मेष लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को 'वीर्य' एवं बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है कई बार विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित जी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते हैं, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

सबसे पहले हमने **'कर्कलग्न'** की पुस्तक प्रकाशित की। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह **'मेषलग्न'** की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है मेषलग्न में भगवान शंकर, सिकन्दर महान, सम्राट पृथ्वीराज, फिल्म अभिनेता अशोक कुमार, अभिषेक बच्चन, राजनेताओं में गुलजारीलाल नन्दा, सरदारवल्लभ भाई पटेल, हरदेव जोशी, दलित नेता कांशीराम, जार्ज फर्नांडीस, चन्द्रबाबू नायडू जैसे व्यक्तित्व हुए हैं। मेषलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। मेषलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार से फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। आम आदमी तक फलित ज्योतिष का ज्ञान पहुंचाने का यह हमारा विनम्र प्रयास है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है, आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर प्रोग्राम 'सृष्टिम' के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आएगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाईप किया हुआ जवाबी लिफाफा पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 400 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को ''कर्कलग्न'' के अंतर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि 'युग पुरुष' के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

1. **हस्तरेखा विभाग**–सन् 1981 में डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा **'अंगुष्ठ से भविष्य ज्ञान'** एवं **'पांव तले भविष्य'** नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। सामुद्रिक शास्त्र की दुनिया में इस नये विषय को लेकर हंगामा मच गया। पाठकों ने इन पुस्तकों को सराहा तथा इनके अनेक संस्करण छपे। सन् 1992 में **'ज्योतिष और आकृति'** तथा सन् 1996 में **'हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन'** दो भागों में प्रकाशित हुए। अपने 40 वर्षों के अध्ययन से अनुभूत प्रस्तुत पुस्तक पर इस विषय के छठे पुष्प के रूप में पाठकों को समर्पित की है। **'हस्तरेखाओं का रहस्यमय संसार'** नामक यह कृति किसी भारतीय विद्वान् द्वारा लिखी गई संसार की श्रेष्ठ एवं बेजोड़ पुस्तकों में सर्वोपरि है। इस पुस्तक की कीर्ति ने जरमिन, कीरो एवं बेन्हाम जैसे विदेशी विद्वानों को मीलों पीछे छोड़ दिया।

2. **ज्योतिष विभाग**–इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न कम्प्यूटर लगे हैं जो गणित एवं फलित दोनों प्रकार की जन्मपत्रियों का निर्माण करते हैं। व्यक्ति की जन्म तारीख, जन्म समय एवं जन्म स्थान के माध्यम से जन्मपत्रिका, वर्षफल, विवाहपत्रिका, प्रश्न पत्रिका आदि का निर्माण सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित सूत्रों द्वारा होता है। सही जन्मपत्रिका यदि बनी हुई है तो उस पर विभिन्न प्रकार के फलादेश करवाने की व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमारे यहां हैण्ड-प्रिण्ट देखने की सुविधा एवं चेहरा देखकर भविष्य बताने की विद्या का चमत्कार केवल उन्हीं सज्जनों को प्राप्त है, जो हमारी संस्था **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के संस्थापक, संरक्षक या आजीवन सदस्य हैं। 'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज' के सदस्यों, व्यापारियों व उद्योगपतियों को वरीयता के साथ हम नियमित ज्योतिष संवाद पत्र भी भेजते हैं। इसके लिये निःशुल्क प्रपत्र अलग से प्राप्त करें। फलित ज्योतिष पर एक साफ्टवेयर **'दृष्टि'** के नाम से बन रहा है जो अब तक का सबसे अनुपम व अद्वितीय कार्य होगा।

3. **वास्तु विभाग**–हमने 'इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन' की स्थापना कर रखी है। हमारे यहां के वास्तुशास्त्रियों द्वारा वास्तु संबंधी विभिन्न त्रुटियों व दोषों का परिहार पूर्ण विधि-विधान से किया जाता है यदि व्यक्ति नक्शा भेजता है तो उस पर भी विचार-विमर्श करके सही स्थानों को चिह्नित व संशोधित करके नक्शा वापस भेज दिया जाता है। जो सज्जन 'वास्तु विजिट' कराना चाहते हैं उन्हें एडवांस ड्राफ्ट भेजकर समय निश्चित कराना चाहिए। वास्तु शास्त्र पर विद्वान लेखक की अनेक पुस्तकें हिन्दी व अंग्रेजी में प्रकाशित हैं। जो अपने आप में एक रिकॉर्ड उपलब्धि है।

4. **यंत्र विभाग**–विद्वान् ब्राह्मणों को देखरेख में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण शुभ नक्षत्र, दिन व मुहूर्त में किया जाता है। यंत्र बनने के पश्चात् उसमें विधिवत् प्राण प्रतिष्ठा करके ही भेजे जाते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखा

जाता है कि सभी यंत्र यजमान द्वारा निर्दिष्ट धातु में सर्वशुद्ध तरीके से बनाए जाते हैं। सभी यंत्र लॉकेट में उभरे हुए होते हैं तथा बनने के पश्चात निर्दिष्ट गंतव्य पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दिए जाते हैं। वी.पी. नहीं की जाती। वी.पी. के लिए आधा एडवांस प्राप्त होना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा अभिमंत्रित व सिद्ध यंत्रों का सम्पूर्ण सूची-पत्र अलग से प्रार्थना कर, प्राप्त किया जा सकता है।

5. रत्न विभाग–अनेक जिज्ञासु सज्जनों के विशेष आग्रह पर हमारे यहां विभिन्न रत्नों एवं राशि रत्नों के विक्रय की व्यवस्था की गई है। भाग्यवर्द्धक अंगूठियां एवं लॉकेट भी पूर्ण विधि-विधान के साथ बनाए जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक मालाएं, पारद शिवलिंग, हत्था जोड़ी, सभी प्रकार के तंत्र की सामग्री असली होने की गारंटी के साथ दी जाती है। इस हेतु सम्पूर्ण जानकारी हेतु सूची-पत्र अलग से प्राप्त करें।

6. विविध धार्मिक अनुष्ठान–संस्थान द्वारा 108 कुण्डीय पवित्र यज्ञ-कुण्डों, दस महाविद्याओं की जागृत 'श्रीपीठ' की स्थापना हो चुकी है। यहां पर विभिन्न प्रकार के दुर्योगों की शांति हेतु, व्यापार-व्यवसाय में रुकावट दूर करने हेतु, दुःख, क्लेश, भय, रोग से निवारण हेतु प्रेत बाधा एवं शत्रु को नष्ट करने हेतु, राजयोग, पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पाठ एवं शांति कराने की सभी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं। भारत एवं विदेशों में 'सामूहिक कालसर्पयोग शान्ति' कराने का श्रेय हमारे इस संस्थान को ही जाता है।

7. प्रकाशन विभाग–जो कुछ भी शोध कार्य कार्यालय के विद्वानों द्वारा होता है उसको निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा एवं प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन भी विभाग द्वारा किया जाता है। अब तक डॉ. द्विवेदी द्वारा 500 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें से 400 के लगभग प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालय से दो नियतकालीन प्रकाशन अनवरत रूप से चल रहे हैं।

1. **अज्ञातदर्शन (पाक्षिक)** 1977 से प्रकाशित, 2. **चण्डमार्तण्डपंचांग** एवं कैलेण्डर (वार्षिक) 1987 से नियमित प्रकाशित होते रहते हैं।

8. श्रीविद्या साधक परिवार–प्रायः सम्मोहन, यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले अनेक जिज्ञासु सज्जनों, छात्र-छात्राओं के अनेक फोन व पत्र पूज्य गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु उनसे दीक्षा प्राप्त करने हेतु, मंत्र शिविरों में भाग लेने हेतु आते हैं। ऐसे जिज्ञासु साधकों को सर्वप्रथम 'श्रीविद्या साधक परिवार' का सदस्य बनना होता है। श्रीविद्या साधक परिवार से जुड़ने के बाद ही ऐसे जिज्ञासु सज्जनों को परमपूज्य गुरुदेव का पत्र या स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त होता है।

विनम्र निवेदन–बाहर से पधारने वाले जिज्ञासु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि बिना कोई अत्यधिक ठोस कारण के परमपूज्य गुरुदेव से मिलने का दुराग्रह न रखें। सर्वश्री डॉ. भोजराज द्विवेदी से मिलने के लिए टेलीफोन नंबर-2637359, 3113513, फैक्स 2431883, मोबाइल-0291-3129105 पर पूर्व समय निश्चित करके ही मिला करें। यह आपकी और कार्यालय दोनों की सुविधा के लिए अत्यन्त जरूरी है।

इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन (रजि.)–डॉ. भोजराज द्विवेदी उनके सहयोगियों ने मिलकर इंटरनेशनल वास्तु ऐसोशिएशन का गठन 14 दिसम्बर 1996 में किया तथा 7 दिसम्बर को इसे विधिवत रजिस्टर्ड कराया। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य भारत एवं भारत के बाहर सुदूर विदेशों में बसे जिज्ञासुओं को भारतीय प्राच्य विद्याओं की सही व सच्ची जानकारी देना तथा पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से उन्हें शिक्षित व दीक्षित करते हुए योग्य विद्यार्थियों एवं विद्वानों को प्रमाण पत्र एवं सैकड़ों जिज्ञासु सज्जन शिक्षित होते हैं। अब तक इस संस्था ने भारत व विदेशों में कम से कम 150 सिम्पोजियम, ऑडियो विज्युल कार्यक्रम, अखिल भारतीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन सफलतापूर्वक आयोजित किए हैं। हमारे संस्थान की शाखाएं भी देश-विदेश में कार्यरत हैं। 50 रु. का मनीआर्डर भेजकर कोई भी सज्जन ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, मंत्र-तंत्र, विद्या, हस्तरेखा इत्यादि में प्रवीणता प्राप्त करने हेतु पत्राचार पाठ्यक्रम पुस्तिका मंगवा सकता है तथा अन्य जिज्ञासु लोगों को शिक्षित करने हेतु अपने शहर में भी अन्तराष्ट्रीय वास्तु ऐसोशिएशन की शाखा भी खोल सकता है।

ज्योतिष शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है व यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगो में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ ''कृत्तिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृत्तिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवें[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुतिवाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तः श्रोत्रमुच्यते।।-पाणिनी शिक्षा, श्लोक/4।
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम्-फ. ज्यो. वि. नृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम् -इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतयोपासक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृत्तिकास्वग्निमादधीत-तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकायां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्-तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।
यच्च किंचित् कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्ररहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत्+इस् (इसिन्)
ज्युत+इस् =ज्योत्+इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीनों शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करें अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[5]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[6]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुंसक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550
5. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
6. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया।[1] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[2]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमें **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[3] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसापूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[4]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है-**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[5]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[6]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

---

1. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
2. वैदिक सम्पति प. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ कैसल, बम्बई पृ. 90
3. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते।।-पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
4. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa&(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3
5. ज्योतिर्निबन्ध श्री शिवराज (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृ.1
6. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रकौं यत्र साक्षिणौ ॥3॥[1]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चन्द्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चन्द्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ॥4॥[2]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[3]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[4] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलटपुलट हो जाए।[5] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।**[1] **अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।**[2]

---

1. जातकसार दीप-चन्द्रशेखरन (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
2. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550
3. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन 1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ठ 17
4. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/32
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालोगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों मे या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है, भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत मे भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष

---

1 अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः।
तथाऽसांवत्सरो राजा भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥ - बृहत्संहिता अ.1/24

2 बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

शास्त्र के अध्येता को स्वयं वराहमिहिर ने कहा है

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो। इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो जाता है। इस दिव्य ज्ञान की गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक मे 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[2]

मेरे निजी शब्दों में '**ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।**'

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[3]

❑❑❑

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30
2. वक्री ग्रह प्रकाशन (991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ 140
3. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदावधीतोऽप्यज्योतिषशास्त्रं बिना द्विजः। वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20, पृ 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक ससार मे कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है।5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाभ्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चन्द्रमा बीज सदृश है, लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या।।
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलंग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है। (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं बिना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदिया विलीन हो जाती हैं।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽय विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ मे सपूर्ण फल की मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त मे अल्प फल होता है, यह विद्वानो का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्में मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, स्वरूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एव संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहा दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभुषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनु लग्न।
मकरलग्न मन्द बुदि के, अपने धुन में वो भी मगन।

कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेंडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते है। क्योंकि "लग्न" का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच मे पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशो में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात मे 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न होते है। 60 में बारह का भाग देन पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है. यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहा से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है. उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या

"बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली की सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति के जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

3.30 से 5.30 A.M. | 7.30 से 9.30 | 5.30 से 7.30 A.M. सूर्योदय | 3.30 से 11.30 | 9.30 से 11.30 | 11.30 से अर्धरात्रि 1.30 | दोपहर 1.30 से 11.30 | सूर्यास्त 5.30 से 7.30 P.M. | 1.30 से 3.30 | 1.30 से 3.30 | 3.30 से 5.30 | 7.30 से 3.30 P.M.

12 | 10 | 1 के. | 11 लग्न | 9 | चं. | शु. 2 | 8 | 3 सू. बु. | 5 | 7 रा. | 4 गु. | श. | 6

बुध च.शु. / मिथुन सू. बु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन / कुम्भ
कर्क, गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि / कन्या मं.	तुला राहु	धनु / वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. शु.	मिथुन सू. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा	कन्या म

चन्द्र 3 शुक्र 5 / सूर्य 5 बुध 6	प्रथम स्थान के. 2	
गुरु 9	बंगाल	
श. 11 मं. 14	रा. 16	लग्न 17

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। 1. **जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।**

विभिन्न पचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय स्टेण्डर्ड समय में दी हुई होती है। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्नं देहो वर्ग षट्कोगानि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

बायां नेत्र, 2
दायां नेत्र 12
बायीं भुजा कन्धा दोनों
सिर चेहरा 1
1, पिण्डली
4 वक्षस्थल, छाती हृदय
हृदय वक्षस्थल सीना 10
5 बायां पैर
7 गुप्तेन्द्री गुदा, लिंग
9 जांघ
6 कमर
पैर 8 जंघा

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनूत्वादनमन्तरैव
परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।
बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः
ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

द्वितीय भाव
द्वादश भाव
तृतीय भाव
प्रथम भाव
एकादश भाव
चतुर्थ भाव
दशम भाव
सप्तम भाव
पंचम भाव
नवम भाव
षष्ठ भाव
अष्टम भाव

जैसे वृक्ष के बिना फल पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

द्रव्यं
व्यय
पराक्रम
देह
लाभ
सुख
राज्य
सुतौ
कलत्र
भाग्य
आयु
वृत्ति

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा। सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाऊगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाए से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव मे कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थो काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें मे राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

मेषलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, अष्टमेश	–	मगल
2.	धनेश, सप्तमेश	–	शुक्र
3.	पराक्रमेश, षष्ठेश	–	बुध
4.	पंचमेश	–	सूर्य
5.	भाग्येश, खर्चेश	–	गुरु
6.	राज्येश, लाभेश	–	शनि
7.	सुखेश		चंद्रमा
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5 चंद्रमा, 9-गुरु
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6 बुध, 8-मंगल, 12-गुरु
10.	केन्द्राधिपति	–	7-शुक्र, 10-शनि
11.	पणफर के स्वामी	–	2 शुक्र, 5-सूर्य, 8-मंगल, 11-शनि
12.	आपोक्लिम		3, 6 बुध, 9, 12-गुरु
13.	त्रिकेश	–	6-बुध, 8-मंगल, 12-गुरु
14.	उपचय के स्वामी	–	3, 6-बुध, 10 11-शनि
15.	शुभ योग	–	1. सूर्य स्वगृही, 2. गुरु स्वगृही 3. क्षीण चन्द्र, 4. मंगल
16.	अशुभ योग	–	1. शनि, 2. बुध, 3. शनि (मगल लग्नेश के शत्रु)
17.	निष्फल योग	–	1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि 3. शनि अकेला किसी भी पापग्रह से युत या दुष्ट न हो और शुभ स्थान केन्द्र व त्रिकोण मे हो तो शुभ है। तब अच्छे फल करेगा।
18.	सफल योग	–	1. सूर्य+मगल, 2. सूर्य+चंद्र, 3. सूर्य+शुक्र, 4. सूर्य+शनि, 5. मंगल+गुरु, 6. चंद्र-गुरु
19.	राजयोगकारक	–	1. सूर्य, चंद्र, गुरु

20.	**मारकेश**	–	शुक्र. शुक्र मुख्य मारक है। मारकेश शुक्र से सम्बन्ध रखने पर शनि और बुध भी मारक होते हैं।
21.	**पापफलद**	–	शनि, बुध एवं शुक्र
22.	**शुभयुति**	–	शनि+गुरु
23.	**अशुभयुति**	–	मंगल+बुध

विशेष– मेषलग्न में मंगल अष्टमेश होते हुए भी लग्नेश होने के कारण अशुभ फल नहीं देगा। शुभ फलकारक ग्रहों की दशा में शुभ फल देता है।

❑❑❑

मेषलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

मन्दसौम्यसिताः पापाः शुभौ गुरुदिवाकरौ।
न शुभं योगमात्रेण प्रभवेच्छनिजीवयोः॥1॥
परन्तु तेन जीवस्य पापत्वमपि सिध्यति।
कविः साक्षान्निहन्ता स्यान्मारकत्वेन लक्षितः॥2॥
मन्दादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञातव्यानि क्रियोद्‌भवे॥3॥

मेषलग्न में शनि, बुध और शुक्र अशुभफल देते हैं। गुरु और सूर्य शुभफल देते हैं। शनि गुरु का योग शुभफलदायक नहीं होता। परन्तु उतने से गुरु का अशुभत्व भी सिद्ध होता है। शुक्र मारक स्थान का अधिपति होने के कारण उसके मारक होना चाहिए परन्तु केवल इतने ही कारण पर से वह मारक नहीं बनता। शनि आदि करके पापग्रह मारक बनते हैं। इस प्रकार मेषलग्न में जातक को शुभाशुभ योग होते हैं वह ज्ञाताओं ने जानना चाहिए। मेषलग्न में शनि 10/11 स्थानों का, बुध 3/6 स्थानों का और शुक्र 2/7 स्थानों का अधिपति होता है 3/6/8/11/12 इन स्थानो के अधिपति अशुभफल देते हैं ऐसा पूर्व में कहा गया है। शुभग्रह केन्द्र में हों तो शुभफल नहीं देते उसी प्रकार मेषलग्न में लग्न स्वामी मगल है और बुध, शुक्र तथा शनि उसके मित्र नहीं होते हैं, इस कारण से बुध, शुक्र और शनि अशुभ होते हैं। सूर्य पंचम स्थान का (त्रिकोण स्थान का) स्वामी और गुरु 9/12 स्थानों का स्वामी होता है। सूर्य और गुरु दोनों ही लग्न स्वामी मंगल के मित्र हैं और वे याने मकर और कुम्भ राशियों का स्वामी शनि अर्थात् दोनों शुभयोग कारक स्थानों का मालिक होने से प्रचंड राजयोग कारक होता है। ऐसा अनुभव है। लेकिन इस प्रकार का राजयोग करने वाला शनि किसी भी पापग्रह से युक्त, दृष्ट तथा अशुभ स्थान में नहीं होना चाहिए वह अकेला और शुभ दृष्ट ऐसा होने पर ही उसके परमोच्च प्रकार के फल मिलते हैं अन्यथा उसके वैभव कारक फलों में न्यूनता रहती है। शनि अकेला रहने की अपेक्षा अन्य शुभग्रह के साथ यदि संबंध करता हो तब अति उत्कृष्ट फल होते हैं। ''शनिदिवाकरौ'' इस पाठान्तर को यदि स्वीकार किया जाए तो इन दोनों का योग भी शुभ बन सकता है कारण शनि केन्द्राधिपति और त्रिकोणाधिपति होता है और सूर्य चतुर्थ केन्द्र का स्वामी है। इसलिए प्रस्तुत श्लोक के अनुसार संबंध नहीं होने पर भी राजयोग होता है। परन्तु

सूर्य शनि का शत्रु होने के कारण कदाचित् फलों में किंचित न्यूनता आना संभव है। 'शनिशशी सुतौ'' ऐसा पाठान्तर यदि स्वीकार किया जाए तो शनि-बुध यह योग श्रेष्ठ बनता है। कारण बुध पंचम याने त्रिकोण का स्वामी होता है इसलिए अशुभ है उसका योग शनि से (नवम-दशम स्थानों के अधिपति से), जो केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी है, श्रेष्ठ प्रकार का राजयोग उत्पन्न कर सकता है। कारण वह दो त्रिकोण स्वामियों का भी योग है। बुध धनेश यद्यपि मारक स्थान का अधिपति है फिर भी पंचम इस त्रिकोण स्थान का स्वामी होने से शुभ है। इसके अतिरिक्त बुध शनि का मित्र है। इसलिए श्लोक 20 के अनुसार श्रेष्ठ राजयोग बनता है। वृषभ लग्न के लिए गुरु 8/11, स्थानों का, शुक्र 1/6 स्थानों का और चन्द्र 3 तीसरे स्थान का अधिपति होते हैं। 8/6/11 और ये 3 स्थान अशुभ हैं। शुक्र ग्रह के लिए प्रथम स्थान भी अशुभ है, इसके अलावा वह षष्ठ स्थान (त्रिषडाय) का स्वामी भी होने से (2) गुरु बारहवें स्थान का स्वामी होने से दूषित है और शुक्र सप्तम (मारक) भाव का स्वामी होने से दूषित है दोनों ही दूषित होने के कारण गुरु शुक्र योग निष्फल होता है। सफलयोग -1. सूर्य-मंगल, 2. सूर्य चन्द्र, 3. सूर्य-शुक्र (निष्कृष्ट और सदोष) कारक शुक्र सप्तम स्थान का स्वामी होने से दूषित है। सूर्य दूषित नहीं है। परन्तु एक दोषयुक्त होने से सफल राजयोग होता है। लेकिन यह योग निकृष्ट और सदोष है।

4. सूर्य शनि, 5. मंगल-गुरु, 6. चन्द्र गुरु यदि चन्द्रमा पूर्ण हो तो चतुर्थ स्थान का (केन्द्र का) स्वामी होने के कारण राजयोग करता है। पूर्ण चन्द्र होने से उसे शुभ माना गया है। परन्तु इस ग्रथ के नियमों के अनुसार केन्द्रेश यदि शुभग्रह हो तो अशुभ होता है, इसलिए यह योग सदोष होता है यदि चन्द्रमा क्षीण होवे तो शुभ होता है। और गुरु द्वादशेश होने से उसका दोष नष्ट करता है।

मेषलग्न के शुभाशुभ योग

1. शुभयोग–सूर्य पंचम स्थान का अर्थात् त्रिकोण स्थान का अधिपति होकर यदि स्वगृह में हो तो श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभफल देने वाला होता है।

2. शुभयोग–गुरु नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी है और वह स्वगृह में हो तो श्लोक 6 के अनुसार शुभफल देने वाला होता है।

3. शुभयोग–चन्द्रमा (विशेषतः क्षीणचन्द्रमा) केन्द्राधिपति होने के कारण से श्लोक 11 के अनुसार (अल्प) कम दूषित होता है और शुभ माना जाता है। वह शुभफल देने वाला होता है।

4. शुभयोग–मंगल अष्टम स्थान का स्वामी होकर लग्नेश भी होता है। श्लोक 9 के अनुसार उसे शुभ माना जाता है। और वह शुभफल देता है।

1. अशुभयोग–शनि दशम स्थान का अधिपति होने से पापग्रह है और एकादश स्थान का भी अधिपति होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ माना गया है और वह अशुभ फल देने वाला मारक है।

2. अशुभयोग–बुध तृतीय एव षष्ठ स्थान का अधिपति होने से श्लोक, 6 के अनुसार अशुभ माना गया है और वह अशुभफल देने वाला मारक है।

3. अशुभयोग–शुक्र द्वितीय एव सप्तम (मारक स्थानों का) स्थानों का अधिपति होकर सप्तम केन्द्र का भी अधिपति होता है और श्लोक 7-10 के अनुसार अशुभ है और मृत्युकारक अशुभफल देने वाला है। (विशेष करके यदि अन्य पापीग्रहों से संबध करता हो तो निश्चय ही श्लोक 10 के अनुसार मृत्युकारक होता है।)

4. अशुभयोग–गुरु द्वादश स्थान का अधिपति होकर नवम स्थान (त्रिकोण स्थान) का भी अधिपति है। वह यदि दशम और एकादश स्थान के स्वामी शनि से सहस्थानाधिपत्य योग श्लोक 8 के अनुसार करे तो वह पापग्रह माना जाएगा और अशुभफल देने वाला होगा।

निष्फलयोग–1. गुरु-शनि, 2. गुरु-शुक्र।

1. शनि गुरु का योग निष्फल होता है। यह भी अशुभ है। गुरु नवम और द्वादश स्थानों का स्वामी होने से मारक (अशुभ) है चन्द्रमा तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार अशुभ है। इसलिए गुरु, शुक्र और चन्द्रमा अशुभ हुए। सूर्य चतुर्थ स्थान का स्वामी होना है। सूर्य इस पापग्रह को केन्द्र शुभ है। इसलिए श्लोक 7 के अनुसार वह शुभ हुआ। गुरु आदि करके अशुभग्रह मारक-लक्षण युक्त होते हैं।

❑❑❑

मेषलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1. लग्न — मेष
2. लग्न चिह्न — मेंढ़ा
3. लग्न स्वामी — मंगल
4. लग्न तत्त्व — अग्नि तत्त्व
5. लग्न उदय — पूर्व
6. लग्न स्वरूप — चर
7. लग्न अवधि — 1 घंटा 36 मिनट
8. लग्न स्वभाव — उग्र
9. लग्न बली — रात्रिबली
10. लग्न कान्ति — लाल (रक्तवर्णी)
11. लग्न दिशा — पूर्व
12. लग्न लिंग व गुण — पुरुष
13. लग्न जाति — क्षत्रिय
14. लग्न प्रकृति व स्वभाव — क्रूर स्वभाव, पित्त प्रकृति
15. लग्न का अंग — सिर
16. जीवन रत्न — मूंगा
17. अनुकूल रंग — लाल
18. शुभ दिवस — मंगलवार, रविवार
19. अनुकूल देवता — शिवजी, भैरव, हनुमान
20. व्रत, उपवास — मंगलवार
21. अनुकूल अंक — नौ
22. अनुकूल तारीखें — 9/18/27
23. लग्न वर्ण — रक्त
24. लग्न धातु — ताम्बा
25. जन्म काल में रुदन — नहीं

26.	जातक भोजन रुचि	— गर्म
27.	जातक की विशेषता	— तेजस्वी
28.	मित्र लग्न	— सिंह, तुला व धनु
29.	शत्रु लग्न	— मिथुन व कन्या
30.	व्यक्तित्व	— दबंग, क्रोधयुक्त व साहसी
31.	सकारात्मक तथ्य	— कुटुम्ब को पालने वाला, चुनौती को स्वीकार करने वाला, सदैव क्रियाशील
32.	नकारात्मक तथ्य	— दम्भी, अधैर्यशील

❑❑❑

मंगल का वैदिक स्वरूप

चारों वेदों में मंगल या भौम से सम्बन्धित कोई सूक्त या मंत्र नहीं मिलता। 'पृथ्वीसूक्त' एवं पृथ्वी के बारे में रहस्यमय जानकारियों से परिपूर्ण अनेक मंत्र ऋग्वेद में हैं परन्तु इनके साथ मंगल ग्रह का कोई तारतम्य नहीं बैठता। वेदों में मंगल ग्रह की आराधना-पूजा व प्रतिष्ठा हेतु एक मंत्र सर्वाधिक प्रचलित है।

मंगल का वैदिक मंत्र

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।
अपा ᳪ रेता ᳪ सि जिन्वति॥
ॐ भौमाय नमः

–यजुर्वेद अ.3/मं. 12

जिसका शब्दिक अर्थ इस प्रकार है-''यह अग्नि द्युलोक के शिर के समान महान है और समस्त पृथ्वीलोक इस अग्नि के तेज से महान है। यही अग्नि जलों में सार (तेज) रूप से (वृष्टि उत्पादन निमित्त) विद्यमान है।''

सम्भवतः ऋषियों के द्यौलोक (अन्तरिक्ष) में ऐसा ज्वलनशील पिण्ड देखा हो, जिसमें जल-जीव व सृष्टि की सम्भावना हो तथा पृथ्वी से जिसका गहरा सम्बन्ध हो और उसे मंगल या भूमिपुत्र 'भौम' कह दिया हो। इस मंत्र के शब्दार्थ में तो कहीं नहीं, परन्तु गूढार्थ व समाधि भाषा में ऐसा भाव झलकता है। इस मंत्र के पीछे ॐ भौमाय नमः जोड़ दिया गया है। जिसका अर्थ है मंगल के ऐसे दिव्य रूप को नमस्कार है। कर्मकाण्ड (पूजा-पाठ) में अनादिकाल से मंगल के पूजन हेतु इसी मंत्र का प्रयोग होता है। मंगल के बारे में इससे अधिक जानकारी वेदों में नहीं है पर पौराणिक काल में मंगल का दिव्य रूप धीरे-धीरे स्पष्टतः मुखरित होता चला गया।

मंगल का पौराणिक स्वरूप

उत्पत्ति कथा—वाराहकल्प की बात है। भगवान वाराह ने रसातल से पृथ्वी का उद्धार कर उसको अपनी कक्षा में स्थापित कर दिया था। पृथ्वी देवी की उद्विग्नता मिट गई थी और वे स्वस्थ हो गई थीं। उनकी इच्छा भगवान को पति के रूप में पाने की हो गई। उस समय वाराह भगवान

का तेज करोड़ों सूर्य के सदृश्य असह्य था। पृथ्वी की अधिष्ठात्री देवी की कामना की पूर्ति के लिए भगवान वाराह अपने मनोरम रूप मे आ गए और पृथ्वीदेवी के साथ वे दिव्य वर्ष तक एकान्त मे रहे। इसके बाद वाराह रूप मे आकर पृथ्वीदेवी का पूजन किया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/29–33)। उस समय पृथ्वीदेवी गर्भवती हो चुकी थीं, उन्होंने मगल नामक ग्रह का जन्म दिया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/43) विभिन्न कल्पों में मगल ग्रह की उत्पत्ति की विभिन्न कथाएं हैं। आजकल पूजा के प्रयोग में इन्हें भारद्वाज गोत्र कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह कथा गणेशपुराण में आती है।

मगल ग्रह के पूजन की बड़ी महिमा है। भौमव्रत मे ताम्रपत्र पर भौम-यत्र लिखकर मगल की सुवर्णमय प्रतिमा प्रतिष्ठित कर पूजा करने का विधान है (भविष्यपुराण)। जिस मगलवार को स्वाति नक्षत्र मिले, उसमें भौमवार व्रत करने का विधान है। मगल देवता के नामों का पाठ करने से ऋण से मुक्ति मिलती है। (पद्मपुराण)। अंगारक व्रत की विधि मत्स्यपुराण के बहत्तरवें अध्याय में लिखी गई है। मंगल अशुभ ग्रह माने जाते हैं। यदि ये वक्रगति न चलें तो एक-एक राशि को तीन-तीन पक्ष में भोगते हुए बारह राशियों को पार करते हैं (श्रीमद्भा. 5/22/14)।

वर्ण–मंगल ग्रह का वर्ण लाल होता है और इनके रोम भी लाल हैं। (मत्स्यपु. 94/3)।

वाहन–मगल देवता का रथ सुवर्ण-निर्मित है। लाल रंग वाले घोड़े इस रथ में जुते रहते हैं। रथ पर अग्नि से उत्पन्न ध्वज लहराती रहती है। इस रथ पर बैठकर मगल देवता कभी सीधी, कभी वक्रगति से विचरण करते हैं। (मत्स्यपु. 127/4-5)। कहीं-कहीं इनका वाहन मेष (भेड़ा) बताया गया है (श्रीतत्त्वनिधि)।

मंगल देवता का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए–

> **रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।**
> **चतुर्भुजः रक्तरोमा वरदः स्याद् धरासुतः॥**
>
> (मत्स्य पु. 94/3)

'भूमिपुत्र मंगल देवता चतुर्भुज हैं। इनके शरीर के रोए लाल हैं। इनके हाथों में क्रम से शक्ति, त्रिशूल, गदा और वरदमुद्रा है। उन्होंने लाल मालाएं और लाल वस्त्र धारण कर रखे हैं।'

मगल के अधिदेवता स्कन्ध, प्रत्याधिदेवता पृथ्वी है.

❑❑❑

मंगल का खगोलीय स्वरूप

सौरमण्डल में पृथ्वी के बाद मगलग्रह का चौथा स्थान है। मगल सूर्य से 22,40,00,000 कि.मी. की दूरी पर है। इसका व्यास 6860 कि.मी. है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 689 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है मंगल की भ्रमण गति 45 दिन में 20 अंश या डेढ़ दिन में एक अंश है। इसका गुरुत्व हमारी पृथ्वी के गुरुत्व के दसवें भाग के बराबर है। जिस प्रकार हमारी पृथ्वी के इर्द-गिर्द चन्द्रमा घूमता है उसी प्रकार मगल के चारों ओर दो चन्द्रमा घूमते हैं। मगल जब पृथ्वी के निकटतम होता है। तब पृथ्वी से उसकी दूरी 9.8 करोड़ कि.मी. की होती है। उस समय यह लालमणि के समान चमकता हुआ दिखलाई देता है तथा उसका अध्ययन भी सुगम रहता है।

मंगल ग्रह अस्त होने से 120 दिन बाद फिर उदय होता है। उदय के 300 दिन बाद वक्री होता है। वक्र के 60 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 300 दिन बाद पुनः अस्त होता है। मगल को अगारक रुधिर, आग्नेय, त्रिनेत्र, भौम, भूमिसुत, कुज आदि नाम दिए गए हैं।

मगल की गति–मगल अपनी धुरी पर 24 घण्टा 37 मिनट और 22 सेकंड में एक चक्कर पूरा कर लेता है। यह 686 दिन 17 घण्टा 20 मिनट और 41 सेकंड में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। इसकी चाल 15 मील प्रति सेकंड और 54000 मील प्रति घण्टा है। स्थूल मत से मगल की चाल 18 मास मानी गई है, फलतः 45 दिन में एक राशि और डेढ़ दिन में एक अंश को पार कर जाता है। यह एक नक्षत्र पर 20 दिन और एक पाद पर 5 दिन रहता है।

जब यह वक्री होता है तो उस राशि को 127 दिन में और उससे अगली राशि को 15 दिन में पूरी करता है। जिस राशि पर मार्गी होता है उस पर 45 दिन रहता है। जब यह सूर्य से 135 डिग्री अंश की दूरी पर जाता है तो वक्री हो जाता है। उस समय इसकी चाल 65 दिन में 12 डिग्री अंश तक की हो जाती है। यह सूर्य से 17 डिग्री अंश की दूरी पर अस्त हो जाता है अस्त होने पर 120 दिन बाद फिर उदय होता है। उदय के 300 दिन बाद वक्री हो जाता है। तथा वक्री के 60 दिन बाद मार्गी हो जाता है, जब इसकी गति 46.1 होती है तो यह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो जाता है।

❑❑❑

मंगल का ज्योतिषीय स्वरूप

मंगल की उत्पत्ति–पृथ्वी के पिता सूर्य और उसकी माता चन्द्र है। मंगल पृथ्वी का पुत्र है। सूर्य और चन्द्र इसके नाना नानी हैं। ननिहाल के पूर्ण गुण भी इसमें हैं और पृथ्वी से संघर्ष कर यह उससे अलग हुआ है। अत: इसमें मारकत्व भी है सूर्य का तेजस्व और चंद्र की शीतलता इसमें है। यह प्रबल साहसी है। शक्ति का नेतृत्व इसका प्रतीक है। उज्जैन में इसकी उत्पत्ति मानी गई है। यह चतुर्भुज रूप है। शूल, गदा ये इसके शस्त्र हैं। यह भारद्वाज कुलीन क्षत्रिय है। मेष इसका वाहन है। इसका देवता कार्तिक स्वामी है, अग्नि तत्त्व है वर्षा में चमकती बिजली के समान इसकी कांति है।

रंग– शत्रुओं का विजेता, युद्ध प्रिय, ऋणकर्त्ता, ऋणहर्ता दोनों के रूप में प्रसिद्ध है यह रक्त का प्रतीक होने से लाल रंग का है। वैद्यनाथ ने "संरक्त: गौर: कुज." से लाल और सफेद के मिश्रण का रंग बताया है। वराहमिहिर ने इसे किंशुक के फूलों जैसा लाल बताया है, तपे हुए तांबे के समान इसकी कान्ति दर्शाई है। विदेशी विद्वानों ने अग्नि ज्वाला सम वर्ण बताया है।

बलवत्ता–इसका कद नाटा है। यह मेष और वृश्चिक राशियों का स्वामी है। मेष इसकी मूल त्रिकोण राशि है। मकर में यह उच्च का होता है और कर्क में नीच का बनता है। नवांश व द्रेष्काण में स्वगृही होकर बली होता है। मीन, वृश्चिक, कुंभ, मकर, मेष राशि के प्रारम्भ में बली होता है। मीन और कर्क में सुखप्रद होता है। नैसर्गिक कुण्डली में लग्नेश और अष्टमेश बनकर जन्म व मृत्यु पर यह अधिकार रखता है। यह रात्रिबली, कृष्ण पक्षी में बली व दक्षिण दिशा में बली होता है। अपनी होरा अपने मास, पर्व और काल में बली होता है। ग्रीष्म ऋतु चतुर्थ स्थान में इसका बल कमजोर रहता है। दशम में दिग्बली होता है। षष्ठ में हर्षबली होता है यह तीसरे व षष्ठ भाव का कारक है, वहां भाव का नाश करता है। वह पुरुष ग्रह है, अत: स्त्री राशियों में ज्यादा सुखदायी रहता है, वक्री होने पर शुभ फल करता है।

कार्य और धन्धे–मंगल में शारीरिक व मानसिक कार्य का सामर्थ्य होता है। इसका प्रधान गुण है दूसरों के लिए खुद को भी कष्ट में डालना। थोड़े से इशारे से ये बात को फौरन समझ जाना, तर्क की प्रबल शक्ति का विकास इनमें होता है–इसलिए राजनेता, वकील, बिजली के कार्य वैज्ञानिक, मिस्त्री, व्यापारी, मशीनरी के कार्य, इंजीनियर, ओवरसिअर, भूस्वामी, जागीरदार, सुनार, दर्जी, लुहार चमार, रसोईया, औषधि विक्रेता, चोर, डकैत स्मगलर, नायक, सेनापति सिपाही इन धंधों में मंगल की प्रधानता पाई जाती है।

धातु—सोना व तांबा है। रत्न मूगा (प्रवाल) है। 5 से 9 रत्ती तक का मूगा पहनने से यह फलता है।

दृष्टि—इसकी उर्ध्वदृष्टि है। 4, 7, 8वीं सम्पूर्ण दृष्टियां हैं, 3, 10 एकपाद, 5, 9 द्विपाद दृष्टियां हैं।

यह दशम भाव का पूर्ण दृष्टि का प्रभाव रखता है। केवल अपने घर को देखकर बुरा प्रभाव नहीं करता है, पर सप्तम दृष्टि प्राय: शत्रुता रखती है।

मित्रादि—मगल के मित्र ग्रहों में सूर्य, गुरु, चद्र हैं। बुध और राहु शत्रु है। शुक्र, शनि सम होते हैं। राहु की शत्रुता समता भाव पर निर्धारित है।

स्वरूप—जिन व्यक्तियों की मेष या वृश्चिक राशि होती है, या जिनके लग्न उपरोक्त होते हैं। वे प्राय: बिना सोचे-समझे सामने वाले व्यक्ति से टकरा जाते हैं। वे बहुत उतावले व त्वरित परिणाम चाहने वाले होते हैं, ये लोग तेजस्वी व दबंग होते हैं तुरन्त निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। अपनी प्रतिभा से ऊंचे उठते हैं। क्रोधी व साहसी होते हैं।

उनका चेहरा ललाई लिए हुए कुछ गोरे रंग का या गेहुंआ होगा। मध्यम औसत कद, गर्दन लम्बी, बाल कुछ घुंघराले, नेत्रों में तीखापन, चेहरा कुछ लम्बा, आंखें गोल, दांत सुंदर, जातक के चेहरे के किसी भाग में चोट या मस्सा या लहसुन का निशान होगा, घुटने कमजोर होंगे। ललाट चौड़ी भी हो व बालों में हल घुघरालापन रहेगा। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। व्यक्ति स्वतत्र विचार वाला होगा।

अचूक फल

- ❑ मंगल 12, 1, 4, 7, 8 भावों में स्थित हो तो कुण्डली मांगलिक होती है, कुछ अन्य ज्योतिषियों के आधुनिक शोध ने दूसरे स्थान के मंगल से कुण्डली को मांगलीक माना है। मांगलिक कुण्डली स्त्री व पुरुषों के लिए पारिवारिक कष्टदाई बनती है। पाप ग्रहों की इन स्थानों में स्थिति से मांगलिक तुल्य बनती है। शुक्र से 4 थे व 5वें मंगल भी कष्टदायी बनते हैं। गृहस्थ ठीक से नहीं चलता।
- ❑ केन्द्र में स्वगृही व उच्च राशि में स्थित मगल से रुचक महायोग बनता है। जो साहस व शौर्य से धन, भूमि व वैभव का स्वामी बनता है।
- ❑ मगल+शनि के सबध से बिजली, विज्ञान व दो नंबर के धधे बनते हैं। मगल में शनि व शनि में मंगल की दशा बीमारी या कष्ट देती है।
- ❑ तीसरे मगल छोटे भाई को देने वाला व उसका मारक भी होता है।
- ❑ पचम व एकादश भवन के मगल पुत्र कारक और मारक भी होते हैं।
- ❑ दूसरे स्थान में स्थित मगल पुत्र को अग्नि सम्बन्ध का एक्सीडेंण्ट से हानि देते हैं।
- ❑ 6, 7, 12वें स्थान में स्थित मगल शत्रु और रोग की वृद्धि करता है

- मगल यदि गुरु से नियंत्रित हो जाए तो शुभ फल करेगा। गुरु से दृष्ट मंगल शुभ फल वाला होता है। परन्तु अभी शोध से मागलिक स्थानों का मंगल गुरु से दृष्ट होकर प्रबल मगल मारक बनता है। ऐसा फल दृष्टव्य है।
- मगल का बल शुक्र तोड़ देता है। (मं.+शु) हो उस मगल की दृष्टि से मृत्यु नहीं होती है। यह सेक्स बढ़ाता है।
- मगल का शुक्र से किसी प्रकार का संबध हो तो वह संतान योग देता है।
- अष्टमस्थ या अष्टम पर दृष्टिकर्त्ता अनियंत्रित मंगल जिस मंगल पर किसी शुभ व अशुभ ग्रह का असर न हो वह मगल उम्र कम करता है। अचानक एक्सीडेण्ट से मृत्यु देता है।
- सूर्य+मगल का योग सूर्य से नियंत्रित मंगल अकस्मात् दुर्घटना देता है।
- चंद्र व शुक्र के संबंध में मंगल दूषित होता है। व्यक्ति कुमार्गगामी, क्रोधी व व्यसनी बनाता है।
- 5, 7, 12वें भाव में मंगल के लोग परनिन्दक होते हैं।
- 2, 4, 6, 8, 12वें भावों में मंगल वाले डिग्रीयां प्राप्त करते हैं। परन्तु मन की अवस्था अविकसित रहती है।
- शुक्र या मंगल जन्म में केन्द्र में हो तो जब जब मंगल उसी राशि पर आएगा चोट देगा।
- जन्मदशा मे मंगल की पांचवीं दशा अशुभ होगी।
- मगल प्रथम भाव में जलीय राशि में हो तो मनुष्य मद्यवी व स्त्रीलोलुप होगा।
- मगल लग्नेश होकर बलवान हो तो व्यक्ति बहुत पुरुषार्थी क्रियाशील, व्यवस्थापक, समाज में अग्रणी, साहसी व नेता होता है।
- 6, 8, 12वे भाव में शुभ ग्रह से युक्त व दृष्ट मंगल हो तो पट्ठों का या सूखे का रोग देता है।
- मंगल तीसरी शत्रु राशि में हो तृतीयेश तथा मंगल पर पाप प्रभाव हो तो छोटा भाई नहीं होता।
- मंगल की दृष्टि जब दो ग्रहों पर पड़ रही हो तो किसी आपत्ति की सूचना होगी। जैसे—वृषभ लग्न में यदि मंगल की दृष्टि बुध व शुक्र पर पड़ेगी तो स्त्री की मृत्यु शीघ्र होगी।
- मेषलग्न व कन्या लग्न में बली मंगल आयु बढ़ाएगा। मकर का मगल 7वें होगा तो 'काहल योग' से राजयोग करेगा।
- तीसरे भाव में मं+रा. युति से व्यक्ति वेश्यागामी होगा।
- तीसरे भाव में मगल स्त्री राशि में हो तो भाइयों का सुख पुरुष राशि में हो तो बहनों का सुख प्राप्त होगा।
- मंगल जहा पर भी बैठा हो उस स्थान की हानि करेगा यदि शुभ दृष्ट न हो।

मंगल दोष शान्ति के उपाय

1. मगल यंत्र की प्रतिष्ठा कर उसका पूजन करें।
2. ''भौमे तु रुद्र क्रिया'' महादेव का नित्य पूजन करें या ब्राह्मण हो तो नित्य अभिषेक स्वयं करें।
3. अगर कर्ज हो गया हो ऋण नाशक मंगल स्तोत्र का पाठ करें।
4. अगर एक्सीडेण्ट योग बनता हो तो हर शनि+मंगलवार को कुत्तों को मीठा देते रहें। हनुमान चालीसा का नित्य पाठ करें।
5. मंगल व्रत करें। मंगल को मसूर की दाल, गुड़ गौ को दें।
6. मंगल को बलवान करना हो तो तांबा, सोना मिश्रण से धातु की अंगूठी बनवाकर उसमें सवा पांच रत्ती से 9 रत्ती तक का मूंगा पहनें।
7. शनि में मंगल की दशा में मंगल का पालन करें व मंगल में शनि की दशा में शनि का पालन करें।
8. संकट मोचन हनुमत् स्तोत्र का पाठ नित्य करें।

किसी 2 उपायों का एक साथ अवलम्बन करें।

मेषलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

मेषलग्न का स्वरूप

रक्तवर्णो बृहद्गात्रश्चतुष्पाद्रात्रिविक्रमी।।6।।
पूर्ववासी नृपज्ञातिः शैलचारी रजोगुणी।
पृष्ठोदयी पावकी च, मेषराशि कुजाधिपः ।।7।।

—बृहत्पाराशरहोराशास्त्रे/अ. 4/श्लो. 16

रक्तवर्ण, लम्बाकद, चतुष्पद, रात्रिबली, पूर्ववासी, क्षत्रिय, पर्वतचारी रजोगुणी, पृष्ठोदय, अग्नितत्त्व, इस प्रकार मेष है, इसका स्वामी मंगल है।

वृत्ताताम्रदृगुष्णशाक लघुभुक् क्षिप्रप्रसादोऽटनः,
कामी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरोऽगंनावल्लभः।
सेवाज्ञः कुनखी व्रणांकिताशिरा मानी सहोत्थाग्रजः,
शक्त्या पाणितलेऽङ्कितोऽतिचपलस्तोये च भीरुः क्रिये।।1।।

बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 1

यदि जन्म समय में मेषलग्न हो तो जातक कुछ गोलाई लिए हुए तथा कुछ लालिमा या विशेष चमक लिए नेत्रों वाला, गर्म खाने वाला, शाक-भाजी तथा कम खाने वाला, जल्दी ही प्रसन्न हो जाने वाला, भ्रमणशील, कामुक, कमजोर घुटनों वाला, चंचल धन वाला, शूरवीर, स्त्रियों का प्रिय, सेवाकार्य को जानने वाला, नाखूनों में विकास युक्त, सिर में घाव का निशान पाने वाला, स्वाभिमानी, अपने भाइयों में सबसे बड़ा या अपने गुणों से अग्रणी, हथेली में भाले के आकार की रेखा से युक्त, अति चपल तथा जल से डरने वाला होता है।

मेषे विलग्नेतु भवेत्प्रसूतश्चण्डो धनी सर्वकलासु दक्षः।
स्वपक्षहन्ता बहुमन्युयुक्तो मन्दमतिस्तीक्ष्णकरः सदैव।।1।।

वृद्धयवनजातक अ. 24/श्लो. 1/पृ. 286

यदि मेषलग्न में जन्म हो तो मनुष्य प्रचण्ड स्वभाव वाला धनवान सभी कलाओं व शिल्प व्यवहार में चतुरता पाने वाला, अपने पक्ष का नाश करने वाला, अत्यधिक क्रोधी स्वभाव वाला, मन्द बुद्धि वाला एवं तीक्ष्णता युक्त कार्य करने वाला होता है।

बन्धुद्वेषकरोऽटनः कृशतनुः क्रोधी विवादप्रियो।
मानी दुर्बलजानुरस्थिरधनः शूरश्च मेषोदये।

—जातक पारिजात श्लो. 1/पृ. 678

मेष बन्धुओं से द्वेष करने वाला, दुर्बल शरीर क्रोधी, विवाद प्रिय, मानी (गर्व सहित), कमजोर घुटने, धन स्थिर न रहे शूरवीर होता है।

दाता हर्ता दीप्तः क्षयोदयी सङरप्रचण्डः स्यात्।
प्रियविग्रहस्त्रिभागे मेषाग्रे बन्धुषूग्रदण्डश्च ॥1॥

—सारावली पृ. 465/श्लो. 1

यदि जन्म लग्न में मेष राशि हो तथा मेष राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो जातक दानी, गिरकर उठने वाला, हरण करने वाला, तेजस्वी, युद्ध में शूर, कलह प्रेमी व बन्धुओं को कठोर दण्ड देने वाला होता है।

मेषलग्ने समुत्पन्नश्चण्डो मानी सकोपकः।
सुधीः स्वजनहन्ता च, विक्रमी पर वत्सलः॥

मानसागरी अ.1/श्लो. 1

मेषलग्न वाले जीव स्वच्छन्दचारी, अभिमानी, कुपित परन्तु गुणवान, निज पराक्रम में यशस्वी, परिवार वालों से पृथक तथा अन्य जीवों का प्रेमी, धन सम्पदा युक्त तथा गुणग्राही रहता है।

भोज संहिता

कालपुरुष की कुण्डली में प्रथम भाव में मेष राशि ही रहेगी, यह स्थाई ज्ञान है। कालगणना व फलादेश के वक्त प्रथम भाव को मेष राशि का मानकर ही चलना पड़ेगा। उस प्रथम भाव में जो राशि स्थित हो वह लग्न कहलाएगी।

जातक की लग्न राशि क्या है, और चंद्र राशि कौन-सी है? इन दोनों के सम्मिश्रण से जातक के स्वभाव का सटीक पता चलेगा।

जातक के स्वभाव मे विशेषता प्रकट करने में नक्षत्रो का बड़ा महत्त्व है। नक्षत्रों में भी चरण फल श्रेष्ठ होंगे। उससे भी सूक्ष्म उपनक्षत्र स्वामी रहेंगे। अतः आपका जन्म लग्न कौन-सी राशि का, किस नक्षत्र में कितने अंशों पर स्थित है यह बहुत महत्वपूर्ण है। इसी तरह आपका चंद्र भी किस नक्षत्र में कितने अशों पर गया है यह भी दृष्टव्य है। फिर चंद्र नक्षत्र स्वामी और लग्न नक्षत्र स्वामी में मित्रता, समता या शत्रुता है इस पर विचार आवश्यक होगा। तब कहीं जाकर आप जातक के वास्तविक स्वभाव का निर्णय ले सकेंगे।

नक्षत्रानुसार फलादेश

चू चे-चो-ला	ली लू ले लो	अ
अश्विनी-4	भरणी-4	कृत्तिका-1

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका पादमेको मेष

-शीघ्र बोध

इसमे दो पूर्ण नक्षत्र और एक पाद अर्थात् सवा दो नक्षत्र का भुगतान है। सूत्र है–मेष का स्वामी मंगल है–मंगल तीन ग्रह नक्षत्र स्वामियों के प्रभाव से सन्निहित है। अश्विनी केतु, भरणी-शुक्र कृतिका-सूर्य, उपरोक्त नक्षत्र स्वामियों की मुख्य भूमिका है फिर उसमें सहायक नक्षत्र के स्वामी भी होते है। जिसकी पार्श्व भूमिका होती है। प्रत्येक चरण का स्वामी नक्षत्र भिन्न होता है। उसका उससे मिश्रण है इस तरह एक राशि मे भी चरणानुसार भिन्न भिन्न स्वभाव का परिचय मिलता है।

चन्द्रमा यदि अश्विनी नक्षत्र में हो–चंद्र या लग्न की अश्विनी नक्षत्र की स्थिति में जातक पारिजात अध्याय 6, श्लोक 85 में कहा है **अश्विन्यां अतिबुद्धि-वित्त-विनय प्रज्ञा यशस्वी सुखी।** मंगल तर्क शक्ति का प्रबल कारक ग्रह है। इसमें संदेह नहीं है। उसी मंगल के दो मुख्य भाग प्रज्ञा और बुद्धि हैं। यहां पर मंगल अश्विनी नक्षत्र का प्रतिनिधित्व कर रहा है अश्विनी नक्षत्र में अश्व के समान बाजीकरण चंचलता भी है। अश्विनी कुमार देवों के वैद्य हैं जो चिर यौवन के दाता हैं। अश्विनी चंद्र का मित्र है अतः चंद्र के गुण लेकर यह स्वभाव में सुंदरता लाता है और मेषलग्न वालों को यश व सुख, विनय व धन भी देता है।

यदि आपका नाम "अ" से शुरू होता है तो आप सेक्स के मामले में भूखे होते हैं। जो भी जैसी भी औरत दिखलाई देगी उसी के प्रति आप एक विशेष ललक व चाहत का अनुभव करने लगेंगे, यह आपकी कमजोरी है। लाल रंग व ज्वलनशील पदार्थ आपके अनुकूल कहे जा सकते हैं। मंगल एक शौर्यवान व तेजोमय ग्रह होने से 'जहां शांति व सज्जनता असफल हो जाती है वहां पर आप झगड़े डांट डपट से अपना कार्य आसानी से सिद्ध कर सकते हैं।

यदि जातक का जन्म "अश्विनी नक्षत्र' में है तो ये स्वतंत्र विचारों वाले व्यक्ति होते हैं। दूसरों की हुकूमत इन्हें बिल्कुल पसंद नहीं होती तथा आप दूसरे के आधिपत्य में रहकर विकास कर ही नही सकते। आप जब स्वतंत्र कार्य करेंगे तभी आपका विकास संभव होगा। आपको अपने मनोभावों पर नियंत्रण रखना आवश्यक है। परन्तु क्रोधावस्था में आप आत्मनियंत्रण खो बैठते हैं। क्रोध जितना शीघ्रता से आता है उतना ही तीव्रता से उतर जाता है।

अश्विनी नक्षत्र का चरणानुसार फल–सारणी में वर्णित नक्षत्रांश में यदि चंद्र भी अश्विनी नक्षत्र में हो तो ऐसा जातक सभी को खूब प्यार करे। वह चतुर भी होगा व सुंदर भी तथा सौभाग्यशाली होगा।

अश्विन्याः प्रथमे पादे, जातो भवति तस्करः।
द्वितीये चाल्पकर्मा च, तृतीये सुभगो भवेत्।
पादे चतुर्थके भोगी, दीर्घायु जायते नरः॥

अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में मंगल राशि स्वामी, नक्षत्र-स्वामी केतु, प्रथम चरण का स्वामी केतु, प्रथम चरण का स्वामी अंश 0 से 3.20 तक मंगल फिर क्रमशः केतु, शुक्र व सूर्य का मिश्रण होने से आभूषणकर्ता सुनार की ही जाति प्रगट होती है। फलस्वरूप चूंकि केतु और मंगल का प्राधान्य होने से वह तस्कर स्वभाव का ही प्रदर्शित करेगा। अतः इस लग्न के 3.20 अंश के भीतर स्वभाव मे यह बात विशेषतः रहेगी। अन्य ग्रहों के सौजन्य व दृष्टिपात

अश्विन चरण	अंश अवधि	चरण के नवमांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र अंश से तक
प्रथम	0.00 से 3.20	मं.	म.	के (1) शु (2) सू (3)	0.0.0 से 0.06.4 0.6.40 से 3.0 0 3.0.0 से 3.20.0
द्वितीय	3.20 से 6.40	शु	मं	चं (4) मं (5)	3.20.0 से 4.46.4 4.46.40 से 5.33.20
तृतीय	6.41.0 से 10.0	बु.	मं.	रा. (6) गु. (7)	5.33.20 से 6.40.2 7.33.20 से 9.20.00
चतुर्थ	10.10 से 13.20	च	म	श (8) बु. (9)	9.20.0 से 11.26.4 11.26.40 से 13.20.00

से कुछ बदलाव सभव है। केतु का फल मंगल की तरह होता है 'केतु कुजवत्' प्रसिद्ध है।

अश्विनी के दूसरे चरण में–जो 3.20 से 6.40 के अंश तक है। उसमें मंगल के साथ चरण स्वामी शुक्र है। केतु के साथ सूर्य+चंद्र+मगल का मिश्रित योग है। अत: मगल+शुक्र का सबंध सेक्स (काम) सवर्धन का है। शुक्र चद्र की ही तरह कामुक है। अत: अतिकामुकता के कारण कार्य क्षेत्र मे थोड़ा ही ध्यान जा पाता है या ओछे या छोटे तबके के कार्य करने का स्वभाव होता है। स्वभाव में ईर्ष्या व उससे जनित अकर्मण्यता रहती है।

अश्विनी का तीसरा चरण–6.40 से 10.00 तक का श्रेष्ठ है। इसका स्वामी बुध है। इसमें बुध+केतु+राहु+गुरु का सम्मिश्रण है। अत: जतिका या जातक ऐश्वर्यशाली होंगे। क्योंकि बुध और चंद्र को धन ऐश्वर्य विषय मे सहायक माना है। व्यक्ति अपने क्रोध को कंट्रोल कर मीठा बोल सकेगा, या मस्त रहेगा। बुध ऐश्वर्य सुख का भोगी भी है।

अश्विनी के चतुर्थ चरण मे जन्म हो तो मनुष्य भागी व दीर्घायु बनेगा। क्योंकि चतुर्थ चरण का स्वामी चद्र है। यह नक्षत्र पाद चंद्र का होने से वह इस पाद में स्वक्षेत्री बनकर दीर्घायु भी देता है और लग्न मे हो तो धन और भोग भी देगा।

चन्द्रमा यदि भरणी नक्षत्र में हो

भरणी नक्षत्र–स्वामी शुक्र, **राशि स्वामी**–मगल

भरणी नक्षत्र मे लग्न या चद्र हो तो व्यक्ति-

दक्षः सुखी सत्यवक्ता भरण्यां
भवेद्रोगः कृत निश्चयः स्यात्। जातक परिजात/अ. 8

भरणी नक्षत्र में व्यक्ति चतुर सुखी, सच बोलने वाला व निरोगी तथा दृढ़ निश्चयी बनेगा। शुक्र लक्जीरियस व सेक्सी ग्रह है। फिर मेष के स्वामी मंगल की राशि में तो कामवासना बढ़ाता ही है। अतः 'जातक परिजात' मे 'होरा प्रदीप' में भिन्न फल किसी अंग विशेष में त्रुटि भी बताता है। परन्तु शुक्र के नक्षत्र में चद्रमा या उच्च राशि का बनता है। अतः रोग रहित और शुक्र चद्र परस्पर शत्रु भी हैं। अतः किसी अंग में रोग दोनों ही संभव लगते हैं। अतिकामी को रोग भी हो सकता है व काम के लिए पौष्टिक पदार्थ भोक्ता होने से निरोगी भी बनता है पर रोगी होगा।

भरणी चरण	चरणों के अंश	नवांश चरणों स्वामी	अंशों के उपस्वामी व अंश
प्रथम	13.21 से 16.40	सू. सू.	शु/शु 13.20 से 15.33.20 शु/सू 15.33.20 से 16.13.20
द्वितीय	16.41 से 20.00	बु. बु.	शु/चं 16.33.20 से 17.20.00 शु/मं 17.20.00 से 18.6.40
तृतीय	20.1 से 23.20	शु. शु.	शु/रा 18.6.40 से 20.6.40 शु/गु 20.6.40 से 21.53.20
चतुर्थ	23.21 से 26.40	मं. मं.	सू/श 21.53.20 से 24.0.10 शु/बु 24.00.00 से 25.53.20

यदि आपका जन्म "भरणी" नक्षत्र में हुआ है तथा आपका नाम "ल" से आरम्भ होता है तो आप कुछ लम्बे कद वाले व्यक्तियों की गिनती में है। आपके अनेक मित्र हैं तथा मित्र गणों पर आपकी पूर्ण कृपा है। आपको छिछले एवं चुगलखोर मित्र कतई पसंद नहीं। आप दूरदर्शी होने के साथ-साथ मितव्ययी भी हैं। फिजूल के खर्च व व्यर्थ के दिखावे में आपकी रुचि नहीं है आपके राशि का चिह्न मेढ़ा होने से आपके दिल में हिम्मत व आंखों में जोश है। आपकी हड्डिया व काठी मजबूत है। भ्रमण व घूमने फिरने के शौक के साथ-साथ आपको चरपरी, भड़कीली या उत्तेजनापूर्ण चटपटे भोजन मे भी बहुत रुचि है।

त्यागी याम्याद्यपादे स्याद्, द्वितीये धनवान् सुखी
तृतीये क्रूर कर्मी च, चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्॥

भरणी के प्रथम चरण में जन्म हो तो जातक त्यागी होगा। क्योंकि इस चरण का स्वामी सूर्य है। इसमें सात्विकता तथा पृथकता दोनों का समावेश है। चन्द्र द्वारा प्रदर्शित धन का यह त्याग भी करवाता है।

भरणी के द्वितीय चरण में मनुष्य धनी व सुखी होगा क्योंकि दूसरे चरण का स्वामी बुध है। जो अपने प्रभाव द्वारा चंद्र के गुणो को बढ़ाता है। चंद्र लग्न मे धन और मन दोनों पुष्ट होते हैं। अतः व्यक्ति बुध+शुक्र+चंद्र मिश्रण से सुखी होगा।

भरणी के तृतीय चरण में व्यक्ति क्रूर कर्म करेगा, क्योंकि इस चरण का स्वामी शुक्र है अतः शुक्र व चंद राशि में शत्रुता होने से व्यक्ति के कर्म ठीक नहीं होंगे।

चतुर्थ चरण में मगल का समावेश है। वह चौथे चरण का स्वामी होगा तो चंद्र मंगल की ही राशि में उससे शत्रुता करेगा। मगल के ही चरण में चंद्रमा का आना दरिद्रता देगा।

भोज संहिता

मेषलग्न का स्वामी मंगल अग्नितत्त्व प्रधान होता है सो ऐसा जातक दबंग व क्रोधयुक्त होता है। यह पुरुष सूचक राशि है। इसका प्राकृतिक स्वभाव साहसी, अभिमानी व पौरुषशाली पुरुषों का प्रजनन है। ऐसे जातक को क्रोध शीघ्र आता है। कोई जरा सी भी विपरीत बात कह दे तो इनको सहन नहीं होता। इनका सिर मजबूत एवं इनमें मेढ़े तुल्य शीघ्रता से भिड़ने की शक्ति होती है। इनकी आंखें बकरे के समान पीत व रक्तवर्णीय होती हैं।

मेषलग्न वाले प्रायः मध्यम कद के होते हैं। सामान्यतया मेषलग्न में उत्पन्न जातक साहसी पराक्रमी, तेजस्वी तथा परिश्रमी होते हैं तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में वांछित मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। ये अत्यधिक सक्रिय एवं क्रियाशील होते हैं तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में इच्छित उन्नति प्राप्त करते हैं।

मेषलग्न के प्रभाव से जातक साहसी, परिश्रमी तथा पराक्रमी होगा तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को परिश्रम एवं निर्भयता से सम्पन्न करेगा। ऐसे जातक में स्वाभिमान का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा स्वपरिश्रम तथा योग्यता से जीवन में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे।

इनके स्वभाव में प्रारंभ से ही तेजस्विता का भाव विद्यमान रहेगा फलतः यदा-कदा आप अनावश्यक क्रोध एव चंचलता का प्रदर्शन करेंगे। जीवन में इनको जन्मभूमि के अतिरिक्त अन्य स्थान में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होगी तथा वहीं इनका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही सांसारिक सुखोपभोग के साधनों को भी आप परिश्रम पूर्वक अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे।

इस लग्न में जन्मे जातक को जीवन में काफी समस्याओं एव परेशानियों का सामना करना पड़ेगा परन्तु अपने परिश्रम एवं दृढ़ सकल्प शक्ति के द्वारा आप इनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ होंगे। इनकी प्रवृत्ति तथा उदारता तथा सहिष्णुता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों को आप अपना सहयोग प्रदान करेंगे। जिससे आपके प्रति लोगों के मन में आदर का भाव उत्पन्न होगा।

मेषलग्न मे जन्मे जातकों के सांसारिक कार्य यद्यपि विलम्ब से सिद्ध होंगे परन्तु गौरव एव सम्मान मृत्युपर्यन्त बना रहेगा। कार्य क्षेत्र में आपको परिश्रम से उन्नति प्राप्त होगी तथा

सामाजिक जनो के मध्य भी समय पर मान सम्मान मिलता रहेगा। आपको अपनी प्रवृत्ति का अन्य जनो के समक्ष सादगी पूर्ण प्रदर्शन करना चाहिए तथा इसमें अनावश्यक दिखावे का समावेश नहीं होना चाहिए। इस प्रकार से जीवन में आपको इच्छित सुख, ऐश्वर्य एव वैभव की प्राप्ति होगी। इस प्रकार आप एक परिश्रमी, तेजस्वी, कार्य निकालने में चतुर परन्तु मन्द गति से कार्य करने वाले व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आवश्यक सुखों का उपभोग करने मे समर्थ होंगे।

मेषलग्न के जातक बहुत ही परिश्रमी व साहसिक कार्यों में रुचि लेने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति प्राय: खेल-कूद, शिकार, सैनिक व पुलिस विभाग, मशीन, भट्टी व ज्वलनशील पदार्थों तथा धातु रंजन इत्यादि वस्तुओं मे रुचि लेते देखे गए हैं।

धार्मिक विचारों में मेषलग्न वालो की दृष्टिकोण अन्य लोगों से भिन्न होता है। आप शक्ति के उपासक हैं। ऐसे लोग अपने बात के धनी होते हैं तथा लग्न अग्नितत्व प्रधान होते हुए भी ऐसे जातक बात के धनी एव शर्त के कट्टर होते हैं। किसी से किसी हद तक प्राय: झगड़ा करना पसन्द नहीं करते परन्तु यदि कोई जब सीमा उल्लंघन करने की चेष्टा करता है तो उसे जबरदस्त सबक सिखाए बिना नहीं रहते। युद्ध कला में प्राय: ऐसे व्यक्ति निपुण होते हैं। भूमि व कोर्ट-कचहरी संबंधी कार्यों में ये प्राय: विजय प्राप्त करते हैं।

यदि आपका जन्म 21 मार्च व 20 अप्रैल के मध्य हुआ है तो आपका भाग्योदय निश्चित रूप से 28 वर्ष के पश्चात सभव है। आप पूर्णत: स्वनिर्मित व्यक्ति हैं। आप अपना भाग्य स्वयं बनाने वाले व्यक्तियों में से हैं। परन्तु याद रखें बिना परिश्रम से आपको विशेष लाभ होने की संभावना नहीं है।

चंद्रमा यदि कृत्तिका नक्षत्र में हो

कृतिका नक्षत्र-स्वामी सूर्य, **राशि स्वामी**-मंगल

कृत्तिका चरण	चरणों के अंश	नवांश चरण स्वामी	अंशो के उपस्वामी व अंश
प्रथम	26.41 से 30.00	गु	सू/सू 1. 26.40 से 27.20.00 सू/च 2. 27.20.00 से 28.26.00 सू/म. 3. 26.26.40 से 29.13.20 सू/रा 4. 29.13.20 से 30.00.00

कृत्तिका का प्रथम चरण में होगा तो व्यक्ति सुदर गुण से युक्त रहेगा। इसका स्वामी गुरु है। अत: गुरु+चंद्रयोग लक्ष्मीयोग+मगल कीर्ति योग भी बनगा। अत. श्रेष्ठफल मिलेगा। अश्विनी भरणी व कृत्तिका के प्रथम चरण के सयोग स मेष राशि बनती है। अत. मेषलग्न या मेष राशि वालो का स्वभाव में उपरोक्त नक्षत्रों के गुणों का समन्वय होगा ही।

मेषलग्न के बारे में विशेष ज्ञातव्य तथ्य

- ❑ मेषलग्न में बैठा मंगल स्वगृही होगा। अतः मांगलिक दोष कम देगा।
- ❑ मंगल अश्विनी नक्षत्र में होगा तो किसी से बिल्कुल नहीं बनेगी।
- ❑ मेष में मंगल, मंगल दोष नहीं बनाता है।
- ❑ लग्न में चंद्र हो, मंगल भी हो तो मांगलिक दोष नहीं होगा
- ❑ लग्न में गुरु+बुध हो तो मांगलिक दोष नहीं होगा। मंगल+गुरु+चंद्र+बुध युति हो तो दोष नहीं होगा।
- ❑ सूर्य लग्न में होगा तो उच्च का होकर भी पंचमेश है। वैधव्य दोष पूर्वश्लोकानुसार नहीं देगा। पर अंग में कुछ दोष करेगा।
- ❑ लग्न में शनि नीच का होकर बहुत दुःख व संघर्ष देगा। शनि अग्नितत्त्व राशि में होने से स्वभाव कुछ मिलनसार पर ईर्ष्यालु होगा। ऐसी महिला जातक सरल व वचन की पक्की प्रमाणिकता वाली होगी। परन्तु साहस के काम क्रोध, झगड़ा और वाद-विवाद में रुचि वाली होगी काम में कुशल होगी पर हमेशा असंतुष्ट रहेगी। स्वयं कमाएगी या नौकरी वाली होगी।
- ❑ लग्न मे केवल मंगल+शनि की युति हो तो जातक स्वयं आत्महत्या कर सकता है। या आकस्मिक मृत्यु, कारागारवास हो सकता है।
- ❑ शनि+चंद्र का योग लग्न में हो तो दुष्ट स्वभाव की महिला होगी व चरित्र भ्रष्ट भी हो सकती है।
- ❑ लग्न में कोई ग्रह न हो तो ऐसा जातक धर्म परायण, समाज में प्रगति वाला जाति में आदर की दृष्टि से देखा जाने वाला होगा।

मेषलग्न की महिला जातक

इस लग्न में जन्मी महिला के शरीर का रंग चंद्रमा के नवांश के अनुसार होता है। चंद्रमा जिस नवांश में हो उसके अधिपति के अनुसार रंग का विचार प्रायः करना चाहिए। परन्तु जन्माक्षर बनाते वक्त ज्योतिषी प्रायः जन्म व राशि कुण्डली ही लिखते हैं। अतः जन्म की राशि और लग्न के मिश्रण से स्वभाव व रंग निरूपण करना प्रभावी रहता है। जन्म लग्न को देखने वाले ग्रहों की दृष्टि का समन्वय भी चरित्र चित्रण सहायक होगा।

मेषलग्न में उत्पन्न नारी हमेशा शुद्ध स्वभाव की होगी। परन्तु वह दूसरों पर दोषारोपण करने वाली होगी। हर काम में उतावली होगी उसे क्रोध भी शीघ्र आएगा ठंडा भी जल्दी होगी पर गर्मी की चपलता दिल में उठी हुई रहती है। इसकी प्रकृति पित्त प्रधान होती है। वह बातचीत करते करते कड़वे वाक्यों का प्रयोग करने में नहीं हिचकती। अपने भाई बहनों में विशेष लगाव नहीं रहता है। प्रायः अपने परिवार में बड़ी (ज्येष्ठ) होती है।

- ❑ लग्न व चंद्र विषम राशि में हो तो स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली व पुरुष के समान साहसिक प्रकृति की होगी। मेष में मेष का चंद्र यह फल करेगा। शुभ दृष्टि व

पाप दृष्टि से चरित्र व स्वभाव में अतर पड़ेगा। शुभ दृष्ट हो तो सुशीला अन्यथा दुष्ट स्वभाव की होगी।

- लग्नस्थ मगल आठवें भाव पर दृष्टि करके एक्सीडेंट योग बनाएगा, यदि अनियंत्रित है। अर्थात् मंगल किसी भी ग्रह की दृष्टि से रहित हो।
- मेष राशि का मगल लग्न मे सिर दर्द व रक्त पीड़ा का अनुभव कराएगा।
- मेष राशि का मंगल निर्भय व शेर की तरह पराक्रम कराएगा। क्रोधी व व्यसनी बनाएगा। तीखे पदार्थ खाने में रुचि होगी आग का भय रहेगा। पित्त रोग होंगे। स्वधर्म में रुचि नहीं होगी, सुधारक मतों का पक्षपात करना यह अनुभव में आएगा।
- मंगल सूर्य या चद्र ये तीनों ही साथ हो तो व्यक्ति बहुत क्रूर व अल्पायु होगा। परन्तु किम्बहुना योग के कारण राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।
- शरीर हट्टा-कट्टा रहेगा, बहुत खून का होना मेष का मंगल करेगा। बचपन में पेट के रोग व दांतों का रोग भी देगा।
- लग्न मे मंगल वाली स्त्री स्वाभिमानी, पराक्रमी व सुंदर होगी तथा चुनरी मंगल वाली महिला होगी।
- लग्न में पाप ग्रह-सूर्य, मगल, शनि, राहु, केतु ये कुण्डली को मांगलिक तुल्य बनाते हैं। सप्तम पर पूर्ण दृष्टि करके वैवाहिक सुख मे भी कमी करते हैं।
- **मूर्तो करोति विधवादिनकृत कुजश्च।** या फिर लग्नस्थित दिनकर **कुरूते अंग पीड़ाम् भूमि सुतो वितनुते रुधिर प्रकोपम्।** से लग्न में मंगल व सूर्य की स्थिति को कष्टकारक सर्वत्र माना गया है
- **"कुजाष्टमे कुटीला मृगांक्षी अनगरंगा परपुरुषसगा, मृतावयेषु कुलधर्म भंगा:"** अर्थात् जिस स्त्री का मंगल आठवें में हो वह मृगनयनी होती है, कुटिल होगी। नित नए वस्त्राभूषण व शृंगार करने वाली होती है तथा परपुरुष के बहकावे में शीघ्र आती है। कई बार अतर्जातीय विवाह या परपुरुषप्रेम के कारण बदनाम होने से कुल का गौरव नष्ट कर देती है।
- लग्न में राहु स्थित हो तो 5वें दृष्टि करके सतान को बाधा करेगी। सातवें दृष्टि से पति में पृथकता देगी। नवमी दृष्टि से भाग्य हीन भी करेगी।
- लग्न में केतु हो तो व्यक्ति के शरीर का कोई अग टूटता है या रोग बढ़ता है या अपघात होता है। लग्नगत केतु के फल प्रायः सभी ज्योतिषियों ने अशुभ बताए हैं। इससे बांधवों में कष्ट होता है दुर्जनों से व्यक्ति को भय रहता है। मानसिक चिंता व उद्वेग बढ़ते हैं। वात पीड़ा होती है।
- वैसे मेष राशि तीन नक्षत्रों के समूह से पल्लवित होती है। अत: संपूर्ण राशि में केतु+शुक्र+मगल+सूर्य का खास तौर पर प्रभाव सिमटा रहता है। अत: स्त्री के स्वभाव मे कुछ क्रोध लड़ने झगड़ने, हर बात को अन्यथा ले लेने का स्वभाव होता है। ऐसी महिला बहुत उतावली व तुरंत परिणाम चाहने वाली होती है। रंग सुंदर पर कुछ गेहुंआ

ही होगा, ललाई उसमें रहेगी, यह बालावस्था में ही अपने माता-पिता के पास कम रहने वाली होगी, वात-पित्त रोग से पीड़ित भी रहेगी। स्वभाव से कंजूस भी होगी। अपनी वस्तु को किसी को कम ही देना पसंद करेगी। खर्च भी कम करेगी। संग्रह का शौक होगा। इसके जीवन में परदेश या विदेश यात्रा के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। पति राजकीय अधिकारी, नेता, पुलिस अफसर, मिलट्री में अधिकारी, इंजीनियर, फौजदारी वकील, समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा। व्यापारी हो तो लाल रंग की वस्तुओं का फैन्सी स्टोर हो सकता है। संतान कई हो सकती है। गर्भपात भी संभव है। जीवन में मृत्युभय (अपघात) तीन बार आता है। तीसरे वर्ष अग्नि से, 7वें वर्ष में कुत्ते या जानवर के काटने का और 30वें वर्ष में चोट का। अत: खतरों से बचने के बाद 68 वर्ष तक अन्य कोई मारक योग नहीं मृत्यु पित्त दोष या गिरने से या विष खाने से संभावित होती है। विद्रोह की भावना प्रबल होती है। चोरी-छिपे बातें सुनने की आदत होती है।

मेषलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन
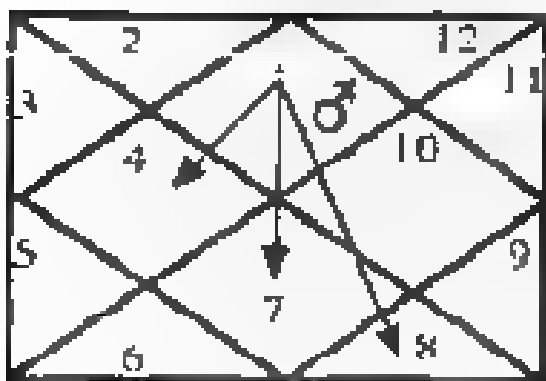
1. माणिक्य—मेषलग्न में सूर्य पंचम त्रिकोण का स्वामी है और लग्नेश मंगल का मित्र है। अत: मेषलग्न के जातक को बुद्धि-बल प्राप्त करने, आत्मोन्नति के लिए संतान-सुख प्रसिद्धि, राज्य-कृपा प्राप्ति के लिए सदा माणिक्य धारण करना चाहिए। सूर्य की महादशा में उसको धारण करना, अत्यंत लाभदायक होगा।

2. मोती—मेषलग्न की कुण्डली में चन्द्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चतुर्थ चन्द्र लग्नेश मंगल का मित्र है। अत: मोती धारण करने से मेषलग्न के जातक मानसिक शान्ति मातृ सुख, विद्या-लाभ, गृह-भूमि लाभ आदि प्राप्त कर सकते है। मोती चन्द्र की महादशा में विशेष रूप से फलप्रद होगा। यदि मोती लग्नेश मंगल के रत्न मूंगे के साथ पहना जाए तो और भी अधिक लाभकर होगा।

3. मूंगा—मंगल लग्न का स्वामी है। अत: मेषलग्न के जातक को मूंगा आजीवन धारण करना चाहिए। उसके धारण करने से आयु, बुद्धि स्वास्थ्य में उन्नति, यश मान प्राप्त होगा तथा जातक सभी प्रकार सुखी होगा। यह इस जातक का 'जीवन रत्न' है।

4. पन्ना—मेषलग्न के लिए बुध दो अनिष्ट भावों तृतीय और षष्ठ का स्वामी है। अत: इस लग्न के जातक को कभी नहीं पहनना चाहिए।

5. पुखराज—मेषलग्न के लिए गुरु नवम (त्रिकोण) और द्वादश भाव का स्वामी है नवम का स्वामी होने के कारण गुरु इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना गया है। अत: पुखराज धारण करने से जातक की बुद्धि बल ज्ञान विद्या में उन्नति धन, मान प्रतिष्ठा और भाग्य में उन्नति होती है। गुरु महादशा में पुखराज धारण करना ज्यादा लाभदायक सिद्ध होगा। यदि इसे मूंगे के साथ धारण किया जाए तो बहुत लाभप्रद होगा।

6. **हीरा**–मेषलग्न के लिए शुक्र द्वितीय और सप्तम स्थान का स्वामी होने के कारण प्रबल मारकेश है। इसके अतिरिक्त लग्नेश मंगल और शुक्र में परस्पर मित्रता नहीं है, तब भी कुण्डली में यदि शुक्र स्वगृही अपनी उच्चराशि में हो या यह शुभ स्थिति में हो तो शुक्र की महादशा में हीरा धारण करने से धन-प्राप्ति, दाम्पत्य सुख विवाह सुख हो सकता है। परन्तु मेषलग्न के जातक को हीरा धारण करने से बचना चाहिए।

7. **नीलम**–मेषलग्न के लिए शनि दशम और एकादश का स्वामी है, दोनों शुभ भाव हैं परन्तु, एकादश भाव के स्वामित्व के कारण शनि को लग्न के लिए शुभ ग्रह नहीं माना है। परन्तु शनि द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, नवम, दशम एकादश या लग्न में स्थित हो तो शनि की महादशा में नीलम धारण करने से मे लाभ हो सकता है, वैसे नीलम नहीं पहनना चाहिए क्योंकि शनि मंगल का शत्रु है।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **सन्तान हेतु**–माणिक्य, मूंगा (सवा चार रत्ती)।
2. **भाग्योदय हेतु** पुखराज (सवा पांच रत्ती), मूंगा (सवा चार रत्ती)।
3. **आरोग्य हेतु**–मूंगा (सवा चार रत्ती), माणिक (सवा चार रत्ती)
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–हीरा (सवा चार रत्ती), पुखराज (सवा पांच रत्ती)।

नक्षत्रों पर विशेष फलादेश

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लु,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वु	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हरिण	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषक 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू. , स 1 मू2 1 श्वान	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सि.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सि. 3 बि. 1	×	×
23	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 1 सर्प	गुरु	6

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	सूर्य	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वेदेवा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	अभिजित्	ब्रह्मा										
	23	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	धनिष्ठा	अष्टावसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	25.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
कुम्भ	26	पूर्वा भा.	अजैकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	27.	उ. भा.	अहिर्बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
मीन	28	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1 अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	-		
चो	0/10/0/0	3	बु	ले	0/23/20/0	3	शु.	–		–	
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.				–

वृष राशि											
3 कृत्तिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चन्द्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	वु	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि											
5. **मृगशिरा** (मंगल)				6. **आर्द्रा** (राहु)				7. **पुनर्वसु** (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3.20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0		म.
की	2/6.40/0	4	मं.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ङ	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु	–	–	–	–
कर्क राशि											
7. **पुनर्वसु** (गुरु)				8. **पुष्य** (शनि)				9. **आश्लेष** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3.30/20/0	4	चं.	हू	3/6.40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	.	गु.
	–			हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
	–	-		हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
				डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4 3/20/0	1	मं.
मी	4/6/40/0	2	शु.
मू	4/10/0/0	3	बु.
मे	4/13/20/0	4	च.

11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
मो	4/16/40/0	1	सू.
टा	4/20/0/0	2	बु.
टी	4/23/20/0	3	शु.
टू	4/26/40/0	4	मं.

12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टे	4/30/0/0	1	गु.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.
पा	5/6/40/0	3	श.
पी.	5/10/0/0	4	गु.
	–	–	–

13. हस्त (चन्द्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
पू	5/13/20/0	1	मं.
ष	5/16/40/0	2	शु.
ण	5/20/0/0	3	बु.
ठ	5/23/20/0	4	च.

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
पे	5/26/40/0	1	सू.
पे	5/30/0/0	2	बु.
–	–	–	
–		–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)				15. स्वाति (राहु)				16. विशाखा (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	म.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–		–	–	रो	6 16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–		

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
-	–		–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
..		–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	म.	यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	म.
यो	8/6/40/0	2	शु.
या	8/10/0/0	3	बु.
यी	8/13/20/0	4	चं.

18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
भू	8/16/40/0	1	सू.
धा	8/20/0/0	2	बु.
फा	8/23/20/0	3	शु.
ढा	8/26/40/0	4	मं.

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भे	8/30/0/0	1	गु.
—	—		—
	—	—	—
—	—	—	—

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.
जा	9/6/40/0	3	श.
जी	9/10/0/0	4	गु.
		—	—

22. श्रवण (चन्द्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
खी	9/13/20/0	1	मं.
खू	9/16/40/0	2	शु.
खे	9/20/0/0	3	बु.
खो	9/23/20/0	4	चं.

23. धनिष्ठा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गा	9/26/40/0	1	सू.
गी	9/30/0/0	2	बु.
—	—		—
—	—	-	

कुंभ राशि

23 धनिष्ठा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गु	10.3/20/0	3	शु.
गे	10.6 40/0	4	म.
			.
.	–	–	–

24. शतभिषा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
गो	10/10/0/0	1	गु.
सा	10/13/20/0	2	श.
सी	10/16/40/0	3	श.
सू	10/19/0/04	4	गु.

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
से	10/23/20/0	1	म.
सो	10/26/40/0	2	श.
द	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10.3/20/0	4	चं.
.	–	–	–
	–	–	–
–		–	–

27. उत्तराभाद्रपद (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
दू	11/6/40/4	1	सू.
थ	11/10/0/0	2	बु.
झ	11/13/20/0	3	शु.
ञ	11/16/40/0	4	गु.

28. रेवती (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
दे	11/20/0/0	1	गु.
दो	11/23/20/0	2	श.
च	11/26/40/0	3	श.
ची	11/30/0/0	4	गु.

मेषलग्न पर अंशात्मक फलादेश

मेषलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र—अश्विनी
2. नक्षत्र पद—1
3. नक्षत्र अंश—0/0 से 3/20 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—अश्व
7. गण—देव
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—अश्विन कुमार
10. वर्णाक्षर—चू
11. वर्ग—सिंह
12. लग्न स्वामी—मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—उत्तम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—उत्तम
18. प्रधान विशेषता—अश्विन्या: प्रथमे पादे जातो भवति तस्कर:।

—जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न, विनयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण, जातक में स्वभावत: बिना पूछे अन्य लोगों की वस्तुएं उठाने की आदत होती है

लग्न जीरो से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था में है, कमजोर है। फिर भी लग्न नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मंगल का मित्र होने से जातक को केतु की दशा अच्छी जाएगी

मेषलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र—अश्विनी
2. नक्षत्र पद—1
3. नक्षत्र अंश—0/0 से 3/20 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—अश्व
7. गण—देव
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—अश्विन कुमार
10. वर्णाक्षर—चू

11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–उत्तम
18. **प्रधान विशेषता**–अश्विन्याः प्रथमे पादे जातो भवति तस्करः।

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण, जातक में स्वभावतः बिना पूछे अन्य लोगों की वस्तुएं उठाने की आदत होती है।

लग्न एक से दो अंश का होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश का मित्र होने से इस जातक को केतु की दशा अच्छी जाएगी। मंगल ग्रह भी शुभफल देगा।

मेषलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–0/0 से 3/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–चू
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–उत्तम
18. **प्रधान विशेषता**–अश्विन्याः प्रथमे पादे जातो भवति तस्करः।

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण, जातक में स्वभावतः बिना पूछे अन्य लोगों की वस्तुएं उठाने की आदत होती है।

लग्न दो से तीन अंश के भीतर होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण इस जातक को केतु एवं मंगल दोनों की दशा अच्छा फल देगी।

मेषलग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–1-2

3. **नक्षत्र अंश**—0/0 से 3.20 तक
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—अश्व
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**—चू
11. **वर्ग**—सिंह
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—उत्तम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—उत्तम
18. **प्रधान विशेषता**—अश्विन्या: प्रथमे पादे जातो भवति तस्कर:।

—जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण, जातक में स्वभावत: बिना पूछे अन्य लोगों की वस्तुएं उठाने की आदत होती है।

लग्न तीन से चार अंश के भीतर होने से उदित अंश में बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नस्वामी मंगल का मित्र होने के कारण, इस जातक को केतु एवं मंगल दोनों की दशा अच्छा फल देगी।

मेषलग्न, अंश 4 से 5

1. **लग्न नक्षत्र**—अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—3/20 से 6/40 तक
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—अश्व
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**—चे
11. **वर्ग**—सिंह
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्रता
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्रता
18. **प्रधान विशेषता**—'द्वितीये चाल्पकर्मा च'

—जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अन्तर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के दूसरे चरण में जन्म होने के कारण, जातक कठोर परिश्रम में कम विश्वास रखेगा और छोटे-छोटे, अल्प अवधि के काम करने में रुचि रखेगा।

लग्न चार से पांच अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु, लग्नस्वामी मगल का मित्र होने के कारण इस जातक को केतु एवं मगल दोनों की दशा अच्छा फल देगी।

मेषलग्न, अंश 5 से 6

1. **लग्न नक्षत्र**—अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—3/20 से 6/40 तक
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—अश्व
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**—चे
11. **वर्ग**—सिंह
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्रता
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्रता
18. **प्रधान विशेषता**—'द्वितीये चाल्पकर्मा च'

—जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एवं प्रज्ञा से युक्त, धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी के दूसरे चरण में जन्म होने के कारण, जातक कठोर परिश्रम में कम विश्वास रखेगा और छोटे-छोटे, अल्प अवधि के काम करने मे रुचि रखेगा।

लग्न पांच से छः अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्न स्वामी मंगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र भी केतु से मित्रभाव रखता है। फलतः ऐसे जातक को मंगल, शुक्र एवं केतु की दशाएं शुभ फलप्रद होंगी।

मेषलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**—अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**—2-3
3. **नक्षत्र अंश**— 3/20 से 6/40 तक
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—अश्व
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**—चे
11. **वर्ग**—सिंह
12. **लग्न स्वामी**—मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्रता

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्रता
18. **प्रधान विशेषता**–'द्वितीये चाल्पकर्मा च'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र मे जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि एव प्रज्ञा स युक्त, धन ऐश्वर्य से सम्पन्न विजयी यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अतर्मुखी व धैर्यशाली होते हैं। दूसरों लोगों की बातों पर आसानी स विश्वास नहीं करते। अश्विनी के दूसरे चरण में जन्म होने के कारण, जातक कठोर परिश्रम मे कम विश्वास रखेगा और छोटे छोटे, अल्प अवधि के काम करने में रुचि रखेगा।

लग्न छः से सात अशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु, लग्न स्वामी, मगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र भी केतु से भिन्न भाव रखता है। फलतः यह जातक जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा तथा शुक्र, मगल व केतु की दशा-अतर्दशा प्रत्यन्तर दशा जातक को समय-समय पर शुभ फल देगी।

मेषलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/40 से 10/0 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–चो
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–मगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'तृतीये सुभगोभवेत्'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि विद्या से युक्त धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण सुन्दर, धनी-मानी व ऐश्वर्यशाली होगा।

लग्न सात से आठ अशों के भीतर उदित अशों मे होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु, लग्न स्वामी मगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु से शत्रु भाव रखता है। फलतः यह जातक उद्विग्न अशान्त रहेगा। इस जातक को मगल व केतु की दशा तो शुभफल देगी पर बुध की दशा जातक को अशान्त रखेगी।

मेषलग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र–अश्विनी
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अश–6/40 से 10/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–अश्व
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अश्विन कुमार
10. वर्णाक्षर–चे
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रुता
18. प्रधान विशेषता–'तृतीये सुभगोभवेत्'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि, विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं ये अंतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण सुन्दर, धनी-मानी व ऐश्वर्यशाली होगा।

लग्न आठ से नौ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मगल का मित्र है परन्तु नक्षत्र चरणस्वामी बुध केतु से शत्रुभाव रखता है। फलत: यह जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा। इस जातक को मंगल व केतु की दशा तो शुभ फल देगी पर बुध की दशा जातक को अशान्त रखेगी।

मेषलग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र–अश्विनी
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश 6/40 से 10/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–अश्व
7. गण–देव
8. नाडी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अश्विन कुमार
10. वर्णाक्षर–चो
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रुता
18. प्रधान विशेषता–'तृतीये सुभगोभवेत्'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगो की बातो पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण सुन्दर, धनी-मानी व ऐश्वर्यशाली होगा।

लग्न नौ से दस अंशों के भीतर होने से उदित अशों में है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मगल का मित्र है परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु से शत्रुभाव रखता है। फलतः यह जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा। इस जातक को मंगल व केतु की दशा शुभफल देगी पर बुध की दशा जातक को अशान्त रखेगी।

मेषलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र—अश्विनी
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—10/0 से 13/20 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—अश्व
7. गण—देव
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—अश्विन कुमार
10. वर्णाक्षर—ला
11. वर्ग—सिंह
12. लग्न स्वामी—मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—चंद्रमा
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रुता
18. प्रधान विशेषता—'पादे चतुर्थके भोगी दीर्घायुः जायते नरः'

—जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि, विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक भोगी होगा एव दीर्घायु को प्राप्त करेगा।

लग्न दस से ग्यारह अश के भीतर होने से उदित अशों मे है बलवान है जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्रमा, केतु से शत्रुभाव रखता है। फलतः इस कुण्डली वाला जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा इस जातक को मंगल व केतु की दशाए शुभ फल देंगी। चन्द्रमा की दशा में जातक अशान्त व उद्विग्न रहेगा

मेषलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र—अश्विनी
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अश—10/0 से 13/20 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय

5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–ला
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'पादे चतुर्थके भोगी दीर्घायुः जायते नरः'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि, विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक भोगी होगा एवं दीर्घायु को प्राप्त करेगा।

लग्न ग्यारह से बारह अंश के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु, लग्नेश मंगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्रमा, केतु से शत्रुभाव रखता है। फलतः इस कुण्डली वाला जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा पर जातक को मंगल व केतु की दशाएं शुभ फल देंगी। चन्द्रमा की दशा में जातक अशान्त व उद्विग्न रहेगा।

मेषलग्न, अंश 12 से 13

1. **लग्न नक्षत्र**–अश्विनी
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/0 से 13/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अश्विन कुमार
10. **वर्णाक्षर**–ला
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'पादे चतुर्थके भोगी दीर्घायुः जायते नरः'

–जातक सारदीप

अश्विनी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति गुण, बुद्धि, विद्या से युक्त, धन, ऐश्वर्य से सम्पन्न, विजयी, यशस्वी व सुखी होते हैं। ये अंतर्मुखी व धैर्यशील होते हैं। दूसरे लोगों की बातों पर आसानी से विश्वास नहीं करते। अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक भोगी होगा एवं दीर्घायु को प्राप्त करेगा।

लग्न बारह से तेरह अंश के भीतर होने से उदित अशों में है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी केतु लग्नेश मगल का मित्र है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्रमा, केतु से शत्रुभाव रखता है। फलत: इस कुण्डली वाला जातक थोड़ा उद्विग्न व अशान्त रहेगा। इस जातक को मंगल व केतु की दशा शुभफल देगी चन्द्रमा की दशा में जातक अशान्त व उद्विग्न रहेगा।

मेष लग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–13/20 से 16/40 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम
10. **वर्णाक्षर**–लो
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**–'त्यागी याम्याद्यापदे स्याद्'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते है। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक त्यागी होता है तथा खर्चीले स्वभाव का होता है।

लग्न तेरह से चौदह अंश के भीतर होने से बलवान है। मध्यबली है। जन्म नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मगल से सम भाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य शुक्र का शत्रु है। फलत: जातक में 70% आशावादी विचार एव 30% निराशावादी विचार होंगे जातक को मंगल व शुक्र की दशा शुभ फलदाई होगी परन्तु सूर्य की दशा में जातक थोड़ा परेशान रहेगा।

मेषलग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–13/20 से 16/40 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम
10. **वर्णाक्षर**–ली

11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रुता
18. प्रधान विशेषता–'त्यागी याम्याद्यापदे स्याद्'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र मे जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते है। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक त्यागी होता है तथा खर्चीले स्वभाव का होता है

लग्न चौदह से पंद्रह अंश के भीतर होने से मध्यम बली है। जन्म नक्षत्र का स्वामी शुक्र, लग्नेश मंगल से सम भाव रखता है। नक्षत्र चरण का स्वामी सूर्य शुक्र का शत्रु है। फलत: जातक मे 30% निराशावादी एव 70% आशावादी विचार होंगे। जातक को मंगल व शुक्र की दशा शुभ फलदाई साबित होगी। परन्तु सूर्य की दशा में जातक थोड़ा परेशान होगा।

मेषलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–भरणी
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–गज
7. गण–गज
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम
10. वर्णाक्षर–ली
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रुता
18. प्रधान विशेषता–'त्यागी याम्याद्यापदे स्याद्'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र मे जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यो की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के प्रथम चरण मे जन्म होने के कारण जातक त्यागी होता है तथा खर्चीले स्वभाव का होता है।

लग्न पद्रह से सोलह अंश के भीतर होने से मध्यम बली है। जन्म नक्षत्र का स्वामी शुक्र, लग्नेश मगल के समभाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य शुक्र का शत्रु है। फलत: जातक

में 30% निराशावादी एवं 70% आशावादी विचार होंगे जातक को मंगल व शुक्र की दशा शुभ फलदाई साबित होगी। परन्तु सूर्य की दशा में जातक थोड़ा परेशान होगा।

मेषलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–भरणी
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–16/40 से 20/40 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–गज
7. गण–मानव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम
10. वर्णाक्षर–ली
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रुता
18. प्रधान विशेषता–'द्वितीये धनवान् सुखी।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण जातक धनवान व सुखी होगा।

लग्न सोलह से सत्रह अंशों वाला होने के कारण मध्यम बली है। जन्म नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मंगल के समभाव रखता है। परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्रमा शुक्र से शत्रुभाव रखता है। फलतः ऐसे जातक को जीवन में सफलता संघर्ष के बाद मिलती है। जातक को मंगल की दशा श्रेष्ठ है। शुक्र की दशा साधारण परन्तु चन्द्रमा की दशा व अंतर्दशा संघर्षकारी साबित होगी।

मेषलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–भरणी
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–16/40 से 20/40 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–गज
7. गण–मानव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–यम
10. वर्णाक्षर–लु
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—सम 16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—महाशत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**—'द्वितीये धनवान् सुखी।'

—जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण जातक धनवान व सुखी व्यक्ति होगा।

लग्न सत्रह से अठारह अंश के भीतर होने के कारण मध्यबली है। लग्न नक्षत्र शुक्र नक्षत्र शुक्र लग्नेश मंगल से सम है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्र शुक्र का महाशत्रु है फलतः जातक का दिमाग थोड़ा खुराफाती होगा। वह जीवन में सफल व्यक्ति तो होगा पर कभी-कभी दिमाग से अशान्त या बैचेन रहेगा। ऐसे जातक को मंगल व शुक्र की दशा ठीक जाएगी परन्तु चन्द्र की दशा मानसिक पीड़ा देगी।

मेषलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**—भरणी 2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—16/40 से 20/0 तक 4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—चतुष्पद 6. **योनि**—गज
7. **गण**—मानव 8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—यम 10. **वर्णाक्षर**—लू
11. **वर्ग**—हरिण 12. **लग्न स्वामी**—मगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र 14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—चन्द्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—सम 16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—महाशत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रुता
18. **प्रधान विशेषता**—'द्वितीये धनवान् सुखी।'

—जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने के कारण जातक धनवान व सुखी व्यक्ति होगा।

लग्न उन्नीस से बीस अंशों के भीतर होने के कारण मध्यम बली है। लग्न नक्षत्र शुक्र, लग्नेश मगल से सम है। नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्र शुक्र का महाशत्रु है। फलतः जातक का दिमाग थोड़ा खुराफाती होगा। वह जीवन मे सफल व्यक्ति तो होगा पर कभी-कभी दिमाग से अशांत

या बेचैन रहेगा। ऐसे जातक को मंगल व शुक्र की दिशा ठीक जाएगी परन्तु चन्द्र की दिशा मानसिक पीड़ा देगी।

मेषलग्न, अंश 20 से 21

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–20/0 से 23/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम
10. **वर्णाक्षर**–ले
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–अच्छा
18. **प्रधान विशेषता**–'तृतीये क्रूर कर्मा च।'

–जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण जातक क्रूर (निर्दयी) होगा तथा साहसपूर्ण, जोखिम भरे कार्य करने में रुचि रखेगा।

लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से मध्यम बली है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मंगल से समभाव रखता है तथा नक्षत्र चरण स्वामी भी शुक्र होने से शुक्र का तत्त्व बढ़ गया है। ऐसे जातक थोड़े रंगीन मिजाज के होंगे। इन्हें मंगल व शुक्र की दशा उत्तम फल देने वाली साबित होगी।

मेषलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–20/0 से 23/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम
10. **वर्णाक्षर**–ले
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–अच्छा
18. **प्रधान विशेषता**–'तृतीये क्रूर कर्मी च।'

जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते है। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण जातक क्रूर (निर्दयी) होगा तथा साहसपूर्ण, जोखिम भरे कार्य करने में रुचि रखेगा,

लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से मध्यम बली है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मंगल से समभाव रखता है तथा नक्षत्र चरण स्वामी भी शुक्र होने से शुक्र का तत्त्व बढ़ गया है। ऐसे जातक थोड़े रंगीन मिजाज के होंगे। इन्हें मंगल व शुक्र की दशा उत्तम फल देने वाली साबित होगी।

मेषलग्न, अंश 22 से 23

1. **लग्न नक्षत्र**–भरणी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–20/0 से 23/20 तक
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गज
7. **गण**–मानव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–यम
10. **वर्णाक्षर**–लू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–उत्तम
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–अच्छा
18. **प्रधान विशेषता**–'तृतीये क्रूर कर्मी च।'

-जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं व धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते है। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण जातक क्रूर (निर्दयी) होगा तथा साहसपूर्ण, जोखिम भरे कार्य करने में रुचि रखेगा।

लग्न बाईस से तेईस अशों के भीतर होने से मध्यमबली है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, लग्नेश मंगल से समभाव रखता है तथा नक्षत्र चरण स्वामी भी शुक्र का तत्त्व बढ़ गया है। ऐसे

जातक थोड़े रंगीन मिजाज के होंगे। इन्हें मंगल व शुक्र की दिशा उत्तम फल देने वाली साबित होगी।

मेषलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र—भरणी
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—23/20 से 26/40 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—गज
7. गण—मानव
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—यम
10. वर्णाक्षर—लो
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी—मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—सम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—सम
18. प्रधान विशेषता—'चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्।'

जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं। ऐसे जातक धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक के पास सब कुछ होते हुए भी धन की कमी महसूस करता रहेगा।

लग्न तेईस अंश से चौबीस अंशों के भीतर होने के कारण अवरोह अवस्था का है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मंगल से सम भाव रख रहा है। नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल अतः मंगल का प्रभाव इस जातक पर विशेष रहेगा। फलतः जातक को मंगल की दशा, अंतरदशा उत्तम फल देगी। जबकि शुक्र की दशा साधारण ही रहेगी।

मेषलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र—भरणी
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—23/20 से 26/40 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—गज
7. गण—मानव
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—यम
10. वर्णाक्षर—लो
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—मंगल

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी** मंगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—सम

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—सम

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—अच्छा

18. **प्रधान विशेषता**—'चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्।'

—जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र मे जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं। ऐसे जातक धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक के पास सब कुछ होते हुए भी वह धन की कमी महसूस करता रहेगा।

लग्न चौबीस से पचीस अंशों के भीतर होने से अवरोही अवस्था में है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, लग्नेश मंगल से समभाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल है। मगल तत्त्व यहां प्रमुख होने से जातक बहादुर व साहसी होगा। इन्हें मंगल की दशा व शुक्र की दशा अच्छी जाएगी।

मेषलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**—भरणी

2. **नक्षत्र पद**—4

3. **नक्षत्र अंश**—23/20 से 26/40 तक

4. **वर्ण**—क्षत्रिय

5. **वश्य**—चतुष्पद

6. **योनि**—गज

7. **गण**—मानव

8. **नाड़ी**—मध्य

9. **नक्षत्र देवता**—यम

10. **वर्णाक्षर**—लो

11. **वर्ग**—हरिण

12. **लग्न स्वामी**—मगल

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—मगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—सम

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—सम

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—सम

18. **प्रधान विशेषता**—'चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्।'

—जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्राही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं। ऐसे जातक धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्राय: नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक के पास सबकुछ होते हुए भी धन की कमी महसूस करता रहेगा।

लग्न पचीस से छब्बीस अंशों के भीतर होने से अवरोही अवस्था का है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र लग्नेश मगल से समभाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल है। मंगल तत्त्व यहा प्रमुख होने से जातक बहादुर व साहसी होगा। इन्हें मंगल व शुक्र की दशा अच्छी जाएगी।

मेषलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र—भरणी
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—23 20 से 26/40 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—गज
7. गण—मानव
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—यम
10. वर्णाक्षर—लो
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—मगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी—मगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—सम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—अच्छा
18. प्रधान विशेषता—'चतुर्थेऽसौ दरिद्रभाक्।'

जातक सारदीप

भरणी नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति पूर्वाग्रही, स्थिर अथवा 'रिजर्व नेचर' के होते हैं। ऐसे जातक योजनाबद्ध तरीके से काम करना पसन्द करते हैं। ऐसे जातक धुन के धनी होते हैं। ऐसे जातक प्रायः नैतिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सैद्धान्तिक जीवन जीना पसन्द करते हैं। भरणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने के कारण जातक के पास सबकुछ होते हुए भी धन की कमी महसूस करता रहेगा।

लग्न छब्बीस से सत्ताइंस अंशों के भीतर होने से अवरोही अवस्था का है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, लग्नेश मगल से समभाव रखता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल है मगल तत्त्व यहां प्रमुख होने से जातक बहादुर व साहसी होगा। इन्हें मगल की दशा व शुक्र की दशा अच्छी जाएगी।

मेषलग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र—कृत्तिका
2. नक्षत्र पद—1
3. नक्षत्र अंश—24/40 से 30/0 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—मेष
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—अग्नि
10. वर्णाक्षर—अ
11. वर्ग—गरुड़
12. लग्न स्वामी—मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी—गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—सम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्रता

18. प्रधान विशेषता–'बहुलनक्षत्रप्रभव बल लभते जुष्टम्।'

–जातक सारदीप

कृत्तिका नक्षत्र में जन्मा 'तेजस्वी बहुलोद्भवः प्रभुसमो' व्यक्ति तेजस्वी, राजा के समान पराक्रमी, पढ़ालिखा, विद्या एवं धन से युक्त जातक होता है। कृत्तिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मे व्यक्ति का भाग्योदय जन्मस्थान से हटकर दूरस्थ प्रदेशों म होता है। **'हीरा वो जो खान से निकल गया, इंसान सो जो वतन से निकल गया'** वाली कहावत इन पर शत प्रतिशत लागू होती है। जातक विदेश जाकर भी खूब धन कमा सकता है।

लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों वाला होकर अवरोही अवस्था का है परन्तु मेषलग्न का स्वामी मंगल तो अट्ठाईस अंशों में जाकर ही पूर्ण उच्चता (श्रेष्ठता) को प्राप्त करता है। फलतः इस अवस्था मे आप लग्न मंगल की रहस्यमय शक्ति से परिपूर्ण होकर बलवान हो गया है, फलतः मंगल की दशा, सूर्य एवं गुरु की दशा, अंतर्दशा जातक को अत्यन्त शुभफलदायक होगी। यह जातक मंगल की रहस्यमय शक्ति का स्वामी होगा।

मेषलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–कृत्तिका
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–24/40 से 30/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मेष
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर अ
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्रता
18. प्रधान विशेषता–'बहुलनक्षत्रप्रभवं बलं लभते जुष्टम्।'

–जातक सारदीप

कृत्तिका नक्षत्र में जन्मा 'तेजस्वी बहुलोद्भवः प्रभुसमो' व्यक्ति तेजस्वी, राजा के समान पराक्रमी, पढ़ा-लिखा, विद्या एवं धन से युक्त जातक होता है। कृत्तिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण म जन्मे व्यक्ति का भाग्योदय जन्मस्थान से हटकर दूरस्थ प्रदेशों में होता है। **'हीरा वो जो खान से निकल गया, इंसान सो जो वतन से निकल गया'** वाली कहावत इन पर शत-प्रतिशत लागू होती है। जातक विदेश जाकर भी खूब धन कमा सकता है

लग्न अट्ठाईस से उनतीस अंशो वाला होकर अवरोही अवस्था का है। परन्तु मेषलग्न का स्वामी मंगल तो अट्ठाईस अंशो मे जाकर ही पूर्ण उच्चता (श्रेष्ठता) को प्राप्त करता है। फलतः इस अवस्था में आप लग्न मंगल की रहस्यमय शक्ति से परिपूर्ण होकर बलवान हो गया

है फलत: मंगल की दशा सूर्य एवं गुरु की दशा अंतर्दशा जातक को अत्यन्त शुभफलदायक होगी। यह जातक मगल की रहस्यमय शक्ति का स्वामी होगा।

मेषलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–कृत्तिका	**2. नक्षत्र पद**–1
3. नक्षत्र अंश–26/40 से 30/0 तक	**4. वर्ण**–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद	**6. योनि**–मेष
7. गण–राक्षस	**8. नाड़ी**–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि	**10. वर्णाक्षर**–अ
11. वर्ग–क्षत्रीय	**12. लग्न स्वामी**–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य	**14. नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम	**16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–सम

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–सम

18. प्रधान विशेषता–'बहुलनक्षत्रप्रभव बल लभते जुष्टम्।'

–जातक सारदीप

कृत्तिका नक्षत्र में जन्मा 'तेजस्वी बहुलोद्भव: प्रभुसमो' व्यक्ति तेजस्वी, राजा के समान पराक्रमी, पढ़ा-लिखा, विद्या एव धन से युक्त जातक होता है। कृत्तिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मे व्यक्ति का भाग्योदय जन्मस्थान से हटकर दूरस्थ प्रदेशों में होता है। **'हीरा वो जो खान से निकल गया, इंसान सो जो वतन से निकल गया'** वाली कहावत इन पर शत-प्रतिशत लागू होती है। जातक विदेश जाकर भी खूब धन कमा सकता है।

लग्न उनतीस से तीस अंशों वाला होकर अवरोह की अन्तिम अवस्था मे है। फलत: लग्न निर्बल अवस्था मे है। जब लग्न ही निर्बल हो तो अन्य शुभ ग्रह क्या भला कर पाएगे? वाली कहावत इन पर चरितार्थ होती है। निर्बल लग्न वाला व्यक्ति जब अन्य कोई विशेष ग्रहस्थिति न हो, शरीर व भाग्य से कमजोर रहता है।

❑❑❑

मेषलग्न और आयुष्य योग

1. मेषलग्न वाले के लिए शुक्र मारकेश होकर भी मारक नहीं, शनि घातक है परन्तु शुक्र अरिष्ट फलदायक है। बुध अशुभफलदायक होकर कभी-कभी मारक का काम करता है। आयुष्य प्रदाता ग्रह मंगल है।
2. मेषलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु मुखरोग, कीटाणुजन्य रोग, अपने ही घर में या, अपने ही कुल में उत्पन्न मनुष्य द्वारा सम्भव होती है।
3. मेषलग्न में जन्म लेने वाले मनुष्य की आयु 75 वर्ष के आसपास होती है। जन्म के उपरान्त प्रथम माह में कष्ट, 13 वर्ष की आयु में अल्पकष्ट, 18 वर्ष में जलभय, 50 वर्ष की आयु मे अंग रोग, 60 वर्ष की आयु में असाध्य बीमारी होने का भय रहता है।
4. मेषलग्न में कर्क का सूर्य चौथे, शनि मीन का बारहवे, मंगल सातवें, एवं पूर्ण बली चन्द्रमा यदि बारहवे हो तो व्यक्ति चिरजीवी होता है।
5. मेषलग्न में मेष का नवमांश हो, नवमांश में गुरु और शुक्र लग्न में हो, चन्द्रमा वृष या धनु के नवमांश में हो, मंगल सिंहासनांश में हो तो व्यक्ति यशस्वी एवं चीरजीवी होता है।
6. मेषलग्न में सूर्य दसवें, गुरु कर्क राशि में, मंगल, शनि इत्यादि पापग्रह तीसरे, छठे या एकादश में हो तो जातक ऋषि-मुनियों की तरह यशस्वी, दीर्घजीवी एवं चिरायु होता है।
7. मेषलग्न मे सूर्य एव मंगल हो, गुरु केन्द्र में हो तो व्यक्ति सौ वर्ष का स्वस्थ आयु भोगता है।
8. मेषलग्न में सूर्य एव मंगल आठवें हो तथा कर्क का गुरु चौथे हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ शतायु को भोगता है।
9. मेषलग्न में सिंह का चन्द्रमा पंचम में हो, त्रिकोण में गुरु एवं दशम मे मंगल हो तो व्यक्ति दीर्घायु होता है।
10. मेषलग्न में मंगल एवं शनि दशम भाव में हो तो जातक स्वस्थ व सौ वर्ष से ऊपर की दीर्घायु को भोगता है।
11. मेषलग्न में मंगल लग्न में हो तथा गुरु व शुक्र से देखते हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
12. मेषलग्न मे चन्द्रमा छठे कन्या राशि का हो, अष्टम स्थान मे कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केन्द्रवर्ती हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

13. मेषलग्न मे उच्च का गुरु केन्द्र में हो, बुध त्रिकोण में हो तथा मगल बलवान हो तो जातक 80 वर्ष को स्वस्थ आयु प्राप्त करता है।
14. मेषलग्न मे लग्नेश मगल लग्न में हो, सभी शुभग्रह केन्द्र में हो तो जातक 75 वर्ष को स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
15. मेषलग्न मे मगल हो, मगल पांचवे सिह का तथा सूर्य सातवे तुला का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।
16. मेषलग्न मे शनि+मंगल+सूर्य हो, चन्द्रमा द्वादश में तथा गुरु बलहीन हो तो ऐसा जातक 70 वर्ष तक जीता है।
17. मेषलग्न में चन्द्रमा+सूर्य दशम भाव में, शनि नीच का लग्न में, गुरु अन्य का चतुर्थ भाव मे हो तो एक प्रकार के उच्च राजयोग की सृष्टि होती है पर ऐसा जातक मात्र 69 वर्ष तक ही जी पाता है।
18. यदि शनि लग्न में, कर्क का चन्द्रमा चौथे, मंगल सातवें और सूर्य दसवें किसी भी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
19. मेषलग्न में अष्टमेश मंगल सातवें हो तथा चन्द्रमा छठे या आठवें स्थान में पापग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
20. शनि लग्न में मगल किसी भी अन्य ग्रह के साथ हो, चन्द्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
21 मेषलग्न में बलवान चन्द्रमा लग्न मे हो पर सूर्य से 120 अश दूर हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 48 वर्ष की आयु मे गुजर जाता है।
22. मेषलग्न मे लग्नेश मगल अष्टम भाव मे पापग्रहों के साथ हो और छठे स्थान में बुध पापग्रहो के साथ हो शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जीता है।
23. मेष (चर) लग्न में चन्द्रमा कन्या या वृश्चिक राशि का शुभग्रहों से दृष्ट न हो, कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र में न हो तो जातक मात्र 33 वर्ष तक जीता है।
24. मेषलग्न में शनि+मंगल हो, चन्द्रमा आठवें एवं गुरु छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
25. मेषलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश निर्बल हो, तो लग्न, द्वितीय व द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
26. मेष का गुरु एव मीन का मंगल परस्पर एक-दूसरे के घर में बैठने वाला बालारिष्ट योग बनता है ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।
27 मेषलग्न के चौथे राहु तथा चन्द्रमा आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनाता है ऐसा जातक आठ वर्ष के पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता है।

28. मेषलग्न में अष्टमेश मंगल छठे स्थान मे षष्टेश बुध के साथ हो, शनि सप्तम में अन्य पापग्रहों के साथ हो, अष्टम स्थान में भी पापग्रह हो तो जातक 31 वर्ष की आयु मे ही शल्य चिकित्सा या गुप्तरोग के कारण मृत्यु को प्राप्त करता है।
29. मेषलग्न में मंगल हो, गुरु बारहवें हो, शुक्र छठे स्थान मे नीच का हो, शुभ ग्रहों को लग्न पर दृष्टि न हो तो उपाय न करने पर ऐसे जातक की एक माह में मृत्यु हो जाती है।
30. मेषलग्न में सूर्य+चन्द्रमा यदि कन्या राशि में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है तथा बालक की नौ वर्ष की आयु में मृत्यु होती है
31. मेषलग्न में गुरु लग्नस्थ हो, चन्द्रमा छठे या आठवें, शुभ ग्रहों के दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे जातक की आयु आठ वर्ष की आयु में होती है।
32. मेषलग्न में सूर्य द्वादश में, चन्द्रमा छठे या आठवें, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक की तत्काल मृत्यु होती है।
33. मेषलग्न मे लग्न या पंचम भाव में सूर्य+राहु+शनि+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, चन्द्रमा निर्बल हो तो जातक शीघ्र मर जाता है।
34. मेषलग्न के सप्तम भाव में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।
35. मेषलग्न के चतुर्थ भाव मे मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।
36. मेषलग्न में लग्नस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

❑❑❑

मेषलग्न और धनयोग

मेषलग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धनप्रदाता ग्रह शुक्र है। धनेश शुक्र की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से सम्बन्ध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, शुक्र एवं धनस्थान पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि सम्बन्ध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त पंचमेश सूर्य, भाग्येश गुरु एवं लाभेश शनि एवं लग्नेश मंगल अनुकूल स्थितियां मेषलग्न वालों के लिए धन ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने में पूर्णरूप से सक्षम होती है।

वैसे मेषलग्न के लिए शनि, बुध और शुक्र अशुभफल देते हैं। बुध परमपापी है। गुरु और रवि शुभ फल देते हैं। अशुभ योग के सहयोग में गुरु निश्चित रूप से अशुभ फल देगा। शुक्र मारक स्थान का अधिपति होकर भी घातक नहीं है पर अरिष्ट फलदायक है। शनि इत्यादि पापग्रह इस लग्न के लिए घातक होते हैं। मंगल लग्नेश व अष्टमेश होने पर भी लग्नेश होने के कारण अशुभ फल नहीं देगा। मंगल स्वगृही हो तो उत्तम फल देगा।

शुभयुति—शनि+गुरु

शुभ योग—सूर्य स्वगृही, शुक्र स्वगृही, क्षीण चन्द्र, मंगल अच्छी स्थिति में

अशुभ युति—मंगल+बुध

राजयोग कारक—रवि, गुरु, चन्द्र

लक्ष्मी योग—शनि नवम में, गुरु सप्तम में, शुक्र पंचम में, सूर्य तृतीय में।

सफल योग— 1. सू.+मं. 2. सू.+चं. 3. सू.+शु.
4. सू.+श. 5. मं.+गु. 6. च.+गु.

निष्फल योग—1. गु.+श., 2. गु.+शुक्र

विशेष योगायोग

1. मेषलग्न में [illegible] शनि में हो तो जातक [illegible] धन कमाता है। धन के मामले में [illegible]
2. मेषलग्न में शुक्र [illegible] पीछा नहीं छोड़ती।
3. मेषलग्न में [illegible] शुक्र [illegible] से

धनवान बनता है, इसमें कोई सन्देह नहीं।

4. मेषलग्न मे शुक्र एव शनि परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों अर्थात् शुक्र के घर में शनि तथा शनि के घर मे शुक्र हो तो ऐसा व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है तथा जीवन में अत्यधिक धन अर्जित करता है।
5. मेषलग्न हो, चन्द्रमा लग्न में मंगल के साथ हो तथा शनि केन्द्र या त्रिकोण में हो तो जातक 28 एवं 32 वर्ष की आयु के मध्य धन कमाता है तथा कीचड़ में कमल की तरह, साधारण परिवार में जन्म लेता हुआ धीरे-धीरे खूब धन कमाता हुआ आगे बढ़ता है।
6. मेषलग्न में सूर्य सिंह का पंचम भाव में हो तथा लाभस्थान में कुम्भ का गुरु स्वगृहाभिलाषी हो तो जातक महाधनी होता है। ऐसा व्यक्ति धनशाली व्यक्तियों में अग्रगण्य होता है।
7. मेषलग्न में मंगल, शनि, शुक्र और बुध इन चार ग्रहों की युति हो तो जातक महाधनी होता है।
8. मेषलग्न में सिंह का सूर्य पंचम में हो, लाभ में शनि चन्द्रमा गुरु में से कोई ग्रह हो तो व्यक्ति महालक्ष्मीवान होता है तथा अतुल सम्पत्ति एवं ऐश्वर्य को भोगता है।
9. मेषलग्न में मगल, सूर्य, शुक्र और चन्द्रमा से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति महालक्ष्मीशाली होता है तथा राजलक्ष्मी को भोगता है।
10. मेषलग्न में मंगल मकर या कुम्भ राशि में हो तथा शनि लग्न में अर्थात् मेष राशि में हो तो जातक आयु के 33वें वर्ष में पांच लाख रुपए कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए एवं अर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।
11. मेषलग्न हो उसमें मंगल, शुक्र, गुरु तथा शनि अपनी उच्च व स्वराशियो में हो तो जातक करोड़पति होता है।
12. मेषलग्न में मंगल हो साथ में बुध, शुक्र व शनि हो तो जातक करोड़पति होता है।
13. मेषलग्न में धनेश शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में चला गया है तो ''धनहीन योग'' की सृष्टि करता है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर सकता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे जातक के पास धन नहीं ठहर पाता। सदैव रुपयों की कमी बनी रहती है। इस योग से निवृत्ति हेतु गले में शुक्र यन्त्र धारण करना चाहिए। पाठक चाहे तो ''शुक्र यंत्र'' हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।
14. मेषलग्न में शुक्र आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि मे गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है अथवा लॉटरी से रुपया मिल सकता है।
15. मेषलग्न हो, मंगल कर्मेश भाग्येश पाचवें हो तो जातक लक्ष्याधिपति बनता है।
16. मेष राशिस्थ लग्न की कुण्डली में सूर्य स्व का हो, गुरु चद्र की युति ग्यारहवें हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।
17. मेषलग्न हो, चन्द्रमा जहा स्थित है यहां से 1 4, 7, 10 में गुरु हो तो जातक भूमिपति होता है, मेयर बनता है।

कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

32. मेषलग्न में बलवान शुक्र की गुरु से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।
33. मेषलग्न में बलवान शुक्र नवमेश गुरु से युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों एवं ठेके से काफी धन कमाता है।
34. मेषलग्न में बलवान शुक्र की दशमेश शनि से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति पिता द्वारा सरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।
35. मेषलग्न में दशम भवन का स्वामी शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता, जन्म स्थान में नहीं कमाता तथा धन की सदैव कमी बनी रहती है।
36. मेषलग्न में लग्नेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एव सूर्य तुला राशि का सातवें (केन्द्र) स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।
37. धनस्थान में पाप ग्रह हो तथा लाभेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है।
38. मेषलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चन्द्रमा गुरु से यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो सकट योग बनता है जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।
39. मेषलग्न में धनेश मंगल अस्त हो, नीचराशि (कर्क) में हो, तथा धनस्थान एवं अष्टम स्थान मे कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता नहीं।
40. मेषलग्न में लाभेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत हो, पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।
41. मेषलग्न मे अष्टमेश मगल वक्री होकर कहीं भी बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात धनहानि का योग बनता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है अत: सावधान रहे।
42. मेषलग्न में अष्टमेश मंगल शत्रुक्षेत्री नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

ज्योतिष में कैंसर योग

1. कर्क, वृश्चिक, मीन, मकर एव तुला राशियों मे से कोई दो राशियां यदि षष्ठेश, अष्टमेश एवं द्वादशेश के प्रभाव में हो, पापग्रसित हो तो जातक को कैंसर होता है।
2. सूर्य से छठे, आठवें एवं द्वादश स्थान के स्वामी का सम्बन्ध राहु, केतु से होने पर व्यक्ति को कैंसर होता है।
3. कर्कलग्न के अधिकाश लोगों को कैंसर होता है. कर्कलग्न में गुरु मुख्य रूप से कैंसर रोग का कारक है। गुरु कैंसर में वृद्धि करता है। शनि, मंगल और गुरु इन तीनों का सम्बन्ध छठे, आठवें, बारहवें तथा द्वितीय स्थान के स्वामियों से होने पर जातक की मृत्यु कैंसर रोग से होती है।
4. जब मगल या शनि के साथ नेपच्यून, प्लूटो, यूरेनस कोई भी ग्रह हो तथा मंगल शनि का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध हो तो व्यक्ति को कैंसर होता है।
5. राहु एवं शनि की अप्रिय (मलिन) स्थिति भी कैंसर रोग की सृष्टि करती है।
6. शनि या मंगल छठे या आठवें स्थान में राहु, केतु के साथ हो तो व्यक्ति को कैंसर होने की सम्भावना रहती है।
7. द्वितीयेश आठवें हो, तथा अष्टमेश लग्न में चन्द्रमा के साथ हो, षष्ठेश 6, 8, 12वें स्थानों में पापग्रह के साथ हो तो ऐसे जातक की मृत्यु ''ब्लड कैंसर'' से होती है
8. षष्ठेश पापग्रहों के साथ लग्न, आठवें या दसवे स्थान में बैठा हो तथा पापदृष्ट हो तो जातक को कैंसर जैसी लाईलाज बीमारी होती है।
9. सूर्य छठे, आठवें, द्वादश स्थान में पापग्रहों के साथ हो तो जातक को पेट या आंतों में अलसर होता है। यदि राहु का प्रभाव लग्न या सूर्य के साथ हो तो जातक को कैंसर होता है.
10. सूर्य पापग्रहो के साथ कहीं भी हो, षष्ठेश छठे स्थान में पापग्रस्त हो, लग्नेश या लग्न पापग्रह के प्रभाव में हो तो व्यक्ति को कैंसर होता है।
11. चन्द्रमा क्षीण बली होकर पापग्रहो की राशि मे, छठे, आठवे बारहवें हो तथा लग्न अथवा चन्द्र शनि+मगल से दृष्ट हो तो जातक को कैंसर की सभावना रहती है।

12. षष्टेश नीच का होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तथा चन्द्रमा और लग्न पापग्रहों के मध्य या पापग्रस्त हो तो जातक को असाध्य बीमारी होती है।
13. द्वितीय भाव में पापग्रह हो, द्वितीयेश पापग्रह से युत होकर छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो, लग्न एवं लग्नेश निर्बल हो तो जातक को कैंसर होता है।

❑❑❑

कैंसर योग पर उदाहरण कुण्डलियां

रक्त कैंसर, जन्म 12/5/1930, समय 23.15, स्थान-मुम्बई
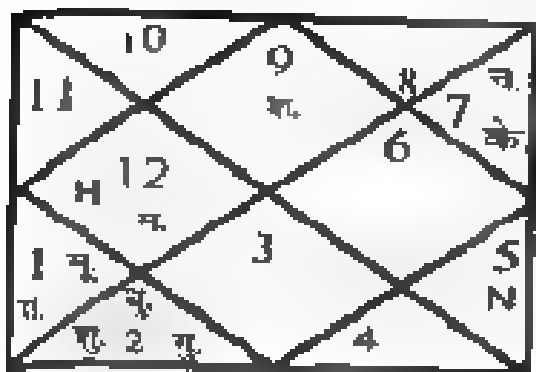
लग्न में पापग्रह है, लग्नेश गुरु षष्ठेश के साथ छठे स्थान में है। सप्तमेश बुध छठे है। सूर्य भी पापग्रसित है। चन्द्रमा भी पापग्रसित है फलतः जातक को रक्त कैंसर हुआ। कैंसर का पता चलते ही जातक ने बहुत ईलाज कराया परन्तु छः महीने में ही जातक की मुम्बई अस्पताल में ही मृत्यु हो गई।

रक्त कैंसर (बालारिष्ट), जन्म-5/7/1980, समय-13.00, स्थान-मुम्बई
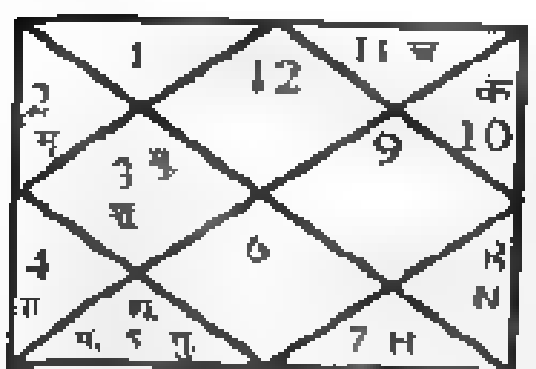
लग्नेश पापग्रह के साथ एवं पापमध्य होकर छठे स्थान में है। चन्द्रमा क्षीण बली होकर पापग्रह की राशि में बैठ कर द्वादश भाव में है। चन्द्रमा की राशि पापग्रसित है तथा चन्द्रमा के साथ षडाष्टक योग में स्थित है। चन्द्रमा द्वादशेश एवं मारकेश पापी ग्रहों (शनि+मंगल) से दृष्ट है। हर्षल आठवें है। इस बालक को दो वर्ष की आयु 6 जून 1982 को पहली बार पता चला कि इसे रक्त कैंसर है। फौरन ईलाज शुरू किया परन्तु ईलाज के दौरान ही टाटा अस्पताल मुम्बई में 8 मार्च 85 को बालक की मृत्यु हो गई। इस प्रकार यह बालक मात्र पांच वर्ष से कम की आयु को ही भोग पाया। रक्त कैंसर तो एक विशेष रोग का नाम है परन्तु मृत्यु के जिम्मेदार कुण्डली में उपस्थित "बालारिष्ट योग" है इसके लिए आप मेरी पुस्तक "ज्योतिष और आयुष्य योग" अवश्य देखें।

गुप्तांग में कैंसर, जन्म-3/4/1926, समय-7.30 प्रातः, स्थान-पूना
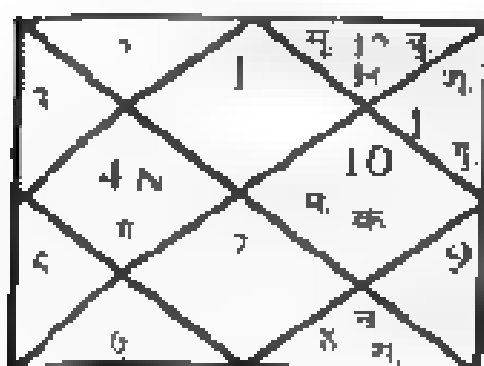
यह एक महिला की कुण्डली है। षष्ठेश बुध सूर्य के साथ नीच का होकर द्वादश स्थान में है। चन्द्रमा पापग्रह के साथ नीच का होकर आठवें है। लग्नेश मंगल पापग्रस्त है। सप्तमेश शुक्र नीचाभिलाषी है। उपरोक्त सभी रोगयोग अकाल मृत्यु के लिए पर्याप्त है। इस महिला को मध्यम आयु में गुप्तांग में तकलीफ हुई। शीघ्र ईलाज कराया। डॉक्टर ने गुप्तांग ही निकाल कर नष्ट कर दिया। कैंसर की एक गांठ दाएं स्तन पर निकली। दायां स्तन ही काट दिया। महिला

बच गई, आज भी जीवित है स्मरण रहे कि दाएं स्तन पर चन्द्रमा की राशि पापग्रस्त थी।

यह महिला बची क्यो? ज्योतिष की दृष्टि में यह जानना बहुत जरूरी है रोग के साथ साथ आयुष्य योग भी देखें, तभी रोगी की आयु का पता चलेगा। यहा लग्नेश मगल दिग्बली व उच्च का होकर केन्द्रस्थ है तथा लग्नेश लग्न को देख रहा है। फिर इस महिला को अभिमंत्रित मगल यत्र भी दिया गया। इसके लिए आप हमारी पुस्तक ''ज्योतिष और आयुष्य'' योग पढ़ें।

स्तन कैंसर, जन्म 24/7/1962, समय-6.00 प्रातः, स्थान जयपुर
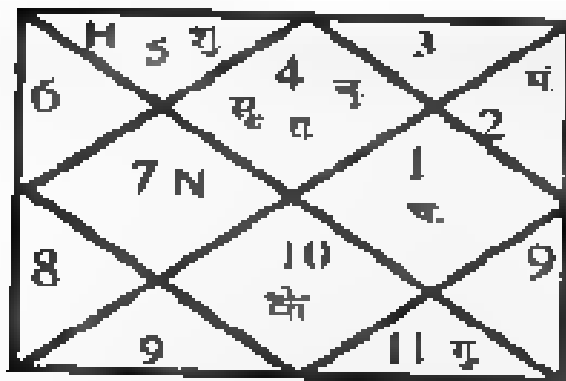
यह एक पच्चीस वर्षीय युवती की कुण्डली है। एक बार उसके सीने में दर्द उठा, एक छोटी फुन्सी स्तन पर दिखलाई दी, जांच कराने पर पता चला कि यह तो कैंसर है। जयपुर में इसका ईलाज हुआ। युवती जीवित है, विवाहित है एवं गृहस्थ सुख भोग रही है। अब कुण्डली क्या कहती है यह देखें।

सबसे पहली बात कर्कलग्न में जन्म है। लग्न में सूर्य, राहु इत्यादि पापग्रह हैं। लग्न पापग्रहो से दृष्ट है। षष्ठेश गुरु आठवें पापग्रगह की राशि में है, परन्तु चन्द्रमा उच्चाभिलाषी होकर केन्द्रस्थ होने एवं अन्य शुभ दृष्टि सम्बन्धों से युवती बच गई।

कैंसर से मृत्यु, जन्म 24/11/1904, समय-20.00, स्थान-मुम्बई
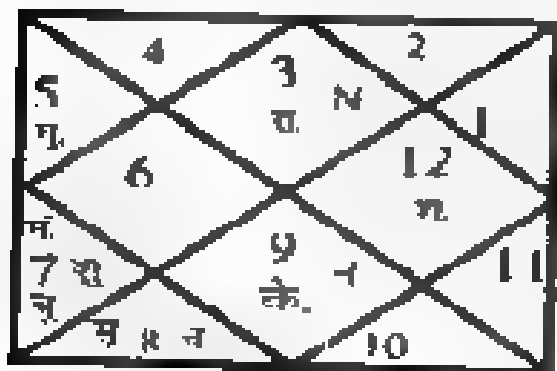
मिथुनलग्न में जन्मे प्रस्तुत जातक के फेफड़ों में कैंसर था। जातक लगातार धूम्रपान करने वाला था तथा सन् 1954 में कैंसर के द्वारा मृत्यु को प्राप्त हुआ। द्वितीयेश चन्द्रमा बलहीन नीच का होकर छठे पड़ा है। वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य पड़ा है षष्ठेश मंगल सूर्य+चन्द्र से बारहवे स्थान पर है। षष्ठेश मंगल ने द्वादशेश शुक्र से युति की है। लग्नेश ने षष्ठेश से युति की, लग्न पापग्रस्त है। अष्टमेश शनि नीचाभिलाषी है। डॉक्टरों ने इसे धूम्रपान न करने की सख्त हिदायत दी पर जातक माना नहीं और अपनी बुरी आदत के कारण मारा गया।

सम्भोग से कैंसर, जन्म-9/10/1951, समय-21.00, स्थान जोधपुर
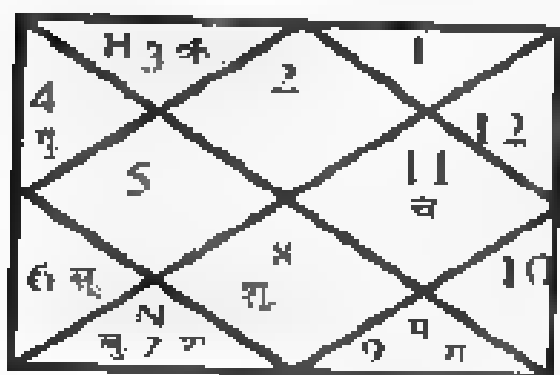
यह एक अत्यन्त सुन्दर युवती की कुण्डली है। यह युवती अत्यधिक कामुक थी तथा विवाहित होते हुए इसका परपुरुषों से ससर्ग था। अत्यधिक सम्भोग के कारण इसकी योनि में कैंसर हो गया। ईलाज के लिये मुम्बई गई। वहा इसका गुप्तांग शरीर से निकाल दिया गया। कैंसर थैरपी हुई पर ईलाज के दौरान ही यह युवती मृत्यु को प्राप्त हुई। आइए इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करें।

मंगल और राहु आठवें स्त्री के स्वेच्छाचारिणी एव परपुरुषगामी बनाता है। षष्ठेश शुक्र सातवें, सप्तमेश आठवें गुप्तांग में रोग देता है। चन्द्रमा पाप राशि में पापग्रह से दृष्ट जातक की मनस्थिति को बतलाता है। द्वितीयेश पापग्रह से युत होकर षष्ठम स्थान में है। द्वितीय भाव पापग्रस्त है। उच्च के गुरु ने इस रोग को बढ़ाया अत: कैंसर से मृत्यु हुई।

गोपनीयता भग न हो इसलिए यहां सभी जातकों के नाम गुप्त रखे गए हैं। प्रबुद्ध पाठक इसके लिए मुझे क्षमा करेंगे। ज्योतिष में निरन्तर शोध प्रवृत्ति बढ़ाने हेतु व प्रमाणिकता की दृष्टि से कहीं कुछ कुण्डलियों में नामों का भी उल्लेख प्रसंगवश कर दिया गया है। इस सदर्भ में किसी यजमान को कोई कष्ट पहुंचा हो तो उसके लिए भी अत्यन्त विनम्र शब्दों में क्षमायाचना चाहता हूं। उपरोक्त जन्म कुण्डलियां सयोगवश किसी अन्य व्यक्ति की कुण्डली से मिल जाए तो उसके लिए लेखक, सम्पादक व प्रकाशक जिम्मेदार नहीं हैं।

❑❑❑

मूक योग पर उदाहरण कुण्डलियां

श्री जसराज अन्याव, जन्म-24/7/1934, इष्ट-3/10, स्थान-बालोतरा

प्रस्तुत जातक जन्म से मूक (गूंगा) है। आप देखेंगे कि इस कुण्डली में वाणी का अधिपति सूर्य पापपीड़ित है। वाणीकारक बुध व्यय भाव में हो तथा कमजोर चन्द्रमा बुध को देख रहा है। फलतः जातक करोड़पति होते हुए भी गूगा है। जीवन में सभी प्रकार के इलाज कराने पर भी मूकत्व दूर नहीं हुआ। जातकतत्त्व के सभी सूत्र इस कुण्डली पर सही रूप से घटित हो रहे हैं। जो कि ज्योतिष शास्त्र की प्रर्माणिकता को स्पष्टतः उजागर कर रहे हैं। इस जातक के दो पुत्र, दो कन्याएं हैं, जिसमें से एक पुत्र, एक कन्या मूक है बाकी दो सही हैं। ज्योतिष प्रेमियों के हितार्थ मेरे व्यक्तिगत गोपनीय संकलन में से ये दोनों कुण्डलियां भी अध्ययन हेतु प्रस्तुत कर रहा हू। जो इस प्रकार हैं।

श्री रोशन अन्याव, जन्म-23/9/1960, समय-5.50 शाम, स्थान-बालोतरा
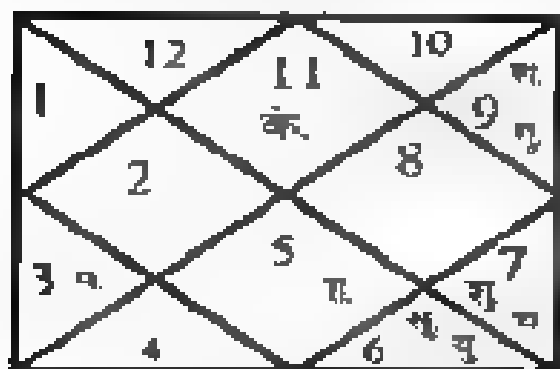
इस कुण्डली में वाणी (द्वितीय भाव) को अधिपति गुरु पापग्रस्त है। वाणी का कारक बुध आठवें है। खड्ढे में गिरा हुआ अष्टमेश व सप्तमेश सूर्य (पापग्रह) पूर्ण दृष्टि से द्वितीय स्थान (वाणी भाव) को देख रहे है। फलतः जातक गूंगा (मूक) है। धन स्थान का स्वामी गुरु स्वगृही होकर लाभ में उत्तम दृष्टियों वाला है सो जातक को धन की कमी नहीं है।

श्रीमति निर्मला जैन, जन्म-30/3/1963, समय-9.48, स्थान-बालोतरा
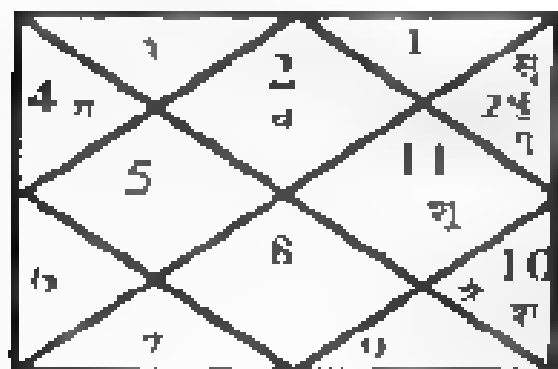
प्रस्तुत कुण्डली में द्वितीयेश एव अष्टमेश की युति लाभ स्थान में है। अतः यह महिला भी जन्म से मूक (गूगी) है। साथ ही वाणी का अधिपति बुध नीच राशिगत भी है। ज्योतिष विद्यार्थियो के लिए मूक योग का यह अनुपम उदाहरण है। जातक पारिजात का श्लोक भी काफी अशों तक इस कुण्डली में फलित हो रहा है। द्वितीयेश की गुरु से युति होने पर जातक मूक होता है। यह बात भी यहा लागू हो रही है।

❑❑❑

मेषलग्न और विवाहयोग

1. मेषलग्न हो मंगल सप्तम भाव में, शनि लग्न में हो तो जातक अवश्य ही दूसरा विवाह करता है।
2. यदि पाप ग्रह षष्ठेश, धनेश और लग्नेश से युक्त होकर सप्तम भाव में हो तो जातक परस्त्रीगामी होता है।
3. गुरु बुध सप्तम भाव में हो तो जातक कई स्त्रियों के साथ संभोग करता है।
4. मेषलग्न हो शुक्र व सूर्य प्रथम या सप्तम भावस्थ हों तो जातक की स्त्री बन्ध्या होती है।
5. मेषलग्न हो, शुक्र स्व का सप्तम भवन में हो तो निश्चय ही पति से वियोग भोगना पड़ता है। अर्थात् पति-पत्नी में विच्छेद होता है
6. मेषलग्न में शनि लग्नस्थ चन्द्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है विलम्ब से विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
7. मेषलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीयभाव में सूर्य हो और लग्नेश मंगल निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. मेषलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश शुक्र बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. मेषलग्न मे सूर्य और शनि के साथ सप्तमेश शुक्र भी हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
10. मेषलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि में हो तथा सूर्य या चन्द्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो जातक का विवाह नहीं होता ।
11. मेषलग्न में सप्तमेश शुक्र के साथ सूर्य चन्द्रमा स्थित हो तो ऐसे में शुक्र अत्यन्त पापी हो जाता है। ऐसी स्थिति में प्रथम तो जातक का विवाह नहीं होता। यदि विवाह हो भी जाए तो जातक को अविवाहित की तरह जीवन यापन करना पडता है।
12. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव के क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।
13. मेषलग्न में द्वितीयेश शुक्र वक्री हो या द्वितीय भाव में कोई ग्रह वक्री हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

14. मेषलग्न में सप्तमेश शुक्र वक्री हो, सप्तम भाव में कोई भी ग्रह वक्री हो या वक्री ग्रहों की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अनेक अवरोध आते हैं। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।
15. मेषलग्न तथा चन्द्रमा एवं शुक्र लग्न में स्थित हो और उन्हें पापग्रह देखते हो तो ऐसी स्त्री परपुरुष गामिनी होती है तथा उसकी माता या मातातुल्य किसी वृद्ध स्त्री का इस कार्य में पूर्ण सहयोग रहता है।
16. मेषलग्न में राहु यदि आठवे स्थान मे हो तो ऐसी स्त्री वैधव्य दुःख को भोगती है।
17. मेषलग्न में जिस स्त्री की कुण्डली में चन्द्रमा आठवें हो तो वह स्त्री पति सुख से हीन होती है। प्रायः ऐसी स्त्री विवाह के आठवे वर्ष मे विधवा होती है।
19. मेषलग्न में सातवें सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, तो स्त्री पति द्वारा त्याग दी जाती है उसका प्रायः तलाक होता है।
19. मेषलग्न में चन्द्रमा यदि चर (मेष, कर्क, तुला, मकर) राशि में हो, केन्द्र में पाप ग्रह, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री विवाह के पूर्व पर पुरुषों से संसर्ग करती है।
20. मेषलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नए अलंकार व वस्त्र पहन कर परपुरुषों का संग करती है तथा कुल की मर्यादाएं तोड़ देती है।
21. मेषलग्न में सप्तमेश यदि चर राशि में हो तो स्त्री का पति परदेश में रहने वाला होगा। ऐसे में बुध व शनि यदि सप्तम में हों तो स्त्री का पति नपुंसक होगा।
22. मेषलग्न मे मंगल आठवें हो तो ऐसी स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल होती है। ऐसी स्त्री प्रेम विवाह करती है तथा स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है।
23. मेषलग्न में मंगल हो, सप्तमेश शुक्र, आठवें हो, सप्तम भाव में बुध हो तो ऐसी स्त्री एक के बाद दूसरा पति और दूसरे के बाद तीसरा पति करती है। इसमें आत्मनिर्णय की कमी रहती है।
24. मेषलग्न में शुक्र सप्तम में हो, शुभ ग्रह उसे देखते हों तो जातक की पत्नी अत्यन्त सुन्दर, स्त्री धर्म परायण एवं पतिव्रता होती है तथा विवाह के बाद पति के भाग्य को चमकाती है।
25. मेषलग्न में षष्टेश बुध राहु के साथ होकर यदि लग्नेश मंगल से किसी प्रकार का सबंध करे तो ऐसा जातक नपुंसक होता है।
26. मेषलग्न में चन्द्रमा मेष का वृश्चिक राशि में हो और इन्हीं राशियों का त्रिशांश भी हो तो ऐसी कन्या विवाह से पूर्व पर पुरुष से संसर्ग करती है।
27. मेषलग्न में शुक्र चन्द्रमा साथ में कहीं भी बैठें, पापग्रहों से दृष्ट हो ऐसी स्त्री व्याभिचारणी होती है।
28. मेषलग्न में चन्द्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक मनोवृत्ति वाली होती है।

29. मेषलग्न में यदि सूर्य, मंगल, गुरु चन्द्र, बुध व शुक्र बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थित वश पर पुरुष की अंकशयिनी बन सकती है।
30. मेषलग्न मे सप्तमेश शुक्र यदि चर राशि (1 4/7/10) में हो तो ऐसी स्त्री का पति निरन्तर प्रवास में रहता है।
31. मेषलग्न में चन्द्रमा एवं शुक्र लग्नस्थ पापग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री अपनी माता सहित परपुरुष गामिनी होती है।
32. मेषलग्न में चन्द्र और शुक्र लग्नस्थ हों तथा पंचम स्थान पर पापग्रहो की दृष्टि हो तो वह नारी बन्ध्या होती है।
33. मेषलग्न में लग्नस्थ मंगल स्वगृही हो तो जातक के द्विभार्यायोग बनता है। ऐसा जातक दो नारियों से रमण करता है।
34. मेषलग्न में शुक्र यदि द्वितीय या द्वादश स्थान मे हो तो ऐसा जातक जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है।
35. मेषलग्न में सूर्य सातवें हो तो ऐसे जातक की पत्नी अल्पजीवी होती है।

मेषलग्न एवं संतान योग

1. वैसे मेषलग्न अल्प सन्तति वाला है परन्तु पंचमेश सूर्य आठवें हो तो जातक के अल्प सन्तति होती है।
2. मेषलग्न में पंचमेश सूर्य अस्त या पापग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान मे हो तो जातक के पुत्र नहीं होता।
3. मेषलग्न मे पंचमेश सूर्य लग्न (मेष राशि) मे हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो जातक के प्रथम पुत्र होता है।
4. मेषलग्न में मंगल हो, पंचम से सूर्य एव आठवें गुरु हो तो जातक के बहुत काल के बाद (जवानी बीत जाने पर) बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
5. मेषलग्न में शनि हो, अष्टम में गुरु एवं मंगल, बारहवें हो तो जातक के बहुत काल के बाद (जवानी बीत जाने पर) बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
6. मेषलग्न में चन्द्रमा ग्यारहवें हो, लग्न मे पापग्रह हो, गुरु से पांचवें स्थान में भी पापग्रह हो तो व्यक्ति की जवानी बीत जाने पर, बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
7. मेषलग्न मे पंचमेश सूर्य लग्न मे हो तथा लग्नेश मगल पंचम स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरे की संतान गोद लेता है।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव मे हो तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को, "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
9. मेषलग्न में पंचमेश कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था मे सन्तान की प्राप्ति होती है
10. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पापग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
11. मेषलग्न में लग्नेश मगल द्वितीय स्थान मे हो तथा पंचमेश, सूर्य पापग्रस्त या पापपीडित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाता है.
12. मेषलग्न मे शनि+मंगल पंचम भाव मे बैठे हो और पंचमेश सूर्य छठे चला गया हो तो जातक को पुत्र का सुख नहीं मिलता। पुत्र उत्पन्न जरूर होता है पर कुछ कालान्तर के बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
13. मेषलग्न मे पंचमेश सूर्य बारहवें शुभग्रहों से युत या दृष्ट हो तो जातक की वृद्धावस्था

मे पुत्र की अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक को संसार से विरक्ति होकर वैराग्य की प्राप्ति होगी।

14. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
15. मेषलग्न में पंचमेश सूर्य की सप्तमेश शुक्र से युति हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
16. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देता है। यदि चन्द्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।
17. पंचमेश सूर्य निर्बल हो, लग्नेश मंगल निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक के सर्पदोष के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।
18. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्मनामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के पुत्र सन्तान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिन्ता एवं मानसिक तनाव रहता है।
19. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।
20. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है। आगे पीढ़ियां नहीं चलती।
21. मेषलग्न के चतुर्थभाव में पापग्रह हो तथा चन्द्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पापग्रह हो तो वंशविच्छेद योग बनता है। ऐसे जातक के स्वय का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलती।
22. तीन केन्द्रों में पापग्रह हों तो व्यक्ति को "इलाख्य नामक" सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शान्ति हो जाती है।
23. मेषलग्न में पंचमेश प्रथम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो "अनपत्य योग" बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सन्तान उत्पन्न नही होती पर उपाय से दोष शान्त हो जाता है।
24. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा सन्तान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नही।
25. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो "अनगर्भा योग" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

26. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो "अनगर्भा योग" बनता है ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।
27. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चन्द्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो "कुलवर्द्धन योग" बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली सन्तानो को उत्पन्न करती है।
28. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को "केवल कन्या योग" होता है। पुत्र सन्तान नही होती।
29. मेषलग्न हो, सप्तम भाव, शुक्र, शनि व राहु के प्रभाव में हो अर्थात् लग्न में शुक्र, दूसरे शनि व 12वें राहु हो तो जातक के सन्तान नहीं होती।
30. मेषलग्न में पंचमेश सूर्य द्वितीय स्थान में लग्नेश मगल के साथ हो तथा कुम्भ का शनि पूर्ण दृष्टि से पंचम भाव की ओर देख रहा हो तो ऐसे जातक के पुत्र ही पुत्र (कम से कम पांच पुत्र) होते हैं। कोई कन्या सन्तति नहीं होती।

उदाहरण–मुरलीधर दवे 6/6/1936 समय 04.15 स्थान दुन्दाडा (बाड़मेर)

□□□

मेषलग्न और राजयोग

1. पूर्ण मेषलग्न में जिसका जन्म हो और सूर्य लग्न में उच्च का हो, उच्च का गुरु कर्क के चतुर्थ भाव मे बैठा हो, उच्च का मगल मकर के दशम भाव में हो। जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. मेषलग्न में सूर्य गुरु के उच्च होने पर तुला का शनि सप्तम में उच्च हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. मेषलग्न में सूर्य-मगल-शनि तीनों ग्रह उच्च के हों तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. मेषलग्न में सूर्य, गुरु, मंगल और शनि चारों ही उच्च के हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. मेषलग्न में सूर्य, गुरु उच्च हों और स्वगृही चन्द्रमा गुरु के साथ हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. मेषलग्न में सूर्य-शनि उच्च के हो, चन्द्रमा स्वगृही हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. मेषलग्न मे सूर्य मंगल उच्च के हों चन्द्रमा स्वगृही हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
8. मेषलग्न में सूर्य उच्च का व चन्द्रमा स्वगृही हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
9. मेषलग्न में शुक्र स्वगृही सूर्य, बुध के साथ मगल उच्च का दशम हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
10. मेषलग्न में उच्च का मंगल, नीच का सूर्य बुध के साथ, कर्क का शनि हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
11. मेषलग्न में गुरु भाग्य स्थान मे, सूर्य, बुध सप्तम मे मगल रिपु भाव मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
12. मेषलग्न में सूर्य बुध, शुक्र सप्तम में गुरु भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

13. मेषलग्न में सूर्य-शुक्र सप्तम मे मगल दशम में शनि चतुर्थ में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
14. मेषलग्न में सूर्य सप्तम में, गुरु नवम में, मंगल दशम में, शनि चतुर्थ में हो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
15. मेषलग्न मे शुक्र सूर्य सप्तम में मंगल दशम में गुरु पंचम भाव मे हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
16. मेषलग्न में सूर्य-शुक्र सप्तम में, शनि एकादश में और गुरु पंचम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
17. मेषलग्न में सूर्य-शुक्र बुध सप्तम में शनि चतुर्थ में हो, जातक-राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
18. मेषलग्न में सूर्य-बुध सप्तम में, शनि एकादश में, गुरु पंचम में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
19. मेषलग्न में सूर्य बुध सप्तम में, शनि एकादश में, गुरु पचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
20. मेषका मंगल लग्न में उच्च का गुरु चतुर्थ में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
21. मेषलग्न में शुक्र बुध सप्तम में, मंगल दशम में गुरु पंचम मे हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
22. मेषलग्न में शुक्र-बुध सप्तम, शनि एकादश में मगल रिपु भाव में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
23. मेषलग्न में बुध सप्तम मे मगल दशम में शनि एकादश में गुरु पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
24. मेषलग्न में बुध, शुक्र सप्तम में, शनि एकादश में गुरु पंचम में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
25. मेषलग्न में सूर्य, बुध, शुक्र, सप्तम में, मगल दश में गुरु पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
26. मेषलग्न में शुक्र सप्तम मे, मगल दशम में, शनि चतुर्थ में, गुरु पचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
27. मेषलग्न मे सूर्य, बुध शुक्र सप्तम मे, मगल दशम में शनि एकादश में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
28. मेषलग्न में सूर्य, शुक्र सप्तम में, गुरु नवम मगल दशम में, शनि चतुर्थ में हो तो, जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
29. मेषलग्न में सूर्य, बुध सप्तम में, गुरु नवम मे, शनि एकादश में, मगल छठे स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

30 मेषलग्न में सूर्य, शुक्र, बुध सप्तम में, मगल दश में, शनि चतुर्थ में, गुरु पचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

31. मेषलग्न मे सूर्य-बुध-शुक्र सप्तम मे, शनि एकादश में, गुरु पंचम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

32. मेषलग्न में शनि बुध सप्तम में, शनि एकादश में, मंगल छठे भाव मे हो तो या मेष का मगल लग्न में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

33. मेषलग्न में उच्च का गुरु चतुर्थ में हो तो मेष का गुरु लग्न में, स्वगृही चन्द्रमा चतुर्थ में, मकर का शुक्र दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

34. मेष का सूर्य गुरु लग्न में, मकर का मंगल दशम में तथा चन्द्रमा, शुक्र और बुध भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

35. मेषलग्न में उच्च का सूर्य लग्न में, उच्च का गुरु चतुर्थ में, उच्च का शनि चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव मे हो तो मनुष्य निश्चय से बडा आदमी होता है और राजा का पुत्र एवं अपने पिता का राज्याधिपति पाता है।

36. मेषलग्न में उच्च का सूर्य, गुरु के साथ लग्न में हो, वृष का शुक्र दूसरे स्थान धन भाव में हो, शनि उच्च का तुला में मंगल के साथ सप्तम स्थान में हो और मीन का चन्द्रमा बुध के साथ द्वादश भाव में हो तो मनुष्य भाग्यवान तथा राज्य का स्वामी होता है।

37. मेष का सूर्य लग्न में, वृष का चन्द्रमा धन में, मिथुन का राहु पराक्रम मे और कर्क का गुरु चतुर्थ में हो तो मनुष्य सरकारी नौकरी में बहुत बड़े पद को प्राप्त करता है।

38. मेषलग्न हो, लग्न में ही चन्द्रमा हो तथा चंद्र व मंगल की युति हो तो जातक अवश्य ही संसद सदस्य बनता है।

39. मेषलग्न हो तथा सूर्य उच्च का (मेष में) हो। गुरु स्वराशिस्थ नवम भावस्थ हो एवं कर्मेश मंगल उच्च का अर्थात् मगल कुंभ का हो जो जातक राज्यपाल बनता है।

40. मेषलग्न हो तथा मंगल-गुरु का सम्बन्ध हो तो वह जातक केन्द्रीय मंत्री बन कर कई विदेश-यात्राएं करता है।

41. मेषलग्न हो, लग्न में सूर्य, मंगल, शनि, केतु इनमें से कोई हो तथा गुरु भाग्य भवन में हो तो जातक अवश्य केन्द्रीय मंत्री बनता है।

42 मेषलग्न वाले जातक की कुण्डली में 11वें भवन में यदि चन्द्रमा एवं गुरु हो, उन पर शुभ ग्रहो की दृष्टि हो तो जातक उच्च शासनाधिकारी बन कर मान पाता है।

43. चन्द्रमा लग्न में स्थित हो, शनि एकादश भाव मे, सूर्य स्वराशिस्थ सन्तान भवन (5) में तथा गुरु मृत्यु भाव (8) में हो तो जातक उच्च पदासीन होता है।

44. लग्नेश व राशि लग्न में होकर 9वें चन्द्रमा हो तो जातक शासन में विरोधी दल का नेतृत्व करता है।

45. मेष लग्नस्थ जातक को पाप ग्रह नहीं देखता हो तो भी जातक उच्च पद प्राप्त करता है।
46. मेषलग्न हो तथा कर्मेश मगल हो, छठे बुध, व्यय भाव में शुक्र हो तो जातक एम.एल.ए. बनता है।
47. मेष स्थित चन्द्रमा को गुरु पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक उच्च पद को प्राप्ति करता है।
48. मेषलग्न हो तथा बुध चौथे, गुरु सातवें, शुक्र 10वें भावस्थ हो तो जातक एम.पी. बनता है।
49. मेषलग्न हो तथा समस्त शुभ ग्रह केन्द्र में स्थित हों तो जातक राज्यपाल बनता है।
50. मेषलग्न हो। चतुर्थेश चौथे एव भाग्येश 10वें हो तो एवं लग्नेश बलवान हो तो जातक सेना में उच्च पद की प्राप्ति करता है।
51. मेषलग्न हो, लग्नेश लग्न को देखता हो, भाग्येश गुरु, केन्द्र या त्रिकोण में (5, 9) हो तो जातक को उच्च पद की प्राप्ति होती है।
52. मेषलग्न हो, चतुर्थेश, पचमेश अर्थात् सूर्य, चंद्र का योग हो तो प्रबल राजयोग बनता है।
53. जन्म लग्न मेष हो, मगल लग्नाधिपति 5वें घर में हो तो लग्नेश की दशा में निश्चय ही राजयोग, अभ्युदयादि होता है।
54. मेषलग्न में उच्च का गुरु और मंगल तथा मेषलग्न में मंगल और गुरु हो, तो राजयोग होता है।
55. सिंह मेषलग्न में सिंह का सूर्य, गुरु, कुंभ का शनि, वृष का चन्द्रमा, वृश्चिक का मंगल, मिथुन का बुध और मेषलग्न में हो तो राजयोग होता है।

❑❑❑

मेषलग्न में आशीर्वादात्मक कुण्डली का मंगल दर्शन

॥ देवाधिदेव महादेव की कुण्डली॥

1 मं. सू.
2 चं.
3 रा.
4 गु.
5
6
7
8
9 के.
10 श.
11
12 शु. बु.

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं, वन्दे जगत्कारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं, वन्दे पशूनांपतिम्।
वन्दे सूर्य शशांक वह्नि नयनं, वन्दे मुकुन्द प्रियम्।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्॥

इस संसार के आदिकारण, पार्वती के पति, समस्त देवताओं के गुरु बाघाम्बर पहनने वाले मणिधारी सर्पों के आभूषणों से सुशोभित भगवान विष्णु के परमप्रिय उपास्यदेव, सूर्य व चन्द्रमा रूपी नेत्रों को धारण करने वाले, समस्त ससार के अग्नितत्त्व को तीसरे नेत्र में स्थापित करने वाले, भक्तों के आश्रयदाता भगवान शकर की समस्त ससार के प्राणियों का मंगल (कल्याण) करने वाले, परम सुन्दर एवं शान्ति करने वाले शंकर स्वरूप को बारम्बार नमस्कार है। ऐसे देवाधिदेव महादेव दीर्घकाल तक इस जातक की रक्षा करें

❑❑❑

मेष लग्न में सूर्य की स्थिति

मेष लग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में
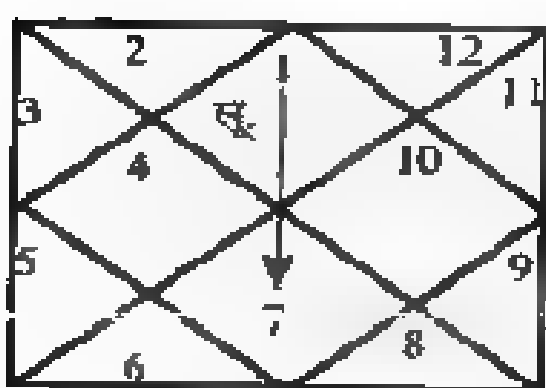
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। लग्न (प्रथम स्थान) में सूर्य मेष राशि में होने से उच्च का होगा। भृगुसूत्र के अनुसार–'**स्वोच्चे कीर्तिमान्**' जातक राजा के समान कीर्तिवान, परोपकारी एवं यशस्वी होता है। ऐसा जातक स्वतंत्र विचारों वाला एवं आरोग्यवान होता है। साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उच्च पद को प्राप्त करता है। सिरदर्द की शिकायत रहती है। दिमाग गर्म रहता है।

निशानी–सतयुगी राजा, हकीम, लालबत्ती का हकदार।

दशा–सूर्य की दशा बहुत अच्छा फल देगी।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार ऐसा जातक प्रशासनिक अधिकारी होता है। इसका पिता समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या प्रातः 6 से 8 बजे के मध्य होगा। जातक धनी व सुखी होगा। उसकी पत्नी सुन्दर होगी। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **सूर्य+मंगल– किम्बहुना योग**–सूर्य के साथ यदि लग्नेश मंगल हो तो, 'रुचक योग' भी बनेगा। जातक राजा होगा। विधायक, सांसद, मंत्री या श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ होगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ बुध हो तो '**बुधादित्य योग**' बनेगा। यह एक प्रकार का राजयोग है।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ भाग्येश गुरु जातक को भाग्यशाली बनाएगा। जातक का सही भाग्योदय प्रथम पुत्र जन्म के बाद होगा।

5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ स्वगृहाभिलाषी होगा। ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी व तेज स्वभाव की होगी।
6. **सूर्य+शनि–नीचभंग राजयोग**–सूर्य के साथ यदि शनि हो तो नीचभंग राजयोग बनेगा। इससे शनि का नीचत्व भंग हो जाता है। जातक राजा होगा। विधायक, सांसद, मंत्री या श्रेष्ठ राजनीतिज्ञ होता है।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु विद्या में बाधा डालेगा। राजकाज में भी बाधा आएगी।
8. **सूर्य+केतु**–जातक को तेजस्वी वक्ता बनाएगा। ऐसा जातक पराक्रमी होगा।
9. सूर्य लग्न में तथा चन्द्रमा चौथे हो तो यह भी एक उत्तम राजयोग की सृष्टि करेगा। ऐसे जातक का जन्म वैशाख शुक्ल अष्टमी प्रातः 6 से 8 बजे के मध्य को होगा।
10. सूर्य लग्न में तथा मंगल दसवें, गुरु चौथे या नवमें हो तो यह जबरदस्त राजयोग होगा। व्यक्ति मिनिस्टर (राजा) होगा। लालबत्ती का स्वामी होगा।

प्रथम भाव में सूर्य का उपचार–

1. माणिक रत्न का लॉकेट "सूर्य यंत्र" साथ जड़वाकर पहने।
2. यदि जातक अपने पैतृक मकान में हैण्डपम्प लगाए तो सूर्य का दुष्प्रभाव नष्ट होगा।
3. परोपकार एवं सेवा का कार्य अधिक करे।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
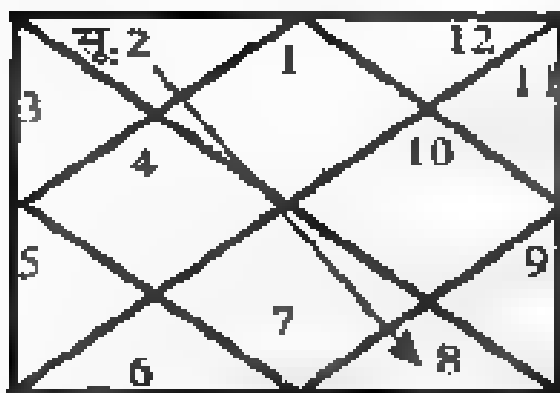
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। द्वितीय स्थान में सूर्य वृषभ राशि में होगा। ऐसा जातक समाज में इज्जत-मान पाने वाला, दस्तकार, फैक्ट्री का मालिक, राजदरबार (सरकार) से मान-सम्मान पाने वाला यशस्वी जातक होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है पर अपने कुटुम्ब के सदस्यों से वैमनस्य रखता है। इस जातक का धन शुभ मार्ग, शुभ कार्य में खर्च होता है। गृह द्वार पर (घोड़े) बड़े-बड़े वाहन खड़े होकर घर की शोभा बढ़ाते हैं।

निशानी–अपने भुजा बल का स्वामी। प्रथम पुत्र जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार जातक की वाणी अभिमानी व कटाक्ष वाली होती है।

दशा–सूर्य की दशा बहुत अच्छी जाएगी। धन की प्राप्ति होगी। सन्तति सुख भी मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक को **'माता की सम्पत्ति'** मिलेगी। जातक धनवान होगा। उसका पुत्र भी धनवान होगा। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या रात्रि 4 बजे के आसपास होगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।

2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ यदि लग्नेश मंगल हो तो जातक स्व पराक्रम से खूब धन कमाएगा। जातक का परिश्रम सार्थक रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य के साथ बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा यह पंचमेश सूर्य की षष्ठेश+तृतीयेश बुध के साथ युति होगी। बुध स्वगृही होगा। ऐसा जातक पराक्रमी होगा परन्तु धीरे धीरे, अटक-अटक कर बोलेगा।
4. **सूर्य+गुरु**—जातक भाग्यशाली होगा। तीर्थयात्रा धार्मिक कार्य में रुपया कमाएगा
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ यदि शुक्र हो तो **'पुत्रमूल धनयोग'** बनेगा। जातक पुत्र द्वारा धन, यश व कीर्ति को प्राप्त करेगा।
6. **सूर्य+शनि**—सूर्य के साथ शनि, पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय कराता है।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु धन के घड़े में छेद, धन की बरकत नहीं। पुत्र खर्चीले स्वभाव का होगा।
8. **सूर्य+केतु**—जातक की वाणी घमण्डी होगी पर अचानक बोला गया वचन सत्य हो जाएगा।

द्वितीय भाव में सूर्य का उपचार—

1. मुफ्त का माल नहीं खाना चाहिए
2. मुफ्त का दान नहीं ले।
3. नारियल का तेल या बादाम का तेल धर्म स्थान पर चढावें।
4. आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में
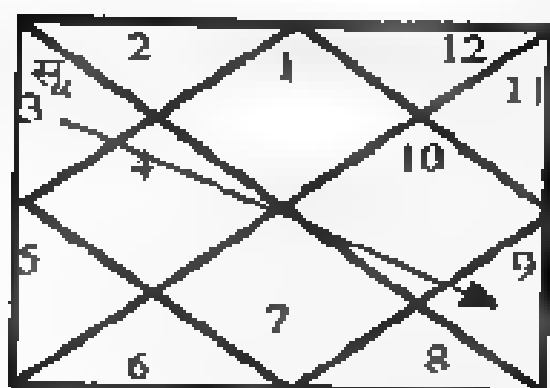
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। तृतीय स्थान में सूर्य मिथुन राशि में मित्रक्षेत्री होगा। राजदरबार (सरकार) में मुकदमे में हमेशा जीत पाने वाला, दृढ़ निश्चयी, भाइयों कुटम्बियों में मान पाने वाला, पिता की सम्पत्ति पाने वाला, गणित का जानकार ज्योतिष का विद्वान एवं महान पराक्रमी होगा।

अनुभव—'भोज संहिता' के अनुसार ऐसे जातक के मित्र धनी होते हैं। भाई प्रभावशाली पद पर होते हैं। जातक साहसी होगा। उसे धर्मगुरु के रूप में यश मिलेगा।

निशानी—धन का राजा, स्वयं कमाकर खाने वाला 'अनुजरहित' ज्येष्ठनाशः (भृगुसूत्र) घर मे आप बड़ा होगा। ज्येष्ठ भाई का नाश होगा।

दशा—सूर्य की दशा उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या

रात्रि को 2 से 4 बजे के बीच होगा। जातक पराक्रमी होगा पर पीठ पीछे इसकी बुराई होती रहेगी पर जातक मित्रों को वशीभूत करने में समर्थ होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–ऐसा जातक पराक्रमी होगा। पर भाइयों में नहीं बनेगी।
3. **सूर्य+बुध–बुधादित्य योग**–पंचमेश व तृतीयेश की युति मित्रों से लाभ दिलाएगी। कुटम्ब परिवार में प्रतिष्ठा रहती है। जातक महान पराक्रमी होता है। ऐसा जातक बहु प्रजावान सन्तति वाला होता है।
4. **सूर्य+गुरु**–जातक भाग्यशाली होगा एवं भाइयों की मदद के आगे बढ़ेगा। मित्रों की मदद रहेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**– धनेश एवं पंचमेश की युति विवाह के बाद धन प्राप्ति कराएगी। दूसरा भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।
6. **सूर्य+शनि**– सूर्य शनि की युति भाइयों में मनमुटाव उत्पन्न कराएगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य राहु परिजनों में विग्रह कराएगा पर जातक जबरदस्त पराक्रमी होगा।
8. **सूर्य+केतु**–जातक कीर्तिवान् होगा। कुटुम्बीजनों के लिए त्याग करेगा, पर उसका फल नहीं मिलेगा।

तृतीय भाव में सूर्य का उपचार–

1. नित्य माता का आशीर्वाद लेना चाहिए।
2. माता न हो तो सास, मौसी या बुआ को सेवा कर आशीर्वाद लें।
3. अपना चाल-चलन ठीक रखे।
4. माणिक्य युक्त 'सूर्य यंत्र' धारण करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
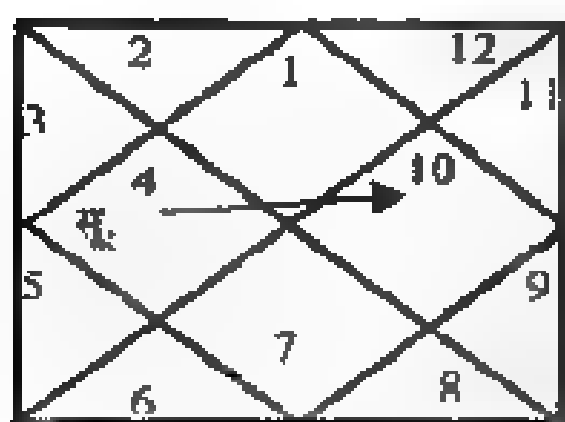
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफल दाई है। चतुर्थ स्थान में सूर्य कर्क राशि का होगा। ऐसा जातक राजदरबार में मान-सम्मान पाने वाला, समुद्री यात्रा या विदेश यात्रा से लाभ कमाने वाला, माता-पिता का भक्त, जमीन-जायदाद का स्वामी होता है। जातक को थोड़ा सहयोग मिलने पर सरकारी नौकरी मिल सकती है। जातक पढ़ा-लिख कर उच्च शैक्षणिक डिग्री को प्राप्त करेगा

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार कर्कस्थ सूर्य यदि चतुर्थ में हो तो जातक विद्यावान् होगा। उसको सरकारी नौकरी मिल सकती है

निशानी–दूसरों के लिए जोड़ जोड़ कर मरे.

दशा–सूर्य की दशा सुख में वृद्धि करेगी। राज्य में लाभ मिलेगा। सन्तति सुख मिलेगा। विद्या में वजीफा मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि का होगा। जातक को माता की सम्पत्ति एवं उत्तम वाहन का सुख मिलेगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक की माता का स्वास्थ्य गड़बड़ रहेगा। सुख-संसाधनों में कुछ न कुछ कमी बनी रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। यह पंचमेश सूर्य के साथ तृतीयेश+षष्टेश बुध की युति केन्द्रस्थान में होगी। यहां बुध शत्रुक्षेत्री होगा। जातक का पुत्र सुखी होगा, उत्तम मकान बनाएगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु हो तो **'हंसयोग'** के कारण जातक राजनीति में सक्रिय होकर उच्च पद को प्राप्त करेगा। जातक के पिता दीर्घजीवी होंगे। यदि यहां चन्द्रमा भी हो तो जातक लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी (हकदार) होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–धनेश+पंचमेश की युति में विवाह धन की प्राप्ति होगी। प्रथम सन्तति के बाद धन और बढ़ेगा
6. **सूर्य+शनि**–जातक के स्वयं का भगीरथ पिता की मृत्यु के बाद होगा। राजपथ में लाभ होगा।
7. **सूर्य+राहु**–जातक का पिता बीमार रहेगा। या पिता का साथ कम मिलेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ यदि राहु, केतु या शनि हो तो जातक की सन्तानों में केवल एक कन्या ही जीवित रह पाएगी।

चतुर्थ भाव में सूर्य का उपचार–

1. अंधों को भोजन दें।
2. शरीर पर सोना पहने।
3. सूर्य की मूर्ति या 'सुवर्ण फूल' गले में धारण करें।
4. अभिमंत्रित माणिक्य 'सूर्य यंत्र' के साथ गले में धारण करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
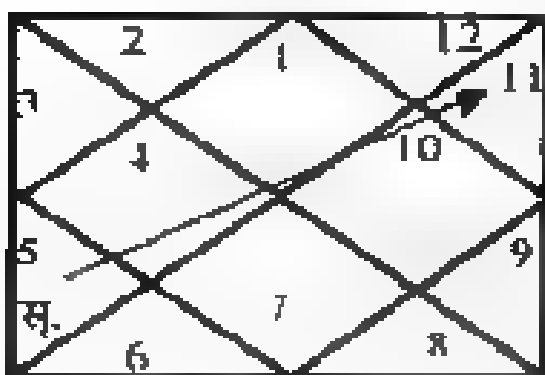
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है पांचवे स्थान में सूर्य सिंह राशि में होने से स्वगृही होगा। जातक राजा व राजा के समान प्रतापी होगा। सरकार से सम्मानित होगा। उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा। जातक ज्योतिष, तंत्र इत्यादि गुप्त विद्याओं का जानकार होगा। जातक का भाग्योदय सन्तान (पुत्र) प्राप्ति के बाद होगा।

अनुभव–पंचमेश पंचम भाव में स्वगृही होने से 'भोज संहिता' के अनुसार जातक को

ईश्वरीय अनुकम्पा प्राप्त होती रहेगी। यह 'पूर्वपुण्य' का भी भाव है। जातक की सन्तति सम्पन्न होगी। जातक को सरकारी नौकरी मिल सकती है।

निशानी—परिवार तरक्की का मालिक।

दशा—सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। जातक का भाग्योदय होगा। सरकारी क्षेत्र में सफलता, कोर्ट कचहरी मे विजय मिलेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 बजे के लगभग होता है। जातक की माता भाग्योदय में सहायक होगी। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **सूर्य+मगल**—यदि लग्नेश मंगल साथ हो तो तीन पुत्रों की सम्भावना रहती है। जातक शस्त्रविद्या का जानकार होता है। जातक शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होता है। यहां सूर्य के साथ मंगल की युति प्रबल राजयोग कारक है।
3. **सूर्य+बुध**— के साथ बुध हो तो **'बुधादित्ययोग'** बनेगा। यह पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्ठेश बुध के साथ युति पचम भाव में होगी जहां सूर्य स्वगृही होगा। यह युति राजयोग प्रदाता साबित होगी। मित्रों की वजह से जातक को सफलता मिलती रहेगी।
4. **सूर्य+गुरु**—प्रथम पुत्र होगा। जातक का पुत्र धनी होगा। स्वयं आध्यात्मिक विद्या का ज्ञाता होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—विद्या से भाग्य चमकेगा। जातक का पुत्र धनी होगा।
6. **सूर्य+शनि**—जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा। सम्भवतः पुत्र सन्तति भी।
7. **सूर्य+राहु**—पितृदोष से जातक ग्रसित रहेगा। परिश्रम का फल नहीं जातक जादू टोनों में विश्वास रखेगा।
8. **सूर्य+केतु**—जातक भूतविद्या का जानकार होगा। जातक जादू-टोनों में विश्वास रखेगा.
9. सूर्य के साथ राहु या केतु हो सर्प के शाप से पुत्र सन्तान का नाश होता है 'राहुकेतु युते सर्पशापात् सुतक्षमः' (भृगुसूत्र) परन्तु काल सर्पशान्ति से सन्तान होगी।

पंचम भाव में सूर्य का उपचार—

1. अपने वायदे-वचन के प्रति पाबन्द रहे।
2. अपनी खानदानी परम्परा को नष्ट न करे।
3. लाल मुंह के बन्दरों को गुड़-चना, फल खिलावे।
4. बजरंग बाण का पाठ करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में

मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। षष्टम स्थान में सूर्य कन्या राशि का होकर मित्र क्षेत्री होता है। जातक बहुत बड़े परिवार वाला, राजदरबार
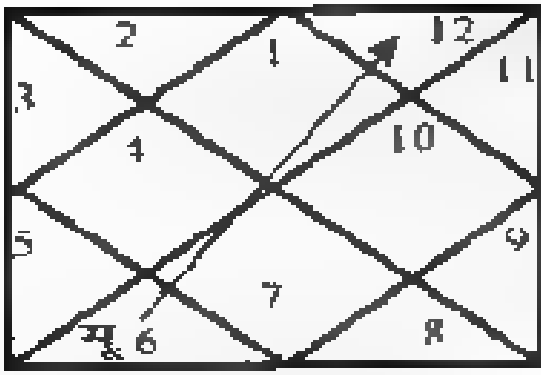
(सरकार) में सम्मान पाने वाला, मुकदमे में विजयी होगा। जातक का जन्म पिता के लिए शुभ परन्तु खुद के पुत्र सन्तति में बाधा 'पुत्रहीन योग' के कारण हो सकता है। विद्या के लिए भी संघर्ष करना पड़ेगा पर सूर्य उपासना, आदित्यहृदयस्तोत्र के पाठ से सब ठीक होगा।

अनुभव–सूर्य की यह स्थिति 'सत्यजातकम्' के अनुसार जातक को कुटुम्ब विवाह की ओर प्रेरित करती है। सरकारी व्यक्ति के साथ झगड़ा जातक को तकलीफ में डाल सकता है।

निशानी–धन से बेफिक्र, भाग्य से सन्तुष्ट। जातक का जन्म पिता के घर से बाहर (ननिहाल) में होता है

दशा–सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–यदि सूर्य के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म अश्विन कृष्ण अमावस्या, रात्रि 9 से 8 बजे के मध्य होगा। जातक अभाग्यशाली होगा। पुत्र सुख की कमी, मातृसुख की कमी महसूस करेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश बुध के साथ युति राजयोगकारक है। यहां बुध उच्च का होगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। विद्या एवं पुत्र सुख में रुकावट महसूस होगी। जातक अटक-अटक कर बोलेगा, ऐसा जातक अपने कुटुम्ब में ही विवाह करेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु **'विपरीत राजयोग'** बनाएगा। जातक धनी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र पत्नी में नित्य कलह, आर्थिक तंगी को दिग्दर्शित करता है।
6. **सूर्य+शनि**–यदि साथ में शनि हो तो खुद की जाति में बहुत शत्रु होंगे। जातक षड्यंत्र का शिकार होगा। पिता-पुत्र की नहीं बनेगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु पितृदोष को बताता है। परिश्रम का लाभ नहीं शत्रु तंग करेंगे।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु संघर्षमय स्थिति, दुर्घटना योग से पांव में चोट पहुंचाएगा।
9. सूर्य के साथ राहु, केतु हों तो बीस वर्ष की आयु में नेत्र टेढे हो जाएंगे या नेत्र दोष होगा। शुभ ग्रह देखे तो दोष नहीं होगा। जातक सन्तानहीन हो सकता है। अथवा अदालत में दण्डित भी हो सकता है।

षष्टम भाव में सूर्य का उपचार–

1. बन्दर को चने देना चाहिए।
2. भूरी च्यूंटी को सतनाजा सप्तधान डालना चाहिए।

3. माता के पाव धोकर आशीर्वाद लेना।
4. सूर्य को लाल पुष्प या कुंकुम डालकर अर्घ्य दे।
5. शत्रुनाश के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें
6. नेत्रपीड़ा की निवृत्ति हेतु 'नेत्रोपनिषद' का पाठ करे।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में
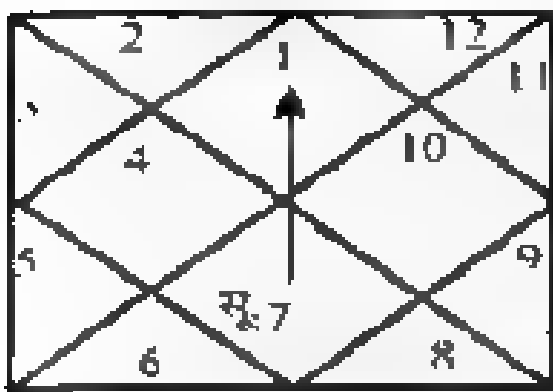
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। सप्तम स्थान में सूर्य तुला राशि के नीच का होगा। जातक अभिमानी होगा उसका विवाह विलम्ब से होगा। पच्चीसवें वर्ष जातक देशान्तर में जाएगा। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी। जातक मुकदमे में समझौता करने वाला होता है

अनुभव—ऐसे जातक का पुत्र विदेश जाकर धनी, मानी व दानी होता है। भोज संहिता के अनुसार पंचमेश नीच का होकर यदि सप्तम भाव में हो तो जातक अपनी पत्नी के रूप की नजर, नीची नजर से देखेगा।

निशानी—कम कबीला, डरता-डरता रहे।

दशा—सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। जातक 24 वर्ष की आयु के बाद उन्नति पथ पर आगे बढ़ना शुरू हो जाएगा

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को सायं 6 से 7 बजे के मध्य होगा जातक सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा। यह युति राजयोग कारक है।
2. **सूर्य+मंगल**— की युति यहा राजयोग कारक साबित होगी। लग्नेश का लग्न को देखना बहुत बड़ी बात है। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।
3. **सूर्य+बुध**—यदि सूर्य के साथ बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। वस्तुतः यह पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। युति केन्द्रवर्ती होने से जातक राज्यतुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक के मित्र शक्तिशाली होंगे। जातक को परिजनों एवं मित्रों से लाभ मिलता रहेगा।
4. **सूर्य+गुरु**— यहां भाग्येश+पंचमेश की युति जातक का भाग्योदय विवाह के बाद एवं दूसरा भाग्योदय प्रथम पुत्र के बाद होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ यदि शुक्र हो तो भी नीचभंग राजयोग बनेगा **'पुत्रमूल धनयोग'** के कारण जातक को पुत्र द्वारा धन यश व कीर्ति की प्राप्ति होगी ससुराल से धन मिलेगा। विवाह के तत्काल बाद किस्मत चमकेगी।

6. **सूर्य+शनि–नीच भंग राजयोग**–सूर्य के साथ शनि हो तो सूर्य का नीचत्व भंग होकर नीचभंग राजयोग बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करेगा। मुकदमे में जीत मिलेगी।
7. **सूर्य+राहु**–पत्नी से झगड़ा, गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण रहेगा। पत्नी घमण्डी होगी
8. **सूर्य+केतु**–दाम्पत्य जीवन में विवाद की स्थिति रहेगी
9. यदि सूर्य के साथ राहु, केतु हो तो जातक अभक्ष्य भक्षण करेगा। अपनी स्त्री से द्वेष करेगा। उसके दो पत्नियां होंगी।

सप्तम भाव में सूर्य का उपचार–

1. रात को रोटी आदि पकाने के बाद आग गैस, चूल्हा स्टोव से दूध बहावे या छींटे दे।
2. रविवार के दिन जमीन में तांबे के टुकड़े दबाना चाहिए।
3. भोजन करने के पूर्व भोजन का कुछ अंश आहुति के रूप में अग्नि में डाले तो सूर्य का दोष कम होगा।
4. माणिक सहित शुद्ध स्वर्ण-पत्र पर मण्डित सूर्य की मूर्ति गले में धारण करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में
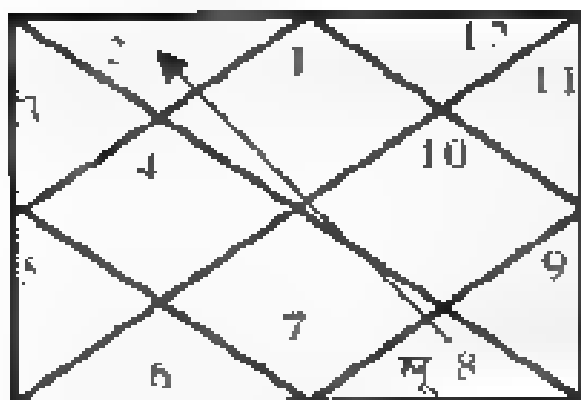
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण, शुभफलदाई है। अष्टम स्थान में सूर्य वृश्चिक राशि का होगा। ऐसा जातक अल्पपुत्र व नेत्ररोगी होगा। उजड़े हुए को बसाने वाला, दूसरों का सच्चा हमदर्द होगा, जातक तपस्वी होगा एवं गुप्त विद्याओं का जानकार होगा।

अनुभव–पंचमेश सूर्य यदि अष्टम स्थान में हो तो जातक का पुत्र दुर्भाग्यशाली होगा। जातक की वाणी में कटुता रहेगी।

निशानी–तपस्वी राजा, सांच को आंच।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या का सायं 4 से 6 बजे के मध्य का होगा, जातक की माता को कष्ट होगा। चन्द्रमा यहाँ नीच का होने से सुख में भी कमी आएगी, वाहन दुर्घटनाग्रस्त होगा
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य मंगल युति यहां निरर्थक होगी। यदि इन दोनों के साथ राहु भी हो तो जातक को किसी [illegible] पर [illegible] सुख नहीं मिलेगा। प्रथम तो सन्तति नहीं होगी, अगर होगी तो [illegible]। सूर्य के साथ यदि मंगल हो तो दसवें वर्ष में सिर पर चोट लगेगी। जातक अल्पसन्तति व अल्पायु होगा। सूर्य की उपासना, श्री हनुमान जी की उपासना से आयु बढ़ेगी

3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ बुध हो तो **'बुधादित्ययोग'** बनेगा पर यह पंचमेश सूर्य की युति तृतीयेश+षष्ठेश बुध के साथ अष्टम भाव में होगी। जातक अटक-अटक कर बोलेगा, पराक्रम भंग होगा फिर भी कोई काम जीवन मे रुका हुआ नहीं होगा जातक प्रभावशाली होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–गुरु के कारण **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनवान होगा पर दुश्मन बहुत होंगे।
5. **सूर्य+शुक्र**–सप्तमेश आठवें शत्रु ग्रह के साथ होने में विलम्ब विवाह का योग बनेगा। गृहस्थ जीवन मे कलह संघर्ष का साम्राज्य रहेगा। धन की तंगी रहेगी।
6. **सूर्य+शनि**–सूर्य के साथ शनि व्यापार में नुकसान दिलाएगा। दुर्घटना योग भी बनता है। पैरों में चोट पहुंच सकती है।
7. **सूर्य+राहु**–यह युति दुर्घटना कारक है। जातक की हड्डिया जरूर टूटेगी। दुश्मनों द्वारा शारीरिक चोट सम्भव है।
8. **सूर्य+केतु** सूर्य केतु की युति षड्यंत्र की द्योतक है। जातक के विद्याध्यन में बाधा आएगी एवं सन्तान कहने में नहीं रहेगी।

अष्टमभाव में सूर्य का उपचार:

1. दक्षिण दिशा के दरवाजे वाले मकान में नहीं रहना चाहिए
2. मकान में प्रवेश द्वार वास्तुदोष नाशक गणपति लगावे।
3. ससुराल के घर में न रहे।
4. बड़े भाई और गाय की सेवा करने से सूर्य का अशुभत्व नष्ट होगा।
5. सूर्य का स्वर्णफूल गले में धारण करे।
6. चोरी ठगी से दूर रहे अन्यथा नुकसान उठाना पड़ेगा।
7. शत्रुभय नाश हेतु आदित्य हृदय-स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
8. नेत्रपीड़ा से बचने हेतु 'नेत्रोपनिषद्' का पाठ करे।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में

मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। नवम स्थान में सूर्य धनु राशि का होगा। ऐसा जातक राज दरबार में लाभ पाने वाला, [illegible] [illegible] 'अर्जित [illegible],' [illegible] महत्व [illegible] [illegible] [illegible] करने [illegible] की प्राप्ति होती है।

अनुभव–पंचमेश सूर्य नवम स्थान में होने से जातक का पिता महान दानी व यशस्वी होगा जातक को देवकृपा मिलती रहेगी।

पुत्रेशे नवम याने शोभनं समुदीरितम्।
तत्रैव शुभयोगश्चेत् तथापि कीर्तिमान्भवेत्

–सत्यजातकम अनु./09

'भाव मंजूषा' के अनुसार जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी.

निशानी–लम्बी उम्र, सूर्य ग्रहण के बाद का सूर्य जातक साहसी होगा।

दशा–सूर्य की दशा बहुत अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होगा। जातक को माता-पिता दोनों का सुख व प्यार मिलेगा। पिता की सम्पत्ति मिलेगी। यह युति राजयोग कारक होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल हो तो यह युति राजयोग कारक है। यदि यहां गुरु भी हो तो जातक लालबत्ती वाली गाड़ी का हकदार होगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो '**बुधादित्य योग**' बनेगा। पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश बुध के साथ युति भाग्य स्थान में होगी जहां बुध अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक परमभाग्यशाली होगा तथा कुटुम्ब-परिवार का शुभचिन्तक व सहायक होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक महान पराक्रमी होगा। जातक का पिता दीर्घायु वाला, जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसा जातक पैतृक व्यवसाय में रुचि रखता है
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक धनवान होगा तथा पत्नी व सन्तान की तरफ से सुखी होगा
6. **सूर्य+शनि**–जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक स्वतंत्र व्यापार में आगे बढ़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**–पिता की सम्पत्ति में बाधा या पिता की अल्पायु में मृत्यु सम्भव है। कोर्ट-केस में पराजय सम्भव है।
8. **सूर्य+केतु**–पिता की सम्पत्ति को लेकर विवाद सम्भव है।

नवम भाव मे सूर्य का उपचार–

1. पीतल के बर्तनों का प्रयोग भोजनशाला में करें।
2. स्वर्ण पत्र पर सूर्य देव की मूर्ति बनाकर गले में धारण करें
3. सूर्य भगवान को नित्य अर्घ्य दें।
4. आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें
5. पिता की सेवा करें

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
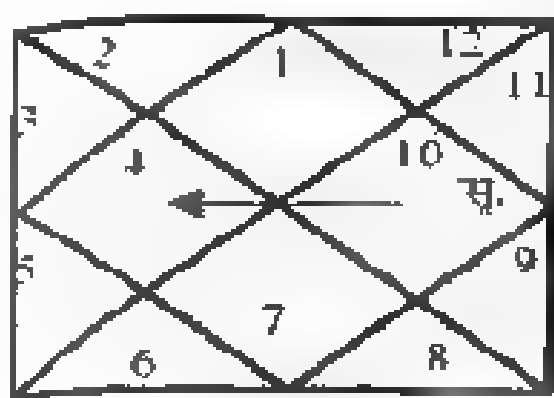
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। दशम स्थान में सूर्य मकर राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। जातक राजा, राजा तुल्य प्रतापी होगा। बड़ा नेता होगा। बड़े मकान व बड़े वाहन का स्वामी होगा। अठ्ठारहवें वर्ष में विद्या की लाईन पकड़ कर जातक ख्यातिवान होगा। जातक की सन्तति उत्तम होगी। जातक को कमाने हेतु बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

अनुभव—सत्यजातकम् के अनुसार पंचमेश सूर्य यदि दशम भाव में हो

> **पुत्रेशे दशमयाते पुण्यकृत्स भविष्यति।**
> **धर्मशालामन्दिराणां जीर्णोद्धारमाचरेत्॥** -*सत्यजातकम् प.5/9*

ऐसा जातक किसी मन्दिर, धर्मशाला एवं परोपकार के महान कार्य अपने हाथ से करता है।

निशानी—धन का मालिक मगर वहमी।

दशा—सूर्य की दशा अच्छा फल देगी। राज (सरकार) में मान सम्मान मिलेगा। सन्तान पक्ष में भी लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**— सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या को मध्य दिन में होगा। यहां से चन्द्रमा अपने ही घर को पूर्ण दृष्टि में देखेगा फलतः जातक को उत्तम वाहन, मकान व नौकर चाकर का पूर्ण सुख मिलेगा। यह युति राजयोगकारक है।
2. **सूर्य+मंगल**— यदि सूर्य के साथ मंगल हो तो **'रुचक योग'** के कारण जातक निश्चय ही राजा (राज्याधिकारी) आई. एस., आर. एस. अफसर होगा। यहां यदि शनि भी हो तो जातक लालबत्ती की गाड़ी का मालिक होगा।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य के साथ यदि बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। युति केन्द्र में होने में बलवान है। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा यहां चन्द्रमा अपने घर को पूर्ण दृष्टि में देखेगा फलतः माता की सम्पत्ति मिलेगी। वाहन सुख मिलेगा। खेती की जमीन से लाभ होगा। राज (सरकार) में सम्मान होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—यहा गुरु जातक को राजकीय सम्मान दिलाएगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—जातक को पत्नी व संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक परिवार का नाम रोशन करेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहा शनि के कारण **'शशयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा परन्तु किस्मत पिता की मृत्यु के बाद चमकेगी।

7. सूर्य+राहु– [illegible] में कारागार में दण्ड दिया सकता है।
8. सूर्य+केतु– [illegible] उसका व्यक्ति धोखा देगा।

दशम भाव में सूर्य का उपचार–

1. ऐसा जातक [illegible] कपड़े न पहने न ही इस रंग के रूमाल भी पास में रखें।
2. बुजुर्गी मकान में हैण्डपम्प लगावें।
3. भूरी भैंस या भूरा बछड़ा पालें।
4. नंगे सिर न रहें। शिखा रखें या लाल, सफेद पीले रंग की टोपी या साफा बांधे,
5. नेवला पालें

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
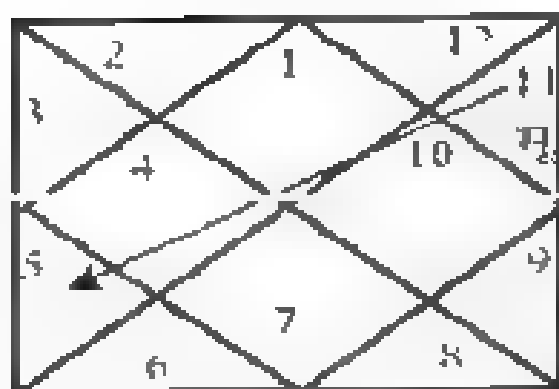
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। एकादश स्थान में सूर्य कुम्भ राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसा जातक गुप्त व रहस्यमय विद्याओं का जानकार विख्यात तान्त्रिक व ज्योतिषी होता है। ऐसा जातक शाकाहारी, ईमानदार, भाई बन्धुओं का सेवक होता है। डॉक्टरी या मेडिकल लाईन में रुचि रखने वाला होता है। जातक धनवान होता है तथा बुरे कामों से दूर रहने वाला होता है तथा दूसरों के लिए अपना सबकुछ दाव में लगा देता है।

निशानी–पूर्ण धर्मी, मगर अपनी ही ऐश पसन्द।

अनुभव–पंचमेश यदि लाभस्थान में हो तो जातक अपने पुत्र से धन, यश, कीर्ति अर्जित करेगा। उसके मित्र प्रभावशाली व धनवान होंगे। उसे व्यापार में अचानक भारी लाभ होगा।

दशा–भोज संहिता के अनुसार सूर्य की महादशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को प्रात: 9 से 11 बजे के मध्य होगा, सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक प्रज्ञावान होगा। उसके पुत्र व पुत्री दोनों सन्तति होगी। सन्तान आज्ञाकारी होगी, जातक उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करेगा। विद्या फलवती होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य मंगल युति यहां राजयोग कारक है। यदि यहां शनि भी हो तो जातक लाल बत्ती की गाड़ी का उम्मीदवार होगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो '**बुधादित्य योग**' बनेगा, पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्ठेश बुध के साथ एकादश स्थान में युति सार्थक होगी। सूर्य यद्यपि शत्रुक्षेत्री है तथापि जातक को पुत्र सन्तति का लाभ देगा। जातक प्रज्ञावान होगा
4. यदि सूर्य के साथ बुध हो तो जातक को कुष्ट रोग होने की सम्भावना रहती है, शुभ दृष्टि हो तो निवृत्ति होगी।

'षष्ठेशयुते कुष्ठरोगयुतः शुभदृष्टियुते निवृत्तिः' (भृगुसूत्र)

5. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु जातक को आध्यात्मिक विद्या का धनी बनाएगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि एवं पुत्र सुख मिलेगा।
6. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक की रुचि कला-संगीत, फिल्म क्षेत्र में बढ़ाएगा एवं उसमें सफलता भी देगा।
7. **सूर्य+शनि**–सूर्य के साथ यदि शनि हो तो जातक को देवता की कृपा से सिद्धि मिलती है। उसे पूर्ण शय्यासुख मिलता है। यदि अन्य बाधा (ऑपरेशन इत्यादि) न हो तो पांच पुत्रों की प्राप्ति होती है, पच्चीसवें वर्ष में वाहन मिलता है।
8. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ व्यापार में नुकसान कराएगा। एक बार सम्पूर्ण व्यापार बदलना पड़ेगा।
9. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु सरकारी पराजय, उद्योग में घाटे का संकेत देता है।

एकादश भाव में सूर्य का उपचार–

1. शराब, मांस-मछली खाना छोड़ दें।
2. सुवर्ण पत्र पर सूर्य की मूर्ति बनवाकर गले में धारण करें।
3. मूली का दान रात्रि में सिरहाने रखकर सुबह मंदिर में देना।
4. झूठा खाना व झूठ बोलना दोनों से परहेज रखें।
5. जीवित बकरा कसाई से छुड़ावें। जीवनदान करें।

मेषलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में
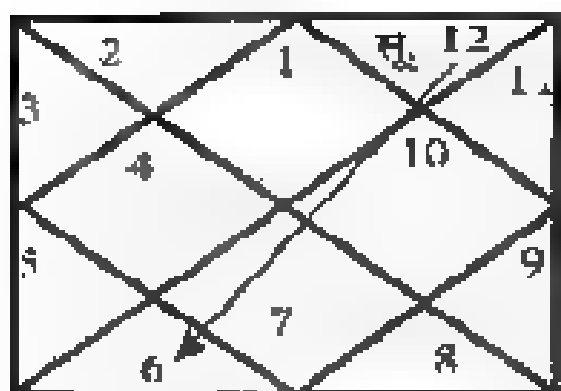
मेषलग्न में सूर्य पंचमेश (त्रिकोणपति) होने के कारण शुभफलदाई है। द्वादश स्थान में सूर्य मीन राशि का होने से मित्रक्षेत्री है। ऐसा जातक विदेशी व्यापार में रुचि रखने वाला (Export-Import) होता है। जातक विदेश यात्राएं करता है। जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेशों विदेशों में कमाता है। जातक गूढ़ व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है।

अनुभव–सत्यजातकम् के अनुसार–'पुत्रेशे द्वादशस्थे ब्रह्मध्यान परो भवेत्।'

पंचमेश यदि द्वादश स्थान में हो तो जातक पुत्र के दुःख (मृत्यु) से सन्यासी हो जाता है सूर्य बारहवें टैक्स व फाईन के रूप में जातक को दण्ड दिलाता है। 'भोज संहिता' के अनुसार यदि सरकारी अधिकारी में झगड़ा हुआ तो जातक को जेल भी हो सकती है।

निशानी–सुख की नींद मगर पराई आग में जल मरने वाला

दशा–सूर्य की दशा मिश्रित फलकारी होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या दिन

को 7.30-9 बजे के मध्य होगा। जातक को नेत्रपीड़ा हो सकती है। खासकर वामनेत्र (left eye) में। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'लग्नभंग योग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनाएगा, फलतः जातक धनवान होगा। परन्तु प्रथम प्रयास में सफलता नही मिलेगी।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ यदि बुध हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्ठेश के साथ युति बारहवें स्थान में है, दोनों की दृष्टि छठे स्थान पर है फलतः रोग व शत्रु का नाश करने में यह युति फलदायक है। जातक यात्राओं में ज्यादा रहता है।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ यदि गुरु हो तो स्वगृही होगा जातक धार्मिक यात्राओं, तीर्थ यात्राओं, परोपकार के कार्य, धर्मशाला, मन्दिर निर्माण व प्रतिष्ठा पर रुपया खर्च करता है
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ यदि शुक्र हो तो जातक के पुत्र या शिष्य बलवान होते हैं। जिनके कारण वह विदेश जाता है।
6. **सूर्य+शनि**–सूर्य के साथ यदि शनि हो तो जातक का बिना आंगन का मकान होता है। दिमागी खराबी का तनाव अधिक रहेगा।
7. **सूर्य+राहु**–विद्या बाधा संतान में बाधा आएगी। उपाय कराना जरूरी है
8. **सूर्य+केतु**–जातक को व्यर्थ का यात्राएं बहुत होगी। पुत्र संतान को लेकर चिन्ता बनी रहेगी।

द्वादश भाव में सूर्य का उपचार–

1. मशीनरी के काम न करें।
2. मकान में आंगन जरूर रखना एवं सूर्य की रोशनी आनी चाहिए।
3. भूरी चींटी को कीड़ी नगरा देवें।
4. बिजली का सामान मुफ्त न लेना, बिजली चोरी न करना।
5. गले में सुवर्णफूल पहने।
6. रविवार के नियमित व्रत करें।
7. माणिक्य युक्त 'सूर्य यंत्र' गले में पहने।
8. गुड़ की 11 डलियां रविवार के दिन चलते पानी में बहावें।
9. घर का आंगन खुला रखें तो सूर्य देवता प्रसन्न रहेंगे।
10. रविवार के दिन चारपाई या पलंग के पायों में सात तांबे की कील लगावें। नींद अच्छी आएगी।

❑❑❑

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति प्रथम भाव में

2	1 चं.	12	11
3	4	10	9
5	7	8	
6			
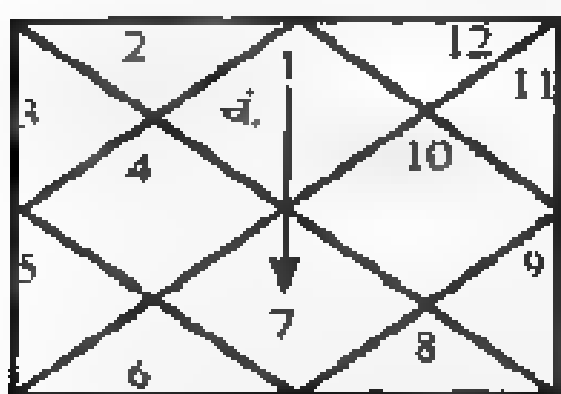
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण, लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। चन्द्रमा यहा मेष राशि होकर लग्न में बैठा है। उच्चाभिलाषी है एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

ऐसा जातक धनवान होता हुआ माता का सेवक होता है। स्त्री व माता की सलाह मानकर चलने वाला, चाल-चलन का नेक जातक होता है। जातक योग क्रोधी होगा।

निशानी—जातक के घर की रसोई में चांदी के बर्तन होते हैं। चन्द्रमा की चांदनी जातक को प्रिय लगेगी। जातक शास्त्रज्ञ होगा।

दृष्टि—चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि को मित्र दृष्टि से देखेगा जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक को सम्पूर्ण स्त्री सुख मिलेगा।

विशेष—माता के जीवित रहने तक जर दौलत का स्वामी होगा।

दशा—'भोजसंहिता' के अनुसार चन्द्रमा की दशा शुभ फल देगी। चूंकि चन्द्रमा उच्चाभिलाषी होगा अत: जातक चन्द्रमा की दशा में विशेष महत्वाकांक्षी होगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द+सूर्य**—यदि चन्द्र के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या की प्रात: का होगा तथा जातक उच्च राज्याधिकारी होगा क्योंकि सूर्य यहा त्रिकोणाधिपति होकर उच्च का होगा।
2. **चन्द+मंगल**—चन्द्रमा के साथ मंगल होने से **'महालक्ष्मी योग'** एवं **'कचक योग'** बनेगा। 28 वर्ष की आयु मे जातक धन कमाना शुरू कर देगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं वैभवशाली होगा।

   'लग्नेशे बलरहिते व्याधिवान्' लग्नेश मंगल यदि बलरहित है तो जातक सदैव रोग से ग्रसित रहेगा।

   'लग्नेश शुभदृष्टे आरोग्यवान्' लग्न या लग्नेश मंगल पर शुभ ग्रहों की दृष्टि होगी तो जातक सदैव हष्टपुष्ट व आरोग्यवान होगा।

3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ बुध जातक का जीवन सघर्षमय बनाएगा भाई बहनों से विचार कम मिलेंगे।
4. **चन्द्र+गुरु** —गुरु+चन्द्र की युति लग्न में **'गजकेसरी योग'** के साथ जबरदस्त राजयोग प्रदाता होगी
5. **चन्द्र+शुक्र**—चन्द्रमा के साथ शुक्र होने से जातक स्वयं सुन्दर होगा एव उसका जीवन साथी भी सुन्दर होगा जातक सुखी जीवन जीएगा। जातक के पास दो गाड़िया होगी
6. **चन्द्र+शनि** -चन्द्रमा के साथ शनि नीच का होगा। ऐसा जातक व्यापारी होगा पर उसकी सोच नकारात्मक होगी। जातक ईर्ष्यालु स्वभाव का होगा।
7. **चन्द्र+राहु**—चन्द्रमा के साथ राहु होने से जातक झगड़ालू (लड़ाकू) स्वभाव का होगा। हठी होगा, बात का धनी होगा। विचारों मे उतार-चढ़ाव ज्यादा आएगे।
8. **चन्द्र+केतु**—चन्द्रमा के साथ केतु होने से जातक थोड़ा क्रोधी स्वभाव का होगा। पत्नी से विचारधारा कम मिलेगी।

प्रथम भाव में चन्द्रमा का उपचार—

1. चांदी के बर्तन में पानी पीया करें, तो भाग्य चमकेगा।
2. बट के वृक्ष को सोमवार के दिन कभी-कभी पानी डालें।
3. माता की सेवा करे एव माता से आशीर्वाद रूप में (चावल, चादी) लेना।
4. विवाह 24 वर्ष के बाद ही करना चाहिए।
5. यदि मानसिक तनाव ज्यादा है तो पलग के चारों पायों मे चार ताबे की कीले सोमवार को लगा दे तो जातक को अच्छी नींद आएगी।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति द्वितीय भाव में
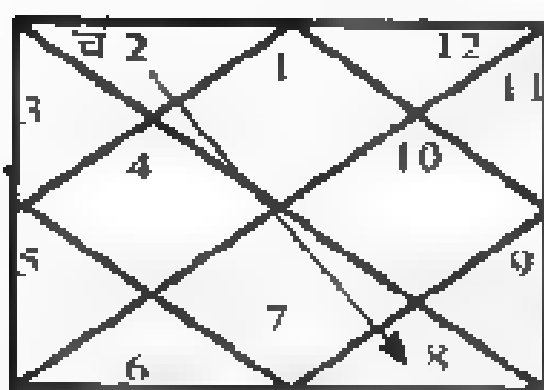
मेषलग्न मे चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एव लग्नेश मगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। चन्द्रमा वृष राशि मे होकर दूसरे स्थान मे होने से उच्च का होगा। उच्च के चन्द्रमा की दृष्टि अष्टम स्थान पर होगी। ऐसा व्यक्ति सकारात्मक विचारों वाला, रोते हुए को हसाने वाला मीठी वाणी बोलने वाला विनम्र स्वभाव का व्यक्ति होता है। 24 वर्ष की आयु मे जातक कमाना शुरू कर देगा। अपनी खुद की माया स्वय पैदा करेगा।

निशानी—जन्म छत पर होगा। सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ होगा जातक को पिता या ससुराल मे धन सम्पत्ति मिलेगी।

विशेष—'भावाधिपे बलयुते अनेक वाहन सिद्धिः' चतुर्थ भाव का स्वामी होकर बलवान होने से जातक के पास उत्तम वाहन होता है।

दशा—भोजसंहिता के अनुसार चन्द्रमा की दशा जातक को धनवान व सुखी बनाएगी। चन्द्रमा की दशा में 'मोती', 'चन्द्रयन्त्र' के साथ पहनने से ज्यादा अनुकूल फल मिलेंगे।

दृष्टि—उच्च के चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि अष्टम भाव में अपनी नीच वृश्चिक राशि पर होगी। यह दृष्टि जातक को दीर्घायु प्रदान करेगी रोग से लडने की शक्ति देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या ब्रह्ममुहूर्त 4 से 5 के मध्य होगा। जातक का भाग्योदय पुत्र जन्म के बाद होगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक अपने परिश्रम से खूब धन कमाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ बुध धन के मामले में थोड़ा संघर्ष रहेगा। जातक अपनी बात को खुद ही काट देगा।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ गुरु होने पर **'गजकेसरी योग'** बनेगा। सुखेश व भाग्येश की युति जातक को सफल व्यक्ति बनाएगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**—यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। अर्थात् इससे अधिक और क्या? चन्द्रमा उच्च का एवं शुक्र स्वगृही। बलवान धनेश की चतुर्थेश से युति होने पर **'मातृमूलधन योग'** बनता है अर्थात् जातक को माता या ननिहाल की सम्पत्ति मिलती है। जातक अत्यधिक धनवान होता है।
6. **चन्द्र+शनि**—चन्द्रमा के साथ शनि होने से जातक धनवान होगा। सुखेश दसमेश के युति जातक को बड़ा व्यापारी बनाएगी।
7. **चन्द्र+राहु**—चन्द्रमा के साथ राहु होने से जातक की वाणी छल प्रपंच वाली होगी। धन के घड़े मे छेद होने धन संग्रह में बाधा आएगी।
8. **चन्द्र+केतु**—चन्द्रमा के साथ केतु होने से धनसंग्रह में बाधा रहती है। जातक मधुर वक्ता होते हुए वाणी व्यंग्यात्मक एवं दम्भपूर्ण होती है।

   यदि चन्द्रमा पूर्ण बली हो तो जातक बहुत धनवान होगा।

   इस चन्द्रमा के साथ कोई भी शुभग्रह हो तो 'शुभयुते बहुविद्यवान' जातक उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करेगा। शास्त्रों का ज्ञाता होगा। यदि पापग्रह हो 'पापयुत विद्याहीन:' तो विद्या में रुकावट आएगी

द्वितीय भाव में चन्द्रमा का उपचार—

1. माता का आशीर्वाद पैरी पैना कहकर लेना।
2. माता की सेवा करें एवं माता से आशीर्वाद रूप में (चावल, चांदी) लेना।
3. घर में घटी, शंख न रखना

4. मकान की नींव में चांदी का सिक्का दबाना।
5. मानसिक तनाव ज्यादा हो तो मोती के साथ 'चंद्र यंत्र' पहने।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में
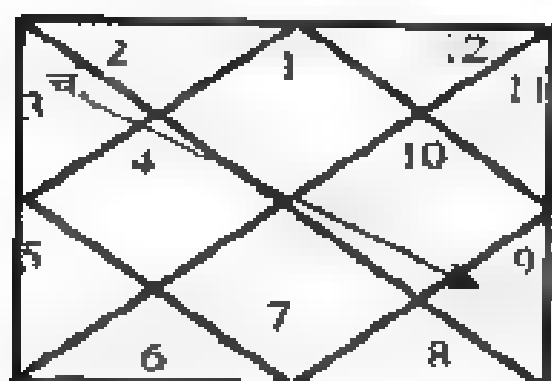
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है. तृतीय स्थान में चन्द्रमा मिथुन राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। यहां चन्द्रमा व्यथित रहेगा। ऐसा जातक लम्बी यात्राएं करने वाला, भाई-बहन का पालन-पोषण करने वाला। जातक कल्पना शक्ति से कमाने वाला, लेखक, फिल्म डायरेक्टर, अच्छा तैराक व खिलाड़ी हो सकता है। भाग्य स्थान पर चन्द्रमा की दृष्टि होने के कारण आयु के 16 एवं 24 वर्ष महत्त्वपूर्ण होंगे।

निशानी—जातक लम्बी उम्र का मालिक होगा।

अनुभव—जातक के पीठ पीछे बुराई होगी। जातक के परिजन एवं मित्र विश्वासपात्र नहीं होंगे।

दृष्टि—यहां मिथुन राशि गत चन्द्रमा की दृष्टि भाग्य भवन में धनु राशि पर होगी। चन्द्रमा की यह दृष्टि जातक के भाग्योदय में सहायक होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिल सकती है।

दशा—भोजसंहिता के अनुसार चन्द्रमा की दशा अच्छी जाएगी परन्तु 30% प्रतिकूल फल भी मिलेंगे।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ यदि सूर्य हो तो जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या की रात्रि दो बजे के आस-पास होगा। जातक को भाइयों की मदद रहेगी।
2. **चन्द्र+मंगल**—यदि चन्द्र के साथ मंगल हो तो '**लक्ष्मी योग**' बनेगा। जातक 28 वर्ष बाद धनवान होगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ यदि बुध हो तो कुटुम्ब में कलह रहेगा। परस्पर शत्रुग्रहों की युति से मित्र एवं कुटुम्बी पीठ पीछे बहुत बुराई करेंगे। जातक की बहनों की संख्या अधिक होगी।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ यदि गुरु हो तो '**गजकेसरी योग**' बनेगा फलत. जातक को पिता का धन मिलेगा। पत्नी ससुराल से लाभ, व्यापार से लाभ होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**—धनेश+सप्तमेश शुक्र की युति मित्रों से लाभ दिलाएगी। जातक सुखी होगा। जातक अपने पुरुषार्थ से अपना मकान बनाएगा।

6. **चन्द्र+शनि** -सुखेश एवं दसमेश+लाभेश की युति में जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक सुखी होगा।
7. **चन्द्र+राहु**—सुखेश चन्द्र के साथ राहु होने से मकान के प्रति विवाद रहेगा पूर्ण सुख में कुछ न कुछ कमी महसूस होती रहेगी।
8. **चन्द्र+केतु**—सुखेश चन्द्र के साथ केतु होने से जातक महान पराक्रमी होगा।

तृतीय भाव में चन्द्रमा का उपचार—

1. लड़की के जन्म पर चन्द्र की चीजों दूध, चावल, चांदी का दान करना।
2. घर आये मेहमान को दूध पिलाना
3. लड़के के जन्म पर सूर्य की चीजों कनक, तांबा का दान करना।
4. कवारी कन्याओं का पूजन करना।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति चतुर्थ भाव में
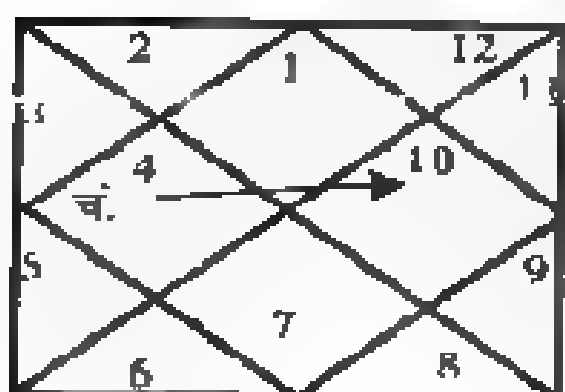
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाइ है। चन्द्रमा चौथे स्थान में कर्क राशि का होकर स्वगृही होगा तथा दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक बुजुर्गों के व्यापार से लाभ कमाने वाला, जमीन जायदाद का स्वामी होता है। ऐसे जातक के पास 'अनेक वाहन सिद्धि' अनेक उत्तम वाहन होते हैं।

यामिनीनाथ योग—यहां चन्द्रमा केन्द्रवर्ती होने से जातक की पत्नी एवं पुत्री आज्ञाकारी होगी। जातक जलीय पदार्थ से धन कमाएगा। यात्रा से धन कमाएगा। जातक सेल्समैन के रूप में ज्यादा सफल होगा। जातक उद्योगपति होगा। वस्त्र व्यवसाय से कमाएगा।

निशानी—खर्चने पर और बढने वाली आय की नदी जातक स्वयं सुन्दर होगा।

अनुभव—भोजसंहिता के अनुसार जातक अच्छी शिक्षा प्राप्त करेगा। उसके दांत श्वेत व चमकीले होंगे। जातक का हृदय मजबूत होगा।

दृष्टि—स्वगृही चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि शनि की मकर राशि (दशम भाव) पर होगी। यह दृष्टि जातक को राज्य (सरकार) से लाभ दिलाने में सहायक है।

दशा—चन्द्रमा की दशा अत्यन्त शुभफल देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म श्रावणकृष्ण अमावस्या रात्रि 12 बजे के लगभग होगा। जातक बड़ा उद्योगपति होगा।
2. **चन्द्र+मगल**—नीचभंग राजयोग यदि चन्द्रमा के साथ मगल हो तो **'नीचभग राजयोग'** की

सृष्टि होगी। **'महालक्ष्मी योग'** भी बनेगा। जातक को भूमि भवन लाभ होगा। वह भूस्वामी होगा। धनवान होगा। यहां मांगलिक दोष समाप्त होगा।

3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्र, बुध की युति से जातक पुराना वाहन खरीदेगा एवं पुराने मकान में रहेगा। पर मध्य आयु के बाद वाहन भी दो होंगे एवं मकान भी दो होंगे।
4. **चन्द्र+गुरु—किम्बहुना योग**—चन्द्रमा के साथ यदि गुरु हो तो यह योग बनेगा अर्थात् चन्द्रमा स्वगृही एवं गुरु उच्च का इससे अधिक और क्या चाहिए? यह स्थिति केसरी योग, गजकेसरी योग एवं हंस योग बनाती है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य एवं प्रभाव वाला होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**—ऐसे जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के पास उत्तम श्रेणी का वाहन होगा। जिस मकान में वो रहेगा, वह सुन्दर होगा.
6. **चन्द्र+शनि**—चन्द्रमा के साथ शनि यहां राजयोग बनाता है। जातक ठेकेदारी के काम में धन कमाएगा। **पद्मसिंहासन योग** भी बनता है।
7. **चन्द्र+राहु** चन्द्रमा के साथ राहु माता की अचानक मृत्यु एवं अचानक वाहन दुर्घटना का संकेत भी देता है।
8. **चन्द्र+केतु**—चन्द्रमा के साथ केतु हृदयरोग, फेफड़ों में बीमारी देगा।
9. **सूर्य+चन्द्र+गुरु** की युति चतुर्थ भाव में सर्वोच्च राजयोग बनाती है।

चतुर्थ भाव में चन्द्रमा का उपचार:

1. सुबह काम करते समय दूध का कुम्भ रखना।
2. दूध का दान देना या घर आए मेहमान को दूध या खीर खिलाना।
3. व्यापार माता के साथ हिस्सादारी में करना।
4. विशेष शनियोग हेतु नवरत्नजड़ित 'चन्द्रयंत्र' पहने।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति पंचम भाव में
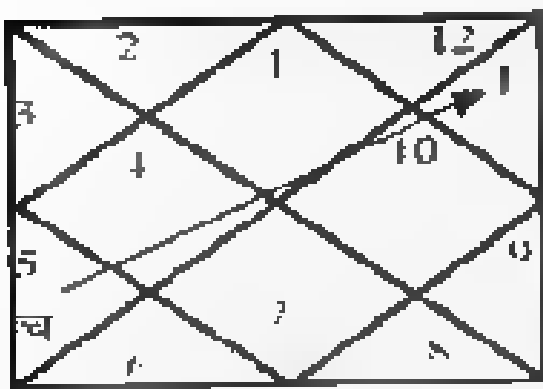
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। पंचम स्थान में चन्द्रमा सिंह राशि में होगा। जिसका स्वामी सूर्य त्रिकोणाधिपति होने से मेषलग्न वालों के लिए योगकारक होकर शुभफलदाई है। जातक राजा की किस्मत वाला होता है तथा राजदरबार में बड़ी भारी इज्जत पाता है। जातक धर्मात्मा होगा, परोपकारी होता है। जातक की संतान बहुत तरक्की करेगी। चन्द्रमा की दृष्टि लाभ स्थान [illegible] में जातक को [illegible] लाभकारी होगी। जातक अच्छी आयु वाला होगा।

विशेष—ऐसा जातक हठ पर अड़ने पर किसी के आगे झुकता नहीं [illegible] द्रव्यम्, जातक के पास पशु या चार पहियों का वाहन होगा। स्त्री भी हो सकती है।

निशानी–बच्चों के दूध की माता व आत्मिक प्रेम की नदी अथवा जुड़वा बच्चे घर में हों साधारण अवस्था मे जातक को स्वयं का एक पुत्र, एक कन्या होगी।

अनुभव–जातक अधैर्यशाली, शीघ्र भड़कने वाला, क्रोधी होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ चन्द्रमा की दृष्टि शनि की कुम्भ राशि (लाभ स्थान) पर होगी यह दृष्टि व्यापार-व्यवसाय के लिए लाभप्रद है।

दशा–चन्द्रमा की दशा जातक को प्रज्ञावान बनाएगी उसे व्यापार व्यवसाय मे लाभ होगा। 'भोजसंहिता' के अनुसार दशा का शुभत्व सूर्य की स्थिति पर निर्भर करेगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक को पुत्र एव पुत्री दोनों की प्राप्ति होगी। दोनों तेजस्वी होंगे। ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को रात्रि दस बजे के आसपास होगा। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ यदि मंगल हो तो **'लक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक लक्ष्मीवान् होगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ बुध दो कन्या देगा। जातक साइंस का विद्यार्थी होगा। सरल चिकित्सा में रुचि लेगा। यदि जातक महिला है तो ऑपरेशन से संतान होगी।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु होने से **'गज केसरी योग'** बनेगा। सुखेश व भाग्येश की युति जातक को भाग्यशाली एवं सफल व्यक्ति बनाएगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ शुक्र माता से, पत्नी से धन दिलाएगा। स्त्री मित्रों से लाभ, जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ कन्या सन्तति की बाहुल्यता देगा। पुत्र सन्तति में रुकावट एव विद्या में भी बाधा डालेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु माता के श्राप से वंशवृद्धि में रुकावट बताता है। विद्या में बाधा का संकेत देता है।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु विद्या में संघर्ष एव मातृ पितृ दोष से जातक को कष्ट होने का संकेत देता है।

पंचम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. जंगल पहाड़ की सैर करेगा तो उत्तम रहेगा।
2. कोई भी नया काम प्रारम्भ करने के पहले परिपक्व व्यक्ति से सलाह लेकर काम करें।
3. मोती युक्त 'चन्द्र यंत्र' धारण करें।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति षष्टम भाव में

मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एव लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है यहां छठे भाव में चन्द्रमा कन्या राशि में होने से शत्रुक्षेत्री होगा। व्यथित व
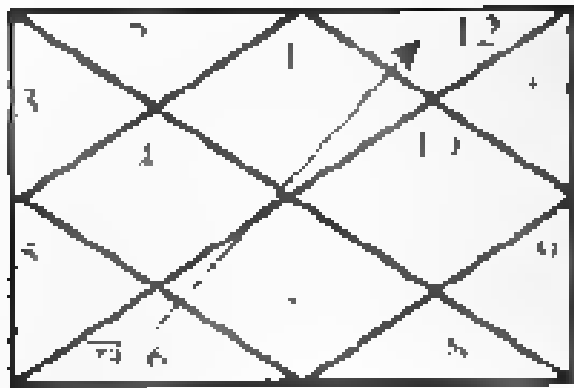
दुःखी होगा। ऐसे जातक का जन्म बूढ़ा, बहन व लड़की के लिए शुभ होता है। जातक परोपकारी एवं दयालु होता है। तड़पते के मुंह में पानी डालने वाला, सच्चा हमदर्द होता है। जातक के नौकरी या व्यापार में बारम्बार बदलाव आते रहता है। चन्द्रमा की दृष्टि खर्चे (व्यय) स्थान पर होने के कारण जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्राएं अधिक करेगा। विदेश भी जाएगा।

निशानी–धोखे की माता एवं खारा कड़वा पानी जातक की माता अल्पायु होगी या बीमार रहेगी। जातक नकारात्मक सोच वाला होगा। जातक को रक्तचाप होगा।

अनुभव–जातक रोगी होगा। जातक की मां रोगी होगी। मंगल की स्थिति इस पर ज्यादा रोशनी डालेगी। जातक निराशावादी होगा।

दृष्टि–यहां से चन्द्रमा नीचराशिगत होकर मीन राशि (द्वादश भाव) को देखेगा। चन्द्रमा की यह दृष्टि द्वादश भाव के शुभफलों में वृद्धि करेगी। बाहरी यात्राएं सार्थक रहेंगी।

दशा–चन्द्रमा की दशा प्रतिकूल रहेगी। 'फलदीपिका' के अनुसार बुध की शुभ स्थिति एवं चन्द्रमा पर शुभ ग्रहों की दृष्टि प्रतिकूलता में कमी लाएगी। यदि चन्द्रमा की राशि (चतुर्थ स्थान) पर शुभग्रह हो तो भी चन्द्रमा की दशा में शुभत्व आएगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ यदि सूर्य हो तो जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 बजे के आसपास होगा। जातक को सन्तान सम्बन्धी चिन्ता रहेगी। विद्या में रुकावट आएगी। सरस्वती का मन्त्र धारण करने से लाभ होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ **लग्नभंग योग** के साथ **विपरीत राजयोग** भी बनाता है। ऐसा जातक धनी होगा। सुखी होगा पर मानसिक अशान्ति रहेगी.
3. **चन्द्र+बुध**–यदि चन्द्रमा के साथ बुध हो तो **'पराक्रमभंग योग'** बनेगा। जातक षड्यन्त्र का शिकार होगा। मित्र व रिश्तेदार दगा देंगे। जिससे कीर्तिभंग होगी। जातक बदनाम होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। परन्तु भाग्यभंग योग, सुखभंग योग के कारण यह युति ज्यादा सार्थक नहीं होगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**–यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र नीच का हो तो 'षट्त्रिंशद् वर्ष विधवासंगमी' हो 36वें वर्ष में विधवा स्त्री के साथ सम्भोग करेगा.
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ **'राजभंग योग'** एवं **'लग्नभंग योग'** बनाएगा। ऐसा जातक मानसिक तनाव में रहेगा तथा धन को लेकर परेशान रहेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–राहु की स्थिति यहां शुभद है पर ग्रहणयोग के कारण जातक सदैव तनावग्रस्त रहेगा।

8. **चन्द्र+केतु**–केतु की युति के कारण हल्की दुर्घटना का योग बनता है। तेज वाहन स्वयं न चलावें
9. यदि चन्द्रमा के साथ राहु या केतु हो तो जातक को धन कमाने हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक रोगी होगा।

षष्टम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. अपना भेद किसी को न बताओ
2. घर में खरगोश की पालना करें।
3. मंत्रपूत मोती जड़ा हुआ 'चन्द्र यंत्र' गले में धारण करें।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति सप्तम भाव में
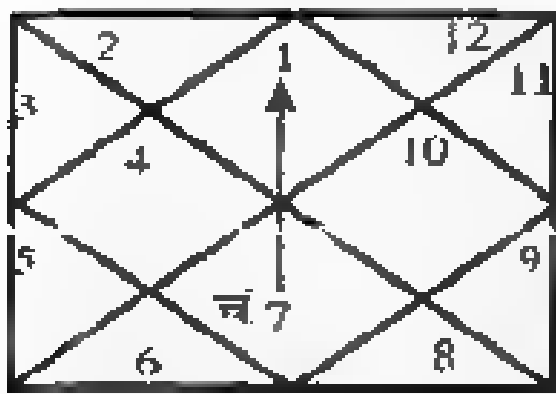
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं चन्द्रमा लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभ फलदाई है। चन्द्रमा यहां सप्तम भाव में तुला राशि का होगा। जातक धन-दौलत की कमी न पाने वाला, किसी के आगे हाथ न फैलाए। स्त्री सुन्दर और शुभलक्षणों से युत होगी। चन्द्रमा यदि पूर्णबली है तो जातक के पत्नी जीवन भर साथ निभाएगी। 'क्षीणचन्द्रे कलत्रनाश:' चन्द्रमा यदि निर्बल है तो पत्नी की छोटी आयु में मृत्यु होगी।

दृष्टि–चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि लग्न पर है फलत: ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ होगा। उसकी विद्या फलवती होगी। 24 वर्ष के बाद जातक आगे बढ़ेगा। जातक नित नए विषय की खोज करेगा।

निशानी–बच्चों की माता खुद लक्ष्मी अवतार, जातक ज्योतिष या अध्यात्म विद्या का ज्ञाता होगा। जातक मौत के समय अपने घर पर होगा। सूर्य, चन्द्र दोनों की दृष्टि लग्न पर होने से जातक की माता व पुत्र दोनों तेजस्वी होंगे।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार चन्द्रमा की यह स्थिति जातक को गुप्त धन देगी एवं ऐसे जातक को स्त्री-मित्रों से ज्यादा लाभ होगा। जातक को ससुराल में भूमि मिलेगी।

दशा–चन्द्रमा की दशा शुभफल देगी। शुक्र की अच्छी स्थिति शुभत्व में वृद्धि करेगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म कार्तिककृष्ण अमावस्या की साय काल सूर्यास्त के समय का होगा। जातक प्रशासनिक कार्यों में रुचि लेगा तथा अच्छा प्रशासक, प्रबन्धक एवं वक्ता साबित होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। लग्नाधिपति योग के कारण जातक खूब धन कमाएगा। यहा मांगलिक दोष समाप्त होगा।

3. **चन्द्र+बुध**–ऐसे जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा। जातक स्वयं अपने कुल का नाम रोशन करेगा। पराक्रमी होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु होने से **'गजकेसरी योग'** बनेगा। सुखेश चन्द्रमा की भाग्येश गुरु के साथ यह युति जातक का पराक्रम बढ़ाएगी। जातक के व्यक्तित्व में निखार आएगा। उसे व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र है तो जातक के दो स्त्री होगी। 'भावाधिये बलयुते स्त्रीद्वयम्' तथा अनेक स्त्रियों से सम्पर्क होगा।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ शनि उच्च का होने से **'शशयोग'** बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैद्य वर्चस्व को प्राप्त करेगा। माता एवं पत्नी से सुखी होगा।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु जीवन साथी में मतभेद, माता को पीड़ा देगा।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जीवन साथी के साथ मारपीट एवं माता को चोट पहुंचाता है।
9. यदि चन्द्रमा के साथ अन्य शुभ ग्रह है तो राजा की कृपा से धन लाभ होगा 'राजप्रसाद लाभः' जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा।
10. यदि चन्द्रमा के साथ राहु या केतु है तो जातक के माता की मृत्यु वाहन से होगी। (सत्यजातकम् अ. 7/श्लोक 7)

सप्तम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. विवाह के दिन ससुराल से पत्नी के वजन का दूध, पानी या चावल लाना या पहले लाकर रखना।
2. चांदी के बर्तन में खाना-पीना शुभ रहेगा।
3. क्लेश दूर करने के लिए 'चन्द्र यंत्र' धारण करें।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में
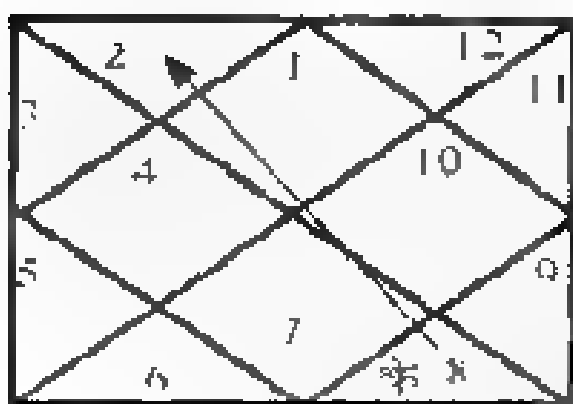
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। चन्द्रमा अष्टम भाव में वृश्चिक राशि का होगा जो कि इसकी नीचराशि है। जातक माता पिता का सेवक होगा। इसे बुजुर्गों की सम्पत्ति मिलेगी। ससुराल से सम्बन्ध स्थापित होने के बाद किस्मत चमकेगी। जातक यात्राओं एवं जलीय संसाधनों से धन कमाएगा।

दृष्टि–चन्द्रमा में खड्डे होते हुए भी उसकी दृष्टि उच्च की धन स्थान पर है। जातक महत्वाकांक्षी होगा एवं यदि लग्नेश मंगल बलवान हो तो जातक खूब धन कमाएगा।

निशानी–मृत माता, जल्दा दूध, अपनी किस्मत आप चमकाए।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार जातक झगड़ालू व ईर्ष्यालु होगा। तिक्त (खट्टा) व चटपटा भोजन पसन्द करेगा। जातक अपनी शक्ति का उपयोग नकारात्मक रूप से करेगा। ऐसे जातक की जमीन पर दूसरे लोग कब्जा करेंगे

दशा–चन्द्रमा की दशा मिश्रित फल देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सायं 4 से 6 के मध्य होगा। जातक की माता को कष्ट होगा या जातक को भूमि का नुकसान होगा। जातक को वाहन दुर्घटना का भी भय बना रहेगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–यदि चन्द्र के साथ मंगल हो तो **'नीचभंगराज योग'** एवं क्रमशः **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी तो चन्द्रमा का नीचत्व भंग हो जाएगा। जातक धन एवं पृथ्वी का स्वामी होगा। धनवान पुरुष होगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ विषभोजन का भय देता है। बदहजमी की शिकायत रहेगी। बुध यहां **विपरीतराज योग** की सृष्टि भी करता है। ऐसा जातक धनी होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु **'गजकेसरी योग'** बनाएगा। परन्तु यह युति ज्यादा सार्थक नहीं होगी। जातक पारिजात के अनुसार ऐसे जातक की मृत्यु **'क्षयरोग'** से होगी। गुरु यहां **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। जातक धनी होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ शुक्र **'राजभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाएगा। ऐसा जातक ईर्ष्यालु होगा, उसे ठेकेदारी में नुकसान भी होगा।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ शनि **'राजभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा ऐसा जातक ईर्ष्यालु होगा। उसे ठेकेदारी में नुकसान भी होगा।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु गुप्तांग में बीमारी एवं दुर्घटना योग बनाता है। जातक के माता की अचानक मृत्यु घातक बीमारी से होगी।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जातक को शल्यचिकित्सा का भय देगा। जीवन में आपरेशन जरूर होगा। हृदय रोग का भय रहेगा।
9. शुक्र की स्थिति यदि अच्छी हो तो विवाह के बाद किस्मत चमकेगी। यदि धनस्थान में शुक्र हो तो जातक उत्तम वाहन (लक्जरी कार) उत्तम भवन (तीन मंजिला) एवं उत्तम नौकर-चाकर के सुखों से मुक्त होकर माता, मौसी या सासु की सेवा करेगा।

अष्टम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. श्राद्ध या बुजुर्गों के नाम पर दान देना।
2. पनीर/दूध के पानी का इस्तेमाल करना, दूध पीना निषेध।
3. अस्पताल या शमशान में कुआं या हैण्डपम्प लगाना।
4. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।
5. बच्चों व बुजुर्गों के पांव धोयें।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में
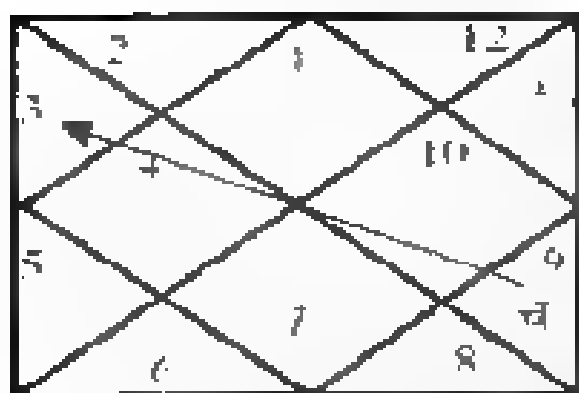
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। नवम स्थान में चन्द्रमा धनु राशि में होगा जो उसे मित्र ग्रह की शुभराशि है। ऐसा जातक बहुत बड़ा धर्मात्मा, पुण्यात्मा एवं ज्ञानी होता है। 'बहुश्रुतवान् पुण्यवान' ऐसा जातक तीर्थयात्राएं करता है। जातक ईमानदार एवं व्यवहारिक होता है तथा समाज में राजनीति से उच्च पद प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

दृष्टि—धनराशि गत चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि पराक्रम स्थान पर है। जातक अपने भाई बहनों एवं परिजनों से बहुत स्नेह रखेगा। जातक जनसम्पर्क सघन होगा। उसे पत्रकारिता एवं नित नए विषयों के अनुसंधान की रुचि रहेगी।

निशानी—दुःखियों का रक्षक, समुद्र। ऐसे जातक के पुत्र सन्तति जरूर होगी। सन्तान सुपुत्र कहलाएगा।

अनुभव—जातक को सच्चाई की बात पर तुरन्त क्रोध आएगा परन्तु क्रोध क्षणिक होगा।

दशा—'भोजसंहिता' के अनुसार चन्द्रमा की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। यदि गुरु की स्थिति इस कुण्डली में शुभ हो तो दशा का शुभत्व 20% और बढ़ जाएगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या की दोपहर में 2 से 4 बजे के मध्य होगा। जातक को माता पिता दोनों का सुख मिलेगा। खासकर पैतृक सम्पत्ति मिलने का योग है। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ मंगल हो अथवा चन्द्रमा के सामने मंगल हो तो **'लक्ष्मीयोग'** बनेगा। जातक खूब धन कमाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ बुध जातक को महान पराक्रमी बनाएगा। मित्रों से लाभ रहेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**—यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। नवम भाव में गुरु स्वगृही होकर बलवान रहेगा। फलतः दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव पर रहेगी। फलतः प्रथम सन्तति के बाद जातक का विशेष भाग्योदय होगा। राजनीति में जीत होगी। सन्तान आज्ञाकारी होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**—चन्द्रमा के साथ शुक्र हो तो जातक को माता पिता द्वारा संचित धन मिलता है। उत्तम वाहन का योग बनता है।

6. **चन्द्र+शनि**—चन्द्रमा के साथ शनि होने से जातक महत्वाकांक्षी होगा। व्यापार में खूब ध न कमाएगा।
7. **चन्द्र+राहु**—चन्द्रमा के साथ राहु भाग्योदय हेतु संघर्ष कराएगा पर किस्मत मेहनत के बाद चमकेगी।
8. **चन्द्र+केतु**—चन्द्रमा के साथ केतु जातक सफलता देता है पर सफलता प्रथम प्रयास से नहीं मिलती।

नवम भाव में चन्द्रमा का उपचार—

1. धर्म-कर्म और तीर्थ यात्रा में रुचि लें।
2. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।

मेष लग्न में चन्द्रमा की स्थिति दशम भाव में
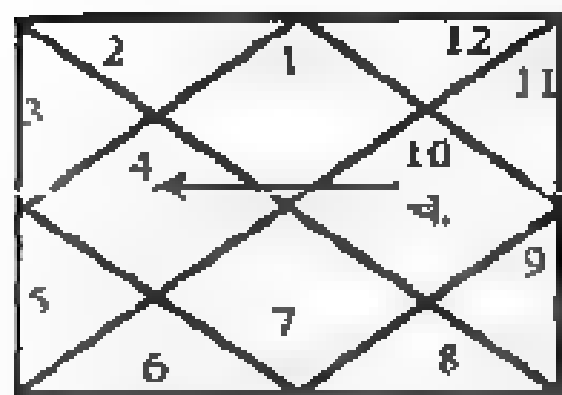
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एव लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। दशम भाव में चन्द्रमा मकर राशि में होगा। मकर राशि का स्वामी शनि मेषलग्न वालों के लिए अशुभ फलकर्त्ता है। फिर भी ऐसा व्यक्ति भंवर में फंसी हुई नैया को पार लगाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति परिश्रमी, कार्यशील, धार्मिक, साहसी, धनवान एवं महत्वाकाक्षी होता है।

दृष्टि—मकर राशि गत चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि चतुर्थ भाव अपने स्वयं के घर पर होने से जातक को उत्तम वाहन एवं भवन की प्राप्ति होती है। उसे सभी कार्यों में बराबर सफलता मिलती है।

निशानी--जहरीला पानी, जातक घूमता रहेगा। यात्राओं में ज्यादा रस लेगा।

दशा चन्द्रमा की दशा बहुत अच्छी जाएगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यदि शनि की स्थिति शुभ हो तो शुभत्व 20% और बढ़ जाएगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को मध्य दिन मे होगा। यहा से चन्द्रमा अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक को उत्तम वाहन मकान का, नौकर-चाकर का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक को सन्तानें पढ़ी-लिखी होंगी। यह युति प्रबल राजयोग कारक है।
2. **चन्द्र+मंगल**—यदि चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो जातक महाधनी होगा **'रुचक योग'**, **'महालक्ष्मी योग**' के कारण जातक बड़ी भूमि-भाव एवं सम्पत्ति का स्वामी होगा। राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। यदि यहा गुरु चौथे व सूर्य लग्न में हो तो जातक मिनिस्टर होगा। लाल बत्ती के गाड़ी का स्वामी होगा।

3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा। जातक अपने कुल का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि धनस्थान, चतुर्थभाव एवं षष्टम् स्थान पर होगी। ऐसे जातक को ननिहाल व माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धनवान होगा। दीर्घजीवी होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ शुक्र जातक को चार पहियों का वाहन देगा।
6. **चन्द्र+शनि**–यदि चन्द्रमा के साथ शनि हो तो **'शशयोग' 'पद्मसिंहासन योग'** योग के कारण जातक साधारण परिवार में जन्म लेकर भी कीचड़ में कमल की तरह उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु व्यापार में नुकसान देगा। माता को बीमारी व कष्ट देगा।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जातक को हृदय रोग या भारी बीमारी देगा पर उससे बचाव होता रहेगा।

दशम भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. रात को दूध नहीं पीना, क्योंकि यह दूध जहर का काम करेगा।
2. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति एकादश भाव में

मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। एकादश स्थान में स्थित चन्द्रमा कुम्भ राशि में होगा। कुम्भ राशि का स्वामी शनि मेषलग्न के लिए अशुभ फलकारी माना गया है। ऐसा जातक उदार हृदय एवं मधुर व्यवहार वाला होता है। जातक राज्याधिकारी, वकील, सामाजिक कार्यकर्त्ता, मकान–वाहन सुख से युक्त दूरदर्शी होता है।

दृष्टि–कुम्भ राशि में स्थित चन्द्रमा की पूर्व दृष्टि पंचम भाव पर है। फलतः जातक को विद्या में सफलता मिलेगी। जो भी कार्य हाथ में लेंगे, उसमें सफलता मिलेगी।

निशानी–सब कुछ होते हुए भी न के बराबर। कन्या सन्तति जरूर होगी।

अनुभव–जातक हवाई यात्रा अवश्य करेगा क्योंकि चन्द्रमा वायुभाजक राशि में होकर लाभस्थान में है।

दशा–चन्द्रमा की दशा में जातक प्रजावान होगा। विद्यावान होगा। भोजसंहिता के अनुसार उसे चन्द्र सम्बन्धी शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रातः 9 से 11 बजे के मध्य होगा। सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक प्रजावान होगा। उसे पुत्र पुत्री दोनों प्रकार की सन्तति मिलेगी। जातक की सन्तानें उच्च शिक्षा प्राप्त करेगी
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ मंगल **'लक्ष्मी योग'** बनाता है। जातक व्यापार में उच्च पद की प्राप्त करेगा, उद्योगपति होगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देगा। जातक लंगोट का कच्चा होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम स्थान पर होने से जातक का प्रथम भाग्योदय विवाह के बाद, दूसरा भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा। जातक अपने परिजनों व मित्रों के प्रति समर्पित भाव रखेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ शुक्र कन्या सन्तति की बाहुलता देगा। जातक बड़े उद्योग का स्वामी होगा। जातक विलासी होगा। धनी होगा।
6. **चन्द्र+शनि**–यदि चन्द्रमा के साथ शनि हो तो जातक धनवान होगा। व्यापारी होगा। उसके कन्या सन्तति जरूर होगी.
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु होने से जातक अपनी उम्र में बड़ी स्त्री के साथ संभोग करेगा।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु जातक को अगम्या स्त्री से रमण कराएगा।
9. यदि चन्द्रमा के साथ अन्य पापग्रह हो तो– पापयुते सप्तविंशति वर्षे विधवासगमेन जन विरोधी' विधवा स्त्री के सम्भोग से जनविरोध का सामना करना पड़ेगा।

एकादश भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. भैरों के मंदिर में दूध देना।
2. बच्चों को 121 पेड़े या रेवड़ी बांटना।
3. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।

मेषलग्न में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में

2 1 चं. 12 11 3 4 10 5 9 6 7 8
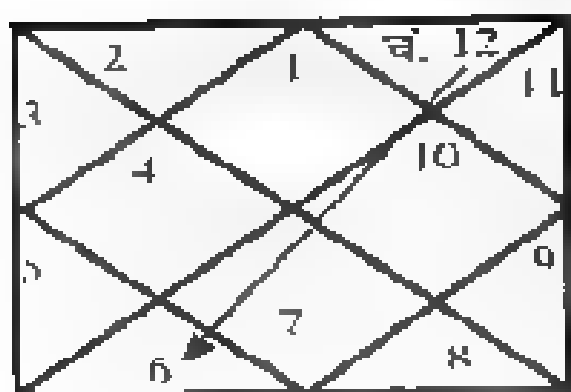
मेषलग्न में चन्द्रमा केन्द्राधिपति होने के कारण एवं लग्नेश मंगल का मित्र होने के कारण शुभफलदाई है। यहां चन्द्रमा बारहवें स्थान पर होने से मीन राशि में होगा। मीन राशि का स्वामी गुरु मेषलग्न के लिए योगकारक होकर चन्द्रमा का मित्र है। ऐसा जातक राजदरबार, कोर्ट-कचहरी में विजय पाने

वाला, ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र गुप्त विद्याओं को जाने वाला, बुजुर्गों का नाम रोशन करने वाला, विदेशों में जाकर अपनी किस्मत चमकाने वाला परम तेजस्वी व्यक्ति होता है।

दृष्टि—मीन राशिगत चन्द्रमा की दृष्टि छठे भाव में होने पर से जातक को दीर्घायु बनाता है। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होता है।

निशानी—तूफान में बस्तियां उजाड़ने वाला दरिया।

अनुभव—जातक विदेश यात्रा, समुद्री यात्रा अवश्य करेगा। भोजसंहिता के अनुसार बाएं नेत्र की रोशनी जरूर कम होगी। ज्यादा प्रतिकूल स्थिति में एक आंख नष्ट भी हो सकती है। व्ययभाव गते चन्द्रः वामचक्षु नश्यति।

दशा—चन्द्रमा की दशा मिश्रित फल देगी। 50% शुभ 50% अशुभ। यदि गुरु की स्थिति शुभ हो तो दशा पूर्णतः अनुकूल हो जाएगी। यदि चन्द्रमा की राशि (चतुर्थ स्थान) में शुभ ग्रह तो दशा 60% शुभ फलदाई होगी। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो 70% शुभफल देगा। चन्द्रमा यदि पाप पीड़ित हुआ तो 40% प्रतिकूल फल देगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या के दिन को 7.30 से 9.30 बजे के मध्य होगा। जातक को नेत्र पीड़ा होगी। जातक काना भी हो सकता है पर खर्चीले स्वभाव का अवश्य होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्र+मंगल युति से **'लक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक धनवान होगा। इस युति के मांगलिक दोष भी समाप्त हो जाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ बुध **'विपरीतराज योग'** की सृष्टि करेगा। जातक धनवान होगा एवं धार्मिक कार्यों में धन व्यय करेगा
4. **चन्द्र+गुरु**—यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** बनता है। गुरु यहां स्वगृही होगा। दोनों शुभग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव पर होगी। फलतः जातक दो मंजिला भवन 32 वर्ष की आयु में बनायेगा। जातक दीर्घजीवी होगा एवं अपने शत्रुओं का मान मर्दन करने में सक्षम होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**—यदि चन्द्रमा के साथ शुक्र हो तो **'मातृमूलधन योग'** की सृष्टि होगी। माता, मकान वाहन द्वारा धन प्राप्ति होगी जातक अनेक नौकरों का स्वामी होगा।
6. **चन्द्र+शनि**—चन्द्रमा के साथ शनि **'राजभंग योग'** एवं **लाभभंग योग** बनाता है जातक का धन खर्च होता रहेगा।
7. **चन्द्र+राहु**—चन्द्रमा के साथ राहु यात्रा व्यय कराएगा। जातक परवंचक होगा
8. **चन्द्र+केतु** चन्द्रमा के साथ केतु जातक हवाई यात्रा करेगा। पर जबान का सच्चा नहीं होगा।
9. चन्द्रमा बारहवें और शुक्र द्वितीय स्थान में हो तो जातक की दोनों आंखों की रोशनी चली जाएगी

द्वादश भाव में चन्द्रमा का उपचार–

1. चावल, चांदी, दूध आदि का दान करना।
2. सच्चा मोती दूध रंग धारण करना, मोती के अभाव में चांदी धारण या चंद्र यंत्र पहनना।
3. दूध का बर्तन रात को सिरहाने रखकर सुबह वटवृक्ष में डालना।
4. सोमवार का व्रत रखना।
5. शिवजी की उपासना करना।

❑❑❑

मेषलग्न में मंगल की स्थिति

मेषलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में
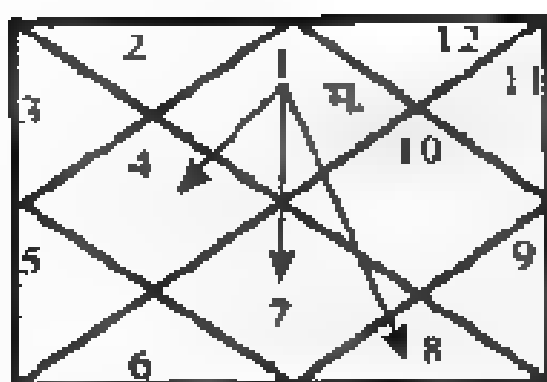
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर यहां लग्नेश होने से मगल को अष्टमेश को दोष नहीं लगेगा। ऐसा व्यक्ति बहुत ही शक्तिशाली, प्रसिद्ध एवं नेतृत्व शक्ति युक्त सफल नेता या प्रशासक होता है।

रुचकयोग—मेषलगन में मगल स्वगृही लग्न में होने के कारण 'रुचक योग' बना।

परिणाम (Result) —ऐसा व्यक्ति जिला शहर या गांव का प्रमुख होता है। जहां सभा इत्यादि में बैठता है, वहा की अध्यक्षता करता है। उतम भवन एव वाहन का सुख उसे सहज में ही प्रप्त होता है। जीवन में सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व ससाधनों की प्राप्ति बलपूर्वक प्राप्त करता है। मगल की प्रधानता के कारण जातक शूरवीर व साहसी होता तथा आगे बढ़ने की तीव्र महत्वाकाक्षा इनमें कूट कूट कर भरी होती है।

लग्न में बैठकर बलवान मगल चौथे स्थान, सातवें स्थान एव आठवे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। फलतः यह दृष्टि जातक की आयु, मातृसुख एव विवाह सुख के लिए सतोषप्रद है। **'लग्नेभौमः क्रोधी'** लग्न में मगल होने में व्यक्ति क्रोधी होगा।

मांगलिक कुण्डली—मगल की यह स्थिति कुण्डली को मागलिक बनाती है। ऐसे पुरुष या स्त्री का जीवन साथी भी मागलिक होना चाहिए। तभी विवाह सुख, गृहस्थ सुख स्थाई रहेगा अन्यथा दोनो में से एक खण्डित होगा।

निशानी—ऐसा जातक **'इसाफ की तलवार'** होता है। जबान से निकला शब्द पत्थर की लकीर होती है। अपने वचन के लिए जातक मर मिटता है। छोटे बडे भाइयों की शर्त नहीं पर आप अकेला भाई नही होगा। चेहरे पर लाल मस्सा, शस्त्रघात या चेचक के निशान होंगे।

व्यवसाय—प्रायः ऐसा जातक पुलिस, प्रशासन मिल्टरी में नौकरी अथवा टैक्नीकल व मैकेनिकल व्यक्ति होता है। इन्हे प्रायः भूमि भवन के निर्माण कार्य लकडी मशीनरी, ठेकेदारी में लाभ होता है।

भाग्योदय—भाग्योदय प्राय, 28 वर्ष की आयु में होता है। विवाह के तत्काल बाद होता है अथवा मगल की दशा, अंतर्दशा में होता है।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मगल की दशा अति उत्तम फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र–महालक्ष्मीयोग** मगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक महाधनवान होगा। यहा मांगलिक दोष भी समाप्त होगा।
2. **मंगल+सूर्य–किम्बहुनायोग**–यदि यहां मगल के साथ सूर्य हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। इससे अधिक और क्या? सूर्य यहा उच्च का होने से जातक को एक तेजस्वी पुत्र होगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
3. **मंगल+बुध**–मगल के साथ यहा बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा। षष्टेश लग्नेश की युति गुप्त रोग व गुप्त शत्रुओ से भय देता रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। पर खर्चीले स्वभाव का होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–धनेश व अष्टमेश की युति शत्रुओं से धन दिलाएगी। जातक रंगीन मिजाज का होगा किन्तु परम साहसी होगा।
6. **मंगल+शनि–नीचभंग राजयोग**–यदि यहा मंगल के साथ शनि हो तो **'नीचभग राजयोग'** बनेगा। शनि का नीचत्व भंग होगा। शनि एवं मंगल परस्पर शत्रु होते हुए भी यहां अत्यन्त शुभफल देंगे। जातक दुस्साहसी एवं हठी होगा तथा राजतुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। महिमा मण्डित होगा।
7. **मंगल+राहु**–ऐसा जातक परम तेजस्वी योद्धा होगा।
8. **मंगल+केतु**–ऐसा जातक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजयी रहेगा। कीर्तिवन्त होगा।

प्रथम भाव में मंगल का उपचार–

1. झूठ बोलने से जातक की ताकत कमजोर होगी।
2. मुफ्त का माल करवाना न दान लेना
3. हाथी दात का सामान घर में न रखे।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में
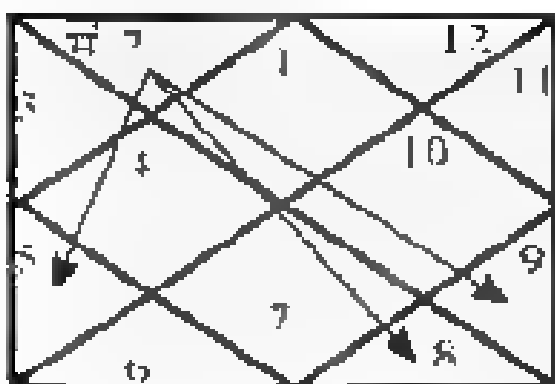
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर मंगल को यहा अष्टमेश का दोष नहीं है। लग्नेश धनस्थान में होने से जातक धनवान होगा। जीवन में सभी प्रकार की सुख सुविधाओ को अपने प्रयत्न (पुरुषार्थ) से प्राप्त करने मे सफल होगा।

निशानी दूसरों को पालने वाला, जन्म से बड़ा भाई होगा या 28 वर्ष तक यह जन्मपत्री वाला खुद बड़ा भाई बन जाएगा।

दृष्टि–मंगल की दृष्टि पंचम भाव, अष्टम भाव, एवं भाग्य (नवम) भाव पर है। फलतः जातक के कम से कम दो पुत्र (ऑपरेशन न हो तो) तीन पुत्र होते हैं। पुत्र जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होता है।

जातक गुप्त विद्याओं, ज्योतिष मन्त्र-तन्त्र-मन्त्र का जानकार होता है। जातक साधक होगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। इस दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक महाधनी होगा। इसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। मकान वाहन का सुख उत्तम होगा। यहा मांगलिक दोष समाप्त होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–पंचमेश लग्नेश की युति धनस्थान में व्यक्ति को महाधनी बनाएगी। ऐसा विद्या व हुनर के माध्यम से आगे बढ़ता है।
3. **मंगल+बुध**–तृतीयेश धनस्थान में लग्नेश के साथ हो तो व्यक्ति अपना पराक्रम बढ़ाने में, इष्ट-मित्रों में धन खर्च करता है।
4. **मंगल+गुरु**–भाग्येश, लग्नेश की युति धनस्थान में व्यक्ति को पुरुषार्थ के द्वारा धन दिलाती है। खासकर मध्यम आयु में व्यक्ति धनी होता है।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ यदि यहां शुक्र हो तो बलवान धनेश की लग्नेश के साथ युति के कारण जातक स्वपराक्रम से अर्जित धन-वैभव को भोगेगा। भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
6. **मंगल+शनि**–दसमेश, लाभेश शनि की लग्नेश से युति धनस्थान में होने से व्यक्ति व्यापार से खूब धन कमाता है पर धन खर्च होता चला जाता है।
7. **मंगल+राहु**–यदि मंगल के साथ राहु हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु धनस्थान मे जातक के जीवन में स्थाई धन के एकत्र मे बाधक है।

द्वितीय भाव में मंगल का उपचार–

1. लाल या नारंगी रंग का सुगंधित रुमाल पास रखना।
2. बच्चों को दोपहर समय चना-गुड़ बांटना।
3. घर में मृगछाला (हिरण की खाल) रखें।
4. मूंगा युक्त 'मंगल यंत्र' धारण करें।
5. ऋणमोचन मंगल स्तोत्र पढ़े।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में
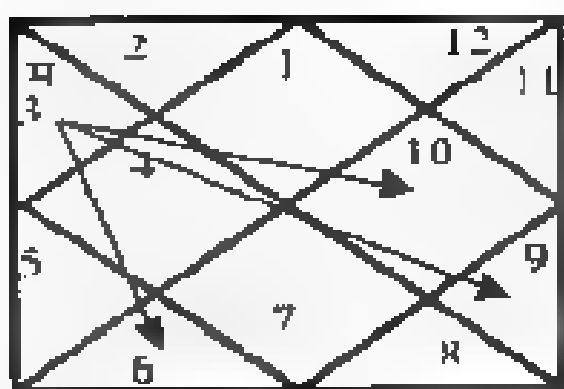
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल मिथुन राशि में है। जो इसकी मित्र राशि नहीं है। मगल यहां मिश्रित फलकारी है।

दृष्टि—तृतीय स्थान में मंगल होने से इसकी दृष्टि छठे भाव, नवमभाव एवं दशम भाव पर होगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। भाग्योदय 28 वर्ष के बाद एवं पिता की सम्पत्ति भी 32 वर्ष बाद मिलेगी।

निशानी—चिड़िया घर का कैदी शेर, जिसको अपनी ताकत का पता नहीं। बहन-भाई जरूर होंगे।

अनुभव—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनराशिगत तृतीयस्थ मंगल जातक को महान पराक्रमी बनाता है। परन्तु जातक कुछ डरपोक किस्म का होता है। भाई-बहन के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं होते क्योंकि मंगल बुध का शत्रु है।

दशा—मगल की महादशा से जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मगल+चन्द्र**—मंगल के साथ यदि चन्द्रमा हो तो लक्ष्मी योग बनेगा। जातक धनवान होगा। उसके नजदीकी रिश्तेदार भी धनवान होंगे।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ पंचमेश सूर्य की प्रति व्यक्ति को पराक्रमी बनाएगा। इष्ट मित्रों से, राजदरबार से जातक लाभान्वित होता रहेगा।
3. **मंगल+बुध**—मगल के साथ स्वगृही बुध, जातक को महान पराक्रमी बनाता है जातक व्यवहार कुशल एवं यशस्वी होगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु होने से कुटम्बी, मित्रों द्वारा धन व यश की प्राप्ति सम्भव है।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ, धनेश+सप्तमेश शुक्र विवाह के बाद जातक का पराक्रम बढ़ाएगा।
6. **मंगल+शनि**— मंगल के साथ शनि के कारण जातक पराक्रमी तो होगा पर भाइयों में नहीं बनेगी। मित्रों से झगड़ा रहेगा।
7. **मंगल+राहु**—मगल के साथ राहु मित्रों से दगा मिलेगा। कुटम्बीजनों से विवाद बना रहेगा।
8. **मगल+केतु**—मगल के साथ केतु व्यक्ति को धर्म ध्वज बनाएगा। कुटुम्बीजनों में विरोध रहेगा।

तृतीय भाव में मंगल का उपचार–

1. हाथी दांत पास रखे।
2. चांदी का छल्ला बायें हाथ मे पहनें।
3. ध्यान रहे तोंद न बढ़े।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में
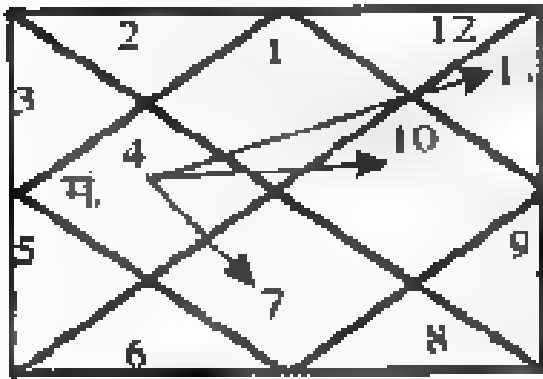
मेषलग्न मे मगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल यहां कर्क राशि में है जो उसके मित्र की राशि है। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी एव निडर होगा जातक दूसरों का हितैषी, वाहन सुख वाला होता है। बालक के जन्म से माता को तकलीफ होती है।

निशानी–भाई की स्त्री धनी, अपनी मां, नानी, सास सब पर मौत तक भारी पड़ेगी। आप बेशक जन्म से छोटा हो मगर इस पत्री वाला 28 साल की आयु तक खुद बड़ा भाई हो जाएगा।

दृष्टि–कर्कस्थ मंगल की दृष्टि सप्तमभाव, दशम (राज्य) भाव एवं एकादश भाव पर है। ऐसे जातक का विवाह के बाद भाग्योदय होगा। जातक नौकरी या व्यवसाय जो भी करे, उससे 28 से 32 वर्ष के भीतर खूब तरक्की होगी। जातक न्यायप्रिय एव सच्चाई का साथ देने वाला व्यक्ति होगा।

अनुभव–ऐसे जातक का तत्काल भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मगल की महादशा उत्तम फलकारी साबित होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र–नीचभंग राजयोग**–यदि यहां मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'नीचभंग राजयोग'** के साथ-साथ **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक को माता की सम्पत्ति स्नेह विशेष मिलेगा। जातक पृथ्वीपति (land lord) होगा। **'महालक्ष्मी योग'** यहां ज्यादा मुखरित होगा तथा मांगलिक दोष भी समाप्त होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–पंचमेश सूर्य केन्द्र में होने से जातक विद्यावान् होगा। मां बीमार रहेगी परन्तु घर सुख-सुविधाओं से भरपूर होगा।
3. **मंगल+बुध**–मगल के साथ बुध यहा शत्रुक्षेत्री होगा। जातक की माता अल्पायु होगी। जातक स्वय को हृदय सम्बधी शल्य चिकित्सा करानी पड़ेगी
4. **मगल+गुरु–नीचभंग राजयोग**–यदि यहा मंगल के साथ उच्च का गुरु हो तो नीचभग राजयोग बनेगा मंगल का नीचत्व समाप्त होगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। 'हंस योग' के कारण जातक गाव का प्रमुख होकर ऊंची प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मगल के साथ शुक्र जातक को एकाधिक वाहन एव नौकरों का सुख देगा।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को सरकारी नौकरी या ठेकेदारी में लाभ दिलाएगा।
7. **मंगल+राहु**–माता की अल्पायु में मृत्यु का संकेत देता है।
8. **मंगल+केतु**–माता को गम्भीर बीमारी एवं जातक के लिए भी शल्य चिकित्सा का योग बनाता है।
9. **मंगल+गुरु+चन्द्रमा** की युति कर्क राशि में हो तो यह प्रबल राजयोग होगा जातक लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

चतुर्थ भाव में मंगल का उपचार–

1. घर में दक्षिणी दरवाजा, कीकर, बेर, बबूल या केक्टस हो तो फौरन हटाए।
2. काला, काना, नि:स्तान, गंजा या विकलांग से दूर रहे।
3. दूध में मीठा डालकर बरगद के वृक्ष में चढ़ाये 28 मंगलवार तक।
4. संतान की रक्षा के लिए मिट्टी के पात्र में शहद या मंगलवार के दिन वीरान जगह में दबा दें।
5. पेट, मस्से या चर्मरोग जैसी बीमारी से बचने के लिए 28 मंगलवार तक गीली मिट्टी का तिलक लगाये।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
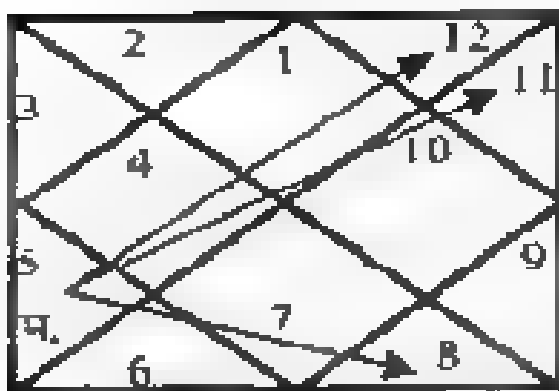
मेषलग्न मे मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल यहां सिंह राशि में है। जिसका स्वामी सूर्य शुभफलदायक है। जातक पहलवानी, व्यायाम मे रुचि रखने वाला शरीर बल पर ज्यादा ध्यान देने वाला होगा। जातक स्वभाव से क्रोधी होगा पर क्रोध क्षणिक होगा।

निशानी–रईसों का बाप-दादा। तृतीय भाव में बुध हो तो दो भाई। प्रथम पुत्र होगा।

दृष्टि–सिंहस्थ मंगल की अग्नि दृष्टि अष्टम भाव, लाभभाव एवं व्ययभाव पर होगी। फलत, जातक की आयु लम्बी होगी। व्यापार में लाभ होगा। जातक महत्वाकांक्षी होगा तथा अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति हेतु धन का अपव्यय करेगा। धैर्य की कमी होगी। पर जातक शूरवीर व साहसी होगा।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार सिंहस्थ मंगल पंचमभाव में मित्र के घर मे होगा। जातक को जीवन में उच्च पद या सफलता अवश्य मिलेगी।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा शुभफलदायक होगी। इस दशा मे यात्रा में लाभ, व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा। उत्तम धन की प्राप्ति होगी

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–यदि मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'लक्ष्मी योग'** बनेगा जातक धनवान होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–यदि यहां मंगल के साथ सूर्य हो तो जातक के प्रथम पुत्र उत्पन्न होगा, पुत्र तेजस्वी होगा। जातक का जन्म श्रावण भाद्रपक्ष माह की रात्रि को दस बजे के लगभग होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को पुत्र के अलावा दो कन्या सन्तति देगा
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ भाग्येश गुरु जातक को तीन से पांच पुत्र देगा। प्रथम पुत्र होगा।
5. **मंगल+शुक्र** मंगल के साथ शुक्र जातक पुत्र के अलावा कन्या सन्तति की बाहुल्यता भी देगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को उद्योगपति बनाएगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा एवं तकनीकी विशेषज्ञ होगा
7. **मंगल+राहु**–मंगल के मध्य राहु विद्या में बाधा। प्रथम सन्तति का गर्भपात भी करा सकता है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक की सन्तति शल्य चिकित्सा से कराएगा

पंचम भाव मे मंगल का उपचार–

1. नीम का वृक्ष लगावे।
2. रात को सिरहाने पानी रखें, सुबह किसी गमले आदि में डाले।
3. अपना चरित्र चाल-चलन ठीक रखें।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम् स्थान में
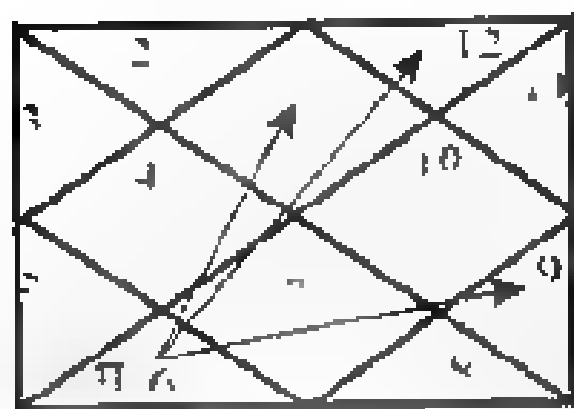
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता यहां छठे स्थान में मंगल कन्या राशि होकर नपुसंक होगा। बुध की राशि में मंगल प्रसन्न नहीं रहता जातक का जीवन संघर्षमय रहता है। जातक शत्रु से परेशान रहता है। शरीर में रोग की सम्भावना रहती है पशु व वाहन के कारोबार में जातक नुकसान उठाता है

निशानी–साधु साध्वी का स्वभाव जो अपने आपको कष्ट देना ज्यादा पसन्द करते हैं एक अकेला ही धर्मवीर होगा। सत्याजातकम् के अनुसार ऐसा व्यक्ति सेना का अधिकारी होगा। पुत्र का जन्म 34 वर्ष की आयु के बाद होगा।

दृष्टि–कन्या राशि में स्थित मंगल की दृष्टि भाग्य भवन व्यय भवन एवं लग्न स्थान पर

पड़ेगी। फलतः भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। यात्राओं से रुपया खर्च होगा। जीवन में दुर्घटना का भय रहेगा। जातक अपने व्यक्तित्व के निखार हेतु रुपया खर्च करेगा।

लग्नभंग योग—लग्नेश छठे जाने से यह योग बना। फलतः ऐसे जातक को अपने आपको स्थापित करने के लिए काफी परिश्रम करना पड़ेगा।

विपरीतराज योग—अष्टमेश मंगल छठे होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक के पास उत्तम वाहन, भौतिक ऐश्वर्य की कमी नहीं रहेगी।

अनुभव—**'बुधक्षेत्र युते कुष्ठरोग'** यदि इस मंगल पर शुभग्रह की दृष्टि न हो तो जातक को कुष्ठरोग या चर्मरोग होने की सम्भावना रहती है।

दशा—मंगल की दशा मिश्रित फल देगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यदि बुध की स्थिति अच्छी हो तो मंगल की दशा शुभफल देगी। मंगल शुभग्रहों से दृष्ट हो तो 60% उत्तम फल मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—यहां चन्द्र+मंगल की युति ज्यादा सार्थक नहीं होगी फिर भी जातक धनवान होगा। जातक को रक्त चाप रहेगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य **'विद्या बाधा योग' 'सन्तति हीन योग'** भी बनाता है.
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ यदि बुध हो तो जातक का पराक्रम निश्चित रूप से भंग होगा। जातक असावधान रहा तो उसे जेल भी हो सकती है।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** बनाता है परन्तु व्ययेश छठे होने से विपरीत राजयोग भी बना। जातक धनवान होगा। उत्तम वाहन, भवन का स्वामी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र **'धनहीन योग' 'विवाहभंग योग'** बनाएगा। जातक का जीवन संघर्षमय होगा। दाम्पत्य सुख चिन्ताजनक रहेगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि **'राजभंग योग' 'लाभभंग योग'** बनाएगा। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। ठेकेदारी में नुकसान होगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु जातक शत्रुओं का सम्पूर्ण नाश करने में समर्थ होगा। शत्रु भयभीत रहेंगे।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु होने से जातक युद्ध में सदैव विजयी रहेगा।

षष्टम भाव में मंगल का उपचार—

1. संतान के जन्म पर मीठे की जगह नमक बांटना (मीठे को नमकीन बनाकर बांटे)।
2. घर में हर वक्त दो बोरी अनाज रखना।
3. बजरंग बाण का पाठ करें।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में

2 1 12 3 11 4 10 5 9 मं. 7 6 8
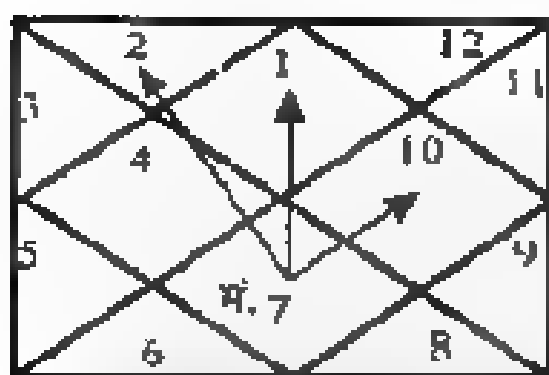
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं होता। मंगल यहां तुला राशि में है। तुला राशि में मंगल प्रसन्न नहीं रहता क्योंकि शुक्र मेषलग्न में मुख्य मारक ग्रह है। ऐसा जातक **इसाफ तौलने वाला**, दण्ड देने वाला 'जज' होता है। राज्य में अधिकार पाता है तथा इच्छित वस्तु को पाकर ही दम लेता है

निशानी–विष्णु की तरह पोषक, भाई की औलाद को पालने वाला। जातक के जन्म से घर-परिवार बढ़े। पर जातक की पत्नी झगड़ालू होगी।

दृष्टि–तुला राशि गत मंगल की दृष्टि राज्यभाव, लग्नस्थान एवं धनस्थान पर होगी। फलतः राज में पाशा, व्यक्तित्व का रौब जमाने में, एवं धन कमाने में जातक को बराबर सफलता मिलेगी।

जातकतत्व अ. 3/85 के अनुसार **'द्यूते बलवति भौमे क्रोधी'** सातवें स्थान में बलवान मंगल हो तो जातक क्रोधी होगा।

अनुभव–तुलाराशि गत मंगल सप्तम में होने यह कुण्डली 'मांगलिक' कहलाएगी। जातक का चरित्र संदिग्ध होगा। उसके विवाह हेतु जीवन साथी की जन्मकुण्डली भी मांगलिक होनी चाहिए, तभी पूर्ण विवाह सुख मिलेगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा जातक को धनवान बनाएगी। राज (सरकार) से लाभ दिलाएगी। मंगल की दशा-अंर्तदशा में जातक के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। तथा मांगलिक दोष भी समाप्त होगा। जातक धनाढ्य होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य नीच का होगा। ऐसे जातक की पत्नी तेज स्वभाव की होती है।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक के जीवनसाथी को स्थाई रोग देता है।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ भाग्येश गुरु की युति जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराती है।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ यदि शुक्र हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा पत्नी रम्भा के समान सुन्दर होगी। **'मालव्ययोग'** के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **मंगल+शनि**–यदि मंगल की शनि से युति हो या शनि से दृष्टि सम्बन्ध भी हो तो जातक

व्यभिचारी होगा। उसका अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होंगे। 'मन्दयुते दृष्टे शिश्नचुम्बन परः' द्विभार्या योग बनता है।

7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु हो तो जातक अधैर्यशाली होकर रजस्वला स्त्री के साथ भी सम्भोग करेगा।

सप्तम भाव में मंगल का उपचार—

1. बहन, लड़की, साली को मीठा खिलाना।
2. भाई की संतान को पालने से शुभ फल मिलेगा।
3. बेलदार पौधें घर में न लगावे।
4. जातक दही एवं लस्सी का अधिक उपयोग करे।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में

मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। यहां अष्टम स्थान में मंगल स्वगृही है। ऐसा व्यक्ति दीर्घजीवी एवं कठोर परिश्रमी होता है। ऐसा जातक युद्ध में शत्रु को जीतने वाला एवं स्त्री को काम में सन्तुष्ट करने वाला होता है। विपत्तियों को हंसकर झेलने वाला, साहसी जातक होता है।

निशानी—मौत का फन्दा 1, 4, 8, 12 वर्ष की आयु बल्कि 15 वर्ष की आयु के बाद दूसरा भाई होगा। कई बार तो जातक अकेला ही रह जाता है। जीवन में लड़ाई-झगड़े का माहौल सदैव बना रहेगा।

अनुभव—अष्टमेश अष्टम स्थान में स्वगृही हो तो **'सरल योग'** नामक विपरीत राजयोग बनता है। जातक दीर्घजीवी, विद्वान एवं ख्यातिप्राप्त व्यक्ति होता है। जातक की भाषा कठोर होगी।

दृष्टि—अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभस्थान, धनस्थान एवं पराक्रम स्थान पर पड़ेगी। भला व्यक्ति गड्ढे में गिरा हुआ भी अपने आत्मीय जनों का भला करता है। फलतः मंगल इस जातक को व्यापार में लाभ देगा। 28 वर्ष के बाद यथेष्ट धन देगा तथा मित्रों व कुटम्बीजनों में पराक्रम (कीर्ति) बढ़ाएगा।

लग्नभंग योग—लग्नेश होकर मंगल आठवें जाने से यह योग बना। फलतः जातक को अपने आपको स्थापित करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

दशा—'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा मिश्रित फल देगी। यदि मंगल शुभग्रह से दृष्ट हो तो मंगल की दशा शुभफल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द**–यदि मगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'नीचभग राजयोग'** बनेगा। चन्द्र+मंगल की युति में **'महालक्ष्मी योग'** भी बनेगा। जातक खूब पैसे वाला होगा। यहा मांगलिक दोष भी समाप्त होगा।
2. **मगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य **'विद्याभग योग'** बनाता है। ऐसे जातक के विद्या मे बाधा, सन्तति में बाधा आती है।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जहां **'पराक्रमभंग योग'** बनाता है वही षष्टेश का अष्टम स्थान म जाने से विपरीत राजयोग बना। जातक धनवान, ऐश्वर्यवान होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जहा **'भाग्यभग योग'** बनाएगा। वहीं व्ययेश का अष्टम स्थान में जाने से विपरीत राजयोग भी बनेगा। जातक धनवान एवं ऐश्वर्यवान होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र **'धनहीन योग' 'विवाहभंगयोग'** भी कराता है। जातक का जीवन संघर्षमय होगा। वैवाहिक सुख भी विवादास्पद रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **राजभंग योग** एव **'लाभभंग योग'** बनाता है। जातक को व्यापार-व्यवसाय में नुकसान होगा।
7. **मंगल+राहु**–यदि मंगल के साथ राहु हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
8. **मगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जीवनदायी को स्थाई बीमारी या कष्ट देता है।

अष्टम भाव में मंगल का उपचार–

1. दक्षिण का दरवाजा घर मे न रखे।
2. विधवा औरतों का आशीर्वाद समय-समय पर लें।
3. मीठी रोटी या लड्डू कुत्ते को खिलावें।
4. रोटी पकाने के समय तवे पर पानी के छींटे दे
5. बजरग बाण का नियमित पाठ करें।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में
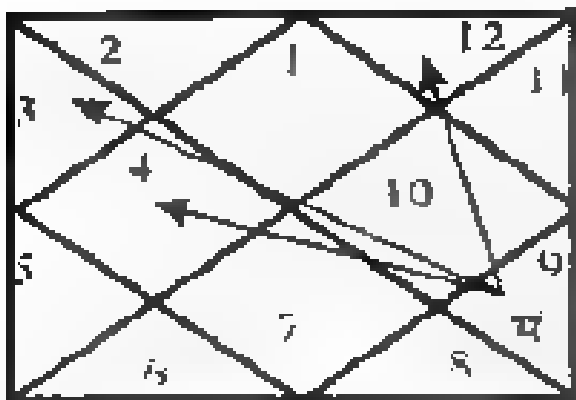
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है। लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मगल यहा धनु राशि में बैठकर भाग्यभवन मे होगा। धनु राशि मे मगल हर्षित रहता है तथा अग्निसज्ञक राशि मे रहकर भी उद्दण्ड नहीं होता। ऐसा जातक राज्याधिकारी भाग्यशाली एव स्वाभिमानी होता है। अपनी किस्मत आप चमकाता है। ऐसा जातक युद्ध के मैदान मे कोर्ट कचहरी मे विजय पाने वाला। शत्रुओं का मानमर्दन करने मे सक्षम होता है। मगल यहा उच्चाभिलाषी है अतः जातक बहुत महत्वाकांक्षी होगा

निशानी–तख्त शाही खजाना। जितने बाबा के भाई, उतने ही खुद के भाई।

दृष्टि–धनु राशि में स्थित मगल यहां व्ययभाव, पराक्रम एव चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक यात्राओं द्वारा धनार्जन करेगा। मित्रो से एवं सघन जनसम्पर्क से लाभ होगा। जातक को वाहन का सुख, माता या माता की सम्पत्ति का सुख मिलेगा।

अनुभव–धनुराशि गत नवम भावस्थ मंगल जातक को जमीन का लाभ देता है। जातक को पिता के धंधे में रुचि होगी।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा शुभफल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द**–मंगल के साथ चन्द्रमा **'महालक्ष्मी योग'** बनाएगा। जातक धनवान होगा। यदि यहा गुरु भी हो तो जातक लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मगल के साथ सूर्य जातक को महाभाग्यशाली बनाएगा। जातक का भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को महान पराक्रमी बनाएगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।
4. **मंगल+गुरु**–यदि मंगल के साथ गुरु हो तो जातक कूटनीतिज्ञ एवं राजनीतिज्ञ होता है। वह चुनाव जीतता है तथा राजनीति में विधायक सांसद या मन्त्री का पद प्राप्त करने में सफल होता है।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को महाधनी बनाएगा। जातक के विवाह के बाद महाधनी होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को ठेकेदारी से लाभ दिलाएगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु भाग्योदय में हल्की रुकावट का संकेत देता है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु व्यापार में सफलतादायक है।

नवम भाव में मंगल का उपचार–

1. भाई की पत्नी की सेवा करें।
2. भाई की आज्ञा मानने से सबकुछ ठीक रहेगा।
3. सुगंधित लाल रुमाल हर वक्त जेब में रखें।
4. 'मंगल यंत्र' गले में धारण करें तो मगल अनुकूल होगा।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न में मगल लग्नेश व अष्टमेश है। पर यहा मंगल को अष्टमेश का दोष नहीं लगता।

दिक्बली एव कुलदीपक योग–मंगल दशम स्थान में होने से दिक्बली है। मंगल दशम
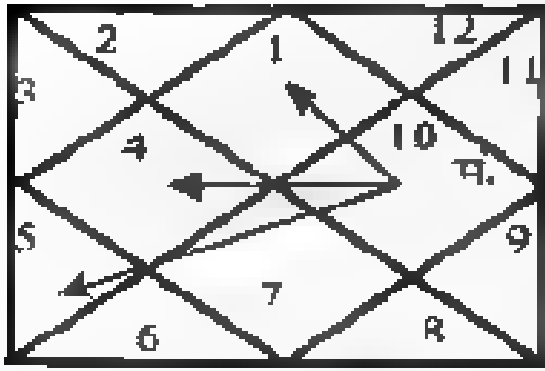
में होने से **'कुलदीपक योग'** भी बना। ऐसे बालक के जन्म लेते ही घर में धन व कीर्ति की वृद्धि होती है। बालक कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

रुचक योग—मेषलग्न में दशम भाव में मंगल उच्च का होने से यह योग बना।

परिणाम—इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति जिला, शहर या गांव का मुखिया होता है। उत्तम भवन एवं वाहन का सुख उसे सहज में प्राप्त होता है। ऐसा जातक जीवन में सभी प्रकार के भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति बलपूर्वक करता है। जातक शूरवीर व साहसी होता है तथा शत्रुओं का मानमर्दन करने में सक्षम होता है।

दृष्टि—बलवान मंगल की दृष्टि लग्नस्थान, चतुर्थस्थान एवं पंचम स्थान पर होने से जातक के तीन तेजस्वी पुत्र होते हैं।

निशानी—ब्रह्म तुल्य राजा। पत्री में यदि शनि ग्रह शुभ हो तो जितने ताये-चाचे उतने स्वयं के भाई। जातक के जन्म से धन-परिवार बढ़े।

दशा—'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा अत्यन्त शुभफल देगी।

व्यवसाय—जातक पुलिस, मिल्टरी या प्रशासन में होगा। उच्च श्रेणी का ठेकेदार, विद्युत व्यवसायी, मैकेनिकल, इंजीनियरिंग कार्यों में दक्ष, भूमि भवन के क्रय-विक्रय से लाभ कमाने वाला, साहसी होता है।

भाग्योदय—जातक का भाग्योदय मंगल की दशा-अंतर्दशा में होगा। 28 वर्ष की आयु में होगा। प्रथम पुत्र के बाद भाग्योदय होगा। 32 वर्ष की आयु में भी पुनः भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—यदि यहां मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक के पास दो-तीन उत्तम वाहन एवं श्रेष्ठ बंगले होंगे।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को उच्च राज्याधिकारी बनाएगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को महान् पराक्रमी बनाएगा।
4. **मंगल+गुरु—नीचभंगराजयोग**—यदि मंगल के साथ गुरु हो, तो गुरु का नीचत्व भंग हो जाएगा। जातक भाग्य पग-पग पर उसकी सहायता करेगा। जातक परोपकारी एवं दयालु होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—यदि मंगल के साथ शुक्र हो तो जातक खुद तो बहुत कमाएगा ही परन्तु स्त्री से धन मिलेगा। स्त्री जातक के लिए लक्की साबित होगी।
6. **मंगल+शनि—किम्बहुना योग**—यदि मंगल के साथ शनि हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा अर्थात् इससे अधिक और क्या? शनि यहां राज्येश+लाभेश होकर स्वगृही होगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा परन्तु दम्भी व हठी होगा। यदि यहां गुरु भी हो तो जातक लालबत्ती की गाड़ी वाला होगा।

7. **मंगल+राहु**–ऐसा व्यक्ति निरंकुश राजा होगा। अभिमानी होगा तथा अपने से बड़ा किसी को नहीं समझेगा।
8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु व्यक्ति को शत्रुघ्ना, पराक्रमी व शूरवीर बनाता है।
9. यहां चन्द्र+मगल+शनि+गुरु की युति जातक को निश्चित ही राजा (मिनिस्टर) बनाएगी।

दशम भाव में मंगल का उपचार–

1. काले व्यक्ति, काना, नि:संतान की सेवा करने से लाभ होगा।
2. घर के स्वर्ण आभूषण बुरे वक्त में न बेचे। बेचने से संतान हानि एवं परिवार में बरबादी की शुरुआत होगी।
3. दूध को आग पर उफनने से बचावे

मेषलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में
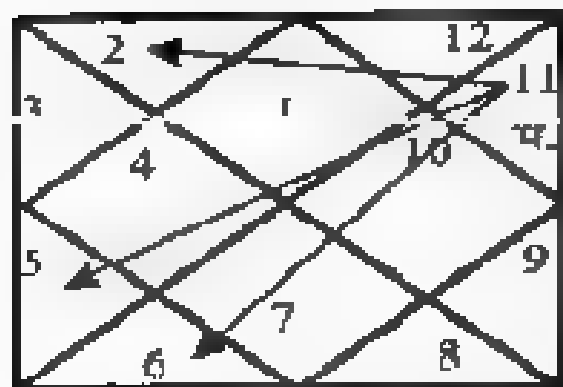
मेषलग्न में मगल लग्नेश व अष्टमेश होता है लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मगल यहा कुम्भ राशि में है। कुम्भ शनि की राशि में है। शनि मेषलग्न हेतु पापफल देने वाला है। फिर भी ऐसा जातक गुरुभक्त एवं उच्च पदाधिकारी होगा। उसे राजनीति में अनायास सफलता मिलती है।

निशानी–फकीरी वेष लग्न से जिस राशि तक गुरु हो, उतने भाई होंगे।

दृष्टि–कुम्भ राशि में स्थित मंगल की दृष्टि धनस्थान, पचमभाव एवं षष्टम् भाव पर होगी। ऐसा जातक जीवन में यथेष्ट धन कमाता है। प्रथम सन्तति के बाद तीव्रता से भाग्योदय होता है। जातक अपने शत्रुओं को परास्त करता है तथा शत्रुओं को परास्त करने में किसी की सहायता लेना पसन्द नहीं करता है।

अनुभव–कुम्भ राशिगत एकादश स्थान में स्थित मंगल जातक को सरकारी नौकरी दिलाता है पर जातक अपने अधिकारी के साथ तकरार करता है।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल की महादशा उत्तमफल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–यहा चन्द्र+मंगल युति **लक्ष्मी योग** बनाएगी। जातक धनवान होगा
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को विद्या के द्वारा लाखों रुपये कमाने में सफलता देगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को मित्रा द्वारा धन दिलाएगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जातक को महान् उद्योगपति बनाएगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मगल के साथ शुक्र जातक विवाह के बाद महाधनी बनाएगा।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ यदि शनि हो तो जातक न्यायाधीश (जज) होगा। स्वत: ही भले-बुरे का लेखा-जोखा करता रहेगा। धन भी न्याय से कमाएगा पर मंगल के कारण दम्भी होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु व्यापार में नुकसानदायक है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु उद्योग में तनाव देगा।
9. 'शुभद्वययुते महाराजाधिपत्य योग' यदि इस मंगल के साथ कोई भी दो शुभ ग्रह हो तो जातक महाराजाधिराज के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
10. यदि यहां चन्द्र+मंगल+सूर्य+शनि हो तो जातक निश्चित ही (राजा) मिनिस्टर होगा और उसका लड़का राजकुमार (उसके पद का उत्तराधिकारी) होगा।

एकादश भाव में मंगल का उपचार–

1. सिन्दूर या शहद मिट्टी के बर्तन में रखकर श्मशान की जमीन में दबावे
2. 'मंगल यंत्र' धारण करें
3. लाल कुत्ता पाले।
4. छोटे बच्चों को घर में रखे।

मेषलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में
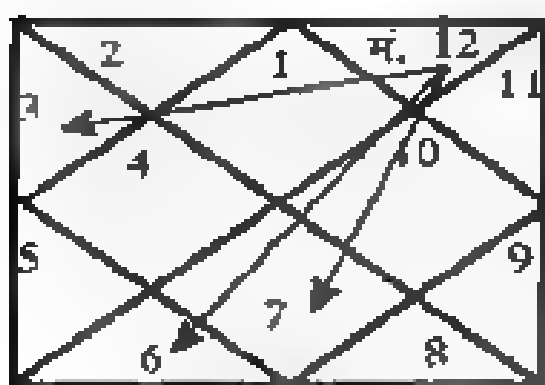
मेषलग्न में मंगल लग्नेश व अष्टमेश होता है, पर लग्नेश मंगल को अष्टमेश का दोष नहीं लगता। मंगल यहां मीन राशि होकर बारहवें स्थान पर होगा। मीन राशि गुरु की राशि है। गुरु मेषलग्न वालों के लिए योगकारक है फलत: मीन राशि में मंगल हर्षित एवं नियंत्रित रहेगा। ऐसा जातक शत्रुओं को परास्त करने में समर्थ एवं घर का मुखिया होता है। जातक यात्राएं अधिक करता है एवं बाप-दादाओं की कीर्ति को बढ़ाता है। हाथ खर्चीला होता है। जातक दानी होता है।

निशानी–प्राण जाए पर वचन न जाए। गुरु भक्त होगा जातक का बड़ा भाई जरूर होगा एर जीवित रहने की कोई शर्त नहीं।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार मंगल द्वादश में जातक का रुपया मुकदमे में, अपराध प्रवृत्ति एवं शत्रुनाश में खर्च कराता है।

दृष्टि–मीन राशि गत मंगल यहां पराक्रम स्थान, छठे स्थान एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: ऐसे जातक को मित्रों से लाभ, सघन जनसम्पर्क से लाभ होता है। जातक अपने पराक्रम से शत्रुओं का नाश करता है। उसे पत्नी का सुख मिलता है। पत्नी आज्ञा में रहता है।

दशा–भोजसंहिता के अनुसार जातक को मंगल की महादशा मिश्रित फल देगी। यदि शुभग्रहों की दृष्टि मगल पर हो तो मगल की दशा शुभ फल देगी।

मगल का अन्यग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के चन्द्र की युति जातक को धनवान बनाएगी। मागलिक दोष भी नष्ट करेगी।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य **'विद्याभंग योग'** एवं **'संतानहीन योग'** बनाता है। जातक उच्चविद्या प्राप्ति या उत्तम सन्तति प्राप्ति में बाधा महसूस करेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध **'विपरीतराज योग'** बनाएगा। ऐसे जातक के पास गाड़ी, बंगला, नौकर-वाहन सबकुछ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु **'विपरीतराज योग'** बनाएगा। साथ ही **'भाग्यभंग योग'** के कारण संघर्ष की स्थिति भी उत्पन्न करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र **'धनहीन योग'** **'विवाहभंग योग'** बनाता है पर द्वादश शुक्र उच्च का निदेश व्यापार में, स्त्री मित्रों से धन दिलाएगा।
6. यदि गुरु या सूर्य मंगल के साथ हो तो जातक को पुत्र सन्तति का पूर्ण सुख मिलता है। अपने बेटों-पोतों का खिलाएगा एवं उनकी तरक्की होते देखेगा।
7. यदि यहां मंगल के साथ गुरु+बुध की युति हो तो यह भी जबरदस्त राजयोगकारक है।
8. यदि यहां पर चंद्र+मंगल+गुरु+शुक्र की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लालबत्ती का हकदार होगा।

द्वादश भाव में मंगल का उपचार–

1. सूर्य के अर्घ्य की मीठा डालकर जल चढ़ाये।
2. लाल-भूरे कुत्तों को मीठी रोटियां खिलाना।
3. मंदिर में पताशा चढ़ाकर बच्चों को बांटने से अशुभ फल नष्ट होगा।
4. घर में जंग लगा हुआ, हथियार, चाकू, बर्तन न रखें।
5. बजरंग बाण का नियमित पाठ करें
6. ऋणमोचन मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

❑❑❑

मेषलग्न में बुध की स्थिति

मेषलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
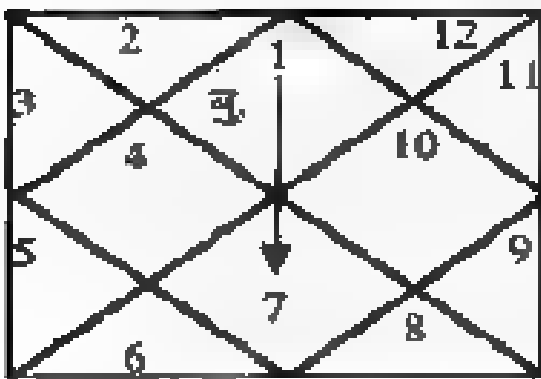
मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी है। लग्नेश मंगल बुध का मित्र नहीं है प्रथम स्थान में बुध मेष राशि का होगा। जातक विद्यवान्, विद्वान, उच्च शिक्षित होगा। जातक ज्योतिषी, मंत्र शास्त्र ज्ञाता एवं विदेशी विद्या, कम्प्यूटर से लाभ कमाने वाला होता है। शास्त्र कहते हैं–

हयरथधनरत्नगोधानरत्नैः प्रपूर्णो,
जलधितटनिवासी, रत्नतुल्यं च धान्यम्।
बहुजनकुलमित्रैः सत्यवादी प्रसूतो,
भवति यदि च केंद्री, दैत्यपूज्यो बुधश्च।। मानसागरी श्लोक8/पृ. 243

निशानी–राजा या हाकिम, खुदगर्ज, शरारती, बदनाम। जातक का जन्म दिन के समय का होगा।

अनुभव–लग्न में बुध वाला जातक व्यापारिक बुद्धि से ओत-प्रोत होता है. प्रायः सी.ए. या अच्छा सलाहकार होता है। जातक को कम्प्यूटर लाईन से लाभ होता है। 'भोजसंहिता' के अनुसार जातक उतावला होगा।

दशा–बुध की दशा उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि सूर्य हो तो जातक का जन्म वैशाख मास में सूर्योदय के समय का होगा पंचमेश सूर्य की तृतीयेश+षष्टेश। बुध के साथ लग्न में युति होने के कारण बुधादित्य योग बना। यह एक प्रकार का शक्तिशाली राजयोग है। जातक महान पराक्रमी एवं इन्द्रतुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला, राज्यमंत्री या सांसद होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यदि सुखेश चन्द्रमा हो तो जातक का जीवन साथी सुन्दर होगा। जातक की माता बीमार रहेगी
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल हो तो भोजसंहिता के अनुसार जातक शूरवीर, साहसी होने के साथ साथ बुद्धिमान भी होगा तथा शत्रु को परास्त करने में बुद्धिबल का प्रयोग करेगा। **'रुचक योग'** के कारण राजा का मंत्री होगा। कैबिनेट मिनिस्टर होगा।

4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु होने पर जातक परम भाग्यशाली होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र हो तो जातक का जीवन साथी अति सुन्दर एवं पुष्ट शरीर वाला होगा। जातक के पास सुन्दर वाहन एवं सुन्दर मोबाईल होगा।
6. **बुध+शनि**—शनि यहां नीच का होगा। पराक्रमेश बुध की लाभेश के साथ युति व्यक्ति को बुद्धिमान होने के साथ-साथ हठी व जिद्दी बनाती है। व्यक्ति निःसंदेह धनवान होगा।
7. **बुध+राहु**—राहु यहां जातक को लड़ाकू बनाएगा। जातक महान् बुद्धिमान एवं चालाक होगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु जातक को युद्ध में विजय दिलाएगा। जातक बुद्धिबल में शत्रुओं को निरुत्तरित कर देगा।

प्रथम भाव में बुध का उपचार—

1. शुभ काम (धर्म-कर्म) करे, मांसाहार न करें।
2. गणपति की उपासना करें।
3. हरे रंग का प्रयोग कम किया करें।

मेषलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
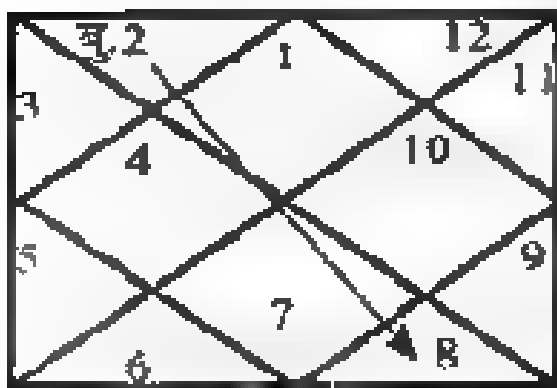
मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी है। लग्नेश मंगल भी बुध का मित्र नहीं है। द्वितीय स्थान में बुध वृष राशि का होगा। ऐसा जातक सबको तारने वाला, हाजिर जबाब, धनवान-सुखी, वक्ता एवं वाचाल होता है। जातक पुस्तकों के व्यापार से लाभ कमाने वाला, व्यापारी होता है।

अनुभव—भोजसंहिता के अनुसार ऐसा जातक बुद्धि बल से धन कमाएगा। जातक अच्छा वक्ता होगा बुध यहां स्वगृहाभिलाषी होने से जातक महत्वाकांक्षी होगा। तथा अन्जान व्यक्ति को अपना हितैषी मित्र बनाने में कुशल होगा। जातक मीठी मधुर वाणी बोलता है।

निशानी—योगी, राजा, मतलब परस्त, ब्रह्मज्ञानी।

दशा—बुध की दशा जातक को धनवान बनाएगी। मित्रों द्वारा लाभ होगा। बुध की दशा में जातक व्यापार द्वारा धन अर्जित करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—बुध के साथ सूर्य होने से 'बुधादित्य योग' बनेगा। यह एक प्रकार का राजयोग है। जो जातक की उन्नति हेतु विविध आमदनी के जरिए खोलेगा।
2. **बुध+चन्द्र**—बुध के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा। वाणी विनम्र होगी पर कभी कभी अपनी बात को खुद ही काट देगा विरोधाभाषी बयान देगा। धन का अपव्यय जीवन में होता रहेगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ लग्नेश+अष्टमेश मंगल हो तो जातक स्व पराक्रम से खूब कमायेगा।
4. **बुध+गुरु**—यदि बुध के साथ गुरु हो या बुध गुरु से दृष्ट हो तो जातक गणितशास्त्र, कम्प्यूटर क्षेत्र का विलक्षण विद्वान् होगा।

    'गुरुणायुते वीक्षिते वा गणितशास्त्रीधिकारेण सम्पन्नः

5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ यदि शुक्र हो तो **'मित्रमूल धनयोग'** एवं **'शत्रुमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी। जातक को मित्रों द्वारा एवं शत्रुओं द्वारा यथेष्ट धन की प्राप्ति होगी।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ दसमेश+लाभेश शनि जातक को निसंदेह धनवान बनाएगा। जातक व्यापारी होगा। वाणी कुटिल एवं व्यंग्यात्मक होगी।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु धन के घड़े में भारी छेद को बताता है। जातक भारी आर्थिक संघर्ष में से गुजरेगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु वाणी में लड़खड़ाहट देगा।
9. यदि यहां बुध+चन्द्र+शुक्र+गुरु की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। इसके आयक के अनेक जरिए होने से वह अति धनवान व्यक्ति होगा।

द्वितीय भाव में बुध का उपचार–

1. तोता, भेड़, बकरी न पालना।
2. दूध या चावल मंदिर में देना।
3. गणपति की नित्य उपासना करना।

मेषलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में
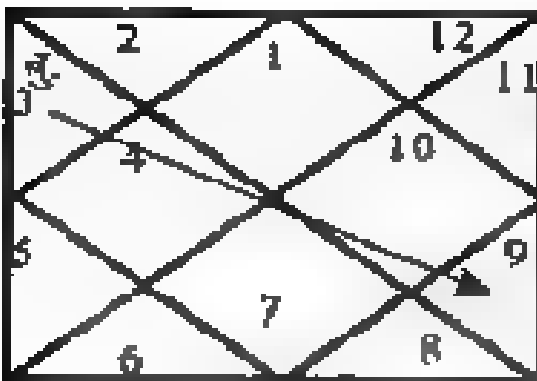
मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी है। लग्नेश मंगल बुध का मित्र नहीं है। तृतीय स्थान में बुध मिथुन राशि का स्वगृही होगा। ऐसा जातक भाइयों के सुख से युक्त, लम्बी आयुवाला, उच्च शिक्षा वाला व्यक्ति होता है। भृगुसूत्र के अनुसार– भ्रातृवान बहुसौख्यावान् पंचदशवर्षे क्षेत्रपुत्रयुतः ऐसा जातक पच्चीस वर्ष की आयु में धनवान हो जाता है। ऐसा जातक अध्ययन अध्यापन कार्यों में लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

निशानी—थूकने वाला, कोढ़ी मन्दा।

अनुभव—'भोजसंहिता' के अनुसार तृतीयस्थ स्वगृही बुध जातक को कम से कम दो बहिनों का सुख देगा। जातक को स्त्री मित्र से लाभ होगा तीसरे भाव में बुध भाइयों में मतभेद पैदा करता है।

दशा—बुध की दशा बहुत अच्छी जाएगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि सूर्य हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा यहां तृतीयेश+पंचमेश की युति सार्थक होगी। जातक की सन्तति उत्तम होगी। जातक स्वय विद्वान्, समाज का प्रतिष्ठित एवं पराक्रमी व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी। मित्र विश्वासनीय नहीं होंगे।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ लग्नेश मगल जातक को महान् पराक्रमी बनाएगा। जातक को भाई-बहन दोनों का सुख होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु जातक को परम सौभाग्यशाली बनाता है। जातक को मित्रों से लाभ होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ धनेश शुक्र मित्रों से धन दिलायेगा जातक की बहन जातक की मददगार होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ राज्येश+लाभेश शनि जातक को महान् पराक्रमी, कुशल व्यापारी एवं यशस्वी समाजसेवी बनाएगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को कुटुम्बीजनों में विवाद कराता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को धर्मध्वज बनाता है। जातक लेखन विद्या व ज्योतिष विद्या का जानकार होगा।
9. यदि यहां बुध के साथ सूर्य+चन्द्र+गुरु हो तो जातक महान पराक्रमी होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति (धरोहर) मिलेगी, वह (राजा) मिनिस्टर तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

तृतीय भाव में बुध का उपचार–

1. दुर्गा पूजन कर कन्याओं का आशीर्वाद लेना।
2. तोते को चुरी देना या मिर्च खिलाना।
3. रात को मूंग साबित भिगोकर सुबह पक्षियो को डालना।
4. दम की दवाई मुफ्त बांटना।
5. गणपति की आराधना करना।
6. द्वार पर हरे रग के वास्तुदोष नाशक गणपति लगावे।

मेषलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मेषलग्न में बुध तृतीयेश व अष्टेश होने से पापी है। लग्नेश मंगल बुध का मित्र नहीं है बुध चतुर्थ स्थान में कर्क राशि का, शत्रुक्षेत्री होगा। शास्त्रों में केन्द्रवर्ती बुध का शुभफल इस प्रकार कहा गया है–

> **हयरथनरनागोद्यानरत्नैः प्रपूर्णो**
> **जलधितट निवासी रत्नतुल्यं च धान्यम्।**

बहुजनकुलमित्रैः सत्यवादी प्रसूतो,
भवति यदि च केन्द्री, दैत्यपूज्यो बुधश्च॥–मानसागरी श्लोक 23/पृ. 241
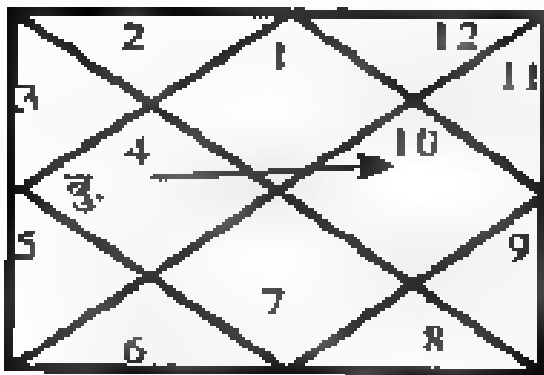
ऐसा जातक अपने 'कुल का दीपक' होता है। दूसरों का कष्ट अपने ऊपर झेलने वाला राज्याधिकारी, लम्बी आयु वाला, उत्तम मकान उत्तम वाहन से युक्त, धन-धान्य, रत्नों से परिपूर्ण सुखी जातक होता है। ऐसा जातक कम्प्यूटर एवं विदेशी व्यापार से लाभ कमाता है।

निशानी–राजयोग

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार जातक को मां बीमार रहेगी। उसे उत्तम वाहन सुख की प्राप्ति होगी। मामा के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे।

दशा–बुध की दशा अच्छी जाएगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य–**बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। यहां तृतीयेश व पंचमेश की युति राजयोग प्रदाता साबित होगी।
2. **बुध+चन्द्र–**बुध के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। उसे मां की ननिहाल की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को मित्रों से लाभ होगा। उसका पराक्रम तेज रहेगा।
3. **बुध+मंगल–**बुध के साथ नीच का मंगल जातक की माता को बीमार करेगा एवं भूमि में विवाद उत्पन्न करेगा।
4. **बुध+गुरु–**बुध के साथ भाग्येश गुरु उच्च का होकर **'हंसयोग'** बनाएगा। जातक चक्रवर्ती राजा होगा।
5. **बुध+शुक्र–**बुध के साथ धनेश शुक्र जातक को शत्रु से धन दिलाएगा।
6. **बुध+शनि–**बुध के साथ दसमेश+लाभेश शनि होने से जातक बुद्धिबल से, व्यापार से ध न कमाएगा।
7. **बुध+राहु–**बुध के साथ राहु जातक को मातृपक्ष से, मामा से नुकसान कराएगा।
8. **बुध+केतु–**बुध के साथ केतु जातक को शल्य चिकित्सा कराएगा।
9. यदि यहा बुध+सूर्य+चन्द्रमा+गुरु की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा एव पूर्ण ऐश्वर्य को भोगेगा।

चतुर्थ भाव में बुध का उपचार–

1. तोता, बकरी की पालना न करना।
2. 101 पलाश (ढाक) के पत्ते दूध से धोकर जल में प्रवाहित करें।
3. गणपति को नित्य अथवा प्रति बुधवार दूर्वा चढ़ावें।
4. प्रवेश द्वार पर वास्तुदोषनाशक गणपति लगावें।

मेषलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में
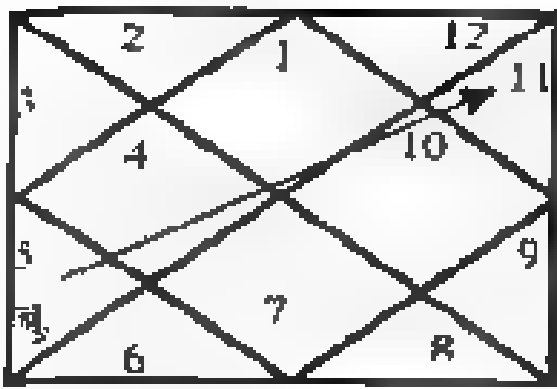
मेषलग्न मे बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी है। यह लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। पंचम स्थान में बुध सिंह राशि का मित्रक्षेत्री होगा। ऐसा जातक शिक्षित, बुद्धिमान, मुकाबले की परीक्षा में सफलता प्राप्त करने वाला, सी.ए. कानूनी सलाहकार, ज्योतिष, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद का पंडित (जानकार) होता है।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार पंचमस्थ सिंह का बुध एक कन्या सन्तति जातक को अवश्य देगा।

निशानी–मुह से निकला ब्रह्मवाक्य, उत्तम होगा

दशा–बुध की दशा अच्छा फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–यदि बुध के साथ सूर्य हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। जातक का पुत्र पराक्रमी होता है। उसे कुटम्बीजनों एवं मित्रों से लाभ होता है। बलवान पंचमेश की तृतीयेश से युति जातक को महान पराक्रमी बनाएगी।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ सुखेश चन्द्रमा उत्तम विद्यायोग कराता है। जातक के तीन कन्याएं होगी। कल्पना शक्ति प्रखर होगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल प्रथम पुत्र कराता है। जातक तकनीकी विद्या, मैकेनिकल कार्यों का जानकार होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु जातक को महान् भाग्यशाली बनाता है। जातक अध्ययन-अध्यापन के कार्य में रुचि लेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ धनेश शुक्र स्त्री मित्रों से लाभ दिलाएगा। जातक धनवान होगा
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ दसमेश+लाभेश शनि होने से जातक गूढ़ एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा। बड़ा व्यापारी होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु संतान उत्पत्ति में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गर्भपात कराएगा प्रथम सन्तति शल्य चिकित्सा से होगी।
9. यदि यहां बुध+चन्द्र+सूर्य+गुरु की युति हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी एव लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

पंचम भाव में बुध का उपचार–

1. चांदी का छल्ला बायें हाथ में पहनना चाहिए।
2. गाय की सेवा करें या नित्य चारा खिलावे।

3. गणपति की उपासना करें।
4. पन्ना रत्न अभिमंत्रित कर धारण करें

मेषलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में

2	1	12
3	4 / 10	11
5	7	9
बु. 6		8
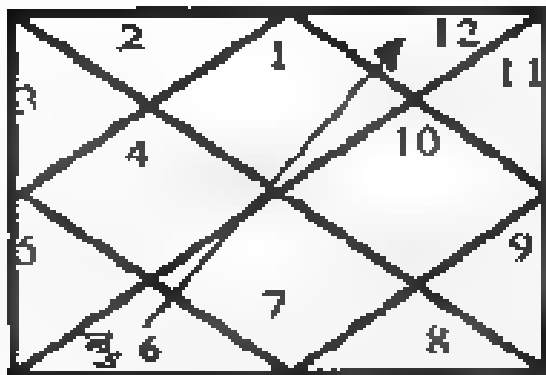
मेषलग्न में बुध तृतीयेश एवं षष्टेश होने से पापी है। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। षष्टम स्थान में बुध कन्या राशि में उच्च का होता है जातक को समुद्री यात्रा, हवाई यात्रा से लाभ होता है। जातक उच्च शिक्षित, डॉक्टर, केमिस्ट, आयुर्वेद, ज्योतिष का ज्ञाता होता है। जातक को छापाखाना, पुस्तक, व्यवसाय में रुचि होती है। जातक दम्भी, विवादशूर व राज्यपूज्य होता है। 32 वर्ष के बाद उच्च उन्नति के योग बनेंगे।

अनुभव—यदि छठे घर का स्वामी छठे स्थान में स्वगृही हो तो हर्ष नामक **विपरीतराज योग** बनता है। जातक भाग्यशाली सुखी, अजेय, स्वस्थ व धनी होता है। शत्रु, रोग, ऋण नहीं होगा।

निशानी—गुमनाम योगी एवं दिल का राजा। यदि मंगल 4 या 8 भाव में हो तो माता का साथ बचपन में छूट जाएगा।

अनुभव—यहां बुध पराक्रमेश होकर छठे जाने से **'पराक्रमभंग योग'** बना। जातक के मित्र दगा देंगे। कोई ऐसी घटना घटित होगी। जिससे जातक की कीर्ति भंग होगी। जातक का यश कलंकित होगा।

दशा—बुध की दशा मिश्रित फल देगी। भोजसंहिता के अनुसार जातक धार्मिक यात्राएं, तीर्थ यात्राएं करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश सूर्य की षष्टेश बुध से युति राजयोग कारक होते हुए भी सन्तान सुख में बाधक है
2. **बुध+चन्द्र**—बुध के साथ चन्द्रमा **'सुखहीन योग'** की सृष्टि करेगा। जातक को माता सुख, ननिहाल का सुख नहीं मिलेगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल **'लग्नभंगयोग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनाएगा। जातक धनी होगा। गाड़ी का सुख होगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनायेगा। जातक धनी होगा। गाड़ी बंगले का सुख होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ यदि शुक्र हो तो **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि होगी। शुक्र का नीचत्व समाप्त हो जाएगा। ऐसे में **'मित्रमूल धनयोग'** एवं **'शत्रुमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी जातक को शत्रु द्वारा धन लाभ मित्रों द्वारा धन लाभ एवं बीमा कम्पनी द्वारा धन लाभ की प्राप्ति होगी।

6. **बुध+शनि**—बुध के साथ **'राजभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** दोनो बनाएगा। जातक को आजीविका की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **बुध+राहु**—यहां राहु योगकारक है तथा बुध भी **विपरीत राजयोग** कारक है, अत: जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु जातक को धनी बनाता है परन्तु गुप्त बीमारी की शल्य चिकित्सा भी कराता है जातक के जीवन में गुप्त शत्रु रहेंगे।

षष्टम भाव में बुध का उपचार—

1. चांदी की अंगूठी बांये हाथ में पहने।
2. गंगा जल बोतल में रखकर (शीशे के ढक्कन वाली) खेती की जमीन में बुधवार के दिन गाढ़े।
3. किसी शुभ कार्य हेतु जाते समय खस का अत्तर लगा कर जावे।
4. दोहती, भानजी को खुश रखे। कन्याओं का आशीर्वाद लें।
5. साबित मूंग या बुध की वस्तुओं का दान करें।
6. 'बुध कवच' का पाठ करें।
7. हरे रंग का सुगंधित रुमाल जेब में रखें।

मेषलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में

मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्टेश होने से पापी होगा। लग्नेश मंगल बुध का मित्र नहीं है सप्तम स्थान में बुध तुला राशि मे होकर केन्द्रवर्ती होगा। शास्त्रो के अनुसार—

हयरथ नरनागोद्यानरत्नै:प्रपूर्णो,
जलधितट निवासी, रत्नतुल्यं च धान्यम्।
बहुजनकुलमित्रै: सत्यवादी प्रसूतो,
भवति यदि च केन्द्री दैत्यपूज्यो बुधश्च॥—*मानसागरी श्लोक 81/पृ. 243*
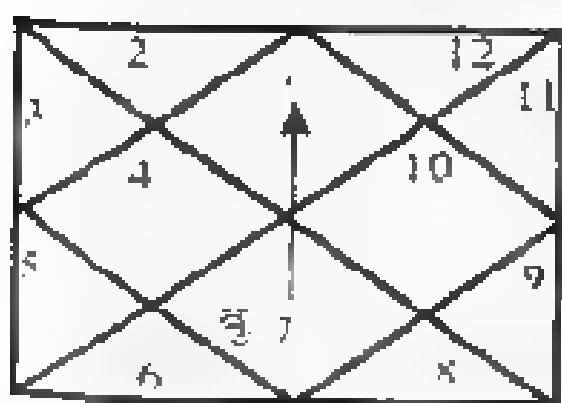
कुलदीपक योग के कारण ऐसा जातक तेजस्वी एवं प्रतिष्ठित होता है। जातक विदेशी व्यापार, कम्प्यूटर-केमिस्टरी, दवाइयो के व्यापार मे कमाएगा। जातक का जीवन साथी उच्चशिक्षित होगा। जातक अपनी पसन्द का विवाह करेगा।

निशानी—संसार के लिए पारस।

अनुभव—'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तमस्थ तुला राशि का बुध होने से जीवनसाथी विनम्र होगा। ससुराल पक्ष व्यापारवर्गीय होगा। पत्नी बीमार रहेगी।

दशा—बुध की दशा उन्नति देगी। जातक का विवाह होगा यदि विवाहित है तो गृहस्थ सुख मे अपूर्व वृद्धि होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश सूर्य की युति षष्टेश तृतीयेश बुध के साथ केन्द्र में है यह राजयोगकारक है ऐसा जातक राज्यपूज्य एवं विख्यात कीर्तियुक्त होता है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यहां चन्द्रमा होने से जातक का जीवनसाथी सुन्दर, चंचल एवं बुद्धिमान होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के कारण लग्नेश मंगल होने से कुण्डली 'मांगलीक' बनेगी। ऐसा जातक कठोर परिश्रमी होगा तथा उसे परिश्रम का फल भी मिलेगा परन्तु जीवन साथी में विचार नहीं मिलेंगे।
4. **बुध+गुरु**–बुध के गुरु होने से जीवनसाथी एवं जातक स्वय भाग्यशाली होगा। पत्नी धार्मिक, पतिव्रता स्वामीभक्त होगी।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ स्वगृही शुक्र **'मालव्य योग'** बनाएगा. ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, वैभवशाली एवं धनी होगा। पत्नी अतिसुन्दर एवं पुष्ट गात्र वाली होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ यहां शनि उच्च का होने से **'शशयोग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान परम पराक्रमी, धनवान गाड़ी-बंगला नौकर चाकर से युक्त वैभवशाली मनुष्य होगा।
7. **बुध+राहु**–यहां बुध के साथ राहु जीवनसाथी का बिछोह तलाक अथवा पूर्व मृत्यु का संकेत देता है।
8. **बुध+केतु**–यहां बुध के साथ केतु गृहस्थ सुख में बाधक है पत्नी-पत्नी के मध्य वैमनस्यता सम्भव है। गुप्त बीमारी भी सम्भव है।
9. यदि बुध के साथ सूर्य+गुरु+मंगल तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। वह लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।
10. यदि यहां बुध+सूर्य+गुरु+मंगल+चन्द्र की युति हो तो जातक राजा (मिनिस्टर) ही होगा एवं लाल बत्ती की गाड़ी का स्वामी आजीवन रहेगा।
11. बुध सातवें एवं शुक्र छठे हो तो जातक की पत्नी स्थाई रूप से बीमार रहेगी।

सप्तम भाव में बुध का उपचार–

1. माता लड़की के साथ एक जैसा व्यवहार करना।
2. पन्ने की अगूठी पहनना। (पन्ने के अभाव में पन्नी पहन सकते हैं।)
3. अधिक थूकना या बार बार थूकना. बंद करे। गुटका न खायें।
4. पन्ना जड़ा हुआ बुध यंत्र धारण करे
5. गणपति की उपासना करें।

मेषलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में
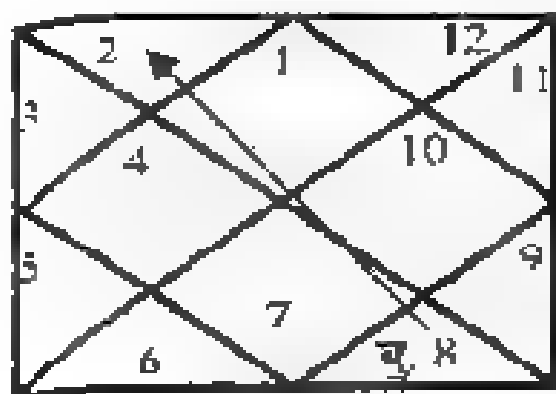
मेषलग्न में बुध तृतीयेश एवं षष्टेश होने से पापी है। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। अष्टम स्थान में बुध वृश्चिक राशि में होगा। जातक विद्वान्, धनवान, राज्यदरबार (सरकार) से मान-सम्मान, इज्जत पाने वाला राज्याधिकारी होगा। स्त्री पक्ष से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। पच्चीस वर्ष की आयु में अनेक कीर्ति-प्रतिष्ठा व सफलता प्राप्त करने वाला जातक होता है।

निशानी—छुपा तबाही का फन्दा, दो स्त्रियों वाला।

अनुभव—भोजसंहिता के अनुसार वृश्चिक राशि गत अष्टमस्थ बुध कीर्तिभंग कराता है। मित्र दगाबाज साबित होंगे। कोई ऐसी सामाजिक घटना परिवार में घटित होगी जिससे यश कलंकित होगा। साथ ही **विपरीत राजयोग** भी बनाता है। ऐसा जातक धनी होगा।

दशा—बुध की दशा अनिष्ट फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—बुध के साथ यदि सूर्य हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा पर यह योग ज्यादा सार्थक नहीं होगा क्योंकि पंचमेश का आठवें जाना **संतानहीन योग** एवं अन्य दुर्योग की सृष्टि भी करता है।
2. **बुध+चन्द**—यदि बुध के साथ चन्द्रमा है तो चन्द्र नीच का होगा एवं **'सुखभंग योग'** बनेगा मातृसुख में कमी आएगी। माता की अकाल मृत्यु होगी।
3. **बुध+मंगल**—यहां बुध के समय मंगल होने कुण्डली मांगलीक होगी पर अष्टमेश अष्टम स्थान में स्वगृही होने से विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी होगा। गाड़ी बंगले का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु**—यहां बुध के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** बनाता है परन्तु व्ययेश अष्टम में होने से **'विपरीतराज योग'** भी बनता है। ऐसा जातक धनी होगा। भाग्येदय संघर्ष के बाद होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ **'विलम्बविवाह योग'** एवं **'धनहीन योग'** की सृष्टि करता है। ऐसा जातक आर्थिक विषमता का शिकार होता है समय पर विवाह सुख नहीं मिलता।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि **'राजभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। ऐसा जातक ठेकेदारी एवं व्यापार में नुकसान उठाता है।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु होने जीवन में गुप्त शत्रुओं का प्रकोप रहेगा। पैर की हड्डी टूटेगी।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु होने से व्यक्ति विषय परिस्थिति में से गुजरेगा। दाये पांव में चोट पंहुचेगी।

अष्टम भाव में बुध का उपचार–

1. लड़की के नाम में चांदी का छल्ला डालना।
2. हरा अण्डरगवियर पहने।
3. जन्म दिवस के दिन मिट्टी के बर्तन में शहद या चीनी भरकर वीरान जगह में रखना।
4. सीढ़ियों की मरम्मत का ध्यान रखना।
5. गणपति की उपासना करें, प्रत्येक बुधवार को दूर्वा एवं लड्डू चढ़ायें।

मेषलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में
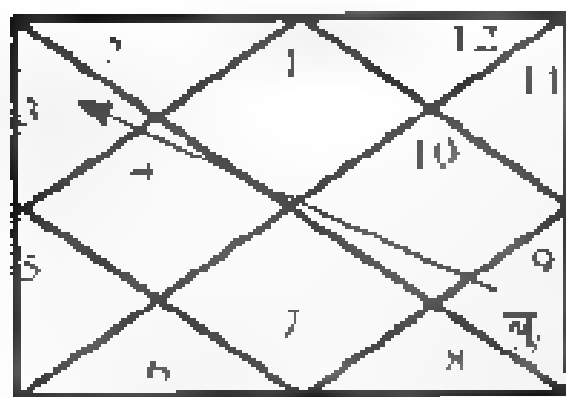
मेषलग्न में बुध तृतीयेश व षष्ठेश होने से पापी है। मेषलग्न में बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। नवम स्थान बुध धनु राशि का होगा। ऐसा जातक परिवार की सेवा करने वाला, धार्मिक कार्य एवं परोपकार के कार्यों में रुचि रखने वाला होता है। भृगुसूत्र के अनुसार 'वेदशास्त्रविशारद संगीतपाठकः दाक्षिण्यवान्' ऐसा जातक धर्मशास्त्र, नीति, संगीत का ज्ञाता एवं चतुर होता है, ऐसा जातक पिता का भक्त एवं परिजनों का प्यारा होता है।

निशानी–कोढ़ी तथा राजा एक साथ।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार धनु राशिगत नवमस्थ बुध जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु में कराएगा। मित्रों की मदद से जातक आगे बढ़ेगा। परिजनों का सहयोग रहेगा।

दशा–बुध की दशा उत्तम फल देगी। भाग्योदय कराएगी, यदि गुरु की स्थिति कुण्डली में अच्छी हो तो बुध की दशा का शुभत्व 40% और बढ़ जाएगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश तृतीयेश की युति यहां ज्यादा अच्छी तरह से मुखरित होकर जातक को प्रबल राजयोग देती है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा होने से जातक सुखी होगा, उत्तम वाहन एवं भवन का स्वामी होगा। माता सहायक होगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ लग्नेश मंगल होने से जातक महापराक्रमी होगा, मंगल उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्त्वाकांक्षी होगा।
4. **बुध+गुरु**–[illegible] पुत्र [illegible]
5. **बुध+शुक्र**–[illegible] लाभ [illegible]
6. **बुध+शनि**–[illegible] से [illegible]

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक कठोर परिश्रमी होगा तथा संघर्ष के साथ आगे बढ़ेगा। पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु संघर्ष में सफलता का द्योतक है। पिता से विचार नहीं मिलेंगे।
9. यदि यहा बुध+सूर्य+गुरु+चन्द्रमा हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

नवम भाव में बुध का उपचार–

1. शरीर पर चांदी पहने।
2. कौवे को भोजन का हिस्सा देना।
3. गाय की सेवा करें, गायों को घास दे।
4. गणपति की उपासना करें। प्रति बुधवार को लड्डू चढ़ाये।

मेषलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न मे बुध तृतीयेश एवं षष्टेश होने से पापी होगा। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। दशम स्थान में बुध मकर राशि का केन्द्रवर्ती होगा–

हयरथनरनागोद्यानरत्नै द्यप्रपूर्णो,
जलधितटनिवासी रत्नतुल्य च धान्यम्।
बहुतजनकुलमित्रैः सत्यवादी प्रसूतो,
भवति यदि च केन्द्री, दैत्यपूज्यो बुधश्च॥

–मानसागरी श्लोक 8/ पृ. 243
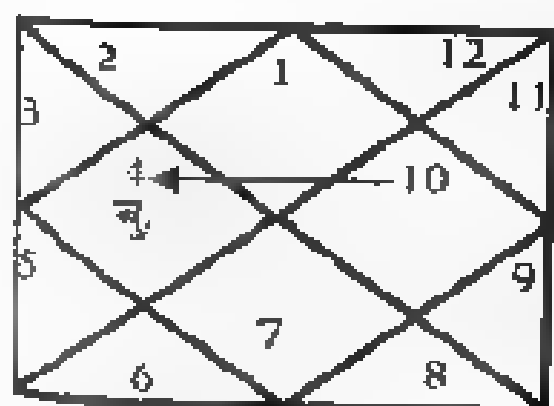
'कुलदीपक योग' के कारण जातक तेजस्वी व यशस्वी होता है, ऐसा जातक शरारती व चालबाज होता है। ऐसा जातक समुद्री यात्रा, हवाई यात्रा से लाभ कमाने वाला, लेखन-सम्पादन में रुचि रखता है। जातक अनेक गुप्त व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है। '**भृगुसूत्र**' के अनुसार ऐसा जातक '**बहुलकीर्तिमान् बहुविद्यवान्!**' बहुत कीर्तिवाला व धनवान होता है।

निशानी–प्रसन्नता से निर्वाह करने वाला।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार से मकरस्थ बुध का दशम भाव में होना शुभ है। 32 वर्ष की आयु में जातक राजा (जिलाधीश) द्वारा सम्मानित होगा। व्यापार व्यवसाय मे लाभकारी स्थितियां बनेंगी जातक अच्छा गणितज्ञ, लेखक या ज्योतिषी हो सकता है।

दशा–बुध की दशा शुभ फलदायक साबित होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि सूर्य की युति हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश+तृतीयेश की यह युति शुभफलदाई एवं प्रबल राजयोग कारक है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा जातक के जीवन में सुख, वैभव, ऐश्वर्य से परिपूर्ण करेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल उच्च का होने से **'रुचक योग'** बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। व्यक्तित्व आकर्षक होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु नीच का होगा। जातक भाग्यशाली होगा पर भाग्य मन्दा होगा। खर्च जीवन में बहुत रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक महाधनी होगा। पत्नी का सुख उत्तम होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से **'शशयोग'** बनेगा। जातक निश्चय ही राजातुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं सम्पन्न होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को राजपक्ष से दण्ड दिला सकता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को राजकीय वैभव में कटौती कराएगा। सरकारी अधिकारी धोखा देंगे।
9. यदि यहां बुध के साथ सूर्य+मंगल+शनि हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होकर लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

दशम भाव में बुध का उपचार–

1. जबान को चमका कम करें, मांसाहार व शराब से दूर रहें तो बुध शुभ होगा।

मेषलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में

2	1	बु. 12	11
3	4	10	9
5	7	8	6
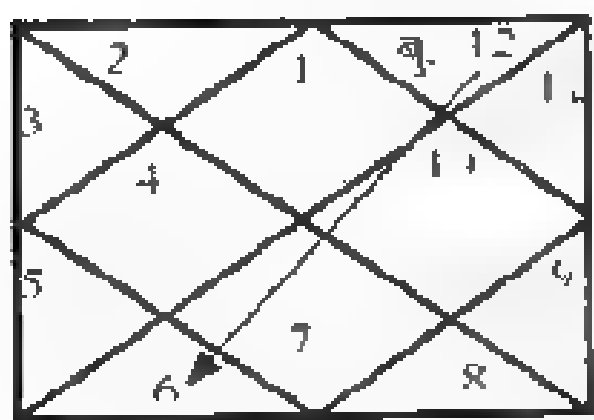
मेषलग्न बुध तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पापी है। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। एकादश स्थान में बुध कुम्भ राशि में होगा। जातक की किस्मत 34 वर्ष बाद चमके। ऐसा जातक बहन-भाइयों का पालने वाला, जीवन सम्पूर्ण सुख सुविधाओं से सम्पन्न होगा। ऐसे व्यक्ति की आमदनी के जरिए अनेक प्रकार के होंगे।

निशानी–धनी जन्म से

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार कुम्भ राशिगत बुध यदि लाभ स्थान में हो तो जातक प्रज्ञावान होगा। उसे पुत्र व पुत्री दोनों प्रकार की सन्तान का लाभ होगा। सन्तान सत्पुत्र व सुवाच्य होंगे। जातक स्वयं पढ़ा-लिखा होगा।

दशा–बुध की दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। पंचमेश+तृतीयेश की युति कुम्भ राशि में राजयोग कारक है जातक महान पराक्रमी होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा जातक को विद्यावान एवं प्रजावान बनाएगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को व्यापार किंवा उद्योग में लाभान्वित करेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु जातक को पुत्र सन्तति देगा एवं व्यापार में भी लाभ देगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को धनवान बनाएगा। पत्नी एवं स्त्री-मित्रों से सहायता मिलती रहेगी।
6. **बुध+शनि**–यदि बुध के साथ शनि स्वगृही होने से जातक उद्योगपति होगा। बड़े कारोबार का स्वामी होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को व्यापार में अचानक नुकसान देगा। ऐसा जातक दो–तीन बार व्यापार बदलेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को चलते कारोबार मे घाटा देगा।
0. यदि यहां बुध+सूर्य+शनि+गुरु की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा या उससे कम नहीं होगा। उसके पुत्र भी जातक के समान ही पराक्रमी होंगे।

एकादश भाव में बुध का उपचार–

1. नया कपड़ा दरिया में धोकर गंगा जल का छींटा देकर पहने।
2. बुध यंत्र पन्ना डालकर गले में पहने तो धनहानि से बचाव होता है। पाठक चाहें तो यह यंत्र लेखक से सम्पर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

मेषलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में
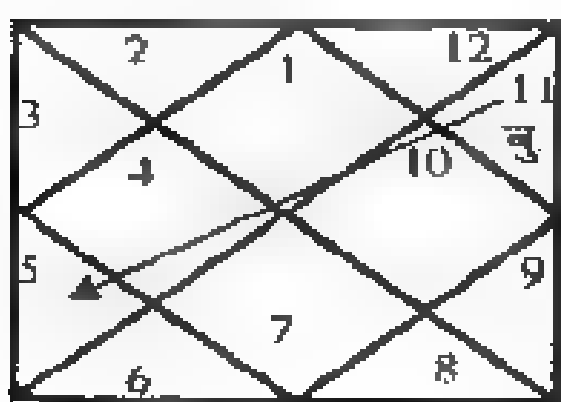
मेषलग्न में बुध तृतीयेश एवं षष्टेश होगा। बुध लग्नेश मंगल का मित्र नहीं है। द्वादश स्थान में बुध 'मीन राशि' का होगा। जो बुध की नीच राशि है। जातक गुप्त विद्याओं का तंत्र मंत्र, ज्योतिष आयुर्वेद का ज्ञाता होगा। इसके जन्म से परिवार, धन-दौलत की वृद्धि पाने वाला, बुजुर्गों की सम्पत्ति पाने वाला होता है। जातक की बहन, लड़की अपने घर मे दुःखी पर ससुराल मे सुखी होती है।

विशेष–बुध द्वादश में जातक का रुपया शिक्षा कार्य में खर्च कराता है

निशानी–नेक, लम्बी आयु, अच्छा जीवन बिताने वाला।

अनुभव–भोजसंहिता के अनुसार मीन राशिगत बुध यदि द्वादश भाव में हो तो जातक Export Import विदेशी व्यापार में कमाएगा। ऐसे जातक का छोटा भाई नहीं होता है।

दशा–बुध की दशा अनिष्ट फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य** यदि बुध के साथ सूर्य हो तो, **'बुधादित्य योग'** बनेगा। वस्तुतः यह पचमेश सूर्य की तृतीयेश, षष्ठेश बुध के साथ द्वादश भाव में युति होगी जहां बुध नीच का होगा। यह स्थिति राजयोग प्रदाता है, पर जातक को सन्तान सम्बन्धी चिन्ता भी मिलेगी। कीर्तिभंग योग बनता है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा माता की सम्पत्ति से जातक को वंचित कराएगा। **'सुखहीन योग'** के कारण जातक को आराम कम मिलेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल **'लग्नभंग योग'** के साथ कुण्डली को **'मांगलिक'** बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी, ऐश्वर्यशाली एवं खर्चीले स्वभाव का होगा
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ यदि शुक्र हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। बुध का नीचत्व समाप्त होगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा सुन्दर स्त्री का पति होगा एवं अन्य स्त्रियां भी उस पर मोहित रहेंगी।
6. **बुध+शनि**–यहां बुध+शनि की युति अथवा बुध+राहु की युति हो तो जातक को जेल जाना पड़ सकता है।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु व्यर्थ की यात्राएं कराएगा जातक के खर्च इतने बढ़े चढ़े होंगे कि कई बार ऋण लेने की नौबत आएगी।
8. **बुध+केतु**– बुध के साथ केतु व्यवहार में कमी लाएगा। जातक के घर चोरी होगी।
9. यदि यहां बुध+शुक्र+गुरु+चन्द्र की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा या उससे कम की हस्ती नहीं होगा। जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होगा। धार्मिक, परोपकारी व दयालु होकर नगरसेठ या 'मेयर' होगा।

द्वादश भाव में बुध का उपचार–

1. एक स्टील का छल्ला जल प्रवाह करना एक (एक ही समय) पहनना।
2. कोरा घड़ा जल प्रवाह करना, 12 बार
3. किया हुआ वायदा पूरा करना जबान का पक्का रहना।
4. अपनी जबान का शब्द ले डूबेगा (गन्दा शब्द न बोलना)।
5. प्रति बुधवार गणपति का लड्डू चढ़ाना।
6. पन्ना जड़ित 'बुधयंत्र' गले में धारण करना।

□□□

मेषलग्न में गुरु की स्थिति

मेषलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में

मेषलग्न में शुक्र नवम स्थान का स्वामी (त्रिकोणाधिपति) होने के कारण शुभफलदाई है। इसे व्ययेश होने का दोष नहीं लगता। कहा है–

एको जीवो यदा लग्ने, सर्वयोगस्तदा शुभा।
दीर्घजीवी महाप्रज्ञो, जातको नायको भवेत्॥ मानसागरी श्लोक 32
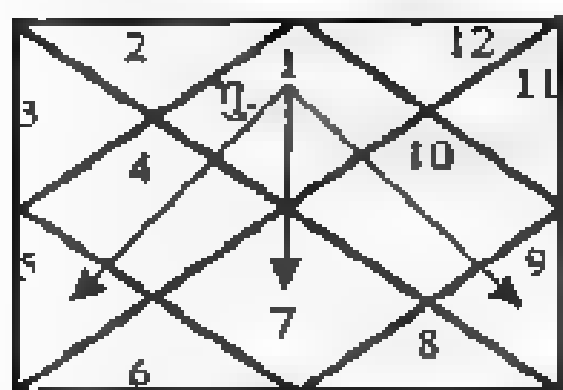
ऐसा जातक बुद्धिमान, उच्च शिक्षा प्राप्त, जज, बैरिस्टर, वकील, सम्पादक, एकाउण्टेंट होता है। जातक परिवार का नाम रोशन करने वाला, कुल का दीपक सबका प्यारा व चहेता होता है। जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा।

निशानी–फकीरी पूर्ण। घर में सभी डिग्री/ डिप्लोमा धारक होंगे। इसके जन्म से पिता की सोई किस्मत जगती है।

दृष्टि–लग्नस्थ गुरु की दृष्टि सन्तान भाव, सप्तम भाव एवं नवम (भाग्य) भाव पर पूर्ण रूप से अमृत वर्षा करेगी। फलतः विवाह के तुरन्त बाद जातक का भाग्योदय होगा। पत्नी सुन्दर एव कामी होगी। दूसरा भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा। जातक के पुत्र जरूर होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति या कारोबार वारिस में मिलेगा।

दशा–गुरु की दशा चहुओर से उन्नति देगी। भाग्योदय कराएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य उच्च का होगा। पंचमेश सूर्य यहां परमयोगकारक होकर भाग्येश के साथ होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। धनवान होगा। राज दरबार में उसका प्रभाव होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्र हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। दोनों शुभग्रह पंचम, सप्तम एवं नवम स्थान को देखेंगे। फलतः विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। द्वितीय भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा। आयु के 24 एव 32 वर्ष महत्वपूर्ण रहेंगे।

3. **गुरु+मंगल**–यदि गुरु के साथ मंगल हो तो 'रुचकयोग' बनेगा। ऐसा जातक जिला, शहर या गांव का मुखिया धर्मगुरु होता है। उसकी समाज व जाति में बड़ी भारी इज्जत होती है।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ पराक्रमेश बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा। महान् धार्मिक एवं बुद्धिशाली होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र होने से जातक धनवान होगा। जातक को परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा। जातक कुल में धनिक व्यक्ति होगा।
6. **गुरु+शनि** गुरु के साथ शनि यहां नीच का होगा। भाग्येश, दसमेश+लाभेश शनि की लग्न में यह प्रति जातक को व्यवहारिक ज्ञान से परिपूर्ण जीवन होगा।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ लग्न में राहु की स्थिति जातक को लड़ाकू विमान का स्वभाव का व्यक्तित्व देगी। चाण्डालयोग के कारण व्यक्ति भक्ष्य अभक्ष्य का भेद नहीं कर पाएगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु व्यक्ति को झगड़ालू स्वभाव का बनाएगा। जातक युद्ध में सदैव जीतेगा।
9. गुरु+चन्द्र+मंगल+सूर्य की युति लग्न में हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लाल बत्ती की गाड़ी उसके पास रहेगी।

प्रथम भाव में गुरु का उपचार–

1. दान न लेना, अपनी किस्मत पर भरोसा रखना।
2. यदि परिवार में जब कोई डिग्री/डिप्लोमा लेगा गुरु अशुभ न रहेगा।
3. पुखराज रत्न जड़ित गुरु यंत्र गले में धारण करें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में
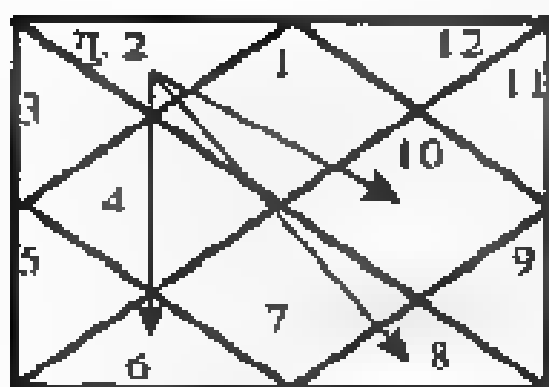
मेषलग्न में गुरु नवमेश (त्रिकोणाधिपति) होने के कारण शुभफलदाई है। द्वितीय स्थान में गुरु वृष राशिगत होगा। जातक धनवान, उच्च शिक्षित ससुराल के सम्बन्ध से तरक्की पाने वाला होता है। जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलती है। ऐसा जातक धार्मिक कार्य परोपकार के कार्य में अत्यधिक रुचि लेगा।

निशानी–जगत का धर्मगुरु और विद्या का स्वामी। ऐसे जातक को अपनी मौत का पहले पता चल जाता है.

दृष्टि–वृष राशिगत गुरु की पूर्ण दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एवं दसवें स्थान पर होगी। फलत: जातक दीर्घजीवी होता हुआ, शत्रुओं का नाश करेगा राजनीति में महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करेगा।

अनुभव–देवगुरु गुरु की यह स्थिति जातक को उत्तम वाणी देती है जातक उत्तम वक्ता होता है। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी पर साथ में बहुत सी जिम्मेदारियां भी मिलेंगी।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार गुरु की यह दशा उत्तम फल देती है। जातक धन प्राप्ति की ओर आगे बढ़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य वस्तुतः पंचमेश+भाग्येश की युति परम धनदायक है. जातक प्रखर वक्ता होगा। वाणी के माध्यम से धनार्जन करेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा परन्तु यहां चन्द्रमा उच्च का होगा। दोनों शुभग्रह छठे स्थान, आठवें स्थान एवं दसवें स्थान का पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को उच्च वाहन एवं भवन की प्राप्ति होगी। वह दीर्घजीवी होगा एवं राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल वस्तुतः पंचमेश+भाग्येश की युति परम धनदायक है। जातक प्रखर वक्ता होगा। वाणी के माध्यम से धनार्जन करेगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ पराक्रमेश बुध व्यक्ति को महान पराक्रमी बनाएगा। जातक बडबोला होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ यदि शुक्र हो तो बलवान धनेश की नवमेश के साथ युति होने से **'भाग्यमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी। जातक का भाग्य पग पग पर जातक की सहायता करेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि की धनस्थान में यह युति लाभदायक रहेगी। जातक व्यापार प्रिय होगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ धनस्थान में राहु धन के घड़े में छेद के समान है। जातक धन संग्रह के मामले में भागफल रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ मगल धनस्थान में केतु होने से जातक फजूलखर्च होगा।
9. गुरु+चन्द्र+शुक्र+मगल की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती की गाड़ी उसके पास रहेगी।

द्वितीय भाव में गुरु का उपचार–

1. अपने घर का रास्ता साफ-स्वच्छ रखना।
2. मकान का कच्चा हिस्सा फौरन पक्का बनाए।
3. गुरु यत्र पुखराज रत्न के साथ गले में धारण करें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में

मेषलग्न में गुरु नवम एव द्वादश भाव में स्वामी होकर योगकारक है। तृतीय स्थान में गुरु मिथुन राशि का होगा। ऐसे जातक का जन्म माता पिता के लिए शुभफलदाई होता है इसके जन्म से पिता की उन्नति होती है। जातक उच्च शिक्षा पाने वाला, मकान वाहन चौपाए के सुख
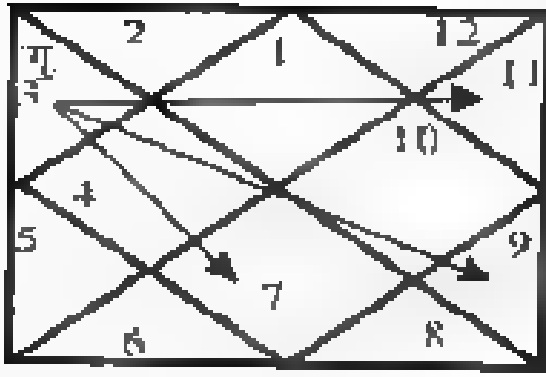
से युक्त, जज, वकील, आई.एस.,आर.एस. अधिकारी होता है। इसे प्राय: निसन्तान व्यक्ति का धन मिलता है। 'अष्टात्रिंशद्वर्षे यात्रासिद्धः' 38वें वर्ष में हुई यात्रा से सफलता मिलेगी भाग्य बदलेगा।

निशानी–ज्योतिष और आशीष का स्वामी।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि सप्तम स्थान भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान पर होगी। गुरु यहा उच्चाभिलाषी है। फलत: विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। पत्नी-ससुराल उत्तम मिलेंगे। यत्नपूर्वक किए गए व्यापार से लाभ होगा। जातक का जन्म पिता के लिए शुभ।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार ऐसे जातक वृद्धजनों का सेवक होता है। वृद्धों से मित्रता करता है और उनकी सलाह को मान्यता देता है। जातक का पितृपक्ष धनवान होगा। तीसरा गुरु भाई बहनों के लिए अच्छा होता है।

दशा–गुरु की दशा भाग्योदय कराएगी, विवाह कराएगी। सरकार से लाभ, मान्यता व महत्त्व दिलाएगी।

गुरू का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–पंचमेश सूर्य के साथ तृतीय स्थान में गुरु होने से जातक महान् पराक्रमी, परोपकारी एवं धर्मध्वज होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। गजकेसरी योग तो बनेगा पर पीठ पीछे बुराई होगी। राज्यपक्ष से धोखा होगा। असावधानी रखने पर मुकदमा हार जाएंगे।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ लग्नेश+अष्टमेश मंगल पराक्रम स्थान में होने से जातक परम पराक्रमी होगा। जातक को तीन से अधिक भाइयों का सुख होगा। बड़े भाई का सुख भी सम्भव है।
4. **गुरु+बुध** यदि गुरु के साथ बुध हो तो जातक पराक्रमी होगा। मित्रों से लाभ होगा। जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र तृतीय स्थान में होने से जातक को भाई-बहन दोनों का सुख होगा। जातक को स्त्री मित्रों से विशेष लाभ होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ दसमेश शनि यदि तृतीय स्थान में हो तो जातक पराक्रमी होगा
7. **गुरु+राहु**–तृतीय स्थान में गुरु के साथ राहु जातक के परिवार में विग्रह कराएगा।
8. **गुरु+केतु** गुरु के साथ तृतीय स्थान में केतु जातक को समाज में यशस्वी बनाएगा।
9. तृतीय स्थान में पापग्रह शनि राहु, मंगल या केतु हो तो जातक दम्भी व झूठा होगा। 'चोरवचनवान् दुर्वचनः अनृतप्रियः।

तृतीय भाव में गुरु का उपचार–

1. केसर-चदन का तिलक लगावें।
2. दुर्गा पूजन या कन्याओं को मीठा भोजन देकर आशीर्वाद लें।
3. गुरु यंत्र गले में धारण करें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मेषलग्न में गुरु त्रिकेणाधिपति होने से शुभफलदाई है। इसे व्ययेश होने का दोष नहीं है। चतुर्थ स्थान में गुरु कर्म राशि में उच्च का होगा फलतः **हंसयोग**, **कुलदीपक योग एवं केसरीयोग** बनेगा। शास्त्र कहते हैं–

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे, यस्य केन्द्रे गुरुः।
मत्तमातंगयूथानाम्, एको हन्ति च केसरी॥ –मानसागरी
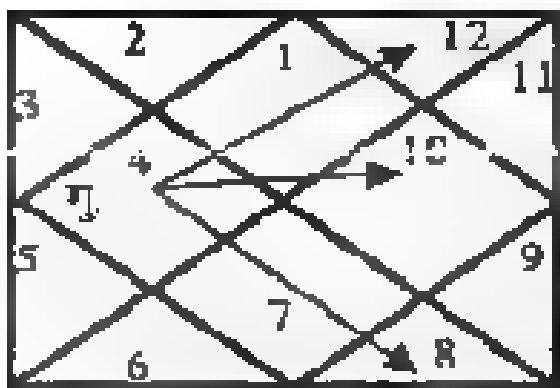
ऐसे जातक के जन्म के साथ ही माता-पिता का भाग्योदय होगा। जातक उच्च शिक्षित व संस्कारी होगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यवान, प्रतापी एवं धनवान होगा। ऐसे जातक को अनायास गढ़े धन की प्राप्ति, लॉटरी सट्टा, शेयर बाजार के उतार- चढ़ाव से धन की प्राप्ति होती है। प्रायः निसन्तान व्यक्ति के धन की प्राप्ति होती है।

निशानी–चन्द्र की राजधानी, जातक को भूमि से लाभ होगा।

दृष्टि–उच्चस्थ गुरु की दृष्टि अष्टम स्थान, दशम स्थान एवं व्यय स्थान पर है फलतः जातक दीर्घायु होगा। राज्य (सरकार) में पद व सम्मान को प्राप्त करेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा, परोपकारी एव दानशील होगा।

दशा–इस जातक को गुरु की दशा-अतर्दशा में जबरदस्त शुभफलों की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–बलवान भाग्येश के साथ पंचमेश सूर्य यदि सुखस्थान में हो तो जातक को सुख की कमी नहीं रहती। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का राजयोग विशेष शक्तिशाली है। जातक को सरकार से मदद या पुरस्कार मिलेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो गजकेसरी योग के साथ **'किम्बहुना योग'** बनेगा। इससे अधिक और क्या होगा? जातक के पास तीन-चार मंजिला बड़ा भवन होगा एक से अधिक भवन होंगे, कई वाहन होंगे, 'अश्व वाहनयोग गृहविस्तारवान्' ऐसे जातक के गुरु व चन्द्रमा की दशा अतर्दशा में शुभफलों की प्राप्ति होगी। जातक को मातृपक्ष से खूब धन मिलेगा।

3. **गुरु+मंगल**–यदि यहा मगल हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। भूमि से लाभ होगा। मंगल का नीचत्व समाप्त होने से जातक शत्रुओं का मान मर्दन करने में सक्षम होगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ पराक्रमेश बुध चतुर्थ भाव में होने से जातक अनेक वाहनों का स्वामी होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र चतुर्थ भाव में होने से जातक सुन्दर भवन एवं वाहन का स्वामी होगा। भवन भी एक से अधिक होगें।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि चतुर्थ भाव में होने से जातक उच्च दर्जे का व्यापारी होगा।
7. **गुरु+राहु**–यदि यहां गुरु के साथ राहु हो तो **'चाण्डाल योग'** बनेगा जातक अभक्ष्य भोजन करेगा। मातृतुल्य स्त्री या गर्भिणी स्त्री के साथ सम्भोग करेगा। जातक परगृहवास करेगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु चतुर्थ भाव में होने से जातक के साथ वाहन दुर्घटना सम्भव है।
9. यदि यहां गुरु+चन्द्र+मंगल+सूर्य की युति हो तो जातक (राजा) मंत्री होगा। लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

चतुर्थ भाव में गुरु का उपचार–

1. लाल बनियान या कच्छा पहनें।
2. बुजुर्गों के व्यापार से लाभ, बुजुर्गों की सेवा करना।
3. धर्म मंदिर में सिर झुकाना, पूजा-पाठ करना।
4. कुल पुरोहित एवं गुरु का आशीर्वाद लेना।
5. पीपल का वृक्ष लगाना या पीपल के वृक्ष को प्रति गुरुवार पानी सींचे।
6. सच्चा पुखराज यंत्र में जड़वाकर गले में धारण करें।
7. राजयोग के लिए माणक+पुखराज+मोती का त्रिशक्ति लॉकेट अभिमंत्रित करके पहने.

मेषलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में
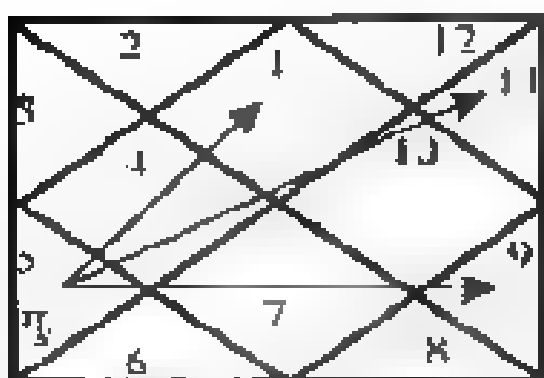
मेषलग्न मे गुरु नवम भाव (त्रिकोणाधिपति) होने से शुभफलदाई है। इसे यहां व्ययेश होने का दोष नहीं है। पंचम स्थान में गुरु सिंह राशि का होगा। ऐसे जातक के बाप से पोते तक सभी कुटुम्बी सुखी व धनवान होते हैं। यदि जातक के घर में गुरुवार को सन्तान हो तो सन्तान उत्पत्ति के साथ ही जातक का तत्काल भाग्योदय होता है। भृगुसूत्र के अनुसार-**'बुद्धिचातुर्यवान्, वाग्मीप्रतापी, अन्नदान, प्रियः, कुलप्रियः'** ऐसा जातक अत्यधिक विलक्षण बुद्धि वाला, वाक्यपटु वक्ता, प्रतापी, अतिथिप्रिय व कुलप्रिय होता है।

अनुभव–नवमेश यदि पंचम में हो तो जातक का पिता प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा, सन्तति अल्प होगी।

निशानी–ब्रह्मज्ञानी परन्तु आग का बास, गुस्से वाला।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि यहां भाग्यभवन, लाभस्थान एवं लग्नस्थान पर होगी। फलतः जातक भाग्यशाली होगा प्रथम सन्तति के बाद तीव्रगति से भाग्योदय होगा। व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा। गुरु की दशा में किए गए प्रयत्नों में बराबर सफलता मिलेगी।

दशा–'भोज संहिता' के अनुसार गुरु की दशा बहुत उत्तम फल देगी। भाग्योदय कराएगी। व्यक्तित्व में उन्नति एवं व्यापार में लाभ देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–भाग्येश गुरु के साथ स्वगृही सूर्य, जातक को अध्यात्म क्षेत्र में सफलता दिलाता है। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त, प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। प्रथम पुत्र होगा। पुत्र जन्म के बाद प्रतिष्ठा विशेष रूप से बढ़ेगी।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा सुखेश व नवमेश की युति पंचम भाव में शुभफलदाई है। जातक का ननिहाल व माता की सम्पत्ति मिलेगी। पुत्र व पुत्री दोनों होंगे। दोनों आज्ञा में रहेंगे।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश बृहस्पति के साथ लग्नेश+अष्टमेश मंगल की युति पंचम भाव में प्रथम पुत्र देगा। पुत्रों की संख्या तीन से पांच के मध्य होगी। जातक की संतान भाग्यशाली होगी।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ तृतीयेश+षष्टेश बुध की युति जातक को मन्त्र शास्त्र, ज्योतिष व गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता बनाएगी ऐसे जातक को पुत्र एवं कन्या, दोनों प्रकार की सन्तति का लाभ होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश की युति पंचम स्थान में जातक को आध्यात्म-कला व अभिनय के क्षेत्र में भरपूर सफलता देता है।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि पंचम स्थान में जातक को व्यवहारिक ज्ञान सम्पन्न बुद्धि देगा। जातक विदेशी भाषा एवं विदेशी कार्यों में रुचि लेगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु विद्या में बाधा पहुचायेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।
8. **गुरु+केतु** बृहस्पति के साथ केतु विद्याध्ययन में संघर्ष का संकेत देता है।
9. यदि गुरु के साथ राहु या केतु हो तो 'सर्पशापात् सुतक्षयः' सर्प के शाप से पुत्र सन्तान का नाश हो 'शुभदृष्टे परिहारः' यदि शुभग्रह की दृष्टि हो तो परिहार हो जाता है। यदि फिर भी बाधा हो तो **'कालसर्प योग'** की शान्ति से पुत्र सन्तान होगी।
10. यदि यहां गुरु के साथ सूर्य+चन्द्र+मंगल की युति हो तो प्रथम सन्तति उत्पन्न के बाद जातक राजातुल्य ऐश्वर्य व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा.

पंचम भाव में गुरु का उपचार–

1. लंगर, धर्म स्थान का प्रसाद न लेना।
2. मुफ्त भोजन एवं माल से परहेज रखना।
3. सिर पर चोटी रखना।
4. साधु सज्जनों की सेवा करना, धर्मशाला-धर्म मन्दिर की सफाई सेवा करना।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति षष्टम स्थान में
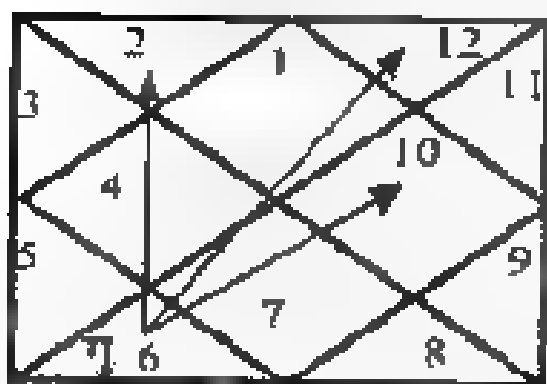
मेषलग्न में गुरु नवम स्थान (त्रिकोणाधिपति) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। इसे यहां व्यमेश होने का दोष नहीं लगता। षष्टम् स्थान में गुरु कन्या राशि का होगा। ऐसा जातक चाल-चलन का नेक, राजदरबार (सरकार) में इज्जत सम्मान पाने वाला, शत्रुओं को परास्त करने वाला, नौकरों-सेवकों से युक्त, सन्तान पक्ष से सुखी जातक होता है। जातक अपने पोते को हाथों से खिलाता है।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि दशम भाव, द्वादश भाव एवं धन स्थान पर होगी। फलतः राज्य पक्ष, धन पक्ष, कुछ कमजोर रहेगा। खर्च अधिक होगा एव धन प्राप्ति हेतु, भाग्योदय हेतु जातक को सघर्ष करना पड़ेगा। गुरु यहा रोग, ऋण व शत्रु में वृद्धि करता है।

निशानी–मुफ्तखोर मगर साधु स्वभाव। जातक उपदेशक व व्याख्याता होता है।

अनुभव–जातक का पिता बीमार रहेगा।

दशा–गुरु की दशा मिश्रित फल देगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार दूसरी दशा में उत्तम धन की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–यहां बृहस्पति के साथ सूर्य होने से **'विद्याभंग योग'** बनेगा। जातक को प्रारम्भिक विद्या में रुकावटें आएगी। पुत्र सन्तति मे भी बाधा सम्भव है। पर उपाय करने पर शान्ति होगी
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्रमा होने से **'गजकेसरी योग'** बनेगा, चन्द्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। चन्द्रमा षष्टम में होने से सुखभंग योग बना। गुरु षष्टम में होने से **'भाग्यभंग योग'** बना। ऐसे में गजकेसरी की सार्थकता काफी कमजोर हो गई है।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ लग्नेश मंगल होने से **'लग्नभंग योग'** बनता है परन्तु अष्टमेश छठे जाने से **'विपरीत राजयोग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक परम तेजस्वी विद्वान एवं धनी जातक होगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ तृतीयेश बुध होने से **'पराक्रमभंग योग'** बनता है परन्तु षष्टेश

षष्टम स्थान में स्वगृही होने से 'विपरीत राजयोग' बना। ऐसा जातक धनी होगा। वाचाल एवं प्रबुद्ध होगा। उसके पास चार पहियों की गाड़ी होगी।

5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ धनेश शुक्र होने से '**धनहीन योग**' यह शुक्र सप्तमेश होने से '**विलम्बविवाह योग**' भी बनता है। ऐसा जातक धनी होगा। परन्तु धन आएगा व खर्च होता चला जाएगा। विवाह को लेकर भी जातक को परेशानी होगी।
6. **गुरु+शनि**—भाग्येश गुरु के साथ शनि होने से **राज्यभग योग** एव **लाभभंग योग** बनाएगा। जातक धनी तो होगा पर जीवन में संघर्ष बहुत रहेगा।
7. **गुरु+राहु**—भाग्येश गुरु के साथ राहु छठे राजयोग प्रदाता है। जातक अपने शत्रुओं के नाश करने में सक्षम होगा।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु छठे जातक को गुप्तरोग एवं गुप्त शत्रु देगा पर जातक उनका समूल नाश करने में सक्षम होगा।
9. गुरु के साथ शनि या राहु हो तो जातक महारोग से ग्रसित होगा। शत्रु पिता का धन हरण कर लेंगे।

षष्टम भाव में गुरु का उपचार—

1. संतान के साथ या सलाह से व्यापार करना।
2. धर्म मंदिर के पुजारी को पीले वस्त्र देना।
3. पुखराज रत्न सोने में धारण करे।
4. पीला सुगन्धित रुमाल जेब में रखे।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में

मेषलग्न में गुरु नवम भाव (त्रिकोणाधिपति) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। उसे यहा व्ययेश होने का दोष नहीं लगता। सप्तम भाव में गुरु तुला राशि का होगा। फलत: **कुलदीपक योग** केसरी योग की सृष्टि होगी।

किं कुर्वन्ति ग्रहा: सर्वे, यस्य केन्द्रे गुरु:
मत्त मातगं यूथानाम्, एको हन्ति च केसरी॥ मानसागरी
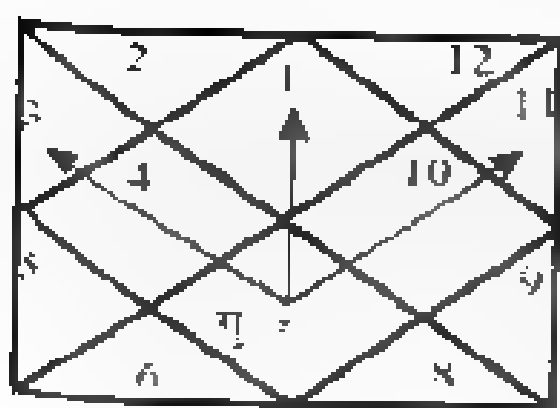
ऐसा जातक भागीदारी के कामों में लाभ कमाने वाला होता है। जातक धनी, मानी व दानी होने के साथ साथ ज्योतिष शास्त्र, तंत्र मंत्र, कर्मकाण्ड, आयुर्वेद का ज्ञाता होगा। जातक धार्मिक ग्रंथों का अध्येता, विक्रेता, प्रकाशक होता है। ऐसा जातक मौत के समय घर पर होता है.

अनुभव—'भोज संहिता' के अनुसार नवमेश यदि सप्तम मे हो तो पिता परदेश में कमाएगा। परदेश मे जातक का पिता धार्मिक कार्य कराएगा।

निशानी–पिछले जन्म का साधु, राजा जनक की तरह संयासी व ज्ञानी। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक की पत्नी पतिव्रता होगी।

दृष्टि–सप्तम भाव में बैठा तुला का गुरु लाभ स्थान, लग्न स्थान और पराक्रम स्थान को देखेगा। फलतः पत्नी पक्ष व ससुराल में लाभ, व्यापार व्यवसाय मे लाभ तथा व्यक्तित्व में बढ़ोतरी होती रहेगी। भाई बहनों से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

दशा–'भोज संहिता' के अनुसार गुरु की दशा सबसे उत्तम फल देगी। इसकी दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा। उसके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–भाग्येश गुरु के साथ पंचमेश सूर्य होने से जातक को पूर्ण गृहस्थ सुख मिलेगा। जातक का भाग्योदय दो टुकड़ो मे होगा। प्रथम विवाह के बाद एवं द्वितीय प्रथम पुत्र सन्तति के बाद जबरदस्त भाग्योदय होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। सुखेश चन्द्रमा एवं भाग्येश गुरु की युति केन्द्र में होने के कारण बहुत शक्तिशाली, प्रभावशाली होगी। जातक का कद राजनीति में ऊंचा होगा।
3. **गुरु+मंगल**–लग्नेश व अष्टमेश मंगल गुरु के साथ होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के तृतीयेश+षष्टेश बुध सप्तम में होने से जातक का जीवन साथी सुन्दर होगा, वैवाहिक जीवन सुखी होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–यदि गुरु के साथ शुक्र हो तो स्वगृही होगा। बलवान धनेश की भाग्येश से युति होने कारण **'भाग्यमूलधन योग' 'मालव्य योग'** बना। जातक अपने भाग्य से खूब कमाएगा। उसे पिता की सम्पत्ति या व्यवसाय मिलेगा।
6. **गुरु+शनि**–यदि गुरु के साथ शनि हो तो उच्च का होगा। ऐसे में **'शशयोग'** एवं राज्येश भाग्येश की युति के कारण जातक राज्य सरकार में उच्चपद प्राप्त करेगा। आई.एस. अफसर, आर.एस. अफसर बनेगा।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ राहु सप्तम में वैवाहिक सुख में बाधक है।
8. **गुरु+केतु**–भाग्येश गुरु के साथ केतु सप्तम मे वैवाहिक जीवन में कटुता देगा।
9. यदि यहा गुरु के साथ+चन्द्र+शनि+शुक्र हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं राजातुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा.

सप्तम भाव में गुरु का उपचार–

1. रतिया (चिरमिया) पीले कपड़े में बांधकर रखना।
2. नशेबाज, साधु, फगड़ों से दूर रहना।
3. गुरुवार का व्रत रखे.
4. पुखराज रत्न धारण करे, गुरु यंत्र मे।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में
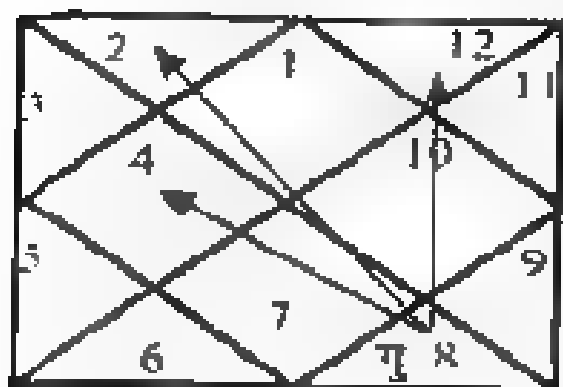
मेषलग्न में गुरु नवम स्थान (त्रिकोण) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। इसे व्ययेश होने का दोष नहीं लगेगा। अष्टम स्थान मे गुरु वृश्चिक राशि का होगा तथा **'भाग्यभंग योग'** को सृष्टि करेगा परन्तु दु:स्थान का स्वामी दु:स्थान में होना **'विपरीत राजयोगदायक'** एव शुभ माना गया है.

ऐसा जातक धनवान, हर बात को गुप्त रखने वाला, किसी के अधीन न रहने वाला, जंगल में मंगल करने वाला, दु:खियों की सेवा करने वाला सज्जन व्यक्ति होता है। ऐसा जातक स्त्री पक्ष से धन पाता है पर पिता की सम्पत्ति नहीं मिलती।

दृष्टि–वृश्चिक के गुरु की दृष्टि व्ययभाव, धनभाव एवं चतुर्थभाव पर होगी। फलत: जातक सुख में कमी, धन मे कमी महसूस करेगा। खर्च पर नियत्रण रखना पड़ेगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार यदि नवमेश अष्टम में हो तो जातक की युवावस्था मे ही पिता की मृत्यु हो जाएगी। जातक पैतृक सम्पत्ति से वंचित रहेगा।

निशानी–मुसीबत के समय परमात्मा की सहायता का मालिक।

दशा–भोज संहिता के अनुसार गुरु की दशा मिश्रित फलकारी साबित होगी। यदि मंगल की स्थित यहां शुभ है तो गुरु की दशा का शुभत्व 60% बढ़ जाएगा।

गुरु के साथ अन्य ग्रहों का सम्बन्ध

1. **गुरु+सूर्य**–यहा गुरु के साथ सूर्य होने से **'विद्याभंग योग'** बनेगा। जातक को प्रारम्भिक विद्या में बाधा आएगी। लापरवाही रखने पर जातक को राजदण्ड भी मिलेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ यदि चन्द्रमा हो तो नीच का होगा। गजकेसरी योग बनेगा परन्तु साथ-साथ सुखभग योग, भाग्यभंग योग भी बनेगा। फलत: गजकेसरी योग ज्यादा सार्थक नहीं रहेगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से **'लग्नभंग योग'** बनेगा। साथ ही अष्टमेश अष्टम स्थान में स्वगृही होने से **'विपरीत राजयोग'** भी बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा। उसके पास चार पहियों वाली गाड़ी होगी, वैभव, ऐश्वर्य होगा परन्तु संघर्ष बना रहेगा।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ तृतीय+षष्टेश बुध अष्टम स्थान में **पराक्रमभंग योग** के साथ **विपरीत राजयोग** भी बनाएगा। जातक धनी होगा पर मित्रों में यश नहीं मिलेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र होने से **'धनहीन योग'** एव **विलम्ब विवाह योग** बनाएगा। जातक का विवाह देरी मे होगा। धन आएगा पर खर्च होता चला जाएगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि अष्टम में होने से **'राजभंग योग'** एव **'लाभभंग योग'** बनता है। जातक को आजीविका हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

7. **गुरु+राहु**—गुरु साथ राहु हो तो **'चाण्डाल योग'** बनेगा। जातक की आमदनी अनैतिक तरीके से होगी।
8. **गुरु+केतु**—भाग्येश गुरु के साथ केतु जातक को अल्पायु एवं दुर्घटना का भय देता है।
9. गुरु के साथ यदि शनि, राहु या केतु इत्यादि पापग्रह हो तो 'विधवासंगमो भवति' जातक विधवा या अपने से बड़ी आयु की स्त्री के साथ सगम करता है।

अष्टम भाव में गुरु का उपचार—

1. शरीर पर सोना पहनने से अच्छा होगा।
2. शुक्र की चीज घी, दही, आलू, कपूर धर्म स्थान देना फकीर के बर्तन में दान डालना।
3. पुखराज रत्न जड़ित 'गुरु यंत्र' गले में धारण करें।
4. गुरुवार का व्रत रखें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में
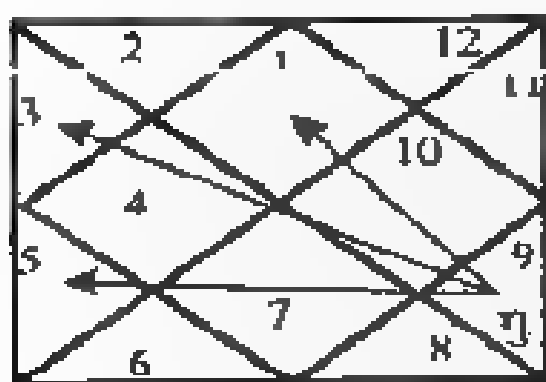
मेषलग्न में गुरु नवम स्थान (त्रिकोण) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। इसे व्ययेश होने का दोष नहीं लगता। नवम स्थान में गुरु धनु राशि का स्वगृही होगा। यह गुरु की सबसे उत्तम स्थिति है।

ऐसा व्यक्ति राजातुल्य प्रतापी एवं फकीर तुल्य त्यागी होगा। कभी शाह, कभी मलंग (फकीर), धर्म का प्रचारक होगा। धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, धर्मार्थ चीजें बनाने वाला होगा। जातक लेखन सम्पादन एवं प्रकाशन कार्यों में रुचि रखने वाला होगा।

दृष्टि—स्वगृही गुरु की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं सन्तान भाव पर होगी। फलतः जातक को प्रत्येक कर्म, जो काम हाथ में लेगा, सफलता मिलेगी। पराक्रम तेज होगा। भाइयो परिजनों व मित्रों का पोषक होगा। जातक को सन्तान सुख उत्तम मिलेगा। उसे पुत्र अवश्य होगा। जातक प्रबल भाग्यशाली होगा।

निशानी—योगी एवं धन का त्यागी, सुनहरी खानदान।

दशा—'भोज संहिता' के अनुसार देवगुरु गुरु की दशा अमृत बरसाएगी अत्यंत लाभकारी साबित होगी। जातक का चहुमुखी विकास होग।

अनुभव—जातक छोटे भाई-बहनों व सन्तति के ऊपर खूब रुपया खर्च करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**-गुरु के साथ सूर्य जातक को परम सौभाग्यशाली तेजस्वी जीवन देगा। जातक विद्यावान् होगा। विद्या भाग्योदय मे सहायक होगी। जातक पुत्रवान् होगा, पराक्रमी होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**—गुरु के साथ यहा चन्द्रमा होने से **'गजकेसरी योग'** बनेगा।

गजकेसरीसञ्जात: तेजस्वी धनधान्यवान्।
मेधावी गुणसम्पन्नो, राज्यप्रतिकरो भवेत्।।

यहा गुरु (नवमेश) का सुखेश (केन्द्रपति) चन्द्रमा से युति अत्यन्त सौभाग्यदायक साबित होगा। जातक को सुन्दर भवन, सुन्दर वाहन का सुख मिलेगा। गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। गुरु स्वगृही होने से बलवान होगा। 'गजकेसरी योग' के कारण राज्य सरकार के उच्चपद मिलेगा। जातक आई.एस., आर.एस. अधिकारी, न्यायाधिकारी या सांसद होगा।

3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा तथा अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश +षष्ठेश बुध भाग्यस्थान में जातक को महान् पराक्रमी एवं व्यापारप्रिय बनाएगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र प्रबल राजयोग देगा। जातक महान् धनी होगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि भाग्यस्थान में जातक को बहुत बड़ा व्यापारी, ठेकेदार बनाएगी।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु भाग्योदय में बाधा का काम करेगा। प्रत्येक नये काम में एक बार बाधा जरूर आएगी।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु भाग्य में विशेष चमक लाएगा।
9. यदि गुरु धनु में व शनि तुला में हो तो यह जबरदस्त राजयोग होगा। शश योग व्यक्ति को मिनिस्टर पद पर पहुंचाएगा।
10. यदि यहा गुरु के साथ शुक्र+चन्द्र+मंगल हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

अष्टम भाव में गुरु का उपचार–

1. गंगा स्नान करना, प्रत्येक जन्म दिन पर सफलतापूर्वक।
2. तीर्थ यात्रा करना/करवाना।
3. झूठा वायदा न करना।
4. झूठा भोजन न खाना न खिलाना। बुफे पार्टी से दूर रहे।
5. किसी के शामिल बैठकर भोजन न करे एवं बफर पार्टी में भाग न ले।
6. पुखराज पहने एवं गुरु की सेवा करे।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न में गुरु नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से शुभफलदाई है। इसे यहां व्ययेश होने का दोष नहीं लगेगा। दशमस्थान में गुरु मकरराशि का नीच का होगा। फिर भी कुलदीपक योग केसरी योग की सृष्टि होगी शास्त्र कहते हैं -

किं कुर्वन्ति ग्रहाः सर्वे, यस्य केन्द्रे गुरुः।
मत्तमातंगयूथानाम्, एको हन्ति च केसरी॥ -मानसागरी
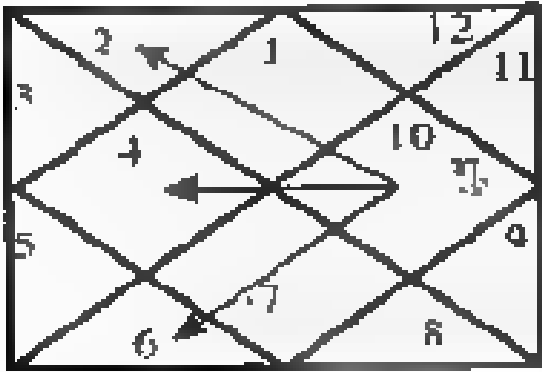
ऐसा जातक नौकर-सेवकों से युक्त, बड़े भवन का स्वामी, चारों पहियों वाली गाड़ी का स्वामी होता है। ऐसा जातक चालाक व होशियार होता है -'योग्यतावान्, प्रौढकीर्ति बहुजनपूज्य' परन्तु गुरु नीच का होने से धन, कीर्ति में कुछ न कुछ कमी रहेगी। मामा से सम्बन्ध अच्छे होंगे।

अनुभव—जातक धार्मिक कार्यों में बढ़चढ़ कर रुचि लेगा।

निशानी—पहाड़ी इलाके का गृहस्थी। पिता की सम्पत्ति में विघ्न मिलेगा।

दृष्टि—नीच के गुरु की दृष्टि धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम भाव पर होगी। फलतः जातक धनवान होगा, सुखी होगा तथा रोग व शत्रु का नाश करने में समर्थ होगा।

दशा 'भोज संहिता' के अनुसार गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। जातक के धन एवं सुख में अद्वितीय वृद्धि कराएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य होने से जातक को राजा द्वारा सम्मान मिलेगा। सरकारी अधिकारी उसकी मदद में रहेंगे.
2. **गुरु+चन्द्र**—गुरु के साथ चन्द्रमा होने से चन्द्रमा अपने घर सुख स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। केन्द्रवर्ती चन्द्र+गुरु की युति **'गजेकसरी योग'** की बलवान स्थित को बताती है। जातक उत्तम वाहन, उत्तम भवन का स्वामी होगा। जलीय पदार्थों में कमाई कर सकता है लाभ प्राप्त कर सकता है। यथा—रत्न, ज्वैलरी, कांच, नमक, शक्कर, पाउडर, सफेद रंग की वस्तु वगैरा।
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। गुरु का नीचत्व यहां समाप्त हो गया। ऐसा जातक राजा, राजमंत्री, सांसद या उनके समकक्ष प्रभावशाली जातक होता है।
4. **गुरु+बुध** गुरु के साथ बुध होने से जातक महान् पराक्रमी होगा। वाचाल होगा। विद्वान होगा एवं सरकारी क्षेत्र से सम्मानित होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—भाग्येश गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र दसम भाव में जातक को विशेष राजयोग बनाता है। जातक महान् धनी एवं व्यापारी होगा।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा तथा **'शश योग'** बनेगा। यहां गुरु का नीचत्व समाप्त हो जाता है। नवमेश व राज्येश, लाभेश की युति जातक को उद्योगपति या बड़ा व्यापारी बनाती है।
7. **गुरु+राहु**—भाग्येश गुरु के साथ राहु दसम में राज्यसुख में बाधक है।

8. **गुरु+केतु**—भाग्येश गुरु के साथ केतु जातक को राजा से सम्मान दिलाएगा।
9. गुरु+मंगल+शनि+चन्द्र की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा एवं लाल बत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

दशम भाव में गुरु का उपचार—

1. पीले वस्त्र एवं सोना न पहनना।
2. 40 43 दिन तांबे का पैसा चलते पानी में डाले तो पिता श्री के कष्ट दूर होंगे। यह प्रयोग गुरुवार से प्रारम्भ करें।
3. गुरुवार को व्रत रखे।
4. पुखराज रत्नजड़ित 'गुरु यंत्र' धारण करें।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में

2 1 12 11 गु. 3 4 10 5 9 7 6 8
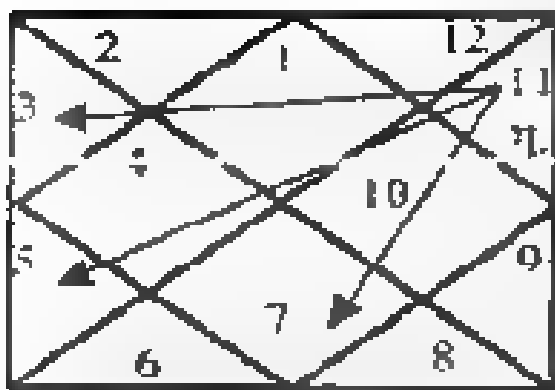
मेषलग्न में गुरु नवम (त्रिकोण) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। उसे यहां द्वादशेश होने का दोष नहीं लगता। एकादश स्थान में गुरु कुलराशि का होगा। ऐसा जातक जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं को पाने वाला, राजदरबार (सराकार) से मान-इज्जत पाने वाला, उत्तम भवन सुख से युक्त, उत्तम मकान सुख से युक्त, होते हुए भी, अपने आप में अकेला व धर्मभीरु होता है।

अनुभव—ऐसे जातक का विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होता है। जातक धनवान होगा।

निशानी—खजूर के पेड़ की भांति अकेला बड़े भाई-बहन न हो। 32वें वर्ष में घर में कार आएगी।

दृष्टि—गुरु की पूर्ण दृष्टि तीसरे स्थान पर, पंचम स्थान पर, एवं सप्तम स्थान पर पड़ेगी। ऐसे जातक का पराक्रम तेज होगा, सन्तान सुख उत्तम होगा। पत्नी धनवान होगी। ससुराल अच्छा होगा।

दशा—'भोज संहिता' के अनुसार गुरु की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। जातक के पराक्रम, व्यक्तित्व का चहुमुखी विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य होने से जातक को प्रथम सन्तति के रूप में पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी जातक का भाग्योदय विवाह के बाद एवं प्रथम पुत्र प्राप्ति के बाद विशेष रूप से होगा.
2. **गुरु+चन्द्र**—चन्द्रमा यदि गुरु के साथ हो तो **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक के भाग्य में अनुपम वृद्धि होगी जातक का पुत्र धार्मिक एवं संस्कारवान होगा पत्नी रूपवती सुन्दर होगी।

3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ लग्नेश+अष्टमेश मगल होने से जातक को व्यापार में कृषि-भूमि मे लाभ होगा। जातक का भाग्योदय उद्योगपति होगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ पराक्रमेश+अष्टमेश बुध होने से जातक को व्यापार से लाभ होगा। मित्रों से लाभ होगा एवं शत्रु भी परास्त होकर धन देगे।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र होने से धन में वृद्धि लाभ में वृद्धि होगी
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ स्वगृही शनि जातक को उद्योगपति बनाएगा। उद्योग में लाभ होगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु लाभ में बाधक है।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु व्यापार में बदलाव लाएगा।
9. गुरु के साथ शनि+मंगल+चन्द्र हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। अति धनवान होगा।
10. गुरु+शनि+मंगल+चन्द्र+सूर्य पंच ग्रह युति यहां हो तो जातक निश्चिय ही (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती का स्वामी होगा नगर का प्रमुख व्यक्ति होगा।

एकादश भाव में गुरु का उपचार–

1. पीला सुगंधित रुमाल पास रखे।
2. पिता के वस्त्र, चारपाई, वस्त्र सोना का इस्तेमाल न करे।
3. लावारिश लाश को कफन
4. केसर-चंदन का तिलक करे।
5. पुखराज रत्न सुवर्ण धातु में अभिमंत्रित करके पहने।

मेषलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में
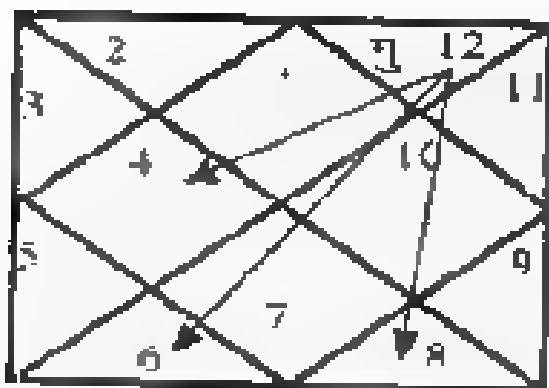
मेषलग्न में गुरु नवम (त्रिकोण) का स्वामी होने से शुभफलदाई है। उसे यहां व्ययेश होने का दोष नहीं लगता। द्वादश स्थान में गुरु मीन राशि का स्वगृही होगा। ऐसा जातक कुलगुरु की तरह सर्वत्र पूजा (आदर) पाने वाला, कर्मकाण्डी पंडित, ज्ञानी होता है. भृगुसूत्र के अनुसार– **"शुभयुते स्वक्षेत्रे स्वर्गलोकप्राप्ति."** ऐसे जातक को मृत्यु उपरान्त स्वर्गलोक की प्राप्ति होती है। इस कुण्डली वाले जातक को सताने वाला बरबाद हो जाएगा एवं आशीर्वाद पाने वाला तर जाएगा। जातक परोपकारी एवं धनवान होगा।

अनुभव–द्वादश भाव में द्वादशेश स्वगृही हो तो विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनता है। ऐसा जातक गूढ़ स्वतंत्र विचारों वाला प्रतिष्ठित एवं धनी व्यक्ति होता है। इस विपरीत राजयोग भी कह सकते हैं।

निशानी—उत्तम ज्ञानी वैरागी। जातक धनसंग्रह में विश्वास रखेगा।

दृष्टि—स्वगृही गुरु की अमृत दृष्टि चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव पर होगी फलत: सुख मे वृद्धि, शत्रुओं का नाश करता हुआ, ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा। ऐसे जातक की मृत्यु सुखद होगी।

दशा—'भोजसंहिता' के अनुसार विद्या, उच्च शिक्षा की डिग्री मिलते ही जातक का भाग्योदय होगा। गुरु की दशा मे जातक का सर्वांगीण विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ पंचमेश सूर्य होने '**विद्याभंग योग**' बनता है। जातक को प्रारम्भिक विद्या में बाधा आएगी।
2. **गुरु+चन्द्र**—यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो '**गजकेसरी योग**' बनेगा। वस्तुत सुखेश चन्द्रमा की त्रिकोणपति गुरु से युति अत्यन्त शुभफलदाई होगी। जातक को सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी। राजदरबार में सम्मान मिलेगा। जातक का राजनैतिक वर्चस्व बढ़ेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का धर्मात्मा एवं दानी होगा।
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ लग्नेश मंगल होने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। परन्तु अष्टमेश मंगल का द्वादश स्थान में जाने से '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनी होगा। उसके पास चार पहियों की गाड़ी होगी।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ पराक्रमेश बुध होने से **पराक्रमभंग योग** बना परन्तु षष्टेश व्यय मे होने से '**विपरीत राजयोग**' बना साथ ही नीच का बुध स्वगृही गुरु के साथ होने से '**नीचभंग राजयोग**' भी बना। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, विद्वान एवं पराक्रमी होगा। उसके पास धन भी होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ धनेश+सप्तमेश शुक्र **धनहीनयोग** एवं **विलम्ब विवाह योग** बनाता है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ दसमेश+लाभेश शनि क्रमशः **राजभंग योग** एवं **लाभभंग योग** बनाएगा। जातक को आजीविका प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **गुरु+राहु**—गुरु के साथ राहु धार्मिक यात्राएं एवं व्यय के खर्च कराएगा।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु खराब स्वप्न दिखाएगा पर सपने सच होंगे।
9. यदि गुरु के साथ शनि, केतु या राहु हो तो जातक की अकालमृत्यु दुर्घटना से होती है। भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते पापलोक प्राप्ति' जातक की मृत्यु दु:खदाई होगी। बचाव के लिए 'महामृत्युन्जय' का लॉकेट प्राप्त करें।
10. गुरु मीन मे और चन्द्र कर्क मे हो तो उत्तम राजयोग बनेगा।
11. यदि यहा गुरु+चन्द्रमा+शुक्र+बुध हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लाल बत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

द्वादश भाव में गुरु का उपचार–

1. झूठी गवाही देना, गबन न करना।
2. किसी के साथ विश्वासघात न करना।
3. गुरु साधु या पीपल की नित्य सेवा करना।
4. गुरुवार का उपवास नियमित करना।
5. पुखराज पहनना, पुखराज के अभाव में हल्दी की गट्ठी पीले रंग के धागे में बांधे या सुनैला धारण करें।
6. चांदी की कटोरी में केसर चंदन का तिलक करना।
7. शुद्ध सोना धारण करना।

❑❑❑

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में

मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानो का स्वामी होने से परमपापी व अशुभफल देने वाला है। परन्तु ज्योतिषशास्त्र में लग्नस्थ शुक्र को शुभ माना है कहा है

एकः शुक्रो जन्म समये, लाभसंस्थे च केन्द्रे,
जातौ वै जन्मराशि यदि सहजगते प्राप्यते का त्रिकोणे।
विद्या विज्ञानयुक्तो भवति, धरपति विश्वविख्यात कीर्तिः
दानी मानी च शूरो, हयगजसहितै सद्गुणैः सेव्यमानः॥

–मानसागरी श्लोक 2/पृ. 242
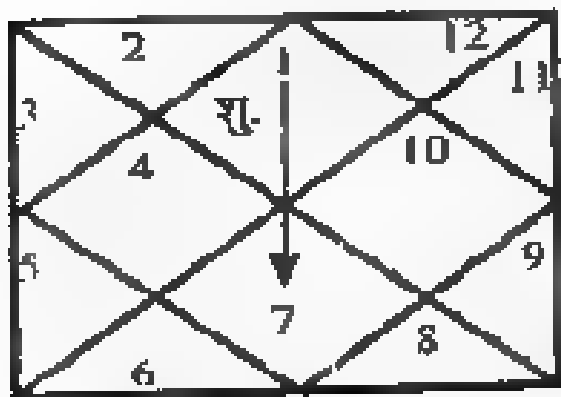
ऐसा जातक दूसरों को पालने वाला पशुधन एवं वाहन सुख से युक्त, दानी- मानी शूरवीर, सुन्दर वस्त्र-आभूषण व स्त्री का शौकीन धनवान व सुखी होता है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार ऐसा जातक बहुत यात्रा करने वाला यशस्वी पत्रकार होता है। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।

निशानी–काग तथा मच्छरेखा की रंग बिरंगी माया।

दशा–शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। 'भोज संहिता' के अनुसार व्यक्ति की आर्थिक उन्नति होगी। पत्नी व ससुराल से लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ यहां पंचमेश सूर्य उच्च का होगा। फलतः **रविकृत राजयोग** बनेगा जातक K.A.S या IPS अधिकारी होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ चन्द्रमा जातक को माता की सम्पत्ति दिलाएगा। सुखेश धनेश की युति के कारण जातक के पास चार पहियों वाली गाड़ी होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ यदि यहा मंगल हो तो 'रुचक योग' बनेगा। धनेश के साथ लग्नेश की युति होने से जातक स्वपराक्रम से खूब धन कमाएगा। पत्नी सुन्दर होगी तथा विवाह के बाद जातक उन्नति पथ की ओर तीव्रता से आगे बढ़ेगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ तृतीयेश+षष्टेश की युति जातक को पराक्रमी तो बनाएगी पर जीवन में गुप्त शत्रु बहुत होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश गुरु जातक को भाग्यशाली बनाएगा परन्तु जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि नीच का होगा। ऐसा जातक लम्पट, धूर्त एवं व्याभिचारी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को जिद्दी स्वभाव का, रंगीले मिजाज का एवं पथभ्रष्ट किन्तु विख्यात व्यक्ति बनाएगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक लड़ाकू बनाएगा। जातक स्वार्थी होगा पर युद्ध में विजय प्राप्त करेगा।
9. शुक्र+सूर्य+मंगल+बुध की युति यदि लग्न में हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती का मालिक होगा।

प्रथम भाव में शुक्र का उपचार–

1. भोजन का कुछ हिस्सा कुत्ते, कौवे के लिए गौ ग्रास के रूप में निकालना।
2. जौ-सरसों, ज्वार व सतनाजा पशु पक्षियों को चुगाना।
3. स्त्री के लिए आभूषण बनवाना।
4. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
5. शुक्र के वैदिक मंत्रों की साधना करें।
6. रुपया किसी को उधार न दें, वरना डूब जाएगा।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में
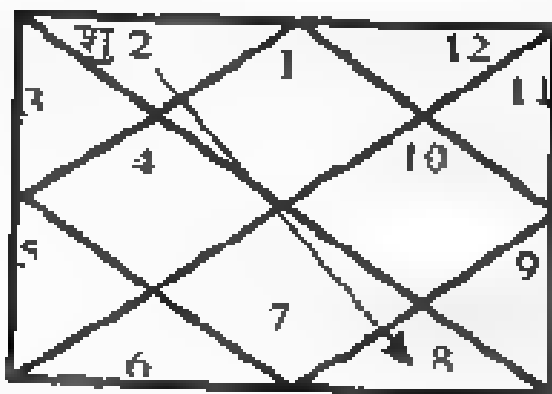
मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभफल देने वाला है। यहां द्वितीय स्थान में वृष का शुक्र स्वगृही होगा। फलतः जातक व्यापार प्रिय एवं धनवान होगा। सुन्दर पोशाक पहनने वाला, श्रृंगार सामग्री से लाभ प्राप्त करने वाला, अच्छा (सुस्वादु) भोजन करने व कराने वाला, सुन्दर भवन वाला, 32वें वर्ष में विशेष लाभ, स्त्री सुख प्राप्त करने वाला जातक होता है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार सप्तमेश यदि द्वितीय स्थान में हो तो जातक को विपरीत लिंगियों से अर्थलाभ होता है। जातक की स्त्री सुन्दर होगी पर शुक्र सप्तम भाव से आठवें स्थान पर होने से जातक को पत्नी से संतोष नहीं होगा।

निशानी–कुटिया उर्फ़ी गकवाट जातक की आंखें सुन्दर होंगी। 'नेत्रविलास धनवान् सुमुख'–भृगुसूत्र चेहरा आकर्षक होगा।

दशा—शुक्र की दशा धन देगी। विवाह कराएगी। पत्नी व ससुराल का सुख, व्यापार में बढ़ोतरी इस दशा में निश्चित सम्भव है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य** शुक्र के साथ पंचमेश सूर्य धनस्थान मे जातक को धनवान बनाएगा। धन का संघर्ष रहेगा। पर प्रथम पुत्र जन्म के बाद जातक विशेष रूप से धनवान होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**—यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा होने से **'किम्बहुना योग'** बनेगा। जातक राजा-महाराजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। दीखने में अत्यधिक सुन्दर होगा। जातक बहुत से मकान व वाहनों का स्वामी होगा। उसके नौकर वफादार होंगे। माता की विशेष कृपा उस पर बनी रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल लग्नेश+अष्टमेश होने से व्यक्ति खूब धन कमाएगा पर धन खर्च होता चला जाएगा।
4. **शुक्र+बुध**—बलवान धनेश के साथ पराक्रमेश+षष्टेश बुध की युति जातक को मित्रों द्वारा धन लाभ कराएगी। पत्नी व ससुराल द्वारा भी धन लाभ का संकेत है।
5. **शुक्र+गुरु** बलवान शुक्र के साथ भाग्येश+खर्चेश गुरु की युति जातक को सौभाग्यशाली बनेगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**—बलवान धनेश के साथ राज्येश+लाभेश शनि की युति जातक को व्यापार में प्रचुर मात्रा में धन दिलाएगी।
7. **शुक्र+राहु**—बलवान धनेश के साथ धनस्थान में राहु धन के घड़े में छेद करता है। जातक खूब कमाएगा पर धन खर्च होता चला जाएगा। धन संग्रह में परेशानी होगी।
8. **शुक्र+केतु**—बलवान धनेश के साथ धनस्थान में केतु जातक को फिजूल खर्ची बनाएगा। जातक को धन की तंगी महसूस होती रहेगी।
9. शुक्र+चन्द्र+गुरु+मंगल की युति जातक को राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं कुबेरतुल्य धनी बनाएगी।

द्वितीय भाव में शुक्र का उपचार—

1. आलू दही का दान करना चाहिए।
2. पशु पालन डेयरी का काम करना चाहिए
3. श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र का पाठ करें।
4. शुक्रवार को व्रत कथा आरती करें
5. श्रीयंत्र कनकधारा यंत्र कुबेर यंत्र को सुनहरी फ्रेम में जड़वाकर नित्य पूजा अर्चना करें।
6. किसी की जमानत न दें, वरना डूब जाएगी।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में
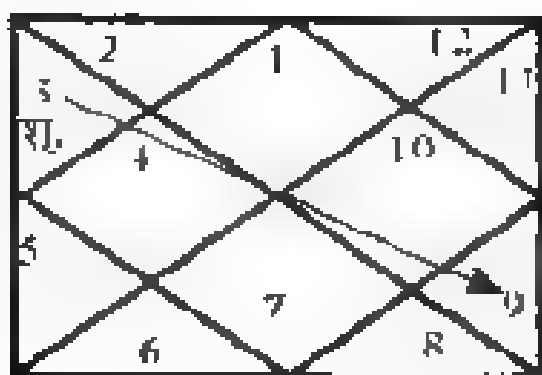
मेषलग्न मे शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभफल को देने वाला है। शुक्र यहा तृतीय स्थान मे मिथुन राशि का होगा। ऐसा व्यक्ति यात्रा से लाभ पाता है। तीर्थ यात्राएं, धार्मिक यात्राए होंगी। ऐसे जातक पर स्त्रियां विशेष रूप से मुग्ध रहती हैं। जातक कामक्रीडा में विशेष पटु होता है एवं वाणी के द्वारा दूसरों को मोहित करने में समर्थ होता है।

अनुभव—भोज संहिता के अनुसार ऐसे जातक के भाई/मित्र विदेश जाकर धनवान होंगे। इसका लाभ जातक को भी मिलेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी—औरत की इज्जत करता–फिर बुरा क्यों।

दशा—शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा। दशा शुभफलदाई होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य की युति पंचमेश की धनेश+सप्तमेश के साथ युति कहलाएगी. ऐसा जातक पराक्रमी होगा। धनवान होगा। भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीएगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**—शुक्र के साथ सुखेश चन्द्र को युति होने से जातक को भाई बहनों का सुख है। स्त्री जातक से लाभ होगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ लग्नेश+अष्टमेश मगल तृतीय स्थान में होने से जातक महान् पराक्रमी होगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ यदि बुध हो तो बुध यहा स्वगृही होगा। बलवान, धनेश की तृतीयेश के साथ युति होने से **'मित्रमूलधन योग'** बनेगा। फलतः मित्रों के द्वारा धन की प्राप्ति होगी। पराक्रम तेज रहेगा। भृगुसूत्र के अनुसार–'भ्रातृतत्पर क्रियायोगपरः' भाई का धन मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—सूर्य के साथ भाग्येश+खर्चेश गुरु होने से जातक को बड़े भाई का सुख रहेगा। जातक की जान-पहचान बड़े लोगों से होगी।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि तृतीय जातक को षड्यन्त्रकारी मित्रों से परिचय करेगा। मित्र नकारात्मक विचारों वाले होंगे।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु भाई बहन व कुटुम्बीजनों से विद्रोह कराएगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु होने से स्त्री मित्र को लेकर बदनामी होगी

तृतीय भाव में शुक्र का उपचार—

1. राग रंग संगीत व गलत खान-पीने का शौक बंद करें

2. घर की पत्नी को महत्त्व देने पर गृहस्थी सुखी होगी।
3. शुक्रवार को व्रत कथा आरती करें।
4. शुक्र के तांत्रिक मंत्रों की साधना करें।
5. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णतः वर्जित है।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपाप व अशुभफल देने वाला माना गया है। यहा चतुर्थ स्थान में शुक्र केन्द्रवर्ती होगा। शास्त्रकार कहते हैं–

भवति मदनमूर्तिः वल्लभः कामिनीनाम्,
सकल जनसमर्थो, दीर्घ जन्मा विधेयः।
गज विषय गुणज्ञो, द्रव्यमुख्य प्रधानः,
सधनकनकपूर्णो, दैत्यामो यस्य केन्द्रे॥

- मानसागरी श्लोक 11/पृ.244
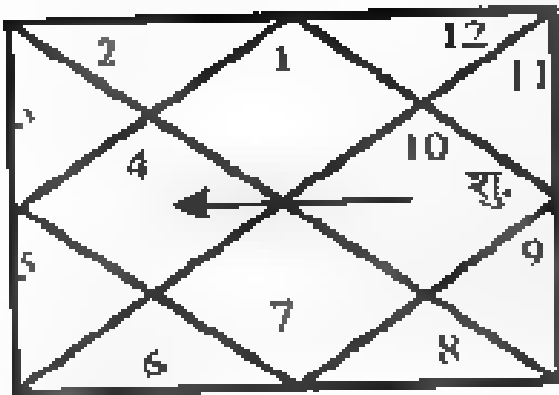
ऐसा जातक उच्च वाहन, जमीन–जायदाद का स्वामी होता है। जातक बुजुर्गों की सम्पत्ति पाने वाला 'कुल का दीपक' सन्तान से सुखी होता है। ऐसा जातक स्त्रियों का प्रिय और एक समय में दो स्त्रियों से कामक्रीडा करने वाला, काम कला मर्मज्ञ होता है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार ऐसे जातक के उत्तम सन्तति अधिक मात्रा में होती है। संतान पढ़ी-लिखी होती है। जातक की माता लम्बी आयु वाली होगी।

निशानी–अपना इश्क औरतों का।

दशा–शुक्र की दशा में वाहन सुख मिलेगा। धन की प्राप्ति होगी। सुख में वृद्धि होगी। पत्नी पक्ष से लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के सूर्य व्यक्ति को उच्च शिक्षिका दिलाएगा। जातक को माता पिता दोनों का सुख मिलेगा
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो **'यामिनीनाथ योग'** बनेगा। जातक की माता सुन्दर व समझदार होती है। जातक माता का विशेष भक्त होता है। माता की उम्र लम्बी होगी।
3. **शुक्र+मंगल**- शुक्र के साथ यदि मंगल हो तो नीच का होगा। फिर भी कृषि भूमि व माता से लाभ होगा।

4. **शुक्र+बुध** शुक्र के साथ बुध होने जातक बुद्धि बल में तेज रहेगा। परन्तु षडयत्र से सावधानी रखनी होगी।
5. **शुक्र+गुरु**—यदि शुक्र के साथ गुरु हो तो **'हंसयोग'** बनेगा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य सम्पन्न होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति एवं राज्य सरकार से सहयोग मिलेगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि जातक को व्यापार में लाभ दिलाएगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु माता को बीमारी देगा। वाहन से दुर्घटना भी कराएगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु शरीरिक अस्वस्थ देगा। जातक को अचानक हृदयरोग होगा।
9. **शुक्र+चन्द्र+गुरु+मंगल** की युति जातक को (राजा) मिनिस्टर बनाएगी। जातक लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

चतुर्थ भाव में शुक्र का उपचार—

1. विवाह समय पर गाय-बछड़े का दान करने पर किस्मत खुलेगी।
2. चांदी की गाय ब्राह्मण को भेंट करें।
3. पत्नी व बेटी को सुखी देखने के लिए जातक को अपने घर की छत पर कचरा नहीं रखना चाहिए।
4. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
5. शुक्र के तांत्रिक मंत्र की एक माला नित्य फेरे
6. अपना वाहन किसी को भी चलाने के लिए न दें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में
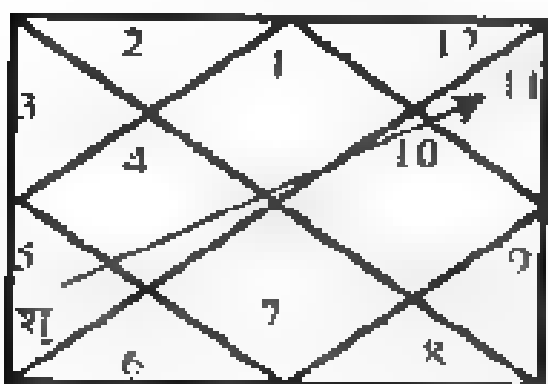
मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश होने से दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी एवं अशुभ है। शुक्र यहां पांचवे भाव में होने से सिंह राशि का होगा। पंचम शुक्र शुभफलदाई है। भृगुसूत्र के अनुसार **"बुद्धिमान मंत्री सेनापतिः"** जातक बुद्धिमान होगा। उच्च अधिकारी, सेनापति या नेता होगा। जातक की पत्नी उच्च घराने की होगी। जातक को जुआ लाटरी, सट्टा एवं शेयरबाजार में धन मिल सकता है।

अनुभव—'भोज संहिता' के अनुसार सप्तमेश यदि पंचम भाव में हो तो जातक छोटी उम्र में सुन्दर लड़की से विवाह करेगा जातक की पत्नी धनवान एवं विनम्र होगी कन्या सन्तति अधिक होगी जातक प्रेम विवाह करेगा।

निशानी—बच्चों से भरा परिवार। स्त्री को प्रसन्न रखने पर परिवार में वृद्धि होगी।

दशा—शुक्र की दशा में अच्छा फल मिलेगा। संघर्ष से व्यक्ति निखरेगा। धन की प्राप्ति होगी। जीवनसाथी से लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ यहां सूर्य स्वगृही होगा। ऐसे जातक को पुत्र व पुत्री दोनों सन्तति की प्राप्ति होगी। विद्याध्ययन से किस्मत चमकेगी।
2. **शुक्र+चन्द्र**—शुक्र के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'यामिनी नाथ योग'** बनेगा। जातक को ननिहाल की सम्पत्ति मिलेगी। एक पुत्र, दो कन्या का योग बनता है।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ यदि मंगल हो तो तीन पुत्र एवं दो कन्या होंगी।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ पराक्रमेश+षष्टेश बुध होने से जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी। प्रयत्न (उपाय) करने पर पुत्र होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ यदि गुरु हो तो भाग्य बराबर साथ देगा एवं पिता व राजदरबार से लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि राज्येश+लाभेश होने से जातक धनवान होगा। व्यापारी व उद्योगपति होगा। कन्या अधिक होंगी।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु हो तो जातक सन्तानहीन होगा। ऐसे जातक को प्रेमविवाह में धोखा मिलेगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु गर्भस्राव, गर्भपात का संकेतक है। एकाध बार विद्या में बाधा आती है।

पंचम भाव में शुक्र का उपचार—

1. गाय की सेवा करें।
2. प्रेम विवाह न करें अन्यथा पछताना पड़ेगा।
3. गुप्तांगों को दूध दही से धोने पर घर की बरकत होगी।
4. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
5. शंखपुष्पी की जड़ का ताबीज बनाकर पहनें।
6. शुक्र की वस्तुओं का दान करें।
7. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णतः वर्जित है।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम् स्थान में
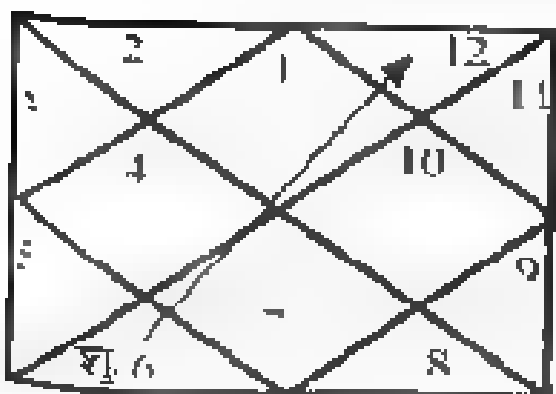
मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। षष्टम् स्थान में शुक्र कन्याराशि में नीच का होगा। धनेश होकर शुक्र छठे जाने से 'धनहीन योग' बनेगा। ऐसे जातक को आर्थिक क्षेत्र में उपलब्धि प्राप्त करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा,

जातक कामक्रीड़ा में गन्दी व अमानवीय हरकतें करता है इस गुप्त व गुह्य बीमारियां सम्भव हैं। विवाह के बाद जातक को ज्यादा तकलीफों कष्टों का सामना करना पड़ सकता है क्योंकि सप्तमेश होकर शुक्र का छठे जाना **'विवाहभंग योग'** विलम्बविवाह योग भी कराता है। जातक के विचार, जीवन साथी के साथ नहीं मिलेंगे

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार सप्तमेश यदि छठे हो तो जातक की पत्नी ननिहाल पक्ष से सम्बन्धित होगी। जातक की एक समय में दो पत्नी हो सकती हैं।

निशानी–दौलत के महल वरना नीच दौलत–कुलद्वेषी जातक का जन्म बहन या ननिहाल के लिए अशुभ हो सकता है.

दशा–शुक्र की दशा मारकेश का काम करेगी। सावधानी अनिवार्य है। जीवनसाथी से बिछोह हो सकता है

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य **'विद्याभग योग'** एवं **'सन्ततिहीन योग'** बनाता है। ऐसे जातक को आर्थिक सघर्ष के साथ-साथ गृहस्थ सुख में बाधा आती है।
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि यहा शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का अपनी माता के साथ झगड़ा रहेगा। ननिहाल या माता की सम्पत्ति को लेकर विवाद रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'लग्नभंग योग'** एवं **विपरीत राजयोग** बनाता है। जातक धनवान होगा पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
4. **शुक्र+बुध–नीचभंग राजयोग**–यदि यहा नीच के शुक्र के साथ **'बुध'** हो तो नीचभंग राजयोग की सृष्टि होगी तथा शुक्र का नीचत्व समाप्त हो जायेगा। जातक को मित्रों से लाभ हो सकता है एव आर्थिक स्थित विषम नहीं होगी। जातक की दो पत्नी हो सकती हैं।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु **'भाग्यभंगयोग'** एवं **विपरीत राजयोग** दोनों बनाएगा। ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु परिश्रम करना पड़ेगा। जातक मध्यम आयु में जाकर धनवान होगा
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'राज्यभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। व्यापार मे नुकसान होगा। सरकारी नौकरी में बाधा आएगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु यहा शुभ फलदायक है। जातक रोग व शत्रुओ का नाश करने में सक्षम होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु भी अरिष्टनाशक है।
9. शुक्र छठे एव बुध आतव हो तो स्त्री स्थाई रूप से बीमार रहेगी।
10. शुक्र कन्या और बुध आठवं हो तो जातक जीवन भर कर्ज मे डूबा रहेगा।

षष्टम भाव में शुक्र का उपचार–

1. घर की स्त्रियों को सम्मान दें

2. स्त्रियों को नंगे पैर न चलने दें नहाते समय भी नंगा पैर जमीन पर न लगे।
3. शुक्रवार को व्रत कथा आरती करें।
4. तेजगति के वाहन में सफर न करें।
5. शुक्र कवच का नित्य पाठ करें।
6. शुक्र शान्ति का प्रयोग करें।
7. चावल, शक्कर व शुक्र की वस्तुओं का दान करें।
8. असाध्य रोग की स्थिति में दूध–दही, शक्कर शहद व पंचामृत से 'रुद्राभिषेक' करावें।
9. शुक्रवार के दिन अग्निकोण की ओर यात्रा न करें।
10. छः दिन तक निरन्तर छः कन्याओं को खीर भोजन खिलाकर दक्षिणा दें।
11. छः सफेद पत्थर दूध में धोकर, सफेद चंदन लगाकर छः शुक्रवार तक जल में प्रवाहित करें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
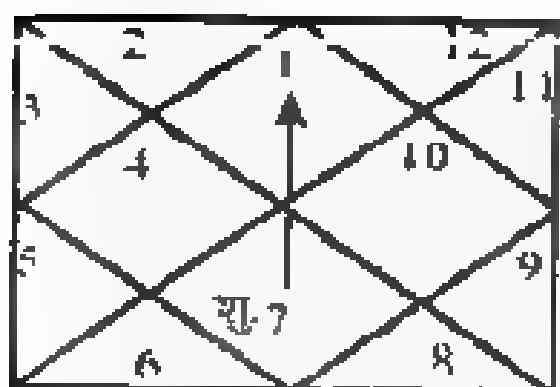
मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तम दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। सातवें स्थान पर शुक्र तुला का होकर स्वगृही होगा। फलतः मालव्य योग कुलदीपक योग की सृष्टि करेगा। ऐसा जातक दीर्घायु युक्त, राजा तुल्य ऐश्वर्य वैभव को प्राप्त करने वाला होता है। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद, गृहस्थ जीवन सुखमय होता है। भागीदारी में लाभ, व्यापार में लाभ अर्जित करता है। भृगुसूत्र के अनुसार–**"अतिकामुकः सुख चुम्बकः अर्थवान् परदारखः वाहनवान् सकल कार्य निपुणः"** ऐसा जातक अतिकामुक होता है कामक्रीड़ा में स्त्रियों को विशेष रूप से संतुष्ट करने वाला, अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रखने वाला, उत्तम वाहन का स्वामी एवं धनाढ्य होता है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा

निशानी–जैसा यह वैसी वह, साथी का प्रभाव, अकेला नेक। आयु के 25वें वर्ष में विवाह शुभ। भागीदारी में धंधे में लाभ।

अनुभव–शुक्र प्रधान कार्य में रुचि होगी। चित्रकारी, वीडियो फोटोग्राफी, पत्रकारिता, सौन्दर्यप्रसाधन कार्यों में रुचि, पर्यटन में रुचि, फिल्म क्षेत्र, वस्त्र व्यवसाय द्वारा धन अर्जित करता है भोज संहिता के अनुसार जातक स्वयं सुन्दर होगा तथा पत्नी प्रतिष्ठित घराने की होगी।

दशा–शुक्र की दशा अच्छी जाएगी। विवाह होगा। जीवन साथी का सहयोग आगे बढ़ाएगा। धन की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य–नीचभंग राजयोग**–शुक्र के साथ यदि सूर्य हो तो सूर्य की नीचत्व भंग होकर,

सूर्य शुभफल देने वाला होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलेगी। उत्तम सन्तति होगी पुत्र एवं कन्या दोनों का संयोग बनेगा।

2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ सुखेश चन्द्रमा **'मातृमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को माता से सम्पत्ति मिलेगी। वाहन का सुख प्राप्त होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से **'शत्रुमूल धनयोग'** बनता है। जातक को शत्रु से धन प्राप्त होगा। जातक के शत्रु नष्ट होंगे।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ **'मातृमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को भाइयों से, मित्रों से धनलाभ होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु **'भाग्यमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को भाग्य से धन मिलेगा।
6. **शुक्र+शनि–किम्वहुनायोग**–शुक्र के साथ यदि शनि हो तो यह योग बनेगा। शुक्र के साथ शनि उच्च का हो तो इससे अधिक और क्या होगा? जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। बहुत धनाढ्य होगा। बलवान धनेश की दशमेश के साथ युति होने से **राज्यमूल धनयोग** बना। जातक को राजदरबार (सरकार) से लाभ होगा एवं पैतृक सम्पत्ति भी मिलेगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है। गुप्त रोग, गुप्त सम्बंध से परेशानी होगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गृहस्थ सुख में न्यूनता लाता है। जीवन मे गुप्तांग में ऑपरेशन जरूर होगा।
9. यदि यहां शुक्र+शनि+गुरु+मंगल की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। वह लालबत्ती का गाड़ी का स्वामी होगा।

सप्तम भाव में शुक्र का उपचार–

1. विवाह के समय गाय का दान करें।
2. बिल्ली की जेर को कम्बल के टुकड़े से लपेट कर पास रखे।
3. शुक्रवार को व्रत–कथा आरती करें।
4. शुक्र की वस्तुओं का दान करे।
5. यदि जीवन साथी पर कष्ट हो तो आठ किलो गाजर या जमीकन्द शुक्रवार के दिन धर्मस्थान में भेंट करें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में

मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होकर पर परमपापी व अशुभ हो गया है। शुक्र अष्टम स्थान में **'वृश्चिक राशि'** का होगा। धनेश होकर शुक्र अष्टम स्थान में वृश्चिक राशि का होगा। धनेश होकर शुक्र आठवें होने से **'धनहीन योग'** बनेगा। ध
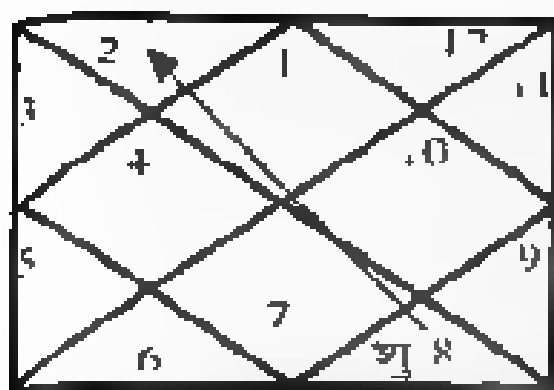
के मामले में संघर्ष की स्थिति रहेगी। जातक पत्नी का भक्त होगा। स्त्री की जबान का शब्द पत्थर की लकीर होगा। यहां शुक्र वाणी का अधिपति भी है, अतः जातक की वाणी से निकला अशुभ शब्द जल्दी पूरा होगा। शुक्र की दृष्टि वाणी स्थान पर होगी जो उसके स्वयं का घर है। वाणी विनम्र होगी।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार जातक की मृत्यु विदेश या जन्मस्थान से बहुत दूर होगी। पत्नी की मृत्यु भी शीघ्र हो सकती है। सावधानी अनिवार्य है। पत्नी धनी परिवार से होगी। जातक की स्त्री यदि किसी को शाप दे दे तो वह अवश्य पूरा होगा।

निशानी–जली मिट्टी की हालत, स्त्री। पच्चीस वर्ष की आयु के बाद विवाह शुभ रहे।

दशा–शुक्र यहां मारकेश का काम करेगा। सावधानी अनिवार्य है। जीवनसाथी से विछोह सम्भव है। धन की हानि भी हो सकती है

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ पंचमेश सूर्य होने से 'सन्तानहीन योग' एव विद्याभंग योग बनता है। जातक के विद्याध्ययन में बाधा आएगी। प्रथम सन्तति विलम्ब से होगी।
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो नीच का चन्द्र **'सुखहीन योग'** की सृष्टि करेगा। जातक की मां बीमार रहेगी। उसमें रुपया खर्च होगा। नौकर चोरी करेगा। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–यदि शुक्र आठवें मगल के साथ हो तो **'धनहीन योग'** के साथ **'लग्नभंग योग'** बनेगा और कुण्डली प्रबल मगलिक होगी। ऐसे जातक को विलम्ब विवाह या कई बार अविवाह की स्थिति बनती है, मंगल का उपाय करने पर शीघ्र विवाह होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनाएगा। जातक धनवान होगा पर पीठ पीछे निन्दा होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** एवं **'विपरीतराज योग'** दोनों बनाएगा। ऐसे जातक का भाग्योदय संघर्ष के बाद होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'राज्यभंग योग'** एवं **लाभभंग योग** दोनों बनाएगा जातक का व्यापार में लाभप्राप्ति में अचानक घाटा होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक को 'सेक्स रोग' होगा।
8. **शुक्र+केतु**– शुक्र के साथ केतु होने से जातक स्त्री-मित्रों से परेशान रहेगा

अष्टम भाव में शुक्र का उपचार–

1. पत्नी को बिना वजह तंग न करें।
2. शुक्र की वस्तुओं का दान न लें।
3. शुक्रवार के दिन गन्दे नाले में ताबे का पैसा या पुष्प गिरावें।

4. बछड़े वाली गाय का दान करें।
5. शुक्रवार का व्रत [illegible] करें।
6. तेजगति के वाहन में सफर न करें।
7. 'शुक्र कवच' का नित्य पाठ करें।
8. शुक्र शान्ति का प्रयास करें।
9. शुक्र की वस्तुओं का दान करें।
10. यदि मृत्यु तुल्य कष्ट हो तो शक्कर, दही दूध, शहद व पंचामृत से रुद्राभिषेक करावें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में
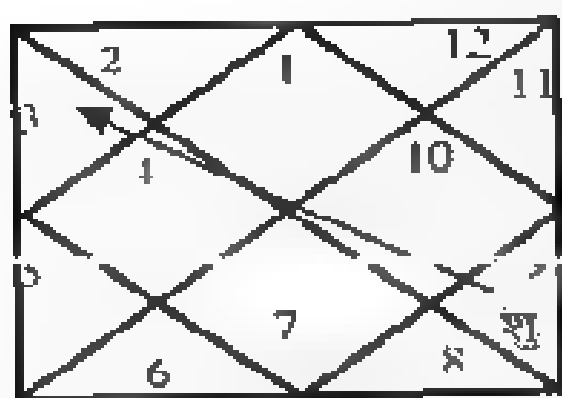
मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी एवं अशुभ है शुक्र यहां नवम स्थान में धनुराशि का होगा। ऐसे जातक का जन्म दादा-पिता, परिवार के लिए शुभ रहेगा। जातक उच्च पदाधिकारी होगा। धार्मिक विचारों वाला, तीर्थयात्रा करने वाला होगा। भृगुसूत्र के अनुसार–**'धार्मिकः तपस्वी अनुष्ठान परः सुतदारवान्'** जातक को पत्नी व पुत्र दोनों का सुख भरपूर होगा। पिता की दीर्घायु होगी। जातक द्वारा किए गए मंत्र अनुष्ठान शीघ्र सफल सिद्ध होंगे।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार यदि सप्तमेश भाग्यस्थान में हो तो जातक के पिता एवं श्वसुर दोनों धनवान होंगे। दोनों परदेश में कमाएंगे, जिसका लाभ जातक को भी मिलेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिले।

निशानी–मिट्टी काली आधी-मंगल बद। शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान पर रहने से बहनों से लाभ अधिक होगा।

दशा–शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। कार्य में सफलता के साथ भाग्य का उदय होगा। धन की प्राप्ति सम्भव है। व्यापार व्यवसाय में सफलता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ पंचमेश सूर्य होने से जातक का भाग्योदय विद्याध्ययन से होगा। जातक पूर्ण सुखी व राजपक्ष में प्रभावसम्पन्न व्यक्ति होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ सुखेश चन्द्रमा होने से जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा एवं बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ यदि गुरु हो गुरु स्वगृही कहलाएगा और शुक्र के शुभत्व में अकल्पनीय वृद्धि करेगा। जातक को पुत्र सन्तति अधिक होगी। जातक का सम्पर्क धार्मिक पुरुषो, साधु-सन्तों एवं परोपकार की सेवा में लगे सज्जनों से अधिक रहेगा। जातक पिता धनवान एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि होने से जातक बड़ा व्यापारी होगी, भौतिक सुख सुविधा से सम्पन्न व्यक्ति होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधक है। भाग्योदय विलम्ब से होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के भाग्योदय में संघर्ष का द्योतक है।
9. यदि यहां गुरु+शुक्र+चन्द्र+मंगल की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। जातक लाल बत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

नवम भाव में शुक्र का उपचार–

1. मकान की नींव में चांदी शहद रखना।
2. स्त्री को चन्द्र चूडी (चांदी का चूड़ा उपर लाल रंग) पहनना।
3. चांदी के नौ चौरस टुकड़े नीम के वृक्ष में शुक्रवार के दिन छेद करके दबायें।
4. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
5. कनकधारा यंत्र-कुबेर यंत्र+श्रीयंत्र सुनहरे फ्रेम में जड़वाकर नित्य पूजा अर्चना करें तो शीघ्र भाग्योदय होगा।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। दशम स्थान में शुक्र मकर राशि का होगा। यहां केन्द्रवर्ती शुक्र का शुभफल कहा गया है।

एक शुक्रो जनन समये लाभसंस्थे च केन्द्रे,
जातौ वै जन्मराशि यदि सहजगते प्राप्यते वा त्रिकोणे
विद्या विज्ञानयुक्तो भवति, नरपति विश्वविख्यात कीर्तिः
दानी मानी च शूरो, हयगज सहितैः सद्गुणै सेव्यमानः॥

–मानसागरी श्लोक 2/242
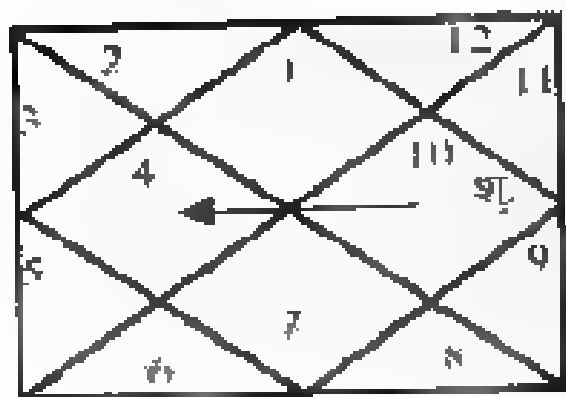
ऐसा जातक बुरे कामों से दूर रहने वाला, अच्छी जमीन जायदाद का स्वामी, विद्यावान कीर्तिवान, इंसाफ को तौलने वाला, रथ-वाहन से युक्त सुखी व्यक्ति होता है। जातक ट्रांसपोर्ट, फोटोग्राफी संगीत, शृंगार व अभिनय में रुचि रखता है।

निशानी—शनि उत्तम तो धर्म मूर्ति (पुरुष या स्त्री)

अनुभव—'भोज संहिता' के अनुसार सप्तमेश यदि दशम भाव में हो तो जातक विदेश में कमाता है। ऐसा जातक डॉक्टर, रंग रसायन, सौन्दर्य प्रसाधन जैसे कार्यों में रुचि लेगा। माता का सुख अच्छा।

दशा—शुक्र की दशा राज्यलाभ देगी। शुभ जाएगी। धन की प्राप्ति सम्भव है। पत्नी पक्ष, ससुराल से लाभ सम्भव है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य जातक को उत्तम विद्या एवं उत्तम सन्तति का लाभ दिलाएगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**—शुक्र के साथ सुखेश चन्द्रमा, जातक को माता का सुख एवं भौतिक सम्पन्नता एवं सुख देगा।
3. **शुक्र+मंगल**—यदि यहां मंगल हो तो रुचक योग के कारण जातक निश्चय ही राजा, सांसद एव मंत्री होता हैं। भृगुसूत्र के अनुसार '**बहुप्रतापवान**' होता है।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ पराक्रमेश बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा। ऐसे जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु जातक को भाग्यशाली बनाएगा। गुरु यहां नीच का होगा। ऐसा जातक विद्या प्रेमी होगा। बिना मांगे सलाह देगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि यहां '**शश योग**' बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभव सम्पन्न होगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु राज्यसुख में बाधक है। सरकारी अधिकारियों के द्वारा ध ोखा होगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु भी प्रतिकूलता सम्पन्न है। राजदण्ड का भय रहेगा।
9. यदि यहां गुरु, बुध, चन्द्र हो तो जातक के अनेक वाहन होते है। माता का सुख उत्तम होगा।
10. यदि यहां गुरु+मगल+शुक्र+शनि की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। वह लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

दसवे भाव में शुक्र का उपचार—

1. कपिला गाय या चांदी की गाय ब्राह्मण को भेंट करें
2. शराब, मांस-मछली से परहेज रखें।
3. शुक्रवार को व्रत कथा आरती करें।
4. शुक्रवार के दिन सवा किलो चावल व शक्कर दक्षिणा सहित ब्राह्मण को दें।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में
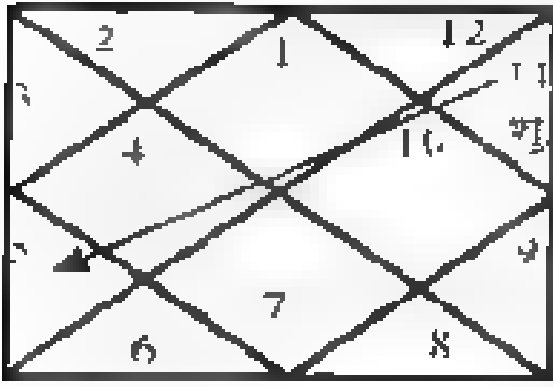
मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। एकादश स्थान में शुक्र कुम्भ राशि का होगा। भृगुसूत्र के अनुसार- **विद्वान बहुधनवान भूमिलाभवान दयावान शुभयुते अनेक वाहनयोगः।** ऐसा जातक विद्वान होती है, बहुत धन सम्पत्ति वाला होता है। स्थाई सम्पत्ति जमीन-जायदाद होता है जातक सुन्दर स्त्री व सन्तान का स्वामी होगा। शुक्र यहां उच्चाभिलाषी होने से जातक अति महत्वाकांक्षी होगा।

अनुभव–'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तमेश यदि लाभ स्थान में हो तो जातक की अनेक पत्नियां होती हैं। यदि यहां शनि धनस्थान में हो तो ऐसे जातक की पत्नियां जातक को कमाकर भी देती हैं।

निशानी–सुन्दर स्त्री, पुरुष माया के सम्बन्ध में घूमता लट्टू। जातक ज्योतिष-तंत्र एवं रहस्यमय गुप्त विद्याओं का जानकार होगा। जातक की कन्या सन्तति अधिक होगी।

दशा–शुक्र की दशा अच्छी जाएगी। विवाह के बाद उन्नति होगी। शुक्र की दशा में व्यापार-व्यवसाय में बढ़ोतरी होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ पंचमेश सूर्य जातक को पुत्र सन्तान का सुख अवश्य मिलेगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ सुखेश चन्द्रमा जातक को माता का सुख एवं उत्तम वाहन का सुख अवश्य देगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ लग्नेश मंगल जातक को परिश्रम का लाभ देगा। जातक उद्योगपति होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश बुध जातक को महान् पराक्रमी बनाएगी। उच्च शिक्षा व Degree दिलाएगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ यदि गुरु हो तो जातक अनेक वाहनों का स्वामी होकर भाग्यशाली होगा।
6. **शुक्र+शनि**–यदि शुक्र के साथ शनि हो तो जातक उद्योगपति होगा। पर खुद के भाई-बहनों से कम बनेगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु व्यापार एवं विद्या में बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु व्यापार में वृद्धि के साथ साथ रुकावटें लाएगा।
9. यदि यहां शुक्र+शनि+सूर्य+गुरु हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक के पास सुन्दर कुबेर तुल्य सम्पत्ति होगी।

एकादश भाव मे शुक्र का उपचार–

1. सरसों का तैल दान करने से लाभ होगा।
2. चादी का गिलास मे दूध पीये दूध की वस्तुओ का अधिक सेवन करें
3. शुक्रवार को व्रत कथा आरती करे।
4. कनकधारा+श्रीयंत्र कुबेर यंत्र को सुनहरी फेम में जड़वाकर नित्य पूजा अर्चना करें तो व्यापार में लाभ होगा।
5. किसी की जमानत न दे, वरना डूब जाएगी।

मेषलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में
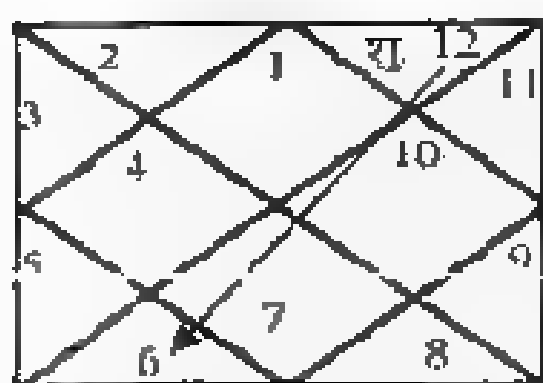
मेषलग्न में शुक्र द्वितीयेश व सप्तमेश दो मारक स्थानों का स्वामी होने से परमपापी व अशुभ है। द्वादश स्थान में शुक्र 'मीन राशि' में होगा। द्वादश स्थान में शुक्र उच्च का होगा। द्वादश शुक्र एक प्रकार से राजयोग कहा गया है। जातक धनवान-सम्पन्न, सुखी एव खर्चीले स्वभाव का होता है। जातक की स्त्री सतवन्ती, सुखवन्ती होती है जातक संगीत प्रेमी, यात्रा प्रेमी व अभिनय का प्रेमी होता है।

अनुभव–द्वादश स्थान में शुक्र 'द्वादश शुक्रयोग' बनाता है। ऐसे जातक की स्त्री धन-ऐश्वर्य प्रदान करने वाली होती है। जातक दीर्घायु प्राप्त करता है। जातक को शयन सुख श्रेष्ठ मिलता है। जातक परदेश में अधिक कमाएगा। जातक के कई स्त्रियों से सबंध रहेंगे।

निशानी–भवसागर से पार करने वाली **'कामधेनु गाय'** के समान, दीन दुखियो की मदद करने वाला होगा। जातक धनसग्रह में विश्वास रखेगा।

दशा–शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा मे जातक का अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ चन्द्रमा **'सुखहीन योग'** बनाता है। जातक को माता का सुख कमजोर मिलगा। जातक को सामाजिक बधन का परहेज नही रहेगा। अपने से बड़ी उम्र की स्त्रियो से गुप्त सबध बनाएगा।
2. **शुक्र+चन्द**–शुक्र क साथ चन्द्रमा **'सुखहीन योग'** बनाता है, जातक को माता का सुख कमजार मिलगा। जातक को सामाजिक बधन का परहेज नहीं रहेगा अपने से बड़ी उम्र की स्त्रियो से गुप्त संबंध बनाएगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मगल **'लग्नभगयोग'** एव **'विपरीत राजयोग'** दोनों बनाएगा। जातक को बहुत परिश्रम करना पड़ेगा पर अन्तिम सफलता मिलेगी। जातक धनवान होगा। जातक को अपमान का भय बना रहेगा।

4. **शुक्र+बुध**–यदि यहा शुक्र के साथ बुध हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। बुध का नीचत्व भंग हो जायगा। जातक महान पराक्रमी होगा, वाचाल होगा एव राजनीति में उसका वर्चस्व होगा

5. **शुक्र+गुरु**–यदि यहा गुरु हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा जातक भाग्यशाली होगा। एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट के कार्य से एवं विदेशो से धन कमाएगा। बड़ी बड़ी तीर्थ यात्राए करेगा। धार्मिक कार्य एवं परोपकार के कार्य मे रुपया खर्च होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'राज्यभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाएगा। जातक को व्यापार व्यवसाय में अचानक घाटा होगा। जातक को अपमान का भय बना रहेगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को बाहरी यात्रा कराएगा, विदेश में जातक खूब धन कमाएगा। विदेशी स्त्री से लाभ होगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु विदेश यात्रा से तीर्थ-यात्रा से लाभ दिलाएगा। यात्रा से धन व यश मिलेगा।

9. यदि यहां शुक्र+गुरु+चन्द्र+बुध की युति हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा एवं महान पराक्रमी परोपकारी व दयालु होगा।

द्वादश भाव में शुक्र का उपचार–

1. मंदिर में गाय के घी का दीया जलावें।
2. पत्नी के हाथों शुक सम्बधी वस्तु का दान करावें।
3. यदि जातक की पत्नी शुक्रवार के दिन नीले रंग का पुष्प जंगल की जमीन में गाड़े पलटेंगे।
4. चांदी की गाय बछड़े वाली ब्राह्मण को दान दें।
5. शुक्रवार को व्रत-कथा आरती करें।
6. शुक्र शान्ति का प्रयोग करें।
7. 'शुक कवच' का नित्य पाठ करें।
8. शुक्र की वस्तुओं का दान करें।
9. शुक्रवार के दिन 'अग्निकोण' की ओर सामान करें।
10. जीवन साथी बीमार हो तो उसके वजन के बराबर लाल ज्वार धर्म स्थान मे भेंट करें।
11. काली गाय की सेवा करें।

❑❑❑

मेषलग्न में शनि की स्थिति

मेषलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
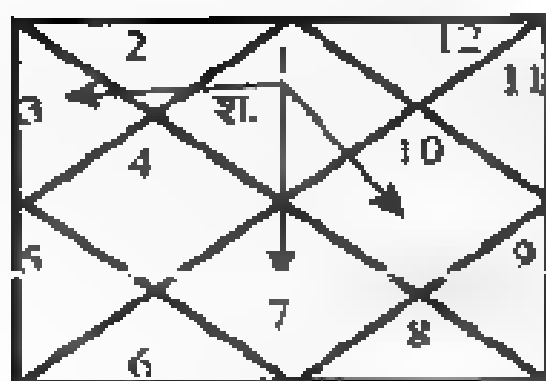
मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश होने से एवं लग्नेश मंगल का शत्रु होने से अशुभ फलदायक है। शनि प्रथम स्थान में मेष राशि का होने से नीच का होगा। जातक त्रिलोकी का स्वामी एवं प्रपंची होगा। जिद्दी व हठी होगा। जातक नौकरी करने में रुचि रखेगा। लग्न पर शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक रोगी होगा।

दृष्टि—शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान, सप्तम भाव एवं दशम भाव पर होगी। पराक्रम भाव में शनि की मित्र राशि है, सप्तम भाव उसकी उच्च राशि एवं दशम भाव में शनि की खुद की राशि है। फलतः शनि की ये दृष्टियां जातक का पराक्रम बढ़ाएंगी, विवाह सुख में वृद्धि करेगी तथ राज्यपक्ष में सम्मान दिलाएगी।

निशानी—बचपन, जवानी, बुढ़ापा उत्तम।

दिशा—शनि की दशा मिश्रित फल देगी।

अनुभव—'भोजसंहिता के अनुसार जातक का भाई-बहनों से मतभेद रहेगा। पत्नी को शक की निगाह से देखेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—शनि के साथ सूर्य **'नीचभंगराज् योग'** एवं **'रविकुलराज योग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं तेजस्वी होगा।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ सुखेश चंद्रमा लग्न में जातक के सुखों में वृद्धि करेगा। माता का सुख, वाहन का सुख मिलेगा।
3. **शनि+मंगल**—यदि शनि के साथ मंगल हो तो **'नीचभंग राजयोग'** एवं **'रुचक योग'** बनेगा। जातक महान पराक्रमी होगा। जिद्दी व हठी होगा। बलपूर्वक वस्तुओं को प्राप्त करने में रुचि रखेगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे,

   यदि यहां शनि+सूर्य+मंगल+चंद्र की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

4. **शनि+बुध**–शनि के तथा तृतीयेश, षष्टेश बुध लग्न मे होने से जातक महान् पराक्रमी होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ भाग्येश खर्चेश, गुरु लग्न में होन से जातक परम भाग्यशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ धनेश, सप्तमेश शुक्र होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के राहु जातक को महान जिद्दी बनाएगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को लड़ाकू बनाएगा।

मेषलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में
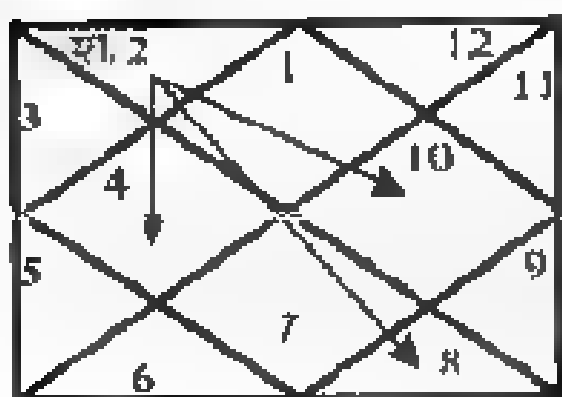
मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश है। लग्नेश मगल का शत्रु है होने में अशुभ फलदायक है। शनि द्वितीय स्थान में वृषराशि का होगा। जातक साहसी व धनवान होगा। जातक शत्रुहन्ता होता है। जातक अच्छी किस्मत वाला होता है, परन्तु भाषा कठोर होगी।

दृष्टि–शनि की दृष्टि सुख स्थान, सप्तम स्थान एवं दशम स्थान पर पड़ेगी। शनि की यह दृष्टि सुख में वृद्धि, दाम्पत्य जीवन में सुख एवं राज्य सुख-सम्मान में वृद्धिदायक है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार लाभेश यदि धनस्थान में हो तो जातक लेन-देन, गिरवी के कार्य में धन कमाएगा। जातक के दांत जल्दी खराब होंगे। मित्र कम होंगे।

निशानी–गुरु शरण। मां बीमार रहे। मकान पुराना हो।

दशा–शनि की दशा शुभफलदायक होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां पंचमेश व राज्येश भेश की युति धनस्थान में होने से जातक विद्या के द्वारा उच्च पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
2. **शनि+चंद्र**–यदि शनि के साथ चन्द्रमा हो तो **'विषयोग'** बनेगा। जातक की मां बीमार रहेगी। फिर भी जातक धनवान होगा।
3. **शनि+मंगल**–लग्नेश व राज्येश लाभेश की युति धन स्थान में जातक स्वपराक्रम से यथेष्ट धन कमाएगा। आयु दीर्घ होगी।
4. **शनि+बुध**–पराक्रमेश+षष्टेश की युति लाभेश+राज्येश के साथ धनस्थान में जातक को गुप्त शत्रुओं से परेशानी करेगी। राजकार्य में बाधा रहेगी।

5. **शनि+गुरु**–भाग्येश+खर्चेश की युति लाभेश+राज्येश के साथ धनस्थान में जातक को अचानक धन दिलाता है। जातक किस्मत का धनी होगा
6. **शनि+शुक्र**–यदि शनि के साथ शुक्र हो तो **'राज्यमूल धनयोग'** बनेगा। जातक राज्य सरकार से आर्थिक लाभ की प्राप्ति करेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि राहु के युति धन की हानि कराएगी। जातक की वाणी लड़ाकू होगी।
8. **शनि+केतु**–शनि केतु की युति भी धन की बरकत में बाधक है।

द्वितीय भाव में शनि का उपचार–

1. बड़ के वृक्ष को मीठा दूध डाल कर गीली मिट्टी का तिलक लगाना।
2. जातक कभी भी माथे व सिर पर काला तेल न लगाएं दूध दही का इस्तेमाल लाभकर होगा। 43 दिन तक नंगे पांव मंदिर में जाकर क्षमा-याचना करना लाभकारी होता है। सांप को दूध पिलायें।
3. नवरत्न जडित **'श्रीयंत्र'** का लॉकेट पहनने से आर्थिक विषमताएं दूर होगी।

मेषलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में
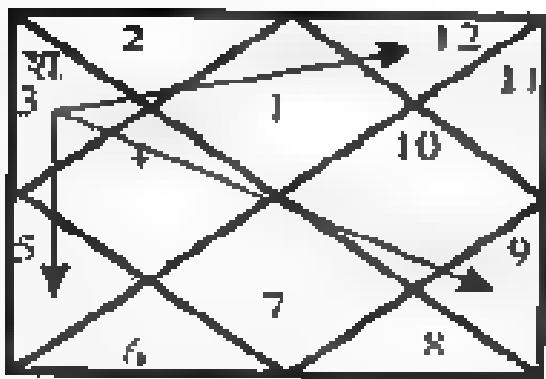
मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश है तथा लग्नेश मंगल का शत्रु है। तृतीय स्थान में शनि मिथुन राशि के मित्र के घर में होगा। ऐसा जातक दूसरों का काम बिगाड़ने वाला, शत्रुओं पर मौत की तरह छाने वाला तेज तर्रार, व्यक्ति होता है। भृगुसूत्र के अनुसार शनि की यह स्थिति **'भ्रातृ हानि कारकः'** भाई के लिए हानिकारक है। खासकर कनिष्ठ भाई के लिए। ऐसा जातक राज्याधिकारी होता है। यदि तृतीयस्थान में पापग्रह हो तो इसके विपरीत फल मिलेंगे।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार लाभेश यदि तृतीय स्थान में हो तो जातक ऐजेन्सी कार्य, संगीत या वीडियो फोटोग्राफी से धन कमाएगा।

निशानी–अगर शनि अशुभ हुआ तो दो गुणा मन्दा। प्रथम सन्तान का नाश हो।

दृष्टि–शनि की दृष्टि पंचम स्थान, भाग्य स्थान एवं व्यय स्थान पर है। शनि मित्र राशि में है फलतः सन्तान प्राप्ति, भाग्यवृद्धि एवं धार्मिक कार्य परोपकार के कार्यों में सहायक है।

दशा–शनि की दशा शुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–पंचमेश सूर्य की राज्यकेश लाभेश शनि के साथ तृतीय स्थान में युति विद्या द्वारा भाग्योदय का संकेत देती है। जातक की सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद या पिता की मृत्यु के पश्चात् होगा।

2. **शनि+चंद्र**—सुखेश चंद्रमा, दसमेश के साथ तृतीय स्थान मे होने से मित्रों से लाभ रहेगा। खासकर स्त्री मित्र से ज्यादा लाभ है।
3. **शनि+मगल**—लग्नेश+अष्टमेश मंगल के साथ राज्यश होने से जातक को राजकीय कार्य, ठेकेदारी वगैरा से लाभ होगा।
4. **शनि+बुध**—अपने स्थान में तृतीयेश स्वगृही होकर राज्येश+लाभेश शनि की युति करने से जातक महान् पराक्रमी एव कीर्तिवान होगा।
5. **शनि+गुरु**—भाग्येश+खर्चेश गुरु तृतीय स्थान में राज्येश शनि के साथ होने से मित्रों द्वारा भाग्योदय, बड़े भाई की सहायता, वृद्ध सेवक की सहायता से जातक आगे बढ़ेगा।
6. **शनि+शुक्र**—सप्तमेश व धनेश शुक्र के साथ राज्येश+लाभेश शनि की युति तृतीय स्थान में विवाह के बाद पराक्रम को बढ़ाती है।
7. **शनि+राहु**—तृतीय स्थान मे शनि के साथ राहु भाइयो एव मित्रों से लाभ की वनस्पति हानि होगी।
8. **शनि+केतु**—तृतीय स्थान में शनि के साथ केतु भाइयों एवं मित्रों में मनमुटाव कराएगा।

तृतीय भाव में शनि का उपचार—

1. दूध/दही का तिलक करना।
2. घर की दहलीज पर लोहे की कीलें गाड़े।
3. मकान में अंधेरी कोठरी कायम करके शनि की चीजें स्थापित करें। इससे धन मे वृद्धि होगी।
4. सफेद-काला कुत्ता पालन मकान-निर्माण का योग बनाता है
5. केतु 3, 10 में हो तो भूरा कुत्ता ज्यादा उत्तम होगा।
6. शनि शांति का वैदिक प्रयोग करें।

मेषलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मेषलग्न मे शनि राज्येश व एकादशेश होता है। शनि लग्नेश मगल का शत्रु है। चतुर्थ स्थान में शनि कर्क राशि का होगा। जातक को माता के सुख में कमी होगी अथवा उसके दो माताए होंगी। जातक को मकान-वाहन का पूर्ण सुख होगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक विदेशों में रहने वाला अथवा विदेशी व्यापार से लाभ कमाने वाला होता है।

दृष्टि—शनि की दृष्टि छठे स्थान, राज्य (दशम) स्थान एव लग्न स्थान पर है। शनि की यह स्थिति शत्रु का नाश करने वाली राज्य लाभ में सहायक तथा व्यक्तित्व बढ़ोतरी मे फायदेमन्द है। पर जातक के हृदय मे बड़ी वेदना होगी।

निशानी–पानी का साप, मकान पुराना हो, मा बीमार रहे। वाहन भी पुराना हो।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार लाभेश चतुर्थ भाव में हो तो जातक माता या कृषिभूमि के माध्यम से धन कमाएगा। चेहरा आकर्षक नहीं होगा।

दशा–शनि की दशा शुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–पचमेश सूर्य शनि के साथ जातक को उच्च विद्या का लाभ देगा। परन्तु किस्मत पिता की मृत्यु के बाद चमकेगी।
2. **शनि+चंद्र**–सुखेश चंद्रमा स्वगृही होकर शनि के साथ **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'विषयोग'** बनाएगा। जातक उत्तम वाहन व भवन का स्वामी होगा।
3. **शनि+मंगल**–यहां शनि के साथ लग्नेश मंगल केन्द्रवर्ती होने से जातक शक्तिशाली राजनेता होगा। रोजी-रोजगार का पूर्ण सुख होगा।
4. **शनि+बुध**–पराक्रमेश व षष्टेश बुध शनि के साथ चतुर्थ मे हो तो माता बीमार रहेगी। वाहन एवं मकान पर अपेक्षित रुपया खर्च होगा।
5. **शनि+गुरु**–यदि यहां शनि के गुरु हो तो **'हंस योग'**, **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** की सृष्टि करेगा। जातक निश्चय ही राज्य सरकार में, केन्द्र सरकार में प्रभावशाली पद पर होगा। उसे राजनीति में लाभ होगा।
6. **शनि+शुक्र**–धनेश+सप्तमेश शुक्र चतुर्थ स्थान मे शनि के साथ होने पर ससुराल का धन मिलेगा। व्यापार तेज होगा।
7. **शनि+राहु**–यहा शनि के साथ राहु होने से माता की मृत्यु बचपन मे होगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु माता को असाध्य बीमारी देगा।
9. यदि यहां शनि के साथ गुरु+मगल+चन्द्र हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा।

चतुर्थ भाव में शनि का उपचार–

1. घर में पूर्व दक्षिण का दरवाजा रखना।
2. कौएं व सांप को चद्र की चीजें चावल-दूध खिलाये।
3. कुए में चावल दूध गिराना चद्र के प्रभाव को उच्च करेगा।
4. तेल उड़द व काले कपड़े का दान लाभकर होगा।
5. चौथे स्थान म यदि पापी शनि हो तो जातक को रात्रि मे दूध नही पीना चाहिए क्योंकि वह जहर बन जाएगा।
6. चौथे स्थान मे यदि शनि का फल अशुभ हो तो जातक काले सर्प को दूध पिलावे, भैंस को चारा व मजदूर वर्ग को खाना खिलावे

7. आमदनी को बढ़ाने के लिए सोमवार को कुंए में दूध डाला करें।
8. शनि चालीसा एवं नवग्रह स्तोत्र पढ़े।

मेषलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में
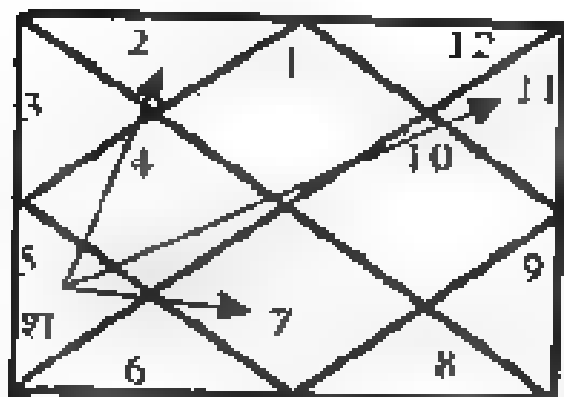
मेषलग्न में शनि दशमेश एकादशेश होता है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु होता है। पंचम स्थान में शनि सिंह राशि में होगा फलतः शत्रुक्षेत्री में होगा।

जातक न्यायप्रिय, धर्मात्मा होता है। ऐसा जातक बुजुर्गों वृद्धजनों की संगत करने वाला, गम्भीर प्रकृति होता है। भृगुसूत्र के अनुसार–पुत्रहीनः, अतिदरिद्रीः, दुर्बल दत्तपुत्री' ऐंसी जातक सन्तति गोद लेता है। विद्या में रुकावट आती है। विद्या में संघर्ष रहता है

निशानी–बच्चे खाने वाला सांप/ सन्तति अल्प होगी।

दृष्टि–शनि की दृष्टि सप्तम भाव, लाभ भाव एवं धन भाव पर होगी। सप्तम भाव में शनि का उच्चराशि है, लाभ भाव में शनि की मूल त्रिकोण राशि है तथा धन स्थान में वृष राशि है फलतः पत्नी से खटपट परन्तु लाभ की स्थिति रहेगी। व्यापार में लाभ होगा धन की आवक रहेगी परन्तु बरकत नहीं होगी। बरकत के लिए शुक्र की स्थिति का अच्छा होना आवश्यक है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार यदि लाभेश पंचम स्थान में हो तो जातक पुत्र के माध्यम से धन व यश कमाएगा। प्रेम विवाह होगा।

दशा–शनि की दशा मिश्रित फल देगी। उद्विग्नता देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य यहां **'रविकृत राजयोग'** बनाता है, ऐसा जातक मेधावी होता है। उसका भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद होता है।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'विष योग'** बनाएगा। जातक मानसिक तनाव में रहेगा। जातक की माता बीमार रहेगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल विद्या में संघर्ष कराएगा। जातक की संतति बीमार रहेगी.
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा। जातक के कन्या संतति अधिक होगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु भाग्योदय में विलम्ब कराएगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र व्यापार व्यवसाय द्वारा उत्तम लाभ का संकेत देता है।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु पुत्र संतति में बाधक है।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु गर्भपात कराता है

पंचम भाव मे शनि का उपचार–

1. हरा रंग निषेध।
2. शनि की शांति के लिए घर मे सोना, तांबा या चांदी का निश्चित स्थान पर कायम रखे और उसे वहा से न हटाए।
3. यदि दसवें में राहु हो तो चूल्हे में दूध डालकर आग बुझाएं, शांति मिलेगी.
4. यदि अशुभ शनि पांचवें में हो व दशम स्थान खाली हो, तो जातक के संतान नहीं होती।
5. यदि जातक 48 वर्ष की आयु में नया मकान खरीदता है तो खरीदते ही पुत्र होता है परंतु दीर्घायु नहीं होता।
6. इस अशुभ को नष्ट करने हेतु घर के पश्चिम दिशा की ओर गुड़, ताम्बा, शहद भूरी वस्तु तथा लाल वस्तु चावल व शक्कर के बोरे रखें। संतान के जन्म पर मीठे की जगह नमक बांटना।
7. धर्म स्थान में बादाम चढ़ाकर आधे वापस लाकर घर में रखने से शनि का अनिष्ट फल बाकी नहीं रहेगा
8. औलाद के जन्मदिन पर मीठे की जगह नमकीन चीजें बांटना मुबारिक होगा।
9. संतान सुख हेतु 'संतान गोपाल' का पाठ करें।
10. शनि अष्टोत्तर नामावली का संतानगोपाल के सम्पुट से हवन करें।

मेषलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में

2 1 12 11 3 4 10 5 9 7 श 6 8
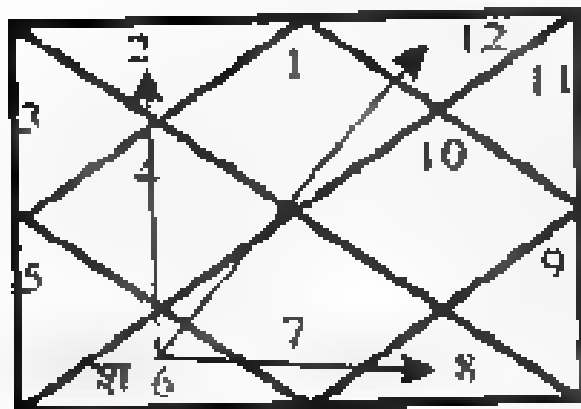
मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश होता है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु है। षष्टम स्थान में शनि कन्या राशि का होगा। जातक कानून का ज्ञाता जज, वकील एव तर्कशास्त्र का ज्ञाता होकर न्यायप्रिय, सैद्धान्तिक व्यक्ति होगा। जातक अल्पज्ञाति एवं कम मित्रों वाला होगा। इसकी किस्मत का सितारा 32 वर्ष बाद चमकेगा। जातक की ज्योतिष आयुर्वेद मंत्र-तंत्र व गूढ़ विद्याओं मे रुचि होगी। लाभेश राज्येश शनि छठे जाने से क्रमश: **राज्यभंग योग** एव **लाभभंग** योग के कारण राजदरबार व सरकार से धोखा होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार लाभेश यदि छठे तो जातक को शत्रु व युद्ध मुकदमेबाजी में पैसा मिलता है।

निशानी–लेख की स्याही, एक गुणा मन्दा।

दृष्टि–शनि की दृष्टि अष्टम स्थान, खर्च स्थान एव पराक्रम स्थान पर है आयु के लिए यह स्थिति कष्टकारक है खर्च की बाहुल्यता रहेगी। पराक्रम में कमी आएगी। मित्रों परिजनों मे धोखा होगा। हृदय या लीवर सम्बन्धी बीमारी सम्भव है।

दशा—शनि की दशा प्रतिकूल रहेगी। शनि दशा मे परदेश गमन होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य** इस युति के कारण **संतानहीन योग**, **राज्यभंग योग**, **लाभभंग योग** बनता है। जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चन्द्र**-शनि का साथ चन्द्रमा '**विषयोग**' बनाएगा। जातक की मां क्षय रोग से पीड़ित होगी।
3. **शनि+मंगल**-'**कुजयुते देशान्तर संचारी**' यदि शनि के साथ मगल हो तो जातक देश-विदेश में घूमेगा।
4. **शनि+बुध**- पराक्रमेश+षष्टेश बुध शनि के साथ **हर्षनामक विपरीत राजयोग** बनाएगा। जातक धनवान होगा, ऐश्वर्यवान होगा।
5. **शनि+गुरु**-भाग्येश+खर्चेश गुरु छठे शनि के साथ होने से भाग्य में लगातार रुकावटें आएगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।
6. **शनि+ शुक्र**- सप्तेश+धनेश शुक्र शनि के साथ होने से धन की रुकावटें आती रहेगी। पत्नी से अनबन रहेगा। दूसरा विवाह होगा।
7. **शनि+राहु**- शनि के साथ राहु सरकारी नौकरी में बाधक है। जातक प्राईवेट नौकरी-व्यापार में कमाएगा।
8. **शनि+केतु**- शनि के साथ केतु राजकीय कार्य पद पद पर बाधा देगा। मार्ग में भी रुकावटे आएगी।

षष्टम भाव में शनि का उपचार—

1. नारियल या बादाम बहते जल में प्रवाहित करें।
2. संतान के लिए काला कुत्ता पालें।
3. सांप को दूध पिलाने से संतान सुख बढ़ता है।
4. बीमारी के समय किसी बर्तन में तेल भरकर उसमें अपना चेहरा देखें और उस तेल को जमीन के अन्दर मिट्टी में दबाए। कारोबार के लिए बुध का उपाय हितकर होगा।
5. यदि छठें स्थान में शनि व बृहस्पति दोनों हो तो पानी वाले नारियल को नदी में बहाना चाहिए।
6. ऐसी स्थिति में जातक को 28 वर्ष से पहले विवाह नहीं करना चाहिए तथा 48 वर्ष की आयु के पहले मकान नहीं बनाना चाहिए।
7. संतान बाधा होने पर काले सर्प को दूध पिलाव व उसकी सेवा करें।
8. पितृदोष की शान्ति कराए।
9. शनि छठे में हो तथा कुण्डली दूसरा भाव खाली हो तथा जातक को शनि का धन्धा करना चाहे तो मिट्टी के घड़े में सरसों का तेल भर तालाब या नदी के तले गाढ़ना चाहिए.

10. ध्यान रहे कि ऊपर पानी अवश्य रहे। तत्पश्चात् कृष्ण पक्ष की मध्य रात्रि को कार्य प्रारम्भ करें, जातक अथाह सम्पत्ति कमाएगा।
11. संतान के जन्म पर मीठे की जगह नमक बांटना शुरू रहेगा।
12. जिसकी कुंडली के छठे घर में शनि होगा, अगर वो अपने जरूरी काम रात में निपटाएगा तो जरूर कामयाबी पाएगा।
13. शनिकवच, महाकाल शनिमृत्युंजय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

मेषलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में
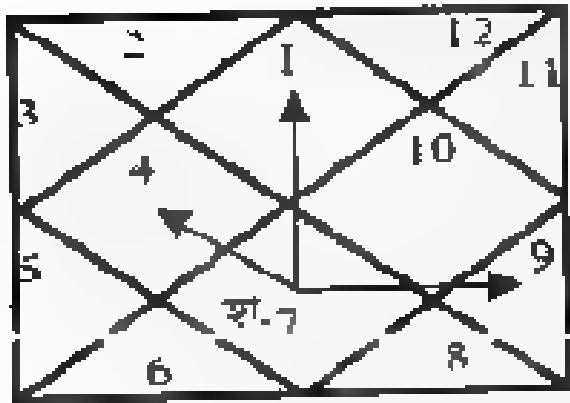
मेषलग्न में शनि दशमेश व एकादशेश होता है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु है। अशुभ फल देने वाला है। सप्तम स्थान में शनि तुला राशि में उच्च का होगा। जातक अत्यन्त धनी होगा। भृगुसूत्र के अनुसार–'उच्चस्वक्षेत्रे अनेक स्त्री सम्भोगी' जातक का अनेक स्त्रियों से शारीरिक सम्बन्ध रहेगा। उसका चरित्र संदिग्ध होगा। ऐसा जातक राज्याधिकारी होगा एवं उसका चरित्र संदिग्ध होगा। ऐसा जातक राज्यधिकारी होगा एव यात्रा (ट्रांसपोर्ट लाईन) से धन कमाएगा। जातक व्यवहारिक होगा। ख्याली बातों में विश्वास न करके, सुनने की जगह देखने से बात का विश्वास करेगा। **'शश योग'** के कारण जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।

निशानी–कलम विधाता, रिजक। पति पत्नी के बीच उम्र का अन्तराल ज्यादा होगा। विद्या में विघ्न होगा।

दृष्टि–शनि की दृष्टि भाग्य भवन, लग्न स्थान एवं चतुर्थ भाव पर होगी। शनि की यह दृष्टि भाग्य के द्वार खोलेगी। व्यक्तित्व का विकास होगा तथा सुख में वृद्धि, वाहन भवन की खरीददारी कराएगी।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार लाभेश यदि सातवें स्थान पर हो तो जातक को स्त्रियों से लाभ होता है। विदेश यात्रा से लाभ होता है। आयात-निर्यात के कार्यों से लाभ होता है। जातक अन्ध श्रद्धालु होगा तथा सुख में वृद्धि, वाहन-भवन की खरीददारी कराएगी।

दशा–शनि की दशा अच्छा फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य–नीचभंग राजयोग**–शनि के साथ सूर्य होने से नीचभंग राजयोग के कारण सूर्य का नीचत्व समाप्त होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलेगी। उत्तम सन्तति होगी। पुत्र, कन्या दोनों का संयोग होगा।
2. **शनि+चन्द्र**–सुखेश चन्द्रमा सप्तमस्थ शनि के साथ होने पर जातक की पत्नी सुन्दर एवं वाहन तथा भवन सुन्दर होगा।

3. **शनि+मंगल—कुजयुते शिश्न चुम्बनपर**—भृगुसूत्र के अनुसार शनि के साथ मंगल हो तो ऐसी स्त्री कामक्रीड़ा में सम्भोग के पूर्व पुरुष का शिश्न चुम्बन करती है। लग्नाधिपति योग के कारण जातक को प्रत्येक कार्य मे सफलता मिलेगी एव वह शत्रुनाश करने में समर्थ होगा।
4. **शनि+बुध** तृतीयेश+षष्टेश बुध शनि के साथ होने पर जातक महान पराक्रमी होगा पर गुप्त शुभ बहुत होगे।
5. यदि यहा गुरु चौथे या नवमें स्थान पर हो तो यह जबरदस्त राजयोग होगा। व्यक्ति मिनिस्टर (राजा) होगा।
7. **शनि+शुक्र—किम्बहुना योग**—यदि यहां शनि के साथ शुक्र स्वगृही हो तो इससे अधिक और क्या उत्तम बात होगी। राज्यमूलधन योग एवं लाभमूलधन योग के कारण, जातक को राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार से सम्मान-सहायता मिलेगी। जातक राजनीति में सफल होगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'शुक्रयुते भग चुम्बनपर' ऐसा जातक कामक्रीड़ा में स्त्री का भग चुम्बन पशुओं की तरह करता है।
8. शनि+शुक्र+मंगल+गुरु की युति जातक को (राजा) मिनिस्टर बनाएगी। जातक लालबत्ती की गाड़ी का स्वामी होगा

मेषलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में
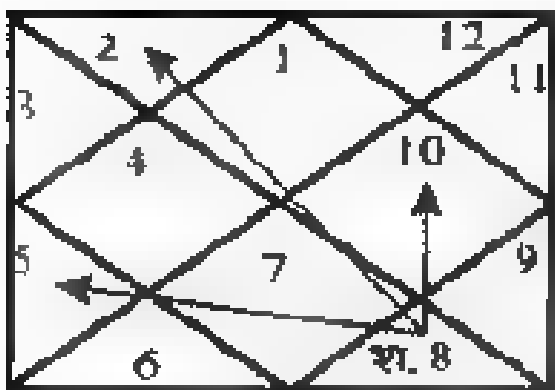
मेषलग्न में शनि दशमेश एवं एकादशेश होने से पापी है। यह लग्नेश मंगल का शत्रु है। अष्टम् स्थान में शनि वृश्चिक राशि का होगा तथा राज्यभंग योग एवं **'लाभभंग योग'** की सृष्टि करेगा।

ऐसे जातक को शनि के समान व्यापार व नौकरी में लाभ होगा। जातक नित नए विषयों की खोज करने वाला, अनुसंधान कर्त्ता, सत्यखोजी होता है। जातक परदेश में रहना एव एकांकी जीवन जीना पसन्द करेगा। साझेदारी के व्यापार में रुचि रखेगा।

अनुभव—'भोज संहिता' के अनुसार लग्नेश यदि आठवें हो तो धन का नाश निश्चित है। उपाय अनिवार्य है।

निशानी—हैडक्वाटर। जातक की छाती पर बाल हो तो वह अमीर होगा। आयु लम्बी होगी पर अचानक ऑपरेशन सम्भव है।

दृष्टि—अष्टभाव शनि की दृष्टि राज्य स्थान, धन स्थान एव पंचम भाव पर होगी। दशम भाव शनि का ही घर है फलत: राज्य (सरकार) से लाभ, धन की हानि या अपव्यय, सन्तान, विद्या की भी हानि कराएगा।

दशा—शनि की दशा अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चन्द्रमा**–शनि चन्द्रमा की युति **'विषयोग'** बनाएगी, जातक की मा को क्षय रोग होगा। जातक स्वयं भी बीमार होगा।
2. **शनि+सूर्य**–पचमेश सूर्य अष्टम स्थान मे शनि के साथ होने से पुत्र हानि का संकेत है। विद्या में भी बाधा आएगी क्योंकि **'विद्याभंग योग'** बनता है।
3. **शनि+मंगल**–यदि शनि के साथ मगल हो तो जातक को लम्बी बीमारी के बाद मौत मिलेगी। महामृत्युंजय मन्त्र धारण करना शुभद रहेगा। गुरुमुख से महामृत्युंजय मन्त्र ग्रहण करके, नित्य जाप करें।
4. शनि+मगल+राहु+सूर्य की युति यहा जातक को पत्नी व सन्तान हीन बनाएगी। जीवन काटों की शय्या के समान पीड़ादायक होगा।
5. **शनि+बुध**–पराक्रेश+षष्ठेश बुध अष्टम भाव मे शनि के साथ होने से **पराक्रम भंगयोग** बनता है परन्तु हर्षनामक **विपरीत राजयोग** के कारण जातक धनवान होगा।
6. **शनि+गुरु**–भाग्येश+खर्चेश गुरु अष्टम स्थान मे शनि के साथ होने से **भाग्यभंग योग एवं विपरीत राजयोग** दोनों ही योग बनते है। ऐसा जातक धनवान एव ऐश्वर्यवान् होगा।
7. **शनि+शुक्र**–धनेश+सप्तमेश शुक्र अष्टम स्थान म शनि के साथ **'धनहीन योग'** एव **'विवाहभंग योग'** बनाता है। जातक आर्थिक सकट के दौर में गुजरेगा तथा एक बार शादी टूटेगी।
8. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु यहा राजयोगभंग करता है। सरकार मे भय रहेगा।
9. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु राजदण्ड दिलाने में सहायक है।

मेषलग्न मे शनि की स्थिति नवम स्थान में
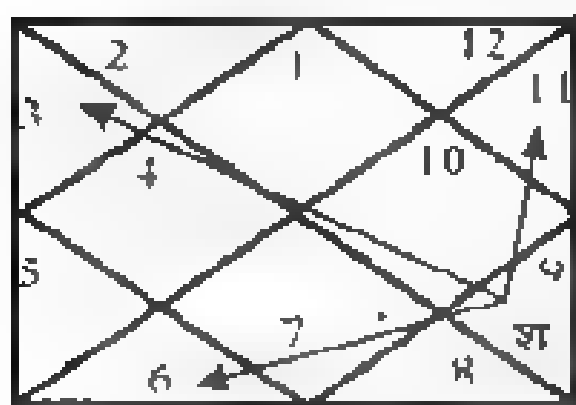
मेषलग्न मे शनि राज्येश एव एकादशेश होकर पापी है। यह लग्नेश मगल का शत्रु है। नवम स्थान मे शनि धनु राशि में होगा। फलत: ऐसा जातक हठी व क्रोधी होगा। जातक किस्मत वाला होगा। वैज्ञानिक मस्तिष्क व दिल दिमाग वाला होगा। ऐसा जातक ज्योतिष मन्त्र तन्त्र, योग, आयुर्वेद इत्यादि गूढ़ विद्याओं मे रुचि रखने वाला होता है। जातक दूरदर्शी एवं चिन्तक होता है।

भृगुसूत्र के अनुसार– **'पतित जीर्णोद्धारक: एकोन चत्वारिंशद्वर्षे तडाकगोपुर निर्माणकर्ता:'** ऐसा जातक पतित, दीन:दुखियों का उद्धार करने वाला एव 41वें वर्ष में तालाब, प्याऊ, मन्दिर एव सामाजिक स्थलों का निर्माण कराता है।

निशानी–कलम विधाता, मकान मर्दी, पिता की सम्पत्ति मे बाधा। अपना मकान खुद बनाएगा।

दृष्टि–शनि की दृष्टि लाभ स्थान पर है जो उसके स्वयं का घर है, पराक्रम स्थान एवं

षष्टम स्थान पर शनि की पूर्ण दृष्टि है। शनि व्यापार-व्यवसाय में लाभ कराएगा परन्तु पराक्रम मे हानि कराएगा। शत्रु व रोग से नुकसान करा सकता है। इसका बचाव जरूरी है।

अनुभव–'भोज संहिता के अनुसार लाभेश यदि भाग्य स्थान में है तो जातक पिता से, धार्मिक संस्था के माध्यम से रुपया कमाएगा।

दशा–शनि की दशा भाग्योदय भी कराएगी। नुकसान भी देगी। जीवन में मिला-जुला फल मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य जातक का भाग्योदय सरकारी क्षेत्र में कराएगा। जातक को राज-सरकार में सम्मान मिलेगा।
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ चन्द्रमा जातक को मकान का सुख देगा। माता का सुख देगा परन्तु मां बीमार रहेगी। मकान भी मरम्मत मांगेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनाएगा। परन्तु भूमि में विवाद रहेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को महान पराक्रमी बनाएगा।
5. **शनि+गुरु**–यदि शनि के साथ गुरु हो तो जातक धर्मबुद्धि प्रधान होगा। माता पिता का भक्त होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को धनशाली बनाएगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु भाग्य मे रुकावट का संकेत देता है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ व्यक्ति के आजीविका के साधन बदलता रहेगा।
9. शनि+शुक्र+गुरु+चन्द्र की युति जातक को राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव एवं सम्पदा की स्वामी बनाएगी

मेषलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में

2 1 12 11 3 4 श. 10 5 9 7 6 8
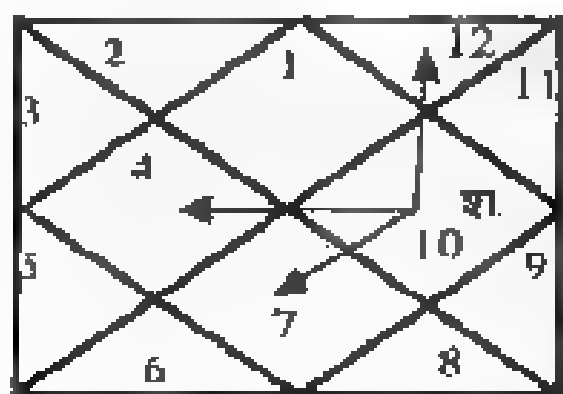
मेषलग्न में शनि दशमेश एवं एकादशेश होने से पापी है। शनि मंगल का शत्रु है दशम स्थान में शनि मकर राशि में स्वगृही होने से शुभफलदाई हो जाएगा। मानसागरी के अनुसार **''धनवान प्रायः शूरो, मन्त्री व दण्डनायकः पुरुषः दशमस्थे रवितनये, वृन्दपुर ग्राम नेता वा।''** श्लोक 12/पृ. 244

ऐसा व्यक्ति अथाह धन सम्पत्ति को स्वामी होता है। जातक सांसद, मंत्री, राजा, न्यायाधीश का दण्डनायक होता है। **'शश योग'** के कारण जातक निश्चय ही राजपुरुष होता है। राजनीतिज्ञ होता है जातक के पिता की लम्बी आयु होती है। जातक ज्योतिष, मन्त्र-तन्त्र, गूढ़ विद्याओं का जानकार होता है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार लाभेश यदि दशमभाव है तो जातक धार्मिक कार्यों व संस्थाओं के माध्यम में रुपया कमाएगा।

दशा–शनि की दशा शुभफल देगी

निशानी–लेख का कोरा, खाली कागज। विद्या में विघ्न आएगा।

दृष्टि–स्वगृही शनि की दृष्टि व्ययभाव, सुखभाव एवं सप्तम भाव पर होगी। फलतः खर्च बढ़ेगा सुख मे वृद्धि होगी। नए वाहन, पुराने भवन की खरीददारी होगी। पत्नी-पक्ष, ससुराल से लाभ होगा। जातक भोजन का शौकीन नहीं होगा

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां शनि के साथ सूर्य जातक को राज-सरकार में ऊंचा पद-स्थान दिलाता है। परन्तु भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चन्द्र**–यहां शनि के साथ चन्द्रमा उत्तम वाहन, भवन एवं माता का सुख देता है पर तीनों कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी।
3. यदि शनि के साथ मगल हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा। जातक करोड़पति होगा। जातक दम्भी व हठी होगा, पर राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक का पराक्रम बढ़ाएगा पर जातक को गुप्त रोग एवं गुप्त बीमारी लगी रहेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु **'नीचभगराज योग'** बनाएगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। यशस्वी होगा एवं प्रतिष्ठित होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र विवाह के बाद जातक का भाग्योदय कराता है। जातक विवाह के बाद महाधनी होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु राजकाज में बाधा दिलाएगा।
8. **शनि - केतु**–शनि के साथ केतु सरकारी क्षेत्र में पीड़ा दिलाएगा।
9. यहां पर शनि+मगल+गुरु+चन्द्र की युति जातक को (राजा) मिनिस्टर बनाएगी। जातक लालबत्ती की गाड़ी का हकदार होगा।

मेषलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में
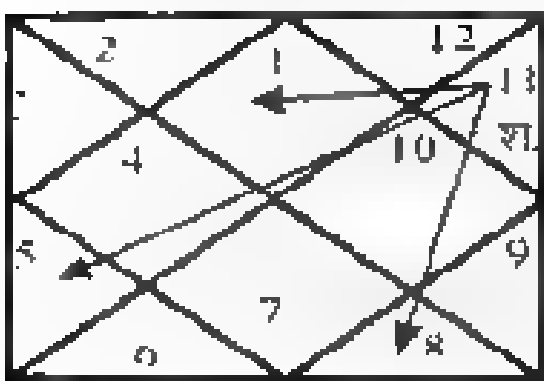
मेषलग्न में शनि दशमेश एवं एकादशेश होने से पापी है। यह लग्नेश मगल का शत्रु है। एकादश स्थान मे शनि **'कुम्भ राशि'** का स्वगृही होगा। जातक भाग्यशाली अच्छी किस्मत वाला, राज्याधिकारी होता है। बुजुर्गों की सम्पत्ति पाने वाला **'बहुधनी विघ्नकरः भूमिलाभः राजपूजकः'** मृगुसूत्र के अनुसार जातक राजा म, सरकार से राज सम्मान लाभ पाने वाला होता है, जातक विद्वान होगा। जातक के अनेक वाहन होंगे। जातक जिद्दी होगा।

दृष्टि—स्वगृही शनि की दृष्टि लग्नस्थान, पंचम भाव एवं अष्टम स्थान पर होगी। व्यक्तित्व में बढ़ोतरी होगी। शनि पाँच पुत्र देगा तथा आयु में बढ़ोतरी देता है व संकट से बचाएगा।

निशानी—लिखे विधाता, स्वय विधाता। अल्प सन्तति होगी।

अनुभव—'**भोज संहिता**' के अनुसार लाभेश लाभ स्थान में यदि मूल त्रिकोण राशि में है तो जातक अपने व्यापार व्यवसाय में बहुत रुपया कमाएगा एव अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा।

दशा—शनि की दशा शुभफल देगी।

शनि की अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—शनि के साथ सूर्य जातक को उद्योगपति बनाएगा। जातक के प्रथम पुत्र होगा अथवा पुत्र उत्पत्ति के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
2. **शनि+चन्द्र**—शनि के साथ चन्द्रमा होने से जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। कृषि या अन्य भूमि का लाभ होगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल होने में जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा परन्तु संघर्ष के बाद ही सफलता मिलेगी।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध पराक्रम में वृद्धि कराएगा। जातक एक से अधिक प्रकार के उद्योग एव व्यापार में रुचि रखेगा
5. यहां शनि के साथ भाग्येश गुरु भी हो तो यह युति जबरदस्त राजयोग कारक है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र होने से जातक को पत्नी सुदर एवं धनाढ्य होगी।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु व्यापार में नुकसान कराता है तथा व्यापार में बदलाव भी लाता है।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु व्यापार-उद्योग में ही लाभ दिलाता है। विदेश व्यापार में लाभ रहेगा।
9. शनि+सूर्य+गुरु+चन्द्र की युति जातक को करोड़पति बनाएगी। जातक बड़ा उद्योगपति होगा। उसकी सन्तान भी उद्योगपति होगी।

एकादश भाव में शनि का उपचार—

1. शराब या तेल 43 दिन तक धरती पर गिराएं।
2. कहीं जाने से पहले जल से भरा पात्र देखें।
3. बीमारी में कम से कम एक वर्ष तक स्त्री से शारीरिक सम्पर्क न करें
4. परायी स्त्री से दूर रहना अति आवश्यक है।
5. नया काम शुरू करने से पहले कुम्भ रखना।
6. दक्षिण के दरवाजे वाले मकान में न रहना।
7. घर में चांदी की ईंट रखना शुभ रहेगा।

8. स्कन्ध पुराणोक्त शनि स्तोत्र का पाठ करें।
9. नीलमयुक्त शनियंत्र धारण करें।

मेषलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में
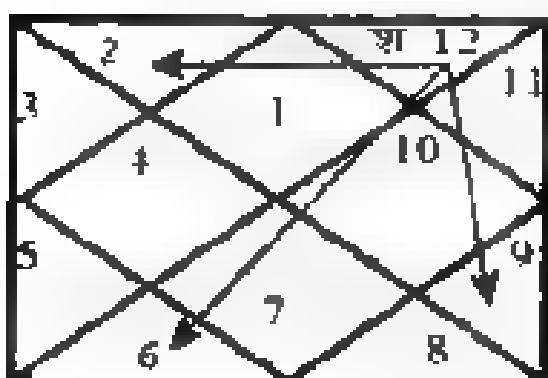
मेषलग्न में शनि राज्येश व एकादशेश होने से पापी है। शनि मंगल का शत्रु है। द्वादश स्थान में शनि मीन राशि का होगा। बारहवां शनि अकाल मृत्यु। ऐक्सीडेन्ट कराता है।

भृगुसूत्र के अनुसार—**पतितः विकलांगः पापयुते नेत्रच्छेदः** ऐसा जातक पतित, विकलांग होता है। जातक बड़े परिवार, जमीन-जायदाद का स्वामी होता है। जातक परोपकारी होगा, त्यागी होगा। माया को पेशाब की धार समझने वाला, वृद्धावस्था में संन्यासी होगा।

अनुभव—'भोजसंहिता' के अनुसार लाभेश यदि द्वादश स्थान में है तो जातक के बड़े भाई की मृत्यु होगी। जातक को धन का नुकसान जरूरी है। जातक का रुपया फालतू कार्यों में खर्च होगा।

निशानी कलम विधाता, आराम जातक के सिर पर टाट (गजापन) होगा। धार्मिक कार्य में रुपया खर्च होगा

दृष्टि -शनि की दृष्टि धन में बढ़ोत्तरी देगी। शत्रु का नाश करेगी एवं भाग्य का द्वार खोलेगी। क्योंकि शनि की पूर्ण दृष्टि धनस्थान, षष्टम् भाव एवं भाग्य (नवम्) भाव पर है। शनि मीन राशि का होना इतना अशुभ फलदाई नहीं होगा, जितना होना चाहिए। विदेश में कमाने के योग ज्यादा हैं।

दशा—शनि की दशा मिश्रित फलदायक है। शुभ-अशुभ दोनों फल की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—शनि के साथ सूर्य विद्या एवं संतान में बाधक है।
2. **शनि+चन्द्र**—शनि के साथ चन्द्रमा **'सुखहीनयोग'** बनाता है। माता का सुख, वाहन का सुख कमजोर रहेगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल **'लग्नभगयोग'** बनाता है जातक को परिश्रम का लाभ नहो मिलेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध **'विपरीत राजयोग'** बनाता है जातक धनी होगा। परन्तु अपयश मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** बनाता है जातक का भाग्योदय मध्यम आयु के बाद होगा।

यदि यहा शनि के साथ बुध+मंगल की युति हो तो यह भी जबरदस्त राजयोग बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा, पर जातक को शत्रुओं से लड़ना पड़ेगा।

6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद एवं विदेश यात्रा के बाद कराता है।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु जातक के खराब सपने देगा। दुर्घटना कराएगा।
8. **शनि+केतु**—विदेश यात्रा में लाभ देगा।
9. यदि यहां शनि+शुक्र+गुरु+बुध की युति हो तो जातक (राजा) मिनिस्टर होगा। शहर का प्रमुख 'मेयर' होगा एवं परोपकारी, दयालु एवं मानवधर्म का उपासक होगा।
10. यदि बारहवें पापग्रह राहु, केतु या सूर्य हो तो एक नेत्र (बाई आंख) का नाश होगा। विदेश यात्रा में धोखा होगा। जातक को जेल भी जाना पड़ सकता है

❑❑❑

मेषलग्न में राहु की स्थिति

मेषलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में
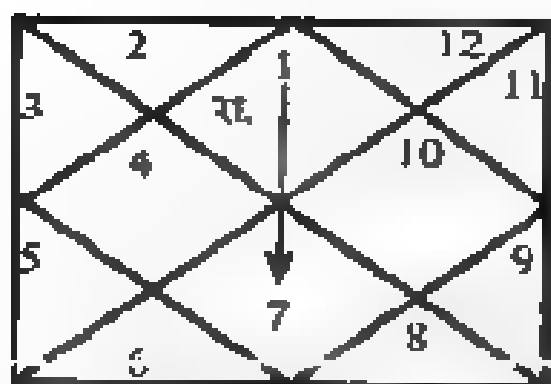
मेषलग्न के प्रथम स्थान में राहु मेष राशि (अग्निसंज्ञक राशि) मंगल के घर में होगा। ऐसे जातक का जन्म अस्पताल या ननिहाल में होता है। जातक अच्छी सेहत वाला धनवान होता है। राजदरबार (सरकार) में मान-सम्मान इज्जत पाने का भूखा होता है। जातक बड़े परिवार वाला होता है। चरलग्न में राहु होने पर जातक एक जगह टिक कर नहीं बैठता। जातक कामी होता है।

निशानी—सीढ़ी पर चढ़ने वाला हाथी। चेहरे (सिर) पर काले रंग का निशान होता है। जातक अस्त्र-शस्त्र से चोट खाने वाला धैर्यहीन होता है। बचपन में बीमार रहेगा।

अनुभव—राहु-केतु छायाग्रह, इनका कोई शारीरिक अस्तित्व नहीं है। स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। अत: अनेक प्राचीन विद्वानों ने इन्हें ग्रह माना ही नहीं। इसका कारण उनकी स्थूल सोच थी। जिस पर मनुष्य के शरीर की छाया का कोई वजन तौल, भार अथवा शरीर में हटकर अलग से स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं हो सकता परन्तु उसकी सत्ता से कोई इंकार नहीं कर सकता। ठीक इसी प्रकार राहु व केतु का फलादेश अक्षुण्ण है, अकाट्य है। फलित ज्योतिष से यदि ये दोनों ग्रह नहीं हो तो फलादेश की सार्थकता ही नष्ट हो जाए। अत: फलादेश करते समय इनकी सूक्ष्म गतिविधियों का सफल अध्ययन कुशल ज्योतिषी को करना चाहिए। एक बात और है राहु अंधेरा है, धुआं है, पर्दे के पीछे छिपी हुई वस्तु है। राहु जन्मकुण्डली के जिस भाव में बैठेगा, वहां भ्रम उत्पन्न करेगा, यह निश्चित है।

मेषलग्न का राहु शारीरिक नैरोग्य-शारीरिक बल इतना देता है कि जातक अपने यौवन से अनेक स्त्रियों का उपभोग लेने में समर्थ होता है अपनी स्त्री से असंतुष्ट रहने से व्याभिचारी वृति भी होती है। परन्तु मेषलग्न में राहु वाला व्यक्ति उदार हृदय का होता है। कब क्या कर बैठेगा, इसका अंदाज किसी को नहीं होगा।

दशा—भोज संहिता के अनुसार राहु की दशा संघर्षशील साबित होगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु+सूर्य**—यहां राहु के साथ सूर्य उच्च का होकर **'रविकृत राजयोग'** बनाएगा। ऐसा जातक तेजस्वी होगा। पर राजदण्ड से भ्रमित होगा।
2. **राहु+चन्द्र**—यहां राहु के साथ चन्द्रमा मातृसुख को तोड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**—यदि राहु के साथ मंगल हो तो **'रुचक योग'** बनेगा। जातक लम्बा होगा। महापराक्रमी होगा। हठी, जिद्दी व क्रोधी होगा पर दयावान भी होगा। जातक कामातुर होगा।
4. **राहु+बुध**—यहां राहु के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा।
5. **राहु+गुरु**—यदि राहु के साथ गुरु हो तो **'चाण्डाल योग'** होगा। जातक अभक्ष्य भक्षण करेगा।
6. **राहु+शुक्र**—यहां राहु के साथ शुक्र जातक को सुन्दर पत्नी देगा। पर जीवनसाथी स्वेच्छाचारी होगा।
7. **राहु+शनि**—यदि राहु के साथ शनि हो तो जातक निष्ठुर होगा। न्यायप्रिय होगा पर आसानी से किसी के काबू में नहीं आएगा जातक कहेगा कुछ व करेगा कुछ। उसका व्यवहार संदिग्ध होगा।
8. यदि सूर्य+चन्द्र के साथ राहु हो तो **'ग्रहण योग'** होगा। ऐसे जातक का जन्म वैशाखकृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के समय हुए ग्रहणकाल में होगा। ऐसा जातक मितव्ययी एवं सदारोगी होगा।

प्रथम भाव में राहु का उपचार—

1. शनिवार को काले कुत्ते को रोटी खिलावें।
2. शनिवार के दिन काला वस्त्र न पहनें।
3. सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण के समय दान दक्षिणा, मंत्र पाठ करें।
4. शनिवार के दिन जौ के आटे की गोलियां मछलियों को खिलावें।
5. राहु के मंत्र का जाप करें, दशांश हवन करे एवं राहु की वस्तुओं का दान करें।
6. हाथी दांत की मूर्ति या वस्तुएं घर में न रखें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में
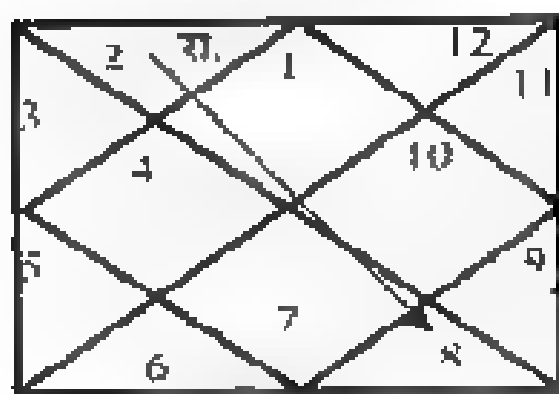
मेषलग्न में द्वितीय स्थान में राहु वृष राशि (स्थिर राशि) में होगा। राहु शुक्र के घर में शुक्र से प्रभावित होगा। जातक परोपकारी होगा। जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आएंगे। मिट्टी से सोना या कभी सोने से मिट्टी बनाएगा। 34 वर्ष की आयु के बाद दो विवाह की सम्भावना रहेगी। धन के घड़े में

छेद है। जातक रुपया इक्कठा नहीं कर पाएगा। जातक कठोर वचन बोलने वाला होता है।

निशानी–बरसाती बादल। जातक की ठोडी के पास काला तिल (लांछन) होगा। जातक के दांत जल्दी खराब होंगे।

अनुभव–**'राहुशनिवत् केतुः कुजवत्'** राहु शनि के समान एवं केतु मंगल के समान फल देता है। बुध-शुक्र और शनि राहु के मित्र ग्रह हैं। राहु के लिए मंगल शत्रु है। राहु की उच्च राशि मिथुन स्वगृह कन्या है। नीच राशि धनु है और सिंह राशि में राहु हर्षित रहता है। राहु की मूल त्रिकोण राशि कर्क कही गई है वृष का राहु मित्र क्षेत्री होता है। कई विद्वान राहु को वृष में उच्च का मानते हैं पर वृष के राहु वाला व्यक्ति लोगों के काम मे बहुत दखल देने वाला होता है। राहु धन भाव में हो तो मनुष्य कुबेर के समान दौलत वाला हो तो भी निर्धन होता है। उसे धन की कमी बराबर सताती रहती है। जातक की वाणी अपवित्र (अप्रिय) होती है। मनुष्य झूठ बोलने वाला होता है।

दशा–राहु की दशा संघर्षशील साबित होगी। सही फलादेश हेतु शुक्र की स्थिति का अध्ययन करना भी जरूरी है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–पंचमेश सूर्य राहु के साथ यहां होने से विद्या में निश्चित बाधा आएगी। विद्या व सन्तति को लेकर धन का अपव्यय होगा।
2. **राहु+चन्द**–राहु के साथ उच्च का चन्द्रमा जातक के सुख ऐश्वर्य में वृद्धि करेगा।
3. **राहु+मंगल**–यदि राहु के साथ मगल हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक के पराक्रम को तोड़ता है।
5. **राहु+गुरु**–राहु के गुरु भाग्योदय में बाधक है। जातक को भाग्योदय व धनप्राप्ति हेतु बाध)ओं का सामना करना पड़ेगा
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र विलम्ब विवाह कराएगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि व्यापार-व्यवसाय में वांछित लाभ में बाधक है।

द्वितीय भाव में राहु का उपचार–

1. श्रीसूक्त का सुबह शाम नित्य पाठ करें।
2. श्रीयत्र+कनकधारा यंत्र+कुबेर यंत्र का नित्य पूजन, दर्शन करें।
3. राहु शान्ति का प्रयोग करें।
4. कड़वा वचन किसी को न बोले।
5. धन प्राप्ति हेतु दूर्वा एव काले तिल से राहु का हवन करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में

मेषलग्न में तृतीय स्थान में राहु मिथुन राशि (वायुराशि) में होगा। मिथुन राशि में राहु उच्च का कहा गया है। ऐसा जातक विद्वान व कलम का धनी होगा। उसकी कलम में तलवार
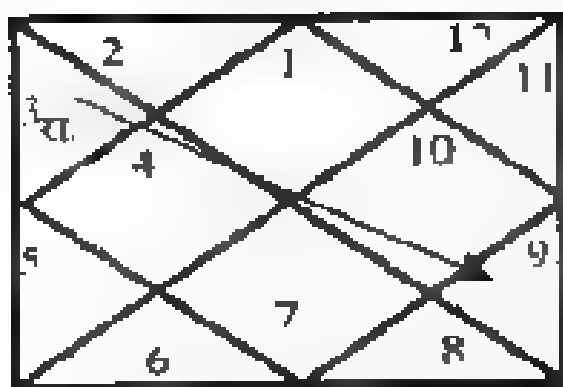
से अधिक ताकत होगी। जातक भाई-बन्धु, परिजनों की सेवा करेगा। स्वप्न में जो भी दिखेगा, सच हो जाएगा जातक स्त्री-सन्तान से सुखी होगा। परन्तु भाइयों से मनमुटाव रहेगा। जातक गरम मिजाज का होगा।

निशानी—आयु और धन का स्वामी। दाएं बाजु पर काले रंग का तिल या निशान होगा।

अनुभव—मिथुन में राहु वाला व्यक्ति 'छिन्द्रान्वेषक' होता है। अपने मित्रों व परिजनों के कार्यों में दोष ढूँढता रहता है। 'त्रिषट् एकादशे राहु:' के अनुसार तृतीयस्थ राहु वाला जातक जबरदस्त बाहुबली होता है। सारा संसार उसे सगे भाई की तरह आदर देगा। परन्तु सहोदर भाई का नाश होता है।

दशा—राहु की दशा में भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे पर 'भोज संहिता' के अनुसार भाइयों, परिजनों एवं मित्रों से धोखा इसी दशा में मिलेगा। राहु के साथ यदि शनि या बुध हो तो राहु की दशा ठीक जाएगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य विद्या में बाधा डालेगा। कुटुम्ब में कलह होगा।
2. **राहु+चन्द्र**—राहु के साथ चन्द्रमा, मातृपक्ष से विरोध उत्पन्न करेगा। पराक्रम व मान भंग का भय रहेगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल भाइयों में विरोध, मित्रों से धोखा दिलाएगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध मिश्रित फल देगा। मित्रों से लाभ एवं विरोध दोनों उत्पन्न करता रहेगा।
5. **राहु+गुरु**—राहु के साथ गुरु व्यक्ति को फिजूल खर्च बनाएगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र धन का अपव्यय मित्रों के लिए कराएगा। स्त्री को लेकर धन खर्च होगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि राज्य सुख में बाधा, व्यापार-व्यवसाय में बाधा पंहुचाएगा।

तृतीय भाव में राहु का उपचार—

1. भाई-कुटुम्बीजनों को पलटकर जबाब न दें।
2. गलत व्यक्तियों एवं व्याभिचारी स्त्रियों की सौबत से बचें।
3. जौ रात्रि सिरहाने रखकर प्रात: जानवरों या किसी गरीब को भेंट करें।
4. बड़े भाई या बहन से लड़ने पर चूल्हे की आग बुझ जाएगी।

मेषलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मेषलग्न के चतुर्थ स्थान में राहु कर्क राशि का होगा। कर्क राशि चर राशि है। जलचर है। राहु चन्द्रमा के प्रभाव में रहेगा ऐसा जातक धनवान एवं माता पिता का सेवक होगा। कर्क
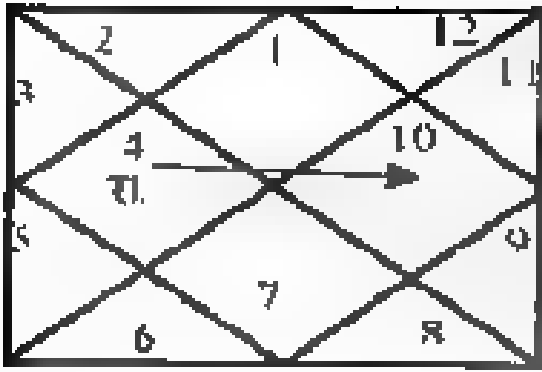
के राहु के कारण जातक पिस्तौल-बन्दूक या घातक हथियार साथ रखने का शौकीन होगा। उच्च पदाधिकारी होगा। घर के सुख में कुछ न कुछ कमी न्यूनता रहेगी सभी सुख के साधन उपलब्ध होते हुए भी जातक सुखी नहीं होगा। विद्या मे विघ्न होगा।

निशानी—धर्मी मगर, धन के आम गए। छाती पर काले रंग का तिल या दाग होगा।

अनुभव—कर्क राहु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। यहा राहु हर्षित रहता है परन्तु ऐसा जातक लोगों के काम में दखल देने वाला, निरंकुश जातक होता है। चतुर्थ भावस्थ राहु व्यक्ति की माता को बीमार रखता है। अथवा चतुर्थस्थ राहु सौतेली मा का योग कराता है। माता को लेकर चिन्ता बनी रहती है। 'भोज संहिता' के अनुसार ऐसे जातक का मन घर में नहीं लगेगा। घर में बैचेन व बाहर मस्त रहेगा।

दशा—राहु की दशा संघर्षशील रहेगी। यदि चन्द्रमा की स्थिति कुण्डली में खराब है तो राहु की दशा खराब जाएगी। यदि चन्द्र की स्थिति शुभ है तो दशा मध्यम फलकारी साबित होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य विद्या में, भौतिक सुखों में बाधक है।
2. **राहु+चन्द**—राहु के साथ चन्द्रमा माता को बीमार करेगा। जातक परम उत्तम (चार पहियों का) वाहन होगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल नीच का होने से जातक लड़ाकू होगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध व्यापार में हानिकारक है। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा।
5. **राहु+गुरु**—राहु के साथ गुरु पिता के सुख मे बाधक है।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र पत्नी मनमुटाव उत्पन्न करेगा। वाहन दुर्घटना का भय बनाएगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि, व्यापार मे नुकसान, भौतिक सुखो की प्राप्ति में बाधक है।

चतुर्थ भाव में राहु का उपचार—

1. तेजगति के वाहन से दूर रहें।
2. माता, बुआ या बडी बहन की बीमारी में लापरवाही न रखें।
3. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप करें।
4. राहु शान्ति प्रयोग करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में
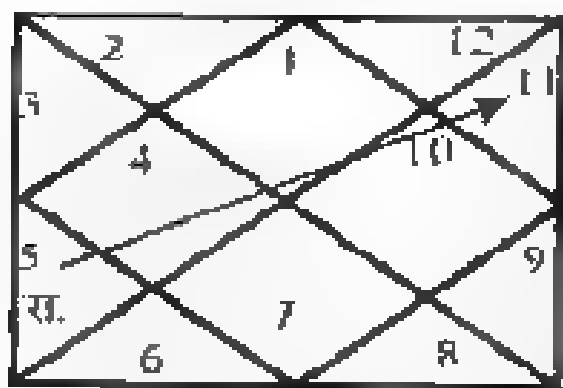
मेषलग्न के पचम स्थान में राहु सिंह राशि का होगा। सिंह राशि अग्नि संज्ञक व स्थित राशि है राहु सूर्य के प्रभाव में होने के कारण जातक गुस्सैल, क्रोधी प्रवृत्ति का शीघ्र भड़कने वाला व्यक्ति होगा। जातक व्यापारी होगा पर सन्तान के लिए तरसेगा। भृगुसूत्र के अनुसार **'पुत्राभाव सर्पशापात् सुतक्षय, नागप्रतिष्ठया पुत्र प्राप्ति।'** सर्प के शाप से पुत्र का अभाव हो पर नाग की प्रतिष्ठ कालसर्पशक्ति करने से पुत्र की प्राप्ति होगी। जातक उच्च अधिकारियों से लाभ प्राप्त करने वाला होगा।

निशानी–शरारती-सन्तान। जातक के पेट या पीठ पर काला तिल या दाग होगा। पाचवा स्थान 'पूर्वजन्मकृत पुण्य' का होता है। ऐसे जातक की कुण्डली में पूर्व जन्मकृत पुण्य का अभाव रहता है।

अनुभव–सिंह राशि राहु की प्रिय राशि है। जिसमें वह प्रमुदित रहता है। राहु सिह का लो तो निर्जन प्रदेश में निवास करके भी मनुष्य यथेष्ट धन अर्जित कर लेता है। ऐसा जातक दयालु होता है। परन्तु पंचमस्थ राहु पुत्रसुख में बाधक है। यह पहली सन्तान को मारता है। पंचम भावस्थ राहु को लेकर 'पद्मनामक' कालसर्पयोग बनता है ऐसा जातक कितना भी डॉक्टरी ईलाज करा ले पर उसे पुत्र सन्तति नहीं होती। ऐसी सैकड़ों कुण्डलियां हमारे सग्रह में है परन्तु कालसर्पयोग की शान्ति विधि-विधान से तीन बार करा लेने पर लोगों के सन्तति हुई है। ऐसा प्रत्यक्ष अनुभव (चमत्कार) हमारे द्वारा कई लोगो को प्राप्त हुआ है। यहां आकर मानना ही पड़ता है कि मनुष्य का कर्म (परिश्रम) भाग्य के सामने वृथा है। कर्म फल प्राप्ति के लिए अनिवार्य है। परन्तु शुभ-अशुभ फल दैवकृपा से ही मिलता है अकेला पुरुषार्थ व्यर्थ है।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार राहु की दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य स्वगृही विद्या से लाभ, पुत्र सन्तति देरी से होगी। पर पुत्र तेजस्वी होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा सन्तान सुख में बाधक है पर मातृदोष की शान्ति के बाद उत्तम सन्तति होगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल भाइयों के सुख एव पुत्र सुख मे बाधक (अवरोधक) है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से व्यक्ति की मामा एवं मातृपक्ष से कम पटेगी।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक की विद्या को बिगाड़ेगा एव भाग्योदय मे भी देरी कराएगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक के वैवाहिक सुख में बाधक है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि व्यापार में नुकसान देगा।

पंचम भाव में राहु का उपचार–

1. संतान गोपाल स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
2. राहु के तांत्रिक मंत्रों का जाप, हवन एवं तर्पण करें।
3. राहु की वस्तुओं का दान करें।
4. पितृदोष या कालसर्पयोग की शान्ति करावें

मेषलग्न में राहु की स्थिति षष्ठम स्थान में
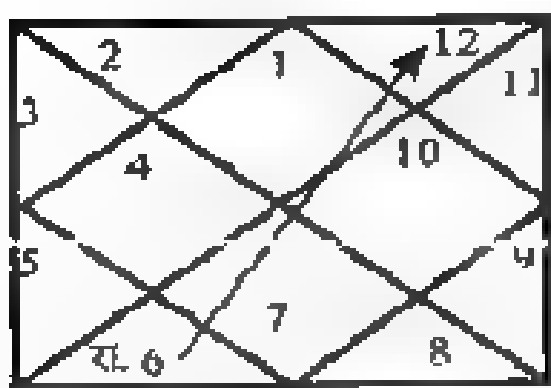
मेषलग्न में षष्ठम भाव में राहु कन्या राशि का होगा। कन्या राशि द्विस्वभाव राशि एवं वायु तत्त्व प्रधान है। इसमें राहु उच्च का कहा गया है।

ऐसा जातक बुराई के कामों से दूर रहने वाला, धीरवान और अतिसुखी होता है। ऐसा जातक दृढ़ निश्चयी होता है, लम्बी आयु का स्वामी एवं शत्रुओं पर विजय पाने वाला, साहसी होता है। उसके शत्रु उसकी प्रतापग्नि में नित्य जलते हैं। ऐसा जातक अपनी किस्मत आप चमकाता है। जातक के जीवन में शत्रु या रोग का प्रकोप अवश्य रहेगा।

निशानी–फांसी काटने वाला सहायक हाथी। नाभि के नीचे काले रंग का तिल या दाग होता है, छठे भाव में राहु वाले व्यक्ति को शीघ्र लग जाती है।

अनुभव–छठे भाव में राहु शत्रुओं के जंगल को भस्मसात करने की शक्ति रखता है परन्तु उसे चाचा-मामा का सुख नहीं होता।

दशा–राहु की दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य होने के कारण जातक के जीवन में स्थिरता पुत्र जन्म के बाद ही आएगी। पुत्र जन्म भी देवताओं की उपासना व कृपा से होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–'इन्दुसुते राजस्त्री भोगी' (भृगुसूत्र) राहु के साथ यहां पर यदि चन्द्रमा हो जातक राजा की स्त्री, राजमंत्री की पत्नी से गुप्त सम्बन्ध रखता है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से जातक को परिश्रम का लाभ 34 वर्ष की आयु के बाद मिलेगा।
4. **राहु+बुध**–यदि बुध भी राहु के साथ है तो पराक्रम भंग होगा। जातक अवश्य जेल जाएगा
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक को राजयोग देगा परन्तु संघर्ष के बाद देगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र सम्पूर्ण विवाह सुख में बाधक है

7. राहु+शनि–राहु के साथ शनि जातक को व्यापार एवं व्यवसाय सुख में बाधक है।

षष्टम भाव में राहु का उपचार–

1. राहु कवच का नित्य पाठ करें।
2. चांदी की ठोस गोली जेब में रखें।
3. राहु पंचविंशति स्तोत्र का हवनात्मक प्रयोग करें।
4. राहु की वस्तुओं का दान करें।
5. रात्रि को गहरी नींद में सोए हुए व्यक्ति को भूरे-काले रंग का कम्बल ओढ़ाकर चुपचाप चले जाए।

मेषलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में
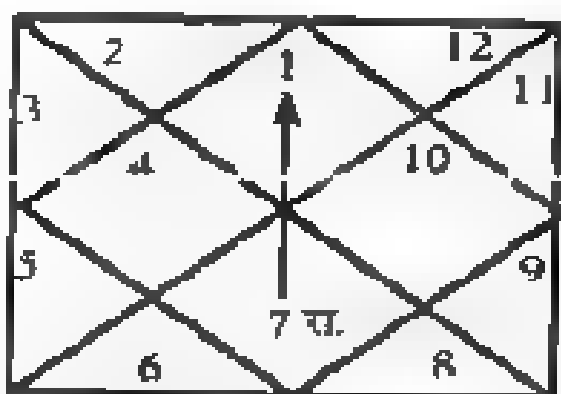
मेषलग्न के सप्तम स्थान में राहु तुला राशि में होगा। तुलाराशि चरराशि वायु तत्त्व प्रधान है। ऐसा जातक शत्रुओं पर विजय पाने वाला राज्याधिकारी होता है। इनके जीवन में धन की कमी नहीं रहेगी। इनका गृहस्थ जीवन विवादास्पद होता है। दुनिया में आकर ये नाम कमाते है परन्तु दारिद्र्य का संकेत मिलता है। प्रथम स्त्री की मृत्यु बीमार से होने प्रायः दूसरी शादी होती है। शुभग्रह साथ हो या शुभग्रह की दृष्टि हो तो एक पत्नी होगी। जातक अंतर्जातीय विवाह या विधवा विवाह करने में संकोच नहीं करेगा। वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं होगा।

निशानी–लक्ष्मी का धुआं निकालने वाला। गुप्तांग पर काला तिल या दाग होता है।

दशा–राहु की दशा मिश्रित फल देगी। शुक्र की स्थिति सही फलादेश का मार्ग प्रशस्त करेगी।

अनुभव–तुला राशि में राहु वाला व्यक्ति 'छिद्रान्वेषक' होता है अपनी पत्नी, मित्र व भागीदारों मे दोष ढूढ़ता रहता है। सप्तम भाव में राहु स्त्री का विनाश करता है। उसे रोगिनी बनाता है। सप्तम भाव में राहु मधुमेह का रोग देता है और भी कारण से स्त्री सुख में न्यूनता देता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य नीच का होने से जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी तथा राजदण्ड का भय रहेगा।
2. **राहु+चन्द्र**–सप्तम भाव में राहु के साथ चन्द्रमा हो तो मनुष्य स्त्री को विभिन्न प्रकार भोग-उपभोग की सामग्रियां निरन्तर भेंट करता रहता है। यदि सप्तम भाव में अन्य पापग्रह हों तो ऐसे जातक की स्त्री कुटिला, कुशीला और लड़ाकू होगी। पति-पत्नी मे लगातार कलह बनी रहेगी।

3. **राहु+मंगल**—यदि राहु के साथ मंगल भी हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध जातक को पत्नीपक्ष, मातृपक्ष एवं मित्रपक्ष से हानि दिलवाता है। स्त्री मित्र से धोखा मिलेगा.
5. **राहु+गुरु**—राहु के साथ गुरु **'चाण्डाल योग'** बनाता है। ऐसा जातक अन्तरजातीय विवाह करता है।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ **'मालव्य योग'** बनाता है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ उच्च का शनि **'शशयोग'** बनाता है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली व धनवान होता है।
8. राहु के साथ यदि शनि या शुक्र हो तो 'भोजसंहिता' के अनुसार जातक दुर्दान्त राजा होगा। ऐसा प्रभावशाली व्यक्ति होगा जो गलत कार्यों में अपनी शक्ति (प्रभाव) का दुरुपयोग करेगा।

सप्तम भाव में राहु का उपचार—

1. राहु शान्ति प्रयोग करें।
2. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप रुद्राक्ष की माला पर करें।
3. राहु की वस्तुओं का दान करें।
4. अत्यधिक बूढ़ी एवं बेसहारा स्त्रियों की मदद करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
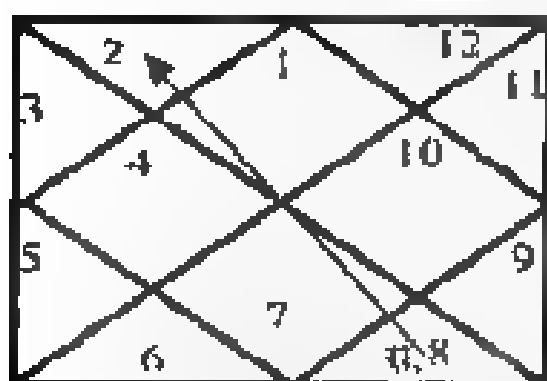
मेषलग्न में अष्टम स्थान में राहु वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि जलसंज्ञक है, स्थिर है। जातक को 32 वर्ष आयु पर खतरा आएगा। जातक की किस्मत झूले की तरह आगे-पीछे, ऊपर-नीचे डोलती रहेगी। ऐसा जातक राजा व फकीर को एक जगह बिठाएगा। धनवान् होगा। 34 वर्ष की आयु के बाद दूसरे विवाह की सम्भावना बनी रहेगी। जातक को गुप्त रोग, मूत्राशय, पथरी, हरनिया की सम्भावना रहेगी। अग्नघात की सम्भावना रहती है।

निशानी—मौत का मालिक, कढ़वे धुएं का संदेश। गुप्तांग या गुदा पर काले रंग का तिल या दाग होगा। विरासत की सम्पत्ति न मिले।

अनुभव—ऐसे जातक को पेट में रोग, ट्यूमर या गुप्तांग में बीमारी होती है। जातक अंतर्जातीय विवाह या विधवा विवाह करता है जातक को 32, 45 एवं 60वें वर्ष मृत्यु का भय रहता है। जातक की वृद्धावस्था कष्टमय रहती है, तथा मृत्यु का पूर्वाभास मृत्यु के पहले हो जाता है। यदि राहु के साथ मंगल हो तो उपरोक्त वर्षों में दुर्घटना का भय और भी प्रबल हो जाता है। पैर टूटने का भय रहता है। ऐसे जातक को नवरत्न जड़ित महामृत्युंजय का लॉकेट गले में हर वक्त पहनना चाहिए। इसके लिए लेखक या 'अज्ञातदर्शन' कार्यालय से सीधा सम्पर्क किया जा सकता है।

यदि राहु के साथ मगल हो तो पत्नी की मृत्यु पहले होगी।

दशा–राहु की दशा अनिष्ट फल देगी। यदि इस कुण्डली में मंगल की स्थिति भी खराब हो तो यह दशा घातक होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य पुत्र सन्तान एवं उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त कराने में बाधक है।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा नीच का होगा। जातक को गुप्त बीमारी का प्रकोप रहेगा। शल्य चिकित्सा से राहत मिलेगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से **'विपरीतराज योग'** बनेगा। जातक महाधनी होगा पर जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से जातक को **'विपरीत राजयोग'** के कारण भौतिक सुख सम्पन्नता मिलेगी पर जातक के मित्र दगाबाज होंगे.
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु **'विपरीतराज योग'** बनाता है। जातक धनी होगा परन्तु संघर्षशील जीवन रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र विवाहसुख से विच्छेद का संकेत देता है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि भी विवाह-विच्छेदक है परन्तु व्यापार-व्यवसाय में धोखा देगा।

अष्टम भाव में राहु का उपचार–

1. राहु कवच का नित्य पाठ करें।
2. असाध्य बीमारी से बचाव हेतु महामृत्युंजय का पाठ करें।
3. हाथी दांत की वस्तुएं घर में न रखे, न प्रयोग में ले।
4. प्राणों पर यदि संकट हो तो अपने वजन के बराबर कच्चा कोयला शनिवार के दिन जल में प्रवाहित करें।
5. यदि बुखार न उतर रहा हो तो 800 ग्राम जौ गौ मूत्र में धोकर शनिवार के दिल जल में प्रवाहित करें

मेषलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में
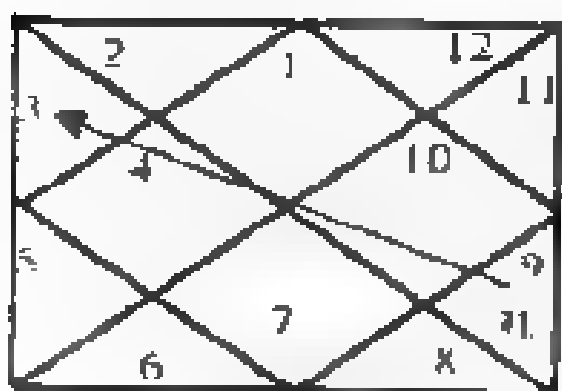
मेषलग्न के नवम स्थान में राहु धनु राशि का होगा। धनुराशि अग्निसंज्ञक है, द्विस्वभाव है। ऐसा जातक जादू टोना, श्मशान क्रिया व तंत्र का जानकार होता है। बहन-भाइयों का पोषक होते हुए भी लालची एवं बेईमान होता है। ऐसा जातक सन्तान से सुखी एवं अधिक यात्रा करने वाला, कुछ क्रोधी एवं

तनुक मिजाजी व्यक्ति होता है। 'भोजसंहिता' के अनुसार ऐसा जातक भाग्योदय में कुछ न कुछ रुकावट महसूस करता होगा।

निशानी–डॉक्टर, मगर बेईमान। जांघों पर काले रंग का तिल का दाग होता है। पिता की सम्पत्ति न मिले। यात्राएं अधिक करे।

अनुभव–नवमस्थ राहु वाला व्यक्ति अपने द्वारा प्रारम्भ किए हुए कार्य को अधूरा नहीं छोड़ता। ऐसा जातक देवताओं व तीर्थों मे श्रद्धा विश्वास रखने वाला, सभ्य व्यक्ति होता है। ऐसा जातक अपने ऊपर किए गए उपकार को कभी भूलता नहीं। व्यक्ति कृतज्ञ होता है। परन्तु अपने दुश्मन को कभी नहीं छोड़ता प्राय: अपने पिता का इकलौता पुत्र होता है बहन यदि हो तो 22वें वर्ष मे उसकी मृत्यु हो जाती है। भाई यदि हो तो 36वें वर्ष में उसकी भी मृत्यु हो जाती है।

दशा–राहु की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु यदि गुरु इस कुण्डली में छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो जातक पर विपत्ति का पहाड़ टूटेगा। उसके प्रयत्न इस दशा में विफल होंगे। राहु का उपाय ही एकमात्र समाधान होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक का भाग्योदय विद्यार्जन से कराएगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा जातक का भाग्योदय माता की मदद से कराएगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मगल के कारण जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक बड़ी सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को महान् पराक्रम बनाएगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक को महान भाग्यशाली एवं तेजस्वी व्यक्ति बनाएगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराएगा।
7. **राहु+शनि** राहु के साथ शनि जातक की किस्मत व्यापार के द्वारा चमकाएगा।

नवम भाव में राहु का उपचार–

1. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप, अनुष्ठान करें।
2. राहु शान्ति प्रयोग करें।
3. शीघ्र भाग्योदय हेतु राहु के एक लाख अठारह हजार तांत्रिक मंत्रों का दूर्वा, काले तिल, कर्पूर व कमलगट्टे का हवन करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में

मेषलग्न के दशम स्थान में राहु मकर राशि का होगा। मकर राशि पृथ्वीसंज्ञक चर राशि है। जातक का जन्म पिता के लिए कष्टकारी होता है। जातक राज-दरबार (सरकार) मान-सम्मान पाने का इच्छुक होता है। जातक धनवान होगा लम्बी आयु वाला होगा। जातक
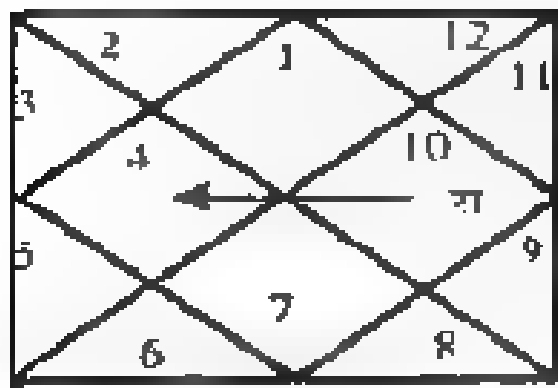
चाल चलन का अच्छा एवं चरित्रवान होगा। परन्तु राज्यपक्ष से कष्ट महसूस करेगा।

निशानी–साप की मणि। घुटनों के पास काले रंग का तिल या दाग होता है। पिता से सम्बन्ध ठीक होंगे।

अनुभव–दशम भाव का राहु बलवान होता है परन्तु ऐसे जातक को पिता का सुख नहीं मिलता। वाहन सुख तो होता है परन्तु वाहन को लेकर खर्च होता रहता। जातक को म्लेच्छ, निम्न जाति एवं विदेशी लोगों से लाभ होगा अर्थात् अपनी जाति के लोगों से कम लाभ होता है।

दशा–राहु की दशा मिश्रित फल देगी। यदि शनि राहु के साथ है तो दशा अच्छी जाएगी परन्तु यदि शनि इस कुण्डली के छठे, आठवें और बारहवें स्थान में हो जातक राज (सरकार) कोर्ट-कचहरी द्वारा दण्डित होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर विद्या अधूरी कराएगा। सरकारी नौकरी में बाधा पहुंचेगी।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा माता की सम्पत्ति में बाधा, मकान को लेकर विवाद कराएगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ उच्च का मंगल यहां **'रुचक योग'** बनाएगा। जातक राजा के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं बड़ी सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से जातक पराक्रमी होगा। व्यापार प्रिय होगा पर वंचक होगा। चालाक होगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु नीच का होने से जातक को नौकरी, अध्यापन वगैरह से लाभ होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र व्यापार एवं स्त्री संसर्ग को लेकर धन खर्च करने का संकेत देता है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'शश योग'** बनाएगा। ऐसे जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

दशम भाव में राहु का उपचार–

1. राजयोग की प्राप्ति हेतु राहु के तांत्रिक मंत्रों का हवन करें।
2. राहु की वस्तुओं का दान करें।
3. राहु पचंविंशति नाम स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
4. राहु के पचंविंशति स्तोत्र का हवनात्मक प्रयोग काले तिल व दूर्वा से करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में

2 1 12 11 3 रा. 10 4 5 9 7 6 8
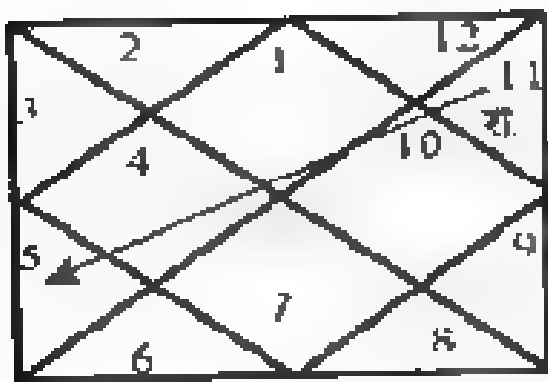
मेषलग्न के एकादश स्थान राहु कुम्भ राशि का होगा। कुम्भ राशि वायु तत्व प्रधान एवं स्थिर राशि है। ऐसा जातक सन्तान से सुखी, धनवान, बड़ी जमीन जायदाद का स्वामी होगा। पुत्र भी ऐश्वर्यशाली होंगे। जातक के जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। मुकदमों एवं झगड़ों से जाक उलझा रहेगा। अन्त में विजय प्राप्त करेगा। पिता की आयु लम्बी होगी। जिसका साथ निभाएगा, उसको अकेला नहीं छोड़ेगा। जातक लाभ में कमी (न्यूनता) महसूस करेगा पर मित्र बहुत होंगे।

निशानी–पिता को गोली मारे, या मुह न देखे। टांगों पर काले रंग का तिल का दाग होगा। जातक धर्मशास्त्र का जानकार होगा।

अनुभव–कुम्भ राशि में राहु वाला व्यक्ति '**छिद्रान्वेषक**' होता है अपने परिजनों व इष्ट मित्रों में दोष ढूढ़ता रहता है। ऐसा जातक जनता व आलोचक होकर धन कमाता है जातक को पुत्र सन्तान अवश्य होती है पर वृद्धावस्था में कान का रोग होता है। ऐसे जातक को 28 वें वर्ष, 42 वें वर्ष पर अनायास धन की प्राप्ति होती है।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार राहु की दशा अशुभ फल देगी। यदि शनि की स्थिति इस कुण्डली में छठे, आठवें या बारहवें स्थान पर हो तो यह स्थिति ज्यादा अनिष्ट फल देगी। ऐसी स्थिति व राहु व शनि दोनों की शान्ति के उपाय करने होंगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होने से जातक को व्यापार मे राज्य कर्मचारियों द्वारा कष्ट पंहुचेगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा विद्या एवं सतान में रुकावट देता है। ऐससा जातक मानसिक परेशानी में रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से जातक को भूमि लाभ होगा पर भूमि को लेकर विवाद भी होगा। कोर्ट-केस बनेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक पराक्रमी बनाएगा.। पर मित्र दगा देंगे।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक को विद्यावान एवं भाग्यशाली बनाएगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक को धनवान तो बनाएगा पर जीवनसाथी को लेकर बदनामी भी होगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को उद्योगपति बनाएगा पर उतार-चढ़ाव बहुत आएगा।

एकादश भाव में राहु का उपचार–

1. भंगी या निम्न वर्ग के व्यक्ति को कभी-कभी खैरात देना। उनके जरूरत की वस्तु भेंट करना।
2. रात को आराम करने की जगह पर शक्कर की बोरी या सौंफ कायम रखने से राहु का अशुभफल नष्ट होगा।
3. राहु शान्ति प्रयोग करें।

मेषलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में

2	1	सू. 12
3		11
4		10
5		9
6	7	8
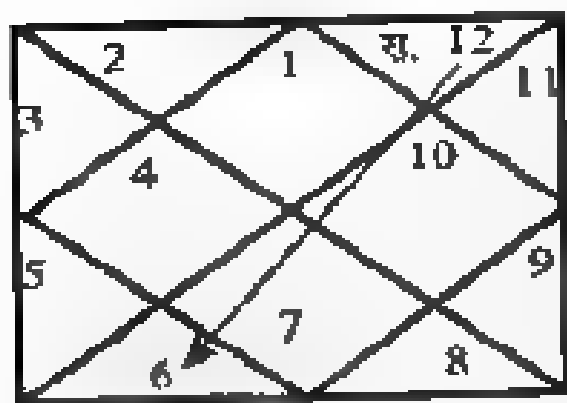
मेषलग्न के द्वादश स्थान में राहु मीन राशि का होगा। मीन राशि द्विस्वभाव राशि व जलचर है। ऐसा जातक बहुत बड़े परिवार को पालने वाला, धनवान व सुखी होगा। रात को आराम से सोने वाला, गुप्त विद्याओं (तन्त्र साधना) का जानकार होगा। मित्रों एवं परिजन के शुभ कार्यों पर रुपया खर्च करने वाला, व्यावहारिक ज्ञान से सम्पन्न, बुद्धिमान एवं विवेकी व्यक्ति होगा। ऐसे जातक को 'नींद' में कमी महसूस होगी। यदि अन्य अशुभ ग्रहों का प्रभाव लग्न या चन्द्रमा पर हुआ तो जातक की कल्पना का अन्त दु:खद होगा।

निशानी–असल शेखचिल्ली। पांव पर काले रंग का तिल व दाग होगा। अथवा मकान के आखिर में अंधेरा कमरा होगा। जीवन संघर्षमय रहेगा।

अनुभव–ऐसे जातक की दुष्टों से मैत्री होती है तथा सज्जनों से परमशत्रुता निरन्तर बनी रहती है राहु अशुभ हो तो प्राय: नेत्ररोग एवं पैर में जख्म होता है। मामा की मृत्यु होती है। घर में एक बार चोरी अवश्य होती है। बारहवें स्थान पर मीन का राहु आध्यात्म ज्ञान एवं संन्यास के लिए शुभ है। जातक का रुपया फालतू कार्यों में खर्च होगा।

दशा–'भोजसंहिता' के अनुसार राहु की दशा अनिष्ट फल देगी। यात्रा में नुकसान सम्भव है। शत्रु अचानक वार करेंगे। यदि गुरु की स्थिति इस कुण्डली में शुभ हो तो राहु की दशा मिश्रित फल देगी। गुरु की खराब स्थिति दशा को और बदतर बनाएगी। ऐसी दशा में राहु और गुरु दोनों की शान्ति के उपाय करने होंगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ **'विद्याभंग योग'** बनाएगा ऐसे जातक को विद्या मे आधा, संतान में बाधा आएगी।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्र सुख में बाधा पंहुचेगा। जातक चिंताग्रस्त रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल बारहवें **'लग्नभंग योग'** बनाता है। जातक भूमि संबधी विवाद से भ्रमित होगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध बारहवें **'पराक्रमभंग योग'** बनाता है। जातक का पराक्रम भंग होगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु **'विपरीतराज योग'** बनाएगा। जातक धनवान होगा पर फिजूलखर्च होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र **'विलम्बविवाह योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनाता है। ऐसा जातक आर्थिक संघर्ष से त्रस्त रहता है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'लाभभंग योग'** बनाता है। जातक को व्यापार-व्यवसाय में नुकसान होगा एवं व्यर्थ की यात्राएं निरर्थक साबित होंगी। इसकी कल्पना की दु:खान्त त्रासदी होगी। आंखों में मोतियाबिंद होगा।

द्वादश भाव में राहु का उपचार–

1. आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अपनी आय का कुछ हिस्सा पुत्री, बहन, बुआ, भानजी पर खर्च करें।
2. लाल कपड़े की थैली में सौंफ डालकर सिलाई कर लें। यह थैली सिरहाने रखें तो बुरे स्वप्न समाप्त होंगे। राहु का भार मिटेगा।
3. राहु का भार मिटेगा रसोई में बैठकर खाना खाने से राहु का अशुभ प्रभाव नष्ट हो जाता है।
4. राहु कवच का पाठ करें।
5. राहु का तांत्रिक हवन करें।

❑❑❑

मेषलग्न में केतु की स्थिति

मेषलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
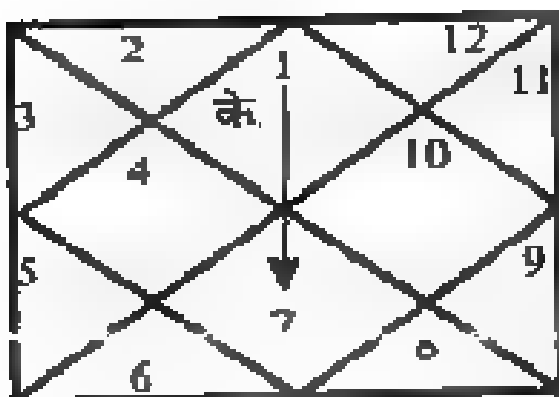
मेषलग्न के प्रथम स्थान में केतु मेष राशि का होकर मंगल के घर में होगा। ऐसा जातक धनवान होता है। तरक्की अधिक तबदीली कम, पिता का पहला पुत्र, भाइयों में बड़ा होगा। लम्बी यात्राएं करने वाला, पिता एवं गुरु से लाभ पाने वाला सुखी जातक होता है। लग्न में केतु जातक को कृतघ्न बनाता है। ऐसा जातक मामा (बांधवों) को तकलीफ पहुंचाता है।

निशानी–हर समय बच्चे बनाने वाला। पिता के साथ रहने वाला। अथवा चेहरे (सिर) पर शहद जैसे रंग का तिल होता है।

अनुभव–सूर्य मंगल और गुरु केतु के मित्र हैं। केतु की उच्चराशि धनु, नीच राशि मिथुन है। कई विद्वान केतु की उच्चराशि वृश्चिक मानते हैं क्योंकि यह 'कुजवत्' काम करता है। केतु 'ध्वजा' को कहते हैं फलतः केतु कीर्ति का प्रतीक है। यश देने वाला ग्रह है। यह राहु जितना अशुभ नहीं होता है। लग्न में केतु होने के कारण 'भोज संहिता' के अनुसार आगे बढ़ने की महत्वाकांक्षा प्रतिपल बनी रहेगी।

दशा–केतु की दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य उच्च का होकर **'रविकृत राजयोग'** बनाएगा। ऐसा जातक तेजस्वी व यशस्वी होगा। सरकारी मे ऊंचा पद प्राप्त करेगा।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ चन्द्रमा माता को बीमार करेगा।
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल होने से **'रुचक योग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
4. **केतु+बुध**–यहा केतु के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक की प्रतिष्ठा बढ़ाएगा।

6. केतु+शुक्र–केतु के साथ शुक्र जातक को सुन्दर पत्नी देगा
7. केतु+शनि–यहां केतु के साथ शनि नीच का होगा। जातक हठी व लड़ाकू होगा।

प्रथम भाव में केतु का उपचार–

1. केतु के तांत्रिक मंत्र के एक लाख सत्रह हजार जप कर, दशांश हवन, कुशा, तिल, कस्तूरी व कपूर से करें।
2. शनिवार के दिन काले कपड़े का दान करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में

2 के. 1 12 11 3 4 10 5 9 7 8 6
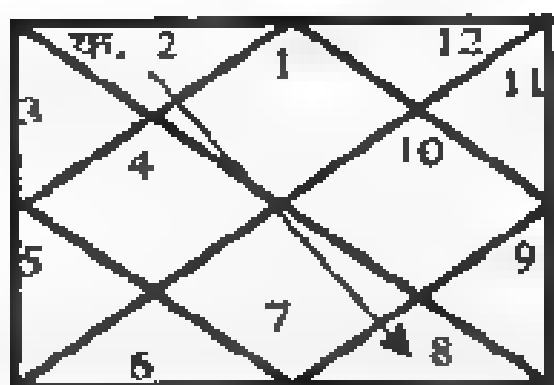
मेषलग्न में केतु द्वितीय स्थान पर होने से 'वृष राशि' का होगा। वृष राशि पृथ्वीसंज्ञक, स्थिर स्वभाव की है। ऐसा जातक राजदरबार (सरकार) में इज्जत-सम्मान एवं धन पाने वाला होता है। ऐसे जातक की छोटी आयु में किस्मत चमकती है एवं कमाना शुरू कर देता है। जातक दूसरों की नेकी को याद करने वाला कृतज्ञ होता है तथा बिना मांगे ही दूसरों की सहायता करने में रुचि रखता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः यात्रा के द्वारा धनार्जन करने वाला, सैल्समैन, कमीशन ऐजेन्ट के रूप में स्थापित होता है।

निशानी–हुक्मरान। ठोड़ी (ठिचकी) के पास शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा।

अनुभव–केतु धनस्थान में है। भोज संहिता के अनुसार ऐसे जातक को धन कमाने की तीव्र इच्छा जीवन पर्यन्त बनी रहेगी। फलादेश का सूत्र यह है कि केतु राक्षस का धड़ (शरीर) है। राहु राक्षस का सिर है। इसे 'ड्रेगन हैड' और केतु 'ड्रेगन टेल' कहते हैं। सिर (राहु) कुण्डली के जिस भाव (स्थान) में होगा उस भाव को विकृत करेगा। दूसरों शब्दों में उस भाव के शुभ फल से जातक को वंचित करेगा। परन्तु केतु शरीर है यह तड़फ रहा है तथा सिर से जुड़ने के लिए तीव्र उत्कण्ठा लिए हुए है। फलतः जन्मकुण्डली के जिस भाव (स्थान) में केतु इस भाव के शुभफल को पाने के लिए जातक जीवन पर्यन्त तड़पता रहेगा।

दशा–केतु की दशा शुभफल देगी

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. केतु+सूर्य–यहां केतु के साथ सूर्य विद्या में बाधा पंहुचाएगा।
2. केतु+चन्द्र–यहां केतु के साथ चन्द्रमा उच्च का जातक को धनवान बनाएगा।
3. केतु+मंगल–यहां केतु के साथ मंगल जातक को खर्चीले स्वभाव का एवं मुंहफट व्यक्ति बनाएगा।
4. केतु+बुध–यहां केतु के साथ बुध जातक को दंत रोग देगा।

5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का बनाएगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र स्वगृही होगा जातक विवाह के बाद धनी होगा।
7. **केतु+शनि**–यहां केतु के साथ शनि होने से जातक की रुचि षड्यंत्रकारी कार्यों में होगी।

द्वितीय भाव में केतु का उपचार

1. नवरत्नजड़ित श्रीयंत्र स्वर्ण में धारण करें।
2. सुबह शाम श्री सूक्त के नित्य पाठ करें।
3. केतु शांति का प्रयोग करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में
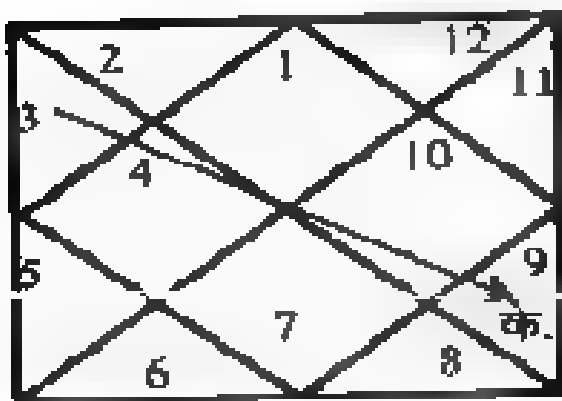
मेषलग्न के तृतीय स्थान में केतु मिथुन राशि में होगा। मिथुन राशि वायुतत्व वाली एवं द्विस्वभाव राशि होती है। ऐसा जातक सबको तारने वाला भाई-बहनों के लिए शुभ होता है। ऐसे जातक के स्वभाव की एक विशेषता यह है अपने ऊपर की गई नेकी को याद रखता है और बुराई को भूल जाता है। ऐसा जातक उच्च पदाधिकारी एवं पराक्रमी होता है। यदि कोई व्यवधान न हो तो एक या तीन नर सन्तान से युक्त होता है

निशानी–टुन टुन करते रहने वाला कुत्ता। ऐसे जातक के दाएं (बाजू) हाथ पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होता है।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार तृतीय स्थान में केतु होने से जीवन पर्यन्त यश (कीर्ति) प्राप्ति के लिए तड़फता (लालायित) रहेगा। केतु की नीच राशि मिथुन है। फिर यहा शुभफल देगा।

दशा–केतु की दशा शुभ होगी। कीर्तिदायक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–यहा केतु के साथ सूर्य जातक के मित्र पराक्रमी होंगे।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ चन्द्रमा होने से जातक स्वजन ही उसके शत्रु होंगे।
3. **केतु+मंगल**–यहा केतु के साथ मंगल जातक को भाइयों से लाभ होगा।
4. **केतु+बुध**–यहा केतु के साथ बुध जातक को लेखन व अन्य कार्यों में यश दिलाएगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को भाग्यशाली व्यक्ति बनाएगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को स्त्री मित्रों से लाभ दिलाएगा।
7. **केतु+शनि**–यहा केतु के साथ शनि होने से जातक का पराक्रम व्यापार द्वारा बढ़ाएगा।

तृतीय भाव में केतु का उपचार–

1. भाई बहनों के साथ विनम्र एव सद् व्यवहार बनाए रखें।

2. अजनबी लोगो व मित्रों पर अत्यधिक भरोसा न करें।
3. अश्वगंधा की जड़ अभिमंत्रित कर तावीज में धारण करने से यश की प्राप्ति होगी।
4. केसर-चंदन का तिलक नाभि व मस्तिष्क पर लगावे तो किस्मत खुलेगी।

मेषलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

2	1	12
3	4 ← 10 के.	11
5	7	9
6		8
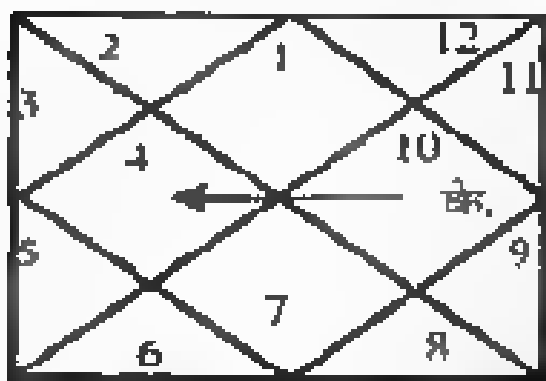
मेषलग्न के चतुर्थ स्थान में केतु कर्क राशि का होगा। कर्क राशि जलसंज्ञक एवं चर राशि है। जातक तीव्रगामी होगा, धनवान होगा, उच्च वाहन एवं मकान सुख से सम्पन्न होगा। जातक का जन्म माता के लिए शुभ होगा। जातक दृढ़ निश्चयी होगा। परन्तु प्रथम सन्तति विलम्ब से होगी। जातक पिता एवं गुरु का सेवक होगा।

निशानी–बच्चों को डराने वाला कुत्ता। जातक की छाती पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार चतुर्थ भाव में कर्क राशिगत केतु व्यक्ति को सुख प्राप्ति, भौतिक ऐश्वर्य एवं वस्तुओं की प्राप्ति हेतु तीव्र रूप से लालायित जीवन पर्यन्त बनाए रखता है।

दशा–केतु की दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य वाहन दुर्घटना का भय देगा।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ स्वगृही चन्द्रमा माता को सुख देता है पर माता को जल या श्वास की बीमारी होगी।
3. **केतु+मंगल**–यहा केतु के साथ मंगल जातक को साहसी व लड़ाकू बनाएगा।
4. **केतु+बुध**–यहा केतु के साथ बुध जातक का झगड़ा मामा, मातृपक्ष से कराएगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु उच्च का **'हंस योग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक परिवार का नाम रोशन करेगा। उसके पास उत्तम वाहन होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से जातक के पास उत्तम मकान होगा।

चतुर्थ भाव में केतु का उपचार–

1. केतु अष्टोत्तर शत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।
2. दुर्घटना से बचने के लिए वाहन पर मारुति यंत्र लगावें।
3. शनिवार के दिन चितकबरे कुत्तों को मीठी रोटी खिलावें।

4. गुरुवार के दिन कुलपुरोहित को पीले वस्त्र व पीला भोजन भेंट करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में
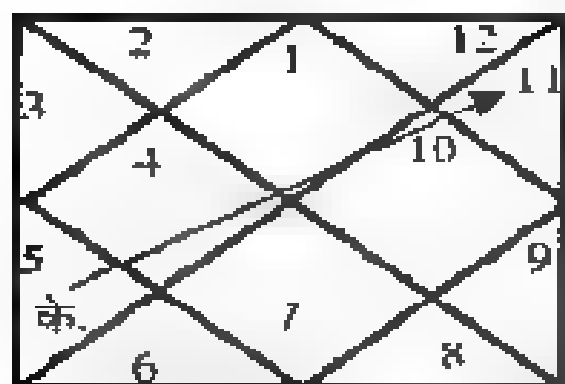
मेषलग्न के पंचम स्थान में केतु सिंह राशि में होगा। सिंह राशि अग्निसंज्ञक एवं स्थिर स्वभाव की राशि है जातक धार्मिक विचारों वाला गुरुभक्त एवं आस्तिक होगा। जातक धनवान होगा एवं अधिक सन्तति युक्त होगा परन्तु एक सन्तति की अपरिपक्व अवस्था में मृत्यु होगी।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार पंचम भावस्थ सिंहराशिगत केतु व्यक्ति को जीवन पर्यन्त सुयोग्य सन्तति प्राप्ति हेतु लालायित रखता है। जातक ज्ञान पिपासु होता है तथा प्रतिपल उत्तम ज्ञान की प्राप्ति हेतु लालायित (उत्कण्ठ) रहता है।

निशानी–अपनी रोटी के टुकड़े के लिए गुरु का निगरान। जातक के पेट या पीठ पर शहद जैसे रंग का तिल होगा।

दशा–केतु की दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ स्वगृही सूर्य जातक को विद्या में तेजस्वी बनाएगा। जातक पुत्रवान होगा पर पुत्र विलम्ब से होगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा जातक को मानसिक चिन्ता कराएगा। जातक के विद्या में बाधा आएगी।
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल जातक को तीन पुत्र देगा जबकि एकाध गर्भपात संभव है।
4. **केतु+बुध**–यहां केतु के साथ बुध जातक को उत्तम बुद्धि विद्या देगा पर शैक्षणिक उपाधि में बाधा आएगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु व्यक्ति को उत्तम विद्या ज्ञान देगा। शैक्षणिक उपाधि में कमी रहेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र व्यक्ति को कन्या सन्तति देगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से कन्या सन्तति देगा एवं जातक व्यापारप्रिय होगा।

पंचम भाव में केतु का उपचार–

1. पितृदोष या कालसर्पयोग की शांति करवाएं
2. केतु शांति प्रयोग करें।
3. केतु के वैदिक मंत्रों का हवनात्मक प्रयोग करें तथा केतु सम्बंधी वस्तुओं का दान करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में
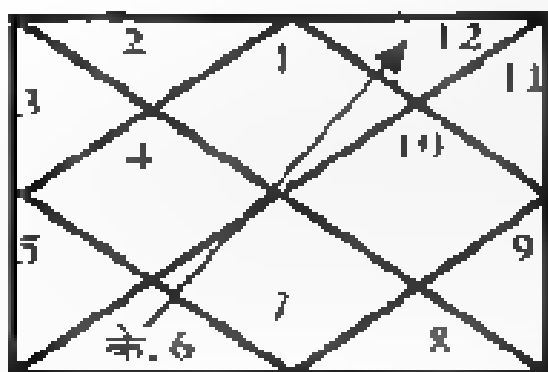
मेषलग्न में षष्टम स्थान में केतु कन्या राशि का होगा। कन्या राशि पृथ्वी सज्ञक द्विस्वभाव राशि है। जातक का जन्म ननिहाल के लिए शुभ होगा। जातक जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों विदेशों में उन्नति पाने वाला होता है। जातक धनवान होता है एवं शत्रुओ पर विजय पाने में सक्षम होता है। ऐसा जातक उत्साही एव सेवा करने की भावना से ओत-प्रोत व्यक्ति होता है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार छठे भाव में स्थित कन्या राशि गत केतु व्यक्ति को जीवनपर्यन्त शत्रुओं के नाश हेतु लालायित रखता है। शत्रु नहीं हो तो रोग अवश्य होगा। जातक रोग की समूल निवृत्ति हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेगा।

निशानी दो रंगी दुनिया जातक की नाभि के पास शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा। ऐसा जातक कुत्तो से डरता है।

दशा–केतु की दशा शुभफल देगी। जातक चेष्टावान बना रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य उत्तम विद्या एवं उत्तम सन्तति दोनों में बाधक है।
2. **केतु+चन्द्र**–यहा केतु के साथ चन्द्रमा माता की अल्पायु कराता है। जातक को मूत्ररोग होगा
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल **'लग्नभंगयोग'** बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **केतु+बुध**–यहां केतु के साथ बुध **'पराक्रमभंग योग'** बनाता है। साथ ही **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक धनवान होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु **'भाग्यभंग योग'** बनाता है ऐसा जातक भौतिक सुख-सुविधाओं व ऐश्वर्य से सम्पन्न होगा पर जीवन सघर्षशील रहेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र **'विलम्बविवाह'** का योग कराता है। जातक को जीवनसाथी का सुख कम ही प्राप्त होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से जातक के जीवन में व्यापार से दो बार बदलाव कराएगा।

षष्टम भाव में केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें
2. काला कुत्ता पालें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को दूध रोटी खिलाये।
3. लहसुन या प्याज शनिवार से शुक्रवार छः दिन तक जल में प्रवाहित करें

4. अपनी बहन, बुआ, पुत्री, मासी, दोहिते, भाणजे को खुश रखें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति सप्तम भाव में
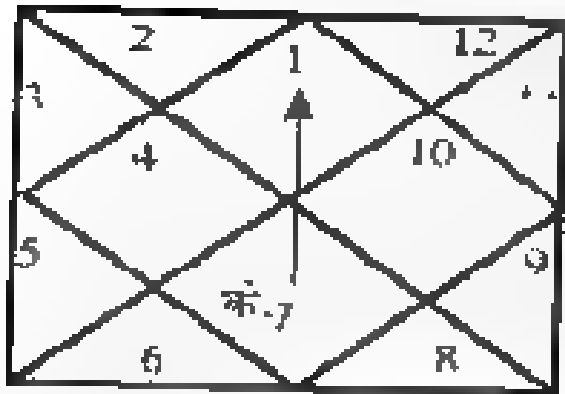
मेषलग्न के सप्तम भाव में केतु तुला राशि में होगा। तुला राशि चर राशि एवं वायुसंज्ञक है। ऐसा जातक साहसी होता है तथा शेर से मुकाबला करने की शक्ति रखता है। ऐसे जातक के जितने बहन-भाई होंगे उतना ही सन्तानें होंगी। 40 वर्ष की आयु तक धन बढ़ता रहेगा। जातक के पास सब कुछ होते हुए भी रोता रहेगा। इससे उसकी सन्तान पर बुरा असर होगा।

अनुभव–भोज संहिता के अनुसार ऐसा जातक सुन्दर पत्नी की प्राप्ति हेतु लालायित रहेगा। यदि जातक विवाहित होगा तो अपने जीवनसाथी से विविध प्रकार के सुख-ऐश्वर्य की प्राप्ति होते इच्छातुर रहेगा। पर उसकी इच्छा तृप्त नहीं होगी।

निशानी–शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता। जातक के गुप्तांग पर शहद जैसे रंग का तिल व दाग होता है।

दशा–केतु की दशा अच्छा फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करेगा। जातक के वैवाहिक सुख में कमी रहेगी।
2. **केतु+चन्द्र**–यहा केतु के साथ चन्द्रमा माता को कष्टमय जीवन देगा।
3. **केतु+मंगल**–यहा केतु के साथ मंगल कुण्डली को **'डबल मांगलीक'** बनाएगा। प्रथमतः जातक का विवाह देरी से होगा। फिर गृहस्थ सुख मे कमी रहेगी।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक का जीवनसाथी बुद्धिमान व सुन्दर देगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को आध्यात्मक विद्या का जानकार एवं जीवनसाथी को वफादार बनायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि **'शश योग'** बनाएगा। ऐसे जातक का जीवन साथी शक्तिशाली होगा जातक स्वयं राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।

सप्तम भाव में केतु का उपचार–

1. केतु विंशति नाम का पाठ करें।
2. पूर्ण वैवाहिक सुख की प्राप्ति हेतु अष्टोत्तरशत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें

मेषलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में
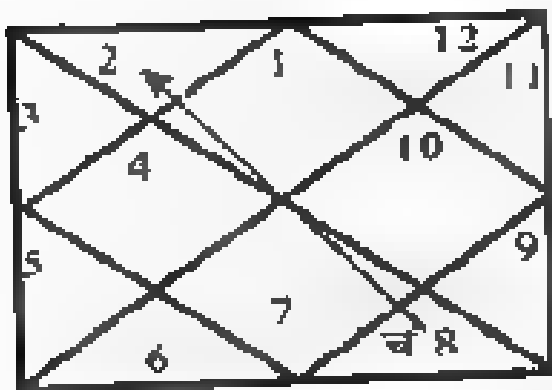
मेषलग्न के अष्टम स्थान में केतु वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि जलसंज्ञक स्थिर स्वभाव की राशि है। जातक धनवान होगा पर जातक का भाई निसन्तान होगा। जातक उस भाई को सन्तान का दान देगा। जातक की स्त्री सुन्दर सुशील एवं शुभविचारों वाली होगी। परन्तु 34 वर्ष बाद जातक दूसरा विवाह कर सकता है।

अनुभव—'भोज संहिता' के अनुसार अष्टमभावस्थ वृश्चिक का केतु व्यक्ति को लम्बी आयु की प्राप्ति हेतु लालायित रखेगा। जातक धन प्राप्ति हेतु भी जीवन पर्यन्त चेष्टा करता रहेगा।

निशानी—मौत के यम को पहले देख लेने वाला कुत्ता। जातक के गुप्तांग या गुदा पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा।

दशा—केतु की दशा शुभफल देगी। केतु वृश्चिक राशि का होने से 'कुजवत्' फल देगा। अतः इस कुण्डली में मंगल की स्थिति देखने बाद ही केतु की दशा के सही फल का निरूपण होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य 'विद्या में बाधा' एवं पुत्र संतान में बाधा उत्पन्न करेगा।
2. **केतु+चन्द्र**—केतु के साथ चन्द्रमा माता के सुख में बाधक है। जातक के जीवन में शल्य चिकित्सा जरूर होगी।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल स्वगृही होने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक के पास उत्तम वाहन, उत्तम भवन होगा। जातक समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध **'विपरीत राजयोग'** के कारण सभी प्रकार के भौतिक सुख देगा। परन्तु प्रतिष्ठा भंग होने का भय रहेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक को भौतिक सुखों से परिपूर्ण करेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र विलम्ब विवाह योग बनाता है। जीवनसाथी को गुप्त रोग रहेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि **'व्यापार भंग योग'** बनाता है। जातक को वैवाहिक सुख देरी से मिलेगा।

अष्टम भाव में केतु का उपचार—

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. कान छिदवा कर सोने का आभूषण पहनें।

3. काला कुत्ता पाले या उसकी सेवा करें।
4. दहेज में प्राप्त चारपाई पर शयन करने का नियम बन पावे तो केतु अनुकूल होगा।
5. दोरंगा कम्बल धर्मस्थान में भेंट करे तो शुभ रहेगा।

मेषलग्न में केतु की स्थिति नवम् स्थान में
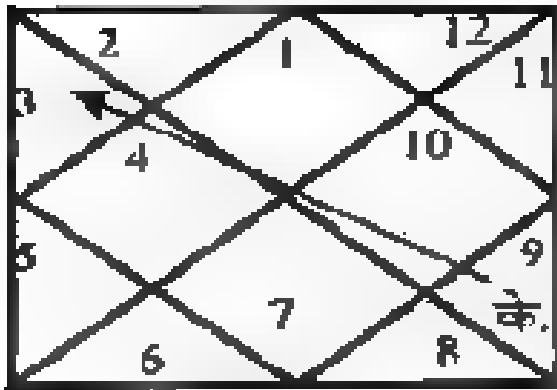
मेषलग्न के नवम स्थान में केतु धनु राशि में होगा। धनु राशि अग्निसंज्ञक द्विस्वभाव राशि है जहां केतु स्वगृही कहलाएगा। ऐसा जातक पिता का आज्ञाकारी पुत्र साबित होगा। जन्मस्थान के दूरस्थ प्रदेशों के कमाएगा, उच्चाधिकारी होगा पर समाज का सेवक होगा। जातक बहुत तरक्की करेगा। इन पर इष्टकृपा गुरु की कृपा विशेष होगी। ऐसे जातक के आशीर्वाद से निसंतान को भी सन्तति होगी।

अनुभव—भोज संहिता के अनुसार धनु राशिगत नवम भाव में स्थित केतु वाला जातक जीवनपर्यन्त सही भाग्योदय हेतु लालायित रहेगा। जातक पराक्रम प्राप्ति हेतु चेष्टवान बना रहेगा।

निशान—बाप का हुक्म मानने वाला बेटा। ऐसे जातक की जंघा पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होता है।

दशा—केतु धनुराशि में होने से गुरुवत् फल देगा। अतः इस कुण्डली में गुरु की स्थिति का अध्ययन करने के बाद केतु की दशा की सही फलावट हो सकेगी क्योंकि राहु और केतु का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता ये जिस राशि व ग्रह के साथ बैठे हैं 'तत्वत्' हो जाते हैं। वैसे केतु की दशा यहां शुभ फल देगी। जातक का भाग्योदय कराएगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को महान् पराक्रमी एवं आध्यात्मिक विद्या का जानकार बनाता है।
2. **केतु+चन्द्र**—केतु के साथ चन्द्रमा जातक को माता का सुख देगा परन्तु मामा से विचार नहीं मिलेंगे।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को पैतृक सम्पत्ति दिलायेगा पर थोड़ा विवाद होगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को प्रखर पराक्रमी बनायेगा। जातक बुद्धिशाली व चतुर दिमाग वाला होगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु जातक को राजा तुल्य वैभवशाली बनायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र होने से जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को व्यापार प्रिय बनायेगा। जातक प्रायः ठेकेदार होगा।

नवम् भाव में केतु का उपचार–

1. रंग-बिरंगे कपड़े न पहनें।
2. तिल, तैल, काले-नीले पुष्प, कस्तूरी व काले वस्त्रों का दान शनिवार के दिन करें।
3. केतु शान्ति का प्रयोग करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में
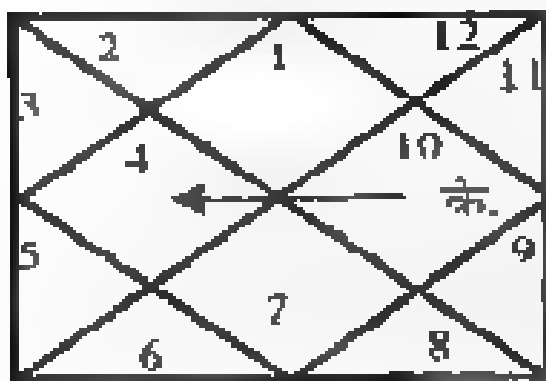
मेषलग्न के दशम स्थान में केतु मकर राशि का होगा। मकर राशि पृथ्वी तत्त्व प्रधान एवं चरसंज्ञक है। ऐसा जातक नौकर चाकर सेवकों से युक्त सुखी व्यक्ति होता है। जातक खेलों का शौकीन एवं दक्ष खिलाड़ी होगा। जातक के भाई-बन्धु इसकी दौलत को बरबाद करेंगे फिर भी जातक उनको माफ करता रहेगा। उनकी मदद करता रहेगा। जातक चाल-चलन का नेक एवं साफ दिल होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार मकर राशिगत दशमस्थ केतु जातक को राज्य (सरकार) में पद प्राप्ति हेतु लालायित बनाए रखता है। अथवा सरकार से ठेका, वजीफा, सम्मान प्राप्ति हेतु जीवन भर प्रयत्नशील रहेगा।

निशान–चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला मौकाबाज। ऐसे जातक के घुटने पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होता है।

दशा–केतु की दशा शुभ रहेगी। केतु यहां शनि तुल्य फल देगा अत: शनि की स्थिति का अध्ययन करने के बाद ही केतु की दशा का सही फलादेश हो पाएगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को राजसुख देगा। उत्तम विद्या देगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा माता की सम्पत्ति दिलायेगा। वाहन का सुख दिलायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ उच्च का मंगल **'रुचक योग'** की सृष्टि करेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को बुद्धिशाली एवं परिवार का शुभ चिन्तक बनायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु का होगा ऐसा जातक आध्यात्मिक राह का पथिक एवं धर्मध्वज होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन सुख देगा। नौकरी विवाह के बाद लगेगी।

7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। ऐसा जातक माता के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं प्रतिष्ठित होगा।

दशम भाव में केतु का उपचार–

1. चितकबरे कुत्ते को सात दिन तक दूध रोटी खिलावें।
2. चितकबरी गाय को चार खिलावें। इससे अचानक आई विपत्ति दूर होगी।
3. राजयोग की प्राप्ति अभीष्ट हो तो शनिवार के दिन अभिमन्त्रित जल से औषध स्नान करें।

मेषलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में
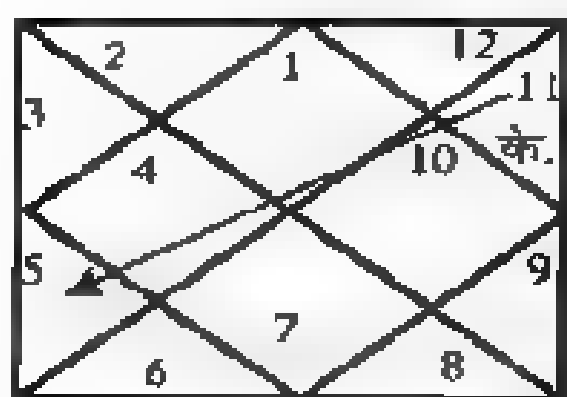
मेषलग्न के एकादश स्थान में केतु कुम्भ राशि का होगा। कुम्भ राशि वायु तत्त्व प्रधान एवं स्थिर स्वभाव की राशि है। जातक राजदरबार में इज्जत–सम्मान पाने वाला, आने वाले समय को ध्यान में रखकर प्लानिंग के साथ काम करने वाला, धनवान, अच्छी किस्मत वाला, लम्बी यात्रा से लाभ पाने वाला होता है। प्रथम सन्तति प्रायः विलम्ब से होती है।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार कुम्भ राशिगत एकादशस्थ केतु जातक को सदैव लाभ प्राप्ति हेतु लालायित रखेगा।

निशान–गीदड़ स्वभाव कुत्ता। जातक के पिंडलियों टांगों पर शहद जैसे रंग का तिल या दाग होगा। न संतान मुर्दा पैदा होगी।

दशा–केतु की दशा शुभ फल देगी। केतु शनि की मूलत्रिकोण कुम्भ राशि में है अतः कुण्डली मे शनि की शुभ-अशुभ स्थिति का अध्ययन करने के बाद केतु की दशा पर सही फलादेश हो सकेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा माता की सम्पत्ति देगा। प्रखर कल्पनाशक्ति देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल को पुरुषार्थ का लाभ देगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को प्रखर बुद्धिशाली बनायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को सौभाग्यशाली बनायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को उत्तम विद्या सम्मान एवं स्त्री सुख देगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।

एकादश भाव में केतु का उपचार–

1. घर में छिपकली न घूमने दें।
2. लकड़ी से बनी चारपाई या पलंग दान करें।

3. अश्वगंधा की जड को अभिमंत्रित कर लॉकेट में धारण करें।
4. मृत संतान यदि पैदा होती हो तो सफेद मूली स्त्री के सिरहाने रखकर, शनिवार के सवेरे धर्म स्थान में दान देने से नर संतान खुशहाल रहेगी।

मेषलग्न में केतु की स्थिति द्वादश स्थान में
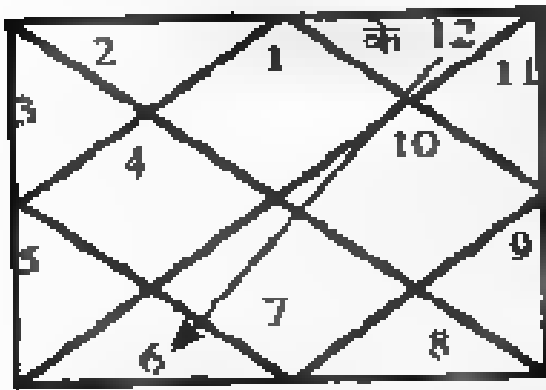
मेषलग्न में द्वादश स्थान में केतु मीन राशि का होता है। मीन राशि जलसंज्ञक एवं द्विस्वभाव राशि होती है। ऐसा जातक जमीन-जायदाद का स्वामी, जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक ऐश्वर्यवान व धनवान होगा। जातक सन्तान से सुख पाने वाला, शत्रुओं पर विजय पाने वाला पराक्रमी व्यक्ति होगा।

अनुभव–'भोज संहिता' के अनुसार मीन राशिगत द्वादशस्थ केतु जातक को नित-नूतन वस्तु की जानकारी एवं बाहरी यात्राओं हेतु लालायित रखेगा।

निशानी–ऐशो आराम जद्दी विरासत। पांव में ऐड़ी के पास शहद जैसे रंग का तिल का दाग होगा।

दशा–केतु की दशा में जातक तीर्थयात्राएं करेगा। परोपकार के कार्य करेगा। दशा शुभ रहेगी, परन्तु गुरु की स्थिति ज्यादा सटीक फलादेश में सहायक होगी।

विशेष–सत्यजातकम् अध्याय 12 श्लोक। के अनुसार केतु बारहवें जातक को अपनी दशा में धनवान बनाता है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को विद्या में, संतान में, खासकर पुत्र सुख में बाधा पहुंचाएगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा जातक को माता के सुख से वंचित करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल कुण्डली को **'डबल मंगलीक'** कर देगा। जातक के विवाह में विलम्ब होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध **'पराक्रमभंग योग'** बनायेगा। जातक धनवान एवं समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा पर मानभंग का भय बना रहेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनवान एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को फिजूलखर्ची बनायेगा। जातक परोपकारी व दानी होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि **'व्यापारभंग योग'** बनाता है। जातक का जमा-जमाया व्यापार एक बार उखड़ेगा।

द्वादश भाव में केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. 12 दिन तक निरन्तु गुरुवार को शुरू करके 12 केले प्रतिदिन धर्मस्थान से भेंट करने पर केतु का अशुभत्व नष्ट होता है।
3. 12 दिन तक निरन्तर 12 बार प्रतिदिन दूध व शहद में अंगूठा भिगोकर चूसने से केतु अनुकूल होता है ऐसा लाल किताब वाले कहते हैं। केतु के तांत्रिक मंत्रों का जाप करें।
4. केतु के तांत्रिक मंत्रों का जाप करें।

❑❑❑

मंगलवार व्रत कथा

मगल बहादुरी व साहस के देवता है ये भय तथा शत्रुओं का नाश करने वाले हैं। मंगलवार का व्रत व पूजन करने से सब प्रकार के अनिष्टों से मुक्ति होती है मंगलवार के व्रत का नियम पूर्वक पालन करने से धन-सपत्ति की प्राप्ति होती है।

मगल की दशा कड़ी होने, तथा मंगलदेव की शांति हेतु इस उपवास को इक्कीस मगलवार तक किया जाता है।

मंगल का तांत्रिक मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं भौमाय नमः।

विधि विधान–यह व्रत मंगलवार को रखा जाता है तथा दिन में एक ही बार मीठा भोजन करना चाहिए। भोजन सूर्यास्त से पहले कर लेना चाहिए। प्रातः काल शय्या त्याग कर नित्यकर्मों से निवृत्त हो स्वच्छ वस्त्र धारण करें तत्पश्चात शुद्ध स्थान पर मगलदेव की प्रतिमा स्थापित कर लाल चंदन, सिदूर, लाल पुष्पों द्वारा मगल देव की पूजा करें तथा मंगल के तांत्रिक मंत्र द्वारा इक्कीस बार जाप करें तथा व्रत कथा का पाठ करें।

व्रत कथा–एक नगर में एक ब्राह्मण दम्पत्ति रहते थे। किन्तु वे निःसन्तान थे। इसी कारण दोनों पति -पत्नी दुःखी रहते थे। पुत्र प्राप्ति की इच्छा से ब्राह्मण वन मे हनुमान जी की उपासना व तपस्या करने चला गया।

ब्राह्मण की पत्नी भी प्रत्येक मंगलवार को मंगल का उपवास व पूजन करती थी। मगलवार को व्रत के लिए वह प्रेम से भोजन पकाती तथा फिर वह निष्ठापूर्वक हनुमान जी को भोग लगाती तथा फिर श्रद्धा व प्रेम से स्वय एक समय भोजन करती थी।

एक बार पड़ोस मे कोई शादी होने के कारण ब्राह्मणी को वहा जाना पड़ गया इसलिए उस दिन ब्राह्मणी भोजन न पका सकी और सारा दिन वहीं विवाह में व्यस्त रही। घर पर भोजन न पका सकने के कारण ब्राह्मणी ने हनुमान जी को भी भोग नहीं लगाया। वह अपने मन में ऐसा प्रण करके सो गई कि अब अगले मगलवार को ही भोग लगाकर, अन्न ग्रहण करूंगी।

वह भूखी-प्यासी छः दिन तक पड़ी रही। मगलवार के दिन उसे मूर्च्छा आ गई हनुमान जी उसकी लगन और निष्ठा को देखकर प्रसन्न हो गए। उन्होंने उसे दर्शन दिए और कहा–"मैं तुमसे अति प्रसन्न हू। मैं तुम्हें एक सुन्दर बालक देता हू, जो तेरी बहुत सेवा किया करेगा।

सुन्दर बालक पाकर ब्राह्मणी अति प्रसन्न हुई ब्राह्मणी ने बालक का नाम मगल रखा। कुछ समय पश्चात ब्राह्मण वन से लौटकर आया। एक प्रसन्नचित्त सुन्दर बालक को घर मे क्रीड़ा

करते देखकर, ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से पूछा "यह बालक कौन है?" पत्नी ने कहा–"मंगलवार के व्रत से प्रसन्न हो हनुमान जी ने दर्शन देकर मुझे यह बालक दिया है" ब्राह्मण को पत्नी की बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा यह कुल्टा, व्यभिचारिणी अपनी कलुषता छिपाने के लिए बात बना रही है।

एक दिन ब्राह्मण कुएं पर पानी भरने गया तो ब्राह्मणी ने कहा कि मंगल को भी अपने साथ ले जाओ। ब्राह्मण मंगल को साथ ले गया परन्तु वह उस बालक को नाजायज मानता था इसलिए वह बालक को कुएं में डालकर पानी भरकर घर वापस आ गया। ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से पूछा कि मंगल कहां है। तभी मंगल हंसता हुआ घर वापस आ गया। उसे वापस आया देखकर ब्राह्मण बहुत आश्चर्यचकित हो गया। उसने सोचा, अभी तो मैं इसे कुएं में धक्का देकर आया था फिर यह कहां से आ गया? रात्रि को उसे स्वप्न में हनुमान जी ने दर्शन दिए और कहा -"यह बालक मेरा दिया हुआ है। तुम अपनी पत्नी पर व्यर्थ ही लांछन क्यों लगाते हो?" ब्राह्मण को सत्य जानकर बड़ी ग्लानि हुई। उसने अपनी पत्नी से क्षमा मांगी और फिर ब्राह्मण-दम्पत्ति मंगलवार का व्रत करते हुए आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। इस प्रकार जो भी मंगलवार का व्रत रखता है, उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और वह सब कष्टों से मुक्ति पाता है।

मंगलवार व्रत की दूसरी कथा

एक वृद्धा मंगलवार को अपना इष्टदेव मानती थी और प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखती व मंगल देव का पूजन करती। उसका एक पुत्र था जिसका नाम मंगलिया था। मंगलवार को वह न घर लीपती न ही पृथ्वी खोदती थी। एक दिन स्वयं मंगलदेव उसकी श्रद्धा की परीक्षा लेने के लिए साधु का रूप धारण कर आए और उसके द्वार पर आकर आवाज दी। बुढ़िया घर से बाहर आई और साधु को खड़ा देख हाथ जोड़कर बोली–"महाराज क्या आज्ञा है?" साधु ने कहा–"मुझे बहुत भूख लगी है, भोजन बनाना है। इसके लिए तू थोड़ी सी पृथ्वी लीप दे तो तेरा पुण्य होगा।" यह सुन बुढ़िया ने कहा–"महाराज आज मैं मंगलवार की व्रती हूं इसलिए मैं चौका नहीं लगा सकती। कहें तो जल का छिड़काव कर दूं। वहां पर भोजन बना लें।" साधु ने कहा–"मैं गोबर से ही लिपे चौके पर खाना बनाता हूं।" बुढ़िया ने कहा–"पृथ्वी लीपने के अलावा और कोई सेवा हो तो मैं वह करने के लिए उपस्थित हूं।" साधु ने कहा -"सोच समझकर उत्तर दो। जो कुछ भी मैं कहूंगा वह तुमको करना होगा।" बुढ़िया कहने लगी–"महाराज पृथ्वी लीपने के अलावा जो भी आप आज्ञा करेंगे उसका मैं अवश्य पालन करूंगी" बुढ़िया ने ऐसा वचन तीन बार दिया। तब साधु ने कहा-"तू अपने लड़के को बुलाकर औंधा लिटा दे, मैं उसकी पीठ पर भोजन बनाऊंगा।" साधु की बात सुनकर बुढ़िया चुप रह गई। तब साधु ने कहा "बुला लड़के को, अब सोच विचार क्या करती है?" बुढ़िया

'मंगलिया...मंगलिया' कहकर अपने पुत्र को पुकारने लगी। थोड़ी देर बाद उसका लड़का आ गया। बुढ़िया ने कहा–"जा बेटे तुझको साधु महाराज बुला रहे हैं।" लड़के ने मां की बात सुनकर उसकी आज्ञा का पालन किया और बाबा के पास जाकर कहा–"महाराज क्या आज्ञा है?" साधु ने कहा "जा, जाकर अपनी माता को ले आओ।" जब माता आ गई तो साधु ने कहा कि इसे जमीन पर लिटा दे। बुढ़िया ने कहा ठीक है और मंगलदेव का स्मरण करके लड़के को उल्टा लिटा दिया और उसकी कमर पर अंगीठी रख दी। तब वृद्धा दुःखी मन से बोली–"महाराज अब आपको जो कुछ करना है करो, मैं जाकर अपना काम करती हूं।" साधु ने अंगीठी में आग जलाई और उस पर भोजन बनाया। जब भोजन बन गया तो साधु ने वृद्धा से कहा कि आओ माई तुम भी भोग लगा लो और अपने पुत्र को भी बुलाओ कि वह भी भोजन ले जाए। वृद्धा ने दुःखी मन से कहा–"बाबा जी यह क्या कहते हो? आपने खुद ही तो अभी उसकी पीठ पर आग जलाई है और उसी को बुला रहे हैं। अब आप मुझे उसकी याद न दिलाओ। वह तो कब का मर चुका होगा। आप भोजन करके जहा जाना हो चले जाइए।" साधु ने कहा–"तू आवाज तो लगा।" वृद्धा ने कहा–ठीक है महाराज, जैसी आपकी इच्छा।" और जैसे ही उसने मंगलिया कहकर पुकारा वैसे ही मंगलिया दौड़ता हुआ आ गया। साधु ने कहा–"माता तुम्हारा व्रत सफल हुआ। तेरी निष्ठा पक्की है, अब तुझे कभी कोई कष्ट नहीं होगा।"

❑❑❑

मंगलवार की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर कांपै।
रोग-दोष जाके निकट न झांपै।।
अंजनि पुत्र महाबल दाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज संवारे।।
लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े सकारे।
लाए संजीवन प्राण उबारे।।
पैठी पाताल तोरि जम कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे।।
बाएं भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संत जन तारे।।
सुर नर मुनि आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई।।
जो हनुमान जी की आरती गावै
बसि बैकुंठ परमपद पावै।।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई।
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।।

❑❑❑

कर्जनाशक व दाम्पत्य सुख कारक मंगलयन्त्र

जन्म पत्र के 1, 4, 7, 8, 12 भावों में मंगल हो तो कुण्डली मंगलीक बनती है। पुरुष की कुण्डली में इस स्थिति वाले मंगल को "मोलिया मगल" एवं स्त्री की कुण्डली में होने से इसे "चुनरी मंगल" कहते हैं। यह देखने में आता है कि इस प्रकार की ग्रह स्थिति वाले लड़कियों की शादी प्राय: नहीं होती, होती भी है तो बहुत देरी से, तथा होने के बाद भी यह देखने में आता है कि उनका दाम्पत्य जीवन कलह पूर्ण होता है। जन्मपत्र हो चाहे न हो उपरोक्त स्थितियां जब भी जीवन में आती हैं उसका मुख्य कारण मंगल ग्रह का दूषित होना है। चाहे वह गोचर प्रभाव हो या जन्म स्थिति से।

विवाह योग्य कन्या या पुत्र के विवाह में बाधा आना, विवाहित दम्पति के जीवन में दीर्घकाल तक सन्तानभाव रहना, गर्भपात होकर सन्तान हाथ न लगना, मनुष्य का ऋण लेते हुए कर्जग्रस्त होने के बाद, कर्ज चुकाने के आसार से निराश हो जाना, इन तीनों दु:खों को दूर करने के लिए ज्योतिष शास्त्र में मंगल व्रत का विधान है

मंगल व्रत का नाम सुनते ही जन साधारण एक समय भोजन कर, हनुमान जी का दर्शन करके छुट्टी मना लेते हैं फिर काम पूर्ण न होने पर धन्य देव को पकड़ते हैं। यह सब जानकारी के अभाव में होता है।

कर्मकाण्ड शास्त्र ज्योतिष शास्त्र से प्रदर्शित अनिष्ट का निवारण करवाता है। कर्मकाण्ड के अंग-उपासना जप, पूजन, यज्ञादि हैं। अत: शास्त्रीय पद्धति से किया हुआ कार्य कभी भी निष्फल नहीं जाता। गीता में कहा है-

"तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते" "ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तम् कर्म कर्तुं मिहार्हसि।" यत्न करने पर भाग्य भी फलता है, बनता है और संचित होता है। यत्न करने पर भी कार्य न हो तो "यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्रदोष:" कार्य के यत्न में कहीं त्रुटि है ऐसा शास्त्रकार ने कहा है उसे निकालकर यत्न करे तो काम बन ही जाता है।

मंगल भूमि पुत्र और ग्रहों का सेनापति है मंगल के व्रत में "मंगल मन्त्र" के पूजन का विधान है। प्राचीन समय में कई घरों में यह मत्र पाया जाता रहा है, परन्तु आने वाली पीढ़ी अज्ञान वश उसके पूजन एवं विधान से अनभिज्ञ है

हमारे कार्यालय में ऐसे अनेक केस आते हैं कि लड़कियां 30 से 40 वर्ष की आयु तक

पहुंच जाती हैं परन्तु मंगलीक दोष के कारण विवाह तो दूर, सगाई तक नहीं बैठती। दूसरी ओर वर पक्ष से ऐसे ऐसे उदाहरण आते हैं कि दो-दो तीन-तीन विवाह कर लिए परन्तु 'मंगली दोष' के कारण पत्नी का सुख नहीं। मंगली दोष से व्यक्ति कर्जदार होता और कर्जदार भी ऐसा कि उसका कर्जा उसकी मृत्यु पर्यन्त उसके साथ रहता है। ऐसे जातकों की भी कमी नहीं जो आमूलचूल कर्ज से डूबे हुए हैं, उन्होंने लक्ष्मी साधना, श्रीमन्त्र एव रुपया की प्राप्ति हेतु कई या व अनुष्ठान भी किए परन्तु पैसा आता है वह चला जाता है, रुकने का नाम नहीं लेता। ऐसे जातकों को पहले 'मगल मन्त्र' की साधना से अपने मंगलीक दोष की निवृत्ति करनी चाहिए। हमने प्रयोग किए और पाया कि 'मगल मन्त्र' की विधिवत उपासना के पश्चात, 21 मगलवार पूर्ण होते-होते लोगों को अपने-अपने अभीष्ट कार्यों में बराबर सफलता मिली है। कई परिवारों में विवाह के पश्चात सन्तान बाधा हेतु भी इसके प्रयोग किए। सभी को अनुकूल लाभ हुए। यदि किसी जातक का पंचमेश मंगल हो, या पचम भाव में मंगल हो या मगल की दृष्टि हो तो तेजस्वी पुत्र संतान की प्राप्ति हेतु 'मंगल मन्त्र' का सहारा लेना चाहिए।

सर्वजन हित मंगल व्रत और मगल यन्त्र पूजन की सम्पूर्ण विधि संस्कृत के साथ साथ, अत्यधिक सरल ढग से हिन्दी में भी दी जा रही है ताकि साधारण पढ़े-लिखे लोग भी इसका लाभ ले सकें।

मंगल यन्त्र का चित्र यहा दिया हुआ है। ऐसा चित्र तांबे की प्लेट पर बनवा दे तांबा मगल की मुख्य धातु है। परन्तु ध्यान रहे तांबे की प्लेट पर मन्त्र खुदा हुआ नहीं होना चाहिए। उत्कीर्ण (खुदा) हुआ यन्त्र शास्त्रानुसार निकृष्ट होता है। आप चाहे तो भोजपत्र पर अष्टगन्धा से लिखकर भी इस यन्त्र को बना सकते हैं। अष्टगन्धा में शुद्ध कस्तूरी, केसर, गोरोचन, कुंकुम, चन्दन का ही प्रयोग लेना चाहिए। यदि असुविधा हो तो यह दोनों प्रकार यन्त्र कार्यालय में सम्पर्क साध कर प्राप्त किए जा सकते हैं।

पूजन विधि—हर मगलवार के दिन पूजन सूर्योदय बेला में सुन्दर रहता है, परन्तु दोपहर बारह बजे के पहले पूजन कर लेना चाहिये। स्नान करके धुले हुए वस्त्र पहने, लाल वस्त्र हो तो उत्तम, नहीं तो लाल ऊन का आसन जरूरी है। पूजन सामग्री में धूप, दीप के अलावा लाल फूल, लाल चावल कुंकुम से किए हुए या लाल चदन जरूरी है। गुड़ का भोग लगावे, लाल फल रखे। मौली चढ़ावें, फिर पचामृत से फिर शुद्ध जल से धोकर, लाल वस्त्र से पोंछ ले पश्चात् यत्र में एक दो के क्रम से 21 बिंदिया लगावें। कंकु गुलाल डालकर वस्त्र दीप नैवेद्य फल दक्षिणा धरे तब प्रार्थना करें इस तरह 21 मगलवार व्रत रखने से काम पूर्ण रूप से हो जाता है या प्रगति पर आ जाता है। एक कामना लेकर, श्रद्धा विश्वास से व्रत करें, एक कामना पूर्ण होने पर उद्यापन करके तब कोई दूसरी इच्छा हो तो उसके हेतु व्रत पुनः शुरू करें। एक ही कामना से व्रत आरंभ करने के बाद उसमें दूसरी इच्छाएं नहीं जोड़ना चाहिए। यत्र प्राण प्रतिष्ठा युक्त लें या घर पर बनवायें तो विद्वान् ब्राह्मण से प्राण प्रतिष्ठा करवा लें
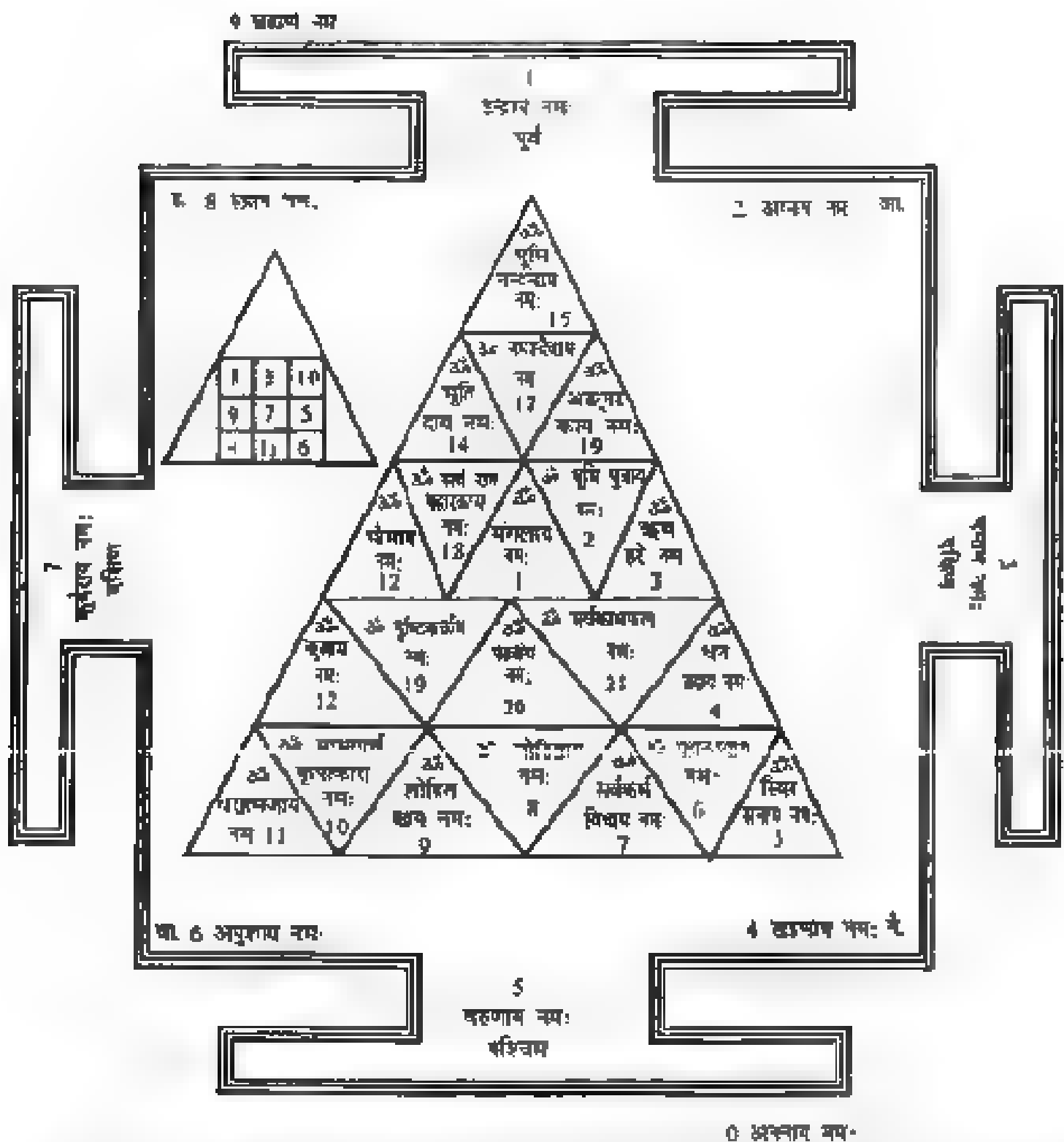
संकल्प–दायें हाथ में जल लेकर संकल्प करें। **"ॐ अद्य पूर्वोच्चरितस्य गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम (अमुक) स्थाने स्थित भौम जनित दोष परिहारार्थं तथाच आजन्म पर्यन्तं स्त्रीसुख प्राप्त्यर्थं अनेन भौमजोपाख्येनकर्मणा भगवान् भौमः प्रीयताम्।"**

हिन्दी भाषा में इस प्रकार करें–मैं (अपना नाम) आज (अमुक) वर्ष के (अमुक) मास (अमुक) तिथि (अमुक) बार को श्री मंगल देवता को प्रसन्न करने हेतु तथा मेरी कुण्डली में अमुक स्थान में स्थित मंगल दोष के निराकरण हेतु, भक्ति के साथ (अमुक कामना) की पूर्ति हेतु 'मंगलयंत्र' का पूजन और व्रत करता हूं (कहकर जल छोड़ दें) फिर न्यास, ध्यान के साथ यन्त्र में यन्त्रस्थ देवता का आह्वान कर, यन्त्र की पूजा करें। उसके बाद कवच व स्तोत्र का पाठ करना होता है।

न्यास–

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यांनमः
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यानम। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यांनमः

ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यांनमः। ॐ ह्रः करतलपृष्ठाभ्यांनमः।
ॐ ह्रां हृदयायनमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रू शिखाये नमः। ॐ ह्रीं कवचाय हुम्॥
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट्॥
ॐ खंखः इति दिग्बन्धः॥

न्यास–सबसे पहिले न्यास करें यानि मूल में जो न्यास के मंत्र लिखे हैं उन मत्रों को बोलते जाएं और उन-उन अंगों को स्पर्श करते जाए जो कि, मूल-मंत्रों में ही लिखे हैं। हाथ की पांचों अंगुलियों का नाम संस्कृत में क्रम से 1 अंगुष्ठ (अंगूठा) 2 तर्जनी (अंगूठे के पास की उगली) 3 मध्यमा (बचली) 4 अनामिका (चौथी) कनिष्टिका, सबसे छोटी अंगुली कही जाती है। करतल हथेली तथा पृष्ठ, हाथ की पीठ कही जाती है। हृदय-छाती, शिर-खोपड़ी, शिखा-चोटी, कवच-भुजाएं, नेत्रय तीन नेत्र कहे जाते हैं। इन संस्कृत के शब्दों वाले पदों से इनका स्पर्श होता है। ये दोनों करन्यास और अंगन्यास कहलाते हैं। "अस्त्राय फट्" कहर अपने दोनों ओर हाथ घुमा ताली बजाने तथा ओम् खखः कहकर चुटकी बजाने से दिग्बन्ध हो जाता है।

ध्यानम्–

एह्ये हि भगवन्भौम अङ्गारक महाप्रभो॥
त्वयि सर्व समायातं त्रैलोक्यं सचराचरम्॥
भौममावाहयिष्यामि तेजोमूर्तिं दुरासदम्॥
रूद्ररूपमनिर्देश्चवक्त्रचं रुधिरप्रभम्॥
विनियोग–अग्निमूर्धाङ्गिरसो विरूपोऽङ्गारको गायत्री।
मङ्गलावाहने विनियोगः॥

ध्यानम्–रक्तमाला पहिने, शक्ति शूल और गदा हाथ में लिए हुए चतुर्भुजी तथा मेंढ़े की सवारी रखने वाले धरानन्दन वर दिया करते हैं, इस प्रकार ध्यान करें। हे अंगारक महाप्रभो भौम! पधारिये, आपके आने से चराचर समेत तीनों लोक आ गए; लोहू जैसा लाल-लाल मुख, साक्षात रुद्ररुपी तेजोमूर्ति दुरासद मंगल का आह्वान करता हूं।

मंगल आह्वान–ॐ अग्निर्मूर्धाः॥ ॐ नमो भगवते धनसमृद्धिदाय मङ्गलाय नमः॥ मंगलमावाह्वामि इत्यावाह्य अग्निर्मूर्धेति मन्त्रेण मंगलगायत्र्या वा आसनादि पुष्पान्तं पूजयित्वा यन्त्रस्थैकविंशतिकोष्ठेष्वढ.गान्येकविंशतिनामभिः पूजयेत्॥

मंगल आह्वान–"अग्निर्मूर्धा" इस मंत्र के आंगिरस विरूप ऋषि है; मंगल देवता है, गायत्री छन्द है, मंगल के आह्वान में विनियोग होता है। "ओम् अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपांघू रेताघुंसि जिन्वति।" यह पृथ्वी का पुत्र भौम, दिवका मूर्धा तथा सबका अग्रणी है। सबका पालक तथा सबसे श्रेष्ठ है, यही पानी के सारों को पुष्ट करता या व्यापकों

को बल देता है। इस मन्त्र से अथवा धन समृद्धि देने वाले भगवान् मंगल के लिए नमस्कार करता हूं! मंगल का आह्वान करता हू. इस मन्त्र से आह्वान हुआ।

अंग पूजा–1. ॐ मंगलाय नमः पादौ पूजयामि 2. भूमि-पुत्राय नमः गुल्फौ पूजयामि। 3. ऋणहर्त्रे नमः जंघौ पूजयामि 4. धनप्रदाय नमः जानुनी पूजयामि। 5. स्थिरासनाय नमः उरू ॐ पूजयामि। 6. महाकायाय नमः कटीं पूजयामि। 7. सर्वकर्मावरोधकाय नमः नाभिं पू.। 8. लोहिताय उदर पू.। 9. लोहिताक्षाय हृदय पूजयामि। 10. सामगानाकृपाकराय करौ पू.। 11. धारात्मजाय नमः बाहु पूजयामि। 12. कुजाय स्कन्धौ पू.। 13. भौमाय नमः कण्ठ पूजयामि 14. भूतिदाय हनुं पू.। 15. भूमिनंदनाय मुख पूजयामि। 16. अङ्गारकाय नासिकं पू.। 17. यमाय नमः कर्णौ पूजयामि 18. सर्वरोगापहारकाय नमः चक्षुषी पू.। 19 वृष्टिकर्त्रे नमः ललाट पूजयामि। 20. वृष्टिहर्त्रे नमः मूर्धानं पूजयामि। 21. सर्वकामफलप्रदाय नमः शिखाम् पूजयामि।।

ततो धूपादिपुष्पांजल्यन्तं कृत्वा एतैरेव नामभिरेकविंशत्यर्घ्यन्दियात्।।

अंग पूजा–"अग्निमूर्धा" इस मन्त्र से तथा ' ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्" इस मंगल गायत्री से आसन से लेकर पुष्प समर्पण तक की पूजा करें। मन्त्र को गंगा जल में धोएं फिर मन्त्र के जिस कोष्ठ में जो नाम मन्त्र लिखे गये है, उन्हीं इक्कीस नाम मत्रों से उन-इन कोष्ठों में क्रमशः अगों का पूजन करते हुए बिन्दिया लगाएं। बिन्दी लगाते समय सर्वत्र ॐ शब्द एवं उन-उन कोष्टकों के नाम मन्त्रों का उच्चारण करें। अंगपूजा- मंगल के लिए नमस्कार चरणों को पूजता हू, भूमिपुत्र के लिए गुल्फों को ऋण हर्ता के लिए जघाओं को, धन देने वाले के लिए जानुओं को, स्थिरासन के लिए उरूओं को, महाकाय के लिए कटि को, सब कर्मों के अवरोध के लिए नाभि को, लोहित के लिए उदर को, लोहिताक्ष के हृदय को, साम के जानने वालों पर कृपा करने वालों के लिए हाथों को, धारात्मज के लिए बाहुओं को, कुज के लिए स्कन्धों को भौम के लिए कंठ को, भूति के देने वाले के लिए हनु को, भूमिनन्दन के लिए मुख को, अंगारक के लिए नासिकाओं को, यम के लिए कर्णों को, सब रोगों के नष्ट करने वाले के लिए नेत्रों को, दृष्टि के करने वाले के लिए ललाट को, वृष्टि के हर्ता के लिए मूर्धा को, सब कामों के फल देने वाले के लिए नमस्कार शिखा को पूजता हू। अग पूजा के पश्चात दश दिशाओं में भी बिन्दिया लगाएं, पुष्प लगाए

मंगल कवच–

शिखायां मंगलः पातु भूमिपुत्रश्च मूर्धनि।।
ललाटे ऋणहर्ता च चक्षुषोश्च धनप्रदः।।
स्थिरासनः श्रोत्रयोश्च महाकायश्च नासिके।।
आस्यदन्तोष्ट जिह्वासु सर्वकर्मावरोधकः।।
हनौ मे लोहितः पातु लोहिताक्षश्च कण्ठके।
स्कन्धयोरुभयो रक्षेत्सामगानां कृपाकरः।।

धरात्मजो भुजौ पातु कुजो रक्षेत्करद्वयम्॥
भौमो मे हृदय पातु भूतिदस्तु तथोदरे॥
भूमिनन्दनो नाभौ तु गुह्ये त्वङ्गारकोऽवतु॥
उरू मम यमो रखेज्जान रोगापहारकः॥
जंघयोर्वृष्टिकर्ता च अपहर्ता च गुल्फयोः॥
पादागुष्टा च गुल्फौ च सर्वकामफलप्रदः॥
शक्तिर्मे पूर्वतो रक्षेच्छूलं रक्षेच्च दक्षिणे॥
पश्चिमे च धनुः पातु उत्तरे च शरस्तथा॥
ऊर्ध्वं पिण्डाननः पातु अधस्तात्पृथिवी मम॥
एवं न्यस्तशरीरोऽसौ चिन्तयेद्भूमिनन्दनम्॥

मंगल कवच–शिखा की मंगल रक्षा करें। भूमिपुत्र मूर्धा की, ऋणहर्ता ललाट की, धनप्रद नेत्रों की, स्थिरासन श्रोत्रों की, नासिकाओं की महाकाय, सर्व कर्माविरोधक मुख, दन्त, ओष्ठ और जिह्वा की, लोहित हनु की, लोहिताक्ष कठ की, सांमगों पर कृपा करने वाला दोनों स्कन्धों की, धरात्मज भुजाओं की, कुज दोनों हाथों की, भौम हृदय की, भूतिद उदर की, भूमिनन्दन नाभि की, अंगारक गुह्य की, यम उरूओं की, रोगापहारक जानुओं की, वृष्टिकर्ता जांघो की अपहर्ता गुल्फों की सर्वकाम फलप्रद, पाद अंगुष्ठ और गुल्फों की रक्षा करें। शक्ति मेरी पूर्व से रक्षा करें दक्षिण में शूल रक्षा करें। पश्चिम में धनुष रक्षा करे उत्तर में शर रक्षा करे, ऊपर पिण्डानन तथा नीचे पृथ्वी रक्षा करे, इस प्रकार शरीर में न्यास या रक्षा के लिए इन रूपों को यहां बिठा कर मंगल का ध्यान करें। (ये न्यास कहे हुए अगों पर रक्षा के लिए किए जाते हैं इस कारण हमने सीधा रक्षा करें यह अर्थ कर दिया है।) इस प्रकार कवच का पाठ करें।

मंगल गायत्री–

ॐ अङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्तायधीमहि।
तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥

मंगल गायत्री–अगार के समान रक्त वर्णीय, दोनो हाथों में शक्ति धारण करने वाले तेजस्वरूप तेजस्वी मंगल ग्रह को नमस्कार है। अथवा यहां 'ॐ ह्रीं भौमाय नमः' की एक माला फेरें। इसके बाद मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

मगल स्तोत्र–

मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्माविरोधाकः॥
लोहितो लोहिताक्षश्च साम्मगानां कृपाकरः
धारात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥
अंङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥

एतानि कुजनामानि नित्यं यः प्रयतः पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य सन्तानं वर्धते सदा।।
एकविंशतिनामानि पठित्वा तु दिनान्तके।
रूपवान् धनवांश्चैव जायते नात्र संशयः।।
एककालं द्विकालं वा यः पठेत्सुसमाहितः।
एवं कृते न सन्देहो ऋणं हित्वा सुखी भवेत्।।

मंगल स्तोत्र– मंगल, भूमिपुत्र, ऋणहर्ता, धनप्रद, स्थिरासन, महाकाय, सर्वकर्मावरोधक, लोहित, लोहिताक्ष, सामगाना कृपाकर, धरात्मज, कुज, भौम, भूतिद, भूमिनन्दन, अंगारक, यम, सर्वरोगापहारक, वृष्टिकर्ता, वृष्टिअपहर्ता, सर्वकामफलप्रद, ये मंगल के 21 नाम हैं। जो रोज सावधानी के साथ इन्हें पढ़ता है, उस पर कष्ट नहीं होता, सदा सन्तान की वृद्धि होती है। साय-काल के समय इन इक्कीस नामों को पढ़कर, रूपवान और धनवान हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं है। एक बार या दो बार एकाग्र चित्त हो पढ़े, इस प्रकार नित्य करने पर ऋण को चुका, व्यक्ति सुखी हो जाता है। रुचि के अनुसार काव्यात्मक इस स्तोत्र को भी पढ़ सकते हैं।

काव्यात्मक मंगल स्तोत्र

भारद्वाज कुल उज्ज्वल कर, उज्जैन में वास लिया तुमने, हे चारभुजाधारी, मंगल! हे शूलशक्ति धर भौम कुजे। करते स्तुति देव सदा मिलकर, दानव गंधर्व सदा भजते, करता कल्याण सदा उनका, जो पूर्ण मनोरथ से भजते।। धरणी गर्भ से जन्म लिया, बिजली सी चमक उससे पाई हे! सेनापति देवों के, विजय देव हे! सुखदाई। है रक्त वर्ण, है लाल नैत्र, मीढ़ा है वाहन मनभाया, हे मंगल! शक्ति हाथ तेरे, कर मम मगल सुखदाया।। मैं नमन करूं अब बार बार, तुमने भक्तों को दिया तार, तुम नष्ट करो ऋण सब मेरा, कर दो अपनी करुणा अपार। मम रोग हरो भव, ताप हरो, अपमृत्यु हरो मेरी साईं हरो दरिद्रता इस जन की, वरदो! सन्तान बड़े भाई।। धान दो, सब पाप मिटे मेरे, करदो मम सन्तान सगाई, हे ऋणहर्ता है, नमस्कार, सुख सौभाग्य, मुझे दे दो। दो पुत्र मुझे, जिससे सुख हो, हे देव-देव भक्ति तब दो, हे धारणी नन्द हे मगल, हे बाल कुमार विनय सुन ले तेरी पूजा से जन-जन-मन, पाते मगल, मगल कर दो।

नमस्कार–

धारणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगल प्रणमाम्यहम्।।

नमस्कार–भूमि के गर्भ से उत्पन्न होने वाले की कान्ति के समान प्रभा वाले, शक्ति हाथ में लिए कुमार मगल को बारम्बार प्रणाम करता हूं। इस प्रकार कहकर हाथ जोड़कर नमस्कार करें।

तीन रेखाओं का प्रयोग–

(खदिरांगारेजा रेखात्रयं कृत्वा)–

अङ्गारक महीपुत्र भगवन्भक्तवत्सल

त्वां नमस्यामि मेऽशेषं ऋणमाशु विनाशय।।1।।
ऋणरोगादिदारिद्रयपापक्षुधापमृत्यव:
भवक्लेशमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा।।2।।
ऋणदु:ख विनाशाय पुत्रसन्तानहेतवे।
मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्त्रे जन्मसमुद्‌भवा:।।3।।
दु:खदौर्भाग्यनाशाय सुखन्तानहेतवे:।
कृतं रेखात्रयं वामपादेन मार्जयाम्यहम्।।4।।

तीन रेखाओं का प्रयोग—इसके बाद आरती उतारकर खैर की लकड़ी के कोयले से अथवा खेजड़ी कोयले से तीन रेखाएं जमीन पर खींचे, फिर उन रेखा को बाएं पैर से उपरोक्त मंत्र या हिन्दी के पद को बोलते हुए मिटाएं। खैर के अंगार से तीन रेखा करके कहे—हे भगवन् अंगारक! हे महीपुत्र! हे भक्तवत्सल! मैं आपको नमस्कार करता हूं, मेरा समस्त ऋण नष्ट करिए, ऋण रोगादि, दारिद्र, पाप, क्षुद्रता, अपमृत्यु, भव के क्लेश, मन के ताप ये मेरे सदा नष्ट हों! ऋण के दु:ख को नष्ट करने तथा पुत्र और सन्तान के लिए, तीन जन्म से होने वाली तीनों ग्रसित रेखाओं का मार्जन करता हूं। जिससे दु:ख और दुर्भाग्य का नाश तथा सुख और सन्तान की प्राप्ति हो, दुर्भाग्य सूचक तीनों रेखाओं का बाएं पैर से मार्जन करता हूं, इन मंत्रों से रेखाओं का मार्जन करें।

रेखाओं को मिटाते वक्त बोलने का पद—

हे अंगारक ! हे महीपुत्र, भगवान् भक्तों के प्यारे,
मैं नमस्कार करता तुमको, जो नमें उन्हें, तुमने तारे।
तीन जन्म की ये रेखाएं, मेरी भाग्य बाधक प्यारे,
काली रेखा ऋण-रोगों की, दुर्भाग्य मिटाता हूं प्यारे।
सुख सन्तान बढ़े मेरे, या दे दो सुन्दर पति/पत्नी तुम प्यारे,
कन्या मेरी अब बढ़ी हुई, उसको पति दो तुम प्यारे।।

मंगल प्रार्थना—

ऋणहत्रे नमस्तेऽस्तु दु:खदारिद्र्यनाशक।
सुखसौभाग्यधनदो भव मे धरणी:सुत:।।
ग्रहराज नमस्तेऽस्तु सर्वकल्याणकारक:।
प्रसादात्तव देवेश सदा कल्याणभाजन:।।
देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगा:।
प्राप्नुवन्ति शिवं सर्वे सदा पूर्णमनोरथा:।।
प्रसादं कुरु मे भौम सौभाग्यं मंगलप्रद:।।
बाल: कुमारको वसतु स भौम: प्रार्थितो मया।।

उज्जयिन्या समुत्पन्नो, नमो भौम चतुर्भुज।
भरद्वाजकुले जात: शूलशक्तिगदाधर:।।

मगल प्रार्थना—हे दु:ख और दरिद्रता के नाश करने वाले तुझ ऋणनाशक के लिए नमस्कार है। हे धरणी के पुत्र! मुझे सुख और सौभाग्य का देने वाला बन जा, हे सबके कल्याण क करने वाले! तुझ ग्रहराज के लिए नमस्कार है। हे देवेश! आपकी कृपा से सदा कल्याण हो, क्योंकि आप सदा ही कल्याण के भाजन हैं। देव दानव, गन्धर्व, दक्ष, राक्षस, पन्नग ये सब सदा ही पूर्ण मनोरथ होकर कल्याण को पाते है। हे भौम! मुझ पर कृपा करिए, हे मगल के देने वाले। सौभाग्य दे। जो चतुर्भुज बालकुमार उज्जयनी में उत्पन्न हुआ है उसी से प्रार्थना कर रहा हूं। उसी के लिए मेरी ये नमस्कारें भी हैं। जो भरद्वाज के कुल में पैदा हुआ है। शक्ति शूल और गदा धारण करने वाला हैं। यह प्रार्थना करके फिर स्त्रोत्र पढ़ना चाहिये।

वायनदानम्—

तिलगुड मिश्रितैनैकविंशतिलड्डूकान्
गोधूमभवान्फल दक्षिणासहितान्वेदविदे दद्यात्।।

वायनदानम्—तिल गुड़ मिले हुए गेहू के इक्कीस लड्डू फल और दक्षिणा के साथ वेद के जानने वाले ब्राह्मण को दें, सब मंगलों के देने वाले तुझ मंगल के लिए नमस्कार है। इस से संतुष्ट होकर मेरे मनोरथों को पूरा करिए, "देवस्य त्व." इस मन्त्र को बोलकर कहे कि, इस दान से मगल देव प्रसन्न हो; पीछे दे दें। यह वायने के दान का मन्त्र है। यदि सन्तान की चाहना हो तो 21 लाल रंग की गोलियां छोटे छोटे बच्चों को बांटे। यदि ऋण उतारना हो तो गाय को गुड़ खिलावें। यदि रोग मिटाना हो तो ब्राह्मण व साधु को तृप्त भोजन कराए, उसके बाद भोग लगाकर स्वयं भोजन करें। कार्य की सिद्धि हो जाने पर उद्यापन में 21 लाल रंग की वस्तु, लाल पुष्प या लड्डू सत्पुरुषों में बांट दें। दशांश हवन करें। हवन करने पर ब्राह्मण भोजन अवश्य कराए।

दानमन्त्र—

मंगलाय नमस्तुभ्यं सर्वमगलदायक।।
वायनेन च संतुष्ट: कुरु मे त्वं मनोरथान्।।
देवस्यत्वेति मन्त्रेण मङ्गल: प्रीयतामिति दद्यात्।।
(आवाहनं न जानामि. इति पूजनम्)

फल स्तुति—

तस्य वै ग्रहपीड़ा च न भवेत् कदाचन।
भूतवेतालशाकिन्यौ न भवन्ति च हिंसका:।। 1।।
दारिद्र्य नश्यते तस्य पुत्रपौत्राश्च वर्धते।
एवमुक्त्वा च तत्रैव मगलोऽपि दिव गत:।। 2।।

एवं व्रत समाख्यातं सर्वसौख्यप्रदायकम्।।
इदं व्रतं करिष्यन्ति तेषां पीडा न जायते।। 3।।
स्त्रीभिर्व्रत प्रकर्त्तव्यं पुरुषैश्च विशेषत:।
तेषां मुक्तिर्भवत्येव स्वर्गवासो न संशय:।। 4।।

फल स्तुति–उसे कभी ग्रहपीड़ा नही होगी। उसे भूत प्रेत बेताल की बाधा और दारिद्र्य नष्ट हो जाता है और बेटा नातियों के साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। यह कह कर मंगल देव अन्तरिक्ष में चले गए। यह सब सुखों का देने वाला व्रत मैने कह दिया है। जो इस व्रत को करेंगे उन्हें कभी भी ऋण की पीड़ा नहीं होगी। इस व्रत को स्त्रियों को करना चाहिए। विशेष करके पुरुष भी इसी व्रत को करें उनकी मुक्ति और स्वर्गवास होगा इसमें सन्देह नहीं है। यह प्रयोग हर प्रकार से सुख सम्पत्ति व प्रसन्नता को देने वाला कहा गया है।

दीर्घायु, रोग निवारण एवं उत्तम स्वास्थ्य हेतु

1. चन्द्रमा का जीवन रत्न मोती सवा पांच रत्ती और जीवन शक्तिदायक मंगल का रत्न 'मूंगा' सवा पांच रत्ती संयुक्त रूप से लॉकेट बनाकर गले या अंगूठी में धारण करें। यह लॉकेट 'महालक्ष्मी योग' का भी काम करने के कारण दोहरे चमत्कार वाला साबित होगा।
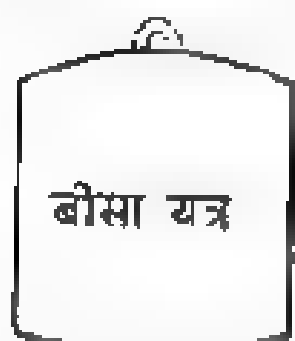
   बीसा यंत्र में ये दोनों रत्न 'लक्ष्मी योग' को प्रबल करते है। बीसा यंत्र में कोई भी रत्न प्रतिकूल कार्य नहीं करता और जातक का वांच्छित धन लाभ देता है। जिन लोगों के हाथ मे पैसा नहीं टिकता एवं जिन लोगों के धन स्थान में राहु बैठा हो तो, धन के घड़े में छेद हो, उन लोगों को यह यंत्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह हमारा अनुभूत प्रयोग है कि कुण्डली जन्म दुर्बल योग, दरिद्रयोग इस यंत्र के धारण करने से नष्ट हो जाते है संकट योग, धनहीन योग एवं केमद्रुम योग में जन्म लेने वाले जातक के लिए यह यंत्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है।

   बीसा यंत्र
   चांदी ← → मूंगा

2. रुद्राक्ष की माला पर महामृत्युंजय मंत्र का नित्य जाप करें।
3. बालारिष्ट व अकाल मृत्यु से बचने हेतु बच्चे के गले में मोतीयुक्त चांदी का चन्द्रमा अभिमंत्रित करके पहनाए।
4. अनिष्ट चन्द्रमा के कारण बालारिष्ट की शान्ति हेतु चन्द्रकवच पढ़ें, चन्द्रमा के वैदिक मंत्रो का 11000 या 44000 हजार जप, दशांश हवन कर, बच्चे के गले में रक्षा सूत्र या चन्द्रमा पहनाएं।
5. चांदी के बर्तन में रात को सिरहाने पर दूध रखना तथा प्रात:काल बिना कुछ बोले कीकर

पीपल या बिल्व वृक्ष में दूध ''ॐ नमः शिवाय'' मंत्र का जाप करते हुए डाले तो तत्काल कष्ट दूर होगा।

6. शिवजी की नित्य उपासना एवं सोमवार का व्रत रखें।
7. सोम प्रदोष का व्रत रखने से शिव पार्वती शीघ्र प्रसन्न होते हैं।
8. प्रत्येक जन्मदिन या पुष्य नक्षत्र पर दूध व गंगाजल से रुद्राभिषेक कराए एवं वैदिक मंत्रों के साथ अभिषेक लें।
9. विशेष अवस्था में रोग निवारण हेतु मंत्रपूत औषधियों के साथ पुष्य नक्षत्र स्नान करें।
10. माता (सास), मासी, मामी एवं घर में बुजुर्ग औरतों का आशीर्वाद लें।
11. मरणासन्न व्यक्ति के लिए जहां दवाइयों ने काम करना कर दिया हो। बीमारी गम्भीर व लाईलाज हो वहां त्रिविध तापों के नाश हेतु महामृत्युंजय का सवालक्ष जप, दशांश हवन एवं कवच पाठ अमोघ फल को देने वाला है।
12. चन्द्रमा की निर्बलता में कैलशियम की विशेष कमी पाई जाती है। अतः केला, इत्यादि सेवन बच्चों के लिए हितकर रहता है।
13. आषाढ़ कृष्ण (योगिनी) एकादश का व्रत नियमित करना चाहिए। इससे शरीर स्वस्थ हो जाता है।

योगिनी एकादशी—यह एकादशी आषाढ़ कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है। इस दिन व्रत रखकर भगवान नारायण की मूर्ति को स्नान कराके भोग लगाते हुए पुष्प, धूप, दीप से आरती उतारनी चाहिए। गरीब ब्राह्मणों को दान देना परम श्रेयस्कर है। इस एकादशी के प्रभाव से पीपल वृक्ष के काटने से उत्पन्न पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है।

कथा—प्राचीन समय की बात है अलकापुरी में धनद कुबेर के यहां एक हेम नामक माली रहता था। वह भगवान शंकर के पूजनार्थ नित्य प्रति मानसरोवर से फूल लाया करता था। एक दिन की बात है वह कामोन्मत हो अपनी स्त्री के साथ स्वच्छन्द विहार करने के कारण फूल लाने में प्रमाद कर बैठा तथा कुबेर के दरबार में विलम्ब से पहुंचा। क्रोधी कुबेर के शाप से वह कोढ़ी हो गया। कोढ़ी रूप में जब वह मार्कण्डेय ऋषि के पास पहुचा तब उन्होंने योगिनी एकादशी व्रत रहने का आज्ञा दी। व्रत के प्रभाव से उसका कोढ़ समाप्त हो गया तथा दिव्य शरीर वाला होकर स्वर्गलोक को गया।

14. इसी प्रकार निर्जला एकादशी ज्येष्ठ शुक्ल को करनी चाहिए इससे दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

निर्जला एकादशी—ज्येष्ठ शुक्ल पक्षीय एकादशी को निर्जला एकादशी या 'भीमसेनी एकादशी' कहते हैं, क्योंकि वेदव्यास के आज्ञानुसार भीमसेन ने इसे धारण किया था। शास्त्रों के अनुसार इस एकादशी के व्रत से दीर्घायु तथा मोक्ष मिलता है इस दिन जल

नहीं पीना चाहिए। इस एकादशी का व्रत रखने से वर्ष की पूरी (24) एकादशियों का। फल मिलता है। यह व्रत करने के पश्चात् द्वादशी को ब्रह्म बेला में उठकर स्नान, दान तथा ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए इस दिन 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करके गोदान, वस्त्रदान, छत्र, फल आदि दान करना वांछनीय है।

कथा–एक समय की बात है भीमसेन ने व्यास जी से कहा कि हे भगवान्! युधिष्ठिर, अर्जुन, नकुल, सहदेव, कुन्ती तथा द्रौपदी सभी एकादशी के दिन उपवास करते हैं। तथा मुझसे भी यह कार्य करने को कहते हैं, मगर मैं कहता हूं कि मैं भूख बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं दान देकर तथा वासुदेव भगवान की अर्चना करके उन्हें प्रसन्न कर लूंगा। बिना व्रत किए जिस तरह से हो सके मुझे एकादशी व्रत का फल बताइए। मैं बिना काया क्लेश के ही फल चाहता हूं।

इस पर वेद व्यास बोले हे वृकोदर! यदि तुम्हें स्वर्गलोक प्रिय है तथा नरक जाने से सुरक्षित रहना चाहते हो तो दोनों एकादशियों का व्रत रखना होगा।

भीमसेन बोले–हे देव! एक समय का भोजन करने से तो मेरा काम न चल सकेगा। मेरे उदर में वृक नाम अग्नि निरन्तर प्रज्वलित रहती है। पर्याप्त भोजन करने पर भी मेरी क्षुधा शांत नहीं होती है। हे ऋषिवर! आप कृपा करके मुझे ऐसा व्रत बतलाइए कि जिसके करने मात्र से मेरा कल्याण हो सके।

व्यासजी बोले–हे भद्र! ज्येष्ट की एकादशी का निर्जल व्रत कीजिए। तुम जीवन पर्यन्त इस व्रत का पालन करो। इससे तुम्हारे पूर्वकृत समस्त एकादशियों के अन्न खाने का पाप समूल विनष्ट हो जाएगा। व्यासाज्ञानुसार भीमसेन ने बड़े साहस के साथ निर्जला का यह व्रत किया जिसके परिणामस्वरूप प्रातः होते होते संज्ञाहीन हो गये। तब पांडवों ने गंगाजल तुलसी चरणामृत प्रसाद देकर उसकी मूर्च्छा दूर की। तभी से भीमसेन पाप मुक्त हो गए।

15. आयुष्य, आरोग्य की वृद्धि हेतु 'रविप्रदोष' का व्रत करना चाहिए। परन्तु रोगों से मुक्ति हेतु उत्तम स्वास्थ्य के लिए 'मंगलप्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

ऋण मुक्ति, धन प्राप्ति, स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु–

1. स्थाई लक्ष्मी हेतु माणिक्य सवा पांच रत्ती मोती सवा पांच रत्ती, और मूंगा सवा पांच रत्ती का लॉकेट बनाकर धारण करें।
2. प्रति पूर्णिमा को श्रीसूक्त का हवन, गोघृत, कपूर एवं खोपरे व मिष्ठान या खीर से करें।
3. चन्द्रमा यदि नीच का पंचम भाव में हो तो चन्द्रमा की चीजों का दान न लें।
4. चन्द्रमा यदि उच्च का लाभ स्थान हो तो चन्द्रमा की चीजों का दान न दें।
5. छत पर पानी की टंकी हो तो उसकी नियमित सफाई 3-4 महीनों में कराते रहें। घर में

कहीं भी पानी के पड़ने से चन्द्रमा रुष्ट रहता है। जिसका चन्द्रमा दूषित हो उनको अपने घर के आगे कीचड़ या गन्दे पानी का जमाव नहीं होने देना चाहिए।

6. घर में खड़ी लक्ष्मी की तस्वीर का पूजन न करें।
7. लक्ष्मीजी की तस्वीर या श्रीयंत्र कागज, एल्युमीनियम या कांच के न हों।
8. श्रीयंत्र कभी भी तांबे या पीतल का न हो।
9. गृहलक्ष्मी से नित्य बहस या कलह करने से घर का ऐश्वर्य एवं लक्ष्मी दोनों ही नष्ट हो जाते हैं।
10. भूलकर भी प्रमादवश माता या मातृतुल्य औरतों का अपमान न करें, इससे चन्द्रमा शीघ्र अप्रसन्न हो जाता है।
11. गन्दे एवं पसीने वाले वस्त्रों के धारण से भी चन्द्रमा शीघ्र नाराज होकर प्रतिकूल हो जाता है।
12. घर की स्त्रियां यदि 'श्रीसूक्त' का पाठ करें तो लक्ष्मी जल्दी प्रसन्न होती हैं
13. दुकान, फैक्ट्री या कामर्शियल स्थल पर श्रीयंत्र-कुबेर यंत्र-कनकधारा यंत्र एक फ्रेम में जड़वाकर नित्य धूप अगरबत्ती दें। श्रीसूक्त का नियमित पाठ करें
14. नवरत्न जड़ित 'श्रीयंत्र' गले में धारण करें।

इस यंत्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनन्त ऐश्वर्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।
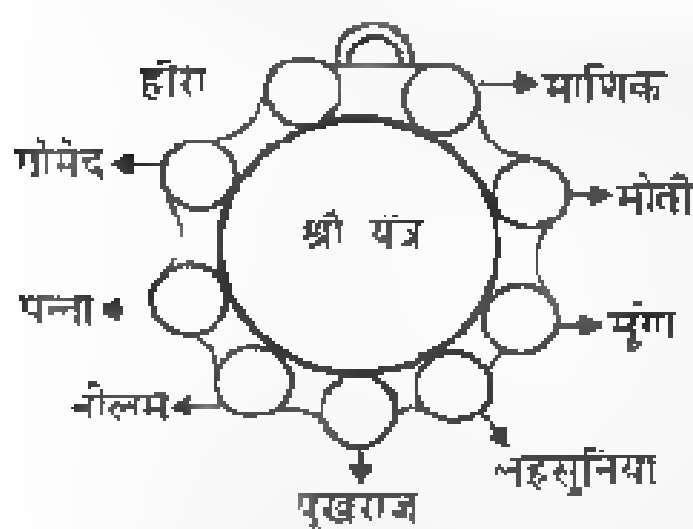
व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे लक्ष्मी उसके साथ है नवग्रह श्रीयंत्र से बंधे हुए होने के कारण ग्रहों की प्रतिकूल दशा का असर धारण करने वाले व्यक्ति पर नहीं होता। गले में होने के कारण यह यंत्र पवित्र रहता है एवं स्नान करते समय इस यंत्र से स्पर्श होकर जो जल बिन्दु शरीर को लगते हैं वह गंगा जल के समान पवित्र हो जाते हैं। अपरोक्ष रूप से एक प्रकार से व्यक्ति का नित्य प्रति रत्न स्नान भी हो जाता है। इसलिए यह सबसे पावरफुल श्रीयंत्र कहलाता है। जिस प्रकार अमृत से ऊपर कोई औषधि नहीं उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इस श्रीयंत्र से बढ़िया अन्य कोई यंत्र संसार में नहीं है। इस प्रकार के श्रीयंत्र शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके हमारे कार्यालय में बनाए जाते हैं।

15. कर्ज अधिक हो तो 'दरिद्रतानाशक' अंगूठी धारण करें।

दरिद्रता नाशक अंगूठी– यदि हाथ में भाग्य रेखा छिन्न-भिन्न अवस्था में हो। धनरेखा गायब है, तथा जीवन में रुपया- पैसों की कमी लगातार बनी रहती है तो यह अंगूठी धारण करना बहुत जरूरी है। तंत्रोक्त 'शारदा तिलक' के अनुसार -

तारताम्र सुवर्णानांअर्के षोडशखेन्दुभिः।
पुष्यार्के घटिका मुद्री ऋणदारिद्र्य नाशिनी॥

अर्थात् सोलह रत्ती तांबा बारह रत्ती चांदी एवं दस रत्ती सुवर्ण इन तीनों धातु की अंगूठी पुष्य नक्षत्र के घटीपल में बनाकर मंत्रपूत करके पहनी जाए तो कैसी भी दरिद्रता हो धीरे धीरे नष्ट हो जाती है, कैसा भी कर्ज हो उतर जाता है यह अनुभूत है इस अंगूठी को धार्मिक भाषा मे 'पवित्री' भी कहते हैं। यह धातु स्पर्श चिकित्सा का सबसे चमत्कारी पहलू है। किसी भी प्रकार की असुविधा होने पर उपर्युक्त सभी सामग्रियां हमारे जोधपुर कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।

16. वैशाख पूर्णिमा को व्रत, हवन एवं तीर्थ स्नान करने से स्थाई धन की प्राप्ति होती है

वैशाखी पूर्णिमा—वैशाखी पूर्णिमा स्नान लाभ की दृष्टि से अंतिम पर्व है। इस दिन गंगा जैसी पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए। दान के लिए मिष्ठान, सत्तू, वस्त्र आदि का विशेष महत्त्व है। श्रीकृष्ण के बचपन के सहपाठी दरिद्र ब्राह्मण सुदामा जब द्वारिका उनसे मिलने गए तो उन्होंने सत्य विनायक व्रत का उनको विधान बताया। इसी व्रत के प्रभाव से सुदामा की सब दरिद्रता जाती रही तथा वह अत्यन्त ऐश्वर्यशाली हो गए।

17. अभीष्ट सिद्धि हेतु घर की स्त्रियों को 'सोमप्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

सोम त्रयोदशी प्रदोष व्रत—सूत जी बताने लगे—'सोम त्रयोदशी प्रदोष व्रत से शिव-पार्वती प्रसन्न होते हैं। व्रती के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।'

एक नगर मे एक ब्राह्मणी रहती थी। उसके पति का स्वर्गवास हो गया था। उसका अब कोई आश्रयदाता नहीं था, इसलिए प्रातः होते ही वह अपने पुत्र के साथ भीख मांगने निकल पड़ती थी। भिक्षाटन से ही वह स्वयं व पुत्र का पेट पालती थी। एक दिन ब्राह्मणी घर लौट रही थी तो उसे एक लड़का घायल अवस्था में कराहता हुआ मिला। ब्राह्मणी दयावश उसे अपने घर ले आई।

वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था। शत्रु सैनिकों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर उसके पिता को बन्दी बना लिया था और राज्य पर नियंत्रण कर लिया था, इसलिए वह मारा मारा फिर रहा था। राजकुमार ब्राह्मण पुत्र के साथ ब्राह्मणी के घर रहने लगा। एक दिन अंशुमति नामक एक गंधर्व कन्या ने राजकुमार को देखा और उस पर मोहित हो गई। अगले दिन अंशुमति अपने माता-पिता को राजकुमार से मिलाने लाई। उन्हें भी राजकुमार भा गया। कुछ दिनों बाद अंशुमति के माता पिता को शंकर भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया कि राजकुमार और अंशुमति का विवाह कर दिया जाए। उन्होंने वैसे ही किया। ब्राह्मणी प्रदोष व्रत करती थी। उसके व्रत के प्रभाव और गंधर्वराज की सेना की सहायता से राजकुमार ने विदर्भ से शत्रुओं को खदेड़ दिया और पिता के राज्य को पुनः प्राप्त कर आनन्दपूर्वक रहने लगा। राजकुमार ने ब्राह्मण पुत्र को अपना प्रधानमंत्री बनाया।

ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत के महात्म्य से जैसे राजकुमार और ब्राह्मण पुत्र के दिन फिरे, वैसे ही शंकर भगवान अपने दूसरे भक्तों के दिन फेरते हैं।

आकर्षण बढ़ाने हेतु, यश प्राप्ति एवं पराक्रम वृद्धि हेतु

1. स्फटिक माला डॉयमण्ड कटिंग वाली गले में धारण करें। इसे आकर्षण मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित करके पहनें तो शीघ्र प्रभाव होगा।
2. तृतीयेश बुध का रत्न पन्ना कनिष्टिका अंगुली में सवा छः रत्ती का धारण करें। कर्क लग्न में बुध दो अशुभ भावों तृतीय एवं द्वादश का स्वामी होता है। अतः यह रत्न सुवर्ण धातु में पहनना चाहिए चांदी में नहीं।
3. यदि कुण्डली में शुक्र की स्थिति अच्छी हो तो पन्ने के साथ हीरा या जिरकॉन भी समान वजन के पहन सकते हैं।
4. भगवती जगदम्बा को सौ सुगन्धित मालती के पुष्प 'चन्द्र कवच' को पढ़ते हुए चढ़ाएं।
5. जेब में सफेद रुमाल रखें।
6. चमेली या मालती का अत्तर या स्प्रे प्रति सोमवार काम में लिया करें।
7. सोमवार को जब भी घर से बाहर निकलें कांच में मुंह देखकर निकलें।

माता, मकान एवं घर में सुख शान्ति हेतु

1. आपकी कुण्डली की चतुर्थेश शुक्र का रत्न 'हीरा' या 'जिरकान' सवा पांच रत्ती, सवा चार रत्ती मोती के साथ 'बीसा यंत्र' में धारण करें तो माता के सुख, मकान के सुख, नौकर-चाकर के सुख, वाहन के सुख में अकल्पनीय वृद्धि होगी।
2. चन्द्रमा के पौराणिक मंत्र का मोती की माला पर जप करें।
3. 28 सोमवार का नियमित व्रत करें।
4. दुर्गासप्तशती का पाठ वैदिक चन्द्रमा के मंत्रों से सम्पुष्टित करके हवन करें तो तीन माह के भीतर नए मकान की प्राप्ति होती है।
5. सवा चार रत्ती का मोतीयुक्त चन्द्रमा गले में धारण करें तो घर में कलह नहीं होगी।

सन्तान प्राप्ति हेतु

1. मूंगा सवा पांच रत्ती एवं मोती सवा पांच रत्ती दोनों रत्न शुद्ध सुवर्ण धातु में 'बीसा यंत्र' के साथ जड़वा कर मंत्रपूत करके गले में धारण करें।
2. प्रदोष व्रत के साथ शिवजी की विशिष्ट उपासना अनुष्ठान प्रारम्भ करें।
3. सन्तान गोपाल स्तोत्र का पाठ करें।
4. पंचमेश का रत्न मूंगा सवा आठ रत्ती का धारण करना चाहिए।

5. श्रावण शुक्ला पंचमी (नागपचमी) को व्रत रखना चाहिए। नाग की पूजा करनी चाहिए। दूध खीर का भोग लगाना चाहिए। इससे सर्प दोष, पितृ दोष एवं कालसर्पजनिक दोष की शान्ति होकर 'पुत्र रत्न' की प्राप्ति होती है।

नागपंचमी–श्रावण शुक्ल पचमी को नाग पचमी कहते हैं। इस दिन नागों की पूजा की जाती है। गरुड़ पुराण में ऐसा सुझाव दिया गया है कि नागपंचमी के दिन घर के दोनो बगल में नाग की मूर्ति खींचकर अनन्तर प्रमुख महानागों का पूजन किया जाए।

पचमी नागों की तिथि है, ज्योतिष के अनुसार पचमी तिथि के स्वामी नाग हैं। अर्थात् शेष आदि सर्पराजों का पूजन पचमी को होना चाहिए। सुगंधित पुष्प तथा दूध सर्पों को अति प्रिय है। गांवों में इसे 'नागचैया' भी कहते हैं। इस दिन ग्रामीण लड़कियां किसी जलाशय में गुडियों का विसर्जन करती है। ग्रामीण बच्चे तैरती हुई इन निर्जीव गुड़ियों को डंडे से खूब पीटते भी हैं। तत्पश्चात् बहन उन्हें रुपयों की भेंट तथा आशीर्वाद देती है।

कथा–प्राचीन दन्त-कथाओं से ज्ञात होता है कि किसी ब्राह्मण के सात पुत्रवधुएं थी। सावन मास लगते ही छः बहुएं तो भाई के साथ मायके चली गई, परन्तु अभागी सातवीं के कोई भाई ही न था कौन बुलाने आता? बेचारी ने अति दुखित होकर पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग को भाई रूप मे याद किया। करुणायुक्त, दीन वाणी को सुनकर शेष जी वृद्ध ब्राह्मण के रूप में आए, और उसे लिवाकर चल दिए। थोड़ी दूर रास्ता तय करने पर उन्होंने अपना असली रूप धारण कर लिया। कुल परम्परा में नागों के बहुत से बच्चों ने जन्म लिया। उस नाग बच्चों को सर्वत्र विचरण करते देख शेष नागरानी ने उस वधू को पीतल का एक दीपक दिया तथा बताया कि इसके प्रकाश से तुम अंधेरे में भी सब कुछ देख सकोगी। एक दिन अकस्मात् उसके हाथ से दीपक नाग टहलते हुए नाग बच्चों पर गिर गया। परिणामस्वरूप उन सबकी थोडी पूंछ कट गई।

यह घटना घटित होते ही कुछ समय बाद वह ससुराल भेज दी गई। जब अगला सावन आया तो वह वधू दीवाल पर नागदेवता को उरेह कर उसकी विधिवत् पूजा तथा मंगल कामना करने लगी। इधर क्रोधित नाग बालक माताओं से अपनी पूंछ काटने का आदिकारण इस वधू को मारकर बदला चुकाने के लिए आए थे, लेकिन अपनी ही पूजा में श्रद्धावनत देखकर वे सब प्रसन्न हुए और उनका क्रोध समाप्त हो गया बहन स्वरूपा उस वधू के हाथ से प्रसाद रूप में उन लोगों ने दूध तथा चावल भी खाया। नागों ने उसे सर्पकुल से निर्भय होने का वर तथा उपहार में मणियों की माला दी। उन्होंने यह भी बताया कि श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पचमी को हमें भाई रूप में जो पूजेगा उसकी हम रक्षा करते रहेंगे।

6. श्रावण शुक्ला एकादशी एवं पौष शुक्ला एकादशी पुत्रदा एकादशी कहलाती है। इस दिन विष्णु भगवान की पूजन कर व्रत रखने से 'पुत्र रत्न' की प्राप्ति होती है।

पुत्रदा एकादशी–यह एकादशी सावन शुक्ल पक्ष में 'पुत्रदा एकादशी' के नाम से मनाई जाती है। इस दिन भगवान विष्णु के नाम पर व्रत रख कर पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन कराके दान देकर आशीर्वाद लेना चाहिये। सारा दिन भगवान के वंदन, कीर्तन में बिताएं तथा रात्रि में भगवान की मूर्ति के पास ही सोना चाहिए। इस व्रत को रखने वाले निःसंतान व्यक्ति को पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है।

कथा–प्राचीन समय में महिष्मती नगरी में महीजित नामक राजा राज्य करते थे। अत्यन्त धर्मात्मा, शान्ति प्रिय तथा दानी होने पर भी उनके कोई संतान नहीं थी। इसी से राजा अत्यन्त दुःखी थे। एक बार राजा ने अपने राज्य के समस्त ऋषियों को बुलाया तथा संतान प्राप्ति का उपाय पूछा। इस पर परम ज्ञानी लोमश ऋषि ने बताया कि आपने पिछले सावन मास की एकादशी को अपने तालाब से प्यासी गाय को पानी पीने से हटा दिया था। उसी के शाप से आपके कोई संतान नहीं हो रही है। इसलिए आप सावन माह को पुत्रदा एकादशी का नियमपूर्वक व्रत रखिए तथा रात्रि जागरण कीजिये, पुत्र अवश्य प्राप्त होगा। ऋषि के आज्ञानुसार राजा सहित एकादशी व्रत रहा और पुत्ररत्न प्राप्त हुआ।

7. कार्तिक शुक्ला एकादशी को तुलसी विवाह करने से भी व्यक्ति को उत्तम संतति की प्राप्ति होती है।
8. हरिवंश पुराण की कथा का विधिपूर्वक श्रवण करने से भी उत्तम संतति की पुत्र प्राप्ति होती है। जिनके संतान होकर जीवित न रहती हो उन्हें आश्विन कृष्ण अष्टमी को जीवित पुत्रिका व्रत व कथा करनी चाहिए।
9. पुत्र सन्तान की प्राप्ति हेतु घर की स्त्रियों को 'शनिप्रदोष' का व्रत करना चाहिये

शनि त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सूत जी बोले–

'पुत्र कामना हेतु यदि, हो विचार शुभ शुद्ध।
शनि प्रदोष व्रत परायण, करे सुभक्त विशुद्ध॥'

कथा–प्राचीन समय की बात है। एक नगर सेठ धन-दौलत और वैभव से सम्पन्न था। वह अत्यन्त दयालु था। उसके यहा से कभी कोई भी खाली हाथ नहीं लौटता था। वह सभी को जी भरकर दान-दक्षिणा देता था। लेकिन दूसरों को सुखी देखने वाले सेठ और उसकी पत्नी स्वयं काफी दुःखी थे। दुःख का कारण था–उनके संतान का न होना। संतानहीनता के कारण दोनों घुले जा रहे थे। एकदिन उन्होंने तीर्थयात्रा पर जाने का निश्चय किया और अपने काम-काज सेवकों को सौंप कर चल पड़े। अभी वे नगर से बाहर ही निकले थे कि उन्हें एक विशाल वृक्ष के नीचे समाधि लगाए, एक तेजस्वी साधु दिखाई पड़े। दोनों ने सोचा कि साधु महाराज से आशीर्वाद लेकर आगे की यात्रा शुरू की जाए। पति पत्नी दोनों समाधिलीन साधु के सामने हाथ जोड़कर बैठ गए और उनकी समाधि टूटने की प्रतीक्षा करने लगे। सुबह से शाम फिर रात हो गई। लेकिन साधु की समाधि नहीं टूटी। मगर सेठ पति पत्नी धैर्यपूर्वक हाथ जोड़े पूर्ववत् बैठे रहे।

अतत: अगले दिन प्रात: काल साधु समाधि से उठे सेठ पति पत्नी को देख मन्द मन्द मुस्कराए और आशीर्वाद स्वरूप उाथ उठाकर बोले ''मैं तुम्हारे अंतर्मन की कथा भांप गया हू वत्स! मैं तुम्हारे धैर्य और भक्तिभाव से अत्यन्त प्रसन्न हूं। साधु ने संतान प्राप्ति के लिए उन्हें शनि प्रदोष व्रत करने की विधि समझाई और शकर भगवान की निम्न वन्दना बताई–

हे! रुद्रदेव शिव नमस्कार। शिव शंकर जगद्गुरु नमस्कार।
हे। नीलकंठ सुर नमस्कार। शशि मौलि चन्द्र सुख नमस्कार।
हे! उमाकान्त सुधि नमस्कार। उग्रत्व रूप मन नमस्कार।
ईशान ईश प्रभु नमस्कार। विश्वेश्वर प्रभु शिव नमस्कार।

तीर्थयात्रा के बाद दोनों वापस घर लौटे और नियमपूर्वक शनि प्रदोष व्रत करने लगे। कालान्तर में सेठ की पत्नी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। शनि प्रदोष व्रत के प्रभाव से उनके यहां छाया अधकार लुप्त हो गया। दोनों आनंदपूर्व रहने लगे।

गुप्त एवं प्रकट शत्रु नाश तथा मुकदमे में विजय के लिए–

1. नित्य चन्द्र कवच एवं चन्द्रमा के अठाईस नामों वाले स्रोत का पाठ करें।
2. बगुलामुखी का जाप दशांश हवन अनुष्ठान करें।
3. बगुलामुखी यंत्र गले में धारण करें।

इस यंत्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति अपने शत्रु को नष्ट करने में सक्षम व समर्थ हो जाता है। व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे कोई गुप्त शक्ति उसके साथ चल रही है। इस यंत्र को हर समय नहीं पहनना चाहिए। रात्रिकाल में गृहस्थ के समय इसको उतार लेना चाहिए इस यंत्र को पहनकर व्यक्ति कोर्ट में खड़ा हो जाए तो मन मे बगलामुखी यत्र का उच्चारण करता रहे तो प्रतिकूल मजिस्ट्रेट (न्यायाधीश) भी उसके खिलाफ फैसला नहीं दे सकता कहने का तात्पर्य यह है कि इसे पहन कर व्यक्ति यदि जलती आग मे भी कूद जाए एव शत्रुओं के बीच में भी घुस जाए तो उस का बाल बांका नही होता है, यह अनुभूत है
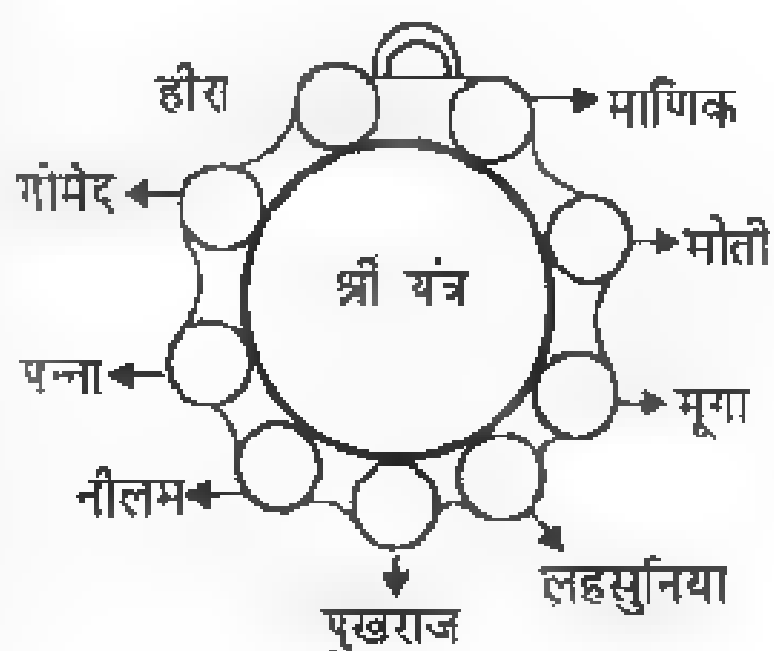
4. खोया हुआ राज्य पुन: प्राप्त हो जाए एव सभी शत्रु नष्ट हो जाए इसके लिए भाद्र शुक्ल एकादशी, परिवर्तनी एकादशी का व्रत व कथा करनी चाहिए

परिवर्तनी एकादशी—भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी को पद्मा एकादशी भी कहते हैं यह श्रीलक्ष्मी जी का परम आह्लादकारी व्रत है। इस दिन भगवान विष्णु क्षीर सागर में शेष शय्या पर शयन करते हुए करवट बदलते हैं। इसीलिए इसे करवटनी एकादशी भी कहा जाता है इस दिन लक्ष्मी पूजन करना श्रेष्ठ है, क्योंकि देवताओं ने अपने पुनः राज्य को पाने के लिए महालक्ष्मी का ही पूजन किया था।

5. चन्द्रमा कुण्डली में कमजोर हो, नीच का हो, पद्च्युत हो, तो चन्द्रमा को बलवान व प्रसन्न करने के लिए मार्गशीर्ष पूर्णिमा को व्रत एवं हवन करना चाहिए।
6. इसी प्रकार कोर्ट-कचहरी व मुकदमों में विजय प्राप्त करने के लिए माघ शुक्ला एकादशी 'विजया एकादशी' का व्रत रखकर हवन करना चाहिए।

विजया एकादशी—यह व्रत फाल्गुन कृष्ण पक्ष एकादशी को किया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने से अत्यन्त पुण्य होता है। पूजन में धूप, दीप, नैवेद्य, नारियल आदि चढ़ाया जाता है।

सप्त अन्न युक्त घट स्थापन किया जाता है। जिसके ऊपर विष्णु की मूर्ति रखी जाती है। इस तिथि को 24 घंटे कीर्तन करके दिन-रात बिताना चाहिये। द्वादशी के दिन अन्न भरा घड़ा ब्राह्मण को दिया जाता है। इस व्रत को प्रभाव से दुःख दारिद्रय दूर हो जाते हैं, समग्र कार्य में विजय प्राप्त होती है। इसकी कथा भगवान राम की लंका विजय से सम्बन्धित है।

7. शत्रुनाश हेतु घर के स्त्री पुरुषो को 'शुक्र प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

शीघ्र विवाह, सुयोग्य सुन्दर जीवन साथी की प्राप्ति एवं दाम्पत्य सुख में वृद्धि हेतु

1. आपकी कुण्डली में शनि सप्तमेश है अतः जीवन साथी की प्राप्ति हेतु शनि का रत्न 'नीलम' अभिमंत्रित करके नीले रंग के रुमाल के साथ दो माह तक जेब मे रखें। शनि की वस्तुओं का दान करें। कर्क लग्न वालों को नीलम तो भूल कर भी नहीं पहनना चाहिए क्योंकि वह सप्तम (मारक स्थान) और अष्टम (दुःख स्थान) का स्वामी होने के कारण अशुभ है।
2. ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को बट् सावित्री पूजन, कथा करने से सुहागिन स्त्रिओं के पति को दीर्घायु की प्राप्ति होती है।
3. श्रावण मास में जितने भी मगलवार आते हैं उनका व्रत मंगलागौरी व्रत कहलाता है यह प्रायः सुहागिन स्त्रिया अपने पति की दीर्घायु के लिए करती है। यदि कंवारी कन्या भी करें तो उत्तम पति की प्राप्ति होती है।
4. भाद्रशुक्ल तीज हरितालिका तीज कहलाती है। इस दिन उपवास रखने पर पति प्रसन्न हो जाता है। पति पत्नी के मध्य प्रेम बढ़ जाता है।

5. कार्तिक कृष्ण चतुर्थी करवा चौथ का व्रत करने से पति की आयु बढ़ती है। यह व्रत विवाहित स्त्री के लिए है।
6. माघ शुक्ल एकादशी 'जया एकादशी' का व्रत रखने पर गुस्सैल पत्नी भी अनुकूल हो जाती है यह व्रत केवल पुरुषों के लिए है।

जया एकादशी—यह व्रत माघ शुक्ल पक्ष एकादशी को किया जाता है। इस तिथि को भगवान केशव (कृष्ण) को पुष्प, जल, अक्षत, रोली तथा विशिष्ट सुगंधित पदार्थों से पूजन करके आरती उतारनी चाहिए। भगवान को भोग लगाये गए प्रसाद को भक्त स्वयं खाये।

कथा—एक समय की बात है इन्द्र की सभा में एक गंधर्व गीत गा रहा था, परन्तु उसका मन अपनी नवयौवाना सुन्दरी में आसक्त था। अतएव स्वर-लय भंग हो रहा था। यह लीला इन्द्र को बहुत बुरी तरह खटकी, तब उन्होंने क्रोधित होकर कहा—हे दुष्ट गंधर्व, तू जिसकी याद में मस्त है वह राक्षसी हो जाएगी। यह शाप सुनकर वह बहुत घबराया और इन्द्र से क्षमा याचना करने लगा। इन्द्र के कुछ न बोलने पर वह घर चला आया, यहां आकर देखने पर उसकी पत्नी सचमुच पिशाचिनी रूप में मिली। शाप निवृत्ति के लिए उसने करोड़ों यत्न किए, परन्तु सब असफल रहे तब हार कर बैठ गया। अकस्मात एक दिन उसका साक्षात्कार ऋषि नारद से हो गया। तब उन्होंने दुःख का कारण पूछा। गंधर्व ने सब बातें यथावत् बता दीं। यह सुनकर नारद ने माघ शुक्ल पक्ष की जया-एकादशी का व्रत तथा भगवत कीर्तन करने को कहा। गंधर्व ने एकादशी का व्रत किया जिसके प्रभाव से उसकी पत्नी अत्यन्त सौन्दर्यशाली हो गई।

7. पति-पत्नी में मनमुटाव हो जाए, तलाक की नौबत आ जाए तो कार्तिक कृष्ण एकादशी 'रम्भ एकादशी' का व्रत रखने से दोनों में प्रेम हो जाएगा।
8. सौभाग्य एवं स्त्री की समृद्धि हेतु पुरुष जातक को 'शुक्र प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

नौकरी प्राप्ति, व्यापार-व्यवसाय में उन्नति एवं शीघ्र भाग्योदय हेतु

1. भाग्योदय हेतु मूंगा सवा पांच रत्ती एवं भाग्येश गुरु का रत्न 'पुखराज' सवा पांच रत्ती का पैण्डल सुवर्ण धातु में 'बीसा यंत्र' के साथ बनवाकर गले में पहनना चाहिए।

बीसा यंत्र

चादी ← ○ ○ → मूंगा

बीसा यंत्र में यह दोनों रत्न गजकेसरी योग को प्रबल पुष्ट करते हैं। जिन लोगों को परिश्रम करने पर भी मेहनत का बराबर फल नहीं मिलता जिनका प्रमोशन पदोन्नति नहीं हो रहा हो, अथवा जिनको अपने राजनैतिक व सामाजिक महत्त्व का पूरा लाभ नहीं मिल रहा हो, उनको यह यंत्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह हमारा अद्भुत प्रयोग है कि इस यंत्र को धारण करने से व्यक्ति का प्रभाव पराक्रम, प्रभुत्व बढ़ जाता है ऐसा व्यक्ति दूसरों को

शीघ्र प्रभावित करके अपना कार्य दूसरों से निकलवाने में सक्षम व समर्थ हो जाता है। महत्वाकांक्षी लोगों के लिए यह यंत्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है जो ताकत की कार्यकुशलता को कई गुना बढ़ा देता है।

2. चाहें तो उपरोक्त संयुक्त रत्नों को अंगूठी भी तर्जनी या अनामिका अंगुली में धारण कर सकते हैं।
3. मूंगा सवा चार रत्ती, पुखराज सवा चार रत्ती, मोती सवा चार रत्ती इन तीनों रत्नों को त्रिलौह धातु या शुद्ध सुवर्ण में लॉकेट बनाकर मंत्रपूरित करके पहले तो मार्ग रुकावट दूर होकर शीघ्र भाग्योदय होगा।
4. चार श्वेत पुष्प प्रति सोमवार एवं पूर्णिमा को कुएं या बहते पानी में प्रवाहित करें। ऐसा 28 बार करने से कई बार अचानक भाग्योदय हो जाता है।
5. चांदी के बर्तनों में भोजन करें, जल पियें।
6. प्रत्येक सोमवार को बिल्व वृक्ष में दूध चढ़ावें।
7. नवरत्न जड़ित स्पेशल पावरफुल 'श्रीयंत्र' सुवर्ण में धारण करें.

पिता सुख, राज्य व व्यापार में तरक्की हेतु

1. नित्य शिवजी का पूजा करें। शिवरात्रि का व्रत एवं जागरण रखें।

महाशिवरात्रि व्रत—फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्दशी को शिवरात्रि का महोत्सव मनाया जाता है। त्रयोदशी को एक बार भोजन करके चतुर्दशी को दिन भर अन्न ग्रहण करना नहीं चाहिए। काले तिलों से स्नान करके रात्रि में विधिवत् शिव पूजन करना चाहिए। शिव पूजन विधान से बेलपत्र सबसे प्रमुख है। शिवजी पर पका आम चढ़ाने से विशेष फल प्राप्त होता है। शिवलिंग पर चढ़ाए गए पुष्प, फल तथा जल को नहीं ग्रहण करना चाहिए

2. अमरनाथ की यात्रा अथवा द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा करें।
3. घर की छत के नीचे कुआं या हैण्ड पम्प न लगाना।
4. चन्द्र दोष पीड़ित व्यक्ति को प्रदोष व्रत एव श्रावण के सोमवार को रुद्राभिषेक शिव पूजन अवश्य करना चाहिए।
5. पंचमुखी रुद्राक्ष को पूजा स्थान पर रखकर नियमित पूजन करें।
6. 'ॐ नमः शिवाय' पंचाक्षर मंत्र की माला का नित्य जाप करें।

भागीदारी एवं मित्रों से लाभ प्राप्ति हेतु

1. सोलह सोमवार की कथा करें
2. चावल, चांदी, दूध का दान छोटे-बच्चों को करें।
3. सवा चार रत्ती सच्चे मोती की अंगूठी चांदी में बनवाकर अभिमंत्रित करके पहनें।

4. ग्यारह ब्राह्मणों से दुग्ध भांग मिश्रित रुद्राभिषेक करवा कर, ब्राह्मणों को खीर का भोजन कराएं।
5. शिव चालीसा का नियमित पाठ करें

मानसिक तनाव कम करने, आत्मबल में वृद्धि एवं सुखपूर्वक नींद प्राप्त करने हेतु–

1. शुद्ध, सच्चे एवं गोल मोतियों की माला गले में धारण करें।
2. माला यदि मंत्रों द्वारा प्राणप्रतिष्ठित–अभिमंत्रित करके पहनें तो ज्यादा लाभ होगा।
3. चांदी की चार कीलें पलंग के सिरहाने वाले पाए पर लगाएं।
4. शयन करने के पूर्व हाथ-पांव धोकर 'रात्रि सूक्त' का पाठ करें
5. शयनकक्ष में ऊटपटांग चित्र, डरावने फोटो, मूर्तियां, लाल रंग की बत्ती वगैरा नहीं होनी चाहिए
6. तनाव रहित जीवन जीने हेतु, सर्वकामना सिद्धि हेतु घर के स्त्री–पुरुषों को 'बुध प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सुत जी आगे बोले 'बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत से सर्व कामनाएं पूर्ण होती हैं। इस व्रत में हरी वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए। शंकर भगवान की आराधना धूप, बेल पत्रादि से करनी चाहिए।'

व्रत कथा–एक पुरुष का नया नया विवाह हुआ। विवाह के दो दिनों बाद उसकी पत्नी मायके चली गई। कुछ दिनों बाद वह पुरुष पत्नी को लेने उसके यहां गया। बुधवार को जब वह पत्नी के साथ लौटने लगा तो ससुराल पक्ष ने उसे रोकने का प्रयत्न किया कि विदाई के लिए बुधवार शुभ नहीं होता। लेकिन वह नहीं माना और पत्नी के साथ चल पड़ा। नगर के बाहर पहुंचने पर पत्नी को प्यास लगी। पुरुष लोटा लेकर पानी की तलाश में चल पड़ा। पत्नी एक पेड़ के नीचे बैठ गई। थोड़ी देर बाद पुरुष पानी लेकर वापस लौटा, उसने देखा कि उसकी पत्नी किसी के साथ हंस-हंसकर बातें कर रही है और उसके लोटे से पानी पी रही है। उसको क्रोध आ गया। वह निकट पहुंचा तो उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। उस आदमी की सूरत उसी की भांति थी। पत्नी भी सोच में पड़ गई। दोनों पुरुष झगड़ने लगे। भीड़ इकट्ठी हो गई। सिपाही आ गए। हमशक्ल आदमियों को देख वे भी आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने स्त्री से पूछा–'उसका पति कौन है?' वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। तब वह पुरुष शंकर भगवान से प्रार्थना करने लगा– हे भगवान हमारी रक्षा करें। मुझसे बड़ी भूल हुई कि मैंने सास श्वसुर की बात नहीं मानी और बुधवार को पत्नी को विदा कर लाया। लोकोक्ति भी प्रचलित है 'बुध बेटी कभी न भेटी', मैं भविष्य में ऐसा कदापि नहीं करूंगा। जैसे ही उसकी प्रार्थना पूरी

हुई, दूसरा पुरुष अंतर्धान हो गया। पति-पत्नी सकुशल अपने घर पहुंच गए। उस दिन के बाद से पति-पत्नी नियमपूर्वक बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत रखने लगे और सुखपूर्वक रहने लगे।

आह्वान–

ऋषिभिः स्तूयमानं च भौममावहयाम्यहम्।। 1।।
उज्जयिन्यां समुत्पन्नो भोभो भौमश्चतुर्भुजः।
भारद्वाजकुले जातः शूलशक्तिगदाधारः।। 2।।
वरदो मेषमारूढः स्कन्दप्रावृड्तडित्प्रभो।
स्योना पृथ्वीति मन्त्रेण दलेयाम्ये प्रतिष्ठितः।। 3।।
ॐ स्योनापृथिवीनोभवान्नृक्षरानिवेशनी–
पुच्छानः शर्म्मसप्रथाः।। 4।।
दक्षिणे भौमं स्थापयामि–

धूमकेतु नामाग्नि, समिधा, और (खदिर), फल-सुपारी मंगल यंत्र की स्थापना करें।

मंगल ग्रह की प्रतिष्ठा का वैदिक मन्त्र

ॐ अग्निमूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।
अपाः रेताः सिंजिन्वति।।

तान्त्रिक मन्त्र

ॐ क्रॉं क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।

मंगल अरिष्ट नाशन के विविध उपाय

1. मगलकृत अरिष्ट निवारणार्थ मंगल व्रत सहित मंगल मन्त्र का विधिवत अनुष्ठान करना चाहिए।
2. समर्थ गुरु के निर्देशन में भैरव (विशेष रूप से आयु वृद्धारक बटुक भैरव) मन्त्र का प्रयोग पापक्रान्त या नीच राशिस्थ भौम के लिए अयोग्य है।
3. सिंह और धनु राशिस्थ मंगल के लिए कार्तिकेय एवं द्विस्वभाव (3, 6, 12) राशिस्थ मंगल के लिए चामुण्डा की उपासना करनी चाहिए।
4. संयमी और शुद्ध चरित्र का व्यक्ति हनुमान जी की भी साधना कर सकता है।
5. मंगल की दशान्तर्दशा में आचार्य शंकर कृत सुब्रह्मण्यम भुजंग स्तोत्र या कार्तिकेय स्तोत्र का पाठ एवं कुमार कार्तिकेय की पूजा लाभदायक रहती है। इसके साथ 11 प्रदोष तिथियों में रुद्राभिषेक करना चाहिए।
6. शत्रुबाधा अथवा अभिचार पीड़ा में भगवती प्रत्यंगिरा अथवा पीताम्बरा के पंचांग का प्रयोग करना चाहिए।
7. वंश वृद्धि के लिए मंगल यंत्र को प्राण प्रतिष्ठित कर उसका विधिवत जप और पूजन करें।
8. ऋण और धान नाश की स्थिति में ऋण मोचन अंगारक स्तोत्र एवं वाल्मीकि रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ लाभदायक रहता है।
9. कन्याओं के मगली दोष में श्रीमद् भागवत के अठाहरवें अध्याय के नवम श्लोक का जप करें।
10. रक्त पुष्पों से मगल की पूजा 'तब जनक पाय वशिष्ठ आयसु हंकारि के' इस सम्पुट के साथ तुलसी रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ, गौरी पूजन सहित अभीष्ट प्रद है।
11. मगल यंत्र अथवा कवच और निर्दोष गूगा धारण करना एवं यथा शक्ति दान भी हितकारी सिद्ध होता है।
12. सामान्य मगल पीड़ा बजरग बाण एवं हनुमान जी के मंदिर में दीपदान से भी दूर होती है।
13. लक्ष्मी स्तोत्र, देवी कवच, गणपति स्तोत्र अथवा मोचन स्तोत्र में से किसी भी एक का नियमित वाचन करें।
14. 21 मंगलवार, 21 संकटीव्रत तथा 21 विनायकी व्रत करें।
15. ताम्रपात्र से जल पीए।

16. मसूर की दाल तथा गुड़ अवश्य ही मंगलवार को ग्रहण करें।
17. श्री गणेश जी के दर्शन करें।
18. देवी भगवत का पाठन अथवा श्रवण करें।
19. लाल पुष्पों को जल में प्रवाहित करें।
20. तुलसी पत्र का भक्षण करें। कालीमिर्च भी खाएं।
21. तुलसी के पौधों में जल चढ़ाएं।
22. मंगल के होरा में निर्जल रहें।
23. वृष या तुला लग्न मे मंगल छठे, आठवें, बारहवें हो या कुण्डली मंगलीक हो तो भावी वैवाहिक जीवन की मंगल कामना के लिए, विवाह समय दो बराबर वजन के मूंगे लें। फिर संकल्पपूर्वक एक मूंगा पानी मे बहा दें तथा दूसरा मूंगा अपने पास रखें। जब तक यह मूंगा व्यक्ति के पास रहेगा। उसको मंगल का अशुभ प्रभाव स्पर्श नहीं करेगा तथा उसका वैवाहिक जीवन पूर्णतः सुखी रहेगा.
24. मंगलवार का नियमित 28 बार व्रत रखना। ध्यान रहे बीच में नियम टूटने पर पुनः 28 मंगलवार करने पड़ेगें। कार्य सिद्ध होने पर मंगल का उद्यापन अनिवार्य है।
25. महागायत्री का पाठ करना, हनुमान जी को सिन्दूर लगाना। एवं खुद भी हनुमान जी के पैरों में रखे हुए सिन्दूर को लगाएं।
26. दाल मसूर, मूंगा, शहद या सिन्दूर आदि का दान देना या जल प्रवाह करना चाहिए।
27. खाने के बाद मेहमानों को मीठा (सौंफ चीनी या मिश्री) खिलाना चाहिए।
28. मंगल (अशुभ हो तो) रेवड़ियां (गुड़+तिल) जल प्रवाह करनी चाहिए।
29. मंगल (शुभ हो तो) मिठाई मीठा भोजन का दान या पताशे चलते पानी में बहाएं।
30. मूंगा (लाल) धारण करें, मूंगे के आभाव में तांबा धारण करें।
31. भाई की सेवा करना।
32. मृगशाला (हिरण की खाल) पर सोएं।
33. जौ (अनाज) गऊ पेशाब से धोकर लाल कपड़े में बांधा कर रखें।
34. लाल वस्त्र धारण करना या लाल रुमाल पास रखें।
35. चांदी खालस धारण करना।
36. ढेक, काना, काला, गंजा, निःसन्तान से दूर रहें।
37. मंगल उच्च हो तो उसकी चीजों का दान न दें।
38. मंगल नीच या अशुभ हो तो उसकी चीजों का दान न लें। उपरोक्त उपाय 8, 11 या 43 दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।
39. मंगल को शक्तिशाली बनाने के लिये "मंगलयन्त्र" धारण करें।
40. जिसको सुयोग्य जीवन साथी की अभिलाषा हो वे "मंगलयन्त्र" धारण करके 28 मंगलवार का व्रत रखें निश्चय लाभ होगा।
41. निवृत्ति की इच्छा के साथ जन्म जातक को धनसंग्रह की कामना हो तो "मंगलयन्त्र" में मूंगे के साथ मोती लगाए तो लक्ष्मीदेवी की कृपा हो जाएगी।

42. कर्जा अधिक बढ़ गया है, उतर नहीं रहा हो तो "ऋणमोचन मंगल स्तोत्र" का नियमित पाठ करें।
43. मंगल पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु बेलफल, जटामासी, मुसली, बदुलचदन, बला, लाख पुष्प एव हिंगलू मिला कर 8 मंगलवार तक स्नान करें।
44. यदि सन्तान प्रतिबन्धक ग्रह मंगल हो तो ग्रामदेवता, भगवान कार्तिक स्वामी, अथवा भाई कुटम्बीजनों के शाप के कारण जातक को सन्तान सुख नहीं होता। ऐसे में मंगल के वेदोक्त मन्त्र का दस हजार जप करना चाहिए। मंगल सम्बन्धी वस्तुओं का दान करते हुए, मंगलवार का नियमित व्रत रखना चाहिए।
45. हरिवंश पुराण के अनुसार ऐसे जातक को महारुद्र या अतिरुद्र यज्ञ कराना चाहिए।
46. बाधक मंगल यदि गुणों से युक्त हो तो कुछ पताशे लेकर बहती नदी में डाले। श्रेष्ठफल देगा।
47. मंगल का अनिष्ट फल समाप्त करने हेतु मृगचर्म का आसन नित्य प्रयोग में लाएं।
48. मीठी रोटियां गरीबों में बाटें।
49. यवों को दूधा में धोकर, चलते पानी में बहाएं।
50. यदि जातक की कुण्डली में मंगल चौथे स्थान में हो, कुण्डली में "मंगलीक दोष" हो, माता, सास व दादी का स्वास्थ्य चिन्ता का विषय हो, घर में अशान्ति, आर्थिक नुकसान रहता हो, वैवाहिक चिन्ता रहती हो तो जातक सुबह उठते ही नित्य कुएं के जल से दांतुन किया करें।
51. मीठे दूध, बड़ की जड़ व जमीन की मिट्टी से मिश्रित तिलक को ललाट पर लगाएं ऐसा करने से पेट की बीमारी को शीघ्र आराम मिलेगा।
52. यदि अग्निभय रहता हो तो शक्कर की बोरी छत पर डाल दे तथा छत के सबसे ऊपरी हिस्से पर कुछ शक्कर डाल दें।
53. यदि बीमारी की वजह से संतान व पत्नी के आयु का भय हो तो एक बर्तन में शहद डालकर शमशान घाट पहुंचा दे।
54. लम्बी बीमारी से बचने के लिए मृगचर्म अधिक से अधिक काम में लें तथा घर के दक्षिण द्वार की ओर लोहे के नाखून लटका दें या रख दें।
55. यदि मंगल आठवें स्थान में हो, जातक शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा लम्बी बीमारी भुगत रहा हो तो मीठी रोटियां अथवा पराठे में मास डालकर (लाल) कुत्तों को खिलाना चाहिए।
56. यदि पापी मंगल एकादश स्थान मे हो, तीसरा घर खाली हो तो, जातक को पैतृक सम्पति नुकसानदायक साबित होती है, कर्जदार जिन्दगी बीतती है। ऐसे जातक को घर मे कुत्ता पालना लाभदायक रहता है।
57. मंगल द्वादश में हो, बुध 3, 8, 9, व 12 हो, तो जातक को द्वादश मंगल के दुष्परिणाम अवश्य भुगतने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति मे दूध मे शहद डालकर दान करना चाहिए। कुत्तो को मीठी रोटी तथा हनुमान के मन्दिर मे बताशे चढ़ाने चाहिए।

दृष्टांत कुण्डलियां

देवाधिदेव भगवान शंकर जी

गुरु श्री गोविन्द सिंह जी

श्री रामानुजाचार्य

सिकन्दरे-आजम

जन्म 22.9.356 BC, रात्रि 10.00 बजे, मेसडोनिया का राजा विश्व विजेता सिकन्दर ने, थेबन, परसिया, साईरा, इजिप्त, मिस्र, फोनेसिया इत्यादि देशों को जीता। फिर भारत आया और 326 BC में इसकी भारत से लौटते वक्त मृत्यु हुई, इसकी कब्र बेबीलोन में रखी गई।

सरदार वल्लभभाई पटेल (लौहपुरुष)

जन्म 31.10.1875 समय 17.25 बजे, भारत के प्रथम गृहमंत्री

श्री चन्द्रबाबू नायडू

मुख्यमंत्री तमिलनाडु, प्रधानमंत्री के दावेदार, जन्म 27.4.1951, समय 6.30 बजे प्रातः।

सुभाषचन्द्र बोस

जय हिन्द फौज के निर्माता, भारत को आजादी दिलाने वाले महान क्रान्तिकारी वीर पुरुष एवं राजनीतिज्ञ, मृत्यु रहस्यमय। जन्म 23.1.1897, 12.00 बजे दोपहर, जन्म-उड़ीसा।

अभिनेता अशोक कुमार

फिल्मी दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति एवं लम्बी आयु वाले व्यक्ति। जन्म 13.10.1911, समय 20.00 बजे, जन्म स्थल-भागलपुर, मृत्यु-दिसम्बर 2001।

महाराजा कंस
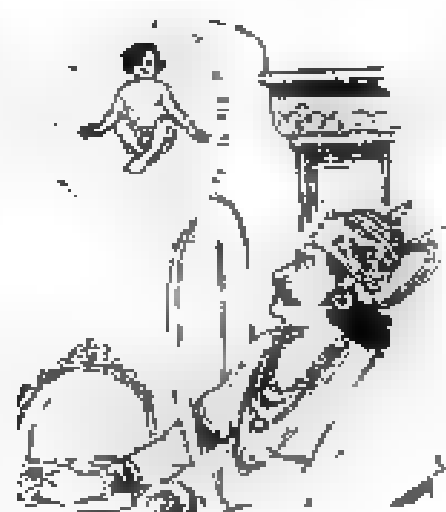
जैक्वस शिराक

2   1   12
11 रा.
3
4   10 श.
म. 5 बृ. के.   शु. 7   9 चं.
6   8 सू. बु.

फ्रांस के भूतपूर्व प्रधानमंत्री, जन्म पेरिस, 29.11.1932, समय 16.00।

महाराजा त्रावनकोर

2 के.   1 सू. बु.   12
11
3 शु.   4 गु.   10 म.
चं. 7
5   9 श.
6   8 रा.

बहुत धनी महाराजा थे।

महारानी विक्टोरिया

चं. 2 सू.   1 बु.   श. मं 12 रा. शु.
1
3   4   10 गु.
5   7   9
6 के.   8

इंग्लैण्ड की प्रथम ब्रिटिश शासिका जन्म 24.5.1819 समय 4.15 बजे प्रात: मृत्यु 22.1.1901 समय 8.30 बजे रात्रि, जिसके राज्य में ब्रिटिश का सूर्य कभी अस्त नहीं हुआ

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर
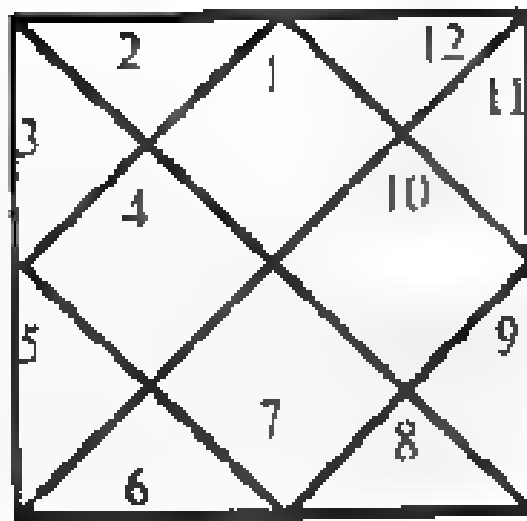
जार्ज फर्नांडीस
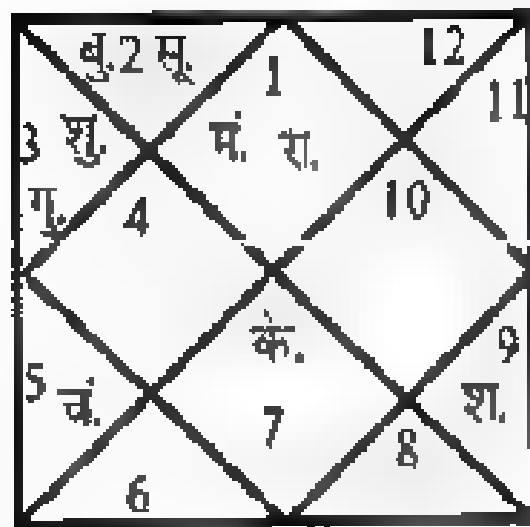
भारत के रक्षामंत्री, जन्म 3.6.1930, प्रातः 4.30 बजे, मैंगलोर (मैसूर) में।

कांशीराम
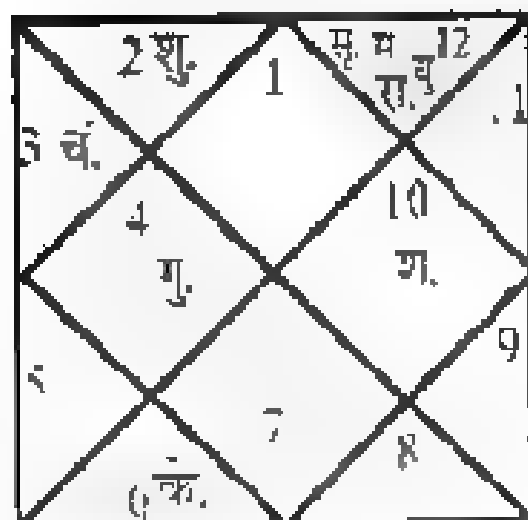
दलित नेता मुख्यमंत्री मायावती के गॉडफादर, जन्म 12.4.1932 प्रातः 7.30 बजे, जन्मभूमि- अबोहर (पंजाब)।

के.पी.एस. गिल

2	1	12
3		11
4 के.		10 श. रा.
5	गु. 7	9 बु. शु. सू.
6 चं. मं.		8

डायरेक्टर जनरल पुलिस (पंजाब), जन्म-लाहौर, 29.12.1934, समय 14.00 आंतकवादियों के शत्रु, जिसने पंजाब को आंतकवाद से मुक्त कराया।

लालू प्रसाद यादव

2 सू.	1 रा.	12
3 बु. शु.		11
4 चं. श.		10
5 मं.	के. 7	9 गु.
6		8

बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री जन्मभूमि फुलवरिया (बिहार) 11.6.1948, समय प्रात 4.00 बजे

गुलजारी लाल नन्दा

2	1 मं.	12
3 बु. सू. के.		11
4 श. शु.		10
5	7	9 रा. चं.
6 गु.		8

भूतपूर्व उपप्रधानमंत्री भारत

श्री चन्द्रशेखर पूर्व प्रधानमंत्री
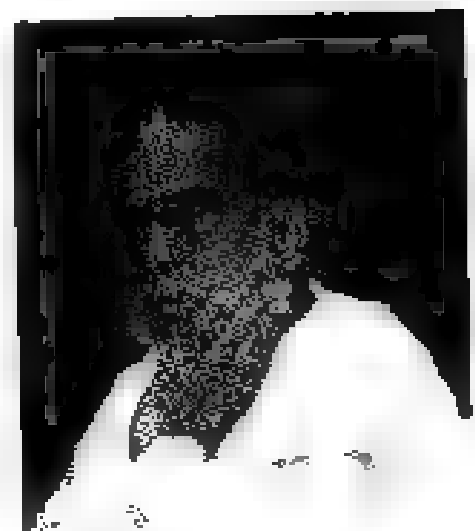
भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री, जन्मभूमि-गाजीपुर (उत्तरप्रदेश) जन्म 17.4.1927, समय प्रात 6.15 बजे।

अभिनेत्री हेमामालिनी

भारत के रक्षामंत्री, जन्म 3.6.1930, प्रात: 4.30 बजे, मैंगलोर (मैसूर) में।

अभिनेत्री रीनाराय

दलित नेता मुख्यमंत्री मायावती के गॉडफादर जन्म 12.4.1932 प्रात: 7.30 बजे, जन्मभूमि अबोहर (पंजाब)।

अभिनेता दिलीप कुमार

पूर्णकालसर्पयोग।

अभिनेत्री डिम्पल कापड़िया

अभिनेत्री स्मिता पाटिल

अल्पआयु का अनुपम उदाहरण जन्म 7.10.1935, साय 16.45, मृत्यु 1986, पूर्ण कालसर्पयोग।

गोविन्दा

जन्म स्थान मुम्बई, जन्म- 21.12.1963 समय-14.00 रात्रि।

श्री जहीर खान

जन्म स्थान-श्रीराम पुर, जन्म- 7.10.1978, जिला अहमदनगर (महाराष्ट्र), समय 12.00 रात्रि।

अभिषेक बच्चन

जन्म स्थान-मुम्बई, जन्म 5.12.1976, समय-12.00 रात्रि।

श्री अजय जाडेजा

भाव	ग्रह
1	चं. श.
2	
3	
4	
5	के.
6	
7	
8	गु. मं.
9	शु. बु.
10	सू.
11	रा.
12	

श्री आर.पी. गोयनका

भाव	ग्रह
1	
2	गु.
3	रा.
4	
5	
6	
7	के.
8	
9	श.
10	बु. मं.
11	सू. च. शु.
12	
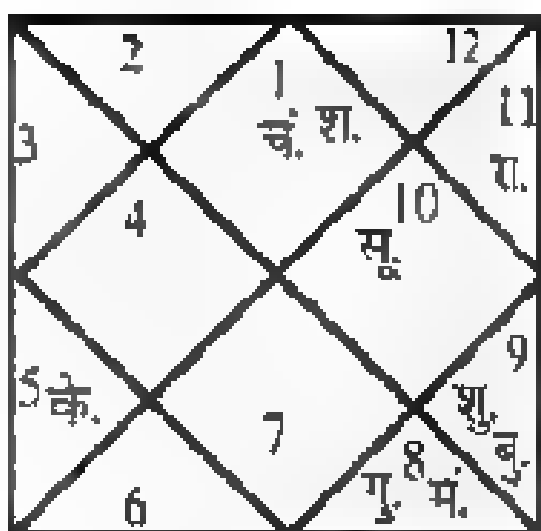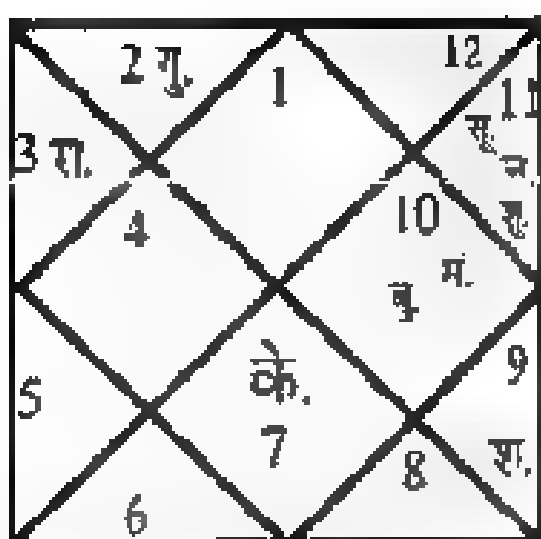
धनाढ्य व्यक्ति, 1.3.1930 समय-8.45 प्रातः।

श्री हीरालाल देवपुरा

भाव	ग्रह
1	
2	
3	
4	चं. रा.
5	
6	बु. सू. मं.
7	श.
8	शु.
9	गु.
10	के.
11	
12	
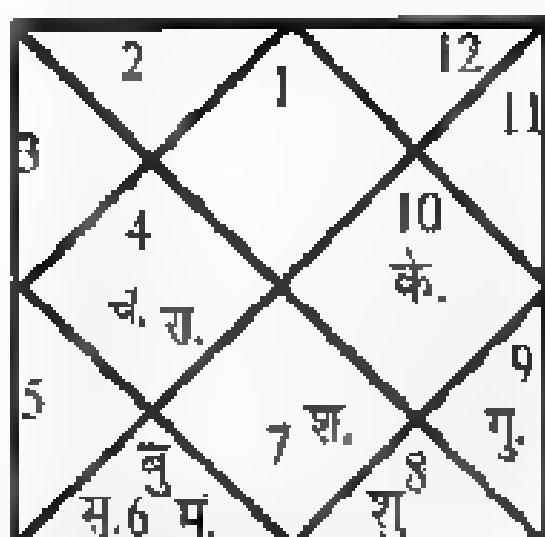
मुख्यमंत्री, राजस्थान सरकार।

श्री हरिदेव जोशी

भाव	ग्रह
1	
2	
3	
4	चं.
5	
6	रा. श. गु.
7	मं.
8	बु. शु.
9	सू.
10	
11	
12	के.
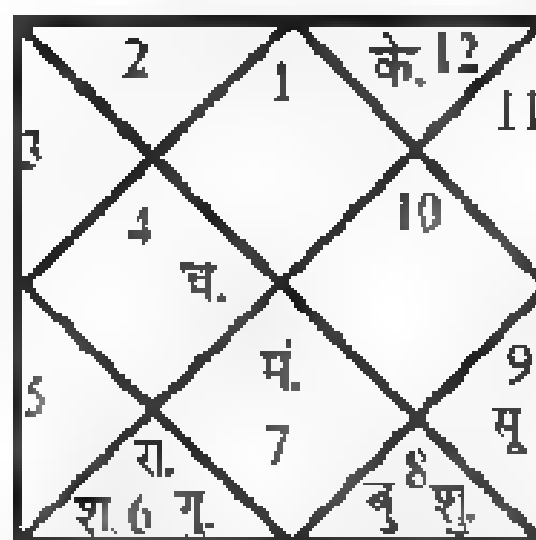
राजस्थान के मुख्यमंत्री, जन्म 17 दिसम्बर 1921, गाव खान्दू (बासवाण)

सम्राट पृथ्वीराज चौहान
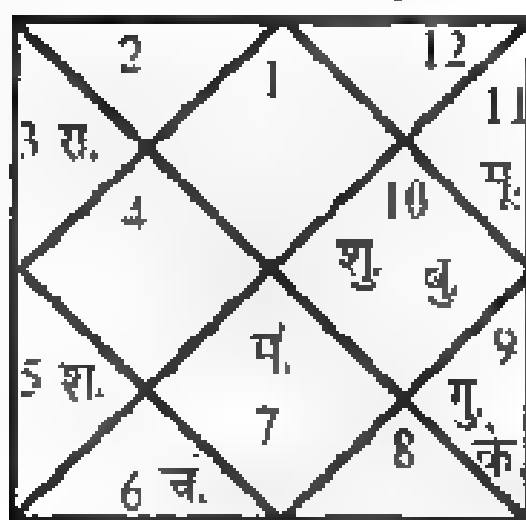
जनरल दिगाल (फ्रांस)
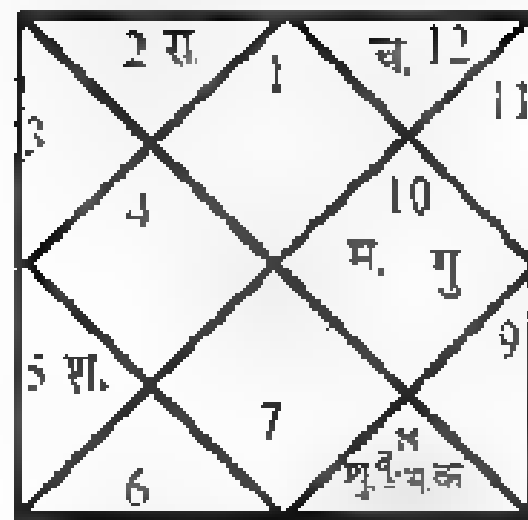
फ्रांस के राष्ट्रपति

राज्यपाल सम्पूर्णानन्द
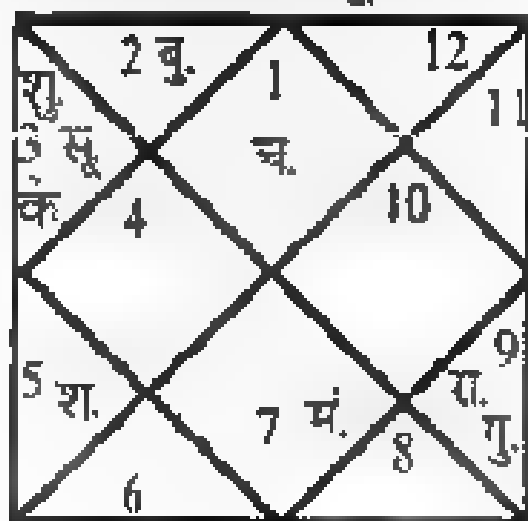
पाकिस्तान राष्ट्र की कुण्डली
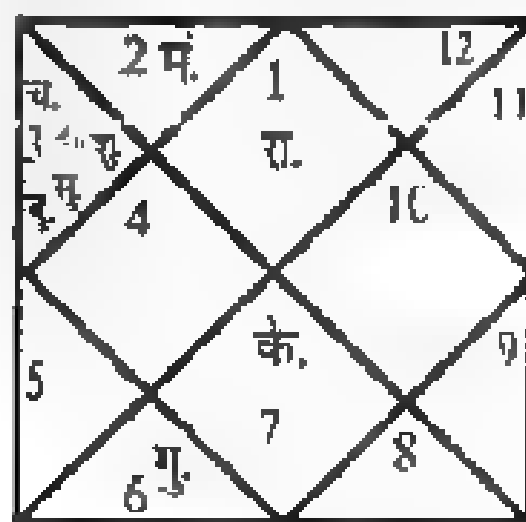
15.8.1947 समय 12.00 मध्यरात्रि, करांची, भारत की कुण्डली वृषभ स्थिर लग्न की है। पाकिस्तान की कुण्डली मेष लड़ाकू लग्न की कुण्डली है।

❑❑❑

वृषभ लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है कई बार विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित जी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते है अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग अलग पस्तुकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके

सबसे पहले हम **'कर्कलग्न'**, **'मेषलग्न'** की पुस्तक प्रकाशित की। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह **'वृषलग्न'** की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। वृषलग्न में भगवान श्रीकृष्ण महात्मा कबीर, विश्व कोकिला लता मंगेशकर, बर्नाड शॉ, मायावती, शत्रुघ्न जैसे व्यक्तित्व हुए हैं। वृषलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती सस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। वृषलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार से फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एव अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। आम आदमी तक फलित ज्योतिष का ज्ञान पहुचाने का यह हमारा विनम्र प्रयास है। प्रत्येक दिन रात मे आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है, आशा है, ज्योतिष की दुनिया मे इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर हम गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर प्रोग्राम 'सृष्टिम' के नाम से भी बना

रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह, अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष मे नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण ससार में आएगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यवहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठा में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाईप किया हुआ जवाबी लिफाफा पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

लेखक परिचय

ज्योतिषशास्त्र के उन्नयन में लेखक का योगदान–अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसियेशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणिया पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को "**कर्क लग्न**" के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधिया विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी है। इनकी संस्था के अन्तर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारो शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कसीवीं शताब्दी, तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि 'युग पुरुष' के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

पू. रमेश भाई ओझा, सुधांशु जी महाराज, गुरु मैया हरे राम-हरे कृष्ण जैसे अनेक धर्म गुरुओं का प्रवचन सुनने को मिलता है और उनके प्रवचनों में भी हम देखते हैं कि लाखों की भीड़ उन्हें सुनने के लिए उमड़ी पड़ी है **यह तथ्य निश्चय ही महत्वपूर्ण और चौंकाने वाला है कि विश्वजनमत का रूझान ज्योतिष और आध्यात्म की ओर जबरदस्त झुकाव लिये हुए है।**

अभी हाल ही में केन्द्रीय सरकार ने यू.जी.सी. द्वारा ज्योतिष शास्त्र, पौरोहित्य (पूजा-पाठ) एवं योग को मान्यता प्रदान कर एक नये विवाद को जन्म दे दिया है। भारतीय अस्मिता के उपासक एवं नास्तिक विचारों वाले विरोधी तत्त्व, दोनों ही नींद में सोये हुए थे. इस घोषणा से चौंक कर जाग उठे। अंग्रेजी समाचार-पत्र एवं विदेशी मीडिया ने ज्योतिष को अन्धशास्त्र का दर्जा देकर उसकी निन्दा करने में ज्यादा रुचि दिखाई। क्या विश्वविद्यालय में ज्योतिष जैसे विषयों को पढाया जाना चाहिए? इस पर चर्चा का नया विषय मीडिया को मिला। अनेक तथाकथित वैज्ञानिकों ने इसकी निन्दा की। फलतः जनमत का सर्वेक्षण हुआ। "टाइम्स ऑफ इन्डिया" के दिल्ली संस्करण में विश्व जनमत का सर्वेक्षण प्रकाशित हुआ। उसके हिसाब से 79 प्रतिशत बुद्धिजीवी लोगों ने ज्योतिष पढ़ने में रुचि दिखलाई।

पवित्र विज्ञान

यह मुक्ति प्रदान करने वाला पवित्र विज्ञान है। *ब्रिटिश एसोसिएशन ऑफ एस्ट्रोलॉजी* के अध्यक्ष ऐंड्रू फॉस को इस बात से कोई ऐतराज नहीं कि ज्योतिषशास्त्र भारतीय विश्वविद्यालयों में पाठ्यक्रम के तौर पर रखा जाना चाहिए। फॉस ने बताया, "हमने ब्रिटेन में इसे चार विश्वविद्यालयों में रखा है और अमेरिका में भी ज्योतिषशास्त्र पढ़ाने वाले तीन संस्थानो में से दो की साख है।" 25 साल से वैदिक विज्ञान पढ़ा रहे फॉस यह भी मानते हैं कि "ज्योतिषशास्त्र और भौतिकशास्त्र में कुछ साझा बातें हैं।"

फटाफट भारत एवं विदेशों में अनेक ऐसी संस्थाएं खुल गईं जो ज्योतिष, वास्तु, हस्तरेखा एवं अध्यात्म के कोर्स, प्रशिक्षण केन्द्र चलाने लगे। अध्यात्म की रुचि का यह आलम है कि तिरूपति बालाजी के मंदिर में आजकल युवक-युवतियों की इतनी भीड़ बढ़ गई है कि पांच सौ, हजार रुपयों के टिकट वाले धर्म प्रेमी दर्शनार्थियों को कई घंटे लाईन में खड़ा रहना पड़ता है। इतना ही क्यों मुम्बई के सिद्धि विनायक में मंगलवार की सुबह मंगल दर्शन के लिए सोमवार की रात से ही लम्बी लाइन लग जाती है। शिरडी वाले सांईबाबा मंदिर, वैष्णो देवी मंदिर में श्रद्धालुओं की बढ़ती हुई भीड़, गिरजाघरों में पोप के संदेश और मुस्लिम मदरसों में धर्मान्ध शिक्षा के प्रति बढ़ती रुचि यह बताती है कि लोगों की आस्था इस सहस्त्राब्दी मे धर्म के प्रति बहुत ज्यादा बढ़ गई है।

कुछ समय पहले पूजापाठ, यज्ञ-जप-अनुष्ठान, व्रत-उपवास, ज्योतिष एवं वास्तु को जो लोग पाखण्ड एवं अन्ध श्रद्धा से जोड़ते थे उनकी मानसिकता बदल गई है। आधुनिकता एवं भौतिक सुख-सुविधाओं का नशा काफूर होने लगा है तथा लोगों को ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारने में अब कोई गुरेज नहीं रहा। आधुनिकता की दौड़ में समय की मारामारी एवं तनाव भरी जिन्दगी इतनी विषैली हो गई है कि लोगों मे मन की शांति, सुकुन और आध्यात्मिक अनुभूति की तलाश के लिए धार्मिक-साहित्य, ज्योतिष, वास्तु एवं यंत्र-मंत्र की पत्र-पत्रिकाए पढ़ने की ललक बढ़ गई है।

ज्योतिष लोगों को क्या देता है?

❑ काल-गणना (शुभ-अशुभ समय का अनुमान) ❑ सही समय में सही कार्य करने का निर्देश ❑ भूत-भविष्य एवं वर्तमान सम्बन्धित घटनाओं का अनुमान ❑ ईश्वर की सकारात्मक शक्ति के प्रति आस्था भाव ❑ धर्म, दान, परोपकारिता एवं सत्साहित्य, स्त्रोत, मंत्र, जाप, उपवास के प्रति आकर्षण व रूझान पैदा करना। ❑ ज्योतिष व्यक्तिगत समस्या निदान के साथ-साथ समष्टिगत राष्ट्रव्यापी समस्याओं का समाधान भी ढूंढता है। ❑ अशुभ ग्रह प्रभाव से बचाव के उपाय ❑ विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के उपाय। ❑ मनुष्य के मानसिक तनाव को दूर कर, आशावादी विचारों का सम्प्रेषण करना। ❑ मनुष्य को आध्यात्मिक शक्ति एवं उत्तम ज्ञान की ओर उन्मुख करना। ❑ ज्योतिष मनुष्य की सहनशक्ति एवं आत्मविश्वास को बढ़ाता है तथा विपरीत परिस्थितियों में भी हार न मानने का साहस जगाता है।

पारिवारिक घुटन, दैनिक व्यस्तता, आर्थिक चिन्ता, ऑफिस के तनाव से व्यक्ति का तन और मन अस्थिर रहने लगा है। ऐसे में उन्हें एक ही मार्ग दिखाई दिया, ईश्वर की शरण, गुरुजनों की सीख जहा शांति, सुकून और मन का आनन्द सब कुछ है। इस तरह धीरे-धीरे नई पीढ़ी अध्यात्म की ओर झुकने लगी। शिक्षित-अशिक्षित,

गरीब अमीर, बड़े-बड़े उद्योगपति, फिल्म अभिनेता से लेकर राजनेताओं ने स्वय को ईश्वरीय शक्ति के प्रति समर्पित कर दिया।

आज हर इन्सान समस्याओं से घिरा हुआ है। रिश्तों की उलझन, बेरोजगारी, आफिस के टेन्शन, व्यापार में आर्थिक मन्दी, परिवार में समस्या, बच्चों के कैरियर, मित्रों से धोखा, चारों ओर लूटमार, असुरक्षा, राष्ट्र के कर्णधारों के नैतिक चरित्र में गिरावट की चिन्ता, अखबार के हेड लाईन, नये-नये तरीकों के अपराध व अपराधियों से बढ़ती हुई असुरक्षा की भावना ऐसी अनेक व्यक्तिगत तथा समष्टिगत सार्वजनिक परेशानिया हैं जिनसे आज का मानव घिरा हुआ है। इन परेशानियों को बांटे तो किससे? किसी के पास इन परेशानियों को सुनने का समय नहीं है। इसलिए लोगों ने धर्म, अध्यात्म एव भक्ति का सहारा लेना शुरू किया। इनमें से कुछ मंदिरों में जाते हैं कुछ प्रवचनों-सत्संग में जाते हैं कुछ आध्यात्मिक कैसेट लगा कर "मेडीटेशन" करते हैं। कुछ महात्माओं को गुरु मानकर उनसे आध्यात्मिक ज्ञान लेते हैं। कुछ ज्योतिष और वास्तु की पुस्तके पढ़कर अपना भविष्य सुधारने की कोशिश करते हैं।

औसतन आज लोगों की आयु कम हो रही है। मृत्यु कब आ जाए कुछ कहा नहीं जा सकता। प्राचीन काल में भारतीय लोगों के सौ वर्ष की स्वस्थ आयु मानी जाती थी। अब औसत आयु घटकर पचास वर्ष की रह गई है। उसमें भी तरह तरह की बढ़ती हुई बीमारियां, तरह तरह की अपराध प्रवृतियां हमारे दैनिक जीवन को असुरक्षित बना रही हैं। कल क्या होगा किसी को पता नहीं यह अज्ञात है। प्रकृति के भीतर क्या छिपा है, उसकी रहस्यमय शक्ति अज्ञात है। अज्ञातता को ज्ञात करने की इच्छा, कल क्या होगा यह जानने की जिज्ञासा, भविष्य जानने की प्रबल ज्ञान पिपासा हमें ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता के पास ले जाती है।

हमे मालूम है कि कुछ घटनाए ऐसी होती है जिस पर हमारा नियन्त्रण नहीं है। हम कोशिश तो बहुत करते है पर कई बार हमे परिश्रम का फल नहीं मिलता है। हम ज्योतिषी के पास अपनी समस्या लेकर जाते है–शादी कब होगी? नौकरी कब लगेगी? परीक्षा में पास होऊंगा या नहीं? व्यापार कामयाब रहेगा या नहीं? कौन-सा व्यापार करूं? कब करूं? अमुक यात्रा हेतु कब प्रस्थान करूं? मकान शुभ है या अशुभ? संतान का क्या नाम रखे? किसान पूछता है फसलें उत्तम होगी या नहीं? वर्षा कब होगी? नेता पूछते हैं चुनाव जीतूंगा या नहीं? कब नामाकन करें? शपथ कब लें? आज भारत और विदेशों में पार्षद से लेकर प्रधानमंत्री तक ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो नामांकन के पहले और नामाकन के बाद शपथ लेने के लिए ज्योतिषी से मुहूर्त नहीं पूछता हो। प्रत्येक महत्वपूर्ण व्यक्ति के व्यक्तिगत ज्योतिषी हैं। फिर वह चाहे एकता कपूर हों या लालू यादव।

जीवन की कटु सच्चाई तो यह है कि ईश्वर एव आध्यात्म के प्रति हमारा झुकाव निःस्वार्थ नहीं है। हम किसी न किसी स्वार्थ मे बधे हुए आध्यात्म का चोला

ओढ़कर ज्योतिषी के पास आते हैं। मंदिर में रखी हुई, बेजान पत्थर की मूर्ति तो कुछ बोलती नहीं अपितु ज्योतिषी के मुख से भगवान् स्वयं बोलता है। इसलिए भारत में ज्योतिषशास्त्र एवं ज्योतिषी को ईश्वर तुल्य आदर मिलता है।

ज्योतिषशास्त्र का महत्व एवं उपयोगिता

"वेदांग ज्योतिष" में ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया गया है, साथ में यह भी कहा गया है कि जो ज्योतिष को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है। छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान सर्वोपरि महत्त्व को धारण करते हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।

ज्योतिष शास्त्र के द्वारा मनुष्य आकाशीय चमत्कारों से परिचित होता हैं फलतः वह जन साधारण को सूर्योदय, सूर्यास्त, सूर्य चन्द्र-ग्रहण, ग्रहो की युति, ग्रह युद्ध, चन्द्र शृगोंन्नति, ऋतु परिवर्तन, अयन एवं मौसम के बारे में सही-सही व महत्वपूर्ण जानकारी दे सकता है।

इसलिए ज्योतिष विद्या का बड़ा महत्त्व है। शास्त्रो के अनुसार ज्योतिष के दुर्गम्य भाग्यचक्र को पहचान पाना बहुत कठिन है परन्तु जो जान लेते हैं वे इस लोक में सुख सम्पन्नता व प्रसिद्धि को प्राप्त करते हैं तथा मृत्यु के उपरांत स्वर्ग लोक को शोभित करते हैं

जैसे अंधकार मे रखी हुई वस्तु का ज्ञान दीपक से होता है ठीक उसी प्रकार से प्राणी के पूर्व जन्म के लिए शुभाशुभ फल कर्मफल का ज्ञान होना-शास्त्र (ज्योतिष) से होता है। जप, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले एक विद्वान् ज्योतिष को सदैव पास रखे। क्योंकि बिना ज्योतिषी के राजा उस अधकारमय रात्रि के समान है। जिसमे चंद्रमा (प्रकाश) नहीं है, वह उस कान्तिहीन आकाश के समान है जिसमें सूर्य नहीं है, वह उस अंधे के समान है जो कि भाग्यरूपी घनघोर बीहड़ जंगल में सफलता के मार्ग को ढूंढने का व्यर्थ ही चेष्टा कर रहा है।

ज्योतिषशास्त्र वास्तव में सूचनाओं व सम्भावनाओं का शास्त्र है। सारावली के अनुसार इस शास्त्र का सही ज्ञान मनुष्य के लिए धन अर्जित करने में बड़ा सहायक होता है। अर्थात् ज्योतिषी जब बताता है कि शुभ समय है, उस समय मिट्टी में हाथ डालें तो सोना ही सोना हो जाता है, जब बताता है कि अशुभ समय है तो सोने में हाथ डालने से वह मिट्टी हो जाता है। ज्योतिष विपत्ति रूपी समुद्र मे नौका व जहाज का कार्य करता है। यात्रा के समय में उत्तम मंत्री है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्रों व शुभचिन्तकों की शृंखला खड़ी कर देता है। इतना ही नहीं, इसके अध्ययन से व्यक्ति को धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है, वह विपत्ति रूपी समुद्र में नौका

के समान एव जीवन के अधकार पूर्ण अनजान रास्तों में प्रकाश की किरण के समान मार्ग प्रशस्त करता है।

ज्योतिष की उपयोगिता मौसम विज्ञान की तरह स्पष्ट है। ज्योतिष गणना के आधार पर अष्टमी व पूर्णिमा को समुद्र में ज्वारभाटा का समय निश्चित किया जाता है, फलत: बड़े-बड़े जहाज बन्दरगाह पर ही रोक दिये जाते हैं। वैज्ञानिक राष्ट्र चन्द्र तिथियों व नक्षत्र तिथियों का प्रयोग अब कृषि में करने लगे हैं तथा ''नौटिकल पंचांग' में निर्देश दिये गये है कि किस तिथि को मटर की खेती अधिक उपजाऊ होती है व किस तिथि को चने की। ज्योतिषशास्त्र भविष्य में होने वाली दुर्घटनाओं व कठिनाइयों के प्रति मनुष्य को सावधान कर देता है। कई लोग यह तर्क देते हैं कि जो होना है वह तो होगा फिर ज्योतिषी के पास जाने से क्या लाभ? इस तर्क को उदाहरण से स्पष्ट करने की चेष्टा करता हू कि जैसे ज्योतिषी ने पचांग देखकर भविष्यवाणी कर दी कि कल वर्षा होगी। फलत: नियति के अनुसार बारिश तो होगी, उसे ज्योतिष नहीं रोक सकता। परन्तु आपको पूर्व सूचना मिलने के कारण आप छाता लगाकर चलेंगे, सारी दुनिया भीगेगी। कई लोग अचानक वर्षा के कारण कई प्रकार के कष्ट व कठिनाइयों में उलझ सकते हैं परन्तु आप बचे रहेंगे। इस प्रकार दैनिक जीवन के अनेक क्रिया कलाप ज्योतिषशास्त्र की मदद से व्यवस्थित हो सकते हैं। इसी प्रकार रोग निदान में भी ज्योतिष का बड़ा योगदान है। दैनिक जीवन में हम देखते हैं कि जहा बड़े-बड़े चिकित्सक असफल हो जाते हैं, डॉक्टर थककर बीमारी व मरीज से निराश हो जाते हैं, वहां मत्र, आशीर्वाद प्रार्थनाए, टोटके व अनुष्ठान काम कर जाते हैं।

राशि कौन-सी देखें और क्यों?

ज्योतिष प्रेमियों के साथ दूसरी बड़ी समस्या यह है कि वे जन्म राशि देखें या नाम राशि। वैसे व्यक्ति के जीवन का पूरा विवरण एवं जानकारी तो उस ''जन्म पत्रिका'' के द्वारा ही सम्भव है, परन्तु मोटे तौर पर जन्मकालीन चंद्रमा का पता लगने पर ही अमुक व्यक्ति का चरित्र, गुण व गतिविधि के बारे में बहुत कुछ बताया जा सकता है। कई व्यक्ति इस चक्कर में रहते हैं कि राशि कौन-सी प्रधान माने ''जन्मराशि'' अथवा ''चालू नाम'' राशि। इसके लिए ज्योतिष शास्त्र इस प्रकार से निर्देश देता है।

विद्यारम्भे विवाहे च सर्वसंस्कार कर्मषु।
जन्म राशि: प्रधानत्वं, नाम राशि व चिन्तयेत्।।

अर्थात् विद्यारम्भ, विवाह, यज्ञोपवीत इत्यादि मूल संस्कारित कार्यों मे जन्म राशि की प्रधानता होती है। नाम राशि पर विचार न करें, परन्तु

गृहे ग्रामे खले क्षेत्रे, यज्ञे व्यापार कर्मणि।
नाम राशिः प्रधानत्वं, जन्म राशि न चिन्तयेत्॥

घर को आने जाने पर, गांव प्रस्थान व यात्रादि पर, लाटा-खेत फर्म, फैक्ट्री इत्यादि के उद्घाटन व समापन पर तथा यज्ञ, पार्टी व व्यापार कर्मो तथा दैनिक कार्यों में नाम राशि प्रधान है, जन्म राशि नही।

पाश्चात्य देशों में प्रकाण्ड विद्वान ऐलिन लियो ने निष्कर्ष लिया कि जिस नाम के लेने से सोया हुआ व्यक्ति नींद से उठ जाये, जिस नाम से उसके दैनिक क्रिया कलापों से गहरा सम्बन्ध हो वही अक्षर प्रधान राशि उस व्यक्ति को देखना चाहिए।

डॉ भोजराज द्विवेदी
एम. ए. संस्कृत (दर्शन) पी.एच. डी. (ज्योतिष) वास्तुविशेषज्ञ
प्रथम बी रोड, गोल बिल्डिंग के पीछे सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)
दूरभाष-0291 2637359, 2431883 फैक्स-2431883
ईमेल-agyat@wilnetonline.net.

□□□

लग्न प्रशंसा

लग्नं देव. प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।

लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः।।

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परम ज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक ससार मे कोई नहीं है, क्योंकि गुरु का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दव बलम्।

लग्नेमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः।।5।।

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशसा की है।।5।।

इन्दुः सर्वत्र बीजाअभ्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्।।7।।

भुवन दीपक नामक ग्रंथ मे बताया है कि समस्त कार्यों में चद्रमा बीज सदृश, लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्यादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनमत्र मिथ्या।

विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्॥

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है)। ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

ज्योतिविवरण में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं॥8॥

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।9।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।

अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।10।

□□□

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. भगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, साररूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** मे, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब को करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषलग्न***।
तरह तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनुलग्न।
मकरलग्न मन्द बुद्दि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बडे अवधूत, रात दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है?
लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेंडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घटे का होता है। ज्योतिष की भाषा मे जिसे जन्म कुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते है। क्योंकि "लग्न" का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच मे पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों मे Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिषी वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत मे इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह

लग्न होते हैं। 60 में बारह का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्म कुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्म कुण्डली की सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा मे उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्म कुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों मे एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों मे पाठक जन्म कुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्म कुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओ की जानकारी आवश्यक है।
1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एव भारतीय स्टेण्डर्ड समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्म पत्रिका. निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्न देहो वर्ग षट्कोगानि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्म पत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनूत्पादनमन्तरैव
परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।
विना विलग्नं परभाव सिद्धिः
ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्।।

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्म पत्रिका निर्माण में "बीज रूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्म कुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवे में सन्तान एव विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑❑

वृषलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

वृषलग्न में जन्म हो तो इस प्रकार फल जानना चाहिए–

गुरु, शुक्र और चंद्रमा ये वृषलग्न के लिये अशुभ हैं। इलिए उनको मारक लक्षण प्राप्त होता है तो अर्थात् मारक स्थानो से उनका जिस प्रकार का और जब सबंध आएगा इस प्रमाण से वे मारक बनते हैं।

(दिवाकरी)

जीवशुक्रादयः पापाः शुभौ शनिशशीसुतौ।
राजयोगकरः साक्षादेक एवं रवेः सुतः ।।4।।
जीवादयो ग्रहाः पापाः सति मारकलक्षणाः।
बुधस्तत्र फलान्येव ज्ञेयानि वृषजन्मन.।।5।।

वृषलग्न के लिये गुरु और चंद्रमा अशुभ फल देते हैं। शनि और रवि (चन्द्र) ये शुभ फल देते हैं। शनि अकेला ही राजयोग कारक है वृषलग्न के लिए शनि भाग्य और दशम स्थानों का त्रिकोणाधिपति है इसलिए दोनों शुभ हुए। नवम और दशम स्थान के स्वामियों का राजयोग होता है, ऐसा इस श्लोक पर से सिद्ध होता है। इस पर से गुरु शनि का योग मेषलग्न के लिये शुभ फल दायक होना चाहिए था परन्तु ये ग्रह 11/12 स्थानों के स्वामी होते हैं इसलिए नियमों के अनुसार गुरु शनि का योग यहां पर शुभ नहीं होता। (परन्तु कुछ ग्रथों मे गुरु तथा शनि का योग मेष लग्न के लिए राजयोग माना है.) गुरु शनि योग शुभ नही होता। ऐसा जो उपरोक्त श्लोक में कहा गया है, इतना ही नहीं तो गुरु शनि योग होने से गुरु प्रत्यक्ष रुप से अशुभ होता है कारण गुरु के दोनों स्थानों में से नवम शुभ और द्वादश अशुभ और शनि के दोनों स्थानों मे से दशम स्थान शुभ और एकादश स्थान अशुभ होते हैं। परन्तु गुरु निसर्गतः शुभ ग्रह होने के कारण से उसे शनि इस पाप ग्रह का योग अधिक बाधक होता है और शनि नैसर्गिक पाप ग्रह (क्रूर ग्रह) होने से उसको गुरु इस शुभ ग्रह का योग अधिक बनाता है। और इस प्रकार शनि का अशुभत्व कम हो जाता

है इसलिए गुरु शुभ नहीं है। शुक्र 2/7 स्थानों का स्वामी होता है। अर्थात् मारक स्थानों का स्वामी होता है परन्तु वह नैसर्गिक शुभ ग्रह होने से स्वयं मारक नहीं बनता। उसके साथ दूसरा पाप ग्रह हो तो शुक्र उसे मारकत्व का काम सौंप देता है।

(इस प्रकार 11/12 स्थानाधिपतियो को बहुत गौणत्व प्रदान किया गया है यह दिखाई पड़ता है।) उसी प्रकार श्लोक 9 मे कहे अनुसार मंगल अष्टम स्थान का स्वामी भी होता है। परन्तु अष्टम स्थान का स्वामी लग्नेश भी होने के कारण से वह अशुभ नहीं होता। इसके सिवाय अष्टमस्थ या लग्नस्थ हुआ तो शुभ होता है। चंद्रमा यदि क्षीण हो तो वह पापी होता है और पापी ग्रह केन्द्र का स्वामी होने से अशुभ फल नहीं देता। श्लोक के अनुसार मंगल और चद्रमा ये सम होते हैं। सूर्य गुरु का योग इस लग्न को शुभ होता है, कारण सूर्य पचमेश और गुरु नवमेश द्वादशेश है परन्तु श्लोक के अनुसार गुरु स्वयं दोष युक्त (द्वादश का स्वामी होने से) होने पर भी सूर्य से युक्त होने के कारण गुरु का दोष नष्ट होता है और वह राजयोग होता है।

वृषलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–शनि नवम् (त्रिकोण) और दशम (केन्द्र) स्थानों का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार स्वयं अकेला ही राजयोग कारक है और उसमे यदि उसका योग शुभ ग्रहों से होता हो तो अतिश्रेष्ठ राजयोग के फल प्राप्त होते है। ''भावार्थ रत्नाकर'' नामक ग्रंथ में वृषलग्न को शनि अकेला राजयोग नहीं करता ऐसा कहा हुआ है।
2. **शुभ योग**–बुध द्वितीय स्थान का (मारक स्थान का) स्वामी होकर पंचम (त्रिकोण) स्थान का अधिपति होने से श्लोक के अनुसार शुभ है। यह मध्यम योग है। ''शनिशशीसुतौ'' और ''शनिदिवाकरौ'' पाठान्तर बराबर दिखाई पड़ता है। बुध के बारे में ऊपर कह चुके हैं। रवि चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होने से श्लोक के अनुसार शुभ होकर शुभ फल करने वाला है। रवि शनि का शत्रु है और इनका योग उत्कृष्ट राजयोग नहीं कर सकेगा। इसकी जगह बुध शनि यह उत्कृष्ट राजयोग बन सकता है

वृषलग्न के लिए अशुभयोग

1. **अशुभयोग**–गुरु अष्टम स्थान का स्वामी तथा एकादश स्थान का स्वामी होने से श्लोक 9 और 6 के अनुसार अशुभ होता है और मृत्युकारक अशुभ फल देने वाला होता है।

2 **अशुभ योग**–शुक्र षष्ठ का अधिपति होने से श्लोक 7 और 10 के अनुसार अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला (मृत्यु कारक) होकर अशुभ फल देने वाला होता है।

3 **अशुभ योग**–चंद्रमा तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ (मृत्यु कारक) होकर अशुभ फल देने वाला होता है।

4 **अशुभ योग**–मंगल सप्तम स्थान (केन्द्र स्थान) का स्वामी है, और श्लोक 7 के अनुसार शुभों में उसकी गणना की गयी है, परन्तु वह मारक स्थान का स्वामी और द्वादश स्थान का स्वामी होने से अशुभ माना गया है और वह अशुभ फलदायक होता है।

वृषलग्न के लिए निष्फल योग

1. शुक्र-बुध, 2. मंगल-बुध

वृषलग्न के लिए सफल योग

1. शुक्र-शनि, 2. सूर्य-बुध, 3. सूर्य-शनि 4. मंगल-शनि (निकृष्ट और सदोष) कारण मंगल द्वादश स्थान का स्वामी होने से दूषित है और सप्तम स्थान का स्वामी होने से कष्टदायक है। 5. शनि स्वयं अकेला राजयोग कारक है और श्रेष्ठ फल दायक योग करता है। 6. शनि-बुध यह श्रेष्ठ योग है। शनि नवम और बुध पंचम स्थान का स्वामी है। ये दोनों त्रिकोण के स्वामी हैं और शनि दशम बलवान केन्द्र का स्वामी भी होने से इनका योग श्लोक 20 के अनुसार श्रेष्ठ राजयोग होता है।

वृषलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, षष्ठेश	–	शुक्र
2.	धनेश, पंचमेश	–	बुध
3.	पराक्रमेश	–	चंद्र
4.	सुखेश	–	सूर्य
5.	सप्तमेश, खर्चेश	–	मंगल
6.	अष्टमेश, लाभेश	–	गुरु
7.	राज्येश, भाग्येश	–	शनि
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5–बुध, 9–शुक्र
9.	दुःस्थान के स्वामी	–	6–शुक्र, 8–गुरु 12–मंगल
10.	केन्द्राधिपति	–	1–शुक्र, 4 सूर्य, 7–मंगल, 10 शनि
11.	पणकर के स्वामी	–	2,5–बुध, 8, 11–गुरु
12.	आपोक्लिम	–	3–चन्द्र, 6–शुक्र, 9–शनि, 12–मंगल
13.	त्रिकेश	–	6–शुक्र, 8 गुरु, 12–मंगल
14.	उपचय के स्वामी	–	3–चंद्र, 6 शुक्र, 10–शनि, 11–गुरु
15.	शुभ योग	–	1. शनि, शनि के साथ शुभ ग्रह हो तो अति उत्तम 2. बुध (मध्यम) (बुध+शनि)
16.	अशुभ योग	–	1. गुरु, 2. शुक्र, 3. चंद्र, 4. मंगल
17.	निष्फल योग	–	1. शुक्र+बुध, 2. मंगल+बुध
18.	सफल योग	–	1. शुक्र+शनि, 2. सूर्य+बुध 3. सूर्य+शनि

19.	राजयोगकारक	–	सूर्य, बुध, शनि
20.	मारकेश	–	गुरु, गुरु अष्टमेश होने से मारकेश का फल देता है। मंगल द्वितीय मारकेश है।
21.	पापफलद	–	गुरु, शुक्र और चंद्रमा परम पापी-गुरु+चंद्र
22.	शुभयुति	–	शनि+बुध
23.	अशुभयुति	–	1. मंगल+शनि

❑❑❑

वृषलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1. लग्न — वृष
2. लग्न चिह्न — वृषभ (बैल)
3. लग्न स्वामी शुक्र
4. लग्न तत्त्व — पृथ्वी तत्त्व
6. लग्न स्वरूप — स्थिर
8. लग्न दिशा — दक्षिण
9. लग्न लिंग व गुण — स्त्री, रजोगुणी
10. लग्न जाति — वैश्य
11. लग्न प्रकृति व स्वभाव — सौम्य स्वभाव, वात प्रकृति
12. लग्न का अंग — मुख
13. जीवन रत्न — हीरा
14. अनुकूल रंग — श्वेत
15. शुभ दिवस — शुक्रवार, शनिवार
16. अनुकूल देवता — श्री लक्ष्मी, संतोषी माता
17. व्रत, उपवास — शुक्रवार
18. अनुकूल अंक — छः
19. अनुकूल तारीखें — 6/15/24
20. मित्र लग्न — मकर, कुम्भ
21. शत्रु लग्न — सिंह, धनु व मीन
22. व्यक्तित्व — गुरुभक्त, कृतज्ञ, दयालु

23.	सकारात्मक तथ्य	–	आकर्षक पहनावे, वस्त्र-आभूषण में रुचि
24.	नकारात्मक तथ्य	–	दुराग्रही, कानों का कच्चा, आलसी

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्या शुक्रः –शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो य एष तपति –शतपथ ब्राह्मण 4/3/./26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्यः)

–शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

असौव शुक्र आद्यो मन्थी –शतपथ ब्राह्मण 4/2/1/13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् –ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है–शुक्र और मंथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वहीं है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये **'अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायु रजसोविमाने'** मंत्र बड़ा प्रसिद्धि है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे देवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामंथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य
   तष तपति तद्ध देष एत्तपति तेपैषशुक्रश्चंद्रमा एवं मंथी।। शतपथ ब्राह्मण 4/2/1
   मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डलों पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष–शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. शं नो ग्रहाश्चान्द्रमामाः शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतुः रुद्रास्तिग्मतेजसः।। अथर्ववेद 19/9/10
5. य वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुखः। ऋग्वेद 5/40/9

आचार्य शुक्र

शुक्राचार्य दानवों के पुरोहित हैं (तै. सं. 2/5/8/5, ता. ब्रा. 7/5,20)। ये योग के आचार्य हैं। अपने शिष्य दानवों पर इनकी कृपा बरसती रहती है। मृतसंजीवनी विद्या के बल पर ये मरे हुए दानवों को जिला देते हैं (महाभा., आदि. 76/8)। असुरों के कल्याण के लिये इन्होंने एक ऐसे कठोर व्रत का अनुष्ठान किया, जिसे आज तक कोई कर नहीं सका था। इस व्रत से इन्होंने देवाधिदेव शंकर को प्रसन्न कर लिया। औढरदानी ने वरदान दिया कि तुम देवताओं को पराजित कर दोगे और तुम्हे कोई मार नही सकेगा (मत्स्य पु., अ. 47)। अन्य वरदान देकर भगवान ने इन्हें धनो का अध्यक्ष और प्रजापति भी बना दिया।

इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक में जितनी सम्पत्तियां है, सबके स्वामी बन गए (महाभा., आदि 78/39)। सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य तो समग्र औषधियो, मंत्रों और रसों के भी स्वामी हैं (मत्स्य पु. 47/64)। इन्होंने अपनी समस्त सम्पत्तियो को अपने शिष्य असुरो को प्रदान कर दिया था (मत्स्यपु. 67/65)। दैत्य गुरु शुक्राचार्य का सामर्थ्य अद्भुत है।

ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोकों के प्राण का परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि, अभी अनावृष्टि, कभी भय और कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियों के योग क्षेम का कार्य पूरा करते हैं (महाभा. आदि. 66/42 44)। ग्रह के रूप में ये ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित होते हैं (महाभा., सभा 11/29)। लोकों के लिये ये अनुकूल ग्रह हैं। ये वर्षा रोकने वाले ग्रहों को शान्त कर देते हैं (श्रीमद्भा. 5/2 /12)। इनके अधिदेवता इन्द्र और प्रत्याधिदेवता इन्द्राणी हैं.

वर्ण–शुक्राचार्य का वर्ण श्वेत है (मत्स्य पु. 94/5)।

वाहन–इनके वाहन रथ में अग्नि के समान वर्ण वाले आठ घोड़े जुते रहते हैं। रथपर ध्वजाएं फहराती रहती हैं (मत्स्य पु. 127/7)

आयुध–दण्ड इनका आयुध है (मत्स्य पु. 94/5)।

परिवार–शुक्राचार्य की दो पत्नियां है। एक का नाम 'गो' है जो पितरों की कन्या है, दूसरी पत्नी का नाम जयन्ती है, जो देवराज इन्द्र की पुत्री है। गो से इनके चार पुत्र हुए–त्वष्ठा, वरुत्री, शण्ड और अमर्क। जयन्ती से देवयानी का जन्म हुआ।

❑❑❑

शुक्र का खगोलीय स्वरूप

सौर मण्डल में बुध के बाद दूसरा स्थान शुक्र का है। शुक्र ग्रह सूर्य से 10,80,00,000 किमी. की दूरी पर स्थित है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 225 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है. इसका व्यास 12,600 किमी. है तथा गुरुत्व लगभग पृथ्वी के समान है। सूर्य तथा चद्रमा के बाद शुक्र ही आकाश मे सबसे अधिक तेजस्वी ग्रह है। इसके संबध में सबसे विचित्र बात यह है कि चंद्रमा की भांति इसकी भी कलायें हैं, जो किसी भी दूरदर्शी यंत्र द्वारा सुगमता से देखी जा सकती हैं। शुक्र सूर्योदय के समय पूर्व में अथवा सूर्यास्त के समय पश्चिम में देखा जाता है। इसे "संध्या" तथा "प्रभात का तारा" भी कहते हैं। शुक्र ग्रह पूर्व में अस्त होने के 75 दिन बाद उदय होता है। उदय के 240 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 23 दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है। पश्चिम में अस्त होने के 6 दिन बाद पूर्व में उदित होता है। पूर्वोदय में 23 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 240 दिन बाद पुनः पूर्व में अस्त होता है। शुक्र ग्रह सूर्यास्त के एक-दो घण्टे तक सूर्योदय से एक-दो घण्टे पूर्व ही दिखाई देने लगता है। अर्थात् सूर्य को छोड़कर 45 अंश अधिक दूर कभी नहीं जाता।

शुक्र को भृगु, कवि, सीत, आच्छा, ऊशना, कारक, आस्फुजित दानवेज्य, दैत्यगुरु आदि विभिन्न नाम दिये गये हैं

शुक्र की गति--यह अपनी धुरी पर 23 घण्टा 21 मिनट मे पूरा घूम लेता है तथा सूर्य की परिक्रमा 224 दिन 42 घटी 2 पल में पूरी कर लेता है। इसकी गति एक सैकेण्ड में 22 मील है। स्थूल मान से यह एक राशि पर एक मास, एक नक्षत्र पर 11 दिन रहता है।

यह एक वर्ष वक्री और एक वर्ष मार्गी रहता है। वक्री अवस्था में यह पूर्व मे उदय और पश्चिम में अस्त होता है। यह मार्गी अवस्था में सूर्य से 9 डिग्री अंश पर और वक्री अवस्था में 8 डिग्री अंशों पर अस्त रहता है। इसी प्रकार मार्गी अवस्था मे 250 और वक्री अवस्था में 248 दिन उदय रहता है। इस ग्रह की मार्गी अवस्था

510 दिन और वक्री अवस्था 45 दिन तक रहती है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर वक्री, बारहवीं पर शीघ्रगामी, तीसरी और ग्यारहवीं पर समचारी रहता है। जब इसकी गति 75.42 होती है तब यह परम शीघ्रगामी हो जाती है। अविचारी अवस्था में यह 10 दिन तक ही रह पाता है। वक्री होने के दो दिन आगे या पीछे यह स्थिर भी प्रतिभासित होता है।

शुक्र कई बार सूर्योदय के कुछ समय पहले तेजी से चमकता हुआ पूर्व दिशा में दिखलाई पड़ता है। फलत: लोग इसे प्रभात या भोर का तारा भी कहते हैं। कई बार यह सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा में भी चमकता हुआ दिखलाई देता है। ऐसी वेला में इसे "संध्या" का तारा भी कहते हैं। किन्तु शुक्र ग्रह जब भी पूर्व दिशा में अस्त होता है तो 15 दिन बाद ही उदय हो पाता है। यह उदय के प्राय: 250 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 23 दिन बाद पश्चिम दिशा में अस्त हो जाता है। पश्चिम में अस्त होने के 9 दिन बाद पूर्व में पुन: उदित होता है। पूर्वोदय के 23 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 250 दिन बाद पुन: पूर्व में अस्त हो जाता है यह क्रम चलता ही रहता है।

❑❑❑

वृषलग्न के स्वामी शुक्र का पौराणिक स्वरूप

दैत्यों के गुरु शुक्र का वर्ण श्वेत है। उनके सिर पर सुन्दर मुकुट तथा गले में माला है वे श्वेत कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चार हाथों में क्रमशः दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र तथा वर मुद्रा सुशोभित रहती है। शुक्राचार्य की दो पत्नियां हैं। एक का नाम 'गो' है जो पितरों की कन्या है, दूसरी पत्नी का नाम जयन्ती है, जो देवराज इन्द्र की पुत्री है। गो से इनको चार पुत्र हुए-त्वष्टा, वरूत्री, शंड और अमर्क। जयन्ती से देवयानी का जन्म हुआ।

शुक्राचार्य दानवों के पुरोहित हैं। ये योग के आचार्य हैं। अपने शिष्य दानवों पर इनकी कृपा सर्वदा बरसती है। इन्होंने भगवान शिव की कठोर तपस्या करके उनसे मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त की थी। उसके बल से ये युद्ध में मरे हुए दानवों को जिन्दा करते थे (महाभारत आदि. 73/8)

मत्स्य पुराण के अनुसार शुक्राचार्य ने असुरों के कल्याण के लिए ऐसे कठोर व्रत का अनुष्ठान किया जैसा आज तक कोई नहीं कर सका। इस व्रत से इन्होंने देवाधिदेव शंकर को प्रसन्न कर लिया। शिव ने इन्हें वरदान दिया कि तुम युद्ध में देवताओं को पराजित कर दोगे और तुम्हें कोई नहीं मार सकेगा। भगवान शिव ने इन्हें धन का भी अध्यक्ष बना दिया। इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक की सारी सम्पत्तियों के स्वामी बन गये।

महाभारत आदिपर्व (78/39) के अनुसार सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य औषधियों, मंत्रों तथा रसों के भी स्वामी हैं। इनकी सामर्थ्य अद्‌भुत है। इन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति अपने शिष्य असुरों को दे दी और स्वयं तपस्वी जीवन ही स्वीकार किया।

ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोगों के प्राण का परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि, कभी अवृष्टि, कभी भय, कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियों के योग-क्षेम का कार्य पूरा करते हैं। ये ग्रह के रूप में ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित

होते हैं। लोकों के लिये ये अनुकूल ग्रह हैं तथा वर्षा रोकने वाले ग्रहों को शान्त कर देते हैं। इनके अधिदेवता इन्द्राणी तथा प्रत्यधिदेवता इन्द्र हैं। मत्स्य पुराण (14/4) के अनुसार इनका वाहन रथ है, उसमें अग्नि के सामन आठ घोड़े जुते रहते है। इनके रथ पर ध्वजाएं फहराती रहती हैं। इनका आयुध दण्ड है। शुक्र वृष और तुला राशि के स्वामी हैं। तथा इनकी महादशा 20 वर्ष की होती है।

शुक्र ग्रह की शान्ति के लिए गोपूजा करनी चाहिए तथा हीरा धारण करना चाहिए। चादी, सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, हीरा, सफेद अश्व, दही, चीनी, गौ और भूमि ब्राह्मणो को दान देनी चाहिए।

नवग्रह मण्डल में शुक्र का प्रतीक पूर्व में श्वेत पंचकोण है। शुक्र की प्रतिकूल दशा में इनकी अनुकूलता और प्रसन्नता हेतु वैदिक मंत्र–'ओइम् अन्नात्परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्र पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सतयमिन्द्रियं विपान्ँ शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।' पौराणिक मंत्र–'हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।' बीज मंत्र–'ओइम द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः', तथा सामान्य मंत्र 'ओइम शुं शुक्राय नमः' है। इनमें से किसी एक का नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। कुल जप सख्या 16000 तथा जप का समय सूर्योदयकाल है। विशेष अवस्था में विद्वान ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

ज्योतिषीय स्वरूप–हमारे शास्त्रों में लक्ष्मी की उत्पत्ति की तीन गाथाएं चल रही हैं। 1. समुद्र मंथन, 2. ज्वाला से उत्पत्ति, 3 भृगु कन्या के रूप में श्रीमाल पुराण मे। ये तीनों कथायें रहस्यवाद व छायावाद से ओतप्रोत होकर प्रतीकात्मक रही है। कथन का तात्पर्य है 1. विचार मन्थन से सृजनात्मक शक्ति द्वारा श्री प्राप्ति 2. सगठनात्मक के तेज से को प्रकट करना। 3. भृगु की तपस्या से, तप से व ब्रह्मचर्य द्वारा लक्ष्मी प्राप्त करना। इन कथाओ में दो तत्त्व मल प्रकट होते हैं इन दोनों का सबध शुक्र से है। भृगु से लक्ष्मी के जन्म की कथा ने ही भृगु-शुक्र से लक्ष्मी का संबंध जोड़ा है।

ज्योषित शास्त्र में देव गुरु बृहस्पति को धन दायक ग्रह नहीं माना है। नैसर्गिक कुण्डली में भी भाग्य भवन खर्च के अधिपति गुरु हैं, अतः यह विद्यादायक हैं धन दायक नहीं हैं। जबकि शुक्र नैसर्गिक कुण्डली मे धनेश बनता है। दोनों ही स्थान ऐश्वर्य और व्यापार से सबंधित हैं। "व्यापारो वर्धते लक्ष्मीः" व्यापार से लक्ष्मी बढ़ती है। ऐश्वर्य से शोभा बढती है। अतः हमारे भृगु शुक्र का श्री से सम्पूर्ण सबध है.

शुक्र का एक पर्यायवाचक नाम वन्त है। मदन है और कवि है। यह ऐश्वर्य का उपभोक्ता ग्रह है संजीवनी विद्या का सर्जक है, दैत्य गुरु है, दैत्य ही धन का

संग्रह करते थे। यह कर्म है। अत: मदन है। ऋतु बसन्त मदन उद्दीपक है। वीर्य ही संजीवनी है, वीर्य रक्षण ही प्रधान तत्त्व है। धर्मशास्त्रों की प्रत्येक क्रिया पुण्याहवाचन से प्रारम्भ होती है। उसमें ग्रहों के क्रम में "शुक्रोंगरको बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोम संहिता आदित्याद्या सर्वेग्रहा-प्रीयन्ताम" का उद्घोष क्रम, क्रमशः शुक्र, मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु, सोम और सूर्य का चयन करता है। इसका मुख्य कारण वीर्य प्रधानता है। जब आपका वीर्य ही बलवान नहीं तो आप के जीवन में क्या रहेगा? न सुख का उपयोग कर सकेंगे न काम की प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। गुरु वसा प्रधान ग्रह है जबकि शुक्र वीर्य प्रधान ग्रह है। अत: वीर्यवान् व्यक्ति ही धन प्राप्त करने में समर्थ होता है। वीर्यवान बनने के लिए 25 वर्षों तक ब्रह्मचर्य आवश्यक है। अत: शुक्र से संबंधित भाग्योदय की आयु का 25वां वर्ष है। "नाय आत्मा बलहीनेन लभ्य" आत्मा साक्षात्कार भी बलहीन नहीं कर सकता अत: इस लोक में परलोक दोनों की प्राप्ति शुक्र की बलवन्ता से संभव मानी गई है। यही कारण रहा है कि धर्मशास्त्रों ने भी शुक्र को ही प्रमुख स्थान दिया है।

शुक्र का विवेचन—शुक्र की दो राशियां उनकी अपनी हैं–1. वृषभ और तुला। वृषभ राशि मे बैल का स्वरूप है तो तुला में तराजू हाथ में तौलते हुए मनुष्य का स्वरूप है।

अत: वृषलग्न चाहे राशि हो उसके जातक दृढ़ स्कंध वाले पाये जायेंगे। प्राय: गौर वर्ण से संबंधित होंगे। अपनी धुन के पक्के व कामी होंगे, ऐश्वर्यशाली बनेंगे। हठ पर दृढ़ रहेंगे। उनमें शासन क्षमता होगी भावुक होंगे और अनुचित कार्य पर पछतावा भी करेंगे। इनकी हंसी लुभावनी होगी। स्वार्थी तो होंगे पर अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का कम नुकसान करेंगे। इनमें कुछ कला झगड़ने की भी पाई जाएगी।

जबकि तुला राशि शुक्र की मूलत्रिकोणीय राशि है। तुलालग्न व राशि वाले अगर किसी के लिए 10 रुपये खर्च करेंगे तो 100 का लाभ उठाना चाहेंगे। अपने स्वार्थ को साधने में दूसरों को भरपूर नुकसान कर देंगे। ये भी विलासी व व्यसनी होंगे पर व्यापारी क्रिया में दक्ष होने से मीठा बोल कर अपना काम निकालेंगे। इनसाफ पसंद, धीरज वाले धार्मिक भी होंगे। वे न्यायाधीश भी होंगे।

शुक्र की उच्च राशि मीन जो जलग्रह है और नीच राशि कन्या अत: शुक्र प्रधान, जलविहार व घूमना पसंद करेंगे और स्त्रियों के प्रति उनका आकर्षण गहरा होगा। ये चरित्र भ्रष्ट भी बन सकते हैं. शुक्र पंच कोण का सितारा है। " पच कोणेतु भार्गवे" ऐसा वर्णन है। यह दूर्वादल श्याम वर्ण का है न अधिक गोरा और न काला। गेहूंआ वर्ण कह सकते हैं।

लग्नस्थ शुक्र पर जब चंद्र व गुरु की दृष्टि हो तो वह गौर वर्ण का जातक होगा। अन्यथा कुछ कालापन लिए गेहुआ रंग का होगा। लग्नस्थ शुक्र के पति-पत्नी में एक सा रंग कुछ कालापन का होगा। इसे चित्रभानु भी कहा गया है। अतः यह स्त्रियों जैसा आचरण करने वाला जातक होता है। स्त्रियो चित्र विभिन्न कपड़े पहनती रहती है इसके ऋतु बसंत है। बसंत ऋतु मे ही प्रायः प्रकृति पुष्पित, सुरभित होती है और काम उद्दीप्त होती है। इसकी देवी इंद्राणी व लक्ष्मी है। यह इंद्रिय है और ऐश्वर्यशाली है। वैभवन सम्पन्न लोग ही भोग विलास का आनन्द उठाते हैं। इसकी दिशा पूर्व और दक्षिण है परन्तु अग्निकोण मुख्य स्थान है। क्योंकि यह आर्द्र भी है। और आग भी है। इसमें जल व तेज का समन्वय है। इसकी जाति ब्राह्मण है। क्योंकि यह तपस्वी 25 वर्ष का ब्रह्मचर्य भी धारण से वीर्य परिपक्व होता है। यह रजोगुणी है, क्योंकि यह ग्रह भोग प्रधान ग्रह है। यह सदैव शुभ रहता है क्योंकि यह शुभ वर्ण का है गौरता इसमे प्रमुख पाई जाती है।

यह हमेशा मनोरंजन में आसन्न रहता है क्योंकि इसका जातक दर्शनीय शरीर वाला, सुन्दर नेत्र वाला, लहरीले केशों वाला, कफवान प्रधान प्रकृति वाला होता है जिस पर स्त्रियां आसक्त रहती है। यह कवि है, क्योंकि प्राकृतिक सौन्दर्य पर इसका अधिकार है प्रातः बेला में ही कवि व संगीतकार अपने काव्य व संगीत की साधना करते हैं

शुक्र की बलवत्ता—प्राकृतिक कुण्डली में चतुर्थ स्थान चंद्र का है पर शुक्र 4थे भाव में बैठकर बली होता है। पुरुषों की कुण्डली का स्त्री राशियों में बैठा शुक्र जातक की कुण्डलियों मे पुरुष राशि में बैठा शुक्र बलवान होता है।

चौथे भाव में शुक्र दिग्बली और 5वें भाव में हर्षबली होता है। शुक्र सप्तम भाव का कारक है। अतः सप्तमस्थ-शुक्र शुभ नहीं देता है। "कारको भावनाशाय" ऐसा प्रसिद्धि है। सप्तम का शुक्र कामेच्छा बलवान करता है। शुक्र राशि के मध्य भाग में अपनी उच्च राशि में द्रेष्कोण में और नवांश कुण्डली में स्वगृह में दिन में तीसरे चौथे षष्ठ तथा व्यय स्थान में, तीसरे पहर में ग्रह मुहूर्त में चंद्र के साथ तथा वक्री ग्रह के साथ सूर्य के आगे गया हुआ बलवान होता है। परन्तु वक्री बुध के साथ शुक्र कम होता है। शुक्र का बल चंद्र तोड़ देता है। यह षष्ट स्थान में विफल रहता है। इसमें विवाद भी है।

शुक्र का उदयास्त—पूर्व का शुक्र, द्वितीय भाव लग्न और व्यय स्थान में होता है। पश्चिम का शुक्र छठवे, सातवें और आठवें स्थान में होता है।

द्वितीय भाव षष्ठ और सप्तम में यह नजर नहीं आता और लग्न, व्यय और अष्टम में दिखाई देता है। शुक्र पश्चिम की ओर उदय होता है तब यह सूर्य के पीछे

रहता है उस समय यह सांवला दिखाई देता है जब शुक्र पूर्व की ओर हो तो सूर्य के आगे होता है इस समय यह अति शुभकार्य तेजस्वी होता है। सूर्य के साथ बैठा शुक्र अस्त हो जाता है। शुक्र हमेशा सूर्य के आगे या पीछे घर में रहता है।

शुक्र के रत्न—शुक्र से रत्नों में मोती, हीरा व स्फटिक हैं। इसकी धातु सफेद सोना (प्लेटिनम) और चांदी है। निर्बल शुक्र को रत्न पहना कर बलवान किया जा सकता है।

शुक्र के फल

1. कन्या लग्न में नीच का शुक्र उत्तम वैभव देता है।
2. चतुर्थ स्थान में बैठ शुक्र किसी भी राशि में हो उसकी उम्र सुख से गुजार देता है।
3. शुक्र धनदाता ग्रह है। शुक्र प्रधान व्यक्ति सुखी रहता है। शुक्र की दशा विंशोतरी में 20 वर्ष की होती है।
4. धन स्थान में शुक्र धनवान बनाता है।
5. तीनों लग्नो में 12वें गया शुक्र राजा के तुल्य धन देता है।
6. शनि+शुक्र का सबंध एक दूसरे का पूरक है।
7. शुक्र की महादशा में शनि की अर्न्तदशा शनि की महादशा में शुक्र की अंतदर्शा धनु और मीन राशि व लग्न के जातकों को छोड़कर सभी को योग हीन बना देती है।
8. जिस भाव मे शनि+शुक्र की युति होती है उस भाव के फल में प्रायः वृद्धि होती है। परन्तु 7वें भाव में यह व्यक्ति का चरित्र गिरा देती है।
9. चौथे भाव में शनि+शुक्र की युति अनेक स्त्रियों से धन प्राप्ति और दशम में हो तो राजा तुल्य वैभव होगी।
10. मकर व कुम्भलग्न में शुक्र योगकारक है वहां शुक्र+शनि की युति ज्यादा लाभप्रद है.
11. तुला व वृषलग्नों में शनि+शुक्र युति विशेष फल प्रदान नहीं करेगी। केवल शनि अकेला योग कारक होगा।
12. शुक्र से 4-8वें 12वें श., मं. या पाप ग्रह हो तो दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद रहेगा, अगर शुभ दृष्ट हो तो और बात है।
13. मं.+शु समसप्तक हो तो कामी विशेष बना देगा।

14. वक्री ग्रह स. के साथ या अन्य वक्री ग्रह बुध को छोड़ कर बैठा शुक्र वैभव से पूर्ण करेगा।

15. शुक्र की एक पाद, द्विपाद, त्रिपाद या सम्पूर्ण दृष्टि से शून्य मगल होगा तो संतान का अभाव रहेगा।

निर्बल शुक्र को शांत करने व बलवान करने के उपाय

1. श्री यंत्र का पूजन नित्य करें।
2. श्री सूक्त या लक्ष्मी स्रोत व कनक धारा स्रोत का पाठ करें।
3. ब्राह्मणों द्वारा शुक्र व बाधक ग्रह के जाप करवायें।
4. नित्य 1 मुट्ठी ताजे चावल सूर्योदय से पहले बनवाकर घी शक्कर डालकर सूर्योदय से पहले गौ को दें/ गौ पालतू न हो। सफेद व काली हो तो श्रेष्ठ। ऐसा 28 रोज करें।
5. हर शुक्रवार को मछलियों को चुग्गा दें।
6. बीमारी हो तो हर शुक्रवार मोरों को चने चुगायें।
7. हर शुक्र, मगल को कुत्तों को दूध और डबल रोटी देते रहें।
8. लेख में प्रदर्शित शुक्र के रत्न धारण करें।
9. मंदिर में हर शुक्र को सफेद वस्तु, दूध, दही, चावल या शक्कर का दान करें।
10. शुक्र की अनिष्टता के परिहारार्थ दूध, जवारी का दान सतत् करते रहें। भोजन के पूर्व थाली में परोसी सभी चीजें थोड़ी-थोड़ी निकालकर सफेद गाय या सफेद बैल को खिलाएं।
11. लग्न में स्थित शुक्र अनिष्ट हो एवं सप्तम तथा दशम स्थान में कोई ग्रह न हो तो ऐसे जातक का विवाह 25वें साल में होता है। विवाह के बाद वह कंगाल बनता है। उसकी पत्नी उसे छोड़ देती है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए घास (जवस) की चटनी बनाकर नित्य भोजन में लें। गोमूत्र का रोज सेवन करें। सप्तधान्य इकट्ठा करके पंछियों को खिलाएं।
12. अनिष्ट शुक्र द्वितीय स्थान में और बृहस्पति 8, 9 या 10 में से किसी स्थान मे हो तो जातक का वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण रहता है। पत्नी नौकरी करती हो तो उसका चरित्र भ्रष्ट होता है। जातक जीवनभर दुःखी रहता है। जातक को गुप्त रोग एवं शीघ्र वीर्य पतन के विकार होते हैं। यह अनिष्टता दूर करने के लिए प्रवाल भस्म का सेवन करें।

13. अनिष्ट शुक्र पचम स्थान में हो एव राहु लग्न में या सप्तम स्थान में हो तो जातक कामातुर रहता है। उसकी संतान आज्ञाकारी नहीं रहती है। चोरी का डर रहता है। इस अनिष्टता के निवारण के लिए गाय की सेवा करें। स्वय का चरित्र शुद्ध रखें। जातक स्त्री या पुरुष दोनों ही दही-दूध से अपने गुप्तांग स्वच्छ करें। इससे आय में बढ़ोत्तरी होकर जीवन सौभाग्यशाली बनेगा।

14. शुक्र अष्टम स्थान में हो तो अनिष्ट फल देता है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए सफेद सिक्का, चवन्नी, अठन्नी या रुपया सफेद पुष्प के साथ गंदे पानी में प्रवाहित करें। देवी के मंदिर में जाकर नित्य प्रार्थना करें।

15. नवम् स्थान में शुक्र होने पर जातक धनी तथा उद्योगपति बनता है। उसकी बुद्धि की कुशाग्रता को बढ़ावा मिलता है। यदि नवमस्थ शुक्र अनिष्ट हो तो उसके शुभ फल न मिलकर अशुभ फल ही प्राप्त होंगे। इन अशुभ फलो की निवृत्ति के लिए चांदी के चौकोर टुकड़े कड़वे नीम के पेड़ के नीचे गाड़ दें। नवम स्थान में शुक्र के साथ चंद्र व मंगल हों तो गृह निर्माण के समय एक छोटे-से मिट्टी के पात्र में शहद भरकर यह मधुघट मकान की नींव में गाड़ दें।

16. बारहवें स्थान मे शुक्र पत्नी के लिए अनिष्टकर होता है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए नीले या बैंगनी रंग के कुछ फूल संध्या समय जंगल में गाड़ दें।

17. बारहवें स्थान में शुक्र एवं 2, 6 7, 12 में से किसी एक स्थान में राहु होने पर जातक की उम्र के 25वें साल तक स्थिति कष्टकारक रहती है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए काली गाय या भैंस पालें।

18. चादी, चावल, चित्र विचित्र रग के वस्त्र, बछड़े सहित गाय, हीरा, रूपा, इसमें से जो संभव हो उसका दान करें।

19. वाघाटी की जड़ तावीज में धारण करें।

20. हर शुक्रवार को सफेद सीसा पानी मे डालकर स्नान करें।

शनि अनिष्ट से बचने हेतु टोटके

21. कुण्डली में शनि शुभ हो तो उसे और शुभ बनाने के लिए मकान में लोहे के फर्नीचर का इस्तेमाल करें। भोजन में काला नमक और काली मिर्च का प्रयोग करें। आंखों में काजल या काला सुरमा लगाएं।

22. शनि की अनिष्टता साढ़ेसाती या ढैय्या में होने वाले कष्ट कम करने के लिए भोजन के थाली में परोसे सभी पदार्थ थोड़े-थोड़े अलग निकालकर रखें। ये पदार्थ कौओं को खिलाएं।

23. संतति प्राप्ति में शनि रोड़े अटकाता हो या अनिष्ट शनि के कारण गर्भपात होता हो तो ऐसी स्त्री भोजन पूर्व थाली में परोसे सभी पदार्थ से थोड़ा-थोड़ा अलग निकालकर काले कुत्ते को खिलाएं।
24. अनिष्ट शनि की अनिष्टता निवारण के लिए सरसों या तिल का एवं शनि तेल का दान करें।
25. अनिष्ट शनि होने पर उस जातक के मकान का प्रवेश द्वार पश्चिम दिशा में होता है। जातक की आयु के 36, 42, 45, 48वें साल क्लेशदायक बीतते हैं। शिक्षा पूर्ण नहीं होती। अपच की शिकायत रहती है। ऐसे जातक सुरमा खरीदकर जमीन में गाड़ दें। सुरमा एवं बड़ की जड़ दूध में उबालकर उसका तिलक स्वयं के माथे पर करें। इससे शरीर की मानसिक एवं आर्थिक अड़चनें दूर होती हैं।
26. चतुर्थ स्थान में शनि हो, ऐसे जातक रात को दूध न पीएं। क्योंकि दूध जहरीला बनकर शनि की अनिष्टता को बढ़ाता है।
27. चतुर्थ स्थान में शनि हो तो ऐसे जातक काले सांप को दूध पिलाएं, भैंस को घास खिलाएं, मजदूरों को भोजन दें। हमेशा आर्थिक तंगी रहती हो तो कुएं में कच्चा दूध डालें।

❑❑❑

वृषलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

वृषलग्न का स्वरूप

श्वेतः शुक्राधिपो दीर्घश्चतुष्पाच्छर्वरीवली।

याम्येट् ग्राम्यो वणिग्भूमिरजपृष्ठोदयो वृषः ॥8॥

—बृहत्पाराशरहोराशास्त्र/अ. 4/श्लो. 8

वृषलग्न श्वेतवर्ण, लम्बा शरीर, चतुष्पद, रात्रिबली, दक्षिण दिशावासी, ग्रामचारी, वैश्य जाति, भूमि तत्त्व, रजोगुणी, पृष्ठोदय है, इसका स्वामी शुक्र है।॥8॥

कान्तः खेलगतिः पृथूरुवदनः पृष्ठास्यपार्श्वकवेऽङ्कित

स्त्यागी क्लेशसहः प्रभुः ककुद्वान् कन्याप्रजः श्लेष्मलः।

पूर्वैर्बन्धुभिरात्मजैर्विरहितः सौभाग्ययुक्तः क्षमी,

दीप्ताग्निः प्रमदाप्रियः स्थिरसहृन्मध्यान्त्यसौख्यो गवि॥2॥

बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 2

वृषलग्न राशि में चंद्रमा रहने पर उत्पन्न व्यक्ति सुन्दर व दर्शनीय व्यक्तित्व वाला, विशिष्ट प्रभावोत्पादक गमन वाला, बड़े व भरे हुए मुखमंडल वाला, भारी जांघों वाला, पीठ, मुख एवं पार्श्व (पेट का किनारा) में चिन्ह से युक्त, त्यागशील, क्लेश सहने की प्रवृत्ति, समर्थ, ऊंचे कन्धों वाला, कन्या सन्तति की अधिकता वाला कफ प्रधान प्रकृति, बड़े भाई व पुत्रों से रहित, अर्थात् छोटे भाइयों वाला, सौभाग्यशाली, क्षमाभावना से युक्त, तीव्र भूख का अनुभव करने वाला, स्त्रियों से विशेष अनुराग रखने वाला या स्त्रियों का प्रिय, पक्की मित्रता रखने वाला, मध्यावस्था व वृद्धावस्था में विशेष सुख पाने वाला होता है।

वृषे विलग्ने तु नरः प्रसूतो मित्रं क्षमी हास्यरतः सुवाक्यः।

विज्ञानयुक्तो गुरुलोकभातः शूरः प्रधानः सुतालसश्च॥2॥

वृद्धयवनजातक अ. 24/श्लो. 2/पृ. 286

यदि वृषलग्न में जन्म हो तो मनुष्य मित्रता निभाने वाला, क्षमावान हास्य में रत रहने वाला, सुन्दर वाक्य बोलने वाला, विशिष्ट ज्ञान से युक्त पूर्वजों व अग्रजों का सत्कार करने वाला, शूरवीर, प्रधानता पाने वाला एवं बेटे की इच्छा करने वाला होता है।

गोमान् देवगुरुद्विजार्च्चनरतः स्वल्पात्मजः शान्तधी

र्विद्यावादरतोऽटनश्च सुभगो गोलग्नजः कामुकः ॥2॥

–जातक पारिजात श्लो. 2/पृ. 678

वृष गौ आदि पशुओं से युक्त, देवता, गुरु और ब्राह्मणों की पूजा (सत्कार) मे रत, थोड़े पुत्र वाला, शांत बुद्धि, विद्यावाद (शास्त्रार्थ) में संलग्न, घूमने फिरने या यात्रा करने वाला, देखने में सुंदर, कामुक (कामवासना प्रधान)।

प्रियपानभोज्यनारीवियोगतप्तो वृषभ पूर्वांशे।

वस्त्रालङ्कारयुतो युवतिप्रकृतानुसारी स्यात्॥

–सारावली पृ. 466/श्लो. 10

यदि जन्म लग्न में वृषलग्न में वृष राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो जातक खाने पीने का शौकीन, नारी (स्त्री) के वियोग से पीड़ित वस्त्र व भूषणों से युक्त तथा स्त्री की प्रकृति स्वभाव के अनुरूप कार्य करने वाला होता है।

वृषलग्ननोभवो बाल्ये गुरुभक्तः प्रियंवदः।

गुणीकृती धनी लुब्धः शूरः सर्वजनप्रियः॥

–मानसागरी

वृषलग्न वाले जीव मानव धर्म आस्थाशील, गुणी जनों का प्रेमी, प्रियवादी गुणशील, बुद्धिमान, धनवान, लोभी, पराक्रमी तथा जनसमाज का स्नेहभाजन एवं स्वकार्य कुशल होता है।

भोज संहिता

वृषलग्न का स्वामी शुक्र है। शुक्र ऐश्वर्यशाली व विलासपूर्ण ग्रह है। इस राशि वाले जातक प्रायः गौरवर्ण के, दिखने में सुन्दर व आकर्षक व्यक्ति होते हैं। इस राशि का चिन्ह वृषभ (बिना जोता हुआ बैल) होने से पुष्ट शरीर, मस्त चाल, मजबूत जंघाएं, बैल के समान नेत्र, स्वाभिमान एव स्वच्छंद विचरण एवं शीतल स्वभाव इनकी प्रमुख विशेषता कही जा सकती हैं।

सामान्यतया वृषलग्न में उत्पन्न जातक सुंदर उदार तथा सहिष्णु स्वभाव के होते हैं। उनकी वाणी में भी मधुरता का भाव विद्यमान रहता है। साथ ही व्यक्तित्व भी

आकर्षक होता है तथा अन्य जनों को प्रभावित करने में वे समर्थ रहते हैं। शारीरिक रूप से उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है। तथा उनको मानसिक सतुष्टि भी बनी रहती है। ये अत्यधिक परिश्रमी जातक होते हैं तथा परिश्रम करने की उनकी अपूर्व क्षमता रहती है जिससे जीवन में उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने तथा सुखैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करने में वे प्रायः सफल रहते हैं। शांति एवं सहिष्णुता के साथ इनमें साहस तथा पराक्रम का भाव भी विद्यमान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा तथा सभी लोग आपसे प्रभावित रहेगे। अपने वाकचातुर्य से शुभ एवं महत्वपूर्ण सासारिक कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होगे। आपका शारीरिक कद मध्यम होगा परन्तु स्वरूप सुदर व आकर्षक होगा। आप मे सहनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा।

आप एक परिश्रमी पुरुष होंगे तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से किसी उच्च पद या समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करेंग साथ ही अपने सद्गुणों के द्वारा श्रेष्ठ जनों को सतुष्ट करने मे सफल होंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा विभिन्न विषयों कला, साहित्य एव संगीत का आपको उचित ज्ञान रहेगा तथा इस क्षेत्र में प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान होगा तथा समय समय पर जरूरतमन्दों को दान देने में तत्पर रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर बुद्धिमत्ता की स्पष्ट छाप होगी।

धर्म के प्रति आप श्रद्धालु रहेगे तथा अवसरानुकूल धार्मिक अनुष्ठानों तथा कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। धार्मिक क्षेत्र में आप किसी सस्था से संबंधित हो सकते है तथा इस क्षेत्र में आपको कोई विशिष्ट सफलता या प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो सकती है।

आपमें उदारता तथा सहनशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल समाज सेवा के लिए भी उद्यत रहेंगे आपकी प्रवृत्ति सात्विक होगी तथा विचार भी उत्तम होंगे। साथ ही परोपकार की भावना भी विद्यमान होगी। इसके अतिरिक्त कई शास्त्रों का आपको ज्ञान होगा, जिससे आपको सामाजिक मान प्रतिष्ठा तथा प्रसिद्धि प्राप्त होती रहेगी। इस प्रकार आप स्वस्थ सुदर आकर्षक व्यक्तित्व वाले विद्वान एवं साहसी पुरुष होगे तथा आपका जीवन प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

वृष राशि भूमि तत्त्व प्रधान है। इसलिए ऐसे जातक मशीनरी व भूमि संबंधी कारोबार में विशेष रुचि लेते देखे गये हैं। इनकी इच्छा शक्ति बड़ी प्रबल होती है। ये बड़े धैर्यवान होते हैं। इनकी उन्नति प्रायः धीमी गति से होती है यदि आपका जन्म 'रोहिणी नक्षत्र' में है तो केवल एक ही प्रकार का कार्य करने से आपको सफलता कम मिलेगी। आप अपनी बहुमुखी प्रतिभा को बढायें। आपकी उन्नति तभी संभव है जब आप एक से अधिक कार्य हाथ में लें।

नक्षत्रानुसार फलादेश

ई-उ ए	ओ -वा-वी-वू	वे-वो
कृत्तिका-2	रोहिणी-4	मृगशिरा-3

रोहिणी नक्षत्र

चरण	अंश से तक	चरण के नवमांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र स्वामी अंश से तक
प्रथम	10.0.0 से 13.20.0	मं. म.	शु. शु.	चं. च.	चं 10.0.0 से 11 6.40 म 11.6.40 से 11.53.20
द्वितीय	13.20.0 से 16.40.0	शु. शु.	शु. शु.	चं. चं.	रा. 11 53.20 से 13 53.20 गु. 13.53.20 से 15.40.0
तृतीय	16.40.0 से 20.0.0	बु बु	शु. शु.	च. चं.	शु. 15.40.0 से 17.46.40 बु. 17.46.40 से 19.40.00
चतुर्थ	20.0.0 से 23.20.0	चं च च	शु. शु. शु.	चं. च. चं.	के. 19.40.0 से 20.26.40 शु. 20.26.40 से 22.40.00 शु. 22.40.00 से 23.20.0

चरणानुसार रोहिणी नक्षत्र के फल

प्रजापते भें प्रियवाक् सुरूपः
शुचि सवा सत्यवचोः शशांके।

रोहिणी चद्र को अतिप्रिय है। अतः इस नक्षत्र मे जन्मी जातिका मीठा बोलने वाली होगी। चद्र तो स्वयं सौन्दर्य है अतः वृष राशि में चंद्र नक्षत्र के अंशों मे जन्मी जातिका सुन्दर तो होगी ही साथ ही अपने तरीके से व्यवस्थित रहना पसंद करेगी, सफाई पसंद व सत्य पक्षपातिनी होगी। कोमल स्वभाव की होगी।

रोहिणी नक्षत्र वृष राशि के अतर्गत आता है। शुक्र और चंद्र में शत्रुता तो प्रसिद्ध है। परन्तु दोनों सौन्दर्शाली ग्रह हैं। इसको विधि विरंचि भी कहते हैं। यह ब्रह्मा का ही एक नाम है। ब्रह्मा द्वारा वेद ज्ञान विस्तृत हुआ अतः इस नक्षत्र का ज्ञान से भी घनिष्ठ सम्बन्ध है।

चद्र की रोहिणी नक्षत्र स्थिति में स्थिति पर जातक परिजात अध्याय 6 में लिखा है–रोहिण्यां पर रन्ध्रवित्कृशतनु बोधी परस्त्रीरतः।

खासकर स्त्रियों के स्वभाव में जन्मजात पर छिद्रान्वेषण होता है। अतः रोहिणी में जन्मी स्त्री पर छिद्र जरुर दिखेंगे, ज्ञानी भी होगी। यदि पुरुष जातक हो तो परस्त्री पर रति होती है। रोहिणी का देवता ब्रह्मा है और स्वामी चंद्र होता है।

इसलिए स्त्री ग्रह चंद्र का अपने ही नक्षत्रों मे होना स्त्री प्रेम को प्रकट करता है और जहा तक होता है स्त्री दुबले पतले शरीर की बनी रहती है। जिसमें आकर्षण रहता है। यद्यपि जलीय ग्रह से धीरे-धीरे मोटापा भी संभव है।

सौभाग्य च तथा पीड़ा भीरूत्व सत्यवादिता।

रोहिणी संभवस्यैव फलं पाद चतुष्टये।।

रोहिणी का प्रथम चरण–इसमें जन्मी जातिका सौभाग्यशालिनी होगी। इस चरण का स्वामी मंगल है व चंद्र का मित्र है। अत: धन व ख्याति योग भी देगा।

रोहिणी का द्वितीय चरण–इसमें चरण स्वामी शुक्र होने से चंद्र शुक्र के कारण जातिका को कुछ न कुछ पीड़ा बनी ही रहेगी।

रोहिणी का तृतीय चरण–इस चरण का स्वामी बुध एक नपुंसक ग्रह है। अतः जातिका डरपोक रहेगी। स्त्री की भीरूता भी उसका एक गुण है पर भावुक और डरपोक भाव दोनों का समावेश रहेगा क्योंकि चंद्र+बुध भी शत्रु ही हैं।

रोहिणी का चतुर्थ चरण–इस चरण का स्वामी चद्र है। अतः राशि स्वामी शुक्र के गुणों को सत्यवादिता एवं सौन्दर्य दोनों को अपनायेगा। जातिका यथार्थ को जानेगी व सत्यप्रिय भी होगी।

आप स्त्री सूचक लग्न वाले हैं तथा वृष राशि अर्द्धजल लग्न भी कहलाता है। इसलिए गायन, नृत्यकला, सिनेमा तथा अभिनेता व अभिनेत्रियों के प्रति आपका झुकाव कुछ विशेष रहेगा। यदि आपका जन्म "कृतिका" नक्षत्र में है तो आप खूबसूरत व्यक्ति हैं। विपरीत लिंगी के प्रति आप शीघ्र आकर्षित हो जायेंगे और आप पायेंगे कि लड़कियां भी आपकी ओर सहज में आकर्षित हो जाएंगी। सेक्स के मामले में आप बहुत लचीले स्वभाव के हैं तथा मन पर आपका नियंत्रण सभव नहीं है। फिर भी सेक्स के मामले में आपको काफी हद तक सफलताएं मिलेगी।

कृतिका नक्षत्र

"*कृतिकायाः त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोर्द्ध, वृषभः।।* इसमे कृतिका–सूर्य, रोहिणी- चद्र, मृगशिर्ष मंगल इन तीन ग्रहो की प्रधानता विद्यमान है। कृतिका नक्षत्र-स्वामी सूर्य/राशि वृष, राशि स्वामी शुक्र "

चरणानुसार कृत्तिका नक्षत्र के फल

चरण	चरणों के अंश	नवांश चरण स्वामी	अंशों के उपस्वामी व अंश
द्वितीय	0/0/9 से 3/20/0	शु.	शु/सू./रा. 0/0/0 से 1 13 20 शु/सू/गु. 1/1320 से 3.0.0
तृतीय	3/21/0 से 6/40/0	श.	शु/सू./गु. 3/0/0 से 5.6.40 शु/सू./बु. 5/6/40 से 7.0.0
चतुर्थ	6/41/0 से 10/0/0	गु.	शु/सू./के. 7/0/0 से 7.46.40

"तेजस्वी बहुलोद् भवः प्रभुसमो अमरवेश्च विद्याधनो" चंद्र कृतिका के नक्षत्र में हो व लग्न-कृत्तिका के नक्षत्र में हो एक ही बात है ऐसा जातक तेजस्वी जरूर होगा। क्योंकि कृतिका का स्वामी सूर्य है। देवताओं के सेनापति स्कंद की माताएं छः कृतिकाए थीं जिन्होंने तेजस्वी संतान को पुष्ट किया। यह जातिका पढ़ाई मे चतुर होगी। यह सूर्य का विशेष गुण तेज है। परन्तु शुक्र व सूर्य में शत्रुता भी है। अतः सुदर भी हो तेजस्वी भी हो पर स्थिर विचार न रहगे।

सूर्य के इस नक्षत्र में चंद्र (राशि) भी रहेगा तो सूर्य चंद्र मेल होगा। चंद्र अर्थात् मन पर तथा शरीर पर तेज की अनुभूति होगी।

अतः जब चंद्रमा रूपी व्यक्तित्व कृतिका से प्रभावित होगा तो उसमें प्रभुत्व होगा। अर्थात् उच्च स्तरीय स्थिति आयेगी, राजकीय गुण आयेंगे। वृष में चद्रमा उच्च का होता है प्रथम 3 अंश तक परमोच्च बनता है। चंद्र इस नक्षत्र में धन भी देता है, कारण दो लग्न द्योतक ग्रहों से युति है। वैसे सूर्य का बल भी बढ़ जाता है। अतः हो सकता है कि यह गुण सूर्य के नक्षत्र को चद्रमा द्वारा लाभ पहुचाना हो। चंद्र भी कृतिका नक्षत्र में हो–

स्यात् कृतिका स्वन्यकलभग्मयी, प्रभूत रूकः ख्याति युतः सुतेज॥

कृतिका नक्षत्र का चद्र जातक या जातिकाओं में एक दूसरे के प्रति आकर्षण देता है। अन्योन्य आकर्षण का स्वभाव बनता है। रोग भी शीघ्र प्रभावी होते हैं। सौन्दर्य के तेज के कारण प्रसिद्धि भी खूब मिलती है। बहुभोगी होना व रोगी होना, दो अवगुण निहित हैं। कारण सैक्स की उत्तेजना हो सकती है या भोजन की असावधानी से रोग संभव है।

कृत्तिका का दूसरा चरण–(0/0/0/0 से 1/3/20/0) स्वामी सूर्य, चरण स्वामी शनि का समन्वय है। अत: विज्ञान शास्त्र की जानकार हो सकती है, डॉक्टर हो सकती है। यह शनि का चरण तो है पर नक्षत्र स्वामी सूर्य है। अत: ज्ञान अनुभव दोनों का समावेश है।

कृत्तिका का तीसरा चरण–(1/3/20/0 से 2/6/40/0) इसमें राशि स्वामी शुक्र, नक्षत्र स्वामी सूर्य और चरण स्वामी शनि का समावेश है। उप नक्षत्र स्वामी शनि, बुध का भी समावेश होने से फल में कुछ अंतर है, अत: शूरवीरता तो आएगी। इस पाद का स्वामी भी शनि है परन्तु यहां शनि मकर राशि का न बनकर कुंभ राशि का बनेगा। अत: शूरवीर सूर्य के नक्षत्र में शनि का धीरज पाकर अधिक शौर्य का परिचय देगा।

कृत्तिका का चौथा चरण–(1/6/40/0 से /1/10/0/0) राशि स्वामी शुक्र, नक्षत्र स्वामी सूर्य, चरण स्वामी गुरु होगा, उप नक्षत्र स्वामी केतु या शुक्र होगे। अत: जातक दीर्घायु होगा, संतान वाला होगा, कारण गुरु अपने शुभ प्रभाव से चद्र द्वारा प्रदर्शित आयु को बढ़ा देगा। (क्योंकि चद्र स्वय लग्न होता है।) पुत्रोत्पत्ति में गुरु सहायक होगा।

चरणानुसार मृगशीर्ष नक्षत्र के फल

चरण	अंश से तक	चरण के नवमांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र अंश से तक
प्रथम	23.21.0 से 26.40.0	सू. सू.	शु. शु.	मं. मं.	म. 23.20.0 से 24.6.40 रा. 24.6.40 से 26.6.4
द्वितीय	26.40.0 से 30 0.0	बु. बु.	शु. शु.	मं. मं.	गु. 26.6.40 से 27 53.2 श. 27.53.20 से 30.00.0

वृष में 3 20 0 से 30–0–0 तक यह मगल का नक्षत्र है। प्रथम 2 चरण वृषभ के अर्थात् शुक्र के अतर्गत शेष 2 चरण बुध के अंतर्गत होगे।

प्रथम 2 चरणों में मंगल+शुक्र+चरण स्वामी सूर्य व बुध का भाग रहगा। अत: जातक उत्साही और भोगी दोनों ही बनेगा।

यहां वृष राशि सम्पूर्ण होती है।

1–26–40–0 से 1–30–0–0 तक।

उत्साह भोगार्थ सुतो मृगांके,
भीरू पटुस्यात् चतुरः चलश्च॥

व्यक्ति धनी, चतुर, कुशल पर अंदर से डरा हुआ व चंचल स्वभाव वाला होगी।

प्रथम चरण–प्रथम चरण में व्यक्ति राजातुल्य बनता है। इसका स्वामी सूर्य राजा है। चंद्र अपने मित्र के द्वारा प्रभावित होकर राजसी ठाठ बाट देता है।

द्वितीय चरण–द्वितीय चरण का स्वामी बुध है अतः बुध+मंगल में शत्रुता है। इनके चरण में चंद्र का होना स्वभाव में चौर्यवृत्ति लायेगा क्योंकि मंगल स्वय सुन्दर है। स्वर्ण चोर ही स्वर्णकार बनते हैं। अतः कुछ छिपाने की, चोरी की आदत भी स्वभाव में होती है।

इसमें प्रधान ग्रह शनि है, सम ग्रह शुक्र है, शुभ शनि, बुध, सूर्य (मंगल) है। पाप ग्रह गुरु, चंद्र (शुक्र) मारक बुध, मंगल, गुरु, शुक्र, चंद्र राजयोग कर्त्ता शनि अकेला अल्प सुखद। बुध वृष राशि के जातक के गला व मुख को प्रभावित करती है। यह काल पुरुष का दूसरा भाव है। द्वितीय भाव भावेश वृष राशि एवं शुक्र पाप पीड़ित हो तो गले व मुख में रोग देंगे।

- ❑ यहां केवल बुध+सूर्य से कोई योग नहीं बनता चाहे यह युति कहीं भी हो।
- ❑ केवल शनि जब तक बुध व सूर्य से सम्बन्ध नहीं करता योगप्रद नहीं होता।
- ❑ वृषलग्न स्थिर लग्न है अतः नवम भाव व उसका स्वामी बाधक बनता है। यदि खर ग्रह व मांदि इसमें हो तो पूर्ण बाधक होता है। उसकी दशा आधी अच्छी और आधी खराब रहेगी।
- ❑ शनि अकेला शुभ दृष्ट हो व त्रिकोणेश और केन्द्रेश बुध व सूर्य से सम्बन्ध करे तो योगप्रद होगा।

वृषलग्न की जातिका का संपूर्ण प्रभाव

सत्य बोलने वाली, मन की बात जानने वाली, रहस्यवेत्ता अच्छे और विनम्र ढग से काम करने वाली, पति को प्यारी और सभी कलाओं में चतुर तथा अपने परिवार का हित चाहने वाली तथा ब्राह्मण व गुरु देव की पूजक होती है। सभी का आदर भी करती है, खरीद फरोख्त मे होशियार होती है।

वृष राशि के स्वभाव के कारण शुक्र+सूर्य+चंद्र+मंगल के मिश्रित प्रभाव से इसकी जितनी सुदर आकृति होती है उतना ही अच्छा पति भी प्राप्त होता है वृष का चंद्र 3 अंशों तक परमोच्च हाता है। आगे भी उच्च का तो रहता ही है। यह परस्पर बहुत प्रेम दर्शाती है। इसके स्थूल होंठ और नाक होते हैं। कफ प्रकृति बनती है।

धनवती और बहुत खर्च वाली होती है। यह दूसरे धर्मों का बहुत आदर करती है। और उन्हें मानती भी है। वृषलग्न में वृष के चंद्र को भी संघर्षप्रद माना गया है। इसके फल अच्छे कम हैं। अत: यह सब प्रकार के काम करने में कुशल होती है। लेकिन अपने परिवार वालों की कोई चिन्ता नहीं करती है इसके सीमित संतान होती है। अपने समान स्त्री से सदा वैर भाव रखती है इनके नेत्र पांव और गर्दन में पीड़ा रहती है। कार्तिक का मास इसके लिए विशेष शुभ रहता है। अपने सभी महत्वपूर्ण कार्य इसी मास में करें तो श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा। इनको जीवन में 3 बार विशेष खतरा उठाना होता है। 7 वें वर्ष में जल भय रहता है। दसवें वर्ष में अग्नि से, 16 वें वर्ष में वात, कफ रोग का भय रहता है। अपघात व मृत्यु भूख, परिश्रम या जल तथा शूल रोग से बनती है। अगर काई अन्य मारक योग न बने तो आयु 78 वर्ष तक होती है।

वृष राशि व लग्न में स्थित ग्रहों के योग

- ❑ यदि लग्न मे मगल है तो शरीर पुष्ट होगा, परन्तु मागलिक दोष बनेगा। व्यक्ति महान कंजूस होगा चोट भी लग सकती है।
- ❑ लग्न में चंद्र विशेष धन योग नहीं करता। संसार में कम सुख मिलेगा। विवाह में बाधा आएगी।
- ❑ लग्न में शुक्र 'मालव्य योग' करेगा, श्रेष्ठ फल होगा। शुक्र पाप प्रभावी होगा तो गले में कष्ट रहेगा।
- ❑ लग्नेश शुक्र शरीर से सुंदर होगा। रंग यदि गोरा हो तो गैर से संपर्क भी कर सकता है। यदि रंग कुछ काला भी हो तो पति गौर वर्ण का मिलेगा, विलासनी होगी।
- ❑ लग्न में गुरु शुभ फल नही करेगा, वह शत्रुक्षेत्री होकर निर्बल रहेगा।
- ❑ लग्न के चंद्र पर सूर्य या बुध की दृष्टि हो तो उत्तम विद्यायोग बनेंगे।
- ❑ लग्नेश शुक्र की दशा भी अशुभ फल प्रदान करेगी।
- ❑ लग्न में गुरु+चंद्र दोनों हो, चुनाव में विजय होगी।
- ❑ पृथ्वी तत्त्व शनि लग्न में घमंडी बनायेगा, नीच व दुष्ट स्वभाव देगा। शनि से भी मांगलिक तुल्य बनेगी। विचार शून्य हो, नौकारी में सुख मिलेगा।
- ❑ लग्न में राहु+चद्र हो तो विवाह तो जल्दी हो पर विधवा शीघ्र हो या विवाह के तीसरे दिन ही पति का एक्सीडेंट हो और धन हानि खूब होगी।
- ❑ लग्न में केतु हो तो पति पत्नी में झगड़ा बन रहेगा। यह भी मांगलिक तुल्य योग है।

- ❑ लग्न में शुक्र पाप पीड़ित हो तो शरीर प्राय: अस्वस्थ रहेगा।
- ❑ लग्न में सूर्य हो तो यह भी मांगलिक तुल्य दोष देता है। विवाह में देरी होती है या बाधा आती है। शरीर के किसी अंग में पीड़ा रहती है। सूर्य और शुक्र शत्रु हैं। अत: पेट या गले में विकार भी संभव हैं। पृथ्वी तत्त्व है और उसी तत्त्व का सूर्य होने से जातिक अति विश्वासी होगी। दृढ़ निश्चयवाली हो, उद्धार हो। ऊंचे विचारों के होने पर स्वाभिमानी हो। हल्के काम का तिरस्कार करने वाली, कुछ कठोर व न्याय चाहने वाली प्रमाणिक हो।
- ❑ सूर्य+मंगल+शनि+राहु या केतु ये 5 ग्रह भौम पंचक दोष वाले हैं। इनमे से चार ग्रह साथ रह सकते हैं तब प्रबल मांगलिक बनेगी गुरु दृष्ट हो तो ठीक हैं वरना गृहस्थ सुख का प्राय: अभाव रहेगा। ऐसी कन्या का विष्णु से घट विवाह करके विवाह करना उत्तम फलदायक होगा।
- ❑ क्रूर ग्रह लग्न में हो तो दुष्ट कर्म करेगी यदि शुभ दृष्टि हो तो स्थिर बुद्धि होगी।
- ❑ चंद्र+मंगल लग्न में हो वह अंधी बनेगी। हठीली होगी और दुबली-पतली रहेगी।
- ❑ वृषलग्न चंद्र रोहिणी नक्षत्र के तीसरे चरण 16-40 से 20-0 मध्य स्वग्रही पर मिथुन नवांश में जाने से प्रेम विवाह देकर तलाक बनायेगा। मृगशिरा में 2 चरण 26-40 से 30 0 में शुक्र कन्या नवांश में जाकर विलम्ब से विवाह योग देगा, इतर यौन सम्बन्ध भी करेगा।
- ❑ सूर्य+चंद्र व पाप ग्रह लग्न में हो तो जातिक का चरित्र दूषित हो सकता है।
- ❑ लग्नेश शुक्र, बुध, गुरु और सूर्य 4 ग्रह लग्न मे हो तो सुखी रहेगी।
- ❑ लग्न में गुरु+शनि युति हो तो भी ठीक योग नहीं होता। शनि के साथ अष्टमेश का योग है। घरेलू जीवन ठीक नहीं रहेगा।

यदि आपका जन्म 13 मई व 14 जून के बीच में हुआ है तो निश्चय ही आपका भाग्योदय 24 वर्ष की अवस्था से प्रारभ हो जाता है। बचपन बड़े ही आराम से व्यतीत होता है। यौवन काल में आपको भविष्य संवारने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

आपकी प्रकृति स्वार्थी है। अर्थात् आप अपने कार्य के प्रति पूर्णरूपेण, सजग व सचेत रहेंगे। आप कोरी भावनाओं मे बह जाने वाले व्यक्ति नहीं हैं। खाली ख्याली घुलाव व कल्पना लोक मे विचरण करने वाले व्यक्तियों में आपका नाम नहीं। आप कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं स्पष्टवादी हैं राजनीतिक, सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भाग लेने

से आपको बहुमूल्य जायदाद प्राप्त हो सकती है। मित्र व संबंधियों के स्नेह से आपकी आर्थिक उन्नति भी संभव है।

प्रायः वृषलग्न वाले जातक को व्यापार में रुचि रहती है, ऐसे जातक कुशल व्यापारी होते देखे गये हैं। नित नई, वेशभूषा पहनने व सुंदर ढग से अलंकृत रहने का शौक इनको कुछ विशेष ही होता है। ये श्रृंगार प्रिय तथा कला मे रुचि लेने वाले व्यक्ति होते हैं। उत्तम व मिष्ठान भोजन के शौकीन होते हुए भी खुशबूदार वस्तुओं के बड़े रसिक होते हैं, कला की कद्र करना तथा किसी भी व्यक्ति के गुण अवगुण को परखने की कला इनमें खूब होती है। कुल मिलाकर ये शौकीन मिजाज तो होते ही हैं, इसके साथ वस्तु की बारीकी को पकड़ना व कार्य की गहराई में उतरना इनकी मौलिक विशेषता कही जा सकती है।

शुक्र एक विलासी, शीतल व सौम्य ग्रह है। यह रात्रि को हल्की श्वेत झलकदार किरणें बिखेरता है। अतः श्वेत रंग व साफ-सुथरी एवं ऐश्वर्य प्रधान वस्तुओं का व्यापार आपके अनुकूल कहा जा सकता है। आपका अनुकूल रत्न "हीरा" है।

❑❑❑

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	च.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–		
वृष राशि											
3. कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चन्द्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/26/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	वू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.
की	2/6/40/0	4	मं.

6. आर्द्रा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
कु	2/.0/0/0	1	गु.
घ	2/13/20/0	2	श.
ङ	2/16/40/0	3	श.
छ	2/20/0/0	4	गु.

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
के	2/23/20/0	1	मं.
को	2/26/40/0	2	शु.
हा	2/30/0/0	3	बु.
–	–	-	–

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.
–	–	–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

8. पुष्य (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
हू	3/6/40/0	1	सू.
हे	3/10/0/0	2	बु.
हो	3/13/20/0	3	शु.
डा	3/16/40/0	4	मं.

9. आश्लेषा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
डी	3/20/0/0	1	गु.
डू	3/23/20/0	2	श.
डे	3/26/40/0	3	श.
डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)				11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)				12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.	—	—	—	
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.	—	—		
मे	4/13/20/0	4	चं.	टू	4/26/40/0	4	मं.	—	—	—	—

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)				13 हस्त (चन्द्र)				14. चित्रा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	मं.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	—	—	—	—
—		—	—	ठ	5/23/20/0	4	च.	—	—		—

तुला राशि

14. चित्रा (मगल)				15. स्वाति (राहु)				16. विशाखा (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ते	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
-	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.		–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–		–	-	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	-	–		नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–		–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
भा	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–			
भी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–		–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रावण (चन्द्र)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.		–	–	–
		–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)				24. शतभिषा (राहु)				26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	ते	10/23/20/0	1	म.
गे	10/6/40/0	4	मं.	ता	10/13/20/0	2	श.	तो	10/26/40/0	2	श.
–	–	–	–	ती	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	तू	10/19/0/04	4	गु.	–		–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)				27. उत्तराभाद्रपद (शनि)				28. रेवती (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
1	अश्विनी	अश्विन	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व	सम	मित्र	मित्र
3.	कृत्तिका	अग्नि	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
7.	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व	शत्रु	सम	सम	सम
8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व	मित्र	मित्र
9.	आश्लेषा	सर्प	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व	सम	मित्र	सम	सम	सम
10.	मघा	पितारस	केतु	शत्रु	महाशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
11.	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व	स्व	मित्र	मित्र
12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
13.	हस्त	आदित्य	चन्द्रमा	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
14.	चित्रा	त्वसत्व	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	बृहस्पति	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	सम	सम	सम
17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व.	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.
20.	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	सम	मित्र	मित्र
21	उ. षा.	विश्वदेव	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
22	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
23	धनिष्ठा	अष्टवसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
25	पूर्वा भा.	अजैकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	सम	सम	सम
26.	उ. भा.	अहिर बुध्न	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व	मित्र	मित्र
27.	रेवती	पूषा	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व.	सम	मित्र	सम	सम	सम

वृषलग्न पर अंशात्मक फलादेश

वृषलग्न, चरण-1, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–2
3. नक्षत्र अंश–रा0/अ.30/क.0 से रा.1/अ. 3/क.20
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ई
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–द्वितीय शास्त्र विज्ञानम्

कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है, पर कृतिका नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। सूर्य ज्ञान का स्वामी है और शनि अनुभव का दोनों मिलाकर 'विज्ञान' होता है। इस नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति विविध शास्त्रों का ज्ञाता एवं अपने क्षेत्र का विशिष्ट विद्वान होता है।

लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था में है। कमजोर है। जातक लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। सूर्य, शनि व शुक्र की दशाएं अनिष्टफल देगी।

वृषलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका | **2. पद**–2

3. नक्षत्र अंश–रा0/अ.30/क.0 से रा.1/अ. 3/क.20

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि– मीढा | **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**–अग्नि

10. वर्णाक्षर–ई | **11. वर्ग**–गरुड़

12. लग्न स्वामी–शुक्र | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–द्वितीय शास्त्र विज्ञानम्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं अन्य स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है पर कृतिका नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। सूर्य तेज व ज्ञान का कारक है और शनि अनुभव का, दोनों मिलकर 'विज्ञान' होता है। इस नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति शास्त्रों का ज्ञाता एवं अपने क्षेत्र का तेजस्वी विद्वान् होता है।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जातक लग्नबली एवं चेष्टावान् होगा। सूर्य व शनि की दशाएं अशुभ परन्तु लग्नेश शुक्र की दशा शुभ फल देगी।

वृषलग्न, अंश 2 से 3

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका | **2. पद**–2

3. नक्षत्र अंश–रा0/अ.30/क.0 से रा.1/अ. 3/क.20

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि– मीढा | **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**–अग्नि

10. वर्णाक्षर–ई | **11. वर्ग**–गरुड़

12. लग्न स्वामी–शुक्र | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–द्वितीय शास्त्र विज्ञानम्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है सूर्य तेज व ज्ञान का कारक है और शनि अनुभव का, दोनों मिलकर 'विज्ञान' होता है। इस नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति शास्त्रों का ज्ञाता एवं अपने क्षेत्र का तेजस्वी विद्वान् होता है।

लग्न दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, लग्न स्वामी शुक्र के प्रतिस्पर्धी होने के जातक को सूर्य व शुक्र दोनों की दशा संघर्ष पूर्ण होगी।

वृषलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका 2. पद–3

3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.3/क.20 से रा.1/अ. 6/क.40

4. वर्ण–वैश्य 5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि– मीढा 7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–अन्त्य 9. नक्षत्र देवता–अग्नि

10. वर्णाक्षर–ऊ 11. वर्ग–गरुड़

12. लग्न स्वामी–शुक्र 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–तृतीये शौर्यभाग्यवेत्।

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है। सूर्य तेज का प्रतीक है और शनि अनुभव का, फलतः जातक शौर्यवान होगा, तेजस्वी होगा एवं भाग्यशाली होगा।

लग्न तीन से चार अंशों के भीतर होने से उदित अंशों वाला है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य एवं लग्नेश शुक्र परस्पर प्रतिस्पर्धी हैं इससे जातक की सूर्य व शुक्र दोनों की दशा संघर्ष पूर्ण होगी

वृषलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–3
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.3/क.20 से रा.1/अ. 6/क.40
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ऊ
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–तृतीये शौर्यभाग्यवेत्।

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एव पराई स्त्रियों में आसक्त रहता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के तीसरे चरण का स्वामी शनि है। ऐसा जातक शूरवीर होगा। भाग्यशाली होगा।

लग्न चार से पांच अंशों के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।

वृषलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–3
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.3/क.20 से रा.1/अ. 6/क.40
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ऊ
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रुता
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–तृतीये शौर्यभाग्यवेत्।

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई

स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के तीसरे चरण का स्वामी शनि है। ऐसा जातक शूरवीर होगा। भाग्यशाली होगा।

लग्न पांच से छः अंशों के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।

वृषलग्न, अंश 6 से 7

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.6/क.40 से रा.1/अ. 10/क.0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ए
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–दीर्घायु बहुपुत्रश्च चतुर्थ चरणे भवेत्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। फलतः ऐसा जातक दीर्घायु एवं बहुत पुत्रों वाला होगा।

लग्न छः से सात अंशों के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, नक्षत्र चरण स्वामी बृहस्पति का मित्र है। फलतः जातक को सूर्य व बृहस्पति की दशा–अन्तर्दशा में उन्नति होगी। जातक का विशेष भाग्योदय सूर्य, बृहस्पति एवं लग्नेश शुक्र की दशा में होगा।

वृषलग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.6/क.40 से रा.1/अ. 10/क.0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ए
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–दीर्घायु बहुपुत्रश्च चतुर्थे चरणे भवेत्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति दीर्घायु कर्त्ता एवं पुत्र सन्तति प्रदायक है। फलत: ऐसा जातक दीर्घायु एवं बहुत पुत्रों वाला होगा।

लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों व बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, नक्षत्र चरण स्वामी बृहस्पति का मित्र है। फलत: जातक की सूर्य व बृहस्पति की दशा–अन्तर्दशा में उन्नति होगी। जातक का विशेष भाग्योदय सूर्य, बृहस्पति एवं लग्नेश शुक्र की दशा में होगा।

वृषलग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–रा.1/अ.6/क.40 से रा.1/अ. 10/क 0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ए
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–दीर्घायु बहुपुत्रश्च चतुर्थे चरणे भवेत्

कृतिका नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जबकि कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति दीर्घायु कर्त्ता एवं पुत्र सन्तति प्रदायक है। फलत: ऐसा जातक दीर्घायु एवं बहुत पुत्रों वाला होगा।

लग्न आठ से नौ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, नक्षत्र चरण स्वामी बृहस्पति का मित्र है। फलतः जातक की सूर्य व बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में उन्नति होगी। जातक का विशेष भाग्योदय सूर्य, बृहस्पति एवं लग्नेश शुक्र की दशा में होगा।

वृषलग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र–कृतिका
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–रा.1/अ.6/क.40 से रा.1/अ. 10/क.0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि– मीढा
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–अग्नि
10. वर्णाक्षर–ए
11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी -सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–दीर्घायु बहुपुत्रश्च चतुर्थे चरणे भवेत्

कृतिका नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति खाने (भोजन) का शौकीन एवं पराई स्त्रियों में आसक्त होता है। कृतिका नक्षत्र का स्वामी सूर्य व देवता अग्नि है। कृतिका नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति दीर्घायु कर्त्ता एवं पुत्र सन्तति प्रदायक है। फलतः ऐसा जातक दीर्घायु एवं बहुत पुत्रों वाला होगा।

वृषलग्न नौ से दस अंशों के भीतर होने से उदित अंशों का है, बलवान है। जन्म नक्षत्र स्वामी सूर्य, नक्षत्र चरण स्वामी बृहस्पति का मित्र है। फलतः जातक की सूर्य व बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में उन्नति होगी। जातक का विशेष भाग्योदय सूर्य, बृहस्पति एवं लग्नेश शुक्र की दशा में होगा।

वृषलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–रा.1/अ.10/क.40 से रा.1/अ. 13/क.20
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य | 9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर–ओ | 11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र | 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल | 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–सौभाग्यं

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मगल है। जो चद्रमा का मित्र है। फलतः ऐसा जातक सौभाग्यशाली व धनवान होगा।

वृषलग्न दस से ग्यारह अशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी मंगल का मित्र है। फलतः चंद्रमा व मगल की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। लग्नेश शुक्र की दशा उन्नति में विशेष सहायक होगी।

वृषलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी | 2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.10/क.40 से रा.1/अ. 13/क.20
4. वर्ण–वैश्य | 5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प | 7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य | 9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर–ओ | 11. वर्ग–गरुड़
12. लग्न स्वामी–शुक्र | 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल | 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–सौभाग्यं

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरो के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। जो चंद्रमा का मित्र है। फलतः ऐसा जातक सौभाग्यशाली व धनवान होगा।

यहां वृषलग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरणस्वामी मंगल का मित्र है। फलत: चंद्रमा व मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। लग्नेश शुक्र की दशा उन्नति में विशेष सहायक होगी।

वृषलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र—रोहिणी　　**2. पद**—1

3. नक्षत्र अंश—रा1/अ.10/क.0 से रा.1/अ. 13/क.20

4. वर्ण—वैश्य　　**5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—सर्प　　**7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—अन्त्य　　**9. नक्षत्र देवता**—ब्रह्मा

10. वर्णाक्षर—ओ　　**11. वर्ग**—गरुड़

12. लग्न स्वामी—शुक्र　　**13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—चन्द्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी—मंगल　　**15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र　　**17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

18. प्रधान विशेषता—सौभाग्यं

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। जो चंद्रमा का मित्र है। फलत: ऐसा जातक सौभाग्यशाली व धनवान होगा।

यहां वृषलग्न बारह से तेरह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरणस्वामी मंगल का मित्र है। फलत: चंद्रमा व मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। लग्नेश शुक्र की दशा उन्नति में विशेष सहायक होगी।

वृषलग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र—रोहिणी　　**2. पद**—2

3. नक्षत्र अंश—रा1/अ.13/क.10 से रा.1/अ. 16/क.40

4. वर्ण—वैश्य　　**5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—सर्प
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर—वा
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—स्व
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—पीड़ा

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरो के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है जो कि स्वयं लग्नेश है। नक्षत्र स्वामी चद्रमा यहा शुक्र से शत्रु भाव रखता है। फलत: जातक को शारीरिक व मानसिक पीड़ा की अनुभूति होती रहेगी।

यहां वृषलग्न तेरह से चौदह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, नक्षत्र चरणस्वामी शुक्र होने से एव लग्न बनवान अंशों में होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र—रोहिणी
2. पद—2
3. नक्षत्र अंश—रा1/अ.13/क.10 से रा.1/अ. 16/क.40
4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—सर्प
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर—वा
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—स्व
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—पीड़ा

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र

है जो कि स्वयं लग्नेश है। नक्षत्र स्वामी चंद्रमा यहां शुक्र से शत्रु भाव रखता है। फलतः जातक को शारीरिक व मानसिक पीड़ा की अनुभूति होती रहेगी।

यहां वृषलग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था वाला है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से एवं लग्न बलवान अंशों में होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी
2. पद–2
3. नक्षत्र अंश–रा.1/अ.13/क.10 से रा.1/अ. 16/क.40
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर–वा
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–पीड़ा

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है जो कि स्वयं लग्नेश है। नक्षत्र स्वामी चद्रमा यहां शुक्र से शत्रु भाव रखता है। फलतः जातक को शारीरिक व मानसिक पीड़ा की अनुभूति होती रहेगी।

यहां वृषलग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है, बलवान है। लग्न नक्षत्र स्वामी शुक्र, नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से एवं लग्न बलवान अंशों में होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी
2. पद–3
3. नक्षत्र अंश–रा.1/अ.16/क.40 से रा.1/अ. 20/क.0

4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर–वी
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–भीरुत्व

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। यह लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता रखता है। ऐसा जातक भीरु होता है। डरपोक स्वभाव का होता है।

यहां वृषलग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर होने से मध्यबली होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता है। फलतः चन्द्र व बुध की दशा नेष्ट परन्तु लग्न पूर्ण बली होने से लग्नेश शुक्र की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी
2. पद–3
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.16/क.40 से रा.1/अ. 20/क.0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर–वी
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–भीरुत्व

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। यह लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता रखता है। ऐसा जातक भीरु होता है। डरपोक स्वभाव का होता है।

यहां वृषलग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर होने से मध्यबली होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता है। फलतः चन्द्र व बुध की दशा नेष्ट परन्तु लग्न पूर्ण बली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक को उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र—रोहिणी
2. पद—3
3. नक्षत्र अंश—रा1/अ.16/क.40 से रा.1/अ. 20/क.0
4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—सर्प
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर—वी
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—भीरुत्व

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र है। देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। यह लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता रखता है। ऐसा जातक भीरु होता है। डरपोक स्वभाव का होता है।

यहां वृषलग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्यबली होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता है। फलतः चन्द्र व बुध की दशा नेष्ट परन्तु लग्न अंशों में बली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक को उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी
2. पद–3
3. नक्षत्र अंश–रा./अ.16/क.40 से रा.1/अ. 20/क.0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर–वी
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–भीरुत्व

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र होता है देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। यह लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता रखता है। ऐसा जातक भीरु होता है। डरपोक स्वभाव का होता है।

यहा वृषलग्न उन्नीस से बीस अंशों के भीतर मध्यबली होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता है। फलतः चन्द्र व बुध की दशा नेष्ट परन्तु लग्न अंशों में बली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.20/क.0 से रा.1/अ. 23/क.20
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर–वु
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व
18. प्रधान विशेषता–सत्यवादिता

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र और देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चन्द्र है। लग्न नक्षत्र स्वामी और नक्षत्र चरण स्वामी दोनों चन्द्र होने से व्यक्ति सत्यवादी होगा। सत्य की रक्षा के लिए सब कुछ करेगा।

यहां वृषलग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से मध्यबली होने से पूर्ण बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र, नक्षत्र चरण स्वामी भी चन्द्र होने से चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी, परन्तु लग्न मध्यबली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र–रोहिणी
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.20/क.0 से रा.1/अ. 23/क.20
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–ब्रह्मा
10. वर्णाक्षर–वू
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व
18. प्रधान विशेषता–सत्यवादिता

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र और देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला, ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चन्द्र है। लग्न नक्षत्र स्वामी और नक्षत्र चरण स्वामी दोनों चन्द्र होने से व्यक्ति सत्यवादी होगा। सत्य की रक्षा के लिए सब कुछ करेगा।

यहां वृषलग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर अवरोह अवस्था में होने से

थोड़ा उतार में है, फिर भी बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी चन्द्र होने से चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी परन्तु लग्न मध्यबली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र—रोहिणी | **2. पद**—4

3. नक्षत्र अंश—रा1/अ.20/क.0 से रा.1/अ. 23/क.20 तक

4. वर्ण—वैश्य | **5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—सर्प | **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**—ब्रह्मा

10. वर्णाक्षर—वू | **11. वर्ग**—हरिण

12. लग्न स्वामी—शुक्र | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—चन्द्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी—चन्द्र | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—स्व | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—स्व

18. प्रधान विशेषता—सत्यवादिता

रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चंद्रमा और देवता ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दूसरों के छिद्रान्वेषण में तत्पर रहता है। कमजोर शरीर वाला ज्ञान वाला परन्तु परस्त्री में अनुसक्त रहता है। रोहिणी नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चन्द्र है। लग्न नक्षत्र स्वामी और नक्षत्र चरण स्वामी दोनों चन्द्र होने से व्यक्ति सत्यवादी होगा। सत्य की रक्षा के लिए सब कुछ करेगा।

यहां वृषलग्न बाईस से तेईस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है, बलवान है। नक्षत्र स्वामी चन्द्र एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी चन्द्र होने से चंद्रमा की दशा शुभफल देगी, परन्तु लग्न मध्यबली होने से लग्नेश शुक्र की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र—मृगशिरा | **2. पद**—1

3. नक्षत्र अंश—रा1/अ.23/क.20 से रा.1/अ. 26/क 40 तक

4. वर्ण—वैश्य | **5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—सर्प | **7. गण**—देव

8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–वे
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–नृपति

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। इन दोनों ग्रहों का सयोग राजयोग देता है जातक नृपति, राजा होता है किंवा राजा के समान ऐश्वर्यवान होता है।

यहां वृषलग्न तेईस से चौबीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी मंगल और नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य में मित्रता होने से सूर्य और मंगल दोनों की दशाएं शुभफल देंगी परन्तु लग्न मध्यबली होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.23/क.20 से रा.1/अ. 26/क.40 तक
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–वे
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–नृपति

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। इन दोनों ग्रहों का संयोग राजयोग देता है। जातक नृपति, राजा होता है किंवा राजा के समान ऐश्वर्यवान होता है।

यहां वृषलग्न चोबीस से पच्चीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी मंगल और नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य में मित्रता होने से सूर्य और मंगल दोनों की दशाएं शुभफल देगी, परन्तु लग्न अंशों में बलवान होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.23/क.20 से रा.1/अ. 26/क.40
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–वे
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–नृपति

मृगशिर नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटी दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। इन दोनों ग्रहों का संयोग राजयोग देता है। जातक नृपति, राजा होता है किंवा राजा के समान ऐश्वर्यवान होता है।

यहां वृषलग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में होने से बलवान है। नक्षत्र स्वामी मगल और नक्षत्र चरण स्वामी सूर्य में मित्रता होने से सूर्य और मगल दोनो की दशाएं शुभफल देगी, परन्तु लग्न अंशों में बलवान होने से लग्नेश शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी।

वृषलग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा
2. **पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–रा1/अ.20/क.40 से रा.1/अ. 26/क.40
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–सर्प
7. **गण**–देव

8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—चन्द्र
10. वर्णाक्षर—वा
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—तस्करी

मृगशिर नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी स्वामी से, नक्षत्र देवता से बुध की शत्रुता है। ऐसा जातक झूठ बोलने एवं चौर्य कार्य में रुचि लेगा।

यहां वृषलग्न छब्बीस से सताईस अंशों में अवरोह अवस्था में है, हीन बली है। नक्षत्र स्वामी मंगल एव नक्षत्र चरण स्वामी में परस्पर शत्रुता होने से मगल और बुध की दशाएं नेष्ट फल देगी। लग्न यहां अवरोह होकर वृद्धावस्था में है। फलतः शुक्र की दशा-अन्तर्दशा जातक की उन्नति तो करायी पर विशेष भाग्योदय करने में सहायक न हो सकेगी।

वृषलग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र—मृगशिरा
2. पद—2
3. नक्षत्र अंश—रा1/अ.20/क.40 से रा.1/अ. 26/क.40
4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—सर्प
7. गण—देव
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—चन्द्र
10. वर्णाक्षर—वा
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—मगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—तस्करी

मृगशिर नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा

नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी स्वामी से, नक्षत्र देवता से बुध की शत्रुता है। ऐसा जातक झूठ बोलने एवं चौर्य कार्य में रुचि लेगा।

यहां वृषलग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों के मध्य अवरोह अवस्था मे है, परन्तु वृषलग्न मे अशों की यह स्थिति बड़ी महत्वपूर्ण है। यह विशिष्ट अवस्था है। लग्नेश शुक्र मीन राशि के 27 अशों मे परम उच्च का एव कन्या राशि के 27 अंशो में परम नीच का होता है। अतः यहां 27 अंशों का बड़ा महत्व है। नक्षत्र स्वामी मगल एवं नक्षत्र चरा स्वामी में परस्पर शत्रुता है। फलतः मंगल व बुध की दशाएं नेष्ट है, परन्तु लग्नेश शुक्र की दशा अन्तर्दशा में अमूलचूक परिवर्तन का संकेत है। यह परिवर्तन शुभ भी हो सकता है। और अशुभ भी। शुक्र ग्रह की लग्न में स्थित एवं शुक्र के स्वयं का अंशों में बलाबल की अवस्था ही इस निर्णय में सहायक होगी।

वृषलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा **2. पद**–2

3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.20/क.40 से रा.1/अ. 26/क.40

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–सर्प **7. गण**–देव

8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–चन्द्र

10. वर्णाक्षर–वा **11. वर्ग**–हरिण

12. लग्न स्वामी–शुक्र **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–मगल

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–सम

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–तस्करी

मृगशिर नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी स्वामी से, नक्षत्र देवता से बुध की शत्रुता है। ऐसा जातक झूठ बोलने एवं चौर्य कार्य मे रुचि लेगा।

यहा वृषलग्न अट्ठाईस से उन्नतीस अंशों में होने से अवरोह अवस्था मे हीनबली है, सारा तेज समाप्ति की ओर है। नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में शत्रुभाव है. लग्नेश शुक्र अशों में मृत हो चुका है। फलतः मंगल, बुध एव शुक्र की दशाए नेष्ट फल देगी। यह तथ्य फलादेश करते समय ध्यान में रखना चाहिए।

वृषलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. पद–2
3. नक्षत्र अंश–रा1/अ.20/क.40 से रा.1/अ. 26/क.40
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–वा
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी -मगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–सम
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–तस्करी

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल है। मृगशिरा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है लग्न नक्षत्र स्वामी स्वामी से, नक्षत्र देवता से बुध की शत्रुता है। ऐसा जातक झूठ बोलने एव चौर्य कार्य में रुचि लेगा।

यहां वृषलग्न उन्नतीस से तीस अशों में होने से अवरोह अवस्था में मतावस्था (Combust) है। निस्तेज है। नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। लग्नेश शुक्र अंशों में मृत हो चुका है। फलतः मंगल, बुध एवं शुक्र की दशाएं नेष्ट फल देगी। यह तथ्य फलादेश करते समय विशेष रुप से ध्यान में रखना चाहिए।

❑❑❑

वृषलग्न और आयुष्य योग

1. वृषलग्न के लिये यद्यपि बुध मारकेश पर अष्टमेश गुरु मारकेश का कार्य करेगा। चंद्रमा परमपापी है और शुक्र कभी-कभी अशुभ फलदायक भी होगा। आयुष्य प्रदाता ग्रह शुक्र है।
2. वृषलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु गुप्त एवं गुदारोग से, सर्प, कीट, पशु या अपने ही जन्म स्थान के निवासी द्वारा होना सम्भव है।
3. वृषलग्न वाले व्यक्तियों की औसत आयु 85 वर्ष मानी गई है। जन्म के उपरान्त 3, 5, 6, 8, 13, 17, 20, 21, 28, 33, 42, 52, 62, 63, 71 और 78 वर्ष में अल्पभय या शारीरिक रोगों के प्रकोप का भय रहता है।
4. वृषलग्न में चंद्रमा, बुध, शुक्र एवं गुरु के साथ लग्न में हो तो और बचे हुये सभी ग्रह द्वितीय भाव में हो तो जातक इन्द्र के समान चिरंजीवी एवं यशस्वी होता है।
5. यदि वृषलग्न में शुक्र एवं बृहस्पति केन्द्र में हो और अन्य सारे ग्रह तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें भाव में हों तो ऐसा जातक चिरजीवी होता है।
6. वृषलग्न में वृष का नवमांश हो, शुक्र गोपुरांश से होकर तीसरे या ग्यारहवें स्थान में हो तो जातक ब्रह्मा के समान यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
7. वृषलग्न में मंगल हो, गुरु एवं बुध केन्द्रवर्ती हो, चंद्रमा गोपुरांश में हो तो जातक यशस्वी एव चिरजीवी होता है।
8. वृषलग्न में सूर्य एव मंगल आठवें तथा सिंह का बृहस्पति केन्द्र में हो तो व्यक्ति सौ वर्ष की स्वस्थ शतायु को भोगता है।
9. वृषलग्न में शनि उच्च का छठे भाव में जातक को दीर्घायु देता है।
10. वृषलग्न में बृहस्पति बैठा हो तथा शुक्र उसे देखता हो तो जातक सौ वर्ष की दीर्घायु को प्राप्त करता है।
11. वृषलग्न में चद्रमा छठे तुला का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

12. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो व्यक्ति 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
13. वृषलग्न में वृश्चिक का मंगल यदि दशम भाव को देखे तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र–त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।
14. वृषलग्न में शनि मेष का बारहवें, मगल कन्या का पाचवे एव सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु प्राप्त करता है।
15. वृषलग्न में कुम्भ का बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ केन्द्र में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
16. वृषलग्न में शुक्र हो, तथा बुध और शनि केन्द्र मे हो, तीसरे भाव में उच्च का गुरु, एकादश में कोई भी शुभ ग्रह हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. शनि यदि लग्न में, सिंह का चंद्रमा चौथे, मंगल वृश्चिक का सातवें, सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु सातवें हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
19. वृषलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें या द्वादश भाव में हो तो जातक सैद्धान्तिक विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
20. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र अष्टम भाव मे पाप ग्रहों के साथ हो, अष्टमेश गुरु पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा व्यक्ति मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
21. वृषलग्न मे शनि+मगल हो, चंद्रमा आठवे एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
22. वृषलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शुक्र निर्बल हो, लग्न, द्वितीय एवं द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
23. वृषलग्न में मेष का बृहस्पति एवं मीन का मगल परस्पर एक दूसरे के घर मे बैठने से बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।
24. वृषलग्न में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा सातवें भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक ज्यादा नहीं जीता।

25. वृषलग्न में छठे स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।
26. वृषलग्न में द्वादशस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।
27. वृषलग्न में तृतीयस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है
28. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र एवं लग्न दोनो पापग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर आत्महत्या करता है।
29. वृषलग्न का षष्ठेश शुक्र सप्तम या दशम भाव मे हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शुभकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।
30. वृषलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, शनि सातवें हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।
31. वृषलग्न मे निर्बल चद्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक पिशाच बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है एवं अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

वृषलग्न और रोग

1. वृषलग्न में षष्ठेश शुक्र लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जल स्राव से अंधा होता है।
2. वृषलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश सूर्य पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. वृषलग्न में चतुर्थेश सूर्य यदि अष्टमेश गुरु के साथ अष्टम स्थान मे हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. वृषलग्न में चतुर्थेश सूर्य, तुला या मकर राशि का हो अथवा अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. वृषलग्न में सिंह का शनि चतुर्थ में हो, तथा सूर्य एव षष्टेश शुक्र पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. वृष लग्न में चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो, सूर्य नीच का हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. वृषलग्न मे सिंह का शनि एवं कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है पर जातक उपाय करने से बच जाता है।
8. वृषलग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट अटैक) होता है।
9. वृषलग्न में वृश्चिक का सूर्य पाप ग्रहों के मध्य हो, पाप दृष्ट हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. वृषलग्न में शुक्र+सूर्य+गुरु की युति दु:स्थान में हो तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।
11. वृषलग्न में पाप ग्रह हो, लग्न का स्वामी शुक्र बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

12. वृषलग्न में क्षीण चंद्रमा स्थित हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति सदैव रोगी रहता है।

13. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु लग्न में एवं लग्नेश शुक्र अष्टम में हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता। सदैव रोगी रहता है।

14. वृषलग्न में शुक्र चौथे या बारहवें भाव में मंगल+बुध के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

15. वृषलग्न मे शनि+चंद्रमा से युत बृहस्पति छठे हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

16. वृषलग्न में शनि मेष का बारहवें मंगल कन्या का पांचवें एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु प्राप्त करता है।

17. वृषलग्न में कुभ का बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ केद्र में हो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. वृषलग्न में शुक्र हो, तथा बुध और शनि केंद्र में हो, तीसरे भाव मे उच्च का गुरु तथा एकादश में कोई भी शुभ ग्रह हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

19. शनि यदि लग्न में, सिंह का चंद्रमा चौथे, मगल वृश्चिक का सातवें, सूर्य दसवें स्थान मे किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु सातवें हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान मे हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. वृषलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें या द्वादश भाव में हो तो जातक सैद्धांतिक विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

22. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र अष्टम भाव में पाप ग्रहो के साथ हो, अष्टमेश गुरु पाप ग्रहो के साथ छठे भाव में, शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा व्यक्ति मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

23. वृषलग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

24. वृषलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव मे पाप ग्रह हो, लग्नेश शुक्र निर्बल हो,

लग्न द्वितीय एवं द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

25. वृषलग्न में मेष के बृहस्पति एवं मीन के मंगल के परस्पर एक-दूसरे के घर में बैठने से 'बालारिष्ठ योग' बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

26. वृषलग्न में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा सातवें भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक ज्यादा नहीं जीता।

27. वृषलग्न मे छठे स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

28. वृषलग्न में द्वादशस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

29. वृषलग्न में तृतीयस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

30. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर 'आत्महत्या' करता है।

31. वृषलग्न का षष्ठेश शुक्र सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

32. वृषलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, शनि सातवें हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

33. वृषलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टमा में शनि के साथ हो तो जातक पिशाच बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीडित रहता है एवं अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

वृषलग्न और धनयोग

वृषलग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धन प्रदाता ग्रह बुध है। धनेश बुध की शुभाशुभ स्थिति मे, धन स्थान में संबंध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एव योगायोग, बुध एव धन स्थान पर पड़ने वाले ग्रहो के दृष्टि सबध से जातक की आर्थिक स्थिति आय के स्रोत्रों तथा चल, अचल सम्पत्ति का पता चलता है। लग्नेश शुक्र भाग्येश शनि एव लाभेश बृहस्पति की अनुकूल स्थितिया वृषलग्न वालों के लिए धन, ऐश्वर्य एव वैभव को बढ़ाने में पूर्ण रुप से सहायक होती हैं।

वैसे वृषलग्न के लिए गुरु, शुक्र और चन्द्र अशुभ हैं। शनि और बुध अल्प अशुभ हैं। अकेला शनि राजयोग करता है। गुरु अष्टमेश होने से मारक का फल देता है। सूर्य शुभ फलदायक है। परमपापी चद्रमा व गुरु हैं योगकारक सूर्य, बुध व शनि ही हैं।

शुभ योग–बुध+शनि।

अशुभ योग–बुध+गुरु, शुक्र+मंगल।

सफल योग–शुक्र+शनि, सूर्य+बुध, सूर्य+शनि।

निष्फल योग–शुक्र+बुध, मंगल+बुध।

लक्ष्मी योग–शनि नवम में या सप्तम में, बुध द्वितीय या पंचम में।

विशेष योगायोग

1. वृषलग्न में बुध, मिथुन या कन्या राशि में हो तो व्यक्ति धनवान होता है।
2. वृषलग्न में शनि, मकर, कुम्भ या तुला राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति धन के मामले में भाग्यशाली होता है।
3. वृषलग्न में शुक्र हो, शनि, बुध से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक शहर का प्रतिष्ठित धनवान होता है।

4. वृषलग्न में बुध एवं शनि परस्पर परिवर्तन योग करके बैठे हों अर्थात् बुध, मकर या कुम्भ राशि मे हो तथा शनि, मिथुन या कन्या राशि में हो तो जातक अपने पुरुषार्थ एवं पराक्रम से धनवान बनता है तथा खूब धन कमाता है।

5. वृषलग्न में यदि बुध एवं बृहस्पति परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है तथा जीवन में अत्यधिक धन अर्जित करता है।

6. वृषलग्न में बुध पंचम भाव मे हो, मीन का बृहस्पति लाभ स्थान में चंद्रमा या मंगल के साथ हो तो "महालक्ष्मी योग" बनता है। ऐसे जातक के पास अटूट लक्ष्मी होती है। जातक अपने भुजबल से शत्रुओं का नाश करता हुआ राज्यलक्ष्मी को भोगता है।

7. वृषलग्न में चंद्रमा हो, साथ में मंगल हो तो जातक का भाग्योदय 24 से 28 वर्ष की आयु के मध्य होता है। ऐसा जातक अपने पराक्रम, पुरुषार्थ से खूब धन कमाता है.

8. वृषलग्न में शनि केन्द्र-त्रिकोण में हो, बुध धन स्थान या पंचम भाव में स्वगृही हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह आगे बढ़ता है। अर्थात् सामान्य परिवार मे जन्म लेकर भी धीरे-धीरे अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करता हुआ, 32 वर्ष की आयु के बाद लक्षधिपति, कोट्याधिपति हो जाता है।

9. वृषलग्न में शुक्र, चंद्रमा और सूर्य की युति हो तो जातक महाधनी होता है।

10. वृषलग्न हो, पंचम भाव में बुध हो तथा लाभ स्थान मीन राशि में चन्द्र, मंगल हो तो व्यक्ति महालक्ष्मीवान होता है।

11. वृषलग्न में शुक्र लाभ स्थान में तथा लाभेश गुरु लग्न स्थान में हो तो जातक 33वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्व अर्जित धन-लक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

12. वृषलग्न हो, लग्नेश शुक्र, धनेश बुध, भाग्येश शनि एवं लाभेश गुरु अपनी-अपनी उच्च या स्वराशियों में हों तो जातक करोड़पति होता है।

13. वृषलग्न में पंचम भाव में राहु, शुक्र, मंगल और शनि इन चार ग्रहों की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

14. वृषलग्न मे धनेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान मे हो तो "धनहीन योग" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े मे छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता। सदैव रुपयों की कमी बनी रहती है। इस दुर्योग की निवृत्ति हेतु गले में

"बुधयत्र" धारण करना चाहिये। पाठक चाहे तो "बुधयंत्र" हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

15. वृषलग्न में धनेश बुध यदि आठवें स्थान में हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गड़े हुये धन की प्राप्ति होती है अथवा लॉटरी से भी रुपया मिल सकता है। पर रुपया पास में टिकेगा नही।
16. बुध एव शनि द्वितीय स्थान मे हो तो धन प्राप्ति होती है।
17. सूर्य वृश्चिक का हो तथा शुक्र, सिंह का हो तो ससुराल से धन प्राप्त होता है।
18. शुक्र, मिथुन का हो, बुध मीन का हो, गुरु ध्रुव केन्द्र में हो तो जातक को यकायक अर्थ की प्राप्ति होती है।
19. वृषलग्न हो और मंगल, बुध, गुरु साथ हों तो बुध की महादशा में जातक पर कर्ज होता है।
20. लग्न में शुक्र व मंगल हो और नवम् में मकर का गुरु हो तो बुध व गुरु की दशा में भाग्योदय होगा।
21. वृषलग्न हो, उसमें पूर्ण का चंद्रमा स्थित हो, कुंभ में शनि, सिंह में सूर्य, वृश्चिक में गुरु हो तो अधिक सम्पत्ति, वाहन व प्रभुता की प्राप्ति होती है।
22. राहु लग्न या 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12 भाव में से कहीं भी स्थित हो एवं मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिह, वृश्चिक, मीन मे से किसी में स्थित हो तो जातक अवश्य ही धनी होता है।
23. वृषलग्न हो तथा सूर्य, बुध साथ हो तथा वृश्चिक के अतिरिक्त कहीं भी बैठे हों तो जातक बहुत बड़ा व्यापारी होता है।
24. लाभेश द्वादश स्थान मे हो या भाग्येश, दशमेश व्यय स्थान में हों तो जातक दिवालिया होता है।
25. बुध (द्वितीयेश) 9, 10, 11 भावों में हो तो जातक दिवालिया होता है।
26. लग्नेश शुक्र वक्री होकर 6, 8, 12वें स्थान में हो तो जातक अवश्य ही दिवालिया होता है।
27. चंद्रमा वृश्चिक का हो तथा लग्नेश सुख भाव में स्थित हो तो जातक को ससुराल से धन प्राप्त होगा।
28. लग्नेश लग्न में ही हो तथा दशम पति व चतुर्थेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हों तो छाप होने से जातक धनवान होता है।

29. सूर्य-बुध सुख भवन मे, शनि-चंद्र 10वें, मंगल वृष का हो तो जातक राजा के तुल्य ऐवश्र्य भोगता है।

30. वृषलग्न हो तथा नवमेश-दशमेश का संबंध भाग्य भाव में हो, चतुर्थेश-पंचमेश का संबंध चतुर्थ भाव में हो तो जातक लक्ष्याधिपति होता है।

31. शनि व मंगल 7वें भाव में हो तथा उन पर अन्य ग्रहों की दृष्टि न हो तो दत्तक जाने का योग बनता है।

32. वृषलग्न में मंगल यदि वृश्चिक या मकर राशि में हो तो "रुचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

33. वृषलग्न में सुखेश सूर्य, लाभेश गुरु यदि नवम भाव में हो तथा नवम भाव मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन प्राप्ति होती है।

34. वृषलग्न में गुरु+चंद्र की युति मिथुन, सिंह, कन्या या मकर राशि में हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन मिलता है।

35. वृषलग्न में धनेश बुध अष्टम में एवं अष्टमेश गुरु धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

36. वृषलग्न में तृतीयेश चन्द्र लाभ स्थान में एवं लाभेश गुरु तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों से धन की प्राप्ति होती है।

37. वृषलग्न में बलवान बुध के साथ यदि चतुर्थेश सूर्य की युति हो तो व्यक्ति को माता द्वारा, अनुचरों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

38. वृषलग्न में यदि बलवान बुध की सूर्य से युति हो, पंचम भाव बृहस्पति से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

39. वृषलग्न में बलवान बुध की यदि षष्टेश शुक्र से युति हो तथा धनेश बुध शनि या मंगल से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

40. वृषलग्न में बलवान बुध की सप्तमेश मंगल की युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के पश्चात् होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

41. वृषलग्न में बलवान बुध की नवमेश शनि से युति हो तो ऐसा जातक राजा, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी ठेकों से काफी धन कमाता है।

42. वृषलग्न में बलवान बुध की दशमेश शनि से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा संरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

43. वृषलग्न में दशम भवन का स्वामी शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता, जन्म स्थान में नहीं कमा पाता तथा उसके जीवन में सदैव धन की कमी बनी रहती है।

44. वृषलग्न में लग्नेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं तुला राशि का सूर्य छठे स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में सदैव कमजोर होता है।

45. वृषलग्न में द्वितीय भाव में यदि पाप ग्रह हो तथा लाभेश गुरु यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

46. वृषलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा बृहस्पति से यदि छठे, आठवें एवं बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

47. वृषलग्न में धनेश बुध अस्त हो, नीच राशि (मीन) में हो तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है। उसके सिर से कर्जा नहीं उतरता।

48. वृषलग्न में लाभेश गुरु यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तंगत एवं पाप पीड़ित हो तो व्यक्ति महादरिद्री होता है।

49. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु वक्री होकर कहीं बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश भारी नुकसान हो सकता है, फलस्वरुप सावधान रहें।

50. वृषलग्न में अष्टमेश गुरु शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्तगत हो तो अचानक धन की हानि होती है।

□□□

वृषलग्न और विवाहयोग

1. सूर्य वृश्चिक का हो तथा शुक्र सिंह का हो तो ससुराल से धन प्राप्त होता है।
2. गुरु सप्तम भाव में हो तो पत्नी को गर्भावस्था में अनिष्ट कर एवं जीवन-हानि होती है।
3. चंद्रमा वृश्चिक का हो तथा लग्नेश सुख भाव में स्थित हो तो ससुराल से धन प्राप्त होगा।
4. सप्तमेश बुध युक्त न होकर 6/8/12वें भाव का हो या नीच का या अस्तगत हो तो विवाह ही नहीं होता या विधुर होता है।
5. मंगल या शुक्र 3/6/10/11/7वें स्थान में हो तो विवाहोपरान्त भाग्योदय होता है। भाग्येश शनि से 36वां वर्ष भाग्योदय का होता है।
6. मंगल वृश्चिक का हो तथा यदि शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो जातक दूसरा विवाह करता है तथा उससे भी मतभेद रहता है।
7. वृषलग्न में शनि सप्तमस्थ चंद्रमा के साथ हो तथा लग्न में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है पर अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
8. वृषलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय भाव में सूर्य हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. वृषलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश मंगल बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
10. वृषलग्न में सूर्य, शनि एवं शुक्र की युति कहीं भी हो तथा सप्तमेश मंगल बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
11. वृषलग्न में शुक्र कर्क या सिह राशि में हो, सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

12. वृषलग्न में द्वितीयेश बुध अस्त हो द्वितीय भाव में कोई ग्रह वक्री हो तो विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

13. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

14. वृषलग्न में सप्तमेश मंगल वक्री हो, सप्तम भाव में कोई भी ग्रह वक्री हो या किसी वक्र ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अनेक अवरोध आते हैं। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

15. वृषलग्न मे राहु यदि सातवें हो तो स्त्री वैधव्य दु:ख को भोगती है।

16. वृषलग्न में चंद्रमा स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) में हो तो ऐसी कन्या अक्षत योनि होती है।

17. वृषलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री अपने सुख के खातिर, नित नये वस्त्र अलंकार पहन कर पर पुरुषों का संग करती है।

18. वृषलग्न में सप्तम भावस्थ मंगल पर-शनि की दृष्टि हो तो जातक में प्रबल वासना देखी गई है। ऐसा जातक स्त्री के यौनांग का स्पर्श अपने मुंह से करता है। यदि ऐसे मंगल के साथ राहु हो तो जातक अपनी आश्रम में रहने वाली दासी तथा सेविका से यौन संबंध रखता है।

19. वृषलग्न में यदि कुम्भ का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री अन्य स्त्री की सहायता से अपनी कामपिपासा को शान्त करती है अर्थात् अपने साथ साथ रमण करने के लिये अन्य स्त्री से पुरुष का आचरण कराती है। यदि पुरुष की कुण्डली में यह योग हो तो वह समलैंगिक यौनाचार करता है।

20. वृषलग्न में मंगल आठवें हो तो स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल स्वभाव की होती है तथा प्रेम विवाह में विश्वास रखती है।

21. वृषलग्न में शनि राहु सातवें एवं मंगल छठे हो तो विवाहित स्त्री को पति होते हुए भी पति का सुख नही मिलता। पति से शारीरिक सम्पर्क नहीं होता तथा दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहता है।

22. वृषलग्न में चंद्रमा यदि (2/4/6/8/10/12) राशियों में हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त कोमल व मृदु स्वभाव की होती है।

23. वृषलग्न में यदि बुध, गुरु, शुक्र व मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात, विदुषी एवं सच्चरित्र वाली होती है।

24. वृषलग्न में मंगल का नवमांश हो अथवा सप्तम भाव पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री की योनि में रोग होता है।

25. जातक परिजात के अनुसार वृषलग्न में उत्पन्न कन्याएं सुन्दर होती हैं। यदि लग्न में चंद्रमा हो तो ऐसी स्त्री पति की प्यारी होती है।

26. वृषलग्न में सप्तमेश मंगल या शुक्र वृष, सिंह, वृश्चिक या कुम्भ राशि में हो तथा चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो तो ऐसे जातक का विवाह बिलम्ब से होता है।

27. वृषलग्न में स्वगृही शुक्र लग्नस्थ हो तथा गुरु साथ में हो तो "द्विभार्यायोग" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है

28. वृषलग्न में सप्तमेश मंगल यदि द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है

29. वृषलग्न में राहु शनि, सातवें शुभ ग्रहों में दृष्ट न हो तथा मंगल मीन राशि में हो तो ऐसे पुरुष को पत्नी व संतान दोनों का सुख नहीं होता अर्थात् न पत्नी होती है न संतान। इनको प्रेम प्रसंग में धोखा मिलता है तथा गुप्त धंधे में विश्वासघात होता है।

30. वृषलग्न में मेष का राहु बारहवें हो तो स्त्री विधवा होती है।

31. वृषलग्न में तुला का शनि छठे हो एवं षड्बलाशिद्ध सूर्य तृतीय में हो तो ऐसी स्त्री राजपत्नी, धर्म पर अखण्ड प्रेम रखने वाली पति की प्राणवल्लभा होती है।

❑❑❑

वृषलग्न एवं संतान योग

1. वैसे वृषलग्न अल्प सन्तति वाला है। वृषलग्न में पंचमेश बुध आठवें हो तो जातक के अल्प सन्तति होती है।
2. वृषलग्न में पंचमेश बुध अस्त हो या पापग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
3. वृषलग्न में पंचमेश बुध लग्न (वृष राशि) में हो, तथा बृहस्पति से युत या दृष्ट हो तो जातक के प्रथम पुत्र होता है।
4. वृषलग्न मे मंगल हो, पचमस्थ सूर्य हो तथा शनि आठवें हो तो जातक की जवानी बीत जाने पर, बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
5. वृषलग्न में शनि हो, बृहस्पति आठवें एवं मंगल बारहवें हो तो जातक की जवानी बीत जाने पर बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
6. वृषलग्न में पाप ग्रह हो, बृहस्पति से पांचवे भी पाप ग्रह हो, चंद्रमा ग्यारहवें मीन राशि का हो तो व्यक्ति की जवानी बीत जाने से बाद, बहुत प्रयत्न करने से पुत्र होता है।
7. वृषलग्न में बुध लग्न में हो तथा लग्नेश शुक्र पंचम भाव में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरे को संतान गोद लेता है तथा उसे अपने बच्चे की तरह पालता है।
8. वृषलग्न में बुध यदि पचम भाव मे हो तो जातक के तीन कन्याएं होती हैं। यदि साथ में चंद्रमा हो तो चार कन्याएं होती हैं.
9. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हों तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा मे ऐसे बालक को ''सिजेरियन चाइल्ड'' कहते हैं।
10. वृषलग्न में पंचमेश बुध कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान की प्राप्ति होती है।

11. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।

12. वृषलग्न में लग्नेश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश बुध पाप ग्रह या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाता है।

13. वृषलग्न में पंचमेश बुध बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक को संसार से विरक्ति होकर वैराग्य की प्राप्ति होती है।

14. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

15. वृषलग्न में पचमेश बुध की सप्तमेश मंगल से युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

16. वृषलग्न में पांच भाव में स्थित राशि के नवांश शनि, बुध, शुक्र या चंद्र से युक्त हों तो कन्याएं अधिक होती हैं।

17. राहु व मगल एकादश भाव में हों, शनि सूर्य लग्न में हो, शुक्र मेषस्थ हो तो जातक की संतान गूंगी व बहरी होती है।

18. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) मे गया हुआ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देता है। यदि चद्रमा और शुक्र का भी पचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

19. पंचमेश बुध निर्बल हो, लग्नेश शुक्र भी निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक को सर्प दोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

20. पंचम भाव मे राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्मनामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के पुत्र संतान नहीं होती है। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एव मानसिक तनाव रहता है।

21. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

22. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पचम से सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़िया नहीं चलतीं।

23. वृषलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चद्रमा यहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पापग्रह हो तो वंशविच्छेद योग बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलतीं।

24. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को "इलाख्य नामक" सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र सतान का सुख नही मिलता। दोष निवृत्ति पर शान्ति हो जाती है।

25. वृषलग्न में पचमेश पचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो "अनपत्य योग" बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शान्त हो जाता है।

26. पंचम भाव मगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

27. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली मे सूर्य लग्न मे और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो "अनगर्भा योग" बनता है। ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

28. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो "अनगर्भा योग" बनता है, ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

29. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान मे हो तो "कुलवर्द्धन योग" बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

30. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को "केवल कन्या योग" होता है। पुत्र सतान नहीं होती।

❑❑❑

वृषलग्न और राजयोग

1. पूर्ण वृषलग्न में जिसका जन्म हो और पूर्ण चंद्रमा लग्न में उच्च का बैठा हो और साथ ही चार, पांच, छः ग्रह उच्च के, या स्वगृही, या मित्रक्षेत्री, शुभ नवांश में, केन्द्र त्रिकोण में बली हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. उच्च का चंद्रमा लग्न में, सिंह का सूर्य चतुर्थ में, कुम्भ का शनि दशम में और वृश्चिक का बृहस्पति सप्तम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. वृष का चंद्रमा लग्न में हो, सिंह का सूर्य चतुर्थ भाव में हो, वृश्चिक का बृहस्पति सप्तम भाव में हो, कुम्भ का शनि राज्य में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का चंद्रमा लग्न में, उच्च का गुरु भ्रातृ स्थान में उच्च का बुध विद्या भवन में और उच्च का मगल भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. मिथुन, बुध, कर्क का चद्रमा, सिह का सूर्य, वृश्चिक का मंगल, कुम्भ का शनि, मीन का बृहस्पति और वृष का शुक्र हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. ये सभी सभी ग्रह स्वगृही है, इनमें से यदि चार भी ग्रह स्वगृही बलवान् बैठे हों तो राजयोग करते हैं।
7. यदि वृषलग्न में बृहस्पति मिथुन में चंद्रमा, मकर में उच्च का मंगल, सिंह में शनि, कन्या में बुध सूर्य और तुला का शुक्र हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।
8. यदि वृषलग्न में स्वगृही शुक्र हो, मिथुन का चंद्रमा दूसरे स्थान मे बलवान् हो और कर्क का गुरु अपने उच्चांश में तृतीय स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा ही पराक्रमी, धनवान, यशस्वी तथा आदरणीय होता है।

9. यदि लग्न में, उच्च का चंद्रमा, चतुर्थ में स्वगृही सूर्य, सप्तम में वृश्चिक का गुरु और दशम में कुम्भ का शनि हो तो मनुष्य पुलिस या सेना, नेकी आदि में निज पराक्रम के लिए धन, यश पारितोषित पाता है।
10. यदि उच्च का चंद्रमा लग्न में, मिथुन का गुरु धन स्थान में, शनि या सूर्य छठे स्थान में, मीन का शुक्र एकादश स्थान में हो तो मनुष्य धनी होता है।
11. यदि शनि एवं बुध की युति अच्छे स्थान पर हो तो प्रबलतम राजयोग होता है।
12. यदि चार ग्रह उच्च के हों या मूल त्रिकोण में हों तो जातक मत्री या राज्यपाल होता है।
13. शुक्र, गुरु, बुध केन्द्र में स्थित हों एव मंगल 10वें हो तो जातक को उच्च पद प्राप्त होता है।
14. मूल त्रिकोण (5, 9) में मंगल व शुक्र हो तो उच्च पद की प्राप्ति होती है।
15. शुक्र छठे भावस्थ, द्वादश में मंगल एवं चतुर्थ गुरु हो तो वह शासकीय उच्च पद की प्राप्ति करता है।
16. मेष का चंद्रमा हो तथा शुक्र पूर्ण दृष्टि से अर्थात् छठे भाव से देखता हो तो जातक चुनाव में विजय प्राप्त कर नेता बनता है।
17. केन्द्र स्थानों पर पाप ग्रह तथा शुभ ग्रह स्वराशिस्थ हो तो जातक राजदूत का पद प्राप्त करता है।
18. लग्न में चंद्रमा हो तथा उस पर शुभ दृष्टि हो तो राज्य योग होता है।
19. शुक्र, सूर्य, चद्रमा एक स्थान पर हों तथा गुरु उन्हे देखता हो तो विशिष्ट राजयोग होता है।
20. बुध सिंहस्थ, गुरु वृश्चिक का तथा शुक्र कुंभ का हो तो जातक एम.पी. का पद प्राप्त करता है।
21. मंगल कुंभ का हो तथा शनि अपनी उच्च राशि (मेष) में हो तो श्रीनाथ योग होता है। फलस्वरूप पारिवारिक जीवन सुखी, जातक धनवान होता है तथा उच्च पद की प्राप्ति करता है।
22. सूय-बुध, सुख भव में, शनि-चन्द्र 10वें, मगल वृष का हो तो जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्य भोगता है।
23. वृषलग्न में जन्मकाल से लग्न से दशम स्थान में शनि हो तो धनवान्, विद्वान्, शूरवीर, मत्री, दण्ड देने वाला (अर्थात् जज वगैरह) एक गांव या गावों के समूह का नेता होता है।

24. वृषलग्न में जन्म समय में सिंह, वृष, कन्या, कर्क इन चारों राशियों में से किसी में भी राहु हो तो जातक महाराजाधिराज और लक्ष्मी से सम्पन्न होता है। राहु उच्च में हो तो हाथी, घोड़ा, मनुष्य तथा नाव की सवारी वाला, जमीन वाला, पण्डित और अपने कुल का श्रेष्ठ होता है।

25. वृष में गुरु, मिथुन में चंद्रमा, मकर मे मंगल, सिंह में शनि, कन्या में बुध सूर्य, तुला में शुक्र हो तो यह राजयोग होता है। इस योग में उत्पन्न महाराजा होता है।

26. वृषलग्न में वृष का (उच्च) चंद्रमा, कुंभ का शनि, सिंह का सूर्य, वृश्चिक का बृहस्पति हो, तो वैभव संपन्न राजयोग होता है।

27. वृषलग्न में चंद्रमा परम (3 अंश के अंदर) हो और शुक्र से दृष्ट हो तथा आपोक्लिम स्थान में (3/6/12) सब पाप ग्रह स्थित हो राजयोग होता है।

28. वृषलग्न में वृष राशि का चंद्रमा बृहस्पति से युत हो और लग्न का स्वामी बलवान त्रिकोण (9-5) में हो सूर्य शनि मंगल में युत अगर दृष्ट न हो तो राजयोग होता है।

❑❑❑

वृषलग्न में आशीर्वादात्मक कुण्डली का मंगल दर्शन

॥ श्री कृष्ण जन्म कुण्डली ॥

भाव	ग्रह
1	
2	चं. श.
3	
4	गु.
5	बु. सू.
6	रा.
7	शु.
8	
9	
10	मं.
11	
12	के.
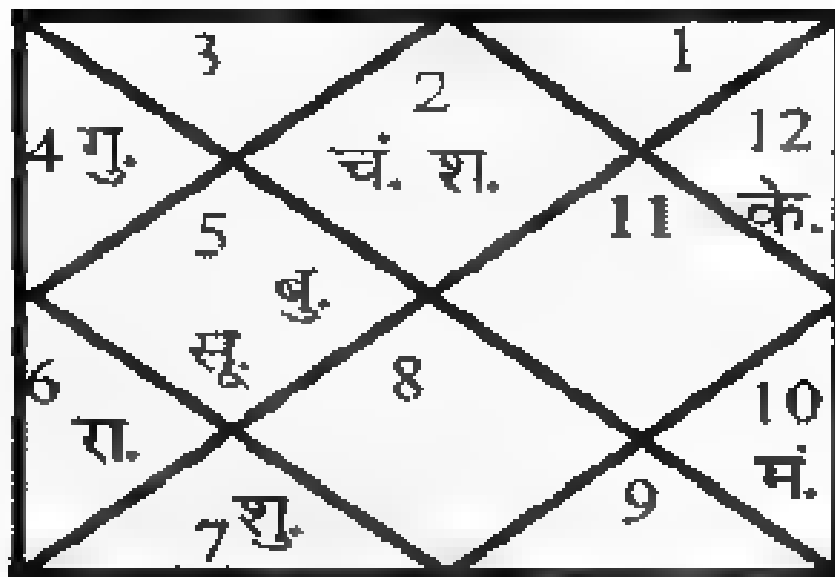
श्रीकृष्णो रोहिणी भे वृषतनु शशिनोः श्रावण स्यासितेऽभू
अष्टम्यां मध्यरात्रे हरिगरविविदो कर्किणीज्ये मृगारे।
जूकस्थे भार्गवयो अनुगरविसुते चान्द्रिंवारेऽगंनास्थे
राहौ यज्जन्मपत्री तम्भवतु सततं दीर्घकालं सुरेशः

—जातक सारदीप

श्रीकृष्ण भगवान शुक्लादिमान से श्रावण कृष्ण पक्ष व कृष्णादि मान से भाद्रपद कृष्ण अष्टमी बुधवार, रोहिणी नक्षत्र, वृषलग्न में अवतीर्ण हुए थे। उस समय मध्य रात्रि का समय था। सिंह में सूर्य-बुध, कर्क में गुरु, मकर में मंगल, तुला में शुक्र, वृष में शनि, कन्या में राहु था। ऐसे भगवान कृष्ण दीर्घकाल तक जातक की रक्षा करें।

❑❑❑

भगवान श्री कृष्ण एवं भगवान श्रीराम की कुण्डलियों का तुलनात्मक अध्ययन
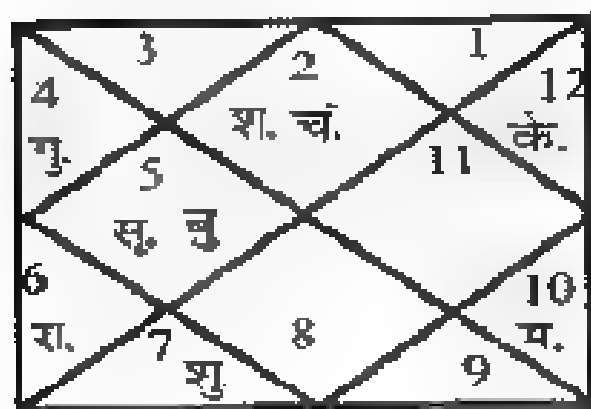
1. भगवान् श्रीकृष्ण यादवेन्द्र थे इनका जन्म वृन्दावन में हुआ वे द्वारकाधीश कहलाते थे और मथुरा के राजा थे।
2. श्रीकृष्ण चन्द्रवंशीय थे। इनका जन्म भाद्रकृष्ण अष्टमी की मध्य रात्रि को ठीक 12 बजे हुआ था।
3. भगवान् श्रीकृष्ण की कुण्डली में चद्रमा उच्च का था।
4. चंद्रमा 16 कलाओं का स्वामी है फलतः श्रीकृष्ण सोलह कलाओं के अवतार कहे गये हैं। उनमें छल-कपट, चोरी, झूठ बोलकर न्याय-धर्म की रक्षा करना, प्रेम, प्रवचंना, ईर्ष्या इत्यादि सभी गुण थे। वे सर्वकला निष्णात थे।
5. श्रीकृष्ण अनेक पत्नीगामी थे।
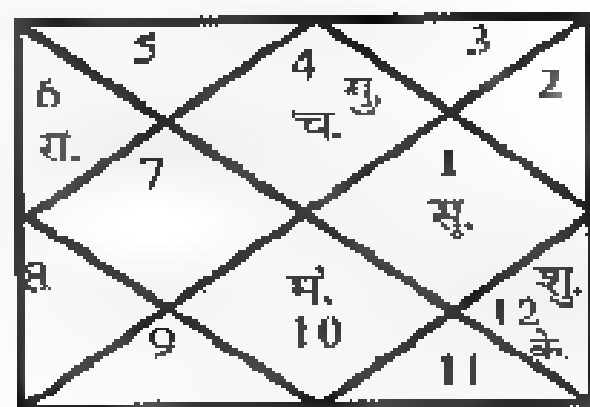
1. भगवान् श्रीराम राघवेन्द्र थे। इनका जन्म अयोध्या में हुआ। वे समस्त भारत भूमण्डल के चक्रवर्ती सम्राट कहलाते थे।
2. भगवान् श्रीराम सूर्यवंशीय थे। इनका जन्म चैत्र शुक्ल नवमी दिन को ठीक 12 बजे अभिजित मुहूर्त में हुआ।
3. भगवान् श्रीराम की कुण्डली में सूर्य उच्च का था।
4. सूर्य 12 कलाओं में मर्यादित हैं फलतः श्रीराम का चरित्र मर्यादित था। वे सत्य वक्ता थे। उनके मुख से जो वचन निकल गया वो सत्य होता था, परिपूर्ण होता था, अमोघ होता था।
5. भगवान् श्रीराम ने एक पत्नीव्रत धारण कर रखा था।

6. श्रीकृष्ण युद्ध में पलायन कर गये फलतः 'रणछोड़' कहलाये।

7. भगवान् श्रीकृष्ण के लग्न में शनि + चन्द्र की युति उनका जन्म निम्न स्थान, जेल में होना बताती है। यह युति एक प्रकार का ग्रहण योग व कष्टों को बताती है।

8. भगवान् श्रीकृष्ण के पंचम भाव में राहु सन्तान बाधा का संकेत देता है। फलतः श्रीकृष्ण को सन्तान प्राप्ति हेतु शिवजी की उपासना अनुष्ठान करना पड़ा तब प्रद्युम्न नामक पुत्र हुआ पर वह कायर निकला।

9. भगवान् श्रीकृष्ण का अन्त छल से हुआ। एक बहेलिये ने उन्हें हिरण समझ कर मार डाला।

10. भगवान् श्रीकृष्ण का चरित्र किसी भी दृष्टि से अनुकरणीय नहीं है।

6. भगवान् श्रीराम के मुंह से निकला हुआ शब्द और धनुष से निकला बाण कभी लौटकर वापस नहीं आया।

7. भगवान् श्रीराम के लग्न में उच्च का बृहस्पति व चंद्रमा उनका जन्म उच्च कुल में होना बताते हैं।

8. भगवान् श्रीराम का पंचमेश मंगल उच्च का होने से पराक्रमी पुत्रों का संकेत देता है। लव-कुश दोनों ही अति पराक्रमी थे और चक्रवर्ती सम्राट कहलाये।

9. भगवान् श्रीराम जीवित ही स्वर्गलोक को पधारे।

10. भगवान् श्रीराम एक आदर्श महापुरुष थे। एक आज्ञाकारी पुत्र, एक पिता, एक जिम्मेदार पति, एक सहृदय भाई, एक आदर्श शत्रु, एक अन्तरंग सखा, एक अति प्रतापी राजा, जीवन के हर पहलू में उनका चरित्र अनुकरणीय था और अनुकरणीय रहेगा।

सृष्टि संचालक विराट महापुरुष की सूर्य व चंद्रमा के समान ये दोनों आंखें, सम्पूर्ण मानव सभ्यता को प्रेरणा देती रहेंगी। ये दोनों महापुरुष युग-युगाब्द तक याद किये जाते रहेंगे। श्रावण व भादों का महीना श्रीकृष्ण भगवान् के जन्मोत्सव का महीना है। इन पवित्र महीनों में हम इन दिव्य आत्माओं के आदर्श चरित्रों को याद करते हुए उनके श्रीचरणों में सादर श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

❑❑❑

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में
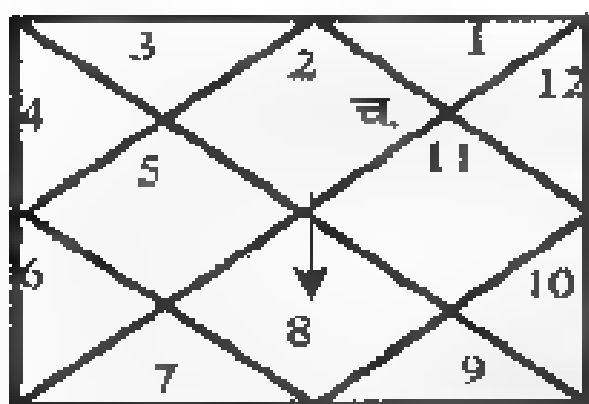
वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। तृतीयेश चंद्रमा वृष राशि में होकर लग्न में बैठने से उच्च का हो गया है। चंद्रमा केन्द्रस्थ होने से **'यामिनीनाथ योग'** बना। ऐसा जातक सुन्दर देह, सुन्दर नेत्र, मधुरवाणी, गौरवर्ण, कोमल स्वभाव, बुद्धिमान, सदैव युवा प्रतीत होने वाला, राजा के समान ऐश्वर्यशाली जातक होता है।

दृष्टि–बलवान चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) पर है। ऐसे जातक का जीवन साथी सुन्दर, आकर्षक, मोहक, शान्त, सौम्य व उदार मनोवृत्ति वाला होता है।

निशानी–जातक की आंखें सुन्दर, बड़ी, आकर्षक एवं उत्तेजित करने वाली होती हैं।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + शुक्र**–होने से 'किम्बहुना योग' बना क्योंकि शुक्र स्वग्रही होकर 'मालव्य योग' बनायेगा तथा चद्रमा उच्च का रहेगा। इससे अधिक और क्या होगा? अर्थात् ऐसा जातक सुन्दर वाहन, नौकर-चाकर एवं सुन्दर भवन का स्वामी होगा। जातक महान् पराक्रमी होगा।
2. **चन्द्र + बृहस्पति**–यह युति यहां खिलेगी। **गजकेसरी योग** के कारण जातक को उत्तम सन्तति, सुन्दर-पतिव्रता स्त्री एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्राप्त होते रहेगे।

3. **चन्द्र + शनि**–चन्द्र, शनि की युति जातक को परम सौभाग्यशाली बनायेगी। यहां **पद्मसिंहासन योग** बनेगा, जिसके कारण साधारण परिवार में जन्म लेकर भी जातक कीचड़ में कमल की तरह उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
4. **चन्द्र + बुध**–बलवान् तृतीयेश की धनेश के साथ युति जातक को स्वपराक्रम से अर्जित द्रव्य के कारण धनवान एवं लब्ध प्रतिष्ठित बनायेगी।
5. **चन्द्र + मंगल**–यह युति यहां **महालक्ष्मी योग** बनायेगी। मंगल मातृ सुख में वृद्धि करेगा अपने घर (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखता हुआ सुन्दर पत्नी, पराक्रमी ससुराल देगा। ऐसा जातक अपने शत्रुओं को समूल नष्ट करने में सक्षम होता है।
6. **चन्द्र + सूर्य**–ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को प्रातः काल सूर्योदय के समय होगा। जातक **चन्द्रकृत राजयोग** के कारण समस्त सुखों को प्राप्त करेगा।
7. **चन्द्र + राहु**–चंद्रमा के साथ राहु भी यहां उच्च का होगा फलतः राजयोग देगा। ऐसा जातक हठी, अभिमानी एवं अहंकारी होगा तथा छल-बल से अपना कार्य सिद्ध करने में माहिर होगा।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में

3 च. 2 1 12 4 11 5 6 10 8 7 9
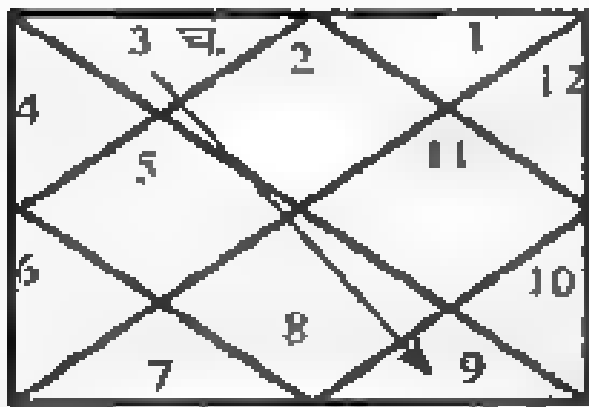
वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। चंद्रमा द्वितीय स्थान में अपने पुत्र बुध की मिथुन राशि का होने से शत्रुक्षेत्री है। क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्र को अपना शत्रु मानता है। ऐसा जातक विद्या, बुद्धि, लेखन और भाषण कला में प्रवीण होता है पर कई बार अपनी बात को खुद ही काट देता है। ज्यादा धन एकत्रित नहीं कर पाता। धनवान होने की सही स्थिति का पता तो बुध की स्थिति से चलेगा।

दृष्टि–चंद्रमा द्वितीय स्थान में बैठकर अष्टम स्थान धनु राशि को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। ऐसे जातक के गुप्त-शत्रु बहुत होते हैं। चंद्रमा अपने घर में बारहवें स्थान पर होने के कारण जातक का स्वभाव खर्चीला होगा। धन एकत्रित नहीं हो पाएगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा खर्च कराएगी एवं मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + बुध**–जातक को पूर्व अर्जित धन सम्पत्ति मिलती है। जातक पढ़ा-लिखा, शिक्षित, सभ्य एवं समाज का प्रतिष्ठित व धनी-मानी व्यक्ति होगा।
2. **चन्द्र + बृहस्पति**–यह युति यहां राजयोग कारक है। 'गजकेसरी योग' के कारण जातक धनवान, ऐश्वर्यवान होगा। ऋण, रोग और शत्रुओं का समूल नाश करने में सक्षम होगा.
3. **चन्द्र + शुक्र**–लग्नेश व पराक्रमेश की युति जातक को अपने द्वारा किए जा रहे प्रयासों में बराबर सफलता देगी। जातक धनवान होगा।
4. **चन्द्र + मंगल**–यह युति यहां 'लक्ष्मी योग' कारक है। जातक को पत्नी द्वारा, ससुराल द्वारा धन की प्राप्ति होती रहेगी। जातक पुत्रवान, भाग्यशाली होगा। 28 वर्ष की आयु में किस्मत का सितारा चमक उठेगा।
5. **चन्द्र + सूर्य**–ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय के पहले 4-5 बजे के लगभग होगा। सुखेश व तृतीयेश की युति उत्तम भवन एवं वाहन सुख में सहायक है।
6. **चन्द्र + शनि**–भाग्येश, दशमेश का धन स्थान में होना शुभ संकेत है। जातक अपने पराक्रम से, पुरुषार्थ से स्वयं का भाग्योदय करेगा। भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा। जातक व्यापार, व्यवसाय में कमाएगा।
7. **चन्द्र + राहु**–यहां राहु स्वगृही होगा। फिर भी जातक चाहे जितना कमाए, धन की बरकत नहीं होगी। वाणी त्रुटिपूर्ण होने से शत्रु पैदा होते रहेंगे। सावधानी अनिवार्य है वाणी पर नियंत्रण रखें।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में
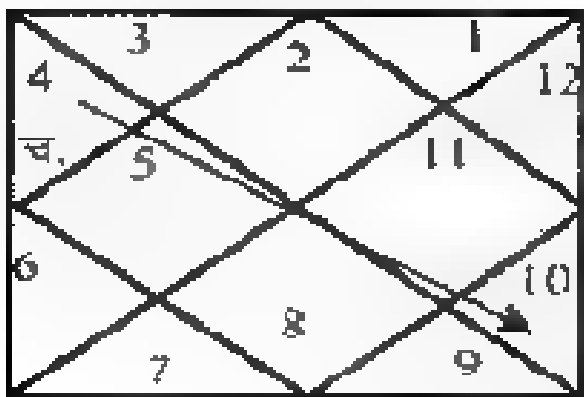
वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। तृतीयस्थ चंद्रमा कर्क राशि में होने से स्वगृही है। ऐसे जातक महत्वकांक्षी, पराक्रमी, धैर्यवान, उदार, हृदय, भाई बहनों से सुखी एव बहुमित्र वाले होत हैं। जातक जाति-समाज किंवा सरकार द्वारा सम्मानित भी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य भवन (मकर राशि) पर होने से जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा तथा जीवन मे उन्नति का मार्ग निष्कटक होगा।

निशानी–जातक बहुत बहनों वाला होता है।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक की महत्वकांक्षाएं पूरी होंगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द + मंगल—**जातक थोड़ा उत्साही व उग्र स्वभाव का होगा। धनवान होगा। समाज के धनी वर्ग में अच्छी मित्रता होगी। विवाह के बाद जातक का पराक्रम बढ़ेगा। यह योग सुखदायक है।
2. **चन्द + शनि—**जातक स्वार्थी होगा पर भाग्यशाली होगा। मित्रों की मदद से आगे बढ़ेगा।
3. **चन्द + राहु—**के कारण जातक सनकी, स्वार्थी एवं झगड़ालू स्वभाव का होगा। भाइयों व परिजनों से नहीं बनेगी।
4. **चन्द + सूर्य—**इस युति से चंद्रमा बलहीन हो जाएगा। चंद्रमा अपना फल न देकर सूर्य का फल देगा। जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या सूर्योदय के पूर्व प्रातः तीन बजे के लगभग होगा।
5. **चन्द + बुध—**जातक को तीव्र बुद्धिशाली बनाएगा।
6. **चन्द + शुक्र—**आध्यात्मिक शक्ति से युक्त बनाएगा।
7. **चन्द + केतु—**यह युति शुभ है। जातक को धार्मिक एवं आध्यात्मिक शक्ति देगा।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में

3 2 1 12 4 5 11 6 चं. 10 8 7 9
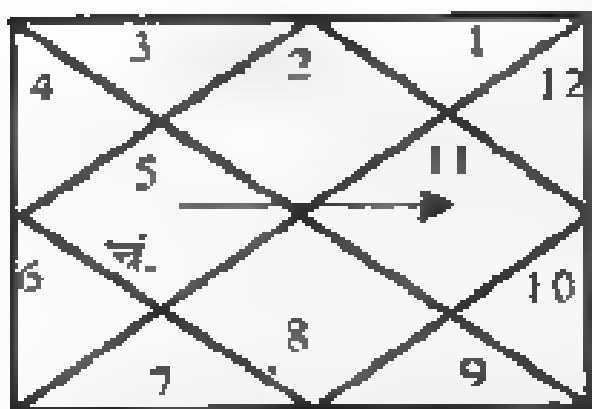
वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। चद्रमा यहा चतुर्थ स्थान में सिंह राशि (अग्नि तत्त्व) में होने से उद्विग्न है। चंद्रमा सूर्य का मित्र होने से जातक माता-पिता का भक्त होगा। जातक धनवान होगा। उसे उत्तम भवन, उत्तम वाहन, उत्तम पत्नी, भाई बहनों का सुख मिलेगा। जातक विद्वान, साहित्यकार, लेखक, चिंतक, सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं दार्शनिक होकर, समाज को नई दिशा देने में सक्षम होगा।

दृष्टि—चतुर्थ स्थान में बैठकर चंद्रमा दशम भाव (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा फलतः जातक का पिता समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को शासकीय पदों पर सफलता मिलेगी एवं ऊंचे अफसरों से अच्छे सम्बन्ध होंगे।

निशानी–जातक को जलीय व्यवसाय लाभ होगा। दूध, दूध से निर्मित वस्तुए, रत्न, दवाइयां, रेडिमेड गार्मेन्ट, फैशन के सामान वगैरह में फायदा रहेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी। चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में पदोन्नति, व्यापार व आय के स्रोत में बढ़ोत्तरी होगी। गृह-निर्माण होगा, उत्तम वाहन खरीदा जा सकता है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + सूर्य**–यह युति जातक को तीन मंजिला भवन एवं एक से अधिक वाहनों का सुख, नौकर चाकर का सुख दिलाएगी। जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या की मध्यरात्रि को पैतृक मकान मे होगा। '**रविकृत राजयोग**' के कारण जातक उच्च पद को प्राप्त करेगा।
2. **चन्द्र + बुध**–की युति जातक को शिक्षित, वाक्पटु एवं अति धनवान बनाएगी।
3. **चन्द्र + बृहस्पति**–यह युति जातक को महाधनी बनायेगी। राजकेसरी योग के कारण जातक एक सफल व्यक्ति के रूप में उभरेगा।
4. **चन्द्र + शुक्र**–तृतीयेश व लग्नेश की युति केन्द्र स्थान में जातक मातृ सुख, वाहन सुख देगी एवं जातक का राज्य सरकार में दबदबा भी रहेगा।
5. **चन्द्र + शनि**–तृतीयेश व भाग्येश की युति केन्द्र में लाभदायक है। यहां शनि अपने घर (कुम्भ राशि) एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा फलत: जातक द्वारा किया गया परिश्रम सार्थक रहेगा। जातक अपने समाज मे सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा कोर्ट (कचहरी) में सदैव विजय मिलगी।
6. **चन्द्र + मंगल**–यहां मंगल अपने घर (वृश्चिक राशि), दशम स्थान एव एकादश स्थान के पूर्ण दृष्टि से 'लक्ष्मी योग' के साथ देखेगा। फलतः जातक को माता की सम्पत्ति, कृषि की भूमि मिलेगी। राजपक्ष में जातक का दबदबा रहेगा।
7. **चन्द्र + राहु**–चन्द्र राहु की युति माता के सुख में कमी, वाहन से दुर्घटना एवं नौकर से दगा दिलायेगी।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में

वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। पंचम भाव में चंद्रमा अपने पुत्र बुध की कन्या राशि में स्थित होगा। यह चंद्रमा की शत्रु राशि है क्योंकि बुध पुत्र होते हुए भी पिता का शत्रु है। परन्तु चंद्रमा बुध से शत्रुता नहीं रखता फलत: जातक अपनी सन्तति व भाई-बहनों से एकतरफा प्यार करेगा। जातक सुशील, सुन्दर, सभ्य, शिक्षित एवं नीति में निपुण होगा।
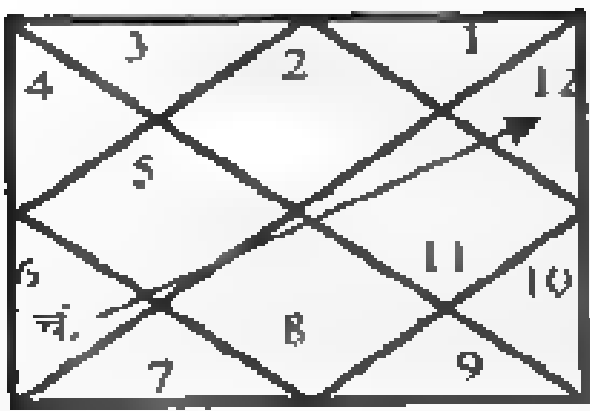
दृष्टि—पंचम भाव में कन्या राशिगत चंद्रमा की दृष्टि लाभ भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः यह दृष्टि व्यापार व्यवसाय में लाभकारक है। जातक प्रज्ञावन होगा। गूढ़ एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।

निशानी—जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र + बुध**—यह युति जातक को महाधनी बनायेगी एवं जातक का भाग्योदय प्रथम कन्या सन्तति के बाद होगा। जातक राजा तुल्य होता है।
2. **चन्द्र + सूर्य**—यह युति जातक को संतान सुख में न्यूनता दिलायेगी। जातक का जन्म आश्विन् कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 बजे के आसपास होगा।
3. **चन्द्र + मंगल**—इस युति कारण जातक क्रोधी व हठी स्वभाव का होगा। मन में अधीरता रहेगी फिर भी उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करेगा।
4. **चन्द्र + बृहस्पति**—चन्द्र, बृहस्पति की युति यहां सार्थक है क्योंकि बृहस्पति भाग्य स्थान अपने घर (मीन राशि) एवं लग्न स्थान (जहां चंद्रमा की उच्च राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक धनवान होगा। उसकी सन्तति भी धनवान होगी। गजेकसरी योग के कारण जातक को व्यापार-व्यवसाय में जबरदस्त लाभ होगा।
5. **चन्द्र + शनि**—तृतीयेश चन्द्र की भाग्येश के साथ त्रिकोण में युति केन्द्र+त्रिकोण संबंध करके जातक को उन्नति मार्ग की ओर बढ़ायेगी।
6. **चन्द्र + सूर्य**—यह युति जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को रात्रि के दस बजे के आस-पास होना बताती है। सुखेश सूर्य का त्रिकोण में होना शुभ है। जातक को सूर्य की कृपा में प्रेम की प्राप्ति भी होगी।
7. **चन्द्र + राहु**—यह युति सन्तान प्राप्ति व विद्या प्राप्ति में बाधक है तथा चंद्रमा का अशुभत्व बढ़ाने वाली है।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम् स्थान में

वृषलग्न में चद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। चंद्रमा यहां तुला राशि में है। खड्डे (छठे स्थान) में होने से 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करता है। जातक
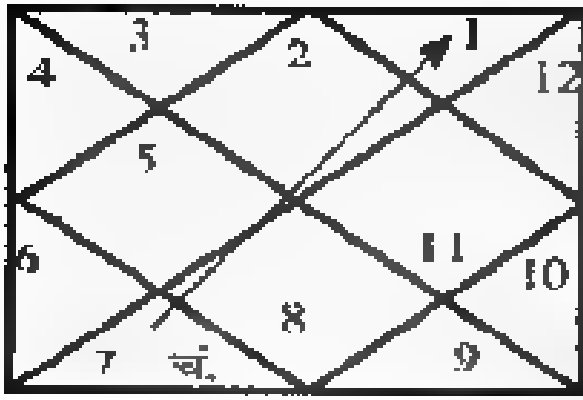
का पराक्रम रोग, ऋण और शत्रुओं द्वारा बाधित होता रहेगा। प्रायः पाचन क्रिया निर्बल, कफ और श्वास के रोगों की पीडा रहेगी।

दृष्टि—षष्टम् भावगत चंद्रमा की दृष्टि द्वादश स्थान (मेष राशि) पर होगी फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा एवं अधिक यात्राओं में रुचि रखेगा।

निशानी—जातक कपटी होगा एवं षड्यंत्रकारी कार्यों में ज्यादा रुचि रखेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक को महामृत्युंजय का जाप करना चाहिए।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + शुक्र**—की युति ज्यादा कष्टदायक है क्योंकि यह **"लग्नभंग योग"**, **"पराक्रमभंग योग"** की सृष्टि करती है परन्तु शुक्र स्वगृही होने से **हर्ष योग** बना जिसके कारण जातक ऋण, रोग व शत्रु पर विजय प्राप्त करने में सक्षम हो जाएगा।
2. **चन्द्र + सूर्य**—यह युति भी कष्टदायक है क्योंकि **'पराक्रमभंग योग'** के साथ-साथ **'सुखहीन योग'** की सृष्टि होती है। तुला का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। फलतः जातक असावधान रहा तो जेल यात्रा हो सकती है। ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 बजे के लगभग होता है।
3. **चन्द्र + बृहस्पति**—बृहस्पति खड्डे में जाने से **'लाभभंग योग'** बनेगा। साथ ही अस्टमेश का छठे स्थान में जाने से **'सरल योग'** बना जिससे शुभ फलों की प्राप्ति में वृद्धि होगी। इस **'गजकेसरी योग'** के कारण चंद्रमा का शुभत्व बढ़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित, धनी व्यक्ति होगा।
4. **चन्द्र + शनि**—शनि यहां चंद्रमा के साथ छठे स्थान पर जाने से **'भाग्यभंग योग'** **'राज्यभंग योग'** बना परन्तु शनि उच्च का है। अतः चद्रमा का अशुभत्व नष्ट हो गया है। जातक पराक्रमी होगा।
5. **चन्द्र + बुध**—बुध का चद्रमा के साथ होने पर **'धनहीन योग'** एवं **'संतानहीन योग'** की सृष्टि होगी। फिर बुध, चन्द्र परस्पर शत्रु होने से यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है।

6. **चन्द्र + मंगल**–मंगल छठे जाने से **'विवाहभंग योग'** बनता है। परन्तु व्ययेश का छठे होने से **'विमल योग'** के कारण मंगल का अशुभत्व नष्ट हो गया है। चन्द्र मंगल **'लक्ष्मी योग'** के कारण जातक धनवान होगा।
7. **चन्द्र + राहु**–यह युति ज्यादा खराब नहीं है क्योंकि राहु छठे स्थान में राजयोग कारक होता है। दुष्ट ग्रहों का दु:स्थान मे होना शुभ माना गया है।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम् स्थान में
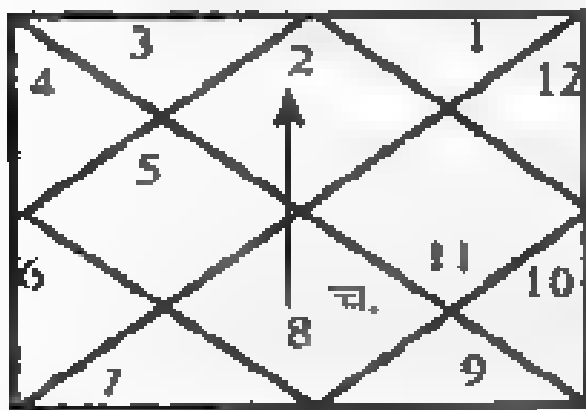
वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। चंद्रमा यहां वृश्चिक राशि में अपनी नीच राशि में है, जहां 3 अंशों में होने पर यह परम नीच हो जाएगा। फलत: ऐसा जातक ईर्ष्यालु, कामातुर, अधर्मी, हठी स्वभाव का होता है। जातक का मानसिक स्तर ज्यादा उदारवादी (उच्च) नहीं होता।

दृष्टि–सप्तम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह चद्रमा अपने घर से पचम स्थान पर बैठकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेगा जहां चन्द्र की उच्च राशि अधिष्ठित है। फलत: जातक की उन्नति स्वप्रयत्नों से, स्वविचारों से होगी। जातक स्वयं सुंदर होगा एवं पत्नी भी सुंदर होगी।

निशानी–जातक की कल्पना शक्ति प्रखर होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र + मंगल**–इस युति से **'नीचभंगराज योग'** की सृष्टि होकर चद्रमा का नीचत्व भंग होकर। शुभ फलों की प्राप्ति में वृद्धि होगी। जातक महाधनी होगा, पर अनैतिक तरीकों से धन प्राप्ति करने में सफल रहेगा। **'रुचक योग'** के कारण जातक महान पराक्रमी होगा।
2. **चन्द्र + बुध**–इस युति मे जातक के मानसिक स्तर में सुधार होगा। बुद्धि बल व नैतिकता में वृद्धि होगी। जातक महाधनी होगा।
3. **चन्द्र + शनि**–यह युति स्वभाव में चंचलता समाप्त करके, जातक को गंभीर स्वभाव का बनाएगी। जातक का नाम भाग्यशाली व्यक्तियों में होगा।
4. **चन्द्र + शुक्र**–यह युति जातक को मिलनसार बनाएगी जातक सुंदर शरीर का स्वामी होगा पर कामी होगा। पर स्त्रियो से संसर्ग अवश्य करेगा। जीवन में उन्नति भी करेगा।

5. **चन्द्र + बृहस्पति**—यह युति जातक को ब्रह्मज्ञान से आलोकित करेगी। जातक की रुचि ज्योतिष-अध्यात्म में होगी। गजकेसरी योग के कारण जातक का गृहस्थ जीवन सुंदर होगा। 50 वर्ष की आयु के बाद व्यक्ति मोह-माया छोड़कर त्यागी हो जाएगा।
6. **चन्द्र + राहु**—चन्द्र के साथ राहु या केतु हो तो जातक चरित्रहीन होगा। उसका जीवन साथी भी लम्पट होगा।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में

3 2 1 12 4 5 11 10 6 8 7 चं 9
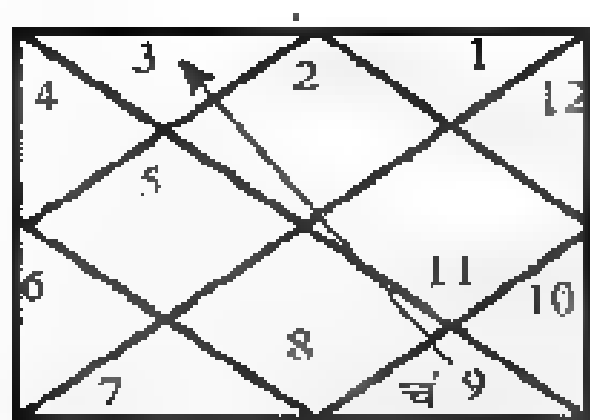
वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है यहां तृतीयेश चंद्रमा धनु राशि का होकर अष्टम भाव में स्थित होने से निर्बल हो गया है। तृतीयेश के अष्टम में जाने से '**पराक्रमभंग योग**' भी बना। ऐसे जातक कर्त्तव्यनिष्ठ, कठोर परिश्रमी व धार्मिक स्वभाव के होते हैं। धन व यश की प्राप्ति हेतु उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ता है।

दृष्टि—धनु राशिगत अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन स्थान (मिथुन राशि) पर रहेगी। फलत: धन व प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन में संघर्ष बना रहेगा। परिजनों द्वारा जातक को अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पाएगा।

निशानी—9 वर्ष एवं 19 वर्ष की आयु तक जल भय रहेगा।

उपाय—चांदी का चंद्रमा, मोती डालकर बालक के गले में पहनाएं।

दशा—चंद्रमा की दशा अशुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र + गुरु**—यह युति शुभ फलदायक है। गुरु स्वगृही होकर चंद्रमा को बलवान करेगा। 'गजकेसरी योग' के कारण बिगड़े कार्य सुधरेंगे।
2. **चन्द्र + बुध**—संतान प्राप्ति में बाधा। शल्य चिकित्सा से सन्तति पर चंद्रमा निस्तेज न होगा।
3. **चन्द्र + शनि**—भाग्योदय में बाधा पर चंद्रमा निस्तेज न होगा। शनि की दृष्टि कुंभ राशि पर होने से जातक को राजा (सरकार) से मदद मिलती रहेगी। पिता भी मददगार होगा।
4. **चन्द्र + सूर्य**—सुख के लिए संघर्ष, पांव में तकलीफ, माता को कष्ट ऐसे

जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 4 बजे के आस-पास होता है।

5. **चन्द्र + मंगल**—जीवन साथी से टकराव अदालतों के चक्कर में धन हानि होगी।
6. **चन्द्र + राहु**—या केतु पुलिस केस व अदालतों में धन का अपव्यय, मानसिक व दैहिक रोग होते हैं।
7. **चन्द्र + शुक्र**—**'लग्नभंग योग'** के कारण परिश्रम पूर्वक किये गये प्रयासों में भी वांछित सफलता नहीं मिलती।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में
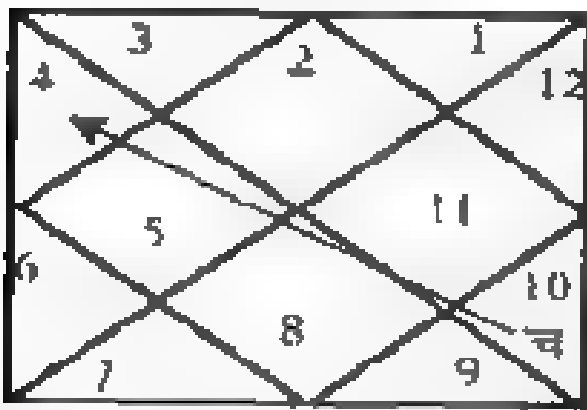
वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है यहां नवम भाव में स्थित चद्रमा मकर राशि का होकर, अपने स्थान से सातवां होकर अपने घर (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक पराक्रमी होगा। उसे भाई बहनों , इष्ट-मित्रों का सुख मिलेगा। ऐसे व्यक्ति सुन्दर स्त्री, श्रेष्ठ सन्तान से युक्त, धर्म बुद्धि वाले माता-पिता के सुख से युक्त होते हैं।

निशानी—जातक कलह या युद्ध प्रिय नहीं होता। जातक का भाग्योदय प्रायः मध्यम आयु मे होता है। चंद्रमा यदि पूर्ण बली हो तो जातक विदेश यात्रा से धन कमायेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा भाग्योदय करायेगी पराक्रम बढ़ायेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र + शनि**—यह युति 'पद्मसिहांसन योग' बनायेगी। जातक करोड़पति होगा.
2. **चन्द्र + मंगल**—जातक 'महालक्ष्मी योग' के कारण महाधनी होगा। भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक का ससुराल धनी होगा।
3. **चन्द्र + बुध**—जातक धनवान, पुत्रवान होगा। प्रथम संतान के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
4. **चन्द्र + सूर्य**—यह युति जातक को विवेकहीन बनायेगी। जातक की शिक्षा अधूरी रह जायेगी। जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या को दोपहर बाद 3 बजे के आस-पास होगा। जातक को नेत्र दोष होगा। व्यापार में हानि सम्भव है।
5. **चन्द्र + शुक्र**—जातक अपने परिश्रम से यथेष्ट धन कमायेगा।

6. **चन्द्र + बृहस्पति**—जातक धार्मिक, परोपकारी एव समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। 'गजकेसरी योग' के कारण कोई भी काम रुका हुआ नहीं रहेगा।
7. **चन्द्र + राहु**—या चन्द्र+केतु जातक की उन्नति में सहायक होंगे। जातक जन्म स्थान (घर) मे दूर परदेश मे कमायेगा.

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में
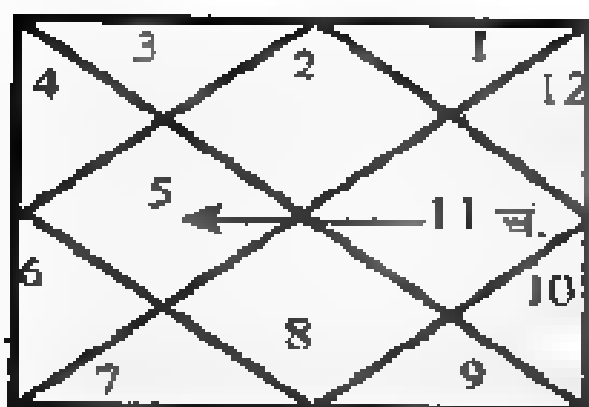
वृषलग्न में चद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। तृतीय भाव का स्वामी होकर चद्रमा दशम भाव कुम्भ राशि में होने में जातक को नृपतुल्य प्रसिद्धि व सम्मान दिलाता है। यद्यपि यह चंद्रमा अपनी राशि से अष्टम स्थान पर होने से दिग्बल शून्य है तथापि चंद्रमा यदि बलवान हो तो जातक माता पिता का सुख, रोजी रोजगार उत्तम नौकरी एवं व्यापार मे लाभ होता है।

दृष्टि—कुम्भस्थ चंद्रमा की पूर्ण दृष्टि चतुर्थ (सिंह राशि) पर होने से घर, वाहन, जमीन,-जायदाद, कीर्ति, शौर्य एवं राज से मान्यता प्राप्त होती है।

निशानी—जातक भंवर में फंसी नाव को पार लगाने वाला, विपत्ति मे फंसे व्यक्ति की मदद करने वाला, परोपकारी होगा।

दशा—चद्रमा की दशा अन्तर्दशा अच्छी जायेगी। नवीन योजनाओं में सफलता मिलेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र + शनि**—जातक महाधनी व उद्योगपति होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
2. **चन्द्र + बृहस्पति**—जातक सौभाग्यशाली, परोपकारी, एवं धर्मध्वज धारक व्यक्ति होगा। 'गजकेसरी योग' के कारण कोई काम रुकेगा नहीं। जातक धन कमायेगा एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **चन्द्र + बुध**—जातक समाज का धनवान एवं प्रतिष्ठि व्यक्ति होगा। जातक समाज का मुख्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। उसकी सन्तान भी सुशिक्षित होगी।
4. **चन्द्र + शुक्र**—जातक धनवान होगा पर गलत तरीकों में धन कमाने में उसकी रुचि होगी।
5. **चन्द्र + मंगल**—जातक धनवान होगा। पत्नी के माध्यम से रुपया कमायेगा। ससुराल से भी धन प्राप्ति संभव है।

6. चन्द्र + सूर्य–जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या की दोपहर 12 बजे के लगभग होगा। जातक उत्तम भवन एवं वाहन का स्वामी होगा क्योंकि सूर्य की दृष्टि अपने घर (सिंह राशि) पर होगी।

7. चन्द्र + राहु या केतु–जातक वेश्यावृति अथवा गलत कार्यों से धन कमायेगा। भाईयों से कम बनेगी।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में
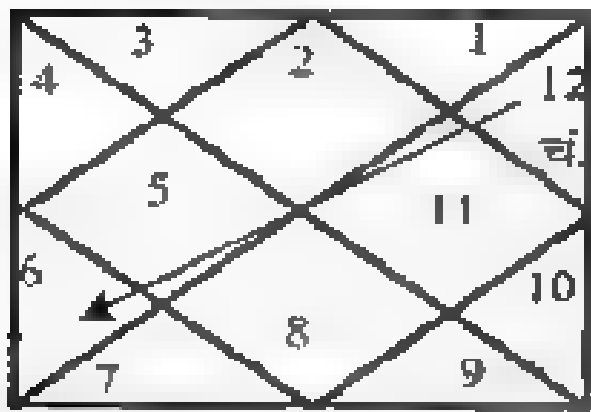
वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। एकादश स्थान में स्थित मीन राशिगत चंद्रमा अपनी कर्क राशि में नवम स्थान पर होने से शुभ फलदाई हो गया है। भृगुसूत्र के अनुसार, "बहुश्रुतवान् पुत्रवान गुणज्ञः" जातक बुद्धिमान, गुणवान, धनवान, माता-पिता, स्त्री, सन्तान सुख से युक्त तथा शास्त्र का ज्ञाता एवं विद्वान प्राणी होता है।

दृष्टि–मीनस्थ चंद्रमा की पूर्ण दृष्टि पंचम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक 'बहुविद्यावान' होगा। अनेक प्रकार की विधाओं का जानकार होगा। जातक उच्च कोटि का लेखक, चिन्तक, समाज सुधारक व दार्शनिक होगा।

निशानी–ऐसा जातक प्रेमभाव के कारण अनेक मित्रों से युक्त होता है। जातक तंत्रविद्या व ज्योतिष का जानकार होगा। जातक जलयान में यात्रा अवश्य करेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. चन्द्र + बृहस्पति–जातक पुत्रवान् जरुर होगा। यहां पर 'गजकेसरी योग' ज्यादा खिलेगा। जातक अति धनवान होगा। उसकी सन्तति सुयोग्य होगी। जातक का जीवन साथी जातक के प्रत्येक कार्य में उसका सहयोग करेगा। गृहस्थ सुख अच्छा होगा। जातक को अपने परिवार में उचित सम्मान मिलता रहेगा।

2. चन्द्र + शुक्र–"शुक्रयुतेन नरवाहनयोग-भृगुसत्र" ऐसा जातक उच्च राज्यधिकारी एवं श्रेष्ठ वाहन से युक्त होगा। क्योंकि शुक्र यहां उच्च का होगा।

3. चन्द्र + बुध–जातक धनी होगा। अपने पराक्रम, परिश्रम में बहुत धन कमायेगा। जीवन में सफल व्यक्ति होगा। प्रथम सन्तति के बाद किस्मत चमकेगी।

4. **चन्द्र + मंगल**—जातक महाधनी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
5. **चन्द्र + सूर्य**—ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को दिन के 10 बजे के बाद होता है। जातक को नेत्र विकार सम्भव है।
6. **चन्द्र + शनि**—जातक परम सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। उत्तम व्यापारी होगा।
7. **चन्द्र + राहु**—जातक को नेत्र विकार सम्भव है। व्यापार में उतार चढ़ाव आते रहेंगे।

वृषलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में
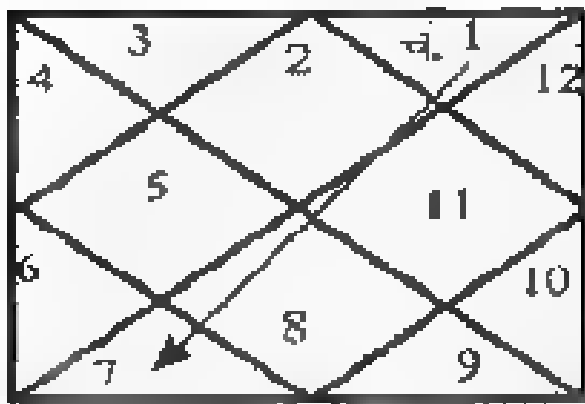
वृषलग्न में चंद्रमा तृतीयेश होने से अशुभ फलकारी है। यहां तृतीयेश चंद्रमा द्वादश भावगत 'मेष राशि' में होने में 'पराक्रमभग योग' बना ऐसा जातक साधारणतः आलसी, द्वेषी व नेत्ररोगी होता है। खासकर बाई आंख कमजोर होगी। 'व्ययभाव गते चन्द्र वायचक्षु विनश्यति'। जातक क्रोधी होगा क्योंकि चंद्रमा अग्निसंज्ञक राशि में है। भृगुसूत्र के अनुसार "दुर्जनः दुष्पाभव्दयः कोपोदभव व्यसन" जातक अयक्ष्यभोजी, व्यसनी, फालतू कार्य में रुपया खर्च करने वाला, क्रोध में अपना कार्य बिगाड़ने वाला होता है।

दृष्टि—मेष राशिगत द्वादशस्थ चन्द्र की दृष्टि षष्टम् भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक को जीवन में गुप्तरोग, गुप्तशत्रु एवं ऋण का भय बना रहेगा।

निशानी—जातक की किस्मत परदेश में चमकेगी।

दशा—चंद्रमा की दशा, अन्तर्दशा थोड़ा प्रतिकूल फल देगी।

उपाय—शिवजी की उपासना में, महामृत्युंजय प्रयोग से जातक को शुभफलों की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र + मंगल**—इस युति में मंगल स्वगृही होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। जातक समाज का धनी व्यक्ति होगा। जातक को भाग्योदय विवाह के बाद होगा। व्ययेश व्यय स्थान में होने में 'विमल योग' के कारण जातक पराक्रमी होगा।
2. **चन्द्र + बृहस्पति**—की युति चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को नष्ट कर देगी। भृगुसूत्र के अनुसार—शुभयुत विद्वान, दयावानः जातक विद्वान् दयावान एवं परोपकारी होगा। गजकेसरी योग के कारण जातक ऋण, रोग व शत्रुओं पर विजय प्राप्त

करने में समर्थ होगा। अष्टमेश बारहवें होने से 'सरल योग' के कारण जातक प्रतापी होगा।

3. **चन्द्र** + **शुक्र**—की युति में वेश्यावृत्ति या गतल कार्य में धन कमाने में रुचि होगी। परन्तु षष्टेश बारहवें होने से हर्ष योग बनेगा। शुक्र का अशुभत्व नष्ट हो जायेगा।

4. **चन्द्र** + **बुध**—की युति से बुद्धि में धन हानि होगी क्योंकि बुद्ध द्वादश भाव में होने में 'धनहीन योग' एवं 'सन्तानहीन योग' की सृष्टि होगी।

5. **चन्द्र** + **शनि**—भाग्येश-दशमेश बारहवें होने से 'भाग्यभंग योग' बना जातक के भाग्योदय में व्यापार में काफी रुकावटें आयेंगी।

6. **चन्द्र** + **सूर्य**—की युति के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को प्रातः 8 बजे के लगभग होगा। जातक को जीवन में प्रगति एव सुख प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

7. **चन्द्र** + राहु—चंद्रमा के साथ राहु या केतु होने से जातक चालाक, धोखेबाज एवं अविश्वसनीय स्वभाव का होगा।

❑❑❑

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में
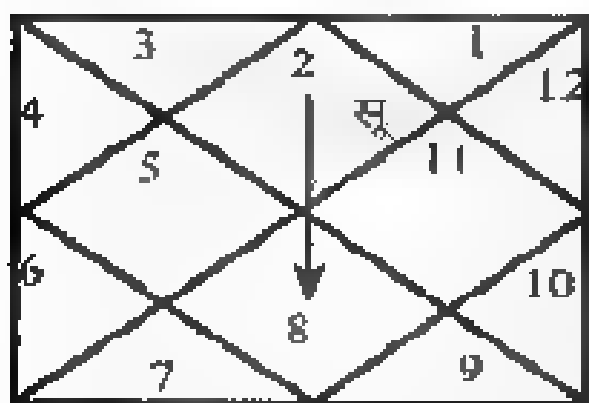
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। वृष राशि में सूर्य लग्नेश शुक्र के घर में शत्रु क्षेत्री होगा। सूर्य की दृष्टि यहां सप्तम भाव में वृश्चिक राशि पर होगी। यहा सूर्य अपनी राशि में दशम स्थान पर होने के कारण दिग्बली है। ऐसे जातक की मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और राजनैतिक प्रतिभा विलक्षण होती है। जातक भाग्यवान एवं धनवान होगा।

निशानी–राजा या ऊंचे अफसर की तरह जीवन जीना पसन्द करेगा। जातक का जन्म सूर्योदय के समय होगा।

दशा–सूर्य की दशा सुख एवं ऐश्वर्य में वृद्धि करेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। प्रथम स्थान पर वृष राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। लग्न में बुध स्वगृहाभिलाषी होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक की पत्नी पढ़ी लिखी एवं धनवान होगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के सुख-संसाधनों की प्राप्ति स्वयं के पुरुषार्थ से होगी।
2. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश व सुखेश की युति जातक के जीवन मे सुख और वैभव की वर्षा करेगी।
3. **सूर्य + मंगल**–की युति से चोट, दुर्घटना, रक्तसुख का भय बना रहेगा।

4. **सूर्य + बृहस्पति**—यहां वस्तुत सुखेश सूर्य की अष्टमेश व लाभेश बृहस्पति के साथ लग्न स्थान में युति जातक को मिश्रित फल देगी। जातक पुत्रवान होगा। गृहस्थ सुख में बढ़ोत्तरी होगी। जातक का भाग्योदय धार्मिक कार्य के माध्यम से होगा।
5. **सूर्य + शनि**—की युति सफलतादायक है पर बौद्धिक विकास में बाधक है।
6. **सूर्य + चन्द्र**—ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठाकृष्ण अमावस्या को प्रातः काल सूर्योदय के समय होगा। जातक चन्द्रकृत राजयोग के कारण समस्त सुखों को प्राप्त करेगा।
7. **सूर्य + राहु**—सूर्य राहु की युति शुभ नहीं है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
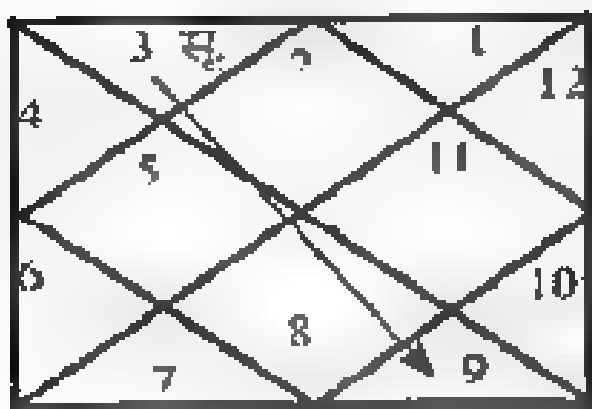
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। सूर्य यहां मिथुन राशि में बैठकर अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। सूर्य यहां अपनी राशि से एकादश स्थान में होकर मित्र के घर का है। सूर्य की यह स्थिति, धन, पद, प्रतिष्ठा अच्छी शिक्षा, अच्छे स्वास्थ्य, व अच्छे व्यवसाय की प्रतीक है।

निशानी—ऐसा जातक अपने भुजा बल पर भरोसा करने वाला, स्वयं के हाथों से काम करने वाला, हुनर का जानकार एवं सारे परिवार को पालने वाला होता है। जन्म सूर्योदय के पूर्व ब्रह्ममुहूर्त 5.00 बजे के लगभग होगा।

दशा—सूर्य की दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बंन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। द्वितीय स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पचमेश+धनेश बुध के साथ सार्थक युति है। यह युति यहां खिलती है बुध यहां स्वगृही होगा फलतः जातक धनवान होगा। बलवान धनेश की चतुर्थेश से युति होने के कारण जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को विद्याबल में रुपया मिलेगा। अष्टम भाव पर दोनों ग्रहों की दृष्टि होने से आयु लम्बी होगी। जातक को सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व संसाधनों की प्राप्ति होती रहेगी।
2. **सूर्य + चन्द्र**—ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पहले 4-5 बजे के लगभग होगा। सुखेश व तृतीयेश की युति उत्तम वाहन,

उत्तम भवन सुख में सहायक है.

3. **सूर्य + मंगल**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, खर्चेश मगल की युति धन स्थान मे ज्यादा ठीक नहीं। जातक का धन कपूर की तरह उड़ता रहेगा।

4. **सूर्य + बृहस्पति**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश लाभेश बृहस्पति की युति धन स्थान में ज्यादा शुभ नहीं है। जातक अटक-अटक कर बोलेगा व उसकी वाणी धार्मिक होगी।

5. **सूर्य + शुक्र**—सुखेश सूर्य की लग्नेश शुक्र के स्थान धन स्थान में युति शुभ है। जातक अपने पुरुषार्थ मे यथेष्ट धन कमायेगा परन्तु परस्पर शत्रु ग्रहों की युति के कारण धन प्राप्ति का लेकर संघर्ष की स्थिति रहेगी।

6. **सूर्य + शनि**—सुखेश सूर्य के साथ भाग्येश, दशमेश शनि का धन स्थान में बैठना शुभ है। भाग्य प्रबल रहेगा परन्तु शनि सूर्य की परस्पर शत्रुता के कारण पिता के गुजरने के बाद ही जातक भाग्यशली होगा।

7. **सूर्य + राहु**—राहु सूर्य के तेज को समाप्त कर देगा परन्तु मिथुन राशि में राहु स्वगृही होने से इतना नुकसान दायक नहीं है। धन के मामले को लेकर जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में
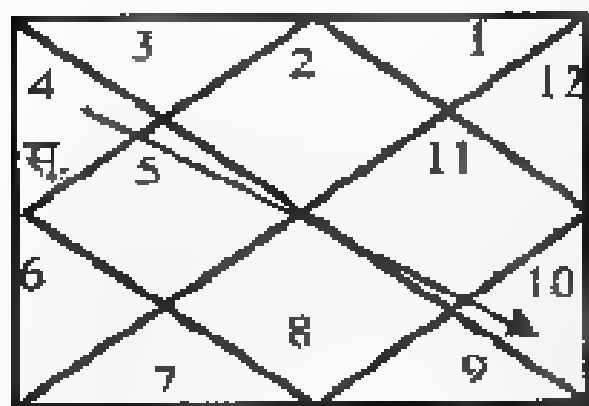
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। सूर्य यहा कर्क राशि में बैठकर नवम स्थान (भाग्य भावन) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। इस भाव में सूर्य अपनी राशि से द्वादश स्थान कर्क राशि में है। चतुर्थेश की यह स्थिति मिश्रित फलदायक है। ऐसा जातक आप कमाकर खाने वाला, धन का राजा एवं खूबसूरती का मालिक होगा।

निशानी—मानसागरी के अनुसार तृतीयस्थ सूर्य बड़े भाई का नाश करता है। जातक का जन्म सूर्योदय के पूर्व तीन बजे के लगभग होगा।

दशा—सूर्य की दशा पराक्रम बढ़ायेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. सूर्य + बुध—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। तृतीय स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध

के साथ युति है। बुध यहां शत्रु क्षेत्री होगा। यहां दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगा। उसे इष्ट-मित्रों एवं कुटुंबी जनों से सहायता मिलती रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा। जीवन में सभी प्रकार की सफलताएं इस योग के कारण प्राप्त होंगी। योग घटित होने का समयः यह योग सूर्य व बुध की दशा में घटित होगा। सूर्य की दशा अच्छी जायेगी।

2. **सूर्य + चन्द्र**—इस युति के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व तीन बजे के लगभग होता है। चंद्रमा बलहीन हो जायेगा तथा अपना फल न देकर सूर्य का फल देगा।
3. **सूर्य + बृहस्पति**—यहां वस्तुतः सुखेश सूर्य की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ युति तृतीय स्थान में होगी। बृहस्पति यहां उच्च का होकर मातृ सुख एवं मित्रों की संख्या बढ़ायेगा।
4. **सूर्य + शुक्र**—लग्नेश शुक्र की युति सुखेश सूर्य के साथ तृतीय भाव में होने से जातक परिजनों का सहायक होगा। मित्रों का सच्चा मित्र होगा। उसे भाई-बहन दोनों का सुख प्राप्त होगा। जातक पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य + शनि**—सुखेश सूर्य की भाग्येश, दशमेश के साथ तृतीय स्थान में युति शुभ है परन्तु दोनों परस्पर शत्रु ग्रह होने के कारण परिजनों से प्रेम नहीं रहेगा। जातक को बड़े भाई व छोटे भाई का सुख नहीं रहेगा।
6. **सूर्य + मंगल**—यहां सुखेश सूर्य की युति सप्तमेश, खर्चेश मंगल के साथ कष्ट कारक है। जातक को चोट, दुर्घटना, रक्त स्राव का भय रहेगा। जातक आप अकेला भाई न होगा। तीन भाईयों का योग बनता है।
7. **सूर्य + राहु**—राहु सूर्य का तेज़ समाप्त करता है उसके शुभ फलों को तोड़ता है। फलतः जातक के परिजन, मित्र ही जातक के शत्रु होंगे।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
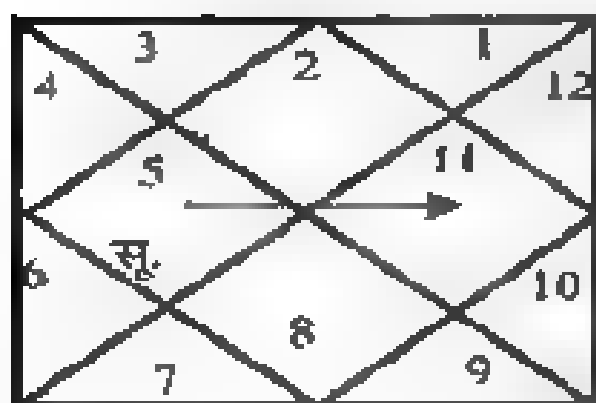
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। यद्यपि सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है तथापि यहा स्वगृही एवं केन्द्रस्थ होकर सम्पूर्ण रुप से शक्तिशाली है। सूर्य यहां 'रविकृत राजयोग' बनाता हुआ दशम भाव (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

ऐसा जातक रिपुहन्ता परम उत्साही, तेजस्वी, गम्भीर स्वभाव वाला, धन व ऐश्वर्य से परिपूर्ण जातक होता है। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलती है एवं वह उच्च राज्यधिकारी होता है अथवा उच्च राज्याधिकारी में मेल रखता है।

निशानी–सरकारी काम व ठेकों में लाभ, राजदरबार में सिक्का रहेगा। यात्रा में मोती निपजेगे। स्वर्ण (ज्वेलरी शो रूम), धातु के कार्यों मे लाभ होगा।

दशा–सूर्य की महादशा, अन्तर्दशा में जातक के बिगड़े कार्य सुधरेंगे। जातक के सुख व ऐश्वर्य में वृद्धि होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। चतुर्थ स्थान मे सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां स्वगृही होगा। यहां दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होने से बलवान होकर 'कुलदीपक योग' एव रविकृत राजयोग बनायेंगे। यहा बैठे दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान, धनवान होगा। जातक माता-पिता की सम्पत्ति का वारिस होगा व कुल का नाम रोशन करेगा। नौकरी या व्यापार जो भी होगा, उत्तम श्रेणी का होगा।
2. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को ठीक मध्यरात्रि में होता है। जातक का जन्म माता-पिता के लिए कष्ट दायक होता है। जातक के परिजन ही जातक से द्वेष रखेगे।
3. **सूर्य + मगल**–सुखेश सूर्य की सप्तमेश व खर्चेश मगल के साथ युति ज्यादा दुःखद नहीं है। क्योंकि यह वाहन दुर्घटना का संकेत देता है फिर भी रविकृत राजयोग के कारण जातक अति साहसी व पराक्रमी होगा तथा शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक ऋण, रोग एव शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश शुक्र की युति सुखेश सूर्य के साथ होने से जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा। जातक कुल का नाम रोशन करेगा परन्तु दोनो परस्पर शत्रु ग्रह की युति माता को बीमार करेगी वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा।
6. **सूर्य + शनि**–सुखेश सूर्य की भाग्येश, दशमेश शनि के साथ युति वैसे तो सौभाग्यर्धक है क्योंकि शनि यहां परमराजयोग कारक है परन्तु शनि सूर्य का

कट्टर शत्रु है। सूर्य में अस्त है अत यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करने वाला ग्रह है सूर्य के साथ इसकी युति माता पिता के सुख में न्यूनता लाती है। ऐसा जातक उदण्ड होता है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
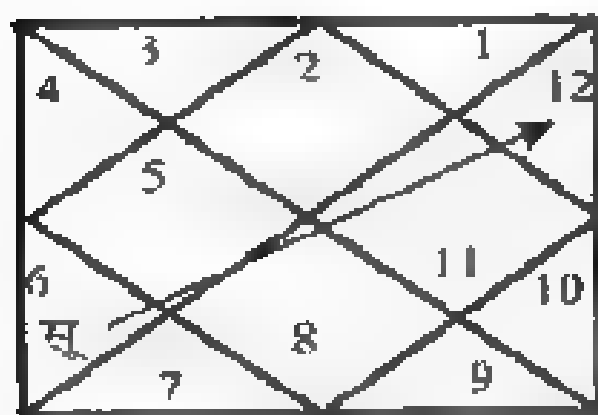
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां कन्या राशि में स्थित होकर लाभ भवन (मीन राशि) को सम्पूर्ण दृष्टि से देख रहा है इस भाव में सूर्य अपनी राशि में द्वितीय स्थान (त्रिकोण) में है। केन्द्र व त्रिकोण का लाभदायक संगम है।

ऐसा जातक विद्वान, दार्शनिक, श्रेष्ठ लेखक, श्रेष्ठ वक्ता, ज्योतिष व अध्यात्म शास्त्र का जानकार होगा।

निशानी–औलाद के पैदा होने के दिन से जातक की तरक्की होगी।

उपाय–यदि जातक अपने मकान की पूर्वी दीवार में रसोई बनाए तो सूर्य तत्काल उत्तम फल देगा।

दशा–सूर्य की दशा बहुत अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। पचम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। बुध यहां उच्च का होगा। बलवान धनेश व चतुर्थेश की युति 'मातृमूल धनयोग' की सृष्टि करती है। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी. जातक की सन्तति उत्तम होगी तथा जातक की आज्ञा में रहेगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व संसाधनों की प्राप्ति होती रहेगी। यह युति जातक को आगे बढ़ाने में बड़ी सहायक होगी।
2. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण को रात्रि दस बजे के आस पास होता है। जातक की सन्तति या भाई का विकलांग होने को खतरा बना रहता है।
3. **सूर्य + शुक्र**–सुखेश सूर्य की लग्नेश से युति त्रिकोण में शुभ है परन्तु शुक्र

नीच का है। शत्रु ग्रह के साथ है, षष्टेश है तथा जातक के सन्तान सुख में बाधक है। जातक की सन्तति की विद्या में रुकावट आयेगी।

4. **सूर्य + शनि**—सुखेश सूर्य की नवमेश, दशमेश शनि के साथ त्रिकोण स्थान में युति शुभ है परन्तु सूर्य नीचाभिलाषी है एवं शत्रु ग्रह के साथ होने से क्षुब्ध है। फलतः जातक विद्याध्ययन में संघर्ष रहेगा।
5. **सूर्य + मंगल**—सुखेश सूर्य की सप्तमेश, खर्चेश मंगल के साथ युति ठीक नहीं। जातक के गर्भपात होगा। परन्तु पुत्र सन्तति अवश्य होगी।
6. **सूर्य + बृहस्पति**—सुखेश सूर्य की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ युति ज्यादा सार्थक नहीं है। क्योंकि बृहस्पति मुख्य मारकेश है। जातक सन्तति का गर्भपात होगा। एकाध की अकाल मृत्यु होगी।
7. **सूर्य** + राहु—राहु सूर्य के तेज़ को नष्ट करता है पर कन्या का राहु मित्र के घर में है कन्या सन्तति तो देगी परन्तु पुत्र सन्तति में बाधक है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति षष्ट्म स्थान में

3 2 1 12 4 5 6 11 10 8 7 सू. 9
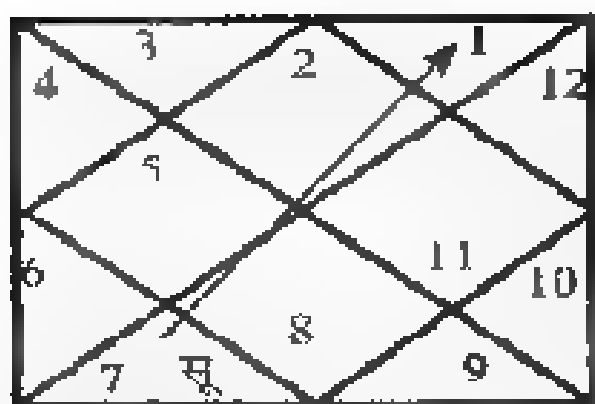
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है यहां सूर्य तुला राशिगत नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट कर रहा है। सूर्य की दृष्टि द्वादश भाव मेष राशि पर है। इस भाव पर सूर्य अपनी राशि से तृतीय स्थान पर नीच राशि तुला पर सवार है। जिसके दस अंशों तक यह परम नीच का होकर भूमि-घर, जमीन-जायदाद, व पैतृक सम्पत्ति विषय में परेशानी पैदा करेगा एव माता पिता का अल्प सुख देता है।

सुखभंग योग—सुखेश सूर्य के छठे स्थान पर जाने से यह योग बना है। फलतः यह स्थिति परम्परागत सुखों में न्यूनता लाती है तथा जातक के आत्मविश्वास में कमी आती है। यह योग सरकारी नौकरी में बाधक है

निशानी—जातक का जन्म ननिहाल या पैतृक घर से बाहर होगा। प्रारम्भिक कष्ट सहने के बाद अन्ततः रोग, ऋण, और शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है जातक बेफ़िक्र पर आग की तरह जल्दी गर्म हो जाने वाले स्वभाव का होता है।

उपाय—1. जातक को प्रतिदिन आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। 2. 01सूर्य को अर्घ्य देते रहना चाहिए। 3. प्रातः काल सूर्योदय के समय उठने की आदत डालनी चाहिए।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। षष्ट्म स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां नीच राशिगत है। यहां छठे जाने से 'सुखभंग योग' एवं बुध छठे से 'धनहीन योग' व 'सन्तति हीन योग' की सृष्टि होती है। फलतः यहा इस स्थान में यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। यहां बैठे दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव पर रहेगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। रोग व शत्रुओं का शमन करने में सक्षम होगा परन्तु संघर्ष होगा इस योग के कारण अन्तिम सफलता संघर्ष के बाद, सुख-सफलता जातक को अवश्य मिलेगी।
2. **सूर्य + शुक्र**–सूर्य नीच का एवं शुक्र स्वग्रही होने से **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि हुई। षष्टेश के छठे स्थान में होने से **'हर्ष योग'** भी बना। यह युति रोग व शत्रुओं का नाश करने के लिए शुभ है।
3. **सूर्य + शनि**–सूर्य नीच का एव शनि उच्च का होने में **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि हुई। यह योग सरकारी नौकरी में बाधक है। पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय होगा क्योंकि भाग्येश शनि सूर्य से अस्त है।
4. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि को आठ बजे के आस पास होता है। जातक के माता-पिता को लकवा (स्थाई) बीमारी होने का भय रहता है।
5. **सूर्य + बृहस्पति**–अष्टमेश व लाभेश बृहस्पति का सूर्य के साथ छठे जाना शुभ नहीं परन्तु अष्टमेश के छठे जाने से 'सरल योग' बना फलतः बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट हो गया। जातक के पैर में चोट पहुंचेगी पर जातक बच जायेगा।
6. **सूर्य + मंगल** -खर्चेश, सप्तमेश मंगल का छठे जाने से 'विमल योग' बना। जातक का ससुराल या पत्नी से विवाद हो सकता है, कहीं दुर्घटना भी हो सकती है पर 'विमल योग' के कारण अप्रिय घटना घटित नहीं होगी।
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। परन्तु शास्त्रकारों ने छठे राहु को योगकारक माना है राहु मित्र राशि में भी है अतः जातक पराक्रमी होगा पर सोच में नकारात्मक रहेगा।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

वृषलग्न मे सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां सूर्य केन्द्रवर्ती है मगल की राशि वृश्चिक में बैठकर लग्न स्थान
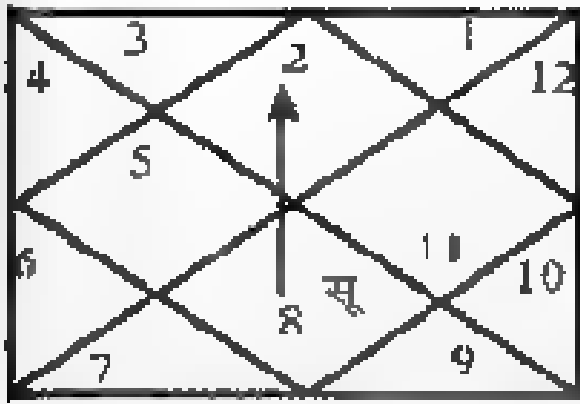
(प्रथम भाव) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। सूर्य यहां तुला राशि से बाहर निकलने के कारण आरोही (चढ़ने वाली) अवस्था में है। सूर्य यहां जल राशि में है। फलतः जातक उग्र व उष्ण स्वभाव का न होकर शांत व सौम्य स्वभाव का होगा। जातक गंभीर, दार्शनिक, जिज्ञासु एवं अन्वेषाणात्मक स्वभाव का होता है तथा जातक अपने स्वयं के विचारों, सोच व परिश्रम से आगे बढ़ता है।

दशा—सूर्य की दशा में जातक की तरक्की होगी।

निशानी—ऐसा जातक सुनता सबकी है, पर करता अपने मन की है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। सातवें भाव में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहा दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर लग्न को देखेंगे। फलतः कुलदीपक बनेगा। ऐसे जातक बुद्धिमान होगा। बुद्धि के चातुर्य व वाकचातुर्य से शीघ्र उन्नति को प्राप्त करेगा। विवाह जीवन में उन्नति के मार्ग खोलेगा जातक को सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य संसाधनों की प्राप्ति सहज में होगी
2. **सूर्य + मंगल**—पत्नी से विचार धारा न मिले। पत्नी उग्र स्वभाव की होगी। यदि राहु साथ में हो तो पत्नी से तलाक हो सकता है।
3. **सूर्य + शुक्र**—लग्नेश शुक्र के लग्न को देखने से 'लग्नाधिपति योग' बनेगा। जातक को मेहनत का फल मिलेगा सुखेश+लग्नेश की युति पिता एवं वाहन के लिए ठीक है।
4. **सूर्य + चन्द्र**—पत्नी से विचार धारा न मिले। जीवन साथी षड्यन्त्रकारी होगा यदि सप्तम भाव राहु या शनि के प्रभाव में हो तो जीवन साथी की मृत्यु होगी ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सायं काल सूर्यास्त के समय होगा जातक स्वयं विकलांग हो सकता है।
5. **सूर्य + शनि**—सुखेश एवं भाग्येश, दशमेश शनि की युति केन्द्र में होना सौभाग्यवर्धक है। जातक का भाग्योदय 32 वें वर्ष मे होगा। परस्पर शुभ ग्रहो की युति के कारण जातक का सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
6. **सूर्य + बृहस्पति**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति केन्द्रवर्ती अपने घर (मीन राशि) एवं उच्च राशि (कर्क) को देखेगा बृहस्पति यहा

मारकेश होते हुए भी जातक की उन्नति में सहायक होकर उसके व्यापार एव पराक्रम को बढ़ायेगा।

7. **सूर्य** + राहु—राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। वृश्चिक राहु की शत्रु राशि है। यहा पर यह युति जीवन साथी से वैमनस्य करायेगी तथा कई बार तलाक (बिछोह) की स्थिति भी आ सकती है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में
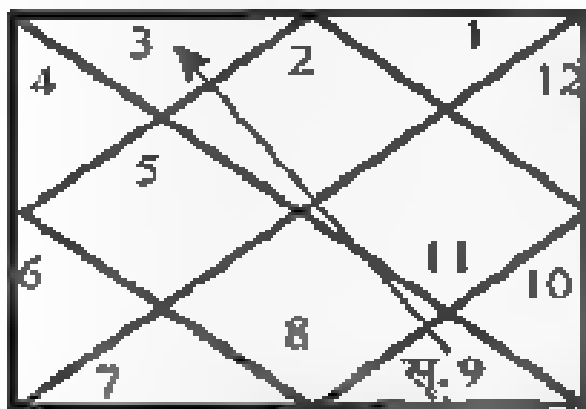
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहा सूर्य खड्डे (अष्टम घर) में होने से '**सुखभंग योग**' की सृष्टि कर रहा है। अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन भाव पर विद्यमान है। यद्यपि सूर्य अपनी राशि से पंचम स्थान एवं अपने मित्र (बृहस्पति) के घर में है। तथापि सूर्य अष्टम जाने में अपना शुभ फल खो देता है। अष्टम भाव दुष्ट स्थान है। यहा सूर्य से प्राप्त होने वाले शुभ फलों की आशा धूमिल हो जाती है

विशेष—जातक के स्वयं के भाग्य का हाल पापी ग्रहों की अच्छी या बुरी हालत पर निर्भर रहेगा। फिर भी जातक उजड़े मकानों को बसाने वाला धनवान दौलतमन्द होगा।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा में चन्दन, केसर का दान, पीले पुष्प शिव मन्दिर पर चढ़ाने से दशा अच्छी होगी।

निशानी—जातक प्रारम्भ में किराये के मकान में रहता है। स्वगृह निर्माण में बाधा आती है मगर सन्तान पर ध्यान न दे तो वह आवारा हो जाती है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य** + बुध—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। अष्टम भाव में 'धनु राशिगत' यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश-धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य आठवें होने से 'सुखभंग योग' तथा बुध आठवें हो जाने से 'धन हीनयोग' एवं 'सन्ततिहीन योग' की क्रमशः सृष्टि होती है। फलतः यहां इस स्थान पर यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु, सुख ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। माता की सम्पत्ति सम्भवतः इसे न मिले, फिर भी योग के कारण अन्तिम सफलता जातक को मिलेगी। जातक एक सफल व्यक्तित्व का धनी होगा।

2. **सूर्य + चन्द्र**—ऐसे जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या सांय सूर्यास्त के पहले पाच बजे के आस पास होता है। जातक को जीवन में परिजनों का सहयोग नहीं मिल पाता

3. **सूर्य + शनि**—धन हानि, मान हानि जैसी घटना हो सकती है। कारागार जाने की नौबत आ सकती है परन्तु पिता की मृत्यु के बाद भाग्योदय होगा।

4. **सूर्य + शुक्र**—लग्नेश शुक्र का आठवें जाना बहुत अशुभ है। षष्टेश के आठवें जाने से '**हर्ष योग**' बना। इस कारण शुक्र का अशुभत्व नष्ट हो गया परन्तु परस्पर शुभ ग्रहों की युति सुख व पराक्रम में बाधक है।

6. **सूर्य + शुक्र**—आगे उन्नति होने की सम्भावना बनी रहती है पत्नी रोग ग्रस्त एवं कलहकारिणी होती है।

5. **सूर्य + बृहस्पति**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश की युति अष्टम स्थान में कष्टायक है परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वग्रही होने से 'सरल योग ' बना फलतः जातक को दीर्घायु प्राप्त होगी तथा दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।

6. **सूर्य + राहु**—राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। अष्टमस्थ राहु सूर्य के साथ होने से पिता की आयु कम होती है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में
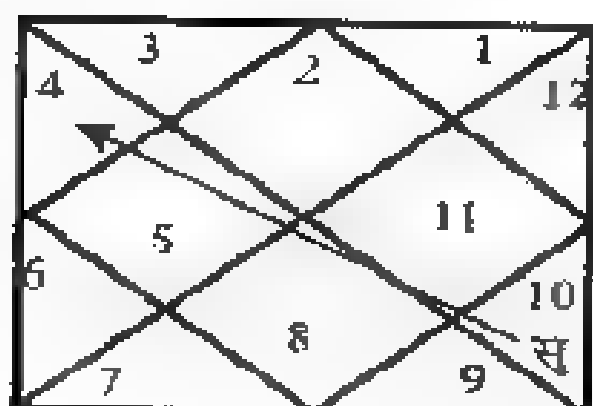
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर भाग्य भवन में बैठा है एवं पराक्रम स्थान में कर्क राशि को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। सूर्य अपनी राशि सिंह में छठे स्थान पर परम शत्रु की राशि मकर में बैठा उद्विग्न है। नवम भाव पिता का है और सूर्य पिता का प्रतिनिधि है। अतः पिता की प्रतिष्ठा और पिता का जीवन स्वस्थ नहीं रखता। पिता-पुत्र के सम्बन्ध भी स्वस्थ नहीं होते। केन्द्राधिपति त्रिकोण में कारक स्थान में होने से,जातक महान पराक्रमी होगा तथा शत्रुओ की नींद उड़ा देगा, पर षड्यन्त्र का शिकार होगा।

निशानी—जातक की किस्मत 34 वर्ष की आयु के बाद चमकेगी।

उपाय—पीतल या तांबे के बर्तन पनिहारे पर रखें। रोज चमकायें तो किस्मत चमकेगी।

दशा—सूर्य की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध :

1. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। नवम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान पर होगी। जातक बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जाएगा। जातक धनवान होगा पर सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री होने से हल्का संघर्ष होगा। जातक की उन्नति में माता एवं समी की मदद बराबर बनी रहेगी।
2. **सूर्य + शनि**–स्वगृही भाग्येश के साथ सुखेश सूर्य की युति उन्नति कारक है। जातक व्यापारी होगा। परस्पर शुभ ग्रहों की युति के कारण व्यापार व्यवसाय में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।
3. **सूर्य + शुक्र**–लग्नेश भाग्य स्थान में सुखेश सूर्य के साथ होने से जातक भाग्यशाली होगा। उसे अल्प प्रयत्न का ज्यादा लाभ मिलेगा। परस्पर शत्रु ग्रहों के युति के कारण थोड़ा संघर्ष रहेगा।
4. **सूर्य + मंगल**–सुखेश सूर्य के साथ सप्तमेश, खर्चेश मंगल उच्च का भाग्य स्थान में होने से जातक का भाग्य विवाह के बाद चमकेगा। जातक महान पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य + चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को दोपहर तीन बजे के आस-पास होता है। जातक को माता-पिता का सुख मिलता है।
6. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति नवम स्थान में होगी। यहां बृहस्पति नीच का होगा। यह युति व्यापार सुख में वृद्धि कारक साबित होगी।
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। यहा समराशि में होने से यह इतना हानिकारक नहीं है। फिर भी भाग्योदय काफी दिक्कतों के बाद देरी से कराता है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में

वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां सूर्य केन्द्रवर्ती होकर शत्रु क्षेत्री है तथा अपने ही घर चतुर्थ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। सूर्य यहां दिग्बली है। सिंह राशि में सप्तम स्थान पर है। चतुर्थेश सूर्य की दशम भाव में स्थिति चतुर्थ व दशम दोनों भाव को बलवान करती है।
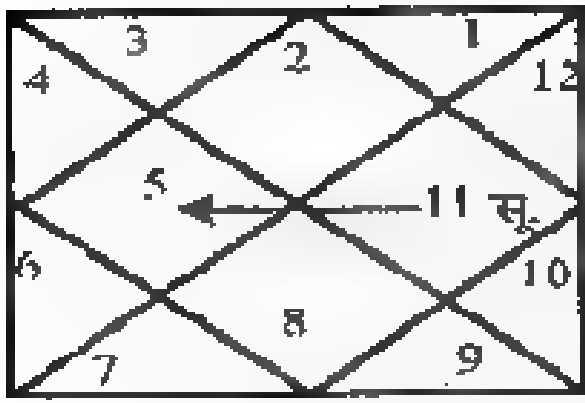
फलतः ऐसे जातक में असीम शक्ति होती है। ऐसे जातक प्रखर वक्ता होते हैं। ऐसे जातक राजनैतिक व धार्मिक संगठनों के प्रमुख होते हैं। इनके भाषणों में, सभाओं में भीड़ का समुद्र होता है। ऐसा जातक अच्छे सेहत, अच्छा सम्मान एव उत्तम धन-सम्पत्ति का स्वामी होता है।

दशा—सूर्य की दशा उत्तम फल देगी।

उपाय—सिर पर पगड़ी, साफा या टोपी पहने तो भाग्योदय जल्दी होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध :

1. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। दशम स्थान में 'कुम्भ राशिगत' यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचामेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होगे तथा 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेंगे। दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक धनवान होगा। जातक को पैतृक/मातृक सम्पत्ति मिलेगी। खुद का उत्तम मकान खुद बनायेगा। वाहन सुख भी उत्तम होगा। जातक जीवन में विभिन्न संसाधनों से सम्पन्न एक सफल व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + शनि**—सुखेश सूर्य के साथ शनि स्वग्रही 'शशयोग' करता हुआ जातक को राजा के समान ऐश्वर्यशाली व प्रतापी बनायेगा। जातक को माता पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
3. **सूर्य + शुक्र**—लग्नेश शुक्र केन्द्र में 'कुलदीपक योग' के साथ जातक को सौभाग्यशाली बनाता है। जातक ऐश्वर्यवान व प्रतापी होगा।
4. **सूर्य + चन्द्र**—ऐसे जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को दिन के बारह बजे के आस-पास होगा। जातक को माता-पिता दोनों की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **सूर्य + मंगल**—सुखेश सूर्य के साथ सप्तमेश, खर्चेश मंगल की युति अशुभ होते हुए भी शुभफलदायक है क्योंकि जातक उत्तम भू-सम्पत्ति एवं भवन का स्वामी होगा।
6. **सूर्य + बृहस्पति**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति यद्यपि निष्फल है तथापि व्यापार वृद्धि की द्योतक है। जातक के पिता की समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रहेगी।
7. **सूर्य + राहु**—सूर्य राहु के तेज को नष्ट करता है। यहां राहु राज्य पक्ष से दण्ड दिला सकता है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में

3 2 1 12 सू. 4 5 11 6 10 8 7 9
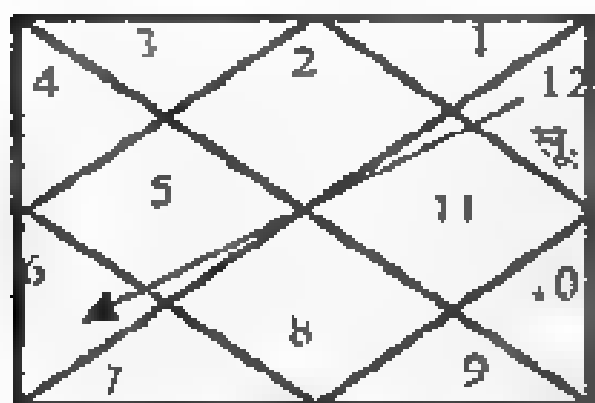
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रुभाव रखता है. यहां सूर्य लाभ स्थान में बैठा हुआ पंचम भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। सूर्य अपनी राशि से अष्टम स्थान में है परन्तु मित्र ग्रह (बृहस्पति) की मीन राशि मे है। यह भाव लाभ व उपचय स्थान है यहां पर आकर सभी ग्रह शुभ फल देते हैं।

ऐसा जातक पराक्रमी, धार्मिक, ज्योतिष व यन्त्र-तन्त्र विद्या का ज्ञाता होता है।

निशानी—जातक पूर्ण धर्मी होगा परन्तु अपनी पसन्द व जिद्द को पूरा करने हेतु अधर्म आचरण भी कर सकता है।

दशा—सूर्य की दशा उत्तम फल देगी

उपाय—मूली, गाजर, रात को सिरहाने के नीचे रखकर प्रातः काल धर्म स्थान में देने से सूर्य शुभ फल देगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। एकादश स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां जिस घर में बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव पर होगी जो बुध का निजी भवन है। फलतः जातक बुद्धिमान गुप्त विद्याओं मन्त्र-तन्त्र ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता होगा, शिक्षित होगा। उसकी सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार के माध्यम से तरक्की प्राप्त करेगा। घर का मान एवं सभी भौतिक सुख उसे सहज में प्राप्त होंगे।
2. **सूर्य + बृहस्पति**—जातक को पुत्र सन्तति अवश्य होगी। दो पुत्रों का लाभ होगा ही बृहस्पति स्वगृही होगा। जातक आध्यत्मिक व्यक्ति होगा।
3. **सूर्य + चन्द्र**—ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व प्रातः चार बजे के आस-पास होता है।
4. **सूर्य + शुक्र**—यहां शुक्र उच्च का होगा। लग्नेश उच्च का होने से जातक प्रतिभाशाली, धनी, मानी व अभिमानी व्यक्ति होगा।
5. **सूर्य + शनि**—सुखेश सूर्य के साथ भाग्येश, दशमेश शनि की युति लाभ स्थान में शुभ फलदायक है। जातक उद्योगपति होगा।

6. **सूर्य + मगल**–सुखेश सूर्य के साथ, सप्तमेश खर्चेश मंगल की युति लाभ स्थान में शुभ है। जातक को तीन पुत्र होने की सम्भावना रहती है।
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है। ऐसे जातक के लाभ में व्यापार-व्यवसाय मे कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहती है।

वृषलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

3	2	सू. 1	12
4	5	11	10
6	7	8	9
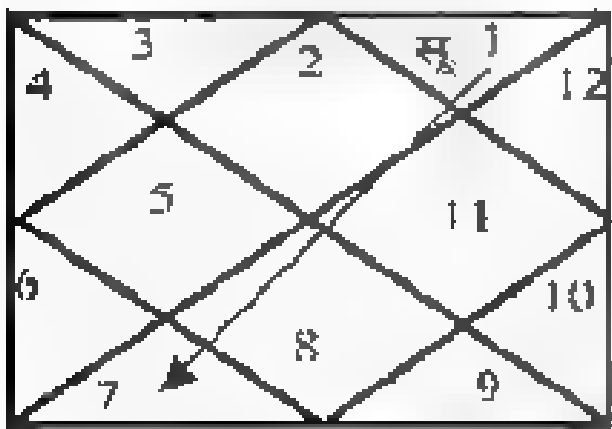
वृषलग्न में सूर्य सुखेश होकर राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहा सूर्य उच्च का होकर बारहवें स्थान पर जाने से 'सुखभंग योग' बना रहा है। सूर्य की सम्पूर्ण दृष्टि षष्ट्म भाव (तुला राशि) पर है सूर्य यहां सिंह राशि से नवम स्थान में होकर उच्च का है।

ऐसे जातक भौतिकवादी, हठी एवं निर्भीक होते हैं। किसी से डरते नही.

निशानी–वैसे ऐसा जातक पूर्ण सुखी होता है हरी भरी फुलवाड़ी का स्वामी होता है, परन्तु पराई पचायती में अपनी रातों को नींद खराब करेगा। अपने परिवार की सुख शान्ति को नष्ट करेगा।

दशा–सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**– 'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। द्वादश स्थान मे सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां उच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान एवं तेजस्वी होगा। यात्राओं में कमायेगा। विदेश जायेगा। पर पैसा पास में टिकेगा नहीं। शत्रु व रोग का समूल नाश करने में पूर्ण समर्थ होगा। जातक जीवन में कामयाब एवं सफल व्यक्तियों की श्रेणी में अग्रण्य होगा।
2. **सूर्य + चन्द्र**–जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को होगा। माता-पिता एवं परिजनों के सहयोग की कमी जीवन पर्यन्त बनी रहेगी.
3. **सूर्य + शुक्र**–शैय्या सुख का नाश
4. **सूर्य + मंगल**–जातक को अत्यधिक कामी एवं एव विलासी बना देगा।
5. **सूर्य + राहु**–जातक की नींद उड़ा देगा। शैय्या सुख नहीं।

6. **सूर्य + शनि**–जातक के पिता सुख शैय्या सुख में कमी करेगा। सूर्य का शनि नीच का होने में '**नीचभंग राजयोग**' बना। फलतः जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा परन्तु भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य + बृहस्पति**–सुखेश सूर्य के साथ लाभेश व अष्टमेश बृहस्पति व्यय भाव 'सरल योग' की सृष्टि करता है। जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा तथा ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति

वृषलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में
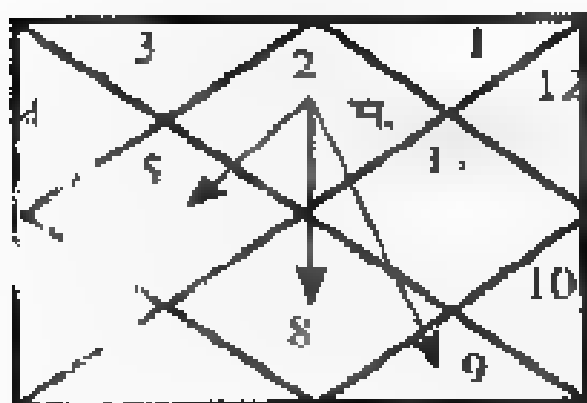
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश व खर्चेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। वृष राशि में लग्नस्थ मंगल व्यक्ति को विलासी बनाता है। ऐसा जातक भोग और ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु उचित और अनुचित दोनों प्रकार के प्रयास करता है। मंगल लग्न में होने से कुण्डली मांगलिक है। ऐसा व्यक्ति महत्वकांक्षी होता है।

[illegible]—द्वादशेश मंगल में भोग विलास का दोष अधिक होता है। लग्न में बैठे वृष [illegible] मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (सिंह राशि) सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) एवं अष्टम भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसा जातक निर्भीक होगा। दीर्घ आयु वाला होगा। जातक माता का भक्त होगा। कामुकता के कारण पत्नी का दीवाना होगा।

निशानी—ऐसा जातक अपनी किस्मत आप चमकायेगा।

दशा—मंगल की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु जातक को तेजगति के वाहन से बचना चाहिए।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल + चन्द्र**—लग्न में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः तृतीयेश चद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी जहां चद्रमा उच्च का वृष राशि में होगा। फलतः यह 'महालक्ष्मी योग' बनायेगा। लग्न स्थित इन दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ स्थान (सिंह राशि) पर, सप्तम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं अष्टम स्थान (धनु राशि) पर होगी। मंगल अपने ही घर को देखेगा। फलतः जातक

का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। देशाटन व यात्राओं के द्वारा जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

2. **मगल + शनि**–भाग्येश, दशमेश शनि का मगल के साथ लग्न स्थान में होना शुभ फलदायक है। जातक धनी होगा। उद्यमी होगा। पर बहुत हठी होगा। क्रोधी भी होगा।

3. **मंगल + शुक्र**–के कारण जातक स्त्री भोग सुख हेतु बलात्कारी भी हो सकता है। अत्यधिक वीर्य क्षरण के कारण निस्तेज, होकर बीमार भी हो सकता है। परन्तु **'मालव्य योग'** के कारण जातक धनी होकर राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।

4. **मंगल + बृहस्पति**–सप्तमेश मंगल की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ लग्न में युति दो मारकेश ग्रहों की लग्न में युति कहलायेगी। परन्तु बृहस्पति की दृष्टि पंचम, सप्तम एवं नवम पर होने से गृहस्थ, सन्तान व भाग्य सुख के लिए उत्तम है।

5. **मंगल + सूर्य**–सुखेश सुर्य की युति लग्नस्थ मगल के साथ चोट, दुर्घटना का भय देता है।

6. **मंगल + बुध**–धनेश, पंचमेश बुध लग्न में मंगल के साथ होने से जातक को धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी।

7. **मंगल + राहु**–मगल के साथ राहु या केतु हो तो जातक धोखेबाजी, स्मगलिंग, उग्रवाद एव बलात्कार की प्रेरणा में प्रेरित रहेगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में
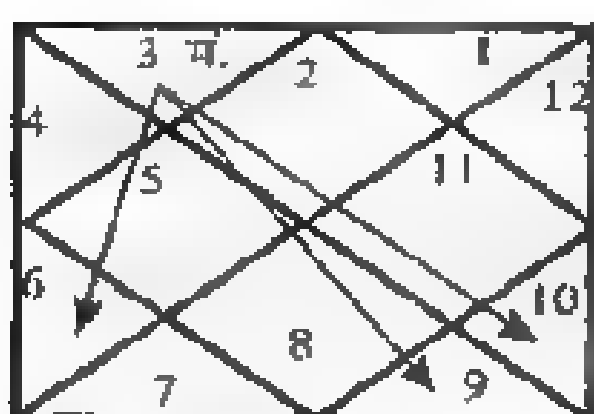
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एव व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने के कारण अशुभ फलदाता है। यहां धन भाव में मिथुन राशिगत मंगल व्यक्ति को विनम्र, सहिष्णु, पुत्र-मित्र कुटुम्बीजनों का हितचिन्तक बनाता है।

दृष्टि–द्वितीय स्थान में मिथुन राशिगत मंगल पचम भाव (कन्या राशि) अष्टम भाव एव नवम भाव (मकर राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः ऐसा जातक पुत्र सन्तति से युक्त, दीर्घायु वाला एवं प्रबल भाग्य का स्वामी होता है।

निशानी–जातक ज्योतिष-तन्त्र एवं गुप्त विद्याओं का जानकार होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध :

1. **मंगल + चन्द्र**—धन स्थान में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी जहां चंद्रमा शत्रुक्षेत्री (मिथुन राशि) होगा। फलतः यहां लक्ष्मी योग की सृष्टि होती है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पचम स्थान (कन्या राशि) अष्टम स्थान (धनु राशि) एवं भाग्य स्थान (मकर राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः विवाह के बाद जातक का पराक्रम बढ़ेगा। जातक धनवान होगा। धन का संकलन चिरस्थाई रह पायेगा या नहीं इसका निर्णय धनेश बुध ग्रह की स्थिति पर निर्भर करता है।
2. **मगल + बुध**—यद्यपि बुध मंगल का शत्रु है। तथापि बुध यहां त्रिकोण का स्वामी होने में बहुत शुभ फलकारी है। यह युति जातक का धन-ऐश्वर्य बढ़ाती है। बुध यहा स्वगृही होने में जातक कुशल वक्ता एवं अति धनी व्यक्ति होगा।
3. **मंगल + शुक्र**—ऐसा जातक अभिनय, कला, संगीत के क्षेत्र में प्रतिपल कुछ न कुछ नया करने के लिए उत्साहित रहता है। भृगुसूत्र के अनुसार ऐसे जातक के नेत्रों में विकार होता है
4. **मंगल + बृहस्पति**—ऐसा जातक धार्मिक होता है। ज्योतिषी होता है। अध्यात्म व धर्म के क्षेत्र में कुछ न कुछ नया करने की प्रवृति रहती है। जातक तकनीकी कार्य एवं व्यापार के द्वारा यथेष्ट धन कमायेगा।
5. **मंगल + शनि**—मंगल+शनि की युति वाणी में अहंकार एव धूर्तता को बताती है अथवा नेत्र विकार भी सम्भव है। भाग्येश, दशमेश के धन स्थान में जाने में जातक लॉटरी, सट्टा या अनैतिक कार्यों से फटाफट धनवान होना चाहेगा।
6. **मंगल + सूर्य**—सुखेश सूर्य का धन स्थान में मंगल के साथ होना वाणी में अधैर्यता, उतावलापन लायेगा। जातक सुख प्राप्ति हेतु उत्साहित रहेगा एवं नये-नये तरीकों का इस्तेमाल करेगा।
7. **मंगल + राहु** -वाणी में स्खलन होगा। जातक झूठ ज्यादा बोलेगा। जातक नेत्र रोगी होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा तथा अत्यधिक फिजूल खर्ची के कारण कई बार जातक परेशानी या कर्ज में उलझ जायेगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में

वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एव व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां तृतीयस्थ मंगल कर्क राशि का होगा। कर्क मंगल की नीच राशि है। यहां पर 28 अंशों पर होने से मंगल परम नीच का हो जाता है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार उपचय स्थानों में पाप ग्रह शुभ फलदायक हो जाते हैं
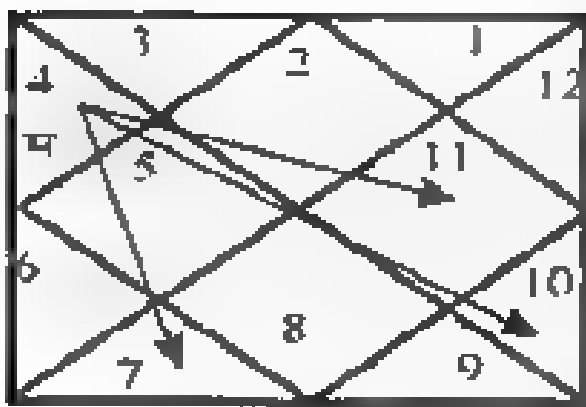
इसलिए तृतीयभाव में मंगल की यह अवस्था हानिरहित है। फिर तृतीयस्थ यह मंगल मेष राशि में चौथे एवं वृश्चिक राशि में नवमें स्थान पर होने से धन-पद-प्रतिष्ठा व यश को देने वाला कहा गया है। ऐसा जातक परिश्रमी, पराक्रमी युद्ध प्रिय, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से सम्पन्न होता है

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि षष्टम भाव (तुला राशि) नवम भाव (मकर राशि) एवं दशम भाव (कुंम्भ राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक रोग, ऋण व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम, भाग्यशाली एवं उद्योगपति (यथेष्ट धन का स्वामी) होता है।

निशानी–जातक आप अकेला भाई नहीं होगा।

दशा–मंगल की दशा जातक का पराक्रम बढ़ाने में सहायक होगी। जातक का भाग्योदय करायेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–तृतीय स्थान में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा स्वगृही होगा। फलतः यहां 'महालक्ष्मी योग' बना यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान (तुला राशि) भाग्य भवन (मकर राशि) एवं दशम स्थान (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद अथवा प्रथम भाई-बहिन के जन्म के बाद त्वरित गति से होगा। चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच का होगा फलतः 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। फलतः जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी एवं धनवान होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–सुखेश सूर्य तृतीय में होने से जातक आप अकेला भाई न होगा। बड़े भाई की मृत्यु सम्भव है। जातक के दायें हाथ पर चोट, दुर्घटना का भय रहेगा।
3. **मंगल + शुक्र**–लग्नेश शुक्र के तृतीयस्थ मंगल के साथ जाने से जातक महान् पराक्रमी होगा। उसे भाई बहन दोनों का सुख होगा। उसे मित्रों का लाभ मिलता रहेगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–मंगल बृहस्पति की युति से यहां **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। फलतः दोनों ग्रह शुभ फलदाई ज्यादा हो जायेंगे। जातक महान पराक्रमी, तेजस्वी होकर राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

5. **मंगल + शनि**–दशमेश, नवमेश शनि की तृतीयस्थ नीच के मंगल के साथ युति होने से जातक के छोटे भाई की मृत्यु हो जायेगी। जातक अपने परिजनों से द्वेष रखेगा। मित्र मददगार होगे पर पीठ पीछे बुराई करेंगे।

6. **मंगल + बुध**–धनेश व पंचमेश होकर योगकारक बुध की युति तृतीयस्थ मंगल के साथ धन वृद्धि कारक है। बुध यहां शत्रु क्षेत्री होने से जातक अपनी बहनों में वैमनस्य रखेगा।

7. **मंगल + राहु**–राहु यहां चंद्रमा का शत्रु है राहु चन्द्र तेज को नष्ट करने वाला है। कर्कस्थ राहु मंगल के साथ होने से भाईयो में विद्रोह की स्थिति अथवा परिजनों में विवाह करायेगा। यहां तक की जातक के मित्रों का आचरण संदिग्ध रहेगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में
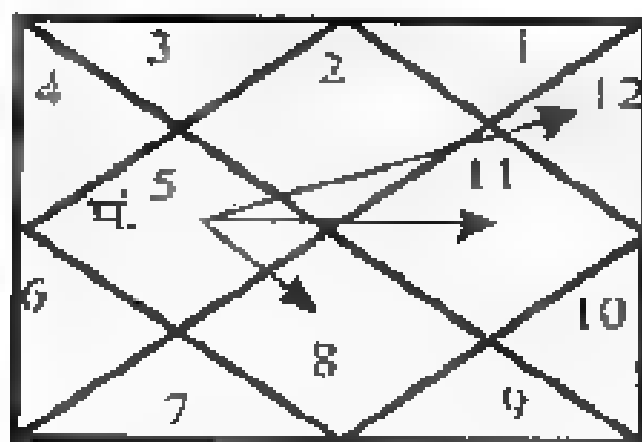
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं [illegible] है, मगल यहा द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहा चतुर्थस्थ मगल सिंह राशि का होगा मगल यहा दिक्बली है। यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' भी बनाती है। जातक धीर वीर व साहसी होने के साथ साथ उत्तम भूमि व भवन का स्वामी होता है।

दृष्टि–सिह राशिगत मगल की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि), दसम भाव (कुम्भ राशि), एकादश भाव (मीन राशि) पर होगी। यह मगल व्यवसाय व नौकरी में उन्नति प्रदान करता है।

दशा–मगल की दशा अन्तर्दशा में जातक नई भूमि, जमीन-जायदाद खरीद सकता है

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–चतुर्थ स्थान मे चन्द्र+मगल की युति वस्तुत: तृतीयेश चद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा अग्नि राशि में जाकर उद्विग्न होगा। एवं मंगल दिक्बल को प्राप्त करेगा फलत: 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। दोनों ग्रह केन्द्र में बैठकर सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) दशम भाव (कुम्भ राशि) एवं एकादश भाव (मीन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। खेती की भूमि, कृषि से लाभ

होगा। उत्तम वाहन, उत्तम मकान व नौकरी का सुख मिलेगा। जातक समाज का धनी व्यक्ति होगा।

2. **मंगल + सूर्य**–मंगल की सूर्य के लाभ युति यहां 'रविकृत राजयोग' की पुष्टि करता है। जातक को उत्तम नौकरी-व्यवसाय की प्राप्ति होगी।
3. **मंगल + बुध**–मंगल के साथ योगकारक बुध की युति से धन की प्राप्ति तेज होगी। व्यक्ति व्यापार के माध्यम से कमायेगा।
4. **मंगल + शनि**–भाग्येश, दशमेश शनि की युति चतुर्थ भाव में मंगल के साथ होने से शनि अपने घर (कुम्भ राशि) एवं लग्न (वृष राशि) को देखेगा फलतः जातक उद्योगपति या बड़ा व्यापारी होगा
5. **मंगल + शुक्र**–मंगल शुक्र की युति केन्द्र में श्रेष्ठ फलदायक है। यहां **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि होगी। जातक धनी होगा।
6. **मंगल + बृहस्पति**–बृहस्पति मंगल के साथ केन्द्रस्थ होकर **'केसरी योग'** बनायेगा तथा जातक की आयु एव धन में वृद्धि करेगा।
7. **मंगल + राहु**–राहु मंगल का शत्रु है। यह माता, भवन एव वाहन के सुख में हानि पहुंचायेगा। मंगल की दशा में नवीन कार्य सोच-समझ कर करें।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
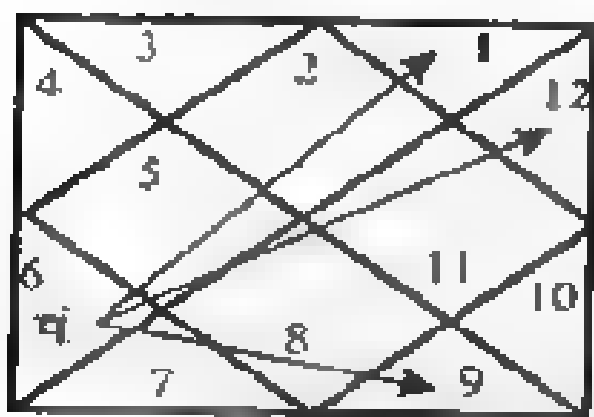
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एव व्ययेश है। मंगल यहा द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां पंचमस्थ मंगल कन्या राशि का होगा। मंगल बुध की राशि में उत्तम फल देगा। जातक बुद्धिबल से यथेष्ट धन अर्जित करेगा। जातक को अन्नदान प्रिय होगा।

दृष्टि–कन्या राशिगत पंचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टम भाव (धनु राशि), लाभ भाव (मीन राशि) एवं व्यय भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक ऋण, रोग और शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–कन्या राशि में मंगल वाला जातक स्त्री और शत्रु से डरेगा। जातक को नर सन्तान का सुख मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–पंचम स्थान में चन्द्र+मगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। यह 'लक्ष्मी योग' बनायेगी। चंद्रमा

यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (धनु राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एव द्वादश भाव (मेष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा। उत्तम सन्तति पुत्र-पुत्री दोनों से युक्त होगा। जातक की सन्तान भी धनवान होगी। जातक की आयु दीर्घ होगी। प्रथम सन्तति के बाद ही जातक का भाग्योदय तीव्र गति से होगा।

2. **मंगल + बुध**–बुध यहा उच्च का होगा। जातक अपनी स्वयं की मेहनत और सन्तान के कारण काफी धन कमायेगा। जातक प्रज्ञावान होगा।
3. **मंगल + सूर्य**–सुखेश सूर्य का त्रिकोण से सम्बन्ध होना उत्तम बात है। जातक को तेजस्वी नर सन्तति की प्राप्ति होगी। स्वयं शिक्षित होगा एवं सन्तान भी शिक्षित होगी।
4. **मंगल + शुक्र**–शुक्र यहा नीच राशि में होगा पर केन्द्र अधिपति का त्रिकोण से सम्बन्ध पाराशर ऋषि ने शुभ माना है। जातक परम भाग्यशाली, परिश्रमी एवं अपने प्रयत्न से आगे बढ़ने वाला व्यक्ति होगा।
5. **मंगल + शनि**–मंगल शनि की युति पुन: केन्द्र+त्रिकोण सम्बन्धों पर आधारित एवं उत्तम युति होगी। यहां पर जातक चालाक एव स्वार्थी बुद्धि से युक्त होकर यथेष्ट धन अर्जित करेगा।
6. **मंगल + बृहस्पति**–अष्टमेश का त्रिकोण में जाना शुभ है। परन्तु जातक को विद्या में रुकावट देगा एवं प्रथम सन्तति शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) द्वारा दिलायेगा।
7. **मंगल + राहु**–कन्या राशि राहु का मित्र स्थान है पर मगल शत्रु है। राहु सन्तति में बाधक का कार्य करेगा। एक दो मिस डिलीवरी करायेगा। विद्या में भी यथेष्ट लाभ नहीं होने देगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति षष्ट्म स्थान में
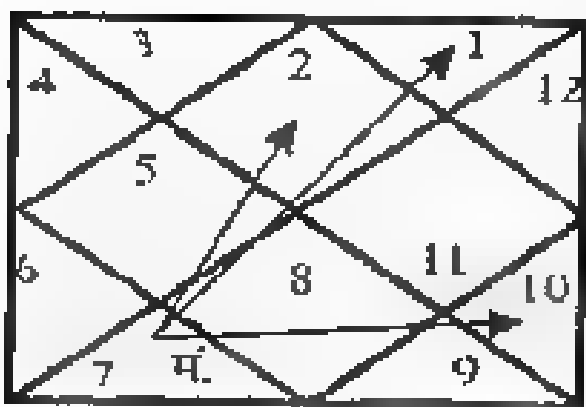
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश व व्ययेश है। मगल यहा द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहा छठे स्थान में मंगल तुला राशि का होगा। सप्तमेश का छठे स्थान में आने में **'विवाहभंग योग'** एवं **'यात्राभंग योग'** बनता है। ऐसा जातक कामातुर स्वभाव का होगा एवं अपनी शारीरिक ऊर्जा (वीर्य) का अपव्यय करेगा। इसके पत्नी के साथ वैवाहिक सम्बन्ध बिगड़ेंगे।

ज्योतिष सिद्धांत के अनुसार व्ययेश के छठे जाने से 'विमल योग' बनेगा। दु:स्थान का स्वामी दु:स्थान में हो तो उसका अशुभत्व नष्ट हो जाता है। फलतः व्यक्ति निर्धन कुल में जन्म लेकर भी समाज में प्रतिष्ठा अर्जित करेगा।

दृष्टि–तुला राशिगत छठे स्थान में विराजित मंगल की दृष्टि भाग्य भवन जहां उसकी उच्च राशि मकर है व्यय स्थान जहां उसके स्वयं का घर मेष राशि है तथा लग्न स्थान (वृष राशि) को देखेगा। मंगल की ये दृष्टियां जातक को सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत करेगी। जातक भाग्यशाली, खर्चीले स्वभाव का, परोपकारी एवं मेहनती होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–षष्टम स्थान में चन्द्र+मंगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। फलतः 'लक्ष्मी योग' बनेगा। पर लक्ष्मी योग के साथ साथ तृतीयेश छठे होने से 'पराक्रम भंगयोग' एवं सप्तमेश छठे होने से 'विवाहभंग योग' बनता है। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (मकर राशि) व्यय स्थान (मेष राशि) एवं लग्न स्थान (वृष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः भाग्योदय संघर्ष के साथ 28 वर्ष की आयु के बाद होगा। जातक में रोग व शत्रु का समूल नाश करने की शक्ति होगी। जातक समाज का धनी व्यक्ति होगा परन्तु युवावस्था 36 वर्ष की आयु के बाद।
2. **मंगल + सूर्य**–सूर्य यहां नीच का होगा एवं मंगल के साथ आने से 'सुखभंग योग' बनेगा फलतः [illegible] हेतु जातक को बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **मंगल + बुध**–बुध के छठे स्थान में मंगल के साथ होने पर 'सन्तान भंग योग' विद्याभंग योग एवं धनहीन योग की सृष्टि होगी। फलतः जातक को धनार्जन हेतु शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **मंगल + शुक्र**–शुक्र छठे जाने से **'लग्नभंग योग'** बनेगा। शुक्र यहां स्वगृही होगा तथा षष्टेश का षष्टम भाव में होने से **'हर्ष योग'** बनेगा जातक अति कामुक होगा तथा व्यभिचारी होगा।
5. **मंगल + शनि**–शनि छठे जाने से **'भाग्यभंग योग'** व **'राजयभंग योग'** की सृष्टि होगी। शनि यहां उच्च का होगा। मंगल शनि की युति व्यक्ति को दुष्ट, असामाजिक व गलत कार्य करने की प्रेरणा देगी। जिससे जातक को नुकसान होगा।
6. **मंगल + बृहस्पति**–बृहस्पति के छठे जाने से **'लाभभंग योग'** बनेगा परन्तु अष्टमेश का छठे जाने से **'सरल योग'** की सृष्टि होगी। बृहस्पति+मंगल की युति धार्मिक यात्राओं में चोरी होने का संकेत देती है।

7. **मंगल + राहु**–राहु का छठे जाना राजयोग कारक माना गया है फिर तुला राशि राहु की मित्र राशि है, जहां वह हर्षित रहता है. ऐसा जातक गुप्त एवं रहस्यमय शक्ति का स्वामी होगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में
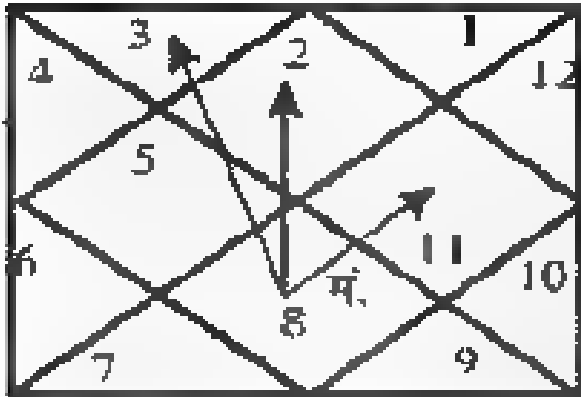
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने में अशुभफलदाता है। यहा सप्तम स्थान मे मगल स्वगृही वृश्चिक राशि का होकर **'रुचक योग'** की सृष्टि करेगा। कुण्डली **'मांगलिक'** भी होगी। जातक राजा तुल्य पराक्रमी, प्रतापवान एवं ऐश्वर्य शाली होता है। व्यवसाय नौकरी, धन हेतु यह मंगल शुभ है परन्तु वैवाहिक सुख मे बाधक है। ऐसे जातक का ससुराल धनवान होता है अथवा पत्नी पढ़ी लिखी व नौकरी करने वाली होती है। फलतः परस्पर अहम् भाव का टकराव होता रहता है। जीवन साथी के व्यवहार से जातक असंतुष्ट रहता है।

दृष्टि–सप्तमावस्था स्वगृही मगल की दृष्टि दशम भाव (कुम्भ राशि), लग्न भाव (वृष राशि) एव धनभाव (मिथुन राशि) पर होगी। मंगल की ये दृष्टियां जातक के व्यक्तिगत जीवन में धनलाभ, राज्यलाभ, नौकरी व उन्नति की प्राप्ति हेतु अमृत तुल्य उपादेय है।

निशानी–विष्णु की तरह सबका पालक रोते हुए को हंसाने वाला।

दशा–मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। नौकरी लगेगी। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–सप्तम स्थान में चन्द्र+मंगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। मंगल यहां स्वगृही होकर लग्न को देखेगा फलतः 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि होगी। यहा पर यह युति ज्यादा सार्थक है। क्योंकि चंद्रमा अपनी उच्च राशि को देखेगा। ये दोनों ग्रह दशम भाव (कुम्भ राशि), लग्न स्थान (वृष राशि) एवं धन स्थान (मिथुन राशि) को पूर्ण दृष्टि से प्रभावित करेंगे। फलतः जातक समाज का धनी, प्रतिष्ठित एवं प्रभावशाली व्यक्ति होगा। पत्नी सुन्दर व ससुराल धनवान होगा। 28 वर्ष अथवा विवाह के तत्काल बाद जातक की किस्मत चमकेगी।

2. **मंगल + सूर्य**–सुखेश सूर्य की युति सप्तमेश के साथ जातक को उत्तम भवन, वाहन व ऐश्वर्य भाग में वृद्धि करेगी। परन्तु जीवन साथी के साथ विवाद को बढ़ायेगी।

3. **मंगल + बुध**–धनेश व पंचमेश का युति स्वगृही मंगल के साथ होने से पत्नी (ससुराल) से धन मिलेगा। जातक का विशेष भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।

4. **मंगल + शुक्र**–मंगल+शुक्र की युति भाग्योदय में सहायक है। लग्नेश लग्न को देखने से 'लग्नाधिपति' योग बनेगा। यहां 'भगचुम्बन योग' के कारण जातक स्त्री का गुलाम होगा।

5. **मंगल + बृहस्पति**–लाभेश का केन्द्रगत होना **'केसरी योग'** बनायेगा। बृहस्पति अपने घर (मीन राशि) लग्न एवं अपनी उच्च राशि (कर्क) को देखेगा। जातक को व्यापार में लाभ दिलाता हुआ अतुल पराक्रम का स्वामी बनायेगा। परन्तु गुप्तरोग के कारण शल्य चिकित्सा (आपरेशन) होगी।

6. **मंगल + शनि**–भाग्येश, दशमेश शनि का केन्द्रस्थ होकर मंगल से युत होना शुभ है। भाग्योदय में सहायक है, परन्तु जातक की पत्नी हठी, जिद्दी व अहंकारी होगी।

7. **मंगल + राहु**–यहां राहु अपनी शत्रु राशि में होगा। फलतः गृहस्थ सुख में बाधक है। पत्नी से मनोमलिन्यता में वृद्धि कर तलाक दिलवा सकता है।

8. **मंगल + केतु**–भृगुसूत्र के अनुसार–केतुयुते रजस्वला स्त्री सम्भोगी।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में
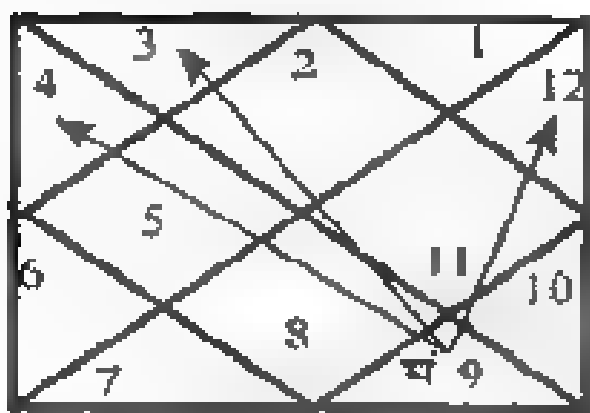
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां अष्टमस्थ मंगल धनु राशि का होगा। कुण्डली 'मांगलिक' भी होगी। धनु राशि मंगल की मित्र राशि है। गर्ग ऋषि के अनुसार ऐसे जातक की मृत्यु शस्त्र, कोढ़, देह व्रण, अग के सड़ने–जलने से होती है। मंगल अष्टम में क्रमशः **'विवाहभंग योग'** एवं **'यात्राभंग योग'** की सृष्टि करता है परन्तु व्ययेश का आठवें जाना, दुःस्थान के स्वामी का दुःस्थान में जाना **'विमल योग'** बनाकर मंगल का अशुभत्व नष्ट करता है। जातक शत्रुओं को घटाने वाला प्रबल पराक्रमी होता है।

दृष्टि–धनु राशिगत अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (मीन राशि) धन भाव (मिथुन राशि) एव पराक्रम भाव (कर्क राशि) पर होगी। मंगल की ये दृष्टियां धन की बढ़ोत्तरी, लाभ की बढ़ोत्तरी एवं पराक्रम की बढ़ोत्तरी में सहायक हैं।

निशानी–जातक का छोटा भाई आठ वर्ष के अन्तर से पैदा होगा। जातक की भाइयों से नहीं बनेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चन्द्र**–अष्टम स्थान में चन्द्र+मंगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। अष्टम स्थान में चन्द्र+मंगल की युति धनु राशि में होगी। 'लक्ष्मी योग' तो बनेगा पर लक्ष्मी योग के साथ-साथ तृतीयेश चन्द्र आठवें होने से 'पराक्रमभंग योग' तथा सप्तमेश मंगल आठवें होने से कुण्डली मांगलिक होने के साथ 'विवाहभंग योग' भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक परम पराक्रमी होगा पर शत्रु जीवन पर्यन्त बने रहेंगे। जातक धनवान होगा परन्तु चिरस्थायी धन की स्थिति का निर्णय धनेश बुध की स्थिति से निर्णय होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–सूर्य अष्टम में जाने से निर्बल हो जायेगा। फलतः 'सुखभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक को सुख (भौतिक उपलब्धियों) की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा.
3. **मंगल + बुध**–बुध के आठवें जाने से 'सन्तानभंग योग', 'विद्याभग योग' एवं 'धनहीन योग' की सृष्टि होगी। फलतः जातक को धनार्जन हेतु, शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **मंगल + शुक्र**–शुक्र के आठवें जाने में 'लग्नभंग योग' बनेगा। परन्तु षष्टेश का आठवे जाने से 'हर्ष योग' बनेगा। जातक कामुक एवं व्यभिचारी होगा।
5. **मंगल + बृहस्पति**–बृहस्पति के आठवें जाने से 'लाभभग योग' बनेगा। परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल योग' बृहस्पति के अशुभ फल को नष्ट करेगा। यह युति व्यक्ति को धार्मिक बनायेगी. जातक बड़े भाई का आदर करेगा।
6. **मंगल + शनि**–शनि आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग', 'राजभंग योग' परन्तु शनि यहां बृहस्पति के क्षेत्र मे होने से ज्यादा गलत, असामाजिक कार्य नही करायेगा।

7. **मंगल + राहु**—राहु अष्टम स्थान में शत्रुक्षेत्री है। जातक को गुप्त रोग, गुप्त पीड़ा, कष्ट देगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में
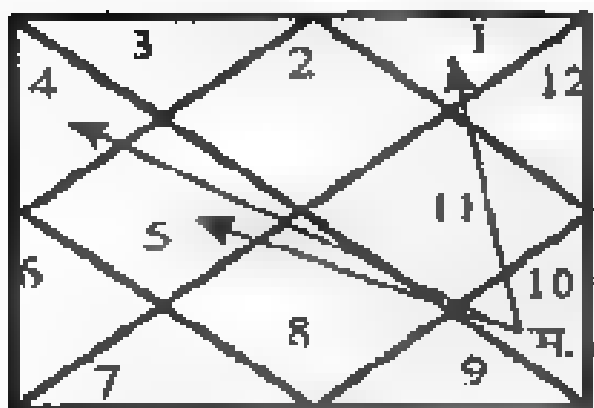
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदाता है। यहां दशमस्थ मंगल मकर राशि मे होकर उच्च का होगा। मकर के 28 अंशों तक मंगल परमोच्च का होगा। जातक राजमन्य होगा। उन्नतिशील होगा। अपनी स्वार्थ सिद्धि हेतु शत्रु को मित्र एवं मित्र को शत्रु बना लेगा। नैतिकता व अन्याय का शब्द इनके लिए अर्थहीन है। येन-केन प्रकारेण सफलता प्राप्त करना इनके जीवन का लक्ष्य होता है।

दृष्टि—नवमस्थ मकर राशिगत मंगल की दृष्टि व्यय भाव (मेष राशि), पराक्रम भाव (कर्क राशि) एवं सुख भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का दानी, पराक्रमी, अभियानी एवं उत्तम सम्पत्ति का स्वामी होगा।

निशानी—खजाने का मालिक एवं अंगल में मंगल करने वाला व्यक्ति होगा। जातक का पिता रोगी या अल्पायु होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल + चन्द्र**—नवम स्थान में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मगल के साथ युति होगी। मगल उच्च का होगा फलतः 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (मेष राशि) पराक्रम स्थान (कर्क राशि), एवं सुख स्थान (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलतः जातक महाधनी (करोड़पति) होगा। परम पराक्रमी होगा क्योंकि चंद्रमा अपने घर को देखेगा। जातक परम परोपकारी, दयालु व अति खर्चीले स्वभाव का होगा एवं यशस्वी होगा।
2. **मंगल + सूर्य**—भाग्य भवन में सूर्य मंगल का साथ शत्रु क्षेत्री होगा। जातक क्रोधी एवं अति अहकारी होगा।
3. **मंगल + बुध**—धनेश, पंचमेश बुध की भाग्य भवन में मगल के साथ युति जातक को भाग्यशाली एवं परमधनी बनायेगी। प्रथम सन्तति के बाद भाग्योदय होगा।

4. **मंगल + शुक्र**—लग्नेश का त्रिकोण में जाने केन्द्र-त्रिकोण सम्बन्ध से व्यक्ति परम सौभाग्यशाली होगा। जातक उत्तम वाहन, तीन मंजिल की कोठी का स्वामी होगा।
5. **मंगल + बृहस्पति**—लाभेश का भाग्य मे होना 'नीचभगराज योग' बनायेगा क्योंकि बृहस्पति नीच का एवं मंगल उच्च का होगा। जातक राजतुल्य पराक्रमी एव ऐश्वर्यवान होगा। जातक की बुद्धि धार्मिक एवं परोपकारी होगी।
6. **मगल + शनि**—शनि स्वगृही एवं मंगल उच्च का होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'उच्चस्वक्षेत्रे गुरदारगः' जातक गुप्त पत्नी, वृद्ध मित्र की पत्नी से गमन करेगा। जातक व्यभिचारी एवं निरंकुश होगा।
7. **मगल + राहु**—राहु यहां मित्र राशि में शत्रु के साथ होने से उद्विग्न रहेगा। जातक अनिश्चित निर्णय वाला, क्षण-प्रतिक्षण स्वभाव में गिरगिट की तरह रग बदलने वाला अविश्वासी होगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में

3 2 1 4 12 5 11 मं. 6 10 8 7 9
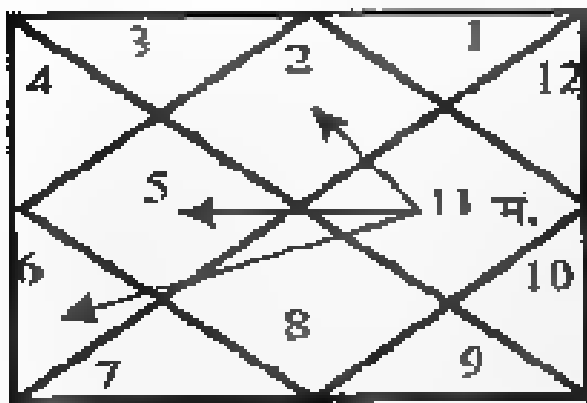
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एव व्ययेश होने से द्वितीय मारकेश है। फलतः अशुभ फलदायक है। यहा दसमस्थ मंगल कुम्भ राशि का होकर 'दिग्बली' होगा। दशमस्थ मंगल कुलदीपक योग बनता है। ऐसे जातक के जन्म से घर में धनवृद्धि होगी। जातक शारीरिक बल से युक्त, यशस्वी, प्रतापी, पराक्रमी साहसी, धनवान एवं ऊर्जावान् होता है।

दृष्टि—कुम्भ राशिगत दसमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (वृष राशि), चतुर्थ स्थान (सिंह राशि), एवं पंचम भाव (कन्या) राशि पर होगी। इससे लग्न को अतिरिक्त ऊर्जा मिलती है। जातक को माता की सम्पत्ति मिलती है। जातक की सन्तान तेजस्वी होती है पर गर्भपात, रक्तसुख का भय रहता है।

निशानी—मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी। जातक को नौकरी मिलेगी या व्यापार में तरक्की होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल + चन्द्र**—दशम स्थान में चन्द्र+मंगल युति चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मगल के साथ होगी। मंगल यहां केन्द्रवर्ती एवं दिक्बली होगा फलतः 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (वृष राशि), सुख

भाव (सिंह राशि) एवं पंचम भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक महाधनी व उद्योगपति होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। राजपक्ष में उसका प्रभाव रहेगा। राजनीति में उसे लाभ रहेगा। जातक की किस्मत 28 व 32 वर्ष के मध्य चमकेगी। भाई की दीर्घायु होगी।

2. **मंगल + सूर्य**–सुखेश सूर्य की स्थिति दशमस्थ मंगल के साथ होने से जातक सभी प्रकार के सुखों को सहज में प्राप्त कर लेगा। जातक सरकार मे प्रभावशाली व्यक्ति होगा। राजनीति में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
3. **मंगल + बुध**–भृगुसूत्र के अनुसार बुध में युत होने पर 'अष्टादशवर्षे द्रव्यार्जन समर्थः' 18 वर्ष की लघु आयु में भी जातक धनोपार्जन में समर्थ हो जाता है।
4. **मंगल + शुक्र**–लग्नेश शुक्र की युति में जातक छोटी आयु में ही धन कमाने में समर्थ हो जाता है। जातक कुटुम्ब जाति व समाज का गौरव होगा।
5. **मंगल + बृहस्पति**–भृगुसूत्र के अनुसार यह युति 'गजान्तैश्वर्यवान्' जातक हाथी जैसे बड़े वाहन से युत ऐश्वर्यवान् होता है।
6. **मंगल + शनि**–भृगुसूत्र के अनुसार भाग्येश शनि की युति से 'राज्यपट्टाभिषेकवान्' जातक राजनीति के उच्च पद को शीघ्र प्राप्त कर जाता है। शनि यहां मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर 'शश योग' एव 'पद्मसिंहासन योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।
7. **मंगल + राहु**–जातक राजनीति में माहिर अत्यधिक चालाक एवं नकारात्मक शक्ति से युक्त ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होगा।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में

3 1 4 12 मं. 2 5 11 6 10 8 7 9
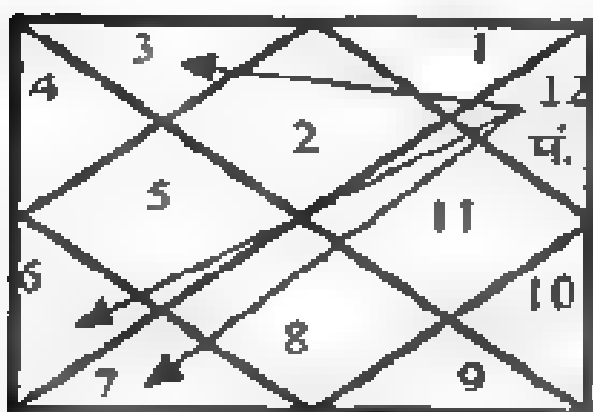
वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलदायक है। यहा एकादशस्थ मंगल मीन राशि का होगा। यहां मंगल अपने मित्र गृह की राशि में है। जलसंज्ञक राशि में है। फलतः व्यक्ति धैर्यवान्, सोच-समझकर निर्णय लेने वाला, ठंडे दिमाग का जातक होगा। जातक अपनी किस्मत आप बनाने वाला होता है। परन्तु सन्तान और विद्या के पक्ष में थोड़ा असंतोष रहता है।

दृष्टि–एकादशस्थ मीन राशिगत मंगल की दृष्टि धन भाव (मिथुन राशि), पंचम भाव (कन्या राशि) एवं षष्टम भाव (तुला राशि) पर होगी फलतः जातक धनवान, पुत्रवान एवं रोग व शत्रुओं का सर्वनाश करने में समर्थ होगा।

निशानी—जातक के पुत्र सन्तति जरूर होगी। गुप्त शत्रु अवश्य होंगे। पर सभी युद्ध में हारेंगे व पराभव को प्राप्त होंगे।

दशा—मंगल की दशा-अन्तर्दशा में धन, पुत्र, पराक्रम वृद्धि के श्रेष्ठ फल देता है।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल + चन्द्र**—एकादश स्थान में चन्द्र+मंगल की युति वस्तुतः चंद्रमा की सप्तमेश+व्ययेश मंगल के साथ युति होगी। फलतः 'लक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान (मिथुन राशि) पंचम (कन्या राशि) एवं षष्ट्म भाव (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। विवाह के बाद अथवा प्रथम सन्तति उत्पन्न होने के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम व समर्थ होगा।
2. **मंगल + सूर्य**—सुखेश सूर्य लाभ स्थान में मंगल के साथ होने में उच्चाभिलाषी होगा। फलतः जातक अत्यधिक महत्त्वाकाक्षी एव ऊर्जावान होगा।
3. **मंगल + बुध**—बुध यहां नीच राशि में होकर अपने घर (कन्या राशि) को देखेगा। फलतः जातक के पुत्र व कन्या दोनों सन्तति होंगी। सुयोग्य होगी, विद्यवान होगी जातक में तार्किक शक्ति अच्छी होगी।
4. **मंगल + शुक्र**— शुक्र यहां उच्च का होगा। लग्नेश उच्च का होकर जब मंगल से युति करेगा तो जातक महान् भाग्यशाली होगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'शुभद्वययुते महाराजाधिपत्ययोग' जातक राजनीति के उच्च पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
5. **मंगल + बृहस्पति**—बृहस्पति यहां स्वगृही होगी। जातक व्यापार में यथेष्ट लाभ प्राप्त करेगा। जातक के भाई धनवान होंगे। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।
6. **मंगल + शनि**—भाग्येश, दशमेश शनि का लाभ स्थान में होना शुभ है। शनि मंगल के साथ बृहस्पति की राशि में होने से उद्विग्न रहेगा। जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा एवं ऋण, रोग व शत्रुओं को समूल नष्ट करने में सक्षम होगा।
7. **मंगल + राहु**—लाभ स्थान में राहु योग कारक माना गया है। यह मंगल की सृजनात्मक ऊर्जा को बढ़ायेगा। जातक येन केन प्रकारेण लाभ प्राप्त करने में ही रुचि लेगा। भले ही उसमें दूसरे का भारी नुकसान हो जाए।

वृषलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में

वृषलग्न में मंगल सप्तमेश एवं व्ययेश है। मंगल यहां द्वितीय मारकेश होने से अशुभ फलकारी है। यहां द्वादश मंगल मेष राशि का होकर स्वगृही होगा। साथ ही
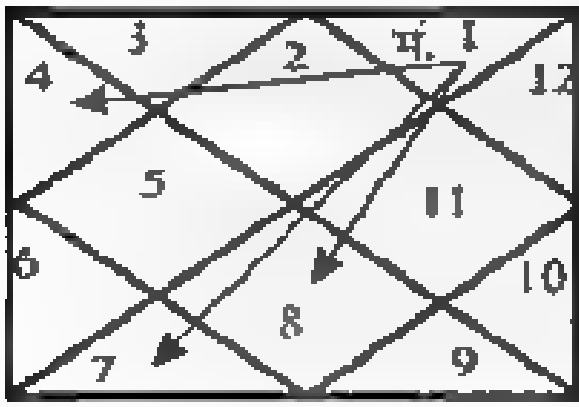
यह कुण्डली 'मांगलिक' दोष से युक्त हो गई है। ऐसे जातक की अवाज बुलन्द होती है। जातक में अहम् प्रदर्शन की भावना विशेष रहती है। विवाह की शुरुआती जिन्दगी खटपट में परिपूर्ण रहती है। थोड़े समय बाद सब कुछ सामान्य हो जाता है। जातक बोली से कड़वा एवं हृदय में साफ दिल का होगा।

दृष्टि—द्वादश भाव में स्थित मेष राशिगत मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (कर्क राशि), शत्रु स्थान (तुला राशि) एवं सप्तम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक बड़े परिवार वाला होगा। अपनी समस्या स्वयं सुलझा लेगा तथा शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण समर्थ होगा। जातक शत्रुओं को कभी क्षमा नहीं करेगा।

निशानी—जातक अधैर्यशाली व क्रोधी होगा। जातक खोजी पत्रकारिता, ड्राईविंग या ट्रैवल कम्पनी चलाने में रुचि रखेगा।

दशा—मंगल की दशा अन्तर्दशा उत्तम फलदेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल + चन्द्र**—द्वादश स्थान में चन्द्र+मंगल युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की सप्तमेश+खर्चेश मंगल के साथ युति होगी। द्वादश स्थान में चन्द्र+मंगल की युति 'महालक्ष्मी योग' बनायेगी। क्योंकि मंगल यहां स्वगृही होगा पर साथ-साथ तृतीयेश चंद्रमा बारहवें होने से 'पराक्रमभंग योग' एवं मंगल बारहवें कुण्डली को मांगलिक बनाते हुए 'विवाहभंग योग' की सृष्टि करता है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (कर्क राशि), षष्ट्म स्थान (तुला राशि) एवं सप्तम स्थान (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक परम पराक्रमी एवं महाधनी व्यक्ति होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा।
2. **मंगल + सूर्य**—यहां सूर्य उच्च का होगा मंगल स्वगृही होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। यह योग राजनीति में प्रगतिदायक, उन्नतिदायक एवं श्रेष्ठ कहा गया है।
3. **मंगल + बुध**—बुध द्वादश में 'धनहीन योग' व 'संतानहीन योग' की सृष्टि करता है। जातक को प्रथम संतति विलम्ब से प्राप्त होगी।
4. **मंगल + शुक्र**—मंगल+शुक्र की युति व्यक्ति को कामांध करती है। जातक चरित्रहीन एवं षड्यंत्रकारी होता है। जातक परस्त्रीरत होता है। धन का अपव्यय करता है।

5. **मंगल + बृहस्पति**—बृहस्पति बारहवे स्थान में होने से 'सरल योग' बना। ऐसा व्यक्ति परोपकारी, धार्मिक व तीर्थ यात्राओं में भाग लेने वाला साहसी जातक होता है।
6. **मंगल + शनि** शनि यहां नीच का होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं यशस्वी होगा। खर्च अधिक करेगा।
7. **मंगल + राहु**—राहु यहां शत्रु के घर में है। ऐसा जातक, व्यभिचारी, आवारा एवं षड्यंत्रकारी होता है। भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते दाम्भिक' है। जातक अति घमण्डी होगा।

❑❑❑

वृषलग्न में बुध की स्थिति

वृषलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
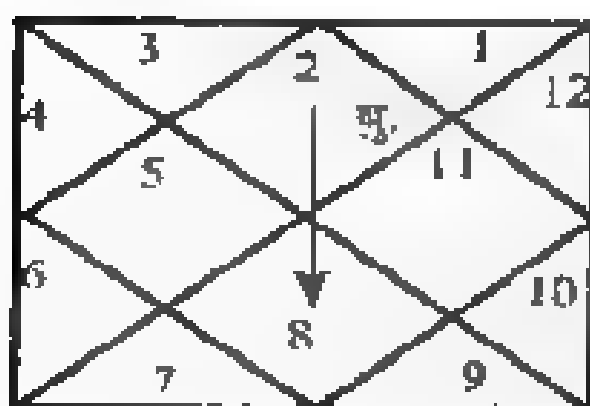
वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। प्रथम स्थान में वृष राशिगत बुध अपने मित्र शुक्र की राशि में है। बुध यहां दिग्बली है एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि भी कर रहा है। ऐसा व्यक्ति सुगठित एवं सुंदर शरीर वाला होता है। जातक विनोदी, व्यवहार कुशल, सुशिक्षित होता है तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला कुल का दीपक होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा, उन्नति करेगा।

निशानी–जातक का जन्म दिन के समय होता है। जातक ज्योतिष विद्या, अध्यात्म-शास्त्र का जानकार होता है।

दशा–बुध की दशा उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योग कारक है। प्रथम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। लग्न में बुध स्वगृहाभिलाषी होगा तथा दोनों ग्रहो की दृष्टि सप्तम भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक की पत्नी पढ़ी-लिखी एवं धनवान होगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के सुख-ससाधनों की प्राप्ति स्वयं के पुरुषार्थ से होगी।

2. **बुध + चन्द्र**—बुध चन्द्र की युति से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। चद्रमा उच्च का होने से '**स्वर्णकान्तिदेह—ज्योतिष शास्त्र पठितः**' जातक विद्वान् होगा।
3. **बुध + मंगल**—सप्तमेश, खर्चेश मंगल बुध के साथ होने से चतुर्थ भाव सप्तम भाव व अष्टम भाव को देखेगा। फलतः जातक को वैवाहिक सुख मिलेगा। माता का सुख मिलेगा एवं जातक की आयुष्य बढ़ेगी।
4. **बुध + बृहस्पति**—लाभेश बृहस्पति लग्न में बैठकर पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को पुत्र सन्तति, गृहस्थ सुख एवं भाग्य का लाभ होगा।
5. **बुध + शुक्र**—वृषलग्न में शुक्र+बुध की युति निष्फल मानी गई है। बुध की युति शुक्र के साथ होने से शुक्र की दशा रोग, ऋण एव शत्रुओं की वृद्धि करने वाली होगी क्योंकि षष्ठेश शुक्र का पापत्व मारकेश बुध के साथ होने से बढ़ जाएगा।
6. **बुध + शनि**—भाग्येश, दशमेश शनि लग्न में बैठकर पराक्रम स्थान, सप्तम स्थान एवं दशम स्थान अपने घर (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक पराक्रमी होगा। गृहस्थ सुख से युक्त, राजनीति मे हस्तक्षेप रखने वाला महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा
7. **बुध + राहु**—लग्न में वृष का राहु उच्च का होगा। बुध के साथ यह राजयोग देगा। जातक धनी होगा व राजनीति में प्रभावशाली व्यक्ति होगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
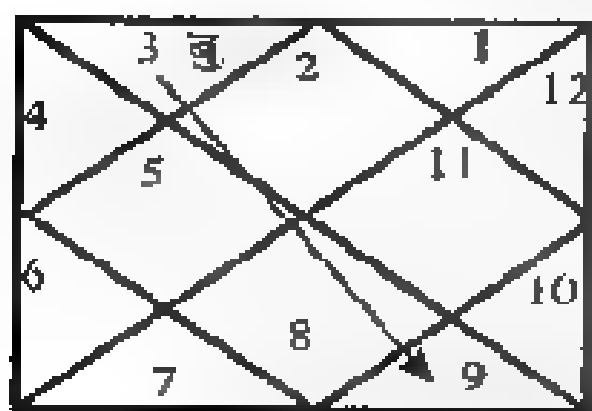
वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। द्वितीय स्थान में बुध मिथुन राशिगत होने से स्वगृही है। वृषलग्न में द्वितीय स्थान में बुध मीठी व विनम्र वाणी देता है। जातक वाचाल एवं वाकचातुर्य से धन कमाता है। बुद्धिबल से, व्यापार से धन कमाता है। जातक हाजिर-जवाब होता है।

दृष्टि—द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टम स्थान (धनु राशि) पर होगी। यह दृष्टि जातक को लम्बी उम्र प्रदान करती है।

निशानी—अध्ययन-अध्यापन, कम्प्यूटर, वकालत, प्रकाशन और ज्योतिष का रुचिकर व्यवसाय होगा।

दशा—बुध की दशा अतर्दशा में जातक धनवान होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। द्वितीय स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यह युति यहां खिलती है। बुध यहां स्वगृही होगा। फलतः जातक धनवान होगा, बुद्धिमान होगा। बलवान धनेश की व चतुर्थेश की युति होने के कारण जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को विद्याबल में रुपया मिलेगा। अष्टम भाव पर दोनों ग्रहों की दृष्टि होने से आयु लम्बी होगी। जातक को सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व संसाधनों की प्राप्ति होती रहेगी।
2. **बुध + चन्द्र**–तृतीयेश चंद्रमा बुध के साथ होने पर व्यक्ति अपने पराक्रम से खूब धन कमाएगा। बलवान धनेश की पराक्रमेश के साथ युति होने से **'कलत्रमूल धनयोग'** बनेगा। जातक को परिजनों, मित्रों द्वारा धन की प्राप्ति होगी।
3. **बुध + मंगल**–सप्तमेश मंगल के बलवान धनेश से युति करने पर **'कलत्रमूल धनयोग'** बनेगा। जातक को पत्नी-ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होगी।
4. **बुध + शुक्र**–शुक्र की युति बुध के साथ होने से व्यक्ति धन तो बहुत कमाएगा। पर शुक्र की दशा में शत्रु और बीमारी में वृद्धि होगी।
5. **बुध + बृहस्पति**–बलवान् धनेश की बृहस्पति के साथ युति होने से **'शत्रुमूल धनयोग'** बना। जातक अपने शत्रुओं से धन कमाएगा।
6. **बुध + शनि**–बलवान धनेश की भाग्येश के साथ युति होने से **'भाग्यमूल धनयोग'** बना। जातक के पुरुषार्थ के प्रत्येक कदम पर धन व भाग्य सहायता करते रहेंगे। जातक बहुत भाग्यशाली एवं धनी व्यक्ति होगा।
7. **बुध + राहु**–राहु धन के घड़े में छेद करेगा। धन की अच्छी आवक होते हुए भी धन की बरकत नहीं होगी।

वृषलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में
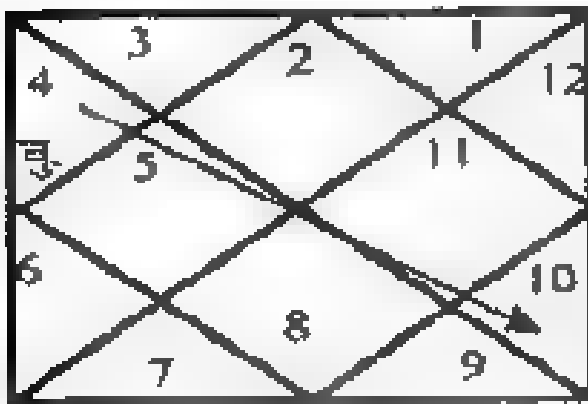
वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। तृतीयस्थ बुध यहां अपनी शत्रु कर्क राशि में है। बुध तृतीय में होने से जातक अपने पुरुषार्थ, पराक्रम और साहस से धन कमाता है। जातक को भाई–बहन, कुटुम्ब, परिवार का सुख मिलता है। जातक की ज्योतिष, गणित, कम्प्यूटर इत्यादि में रुचि होती है।

दृष्टि—तृतीयस्थ बुध की दृष्टि भाग्य स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक 18 वर्ष की छोटी आयु में ही सही भाग्योदय की ओर गतिशील हो जाता है।

निशानी—ऐसा जातक अपनी किस्मत आप जगाता है। जातक को यात्राओं से लाभ होता है।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक को अपेक्षित लाभ नहीं होगा। इसकी दशा में बौद्धिक व सामाजिक उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न मे बुध योगकारक है। तृतीय स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलतः जातक बुद्धिमान एवं पराक्रमी होगा। उसे इष्ट+मित्रों एवं कुटुम्बी जनों से सहायता मिलती रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा। जीवन में सभी प्रकार की सफलताएं इस योग के कारण प्राप्त होंगी।
2. **बुध + चन्द्र**—चंद्रमा यहा स्वगृही होगा। ऐसे जातक को यात्राओं से लाभ होता है। बहनों का प्यार मिलता है।
3. **बुध + मंगल**—मंगल यहां नीच का होगा तथा छठे स्थान, भाग्यस्थान व दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा तथा राजनीति में वर्चस्व रखेगा.
4. **बुध + शुक्र**—शुक्र+बुध की युति शल्य चिकित्सा कराती है। जातक के जीवन में बहनों का सुख ज्यादा होगा।
5. **बुध + बृहस्पति**—अष्टमेश व द्वितीयेश की युति जातक की वाणी में दोष उत्पन्न करती है। भाइयों में भारी मनमुटाव की स्थिति बनती है।
6. **बुध + शनि**—भाग्येश, दशमेश तृतीय मे जाकर पंचम भाव, नवम भाव अपने घर को एवं व्यय भाव को देखेगा। फलतः जातक पराक्रमी तो होगा एव भाग्यशाली भी होगा।
7. **बुध + राहु**—तृतीय स्थान में राहु को शास्त्रकारों ने शुभ माना है पर शत्रुक्षेत्री बुध व राहु परिजनों एव मित्रो मे विवाद-कलह कराएंगे।

वृषलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में

वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। चतुर्थस्थ बुध यहा सिंह राशि में केंद्रस्थ होकर 'कुलदीपक योग' बना रहा है। बुध अपने मित्र सूर्य
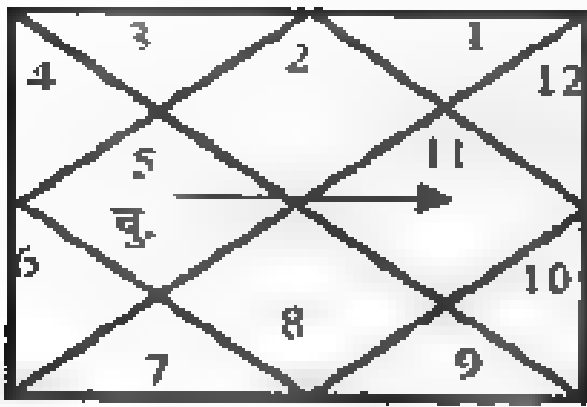
की राशि में है। फलतः जातक को घर-परिवार, जमीन-जायदाद, सुंदर भवन, सुंदर वाहन, सुंदर विद्या, अच्छी दौलत एवं कुटुम्ब का सुख देता है। ऐसा जातक राज्याधिकारी होता है। अपने परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ बुध की दृष्टि दशम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक का राज दरबार में सम्मान होगा।

निशानी–प्रायः चतुर्थ भावगत बुध से पुत्र कम (निःसंतान) होते हैं क्योंकि बादनारायण ऋषि ने चतुर्थस्थ बुध को निष्फल माना है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। चतुर्थ स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां स्वगृही होगा। दोनों ग्रह केंद्रवर्ती होने से बलवान होकर 'कुलदीपक योग' एवं रविकृत राजयोग बनाएंगे। यहां बैठे दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान धनवान होगा। माता पिता की सम्पत्ति का वारिस होगा। कुल का नाम रोशन करेगा। नौकरी या व्यापार जो भी होगा, उत्तम श्रेणी का होगा।
2. **बुध + चन्द्र**–बुध के साथ चंद्रमा माता का सुख देता है पर माता को तपेदिक (बीमारी) रहेगी। जातक विदेश यात्रा करेगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक के पास अनेक वाहन व मकान होंगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **बुध + शुक्र**–भृगुसूत्र के अनुसार 'अनेक वाहनवान्' जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
5. **बुध + बृहस्पति**–जातक अनेक प्रकार के धंधों से धन कमाएगा। जातक को लाभ ही लाभ होता रहेगा।
6. **बुध + शनि**–नौकर दगा देंगे। वाहन में अरिष्ट होगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
7. **बुध + राहु**–जातक बंधुओं का द्वेषी होगा। वाहन में अरिष्ट होगा।
8. **बुध + केतु**–जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में
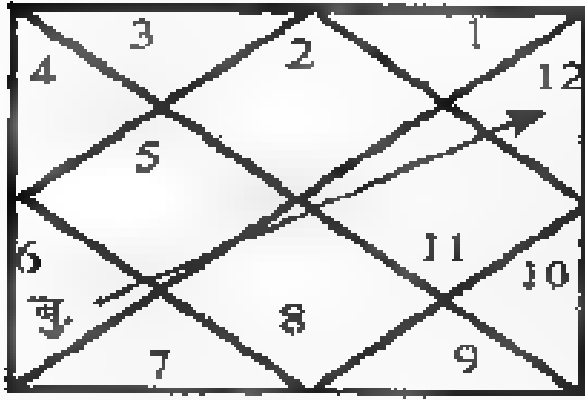
वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां पंचम भावगत कन्या राशि में होने से उच्च का है तथा 15 अंश तक परमोच्च का कहलाता है ऐसा जातक शिक्षित, बुद्धिमान, मुकाबले (कम्पीटिशन) की परीक्षा में प्रथम आने वाला होता है। ऐसे जातक का बौद्धिक स्तर उन्नत होता है। ऐसा जातक एक सच्चे साथी व मित्र के रूप में उत्तम सलाहकार होता है।

दृष्टि—पंचमस्थ बुध की दृष्टि लाभ स्थान (मीन राशि) पर होगी फलतः जातक व्यापार मे खूब धन कमाएगा

निशानी—जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद तत्काल होगा। जातक आशीर्वाद देने की क्षमता रखता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान एवं प्रज्ञावान होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। पचम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। बुध यहा उच्च का होगा। बलवान धनेश व चतुर्थेश की युति 'मातृमूल धनयोग' की सृष्टि करती है। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक की संतति उत्तम होगी तथा जातक की आज्ञा मे रहेगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य व संसाधनों की प्राप्ति होती रहेगी यह युति जातक को आगे बढ़ाने में बड़ी सहायक होगी।
2. **बुध + चन्द्र**—यहां **'मित्रमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी। जातक अपने परिजनों व मित्रों के माध्यम से उत्तम धन कीर्ति को प्राप्त करेगा।
3. **बुध + मंगल**-यहां **'कलत्रमूल धनयोग'** की सृष्टि होगी। जातक को पत्नी-ससुराल से उत्तम धन (जायदाद) की प्राप्ति होगी।
4. **बुध + बृहस्पति**—**'मेधावी मधुरभाषी बुद्धिमान्'** जातक मेधावी बुद्धिमान् एवं गंभीर वाणी बोलने वाला, व्यापार में लाभ कमाने वाला व्यक्ति होगा।
5. **बुध + शुक्र**—यहां **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा जातक राज्य तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

6. **बुध + शनि**—यहां **'भाग्यमूल धनयोग'** बना। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक भाग्यशाली होगा।
7. **बुध + राहु**—राहु यहां पुत्र नाश कराता है। माता को बीमारी सम्भव है।
8. **बुध + केतु**—जातक दत्तक पुत्र गोद लेता है। इसकी सलाह षड्यंत्रकारी होती है।

वृषलग्न में बुध की स्थिति षष्ट्म स्थान में

3 2 1 12 4 5 11 6 10 8 7 बु. 9
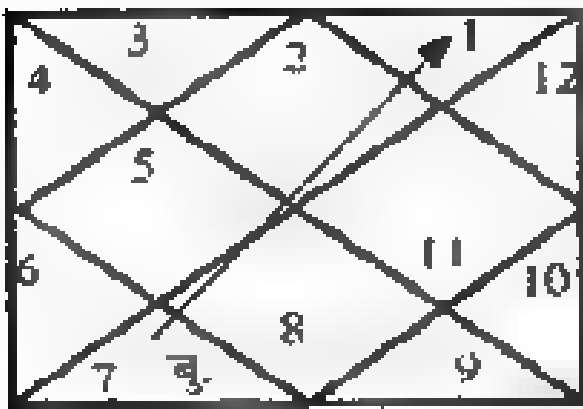
वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां छठे स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि में है बुध यहां उद्विग्न नहीं है परन्तु **'धनहीन योग'** एवं **'संतानहीन योग'** की सृष्टि करता है। फलतः बुद्धि, संतान और धन की हानि होती है। लग्नेश व भाग्येश की स्थिति ही जातक के जीवन की सफलता एवं भाग्य की बलवत्ता का निर्णय करेगी।

दृष्टि—षष्टमस्थ बुध की दृष्टि द्वादश भाव (मेष राशि) पर होगी, ऐसे जातक के धन की रक्षा नहीं हो पाएगी।

विशेष—यहां अकेला बुध शत्रुओं की वृद्धि करेगा।

दशा—बुध की दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। षष्टम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां नीच राशिगत है। सूर्य छठे जाने से 'सुखभंग योग' एवं बुध छठे होने से 'धनहीन योग' व 'सन्तति हीन योग' की सृष्टि होती है। फलतः यहा इस स्थान में यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। यहा बैठे दोनों ग्रहो की दृष्टि व्यय भाव पर रहेगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक रोग व शत्रुओं का शमन करने में सक्षम होगा परन्तु संघर्ष रहेगा। इस योग के कारण अंतिम सफलता, संघर्ष के बाद सुख-सफलता जातक को अवश्य मिलेगी।
2. **बुध + चन्द्र**—इस युति के कारण जातक का पराक्रम भंग होगा।
3. **बुध + मंगल**—इस युति के कारण जातक को गृहस्थ सुख नहीं मिल पाएगा। जीवन साथी के साथ विवाद रहेगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'कुजर्क्ष नीलकुष्टादिरोगी' जातक को रक्तविकार होगा।

4. **बुध + शुक्र**—शुक्र यहां स्वगृही होकर '**हर्ष योग**' बनाएगा। बुध के शुभत्व में वृद्धि करेगा। जातक बुद्धिबल से भी समस्याओं का समाधान कर लेगा।
5. **बुध + गुरु**—गृहस्थ सुख 37 वर्ष की आयु के बाद मिलेगा। गुरु यहां 'सरल योग' बनाएगा। फलतः बुध के शुभत्व में वृद्धि होगी।
6. **बुध + शनि**—'शनियुते जातिशत्रुकलह' भृगुसूत्र के अनुसार ऐसे जातक के जाति बंधु जातक से शत्रुता रखेंगे।
7. **बुध + राहु**—भृगुसूत्र के अनुसार 'वातशूलादिरोगी जातिशत्रुकलहः' जातक को वातरोग होगा। वाणी का स्खलन होगा।
8. **बुध + केतु**—भृगुसूत्र के अनुसार वातशूल रोगी होगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में
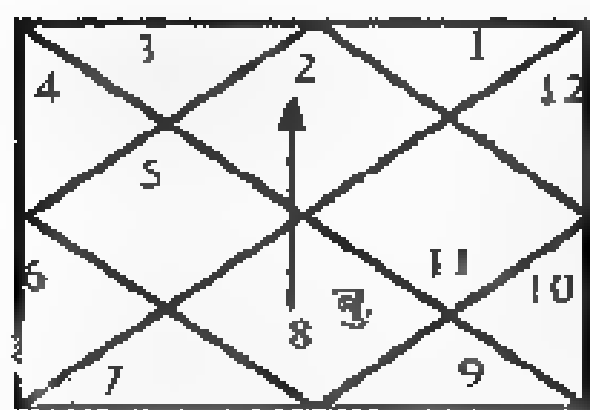
वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां सप्तमस्थ होकर वृश्चिक राशि में है। केन्द्रस्थ बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बन रहा है। बुध अपने मित्र मंगल की 'वृश्चिक राशि' में है। यह जातक को सुंदर जीवन साथी देगा, धन देगा, विद्या देगा, कुटुंब और संतान का सुख भी देगा।

विशेष—जातक अपनी पसंद का विवाह करेगा। पत्नी शिक्षित व सभ्य होगी।

दृष्टि—सप्तमस्थ बुध की दृष्टि लग्न स्थान (वृष राशि) पर होगी। ऐसा जातक सुंदर शरीर वाला एवं विनम्र स्वभाव का होता है। उसके प्रयत्नों में सफलता मिलेगी

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में आर्थिक व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। सप्तम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। दोनों ग्रह यहां केन्द्रवर्ती होकर लग्न को देखेंगे। फलतः 'कुलदीपक योग' बनेगा। ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। बुद्धि के चातुर्य व वाकचातुर्य से शीघ्र उन्नति को प्राप्त करेगा। विवाह जीवन में उन्नति के मार्ग खोलेगा। जातक को सभी प्रकार के भौतिक ऐश्वर्य संसाधनों की प्राप्ति सहज में होगी।

2. **बुध + चन्द्र**–चंद्रमा यहां नीच राशि का होगा पर जातक को अति पराक्रमी बनाने में सहायक होगा।
3. **बुध + मंगल**–मंगल यहां स्वगृही होकर 'रुचक योग' बनाएगा। जातक महान् पराक्रमी व राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
4. **बुध + शुक्र**–शुक्र के कारण 'लग्नाधिपति योग' बनेगा। जातक को जीवन के सभी क्षेत्रों में सफलता मिलेगी।
5. **बुध + गुरु**–ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा। गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा।
6. **बुध + शनि**–बुध शनि की युति जातक को वेश्यागामी बना देती है। जातक भाग्यशाली होगा। अपने से बड़ी उम्र की स्त्रियों से ससर्ग करेगा।
7. **बुध + राहु**–बुध राहु जातक को युद्ध में पराजय देगा। व्यक्ति पाशविक मैथुन करेगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में
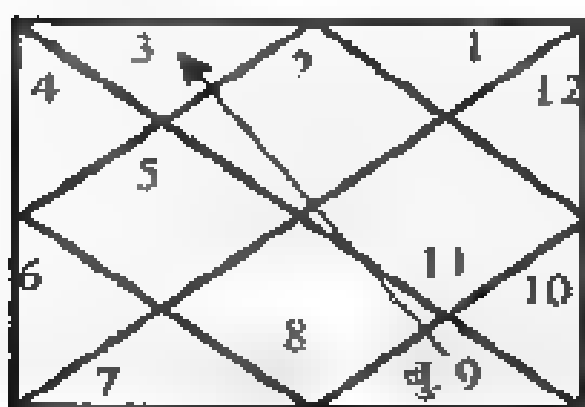
वृषलग्न में बुध धनेश व पचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहा अष्टमस्थ होकर धनु राशि में है। यह बुध की समराशि है। ऐसा जातक विख्यात, चिरंजीवी, कुलश्रेष्ठ, न्यायाधिकारी, राजा के समान दंडनायक होता है। यहां बुध के कारण 'धनहीन योग' एवं 'संतानहीन योग' बनता है। फलत: जातक को धन, विद्या व सन्तति की प्राप्ति विलम्ब से होगी। बुध अपनी राशि से सातवें एवं चौथे केन्द्रवर्ती होने से ज्यादा अनिष्टकारक नहीं है।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि अपने ही घर, धन भाव (मिथुन राशि) पर होती है, जो जातक को धनवान बनाएगी।

निशानी–जातक पुत्रवान होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. बुध + सूर्य–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। अष्टम स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य आठवें होने से 'सुखभंग योग' तथा बुध आठवें जाने से 'धनहीन योग' एवं 'सन्ततिहीन योग' की क्रमश: सृष्टि होती है। फलत: यहां,

इस स्थान पर यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु, सुख ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु, संघर्ष करना पड़ेगा। माता की सम्पत्ति सम्भवतः इसे न मिले, फिर भी इस योग के कारण अंतिम सफलता जातक को मिलेगी। जातक एक सफल व्यक्तित्व का धनी होगा।

2. **बुध + चन्द्र**—चंद्रमा की युति 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करेगी। असावधानी रहने पर जातक को जेल भी हो सकती है।
3. **बुध + मंगल**—बुध तथा मंगल की युति जातक के लिए अनिष्टकारी है। जीवन साथी का बिछोह सम्भव है। गृहस्थ सुख में बाधा का संकेत है।
4. **बुध + शुक्र**—शुक्र 'लग्नभंग योग' बनाएगा षष्टेश शुक्र के आठवें जाने से 'हर्षयोग' बनेगा। जातक को शुक्र व बुध की दशा इतना अनिष्ट फल नहीं दे पाएगी
5. **बुध + बृहस्पति**—यहां बृहस्पति जातक को बहुत लम्बी उम्र देगा क्योंकि बृहस्पति स्वगृही होकर 'सरल योग' बनाएगा। भृगुसूत्र के अनुसार, 'सप्तपुत्रवान्' जातक अधिक पुत्रों वाला होगा।
6. **बुध + शनि**—शनि 'भाग्यभंग योग' बनाएगा। जातक को धन प्राप्ति हेतु सौभाग्य की प्राप्ति हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
7. **बुध + राहु**—राहु दुर्घटना कारक है। दायीं टांग में कष्ट देगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में

3 2 1 4 12 11 5 6 10 8 7 9 बु.
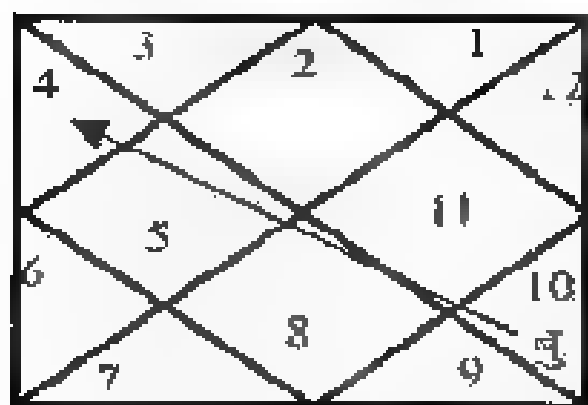
वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध नवमस्थ होकर मकर राशि में बैठा है। यह बुध की सम राशि है। योग कारक बुध का भाग्य स्थान मे बैठना बहुत बड़ी बात है। जातक को व्यापार के द्वारा अपार धन सम्पत्ति मिलेगी। बुद्धि चतुराई, धर्म एव भाग्य कदम कदम पर जातक का साथ देगे। जातक के पिता प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं। जातक परिवार की सेवा करने वाला, उच्च पदाधिकारी होगा।

दृष्टि—नवमस्थ बुध की दृष्टि तृतीय भाव (कर्क राशि) पर होगी फलतः, जातक भाइयों, परिजनों व मित्रों की सेवा करेगा।

निशानी—जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा मे जातक का भाग्योदय एवं सर्वांगीण विकास होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योग कारक है। नवम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा एवं पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जाएगा। जातक धनवान होगा, पर सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से हल्का संघर्ष रहेगा। जातक की उन्नति में माता एवं सभी जातक की मदद बराबर रहेगी।
2. **बुध + चन्द्र**—चन्द्र की युति यहां फलदायक है। जातक महान पराक्रमी होगा।
3. **बुध + मंगल**—मंगल यहां उच्च का होगा। जातक विदेश यात्रा, एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट के व्यापार से धन कमाएगा। मंगल तथा बुध की दृष्टि व्यय स्थान, पराक्रम एवं सुख भाव पर होने से जातक महान पराक्रमी होगा एवं सभी प्रकार के सुख उसे सहज में प्राप्त होंगे।
4. **बुध + बृहस्पति**—बृहस्पति यहां नीच राशि का होगा। उसकी दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम एवं विद्या स्थान पर होने से जातक उच्च कोटि का विद्वान्, लेखक, सम्पादक व पत्रकार होगा।
5. **बुध + शुक्र**—भृगुसूत्र के अनुसार 'संगीतपाठक दाक्षिण्यवान्' जातक नृत्य, कला, संगीत, अभिनय क्षेत्र को पढ़ाने वाला, महान चतुर कलाकार होगा।
6. **बुध + शनि**—शनि यहां स्वगृही होगा। शनि बुध की दृष्टि लाभ भाव, पराक्रम भाव एवं छठे भाव पर होगी। फलतः जातक महान पराक्रमी होगा, व्यापार में उसे लाभ होगा एवं जातक ऋण व रोग को समूल नष्ट करने में समर्थ होगा।
7. **बुध + राहु**—राहु यहां समराशि में है। यह सौभाग्य से प्राप्त होने वाले शुभ फलों में रुकावटें व बाधाएं डालेगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में
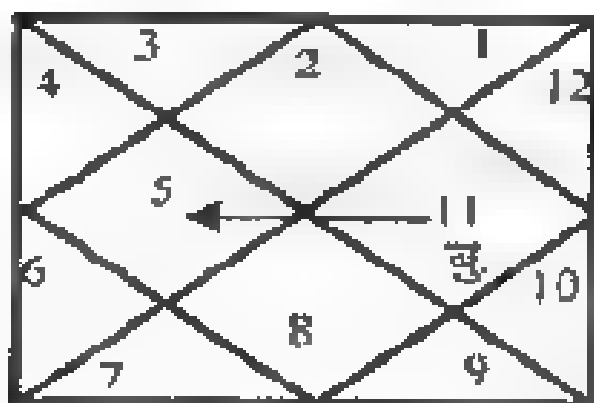
वृषलग्न में बुध धनेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां दशमस्थ होकर कुम्भ राशि में है। केन्द्रस्थ बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बना है। यह बुध की समराशि है। योगकारक बुध का दशम स्थान में केन्द्रस्थ होकर बैठना बहुत बड़ी बात है। जातक को माता पिता की सम्पत्ति

मिलेगी। व्यापार व्यवसाय के माध्यम से जातक आर्थिक दृष्टि से बहुत सक्षम व सम्पन्न होगा।

दृष्टि—दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक शिक्षित होगा। माता की सेवा करेगा।

निशानी—जातक को कन्या सन्तति अधिक होगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। दशम स्थान में कुम्भ राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती तथा 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेंगे। दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक धनवान होगा। जातक को पैतृक/मातृ सम्पत्ति मिलेगी। खुद का उत्तम मकान बनाएगा। वाहन सुख उत्तम होगा। जातक जीवन मे विभिन्न संसाधनों से सम्पन्न एक सफल व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चन्द्र**—तृतीयेश केन्द्र में होने से 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। जातक अनेक वाहनों का स्वामी होगा। पराक्रमी होगा।
3. **बुध + मंगल**—सप्तमेश केन्द्र में 'दिग्बली' होगा। जातक के अनेक नौकर होंगे। जातक अनेक वाहनों का स्वामी होगा।
4. **बुध + बृहस्पति**—लाभेश केन्द्र में होने से व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा। जातक आध्यात्मिक व धार्मिक व्यक्ति होगा।
5. **बुध + शुक्र**—शुक्र केन्द्र में होने से जातक 'अनेक वाहनों' से युक्त अति पराक्रमी एवं महत्वाकांक्षी होगा क्योंकि शुक्र उच्चाभिलाषी है अतः जातक को हर काम में सफलता मिलती रहेगी।
6. **बुध + शनि**—भाग्येश केन्द्र में 'शश योग', 'पद्सिंहासन योग' बनाएगा। जातक महाराजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा।
7. **बुध + राहु**—राहु यहां मूल त्रिकोण स्वराशि में है। जातक विविध प्रकार के व्यापार से धन कमाएगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में

वृषलग्न में बुध धनेश व पचमेश होने से राजयोग कारक है। बुध यहां एकादस्थ होकर मीन राशि में है। मीन राशि मे बुध नीच का होता है तथा 15 अंशों
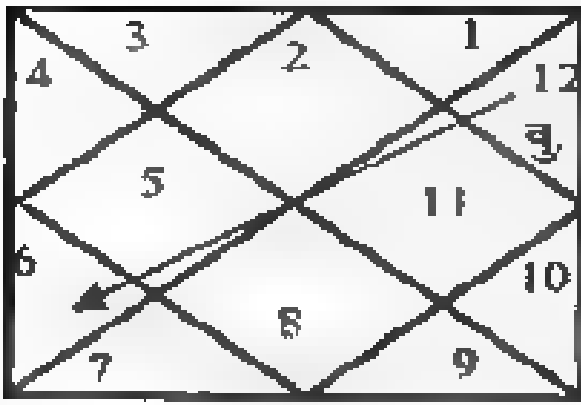
में बुध परम नीच का होगा। परन्तु एकादश भाव में बुध नवम और दशम भाव की भाँति श्रेष्ठ फल देता है। ऐसे व्यक्ति उत्तम गणितज्ञ होते हैं। जीवन अनेक प्रकार की सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होता है। जातक धर्मप्राण होता है। पुत्र-जन्म के बाद जातक का भाग्योदय तीव्रता से होता है।

दृष्टि–एकादशस्थ बुध की दृष्टि पंचम भाव (कन्या राशि) अपने घर पर होगी। फलतः जातक विद्यावान्, शिक्षित होगा। उसकी सन्तति भी शिक्षित होगी।

निशानी–जातक प्रज्ञावान होगा। 34 वर्ष की आयु के बाद किस्मत चमकती है।

दशा–बुध अपनी दशा में धन व उत्तरोत्तर उत्तम फल देगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **'बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। एकादश स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पंचमेश+धनेश बुध के साथ युति है। यहां जिस घर में बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव पर होगी जो बुध का निजी भवन है। फलतः जातक बुद्धिमान, गुप्त विद्याओं, मन्त्र-तन्त्र, ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता व शिक्षित होगा। उसकी सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार के माध्यम से तरक्की प्राप्ति करेगा। घर का मकान एवं सभी भौतिक सुखों की उसे सहज में प्राप्ति होगी।
2. **बुध + चन्द्र**–तृतीयेश लाभ में जाने से जातक को इष्ट-मित्रों से लाभ होगा। जातक का जनसम्पर्क विस्तृत होगा।
3. **बुध + मंगल**–सप्तमेश लाभ में होने से जातक को अनेक स्त्रियों द्वारा धन लाभ होगा। विपरीत लिंगी से मित्रता लाभप्रद रहेगी।
4. **बुध + बृहस्पति**–यह युति 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि करेगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव को भोगेगा।
5. **बुध + शुक्र**–यह युति 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि करेगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा। जातक अनेक प्रकार से धनवान होगा।
6. **बुध + शनि**–भाग्येश, दशमेश का लाभ स्थान में होकर लग्न स्थान, पंचम भाव एवं अष्टम भाव को देखेंगे। ऐसा जातक महान पराक्रमी, सौभाग्यशाली एवं लम्बी आयु को प्राप्त करता है।

7. **बुध + राहु**—राहु यहां शत्रु राशि में है। एकादश में राहु का बैठना शुभ फलदायक है। जातक को गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना होगा।

वृषलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में
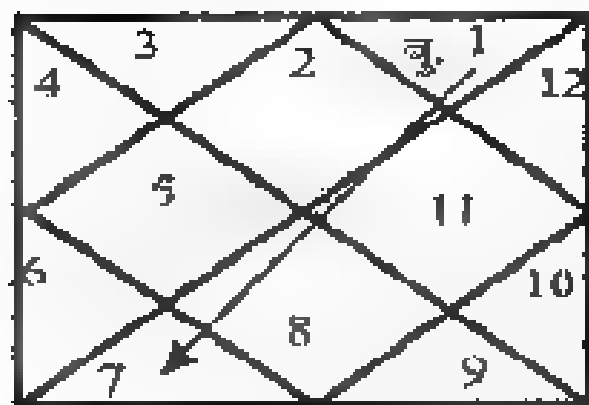
वृषलग्न में बुध धनेश व पचमेश होने से राजयोग कारक है बुध यहां द्वादशस्थ होकर मेष राशि में है। बुध मंगल के घर में है। मगल के प्रति उदासीन है परन्तु मंगल बुध से शत्रुता रखता है। यहां बुध के कारण 'धनहीन योग' एवं 'सन्तानहीन योग' भी बनता है। फलतः बुध अशुभ फलदायक है। जातक का बौद्धिक एवं मानसिक स्तर विकसित नहीं होता। ऐसा जातक राजा द्वारा पीड़ित हो सकता है। न्यायालय से दंड मिल सकता है। जातक की सन्तति उदण्ड हो सकती है। जातक का धन व्यर्थ के कार्यों में खर्च होगा। जातक गुप्त विद्याओं का जानकार होगा।

दृष्टि—द्वादशस्थ बुध छठे स्थान (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—बहन-बेटी की चिन्ता रहेगी।

दशा—बुध की दशा शुभ कार्यों में खर्च बढ़ाएगी व यात्रा कराएगी। जातक को ऋणी (कर्जदार) भी बनाएगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषलग्न में बुध योगकारक है। द्वादश स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः सुखेश सूर्य की पचमेश-धनेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहां उच्च का होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे भाव पर होगी। फलतः जातक बुद्धिमान एवं तेजस्वी होगा, यात्राओं से कमाएगा, विदेश जाएगा। पर पैसा पास में टिकेगा नहीं तथा जातक शत्रु व रोग का समूल नाश करने में पूर्ण समर्थ होगा। जातक जीवन में कामयाब एवं सफल व्यक्तियों की श्रेणी में अग्रगण्य होगा।
2. **बुध + चन्द्र**—चद्रमा यहा पराक्रम भंग करता है। राजदड के कारण जातक जेल भी जा सकता है।
3. **बुध + मंगल**—मंगल विवाह सुख में बाधक होकर कुण्डली को मांगलिक बनाएगा। जातक का अपने जीवन साथी के संग मनमुटाव रहेगा।

4. **बुध + बृहस्पति**–बृहस्पति 'लाभभंग योग' के साथ 'सरल योग' की सृष्टि करेगा। जातक पुत्रवान् होगा।
5. **बुध + शुक्र**–शुक्र 'लग्नभग योग' बनाएगा। परन्तु षष्टेश शुक्र के बारहवें जाने से 'हर्ष योग' बना। जातक को शुक्र व बुध की दशा इतना अनिष्ट फल नही दे पाएगी, जितनी सम्भावना है।
6. **बुध + शनि**–शनि बारहवें जाने से 'भाग्यभंग योग, राज्यभंग योग' बना। जातक को धन, नौकरी व सौभाग्य की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **बुध + राहु**–राहु यहां व्यर्थ की यात्राओं में रुपया खर्च कराएगा। जातक धन का अपव्य अधिक मात्रा मे करेगा। संतान को लेकर भी व्यर्थ का रुपया खर्च होगा।

❑❑❑

वृषलग्न में गुरु की स्थिति

वृषलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में
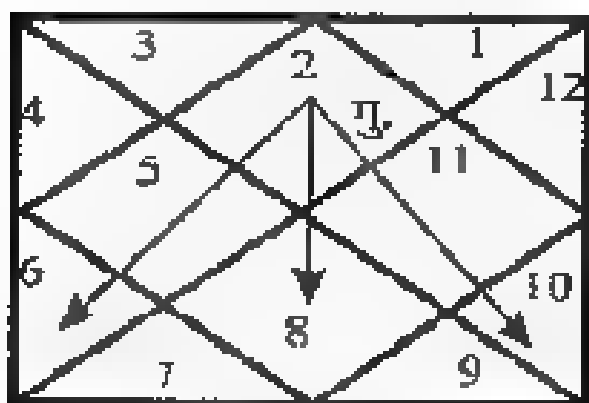
वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। लग्नस्थ बृहस्पति वृष राशि में है जो कि बृहस्पति की शत्रु राशि है यहा बैठकर बृहस्पति 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' की सृष्टि करेगा। प्रथम भाव में बृहस्पति बलवान होता है। फलतः अष्टमेश होते हुए भी अष्टमेश की अशुभता (दुष्टता) का फल नहीं देगा. जातक सौम्य, शीलवान, कर्त्तव्यनिष्ठ, गंभीर एवं विश्वसनीय स्वभाव का होगा। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा। जातक ऊर्जावान् व तेजस्वी होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि—लग्नस्थ वृष राशिगत बृहस्पति की दृष्टि पचम भाव (कन्या राशि), सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) एव भाग्य भवन (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक को यश-विद्या, उत्तम सन्तति, सुंदर पत्नी एवं माता पिता के सुख की प्राप्ति होगी।

विशेष—जातक का जन्म पिता व परिवार की किस्मत को जगाने के लिए होगा।

दशा—बृहस्पति की दशा जातक की सर्वांगीण उन्नति कराएगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में प्रथम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। लग्न स्थान में चन्द्र उच्च का होगा। फलतः आपका पराक्रम, जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा। इस गजकेसरी योग का प्रभाव सन्तान भवन, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव

पर पड़ रहा है। फलतः सन्तान उत्तम होगी, पत्नी सुंदर होगी, भाग्य बल भी उत्तम प्रकार का रहेगा।

2. **गुरु + सूर्य**—गुरु, सूर्य की युति सुखेश की लाभेश के साथ युति होगी। यह युति जातक का व्यक्तित्व बढ़ाने में सहायक होगी।

3. **गुरु + मंगल**—गुरु+मंगल की युति यहा गृहस्थ सुख बढ़ाने में सहायक है। जातक थोड़े खर्चीले स्वभाव का होगा।

4. **गुरु + बुध**—धनेश व पचमेश बुध का लग्न स्थान में गुरु के साथ बैठना अत्यन्त शुभ है जातक धनवान, पुत्रवान एवं कीर्तिवान होगा।

5. **गुरु + शुक्र**—शुक्र यहां स्वगृही होकर 'मालव्य योग' बनाएगा। शुक्र+गुरु की युति प्रथम स्थान में जातक को राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव व सम्पन्नता की वृष्टि करेगी।

6. **गुरु + शनि**—भाग्येश, दशमेश शनि का लग्न में बृहस्पति के साथ बैठना व्यापार-व्यवसाय की उन्नति के लिए श्रेष्ठ है। जातक पराक्रमी, पुत्र सन्तति युक्त एवं राजनीति में पद प्राप्त करने वाला तथा गम्भीर स्वभाव का व्यक्ति होता है।

7. **गुरु + राहु**—गुरु+राहु की युति लग्न मे 'चाण्डाल-योग' की सृष्टि करती है। व्यक्ति दुस्साहसी एवं धार्मिक छलावे में विश्वास रखने वाला होगा.

वृषलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में
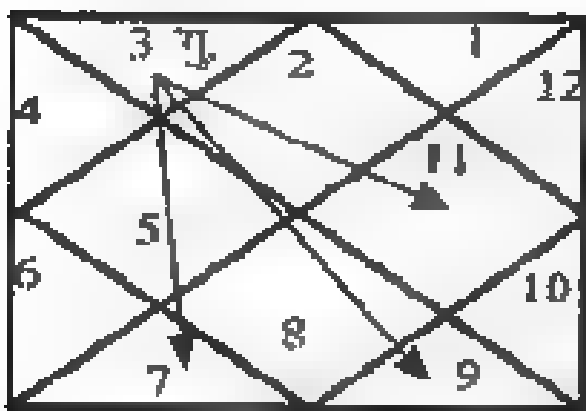
वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। धनस्थ बृहस्पति मिथुन राशि में है। मिथुन बृहस्पति की शत्रु राशि है। फलतः जातक के धन संग्रह एवं कुटुम्ब सुख में बाधाएं आती हैं। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा। उसे विद्यालय, कालेज और शिक्षण-संस्थान द्वारा वजीफा मिलेगा। जातक धार्मिक कार्यों में रुचि लेगा।

दृष्टि—द्वितीय भाव में स्थित मिथुन राशिगत बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (तुला राशि), अष्टमभाव (धनु राशि) एवं दशम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु में वृद्धि होगी। राजपक्ष (राजनीति) में जातक का दबदबा रहेगा।

निशानी—ऐसे जातक को अपनी मौत का पता बहुत पहले लग जाएगा।

दशा—बृहस्पति की दशा–अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में द्वितीय स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। द्वितीय स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है। यहा दोनों ग्रह षष्ट भाव, अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। फलतः आपको माता या पैतृक सम्पत्ति सम्बन्धी पूर्ण लाभ नहीं मिलेगा। शत्रु परास्त तो होंगे पर परेशान करते रहेंगे
2. **गुरु + सूर्य**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश की युति द्वितीय भाव में वाणी के लिए ज्यादा शुभ नहीं है। जातक अटक-अटक कर बोलेगा या वाणी में स्खलन होगा। सूर्य के संग बृहस्पति का बल क्षीण होता है
3. **गुरु + मंगल**–ऐसा जातक धार्मिक होता है। ज्योतिषी होता है। अध्यात्म व धर्म के क्षेत्र में कुछ न कुछ नया करने की प्रवृत्ति रखता है। जातक तकनीकी कार्य एवं व्यापार द्वारा यथेष्ट धन कमाएगा।
4. **गुरु + बुध**–धनेश बुध की बृहस्पति के साथ युति 'शुत्रूमूल धनयोग' बनाती है। जातक को शत्रुओं के द्वारा, मुकदमेबाजी के द्वारा धन की प्राप्ति होगी।
5. **गुरु + शुक्र**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से मुख रोग की सम्भावना रहेगी।
6. **गुरु + शनि**–भाग्येश, दशमेश शनि का धन स्थान में होना शुभ है। जातक अल्प प्रयत्न से अधिक धन कमाएगा। जातक धन के मामले में भाग्यशाली होगा।
7. **गुरु + राहु**–गुरु, राहु की युति से 'चाण्डाल योग' बनता है। धन प्राप्ति में बाधा के साथ गुप्तरोग की सम्भावना बनी रहेगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में
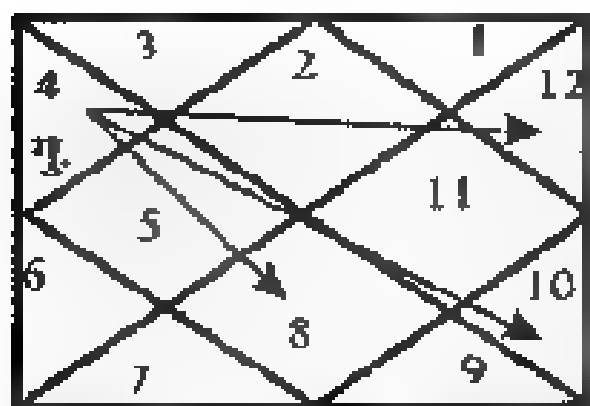
वृषलग्न मे बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। तृतीय भावस्थ बृहस्पति कर्क राशि में है, जहां बृहस्पति हर्षित होकर उच्च का है। कर्क राशि के 5 अंशों तक बृहस्पति परमोच्च का रहता है। जातक का पराक्रम तेज रहेगा। उसके भाई-बहनों के सुख में वृद्धि होगी। जातक की आर्थिक, सामाजिक तथा व्यावसायिक उन्नति होती है। जातक परिजनों कुटुम्बियों की सेवा में पूर्ण रुचि लेगा।

दृष्टि–कर्क राशिगत तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि), नवम भाव (मकर राशि) एवं एकादश भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसे

जातक को पत्नी सुख, बड़े भाई का सुख एवं धन-सौभाग्य का सुख पूर्ण रूप से मिलेगा। एकादशेश की एकादश भवन पर दृष्टि अनेक प्रकार के लाभ को देने वाली मानी गई है।

निशानी—विवाह के बाद ससुराल की तरक्की होगी।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में साझेदारी या व्यापार द्वारा धन लाभ होगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—आपकी जन्मपत्रिका में वृषलग्न में तृतीय स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। तृतीय स्थान में बृहस्पति उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होगा। यहां दोनों शुभग्रह बलवान होकर सप्तम भाव, भाग्य भवन एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलतः जातक को पत्नी का सुख मिलेगा। पिता की सम्पत्ति मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा।
2. **गुरु + सूर्य**—यहां वस्तुतः सुखेश सूर्य की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ युति तृतीय स्थान में होगी। बृहस्पति यहां उच्च का होकर, भातृ+सुख एवं मित्रों की संख्या बढ़ायेगा।
3. **गुरु + मंगल**—मंगल व बृहस्पति की युति से यहां 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। फलतः दोनों ग्रह ज्यादा शुभफलदायी हो जाएंगे। जातक महान पराक्रमी, तेजस्वी होकर राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
4. **गुरु + बुध**—अष्टमेश व द्वितीयेश की युति जातक की वाणी में दोष उत्पन्न करती है। भाइयों में भारी मन-मुटाव की स्थिति बनती है।
5. **गुरु + शुक्र**—उत्तम नौकरी तथा व्यवसाय से धन लाभ मिलेगा। गृहस्थ सुख उत्तम होगा। बड़े भाई से लाभ रहेगा।
6. **गुरु + शनि**—यहां कर्कस्थ बृहस्पति शनि के साथ उच्च का होगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। भाग्य भी ठीक रहेगा। उन्नति शीघ्र होगी।
7. **गुरु + राहु**—यह युति 'चाण्डाल योग' की सृष्टि करती है। जातक को बड़े भाई का सुख नहीं मिलेगा।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति सिंह राशि में होगा। यहां बृहस्पति अपने
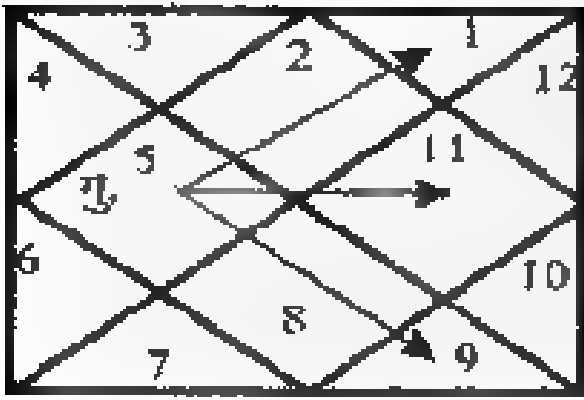
मित्र ग्रह सूर्य की राशि में है। जातक उच्च शिक्षा पाने वाला, उत्तम भवन, उत्तम वाहन के सुख से युक्त होता है जातक राजा के समान ऐश्वर्यवान् होकर अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

निशानी—जातक न्यायप्रिय व धैर्यशाली होता है।

दृष्टि—सिंह राशि गत चतुर्थ भाव में स्थित बृहस्पति की दृष्टि अष्टम भाव (धनु राशि), दशम भाव (कुम्भ राशि) एवं द्वादश भाव (मेष राशि) पर रोगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं से समझौता करता है। उसकी आयु दीर्घ होती है। जातक परोपकार व सद्कार्यों में रुपया खर्च करता है

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में चतुर्थ स्थान में गुरु-चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश लाभेश बृहस्पति से युति है। चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह अग्नि राशि सिंह में होंगे। जहां से ये अष्टम भाव, दशम भाव एवं खर्च स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसे में जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धी गड़बड़ी रहेगी। पिता का प्रकोप रहेगा। जातक का स्वभाव खर्चीला रहेगा। पैसा पास में नहीं टिकेगा।
2. **गुरु + सूर्य**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक ऋण, रोग एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **गुरु + बुध**—जातक अनेक प्रकार के धधों से धन कमाएगा। जातक को लाभ ही लाभ होता रहेगा।
4. **गुरु + मंगल**—बृहस्पति मंगल के साथ केन्द्रस्थ होकर 'केसरी योग' बनाएगा तथा जातक की आयु एवं धन में वृद्धि करेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा तथा तीर्थाटन एव धार्मिक कार्यों में रुचि लेगा।
6. **गुरु + शनि**—सिंहस्थ शनि के साथ बृहस्पति ज्यादा शुभ नहीं है। जातक कुल का दीपक होगा। परन्तु सुख संसाधनो की प्राप्ति मे बाधा रहेगी।
7. **गुरु + राहु**—गुरु तथा राहु की युति 'चाण्डाल योग' बनाएगी। जातक को पिता के पूर्ण सुख की कमी रहेगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में
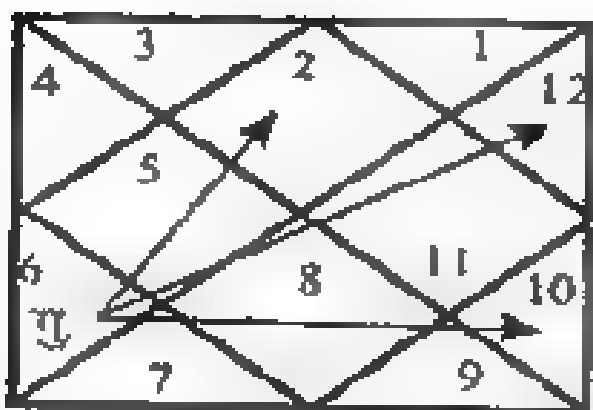
वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। पंचम भावस्थ बृहस्पति कन्या राशि में होगा जो कि बृहस्पति की शत्रु राशि है। ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान, महान् वक्ता, विद्वान् व दार्शनिक होता है, ऐसे जातक के परिवार में बाप से पोते तक सभी सुखी व धनवान होते हैं। जातक की सन्तान आज्ञाकारी होती है। सन्तान को शिक्षा-दीक्षा व संस्कार उत्तम होते हैं।

निशानी–पंचम भाव में बृहस्पति पुत्र कम और कन्या अधिक देगा। पुत्र थोड़ा विद्रोही स्वभाव का होगा।

दृष्टि–कन्या राशिगत पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि नवम भाव (मकर राशि), एकादश भाव (मीन राशि) एवं लग्न भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक के भाग्य में वृद्धि, लाभ में वृद्धि एवं प्रयत्न पुरुषार्थ का लाभ बराबर मिलेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अतर्दशा उत्तम फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न मे पचम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। पचम स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है। जहा से ये दोनों ग्रह नवम भाव, एकादश स्थान एव लग्न स्थान को देखेंगे। फलतः भाग्योदय शीघ्र होगा व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगी। जातक के व्यक्तित्व में निखार 32 वर्ष की आयु के बाद आएगा।
2. **गुरु + सूर्य**–सुखेश सूर्य की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति के साथ युति ज्यादा सार्थक नही है क्योंकि बृहस्पति मुख्य मारकेश है जातक संतति का गर्भपात होगा। एकाध की अकाल मृत्यु होगी।
3. **गुरु + मंगल**–अष्टमेश का त्रिकोण में जाना शुभ है, परन्तु जातक को विद्या में रुकावट देगा एवं प्रथम संतति शल्य चिकित्सा (ऑपरेशन) द्वारा दिलाएगा।
4. **गुरु + बुध**–'मेधावी मधुर भाषी बुद्धिमान' जातक मेधावी, बुद्धिमान एवं गभीर वाणी बोलने वाला, व्यापार से लाभ कमाने वाला व्यक्ति होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–गुरु+शुक्र की युति गर्भपात एवं संतति की अकाल मृत्यु की सकेतक है।

6. **गुरु + शनि**—भृगुसूत्र के अनुसार 'गुरुदृष्टे स्त्रीद्वयम्' जातक की दो पत्नियां होंगी। प्रायः जातक को प्रथम पुत्र एवं द्वितीय पुत्री होती है।
7. **गुरु + राहु**—गुरु राहु के 'चाण्डाल योग' के कारण पुत्र सन्तति में बाधा तथा जातक को भौतिक जीवन में अनासक्ति, वैराग्य हो जाएगा। भृगुसूत्र कहता है—'राहुकेतु युते सर्पशापात् सुतक्षमः' राहु या केतु यदि बृहस्पति के साथ हों तो सर्प के शाप से सन्तान का नाश होता है। परन्तु कालसर्पयोग शान्ति से पुत्र की प्राप्ति होगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति षष्ट्म स्थान में
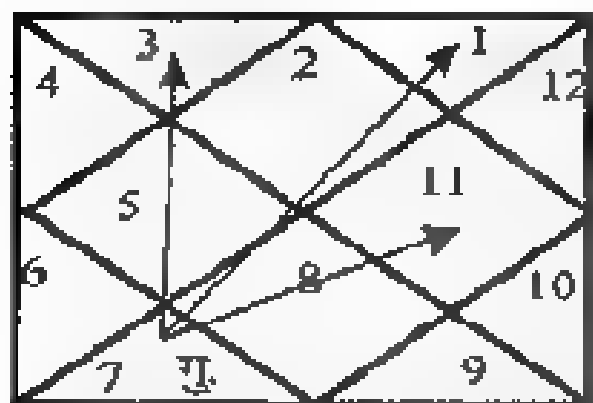
वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहा अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां छठे स्थान में बृहस्पति तुला राशि में होगा। तुला राशि बृहस्पति की शत्रु राशि है। बृहस्पति छठे स्थान (खड्डे) में जाने से **'लाभभंग योग'** बनेगा परन्तु अष्टमेश का छठे जाना शुभ माना गया है। इससे सरल योग बना जिससे बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट हो गया है। ऐसा जातक भाई-बहन, मामा-मामी, ननिहाल, मौसी को सुख देने वाला होता है। जातक कामी होता है। सुंदर स्त्रियों का भोग करता है। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होते हैं।

दृष्टि—षष्टम भावगत तुला के बृहस्पति की दृष्टि दशम भाव (कुम्भ राशि), द्वादश भाव (मेष राशि) एवं धन भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक राज्यपक्ष से लाभ पाने वाला, तीर्थयात्रा में रुचि लेने वाला, सामाजिक व धार्मिक कार्यों द्वारा धन लाभ प्राप्त करता है।

निशानी—पचास वर्ष की आयु के बाद बहुमूत्र, मधुमेह, हर्निया व गुर्दे की बीमारी सम्भव है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में षष्टम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है छठे स्थान में चद्रमा 'पराक्रमभग योग' एवं बृहस्पति 'लाभभग योग' की सृष्टि कर रहा है। छठे भाव में निर्बल स्थिति मे बैठे ये ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं

धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: राजनीति में धोखा, मित्रों से धोखा, व्यापार-व्यवसाय में धोखा मिलेगा।

2. **गुरु + सूर्य**—अष्टमेश व लाभेश बृहस्पति का सूर्य के साथ छठे जाना शुभ नहीं है परन्तु अष्टमेश के छठे जाने से 'सरल योग' बना फलत: बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट हो गया। जातक के पैर में चोट पहुंचेगी पर जातक बच जाएगा।

3. **गुरु + मंगल**—बृहस्पति के छठे जाने से 'लाभभंग योग' बनेगा। परन्तु अष्टमेश का छठे जाने से 'सरल योग' की सृष्टि होगी। बृहस्पति+मंगल की युति धार्मिक यात्राओं में चोरी होने का संकेत देती है।

4. **गुरु + बुध**—जातक को गृहस्थ सुख 37 वर्ष की आयु के बाद मिलेगा। गुरु यहां 'सरल योग' बनाएगा। फलत: बुध के शुभत्व में वृद्धि होगी।

5. **गुरु + शुक्र**—शुक्र 'हर्षयोग' में एवं बृहस्पति 'सरल योग' से होगा। जातक व्यापार प्रिय एवं सफल व्यक्ति होगा पर संघर्ष से मुक्ति नहीं होगी।

6. **गुरु + शनि**—तुला राशिगत शनि के साथ अष्टमेश बृहस्पति की युति शुभ है। जातक शत्रुओं का नाश करने मे समर्थ रहेगा।

7. **गुरु + राहु**—राहु गुरु की युति 'चाण्डाल योग' की सृष्टि करती है। जातक को गुप्त शत्रु या गुप्त रोग से पीड़ा होगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में
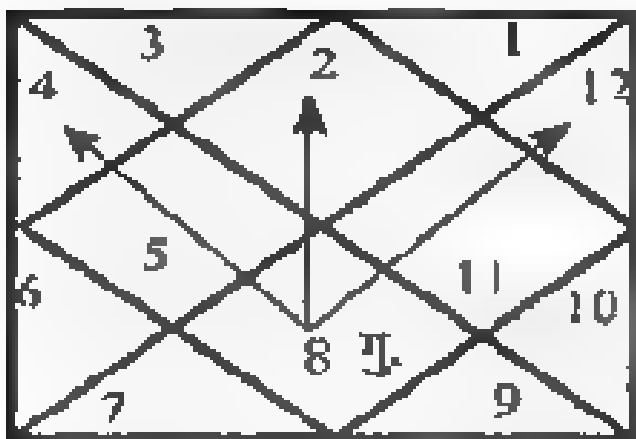
वृषलग्न मे बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां सप्तम भावस्थ बृहस्पति वृश्चिक राशि में होगा। वृश्चिक बृहस्पति की मित्र राशि है। बृहस्पति यहां केन्द्रस्थ होने के कारण 'केसरी योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि भी हुई है। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का जीवन साथी सुंदर गुणी और धैर्यवान होता है। जातक न्यायप्रिय होता है। उसे जाति व समाज में अच्छी मान्यता मिलती है।

दृष्टि—सप्तम भावगत वृश्चिक के बृहस्पति की दृष्टि लाभ स्थान स्वयं के घर (मीन राशि) लग्न (वृष राशि) एवं तृतीय भाव अपनी उच्च राशि (कर्क) पर होगी। फलत: जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ, जातक स्वयं के रुचिकर कार्य में उन्नति एव कुटुम्बी जनो मे पराक्रमी होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक को अकल्पनीय उन्नति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में सप्तम स्थान में गुरु+ चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। सप्तम स्थान मे चंद्रमा नीच का होगा। केन्द्र में बैठे दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न भाव एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः विवाह के तत्काल बाद, भाग्योदय, व्यक्तित्व बढ़ोतरी होगी तथा मित्रो व शुभचिन्तकों की संख्या में बढ़ोतरी होगी।
2. **गुरु + सूर्य**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति केन्द्रवर्ती अपने घर (मीन राशि) एवं उच्च राशि (कर्क) को देखेगा। बृहस्पति यहां मारकेश होते हुए भी जातक की उन्नति में सहायक होकर उसके व्यापार एवं पराक्रम को बढ़ाएगा।
3. **गुरु + मंगल**–लाभेश का केन्द्रगत होना 'केसरी योग' बनाएगा। बृहस्पति अपने घर (मीन राशि) लग्न एवं अपनी उच्च राशि (कर्क) को देखेगा। जातक को रोग के कारण शल्य चिकित्सा (आपरेशन) होगा।
4. **गुरु + बुध**–ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा। गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक परम्परागत विवाह में रुचि रखेगा। व्यापार से लाभ कमाएगा।
6. **गुरु + शनि**–अष्टमेश बृहस्पति का सप्तम स्थान में शनि के साथ होना गृहस्थ सुख में बाधक है।
7. **गुरु + राहु**–यहां 'चाण्डाल योग' बना। गुरु राहु की युति सप्तम भाव में पति-पत्नी में स्थायी मनमुटाव उत्पन्न करेगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में
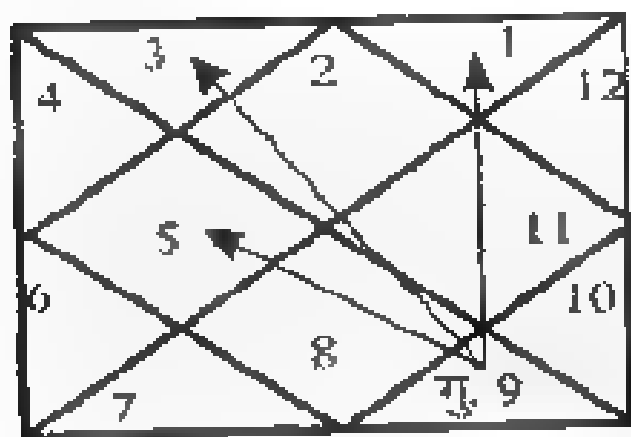
वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां आठवें स्थान में बृहस्पति धनु राशि का स्वगृही होगा। बृहस्पति आठवें जाने से 'लाभभंग योग' बना परन्तु अष्टमेश के अष्टम स्थान में होने से 'सरल योग' की सृष्टि होती है जिससे बृहस्पति का अशुभत्व पूर्णतः नष्ट हो गया है। बृहस्पति और अष्टम भाव दोनों ही आयु के

प्रतीक है। अतः ऐसा जातक परिवार में लम्बी आयु वाला होगा। ऐसा जातक दुःखियों की सेवा करने वाला परोपकारी होता है।

दृष्टि—अष्टम भावगत स्वगृही बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (मेष राशि), धनभाव (मिथुन राशि) एवं सुख भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान होता है। भौतिक संसाधनों से युक्त सुखी होता है तथा खर्चीले स्वभाव का दानी होता है।

निशानी—जातक का जीवन साथी सुखी एवं मधुर वाणी बोलने वाला होता है। जातक को अनायास सम्पत्ति वसीयत या बीमे की राशि के रूप में प्राप्त होती है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। स्वास्थ्य लाभ-देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चन्द्र**—वृषलग्न में अष्टम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश लाभेश बृहस्पति से युति है। आठवें स्थान में बृहस्पति स्वगृही होगा परन्तु चन्द्र-बृहस्पति आठवें होने से क्रमशः 'पराक्रमभंग योग' [illegible] उतना नहीं मिलेगा। जितना मिलना चाहिए फिर भी जीवन में कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।
2. **गुरु + सूर्य**—सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश की युति अष्टम स्थान में कष्टदायक है। परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल योग' बना फलतः जातक को दीर्घायु प्राप्त होगी तथा दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।
3. **गुरु + मंगल**—बृहस्पति के आठवें जाने से 'लाभभंग योग' बनेगा परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल योग' बृहस्पति के अशुभ फल को नष्ट करेगा। यह युति व्यक्ति को धार्मिक बनाएगी। जातक बड़े भाई का आदर करेगा।
4. **गुरु + बुध**—यहां बृहस्पति जातक को बहुत लम्बी उम्र देगा क्योंकि बृहस्पति स्वगृही होकर 'सरल योग' बनाएगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'सप्तपुत्रवान्' जातक अधिक पुत्रों वाला होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—की युति ज्यादा शुभ नहीं है। ऐसा जातक गुप्तांग में बीमारी भोगने वाला होता है। स्वयं की पत्नी से अनबन पर अन्य स्त्रियों पर धन खर्च करने वाला व्यक्ति होता है। जीवन में दो-तीन बार ऑपरेशन कराने का योग जरूर बनेगा। अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से 'सरल योग' जातक की दीर्घायु प्रदान करेगा।

6. **गुरु + शनि**–अष्टमेश बृहस्पति का अष्टम भाव में शनि के साथ होना शुभ है। फिर भी गुप्त रोग, दाये पैर में चोट का खतरा बना रहेगा।

7. **गुरु + राहु**–यहां 'चाण्डाल योग' अनिष्ट सूचक है। गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग जातक को परेशान करेंगे।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में
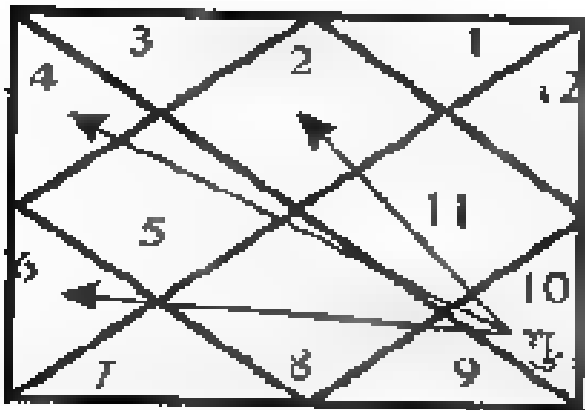
वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां भाग्य भवन में बृहस्पति मकर राशि का होगा। यहां बृहस्पति नीच राशि का होगा तथा मकर राशि के 5 अशों में बृहस्पति परम नीच का होगा। बृहस्पति नवमें भाव का कारक है तथा मनुष्य के धर्म, सौभाग्य एवं सन्तान का प्रतीक ग्रह भी है। इसका नवम (भाग्य) स्थान में [illegible] होगा। राजा होते हुए भी त्यागी होगा। धार्मिक कार्य में [illegible] होगा।

निशानी–बृहस्पति जनित सुंदर फल कुछ विलम्ब से मिलेंगे।

दृष्टि-बृहस्पति नवम भाव में बैठकर लग्न स्थान (वृष राशि), पराक्रम भाव (कर्क राशि) एव पंचम भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि में देख रहा है। फलतः जातक को अल्प प्रयत्न से अधिक लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा, अपने भाई बहनो से प्यार करेगा एव उत्तम सन्तति (पुत्र सन्तान) से युक्त होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा सुंदर फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न मे नवम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। नवमें स्थान में बृहस्पति नीच का होगा परन्तु इन दोनों शुभग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एव पचम भाव पर रहेगी। फलतः प्रथम सन्तति के बाद आपका विशेष भाग्योदय होगा राजनीति मे आपकी जीत होगी तथा मित्रों से लाभ बराबर मिलता रहेगा।

2. **गुरु + सूर्य**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति नवम

स्थान में होगी। यहां बृहस्पति नीच का होगा। यह युति व्यापार सुख में वृद्धिकारक साबित होगी।

3. **गुरु + मंगल**—लाभेश का भाग्य में होना 'नीचभंग राजयोग' बनाएगा क्योंकि बृहस्पति नीच का एवं मंगल उच्च का होगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान होगा। बुद्धि धार्मिक एवं परोपकारी होगी।

4. **गुरु + बुध**—बृहस्पति यहां नीच राशि का होगा पर उसकी दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम एवं विद्या स्थान पर होने से जातक उच्च कोटि का विद्वान, लेखक, सम्पादक व पत्रकार होगा।

5. **गुरु + शुक्र**—यह युति भाग्य में वृद्धिदायक है

6. **गुरु + शनि**—अष्टमेश बृहस्पति जब शनि के साथ होगा तो 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

7. गुरु + राहु—यहां राहु की युति 'चाण्डाल योग' बनाएगी। जातक के भाग्योदय में घोर बाधाएं आएगी।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में
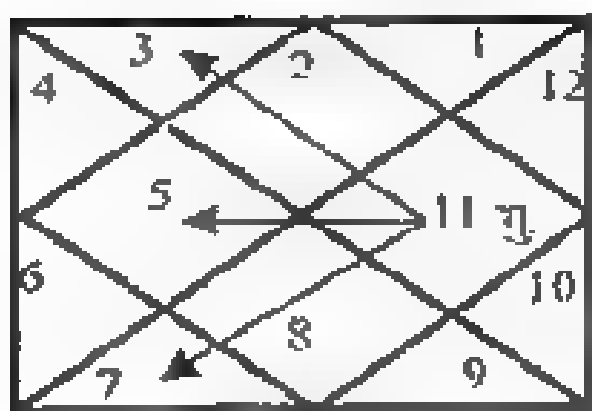
वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। यहां बृहस्पति दशम भाव में कुम्भ राशि का होगा। यह बृहस्पति की समराशि है। बृहस्पति केन्द्रस्थ होने के कारण क्रमशः (केसरी योग) एवं (कुलदीपक योग) की सृष्टि होगी। दशम भाव में बृहस्पति सभी अरिष्टों का नाशक एवं राजातुल्य यश ऐश्वर्य देने वाला होता है। परन्तु ऐसा जातक हठी, एकान्तवासी, शुष्क एवं कंजूस स्वभाव का होता है। फिर भी 'प्रौढ़कीर्ति बहुजनपूज्यः' जातक जाति व समाज में पूज्य आदरणीय स्थान को प्राप्त करता है।

दृष्टि—दशम भाव मे कुम्भ राशिगत बृहस्पति की दृष्टि धन भाव (मिथुन राशि) सुख भाव (सिह राशि) एवं छठे भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान, पूर्णसुखी एवं शत्रुओ का नाश करने में पूर्ण सक्षम होता है

दशा—बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होती है नौकरी लगती है या राज्य की कृपा प्राप्त होती है।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–वृषलग्न में प्रथम स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। दसवें भाव में बैठकर इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि धनस्थान, सुखस्थान, एवं षष्टम भाव पर होगी। फलतः 24 वर्ष की आयु के बाद धनप्राप्ति होनी शुरू होगी। जातक अपने शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा तथा 36 वर्ष की आयु के बाद घर का मकान दो मंजिला बनायेगा।
2. **गुरु + सूर्य**–सुखेश सूर्य के साथ अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति की युति यद्यपि निष्फल है तथापि व्यापार वृद्धि की द्योतक है। जातक के पिता की समाज में अच्छी प्रतिष्ठा रहेगी।
3. **गुरु + मंगल**–भृगुसूत्र के अनुसार यह युति (गजान्तैश्वर्यवान) जातक हाथी जैसे बडे वाहन से युत ऐश्वर्यवान होता है।
4. **गुरु + बुध**–लाभेश केन्द्र में होने से व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा। जातक आध्यात्मिक व धार्मिक व्यक्ति होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–'बहुभाग्यवान' केन्द्रस्थ बृहस्पति 'केसरी योग' के कारण शुक्र के साथ प्रचुर लाभ देगा।
6. **गुरु + शनि**–लाभेश, अष्टमेश बृहस्पति की युति केन्द्रवर्ती होने से जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगेगा।
7. **गुरु + राहु**–गुरु के साथ राहु होने के कारण 'चाण्डाल योग' बनेगा। जातक को राजदण्ड (अदालत से सजा) मिलेगा।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में
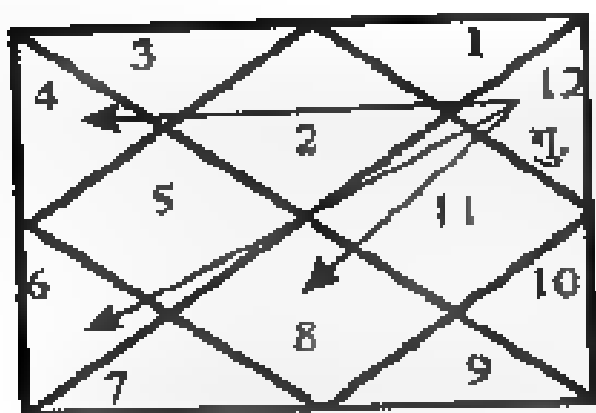
वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। एकादश भाव में स्थित छठे भाव में छठे स्थान पर होने के कारण एक दुष्ट स्थान माना गया। इसमें यहां अष्टमेश का पापत्व भी आ जाता है। इसलिए यह रोग, ऋण व शत्रुओं का भी स्थान है। ऐसा जातक शोध कर्त्ता होता है। स्वबुद्धि, ज्ञान, विवेक से प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता है। व्यापार या व्यावसायिक स्पर्धाओं में आगे रहकर धन प्राप्त करता है। ऐसा जातक वेद शास्त्रों का ज्ञाता, यज्ञ करने वाला, पुत्र-सन्तान से धन व यश को प्राप्त करने वाला होता है।

दृष्टि–एकादश स्थान मे स्थित स्वगृही बृहस्पति की दृष्टि तृतीय भाव (कर्क राशि), पंचम भाव (कन्या राशि) एवं सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा। परिजनों का शुभ चिन्तक होगा। पत्नी व पुत्र से धन व यश की प्राप्ति होगी।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन-यश व विद्या की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चन्द्र**–आपकी जन्मपत्रिका के वृषलग्न में एकादश स्थान में गुरु+चन्द्र की युति वस्तुतः तृतीयेश चद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति है। लाभ स्थान में बृहस्पति स्वगृही होकर बलवान होंगे। लाभ स्थान में बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्त भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः आपका पराक्रम बढ़ा चढ़ा रहेगा। ससुराल अच्छा मिलेगा, पत्नी सुन्दर मिलेगी, सन्तति उत्तम होगी तथा पुत्र एवं कन्या दोनों ही प्रकार की सन्तति होगी।
2. **गुरु + सूर्य**–जातक को पुत्र संतति अवश्य होगी। दो पुत्रों का लाभ होगा। [illegible] होगा।
3. **गुरु + मंगल**–बृहस्पति यहां स्वगृही होगा। जातक व्यापार में यथेष्ट लाभ प्राप्त करेगा जातक के भाई धनवान होंगे। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी।
4. **गुरु + बुध**–यह युति 'नीचभग राजयोग' की सृष्टि करेगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव को भोगेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–की युति यद्यपि 'किम्बहुना योग' की सृष्टि करती है। क्योंकि यहां शुक्र उच्च का एवं बृहस्पति स्वगृही होगा। परन्तु यह युति ज्यादा शुभदायक नहीं है। क्योंकि बृहस्पति अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा।
6. **गुरु + शनि**–यह लाभेश लाभ स्थान में स्वगृही होकर जब शनि के साथ होगा तो जातक व्यापार में खूब धन-दौलत कमायेगा।
7. **गुरु + राहु**–राहु की युति से 'चण्डाल योग' बनेगा। फलतः जातक को निजी व्यापार-व्यवसाय में अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

वृषलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में

वृषलग्न में बृहस्पति लाभेश व अष्टमेश है। गुरु यहां अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा। मेष बृहस्पति की मित्रराशि है। लाभेश का द्वादश में जाने से 'लाभभंग
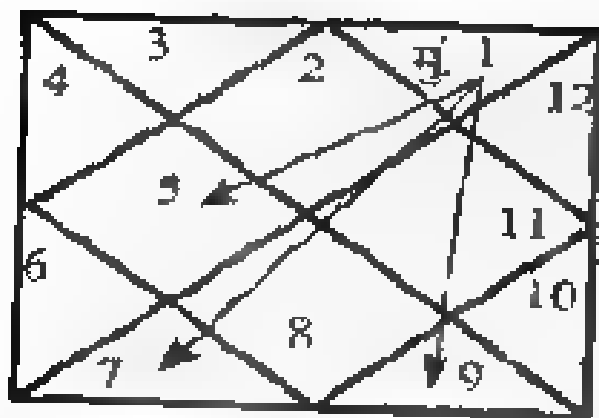
योग' बना परन्तु अष्टमेश होकर बृहस्पति का द्वादश स्थान में जाने से 'सरल योग' की सृष्टि इस योग के कारण बृहस्पति का सारा अशुभत्व नष्ट हो गया। ऐसा जातक तीर्थपुरोहित, वेद-शास्त्र, कर्मकाण्ड का ज्ञाता, परोपकारी, देश विदेश की यात्रा करने वाला होता है। धन खर्च एवं अपव्यय के प्रति जातक को चिन्ता बनी रहती है।

दृष्टि—द्वादश भाव में स्थित मेष के बृहस्पति की दृष्टि सुख भाव 'सिंह राशि', षष्टम भाव 'तुला राशि' एवं अष्ट भाव 'धनु राशि' पर होगी। जातक सुखी होगा तथा शत्रु, ऋण व रोग का नाश करने में समर्थ होगा।

निशानी—जातक धन-दौलत का भण्डारी एवं माया का त्यागी होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

युति बस्तुतः तृतीयेश चंद्रमा की अष्टमेश, लाभेश बृहस्पति से युति [illegible] स्थान में युति होने से क्रमशः 'लाभभंग योग' एवं 'पराक्रमभग योग' की सृष्टि होगी। निर्बल अवस्था को प्राप्त ये दोनों शुभग्रह यहां बैठकर सुख स्थान, छठे स्थान एव आठवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः आपको रोग व शत्रु द्वारा कष्ट पहुंच सकता है। परन्तु दोनों ही समूल नष्ट होंगे। आपको जीवन में अच्छे वाहन एवं अच्छे मकान का सुख भी बराबर मिलेगा।

2. **गुरु + सूर्य**—सुखेश सूर्य के सथ लाभेश व अष्टमेश बृहस्पति व्यय भाव मे सरल योग की सृष्टि करता है। जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा तथा ऋण, रोग व शत्रुओं को नाश करने में समर्थ होगा।
3. **गुरु + मंगल**—'ब्राह्मण स्त्री सम्भोगी' बृहस्पति बारहवें स्थान में होने से 'सरल योग' बना। ऐसा व्यक्ति परोपकारी, धार्मिक व तीर्थ यात्राओं में भाग लेने वाला साहसी जातक होता है।
4. **गुरु + बुध**—बृहस्पति 'लाभभंग योग' के साथ 'सरल योग' की सृष्टि करेगा। जातक पुत्रवान होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—शुक्र, बृहस्पति युति व्यापार में हानिकारक है। फिर भी व्यक्ति धार्मिक, परोपकारी व दानी होगा।

6. **गुरु + शनि**—यहां लाभेश, अष्टमेश बृहस्पति का द्वादश स्थान में शनि के साथ होना शुभ है। व्यक्ति धर्म कार्य, परोपकार में रुपया खर्च करेगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां पर राहु होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा। जातक व्यर्थ की यात्राओं व फिजूल के कार्यों में खूब रुपया खर्च करेगा। यात्रा में चोरी होगी।

❑❑❑

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में
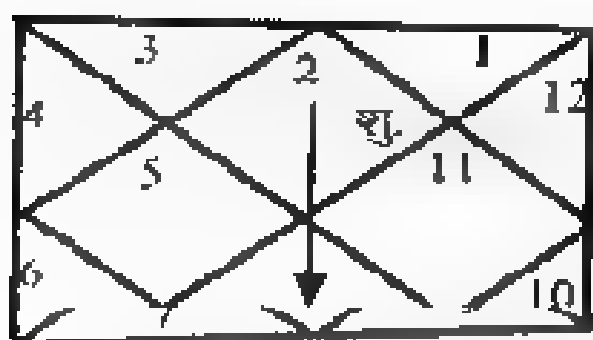
वृषलग्न के लिए शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बना। ऐसा [illegible] करने वाला यशस्वी होता है।

मालव्योग–स्वगृही शुक्र लग्न में स्वगृही होने से यह योग बना। यह पंचमहापुरुष योगों में से उत्तम योग है। ऐसा जातक दूसरों को पालने वाला, सुन्दर वाहन एवं चौपायों का स्वामी होता है। जातक अपने परिश्रम से दो मंजिला सुन्दर भवन बनाता है। जातक कूटनीतिज्ञ होता है।

निशानी–भोजसंहिता के अनुसार जातक हंसमुख, स्त्रियों का प्रिय, शौकीन मिजाज होगा। जातक कवि, शायर व रसिक मिजाज का होगा। सुन्दर पोशाक व सुन्दर भोजन का शौकीन पर नारी का विशेष आदर करने वाला, धनवान व सुखी प्राणी होता है।

दशा–शुक्र की दशा में जातक का विशेष भाग्योदय होगा। शनि व बुध की दशा भी उत्तरोतर उत्तम जायेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **किम्बहुना योग**–शुक्र+चन्द्र की युति से यह योग बनेगा। शुक्र यहां स्वगृही एवं चंद्रमा उच्च का होने से यह योग बना। इससे अधिक और क्या? अर्थात् ऐसा जातक राजाओं का राजा एवं अति पराक्रमी व्यक्ति होगा। ऐसे जातक अनेक आभूषणों को धारण करने वाला, स्वर्ण-कान्ति युत देह वाला होता है।

2. **शुक्र + गुरु**—युति हो तो व्यक्ति रोगी होगा।
3. **शुक्र + मंगल**—की युति हो तो चोट-दुर्घटना, रक्तस्राव का भय बना रहेगा। जातक रोगी होगा।
4. **शुक्र + बुध**—धनेश+पंचमेश का लग्न में होना अत्यधिक शुभ है। जातक बुद्धि बल से स्वयं के पराक्रम से खूब धन कमायेगा।
5. **शुक्र + सूर्य**—सूर्य सुखेश होकर लग्न में होने से सुख की वृद्धि करेगा। परन्तु दो परस्पर शत्रु ग्रहों की युति जातक को भोगी योगी दोनों बनायेगी।
6. **शुक्र + शनि**—पति-पत्नी में वैमनस्य रहेगा। जातक सौभाग्यशाली होगा एवं कूटनीतिज्ञ व छली होगा।
7. **शुक्र + राहु**—गृहस्थ सुख में व्यवधान। जातक का राजपुरुषों या राजनीतिज्ञों में अच्छा नाम होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में
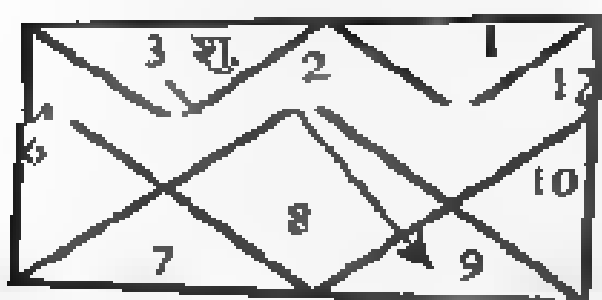
वृषलग्न में के लिए शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से स्वतः अशुभ भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। जातक व्यापारी होगा एवं धनवान होगा। जातक उच्चाधिकारी होगा। अभिनय, वाक् कला एवं समाज सेवा में पटु होगा। जातक सुन्दर पोशाक एवं सुगंधित द्रव्यों का शौकीन होगा।

शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (धनु राशि) पर होने से जातक की आयु दीर्घ होगी।

निशानी—भोजसंहिता के अनुसार जातक प्रज्ञावान होगा। उसका घर बच्चों से हरा-भरा रहेगा। साठ वर्ष की उम्र में गांव-शहर का धनवान व्यक्ति कहलायेगा।

दशा—शुक्र की दशा में भाग्योदय होगा। बुध की दशा एवं शनि की दशा भी भाग्योदय करायेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + बुध**—शुक्र+बुध की युति वृषलग्न में निष्फल मानी गई है। फिर भी धन के मामले में योगकारक बुध स्वगृही होकर धन स्थान में बैठने से जातक खूब धन कमायेगा। 'शत्रुमूल धनयोग' यहां बलवान धनेश की षष्टेश से युति होने के कारण जातक शत्रुओं के द्वारा भी धन प्राप्त करने में सक्षम होगा।

2. **शुक्र + सूर्य**–ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ मास में प्रातः 5 बजे के लगभग होता है। जातक को माता पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक महाधनवान होगा तथा आवक के जरिए दो–तीन प्रकार से बने रहेंगे।
3. **शुक्र + चन्द्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा हो तो जातक गजान्त ऐश्वर्य को भोगेगा जातक की वाणी मीठी होगी परन्तु हड़बड़ाहट वाली होगी।
4. **शुक्र + बृहस्पति**–शुक्र के साथ बृहस्पति हो तो मुख रोग होगा।
5. **शुक्र + राहु**–की युति होने पर जातक आध्यात्मिक न होकर शराब, जुआ व भोग विलास में डूबा रहेगा। वैवाहिक जीवन में टकराव रहेगा
6. **शुक्र + मंगल**–की युति होने पर पति पत्नी में विवाद, कलह एव अहम् का टकराव होता रहेगा।
7. **शुक्र + शनि**–भाग्येश, दशमेश, शनि का धन स्थान में होना शुभ है। जातक धन कमाने की दृष्टि से भाग्यशाली होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में
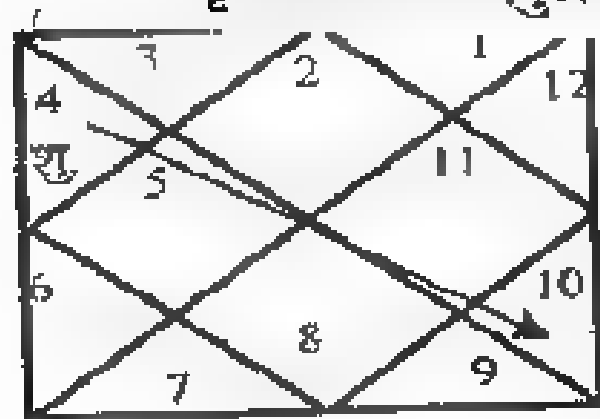
होने से एक दुःस्थान का स्वामी है। फलतः यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहा तीसरे स्थान में कर्क राशि में है तथा भाग्य स्थान (मकर राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

ऐसा जातक भाई व भागीदारों में लाभन्वित होता रहेगा। जातक स्त्रियों का विशेष सम्मान करने वाला तीर्थयात्रा, दूरस्थ प्रदेशों (विदेश) यात्रा से लाभ कमाने वाला होता है। ऐसे जातक को जन्मसर्क के कार्यों में लाभ, लेखन, विज्ञापन, एंजेन्सी, सौन्दर्य–प्रधान सामग्री इत्यादि से लाभ होने की सम्भावना रहती है।

निशानी–सत्यवान स्त्री का साथ रहेगा

दशा–शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। शनि अथवा बुध की दशा अन्तर्दशा में भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + चन्द्र**–यहां चंद्रमा स्वगृही होकर लग्नेश के साथ होगा। ऐसे जातक को भाई की पत्नी एवं भागीदार की पत्नी से लाभ होगा। जातक को स्त्री–मित्रों

से लाभ होगा। स्त्रियां इस जातक पर मुग्ध रहेंगी। जातक अन्य स्त्रियों से यौन सम्बन्ध भी स्थापित कर लेता है पर मानसिक रुप से विकृत होता है।

2. **शुक्र + सूर्य**—जातक अति पराक्रमी होगा। जातक का जन्म श्रावण मास में रात्रि 3 बजे के लगभग होगा। उसे भाई-बहन दोनों का सुख होगा।
3. **शुक्र + बुध**—बुध या शत्रु क्षेत्री होगा। जातक की बहनें अधिक होंगी। जातक विद्यावान व धनवान होगा।
4. **शुक्र + बृहस्पति**—उत्तम नौकरी व्यवसाय से धनलाभ मिलेगा। गृहस्थ सुख उत्तम होगा। बड़े भाई से लाभ रहेगा।
5. **शुक्र + मंगल**—यह युति मानसिक विकृति की संकेतक है। भाईयों का सुख रहेगा।
6. **शुक्र + शनि**—मलिन बुद्धि किन्तु जातक भाग्यशाली होगा। परिजनों से मनोमालिन्यता रहेगी।
7. **शुक्र + राहु**—भाईयों से शत्रुता, मानसिक रुग्णता।
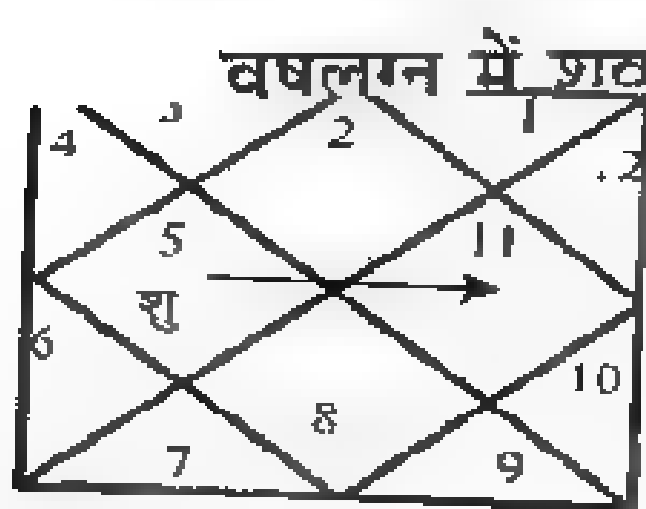
वृषलग्न में शुक्र की स्थिति

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दुःस्थान का स्वामी है, फलतः यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां चतुर्थ स्थान में सिंह (शत्रु) राशि मे है तथा दशम भाव (कुम्भ राशि) को पूर्ण दृष्टि में देख रहा है। ऐसे जातक वाहन, जमीन-जायदाद से युक्त सुखी व धनवान व्यक्ति होता है।

कुलदीपक योग—शुक्र केन्द्रवर्ती होने से जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होगा।

निशानी—भोजसंहिता के अनुसार जातक को बुजुर्गों की सम्पत्ति मिलती है। 32वें वर्ष में भाग्योदय होता है। शादी के चार वर्ष बाद खूब आराम मिलेगा। जिसे प्यार करता है वह स्त्री उम्र में बड़ी होगी।

विशेष—जातक 'डिप्लोमेट' होता है। एक समय में दो स्त्रियों मे सम्पर्क रखता है। जातक सभी प्रकार के भौतिक सुखों एवं ऐश्वर्य में परिपूर्ण जीवन को जीने वाला होता है। सन्तान सुख से युक्त होता है।

दशा—शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। बुध एवं शनि की दशा में जातक का विशेष भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–यहां सूर्य स्वगृही होगा एवं जातक का जन्म भाद्र माह की मध्य राशि को होगा। जातक परम तेजस्वी होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति तो मिलेगी पर उसमें विवाद रहेगा। जातक के पास दो-चार नौकर एवं चार पहियों वाली गाड़ी जरुर होगी। राज दरबार में जातक का दबदबा रहेगा।
2. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु या केतु हो तो पिता को कष्ट होगा। जातक का गृह निर्माण कष्टों में परिपूर्ण रहता है। माता को क्लेश ।
3. **शुक्र + शनि**–की युति भाग्योदय कारक है। जातक को पैतृक सम्पत्ति दिलाने में सहायक है प्रथम वाहन खरीदने के बाद जातक का भाग्योदय होगा। पिता को कष्ट होगा।
4. **शुक्र + बुध**–जातक शिक्षित होगा एवं एकाधिक वाहनों का स्वामी होगा।
5. **शुक्र + मंगल**–जातक टैक्नीकल व्यक्ति होगा। पराक्रमी एवं भूसंपत्ति का स्वामी होगा।
6. **शुक्र + बृहस्पति**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा। तीर्थाटन एवं धार्मिक
7. **शुक्र + चन्द**–जातक पराक्रमी होगा। जातक का जनसम्पर्क तेज रहेगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में
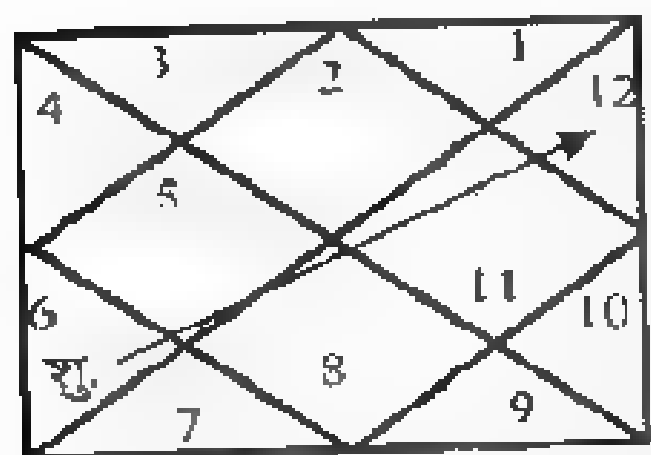
वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दुःस्थान का स्वामी है। फलतः यह अशुभ फलकारी भी है परन्तु लग्नेश कभी भी अशुभ फल नहीं देता। इस भाव में शुक्र अपने मित्र ग्रह बुध की कन्या राशि मे स्थित होकर नीच का है जो 27 अंशों में परम नीच का कहलाता है। पर लग्नेश शुक्र की त्रिकोण में यह स्थिति बली मानी गई है।

जातक को सुन्दर स्त्री व सुन्दर सन्तति का लाभ मिलता है। जातक प्रायः प्रेम विवाह करता है तथा अति चालाक व्यभिचारी एवं चरित्रहीन होता है। जातक दूसरों की सन्तति पर ताक रखता है। नर सन्तान विलम्ब में होती है। एक दो गर्भपात जरूर होते हैं।

निशानी–यदि शुभ पुरुष ग्रहो का प्रभाव शुक्र पर न हो तो जातक के वीर्य में क्रोमोसोम की कमी रहती है जिससे कन्या सन्तति की अधिकता रहेगी।

दशा—शुक्र की दशा में भाग्योदय होगा तथा बुध व शनि की दशाएं भी अति उत्तम लाभ एवं धन देने वाली साबित होंगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **नीचभंग राजयोग**—शुक्र यहां नीच का एवं बुध उच्च का होने में 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक अति धनवान होगा। प्रथम सन्तति कन्या होगी। प्रथम सन्तति के बाद जातक का भाग्योदय होता है।
2. **शुक्र + चन्द्र**—की युति भी प्रथम कन्या सन्तति देगी।
3. **शुक्र + बृहस्पति**—की युति गर्भपात एवं सन्तति की अकाल मृत्यु की संकेतक है।
4. **शुक्र + मंगल**—की युति अधिक रक्त स्राव एवं हाई ब्लडप्रेशर के कारण सन्तति का नाश बतलाता है।
5. **शुक्र + शनि**—की युति पुत्र सन्तति एवं कन्या सन्तति दोनों के लिए लाभप्रद है।
6. **शुक्र + राहु**—की युति अनुष्ठान के बाद पुत्र लाभ देती है, सौभाग्य में वृद्धि करती है। [illegible]
7. **शुक्र + सूर्य**—जातक शिक्षित होगा एव शिक्षित, सुसंस्कार युक्त पुत्र का पिता होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति षष्ट्म स्थान में
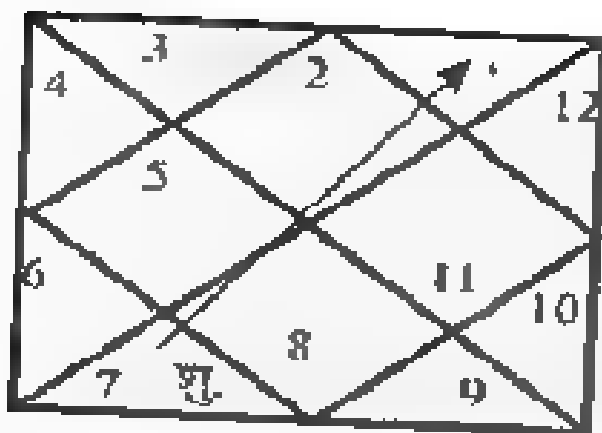
वृषलग्न में लिए शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दुःस्थान का स्वामी है। फलतः यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां तुला राशि में बैठकर द्वादश स्थान (मेष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

लग्नभंग योग—लग्नेश शुक्र छठे स्थान में होने से यह योग बना। ऐसे जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलता।

सरल योग—षष्टेश शुक्र छठे स्थान मे स्वगृही होने से यह योग बना। ऐसा जातक भयरहित, विद्वान, शत्रुओं को भयभीत करने वाला, सदैव विजय पाने वाला, समृद्धिशाली होता है।

निशानी—जातक के मामा, मौसी सुखी होते हैं।

विशेष–ऐसे जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकती है। ससुराल से, स्त्रियों से लाभ पाने वाला, नित्य वाहन रखने वाला तथा राजनीति में कूटनीतिज्ञ एवं दृढ़ निश्चयी होता है। शुक्र यहां कीमती हीरे के समान तेजस्वी है पर जातक की सन्तति नालायक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **किम्बहुना योग**–शुक्र और शनि की युति से शुक्र स्वगृही एवं शनि उच्च का होगा। इससे अधिक और क्या? ऐसा जातक उच्च वाहन का स्वामी होगा परन्तु वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा। व्यापार, व्यवसाय में बहुत धन कमाएगा।
2. **शुक्र + चन्द्र**–'पराक्रमभंग योग' बनेगा। जातक उदासीन मनोवृत्ति वाला होगा।
3. **शुक्र + बुध**–बुद्धि बल बढ़ेगा परन्तु धन प्राप्ति हेतु, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने हेतु संघर्ष रहेगा।
4. **शुक्र + सूर्य**–जातक बुद्धिमान होगा। सूर्य के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक ऐश्वर्यशाली एवं प्रतापी होगा।
5. **शुक्र + बृहस्पति**–शुक्र 'हर्ष योग' में एवं बृहस्पति 'सरल योग' में होगा।
6. **शुक्र + मंगल**–मंगल यहां दोष रहित है क्योंकि द्वादशेश होकर छठे स्थान से 'विमल योग' बना। जातक में धन की विशेष ललक रहती है।
7. **शुक्र + राहु**–जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। जातक लालची होता है।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
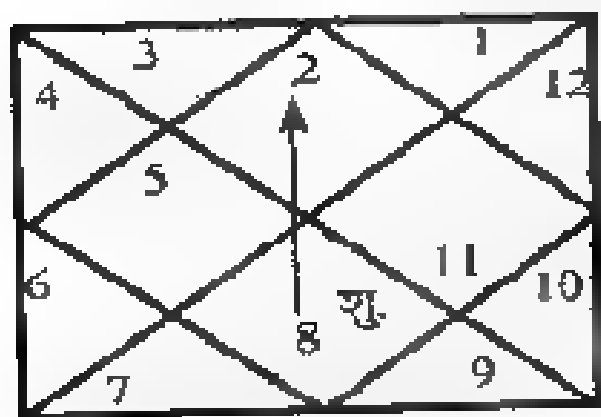
वृषलग्न में के लिए शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां वृश्चिक में बैठकर अपने घर (वृष राशि) को देखेगा।

कुलदीपक योग–शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

ऐसा जातक अपनी किस्मत आप चमकाने वाला, 25वें वर्ष में भाग्योदय की ओर बढ़ने वाला, सुंदर नारी एवं ससुराल से सम्पत्ति पाने वाला, सुखी गृहस्थ जीवन जीने वाला, निजी व्यवसाय एवं व्यापार में धन कमाने वाला जातक होता है

दशा—शुक्र की दशा में जातक के व्यक्तित्व का सुंदर विकास होगा। शनि की दशा में भाग्योदय एवं बुध की दशा अच्छी जाएगी। इस बात का ध्यान रहे कि बृहस्पति मारकेश का काम करेगा।

निशानी—ऐसा जातक जब तक कमाएगा, सफर करता रहेगा। घर (जन्म स्थान) पर कम, सफर में अधिक रहेगा। सफर से जिन्दा वापस आएगा, परदेस में या यात्रा में मौत कभी नहीं होगी।

विशेष—जातक कला-प्रेमी व रसज्ञ होगा। अनायास धन प्राप्ति एवं राजनीति में सफलता के अवसर मिलते रहेंगे। आयु पर्यन्त पति-पत्नी की जोड़ी सलामत, माता पिता की हालत उत्तम होगी। व्यवहार में नरमी रहेगी। धन कमाने में जातक का परिश्रम निरर्थक नहीं जाएगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + मंगल**—इस योग के कारण 'रुचक योग' बना। ऐसा जातक उच्च वाहन का स्वामी, अच्छे भवन का स्वामी, नौकर-चाकर से युक्त परम तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होता है।
[illegible] होगा।
[illegible] युति राजयोग कारक है। जातक प्रेम विवाह करेगा।
4. **शुक्र + शनि**—की युति सफलता दायक है। जातक परम भाग्यशाली होगा।
5. **शुक्र + बृहस्पति**—जातक परम्परागत विवाह में रुचि रखेगा। व्यापार में लाभ कमाएगा।
6. **शुक्र + सूर्य**—जातक प्रबल पराक्रमी एवं सफल व्यक्ति होगा।
7. **शुक्र + राहु**—कामासक्ति में वृद्धि एवं दाम्पत्य सुख में बाधा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में
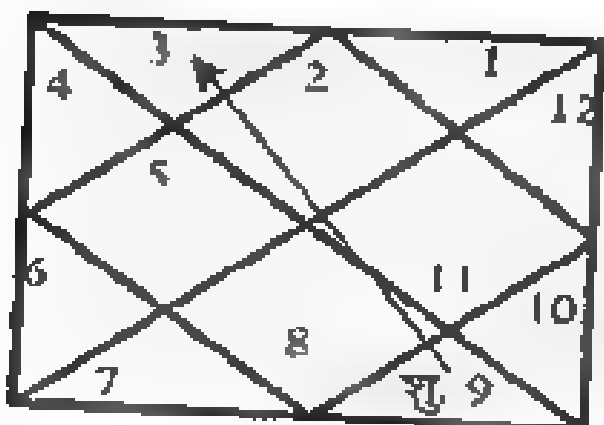
वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहां धनु राशि में होकर द्वितीय (धन) भाव (मिथुन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

लग्नभंग योग—लग्नेश शुक्र अष्टम में जाने से व्यक्ति स्त्री से डरकर रहने वाला, ससुराल की नैय्या डुबोने वाला, कृतघ्न,

भाई-बहनों से झगड़ने वाला, परिश्रम का फल न पाने वाल, हतोत्साही व्यक्ति होता है। ऐसा जातक शत्रुओं से भयभीत रहता है।

हर्ष योग–छठे घर का स्वामी होकर शुक्र आठवें जाने से यह योग बना। आयु की दृष्टि से यह योग शुभ है

सावधानी–किसी की कसम खाना, किसी की जमानत देना ठीक नहीं रहेगा। बिना बात किसी की पंचायती करना भी ठीक नहीं रहेगा।

उपाय–1. गाय दान करने से किस्मत चमकेगी।

2 तांबे का पैसा और सफेद पुष्प 27 शुक्रवार गदे पानी में डालते रहें और मंदिर में सिर झुकाते रहें तो शत्रु अपने आप (खुद की हरकतो स ही) नष्ट होंगे।

दशा–शुक्र की दशा में उत्साह, धैर्य व बुद्धि चातुर्य से योजना में सफलता मिलती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + गुरु**–यह युति ज्यादा शुभ नहीं है। ऐसा जातक गुप्तांग मे बीमारी भोगने वाला होता है। स्वयं की पत्नी में अनबन कर अन्य स्त्रियों पर खर्च करने वाला, व्यक्ति होता है। जीवन में दो-तीन बार आपरेशन कराने का योग जरूर बनेगा। अष्टमेश अष्टम मे स्वगृही होने से 'सरल योग' जातक को दीर्घायु प्रदान करेगा।
2. **शुक्र + चंद्रमा**–इस युति से व्यक्ति शराबी होगा। मित्रों से धोखा मिलेगा।
3. **शुक्र + सूर्य**–'सुखभंग योग' के कारण सुख प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **शुक्र + बुध**–'धनहीन' व 'सन्तानहीन' योग के साथ अष्टम भावस्थ बुध सन्तान एवं विद्या प्राप्ति से असंतोष देगा।
5. **शुक्र + मंगल**–गुप्तरोग की संभावना, पत्नी से अनबन सभव।
6. **शुक्र + शनि**–'भाग्यहीन योग', 'राजहीन योग' के कारण सही नौकरी, व्यवसाय की प्राप्ति हेतु सघर्ष बना रहेगा।
7. **शुक्र + राहु**–व्यक्ति शराबी, व्यभिचारी होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ नहीं होता। शुक्र यहा मकर राशि में बैठकर पराक्रम स्थान (कर्क राशि) को देखेगा। ऐसे जातक का जन्म
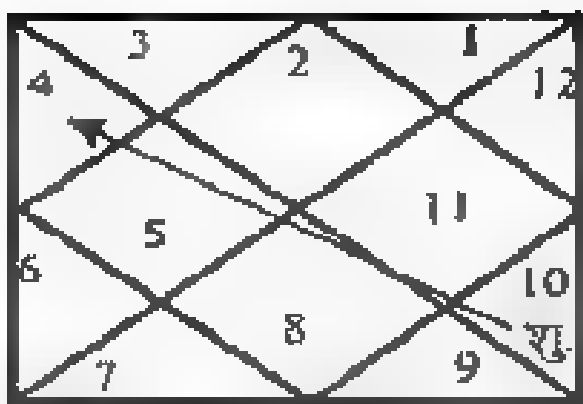
माता-पिता, दादा-दादी के लिए शुभ होता है। ऐसा जातक अपने बाप-दादाओं की सम्पत्ति को बढ़ाने वाला, सुलझे हुए विचारों वाला व्यक्ति होता है।

स्वभाव–जातक शनि के स्वभाव सा शैतान, चालाक व होशियार होगा। जवानी में सदाबहार फूलों की तरह पराई स्त्री से संपर्क करने के बहुत-से अवसर मिलते रहेंगे जिसे जातक छोड़ेगा नहीं। जातक धार्मिक होते हुए भी रसिक स्वभाव का होगा।

निशानी–पति हल्का एवं स्त्री हृष्ट-पुष्ट होगी। पत्नी मद से भरी हुई, कामदेव की प्रतिमूर्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + शनि**–यह युति अति उत्तम फल देगी। शनि यहा स्वगृही होगा एव पद सिंहासन योग बनाएगा। जातक व्यभिचारी होगा। अपने से बड़ी उम्र की स्त्री के साथ सहवास करेगा।
2. **शुक्र + चन्द्र**–जातक अति पराक्रमी होगा।
3. **शुक्र + मंगल**–मंगल यहां उच्च का होगा। कर्क व मगल मारकेश होने से शुभ फलदायक नहीं है। यह युति ज्यादा उत्तम फल देने वाली नहीं है। जातक धृष्ट एवं दु:साहसी होगा।
4. **शुक्र + बुध**–की युति हो तो जब तक स्त्री साथ रहेगी जातक के साथ कोई अप्रिय हादसा नहीं होगा। अर्थात् स्त्री के साथ मोटर कार, बस, रेल में कहीं जा रहा हो कुदरत की ओर से कोई दुर्घटना होने को हो तो जब तक स्त्री नीचे न उतरे हादसा नहीं होगा। स्त्री के बैठे मकान नहीं गिरेगा, स्त्री के बैठे शत्रु नकसान नहीं पहुंचा पाएंगे।
5. **शुक्र + सूर्य**–जातक महा भाग्यवान, उत्तम वाहन में युक्त होगा।
6. **शुक्र + बृहस्पति**–यह युति भाग्य में वृद्धि दायक है।
7. **शुक्र + राहु**–जातक के पिता को कष्ट होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्ठेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ फल नहीं देता। शुक्र यहां
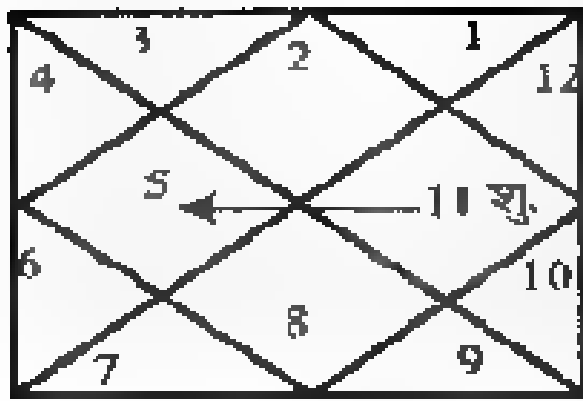
कुम्भ राशि में बैठकर चतुर्थ स्थान (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

कुलदीपक योग—शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना। शुक्र उच्चाभिलाषी है। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब, परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।

ऐसा जातक इंसाफ को तोलने वाला (न्यायाधीश), वकील, उच्च राजपुरुष या राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है

स्वभाव—जातक शनि के स्वभाव का होगा। शैतान, चालाक एवं होशियार होगा। खुफिया काम करने वाला, हरदम मिजाज बदलता रहेगा।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + शनि**—शनि यहा स्वगृही होने से 'शशयोग' एव 'पद्मसिंहासन योग' बनाएगा। यह युति यहां खिलेगी क्योंकि यह राजयोग कारक है। ऐसा जातक राजा या राजमंत्री, आई.ए.एस. अधिकारी होता है।
2. **शुक्र + चन्द्र**—भृगुसूत्र के अनुसार **'अनेकवाहनारोणम्'** जातक सभी प्रकार के सुखों से युत होगा।
3. **शुक्र + बुध**—जातक को उच्च शिक्षा मिलेगी। भृगुसूत्र के अनुसार **'अनेकवाहनारोहरणम्'**
4. **शुक्र + सूर्य**—भृगुसूत्र के अनुसार **'बहुभाग्यवान् वाचाल'** जातक सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा।
5. **शुक्र + मंगल**—मंगल यहां दिग्बली होने से जातक को राजा तुल्य सुख, ऐश्वर्य देगा
6. **शुक्र + बृहस्पति**—**'बहुभाग्यवान'** केन्द्रस्थ बृहस्पति **'केसरी योग'** के कारण शुक्र के साथ प्रचुर लाभ देगा।
7. **शुक्र + राहु**—राजनीति में सफलता मिलेगी। जातक पराक्रमी होगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ फल नहीं देता। शुक्र
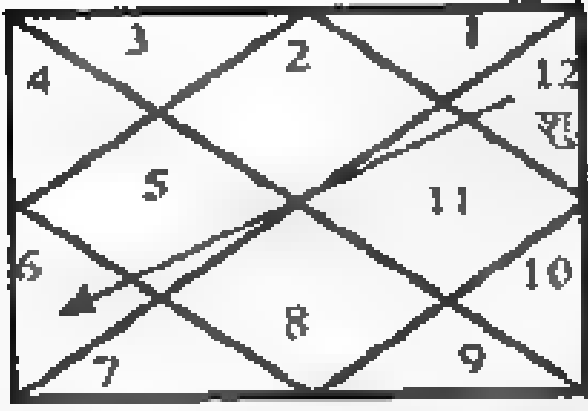
यहां मीन राशि में बैठकर पंचम स्थान (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। शुक्र उच्च का है।

ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है और अपने भाई बहनों व परिजनों से विरोध पाने वाला होता है। प्राय: व्यापारी होता है एवं व्यापार में बार-बार परिवर्तन करता रहता है। जातक धनवान होगा।

निशानी—ऐसे व्यक्ति के प्राय: कन्याएं अधिक होती हैं तथा स्त्री के एक भाई होता है। ऐसा जातक ज्योतिष, अध्यात्म, व गुप्त विद्याओं का जानकार होता है।

दशा—शुक्र की दशा जातक का भाग्योदय कराएगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + बुध**—की युति से यहां 'नीचभंग राजयोग' बना। ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली होता है। यद्यपि कुछ विद्वानों ने इस युति को निष्फल माना है परन्तु जातक के पास एकाधिक वाहन होते हैं।
2. **शुक्र + बृहस्पति**—की युति यद्यपि 'किम्बहुना योग' की सृष्टि करती है क्योंकि यहां शुक्र उच्च का एवं बृहस्पति स्वगृही होगा परन्तु यह युति ज्यादा शुभ फलदायक नहीं है क्योंकि बृहस्पति अष्टमेश होने से मारकेश का फल देगा।
3. **शुक्र + शनि**—यह युति 'अनेक वाहन योग' दिलाती है। भाग्येश शनि का उच्च के शुक्र साथ होना सुखद बात है।
4. **शुक्र + चन्द्र**—तृतीयेश चद्रमा के उच्च लग्नेश के साथ होने से जातक राजा तुल्य पराक्रमी होता है।
5. **शुक्र + सूर्य**—भृगुसूत्र के अनुसार 'विद्वान बहुधनवान् भूमि लाभ' जातक को पुत्र लाभ जरूर होगा।
6. **शुक्र + बुध**—जातक को उच्च शिक्षा मिलेगी। प्रथम सन्तति कन्या होगी।
7. **शुक्र + राहु**—राहु यहां लाभ के अंश को तोड़ेगा।

वृषलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में

वृषलग्न में शुक्र लग्नेश व षष्टेश होने से एक दु:स्थान का स्वामी है। फलत: यह अशुभ फल प्रदाता भी है परन्तु लग्नेश कभी अशुभ फल नहीं देता। शुक्र यहां द्वादश स्थान में बैठकर छठे स्थान (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।
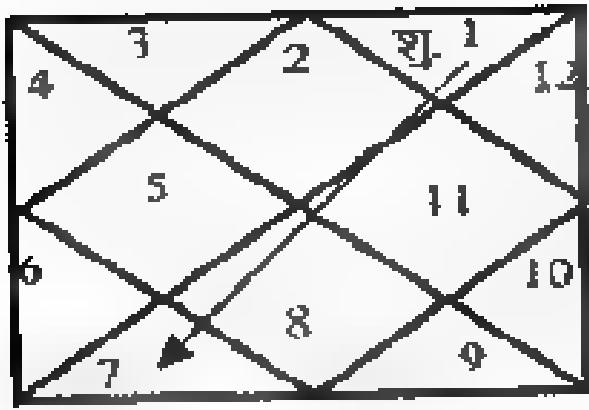
लग्नभंग योग—लग्नेश शुक्र बारहवें होने से यह योग बना। ऐसे जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक बाप दादाओं की सम्पत्ति खर्च करने वाला आमदनी से अधिक रुपया खर्च करने वाला, घुमक्कड़ प्राणी होता है।

निशानी—जातक की स्त्री बीमार रहेगी।

विशेष—ऐसा जातक राजनीति में पैठ जमाने वाला परन्तु स्त्री व संतान से अनादर पाने वाला व्यक्ति होता है।

उपाय—गाय पालें या गाय का दान करें। स्त्री के हाथ में नीले रंग का पुष्प घर के बाहर वीराने में दबाने से सभी कष्ट दूर होगे। यह प्रयोग 27 शुक्रवार तक करना चाहिए।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + मंगल**—शुक्र, मंगल की युति यहां शुभ नहीं होगी क्योंकि मंगल मारकेश है। द्वादश स्थान में कुण्डली मंगली होने से विवाह सुख में यह युति बाधक होगी।
2. **शुक्र + शनि**—शुक्र शनि की युति से यहा शनि नीच का होगा। बारहवें शनि (भाग्यभंग योग) की सृष्टि करेगा। फलतः यह युति यहा ज्यादा सार्थक न होकर प्रतिकूल फल देगी।
3. **शुक्र + बुध**—बुध व शुक्र की युति विद्या में बाधक तथा धन प्राप्ति में रुकावट देगी।
4. **शुक्र + चन्द्र**—शुक्र+चन्द्र की युति पराक्रम भंग करेगी। मित्र धोखा देंगे।
5. **शुक्र + बृहस्पति**—शुक्र व बृहस्पति की युति व्यापार में हानिकारक है। व्यक्ति धार्मिक, परोपकारी व दानी होगा।
6. **शुक्र + शनि**—भृगुसूत्र के अनुसार 'शनियुतेविषयलुब्धः' जातक कामी एव दुराचारी होगा।
7. **शुक्र + राहु**—भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते नाकःप्राप्ति' जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

❑❑❑

वृषलग्न में शनि की स्थिति

वृषलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
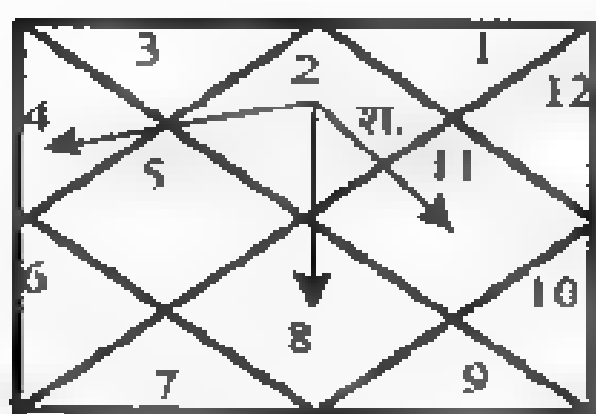
वृषलग्न मे शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। यहां लग्नस्थ शनि वृष राशि में है। वृष राशि शनि की मित्र राशि है। लग्नस्थ राशि अपनी राशि से चतुर्थ एवं पंचम स्थान पर होगा। परिणाम स्वरूप जातक अपने कुटुम्ब-परिवार को विष्णु की तरह पालने वाला, परिश्रमी, विवेकी, बुद्धिमान, उच्च पदासीन, शक्की, एकांतवासी और कुछ उदासीन स्वभाव का होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि तृतीय भाव (कर्क राशि) सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) एवं दशम भाव अपने ही घर (कुम्भ राशि) को देखेगा। फलतः पराक्रम में वृद्धि, दाम्पत्य सुख में वृद्धि, नौकरी में पदोन्नति, व्यापार, व्यवसाय में उन्नति देगा।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा में भाग्योदय होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + शुक्र**–शुक्र यहां स्वगृही होकर 'कुलदीपक योग' बनाएगा। जातक सौभाग्यशाली एवं कूटनीतिज्ञ होगा पर पति-पत्नी में वैमनस्य रहेगा।
2. **शनि + चन्द्र**–शनि+चन्द्र की युति जातक को परम सौभाग्यशाली बनाएगी यहां **'पद्मसिंहासन योग'** जिसके कारण साधारण परिवार में जन्म लेकर भी जातक कीचड़ में कमल की तरह उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
3. **शनि + बुध**–यह युति वृषलग्न में सबसे सफल व श्रेष्ठ युति मानी गई है क्योंकि यहां शनि राजयोग कारक है वहां बुध की त्रिकोण का स्वामी होने से परमराजयोग कारक है, साथ ही बुध धनेश भी है। फलतः यह युति चार

करणों से सर्वाधिक शक्तिशाली युति कहलाती है। (1) धनेश+भाग्येश की युति (2) धनेश+राज्येश की युति (3) पंचमेश+भाग्येश की युति (4) पंचमेश+राज्येश की युति यहां पर लग्न स्थान में यदि शनि+बुध की युति हो तो जातक आयु के बाद महाधनवान होगा। प्रबल भाग्यशाली होगा। अपने परिश्रम एवं स्वयं के पुरुषार्थ से आगे बढ़ेगा। जातक राजा के समान उत्तम ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगेगा। उसके पुत्र उसकी आज्ञा में रहेंगे।

4. **शनि + सूर्य**–सूर्य शनि की युति यहां सफलतादायक है पर बौद्धिक विकास में बाधक है।
5. **शनि + मंगल**–भाग्येश, दशमेश शनि का मंगल के साथ लग्न स्थान में होना शुभ फलदायक है। जातक धनी व उद्यमी होगा पर हठी बहुत होगा जातक क्रोधी भी होगा।
6. **शनि + बृहस्पति**–अष्टमेश बृहस्पति की शनि के साथ युति ज्यादा शुभ फलदायी नहीं है। चहुंमुखी विकास में रुकावट, भाग्योदय प्रायः धीमी गति से होगा।
7. **शनि + राहु**–ऐसा जातक जिद्दी व हठी स्वभाव का होता है, पर भाग्यशाली होता है।

वृषलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में
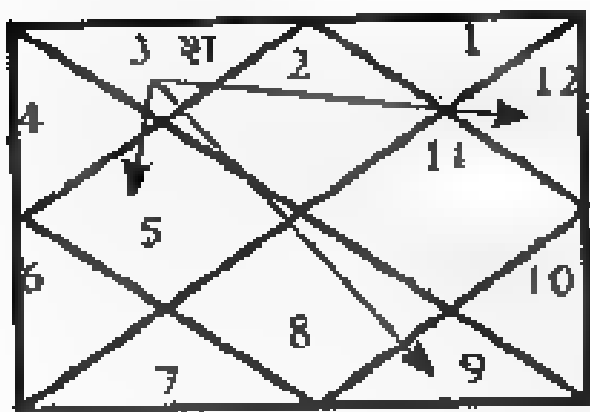
वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश होने से परमयोगकारक एवं अति शुभफलदायी ग्रह है। यहां धनभाव मे स्थित शनि मिथुन राशि में है। मिथुन राशि शनि की मित्र राशि है। आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यावसायिक वृद्धि हेतु शनि की यह स्थिति श्रेष्ठ है। ऐसे जातक अपार धन अर्जित करने में सक्षम होते हैं।

दृष्टि–द्वितीय भावगत मिथुन राशि के शनि की दृष्टि तृतीय भाव (सिंह राशि), अष्टम भाव (धनु राशि) एवं लाभ भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा पर सुख में कोई न कोई कमी रहेगी। आयु दीर्घ होगी। व्यापार में लाभ होता रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक धनार्जन करेगा एवं उसका भाग्योदय होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + बुध**–शनि+बुध की युति यह सबसे श्रेष्ठ स्थिति होगी क्योंकि यह युति दोनों परमराजयोग कारक ग्रहों की युति होगी। यहां बुध स्वगृही होने से ज्यादा

सबसे ज्यादा बलवान है। बलवान धनेश की भाग्येश से युति होने के कारण 'भाग्यमूल धनयोग' एवं 'राज्यमूल धनयोग' की सृष्टि होती है। ऐसा जातक पैतृक सम्पत्ति को प्राप्त करता हुआ परम सौभाग्यशाली होता है। राज्य सरकार और जनता से सम्मान पाता है।

2. **शनि + सूर्य**—नवमेश, दशमेश शनि का सुखेश सूर्य के साथ होना शुभ है। जातक का भाग्योदय पिता के गुजरने के बाद होगा। जातक का भाग्य प्रबल रहेगा।
3. **शनि + चन्द्र**—भाग्येश, दशमेश का धन स्थान में होना शुभ संकेत है। जातक अपने पराक्रम से, पुरुषार्थ से स्वयं का भाग्योदय करेगा। जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय से धन कमाएगा।
4. **शनि + मंगल**—मगल+शनि की युति वाणी में अहंकार एव धूर्तता को बताती है, अथवा नेत्र विकार भी संभव है। भाग्येश, दशमेश के धन स्थान में जाने से जातक लॉटरी, सट्टा या अनैतिक कार्यों से फटाफट धनवान होना चाहेगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—अष्टमेश बृहस्पति का धनवान में होना ज्यादा शुभ नहीं। धन की प्राप्ति तो होगी पर धीमी गति से होगी।
6. **शनि + शुक्र**—जातक धन कमाने की दृष्टि से भाग्यशाली होगा।
7. **शनि + राहु**—भाग्येश, राज्येश शनि जहां धन की आवक को बराबर बनाए रखेगा वहीं राहु खर्च में बढोतरी करके जातक को खर्चीले स्वभाव का बनाएगा पर जातक का कोई काम धन की कमी से अटका नहीं रहेगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में
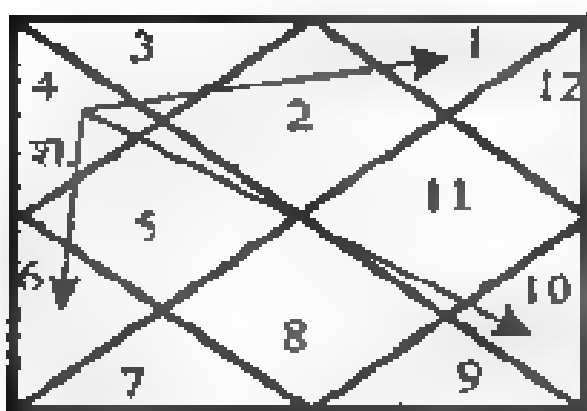
वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अत: शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभफलदायी ग्रह है। यहां द्वितीय भाव में स्थित शनि कर्क राशि में है। कर्क राशि शनि की शत्रु राशि है परन्तु ज्योतिष शास्त्र के अनुसार तृतीय, षष्ठ और एकादश स्थान 'उपचय' स्थान कहलाते हैं। उपचय स्थान में स्थित नैसर्गिक पापग्रह शुभ फल देते हैं। ऐसा जातक राज्याधिकारी एवं पराक्रमी होगा। ऐसा जातक भाइयों परिजनों का शुभचिन्तक होगा पर दूसरों का बिगाड़े, और आप सुख पावे वाली प्रवृत्ति रहेगी।

निशानी—जातक को छोटे भाई का सुख न होगा।

दृष्टि- तृतीय भावस्थ कर्क राशिगत शनि की दृष्टि पंचम भाव (कन्या राशि) नवम भाव अपने स्वयं के घर (मकर राशि) एवं द्वादश भाव (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक को उत्तम संतति मिलेगी। जातक का भाग्य 36 वर्ष की आयु में चमकेगा। यात्राओं (विदेश) के द्वारा भी जातक को लाभ होगा।

दशा-शनि की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्य उदय होगा, पराक्रम बढ़ेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **शनि + सूर्य**-भाग्येश शनि की सुखेश सूर्य के साथ तृतीयेश भाव में युति होने से परिजनों में प्रेम नहीं रहेगा। जातक को बड़े भाई व छोटे भाई का सुख नहीं रहेगा।
2. **शनि + चन्द्र**-जातक स्वार्थी होगा पर भाग्यशाली होगा। मित्रों की मदद से आगे बढ़ेगा।
3. **शनि + बुध**-कर्कस्थ शनि के साथ बुध की युति जातक को पराक्रमी बनाएगी। जातक भाग्यशाली होगा।
4. **शनि + मंगल**-दशमेश, नवमेश शनि की तृतीयस्थ नीच के मंगल के साथ युति होने से जातक के छोटे भाई की मृत्यु हो जाएगी। जातक अपने परिजनों से द्वेष रखेगा। मित्र मददगार होंगे पर पीठ पीछे बुराई करेंगे।
5. **शनि + बृहस्पति**-यहां कर्कस्थ बृहस्पति शनि के साथ उच्च का होगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। भाग्य भी ठीक रहेगा। उन्नति शीघ्र होगी।
6. **शनि + शुक्र**-कर्कस्थ शनि के साथ शुक्र की युति से जातक भाग्यशाली तो होगा परन्तु परिजनों से मनोमालिन्यता बनी रहेगी।
7. **शनि + राहु**-कर्कस्थ शनि के साथ राहु होने पर जातक परम पराक्रमी होगा एवं भाग्यशाली होगा। यारी-दोस्ती में खूब पैसा उड़ाएगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में
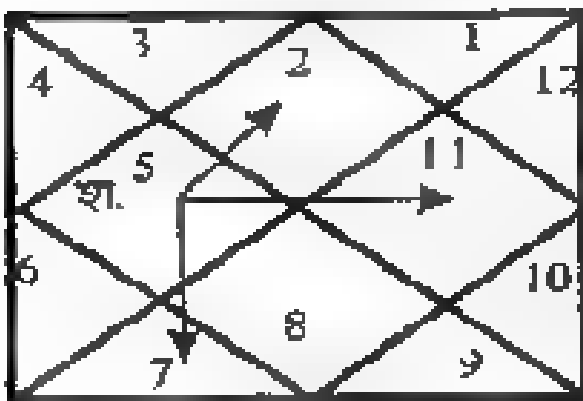
वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभफलदायी ग्रह है चतुर्थ भाव में शनि सिंह राशि का होगा। सिंह, शनि की शुभ राशि है। शनि सूर्य का पुत्र है फिर भी वह पिता सूर्य से वैमनस्य रखता है।

अतः सिंह राशि में शनि उद्विग्न व उदास रहता है फिर भी ऐसे जातक को मकान वाहन का पूर्ण सुख मिलता है। ऐसे जातक को विदेश यात्रा एवं व्यापार से लाभ होता है, मनुष्य गभीर व शांत स्वभाव का होगा।

दृष्टि—सिंह राशि में स्थित चतुर्थ भावस्थ शनि की दृष्टि छठे स्थान (तुला राशि), दसवें स्थान (कुम्भ राशि) एवं लग्न स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलतः शत्रुओं में वृद्धि, कार्य में प्रगति एवं समाज में प्रतिष्ठा रहेगी।

निशानी—माता-पिता से मतभेद रहेगा।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसके सांसारिक एवं सभी सुखों में वृद्धि होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—शनि के साथ सूर्य की युति यहां ज्यादा सार्थक नहीं है। पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
2. **शनि + चन्द्र**—तृतीयेश व भाग्येश की युति केन्द्र में लाभदायक है। यहा शनि अपने घर (कुम्भ राशि) एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक द्वारा किया गया परिश्रम सार्थक रहेगा। जातक अपने समाज में सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। कोर्ट-कचहरी में इसको सदैव विजय मिलेगी।
3. **शनि + बुध**—नौकर दगा देंगे। वाहन से अनिष्ट होगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
4. **शनि + मंगल**—भाग्येश, दशमेश शनि की युति चतुर्थ भाव में मंगल के साथ होने से शनि अपने घर (कुम्भ राशि) एवं लग्न (वृष राशि) को देखेगा। फलतः जातक उद्योगपति या बड़ा व्यापारी होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—सिंहस्थ शनि के साथ बृहस्पति ज्यादा शुभ नहीं है। जातक कुल का दीपक होगा, परन्तु सुख-संसाधनों की प्राप्ति में बाधा रहेगी।
6. **शनि + शुक्र**—यह युति भाग्योदय कारक है। प्रथम वाहन खरीदने के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **शनि + राहु**—सिंहस्थ शनि के साथ राहु होने पर माता की मृत्यु, वाहन से दुर्घटना, अग्निकांड का भय बना रहेगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में

वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहा परम राजयोग एवं अति शुभफलदायी ग्रह है। पंचम भावस्थ शनि कन्या राशि का होगा। यहां शनि अपने
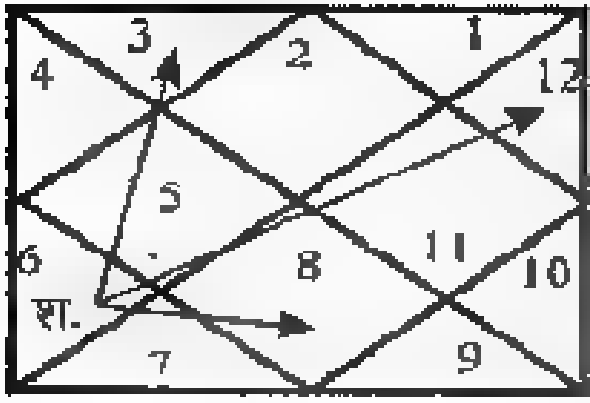
मित्र बुध की राशि में होकर हर्षित है। ऐसे जातक को स्त्री सुख, पुत्र सुख, धन सम्पत्ति सुख, मकान वाहन सुख पूर्ण मिलता है। जातक प्रतियोगी परीक्षाओं, व्यापार-व्यवसाय की स्पर्धाओं में आगे रहता है। शेयर, सट्टा, जुआ, लाटरी, अचानक भाग्योदय कराने वाले कार्यों मे जातक की भरपूर रुचि रहती है।

दृष्टि—कन्या राशिगत पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) एकादश भाव (मीन राशि) एवं धन भाव (मिथुन राशि) पर रहेगी। फलतः जातक को गृहस्थ सुख, व्यापार सुख एवं धन प्राप्ति का पूर्ण सुख समय-समय पर मिलता रहेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे विद्या, विवाह एवं सन्तति का सुख मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—शनि के साथ सुखेश सूर्य नीचाभिलाषी है। फलतः विद्याध्ययन मे बाधा व संघर्ष की स्थिति रहेगी।
2. **शनि + चन्द्र**—तृतीयेश चन्द्र की भाग्येश के साथ त्रिकोण में युति केन्द्र+त्रिकोण सम्बन्ध करके जातक को उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ाएगी.
3. **शनि + मंगल**—शनि+मंगल की युति यहां पर पुनः केन्द्र+त्रिकोण सम्बन्धों पर आधारित एक उत्तम युति होगी। जातक चालाक एवं स्वार्थी बुद्धि से युक्त होकर यथेष्ट धन अर्जित करेगा।
4. **शनि + बुध**—यहां 'भाग्यमूल धनयोग' बनेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक भाग्यशाली होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—भृगुसूत्र के अनुसार 'गुरुदृष्टे स्त्रीद्वयम्' जातक की दो पत्नियां होंगी। प्रायः जातक को प्रथम पुत्र एवं द्वितीय पुत्री होती है।
6. **शनि + शुक्र**—यह युति पुत्र सन्तति एवं कन्या सन्तति दोनों के लिए लाभप्रद है।
7. **शनि + राहु**—भृगुसूत्र के अनुसार 'पुत्रहीनः दरिद्रोः' जातक को पुत्र सन्तति में बाधा होती है। धन प्राप्ति में भी बाधा रहती है।

वृषलग्न में शनि की स्थिति षष्ठ्म स्थान में

वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। षष्टमस्थ शनि तुला राशि में उच्च का होगा। तुला राशि
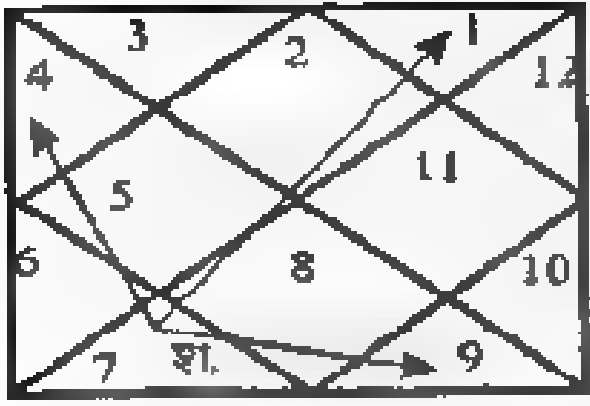
के 20 अंशों में शनि परम उच्च का होता है। यहां उपचय स्थान मे होने के कारण नैसर्गिक पाप ग्रह होते हुए भी शनि शुभ फल देगा। यद्यपि शनि छठे जाने से 'भाग्यभंग योग' एव 'राज्यभंग योग' की सृष्टि हुई है। जातक भाग्यशाली व धनवान होता है, परन्तु मानसिक रूप से परेशान रहता है। कानून व न्याय का जानकार, तर्कशास्त्री होता है।

दृष्टि—छठे स्थान में तुला राशिगत शनि की दृष्टि अष्टम भाव (धनु राशि) द्वादश भाव (मेष राशि) एवं तृतीय भाव (कर्क राशि) पर रहेगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा, दीर्घायु होगा एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी—विवाह विलम्ब से होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—शनि, सूर्य की युति के कारण यहां 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि हुई। सरकारी नौकरी के रास्ते बंद, फिर भी जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
2. **शनि + चन्द्र**—शनि यहां चंद्रमा के साथ छठे स्थान पर जाने से 'भाग्यभग योग', 'राज्यभंग योग' बना, परन्तु शनि उच्च का है। अतः चंद्रमा का अशुभत्व नष्ट हो गया है। जातक पराक्रमी होगा।
3. **शनि + मंगल**—भृगुसूत्र के अनुसार 'कुजमुतेदेशान्तरसंचारी' शनि मंगल की युति जातक को देश-विदेश मे घुमाती है।
4. **शनि + बुध**—भृगुसूत्र के अनुसार जातक के जातिबंधु, परिजन ही जातक के शत्रु होंगे।
5. **शनि + बृहस्पति**—तुला राशिगत शनि के साथ अष्टमेश बृहस्पति की युति शुभ है। जातक शत्रुओं का नाश करने में समर्थ रहेगा।
6. **शनि + शुक्र**—यहा 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? जातक व्यापार-व्यवसाय में खूब धन कमाएगा।
7. **शनि + राहु**—यहा शनि के साथ राहु होने से जातक के भाग्य में निरन्तर अवरोध आते रहते हैं।

वृषलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में

वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहा परम राजयोग कारक एवं अति शुभफलदायी ग्रह है। सप्तम भाव में स्थित शनि वृश्चिक राशि का होगा।
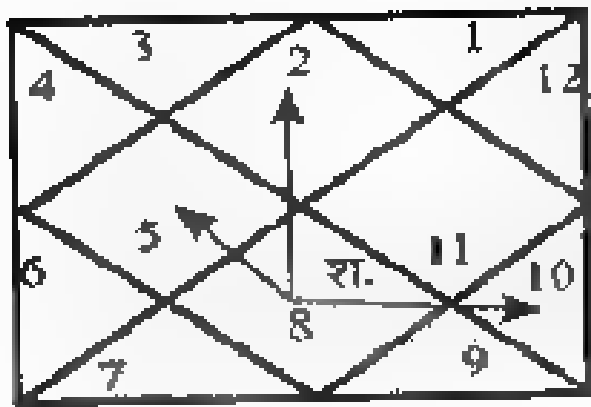
वृश्चिक शनि के शत्रु (मंगल) की राशि है। परन्तु शनि यहां अपनी मूलत्रिकोण राशि से दसवें स्थान पर होने के कारण 'दिग्बली' है। अत: शतप्रतिशत शुभ फल ही देगा। जातक की आमदनी हजारों लाखों में होगी। जातक हठी, अत्यन्त धनी व कूटनीतिज्ञ होगा। जातक राज्याधिकारी होगा अथवा राजनीति में उच्च पद प्राप्त करेगा।

दृष्टि–सप्तम भावगत वृश्चिक राशि में स्थित शनि की दृष्टि भाग्य भवन अपनी ही राशि मकर, लग्न भाव (वृष राशि) एवं चतुर्थ भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: भाग्य में तरक्की, व्यक्तित्व में निखार एव भौतिक सुखों में वृद्धि कराएगा।

दशा–शनि की दशा भाग्योदय कराएगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चन्द्र**–यह युति स्वभाव में चंचलता समाप्त कर, जातक को गंभीर स्वभाव का बनाएगी. जातक का नाम भाग्यशाली व्यक्तियों में होगा।
2. **शनि + सूर्य**–ऐसे जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा। सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
3. **शनि + मंगल**–भाग्येश, दशमेश शनि का केन्द्रस्थ होकर मंगल से युत होना शुभ है व भाग्योदय में सहायक है। परन्तु जातक की पत्नी हठी, जिद्दी व अहंकारी होगी।
4. **शनि + बुध**–यह युति यहां जातक को वेश्यागामी बना देगी। जातक अपने से बड़ी उम्र की स्त्रियों के साथ सहवास करेगा। जातक भाग्यशाली होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–अष्टमेश बृहस्पति का सप्तम स्थान में शनि के साथ होना गृहस्थ सुख में बाधक है।
6. **शनि + शुक्र**–जातक परम भाग्यशाली होगा। यह युति सफलतादायक है।
7. **शनि + राहु**–यहां शनि के साथ राहु होने से गृहस्थ सुख में भयंकर बाधा, तलाक, बिछोह या जीवन साथी की मृत्यु भी हो सकती है।

वृषलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

वृषलग्न मे शनि भाग्येश एव राज्येश है। अत: शनि यहा परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। अष्टमस्थ शनि यहां धनु राशि में होगा। यहां शनि उद्विग्न व बेचैन रहेगा। शनि के अष्टम स्थान में जाने से 'भाग्यभंग योग' व 'राज्यभंग योग'
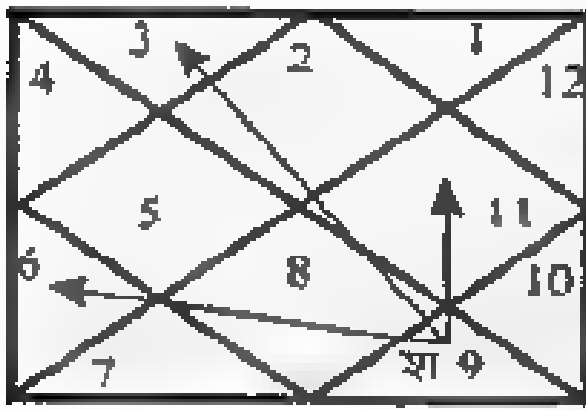
की सृष्टि हुई है। ऐसा व्यक्ति नित नए विषयों की खोज करने वाला तथा साझेदारी के काम में रुचि रखने वाला होता है। व्यक्ति गुप्त विद्या, पुरातन विद्या का जानकार होता है। दीर्घायु को प्राप्त करने वाला होता है। भृगुसूत्र के अनुसार ऐसा जातक 'कष्टान्भोजी' होता है अर्थात् सब कुछ होते हुए भौतिक सुख-सुविधाओं के होते हुए भी जातक मानसिक वेदना, कष्ट की अनुभूति करता रहेगा।

दृष्टि—धनु राशिगत अष्टमस्थ शनि की दृष्टि दशम भाव (कुम्भ राशि), धन भाव (मिथुन राशि) एव पंचम भाव (कन्या राशि) पर होगी। यहां शनि का अपनी मूलत्रिकोण राशि कुम्भ को देखना बहुत महत्वपूर्ण है। यह जातक को सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक, राजनैतिक उन्नति देता है। उत्तम सन्तति व यथेष्ट द्रव्य देता है।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी परन्तु नवीन योजनाएं लाभप्रद रहेंगी।

विशेष—अष्टम भावगत शनि मनुष्य की वृद्धावस्था में ज्यादा दुःख देता है परन्तु यदि मध्यम आयु के पूर्व यदि कष्ट दिया हो तो वृद्धावस्था में कष्ट नहीं देगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—धन हानि, मानहानि जैसी घटना हो सकती है। जातक को कारागार जाने की नौबत आ सकती है।
2. **शनि + चन्द्र**—भाग्योदय में बाधा पर चंद्रमा निस्तेज न होगा। शनि की दृष्टि कुम्भ राशि पर होने से जातक को राजा (सरकार) से मदद मिलती रहेगी, पिता भी मददगार होगा।
3. **शनि + मंगल**—शनि आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग', राजभंग योग' परन्तु शनि यहां बृहस्पति के क्षेत्र में होने से ज्यादा गलत, असामाजिक कार्य नहीं कराएगा।
4. **शनि + बुध**—जातक को धन प्राप्ति हेतु, सौभाग्य की प्राप्ति हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—अष्टमेश बृहस्पति का अष्टम भाव में शनि के साथ होना शुभ है। फिर भी गुप्तरोग, दाएं पैर में चोट का खतरा बना रहेगा।

6. शनि + शुक्र–'भाग्यभंग योग' व 'राज्यभग योग' के कारण सही नौकरी व व्यवसाय की प्राप्ति हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ेगा।

7. शनि + राहु–यहां शनि रोगकारक होगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में

3 2 1 4 12 5 11 6 8 10 श. 7 9
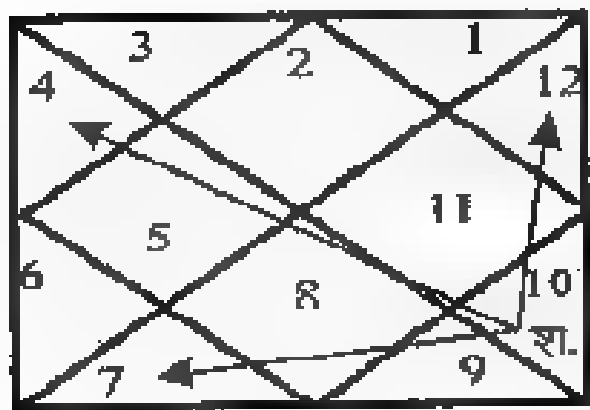
वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहा परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। नवम स्थान में शनि अपनी स्वराशि मकर में होगा। केन्द्र व त्रिकोण के स्वामी के रूप में शनि की यहां उपस्थिति अत्यन्त लाभप्रद है। शनि यहां 'पद्मसिंहासन योग' भी बना रहा है। शनि नीच व दुष्ट ग्रह होते हुए भी यहा पर सर्वोत्तम सुन्दर फल देगा। गर्ग संहिता के अनुसार नवम भावगत उच्च या स्वगृही शनि हो तो ऐसे जातक का पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म दोनों ही श्रेष्ठ होते हैं। जातक किस्मत वाला होता है। धन, धर्म, बन्धु, पिता, पुत्र, यश, वैभव सभी सुख इस जातक को मिलेंगे। जातक का पिता दीर्घायु वाला होता है। जातक स्वयं दूरदर्शी व तन्त्र का जानकार होता है।

दृष्टि–भाग्य भावगत मकर राशिगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (मीन राशि), पराक्रम स्थान (कर्क राशि) एवं षष्टम भाव (तुला राशि) पर होगी।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा में जातक को राजा की पदवी, राजसिंहासन (महत्वपूर्ण राजनैतिक) पद मिलता है।

विशेष–जातक को पिता की सम्पत्ति मिलती है या जातक पैतृक व्यवसाय में पिता से आगे निकल जाता है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **शनि + सूर्य**–शनि के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा, व्यापार-व्यसाय में उतार चढाव आते रहेंगे।
2. **शनि + चन्द्र**–यह युति 'पद्मसिंहासन योग' बनाएगी। जातक करोड़पति होगा।
3. **शनि + मंगल**–यहां 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, वैभवशाली होगा।
4. **शनि + बुध**–जातक महान पराक्रमी होगा। उसको व्यापार में लाभ होगा। जातक ऋण, रोग व शत्रु का समूल नाश करने में समर्थ होगा।

5. **शनि + बृहस्पति**–अष्टमेश बृहस्पति जब शनि के साथ होगा तो 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

6. **शनि + शुक्र**–यह युति अति उत्तम रहेगी। जातक व्यभिचारी होगा। अपने से बड़ी उम्र की स्त्री के साथ जातक सहवास करेगा।

7. **शनि + राहु**–पिता का अरिष्ट होगा। राहु की युति से भाग्योदय में अकारण बाधाएं आती रहेंगी पर अंतिम सफलता निश्चित है।

8. **शनि + केतु**–पिता बीमार होगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में

3 2 1 12 4 5 11 श 6 10 8 7 9
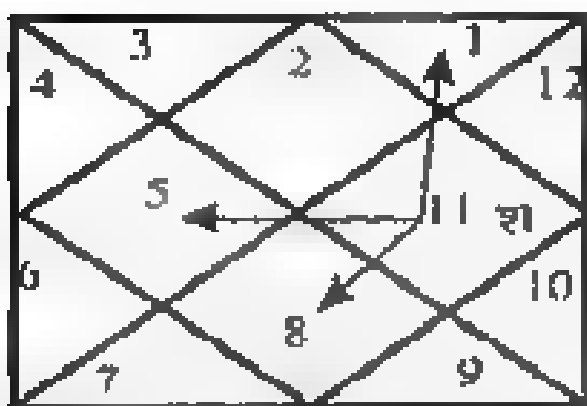
वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। दशम स्थान में शनि अपनी मूलत्रिकोण राशि कुम्भ में होगा। शनि स्वगृही केन्द्र में होने से 'शश योग' भी बना। 'पद्मसिंहासन योग' भी बना। यह शनि की सर्वोत्तम श्रेष्ठ अवस्था है। ऐसा शनि रोडपति को करोड़पति, गरीब को अमीर, रंक को राजा, अनजाने व बेगाने व्यक्ति को अपार यशस्वी व उच्च राजनेता मिनटो में बना देता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है, अथाह भू-सम्पत्तियों का स्वामी होता है। जातक के पिता की लम्बी आयु होती है।

निशानी–जातक जादू, तन्त्र-विद्या का जानकार होता है तथा राजसभा से सम्मानित होता है।

दृष्टि–दशमस्थ स्वगृही शनि की दृष्टि व्यय भाव (मेष राशि), सुख भाव (सिंह राशि) एवं सप्तम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी।

विशेष–शनि को न्यायाधीश कहा गया है। यह मनुष्यों को छुपके से किए गए पापों के लिए सजा देता है। तत्पश्चात् श्रेष्ठ फल भी देता है। अर्थात् कष्ट के बाद सुख भी देता है। शनि प्रभावी व्यक्ति श्रेष्ठ वकील, जज, आई.ए.एस., आर.ए.एस. अधिकारी के रूप में ज्यादा सफल होता देखा गया है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को राज्याधिकारी बनाएगी, जातक का भाग्योदय कराएगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + सूर्य**–जातक बड़ी भू-सम्पति का स्वामी होगा। जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व प्रतापी होगा।

2. **शनि + चन्द्र**—जातक महाधनी होगा, उद्योगपति होगा। उसे पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
3. **शनि + मंगल**—जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
4. **शनि + बुध**—ऐसा जातक इन्द्रतुल्य पराक्रमी होता है।
5. **शनि + बृहस्पति**—लाभेश, अष्टमेश बृहस्पति की युति केन्द्रवर्ती होने से जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगेगा।
6. **शनि + शुक्र**—शुक्र, शनि की युति यहां खिलेगी। जातक राजा, राजमंत्री या आई.ए.एस. अधिकारी होगा।
7. **शनि + राहु**—यहा राहु के साथ होने से जीवन मे सफलताएं जल्दी प्राप्त होती रहेंगी।
8. **शनि + केतु**—जातक यशस्वी होगा।

वृषलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में

3 1 4 12 2 श. 5 11 6 10 8 7 9
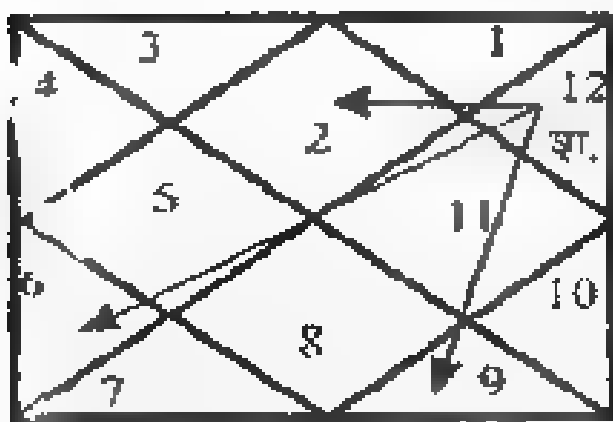
वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। शनि एकादश स्थान में मीन राशि का होगा। मीन शनि की शत्रु राशि है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार नैसर्गिक पापग्रह यदि तृतीय, षष्ठ, एकादश (उपचय) स्थान में हो तो शुभ फल देते हैं। फलतः शनि यहां शुभ फल ही देगा। जातक को बुजुर्गों की सम्पत्ति मिलती है। जातक 'राजपूजक' होता है। उसे राजा (राज्य सरकार) द्वारा सम्मान मिलता है। जातक को स्त्री, उत्तम सन्तति, धन, वाहन, उत्तम भवन एव सभी सांसारिक सुखों की प्राप्ति होती है। जातक की ससुराल भी धनी होगी।

दृष्टि—मीन राशि एकादश भाव में स्थित शनि की दृष्टि लग्न भाव (वृष राशि), पंचम भाव (कन्या राशि) एवं अष्टम भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसा जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा। परिश्रम में सफलता मिलेगी। जातक की सन्तान शिक्षित होगी। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा।

निशानी—जातक को भाई-बंधुओं से लाभ होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—भावार्थ रत्नाकर के अनुसार 'लाभस्थो भानु भाग्यदेशौ दीर्घायु

योगवान' ऐसा जातक लम्बी उम्र वाला एवं योगी होता है। जातक उद्योगपति होगा।

2. **शनि + चन्द्र**—जातक परम सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। उच्च व्यापारी होगा।
3. **शनि + मंगल**—जातक दीर्घायु होगा। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रु को नाश करने में सक्षम होगा।
4. **शनि + बुध**—ऐसा जातक महान पराक्रमी व सौभाग्यशाली होगा। जातक दीर्घायु होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—यहां लाभेश लाभ स्थान में स्वगृही होकर जब शनि के साथ होगा तो जातक व्यापार में खूब धन-दौलत कमाएगा।
6. **शनि + शुक्र**—यह युति 'अनेक वाहन' बनाती है। भाग्येश शनि के साथ उच्च के शुक्र की युति अत्यन्त शुभफलदायी है।
7. **शनि + राहु**—शनि के साथ राहु होने पर राज द्वारा सम्मान में षड्यंत्र होगा। सरकारी क्षेत्र में गुप्त व प्रकट शत्रु होंगे।

वृषलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में
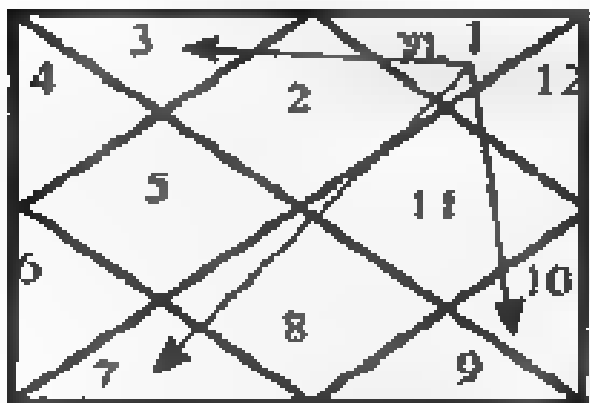
वृषलग्न में शनि भाग्येश एवं राज्येश है। अतः शनि यहां परम राजयोग एवं अति शुभ फलदायी ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित शनि मेष राशि का होगा। यह शनि की नीच राशि है। मेष राशि के 20 अंशों तक शनि परम नीच का होगा। शनि के बारहवें जाने से क्रमशः 'भाग्यभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' की सृष्टि हुई है। ऐसे जातक के भाग्योदय में रुकावट आती है। जातक के शत्रु बहुत होते हैं। जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होता है। धन का संग्रह नहीं हो पाता। भाग्योदय, नौकरी की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ता है। जातक परोपकारी होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में नुकसान (धोखा) मिलेगा।

निशानी—जातक सांसारिक सुखों के प्रति उदासीन हो जाता है। जातक मध्यायु के बाद त्यागी, वैरागी या संन्यासी हो जाता है।

दृष्टि—द्वादश भाव में स्थित मेष राशि के शनि की दृष्टि धन भाव (मिथुन राशि), छठे भाव (धनु राशि) एवं अपने ही घर, भाग्य भाव (मकर राशि) को देखेगा। फलतः धन प्राप्ति में बाधा, जातक के जीवन में अकारण शत्रु पैदा होते रहेंगे

परन्तु फिर भी जातक भाग्यशाली होगा। संघर्ष के बाद जातक अंतिम सफलता का स्वामी होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। सावधानी अनिवार्य है।

शनि का अन्य् ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—यहां पर 'नीचभंग राजयोग' बना। फलतः जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा। जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि + चन्द्र**—भाग्येश+दशमेश बारहवें होने से 'भाग्यभंग योग' बनेगा। जातक के भाग्योदय में व्यापार में काफी रुकावटें आएगी।
3. **शनि + मंगल**—यहां 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एव खर्चीले स्वभाव का होगा।
4. **शनि + बुध**—यह युति ज्यादा शुभद नहीं होगी। जातक को भाग्योदय एवं सौभाग्य की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—यहां लाभेश, अष्टमेश बृहस्पति का द्वादश स्थान में शनि के साथ होना शुभ है। व्यक्ति धर्म कार्य, परोपकार में अपना खर्च करेगा।
6. **शनि + शुक्र** शुक्र यहां 'लग्नभंग योग' के साथ होकर शनि से युति करेगा जो ज्यादा सार्थक नहीं है।
7. **शनि + राहु**—भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते नरकप्राप्ति' जातक की मृत्यु दर्दनाक होगी दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **शनि + केतु**—भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते नेत्रच्छेदः'।

❑❑❑

वृषलग्न में राहु की स्थिति

वृषलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में
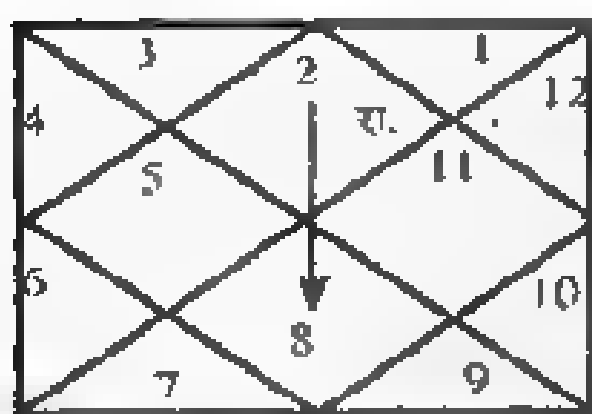
वृषलग्न में लग्नस्थ राहु उच्च का होता है। प्राय: लग्नस्थ राहु से मनुष्य अपनी उम्र से अधिक एवं कुरूप प्रतीत होता है किन्तु वृषलग्न में राहु वाला व्यक्ति युवा, सुंदर एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। जातक के जन्म के समय पिता घर पर नहीं होगा। जातक का जन्म ननिहाल या अस्पताल में होगा। जातक के चेहरे पर काले रंग का तिल या कोई निशान होगा। जातक को राज दरबार में सम्मान मिलेगा। जातक कूटनीतिज्ञ होगा।

निशानी—चालीस वर्ष की आयु के बाद पत्नी के शरीर में दर्द की शिकायत रहती है।

दशा—यदि कालसर्प योग में जन्म न हो तो राहु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **राहु + सूर्य**—सूर्य राहु की युति शुभद नहीं है जातक को सुख प्राप्ति में कष्टानुभूति होगी।
2. **राहु + चन्द**—चंद्रमा यहां उच्च का होगा। ऐसा जातक 'चन्द्रकृत राजयोग' के कारण संसार के सभी सुखों को भोगेगा।
3. **राहु + मंगल**—मंगल के साथ राहु होने से जातक धोखेबाजी, स्मलिंग, उग्रवाद एवं बलात्कार की प्रेरणा से प्रेरित होगा।
4. **राहु + बुध**—लग्न में उच्च के राहु के साथ बुध यहां राजयोग प्रदाता है। जातक धनी होगा एवं राजनीति में प्रभावशाली व्यक्ति होगा।

5. राहु + बृहस्पति—गुरु, राहु की युति लग्न में 'चाण्डाल योग' की सृष्टि करती है। व्यक्ति दुस्साहसी होगा एवं धार्मिक छलावे में विश्वास रखने वाला होगा।
6. राहु + शुक्र—जातक अपने कुल का नाम रोशन करेगा। राजपुरुषों या राजनीतिज्ञों में जातक का अच्छा नाम होगा। गृहस्थ सुख में कुछ बाधा सम्भव है।
7. राहु + शनि—ऐसा जातक जिद्दी व हठी स्वभाव का होता है, पर भाग्यशाली होता है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में
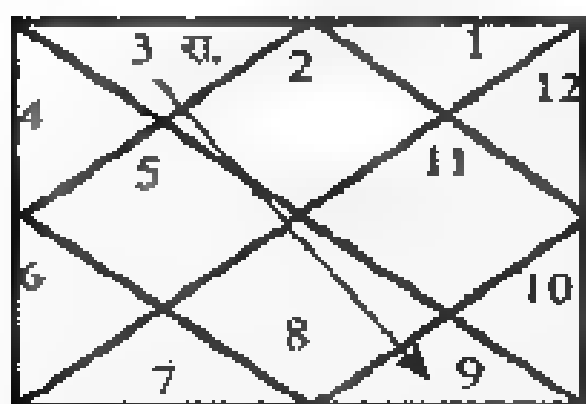
वृषलग्न में राहु लग्नेश का मित्र है। यहां द्वितीयस्थ मिथुन राशि में राहु स्वगृही है। ऐसा जातक धनी होता है। वाणी ज्यादा कठोर या रूखी नहीं होती। 34 वर्ष की आयु के बाद ससुराल से लाभ होगा। मनुष्य की देह पुष्ट होती है। घर, धन, परिवार एवं वाहन से जातक परिपूर्ण होता है। ऐसा मनुष्य चतुर व चालाक होता है।

निशानी—ऐसे व्यक्ति के दो विवाह होते हैं।

दशा—यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा में व्यक्ति शत्रुओं को पराजित करता है। संघर्ष में विजय प्राप्त करता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. राहु + सूर्य—राहु सूर्य के तेज को समाप्त कर देता है पर यहां मिथुन में राहु स्वगृही होने से इतना नुकसानदायक नहीं है। फिर भी धन के मामले को लेकर जातक को काफी संघर्ष करना पड़ता है।
2. राहु + चन्द्र—राहु चन्द्र के तेज को समाप्त कर देता है। जातक जितना चाहे कमाए धन की बरकत नहीं होगी।
3. राहु + मंगल—वाणी में स्खलन होगा। जातक झूठ ज्यादा बोलेगा। जातक नेत्र रोगी होगा खर्चीले स्वभाव का होगा। फिजूलखर्ची के कारण कई बार परेशानी में आएगा।
4. राहु + बुध—बुध स्वगृही होगा पर राहु यहां धन के घड़े में छेड़ करेगा। धन की अच्छी आवक होते हुए भी धन की बरकत नहीं होगी।
5. राहु + बृहस्पति—गुरु, राहु की युति से 'चाण्डाल योग' बनता है। धन प्राप्ति में बाधा के साथ गुप्तरोग की सम्भावना बनी रहेगी

6. **राहु + शुक्र**–ऐसा जातक शराब, जुआ, भोग-विलास में डूबा रहेगा। जातक के वैवाहिक जीवन में टकराव रहेगा।
7. **राहु + शनि**–भाग्येश, राज्येश शनि का मित्र के घर में जाना शुभ है। राहु जहां जातक को खर्चीला बनाएगा, वहां शनि धन की आवक को बराबर बनाए रखेगा। जातक का कोई काम अटका हुआ नहीं रहेगा।

वृषलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में

3 2 1 12 4 रा. 5 11 6 10 8 7 9
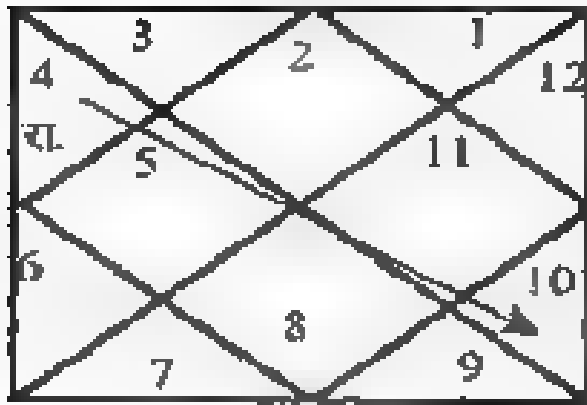
वृषलग्न मे राहु की लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां तृतीय स्थान में कर्क राशिगत राहु अपने शत्रु चन्द्रमा की राशि मे है। ऐसा जातक पराक्रमी एवं शौर्यवान होता है। इसकी कलम में तलवार से अधिक ताकत होती है। परन्तु फिर भी मित्र वफादार नहीं होते। जिनके लिए जान जोखिम में डाली जिनका काम किया वे ही धोखा देंगे। जीवन में संघर्ष से मुक्ति नहीं है।

निशानी-ऐसे जातक को नींद में भी सच्चे ख्वाब आयेंगे।

दशा-यदि जन्मकुडली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–राहु सूर्य का तेज समाप्त करता है उसके शुभ फलों को तोड़ता है। इस अति के कारण जातक के परिजन व मित्र ही जातक के शत्रु होंगे।
2. **राहु + चन्द्र**–चन्द्र राहु के कारण जातक सनकी, स्वार्थी, एवं झगड़ालू स्वभाव का होगा। भाईयों, परिजनों से नहीं निभेगी।
3. **राहु + मंगल**–कर्कस्थ राहु मंगल की युति के कारण जातक के परिजनों में द्वेष रहेगा। जातक को मित्रों से भी दगा मिलेगा।
4. **राहु + बुध**–शत्रुक्षेत्री बुध के साथ राहु की युति परिजनों एवं मित्रों में विवाद व कलह करायेगी।
5. **राहु + बृहस्पति**–यह युति **'चाण्डाल योग'** की सृष्टि करती है। जातक को बड़े भाई का सुख नहीं मिलेगा।
6. **राहु + शुक्र** भाईयों में शत्रुता व मानसिक तनाव रहेगा।
7. **राहु + शनि**–कर्कस्थ राहु के साथ शनि होने पर जातक परम पराक्रमी एवं भाग्यशाली होगा। जातक यारी-दोस्ती में पैसा बहुत उड़ायेगा।

वृषलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
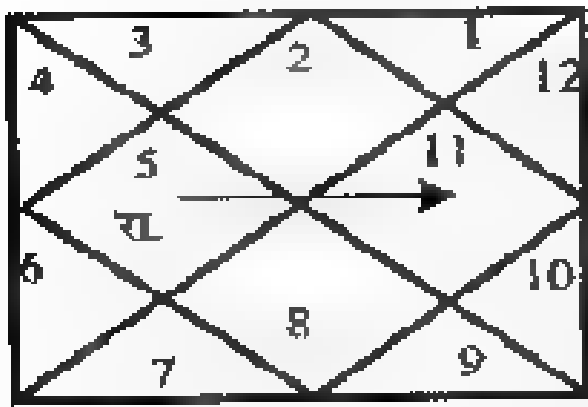
वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां चतुर्थ स्थान में राहु सिंह राशि में होगा। सिंह राशि राहु के परम शत्रु सूर्य की राशि है। यह अग्नि तत्त्व प्रधान राशि है। फलतः जातक क्रोधी होगा। जातक के माता-पिता को क्लेश-कष्ट परेशानी कोई न कोई लगी रहेगी। ऐसे जातक को जीवन में अनेक प्रकार की असफलताओं, बाधाओं, का सामना करना पड़ेगा।

निशानी–ऐसा जातक पिस्तौल-बन्दूक या शस्त्र रखने का शौकीन होगा।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी है। यदि कालसर्प योग न हो तो दशा ज्यादा प्रतिकूल नहीं रहेगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–यहां सूर्य राहु की प्रति माता पिता के सुख में न्यनता लाती है। जातक उद्‌ण्ड होता है।
2. **राहु + चन्द्र**–चन्द्र राहु की युति माता के सुख में कमी, वाहन से दुर्घटना एवं नौकर से दगा दिलायेगी।
3. **राहु + मंगल**–राहु मंगल का शत्रु है। यह युति मातृ सुख में बाधक है। भवन एवं वाहन सुख में हानि पहुंचायेगा।
4. **राहु + बुध** जातक बन्धुओं का द्वेषी होगा। वाहन में अरिष्ट होगा।
5. **राहु + बृहस्पति**–राहु, राहु की युति **'चाण्डाल योग'** बनायेगी। जातक को पिता के पूर्ण सुख की कमी रहेगी।
6. **राहु + शुक्र**–जातक के माता-पिता को कष्ट रहेगा। जातक के गृह निर्माण में बाधाएं आयेंगी।
7. **राहु + शनि**-सिंहस्थ राहु के साथ शनि होने पर माता की मृत्यु, वाहन से दुर्घटना, अग्निकाण्ड का भय बना रहेगा।

वृषलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में

वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां पचम भाव में कन्या राशि का है। कन्या राशि में राहु स्वगृही माना गया है।जो शुभफलो को देने वाला है। त्रिकोण भाव में छाया ग्रह जातक के हित में शुभ फल देते है। भृग्रसूत्र के अनुसार राहु यदि
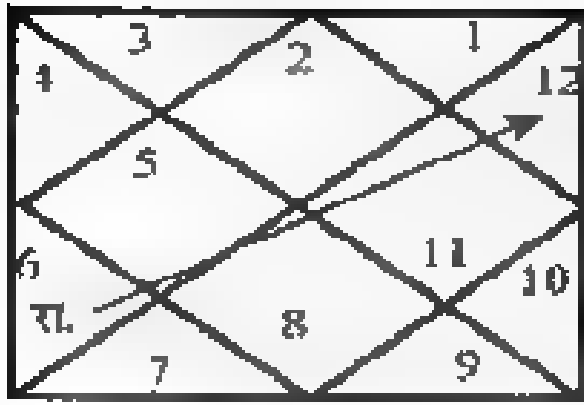
पंचम स्थान में हो तो "पुत्राभाव सर्प शापात् प्रत्यक्ष, नागप्रतिष्ठया प्रच प्राप्ति " सर्प के श्राप से पुत्र सन्तति नहीं होती परन्तु नाग की प्रतिष्ठा करने पर पुत्र सम्भव है। मेरे मत में यह नियम कन्या राशिगत पंचमस्थ राहु पर लागू नहीं होता। ऐसा जातक को सन्तति होती है। जीवन में सफलता भी मिलती है। जातक, बुद्धि बल में उत्तम धन की प्राप्ति करता है। उसका गृहस्थ जीवन सुखी होता है

दशा- यदि कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी। नवीन योजनाएं सफल होंगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–यहां राहु, सूर्य की युति पुत्र सन्तति में बाधक है. राहु मित्र के घर में हाने के कन्या सन्तति तो देगा ही।
2. **राहु + चन्द्र**–चन्द्र राहु की युति सन्तान प्राप्ति में बाधक है। विद्या प्राप्ति में बाधक है तथा चंद्रमा का अशुभत्व बढ़ायेगी।
3. **राहु + मंगल**–जहां राहु सन्तति सुख में बाधक तत्व का कार्य करेगा, वहां मंगल गर्भपात-गर्भस्राव करायेगा। विद्या में भी रुकावट देगा।
4. **राहु + बुध** राहु पुत्र नाशक में सहायक है। माता के बीमारी सम्भव है।
5. **राहु + बृहस्पति**–राहु के साथ बृहस्पति गर्भपात करायेगा। यह दुष्परिणाम **'चाण्डाल योग'** के कारण होगा।
6. **राहु + शुक्र**–गर्भपात या गर्भस्राव होता रहेगा पर अनुष्ठान (उपाय) के बाद पुत्र की प्राप्ति होगी।
7. **राहु + शनि**–भृगुसूत्र के अनुसार **'पुत्रहीनः दरिद्री'** जातक को पुत्र सन्तति में बाधा होती है। धन प्राप्ति में भी बाधा रहती है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति षष्ठम स्थान में
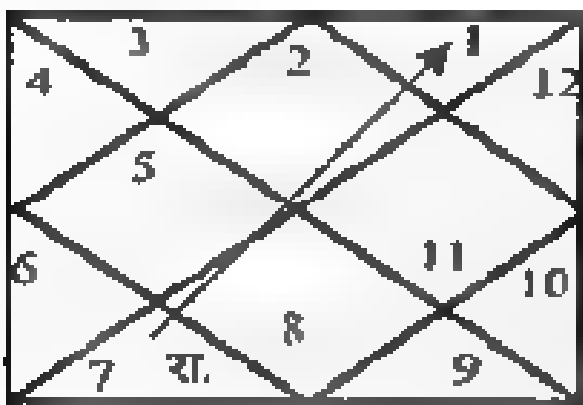
वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। राहु यहां छठे स्थान में तुला राशि का है। तुला राशि राहु की प्रिय राशि है। ऐसा जातक रोग, ऋण और शत्रुओं का समूल नाश करने में सक्षम-समर्थ होता है। जातक दृढ़-निश्चयी, लम्बी

आयु वाला होता है। जातक चतुर होता है। उसकी सूझ बूझ, प्रतिभा विलक्षण होती है।

निशानी–जातक अपनी किस्मत आप जगाता है। नाभि के नीचे काले रंग का तिल होता है।

दशा–राहु की दशा–अन्तर्दशा में जातक गुप्त रूप व योजनाबद्ध तरीक से आगे बढ़ता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. राहु + **सूर्य**–सूर्य यहा छठे होने से, भौतिक सुखों में बाधा आयेगी। जातक पराक्रमी होगा पर उसकी सोच नकारात्मक होगी।
2. राहु + **चन्द्र** यह युति ज्यादा खराब नहीं है क्योंकि दुष्ट ग्रहों का स्थान में होना शुभ है। छठे स्थान में राहु राजयोग कारक है।
3. राहु + **मंगल**–ऐसा जातक गुप्त एवं रहस्यमय शक्ति का स्वामी होगा।
4. राहु + **बुध** -जातक को वातरोग होगा एवं वाणी में दोष रहेगा।
5. राहु + **बृहस्पति**–राहु गुरु की युति '**चाण्डाल योग**' की सृष्टि करेगी। जातक को गुप्त शत्रु या गुप्त रोग में पीड़ा होगी।
6. राहु + **शुक्र**–जातक की शिक्षा अधूरी रहती है। जातक लालची स्वभाव का होगा।
7. राहु + **शनि**–यहां राहु के साथ शनि होने से जातक के भाग्य में निरन्तर अवरोध आते रहते हैं।

वृषलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में

3 2 1 4 12 5 6 11 10 रा. 8 7 9
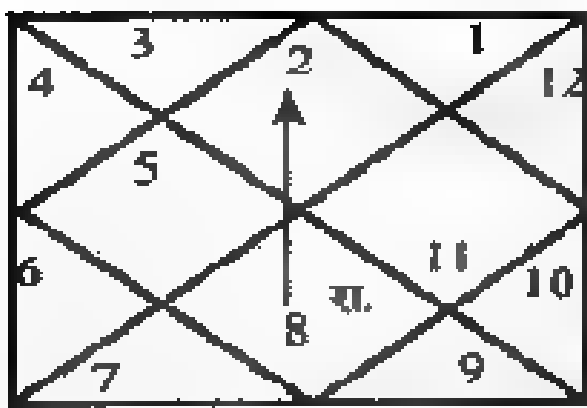
वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र हैं। यहां सप्तम भाव में राहु वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि में राहु नीच का होता है। ऐसे जातक की नौकरी अस्थिर रहती है। वैवाहिक सुख में कुछ न कुछ न्यूनता रहती है जातक कठोर परिश्रमी एवं राज्याधिकारी होता है। जातक में आचरण–व्यवहार व योग्यता की विशेष प्रतिभा होती है। जातक गुप्त शक्तियों का स्वामी होता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. राहु + **सूर्य**–सप्तम भाव राहु, सूर्य की युति जीवनसाथी में वैमनस्य कायेगी, तथा

कई बार तो जीवन में तलाक (बिछोह) की स्थिति भी आती है।

2. राहु + चन्द्र–चन्द्र के साथ राहु की युति वाला जातक चरित्रहीन होगा। उसका जीवनसाथी लम्पट होगा।
3. राहु + मंगल–व्यक्ति कातातुर रहता है। पत्नी से मनोमालिन्यता कराता है।
4. राहु + बुध–जातक पाशविक मैथुन करेगा एवं युद्ध में शत्रु से पराजित होगा।
5. राहु + बृहस्पति–यहां 'चाण्डाल योग' बना। गुरु राहु की युति पति-पत्नी में स्थाई मनमुटाव उत्पन्न करेगी।
6. राहु + शुक्र -व्यक्ति विशेष रुप से कातातुर रहता है। दाम्पत्य सुख में बाधा।
7. राहु + शनि यहां राहु के साथ शनि होने से गृहस्थ सुख में भयंकर बाधा, तलाक, बिछोह या जीवन साथी की मृत्यु की स्थिति भी आ सकती है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
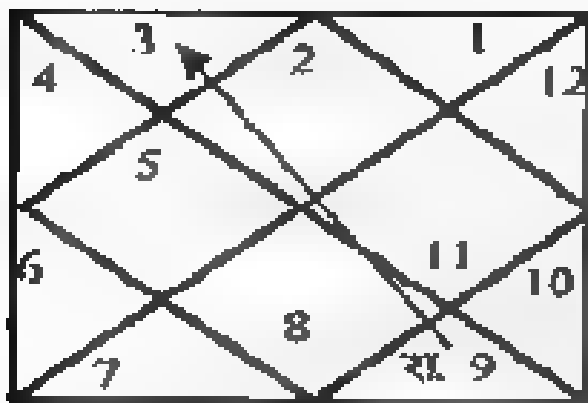
वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां अष्टम भाव में राहु धनु राशि का होगा। धनु राशि राहु की शुभ राशि है जहां राहु नीच का कहलाता है। फलत: जातक की किस्मत झूले की तरह कभी ऊपर, कभी नीचे चलती रहेगी। जीवन में अस्थिरता रहेगी। नौकरी, व्यापार-व्यवस्था में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। जातक मानसिक तनाव में रहेगा। कोई न कोई बीमारी शरीर में लगी रहेगी। शिक्षा में बाधाएं आयेंगी।

निशानी–चौंतीस वर्ष की मृत्यु के बाद जातक का दूसरा विवाह होने की सम्भावना रहेगी। अथवा मूत्राशय में बीमारी होगी।

दशा–राहु की दशा - अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. राहु + सूर्य–अष्टम भाव में राहु के साथ सूर्य हो तो जातक के पिता की आयु कम होती है।
2. राहु + चन्द्र ऐसे जातक के धन का अपव्यय पुलिस केस व अदालतों में होता है। जातक के मानसिक व दैहिक रोग होते है।
3. राहु + मंगल–राहु अष्टम में शत्रुक्षेत्री होकर मंगल के साथ होने से गुप्त रोग,

गुप्त पीड़ा एवं गुप्त कष्ट देगा।

4. राहु + बुध–राहु, बुध की युति दुर्घटनाकारक है। दाई टांग में कष्ट हो सकता है।

5. राहु + बृहस्पति–यहा बना 'चण्डाल योग' अनिष्टसूचक है। गुप्त शत्रु एव गुप्त रोग जातक को परेशान करेंगे।

6. राहु + शुक्र–जातक शराबी, व्यभिचारी होगा।

7. राहु + शनि–यहां राहु के साथ शनि होने पर भाग्य में भयंकर बाधा कष्ट का सकेत स्पष्ट है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में

3 2 1 12 4 11 5 10 6 8 रा. 7 9
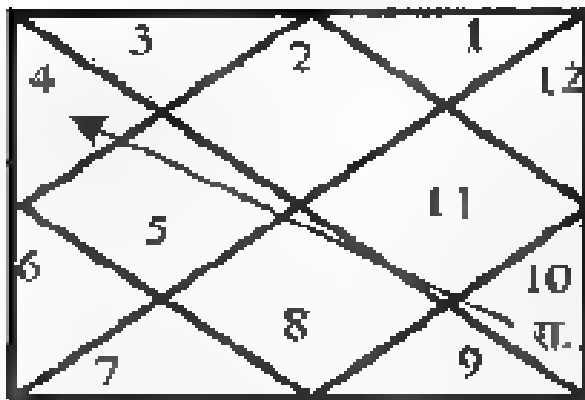
वृषलग्न मे राहु लग्नेश शुक्र का मित्र हैं। यहां नवम भाव मे राहु मकर राशि का होगा। मकर राशि राहु की सम राशि है। इन भावो में राहु पराक्रमी, कठोर परिश्रमी एव शौर्यवान जातक हो जन्म देता है, जातक व्यवहार में थोड़ा बेईमान, जादू-टोनों में विश्वास रखने वाला होता है। जीवन में सांसारिक उन्नति, सामाजिक प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु थोड़ा संघर्ष करना पड़ता है।

निशानी–पिता की अल्प आयु या पिता रोगों मे ग्रसित रहता है। जातक के शत्रु जातक से परेशान रहते हैं।

दशा–यदि कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा में भाग्योदय होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**–सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर राहु के साथ होने से काफी दिक्कतें आयेंगी।

2. **राहु + चन्द्र** यह युति जातक की उन्नति में सहायक है। जातक जन्मस्थान (घर) से दूर परदेश में कमायेगा।

3. **राहु + मंगल**–राहु, मंगल की युति उद्विग्नता देगी। जातक अनिश्चित निर्णय वाला, क्षण-प्रतिक्षण स्वभाव में गिरगिट की तरह रंग बदलने वाला, अविश्वासी होगा।

4. **राहु + बृहस्पति** यहां बृहस्पति नीच का होगा। **'चाण्डालयोग'** जातक को उत्पीड़ित करेगा। भाग्योदय में घोर बाधाएं आयेगी।

5. **राहु + शुक्र**–जातक के पिता को कष्ट होगा।

7. **राहु + शनि**—राहु के साथ शनि होने से पिता का अरिष्ट होगा। राहु की युति से भाग्योदय में अकारण बाधाएं आती रहेंगी पर अन्तिम सफलता निश्चित है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में

3	2	1	12
4	5	11 रा.	10
6	8	9	7
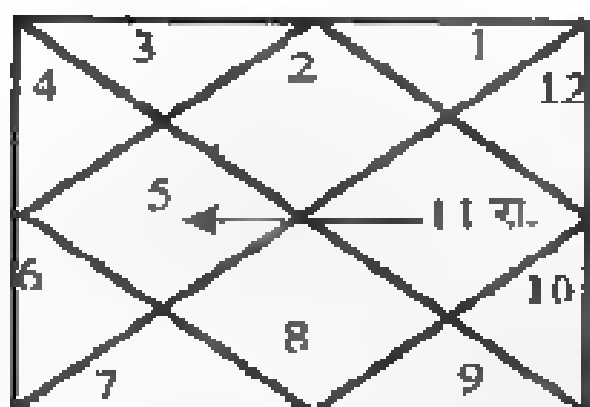
वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां दशम भाव में स्थित राहु कुम्भ राशि का होगा। कुम्भ राशि राहु की स्वराशि कही गई है। ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय मे लाभ तो होता है परन्तु कई बार अपमान का घूंट भी पीना पड़ता है। जातक को सामाजिक, आर्थिक एवं व्यवसायिक उन्नति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ता है।

निशानी—जातक धनवान व लम्बी आयु वाला होता है। परन्तु धन जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर कमाता है।

दशा—यदि कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु + सूर्य**—सुर्य राहु के साथ शत्रुक्षेत्री होने से जातक को राजपक्ष (अदालत) से दण्ड मिलता है।
2. **राहु + चन्द्र**—जातक वेश्यावृत्ति या गलत कार्यों में धन कमायेगा। भाईयों से कम बनेगी।
3. **राहु + मंगल**—जातक राजनीति में माहिर, अत्यधिक चालाक एवं नकारात्मक शक्ति से युक्त, ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होगा।
4. **राहु + बुध**—जातक विविध प्रकार के व्यापार में धन कमायेगा।
5. **राहु + बृहस्पति**—राहु के साथ गुरु होने में **'चाण्डाल योग'** बना। जातक को राजदण्ड (अदालत से सजा) मिलेगी।
6. **राहु + शुक्र**—राजनीति में सफलता मिलेगी। जातक पराक्रमी होगा।
7. **राहु + शनि**—यदि यहां राहु के साथ शनि हो तो जीवन में सफलताएं जल्दी प्राप्त होने लगती है।

वृषलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में

वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां एकादश भाव में राहु मीन राशि का है। मीन राशि राहु की प्रिय राशि नहीं है पर एकादश भाव में राहु राजयोग कारक
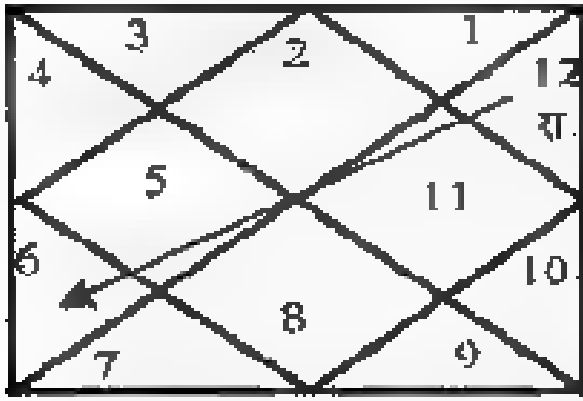
होता है। ऐसा जातक सन्तान से सुखी होता है तथा अनेक स्थानों से लाभ व सम्मान प्राप्त करता है। जातक अच्छा वक्ता होता है। कर्म-शास्त्रों का ज्ञाता होता है। जातक व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

निशानी—जिसका भी साथ देगा उसे पूरा निभायेगा बीच में धोखा नहीं देगा।

दशा -यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**--सूर्य राहु के साथ होने से जातक के व्यापार-व्यवसाय में कुछ न कुछ न्यूनता आती है।
2. **राहु + चन्द्र** जातक को नेत्र विकार सम्भव है। व्यापार में उतार चढ़ाव आते रहेंगे।
3. **राहु + मंगल** मंगल, राहु जातक की सृजनात्मक ऊर्जा को बढ़ायेगा जातक येन केन प्रकारेण लाभ प्राप्ति में रूचि लेगा।
4. **राहु + बुध** जातक को गुप्त व्यापार से लाभ होता रहेगा पर गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना होगा।
5. **राहु + बृहस्पति**–राहु के साथ गुरु होने से '**चाण्डाल योग**' बनेगा। जातक को निजी व्यापार व्यवसाय अनेक दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
6. **राहु + शुक्र**–शुक्र राहु की युति लाभ प्राप्ति मे बाधक है
7. **राहु + शनि**--राहु के साथ शनि होने पर राज्य द्वारा सम्मान में षड्यन्त्र होगा। सरकारी क्षेत्र में गुप्त व प्रकट शत्रु होंगे।

वृषलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में
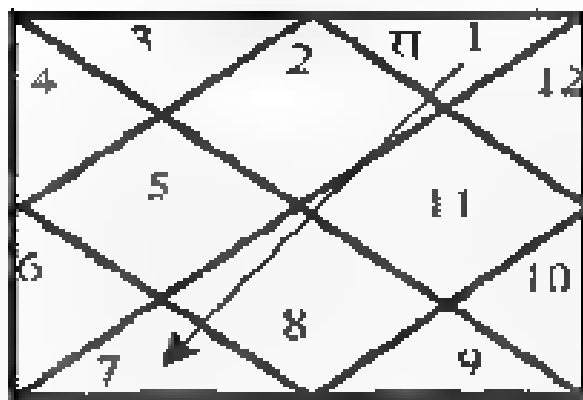
वृषलग्न में राहु लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहा द्वादश स्थान में राहु मेष राशि का होगा. मेष राशि राहु की सम राशि है। ऐसा जातक निर्धन परिवार मे जन्म लेकर भी ऊंची प्रतिष्ठा व पद को प्राप्त करता है। जीवन में अनेक बाधाएं आती हैं पर शत्रु जातक के उन्नति के मार्ग को रोक नहीं पाते। प्राय: जातक चिन्तातुर रहता है और नींद कम आयेगी।

निशानी—जातक प्रायः विदेशी वासी होता है अथवा अपने घर (जन्मस्थल) से दूर अपने देश में ही अन्यत्र रहता है।

दशा—यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा अन्तर्दशा निकृष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु + सूर्य**—ऐसा जातक का शैय्या सुख कमजोर होगा। जातक को नींद कम आयेगी।
2. **राहु + चन्द्र**—चंद्रमा व राहु की युति में जातक चालाक, धोखेबाज, एवं अविश्वसनीय स्वभाव का होगा।
3. **राहु + मंगल**—राहु, मंगल की युति जातक को दम्भी, घमण्डी बनायेगी जातक षड्यन्त्रकारी योजनाओं में रुचि लेगा।
4. **राहु + बुध**—व्यर्थ यात्राओं में रूपया खर्च होगा। जातक को सन्तति सम्बन्धी कार्यों में धन खर्च करना पड़ेगा। जीवन में धन का अपव्यय होता रहेगा।
5. **राहु + बृहस्पति**—यहां पर बृहस्पति होने में **'चाण्डाल योग'** बनेगा। जातक व्यर्थ के कार्यों एवं फिजूल की यात्राओं में खूब पैसा खर्च करेगा। यात्रा में चोरी होगी।
6. **राहु + शुक्र**—जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। मृत्यु कष्टपूर्ण होगी।
7. **राहु + शनि**—जातक की मृत्यु दर्दनाक होगी। दुर्घटना का भय रहेगा।

❑❑❑

वृषलग्न में केतु की स्थिति

वृषलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
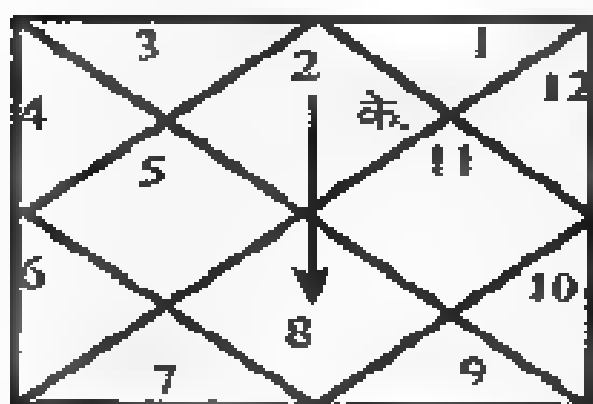
राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में लग्नस्थ केतु अपनी नीच राशि वृष में होगा। जातक के पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करने की महत्वकांक्षा होगी। जातक प्रतिपल उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ने के लिए चेष्टावान रहेगा। जातक पिता या गुरु से मार्गदर्शन प्राप्त करता रहेगा।

निशानी – जातक पिता के साथ रहने वाला होगा अथवा भाईयों में बड़ा होगा।

दशा– केतु की दशा अन्तर्दशा व संघर्ष के बाद सफलता की द्योतक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य** -केतु के साथ सूर्य जातक को कष्टानुभूति देगा।
2. **केतु + चन्द्र** उच्च के चंद्रमा के साथ केतु होने से राजयोग शक्तिशाली होगा।
3. **केतु + मंगल**–मंगल के साथ केतु होने से गृहस्थ सुख में मनोमालिन्यता आयेगी।
4. **केतु + बुध**–जातक धनवान होगा।

5. केतु + बृहस्पति—जातक धार्मिक होगा।
6. केतु + शुक्र—जातक कामी होगा।
7. केतु + शनि—जातक भाग्यशाली होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में
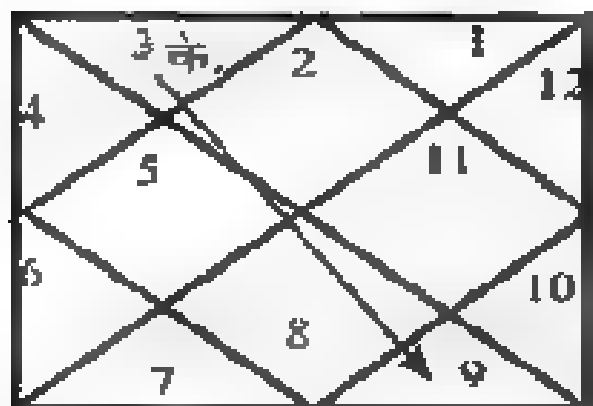
राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। पर राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकाक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र का शत्रु है। यहां पर द्वितीय स्थान में केतु मिथुन राशि का होगा। मिथुन राशि में केतु नीच का ही कहलायेगा। धनभाव में केतु होने से जातक को धन प्राप्ति की महत्वकांक्षा बहुत होगी। प्रायः रुपया आयेगा व खर्च होता चला जायेगा। जातक अपनी आर्थिक स्थिति को सुस्थिर दृढ़ करने के लिए प्रतिपल चेष्टावान रहेगा। धनेश बुध की स्थिति इस कुण्डली वाले जातक की सही आर्थिक स्थिति को प्रकाशित करेगी।

निशानी—छोटी आयु में कमाना सीखें।

दशा—केतु के दशा-अन्तर्दशा धन प्राप्ति हेतु संघर्ष की द्योतक है। यदि कुण्डल में कालसर्प योग बनता है। यह संघर्ष कष्टदायक होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. केतु + सूर्य धन व सुख क प्राप्ति में सामान्य बाधाए, रूकावटें आयेगी।
2. केतु + चन्द्र—मित्रों पर रूपया खर्च होगा। कर्ज की स्थिति आती रहेगी।
3. केतु + मंगल—जातक खर्च अधिक करेगा। आर्थिक तंगी रहेगी।
4. केतु + बुध–जातक धनी होगा पर धन के घड़े में छोटा छेद है, उसकी सुरक्षा करनी होगी।
5. केतु + बृहस्पति—वाणी में स्खलन रहेगा। कमाई धीमी गति से होगी।
6. केतु + शुक्र परिश्रम से धन मिलेगा पर बीमारी में खर्च होगा।
7. केतु + शनि—जातक धनी एवं सौभाग्यशाली होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में
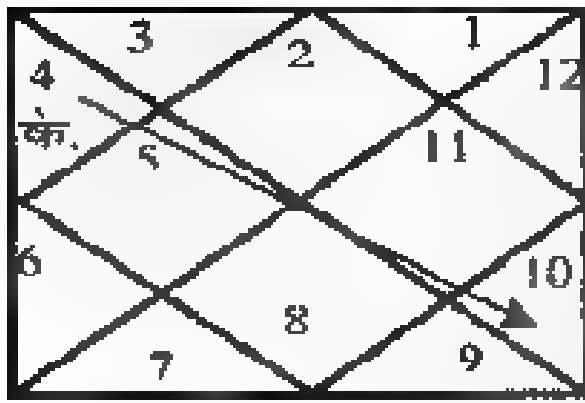
राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अत: ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अत: ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्त्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रुभाव रखता है। यहां केतु तृतीय स्थान में कर्क राशि का है। कर्क राशि में केतु की शत्रु राशि है। यहां केतु ज्यादा उद्विग्न रहेगा। जातक भाई बहन परिजनों से प्रेमभाव स्नेह सम्बन्ध प्रगाढ़ बनाने हेतु लालायित रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक नेकी को याद रखता है, बुराई को भूल जाता है।

दशा–केतु की दशा अन्तर्दशा में कीर्ति की वृद्धि होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक सुखी होगा, पराक्रमी होगा।
2. **केतु + चन्द्र**–मित्रों में यारी पूरी निभायेगा।
3. **केतु + मंगल**–खर्चीले स्वभाव का होगा। पत्नी (अन्य स्त्रियों) पर रूपया खर्च करेगा।
4. **केतु + बुध**–मित्रों व परिजनों के षड्यन्त्र का शिकार होगा।
5. **केतु + बृहस्पति**–व्यापार-व्यवसाय से लाभ कमाने वाला होगा।
6. **केतु + शुक्र**–पराक्रमी होगा। रोगी भी होगा।
7. **केतु + शनि**–मित्रों के सहयोग से भाग्योदय होगा। जनसम्पर्क अच्छा रहेगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अत: ज्यादा डरावना व
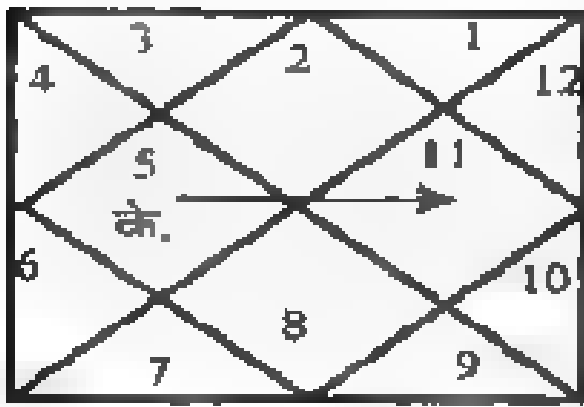
घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। यहां चतुर्थ स्थान में केतु सिंह राशि में होगा। केतु यहां शत्रु राशि में होने से ज्यादा उद्विग्न रहेगा। ऐसे जातक का माता से, सासु माता या मौसी से मनमुटाव रहेगा पर जातक उनसे स्नेहपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने हेतु प्रतिपल लालायित रहेगा। जातक को भौतिक सुख-साधन ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। पिता से भी सम्बन्ध ज्यादा मधुर नहीं रहेंगे पर जातक अपनी ओर से सम्बन्ध मधुर करने के लिए संचेष्ट रहेगा।

निशानी–कुलपुरोहित को पूजने वाला।

दशा–केतु की दशा – अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक का निजी मकान, भवन होगा। उत्तम होगा। खुद का वाहन भी होगा।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक यार-मित्रों से निभायेगा। सुखी होगा।
3. **केतु + मंगल**–जातक भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति हेतु रूपया खर्च करेगा।
4. **केतु + बुध**–जातक धनी होगा। शिक्षित होगा। सन्तान भी शिक्षित होगी पर रूकावट के साथ आगे बढ़ेगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक धार्मिक होगा। व्यापार प्रिय होगा।
6. **केतु + शुक्र**–जातक परिवार वालों का विशेष ख्याल रखेगा। कुटुम्ब का रक्षक होगा।
7. **केतु + शनि**–जातक महाधनी होगा। एक से अधिक प्रकार के व्यापार करेगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में

राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व
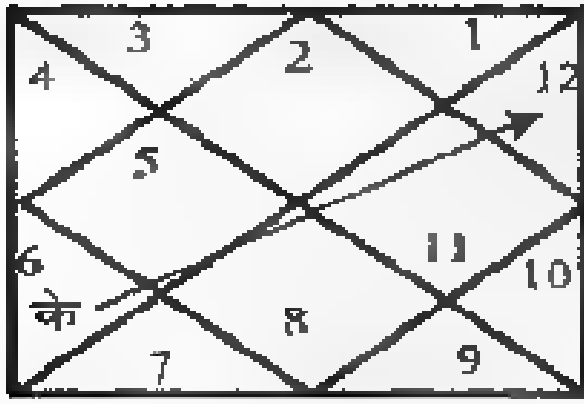
घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां पंचम स्थान मे कन्या राशि का होगा। कन्या केतु की मूल त्रिकोण राशि है। जहां केतु हर्षित रहेगा। जातक विद्या प्राप्ति हेतु सचेष्ट रहेगा। जातक सही आर्थों में ज्ञान का पिपासु होगा।

निशानी--जातक प्रज्ञावान होगा। अधिक सन्तति वाला होगा। जातक खुद अकेला भाई न होगा। मामा भी जातक के दो-तीन होंगे।

दशा-केतु की दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक के एक पुत्र होगा एवं कन्या सन्तति भी होगी। सूर्य की उपासना जातक के लिए फलवती होगी।
2. **केतु + चन्द्र**–प्रथम कन्या होगी। कन्या उत्पत्ति के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
3. **केतु + मंगल** जातक को कन्या पुत्र दोनों की प्राप्ति होगी। गर्भपात भी होगा।
4. **केतु + बुध** जातक महाधनी होगा। कन्या सन्तति अधिक होगी, अथवा प्रथम कन्या होगी
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक व्यापार-व्यवसाय के प्रचुर धन कमायेगा।
6. **केतु + शुक्र** जातक परिश्रमी होगा एवं अपने पुरुषार्थ से आगे बढ़ेगा।
7. **केतु + शनि**–जातक महाधनी व भाग्यशाली होगा परन्तु भाग्य बत्तीसवें वर्ष में चमकेगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति षष्ट्म स्थान में

राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर हैं, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व
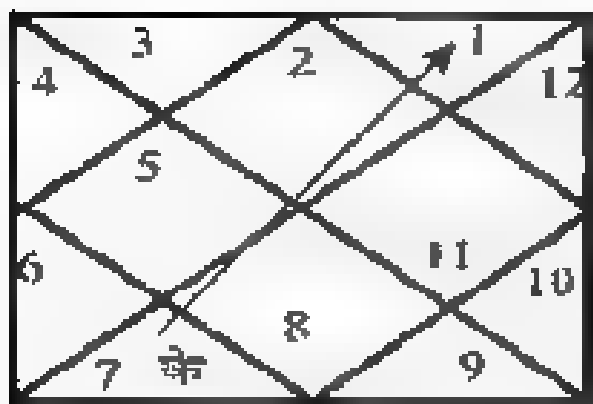
घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्त्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां छठे स्थान में तुला राशि का होगा। तुला राशि केतु की मित्र राशि है। ऐसा जातक शत्रु व रोग से भयग्रस्त रहेगा। स्वस्थ शरीर की कामना, निरोग रहने की भावना, दीर्घायु प्राप्ति की इच्छा प्रबल रहेगी। छठे भाव में पाप ग्रह ज्यादा अशुभ फल नहीं देते।

निशानी–जातक परदेश में रहने वाला होगा। उसे कुत्ते के या किसी अन्य जानवर के काटने का भय रहेगा।

दशा–केतु की दशा मध्यम (मिश्रित) फलकारी होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक के माता-पिता बीमार रहेंगे।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक के भाई जातक के प्रति उदासीन रहेंगे
3. **केतु + मंगल**–जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय नहीं होगा।
4. **केतु + बुध**–जातक को प्रथम सन्तति हाथ नहीं लगेगी।
5. **केतु + बृहस्पति** जातक का प्रथम सन्तति का गर्भ स्राव हो जायेगा। गुरु कृपा से, पूजा-पाठ से पुत्र होगा।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम का वांछित लाभ नहीं मिलेगा। परिश्रम विशेष करना पड़ेगा।
7. **केतु + शनि**–भाग्योदय हेतु, आगे बढ़ने के लिए निरन्तर रूकावटों का सामना करना पड़ेगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में

राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। पर राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं
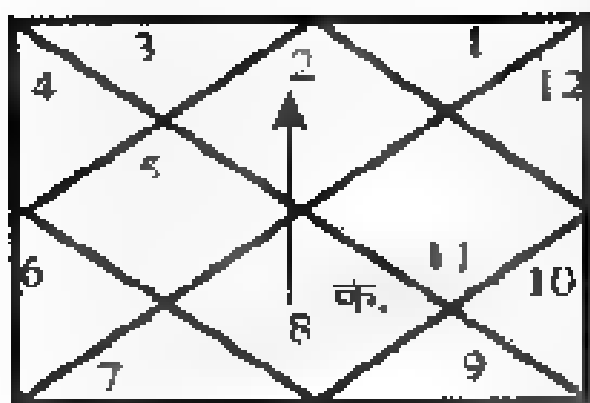
है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां सप्तम स्थान मे वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि में केतु उच्च राशि का होता है। केतु की यह स्थिति जातक के जीवन में गृहस्थ सुख के प्रति ललक बढ़ायेगी। जातक कामी होगा। विषय वासना, भोग-विलास, की इच्छा प्रतिपल रहेगी। काम सन्तुष्टि की तृप्ति की इच्छा बनी रहेगी पर काम के प्रति तृप्ति-सन्तुष्टि नहीं हो पायेगी।

निशानी–जितने बहन भाई होंगे, उतनी सन्तानें होंगी।

दशा–केतु की दशा अन्तर्दशा उन्नतिदायक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–पत्नी के शरीर में रोग रहेगा। मानसिक अशान्ति रहेगी।
2. **केतु + चन्द्र**–जिससे प्रेम करेंगे वो स्त्री धोखा देगी। स्त्री से मित्रता हानिकारक रहेगी।
3. **केतु + मंगल**–पहली पत्नी का शोक, दूसरी भी रोगी होगी।
4. **केतु + बुध**–जातक धनी होगा। प्रज्ञावान होगा। ज्ञानी होगा। चेष्टावान होगा।
5. **केतु + बृहस्पति** गृहस्थ सुख में कोई न कोई व्यवधान बना रहेगा।
6. **केतु + शुक्र**–दो स्त्रियों से सम्पर्क एक समय में रहेगा।
7. **केतु + शनि**–द्विभार्या योग, दूसरी पत्नी ठीक होगी।

वृषलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में
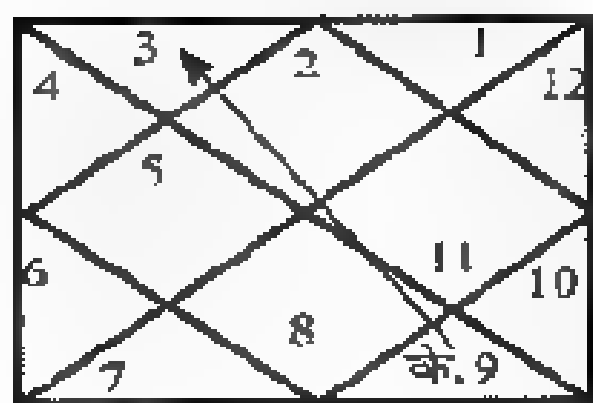
राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक

है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक को महत्त्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां अष्टम स्थान में धनु राशि का होगा। धनु राशि में केतु स्वगृही माना गया है। ऐसे जातक को शत्रु व रोग के प्रति भय बना रहेगा। स्वस्थ शरीर की कामना, निरोग रहने की भावना, दीर्घायु प्राप्ति की इच्छा प्रबल रहेगी।

निशानी–द्विभार्या (दो विवाह) का योग प्रबल है। अथवा जातक का भाई निसन्तान होगा।

दशा केतु की दशा अन्तर्दशा अनिष्ट फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक को पिता का सुख कमजोर रहेगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा। नौकर वफादार नहीं होंगे।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक को माता का सुख कमजोर रहेगा। भाई, बहन भी जातक के सहायक नहीं होंगे।
3. **केतु + मंगल**–जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण होगा।
4. **केतु + बुध**–जातक की सन्तति जातक की आज्ञा में न होगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक गुप्त बीमारी, गुप्तरोग से ग्रसित होगा।
6. **केतु + शुक्र**–जातक के स्वयं के शरीर में रोग रहेगा। जातक के वीर्य का क्षरण होता रहेगा।
7. **केतु + शनि**–भाग्योदय हेतु, संघर्ष की स्थिति रहेगी।

वृषलग्न में केतु की स्थिति नवम भाव में
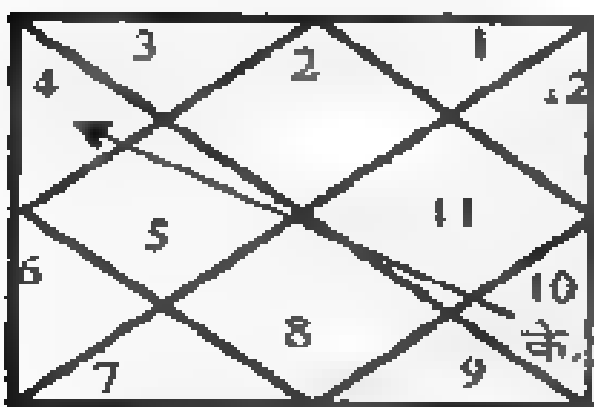
राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है। इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु

जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहा नवम स्थान में मकर राशि का होगा। मकर राशि केतु की मूल त्रिकोण राशि है। जातक भाग्योदय के प्रति, उन्नति के प्रति, आगे बढ़ने के लिए बहुत लालायित चेष्टावान रहेगा। आगे बढ़ने के अवसर भी जीवन में मिलते रहेंगे।

निशानी जातक पिता का आज्ञाकारी पुत्र होगा।

विशेष-तृतीय भाव (कर्क राशि) में शत्रु ग्रह हो तो विवाह के सात वर्ष बाद सन्तान होगी।

दशा–केतु की दशा अन्तर्दशा भाग्योदय में सहायक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**-जातक सुखी एवं सम्पन्न व्यक्ति होगा।
2. **केतु + चन्द्र** जातक के रिश्तेदार धनवान एवं शक्ति सम्पन्न होगे।
3. **केतु + मंगल**–जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का पराक्रम बढ़ेगा।
4. **केतु + बुध**–जातक सौभाग्यशाली होगा। महाधनी होगा। उत्तम सन्तति से युक्त सफल व्यक्ति होगा।
5. **केतु + बृहस्पति** जातक के भाई-कुटम्बी होंगे पर जातक के साथ उनका व्यवहार सही नहीं होता।
6. **केतु + शुक्र**–जातक व्यापार प्रिय होगा। जातक को व्यापार में सफलता मिलेगी एवं अनेक प्रकार के व्यापार करेगा।
7. **केतु + शनि** जातक राजा तुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं शक्ति सम्पन्न होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में
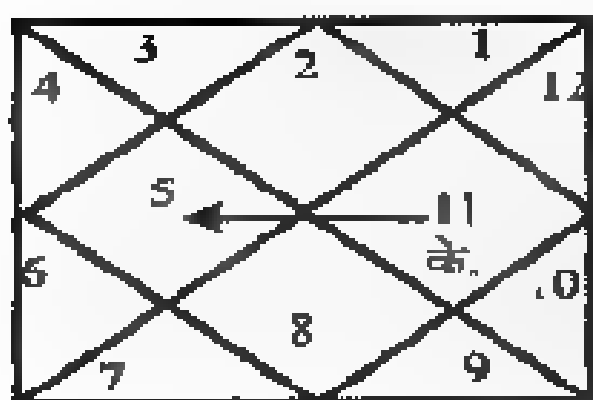
राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है

अपितु केतु के एक हाथ मे ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है। इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसके प्रति जातक की महत्त्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां दशम स्थान में कुम्भ राशि का होगा। कुम्भ राशि केतु की मित्र राशि है। ऐसा जातक सरकारी नौकरी, राजकीय कार्य, ठेकेदारी बगैरा में रुचि रखेगा। समाज मे, जाति में, राज्य-सरकार में, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु लालायित रहेगा।

निशानी–जातक चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला, चाल-चलन का नेक होगा।

दशा–केतु की दशा - अन्तर्दशा में जातक का व्यापार–व्यवसाय बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक सभी प्रकार से सुखी एवं साधन सम्पन्न व्यक्ति होगा।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक के कुटुम्बी (रिश्तेदार) प्रभावशाली होंगे।
3. **केतु + मंगल** -जातक का ससुराल प्रभावशाली एव पराक्रमी होगा।
4. **केतु + बुध** जातक की सन्तति प्रभावशाली एवं पराक्रमी होगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–जातक व्यापार-व्यवसाय में उन्नति करेगा।
6. **केतु + शुक्र**–जातक कुटुम्ब - परिवार को तारने वाला एवं सामर्थ्यवान व्यक्ति होगा।
7. **केतु + शनि**–जातक इन्द्र तुल्य पराक्रमी, वैभवशाली एवं शक्ति सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक उद्योगपति होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में
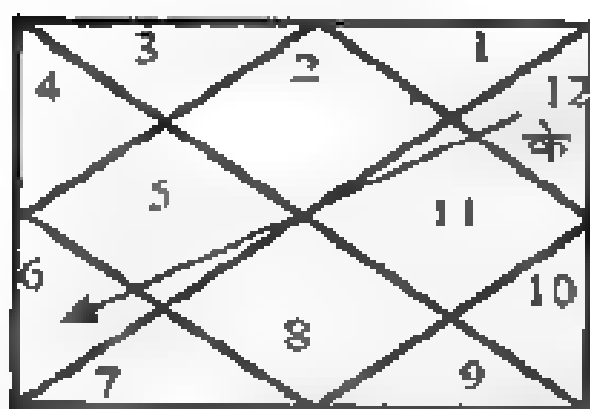
राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक है और सूर्य चन्द्र के शत्रु है। पर राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूंछ अतः ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है। इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता

आयेगी। राहु जिस घर (भाव) मे होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) में होगा उसक प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां एकादश स्थान में मीन राशि का होगा। मीन राशि केतु की स्वराशि है। ऐसा जातक व्यापार-व्यवसाय में आगे बढ़ने के प्रति चेष्टावान रहेगा। सरकारी क्षेत्र में, ठेकेदारी के कार्य में रुचि रखेगा। जातक धार्मिक कार्य, परोपकार के कार्य, जनसेवा के प्रति भी पूर्ण रुचि लेगा।

निशानी-नर सन्तान अधिक होगी।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनवान बनेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**-जातक का राज्य (सरकार) किंवा राजनीति में प्रभाव रहेगा।
2. **केतु + चन्द्र**-जातक धार्मिक होगा। जातक पराक्रमी होगा।
3. **केतु + मंगल**–तीन पुत्र सन्तति होंगी। जातक अपने शत्रुओं को तबाह व बरबाद कर देगा।
4. **केतु + बुध**-कन्या योग कि बाहुल्यता। दो कन्या एक पुत्र योग है।
5. **केतु + बृहस्पति**–पांच पुत्रों का योग बनता है। जातक पराक्रमी होगा।
6. **केतु + शुक्र**–छः कन्याओं का योग बनता है। जातक प्रबल पराक्रमी होगा।
7. **केतु + शनि**-सात कन्याओं का योग बनता है। गुरु कृपा एव ईश्वर आराधना से एक पुत्र सम्भव है। जातक भाग्यशाली होगा।

वृषलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में
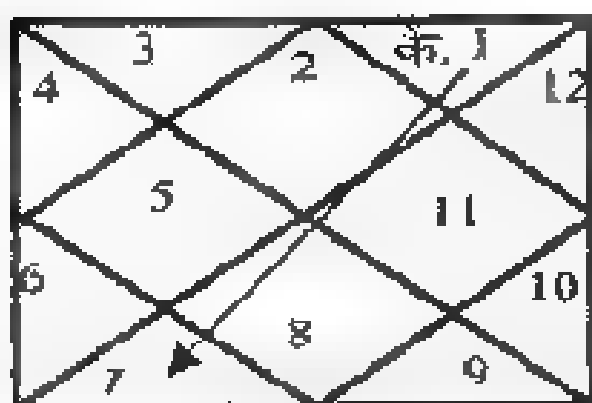
राहु और केतु दोनों छायाग्रह हैं, पापग्रह हैं, अंधेरे के प्रतीक हैं और सूर्य, चन्द्र के शत्रु हैं। राहु राक्षस का सिर है, सर्प का मुख है अतः ज्यादा डरावना व घातक है जबकि केतु राक्षस का धड़ है, सर्प की पूछ अत: ज्यादा घातक नहीं है अपितु केतु के एक हाथ में ध्वजा है, जो कीर्ति का प्रतीक है इस सूक्ष्म अन्तर को हमें समझना होगा तभी फलादेश में सूक्ष्मता आयेगी। राहु जिस घर (भाव) में होता है। उसका नाश करता है जबकि केतु जिस घर (भाव) मे होगा उसके प्रति जातक की महत्वकांक्षा (भूख) बढ़ा देता है।

वृषलग्न में केतु लग्नेश शुक्र से शत्रु भाव रखता है। केतु यहां द्वादश स्थान में मेष राशि का होगा। केतु यहां अपने मित्र मंगल की राशि में होने शुभ फल देने वाला है। ऋण रोग व शत्रु से मुक्ति देने वाला, मोक्ष प्रदाता ग्रह का फल देगा। ऐसा व्यक्ति तीर्थ यात्रा करने हेतु परोपकार व धार्मिक कार्य में धन खर्च करने हेतु लालायित रहेगा।

निशानी–जातक को नर सन्तति अधिक होगी।

दशा–यदि अन्य दुष्टग्रह साथ न हो तो केतु की दशा शुभ फल देगी। केतु की दशा में जातक धनवान होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + सूर्य**–जातक भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति में बाधा महसूस करेगा।
2. **केतु + चन्द्र**–जातक को परिजनों से लाभ नहीं होता।
3. **केतु + मंगल**–पत्नी से विवाद, ससुराल से अनबन रहेगी।
4. **केतु + बुध**–सन्तति की उन्नति की चिन्ता सताती रहेगी।
5. **केतु + बृहस्पति** -गुप्त रोग, गुप्त चिन्ता परेशान करती रहेगी।
6. **केतु + शुक्र**–जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
7. **केतु + शनि** भाग्योदय हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

❑❑❑

शुक्रवार व्रत कथा

शुक्रवार का उपवास शुक्र ग्रह की शांति हेतु किया जाता है. दूसरी ओर यह व्रत संतोषी माता के निमित्त सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए भी किया जाता है। शुक्रवार को मां संतोषी का भी वार कहा जाता है इस व्रत को चाहे संतोषी मा को प्रसन्न करने के लिए किया जाए अथवा शुक्र ग्रह की शांति के लिए, यह दोनों ही स्थितियों में सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला है।

शुक्र का तांत्रिक मंत्र—ॐ शु शुक्राय नम.।

विधि विधान—शुक्रवार का व्रत अन्य व्रतों की अपेक्षा ब्रह्ममुहूर्त में किया जाता है। प्रातः काल सूर्योदय के पूर्व उठकर स्नानादि से निवृत्त हो पूर्व दिशा की ओर मुख करके शुक्र के तांत्रिक मंत्र से ग्यारह बार जाप करें। व्रत के पूजन व प्रसाद में सफेद वस्तुओं का पूजन करें इस व्रत में खट्टी चीजें नहीं खानी चाहिए, तथा भोजन एक ही समय करना चाहिए।

व्रत कथा—एक समय की बात है कि एक नगर में कायस्थ ब्राह्मण तथा वैश्य जाति के तीन लड़कों में परस्पर गहरी मित्रता थी। उन तीनों मित्रों का विवाह हो गया था। ब्राह्मण तथा कायस्थ के लड़कों का गौना हो गया था परन्तु वैश्य के लड़के का अभी गौना नहीं हुआ था।

एक दिन कायस्थ के लड़के ने कहा कि हे मित्र तुम भी मुकलावा करके अपनी स्त्री को ले आओ। स्त्री के बिना घर अत्यधिक सूना लगता है। यह बात वैश्य के लड़के को अच्छी लगी।

वह कहने लगा कि मैं अभी जाकर मुकलावा लेकर आता हूं। ब्राह्मण के लड़के ने कहा कि मित्र तुम अभी अपनी स्त्री को लेने मत जाओ क्योंकि शुक्र अस्त हो रहा है। जब उदय हो जाए तब जाकर ले आना।

परन्तु वैश्य का लड़का अपनी जिद पर अड़ गया तथा किसी प्रकार से नहीं माना। उसके घरवालों ने भी उसे बहुत समझाया किंतु सबकी बातें अनसुनी करके वह अपनी स्त्री को लेने के लिए ससुराल चला गया।

उसको आया देखकर ससुराल वाले भी चकराए। दामाद का स्वागत सत्कार करने के बाद उन्होंने उसके आने का कारण पूछा। वैश्य पुत्र ने कहा कि मैं अपनी स्त्री को लेने के लिए आया हूं। ससुराल के व्यक्तियों ने भी उसे अनेक प्रकार से समझाया किंतु वह अपनी बात पर अडिग रहा।

जब वैश्य पुत्र नाना प्रकार से समझाने पर भी न माना तो ससुराल के व्यक्तियों को लाचार होकर अपनी पुत्री को विदा कर दिया। वैश्य पुत्र पत्नी को रथ में बिठाकर चल दिया। थोड़ी दूर जाने के बाद मार्ग में रथ का पहिया टूट गया तथा बैल का पैर भी टूट गया।

उसकी पत्नी भी गिरकर घायल हो गई तथा रास्ते में डाकुओं ने उनके वस्त्राभूषण छीन लिये। इस प्रकार अनेक कष्टों को सहते हुए वे पति पत्नी घर पहुंचे तो घर आते ही वैश्य पुत्र को सर्प ने काट लिया। वैध ने भी कह दिया कि यह तीन दिन बाद मर जाएगा। जब उसके दोनों मित्रों को यह सूचना प्राप्त हुई तो उन्होंने कहा कि यदि वह पुनः अपनी स्त्री के साथ ससुराल जाए तथा शुक्रोदय पर लौटे तो निश्चय ही विघ्न टल जाएगा।

सेठ ने अपने पुत्र तथा वधू को तत्काल ही ससुराल पहुंचा दिया। वहां पर पहुंचते ही वैश्य पुत्र की मूर्छा दूर हो गई तथा वह साधारण उपचार के द्वारा ही स्वस्थ हो गया।

ससुराल वाले अति प्रसन्न हुए तथा वैश्य पुत्र अपनी ससुराल में स्वास्थ्य लाभ करता रहा इसके पश्चात् शुक्र उदय होने पर अपनी स्त्री को लेकर पुनः घर लौट गया।

अथ शुक्रवार की आरती

आरती लक्ष्मण बालजती की। असुर संहारन प्राणपति की।।
जगमग ज्योति अवधपुरी राजे। शेषाचल पर आप विराजे।।
घंटाताल पखावज बाजै। कोटि देव आरती साजै।।
क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै। तीन लोक जाकि शोभा राजै।।
कंचन थार कपूर सोहाई। आरती करत सुमित्रा माई।।
प्रेम मगन होय आरती गावैं। बसि बैकुण्ठ बहुरि नहीं आवैं।।
भक्त हेतु हरि लाड़ लड़ावैं। जब घनश्याम परम पद पावै।।

शुक्रस्तवराजः

अस्य श्रीशुक्रस्तवराजस्य प्रजापतिर्ऋषिः अनुष्टुप् – छन्दः ।
शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः॥
नमस्ते, भार्गव श्रेष्ठ, दैत्य दानव पूजितः।
वृष्टि रोध प्रकर्त्रे, च, वृष्टि कर्त्रे, नमो नमः॥
देवयानि, पितः तुभ्यम्, वेद वेदांग पारग।
परेण, तपसा, शुद्धः, शंकरः, लोक सुन्दरः॥
प्राप्तः, विद्यां, जीवनाख्यां, तस्मै, शुक्रात्मने नमः।
नमः, तसमै भगवते भृगु पुत्राय् वेधसे॥
तारा मण्डल, मध्यस्थ, स्व भासा – सित – अम्बर।
यस्य उदये, जगत् सर्वम्, मंगल – अर्ह, भवेत् – इह॥
अस्तम्, यः ते हिं–अरिष्टम्, स्यात् तस्मै, मंगल रूपिणे।
त्रिपुरा – वासिनः दैत्यान्, शिव बाण – प्रपीडितान्॥
विद्यया, अजीवयः, शुक्रः, नमस्ते, भृगु नन्दन।
ययाति, गुरवे, तुभ्यम्, नमस्ते, कवि, नन्दन॥
बलि राज्य प्रदः जीवः, तस्मै, जीवात्मने, नमः।
भार्गवाय, मः, तुभ्यम् पूर्व गीर्वाण वन्दितः॥
जीव पुत्राय्, यः, विद्याम्, प्रादात् तस्मै, नमः नमः।
नमः शुक्राय काव्याय्, भृगुपुत्राय्ः धीमहि॥
नमः, कारण रूपाय्, नमस्ते, कारणात्मने।
स्तवराजम् इमम्, पुण्यम्, भार्गवस्य, महात्मनः॥
यः, पठेत्, श्रेणुयात्, वा, अपि, लभते, वाञ्छितम्, फलम्।
पुत्रकामः, लभेत्, पुत्रान्, श्रीकामः, लभते श्रियम्॥
राज्य कामः लभेत् राज्यम् स्त्री कामः, स्त्रियम्, उत्तमाम्।

भृगूवारे, प्रयत्नेन, पठितव्यम्, समाहितैः।।
अन्य वारे, तु, होरायाम्, पूजयेत् भृगु नन्दनम्।
रोगार्तः, मुच्यते रोगात्, भयार्तः मच्यते भयात्।।
यत् - यत् प्रार्थयते, जन्तुः तत् - तत् प्राप्नोति सर्वदा।
प्रातः काले प्रकर्तव्या भृगु पूजा प्रयत्नत।।
सर्व पाप विनिर्मुक्त प्राप्नुयात् शिव सन्नि धिम्।।

नोट—सभी प्रकार के ऐश्वर्य तथा पूर्ण रति सुख प्राप्ति हेतु नित्य 108 पाठ करने चाहिए।

शुक्र मंत्र

अन्नात्परिस्रुत इति मत्रस्य पराशरऋषिः शक्वरीछन्दः शुक्रोदेवता रसं ब्रह्मणो इति बीजं शुक्रपीत्यर्थे जपे विनियोगः ॐ पराशरऋषये नमः शिरसि १ॐ शक्वरी छनदसे नमः इति मुखे २.ॐ शुक्रदेवतायै नमः हृदये ३. ॐ रसंब्रह्म इति बीजाय नमः गुह्ये ४ इति ऋष्यादिन्यासः। 'ॐ अन्नातपरिस्रुतः' इत्यङगुष्ठाभयां नमः १ 'ॐ रसंब्रह्मणा व्यपिबत्' इति तर्जनीभ्यां नमः २. 'ॐ क्षत्रं पयः' इति मध्यामाभ्यां नमः ३. 'ॐ सप्रजापतिः' इत्यनामिकाभ्यां नमः ४. 'ॐ इति ऋष्यादिनन्यासः। 'ॐ अन्नातपरिस्रुतः' इत्यङगुष्ठाभ्यां नमः १ 'ॐ रसंब्रह्मण व्यपिबत्' इति तर्जनीभ्यां नमः २ ' ॐ क्षत्रं पयः ' इति मध्यामाया नमः ३. 'ॐ सोमप्रजापतिः' इत्यनामिकाभ्या नमः ४. 'ऋतेनसत्यमिन्द्रय विपानर्ठ, शुक्रमन्धसः' इति कनिष्ठिकाभयां नमः ५. 'इन्द्रस्येन्द्रियमिदंपयोमृतमधु' इति करतलकरपृष्ठाभया नमः ६. इति करन्यासः।

'ॐ अन्नात्परिस्रुतः' इति हृदयाम नमः १ ' ॐ रसब्रह्मणाव्यापिबत्' इति शिरसे स्वाहा २ ' ॐ क्षत्रपय.' इति शिखायै वषट ३.' ॐ सोमंप्रजापतिः' इति कवचाय हुम ४' ' ॐ ऋतेन-सत्यमिन्द्रिय विपानर्ट, शुक्र मन्धसः इति नेत्रयायं वौषट् ५ ' ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोमृतंमधु' 'इत्यस्राय फट्' ६ इति हृदयादिन्यासः।

'ॐ अन्नात्परिस्रुतः' ति शिरसि १ ॐ रसब्रह्मणा इति ललाटे २ 'ॐ व्यपिबतक्षत्रम्' इति मुखे ३ 'ॐ पयः सोमम्' इति हृदये ४ 'ॐ प्रजापतिः 'इत नाभौ ५ 'ॐ ऋतेन सत्यम्' इति कट्याम् ६ 'इन्द्रिय विपानम्' इति गुदे ७ ॐ शुक्रम्' इति वृषणयोः 'ॐ अंधस' इत्पुर्वोः १ 'ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयः''इति जानुनोः ११ 'ॐ अमृतम्' इति पादयोः १ ' ॐ मधु' इति सर्वाङ्गे २ इति मंत्रन्यासं कृत्वा ध्यायेत्-ॐ श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतर्भुजौ दैत्यगुरूः प्रशान्तः।

तक्षाक्षसूत्रश्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम १ इति ध्यात्वा जपेत्-ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रण व्यपिबत् क्षत्रवयः सोम प्रजापतिः।

शुक्रः ध्यानम्—श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजों दैत्यगुरूः

प्रशान्तः तथा ऽससुत्रञ्च कमण्डलुश्च, दण्डश्च विप्रदवरदोऽस्तु मह्यम्॥

यह शुक्र परमतेजस्वी श्वेत वस्त्रों को धारण किये हुए हैं। श्वेत शरीर वाला है। श्वेत चमकीला मुकुट पहने हुए है। चार हाथ वाला है। दैत्यों का गुरु है शान्त है। रूद्राक्ष की माला पहने हुए है। हाथ में कमण्डल है, एक हाथ में दण्ड है। तत्काल वर देने वाला है। मुझे भी वरदायक फलदायक हो जावे। ऐसे तेजस्वी शुक्र का हम ध्यानपूर्वक आह्वान करते है।

आह्वान–

शुक्र हाटक नामाग्नि, समिधा–उदुम्बर

(उमटा) फल–खारक, मिश्री

सोमतुल्योदितिप्राज्ञो दानवानां च पुरोहितः त्राता च सर्वदैत्यानां शुक्रमावहयाम्यहम्।।1।।

भोभो भोजकटेजात शुक्रश्वेताश्ववाहनः समागच्छश्चतुर्बाहु भृगुगोत्रविभूषणः।।2।।

परिधाक्षा बलिहस्त कमण्डलु धराद:। पूर्वपत्रेति शुक्रश्च प्राचयां शुक्रं निधापयेत्।।3।।

ॐ शुक्रज्योतिश्चचित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च।

ज्योतिष्मांश्च शुक्रश्च ऋतपाश्चातय ठं हा:।।17।। 80।।

1. शुक्र ग्रह का वैदिक मन्त्र–ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणा व्यपि वत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ठं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु।।19/75।।पूर्वे शुक्रं स्थापयामि–

2. शुक्र का यन्त्र–

11	6	13
12	10	8
7	14	9

3. तान्त्रिक मन्त्र–ॐ द्राँ द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।' नमस्कार–

4. शुक्र गायत्री–ॐ भृगुवंशजाताय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः कविः प्रचोदयात्

विशेष–शुक्र के मन्त्रों के सोलह हजार (16,000) जाप से शुक्र प्रसन्न हो जाता है।

❑❑❑
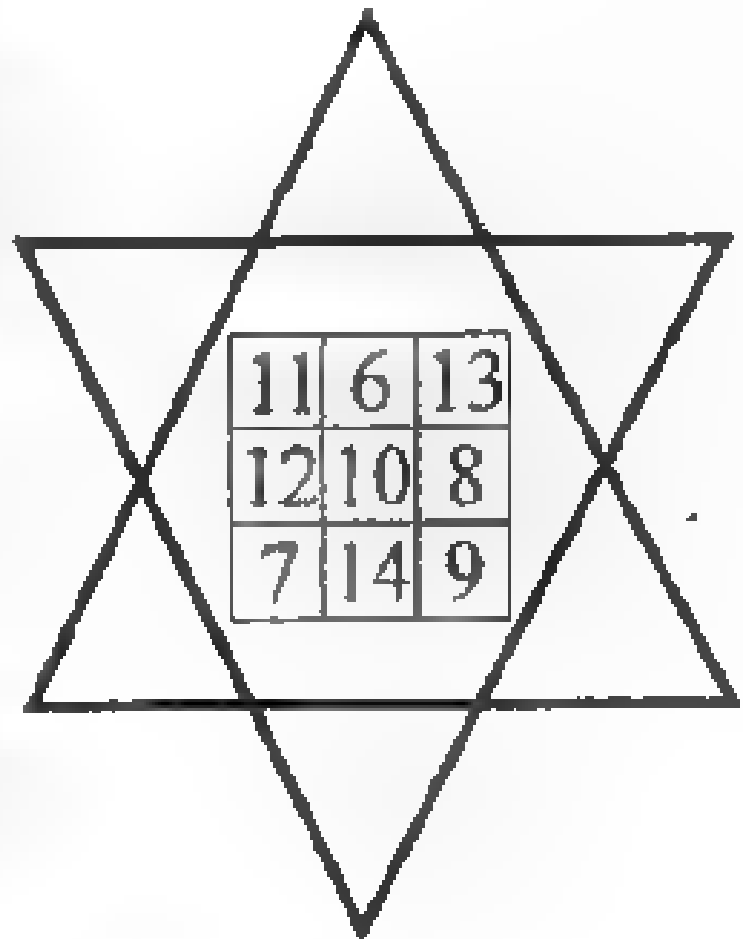
दृष्टांत कुण्डलियां

भगवान श्रीकृष्ण
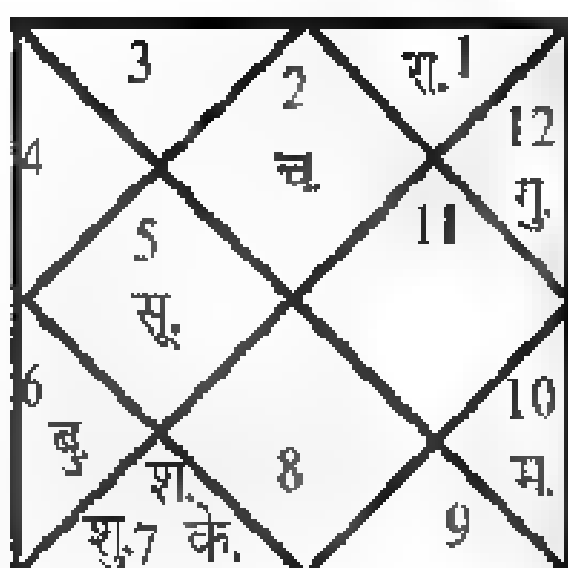
जन्म तिथि–ईसा से 5158 वर्ष पूर्व, भाद्रपद कृष्ण पक्ष अष्टमी, बुधवार रात्रि 12.00 जन्म नक्षत्र-रोहिणी, जन्म स्थान-नन्दगांव (मथुरा), उत्तर प्रदेश, जन्म समय- 12.00 रात्रि

चंद्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति और शनि यह पांच ग्रह उच्च के होने से राजयोग हुआ। शुक्र व सूर्य स्वगृही है। इस प्रकार सातों ग्रह उत्तरोत्तर श्रेष्ठ स्थिति में हैं।

नभश्चराः पंच निजोच्चसस्था।
यस्य प्रसूतौ स तु सार्वभौम॥

बृहद् योगरत्नाकर/पृ.66

भगवान श्रीकृष्ण चंद्र प्रधान होने के कारण षोडश कला अवतार थे। यह कुंडली भी इस बात को पुष्ट करती है। प्रायः जन्मपत्रिका के प्रारंभ में अनिष्ट निवारण एवं शुभदर्शन हेतु भगवान् श्रीकृष्ण की कुंडली प्रस्तुत की जाती है। इस कुंडली के पांचो पंच महा पुरुष योग के साथ सभी प्रकार के राजयोग संयुक्त रूप से सम्मिलित हैं।

दूसरे घर का अधिपति पंचम में होने से वाणी में जादू था।

संत कबीर

जैनाचार्य विजय सूरी जी

मुंशी प्रेमचंद

आचार्य रजनीश

3	2	1
4 गु.		12 रा.
5		11
6	सू. 8	10
7 के.		श. बु. चं. शु. 9

जन्म तिथि-11.12.1921, जन्म स्थान पूना, जन्म समय 17.15

जार्ज बर्नार्ड शॉ (नाटककार)

3 श. बु.	2 चं.	1
4 शु. सू.		12 गु. रा.
5		11
6 के.	8	10
7 म.		9

जन्म तिथि 26.7.1856, जन्म समय-3.30 प्रात: जन्म स्थान डबलिन इंग्लैण्ड

डोरोथी पार्कर

3	2	1
4 बु. गु.		12 रा.
5 मं. सू.		11
6 श. के. शु.	8	10
7		चं. 9

सुप्रसिद्ध अमेरिकन कवियित्री

डॉ. जगदीशचन्द्र बोस (वैज्ञानिक)

3
2 गु.
1
12
4 श
5 के.
11 रा
6 चं.
सू. 8
10 मं.
7
शु. बु. 9

जन्म तिथि-30.11.1858, जन्म समय-17.00, जन्म स्थान-पश्चिम बंगाल।

के. करुणाकरन

3 गु. बु. सू.
2 के. चं. शु.
1
12
4 श.
5
11
6 मं.
रा. 8
10
7
9
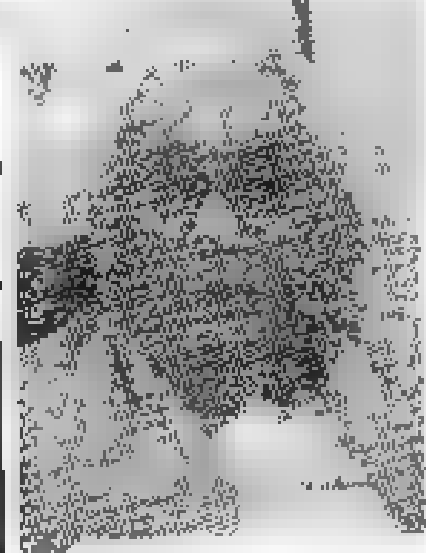
जन्म स्थान-त्रिवेन्द्रम्, जन्म तिथि 5.7.1918, जन्म समय-04.30

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी

3 सू.
2
के. 1
12
4 बु. शु.
5
11 चं.
6 मं.
8
10
7 रा.
श. गु. 9

प्रमोद महाजन

3	2	रा. 1
4		12
5 श.		11
6 च. बु. शु.	मं. 8	10
7 सू. के.		गु. 9
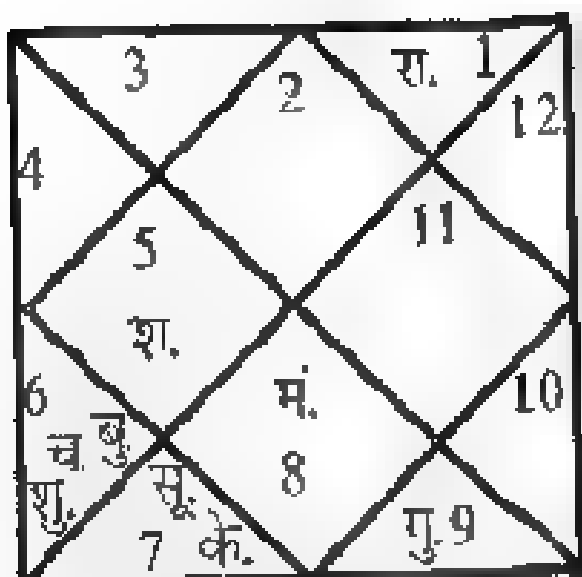
जन्म तिथि 30.10.1948, जन्म समय-21.00, जन्म स्थान हैदराबाद।

कु. हेलन केलर

के. 3 सू. शु.	2	श. 1
मं. 4 बु.		12 गु.
5		11 चं.
6	8	10
7		रा. 9
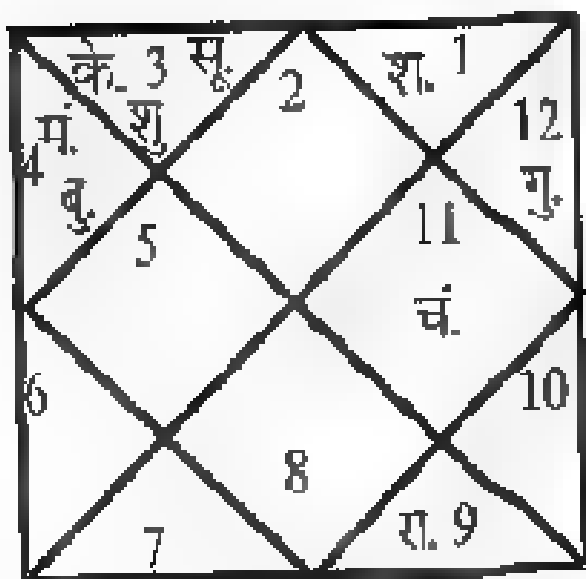
जन्म स्थान-अमेरिका, जन्म समय- 27.6.1988, जन्म समय-3.30 सुबह। अमे. सामा. कार्यकर्त्ता, जो जन्म के 19 माह से गूंगी, बहरी व अंधी हो गई थी।

स्वतंत्र भारत

3 मं.	2 रा.	1
च. 4 च. बु. सू. श.		12
5		11
6	के. 8	10
7 गु.		9
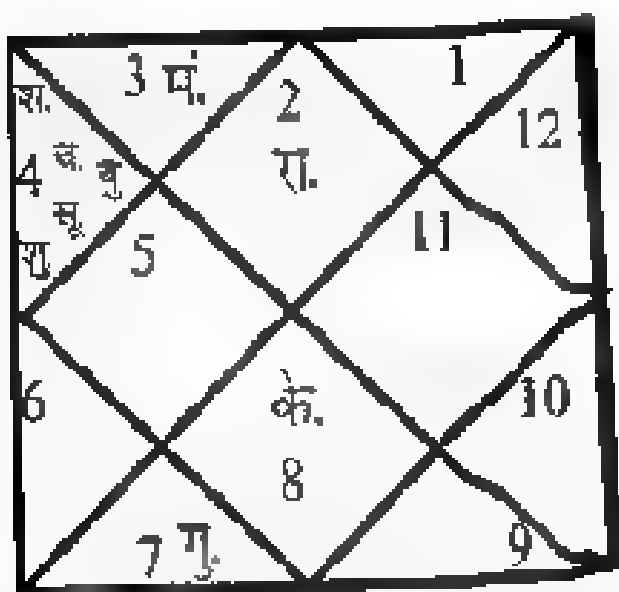
समय-12.00, तिथि 15.8.1947, स्थान-दिल्ली। स्वतंत्र भारत की कुंडली में पूर्ण कालसर्प योग है।

आरिफ मोहम्मद खान

3 2 1
4 12 रा.
5 11 चं. गु.
6 श. के. सू. शु. 8 बु. 10
7 मं. 9
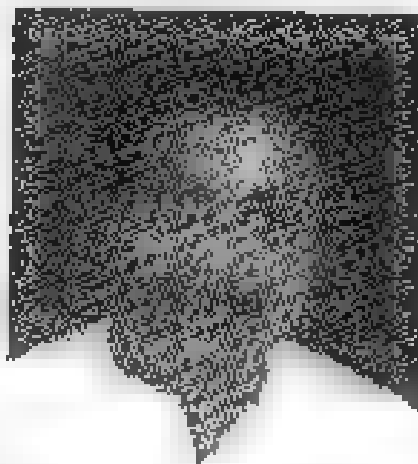
जन्म स्थान-बुलन्दशहर, जन्म तिथि-18.11.1950, जन्म समय-18.15

विश्व कोकिला लता मंगेशकर

3 2 गु. रा. 1
4 च. 12
5 शु. 11
6 बु. सू. के. 8 10
7 मं. श. 9
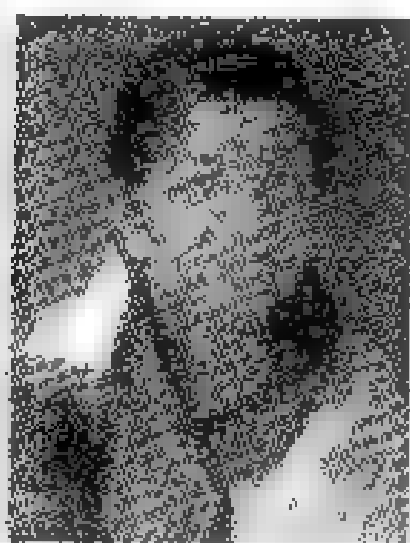
जन्म तिथि-28.9.1929, जन्म समय-23.00, जन्म स्थान मुम्बई।

माइकल ऐंजलो एन्टोनी

3 2 चं. 1
4 12 रा.
5 11
6 सू. म. बु. गु. 8 श. 10
के. 7 शु. 9

एक प्रसिद्ध अंग्रेजी फिल्म डायरेक्टर

अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा

जन्म स्थान पटना, जन्म तिथि 9.12.1945, जन्म समय-17.20

आशुतोष मुखर्जी
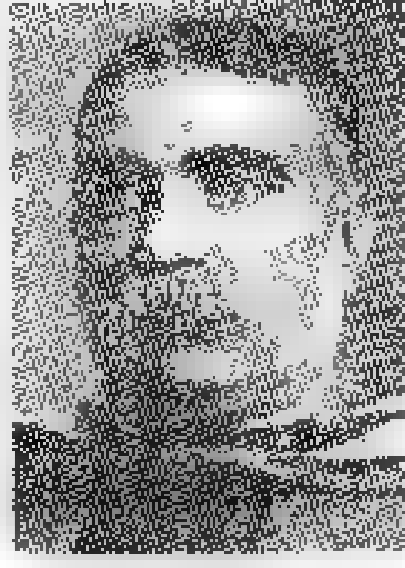
जन्म तिथि-29.6.1864, जन्म समय 03.55, जन्म स्थान-कलकत्ता

उद्योगपति जे.आर.टाटा

जन्म स्थान पेरिस, जन्म तिथि-27.07.1904, जन्म समय-12.39।

अभिनेत्री नर्गिस
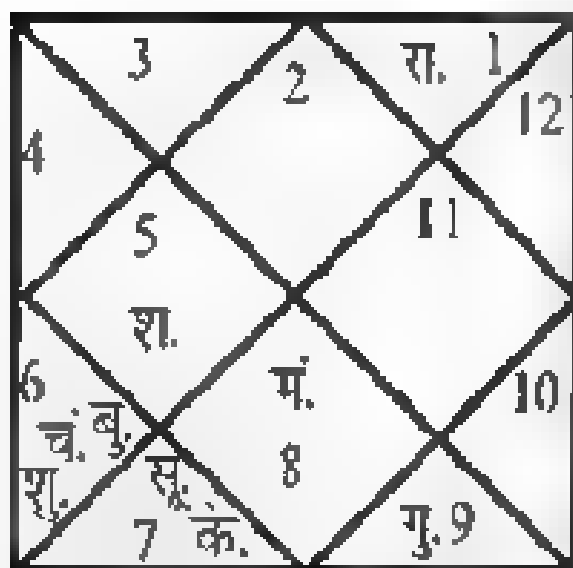
जन्म तिथि-1.6.1929, जन्म समय-05.52, जन्म स्थान-कलकत्ता। प्रसिद्ध अभिनेता सुनीलदत्त की धर्मपत्नी एवं संजयदत्त की माता, इनकी मृत्यु कैंसर के कारण 3.5.1980 को मुंबई में हुई।

सौरभ गांगुली
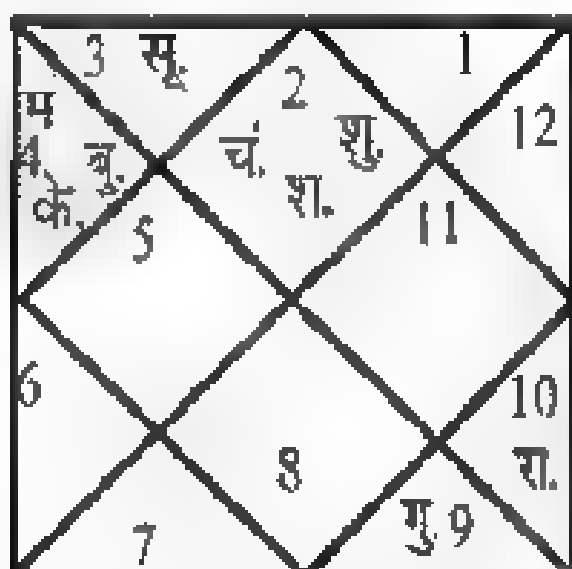
जन्म तिथि 8.7.1972, जन्म समय रात्रि 02.30, जन्म स्थान कलकत्ता। 'बंगाल का टाईगर' नामक से विख्यात भारतीय टीम के कप्तान सौरभ गांगुली के पराक्रम भाव का स्वामी चंद्रमा उच्च राशि में स्वगृही शुक्र के साथ 'किम्बहुना योग' करके बैठा है। फलतः सौरभ की कीर्ति समग्र विश्व मे अपनी सानी नहीं रखती।

दिलीप कुमार
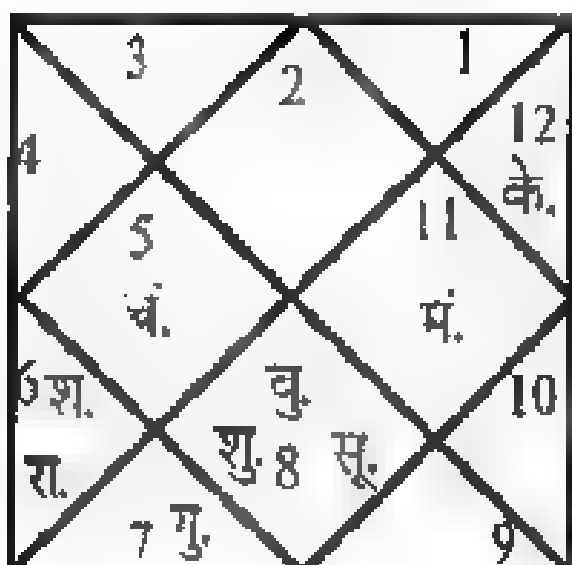
जन्म स्थान पेशावर (पाकिस्तान), जन्म तिथि-11.12.1922, जन्म समय - 16.001 पद्मनामक कालसर्पयोग तीन पत्नियों के होते हुए भी संतान नहीं।

महारानी विक्टोरिया
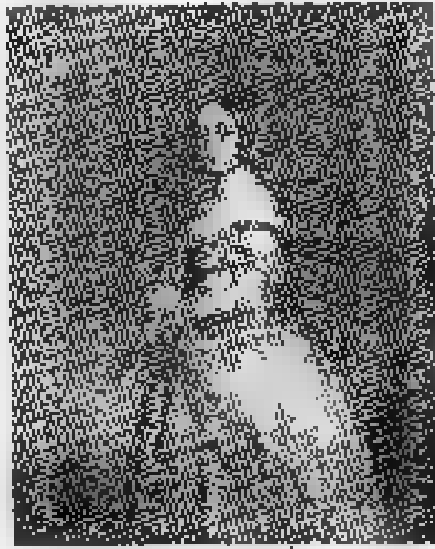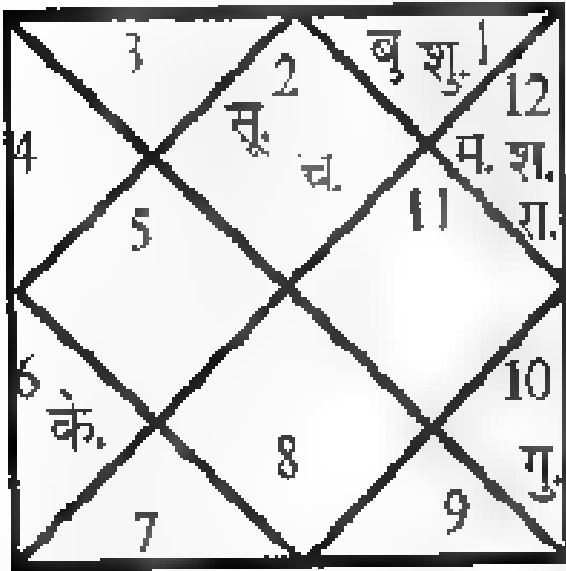
जन्म तिथि-24.5.1819, जन्म समय 4.04, जन्म स्थान-लंदन।

जातकतत्त्व श्लोक 118 पृ. 307 के अनुसार किसी कुंडली में सुखेश यदि सप्तम स्थान को छोड़कर अन्य केंद्र-त्रिकोण स्थान में गया तो '**बलवान् राजयोग**' होता है। इस कुंडली में सुखेश सूर्य लग्न में उच्च के चद्रमा के साथ बैठा है। गुरु भाग्य भवन में बैठकर पूरी ताकत से लग्न को देख रहा है। लग्नेश शुक्र स्वगृहाभिलाषी है। लाभ स्थान में मंगल स्वगृहाभिलाषी है। वहीं भाग्येश एव दशमेश, शनि, गुरु के घर में गुरु-शनि ने घर में जाकर परस्पर स्थान परिवर्तन कर उत्तम राजयोग की सृष्टि की है। क्वीन विक्टोरिया का सिक्का ब्रिटिश राज्य में अमिट छाप छोड़ गया परतु पंचम भाव पाप पीडित, पंचमेश द्वादश में होने से उनकी सन्तानें, उनकी गरिमा को कायम न रख सकीं।

मनीषा कोईराला
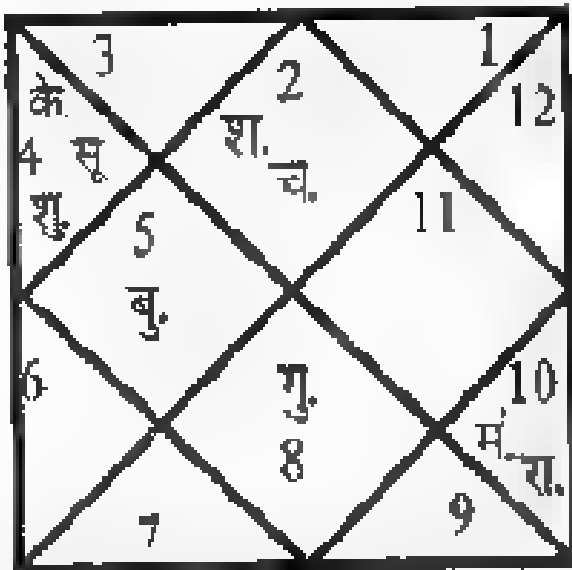
भारतीय फिल्मी दुनिया के क्षेत्र मे 'एम' (M) अक्षर से है प्रारंभ होने वाले नामों ने शुरू से ही बहुत तहजका मचा रखा है जैसे माधुरी, मीनाकुमारी, मधुबाला,

मुमताज, महिमा, मुकेश, महमूद, मोहम्मद रफी, महेन्द्र कपूर, माईकल जैक्सन, मनीषा भी इसमें अपवाद नहीं है।

16 अगस्त 1971 को काठमाण्डो (नेपाल) के राजपरिवार में मनीषा का जन्म वृषलग्न के अन्तर्गत हुआ। नेपाल के उत्थान एवं पतन में कोइराला परिवार की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। क्योंकि मनीषा के पांच चाचा है तथा यह विचित्र संयोग है कि पांचों चाचा नेपाल के प्रधानमंत्री पद पर आसन रह चुके हैं। यह दुनिया का अद्भुत आश्चर्य है एवं गिनिज बुक ऑफ रिकार्ड में इसका उल्लेख भी है। मनीषा उत्तम राजपरिवार में जन्मी एवं फिल्मी दुनिया में उतरी।

फिल्मी दुनिया में पदार्पण राहु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत हुआ। शुक्र ही मनीषा की कुण्डली में सबसे आश्चर्यजनक योग है। चन्द्र एवं शुक्र का परस्पर स्थान परिवर्तन योग। लग्नेश शुक्र चंद्रमा के घर मे ही पराक्रमेश चन्द्र उच्च का शुक्र के घर मे है यही से इन्हें अद्वितीय सुन्दरता, एवं सर्वोच्च कुशल अभिनेत्री के संयोग बनें।

मनीषा के सप्तम भाव में बृहस्पति स्वगृहाभिलाषी है। यह लग्न को देख रहा है फलत: मनीषा में अपने मूल वतन नेपाल के प्रति देशप्रेम कुट-कूट कर भरा हुआ है। वे परोपकारी भी है, दयालु भी है। इसका कारण यह बृहस्पति जो कुलदीपक योग एवं गजकेसरी जैसे उत्कृष्ट योगों की सृष्टि कर रहा है।

मनीषा की कुण्डली में एक और बहुत महत्वपूर्ण घटना यह है कि भाग्य का स्वामी मंगल उच्च का है। मंगल नेतृत्व शक्ति का स्वामी है। इसकी दृष्टि व्ययभाव, धनभाव एवं पराक्रम भाव में है। फलत: मनीषा खर्चीली स्वभाव की होगी, नशे करने वाली होगी, धन खूब कमायेगी एव इनका बड़ा भारी नाम फिल्मी दुनिया में होगा। चूंकि सप्तमेश होकर मंगल उच्च मनीषा प्रेम विवाह करेगी पति करोड़पति-अरबपति होगा। विवाह विदेश में होगा, इस बात की संभावना अधिक है क्योंकि मंगल व्ययभाव (विदेश स्थान) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। मनीषा को राहु मे शुक्र की दशा ने अद्वितीय सफलता दी। सौदागर फिल्म से एक के बाद एक लगातार उत्तम फिल्में उन्हें मिलती रही और वे सफलता की बुलन्दियों को छूती रहीं।

26 नवम्बर, 2002 से कुछ प्रतिकूल समय की शुरूआत हुई जिसका प्रभाव 26 दिसम्बर 2002 तक रहेगा। गुरु में केतु कीर्ति को भग करेगा। मनीषा अपनी नई फिल्म 'छोटी सी लव स्टोरी' के रीलीज के साथ ही उलझ गई। उसे राजनेताओं से लेकर अदालत के दरवाजे खटखटाने पड़े। उसकी व्यक्तिगत जीवन पर आरोप-प्रत्यारोप लगे। मनीषा की मानसिक शांति भंग हुई इसका सारा दोष केतु की अन्तर्दशा और शनि की साढ़े साती को जाता है। यह कुछ ऐसा ही समय है जो संजय दत्त एवं सलमान खान के जीवन में आया।

शनि के हिसाब से 2 अप्रैल 2003 तक शनि का गोचर मनीषा के लिए

मानसिक शांति भंग करने वाला एव अशुभ रहेगा क्योंकि शनि की साढ़े साती इस समय तीसरे चरण पर होगी। मनीषा को सस्ती लोकप्रियता एवं व्यर्थ के विवादो से बचकर रहना चाहिए

अंकविद्या के हिसाब से भी इनका भाग्यांक 7 एवं मूलांक 6 है। आने वाला वर्ष 2003 का मूलांक पांच है। मूलांक पांच का स्वामी बुध है जबकि सात का वरूण जो पांच का शत्रु है। फलतः यह वर्ष 2003 विवादास्पद रहेगा एवं चुनौतियो से भरा वर्ष होगा जबकि 2004 का मूलांक 6 होने से उत्तम उपलब्धियां भरा वर्ष होगा।

इस समय ये पुनः एक नई चेतना-शक्ति के रूप में फिल्मी चित्रपट पर उभरकर आयेगी। इन्हीं दिनों 3.7.2004 तक गुरु में शुक्र का अन्तर इन्हें अद्वितीय सफलता की ओर ल जायेगा। इन्हे विशेष रूप से शुद्ध हीरे से जड़ा हुआ शुक्र यंत्र धारण करना चाहिए। यह शुक्र ही इनके भाग्य के सितारे को बुलन्दी की ओर ले जायेगा।

उद्योगपति राहुल बजाज
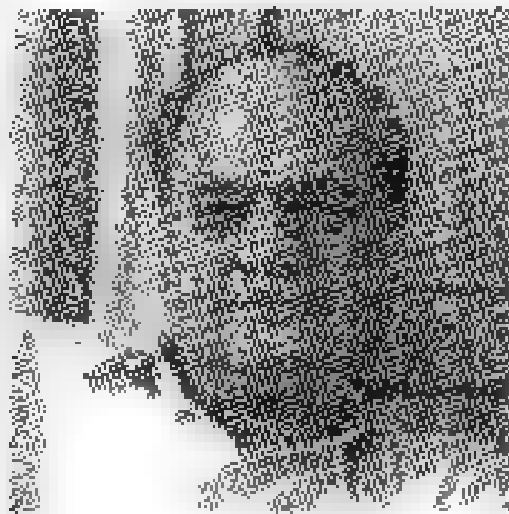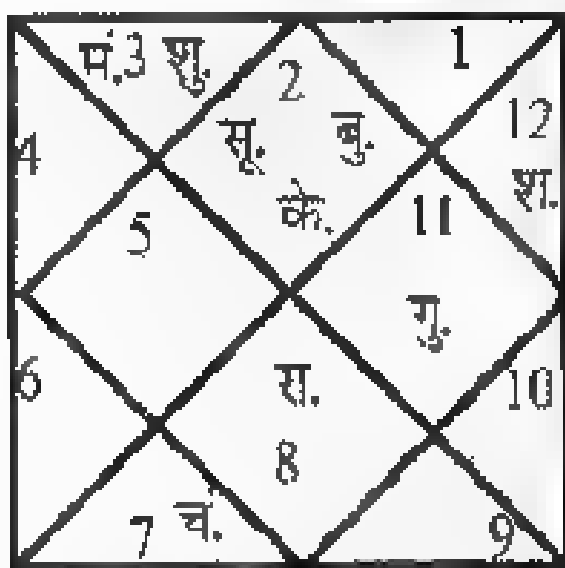
जन्म स्थान-कलकत्ता, जन्म तिथि-10.6.1930, जन्म समय-5.10

उद्योगपति नुस्ली वाडिया
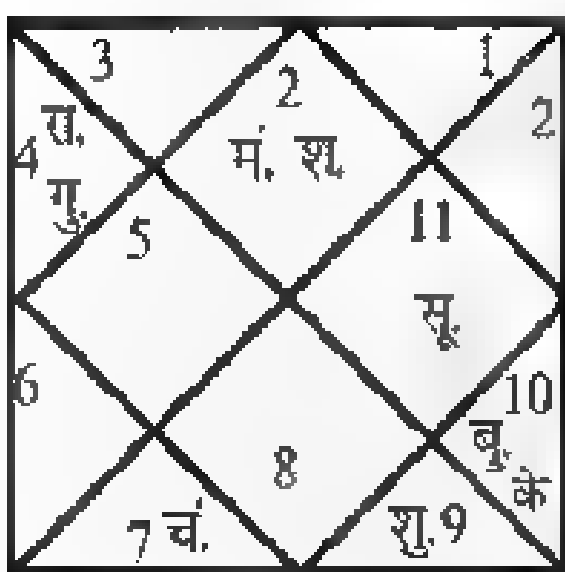
जन्म तिथि-15.2.1944, जन्म समय-13.30, जन्म स्थान-मुम्बई।

मार्टिन लूथर

जन्म तिथि 15.1.1929, जन्म समय-14.30 प्रातः, जन्म स्थान अमेरिका। यह नीग्रो राजा लूथर है। जिसकी 4.4.1964 में हत्या हो गई।

टॉनी ब्लेयर
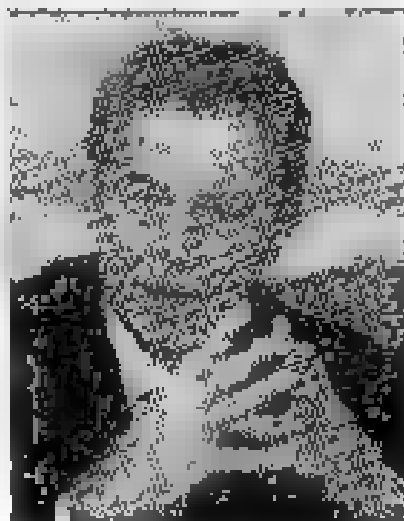
प्रधानमंत्री ब्रिटेन, जन्म तिथि-6.5.1955, जन्म स्थान-लंदन।

राजकवि मैथिलीशरण गुप्त

डोंगरे महाराज

बी. सूर्यनारायण (ज्योतिषाचार्य)

जन्म तिथि 12.2.1856, जन्म समय-दोपहर 12.30, जन्म-बैंगलोर

भक्तकवि दयाराम

पं. रामाचार्य

कु. प्रज्ञाभारती

प्रखर वक्ता एवं तेजस्वी संन्यासिन, शिष्या स्वामी सत्य मित्रानन्द गिरि हरिद्वार (उत्तर प्रदेश)

गोभक्त वीर जुगराज बोहरा

व्यक्ति बाल ब्रह्मचारी रहा, समाजसेवी एव राजनीति में भी सक्रिय रहा।

पं. हरदेव शर्मा त्रिवेदी

मीर गुलाम अलीखान

राजा विष्णु सिंह

महाराजा त्रेवेन्कोर

पूंजीपति रामकृष्ण डालमिया

महारानी दरभंगा

जन्म तिथि-सन् 1909 इस्ट-30.04. जन्म स्थान-नरसिंह गढ़। धनेश बुध उच्च के शुक्र के साथ 'नीचभंग राजयोग' करके बैठा है। भाग्येश शनि उच्चाभिलाषी होकर केन्द्र-त्रिकोण सबंध स्थापित करके 'कुबेर योग' बना रहा है।

जन्म तिथि-25.9.1857।

संत ज्ञानेश्वर

3 2 क. 1 12
4 गु. चं.
5 11
सू.
6 बु. 10
शु. रा. 8 म.
7 श. 9
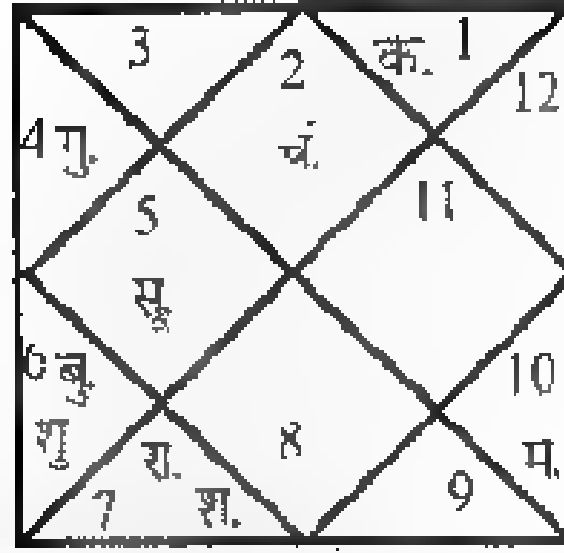
जन्म संवत-1332 माह श्रावण कृष्ण अष्टमी, रोहिणी नक्षत्र, जन्म समय रात्रि 12.00

चद्रमा, मगल बुध और बृहस्पति उच्च होने से राजयोग हुआ। उच्च का गुरु उच्च का बुध, उच्च का मगल-तीन ग्रह उच्च के सूर्य स्वग्रही-इन चार ग्रहों के प्रभाव से यह कुंडली '**अंशावतार योग**' की कुडली बनती है यह कुडली भगवान् श्रीकृष्ण की कुडली से काफी अंशों में समानता लिए हुए है। क्योंकि सत ज्ञानेश्वर को श्री कृष्ण भगवान का ही अवतार या स्वरूप माना गया है।

❑❑❑

मिथुन लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनो ही पक्षों मे 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष मे लग्न को 'वीर्य' एवं बीज कहा है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या को कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बाद विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं, अतः इस कमी को दूर करने के लिए पुस्तके पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पस्तुकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मर्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है लग्न बारह है, ग्रह नौ है, फलत 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह स्थितियां एक लग्न मे बनी। बारह लग्नों में 108 × .2 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितियां बनी। प्रत्येक ग्रहों की दृष्टियो को तीर द्वारा चित्रित कर, इनके फलादेशो पर भी व्यापक प्रकाश, इन पुस्तको में डाला गया है। निश्च्य ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज दिन तक नहीं हुआ वह है–**'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन सी राशि मे है? किस लग्न में है? और कहा किसी भाव (घर) में है? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा का कच्चा ही रह गया इस पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह को अन्य दूसरे ग्रह की युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से .08

ग्रह स्थितियों को पुन: नौ ग्रहों की भिन्न भिन्न युति से जोड़ा जाय तो एक लग्न में 972 प्रकार की द्वि ग्रह स्थितियां बनेगी तथा बारह लग्न में 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्विग्रह युतियां बनेगी. ग्यारह हजार छ: सौ चौसठ **प्रकार की द्विग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनियां में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तक मील का पत्थर साबित होगी। यही कारण है। इन किताबों पर जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

एक छोटा सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मीयोग'** का ले सकते हैं क्या गुरु+चन्द्र की युति से बना गजकेसरी योग सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देगी!!! गजकेसरी योग का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा? गजकेसरी योग की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेगी। अकेली गजकेसरी योग 144 प्रकार का होगा. और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे. गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, **'मकर'** या **'कुम्भलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में गजकेसरी योग छठे स्थान या आठवें स्थान में है तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर बृहस्पति छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चन्द्रमा छठे आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अत: यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सर्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष साफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न' एवं **'कर्कलग्न'** की पुस्तकें अक्टूबर में, तथा **'वृषलग्न'** एवं **'तुलालग्न'** नवम्बर 2003 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी है। जिसका ज्योतिष की दुनियां में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह **'मिथुनलग्न'** की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अन्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। मिथुनलग्न में जार्ज वाशिंगटन, जुल्फीकार अली भुट्टो, चार्ल्स शोभराज, पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर, प्रियंका गांधी, मुख्यमंत्री जयललिता, डॉ. जाकिर हुसैन, विजयराजे सिन्धिया, अभिनेता राजेश खन्ना, पी. चिदम्बरम्, प्रमोद महाजन जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। मिथुनलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती सस्करण भी शीघ्र निकलेगा।

मिथुनलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की Zero Degree से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व मे पहली बार हुआ है यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है जरूरी नही है कि यह फलादेश सत्य हो फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है.

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन रात में आकाश मे बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम **'सृष्टि'** के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर मे अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष मे नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई **'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों'** से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों मे लिखे। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा मे आपका पहला सार्थक कदम होगा।

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र तंत्र मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं. फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को **"कर्कलग्न"** के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद् उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी है। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वस्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कसीवीं शताब्दी, तंत्र मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि 'युग पुरुष' के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धात, संहिता व होरा इन तीन भागो मे विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदागो में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदागों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालवित, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दो का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वय सायणाचार्य ने **'ऋग्वेदभाष्यभूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का सशोधन है।[6] उदाहरणार्थ "कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष सबधी ज्ञान के बिना सभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवें[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप-स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयन चक्षुर्निरुक्त श्रोत्रमुच्यते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिद कालविधान शास्त्र, यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागाना मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणा ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम्
   इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक "ज्योतिषविवेक (पृ. 4)" गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामा दीक्षरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्--तैत्तरीय संहिता 6/4/8.1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा आएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।
यच्च किंचत् कुर्वत सता कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय–लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्.

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषम्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसक–दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष 1929, पृ. स. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड 2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध सिद्धान्तों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक परिचय हमें **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[5] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[7]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पत्ति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
5. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥ पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chrono ogy and VeoaQnga Jyotisa&(Pub 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar WaoaQ, POONA C TY, page 3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है यो ज्योतिषं
OB 1 OB ;KKI~

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन मे बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं तिथि, वार नक्षत्र योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नही हो सकते। अत: सभी वैदिक एव लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

ससार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम घूम कर द रहे हैं। सूर्य, चद्र ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहो की श्रृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एव सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने ससार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। ससार में ज्ञान विज्ञान की जितनी भी विद्याए हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध श्री शिवराज, (पृ 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ।
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप चंद्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट आरियण्टल सीरिज मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोत.।

यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥6॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों लम्बी श्रृखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल मे सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वय वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नही कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट पुलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका मे ही वराहमिहिर कहते है कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एव अनवरत अनुसधान परीक्षणों मे सलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष- पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ट 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभ.।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि।। बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र मे नहीं उतारेंगे और करोड़ो रूपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते मे आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ मे आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं.

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे म प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने से हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा. समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालेंगे, सोना हो जाएगी. मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते है।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणो में, विपत्ति की घड़ियों मे, या ऐसे समय मे जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक ससाधनों का जोर नही चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर मस्जिद या गिरजाघरों मे, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में आकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों मे पड़े निर्जीव पत्थर तो नहीं बोलते, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे मे इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते है। भविष्य वक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्य वक्ता को उतना सम्मान नही मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यो न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है भारतीय वाङ्गमय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है.

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है[2]

❑❑❑

1. वक्री ग्रह (प्रकाशन 1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ट 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
तथा वेदानधीतोऽपिज्योतिशास्त्रं विना द्विजः।। वेद व्यास ज्योतिर्निबन्ध 20/पृ.7

लग्न प्रशंसा

लग्न देवः प्रभु. स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।

लग्न दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश मे बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक ससार मे कोई नही है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशसा की है।5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजानम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनूत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनमत्र मिथ्या॥
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्॥

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अगों (दूसरे लोगो पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावो (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलय याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

'ज्योतिर्विवरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं ॥8॥

आचार्य रणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।॥9॥

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रद स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफल विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त मे अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है॥10॥

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी प. भगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसधान, अनुभव एव अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहा दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो **मेषलग्न** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता **वृषभलग्न**।
तरह तरह के शाल दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुंसक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआ और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है। टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर जिसका होता **धनुलग्न।**
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है?
लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्य, उदय, आद्य, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का माप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि "लग्न" का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी मे इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है वस्तुत: आकाश में दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है, 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 मे बारह

का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहा से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं इसका ऊपरी मध्य घर जहा सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली की सीधा पूर्व है चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं, चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटो में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटो में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थो में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय मे हुआ था।

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5 00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.1.	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है।
1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहा से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारो ने "लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगानि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए है

जातक ग्रन्थों के अनुसार -

यथा तनुत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एव पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। इसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावो की कल्पना एव फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि– **"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों मे विभाजित किया गया है।

दायां नेत्र, 2
दाहिनी भुजा कंधा दोनों
सिर चेहरा 1
बाया नेत्र 12
11 पिण्डली
4 वक्षस्थल छाती हृदय
हृदय वक्षस्थल सीना 10
5 दाया पैर
7 गुप्तेन्द्री गुदा लिंग
9 जांघ
6 कमर
पैर 8 बाया

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित

द्वितीय भाव
द्वादश भाव
तृतीय भाव
प्रथम भाव
एकादश भाव
चतुर्थ भाव
दशम भाव
पंचम भाव
सप्तम भाव
नवम भाव
षष्ठ भाव
अष्टम भाव

है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाए से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों मे काफी चिन्तन किया गया है एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है

द्रव्यं
व्यय
पराक्रम
देह
लाभ
सुख
राज्य
सुतौ
कलत्रं
भाग्यं
शत्रु
वृत्ति

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्यया लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवे में सन्तान एव विद्या छठे में शत्रु व रोग सातवें में पत्नी, आठवे में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवे में राज्य ग्यारहवें में लाभ एव बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार मिथुनलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

भौमजीवारुणाः पापा एक एव कविः शुभः।
शर्नैश्चरेण जीवस्य योगमेषभवो यथा॥6॥
नायं शशी निहंता स्यादुभिषत्याप निष्कलम्।
ज्ञातव्यानि दिनेशस्य फलान्येतानि सूरिभिः॥7॥

दूसरा पाठ

कुजभान्विन्दवः पापा एक एव कविः शुभः।
राजयोगकरौ शुक्रसोमपुत्रो शुभान्वितौ॥8॥
शनिजीवसमायोगात् फलं मेषभुवो यथा।
शनिः साक्षान्न हन्ता स्यान् मारकत्वेन लक्षितः॥9॥
भौमादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः।
शुभाशुभफलान्येवं ज्ञेयानि युगजन्मनः॥10॥

मिथुन लग्न के लिए मंगल, गुरु और रवि अशुभ होते हैं, इसका कारण मंगल षष्ठ स्थान का और एकादश स्थान का स्वामी है। गुरु सप्तम (मारक) स्थान का और दशम स्थान का स्वामी है और वह मारक (सप्तम) स्थान का स्वामी होने से मारकेश है और अशुभ फल करने वाला है। रवि तृतीय स्थान का स्वामी होने से अशुभ है। गुरु का पाप फल उत्पन्न करने का कारण श्लोक 10 में दिया हुआ है। शनि और गुरु का योग मारक होता है। कारण शनि अष्टम स्थान का स्वामी होकर गुरु मारकाधीश है। इसलिए इनका योग अनिष्ट फल उत्पन्न करने वाला है। शुक्र

शुभ फल उत्पन्न करने वाला है। कारण वह पंचम स्थान (त्रिकोण स्थान) का अधिपति है। व्ययेश और द्वितीयेश साहचर्यानुसार फल देने वाले होते हैं। इसलिये चन्द्रमा पाप ग्रहों से संयुक्त नहीं हो तो वह मारक नहीं बनता कारण चन्द्र और सूर्य इनको मारक का दोष नहीं लगता। बुध और शुक्र का संयोग हो तो इसे राजयोग समझना चाहिए। शुक्र लग्न स्वामी बुध का मित्र है इसलिए शुक्र सर्वस्वी शुभ फल देता है। मिथुन लग्न हो तो अकेला शुक्र किसी भी शुभ स्थान में हो तो अति श्रेष्ठ प्रकार के फल देता है। बुध लग्न का और चतुर्थ केन्द्र का स्वामी है और इसका पंचमेश शुक्र के (त्रिकोणेश के) साथ योग श्रेष्ठ फल करने वाला होता है। इस कुंडली में मंगल और शनि मारक होते हैं।

(मतान्तर से) मंगल, रवि और चन्द्र ये अशुभफल देते हैं। अकेला शुक्र मात्र शुभ फल देता है। शुक्र, बुध इनका शुभयोग हो तो राजयोग होता है। शनि और गुरु इनका योग मेष लग्न के समान ही फल करता है। मारक लक्षणों से युक्त होने पर भी शनि प्रत्यक्ष मारक नहीं बनता। मंगल इत्यादि जो अशुभ ग्रह कहे गए हैं वे मारक होते हैं। इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना चाहिए।

स्पष्टीकरण

दूसरे पाठ में गुरु की जगह चन्द्रमा लिया गया है। चन्द्रमा धनेश है। इसलिये वह मारक स्थान का स्वामी होने से अशुभ फल देने वाला होता है। इसलिए चन्द्रमा की गणना अशुभ ग्रहों में की गई है। इसके सिवाय चन्द्रमा लग्नेश बुध का शत्रु है। पहले पाठ के अनुसार शुक्र अकेला राजयोग करता है और उसकी लग्नेश बुध के साथ मित्रता है इसलिए बुध, शुक्र का योग राजयोग करता है ऐसा कहा हुआ है। कुछ ग्रंथकारों का मत है कि गुरु दशम और सप्तम इन दो केन्द्रों का स्वामी होने से शुभ होता है। शुभ ग्रह केन्द्र स्थान में अशुभ होता है। ऐसा जो भी एक ठोस नियम है तो भी केन्द्र का स्वामी होने के कारण उसने कुछ तो भी शुभ देना ही चाहिए यह उचित है। इस कारण से गुरु को दूसरे पाठ में से निकाल दिया जाता है।

कुछ प्रतियों में इस प्रकार का श्लोक दिया हुआ है।

"रविचन्द्रकुजाः पापा एक एव शनिः शुभः।
चन्द्रात्मजेन संयुक्तो विशेषफलदायकाः॥"

मिथुन लग्न के लिए रवि, मंगल और चन्द्रमा पाप फल देने वाले होते हैं। शनि शुभ फल देता है। यदि इस शनि से बुध का संयोग होता हो तो विशेष फलदायक होगा अथवा राजयोग करेगा।

इस श्लोक में शनि शुभ फल देने वाला है ऐसा कहा हुआ है परन्तु शनि अष्टमेश और भाग्येश होता है यानि भाग्य स्थान का अर्थात् बलवान त्रिकोण स्थान

का अधिपति मानकर अष्टम स्थान का अधिपति जो भी हो तो भी अष्टम स्थान की त्रिषडाय स्थानों में गणना नहीं की गयी होने से इसलिए इसे योगकारी माना गया होना चाहिए।

मिथुनलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**—चन्द्रमा द्वितीय स्थान का अधिपति होकर उसे श्लोक 11 के अनुसार मारकत्व का दोष नहीं होने से वह अशुभ फल नहीं देता लेकिन शुभ फल देता है (मध्यम-फल)।
2. **शुभ योग**—शुक्र द्वादश स्थान का अधिपति होकर बुध से स्थान साहचर्य के कारण और अन्य ग्रहों के साहचर्य के अलावा वह पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फलदायक होता है।
3. **शुभ योग**—बुध चतुर्थ स्थान (केन्द्र स्थान) का अधिपति होकर उसे श्लोक 11 के अनुसार अल्पदोष लगता है और शुक्र का स्थान साहचर्य प्राप्त होने पर राजयोग कारक होता है और इतने पर भी वह यदि इन स्थानो में हो तो निश्चयपूर्वक राजयोग करके शुभ फल देने वाला होता है।

मिथुनलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**—मंगल पाप ग्रह होकर श्लोक 6 के अनसार षष्ठ और एकादश स्थानों का स्वामी होने से विशेष अशुभ है विशेष अशुभ फलदायक होता है।
2. **अशुभ योग**—गुरु सप्तम स्थान का अधिपति होने से मारक होकर सप्तम और दशम स्थानों का (केन्द्रों का) स्वामी होता है। श्लोक 7 के अनुसार और केन्द्राधिपत्य दोष श्लोक 10 के अनुसार ये दोष बलवत्तर हैं और शनि के सह-स्थानाधिपत्य के दोष के कारण से भी वह अशुभ माना गया है। यह मारक होकर अशुभफल देता है।
3. **अशुभ योग**—सूर्य पाप ग्रह होकर तृतीय स्थान का अधिपति होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है

मिथुनलग्न के लिए निष्फल योग

1. गुरु+शुक्र, (दोनों ही दूषित होते हैं), 2. गुरु-शनि, 3. बुध शनि (शनि अष्टम स्थान का स्वामी होने से) 4. तीसरा योग श्लोक 22 के अनुसार निष्फल होता है।

मिथुनलग्न के लिए सफल योग

बुध+शुक्र

मिथुनलग्न एक परिचय

1.	धनेश	– चन्द्रमा
2.	पराक्रमेश	– सूर्य
3.	लग्नेश, सुखेश	– बुध
4.	पंचमेश, खर्चेश	– शुक्र
5.	षष्ठेश, लाभेश	– मंगल
6.	सप्तमेश, राज्येश	– गुरु
7.	अष्टमेश, भाग्येश	– शनि
8.	त्रिकोणाधिपति	– 5-शुक्र, 9-शनि,
9.	दु:स्थान के स्वामी	- 6-मंगल, 8-शनि, 12-शुक्र
10.	केन्द्राधिपति	– 1, 4-बुध, 7, 10-गुरु
11.	पणफर के स्वामी	– 2-चन्द्र, 5-शुक्र, 8-शनि, 11-मंगल
12.	आपोक्लिम	– 3-सूर्य, 6-मंगल, 9-शनि, 12-शुक्र
13.	त्रिकेश	– 6-मंगल, 8-शनि, 12-शुक्र
14.	उपचय के स्वामी	– 3-सूर्य, 6-मंगल, 10-गुरु, 11-मंगल
15.	शुभ योग	– 1. चन्द्र (मध्यम फल), 2. शुक्र, 3. बुध
16.	अशुभ योग	– 1. मंगल, 2. गुरु, 3. सूर्य
17.	निष्फल योग	– 1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि, 3. बुध+शनि
18.	सफल योग	– बुध+शुक्र
19.	राजयोग कारक	– बुध, शुक्र, चंद्र
20.	मारकेश	– चन्द्र मुख्य मारक, सहायक मारक गुरु

21.	**पापफलद**	–	सूर्य, मंगल, शनि (पापी), परमपापी–सूर्य, मंगल
22.	**शुभ युति**	–	बुध+शुक्र
23.	**अशुभ युति**	–	1. बुध+मंगल

विशेष मिथुनलग्न में गुरु को 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है शनि नवमेश (योगकारक) होकर भी पूर्णफलदायक नहीं है।

❑❑❑

मिथुनलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	–	मिथुन
2.	लग्न चिह्न	–	स्त्री पुरुष का जोड़ा, गदा व वीणा हाथ में
3.	लग्न स्वामी	–	बुध
4.	लग्न तत्त्व	–	वायु तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	–	द्विस्वभाव
6.	लग्न दिशा	–	पश्चिम
7.	लग्न लिंग व गुण	–	पुरुष (कुमार)
8.	लग्न जाति	–	शूद्र
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	क्रूर स्वभाव, त्रिधातु प्रकृति
10.	लग्न का अंग	–	कन्धा
11.	जीवन रत्न	–	पन्ना
12.	अनुकूल रंग	–	हरा
13.	शुभ दिवस	–	बुधवार
14.	अनुकूल देवता	–	गणपति
15.	व्रत, उपवास	–	बुधवार
16.	अनुकूल अंक	–	पांच
17.	अनुकूल तारीखें	–	5/14/23
18.	मित्र लग्न	–	मेष, तुला, कुम्भ, सिंह, कन्या
19.	शत्रु लग्न	–	कर्क
20.	व्यक्तित्व	–	चतुर, निडर, बुद्धिमान

21.	सकारात्मक तथ्य	–	कुशल व्यापारी-व्यवसायी, वाकपटु
22.	नकारात्मक तथ्य	–	निर्मोही, आत्मकेन्द्रित निष्ठुर।

❑❑❑

बुध का खगोलीय स्वरूप

बुध सूर्य के सबसे निकट का ग्रह है। इसी कारण इस पर भयकर उष्णता है। बुध मूर्य से 5,80,00,000 किमी. की दूरी पर है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 88 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। बुध सदैव अपना एक भाग सूर्य के सम्मुख रखकर सूर्य की परिक्रमा करता है। यह हमारे सौर मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। इसका व्यास केवल 5160 किमी है। और इसका गुरुत्व भी हमारी पृथ्वी से एक चौथाई है। पृथ्वी पर छः फुट कूदने वाला व्यक्ति बुध पर चौबीस फुट ऊंचा कूद सकेगा। सूर्य के निकटतम होने के कारण इसे देखा जाना भी कठिन है। यह सूर्य के साहचर्य मे न होने पर, सूर्योदय के कुछ मिनट पहले पूर्वी क्षितिज पर अथवा सूर्यास्त के कुछ ही मिनट बाद तक पश्चिमी क्षितिज पर, प्रथम कक्षा के तारे के समान चमकता हुआ दिखाई देता है बुध पूर्व दिशा में अस्त होने के बत्तीस दिन बाद वक्री होता है, वक्री के चार दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है। अस्त होने के सोलह दिन बाद पूर्व में उदय, उदय के चार दिन बाद मार्गी, मार्गी के बत्तीस दिन बाद पूर्व में पुनः अस्त हो जाता है।

बुध को क्षैतिज, सौम्य, बोधन, शन्न, कुमार हेम्न, उतारूद, आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

बुध की गति—बुध अपनी धुरी पर 24 घण्टा 5 मिनट में पूरी तरह घूम लेता है तथा 87 दिन 23 घण्टा 15 मिनट और 16 सैकेण्ड में सूर्य की परिक्रमा कर लेता है, जिस समय यह सूर्य के निकट होता है तब प्रति सैकेण्ड 35 मील, दूर रहने पर प्रति सैकेण्ड 23 मील और मध्यम गति 29 मील प्रति सैकेण्ड की गति से परिभ्रमण करता है। यह एक घण्टे में एक लाख नौ हजार मील की गति से चलता है। स्थूल मान से बुध एक राशि पर 25 दिन व एक नक्षत्र पर 8 1/2 दिन रहता है।

सूर्य से 27 डिग्री अंश की दूरी से आगे होने पर यह वक्री हो जाता है। जिस राशि पर यह वक्री होता है, उस पर 25 दिन ही रह पाता है। सूर्य की गति से भी तीव्र गति वाला होने के कारण यह पूर्व मे अस्त और पश्चिम मे उदय होता है और

जब वक्री होता है तब पश्चिम में अस्त व पूर्व में उदय होता है। वक्री होने की स्थिति में सूर्य से 12 डिग्री अंश की दूरी पर तथा मार्गी होने पर 13 डिग्री अंश पर अस्त हो जाता है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर जाने से वक्री और बारहवीं पर शीघ्रगामी होता है। यह 92 दिन मार्गी और 23 दिन वक्री रहता है। मार्गी होने पर 37 दिन उदय और 36 दिन अस्त हो जाता है। वक्री होने पर 33 दिन उदय और 16 दिन अस्त रहता है। जब बुध की गति 113/32 घटी पल की होती है तब यह परम शीघ्रगामी या अतिचारी हो जाता है। और इस स्थिति में 20 दिन रहता है। यह एक वर्ष में तीन बार वक्री होता है। बुध वक्री होने पर एक दिन आगे या पीछे स्थिर सा प्रतिभासित भी होता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न के स्वामी बुध का पौराणिक स्वरूप

पीतमाल्याम्बरधर: कर्णिकारसमद्युति:।
खड्गचर्मगदापाणि: सिंहस्थो वरदो बुध ।।

बुध पीले रंग की पुष्प माला और पीला वस्त्र धारण करते हैं उनके शरीर की कान्ति कनेर के पुष्प जैसी है। वे अपने चारों हाथों में क्रमश: तलवार ढाल, गदा और वरमुद्रा धारण किये रहते हैं। वे अपने सिर पर सोने का मुकुट तथा गले में सुन्दर माला धारण करते हैं। उनका वाहन सिंह है।

बुध की उत्पत्ति

अत्रि ऋषि के पुत्र चन्द्र हुए उन्होंने एक बार देवगुरु बृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण कर लिया इससे देवासुर संग्राम हो गया। अन्त में ब्रह्मा जी ने बीच में पड़ कर तारा को बृहस्पति को वापिस दिला दिया। गुरु ने तारा को गर्भवती पाया। उन्हें अपने क्षेत्र में दूसरे का बीज देखकर तारा को गर्भस्राव करने की आज्ञा दी तारा ने एक सुनहले अणु को गर्भ से बाहर निकाला। उस अण्डे से बालक का जन्म हुआ। वह अति सुन्दर था। उसे देखकर चंद्र और गुरु दोनों ही मोहित हो गये। यह किसका पुत्र है? तारा लज्जावश जब कुछ न कह सकी तो जन्मजात बालक ने मां की झूठी लज्जा से क्रोधित होकर उसे सत्य बोलने पर विवश किया। इस बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर ब्रह्मा जी ने उसका नाम बुध रख दिया। यह बुद्धिदाता रहेगा, यह वरदान दिया। बालक को चंद्रमा को सौंप दिया गया तब से बुध चंद्र पुत्र कहलाये। उनके जन्म के बाद उनकी प्रेरणा से भौतिक ज्ञान का उजागर करने वाली वेद विद्या अथर्ववेद के रूप में प्रसिद्ध हुई। अर्थशास्त्र, गणित व विज्ञान कला कौशल व्यापार के सूत्र उसमें रहे। अत: बुध का सम्बन्ध व्यापार से बन गया।

अत: बुध सौम्य ग्रह कहलाया व शुभ ग्रह माना गया है। यह गुरु, चंद्र व तारा तीनों के मिश्रण का स्वरूप है। गुरु का रंग पीला, चंद्र का सफेद व तारा का लाल

था। अत: इनके मिश्रण से इस ग्रह का रग दूर्वादल श्याम हरा रग बना। असल में वात पित्त और कफ का मिश्रण बुध है। यह कल्पना इसमें रूपात्मकता से दी गई है। गुरु का क्षेत्र और चंद्र का वीर्य होने से यह दोनो से शत्रुता रखने वाला ग्रह बना। साथ ही अन्य क्षेत्र में उत्पन्न होने से यह वर्ण सकर अर्थात् नपुसक ग्रह कहलाया गीता में कहा गया है।

अथर्ववेद के अनुसार बुध के पिता का नाम चन्द्रमा और माता का नाम तारा है। ब्रह्माजी ने इनका नाम बुध रखा, क्योंकि इनकी बुद्धि बड़ी गम्भीर थी। श्रीमद्भागवत के अनुसार ये सभी शास्त्रों में पारंगत तथा चन्द्रमा के समान ही कान्तिमान हैं. (मत्स्य पुराण 24/./2) के अनुसार इनको सर्वाधिक योग्य देखकर ब्रह्मा जी ने इन्हें भूतल का स्वामी तथा ग्रह बना दिया।

महाभारत की एक कथा के अनुसार इनकी विद्या-बुद्धि से प्रभावित होकर महाराज मनु ने अपनी गुणवती कन्या इला का इनके साथ विवाह कर दिया। इला और बुध के सयोग से महाराज पुरुरवा की उत्पत्ति हुई। इस तरह चंद्रवश का विस्तार होता चला गया।

श्रीमद्भागवत (4/22/13) के अनुसार बुध ग्रह की स्थिति शुक्र से दो लाख योजन ऊपर है। बुध प्राय: मगल ही करते हैं। किन्तु जब यह सूर्य की गति का उल्लंघन करते है, तब आंधी-पानी और सूखे का भय प्राप्त होता है

मत्स्य पुराण के अनुसार बुध ग्रह का वर्ण कनेर के पुष्प की तरह पीला है बुध का रथ श्वेत और प्रकाश से दीप्त है। इसमें वायु के समान वेग वाले घोड़े जुते रहते हैं। उनके नाम श्वेत, पिसंग, सारग, नील, पीत, विलोहित, कृष्ण, हरित, पृष और पृष्णि हैं।

बुध ग्रह के अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता भगवान विष्णु हैं। बुध मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है इनकी महादशा 17 वर्ष की होती है।

बुध ग्रह की शान्ति के लिए प्रत्येक अमावस्या को व्रत करना चाहिये तथा पन्ना धारण करना चाहिये। ब्राह्मण को हाथी दात, हरा, वस्त्र, मूंगा, पन्ना सुवर्ण, कपूर, शस्त्र, फल, षट्रस, भोजन तथा घृत का दान करना चाहिए नवग्रह मण्डल में इनकी पूजा ईशान कोण मे की जाती है। इनका प्रतीक वाण है तथा रंग हरा है। इनके जप का वैदिक मंत्र '**ओइम उद्बुध्यास्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स्ँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥**', पौराणिक मत्र '**प्रियकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेत तं बुध प्रणमाम्यहम्॥**' बीज मंत्र '**ओइम ब्रां ब्रीं ब्रौ स: बुधाय नम:** सामान्य मत्र **ओइम बुं बुधाय नम:**। इनमें से किसी का भी नित्य एक निश्चित सख्या में जप करना चाहिए। जप की कुल

सख्या 9000 तथा समय 5 घडी दिन है विशेष परिस्थितियो मे विद्वान ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए

व्यापारी

नाना प्रकार के रसों का सग्रह करने वाला व्यापारी होता है यह भोजन के सभी रसों को बनाकर उनको स्नायुओं म सचालित करता है। अतः यह स्नायु मडल का अधिकारी है। सुन्दर रस परिपाचक से त्वचा सुन्दर बनती है। अतः यह त्वचा पर पूर्ण अधिकार रखता है। इसकी मूलतः दो राशियां हैं। नकारात्मक राशि मिथुन और सकारात्मक राशि कन्या है.

राशि स्वरूप मिथुन मे स्त्री पुरुष का जोड़ा बनाया गया है और कन्या में सुन्दर कन्या हाथ मे ज्वाला लिए दिखाई गई है। मिथुन वायु तत्त्व प्रधान राशि है और कन्या पृथ्वी तत्त्व प्रधान है। अतः वायु और पृथ्वी का मिश्रण बुध है

बुध का अधिकार क्षेत्र

वायु तत्त्व प्रधान बुध का प्रभाव स्कध, फेफडा, ऊपरी पसली, कन्धे हाथ, बाजू, स्वर अग, श्वास नली व कोशिकाओं पर पड़ेगा. पृथ्वी तत्त्व से नाभिचक्र अग्नाशय, कमर मेखला और आंतो पर होगा। बलवान बुध इनमें विकार नहीं आने देगा और बिगड़ा हुआ इनमें से भावानुसार कोई रोग देगा

बुध के अधिकारियो में स्नायुतत्र, जीभ, आत, वाणी, नाक कान, गला, फेफड़े आते हैं नैसर्गिक कुण्डली में यह तीसरे और षष्ठ भाव का प्रतिनिधित्व करता है। बुध के बिगड़ने पर, उसकी विशोंत्तरी दशा म मस्तिष्क विकार, याददाश्त कमजोर होना, पक्षाघात, हकलाहट, दौरे पड़ना, सूघने, सुनने और बोलने की शक्ति का ह्रास होता है।

खेलकूद, हंसी-मजाक इसके क्षेत्र हैं। रेडियो, तार, टेलीफोन इसके अधिकार में हैं। इसकी मुख्य धातु पारा है। इसका रत्न पन्ना है यह सदा कुमार ही रहता है। बाल्यावस्था पर इसका अधिकार है। यह सबसे छोटा ग्रह होने से इसे क्षुद्र ग्रह भी कहते हैं।

बुध का स्वरूप

मिथुन राशि में स्त्री पुरुषों का मिथुन चित्र है. यह दूर्वादल श्याम रग का है अतः इसका गेहुआं रग होता है। कन्या राशि में अग्नि का अस्त्र भाण्ड हाथ में लिए नाव में बैठी कन्या का चित्र है। यह रूपवान है। कुछ गौर वर्ण की है। मिथुन में

कद लम्बा होगी क्योंकि यह पुरुष राशि है और कन्या में मझौला कद होगा। सामान्यत: चेहरा भरा हुआ, नेत्र काले और बालों में कुछ घुंघरालापन होगा। नाक, ऊंची, हाथ पैर लम्बे, और दुबले दोनो राशियों में ऊष्मा की कमी रहेगी। नेत्र आकर्षक, सुन्दर व मतवाले होंगे। आकर्षक घनी केश राशि होगी।

कन्या राशि या लग्न वालों में स्त्री स्वभाव की झलक पाई जाती है। दोनो दो विरोधी पक्षों से मेल रखने में माहिर होंगे। मीठा बोलकर अपना काम बनायेंगे। दोनों मनोरंजन के शौकीन, विलासी, प्रसन्न रहने वाले, कुछ मजाक करने वाले व चचल मस्तिष्क वाले होंगे बुध प्रधान व्यक्ति शीघ्र सिखावट में आने वाले व सोहबत का असर भी इन पर शीघ्र होगा एंसे व्यक्ति दूसरों की भूलो को सूक्ष्मता से निकालने में होशियार होगे व सामने वाले की मशा शीघ्र समझ जायेंगे।

मिथुन जातक का व्यक्तित्व विद्रोही होगा। कठोर परिश्रमी होगे, साहस होगा। जोखिम उठा सकेगा। इनका विचारने का तरीका तर्कसंगत व वैज्ञानिक होगा। जातक चतुर, चालाक, वाचाल व कुशल व्यापारीपन रहेगा। इनकी पठन-पाठन मे रुचि भी रहेगी. मैकेनिकल कार्य में भी रुचि रहेगी।

कन्या में पराया धन भवन, वाहन का लाभ पाएगा। कुशाग्र बुद्धि होगा। पढ़ने मे होशियार होगा। विद्वता रहेगी। राजनीति में सफलता, मेडिकल लाईन व सामाजिक कार्यों में रुचि रहेगी। यह ज्यादा भावुक होंगे। बिना सोचे समझे कार्य कर लेगे। कोमल प्रकृति होगी। सकट में शीघ्र घबराने वाला। प्रेम के क्षेत्र मे असफल रहेंगे। पत्नी पक्ष से परेशान होंगे व पुत्र सतान कम होगी। बुध प्रधान व्यक्ति दो विरोधियों पार्टियों से मेल रखने में माहिर होंगे।

बुध की बलवत्ता

कन्या मिथुन राशि में, कन्या मूल त्रिकोणी, बुधवार को द्रेष्काण तथा नवांश में स्वगृह में धनु राशि में (रवि के साथ न हो तो) रात को तथा दिन को विसुव के उत्तर में, तथा शनि के मध्य भाग में, लग्न मे अकेला हो तो बली होता है। बली होने पर यश और बल की वृद्धि करता है। लग्न मे दिग्बली होता है। हर्ष बली होता है। यह चतुर्थ व दशम भाव का कारक ग्रह है। मीन मे नीच का होता है। सूर्य से 13 अंशो के भीतर अस्त भी होता है। प्राय: सूर्य बुध साथ ही देखे जाते है अत: अस्त, वक्री और मार्गी बनता रहता है। इसकी राशि बदलने की अवधि 1 मास है। सूर्य, राहु, शुक्र इसके मित्र हैं। गुरु, मगल शनि सम हैं। चद्र से इनकी शत्रुता है। कन्या के 15 अंश तक मूल त्रिकोण में होने से ज्यादा बलवान रहता है तथा परमोच्च का कहलता है। मीन के 15 अशों तक परम नीच रहता है नीच होकर यदि यह वक्री हो तो शुभ फल देता है। प्रात: सूर्योदय के 2 घटे तक बलवान रहता है।

विवेचन

यह राहु के दोष को दूर करता है। "राहुदोष बुधो हन्यात" प्रसिद्धि है यह चौथे स्थान में विफल होता है। अतः चौथे भवन मे बैठकर निर्बल हो जाता है। शुक्र से बुध की पराजय होती है। इसकी दृष्टि तिरछी है वैसे सातवें तो देखता है ही पर अपनी एक राशि को देखते ही दूसरी राशि को भी देख लेता है। इसकी विशेष दृष्टि नहीं है। इसकी दिशा उत्तर मानी गई है।

ईशान कोण इसका निवास माना गया है। इसका घर बाण आकार का है। जन्मभूमि मगध देश है इसके देवता विष्णु हैं। इसे प्रसन्न करने हेतु "विष्णु सहस्र नाम" का पाठ श्रेष्ठ रहता है। यज्ञ और ज्ञान का यह अधिष्ठाता है। यह रजोगुणी, ब्राह्मण है क्योंकि अण्ड और जन्म दोनों यह अणुज द्विज है। "द्वाभ्या जन्म संस्कारत् जायते इति द्विज" यह प्रसिद्ध है। यह यों तो सर्वदा बली माना गया है यह शीघ्र फलदाता है। यह 32वें वर्ष मे भाग्योदय करता है मेष, सिंह, धनु इसकी शुभ राशिया हैं। वृष, कन्या, मकर साधारण तथा मिथुन, तुला, कुम्भ उत्तम, कर्क, वृश्चिक, मीन अशुभ राशिया हैं बुध को दी हुई वस्तु शीघ्र नहीं आती है। बुध के दिन विद्या प्रारम्भ का निषेध है व किसी वस्तु का देना भी मना है। व्यापार प्रारम्भ की दृष्टि से श्रेष्ठ है।

बुध के अचूक फल

- ❑ बुध अकेला किसी भाव में कम ही पाया जाता है अतः इसके अकेले के फल के वर्णन मिलने कठिन हैं। क्योंकि बुध सूर्य या शुक्र प्रायः साथ में या आगे पीछे रहते हैं। अतः इनके परिप्रेक्ष्य में फल मिलते रहते है
- ❑ लग्न में अकेला बुध शुभ फल करेगा, शुभ दृष्टि हो तो व्यापार से धनी बनायेगा (लग्न+कन्या+मिथुन)।
- ❑ सातवें भाव में अकेला बुध हो तो प्रायः नपुंसकता ही देगा चाहे शुभ दृष्टि ही क्यों न हो (लग्न कन्या, बुध) विवाह शीघ्र होगा।
- ❑ तीसरे भाव में बुध व्यक्ति को ज्योतिषी, डॉक्टर, लेखक और न्यायाधीश बनाता है। (लग्न कर्क, कन्या, धनु)
- ❑ यदि धन स्थान मे बुध तीसरे शुक्र हो, तो जातक ज्योतिषी, सुन्दर हस्ताक्षर वाला, तीव्र स्मरणशक्ति वाला होगा। 24, 30, 36वें वर्ष में जातक का भाग्योदय होगा।
- ❑ चौथे बुध, गु+शु+श के साथ ही उत्तम व्यापार व वाहन योग बनेगा यदि राहु साथ हो तो जमीन बाग निर्बल रहेगा।

- मिथुन लग्न में पाप प्रभावी बुध चर्म रोग देता है। सू+च. के साथ हो तो।
- द्वितीयेश बुध का पाप प्रभाव घर से भागने की प्रवृत्ति करेगा।
- तृतीयेश बुध (लग्न, मेष, कर्क) हो तो पाप पीड़ित व अकाल मृत्यु के संकेत है।
- अष्टमेश बुध (लग्न वृश्चिक, कुम्भ) सट्टे से धन दिलाने वाला हो तो निर्बल धन नाश होगा।
- मिथुन राशि में बुध तृतीय व भावेश पाप प्रभावी हो तो सास की नली, दमा खांसी के रोग होगे।
- कन्या राशि में बुध षष्ठ भाव भावेश पीड़ित हो तो कब्ज, टायफाईड, हर्निया, आंत्रशोथ होंगे।
- तृतीयेश बुध के साथ हो कण्ठ रोग की संभावना रहेगी।
- षष्ठेश और बुध लग्न में हो तो जातक गूंगा होता है।
- चंद्र+मंगल+बुध तीनों ग्रह राहु व शनि से पीड़ित हो तो कुष्ठ रोग होगा।
- चंद्र और बुध पाप प्रभावी हो तो पागलपन के संकेत है.
- शनि की राशियों में बुध या मंगल हो तो जातक हंसी दिल्लगी वाला होगा
- बुध का गुरु से संबंध हो तो जातक हंसोड़ होगा।
- बुध के साथ चंद्र भी पीडित हो, चौथा भाव भी पीडित हो तो त्वचा रोग होगा
- यदि धनेश वक्री हो बुध स्थान में दरिद्र योग बनेगा।
- केन्द्र में स्वगृही या उच्च का बुध हो तो भद्रयोग बनेगा। व्यक्ति धनी बनेगा.
- सातवें नीच का बुध हो तो विवाह देर से होगा।
- 5वें बुध (लग्न कर्क, वृश्चिक, मीन) प्रथम पुत्री हो बाद में पुत्र होगा (कुम्भ में संतान की कमी)
- बुध यदि मेष, सिंह, धनु राशि में हो तो व्यक्ति ज्योतिषी, गणितज्ञ, तत्त्वज्ञानी, इंजीनियर, वृष, कन्या मकर में हो तो पदार्थ, विज्ञान, हस्तरेखा मिथुन, तुला, कुम्भ चिकित्सक व्याकरणी व्यापारी होगा। कर्क, वृश्चिक, मीन में टाईपिंग अंगूठे का विशेषज्ञ।
- बुधादित्य योग के कारण जातक सरकारी नौकरी शिक्षक या डॉक्टर, वकील बनेगा। क्लर्क, बैंक में नौकरी।

- दशम भाव में बुध राशि 1, 5, 9 का इंजीनियर, गणितज्ञ, क्लर्क शिक्षक 2, 6 10 व्यापारी, कमीशन एजेन्ट, ठेकेदार। 3, 7, 12 समाचार सम्पादक, मुद्रक, प्रकाशक।
- 11वें भाव में बुध राशि 1 5, 9 में हो तो 1 या 2 पुत्र होंगे 2, 6, 10 में जातक चित्रकार, टाईपिस्ट, कम्पाउण्डर होगा। 3, 7, 11 में हो तो शिक्षा डिमोस्टेटर। 4, 8, 12, में हो तो स्वतंत्र व्यापार की सभावना है।
- 12वें भाव में बुध होने से व्यक्ति खर्चीला ज्ञानी व विद्वान होगा एव समाज में अग्रणी होगा

उपाय

निर्बल बुध को बलवान करने तथा बुध दोष दूर करने हेतु।

1. विष्णु पूजन, यज्ञ व विष्णु सहस्र नाम का पाठ करें।
2. बुध रत्न पन्ना 7 से 8 रत्ती तक का, विषम सख्या लीलड़ी या हरा काच भी पहन सकते है। हरी चड्डी या बनियान पहने।
3. बुधवार को यम की पूजा करें और ब्राह्मण से जप कराए।
4. बुधवार को गणपति दर्शन कर भोग लगाए। गणपति को दूध चढ़ाए।
5. गाय को हरी घास दें। हरी सब्जी, अन्न क्षेत्र में दें हरी वस्तु मंदिर में चढाएं
6. हाथी को नारियल दे
7. सत्यनारायाण व्रत करें व कथा करें।
8. कांसे के पात्र में सुवर्णतुष डालकर छायादान करें।
9. हर बुधवार गौ को मूग की दाल, गुड़, रोटी दें।
10. तोते को हरी मिर्च दें, तोता पालें।
11. वैष्णव संत के घर हर बुधवार सीधा सामान दें
12. एकादशी का व्रत करें व साधुओं को हरे फल दे।
13. बुधवार को व्रत करना भी श्रेष्ठ होता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

मिथुनलग्न का स्वरूप

पार्वतीय कन्याख्या राशिर्दिनबलान्दिता।
शीर्षोदया च मध्याङ्गा द्विपाधाम्यचरा च सा ॥13॥
सा सस्यदहना वैश्य चित्रवर्णा प्रभुजिनी।
कुमारी तमसा युक्त बालाभावा बुधाधिपा॥14॥

—बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 9

शीर्षोदय, गदा और वीणा सहित पुरुष स्त्री की जोड़ी, पश्चिम दिशावासी, वायु तत्त्व, द्विपद रात्रिबली, ग्रामचारी, वात प्रकृति, समदेह, हस्ति वर्ण है, इसका स्वामी बुध है॥9॥

स्त्रीलोलः सुरतोपचारकुशलः श्यामेक्षणः शास्त्रविद्,
दूतः कुंचितमूर्धजः पटुमतिर्हास्येङि्तद्यूतविन्।
चार्वङ्गः प्रियवाकप्रभक्षणरुचिर्गीतप्रियो नृत्तवित्,
क्लीवैर्याति रतिं समुन्नतनसश्चन्द्र तृतीयर्क्षगे॥13॥

—बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 7

मिथुनस्थ चन्द्रमा से मनुष्य स्त्रियों के विषय में विशेष आकर्षण अनुभव करने वाला, शास्त्रोक्त विधि से सम्भोग करने वाला अर्थात् विभिन्न मुद्राओं व विधियों से स्त्री को सतुष्ट व तत्पर करने मे कुशल, काले नत्रों वाला, शास्त्र तत्त्व को जानने वाला, धूतकर्म अर्थात् सन्देश वचन में निपुण, कुछ मुड़े बालों वाला, चतुर बुद्धि अर्थात् प्राज्ञ, हास्य एवं दूसरे के भावों को ताड़ लेने वाला, द्यूतक्रीड़ा के रहस्यों को समझने वाला, सुन्दर शरीर वाला, प्रिय वचन बोलने वाला, सदैव खाने के लिए तत्पर, गीत प्रिय, नाटक व उसके अंगों को समझने वाला गुणदोषज्ञ, नपुंसको से प्रेम रखने वाला, एवं ऊंची नासिका वाला होता है

तृतीयलग्ने तु नरोऽभिजातो विज्ञानविद्यागमशास्त्रलुब्धः।
स्वपक्षपूज्यः परपक्षहन्ता जितेन्द्रियः स्याद्बहुवित्तयुक्तः।3॥

–वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.3/ पृ.287

यदि मिथुनलग्न में जन्म हो तो मनुष्य कुलीन विशेष ज्ञान से युक्त, विद्या से युक्त, विद्या व शास्त्र का रसिक, अपने पक्ष में पूज्यत्व पाने वाला, शत्रुओं का नाश करने वाला, अपनी इन्द्रियों को वश में रखने वाला, अत्यधिक धन सम्पन्न होता है।

भोगी बन्धुरतो दयालुरधिकः श्रीमान् गुणी तत्वविद्
योगात्मा सुजनप्रियोऽतिसुभगो रोगी च युग्मोदये।

जातक पारिजात श्लो. 3/ पृ. 678

भोगी अपने बन्धुओं को प्रेम करने वाला, विशेष मात्रा में दयालु, धनी, गुणी, तत्त्ववेत्ता योगात्मा(योगासक्त जिसकी आत्मा हो अर्थात् आत्मिक उन्नतिशील, सज्जनों का प्रिय) (या सज्जन प्रिय हो) अत्यन्त सुन्दर स्वरुप, रोगी।

मिथुनादिमे दृगाणे पृथूत्तमाङ्गो धनान्वितः प्रांशुः।
कितवो गुणी विलासी नृपाप्तमानो वचस्वी स्यात्।।

–सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में मिथुन राशि तथा मिथुन राशि का महिला द्रेष्काण हो तो जातक मोटे मस्तक वाला, धनी, ऊंचा, धूर्त, गुणी, विलासी राजा से सम्मान प्राप्त करने वाला और अच्छा वक्ता होता है।

मिथुनोदयसन्जातो मानी स्वजनवल्लभ.।
त्यागीभोगी धनीकामी दीर्घसूत्रोऽरिमर्दकः।।

–मानसागरी अ. 1/ श्लो.3

मिथुनलग्न वाले जीव मानी, बन्धुजनों का प्रेमी, दानी, भोगी, शांत गति से कियाशील, शत्रु हन्ता तथा वाहन सुख- मित्र युक्त, ऊच्च जीवों के समीप, सहवासशील, नीतिमान चतुर होता है।

भोजसंहिता

मिथुनलग्न का स्वामी बुध सूर्य का सबसे निकटतम ग्रह है। यह प्राय. उदीयमान होते हुए सूर्य के साथ व अस्ताचल की ओर जाते हुए सूर्य के साथ देखा गया है। इस राशि वाले व्यक्ति प्रायः पीत वर्णीय देखे गए हैं बुध जिस ग्रह के साथ बैठता है अथवा जिस ग्रह का इस पर प्रभाव होता है वह तत् वत् हो जाता है उसी के

अनुसार व्यक्ति का रंग व चरित्र हो जाता है। मिथुन राशि वाले व्यक्ति पर संगत का असर बहुत ज्यादा होता है ऐसा देखा गया है। बुरी संगत इनको बुरा बना देती है तथा अच्छी संगत से ये अच्छे बन जाते हैं। ये शीघ्र ही दूसरे लोगों के प्रभाव व आकर्षण केन्द्र में आ जाते है। यह इस लग्न वालों की सबसे बड़ी कमजोरी है।

नक्षत्र चरणानुसार फलादेश

का की कु	घ ड़ छ	के हो हा
मृगशिरा-2	आर्द्रा-4	पुनर्वसु-3

मृगशिरोर्धम् आर्द्रा पुनर्वसु पाद त्रयं मिथुनः

मृगशिरा नक्षत्र

यदि आपका जन्म मृगशिरा नक्षत्र में हुआ है तो आपकी राशि का प्राकृतिक स्वभाव विद्याध्ययनी और शिल्पी है। इस राशि वाले बालक बहुत ही चतुर व सुंदर होते है। प्रायः ये मध्यम कद एवं छरहरे बदन के होते हैं. इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक आर्थिक दृष्टिकोण से मितव्ययी एवं सोच विचार कर खर्च करने वाले होते है। इनकी प्रगति में निरन्तर बाधाएं आती रहती हैं तथा इनका जीवन परिवर्तनमय रहता है। Change is Charm of Life के सिद्धान्त का प्रतिपादन करने वाले ये व्यक्ति प्रायः एक धन्धे को छोड़कर दूसरे धंध मे हाथ डालते हुए देखे गये हैं।

चरण	अंश से तक	चरण के नवांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
तृतीय	1.0.0 से 3.20.0 तक.	शु. शु.	मं. बु.	बु. के.	1.00.00 से 1.53.20 1.53.20 से 2.40.00
चतुर्थ	3.21.0 से 6.40.0 तक	मं. मं. मं.	बु. बु. बु.	शु. सू. चं.	2.40.00 से 4.53.20 4.53.20 से 5.33.20 5.33.20 से 6.40.0

यह द्विस्वभाव लग्न है। अतःएव इस लग्न वाले व्यक्ति प्रत्येक वस्तु के दोनों पहलुओं पर बहुत अच्छी तरह सोच विचार कर फिर निर्णायात्मक कदम उठाते हैं, यह लग्न मध्यम संतति और शिथिल शरीर का प्रतिनिधित्व करता है। इसको क्रोध कम आता है प्रायः यह शान्त व गम्भीर स्वभाव के होते हैं। यदि ये क्रोधित हो जाएं तो क्रोध शान्त होने पर फिर पश्चाताप प्रकट करते हैं।

इस राशि का चिह्न "गदा व वीणा सहित" पुरुष-स्त्री की जोड़ी है। अतःएव व्यक्ति गायन, वाद्य आदि कलाओं में रुचि रखते हैं

आर्द्रा नक्षत्र

यदि आपका जन्म आर्द्रा नक्षत्र मे हुआ है तो अध्ययनशीलता के साथ इनमे व्यापारिक बुद्धि होती है, इनकी बुद्धि अन्तर्मुखी होती है। आप सभी की सुनते हैं परन्तु करते वही है जो दिल कहता है, आप रहस्यवादी व्यक्ति हैं, आपके मन की थाह पा लेना बहुत कठिन है इसके विपरीत आप दूसरों के मन की बात को तुरन्त भाप लेते हैं। इस राशि वाले जातक व्यापारिक संस्थाओं में अधिकतर Salesman, or जनसम्पर्क के लिये नियुक्त किय जाते हैं ऐसे व्यक्ति सरकारी क्षेत्र में भी Public Dealing कार्यो मे देखे गये है। रौबीले व सख्त अनुशासनात्मक कार्य कलाप इनके बस का खेल नही है ये शारीरिक प्रेम की अपेक्षा मानसिक श्रम पर ज्यादा जोर देते हैं, क्योंकि यह राशि वायु तत्त्व प्रधान है।

आर्द्रा के चारों चरणों के फल–

रौद्रर्क्षे प्रभवो बालो भवेत्पाद चतुष्टये

व्ययी दरिद्री स्वल्पायु तस्करस्तु यथा क्रमम्॥

प्रथम चरण मे– नवांशेश, गुरु और उप नक्षत्र स्वामी राहु का प्रभाव चंद्र पर या लग्न पर पड़ेगा। अत: जातक धनकारक गुरु का राहु प्रभाव से खर्च करेगा। अत: बहुत खर्चीला होगा।

द्वितीय चरण में–नवांशेश शनि का राहु व उपनक्षत्र स्वामी शनि से संबंध बनेगा। अत: मिथुन राशि का चद्र यदि आर्द्रा के द्वितीय पाद मे आ गया तो निर्धन बना देगा या धन की कमी करेगा।

तृतीय चरण में–इसमें भी नवांशेश शनि का चद्र+बुध+शुक्र+सूर्यादि से संबंध बनेगा। अत: यह आयु पर प्रभाव करके शारीरिक कष्ट या अल्प आयु देगा।

चतुर्थ चरण में–नवांशेश गुरु का चद्र से योग तो बनता है परन्तु राहु+चंद्र योग भी है। उपनक्षत्रों मे मंगल प्रभाव पड़े तो व्यक्ति तस्कर बनता है। अत: छुपाने की या चोरी करने की आदत जातक में होगी।

मिथुनलग्न में उत्पन्न जातक विनम्र, उदार एवं हास्य प्रवृत्ति के व्यक्ति हाते हैं तथा बुद्धिमत्ता का भाव उनके चेहरे से परिलक्षित होता है। इनमें स्वाभिमान का भाव विद्यमान रहता है तथा यह भौतिक सुख साधनों एवं धनैश्वर्य से सम्पन्न रहते हैं। वे

कार्यों को अत्यंत ही सोच समझ कर सम्पन्न करते हैं तथा सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से उनका सम्पर्क बना रहता है। संगीत एवं कला के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा नवीन सिद्धान्तों या मूल्यों का प्रतिपादन करने में समर्थ रहते हैं। इसके अतिरिक्त गणित लेखन या संपादन के क्षेत्र में इनको सफलता प्राप्त होती है।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक संतुष्टि भी बनी रहेगी अपने समस्त सांसारिक महत्त्व के कार्यों को आप बुद्धिमत्ता पूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही जीवन में स्वपरिश्रम एवं योग्यता से आपको भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी तथा आप धनैश्वर्य से सुसम्पन्न होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

मित्रों के प्रति आपके मन में पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा आप सरकारी कार्यों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा वाणी में भी मधुरता रहेगी साथ ही शांति विनम्र एवं हास्य प्रवृत्ति के कारण अन्य जनों को प्रभावित तथा आकर्षित करने में समर्थ रहेंगे। कला एवं संगीत के प्रति आप रुचिशील रहेंगे तथा प्रयत्न से आपको इस क्षेत्र में मान प्रतिष्ठा भी प्राप्त हो सकती है. लेखन, गणित, सम्पादन या व्यापार संबंधी कार्यों में आप उन्नति प्राप्त करके समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में स्वयं को स्थापित करने में समर्थ रहेंगे

आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित तथा आकर्षित रहेंगे। आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में सफल होंगे तथा धनैश्वर्य एवं वैभव से भी सुसम्पन्न रहेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे फलतः अपनी विद्वत्ता से समाज में मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव होगा तथा निष्ठापूर्वक आप धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। आप अवसरानुकूल सामाजिक जनों के मध्य उदारता तथा दानशीलता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे फलतः आपके सामाजिक प्रभाव तथा मान प्रतिष्ठा में सतत् वृद्धि होती रहेगी। आप धर्म के ज्ञाता होंगे तथा गूढ़-से-गूढ़ विषय को हृदयगम करने में समर्थ होंगे।

व्यापार के प्रति आपकी विशेष रुचि होगी तथा इसके द्वारा आप धनवान एवं विख्यात होंगे। संगीत एवं कला में भी आप समयानुसार अपनी रुचि का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप सांसारिक ऐश्वर्य से युक्त होंगे। तथा सामान्यतया आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता से युक्त रहेगा। इस प्रकार आप शांत उदार, हास्य प्रवृत्ति युक्त एवं विद्वान पुरुष होंगे तथा जीवन में समस्त सुखों को अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

पुनर्वसु नक्षत्र

यदि आपका जन्म पुनर्वसु नक्षत्र में हुआ है तो आप सबसे प्रेम करते है परन्तु बहुत कम व्यक्ति स्नेह पूर्ण व्यवहार को समझ पाते हैं, प्राय: इनके प्रेम का सबंध लोग कायरता से जोड़ देते है। इनके कई गुप्त शत्रु होत हैं। इनके कई सतान होती हैं परन्तु उनमें आपस में या माता पिता के प्रति विद्वेष की भावना हो आयेगी। सहयोगी, पड़ोसी व ससुराल पक्ष में ऐस जातक के पति षडयत्रकारी वातावरण बनते रहते हैं, आपको निकटतम मित्र से विश्वासघात की आशका बनी रहती है, आप सतर्क रहें।

चरण	अंश	नवांशेश	उप नक्षत्र स्वामी	अश से तक
प्रथम	23 20.0	मगल	गुरु शनि बुध	20.0.0 से 21.46.40 21.46.40 से 23 53.20 23.53.20 से 25 46.40
द्वितीय	26.40 0	शुक्र	केतु शुक्र	25.46 40 से 26.33.20 26.33.20 से 28.46.40
तृतीय	30.0.0	बुध	सूर्य चंद्र	28.46.40 से 29.26.40 29.26 40 से 30.0.0

यह नक्षत्र मिथुन राशि के 20 अश से कर्क राशि के 3 20 अश तक रहता है। अत: गुरु इसका स्वामी है। इसमे 3 चरण तक तो मिथुन राशि ही है। अत: चद्र+बुध+गुरु का प्रभाव रहेगा। आगे चौथे चरण में चंद्र+गुरु+चद्र का प्रभाव बनेगा। अत: जातक मूर्ख, धनबल का अभिमानी पर प्रसिद्ध कवि और कामातुर बनता है। यह सपूर्ण नक्षत्र फल है।

"मूढ़ात्मा च पुनर्वसौ धनबलस्यात्: कवि: कामुक:"

पुनर्वसु नक्षत्र में चरणगत चंद्र के फल

प्रथम चरण में—गुरु+चंद्र और नवांश में मंगल का सयोग है तीनों ही परस्पर मित्र होने से जातक खूब सुखी रहेगा।

द्वितीय चरण में—इसमें गुरु+चद्र+शुक्र संयोग होने से जातक विदुषी होगा।

तृतीय चरण में—इसमें गुरु+चंद्र+बुध सयोग होने से बुध की चंद्र व गुरु से शत्रुता के कारण जन्म लेने वाली जातिका रोगिणी होगी।

संपूर्ण फल

• इस तरह मिथुन राशि का फल सूक्ष्मतर बनता है। अतः इस राशि में जन्म लेने वाली स्त्री कफ, वात और पित्त प्रकृति वाली बनेगी, कुछ अल्प बुद्धि वाली और छोटे लेकिन पुष्ट शरीर वाली एवं प्रायः गौरवर्ण वाली होगी। यह अपने धर्म में विशेष श्रद्धा रखेगी और प्रायः मीठा वचन बोलकर अपना काम निकालेगी। उसका स्वास्थ्य भी साधारण होगा। 1 व 7 वर्ष की उम्र में जल भय, 24वे वर्ष मे बीमारी का योग है यानि 3-5-8-11-20-28 व 45 वर्ष की आयु में भी कष्ट रहेंगे। अगर लम्बी आयु बनती हो तो 76 वर्ष तक जा सकती है। आयु भवन के संयोग लग्नगत स्वभाव से सही नहीं बैठते हैं पर रोगों से बचें तो ऐसा संभव है। अंत में त्रिदोष से या जल से या विष से मृत्यु संभावित है। इस लग्न में मंगल व गुरु मारक बनते हैं।

इस लग्न मे या चंद्र लग्न में शुक्र प्रधान ग्रह है। शुभ ग्रह शुक्र ही बनता है। मंगल, गुरु, सूर्य व शनि पापी बनते हैं। केन्द्राधिपत्य दोष बुध व गुरु को लगता है। मिश्रफलकर्त्ता चंद्र (सम) है। बुध भी मिश्रफल कर्ता है। राजभंग योग करने वाला शनि और सप्तमेश गुरु बाधक ग्रह बनता है।

राजयोग भंग संबंध गुरु+मंगल दशमेश लाभेश संबंध से होगा। चंद्र भी मारक बनता है पर सम है। यदि शुक्र+गुरु+मंगल संयोग हो तो राजयोग भंग नहीं होगा।

रोग

मिथुन राशि मे बुध प्रभावी हो और साथ में तीसरे भाव तृतीयंश पर भी पाप प्रभाव हो तो काल पुरुष की तीसरी राशि का अंग सांस की नली के रोग, दमा व खांसी बनते रहेंगे वायु तत्त्व का नुकसान होगा

खराब दशा

यहां पर षष्ठेश एकादशेश बनकर मंगल ज्यादा पापी है। गुरु के बाधक ग्रह होने से इन दोनों की दशाएं खराब ही जायेंगी।

शुभ योग

बुध+सूर्य युति से शुभ योग बनेंगे चाहे स्थान परिवर्तन हो या तीसरे भाव मे भी बैठ जायें बुध+शुक्र भी शुभ योग बनायेंगे।

पागलपन

बुध+चंद्र पाप प्रभावी हो व शुक्र भी पाप दृष्ट हो तो पागलपन बनेगा।

चरण	अंश	नवांशेश	उप नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
प्रथम	10.0.0 10.0.0	गुरु गुरु	राहु गुरु	6.40.0 से 8.40.0 8.40.0 से 10.26.40
द्वितीय	13.20.0	शनि	शुक्र बुध केतु	10.26.40 से 12.33.20 12.33.20 से 14.13.20 14.26.40 से 15.13.20
तृतीय	16.40.0	शनि	शुक्र सूर्य	15.13.20 से 17.26.40 17.26.40 से 18.6.20
चतुर्थ	20.0.0	गुरु	चंद्र मंगल	18.6.20 से 19.13.20 19.13.20 से 20.0.0

लग्न में, पाप ग्रह में यदि मंगल हो तो कुण्डली प्रबल मांगलिक होगी।

लग्नेश धन मे धनेश लग्न मे हो श्रेष्ठ योग होगा परन्तु कुण्डली मांगलिक होने के कारण जातिका शीघ्र विधवा तो होगी पर विश्व प्रसिद्ध महिला बनेगी। चंद्र+मंगल की युति से कीर्ति योग बनेगा। कुण्डली में मंगल से मांगलिक शनि से भी है। बाधक ग्रह गुरु षष्ठ मे है स्वगृही सूर्य भी श्रेष्ठ श्रम करने वाला रहा। अत. विश्व प्रसिद्ध होने पर भी मिथुन लग्न मे उत्पन्न नारी अति कठोर हो सकती है पर व्यंग करने में चतुर होती है। ऐसी स्त्री कार्य करने में असंतुष्ट रहती है भोग विलास का सुख खूब प्राप्त करती है व शौकीन भी होती है। परिवार वालों से बैर शीघ्र माल ले लेती है वही पहले वाला श्लोक इसमें भी काम करेगा। "मूर्ती करोति विधवा दिनकर जश्य" सूर्य और मगल मे से लग्न में कोई भी हो वैधव्य देगे ही। अन्य पाप ग्रह राहु, शनि भी दुष्ट फल करेंगे। लग्नेश बुध षष्ठ मे राहु अधिष्ठित राशि का होगा तो त्वचा रोग भी देगा।

उपाय

ऐसे व्यक्ति को बुध रत्न पहनकर अर्थात् पन्ना पहनकर स्वास्थ्य व धन को कमाना चाहिए। बुध के साथ साथ शुक्र का रत्न भी धारण करना चाहिए।

स्वभाव

मुख्यत: इसका स्वभाव दो विरोधी पक्षों से मेल रखकर चलने का होगा। जातक की तबीयत रंगीन रहेगी तथा चौथे घर में नीच का ही सही शुक्र जातक को

शालीन स्वभाव बनाता है अन्य शुभ ग्रह हो तो शालीन स्वभाव रहेगा। लग्न मिथुन या कन्या का नवांश आये तो स्वभाव सुन्दर रहेगा। चेहरे पर प्रसन्नता झलकती रहेगी।

अन्य बातें

- मिथुन राशि या लग्न वाली जातिका का व्यक्तित्व विद्रोही होता है। वह कठोर परिश्रमी भी होती है इतना सब कुछ होने पर भी वह सब कुछ प्राप्त नहीं कर सकती है। जिसकी वह अधिकारिणी होती है, परन्तु जातिका अत्यधिक साहसी होती है।
- जातिका आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामिनी होती है वह बाधाओं का सामना आसानी से कर सकती है।
- जातिका की पढ़ने लिखने में रुचि होती है। पुस्तक व्यवसाय या मैकेनिकल कार्य में उसकी रुचि होती है। जातिका जोखिम उठाने को तत्पर रहती है।
- जातिका का विचार करने का तरीका वैज्ञानिक तथा तर्कसंगत होता है।
- व्यक्ति चतुर व चालाक, वाचाल एव कुशल व्यापारी होता है।
- संगत का असर शीघ्र होता है।
- जातिका दूसरे की मंशा शीघ्र समझने वाली व बुद्धिशाली होती है व तर्क पर सबको कसेगी।
- जातिका नृत्य-गान, मनोरंजन व विलास की शौकीन होगी।

❑❑❑

नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	मुंजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,लू	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई उ ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,कों,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी 1	गुरू	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढा	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मिं. 3 श्वा. 1	शनि	19
9	आश्लेष	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मि. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मी 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरू	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17	अनुराधा	न,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	मृग	शनि	19
18	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि 2 मूषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 कु	शुक्र	20
2..	उ षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21	उ षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू 2 सिं	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 वि. 1	×	×
23	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	[illegible]
24	धनिष्ठा	गू,गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मो	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी 2 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरू	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरू	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरू	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो चा,ची	मीन	गुरू	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष		अश्विनी	अश्विन	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
कर्क	8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेष	सर्प	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम
सिंह	10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	महाशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	11	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	आदित्य	चन्द्रमा	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16	विशाखा	इन्द्राग्नि	बृहस्पति	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
शनि	17	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
धनु	19	मूल	नैर्ऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	20.	पूर्वाषाढा	जल	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
मकर	21	उ षा	विश्वदेव	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
	22	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	अष्टावसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
कुम्भ	25.	पूर्वा भा.	अजकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
	26.	उ. भा	अहिर् बुध्न	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
मीन	27	रेवती	पूषा	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि

1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु	0/3/20/0	1	म.	ली.	0.16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0.10/0/0	3	बु.	ले	0/23/20/0	3	शु.	–	–		–
ला	0/13/20/4	4	च.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

वृष राशि

3 कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	म.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1 10/0/0	4	म.	वू	1/23/20/0	4	च			–	–

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)				6. आर्द्रा (राहु)				7. पुनर्वसु (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2/6/40/0	4	म.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ङ	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.		-	-	

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (गुरु)				8. पुष्य (शनि)				9. आश्लेषा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	च.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)				11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)				12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	य	4/20/0/0	2	बु.		–	–	–
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20.0	3	शु.		–	–	–
मे	4/13/20/0	4	च.	टू	4/26/40.0	4	मं.		–	–	–

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)				13 हस्त (चंद्र)				14. चित्रा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	मं.	पे	5/26/40/0	1	सु
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	–	–		–
	–	–	–	ठ	5/23/20/0	4	चं.	–	–		

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
र	6/3/20/0	3	शु.
री	6/6/40/0	4	मं
—	-		-
—	—		—

15. स्वाति (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
रू	6/10/0/0	1	गु
रे	6/13/20/0	2	श
रो	6/16/40/0	3	श
ता	6/20/0/0	4	गु.

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ती	6/23/20/0	1	म.
तू	6/26/40/0	2	शु.
ते	6/30/0/0	3	बु
—	—	—	—

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	च.
—			—
-	—	—	—

17. अनुराधा (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
ना	7.6.40/0	.	शु
नी	7.10/0/0	2	बु.
नू	7/13/20/0	3	शु.
ने	7/.6/40/0	4	मं.

18. ज्येष्ठा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
नो	7/20/0/0	1	गु.
या	7/23/20/0	2	श.
यी	7/26/40/0	3	श.
यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	म.
यो	8/6/40/0	2	शु.
या	8/10/0/0	3	बु.
यी	8/13/20/0	4	च

.8 पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
भू	8/16/40/0	1	सू.
धा	8/20/0/0	2	बु.
फा	8/23/20/0	3	शु.
ढा	8/26/40/0	4	म.

21 उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भे	8/30/0/0	1	गु.
	–	–	–
	–		–
		–	–

मकर राशि

2.. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.
जा	9/6/40/0	3	श.
जी	9/10/0/0	4	गु.
–		–	

22. श्रावण (चंद्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
खी	9/13/20/0	1	म.
खू	9/16/40/0	2	शु
खे	9/20/0/0	3	बु.
खो	9/23/20/0	4	चं.

23. धनिष्ठा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गा	9/26/40/0	1	सू.
गी	9/30/0/0	2	बु.
	–	–	–
	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)				24. शतभिषा (राहु)				26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.	गो	10/10/0/0	1	गु.	ते	10/23/20/0	1	मं.
गे	10/6/40/0	4	मं.	सा	10/13/20/0	2	श.	तो	10/26/40/0	2	श
—	—	—	—	सी	10/16/40/0	3	श.	दा	10/30/0/0	3	बु.
			—	सू	10/19/0/04	4	गु.			—	

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)				27. उत्तराभाद्रपद (शनि)				28. रेवती (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.	दू	11/6/40/4	1	सू.	दे	11/20/0/0	1	गु
—				थ	11/10/0/0	2	बु.	दो	11/23/20/0	2	श.
—				झ	11/13/20/0	3	शु.	चा	11/26/40/0	3	श.
		—	—	ञ	11/16/40/0	4	गु.	ची	11/30/0/0	4	गु.

मिथुनलग्न पर अंशात्मक फलादेश

मिथुनलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/3/20 से 2/3/20 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–का
11. वर्ग बिलाड
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'भोगी'

मृगशिरा नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व सेगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। मृगशिरा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है जो विलास प्रिय एवं भोगी है, ऐसा जातक ऐश्वर्य प्रिय एवं भोगी होता है।

यहा लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है, कमजोर है जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। बुध व मंगल की दशा अशुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–2/30/20 से 2/3/20 तक

4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–का
11. वर्ग–बिलाड
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'भोगी'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मगल एवं देवता चन्द्र है। मृगशिरा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है जो विलास प्रिय एवं भोगी है। ऐसा जातक ऐश्वर्य प्रिय एव भोगी होता है।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से उदित अंशो का है, बलवान है। जातक लग्नबली एव चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 2 से 3

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/30/20 से 2/6/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–का
11. वर्ग–बिलाड
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'भोगी'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है. मगृशिरा का स्वामी मंगल एव देवता चन्द्र

है। मृगशिरा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है जो विलास प्रिय एवं भोगी है। ऐसा जातक ऐश्वर्यप्रिय एवं भोगी होता है।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/30/20 से 2/6/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–चन्द्र
10. वर्णाक्षर–क्री
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व
18. प्रधान विशेषता–'धन धान्य समन्वित:'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है। मगृशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। यहां लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल है। अतः इस जातक पर मंगल का प्रभाव ज्यादा रहेगा। नक्षत्र देवता चन्द्र, मंगल का मित्र है फलतः बालक धनधान्य से युक्त लक्ष्मीवान् होगा।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से, लग्नेश बुध की दशा अच्छा फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–मृगशिरा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/3/20 से 2/6/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सर्प
7. गण–देव

8. **नाड़ी**–आद्य | 9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–की | 11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मगल | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध** सम
18. **प्रधान विशेषता**–'धन धान्य समन्वित:'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला, भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है मृगशिरा का स्वामी मंगल एवं देवता चन्द्र है। यहा लग्न नक्षत्र स्वामी मगल एव नक्षत्र चरण स्वामी भी मगल है। अत: इस जातक पर मगल का प्रभाव ज्यादा रहेगा। नक्षत्र देवता चन्द्र, मगल का मित्र है फलत: जातक धन धान्य से युक्त लक्ष्मीवान् होगा।

लग्न यहा चार से पांच अंशो के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी.

मिथुनलग्न, अंश 5 से 6

1. **लग्न नक्षत्र**–मृगशिरा | 2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–2/3/20 से 2/6 40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र | 5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सर्प | 7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य | 9. **नक्षत्र देवता**–चन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–की | 11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–सम
18. **प्रधान विशेषता** -'धन धान्य समन्वित:'

मृगशिरा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य मन वाला भ्रमणशील, कुटिल दृष्टि वाला, कामातुर व रोगवान होता है मगृशिरा का स्वामी मगल एव देवता चन्द्र है। यहां लग्न नक्षत्र स्वामी मगल एव नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल है। अत: इस जातक पर मगल का प्रभाव ज्यादा रहेगा। नक्षत्र देवता चन्द्र, मंगल का मित्र है फलत: जातक धन धान्य से युक्त लक्ष्मीवान् होगा।

लग्न यहां पांच से छ: अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा	2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/10/0 तक	
4. **वर्ण**–शूद्र	5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–श्वान	7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि	9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–कु	11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु	15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु	17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–व्ययी	

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति की युति से चाण्डाल योग बनता है। अत: इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा	2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/6/40 से 2/10/0 तक	
4. **वर्ण**–शूद्र	5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि** श्वान	7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आदि	9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–कु	11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**—व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति में चाण्डाल योग बनता है। अतः इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों मे है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी गुरु की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**—आर्द्रा

2. **नक्षत्र पद**—1

3. **नक्षत्र अंश**—2/6/40 से 2/10/0 तक

4. **वर्ण**—शूद्र

5. **वश्य**—द्विपद

6. **योनि**—श्वान

7. **गण**—मनुष्य

8. **नाड़ी**—आदि

9. **नक्षत्र देवता**—शिव

10. **वर्णाक्षर**—कु

11. **वर्ग**—बिलाव

12. **लग्न स्वामी**—बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**—व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव है तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति में चाण्डाल योग बनता है। अतः इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में है। उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। बृहस्पति की दशा भाग्योदय करायेगी। आवक के जरिए खुलेंगे

मिथुनलग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–2/6/40 से 2/10/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आदि
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–कु
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–व्ययी

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु और बृहस्पति में चाण्डाल योग बनता है। अतः इस योग में जन्मा व्यक्ति धन का अधिक खर्च करने वाला व्ययी होगा।

यहा लग्न नौ से दस अंशों के भीतर है। उदित अंशों में है बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी बृहस्पति की दशा भाग्योदय करायगी। नौकरी मिलेगी।

मिथुनलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–2/10/0 से 2/13/20 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आदि
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–घ
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अतः दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहा लग्न दस से ग्यारह अंशो के भीतर आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि व बृहस्पति की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र—आर्द्रा | **2. नक्षत्र पद**—2

3. नक्षत्र अंश—2/10/0 से 2/13/20 तक

4. वर्ण—शूद्र | **5. वश्य**—द्विपद

6. योनि—श्वान | **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—आदि | **9. नक्षत्र देवता**—शिव

10. वर्णाक्षर—घ | **11. वर्ग**—बिलाव

12. लग्न स्वामी—बुध | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बाते करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव है तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है, राहु भी स्वल्प धनी है अतः दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि व बृहस्पति की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र—आर्द्रा | **2. नक्षत्र पद**—2

3. नक्षत्र अंश—2/10/0 से 2/13/20 तक

4. वर्ण—शूद्र | **5. वश्य**—द्विपद (नर)

6. योनि—श्वान

7. गण—मनुष्य

8. नाड़ी—आद्य

9. नक्षत्र देवता—शिव

10. वर्णाक्षर—घ

11. वर्ग—बिलाव

12. लग्न स्वामी—बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी—राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बात करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिव हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अतः दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा जातक को आगे बढ़ायेगी एवं उत्तरोत्तर उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा

मिथुनलग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र—आर्द्रा

2. नक्षत्र पद—2

3. नक्षत्र अंश—2/10/0 से 2/13/20 तक

4. वर्ण—शूद्र

5. वश्य—द्विपद

6. योनि—श्वान

7. गण—मनुष्य

8. नाड़ी—आद्य

9. नक्षत्र देवता—शिव

10. वर्णाक्षर—घ

11. वर्ग—बिलाव

12. लग्न स्वामी—बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी—राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध -मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—दरिद्री

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। जो स्वल्प धनी है। राहु भी स्वल्प धनी है अतः दोनों के योग से जातक दरिद्री होता है।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य है। आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा जातक को आगे बढ़ायेगी एवं उत्तरोत्तर उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा	**2. नक्षत्र पद**–3
3. नक्षत्र अंश–2/13/20 से 2/16/40 तक	
4. वर्ण–शूद्र	**5. वश्य**–द्विपद (नर)
6. योनि–श्वान	**7. गण**–मनुष्य
8. नाड़ी–आदि	**9. नक्षत्र देवता**–शिव
10. वर्णाक्षर–ड	**11. वर्ग**–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध	**13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि	**15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र	**17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. प्रधान विशेषता–अल्पायु	

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र मत है।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। राहु भी शुभ फल देगा। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा	**2. नक्षत्र पद**–3
3. नक्षत्र अंश–2/13/20 से 2/16/40 तक	
4. वर्ण–शूद्र	**5. वश्य**–द्विपद
6. योनि–श्वान	**7. गण**–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य	**9. नक्षत्र देवता**–शिव
10. वर्णाक्षर–ड	**11. वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र वचन है।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी राहु की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 16 से 17

1. **लग्न नक्षत्र**–आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–2/13/20 से 2/16/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–शिव
10. **वर्णाक्षर**–ङ
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी** -राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी है तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण मे जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र वचन है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अशों के भीतर मध्य अवस्था में है। पूर्णबली है, लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/13/20 से 2/16/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–ङ
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध मित्र
18. प्रधान विशेषता–अल्पायु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त बातें करने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। आर्द्रा के तृतीय चरण में जन्मे व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है, ऐसा शास्त्र वचन है

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर मध्य अवस्था मे है पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा

मिथुनलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–2/16/40 से 2/20/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–श्वान
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–शिव
10. वर्णाक्षर–छ
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–तस्करस्तु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा　**2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–2/16/40 से 2/20/0 तक

4. वर्ण–शूद्र　**5. वश्य**–द्विपद (नर)

6. योनि–श्वान　**7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य　**9. नक्षत्र देवता**–शिव

10. वर्णाक्षर–छ　**11. वर्ग**–सिंह

12. लग्न स्वामी–बुध　**13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु　**15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु　**17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–तस्करतु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है। इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहा लग्न उन्नीस अंशों से बीस अशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी।

मिथुनलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–आर्द्रा　**2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–2,6/40 से 2/20/0 तक

4. **वर्ण**—शूद्र
5. **वश्य**—द्विपद (नर)
6. **योनि** श्वान
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—शिव
10. **वर्णाक्षर**—छ
11. **वर्ग**—सिंह
12. **लग्न स्वामी**—बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—तस्करतु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है। आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी हैं तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु की युति 'चाण्डाल योग' बनाती है इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहा लग्न बीस से इक्कीस अंशो के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। बृहस्पति में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**—आर्द्रा
2. **नक्षत्र पद**—4
3. **नक्षत्र अंश**—2/6/40 से 2/20/0 तक
4. **वर्ण**—शूद्र
5. **वश्य**—द्विपद (नर)
6. **योनि**—श्वान
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—शिव
10. **वर्णाक्षर**—छ
11. **वर्ग**—सिंह
12. **लग्न स्वामी**—बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—तस्करतु

आर्द्रा नक्षत्र में जन्म होने से जातक मीठी रसयुक्त वाणी बोलने वाला, पूर्वाभास

की शक्ति से युक्त, कुछ क्रोधी व घमण्डी होता है आर्द्रा नक्षत्र के देवता शिवजी है तथा नक्षत्र स्वामी राहु है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। राहु, गुरु को युति 'चाण्डाल योग' बनाती है इसके कारण जातक में चोरी की आदत आ जाती है।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था मे है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक का भाग्योदय होगा

मिथुनलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद– 1
3. नक्षत्र अंश–2/20/0 से 2/23/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति
10. वर्णाक्षर–के
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–गुरु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17 नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है गुरु और मंगल दोनों मित्र है। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न बाईस से तेईस अंशों में अवरोह अवस्था मे है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा में गृहस्थ व नौकरी का सुख मिलेगा।

मिथुनलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–2/20/0 से 2/23/0 तक

4. वर्ण—शूद्र
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—मार्जार
7. गण—देव
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—शिव
10. वर्णाक्षर—के
11. वर्ग—बिलाव
12. लग्न स्वामी—बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—गुरु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—मगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध मित्र
18. प्रधान विशेषता—सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता शिव तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी मगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहा लग्न तेइस से चौबीस अशो में अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक भाग्योदय होगा बृहस्पति की दशा में गृहस्थ व नौकरी का सुख मिलेगा।

मिथुनलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र—पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद—1
3. नक्षत्र अंश—2/23/0 से 2/26/40 तक
4. वर्ण—शूद्र
5. वश्य—द्विपद (नर)
6. योनि—मार्जार
7. गण—देव
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—अदिति
10. वर्णाक्षर—के
11. वर्ग—बिलाव
12. लग्न स्वामी—बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—गुरु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—मगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी

मगल है। गुरु और मगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहा लग्न चौबीस से पच्चीस अशों के मध्य अवरोह अवस्था में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी मंगल मिश्रित फल देगा पर बुध की दशा में भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–पुनर्वसु
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–2/23/0 से 2/26/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–मार्जार
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अदिति
10. **वर्णाक्षर**–के
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–सुखी

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के प्रथम चरण का स्वामी मगल है। गुरु और मंगल दोनों मित्र हैं। फलतः ऐसा जातक सुखी होता है।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अशों के मध्य हीन बली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। मंगल मिश्रित फल देगा। गुरु की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**–पुनर्वसु
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–2/23/0 से 2/26/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–मार्जार
7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अदिति

10. **वर्णाक्षर**–को

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–विद्वान

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील सुन्दर, लोकप्रिय धन और बल से युक्त शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है, बृहस्पति देवताओं के आचार्य हैं तथा शुक्र दैत्यों के आचार्य हैं। अतः दोनों आचार्यों से सबंध रखने वाला जातक विद्वान् होगा.

यहां लग्न छब्बीस से सताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–पुनर्वसु

2. **नक्षत्र पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–2/20/40 से 2/30/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–मार्जार

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अदिति

10. **वर्णाक्षर**–को

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–विद्वान

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। बृहस्पति देवताओं के आचार्य हैं तथा शुक्र दैत्यों के आचार्य हैं। अत. दोनों आचार्यों से संबध रखने वाला जातक विद्वान् होगा।

यहा लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मिथुनलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/26/40 से 2/30/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति
10. वर्णाक्षर–ह
11. वर्ग–मीढ़
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति
14. नक्षत्र चरण स्वामी -बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–रोगान्वित्

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील, सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। पुनर्वसु के तृतीय चरण का स्वामी बुध है जो बृहस्पति का शत्रु है। अतः ऐसा जातक रोगी होगा कोई न कोई बीमारी उसे लगी रहेगी।

यहा लग्न 28 से 29 अशो वाला अवरोही अवस्था में होकर 'हीनबली' है, उसका सारा तेज समाप्ति की ओर है। नक्षत्र स्वामी बृहस्पति एवं नक्षत्र चरणस्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। फलतः बृहस्पति एव बुध दोनों की दशाएं नेष्टफल देंगी।

मिथुनलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–2/26/40 से 2/30/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–मार्जार
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अदिति

10. वर्णाक्षर–ह

11. वर्ग–मीढा

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–रोगान्वित्

पुनर्वसु नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति शान्त, सुखी, सुशील सुन्दर, लोकप्रिय, धन और बल से युक्त, शास्त्र को पढ़ने वाला, दानी, पुत्र और मित्रादि से युक्त होता है। पुनर्वसु के देवता अदिति तथा नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है, पुनर्वसु के तृतीय चरण का स्वामी बुध है जो बृहस्पति का शत्रु है। अतः ऐसा जातक रोगी होगा तथा कोई न कोई बीमारी उसे लगी रहेगी।

यहा लग्न 29 से 30 अशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था (Combust) में है। निस्तेज है। नक्षत्र स्वामी बृहस्पति एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। फलतः बृहस्पति एव बुध दोनो की दशाए नेष्ट फल देगी

❑❑❑

मिथुनलग्न और आयुष्य योग

1. मिथुनलग्न के लिये चन्द्रमा मारकेश होते हुए भी मारक का कार्य नहीं करेगा। मगल गुरु अशुभ है, सूर्य परमपापी है। आयुष्य प्रदाता ग्रह बुध है।
2. मिथुनलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु जल से अधिक रक्त बह जाने से, वाहन से, भयानक दुर्घटना से अथवा हृदय रोग से सम्भव है।
3. मिथुनलग्न वालों की औसत आयु 75 वर्ष की मानी गई है। इनके जन्म के उपरान्त 3 माह 6 माह, 1 3, 6 10, 11, 18, 20, 24, 26, 33, 40, 46, 53, 58, 62 और 63 वर्ष में शारीरिक कष्ट एव अल्प मृत्यु का भय रहता है।
4. मिथुनलग्न में मगल लग्न से पूर्वार्द्ध (2 से 7 तक) मे हो, तथा उत्तरार्द्ध दूसरे भाग (7 से 12) में बृहस्पति हो, केन्द्र स्थानों में शुक्र एव बुध उच्च का हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
5. मिथुनलग्न में शनि आठवें हो तो जातक दीर्घायु को भोगता है।
6. मिथुनलग्न में शनि उच्च का पंचम भाव मे जातक को दीर्घायु देता है।
7. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि लग्न मे गुरु एव शुक्र के द्वारा दृष्ट हो तो जातक 100 वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है
8. मिथुनलग्न मे चन्द्रमा मेष, मिथुन, सिह, तुला धनु या कुम्भ राशि में हो तथा अन्य सभी ग्रह भी इन्हीं राशियो में हो तो जातक 90 वर्ष की उत्तम आयु को भोगता है।
9. मिथुनलग्न में चन्द्रमा छठे वृश्चिक का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
10. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध लग्न को देखता हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो जातक 75 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है
11. मिथुनलग्न में शनि मेष का, मंगल तुला का पाचवे एवं सूर्य सातवें हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

12. शनि लग्न में, कन्या का चन्द्र चौथे, मगल सातवे और सूर्य दसवे, किसी भी शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु मे गुजर जाता है।

13. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चन्द्रमा पापग्रहो के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष को आयु मे गुजर जाता है

14. मिथुनलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चन्द्रमा अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक एवं विद्वान् होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

15. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में, शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

16. मिथुनलग्न में शनि+मंगल हो, चन्द्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

17. मिथुनलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव मे पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

18. मिथुनलग्न में शनि+मंगल दूसरे स्थान में, तृतीय स्थान में राहु शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की एक वर्ष के भीतर मृत्यु होती है।

19. मिथुनलग्न के चौथ स्थान में राहु एव छठे स्थान में चन्द्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक आठ वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

20. मिथुनलग्न में बुध सूर्य से अस्त हो, अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में हो, मारकेश चन्द्रमा पाप ग्रह के साथ द्वादश भाव में हो तो जातक की मृत्यु 51वें वर्ष में फासी के द्वारा होती है।

21. मिथुनलग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

22. मिथुनलग्न में सूर्य मकर में तथा शनि सिंह में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व हो जाती है।

23. मिथुनलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+मंगल हो, लग्नेश निर्बल हो तो बालारिष्ट योग बनता है। शीघ्र उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास में ही गुजर जाता है।

24. मिथुनलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, गुरु पचम या अष्टम में हो, अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

25. मिथुनलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+राहु+बृहस्पति+मंगल हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसके शरीर में शारीरिक रूग्णता बनी रहती है.

26. मिथुनलग्न के द्वितीय स्थान मे मगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृ घातक होता है।

27. मिथुनलग्न के एकादश स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृ घातक होता है।

28. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम मे पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

29. मिथुनलग्न में षष्टेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

30. मिथुनलग्न में चन्द्रमा पाप ग्रहों के मध्य हो शनि सप्तम में हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

31. मिथुनलग्न में निर्बल चन्द्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा और शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है तथा अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न और रोग

1. मिथुनलग्न में षष्टेश शुक्र लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जल स्राव से अंधा होता है।
2. मिथुनलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश बुध पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. मिथुनलग्न में चतुर्थेश बुध यदि अष्टमेश शनि के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. मिथुनलग्न में चतुर्थेश बुध कर्क या मीन राशि मे हो एवं अस्त हो तो जातक को तीव्र हृदय रोग होता है।
5. मिथुनलग्न में शनि चौथे कन्या का, षष्टेश मंगल एवं सूर्य पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग है।
6. मिथुनलग्न में चतुर्थ एवं पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
7. मिथुनलग्न में कन्या का शनि चौथे एवं कुंभ का सूर्य नवमें हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
8. मिथुनलग्न में चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट अटैक) होता है।
9. मिथुनलग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहो के मध्य हो तो जातक को तीव्र हार्ट-अटैक होता है।
10. मिथुनलग्न में बुध+शनि+मंगल की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से जातक की मृत्यु होती है।
11. मिथुनलग्न में पाप ग्रह हो, लग्न का स्वामी बुध बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

12. मिथुनलग्न मे क्षीण चद्रमा बैठा हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।
13 अष्टमेश शनि लग्न में एव लग्नेश बुध अष्टम में हो लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी बना रहता है।
14. मिथुनलग्न मे लग्नेश बुध चौथे या द्वादश भाव में शनि+मगल के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।
15. मिथुनलग्न में शनि+चद्रमा से युत्त होकर बृहस्पति छठे भाव में स्थित हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।
16. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चद्रमा पाप ग्रहो के साथ छठे या आठवे हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु मे गुजर जाता है।
17. मिथुनलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चद्रमा अष्टम या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एव विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18. मिथुनलग्न मे लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ आठवे हो तथा अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
19 मिथुन लग्न में शनि+ मगल हो, चद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त होता है।
20. मिथुनलग्न के द्वितीय एवं द्वादश भाव मे पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
21. मिथुनलग्न मे शनि+मंगल दूसरे स्थान में, तृतीय स्थान में राहु शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसे बालक की एक वर्ष के भीतर मृत्यु होती है।
22. मिथुनलग्न के चौथे स्थान में राहु एवं छठे स्थान में चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसा बालक आठ वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
23. मिथुनलग्न में बुध सूर्य से अस्त हो, अष्टमेश शनि पाप ग्रहो के साथ छठे स्थान में हो, मारकेश चंद्रमा पाप ग्रह के साथ द्वादश भाव में हो तो जातक की मृत्यु 51वें वर्ष में फांसी के द्वारा होती है।

24. मिथुनलग्न में मगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

25. मिथुनलग्न मे सूर्य मकर में तथा शनि सिंह में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व हो जाती है।

26. मिथुनलग्न के आठवें स्थान मे सूर्य+मगल हो, लग्नेश निर्बल हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। शीघ्र उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास मे ही गुजर जाता है।

27. मिथुनलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, गुरु पंचम या अष्टम में हो, अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

28. मिथुनलग्न के आठवे स्थान मे सूर्य+राहु+बृहस्पति+मगल हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है, उसके शरीर मे शारीरिक रुग्णता बनी रहती है।

29. मिथुनलग्न के द्वितीय स्थान मे मगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक 'मातृ घातक' होता है।

30. मिथुनलग्न के एकादश स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृ घातक' होता है।

31. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध एव लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो जातक जीवन से निराश होकर 'आत्महत्या' करता है।

32. मिथुनलग्न में षष्टेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

33. मिथुनलग्न में चद्रमा पाप ग्रहों के मध्य हो, शनि सप्तम में हो तो जातक देवता के शाप अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

34. मिथुनलग्न में निर्बल चद्रमा अष्टम में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एव शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है तथा अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न और विवाह योग

1. लग्न से सप्तम भाव के मध्य सूर्य, मगल, शनि हों तो जातक की स्त्री को वैधव्य भोगना पड़ता है।
2. स्त्री की कुण्डली में मंगल सप्तम भाव में हो तो वह स्त्री पुरुष रक्त कुकर्म तत्पर व सौभाग्यहीन होता है।
3. मिथुनलग्न में कर्क का चंद्रमा एवं धनु का बृहस्पति सप्तम में हो तो वह स्त्री विश्व सुन्दरी का मुकुट धारण करती है।
4. बुध सातवें स्थान में शनि युक्त हो तो पति नपुंसक होता है
5. सप्तमेश अपने मूल त्रिकोण में हो तथा धनेश के साथ हो और लग्नेश अपनी उच्च राशि में हो तो जातक का विवाह उच्च कुल में होता है तथा जातक का 18वें वर्ष में भाग्योदय होता है
6. सप्तम में सूर्य, मगल, चद्र या शनि हो तो जातक अन्य जाति की लड़की से विवाह होता है।
7. मगल, शनि सप्तम में हो, शुभ ग्रहो की दृष्टि हो तथा किसी राशि में पुरुष ग्रह व स्त्री ग्रह दोनो एक साथ बैठे हों तो वृद्धावस्था में अधिक उम्र की स्त्री प्राप्त होती है।
8. क्रूर ग्रह अष्टम में वैधव्य करता है, वह वैधव्य किस वय मे होगा इसका निर्णय अष्टम स्थान का स्वामी जिस नवांश में हो उस नवांश स्वामी ग्रह की अवस्था में वैधव्य योग होता है।
9. मिथुनलग्न में शनि लग्नस्थ चन्द्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो ऐसे जातक के विवाह में भयकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
10. मिथुनलग्न में शनि द्वादशस्थ या अष्टमस्थ हो, द्वितीय भाव में सूर्य हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

11. मिथुनलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश गुरु बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
12. मिथुनलग्न में सूर्य, शनि एवं शुक्र की युति कहीं भी हो, सप्तमेश गुरु निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
13. मिथुनलग्न मे शुक्र कर्क या सिंह राशि मे हो तथा सूर्य या चन्द्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान मे हो जातक का विवाह नही होता।
14. मिथुन लग्न में राहु हो तथा शुक्र मिथुन, सिंह, कन्या, धनु (वन्ध्या) राशिगत हो तो विवाह विलम्ब से होता है तथा जीवन साथी से तृप्ति नही मिलती।
15. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहो से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्रायः अन्तर्जातीय विवाह करता है।
16. मिथुनलग्न में द्वितीयेश चन्द्रमा अस्त हो, द्वितीय भाव में वक्री ग्रह स्थित हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।
17. मिथुनलग्न में सप्तमेश बृहस्पति वक्र हो, सप्तम भाव मे कोई भी ग्रह वक्री हो या किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आते हैं। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।
18. मिथुनलग्न में बृहस्पति यदि स्वराशिगत उच्चराशिगत या उच्चाभिलाषी हो तो जातक एक पत्नीव्रत व भारतीय परम्परा में विश्वास रखता है। 34 वर्ष की आयु में जातक को विशिष्ट पद-प्रतिष्ठा सुख व ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। ससुराल से प्रचुर धन व मान मिलता है।
19. मिथुनलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नूतन वस्त्र पहनकर परपुरुषों का संग करती है एवं कुल की मर्यादा को नष्ट कर देती है।
20. मिथुनलग्न में षष्टेश मंगल लग्न मे बुध के साथ हो तो ऐसा जातक स्त्री सहवास योग्य नही रहता अर्थात् नपुंसक होता है
21. मिथुनलग्न मे चंद्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक प्रकृति की महिला होती है।
22. मिथुनलग्न में सूर्य मंगल, गुरु, चन्द्र, बुध व शुक्र तथा शनि बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थिति वश परपुरुष की अंकशायिनी बन सकती है।
23. मिथुनलग्न में बुध स्वगृही लग्न मे हो साथ मे अष्टमेश शनि भी हो तो "द्विभार्या योग" बनता है। ऐसा जातक दो नारियो के साथ रमण करता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न और धन योग

मिथुनलग्न मे जन्म लेने वाले जतकों के लिये धन प्रदाता ग्रह चन्द्रमा है धनेश चन्द्र की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से सबध जोड़ने वाले ग्रहो की स्थिति एवं योगायोग, चन्द्रमा एव धन स्थान पर पड़ने वाले ग्रहों के दृष्टि सबंध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतो तथा चल अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश बुध, पंचमेश शुक्र, भाग्येश शनि एव लग्नश मगल की अनुकूल स्थितिया मिथुनलग्न वालो के लिए धन, ऐश्वर्य एव वैभव का बढाने में पूर्णरूप से होती है।

वैसे मिथुनलग्न के लिए मगल, गुरु और सूर्य अशुभ हैं अकेला शुक्र शुभ है। चन्द्रमा मारकेश होते हुए भी मारक का काम नहीं करेगा। रवि निष्फल है। मगल षष्टेश और लाभेश होने से अशुभ और राजयोग भंग करने वाला बन गया है। मिथुनलग्न मे गुरु को केन्द्राधिपत्य दोष लगने से वह शुभ फल नही दे पाता शनि अष्टमेश व नवमेश होने से पूर्ण योग फलदायक नहीं है। सूर्य व मंगल परम पापी हैं।

सफल योग– 1. बुध+शुक्र

निष्फल योग– 1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि, 3. बुध+शनि,

अशुभ योग– 1. बुध+मंगल 2. बुध+गुरु 3. बुध+सूर्य

राजयोग कारक–बुध, शुक्र, चन्द्र।

लक्ष्मी योग–मगल नवम में, शुक्र सप्तम में, चन्द्रमा केन्द्र त्रिकोण में

विशेष योगायोग

1. मिथुनलग्न मे चन्द्रमा कर्क या वृष राशि में हो तो जातक धनवान होता है।
2. मिथुनलग्न में चन्द्रमा शनि के घर कुम्भ राशि में हो एवं शनि चन्द्रमा के घर कर्क राशि में हो तो जातक अपने भाग्य के बल पर खूब रुपया कमाता है तथा लक्ष्मीपति होता है।

3. मिथुनलग्न में पंचम स्थान में शुक्र हो, लाभ स्थान में मंगल हो तो, व्यक्ति बहुत सारी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता हुआ प्रतिष्ठित धनवान होता है।

4. मिथुनलग्न में बुध हो, बुध के साथ शुक्र या शनि हो अथवा शुक्र, शनि लग्न को देखते हों तो व्यक्ति शहर का प्रतिष्ठित धनवान होता है तथा अपने स्वयं के पुरुषार्थ से आगे बढ़ता है।

5. मिथुनलग्न में शनि कुम्भ का तुला राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति धन के मामले में भाग्यशाली कहलाता है.

6. मिथुनलग्न में चन्द्रमा मेष राशि में तथा मंगल कर्क राशि में परस्पर परिवर्तन योग करके बैठे हों तो ऐसा जातक महाभाग्यशाली होता है तथा जीवन में अत्यधिक धन अर्जित करता है।

7. मिथुनलग्न में बृहस्पति यदि केन्द्र त्रिकोण में हो तथा चन्द्रमा स्वगृही होकर धन स्थान में मंगल के साथ हो या मंगल चन्द्रमा के सामने भाग्य स्थान (कुम्भ राशि) में हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी व्यक्ति 28 वर्ष की आयु के बाद भारी धन सम्पत्ति का स्वामी हो जाता है।

8. मिथुनलग्न में लग्नस्थ बुध, गुरु या शनि से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है।

9. मिथुनलग्न हो, स्वराशि का शुक्र पंचम भाव में हो, शनि लाभ स्थान में हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है

10. मिथुनलग्न में बुध मेष राशि में हो तथा मंगल लग्न में हो तो जातक 53वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धन लक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है

11. मिथुनलग्न हो, लग्नेश बुध, धनेश चन्द्र, भाग्येश शनि तथा लाभेश मंगल अपनी अपनी उच्च एवं स्वराशियों में हो तो जातक करोड़पति होता है।

12. मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में राहु, शुक्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक अरबपति होता है

13. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्रमा यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान में हो तो "धनहीन योग" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार ऐसे जातक के पास धन नहीं ठहर पाता।

इस दुर्योग की निवृत्ति हेतु जातक को गले में अभियन्त्रित 'चद्र यत्र' धारण करना चाहिये।

14 मिथुनलग्न मे धनेश चद्रमा यदि आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति का भूमि में गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है अथवा लॉटरी से भी रुपया निकल सकता है पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।

15. चन्द्रमा स्व का हो तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।

16. द्वितीयेश उच्च स्थान मे बैठा हो तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।

17. षष्ठेश, पचमेश की युति होने से दरिद्र योग बनता है।

18. बुध सप्तम भाव में हो तथा द्वादशेश चतुर्थ भवन में हो तो जातक को ससुराल से अर्थ प्राप्ति होती है।

19. बलवान धनेश सातवे हो तथा शुक्र द्वारा देखा जाता हो तो ससुराल से धन की प्राप्ति होती है।

20. यदि धन व चन्द्रमा 10वें स्थान पर हो तो यकायक अर्थ प्राप्ति होती है.

21. मिथुनलग्न में गुरु, शनि व मगल लग्न में हों तो जमींदार योग होता है।

22. दिन का जन्म हो, मिथुनलग्न हो, चन्द्रमा मित्र के नवाश मे हो तो धन-सुख मिलता है।

23 मिथुनलग्न हो, गुरु, चद्र की युति कर्क में हो तो गजकेसरी योग होता है। जातक विवेकी, सद्गुणी, नम्र तथा धनी होता है।

24. मिथुनलग्न हो, शनि स्व (कुभ) का त्रिकोण में पड़ा हो तथा दशमेश गुरु पचम भाव में बैठकर सुरपति योग बनाता है। ऐसा जातक अतुल ऐश्वर्य प्राप्त करता है

25. मिथुनलग्न मे मगल लाभ स्थान में यदि मेष राशि का हो तो "रुचक योग" बनता है ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

26. मिथुनलग्न मे सुखेश बुध, लाभेश मंगल नवम भाव में शुभ ग्रहो से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

27 मिथुनलग्न में गुरु+चन्द्र की युति कर्क, कन्या, तुला या कुम्भ राशि में हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन मिलता है।

28. मिथुनलग्न में धनेश चन्द्रमा अष्टम में एव अष्टमेश शुक्र धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एव औतिक कार्यों से धन कमाता है।

29. मिथुनलग्न मे तृतीयेश सूर्य लाभस्थान में एवं लाभेश मंगल तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

30. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र के साथ यदि चतुर्थेश बुध की युति हो तो व्यक्ति माता, वाहन व नौकरों के द्वारा धन अर्जित करता है

31 मिथुनलग्न में तृतीयेश सूर्य उच्च का लाभ स्थान में हो तथा लग्नेश लाभेश का परस्पर परिवर्तन योग हो तो जातक प्रकाशन कार्य एव बुद्धि वैचित्रय से करोड़ों रुपये कमाता है

32. मिथुनलग्न मे धनेश चन्द्रमा (धन भाव) अर्थात् अपने घर को देखता हो। लग्नेश बुध उच्च का केन्द्र में हो। लग्न स्थान या लग्नेश पर गुरु की दृष्टि हो तो जातक कुबेर के समान करोड़ों का स्वामी होता है।

33. मिथुनलग्न में यदि बलवान चन्द्र पंचमेश शुक्र के साथ हो धन भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र संतान द्वारा धन की प्राप्ति होती है किवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

34. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र यदि षष्टेश मगल के साथ हो तथा धनेश चन्द्र शनि से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओ के मान मर्दन से धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओ को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

35. मिथुनलग्न मे बलवान चन्द्र की सप्तमेश गुरु से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

36. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र की नवमेश शनि के साथ युति हो, शुभ ग्रह उसे देखते हो तो ऐसे जातक को राजा से, राज्य सरकार, सरकारी अधिकारियों एव सरकारी अनुबध (ठेके) से काफी धन की प्राप्ति होती है।

37. मिथुनलग्न में बलवान चन्द्र की दशमेश गुरु से युति हो तो जातक को पैतृक, सम्पत्ति, पिता द्वारा संरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

38. मिथुनलग्न में दशम भवन का स्वामी बृहस्पति यदि छठे आठवें या बारहवें स्थान मे हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नही मिलता। जातक जन्म स्थान पर नहीं कमा पाता तथा उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है.

39. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान मे हो एवं सूर्य वृश्चिक, मकर या वृष राशि में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

40. मिथुनलग्न के द्वितीय भाव में पाप ग्रह हो तथा लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें एवं बारहवें स्थान मे हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

41. मिथुनलग्न मे केन्द्र स्थानों को छोड़कर चन्द्रमा बृहस्पति से यदि छठे, आठवें एवं बारहवें स्थान मे हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

42. मिथुनलग्न मे धनेश चन्द्र अस्त हो, नीच राशि (वृश्चिक) मे हो, तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है। कर्ज उसके सिर से उतरता ही नही।

43. मिथुनलग्न मे लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत तथा पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

44. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि वक्री होकर कही बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है। सावधान रहें।

45. मिथुनलग्न में अष्टमेश शनि शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

मिथुनलग्न एवं संतान योग

1. मिथुनलग्न में चन्द्रमा तुला का पचम भाव में हो तो जातक के पुत्र होता है।
2. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र यदि आठवें हो तो जातक के अल्प सन्तति होती है।
3. मिथुनलग्न में पचमेश शुक्र अस्त हो या पाप पीड़ित होकर छठे, आठवें या बारहवे स्थान में हो तो जातक के पुत्र नहीं होता।
4. मिथुनलग्न में पचमेश शुक्र लग्न (मिथुन राशि) में हो तथा बृहस्पति से युत या दृष्ट हो तो जातक के प्रथम पुत्र होता है।
5. मिथुनलग्न में शुक्र लग्न में हो तथा लग्नेश बुध पचम भाव में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो जातक दूसरे की सन्तान गोद लेता है तथा उसको अपन बच्चे की तरह पालकर अपने धन का स्वामी बनाता है
6. मिथुनलग्न में पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक के छः कन्याए होती हैं।
7. मिथुनलग्न मे सूर्य पचम में हो तथा मकर या कुम्भ के नवमाश में पाप पीड़ित हो तो जातक को पितृश्राप का दोष होता है। जिसके कारण उसे पुत्र सन्तान नहीं होती।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पचम भाव मे हो तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा म ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते है।
9. मिथुनलग्न मे पंचमेश शुक्र कमजोर हो तथा राहु एकादश में हों तो जातक के वृद्धावस्था में संतान होती है
10. पचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हों तो गर्भपात अवश्य होता है।
11. मिथुनलग्न में लग्नेश बुध द्वितीय स्थान में तथा पचमेश शुक्र पाप ग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाते हैं।

12. मिथुनलग्न मे पचमेश शुक्र बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।
13. पंचमेश यदि वृष कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है
14. मिथुनलग्न में पंचमेश शुक्र की सप्तमेश गुरु के साथ युति हो जातक को प्रथम सन्तान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
15. सप्तमेश गुरु व तृतीयेश सूर्य को अन्योन्याश्रित योग होने से जातक के सन्तान बहुत होती है।
16. शुक्र कन्या का तथा सूर्य पचम भाव मे होने पर जातक के कन्याएं अधिक होती हैं।
17. शुक्र धनु का, चंद्र मीन का तथा कन्या राशिस्थ शनि, मगल, राहु हो तो जातक के सतान नही होती
18. गुरु धनु का हो तथा शुक्र, मंगल कहीं भी एक साथ होने पर उस स्त्री को सतान नही होती।
19. सप्तम स्थान मे शनि, मगल साथ हो तो स्त्री (जातक) के सन्तान होती ही नहीं।
20. स्त्री जातक के सप्तम भाव में सूर्य हो तो वह स्त्री दुष्टा होती है। पति से सदा अनबन रहती है तथा सन्तान गुणहीन होती है।
21. समराशि (2, 4, 6, 8 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सन्तति की बाहुल्यता देता है। यदि चद्रमा और शुक्र का भी पचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।
22 पचमेश शुक्र निर्बल हो, लग्नेश बुध भी निर्बल हो तो पचम भाव में राहु हो तो जातक को सर्पदोष के कारण पुत्र सन्तान नही होती.
23. पचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्म नामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के पुत्र सन्तान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिन्ता एवं मानसिक तनाव रहता है।
24. सूर्य अष्टम हो, पचम भाव मे शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृ दोष होता है तथा पितृ शाप के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।
25. मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव मे पाप ग्रह हो तथा चन्द्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो वशविच्छेद योग बनता है. ऐसे जातक का स्वयं का वश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलतीं।

26. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हों तो ''इलाख्य नामक'' सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र सन्तान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शान्ति हो जाती।

27. मिथुनलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ट या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सन्तान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शान्त हो जाता है।

28. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा सन्तान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

29. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न मे और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

30. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

31. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चन्द्रमा यदि पंचम स्थान में हों तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली सन्तानों को उत्पन्न करती है।

32. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र सन्तान नहीं होती।

❑❑❑

मिथुनलग्न और राजयोग

1. मिथुनलग्न वाले मनुष्य के लग्न में यदि राहु और सिंह का मंगल पराक्रम स्थान में बैठा हो उच्च या मेष का सूर्य एकादश स्थान में विराजमान हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. लग्न में बुध, कर्क का चन्द्रमा धन भाव में, पराक्रम में सिंह का सूर्य और दशम में मीन का बृहस्पति हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का गुरु दूसरे भाव में, उच्च का बुध चतुर्थ भाव में और उच्च का सूर्य एकादश भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ पंचम भवन में हो, स्वगृही बृहस्पति सप्तम में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. स्वगृही सूर्य तृतीय स्थान में बैठा हो तथा उच्च का बृहस्पति स्वगृही चन्द्रमा के साथ धन भाव में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के पंचम स्थान में हो और उच्च का सूर्य के साथ स्वगृही मंगल एकादश भवन में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. उच्च का शुक्र दशम, उच्च का सूर्य एकादश उच्च का बुध चतुर्थ और उच्च का शनि पंचम में हो तो राजयोग करता है।
8. यदि मिथुन का शुक्र लग्न में हो, कर्क का स्वगृही पूर्ण चन्द्रमा धन (दूसरे) स्थान में हो, सिंह का बृहस्पति तीसरे स्थान में हो तो मनुष्य अपने पराक्रम से धनी होता है तथा कीर्ति पाता है।
9. सूर्य एकादश भाव में, मंगल मृत्यु भवन में हो, शनि उच्च का हो तथा बुध त्रिकोण में हो तो जातक अवश्य ही मंत्री बनता है या राज्यपाल होता है।

10. शुक्र, लग्नेश व दशमेश, दशम भाव में हो तो जातक अवश्य राज्य में उच्च स्थान प्राप्त करता है हां, मंगल अवश्य ही 10वें भावस्थ होतो

11. शुक्र पचम भाव मे मंगल स्व का मेष में, गुरु द्वितीय भाव में हो तो जातक अवश्य ही शासन में उच्च पद प्राप्त करता है

12. लग्नेश सप्तमेश की किसी केन्द्र में युति हो तथा गुरु उसे देखता हो तो उत्तम राज्ययोग होता है।

13. सभी ग्रह परमोच्च में हों तथा बुध अपने उच्च के नवांश में हो तो जातक देश का सर्वश्रेष्ठ पद संभालता है।

14. लग्न में बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्र की युति हो तथा उस पर पाप ग्रहों की छाया न हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

15. बुध सुख भाव में, गुरु 10वें तथा शुक्र त्रिकोण (5वें) में हो तो जातक एम. एल.ए. होता है।

16. गुरु कर्क में तथा चन्द्रमा वृष का हो तो जातक नेता बनता है।

17. गुरु या शुक्र उच्च का हो तथा वह चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक मंत्री बनता है।

18. शनि मिथुन का, गुरु स्व का सप्तम भाव में तथा शुक्र की उस पर पूर्ण दृष्टि हो तो व्यक्ति राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है

19. बुध, शुक्र व गुरु नवम् भाव में हो तथा इन पर मित्र ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक राजनीतिज्ञ बनता है।

20. गुरु द्वितीय भाव में तथा चन्द्रमा धनु राशि का हो तो जातक को उच्च पद की प्राप्ति होती है।

21 शनि अपने कारक स्थान, गुरु, चन्द्र के साथ 7वें स्थान में तथा बुध चतुर्थ भाव मे हो तो जातक को उच्च श्रेणी की नौकरी प्राप्त होती है।

22. सुखेश, कर्मेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हों तो जमींदार योग बनता है।

23 लग्नेश बुध पंचम भाव मे तथा शुक्र लग्न में हो तो महा राजयोग होता है।

24 बुध, गुरु, शुक्र क्रमशः 4, 7, 10वें स्थान में हों तथा अन्य ग्रह अन्यत्र तो जातक एम.पी. बनता है।

25. सभी ग्रह लग्न व त्रिकोणों में हों तो जातक सेनाध्यक्ष बनता है।

26. मिथुन लग्न हो, गुरु कर्क का, शनि तुला व सूर्य मेष राशि का होने से नृप योग होता है। जातक उच्च शासकीय पद प्राप्त करता है। उदाहरण–मुरारजी देसाई की कुण्डली देखें।

27. मिथुनलग्न में मीन का शुक्र यदि केन्द्र (1/4/7/10) में बैठा हो तो विद्या, कला बहुगुणों से शोभित कामधेनु के बराबर भोग से पूर्ण सुन्दरी स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, देश, नगर, देखने में व्यस्त राजा होता है।
28. मिथुनलग्न में द्वितीय स्थान में चन्द्रमा, बुध, मेष में गुरु दशम स्थान में राहु शुक्र हो तो राजयोग होता है।
29. मिथुनलग्न में राहु, सिंह में मंगल हो तो इस योग में जातक घोड़ा, हाथी रखने वाला राजा होता है।
30. मिथुनलग्न में जलचर राशि में छठा चंद्रमा हो लग्न में उदित शुभ ग्रह और केन्द्र में पाप ग्रह न हों, तो राजयोग होता है।

❑❑❑

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में
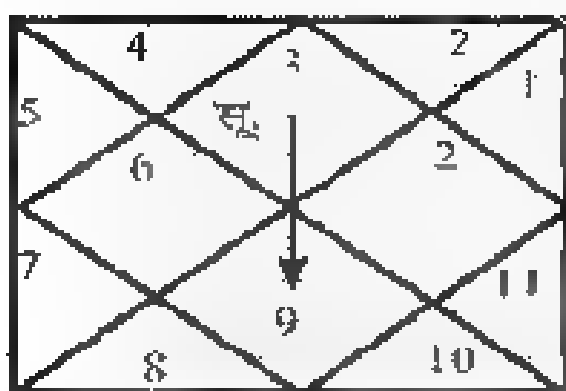
मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप मे एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहा पर प्रथम स्थान में सूर्य मिथुन राशि का होगा। यह इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक राजा के समान उच्च राज्याधिकारी होता है। ऐसा व्यक्ति स्वाभिमानी, धार्मिक कार्यों में अग्रणी एव परम्पराओं का पालक होता है जातक स्वस्थ शरीर का स्वामी होता है, उसका बौद्धिक स्तर बढ़ा चढ़ा होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को स्त्री व पुत्र दोनों सुख प्राप्त होंगे।

निशानी–स्वभाव में भावेश होने के कारण किसी से भी शीघ्र टकराव होगा।

दशा–सूर्य की दशा में उन्नति होगी, पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र** मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एव सूर्य पराक्रमेश होगा यहा इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहा प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय (5 से 7 बजे) के मध्य होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक

की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा जातक समाज का प्रतिष्ठित व पराक्रमी व्यक्ति होगा।

2. **सूर्य+मंगल**—जातक अधिक साहसी व हठी होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न मे बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रो का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहा स्वगृही होगा। लग्न मे बैठकर दोनो ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहा पर 'कुलदीपक योग' एव 'भद्र योग' की सृष्टि भी होगी यहा पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है फलत: ऐसा जातक राजा के समान महान् पराक्रमी व यशस्वी होगा। अपने बुद्धिबल एवं वाक् चातुर्य से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ेगा।
4. **सूर्य+गुरु**—ऐसा जातक आध्यात्मिक व धार्मिक प्रवृत्ति का होता है
5. **सूर्य+शुक्र**—ऐसा व्यक्ति दार्शनिक होता है।
6. **सूर्य+शनि**—यहां प्रथम स्थान मे दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। यहा बैठकर दोनो ग्रह, पराक्रम स्थान (सिंह राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एव दशम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जातक धनवान होगा। जातक की किस्मत पिता की मृत्यु के बाद खुलेगी
7. **सूर्य+राहु**—जातक साहसी एवं राजा तुल्य पराक्रमी होता है।
8. **सूर्य+केतु**—जातक क्रोधी होता है।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
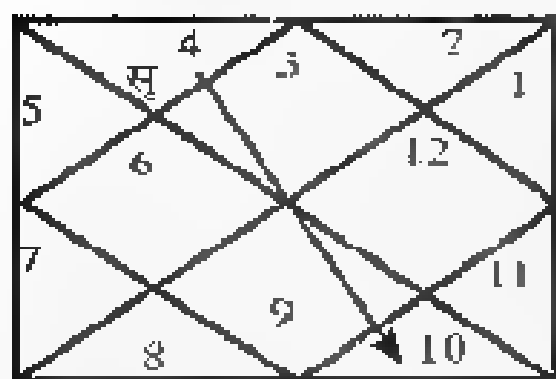
मिथुनलग्न मे सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहा सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहा अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एव पराक्रम को बढ़ायेगा। यहा पर द्वितीय स्थान में सूर्य कर्क राशि का होगा जो कि सूर्य की मित्र राशि है। ऐसा व्यक्ति दानी होता है एव रुपया खर्च करने में आगे रहता है। ऐसा जातक अपने हुनर व परिश्रम के द्वारा धन कमाता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ सूर्य यहा अष्टम भाव (मकर राशि) को देखेगा। फलतः जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा

निशानी–जातक की परिवारिक उलझने रहेंगी।

दशा–सूर्य की दशा जातक को धनवान बनायेगी जातक पराक्रमी होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एव सूर्य पराक्रमेश होगा। यहा इन दोनो की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान मे दोनो ग्रह मिथुन राशि मे होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय (6 से 4 बजे) के मध्य होगा। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। बलवान धनेश की तृतीयेश के साथ युति होने के कारण मित्रमूल धन योग बनेगा। ऐसा जातक कुटम्बी जनो व मित्रों की सहायता से धन अर्जित करेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–कुटुम्ब सुख में हानि।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न मे बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है बुध यहां शत्रु क्षेत्री होगा। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान होगा तथा बाहुबल से खूब रुपया कमायेगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा। लग्नेश की अष्टम भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–व्यक्ति का ससुराल धनाढ्य एवं पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक आध्यात्मिक, संयमी व सतोषी व्यक्ति होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहा द्वितीय स्थान मे दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान (कन्या राशि), अष्टम भाव (मकर राशि) एवं लाभ स्थान मेष राशि को देखेगे। फलतः जातक धनी, लम्बी उम्र का स्वामी एव भाग्यशाली होगा। जातक की आर्थिक स्थिति पिता की मृत्यु के बाद सुधरेगी।
7. **सूर्य+राहु**–धन के घड़े में छेद रहेगा
8. **सूर्य+केतु**–कुटुम्ब एवं धन संबंध में हानि

मिथुनलग्न मे सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान मे
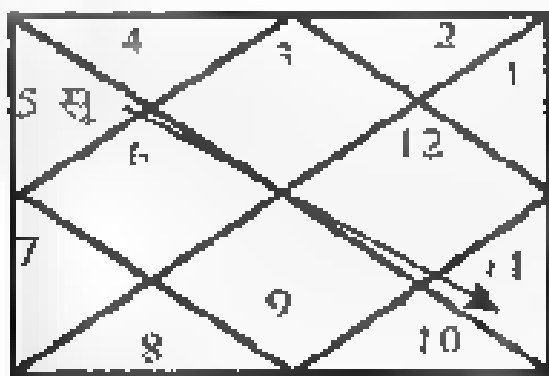
मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एव पराक्रम को बढ़ायेगा। यहा तृतीय स्थान में सूर्य सिंह राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक दौलत का राजा होता है। जातक शूरवीर एव पराक्रमी होता है.

दृष्टि—तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि नवम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक सौभाग्यशाली होता है व अपने भाग्य का निर्माण खुद करता है।

निशानी—मध्यम आयु के बाद जातक की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत हो जाती है। जातक के बड़े भाई की मृत्यु जातक के सामने होगी।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम बहुत बढ़ेगा

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एव सूर्य पराक्रमेश होगा। यहा इन दोनो की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि मे होगे फलतः ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को रात्रि के समय दो से चार बजे के मध्य होगा सूर्य यहां स्वगृही होगा फलत बलवान तृतीयेश की धनेश के साथ युति होने से जातक कुटुम्बी जनों मित्रों से धन व यश अर्जित करेगा
2. **सूर्य+मंगल**—सहोदर सुख मे हानि, बड़े भाई की मृत्यु।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के तृतीय भाव में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहा पर स्वगृही है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि मे देख रहे हैं। फलतः जातक महान पराक्रमी होगा। भाई परिजन व मित्रों का बल उसे मिलता रहेगा। जातक भाग्यशाली होगा। पिता की सम्पत्ति या सहयोग से जातक का भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।

4. **सूर्य+गुरु**–भाई पराक्रमी होंगे। मित्रों से, राजकीय अधिकारियों से लाभ होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–भाई-बहनों का सुख रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), भाग्य भाव (कुंभ राशि) एवं व्यय भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक की सन्तति प्रभावशाली होगी। जातक भाग्यशूर एवं खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक का पराक्रम पिता की मृत्यु के बाद बढ़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**–कुटुम्ब सुख में हानि होगी व कलह, विवाद रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–पराक्रम में कमी होगी, मित्र पीठ पीछे निन्दा करेंगे।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
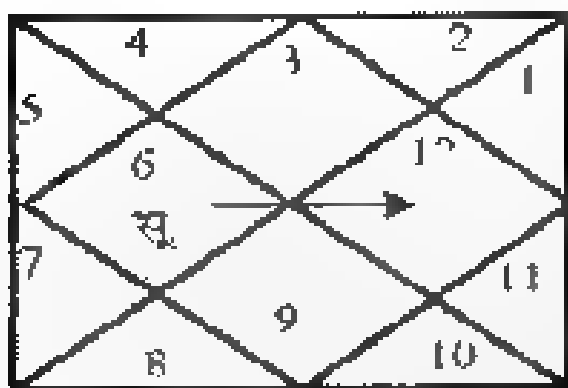
मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। चतुर्थ स्थान में सूर्य कन्या राशि में होगा जो कि इसकी मित्र राशि है। जातक उत्तम भू-सम्पत्ति, जमीन-जायदाद का स्वामी होगा। पर अपने कमाये गये धन का उपयोग स्वयं नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति अपने परम्परागत कार्य से हटकर नये आजीविका के क्षेत्र तलाशता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ सूर्य की दृष्टि दशम भाव (मीन राशि) पर होगी। राज्य पक्ष या राजनीति से लाभ होगा।

निशानी–जातक का जन्म उच्च कुल में होगा।

दशा–सूर्य की दशा अन्तर्दशा में भौतिक सुख-उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि बारह बजे के आस-पास होगा। चन्द्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

2. **सूर्य+मंगल**–भाईयों का सुख मिलेगा। मित्रों से लाभ होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है बुध यहां उच्च का होगा तथा 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्र योग' की सृष्टि करेगा उच्च का बुध दशम भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा। यहा पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलतः जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली और पराक्रमी होगा। उसे माता पिता की सम्पत्ति मिलेगी। स्वयं भी बड़ी भूसम्पत्ति, नौकर-चाकर से युक्त, उत्तम वाहनों का स्वामी होगा। जातक की गिनती जीवन में सफलतम व्यक्तियों में अग्रगण्य होगी
4. **सूर्य+गुरु**–राजयोग बनेगा। नौकरी लगेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सन्तति सुख, विद्या लाभ होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहा चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। यहा केन्द्रवर्ती होकर दोनो ग्रह छठे स्थान (वृश्चिक राशि), दशम स्थान (मीन राशि) एवं लग्न स्थान, मिथुन राशि को देखेंगे। फलतः जातक के अनेक शत्रु होंगे पर जातक उनको नष्ट करने में सक्षम होगा। जातक का शहर की राजनीति में वर्चस्व होगा तथा वह महत्वकांक्षी होगा। वह जो भी योजनाएं हाथ मे लेगा उसमें सफलता मिलेगी।
7. **सूर्य+राहु**–माता की मृत्यु अल्पआयु म सभव है।
8. **सूर्य+केतु**–भौतिक सुखों की प्राप्ति में सघर्ष बना रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
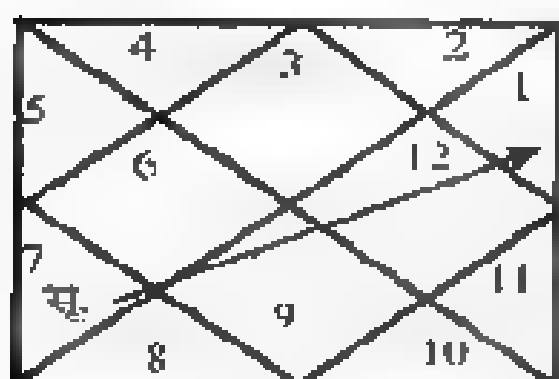
4 3 2 1 5 6 12 7 सू. 9 11 8 10

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां पंचम स्थान में सूर्य तुला राशि का होगा। तुला राशि में सूर्य नीच का होता है तथा इसके 10 अशों तक परम नीच का होता है। सूर्य की यह स्थिति जातक परिवार के लिए उन्नति कारक है, जातक

के जन्म के बाद परिवार की उन्नति होगी। जातक प्रजावान होगा। जातक के स्वय के यहां जब पुत्र उत्पन्न होगा तब उसके स्वय का विशेष भाग्योदय प्रारभ होगा।

दृष्टि—पचमस्थ सूर्य की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक को व्यापार से लाभ होगा।

निशानी—दस अशो से अधिक अशो वाला होने पर सूर्य जातक को उत्तम विद्या, बुद्धि, नौकरी व व्यवसाय देगा।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम एव विद्या बढेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चद्र**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एव सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनो की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां पचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 12 बजे के मध्य होगा। सूर्य यहां नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करेगा। जातक को एकाध सन्तति का क्षरण, अकाल मृत्यु या गर्भपात जैसा होगा।
2. **सूर्य+मगल**—प्रशासन के कार्य व्यापार व्यवसाय मे लाभ होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न मे बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के पंचम भाव में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति कहलायेगी सूर्य यहा नीच राशि का होगा परन्तु दोनो ग्रहो की दृष्टि एकादश भाव पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलत: जातक बुद्धिमान एवं प्रजावान होगा। जातक को कन्या व पुत्र दोनो सन्तति होंगी जातक निजी व्यवसाय व्यापार के द्वारा उन्नति के चरम शिखर पर पहुचेगा। जातक शिक्षित होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—प्रकाशन, अध्ययन-अध्यापन के कार्य से जातक को लाभ होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—लेखन, प्रकाशन कार्य से लाभ होगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि के होंगे। यहां शनि उच्च का होगा। तुला राशि अंशों मे शनि परमोच्च का होगा। यहा बैठकर दोनो ग्रह 'नीचभग राजयोग' बनायेंगे। तथा सप्तम भाव (धनु राशि), एकादश भाव (मेष राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। फलत: जातक स्वयं महाधनी होगा। पिता के मृत्यु के बाद ऐसा जातक व्यापार व्यवसाय में खूब धन कमायेगा।

7. सूर्य+राहु–सन्तान सुख एवं कुटुम्ब सुख में बाधा होगी।
8. सूर्य+केतु–गर्भपात का भय होगा विद्या रुकावट के साथ सभव है।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहा सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहा अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एव पराक्रम को बढ़ायेगा। यहा सूर्य वृश्चिक राशि मे होगा। अपनी राशि मे चौथे स्थान पर होने से ज्यादा अनिष्टकारी नही है। फिर भी 'पराक्रमभग योग' तो बनाता ही है। ऐसा व्यक्ति बेफिक्र व लापरवाह होता है। जातक क्रोध में आकर कुछ भी कर सकता है नौकरी में निरन्तर बाधा आती है धैर्य की कमी के कारण मित्रों परिजनों मे मनमुटाव रहेगा।

दृष्टि–षष्टम भावगत सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि) होगी। फलत: नौकरी या व्यापार में बदलाव की निरन्तर स्थितिया बनती रहेंगी

निशानी–अभावग्रस्त परिवार में जन्म होने के पश्चात् भी जातक सफलता के उच्च शिखर को स्पर्श करेगा

दशा–सूर्य की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी होगी

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न मे चन्द्रमा धनेश होगा एव सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहा षष्ठम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। चद्रमा के कारण 'धनहीन योग' एवं सूर्य के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या की रात्रि को 8 व 9 बजे के लगभग होता है। इन दोनों ग्रहो की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राजयोग (सरकारी नौकरी) एवं व्यापार-व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त सघर्ष करना पडेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–जातक रूखे स्वभाव का होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसहिता' के अनुसार मिथुनलग्न मे बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा मिथुनलग्न के छठे स्थान म वृश्चिक राशिगत यह युति

वस्तुत पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य छठे होने से 'पराक्रमभग याग' तथा बुध के छठ जाने से 'लग्नभग योग' एवं 'सुखभग योग' की क्रमश: सृष्टि हुई है। फलत: यहां यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है जातक को माता की सम्पत्ति से वंचित होना पडेगा तथा उसे वाहन दुर्घटना का भय भी बना रहेगा। फिर भी इस योग के प्रभाव के कारण जातक का बचाव होता रहेगा।

4. **सूर्य+गुरु**–पत्नी पक्ष से वैचारिक मतभेद रहेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–जातक विनम्र व कोमल स्वभाव का होगा।
6. **सूर्य+शनि**–छठे स्थान मे दोनो ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे. यहां बैठकर दोनों ग्रह, अष्टम भाव (मकर राशि), व्यय भाव (वृष राशि) एव पराक्रम भाव (सिंह राशि) को देखेगे फलत: ऐसा जातक दीर्घ आयु वाला, खर्चीले स्वभाव का एव पराक्रमी होगा। परन्तु जातक का भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–जातक निडर किन्तु रूखे स्वभाव का व्यक्ति होगा।
8. **सूर्य+केतु**–शत्रुओं से भय बना रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में
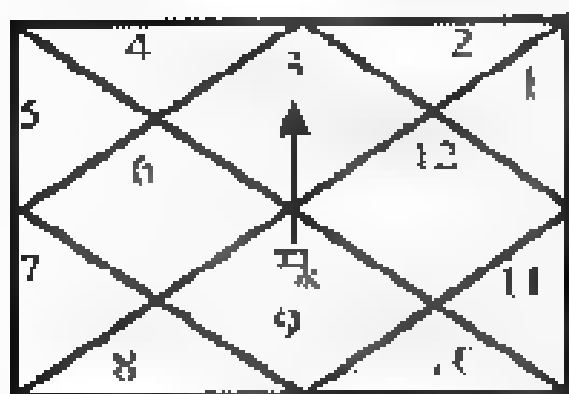
मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहा सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहा सप्तमस्थ सूर्य धनु राशि अपनी मित्र राशि में होगा. अपनी राशि (सिंह) से पांचवें होने के कारण सूर्य यहा शुभ फल देगा। सूर्य अग्नि राशि मे होने के कारण जातक का स्वभाव कुछ भड़कीला व क्रोधी होगा। फिर भी जातक में बल, बुद्धि एवं विद्या का सम्मिश्रण प्रखर होगा। प्रथम सन्तति के जन्म के पश्चात् जातक का भाग्य चमकेगा।

दृष्टि–सप्तम भावगत सूर्य की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक को परिश्रम का पूरा फल मिलेगा। जातक मित्रों-परिजनों का शुभचिन्तक होगा।

निशानी–जातक को 25 वर्ष की आयु के बाद विवाह सुख मिलेगा।

दशा–सूर्य की दशा अन्तर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा गृहस्थ सुख में वृद्धि होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनो की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी. यहा सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे फलत: ऐसे जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को सायं छ: बजे के आस पास होता है धनेश व पराक्रमेश होकर दोनों ग्रह स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक अपने परिश्रम व पुरुषार्थ से यथेष्ठ धन व प्रतिष्ठा की प्राप्ति करेगा
2. **सूर्य+मंगल**–दाम्पत्य जीवन में कलह रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के सातवें स्थान मे धनु राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: 'कुलदीपक योग' एवं 'लग्नाधिपति योग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक तेजस्वी होगा। कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा तथा अल्प प्रयत्न से ही उसे ज्यादा सफलता मिलेगी जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–जातक का गृहस्थ सुख वैभवपूर्ण रहेगा। 'हंस योग' के कारण विवाह के बाद जातक की किस्मत खुलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–गृहस्थ सुख, सन्तान सुख श्रेष्ठ होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहा सप्तम स्थान में दोनो ग्रह धनु राशि में होंगे यहा बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (कुंभ राशि), लग्न भाव (मिथुन राशि) एवं सुख स्थान (कन्या राशि) को देखेंगे फलत: ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला सुखी जातक होता है। पर जातक का सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होता है।
7. **सूर्य+राहु**–वैवाहिक सुख में बाधा, विवाद, बिछोह की संभावना है।
8. **सूर्य+केतु**–गृहस्थ सुख विवादास्पद रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में

मिथुनलग्न मे सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी
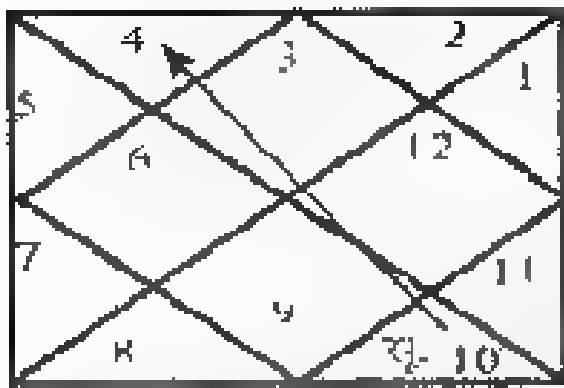
है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां अष्टम भाव गत सूर्य मकर राशि अपनी शत्रु राशि में होगा। सूर्य के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। सूर्य अपनी राशि से छठे स्थान पर होने से यहां अशुभ फल ही देगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा भाईयों व मित्रों में विवाद बना रहेगा। ऐसे जातक को घर में जहरीले जानवर को नही पालना चाहिए गुप्त प्रेम प्रसंग से जातक तबाह बरबाद होगा तेज गति के वाहन से बचना चाहिए। पाप कर्मों से बचे रहने पर ही आगे भाग्य चमकेगा

दृष्टि—अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक का धन विवाद, कोर्ट-कचहरी में खर्च होगा।

निशानी—ऐसा जातक मरते हुए प्राणी के सामने आ जाए तो उसके प्राण नहीं निकलेंगे।

दशा—सूर्य की दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होने से ऐसे जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा दोनो ग्रहों के खड्डे मे गिरने से 'पराक्रमभंग योग', 'धनहीन योग' बनता है यह स्थिति निकृष्ट है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु एवं व्यापार व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **सूर्य+मंगल**—जातक का स्वभाव नकारात्मक होगा पर 'विपरीत राजयोग' के कारण जातक राज-ऐश्वर्य को भोगेगा
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न मे बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा मिथुनलग्न के अष्टम स्थान मे मकर राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के आठवें होने से 'पराक्रमभंग योग' एवं बुध के आठवें होने से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' बनेगा। फलत: जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी प्रयत्न करना पड़ेगा। परिश्रम का उतना लाभ नहीं मिलेगा जितना

मिलना चाहिए। यहा यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक को अन्तिम सफलता मिलेगी।

4. **सूर्य+गुरु**–जातक लम्बी उम्र का स्वामी व धैर्यवान् होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**– जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां अष्टम स्थान मे दोनो ग्रह मकर राशि में होगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह राज्य भाव (मीन राशि), धनु भाव (कर्क राशि) एव पचम भाव (तुला राशि) को देखेंगे, शनि यहा स्वगृही होकर मिल नामक, विपरीत राजयोग बनायेगा। फलत: जातक धनी होगा राजनीति मे ऊंचे पद को प्राप्त करने वाला यशस्वी होगा। परन्तु पिता की मृत्यु के बाद ही राजनीति में सही विकास होगा।
7. **सूर्य+राहु**–जातक को लम्बी बीमारी, दुर्घटना सम्भव है
8. **सूर्य+केतु**–जातक को गुप्त रोग, बीमारी सभव है।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में
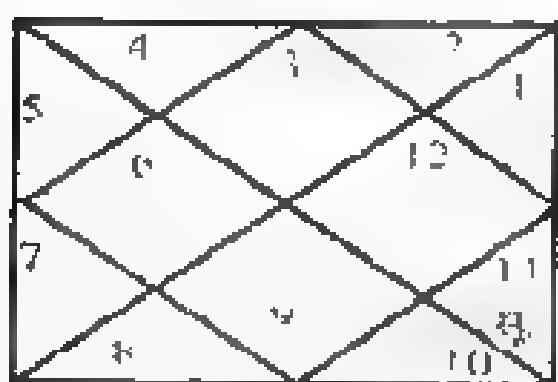
मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहा सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एव पराक्रम को बढ़ायगा। यहा नवम भावगत सूर्य कुम्भ राशि अपनी शत्रु राशि मे होगा। यह स्थिति पिता के लिए अनिष्ट कारक है। सूर्य यहा अपनी (सिंह) राशि से सातवे (केन्द्र) में होने मे शुभ फल प्रदाता है। जातक की उम्र लम्बी एवं खानदान बड़ा होगा। व्यक्ति अपने कुल कुटम्ब की रक्षा के लिए कुर्बान होने के लिए प्रतिपल तैयार रहेगा। जातक को आध्यात्मिक, भौतिक एव सामाजिक प्रतिष्ठा सहज प्राप्त होगी।

दृष्टि– नवमस्थ सूर्य की दृष्टि अपनी सिंह राशि पर एव पराक्रम भाव पर होगी फलत: जातक महान् पराक्रमी होगा। जनसम्पर्क के सहयोग मे आगे बढ़ेगा।

निशानी–इस जातक के जन्म लेते ही परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी.

दशा–सूर्य की दशा–अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा व पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एव सूर्य पराक्रमेश होगा। यहा इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी यहा

नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि मे होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को दोपहर तीन बजे के आस पास होगा। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान सिंह राशि पर होगी। जो सूर्य का घर है। फलतः जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

2. **सूर्य+मंगल**—भौतिक व सामाजिक उत्थान सम्भव है।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के नवम स्थान मे कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह तृतीय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। उसका पराक्रम तेज होता है. जातक के कुटुम्बी-परिजन उसके सहायक होंगे. जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
4. **सूर्य+गुरु**—सरकार व राज्य क्षेत्र में अच्छी नौकरी को सम्भावना रहेगी
5. **सूर्य+शुक्र**—भाग्य प्रबल रहेगा। सन्तति सुख उत्तम है।
6. **सूर्य+शनि**—यहा नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि मे होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (मेष राशि), पराक्रम स्थान (सिंह राशि) एवं छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी शनि यहा अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। फलतः जातक भाग्यशाली होगा एवं व्यापार में लाभ कमायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा, परन्तु जातक का सही भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**—भाग्य में बाधा, भौतिक सुखों की हानि होगी।
8. **सूर्य+केतु**—वैराग्य की भावना बनी रहेगी। जातक का आध्यात्मिक जीवन की ओर झुकाव रहेगा।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
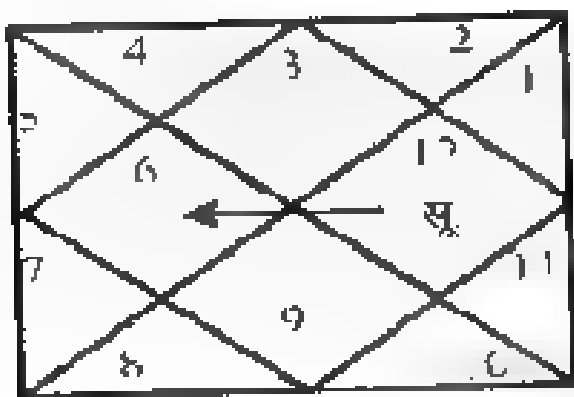
4	3	2	1
5	6	12 सू.	11
7	9	8	10

मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहा सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहां अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एवं पराक्रम को बढ़ायेगा। यहां दशम स्थान में सूर्य मीन राशि

अपनी मित्र राशि में होगा। दशम भावगत सूर्य स्वास्थ्य, धन व प्रसिद्धि के लिए अत्यन्त शुभ माना गया है। व्यक्ति महत्वकाक्षी एवं भाग्यशाली होता है। सूर्य यहा जल राशि मे है फलत: अपनी उष्णता, उग्रता व क्रूरता खो देता है। इससे जातक में नेतृत्व शक्ति ज्यादा बढ जाती है। अपनी सिंह राशि में अष्टम स्थान पर होने से जातक कुछ शकालु स्वभाव का होगा पर कुटम्बी जनों से आहत होगा।

दृष्टि—दशम भावगत सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (कन्या राशि) पर होगी फलत: जातक को मकान, वाहन एवं नौकर-चाकर का सुख मिलेगा।

निशानी—जातक का व्यक्तित्व राजा के समान प्रभावशाली होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा मे जातक उन्नति पथ की ओर लगातार आगे बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **सूर्य+चद्र**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनो की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहा दशम स्थान में दोनो ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या दोपहर 12 से 2 बजे के बीच होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रहो की दृष्टि चतुर्थ भाव कन्या राशि पर होगी, जातक को उत्तम वाहन सुख एवं भवन सुख की प्राप्ति होगी। जातक का राज्य सरकार या राजनीति में दबदबा रहेगा, क्योंकि सूर्य यहां उच्चाभिलाषी है
2. **सूर्य+मंगल**—जातक रौबीला होगा व शत्रुओं का नाश करने मे समर्थ होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रो का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के दशम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है बुध यहा नीच का होगा। पर केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' बना रहा है। यहां बैठकर दोनो ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जहा बुध की उच्चराशि उपस्थित है। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। बुद्धि चातुर्य से जातक धनवान होगा। अच्छा व्यापारी होगा जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक अपन कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **सूर्य+गुरु**—'हंस योग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—'जातक' राजा जैसा ही वैभवशाली होगा। 'मालव्य योग' से जातक का अचानक भाग्योदय होगा।

6. **सूर्य+शनि**—यहा दसवे स्थान मे दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (वृष राशि), चतुर्थ भाव (कन्या राशि) एव सप्तम भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक पूर्ण सुखी होगा तथा विवाह के बाद उसकी किस्मत खुलेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा परन्तु सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**—संघर्ष के उपरान्त सफलता निश्चित है।
8. **सूर्य+केतु**—थोड़ा संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
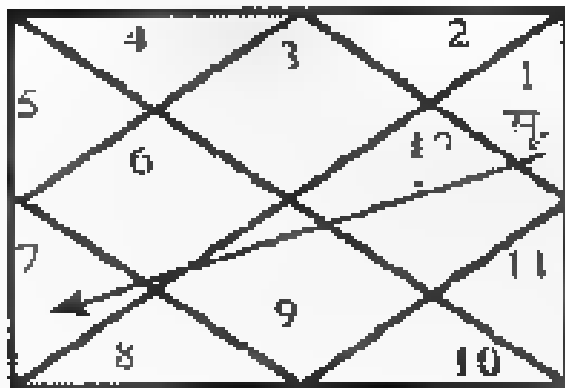
मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप मे एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है। सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अत: यहा अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य, तेजस्विता एव पराक्रम को बढ़ायेगा। यहा एकादश स्थान मे सूर्य मेष राशि का होगा। जहां वह उच्च का होगा तथा 10 अंशों तक परमोच्च का होगा। अपनी (सिंह) राशि से नवम स्थान पर होने से सूर्य सर्वश्रेष्ठ शुभ फलों का प्रदायक है। ऐसे जातक को मित्र, समाज व ज्येष्ठ भ्राता से मनोवांछित सहयोग मिलता रहेगा। जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

दृष्टि—एकादश भावगत सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक विद्यावान होगा। उसके एक पुत्र जरूर होगा। पुत्र भी विद्यावान होगा।

निशानी—जातक व्यक्तिगत रूप से अहंकारी होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक को खूब व्यापार एवं धन लाभ होगा

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या के दिन के दस-ग्यारह बजे के लगभग होता है। यहा सूर्य उच्च का होगा। सूर्य दस अंशों मे परमोच्च का होगा। फलत: 'रविकृत राजयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पचम स्थान (तुला राशि) को पूर्ण

दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक विद्यवान व तेजस्वी होगा उसकी सन्तति भी तेजस्वी होगी। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।

2. **सूर्य+मंगल**—बड़े भाई बहन के सुख में हानि परन्तु 'किम्बहुना योग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव मे मेष राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। सूर्य यहा उच्च राशि में होगा तथा पंचम भाव को देखेगा। यह युति यहा सार्थक है, ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। गाव या शहर का प्रमुख प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक शिक्षित होगा उसकी सन्तान भी शिक्षित होगी। जातक पराक्रमी एवं सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—राज्य सुख में वृद्धि होगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—सन्तति सुख उत्तम, विद्या सुख श्रेष्ठ।
6. **सूर्य+शनि**—यहा एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि राशि मे होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह लग्न भाव (मिथुन राशि) पचम भाव (तुला राशि) एव अष्टम भाव (मकर राशि) को देखेंगे। सूर्य यहां उच्च का होगा शनि नीच का 'नीचभग राजयोग' बनायेगा। फलतः ऐसा जातक विद्यावान होगा तथा ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा तथा प्रत्येक कार्य में सफल होगा। परन्तु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद ही होगा।
7. **सूर्य+राहु**—बड़े भाई एव पिता के सुख में हानि होगी सन्तति सुख में हानि सभव है।
8. **सूर्य+केतु**—कुटुम्ब सुख मे हानि महसूस करेंगे।

मिथुनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में
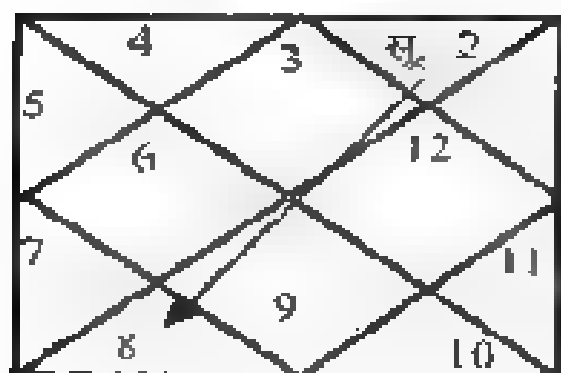
मिथुनलग्न में सूर्य तृतीय भाव के स्वामी के रूप में एक पापी ग्रह है, पर यहां सूर्य न्यूनतम पापी है। सूर्य लग्नेश बुध का मित्र ग्रह है सूर्य क्षत्रिय होने पर सत्वगुणी है अतः यहा अनिष्टकारी न होकर जातक के शौर्य तेजस्विता एव पराक्रम को बढ़ायेगा। यहा द्वादश स्थान मे सूर्य वृष राशि अपनी शत्रु राशि में होगा। सूर्य

की यह स्थिति 'पराक्रमभंग योग' बनाती है। अपनी सिह राशि से दशम स्थान पर होने के कारण इतना अशुभ फल नही होगा। जातक धार्मिक यात्रा, परोपकार व सामाजिक कार्यों मे पैसा खर्च करेगा। अपने मित्रों-परिजनों पर धन खर्च करेगा। जातक एय्याशी पर भी पैसा खर्च कर सकता है।

दृष्टि–द्वादश भावगत सूर्य की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक रोग एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सक्षम होगा।

निशानी–पैसे की तंगी के कारण इज्जत खतरे में पडेगी जातक दूसरों की मुसीबत अपने सिर लेता है।

दशा सूर्य की दशा अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चद्र**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनो की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहा द्वादश स्थान मे दोनो ग्रह वृष राशि में होगे ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को प्रात: आठ बजे के आस-पास होता है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा। चंद्रमा तीन अंशों में परमोच्च का होगा। दोनों ग्रहों क द्वादश मे जाने से 'पराक्रमभंग योग' एवं 'धनहीन योग' बनता है। परन्तु धनेश उच्च का होने से जातक के पास धन तो बहुत आयेगा पर धन एकत्रित नहीं हो पायेगा, रुपयों की बरकत नहीं होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–शैय्या सुख में हानि पत्नी से वैचारिक मतभेद सम्भव हैं।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुन लग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रो का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के द्वादश भाव में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगे। सूर्य बारहवें होने से 'पराक्रमभंग योग' बना एवं बुध के कारण 'लग्नभग योग' एव 'विद्या बाधायोग' बना। फलत: यहा यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। यात्राएं खूब करेगा पर जीवन में सघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। ऐसा जातक संघर्षशील जीवन जीते हुये भी सफल व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–विलम्ब विवाह या शय्या सुख की हानि सभव है।
5. **सूर्य+शुक्र**–शैय्या सुख विविधता के साथ।
6. **सूर्य+शनि**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कर्क राशि), छठे स्थान (तुला राशि) एवं भाग्य स्थान (कुंभ

राशि) को देखेंगे। फलतः जातक भाग्यशाली तो होगा पर उसका पराक्रम भंग होगा। धन एवं इच्छित सफलता को प्राप्त करने हेतु संघर्ष बना रहेगा। जातक का भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**—राजदण्ड मिल सकता है। कैद हो सकती है। शय्या सुख की हानि होगी।
8. **सूर्य+केतु**—कोर्ट-कचहरी से कारावास का भय बना रहेगा।

❑❑❑

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में
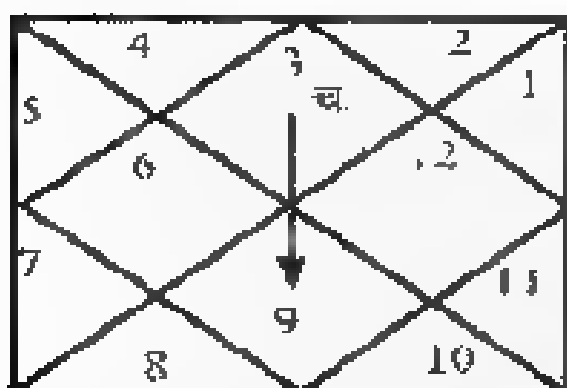
मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। चंद्रमा प्रथम स्थान में मिथुन राशि में होगा एवं शत्रु क्षेत्री होगा। **'यामिनीनाथ योग'** के कारण ऐसा जातक समाज का सम्मानित व सफल व्यक्ति होगा। यद्यपि माता से वैचारिक मतभेद रहेंगे तथा माता का आशीर्वाद लेने से जातक निरन्तर उन्नति पथ की ओर अग्रसर होता रहेगा। जातक स्वय के पुरुषार्थ से अच्छा धन कमायेगा जातक संवेदनशील व शंकालु होगा।

दृष्टि—लग्नस्थ चद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक की पत्नी सुन्दर, धार्मिक व पतिव्रता होगी।

निशानी—जब तक माता जीवित है जातक को धन दौलत की कमी नहीं रहेगी।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी। धन मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा. यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी. यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि मे होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय (5 से 7 बजे) के मध्य होगा। यहां बैठकर दोनो ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक

की पत्नी सुन्दर होगी। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व पराक्रमी व्यक्ति होगा।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसहिता' के अनुसार मिथुन लग्न में चद्रमा धनेश है जबकि मंगल षष्टेश व लाभेश होने से पापी है। लग्न में चंद्र+मगल की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की षष्टेश+लाभेश के साथ युति होगी चद्रमा यहा शत्रु क्षेत्री है। फिर भी 'लक्ष्मी योग' बनता है यहा बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान (कन्या राशि) सप्तम स्थान (धनु राशि) एव अष्टम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी तथा जातक लम्बी उम्र वाला होगा।

3. **चंद्र+बुध**–'भद्र योग' के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।

4. **चंद्र+गुरु**–'गजकेसरी योग' के कारण जातक परम भाग्यशाली होगा मिथुनलग्न में प्रथम स्थान मे गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चद्रमा की सप्तमेश दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। लग्न स्थान में चंद्रमा शत्रु क्षेत्री होगा। दो केन्द्रों का स्वामी होकर बृहस्पति क्रमश: पचम भाव, सप्तम भाव एव भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। धन की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान की उत्पत्ति के साथ पुन: भाग्योदय होगा। जीवन आराम से गुजरेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–जातक विद्वान एवं यशस्वी होगा

6. **चंद्र+शनि**–जातक परम भाग्यशाली होगा।

7. **चद्र+राहु**–जातक हठी एवं अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा।

8. **चंद्र+केतु**–जातक अपने विचारों पर स्थिर नहीं रहेगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में
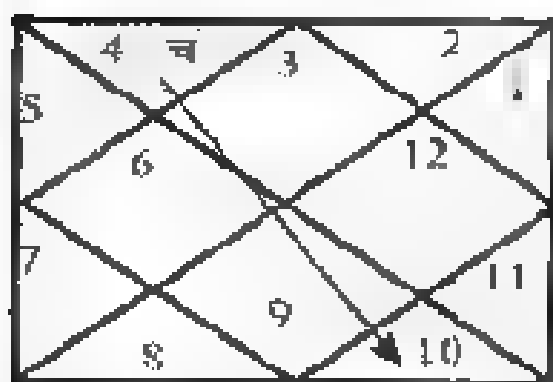
मिथुनलग्न में चद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न मे चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न के लिए योगकारक ग्रह माना गया है। यहा द्वितीयस्थ चद्रमा कर्क राशि में स्वगृही होगा। जातक को धन दौलत की कमी नही रहेगी। ऐसा व्यक्ति घर में मन्दिर बनाये व चादी की घण्टा बजाये तो चंद्रमा का शुभ फल मिलता रहेगा। चादी के बर्तन में भोजन करना सोते समय दूध पीना जातक के

लिए शुभ रहेगा। जातक विद्यावान होगा। शिक्षा या संतान दोनों में से एक सुख ज्यादा अवस्था में पुष्टित होगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक की आयु में वृद्धि होगी। दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।

निशानी—जातक की वाणी मीठी होगी।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक महाधनी होगा। धन मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। फलत: ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को प्रात:काल सूर्योदय के समय 6 से 4 बजे के मध्य होगा। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। बलवान धनेश की तृतीयेश के साथ युति होने के कारण मित्रमूल धनयोग बनेगा। ऐसा जातक कुटम्बी जनों व मित्रों की सहायता से धन अर्जित करेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—'भोजसंहिता' के अनुसार द्वितीय स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बना। इसके कारण यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), भाग्य भाव (कुम्भ राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। महाधनी होगा परन्तु जातक का भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक धनी एवं परिश्रमी होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—मिथुनलग्न के द्वितीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। द्वितीयस्थ बृहस्पति उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होकर किम्बहुना योग बनायेगा। इनकी अमृत दृष्टि षष्टम भाव, अष्टम भाव एवं दशम भाव पर पड़ेगी। फलत: आपके शत्रु नष्ट होंगे। आपका राजनीति में वर्चस्व रहेगा। आप दीर्घायु को प्राप्त करेंगे एवं धन की कोई कमी आपकी उन्नति में बाधक नहीं होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**—जातक कला प्रेमी एवं रसिक मनोवृत्ति वाला होगा
6. **चंद्र+शनि**—जातक भाग्यशाली होगा एवं व्यापार के द्वारा धन अर्जित करेगा।
7. **चंद्र+राहु**—जातक का उपार्जित धन खर्च होता रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**—जातक के पास धन संग्रह कठिनता से होगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में
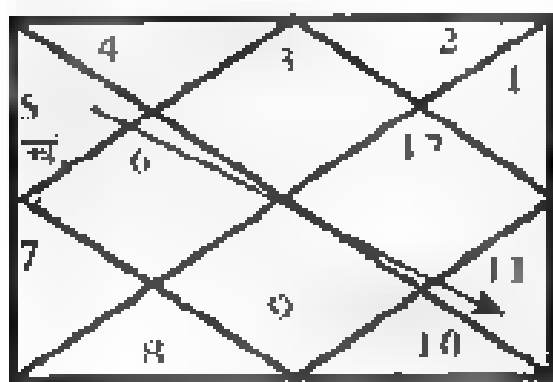
मिथुनलग्न में चद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोडा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न के लिए योगकारक ग्रह माना गया है। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा सिंह राशि में होगा जो कि चंद्रमा की मित्र राशि है। जातक महत्त्वकाक्षी होगा। उसका पराक्रम तेज रहेगा। जातक भाई बहन कुटुम्ब परिवार वाला होगा. ऐसा जातक किसी का अकुश या दबाब सहन नहीं कर पाता।

दृष्टि—तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य भवन (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक सौभाग्यशाली होगा।

निशानी—ऐसे व्यक्ति के घर में अकाल मृत्यु नहीं होगी। यहा चन्द्रमा मौत से रक्षा करने वाला है।

दशा—चद्रमा की दशा अन्तर्दशा मे जातक का पराक्रम बढ़ेगा। धन प्राप्ति के प्रयास सफल होंगे।

चद्रमा का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **चद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहा इन दोनो की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहा तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को रात्रि दो से चार बजे के मध्य होगा। सूर्य यहां स्वगृही होगा. फलत बलवान् तृतीयेश की धनेश के साथ युति होने से जातक कुटुम्बी जनों, मित्रों से धन व यश अर्जित करेगा।
2. **चद्र+मंगल**—'भोजसंहिता' के अनुसार तृतीय स्थान में चंद्र+मंगल की युति 'सिंह राशि' में होगी। जहां बैठकर दोनो ग्रह छठे भाव (वृश्चिक राशि) भाग्य भाव (कुम्भ राशि) एव दशम भाव (मीन राशि) को देखेंगे फलतः ऐसा जातक भाग्यशाली एवं धनवान होगा तथा अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक पराक्रमी होगा एव उसकी बहने अधिक होगी।
4. **चंद्र+गुरु**—मिथुन लग्न के तृतीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चद्रमा

की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव नवम भाव एव एकादश भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे फलत: विवाह के बाद भाग्योदय के अवसर मिलेंगे। आवक के जरिए नौकरी एवं स्वतंत्र व्यापार-व्यवसाय के माध्यम से बहुमुखी होंगे। यह युति आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता देगी।

5. **चंद्र+शुक्र**–जातक को भाई-बहनों का सुख होगा। स्त्री मित्र भी रहेंगे।
6. **चंद्र+शनि**–जातक को मित्रों से लाभ होगा मित्र भाग्यशाली व धनी होंगे
7. **चंद्र+राहु**–भाइयों से अनबन रहेगी।
8. **चंद्र+केतु**–मित्र पीठ पीछे निन्दा करेंगे

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में
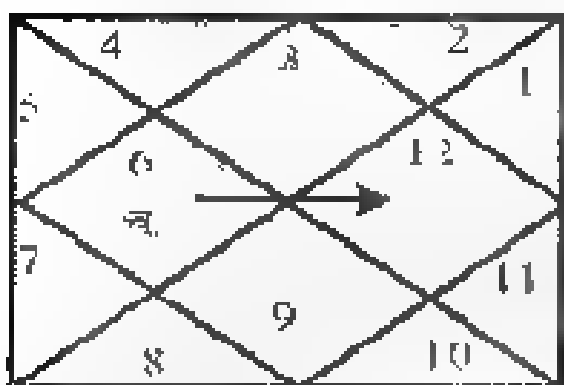
मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। चतुर्थ स्थान में चंद्रमा यहां कन्या राशि (शत्रु राशि) में होगा। फिर चंद्रमा इस भाव में बलवान होगा। यहां पर चंद्रमा को 'आमदनी का दरियाव' कहा गया है जो 'यामिनीनाथ योग' भी बनाता है। जातक के पास वाहन, स्वयं का धन एवं माता की सम्पत्ति होगी। जातक उत्तम भवन का स्वामी होगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (मीन राशि) पर होगी फलत: राजपक्ष में जातक का वर्चस्व बढ़ेगा।

निशानी–जातक भावुक, संवेदनशील, सौन्दर्य व शृंगार प्रेमी होगा ऐसे व्यक्ति की आमदनी खर्च करने पर बढ़ती चली जाती है।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक के सुख ऐश्वर्य में वृद्धि होगी

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे फलत: ऐसे जातक का जन्म

आश्विन कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि बारह बजे के आस पास होगा। चन्द्रमा यहा शत्रु क्षेत्री होगा। फलतः वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

2. **चद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार चतुर्थ स्थान में चद्रमा कन्या राशि में शत्रु क्षेत्री होगा। फलतः 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। मंगल यहा दिग्बली होगा। यहा बैठकर दोनो ग्रह सप्तम भाव (धनु राशि), दशम भाव (मीन राशि) एव एकादश भाव (मेष राशि) को देखेगे जो कि मंगल के स्वयं की राशि है। ऐसा जातक धनी होगा बड़ा व्यापारी होगा तथा इसका भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध** -'भद्र योग' के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के चतुर्थ स्थान मे गुरु+चद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ स्थान में चन्द्रमा शत्रु क्षेत्री होगी जहा बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दशम भाव एव द्वादश पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत. खर्च बढचढ कर रहेगा। राजकाज में प्रभाव वर्चस्व दबदबा रहेगा। जातक की आयु लम्बी होगी।
5. **चद्र+शुक्र**–जातक धनी होगा पर सही भाग्योदय प्रथम सन्तति के बाद होगा
6. **चद्र+शनि**–जातक परम भाग्यशाली होगा, ठेके के कार्य में रुचि रहेगी।
7. **चंद्र+राहु** माता को कष्ट, अथवा छोटी उम्र में माता की मृत्यु सम्भव है।
8. **चद्र+केतु**–वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा। माता की सम्पत्ति मे विवाद सम्भव है।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति पचम स्थान मे
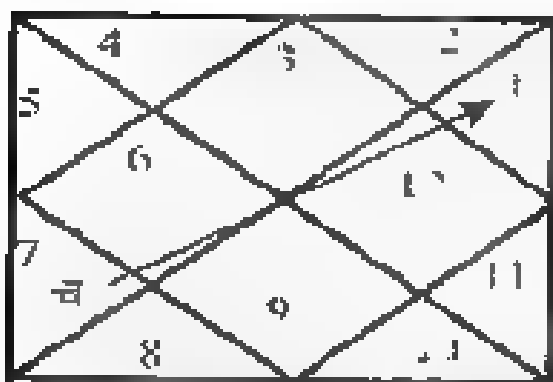
4	3	2	1
5	6	12	11
7 चं	9	8	10

मिथुनलग्न में चद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न मे चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नही मानता फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योग कारक ग्रह माना गया है। पंचम स्थान में चंद्रमा तुला राशि का होगा। यहा चद्रमा को 'दूध की नहर' कहा गया है। ऐसा जातक शुभकार्य एव बच्चों पालन-पोषण पर धन खर्च करता है। उसके घर म दौलत की बरकत रहती है। पाराशर ऋषि कहते हैं–''धनोपार्जन कृति लाश्च जायन्ते तत्सुता अपि'' जातक धनी होगा तथा उसकी सन्तति भी धनवान होगी

दृष्टि—पचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक व्यापार मे धन अर्जित करेगा। विदेशी व्यापार से भी लाभ सभावित है

निशानी—जातक के प्रथम कन्या होगी। दो कन्या की सम्भावना है।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक को नवीन उपलब्धियां मिलेंगी धन की प्राप्ति होगी

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न मे चन्द्रमा धनेश होगा एव सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनो की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां पचम स्थान मे दोनो ग्रह तुला राशि मे होंगे फलतः ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि मे 10 से 12 के मध्य होगा सूर्य यहा नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करेगा। जातक की एकाध सन्तति का क्षरण, अकाल मृत्यु या गर्भपात जैसा होगा।
2. **चंद्र+मंगल**—'भोजसंहिता' के अनुसार पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। जहां बैठकर दोनो ग्रह अष्टमभाव (मकर राशि) लाभ स्थान (मेष राशि) एव व्यय भाव (खर्च स्थान) मे देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा, लम्बी आयु का स्वामी होगा तथा खर्चीले स्वभाव का जातक होगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक पढ़ा लिखा होगा। जातक की सन्तति भी पढ़ी लिखी व सभ्य होगी।
4. **चंद्र+गुरु**—मिथुन लग्न के पचम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। पंचम स्थान मे ये दोनों शुभ ग्रह बैठकर भाग्य भवन, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का व्यक्तित्व तेजस्वी होगा। व्यापार-व्यवसाय द्वारा जातक को अतुल धन की प्राप्ति होती रहेगी। अन्य दुर्योग न हों तो जीवन सुखी रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलेगी।
6. **चंद्र+शनि**—जातक करोड़पति होगा, किसी उद्योग का स्वामी होगा।
7. **चंद्र+राहु**—पुत्र सन्तान प्राप्त मे बाधा संभव है।
8. **चंद्र+केतु**—एकाध गर्भपात संभव

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्ट्म स्थान में

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम

4	3	2	1
5	6	12	
7	9	11	
8 चं		10	
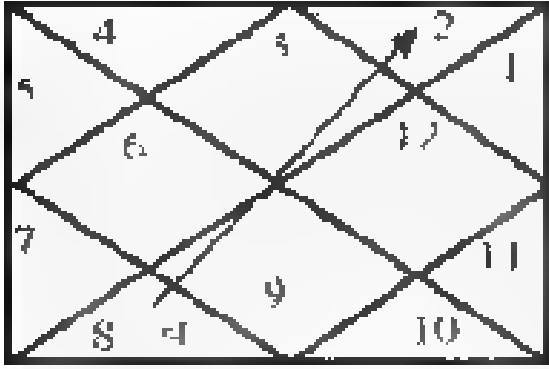
शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। छठे स्थान पर चंद्रमा अपनी नीच वृश्चिक राशि में होगा। इसमें 3 अंशों तक चन्द्रमा परम नीच का होगा। चंद्रमा की यह अवस्था 'धनहीन योग' बनाती है। ऐसे जातक को जीवन में निर्धनता व असफलताओं का सामना करना पड़ता है मन अशान्त रहता है। भोजसंहिता के अनुसार जातक को विषभोजन का भय रहता है।

दृष्टि—षष्टम भावगत चंद्रमा की दृष्टि द्वादश भाव (वृषभ राशि) पर होगी जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी—चंद्रमा के साथ पाप ग्रह तो शत्रु द्वारा धन हानि और यदि शुभ ग्रह हो तो शत्रु द्वारा धन लाभ की स्थिति बनती है।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा कष्टदायक होगी।

विशेष—ऐसे जातक को बासी भोजन नहीं करना चाहिए। रात्रि को सोते समय दूध नहीं पीना चाहिए।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी यहां षष्ठम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' एवं सूर्य के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या की रात्रि को 8 व 9 बजे के लगभग होता है। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राजयोग (सरकारी नौकरी) एवं व्यापार-व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—'भोजसंहिता' के अनुसार छठे स्थान में चंद्रमा अपनी नीच राशि में होगा एवं मंगल स्वगृही होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कुम्भ राशि), धन राशि (कर्क राशि) एवं पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी फलतः 'महालक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा तथा भाग्यशाली होगा एवं राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**—लग्नभंग योग के कारण जातक का परिश्रम सार्थक नहीं होगा। जातक को मेहनत का फल नहीं मिलेगा
4. **चंद्र+गुरु**—मिथुन लग्न के छठे स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है छठे स्थान में चंद्रमा नीच का

होगा एवं इस कुण्डली में 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि होगी। फलतः यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभ फलदायक न होकर धन के प्रति संघर्ष का संकेत देता है।

5. **चंद्र+शुक्र**—विद्या में बाधा निश्चित है। विलम्ब सन्तति योग संभव है
6. **चंद्र+शनि**—भाग्योदय में भारी रुकावट, संघर्ष रहेगा।
7. **चंद्र+राहु**—यहां राहु मृत्यु तुल्य कष्ट देगा।
8. **चंद्र+केतु**—यहा केतु लम्बी बीमारी देगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में
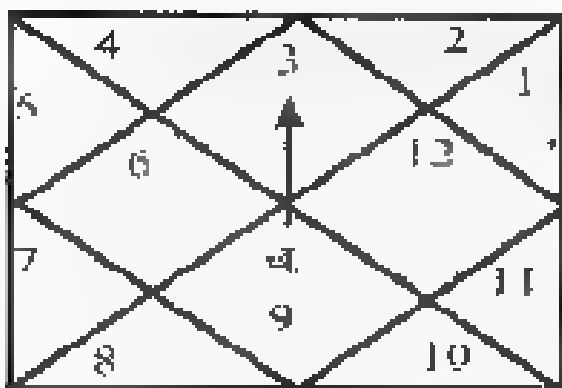
मिथुनलग्न में चद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चद्रमा मिथुन लग्न मे योग कारक ग्रह माना गया है। सप्तम स्थान मे चद्रमा यहा धनु राशि मे है, जो कि इसकी मित्र राशि है। ऐसे चद्रमा को 'लक्ष्मी का अवतार' कहते है। जातक का स्वभाव विनम्र उदार, कल्पनाशील, भावुक, संवेदनशील एवं सात्विक होता है। जातक की आर्थिक स्थिति विवाह के बाद सुदृढ़ होगी। जीवन साथी धन संग्रह मे दक्ष होगा। जीवन साथी सुन्दर होगा। राजपक्ष मे जातक को सम्मान मिलेगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ चद्रमा की दृष्टि लग्नस्थ (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक द्वारा किये गये परिश्रम सार्थक होंगे।

निशानी—ज़ातक के जन्म के बाद घर-परिवार में धन-दौलत की बरकत होती है।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा जातक की उन्नति होगी वैवाहिक (गृहस्थ) सुख में वृद्धि होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहा इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। फलतः ऐसे जातक का जन्म पौष

कृष्ण अमावस्या को साय छः बजे के आस पास होता है। धनेश व पराक्रमेश होकर दोनो ग्रह स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलत. जातक अपने परिश्रम व पुरुषार्थ से यथेष्ठ धन व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

2. **चंद्र+मंगल** 'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तम स्थान में धनुराशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (कुंभ राशि) लग्न स्थान (वृष राशि) एव धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। दोनों ग्रह केन्द्र में होने से 'रूचक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' बना। फलतः जातक राजा के सामान बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। सौभाग्यशाली होगा एवं उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **चंद्र+बुध**--जातक की पत्नी सुन्दर, पतिव्रता व आज्ञाकारी होगी।
4. **चंद्र+गुरु**--मिथुन लग्न के सप्तम स्थान मे गुरु+चद्र की युति वस्तुतः धनेश चद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। सप्तम भाव मे बृहस्पति स्वगृही होने से 'हंस योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनो शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न भाव एव पराक्रम स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपका व्यक्तित्व 24 वर्ष की आयु में निखरना शुरू हो जायेगा। 32 वर्ष की आयु मे आपका पराक्रम पूर्ण यौवन पर होगा। यदि लग्नेश बुध आपकी कुडली मे अच्छी स्थिति में है तो निश्चय ही आप एक उत्कृष्ट श्रेणी के सफल व्यक्तियों में से एक हैं।
5. **चंद्र+शुक्र**--पत्नी सुन्दर एव मांसल शरीर वाली, पति वल्लभा होगी
6. **चंद्र+शनि**--विवाह के बाद भाग्योदय होगा।
7. **चंद्र+राहु**--गृहस्थ सुख में व्यवधान, द्विभार्या योग बनता है।
8. **चंद्र+केतु**--पत्नी से वैचारिक मतभेद सम्भव परन्तु पत्नी सुन्दर होगी

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में
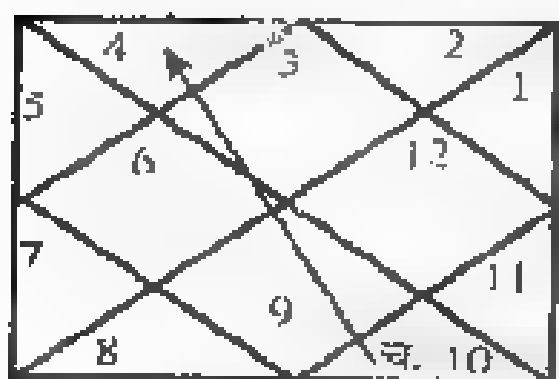
4 3 2 1 5 6 12 7 11 9 8 च. 10

मिथुनलग्न में चद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश हैं। अपने पुत्र बुध के लग्न मे चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। यहां अष्टम स्थान मे चंद्रमा मकर राशि में होगें। चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' बनेगा। यहा चंद्रमा 'जला हुआ दूध' कहलाता है ऐसा जातक बिना परिश्रम किये हुए धन-प्रतिष्ठा

मिलने की उम्मीद रखता है और अन्तत: निराशा हाथ लगती है। ऐसा जातक प्राय: निर्लज्ज व स्वार्थी होता तथा अनैतिक कार्यों में विश्वास रखता है।

दृष्टि—अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि अपने ही घर (कर्क राशि) धन भाव पर होगी। जातक का अंतिम प्रयास में सफलता मिलेगी।

निशानी—जातक प्राय: आलसी होता है

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को विशेष संघर्ष, कष्ट एवं मानसिक वेदना की अनुभूति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां अष्टम स्थान में दोनो ग्रह मिथुन राशि में होने से ऐसे जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों के खड्डे में गिरने से 'पराक्रमभंग योग', 'धनहीन योग' बनता है। यह स्थिति निकृष्ट है। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु एवं व्यापार, व्यवसाय में प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—'भोजसंहिता' के अनुसार अष्टम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनायेगा। यहां बैठकर दोनो ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) धन भाव (कर्क राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलत: 'महालक्ष्मी योग' के कारण ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापारी होगा। उसका पराक्रम जनसंपर्क तेज होगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—मिथुन लग्न के अष्टम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। अष्टम भाव में दोनो ग्रह होने के कारण आपकी कुंडली में क्रमश: 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि हुई है। फलत: यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभ फलदाई न होकर धन संग्रह में बाधक, विवाह सुख में बाधक एवं सरकारी नौकरी में बाधक है। राजकाज में किसी मुकदमें में पराजय भी हो सकता है।
5. **चंद्र+शुक्र**—विद्या में निश्चित रूप से बाधा आयेगी।
6. **चंद्र+शनि**—विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
7. **चंद्र+राहु**—जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा। शत्रु भय रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**—शल्य चिकित्सा या दुर्घटना का योग है।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। यहां नवम स्थान मे चंद्रमा 'कुभ राशि' म होंगे। ऐसे चद्रमा को 'दुखियों का रक्षक' कहा जाता है। ऐसा जातक सात्विक, धार्मिक माता-पिता, गुरुजनों का भक्त होता है। जातक प्राय: सत्यवादी एव न्यायप्रिय होता है। उसको परोपकार एवं सामाजिक कार्यों में रुचि रहती है।

दृष्टि–नवम स्थानगत चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी फलत: जातक अत्यन्त पराक्रमी होगा। उसका जनसंपर्क उच्च वर्ग के अभिजात्य लोगों से होता है।

निशानी–जातक व्यापार से धनार्जन करता है चद्रमा का शुभ असर जातक की सन्तति पर होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा जातक के प्रयास सार्थक होंगे एवं उसे धन की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहा इन दोनों की युति वस्तुत: धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी यहा नवम स्थान मे दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को दोपहर तीन बजे के आस-पास होगा सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम स्थान सिंह राशि पर होगी जो सूर्य का घर है। फलत: जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा
2. **चद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार नवम स्थान में कुम्भ राशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि), पराक्रम भाव (सिंह राशि) एवं सुख भाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान होगा। महान पराक्रमी होगा एवं खर्चीले स्वभाव का भी होगा। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी एवं भाग्यशाली होगा।

3. **चंद्र+बुध**—जातक का भाग्योदय व्यापार से होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—मिथुन लग्न के नवम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। नवम भाव में बैठकर दोनों शुभ ग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपके व्यक्तित्व में बढ़ोत्तरी 24 वर्ष की आयु से शुरू हो जायेगी। विवाह शुभद रहेगा एवं प्रथम संतति के साथ ही भाग्योदय का पूर्ण विकास होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—विद्या, बुद्धि, हुनर द्वारा धन की प्राप्ति होगी।
6. **चंद्र+शनि**—जातक राजा के समान धनी एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
7. **चंद्र+राहु**—भाग्य में रुकावट, पिता का सुख कमजोर रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**—भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में
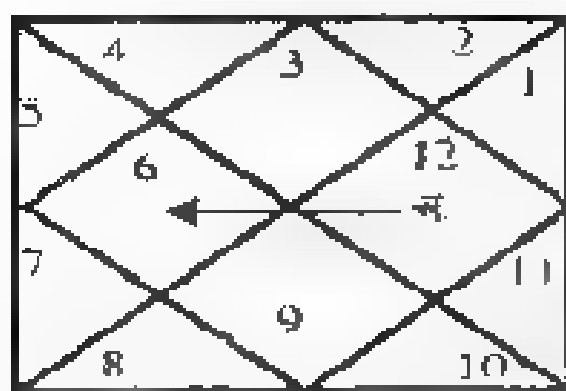
मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न में योगकारक ग्रह माना गया है। यहां दशम स्थान में चंद्रमा मीन राशि में है जो कि चंद्रमा की मित्र राशि है। यहां चंद्रमा 'यामिनी नाथ योग' बना रहा है। चंद्रमा अपनी राशि कर्क में नवम स्थान पर होने से शुभ है। ऐसा जातक सहिष्णु, धैर्यशाली, शिष्टभाषी, धर्मप्रिय एवं विनम्र होता है। जातक को राज्य पक्ष से सम्मान मिलता है।

दृष्टि—दशमस्थ चन्द्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (कन्या राशि) को देखेगा। जातक को भूमि-वाहन व माता का सुख मिलेगा।

निशानी—जातक सुगंध एवं सुन्दर स्त्री व सौन्दर्य का प्रेमी होता है।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को धन व यश की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां

दशम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या दोपहर 2 से 12 बजे के बीच होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव कन्या राशि पर होगी, जातक को उत्तम वाहन सुख एवं भवन सुख की प्राप्ति होगी जातक का राज्य सरकार या राजनीति में दबदबा रहेगा, क्योंकि सूर्य यहां उच्चाभिलाषी है।

2. **चंद्र+मंगल**–'भोजसंहिता' के अनुसार दशम स्थान में मीन राशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि), चुतर्थ भाव (कन्या राशि) एवं पंचम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत. जातक को जीवन के सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। कुलदीपक योग के कारण जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी पर जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक कुल का दीपक एवं चमकता सितारा होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–मिथुन लग्न के दशम स्थान में चंद्र+गुरु की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बृहस्पति स्वगृही होकर केन्द्रस्थ होने से 'हंस योग' की सृष्टि कर रहा है। दोनों ग्रह बली होकर धन स्थान सुख स्थान एवं छठे भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे फलतः आपके पास चल अचल सम्पत्ति बहुत होगी। आपको अनेक वाहनों का सुख भी होगा। आयु दीर्घ होगी। पद्मसिंहासन योग के कारण आप साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उन्नति के पथ पर बहुत आगे बढ़ जायेंगे।
5. **चंद्र+शुक्र**–'मालव्य योग के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–सरकारी क्षेत्र में धोखा होगा
8. **चंद्र+केतु**–सरकारी कार्य में बाधा आयेगी।

मिथुनलग्न मे चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में
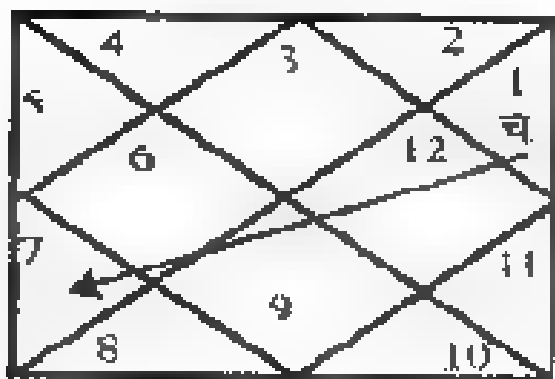
4 3 2 1 च. 5 6 12 7 11 9 8 10

मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चद्रमा मिथुन लग्न में योग कारक ग्रह माना गया है। एकादश स्थान में चंद्रमा मेष राशि में होगा। मेष चंद्रमा की मित्र राशि है। ऐसा जातक थोड़ा

क्रोधी उग्र स्वभाव का होगा इसके कारण कई बार मानसिक संतुलन खो बैठता है। जातक महत्वकांक्षी होगा एव धनवान होगा। जातक राज्य सरकार या सामाजिक सस्थानों द्वारा सम्मानित भी होगा।

दृष्टि—एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पचम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक अध्यात्म विद्या, गूढ़ विद्या का जानकार होता है।

निशानी—जातक व्यापार-प्रिय होगा।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक को धन की प्राप्ति होगी। जातक का व्यापार व्यवसाय बढ़ेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—मिथुनलग्न में चन्द्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहां इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या के दिन के दस ग्यारह बजे के लगभग हाता है। यहा सूर्य उच्च का होगा। सूर्य दस अंशों में परमोच्च का होगा। फलतः 'रविकृत राजयोग' बनेगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक विद्यवान व तेजस्वी होगा उसकी सन्तति भी तेजस्वी होगी। जातक निश्चय ही पराक्रमी होगा।
2. **चंद्र+मंगल**—'भोजसंहिता' के अनुसार एकादश स्थान में मेष राशि गत मगल स्वगृही होगा। फलतः 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान (कर्क राशि), पंचम भाव (तुला राशि) एव छठे स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलतः जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अति धनवान होगा। उद्योगपति होगा एवं भाग्योदय प्रथम पुत्र सन्तति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक व्यापार-प्रिय व्यक्ति होगा।
4. **चद्र+गुरु**—मिथुन लग्न के एकादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। ये दोनो शुभ ग्रह यहा बैठकर तृतीय स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम स्थान पर पूर्ण दृष्टिपात करेंगे। फलतः आपके पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि होगी, सन्तान उत्तम विद्यासुख श्रेष्ठ होगा। विवाह अच्छे घर-घराने में होगा। पत्नी सुन्दर मिलेगी।
5. **चंद्र+शुक्र**—जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।

6. **चंद्र+शनि**–जातक धनी व उद्योगपति होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक हिंसक स्वभाव का होगा। पागलपन के दौरे भी आ सकते हैं।
8. **चंद्र+केतु**–जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगा।

मिथुनलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में
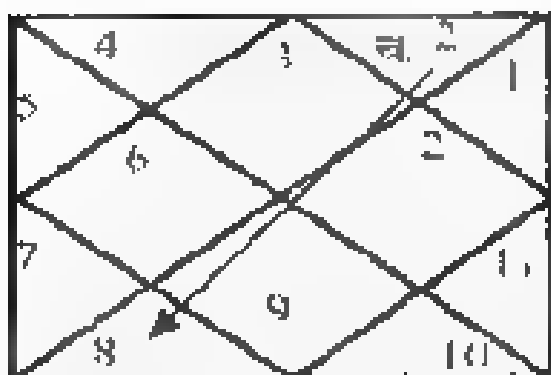
मिथुनलग्न में चंद्रमा द्वितीयेश होने के कारण मुख्य मारकेश है। अपने पुत्र बुध के लग्न में चन्द्रमा थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चन्द्रमा का परमशत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध को अपना शत्रु नहीं मानता। फिर भी चंद्रमा मिथुन लग्न के योगकारक ग्रह माना गया है द्वादश स्थान में चंद्रमा वृष राशि में होगा, चंद्रमा के कारण 'धनहीन योग' बनेगा पर चंद्रमा यहां उच्च का होगा तथा 5 अशों तक परमोच्च का है। इस भाव चंद्रमा अपनी कर्कराशि में एकादश स्थान में होने के कारण द्वितीय भाव के पूर्ण फल प्रदान करेगा। निश्चय ही जातक धनी, मानी और अभिमानी होगा। लालकिताब वाले इसे 'रात का तूफान' कहते हैं। जातक यात्राओं के द्वारा (विदेश यात्रा) धन कमायेगा।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–ऐसा जातक जीवन में स्वप्रयास से जो कुछ कमायेगा वह स्थाई रहेगा। माता पिता की सम्पत्ति स्थाई काम न आ पायेगी।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक यश-कीर्ति का अर्जन करेगा। यह दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–मिथुनलग्न में चंद्रमा धनेश होगा एवं सूर्य पराक्रमेश होगा। यहा इन दोनों की युति वस्तुतः धनेश की पराक्रमेश के साथ युति कहलायेगी। यहां द्वादश स्थान में दोनो ग्रह वृषराशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को प्रातः आठ बजे के आसपास होता है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा चंद्रमा तीन अंशों में परमोच्च का होगा। दोनों ग्रहों के द्वादश में जाने से 'पराक्रमभंगयोग' एवं 'धनहीनयोग' बनता है। परन्तु धनेश उच्च का होने से जातक के पास धन तो बहु आयेगा पर धन एकत्रित नहीं हो पायेगा रुपयों की बरकत नहीं होगी।

2. **चद्र+मंगल** 'भोजसंहिता' के अनुसार द्वादश स्थान में वृषराशिगत चंद्रमा उच्च का होगा। धनेश उच्च का होने से 'महालक्ष्मीयोग' बनगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (सिंह राशि) छठास्थान (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम स्थान (धनु राशि) में देखेंगे फलत: ऐसा जातक ऋणरोग व शत्रु का नाश करने में समर्थ होगा। महापराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

3. **चद्र+बुध**—लग्नभंग योग के कारण परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलेगा।

4. **चंद्र+गुरु**—मिथुन लग्न के द्वादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति गजकेसरी योग की सृष्टि कर रही है। यहा उच्च का है, चद्रमा स्वगृही, इससे अधिक और क्या चाहिए? गुरु चद्र की यह युति धनेश व दसमेश की युति है। आपके भाग्य में अद्वितीय वृद्धि कर रही है। यह युति सतति सुख देगी परंतु विवाह सुख में बाधक है। पत्नी फिजूल खर्च करने वाली होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—यहां 'किम्बहुनायोग' बनेगा। चंद्रमा उच्च का, शुक्र स्वगृही जातक को ट्रेवलिंग ऐजेंसी से लाभ होगा। विदेश में धन कमायेगा।

6. **चंद्र+शनि**—'भाग्यभग योग' बनगा पर विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान एव उत्तम वाहन का स्वामी होगा।

7. **चंद्र+राहु**—विदेश यात्र होगा जातक परदेश में कमायेगा।

8. **चंद्र+केतु**—जातक को यात्रा के दौरान संकट का सामना करना पड़ेगा।

❑❑❑

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में
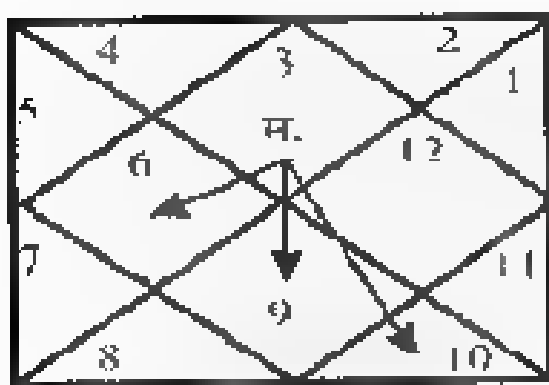
मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां प्रथम स्थान में मिथुन राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली 'मांगलिक' कहलाती है, यह मंगल किस्मत जगाने वाला होता है। ऐसे जातक का 28 वर्ष की आयु के बाद भाग्योदय होता है। भाईयों के सहयोग से जातक की उन्नति होती है। ऐसा जातक किसी के भी बारे में अनायास अशुभ वचन बोल दे, तो वो पूरा जरूर होता है।

दृष्टि—लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (कन्या राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को वाहन सुख, गृहस्थ सुख एवं दीर्घायु का लाभ जरूर मिलेगा।

निशानी—ऐसे जातक को गर्वीले व हठीले स्वभाव के कारण समाज में उचित स्थान नहीं मिलता।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक को वाहन सुख, मकान सुख की प्राप्ति होगी। जातक का सर्वांगीण विकास होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—जातक क्रोधी किन्तु पराक्रमी होगा। कुटुम्ब सुख श्रेष्ठ रहेगा।
2. **मंगल+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुन लग्न में चंद्रमा धनेश है जबकि मंगल षष्टेश व लाभेश होने से पापी है। लग्न में चंद्र+मंगल की युति वस्तुतः

धनेश चंद्रमा की षष्टेश+लाभेश के साथ युति होगी। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है फिर भी 'लक्ष्मीयोग' बनता है यहां बैठकर दोनों ग्रह, सुख स्थान (कन्या राशि) सप्तम स्थान (धनु राशि) एवं अष्टम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे फलत: जातक धनवान होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी तथा जातक लम्बी उम्र वाला होगा।

3. **मंगल+बुध**—जातक 'भद्रयोग' के कारण राजा जैसा पराक्रमी होगा।
4. **मंगल+गुरु**—जातक का गृहस्थ सुख वैभवशाली होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—जातक विद्यावान व सभ्य होगा।
6. **मंगल+शनि**—जातक भाग्यशाली, धनवान होगा।
7. **मंगल+राहु**—जातक पराक्रमी, हठी व लड़ाकू होगा।
8. **मंगल+केतु**—जातक का व्यक्तित्व संघर्षशील रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में
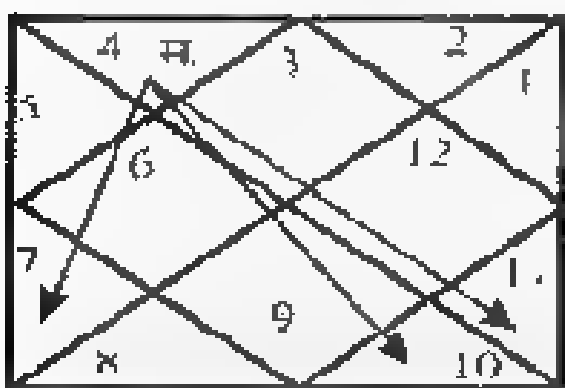
4 मं. 3 2 1 5 6 12 7 11 9 8 10

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां द्वितीयस्थ मंगल कर्क अपनी नीच राशि में होगा। कर्क राशि के 28 अंशों में मंगल परमनीच का कहलाता है। दूसरे घर में मंगल 'धर्म की मूरत' कहा गया है। ऐसे जातक को धन, यश, विद्या, बुद्धि, घर परिवार के सुख की प्राप्ति होती है। जातक तामसी भोजन करेगा। अशुद्ध वाणी बोलेगा जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला एवं समाजसेवी होगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), अष्टमभाव (मकर राशि) एवं भाग्यभवन (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: पुत्र संतान की प्राप्ति उत्तम भाग्य की प्राप्ति एवं दीर्घायु की प्राप्ति होगी।

निशानी—जातक को जीवन में दौलत की कमी नहीं रहेगी। धन खुद-ब-खुद चलकर जातक के पास आएगा पर धनागमन बहुत कुछ चंद्रमा की स्थिति पर निर्भर करेगा।

दशा—मंगल की दशा में जातक धनवान होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य–** जातक की वाणी प्रखर-तेज होगी।
2. **मंगल+चंद्र–** 'भोजसंहिता' के अनुसार द्वितीय स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं मंगल नीच के होने से 'नीचभंगराजयोग' बना। इसके कारण यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि) भाग्यभाव (कुम्भ राशि) एवं अष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक भाग्यशाली होगा। महाधनी होगा परंतु इसका भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध–** जातक पुरुषार्थी एवं विवेकी होगा।
4. **मंगल+गुरु–** जातक महाधनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र–** जातक धनी एवं अभिमानी व्यक्ति होगा।
6. **मंगल+शनि–** कुटुम्ब में विवाद होगा, धन की तकलीफ रहेगी।
7. **मंगल+राहु–** धन के घड़े में छेद, रुपया खर्च होता चला जाएगा।
8. **मंगल+केतु–** कुटुम्ब में विवाद, धन संग्रह में कमी रहेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में

4 3 2 1 5 मं 6 7 8 9 10 11
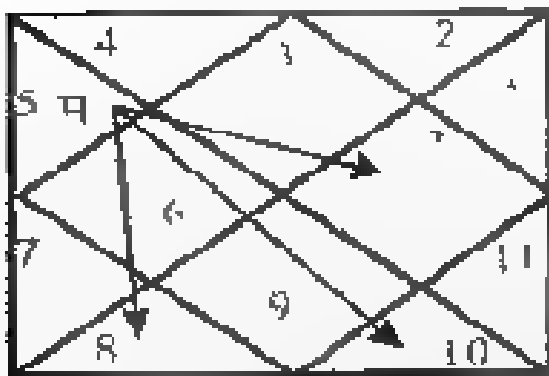
मिथुनलग्न में षष्ठेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर हैं फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। तृतीयस्थ मंगल सिंह राशि में होगा। फलतः जातक की तेजस्विता, पराक्रम शक्ति विलक्षण होगी। जातक शत्रुहंता होगा। उसमें साहस, शक्ति, उत्साह, परिश्रम एवं विजय की भावना प्रबल होगी। ऐसे मंगल को 'चिड़िया घर का कैदी शेर' कहा गया है। जो अपनी क्षमताओं का प्रयोग करने में असमर्थ होता है। जातक को भाई बहन का सुख जरूर मिलता है।

दृष्टि– तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि), भाग्य भवन (कुंभ राशि) एवं दशम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। जातक राजनीति में महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा।

निशानी– जातक प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कार्य करने की अद्भुत क्षमता रखेगा।

दशा– मंगल की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–कुटुम्ब, सहोदर का सुख रहेगा। जातक आप अकेला नहीं होगा। बड़े भाई की मृत्यु संभव है।
2. **मगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार तृतीय स्थान में चद्र+मंगल की युति 'सिंह राशि' में होगी जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव (वृश्चिक राशि), भाग्यभाव (कुम्भ राशि) एव दशमभाव (मीन राशि) को देखेगे फलत: ऐसा जातक भाग्यशाली तथा धनवान होगा एव अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **मंगल+बुध**–भाई बहन का सुख रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मित्रो से लाभ होगा, पराक्रम तेज रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–भाई-बहनों का सुख रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–परिवार मे कलह रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–परिवार में विग्रह रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–कीर्ति उत्तम पर मित्रों से मनमुटाव रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में

4 3 2 1
5 6 12
म.
7 11
9
8 10

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां चतुर्थस्थ मंगल 'कन्या राशि' मित्र राशि मे होगा। मगल की यह स्थिति कुण्डली को मांगलिक बनाती है। मंगल यहां दिक्बली है। अत: चौथे मंगल को 'जलती आग' कहा गया है। ऐसा व्यक्ति शत्रुओं को सूखी घास की तरह जला डालता है। ऐसा जातक कुशल गणितज्ञ, सर्जन, इजीनियर, कम्प्यूटर कार्य मे दक्ष, अनुशासन कार्य मे कुशल होता है। ऐसा व्यक्ति अपने परिवार-कुटुम्ब का सच्चा सहायक होता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ मगल की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) दशम भाव (मीन राशि) एवं एकादश स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक को गृहस्थ सुख एवं व्यापार-व्यवसाय में यथेष्ट लाभ मिलता रहेगा।

दशा–मंगल की दशा अतर्दशा में जातक को भौतिक ऐश्वर्य व उपलब्धियों की प्राप्ति होगी

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मगल+सूर्य**–भौतिक व पारिवारिक सुख मिलेंगे।
2. **मगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार चतुर्थ स्थान में चद्रमा कन्या राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। मंगल यहां दिक्बली होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (धनु राशि), दशम भाव (मीन राशि) एव एकादश भाव (मेष राशि) को देखेगे जो कि मंगल के स्वयं की राशि है। ऐस जातक धनी होगा। बड़ा व्यापारी होगा तथा उसका भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजातुल्य वैभव से सम्पन्न होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का ससुराल अच्छा होगा। स्वय की नौकरी अच्छी होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक धनी व वैभवशाली होगा।
6. **मंगल+शनि**-जातक भाग्यशाली है। दो मंजिल वाले मकान का स्वामी होगा।
7. **मंगल+राहु**–माता सुख में कमी, अल्पायु में मृत्यु सभव।
8. **मंगल+केतु**–माता बीमार रहेगी

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
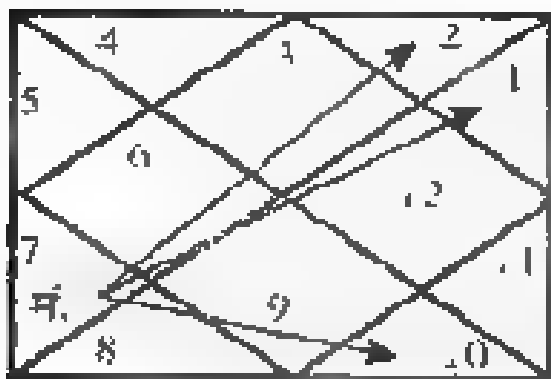
4 3 2 1 5 6 12 7 मं. 11 9 8 10

मिथुनलग्न मे षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न मे मगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहा पचम स्थान में मगल तुला राशि (शत्रु) का होगा। ऐसा मगल 'रईसो का बाप-दादा' कहलाता है। जातक धनवान विद्यावान, बुद्धिमान होगा, परतु विद्या में एक बार रुकावट आती है। दो तीन पुत्र हो सकते हैं पर एकाध गर्भपात संभव है।

दृष्टि–पंचमस्थ मगल की दृष्टि अष्टमभाव (मकर राशि), अपने घर मेष राशि (एकादश स्थान), द्वादश स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलतः लम्बी आयु वाला, व्यापारी एव खर्चीले स्वभाव का होता है

निशानी–ऐसा व्यक्ति 28 वर्ष की आयु के बाद दिन-प्रतिदिन अमीर होता चला जाएगा। प्रथम सतान की उत्पत्ति के बाद जातक का भाग्य और अधिक चमकेगा

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। सरकारी नौकरी में कमी रहेगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मकर राशि), लाभ स्थान (मेष राशि) एवं व्यय भाव (खर्च स्थान) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान लम्बी आयु का स्वामी होगा तथा खर्चीले स्वभाव का होगा
3. **मंगल+बुध**–संतति सुख उत्तम। पुत्र-पुत्री दोनों का सुख रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–पुत्र सुख निश्चित विद्या में डिग्री मिलेगी।
5. **मंगल+शनि**–संतान एवं विद्या सुख श्रेष्ठ।
6. **मंगल+शनि**–विद्या में संघर्ष, रुकावट।
7. **मंगल+राहु**–संतान में बाधा, गर्भपात संभव।
8. **मंगल+केतु**–गर्भक्षय एवं रुकावट के साथ विद्या का संकेत मिलता है

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति षष्ट्म स्थान में
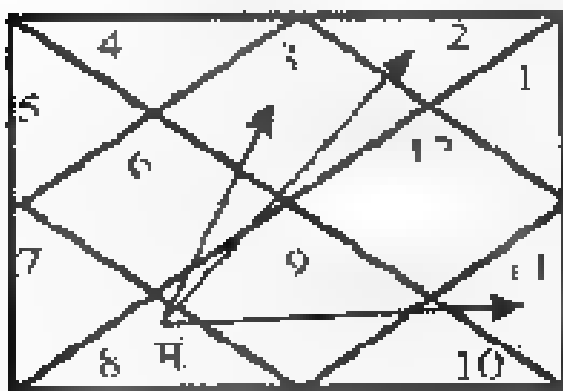
4 3 2 1 5 6 12 7 9 11 8 मं. 10

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है मिथुन राशि भी उग्र उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां छठे स्थान में मंगल वृश्चिक राशि में स्वगृही है। षष्टेश षष्टम में स्वगृही होने से 'हर्षयोग' बनता है। जातक युद्ध विद्या व षड्यंत्र करने में निपुण होता है। जातक शत्रुहंता होता है। तनाव व दबाव को सहन करने मे समर्थ होता है। जातक अपनी उन्नति हेतु अनैतिक तरीकों का इस्तेमाल करने से नहीं चूकता। यहा 'लाभभंग योग' के कारण कई बार व्यापार मे घाटा होगा

दृष्टि–यहां षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य भाव (कुम्भ राशि), व्यय भाव (वृष राशि) तथा लग्न भाव (मिथुन राशि) पर होगी फलतः जातक उन्नतिशील होगा एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–ऐसे व्यक्ति साम, दाम, दण्ड व भेद नीति में निपुण होते हैं।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य—**पराक्रम भंग होगा। भाईयों में नहीं बनेगी।
2. **मंगल+चंद्र—**'भोजसंहिता' के अनुसार छठे स्थान में चंद्रमा अपनी नीच राशि में होगा एवं मंगल स्वगृही होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कुम्भ राशि), धन स्थान (कर्क राशि) एवं पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः 'महालक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। भाग्यशाली होगा एवं राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध—**परिश्रम का लाभ कम मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु—**गृहस्थ सुख में विवाद, पत्नी से कम बनेगी।
5. **मंगल+शुक्र—**विद्या में बाधा, संतान बिलम्ब से संभव
6. **मंगल+शनि—**विपरीत राजयोग से वैभव बढ़ेगा।
7. **मंगल+राहु—**लम्बी बीमारी संभव
8. **मंगल+केतु—**शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में
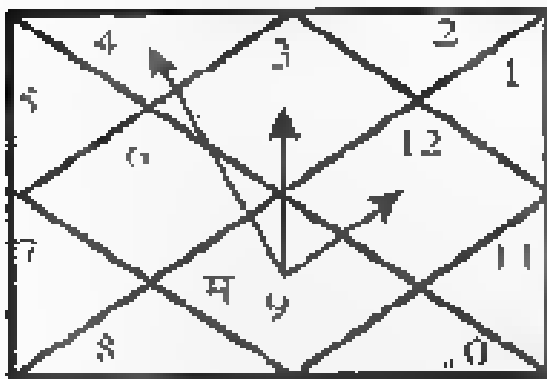
4, 3, 2, 1, 5, 6, 12, 7, म 9, 11, 8, 10

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है मंगल की प्रकृति उग्र उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है यहां सप्तम स्थान में मंगल धनु राशि मित्र राशि का होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाएगी। इस मंगल को 'मीठा हलवा' कहा गया है। ऐसे जातक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है उसे जमीन जायदाद से लाभ होता है राज्यपक्ष से भी लाभ होता है।

दृष्टि सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (मीन राशि), लग्न भाव (मिथुन राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक उन्नतिशील, धनी एवं राजनीति में दक्ष होगा।

निशानी—जातक का जीवनसाथी क्रोधी, कलहकारी एवं अहंकारी होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–दाम्पत्य जीवन में कष्ट पीड़ा रहेगी।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार सप्तम स्थान में धनुराशि गत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (कुंभ राशि) लग्न स्थान (वृष राशि) एवं धन भाव (कर्क राशि) पर होगी। दोनों ग्रह केन्द्र में होने से 'रूचकयोग' एवं 'यामिनीनाथ योग' बना. फलतः जातक राजा के सामन बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा सौभाग्यशाली होगा एवं उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **मंगल+बुध**–परिश्रम का फल अवश्य मिलेगा। पुरुषार्थ व्यर्थ नहीं जाएगा।
4. **मंगल+गुरु**–'हंसयोग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक भाग्यशाली, सुखी होगा।
6. **मंगल+शनि**–गृहस्थ सुख में रुकावट है। विलम्ब विवाह संभव है।
7. **मंगल+राहु**–पत्नी से विवाद, कलह बिछोह संभव।
8. **मंगल+केतु**–गृहस्थ सुख में कोई-न-कोई न्यूनता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में
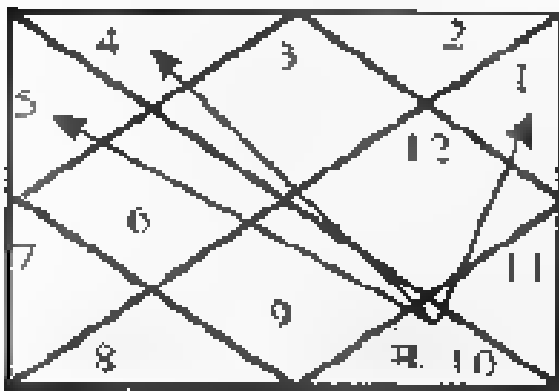
4 3 2 1 5 12 6 7 11 9 8 मं. 10

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है, मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। अष्टम स्थान में मंगल मकर राशि में उच्च का होगा यहां 28 अंशों में मंगल परमोच्च का होता है। मंगल की इस स्थिति में कुण्डली 'मांगलिक' कहलाती तथा 'लाभभंगयोग' एवं 'हर्षयोग' भी बनता है लाल किताब में ऐसे मंगल को 'मौत का फंदा' कहा गया है। ऐसा व्यक्ति शत्रुओं का मुकाबला करता है। इंसाफ के लिए लड़ता है और उसे सफलता भी मिलती है। जातक धनी होता है पर भाग्यशाली है या नहीं इसका निर्णय शनि की बलवान स्थिति पर निर्भर होगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि अपने घर लाभ स्थान (मेष राशि), धन स्थान (कर्क राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा व्यक्ति पराक्रमी होता है। जातक व्यापार व्यवसाय से लाभ प्राप्त करता है और धनी भी होता है।

निशानी–व्यक्ति धनी होते हुए भी समाज मे प्रतिष्ठित नहीं होगा।

विशेष–ऐसे व्यक्ति के घर में तदूर या भट्‌टी हो तो उसे फौरन हटा, देना चाहिए।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में दिक्कतें आएगी, सघर्ष की स्थिति बनेगी पर सफलता संघर्ष के बाद निश्चित है।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मगल+सूर्य**–कुटुम्ब सुख में बाधा विपरीत राजयोग के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता'[1] के अनुसार अष्टम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनाएगा। यहा बैठकर दोनो ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (मेष राशि) धन भाव (कर्क राशि) एवं पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी, फलत: 'महालक्ष्मीयोग' के कारण ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापारी होगा। उसका पराक्रम, जनसपर्क तेज होगा।
3. **मंगल+बुध**–जीवन साथी या स्वयं का शरीर सुख कमजोर।
4. **मंगल+गुरु**–जीवन साथी रोगी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–विलम्ब संतति या विद्या में बाधा सम्भव है।
6. **मगल+शनि**–यहा शनि के कारण '**किम्बहुना**' नामक राजयोग बनेगा परन्तु जातक जीवन में प्राय: असफल ही रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–अचानक दुर्घटना भय सभव है।
8. **मंगल+केतु**–शल्य चिकित्सा योग, दीर्घ बीमारी संभव है।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में
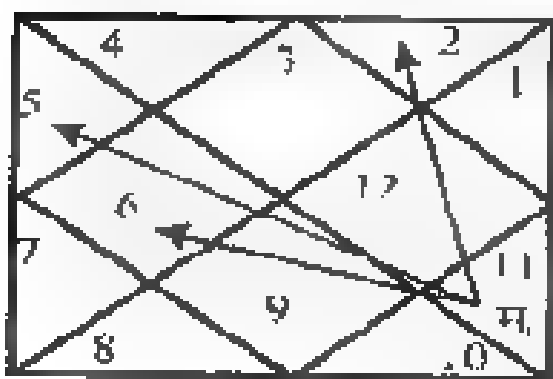
4	3	2
5		1
6	12	
7		11
8	9	10 मं.

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत: मिथुन लग्न में मगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। नवम स्थान में मगल अपनी शत्रु कुंभ राशि में होगा। लाल किताब वालों ने ऐसे मंगल को 'शाही तख्त' कहा है। ऐसा व्यक्ति आयु के 28 वर्ष के बाद धनाढ्य होगा व राज्याधिकारियो की कृपा प्राप्त करेगा। समाज मे राजनीति मे उच्च

पद को प्राप्त करेगा। जातक प्रायः नास्तिक होता है तथा उसे अपयश का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि—नवम स्थानगत मंगल की दृष्टि व्यय भाव (मेष राशि), पराक्रम भाव (सिंह राशि) एवं चतुर्थ भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को वाहन सुख, भूमि सुख मिलेगा। मित्रों से लाभ होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा दानी, परोपकारी होगा।

निशानी—पिता अल्प आयु वाला, अल्प प्रतिष्ठित रोगी होगा या पिता-पुत्र में कलह रहेगी, अथवा पड़ोसियों से कलह या मुकदमे होंगे।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—जातक के भाई व मित्र पराक्रमी होंगे।
2. **मंगल+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार नवम स्थान में कुम्भ राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि), पराक्रम भाव (सिंह राशि) एवं सुख भाव (कन्या राशि) पर होगी ऐसा जातक धनवान, महान् पराक्रमी होगा एवं खर्चीले स्वभाव का भी होगा। इस 'लक्ष्मीयोग' के कारण जातक धनी एवं भाग्यशाली होगा।
3. **मंगल+बुध**—जातक उद्यमी होगा। पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**—जातक का ससुराल धनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—स्त्री, संतान सुख श्रेष्ठ।
6. **मंगल+शनि**—जातक राजा के समान प्रभावशाली एवं पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**—जातक धनवान होगा, पर भाग्य उदय में रुकावटें बहुत आएंगी।
8. **मंगल+केतु**—संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में
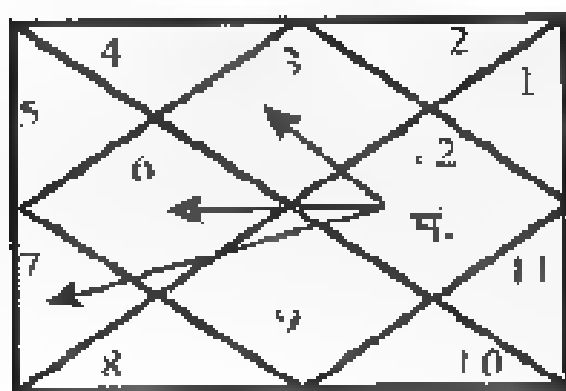
4 3 2 1 5 6 12 मं. 7 11 9 8 10

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है दशम स्थान में मंगल मीन राशि अपने मित्र गुरु की राशि में होगा मंगल

'दिक्बली' होकर 'कुलदीपकयोग' बनाएगा लालकिताब वालों ने ऐसे मंगल को 'चींटी के घर भगवान' की सज्ञा दी है ऐसा व्यक्ति अपने पूरे खानदान, कुटम्बीजनों का कल्याण करता है व सुदर व सुदृढ देह का स्वामी होता है। जातक जमीन-जायदाद से लाभ उठाता है परिवार-कुटुम्ब का नाम दीपक के सामन रोशन करता है।

दृष्टि—दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि), चतुर्थ भाव (कन्या राशि) एवं पंचम स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ता है एवं वाहन व भूमि सुख प्राप्त करता है। संतान व गृहस्थ सुख भी प्राप्त करता है।

निशानी—जातक स्वपराक्रम से धन कमाता है और खुले दिल से खर्च करता है।

दशा—मगल की दशा अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—जातक का राज्यक्षेत्र में पराक्रम होगा। बड़े राजनेताओं से सम्पर्क रहेगा।
2. **मंगल+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार दशम स्थान में मीन राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न भाव (मिथुन राशि), चुतर्थ भाव (कन्या राशि) एव पचम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक को जीवन के सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। कुलदीपक योग के कारण जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी पर जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—जातक धनी एवं वैभवशाली होगा।
4. **मंगल+गुरु**—'हसयोग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी एव धनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—जातक महाधनी होगा। 'मालव्ययोग' के कारण राजा से कम प्रभावशाली नहीं होता।
6. **मंगल+शनि**—जातक सौभाग्यशाली होगा। भाग्योदय के अवसर मिलते रहेंगे।
7. **मंगल+राहु**—जातक को राज्यपक्ष में हानि होगी।
8. **मंगल+केतु**—जातक को राज्यपक्ष से भय रहेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में

मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलत:
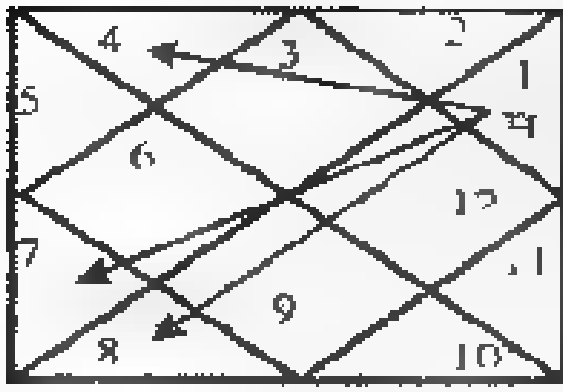
मिथुन लग्न में मगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। एकादश स्थान में मंगल स्वगृही होकर मेष राशि में होगा। लालकिताब वालों ने ऐसे मंगल को 'दूध से पला हुआ पालतू शेर' कहा है, ऐसे जातक को धन, भवन, भू-सम्पत्ति, वाहन सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक देखने मे खतरनाक परंतु कोमल हृदय का आध्यात्मिक प्राणी होता है। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। पर सतान को लेकर कोई-न-कोई चिंता बनी रहेगी।

दृष्टि—एकादशस्थ स्वगृही मंगल की दृष्टि धन भाव (कर्क राशि), पचम भाव (तुला राशि) एव षष्टम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक धनी होगा। सतान सुख से युक्त होगा तथा ऋण-रोग व शत्रु का नाश करने मे पूर्णतः समर्थ होगा।

निशानी—जातक की आमदनी में वृद्धि 28 से 32 वर्ष की आयु के मध्य होगी। जातक के बड़े भाई को कष्ट होगा।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

मगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—'किम्बहुना योग' के कारण जातक महान् पराक्रमी होगा। उद्योगपति एवं धनी होगा। जातक बड़े कुटुम्ब का स्वामी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार एकादश स्थान में मेष राशिगत मगल स्वगृही होगा। फलतः 'महालक्ष्मीयोग' बनेगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान (कर्क राशि), पचम भाव (तुला राशि) एव छठे स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेगे। फलतः जातक ऋण रोग व शत्रुओ का नाश करने में सक्षम होगा। जातक अति धनवान, उद्योगपति होगा एव भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—जातक कृशकाय होगा।
4. **मंगल+गुरु**—जातक का राज्यक्षेत्र में, सरकारी अधिकारियों के मध्य प्रभाव होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—जातक कृशकाय होगा।
6. **मंगल+शनि**—जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा 'नीचभंग राजयोग' के कारण धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**—व्यापार व लाभ में कमी, कुटुम्ब कलह सभव।
8. **मंगल+केतु**—परिवार में विग्रह विवाद, शत्रुओं से सामना करना पड़ेगा।

मिथुनलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में
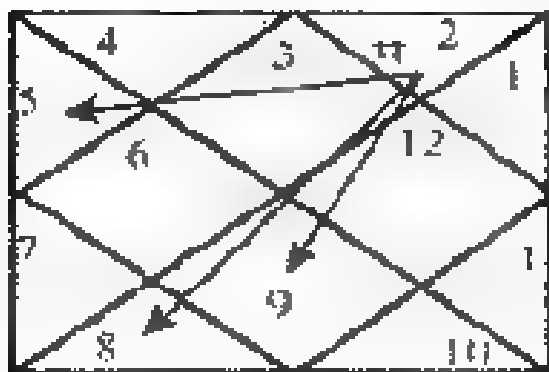
मिथुनलग्न में षष्टेश व लाभेश होने के कारण मंगल अशुभ फलदायक है। मंगल की प्रकृति उग्र, उष्ण व क्रूर है। मिथुन राशि भी उग्र, उष्ण व क्रूर है फलतः मिथुन लग्न में मंगल सकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है द्वादश स्थान में मंगल वृषभ राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली में क्रमशः 'मांगलिक योग', 'लग्नभंगयोग' एवं 'हर्षयोग' बनाती है। लालकिताब वाले इस मंगल को 'मनमौजी' का दर्जा देते हैं। फलतः ऐसा व्यक्ति अपनी मर्जी (इच्छा) का स्वामी होता है। दूसरों के दबाव में आकर कोई काम नहीं करता। जातक भोग-विलास एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु लालायित रहेगा।

दृष्टि—द्वादशस्थ मंगल की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंह राशि), छठे भाव (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा रोगी होगा एवं जीवन साथी के प्रति पूर्ण वफादार (समर्पित) नहीं होगा।

निशानी—गुरु व गाय की नित्य सेवा करने पर जातक तरक्की करेगा।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा कष्ट दिक्कतों वाली होगी पर संघर्ष के बाद सफलता देने वाली होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—परिवार में विग्रह विवाद की स्थिति रहेगी।
2. **मंगल+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार द्वादश स्थान में वृष राशिगत चंद्रमा उच्च का होगा धनेश उच्च का होने से 'महालक्ष्मीयोग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (सिंह राशि), षष्ठम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं सप्तम स्थान (धनु राशि) में देखेंगे फलतः ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में समर्थ होगा। महापराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**—गृहस्थ सुख में बाधा, विलम्ब विवाह का योग है।
5. **मंगल+शनि**—जातक के दाम्पत्य सुख में कड़वाहट रहेगी। कलह, अलगाव की स्थिति, संतति हानि की स्थिति संभव है।

6. **मंगल+शनि**–विलम्ब भाग्योदय का योग बनता है।
7. **मंगल+राहु**–भाग्य में रुकावट, यात्रा में चोरी सम्भव है।
8. **मंगल+केतु**–यात्रा में धनहानि, विवाद सम्भव है।

❑❑❑

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
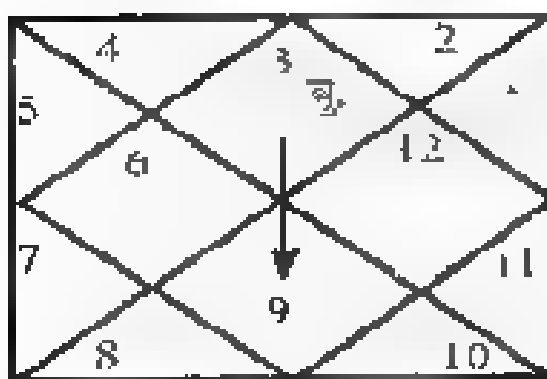
मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केंद्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केंद्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। प्रथम स्थान में बुध मिथुन राशि का होकर स्वगृही होगा फलत: 'कुलदीपकयोग' एवं 'भद्रयोग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करने वाला प्रख्यात धनी, बहुसुत एव बहुमित्रों से युत पराक्रमी होता है। लाल किताब वालो से इस बुध को 'खुदगर्ज हाकिम' कहा है। ऐसे जातक अपने कार्यों को युक्तपूर्वक करता है जिससे समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है

दृष्टि—लग्नस्थ स्वगृही बुध की दृष्टि सप्तम भाव (धनुराशि) पर होगी। फलत: जातक की पत्नी धार्मिक एव पतिव्रता होगी तथा अल्परति में रुचि रखेगी।

निशानी—ऐसे व्यक्ति धन व अधिकार प्राप्त करने के लिए अनैतिक कार्य करने में नहीं हिचकता।

दशा—बुध की दशा-अतर्दशा में जातक राजयोग एव व्यापार में उन्नति को प्राप्त करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न मे बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव मे मिथुनराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहा स्वगृही होगा। लग्न मे बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां

पर 'कुलदीपकयोग' एव 'भद्रयोग' की सृष्टि भी होगी। यहा पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलत: ऐसा जातक राजा के समान महान् पराक्रमी व यशस्वी होगा अपने बुद्धिबल एवं वाक्‌चातुर्य से जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता हुआ आगे बढ़ेगा।

2. **बुध + चद्र**–व्यकित धनी होगा एवं बहु व्यवसायी होगा।
3. **बुध + मगल**–व्यकित पराक्रमी एव जिद्दी स्वभाव का होगा।
4. **बुध + गुरु**–व्यक्ति का गृहस्थ जीवन सुखी होगा।
5. **बुध + शुक्र**–ऐसा जातक विनम्र एवं विद्यावान होगा
6. **बुध + शनि**–ऐसा जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **बुध + राहु**–ऐसा जातक हठी, जिद्दी किन्तु बुद्धिमान होगा।
8. **बुध + केतु**–ऐसा जातक कुतर्की होगा।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
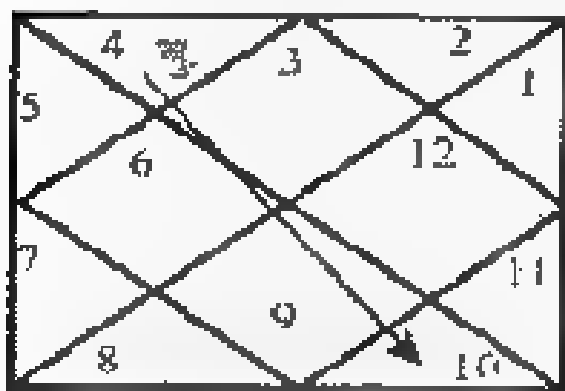
मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहा बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है द्वितीय स्थान में बुध कर्क राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। लालकिताब में ऐसे जातक को 'योगीराज' कहा गया है। ऐसा जातक बड़ी मेहनत करके धन जुटाता है पर एक ही झटके में खर्च कर डालता है जातक को जीवन में धन, यश, विद्या, कुटुम्ब सुख, घर, जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी। जातक आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा ऐसा व्यक्ति बातचीत में कुशल, वाक्यपटु होता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टमस्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक लम्बी उम्र वाला होता है।

निशानी–जातक की आर्थिक स्थिति में उतार-चढ़ाव आते-जाते रहेंगे।

दशा–बुध की दशा-अतर्दशा में जातक धनवान होगा उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न मे बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो

केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+चतुर्थेश के साथ युति है। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। धनवान होगा। बाहुबल से खूब रुपया कमाएगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा। लग्नेश की अष्टम् भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहगा।

2. **बुध + चंद्र**—जातक बुद्धिमान, धनवान एवं विनम्र वाणी वाला होगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक बुद्धिमान किंतु सिद्धांतवादी वाणी का स्वामी होगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक गंभीर विषयों पर बोलने वाला, धार्मिक, परोपकारी एवं धनी होगा।
5. **बुध + शुक्र**—ऐसा जातक धनी होगा। विद्यावान होगा। विद्याबल से धन अर्जित करेगा।
6. **बुध + शनि**—जातक को धन कमाने के उचित अवसर भाग्यवश प्राप्त होते रहेंगे।
7. **बुध + राहु**—धन के घड़े में छेद के कारण आर्थिक संघर्ष रहेगा।
8. **बुध + केतु** धन के अधिक खर्च से मानसिक चिन्ता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में

4 3 2 1
5 बु 6 12
7 9 11
8 10

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केंद्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। यहां तृतीयस्थान में बुध सिंहराशि अपनी मित्रराशि में होगा। फलत: ऐसा जातक उन्नतिशील, अति उत्साही एवं पराक्रमी होता है, तीसरे घर में बैठे बुध को 'थुकने वाला कोढ़ी' कहा गया है। यदि बुध खराब हो तो व्यक्ति दर दर की ठोकरें खाने वाला होता है तथा जितना भी धन हो नष्ट कर डालता है पर यहां यह स्थिति नहीं है, जातक धनी होगा तथा बुद्धिबल से मित्रों के सहयोग से धन कमाएगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ सिंहराशिगत बुध की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभराशि) पर होगी ऐसा जातक भाग्यशाली होता है। पूर्ण भाग्योदय 32 वर्ष की आयु तक होता है।

निशानी—जातक को भाई बहन का पूर्ण सुख मिलेगा।

दशा–बुध की दशा-अतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के तृतीय भाव में सिंहराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। यहां पर स्वगृही है तृतीय स्थान में बैठकर दोनों ग्रह भाग्यस्थान को पूर्ण दृष्टि में देख रहे है। फलत: जातक महान् पराक्रमी होगा। भाई–परिजन व मित्रों का बल उसे मिलता रहेगा। जातक भाग्यशाली होगा। पिता की सम्पत्ति या सहयोग से जातक का भाग्योदय शीघ्र हो जाएगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक के बहने अधिक होगी। स्त्री-मित्र से जातक के लाभ रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–जातक को भाई बहन दोनों का सुख होगा।
4. **बुध + गुरु** जातक को बड़े भाई या उम्र में बड़े मित्रो से लाभ होगा।
5. **बुध + शुक्र**–जातक के बहने अधिक होगी। स्त्री मित्र से जातक को लाभ होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक के कुटम्बी भाग्यशाली होंगे।
7. **बुध + राहु**–मित्रों में विवाद, भाईयों से विग्रह रहेगा।
8. **बुध + केतु**–ऐसे जातक के मित्र ऐनवक्त पर धोखा देंगे।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में
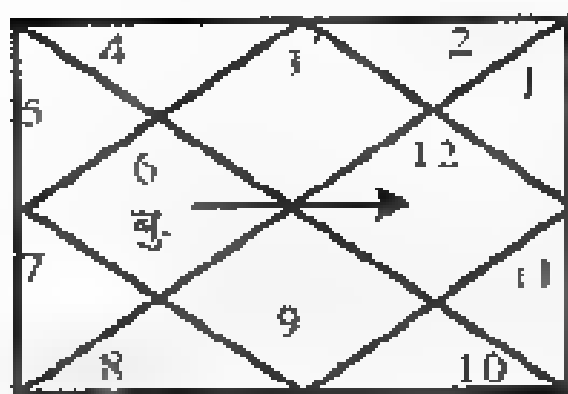
4, 3, 2, 1, 5, 6 बु., 12, 7, 11, 9, 8, 10

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। चतुर्थ स्थान में बुध कन्याराशि में उच्च का होगा कन्याराशि के अंशो मे बुध परमोच्च का होगा। बुध की इस स्थिति से 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्र योग' की सृष्टि होती है। ऐसा जातक समस्त भौतिक सुख-एश्वर्य से युक्त राजातुल्य परम पराक्रमी होता है। लाल किताब वालों ने इस बुध को 'हुनुरमंद' कहा है ऐसा व्यक्ति किसी कला में निपुण होकर राजकार्य से जुडा होता है।

दृष्टि—चतुर्थभाव उच्च के बुध की दृष्टि राज्यपक्ष (मीनराशि) पर होगी। फलत: जातक राजनीति में उच्चपद व प्रतिष्ठा को अवश्य प्राप्त करेगा।

निशानी—जातक के वाहन और फोन जरूर होगा।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक राजयोग एवं व्यापार में उन्नति प्राप्त करता है

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा मिथुनलग्न के चतुर्थ भाव में कन्याराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है। बुध यहां उच्च का होगा तथा 'कुलदीपकयोग' एवं 'भद्रयोग' की सृष्टि करेगा। उच्च का बुध दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा यहां पर यह युति सर्वाधिक सार्थक है। फलत: जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली और पराक्रमी होगा। उसे माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। स्वयं भी बड़ी भूसम्पत्ति, नौकर चाकर से युक्त, उत्तम वाहनों का स्वामी होगा। जातक की गिनती जीवन में सफलतम व्यक्तियों में अग्रण्य होगी।
2. **बुध + चंद्र**—जातक महाधनी होगा। दो तीन मकानों का स्वामी होगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक के गुप्त शत्रु जरूर होंगे पर सभी नष्ट होंगे। भूमि संबंधी विवाद जरूर होगा
4. **बुध + गुरु**—ऐसे जातक की पत्नी धनवान होगी। ससुराल पराक्रमी होगा।
5. **बुध + शुक्र**—'नीचभंगयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **बुध + शनि**—जातक भाग्यशाली होगा। जीवन में खूब धन कमाएगा।
7. **बुध + राहु**—माता एवं बहन का सुख कमजोर रहेगा।
8. **बुध + केतु**—माता की सम्पत्ति हाथ नहीं लगेगी। भौतिक सुखों में बाधा महसूस होगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में
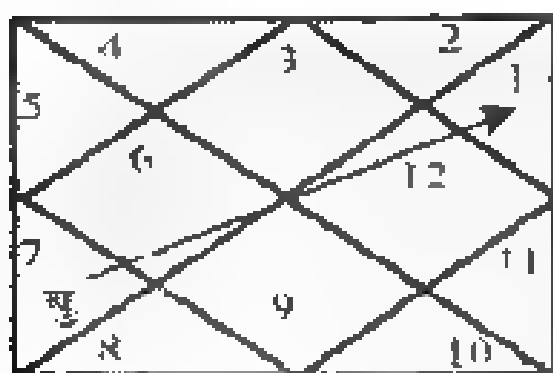
मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केंद्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। बुध लग्नेश कभी । अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। यहां पंचम स्थान में बुध तुला

राशि मित्रराशि में होगा। ऐसे जातक को धन, विद्या, बुद्धि, स्त्री-संतान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति सहज में ही होती रहेगी। लाल किताब वालों ने इस बुध को 'पीर का आशीर्वाद' कहा है। ऐसे व्यक्ति पर गणपति व गुरु की कृपा होती है। ऐसा जातक किसी के भी संदर्भ में अचानक कोई बात कहे तो वह पूर्ण (सही) हो जाती है।

दृष्टि—पंचमस्थ बुध की दृष्टि लाभस्थान (मेषराशि) पर होगी। जातक को व्यापार में लाभ होगा। कम्प्यूटर या मेडिकल लाईन में ज्यादा लाभ संभव है।

निशानी—जातक को प्रथम कन्या होगी। दो तीन कन्याओं का योग बनता है।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक का चहुमुखी विकास होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के पंचम भाव में तुलाराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां नीच राशि का होगा परंतु दोनों ग्रहों की दृष्टि एकादश भाव पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। प्रज्ञावान होगा। जातक को कन्या व पुत्र दोनों संतति होगी। जातक निजी व्यवसाय-व्यापार के द्वारा उन्नति के चरम शिखिर पर पहुंचेगा। जातक शिक्षित होगा।
2. **बुध + चंद्र**—संतति के संबंध में जातक भाग्यशाली होगा।
3. **बुध + मंगल**—ऐसा जातक लाभदायक व्यापार का स्वामी होगा। पुत्र एवं पुत्री दोनों का सुख मिलेगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक को पत्नी द्वारा लाभ होगा।
5. **बुध + शुक्र**—जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध + शनि**—जातक अति धनी होगा। भाग्यशाली होगा। जातक की संतान भी महाधनी होगी।
7. **बुध + राहु**—एक-दो संतति की अकाल मृत्यु संभव है। विद्या में बाधा।
8. **बुध + केतु**—विद्या पूरी होगी पर संघर्ष के साथ।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति षष्ठम स्थान में

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता, अतः यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। यहां छठे स्थान में बुध वृश्चिक
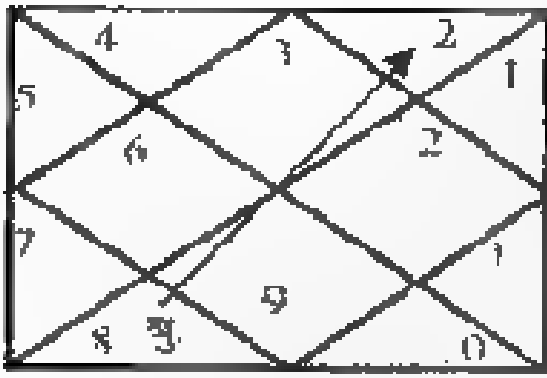
(सम) राशि का होगा। फलतः 'लग्नभंगयोग', 'सुखहीनयोग' की सृष्टि होती है। ऐसे जातक को परिश्रम का उचित लाभ नहीं मिलता। भौतिक सुख ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ता है। लालकिताब वालों ने इस बधु को 'दिल का राजा' कहा है। ऐसा व्यक्ति दिल का साफ होता है मन में गाठ नहीं रखता। लिखा-पढ़ी एवं मानसिक श्रम से धन कमाता है।

दृष्टि—अष्टमस्थ बुध की दृष्टि व्ययभाव (वृषराशि) पर होगी जातक के रुपये रोग एवं शत्रु को लेकर खर्च होंगे।

निशानी—ऐसा व्यक्ति कलहप्रिय, निष्ठुर, कटुवचनकारी होता है। तथा मित्रों के लिए विश्वासनीय नहीं होता शारीरिक श्रम इसके वश की बात नही।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश-चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के छठे स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश-सुखेश के साथ युति है। सूर्य छठे होने से 'पराक्रम भंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'लग्नभंगयोग' एवं 'सुखभंगयो' की क्रमशः सृष्टि हुई है। फलतः यहा यह योग ज्यादा सार्थ नहीं है। जातक को माता की सम्पत्ति से वंचित होना पड़ेगा तथा उसे वाहन दुर्घटना का भय भी बना रहेगा। फिर भी यह योग के प्रभाव के कारण जातक का बचाव होता रहेगा।
2. **बुध + चंद्र**—आर्थिक कष्ट एवं तंगी रहेगी
3. **बुध + मंगल**—विपरीत राजयोग के कारण जातक ऐश्यवर्यशाली जीवन जिएगा
4. **बुध + गुरु**—विलम्ब विवाह होगा। गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**—विलम्ब संतति होगी। विद्या में बाधा।
6. **बुध + शनि**—भाग्योदय में बाधा आएगी।
7. **बुध + राहु**—शत्रु परास्त होने पर बाधा पहुंचाने की चेष्टा करेंगे
8. **बुध + केतु**—गुप्त शत्रुओं से चिंता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में
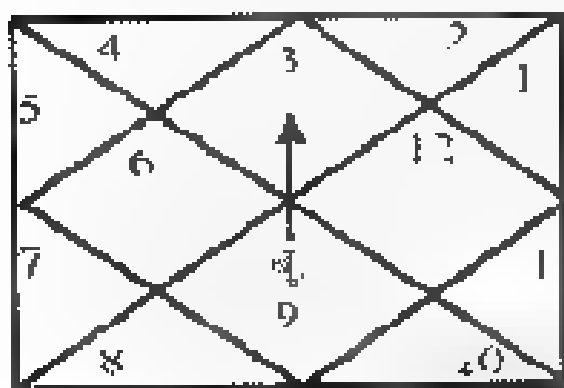
4	3	2
5	↑	1
6		12
7	बु. 9	11
8		10

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। सप्तम स्थान में बुध धनुराशि का होगा। यह बुध की समराशि है। बुध यहां 'कुलदीपक योग' बनाएगा. लालकिताब वालों ने इस बुध को 'पारस' का दर्जा दिया है। ऐसे जातक को विद्या, बुद्धि एवं कलम की शक्ति मिलती है. जातक अपनी कला, हुनर के माध्यम से धनवान होता है। उसे परिश्रम का फल मिलता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ बुध लग्नस्थान अपने ही घर (मिथुनराशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: ऐसा जातक सुंदर, सुडौल और आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा।

निशानी—जातक का जीवनसाथी वफादार होता है

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के सातवें स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: 'कुलदीपकयोग' एवं 'लग्नाधिपति योग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक तेजस्वी होगा। कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा। तथा अल्प प्रयत्न से ही उसे ज्यादा सफलता मिलेगी जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्यक्ति अपने पुरुषार्थ व पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धन कमाएगा
3. **बुध + मंगल**—जातक पराक्रमी होगा। गृहस्थ सुख में थोड़ी सी खटपट संभव
4. **बुध + गुरु**—'हंसयोग' के कारण विवाह के बाद जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा,
5. **बुध + शुक्र**—गृहस्थ जीवन सुखी। जातक स्त्री व संतान से सुखी होगा।
6. **बुध + शनि**—जातक भाग्यशाली होगा। गृहस्थ सुख उत्तम।
7. **बुध + राहु**—गृहस्थ सुख में बाधा द्विभार्यायोग संभव।
8. **बुध + केतु**—वैवाहिक तनाव संभव।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में
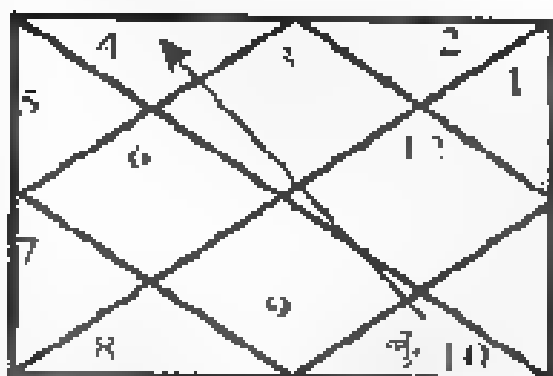
मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। अष्टम भाव में बुध मकर (सम) राशि में होगा। बुध की यह स्थिति 'लग्नभगयोग एवं सुखहीन योग' की सृष्टि करती है। लाल किताब वालों ने इस बुध को बीमारी और जहमत कहा है जातक को जीवन में अनेक कष्ट दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। गुप्त रोग व गुप्त शत्रु का भय रहेगा।

दृष्टि—अष्टम स्थानगत बुध की दृष्टि धनभाव (कर्कराशि) पर होगी। फलतः जातक को धन, विद्या व कुटुम्ब का सुख मिलेगा।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक को परेशानी पैदा होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के अष्टम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के आठवें होने से 'पराक्रमभगयोग' एवं बुध के आठवें होने से 'लग्नभंगयोग' एवं सुखभंग योग बनेगा। फलतः जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी प्रयत्न करना पड़ेगा। परिश्रम का उतना लाभ नहीं मिलेगा जितना मिलना चाहिए। यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक को अन्तिम सफलता मिलेगी।
2. **बुध + चंद्र**—धन प्राप्ति हेतु कष्ट, संघर्ष एवं बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
3. **बुध + मंगल**—यहां 'विपरीत राजयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य एवं पराक्रम को प्राप्त करेगा।
4. **बुध + गुरु**—गृहस्थ सुख में बाधा एवं शत्रुओं का भय बना रहेगा।
5. **बुध + शुक्र**—विलम्ब संतति योग एवं विद्या में बाधा संभव।
6. **बुध + शनि**—विपरीत राजयोग के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

7. **बुध + राहु**—अचानक दुर्घना संभव, आयु मे बाधा।
8. **बुध + केतु**—शल्यचिकित्सा, पैरों में चोट सभव।

मिथुनलग्न मे बुध की स्थिति नवम स्थान में
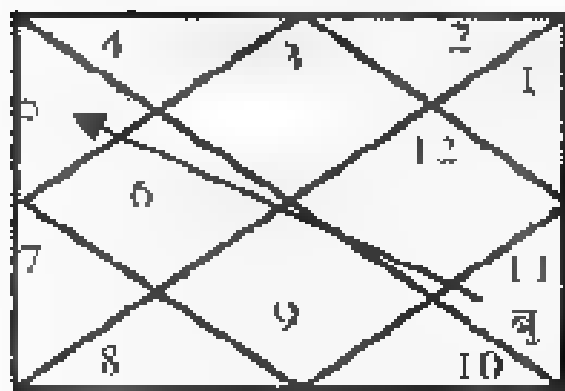
4	3	2
5		1
6		12
7		11 बु
8	9	10

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नही होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है नवम स्थान में बुध कुभ (सम) राशि में होगा। लग्नेश का भाग्यस्थान में होने से जातक भाग्यशाली होगा धनवान होगा। बुद्धिमान होगा। बंधु बांधवों का प्रेमी, विख्यात, तेजस्वी व पराक्रमी होगा। जातक का जनसपर्क तेज होगा

दृष्टि—नवम् स्थानगत बुध की दृष्टि पराक्रम भाव (सिहराशि) पर होगी। जातक महान पराक्रमी होगा। मित्रों से लाभ उठाएगा।

निशानी—लाल किताब वालो ने इस बुध को 'जादू का भूत' कहा है ऐसा व्यक्ति जबान से बोलेगा सच हो जाएगा।

दशा—बुध की दशा-अतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा मिथुनलग्न के नवम् स्थान में कुभराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह तृतीय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि सूर्य का स्वय का घर है। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होता है। भाग्यशाली होता है उसका पराक्रम तेज होता है। जातक के कुटुम्बी-परिजन उसके सहायक होंगे। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
2. **बुध + चंद्र**—भाग्य एव धन का साथ जीवन में बराबर बना रहेगा।
3. **बुध + मंगल**—थोड़ा सघर्ष रहेगा पर सफलता मिलती रहेगी।
4. **बुध + गुरु**—गृहस्थ सुख उत्तम। नौकरी सुख भी उत्तम।
5. **बुध + शुक्र**—भाग्य का सितारा आपके आगे बढ़ाने में लगातार सहायक भूमिका निभाएगा

6. **बुध + शनि**–राजा के सामन ऐश्वर्यशाली जीवन होगा। भाग्यशाली व्यापारियों में अपनका नाम होगा।
7. **बुध + राहु**–भाग्य में बाधा, रुकावट एवं कष्टानुभूति होगी पर अंतिम सफलता।
8. **बुध + केतु**–संघर्ष, परेशानी एवं भाग्योदय संबंधी चिंता रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में
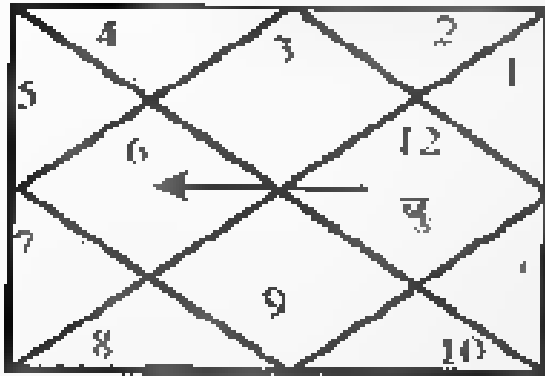
4	3	2	1
5	6	12 बु.	
7	9	10	8

मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अतः यहां बुध अतिशुभ फलदायक व योगकारक ग्रह है। दशम स्थान पर बुध मीन राशि अपनी नीच राशि में होगा। यहां 15 अंशों में बुध परमनीच का होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। ऐसे जातक को जीवन में धन, धान्य, वाहन, मकान का सुख, स्त्री संतान का सुख मिलेगा। जातक अपने कुल का नाम रोशन करेगा। लालकिताब वालों ने ऐसे बुध का 'जीहजूरिया' कहा है, क्योंकि ऐसा जातक दूसरों को हां में हां मिलाने वाला, खुशामद से अपना कार्य सिद्ध करने वाला होता है।

दृष्टि–दशमस्थ बुध की दृष्टि अपनी उच्च राशि (कन्या) चतुर्थभाव पर होगी। फलत: जातक को मकान का पूर्ण सुख मिलेगा। भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति बुद्धिबल के माध्यम से होगी.

निशानी–ऐसे व्यक्ति की जुबान मीठी होती है। व्यापार नौकरी से धन कमाता है।

दशा–बुध की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा मिथुनलग्न के स्थान स्थान में मीनराशिगत यह युति वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है. बुध यहां नीच का होगा पर केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपकयोग' बना रहा है। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगें जहां बुध की उच्चराशि उपस्थित है। फलत: जातक भाग्यशाली होगा बुद्धि चातुर्य से जातक धनवान होगा। अच्छा

व्यापारी होगा। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

2. **बुध + चंद्र**–राज्य में, सरकार व राजनीति में लाभप्रद स्थिति रहेगी।
3. **बुध + मंगल**–परिवार व कुटुम्ब आपके नाम से जाना जाएगा।
4. **बुध + गुरु**–गुरु के कारण यहां 'नीचभंग राजयोग' बनेगा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली पराक्रमी होगा जातक ज्ञानी-ध्यानी होगा।
5. **बुध + शुक्र**–शुक्र के कारण यहां 'नीचभंगराजयोग' बनेगा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा एकाधिक वाहनों का स्वामी होगा।
6. **बुध + शनि**–भाग्य का सितारा आपकी मेहनत का सही मूल्यांकन करेगा
7. **बुध + राहु**–राज्य सरकार एवं राजनीति मे अप्रिय घटना हो सकती है।
8. **बुध + केतु**–राज्य-सरकार या राजनीति मे कार्यरत लोगो के माध्यम से चिंताग्रस्त रहेंगे।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में
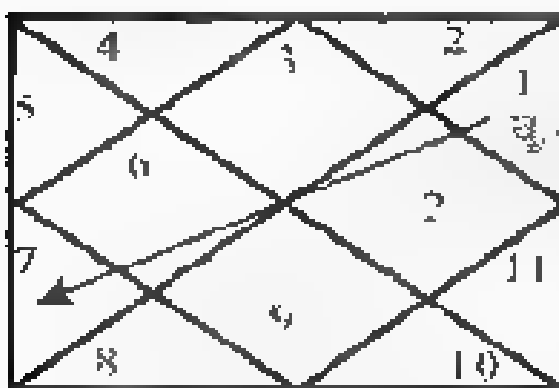
मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगा। बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। एकादश स्थान मे बुध मेष (सम) राशि में है। लालकिताब वालो ने इस बुध को हुनरमंद और शर्मसार कहा है। जातक प्राय: विरोधाभासी बयान देगा तथा कई बार सही निर्णय लेने में अक्षम रहेगा। प्राय: जातक असत्य वचन बोलकर अपनी विश्वसनियता खो देता है। पर जातक धनवान होता है। जातक का परिश्रम उसे सफल बनाने में सहायक होगा।

दृष्टि–एकादश भाव मे स्थित बुध की दृष्टि पंचम भाव (तुलाराशि) पर होगी। जातक प्रज्ञावान होगा। कन्या संतति अधिक होगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति का भाग्योदय 34 वर्ष के बाद होता है। परन्तु जातक का बड़े भाई से विरोध रहेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेगा।

बुध का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रो का स्वामी होगा मिथुनलग्न के प्रथम भाव में मेषराशिगत यह युति

वस्तुत: पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के साथ युति है सूर्य यहां उच्च राशि में होगा तथा पचम भाव को देखेगा। यह युति यहा सार्थक है। ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। गाव या शहर का प्रमुख प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा जातक शिक्षित होगा उसकी सतान भी शिक्षित होगी। जातक पराक्रमी एव सर्वगुण सम्पन्न व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र** -व्यापार-व्यवसाय मे बराबर लाभ होगा।
3. **बुध + मंगल**—यहां संगत की युति से जातक नकली चीजें बनाने में झूठी गवाह देने में रुचि लेगा अपने गलत कार्य को भी सही मानेगा।
4. **बुध + गुरु**—विवाह के बाद उन्नति, गृहस्थ सुख श्रेष्ठ।
5. **बुध + शुक्र**—गृहस्थ सुख उत्तम, स्त्री सतान सुख उत्तम।
6. **बुध + शनि**—भाग्य एव भविष्य व्यापार से ही चमकेंगे
7. **बुध + राहु**—व्यापार में शुद्ध मुनाफे मे घाटा होगा
8. **बुध + केतु**—व्यापार व्यवसाय में तरक्की की चिता बनी रहेगी।

मिथुनलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में
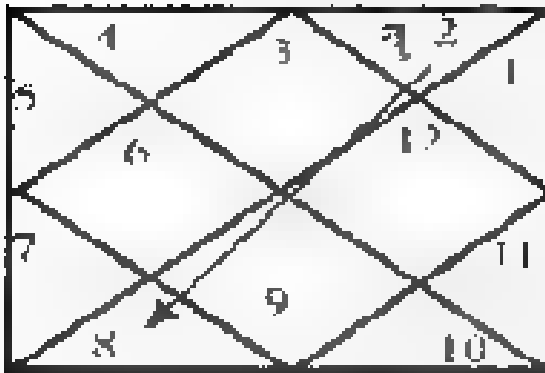
मिथुनलग्न में बुध लग्नेश व सुखेश दो केन्द्रों का स्वामी होने पर भी इसे '**केन्द्राधिपत्य दोष**' नहीं लगा बुध लग्नेश कभी भी अशुभ नहीं होता। अत: यहां बुध अतिशुभफलदायक व योगकारक ग्रह है। द्वादश स्थान में बुध वृषराशि का होगा वृष बुध की मित्रराशि है पर बुध की यह स्थिति क्रमश: **लग्नभंगयोग, सुखहीनयोग** की सृष्टि करती है। जातक को सुदर स्त्री, सुंदर वस्त्र, सतान एव वाहन का सुख मिलेगा परतु परिश्रम का उतना लाभ नहीं मिलेगा, जितना मिलना चाहिए। लाल किताब वालों ने इस बुध को 'नेकस्वभाव मगर किस्मत का मारा' कहा है। ऐसे व्यक्ति को भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति हेतु काफी सघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि—द्वादश भाव स्थि बुध की दृष्टि छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग परेशान करेंगे।

निशानी—जातक हास्य, संगीत, खेल व कला का प्रेमी होगा

दशा—बुध की दशा-अतर्दशा में जातक को दिक्कते आएगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनलग्न में बुध लग्नेश+चतुर्थेश दो केन्द्रों का स्वामी होगा। मिथुनलग्न के द्वादश भाव में वृषराशिगत यह युति वस्तुतः पराक्रमेश सूर्य की लग्नेश+सुखेश बुध के भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगे सूर्य बारहवें होने से 'पराक्रमभंग योग' बना एवं बुध के कारण 'लग्नभंगयोग' एवं 'विद्या बाधायोग' बना फलतः यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। यात्राएं खूब करेगा पर जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी ऐसा जातक संघर्षशील जीवन जीते हुये भी सफल व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–धन के अपव्यय पर चिंता बनी रहेगी। यात्राएं अधिक होगी।
3. **बुध + मंगल**–व्यापार व्यवसाय में लाभ के प्रति आशंका रहेगी.
4. **बुध + गुरु**–गृहस्थ सुख में चिंता, अलगाव सम्भव।
5. **बुध + शुक्र**–गृहस्थ सुख, संतान सुख में बाधा
6. **बुध + शनि**–भाग्योदय में बाधा, व्यापार में बाधा।
7. **बुध + राहु**–व्यापार में हानि, यात्रा में संकट।
8. **बुध + केतु**–कारोबार के प्रति, धन के प्रति चिंता रहेगी

❑❑❑

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में
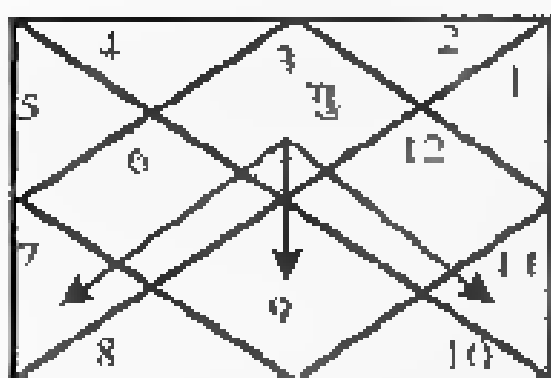
4 3 2 1 5 गु 6 12 7 11 9 8 10

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। प्रथम स्थान में बृहस्पति मिथुन (मित्र) राशि में होकर 'कुलदीपक योग' एवं 'केसरीयोग' योग की सृष्टि करते हुए उच्चाभिलाषी होगी। ऐसा जातक महत्वकांक्षी होता है। उसमें ज्ञान, संयम, विवेक व धैर्य का अद्भुत समंवय होता है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'गद्दीनाथ साधु' कहा है। ऐसा व्यक्ति समाज का सम्मानित, प्रतिष्ठित एवं आदरणीय व्यक्ति होता है। ऐसा व्यक्ति भले ही ज्यादा दौलतमंद न हो पर यशस्वी जरूर होता है। धन की मजबूती का पता चंद्रमा की स्थित से लगेगा।

दृष्टि—लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि), सप्तम भाव (धनु राशि) एवं भाग्य स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः जातक को संतान सुख, पत्नी व गृहस्थ सुख, भाग्य व सौभाग्य का सुख पूर्ण रूप से मिलेगा।

निशानी—जातक अध्ययन-अध्यापन के काम मे ज्यादा रूचि लेगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा। उसे भौतिक व आध्यात्मिक सुखों की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध -

1. **गुरु + सूर्य**—ऐसा जातक पराक्रमी होगा। कुटुम्ब-परिवार में रहने वाला होगा।
2. **गुरु + चंद्र**—मिथुनलग्न में प्रथम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। लग्न स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री

होगा। दो केन्द्रों का स्वामी होकर बृहस्पति क्रमशः पचम भाव, सप्तम भाव एव भाग्यस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखगा। फलतः आपका भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। धन की प्राप्ति होगी। प्रथम सतान की उत्पत्ति के साथ पुनः भाग्योदय होगा। जीवन आराम से गुजरेगा।

3. **गुरु + मंगल**—जातक सिद्धांत प्रिय एव हठी होगा
4. **गुरु + बुध**—'भद्रयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक उच्च शैक्षणिक प्रतिभा वाला Highly Qualified होगा।
6. **गुरु + शनि**—जातक धनी एव उत्तमश्रेणी के व्यापार का स्वामी होगा।
7. **गुरु + राहु**—यहा दोनो ग्रह प्रथम स्थान मे मिथुन राशि मे है यहा बृहस्पति की अपनी मित्रराशि एवं अपनी उच्चराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण जातक हठी होगा तथा परिवार-कुटुम्ब वालों के प्रति लगाव नही रखेगा।
8. **गुरु + केतु**—ऐसा जातक धर्मध्वज होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में
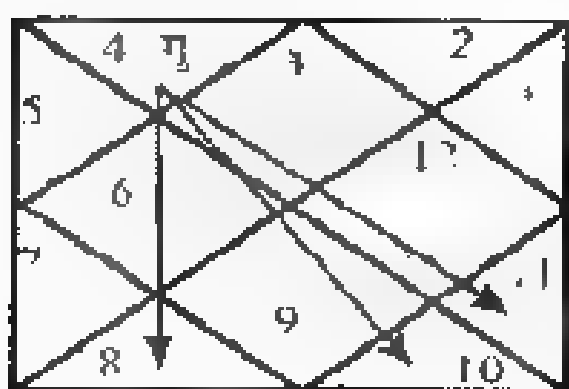
4 गु 3 2 1 5 12 6 7 11 9 8 10

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न मे 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एव यहां अशुभ फलदायक है। यहां द्वितीय स्थान मे बृहस्पति उच्च (कर्क) राशि मे है। कर्कराशि के अंशों मे बृहस्पति परमोच्च का होता है। बृहस्पति की यह स्थिति जातक के लिए परमसौभाग्यशाली होने का प्रतीक है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'सभी को तारने वाला जगतगुरु' कहा है, ऐसा जातक अपने कुल की प्रतिष्ठा को चार-चाद लगाता है। मर्यादाओं में रहते हुए उन्नति करता है। अपने कुटुम्ब की जिम्मेदारियों का निर्वहन, हंसते हुए करता है पर आय का स्रोत धीमा होता है। जातक का वाणी गंभीर एवं धर्मप्रधान प्रामाणिक होता है।

दृष्टि—द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि), आठवें भाव (मकर राशि) एव अपने स्वय के घर राज्यभाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रुओ का नाश करने मे सक्षम (समर्थ) होता है।

विशेष—'कारको भावनाशाय' सूत्र के अनुसार कई बार उच्च का बृहस्पति यहां धन, कुटुम्ब, संतान व दाम्पत्य के सुख में बाधक हो जाता है। अतः बृहस्पति यहा पूर्ण शुभ फल तभी देगा जब बृहस्पति किसी शुभग्रह से युत वा दृष्ट हो।

दशा बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक धनी होगा उसका सर्वांगीण विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—जातक धनवान होगा। भाई-कुटम्बी व मित्रों से धन की प्राप्ति होगी।
2. **गुरु + चंद्र**—मिथुन लग्न में द्वितीय स्थान गुरु+चंद्र की कयुति वस्तुः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है द्वितीयस्थ बृहस्पति उच्च का एव चंद्रमा स्वगृही होकर **किम्बहुनायोग** बनाएगा इनकी अमृत दृष्टि षष्टमभाव अष्टमभाव एवं दसम भाव पर पड़ेगा। फलतः आपके शत्रु नष्ट होंगे। आपका राजनीति में वर्चस्व रहेगा। आप दीर्घायु को प्राप्त करेंगे एवं धन की कोई कमी आपकी उन्नति में बाधक नहीं होगी।
3. **गुरु + मंगल**—यहा 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक धनवान होगा। राजनैतिक पराक्रम वाला व्यक्ति होगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक बुद्धिमान होगा बुद्धिबल से रुपया कमाएगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक विद्यावान होगा। विद्या के बल पर धन अर्जित करेगा।
6. **गुरु + शनि**—जातक भाग्यशाली होगा। भाग्य कदम-कदम पर साथ देगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां द्वितीय स्थान मे दोनो ग्रह कर्क राशि मे है। यहां बृहस्पति अपनी उच्चराशि एवं अपनी शत्रुराशि में है 'चाण्डालयोग' के कारण धन के प्रति लापरवाह होगा। जहां जरूरत नहीं होगी वहा रुपया खर्च कर देगा।
8. **गुरु + केतु**—जातक धर्मगुरु या धार्मिक वक्ता होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में
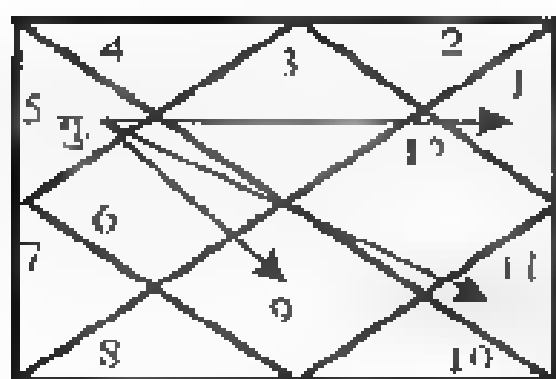
मिथुनलग्न मे गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न मे 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। यहा तृतीयस्थ बृहस्पति अपने मित्र सूर्य की सिंहराशि में हो। जातक पराक्रमी होगा। जातक को राज्यसुख, पितृसुख, भाईयों मित्रों का सुख नौकरी व्यवसाय का सुख मिलेगा। लालकिताब वालो ने इस बृहस्पति को 'गरजते शेर' की संज्ञा दी है ऐसा जातक बहुत हिम्मतवाला होता है

तथा विपरीत परिस्थितियों में भी अपना धैर्य नहीं खोता। जातक समाज में, राजनीति में, यश-प्रतिष्ठा मिलती है

दृष्टि—तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि), भाग्य भवन (कुंभ राशि) एवं एकादश भाव (मेष राशि) पर होगी। इससे स्त्री, गृहस्थ सुख, सौभाग्य, बड़े भाई, धन, पद, घर और जमीन-जायदाद का सुख मिलेगा।

निशानी—अपने से बड़ी उम्र के लोगों से लाभ होगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक का चहुमुखी विकास होगा। सौभाग्य में वृद्धि होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—जातक का पराक्रम तेज होगा। भाई कुटुम्बी इष्ट मित्रों की सहायता जातक को समय-समय पर मिलती रहेगी।
2. **गुरु + चंद्र**—मिथुन लग्न के तृतीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश दशमेश बृहस्पति के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तमभाव, नवमभाव एवं एकादश भाव पर पूर्ण दृष्टि होंगे। फलतः विवाह के बाद भाग्योदय के अवसर मिलेंगे। आवक के जरिए नौकरी एवं स्वतंत्र व्यापार-व्यवसाय के माध्यम से बहुमुखी होंगे। यह युति आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता देगी।
3. **गुरु + मंगल**—जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक अपने पराक्रम से आगे बढ़ेगा
5. **गुरु + शुक्र**—जातक विद्यावान होगा। प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होगा। जातक की संतान भी पढ़ी-लिखी होगी।
6. **गुरु + शनि**—जातक मित्रों के सहयोग जनसंपर्क से आगे बढ़ेगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां तृतीयस्थ दोनों ग्रह सिंहराशि में है। राहु अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण भाईयों से अनबन एवं भागीदारों में मनमुटाव रहेगा।
8. **गुरु + केतु**—जातक धार्मिक पुस्तकों का लेखक, प्रकाशक या सम्पादक होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ
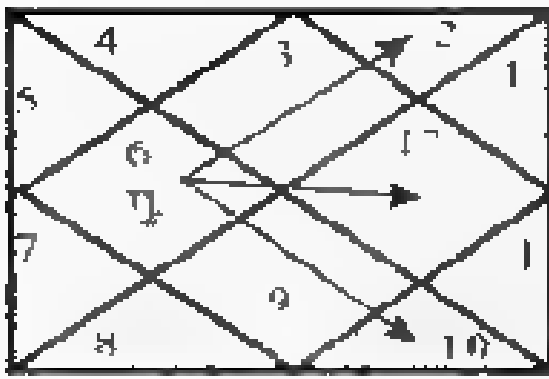
फलदायक है यहां चतुर्थ स्थान में बृहस्पति कन्या (शत्रु) राशि में होगा। यहां बैठकर बृहस्पति 'केसरीयोग' एवं 'कुलदीपकयोग' की सृष्टि करेगा। ऐसे जातक को माता, भूमि भवन, नौकरी-व्यवसाय का पूर्ण सुख मिलता है लालकिताब वालों ने इसे नेकराह का मुसाफिर कहा है ऐसा जातक चतुर्दिक मान-प्रतिष्ठा व सफलता प्राप्त करता हुआ नेक राह पर चलता है। जातक के जाति-समाज, व्यवसाय, राजनीति इत्यादि में सर्वत्र प्रतिष्ठा मिलती है

दृष्टि चतुर्थ भावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम स्थान (मकरराशि), दशम स्थान (मीनराशि) एवं द्वादश स्थान (वृषराशि) को देखेगा। फलतः जातक दीर्घायु वाला, धार्मिक व परोपकार के कार्य में रुपया खर्च करने वाला। राजा से सम्मान प्राप्त करता है।

निशानी–जातक धन का अपव्यय नहीं करता एवं कलह लड़ाई झगड़े, ईर्ष्या में विश्वास नहीं रखेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक उच्च पद, प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य** जातक को घर का मकान, वाहन एवं भौतिक सुख सदैव उपलब्ध रहेंगे।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के चतुर्थ स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ स्थान चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगी जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दसम भाव एवं द्वादश पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः खर्च बढ़चढ़ कर रहेगा राजकाज में प्रभाव वर्चस्व दबदबा रहेगा जातक की आयु लम्बी होगी।
3. **गुरु + मंगल**–जातक अपने कुटुम्ब कुल का नाम स्वपराक्रम से रोशन करेगा।
4. **गुरु + बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजा के समान प्रभावशाली होगा। जातक का मातृपक्ष शक्तिशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–ऐसा जातक Highly qualified उच्च शैक्षणिक डिग्री को प्राप्त होगा
6. **गुरु + शनि**–जातक भाग्यशाली होगा एवं बड़ी भू सम्पति का स्वामी होगा।

7. **गुरु + राहु**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में हैं। 'चाण्डालयोग' के कारण माता के सुख में कमी रहेगी। सांसारिक सुखों में न्यूनता रहेगी।
8. **गुरु + केतु**–जातक किसी धार्मिक ट्रस्ट या धर्मस्थान का प्रधान होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में
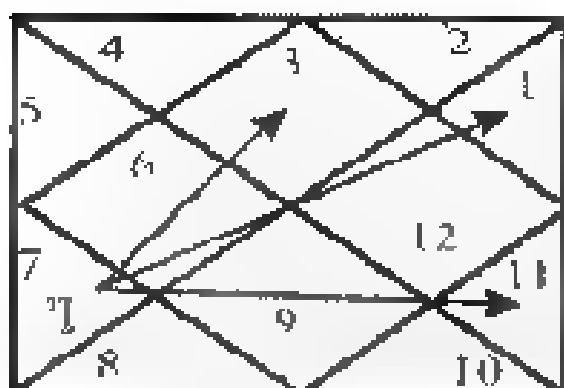
मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। पंचम स्थान में बृहस्पति तुला (शत्रु) राशि में होगा जातक विद्यावान-ज्ञानवान होगा एवं गृहस्थ के सम्पूर्ण सुख को भोगेगा। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को ब्रह्मज्ञानी कहा है। जातक बड़ी इज्जत-आबरू वाला, अपनी सलाह से लोगों की पीड़ा-कष्ट को दूर करने में समर्थ होता है। ऐसा व्यक्ति का पुत्र प्रतिष्ठित होता है। जातक भाग्योदय पुत्र उत्पत्ति के पश्चात् होता है तथा प्रौढावस्था ज्यादा सुखमय होती है।

दृष्टि–पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभ राशि), लाभस्थान (मेष राशि) और लग्नस्थान (मिथुन राशि) पर होगी. फलतः जातक को पुरुषार्थ-परिश्रम का यथेष्ट फल मिलेगा। जातक व्यापार व्यवसाय में लाभ कमाएगा एवं परम सौभाग्यशाली होगा।

निशानी–जातक के पास सबकुछ होते हुए भी व्यवसाय नौकरी, संतान पक्ष में असंतोष रहता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी। कोर्ट-केस में विजय मिलेगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक बुद्धिमान होगा। आध्यात्म-मार्ग का पथिक होगा। जातक के पास पूर्व संचित पुण्य के कारण पूर्वाभास की शक्ति होगी।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के पंचम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। पंचम स्थान में ये दोनों शुभ ग्रह बैठकर भाग्यभवन, लाभस्थान एवं लग्नस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का व्यक्तित्व तेजस्वी होगा व्यापार व्यवसाय द्वारा जातक के अतुल धन की प्राप्ति होती रहेगी। अन्य दुर्योग न हो तो जीवन सुखी रहेगा।

3. **गुरु + मगल**—जातक व्यापार व्यवसाय में धन अर्जित करेगा टैक्निकल व मैकेनिकल कार्य में रुचि रखेगा।

4. **गुरु + बुध**—जातक व्यापार प्रिय होगा एव व्यापार से धन कमाएगा।

5. **गुरु + शुक्र**—जातक कला प्रिय गुणों का पारखी एवं ज्ञानी होगा

6. **गुरु + शनि**—जातक परम सौभाग्यशाली एव महाधनी होगा

7. **गुरु + राहु** यहा पंचमभाव में दोनों ग्रह तुलाराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण पुत्र सतति विलम्ब में होगी विद्यायोग में अनपेक्षित बाधा सम्भव।

8. **गुरु + केतु**—धार्मिक क्रिया करने पर तेजस्वी सतति का पिता होगा

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति षष्ट्म स्थान में
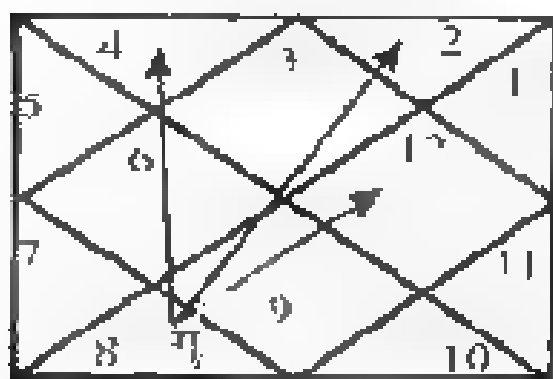
मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न मे 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एव यहा अशुभ फलदायक है। छठे स्थान मे बृहस्पति वृश्चिक (मित्र) राशि मे है। बृहस्पति छठे जाने से 'विवाहभगयोग' एव राज्यभंग योग' की सृष्टि हुई। जातक को गृहस्थसुख एव राज्यसुख प्राप्त करने मे दिक्कते बाधाए आएगी। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'मुफ्तखोर' की सज्ञा दी है। ऐसा जातक साधु स्वभाव वाला होता हुआ भी बिना परिश्रम किये धन अर्जित करने मे विश्वास रखता है। जातक अपनी बुद्धि ज्ञान व अनुभव का पूरा लाभ नही उठा पाता।

दृष्टि—छठे भावगत बृहस्पति की दृष्टि दसम स्थान (मीनराशि), व्ययस्थान (वृषराशि) एव धनस्थान (कर्कराशि) पर होगी। फलतः जातक का धन, शत्रु रोग एव कोर्ट-कचहरी में खर्च होगा।

विशेष -इस बृहस्पति को शुभ बनाने के लिए व्यक्ति पीले रंग का रुमाल जेब मे रखना चाहिए। भिखारियों को भोजन एव बृहस्पति को केले का दान करने से गुरु नेक हो जाता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अतर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—ऐसे जातक का 'पराक्रमभग' होता है। जातक को राजा से दण्ड या समाज से तिरस्कृत (अपमान) जनक कार्यवाही संभव है।

2. **गुरु + चंद्र**- मिथुन लग्न के छठे स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है छठे स्थान मे चद्रमा नीच का होगा। एवं इस कुण्डली में 'धनहीनयोग', 'विवाहभंगयोग' एवं 'राजभंगयोग' की सृष्टि होगी। फलत: यहा गजकेसरी योग आपके लिए शुभफलदायक न होकर धन के प्रति संघर्ष का संकेत देता है।
3. **गुरु + मंगल** विपरीत राजयोग के कारण जातक के पास गाड़ी घोड़ा बगंला, बैंक-बैलेंस वगैरा होगें।
4. **गुरु + बुध**—जातक को परिश्रम का उचित फल नही मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—विद्या मे रुकावट, खर्च के प्रति चिंता सभव।
6. **गुरु + शनि**—भाग्योदय में बाधा, विलम्ब विवाह संभव है।
7. **गुरु + राहु**—यहा छठे स्थान में दोनो ग्रह वृश्चिक राशि में है। चाण्डालयोग के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित रूप से बाधा पहुंचेगी।
8. **गुरु + केतु** नीति वाक्यों एव धैर्य के माध्यम से जातक अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में
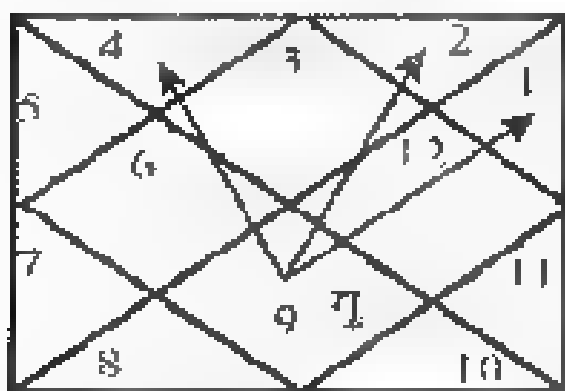
मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न मे 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एव यहां अशुभ फलदायक है। यहा सप्तम स्थान में बृहस्पति स्वगृही धनुराशि का है। फलत: यहा पर क्रमश: कुलदीपकयोग, केसरीयोग एवं हंसयोग की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली पराक्रमी, कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करने वाला यशस्वी जातक होता है। लालकिताब वालों ने इसे 'गृहस्थ में फंसा साधु' कहा है। ऐसा जातक धर्म-कर्म में अग्रणी व दौलतमन्द होता है जातक माता-पिता का सेवक होता है तथा प्रथम पुत्र की उत्पत्ति के बाद प्रतिष्ठा एवं आवक बढ़ती है

दृष्टि—सप्तमस्थ बृहस्पति की दृष्टि एकादश (मेष राशि), लग्नस्थान (मिथुन राशि) एवं पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक महान् पराक्रमी होगा। कुटुम्ब एव मित्रों का रक्षक होगा।

निशानी–जातक के आवक के जरिए दो तीन प्रकार के होंगे।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक जबरदस्त उन्नति करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जिससे जातक के स्वयं का पराक्रम बढ़ेगा।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के सप्तम स्थान मे गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है सप्तम भाव में बृहस्पति स्वगृही होने से '**हंसयोग**' की सृष्टि होगी यहा बैठकर दोनों शुभग्रह लाभस्थान, लग्नभाव एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलता आपका व्यक्तित्व 24 वर्ष की आयु में निखरना शुरू हो जायेगा। 32 वर्ष की आयु मे आपका पराक्रम पूर्ण यौवन पर होगा। यदि लग्नेश बुध आपकी कुडली में अच्छी स्थिति में है तो निश्चय ही आप एक उत्कृष्ट श्रेणी के सफल व्यक्तियों में से एक है।
3. **गुरु + मंगल**–जातक धनी होगा। व्यापार प्रिय होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक को अल्प पुरुषार्थ का विशेष फल मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक बुद्धि कौशल से अपने क्षेत्र में नये कीर्तिमान् स्थापित करेगा।
6. **गुरु + शनि** जातक परमसौभाग्यशाली एव धनी होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां दोनों ग्रह धनुराशि में है। जातक का ससुराल प्रभावशाली व सपन्न होगा। यहा 'चाण्डालयोग' के कारण पति-पत्नी के मध्य अहम् का टकराव होता रहेगा।
8. **गुरु + केतु**–समझौते वाली नीति एवं धैर्य के माध्यम से जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में
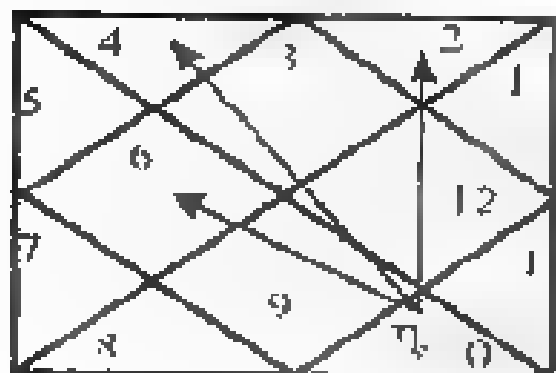
मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है, गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एव यहां अशुभ फलदायक है। यहा अष्टम स्थान में बृहस्पति अपनी नीच (मकर) राशि मे होगा। मकरराशि के पांच अंशों में बृहस्पति परमनीच

का कहलाता है। बृहस्पति की इस स्थिति में क्रमशः 'विवाह भंगयोग' एवं 'राज्यभंगयोग' की सृष्टि होती है। जातक का विवाह विलम्ब से होगा अथवा गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ न्यूनता रहेगी। राज्यपक्ष में भी वांछित लाभ नहीं मिल पाएगा। लालकिताब वालों ने इसे 'देवकृपा का प्रतीक' कहा है। ऐसा जातक सोने की लंका तक का दान करने में नहीं हिचकिचाता।

दृष्टि—अष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (वृष राशि), धन भाव (कर्क राशि) एवं चतुर्थ भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी परंतु जातक खर्च की बाहुल्यता के कारण ऋणी रहेगा।

विशेष—ऐसे जातक को शरीर के सुवर्ण आभूषण धारण करना चाहिए, गुप्त दान या पीले फलों के दान करते रहना चाहिए तो बृहस्पति शुभ हो जाएगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में दिक्कतें आएंगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **गुरु + सूर्य**—जातक का पराक्रम भंग होगा, राजा से दण्ड मिल सकता है, समाज से बहिष्कार या तिरस्कार जैसी घटना घटित हो सकती है।
2. **गुरु + चंद्र** मिथुन लग्न के अष्टम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दशमेश बृहस्पति के साथ युति है, अष्टम भाव में दोनों ग्रह होने के कारण आपकी कुंडली में क्रमशः 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि हुई है, फलतः यहां गजकेसरी योग आपके लिए शुभफलदाई न होकर धनसंग्रह में बाधक, विवाह सुख में बाधक एवं सरकारी नौकरी में बाधक है, राजकाल में किसी मुकदमे में पराजय भी हो सकता है।
3. **गुरु + मंगल**—यहां मंगल होने पर 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक राजा के समय पराक्रमी होगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—विद्या में बाधा, संतान की तरक्की में भी बाधा महसूस होगी।
6. **गुरु + शनि**—यहां शनि होने पर नीचभंगराजयोग बनेगा। जातक राजा के समान प्रभावशाली होगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है, 'चाण्डालयोग' के कारण विलम्ब विवाह योग अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित बाधा के योग बनते है। यहां द्विभार्यायोग भी संभव है।

8. **गुरु + केतु**–यदि धैर्य एव समझौतवादी नीति से काम न लिया तो गृहस्थ जीवन कष्टमय हो सकता है।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में
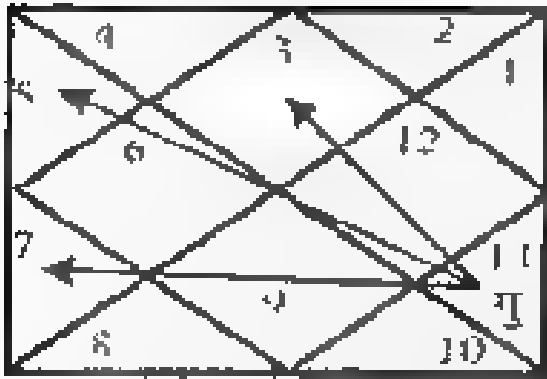
मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है बृहस्पति को मिथुनलग्न मे 'केन्द्राधिपत्य दोष लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एव यहा अशुभ फलदायक है। नवम् स्थान में बृहस्पति कुंभ (सम) राशि में है जातक बुद्धिमान ज्ञानवान, धैर्यवान होता है। जातक की बौद्धिक ऊर्जा सकारात्मक होती है। लालकिताब वालों ने इसे 'दहकता सोना' कहा है जातक अपने बुजुर्गों की इज्जत करता है। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। जातक महत्वकांक्षी होता है। राज्यपक्ष व राजनीति मे जातक का दबदबा रहता है। कोर्ट-कचहरी में उसे विजय मिलती है

दृष्टि–नवमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि), पराक्रमस्थान (सिंहराशि) एवं पंचम भाव (तुलाराशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा। पुत्रवान होगा। उसे परिश्रम में सफलता मिलेगी।

निशानी जातक विनम्र, उदार व शालीन होता है

दशा–बृहस्पति की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक गंगास्नान को जायेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रम बहुत तेज होगा। जनसम्पर्क विस्तृत होगा कुटुम्बीजनों मित्रों से लाभ है।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के नवम स्थान में गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है नवमभाव में बैठकर दोनो शुभग्रह लग्नस्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे फलत. आपके व्यक्तित्त्व में बढ़ोतरी 24 वर्ष की आयु से शुरू हो जाएगी। विवाह शुभद रहेगा एवं प्रथम संतति के साथ ही भाग्योदय का पूर्ण विकास होगा।
3. **गुरु + मंगल**–जातक प्रसिद्ध उद्योगपति होगा
4. **गुरु + बुध**–जातक प्रसिद्ध व्यापारी होगा।

5. **गुरु + शुक्र**—जातक विद्याबल आगे बढ़ने वाला, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा।
6. **गुरु + शनि**—जातक परम भाग्यशाली, राजा के सामन वैभवशाली होगा।
7. **गुरु + राहु**—यहा दोनो ग्रह कुभ राशि में है। जातक का राजनैतिक वर्चस्व तो रहेगा परतु 'चाण्डालयोग' के कारण पिता से अनबन रहेगी अथवा राजनीति में पद प्राप्ति के अवसर पर धोखा मिलेगा
8. **गुरु + केतु**—जातक सिद्धातवादी व्यक्ति होगा एवं भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में
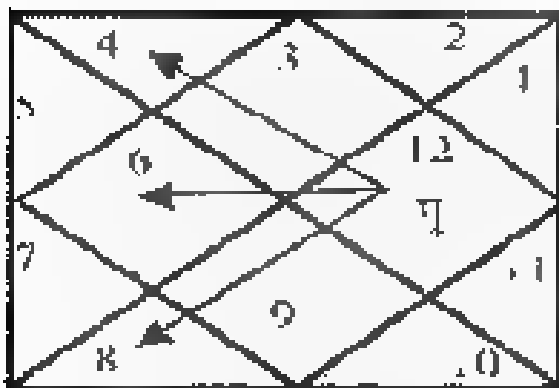
4	3	2	1
5	6	12 गु	11
7	8	9	10

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति का मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एव यहां अशुभ फलदायक है यहां दसम स्थान में बृहस्पति स्वगृही है। फलतः यहां पर क्रमशः कुलदीपक योग, केसरीयोग एवं हंसयोग की सृष्टि हुई है. ऐसा जातक राजा के समान परम पराक्रमी, नौकर-चाकर से युक्त, उत्तम वाहन का स्वामी होता है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को 'बच्चों को यतीम छोड़ने वाला बाप' कहा है। जो कम जंचता है ऐसे व्यक्ति व्यक्तिगत और समष्टिगत उन्नति में विश्वास रखते हैं. जातक को माता पिता, पत्नी पुत्र, धन, यश जमीन-जायदाद का पूर्ण सुख मिलता है

दृष्टि—दशमस्थ बृहस्पति की दृष्टि धन स्थान (कर्क राशि), चतुर्थ भाव (कन्या राशि) एवं छठेभाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक अतिधनी होगा। अच्छे भवन, वाहन का स्वामी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

दशा—बृहस्पति की दशा अतर्दशा में जातक की सर्वागीण उन्नति होती है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—जातक महान् पराक्रमी होगा। राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं धनी होगा। मित्रो से जनसम्पर्क से लाभ होता रहेगा।
2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के दशम स्थान में चद्र+गुरु की युति वस्तुतः धनेश चन्द्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बृहस्पति स्वगृही

होकर केन्द्रस्थ होने से 'हंसयोग' की सृष्टि कर रहा है। दोनों ग्रह बली होकर धनस्थान, सुखस्थान एवं छठे भाव को पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपके पास चल अचल सम्पत्ति बहुत होगी। आपके अनेक वाहनों का सुख भी होगा। आयुदीर्घ होगी। पद्मसिंहासन योग के कारण आप साधारण परिवार में जन्म लेकर भी उन्नति के पथ पर बहुत आगे बढ़ जाएंगे.

3. **गुरु + मंगल**—जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
4. **गुरु + राहु**—यहां दोनों ग्रह मीन राशि में है। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। परंतु **'चांडालयोग'** के कारण राजा (सरकार) में दण्ड प्राप्ति संभव है पिता की सम्पत्ति में विवाद रहेगा।
5. **गुरु + केतु**—जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली, न्यायप्रिय एवं कीर्तिवान् होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में
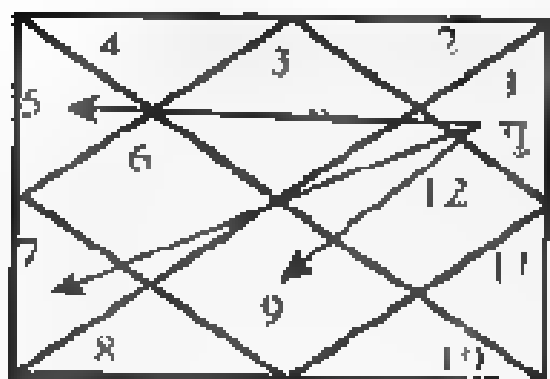
4 3 2 1 गु 5 6 12 7 11 9 8 10

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है. बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एवं यहां अशुभ फलदायक है। एकादश स्थान में बृहस्पति मेष (मित्र) राशि में होता है। ऐसे जातक का जीवनसाथी आकर्षक, बुद्धिमान व शिक्षित होता है। जातक नौकरी, व्यापार व कमाई के कार्यों में दक्ष होता है। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति का 'खजूर के वृक्ष पर अकेला' कहा है। जातक को जमीन जायदाद का लाभ मिलेगा। परंतु अपने विचारधारा का आप अकेला व्यक्ति होगा।

दृष्टि—एकादश स्थान में स्थित बृहस्पति की दृष्टि तृतीयभाव (सिंहराशि) पंचमभाव (तुलाराशि) एवं सप्तमभाव अपने ही घर (धनुराशि) पर होगी। फलतः जातक को भाईयों का सुख, पत्नी (गृहस्थ) का सुख एवं संतान का सुख उत्तरोत्तर उत्तम होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा एवं विभिन्न भौतिक सुखों को प्राप्त होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—जातक महान् पराक्रमी एवं तेजस्वी होगा। कुटुम्बीजनों, मित्रों से सहयोग मिलता रहेगा।

2. **गुरु + चंद्र**-मिथुन लग्न के एकादश स्थान में गुरु+चद्र की युति वस्तुतः धनेश चंद्रमा की सप्तमेश, दसमेश बृहस्पति के साथ युति है। ये दोनो शुभग्रह यहां बैठकर तृतीय स्थान, पचमस्थान एव सप्तम स्थान पर पूर्ण दृष्टिपात करेंगे। फलतः आपके पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि होगी। संतान उत्तम विद्यासुख श्रेष्ठ होगा। विवाह अच्छे घर घराने में होगा। पत्नी सुंदर मिलेगी।
3. **गुरु + मगल**—जातक पराक्रमी होगा पर गुप्त शत्रु बहुत होंगे।
4. **गुरु + बुध**—जातक व्यापार प्रिय होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक बुद्धिबल से कमाने वाला उच्च व्यवसायी होगा।
6. **गुरु + शनि**—जातक भाग्यशाली व्यापारी होगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां दोनों ग्रह मेषराशि में है। जातक पत्नी एव पिता पक्ष में सुखी होगा परतु 'चाण्डालयोग' के कारण व्यापार व्यवसाय में अपेक्षित लाभ नहीं होगा।
8. **गुरु + केतु**—ऐसा जातक यशस्वी उद्योगपति होगा।

मिथुनलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में
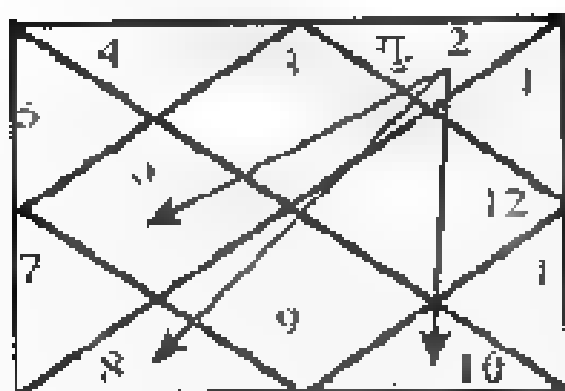
4 3 गु. 2 1
5 6 12
7 9 11
8 10

मिथुनलग्न में गुरु सप्तमेश व दसमेश है। बृहस्पति को मिथुनलग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' लगता है। गुरु द्वितीय मारकेश होने से निष्फलयोग कर्ता एव यहां अशुभ फलदायक है। यहां द्वादश स्थान में बृहस्पति वृष (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति की इस स्थिति में क्रमशः 'विवाहभंगयोग' एव 'राज्यभंगयोग' की सृष्टि होगी जातक का विलम्ब विवाह होगा अथवा गृहस्थ सुख में अकारण बाधाएं उत्पन्न होगी. राज्यपक्ष में भी, राजनीतिज्ञ लोगो से भी वांछित सहयोग नहीं मिलेगा। लालकिताब वालों ने इस बृहस्पति को उच्चतम ज्ञानी कहा है जातक तत्र-मत्र, धर्म-अध्यात्म का ज्ञानी होता है।

दृष्टि—द्वादशस्थ बृहस्पति की दृष्टि चुतर्थभाव (कन्याराशि), षष्टम भाव (वृश्चिकराशि) एव अष्टमभाव (मकरराशि) पर होगी. फलतः शारीरिक सुखों में बाधा, शत्रुओ का प्रकोप एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पडेगा।

निशानी—ऐसा जातक प्रौढ़ावस्था में प्रायः संन्यास की ओर प्रवृत होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा अतर्दशा में रोग उत्पन्न होंगे। अशुभ परिणाम फलिभूत होगे.

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–जातक का पराक्रमभंग होगा। सरकार से दण्ड या समाज से अपमान होगा।
2. **गुरु + चंद्र** मिथुन लग्न के द्वादश स्थान में गुरु+चंद्र की युति गजकेसरी योग की सृष्टि कर रही है। यहा उच्च का है चंद्रमा स्वगृही, इससे अधिक और क्या चाहिए? गुरु चंद्र की यह युति धनेश व दसमेश की युति है। आपके भाग्य में अद्वितीय वृद्धि कर रही हैं। यह युति संतति सुख देगी परंतु विवाह सुख में बाधक है पत्नी फिजूल खर्च करने वाली होगी।
3. **गुरु + मंगल**–जातक को व्यापार में नुकसान होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक को परिश्रम का यथेष्ट फल नहीं मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक विलासी होगा एवं यात्राओं से धन कमाएगा।
6. **गुरु + शनि**–भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा
7. **गुरु + राहु**–यहा दोनों ग्रह वृषराशि में हैं। यहा **'चाडालयोग'** के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृह सुख में बाधा होने के निश्चित योग बनते हैं। जातक जन्म स्थान छोड़कर परदेश बस जाएगा
8. **गुरु + केतु**–जातक धार्मिक कार्य, परोपकार, तीर्थयात्रा में, शुभकार्य में धन खर्च करेगा।

❑❑❑

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में
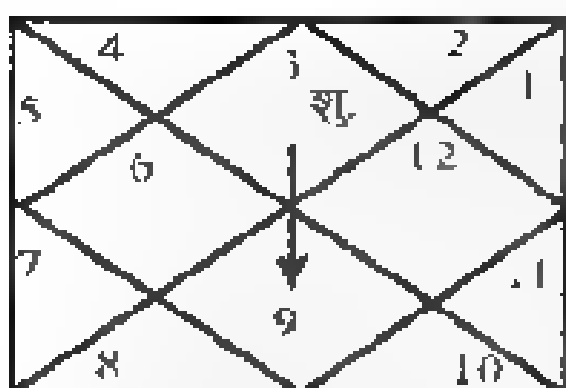
मिथुनलग्न मे शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहा योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहा प्रथम स्थान में शुक्र मिथुन (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक गीत-संगीत, नृत्य-कला, स्त्री व रोमांच के प्रेमी होते हैं पंचमेश लग्न में होने से जातक का सोया हुआ भाग्य खुलता है। प्रयत्न यदि उत्तम हो तो जातक सफलता की बुलंदियो को छू लेता है। लाल किताब वालो ने इस शुक्र का नाम '**रंग-बिरगी माया**' दिया है। यह शुक्र '**कुलदीपकयोग**' भी बना रहा है। ऐसे जातक के जीवन का सही विकास विवाह के बाद होता है, जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। धन, विद्या, यश, वाणिज्य व्यापार से लाभ होगा।

दृष्टि—लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (धनुराशि) पर होगी। जीवनसाथी सुदर मिलेगा।

निशानी—ऐसा व्यक्ति जीवन में अनेक स्त्रियों का सुख भोगता है। जातक दूसरों की सलाह लेकर काम करेगा तो उन्नति ज्यादा होगी। सफलता अधिक मिलेगी।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—यहां सूर्य की स्थिति से जातक तेजस्वी होगी, परंतु विचलित मनोवृत्ति वाला होगा। कभी 'हां' कभी 'ना' के बीच में निर्णय झूलता रहेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**—चंद्रमा यहा शत्रुक्षेत्री होकर जातक की चित्तवृत्ति अस्थिर करता है।

3. **शुक्र+मंगल**–मंगल के कारण जातक हठी, कलहकारी किन्तु विलासी प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा।
4. **शुक्र+बुध**–'भद्रयोग' के कारण राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–यहां गुरु के कारण गृहस्थ सुख उत्तम, संतान सुख उत्तम एवं जातक भाग्यबली होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शनि की युति से जातक ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–जातक के कार्य में अस्थिरता रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**–जातक का स्वभाव रंगीन एवं अस्थिर रहेगा।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में
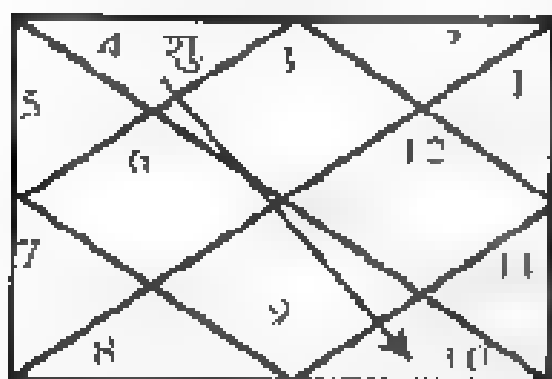
मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। द्वितीय स्थान में शुक्र कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक के रोमांटिक स्वभाव के कारण धनसंग्रह में बाधा होगी विलासित पूर्ण वस्तुओं में धन का अपव्यय होगा। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को **'मोहमाया का उम्दा गृहस्थी'** कहा है। ऐसा व्यक्ति सुंदर, आकर्षक विनम्र एवं उदार स्वभाव का होगा। जातक की आर्थिक सम्पन्नता प्रथम संतति के बाद ज्यादा मुखरित होगी।

दृष्टि–शुक्र की दृष्टि अष्टमस्थान (मकरराशि) पर होगी, फलतः जातक की आयु दीर्घ होती है।

निशानी–ऐसा जातक यदि ईश्वर पर भरोसा रखकर काम करेगा तो उसे किसी वस्तु की कमी नहीं रहेगी। देवी की उपासना ज्यादा फलेगी

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे। धन एवं शुभफलों की प्राप्ति अधिक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–जातक को मित्रों द्वारा धन मिलेगा।
2. **शुक्र+चंद्र** जातक की वाणी विनम्र मधुर होगी। जातक धनी होगा
3. **शुक्र+मंगल**–जातक की वाणी कर्कश, कटाक्ष वाली होगी।

4. **शुक्र+बुध**—जातक मधुर वाणी एवं मीठी बातें करने वाला होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—जातक महाधनी एवं विद्यावान होगा।
6. **शुक्र+शनि**—जातक भाग्यशाली होगा, हुनरबंद होगा।
7. **शुक्र+राहु**—धन का अपव्यय अधिक होगा।
8. **शुक्र+केतु**—धनखर्च के प्रति चिंता रहेगी

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में

4	3	2	1
5 शु	6	12	11
7	9	8	10
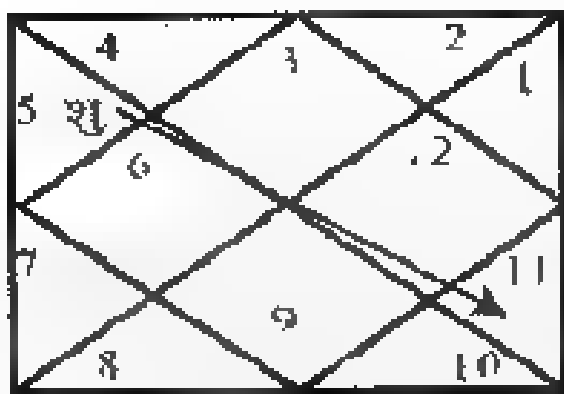
मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है, तृतीय स्थान में शुक्र सिंह (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक का पराक्रम विवादास्पद होता है। भाई-बहनों व मित्रों से मनमुटाव रह सकता है। लालकिताब वालों ने इस शुक्र को **'इश्क का परवाना'** कहा है। ऐसे जातक पराई स्त्री पर डोरे डालता है और उनसे अनैतिक सम्पर्क स्थापित करने की कोशिश करता है। ऐसा जातक यार दोस्तों पर, सामाजिक प्रतिष्ठा कायम रखने के चक्कर में बहुत पैसा खर्च करता है। जातक फिजूलखर्ची होता है।

दृष्टि—तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभराशि) पर होगी। ऐसा जातक थोड़ी मेहनत से ही उत्तम फलों की प्राप्ति करने में सफल होता है।

निशानी—जातक की प्रगति विवाह के बाद होती है।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—यहां सूर्य होने से जातक को भाई-बहन दोनों का सुख मिलता है, पर बड़े भाई की आयु के लिए सूर्य की यह स्थिति ठीक नहीं।
2. **शुक्र+चंद्र**—पराक्रम स्थान में धनेश पंचमेश युति सार्थक है। विद्या द्वारा जातक का पराक्रम बढ़ेगा।
3. **शुक्र+मंगल**—जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा एवं खटपट भी रहेगी।
4. **शुक्र+बुध**—लग्नेश का तृतीयस्थान में पंचमेश शुक्र से युति शुभ है
5. **शुक्र+गुरु**—सप्तमेश पंचमेश की युति तृतीयस्थान में विवाह के बाद जातक का पराक्रम बढ़ाएगी।

6. **शुक्र+शनि**–भाग्येश पचमेश की युति तृतीय स्थान मे व्यक्ति के भाग्यवृद्धि का सकेत देती है।
7. **शुक्र+राहु**–परिवार में मनमुटाव रहेगा।
8. **शुक्र+केतु**–मित्रों में असतोष रहेगा।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में
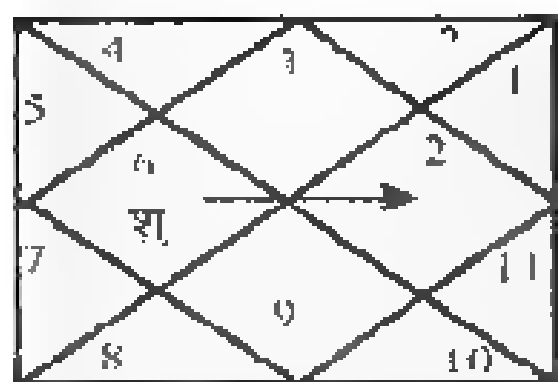
4	3	2	1
5	6 श.	12	11
7	8	9	10

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां चतुर्थ स्थान में शुक्र कन्या (मित्र) राशि में होते हुए नीच का होता है। कन्याराशि के 27 अंशों मे परमनीच का होता है। शुक्र केंद्रवर्ती होने से '**कुलदीपकयोग**' बना रहा है। चतुर्थभाव में शुक्र बलवान होने से हानिकारक नहीं होता। जातक को उत्तम वाहन, धन सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को '**खुश्की का सफर**' कहा है। ऐसा व्यक्ति भरपूर सपत्ति, सवारी एवं भौतिक वैभव से सम्पन्न होता है। जातक की शिक्षा संघर्षपूर्ण होती है।

दृष्टि–चतुर्थभावगत शुक्र की दृष्टि दशमभाव (मीनराशि) पर होगी। यह शुक्र की उच्च राशि है। फलतः जातक राजनीति में उच्च पद, प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

निशानी–ऐसे जातक उन्नति विवाह के बाद होती है पर सतान आज्ञाकारी नहीं होते। विवाह के पहले प्रेमप्रसंग संभव है, बाद में सब कुछ सामान्य रहता है।

दशा–शुक्र की दशा अतर्दशा में जातक को भौतिक उपलब्धियों एवं सुखों की प्राप्ति होगी

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **शुक्र+सूर्य**–तृतीयेश सूर्य केन्द्र में शुक्र के साथ शुभ स्थिति की सूचक है। जातक ऐश्वर्यवान् होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनेश का पंचमेश शुक्र के साथ केन्द्रस्थ होना बहुत शुभ है। जातक धनी होगा। एकाधिक मकानों का स्वामी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–मंगल का दिक्बली होकर शुक्र के साथ केन्द्र में बैठना शुभ है। जातक बड़ी भूमि का स्वामी होगा।

4. **शुक्र+बुध**–बुध के कारण 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। ऐसा जातक निश्चय ही राजा तुल्य धन-सम्पत्ति ऐश्वर्य को भोगता है।
5. **शुक्र+गुरु**–जातक का प्रथम भाग्योदय विवाह के बाद, द्वितीय भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
6. **शुक्र+शनि**–भाग्येश व पंचमेश की युति केंद्र में जातक को उद्योगपति बनाएगी।
7. **शुक्र+राहु**–यहां राहु की युति से शुक्र चतुर्थ व पंचम दोनों भाव के शुभ फल नष्ट करता है।
8. **शुक्र+केतु**–केतु की युति से माता बीमार रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में

4 3 2 1 5 6 12 7 शु. 11 9 8 10
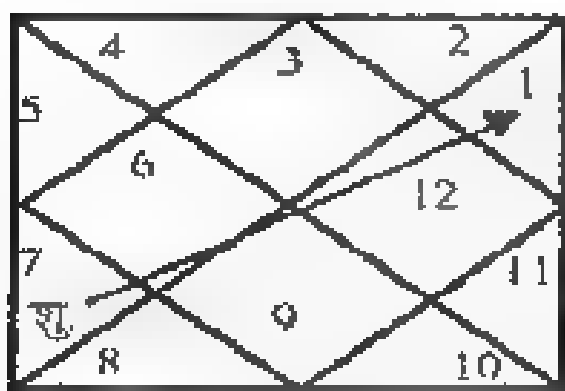
मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। पंचम स्थान में शुक्र तुलाराशि में स्वगृही होता है। ऐसा जातक विद्या, बुद्धि, स्त्री-संतान सुख से युक्त होता है। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि Educational Degree मिलती है। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'बच्चों से भरा घर परिवार' की संज्ञा दी है। जब तक जातक की पत्नी जीवित है, उसके जीवन में कोई रुकावट (कमी) नहीं आएगी।

दृष्टि–पंचमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (मेषराशि) पर होगी। जातक समाज जाति का गौरव एवं संस्कारी व्यक्ति होगा

निशानी–जातक के छ: कन्या होती है। जातक प्रज्ञावान् होगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक को खूब धन दौलत, तरक्की मिलती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–यदि सूर्य यहां है तो 'नीचभंगराजयोग' बनेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी व यशस्वी होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनेश पंचम स्थान में स्वगृही शुक्र के साथ होने से जातक अपनी विद्या बुद्धि में धन अर्जित करेगा। जातक की संतान भाग्यशाली होगी।

3. **शुक्र+मंगल**–जातक उद्योगपति होगा, ठेके व व्यापार से धन कमाएगा।
4. **शुक्र+बुध**–जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। जातक धनी व्यक्ति होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–जातक आध्यात्मिक एवं भक्ति मार्ग का पथिक होगा
6. **शुक्र+शनि**–यदि शनि यहां हो तो 'किम्बहुना नामक राजयोग' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा के समान भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–विद्या एवं पुत्र संतति में बाधा।
8. **शुक्र+केतु**–विलम्ब संतति या संघर्ष के साथ विद्या की संभावना

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति षष्ट्म स्थान में
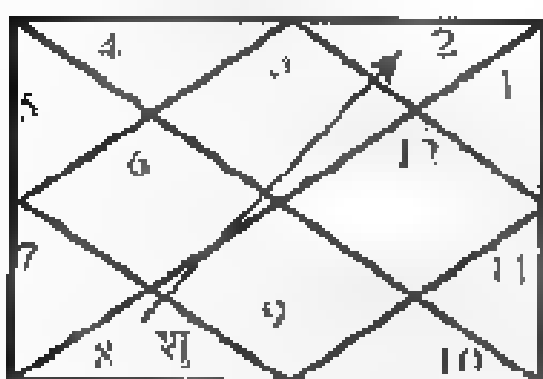
मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां छठे स्थान में शुक्र वृश्चिक (सम) राशि का होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण **'संततिहीन योग'** बनता है। परतु व्ययेश का छठे जाने से **'सरलयोग'** की सृष्टि भी होती है। शुक्र की इस स्थिति के कारण व्यक्ति में कामातिरेक की बाहुल्यता होती है। जातक परिश्रमी होता पर भोग-विलास, नशे पते या जुआ के शौक मे अपनी बरबादी का खुद ही कारण होता है।

दृष्टि–छठे भावगत शुक्र की दृष्टि अपने ही घर (वृषराशि) व्यय स्थान पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा एवं कई बार राह से भटक जाएगा।

निशानी–ऐसा जातक प्राय: अपनी योग्यता एवं रुचि से भिन्न विषयों के क्षेत्र में कार्य करता है तथा किस्मत को कोसता रहता है।

दशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–पराक्रमभंगयोग बनता है। विद्या में रुकावट। निर्णय गलत होंगे।
2. **शुक्र+चंद्र**–धनहीनयोग के कारण आर्थिक संकट रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा पर शरीर में रोग रहेगा।
4. **शुक्र+बुध**–जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–गृहस्थ सुख मे बाधा रहेगा। गुप्त रोग की संभावना है।

6. **शुक्र+शनि**—भाग्योदय में बाधा परंतु विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा
7. **शुक्र+राहु**—विद्या पुत्र संतति सुख में बाधा।
8. **शुक्र+केतु**—शल्य चिकित्सा योग। गुप्त बीमारी रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
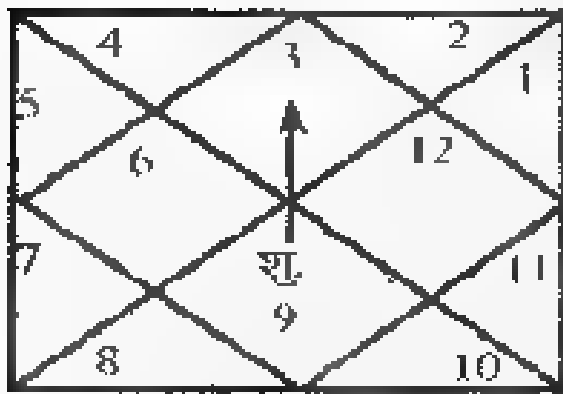
मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। सतम स्थान में शुक्र धनु (शत्रु) राशि में होता है। शुक्र की इस स्थिति मे '**कुलदीपकयोग**' बनता है। जातक उत्तम विद्या, बुद्धि, स्त्री व संतान के सुख से युत होता है। जातक की पत्नी खूबसूरत, स्नेह, ममता की मूर्ति, धर्मभीरू परंतु कुछ उग्र स्वभाव की होती है। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकती है।

दृष्टि—सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि) पर होगी। फलतः जातक अल्प प्रयत्न से बहुभाग्य का स्वामी होगा।

निशानी—ऐसा जातक परदेश में ज्यादा धन कमाता है।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होती है। उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—जातक का ससुराल, जीवनसाथी प्रभावशाली होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**—जातक को ससुराल से धन मिलेगा। लाभ की प्राप्ति होती रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**—जातक के गृहस्थ जीवन में सुख-दुःख का सम्मिश्रण रहेगा।
4. **शुक्र+बुध**—जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। गृहस्थ सुख श्रेष्ठ
5. **शुक्र+गुरु**—'हंसयोग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा। जीवनसाथी सुंदर होगा।
6. **शुक्र+शनि**—जातक परम सौभाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**—गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**—गृहस्थ सुख में कलह रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में
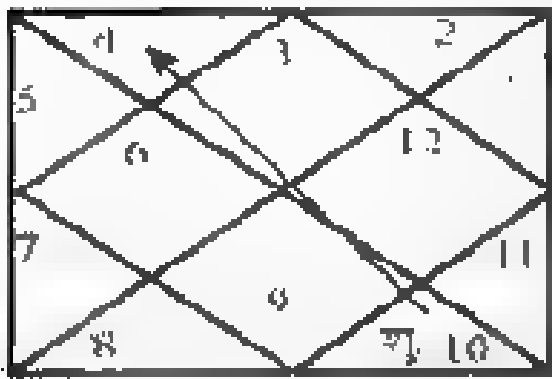
मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है। यहां अष्टम स्थान में शुक्र मकर (मित्र) राशि में होगा। शुक्र की यह स्थिति 'संततिहीन योग' की सृष्टि करती है परंतु व्ययेश अष्टम में होने से '**सरलयोग**' की भी सृष्टि करती है. ऐसे जातक के जीवन में दूरदर्शिता का अभाव होता है तथा उसकी विद्या एवं बुद्धि का सही उपयोग समय पर नहीं हो पाता। लालकिताब वालों ने इस शुक्र को '**चाण्डाल औरत**' की संज्ञा दी है। ऐसे जातक की पत्नी की जबान से निकला शब्द पत्थर की लकीर होगा।

दृष्टि—अष्टम भाव में स्थित शुक्र की दृष्टि धनस्थान (कर्कराशि) पर होगी फलतः जातक धन को खर्च करते वक्त तनिक भी विचार नहीं करता।

निशानी—ऐसा जातक यदि पत्नी को तंग करेगा तो उसे लगातार मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। ऐसे शुक्र को शुभ करने के लिए गाय (दूध) का दान करें जातक को धर्म स्थान के सामने सिर झुकाकर चलना चाहिए।

दशा—शुक्र की दशा-अंतदशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—पराक्रम भंगयोग के कारण मानहानि होगी। रोग का प्रकोप होगा
2. **शुक्र+चंद्र**—धनहीन योग के कारण आर्थिक परेशानी बनी रहेगी
3. **शुक्र+मंगल**—विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा
4. **शुक्र+बुध**—लग्नभंगयोग के कारण परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—विलम्ब विवाह या गृहस्थ सुख कलुषित रहेगा सैक्स रोग होगा
6. **शुक्र+शनि**—विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान एवं भोगी होगा।
7. **शुक्र+राहु**—गुप्त बीमारी एवं अचानक दुर्घटना संभव।
8. **शुक्र+केतु**—शल्यचिकित्सा योग बनता है।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में

मिथुनलग्न मे शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल
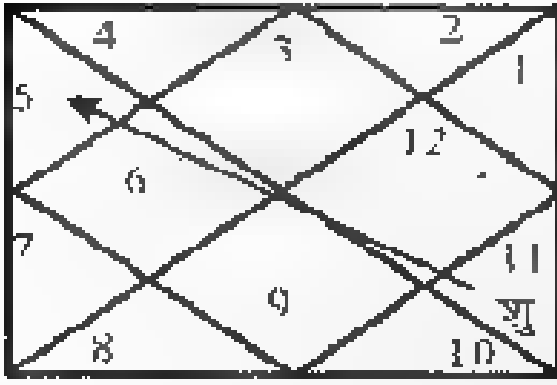
देने वाला है। यहां नवम स्थान में शुक्र कुंभ (मित्र) राशि में होगा, यह शुक्र पंचम भाव से पंचम है, उच्चाभिलाषी है। अत: श्रेष्ठ है, इस भाव में शुक्र के पिता की दीर्घआयु होती है, जातक को स्त्री, धन, संतान, विद्या-बुद्धि एवं सौभाग्य का पूर्ण सुख मिलता है, लाल किताब वालों ने इस शुक्र को **'मिट्टी की काली आंधी'** कहा है। ऐसे जातक को स्त्री या दौलत दोनों में से एक का ही पूर्ण सुख मिलता है।

दृष्टि—नवम स्थानगत शुक्र की दृष्टि पराक्रम भाव (सिंह राशि) पर होगी फलत: जातक प्रबल पराक्रमी होगा। जनसंपर्क बहुत तेज होगा।

निशानी—ऐसा व्यक्ति यदि सम्मानित स्त्रियों का अपमान करें तो उसका भाग्य तत्काल रूठ जाएगा।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक का चतुर्मुखी भाग्योदय होता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—जातक महान् पराक्रमी होगा। कुटुम्बी एवं मित्रों का सकारात्मक सहयोग रहेगा.
2. **शुक्र+चंद्र**—धनेश चन्द्र भाग्यस्थान में शुक्र के साथ होने से धन द्वारा भाग्य में वृद्धि होगी।
3. **शुक्र+मंगल**—जातक उद्योगपति होगा, पर गुप्त शत्रु परेशान करेंगे।
4. **शुक्र+बुध**—जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। सफलता कदम चूमेगी।
5. **शुक्र+गुरु**—विवाह के बाद जातक का विशेष भाग्योदय होगा।
6. **शुक्र+शनि**—जातक करोड़पति होगा। भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**—भाग्योदय में लगातार बाधा से जातक परेशान हो जाएगा
8. **शुक्र+केतु**—जातक का जीवन में, संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से मुक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है, दशम स्थान में शुक्र [illegible] राशि का उच्च का होगा। मीन राशि के 27 अंशों में शुक्र परमोच्च का होता है। शुक्र की इस स्थिति से यहा **'कुलदीपकयोग'**
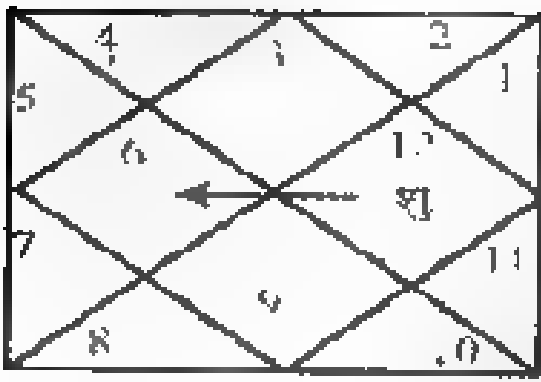
एवं 'मालव्ययोग' की सृष्टि हो रही है ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य एव साधनों का स्वामी होगा। लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'खाख्र हरा' की सज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति प्रेम-प्रसगो में उलझा रहता है सुदर स्त्रियों के साथ सपर्क करने हेतु लालायित रहता है। उसे धन, यश, परिवार, नौकरी-व्यवसाय में उन्नति होगी।

दृष्टि—दशमस्थ शुक्र की दृष्टि सुख भाव (कन्याराशि) पर होने से जातक को सुंदर भवन सुंदर वाहन, माता का सुख, भौतिक सुख एव ऐश्वर्य के सभी साधनों की प्राप्ति होगी।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। राज्य से लाभ प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—यहा सूर्य, शनि की युति से 'प्रवज्यायोग' बनेगा। जातक राजा होते हुए भी वैरागी होगा।
2. **शुक्र+चद्र** जातक अति धनवान होगा। राजातुल्य ऐश्वर्यवान् होगा।
3. **शुक्र+मंगल**—यहा दिक्बली मगल 'कुलदीपकयोग' के साथ जातक का नाम रोशन करेगा।
4. **शुक्र+बुध**— नीचभग राजयोग' के कारण जातक करोड़पति होगा।
5. **शुक्र+गुरु** किम्बहुनायोग, हसयोग, मालव्ययोग, पद्मसिहासन योग चारों एक साथ एकत्रित होने से जातक करोड़पति होगा। जातक भाग्योदय की कोई सीमा नहीं होगी। सिंह शुक्र गुरु की युति का सर्वश्रेष्ठ दृष्टांत है।
6. **शुक्र+शनि**—जातक परमसौभाग्यशाली एव धनी होगा
7. **शुक्र+राहु**—राज्यपक्ष मे बाधा, सरकारी परेशानी रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**—सरकारपक्ष में गुप्त संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में

मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहा योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल
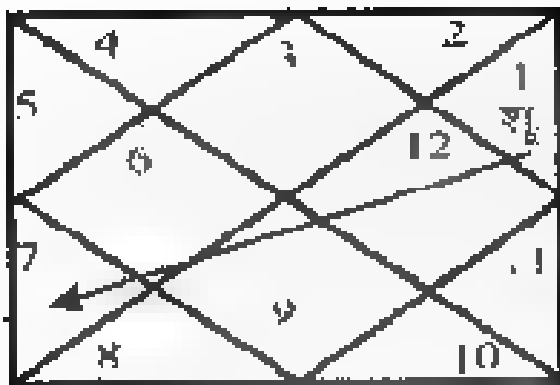
देने वाला है। यहां एकादश स्थान में शुक्र मेष (सम) राशि का होगा। जातक बुद्धिमान, धनवान, स्त्री व संतान सुख से युक्त होता है। प्राय: माता पिता की प्रेरणा व सहयोग से उच्च पद, प्रतिष्ठा, धन-वैभव की प्राप्ति होती है लाल किताब वालों ने इस शुक्र को **'माया के लिए घूमते व्यक्ति'** की संज्ञा दी है। ऐसे व्यक्ति का धन जब तक पत्नी के पास रहेगा, सुरक्षित रहेगा। अन्यथा ऐसा व्यक्ति सरलता से धन का खर्च कर देगा, संचय नहीं कर पाएगा।

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित शुक्र की दृष्टि अपने घर तुलाराशि (पंचमभाव) पर होगी फलत: जातक संघर्ष के बाद भी विद्या (Educational Degree) प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–उच्च का सूर्य जातक को महान् पराक्रमी एवं यशस्वी बनाएगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–जातक को उद्योग व्यापार से लाभ होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–जातक बडा उद्योगपति होगा। स्वगृही मंगल व्यापार में लाभ कराएगा।
4. **शुक्र+बुध**–जातक का परिश्रम सदैव सार्थक रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–जातक को गुप्त व्यापार से लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**–जातक भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**–व्यापार में गुप्त नुकसान होगा।
8. **शुक्र+केतु**–व्यापार व्यवसाय लाभ में रुकावट आएगी।

मिथुनलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में
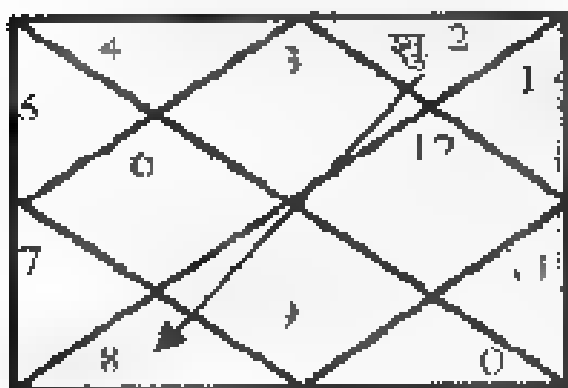
मिथुनलग्न में शुक्र पंचमेश व खर्चेश है। शुक्र त्रिकोण का स्वामी होने से व्ययेश के दोष से युक्त हो गया है। शुक्र यहां योगकारक होकर अत्यंत शुभ फल देने वाला है, यहां द्वादश स्थान में शुक्र स्वगृही होगा। शुक्र की यह स्थिति 'संतानहीन

योग' बनाती है परंतु व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से '**सरलयोग**' बना। इसलिए शुक्र शुभफलदाई हो गया है। लालकिताब वालों ने इस शुक्र को '**कामधेनु गाय**' की संज्ञा दी है. ऐसे व्यक्ति के पास धन-दौलत ऐशो आराम की सामग्री अपने आप आएगी। बलवान शुक्र के कारण स्त्री-सुंदर व आकर्षक होगी विवाह शीघ्र होगा। ऐसा व्यक्ति धनवान विख्यात तेजस्वी व यशस्वी होगा।

दृष्टि द्वादशस्थ शुक्र की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–व्यक्ति को नौकरी अथवा ट्रेवलिंग व्यापार में अच्छी सफलता मिलती है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक सुखी होगा। सम्पन्नता को प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–पराक्रम भंग योग के कारण मान भंग होगा
2. **शुक्र+चंद्र**–चंद्रमा उच्च का एवं शुक्र स्वगृही होने से 'किम्बहुनायोग' बनेगा। जातक परोपकारी एवं दानी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा।
4. **शुक्र+बुध**–लग्नभंग योग के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा आएगी।
6. **शुक्र+शनि**–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **शुक्र+राहु**–व्यर्थ की यात्रा में धन का अपव्यय होगा। राहु के साथ शुक्र होने से व्यक्ति कामी हो जाता है तथा नैतिक-अनैतिक तरीके से अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है।
8. **शुक्र+केतु**–यात्रा में कष्ट, नेत्रपीड़ा संभव। शल्य चिकित्सा होगी।

❑❑❑

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
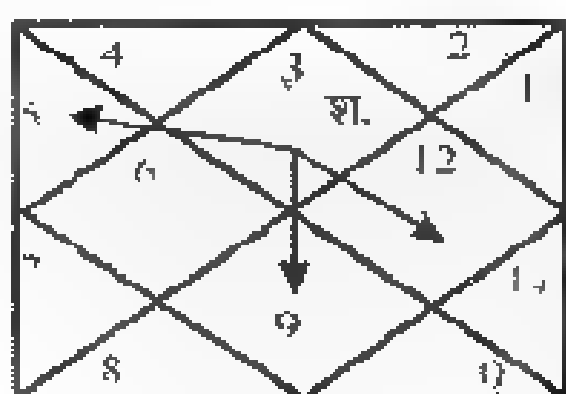
4 3 श. 2 1 5 6 12 7 9 11 8 10

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नही होगा अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नही पर शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां प्रथम स्थान में शनि मिथुन (मित्र) राशि में होगा। फलत: ऐसा जातक स्वस्थ्य शरीर वाला, उदार प्रवृत्ति विनम्र एवं गभीर स्वभाव का होगा। ऐसा व्यक्ति स्वप्रयासो से उन्नति करता है व्यक्ति कई बार उदासीन व एकातप्रिय होता है।.

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (सिंह राशि) सप्तम भाव (धनु राशि) एव राज्यभाव (मीन राशि) पर होगी जातक की भाईयो से कम बनेगी. पत्नी से विचार नहीं मिलेग एव सरकार (नौकरी) मे खटपट रहेगी।

निशानी–ऐसे व्यक्ति की किस्मत प्राय: वृद्धावस्था मे चमकती है।

दशा–शनि की दशा अतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति होगी

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां प्रथम स्थान मे दोनों ग्रह मिथुन राशि मे होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, पराक्रम स्थान (सिह राशि), सप्तम भाव (धनुराशि) एवं दसमभाव (मीनराशि) को देखेंगे। फलत: जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जातक धनवान होगा। जातक का किस्मत पिता की मृत्यु के बाद खुलेगी

2. **शनि+चंद्र** -धनेश लग्न में शत्रुक्षेत्री पापग्रह शनि के साथ होने से आर्थिक संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी.
3. **शनि+मंगल**–जातक झगडालू+ईर्ष्यालु व कलहकारी होगा।
4. **शनि+बुध**–'**भद्रयोग**' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शनि+गुरु** जातक गम्भीर स्वभाव का होगा विवाह के बाद उन्नति पथ की ओर बढ़ेगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक भाग्यशाली एवं धनी होगा।
7. **शनि+राहु**–जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी।
8. **शनि+केतु**–जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में
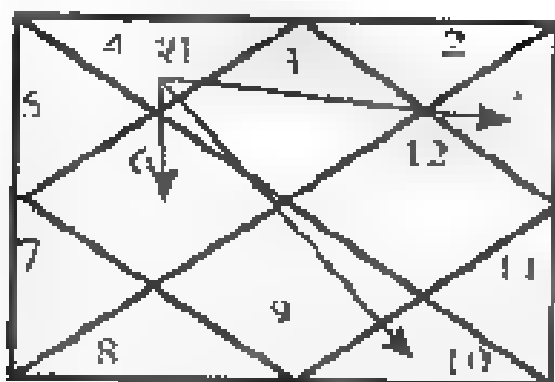
4 शं 3 2 1 5 6 12 7 11 9 8 10

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। द्वितीय स्थान में शनि कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को प्रायः धन व कुटुम्ब सुख में परेशानी आती है। वाणी में कड़वाहट का सम्मिश्रण रहता है। लालकिताब वालों ने ऐसे शनि को '**गुरुशरण**' कहा है। ऐसे व्यक्ति की क्षमता व योग्यता बाह्य दृष्टि से कम प्रतीत होती है पर गुरु की कृपा से जातक आतंरिक रूप से शक्तिशाली, बुद्धिमान और समर्थ होता है। इस कुण्डली में धन की ताकत का पता चंद्रमा की स्थिति में चलेगा।

दृष्टि–द्वितीय शनि की दृष्टि सुखस्थान (कन्याराशि), अष्टमस्थान (मकरराशि) एवं लाभस्थान (मेषराशि) पर होगी। जातक भौतिक सुख की प्राप्ति हेतु संघर्ष करेगा। व्यापार-व्यवसाय में भी संघर्ष एवं रोग के प्रकोप हेतु भी जातक को सावधान रहना होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेंगे। शुभ व अशुभ दोनों प्रकार

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि मे होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान (कन्या राशि), अष्टम भाव (मकरराशि) एव लाभस्थान मेष राशि को देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा लम्बी उम्र का स्वामी एव भाग्यशाली होगा जातक की आर्थिक स्थिति पिता की मृत्यु के बाद सुधरेगी।
2. **शनि+चंद्र**–जातक भाग्यशाली एवं महाधनी होगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक का पैसा कोर्ट कचहरी मे खर्च होगा।
4. **शनि+बुध**–जातक अपने पुरुषार्थ से धन अर्जित करेगा
5. **शनि+गुरु**–जातक ससुराल पक्ष से भाग्यशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**–जातक विद्या हुनुर के माध्यम से धन अर्जित करेगा।
7. **शनि+राहु**–धन के संग्रह में बाधा रहेगी।
8. **शनि+केतु**–धन एकत्रित नहीं हो पाएगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में
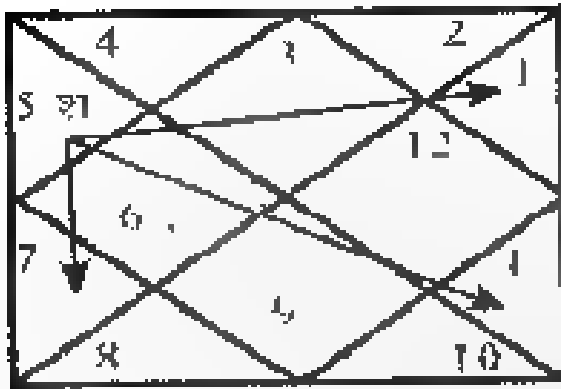
4	3	2	1
5 श	12	6	7
11	9	8	10

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी यहा शनि तृतीय स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक के भाई होगे पर भाईयों से कम निभेगी जातक परिश्रमी होगा एव कठोर परिश्रम के द्वारा अपना भाग्योदय स्वय करेगा जातक भाग्यशाली होगा परंतु भागीदारो, मित्रों से ज्यादा नही निभेगी। जातक मशीनरी कार्यों में रुचि रखेगा, परंतु भाग्योदय 32 से 34 के पहले नहीं होगा जातक पराक्रमी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पचम भाव (तुलाराशि) भाग्यभवन जो उसके स्वयं का घर है (कुंभ राशि) एवं लाभ भाव (मेषराशि) पर होगी। शनि की यह स्थिति सतान सुख में बाधक है। स्वतत्र व्यापार में बाधा आएगी।

निशानी–जातक छोटे भाई बहन के सुख में कमी अनुभव करता है। शनि की यह स्थिति छोटे भाई की आयु के लिए घातक है।

दशा–शनि की दशा अतर्दशा संघर्षमय रहेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहा तृतीय स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहा स्वगृही होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (तुला राशि) भाग्यभाव (कुंभराशि) एवं व्ययभाव (वृषराशि) पर होगी। फलतः जातक की संतति प्रभावशाली होगी. जातक भाग्यशूर एव खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक का पराक्रम पिता की मृत्यु के बाद बढ़ेगा।
2. **शनि+चंद्र** जातक के भाई बहनों का सुख होगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक कुटुम्ब परिवार के साथ रहना पसंद करेगा।
4. **शनि+बुध**–जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहनों का सुख होगा।
5. **शनि+गुरु**–भाग्येश व सप्तमेश की युति विवाह के बाद जातक का भाग्योदय कराएगी।
6. **शनि+शुक्र**–पंचमेश, भाग्येश की तृतीय भाव में युति जातक का पराक्रम बढ़ाएगी।
7. **शनि+राहु**–भाईयों से अनबन रहेगी। कोर्ट में विवाद संभव है।
8. **शनि+केतु**–मित्रों में मनमुटाव रहेगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में
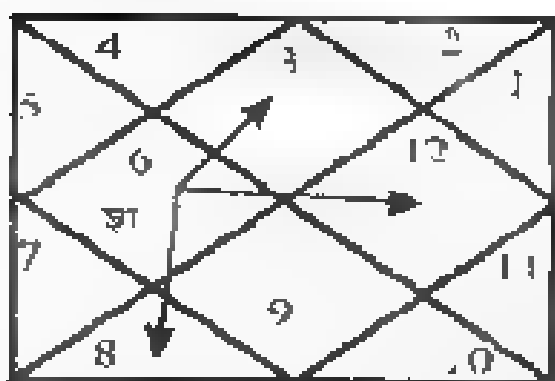
4 3 2 1 5 6 श 12 7 11 8 9 10

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां चतुर्थ स्थान में शनि कन्या (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति अवश्य होती है पर उसमें कुछ न कुछ कमी रहती है। लाल किताब वालों ने इस शनि को '**पानी का साँप**' कहा है। जातक जहरीले स्वभाव का होता है पर जहरीला दिखाई नही देता। ऐसे जातक युवावस्था में प्रेम प्रसंगों में घिरते है पर जीवन के उत्तरार्द्ध में धार्मिक होते हैं।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि छठेभाव (वृश्चिक राशि), राज्यभाव (मीन राशि) एवं लग्नभाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक पर रोग-ऋण व शत्रु हावी रहेंगे। फिर जातक उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ता रहेगा।

निशानी—वृद्धावस्था मे धन दौलत भरपूर होती है जातक स्वार्थी होगा पर भाग्यशाली होगा।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा मे मिश्रित फल मिलते हैं

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—ऐसे व्यक्ति का जीवन घोर सघर्षों से भरा होगा। यहा चतुर्थ स्थान मे दोनो ग्रह कन्या राशि में होगे। यहा केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह छठे स्थान (वृश्चिकराशि), दशमस्थान (मीनराशि) एव लग्नस्थान, मिथुनराशि को देखेंगे। फलत: जातक के अनेक शत्रु होगे पर जातक उनको नष्ट करने मे सक्षम होगा। जातक का शहर की राजनीति मे वर्चस्व होगा तथा महत्वकाक्षी जो भी योजनाए हाथ में लेगा उसमें सफलता मिलेगी।
2. **शनि+चंद्र**—जातक धनी होगा माता का सुख होगा, परतु मां बीमार रहेगी।
3. **शनि+मंगल**—मगल यहा दिक्बली होगा। भूसम्पत्ति को लेकर विवाद रहेगा।
4. **शनि+बुध**—'**भद्रयोग**' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा
5. **शनि+गुरु**—विवाह के बाद जातक का भाग्य चमकेगा।
6. **शनि+शुक्र**—जातक की संतान भाग्यशाली होगी।
7. **शनि+राहु**—वाहन दुर्घटना का योग है।
8. **शनि+केतु**—मातृसुख कमजोर रहेगा।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नही पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहा पंचम स्थान में शनि तुला राशि में उच्च का होगा। तुला राशि के अशों मे शनि परमोच्च का होता है। शनि की यह स्थिति परम सौभाग्य का सूचक है। लाल किताब वालों इस शनि को '**बुद्धू लड़का**' कहा है जो अपने भोलेपन के कारण परेशानी में पड़ जाता है। ऐसे व्यक्ति ज्यादा प्लानिग से कार्य नही करते, उतावलापन में किए गये कार्य से अवश्य नुकसान होता है।
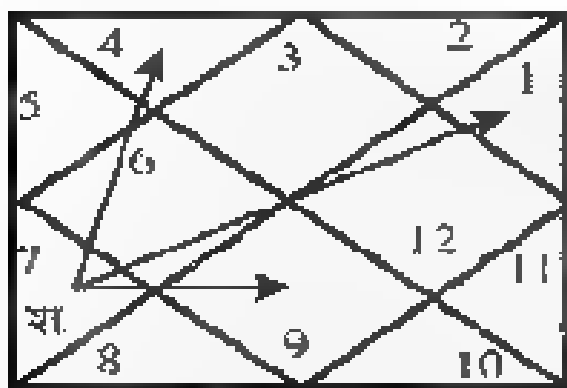
दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (धनुराशि) लाभभाव (मेषराशि) एवं धनभाव (कर्कराशि) पर होगी। फलतः जातक के विवाह में विलम्ब होगी। त्वरित धन एकत्रित करने में बाधा रहेगी।

निशानी–जातक के सात कन्याएं होती हैं या कन्या संतति की बाहुल्यता रहती है। यदि जातक सदाचारी होगा तो पुत्र संतान का सुख मिलेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। सौभाग्य में वृद्धि होगी.

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह तुलाराशि के होंगे। यहां शनि उच्च का होगा। तुलाराशि अंशों में शनि परमोच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह '**नीचभंगराजयोग**' बनाएंगे। तथा सप्तमभाव (धनुराशि), एकादशभाव (मेषराशि) एवं धनभाव (कर्कराशि) को देखेंगे। फलतः जातक स्वयं महाधनी होगा। पिता की मृत्यु के बाद ऐसा जातक व्यापार व्यवसाय में खूब धन कमाएगा।
2. **शनि+चंद्र**–जातक महाधनी होगा भाग्यशाली होगा.
3. **शनि+मंगल**–शत्रु परेशान करेंगे.
4. **शनि+बुध**–जातक महान् बुद्धिशाली होगा। हुनरबंद होगा।
5. **शनि+गुरु**–जातक का ससुराल धनाढ्य होगा
6. **शनि+शुक्र**–शुक्र स्वगृही, शनि उच्च का होने से 'किम्बहुनायोग' बनेगा। जातक महाभाग्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–विद्या में रुकावट, कन्या संतति ज्यादा।
8. **शनि+केतु**–स्त्री संतति की बहुल्यता एकाध गर्भपात सम्भव।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति षष्ठम स्थान में
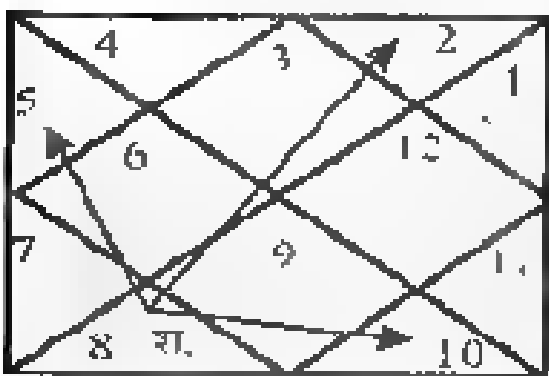
मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां छठे स्थान में शनि वृश्चिक (शत्रु)

राशि में है। अष्टमेश का छठे होने से **'विमल योग'** विपरीत राजयोग बनता है लाल किताब वालों ने इस शनि को **'किस्मत लिखने का मालिक'** कहा है अर्थात् ऐसा व्यक्ति सर्व कार्य स्वतंत्र होता है। अपना भाग्य खुद बनाता है। जातक को समाज में प्रतिष्ठ धन-यश व संतति सुख मिलता है। भाग्येश शनि छठे जाने से **'भाग्यभंगयोग'** बना। जिससे भाग्य की हानि होती है पर यह हानि मात्र 20% है। 80% शनि अष्टमेश का फल करेगा। जिससे जातक के शत्रुओं का दमन होगा।

दृष्टि–षष्ठमस्थ शनि की दृष्टि अष्टमभाव अपने स्वयं के घर (मकरराशि) पर होगी। व्ययभाव (वृषराशि) एवं पराक्रमभाव (सिंहराशि, पर होगी फलतः जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–जातक के पीठ पीछे उसकी निंदा होती रहेगी।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा में विपरीत राजयोग (विमलयोग) के कारण जातक उन्नति करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–छठे स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, अष्टमभाव (मकरराशि) व्ययभाव (वृषराशि) एवं पराक्रमभाव (सिंहराशि) को देखेंगे फलतः ऐसा जातक दीर्घआयु वाला, खर्चीले स्वभाव का एवं पराक्रमी होगा। परंतु भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–**'धनहीन योग'** के कारण जातक को आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा।
3. **शनि+मंगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा।
4. **शनि+बुध**–लग्नभंगयोग के कारण परिश्रम व्यर्थ जाएगा।
5. **शनि+गुरु**–विवाह संबंधी विवाद संभव। जातक का समय पर विवाह नहीं होगा।
6. **शनि+शुक्र**–संतति बाधा, गृहस्थ सुख में कमी।
7. **शनि+राहु**–विपरीत राजयोग के काण जातक धनी होगा।
8. **शनि+केतु**–गुप्त शत्रु या रोग जातक को परेशान करेंगे।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के
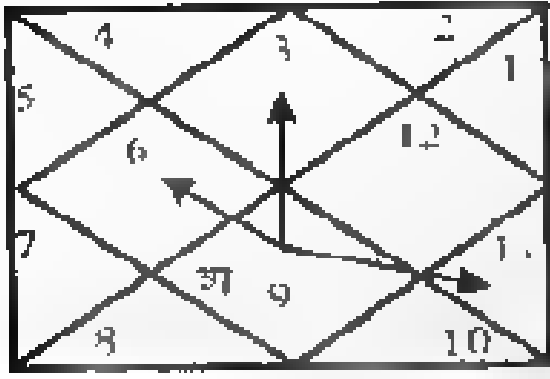
दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी उसकी हानि अधिक होगी। यहां सप्तम भावगत शनि धनु (सम) राशि में होगा। जातक को दाम्पत्य सुख, गृहस्थ सुख, व्यापार वाणिज्य का सुख, अध्यात्म व भाग्य का सुख पूर्ण होगा। पर सभी सुखों में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी। लाल किताब वालों ने इस शनि को **'विधाता की कलम'** कहा है। ऐसे जातक को अपने कर्मों का फल इसी जन्म में भोगना पड़ता है ऐसा जातक ऊपर से कुछ और अंदर से कुछ और ही प्रकार का होता है। फलत: ऐसा जातक रहस्यमय होता है जो कहता है वो करता नहीं, जो करता है वह कहता नहीं।

दृष्टि—सप्तमस्थ शनि की दृष्टि अपने घर भाग्यस्थान (कुंभराशि), लग्नस्थान (मिथुनराशि) एवं चतुर्थभाव (कन्याराशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा पर कोई भी कार्य प्रथम प्रयास (First attempt) में सिद्ध नहीं होगा।

निशानी—जातक का विवाह यदि विलम्ब से हो तो यह उन्नति का संकेत है।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे, यहा बैठकर दोनों ग्रह, भाग्यस्थान (कुंभराशि) लग्नभाव (मिथुनराशि) एवं सुखस्थान (कन्याराशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला सुखी जातक होता है। पर जातक को सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होता है।
2. **शनि+चंद्र**—जातक का विवाह के बाद धनी होगा।
3. **शनि+मंगल**—जातक का व्यापार विवाह के बाद चमकेगा।
4. **शनि+बुध**—जातक को परिश्रम का सुंदर फल मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**—'हंसयोग' के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र** जातक की पत्नी सुंदर व भाग्यशाली होगी।
7. **शनि+राहु**—विवाह सुख में कमी। द्विभार्यायोग बनता है।
8. **शनि+केतु**—जीवनसाथी से बिछोह संभव।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में
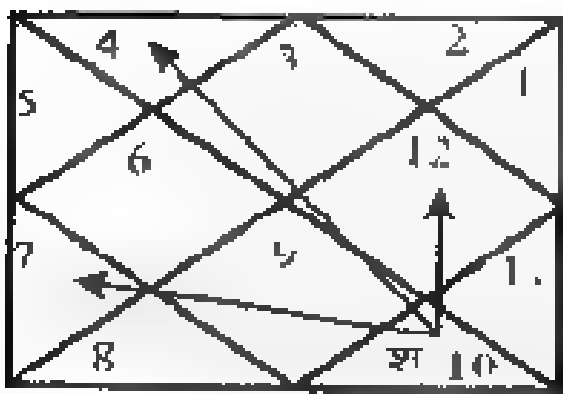
मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी अष्टम स्थान मे शनि मकरराशि का स्वगृही होता है। यद्यपि शनि की यह स्थिति '**भाग्यभंगयोग**' की सृष्टि करती है तथापि अष्टम स्थानगत शनि दीर्घायु देता है। अष्टमेश का अष्टम में स्वगही होना '**विमलनामक**' विपरीत राजयोग की सृष्टि करता है। जातक भाग्यशाली होता है रोजगार प्राप्ति में व्यवधान, धन प्राप्ति में व्यवधान, सतान सुख में व्यवधान होते हुए भी अंतिम रूप से सफलता निश्चित रूप से मिलती है। लाल किताब वालो ने इस राशि को '**मनमर्जी का मालिक**' कहा है। ऐसा व्यक्ति स्वेच्छाचारी एवं अभिमानी होता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि राज्यभवन (मीनराशि), धनभाव (कर्कराशि) एव सतान भवन (तुलाराशि) पर होगी। फलतः धनप्राप्ति, रोजगार प्राप्ति, सतान प्राप्ति में विलम्ब होता है

निशानी कोई भी कार्य मे प्रथम प्रयास (First attempt) मे सफलता न मिलकर प्रगति धीमे-धीमे होती है

दशा–शनि की दशा अतर्दशा में शत्रुओं का नाश होकर, रोग पर विजय प्राप्त होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां अष्टम स्थान में दोनो ग्रह मकरराशि में होगे, यहां बैठकर दोनों ग्रह राज्यभाव (मीनराशि), धनुभाव (कर्कराशि) एव पंचमभाव (तुलाराशि) को देखेंगे। शनि यहां स्वगृही होकर सरल नामक, '**विपरीत राजयोग**' बनाएगा। फलतः जातक धनी होगा राजनीति में ऊचे पद को प्राप्त करने वाला यशस्वी होगा। परतु पिता की मृत्यु के बाद ही राजनीति में सही विकास होगा।
2. **शनि+चंद्र**–धनहीन योग बनेगा। आर्थिक सघर्ष रहेगा फिर भी विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।

3. **शनि+मंगल**–यहां शनि मंगल से युक्त होकर आयु की हानि करता है. यहां पर शनि स्वगृही, मंगल उच्च का 'किम्बहुनायोग' एवं विपरीत राजयोग बनाता है। फलतः जातक महाधनी होगा। गाड़ी बंगला मोटर का स्वामी होगा

4. **शनि+बुध**–लग्नभंग योग के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

5. **शनि+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा। 'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक धनी, मानी व अभिमानी पुरुष होगा।

6. **शनि+शुक्र**–संततिहीन योग विद्या में बाधा संभव।

7. **शनि+राहु**–आयु में रुकावट, दुर्घटना संभव।

8. **शनि+केतु**–शरीर कष्ट एवं शल्य चिकित्सा संभव।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में
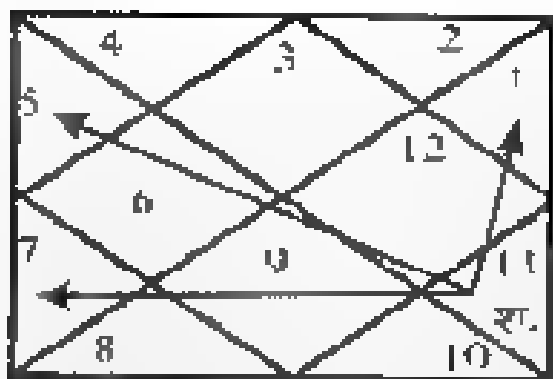
मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। नवम स्थान में शनि कुम्भराशि का होकर स्वगृही होगा। यह शनि की **मूलत्रिकोण** राशि है। यह शनि पितृ सौख्य का प्रतीक है। ऐसा जातक अति धनवान एवं वैभवशाली होता है। लालकिताब वाले ने इस शनि को '**आक के दरख्त**' की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति एक से अधिक मकान बनाता है। उसका परिवार सुखी व संपन्न होता है। यदि सही पुरुषार्थ करे तो भाग्य कदम कदम पर सहायता करता है।

दृष्टि–नवमस्थ शनि की दृष्टि एकादश स्थान (मेषराशि), पराक्रम स्थान (सिंहराशि) एवं छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को गुप्त शत्रु परेशान करेगा, परंतु सभी शत्रु अपने-अपने कर्मों से नष्ट होंगे।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा। जातक गंगा स्नान को जायेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभस्थान (मेषराशि), पराक्रम स्थान (सिंहराशि) एवं छठेभाव (वृश्चिक

राशि) पर होगी. शनि यहा अपनी मूलत्रिकोण राशि में होगा। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। व्यापार में लाभ कमाएगा। जातक महान् पराक्रमी होगा तथा ऋण रोग व शत्रुओं को नष्ट करने मे सक्षम होगा, परतु सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।

2. **शनि+चंद्र**—जातक महाधनी होगा।
3. **शनि+मंगल**—जातक उद्योगपति होगा पर एक बार उद्योग बंद जरूर होगा
4. **शनि+बुध**—जातक भाग्य शूर होगा।
5. **शनि+गुरु**—विवाह के उपरात ही जातक का भाग्य खुलेगा।
6. **शनि+शुक्र**—जातक को श्रेष्ठ पत्नी एव उत्तम संतति का सुख मिलेगा.
7. **शनि+राहु**—भाग्य मे बिगाड़। किस्मत बनती-बनती बिगड़ जाएगी।
8. **शनि+केतु**—भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में
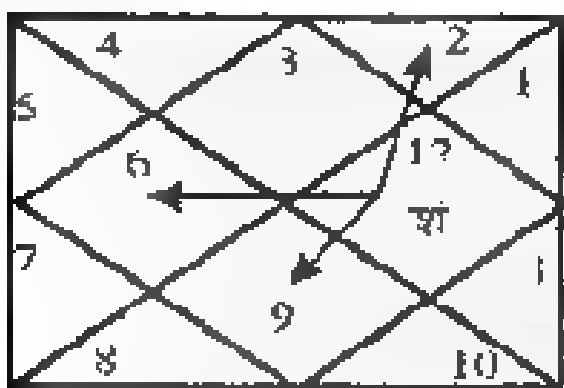
मिथुनलग्न मे शनि अष्टमेश व नवमेश है त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नही पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी उसकी हानि अधिक होगी यहां दशम स्थान में शनि मीन (सम) राशि मे है। नवमेश दसम भाव मे स्थित होने से जातक को धन, विद्या, यश, वाहन, भवन, व्यापार-वाणिज्य का सुख प्राप्त होगा। लाल किताब वालो ने इस शनि को '**किस्मत जगाने**' वाले की संज्ञा दी है। ऐसा जातक प्रतिभावान होता है। अपने विशिष्ट प्रयत्न से अपनी किस्मत खुद बनाता है। जातक ऐश्वर्यशाली एवं तेजस्वी जीवन जीता है। जातक धर्म, ज्योतिष, तंत्र-मंत्र एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है

दृष्टि—दशमस्थ शनि की दृष्टि व्ययभाव (वृषराशि), चतुर्थभाव (कन्याराशि) एवं सप्तमभाव (धनुराशि) पर होगी फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्रा, धार्मिक कार्य में धन खर्च होता रहेगा।

निशानी—ऐसा जातक माता पिता का भक्त होता है। जातक का स्वभाव सौम्य व शीतल होता है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहा दसवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्ययभाव (वृषराशि), चतुर्थभाव (कन्याराशि) एवं सप्तमभाव (धनुराशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक पूर्ण सुखी होगा विवाह के बाद किस्मत खुलेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा परंतु सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा
2. **शनि+चंद्र**–जातक का राजनीति मे प्रभाव रहेगा।
3. **शनि+मंगल**–जातक उद्योगपति होगा
4. **शनि+बुध**–'**कुलदीपकयोग**' के कारण जातक परिवार का नाम रोशन करेगा. जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
5. **शनि+गुरु**–'**हंसयोग**', '**पद्मसिंहासन योग**' के कारण जातक महाधनी होगा। उनके पास अनेक वाहन होंगे।
6. **शनि+शुक्र**–'**मालव्ययोग**' के कारण जातक के पास अनेक वाहन होंगे। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
7. **शनि+राहु**–राजनीति में धोखा मिलेगा।
8. **शनि+केतु**-राजनीति यत्र में गुप्त शत्रु आपके लिए सक्रिय रहेंगे।

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में
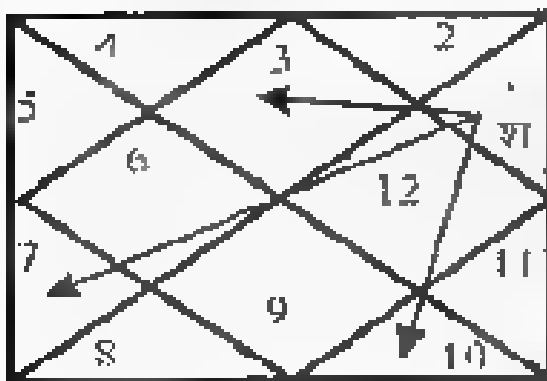
4 3 2 1 श 5 6 12 7 11 9 8 10

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है। पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नही होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नही पर शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। एकादश स्थान में यहा शनि मेष (शत्रु) राशि का होगा। मेष में शनि नीच का होता है तथा 20 अंशों में परमनीच का होता है एसा जातक धनी व उद्योगपति होता है। लालकिताब वालो ने इस शनि को '**खुद का विधाता**' कहा है। एसा व्यक्ति अपने हुनुर एवं चतुराई से, बिना किसी बाहरी मदद के उन्नतिपथ की ओर आगे बढ़ता है। जातक को लघु उद्योग, व्यवसाय से लाभ होता है। जातक दीर्घजीवी होता है।

दृष्टि—एकादश स्थान में स्थित शनि की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि), पंचम भाव (तुलाराशि) एवं अपने स्वयं के घर मकरराशि (अष्टमभाव) पर होगी। फलतः ऐसे जातक को परिश्रम अनुरूप फल नहीं मिलता संतति के भाग्योदय में बाधा, जीवन में उन्नति आसानी से नहीं होगी।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी.

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—यहां सूर्य के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के तुल्य। यहां एकादश स्थान मे दोनों ग्रह मेषराशि राशि मे होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्नभाव (मिथुनराशि) पंचमभाव (तुला राशि) एवं अष्टमभाव (मकरराशि) को देखेंगे। सूर्य यहां उच्च का होगा शनि नीच का 'नीचभंगराजयोग' बनाएगा फलतः एसा जातक विद्यावान होगा। ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा तथा प्रत्येक कार्य में सफल होगा। परंतु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद ही होगा
2. **शनि+चंद्र**—जातक धनी होगा। व्यापार से लाभ रहेगा।
3. **शनि+मंगल**—यहां मंगल के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक बड़ी भूमि, फैक्ट्री, कारखाने का स्वामी होगा।
4. **शनि+बुध**—परिश्रम का लाभ बराबर मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**—जातक को दो प्रकार के धंधों से लाभ होगा
6. **शनि+शुक्र**—जातक विद्यावान् होगा।
7. **शनि+राहु**—व्यापार में नुकसान होगा
8. **शनि+केतु**—व्यापार के लाभांश में रुकावट महसूस होगी.

मिथुनलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में
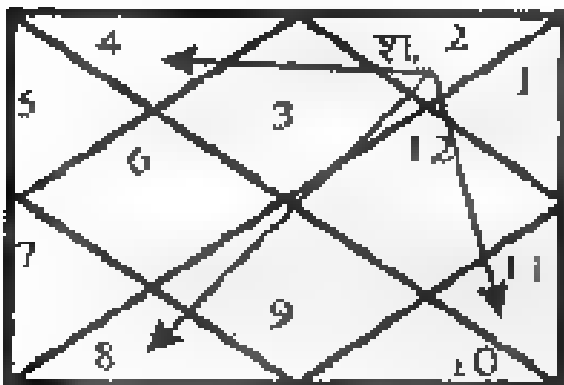
4 श. 2 1 5 3 6 12 7 11 9 8 10

मिथुनलग्न में शनि अष्टमेश व नवमेश है। त्रिकोण का अधिपति होने से शनि योगकारक होकर भी पूर्ण योगफलप्रद नहीं है पर अष्टमेश होने से शनि पापत्व के दोष से मुक्त नहीं होगा। अष्टमेश के पापत्व से शनि जिस भाव में होगा उसकी कुछ हानि नहीं पर, शनि की दृष्टि जिस भाव पर होगी, उसकी हानि अधिक होगी। यहां शनि वृष (मित्र) राशि में है। शनि

की इस स्थिति मे '**भाग्यभग योग**' बनता है परतु अष्टमेश का व्ययस्थान में जाने से '**सरल नामक विपरीत राजयोग**' भी बनता है। फलस्वरूप जातक भाग्यवान, धनी एव प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है, पर जीवन मे इन सब वस्तुओ की प्राप्ति हेतु संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। लाल किताब के अनुसार ऐसा व्यक्ति रुपयों का गुलाम नहीं होता। जमा पूंजी को एक मिनट में खर्च करते हुए विचार नहीं करता।

दृष्टि–द्वादशस्थ शनि की दृष्टि धनभाव (कर्कराशि), छठे भाव (वृश्चिक राशि) एव अपने ही घर कुभ राशि (भाग्यस्थान) पर होगी।

निशानी–जातक को नीद कम आएगी एव अतिम अवस्था (मृत्यु) दुःखदाई होती है। इसके लिए शुक्र की स्थित को देखना भी जरूरी है

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में खर्च बढ़ेगा। भाग्योदय भी होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां द्वादश स्थान मे दोनों ग्रह वृष राशि मे होंगे। यहा बैठकर दोनो ग्रह धनभाव (कर्कराशि) छठे स्थान (तुलाराशि) एव भाग्यस्थान (कुभराशि) को देखेंगे। फलत: जातक भाग्यशाली तो होगा पर पराक्रमभग होगा। धन एव इच्छित सफलता को प्राप्त करने हेतु संघर्ष बना रहेगा। जातक का भाग्योदय पिता के मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–बढ़े चढे खर्चे से कर्ज की स्थिति बन सकती है।
3. **शनि+मंगल** जातक गुप्त शत्रुओं के कारण परेशान रहेगा।
4. **शनि+बुध**–परिश्रम-पुरुषार्थ का यथेष्ट लाभ नही मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–गृहस्थ सुख में बाधा। ससुराल में धोखा सभव
6. **शनि+शुक्र**–जातक नित नई स्पर्शा का सेवन (सभोग) करेगा।
7. **शनि+राहु** यात्रा में कष्ट, गुप्त बीमारी सभव जातक दार्शनिक होगा।
8. **शनि+केतु**–मानसिक चिंता व तनाव रहेगा।

❑❑❑

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति

मिथुनलग्न मे राहु की स्थिति प्रथम स्थान में
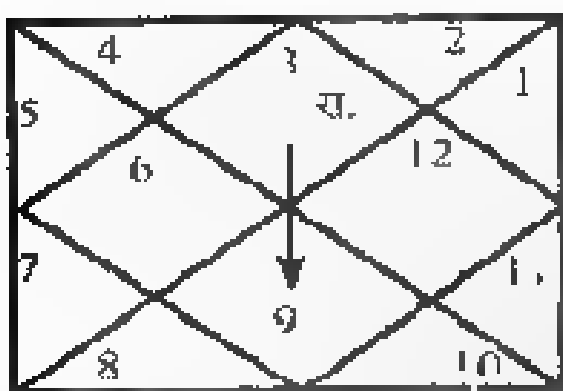
मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत मे शुभफल देता है। प्रथम भावगत राहु मिथुन राशि मे है जो कि राहु की स्वराशि है। कुछ विद्वान इसे राहु की उच्च राशि भी कहते हैं। ऐसा जातक तीव्र बुद्धि वाला, कोई भी निर्णय सोच-समझकर करने वाला, स्वतंत्र विचारों वाला, धैर्यवान्, स्नेहशील एवं समझौतावादी दृष्टिकोण वाला होता है। ऐसा जातक वैभवशाली जीवन जीता है तथा व्यापार व नौकरी में बराबर उन्नति प्राप्त करता रहता है।

दृष्टि—राहु की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होने से गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ न्यूनता महसूस होगी।

निशानी—लाल किताब वालों ने इस राहु को '**पीढ़ी संदी**' कहा है ऐसा व्यक्ति धनवान होता है तथा खर्चा भी खूब करता है।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी दशा अच्छा फल देगी

राहु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के संग सूर्य होने से व्यक्ति उदण्ड होता है।
2. **राहु+चंद्र**—जातक हठी व अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा
3. **राहु+मंगल**—राहु के संग मगल होने से व्यक्ति अभद्र व्यवहार करने वाला उदण्ड होता है।
4. **राहु+बुध**—जातक हठी, जिद्दी किंतु बुद्धिमान होता है।

5. **राहु+गुरु**—यहा दोंनो ग्रह प्रथम स्थान मे मिथुन राशि में है। यहा बृहस्पति अपनी मित्रराशि एव अपनी उच्चराशि में है 'चाण्डालयोग' के कारण जातक हठी होगा तथा परिवार कुटुम्ब वालों के प्रति लगाव नही रखेगा
6. **राहु+शुक्र**—जातक के कार्य मं अस्थिरता रहेगी।
7. **राहु+शनि**—जीवन में सघर्ष की स्थिति रहेगी।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में
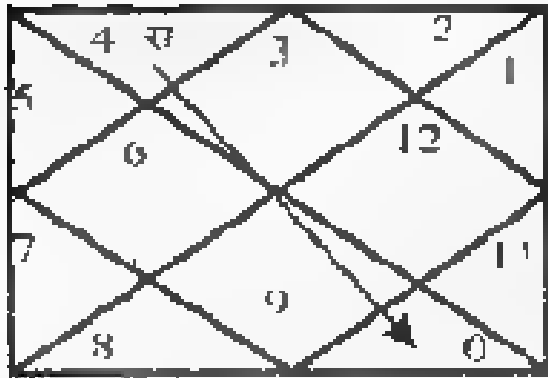
मिथुनलग्न मे राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत मे शुभफल देता है। यहा द्वितीय स्थान में राहु कर्क (शत्रु) राशि मे है। ऐसा जातक धन कमाता है। पर धन की बरकत नहीं होती पैसे की तगी बराबर बनी रहती है। ऐसा जातक की वाणी अनियंत्रित होती है। कुटुम्ब मे भी प्रेम-स्नेह संबल की कमी रहती है।

दृष्टि—राहु की दृष्टि आठवें स्थान (मकर राशि) पर होगी यह राहु दीर्घायु में कमी कराता है।

निशानी: लाल किताब वालो ने राहु को '**राजगुरु के मातहत**' की संज्ञा दी है जातक प्रभावशाली होता है पर अमीरी गरीबी की छाया में पलकर बड़ा होता है

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा में धन हानि की सभावना, परिवार मे विवाद एव गलत निर्णय के दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—की युति में जातक अहकारी होता है। वाणी मे घमण्ड ज्यादा होता है तथा मित्रों के प्रति उपेक्षा भाव बना रहता है।
2. **राहु+चंद्र**—जातक द्वारा उपार्जित धन खर्च होता चला जाएगा।
3. **राहु+मंगल**—की युति से जातक कलहकारी होगा, वाणी लड़ाकू होगी।
4. **राहु+बुध**—धन के घड़े में छेद के कारण आर्थिक संघर्ष रहेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहा द्वितीय स्थान में दोनो ग्रह कर्क राशि मे है। यहा बृहस्पति अपनी उच्चराशि एव अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण धन के प्रति लापरवाह होगा। जहां जरूरत नहीं होगी वहा रुपया खर्च कर देगा।
6. **राहु+शुक्र**—धन की अपव्यय अधिक होगा।

7. **राहु+शनि**—धन संग्रह में बाधा रहेगी।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में
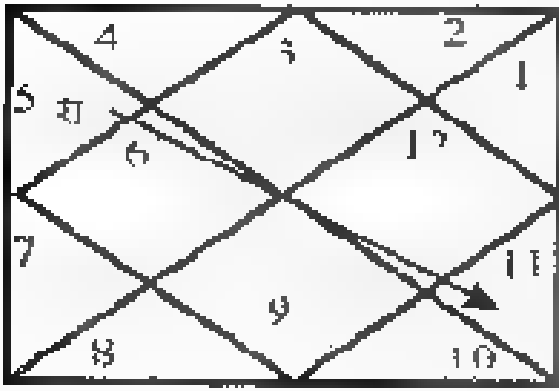
मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है यहा तीसरे स्थान मे राहु सिंह (शत्रु) राशि मे होगा। तीसरे भाव में राहु की स्थिति को शास्त्रकारों ने राजयोग कारक माना है ऐसा जातक महान्, पराक्रमी, धार्मिक, हठी एवं महत्वकांक्षी होता है, ऐसे व्यक्ति के पास जायदाद अवश्य होती है। जातक शरण में आउ व्यक्ति की भरपूर मदद करता है। उसके हौसले बुलंद होते हैं पर भाईयों कुटम्बीजनों से अपेक्षित सहयोग नहीं मिलता। भाईयों से मनमुटाव की स्थिति रहती है, पर जातक की व्यक्तिगत उन्नति शानदार होती है।

दृष्टि—तृतीयस्थ राहु की दृष्टि भाग्यभवन (कुंभराशि) पर होगी। फलतः भाग्य में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी।

निशानी—लाल किताब वालों ने इस राहु को '**अंगरक्षक**' की संज्ञा दी है। ऐसा व्यक्ति दिलेर होता है तथा मुसीबत में घिरे व्यक्तियो की मदद करता है। जातक के सपने कई बार सच होते हैं।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा मे पराक्रम बढ़ेगा पर विरोधियो का भी सामना करना पड़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—कुटुम्ब सुख में हानि, कलह, विवाद रहेगा
2. **राहु+चंद्र** यहा राहु संग चंद्रमा होने से जातक का मन मस्तिष्क अशांत रहेगा। जातक एकांत प्रिय होगा। भाईयों से अनबन रहेगी।
3. **राहु+मंगल**—परिवार में विग्रह होगा।
4. **राहु+बुध**—मित्रों मे विवाद, भाईयों मे विग्रह रहेगा
5. **राहु+गुरु** यहां तृतीयस्थ दोनों ग्रह सिंहराशि में है। राहु अपनी शत्रुराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण भाईयो से अनबन एवं भागीदारों में मनमुटाव रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—परिवार में मनमुटाव रहेगा।
7. **राहु+शनि**—भाईयों से अनबन रहेगी। कोर्ट मे विवाद संभव है।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
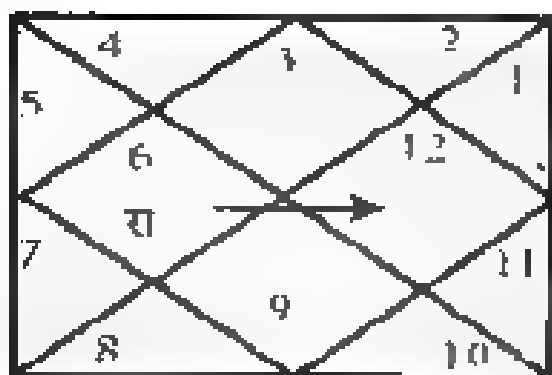
मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां चतुर्थ स्थान में राहु कन्या (स्व) राशि में है। ऐसे व्यक्ति को मातृसुख में न्यूनता रहती है। भौतिक ऐश्वर्य, सुख समाधनों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। मानसिक अशान्ति, अस्थिरता एवं अज्ञात भय, अशुभ की आशंका बनी रहेगी ऐसे व्यक्ति को पुराने मकान में रहना पड़ता है तथा प्रायः मकान में वास्तुदोष होता है। जातक को समाज में अपयश भी मिलता है।

दृष्टि—चतुर्थस्थ राहु की दृष्टि दशमभाव (मीनराशि) पर होगी। फलतः जातक का राजा (सरकार) से सम्मान होगा।

निशानी—लालकिताब वालो इस राहु को 'धर्मी' कहा है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक व परोपकारी होता है, भाग्यपथ से दौलत अर्जित करता है।

दशा-राहु की दशा अंतर्दशा में आर्थिक, सामाजिक एवं व्यवसायिक उन्नति होगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. राहु+सूर्य—माता की मृत्यु अल्प आयु में संभव।
2. राहु चंद्र—माता को कष्ट अथवा छोटी उम्र में माता की मृत्यु संभव है
3. राहु+मंगल—मंगल की युति से शिक्षा अधूरी रहेगी।
4. राहु+बुध—माता एवं बहन का सुख कमजोर रहेगा।
5. राहु+गुरु—यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण माता के सुख में कमी रहेगी। सांसारिक सुखों में न्यूनता रहेगी
6. राहु+शुक्र—यहां राहु की युति से शुक्र चतुर्थ व पंचम दोनों भाव के शुभ फल नष्ट करेगा।
7. राहु+शनि—वाहन दुर्घटना का योग बनता है

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में

मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां पंचम स्थान में राहु, तुला (मित्र) राशि में है। यह इतना बुरा नहीं होता।
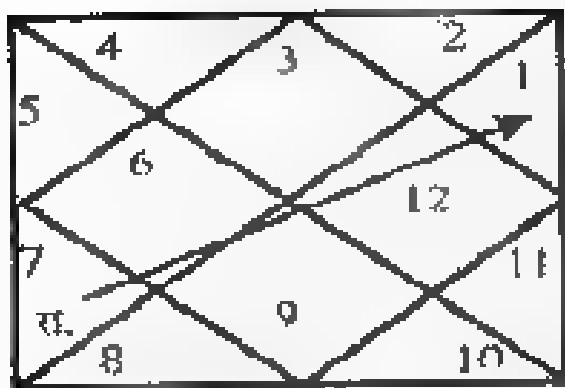
यह पंचम भाव के फलों में वृद्धि करता है। परंतु शुक्र की बलवत्ता (स्थिति) पर ध्यान देना जरूरी है। जातक को पुत्र सुख विलम्ब से मिलता है। जातक को व्यर्थ के वाद-विवाद का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि–पचमस्थ राहु की दृष्टि एकादश भाव (मेषराशि) पर होगी। फलतः व्यापार-व्यवसाय में प्रारंभिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को '**शरारती**' कहा है। यह विद्या में बाधा डालता है। गर्भ में संतान को नष्ट करता है।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेंगे। मनोवांछित कार्य में रुकावट महसूस होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य निराशा उत्पन्न करता है। शिक्षा का अभाव सभव है। अथवा शिक्षा का यथेष्ट लाभ जीवन मे नहीं मिलेगा। संतान व कुटुम्ब सुख में बाधा
2. **राहु+चंद्र**–पुत्र सतान प्राप्ति मे बाधा सभव।
3. **राहु+मंगल**–यहां मगल की युति से शिक्षा अधूरी रहेगी।
4. **राहु+बुध**–एक दो सतति की अकाल मृत्यु सभव है। विद्या में बाधा।
5. **राहु+गुरु**–यहां पचमभाव में दोनों ग्रह तुलाराशि में है। 'चाण्डालयोग' के कारण पुत्र संतति विलम्ब में होगी विद्यायोग में अनपेक्षित बाधा सभव
6. **राहु+शुक्र**–विद्या एवं पुत्र संतति मे बाधा।
7. **राहु+शनि**–विद्या में रुकावट, कन्या सतति ज्यादा

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति षष्ट्म स्थान में
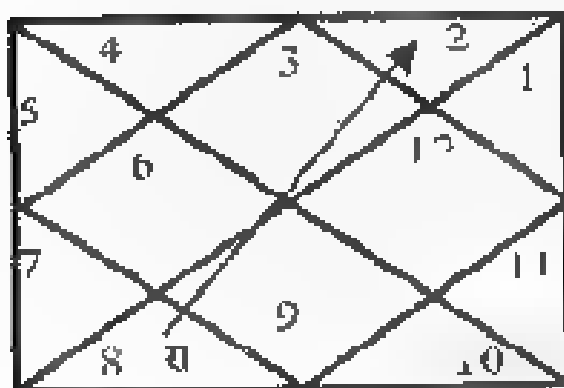
मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां छठे स्थान में राहु वृश्चिक राशि मे नीच का होगा शास्त्रकारों ने छठे राहु को राजयोगकारक माना है, क्योंकि दुष्टग्रह उपचय स्थान में शुभफल देते हैं फलतः

यहा जातक की व्यक्तिगत उन्नति मे सहायक है। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होता है। ऐसे व्यक्ति को सुख ऐश्वर्य के सभी साधन सहज में उपलब्ध होते हैं। व्यक्ति हमेशा उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता रहेगा

दृष्टि–षष्ट भावगत राहु की दृष्टि व्ययभाव (वृषराशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को '**फांसी काटने वाला मददगार हाथी**' कहा है। ऐसे व्यक्ति को कोई भी बाधा अधिक समय तक पीड़ित नहीं कर सकती।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जहां देह कष्ट, मानसिक संताप या रोगोत्पत्ति का सभावना बनी रहेगी वही जातक की उन्नति भी होगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–निडर किंतु रूखे स्वभाव का व्यक्ति होगा।
2. **राहु+चंद्र**–यहा राहु मृत्यु तुल्य कष्ट देगा।
3. **राहु+मंगल**–यहां राहु+मगल की युति जातक **को अतिपराक्रमी** बनाएगी। जातक पुलिस, फौज, प्रशासन के कार्यों में विशेष रुप से सफल होगा।
4. **राहु+बुध**–शत्रु परास्त होने से बाधा पहुंचाने की चेष्टा करेंगे।
5. **राहु+गुरु**–यहा छठे स्थान मे दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में है। चाण्डालयोग के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृहस्थ सुख मे निश्चित रूप से बाधा पहुचेगी।
6. **राहु+शुक्र** विद्या, पुत्र संतति सुख में बाधा।
7. **राहु+शनि**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में

4	3	2
5	6	12	1
7	रा. 9	11
8		10
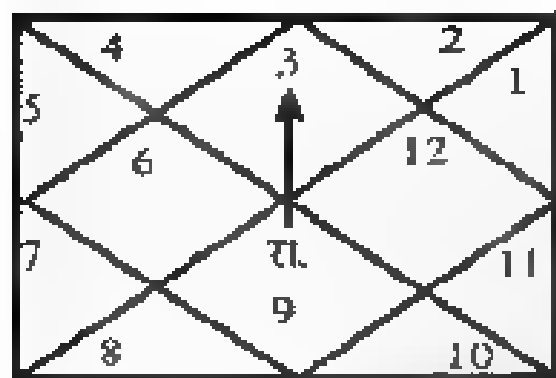
मिथुनलग्न मे राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत मे शुभफल देता है। सप्तम स्थान मे राहु धनु (शत्रु) राशि में है। राहु की यह अवस्था सप्तम भाव के लिए शुभ नहीं कही गई। जातक के गृहस्थ सुख में कमी रहेगी। सभवतः प्रथम विवाह का सुख नहीं। सम्भवतः दूसरे विवाह से सुख मिलता है अथवा 42 वर्ष की आयु के बाद गृहस्थ सुख जमता है यहां सप्तमेश बृहस्पति की स्थित का अवलोकन करके निर्णय लेना चाहिए।

दृष्टि—राहु की दृष्टि लग्न स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

निशानी—लाल किताब वालों ने इस राहु को 'दौलत का धुआं निकालने वाला चाण्डाल' कहा है। शीघ्र विवाह होना, जीवन साथी के लिए हानिप्रद रहता है

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा में गृहस्थ सुख में बाधक है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—वैवाहिक सुख में बाधा, विवाद, बिछोद की संभावना।
2. **राहु+चंद्र**—गृहस्थ सुख में व्यवधान, द्विभार्यायोग बनता है।
3. **राहु+मंगल**—पत्नी से विवाद, कलह, बिछोह संभव
4. **राहु+बुध**—गृहस्थ सुख में बाधा द्विभार्या योग सभव
5. **राहु+गुरु**—यहा दोनो ग्रह धनुराशि मे है। जातक का ससुराल प्रभावशाली व सपन्न होगा। यहां 'चाण्डालयोग' के कारण पति-पत्नी के मध्य अहम् का टकराव होता रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी।
7. **राहु+शनि**—विवाद सुख में कमी, द्विभार्यायोग बनता है

मिथुनलग्न मे राहु की स्थिति अष्टम स्थान में

4 3 2 1 5 6 12 7 11 9 8 रा. 10
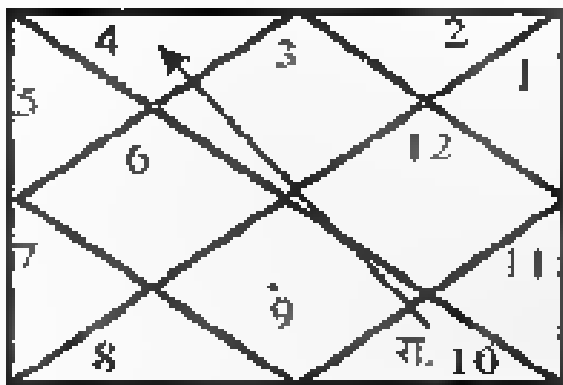
मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहा अष्टम स्थान में राहु मकर (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक मे चिंतन की शक्ति गजब की होती है। इनका दैहिक कष्ट व दुर्घटना का भय रहेगा। गुप्त शत्रु भी परेशान करेंगे। लोगों की भलाई मे बुराई का फल मिलेगा।

दृष्टि—अष्टम भावगत राहु की दृष्टि धनभाव (कर्कराशि) पर होगी फलतः धन की हानि एवं पारिवारिक कष्ट होगे

निशानी—लाल किताब वालों ने इस राहु को **'कड़वा धुआ'** कहा है। ऐसा व्यक्ति अच्छे परिवार में जन्म लेकर भी अपनी करतूतों के कारण बदनाम होता है।

उपाय—इस राहु को नेक करने के लिए व्यक्ति को खोटा सिक्का, 43 शनिवार तक दरिया में बहाना चाहिए या राहु के जाप कराने चाहिए।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा में मानसिक, दैहिक व आर्थिक कष्ट अनुभूति होती है

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—जातक को लम्बी बीमारी दुर्घटना सभव है।
2. **राहु+चंद्र**—जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा, मृत्युभय रहेगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु मगल की युति में जनेन्द्रिय मे रोग होते हैं
4. **राहु+बुध**—अचानक दुर्घटना सभव, आयु में बाधा।
5. **राहु+गुरु**—यहा दोनों ग्रह मकर राशि में है 'चाण्डालयोग' के कारण विलम्ब विवाह योग अथवा गृहस्थ सुख में निश्चित बाधा के योग बनते है। यहा द्विमार्गयोग भी संभव है.
6. **राहु+शुक्र**—गुप्त बीमारी एव अचानक दुर्घटना सभव।
7. **राहु+शनि**—आयु में रुकावट, दुर्घटना सभव।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में
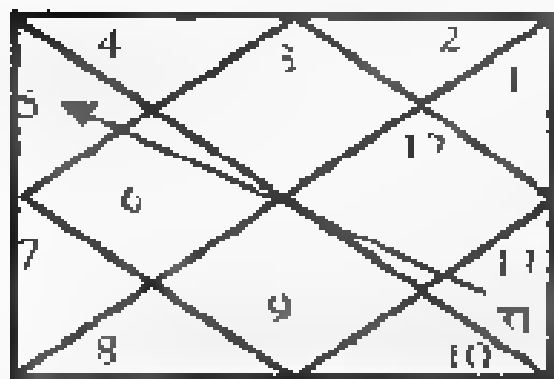
मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां नवम स्थान में राहु कुंभ (मित्र) राशि में है। यह राहु व्यक्ति को राजातुल्य वैभव देता है व्यक्ति शौर्य पराक्रम, बल बुद्धि प्रतिष्ठा में किसी से कम नहीं होता. यद्यपि जातक के जीवन में अनेक उतार चढ़ाव आते है तथापि अक्कड़ किसी रहीस से कम नहीं होती

दृष्टि—नवम भावगत राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक को कुटुम्ब व भाईयों का सुख-सहयोग मिलेगा।

निशानी—लाल किताब वालों ने इस राहु को '**पागलों का सरताज हकीम**' कहा है। ऐसा व्यक्ति स्वप्रयासों से बिगडे एव उलझे हुए जटिल कार्यों से सुलझा देते है।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—भाग्य में बाधा, भौतिक सुखों की हानि।
2. **राहु+चंद्र**—भाग्य में रुकावट पिता का सुख कमजोर रहेगा।

3. **राहु+मंगल**–जातक धनवान होगा पर भाग्योदय में रुकावटें बहुत आएगी।

4. **राहु+बुध**–राज्य सरकार एवं राजनीति मे अप्रिय घटना हो सकती है।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। जातक का राजनैतिक वर्चस्व तो रहेगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण पिता से अनबन रहेगी अथवा राजनीति मे पद प्राप्ति के अवसर पर धोखा मिलेगा।

6. **राहु+शुक्र**–भाग्य में लगातार बाधा से जातक परेशान हो जाएगा।

7. **राहु+शनि**–भाग्य में बिगाड़, किस्मत बनती बनती बिगड़ जाएगी

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में

4	3	2	1
5	6	12 रा.	
7	9	11	
8		10	
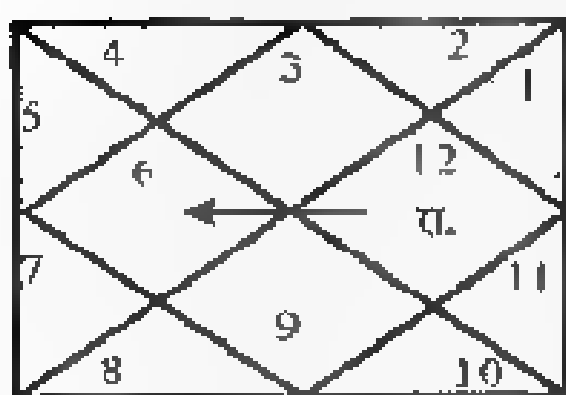
मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है। यहां दशम स्थान में राहु मीन (शत्रु) राशि मे होगा। ऐसा व्यक्ति सामाजिक प्राणी होता है। आध्यात्मिक एवं धार्मिक कार्यों को लेकर विभिन्न संगठनो से जुड़ा रहता है व्यक्ति समाज के पुनर्निर्माण में कुरीतियों को दूर करने में रुचि रखते हैं। विरोधियों द्वारा उत्पन्न बाधाओं को दूर करने में सक्षम होते हैं। ऐसे जातक कूट राजनीतिज्ञ होते हैं तथा हठी व स्वाभिमानी होते हैं।

दृष्टि–दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थभाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक के पास अनेक वाहन होते हैं। उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति सहज में हो जाती है।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को **'साप की मणि'** कहा है। यह जातक को दौलतमंद बनाता है। व्यक्ति खतरों से खेलता है

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक वैभव, उन्नति को प्राप्त करता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–संघर्ष के उपरान्त सफलता निश्चित है

2. **राहु+चंद्र**–सरकारी क्षेत्र में धोखा होगा।

3. **राहु+मंगल**–जातक को राज्यपक्ष से हानि होगी।

4. **राहु+बुध**–व्यापार में, शुद्ध मुनाफे में घाटा होगा।

5. **राहु+गुरु**–यहा दोनों ग्रह मीन राशि में है। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। परंतु 'चांडालयोग' के कारण राजा (सरकार) में दण्ड प्राप्ति संभव है। पिता की सम्पत्ति मे विवाद रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राज्यपक्ष में बाधा, सरकारी परेशानी रहेगी

7. **राहु+शनि**–राजनीति में धोखा मिलेगा

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में

4 3 2 1 रा 5 6 12 7 11 9 8 10
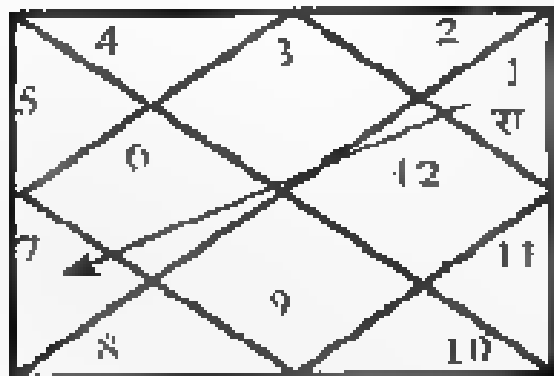
मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अतः हर हालत में शुभफल देता है यहां एकादश स्थान में राहु मेष (सम) राशि मे है। शास्त्रकारों ने एकादश स्थान में राहु को राजयोगकारक माना है। ऐसे व्यक्ति अपने साहस, पराक्रम एवं संघर्ष करने की लगातार शक्ति के कारण उन्नति के शिखर को स्पर्श कर लेते हैं ऐसे जातक प्रायः लड़ाकू प्रवृत्ति के होते हैं।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित राहु की दृष्टि पंचम भाव (तुलाराशि) पर होने से यह गर्भपात कराता है। तथा विद्या प्राप्ति के एकाध बार रुकावट का संकेत देता है।

निशानी–लाल किताब वालों ने इस राहु को कष्टकारक माना है जिसके फलस्वरूप आयु में बड़े भाई बहनों को कष्ट होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में संघर्षकारी स्थितियों को उत्पन्न करेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–बड़े भाई एवं पिता को सुख में हानि। सन्तति सुख मे हानि संभव।
2. **राहु+चंद्र**–जातक हिंसक स्वभाव का होगा। पागलपन के दौरे भी आ सकते हैं।
3. **राहु+मंगल**–यदि मंगल साथ है तो उद्योग या फैक्ट्री में एक बार रुकावट जरूर आएगी।
4. **राहु+बुध**–व्यापार में हानि, यात्रा में संकट।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मेषराशि में है। जातक पत्नी एवं पिता पक्ष में सुखी होगा परंतु 'चाण्डालयोग' के कारण व्यापार व्यवसाय मे अपेक्षित लाभ नहीं होगा।
6. **राहु+शुक्र**–व्यापार मे गुप्त नुकसान होगा।
7. **राहु+शनि**–व्यापार में नुकसान होगा।

मिथुनलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में
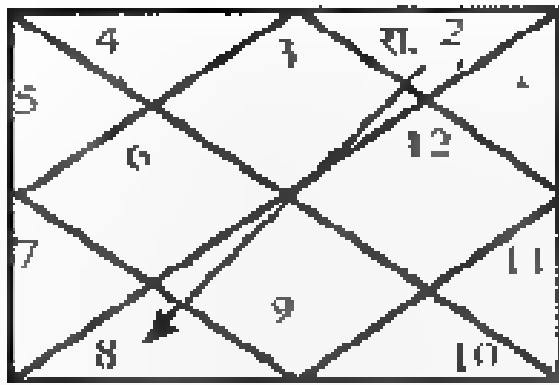
मिथुनलग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, अत: हर हालत में शुभफल देता है। यहां द्वादश स्थान में राहु वृष (उच्च) राशि में है। ऐसा जातक कठोर परिश्रमी, साहसी व कर्मठ होता है। ऐसे जातक घुमक्कड, रसिक एवं विलासी प्रवृत्ति के होते हैं। ऐसे व्यक्ति कार्य कुछ करते हैं तथा परिणाम कुछ (भिन्न) पाता है। बिना सोच समझ कर (Unplanned) कार्य करने से ये स्वयं कई बार मुसीबत मे उलझ जाते हैं।

दृष्टि–द्वादश भाव गत उच्च के राहु की दृष्टि छठे भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक अपने रोग ऋण व शत्रुओं का नाश करने मे सक्षम समर्थ होता है।

निशानी–लाल किताब वालो ने इस राहु को '**शेख चिल्ली**' की सज्ञा दी है। ऐसे जातक को दौलत ज्यादा समय तक साथ नहीं देती।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा मे यात्राए होगी तथा फालतू के खर्चे बढ़ जाएगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–ऐसा व्यक्ति जल जाएगा या राजा से दंडित होगा। शैया सुख की हानि।
2. **राहु+चंद्र**–ऐसा व्यक्ति कर्जदार (ऋणी) होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मगल होने से काम-वासना अधिक होगी।
4. **राहु+बुध**–व्यापार में हानि, यात्रा में संकट।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह वृषराशि में है। यहा 'चाडालयोग' के कारण विलम्ब विवाह अथवा गृह सुख में बाधा होने के निश्चित योग बनते हैं। जातक जन्म स्थान छोड़कर परदेश बस जाएगा। ऐसा व्यक्ति आध्यात्मिक व दार्शनिक होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र होने से व्यक्ति कामी हो जाता तथा नैतिक-अनैतिक तरीके से अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है। यात्रा में धन का अपव्यय होगा।
7. **राहु+शनि**–व्यक्ति दार्शनिक होगा। यात्रा में कष्ट गुप्त बीमारी सभव।

□□□

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति प्रथम भाव में
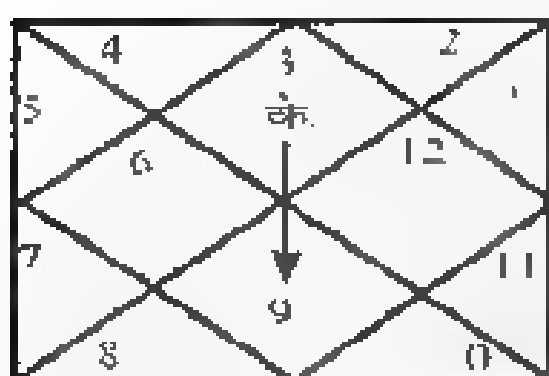
4
3 के.
2
1
5
6
12
7
11
9
8
10

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। केतु प्रथम स्थान में मिथुन (नीच) राशि में है। केतु के यहां बैठने से व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति होती है ऐसा व्यक्ति शक्तिशाली होता है। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा परंतु यदि सप्तमेश बृहस्पति की स्थिति अनुकूल न हो तो **'द्विभार्यायोग'** बनता है।

दृष्टि–केतु की दृष्टि सप्तम भाव (धनु राशि) पर होगी फलतः गृहस्थ सुख में बाधा, थोड़ी कमी रहेगी।

निशानी–जातक को उच्च स्थान से गिरने का भय रहता है।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा पर थोड़ा संघर्ष भी रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–जातक क्रोधी होगी
2. **केतु+सूर्य**–जातक की पत्नी सुंदर होगी।
3. **केतु+मंगल**–जातक का व्यक्तित्व संघर्षशील होगा।
4. **केतु+बुध**–ऐसा जातक कुतर्की होगा।
5. **केतु+गुरु**–ऐसा जातक धर्मध्वज होगा।

6 **केतु+शुक्र**–जातक का स्वभाव रंगीन एवं अस्थिर रहेगा।

7 **केतु+शनि**–जातक मानसिक रुप से उद्विग्न रहेगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय भाव में
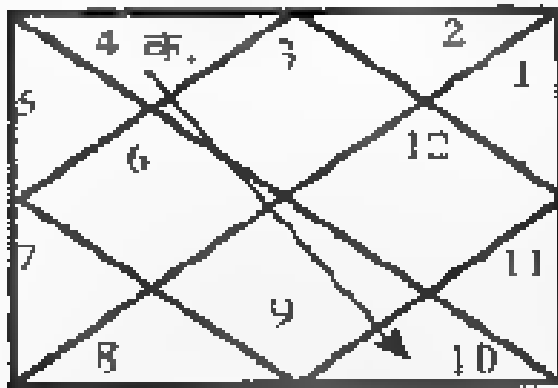
मिथुनलग्न मे केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां द्वितीय स्थान में केतु कर्क (शत्रु) राशि में है दूसरे घर में केतु को लालकिताब वालों ने 'अच्छा हुक्मराज' की संज्ञा दी है। ऐसे व्यक्ति को किस्मत में उतार-चढाव तो आता है पर अतत: शुभ फल मिलता है ऐसे व्यक्ति वाचाल होते है तथा उच्च पद को प्राप्ति इन्हें सरलता से हो जाती है।

दृष्टि केतु की दृष्टि यहां अष्टम भाव (मकरराशि) पर होगी, फलत: गुप्त रोग या बीमारी का भय रहेगा।

निशानी–धन एकत्रित करने के मामले में बहुत संघर्ष करना पड़ता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा धनसंग्रह हेतु सघर्ष की द्योतक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–कुटुम्ब एव धन सबध में हानि
2. **केतु+सूर्य**– जातक के पास धनसग्रह-कठिनता से होगी.
3. **केतु+मंगल**–कुटुम्ब में विवाद, धनसंग्रह में तकलीफ होगी।
4. **केतु+बुध**–धन के अधिक खर्च से मानसिक चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–जातक धर्मगुरु का धार्मिक वक्ता होगा।
6. **केतु+शुक्र**–धन खर्च के प्रति चिता रहेगी।
7. **केतु+शनि**–धन एकत्रित नहीं हो पाएगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति तृतीय भाव में

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एव उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने सामने रहते हैं। यहा तृतीय स्थान में केतु सिंह (शत्रु)
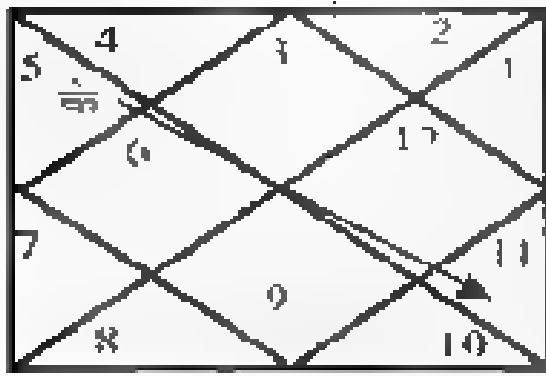
राशि मे है। तीसरे घर मे केतु व्यक्ति के यश की कीर्ति पताका का द्योतक है। ऐसे व्यक्ति को दैविक सहायता तो मिलती रहती है पर जीवन में व्यर्थ की उलझने बहुत आएगी। जातक पराक्रमी होगा एवं राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ केतु की दृष्टि सातवें स्थान (कुंभ राशि) पर होगी।

निशानी—जातक के जीवन में निरतर यात्रा की स्थिति बनी रहती है।

दशा—केतु की दशा-अतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—पराक्रम में कमी मित्र पीठ पीछे निंदा करेंगे।
2. **केतु+सूर्य**—मित्र पीठ पीछे निंदा करेंगे।
3. **केतु+मंगल**—कीर्ति उत्तम पर मित्रो से मनमुटाव रहेगा।
4. **केतु+बुध**—ऐसे जातक को मित्र ऐनवक्त पर धोखा देंगे।
5. **केतु+गुरु**—जातक धार्मिक पुस्तकों का लेखक, प्रकाशक या सम्पादक होगा।
6. **केतु+शुक्र**—मित्रो में असंतोष रहेगा।
7. **केतु+शनि**—मित्रों में मनमुटाव रहेगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ भाव में
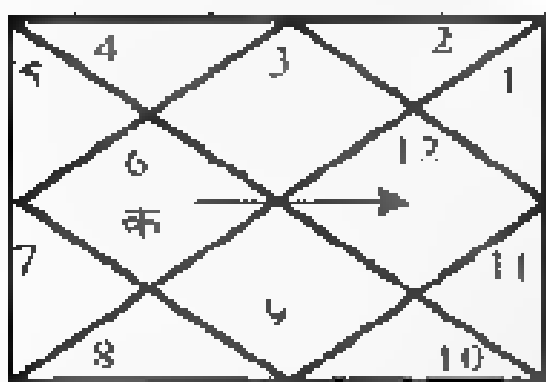
मिथुनलग्न म केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एव उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनो छाया ग्रह आमने सामने रहते है। यहा चतुर्थभाव गत केतु कन्या (मूल त्रिकोण) राशि मे है, यहा केतु शुभफल देगा। लाल किताब वालो ने चौथे घर मे केतु को 'डराने वाला कुत्ता' जो काटता नही। अशुभ की आशका बनी रहेगी पर जीवन में अशुभफल मिलेगे नहीं। दौलत व आयु के लिए केतु की यह स्थिति ठीक है.

दृष्टि—चतुर्थ भाव गत केन्द्र की दृष्टि दशमभाव (मीन राशि) पर होगी जातक को भौतिक सुख राजनैतिक पद की प्राप्ति होगी।

निशानी—जातक की आयु के 36 वर्ष बाद पुत्र सुख की प्राप्ति होगी।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा में भौतिक उपलब्धियां मिलेंगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध--

1. **केतु+चंद्र**—भौतिक सुखों की प्राप्ति में संघर्ष बना रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**—वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा। माता की सम्पत्ति में विवाद संभव है।
3. **केतु+मंगल**—माता बीमार रहेगी।
4. **केतु+बुध**—माता की सम्पत्ति हाथ नहीं लगेगी। भौतिक सुखों में बाधा महसूस होगी।
5. **केतु+गुरु**—जातक किसी धार्मिक ट्रस्ट या धर्मस्थान का प्रधान होगा।
6. **केतु+शुक्र**—माता बीमार रहेगी।
7. **केतु+शनि**—मातृ सुख कमजोर रहेगा।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति पंचम भाव में
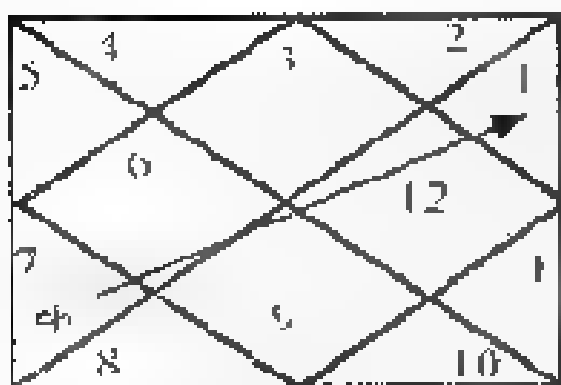
मिथुनलग्न से केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां पंचम स्थान में केतु तुला (सम) राशि में है लालकिताब वालों ने पांचवें घर में केतु को '**रक्षक**' कहा है। यह संतति और विद्या दोनों के तेजस्विता की रक्षा करता है। प्रारम्भिक अवरोधों के बाद संतान और विद्या दोनों की प्राप्ति होती है। जातक को अपने जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। कोई भी वस्तु आसानी से नहीं मिलती।

दृष्टि—पंचम भाव में स्थित केतु की दृष्टि लाभ भाव (मेषराशि) पर होगी। फलत: जातक को व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा थोड़े से संघर्ष के बाद पूर्ण सफलता की सूचक है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–गर्भपात का भय विद्या में रुकावट संभव।
2. **केतु+सूर्य**–एकाध गर्भपात संभव।
3. **केतु+मंगल**–गर्भक्षय एवं रुकावट के साथ विद्या का संकेत मिलता है।
4. **केतु+बुध**–विद्या पूरी होगी पर संघर्ष के साथ।
5. **केतु+गुरु**–धार्मिक क्रिया करने पर जातक तेजस्वी संतति का पिता होगा।
6. **केतु+शुक्र** विलम्ब संतति या संघर्ष के साथ विद्या प्राप्ति
7. **केतु+शनि**–स्त्री संतति की बाहुल्यता, एकाध गर्भपात संभव।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति षष्ट्म भाव में
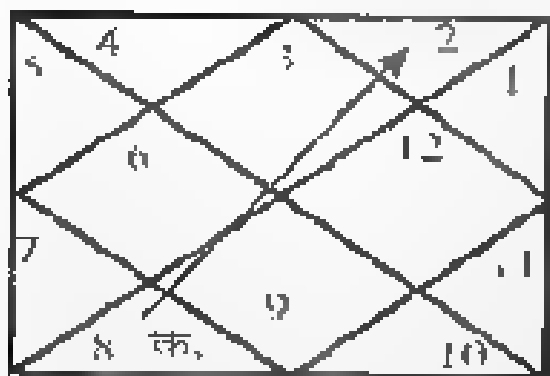
मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने सामने रहते हैं। यहां छठे स्थान में केतु वृश्चिक (उच्च) राशि में है। लाल किताब वालों ने छठे घर में बैठे केतु को 'शेर के समान खूंखार कुत्ता' कहा है। ऐसे जातक घुमक्कड व रसिक मिजाज के होते हुए भी अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होते हैं।

दृष्टि–छठे भावगत केतु की दृष्टि व्ययभाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–यदि शुक्र कमजोर हो तो गृहस्थ व संतान सुख में बाधा आएगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में परेशानी बढ़ेगी पर शत्रु परास्त होंगे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–शत्रुओं से भय बना रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–जातक को लम्बी बीमारी होगी।
3. **केतु+मंगल**–शत्रुओं का प्रकोप रहेगा
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध शुभ फल देगा। पर गुप्त शत्रुओं से चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–नीति वाक्यों एवं धैर्य के माध्यम से जातक अपने शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।

6. **केतु+शुक्र**—शल्य चिकित्सा योग गुप्त बीमारी रहेगी।
7. **केतु+शनि**—गुप्त शत्रु या रोग जातक को परेशान करेंगे।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति सप्तम भाव में
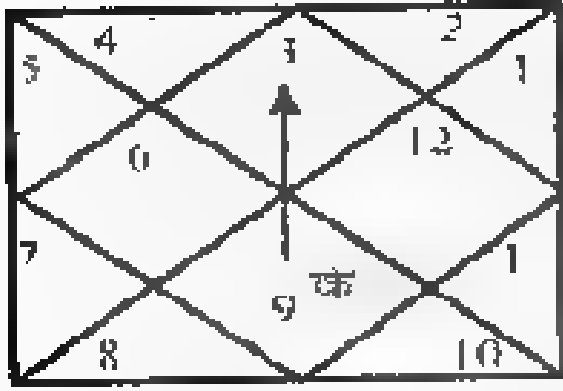
मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने सामने रहते हैं, यहां सप्तम स्थान में केतु धनु अपनी स्वराशि में होने से स्वगृही है. केतु यहां शुभ फल देगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'गडरिए का पालतू कुत्ता' कहा है। ऐसा जातक प्रत्येक व्यक्ति को सही राह दिखाता है। ऐसा जातक यदि भक्ति (साधना) का मार्ग पकड़ ले तो उसके दुश्मन अपने आप तबाह बरबाद हो जाते हैं।

दृष्टि—सप्तम भावगत केतु की दृष्टि लग्नस्थान (मिथुनराशि) पर होगी। फलतः ऐसे जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।

निशानी—यदि ऐसा व्यक्ति वचन का पक्का हो तो उसे कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र** गृहस्थ सुख विवादास्पद रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**—जातक की पत्नी सुंदर होगी। पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेगा।
3. **केतु+मंगल**—गृहस्थ सुख में कोई-न-कोई न्यूनता रहेगी
4. **केतु+बुध**—वैवाहिक तनाव संभव है।
5. **केतु+गुरु**—समझौते वाली नीति एवं धैर्य के माध्यम से जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगी।
6. **केतु+शुक्र**—गृहस्थ सुख में कलह रहेगी
7. **केतु+शनि**—जीवन साथी में बिछोह संभव।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति अष्टम भाव में

मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है, इसलिए राहु व
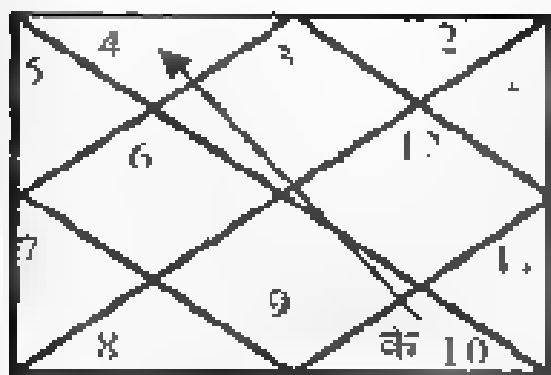
केतु दोनों छाया ग्रह आमने सामने रहते हैं। यहां अष्टम स्थान में केतु मकर (मित्र) राशि में है। यह केतु की मूल त्रिकोण राशि भी है, जहां वह शुभफल देने के लिए बाध्य है आठवें घर में बैठे केतु को बच्चों के गम में 'छत पर रोने वाले कुत्ते की संज्ञा दी है। प्रथम संतान की उत्पत्ति के बाद ऐसे व्यक्ति की आयु को कोई खतरा नहीं है जातक वाणी का जरूर कर्कश हो सकता है

दृष्टि–अष्टम भावगत केतु की दृष्टि धनस्थान (कर्कराशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक फिजूलखर्ची होता है।

निशानी यदि छत पर बैठकर कुत्ता रोए, तो आठवें घर में बैठा केतु अशुभ फल देगा।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा में दुश्मनों से सावधान रहे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–जातक को गुप्त रोग बीमारी संभव है।
2. **केतु+सूर्य**–शल्य चिकित्सा या दुर्घटना योग है।
3. **केतु+मंगल**–शल्य चिकित्सा योग, दीर्घ बीमारी संभव
4. **केतु+बुध**–शल्य चिकित्सा, पैरों में चोट संभव है।
5. **केतु+गुरु**–यदि धैर्य एवं समझौते वादी नीति से काम न लिया तो गृहस्थ जीवन कष्टमय हो सकता है।
6. **केतु+शुक्र**–शल्य चिकित्सा योग बनता है।
7. **केतु+शनि**–शरीर कष्ट एवं शल्य चिकित्सा संभव

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति नवम भाव में
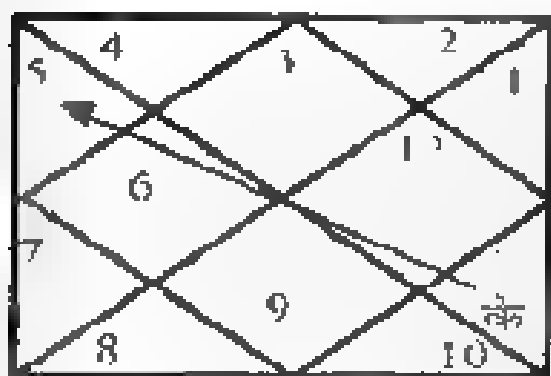
मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां नवम स्थान में केतु कुंभ (मित्र) राशि में है। लालकिताब वालों ने इस केतु को 'बाप

का अज्ञाकारी बेटा' कहा है. ऐसा जातक सौभाग्यशाली एवं पराक्रमी होता है। ऐसे जातक का संतान उन्नतिशील एवं बलवान होगी। संतान के जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

दृष्टि–नवम् भावगत केतु की दृष्टि पराक्रम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलत: भाईयों व कुटम्बी जनों से कम निभेगी।

निशानी–यदि व्यक्ति दुरंगा कुत्ता पाले या 'Tiger-eye' टाईगर आई नामक रत्न पहने तो भाग्योदय शीघ्र होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में भाग्योदय होगा। पराक्रम बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. केतु+चंद्र– वैराग्य की भावना बनी रहेगी। आध्यात्मिक जीवन की ओर झुकाव रहेगा
2. केतु+सूर्य–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी.
3. केतु+मंगल–संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी
4. केतु+बुध–संघर्ष परेशानी एवं भाग्योदय संबंधी चिंता बनी रहेगी
5. केतु+गुरु–विवाह के भाग्योदय होगा तथा जातक सिद्धांतवादी व्यक्ति होगा।
6. केतु+शुक्र–जातक के जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. केतु+शनि–भाग्योदय हेतु संघर्ष की स्थित रहेगी।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति दशम भाव में
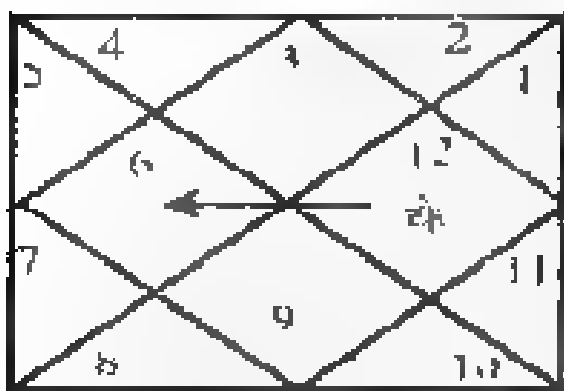
मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहां दशम स्थान में केतु मीन राशि अपनी स्वराशि में है। जातक को नौकरी-व्यापार में लाभ होगा जातक अपने रोजी रोजगार में उन्नति प्राप्त करेगा। जातक के निजी जमीन-जायदाद होगी।

दृष्टि–दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थभाव (कन्याराशि) पर होगी फलत: जातक को वाहन का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक पराई स्त्री के चक्कर में रहेगा तो तबाह-बरबाद हो जाएगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। रोजी-रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

केतु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—थोड़ा संघर्ष रहेगा पर सफलता मिलेगी।
2. **केतु+सूर्य**—सरकारी कार्य में बाधा आएगी।
3. **केतु+मंगल**—जातक के राज्यपक्ष से भय रहेगा।
4. **केतु+बुध**— राज्य-सरकार या राजनीति में कार्यरत लोगो के माध्यम से चिंताग्रस्त रहेंगे।
5. **केतु+गुरु**—जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली, न्यायप्रिय एवं कीर्तिवान् होगा।
6. **केतु+शुक्र**—सरकार पक्ष से गुप्त संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **केतु+शनि**—राजनीति में गुप्त शत्रु आपके लिए सक्रिय रहेंगे

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति एकादश भाव में
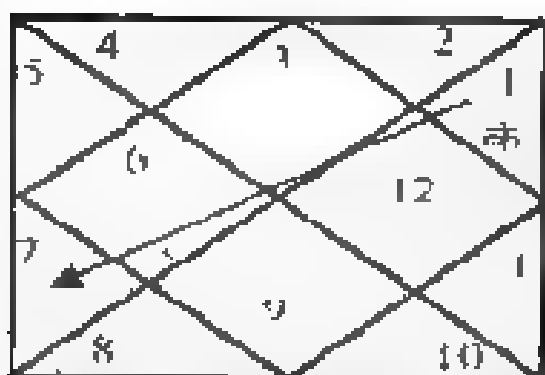
मिथुनलग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है। पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते हैं। यहा एकादश स्थान में केतु मेष (मित्र) राशि में है। यह केतु व्यापार व्यवसाय में कीर्ति देगा लाल किताब वालों ने इस केतु को 'गीदड़ स्वभाव' का कहा है। जातक लड़ाकू होते हुए भी डरपोक होगा ऐसा जातक राज्य (सरकार) पक्ष के प्रतिष्ठित लोगो के सम्पर्क मे रहकर उच्चपद को प्राप्त करता है।

दृष्टि—एकादश भाव में स्थित केतु की दृष्टि पंचम स्थान (तुला राशि) पर होगी। अतः एकाध गर्भपात कराएगा

निशानी—व्यक्ति स्वयं अपनी जमीन-जायदाद खुद बनाएगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—कुटुम्ब सुख में हानि महसूस करेंगे।
2. **केतु+सूर्य**—जातक मानसिक रुप से उद्विग्न रहेगा।
3. **केतु+मंगल**—परिवार में विग्रह विवाद शत्रुओं से सामना करना पड़ेगा।

4. **केतु+बुध**—व्यापार व्यवसाय में तरक्की की चिंता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—ऐसा जातक यशस्वी उद्योगपति होगा।
6. **केतु+शुक्र**—व्यापार-व्यवसाय, लाभ मे रुकावट रहेगी
7. **केतु+शनि**—व्यापार के लाभांश में रुकावट महसूस होगी।

मिथुनलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में
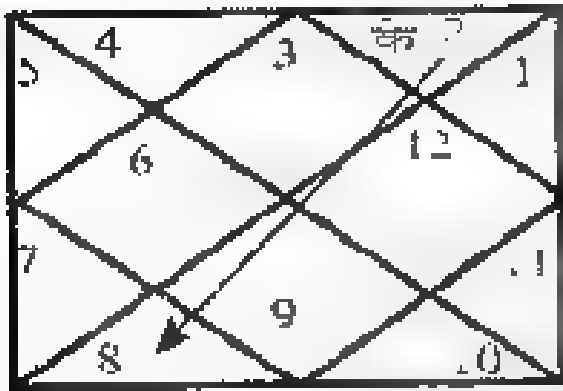
मिथुनलग्न मे केतु लग्नेश बुध से शत्रुभाव रखता है पृथ्वी की दक्षिण छाया को राहु एवं उत्तरी छाया (North Pole) को केतु कहा गया है। इसलिए राहु व केतु दोनों छाया ग्रह आमने-सामने रहते है। यहां द्वादश स्थान मे केतु वृष (नीच) राशि का है लालकिताब वालों ने इस केतु को शुभफल देने वाला कहा है ऐसे जातक का जीवन ऐशो आराम से व्यतीत होगा। ऐसा जातक जीवन में निरंतर उन्नति व लाभ को प्राप्त करता रहेगा। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने मे पूर्णतः सक्षम (समर्थ) होगा.

दृष्टि—द्वादश भावगत केतु की दृष्टि छठे स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक दीर्घ आयु को प्राप्त करेगा।

निशानी—ऐसे व्यक्ति को किसी संतानहीन व्यक्ति से भूमि, जमीन-जायदाद नहीं खरीदनी चाहिए अन्यथा उसके दिन बुरे शुरु हो जाएंगे।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा में व्यर्थ की यात्रा एव खर्च बढ़ जाएगें

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—कोर्ट-कचहरी से कारावास का भय रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**—जातक को यात्रा के दौरान संकट का सामना करना पड़ेगा।
3. **केतु+मंगल**—यात्रा में धनहानि, परेशानी संभव है।
4. **केतु+बुध**—कारोबार के प्रति, धन के प्रति चिंता रहेगी।
5. **केतु+गुरु** जातक धार्मिक कार्य, परोपकार, तीर्थयात्रा मे, शुभ कार्य मे रुपया खर्च करेगा।
6. **केतु+शुक्र**—यात्रा में कष्ट नेत्र-पीड़ा संभव शल्य चिकित्सा होगी।
7. **केतु+शनि**—मानसिक चिंता व तनाव रहेगा।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव
फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें, गम्भीरता पूर्वक करें आलतू फालतू लोगों को पास न बैठावें जहां तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके, उसे प्रभुचरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्रवचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर लें और प्रत्युत्तर हमेशा मय हस्ताक्षर तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेगी।
7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर ज्यादा फूलें नहीं क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित सत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होता है **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हमसे है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐसा विश्वास रखना चाहिए।
8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखें।

शास्त्र कहते हैं—

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
   को वक्ता तारतम्यस्य तमेकं वेधस विना॥

   ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ शुभ-अशुभ फलो की सूचना करते हैं परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा?

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
    ते योगाः किं करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

    ग्रहो की अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओं मे ग्रहों के शुभ अशुभ फल प्राप्त होते है। इस जगह '**दशा**' शब्द से '**महादशा**' और '**अन्तर्दशा**' इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष फल मिलता है, परन्तु अन्य समय में थोड़ा बहुत फल मिलना ही चाहिए।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्र शुभ विदुः।**
    केन्द्रत्रिकोणेष्वुच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते।

    मित्र और शत्रु ग्रहो का योग हो तो मिश्रफल जानना। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानो में मित्र ग्रहा से युक्त ग्रह हो तो शुभफल जानना चाहिए।

12. मित्रराशिगत वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते
    मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः॥

    मित्र ग्रहों के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और बलवान ऐसा ग्रह यदि गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उसकी दशा में बहुत दुःख होता है।

15. जब ग्रह 'दिग्बल' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा में मिलती है, जिसका वह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह की महादशा मे, शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो आरंभ से कष्ट होता है और अंत मे भय होता है।

17. जब शुभ ग्रह की महादशा हो, तो पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अत मे भय होता है।

18. जब क्रूर ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अन्तर्दशा, यदि वे दोनो आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस मे मित्र हों तो जीवन में सदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवे स्थान मे स्थित हो तो उनके दशांतर में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा हो तो मनुष्य को मृत्यु सभव है

21. जब पाप ग्रह क्रूर राशि में स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हों तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अन्तर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8 12 स्थानो में स्थित ग्रह की अन्तर्दशा शुभ नहीं होती है शेष स्थानो में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पापग्रह की अन्तर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब कर्म, लग्न, लभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हो तो उस ग्रह की दशा शुभ होती हैं। परन्तु जो ग्रह 8-12 6-7-2 स्थानों मे अथवा अष्टमेश मे हो अथवा शत्रु के घर का हो पाप ग्रह हो अथवा नीच का हो अथवा अस्तगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती हैं।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा मे, मित्र ग्रह की अन्तर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अन्तर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अन्तर्दशा हो, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अन्तर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अन्तर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल होता है

26. उक्त दशाओ के साथ-साथ गोचर मे चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

❑❑❑

अनिष्ट निवारण के विविध उपाय

1. अनिष्ट बुध की शांति की सर्वोत्तम उपाय बुध मंत्र के अनुष्ठान सहित नित्य विष्णु सहस्त्र नाम का पाठ है।
2. पुरुष सुक्त के द्वारा भगवान विष्णु को षोडशोपचार पूजा भी कर ली जाए तो बुधकृत समस्त अरिष्ट निश्चित रूप से शांत होते हैं संतान कष्ट गर्भदोष, वाणी एवं मानसिक कष्ट दूर हो जाते हैं तथा सुख शांति की वृद्धि होती है।
3. नित्य शालिग्राम पूजन करके तुलसी पत्र का सेवन करें तथा मंत्र जाप कर लें। चमत्कारिक लाभ होगा।
4. व्यापारिक अड़चनों एवं संतान कष्ट मे गोपालसहस्त्रनाम एवं कृष्ण पूजा भी अमोघ है
5. कलह, शत्रुता, हानि, बाधाओं आदि से त्रस्त, मानसिक रूप से बहुत आकुल व्यक्ति यदि अधिक न कर सकें तो श्रीमद्भागवत गजेन्द्र मोक्ष या रामरक्षा स्त्रोत के पाठ से ही पर्याप्त लाभ उठा सकते हैं.
6. शत्रु बाधा एवं अभिचार कर्मों के शमन के लिए प्रत्यांगिरा जप तथा हवन अमोघ है।
7. शारीरिक व्याधियों के लिए महाधन्वतरी मंत्र अथवा मृत्युजय प्रयोग प्रशस्त है।
8. शिक्षा में बाधा एवं वाणी दोष के लिए वैदिक मार्ग प्रेम ऋग्वेदीय सारस्वत मंत्र एवं तंत्र प्रेमी नील सरस्वती मंत्र एवं स्त्रोत का अनुष्ठान करें, कल्याण होगा।
9. बुद्धिस्थान को मजबूत करने हेतु धन प्राप्तिहेतु पन्नायुक्त 'बुधयंत्र' धारण करें।
10. बुधवार को इलायची एवं तुलसी पत्र का भक्षण करें तथा एक हरी इलायची जल में प्रवाहित करें।
11. सवा रत्ती स्वर्ण का दान करें (बुधवार के दिन)
12. ग्यारह एकादशी एवं 11 बुधवार को व्रत रखें।
13. ग्यारह बुधवार तक मुट्ठीभर मूंग भिखारियों को दान करें।

14. ब्राह्मणों को प्रति बुधवार दुग्ध का दान करें।
15. बुध अथवा पाण्डुरंग स्त्रोत का पठन करें।
16. निगणपतिजी के दर्शन करें।
17. बुध की होरा में निर्जल रहे।
18. धनु या मीन लग्न में बुध छठे, आठवें या बारहवें हो तो बुध के अशुभ प्रभाव से बचने के लिये, विवाह समय में दो बराबर वजन के पन्ने एवं मूंग के दाने ले विवाह समय में संकल्पपूर्वक एक हिस्सा बहते पानी में छोड़ दे तथा दूसरा हिस्सा अपने पास रखें। जब तक वह हिस्सा जातक के पास रहेगा उसका बुध के अशुभ प्रभाव से बचाव होता रहेगा तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखी रहेगी
19. बुधवार का व्रत 5 या 11 या 43 बार करना।
20. दुर्गा पाठ करना कन्याओं का (दान-दक्षिणा देकर) आर्शीवाद लेना या दुर्गा तीर्थों की यात्रा करना।
21. मूंग साबूत, हरी चीजें दान देना या जल प्रवाह करना।
22. रेडियों, घड़ियां, टेलिविजन, गाने बजाने के यंत्र ठीक रखना।
23. तांबे के पैसे में सुराख करके चलते पानी में बहाना।
24. पन्ना धारण करना, पन्ने के अभाव मे कली (धातु) धारण करें।
25. बकरी, तोते की सेवा करना।
26. हरा रंग निषेध (तुलसी, मणी प्लाट) 96 घण्टानाक छेदन।
27. लड़की-बहन-बुआ, साली की सेवा करना और आर्शीवाद लेना।
28. तड़ागी या बेल्ट बांधना।
29. कौड़ियों को जला कर चलते पानी में बहाना।
30. हीजड़ों को हरी चूड़ियां, हरे रंग के कपड़े आदि देना।
31. भभूती-तावीज, साधुओं की तस्वीर, धार्मिक ग्रंथ बंद करके न रखना।
32. बुध उच्च हो तो बुध की चीजों का दान न देना ।
33. बुध नीच हो तो बुध की चीजों का दान न लेना। उपरोक्त उपाय 5 या 11 या 43 दिन या सप्ताह या माह लगातार करने चाहिए।
34. बुध पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु चावल, शहद, सफेद सरसों, गोबर, गोरोचन एवं नेवारी मल्वल मिलाकर 7 बुधवार तक स्नान करें।
35. बुध पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु हरड़, गोमय अक्षत, गोरोचन, स्वर्ण आवला और मधु मिलाकर 7 बुधवार तक स्नान करें।

36. यदि संतान अवरोधक ग्रह बुध है तो समझिये कि बिल्ली को मारने के कारण या मछलियों तथा अन्य प्राणियों के अण्डों को नष्ट करने के कारण, कम उम्र के बालक बालिकाओं (झडौलियों) के शाप से, भगवान् विष्णु के अनदार के कारण संतान नहीं हो रही है ऐसे में जातक को बुध के वेदोक्त मंत्र के चार हजार जप करने चाहिये। बुध संबंध वस्तुओं का दान करते हुए, बुधवार का नियमित व्रत रखना चाहिए।

37. हरिवंश पुराण के अनुसार ऐसे जातक का महाविष्णु या अतिविष्णु यज्ञ कर कास्यपात्र दुध में देना चाहिये।

38. बुध का अशुभत्व नष्ट करने के लिए छेद किया हुआ ताम्बे का पैसा या प्लेट बहते पानी मे डाल दे अथवा कौडियों को जलाकर उसकी राख को दरिया में बहा दें।

39. जब बुध या केतु लग्न या सुखस्थान को छोड़कर कहीं भी बैठे हो तो अशुभ होते है। ऐसे जातक को विवाह के 34 वर्षों तक आर्थिक संघर्ष के मध्य में से गुजरना पडता है, विवाह देरी से होता है। बचाव के लिए जातक नाक मे छेद करावे तथा फिटकारी से दांत साफ करे, छोटी कन्याओं को पीले हलवे का भोजन करावे, मंदिर में केसर चढ़ावे।

40. यदि बुध तीसरे स्थान में बैठकर अशुभ फल दे रहा है पराक्रम में कमी, मान भंग की आशा हो, तो मंगल की रात्रि को साबित मूंग की दाल लाकर भिगो दे। बुध की प्रातः उसे पक्षियों को चुगा दे 43 दिन तक नियमित प्रयोग करने से व्यक्ति का प्रभुत्व पराक्रम बढता है या साबूत मूग का दान भी जातक कर सकता है।

41. बुध तीसरे हो तथा उसके शत्रु ग्रह केतु या शुक्र 6, 7वें स्थान मे हो तो पिता की सम्पत्ति खतरे में पड़ जाती है, मासी व मौसे का स्वास्थ्य चिंता का विषय हो जाता है। ऐसी स्थिति मे जातक नित्य फिटकरी से दांत साफ करे, पक्षी को चुग्गा दे तथा भेड़ का दान करे। जब अनिष्टकारी बुध सप्तम स्थान में हो तो उसकी निशानी यह होगी कि अपनी बहिन तथा बाप की बहिन को कष्ट होगा। ऐसे समय में साबूत मूंग का दान करना चाहिए।

❑❑❑

बुधवार व्रत कथा

बुध मनुष्य को विद्या, वाक्‌पटुता व बुद्धि को प्रभावित करता है। बुध को ग्रहों का राजकुमार कहा जाता है। बुध बुद्धि व स्वास्थ लाभ प्रदान करने वाला है। बुध ग्रह की शांति व सुख-समृद्धि के लिए बुधवार का पूजन विशेष लाभकारी है। मनोकामनाओं की पूर्ति व शांति हेतु स्त्री-पुरुषों को बुधवार का व्रत रखना चाहिए।

बुध का तांत्रिक मंत्र–ॐ बुं बुधाय नमः।

विधि विधान–बुधवार का उपवास विशाखा नक्षत्र वाले बुधवार से आरंभ करना चाहिए। इस व्रत में सफेद वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए। यह व्रत सात, सत्रह अथवा सताइस बुधवारों को करना चाहिए। दिन में एक ही समय भोजन करना चाहिए। सर्वप्रथम बुधवार के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर, स्वच्छ स्थान पर पूजन की सामग्री रखें तथा बुध के तांत्रिक मंत्र का जप इक्कीस बार करें। तत्पश्चात कथा पढ़ें, कथा के मध्य में न तो उठें, ना ही बीच में बोलें कथा सुनकर आरती करके प्रसाद ग्रहण करना चाहिए

व्रत कथा–एक बार एक व्यक्ति जिसकी पत्नी अपने मायके गई हुई थी, वह अपनी पत्नी को विदा करवाने के लिए अपनी ससुराल गया। कुछ दिन वहां रहने के पश्चात उसने सास-ससुर से जाने के लिए आज्ञा मांगी। किंतु सास-ससुर ने कहा आज बुधवार का दिन है। आज के दिन गमन नहीं करते। उसने किसी की बात नहीं सुनी और अपनी पत्नी को विदा करवाकर अपने नगर के लिए चल पड़ा मार्ग में उसकी पत्नी को प्यास लगी। वह व्यक्ति गाड़ी से उतरकर पात्र लेकर जल की खोज में चल पड़ा। कुछ देर पश्चात वह वापस आया तो उसने देखा कि उसके जैसी शक्ल-सूरत वेशभूषा वाला एक व्यक्ति उसकी पत्नी के पास बैठा है, यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और क्रोध भी आया। वह क्रोध में बोला "तू कौन है और मेरी पत्नी के निकट क्यों बैठा है?" दूसरे व्यक्ति ने कहा -"यह मेरी पत्नी है, मैं अभी अपनी ससुराल से इसे विदा कराकर ला रहा हूं।" दोनों में परस्पर झगड़ा होने लगा, तभी उधर से राज्य के सैनिक जा रहे थे, उन्होंने सारा हाल सुनकर स्त्री से पूछा–"तुम्हारा

पति इन दोनों में से कौन है?'' उसकी पत्नी चुप थी क्योंकि दोनों व्यक्ति बिलकुल एक जैसे थे और उसमे से असली को पहचान पाना मुश्किल था। असली व्यक्ति ने ईश्वर से प्रार्थना की–''हे प्रभु! यह कैसी माया है कि पराया व्यक्ति मेरी पत्नी को अपना बना रहा है।'' तभी आकाशवाणी हुई कि हे मूर्ख, बुधवार के दिन तूने गमन किया, तूने किसी की बात नहीं मानी, अतः बुध देव की माया से तुझे इस कष्ट का सामना करना पड़ा है।

उसने भगवान् बुध देव से क्षमा याचना की। मनुष्य के रूप मे आए भगवान बुध देव अ तर्ध्यान हो गए। वह व्यक्ति खुशी खुशी अपनी पत्नी को लेकर अपने घर आया इसके पश्चात् पति-पत्नी दोनों नियमपूर्वक बुधवार का उपवास करने लगे इस प्रकार जो कोई भी बुधवार का उपवास रखता है तथा श्रद्धापूर्वक व्रत कथा को सुनता है उसे बुधवार के दिन गमन करने का दोष नहीं लगता है तथा उसे सर्वप्रकार के सुखो की प्राप्ति होती है और उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती है।

बुधदेव की आरती

जय श्री बुध देवा,
स्वामी जय श्री बुध देवा।
छोटे बड़े सभी नर-नारी,
करें तेरी सेवा।। स्वामी जय०।
सुख करता दु:ख हरता,
जय जय आनन्द दाता।
जो प्रेम भाव से पूजे,
वह सब कुछ है पाता ।।स्वामी जय०।।
सिंह आपका वाहन है,
है ज्योति सबसे न्यारी।
शरणागत प्रतिपालक,
हो भक्तन के हितकारी स्वामी जय०।।
तुम हो दीनदयाल दयानिधि,
भय बंधन हारी।
वेद पुराण बखानत,
तुम हो भय पातक हारी ।।स्वामी जय०।।

सद् गृहस्थ हृदय में,
बुधराजा तेरा ध्यान करें।
जय के सब नर-नारी,
व्रत पूजा पाठ करें।।स्वामी जय०।।
विश्व चराचर पालक,
कृपासिन्धु शुभ करता।
सफल मनोरथ पूर्ण करता,
भव बन्धन हरता।।स्वामी जय०।।
श्री बुधदेव की आरती,
जो प्रेम सहि गावे।
सब संकट मिट जाए,
अतुलित वैभव पावे।।स्वामी जय०।।

बुध के वैदिक, पौराणिक व तांत्रिक मंत्र

ध्यानम्—

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रोद्भवो।
बाणेशानिदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः॥
कन्या युग्मपतिदर्शाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवते शशिसुत· कुर्यात् सदा मंगलम्॥

बुध की उत्पत्ति अत्रि गोत्र में मानी जाती है। बुध चेतना, इच्छा, सदाचार, मानव जीवन मे तरक्की और चेतना शक्ति को मुख्य रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं ऐश्वर्य, प्रेम, उदारता, आकांक्षा, आत्मविश्वास आदि के ये संतुलनकर्ता हैं। ये पुरातत्ववेत्ता, आविष्कर्ता, राजा, मंत्री आदि का भी प्रतिनिधित्व करते हैं हृदय रक्त का संचालन, आंख, कान, हड्डी आदि पर भी बुध अपना अधिक-से-अधिक प्रभाव डालते हैं।

आह्वान्–

बुधोबुद्धिप्रदाता च सौम्यदृष्टिर्महायशः
यजमान-हितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम्॥1॥
अहो चन्द्र सुतः श्रीमान् मागधायसमुद्भवः।
अत्रिगोत्रः चतुर्बाहुः खड्गखेटक धारकः॥2॥
गदावरदसिंहस्य सुवर्णाभश्समाविश।
कृष्णवर्दि सपत्रे च इदं विष्णु प्रपूजयेत्॥3॥
ॐ इदं विष्णुविचक्रमेवेधानिदधेपदम।
समूढमस्यपा ठं सुरे स्वाहा ॥15/15॥
इशाने . बुध स्थापयामि–

वैदिक मंत्र

विनियोग–ॐ उद्बुध्यस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठीऋषिः बृहती छन्दः बुधो देवता त्वमिष्ठापूर्तेसम् इति बीजं बुधप्रीतये जपे विनियोग.। 'ॐ परमेष्ठीऋषये नमः शिरसि' 1 'ॐ बृहतीछन्दसे नमः मुखे 2'

न्यास–'ॐ बुधायै नमः हृदये' 'ॐ त्वमिष्टापूर्तेसम्' इति बीजाया नमः गुह्ये 4 'ॐ बुधप्रतीये जपे विनियोगाय नम. सर्वाङ्गे 5 इति ऋष्यादिन्यासः। 'ॐ उद्बुद्धयस्वाग्नेप्रतिजागृहि' अङ्गुष्ठाभ्या नमः 1 'ॐ त्वमिष्ठापूर्तेसम्' तर्जनीभ्या नमः 2 'ॐ सृजेयामयञ्च' मध्यमाभ्या नम 3 'ॐ अस्मिन्त्सध स्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्' अनामिकाभ्या नमः 4 ॐ विश्वेदेवा' कनिष्ठिाभ्यां नम. 5 'ॐ यजमानश्चसीदत-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः इति करन्यासः।

हृदयादिन्यास–ॐ त्वमिष्टा पूर्तेसम् इति शिरसे स्वाहा 2 'ॐ सृजेथामयञ्च' इति शिखायै वषट् 3 'ॐ अस्मिन्त्सधस्थेऽ अध्युत्तरस्मिन्' इति कवचाय हुम् 4 'ॐ विश्वेदेवा' नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ यजमानश्च सीदत इति अस्त्राय फट् 6 इति हृदयादिन्यासः।

'ॐ उदबुध्यस्व' इति शिरसि 'ॐ अग्नेप्रति' इति ललाटे 2 'ॐ जागृहित्वम्'। इति मुखे 3 'ॐ इष्टापूर्तेसम् इति हृदये 4 'ॐ सजेथामयञ्च' इति कय्याम् 6 'ॐ अध्युत्तरस्मिन्' इत्यूर्वोः 7 'ॐ विश्वेदेवा' नाभौ 5 'ॐ अस्मिन्त्सधस्थ' इति जानुनोः 8 'ॐ यजमानश्च' ति पादयोः 9 'ॐ सिदत' इति सर्वाङ्गे 10 एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्–'ॐ पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी।

चर्मासिधृक् सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो 'बुधयच' । इति ध्यात्वाजयं कुर्यात्

उपयोग वैदिक मंत्र–ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वामिष्टापूर्ते स ठ्ठ सृजेथामय च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वदेवा यजमानश्च सीदत:

यह वैदिक मंत्र है। यद्यपि यह उच्चारण की दृष्टि से कठिन होने के कारण सर्व–साध्य नहीं है, व्यावहारिक दृष्टि से सरल, उच्चारण में सहज और सर्वसाध्य मंत्र निम्न हैं।

तंत्रोक्त बुध मंत्र–ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:।

पुराणोक्त बुध मंत्र–

ह्रीं प्रियंगु कलिकाश्यामं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेत तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

यदि दैनिक पूजा में स्नानोपरात कोई व्यक्ति इस मत्र की प्रतिदिन 5 7 माला जपता रहे तो कुछ समय उपरांत वह किसी स्थिति में सुखद परिवर्तन का अनुभव करेगा। यह पौराणिक और अत्यंत सरल मत्र है। इसके अतिरिक्त वैदिक और तान्त्रिक मंत्र भी प्राप्त होते है, जो इस प्रकार है -

इन तीनो मत्रों में से किसी एक मत्र का नौ हजार जप अवश्य करना चाहिए जप के प्रभाव से ग्रह पीड़ा में परिवर्तन होना स्वाभाविक है, जपकर्ता 108 दाने की माला से ही जाप करें

बुध गायत्री मंत्र–

ॐ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्य: प्रचोदयात्

इस बुध गायत्री मंत्र का जप उनके लिए अत्यधिक आवश्यक है, जिन पर बुध की कठोर दृष्टि है। यदि वे इस मंत्र का जाप नियमित रूप से एव पवित्रता से करें तो उसके लिए अत्यत ही लाभकारी होगा। कम-से-कम एक माला प्रतिदिन जपनी चाहिए

बुध यंत्र–बुध यंत्र को काष्ठ पीठिका पर आच्छादित श्वेत या हरित वस्त्र खण्ड पर स्थापित करें। गंगाजल अथवा शुद्ध जल छिड़क कर इसे स्नान कराएं। तत्पश्चात चदन पुष्प, अक्षत, धूप दीप आदि से पूजन करके किसी मीठी वस्तु का नैवेद्य अर्पित करें यह समस्त प्रक्रिया पूर्व की ओर मुख करके की जानी चाहिए।

यत्र की पूजा कर चुकने के पश्चात् यथा–सामर्थ्य 1, 5 या 7 माला बुध मंत्र जपना चाहिए। उपवास भी आवश्यक होता है इस प्रकार 7, 11 या 12 बुधवारों तक लगातार बुध यंत्र की नियमित रूप से श्रद्धापूर्वक उपासना करने की अवश्य ही लाभ होता है।

9	4	11
10	8	6
5	12	7

उपरोक्त बताई गई रीति के अनुसार ही यंत्र पूजन कर तावीज में भरकर धारण करना चाहिए,

बुधमंत्र- जपसंख्या 400, रत्न पन्ना, समिधा- अपामार्ग, दान मूंग, नीलवस्त्र, कांस्य, कस्तूरी, घी, पंचरत्न, हाथी, दासी।

बुध कवच

विनियोग अस्य श्रीबुधकवच स्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः बुधो देवता बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधस्त पुस्तकधरः कुंकुमस्य समद्युतिः।
पीताम्बरधरः पातु पीतमाल्यानुलेपन॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेशं बुधस्तथा
नेत्र ज्ञानमयः पातु श्रुति पातु निशाप्रियः।
घ्राणं गंधप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम
कण्ठं पातु विधोः पुत्रों भुजौ पुस्तक भूषणः।
वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं रोहिणीसुतः
नाभि पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः।
जानुनी रोहिणेयश्च पातु जङ्घेऽखिलप्रदः
पादौ मे बोधनः पातुःपातु सौम्योऽखिलं वपुः।
एतद्धि कवचं दिव्य सर्वपाप प्रणाशनम्।
सर्वरोग प्रशमनं सर्वदुख निवारणम्।
आयुरारोग्यशुभद पुत्रपौत्र प्रवर्धनम्
यः पठेच्छृणुयाद् वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत्।

उक्त बुध कवच ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णित है. कवच का पाठ करनेवाला प्राणी यदि नियमित रूप से एकाग्र होकर पूजन करे तो उस पर बुध ग्रह की अवश्य ही कृपा बनी रहेगी तथा दीर्घ आयु, निरोगी, वंश वृद्धि होने के साथ ही दुखों का सर्वनाश होना स्वाभाविक है।

बुधपंचविंशतिनाम स्तोत्र

विनियोग—अस्य श्रीबुधपंचविंशतिनाम स्त्रेत्रस्य प्रजापति ऋषिः त्रिष्टप्छन्दः बुधो देवता, बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधो बुद्धिमता श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियंगुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः॥
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धन॥
चंद्रात्मजोविष्णुरूप ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दार पुत्र धान्य पशुप्रदः।
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिगुणदो गुणिवत्सलः।
पंचविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्॥
स्मृत्व बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्॥

❑❑❑

रत्न चिकित्सा

मिथुनलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–मिथुनलग्न की कुण्डली में सूर्य तृतीय भाव को स्वामी होता है। अत: इस कुण्डली के जातक को यह रत्न भी धारण करना लाभदायक नहीं होगा।
2. **मोती**–मिथुनलग्न में चंद्र धन भाव का स्वामी है। चद्र की महादशा में इस लग्न का जातक मोती पहनना चाहे तो पहन सकता है। परन्तु यदि इसके बिना काम चल सके तो अच्छा होगा। क्योंकि चंद्र मारकेश भी है परतु कुण्डली में यदि चंद्र द्वितीय होकर एकादश, दशम या नवम भाव में स्थित हो या द्वितीय ही में स्वराशि में हो तो चद्र की महादशा मे मोती धारण करने से लाभ होगा।
3. **मूगा**–मिथुनलग्न इसमे मगल षष्ठम और एकादश या षष्ठम में ही स्थित हो तो मंगल की महादशा मे मूगा धारण किया जा सकता है। मिथुन लग्न के जातक यदि मूगे से दूर रहे तो अच्छा ही है। क्योंकि लग्नेश बुध और मगल परस्पर मित्र नहीं है।
4. **पन्ना**–मिथुनलग्न के लिए बुध लग्न और चतुर्थ का स्वामी है। इस लग्न के जातक को पन्ना सदा रक्षा-कवच के रूप में धारण करना चाहिए। इसके धारण से धन शिक्षा, यश, मान प्रतिष्ठा आदि में वृद्धि होती है। ध्यान रखें, पन्ना आपका जीवनरत्न है
5. **पुखराज**–मिथुनलग्न के बृहस्पति और दशम भावों का स्वामी होने के कारण केन्द्राधिपति दोष से दूषित है, तब भी यदि बृहस्पति लग्न द्वितीय, एकादश, या किसी त्रिकोण में स्थित हो तो बृहस्पति की महादशा में पीला पुखराज
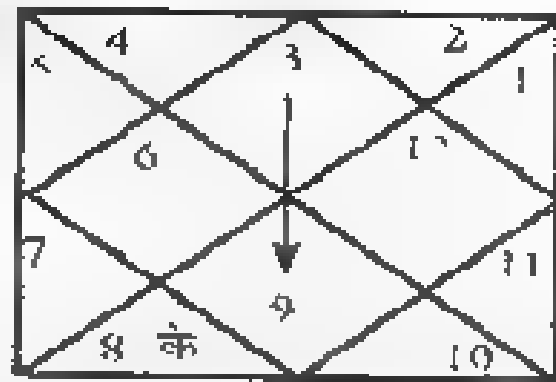
धारण करने से संतान, सुख समृद्धि मे वृद्धि तथा धन की प्राप्ति होती है। यह मारकेश भी है। आर्थिक या सांसारिक सुख देकर वह मारक भी बन सकता है

6. **हीरा**–मिथुनलग्न के लिए शुक्र द्वादश और पचम का स्वामी होता है। पचम त्रिकोण मे उसकी मूल त्रिकोण राशि पड़ती है। अतः इस लग्न के लिए शुक्र शुभ माना गया है। इसके अतिरिक्त शुक्र और लग्नेश बुध में परस्पर मित्रता है, इस कारण से शुक्र की महादशा में हीरा धारण करने से उन्नति, संतान सुख, मान, यश, प्रतिष्ठा हो ता और भी शुभ फलकारी बन जाएगा।
7. **नीलम**–मिथुनलग्न का शनि अष्टम् और नवम् का स्वामी होता है। नवम् त्रिकोण का स्वामी होने से इस लग्न के लिए शुभ ही माना गया है। यदि शनि की महादशा में यह रत्न धारण किया जाये तो लाभदायक होगा। यदि नीलम को पन्ना के साथ धारण किया जाये तो अति उत्तम होगा।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–हीरा सवा पांच रत्ती पन्ना सवा पांच रत्ती
2. **भाग्योदय हेतु**–पन्ना सवा पांच रत्ती, नीलम सवा चार रत्ती।
3. **आरोग्य हेतु**–केवल पन्ना सवा छः रत्ती।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–पन्ना, हीरा दोनों सवा चार-चार रत्ती।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

संत दलाईलामा
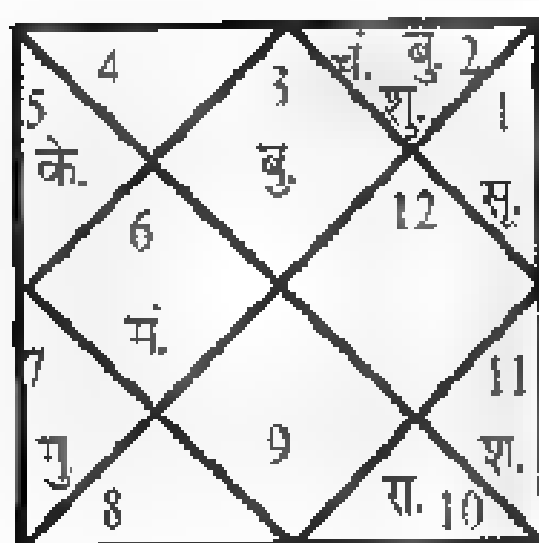
विश्व राजनीति में शान्ति दूत के रूप में विख्यात दलाईलामा तिब्बत के महान धर्म गुरु हैं। चीनी सरकार से पीड़ित श्री दलाईलामा भारत में विशेष सम्माननीय संत के रूप में पूजे जाते हैं। व्यय भाव में तीन ग्रहों होने के कारण ये सदैव भ्रमणशील रहे। लग्न में बुध **'भद्र योग'** बना रहा है। एक मात्र राजयोग के कारण वे संत होने के साथ-साथ राजपुरुष भी हैं।

डा. नारायणदत्त श्रीमाली

जन्म स्थान-खींवसर (जोधपुर), जन्म समय-10.20, जन्म तिथि 20.4.1935। इस कुण्डली में **'बुधादित्य योग'**, **'गजकेसरी योग'** होने से जातक ने बुद्धि वैचित्र्य एवं प्रकाशन से करोड़ों रुपये कमाये। अत्यंत साधारण परिवार में जन्मे ये भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्होंने दुनिया को बताया कि ज्योतिषशास्त्र के माध्यम से भी करोड़ों
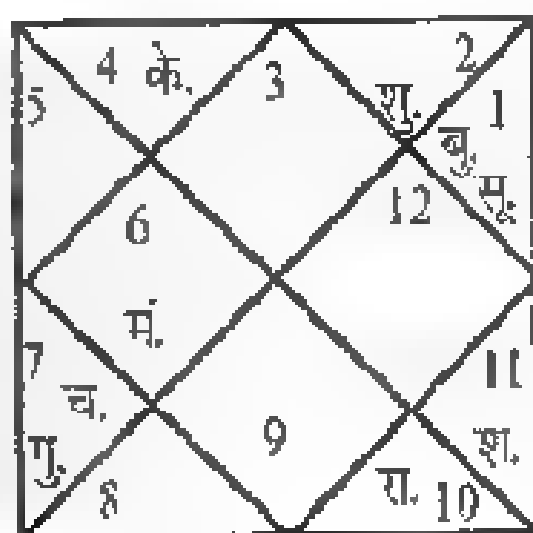
रुपये कमाये जा सकते हैं। शनि भाग्य स्थान में मूलत्रिकोण राशि मे होने से ये 'भाग्यशूर' थे। भाग्य पक्ष और पत्नी पक्ष इनकी उन्नति में बराबर के सहयोगी थे।

डॉ. गिरधारी लाल गोस्वामी

जन्म स्थान-चिलियोट (पाक.) जन्म समय प्रात 3.00, जन्म तिथि-19.8..935। यह भी भारत प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य की कुण्डली है। जिनके नाम से दिल्ली में एक राजमार्ग भी है नेहरु परिवार से इनके घरेलू संबध थे, इस कुण्डली में तृतीयेश सूर्य स्वगृही एव चतुर्थेश बुध उच्च का **'भद्र योग'** एवं **'नीचभंग राजयोग'** बना कर बैठा है, फलत: पराक्रम एव सुख दोनों ही घर शक्तिशाली थे। इनके तीन पुत्र है और तीनों यशस्वी हैं
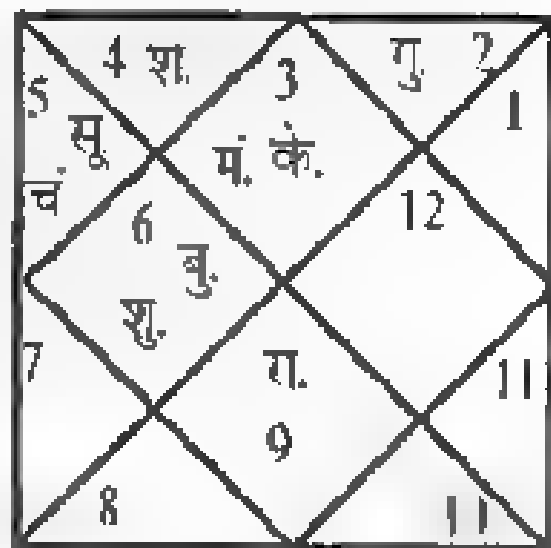
काका हाथरसी (महान हास्य कवि)
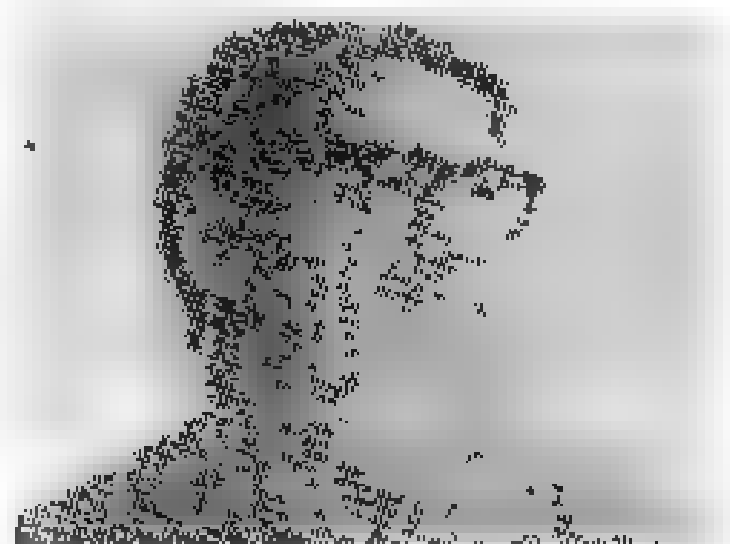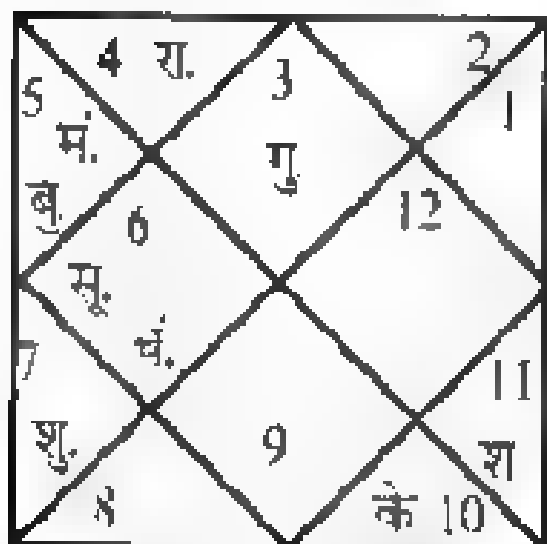
जन्म स्थान-हाथरस, जन्म समय 12.00, जन्म तिथि 18.9.1906। काका हाथरसी का जन्म एक गरीब परिवार मे हुआ। उनकी युवावस्था सघर्षशील थी। सप्तमेश बृहस्पति के अपने स्थान को देखने के कारण विवाह के बाद काका का भाग्योदय हुआ। तृतीयेश सूर्य बुध के घर मे, एवं चतुर्थेश बुध सूर्य के घर के परस्पर **'परिवर्तन योग'** के कारण काका की लेखनी यशस्वी बनी और उसी से उन्हें भौतिक सुखों की प्राप्ति हुई।

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन

जन्म स्थान-हैदराबाद, जन्म तिथि-8.2.1897, जन्म समय प्रात 15.00। कुण्डली मे उच्चस्थ शुक्र केन्द्र म होने से **'मालव्य नामक राजयोग'** बना।
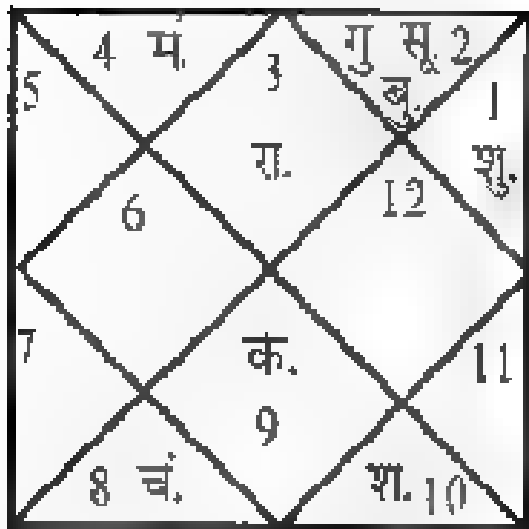
लग्नेश आठवें होने से जन्म साधारण परिवार में होकर बड़े संघर्ष के साथ जातक आगे बढ़ता है। मंगल यहां **विपरीत राजयोग** बनाता है। जातक शुक्र की दशा में भारत के राष्ट्रपति पद पर पहुंच गये।

जयपुर महाराजा जयसिंह जी
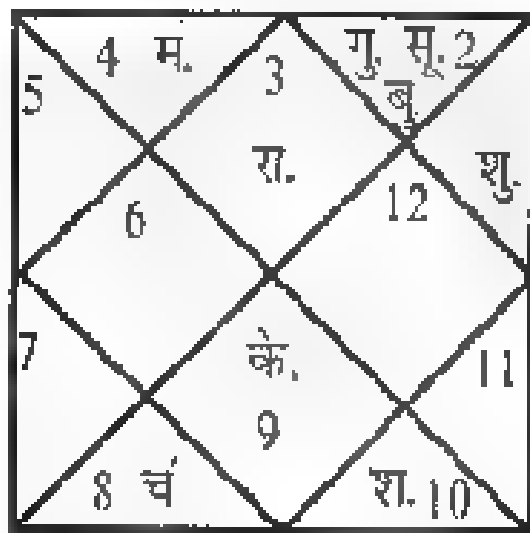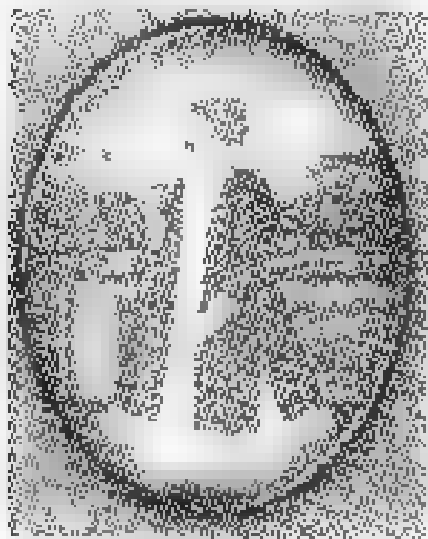
जयपुर महाराजा श्री जयसिंह ज्योतिषशास्त्र के मूर्धन्य विद्वान थे। उन्होंने जयपुर, दिल्ली, बनारस व उज्जैन में विभिन्न वेधशालाओं का निर्माण कराया। इस कुण्डली में उच्च का राहु लग्नस्थ होने से ही विशेष राजयोग मुखरित हुआ। वे राहु की दशा में ही महाराजा बने।

अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन
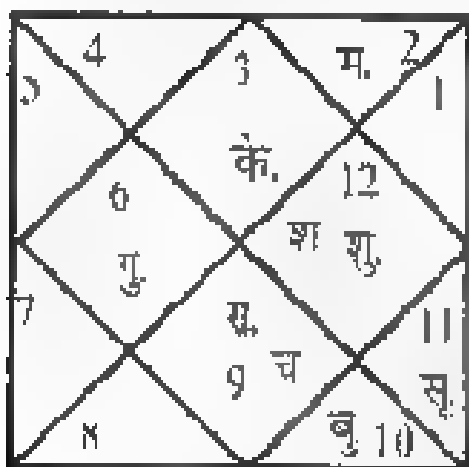
यहां चारो केन्द्र भरे हुए होने के कारण **'आसमुद्रात'** नामक राजयोग बना। उच्च का शुक्र केन्द्र मे होने से **'मालव्य'** नामक राजयोग बना। तृतीयेश सूर्य भाग्य में होने से जातक का पराक्रम, यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा सात समुद्र पार फैली।

प्रधानमंत्री गोल्डा मेयरे
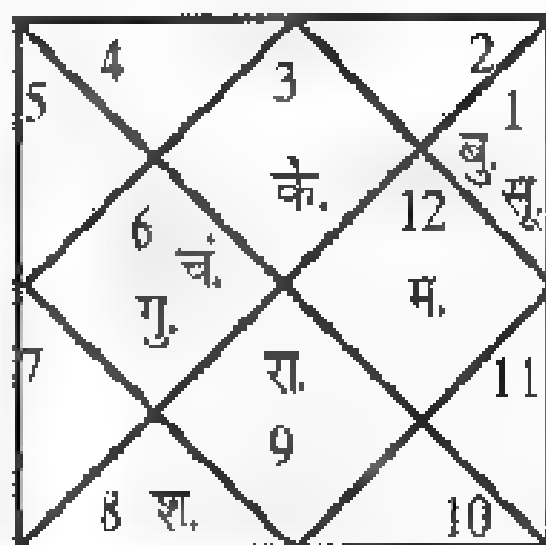
जन्म स्थान–इजराइल, जन्म तिथि–3.5.1898 जन्म समय–प्रात 9.30। **'गजकेसरी योग'** एव **'बुधादित्य योग'** के कारण यह महिला आगे बढी। यहां शनि विपरीत राजयोग बनाकर बैठा है। शनि भाग्येश है फलतः शनि की दशा में ही गोल्डा मेयरे इजराइल की प्रधानमंत्री बनी। सूर्य उच्च का होने से इनका पराक्रम विलक्षण था।

पूर्व प्रधानमत्री श्री जुल्फिकार भुट्टो (पाक.)
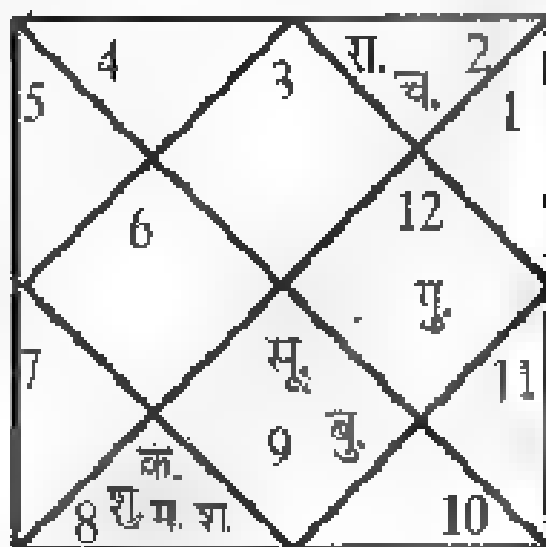
जन्म स्थान–लरकाना (पाक.) जन्म समय- प्रात 5.30 जन्म तिथि 5.1.1928। इनकी पहली शादी 13 वर्ष की आयु मे तथा दूसरी 24 वर्ष की आयु में नुसरत भुट्टो से हुई। इनकी बेटी बेनज़ीर भुट्टो भी पाकिस्तान की प्रधानमत्री बनी। 1 जनवरी 1963 भुट्टो पहली बार विदेश मंत्री बने। 1970 में श्री भुट्टो पाकिस्तान के प्रधानमत्री बने। 3 सितम्बर 1977 को इन्हें गिरफ्तार किया तथा 3.4.1979 को

रावलपिंडी मे इन्हें फासी पर लटका दिया। अज्ञातदर्शन के मार्च 79 के अंक में भुट्टो को फासी देने की भविष्यवाणी की गई थी जो सच हुई। बुध लग्नेश होकर लग्न को देखता हुआ **'लग्नाधिपति योग'** बना रहा है। स्वगृही गुरु केन्द्रस्थ होकर राजयोग बना रहा है। जिसके कारण ये एक बार पाकिस्तान के प्रधानमंत्री पद पर पहुंच गए, चंद्रमा उच्च का एवं मगल स्वगृही है जो मगल को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है. भुट्टो की मृत्यु फासी से होगी इसकी भविष्यवाणी हमने बहुत पहले अज्ञातदर्शन में कर दी थी। हैंड प्रिंट व जन्मकुंडली के आधार पर घोषित की गई मृत्यु की तारीख में सिर्फ चार दिन का अतर निकला।

भुट्टो की कुंडली में छठे स्थान मे द्वादश भाव पर्यन्त **'महापद्म नामक कालसर्प योग'** बना जिसके कारण बिलकुल झूठे आरोप में फसे एवं मृत्युदंड को प्राप्त हुए। जीवन भर कार्य मे बाधा एवं निरंतर सघर्ष एवं परस्पर धोखे के कारण इनका जीवन कष्टमय ही रहा।

पूर्व प्रधानमंत्री (भारत) चौधरी देवीलाल

4
3 श.
2
1
5 के.
12
6 चं. बु. सू.
7 शु. मं.
11 रा.
9
8
गु. 10
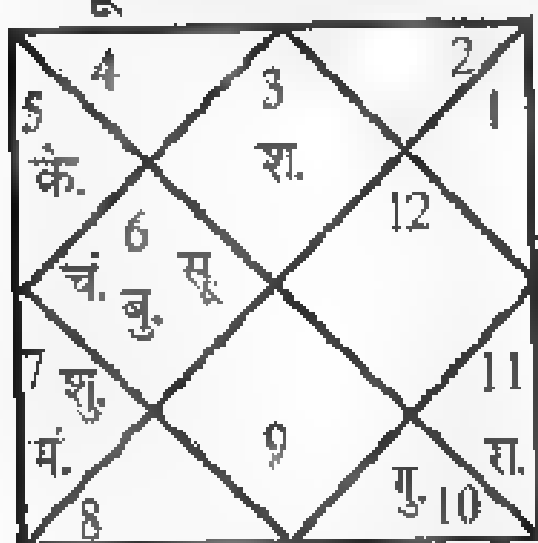
जन्म 25.9.1914, नक्षत्र-चित्रा। चौधरी देवीलाल किसान राजनेता के रूप में पूरे भारत में मशहूर हैं। उनके पुत्र हरियाणा के मुख्यमंत्री है। पचम भाव में स्वगृही शुक्र एवं मंगल तेजस्वी पुत्रो को जन्म देता है। केन्द्र मे **'भद्र योग'** तथा **'बुधादित्य योग'** ने उन्हें भारत का प्रधानमंत्री बना दिया।

ग्वालियर राजमाता श्रीमति विजयराजे सिंधिया

जन्म स्थान-सागर, जन्म तिथि-12.10.1919, जन्म समय-11.00। श्रीमति विजयराजे सिंधिया की कुंडली के तृतीय स्थान में मंगल व शनि की युति से पराक्रम में विग्रह रहा सम्पत्ति का विवाद सदैव उलझा ही रहा। सप्तमेश गुरु उच्च का होने से श्रीमति विजयराजे सिंधिया

का विवाह शाही खानदान में महाराजा जिवाजी राव सिंधिया से हुआ। वे भाजपा की उपाध्यक्ष पद पर रहीं। उन्होंने बृहस्पति के कारण अनेक बार लोकसभा चुनाव जीते उनके पुत्र व पुत्रीं दोनों ही राजनीति में सक्रिय हैं।
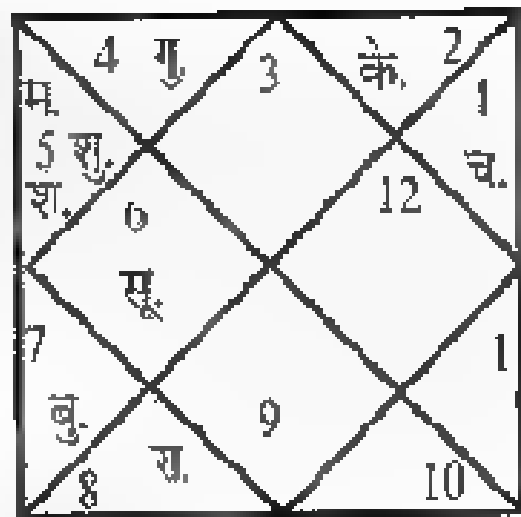
राजनेता श्री अर्जुन सिंह (कांग्रेस)
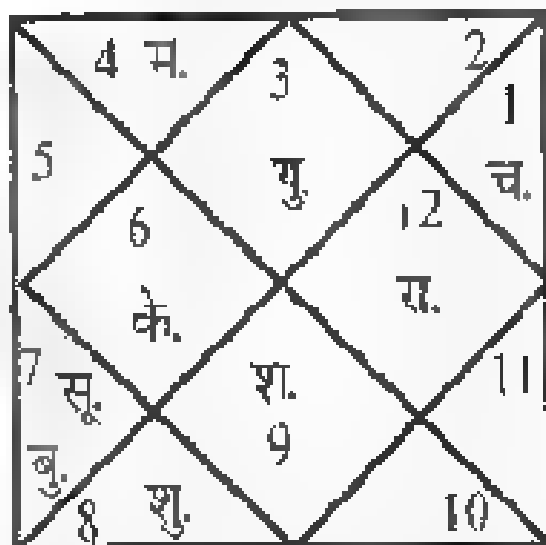
जन्म स्थान सतना, जन्म समय 22.00, जन्म तिथि-5.11.1930, श्री अर्जुन सिंह कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओ मे से एक है वे मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री, पजाब के गवर्नर एव राजीव गाधी के प्रमुख सलाहाकार थे। चारों केन्द्र भरे हुए होने से **'आसमुद्रात् योग'** एवं **'बुधादित्य योग'** के कारण उन्होंने भारत की राजनीति में अपना प्रमुख स्थान बनाया

श्री हेनरी किंसिजर
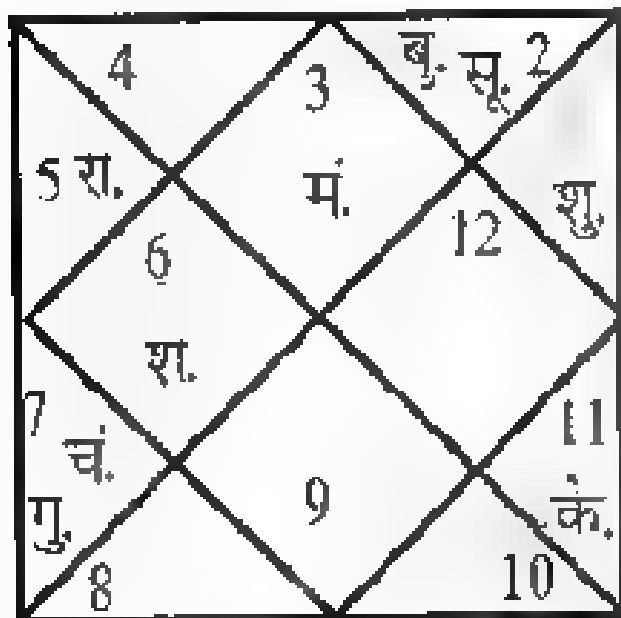
जन्म स्थान-फर्थ (जर्मनी), जन्म समय-प्रात 5.30, जन्म तिथि-27.5.1923। अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन के राज्य शासन सचिव श्री हेनरी किसिंजर उन भाग्यशाली व्यक्तियों में हैं। जिन्हें नोबल शान्ति पुरस्कार मिला। पंचम स्थान में **'गजकेसरी योग'** से उन्हें दलाली के व्यापार में भारी लाभ हुआ। धनेश चंद्रमा पंचम होने से ये महाधनी व्यक्तियों में एक हैं। **बुधादित्य योग** व्यय भाव में होने से इन्होंने पूरे विश्व का भ्रमण अनेक बार किया।

नाथूराम विनायक गोडसे
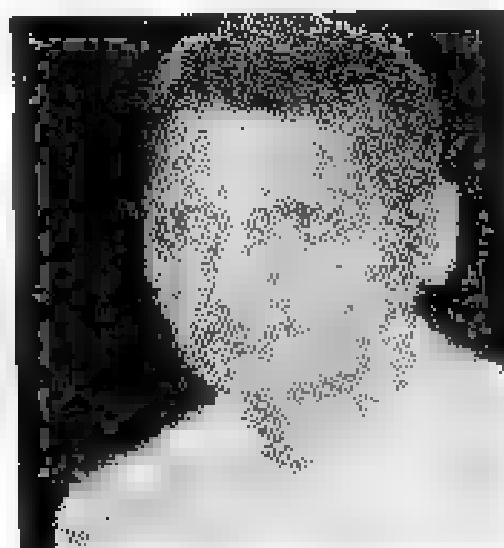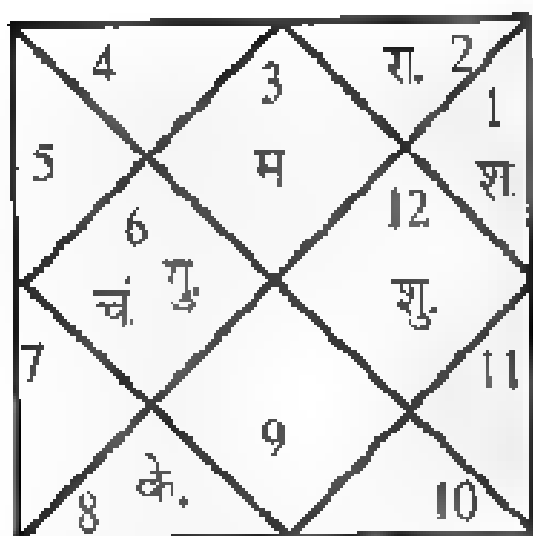
जन्म समय-प्रात 8.30, जन्म तिथि 19.5.1910। लग्नस्थ मंगल व्यक्ति को क्रोधी, दुस्साहसी व खूनी बनता है। द्वादश राहु जेल भेजता है। **'गजकेसरी योग'** के कारण गोडसे बुद्धिजीवी पत्रकार साहित्यकार थे। बृहस्पति दशा उन्हें 1945 में लगी। बृहस्पति केन्द्राधिपत्य दोष से पीड़ित था। शनि नीच का था। उनके द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की हत्या 30 जनवरी 1948 को हुई जब उन्हें बृहस्पति की दशा में शनि का अंतर चल रहा था। वहीं से दुर्दिनों की शुरुआत हुई और इन्हें जेल व मृत्युदण्ड की सजा हुई।

श्री बी.के. मलिक
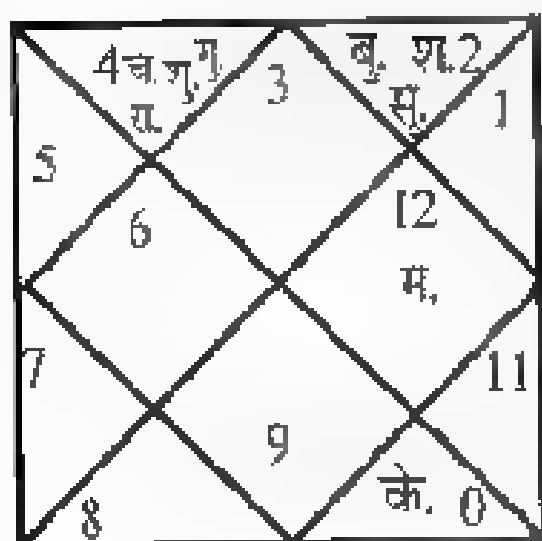
जन्म स्थान-अमृतसर, जन्म समय-7.39 जन्म तिथि 8.6.1943। दिल्ली स्पेशल सुरक्षा बल के डायरेक्टर जनरल पद पर कार्यरत हैं। उनकी कुण्डली में **कालसर्प योग पूर्ण** है। राजयोग कर्ता दसमस्थ मंगल गजकेसरी है। मंगल दिक्बली है वक्री है। दशमेश बृहस्पति उच्च का है। परन्तु व्यय भाव में तीन ग्रहों की युति में उनको अपनी योग्यता के अनुसार उच्च पद न मिल पाया।

श्री जयकरण बालानी (डी.आई.जी.)

जन्म स्थान नबाब शाह (सिंध), जन्म समय 8.45, जन्म तिथि-1.6.1928। जोधपुर शहर में प्रतिष्ठित सिंधी परिवार में जन्में डी.आई.जी. जयकरण बालानी का नाम प्रसिद्ध समाजसेवी व्यक्तियों में अग्रगण्य हैं। वे अत्यधिक विनम्र स्वभाव के रहे लग्न में स्वगृही बुध ने **'भद्र योग'** बनाया। जिससे उनका कार्यकाल यशस्वी रहा।
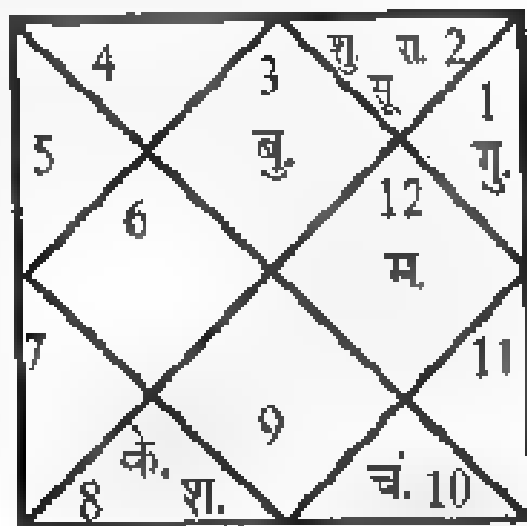
बंगारू लक्ष्मण (राष्ट्रीय अध्यक्ष भाजपा)
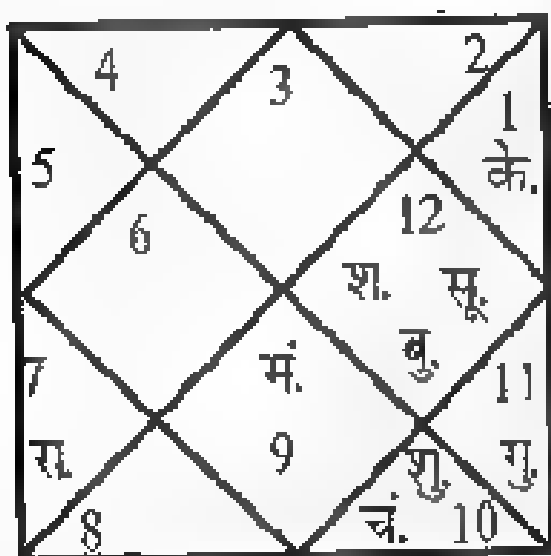
जन्म स्थान-हैदराबाद, जन्म समय-15.00, जन्म तिथि 17.3.1939। केन्द्र में **'बुधादित्य योग'** भाग्य में गुरु के कारण बंगारू लक्ष्मण भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जैसे पद पर आरूढ़ हुए। परन्तु पूर्ण **कालसर्प योग** के कारण मुंह में आया. कौर वापस उलट गया। वे रिश्वत काण्ड में फंसे एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष पद से हाथ धो बैठे।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्रशेखर
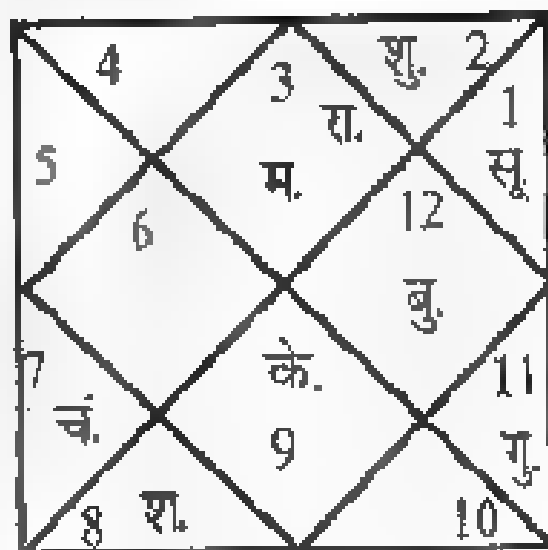
जन्म स्थान-बलिया (उत्तर प्रदेश), जन्म समय- प्रात 11.00, जन्म तिथि 17. 4.1927। लग्नेश बुध केंद्र में, गुरु त्रिकोण में स्वगृहाभिलाषी है। पंचम स्थान मे चंद्रमा, देवगुरु बृहस्पति की पूर्ण दृष्टि लग्न पर है जो स्वगृहाभिलाषी है। जिससे **'पद्मसिंहासन योग'** की सृष्टि हुई इसी प्रकार पराक्रमेश सूर्य उच्च का लाभ स्थान में **उभयचारी** योग के साथ है। जिन्होंने इन्हें प्रधानमंत्री पद पर पहुंचाया। 'यह कुडली भारत के अल्पकालिक प्रधानमत्री की है।' ऐसी अचूक भाविष्यवाणी इनके प्रधानमत्री बनने के एक वर्ष पूर्व हमारे कार्यालय द्वारा की जा चुकी थी।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई
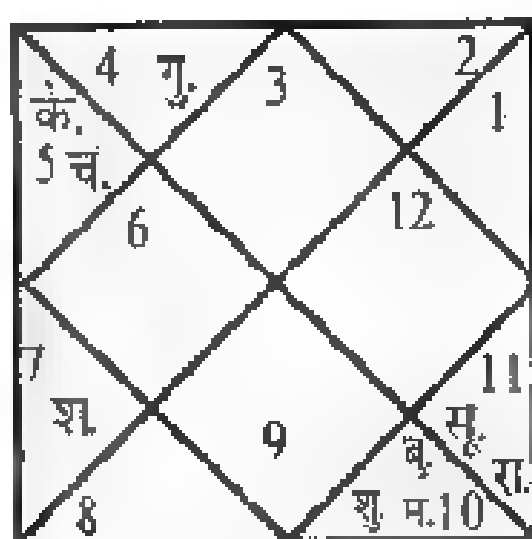
जन्म स्थान-बलसाड़ (गुजरात) जन्म समय 13.20, जन्म तिथि 29.2. 1896। दूसरे, छठे, आठवें बारहवें स्थान में ग्रह हो, तो **'सिंहासन'** नाम का राजयोग होता है। यह कुडली बड़ी विचित्र है, जिसमें चारों केन्द्र खाली हैं। गुरु उच्च का, शनि उच्च का, मंगल उच्च का, इन तीन उच्च के ग्रहों ने इन्हें उपप्रधानमंत्री एव भारत के प्रधानमत्री तक के पद तक पहुंचा दिया। अष्टम स्थान में मगल ने इन्हें शतजीवी बना दिया। अष्टमेश शनि और पचमेश शुक्र ने परस्पर स्थान परिवर्तन किया जिससे आयु सौ वर्ष से ऊपर की चली गई। चिरजीवी आयु की दृष्टि से प्रस्तुत कुडली ज्योतिष प्रेमियों के लिए संग्रहणीय है तथा 'दीर्घायु' का अनुपम उदाहरण है।

जोधपुर महाराजा श्री गजसिंह जी साहब

जन्म समय-(इष्ट) 24.57 जन्म तिथि- 13.1.1948। जोधपुर महाराजा गजसिंह का नाम नवकोटि मारवाट के धनी के रूप में आदर के साथ लिया जाता है। पराक्रमेश सुख केन्द्र में होने से पराक्रम अक्षुण्ण रहेगा। शुक्र उच्चाभिलाषी है, इस कुण्डली में धनेश चन्द्र ने लाभेश भाग्येश शनि के साथ 'राशि परिवर्तन' किया
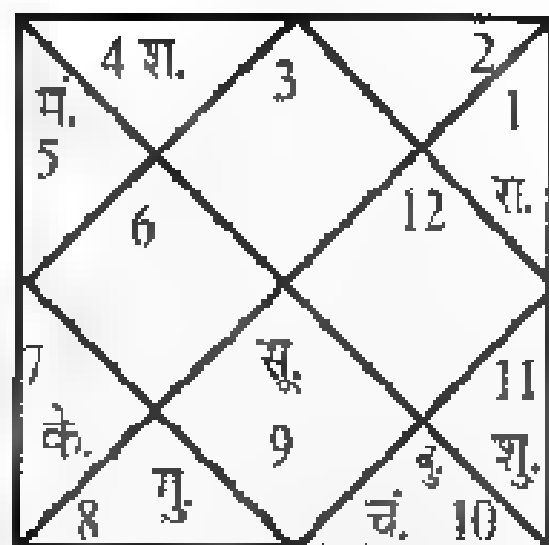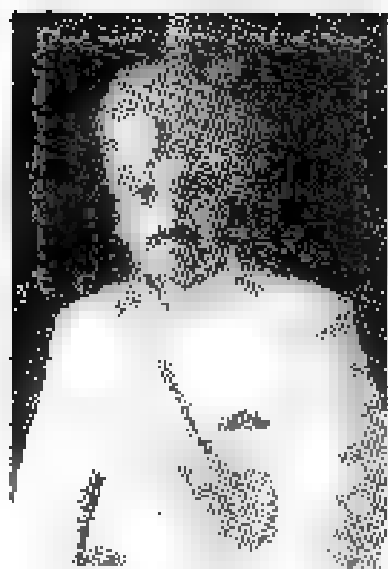
है। यह महाधनशाली एवं कीर्तिवन्त योग है। इनका राजतिलक 12 मई 1952 को हुआ।

श्री एस.बी. चव्हाण
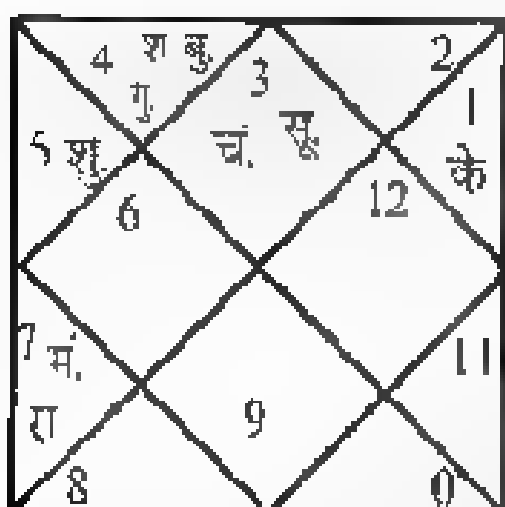
जन्म समय 5.30, जन्म तिथि- 14.7.1920। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एस. बी. चव्हाण पी.वी. नरसिम्हा राव के कार्यकाल में भारत के गृहमंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर रह चुके हैं। लग्न में सूर्य एवं उच्च के गुरु ने इन्हें राजपद तो दिया पर पूर्ण कालसर्प योग के कारण इन्हें स्थाई कीर्ति जितनी मिलनी चाहिए, नहीं मिल पाई। यहा चन्द्र एवं बुध ने परस्पर भाव परिवर्तन किया। इससे भी राजयोग शक्तिशाली बना। पंचम में राहु होने के कारण संतान शक्तिशाली राजयोग वाली नहीं हो पाई।

पूर्व वित्तमंत्री पी. चिदम्बरम्

जन्म स्थान- कराईकुण्डी (तमिलनाडू), जन्म समय 11.47, जन्म तिथि-16.9.1945। यहा मिथुन के राहु ने राजयोग प्रदान किया है सूर्य एवं बुध ने परस्पर घर परिवर्तन किया है। इससे लग्न, सुख एवं पराक्रम तीनों स्थान शक्तिशाली हो गये। पी. चिदम्बरम परम बुद्धिशाली रहे तथा वित्त विभाग में सम्बधित मंत्रालय में भी यशस्वी कार्यकाल में जुड़े रहे।
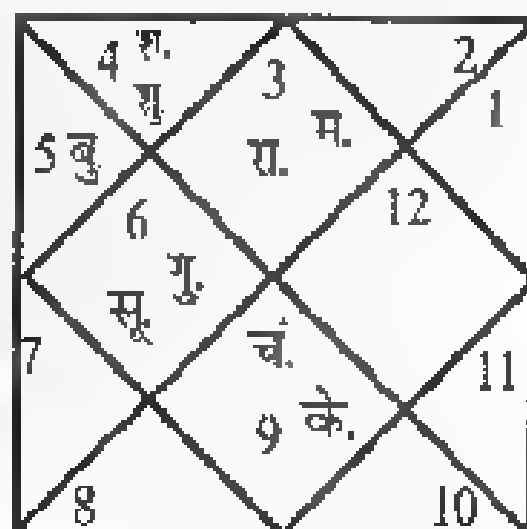
श्री प्रमोद महाजन युवा नेता (भाजपा)
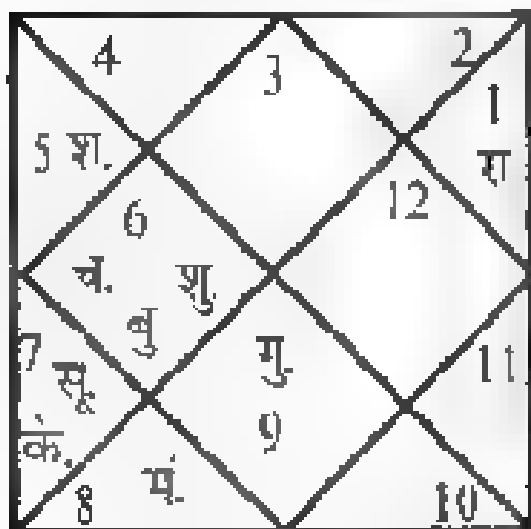
जन्म स्थान हैदराबाद, जन्म समय-प्रात 21.00, जन्म तिथि-30..0.1948। केन्द्रस्थ उच्च के बुध से **'भद्र योग'** बना। शुक्र के कारण **'नीचभंग राजयोग'** बना। फलतः भाजपा की राजनीति में युवा नेता प्रमोद महाजन का एक विशिष्ट स्थान है। गुरु स्वगृही केन्द्र में **'हंस योग'** बना रहा है इससे वे भारत के पूर्व रक्षा मंत्री जैसे पद को प्राप्त कर चुके हैं। मगल छठे विपरीत राजयोग बना रहा है। अतः आगे भी राजनीति में इनका भविष्य उज्जवल है।

श्रीमति प्रियंका गांधी
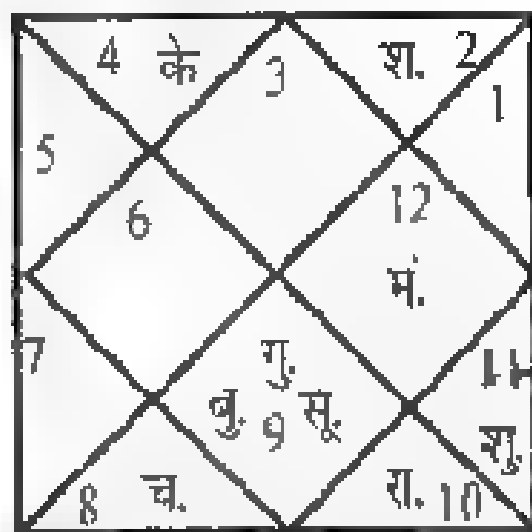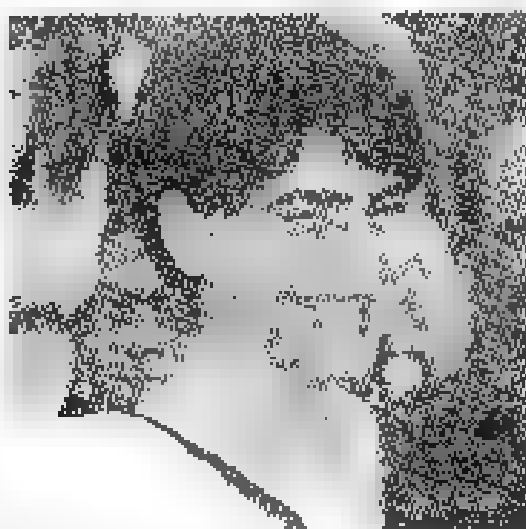
जन्म स्थान दिल्ली, जन्म समय प्रात .7.05, जन्म तिथि-12.1.1972। भारतीय राजनीति एवं नेहरु परिवार के वारिस के रूप में कांग्रेसजन प्रियंका की ओर बड़ी आशाभरी दृष्टि से देख रहे हैं। दशम स्थान में दिक्बली मंगल, सप्तम में बृहस्पति राजयोग की सृष्टि कर रहा है। **बुधादित्य योग** एवं **हंस योग** इनको उच्च पद अवश्य दिलायेगा।

मुख्यमंत्री जयललिता

जन्म स्थान चैन्नई, जन्म समय-2.34, जन्म तिथि-24.2.1948। कु. जयललिता की कुण्डली में गुरु केन्द्र में होने से **हस योग** बना। शुक्र उच्च का केन्द्र म होने
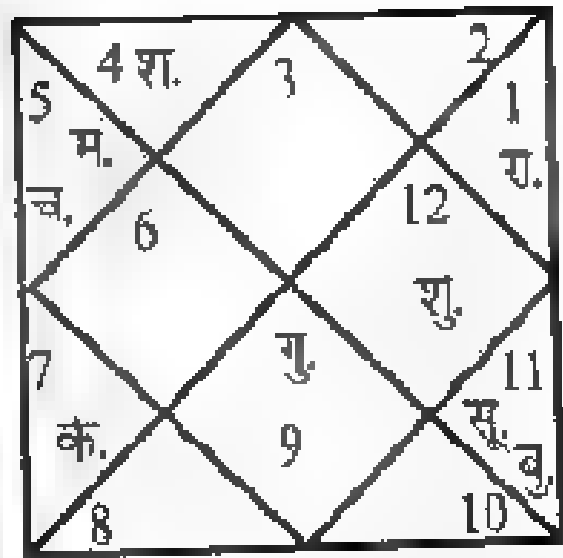
से **'मालव्य योग'** बना। ये दोनों राजयोग महान शक्तिशाली हैं। जिससे जातक शक्तिशाली मुख्यमंत्री पद पर वन्दित है। चन्द्र+मंगल **लक्ष्मी योग** पराक्रम बढ़ा रहा है। बुधादित्य योग भाग्य स्थान में राजपक्ष में शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सहायक है।

दलित उपप्रधानमंत्री बाबू जगजीवन राम
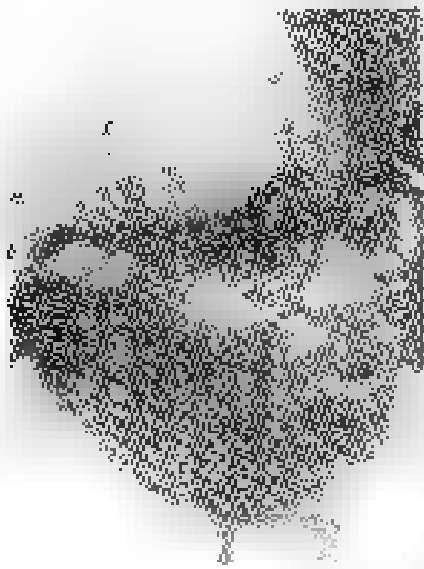
बाबू जगजीवन राम का नाम दलित राज नेताओं में अग्रणी रहा। केन्द्र में उच्च के शुक्र ने **'मालव्य योग'** बनाया। **बुधादित्य योग नीचभंग** राजयोग ने उन्हें भारत के रक्षामंत्री से उप प्रधानमंत्री तक की कुर्सी तक पहुंचाया। आसमुद्रात् योग में उनकी कीर्ति भी अक्षुण्ण बनी रही।
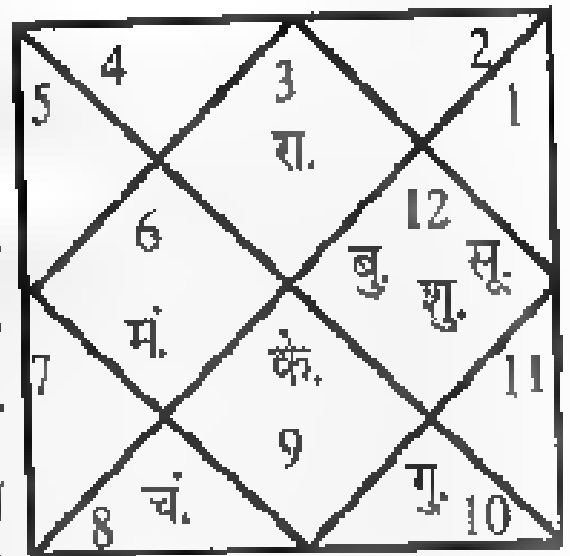
श्री बिल गेटस्, दुनिया का सबसे धनी व्यक्ति
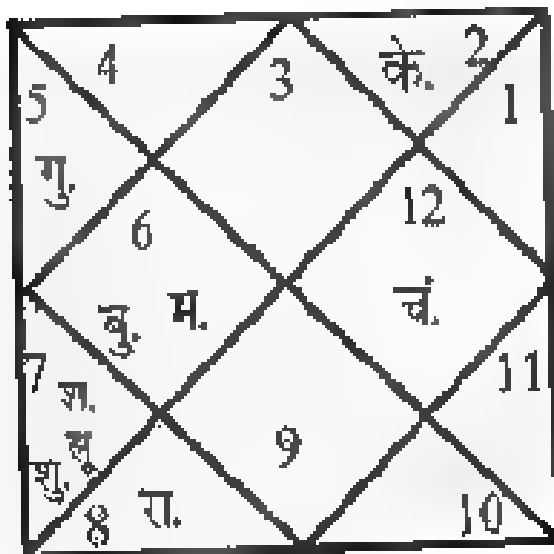
जन्म स्थान सिएटल (अमेरिका), जन्म समय-20.58, जन्म तिथि-28.10

.955। विश्व के सर्वाधिक धनी व्यक्तियो मे बिल गेट्स का विशिष्ट स्थान है। कम्प्यूटर की दुनिया के माध्यम से उन्होंने देश विदेश में अपूर्व ख्याति अर्जित की। केन्द्र मे उच्च के बुध से **'भद्र योग'** ने उन्हें यशस्वी राजा बना दिया तो पञ्चम में **'किम्बहुना योग'** से वे अरब खरबपति बन गये.

श्री उमर अब्दुल्ला (मंत्री)
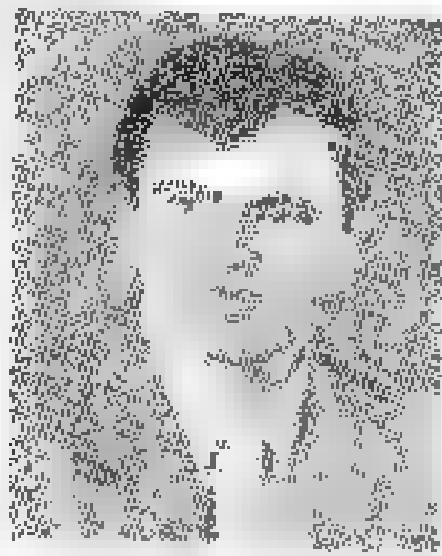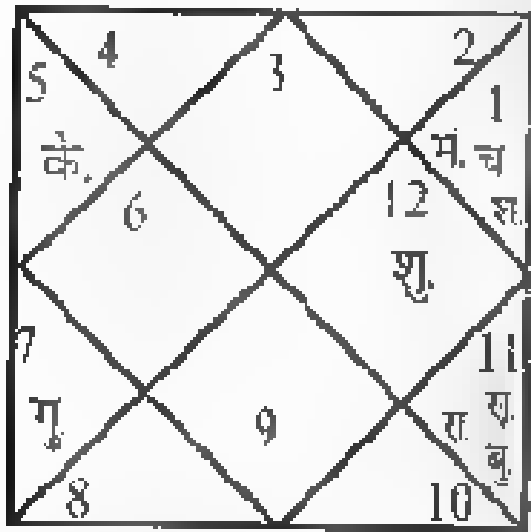
शेख श्री उमर अब्दुल्ला का नाम जम्मू कश्मीर की राजनीति में प्रमुख स्थान रखता है. केन्द्रस्थ उच्च के शुक्र ने **'मालव्य'** योग बनाया, जिससे वे राज्य के मंत्री बने केन्द्र की राजनीति में भी उनका महत्वपूर्ण हस्तक्षेप है। लाभ स्थान में **'नीचभंग राजयोग'** एव भाग्य स्थान में **'बुधादित्य योग'** होने से आगे भी राजनीति में उन्हें सफलता प्रदान करता रहेगा।

युवराज दीपेन्द्र
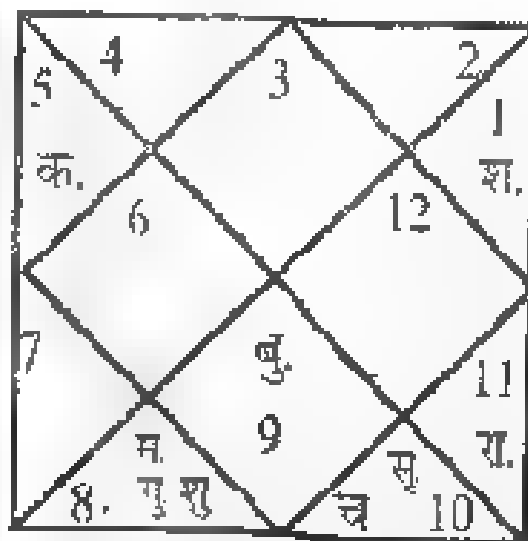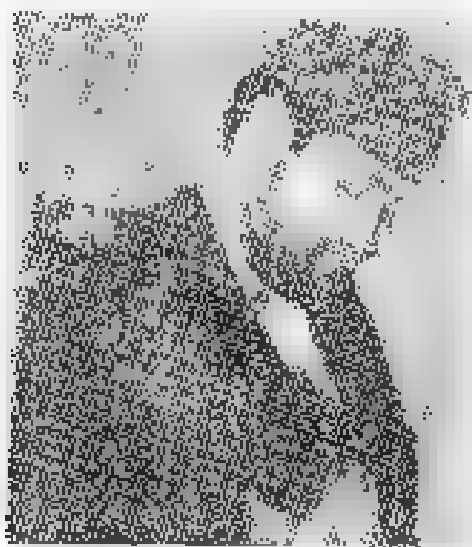
जन्म स्थान-नेपाल, जन्म समय-प्रात 18.00 साय, जन्म तिथि-27.1.1971। नेपाल नरेश एक ऐसे कुख्यात व्यक्ति के रूप में याद किये जायेगे, जिन्हे न तो राजगद्दी मिली न प्रेमिका। नीच का शनि मलिन बुद्धि देता है तथा छठे आठवे स्थान में शुभ ग्रहों की उपस्थिति ने सारे राजयोग नष्ट कर दिये। 28 वर्ष की आयु

में वे स्वयं मारे गये एवं अपने परिवार को भी मार डाला। उनकी मृत्यु 4.6.2001 प्रात: 3.45 को काठमण्डू में हुई।

चार्ल्स शोभराज
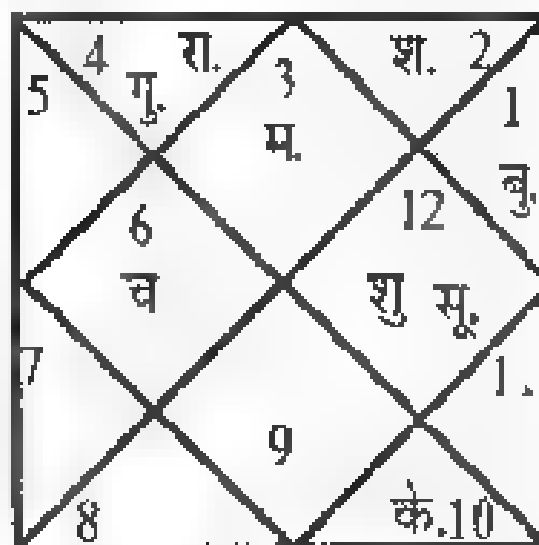
जन्म समय प्रात 11.30, जन्म तिथि-6.4.1944। एक शातिर अपराधी की यह कुण्डली है लग्न में मंगल इसे क्रोधी व दुस्साहसी बनाता है। शुक्र उच्च का केन्द्र में **'मालव्य योग'** बना रहा है। जिससे राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं विलासी जीवन जिया। चद्रमा शत्रुक्षेत्री एवं आंशिक **कालसर्प योग** के कारण इसका अन्त दु:खद रहा।

आंइसटीन वैज्ञानिक
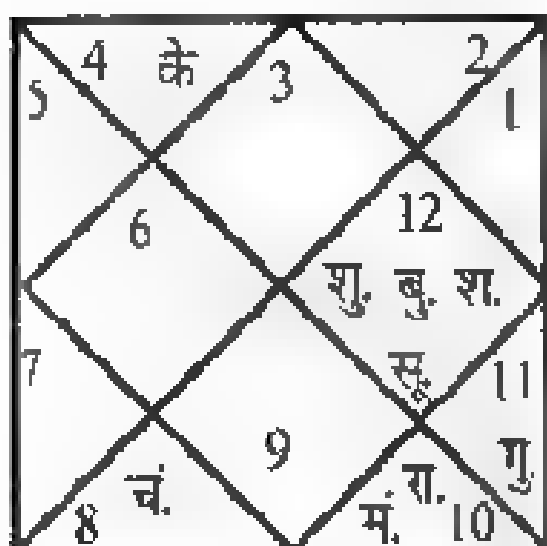
जन्म स्थान-उल्म (जर्मनी), जन्म समय-प्रात 11.30, जन्म तिथि-14.3. 1879। महान वैज्ञानिक एलबर्ट आइस्टीन की कुण्डली में **नीचभंग राजयोग** दशम स्थान में है जिसके कारण उन्हे अद्वितीय कीर्ति मिली। मगल **विपरीत राजयोग** करके उच्च का है। चंद्रमा नीच का है। परतु बृहस्पति राहु के नक्षत्र में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। आइसटीन की मृत्यु बृहस्पति की दशा में ही हुई तथा क्रूर रूप से हुई।

श्रीमति हिलेरी क्लिंटन
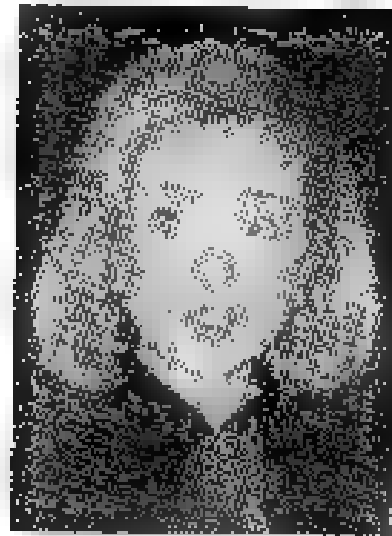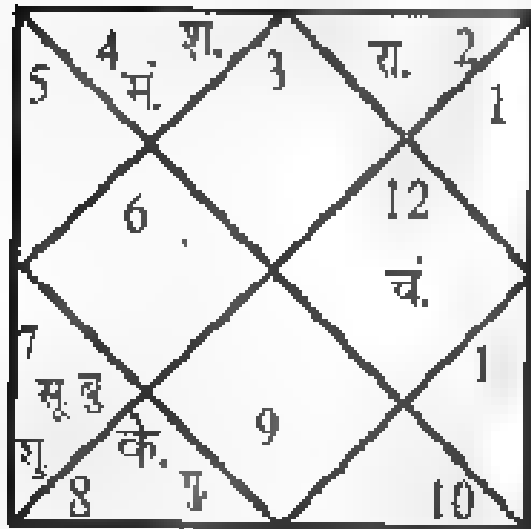
जन्म स्थान-शिकागो (अमेरिका), जन्म समय रात्रि 8.00 बजे, जन्म तिथि-26.10.1947। अमेरीका के पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन की पत्नी श्रीमति हिलेरी क्लिंटन, कानूनी शिक्षा व समाज शास्त्र की प्रोफेसर रही। पंचम स्थान में **नीचभंग राजयोग** की स्थिति यह बता रही है। विवाह के पांच वर्ष बाद एक प्यारी सी बच्ची चेल्सी को मा बनी। सन् 1998 मे इनके पति के ऊपर मोनिका लेनिस्की काण्ड का गंभीर आरोप लगा। श्रीमति हिलेरी ने इसका जमकर मुकाबला किया इन्हीं दिनों में अपने गृह प्रांत की सीनेटर बनी। मौजूदा दौर में 2006-2007 म होने वाले राष्ट्रपति चुनाव में भी श्रीमति हिलेरी प्रमुख दावेदार के रूप मे खड़ी होंगी

श्री रामकृष्ण डालमिया

जन्म स्थान दिल्ली, जन्म समय-11.50, जन्म तिथि 7.4.1893। यह कुंडली भारत के प्रसिद्ध पूंजीपति सेठ श्री रामकृष्ण डालमिया की है।

नीच स्थितो जन्मनि यो ग्रह स्यात्तद्राशिनाथोऽथ तदुच्चनाथः।
भवेत् त्रिकोणे यदि केंद्रवर्ती राजा भवेद्धार्मिकचक्रवती॥

–लग्नचंद्रिका श्लोक 86/पृ. 17
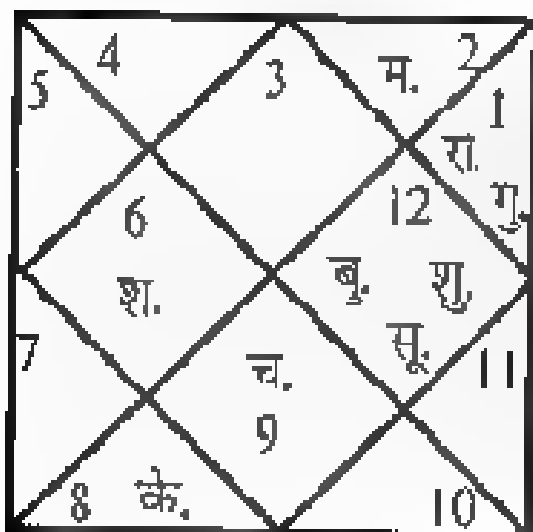
जो ग्रह नीच राशि का हो उस ग्रह के राशि का स्वामी तथा उस राशि का उच्च नाथ केंद्र या त्रिकोण में हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है। यहा बुध नीच का गुरु की राशि में है, गुरु कर्क मे उच्च का है यहां उच्चनाथ चंद्रमा केंद्र में बैठकर लग्न को देख रहा है तथा लग्नेश बुध "**नीचभंग राजयोग**" बनाकर उच्च का शुक्र के साथ केंद्र में है। पराक्रमेश

सूर्य दिक्‌बली होकर उच्चाभिलाषी है। उच्चाभिलाषी शनि भी केंद्रस्थ होकर उत्तरोत्तर श्रेष्ठ राजयोग की सृष्टि कर रहा है।

श्री दुर्गाप्रसाद साबू

जन्म स्थान नाटा सिटी, जन्म समय-इष्ट 39/9, जन्मतिथि–11.10.1929। यहा बुध उच्च का केन्द्र मे होने से '**भद्र योग**' बना। **बुधादित्य योग** बना। धनेश चद्रमा अपने घर (धनस्थान) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। लघु सीमेंट प्लांट बनाने वाले भारत के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री दुर्गाप्रसाद साबू विनम्र स्वभाव के तथा धनी होने के साथ-साथ समाजसेवी भी है।
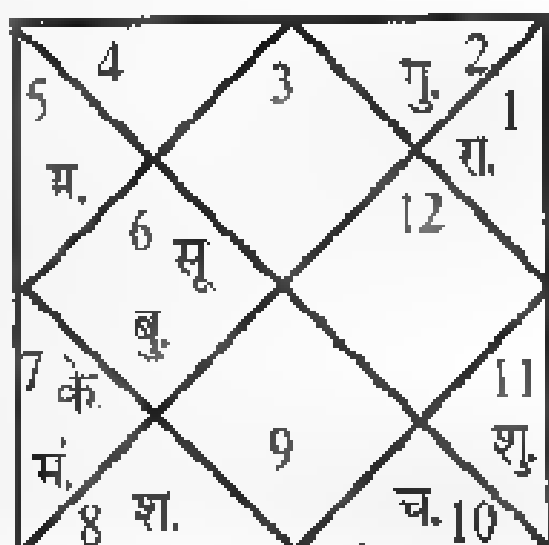
श्री जुगलकिशोर बिड़ला
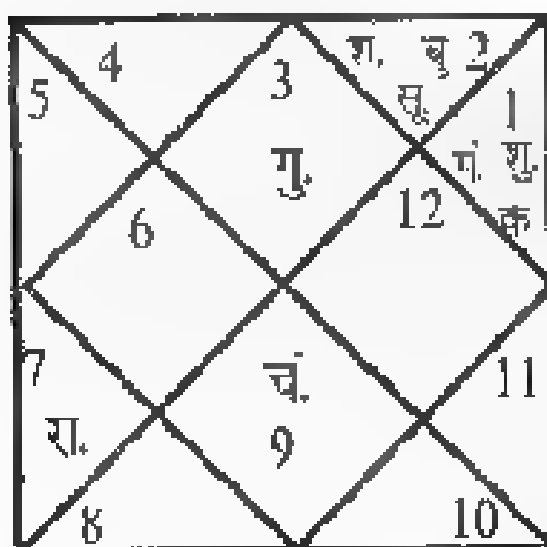
श्री जुगलकिशोर बिड़ला का नाम धनपति घरानों में विशेष है। घर कुण्डली विचित्र है। लग्न में बृहस्पति, **कुलदीपक योग**, **केसरी योग** बना रहा है। सामने चद्रमा होने से **गजकेसरी योग** बना। **बुधादित्य योग** द्वादश स्थान होने श्री बिड़ला महान् दानी थे तथा पूरे विश्व का भ्रमण किया। शनि द्वादश में विपरीत राजयोग बना रहा है। इसी से वे करोड़पति-अरबपति बने।

श्री पद्‌म मेहता

जन्म स्थान-जोधपुर, जन्म समय 2.25, जन्मतिथि 6.8.1948। श्री पद्‌म मेहता सम्पादक एवं स्वामी दैनिक जलतेरीय एवं माणक तथा माणक टी.वी. न्यूज के प्रणेता है। **बुधादित्य योग** धनस्थान मे शुभ है मगल दिक्बली है। परंतु आंशिक **कालसर्प योग** के कारण जीवन संघर्षमय रहेगा।
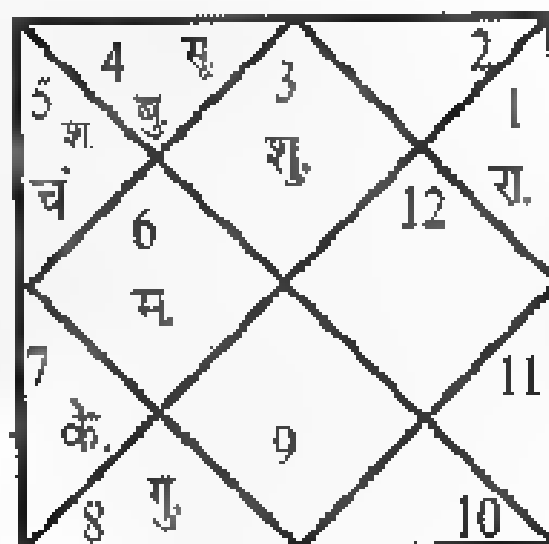
स्वतंत्र राजस्थान की कुण्डली
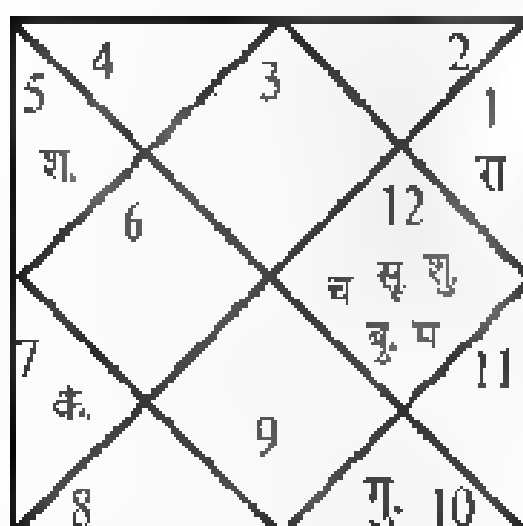
जन्म समय प्रात 12.00, जन्म तिथि 30.3.1949। शुक्र केन्द्र में **'मालव्य योग'**, **'नीचभंग राजयोग'**, **'बुधादित्य योग'** मगल दिग्बली, पंचग्रह युति केन्द्र में होने से राजस्थान प्रान्त मे जो भी बाहर का आकर बसेगा, मालामाल हो जायेगा राजस्थान सदैव उन्नति पथ पर आगे बढ़ेगा तथा अन्य राज्यों के अपेक्षाकृत बहुत श्रेष्ठ, सभ्य एवं विकासशील राज्य होगा।

शहीद खुदीराम बोस (मृत्युदण्ड भोगी)
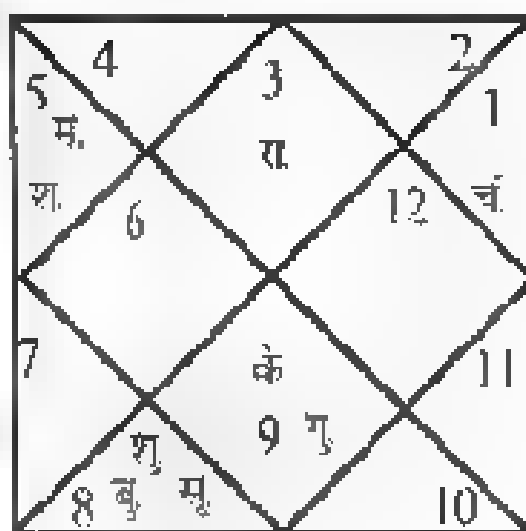
केन्द्र के पाप ग्रह, गुरु पाप पीड़ित हैं। लग्न छठे **'लग्नभंग योग' पराक्रमभंग योग संततिहीन योग** शुभ ग्रह छठे होने से जातक को देशभक्ति हेतु फांसी की सजा मिली। यहां बृहस्पति ने **'हंस योग'** बनाकर जातक को अमर अनन्त कीर्ति प्रदान कर दी

❑❑❑

कर्क लग्नफल

अनुक्रमणिका

ज्योतिषशास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिषशास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदाग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिषशास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिष के लिए किया गया है।[5] स्वय सायणाचार्य ने **'ऋग्वेदभाष्यभूमिका'** मे लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है[6] उदाहरणार्थ 'कृत्तिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें[7] कृत्तिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्॥ इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयन चक्षुर्निरुक्त श्रोत्रमुच्यते॥ -पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिद कालविधान शास्त्र यो ज्योतिष वद स वेद यज्ञम् फ. ज्यो वि. कृ समीक्षा पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागाना मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणा ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम् इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद ज्ञानमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ 4) गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक सन् 1976
7. कृत्तिकास्वग्निमादधीत तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकायां दीक्षरन फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन तैत्तरीय संहिता 6.4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुतिवाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों मे बीज कब बोना चाहिए? फसलें कैसी होंगी? वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश संस्कार एव यज्ञ हवन, निश्चित काल मुहूर्त में ही किए जाते हैं श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।
यच्च किंचित् कुर्वत सतां कृत्यामेवा कुर्वत॥1॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्ररहित हो जाते हैं। शास्त्र आगे कहते हैं कि ऐसे यज्ञ यज्ञमान को नष्ट कर देते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय–लगाकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
द्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'ज्योतिस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीनों शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिषशास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक ज्योतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[2]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहो की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[3]

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सावत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[4]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[5]

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकर 'पुमान्नपुसंक दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो, इति मेदिनीकोष-1929 पृ. स. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. स 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 961 पृ स 550
5. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिषशास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नही है तथापि ज्योतिष सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यो व गणनाओं के बारे में विद्वानो में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारो का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल मे भी देखा जाता था तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण मे ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक '**ओरायन**' के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया।[1] वहीं प. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक '**वैदिक-सम्पत्ति**' में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है[2]

भारतीय ज्यातिर्गणित एव वेध सिद्धान्तों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एव प्रमाणिक परिचय हमे '**वेदाग ज्योतिष**' नामक ग्रन्थ में मिलता है।[3] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है।

तब से लेकर अब तक ज्योतिषशास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[4] इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है -**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[5]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापिनं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[6]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत, स्मार्त कर्म, गर्भाधान जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एव लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

---

1. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3 62
2. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
3. वैदिक सम्पति, प. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
4. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
   तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते॥ पाणिनीय शिक्षा श्लोक 41 42
5. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa&(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3
6. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालये पूना, पृ. 1

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥3॥[1]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चन्द्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चन्द्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[2]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार मे ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देतीं, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[3]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों मे मित्रों व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र नही है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र मे नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वय वराहमिहिर कहते है कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[4] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पुलट हो जाए।[5] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन

---

1. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
2. जातकसार दीप-चन्द्रशाखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट आरियण्टल सीरिज, मद्रास
3. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड पृष्ठ 550
4. सुगम ज्योतिष-प. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन 1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ठ 17
5. बृहत्संहिता, सांवत्सर सूत्राध्याय 1/3?
6. बृहत्संहिता, सांवत्सर सूत्राध्याय 1/24

के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[1] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान् व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।[1]

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज मे एव अनवरत अनुसंधान परीक्षणों मे संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो बरसात तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक बरसात के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे मे प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने मे हाथ डालोगे, मिट्टी हो जाएगा समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घडी की सुई के साथ साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत तुल्य उपादेय है घोर कठिनाई के क्षणो में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एव भौतिक संसाधनो का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर मस्जिद या गिरजाघरों मे, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में आकर अपने दुःख दर्द को फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरो में पडे निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द स प्रस्फुटित होती है ऐसे में इष्ट सिद्ध

---

1 अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः

तथा सांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥- बृहत्संहिता अ. 2/4

ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते है। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत मे भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिषशास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है -

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥१॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो। इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो जाता है, इस दिव्य ज्ञान की गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है,

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोडने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नही, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[2]

मेरे निजी शब्दों में '**ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।**'

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[3]

❑❑❑

---

1. बृहत्संहिता, सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30
2. वक्री ग्रह (प्रकाशन 1991) डायमंड प्रकाशन दिल्ली पृष्ठ 140
3. यथा काष्ठमयः सिंहा यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदानधीनोपिज्योतिशास्त्र बिना द्विजः। वेद व्यास ज्योतिनिबन्ध 20 पृ. 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिर्थिन च नक्षत्रं न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशसन्ति गर्गनारदकश्यपाः॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाभ्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफल स्मृतम्॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चन्द्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान अभीष्ट फल को देने वाले होते हैं

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥

ज्योतिर्विवरण में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं॥

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके फलादेश करना चाहिए॥

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिन्त्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सम्पूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है॥

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. भगदत्त जी राज व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो मेष लग्न में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब को करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम,
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता वृषभ लग्न।
तरह तरह के शाल दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुन लग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्क लग्न के देखे सदा नर उनके रहती बीमारी
सिंह लग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी
कन्या लग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी,
तुला लग्न के तस्कर बालक, खेले जुआ और अपनी नारी।
वृश्चिक लग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनो काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनु लग्न

मकर लग्न मन्द बुद्धि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भ लग्न के पूत बड़े अवधूत, रात दिन करते रहते भजन।
मीन लग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व

हिन्दी मे 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendant) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों मे देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक ''समय'' विशेष के परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि ''लग्न'' का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाए तो साफ हो जाएगी क्योंकि अग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच मे पृथ्वी एव उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला का विदेशो में Birth कहते हैं, इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत मे इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुत: आकाश में दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहल) घर का ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है और दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं 60 में बारह का भाग देने पर 5 घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहो के द्वारा निर्मित होती है यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहा मे गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही ''द्वादश घर'' या ''बारह भाव'' कहलाते हैं इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है चूंकि सूर्य पूर्व दिशा

5	4 ☉ लग्न	3	
6	7	1	2
8	10	11	12
9			

मे उदित होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
.2.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। 1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचागों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न भिन्न देशो की दैनिक लग्न सारणिया, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती है। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का विशेष महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्न देहो वर्ग षट्कोऽगांनि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार-

यथा तनुत्वादनमन्तरेव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एव पराग प्रक्रियाओ की कल्पना व्यर्थ है उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एव फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः

जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि—''**लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्**''

दाया नेत्र, 2
बांहि की भुजा 3 कधा दोनों
सिर चेहरा 1
बायां नेत्र 12
11 पिण्डली
4 वक्षस्थल, छाती, हृदय
हृदय, वक्षस्थल, सीना 10
5 दायां पैर
7 गुप्तेन्द्री गुदा, लिंग
9 जांघ
6 कमर
पैर 8 बायां

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा इस पर हमारी पुस्तक **''ज्योतिष और आकृति विज्ञान''** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहो के स्वभाव व चरित्र से मिलता जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एव पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

द्वितीय भाव
द्वादश भाव
तृतीय भाव
प्रथम भाव
एकादश भाव
चतुर्थ भाव
दशम भाव
पंचम भाव
सप्तम भाव
नवम भाव
षष्ठ भाव
अष्टम भाव

द्रव्य
व्यय
पराक्रम
देह
लाभ
सुख
राज्य
सुतौ
कलत्र
भार्ग्य
शत्रु
मृति

कर्क लग्न एक परिचय

1.	लग्नेश	–	चंद्रमा
2.	धनेश	–	सूर्य
3.	पराक्रमेश, खर्चेश		बुध
4.	सुखेश, लाभेश	–	शुक्र
5.	पंचमेश, राज्येश	–	मंगल
6.	षष्ठेश, भाग्येश	–	गुरु
7.	सप्तमेश, अष्टमेश	–	शनि
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-मंगल, 9 गुरु
9.	दुःस्थान के स्वामी	–	6-गुरु, 8 शनि, 12 बुध
10.	केन्द्राधिपति	–	1-चंद्र, 4-शुक्र, 7-शनि, 10-मंगल
11.	पणफर के स्वामी	–	2 सूर्य, 5 मंगल, 8 शनि, 11-शुक्र
12.	आपोक्लिम	–	3 बुध, 6 व 9-गुरु, 12 बुध
13.	त्रिकेश	–	6-गुरु, 8-शनि, 12-बुध
14.	उपचय के स्वामी	–	3 बुध, 6-गुरु, 10 मंगल, 11 शुक्र
15.	शुभ योग	–	1. मंगल, 2. गुरु
16.	अशुभ योग	–	1. शुक्र, 2. बुध, 3. शनि 4. सूर्य कुछ शुभफल भी
17.	निष्फल योग	–	1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि
18.	सफल योग	–	1. चंद्र+मंगल, 2. चंद्र+गुरु, 3. मंगल+शुक्र, निकृष्ट है, 4. मंगल+गुरु, 5. मंगल+शनि
19.	राजयोगकारक	–	मंगल व गुरु
20.	मारकेश	–	शनि और सूर्य

21.	**पापफलद**	–	गुरु और शनि
22.	**शुभयुति**	–	?
23.	**अशुभयुति**	–	?
24.	**परमपापी**	–	बुध

विशेष-कर्क लग्न में मंगल पूर्ण योगकारक होता है। शनि मारक और साहचर्य से फल देता है

❑❑❑

कर्क लग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

भार्गवेन्दुसुतौ पापौ भूसुताङ्गिरसौ शुभौ।
एक एव ग्रहः साक्षाद्भूसुतो योगकारकः॥11॥
निहन्ता रविज्योऽन्ये तु मानिनो मारकव्हयाः।
(पापिनो)
कुलीरसंभवस्यैव फलान्युक्तानि सूरिभिः॥12॥

दूसरा पाठ

शुक्रमन्दबुधाः पापाः विदुर्धिषणभास्करौ
राजयोगकरः साक्षात् एक एव धरासुतः॥13॥
भवेतां राजयोगस्य कारकौ गुरुभूमिजौ।
रविः साक्षान्न हन्ता स्यात् मारकत्वेन लक्षितः॥14॥
शुक्रादयो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः।
कुलीरसंभवस्यैव फलान्यूह्यानि सूरिभिः॥15॥

तीसरा पाठ

शुक्रमन्दबुधाः पापाः शुभौ धिषणभूसुतौ॥16॥

पहला पाठः—शुक्र और बुध ये अशुभ हैं कारण शुक्र केन्द्र और एकादश का स्वामी होता है और बुध तृतीय और द्वादश स्थान का स्वामी होता है, उसी प्रकार शनि मारक है कारण वह मारकेश और अष्टमाधिप है। मंगल और गुरु शुभ फल उत्पन्न करने वाले होते हैं। पाप ग्रह यदि केन्द्र के अधिपति हो तो वे अशुभ फल नहीं देते ऐसा पूर्व में कहा गया है इसलिए

मगल शुभ है क्योकि त्रिकोण और दशम स्थान का अधिपति होने से राजयोग उत्पन्न: करता है इस प्रकार कर्क लग्न का शुभाशुभ फल समझना चाहिए।

दूसरा पाठ—कर्क लग्न हो तो शुक्र, शनि, बुध, गुरु और रवि अशुभ फल देते हैं अकेला मगल मात्र राजयोग कारक होता है। गुरु मगल का योग हो तो वह राजयोग होता है। रवि मारक लक्षणों से युक्त हो फिर भी वह स्वय मारक नहीं बनता है, शुक्र आदि करके अशुभ ग्रह मारक हो सकते है। कर्क लग्न में जन्म हो तो ज्ञातो से इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना चाहिए।

स्पष्टीकरण—कर्क लग्न हो तो मंगल दशमाधिपति और पचमाधिपति होता है, अर्थात् वह प्रबल राजयोग का कारक होता है, गुरु षष्ठ स्थान का भाग्य स्थान का स्वामी होता है। षष्ठ स्थान अशुभ और भाग्य स्थान शुभ ऐसी स्थिति में गुरु भाग्यधीश होने के कारण से उसका मंगल योग हो तो वह राजयोग कारक होता है।

इन तीनो ही पाठो में शुक्र और बुध को अशुभ फल देने वाले जो कहा है उसमें दो मत नही हो सकते। दूसरे और तीसरे पाठ में अशुभ ग्रहों में शनि को भी अशुभ ग्रह में डाला है। पहले और तीसरे पाठों में शुभ फल देने वाले ग्रहों में मंगल और गुरु की योजना की है। और दूसरे पाठ में गुरु और रवि लिए है। इनमे से मंगल को उडा दिया है और उसकी जगह रवि मारक स्थान मगल योग यदि हो तो विशेष फलदायक होता है बुध मारक लक्षणो से युक्त हो तो भी स्वयं मारक नहीं होता, कुछ स्थानों में बुध की जगह मद: याने शनि एसा पाठ है। मारक लक्षणों से युक्त ऐसे बुधादि ग्रह मारक होते हैं सिंह लग्न में जन्म हो तो ज्ञाताओं को इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना चाहिए।

स्पष्टीकारण—वास्तविक कर्क और सिह लग्न के शुभाशुभ ग्रह एक ही हैं। परन्तु पहले पाठ में शुक्र यदि मगल से युति करे तो शुभ फल नहीं देते ऐसा कहा है यह बराबर है, कारण चतुर्थेश और भाग्येश मगल को त्रिषडायपति (और दशमश) शुक्र मिलता है। वैसे ही शुक्र दशम स्थान (केन्द्र का) का अधिपति है ''केन्द्राधिपत्य दोषस्तु बलवान गुरु शुक्रयो'' इस नियम के अनुसार शुक्र को दुययम (डबल) अशुभत्व का अधिकार प्राप्त हुआ। इसके अलावा शुक्र मगल का शत्रु है। ''भावार्थरत्नाकर'' ग्रथ में श्री रामानुजाचार्य ने कहा है कि सिंह लग्न को शुक्र और मगल ये दशमेश नवमेश होने पर भी इनका योग राजयोग के फल नहीं देते। पहले पाठ में शनि का विचार ही नहीं किया गया है और दूसरे पाठ मे कुछ प्रतियो में बुध मारक लक्षणा से युक्त होने पर भी स्वय मारक नहीं होता तो कुछ प्रतियो में शनि मारक लक्षणो से युक्त होने पर भी स्वयं मारक नही होता, वास्तविक बुध एकादश और द्वितीय स्थान का अधिपति है और शनि षष्ठ और सप्तम स्थानों का स्वामी है। द्वितीय और सप्तम ये मारक स्थान हैं। उसी प्रकार षष्ठ और एकादश ये त्रिषडाय स्थान हैं। रवि और चन्द्रमा की विवेचन मे से पूर्णत: स्थान नहीं है। मगल भाग्याधिपति और चतुर्थाधिपति होने से श्लोक 11 के अनुसार अकेला राजयोग करने म समर्थ है गुरु शुक्र का योग शुभफलदायक नही होने के कारण शुक्र तृतीयाधिपति

और दशमाधिपति और गुरु पंचमाधिपति और अष्टमाधिपति होने के कारण से और कोई भी ग्रह अष्टमेश से युक्त हो तो वह दोषी होता है, ऐसा ग्रंथ में कहा गया होने से यह योग दोषकारक माना गया है। सूर्य लग्नेश और वह लग्न (केन्द्र त्रिकोण) का स्वामी होकर शुभ फल देने वाला है चन्द्रमा व्ययेश और अशुभ फल देने वाला होता है इसलिए उसका विवेचन नहीं किया गया है। परन्तु श्लोक 8 के अनुसार सूर्य और चन्द्रमा क्रमशः कर्क और सिंह लग्नो के लिए द्वितीयेश द्वादशेश होते हैं। परन्तु दोनों ग्रह की एक ही राशि से उन्हे सम माना गया है। और वे जिन स्थानों मे स्थित हों उन स्थानों के अनुरोध से फल करते हैं अर्थात् उन स्थानो के अनुसार शुभाशुभ फल देते हैं

❑❑❑

कर्क लग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	–	कर्क
2.	लग्न चिह्न	–	केकड़ा
3.	लग्न स्वामी	–	चन्द्र
4.	लग्न तत्त्व	–	जल तत्त्व
5.	लग्न उदय	–	पृष्ठ
6.	लग्न स्वरूप	–	चर
7.	लग्न अवधि	–	2 घंटा, 12 मिनट सम
8.	लग्न दर्शन	–	श्रावण की पूर्णिमा को चन्द्रमा के साथ साथ
9.	लग्न स्वभाव	–	सौम्य
10.	लग्न बली	–	रात्रि
11.	लग्न कान्ति	–	स्निग्ध
12.	लग्न दिशा	-	उत्तर
13.	लग्न लिंग व गुण	–	स्त्री, सतोगुणी
14.	लग्न जाति	–	ब्राह्मण
15.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	सौम्य स्वभाव कफ प्रकृति
16.	लग्न का अंग	–	छाती/सीना
17.	जीवन रत्न	–	मोती
18.	अनुकूल रंग	–	सफेद, क्रीम
19.	शुभ दिवस	–	सोमवार
20.	अनुकूल देवता		शिवजी
21.	व्रत, उपवास	-	सोमवार
22.	अनुकूल अंक	–	दो
23.	अनुकूल तारीखें	–	2/11/20/29
24	लग्न वर्ण	–	गुलाबी
25	लग्न धातु	–	कफ

26. लग्न शब्द – हीन
27. लग्न समय जातक का प्रसव– पैर से, कष्टपूर्वक
28. जन्म समय – पिता घर से बाहर
29. जन्म समय नाल – छूटी हुई
30. जन्म काल में रुदन – देर से छींका
31. जातक भोजसारुचि – ठण्डा, मीठा, थोड़ा, पतला, पेय सामग्री अधिक काम में लेने वाला
32. बालक की विशेषता – वामांग में चिह्न, लहसन, गौरवर्ण, कोमल, नाक बड़ी
33. मित्र लग्न – वृश्चिक, मीन तुला
34. शत्रु लग्न – मेष, सिंह, धनु, मिथुन, मकर व कुम्भ
35. व्यक्तित्व – अध्ययन प्रिय, जलप्रिय, भावुक कुशल प्रबधक
36. सकारात्मक तथ्य – कल्पनाशील, योजनाएं बनाने वाला, वफादार
37. नकारात्मक तथ्य – सदा बीमार, अक्षमाशील, द्वेषी

❑❑❑

कर्क लग्न के स्वामी चन्द्रमा का वैदिक स्वरूप

चन्द्रमा (ग्रह) के अर्थ में ऋग्वेद काल मे 'चन्द्रमस्' शब्द अनेक जगह प्रयुक्त हुआ है।[1] किन्तु 'चन्द्र' शब्द का प्रयोग पहली बार अथर्ववेद में आया है.[2]

बहुचर्चित कालवाचक 'मास' (महिना) शब्द का प्रयाग ऋग्वेद में चन्द्रमा के स्थान पर हुआ है।[3] इससे स्पष्ट है कि चन्द्रमा का 'मास' नाम ऋग्वेद समय में प्रचलित था।[4]

वैदिक साहित्य में चन्द्रमा व सोम की अभिन्नता का उल्लेख मिलता है।[5] क्योंकि ये दोनों ही वृद्धि और क्षय को प्राप्त होते हैं। हिलेब्राण्ड्ट सोम के सभी वर्णनों में चन्द्रमा का वर्णन (स्वरूप) देखते हैं।[6] सोम व चन्द्र में अभिन्नता सूचक इसी मन्त्र पर भाष्य लिखते हुए महर्षि दयानन्द कहते हैं–सोम द्वारा बारह मास बलवान है। यहां सोम का अर्थ चन्द्रमा है। सोम (चन्द्र) से पृथ्वी महत्वपूर्ण है और इन अश्विनी, भरणी आदि नक्षत्रों की गोद में सोम (चन्द्र) स्थित है।[7]

फलित ज्योतिष के अस्तित्व को सर्वथा न मानने वाले, ज्योतिष के कट्टर विरोधी स्वयं महर्षि दयानन्द 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' में इसी मन्त्र द्वारा चन्द्र ग्रह की रश्मियों के प्रभाव को स्वीकार करते हुए लिखते हैं–चन्द्रमा के प्रकाश और वायु से सोमलता आदि औषधियां पुष्ट

---

1. नवो नवो भवति जायमानोऽह्ना केतुरुषसामेत्यग्रम्।
 भागं देवेभ्यो विदधात्यायन्प्रचन्द्रमास्तिरते दीर्घमायुः।

 –ऋग्वेद संहिता 10/85/19

2. चन्द्रयत्ते तपस्तेन तं प्रति तपयो स्मानद्वेष्टि यं वयं द्विष्मः। अथर्ववेद 2/22/1
3. सूर्यामासा मिथ उच्चरातः–ऋग्वेद 10/68/10
4. सूर्यामासा विचरन्ता दिविक्षिता धिया शमीनहुषी अस्य बोधतः

 –ऋग्वेद 10/92/12

5. सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही
 अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः। ऋग्वेद 10/85/2
6. वैदिक कोश (पृ. 573) बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, सन 1963
7. ऋग्वेद भाषा भाष्य (द्वितीय भाग) पृ. 449

 दयानन्द संस्थान, वेद मंदिर, नई दिल्ली, सन् 1975

होती हैं और उससे पृथ्वी पुष्ट होती है। इसीलिए ईश्वर ने नक्षत्र लोकों के समीप चन्द्रमा को स्थापित किया।[8]

इस सोम के घटने-बढ़ने से महीनों का जन्म होता है।[9] ऋग्वेद 10/85/5 का अर्थ करते हुए दयानन्द लिखते हैं हे देव सोम जो तुझे पीते हैं तो चन्द्रमा घटता है, मानो देव उसे पी जाते हैं परन्तु वायु सोम का रक्षक है। वर्षों का महीना करने वाला है। मासों से वर्ष बन जाते हैं और मास चन्द्रमा से नापे जाते हैं सूत्रात्मा वायु सब लोकों का रक्षक है, चन्द्र का भी है।[10]

चन्द्रमा का वैदिक नामक 'पंचदश' भी है। क्योंकि वह पन्द्रह दिन में क्षीण होता है और पन्द्रह दिन मे पूरा होता है।[11] अमावस्या के दिन चन्द्रमा का न दिखलाई देना तथा शुक्ल प्रतिपदा को पुनः दिखलाई देने का उल्लेख वेदों मे मिलता है।[12] इस चन्द्रमा को सूर्य रश्मि अर्थात् सूर्य द्वारा प्रकाश प्राप्त करने वाला कहा गया है।[13] यह चन्द्रमा नक्षत्रो के बीच रहता है.[14]

अथर्ववेद में चन्द्र ग्रहण का उल्लेख मिलता है। साथ ही उस काल विशेष में होने वाले अनिष्ट से आशंकित होकर ऋषि ने शान्ति के लिए प्रार्थना भी की है।[15]

यजुर्वेद में चन्द्रमा को मानसिक शक्ति का प्रेरक ग्रह माना गया है.[16] ज्योतिष में भी चन्द्रमा को मन का कारक ग्रह माना गया है।[17]

❑❑❑

---

8. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका (पृ. 449)
   वैदिक यन्त्रालय अजमेर, सन् 1920
9. यत्त्वादेव प्रपिबन्ति तत आ प्यायसे पुनः।
   वायुः सोमस्य रक्षिता समानां मास आकृतिः॥

   ऋग्वेद 10/85/5
10. ऋग्वेद भाष्यभाष्य (द्वितीय भाग) पृ. 449
11. चन्द्रमा वै पंचदशः एष हि पञ्चदश्याम् अपक्षीयते। पञ्चदश्यामापूर्यते। तैत्तिरीय ब्राह्मण 1.5.10
12. चन्द्रमा अमावस्यायामादित्यमनु प्रविशति आदित्याद् वै चन्द्रमा जायते। ऐतरेय ब्राह्मण 40/5
13. सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः। मैत्रायणी संहिता [illegible]
14. अथो नक्षत्राणामेषामुपस्थे सोम आहितः। ऋग्वेद 10/85/2, अथर्ववेद 14/1/2
15. चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। यजुर्वेद [illegible]
16. मनश्च हिमगुः बृहज्जातक अ. 2/1

चन्द्रमा का पौराणिक स्वरूप

1. प्रिय पात्र–वंशपात्र
2. प्रिय अन्न–तदुंल
3. प्रिय वस्तु–कर्पूर
4. प्रिय रत्न–मौक्तिक
5. प्रिय वस्त्र–श्वेतवस्त्र
6. प्रिय पशु–वृषभ
7. प्रिय धातु–रौप्य
8. प्रिय वस्तु–धृतकुम्भ
9. प्रिय मित्र–शंख 11000
10. प्रिय मण्डल–चतुस्र (अग्निकोण मे)
11. प्रिय धूप–गुग्गल
12. प्रिय निवास–यमुना तीर
13. गोत्र–आत्रेय
14. प्रियवर्ण–श्वेत वर्ण
15. प्रिय राशि–कर्क (स्वगृही)
16. उच्च राशि–वृष
17. जप संख्या–11,000

चन्द्रदेव महर्षि अत्रि के पुत्र हैं। चन्द्र देवता को सर्वमय कहा गया है, क्योंकि ये सोलह कलाओं से युक्त हैं तथा मनोमय, अन्नमय, अमृतमय पुरुष स्वरूप भगवान हैं चन्द्र देवता ही सभी देवता, पितर, मनुष्य, भूत, पशु पक्षी, सरीसृप और वृक्ष आदि प्राणियो के प्राण का आप्यायन करते हैं (श्रीमद्भ 5/22/10)।

ब्रह्मा ने चन्द्र देवता को बीज, औषधि, जल तथा ब्राह्मणो का राजा बना दिया। प्रजापति दक्ष ने अश्विनी, भरणी आदि नाम वाली सत्ताईस कन्याए चन्द्र देवता को ब्याह दीं। ये सत्ताईस नक्षत्र के रूप मे जानी जाती हैं, (हरिवंश हरि. पर्व 25/4–22)। ये सभी पत्निया शील और सौन्दर्य से सम्पन्न तथा पतिव्रता-धर्मधारिणी हैं इस तरह इन नक्षत्रों के साथ चन्द्र देवता परिक्रमा करते हुए सब प्राणियों के पोषण के साथ-साथ पर्व संधियों एव विभिन्न मास का विभाग किया करते हैं (महाभा., वन. 163/132)

महाभारत मे लिखा है कि पूर्णिमा को चन्द्रोदय के समय तांबे के बर्तन मे मधुमिश्रित पकवान को यदि चन्द्र देवता को अर्पित किया जाए तो इससे उनकी तृप्ति तो होती ही है साथ ही आदित्य, विश्वेदेव अश्विनीकुमार मरुद्गण और रुद्रदेव भी प्रसन्न और तृप्त होते हैं।

वर्ण -चन्द्र देवता का वर्ण श्वेत है

वाहन–इनका वाहन रथ है। इस रथ में तीन चक्र होते हैं, रथ में दस घोड़े जुते रहते हैं। सब घोड़े दिव्य, अनुपम और मन के समान वेगवान होते हैं। इनके नेत्र और कान भी श्वेत होते हैं। ये स्वयं शङ्ख के समान उज्ज्वल हैं (मत्स्यपु. 126। 47–50)।

परिवार–चन्द्र देवता की नक्षत्र नाम वाली अश्विनी, भरणी आदि सत्ताईस पत्नियां हैं। इनके पुत्र का नाम बुध है, जो तारा से उत्पन्न हुए हैं। चन्द्रमा के अधिदेवता अप (पार्वती) और प्रत्यधि देवता उमा हैं।

इनकी प्रतिमा का स्वरूप इस प्रकार है

श्वेतः श्वेताम्बरधरः श्वेताश्वः श्वेतवाहनः।

गदापाणिर्द्विबाहुश्च कर्त्तव्यो वरदः शशी॥

(मत्स्यपु. 94/2)

'चन्द्र देवता गौरवर्ण हैं। इनके वस्त्र, अश्व और रथ तीनों श्वेत हैं। इनके एक हाथ में गदा और दूसरे हाथ में वरदमुद्रा है।'

चन्द्रमा प्राण है

ज्योतिष शास्त्र में कहा गया है देह जन्म लग्न है, षडवर्ग इसके छः अंग हैं। चन्द्र प्राण है, अन्य ग्रह धातु रूप हैं। प्राण नष्ट होने पर सभी नष्ट होते हैं। अतः चन्द्र का प्रथम विचार करना चाहिए। सूर्य जगत की आत्मा है। तो जगत् का प्राण चन्द्र है। ये दोनों ही ज्योतिष के साक्षी हैं तभी ज्योतिष प्रत्यक्ष शास्त्र बनता है. "प्रत्यक्ष ज्योतिष शास्त्र चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ" यह उक्ति प्रसिद्ध है। बाकी सभी ग्रह ज्योतिर्मण्डल को प्रगट प्रकाश देने वाले हैं

लग्नं देहो वर्गषट्कोऽङ्गानि, प्राणश्चन्द्रो धातुरन्ये ग्रहेन्द्राः।

प्राणे नष्टे सर्वनष्टं विचिन्त्यं तस्माच्चिन्त्यं चन्द्रराशिप्रधानम्॥

छान्दोग्योपनिषद् में एक आख्यान है। कुरुदेश में ओले गिरने व अतिवृष्टि से अकाल पड़ गया था। वहां हाथी वालों का एक गांव था। इसमें महर्षि उषस्ति अपनी पत्नी के साथ रहते थे। कई दिनों तक उपवासी रह जाने के बाद वह राजा के वहां यज्ञ में भाग लेने घर से निकल पड़े। रास्ते में उन्हें एक महावत मिला। उषस्ति ने उससे अन्न मांगा। उसने कहा मेरे पास उबले हुए उड़द तो हैं पर झूठे हैं। यदि आप कहें तो इसमें से कुछ दे दूं। आपत् धर्म समझकर महर्षि ने उससे उड़द ले लिए। बलि वैश्वादि कर्म करके, देवताओं को भोग लगाकर कुछ उड़द खा लिया। जब उसने पानी दिया तो ऋषि ने कहा कि पानी के झरने सब जगह बह रहे हैं। अतः आप द्वारा प्रदत्त जल ग्रहण करना आपत् धर्म में शुमार नहीं है। अतः मैं यह अन्न ही प्राण रक्षार्थ ले चुका हूं। परन्तु उनकी पत्नी ने कहा कि मैं अभी कुछ दिन और उपवास कर सकती हूं। अतः मैं इन्हें ग्रहण नहीं करूंगी। यह चर्चा महावत के द्वारा सर्वत्र फैल भी गई।

राजा के यज्ञ में ऋत्विजों का वरण हो चुका था। वे लोग स्तुति कर्म प्रारम्भ करने जा रहे थे कि उषस्ति भी अपनी पत्नी सहित यज्ञशाला में पहुंच गए। पद रिक्त न रहने से उषस्ति ऋषि

का यज्ञ में प्रवेश पाना असम्भव था। प्रवेश पाए बिना धन कैसे प्राप्त होता तब उसस्ति ने यज्ञ के होते उद्गापि और प्रतिहर्ता आदि से प्रश्न किया कि तुम जिस देवता की स्तुति करने जा रहे हो उस देव को बिना जाने स्तुति करोगे तो तुम्हारा सिर गिर जाएगा। वे सब इसका उत्तर न दे सके यज्ञ में सन्नाटा छा गया। इससे प्रभावित होकर राजा ने उसको सम्मानित कर आचार्य का आसन दिया, तब उसस्ति ने उन्हे सब देवताओं का ज्ञान कराया

(छान्दोग्य 1/10/11)

इस आख्यायिका से स्पष्ट है कि जिस देवता की हम पूजा करने जा रहे हैं। उनके स्वरूप का ज्ञान आवश्यक है। लिखा है–

जन्म, भू, गोत्रं, अग्निश्च, वर्ण स्थान च मुख्यतः।
अज्ञात्वा कुरुते शान्तिं ग्रहास्तनोवमानिताः॥

ग्रहों के जन्म, भूमि स्वरूप, उनका गोत्र, उनकी अग्नि उनकी वर्ण आदि जाने बिना कोई उनका पूजन या जप या शांति करना चाहता है तो ग्रह इससे अपने को अपमानित मानते हैं। तब वे फलदायी नहीं होते। अतः इसका स्वरूप जानना अति आवश्यक है।

हमारे ग्रह मण्डलों में आज लोग चन्द्रमा तक पहुंच गए हैं, पर वह चन्द्रमा का भौतिक स्वरूप हो सकता है। उसका देवत्व स्वरूप कभी नहीं हो सकता है। ग्रह शांति, ग्रह पूजन व ग्रह के फल के स्वरूप का ज्ञान करने में उसका देवत्व काम करता है। जैसे पृथ्वी का भौतिक रूप है पर उसमें भूमि देवता का देवत्व भावना से जुड़ा एक अलग स्वरूप है, जल यह भौतिक रूप है पर वरुण का देवत्व अलग है। जैसे मनुष्य एक भौतिक रूप हाड-मांस व रुधिर से बना है। पर मनुष्य अलग है। इसी तरह ग्रहों का भौतिक स्वरूप और उसका देवत्व भिन्न है

ब्रह्मा के पुत्र अत्रि थे और चंद्र महर्षि अत्रि के पुत्र हैं। भागवत में इसकी कथा है। तीनों देव, ब्रह्मा, विष्णु, महेश अपनी पत्नियों के कहने से सती अनसूया का सतीत्व भंग करने के लिए उसके घर भिक्षा मांगने गए थे वहां नग्न भिक्षा की याचना करने पर उसने अपने पतिव्रत प्रभाव से तीनों को बालक बना कर दूध पिलाया। तब ब्रह्मा के अंश स्वरूप अत्रि के नेत्रों से अमृतमय चंद्रमा का जन्म हुआ।

क्षीर सागर के मंथन से अमृतमय चंद्र की उत्पत्ति है। चन्द्रमा लक्ष्मी का सहोदर भ्राता है। इसलिए फलित ज्योतिष में 'द्रव्यदाता तु चन्द्रमा' कहा गया है, व्यक्ति धनवान होगा या दरिद्र इसका सहज ज्ञान चन्द्रमा की स्थिति से हो जाता है धन्वन्तरि के साथ अमृत कलश था उसमें ही सुधांशु चंद्र की उत्पत्ति हुई। चाहे जो हो चंद्र को अमृतमय माना गया है। अमृत मृत व्यक्ति को अमर बनाने में समर्थ है। अतः चन्द्र को जगत् का प्राण माना जाता है

द्विजराज सुरश्रेष्ठ, तारापत्यत्रिनन्दनः।
औषधीनां सुगमनं सोमं मृगांकलांछनः॥

अहोचन्द्रः जगत्प्राण यमुना विषयोद्भवः।
सश्ववेताभि गोत्रेय गदावाणी वरप्रदः॥
दशाश्व वाहनो याहि उमा रूपी समाविशः।
हुताशन दलैकेव मंत्रेणा श्वग्निनार्चितः॥

यह चन्द्र ब्राह्मणों का राजा, देवताओं में श्रेष्ठ तारापति, अग्निनन्दन, औषधिनाथ, मृगाकलांछन तथा मृग पर सवारी वाला जगत् का प्राण यमुना में पैदा हुआ। अत्रि गोत्र वाला, दस अश्वों के वाहन वाला, श्वेत रंग वाला, एक हाथ में वर मुद्रा व दूसरे हाथ में गदा धारण किए हुए है पार्वती का स्वरूप है। हुताशन इसका दल, अश्वनि मुंछ से पूजा जाता है चन्द्र सभी पितर मनुष्य, भूत, पशु, पक्षी, सरीसृप और वृक्ष आदि प्राणियों को प्राणदान कर अप्यायित करता है। (श्री मद्भा. 5/22/10)

ब्रह्मा ने चंद्र को बीज, औषधि, जल तथा ब्राह्मणों का राजा बना दिया। ''सोमो अस्माक ब्राह्मण राजा'' प्रसिद्ध है, चन्द्रमा मन है यह वेदों में प्रख्यात है। ''चन्द्रमा मनसो जातः'' यह विराट् पुरुष के मन से उत्पन्न हुआ है। दक्ष प्रजापति ने अश्विनी, भरणी आदि अपनी सत्ताईस कन्याएं चंद्र को ब्याह दीं। यह उडुपति कहलाया। ये सत्ताईस कन्याएं सत्ताईस नक्षत्र हैं।

(महाभारत वन 163/32)

महाभारत में लिखा है कि पूर्णिमा को चंद्रोदय के समय तांबे के बर्तन में मधुमिश्रित पकवान को यदि चंद्र को अर्पित किया जाए तो इससे इनकी तृप्ति तो होती ही है साथ ही आदित्य विश्वेदेव अश्विनी कुमार मरुद्गण और वायुदेव भी प्रसन्न और तृप्त होते हैं।

क्योंकि चन्द्र देव को सर्वमय कहा गया है। यह सोलह कलाओं से युक्त है तथा मनोमय, अन्नमय, अमृतमय पुरुष स्वरूप भगवान है।

स्वरूप वर्ण श्वेत है, वाहन रथ उसके 3 चक्र हैं, रथ में 10 घोड़े जुते रहते हैं। सभी अश्व मन की गति से चलने वाले हैं ये शंख के समान उज्ज्वल हैं (मत्स्य पुराण 126 47 50) [illegible] बुद्धिमान व चंचल है

चन्द्र-परिवार – चन्द्रमा राजा है 27 नक्षत्र इसकी रानियां हैं जो तारा से उत्पन्न हैं। [illegible] जल और प्रत्यधि देवता उमा है लक्ष्मी सहोदरी है।

चन्द्र द्विपाद स्त्री ग्रह है अवस्था तारुण्य और प्रौढ़ावस्था। मणि स्वच्छ मोती, चन्द्रमणि, [illegible] पश्चिम गह चतुष्कोण, ग्रहमण्डल में अग्नि कोण [illegible] धातु-कांसा [illegible] स्थान नदी-तालाब, प्रदेश-वनदेश, वर्ण-वैश्य, गुण-सत्वगुण, [illegible] रस लवण, काल क्षण दृष्टि समदृष्टि [illegible] दृष्टि प्रमुख है। चांदी [illegible] सौन्दर्य का उपासक है

[illegible] कृष्ण पक्ष में [illegible] तक चन्द्रमा अति शुभ फल देता है

[illegible]

- पंचमी से अमावस्या तक चन्द्रमा निर्बल और अशुभ होता है और अशुभ फल देता है।
- शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक चन्द्रमा पूर्ण बली होता है।
- कृष्ण पक्ष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की सप्तमी तक चन्द्र क्षीण होता है। यह महर्षि वशिष्ठ जी का मत है
- चन्द्रमा कृष्ण पक्ष में रोज घटता है और शुक्ल पक्ष मे बढता है पूर्णिमा का पूर्ण बली होता है। कहते हैं यह शुक्राचार्य की श्राप के कारण है वैसे इसकी 16 कलाए मानी गई है पर 9 कला शिवजी ने विषपान करते वक्त सिर पर धारण कर ली थी. यह विष को भी अमृत बनाता है। अत: 15 दिन घटता है अमावस्या को शून्य कला होती है।
- चन्द्रमा प्रतिपदा को कभी कभी उदया होता है या फिर द्वितीय को अवश्य दिखाई देता है। अत: प्रतिपदा को अध्ययन काल निषेध है
- चन्द्रमा शांत व शीतल प्रकृति का है। आखे सुन्दर, मोहक, गौरवर्ण, कद ऊचा, केश घुंघराले।
- शुक्ल पक्ष को प्रतिपदा से दशमी तक मध्यमबली इसके बाद 10 दिन अतिबली, फिर क्षीण हो जाता है अत: निर्बल बनता है।
- बलहीन चन्द्र भी शुभ ग्रह गुरु, शुक्र से देखा जाए तो शुभ फल दे देता है। दक्षिणायन में और सधिकाल छोड़कर अन्यत्र बलवान होता है।
- कर्क और वृष राशि मे तथा सोमवार को तथा द्रेषकाण, होरा मे स्वगृही हो, राशि के अंतिम भाग में, शुभ दृष्टि, रात्रि में चौथे भाव में दक्षिणायन मे बली होगा।
- शुभ ग्रह चन्द्र को देखें तो राजयोग होता है
- इसके रोग–पाडु जल से उत्पन्न रोग दमा, खासी, स्त्री सम्बन्ध से होने वाले रोग, धातुक्षीणता पागलपन, देवियों से होने वाली पीड़ाए होती हैं

कारकत्व–उच्च गृह स्वामी की पत्नी, जनता, प्रकाशक, घी, तेल, रक्त, छापाखाना, दूध, वनस्पति, वैधक, जन्तुशास्त्र, रानी चावल, कपास, सफेद वस्त्र, नर्स, मिड वाइफ, इंजीनियर, दमा, मोह, फेफड़े, पागलपन भावुकता, चालाक, चतुराई

लग्नेश कर्क लग्न में चन्द्रमा लग्नेश होगा। कर्क लग्न बलवान हो तो धन, मान मे वृद्धि, प्रसन्नता, स्त्री वर्ग से लाभ, तरल पदार्थो में लाभ, स्वास्थ्य की सुन्दरता दया का भाव और चन्द्र जहा बैठा हो उस भाव का विशेष लाभ होगा निर्बल होगा तो चद्र से सम्बन्धित रोग देगा व इन्हीं वस्तुओ का अनिष्ट फल देगा

धनेश–मिथुन लग्न मे चन्द्रमा धनेश होगा मिथुन लग्न बली होगा तो धन सम्पत्ति, खजाना बैंक बैलस म बढोतरी करेगा कुटुम्ब सुख, विवाह विद्या मे उन्नति भाषण शक्ति तेज करेगा। आखो म ज्योति उत्तम, माता व भाई व बडी बहनो की उन्नति पुत्र का मान, खान पीने की वस्तुए अच्छी व पर्याप्त मिले निर्बल होगा तो उपरोक्त बातो का उलटा फल करेगा। मारकेश का काम करेगा जीभ मे दोष हकलाहट पैदा करेगा।

पराक्रमेश–लग्न वृषभ बलवान हो तो थोड़ा धन तो मिलेगा ही छोटे भाई बहनों की उन्नति होगी अच्छे मित्र मिलेंगे पराक्रम बढ़ेगा। लेखन शक्ति बढ़ेगी नौकर चाकर का सुख होगा। सर्वत्र जीत होगी। निर्बल होने पर धन की आय खूब होगी परन्तु भाई बहनों से प्रेम की कमी, पराजय माता की आखों का कष्ट होगा। चंद्र जहां जन्म कुण्डली मे बैठा होगा उस भाव से सम्बन्धित वस्तुओं की जानबूझ कर हानि होगी। ऐसा चंद्र जितना निर्बल होगा धन बढ़ेगा।

सुखेश–मेष लग्न में चन्द्रमा सुखेश अनुर्थेश होगा। लग्न मेष बली होगा तो उल्लास, उत्साह और शांति मिलेगी जन सम्पर्क अच्छा रहेगा मामा माता का प्यार बढ़ेगा यदि चंद्र पर शुक्र दृष्टि है तो वाहन, भवन के सुख प्राप्त होंगे भ्रमण अच्छा होगा। विदेश में वास मिलेंगे। जातक उन्नति की तरफ बढ़ेगा शुभ कार्य होंगे। यश मिलेगा। श्वसुर का धन बढ़े। छोटे भाई बहनों की उन्नति होगी। निर्बल है तो विपरीत फल होगा। क्रोध, वैराग्य उदासीनता बनेगी चंद्र, बुध, सूर्य, मंगल युति हो और राहु व शनि से ये पीड़ित हों तो मस्तिष्क के रोग होंगे। अधिक पाप प्रभाव हो तो पागलपन होगा चंद्र और चौथे भाव केवल राहु का प्रभाव रक्त चाप देगा माता रोगी रहेगी। मानसिक क्लेश होंगे स्वयं की छाती के रोग होंगे धन का नाश होगा चन्द्र सातवें भाव में राहु से प्रभावित हो तो व्याभिचार बढ़ेगा।

पंचमेश–मीन लग्न मे चन्द्रमा पंचमेश लग्न मीन बली होगा तो मंत्रणा शक्ति बढ़ेगी। इष्टदेव के प्रति भक्ति दृढ़ होगी। सट्टे से लाभ होगा। पुत्री का जन्म हो। रोजमर्रा की आय चंद्र दशा में बढ़ती है। निर्बल होने पर इसके विपरीत फल होगा। भाग्य हानि कारक होगा। स्मरण शक्ति कम होगी। चन्द्र व पांचवें भाव पर राहु व शनि का प्रभाव हो तो योजनाएं असफल रहेंगी। सट्टे मे हानि होगी। बुध चन्द्र गुरु इकट्ठे हों व अलग रहें और उन सब पर राहु व शनि का प्रभाव हो तो मस्तिष्क के रोगों का शिकार बनेगा। बहुत पाप प्रभाव से पागलपन पिता पक्ष में हानि करेगा।

षष्ठेश–कुम्भ लग्न में चन्द्रमा षष्ठेश होने से पाप फलप्रद है लग्न कुम्भ यदि बलवान है तो धन का मध्यम सुख, माता के छोटे भाइयों की वृद्धि करता है। शत्रुओं में कमी। स्वास्थ्य की सुन्दरता। यदि लग्नेश शनि से युति करे तो बहुत धन देता है। पुत्रों को बढ़ाता है

यह निर्बल होगा तो भी धन की वृद्धि करेगा। पर मातृ पक्ष मे कष्ट रहेगा। शनि चंद्र युति भी पीड़ित होगी तो रक्त दाब देगी बड़े भाई को कष्ट। शत्रु ज्यादा होंगे पुत्र के धन की हानि होगी। चंद्र पर राहु व शनि का प्रभाव हो तो पुत्र विद्या में असफल रहे।

सप्तमेश–मकर लग्न मे चन्द्रमा सप्तमेश होने से पाप फलप्रद है, लग्न मकर यदि बलवान है तो अपनी दशा में विवाह सुख देगा कामवासना व व्यापार बढ़ाएगा राज्य से लाभ मान व धन में वृद्धि। भूमि, जायदाद, वाहन सुख तब देगा जब चन्द्रमा शुक्र से सम्बन्धित हो। चन्द्र यदि निर्बल है तो और पाप प्रभावी है तो रोगी बनाएगा। व्यापार में हानि आदि उल्टा फल करेगा,

अष्टमेश–धनु लग्न में चन्द्रमा अष्टमेश होने से पापी है। धनु लग्न यदि बली हो तो साधारण धन देगा विज्ञान मे या समस्या के अनुसंधान में लगेगा। स्वास्थ्य साधारण रहेगा। यदि

निर्बल पाप प्रभावी है अचानक शारीरिक कष्ट दशा में देगा धन की कमी रहेगी अनुसंधान में असफलता। यदि अष्टम भाव और अष्टमेश चन्द्र दोनों पीड़ित हों तो विदेश यात्रा भी होगी। यदि चन्द्र शनि सम्बन्ध रहे तो विद्या हेतु भी विदेशी यात्रा सम्भव।

भाग्येश–वृश्चिक लग्न में चन्द्रमा भाग्येश होने से योगकारक है लग्न वृश्चिक यदि बली है तो धर्मप्रिय होगा। उच्च विचार बनें भाग्य वृद्धि धन वृद्धि हो। पिता का धन मान बढ़े। साले सालियों के धन में वृद्धि हो। पौत्री की प्राप्ति दशा में हो। छोटी बहन के पति की वृद्धि, राज्य कृपा दृष्टि, सट्टे के व्यापार में लाभ। पुत्र की उन्नति। पापी निर्बली चंद्र हो तो इन्हीं का उलटा फल हो। व्यापार व नौकरी में भारी हानि। पिता को आर्थिक कष्ट हो।

राज्येश–तुला लग्न में चन्द्रमा राज्येश होने से राजयोगकारक है। लग्न तुला यदि बली है तो राज्य सत्ता व अधिकार प्राप्ति हो। मान व यश मिले धन में वृद्धि। दशा भुक्ति में सास से धन मिले। यश हो, परोपकार बने। महत्वाकांक्षा व कार्यों में सफलता हो। दशमेश चन्द्र 7वें हो तो प्रेम विवाह। यदि चन्द्र क्षीण व पाप प्रभावी निर्बल हो तो राज्याधिकारियों से परेशानियां आती हैं. सर्वत्र विफलता मिलती है। यदि रा. श. के प्रभाव हो। यह योग धन में कमी भी लाता है। नास्तिकता बढ़ती है।

लाभेश–कन्या लग्न में चन्द्रमा लाभेश होगा। चन्द्रमा यहां 'उपचय' का स्वामी होने से पापी है लग्न कन्या यदि बली है तो विशेष धन मिलता है। स्त्री वर्ग से लाभ प्राप्त हो। शुभ कार्य में समय लगता है। बड़े भाई या मित्र की सहायता मिले। छोटे भाई का भाग्य बढ़ता है। पुत्री को पति प्राप्त होता है अथवा दामाद की उन्नति होती है. चन्द्र-शुक्र संयोग हो तो बहुत धन प्राप्ति होती है यदि निर्बल है तो विपरीत फल व माता के स्वास्थ्य के लिए भी हानिप्रद बनेगा. पुत्रों को रोग देगा।

द्वादशेश–सिंह लग्न में चन्द्रमा खर्चेश होगा। पाप साहचर्य से ''मारक'' का काम करेगा। क्योंकि यह त्रिकेश है. सिंह लग्न यदि चन्द्र द्वादशेश होकर बली हो शुभ प्रभाव में है तो धन वृद्धि करेगा शय्या सुख देगा। शुभ व्यय कराएगा।

पाप प्रभावी हो तो आंख में रोग खास कर बांई आंख को कष्ट हो नशे या व्यसन में व्यय बढ़े, जेल जाने के योग बने। पिता को कष्ट छोटे भाई के मान की हानि। पुत्र का कष्ट रहे

चन्द्र से बनने वाले योगायोग–

1. सूर्य को छोड़कर चंद्र से 12वें ग्रह होंगे तो 'अनफा योग' श्रेष्ठ धन योग और दूसरे घर में ग्रह हो तो 'सुनफा योग' दोनों तरफ ग्रह होंगे तो 'दुरधरा योग' बनेगा। इन योगों में व्यक्ति धन धान्य सम्पन्न बनता है।
2. चन्द्र के आगे पीछे कोई ग्रह न हो। केवल सूर्य या राहु हो तो भी ''केमद्रुम योग' बनता है। यह योग व्यक्ति को दरिद्री बनाता है. जातक आर्थिक स्थिति विषम रहती है चाहे अन्य धन योग कितने भी हो। चन्द्र के साथ शुभ ग्रह, लग्न या चन्द्र से केन्द्र में शुभ ग्रह हो खासकर गुरु हो तो केमद्रुम भंग हो जाता है और **गजकेसरी योग** बन जाता है

3. चंद्र से 6, 7, 8वें भावों में शुभ ग्रह हो तो चंद्र लग्नाधि योग बनता है। यह भी विशेष धन दाय योग है
4. चंद्र से दसवें शुभ ग्रह हो "अमला योग" यह भी धन योग है।
5. जन्म लग्न से चन्द्र 10वें भाव में गुरु 7वें भाव में राजयोग।
6. चंद्र से 3,6,10,11 भावों में शुभग्रह हो तो "वसुमान" योग धन योग।
7. चंद्र स्व या उच्च का केन्द्र त्रिकोण में गुरु से दृष्ट हो तो "गौरी योग" धन योग।

चंद्र का पीड़ित होना–चौथे घर में शनि या राहु या केतु हो तो चंद्र अपने आप पीड़ित हो जाता है चाहे वह कहीं भी हो चंद्र+राहु की युति ग्रहण योग है। चंद्र पीडित होगा। चंद्र क्षीण हो उस पर शनि व राहु की एक साथ दृष्टि तो पीड़ित होगा चंद्र राहु या केतु के मध्य में हो तो पीड़ित होगा। चद्रमा 11वें भाव मे क्षीण होता है।

अचूक फल

- ❑ चंद्र+शनि या चंद्र+राहु युति से व्यक्ति को कोई न कोई नशे की आदत पड़ेगी।
- ❑ च+मं प्रसिद्धि योग है। प्रति युति कैंसर भी बनाती है। च+बु माता से शत्रुता रहेगी।
- ❑ कर्क राशि, चंद्र चतुर्थ भाव, भावेश पाप पीड़ित हो तो टी.बी., क्षय, न्यूमोनिया, फेफड़े व वक्ष स्थल की बीमारियां होंगी।
- ❑ चंद्र+शनि युति कर्क राशि मे हो उस पर बुध दृष्टि हो तो कोढ़ होगा।
- ❑ चंद्र चौथा भाव 1 ला. 5 वा व उनके स्वामी तथा चंद्र और बुध पाप प्रभावी हो तो पागलपन होगा।
- ❑ चंद्र पर राहु तथा अन्य पाप प्रभाव हो तो मिरगी रोग होगा।
- ❑ चंद्र बुध और मिथुन राशि पीड़ित हो, खासकर राहु और शनि से तो दमा रोग होगा।
- ❑ सप्तमेश चंद्र (लग्न मकर) दूसरे भाव में बैठे और उसके साथ कोई ग्रह न बैठा हो तो नष्ट या गया धन वापस आता है।
- ❑ चंद्र किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की युति से हटकर पाप युति व या दृष्ट आ रहा हो तो बालारिष्ट होगा।
- ❑ कर्क राशि मे शुक्र बैठा हो तो विलम्ब से विवाह होगा या फिर एक बार विवाह का पूरा प्रबन्ध होकर बिखर जाएगा।
- ❑ चंद्र 5वें हो तो देवी उपासना फल देगी
- ❑ छठवें आठवें भाव मे चंद्र मृत्यु कारक बनता है परन्तु शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो और कृष्ण पक्ष में दिन का हो तो आयु बढाता है। 8वा चंद्र वृषभ का हो या कर्क का हो तो दीर्घ आयु देगा
- ❑ चंद्र सूर्य के समीप होता हुआ भी तब बलवान होगा जब सूर्य निर्बल हो। जैसे तुला राशि का सूर्य 4 थ भाव मे और वृश्चिक का चंद्र 5वे भाव मे।
- ❑ स्वक्षेत्री 7वा चंद्र वसीयत से धन दिलाएगा।

- मेष सिंह धनु राशि में 7वां चद्र किसी न किसी मार्ग से धन दिलाता है
- वृश्चिक लग्न मे तीसरे भाव में चद्र +शनि युति धनवान बनाती है। परन्तु पुत्र नही होता।
- चद्र+शनि युति व प्रति युति (सुख, लाभ व दशम भाव को छोड़कर) कही भी हो तो हस्त मैथुन से वीर्य च्युति करता ही है
- चद्र+मंगल युति वाले अप्राकृतिक मैथुन करने वाले होते हैं।
- चद्र षष्ठ भाव में स्वराशिस्थ कर्क का हो उस पर जल राशिस्थ (4,8,12) राशि वाले पाप ग्रह की दृष्टि हो तो मधुमेह होगा।
- चद्र 1,5,9,12 वें भाव मे हो तो सूर्य 7वें हो तो नेत्र या दन्त रोग बनेंगे।
- शनि+चंद्र एक साथ मंगल को देखे तो मृगी रोग बनेगा।
- चद्र+शुक्र एक साथ केन्द्र में हो और 8वें पाप ग्रह हो तो मृगी रोग बनेगा। चद्र+बुध भी एक साथ केन्द्र में हो और 8वें पाप ग्रह हो तो मृगी रोग देगा।
- जन्म राशि से अष्टमेश जिस नक्षत्र मे हो उससे तीन नक्षत्रों मे जातक को श्रम रोग तथा दुःख अवश्य देगा। जब-जब चंद्रमा गोचर में उस पर आएगा।
- दशम भाव में चन्द्र प्रथम संतान को दीर्घजीवी नही करता व प्रथम संतान की मृत्यु संभव। यदि पंचम भाव में चद्र 4, 8 12 राशियों मे शुभ प्रभावी हो तो बहुत संतान होगी
- चंद्र जब शुक्र चतुर्थेश अष्टमेश आदि से मिलकर लग्न लग्नेश, चद्र लग्न लग्नेश आदि पर प्रभाव डाले तो व्यक्ति जलीय व्यवसाय, जल सेना की नौकरी, सोडावाटर फैक्टरी, वाटर सप्लाई विभाग नहर का महकमा आदि में काम करेगा।
- चद्र जब लग्नेश होकर बलवान हो और चतुर्थ भाव चतुर्थेश से शुभ सम्बन्धित हो तो मनुष्य जनकार्य में रत रहेगा।
- चतुर्थ भाव चतुर्थेश तथा चद्र के बल से माता की आयु का निर्णय करें।
- चंद्र पर शनि की युति व दृष्टि हो तो मनुष्य उदासीन मन वाला, विरक्त चित्त व सन्यास प्रिय होगा। निराशा रहेगी या शराबी, व्यसनी बनेगा।
- चतुर्थेश चद्र हो ऐसे चंद्र पर राहु की युति या चतुर्थ भाव पर राहु युति दृष्टि द्वारा प्रभाव हो और चद्र 6,8,12 में हो तो मन में भय की विशेष सृष्टि होगी। मिरगी, हिस्टीरिया बेहोशी के रोग होंगे।
- चतुर्थेश चद्र पर शनि मगल के प्रभाव व चतुर्थ पर पाप प्रभाव हो तो फेफड़ा के रोग खांसी, निमोनिया आदि होंगे।
- लग्नेश चद्र पर पाप युति व दृष्टि प्रभाव हो तो रक्त विकार होंगे।
- चद्र 6,8,12 भावों में क्षीण हो शुभ राशि मे हो पाप प्रभावी हो तो आंख की हानि होगी।
- लग्नेश चद्र या लग्नेश के साथ चद्र क्षीण बली होकर पाप दृष्ट हो तो अल्पायु होगा।
- चतुर्थेश चद्र जिस भाव में होगा मनुष्य के मन का विशेष झुकाव उस भाव से प्रदर्शित वस्तुओं से होगा।

❑❑❑

कर्क लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

कर्क लग्न का स्वरूप

पाटलो वनचारी च ब्राह्मणो निशि वीर्यवान्॥10॥
बहुपादचरः स्थौल्यतनुः सत्वगुणी जली।
पृष्ठोदयी कर्कराशिमृगाङ्काधिपतिः स्मृतः॥11॥

-बृहत्पाराशरहोराशास्त्र, अ. 4/श्लो. 10

पाटलवर्ण, वनचारी विप्रवर्ण, रात्रिबली, बहुत पैर वाला, स्थूल देह, सत्वगुणी, जल तत्व, पृष्ठोदय है इसका स्वामी चन्द्रमा है॥10-11॥

आवक्रद्रुतगः समुन्नतकटिः स्त्रीनिर्जितः सत्सुहृद्,
दैवज्ञः प्रचुरालयः क्षयधनैः संयुज्जते चन्द्रवत्।
ह्रस्वः पीनगलः समेति च वशं साम्ना सुहृद्वत्सल
स्तोयोद्यानरतः स्ववेश्मसहिते जातः शशांके नरः ॥4॥

-बृहज्जातकम् अ. 16/ श्लो. 4

यदि चन्द्रमा कर्क लग्न में स्थित हो तो जातक कुछ टेढ़ा होकर जल्दी चलने वाला, कमर के किनारों पर ऊंचे मांस वाला, स्त्रीजनों से विजित अर्थात् स्त्रियों से शीघ्र प्रभावित होने वाला अच्छे मित्रों वाला, भाग्य का जानने वाला अर्थात् ज्योतिषी अथवा ज्योतिष में रुचि रखने वाला, प्रचुर अर्थात् खूब भवनों वाला अथवा कई कमरों या मंजिलों के मकान में रहने वाला, केवल शांति व प्रेम से वश में होने वाला चन्द्रमा के समान ही घटते बढ़ते हुए हानि लाभ वाला, छोटे कद वाला मोटी गर्दन वाला, अपने मित्रों से विशेष स्नेह रखने वाला, जल व उद्यानों से विशेष प्रीति रखने वाला अर्थात् जलीय प्रदेशों व हरे भरे स्थानों में रुचि रखने वाला होता है।

लग्ने कुलीरे यदि संप्रसूतो नयप्रियो ऽ सृष्टरुगिष्टयोगः।
सौभाग्ययुक्तो रतिलालसश्च मन्त्रोपसेवी गुरुवत्सलः स्यात् ॥4॥

—वृद्धयवनजातक अ.24/श्लो.5/ पृ.287

यदि कर्क लग्न में जन्म हो तो मनुष्य नीतिपरायण न्यायप्रिय, रोगों की कल्पना में जीने वाला असम्भावित रोगों से ग्रस्त होने का भ्रम पालने वाला, अभीष्ट फल पाने वाला, सौभाग्य

से युक्त, रति क्रिया की इच्छा रखने वाला, मनन परायण, सदैव सोच विचार का कार्य करने वाला, गुरुओं का प्रिय पात्र होता है।

मिष्टान्नाम्बर भूषणो ललितवाक्कापट्यधीर्धर्मवान्।
जातः स्थूलकलेवरोऽन्यभवनप्रीत. कुलीरोदये ॥5॥

—जातक पारिजात श्लो.5/पृ 678

मिठाई (रसपूर्ण सुस्वादु खाद्य पदार्थ), वस्त्र, आभूषणों का भोक्ता, सुन्दर और कोमल वाणी, कपट बुद्धि धार्मिक, पुष्ट (मोटा) शरीर, दूसरों के मकानों में प्रीति रखने वाला फलदीपिका के अनुसार जिसके कई मकान हों।

कर्कटकादिमभागे देवब्राह्मणरतश्चलो गौरः।
कृत्यकरश्च परेषां सुधीः सुमूर्तिः शुभाङ्गनः सुभग.॥1॥

–सारावली श्लो. 10/पृ. 466

यदि जन्म लग्न में कर्क राशि व कर्क राशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक देवता व ब्राह्मणों में लीन अर्थात् भक्त, चंचल, गौरवर्ण, दूसरों के कार्य करने वाला व परोपकारी, सुन्दर बुद्धिमान व पण्डित, सुन्दर शरीरधारी, अच्छी स्त्री वाला और सौभाग्यवान होता है।

कर्क लग्ने समुत्पन्नो, भोगी धर्मजनप्रियः।
मिष्ठान्नपानसंयुक्तः सुभगः सुजनप्रियः॥

—मानसागरी अ. 1/श्लो. 4

कर्क लग्न वाला जातक भोगी मानव धर्म उपासक, मिष्ठान्न प्रेमी धन–सम्पदा एश्वर्य से सम्पन्न, उदार मनोवृत्ति, जलप्रिय, विनम्र परन्तु चपल बुद्धि, तत्वग्राही मनोवृत्तिशील होगा।

भोज संहिता

कर्क लग्न का स्वामी "चन्द्रमा" एक शीतल सौम्य एवं शुभ ग्रह है। चन्द्रमा का सबसे ज्यादा असर मनः स्थिति पर देखा गया है। अतः इस राशि वाले पुरुष स्त्री प्रायः अत्यधिक भावुक व भावनाप्रद विचारों से ओत प्रोत पाए जाते हैं लम्बा कद, दूसरों के प्रति दया व प्रेम की भावना विशेष एवं जीवन में निरन्तर आगे बढ़ने की तीव्र लालसा इनकी निजी विशेषता है।

सामान्यतया कर्क लग्न में उत्पन्न जातक शान्त प्रवृत्ति से युक्त होते हैं तथा अपने कार्यकलापों को वे दृढ़तापूर्वक सम्पन्न करते हैं। इनमें भावुकता का भाव भी विद्यमान रहता है तथा प्रेम एवं स्नेह के क्षेत्र में ये निश्छलता का प्रदर्शन करते हैं। जीवन में भौतिक सुख संसाधनों को ये स्वपरिश्रम तथा पराक्रम से अर्जित करने में समर्थ रहते हैं तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करते हैं साथ ही इनमें समाज या देश सेवा की भावना भी विद्यमान रहती है। अन्य जनों की आंतरिक भावनाओं को समझने में ये दक्ष होते हैं तथा राजनीतिक या सरकारी क्षेत्र में किसी सम्मानित पद को प्राप्त करके मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्ध अर्जित करते हैं

अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा अपने सांसारिक शुभ एवं महत्त्वपूर्ण कार्यों को बुद्धिमता एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको प्रायः सफलता

प्राप्त होगी जिससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। साथ ही समाज में यथोचित आदर एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। आर्थिक रूप से आप सुदृढ़ रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा।

जीवन में आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ेगा। परन्तु समस्त समस्याओं का सामना तथा समाधान आप दृढ़तापूर्वक करेंगे तथा विषम परिस्थितियों में भी साहस नहीं छोड़ेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा अनुकूल प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा फलतः अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। श्रेष्ठ एवं उत्कृष्ट कार्यों को करने में आपकी रुचि रहेगी तथा यत्नपूर्वक इनको करने में तत्पर होंगे।

आप में कर्त्तव्य परायणता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा समाज एवं देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगे। इससे सर्वत्र आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे तथा लोग भी आपको यथोचित आदर प्रदान करेंगे, सरकारी क्षेत्र या राजनीति में आपको सफलता मिलेगी तथा किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी परन्तु धार्मिक कार्यकलाप या अनुष्ठान अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। प्रकृति के प्रति आकर्षण रहेगा तथा समय-समय पर आप इन स्थानों पर भ्रमण कार्यक्रम बनाते रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति भी आपका आकर्षण रहेगा तथा इस क्षेत्र में आपका योगदान भी रहेगा। मित्रों के मध्य आप सम्मानीय रहेंगे तथा उनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी साथ ही वे गुणवान तथा शिक्षित भी होंगे।

इस प्रकार आप कर्त्तव्यपरायण, दृढ़-प्रतिज्ञ, मित्र-प्रेमी तथा पराक्रमी पुरुष होंगे एवं जीवन में परिश्रमपूर्वक धन ऐश्वर्य एवं वैभव अर्जित करके प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। कर्क लग्न वाले प्रायः गोरे वर्ण व धवल कांति वाले होते हैं।

नक्षत्रानुसार फलादेश

ही	हू, हे, हो, डा	डी, डू, डे, डो
पुनर्वसु–1	पुष्य–4	आश्लेषा–4

"पुनर्वसु पादमेकं पुष्य आश्लेषान्तं कर्क"

–शीघ्रबोध

कर्क राशि व लग्न में पुनर्वसु, पुष्य व आश्लेषा नक्षत्रों का योग बनता है, पुनर्वसु का स्वामी गुरु, पुष्य का स्वामी शनि और आश्लेषा का बुध। गुरु+शनि+बुध का समन्वय ही कर्क राशि है।

चन्द्रमा यदि पुनर्वसु में हो तो

यह नक्षत्र मिथुन राशि के 20 अंश से कर्क राशि के 3.20 अंश तक रहता है।

मूढात्मा च पुनर्वसौ धनबलख्यातः कविः कामुकः।

जातक पारिजात, अ. 6/श्लोक

पुनर्वसु चरण	अंश अवधि	चरण के नवमांश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र अंश से तक
चतुर्थ	0.00 से 3.20	चं. चं. चं.	चं. चं. चं.	गु. गु. गु.	चं. 00.00 से 0.33.20 मं. 0.33.20 से 1.20.00 रा. 1.20.00 से 3.20.00

ऐसा व्यक्ति मूढ़, धनबल से युक्त विख्यात कवि और कामुक होता है। पुनर्वसु नक्षत्र का स्वामी गुरु होने से चन्द्रमा यहा बहुत प्रसन्न रहता है, इससे इस नक्षत्र में जन्मा जातक प्रसिद्ध, प्रखर, कल्पना शक्ति से युक्त प्रचुर धन का स्वामी होता है

पुनर्वसु नक्षत्र चतुर्थ चरण

यदि आपका जन्म "पुनर्वसु" नक्षत्र में हुआ है तो आपके दांत बहुत ही मजबूत व सुन्दर हैं। यदि आपका जन्म "पुष्य नक्षत्र" मे है तो आप बहुत ही धार्मिक बुद्धि वाले आस्तिक विचारों के सौम्य स्वभाव वाले व्यक्ति हैं। खाने में नमक ज्यादा खाते हैं तथा नमकीन स्वाद आपको बहुत पसन्द है।

पुष्य चरण	अंश के अवधि	नवमांशेश	राशी. श	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र स्वामी	स्वामी अंश से तक
प्रथम	3.20 से 6.40	सू.	चं.	श.	शु. बु.	3.20 से 5.26.40 5.26.40 से 7.20.00
द्वितीय	6.40 से 10.00	बु.	च	श.	के. शु.	7.20.0 से 8.6.40 8.6.40 से 10.20.0
तृतीय	10.0 से 13.20	शु.	च.	श.	सू. चं.	10.20.0 से 11.0.0 11.0.0 से 12.6.40
चतुर्थ	13.20 से 16.40	म.	च.	श.	म. रा. गु.	12.6.40 से 12.53.20 12.53.20 से 14.53.20 14.53.20 से 16.40.00

यदि आपका जन्म "पुष्य-नक्षत्र" में हुआ है तो आप में मिलनसार, काम करने की प्रवृत्ति

बनी रहेगी। निरन्तर कठिन परिश्रम करते रहने पर भी आपको फल प्राप्ति में देरी हो जाती है आप निराश न हों आपकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण है परन्तु भावुक तत्त्व प्रधान होने से किसी भी कार्य की गहराई में पहुंचने की क्षमता नहीं रखते। हां आप उच्च श्रेणी के प्रेमी अवश्य साबित हो सकते हैं और आप एक सच्चे मित्र के रूप में बहुत ही उपयोगी व्यक्ति हैं।

कर्क लग्न ''जलतत्त्व'' प्रधान है इसलिए ऐसा व्यक्ति चंचल व जलप्रिय होता है। घूमने व तैरने का शौकीन तथा चन्द्रमा की चांदनी इनको बहुत प्रिय लगती है, इनकी कल्पना शक्ति बहुत तीव्र होती है, ये अच्छे लेखक सुन्दर कवि, महान दार्शनिक तथा उच्च कोटि के साहित्यकार व 'भविष्यवक्ता' हो सकते हैं

चन्द्रमा यदि पुष्य नक्षत्र में हो

स्यात्पंडितः शान्तमनाः शशांके,
सौभाग्यधर्मार्थयुतश्च पुष्ये।

जातक पारिजात, अ. 5/ श्लो.

चन्द्रमा यदि पुष्य नक्षत्र में हो तो जातक शान्त मन वाला, पण्डित, भाग्यशाली, धार्मिक तथा धनी होता है।

इस नक्षत्र का स्वामी शनि है। यह नक्षत्र कर्क राशि के 3.20 से 16.40 तक का है। इसे तिष्य और अमरेज्य भी कहते हैं अमरेज्य अर्थात् देवपूज्य। वैसे इस नक्षत्र का स्वामी शनि है पर इसके गुण गुरु तुल्य बताए गए हैं। ''विप्र सुरप्रियम् स धनधी राजाप्रियो बन्धुमान्'' अर्थात् व्यक्ति देव ब्राह्मण भक्त और धनी बुद्धिशाली व राजाप्रिय हो व बंधु वर्ग से युक्त होगा.

चरणानुसार पुष्य नक्षत्र फल

दीर्घायुः तस्करो भोगी, बुद्धिमान् जायते नरः
क्रमात्पादचतुराणा तु पुष्यस्य च प्रकीर्तनात्।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम पाद में यदि चन्द्रमा हो तो जातक लम्बी आयु वाला होता है। इस पाद का स्वामी सूर्य होता है और नक्षत्र का स्वामी शनि, उधर इसमें स्थित ग्रह है चन्द्र तीनों आयु के किसी न किसी रूप में द्योतक हैं सूर्य और चन्द्र तो लग्न रूप होने से और शनि आयुष्य कारक है ही। अतः दीर्घायु कहा।

पुष्य नक्षत्र के द्वितीय पाद में चन्द्रमा के स्थित होने पर व्यक्ति चोर होता है इस पाद का स्वामी बुध है बुध और नक्षत्र स्वामी शनि दोनों मिलकर चौर्य दर्शाते हैं अतः इन दोनों के प्रभाव से मन में चन्द्रमा पर चौर्य प्रभाव आ जाता है।

पुष्य नक्षत्र के तृतीय पाद में चन्द्रमा के स्थित होने पर जातक भोगी होता है इस पाद का स्वामी शुक्र होने से मन में विलासिता भोग की प्रवृत्ति का आ जाना स्वाभाविक ही होगा।

पुष्य नक्षत्र के चतुर्थ पद में चन्द्रमा के स्थित होने पर जातक बुद्धिमान होता है। इस पाद का स्वामी मंगल होता है। मंगल तर्कशील ग्रह है। अत: चन्द्र को अपने अनुरूप बनाने में सफल होगा।

चन्द्रमा यदि आश्लेषा नक्षत्र में हो तो

"आश्लेषा नक्षत्र " में जन्मे व्यक्तियों का प्राकृतिक स्वभाव, सांसारिक उन्नति में प्रयत्नशीलता, लज्जा व सौन्दर्योपासना है चन्द्रमा औषधाधिपति है तो ऐसे जातक उच्च श्रेणी के वैद्य, डॉक्टर वैज्ञानिक व अनुसंधानकर्ता भी होते हैं ऐसे राशि वाले व्यक्ति परम चतुर प्राय: घर से दूर रहने वाले होते हैं। प्राय: इनका वैवाहिक जीवन विशेष मधुर नहीं कहा जा सकता।

आश्लेषा राशि का स्वामी चंद्र और नक्षत्र स्वामी बुध है। यह 16.40 अंशों से 30 अंश तक पूर्ण होती है नक्षत्रेश बुध के पर्याय सर्प, अहि, भुजंग इत्यादि हैं। आश्लेषा का सर्पों से घनिष्ठ सम्बन्ध परिलक्षित है। कारण यह हो सकता है कि यह गंड नक्षत्र है यह नक्षत्र कर्क राशि की समाप्ति का भाग है नक्षत्र और राशि दोनों समाप्त करने वाला यह काल जन्म मृत्यु का प्रतीक है। मृत्यु प्रतीकों में सूर्य है। बुध चंद परस्पर शत्रु हैं जबकि पारिजात के छंद में कहा है। - 'सार्पे मूढमति कृतघ्नवचन: कोपी दुराचारवान्।" अर्थात् आश्लेषा से व्यक्ति मूढ़ मति अपने वचन से मुकर जाने वाला, क्रोधी और दुराचारी होता है।

कारण साफ है बुध का नक्षत्र चंद के शत्रु का नक्षत्र है। अत: मनोस्थिति कर्तव्य विमूढ़ बन जाती है। अपने वचन से मुंह मोड़ लेना यह भी वाणिकारक बुध के प्रतिकूल वातावरण का परिणाम होगा और शत्रु के साथ रहने से दावपेच बनते ही हैं तो दुराचारिता का दुर्गुण पीछे के दरवाजे से आ जाता है।

धूर्तः शठः पापरतः कृतघ्नः
स्यात् सर्वभक्षो भुजगर्क्ष संस्थे॥

आश्लेषा नक्षत्र में कर्क का चंद आ जाए तो व्यक्ति स्वभाव से ही धूर्त, शरारती, पाप (क्रूर) कर्म करने में न हिचकने वाला कृतघ्न खाने पीने के आचार विचार भक्ष्याभक्ष्य से रहित होता है।

चरणानुसार आश्लेषा फल

अग्रजाः परकार्यश्च, रोगी च सुभगो भवेत्
सार्पक्षांघ्रि चतुर्गातो गण्डान्तेचाल्पजीवितः।

आश्लेषा—परकार्य संलग्न होवे परोपकारी भी हो नौकरी भी पावे। इसका नवांश शनि है। शनि में भृत्यता, नौकरी परसेवा दोनों का समावेश है यह स्वतंत्रकर्ता होने से व्यक्ति परोपकारी बन सकेगा।

आश्लेषा प्रथम चरण—सतानहीन होवे। नवांशेश गुरु, चंद्र गुरु दोनों संतानकारक हैं। दोनों पर नपुंसक बुध का प्रभाव उसे संतानहीन करेगा।

आश्लेष नक्षत्र	अंश अवधि	अंश स्वामी	राशि स्वामी	नक्षत्र स्वामी	उप नक्षत्र स्वामी	अंश से तक
प्रथम	16.40 से 20.00	गु.	च.	बु.	बु. के.	16.40.0 से 18.33.20 18.33.00 से 9.20.00
द्वितीय	20.0 से 23.20	श.	च.	बु.	शु. सू.	19.20.0 से 21.33.20 21.33.20 से 22.12.20
तृतीय	23.20 से 26.40	श.	च.	बु.	चं. मं.	22.13.20 से 23.20.0 23.20.0 से 30.0.00
चतुर्थ	26.40 से 30.00	गु.	चं.	बु.	रा. गु.	24.6.40 से 26.6.40 26.6.40 से 27.53.20

आश्लेषा तृतीय चरण—जातक इसमें रोगी बनता है इसका नवांशेश शनि है शनि रोगकारक भी है और चंद्र का शत्रु भी। यह बुध के साथ होने से शरीर मे रोग देगा।

आश्लेषा चतुर्थ चरण—इसमें व्यक्ति भाग्यशाली हो। इसका नवांशेश गुरु है। गुरु धन व शुभकारक होकर चद्र का मित्र है। अत: नक्षत्रेश बुध का गुरु की तरह कार्य करना स्वभाविक है। चद्र पर भी आर्थिक दृष्टि से शुभ प्रभाव देकर व्यक्ति को भाग्यशाली बनाएगा।

आश्लेषा के अंत में गण्ड है इसलिए यह व्यक्ति को अल्पजीवी भी करता है। फलस्वरूप लोग आश्लेषा की विधि विधान से शान्ति भी करात हैं

चन्द्रमा की धवल कांतिमय किरणों का रंग हल्का ''मोतियों'' की तरह आंका गया है। अत: उसका रत्न मोती आपके लिए अत्यधिक अनुकूल माना गया है श्वेत रंग प्रिय होने से ऐसे व्यक्ति (White Powder) खड़्ड़ी सीमेन्ट, कारखाने तथा (Building Construction) भवन निर्माण इत्यादि कार्यों के बड़े बड़े ठके के कार्यों में व कपड़ा संबंधी व्यापार में सफल होते देखे गए हैं

यह एक जलीय राशि होने से इस राशि वाले व्यक्ति खेती के कार्य व यांत्रिक मशीनरी वस्तुओं में रुचि लेते हुए पाए जाते हैं। सरकारी अभियानों में ऐसे व्यक्ति जल संबंधी (Water work कार्यों में दक्ष पाए गए हैं।

यह स्त्री [illegible] राशि है सो इसकी प्रकृति और मानसिक अवस्था में इतनी चंचलता रहती है कि [illegible] एक रस व्यवहार नहीं कर [illegible] धार्मिक प्रवृत्ति भी पाई जाती है। अगर [illegible] जाए या कुछ [illegible] आ जाए तो आप विचलित हो उठते हैं स्त्रियां

के समान बातचीत के शौकीन होते हैं आप मृदुल स्वभाव के कारण मित्रों से आप उल्टे नुकसान मे रहते हैं। अत्यधिक भावुकता आपके लि ... क है।

कर्क लग्न का चिह्न "केकड़ा" है। केकड़ा स्व... का शत्रु होता है तथा इसकी पकड़ बहुत मजबूत होती है। तो आपके कुटुम्ब वाले व्यक्तियो .. आपकी इतनी प्रतिष्ठा न रहेगी जितनी अन्य जाति व सामाजिक सगठनों व मित्रों मे होगी। शत्रु अगर आपकी पकड़ में आ जाए तो उसका बचना बड़ा मुश्किल है यह आपकी निजी विशेषता है।

यदि आपका जन्म 9 जुलाई व 16 अगस्त के बीच में हुआ है तो आपका भाग्य निर्माण 16 वर्ष की अवस्था में प्रारभ हो जाता है। 26 व 30 वर्ष की आयु में क्षति की सभावना है। युवावस्था मे अपनी पसद के मुताबिक व्यवसाय करने के मार्ग में काफी रोड़ अटकाए जाएंगे। 15 वर्ष के बाद पूर्णभाग्योदय है आप भ्रमण प्रिय भी हो सकते हैं, कफ तथा पित्त जनित रोग होने की सभावना है। आप यात्राएं बहुत करेंगे। आप जल मार्ग से व समुद्र पार यात्रा व विदेश व्यापार से काफी धन व प्रसिद्धि कमा सकते हैं।

कर्क लग्न की स्त्री (भोज संहिता)

कर्क लग्न में जन्म लेने वाली जातिका अधिक कंठ और बात वाली गुप्त रोगिणी होती है। इसे अपने परिवार वालों से आदर व स्नेह कम मिलता है। अत: यह हमेशा आदर व प्रशंसा पाने की भूखी रहती है। इसे सुयोग्य पति नहीं अथवा पति अनमेल होता है। सतान बहुत होती है। शत्रुओं पर यह सरलता से विजय प्राप्त कर सकती है इसका परिणाम ठीक ठीक रहता है। परन्तु इसका स्वभाव अस्थिर होता है। वह सदैव दूसरों के धन का खर्च कराने की इच्छा रखती है। प्राय: कमर दर्द बना रहता है किसी किसी के हृदय और नाक पर तिल होते हैं। यदि हो तो 3 पुत्र 2 कन्याएं को विशेष सुख देगी इसको तीसरे वर्ष अग्नि से, 11वें वर्ष जल से, 18वें वर्ष बीमारी से भय रहेगा, आयु 70 वर्ष तक होती है। मृत्यु कफ या जलोदर रोग व फांसी से भी हो सकती है।

कर्क लग्न वाली महिला जल विहार, जल-क्रीड़ा की शौकीन होगी। शीघ्रगामी होगी। चाल तेज होगी। संतान थोड़ी होगी। प्रकृति कुटिल होगी कूटराजनीतिज्ञ वाली होगी। स्थूल गला, कमर मोटी कद मध्यम होगा। धनाढ्य और मकान बहुत से होंगे। बुद्धिशाली और सेक्स की रसीली होगी। पति को खूब चाहेगी। कद मध्यम होगा स्थूल शरीर की सभावना प्राय: गौर वर्ण विशाल आखें, गौर वर्ण मुस्कराहट युक्त हो। वक्षस्थल प्रशस्त और पुष्ट हो। हाथ पैर और शरीर के अधोभाग अपेक्षाकृत स्थूल व मजबूत होंगे नाक थोड़ी सी दबी हुई होगी।

नित्य नए कामों में व्यस्त रहने वाली ईमानदारी और न्यायशीलता में प्रसिद्ध कुटिल पर भावुक, पैनी बुद्धिवाली परन्तु कठोर परिश्रमी होती है।

दाम्पत्य जीवन मे कलह रहेगा। परिवार मे भी प्राय: मनमुटाव बना रहेगा अति सवेदनशील स्वभाव की हो। सबका भला चाहने वाली हो। शत्रु कम रहें। अत्यधिक ... मे

छल कपट की सीमा रहेगी वर्ष -5- 6-18-20-24 में विवाह के पूर्व कष्ट उत्तर वय में 45-50-54-56 में कष्ट अंतिम वय में 65 70 75 मे कष्ट होगा।

निश्चय मे परिवर्तन हेतु प्रतिपल तैयार रहने वाली हो पर स्वभाव खरा व जिद्दी हो। अपनी योजनाओं की शीघ्र पूर्ति करेंगी। चाहे उसमें छल-बल-कपट सभी तरह के व्यवहार क्यों न करने पड़ें।

सहनशीलता मे कमी रहेगी भीतर से कुछ बाहर से कुछ दिखाएगी। पूर्ण स्वार्थी प्रवृत्ति होगी पर आत्मप्रशंसा सुनना खूब पसंद करेंगी, प्रशंसकों का काम भी कर देगी

व्यवहार में कुशलता रहेगी। ईश्वर के प्रति आस्था होगी। जनता में भी प्रशंसा पाएगी पर एक क्षण में प्रसन्न दूसरे ही क्षण रूठ जाने की कला बनी रहेगी।

जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आएंगे। कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष में जन्म लेने वाली महिला अधिक भाग्यशाली होगी। आय के अनेक स्रोत रहेंगे। धन के मामले मे सदा सजग रहेगी। व्यक्ति कपट से भी धन कमाने में होशियार होगी और जब तक पूरा धन न मिले साथ ही प्रशंसा भी न मिले तब तक संतोष नहीं होगा।

अपनी संतान पर अपार स्नेह रहेगा स्मरण शक्ति अति तीव्र होगी। भूमि व वाहन के सुख उत्तम रहेंगे।

❑❑❑

नक्षत्रों पर विशेष फलादेश

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मींढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मींढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 बि. 1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मींढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	पुञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. . मू. 2	सूर्य	6
.3.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
.4.	चित्रा	पे पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14	चित्रा	रा री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हरिण	मंगल	7
5.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
6.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
6	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17	अनुराधा	ना,नी नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो भा भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2 मूषक 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 1 श्वान	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3 वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1.	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13	हस्त	आदित्य	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
धनु	19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	20.	पू. षा.	जल	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21	उ. षा.	विश्वेदेवा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23	धनिष्ठा	अष्टवसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
कुंभ	25.	पू. भा	अजैकपाद	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	26	उ. भा.	अहिर्बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
मीन	27	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

कर्क लग्न पर अंशात्मक फलादेश

कर्क लग्न, अंश 0 से 1

लग्न नक्षत्र—पुनर्वसु
पद—4,
नक्षत्र चरण अंश—0/0 से 3/20 तक
नक्षत्र देवता—अदिति,
वर्णाक्षर—ही,
वर्ग—हरिण
नक्षत्र स्वामी गुरु
लग्न स्वामी—चन्द्र
नक्षत्र चरण स्वामी चन्द्र
लग्न स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
लग्न नक्षत्र—मित्र,
नक्षत्र चरण स्वामी—पूर्ण अनुकूल
प्रधान विशेषता—धनवन्त मानसागरी अ 1/पृ. 66

पुनर्वसु की आकृति एक मकान जैसी है। इस नक्षत्र का देवता 'अदिति' है जो कि दक्ष प्रजापति की कन्या एवं द्वादश आदित्यों की माता है। पुनर्वसु में जन्मे जातकों के बारे में "जातक परिजात" कहता है "पुनर्वसौ धन बलाख्यात: कवि. कामुक:' ऐसे व्यक्ति धनबल से युक्त, कवि हृदय सगीत प्रेमी और कोमल हृदय एव कामुक मनोवृत्ति वाले जातक होते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति लाल (गुलाबी) नेत्रों वाला एवं रसिक प्रवृत्ति का जातक होता है यदि इस नक्षत्र पर मंगल भी हो तो ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु स्वयं की पत्नी को भी दांव पर लगा देता है। यदि इस नक्षत्र पर गुरु बैठा हो तो व्यक्ति अपने समाज व जाति का मुखिया (नेता) होता है। लग्न 'जीरो' से 1 अंश के भीतर होने के कारण कमजोर व मृतावस्था में है। ऐसा जातक ज्यादा आर्थिक उन्नति नहीं कर पाता।

कर्क लग्न, अंश 1 से 2

लग्न नक्षत्र—पुनर्वसु,
पद—4
नक्षत्र चरण अंश—0/0 से 3/20 तक
नक्षत्र देवता अदिति
वर्णाक्षर—ही,
वर्ग—हरिण
लग्न स्वामी—चन्द्र,
लग्न नक्षत्र स्वामी—गुरु.
नक्षत्र चरण स्वामी-चन्द्र
लग्न स्वामी से सम्बन्ध—लग्न नक्षत्र स्वामी- मित्र पूर्ण अनुकूल
प्रधान विशेषता—धनवन्त—मानसागरी अ-1/पृ 66

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार पुनः वापसी को कहते हैं तथा वस्तु निवास (रहने) को कहते है पुनर्वसु की आकृति एक मकान जैसी है। इस नक्षत्र का देवता 'अदिति' है जो कि दक्ष प्रजापति की कन्या एव द्वादश आदित्यों की माता है। पुनर्वसु में जन्मे जातकों के बारे मे "जातक पारिजात' कहता है "पुनर्वसौ धन बलाख्यातः कविः कामुक" ऐसे व्यक्ति धनबल से युक्त कवि हृदय सगीत प्रेमी और कोमल हृदय के कामुक मनोवृत्ति वाले जातक होते है।

पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति लाल (गुलाबी) नेत्रों वाला एव रसिक प्रवृत्ति का जातक होता है। यदि इस नक्षत्र पर मंगल भी हो तो ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु स्वय की पत्नी को भी दाव पर लगा देता है। यदि इस नक्षत्र पर गुरु बैठा हो तो व्यक्ति अपने समाज व जाति का मुखिया (नेता) होता है। लग्न दो अशों का होने मे बलवान है। बाल अवस्था मे जातक अपने समाज मे धनवान व्यक्ति होगा।

कर्क लग्न, अंश 2 से 3

लग्न नक्षत्र–पुनर्वसु, **पद**–4,
नक्षत्र चरण अंश–0/0 से 3/20 तक **नक्षत्र देवता**-अदिति
वर्णाक्षर–ही, **वर्ग**–हरिण
लग्न स्वामी–चन्द्र, **लग्नगत नक्षत्र स्वामी**–गुरु,
नक्षत्र चरण स्वामी–चन्द्र
लग्न स्वामी से सम्बन्ध–लग्न नक्षत्र स्वामी–मित्र, पूर्ण अनुकूल
प्रधान विशेषता–धनवन्त–मानसागरी अ–./पृ. 66

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार पुनः "वापसी" को कहते है तथा वस्तु निवास (रहने) को कहते है। पुनर्वसु की आकृति एक मकान जैसी है। इस नक्षत्र का देवता 'अदिति' है जो कि दक्ष प्रजापति की कन्या एव द्वादश आदित्यों की माता है। पुनर्वसु मे जन्मे जातकों के बारे में "जातक पारिजात" कहता है–'पुनर्वसौ धन बलाख्यातः कविः कामुकः" ऐसे व्यक्ति धनबल से युक्त, कवि हृदय, सगीत प्रेमी और कोमल हृदय के कामुक मनोवृत्ति वाले जातक होते हैं।

पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति लाल (गुलाबी) नेत्रों वाला एवं रसिक प्रवृत्ति का जातक होता है। यदि इस नक्षत्र पर मगल भी हो तो ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु स्वय की पत्नी को भी दाव पर लगा देता है। यदि इन नक्षत्र पर गुरु बैठा हो तो व्यक्ति अपने समाज व जाति का मुखिया (नेता) होता है. लग्न दो से तीन अशों का होने से बलवान है। जातक अपने कुटुम्ब कुल व ग्राम मे धनवान व्यक्ति होगा लग्न बाल अवस्था मे है ऐसे जातक को अल्प प्रयत्न से अधिक लाभ होगा

कर्क लग्न अंश 3 से 4

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद** 1,
नक्षत्र चरण अंश– 3/20 से 6/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु

वर्णाक्षर–3° 20 तक ही उसके बाद हू,   **वर्ग** हरिण
लग्न स्वामी–चन्द्र,   **लग्नगत नक्षत्र स्वामी**–शनि,
नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
लग्न स्वामी से सम्बन्ध–लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शत्रु,
नक्षत्र चरण स्वामी–परम शत्रु
प्रधान विशेषता–महीपति मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। जातक उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। लग्न चार अंशों में होने के कारण जातक अच्छी जमीन जायदाद का स्वामी होगा। उसके घर का निजी दो मंजिला मकान होगा।

कर्क लग्न, अंश 4 से 5

लग्न नक्षत्र–पुष्य   **पद**–1,
नक्षत्र चरण अंश–3/20 से 6/40 तक   **नक्षत्र देवता**–गुरु
वर्णाक्षर हू,   **वर्ग**–हरिण
लग्न स्वामी–चन्द्र,   **लग्नगत नक्षत्र स्वामी**–शनि,
नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
प्रधान विशेषता–महीपति मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है यह तीन सितारो से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है जिसका देवता गुरु है जाता यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना माना है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अतिभावुक होता है। दोनों ही रीति से इस अक्षर पर बुध का प्रभाव एकदम स्पष्ट है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते है तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों मे दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते है, भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते है.

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है, वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। जातक उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। कर्क लग्न के पांच अंशों में जन्म होने के कारण लग्न बाल अवस्था में है एसा जातक अच्छी जमीन जायदाद, दो मंजिल के मकान का स्वामी होगा।

कर्क लग्न, अंश 5 से 6

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–1,
नक्षत्र नक्षत्र अंश–3/20 से 6/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हू **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी** सूर्य
प्रधान विशेषता महीपति, मानसागरी अ. 2/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य बेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अतिभावुक होता है। दोनों ही रीति से इस अक्षर पर बुध का प्रभाव एकदम स्पष्ट है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते है तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने मे दक्ष होते है। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एव व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एव विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल मे जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। कर्क लग्न के छः अशों में जन्म होने के कारण जातक अच्छी जमीन जायदाद, दो मंजिल के भवन का स्वामी होता है। आपका लग्न कुमार अवस्था वाला है फलतः आप अत्यधिक चेष्टावान हैं।

कर्क लग्न, अंश 6 से 7

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–2,
नक्षत्र अंश–3/20 से 6/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु
वर्णाक्षर–हे **लग्न स्वामी**–चन्द्र
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
प्रधान विशेषता -स्वागमुनीश्वर मानसागरी अ. 1 पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा में उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। सात अंशों में लग्न आरोह अवस्था में पूर्ण बली है ऐसा जातक पक्ष-विपक्ष दोनों ही पार्टी से मधुर सम्बन्ध रखने वाला, वाकपटु एवं बहुधंधी होता है। आपका लग्न कुमार अवस्था वाला है।

कर्क लग्न, अंश 7 से 8

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–2,
नक्षत्र अंश–6/40 से 10/0 तक **नक्षत्र देवता** गुरु,
वर्णाक्षर–हे **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
प्रधान विशेषता–स्वागमुनीश्वर मानसागरी अ. 1/66 पृ.

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके अपना काम निकालने मे दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं भागीदारी नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है उत्तम कुल मे जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा में उच्च वाहन पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आठ अंशो मे लग्न आरोह अवस्था मे पूर्ण बली है ऐसा जातक पक्ष विपक्ष दोनो ही पार्टी से मधुर सम्बन्ध रखने वाला, अनेक प्रकार की वेश भूषा को धारण करने वाला, गिरगिट की तरह चाल व रंग को बदलने वाला वाकपटु होता है यह लग्न कुमार अवस्था वाला है।

कर्क लग्न, अंश 8 से 9

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–2,
नक्षत्र अंश–6/40 से 10.0 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हे **लग्न स्वामी**–चन्द,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
प्रधान विशेषता–स्वागमुनीश्वर मानसागरी अ. 1/66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है इसमें जन्मा लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अतिभावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र व बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले मे किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एव व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एव भाग्यशाली होता है। वह यात्राओ द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल मे जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च, वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है लग्न नौ अंशो में होने के कारण कुमार अवस्था वाला है। ऐसा जातक वाकपटु होता है तथा शत्रु व मित्र दोनो में हाथ मिलाकर चलता हैं।

कर्क लग्न, अंश 9 से 10

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–3,
नक्षत्र अंश–10/0 से 13/20 **नक्षत्र देवता**-गुरु,
वर्णाक्षर–हो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
प्रधान विशेषता–विद्यावन्त–मानसागरी अ. 1/66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाक्पटु होते हैं तथा बातो ही बातो में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने म दक्ष होते है। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं भागीदारी, नोकरी, व्यापार एव व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एव विश्वास पात्र होते हैं.

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एव भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च

वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है लग्न दस अंशो में होने के कारण कुमार अवस्था वाला है ऐसा जातक विद्यावान होता है। उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करता है।

कर्क लग्न, अंश 10 से 11

लग्न नक्षत्र–पुष्य, पद–3,
नक्षत्र अंश–10.0 से 13/20 नक्षत्र देवता–गुरु,
वर्णाक्षर–हो लग्न स्वामी–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
प्रधान विशेषता–विद्यावन्त मानसागरी अ. 1/66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमे जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अतिभावुक होता है। ऐसे जातक बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल में मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते' बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते है। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं भागीदारी, नौकरी व्यापार एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एव भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है लग्न ग्यारह अंशों का होने के कारण कुमार अवस्था वाला है। जातक विद्यावान होगा उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा

कर्क लग्न, अंश 11 से 12

लग्न नक्षत्र–पुष्य, पद–3,
नक्षत्र अंश–10.0 से 13/20 नक्षत्र देवता–गुरु,
वर्णाक्षर–हो, लग्न स्वामी–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र
प्रधान विशेषता–विद्यावन्त मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमे जन्मा जातक लक्ष्य वेधन मे पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों मे दूसरे व्यक्ति को मोहित करके,

अपना काम निकालने मे दक्ष होते है। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण मे जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओ द्वारा धन अर्जित करता है उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है लग्न 12 अशों का होने के कारण कुमार अवस्था वाला है। ऐसा जातक विद्यावान होगा। उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न, अंश 12 से 13

लग्न नक्षत्र -पुष्य, **पद**–3,
नक्षत्र अंश–10/0 से 13/20 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
प्रधान विशेषता–विद्यावन्त–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाक "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले मे किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वास पात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण मे जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओ द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल मे जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आपका लग्न 13 अंशों में होने के कारण युवावस्था में पूर्ण यौवन पर है। आपको विद्या मे सफलता मिलेगी तथा ऐसा जातक जिस कार्य मे भी हाथ डालेगा उसको बराबर सफलता मिलती चली जाएगी।

कर्क लग्न, अंश 13 से 14

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद** 4
नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–डा **लग्न स्वामी**–चन्द्र
लग्नगत नक्षत्र स्वामी शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–मगल
प्रधान विशेषता–धर्मवन्त–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु, अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाकपटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इस नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण मे जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आपका लग्न 14 अंशों में होने के कारण पूर्ण यौवन पर है। ऐसे जातक को धर्म कार्य में, परोपकार कार्य में पूर्ण रुचि होती है तथा जिस कार्य में हाथ डालेगा उनको बराबर सफलता मिलती चली जाएगी।

कर्क लग्न, अंश 14 से 15

लग्न नक्षत्र—पुष्य,	**पद**—4, 1
नक्षत्र अंश—13/20 से 16/40	**नक्षत्र देवता**—गुरु,
वर्णाक्षर—हा	**लग्न स्वामी**—चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी—शनि,	**नक्षत्र चरण स्वामी**—मंगल

प्रधान विशेषता—धर्मवन्त—मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम "तिष्य" है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाक्पटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आपका लग्न 15 अंशों में होने में पूर्ण बलवान है। ऐसे जातक को सामाजिक कार्यों व धार्मिक कार्यों में पूर्ण रुचि रहेगी। जातक जो भी कार्य हाथ में लेगा उसमें पूर्ण सफलता मिलेगी।

कर्क लग्न, अंश 15 से 16

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**–4,
नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 तक **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हा **लग्न स्वामी**–चन्द्रमा,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–मगल
प्रधान विशेषता–धर्मवन्त-मानसागरी अ. 1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य व धन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते। बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाक्पटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। यह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा से वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। लग्न आपका 16 अंशों में होने के कारण पूर्ण यौवन पर है। ऐसे जातक को समाज के कार्यों व धार्मिक कार्यों में पूर्ण रुचि रहेगी। जातक जो भी कार्य हाथ में लेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी।

कर्क लग्न, अंश 16 से 17

लग्न नक्षत्र–पुष्य, **पद**-4,
नक्षत्र अंश–13/20 से 16/40 **नक्षत्र देवता**–गुरु,
वर्णाक्षर–हा **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–शनि, **नक्षत्र चरण स्वामी**–मगल
प्रधान विशेषता–धर्मवन्त मानसागरी अ-1/पृ. 66

पुष्य का वैदिक नाम ''तिष्य'' है। यह तीन सितारों से बना एक तीर की आकृति वाला नक्षत्र है, जिसका देवता गुरु है। यह बहुत शुभ व श्रेष्ठ नक्षत्र माना गया है। इसमें जन्मा जातक लक्ष्य वेधन में पटु, अति साहसी, किन्तु अति भावुक होता है। ऐसे जातक तीव्र बुद्धिशाली होते हैं तथा अक्ल के मामले में किसी अन्य व्यक्ति पर ज्यादा विश्वास नहीं करते बुध ग्रह के प्रभाव के कारण ऐसे जातक वाक्पटु होते हैं तथा बातों ही बातों में दूसरे व्यक्ति को मोहित करके, अपना काम निकालने में दक्ष होते हैं। इन नामाक्षर वाले व्यक्ति स्वामी भक्त होते हैं। भागीदारी, नौकरी, व्यापार एवं व्यवसाय के लिए ऐसे व्यक्ति उपयुक्त एवं विश्वासपात्र होते हैं।

पुष्य नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होता है। वह यात्राओं द्वारा धन अर्जित करता है। उत्तम कुल में जन्म लेता है तथा अपनी प्रतिभा में उच्च वाहन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। आपका लग्न 17 अंशों में बली है। आज सामाजिक कार्यों व धार्मिक कार्यों में बढ़चढ़ कर रुचि लेंगे आप जिस कार्य हाथ में डालेंगे उसमें सफलता आपके कदम चूमेगी।

कर्क लग्न, अंश 17 से 18

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–1,
नक्षत्र अंश–16/40 से 20/00 **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डी **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
प्रधान विशेषता-चोर–मानसागरी–अ. 1/पृ 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतघ्न एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के अंशों व शब्दों मे सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने मे पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र मे ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन भी यही नक्षत्र था

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 18 अंशों में होने से पूर्ण बली है। आप धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक कार्यों मे पूर्ण रुचि लेंगे परन्तु 'सदैव सच बोलना चाहिए, न्यायमार्ग पर चलना चाहिए' इस लोकोक्ति मे आपकी रुचि बिल्कुल नही होगी।

कर्क लग्न, अंश 18 से 19

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, पद–1
नक्षत्र अंश–16/40 से 20/00 **नक्षत्र देवता**–सर्प
वर्णाक्षर–डी **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु

प्रधान विशेषता चार-मानसागरी अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहा इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते हैं जहा क्रोध नहीं करना चाहिए, वहा नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र मे जन्मे जातक के शब्दो में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था, भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था मे अग भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 19 अशों में होने से अवरोही अवस्था को प्राप्त है। ऐसा जातक सच्चरित्रता में विश्वास नहीं रखता।

कर्क लग्न, अंश 19 से 20

लग्न नक्षत्र—आश्लेषा, **पद**—1,
नक्षत्र अंश-16.40 से 20/00 **नक्षत्र देवता**—सर्प,
वर्णाक्षर—डी **लग्न स्वामी**—चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी—बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु
प्रधान विशेषता चोर मानसागरी अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहा इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहा चुप रहते हैं, जहा क्रोध नहीं करना चाहिए वहा नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते है

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आखो व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र मे ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में

अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 20 अंशों में होने से अवरोही अवस्था को प्राप्त है. ऐसा जातक सच्चरित्रता मे विश्वास नहीं रखता।

कर्क लग्न, अंश 20 से 21

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, पद–1,
नक्षत्र अंश 16/40 से 20/00 नक्षत्र देवता–सर्प,
वर्णाक्षर–डी लग्न स्वामी–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
प्रधान विशेषता-चोर–मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते हैं जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोक

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 21 अंशों में होने से अवरोही अवस्था को प्राप्त है। ऐसा जातक सच्चरित्रता में विश्वास नहीं रखता।

कर्क लग्न, अंश 21 से 22

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, पद 2,
नक्षत्र अंश–20/00 से 23/20 नक्षत्र देवता–सर्प,
वर्णाक्षर–डू लग्न स्वामी–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
प्रधान विशेषता-निर्धन–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते है। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते हैं। जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र मे जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एव शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था मे अग-भग का खतरा रहता है। आपका लग्न 22 अशो में होने के कारण यह लग्न वृद्धावस्था को प्राप्त है। ऐसा जातक धन एकत्रित करने के मामले में प्रायः असफल रहता है।

कर्क लग्न, अंश 22 से 23

लग्न नक्षत्र—आश्लेषा, **पद**—2,
नक्षत्र अंश—20/00 से 23/20 तक **नक्षत्र देवता**—सर्प,
वर्णाक्षर—डू **नक्षत्र स्वामी**—चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी—बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**—शनि
प्रधान विशेषता—निर्धन मानसागरी अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते. जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं जहा क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं—

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया॥
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एव शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धधों से होता है। विदेश मे कमाता है। वृद्धावस्था में अग भग का खतरा रहता है आपका लग्न 23 अशो में होने से वृद्ध लग्न है। धनेश की स्थिति यदि ठीक न हो तो ऐसे जातक को धन कमाने के मामले मे सघर्ष करना पड़ता है।

कर्क लग्न, अंश 23 से 24

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, पद–2,
नक्षत्र अंश–20/00 से 23/20 तक नक्षत्र देवता–सर्प,
वर्णाक्षर–डू लग्न स्वामी–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
प्रधान विशेषता-निर्धन–मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतघ्न एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहा चुप रहते हैं। जहा क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भग का खतरा रहता है। आपका लग्न 24 अशों में होने के कारण वृद्धावस्था को प्राप्त है। धनेश की स्थिति यदि ठीक न हो तो जातक को धनार्जन हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

कर्क लग्न, अंश 24 से 25

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, पद–3,
नक्षत्र अंश–23/20 से 26/40 तक नक्षत्र देवता–सर्प,
वर्णाक्षर–डे लग्न स्वामी–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
प्रधान विशेषता–दशपति–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतघ्न एव ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नही करते। जहा इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहा चुप रहते है, जहा क्रोध नही करना चाहिए वहा नियत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 25 अंशों में होने से वृद्ध है। ऐसे जातक की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तो बढ़ी-चढ़ी रहेगी पर उस हिसाब से धन नहीं होगा।

कर्क लग्न, अंश 25 से 26

लग्न नक्षत्र—आश्लेषा, **पद**—3,
नक्षत्र अंश—23/20 से 26/40 **नक्षत्र देवता**—सर्प,
वर्णाक्षर—डे **लग्न स्वामी**—चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी—बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**—शनि
प्रधान विशेषता देशपति—मानसागरी-अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतघ्न एवं ईर्ष्यालु होते है। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं। जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहा नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता।।

—ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोक

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 26 अंशों में होने से मृतावस्था को प्राप्त है। ऐसे जातक की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा तो बहुत होती है पर धन प्राप्ति हेतु किए गए प्रयासो में उतनी सफलता नहीं मिलेगी, जितनी मिलनी चाहिए।

कर्क लग्न, अंश 26 से 27

लग्न नक्षत्र—आश्लेषा, **पद**—3,
नक्षत्र अंश—23/20 से 26/40 तक **नक्षत्र देवता**—सर्प

वर्णाक्षर–डे लग्न स्वामी–चन्द्र
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
प्रधान विशेषता देशपति–मानसागरी अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है इसमें जन्मे जातक क्रोधी, कृतघ्न एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं। जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोक

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है, परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है आपका लग्न 27 अंशों में होने से मृतावस्था को प्राप्त अवरोह अवस्था करता है ऐसे जातक की प्रतिष्ठा के मुकाबले उसके पास रुपया नहीं होगा।

कर्क लग्न, अंश 27 से 28

लग्न नक्षत्र–आश्लेषा, **पद**–4,
नक्षत्र अंश–26/40 से 30/00 **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
प्रधान विशेषता–कुलमन्डन मानसागरी- अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है इससे जन्मे जातक क्रोधी कृतघ्न एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए। वहां चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोक

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है वृद्धावस्था में अग भग का खतरा रहता है। आपका लग्न 29 अंशों में होने से मृतावस्था में है। ऐसे जातक की प्रतिष्ठा बहुत होती है पर उसे धन का अभाव रहता है।

कर्क लग्न, अंश 28 से 29

लग्न नक्षत्र -आश्लेषा, **पद**–4,
नक्षत्र अंश–26/40 से 30/00 तक **नक्षत्र देवता**–सर्प,
वर्णाक्षर–डो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
प्रधान विशेषता कुलमन्डन मानसागरी अ. 1/पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्में जातक क्रोधी, कृतघ्न एवं ईर्ष्यालु होते हैं। ये अपने हित चिन्तक की परवाह नही करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए वहां चुप रहते है, जहां क्रोध नही करना चाहिए, वहा नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं–

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। बाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एव शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है। परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अग भग का खतरा रहता है आपका लग्न 29 अंशों मे होने से मृतावस्था मे है। ऐसे जातक कुल-परिवार की कीर्ति फैलाने वाला होता है पर उसे धनाभाव बना रहता है।

कर्क लग्न, अंश 29 से 30

लग्न नक्षत्र -आश्लेषा, **पद**–4,
नक्षत्र अंश 26/40 से 30/00 नक्षत्र देवता–सर्प
वर्णाक्षर–डो **लग्न स्वामी**–चन्द्र,
लग्नगत नक्षत्र स्वामी–बुध, **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
प्रधान विशषता **कुलमन्डन**–मानसागरी अ. ./पृ. 66

आश्लेषा नक्षत्र का देवता सर्प है। इससे जन्मे जातक क्रोधी, कृतज्ञ एवं ईर्ष्यालु होते हैं।

ये अपने हित चिन्तक की परवाह नहीं करते। जहां इन्हें क्रोध करना चाहिए, वहा चुप रहते हैं, जहां क्रोध नहीं करना चाहिए, वहां नियंत्रण खो बैठते हैं। शास्त्र कहते हैं

प्रचण्डा च कृतघ्ना च कुरूपा कलह प्रिया।
कन्यका प्रेमसक्ता च आश्लेषा जाता सुनिश्चिता॥

ज्योतिष तत्त्व प्रकाश/श्लोका

इस नक्षत्र में जन्मे जातक के आंखों व शब्दों में सम्मोहन होता है तथा शत्रु को नुकसान पहुंचाने में पूर्ण सक्षम होते हैं। वाल्मीकि रामायण के अनुसार भगवान श्रीराम के भाई लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न का जन्म आश्लेषा नक्षत्र में ही हुआ था। भारत में जिस दिन गणपति ने दूध पिया, उस दिन यही नक्षत्र था।

आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यधिक धनी होता है परन्तु उसकी आमदनी का जरिया अनैतिक धंधों से होता है। विदेश में कमाता है। वृद्धावस्था में अंग-भंग का खतरा रहता है। आपका लग्न 30 अंशों में होने से मृत है। ऐसे जातक को अपने द्वारा किए गए प्रयासों में सफलता नहीं मिलती। जातक का लग्न एकदम कमजोर अवस्था को प्राप्त है।

❑❑❑

कर्क लग्न और आयुष्य योग

1. कर्क लग्न के लिए सूर्य मारकेश होकर भी मारक नहीं है, शुक्र सहायक मारकेश का काम करेगा। शनि एवं बुध परम पापी व अशुभ हैं आयुष्य प्रदाता ग्रह चन्द्र है।
2. कर्क लग्न वालों की मृत्यु जल से, सक्रामक रोग से, अग्नि से घाव से, कैंसर, मधुमेह, जलोदर, किसी महारोग से तथा अत्यधिक परिश्रम से होती है।
3. कर्क लग्न वालों की औसत आयु सामान्य स्थिति मे 70 वर्ष आंकी गई है। जीवन के उपरान्त 11 माह, 1, 3, 5, 7, 9, 12, 13, 16, 20 27, 32, 35, 38, 42, 45 47, 51, 55, 58, 59, 61 और 67 वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट एवं अल्प मृत्यु का भय रहता है
4. यदि कर्क लग्न में चन्द्रमा वृषभ का, शनि तुला में गुरु मकर में हो, तो जातक पूर्ण यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
5. यदि कर्क लग्न मे कर्क का नवमांश हो, गुरु केन्द्र में, मंगल मकर में, शुक्र सिंहासनांश में हो तो ऐसा जातक चिरंजीवी होता है।
6. कर्क लग्न में यदि शुक्र केन्द्रवर्ती होकर गोपुरांश में हो, गुरु पारावतांश में होकर त्रिकोण में हो तो व्यक्ति चिरंजीवी होता है।
7. कर्क लग्न हो तथा धनु का नवमाश हो तथा नवमांश में गुरु लग्नस्थ हो तथा नवमाश में तीन या चार ग्रह उच्च के हों तो जातक साक्षात् ब्रह्मा के समान यशस्वी एवं चिरजीवी होता है।
8. कर्क लग्न में गुरु हो, शुक्ल पक्ष मे दिन के समय का जन्म हो एवं मगल सातवें तथा शनि चौथे स्थान में हो तो जातक पूर्ण यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
9. कर्क लग्न हो तथा सभी ग्रह कर्क से लेकर मकर राशि मे क्रमशः उच्च या स्वगृही हों या कर्क म गुरु, चन्द्र, सिह में सूर्य, कन्या मे बुध, तुला मे शनि, वृश्चिक या मकर में मगल हो तो जातक ऋषि मुनियो की तरह दीर्घजीवी, यशस्वी एव चिरंजीवी होता है
10. कर्क लग्न में गुरु हो, शनि तुला मे हा सूर्य बुध के साथ स्थिर राशि (वृष, सिह, वृश्चिक, कुम्भ) मे हो, चन्द्रमा वृष में हो, शुक्र मिथुन में हो तो जातक ऋषि-मुनियों की तरह दीर्घजीवी, यशस्वी एव चिरायु होता है
11. कर्क लग्न में चन्द्रमा यदि कर्क, वृश्चिक या मीन राशि मे हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होता है।

12. कर्क लग्न में चन्द्रमा हो तथा चन्द्र, शनि और मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति छोटे कद का एवं कुबड़ा होता है

13. कर्क लग्न में गुरु लग्न में, मंगल मकर एवं शुक्र, मीन या वृष में हो, अन्य सभी ग्रह केन्द्र स्थानों में हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।

14. कर्क लग्न में गुरु+चन्द्र हो, शुक्र एवं बुध केन्द्र में हो, सूर्य, मंगल और शनि तीसरे, छठे या एकादश स्थानों मे हो तो ऐसा व्यक्ति 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।

15. कर्क लग्न में पंचम भाव में वृश्चिक का चन्द्रमा, त्रिकोण में गुरु एवं दशम स्थान में मंगल हो तो जातक दीर्घायु होता है

16. कर्क लग्न मे शनि आठवें हो तो जातक दीर्घायु को भोगता है अथवा शनि यदि पंचम भाव में वृश्चिक का हो तो भी दीर्घायु होती है।

17. कर्क लग्न में शनि चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव में केन्द्रवर्ती हो तो जातक स्वस्थ व सौ वर्ष से अधिक दीर्घायु को भोगता है।

18. कर्क लग्न में दशमेश मंगल पंचम भाव में, अष्टमेश शनि केन्द्र में अन्य शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक सौ वर्ष तक जीता है।

19. कर्क लग्न में अष्टमेश शनि लग्न में, गुरु एवं शुक्र के द्वारा दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की दीर्घायु को प्राप्त करता है।

20. कर्क लग्न में चन्द्रमा छठे धनु का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा तभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

21. कर्क लग्न मे गुरु उच्च का हो, चन्द्रमा बलवान हो तथा शुभ ग्रह केन्द्र-त्रिकोण में हो तो जातक 80 वर्ष की आयु को भोगता है

22. कर्क लग्न में शनि मेष का, मंगल पांचवें वृश्चिक का, सूर्य सातवें मकर का हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

23. कर्क लग्न में लग्नेश चंद्रमा लग्न को देख रहा हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों जातक की आयु 70 वर्ष की होती है।

24. कर्क लग्न मे सूर्य+मंगल+शनि हो, चन्द्रमा द्वादश या पंचम भाव में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक की आयु 70 वर्ष की होती है

25. कर्क लग्न मे, गुरु+बुध+सूर्य लग्नस्थ हो, शनि मीन राशि का नवम मे तथा चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होकर द्वादश में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है पर ऐसे व्यक्ति की आयु मात्र 66 वर्ष की होती है

26. कर्क लग्न मे तुला का चन्द्र चौथे, उच्च का मंगल सातवें उच्च का सूर्य दसवें स्थान मे किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो एसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है.

27. कर्क लग्न में अष्टमेश शनि सातवें हो, चन्द्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो ऐसा व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

28. कर्क लग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चन्द्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक एवं विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है

29. कर्क लग्न में लग्नेश चन्द्रमा पाप ग्रहों के साथ अष्टम भाव में हो तथा अष्टमेश शनि पाप ग्रहों के साथ छठे स्थान में, किसी भी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

30. कर्क लग्न में शनि+मंगल हो, चन्द्रमा आठवें, गुरु छठे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

31. कर्क लग्न में द्वितीय या द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश हो, लग्नेश चन्द्रमा निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय व द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

32. कर्क लग्न में शनि दो पाप ग्रहों के मध्य हो, चतुर्थ भाव का स्वामी शुक्र, छठे स्थान में पाप ग्रह के साथ हो चन्द्रमा पाप दृष्ट एव निर्बल हो तो ऐसा जातक 67 वर्ष की आयु में अपने ही नौकर द्वारा अस्त्र से मारा जाता है।

33. कर्क लग्न में सूर्य कुम्भ में एव शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों एवं शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है ऐसा बालक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

34. कर्क लग्न में सूर्य+मंगल आठवें हों, लग्नेश चन्द्र निर्बल हो, अन्य शुभ योग न हो तो तीव्र बालारिष्ट योग बनता है। उपाय न करने पर ऐसा बालक एक मास में ही मृत्यु को प्राप्त कर जाता है।

❑❑❑

कर्क लग्न और रोग

1. कर्क लग्न में सूर्य सातवें हो तो मनुष्य को नेत्र रोग होता है।
2. कर्क लग्न मे षष्टेश गुरु पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
3. कर्क लग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश शुक्र पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है
4. कर्क लग्न में चतुर्थेश शुक्र अष्टमेश शनि के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. कर्क लग्न में चतुर्थेश शुक्र कन्या या सिंह राशि में हो, अस्त हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. कर्क लग्न में शनि तुला का चतुर्थ में हो तथा षष्टेश गुरु सूर्य के साथ पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. कर्क लग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
8. कर्क लग्न में तुला का शनि चौथे एवं कुंभ का सूर्य आठवें हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
9. कर्क लग्न मे चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पाप ग्रहो से दृष्ट हो तथा लग्नेश चंद्रमा हीनबली हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट अटैक) होता है।
10. कर्क लग्न मे वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट अटैक) होता है।
11. कर्क लग्न मे चंद्रमा+शुक्र+शनि की एक साथ युति दुःस्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।
12. कर्क लग्न में पापग्रह हो, लग्न का स्वामी चंद्रमा बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी होता है
13. कर्क लग्न मे क्षीण चन्द्रमा लग्न में हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति रोगी होता है।
14. कर्क लग्न मे अष्टमेश शनि लग्न मे तथा लग्नेश चंद्रमा अष्टम में हो, लग्न पाप ग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता। सदैव रोगी बना रहता है।

15. कर्क लग्न में सूर्य चौथे अष्टम मे गुरु एव द्वादश मे चद्रमा, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त करता है।

16. कर्क लग्न के दूसरे स्थान में सिंह का सूर्य हो तथा चौथे एवं दसवें भाव में भी पाप ग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

17. कर्क लग्न के अष्टम या सप्तम स्थान मे गुरु+राहु+मगल+सूर्य हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है, उसे कोई न कोई बीमारी लगी ही रहती है।

18. कर्क लग्न के दशम स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक "मातृघातक" होता है।

19. कर्क लग्न में लग्नेश चद्रमा एव लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम स्थान मे भी पाप ग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर "आत्महत्या" करता है।

20. कर्क (चर) लग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

21. कर्क लग्न में षष्टेश गुरु सप्तम या दशम भाव मे हो, लग्न पर मगल की दृष्टि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है.

22. कर्क लग्न मे निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेम बाधा अथवा शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ, "अकाल मृत्यु" को प्राप्त करता है

❑❑❑

कर्क लग्न और धनयोग

कर्क लग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धनप्रदाता ग्रह सूर्य है। धनेश सूर्य की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से संबंध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, सूर्य एवं धनस्थान पर पड़ने वाले ग्रहों के दृष्टि संबंध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्त्रोतों तथा चल-अचल संपत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश चंद्र, पंचमेश एवं दशमेश मंगल, भाग्येश गुरु, शुक्र की अनुकूल स्थितियां कर्क लग्न वालों के लिए धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

वैसे कर्क लग्न के लिए शुक्र, शनि व बुध परम पापी व अशुभ हैं। गुरु, सूर्य शुभ हैं। इस समय में मंगल अकेला राजयोग कारक है। सूर्य मारकेश होकर भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। सूर्य साहचर्य से मारक का फल देगा। गुरु पापी होने पर भी योग कारक है।

सफलयोग– 1. चंद्र+मंगल, 2. चंद्र+गुरु,
3. मंगल+गुरु, 4. मंगल+शुक्र

निष्फलयोग– 1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि

अशुभयोग– 1. मंगल+शनि

राजयोग कारक–केवल मंगल ही है।

लक्ष्मीयोग–मंगल केंद्र -त्रिकोण में सूर्य द्वितीय, पंचम या नवम में चंद्रमा लग्न या एकादश में।

विशेष योगायोग

1. कर्क लग्न में सूर्य, सिंह या मेष राशि में हो तो जातक धनाध्यक्ष होता है। धन के मामले में लक्ष्मी उसका पीछा नहीं छोड़ती
2. कर्क लग्न में धनेश सूर्य मीन राशि में तथा गुरु सिंह राशि में परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक भाग्यशाली होता है तथा अत्यधिक धन कमाता हुआ लक्ष्मीवान होता है
3. कर्क लग्न में गुरु कर्क या मीन राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत धन कमाता है ऐसा जातक धन के मामले में भाग्यशाली होता है।

4. कर्क लग्न मे सूर्य शुक्र के घर मे तथा शुक्र सूर्य के घर में अर्थात् सूर्य वृष या तुला राशि में तथा शुक्र सूर्य में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है तथा जीवन में अत्यधिक धन अर्जित करता है।
5. कर्क लग्न में मंगल केंद्र या त्रिकोण मे कहीं भी चंद्रमा के साथ हो तो जातक 28 वर्ष की आयु के बाद खूब धन कमाता है तथा कीचड़ मे कमल की तरह खिलता हुआ सामान्य परिवार में जन्म लेकर धीरे धीरे प्रचुर मात्रा में द्रव्य कमाता हुआ लक्षाधिपति यहां तक करोड़पति तक हो जाता है।
6. कर्क लग्न में चद्रमा गुरु एवं मगल के साथ दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है तथा व्यक्ति धनशाली व्यक्तियों मे अग्रगण्य होता है
7. कर्क लग्न में स्वगृही मंगल पंचम भाव में हो तथा लाभ स्थान स्वगृही हो तो व्यक्ति महालक्ष्मीवान होता है।
8. कर्क लग्न में चंद्रमा यदि वृष राशि में हो तथा शुक्र कर्क राशि में हो तो जातक 33वें वर्ष में पाच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए, स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।
9. कर्क लग्न में लग्नेश चंद्रमा, धनेश सूर्य, भाग्येश गुरु, लाभेश शुक्र अपनी अपनी उच्च एवं स्वराशियों में हों तो जातक करोडपति होता है।
10. कर्क लग्न में धनेश सूर्य यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो धनहीन योग की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घडे में छिद्र होने पर उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता। सदैव रुपयों की कमी रहती है। इस दुर्योग की निवृत्ति हेतु ऐसे जातक को गले में अभिमंत्रित "सूर्ययंत्र" धारण करना चाहिए। पाठक चाहे तो यह यंत्र हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं
11. कर्क लग्न में धनेश सूर्य यदि आठवे हो तथा लग्नेश चद्रमा व शुभ ग्रह उसे देखते हों तो जातक को गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर यह रुपया उसके पास टिकता नहीं है।
12. कर्क लग्न हो, चद्रमा, पंचमेश, मगल व भाग्येश गुरु दूसरे भाव में हो तथा शुक्र, सूर्य वृश्चिक राशिस्थ हो तो जातक भिक्षुक के घर में जन्म लेकर भी करोड़पति बनता है।
13. बुध शुक्र के साथ पचम भाव में हो तो बुध अपनी दशा व अंतर्दशा में अर्थ प्राप्ति करवाता है।
14 सूर्य स्वराशिस्थ, बुध तीसरे भाव में उच्च राशि में गुरु भी तृतीय भाव मे मंगल छठे धनु राशि में हो तो जातक अपने बाहुबल से श्रेष्ठ अर्थ प्राप्त करता है एव लखपति होता है।
15 बुध शुक्र 12वें भाव में हो तो शुक्र की दशा मे जातक ख्याति यश एवं धन लाभ करता है।
16. धनेश यदि धनभाव या केंद्र त्रिकोण मे हो तो धन की वृद्धि व 6, 8, 12 इन स्थानो में हों तो धन की हानि होती है।

17. धनेश सूर्य व लाभेश शुक्र दोनों ही अस्त हों या पापयुक्त हों तो जन्म से ही जातक धनहीन होता है।
18. सूर्य, शुक्र षष्ट स्थान में हो गुरु मिथुन का हो, चंद्रमा तृतीय हो तो जातक करोड़पति होता है।
19. बुध, गुरु-सूर्य के साथ ही, शनि की पूर्ण दृष्टि हो, राहु भाग्य भवन मे हो तो जातक करोड़पति बनता है।
20. चंद्रमा वृश्चिक का नीच, सूर्य तुला का सुख भाव में नीच का, चंद्रमा से दशम में शुक्र मंगल हो तो जातक अतुल धनवान, लक्ष्मीवान होता है।
21. गुरु पंचम, चंद्रमा सप्तम में, मंगल तुला का हो, सूर्य भी गुरु के साथ हो तो जातक करोड़पति होता है।
22. गुरु लाभ भाव में हो तथा चंद्रमा गुरु के साथ हो सूर्य लग्न में हो बुध, शुक्र की युति द्वितीय भाव में हो तो जातक को देव कृपा से अर्थ-लाभ होता है।
23. शुक्र, मिथुन का हो द्वादश भाव में, लग्न में सूर्य, तृतीयेश बुध हो तो जातक साधारण अर्थोपार्जन कर आजीविका चलाता है।
24. कर्क लग्न में मंगल यदि मेष, वृश्चिक या मकर राशि मे हो तो ''रुचकयोग'' बनता है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, संपत्ति व धन का स्वामी होता है।
25. कर्क लग्न मे सुखेश शुक्र नवम भाव में शुभ ग्रह से युति किए हुए मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन की प्राप्ति होती है।
26. कर्क लग्न में गुरु+चंद्र की युति सिंह, तुला, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो इस प्रकार के '**गजकेसरी योग**' के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्त्रोत से अकल्पनीय धन मिलता है।
27. कर्क लग्न में धनेश सूर्य अष्टम में तथा अष्टमेश शनि धनस्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़दौड़, स्मगलिंग एव अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है
28. कर्क लग्न में तृतीयेश बुध लाभस्थान में एव लाभेश शुक्र, तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करक बैठे हों तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र, भागीदारी, लेखन, प्रकाशन एव बुद्धिबल के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।
29. कर्क लग्न में बलवान सूर्य के साथ यदि चतुर्थेश शुक्र की युति हो तो व्यक्ति माता के द्वारा, नौकर एव वाहन के द्वारा धन अर्जित करता है
30. कर्क लग्न में बुध कन्या राशि में हो तो जातक कुशल भविष्यवक्ता होता है और बुद्धिबल से खूब रुपया कमाता है,
31. कर्क लग्न में सूर्य+चंद्रमा कुंभ राशि मे हो तथा तीन चार ग्रह नीच के हो तो व्यक्ति करोड़पति के घर म जन्म लेकर भी दरिद्र होता है।

32. कर्क लग्न मे यदि बलवान सूर्य की पचमेश मगल से युति हो, द्वितीय भाव शुभ ग्रह मे दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र के द्वारा धन की प्राप्ति होती है, पुत्र जन्म बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

33. कर्क लग्न में बलवान सूर्य की यदि षष्टेश गुरु से युति हो तथा धनेश सूर्य शनि या मगल से दृष्ट हो तो जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

34. कर्क लग्न में बलवान सूर्य यदि सप्तमेश शनि के साथ हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, सुसराल पक्ष से चल-अचल संपत्ति की प्राप्ति होती है।

35. कर्क लग्न में बलवान सूर्य की नवमेश गुरु से युति हो तो ऐसा जातक राजा, राज्य सरकार, सरकारी अधिकरियों एवं अनुबधनों से काफी धन कमाता है।

36. कर्क लग्न मे बलवान सूर्य दशमेश मंगल के साथ हो तो जातक को पैतृक संपत्ति, पिता द्वारा संरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

37. कर्क लग्न में दशम भाव का स्वामी मगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता, जन्म स्थान में कमाई नहीं होती तथा जातक को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

38. कर्क लग्न में लग्नेश चद्रमा यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य अष्टम स्थान में कुंभ राशि का हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है। उसकी आर्थिक स्थिति सदैव दयनीय होती है।

39. कर्क लग्न के द्वितीय भाव में पाप ग्रह हो तथा लाभेश शुक्र यदि छठे आठवे या बारहवें स्थान में हो तो 'शकट योग' बनता है जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

40. कर्क लग्न में धनेश सूर्य अस्त हो, नीच राशि (तुला) मे हो तथा धन स्थान या अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है। कर्ज उसके सिर से नहीं उतरता।

41. कर्क लग्न में लाभेश शुक्र, यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो, लाभेश अस्तगत या पाप पीड़ित हो तो व्यक्ति महादरिद्री होता है।

42. कर्क लग्न में अष्टमेश शनि वक्री होकर कही भी बैठा हो या अष्टम स्थान मे कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धनहानि का योग बनता है। अत: ऐसे व्यक्ति को धन के मामले मे परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है। अत: सावधान रहे।

43. कर्क लग्न मे अष्टमेश शनि शत्रु क्षेत्री नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है

❑❑❑

कर्क लग्न और विवाहयोग

1. केंद्र व त्रिकोणपति मंगल चंद्रमा से योग करे तथा धन स्थान में हो जातक की स्त्री विवाहोपरांत लखपति बनेगी
2. बुध, शुक्र 12 वें भाव में हों तो शुक्र की दशा में जातक ख्याति, यश एवं अर्थ लाभ करता है।
3. कर्क लग्न में सप्तमस्थ शनि चंद्रमा के साथ हो, लग्न में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलंब से विवाह तो निश्चित है, अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
4. कर्क लग्न में यदि शनि व चंद्रमा एक दूसरे को परस्पर देख रहे हों तो विवाह विलंब से होता है
5. कर्क लग्न में शनि द्वादश या अष्टम में हो, सूर्य द्वितीय भाव में हो और लग्नेश चंद्रमा निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
6. कर्क लग्न में शनि छठे और सूर्य अष्टम में हो तथा शुक्र भी बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता
7. कर्क लग्न में सूर्य, शनि और शुक्र की युति कहीं भी हो तो जातक का विवाह नहीं होता
8. कर्क लग्न में शुक्र लग्न या द्वितीय में हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हों तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि वक्री हो, सप्तम भाव में कोई वक्री ग्रह हो, या किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अनेक अवरोध आते हैं। विवाह समय पर नहीं होता।
10. कर्क लग्न में चंद्रमा यदि चरराशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो, पाप ग्रह केंद्र में हो शुभ ग्रह उन्हें न देखते हों तो ऐसी स्त्री विवाह के पूर्व अन्य पुरुषों से संसर्ग करती है
11. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलंब से होता है। ऐसा जातक प्रायः अंतर्जातीय विवाह करता है।
12. कर्क लग्न में सूर्य आठवें, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नूतन वस्त्र पहन

करं पर पुरुषों का संग करती है।

13. कर्क लग्न में सप्तमस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि हो तो जातक में कामवासना प्रबल होती है ऐसा जातक आवेश में स्त्री के यौनांग का स्पर्श अपने मुंह से करता है। यदि ऐसे मंगल के साथ राहु हो तो जातक अपने आश्रय में रहने वाली सेविका से यौन संबंध रखता है.
14. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि यदि चर राशि में हो तो स्त्री का पति परदेश में रहेगा। ऐसे में यदि सप्तम भाव में बुध व शनि हो तो स्त्री का पति नपुंसक होगा।
15. कर्क लग्न में शनि यदि सातवें हो, शुभ ग्रह न देखते हों तो स्त्री का पति बूढ़ा व पापी होगा।
16. कर्क लग्न में सातवें सूर्य हो, उस पर गुरु की दृष्टि हो तो ऐसी स्त्री रोग रहित, पुत्र-पौत्रों से युक्त, सुंदरियों में प्रधान, रानी के समान सुंदर, वैभव एवं ऐश्वर्य शालिनी होती है।
17. कर्क लग्न में चन्द्रमा यदि (1/4 6/8/10/12) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत कोमल व मृदु स्वभाव वाली होती है
18. कर्क लग्न में गुरु, बुध, शुक्र एवं मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात विदूषी एवं सच्चरित्र वाली होती है।
19. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि यदि चर राशि (1/4/7/10) में हो तो ऐसी स्त्री का पति निरंतर प्रवास में रहता है।
20. जातक पारिजात के अनुसार कर्क लग्न में उत्पन्न कन्याएं सुंदर होती हैं। यदि लग्न में चंद्रमा हो तो ऐसी स्त्री पति को प्रिय व प्राणवल्लभा होती है।
21. जिस स्त्री का जन्म कर्क लग्न में हो तथा सातवें भाव में चंद्रमा हो, अन्य तीन केंद्रों में कोई भी पाप ग्रह न हो तो ऐसी स्त्री रानी तुल्य ऐश्वर्य को भोगती है। उसके घर कार इत्यादि उच्च वाहन, नौकर चाकर का सुख, पति का सुख उत्तम होता है।
22. कर्क लग्न में चन्द्रमा हो साथ में अष्टमेश शनि भी हो तो 'द्विभार्यायोग' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है
23. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि द्वितीय या द्वादश में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा जातक जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ संभोग करता है।
24. कर्क लग्न में सूर्य हो तथा सातवें स्थान में शनि हो तो ऐसे जातक का दांपत्य जीवन कलहपूर्ण रहता है। जीवन साथी से उसकी विचारधारा बिल्कुल नहीं मिलती। इसके विपरीत सूर्य सातवें एवं शनि लग्न में हो तो भी यही योग बनता है.
25. जिस महिला के कर्क लग्न में शनि बैठा हो वह एक नंबर की जिद्दी व हठी महिला होती है। ऐसी महिला प्रेम विवाह करती है तथा जात-पात की मर्यादा कुल-परंपरा एवं लोकलज्जा की परवाह नहीं करती।

26. कर्क लग्न में सप्तमस्थ चंद्रमा शनि से दृष्ट हो तो ऐसी महिला अंतर्जातीय विवाह करती है पर उसके परिणाम सुखद नहीं होते।

27. कर्क लग्न में सप्तमेश शनि छठे, आठवें या बारहवें हो तथा षष्ठेश (गुरु) अष्टमेश (शनि) या द्वादश (बुद्ध) सातवें भाव मे हो तो ऐसा जातक अविवाहित रहता है।

28. कर्क लग्न में सूर्य द्वितीय भाव में शनि के साथ हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के पश्चात् होता है तथा जातक को ससुराल की सारी सम्पत्ति मिलती है।

❑❑❑

कर्क लग्न और संतानयोग

1. वैसे कर्क लग्न अल्प संतति वाला होता है परंतु कर्क लग्न में पंचमेश मंगल यदि आठवें हो तो जातक के अत्यल्प संतति होती है।
2. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल अस्त हो या पाप पीड़ित होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक के पुत्र नहीं होता।
3. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल यदि कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो जातक के पहली संतान कन्या ही होती है।
4. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल विषम राशि में हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति की प्रथम संतान पुत्र ही होता है।
5. कर्क लग्न में मंगल हो, पंचमस्थ सूर्य हो तथा शनि आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति की जवानी बीत जाने के बाद, बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र प्राप्त होता है।
6. कर्क लग्न में शनि हो, गुरु आठवें एवं मंगल बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति की जवानी बीत जाने के बाद, बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र प्राप्त होता है।
7. कर्क लग्न में पाप ग्रह हो, गुरु से पांचवें स्थान में भी पापग्रह हो, चंद्रमा ग्यारहवें वृष राशि का हो तो बहुत प्रयत्न करने पर, जवानी बीत जाने के बाद व्यक्ति को पुत्र रत्न की प्राप्ति होती है।
8. कर्क लग्न में मंगल पंचम भाव में वृश्चिक का हो तो जातक के तीन पुत्र होते हैं।
9. कर्क लग्न में मंगल लग्न में तथा चंद्रमा पंचम भाव में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरे की संतान गोद लेता है तथा उसे अपने लड़के की तरह पालकर, धन का स्वामी बनाता है।
10. कर्क लग्न में पंचम भाव में राहु हो तथा राहु मंगल से दृष्ट हो तो जातक को पुत्र का सुख नहीं मिलता। इसके पुत्र उत्पन्न तो होता है पर कुछ कालांतर के बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
11. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल पंचम, षष्ट या द्वादश स्थान में हो और पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ''अनपत्ययोग' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र संतान उत्पन्न नहीं होती पर दोष निवृति के उपायों से शांति हो जाती है
12. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हों तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को ''सिजेरियन चाइल्ड'' कहते हैं

13. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान प्राप्त होती है।
14. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हों तो गर्भपात अवश्य होता है।
15. कर्क लग्न में लग्नेश चंद्र द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश मंगल पाप ग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाते हैं।
16. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।
17. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्यारत्न की प्राप्ति होती है।
18. कर्क लग्न में पंचमेश मंगल की सप्तमेश शनि से युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
19. पंचम स्थान में मंगल, राहु हो तो वह मनुष्य संतान होते हुए भी संतान सुख प्राप्त नहीं कर पाता।
20. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो वह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।
21. पंचमेश मंगल निर्बल हो, लग्नेश चंद्रमा भी निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक को सर्पदोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती
22. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्म नामक "कालसर्पयोग" के कारण जातक के पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।
23. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
24. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं
25. कर्क लग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उसके आगे पीढ़ियां नहीं चलतीं।
26. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को "इलाख्य नामक" सर्पयोग बनता है इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती है
27. कर्क लग्न में पंचमेश पंचम, षष्ट या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव ग्रहों से दृष्ट

न हो तो "अनपत्ययोग" बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

28. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुडवा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं

29. जिस स्त्री की जन्म कुंडली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो "अनगर्भायोग" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

30. जिस स्त्री की जन्म कुंडली में शनि-मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो "अनगर्भायोग" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

31. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो "कुलवर्द्धन योग" बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

32. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को "केवल कन्या योग" होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

कर्क लग्न और राजयोग

1. कर्क लग्न वाले मनुष्य के यदि उच्च का गुरु लग्न में हो, साथ ही उच्च का मंगल सप्तम भाव में, उच्च का सूर्य राज्य-स्थान में और उच्च का शनि मातृ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का गुरु लग्न में हो, उच्च का शनि चतुर्थ में हो और उच्च का मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव का भोगता है।
4. उच्च का गुरु स्वगृही चंद्र के साथ लग्न में हो और उच्च का सूर्य दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. उच्च का गुरु स्वगृही चंद्र के साथ लग्न मे हो और उच्च का शनि चतुर्थ स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
6. उच्च का गुरु स्वगृही चद्र के साथ लग्न में और उच्च का मंगल सप्तम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है
7. उच्च का गुरु पूर्ण चंद्र के साथ लग्न में हो या कर्क का स्वगृही पूर्ण चद्र लग्न में हो और उच्च का शनि चतुर्थ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
8. उच्च का गुरु लग्न मे हो एवं उच्च का सूर्य राज्य स्थान में और बुध, शुक्र और शनि लाभ स्थान मे हों तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
9. उच्च का गुरु लग्न मे और स्वगृही मंगल राज्य स्थान में हो या उच्च का शनि चतुर्थ में हो, स्वगृही मंगल दशम मे हो और शुक्र सप्तम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
10. उच्च का गुरु लग्न मे हो, स्वगृही मंगल दशम मे हो और स्वगृही शुक्र चतुर्थ भाव मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
11. उच्च का गुरु लग्न में, स्वगृही शुक्र चतुर्थ में और स्वगृही शनि सप्तम में और उच्च का चद्रमा एकादश स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
12. सूर्य, चद्रमा, शुक्र, तीनों उच्च के हों या गुरु उच्च का लग्न में और शुक्र-मेष का राज्य मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव का भोगता है।
13. उच्च का गुरु लग्न मे, उच्च का सूर्य दशम मे और चद्-बुध-शुक्र एकादश में हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है.

14. तुला का शनि मंगल के साथ चतुर्थ स्थान में हो और राज्य स्थान मे उच्च का सूर्य तीनों शुभ ग्रहो के साथ बैठा हो तो ऐसे योग मे जन्मा मनुष्य बडी प्रतिष्ठा वाला होता है
15. यदि कर्क का पूर्ण चंद्रमा स्वगृही लग्न में हो और स्वगृही मीन का गुरु मित्र मंगल के साथ भाग्य या नवम स्थान में हो मनुष्य धन-धान्य से युक्त बडा आदमी होता है।
16. यदि कर्क लग्न में चंद्रमा और गुरु हो, सिंह राशि में सूर्य, बुध और शुक्र दूसरे स्थान में हो, मकर का मंगल सप्तम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है
17. मिथुन राशि का शनि बारहवें स्थान में हो या कर्क का चंद्रमा लग्न में हो सूर्य, मंगल, गुरु और शुक्र सिंह राशि में दूसरे स्थान में हों, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
18. मकर का शनि स्वगृही सप्तम स्थान म हो, मिथुन का स्वगृही बुध व्यय या द्वादश स्थान में हो, तो मनुष्य राजमान्य बहुत बड़ा सरकारी नौकर होता है।
19. यदि लग्न में कर्क का गुरु चतुर्थ में, तुला का शुक्र सप्तम स्थान मे, मकर का शनि दशम स्थान में मेष का मंगल हो तो मनुष्य बड़ा पराक्रमी, पुलिस, सेना में उच्चाधिकारी होता है।
20. शनि अपनी राशि का या मूल त्रिकोण या उच्च का होकर केंद्र में हो तो राज योग होता है। ऐसा जातक राजनीति विशारद, नगरपालिका अध्यक्ष या प्रसिद्ध नेता होता है तथा राजा तुल्य आनंद भी भोगता है
21. नवमेश और चतुर्थेश परस्पर केंद्र मे हों तथा लग्नेश बलवान हो तो जातक शरीर से बलिष्ठ वीर व दृढ चरित्र वाला होता है। मिलिट्री या सेना मे उच्च पद प्राप्त करता है।
22. गुरु शत्रु भावस्थ हो तथा केतु से युति करे तो जातक बहु ऐश्वर्यवान तथा योग्य व राजनीतिपटु होता है।
23. शनि सुख भाव मे, गुरु लग्न में लग्नेश के साथ, सूर्य उच्च का तथा मंगल मकर का हो तो उत्तमोत्तम राजयोग होता है।
24. चंद्रमा स्व का हो, मंगल तीसरे भाव में, बुध, शुक्र गुरु का मेष पर दृष्टि हो तो जातक को अद्वितीय राज्य, ख्याति व पद प्राप्त होता है.
25. गुरु मंगल के नवांश मे हो और उस पर मंगल की दृष्टि हो एवं मेष का सूर्य दशम भाव में स्थित हो तो जातक यशस्वी राजनीतिज्ञ होता है
26. उच्च का गुरु केंद्र में तथा शुक्र कर्म भाव में हो तो जातक राजनीति मे पटु होता है।
27. लग्न से गुरु केन्द्र में हो तथा केवल शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तथा अस्त नीच या शत्रु राशि में न हो तो जातक मुख्यमंत्री बनता है।
28. कर्क लग्न के जन्म समय मे सिंह, वृष, कन्या, कर्क इन चारों राशियों में से किसी में भी राहु हो तो जातक महाराजाधिराज और लक्ष्मी से संपन्न होता है। राहु उच्च मे हो

तो हाथी, घोड़ा, मनुष्य तथा नाव की सवारी करने वाला जमीन वाला, पंडित और अपने कुल का श्रेष्ठ होता है।

29. कर्क लग्न में दसवें स्थान में बुध, सूर्य हो और मंगल-राहु छठे में हो तो इस राजयोग में उत्पन्न जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

30. कर्क लग्न में लग्न से चतुर्थ मे शुक्र हो और मंगल-राहु छठे मे हो तो इस राजयोग मे उत्पन्न जातक मनष्यों में श्रेष्ठ होता है।

31. कर्क लग्न में उच्च का गुरु और मंगल तथा मेष लग्न में मंगल और गुरु हो, तो राजयोग होता है।

32. कर्क लग्न मे स्वराशि का पूर्ण चंद्रमा लग्न मे, सप्तम में बुध षष्ट में सूर्य, चतुर्थ मे शुक्र, दशम में गुरु और शनि मंगल तृतीय स्थान में हो तो वैभव संपन्न राजयोग होता है।

33. कर्क लग्न में कर्क का गुरु, दशम में रवि, वृष में चंद्रमा, बुध शुक्र हों तो जातक अपने बाहुबल से राजयोग प्राप्त करता है।

36. कर्क लग्न में शीर्षोदय राशि मे (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, मकर) सब ग्रह हों और पूर्ण चंद्रमा स्वगृह का लग्न में शुभ ग्रह दृष्ट हो तो राजयोग होता है।

❑❑❑

कर्क लग्न में आशीर्वादात्मक कुण्डली का मंगल दर्शन

॥ श्रीराम जन्माङ्गम्॥

5 3
4 गु. चं.
6 रा. 2 बु.
7 1
श. सू.
8 10 12
मं. शु. के.
9 11
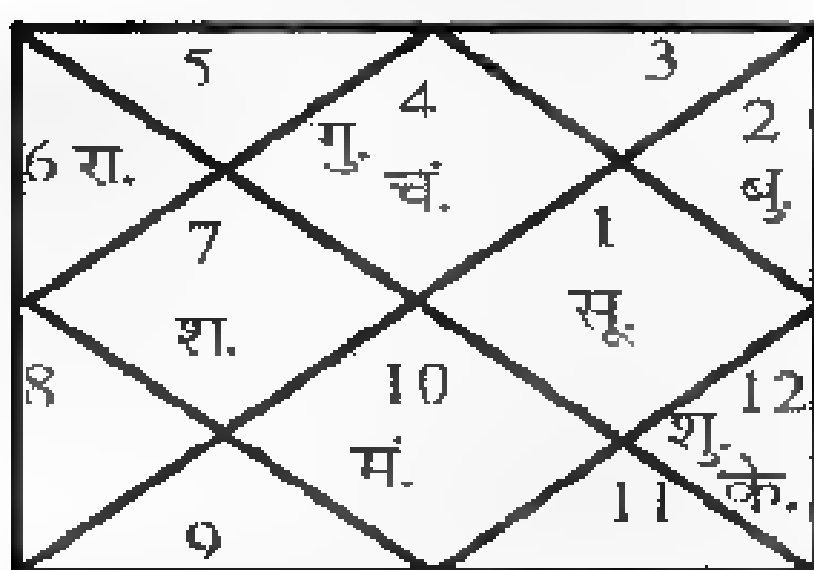
रामश्चैत्र शुक्ल दिनदल समये, पुष्यभे कर्किलग्ने,
जीवेन्द्वो. कर्किराशौ मृगभगतकुजे, ज्ञे वृषे मेषगेऽर्के।
मन्दे जूकेऽगंनायां तमसि शफरगे, भार्गवे वो नवम्यः,
पंचोच्चस्थेऽवतीर्णोऽवतु स तमिय, जन्मपत्री च यस्य॥

जातक सारदीप

नक्षत्रेऽदिति दैवत्ये स्वोच्चेषु पचसु।
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह॥

—वाल्मीकि रामायण

चैत्र शुक्ल नवमी, पुष्य नक्षत्र, कर्क लग्न, लग्न में गुरु चन्द्र, मकर में मंगल, वृष में बुध, मेष में सूर्य, तुला में शनि, कन्या में राहु व मीन में शुक्र इस स्थिति में पाच उच्च ग्रहयुक्त वेला में अवतीर्ण हुए भगवान राम जातक की सदैव रक्षा करें। भगवान राम की कुण्डली मगलार्थ प्रारम्भ मे लिखने की परिपाटी प्राचीनकाल से चली आ रही है

❑❑❑

भगवान श्रीराम को सिंहासन के बदले वनवास क्यों मिला?

भगवान श्रीराम के बारे में आलोचक लोग कहते हैं कि उनके राज्याभिषेक का मुहूर्त गुरु वशिष्ठ ने निकाला था परन्तु उन्हें सिंहासन की जगह वनवास मिला। क्या गुरु वशिष्ठ को इसका आभास नहीं था। ज्योतिषशास्त्र के विरोधी लोग कहते हैं कि भगवान श्रीराम की जन्मकुण्डली के लग्न स्थान में गुरु उच्च का, चंद्रमा स्वगृही था तथा सप्तम भाव में मंगल उच्च का था। लग्न का अर्थ सिंहासन, पद प्रतिष्ठा एवं सप्तम भाव पत्नी का होता है। दोनों जगह उच्च के ग्रह होने पर भगवान श्रीराम को सिंहासन की जगह वनवास तथा पत्नी का वियोग मिला। इससे प्रतीत होता है कि फलित ज्योतिष सच्चा नहीं है ज्योतिष प्रेमियों को भी इस बात का चिन्तन करना चाहिए कि भगवान श्रीराम को सिंहासन की जगह वनवास एवं पत्नी वियोग क्यों मिला? आइए इसका ज्योतिषीय विश्लेषण करें।

5 3
4 च. गु.
6 रा. 2 बु.
7 श. 1 सू.
8 म 12 शु. के.
10 11
9

गुरु वशिष्ठ तो त्रिकालदर्शी थे, उन्हें सब पता था, स्वयं भगवान श्रीराम को पता था कि उन्हें आज वनवास के लिए प्रस्थान करना है तथा पीछे से पिता की मृत्यु होगी ऐसा संकेत बाल्मीकि रामायण में है वे तो मर्यादा पुरुषोत्तम थे लीला ही करने आए थे। साधारण मनुष्य भी जानता है कि सुवर्ण का मृग नहीं होता पर क्या भगवान श्रीराम को मालूम नहीं था। उन्हें पता था यह छलावा है, फिर भी वे उसके पीछे गए और सीता का अपहरण हुआ यह सब लीला थी। पर हमें तो यहां शुद्ध ज्योतिष की बात करनी है कि क्या भगवान श्रीराम की कुण्डली में ऐसी घटनाओं के योग थे? आइए हम उनकी जन्म कुण्डली का सैद्धान्तिक विश्लेषण करें।
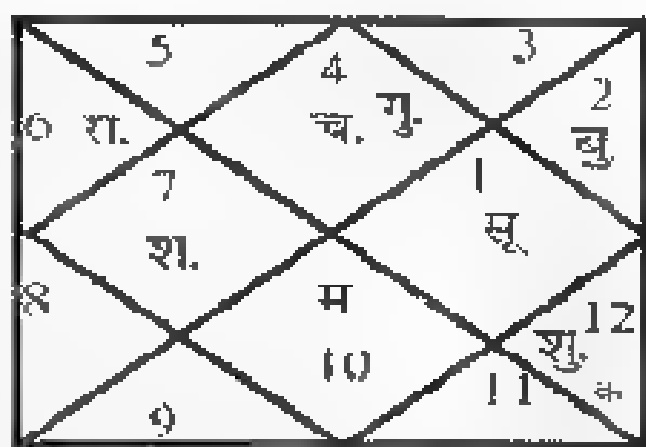
भगवान श्रीराम की कुण्डली में 'राजभंगयोग' स्पष्ट था ज्योतिष के सर्वमान्य सिद्धांतानुसार सौम्य ग्रहों की राशि का अर्थात् (वृष, मिथुन कर्क, कन्या तुला, धनु, मीन) लग्न हो, साथ ही सौम्य राशि में सौम्य ग्रह भी पड़े हों, परन्तु उन सौम्य (शुभ) ग्रहों को कम से कम दो पाप ग्रह पूर्ण दृष्टि से देख रहे हों तो ''राजभंग योग' हो जाता है जातक राजा के घर में

जन्म लेने पर भी वनवासी होता है। यहां श्रीराम की कुण्डली में पाप ग्रह शनि, गुरु-चंद्र को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है तथा मंगल भी गुरु चंद्र को देख रहा है। राहु भी शुक्र को देख रहा है। फलतः **राजभंग योग** स्पष्ट मुखरित है। शनि व सूर्य का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध पिता-पुत्र में वियोग कराता है, यह सर्वमान्य सिद्धान्त है
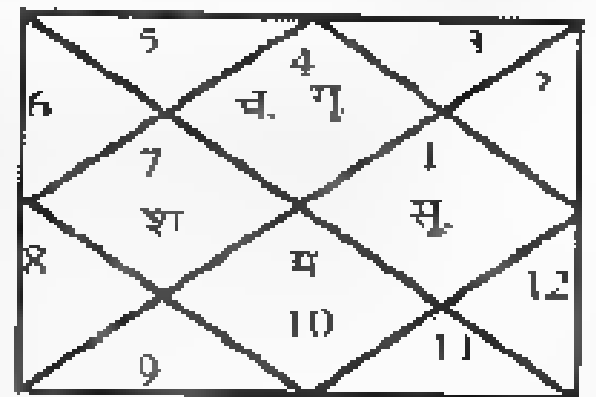
अब रहा पत्नी वियोग की घटना का ज्योतिर्षीय स्पष्टीकरण, भगवान श्रीराम की कुण्डली में लग्न में उच्च का गुरु सप्तम भाव को अपनी नीच दृष्टि से देख रहा था। सप्तम भाव में मंगल होने से कुण्डली मंगलीक हो गई। चौथे शनि होने से कुण्डली "डबल मंगलीक" हो गई। अतः इस कुण्डली में गुरु एवं मंगल का "परस्पर नीच दृष्टि" सम्बन्ध होने से जातक को लग्न (सिंहासन) एवं पत्नी दोनों से च्युत होना पड़ा। हमें ज्योतिषशास्त्र की गहराई को सूक्ष्मता से समझना होगा। खाली उच्च के ग्रह कुण्डली में पड़े होने से कुछ नहीं होता। यही सिद्धांत भगवान श्रीराम की कुण्डली में चौथे भाव (माता व सुख का घर) एवं दशम भाव (पिता व राज्य का घर) पर लागू होता है। शनि और सूर्य का परस्पर नीच दृष्टि सम्बन्ध स्थापित होने पर जातक को मां एवं पिता (राज्य) दोनों के सुख सान्निध्य से वंचित होना पड़ा। ये अकाट्य तर्क है, जिसका कोई ज्योतिषी खण्डन नहीं कर सकता।

कर्क लग्न की कुण्डली का उलट दृष्टान्त देखिए। जो प्रैक्टिकल इसी सिद्धान्त को पुष्ट करती है लग्न में नीच का मंगल है एवं सप्तम भाव में नीच का गुरु है प्रथम दृष्टया तो साधारण ज्योतिष यही कहेगा कि इस जातक के लग्न एवं सप्तम दोनों घर बिगड़ गए। पर ऐसा नहीं है। लग्न है तो चेहरा है, प्रतिष्ठा है पद है जातक लम्ब देह यष्टि वाला, दिखने में सुन्दर एवं उच्च प्रतिष्ठा को प्राप्त है। पत्नी भी सुन्दर, सभ्य, सद्गृहस्थ धर्म परायणा, पतिव्रता को प्राप्त है। पत्नी भी सुन्दर, सभ्य, सद्ग्रहस्थ धर्म परायणा, पतिव्रता, धनाढ्य है। जातक के तीन भाई हैं पर पिता का मकान जातक को मिला, पैतृक विरासत मिली। एवं ससुराल की सारी सम्पत्ति भी मिली। इसका मुख्य कारण है, नीच का मंगल जो कि योगकारक होकर अपनी उच्च राशि सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। इसे परस्पर "उच्च दृष्टि सम्बन्ध" से जातक का लग्न (प्रथम) भाव एवं सप्तम भाव दोनों ही सुधर गए एवं उत्तम फल देने वाले हो गए। इस प्रकार से ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध का भी गहराई से विचार करना चाहिए।

❑❑❑

कर्क लग्न में पुत्र पिता से अधिक पराक्रमी

बहुत वर्ष पहले मैं बनारस की यात्रा पर था ट्रेन में दो साधु मिल गए। ज्योतिष पर चर्चा चल पड़ी। उन्होंने बहुत सी बातें ज्योतिष के विषय में बतलाई। सबसे विचित्र एवं प्रभावोत्पादक बात जो उन्होंने बतलाई वह आज भी मुझे याद है और उसे मैं प्रबुद्ध पाठकों के साथ बांटना चाहूँगा। साधु बाबा ने बहुत ही सरल व एक चमत्कारी सूत्र बताया। उन्होंने कहा ''कर्क लग्न हो तथा सप्तम भाव में मंगल उच्च का हो तो जातक का सप्तम भाव तो बिगड़ता ही है परन्तु जातक का पुत्र पिता से अधिक पराक्रमी होता है तथा युद्ध में पिता को हराता है।'' उन्होंने भगवान श्रीराम, पवन पुत्र हनुमान, वीरवर अर्जुन, महाबलशाली भीम की जन्मकुण्डलियों में सप्तम भाव में मंगल उच्च का था। कर्क लग्न में मंगल पंचमेश होता है, इस कारण जातक के यहां पराक्रमी पुत्र पैदा होता है।

साधु बाबा ने बताया कि भगवान श्रीराम युद्ध भूमि में अपने पुत्र लव-कुश से हारे। पवन पुत्र हनुमान की पसीने की बूंद से एक मत्स्य के गर्भ से ''मकर ध्वज'' नामक पुत्र उत्पन्न हुआ। अहिरावण जब श्रीराम व लक्ष्मण का अपहरण करके पाताल ले गया तो अहिरावण के अगरक्षक मकरध्वज से हनुमान का युद्ध हुआ, हनुमान उसमें लज्जित हुए। अर्जुन ने नागलोक पर चढाई की तो उसके अज्ञात पुत्र ने उससे युद्ध किया एवं अर्जुन को जहरीले बाणों से युद्ध भूमि में मार डाला तत्पश्चात् नागलोक से अर्जुन की पत्नी आई, उसने अर्जुन को पहचाना एवं दिव्य नागमणि का आह्वान कर अर्जुन को जीवित किया इसी प्रकार महाबली भीमसेन का पुत्र घटोत्कच भीमसेन से भी बलवान था भीम ने घटोत्कच से मल्ल युद्ध किया। उसमें लज्जित होना पड़ा तो हिडम्बिनी ने आकर भीम को बताया कि यह आपका ही वीर्य (तेज) है।

ये सब बातें मेरे मन मस्तिष्क में स्थाई रूप से घर कर गई एक कुण्डली मेरे पास आई जातक का जन्म 22.4.1956 दोपहर 12.00 बजे का था। पुत्र पिता में जमीन जायदाद को लेकर विवाद कोर्ट-कचहरी तक चला गया दादा की अचल सम्पत्ति थी। हाईकोर्ट तक विवाद चला। पिता जो कि सम्पत्ति का मालिक था जीवित था तकनीकी कारणों से मुकदमा हार गया। लड़का (पोता) जीत गया। जीतने के बाद उसने सारी सम्पत्ति पिता को समर्पित कर दी। क्योंकि झगड़ा सिद्धांत का था। पोते ने अपने दादा दादी जी की खूब सेवा की थी जबकि पिता शादी करते ही विदेश चला गया और बूढ़े माता-पिता के प्रति पलट कर नहीं देखा। दादा-दादी ने अपने

लाड़ले पोते के नाम वसीयत कर दी पिता ने इस वसीयत को कोर्ट मे चुनौती दी, पिता सेशन से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक मुकदमा हारता चला गया। जब कुण्डली मेरे पास अध्ययन हेतु आई तो सप्तम भाव में उच्च का मंगल देखकर मुझे साधु बाबा की बातें स्मरण हो उठी जिसका उल्लेख मैंने प्रबुद्ध पाठकों हेतु यहां करना उचित समझा। अतः ध्यान रहे जिसके सप्तम भाव में ''मकर का मंगल'' हो वह अपनी संतान से न उलझे।

सजातीय कुण्डलियों का रोचक तथ्य

फलित ज्योतिषशास्त्र की सबसे बड़ी विकट समस्या है सजातीय कुण्डली एवं जुड़वा कुण्डली पर फलादेश करना मुझे अच्छी तरह से याद है जब जोधपुर महाराजाधिराज गजसिंह जी पैदा हुए उसी दिन उस समय जोधपुर मे भिश्तियों के मौहल्ले मे हनीफ का जन्म हुआ। दोनों कुण्डलियां एक समान, एक ही नक्षत्र वाली हैं पर दोनों के व्यावहारिक जीवन में जमीन–आसमान का फर्क।

मेरी सगी भाजी शोभा पत्नी श्री कैलाश शर्मा के यहां "तुला लग्न" के अंतर्गत दो जुड़वां बच्चे हुए। दोनों की परवरिश भाग्य, स्वभाव, विवाह, शिक्षा-दीक्षा अलग-अलग। यदि जन्मकुण्डलियां एक समान हैं तो भाग्य, शिक्षा विवाह, स्वभाव एवं चरित्रगत विशेषताएं अलग अलग क्यों? कई बार फलित ज्योतिष जुड़वा कुण्डलियों एवं सजातीय कुण्डलियों के फलादेश मे पंगु हो जाता है अच्छे अच्छे विद्वान एक ही समान ग्रह नक्षत्रावली वाली जन्म कुण्डलियों का फलादेश एक जैसा घटित क्यों नहीं हो रहा इसका जवाब नहीं दे पाते।

एक बार दिल्ली मे बड़ा ज्योतिष सम्मेलन हुआ। उसमें दिल्ली के मुख्यमंत्री श्री साहिब सिंह वर्मा ने अध्यक्षता की थी। मैं विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित था कहीं से सुप्रसिद्ध तांत्रिक चन्द्रास्वामी भी आ गए। वे जबरदस्ती मुझे अपने घर ले गए। वहा पर अपनी जन्मपत्री मेरे सामने रख दी और सटीक फलादेश के लिए आग्रह करने लगे। उनका जन्म "कर्क लग्न" में था। जब उनकी कुण्डली देखी तो अवाक् रह गया। उनकी और मेरी जन्मकुण्डलियां लगभग एक समान ग्रह नक्षत्र वाली थीं।

जन्म तारीख में केवल एक माह 25 दिन का अंतर इस कारण सूर्य, मंगल, एवं शुक्र तीन ग्रहो की स्थिति मे मामूली अन्तर आया। जो ग्रह उनकी कुण्डली मे कमजोर थे। वे मेरी कुण्डली मे उनसे कही बेहतर स्थिति में पावरफुल थे। उदाहरणार्थ सूर्य चन्द्रास्वामी की कुण्डली मे नीच का है जबकि मेरी कुण्डली मे मूलत्रिकोण मे 17 डिग्री (अंशों) में होने से बहुत शक्तिशाली है मंगल की स्थिति भी उनकी कुण्डली में ठीक नहीं जबकि मेरी कुण्डली में मंगल लग्न में गुरु से दृष्ट है। मंगल और गुरु का परस्पर " उच्च दृष्टि सम्बन्ध" है शुक्र भी मेरी कुण्डली मे तृतीय स्थान मे उच्च के बुध के साथ "**नीचभंग राजयोग**" किए हुए पराक्रम मे अद्वितीय वृद्धि कर रहा है। कुल मिलाकर ज्योतिषशास्त्रानुसार तीनो ग्रहों की स्थिति चन्द्रास्वामी से कई गुना मजबूत है फिर भी वास्तविक जीवन मे जमीन आसमान का अन्तर है।

जन्म 4.9.1949, समय 04.04 जोधपुर जन्म 29.10.1949, समय 23.50 बेहरोड़

[illegible]	[illegible]
सूर्य	[illegible]
चंद्र	[illegible]
मंगल	[illegible]
बुध	14.30
गुरु	[illegible]
शुक्र	24.40
शनि	16.40
राहु	[illegible]
केतु	[illegible]

लग्न	[illegible]
सूर्य	[illegible]
[illegible]	[illegible]
मंगल	[illegible]
बुध	[illegible]
[illegible]	[illegible]
शुक्र	[illegible]
[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]
केतु	[illegible]

वे सतानहीन हैं, मैं उत्तम सन्ततियों का स्वामी हू। उनकी लेखनी शून्य, मेरी लेखनी मे लगभग 250 पुस्तकें सृजित हो चुकी हैं। वश परम्परागत विद्या, ज्ञानविज्ञान, मत्र तत्र में मैं उनसे कई गुना आगे हू। पर धन सम्पत्ति के मामले मे कई गुना पीछे हू। एक समान लग्न एवं ग्रह-स्थितियां होते हुए भी मूलभूत विसंगतिया कुछ शास्त्रीय समाधान ढूढने को लालयित थी। मैंने कई ज्योतिष मित्रों से इसका शास्त्रीय समाधान जानना चाहा पर सभी लोग विषय से हटकर, इधर-उधर की बातें करते रहे। जब विद्वान व्यक्ति भी, ज्योतिष विद्या से जीविकोपार्जन करने वाले व्यवसायिक पंडित भी सही व शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते व कतराते हैं। सजातीय एवं जुडवा जन्मकुण्डली की चर्चा आते ही कहते हैं कि बस यहीं आकर ज्योतिष विद्या फेल हो जाती है, तब बड़ा दुःख होता है। इसी सकट ने मुझे फलादेश में शोध करने हेतु प्रेरित किया। गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी। पर फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है बिना फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। अतः सभी ज्योतिषियो का नैतिक कर्त्तव्य है कि यदि फलादेश मे सूक्ष्मता व सत्यता लानी है तो मिलजुल कर सतत शोध करना होगा एक एक लग्न की समस्या पर बड़े-बड़े सम्मेलन बुलाने चाहिए जिसमें फलादेश की समस्याओं पर विद्वानों के मध्य खुलकर चर्चा होनी चाहिए।

वस्तुतः सजातीय कुण्डलियों एवं जुडवा कुण्डलियों से बिल्कुल नहीं घबराना चाहिए। सजातीय कुण्डलियो से ही नवमाश का महत्त्व एवं नक्षत्रो का महत्त्व प्रत्येक ग्रह के नक्षत्र चरणों के स्वामी के महत्त्व एवं अंशात्मक फलादेश के महत्त्व का पता चलता है। श्री चन्द्रास्वामी का नवमाश "वृश्चिक" है तथा मेरी कुण्डली का नवमाश 'धनु' है। धनु नवमांश मे गुरु लग्न मे स्वगृही है। जबकि चन्द्रास्वामी की नवमाश कुण्डली में गुरु नीच का है। सजातीय कुण्डलियों मे सभी प्रकार की विसगतियो का जवाब नवमाश कुण्डली, लग्नो के अश, ग्रहों के अश नक्षत्र स्वामी की दशा, नक्षत्र चरणो के स्वामी की दशा से पता चल जाता है। फिर देश काल परिस्थितियो का चिन्तन जरूरी है सजातीय कुण्डलिया किस जन्मस्थल से सम्बन्ध रखती है तथा किस जाति वश-परम्परा, पर्यावरण से सम्बन्ध रखती हैं यह जानना बहुत जरूरी है, क्योंकि एक ही दिन व समय मे पैदा हुआ शेर का बच्चा शेर होगा, गीदड की बच्चा गीदड़ यदि दोनो की एक समान लग्न कुण्डलिया ले आओगे और यह नही बताओगे कि वह शेर गीदड़ गधा, घोड या मनुष्य के बच्चे की कुण्डली है तो हम कुछ भी बता नही पाएगे हमको कुछ बताना

भी नहीं चाहिए। जब तक जातक अपनी जाति, गोत्र, वंश परम्परा का इतिहास परिचय नहीं बताए हमें उसके चरित्र-चित्रण पर टीका-टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। इसलिए प्राचीन जन्मपत्रिकाओं मे जातक के माता-पिता दादा-दादी जाति वंश व गोत्र का नाम लिखा होता है।

अब अंतर्जातीय विवाह होने लगे हैं, वर्णसकर संतानें पैदा होने लगी हैं कई लोगों को अपना गोत्र नहीं मालूम। वंश परम्पराएं लुप्त होने लगी है। ऐसे जातक के जन्मगत, स्वभावगत व चरित्र चित्रण का फलकथन ज्योतिषियों के लिए और भी मुश्किल कार्य हो गया है।

❑❑❑

बाधक ग्रहों पर विचार

फलादेश करते समय कुण्डली के बाधक ग्रहों पर भी ध्यान देना जरूरी है। ज्योतिष में बाधक ग्रहों की बड़ी भारी भूमिका होती है। प्रायः जन्मकुण्डली में उच्च के ग्रह दिखाई देते हैं। राजयोग कारक ग्रह की दशा में, राजयोग फलीभूत नहीं हो रहा है। धनेश की दशा चल रही है पर धन नहीं मिल रहा है। इन सबका कारण हैं बाधक ग्रह। प्रत्येक जन्मकुण्डली जन्मपत्रिका का एक बाधक ग्रह शास्त्रकारो ने निश्चित किया है। जिसके बारे में बहुत कम साहित्य उपलब्ध होता है। फलस्वरूप ज्योतिष क्षेत्र मे कार्यरत विद्वान भी इस तथ्य का ज्यादा ध्यान नहीं रख पाते हैं। यह बहुत ही महत्वपूर्ण सर्वाधिक काम का व्यावसायिक विषय है। परतु अधिकतर लोग इसके बारे में अनभिज्ञ हैं। जातक परिजात में एक श्लोक मिलता है।

क्रमाच्च रागद्विशरीरभानाम्
उपान्त्य धर्मस्मरगाः तदीशाः।
खरेशमान्दिस्थित शशि नाथाः
अतीव बाधाकर खेचराः स्युः॥

अ. 2/श्लोक 48

1. यदि जन्म लग्न चर (मेष 1, कर्क 4, तुला 7 और मकर 10) हो तो ग्यारहवें भाव में स्थित ग्रह जातक की जन्म कुण्डली का बाधक ग्रह कहलाएगा। यदि ग्यारहवें स्थान में कोई ग्रह नहीं हो तो ग्यारहवें भाव का स्वामी ग्रह ही बाधक ग्रह होगा।
2. यदि जन्म लग्न स्थिर (वृष 2, सिंह 5, वृश्चिक 8, या कुंभ 11) हो तो नवम स्थान में बैठा ग्रह बाधक ग्रह का कार्य करेगा। यदि नवम स्थान मे कोई ग्रह नहीं है तो स्वयं भाग्येश (नवमेश) ही उस जातक के लिए बाधक ग्रह होगा।
3. जन्म लग्न द्विस्वभाव (मिथुन 3, कन्या 6, धनु 9 या मीन 9) का हो तो सातवे स्थान में स्थित ग्रह बाधक ग्रह कहलाएगा। यदि सातवे स्थान मे कोई ग्रह नहीं है तो ऐसे जातक के लिए सप्तमेश ही बाधक ग्रह का काम करेगा।
4. यदि कोई ग्रह खर या मान्दि का स्वामी हो तो वह बाधक होगा।

बाधक ग्रह की दशा, अतर्दशा और प्रत्यन्तर दशा जातक के कार्य में रुकावटें देने वाली होती हैं। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलता। बाधक ग्रह की दशा विशेष कष्टदायक होती है।

अनुभूत दृष्टान्त–कर्क लग्न के जातक की एक कुण्डली हमारे पास आई। जातक की कुण्डली जन्म 2.10.1954 समय 2.11 A M बजे मे हंसयोग **शशयोग** एव **मालव्य योग** तीनों पचमहापुरुष योग एक साथ थे। जातक को बीस वर्ष की शुक्र की दशा 2.6.1991 को लगी। शुक्र स्वगृही साथ में शनि उच्च का "किम्बहुना" नामक उत्तम योग की सृष्टि कर रहे थे। जातक का प्रश्न था कि यह सब होते हुए भी व धन एव व्यापार में भाग्योदय हेतु अत्यधिक सघर्ष कर रहा था। स्वय ज्योतिष का ज्ञाता है तथा अनेक ज्योतिषाचार्यों के यहां चक्कर लगाने पर भी समस्या का सही निदान नहीं हो पा रहा है।

वस्तुतः इस जन्मपत्रिका में एकादश स्थान में कोई ग्रह नहीं है अत: लाभेश शुक्र ही कर्क (चर) लग्न का बाधक ग्रह सिद्ध हुआ है। बाधक ग्रह की दशा भाग्योदय नहीं कराती। इसके विपरीत भाग्योदय में कष्ट बाधा एवं अवरोध पहुंचाती है यही सत्य है जो कि इस कुण्डली में अक्षरश: फलीभूत हो रहा है फिर इस कुंडली मे पूर्ण कालसर्पयोग भी है क्योंकि सभी ग्रह छठे भाव में स्थित राहु एवं द्वादश भाव स्थित केतु के बीच में कैद हैं। उच्च राजयोग प्रदाता सभी ग्रह बेकार हो जाते हैं। यह जन्मकुंडली इसका अन्यतम उदाहरण है।
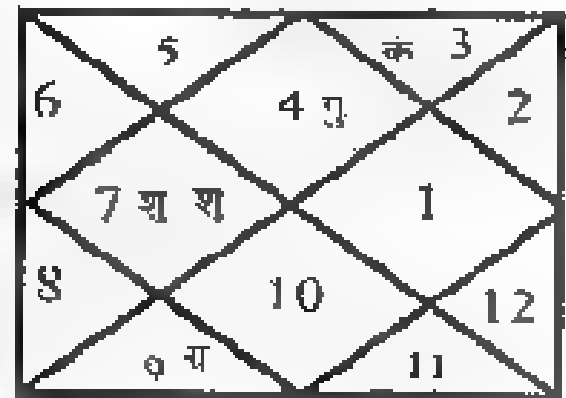
इसी प्रकार एक जातक हमारे पास और आया। जन्म 3.9.1962, समय 16.10 बजे जन्म जोधपुर। उसकी कुडली में उच्च का बुध केन्द्र मे "भद्रयोग" करके बैठा है। पूरी कुंडली में केवल एक बुध ही उच्च का था। अत: सभी ज्योतिषीयों ने लिख कर दिया कि जब बुध की दशा लगेगी जातक करोड़पति होगा। व्यापार चमकेगा। इस जातक को 3.1.2001 को शनि की महादशा में बुध का अन्तर लगा। जातक की उम्मीद थी कि बुध के अतर में अच्छा रुपया आएगा। पर उल्टा हुआ। जैसे ही बुध के अन्तर लगा जातक की बिक्री दिन-प्रतिदिन घटने लगी व्यापार में स्थाई गिरावट से जातक परेशान हो गया शनि तो बुध का मित्र था। धनेश था परंतु उसने लाभ नहीं दिया। वस्तुत: इस कुडली में सप्तमेश बुध बाधक ग्रह है तथा मंगल जो योगकारक है वह भी बाधक है। अत: अनुभूत प्रयोगों से यह स्पष्ट है कि भले ही ग्रह उच्च का हो स्वगृही हो, उच्चराजयोग बनाता है। लग्नेश हो, लग्नेश का मित्र हो दशानाथ का मित्र हो परतु यदि वह बाधक ग्रह की श्रेणी में आता है तो जातक का भाग्योदय रुक जाता है। यह निश्चित है ऐसे में बाधक ग्रहो के निदान का उपाय ही जातक को सही लाभ दे सकता है।

❑❑❑

कर्क लग्न में सूर्य की स्थिति

कर्क लग्न में सूर्य प्रथम भाव में
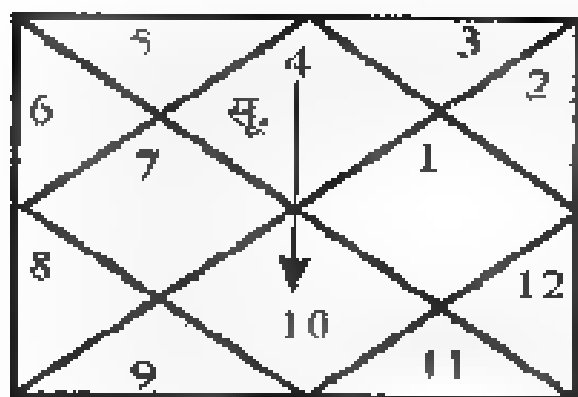
कर्क लग्न में सूर्य धनेश होगा। धनेश का स्वगृहाभिलाषी होकर लग्न में बैठना अत्यन्त शुभ है। ऐसा जातक अपने स्वयं के पराक्रम व पुरुषार्थ से अच्छा रुपया कमाता है।

निशानी—ऐसे जातक का जन्म श्रावण माह में प्रातः सूर्योदय के समय होता है। ऐसा जातक सूर्य के समान तेजस्वी व यशस्वी होता है। रंग गोरा एवं चेहरा चमकदार व रौबीला होता है।

विशेष—जातक स्वभाव में उग्र होगा एवं उसमें दूसरों पर हुकूमत चलाने की मनोवृति रहेगी। दशम भाव का कारक होकर केन्द्र में होने में पिता से सम्बन्ध ठीक रहेंगे पिता की सम्पत्ति भी मिलेगी।

सूर्य की सप्तम भाव पर दृष्टि होने के कारण कुटुम्ब में एवं वैवाहिक जीवन में छोटी-मोटी तकरार होती रहेगी। तकरार का कारण भी जातक का अहंकार होगा।

जातक अपने सभी भाइयों में होशियार होगा तथा अपने समाज में भी, अपना महत्वपूर्ण स्थान सदैव बनाए रखेगा।

दृष्टि (Vision)—यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि, सप्तम भाव को देखता है ऐसे जातक को पत्नी पक्ष, ससुराल पक्ष से असहयोग असंतोष रहता है

दशाफल सूर्य की दशा जातक को अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—यदि लग्न में सूर्य के साथ चन्द्रमा हो तो जातक का जन्म अमावस्या का होगा तथा वह जिस धन्धे में हाथ डालेगा रुपया बढ़ता ही चला जाएगा।
2. **सूर्य+मंगल**—यहां मंगल नीच का होगा पर धनेश+दशमेश की युति पूर्ण योगकारक है। जातक लड़ाकू होगा पर शत्रुओं के लिए दशहत का दूसरा नाम होगा।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य के साथ बुध 'बुधादित्य योग' बनाएगा। यहां तृतीयेश+व्ययेश बुध सूर्य के साथ होने से जातक महान पराक्रमी होगा। जनसम्पर्क तेज रहेगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु उच्च का होकर **'हंसयोग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एवं यशस्वी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति जातक को सुखी सम्पन्न जीवन देगी। जातक का जीवनसाथी अत्यन्त सुन्दर होगा।
6. **सूर्य+शनि**—सूर्य के साथ शनि सप्तमेश+अष्टमेश शनि जातक का चरित्र विवादास्पद बनाएगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु जातक को राजदण्ड दिलाएगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक को उद्दण्ड बनाएगा। सरकारी अधिकारी प्रायः धोखा देंगे।
9. यदि लग्नेश चन्द्रमा नवम में हो तो जातक पिता या परिवार के बुजुर्ग व्यक्ति का धन प्राप्त करता है।
10. यदि लग्न मे सूर्य एव द्वितीय भाव में चन्द्रमा में हो तो परस्पर **परिवर्तन योग** के कारण **'अत्यन्त धन लाभ योग'** बनेगा। ऐसे जातक को बिना कुछ विशेष मेहनत किए धन लाभ मिलता रहेगा।
11. यदि चन्द्रमा सातवें स्थान पर सूर्य के सामने हो तो **'लग्नाधिपति योग'** बनेगा। ऐसा जातक स्वपराक्रम से खूब धन कमाएगा तथा उसका जन्म श्रावण माह की पूर्णिमा को होगा।

प्रथम भाव के सूर्य का उपचार—

1. माणिक रत्न का लॉकेट **'सूर्य यंत्र'** के साथ जड़वाकर पहने।
2. यदि जातक अपने पैतृक मकान में हैण्ड पम्प लगाए तो सूर्य का दुष्प्रभाव नष्ट होगा।
3. परोपकार एवं सेवा का कार्य अधिक करें।
4. धन प्राप्ति हेतु 'शिवप्रोक्त सूर्याष्टकम्' पढ़ें।

कर्क लग्न में सूर्य द्वितीय भाव में

5 सू. 4 3 2 6 7 1 8 12 10 9 11
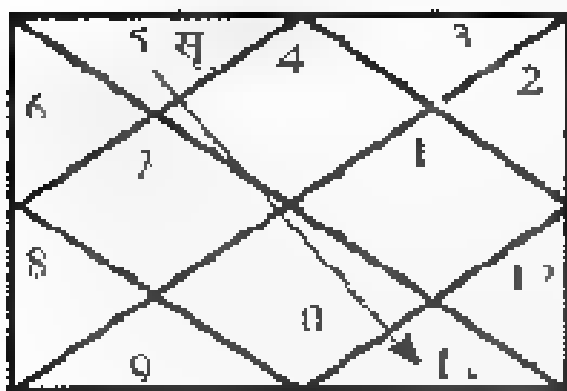
धनेश सूर्य यदि धन स्थान में ही स्वगृही होकर बैठा हो तो जातक शास्त्र का ज्ञाता, ज्ञानवान एवं विद्वान होता है।

जातक समाज में इज्जत-मान, पद-प्रतिष्ठा पाने वाला, राजदरबार में विजय पाने वाला, किसी बड़ी फैक्टरी, उद्योग व कारोबार का स्वामी होता है।

शास्त्र कहते हैं— **'धनाधिपः स्वोच्चे वाग्मी।**
शास्त्रज्ञः ज्ञानवान् नेत्रसौख्य राजयोगश्च।'

ऐसा जातक वाकपटु व कुशल वक्ता होता है।

निशानी–उसके नेत्र आकर्षक होते हैं एव वह स्वय राजनैतिक वर्चस्व वाला होता है दशम भाव कारक होकर, दसवें भाव में कोण मे होने के कारण राजकीय सम्मान तथा पिता की सम्पत्ति भी मिलती है। जातक का पिता समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों मे से एक होगा

दृष्टि (Vision)–सूर्य की अष्टम स्थान कुभ राशि पर शत्रु दृष्टि होने से जातक को भगन्दर, मस्सा, पेशाब के रोग, डायबीटिज, उच्च रक्तचाप जैसे रोग सम्भव है।

दशाफल–सूर्य की दशा शुभ फल देगी.

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को प्रातः 4 से 5 बजे मध्य होगा। जातक धनी होगा। उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा।
2. **सूर्य+मंगल**-सूर्य के साथ मंगल जातक को महाधनी बनाएगा पर जातक दम्भी होगा। जातक की वाणी अतिश्योक्ति पूर्ण होगी।
3. **सूर्य+बुध**–द्वितीयस्थ सूर्य के साथ बुध हो तो '**मातृमूल धनयोग**' एवं '**बुधादित्य योग**' बनता है। ऐसे जातक का भाइयों व भागीदारों से धन-वैभव की प्राप्ति होती है तथा जातक स्वय के बुद्धिबल द्वारा भी खूब पैसा कमाता है।
4. **सूर्य+गुरु**–द्वितीय सूर्य के साथ गुरु हो तथा चन्द्र भी हो अथवा चन्द्रमा की स्थिति मजबूत हो तो '**शत्रुमूल धनयोग**' बनता है। जातक शत्रुओं द्वारा धन वैभव व कीर्ति को प्राप्त करता है।
5. **सूर्य+शुक्र**–द्वितीयस्थ सूर्य के साथ शुक्र की युति हो तो '**मातृमूल धनयोग**' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को माता या मातृपक्ष से धन-वैभव की प्राप्ति होती है।
6. **सूर्य+शनि**–द्वितीयस्थ सूर्य के साथ शनि हो तो '**कलत्रमूल धनयोग**' बनेगा। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे ससुराल से धन मिलता है
7. द्वितीयस्थ सूर्य के साथ गुरु और अन्य बहुत से ग्रह हों तो '**अमर अनन्त धनयोग**' की सृष्टि होती है। जातक के आमदनी के जरिये अनेक होते हैं तथा वह जीवन पर्यन्त धन, ऐश्वर्य व सुखों का उपभोग करता है।
8. द्वितीयस्थ सूर्य के साथ मंगल की युति होने से '**पुत्रमूल धनयोग**' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को पुत्र के द्वारा धन-वैभव की प्राप्ति होती है।

द्वितीय भाव के सूर्य का उपचार–

1. मुफ्त का माल नही खाना चाहिए
2. मुफ्त का दान नही लें।
3. नारियल का तेल या बादाम का तेल धर्म स्थान पर चढ़ाए
4. आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करे।

5. शिवप्रोक्त सूर्याष्टकम् का नित्य पाठ करें।
6. नवरत्न जड़ित 'सूर्ययन्त्र' सुवर्ण में धारण करें

कर्क लग्न में सूर्य तृतीय भाव में
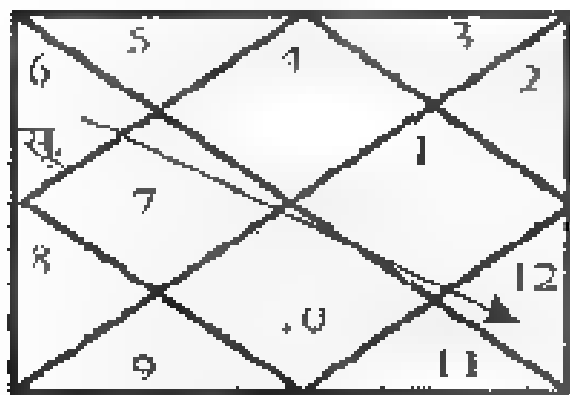
सूर्य यहां धनेश होकर तृतीय स्थान में बुध के घर में है। बुध सूर्य का मित्र एवं साथ-साथ चलने वाला अनुचर है। फलतः जातक को उत्तम कौटुम्बिक सुख देगा। जातक की आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ करेगा।

दृष्टि—सूर्य की दृष्टि सातवीं मित्र दृष्टि मीन राशि पर पितृ स्थान पर होने के कारण जातक का स्वयं के पिता के साथ अच्छा सम्बन्ध रहेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति भी नहीं मिलेगी। सरकारी नौकरी भी अच्छी नहीं मिलेगी, क्योंकि यह सूर्य नीचाभिलाषी है।

निशानी—जातक के भाई होंगे पर भाई के साथ सम्बन्ध मधुर नहीं होंगे तथा उसका जन्म रात्रि 1 से 4 बजे के मध्य होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. सूर्य के साथ बुध हो तो '**बुधादित्य योग**' हो जाएगा। जातक धनवान एवं कीर्तिवान होगा 'भावाधिपे बलयुते भ्रातृदीर्घायु:' ऐसे जातक के भाई जरूर होते हैं एवं भाई दीर्घ आयु वाले होंगे।

दशा—जातक को सूर्य की दशा अच्छी रहेगी।

कर्क लग्न में सूर्य चतुर्थ भाव में
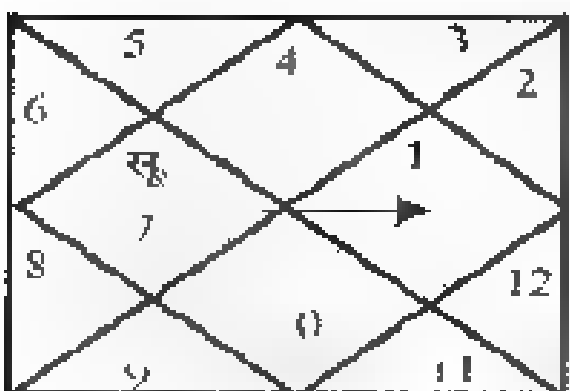
धनेश सूर्य केन्द्र में होने से जातक को धन व कुटुम्ब का सुख उत्तम रहेगा। जातक राजदरबार एवं समुद्र यात्रा से लाभ कमाता है। जातक उत्तम जायदाद, धन सम्पत्ति का स्वामी होता है।

विशेष—तुला का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। अतः जातक को सरकारी नौकरी के अवसर कम मिलेंगे। तुला का सूर्य यातायात, कोरियर, इत्यादि के कामों में अच्छा लाभ दिलाता है।

पितृकारक तरीके पिता के स्थान में आठवें होने के कारण जातक के पिता की मृत्यु छोटी अवस्था में हो जाएगी। यदि पिता जीवित है तो ऐसी परिस्थितियां बनेगी कि जातक पिता के साथ नहीं रह पाएगा

सूर्य का असर हृदय पर होने के कारण जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है। सूर्य पापपीड़ित हो तो उसकी दशा अशुभ जाएगी।

दृष्टि—यहां सूर्य सातवीं उच्च दृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि, दशमभाव को देखता है। यह जातक को पिता राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, धन व सम्मान की प्राप्ति होगी।

दशाफल—सूर्य की दशा अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्णा अमावस्या, मध्यरात्रि का होता है। लग्नेश चन्द्रमा केन्द्र में **यामिनीनाथ योग** बनाएगा। जातक को सभी प्रकार के सुख व ऐश्वर्य की प्राप्ति सहज में होगी।
2. **सूर्य+मंगल**—यहां मंगल को सूर्य के साथ केन्द्रवर्ती होना अत्यन्त शुभ है। जातक अपने कुल का दीपक होगा। रौबीला होगा एवं परिवार का नाम रोशन करेगा।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य बुध का यहां मिलन '**बुधादित्य योग**' कराएगा। केन्द्रवर्ती इस युति के कारण जातक महान् पराक्रमी होगा। दो से अधिक वाहनों का स्वामी होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु जातक को महान् भाग्यशाली बनाएगा। जातक अध्यात्म क्षेत्र का पथिक होगा। समाज मे उसकी बड़ी प्रतिष्ठा होगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ यदि शुक्र हो तो भी '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। सूर्य का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा। जातक व्यापार द्वारा धन कमाएगा। एवं विपरीत लिंगियों से उसे बहुत लाभ होगा।
6. **सूर्य+शनि**—सूर्य के साथ यदि शनि हो तो '**नीचभंग राजयोग**' बन जाएगा सूर्य का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ माता को अल्पायु देगा पिता से भी जातक के विचार कम मिलेंगे
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु राज काज में बाधक है। जातक को सरकारी अधिकारियों से धोखा मिलेगा।

चतुर्थ भाव के सूर्य का उपचार—

1. अंधों को भोजन दें।
2. शरीर पर सोना पहनें।
3. सूर्य की मूर्ति या 'सुवर्ण फूल' गले में धारण करें
4. अभिमंत्रित माणिक्य 'सूर्य यंत्र' के साथ गले में धारण करें।
5. माणिक एवं जिरकान 'बीसा यंत्र' में धारण करें।

कर्क लग्न में सूर्य पंचम भाव में
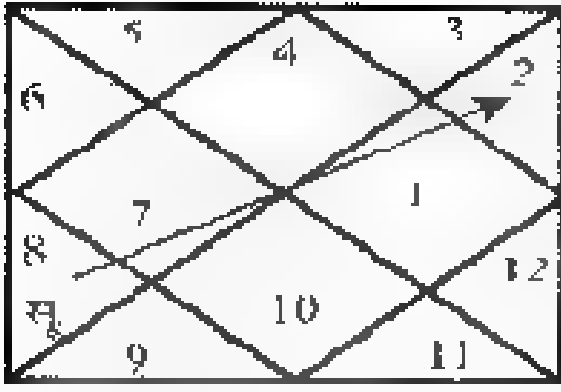
धनेश सूर्य वृश्चिक राशि मे होने में मित्र क्षेत्री है। अपने स्थान में चौथे भाव में एव त्रिकाण स्थान मे होने स जातक को धनसुख एव कुटुम्ब सुख बहुत उत्तम मिलेगा

जातक भूमि स, राजदरबार म धन लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

निशानी–जातक उच्च शिक्षा वाला, ज्योतिष-तन्त्र विद्या का जानकार होता है। प्रथम सन्तति के उत्पन्न होने के बाद जातक का भाग्योदय प्रारम्भ हो जाता है।

विशेष–पितृकारक तरीके पितृस्थान में नवम (कोण) मे होने से पिता से सम्बन्ध अच्छे रहेगे। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

दशम भाव का कारक होने के कारण नौकरी-धंधे में लाभ मिलेगा परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा अल्प प्रयत्न से भी अधिक लाभ का योग है।

दृष्टि (Vision)–सूर्य की दृष्टि ग्यारहवें भाव पर होने से मित्रो से अकल्पनीय लाभ होगा। सूर्य यहां सातवीं शत्रु दृष्टि से शुक्र की वृष राशि को देख रहा है।

ऐसा जातक स्पष्टवक्ता होता है तथा स्पष्ट बात कहने में लाभ हानि की चिन्ता नहीं करता।

दशाफल–सूर्य की दशा उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म मार्गशीर्ष माह, कृष्ण पक्ष की अमावस्या की रात्रि 10-11 बजे के लगभग होगा। यहा चन्द्रमा नीच का होगा। जातक को विष भोजन का भय रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ यदि मगल हो तो **'भावाधिपे बलयुते पुत्र सिद्धिः'** जातक पुत्रों के द्वारा अपने शिष्यों व अनुयायियों के द्वारा बलवान एवं कीर्तिवान होगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य-सुखों को भोगता है। यदि मगल दसवें स्थान में हो तो उपरोक्त शुभ फल के अलावा जातक को सरकार में उच्च पद मिलेगा
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य के साथ बुध **'बुधादित्य योग'** बनाएगा। यह वस्तुत धनेश एव पराक्रमेश की युति कहलायेगी। ऐसा जातक अपने बाहुबल से काफी धन कमायेगा उसे पुत्र व कन्या सन्तति दोनो की प्राप्ति होगी।
4. **सूर्य+गुरु** सूर्य के साथ गुरु होने से जातक भाग्यशाली होगा उसे तीन से पाच के मध्य पुत्रों की प्राप्ति सम्भव है।

5. **सूर्य+शुक्र**–यहां सूर्य के साथ शुक्र शुभ है। सूर्य धनेश है, सुखेश+लाभेश शुक्र के साथ उसकी युति जातक को कला-संगीत व अभिनय प्रिय अभिरुचि देगी जातक पुत्र व कन्या दोनों सन्तति के सुख से परिपूर्ण होगा।
6. **सूर्य+शनि**–शनि यहां शत्रुक्षेत्री होगा शनि सप्तमेश+अष्टमेश होने से जातक के विद्याध्ययन में बाधा आयेगी संतान बीमार रहेगी। जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु पुत्र संतति में बाधक है। पितृदोष के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा पग-पग बाधाएं आयेंगी।
8. **सूर्य+केतु**–जातक की विद्या एक बाधा के बाद आगे बढ़ेगी। पुत्र संतति के पूर्व एकाध गर्भपात संभव है।

पंचम भाव के सूर्य का उपचार–

1. अपने वायदे-वचन के प्रति पाबन्द रहें।
2. अपनी खानदानी परम्परा को नष्ट न करें।
3. लाल मुंह के बंदरों को गुड़-चना फल खिलाएं।
4. शत्रुनाश हेतु बजरंग बाण का पाठ करें।
5. नेत्र पीड़ा की निवृत्ति हेतु **'नेत्रोपनिषद्'** का पाठ करें।
6. तेजस्वी पुत्र की प्राप्ति हेतु शिवप्रोक्त 'सूर्याष्टकम्' का पाठ करें।

कर्क लग्न में सूर्य षष्ठम स्थान में
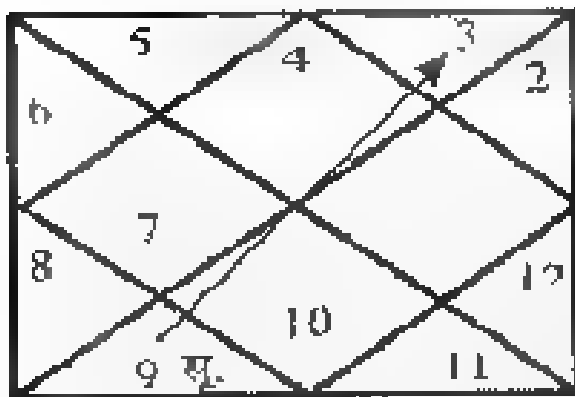
कर्क लग्न में धनेश सूर्य छठे स्थान में जाने से '**धनहीन योग**' बनता है। जातक कितना भी रुपया कमाए पर धन में बरकत नहीं होती।

निशानी–जन्म के समय पिता घर से बाहर होता है। जन्म प्रायः सायं छः बजे के बाद एवं सायं आठ बजे के पहले होता है

विशेष–सूर्य यहां धनु राशि में मित्रक्षेत्री है। पाप ग्रह पाप स्थान (छठे भाव) में होने से छठे स्थान का शुभ फल जरूर देगा शत्रु पर विजय देगा। शरीर को निरोगी रखेगा

पितृकारक सूर्य नवमें भाव से दसवें स्थान पर होने के कारण जातक का पिता धनवान होगा। नौकरी करने वाले लोगों को यह सूर्य अच्छा फल देगा।

लग्नेश निर्बल हो तो कोर्ट कचहरी में जातक के पैसे फालतू बरबाद होंगे परन्तु अन्तिम रूप से फैसला जातक के हक में होगा।

दृष्टि (Vision)–यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में द्वादश भाव

को देख रहा है। ऐसे जातक को धन संग्रह के मामले में काफी दिक्कतो का सामना करना पड़ेगा। रुपया आएगा और धन खर्च होता चला जाएगा।

दशाफल—सूर्य की दशा धन खर्च कराएगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को होगा। जन्म का समय रात्रि 8 बजे के लगभग होगा। चन्द्रमा के कारण **'लग्नभंग योग'** बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक निराशावादी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—मंगल सूर्य के साथ होने से **'राजभंग योग'** एवं **'पुत्रहीन योग'** भी बनेगा। फलत. सरकारी नौकरी के योग कमजोर रहेंगे। संतान संबंधी चिन्ता के साथ आर्थिक परेशानी बनी रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य के साथ बुध **'बुधादित्य योग'** बनाएगा। खर्चेश बुध छठे जाने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु होने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनी होगा। जातक भाग्यशाली होगा पर उसके जीवन में संघर्ष बहुत रहेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र होने से **सुखहीन योग एवं लाभभंग योग** भी बनेगा। यह युति वाहन दुर्घटना का संकेत देती है। यह भी संभव है कि जातक को किसी महिला के द्वारा प्रताड़ित होना पड़े।
6. **सूर्य+शनि**—शनि छठे जाने से **'विवाहभंग योग'** बनता है, साथ ही **'विपरीत राजयोग'** भी बनता है फलत: जातक धनवान होगा, परन्तु पिता व पत्नी का सुख कमजोर रहेगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु हड्डी के जोड़ो में दर्द उत्पन्न करेगा जातक शत्रुओं से भी परेशान रहेगा
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक को शत्रुओ के षड्यन्त्र में उलझायगा
9. सूर्य यदि राहु या केतु के साथ हो तो जातक के पुत्र को सर्पदंश का भय रहता है **'राहुकेतु युते सर्पशापात् सुतक्षय:'**

षष्टम भाव के सूर्य का उपचार—

1. बन्दर को चने देने चाहिए
2. भूरी चींटी को सतनाजा सप्तधान डालना चाहिए।
3. माता के पाव धोकर आशीर्वाद लें।
4. सूर्य को लाल पुष्प या कुंकुम डालकर अर्घ्य दें
5. शत्रु नाश हेतु आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
6. नेत्र पीडा की निवृत्ति हेतु नेत्रोपनिषद का पाठ करें
7. धन की प्राप्ति हेतु शिवप्रोक्त **'सूर्याष्टकम्'** का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में सूर्य सप्तम भाव में
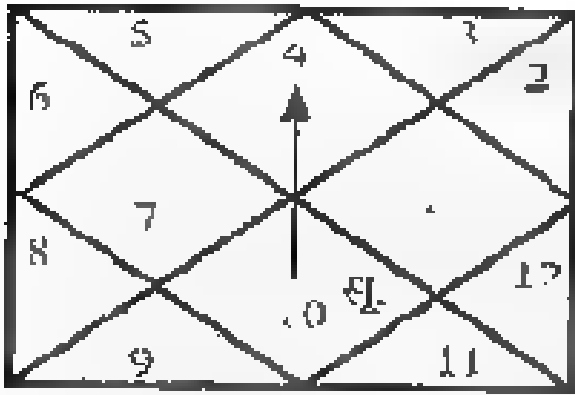
धनेश सूर्य यहा सप्तम भाव में शत्रुक्षेत्री है तथा लग्न का देख रहा है यह सूर्य जातक को आर्थिक रूप से सुदृढ करेगा तथा धन एव कौटुम्बिक सुख में वृद्धि करेगा

पितृकारक सूर्य पिता के स्थान से एकादश होने के कारण पिता को सम्पत्ति देगा पिता से लाभ दिलाएगा। भागीदार एवं सरकारी क्षेत्र में भी जातक की स्थिति लाभप्रद रहेगी।

निशानी जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा एवं उसका जन्म सायंकाल में होगा।

विशेष सूर्य की यह स्थिति दाम्पत्य जीवन के लिए ठीक नहीं। जीवन साथी से टकराव तकरार होता रहेगा। जातक के धंधे में परेशानी आती रहेगी

दृष्टि—यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि में चन्द्रमा की कर्क राशि में प्रथम भाव को देख रहा है। ऐसे जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है। जातक अपने प्रभाव से धन व प्रतिष्ठा को बराबर प्राप्त करता रहेगा।

दशाफल—सूर्य की दशा अच्छी जाएगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चन्द्र**—सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होगा। यहां लग्नेश चन्द्रमा लग्न को देखेगा फलतः जातक को पुरुषार्थ व परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी जातक धनी होगा.
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से **'रुचक योग'** की सृष्टि होगी। ऐसे मे सूर्य का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा मंगल जातक को राजातुल्य प्रभावशाली एव ऐश्वर्यवान बनाएगा।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य के साथ बुध यहा **'बुधादित्य योग'** बनाएगा। यह वस्तुतः धनेश सूर्य के साथ पराक्रमेश की युति होगी। जातक महान पराक्रमी होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ नीच का गुरु जातक को भाग्यशाली बनाता है। जातक को उत्तम गृहस्थ सुख प्राप्त होगा। जातक पराक्रमी होगा
5. **सूर्य+शुक्र**—धनेश सूर्य के साथ सुखेश व लाभेश शुक्र केन्द्रवर्ती होने से जातक अपने कुल कुटम्ब का नाम रोशन करेगा एव सुखी जीवन जीयेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी एव ससुराल व्यापार वर्गी तथा उत्तम होगा।
6. **सूर्य+शनि**—सूर्य के साथ शनि होने से **'शशयोग'** की सृष्टि होगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एव पराक्रमी होगा परन्तु सही अर्थों मे भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक का जीवनसाथी जातक के हाथों में जायेगा।
8. **सूर्य+केतु** सूर्य के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा। जातक के जीवन मे गुप्त शत्रु बहुत होंगे

सप्तम भाव के सूर्य का उपचार–

1. रात को रोटी आदि पकाने के बाद आग गैस, चूल्हा, स्टोव पर दूध बहाएं या छींटें दें
2. रविवार के दिन जमीन मे ताबें के टुकड़े दबाने चाहिए।
3. भोजन करने के पूर्व भोजन के कुछ अंश आहुति के रूप में अग्नि में डालें तो सूर्य का दोष कम होगा।
4. माणिक सहित शुद्ध स्वर्ण-पत्र पर मण्डित सूर्य की मूर्ति गले में धारण करें।
5. उत्तम गृहस्थ सुख की प्राप्ति हेतु **'सूर्यार्या स्तोत्र'** का नित्य पाठ करे।

कर्क लग्न में सूर्य अष्टम भाव में
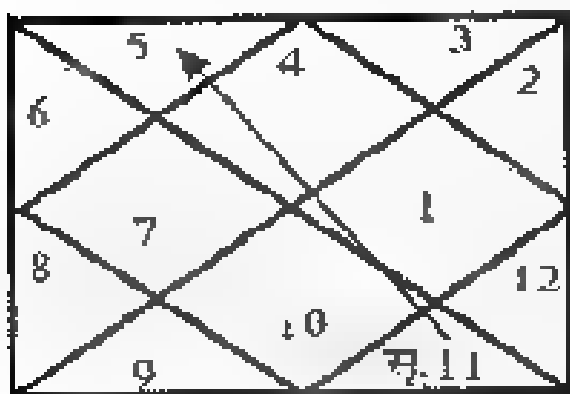
धनेश सूर्य कुम्भ राशि में शत्रुक्षेत्री होकर आठवें स्थान में जाने से जातक को धन व कुटुम्ब सम्बन्धी तकलीफों का सामना करना पड़ेगा।

धनहीन योग–धनेश सूर्य आठवें जाने से यह योग बना। जातक कितना भी रुपया कमाए पर उसमें बरकत नहीं होगी। बैंक बैलंस (Bank Balance) सदैव कमजोर रहेगा।

विशेष–पितृकारक सूर्य पितृस्थान से बारहवे होने के कारण पिता का सुख कमजोर होगा। पिता छोटी आयु में गुजर जाएगा। अथवा यदि जीवित हो तो जातक के साथ सम्बन्ध अच्छे नहीं होंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी, मिल भी जाए तो उसका कोई उपयोग न होगा।

दसवें भाव का कारक होकर सूर्य आठवें जाने से जातक को परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलेगा।

रोग–सूर्य निर्बल होने में नेत्र शक्ति कमजोर होगी। दाईं आंख नकली हो सकती है। दांत कमजोर एव मोटापे का रोग सम्भव है यदि मंगल भी निर्बल हो द्वितीय स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो 'जातक पारिजात' के अनुसार ऐसे जातक की मृत्यु पित्त विकार से होती है

दृष्टि–यहा सूर्य सातवीं दृष्टि से स्वराशि सिंह को द्वितीय भाव में देख रहा है जातक को पेट मे रोग हो सकता है तथा कौटुम्बिक सुख में कुछ न कुछ कमी रहेगी.

दशाफल–सूर्य की दशा खराब जाएगी अचानक रोग मे वृद्धि हो सकती है

सूर्य का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को साय 5 बजे के लगभग होगा। **लग्नभंग योग** के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

2. **सूर्य+मंगल**—मंगल की युति से कुण्डली **'मांगलिक'** कहलायेगी साथ ही **'पुत्रहीन योग'** **'राजभंग योग'** की सृष्टि होगी। ऐसे जातक का जीवन दिक्कतों से भरा होता है।
3. **सूर्य+बुध**—सूर्य बुध युति से यहां **'बुधादित्य योग'** बनेगा। **'पराक्रमभंग योग'** भी बनेगा परन्तु व्ययेश बुध छठे होने से विपरीत राजयोग बनेगा ऐसा जातक धनी होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु होने से जहां **'भाग्यभंग योग'** बनता है। वहीं षष्टेश के अष्टम में जाने से विपरीत राजयोग बनता है। ऐसा जातक धनी होगा। भाग्योदय बहुत कठिन परिश्रम से होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—शुक्र के कारण **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनेगा। जातक को स्त्री के द्वारा धोखा मिलेगा। वाहन दुर्घटना भी संभव है।
6. **सूर्य+शनि**—अष्टमेश अष्टम में होने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनी होगा जातक का गृहस्थ जीवन थोड़ा कष्टमय हो सकता है। यदि विवाह विलम्ब से हो तो योग का बुरा फल नष्ट हो जाता है।
7. **सूर्य+राहु**—जातक बीमार रहेगा। दाएं पांव में चोट पहुंच सकती है। दुर्घटना का भय रहेगा
8. **सूर्य+केतु**—जातक किसी षड्यंत्र का शिकार होगा। गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए।

अष्टम भाव के सूर्य का उपचार—

1. दक्षिण दिशा में दरवाजे वाले मकान में नहीं रहना चाहिए।
2. मकान का प्रवेश द्वार पर वास्तुदोष नाशक गणपति लगाएं।
3. ससुराल के घर में न रहें।
4. बड़े भाई और गाय की सेवा करने से सूर्य का अशुभत्व नष्ट होगा।
5. सूर्य का स्वर्णफूल गले में धारण करें.
6. चोरी ठगी से दूर रहें अन्यथा नुकसान उठाना पड़ेगा।
7. शत्रुनाश हेतु आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में सूर्य नवम भाव में
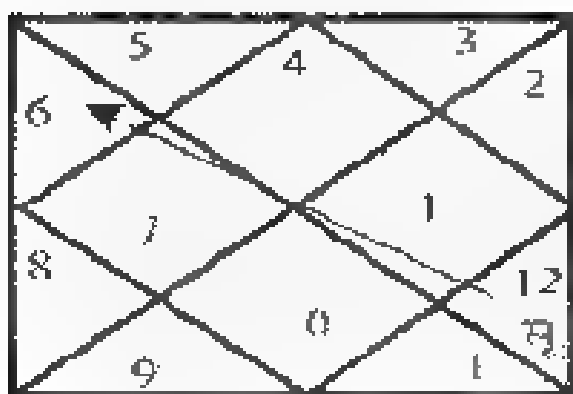
धनेश सूर्य मीन में यहां मित्रक्षेत्री है। यह सूर्य उच्चाभिलाषी होकर नवम भाव में स्थित होने से उत्तम लाभ देगा। जातक अपने पिता से अधिक नाम व पैसा कमाएगा।

पितृकारक तरीके पितृस्थान में सूर्य स्थित होने के कारण, जातक को पिता का सुख पूरा नहीं मिल पाएगा। पिता अल्पायु होगा अथवा किन्हीं कारणों से जातक पिता से दूर रहेगा,

दशम भाव का कारक होकर दशम भाव में बारहवें स्थान पर अव्यवस्थित होने के कारण धन्धा तो ठीक चलेगा पर सरकार द्वारा वांछित लाभ नहीं मिल पाएगा।

तीसरे भाव पर मित्र दृष्टि होने से जातक साहसी होगा भाइयों के साथ अच्छे सम्बन्ध रहेंगे। मित्र एवं भाई विपत्ति में, मददगार साबित होंगे। व्यापार में भागीदारी निभ जाएगी।

दृष्टि–यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से बुध को कन्या में तृतीय भाव को देख रहा है अत: जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है। ऐसे जातक का जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा मित्रों से लाभ होता रहेगा।

दशाफल–सूर्य की दशा उत्तरोत्तर उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य के साथ चन्द्रमा होने से जातक का जन्म चैत्र माह में कृष्ण पक्ष अमावस्या के दिन को तीन बजे के आस-पास होता है। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। उसे पैतृक व्यवसाय में लाभ रहेगा
2. **सूर्य+मंगल**–ऐसा जातक धनी होगा। व्यापार व ठेकेदारी से उसे लाभ होगा। जातक का सही भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद होगा।
3. **सूर्य+बुध**–इस युति से '**बुधादित्य योग**' बनेगा। जातक महान पराक्रमी होगा एवं मित्रों की मदद से आगे बढ़ेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–गुरु यहां त्रिकोण में स्वगृही होगा। धनेश सूर्य के साथ इसकी युति राजयोग कारक है। ऐसा व्यक्ति सही अर्थों में धनी होगा। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–शुक्र यहां उच्च का होगा। धनेश सूर्य की लाभेश+सुखेश शुक्र के साथ यह युति भाग्यवर्धक साबित होगी। जातक को माता-पिता का धन मिलेगा।
6. **सूर्य+शनि**–धनेश सूर्य की सप्तमेश+अष्टमेश शनि के साथ यह युति ससुराल से धन दिलायेगी। साथ ही 32 वर्ष की आयु तक जातक का जीवन संघर्षमय भी बनायेगी।
7. **सूर्य+राहु**–भाग्योदय में बाधक है। जातक को पैतृक सम्पत्ति में फायदा नहीं है।
8. **सूर्य+केतु**–भाग्य स्थान में सूर्य के साथ केतु संघर्षकारी स्थिति को बताता है।

नवम भाव के सूर्य का उपचार–

1. भोजनशाला में पीतल के बर्तनों का प्रयोग करें।
2. सुवर्ण पत्र पर सूर्य देव की मूर्ति बनाकर गले में धारण करें।
3. सूर्य भगवान को नित्य अर्घ्य दें
4. आदित्य हृदय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
5. पिता की सेवा करें।
6. शीघ्र भाग्योदय हेतु 'सूर्य अथर्वशीर्ष' उपनिषद् पढ़ें।

कर्क लग्न में सूर्य दशम भाव में
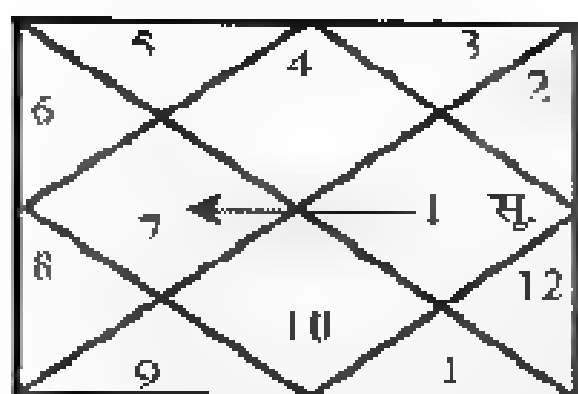
धनेश सूर्य यहां उच्च का होकर केन्द्रस्थ है। जातक खूब पैसे वाला होगा। उसे कुटुम्ब का सुख भी उत्तम मिलेगा

पितृकारक होकर सूर्य उच्च का होने से जातक का पिता धनवान एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पिता की स्थाई सम्पत्ति मिलेगी एवं पिता के साथ उसके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। पिता के बड़े नाम का जातक को लाभ मिलेगा।

जातक को नौकरी, धंधे या व्यापार में सरकारी मदद मिलेगी। जातक यशस्वी होगा क्योंकि दशम स्थान का कारक होकर सूर्य उच्च का है।

दृष्टिफल–सूर्य द्वारा यहां सातवीं दृष्टि से तुला राशि के चौथे स्थान देखने के कारण माता का सुख पूर्ण, वाहन का सुख श्रेष्ठ, नौकर का सुख श्रेष्ठ रहेगा शिक्षा अच्छी मिलेगी। यह सूर्य उच्च पद दिलाने मे सहायक है।

दशा–सूर्य की दशा जातक का परम भाग्योदय कराएगी। 'फलदीपिका' अ. ख/पृ. 375 के अनुसार ऐसी दशा में जातक धनी होगा परन्तु गुरु की दशा मारक होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार सूर्य के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'भास्कर योग'** बनेगा। यहां चन्द्रमा उच्चाभिलाषी होगा सूर्य की इससे बढ़िया कोई स्थिति हो ही नहो सकती। यदि साथ में मगल भी हो तो जातक करोड़पति एवं सर्वप्रभुत्त्व सम्पन्न होगा। यदि गुरु भी यहा साथ बैठकर चतुष्ग्रह युति बनाए तो कर्क लग्न के लिए यह 'परम योगप्रद' स्थिति है। ऐसे जातक का जन्म वैशाख माह कृष्ण पक्ष अमावस्या को दोपहर 12 बजे के आस-पास होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–वहा पर यदि मगल हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा अर्थात् सूर्य उच्च का एवं मंगल स्वगृही एक साथ हो तो इससे अधिक और क्या हो? यह उत्तम राजयोग है। ऐसा जातक राजातुल्य प्रभुत्त्व एवं ऐश्वर्य को भोगेगा।
3. **सूर्य+बुध**–सूर्य बुध की युति से **'बुधादित्य योग'** बनता है। उच्च के सूर्य के साथ केन्द्र में यह युति ज्यादा खिलेगी जातक धनवान व महान पराक्रमी होगा एव रविकृत राजयोग के कारण सरकारी कार्यों मे उसे लाभ मिलेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। जातक आस्तिक बुद्धि वाला एव धर्मध्वज होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला एव उच्च वाहन का स्वामी बनाएगा
6. **सूर्य+शनि**–सूर्य शनि की यह युति यहा पर **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि करेगी। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रम यशस्वी एवं ऐश्वर्यशाली होगा

7. **सूर्य+राहु**–यह युति जातक को राजकाज में बाधा पंहुचायेगी। जातक को पिता का सुख कम मिलेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु सरकारी कार्यों में बाधक है।

दशम भाव के सूर्य का उपचार–

1. ऐसा जातक नीले, काले कपड़े न पहने न ही इस रंग के रुमाल भी पास में रखे।
2. पैतृक मकान में हैण्डपम्प लगवाएं।
3. भूरी भैंस या भूरा बछड़ा पालें।
4. नंगा सिर न रहें। शिखा रखें या लाल, सफेद, पीले रंग की टोपी या साफा बाधें।
5. नेवला पालें।
6. राजनीति मे ऊंचे पद की प्राप्ति हेतु 'सूर्ययाग' करें।
7. नवरत्न जड़ित 'सूर्ययंत्र' गले में धारण करें।

कर्क लग्न में सूर्य एकादश भाव में

5 4 3 2 सू. 6 7 8 12 10 9 11
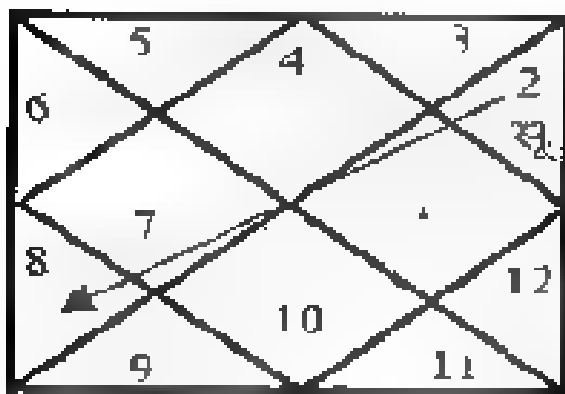
धनेश सूर्य लाभस्थान में अपने घर से दशम होने के कारण पूर्णतः लाभदायक है। जातक को खूब आर्थिक लाभ मिलेगा। जातक को मित्रों, भाई-बहनों द्वारा अकल्पनीय लाभ मिलता रहेगा।

पितृकारक तरीके पितृस्थान से तीसरे पर होने के कारण पिता से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

दशम भाव का कारक होकर दशम भाव से दूसरे स्थान में होने के कारण धंधा खूब चमकेगा। सट्टा, लॉटरी, शेयर में भी धन मिलेगा। मेहनत का पूरा-पूरा फल मिलेगा।

एक पुत्रयोग–पंचम भाव पर पूर्ण दृष्टि होने के कारण जातक का एक तेजस्वी पुत्र होगा।

दृष्टिफल–यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में पंचम भाव को देखता है। ऐसे जातक को विद्या एवं सन्तान पक्ष से लाभ होगा।

दशा–सूर्य की दशा खूब अच्छा फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री है। यदि सूर्य के साथ चन्द्रमा हो अथवा चन्द्र लग्न में हो तो **'भोज-संहिता'** के अनुसार **'अमरकीर्ति योग'** बनता है जातक दानी, प्रसिद्ध एवं खूब यशस्वी होगा ऐसे जातक को मरणोपरान्त भी उसके कुटुम्बीजन एवं समाज के लोग

व प्रशंसक याद करते रहते हैं ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ माह में कृष्ण पक्ष अमावस्या को दिन के 10 बजे के लगभग होगा।

2. **सूर्य+मंगल**—यहा सूर्य+मगल की युति जातक को परिश्रम का लाभ दिलायेगी। जातक के तीन से चार पुत्र होगे। जातक अपने शत्रुओ का नाश करने मे सक्षम होगा।
3. **सूर्य+बुध**—इस युति से '**बुधादित्य योग**' बनता है। जातक पराक्रमी होगा एवं उद्योगपति भी होगा। जातक की व्यापार में प्रवृत्ति ज्यादा रहेगी।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु की युति धनेश, भाग्येश की युति कहलायेगी। जातक भाग्यशूर होगा। उसके पुत्र सतति अधिक होगी। जातक उच्च शिक्षा आर्जित करेगा एव सभ्य होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ स्वगृही शुक्र जातक को उत्तम वाहन, सभी प्रकार के सुख देगा। जातक सम्पन्न होगा। पुत्र एवं कन्या दोनो प्रकार की सन्तति होगी।
6. **सूर्य+शनि**—ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। पत्नी कमाऊ होगी या ससुराल से धन मिलेगा। पिता की मृत्यु के बाद जातक का स्वतंत्र भाग्योदय विशेष रूप से होता है।
7. **सूर्य+राहु**—ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय में आर्थिक परेशानियों का सामना करना पडता है। जातक के अध्ययन में रुकावट भी आ सकती है
8. **सूर्य+केतु**—जातक को सतति सबधी चिन्ता रहेगी। एकाध गर्भपात सभव है।

एकादश भाव के सूर्य का उपचार—

1. शराब, मांस-मछली खाना छोड़ दे।
2. सुवर्ण-पत्र पर सूर्य की मूर्ति बनवाकर गले मे धारण करें।
3. मूली का दान रात्रि मे सिरहाने रखकर सुबह मंदिर मे भेंट करें
4. 40-43 दिन रेत के बिस्तर पर सोना
5. झूठा खाना व झूठ बोलना दोनों से परहेज रखे।
6. जीवित बकरा कसाई से छुडाएं। जीवनदान कर।

कर्क लग्न में सूर्य द्वादश भाव में
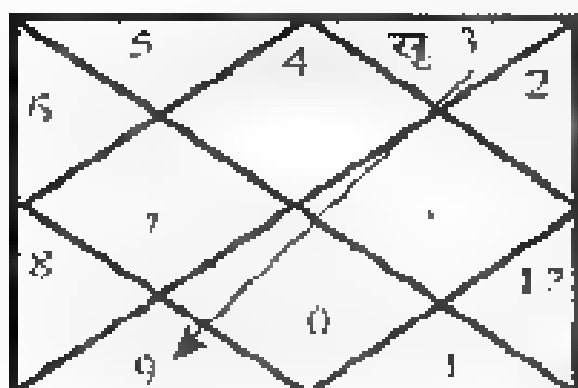
धनेश सूर्य बारहवें मिथुन राशि में होने के कारण जातक की आर्थिक स्थिति विषम होगी। जातक परिश्रमपूर्वक कमाया हुआ सारा धन खर्च कर देता है परन्तु यह खर्च मांगलिक व शुभ होता है।

पितृकारक तरीके सूर्य बारहवे होने से पिता का सुख कमजोर रहेगा, ऐसी गृह स्थिति वाले जातक को स्वतन्त्र धंधा

या व्यापार करना चाहिए। लग्नेश की स्थिति यदि अच्छी न हो तो धन का संग्रह दूसरो के नाम से करना चाहिए।

विशेष–

1. सूर्य यहां नेत्रपीड़ा देता है।
2. धनेश सूर्य बारहवें होने से '**धनहीन योग**' की सृष्टि होती है. जातक के पास रुपया आएगा एवं खर्च होता चला जाएगा।

दृष्टिफल–यहां सूर्य सातवीं मित्र दृष्टि में गुरु की धनु राशि, षष्टम भाव को देख रहा है। ऐसा जातक फिजूल खर्च होता है तथा शत्रु का परास्त करने में सफलता प्राप्त करता है।

दशाफल–सूर्य की दशा खर्च और चिन्ता बढ़ाएगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चन्द्र**–ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ माह कृष्ण पक्ष प्रातः 8 बजे के लगभग होता है। **लग्नभंग योग** के कारण जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नही मिलता।
2. **सूर्य+मंगल**–यह कुण्डली मांगलिक कहलाएगी। जिसके कारण संतविहीन योग व राजभग **योग** भी बनता है। खासकर पुत्र संतति की चिंता रहेगी। सरकारी परेशानी एव पुरुषार्थ का लाभ नहीं होगा।
3. **सूर्य+बुध**–यदि यहा बुध हो तो '**बुधादित्य योग**' बनेगा व्ययेश व्यय स्थान में स्वगृही होने से विपरीत राजयाग बना। जातक निसंदेह धनवान होगा। यात्राएं अधिक करेगा। यात्राओं से लाभ रहेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–भाग्येश बारहवें जाने से '**भाग्यभंग योग** बना परन्तु षष्टेश का व्यय भाव से जाने से विपरीत राजयोग भी बना। ऐसा जातक निसदेह धनवान होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से '**लाभभंग योग**' '**सुखहीन योग**' बनता है। पर द्वादश शुक्र राजयोग कारक माना गया है। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्राए अधिक होंगी। नेत्रपीडा अवश्य होगी। आंखों का ऑपरेशन कराना पड़ेगा।
6. **सूर्य+शनि**–सप्तमेश बारहवें जाने से विलम्ब विवाह गृहस्थ सुख में बाधा की अनुभूति होगी। परन्तु अष्टमेश के द्वादश में जाने से **विपरीत राजयोग** भी बनेगा। जातक धनवान होगा पर शत्रु परेशान करेंगे।
7. **सूर्य+राहु**–राहु के साथ सूर्य यात्रा में दुर्घटना कराएगा। जातक को राजभय रहगा बुरे सपने आयेंगे। आर्थिक **सघर्ष** जीवन पर्यन्त रहगा।
8. **सूर्य+केतु**–जातक आध्यात्मिक विचारा वाला होगा। जो सपने आयेंगे, सच हो जायंग अचानक बोलेगा तो सच हो जायेगा। दुर्घटना होगी पर बचाव भी होगा। अन्तिम समय घर के बाहर रहेगा।

द्वादश भाव के सूर्य का उपचार–

1. मशीनरी के काम न करें।
2. मकान के आगन जरूर रखें एवं सूर्य की रोशनी आनी चाहिए।
3. भूरी चींटी को कीडी नगरा दें।
4. बिजली का सामान मुफ्त न लें बिजली चोरी न करें।
5. गले में सूर्य का सुवर्णफूल पहनें
6. रविवार को नियमित व्रत करें।
7. माणिक्य युक्त 'सूर्य यंत्र' गले में पहनें
8. गुड़ की 11 डलियां रविवार के दिन चलते पानी मे बहाएं।
9. घर का आगन खुला रखें तो सूर्य देवता प्रसन्न रहेंगे.
10. रविवार के दिन चरपाई या पलग के पायों में सात तांबें की कील लगाए। नीद अच्छी आएगी।
11. नेत्र पीड़ा की निवृत्ति हेतु **'नेत्रोपनिषद'** का पाठ करें।
12. धन प्राप्ति हेतु शिवप्रोक्त **'सूर्याष्टकम्'** का नित्य पाठ करें।

❑❑❑

कर्क लग्न में चन्द्रमा की स्थिति

कर्क लग्न में चन्द्रमा प्रथम भाव में
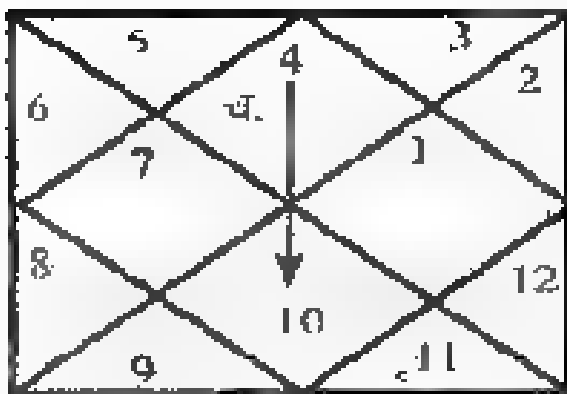
लग्नेश चन्द्र प्रथम भाव में स्थित होने से ऐसा जातक माता पिता द्वारा तरस कर ली गई संतान होती है। जातक माता-पिता की विलम्ब से प्राप्त संतति होती है।

निशानी–ऐसा स्त्री या माता की सलाह पर काम करने वाला, चांदी के बर्तन में भोजन करने वाला होता है। चन्द्रमा लग्न में होने से स्वगृही होता है। ऐसे जातक का मन मजबूत एव पत्नी सुन्दर होती है। जातक शास्त्रज्ञ होता है।

यामिनीनाथ योग–स्वगृही चन्द्रमा केन्द्र मे होने से '**यामिनीनाथ योग**' बनता है। ऐसा व्यक्ति आनन्दी स्वभाव एवं दीर्घायु वाला होगा। मातृकारक चन्द्रमा, मातृस्थान से दसवें होने के कारण जातक का माता के साथ अच्छा संबंध होगा।

यदि यह चन्द्रमा पूर्णिमा का हो तो जातक अकेला ही समस्त शत्रु बलों को नष्ट करने वाला ऐश्वर्यशाली राजा होता है।

दृष्टि (Vision)–यहा चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की मकर राशि को एवं सप्तम भाव को देखता है। अतः जातक को सामान्य असतोष के साथ स्त्री तथा भोग की प्राप्ति होती है। पत्नी का पूर्णसुख सप्तमेश शनि की स्थिति पर निर्भर करता है।

विशेष-यदि इस कुण्डली में सूर्य मीन राशि में हो तो 'जातक पारिजात' अ.-7/श्लोक 58 के अनुसार जातक राजा होता है

बुद्धि एवं शिक्षा–ऐसा जातक पढ़ा लिखा, बुद्धिमान, परोपकारी, राज-दरबार में प्रतिष्ठा पाने वाला माता का सेवक, बहुत बहनो वाला, स्त्री/माता की बात मानकर चलने वाला, चालचलन का नेक, शुद्ध दन्तावली वाला, प्रसिद्ध नेता एव प्रभावशाली व्यक्ति होता है

दशाफल–चन्द्रमा की दशा जातक को अच्छा फल देगी। गुप्त लाभ होगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+गुरु**–लग्नस्थ चन्द्रमा की यदि गुरु के साथ युति हो तो '**किम्बहुना योग**' बनेगा। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य का भोगेगा। जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहता है.

2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ मंगल होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनवान होगा उसके राज्य एवं सन्तान सुख दोनों उत्तम होंगे।
3. **चन्द्र+शनि**—यहां चन्द्रमा के साथ शनि होने से **'निष्ठुरभाषी योग'** बनेगा। जातक को वाणी अप्रिय होगी।
4. यदि चन्द्रमा के साथ राहु या केतु में से कोई ग्रह हो तो **'ग्रहण योग'** बनेगा। जातक मानसिक तनाव में रहेगा।
5. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो व्यक्ति का जन्म श्रावण की पूर्णिमा की सुबह जल्दी सूर्योदय के समय होगा। ऐसा जातक अपने स्वयं के पराक्रम व पुरुषार्थ से अच्छा रुपया कमाएगा। आयु के 24वें वर्ष में उसका भाग्योदय हो जाएगा ऐसा जातक राजा होता है।
6. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ बुध लग्नस्थ होने पर जातक अपने कुटुम्ब का नाम अच्छे कार्य से दीपक के समान रोशन करेगा। जातक की पत्नी सुन्दर (रुप की रानी) होगी।
7. **चन्द्र+शुक्र**—चन्द्रमा के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र होने से जातक उत्तम वाहन का स्वामी होगा। पत्नी रूप की रानी एवं कामक्रीड़ा में जातक को संतुष्टि प्रदान करने वाली होगी। विवाह के बाद ही जातक की किस्मत जागेगी।
8. **चन्द्र+राहु**—ऐसा जातक सौम्य स्वभाव का होते हुए भी थोड़ा लड़ाकू किस्म का होगा। जातक को विचारों में अस्थिरता बनी रहेगी।
9. **चन्द्र+केतु**—ऐसा जातक धर्म ध्वज एवं समाज में यश-कीर्ति प्राप्त करने वाला व्यक्ति होगा परन्तु पत्नी का सुख कमजोर रहेगा।

प्रथम भाव के चंद्रमा का उपचार—

1. चांदी के बर्तन में खाना पीना करें तो भाग्य पलटेगा।
2. वट के वृक्ष को सोमवार सोमवार पानी डालें।
3. माता की सेवा करें एवं माता से आशीर्वाद रूप में चावल चांदी लें.
4. विवाह 24 वर्ष के बाद ही करना चाहिए।
5. यदि मानसिक तनाव ज्यादा हो तो पलंग के चारों पायों में चार तांबे की कीलें सोमवार को लगा दें तो जातक को अच्छी नींद आएगी।
6. नव मोती युक्त चन्द्र यंत्र गले में धारण करें।
7. मोतियों की माला पहनें
8. सफेद वस्त्र पहनने पर अधिक जोर दें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा द्वितीय भाव में

लग्नेश चन्द्र द्वितीय भाव में स्थित होने से यह जातक शुभ संतति वाला, हंसमुख, रोते हुए को हंसाने वाला, मीठा बोलने वाला, भाई बहनों से युक्त, पिता व ससुराल दोनों ही स्थानों
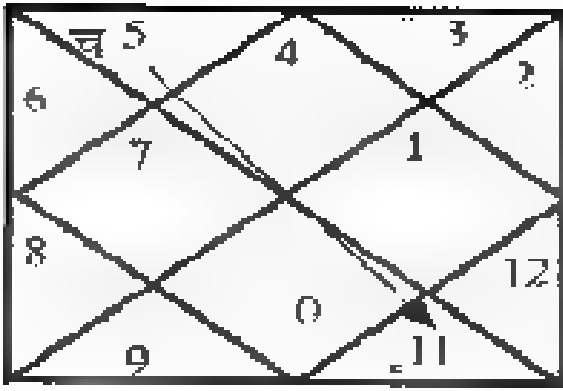
से धन संपत्ति पाने वाला होता है।

व्यवसाय का चयन—सफेद वस्तुओं के व्यापार से लाभ पाने वाला।

निशानी—ऐसे जातक को 18 वर्ष की आयु में ही सही लाइन मिल जाती है

दृष्टि (Vision)—यहां से चन्द्रमा अपनी सातवीं शत्रु दृष्टि से शनि की कुम्भ राशि, अष्टम भाव को देखता है। अतः आयु के संबंध में कुछ परेशानियां आती हैं।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता—जातक जाति व समाज में सम्मान पाने वाला, स्वपराक्रम से धन अर्जित करने वाला सफल व्यक्ति होता है।

परिवर्तन योग—सूर्य+चन्द्र के परस्पर **'परिवर्तन योग'** के कारण जातक स्वयं के पुरुषार्थ, पराक्रम से यथेष्ट धन कमाएगा। जातक **'लक्षाधिपति'** होगा।

दशाफल—चन्द्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—यदि चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक खुद के परिश्रम से खूब रुपया कमाएगा तथा उसका जन्म भाद्र माह की अमावस्या को सूर्योदय के एक घंटे पूर्व होगा।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ यदि मंगल हो तो लग्नेश व पंचमेश+दशमेश की यह युति विद्या द्वारा, ठेकेदारी एवं राजकार्य द्वारा धन प्राप्ति की सूचना देती है। जातक निःसंदेह धनवान होगा।
3. **चन्द्र+बुध**—लग्नेश, तृतीयेश+खर्चेश की युति धनस्थान में धन का अपव्यय करायेगी। यथेष्ट धन संग्रह के प्रति जीवन संघर्षमय रहेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**—भाग्येश+षष्ठेश गुरु की लग्नेश चन्द्र के साथ धनस्थान में युति गजकेसरी योग के कारण धनदायक है। ऐसे व्यक्ति को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धर्म कर्म से पैसा कमायेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**—चन्द्रमा के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र होने से जातक धनवान होगा एवं विलासिता में रुपया खर्च करेगा जातक कला संगीत नृत्य-अभिनय, फोटोग्राफी में रुचि रखेगा।
6. **चन्द्र+शनि**—सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति लग्नेश चन्द्र के साथ धनस्थान में होने से व्यक्ति का धन औरत, बच्चों की देखरेख एवं बीमारी के रखरखाव में खर्च होगा। आर्थिक संघर्ष की स्थिति रहेगी।
7. **चन्द्र+राहु**—धन स्थान में राहु शत्रुक्षेत्री है व अपने शत्रु के साथ है। फलतः धन के घड़े में छेद है। धन संग्रह नहीं होगा। जातक की वाणी में विश्वसनीयता नहीं रहेगी।

8. **चन्द्+केतु**—धनस्थान में केतु भी शत्रुक्षेत्री है। ऐसे जातक को दन्त रोग रहेगा। वाणी कपटपूर्ण होगी।
9. यहां चन्द्रमा के साथ यदि कोई पाप ग्रह हो तो विद्या में रूकावट और यदि शुभ ग्रह हो तो 'धनयुते बहुविद्यावान्' जातक विद्यावान एवं धनवान होगा

द्वितीय भाव के चंद्रमा का उपचार—

1. माता का आशीर्वाद पैरी पैना कहकर लें।
2. माता की सेवा करके, माता से चावल, चांदी लेकर पास रखें।
3. घर में घंटी, शंख न रखें।
4. मकान की नींव में चादी का सिक्का दबाएं।
5. मानसिक तनाव ज्यादा हो तो मोती के साथ 'चद्र यत्र' पहने।

कर्क लग्न में चन्द्रमा तृतीय भाव में

5	4	3
6 चं	1	2
7	10	12
8	9	11
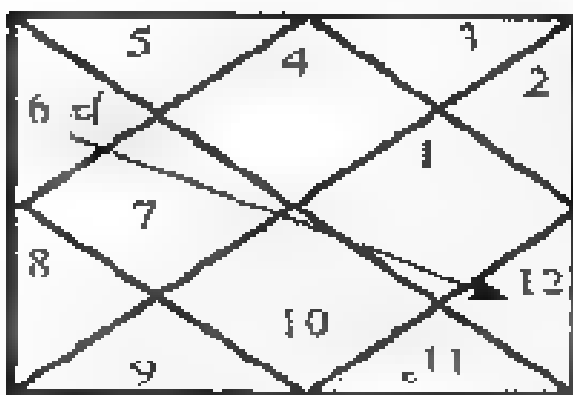
लग्नेश चन्द्र तृतीय भाव में स्थित होने से चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसा व्यक्ति राज्य सरकार द्वारा सम्मानित होता है। जातक लम्बी आयु वाला, बहुत यात्राएं करने वाला, भाई बहन व परिवार को पालने वाला होता है, परन्तु परिवार वालों से उसे यश नहीं मिलता।

निशानी—जातक शतरंज, तैराकी का शौकीन होता है पर जलभय का खतरा बना रहता है।

दृष्टि (Vision)—यहां से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से नवम भाव को गुरु की मीन राशि में देखता है। अत: जातक की भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में उन्नति होती है।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता—24 वे वर्ष से भाग्योदय होगा। गाय भैंस या वाहन के रख रखाव पर बहुत खर्च होगा अथवा ज्योतिष या साहित्य के रख रखाव में रुपया खर्च करेगा।

दशाफल—चन्द्रमा की दशा भाग्योदय कराएगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्+सूर्य**—चद्रमा के साथ सूर्य होने से ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण पक्ष अमावस्या की रात्रि को 2 बजे के लगभग होता है ऐसा व्यक्ति महान पराक्रमी होता है। जातक अपने भाग्य का द्वार स्वयं के कठिन परिश्रम से खोलता है
2. **चन्द्+मंगल**—चंद्र+मगल की युति से **लक्ष्मी योग** बनता है जातक के भाई बहन होंगे। कुटुम्बीजन एवं मित्रों कमी नहीं होगी। परन्तु रिश्तदारों में जातक के प्रति ईर्ष्या की भावना रहेगी

3. **चन्द्र+बुध**–यहां बुध उच्च का होगा जो कि खर्चेश भी है। जातक महान पराक्रमी एवं कीर्तिवान होगा। जातक अपनी शान-शौकत के रख-रखाव में काफी रुपया खर्च करेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–यहां गुरु की युति से **गजकेसरी योग** बनेगा, जातक भाग्यशाली होगा। जीवन म विशिष्ट सफलता 32 वर्ष की आयु बाद मिलेगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**–शुक्र यहां नीच राशि में होगा पर सुखेश+लाभेश शुक्र की लग्नेश के साथ युति होने से जातक को अपनी स्वय की स्त्री एवं अन्य स्त्रियों से लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा बहनों की सख्या अधिक होगी
6. **चन्द्र+शनि**–सप्तमेश+अष्टमेश की युति लग्नेश के साथ **विष योग** की सृष्टि करेगी। जातक के परिजन मित्र षड्यंत्रकारी होगे। अपकीर्ति का योग अधिक है।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ यदि राहु हो तो आयु के 24 वे वर्ष में राजदण्ड से भय रहेगा। जीवन मे सरकारी परेशानी आएगी ऐसे जातक की माता की मृत्यु छोटी उम्र में होती है। मित्रों से दगा मिलेगा। परिजनों से भारी मनमुटाव का संकेत देता है। मुकदमेबाजी की नौबत आ सकती है।
8. **चन्द्र+केतु**–जातक कीर्तिवन्त व यशस्वी होगा पर उसकी पीठ पीछे सदैव बुराई होती रहेगी। जातक के परिजन विश्वास योग्य नहीं होगे.

तृतीय भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. लड़की के जन्म पर चन्द की चीजों दूध, चावल, चादी का दान करें।
2. घर आए मेहमान को दूध पिलाए।
3. लड़के के जन्म पर सूर्य की चीजों कनक, गुड़, तांबा का दान करें।
4. कुंवारी कन्याओं का पूजन करें।
5. बहन, लडकी का कन्यादान करें.

कर्क लग्न में चन्द्रमा चतुर्थ भाव में
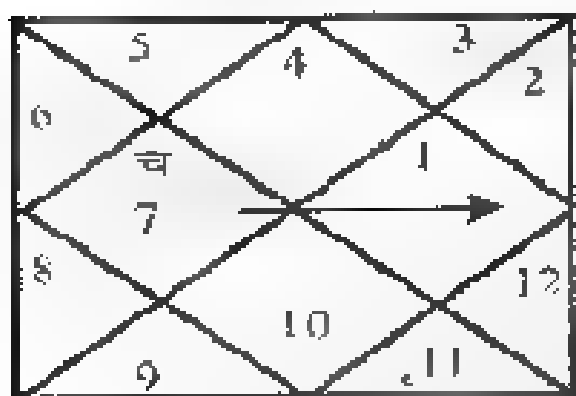
लग्नेश चन्द्र चतुर्थ भाव में स्थित होने से जातक माता का आज्ञाकारी, जमीन/जायदाद एव वाहन सुख वाला होता है, उस पर कुछ गर्वीला होने से किसी का अहसान नहीं मानता है जातक बुजुर्गों की धन-सम्पत्ति को कम करता है तथा प्राय, आत्मीय जनों की आलोचना से दुःखी रहता है, पर राजनीति में पूर्ण सफल होता है।

यामिनीनाथ योग–चन्द्रमा केन्द्र में होने से यह योग बना। ऐसा व्यक्ति आनन्दी स्वभाव का एव दीर्घायु वाला होता है। मातृकारक चन्द्रमा मातृस्थान मे होने से जातक का माता एव मातृपक्ष से अच्छा सम्बन्ध होता है।

निशानी–ऐसा जातक 'राज्यभिषिक्त: अश्वदान्' राज्य दरबार मे शामिल होता है तथा अच्छे वाहन का स्वामी होता है।

दृष्टि (Vision)–यहां चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से मंगल को मेष राशि में दशम भाव को देखता है। अतः जातक के पिता स्थान की उन्नति होती है।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा में जातक को नौकरी मिलेगी। नए वाहन एवं सुख की प्राप्ति होगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य होने से जातक का जन्म कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की मध्य रात्रि को होगा। ऐसा जातक अपने पुरुषार्थ से यथेष्ट धन कमायेगा पर सरकारी नौकरी लगते-लगते रह जाएगी।
2. **चन्द्र+मंगल**–यदि चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो जातक **'लक्ष्मी योग'** के कारण लक्षाधिपति होगा एवं उसके जीवन में धन की कोई कमी नहीं रहेगी।
3. **चन्द्र+बुध**–यदि यहां बुध हो तो माता एवं मातृपक्ष से विवाद बना रहेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–यदि चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक अत्यधिक भाग्यशाली होगा एवं जीवन में उसका कोई कार्य रुका हुआ नहीं रहेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के साथ यदि शुक्र हो तो **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक श्रेष्ठ वाहन एवं श्रेष्ठ बंगले का स्वामी होगा तथा व्यापार से खूब रुपया कमाएगा।
6. **चन्द्र+शनि**–यहां शनि उच्च का होने से **'शशयोग'** बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। विवाह के बाद एवं शनि की दशा में जातक की किस्मत चमकेगी। परन्तु गुप्त शत्रु भी जातक के बहुत रहेंगे।
7. **चन्द्र+राहु**–यहां राहु जातक की माता को कष्ट पहुंचायेगा या अचानक वाहन दुर्घटना कराएगा।
8. **चन्द्र+केतु**–यहां केतु के कारण जातक की माता बीमारी से तकलीफ उठायेगी। वाहन दुर्घटना भी होगी पर बचाव हो जायेगा। राजा से दण्ड का भय रहेगा.

चतुर्थ भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. सुबह काम करते समय दूध का कुम्भ रखना।
2. दूध का दान दें या घर आए मेहमान को दूध या घी खिलाएं।
3. दूध न बेचें, डेयरी का काम बिल्कुल न करें
4. माता के साथ हिस्सेदारी में व्यापार करना।
5. मंत्रपूत, 'चंद्रयंत्र' मोती जड़ा हुआ गले में पहनें।

असुविधा की अवस्था में लेखक से सम्पर्क कर सकते हैं।

कर्क लग्न में चन्द्रमा पंचम भाव में

लग्नेश चन्द्र पंचम भाव में स्थित होने से चन्द्रमा नीच का होगा तथा उसकी दृष्टि अपनी उच्च राशि पर होगी। ऐसा व्यक्ति राजा की किस्मत वाला, न्याय मूर्ति, राजदरबार में विजय पाने
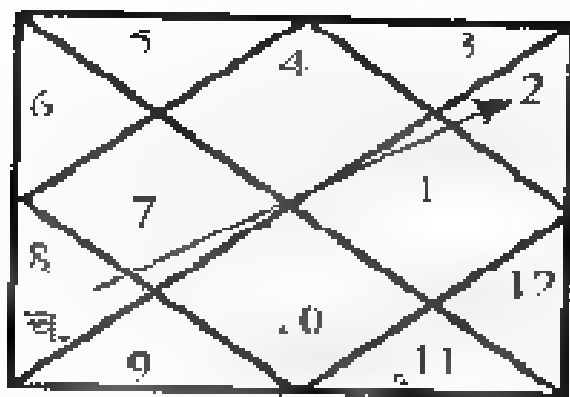
वाला, लम्बी आयु, प्राय: प्रथम संतति कन्या वाला होता है तथा उसकी संतान बहुत तरक्की करती है।

निशानी–पहली संतति कन्या होगी। जुड़वा बच्चे भी संभव हैं, जातक खट्टा स्वाद पसन्द करेगा। जातक की छाती पर लांछन होता है। पंचम भाव में यदि पुरुष ग्रह हो तो फलादेश बदल सकता है।

ऐसा व्यक्ति किसी के आगे नहीं झुकेगा। अन्य शुभ योग हों तो जातक राजनीति में बहुत बड़ा पद प्राप्त करेगा। ऐसे जातक की स्त्री प्रजावान, रूपवती किन्तु कुछ व कोपवती होगी

दृष्टि–यहां से चन्द्रमा सातवीं उच्च दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में एकादश भाव को देखता है, अत: जातक आर्थिक-लाभ के लिए अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों एवं गुप्त युक्तियों का प्रयोग करता है और उसमें उसे सफलता प्राप्त होती है। विशेष सफलता मंगल की स्थिति पर निर्भर है।

धार्मिक एवं आध्यात्मिक सोच–धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ व देवताओं की निरन्तर पूजा करने से इसकी शक्ति प्राप्त होगी।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा सफलता देने वाली होगी।

परिवर्तन योग लग्न में मंगल हो चन्द्र+मंगल के परस्पर **परिवर्तन योग** से जातक विद्यावान, उत्तम सन्तति युक्त, व्यापार प्रिय एवं धनवान होगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य होने से जातक का जन्म मार्गशीर्ष माह के कृष्ण पक्ष में अमावस्या की रात्रि 10 बजे के आस पास होता है। धनेश लग्नेश की इस युति से जातक विद्यावान एवं तेजस्वी होगा। जातक को पुत्र एवं कन्या संतति दोनों की प्राप्ति होगी
2. **चन्द्र+मंगल**–यदि चन्द्रमा के साथ मंगल होगा तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा ऐसे में अशुभ फल कम होकर चन्द्र+मंगल युति से **'लक्ष्मी योग'** बनता है। जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा तथा भूमि ठेकेदारी एवं विद्या के माध्यम से धन कमाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध पंचम भाव में होने से जातक विद्या अध्ययन के लिए जन्म स्थान से दूर जायेगा। विदेश भी जा सकता है। अध्ययन संघर्षपूर्ण रहेगा। फिर भी सफलता मिलेगी।
4. **चन्द्र+गुरु**–चंद्रमा के साथ गुरु होने से **'गजकेसरी योग'** बनेगा। जातक भाग्यशाली होगा एवं व्यापार मार्ग से आगे बढ़ता हुआ, उत्तम उद्योगपति भी बन सकता है उसे प्रथम पुत्र होगा। कन्याएं भी होंगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**–चन्द्रमा के सामने शुक्र स्वगृही हो तो जातक कला प्रेमी होगा पर कन्या संतति अधिक होगी

6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति कष्टदायक है। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। विदेश जाने के अवसर भी उसे मिलेंगे पर ऐन वक्त पर विद्या धोखा देगी, विष भोज्य का भय रहेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–मातृशाप, पितृदोष से पुत्र संतति में बाधा संभव है। पुत्र यदि है तो उसकी उन्नति में बाधाएं रहेंगी, विद्या में रुकावट निश्चित है.
8. **चन्द्र+केतु**–गर्भपात, शल्यचिकित्सा से संतति की प्राप्ति कष्ट साध्य होगी, विद्या में निरन्तर संघर्ष का संकेत है।

पंचम भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. जंगल, पहाड़ की सैर करें तो उत्तम रहेगा।
2. कोई भी नया काम प्रारम्भ करने से पहले परिपक्व व्यक्ति से सलाह लेकर काम करें।
3. मोती युक्त 'चंद्र यंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा षष्टम भाव में
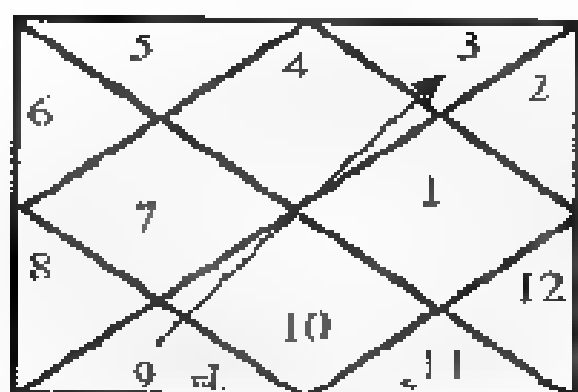
लग्नेश चन्द्र षष्टम भाव में स्थित होने से ऐसे जातक के पेट में खराबी एवं व्यापार में बार-बार तबदीली आती है। ऐसा व्यक्ति तड़पते के मुंह में पानी डालने वाला, हर एक का हमदर्द होता है पर इसके गुप्त शत्रु बहुत होते हैं।

विशेष–लग्नेश होकर चन्द्रमा के छठे स्थान में जाने से **'लग्नभंग योग'** बना। ऐसे जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता, भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ता है.

निशानी–आयु के 36 वें वर्ष में अपने से बड़ी या विधवा स्त्री से संसर्ग के योग बनेंगे।

दृष्टि (Vision)–यहां से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि में बुध की मिथुन राशि, द्वादश भाव को देखता है। अत: जातक को खर्च अधिक रहता है। बाहरी यात्राओं में सम्मान मिलता है।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता–माता के लिए इसका जन्म नेष्ट होता है और ऐसा जातक सदैव मानसिक परेशानी से त्रस्त रहेगा।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा नेष्ट फल देगी.

परिवर्तन योग–यदि गुरु लग्न में हो तो परस्पर **परिवर्तन योग** एवं 'हंसयोग' के कारण **लग्नभंग योग** नष्ट होकर चन्द्रमा का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा.

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चंद्रमा के साथ सूर्य होने से जातक का जन्म पौष माह में कृष्ण पक्ष की अमावस्या को रात्रिकाल 8 बजे के लगभग होगा, सूर्य छठे जाने से **'धनहीन योग'** बनेगा, जातक को पुरुषार्थ का लाभ नहीं मिलेगा एवं धन प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा.

2. **चन्द्र+मंगल**—यहां चन्द्र+मंगल की युति **'लक्ष्मी योग'** होते हुए भी ज्यादा सार्थक नहीं है। मंगल छठे जाने से **राजभंग योग, संततिहीन योग** भी बनता है जातक को आजीविका हेतु, योग्य संतान की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा

3. **चन्द्र+बुध**—पराक्रमेश छठे जाने से एक बार पराक्रम भंग होगा परन्तु व्ययेश का छठे जाने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनवान होगा। निजी मकान, निजी वाहन का सुख है पर जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा।

4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ यदि गुरु हो तो जातक के भाग्योदय में निरन्तर बाधा आती रहेगी पर **'गजकेसरी योग'** के कारण कोई काम अटका हुआ नहीं रहेगा।

5. **चन्द्र+शुक्र**—सुखेश+लाभेश शुक्र छठे जाने से **सुखहीन योग** एवं **लाभभंग योग** बना। ऐसे जातक को स्त्री सुख में कुछ न कुछ कमी महसूस होती रहेगी। जिसके कारण मानसिक शान्ति भंग होगी।

6. **चन्द्र+शनि**—शनि छठे होने से **विलम्ब विवाह योग** बनता है। गृहस्थ सुख विवादित रहेगा परन्तु अष्टमेश छठे जाने से **विपरीत राजयोग** भी बनेगा। जातक धनवान तथा उच्च श्रेणी का व्यापारी होगा।

7. **चन्द्र+राहु**—जातक की माता को लम्बी बीमारी या दुर्घटना का भय रहेगा।

8. **चन्द्र+केतु**—जातक के पांव में चोट पहुंच सकती है अथवा पांव में जहरीला फोड़ा होगा।

9. यदि चन्द्रमा राहु या केतु के साथ है तो 'राहुकेतुसुते अर्थहीन' जातक सदैव अर्थाभाव में संघर्ष करता रहेगा।

षष्टम भाव के चंद्रमा का उपचार—

1. अपना भेद किसी को न बताओ.
2. घर में खरगोश को पालना करें।
3. मंत्रपूत मोती जड़ा हुआ 'चंद्र यंत्र' सहित गले में धारण करें।
4. 'चंद्रकवच' का पाठ करें।
5. रात्रि को दूध न पीएं।

कर्क लग्न में चन्द्रमा सप्तम भाव में
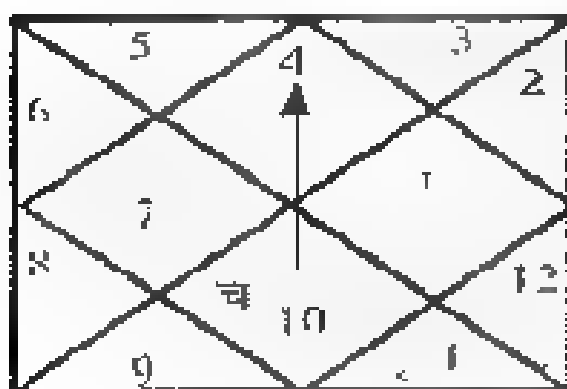
लग्नेश चन्द्र सप्तम भाव में स्थित होने से यह जातक अपने पराक्रम से आगे बढ़ता है। ऐसा जातक धन-दौलत की कमी न पाने वाला, कट्टर स्वाभिमानी होता है तथा किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता।

निशानी—जातक की स्त्री सुन्दर व शुभ लक्षणों से युक्त

होती है। जातक ज्योतिषी, कवि, लेखक या योगाभ्यासी होता है। **'यामिनीनाथ योग'** के कारण जातक आनन्दी एवं विनोदी स्वभाव का होता है एवं सकारात्मक विचारों वाला होता है।

विशेष—लग्नेश के लग्न को देखने के कारण **'लग्नाधिपति योग'** बना। ऐसा जातक अपने स्वयं के परिश्रम व पुरुषार्थ से खूब आगे बढ़ता है। जातक सुखी, धनी, सुन्दर एवं विलासी होता है।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता—जातक की स्त्री धन की देवी, सुन्दर व शुभ लक्षणों से युक्त होती है। ऐसा जातक नित नए विषयों की खोज करने वाला, ज्योतिष, तंत्र मंत्र में सफलता पाने वाला, जलीय वस्तुओं व यात्राओं से कीर्ति कमाने वाला, अपनी मौत के समय घर पर ही होता है। सत्ता-पक्ष का साथ देने से जातक को प्रमुख पद मिलता है।

दृष्टि (Vision)—यहां से चन्द्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी कर्क राशि के प्रथम भाव को देखता है। अतः जातक को शारीरिक सौन्दर्य, मनोबल आध्यात्मिक शक्ति एवं लौकिक कार्यों में सफलता मिलती है.

विशेष अनुसंधान एवं दृष्टान्त—चन्द्रमा की दशा में तरक्की होगी।

दशाफल—चन्द्रमा की दशा तरक्की देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—यदि चन्द्रमा के सामने सूर्य हो तो जातक एक पत्नी व्रत का पालन करने वाला सैद्धान्तिक आदमी होता है। ऐसे जातक का जन्म श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को प्रातः काल सूर्योदय के समय होता है।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ यदि मंगल हो तो **'महालक्ष्मी योग'** बनता है। जातक ठेकेदारी, भूमि भवन व्यवसाय में खूब रुपया कमाता है। ऐसी ग्रह स्थिति में यदि सूर्य द्वितीय स्थान में हो तो जातक करोड़पति होता है।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ तृतीये+खर्चेश बुध सप्तम भाव में होने से पत्नी को लेकर खर्चा होता रहेगा। जातक अपने ससुराल वालो की सेवा में धन लुटायेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
4. **चन्द्र+गुरु**—लग्नेश एवं भाग्येश गुरु की युति यहां सफल **गजकेसरी योग** की सृष्टि करेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा. जातक की पत्नी सुन्दर, पतिव्रता व धार्मिक होगी। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**—चन्द्रमा के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी अत्यधिक सुन्दर (रूप की रानी) होगी। पत्नी से जातक को पूर्ण सुख एवं शान्ति मिलेगी. पत्नी के नाम से किया गया व्यापार फलेगा।
6. **चन्द्र+शनि**—यदि चन्द्रमा के सामने शनि हो तो परस्पर **'परिवर्तन योग'** अत्यन्त सुखद होगा। शनि अपने घर को देखेगा. लग्न एवं प्रतिष्ठा तथा वैवाहिक जीवन दोनों सुखमय हो जाएगे।

7. **चन्द्र+राहु**–यहा पर राहु की स्थिति जीवन साथी से बिछोहदायक है जातक के गृहस्थ सुख में न्यूनता बनी रहेगी। वैचारिक विषमता सभव है।
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु होने से जातक का अपने जीवन साथी के साथ वैचारिक मतभद रहेगा।
9. यदि चन्द्रमा क साथ सूर्य व शनि हो तो जातक दो स्त्री वाला होता है। जातक का जन्म श्रावण मास की अमावस्या का होगा।

सप्तम भाव के चंद्रमा का उपचार–

1. विवाह के दिन ससुराल से पत्नी के वजन के बराबर दूध, पानी या चावल लाएं या पहले लाए
2. चादी के बर्तन में खाना पीना शुभ रहेगा।
3. क्लेश दूर करने के लिए 'चद्र यंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा अष्टम भाव में
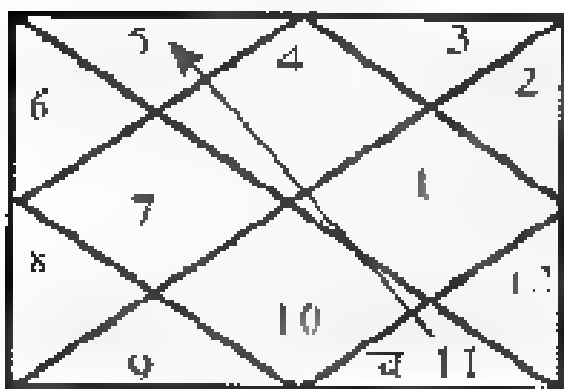
लग्नेश चन्द्र अष्टम भाव में स्थित होने से ऐसा जातक बुजुर्गों की संपत्ति को बर्बाद करता है। खराब समय में राजदरबार से हानि पाता है। ऐसा जातक अपनी किस्मत को आप चमकाता है।

विशेष-लग्नेश चन्द्रमा यहां अष्टम स्थान मे होने के कारण '**लग्नभंग योग**' बना, ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता तथा उसे भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पडता है

निशानी–जातक का जन्म ननिहाल के लिए शुभ होता है। जातक को क्षय रोग होने की सभावना अधिक रहेगी

जीवन मे प्रतिष्ठा एव सफलता–ससुराल ननिहाल के लिए शुभ। ससुराल सबध मे किस्मत चमकेगी। ऐसा जातक अपने कर्त्तव्य पालन के प्रति ज्यादा सतर्क रहता है। ऐसा व्यक्ति कूटनीति मे सफल हो सकता है पर राजनीति मे कुछ समय ही सफल रह पाएगा।

दृष्टि (Vision)–यहा से चन्द्रमा सातवी मित्र दृष्टि से सूर्य की सिह राशि मे द्वितीय भाव को देखता है। अत: जातक कठिन शारीरिक श्रम द्वारा धन की प्राप्ति करता है।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा सघर्ष कराएगी

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

चन्द्र+सूर्य–चन्द्रमा के साथ यहा सूर्य होने पर ऐसे जातक का जन्म फाल्गुण माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को साय 5 बजे के आस पास होगा। सूर्य के कारण **धनहीन योग** बनेगा जातक को परिश्रम का लाभ नही मिलेगा आर्थिक संकट रहेगा।

2. **चन्द्र+मंगल**—मंगल चन्द्रमा के साथ होने से **'सन्ततिहीन योग'** एवं **राजभंग योग** की सृष्टि होती है। यहा **लक्ष्मी योग** ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को विद्या प्राप्ति हेतु बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। आजीविका के साधान प्राप्ति हेतु भी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **चन्द्र+बुध**—बुध अष्टम में जाने से **पराक्रम भगयोग** बनेगा। एक बार जातक की प्रतिष्ठा गिरेगी, परन्तु व्ययेश आठवें होने में **विपरीत राजयोग** बनेगा। जातक धनवान होगा। गाड़ी, बंगले का योग है परन्तु मानसिक तनाव में, शल्य चिकित्सा से मुक्ति नहीं होगी।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ यदि गुरु हो तो 'जातक पारिजात' अ 5/श्लोक 89 के अनुसार जातक की मृत्यु क्षयरोग से होगी।
5. **चन्द्र+शुक्र**—चन्द्र के साथ शुक्र होने से **'लाभभंग योग** एव **सुखहीन योग** बनता है जातक की माता एवं सासु बीमार रहेंगी। जिसकी वजह से जातक को परेशानी उठानी पड़ेगी। वाहन दुर्घटना का भी भय है। अतः तेजगति से वाहन स्वयं न चलाएं।
6. **चन्द्र+शनि**—चन्द्रमा के साथ यदि शनि हो तो **'विषयोग'** बनेगा। ऐसे जातक का दाम्पत्य जीवन तनावपूर्ण रहेगा। जातक प्रायः **'निष्ठुर भाषी'** होगा।
7. **चन्द्र+राहु**—दुर्घटना का भय, प्राणों पर अचानक संकट आयेगा। राहु व चंद्रमा की दशा में सावधान रहें। महामृत्युंजय का जाप कराएं।
8. **चन्द्र+केतु**—शल्य चिकित्सा का योग बनता है। दाए पाव में चोट लगने का भय है।
9. चन्द्रमा के साथ यदि राहु या केतु हो तो **'ग्रहण-योग'** बनेगा। जातक को मानसिक परेशानी के साथ धन का अभाव बना रहेगा।

अष्टम भाव के चद्रमा का उपचार—

1. श्राद्ध या बुजुर्गों के नाम पर दान देना।
2. पनीर/दूध के पानी का इस्तेमाल करें, दूध पीना निषेध।
3. अस्पताल या श्मशान मे कुआ या हैण्डपैम्प लगाना
4. 'चन्द्र यंत्र' धारण करना।
5. बच्चों व बुजुर्गों के पांव धोए
6. चन्द्रकवच का नित्य पाठ करें

कर्क लग्न में चन्द्रमा नवम भाव में
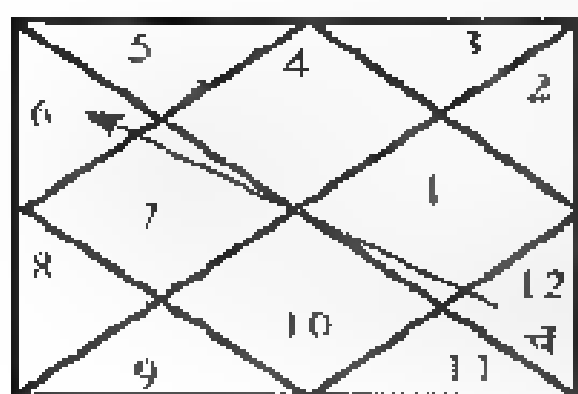
लग्नेश चन्द्र नवम भाव में स्थित होने से ऐसा व्यक्ति जन्म से गरीब और फिर धनवान होता है एव कीचड़ मे कमल की तरह भाग्योदय की ओर आगे बढ़ता है। ऐसा व्यक्ति ईमानदार सामाजिक कार्यकर्त्ता, जननेता एव धर्मार्थ कार्य म रुचि लेने वाला होता है तथा जनप्रिय होता है। ऐसा व्यक्ति विदेशी कार्य एव विदेश यात्रा से लाभ कमा सकता है। चन्द्रमा

क्षीण, मध्य व उत्तमबली होने के अनुपात से इनके भाग्यशाली होने का निर्णय लिया जाता है।

निशानी–'तडाक गोपुरादि-निर्माण पुण्यकर्त्ता' ऐसा जातक बुजुर्गों का नाम रोशन करता है तथा तालाब, प्याऊ, मन्दिर एवं धार्मिक कार्यों के निर्माण में रुचि लेकर पुरखों का नाम रोशन करता है।

दृष्टि–यहां से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से बुध की कन्या राशि, तृतीय भाव को देखता है। अत: जातक को भाई बहन का सुख प्राप्त होता है तथा उसके पराक्रम में वृद्धि होती है।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा शुभ फल देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ यदि सूर्य हो तो जातक का जन्म चैत्र माह, कृष्ण पक्ष अमावस्या को दिन के तीन बजे के आस-पास होगा। जातक धनवान होगा। परिश्रम का लाभ मिलेगा।
2. **चन्द्र+मंगल**–चन्द्रमा के साथ मंगल की युति राज्येश+पंचमेश की लग्नेश से युति भाग्य स्थान में कहलायेगी। यह बहुत उत्तम राजयोग कारक युति है। जातक महान पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय आयु के 28वें वर्ष में हो जाएगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ पराक्रमेश+खर्चेश बुध की युति जातक को पराक्रमी बनायेगी। बुध यहां नीच का होगा। जातक अपनी उन्नति हेतु, व्यक्तित्व विकास एवं निजी शौक की पूर्ति हेतु बहुत रुपया खर्च करेगा।
4. **चन्द्र+गुरु**–चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो प्रबल '**गजकेसरी योग**' बनता है। जातक राजतुल्य ऐश्वर्य का भोगता है। उसका कोई काम साधन के अभाव में अटका हुआ नहीं रहता। जातक परम भाग्यशाली होता है क्योंकि गुरु स्वगृही है
5. **चन्द्र+शुक्र**–शुक्र यहा उच्च का होगा। लग्नेश चन्द्र के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति परम सौभाग्यशाली साबित होगी। जातक के पास अनेक वाहन होंगे। उत्तम भवन भी होगा।
6. **चन्द्र+शनि**–चन्द्रमा के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि भाग्य स्थान में होने से मिले-जुले मिश्रित परिणाम मिलेंगे। जातक को ससुराल से मदद मिलेगी। जातक पराक्रमी होगा एवं जीवन में उतार-चढ़ाव के साथ उच्च उपलब्धियों को स्पर्श करेगा।
7. **चन्द्र+राहु**–भाग्य स्थान में मीन का राहु राजयोग बनाएगा।

नवम भाव के चंद्रमा का उपचार

1. धर्म कर्म और तीर्थ यात्रा में रुचि लें.
2. 'चन्द्र यंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा दशम भाव में

लग्नेश चन्द्र दशम भाव में स्थित होने से उच्चाभिलाषी होकर बैठा हो तो व्यक्ति भवर में फसी नाव का पार लगाने वाला, कुल कुटुम्ब को तारने वाला, बूढ़े बुजुर्गों की सेवा करने
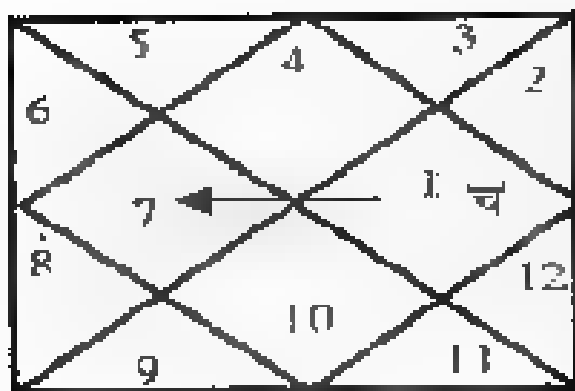
वाला, अनेक प्रकार के कार्यो से धन कमाने वाला, समाज का सेवक, जनता का प्रिय जननेता होता है। अन्य शुभ योगो के साथ जातक को राजनीति मे आशातीत सफलता मिलती है।

निशानी–जातक विद्यावान होगा एवं रहस्यमय विद्याओं का ज्ञाता होगा।

दृष्टि–यहा से चन्द्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि मे चतुर्थ भाव को देखता है। अतः जातक के सुख मे वृद्धि होगी।

यामिनीनाथ योग–ऐसा जातक आनन्दी एव विनोदी स्वभाव का होता है। मातृभवन पर दृष्टि होने से माता एव मातृपक्ष से अच्छा सम्बन्ध होता है।

दशाफल–चन्द्रमा की दशा राज्य मे तरक्की एवं सुख मे वृद्धि करेगी। नए वाहन की प्राप्ति एवं प्रमोशन की सभावना रहेगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चन्द्र+सूर्य**–चन्द्रमा के साथ सूर्य होने से ऐसे जातक का जन्म वैशाख माह के कृष्ण पक्ष में दिन को 12 बजे के लगभग होता है। **रविकृत राजयोग** के कारण जातक महाधनी होगा।
2. **चन्द्र+मगल**–चन्द्रमा के साथ मंगल हो तो क्रमश: **'महालक्ष्मी योग'** एवं **'मालव्य योग'** तथा **'पद्मसिंहासन योग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक साक्षात राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला परम पराक्रमी होता है। जातक को भूमि से लाभ होगा।
3. **चन्द्र+बुध**–चन्द्रमा के साथ तृतीयेश+व्ययेश बुध होने से राजपक्ष में खराब रहेगा। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **चन्द्र+गुरु** चन्द्रमा के साथ गुरु होने से **गजकेसरी योग** बनेगा। जातक धनवान एवं सौभाग्यशाली होगा। ऐसा जातक समाज में, राजनीति मे प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
5. **चन्द्र+शुक्र**–यहां शुक्र सुखेश+लाभेश होकर दशम भाव में लग्नेश चन्द्रमा के साथ होने से राजयोग बनाता है। जातक महाभाग्यशाली होगा। उसके पास एक से अधिक वाहन होगे। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **चन्द्र+शनि**–यहा चन्द्रमा के साथ शनि सप्तमेश+अष्टमेश होने के कारण कष्टकारक होगा। शनि नीच का **'विष योग'** बनाएगा। जातक को राजदण्ड का भय रहेगा गुप्त शत्रु रहेंगे।
7. **चन्द्र+राहु**–चन्द्रमा के साथ राहु सरकारी भय उत्पन्न करेगा। राजदण्ड सम्भव है। कोर्ट केस मे पराजय सम्भव है
8. **चन्द्र+केतु**–चन्द्रमा के साथ केतु सरकारी कारोबार से नुकसान पहुचायेगा।

दसम भाव के चद्रमा का उपचार–

1. रात को दूध ना पीना, क्योंकि यह दूध जहर का काम करेगा,
2. फौरन 'चन्द्रयंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में चन्द्रमा एकादश भाव में
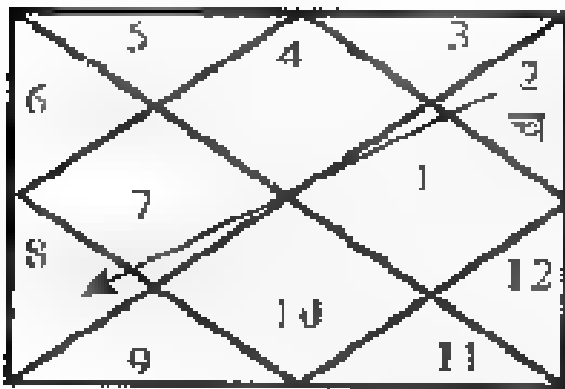
लग्नेश चन्द्र एकादश भाव में स्थित होने से लग्नेश चन्द्रमा उच्च का होगा। जातक माता व संतान से युक्त, दूरदर्शी, दूध/पानी व सफेद वस्तुओं से लाभ पाने वाला होता है।

निशानी—जातक की प्रथम संतति कन्या होगी यदि पंचम भाव में पुरुष ग्रह हो तो फलादेश बदल सकता है।

दृष्टि—यहां से चन्द्रमा सातवीं नीच दृष्टि से भिन्न मंगल की वृश्चिक राशि में पंचम भाव को देखता है। ऐसे जातक की बुद्धि उर्वरक होगी। जातक प्रज्ञावान एवं विद्यावान होगा।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता जातक को स्व मकान व स्व वाहन का सुख अवश्य होता है। जीवन की यौवन अवस्था में कदम रखते ही ऐसे जातक उत्तम धन व यश को प्राप्त करने लग जाते हैं। यदि शुक्र की स्थिति शुभ हो तो कहना ही क्या? ऐसा व्यक्ति उच्चवर्गीय राजनेता होता है।

बुद्धि एवं शिक्षा—जातक उच्च शिक्षाधिकारी, वकील, राज्याधिकारी व सामाजिक कार्यकर्ता होता है। जातक पुत्र पौत्रादि संतान से युक्त होता है तथा उसकी संतान सद्गुणी होती है।

दशाफल—चन्द्रमा की दशा उत्तम फल एवं सन्तति देगी।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—यदि यहां चन्द्रमा के साथ सूर्य हो तो जातक अकेला ही सब शत्रुओं को नष्ट करने वाला राजा होता है।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ पंचमेश व दशमेश मंगल होने से जातक **'महालक्ष्मी योग'** के कारण धनवान होगा। टैक्नीकल, मैकेनिकल कार्य का जानकार होगा एवं बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ पराक्रमेश एवं खर्चेश बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा तथा व्यापार में प्रवृत्त होता हुआ धीरे धीरे बहुत आगे बढ़ जाएगा।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा के साथ गुरु हो तो बहुत ही उत्तम श्रेणी का **'गजकेसरी योग'** होता है। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है। जातक परोपकारी होता है तथा पुण्यार्थ में धन खर्च करता है, उस पर शुक्र की पूर्ण कृपा रहती है।
5. **चन्द्र+शुक्र**—यहां चन्द्रमा के साथ यदि शुक्र हो तो **'किम्बहुना योग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है। उसे मां का सुख उत्तम वाहन नौकर एवं श्रेष्ठ भवन का सुख मिलता है। कन्या संतति की बहुलता रहेगी.
6. **चन्द्र+शनि**—चन्द्रमा के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि पत्नी (ससुराल) पक्ष से चिन्ता कराएगा। जातक अपनी मेहनत से आगे बढ़ेगा एवं स्वाभिमानी होगा

7. **चन्द्र+राहु**—चन्द्रमा के साथ राहु लाभ में बाधा पहुंचाएगा जातक को व्यापारिक चिन्ता होगी।
8. **चन्द्र+केतु**—चन्द्रमा के साथ केतु जातक का उद्योग से लाभ पहुंचाएगा।

एकादश भाव के चंद्रमा का उपचार—

1. भैरों के मंदिर में दूध देना.
2. बच्चों को 121 पेडे या रेवड़ी बराबर बांटना।
3. नवमोती युक्त 'चन्द्रयंत्र' धारण करें
4. स्फटिक की माला गले में धारण करे, इससे राजयोग व उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

कर्क लग्न में चन्द्रमा द्वादश भाव में
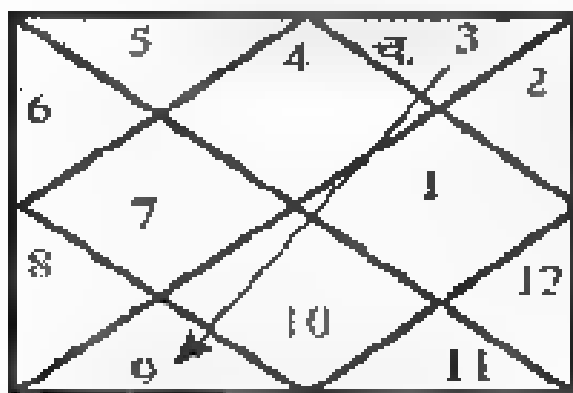
लग्नेश चन्द्र शत्रुक्षेत्री होकर द्वादश भाव में होने से शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक दीवाना, बातूनी, बुजुर्गों की सम्पत्ति बरबाद करने वाला, बीते हुए समय को याद करके रोने वाला होता है।

लग्न भंग योग—लग्नेश चन्द्रमा बारहवें स्थान में होने से यह योग बनता है। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता तथा उसके जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहती है

निशानी—जातक का शरीर दुबला पतला होगा। यात्राएं अधिक होंगी।

विशेष—'व्ययभाव गते चन्द्र वामचक्षुः विनश्यति' बारहवें घर में शत्रुक्षेत्री चन्द्रमा जातक की बाईं आंख को नुकसान पहुचाता है समदड़ी ग्राम के एक वैद्यराज की कुण्डली मेरे सामने आई उनकी कुण्डली में यह योग था वे सरकारी वैद्य थे तथा स्वस्थ थे। उन्होंने मेरी भविष्यवाणी को हंसी में टाल दिया एक बार वे पड़ोस के गांव जेठन्तरी में मरीज देखने मोटर-साइकिल पर गए। पूर्णिमा की रात थी और चन्द्रमा पूर्ण यौवन पर था। गांव में कच्चे रास्ते में एक खड्डा आया मोटर-साइकिल उछली और हैण्डल पर लगा कांच उछल कर दूर जा गिरा परन्तु हैण्डल वैद्यराज के बाईं आंख में घुस गया। बाईं आंख हमेशा के लिए नष्ट होकर विकृत हो गई वे ज्योतिष शास्त्र के अनन्य भक्त बन गए।

जीवन में प्रतिष्ठा एवं सफलता—जातक जबान का कच्चा, ससुराल को डुबोने वाला अनेक कष्ट व दिक्कतों के साथ आगे बढ़ने वाला होता है राजनीति में इन्हे प्रायः धोखा मिलता है। जातक यात्राएं बहुत करेगा

दृष्टि—यहां से चन्द्रमा सातवीं मित्र दृष्टि से षष्ठ भाव को गुरु की धनु राशि में देखता है अतः जातक गुप्त शत्रुओं से पीड़ित रहेगा।

दशाफल—चन्द्रमा की दशा मध्यम फल देगी। यात्राओं में धनहानि व धोखा होगा।

चन्द्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चन्द्र+सूर्य**—चन्द्रमा के साथ सूर्य होने से ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को होगा। जातक का जन्म प्रातः काल 8 से 10 बजे के मध्य होता है। सूर्य के कारण धनहीन योग बनेगा जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
2. **चन्द्र+मंगल**—चन्द्रमा के साथ पंचमेश+दशमेश मंगल होने से **'विद्याभंग योग'**, **'राजभंग योग'** बनेगा। ऐसे जातक की विद्या प्राप्ति में बाधा आएगी। सरकारी कार्य में बाधा आएगी।
3. **चन्द्र+बुध**—चन्द्रमा के साथ पराक्रमेश+व्ययेश बुध होने से एक बार पराक्रम भंग होगा। व्ययेश के व्यय स्थान में स्वगृही होने से विपरीत राजयोग बना। फलतः जातक धनी होगा। उसके पास निजी वाहन, निजी भवन होगा।
4. **चन्द्र+गुरु**—चन्द्रमा गुरु के साथ होने से **'गजकेसरी योग'** बना परन्तु भाग्येश बारहवें **'भाग्यभंग योग'** बनाता है। षष्टेश बारहवें होने से **'विपरीत राजयोग'** भी बना। जातक धनवान होगा तथा निजी भवन एवं निजी वाहन का स्वामी होगा जीवन में संघर्ष रहेगा।
5. **चन्द्र+शुक्र** चन्द्रमा बारहवें और शुक्र यदि द्वितीय स्थान में हो तो जातक की दोनों आंखों की रोशनी चली जाएगी।
6. **चन्द्र+शनि**—सप्तमेश बारहवें स्थान पर होने से **'विलम्ब विवाह योग'** बनेगा। अष्टमेश व्यय भाव में होने से **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा। निजी भवन निजी गाड़ी वगैरह होगी पर मानसिक उद्विग्नता रहेगी यहां चद्रमा का अशुभत्व बढ़ेगा।
7. **चन्द्र+राहु**—चन्द्र+राहु की युति से यात्रा योग विशेष रहेगा। यात्रा में कष्ट होगा। दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **चन्द्र+केतु**—चन्द्र+केतु की युति से जातक तीर्थयात्राओं, धार्मिक व परोपकार के कार्यों में रुचि लेगा।

द्वादश भाव के चंद्रमा का उपचार—

1. चावल, चांदी, दूध आदि का दान करना।
2. सच्चा मोती (दूध रंग) धारण करना, मोती के अभाव में चांदी धारण करें या चद्र यंत्र पहनना।
3. दूध का बर्तन रात को सिरहाने रखकर सुबह वटवृक्ष में डालना।
4. सोमवार का व्रत रखना।
5. शिवजी की उपासना करना।

❑❑❑

कर्क लग्न में मंगल की स्थिति

कर्क लग्न में मंगल प्रथम भाव में
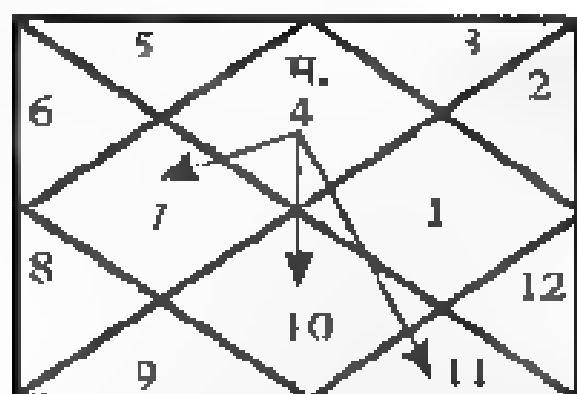
कर्क लग्न में मंगल परम योगकारक ग्रह होता है। लग्न में स्थित होने के कारण यह नीच राशिगत हो जाएगा। पंचमेश एवं दशमेश होने के कारण विद्वान लोग मानते हैं कि कर्क लग्न में मंगल नीच का फल नहीं देता। सन्तान उत्तम होगी।

निशानी–ऐसा जातक **'इंसाफ की तलवार'** होता है अपने वचन के लिए जातक मर मिटता है। उसकी जबान से निकला शब्द पत्थर की लकीर होता है। छोटे-बड़े भाइयों की शर्त नहीं। पर अकेला भाई नहीं होगा। चेहरे पर लाल मस्सा, शस्त्र द्वारा चोट या चेचक के निशान होंगे।

जातक की माता बीमार रहती है। ऐसे जातक की किस्मत 29 वर्ष की आयु के बाद चमकती है और जातक अपनी किस्मत आप चमकाता है। ऐसे जातक दृढ़-निश्चयी व साहसी होते है तथा युद्ध में शत्रु को परास्त करने मे पूर्ण सक्षम होते हैं।

मंगल की यह स्थिति कुण्डली को मांगलिक बनाती है। ऐसे जातक के जीवनसाथी की कुण्डली भी मांगलिक होनी चाहिए, तभी वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–यदि मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'नीचभंग राजयोग'** एवं **'लक्ष्मी योग'** की क्रमशः सृष्टि होगी। इससे मंगल का नीचत्व समाप्त होकर उसकी सकारात्मक शक्ति बढ़ जाती है। जातक धनाढ्य होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–धनेश सूर्य की योगकारक मंगल के साथ युति शुभ है। जातक परम भाग्यशाली एवं धनवान होगा। जातक स्वयं के पराक्रम पुरुषार्थ से आगे बढ़ेगा।
3. **मंगल+बुध**–तृतीयेश बुध लग्न में शत्रुक्षेत्री होगा। जातक पराक्रमी होगा पर शरीर में रोग रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–यदि मंगल के साथ गुरु हो तो **'नीचभंग राजयोग'** एवं **'हंस योग'** की क्रमशः सृष्टि होती है। ऐसे में मंगल का नीचत्व समाप्त होकर उसकी सकारात्मक शक्ति बढ़ जाएगी। जातक राजा के सामान प्रभुत्व सम्पन्न एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ सुखेश शुक्र की युति लाभदायक रहेगी। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ सप्तमेश शनि होने से जातक की पत्नी से कम पटेगी शत्रुओं से लड़ता रहेगा पर अंत में विजयी होगा।

कर्क लग्न में मंगल द्वितीय भाव में
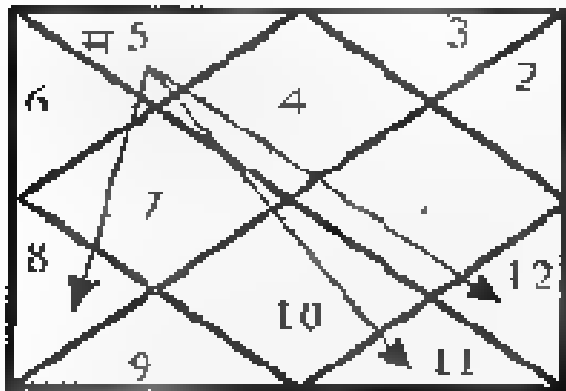
मंगल पंचमेश व दशमेश होकर दूसरे भाव में स्थित होने पर जातक अपने छोटे बहन भाइयों को पालता है। यह मंगल मित्रक्षेत्री है पर सिंह (अग्नि) राशि में होने से जातक की भाषा कठोर एवं अप्रिय होगी।

निशानी–जातक की प्रथम सतति पुत्र होता है तथा जातक विवाह के बाद तरक्की को प्राप्त करता है। जातक **''दूसरों को पालने वाला''** होता है।

पंचमेश होकर मंगल दूसरे भाव में स्थित होकर अपने घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। यह उत्तम सन्तति देगा परन्तु एक-दो गर्भपात या सन्तान की अपरिपक्व अवस्था में मृत्यु हो सकती है।

विद्याध्ययन में रुकावट, लापरवाही होते हुए भी जातक विद्या पूरी करेगा। जातक को पिता से ज्यादा लाभ नहीं होगा।

दशमेश मंगल दशम भाव से कोण (पांचवें) में होने से जातक को अच्छी नौकरी मिलेगी।

अष्टम भाव पर दृष्टि होने से शरीर में गुप्त रोग हो सकता है। खराब दशा या अशुभ गोचर में यह मंगल अकस्मात् रोग देगा।

जातक का छोटा भाई नहीं होगा यदि होगा भी तो उससे सम्बन्ध अच्छे (मधुर) नहीं होंगे।

दशाफल–मंगल की दशा अच्छी जाएगी। मंगल की महादशा में सूर्य या शनि का अन्तर कष्टदायक होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा धन स्थान में **'लक्ष्मीयोग'** बनाएगा जातक अपने पुरुषार्थ से खूब धन कमायेगा
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य स्वगृही होगा ऐसा जातक विद्या के द्वारा, संतान के द्वारा धन व यश कमायेगा।
3. **मंगल+बुध** मंगल के साथ बुध जातक को पराक्रमी एवं खर्चीले स्वभाव का बनाएगा।
4. **मंगल+गुरु** भाग्येश गुरु की मंगल के साथ युति जातक को पैतृक सम्पत्ति दिलायेगी।
5. **मंगल+शुक्र** यहां मंगल के साथ सुखेश लाभेश शुक्र की युति धन स्थान में जातक को माता की सम्पत्ति दिलाती है। जातक धनवान होगा।

6. **मंगल+शनि** यहां मंगल के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति धन स्थान में होने से पत्नी से मनमुटाव करायगी। जातक की वाणी दूषित होगी।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु धन के घड़े मे छेद का काम करेगा। जातक की वाणी दम्भी होगी।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु धन खर्च में बढ़ोतरी करेगा। व्यर्थ के रुपये खर्च होते रहेंगे।
9. मंगल दूसरे भाव में एवं तीसरे भाव में शनि हो तो जातक के सन्तान होने की सम्भावना क्षीण हो जाती है।

द्वितीय भाव के मंगल का उपचार—

1. ऋणमोचन मंगल स्तोत्र का पाठ करें।
2. लाल या नारंगी रंग का सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।

कर्क लग्न में मंगल तृतीय भाव में
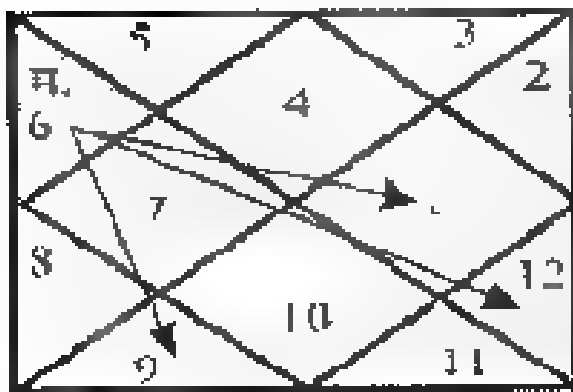
कर्क लग्न में तृतीय भाव में मंगल कन्या राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर मंगल छठे भाव, नवम भाव एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। यह मंगल व्यक्ति को दुस्साहसी बनाता है। जातक को छोटे भाई बहन का सुख कम प्राप्त होगा।

पंचमेश होकर पंचम भाव से ग्यारहवें स्थान में स्थित होने के कारण सन्तान के लिए यह मंगल उत्तम फलदायक है। संतान को लेकर जातक का धन खर्च होगा।

दशमेश होकर दशम भाव से छठे स्थान पर स्थित होने के कारण नौकरी अच्छी मिलेगी पर परिश्रम ज्यादा करना पड़ेगा.

मंगल की नवम भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक के अपने पिता से अच्छे सम्बन्ध होंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी—चिड़ियाघर का कैदी, शेर जिसको अपनी ताकत का पता नहीं।

दशा मंगल की दशा, अंतर्दशा अच्छी जाएगी।

विशेष यदि तृतीयस्थ मंगल के साथ राहु हो तो जातक के बाए पैर में दोष होगा या वहां बड़ा निशान होगा

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—मंगल के साथ चन्द्रमा की युति से '**लक्ष्मी योग**' बनेगा। जातक अपने पराक्रम से यथेष्ट धन कमाएगा। भाई बहनों से पटेगी।

2. **मंगल+सूर्य**—मगल के साथ सूर्य की युति भाइयों से एवं स्वय के हुनर तथा विद्या (बुद्धि) बल से जातक आगे बढ़ेगा। जातक को भाई बहनों का सुख मिलेगा। जातक पराक्रमी होगा
3. **मंगल+बुध**—मगल के साथ उच्च का बुध जातक को साहसी पत्रकार, सम्पादक, लेखक एवं जनसम्पर्क अधिकारी बनाएगा।
4. **मंगल+गुरु**—मगल के साथ गुरु जातक को बडे भाई का सुख देगा। वृद्ध जनों की सहायता-सलाह जातक के लिए सार्थक रहेगी
5. **मंगल+शुक्र**—मगल के साथ नीच का शुक्र जातक को अय्याश बनाएगा। स्त्री-मित्र व सौन्दर्य प्रसाधन पर जातक ज्यादा रुपया खर्च करेगा
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि तृतीय स्थान में होने से कुटुम्ब मे मतभेद की स्थिति बनाएगा। मित्रों मे मतभेद रहेंगे।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु की युति जातक को पराक्रमी बनाती है परन्तु भाइयों से विवाद रहेगा।
8. **मंगल+केतु**—मगल के साथ केतु जातक को शत्रुजयी बनाता है, पर कुटुम्बीजनों से मनमुटाव की स्थिति बनाए रखेगा।

तृतीय भाव के मंगल का उपचार—

1. मगल नामावली स्तोत्र का पाठ करें
2. भौम ग्रह शान्ति विधान का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में मंगल चतुर्थ भाव में
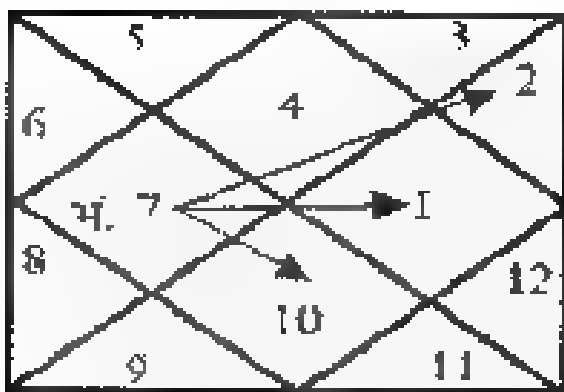
कर्क लग्न में मगल चतुर्थ भाव में तुला राशि का होकर सप्तम भाव, दशम भाव एवं एकादश भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेगा

चन्द्रमा मातृकारक है तथा मगल का मित्र है फलतः जातक की माता उत्तम होगी मगल जातक को जमीन एवं (बांध काम) निर्माण, ठेकेदारी से लाभ देगा जातक का निजी बंगला आलीशान होगा तथा उसे खेती या भूमि के क्रय-विक्रय से भी लाभ होगा।

निशानी—आप चाहे जन्म से छोटा हो मगर अपनी 28 वर्ष की आयु तक बड़ा हो जाएगा

विशेष—ऐसे जातक की कुण्डली मांगलिक कहलाएगी क्योंकि मंगल चौथे भाव में है ऐसे व्यक्ति के जीवनसाथी की कुण्डली भी मांगलिक होनी चाहिए, तभी वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।

पचमेश होकर पाचवें भाव से बारहवें स्थान में मगल जातक को सन्तान नहीं होने देता यदि सन्तान हो भी जाए तो जातक के साथ सम्बन्ध अच्छे नही होंगे।

दशमेश होकर दशम भाव से सातवें स्थान पर होने के कारण जातक का निजी उद्योग-धन्धा एवं व्यापार होगा। जातक अपने धंधे में प्रगति करेगा।

मंगल की सातवीं दृष्टि के कारण जातक को गुप्त रोग हो या गुप्तांग की बीमारी हो सकती है। जीवनसाथी से सम्बन्ध तनावपूर्ण होंगे तथा जातक का जीवनसाथी उससे पहले गुजर जाएगा।

दशाफल—मंगल की दशा अच्छी जाएगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—मंगल के साथ चन्द्रमा **'लक्ष्मी योग'** की सृष्टि करता है। ऐसे जातक को माता का सुख व भौतिक सम्पत्ति का सुख मिलता है।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य की युति जातक को भूमि लाभ, भूमि से धन लाभ दिलाती है।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध की युति जातक को उत्तम वाहन सुख, भूमि का सुख दिलाती है।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ भाग्येश गुरु जातक को भाग्यशाली बनाता है। जातक को पिता की सम्पत्ति तथा वाहन का सुख मिलेगा। जातक कुल का दीपक होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ स्वगृही शुक्र होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगी। जातक बड़ी भूमि, भवन एवं वाहन का स्वामी होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि उच्च का होगा। फलतः **'शशयोग'** बनेगा। जातक राजा-महाराजा की तरह पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। जातक को घर का उत्तम मकान उत्तम सुख मिलेगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु माता की अकाल मृत्यु कराएगा। जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति के लिए संघर्ष करना पड़ेगा।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु माता को दीर्घ बीमारी देगा। जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

चतुर्थ भाव के मंगल का उपचार—

1. श्री मंगल अष्टोत्तर शतनामावली का पाठ करें.
2. त्रिरत्न का त्रिगुणात्मक लॉकेट धारण करें

कर्क लग्न में मंगल पंचम भाव में

कर्क लग्न में पंचमस्थ मंगल स्वगृही होगा तथा पंचम भाव में स्थित होकर आठवें भाव, एकादश भाव एवं द्वादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।
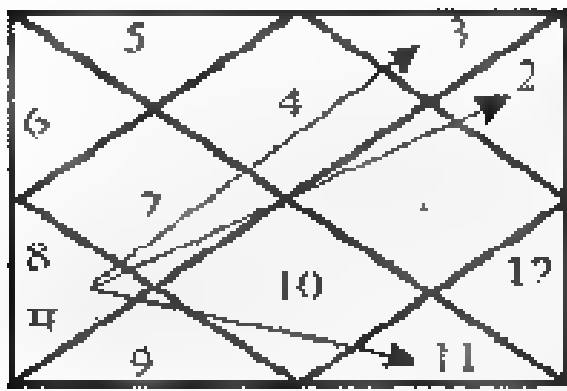
जातक को उत्तम सन्तति की प्राप्ति होगी। सन्तति अल्प होगी अपने भाई बहनों के साथ जातक के अच्छे सम्बन्ध होंगे।

दशम भाव का स्वामी होकर दशम भाव से आठवें होने के कारण जातक को धंधे व्यापार में काफी मेहनत करनी पड़ेगी।

मंगल की अष्टम दृष्टि जातक के जीवन में अचानक योग कराती है। यह मंगल पति पत्नी के बीच मनोमालिन्यता उत्पन्न करता है

मंगल की एकादश भाव पर दृष्टि जातक को सुन्दर मित्रों से लाभ देती है

निशानी—रईसों का बाप दादा।

दशाफल—मंगल की दशा उत्तम फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—यदि मंगल के साथ चन्द्रमा हो तो **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि होगी। साथ ही चन्द्र+मंगल युति से **'लक्ष्मी योग'** भी बनेगा। यहां चन्द्रमा का नीचत्व भंग होकर यह जातक को अपार धन दिलाने में सहायक भूमिका निभाएगा। (गुरु, सूर्य)
   (क) तृतीय भाव मे यदि पुरुष ग्रह (गुरु, सूर्य) हों तो चार भाई होंगे।
   (ख) तृतीय भाव में यदि स्त्री ग्रह (चन्द्र, शुक्र) हों तो तीन भाई होंगे।
   (ग) तृतीय भाव में पाप ग्रह (शनि, राहु) हो तो पांच भाई होंगे।
   (घ) तृतीय भाव में बुध हो तो दो भाई होने चाहिए।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को राजकीय कृपा से धन लाभ देगा। जातक को सरकारी खजाने से वजीफा व धन मिलेगा
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध पराक्रम में वृद्धि कराएगा तथा जातक को दो कन्या संतति भी देगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु पांच पुत्रों का योग बनाता है। जातक धैर्यवान होगा तथा नैतिक नियमों परम्पराओं के निर्वाह के प्रति जागरुक होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र व्यापार से लाभ देगा। जातक को पुत्र के साथ कन्या संतति भी अवश्य होगी।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि की युति विद्या में रुकावट दिलाएगी। एकाध गर्भपात संभव है
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु विद्या तथा संतान में बाधा दिलाएगा
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु गर्भस्राव कराता है। संतान शल्यचिकित्सा से हाथ लगती है।

9. **मंगल+राहु**—पचमस्थ मंगल के साथ राहु हो तो स्त्री जातक का मासिक धर्म रुकावट के साथ अनियमित आता है

पंचम भाव के मंगल का उपचार—

1. त्रिरत्न त्रिगुणात्मक लॉकेट पहने।

कर्क लग्न में मंगल षष्टम भाव में
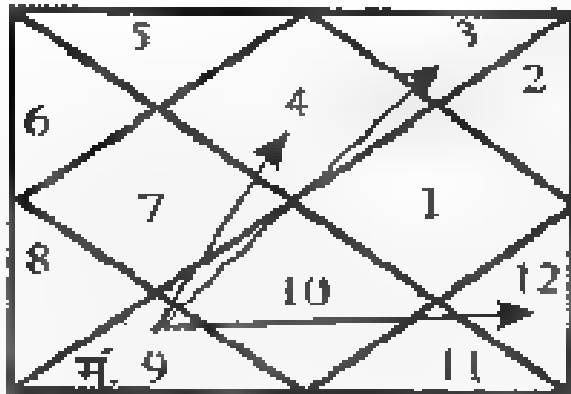
कर्क लग्न में छठे स्थान पर स्थित मगल धनु राशि में मित्रक्षेत्री होगा जहा बैठकर वह भाग्य भवन, व्यय स्थान एवं लग्न स्थान को देखेगा। यह स्थिति जातक को रोग शत्रु एवं कर्ज पर विजय दिलाती है।

विद्याभंग योग—पंचमेश मगल छठे जाने से यह योग बना। ऐसे जातक के विद्याध्ययन में रुकावट जरूर आती है।

पुत्रहीन योग—यदि पंचम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो यह योग बन जाता है। जातक को पुत्र सन्तति नहीं होती। यह मगल पंचम भाव से दूसरे स्थान पर होने से कुछ शुभ फल भी देगा।

दशमेश मंगल दशम भाव से कोण (नवें) में होने के कारण नौकरी अच्छी मिलेगी नौकरी में प्रमोशन होता रहेगा। कम परिश्रम पर भी अधिक लाभ मिलने का योग है।

नवम भाव पर मगल की दृष्टि पिता की सम्पत्ति के निमित्त शुभ नहीं मानी गई है। जातक व्यसनी होगा तथा फालतू कामों के लिए रुपया खर्च करेगा। जातक भाई-बहनों का शुभचिन्तक होगा।

लग्न स्थान (प्रथम भाव) पर मगल की दृष्टि जातक को उग्र स्वभाव वाला स्वाभिमानी बनाती है। जातक के चेहरे पर गंभीर चोट का निशान होना चाहिए।

निशानी—साधु संन्यासी स्वभाव जो अपने आपको कष्ट दे। जातक आप अकेला धार्मिक होगा तथा माता पिता के द्वारा तरस कर ली गई सन्तान होगा।

दशाफल—मंगल की दशा अच्छा फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **मगल+चन्द्र**—मंगल के साथ चन्दमा '**लग्नभग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को जीवन में आगे बढ़ने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ेगा। किसी भी कार्य मे प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी
2. **मगल+सूर्य**—मगल के साथ सूर्य होने से '**धनहीन योग**' बनगा। ऐसे जातक के पास बहुत परिश्रम करने पर भी धन इकट्ठा नहीं होगा। सरकारी नौकरी छूट जाएगी

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से **पराक्रमभंग योग** बनता है। साथ ही विपरीत राजयोग भी बनता है। ऐसा जातक धनी होगा। जातक को उत्तम वाहन का सुख मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जहां '**भाग्यभंग योग**' बनाता है वहां षष्टेश अष्टम में स्वगृही होने से विपरीत राजयोग बनाता है जातक धनी तथा उत्तम वाहन, भवन के सुख से युत होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र होने से '**लाभभंग योग**' एवं **सुखहीन योग**' बनते हैं। जातक को गुप्त बीमारी एवं रोग की सम्भावना रहेगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से जहां '**विवाहभंग योग**' बनता है वहीं अष्टमेश छठे होने से '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनी होगा। वाहन सुख भरपूर पर दुर्घटना का भय रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जातक को शत्रु संघर्ष में विजय दिलाता है परन्तु दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु पांव में चोट पहुंचाएगा। जातक को ऑपरेशन का भय रहेगा।

षष्टम भाव के मंगल का उपचार–

1. भौम के तांत्रिक मंत्रों का प्रयोग करें।
2. अंगारक स्तोत्र का पाठ करें।
3. मंगल जातक मंगलागौरी व्रत करें।
4. विवाह में विलम्ब या बाधा महसूस होने पर घट विवाह का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में मंगल सप्तम भाव में
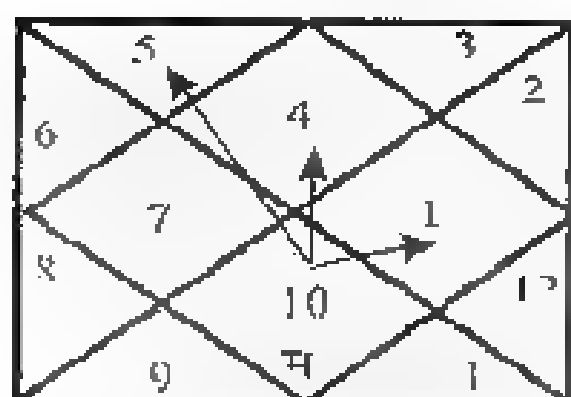
कर्क लग्न में मंगल परमराजयोग कारक होकर सप्तम भाव में उच्च का स्थित होने से '**रुचक योग**' की सृष्टि होती है। धन-यश-कीर्ति व सत्ता के लिए यह सबसे उत्तम योग है ऐसा जातक मजबूत कद काठी वाला व बलवान होकर राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा ऐसा जातक राज्याधिकारी होता है तथा इंसाफ को तौलने वाला होता है।

निशानी–जातक अपने कुटुम्बी परिवार को विष्णु की तरह पालने वाला प्राणी होता है रोते को हंसाने वाला एवं खुद के पुरुषार्थ से दो मंजिला नया मकान बनाने वाला होता है

मंगलीक मंगल सातवें होने के कारण यह कुण्डली प्रबल रूप से मांगलिक हो गई है ऐसे जातक का जीवनसाथी भी मांगलिक होना चाहिए तभी दाम्पत्य जीवन में सुन्दरता आती है। यद्यपि उच्च का मंगल मंगलदोष को कम करता है फिर भी पति-पत्नी के मध्य संघर्ष रहेगा।

पंचमेश सातवें भाव में उच्च का होने के कारण जातक की सन्तान पराक्रमी तथा बुद्धिशाली होगी एवं सन्तान के माध्यम से जातक का भाग्योदय होगा।

दशमेश मंगल दशम भाव से दसवें स्थान पर होने से नौकरी व्यापार उत्तम जातक की आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। मंगल की द्वितीय भाव पर दृष्टि होने के कारण दाईं आंख में दोष, वाणी रौबीली रहेगी क्योंकि द्वितीय भाव वाणी का है।

दशाफल—मंगल की दशा भाग्योदयकारी होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—मंगल के साथ चन्द्रमा **'महालक्ष्मी योग'** बनाएगा। लग्नेश के लग्न को देखने से जातक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। अल्प प्रयास का बहुलाभ होगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य विवाह से धन दिलाएगा। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी। जातक का भाग्योदय तीन किश्तों में होगा। प्रथम 28वें वर्ष में, दूसरा विवाह के बाद, तीसरा प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को अत्यधिक पराक्रमी बनाएगा। जातक पत्नी व गुप्त कार्यों में अधिक धन खर्च करेगा।
4. **मंगल+गुरु**—यदि मंगल के साथ गुरु हो तो **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि होगी। गुरु का नीचत्व समाप्त होकर वह शुभ फलदाई होकर जातक के भाग्य निर्माण में सकारात्मक भूमिका निभाएगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र जातक को माता की सम्पत्ति दिलाएगा। सभी भौतिक सुख व ऐश्वर्य देगा। व्यापार-ठेकेदारी में लाभ होगा। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।
6. **मंगल+शनि**—यदि मंगल के साथ शनि हो तो **'किम्बहुना योग'** बन जाता है। शनि स्वगृही और मंगल उच्च का, इसमें अधिक और क्या? जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद हो जाता है। इसका ससुराल धनवान होता है. यदि ऐसी ग्रह स्थिति में चन्द्रमा भी इनके साथ हो जातक स्वयं लखपति होता है तथा विवाह के बाद करोड़पति हो जाता है क्योंकि चन्द्र+10 मंगल में **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होती है।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु विवाह में समस्या पैदा करेगा। जातक अन्य स्त्रियों से भी शारीरिक सम्पर्क रखेगा।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु जातक में धूर्तता के लक्षण उत्पन्न करेगा। जातक विपरीत लिंगियों के प्रति सहज ही आकर्षित होगा।

सप्तम भाव के मंगल का उपचार—

1. त्रिरत्न त्रिगुणात्मक लॉकेट पहनें।
2. भौम मंगल स्तोत्र का प्रयोग करें।
3. विलम्ब विवाह या अविवाह की स्थिति में घट विवाह का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में मंगल अष्टम भाव में
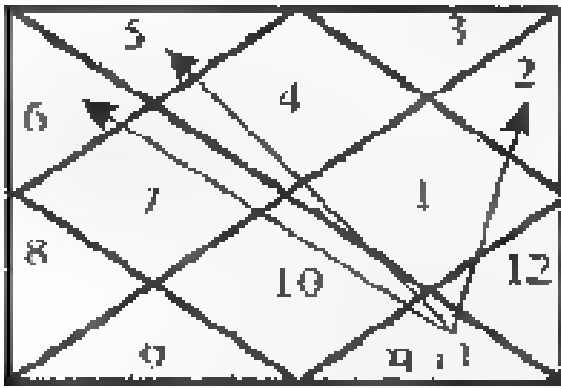
कर्क लग्न मे अष्टम भाव मे स्थित कुम्भ का मगल शत्रुक्षेत्री है। यह मगल लाभ स्थान धन स्थान एव पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा यह मगल अकस्मात मृत्युयोग, भगन्दर, मस्सा एव मूत्राशय क रोग को देगा। जातक की वाणी अप्रिय होगी, दात व मुख के रोग सम्भव। कुटुम्ब मे तकरार होगी

निशानी–बड़े भाई व भागीदारों से नहीं निभेगी। जातक स्त्रैण व डरपोक होगा। 'फासी का फन्दा' 4 8, 12 वर्ष आयु अपितु 15 वर्ष की आयु के बाद दूसरा भाई होगा।

मागलिक कुण्डली–मगल यहा अष्टम स्थान मे होने से कुण्डली मागलिक हो गई है। ऐसे जातक के जीवनसाथी की कुण्डली भी मागलिक होनी चाहिए, तभी वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।

विद्याभंग योग–पचमेश आठवें स्थान में जाने से यह योग बना। ऐसे जातक की विद्या में बाधा जरूर आती है।

पुत्रहीन योग–पचमेश अष्टम में हो तथा पचम स्थान पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो यह योग बनता है। ऐसे जातक के पुत्र सन्तति नहीं होती।

दशमेश मंगल दशम भाव से ग्यारहवें एव लग्न से आठवें होने के कारण नौकरी धधे व्यापार मे मिश्रित फल देगा।

दशाफल–मगल की दशा अच्छी नहीं जाएगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द** -मंगल के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' कराएगा जातक को प्रथम प्रयास मे सफलता नही मिलेगी। जातक नकारात्मक विचारो से प्रभावित होगा।
2. **मंगल+सूर्य** -मगल के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' की सृष्टि करेगा। जातक को आर्थिक संघर्ष का सामना करना पड़ेगा। जातक की सरकारी नौकरी छूट जाएगी।
3. **मंगल+बुध**–मगल के साथ बुध जहा '**पराक्रम भंग योग**' बनाता है वही व्ययेश अष्टम मे जाने से '**विपरीत राजयोग**' भी बनाता है जातक धनी होगा। वाहन सुख तथा ऐश्वर्य से परिपूर्ण जीवन होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मगल के साथ गुरु जहा '**भाग्यहीन योग**' बनाता है, वही षष्टेश के अष्टम मे जाने से '**विपरीत राजयोग**' भी बनेगा जातक धनवान, ऐश्वर्यवान होगा।
5. **मगल+शुक्र** मंगल के साथ शुक्र जातक की कुण्डली में '**लाभभंग योग**', '**सुखहीन योग**' भी बनाता है। ऐसा जातक अय्याश होता है। उसे वाहन दुर्घटना का भय रहता है
6. **मगल+शनि**–मगल के साथ शनि '**विवाहभग योग**' बनाता है परन्तु अष्टमेश के अष्टम

भाव में स्वगृही होने से विपरीत राजयोग बनेगा, जातक महाधनी होगा वाहन सुख पूर्ण होगा

7 **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जीवनसाथी से वियोग कराता है। अचानक दुर्घटना का भय भी देता है।

8 **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु शल्य चिकित्सा कराता है। जातक के दाएं पांव में चोट भी पहुंचाता है।

अष्टम भाव के मंगल का उपचार–

1 मीठी रोटी या लड्डू कुत्तों को खिलाएं

2 भौम ग्रह शान्ति का विधान करें।

3 स्त्री जातक मंगलागौरी का व्रत करें।

4 अविवाह, विलम्ब विवाह एवं जीवनसाथी से बिछोह की स्थिति में 'घट विवाह' का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में मंगल नवम भाव में
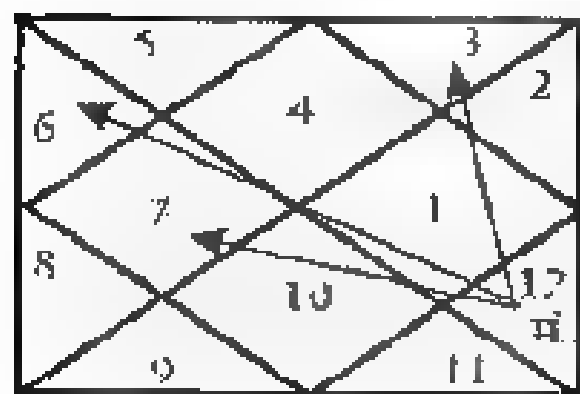
कर्क लग्न मे नवम भाव में स्थित मीन राशि का मंगल मित्रक्षेत्री होकर स्वगृहाभिलाषी होगा।

यह मंगल जातक को महत्वाकांक्षी बनाएगा। जातक का पिता प्रतिष्ठित व धार्मिक होगा जातक को पिता की सम्पत्ति वारिस में मिलेगी। जातक के भाई बहनों से सम्बन्ध अच्छे रहेंगे।

उत्तम सन्तति योग–पंचमेश मंगल पंचम भाव में कोण (पांचवें स्थान) में होने से सन्तान उत्तम एवं जातक की मान-प्रतिष्ठा बढ़ाने वाली होगी।

दशमेश मंगल कोण मे होने से धंधा नौकरी व व्यापार में आवक उत्तम होगी।

मंगल की द्वादश भाव पर दृष्टि शयन सुख में बाधक है। जातक को मानसिक चिन्ता अधिक रहेगी। नींद कम आएगी।

मंगल की दृष्टि चौथे भाव पर होने से जातक की माता बीमार रहेगी, अथवा मां का सुख, मकान सुख उत्तम, वाहन सुख उत्तम होगा

निशानी–'तख्तशाही का खजाना' जितने बाबे भाई, उतने ही भाई।

दशाफल–मंगल की दशा उत्तम फल देगी

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा '**लक्ष्मीयोग**' बनाएगा। जातक को माता पिता का सुख सम्पत्ति मिलेगी

2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को धनवान बनाएगा। उसे सरकार से, भूमि से लाभ होगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को महापराक्रमी बनाएगा पर रिश्तेदारों से जातक की कम पटेगी।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु स्वगृही जातक को महान भाग्यशाली बनाएगा। जातक को संतति से लाभ, विद्या से विशेष लाभ मिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र उच्च का जातक को सम्पूर्ण भौतिक ऐश्वर्य, उत्तम वाहन सुख एवं व्यापार मे लाभ देगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि ससुराल से लाभ दिलाएगा पर जीवनसाथी से कम पटेगी।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु अचानक भाग्य में वृद्धि कराएगा। जातक युद्ध प्रिय होगा।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु जातक को तेजस्वी बनाएगा। जातक अपने शत्रुओं को हराने में पूर्ण सक्षम होगा।

नवम भाव के मंगल का उपचार—

1. त्रिरत्न, त्रिगुणात्मक लॉकेट पहनें।
2. सर्वत्र सफलता के लिए नारंगी रंग का सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।

कर्क लग्न में मंगल दशम भाव में
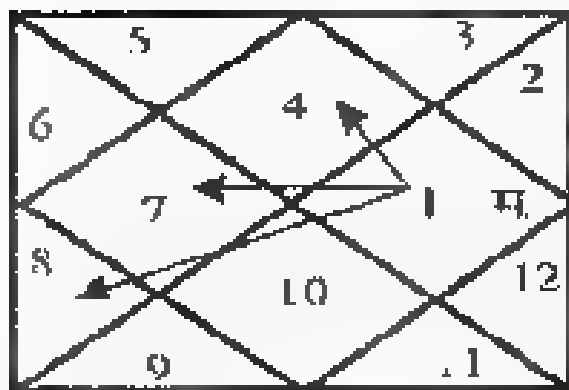
कर्क लग्न में मंगल परम राजयोग कारक होकर दशम भाव में स्वगृही होने से क्रमशः '**कुलदीपक योग**' एवं '**रुचक योग**' की सृष्टि करता है।

ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रौशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है। **रुचक योग के कारण** जातक बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होता है। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला, राज दरबार में ऊंचा पद पाने वाला माता व अपनी सन्तान से सुखी, समाज का सेवक होता है।

निशानी—ऐसे जातक के जन्म से ही घर-परिवार में सब ओर से तरक्की होनी शुरू हो जाती है।

विशेष—दसवें घर का स्वामी होकर मंगल दशमस्थ होने से '**पद्म सिंहासन योग**' भी बनाता है। ऐसा जातक मध्यम (निम्न) परिवार में जन्म लेकर भी कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ धीरे-धीरे उच्च-पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। मंगल पंचम भाव से छठे होने से सन्तान से विचार नहीं मिलेंगे। तृतीय भाव में मंगल आठवें होने के कारण भाइयों में विचार कम मिलेंगे।

मंगल की दृष्टि प्रथम (लग्न) स्थान पर होने के कारण जातक उग्र स्वभाव का एवं दम्भी होगा। जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। सिर व मुंह पर चोट के निशान होंगे। 'फलदीपिका' अ. 19/ पृ.3/4 के अनुसार ऐसा जातक धनी होगा। मंगल की दशा भाग्योदय कराएगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मंगल के साथ चन्द्रमा माता पिता की सम्पत्ति का लाभ देगा। **'महालक्ष्मी योग'** की भी सृष्टि करेगा।
2. **मंगल+सूर्य**–यदि यहा सूर्य हो तो **'किम्बहुना योग'** बनेगा अर्थात् सूर्य उच्च का एवं स्वगृही हो तो इससे अधिक और क्या? ऐसा जातक राजा के समान उच्च पद को भोगता है।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को महान् पराक्रमी बनाएगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मगल के साथ गुरु होने से जातक परम भाग्यशाली होगा तथा कुल का नाम रोशन करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन का सुख, माता का सुख एवं पत्नी का भरपूर सुख देगा। व्यापार में भी भरपूर लाभ देगा।
6. **मंगल+शनि**–यदि यहां मंगल के साथ शनि हो तो **'नीचभंग राजयोग'** की सृष्टि होगी। शनि का नीचत्व समाप्त होकर वह शुभ फल दाई हो जाएगा। शनि पत्नी पक्ष एवं आयु पक्ष में सकारात्मक भूमिका निभाएगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा.
7. **मंगल+राहु**–मगल के साथ राहु जातक को क्रोधी एवं युद्ध प्रिय व्यक्ति बनाएगा पर जातक सदैव विजयी रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु जातक को अदम्य साहसी बनाएगा। जातक शत्रुओं के लिए आतंक का पर्याय होगा।

दशम भाव के मंगल का उपचार–

1. त्रिरत्न, त्रिगुणात्मक लॉकेट पहनें।
2. नारंगी रंग का सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।

कर्क लग्न में मंगल एकादश भाव में

5 3 2 मं 4 6 7 1 8 12 10 9 11
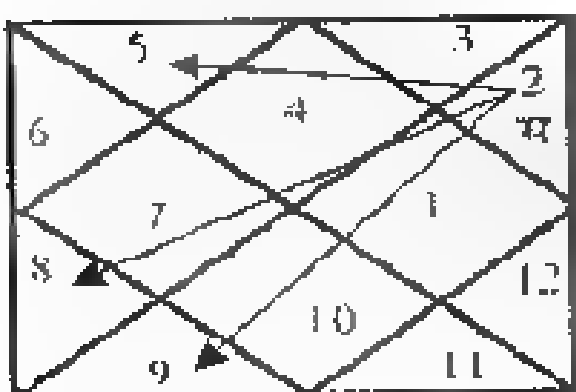
कर्क लग्न में मगल एकादश भाव में वृष राशि का शत्रुक्षेत्री होकर, द्वितीय स्थान, पंचम स्थान एवं षष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। यह मंगल धंधे व्यापार व नौकरी में उत्तम लाभ देगा। जातक को अच्छे मित्र मिलेंगे।

निशानी–जातक की प्रथम सन्तति पुत्र होना चाहिए 'फकीरी भेष' धन दौलत का घमण्ड नही।

मगल पचमेश होकर पंचम भाव से सातवे होकर अपने घर (पंचम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालने से सन्तान सुख उत्तम देगा। सन्तान के प्रति जातक का व्यवहार कड़क (अनुशासन प्रिय) होगा।

दशमेश मगल दशम भाव में दूसरे स्थान पर स्थित होने से जीवन में जातक की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। जातक का मातृपक्ष सबल होगा।

मंगल की दृष्टि द्वितीय भाव पर होने के कारण दाई आंख की दृष्टि कमजोर होगी। जातक की वाणी अप्रिय होगी जिससे उसके कुटुम्बीजन भी उसके अन्तर्विरोधी रहेंगे। भाइयों के साथ जातक के सम्बन्ध ठीक रहेंगे।

छठ भाव पर मगल की दृष्टि शत्रुओं पर विजय दिलाएगी।

दशाफल–मंगल की दशा उत्तम फल देगी।

मगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चन्द्र**–मगल के साथ चन्द्रमा '**महालक्ष्मी योग**' बनाएगा। जातक महाधनी होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को धनी बनाएगा। विद्या योग से, स्वपराक्रम से जातक खूब धन कमाएगा।
3. **मगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक का पराक्रम बढ़ाएगा। जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जातक को परम भाग्यशाली बनाएगा। जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र के बाद होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मगल के साथ शुक्र स्वगृही जातक को सुन्दर पत्नी का सुख, उत्तम वाहन, उत्तम व्यापार का सुख दिलाएगा।
6. **मंगल+शनि**–मगल के साथ शनि जीवन साथी के साथ मनोमालिन्यता परन्तु जीवनसाथी का पूर्ण सुख देगा
7. **मंगल+राहु**–मगल के साथ राहु व्यापार में अचानक हानि दिला सकता है।
8. **मगल+केतु**–मगल के साथ केतु व्यापार को उन्नति के शिखर पर पहुंचा सकता है

एकादश भाव के मंगल का उपचार–

1. त्रिरत्न, त्रिगुणात्मक लॉकेट पहनें।
2. नारगी रग का सुगन्धित रुमाल जेब मे रखें।

कर्क लग्न में मंगल द्वादश भाव मे

कर्क लग्न में मंगल द्वादश भाव में मिथुन राशि का शत्रुक्षेत्री होकर तृतीय स्थान, छठे स्थान व सातवे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक दुर्व्यसनो में रुपया खर्च करेगा। रुपया
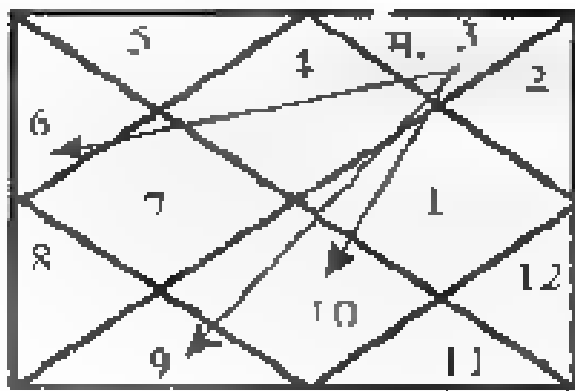
हाथ में आएगा खर्च होता चला जाएगा। पैसा पास में नहीं टिकेगा। जातक का चरित्र सन्देहास्पद रहेगा

निशानी—प्राण जाएं पर वचन न जाए जन्म से पहले उसका बड़ा भाई जरूर होगा। पर बड़ा भाई जीवित नहीं रहेगा।

मांगलिक कुण्डली—मंगल बारहवें स्थान में होने से कुण्डली मांगलिक हो गई है। ऐसे जातक के जीवन साथी की कुण्डली भी मांगलिक होने से दाम्पत्य जीवन सुखी रहता है। अन्यथा जीवन साथी से विवाद रहेगा जीवन साथी की मृत्यु पहले होगी।

विद्याभंग योग—पंचमेश मंगल बारहवें होने से यह योग बना ऐसे जातक के विद्याध्ययन में रुकावट अवश्य आती है

पुत्रहीन योग—यदि पंचम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो, तो यह योग बनता है। जातक के पुत्र सन्तति नहीं होती। पंचम भाव से आठवें एवं पंचमेश बनकर बारहवें होने से सन्तान पक्ष सुख में कुछ न कुछ न्यूनता रहेगी।

दशमेश मंगल बारहवें एवं दशम भाव से तृतीय स्थान पर मंगल होने से जातक को नौकरी धंधे में आशातीत सफलता नहीं मिलेगी। छोटे भाइयों से सम्बन्ध अच्छे (मधुर) न रहेंगे।

मंगल की दृष्टि छठे भाव पर होने के कारण जातक के गुप्त एवं प्रकट शत्रु बहुत होंगे पर जातक शत्रुओं को सबक सिखाने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक को मूत्राशय के रोग अकस्मात् हो सकते हैं।

दशाफल—मंगल की दशा खराब जाएगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चन्द्र**—मंगल के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। जातक को किसी भी कार्य में प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाएगा। जातक की सरकारी नौकरी छूट जाएगी नेत्रपीड़ा भी होगी।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जहां '**पराक्रम भंग योग**' बनाएगा वहीं जातक को '**विपरीत राजयोग**' के कारण परम धनी भी बनाएगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु जहां '**भाग्यभंग योग**' बनाता है वहीं '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक के पास सम्पूर्ण एश्वर्य होगा
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र '**लाभभंग योग**' '**सुखहीन योग**' की सृष्टि करता है। जातक विलासी होगा एवं व्यर्थ में रुपया खर्च करता रहेगा।

6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि '**विवाहभंग योग**' बनाता है, साथ में विपरीत राजयोग के कारण जातक को महाधनी भी बनाएगा
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु व्यर्थ की यात्रा कराएगा। बुरे सपने आयेंगे, दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु धार्मिक यात्राएं (Pleasure trip) कराएगा। ऐसा जातक अदम्य साहसी होगा, सपने प्रायः सच होंगे।

द्वादश भाव के मंगल का उपचार—

1. दाम्पत्य सुख कारक मंगल मंत्र का पूजन करें।
2. मंगल चण्डिका स्तोत्र का पाठ करें।
3. स्त्री जातक मंगलागौरी का व्रत करें।
4. अविवाह एवं विलम्ब विवाह की स्थिति में घट विवाह करें।

❑❑❑

कर्क लग्न में बुध की स्थिति

कर्क लग्न में बुध प्रथम भाव में
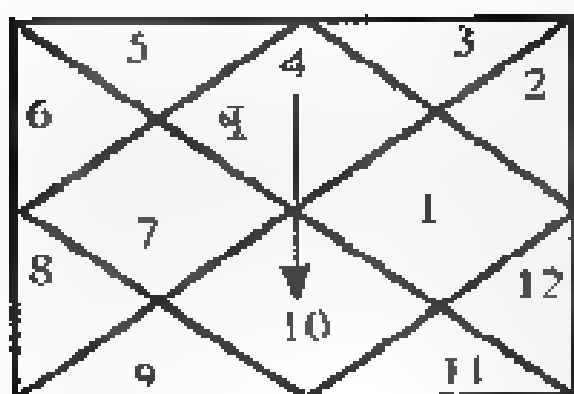
तीसरे व बारहवें घर का स्वामी होने से कर्क लग्न के लिए बुध परम पापी हो गया है लग्न में यह शत्रुक्षेत्री होते हुए भी '**कुलदीपक योग**' बना रहा है। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला बुद्धिमान, विद्वान, उच्चपदाधिकारी, ज्योतिष एवं अध्यात्म विद्या का ज्ञाता होता है।

विद्यावान विवाहादि बहुश्रुतवान्

इसके स्वभाव में उत्साह के साथ कुछ झगडालू मनोवृत्ति होती है। इनका जन्म प्रायः दिन के समय सुबह जल्दी का होता है। आयु के 27वें वर्ष में यह जातक तीर्थाटन (देशाटन) करता है।

कर्कस्थ बुध लग्न में होने से जातक शरारती दिमाग का होता है। इनका शरीर प्रायः कृश, ऊंचा तथा आखें छोटी एवं रंग गोरा होता है. प्रायः इनका पेट खराब होता है। ससुराल व संतान पक्ष से ये प्रायः दुःखी व चिन्तित रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति कुछ जल्दबाजी की रहती है। लेखनी व कल्पना शक्ति से इनका गहरा सम्बन्ध होता है. दृढ़ निश्चय की कमी एवं विचारों को बदलते रहना, इनकी मानसिक कमजोरी कही जा सकती है। जातक कुछ खर्चीले स्वभाव का होता है।

बुध लग्न में विदेश यात्रा द्वारा धन प्राप्ति का अवसर देता है।

दशाफल—बुध की दशा उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—बुध के साथ धनेश सूर्य उत्तम श्रेणी के '**बुधादित्य योग**' की सृष्टि करता है। ऐसा जातक धनवान एवं परम प्रतापी व्यक्ति होगा
2. **बुध+चन्द्र**—बुध के साथ चन्द्रमा स्वगृही होने से '**यामिनीनाथ योग**' बनाएगा ऐसा जातक धनी सुखी एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मगल नीच का होते हुए भी परम योगकारक होने से जातक का सरकार मे दबदबा रहेगा। जातक उत्तम भूमि एवं वाहन का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ उच्च का गुरु **'हंस योग'** बनाएगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी, वैभवशाली एवं साधन सम्पन्न होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होगे जातक व्यापार के द्वारा प्रचुर धन कमाएगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश शनि होने से जातक का गृहस्थ जीवन थोड़ा अशान्त रहेगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत रहेंगे जिससे मानसिक तनाव रहेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को अस्थिर एवं चिड़चिड़े स्वभाव का बनाएगा। जातक अपनी बात से मुकरने में द्वेष नही करेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को थोड़ा झगड़ालू स्वभाव का बनाएगा।

प्रथम भाव के बुध का उपचार–

1. शुभ काम (धर्म कर्म) करें, मासाहार न करें।
2. गणपति की उपासना करे।

कर्क लग्न में बुध द्वितीय भाव में
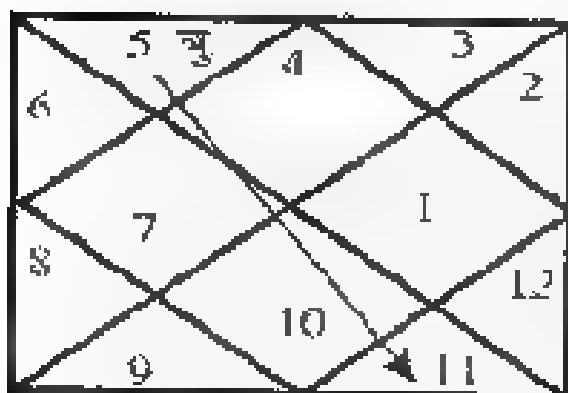
कर्क लग्न में बुध द्वितीयस्थ सिह राशि में होगा। यह तृतीय भाव से बारहवें स्थान पर बैठकर अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा व्यक्ति सबको तारने वाला, हाजिर जबाब होता है। तृतीय भाव से बारहवें होने के कारण एवं तृतीय भाव के कारक ग्रह मंगल का शत्रु होने के कारण बुध तृतीय भाव का शुभ फल नहीं देगा। जातक के छोटे भाई बहनों से सम्बन्ध अच्छे नहीं रहेंगे।

बुध यहां खर्चेश भी है। खर्चेश धन स्थान में होने से जातक को धन सम्बन्धी आर्थिक नुकसान भी होंगे।

निशानी–जातक की वक्तृत्व शक्ति उत्तम होगी। जातक सद्गुणी, वाचाल, विद्वान एवं धनी भी होगा।

दशाफल–बुध की दशा शुभ फल देगी पर आर्थिक नुकसान भी देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य** बुध के साथ यदि सूर्य हो तो **'बुधादित्य योग'** बनेगा परन्तु बलवान धनेश की तृतीयेश से युति होने के कारण **'मित्रमूलधन योग'** बनेगा। जातक मित्रो के माध्यम से खूब रुपया धन कमाएगा भाइयो से कुटुम्बीजनों से भी उसे लाभ होगा

2. **बुध+चन्द्र**—बुध के साथ चन्द्रमा होने से जातक स्वपराक्रम में खूब धन कमाएगा पर धन की बरकत नहीं होगी
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ पंचमेश मंगल धन स्थान में होने से जातक का पुत्र महान पराक्रमी होगा। पुत्र जन्म के बाद जातक धनी होगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक भाग्यशाली होगा। जातक की वाणी गम्भीर एवं उपदेशात्मक होगी। जिसका प्रभाव पड़ेगा
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र होने से जातक महाधनी होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि धन स्थान में शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा जातक का जीवनसाथी लड़ाकू स्वभाव का होगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु धन के घड़े में छेद का होना बतलाता है। ऐसे जातक के पास धन का संग्रह बड़ी कठिनता से होगा।

द्वितीय भाव के बुध का उपचार—

1. तोता, भेड़, बकरी न पालना।
2. दूध या चावल मंदिर में दान देना।
3. हरा रंग, तुलसी, माला, ताबीज, भभूति, साधुओं की तस्वीरें आदि घर में न रखना
4. गणपति की नित्य उपासना करना।

कर्क लग्न मे बुध तृतीय भाव में
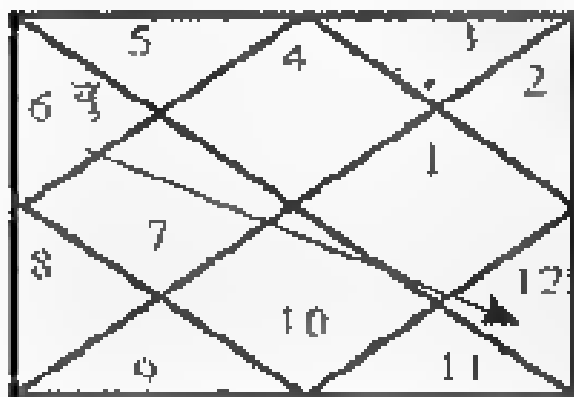
कर्क लग्न मे तृतीयस्थ बुध उच्च का होगा। जहां बैठकर भाग्यभवन को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा बुध तृतीय भाव के शुभ फल देगा। जातक की उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा होगी समाज मे एवं राजदरबार में जातक को उच्च मान मिलेगा कीर्ति अखण्ड होगी। उच्च के बुध की दृष्टि नवम भाव पर होने से जातक का पिता बहुप्रतिष्ठित एवं धनवान होगा जातक के पिता के साथ अच्छे सम्बन्ध होंगे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

भावाधिपे बलयुते दीर्घायुः धैर्यवान्!

बुद्धि एवं विद्या का कारक होने से जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। उसे उच्च स्तर की शैक्षणिक उपाधि मिलेगी परन्तु व्ययेश होने से विद्या में विघ्न एवं रुकावट अवश्य आएगी जातक लम्बी आयु वाला होगा।

व्ययेश उच्च का होने से जातक धर्म मार्ग, परोपकार एवं सामाजिक कार्यों में रुपया खर्च करेगा। लेखक एवं व्यंग्यकार होगा। मध्यायु के बाद जातक सन्यासी भी हो सकता है उसे संसार से वैराग्य हो जाएगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा एवं जातक जनसम्पर्क, मित्र भागीदार एवं राजपुरुषों द्वारा धन अर्जित करेगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ यहां चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगी। जातक पराक्रमी होगा पर मित्रों एवं परिजनों में विवाद रहेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ पंचमेश+दशमेश मंगल तृतीय स्थान में होने से जातक महान पराक्रमी होगा। उसे भाई बहनों का सुख प्राप्त होगा व समाज में उसकी कीर्ति-प्रतिष्ठा रहेगी।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक भाग्यशाली होगा। उसे बड़े भाई का सुख मिलेगा जातक धार्मिक एवं समाजसेवी लोगों के सम्पर्क में ज्यादा रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक का दो–तीन मंजिला उत्तम मकान होगा। जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे। जातक के पास चार पहियों वाली गाड़ी होगी तथा वाहन सुख उत्तम होगा। वाहन एक से अधिक होंगे।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति तृतीय स्थान में होने से जातक के पराक्रम को विवादास्पद बनाती है। जातक के बारे शत्रु अफवाह उड़ाते रहेंगे।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक की कीर्ति को मलिन करेगा मित्र व परिजनों के मध्य मनोमालिन्यता रहेगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु कीर्तिदायक है। जातक का अपने समाज व जाति में बड़ा भारी नाम होगा।

तृतीय भाव के बुध का उपचार

1. दुर्गा पूजन कर कन्याओं का आशीर्वाद लेना।
2. तोते को चूरी देना या मिर्ची खिलाना।
3. रात को मूग साबित भिगोकर सुबह पक्षियों को डालना
4. दम की दवाई मुफ्त बांटना।
5. गणपति की आराधना करना।
6. द्वार पर हरे रंग के वास्तुदोष नाशक गणपति लगाना.

कर्क लग्न में बुध चतुर्थ भाव में

कर्क लग्न में चतुर्थस्थ बुध तुला राशि का होकर दशम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेगा बुध की यह स्थिति **'कुलदीपक योग'** बनाती है ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

विशालाक्षः पितृभ्रातृसौख्ययुतः।
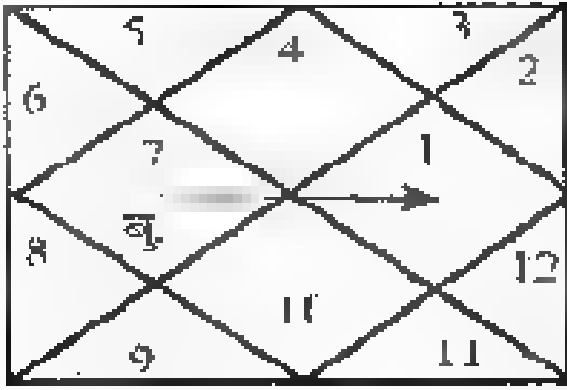
तृतीयेश बुध तीसरे भाव से दूसरे स्थान पर होने से भाई-बन्धु मित्र उत्तम होंगे पर उनके लिए जातक को खर्च करना पडेगा जातक बडी-बडी आंखों वाला एवं माता-पिता के सुख से युक्त होता है।

व्ययेश चौथे भाव में होने से चौथे भाव के फल बिगाडेगा। विद्याध्ययन में रुकावट आएगी। जातक को अपनी पसन्द का धन्धा नहीं मिलेगा। मकान पर खूब रुपया खर्च होगा। वाहन पर रुपया खर्च होगा। माता से सम्बन्ध ठीक नहीं होंगे।

दशाफल–बुध की दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–सूर्य यहां नीच का होगा पर धनेश पराक्रमेश ही युति '**बुधादित्य योग**' के साथ यहां शुभ फलदाई है। जातक धनवान एवं पराक्रमी होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–लग्नेश चन्द्र की पराक्रमेश बुध के साथ युति होने से भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ेगा। जातक की माता बीमार रहेगी।
3. **बुध+मंगल**–पंचमेश+दशमेश मंगल यहां पर कुण्डली को मांगलिक बनाएगा। जातक विद्यावान् एवं भाग्यशाली होगा।
4. **बुध+गुरु**–तृतीयेश बुध की भाग्येश गुरु के साथ युति शुभ फलदायक है। जातक के पास उत्तम वाहन एवं भवन का सुख होगा।
5. **बुध+शुक्र**–शुक्र यहां स्वगृही होने से '**मालव्य योग**' बनेगा. ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। उसके पास अनेक वाहन होंगे एवं मकान भी एक से अधिक होंगे।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि उच्च का होने से '**शशयोग**' बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। जातक के पास पुराने एवं आधुनिक दोनों प्रकार के मकान होंगे वाहन भी एक से अधिक होंगे।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक को माता, मामा व ननिहाल का सुख कमजोर होगा। जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु होने से जातक को ननिहाल का सुख नहीं मिलेगा। उच्च वाहन जातक के लिए शुभ नहीं होगा
9. यदि चन्द्रमा दूषित हो तो जातक को माता सुख नहीं मिलेगा। क्योंकि बुध मातृकारक चन्द्रमा का शत्रु है।
10. राहु-केतु-शनि युते बाह्यारिष्टवान्,
    क्षेत्र सुख वर्जितः बन्धु कुलद्वेषी कपटी

यदि बुध के साथ राहु, केतु या शनि हो तो जातक कुलद्वेषी एवं कपट आचरण वाला होता है।

चतुर्थ भाव के बुध का उपचार–

1. तोता, बकरी को पालना न करना।
2. 101 पलाश (ढाक) के पत्ते दूध से धोकर जल में प्रवाहित करें
3. गणपति को नित्य अथवा प्रति बुधवार दूर्वा चढ़ाए।
4. प्रवेश द्वार पर वास्तुदोषनाक गणपति लगाए।

कर्क लग्न में बुध पंचम भाव में
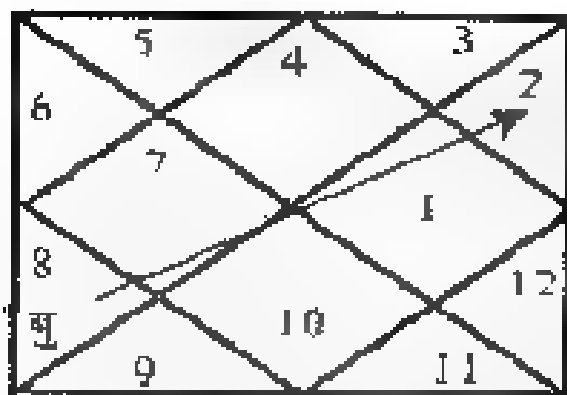
कर्क लग्न में बुध पंचम भाव मे वृश्चिक राशि का होकर शत्रुक्षेत्री होगा एवं एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक शिक्षित, बुद्धिमान, मुकाबले की परीक्षा में सफलता पाने वाला, उत्तम सलाहकार (मंत्री), ज्योतिष, कर्मकाण्ड, चिकित्सा विज्ञान व कम्प्यूटर विज्ञान का जानकार होता है।

तृतीयेश बुध पंचम भाव मे होने से छोटे भाई बहनो का उत्तम सुख देगा।

व्ययेश बुध पंचमस्थ होने से संतान देरी से होगी सन्तान के रख रखाव हेतु जातक को खूब रुपया खर्च करना होगा.

लाभ स्थान पर दृष्टि होने से जातक को मित्रों से लाभ होता है। व्यापार से लाभ है

निशानी–जातक की प्रथम संतान कन्या होगी सम्भवतः दो कन्या होगी पर मंगल की स्थिति पर विचार करके ही सन्तान सम्बन्धी फलादेश हांगे।

दशाफल–बुध की दशा मिश्रित फल देगी। 'फलदीपिका' अ. 19/पृ. 374 के अनुसार कर्क लग्न मे पंचमस्थ बुध की दशा योगकारक होकर शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। विद्या के बल पर जातक आगे बढ़ेगा प्रथम पुत्र संतति उत्पन्न होने के बाद जातक के भाग्य का दरवाजा खुलेगा
2. **बुध+चन्द्र**–पराक्रमेश बुध के साथ लग्नेश चन्द्रमा यहा नीच का होगा। जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी उसे प्रथम संतति ऑपरेशन के द्वारा प्राप्त होगी।
3. **बुध+मंगल**–पराक्रमेश बुध के साथ दशमेश मंगल स्वगृही होगी जातक को प्रथम कन्या के बाद पुत्र की प्राप्ति होगी। यदि मंगल की दशा चल रही हो तो प्रथम पुत्र होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ भाग्येश गुरु होने से पुत्र संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक उच्च विद्या प्राप्त करेगा एवं प्रथम पुत्र (संतति) के बाद विशेष भाग्योदय होगा।

5. **बुध+शुक्र**–पराक्रमेश बुध के साथ धनेश+लाभेश शुक्र पंचम भाव में होने से प्रथम संतति कन्या होगी एवं जातक के जीवन में कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक कला में रुचि रखेगा एवं विद्यावान होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि का पंचम स्थान में होना ज्यादा शुभ नहीं है। विद्या में रुकावट आएगी। जातक आमलप्रेमी होगा। संतान से अनबन रहेगी। पुत्र संतति कष्ट से हाथ लगेगी।
7. **बुध+राहु**–पुत्र संतति में रुकावट, विद्या प्राप्ति में रुकावट संभव है
8. **बुध+केतु**–विद्या प्राप्ति में संघर्ष की स्थिति रहेगी। प्रथम संतति ऑपरेशन द्वारा होगी या गर्भपात संभव है।
9. यहां यदि गुरु दूषित हो तो जातक को सन्तान सम्बन्धी सुख नहीं मिलेगा।

पंचम भाव के बुध का उपचार–

1. चांदी का छल्ला बाएं हाथ में पहनना चाहिए।
2. गाय की सेवा करे या नित्य चारा खिलाएं।
3. गणपति की उपासना करें।
4. पन्ना रत्न अभिमंत्रित कर धारण करें।

कर्क लग्न में बुध षष्टम भाव में

5	4	3	2
6	7	1	12
8	10	11	
9 बु			
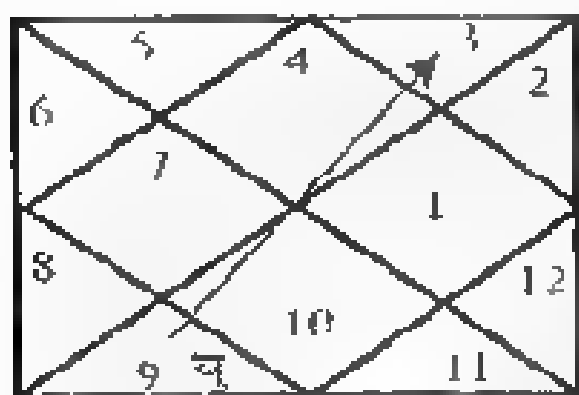
कर्क लग्न में बुध छठे भाव में धनु राशि का तृतीय भाव से चौथे एवं बारहवें भाव से सातवें होकर अपने ही घर (द्वादश भाव) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

तृतीय भाव से छठे होने से तृतीय भाव का शुभ फल मिलेगा जातक का भाई बहनों के साथ सम्बन्ध ठीक होगा। मामा से सम्बन्ध ठीक होंगे।

व्ययेश छठे भाव में जाने से जातक को चर्मरोग मूत्राशय के रोग होंगे व पाचन शक्ति कमजोर होगी।

तृतीयेश एवं व्ययेश होकर बारहवें स्थान पर दृष्टि होने के कारण जातक परोपकार एवं धर्म ध्यान पर रुपया खर्च करेगा।

दशाफल–बुध की दशा शुभ फल देगी।

कीर्तिभंग योग–तृतीयेश छठे होने से यह योग बना जातक का पराक्रम भंग होगा तथा समाज में उसकी बदनामी होगी किसी भी काम में यश नहीं मिलेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–धनेश छठे जाने से 'धनहीन योग' बनता है यहां 'बुधादित्य योग' ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक मध्यमवर्गीय होगा धन की कमी से कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।

2. **बुध+चन्द्र**–चन्द्रमा के छठे जाने से '**लग्नभंग योग**' बनेगा। बुध+चन्द्र की युति यहां पर जातक के अंतर्विरोध को दर्शाती है। जातक के शत्रु बहुत होंगे। उसे परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ दशमेश मंगल होने से '**राजभंग योग**' एवं '**विद्याभंग योग**' बनेगा। ऐसे जातक को विद्या में रुकावट एवं सरकारी नौकरी में रुकावट महसूस होगी।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से '**भाग्यभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों की सृष्टि होगी ऐसा जातक धनी होगा। उसके पास वाहन एवं आधुनिक सुख-सुविधा भरपूर होगी
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से '**धनहीन योग**' एवं '**सुखहीन योग**' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को धन एवं भौतिक सुख संसाधनो की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **बुध+शनि**–यहां बुध के साथ शनि '**विलम्ब विवाह योग**' कराता है। परन्तु अष्टमेश के षष्टम में जाने से '**विपरीत राजयोग**' भी बनता है। ऐसा जातक धनी होगा उसके पास वाहन एवं भौतिक सुख सुविधाएं रहेंगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक गुप्त शक्ति से युक्त विशिष्ट पराक्रमी होगा तथा अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
8. **बुध+केतु**–जातक गुप्त षड्यंत्र का शिकार होगा पर बच निकलेगा।
9. **कुजर्क्षे नील कुष्टादि रोगी,**
   शनि राहुयुते केतुयुते वातशूलादि रोगी ज्ञाति शत्रुकलहः

षष्ठम भाव के बुध का उपचार–

1. चांदी की अंगूठी बाये हाथ में पहने।
2. गंगा जल हरी बोतल मे रखकर (शीशे की ढक्कन वाली) खेती की जमीन में बुधवार के दिन गाढ़ें।
3. दोहिती, भानजी व कुंवारी कन्याओं को खुश रखे।
4. साबुत मूंग एवं बुध की वस्तुओं को दान करें।
5. बुध कवच का पाठ करें।
6. हरे रंग का सुगन्धित रुमाल जेब में रखे।

कर्क लग्न मे बुध सप्तम भाव में

कर्क लग्न में सातवें स्थान पर स्थित बुध मकर राशि का मित्रक्षेत्री होकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बुध की यह स्थिति '**कुलदीपक योग**' बनाती है ऐसा जातक अपने परिवार कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।
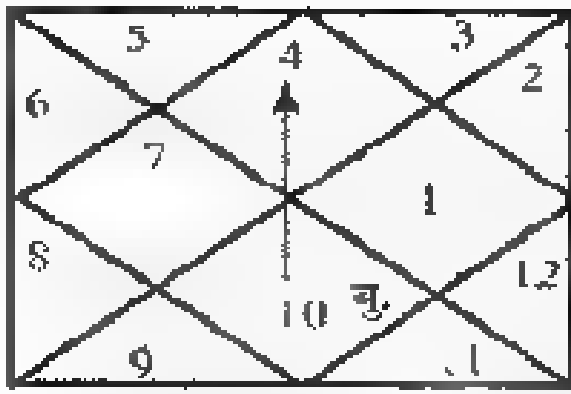
बुध सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी परन्तु शारीरिक शक्ति कमजोर होने से पत्नी असंतुष्ट रहेगी।

धंधा, भागीदारी के लिए बुध की यह स्थिति ठीक है। भागीदार एवं भाई बहनों के साथ जातक के सम्बन्ध मधुर रहेंगे। विदेश व्यापार से लाभ होगा।

निशानी—जातक का चेहरा कोमल एवं स्त्री जैसा होगा। व्ययेश बुध केन्द्र में होने से जातक फालतू के कामों मे रुपया खर्च करेगा एवं उसका वैवाहिक जीवन दु:खी होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—बुध के साथ सूर्य होने से '**बुधादित्य योग**' बनेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक पराक्रमी होगा एवं दानशील मनोवृत्ति वाला होगा।
2. **बुध+चन्द्र**—बुध के साथ यहां चन्द्रमा हो तो '**लग्नाधिपाति योग**' बनेगा बुध+चन्द्र परस्पर शत्रु ग्रह होते हुए भी उनकी यह स्थिति शुभ है। जातक जिस कार्य मे हाथ डालेगा। उसे उसमें सफलता मिलती चली जाएगी।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ दसमेश मंगल उच्च का होने से '**रुचक योग**' बनेगा। जातक राजा के समान महान वैभवशाली एवं ऐश्वर्यशाली होगा जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी। घर का उत्तम वाहन, भवन एवं नौकर-चाकर होंगे।
4. **बुध+गुरु**—यहां गुरु नीच का होगा। फिर भी पराक्रमेश क साथ भाग्येश की युति जातक का भाग्योदय मित्रों की मदद से होगा बताती है
5. **बुध+शुक्र**—पराक्रमेश बुध के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति जातक का पराक्रम विवाह के बाद होना बताती है जातक को तथा बढ़िया ससुराल मिलेगा। पत्नी सुन्दर होगी।
6. **बुध+शनि**—पराक्रमेश बुध के साथ शनि स्वगृही होने से '**शशयोग**' बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। जातक उत्तम भवन, उत्तम वाहन का स्वामी होगा।
7. **बुध+राहु**—यहां राहु की युति व्ययेश बुध के साथ होने से जीवनसाथी की मृत्यु जातक से पहले होगी जातक एकाकी जीवन जीना पसन्द करेगा।
8. **बुध+केतु**—गृहस्थ सुख में न्यूनता का सकेत देता है।

सप्तम भाव के बुध का उपचार—

1. माता लड़की के साथ एक जैसा व्यवहार करना।
2. पन्ने की अगूठी पहने (पन्ने के अभाव म पन्नी पहन सकते हैं।)

3. अधिक थूकना या बार-बार थूकना बंद करें। गुटका न खाएं।
4. पन्ना जड़ा हुआ बुध यंत्र धारण करें।
5. गणपति की उपासना करें

कर्क लग्न में बुध अष्टम भाव में
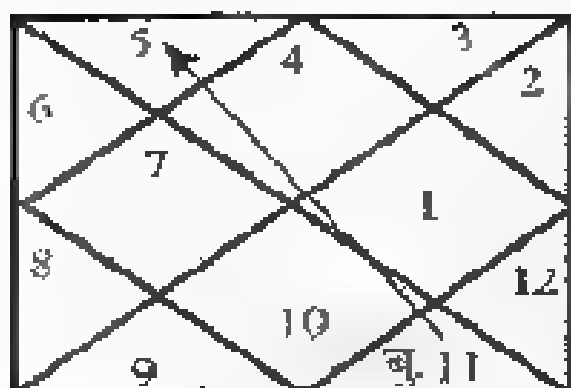
कर्क लग्न में अष्टमस्थ बुध कुम्भ राशि का होकर मित्रक्षेत्री होगा तीसरे भाव से छठे एवं बारहवें भाव से नवें स्थान पर होकर बुध धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बुध की यह दृष्टि जातक की भाषा विनम्र एवं कुटुम्ब का सुख ठीक देगा।

तृतीयेश का आठवें जाना भाइयों के लिए शुभ नहीं। व्ययेश आठवें जाने से खर्च कम होगा तथा जातक को राजयोग ऐसा अच्छा फल मिलेगा।

निशानी—जातक दुर्बल शरीर का स्वामी होगा एवं उसे कोई न कोई बीमारी लगी रहेगी। 35 वर्ष बाद धन व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

दशाफल—बुध की दशा अशुभ रहेगी।

कीर्तिभंग योग—तृतीयेश आठवें जाने से यह योग बना। जातक का पराक्रम भंग होगा। उसे किसी काम में यश नहीं मिलेगा समाज व मित्रों में बदनामी का योग है।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—यहां पर '**बुधादित्य योग**' ज्यादा सार्थक नहीं है क्योंकि धनेश होकर सूर्य का आठवें जाने से '**धनहीन योग**' बनता है। जातक का जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा जातक मध्यम आयु के बाद धनी होगा।
2. **बुध+चन्द्र**—बुध के साथ चन्द्रमा यहां '**लग्नभंग योग**' कराएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता। जातक मानसिक रुप से उद्विग्न रहता है।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल कुण्डली को '**मांगलिक**' बनाएगा। साथ ही '**राजभंग योग**' एवं '**विद्याभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करने में बाधा आती है तथा उसका जीवन संघर्षमय रहता है।
4. **बुध+गुरु**—यहां गुरु होने पर '**भाग्यभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनेंगे। जातक निःसंदेह धनवान होगा।
5. **बुध+शुक्र**—यहां पर शुक्र होने से '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनेगा। ऐसे जातक को व्यापार में नुकसान होगा। पत्नी से थोड़ी कम बनेगी।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि '**विलम्ब विवाह योग**' कराता है। साथ ही '**विपरीत राजयोग**' भी कराता है फलतः ऐसा जातक धनी एवं उच्च वर्गीय व्यापारी होगा।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु गुप्त रोग एवं गुप्त शत्रु से परेशान कराएगा।
8. **बुध+केतु**–जातक के जीवन मे शल्य चिकित्सा योग बनता है।

अष्टम भाव के बुध का उपचार–

1. लड़का का नाम में चादी का छल्ला डालना।
2. हरा अण्डरवियर पहनें।
3. जन्म दिवस के दिन मिट्टी के बर्तन में शहद या चीनी भरकर वीरान जगह में दबाना
4. सीढ़ियों की मरम्मत का ध्यान रखना।
5. गणपति की उपासना करे, प्रत्येक बुधवार को दूर्वा एव लड्डू चढ़ाएं।

कर्क लग्न में बुध नवम भाव में
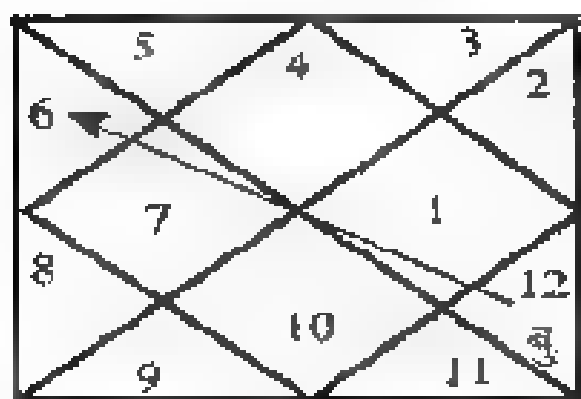
कर्क लग्न में नवम भाव से स्थित बुध नीच (मीन) राशि का होगा। तृतीय भाव से सातवें स्थान पर एव बारहवें भाव से दसवें स्थान पर होने से बुध की यह स्थिति तृतीय भाव का शुभ फल देगी।

जातक अपने भाई बहनों के साथ अच्छा सम्बन्ध रखेगा। व्ययेश बुध नवम में होने से भाग्य में रुकावट होगी एवं जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी सघर्ष करना पड़ेगा।

निशानी–संगीतपाठकः वेदशास्त्र विशारदो बहुप्रजासिद्धिः। भृगुसूत्र 65

ऐसा जातक सगीत, वेदविद्या का विद्वान एव बडे कुटुम्ब परिवार का स्वामी होता है।

दशाफल–बुध की दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ सूर्य '**बुधादित्य योग**' बनाता है धनेश सूर्य की पराक्रमेश के साथ यह युति शुभ है। जातक धनवान एव भाग्यशाली होगा सरकारी क्षेत्र में जातक का वर्चस्व रहेगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चन्द्रमा जातक को परम भाग्यशाली बनाता है। जातक पराक्रमी होगा तथा उसका जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा।
3. **बुध+मगल**–पचमेश+राज्येश मगल भाग्य स्थान मे पराक्रमेश बुध के साथ होने से जातक बड़ा पराक्रमी होगा। सरकार मे उसका वर्चस्व रहेगा। जातक भूमि के क्रय विक्रय से लाभान्वित होगा।
4. **बुध+गुरु**–यदि यहा बुध के साथ गुरु हो तो '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। बुध की नकारात्मक शक्ति कमजोर हो जाएगी ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **बुध+शुक्र**–यदि बुध के साथ शुक्र हो भी '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। बुध की नकारात्मक शक्ति नष्ट हो जाएगी। जातक को व्यापार मे जमकर लाभ होगा तथा उत्तम वाहन मकान व नौकर का सुख मिलेगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि भाग्य स्थान में होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। पत्नी से वैचारिक साम्यता नहीं रह पाएगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को भाग्यशाली बनाता है। ऐसा जातक चतुर व्यापारी होता है तथा बुद्धिबल से खूब धन कमाता है
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को कीर्तिवान होगा। जातक शत्रुजयी होगा

नवम भाव के बुध का उपचार–

1. शरीर पर चांदी पहनें।
2. कौवे को भोजन का हिस्सा देना
3. गाय की सेवा करें, गायों को घास दें।
4. गणपति की उपासन करे। प्रति बुधवार को लड्डू चढ़ाएं।

कर्क लग्न में बुध दशम भाव में
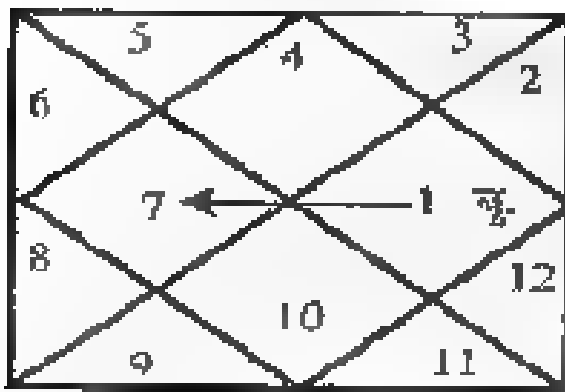
कर्क लग्न में दशमस्थ बुध मेष राशि का होकर शत्रुक्षेत्री होगा। शत्रुक्षेत्री होकर बुध चौथे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक के व्यापार में नुकसान होगा। जमीन में लगाया हुआ रुपया कष्टप्रद साबित होगा।

बुध की यह स्थिति **'कुलदीपक योग'** बनाती है। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

निशानी–जातक व्यापार वर्गीय (प्रिय) होगा।

विशेष–जातक को बहन का सुख उत्तम नहीं मिलेगा। वाहन को लेकर जातक का रुपया फालतू खर्च होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–बुध के साथ यदि यहां सूर्य हो तो जातक की कुण्डली में शक्तिशाली **'बुधादित्य योग'** बनता है।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ लग्नेश चन्द्रमा केन्द्रवर्ती होने से जातक व्यापार प्रिय व व्यवसायी होगा एवं एक से अधिक मकान का स्वामी होगा.
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल स्वगृही होने से **'रुचक योग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। जातक बड़ी भू सम्पत्ति एवं मकान का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से जातक परम सौभाग्यशाली होगा जातक अध्ययन अध्यापन एवं धार्मिक व परोपकार के कार्यों में रुचि लेगा।

5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ सुखेश व लाभेश शुक्र होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक ऐश्वर्यशाली जीवन जीएगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ सप्तमेश-अष्टमेश शनि दशम स्थान में नीच का होगा। ऐसा जातक धनवान होगा। जातक व्यापार से खूब धनार्जन करेगा पर बुद्धि मलीन होगी।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु राजकार्य मे बाधा पहुचाएगा। सरकारी अधिकारी जातक को परेशान करेंगे।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु राजकाज में सफलतादायक है। बुद्धिबल से शत्रु परास्त होंगे।
9. मगल यदि तृतीय स्थान में हो तो बुध के घर मे होगा एवं बुध मगल के घर में होने से परस्पर **परिवर्तन योग** बनेगा। ऐसे मंगल एवं बुध दोनों का प्रभाव सकारात्मक हो जाएगा। दोनों ग्रहों के अधीनस्थ घर तृतीय स्थान, पंचम स्थान, दशम स्थान एवं द्वादश स्थान सुधर जाएंगे।

दशम भाव के बुध का उपचार—

1. जबान का चसका कम करें, मांसाहार व शराब से दूर रहें तो बुध शुभ होगा।
2. बुधवार को गणपति मन्दिर में जाकर दुर्वा लड्डू चढाएं।

कर्क लग्न में बुध एकादश भाव में
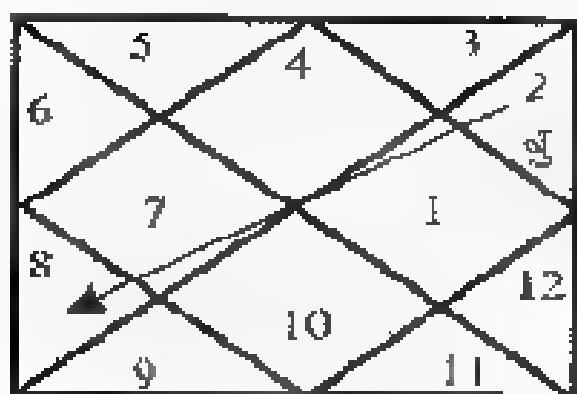
कर्क लग्न में एकादश भाव में स्थित वृष राशि का बुध, तीसरे भाव से नवें में एवं बारहवें भाव से बारहवें स्थान पर होगा। जहां पर स्थित होकर यह पचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

बहुमगलप्रदः अनेक प्रकारेण धनवान्।

—भृगुसूत्र 72

तृतीयेश लाभ स्थान मे होने से जातक अपने भाई बहनो का विशेष ध्यान रखेगा। व्ययेश होकर व्यय स्थान से बारहवें होने के कारण जातक मितव्ययी होगा, फालतू रुपया नहीं उड़ाएगा। जातक अनेक प्रकार के धधों को करते हुए धनवान होगा।

निशानी -विद्या में बाधा आते हुए भी जातक पूरी शिक्षा प्राप्त करेगा। शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। 34 वर्ष बाद किस्मत चमकेगी

दशाफल—बुध की दशा शुभ फलदायक साबित होगी। यदि गुरु भी एकादश स्थान में हो, पचम भाव मे राहु, शनि या केतु हो तो 'फलदीपिका' अ. 19 पृ. 375 के अनुसार राहु की महादशा मे जातक को गगा स्नान आदि पुण्य फल एव तीर्थ यात्राओं का लाभ होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—बुध के साथ सूर्य होने से **'बुधादित्य योग'** बनेगा। ऐसे जातक को धन लाभ व्यापार के द्वारा होगा। जातक उद्योगपति होगा।

2. **बुध+चन्द्र**—बुध के साथ लग्नेश चन्द्रमा यहां उच्च का होगा ऐसा जातक विद्यावान होगा जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल पंचमेश+दशमेश लाभ स्थान में होने से जातक उद्योगपति होगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु भाग्येश होने से जातक उच्च शिक्षायुक्त होगा। जातक धार्मिक कार्य, परोपकार मे रुचि रखने वाला, सच्चरित्र व्यक्ति होता है। जातक के पुत्र जरुर होगा
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ सुखेश शुक्र स्वगृही होगा ऐसा जातक उत्तम विद्या, उत्तम संतति प्राप्त करेगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध+शनि**—तृतीयेश बुध के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि विद्या में बाधक है। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। जातक के गुप्त शत्रु व्यापार में रुकावट डालेंगे।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु व्यापार में बदलाव लाएगा चलते व्यापार में रुकावट आयेगी रुकावट के बाद बदलाव होगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु कार्य में रुकावट का संकेत देता है। गुप्त शत्रु सदैव सक्रिय रहेंगे।

एकादश भाव के बुध का उपचार—

1. नया कपड़ा दरिया में धोकर गंगा जल का छींटा देकर पहनें
2. बुध यंत्र पन्ना डालकर गले में पहने तो धनहानि से बचाव होता है। पाठक चाहे तो यह यंत्र लेखक से सम्पर्क कर प्राप्त कर सकते हैं।

कर्क लग्न में बुध द्वादश भाव में
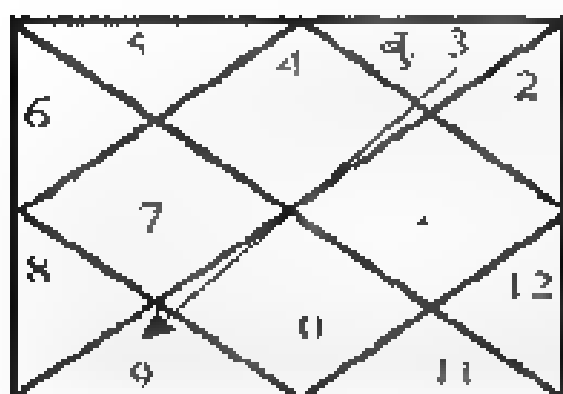
कर्क लग्न में बारहवें भाव मे स्थित मिथुन राशि का बुध स्वगृही होगा। तृतीय भाव से दसवें होने के कारण यह बुध शुभ फलदायक हो गया है।

जातक बुद्धिशाली होगा तथा उसकी शिक्षा उत्तम होगी। धंधे व्यापार के लिए जातक यात्राएं बहुत करेगा। विदेश यात्रा भी सम्भव है।

निशानी—छोटे भाइयों के लिए बुध की यह स्थिति ठीक नहीं। प्रथम तो छोटे भाई होगा नहीं होगा तो उनसे निभेगी नही

बुध की दृष्टि छठे भाव पर होने के कारण जातक को नौकर अच्छे मिलेंगे. जातक का मातृपक्ष सबल होगा परन्तु जातक को चर्मरोग होगा एवं पेट का रोग भी होगा

दशा—बुध की दशा अच्छी नहीं जाएगी.

कीर्तिभंग योग—जातक का पराक्रम भग होगा। किसी भी काम में यश नहीं मिलेगा। समाज मे, मित्रों में बदनामी होने का योग है।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—यहां पर '**बुधादित्य योग**' ज्यादा सार्थक नहीं होगा सूर्य के कारण '**धनहीन योग**' तथा बुध के कारण '**विपरीत राजयोग**' बनेगा. निःसंदेह जातक धनी एव प्रभावशाली व्यक्ति होगा
2. **बुध+चन्द्र**—बुध के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। नेत्रपीड़ा भी सम्भव है।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मगल **विद्याभग योग** एवं '**राजभग योग**' की सृष्टि करेगा जातक के प्रारंभिक विद्या अध्ययन में रुकावट आयेगी। सरकारी नौकरी मे बाधा आएगी।
4. **बुध+गुरु**—यहां गुरु '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि करेगा। साथ ही विपरीत राजयोग भी बनाएगा। ऐसा जातक निश्चय ही धनवान, परोपकारी एवं दानी होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ यहां शुक्र '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' की सृष्टि करेगा। जातक को चलते व्यापार में धक्का लगेगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि '**विलम्ब विवाह योग**' एव '**विपरीत राजयोग**' बनाएगा। ऐसा जातक धनी होगा, व्यापारी होगा पर व्यापार बदलता रहेगा।
7. **बुध+राहु**—राहु के कारण यात्राएं बहुत होंगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा, उसके सिर पर कर्जा रहेगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु होने से जातक धार्मिक यात्राएं करेगा। जातक भारी खर्चे के कारण कर्ज से दबा रहेगा।

द्वादश भाव के बुध का उपचार—

1. एक स्टील का छल्ला जल प्रवाह करें तथा एक (एक ही समय) पहनना।
2. कोरा घड़ा जल प्रवाह करें, 12 बार।
3. किया हुआ वायदा पूरा करें, जबान के पक्के रहें
4. अपनी जबान का शब्द ले डूबेगा (गन्दा शब्द न बोलें)
5. प्रति बुधवार गणपति को लड्डू चढ़ाएं।

❑❑❑

कर्क लग्न में गुरु की स्थिति

कर्क लग्न में गुरु प्रथम भाव में
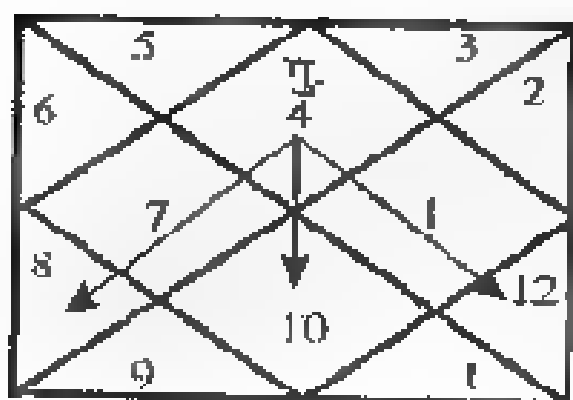
कर्क लग्न के लिए शुभ योगकारक होकर गुरु लग्न में उच्च का होगा। गुरु यहां षष्टेश होने से पापी है पर भाग्येश होने से योगकारक हो गया है।

विशिष्ट योगायोग—गुरु लग्न में होने से दिग्बली होगा तथा क्रमशः 1. **कुलदीपक योग** 2. **केसरी योग** 3. **हंस योग** की सृष्टि करेगा।

इसकी दृष्टि पंचम, सप्तम एवं नवम भाव पर पड़ेगी। ऐसे जातक के जन्म से पिता की किस्मत चमकती है, उसके परिवार का नाम रोशन होता है। ऐसा जातक बुद्धिमानों में अग्रगण्य, उच्चशिक्षाविद् व ज्ञानी होता है। जातक को बुजुर्गों की सम्पत्ति, जायदाद एवं आशीर्वाद की प्राप्ति होती है इसकी स्वयं की संतान शुभ लक्षणी व आज्ञाकारी होती है।

निशानी—ऐसे जातक गौर वर्ण व सुन्दर होते हैं, आकर्षक व्यक्तित्व के साथ इनका जीवन यशस्वी होता है।

व्यवहार—ऐसे व्यक्ति कृतज्ञ एवं विश्वासी मनोवृत्ति वाले होते हैं। ऐसे जातक आपसी झगड़े को अदालत में नहीं ले जाना चाहते। इनके जीवन में त्याग, अध्यापन की अभिरुचि बनी रहती है तथा जीवन की अन्तिम अवस्था में यह प्रायः सन्यास की मनोवृत्ति धारण कर लेते हैं

विशेष—छठे भाव का स्वामी होने के कारण गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

उच्च के गुरु का विचित्र फलादेश—कर्क के गुरु के बारे में यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है कि लग्न के गुरु ने भगवान राम को वनवास दिया। द्वितीयस्थ गुरु ने भीष्म पितामह से राज्य का अधिकार छीन लिया। तृतीयस्थ गुरु ने राजा बलि को पाताल भेज दिया। चौथे भाव के गुरु ने राजा हरिश्चन्द्र के सब सुख छीन लिए। पंचमस्थ गुरु ने राजा दशरथ का पुत्र सुख छीन लिया। छठे भाव के गुरु ने द्रौपदी का चीर हरण शत्रुओं द्वारा कराया सप्तमस्थ उच्च के गुरु ने गजराज को पत्नी वियोग कराया। आठवें गुरु ने रावण को मृत्यु दी।

दसवें गुरु ने दुर्योधन का राज नष्ट किया। ग्यारहवें भाव के गुरु ने राजा नल को वनवास दिया। बारहवें गुरु ने राजा पाण्डु को अकाल मृत्यु दी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. गुरु+सूर्य–उच्च के गुरु के साथ धनेश सूर्य जातक को आध्यात्मिक शक्ति से युक्त महाधनी बनाता है।
2. **गुरु+चन्द्र**–उच्च के गुरु के साथ स्वगृही चन्द्रमा **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनाएगा अर्थात् इससे अधिक और क्या? ऐसा जातक सकारात्मक शक्ति से युक्त चक्रवर्ती सम्राट होता है।
3. **गुरु+मंगल**–उच्च के गुरु के साथ नीच का मंगल होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य से परिपूर्ण वैभवशाली एवं पराक्रमी होगा।
4. **गुरु+बुध** पराक्रमेश व खर्चेश बुध गुरु के साथ होने से जातक महान पराक्रमी एवं विद्वान, बुद्धिशाली होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति लग्न स्थान में होने से जातक महान पराक्रमी एवं विलासी होगा। जातक स्वयं सुन्दर होगा जीवनसाथी भी सुन्दर होगा।
6. **गुरु+शनि**–सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति गुरु के साथ लग्न में होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ लग्न में राहु जातक के भाग्योदय में हल्की रुकावट डालेगा।
8. गुरु+केतु–गुरु के साथ केतु जातक को कीर्तिवान बनाएगा।

प्रथम भाव के गुरु का उपचार–

1. दान न लेना, अपनी किस्मत पर भरोसा रखना।
2. यदि परिवार में जब कोई डिग्री/डिप्लोमा लेगा गुरु अशुभ नहीं रहेगा।
3. पुखराज रत्न जड़ित सहित गुरु यंत्र गले में धारण करें।
4. मूंगा+मोती बीसा यंत्र में अभिमंत्रित कर धारण करें।

कर्क लग्न में गुरु द्वितीय भाव में

5 गु, 3, 2, 6, 4, 1, 7, 8, 12, 10, 9, 11
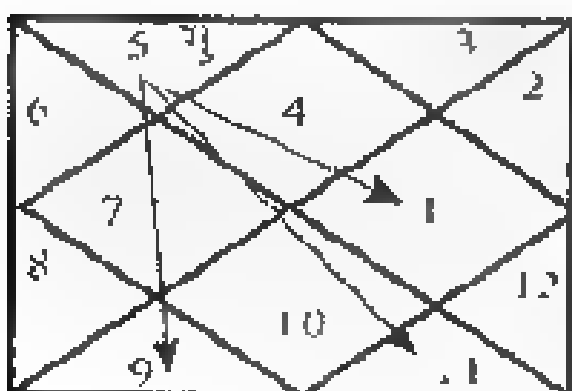
कर्क लग्न में द्वितीयस्थ गुरु सिंह राशि में मित्रक्षेत्री है। यह गुरु जातक की भाषा विनम्र एवं कुटुम्ब सुख उत्तम देता है जातक की सन्तान उत्तम होती है

विशेष दूसरे भाव का कारक होकर दूसरे भाव में स्थित होने के कारण धन सम्बन्धी चिन्ता जातक को बनी

रहेगी। कुटुम्ब की जवाबदारी निभाने में धन खर्च होता चला आएगा।

निशानी—भाग्येश होकर गुरु द्वितीयस्थ होने से जातक का भाग्य उत्तम होगा, जातक का पिता धनवान एवं प्रतिष्ठित होगा। पिता धार्मिक मनोवृत्ति वाला होगा, जातक के अपने पिता के साथ सम्बन्ध अच्छे रहेंगे परन्तु छठे भाव का स्वामी होकर गुरु भाग्य स्थान से छठे होने के कारण पिता की सम्पत्ति का लाभ जातक को नहीं होने देता।

रोग—छठे (रोग स्थान) स्थान का स्वामी होकर तथा द्वितीयस्थ बैठकर छठे भाव पर पूर्ण दृष्टि डालने के कारण जातक को पेट के रोग, कब्जी, सन्निपात, डायबीटिज, पेशाब सम्बन्धी रोग होंगे एवं गुप्त शत्रु भी बहुत होंगे।

गुरु की दृष्टि अष्टम स्थान पर होने के कारण जातक की मृत्यु शान्तिपूर्वक होगी। स्त्री जातक की कुण्डली में गुरु पति कारक सातवें भाव से आठवें स्थान पर होने कारण विवाह देरी से कराता है।

दशाफल—गुरु की दशा अच्छी जाएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—बलवान धनेश के साथ भाग्येश+षष्टेश की युति से क्रमशः **शत्रुमूल धनयोग** एवं **पितृमूल धनयोग** की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को पिता से धन मिलेगा। शत्रु से भी धन मिलेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**—लग्नेश व भाग्येश की युति धन स्थान में जातक को भाग्यशाली बनाएगा। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।
3. **गुरु+मंगल**—यदि गुरु के साथ मंगल हो तो जातक को '**मुख दोष**' होगा। ऐसे जातक की वाणी अशुद्ध व कर्कश होगी। यदि वहां चन्द्रमा हो तो '**गजकेसरी योग**' के कारण जातक में शत्रुसंहार करने की विशेष क्षमता होगी।
4. **गुरु+बुध**—भाग्येश गुरु के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध धन स्थान में होने से व्यक्ति खर्चीले स्वभाव का होगा। उसकी वाणी सारगर्भित होगी.
5. **गुरु+शुक्र**—भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति जातक को धन-धान्य, ऐश्वर्य से परिपूर्ण सुखी जीवन देगी।
6. **गुरु+शनि**—भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि की युति द्वितीय स्थान में जातक को भाग्योदय विवाहोपरान्त कराएगी।
7. **गुरु+राहु**—भाग्येश गुरु के साथ धनस्थान में राहु होने से जातक फिजूलखर्च होगा तथा उसकी वाणी कर्कश रहेगी '**चाण्डाल योग**' के कारण जातक अभक्ष्य भोजन कर सकता है।
8. **गुरु+केतु**—ऐसा जातक फिजूलखर्च तो होगा पर उसमें कंजूसी का पुट भी रहेगा।

द्वितीय भाव के गुरु का उपचार–

1. अपने घर का रास्ता साफ स्वच्छ रखें।
2. मकान का कच्चा हिस्सा फौरन पक्का बनाएं।
3. केसर चंदन का तिलक लगाना शुरु करें।
4. गुरु यत्र पुखराज रत्न के साथ गले मे धारण करे।

कर्क लग्न में गुरु तृतीय भाव में
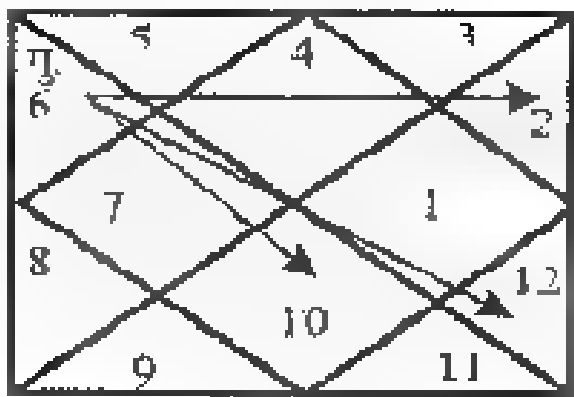
यहा गुरु छठे व नवें भाव का स्वामी होकर कन्या राशि (बुध के घर) में है। ऐसे जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहता है। जातक के सिर पर कर्जा नहीं रहता तथा शत्रु नहीं होते।

भाग्येश होकर भाग्य भवन पर दृष्टि होने के कारण भाग्य उत्तम होगा। जातक का पिता धनवान एव दीर्घायु वाला होगा। पिता से जातक के सम्बन्ध अच्छे रहेगे। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के छोटे भाइयो से अच्छे सम्बन्ध रहेगे।

भागीदारी, धधे मे यह गुरु शुभ फल देगा। मित्रो से मदद मिलती रहेगी। सन्तान उत्तम होगी।

विशेष–गुरु के साथ चन्द्रमा होने स **'गजकेसरी योग'** बनेगा। ऐसे जातक को पत्नी उत्तम मिलेगी। समय पर भाग्य साथ देगा।

दशाफल–गुरु की महादशा अच्छी जाएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–भाग्येश गुरु के साथ धनेश सूर्य पराक्रम स्थान में जातक को पराक्रमी बनाएगा। जातक का जनसम्पर्क तेज होगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा। बड़े भाई का सुख भी संभव है
2. **गुरु+चन्द्र**–यहां भाग्येश गुरु की लग्नेश चन्द्र से युति जहां **'गजकेसरी योग'** बनाती है। वहां जातक पुरुषार्थी होगा तथा उसे हाथ में लिए गये प्रत्येक कार्य मे सफलता मिलेगी।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ पचमेश+दशमेश मंगल की युति जातक को महान पराक्रमी बनाती है। जातक को तीन से पाच के मध्य भाई हो सकते है।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश बुध उच्च का होगा। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी एव यशस्वी होगा जातक धनवान होगा। उसको भाई-बहन दोनों का सुख मिलेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र तृतीय स्थान में नीच का है। ऐसा जातक पराक्रमी तो होता है पर उसे स्त्री मित्रो से बदनामी मिलेगी। ऐसे जातक को भाई-बहन दोनों का सुख प्राप्त होता है

6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ शनि तृतीय स्थान में होने से जातक को पराक्रमी बनाएगा पर मित्रगण व रिश्तेदार पीठ पीछे निन्दा करेंगे।
7. **गुरु+राहु**–भाग्येश गुरु के साथ राहु जातक के परिजनों मे विद्वेष पैदा करता है। मित्र दगाबाज होंगे।
8. **गुरु+केतु**–भाग्येश गुरु के साथ केतु जातक को कीर्ति एवं यश देगा। परन्तु समाज मे पीठ पीछे उसकी बुराई होगी।

तृतीय भाव के गुरु का उपचार–

1. केसर चंदन का तिलक लगाए।
2. दुर्गा पूजन या कन्याओ को मीठा भोजन देकर आशीर्वाद लें।
3. गुरु यंत्र गले में धारण करे।

कर्क लग्न में गुरु चतुर्थ भाव में
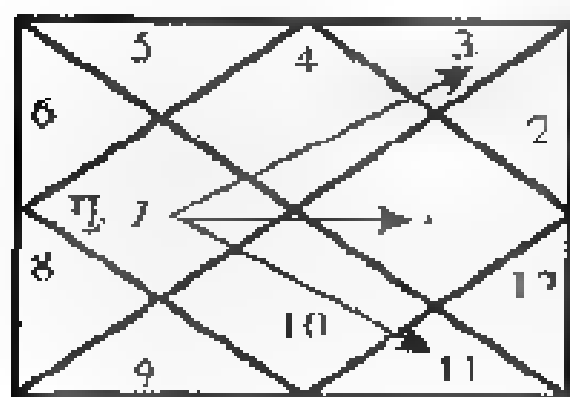
गुरु तुला राशि का शत्रुक्षेत्री है पर गुरु केन्द्र में विद्या स्थान मे होने के कारण जातक को उत्तम विद्या मिलेगी माता का सुख अच्छा रहेगा मकान एवं वाहन का सुख श्रेष्ठ रहेगा।

कुलदीपक योग–गुरु केन्द्र में होने के कारण ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।

निशानी–जातक का जन्म ननिहाल मे होगा। जातक का ननिहाल पक्ष, मातृपक्ष (मामा इत्यादि) सम्पन्न एवं धनी होंगे।

केसरी योग–गुरु केन्द्र में होने से यह योग बना। धनकारक गुरु केन्द्र में होने से जातक धनवान होगा।

गुरु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–भाग्येश गुरु के साथ धनेश सूर्य हो तो जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे।
2. **गुरु+चन्द्र**–यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'**, यदि शुक्र भी साथ हो तो **'महाधनी योग'** और यदि सूर्य भी साथ हो तो गुरु+चन्द्र+शुक्र+सूर्य की इस चतुर्ग्रह युति के कारण जातक करोड़पति होगा।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ पंचमेश+दशमेश मंगल सुख स्थान में जातक को सरकार में ऊंचा पद प्रतिष्ठा दिलाएगा।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध चतुर्थ स्थान मे जातक को एक से अधिक वाहन सुख देगा जातक का मकान भव्य होगा।

5. **गुरु+शुक्र** भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र की युति चतुर्थ स्थान में होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। ऐसा जातक चार पहियों वाली गाड़ी का स्वामी होगा। जातक ऐश्वर्यशाली एवं वैभवशाली **जीवन** जीएगा।
6. **गुरु+शनि**—भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश शनि चतुर्थ भाव में उच्च का होगा। फलतः **'शशयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं धनवान होगा तथा उत्तम भवन एवं वाहन का स्वामी होगा।
7. **गुरु+राहु**—यहा गुरु के साथ राहु **'चाण्डाल योग'** बनाएगा जातक भाग्यशाली होगा। उसके पास एक से अधिक नौकर होंगे। जातक धनवान होगा।
8. **गुरु+केतु** गुरु के साथ केतु उत्तम वैभव देगा। जातक कीर्तिवान होगा।

चतुर्थ भाव के गुरु का उपचार—

1. लाल बनियान या कच्छा पहनें।
2. बुजुर्गों के व्यापार से लाभ, बुजुर्गों की सेवा करें।
3. धर्म मंदिर में सिर झुकाना, पूजा-पाठ करें।
4. कुल पुरोहित एवं गुरु का आशीर्वाद लें।
5. पीपल का वृक्ष लगाएं या पीपल के वृक्ष को प्रति गुरुवार पानी सींचें।
6. सच्चा पुखराज यंत्र में जड़वाकर गले में धारण करें।

कर्क लग्न में गुरु पंचम भाव में
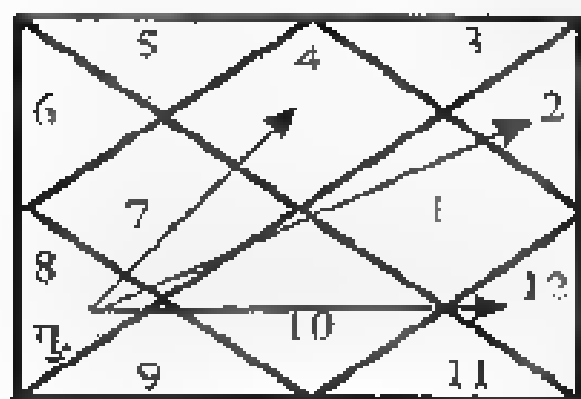
गुरु वृश्चिक राशि में मित्रक्षेत्री है। भाग्येश होकर त्रिकोण में बैठकर, भाग्यभवन पर पूर्ण दृष्टि होने के कारण जातक भाग्यशाली एवं धनवान होगा। उसके पिता से अच्छे सम्बन्ध रहेंगे.

गुरु की प्रथम भाव पर दृष्टि होने से जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। जातक का शरीर स्वस्थ व सुन्दर होगा। जातक लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में पूर्ण सफल होगा। यहा धनकारक गुरु की दृष्टि अपने उच्च स्थान की ओर होने के कारण जातक आर्थिक रूप से महत्वाकांक्षी एवं सफल होगा।

विशेष—एक मत के अनुसार जल राशि का गुरु (कर्क, वृश्चिक व मीन) अच्छा फल नहीं देता। गुरु पंचमस्थ होने से प्रथम तो संतान होगी नहीं, होगी तो पुत्र सन्तान सम्बन्धी चिन्ता सदैव बनी रहेगी।

छठे भाव का स्वामी होकर छठे भाव से बारहवें स्थान में होने के कारण जातक को रोग एवं शत्रु सताएंगे नहीं। पंचमस्थ गुरु जातक को भाषाशास्त्री, डॉक्टर, वकील, जज तथा अपने विषय का विद्वान बनाता है।

दशाफल—गुरु की दशा पूर्णतः शुभ फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—भाग्येश गुरु के साथ धनेश सूर्य पंचम स्थान में शुभ फल देगा। ऐसा जातक विद्यावान, आध्यात्मिक क्षेत्र का प्रख्यात् विद्वान होगा। प्रथम पुत्र होगा। यदि ऑपरेशन न किया गया हो तो तीन से पांच पुत्र होंगे।
2. **गुरु+चन्द्र**—भाग्येश गुरु के साथ लग्नेश चन्द्र की युति '**गजकेसरी योग**' बनाएगी। ऐसा जातक भाग्यशाली होगा। उसे प्रथम कन्या संतति होगी। उसके जीवन में कोई काम धन की वजह से रुका नहीं रहेगा.
3. **गुरु+मंगल**—भाग्येश गुरु के साथ स्वगृही मंगल जातक को तीन से अधिक पुत्र देगा। जातक टैक्नीकल मैकेनिकल विद्या का जानकार होगा। बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
4. **गुरु+बुध**—भाग्येश गुरु के साथ तृतीयेश+व्ययेश बुध की युति पंचम स्थान में जातक को उच्च शिक्षा Educational Degree दिलाएगा। जातक तंत्र मंत्र, ज्योतिष व गूढ़ विद्याओं का ज्ञाता होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र पंचम स्थान में जातक को आध्यात्मिक साथ-साथ अभिनय-संगीत-कला क्षेत्र में कीर्ति दिलाएगा।
6. **गुरु+शनि**—भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि पंचम स्थान में जातक को विदेशी भाषा, विदेशी संस्कृति में दिलचस्पी पैदा करेगा। जातक को आयात निर्यात के कार्यों में लाभ होगा।
7. **गुरु+राहु**—गुरु के साथ राहु उच्च विद्या में बाधक है। जातक **चाण्डाल योग** के कारण 'लक्ष्य च्यूत' होगा। पुत्र संतान प्राप्ति में कष्ट हो सकता है।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु पंचम स्थान में थोड़े अवरोध के पश्चात् जातक को विद्या में सफलता देगा। जातक को एकाध गर्भपात हो सकता है

पंचम भाव के गुरु का उपचार—

1. लंगर, धर्म स्थान का प्रसाद न लेना।
2. मुफ्त भोजन एवं माल से परहेज रखना।
3. सिर पर चोटी रखना।
4. साधु सज्जनों की सेवा करे, धर्मशाला धर्म मंदिर की सफाई सेवा करे।
5. पुत्र संतति हेतु 'संतान गोपाल' स्तोत्र का पाठ करें
6. उत्तम विद्या हेतु 'सरस्वती यंत्र' धारण करें.

कर्क लग्न में गुरु षष्टम भाव में

यहां षष्टेश गुरु स्वगृही होकर छठे स्थान में है फलतः जातक का ननिहाल पक्ष समृद्ध होगा मामा पक्ष से जातक के अच्छे सम्बन्ध रहेंगे जातक जिम्मेदार व जवाबदेह व्यक्ति होगा।
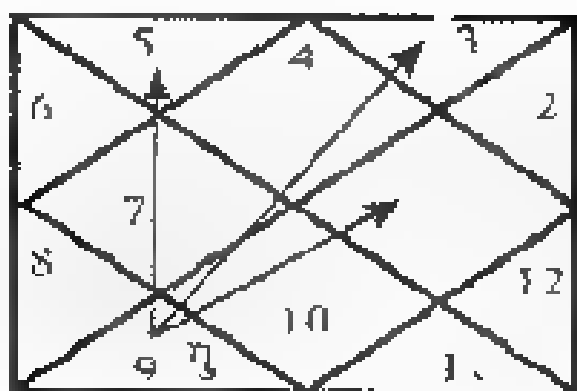
भाग्यभग योग—भाग्येश होकर गुरु छठे जाने से भाग्यभग योग बनाता है। जातक को भाग्योदय हेतु बहुत सघर्ष करना पड़ेगा। पिता के साथ उसके सम्बन्ध ठीक नहीं होगें अथवा पैतृक सम्पत्ति विवाद का कारण बनेगी।

धन कारक होकर छठे स्थान मे जाने से धन भाव पर दृष्टि होने से जातक आर्थिक तगी एव कर्ज की स्थिति में रहेगा पर धनेश सूर्य की स्थिति इस तथ्य को पुष्ट करेगी।

सन्तान कारक होकर पंचमभाव से दूसरे स्थान पर स्वगृही होने के कारण सन्तति उत्तम होगी। वहा पर बैठकर दशम एव बारहवें भाव पर दृष्टि होन के कारण जातक की सामाजिक प्रतिष्ठा स्थिति उत्तम रहेगी। जातक धार्मिक वृत्ति का होगा एव धार्मिक कार्यों, मागलिक प्रसंगों, तीर्थ यात्राओं व शुभ कार्यों मे रुपया खर्च करेगा।

दशाफल—गुरु की दशा मिश्रित फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य छठे होने से '**धनहीन योग**' बनेगा। जातक को धन सग्रह हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **गुरु+चन्द्र**—गुरु के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनेगा। यहां पर बना '**गजकेसरी योग**' ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक धनी व्यक्ति तो होगा परन्तु किसी भी कार्य में पहले प्रयास में सफलता नही मिलेगी।
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मगल होने से '**विद्याहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनेगा। जातक के जमीन को लेकर विवाद होगा तथा प्रारम्भिक विद्या में बाधा आएगी
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध होने से '**पराक्रम भगयोग**' एव '**विपरीत राजयोग**' भी बनेगा। फलत: जातक धनी होगा। उसके पास चार पहियों की गाड़ी होगी, पर मित्र ज्यादा वफादार नहीं होंगे।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र '**सुखहीन योग**' एव '**लाभभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को सुख प्राप्ति के समय कुछ न कुछ बाधा आती रहेगी। व्यापार में भी उतार चढ़ाव आयगी
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि '**विलम्ब विवाह योग**' एव '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाएगा। ऐसा जातक धनी एव वैभवशाली होगा परन्तु गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**—यहा राहु शक्तिशाली होगा। ऐसा जातक शत्रु का मान-मर्दन करने में सक्षम होगा। '**चाण्डाल योग**' के कारण जातक का आचरण संदिग्ध होगा।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु गुप्त रोग एव गुप्त शत्रुओं को उत्पन्न करेगा पर शत्रु कुछ बिगाड़ नहीं पाएंगे।

षष्टम भाव के गुरु का उपचार–

1. संतान के साथ या सलाह से व्यापार करना।
2. धर्म मंदिर के पुजारी को पीले वस्त्र देना।
3. पुखराज रत्न सोने मे धारण करें।
4. पीला सुगन्धित रुमाल जेब में रखें।
5. गुरुवार को कथा–आरती उपवास करें।
6. गुरु कवच का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में गुरु सप्तम भाव में

5	4	3
6	7	2
8	10 गु	12
9		1
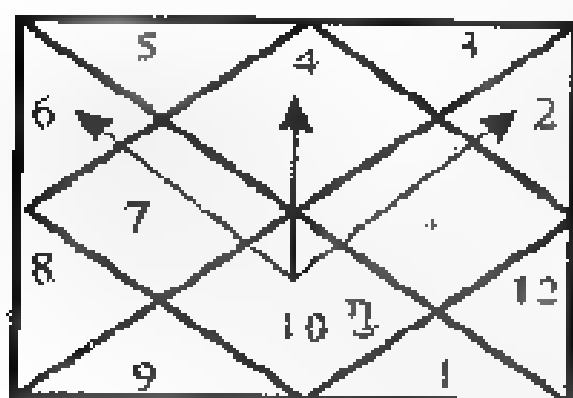
यहां भाग्येश गुरु केन्द्र मे मकर राशि (नीच) गत होते हुए भी शुभ फल देगा। भाग्येश, भाग्य स्थान से ग्यारहवां होने से जातक को पिता की सम्पत्ति, कुल व प्रतिष्ठा का लाभ मिलेगा। गुरु की दृष्टि एकादश भाव पर होने के कारण जातक को अपने धंधे–व्यापार में उत्तम लाभ मिलेगा

कुलदीपक योग व केसरी योग–गुरु की स्थिति कुण्डली में कुलदीपक योग एवं केसरी योग की सृष्टि कर रही है। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है। जातक यशस्वी होता है। केसरी योग के कारण जातक जिस काम में हाथ डालेगा उसमे उसे लगातार सफलता मिलती चली जाएगी। सप्तमस्थ गुरु के कारण पत्नी धार्मिक एवं भीरू मनोवृत्ति वाली होगी। जातक की पत्नी पतिव्रता होगी एवं सुन्दर अगों वाली होगी।

प्रथम भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा। तृतीय भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक के जीवन मे विशेष यात्रायोग बना रहेगा भाई एवं भागीदारों के साथ सम्बन्ध सामान्य रहेंगे।

निशानी–ऐसा व्यक्ति अपनी जाति की कन्या से विवाह करता है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ धनेश सूर्य सप्तम भाव मे जातक को सौभाग्यशाली बनाएगा जातक धनी होगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्र हो तो 'लग्नाधिपति योग' 'गजकेसरी योग' बनेगा। जातक पराक्रमी होगा तथा उसकी पत्नी सुन्दर होगी।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ यदि मगल हो तो 'नीचभंग राजयोग' बनता है रुचक योग' के कारण जातक राजा के समान तेजस्वी यशस्वी, पराक्रमी होगा एवं बडी भूमि का स्वामी होगा

4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश+खर्चेश बुध की युति शुभ है। ऐसे जातक का जीवन साथी वफादार, सुन्दर एवं प्रतिभावान होता है।
5. **गुरु+शुक्र**-गुरु के साथ शुक्र हो तो जातक अपनी स्वजाति की कन्या से विवाह करता है साथ ही **'शशयोग'** के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ यदि शनि हो तो **'नीचभंग राजरोग'** बनता है।
7. **गुरु+राहु**–सप्तम भाव में गुरु के साथ राहु **'चाण्डाल योग'** बनाता है ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है या विवाह के बाद पति-पत्नी में खटपट होती रहेगी।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु विवाह व गृहस्थ सुख में कुछ न्यूनता कराएगा।

सप्तम भाव के गुरु का उपचार–

1. रत्तियां (चिरमयां) पीले कपड़े में बांधकर रखना।
2. नशेबाज, साधु–फगड़ों से दूर रहना।
3. गुरुवार का व्रत रखें।
4. पुखराज रत्न धारण करें, गुरु यत्र में।

कर्क लग्न में गुरु अष्टम भाव में
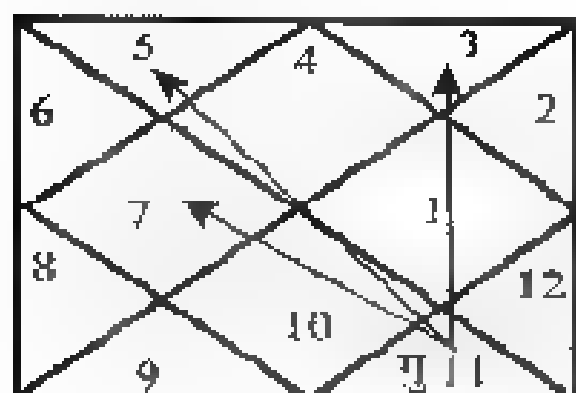
कर्क लग्न में कुम्भ का गुरु आठवें होने से सन्तान सम्बन्धी चिन्ता कराता है परन्तु छठे भाव का स्वामी होकर आठवें जाने से विपरीत राजयोग बनाता है जातक पर कर्जा एव रोग नहीं होगा तथा जातक अपने शत्रुओ का मान-मर्दन करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक के मातृपक्ष व नौकरों से सम्बन्ध अच्छे होंगे।

भाग्यभंग योग–भाग्येश होकर गुरु आठवें जाने से यह योग बना जातक को भाग्योदय हेतु रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। पिता की मृत्यु छोटी उम्र में होगी, जातक को पिता की सम्पति प्राप्त करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा गुरु की दृष्टि बारहवे स्थान पर होने के कारण जातक धार्मिक–सामाजिक एव शुभ कार्यों में रुपया खर्च करेगा।

चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने के कारण मकान सुख, वाहन सुख एव माता का सुख पिता के बनिस्पत ठीक होगा।

दशाफल–गुरु की दशा मिला जुला फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ यहा सूर्य होने से **'धनहीन योग'** बनेगा जातक धनी होगा पर धन संग्रह हेतु उसे सघर्ष करना पड़ेगा।

2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ यहां चंद्रमा जहां '**लग्नभंग योग**' बनाएगा वहां '**गजकेसरी योग**' भी बनेगा पर यह **गजकेसरी योग** ज्यादा सार्थक नहीं होगा। जातक धनी होगा पर उसका जीवन संघर्षपूर्ण रहेगा
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल यहां '**विद्याभंग योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाएगा। जातक धनी होगा पर भाग्योदय हेतु उसे काफी संघर्ष करना पड़ेगा
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश बुध होने से '**पराक्रम भंगयोग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक चार पहियों वाली गाड़ी का स्वामी होता है। जातक के कुटम्बी एवं मित्रगण ज्यादा वफादार नहीं होंगे।
5. **गुरु+शुक्र**–भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश होने से सुखहीन योग एवं **लाभभंग योग** बनेगा। ऐसा जातक धनी व प्रतिष्ठित तो होगा पर जीवन में उतार चढ़ाव बहुत आएंगे।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनाता है। ऐसे जातक को वैवाहिक कष्ट रहेगा। जातक समर्थवान् एवं धनी होगा।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु हड्डियों में चोट पहुंचाता है तथा गुप्त एवं प्रकट शत्रुओं से जातक को भयग्रस्त करता है
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु दाएं पांव में चोट पहुंचाता है या जातक को शारीरिक तकलीफ दिलाता है जिसका समाधान ऑपरेशन के माध्यम से होगा।

अष्टम भाव के गुरु का उपचार–

1. शरीर पर सोना पहनने से अच्छा होगा
2. शुक्र की चीज घी, दही, आलू, कपूर धर्म स्थान पर दें, फकीर के बर्तन में दान डालें।
3. पुखराज रत्न जड़ित 'गुरु यंत्र' गले में धारण करें।
4. गुरुवार को व्रतकथा रखें।
5. गुरुवार के दिन श्मशान में पीपल के वृक्ष लगाएं और उसकी पालना करें।
6. गुरु कवच का नित्य पाठ करें।

कर्क लग्न में गुरु नवम भाव में
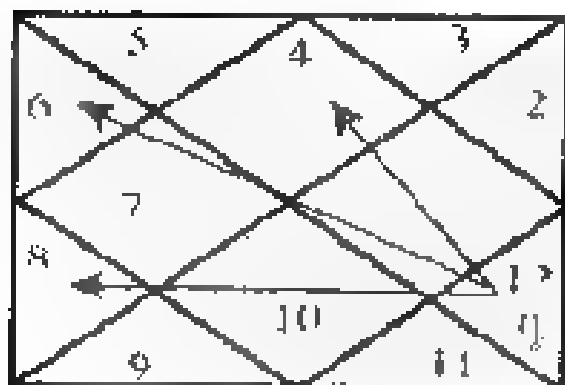
कर्क लग्न में मीन का गुरु नवम भाव में स्वगृही होने के कारण जातक भाग्यशाली होगा। जातक का पिता धार्मिक, राजनैतिक व सामाजिक दृष्टि से प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा, जातक को पिता की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।

छठे भाव का स्वामी कोण में होने के कारण जातक ऋण, रोग व शत्रु पर सदा विजय प्राप्त करेगा

लग्न पर स्वगृही गुरु की उच्च स्थान पर दृष्टि होने के कारण जातक दीर्घायु को प्राप्त करता हुआ सुन्दर, आकर्षक व स्वस्थ शरीर का स्वामी होगा।

तीसरे भाव पर स्वगृही गुरु की दृष्टि होने के कारण जातक का कण्ठ सुन्दर होगा। भाइयों से सम्बन्ध अच्छे हो एव भागीदारी में लाभ होगा। पांचवें भाव पर दृष्टि के कारण जातक को सन्तान सुख उत्तम, सन्तान प्रभावशाली एवं आज्ञाकारी होगी

दशाफल–गुरु की दशा, महादशा एवं अन्तरदशा भाग्योदयकारी साबित होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों का सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ धनेश सूर्य की युति जातक को पिता की सम्पत्ति दिलाएगी। जातक परम्परागत भूमि व सम्पत्ति का स्वामी होता है।
2. **गुरु+चन्द्र**–गुरु के साथ चन्द्रमा शक्तिशाली **'गजकेसरी योग'** बनाता है। ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली, धनी व यशस्वी होता है। उसे माता पिता द्वारा सम्पादित धन की प्राप्ति होती है।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ स्वगृहाभिलाषी मंगल होने से जातक राजा के समान पराक्रमी, यशस्वी एवं धनवान होगा। जातक ग्राम का मुखिया, प्रधान व राजनेता होगा।
4. **गुरु+बुध**–भाग्येश गुरु के साथ **'नीचभंग राजयोग'** बनाएगा। जातक राजा के समान पराक्रमी, वैभवशाली एवं बुद्धिशाली होगा
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ यदि शुक्र हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। यदि गुरु के साथ चन्द्रमा हो तो **'गजकेसरी योग'** बनेगा। जातक की सन्तति पराक्रमी होगी जिससे कुल का गौरव बढ़ेगा।
6. **गुरु+शनि**–भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश शनि जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराता है।
7. **गुरु+राहु**–गुरु के साथ राहु जातक को प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी बनाता है। जातक साम दाम दण्ड-भेद हर प्रकार से काम करने में सफल होता है।
8. **गुरु+केतु** गुरु के साथ केतु जातक को शत्रुंजयी व्यक्तित्व प्रदान करता है

नवम भाव के गुरु का उपचार

1. गंगा स्नान करें, प्रत्येक जन्म दिन पर सफलतापूर्वक।
2. तीर्थयात्रा करना/करवाना।
3. झूठा वायदा न करना।
4. झूठा भोजन न खाना या खिलाना बुफे पार्टी से दूर रहें।
5. किसी के शामिल बैठकर भोजन न करें एव बफर पार्टी मे भाग न लें
6. पुखराज पहने एव गुरु की सेवा करें।

कर्क लग्न में गुरु दशम भाव में
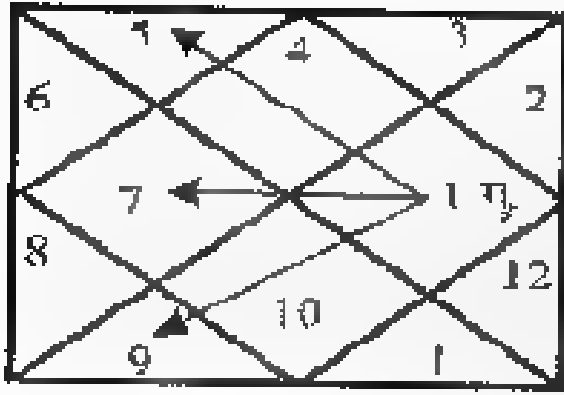
कर्क लग्न में दशमस्थ मेष राशि का गुरु मित्रक्षेत्री होगा। जातक स्वयं के कारोबार-धंधे व्यापार का स्वामी होगा। वकील, जज, डाक्टर, सी.ए., इंजीनियर जैसे पद पर अधिष्ठित हो सकता है। छठे भाव का स्वामी होकर छठे भाव पर दृष्टि डालने के कारण जातक रोग, ऋण एवं शत्रु नाश करने में पूर्ण सक्षम एवं समर्थ होगा ये तीनों इससे दूर रहेंगे।

कुलदीपक योग—जातक अपने परिवार व कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक सबका चहेता व प्यारा होगा है। यह गुरु **'केसरी योग'** करता है। जातक मनुष्यों में सिंह जैसा पराक्रमी होगा.

भाग्येश होकर भाग्य भाव से दूसरे स्थान पर स्थित होकर धनभाव पर पूर्ण दृष्टि होने के कारण जातक जिस धंधे में हाथ डालेगा धन की सफलता उसके कदम चूमेगी।

इस गुरु की दृष्टि चौथे भाव पर होने के कारण जातक प्राप्त को माता का सुख, मकान का सुख, नौकर-चाकर का सुख व सन्तान सुख उत्तम होगा।

दशाफल—गुरु की दशा श्रेष्ठ जाएगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—यहां भाग्येश गुरु के साथ धनेश उच्च का होने से **'रविकृत राजयोग'** बनता है। जातक I A S अधिकारी, मंत्री या राज-सरकार मे उच्च पद को प्राप्त करता है।
2. **गुरु+चन्द्र**—भाग्येश गुरु के साथ लग्नेश चन्द्रमा **'गजकेसरी योग'** बनाता है। ऐसा जातक प्रतापी राजा के समान प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।
3. **गुरु+मंगल**—भाग्येश गुरु के साथ स्वगृही मंगल **'रुचक योग'** बनाता है। ऐसा जातक बड़ी भूमि का स्वामी होकर राजा के समान पराक्रमी, धनी, होता है। जातक मंत्री या राजनेता होता है।
4. **गुरु+बुध**—भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश बुध की युति जातक को महान पराक्रमी बनाएगा। जातक का जनसम्पर्क बहुत तेज होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र जातक को दो से अधिक मकान, दो से अधिक वाहन दिलाएगा।
6. **गुरु+शनि**—भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश शनि नीच का होगा ऐसा जातक पराक्रमी होगा प्रतिष्ठित होगा पर राजा से दण्डित होगा।
7. **गुरु+राहु**—गुरु के साथ राहु सरकारी असहयोग दिलाएगा, जातक को भाग्योदय हेतु अनेक प्रकार के धंधे करने होंगे।

8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु राज सरकार से सहयोग दिलाएगा। यहा केतु कीर्ति एवं बदनामी दोनों साथ-साथ होगी।

दशम भाव के गुरु का उपचार–

1. पीले वस्त्र एव सोना न पहनें,
2. 40-43 दिन ताबे के पैसा चलते पानी में डाले तो पिता श्री के कष्ट दूर होंगे। यह प्रयोग गुरुवार के प्रारम्भ करें।
3. गुरुवार का व्रत रखें।
4. पुखराज रत्न जड़ित 'गुरु यंत्र' धारण करें।

कर्क लग्न में गुरु एकादश भाव में

5	4	3	
6			2 गु.
7			1
8			12
9	10	11	
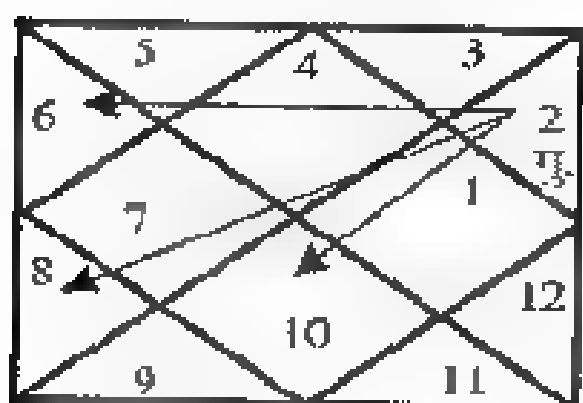
कर्क लग्न में एकादशस्थ वृषभ का गुरु शत्रुक्षेत्री होते हुए भी शुभ फल देगा। जातक धंधे, व्यापार में अच्छी उन्नति करेगा।

निशानी–जातक का बड़ा भाई नहीं होगा। छठे भाव का स्वामी होकर, छठे भाव से छठे स्थान में होने के कारण जातक को ऋण, रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा।

भाग्येश भाग्य भाव से तृतीय स्थान में होने के कारण जातक का पिता धार्मिक एव प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

इस जातक की कुण्डली में गुरु की दृष्टि तृतीय स्थान पर होने के कारण जातक के छोटे-भाई बहनों के साथ अच्छे सम्बन्ध होंगे। सन्तान भाव पर दृष्टि होने के कारण सन्तान उत्तम होगी पर पिता से अलग रहेगी।

सातवें भाव पर दृष्टि होने के कारण वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा। भागीदारों से धन लाभ भी होगा।

दशाफल–गुरु की दशा उत्तम फलदायक होगी। यदि बुध भी एकादश स्थान में हो तथा राहु, केतु या शनि पचम भाव में हो तो 'फलदीपका' अ. 19/पृ. 375 के अनुसार राहु की महादशा में जातक को गगा स्नान इत्यादि पुण्य फल, तीर्थ यात्रा का शुभ लाभ होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य जातक को व्यापार एव नौकरी दोनों से लाभ दिलाएगा।
2. **गुरु+चन्द्र**–यहा चन्द्रमा उच्च का होकर '**गजकेसरी योग**' बनाएगा। जातक धनवान एव उद्योगपति होगा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **गुरु+मंगल**–भाग्येश गुरु के साथ दशमेश मगल प्रथम पुत्र देगा। जातक को तीन से पांच के मध्य पुत्र होंगे। जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि को प्राप्त करेगा।

4. **गुरु+बुध** -भाग्येश गुरु के साथ पराक्रमेश बुध जातक को महान पराक्रमी एव बुद्धिशाली व्यक्तित्व का धनी बनाएगा।
5. **गुरु+शुक्र**—भाग्येश गुरु के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र स्वगृही होने से जातक उच्च श्रेणी का व्यापारी होगा। उसका जीवन सुखी व ऐश्वर्य से परिपूर्ण होगा।
6. **गुरु+शनि**—भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश शनि जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होने का सकेत देता है।
7. **गुरु+राहु**—गुरु के साथ राहु व्यापार में उतार चढ़ाव का संकेत देता है। जातक चलते व्यापार को बदलेगा।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु जातक के पराक्रम में वृद्धि करेगा। जातक को समाज मे यश-कीर्ति मिलेगी

एकादश भाव के गुरु का उपचार—

1. पीला सुगन्धित रुमाल पास रखें।
2. पिता के वस्त्र, चारपाई, वस्त्र, सोना का इस्तेमाल न करें।
3. लावारिश लाश को कफन ओढ़ाए।
4. केसर-चंदन का तिलक करें।
5. पुखराज रत्न सुवर्ण धातु में अभिमंत्रित करके पहनें।

कर्क लग्न में गुरु द्वादश भाव में

5 4 3 गु. 2 6 1 7 8 12 10 9 11
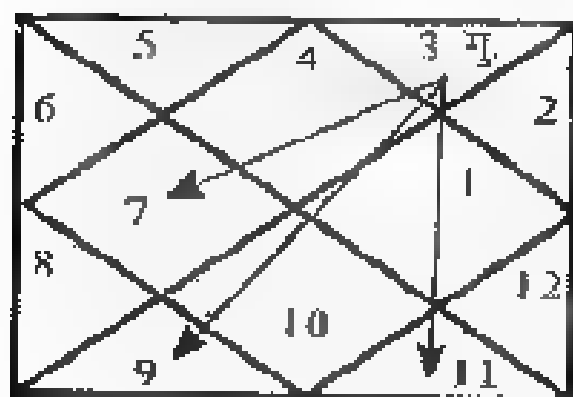
कर्क लग्न मे द्वादशस्थ गुरु मिथुन राशि का होने से ज्यादा शुभ फल नहीं देगा। जातक का पिता छोटी अवस्था में गुजर जाएगा अथवा जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। चौथे भाव पर दृष्टि होने के कारण माता, मकान, नौकर-चाकर एवं वाहन का सुख उत्तम होगा।

भाग्यभंग योग—भाग्येश होकर बारहवें स्थान पर जाने से यह योग बना। जातक को अपने भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष व दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा छठे भाव का स्वामी बारहवें स्थान पर बैठकर छठे भाव पर दृष्टि डालने के कारण छठे स्थान का शुभ फल नहीं देगा। जीवन में ऋण रोग व शत्रु का भय बना रहेगा।

निशानी—धन की अस्थिरता बनी रहेगी। जातक को कान का रोग होने की सम्भावना है। जातक को सन्तान सम्बन्धी कोई न कोई चिन्ता लगी रहेगी। यदि मंगल की स्थिति अशुभ हो तो जातक पुत्र सुख से हीन होगा।

दशाफल—गुरु की महादशा, अतर्दशा शुभ फल नहीं देगी

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य होने से '**धनहीन योग**' बनेगा। जातक धनी तो होगा परन्तु धनसग्रह हेतु सघर्ष करना पड़ेगा।

2. **गुरु+चन्द्र**—गुरु के साथ चन्द्रमा **'लग्नभंग योग'** बनाएगा। यहां **'गजकेसरी योग'** बनेगा पर यह योग ज्यादा सार्थक नहीं होगा। ऐसा जातक यात्राओं से कमाएगा तथा वह परोपकारी एवं दानी होगा।
3. **गुरु+मंगल**—भाग्येश गुरु के साथ मंगल **'विद्याभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनाएगा। ऐसे जातक को प्रारंभिक विद्या में रुकावटें आयेंगी। राज सरकार में अकारण परेशानियां आएगी।
4. **गुरु+बुध**—भाग्येश गुरु के साथ बुध होने से **'पराक्रमभंग योग'** बनेगा साथ ही व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से **विपरीत राजयोग** भी बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा तथा चार पहियों की गाड़ी का स्वामी होगा। पर समाज में उसकी बदनामी भी होगी।
5. **गुरु+शुक्र**—भाग्येश गुरु के साथ शुक्र होने से **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनेगा। ऐसा जातक भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करेगा।
6. **गुरु+शनि**—भाग्येश गुरु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि होने से **'विलम्ब विवाह योग'** एवं **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी मानी-अभिमानी होगा पर उसे गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**—गुरु के साथ राहु जातक को व्यर्थ में भटकाएगा। जातक को आध्यात्मिक सिद्धि में बाधा आएगी। **चाण्डाल योग** के कारण जातक भक्ष्य-अभक्ष्य का ध्यान नहीं रख पाएगा।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु यात्रा में चोरी का संकेत देता है। जातक प्रायः अर्ध नास्तिक होगा।

द्वादश भाव के गुरु का उपचार—

1. झूठी गवाही न दें, गहन न करें।
2. किसी के साथ विश्वासघात न करें।
3. गुरु, साधु या पीपल का नित्य सेवा करें।
4. गुरुवार का नियमित उपवास करें।
5. पुखराज पहनें, पुखराज के अभाव में हल्दी की गांठ पीले रंग के धागे में बांधें या सुनैला धारण करें।
6. चांदी का कटोरी से केसर-चंदन का तिलक करें
7. शुद्ध सोना धारण करें।
8. गुरु कवच का नित्य पाठ करें।

❑❑❑

कर्क लग्न में शुक्र की स्थिति

कर्क लग्न में शुक्र प्रथम भाव में
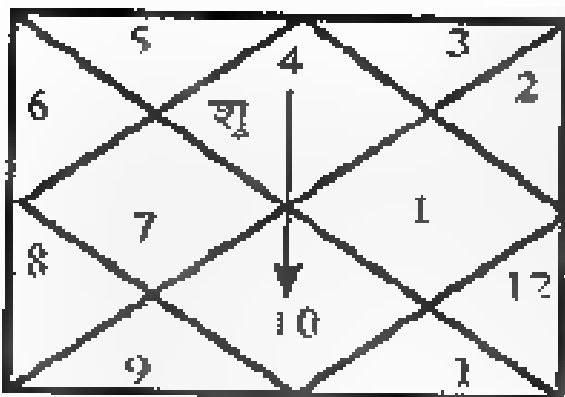
कर्क लग्न के लिए शुक्र सुखेश व लाभेश है। शुक्र लग्न में '**कुलदीपक योग**' बना रहा है। शुक्र स्त्री राशि में होने के कारण शुभ है। ऐसा जातक दूसरों को तारने वाला हंसमुख, आनन्दित व स्त्रियो को प्रिय लगने वाला होता है। इन्हें व्यवसाय में यश, सम्पत्ति व कीर्ति की प्राप्ति होती है।

निशानी–ऐसा जातक गौरवर्ण, सुन्दर व आकर्षक होता है। ऐसे जातक को वाहन सुख अवश्य मिलता है तथा जातक स्वपराक्रम से मकान अवश्य बनाता है।

विशेष–ऐसे जातक का अन्य स्त्रियों से सम्पर्क/ससर्ग अवश्य होता है।

दृष्टिफल–यहा से शुक्र सातवीं मित्र दृष्टि से सप्तम भाव को देखता है, जहां मकर राशि अवस्थित है। ऐसा जातक स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में खूब लाभ प्राप्त करता है।

दशाफल–शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। जातक की उन्नति व भाग्योदय होगा। शुक्र कर्क लग्न के लिए 'बाधक ग्रह' भी है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए क्योंकि कर्क लग्न के लाभ स्थान में बैठा हुआ ग्रह अथवा लाभेश बाधक ग्रह कहलाता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ धनेश सूर्य होने से जातक धनवान होगा। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली तथा पत्नी सुन्दर होगी।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा स्वगृही होने से '**यामिनीनाथ योग**' बनाएगा। ऐसा जातक सुखी होगा। उसे माता का सुख, वाहन का सुख एवं मकान का सुख मिलेगा
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+दशमेश मंगल नीच का होगा ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी होगा एवं शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सक्षम होगा
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश+व्ययेश बुध होने से जातक पराक्रमी होगा तथा स्वयं के बुद्धि बल से आगे बढ़ेगा।

5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ भाग्येश गुरु उच्च का होने से '**हंस योग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक जिद्दी व हठी होगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु जातक को लड़ाकू बनाएगा। '**लम्पट योग**' के कारण जातक व्याभिचारी होगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु होने से जातक क्रोधी एवं शत्रुजयी होगा।

प्रथम भाव के शुक्र का उपचार—

1. शुक्र यंत्र गले में धारण करें।
2. चमकीले स्फटिक की माला पहनें।
3. शुक्र स्तवराज का पाठ करें।
4. क्रीम रंग का सुगन्धित रुमाल हर समय जेब में रखें
5. इष्ट बल बढ़ाने हेतु देवी की उपासना करें।

कर्क लग्न में शुक्र द्वितीय भाव में
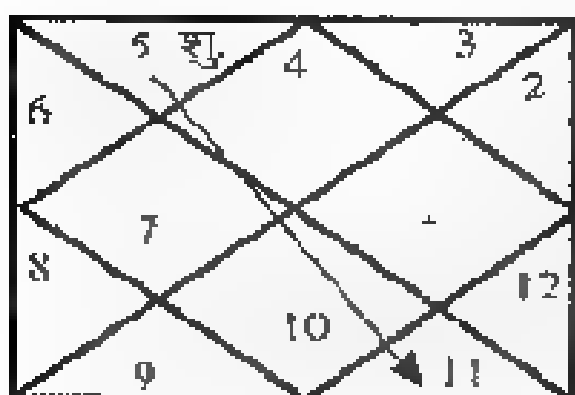
कर्क लग्न में शुक्र सिंह राशि में शत्रु क्षेत्री है। चौथे भाव से ग्यारहवें एवं ग्यारहवें भाव से चौथे स्थान पर स्थित होकर आठवें को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। यह मिश्रित फल देता है। जातक को माता का सुख प्राप्त होता है पर मां बीमारी रहती है। जातक को मकान का सुख मिलता है पर मकान से संतोष नहीं होता। नौकर का सुख होता है पर नौकर वफादार नहीं होता।

लाभेश के धन स्थान में होने से मित्र द्वारा धन लाभ, जातक की आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

निशानी—जातक की वक्तृत्व शक्ति ठीक होगी। आंख, नाक या मुंह में कोई रोग सम्भव है

विशेष—'फलदीपिका अ. 19/प. 374 के अनुसार यहां शुक्र दूसरे स्थान पर होने से योगकारक है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध -

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ यहां धनेश सूर्य स्वगृही होने से '**मातृमूल धनयोग**' बनेगा। जातक को माता की सम्पत्ति या माता समान वृद्ध स्त्री की सम्पत्ति मिलेगी

2. **शुक्र+चन्द्र**—शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा होने से ऐसा जातक धनवान होगा। उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ पचमेश+राज्येश मगल जातक को बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी बनाएगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ पराक्रमेश+व्ययेश बुध होने से जातक का धन मित्रों के रख-रखाव में खर्च होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु धन स्थान में होने से जातक को अचानक धन मिलेगा एव धन खर्च भी होता रहेगा। अर्थात् उतार चढ़ाव बहुत आएगे।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि होने से जातक को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ेगा। जातक का धन बीमारी में, पत्नी के रख-रखाव में खर्च होगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु धन के घड़े में छेद है। जातक का धन संग्रहित नहीं हो पाएगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु आर्थिक विषमता का सकेत देता है।

द्वितीय भाव के शुक्र का उपचार—

1. शुक्रवार को क्रीम रंग के वस्त्र धारण करें।
2. चादी के आभूषण अधिक पहनें।
3. चादी की अगूठी या कड़ा पहनें।
4. इत्र व सुगन्धित वस्तुओं का अधिक इस्तेमाल करें।
5. शुक्र यत्र धारण करने से धन बढ़ेगा।
6. नवरत्न जड़ित 'श्रीयत्र सुवर्ण धातु मे पहनें।
7. घर में क्रीम रंग के पर्दे व चादरों का इस्तेमाल करें।

कर्क लग्न में शुक्र तृतीय भाव में
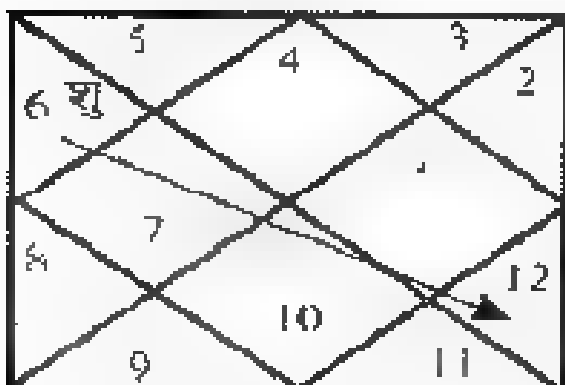
कर्क लग्न मे तृतीयस्थ शुक्र नीच का होकर ग्यारहवें भाव से पंचम एवं चौथे भाव से बारहवें होकर भाग्य भवन पर पूर्ण दृष्टि डाले हुए है। ऐसा जातक धार्मिक तथा मंत्र विद्या का जानकार होता है। उसका कण्ठ उच्चारण स्पष्ट घोष वाला होता है। शुक्र नीच का होने से जातक बहुत कामुक होगा।

निशानी जातक को मा का सुख पूर्ण नहीं मिलेगा। जातक की माता बीमार रहेगी। जातक का वैवाहिक जीवन पूर्ण सुखमय होगा जातक का स्वय अपनी बहनों से वफादारी की उम्मीद

रखना बेकार है।

सावधानी मित्रों से सम्बन्ध रखते समय सावधानी बरतें क्योंकि पीठ पीछे बुराई होगी एवं मित्र धोखा दे सकते हैं।

दशाफल—शुक्र की दशा अच्छी जाएगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ धनेश सूर्य पराक्रम स्थान मे जातक को भाई बहन दोनों का सुख देता है। उसके भाई-बहन सम्पन्न होते है।
2. **शुक्र+चन्द्र**—शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा बहनों की अधिकता देता है. जातक को स्त्री मित्र से लाभ होगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मंगल तीसरे स्थान में तीन भाई व तीन बहनों का सुख देता है। जातक के कुटम्बीगण सम्पन्न होंगे।
4. **शुक्र+बुध**—यदि शुक्र के साथ बुध हो तो यहा **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। शुक्र का अशुभत्व नष्ट हो जाएगा। जातक का पराक्रम, जनसम्पर्क तेज होगा। कुटुम्बीजनों, रिश्तेदारों की बनिस्बत मित्रों व समाज के अन्य लोगों से अधिक लाभ मिलेगा। जातक को लेखनी एवं प्रकाशन सम्बन्धी कार्यों से यश मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु पराक्रम स्थान में जातक को भाग्यशाली बनाता है पर कुटम्बी लोग ही जातक के शत्रु होंगे।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि पराक्रम स्थान मे जातक को मित्रों से ईर्ष्या कराएगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ पराक्रम स्थान में राहु भाई बहनों से झगड़ा कराएगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ पराक्रम स्थान में केतु जातक को कीर्ति देगा परन्तु बहनों से नहीं बनेगी। बुआ का सुख कमजोर होगा।

तृतीय भाव के शुक्र का उपचार—

1. घर से निकलते समय चीनी या मिष्ठान का सेवन करें
2. दही-दूध, आलू का अधिक सेवन करें।
3. शुक्रवार को चादी खरीदें।
4. शुक्र स्तवराज का पाठ करें
5. क्रीम रंग का सुगन्धित रुमाल हर समय जेब में रखें
6. शयन कक्ष की दीवारो में क्रीम रग का इस्तेमाल करे।

कर्क लग्न में शुक्र चतुर्थ भाव में
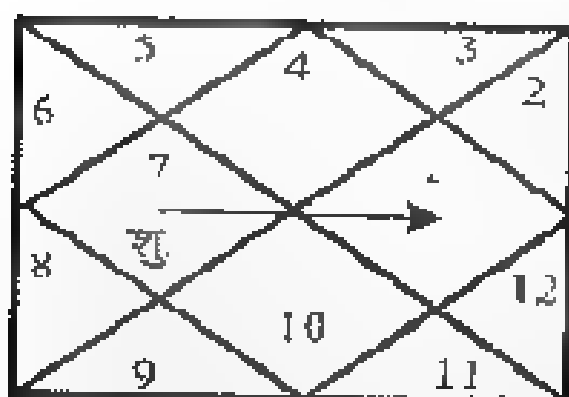
कर्क लग्न में चतुर्थ भाव में स्थित शुक्र स्वगृही होगा। लाभेश का स्वगृही होकर केन्द्रस्थ होने से एवं दशम भाव पर दृष्टि होने से शुक्र का शुभ फल बहुत उत्तम रहेगा.

कुलदीपक योग—ऐसा जातक अपने कुटुम्ब, परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

मालव्य योग—स्वगृही शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना यह पचमहापुरुष योगो में से उत्तम योग है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है। जातक को जीवन में भौतिक सुख समृद्धि, वाहन एवं मकान का सुख, नौकर-चाकर का सुख पूर्ण प्राप्त होगा। जातक का दो-तीन मंजिला मकान होगा। मकान एक से अधिक होगा एवं कम से कम दो चार नौकर होंगे।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनता है। जातक को मां से या भूमि से रुपया मिलेगा। व्यापार में लाभ अधिक होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**—शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा जातक को माता का सुख, एक से अधिक वाहन का सुख देगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मगल होने से जातक के पास एक से अधिक बगले होंगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी दगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ तृतीयेश+व्ययेश बुध केन्द्र में होने से जातक महान पराक्रमी होगा उसके पास दो गाड़ियां चार पहियों वाली होंगी।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु केन्द्र में जातक को उत्तम वाहन भवन एवं नौकर चाकर का सुख देगा पर गुप्त शत्रु बहुत होंगे।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। जातक को पानी से रुपया मिलेगा। गुप्त व्यापार से लाभ होगा। जातक उद्योगपति होगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु विद्या प्राप्ति में बाधक है। तेज गति के वाहन से भय है।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु विद्या में बाधा डालेगा। जातक को हृदय रोग होगा।
9. यहां सूर्य यदि स्वगृही या उच्च का हो तो जातक अपने कुटुम्ब में सबसे धनवान व्यक्ति होगा। परन्तु ऐसी स्थिति नहीं बनती क्योंकि गणितागणित स्पष्टीकरण से शुक्र के सामने सूर्य कभी आ ही नहीं सकता हां, सिंह का सूर्य फिर भी हो सकता है. ऐसे व्यक्ति का जन्म सितम्बर माह मे सूर्योदय के पूर्व प्रातः 4-5 बजे का होगा।

चतुर्थ भाव के शुक्र का उपचार–

1. अपने घर में सफेद व क्रीम रंग के पुष्पों के पौधे लगाएं।
2. शुक्रवार के दिन क्रीम रंग के कपड़े पहनें
3. क्रीम रंग का सुगन्धित रुमाल हर समय जेब में रखें।
4. भौतिक सुख की उपलब्धि हेतु 'शुक्र अष्टोत्तर शत नामावली' का हवनात्मक प्रयोग करें।
5. वाहन क्रीम कलर का खरीदें.

कर्क लग्न में शुक्र पंचम भाव में
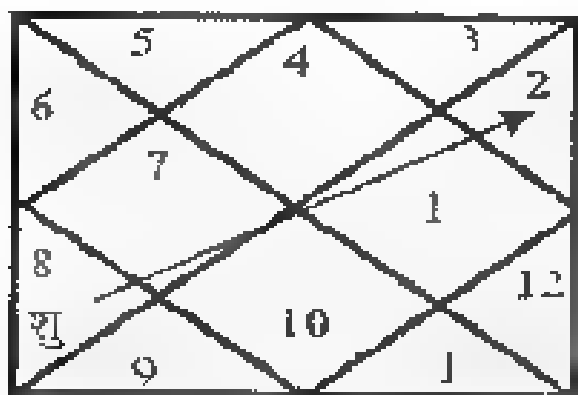
कर्क लग्न में शुक्र पांचवें स्थान पर वृश्चिक राशि का मित्रक्षेत्री होगा। यह शुक्र चौथे भाव से दूसरे स्थान पर एवं ग्यारहवें भाव से सातवें स्थान पर बैठ कर लाभ स्थान पर पूर्ण दृष्टि डालेगा। जातक मंत्र-तंत्र ज्योतिष एवं अध्यात्म विद्या का जानकार होगा। जातक को माता का सुख रहेगा। उत्तम मकान वाहन का सुख रहेगा। शुक्र मंगल क्षेत्री होने से जातक कामुक एवं रंगीन मिजाज का होगा।

निशानी–शुक्र पांचवें होने से जातक को कन्या सन्तति की बाहुल्यता रहेगी.

जातक व्यापारी होगा एवं व्यापार में अच्छा रुपया कमाएगा।

जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

जातक को प्रथम कन्या होगी

यदि पुरुष ग्रह की पंचम भाव पर दृष्टि न हो तो जातक के छः कन्या होंगी।

दशा– शुक्र की दशा में भाग्योदय होगा। **'फलदीपिका'** अ. 19/पृ. 374 के अनुसार ऐसे जातक के लिए बुध की दशा भी योगकारक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य–**शुक्र के साथ धनेश सूर्य पंचम भाव में जातक को पुत्र संतति देगा। जातक विद्यावान होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र–**शुक्र के साथ लग्नेश चंद्रमा यहां नीच का होगा। जातक को विषभोजन का भय बना रहेगा कला अभिनय के क्षेत्र में जातक विशेष उन्नति करेगा।
3. **शुक्र+मंगल–**शुक्र के साथ पंचमेश मंगल यहां स्वगृही होगा। जातक के तीन पुत्र होंगे। जातक मैकेनिकल टैक्नीकल लाईन का जानकार होगा
4. **शुक्र+बुध–**शुक्र के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध जातक को बुद्धिमान बनाएगा। जातक तंत्र-मंत्र का जानकार होगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु पंचम स्थान में जातक को पुत्र संतति देगा। पांच पुत्रों की संभावना है। जातक अध्ययन अध्यापन में रुचि लेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि जातक की विद्या प्राप्ति में एक बार रुकावट लाएगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु पुत्र संतान के सुख में बाधक है तथा वंश वृद्धि में रुकावट पैदा करता है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु संतति सुख में बाधक है तथा एकाध गर्भपात कराता है।
9. मंगल यदि केन्द्र में स्वगृही या उच्च का हो तो जातक का भाग्योदय प्रथम सन्तति के पश्चात् तेजी से होगा।

पंचम भाव के शुक्र का उपचार–

1. संतान प्राप्ति हेतु 'शुक्र यंत्र' धारण करें। यदि कन्या अधिक हों तो शुक्र यंत्र न पहनें.
2. विद्या में विशेष सफलता हेतु 'सरस्वती यंत्र' चांदी में पहनें।
3. शुक्र नामावली का पाठ करें।
4. क्रीम रंग का सुगंधित रुमाल हर समय जेब में रखें।
5. घर की दीवारों, पर्दों का रंग क्रीम रखें।

कर्क लग्न में शुक्र षष्टम भाव में
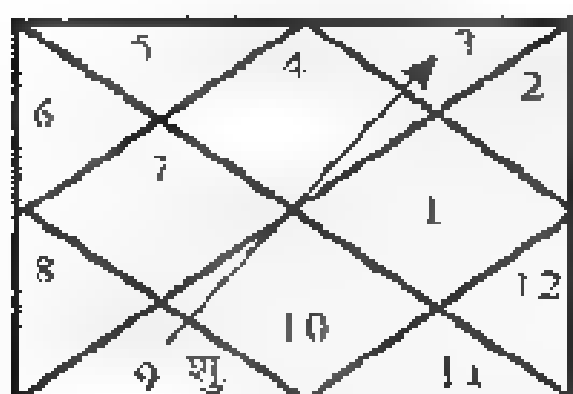
कर्क लग्न में शुक्र छठे स्थान पर धनु राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। जातक के शत्रु बहुत होंगे पर शत्रुओं पर विजय मिलेगी।

विवाह का कारक होकर शुक्र छठे होने पर एवं सातवें भाव से बारहवें स्थान पर होने से वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होगा। जातक दूसरी स्त्रियों में अपने काम की तृप्ति ढूंढ़ेगा। जातक को पेशाब में शक्कर की बीमारी (डायबीटिज) होगी।

लाभभंग योग–लाभेश छठे स्थान में होने से एवं लाभ भाव से शुक्र आठवें स्थान पर होने से यह योग बना। जातक को व्यापार में अच्छा लाभ नहीं होगा।

सुखहीन योग–सुखेश छठे स्थान में जाने से यह योग बना। सुख में कमी रहेगी वाहन सुख सन्तोषकारी नहीं रहेगा। जातक मकान बदलता रहेगा

सावधानी बुरी सोहबत से जातक व्यसनी हो जाएगा, अतः बुरे दोस्तों के संग से बचें अन्यथा गुप्त बीमारी घातक साबित होगी

दशा–शुक्र की दशा कष्टकारक, रोगकारक होगी। कर्क लग्न वालों के लिए शुक्र बाधक ग्रह भी है। इसका ध्यान रखना चाहिए।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ धनेश सूर्य होने से '**धनहीन योग**' बनेगा। जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा, जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मंगल होने से '**विद्याभंग योग**' एवं '**राज्यभंग योग**' बनेगा। ऐसे जातक को नौकरी हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ पराक्रमेश+खर्चेश बुध होने से '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनवान होगा पर प्रतिष्ठा (मान) भंग होने का भय बना रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ षष्टेश+भाग्येश गुरु होने से '**विपरीत राजयोग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर भाग्योदय आसानी से नहीं होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि होने से '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर विवाह देरी से होगा
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक रोग एवं शत्रु पर विजय पाने में पूर्ण सक्षम होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक को गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग का भय रहेगा।

प्रथम भाव के शुक्र का उपचार–

1. राजयोग को मजबूत करने के लिए 'शुक्र यंत्र' धारण करें।
2. शुक्रवार को व्रत कथा, कर्पूर आरती करें।
3. 'शुक्र कवच' का नित्य पाठ करें।
4. घर से निकलते समय राई के दाने मुंह में डालकर बाहर निकलें
5. शुक्रवार के दिन अग्निकोण (SE) की ओर यात्रा न करें।
6. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णत: वर्जित हैं

कर्क लग्न में शुक्र सप्तम भाव में

कर्क लग्न में शुक्र सातवें होने से मकर राशि का मित्रक्षेत्री है। चौथे भाव से केन्द्र में ग्यारहवें भाव से कोण (नवमें) में होने से शुक्र अत्यन्त शुभ फलदाई है। जातक दिखने में खूबसूरत एवं आकर्षक होगा। जातक को माता एवं मकान का सुख उत्तम होगा। **कुलदीपक**
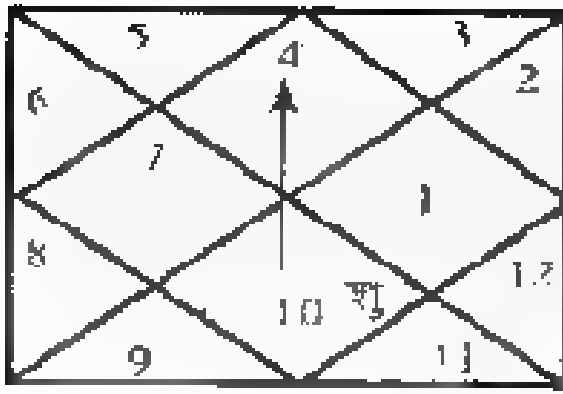
योग–ऐसा जातक अपने परिवार-कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होगा।

निशानी–लाभेश, लाभ स्थान से नवें में होने से जातक व्यापारप्रिय होगा एवं व्यापार में अच्छा कमाएगा।

जातक पराई स्त्रियों मे ज्यादा रुचि रखेगा, पर विवाह स्वजाति मे करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर पति-पत्नी के विचारों में मतभेद रहेगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो '**लग्नाधिपति योग**' बनता है। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा। पत्नी रूप की रानी होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल उच्च का होकर '**रुचक योग**' बनाएगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। किस्मत विवाह के बाद चमकेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक पराक्रमी होगा। बुद्धिमान होगा। जीवनसाथी सुन्दर होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु हो तो व्यक्ति अपनी जाति की कन्या से विवाह करेगा। विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**शशयोग**' बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान् होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु विवाह में विलम्ब कराता है। पति पत्नी में वैचारिक मतभेद होगा।

सप्तम भाव के शुक्र का उपचार

1. वैवाहिक सुख हेतु 'शुक्र यंत्र' धारण करें।
2. तुलसी के पौधे को चांदी के बर्तन में जल लेकर सींचे।
3. चमकीले स्फटिक की माला पहनें।
4. गृहस्थ सुख हेतु हीरे की अंगूठी व आभूषण पहनें।
5. श्रीयंत्र के चारों ओर नव हीरे या जिरकान जड़वाकर गले में धारण करें।

कर्क लग्न में शुक्र अष्टम भाव में

कर्क लग्न में शुक्र अष्टम स्थान में कुम्भ राशि का होकर मित्रक्षेत्री होगा। यह शुक्र चौथे भाव में कोण में, तथा ग्यारहवें भाव में दसवें होकर धन स्थान पर दृष्टि डाल रहा है। यह
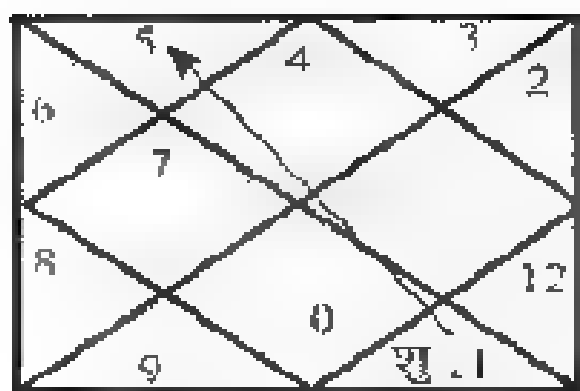
शुक्र जातक को बुद्धिमान एवं विद्वान बनाता है। परन्तु विद्या में एकाध बार रुकावट जरूर आती है

निशानी–जातक पुराने मकान में मरम्मत करवा कर रहेगा। जातक को डायाबिटीज होगी।

लाभभंग योग–लाभेश होकर शुक्र आठवें जाने से यह योग बना ऐसे जातक को लाभ रुक-रुक कर होता है

सुखहीन योग–सुखेश होकर शुक्र आठवें जाने से यह योग बन रहा है। ऐसे जातक छोटी उम्र में अपने भाई बहन को खो देते है। शुरु में छोटे होते हैं पर मध्य आयु में पहुचते-पहुचते स्वयं परिवार के बड़े मुखिया हो जाते हैं।

दशा–शुक्र की दशा अच्छी नहीं जाएगी अष्टमस्थ इस शुक्र को यदि कोई पाप ग्रह देखता हो तो जातक परिजात अ.5/श्लोक 89 के अनुसार जातक की मृत्यु क्षयरोग, प्रमेह से होगी। शुक्र की दशा में जातक को बीमारी लगेगी। कर्क लग्न वालों के लिए शुक्र बाधक ग्रह है। इस बात का ध्यान रखना चाहिए।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाएगा। जातक का रुपया मुकदमेबाजी या शत्रुओं का मुकाबला करने मे खर्च होगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल '**संतानहीन योग**' एवं '**राज्यभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को विद्या में बाधा, संतति व नौकरी विलम्ब से लगेगी
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनाएगा ऐसा जातक धनी होगा। जातक मकान वाहन सुख से सम्पन्न होगा पर मानभंग होने का खतरा बना रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु होने से '**भाग्यभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाएगा। ऐसा जातक सौभाग्यशाली एवं धनी होगा पर काफी संघर्ष के बाद।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**विपरीत राजयोग**' बनाएगा। जातक धनी होगा पर '**विलम्ब विवाह योग**' के कारण विवाह सुख देरी से मिलेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गुप्त रोग बनाएगा जातक की आयु को खतरा है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के जीवन काल में शल्य चिकित्सा जरूर कराएगा।

अष्टम भाव के शुक्र का उपचार–

1. राजयोग को मजबूत करने के लिए 'शुक्र यंत्र' धारण करें।

2. शुक्रवार को व्रत कथा तथा कर्पूर आरती करें।
3. 'शुक्र कवच' का नित्य पाठ करें।
4. घर से निकलते समय राई के दाने मुह मे डालकर बाहर निकलें।
5. शुक्रवार के दिन अग्नि कोण (SE) की ओर यात्रा न करें
6. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णतः वर्जित है।

कर्क लग्न में शुक्र नवम भाव में
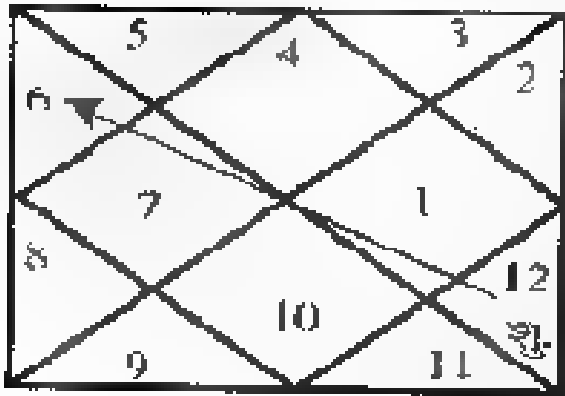
कर्क लग्न में नवम भावस्थ शुक्र उच्च का होता है। यह चौथे भाव से छठे एवं ग्यारहवें भाव से ग्यारहवें होकर तीसरे भाव पर पूर्ण दृष्टि से देखा रहा है ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलती है। जातक का पिता धार्मिक प्रतिष्ठित एवं अत्यधिक धन-दौलत वाला होता है। जातक की माता अच्छी होगी। जातक को उत्तम वाहन एवं उत्तम मकान का सुख मिलेगा।

निशानी—जातक को मित्र एवं बड़े भाई साहब से लाभ होगा।

विशेष—कर्क लग्न वालो के लिए शुक्र लाभेश होने के कारण बाधक ग्रह है पर लाभ स्थान में कोई अन्य ग्रह होगा तो वह बाधक ग्रह कहलाएगा; शुक्र नहीं

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य व्यक्ति को धनवान एवं सभी प्रकार के ऐश्वर्यशाली ससाधनों से युक्त जीवन देगा।
2. **शुक्र+चन्द्र** शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा जातक को परिश्रम का समुचित लाभ देगा। जातक क्रियाशील एवं सौन्दर्य प्रेमी होगा।
3. **शुक्र+मगल** शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मगल व्यक्ति को बड़ी भूमि एवं भवन का स्वामी बनाएगा। उसे पैतृक सम्पत्ति भी मिलेगी।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ पराक्रमेश बुध **'नीचभग राजयोग'** बनाएगा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी तथा बुद्धिमान होगा।
5. **शुक्र+गुरु** -शुक्र के साथ गुरु होने से **'किम्बहुना योग'** बनता है अर्थात् इससे अधिक और क्या? जातक परम धार्मिक, परम दयालु परम परोपकारी होता हुआ राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराएगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधा का कार्य करेगा। फिर भी जातक धार्मिक एवं नीतिवान होगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु जातक को उन्नति के चरम शिखर पर पहुचाएगा।

नवम भाव के शुक्र का उपचार–

1. भाग्योदय हेतु 'शुक्र यंत्र' शीघ्र पहने।
2. हीरे की अंगूठी व हीरे के आभूषण अधिकाधिक पहनें।
3. शीघ्र भाग्योदय हेतु शुक्र अष्टोत्तर शत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें
4. नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र धातु मे पहने।
5. नव हीरा जडित श्रीयंत्र गले में धारण करे।
6. वाहन क्रीम रंग का खरीदें तो उन्नति होगी।

कर्क लग्न में शुक्र दशम भाव में
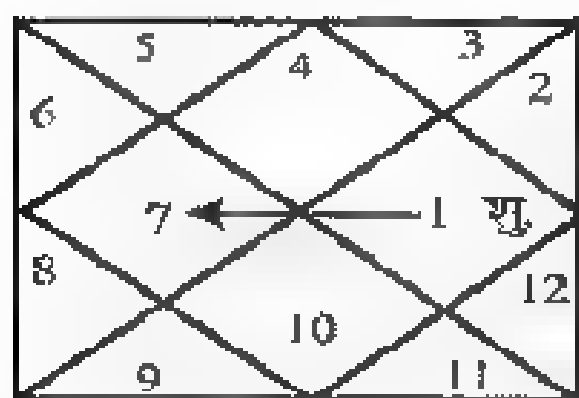
कर्क लग्न में शुक्र दसवें स्थान में मेष राशिगत होकर मित्रक्षेत्री होगा। चौथे भाव से सातवें स्थान पर, एकादश भाव से बारहवें स्थान पर होकर चतुर्थ भाव अपने ही घर को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

ऐसे जातक को शुक्र के धंधे से लाभ होता है। जातक ऐश्वर्यशाली वस्तुओं का व्यापारी, हीरा-मोती, जवाहरात, स्वर्ण आभूषण, रत्न, केमीकल स्त्री रोग विशेषज्ञ एवं कलात्मक वस्तुओं का पारखी, एक्सपोर्ट-इम्पोर्ट के विदेशी कारोबार से लाभ प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है

निशानी–जातक के बड़े भाई-बहन से सम्बन्ध अच्छे नहीं होते। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा।

दशा–शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। कर्क लग्न वालों के लिए शुक्र बाधक ग्रह है, इस बात का ध्यान रखना चाहिए

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य यहां उच्च का होकर '**रविकृत राजयोग**' बनाएगा। जातक उच्च नौकरी या व्यापार करेगा।
2. **शुक्र+चन्द्र**–शुक्र के साथ लग्नेश चन्द्रमा जातक को व्यापार में उन्नति देगा। ऐसा जातक धनवान होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल यहां '**रुचक योग**' एवं '**पद्मसिंहासन योग**' बनाएगा ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से व्यक्ति महान पराक्रमी तथा बुद्धिशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु होने से व्यक्ति परम सौभाग्यशाली होगा। पर प्रत्येक कार्य मे एक बार अड़चन जरूर आएगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ सप्तमेश अष्टमेश शनि यहा नीच का होगा। ऐसा जातक पराक्रमी तो होगा पर पत्नी से कम निभेगी।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु राजकार्य की पूर्ण सफलता में बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु राजकार्य की प्रगति में अवरोधक है। फिर भी जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम व समर्थ होगा।

दशम भाव के शुक्र का उपचार–

1. राजयोग व नौकरी हेतु 'शुक्र यंत्र' धारण करें।
2. व्यापार लाभ हेतु नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र पहनें।
3. हीरे की अंगूठी व हीरे के आभूषण अधिकाधिक पहनें।
4. शीघ्र राज्यसुख की प्राप्ति हेतु शुक्र अष्टोत्तर शत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।
5. कनकधारा यंत्र+श्रीयंत्र+कुबेर यंत्र सुनहरी फ्रेम में जड़वाकर स्थापित करें।
6. घर की दीवारों पर क्रीम रंग का इस्तेमाल करें।

कर्क लग्न में शुक्र एकादश भाव में
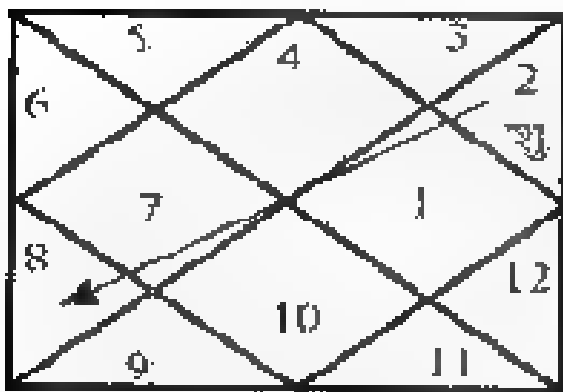
कर्क लग्न में शुक्र एकादश भाव में होने से स्वगृही होगा। चौथे भाव से आठवें एवं पांचवें पर दृष्टि होने से शुक्र जातक को आर्थिक लाभ देगा। जातक को उत्तम मित्र एवं श्रेष्ठ पड़ौसी मिलेंगे।

जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा, जीवनसाथी वफादार एवं पुण्यवान होगा।

निशानी–जातक को माता का सुख तो होगा पर मां बीमार रहेगी। जातक की प्रथम संतान कन्या होगी। जातक को कन्या सन्तति की बाहुल्यता रहेगी।

विशेष–जातक पारिजात के अनुसार कर्क लग्न वालों के लिए शुक्र की यह स्थिति 'बाधक ग्रह' का काम करेगी। बाधक ग्रह अपनी दशा में जातक की उन्नति में बाधक होता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ धनेश सूर्य होने से जातक महान् धनी होगा। ऐसा जातक पुत्रवान जरूर होगा
2. **शुक्र+चन्द्र**–यदि शुक्र के साथ चन्द्रमा हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। इससे अधिक और क्या? एसा जातक उच्च कोटि का उद्योगपति किंवा व्यापारी होता है तथा व्यापार में खूब धन कमाता है।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ पंचमेश+राज्येश मंगल जातक को उद्योगपति बनाएगा। जातक के तीन पुत्र होंगे
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ तृतीयेश+व्ययेश बुध की युति से जातक कुशल व्यापारी होगा पर व्यापार में उतार-चढ़ाव आता रहेगा। जातक के कन्याएं अधिक होंगी

5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ भाग्येश+षष्टेश गुरु लाभ स्थान में होने से जातक भाग्यशूर होगा। जातक के पुत्र पराक्रमी होंगे पर उनके जीवन में शत्रु भी होंगे जो समय-समय पर परेशान करेंगे।
6. **शुक्र+शनि** शुक्र के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि लाभ स्थान में जातक को शूरवीर बनाएगा। जातक व्यापार प्रिय होगा। प्रायः जीवन का प्रारंभ प्राईवेट नौकरी से होगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ यहां राहु व्यापारिक लाभ को तोड़ेगा तथा संतान सुख में व्यवधान उत्पन्न करेगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ यहां केतु वंशवृद्धि में बाधक है। व्यापार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

एकादश भाव के शुक्र का उपचार—

1. व्यापार लाभ हेतु 'शुक्र यंत्र' धारण करें।
2. शुक्रवार के दिन चांदी के बर्तन से तुलसी में जल सींचें।
3. कनकधारा यंत्र+श्रीयंत्र+कुबेर यंत्र सुनहरी फ्रेम में जड़वाकर स्थापित करें।
4. वाहन क्रीम रंग का खरीदें।
5. ऑफिस में क्रीम रंग का फर्नीचर बनवाएं।

कर्क लग्न में शुक्र द्वादश भाव में
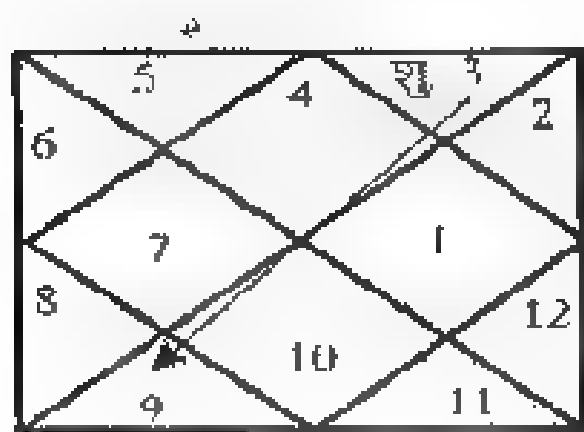
कर्क लग्न में द्वादशस्थ शुक्र मिथुन राशि में होगा। शुक्र की दृष्टि छठे भाव पर होने से जातक उड़ाऊ व खर्चीले स्वभाव का होगा।

सुखहीन योग—सुखेश शुक्र बारहवें होने से यह योग बना। ऐसे जातक की माता छोटी उम्र में गुजर जाएगी या बीमार रहेगी। माता से जातक के संबंध मधुर नहीं होंगे।

लाभभंग योग जातक को मकान का, वाहन का सुख उत्तम मिलेगा। परन्तु मकान एवं वाहन की सुख संतोषजनक नहीं होगा।

द्वादश शुक्र योग—जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेगा। फलदीपिका अ. 19/पृ. 374 के अनुसार शुक्र की यहां स्थिति विशेष योगकारक है।

नेत्र विकार जातक की बाईं आंख में विकार हो सकता है।

दशा—शुक्र की दशा जातक के लिए लाभकारी नहीं होगी। क्योंकि 'कर्क लग्न' वालों के लिए शुक्र बाधक ग्रह का कार्य करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य यहां '**धनहीन योग**' बनाता है। यह धन पीड़ा एवं नेत्र पीड़ा दोनों को दर्शाता है।

2. **शुक्र+चन्द्र**—शुक्र के साथ चन्द्रमा यहा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। वामनेत्र में पीड़ा व्याधि रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ यहा मंगल क्रमशः '**विद्याभंग योग**' एवं '**राज्यभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को प्रारंभिक विद्या में बाधा आती है। सरकारी नौकरी प्राप्त करने में परेशानी आती है।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध यहा '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाता है। जातक धनी तथा वैभव सम्पन्न होगा परन्तु मान भंग होने का भय बना रहेगा
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु क्रमशः '**भाग्यभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाएगा. जातक धनी, पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा पर संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। प्रथम प्रयास मे सफलता नहीं मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि होने से '**विलम्ब विवाह योग**' बनता है साथ ही '**विपरीत राजयोग**' भी बनता है। जातक का विवाह देरी से होगा पर विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु होने से जातक के '**लम्पट योग**' बनता है। जातक व्यभिचारी होगा। जातक विदेश जाएगा एवं विदेशी कन्या से विवाह करेगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु होने से जातक देशाटन, तीर्थाटन में रुचि लेगा तथा विदेशी व्यापार से (Export-Import) से धन कमाएगा।

द्वादश भाव के शुक्र का उपचार—

1. राजयोग को मजबूत करने के लिए '**शुक्रयंत्र**' धारण करें।
2. शुक्रवार को व्रत कथा आरती करें.
3. '**शुक्र कवच**' का नित्य पाठ करें
4. शुक्रवार के दिन अग्नि कोण (SE) की ओर यात्रा न करें।
5. शुक्रवार को नमक और खटाई पूर्णतः वर्जित है।
6. किसी की जमानत न दें एवं रुपया किसी को उधार न दें।

□□□

कर्क लग्न में शनि की स्थिति

कर्क लग्न में शनि प्रथम भाव में
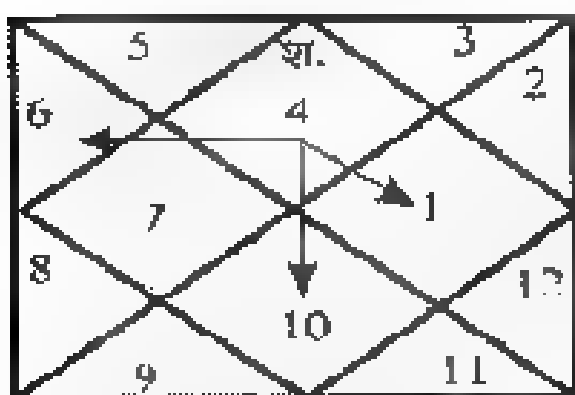
कर्क लग्न में सातवें एवं आठवें घर का स्वामी होने से शनि मारक है। शनि की दृष्टि में विष, भय एवं अलगाववाद की मनोवृत्ति है। यहां पर जलराशि में बैठकर शनि तीसरे, सातवें एवं दसवें स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

निशानी—ऐसे जातक के जीवन में भाग्योदय का अवसर 26 वें वर्ष में या 36 वें वर्ष के मध्य होता है तथा आयु के 25 वें एवं 31 वें वर्ष आर्थिक विषमता, नुकसान व संघर्ष के भय होते हैं।

व्यवहार—ये लोग कुछ मधुरभाषी होते हैं। ऐसे जातक अन्तकरण में ईर्ष्यालु स्वभाव के होते हैं तथा अपने से बड़े या वरिष्ठ अधिकारी से झगड़े कर उन्नति प्राप्त करते हैं, यद्यपि इनका स्वभाव अच्छा होता है पर इनमें स्वार्थी प्रवृत्ति कुछ विशेष होती है।

रोग—इनको सर्दी-जुकाम, खांसी व दमे की शिकायत रहती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. कर्क लग्नस्थ शनि की दृष्टि जिन जिन स्थानों पर है, उन उन स्थानो में सूर्य या राहु में से कोई भी ग्रह वहां बैठा हो तो जातक को उस भाव के शुभ फल से वंचित कर देगा, अर्थात् यदि तीसरे भाव मे राहु या सूर्य हो तो जातक को भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा।
2. यदि सातवें स्थान में राहु या सूर्य हो तो जातक को जीवनसाथी का सुख नहीं मिलेगा।
3. यदि दसवें स्थान मे राहु या सूर्य हो तो जातक को पिता का सुख, राज्य का सुख नहीं मिलेगा।

कर्क लग्न में शनि द्वितीय भाव में
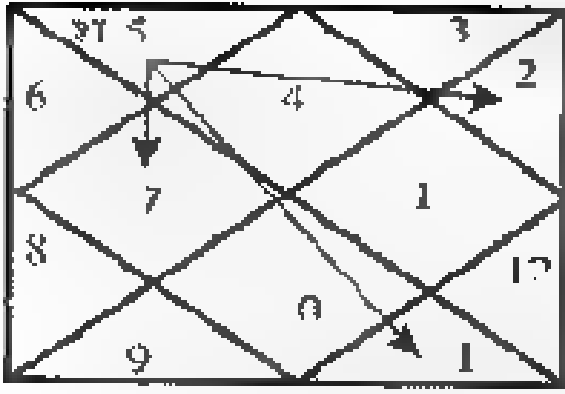
कर्क लग्न में द्वितीयस्थ शनि सिंह राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। सातवें भाव से आठवें एवं आठवें भाव से सातवें स्थान पर रहकर शनि चौथे, आठवें एवं ग्यारहवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

यह शनि कुटुम्ब सुख में न्यूनता देता है। जातक के कुटुम्बीगण जातक के शुभचिन्तक नहीं होंगे। जातक को नेत्र पीड़ा, दांत की पीड़ा एवं धन की कमी मध्यम आयु तक होती है तथा उसकी भाषा ओछी होती है। सप्तमेश होकर सातवें भाव से आठवें होने के कारण पत्नी से विचारों में मतऐक्यता नहीं रहेगी

निशानी—जातक की माता बीमार रहेगी। जातक का बड़े भाई से सम्बन्ध अच्छा नहीं रहेगा। भागीदार से सम्बन्ध तनाव पूर्ण रहेंगे। शनि जातक को आकस्मिक धन भी देता है।

दशा—शनि की दशा मारक होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—शनि के साथ सूर्य हो तो **'कलत्रमूल धनयोग'** बनेगा जातक का ससुराल धनवान होगा। जातक को पत्नी एवं ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है।
2. **शनि+चन्द्र**—लग्नेश व सप्तमेश+अष्टमेश की युति धन स्थान में विवाह के बाद जातक की उन्नति होने का संकेत देती है।
3. **शनि+मंगल**—पंचमेश+दसमेश की युति सप्तमेश+अष्टमेश के साथ धन स्थान में धनार्जन में सहायक है। जातक विवाह के बाद धनी एवं प्रथम पुत्र संतति के बाद महाधनी होगा।
4. **शनि+बुध**—तृतीयेश+खर्चेश बुध की युति सप्तमेश+अष्टमेश शनि के साथ धन स्थान में धन को अपव्यय कराएगी।
5. **शनि+गुरु**—षष्ठेश+भाग्येश गुरु की युति सप्तमेश+अष्टमेश शनि के साथ धन स्थान में होने से विवाह के बाद जातक का भाग्योदय कराएगी।
6. **शनि+शुक्र**—लाभेश+सुखेश शुक्र की युति सप्तमेश+अष्टमेश शनि के साथ धन स्थान में होने से जातक का धन वाहन इत्यादि के रख रखाव में खर्च कराएगी।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु धनहानि कराता है तथा धन का संग्रह नहीं होने देता।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु धन की बरकत में बाधक है।

द्वितीय भाव के शनि का उपचार—

1. नवरत्न जड़ित 'श्रीयंत्र' का लॉकेट पहनने से आर्थिक विषमताएं दूर होंगी

2. दाम्पत्य सुख हेतु शनि भार्या स्तोत्र का पाठ करें।

कर्क लग्न में शनि तृतीय भाव में
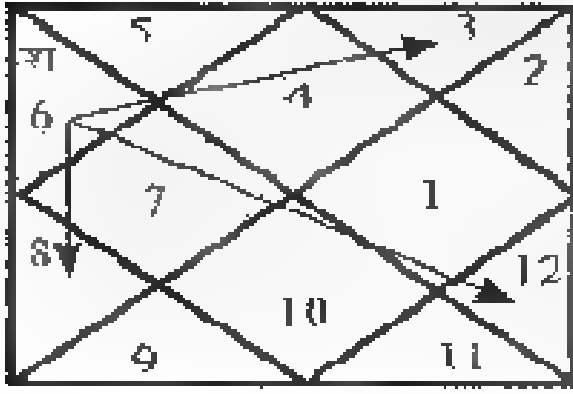
कर्क लग्न में तीसरे स्थान पर कन्या का शनि मित्रक्षेत्री होगा। यह शनि सातवें भाव से सातवें कोण में और आठवें भाव से आठवें स्थान पर बैठकर पंचम भाव, नवमभाव और द्वादश भाव पर दृष्टि डालेगा। यह शनि वैवाहिक सुख तो उत्तम देगा पर शयन सुख में बाधक का कार्य करेगा

जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधा, उत्तम होते हुए भी उसका पूरा आनंद नहीं मिलेगा। जातक की आयु लम्बी होगी पर वृद्धावस्था अच्छी नहीं होगी।

जातक डरपोक स्वभाव का होगा तथा छोटे भाई बहनों से अच्छे सम्बन्ध नहीं रख पाएगा।

निशानी–

1. जातक के अध्ययन में बाधा आकर पढ़ाई अधूरी छूट जाएगी।
2. सन्तान प्राप्ति मे तकलीफ होगी।
3. जातक अंधविश्वास का विरोधी होगा।
4. जातक व्यर्थ की चिन्ताएं अधिक करेगा। जिससे नींद कम आएगी।

दशा–शनि की दशा मिश्रित फल देगी ऐसा मीठा फल जिसका अन्त कड़वा होगा

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यदि शनि के साथ सूर्य हो तो जातक का बड़ा भाई गुजर जाएगा एवं जातक स्वयं परिवार का मुखिया बन जाएगा
2. **शनि+चन्द्र**–लग्नेश चंद्रमा सप्तमेश के साथ तृतीय स्थान मे होने से जातक का पराक्रम विवाह के बाद बढ़ेगा।
3. **शनि+मंगल**–पंचमेश+दशमेश मंगल के साथ शनि होने से जातक को भाइयों से लाभ रहेगा परन्तु मित्रों से अधिक लाभ रहेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध हो तो जातक छोटे भाई बहनो की सहायता करेगा तथा अनजान व्यक्ति की सहायता भी करेगा।
5. **शनि+गुरु**–भाग्येश+षष्टेश गुरु शनि के साथ तृतीय स्थान मे होने से विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

6. यदि शनि के साथ और कोई पाप ग्रह हो तो जातक 'भातृद्वेषी' होगा।

कर्क लग्न में शनि चतुर्थ भाव में
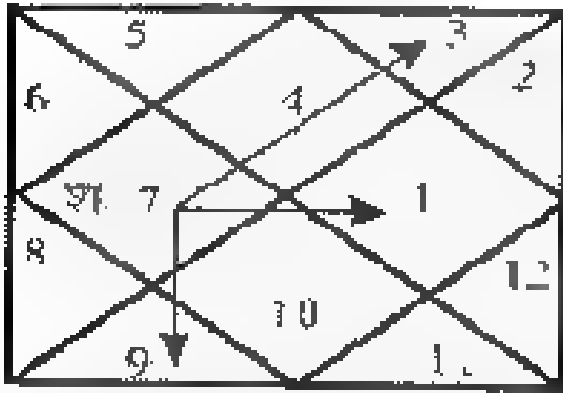
कर्क लग्न में चतुर्थ भाव में स्थित शनि उच्च का होगा। जातक को मकान वाहन का सुख उत्तम होगा। जातक पर कर्जा नहीं होगा। जातक के शत्रु स्वतः ही नष्ट होते रहेंगे।

शशयोग—शनि केन्द्र में उच्च का होने के कारण **'शशयोग'** बनता है। जो पंच महापुरुष योगों में से एक उत्तम योग है सप्तमेश उच्च का होने से जातक का जीवनसाथी उच्च कुटुम्ब परिवार से होगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक नौकर-चाकर, बगला गाड़ी ऐश आराम में परिपूर्ण जीवन जीएगा।

निशानी—

1. विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
2. जातक व्यापार के माध्यम से खूब रुपया कमाएगा।
3. जातक विदेश जाएगा तो खूब रुपया कमाएगा।

विशेष—एक्सपोर्ट इम्पोर्ट व हैण्डीक्राफ्ट के धंधे में जातक को लाभ होता है।

दशा—शनि की दशा शुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **शनि+सूर्य**—शनि के साथ यदि सूर्य हो तो **'नीचभंगराजयोग'** बनता है। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।
2. **शनि+चन्द्र**—लग्नेश चन्द्रमा केन्द्र में शनि के साथ होने से जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का निजी भवन, निजी वाहन उत्तम श्रेणी का होगा
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल होने से जातक बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक का ससुराल धनी व प्रतिष्ठित होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध होने से जातक पराक्रमी तथा कुल का दीपक होगा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ भाग्येश गुरु होने से **'केसरी योग'**, **'कुलदीपक योग'** बनेगा। ऐसा जातक परिवार का प्रेमी व अतिभाग्यशाली होगा
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ यदि शुक्र हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है जातक राजा के समान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु 'मान्दी योग' बनाएगा। जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा। वाहन से दुर्घटना होगी।

चतुर्थ भाव के शनि का उपचार–

1. उपाय संख्या 83 से 97 के मध्य कोई पांच उपाय करें।
2. शनि चालीसा एवं नवग्रह स्तोत्र पढ़ें।
3. नीलम 5.25 कैरट का धारण करें।

कर्क लग्न में शनि पंचम भाव में
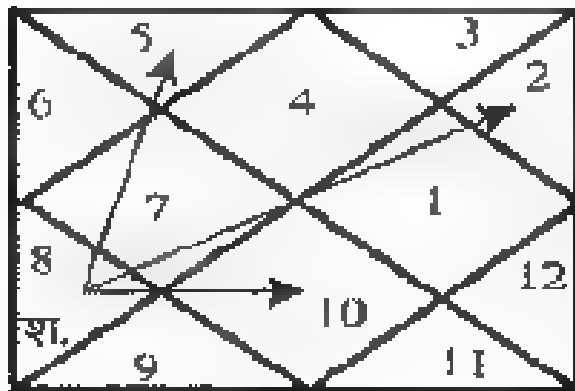
कर्क लग्न में शनि पंचम भाव में वृश्चिक राशि का शत्रुक्षेत्री है। परन्तु सप्तमेश होकर पंचम भाव में बैठ कर अपने घर (सप्तम भाव) पर पूर्ण दृष्टि होने के कारण जातक को जीवनसाथी शक्तिशाली व धनाढ्य मिलेगा। ससुराल से आर्थिक लाभ एवं ससुराल पक्ष सदैव मददगार रहेगा।

निशानी–

1. जातक का विवाह देरी से होगा। जीवनसाथी से खटपट रहेगी।
2. सन्तान सम्बन्धी कोई न कोई चिन्ता जातक को जीवन में लगी रहेगी।
3. जातक को व्यापार में लाभ होगा परन्तु उधार दिए गए रुपयों का डूबने का अन्देशा बराबर लगा रहेगा।
4. जातक के स्वयं के विद्याध्ययन में बाधा आएगी।

दशा–शनि दशा सामान्य रहेगी। सावधानी रखने योग्य है।

शनि का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनेश सूर्य की सप्तमेश शनि के साथ युति होने से जातक को ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी पर विवाद रहेगा क्योंकि शनि अष्टमेश है
2. **शनि+चन्द्र**–लग्नेश चन्द्र की सप्तमेश शनि के साथ पंचम में युति होने से जातक स्वपराक्रम से आगे बढ़ेगा तथा सफलता प्राप्त करेगा।
3. **शनि+मंगल**–पंचमेश+राज्येश मंगल स्वगृही होकर शनि के साथ होने से जातक को तीन पुत्र देगा। पुत्र जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
4. **शनि+बुध**–तृतीयेश+खर्चेश बुध शनि के साथ होने से जातक के विद्याध्ययन में संघर्ष रहेगा सतति पर रुपया खर्च होता रहेगा।

5. **शनि+गुरु**– भाग्येश+षष्टेश गुरु पंचम भाव में शनि के साथ होने से विद्या द्वारा भाग्योदय, पुत्र संतति द्वारा जातक का भाग्योदय होगा।
6. **शनि+शुक्र**–सुखेश+लाभेश शुक्र, शनि के साथ पंचम स्थान में होने से जातक को गुप्त व्यापार समझौता से लाभ होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से विद्या में बाधा व रुकावट रहेगी। संतान अवज्ञाकारक होगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु होने से जातक के पुत्र आवारा होंगे।

पंचम भाव के शनि का उपचार–

1. संतान गोपाल का पाठ करें।

कर्क लग्न में शनि षष्टम भाव में
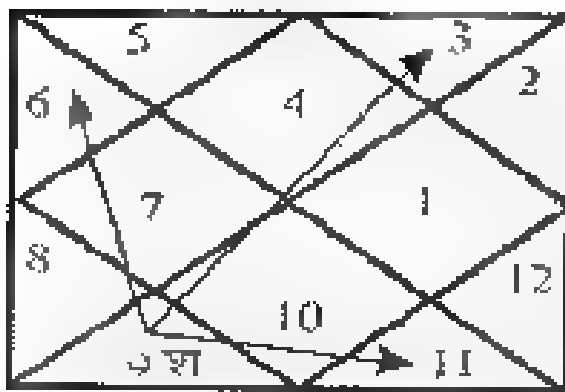
कर्क लग्न में शनि के छठे धनु राशि में बैठकर आयु भाव को देखने से जातक की आयु लम्बी होगी। छठे भाव में स्थित शनि शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम है। धन के मामले में जातक व्यावहारिक होगा। जातक पर कर्जा नहीं होगा शनि स्वगृहाभिलाषी होने से जातक महत्वाकांक्षी होगा। जातक के छोटे भाई से सम्बन्ध मधुर नहीं होंगे।

निशानी–नुक्कड़ का मकान, जातक कानून का जानकार, धर्म-अध्यात्म, ज्योतिष एवं मन्त्र तन्त्र विद्या में रुचि रखने वाला होगा शनि की द्वादश भाव दृष्टि होने के कारण जातक फिजूल खर्च होगा। जातक विकलांग हो सकता है।

. **कलत्रहीन योग**–सप्तमेश के छठे जाने से एवं शनि सातवें भाव में बारहवें स्थान पर स्थित होने के कारण यह योग पुष्ट होता है।

प्रथमतः तो जातक की सगाई, विवाह में विघ्न आएगा, विलम्ब हो या न हो, यदि देवकृपा से विवाह हो जाए तो पत्नी का पूर्ण सुख प्राप्त नहीं होगा पत्नी घर से भाग जाएगी, तलाक हो जाए या पत्नी की मृत्यु पहले हो जाएगी।

दशा शनि की दशा अशुभ फल देगी, सावधानी रखें एवं उपाय करें।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनेश सूर्य शनि के साथ छठे होने पर '**धनहीन योग** बनता है। गुप्त समझौता से धोखा मिलेगा

2. **शनि+चन्द्र**–लग्नेश चन्द्रमा शनि के साथ छठे होने से '**लग्नभंग योग**' बनेगा जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक निराशावादी होगा।
3. **शनि+मंगल**–पचमेश+दशमेश मंगल शनि के साथ छठे होने से संतान एवं विद्या पक्ष में बाधा आएगी। गुप्त समझौते भंग होंगे।
4. **शनि+बुध**–पराक्रमेश+खर्चेश बुध छठे स्थान में शनि के साथ होने से पराक्रम भंग होगा। जातक बदनाम होगा।
5. **शनि+गुरु**–भाग्येश+षष्टेश गुरु शनि के साथ छठे होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। भाग्योदय में बाधा आएगी।
6. **शनि+शुक्र**–सुखेश+लाभेश शुक्र छठे होने से सुखभंग योग बनेगा। सुख प्राप्ति में निरन्तर बाधा, व्यापार में बाधा आएगी।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु पत्नी सुख में बाधक है। जातक के जीवनसाथी की मृत्यु पहले होगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु पत्नी को असाध्य बीमारी देगा।

षष्टम भाव के शनि का उपचार–

1. शनिकवच, महाकाल शनि मृत्युजय स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
2. बजरंग बाण का पाठ करें।

कर्क लग्न में शनि सप्तम भाव में

5 3 2 6 4 7 1 8 12 श 10 9 11
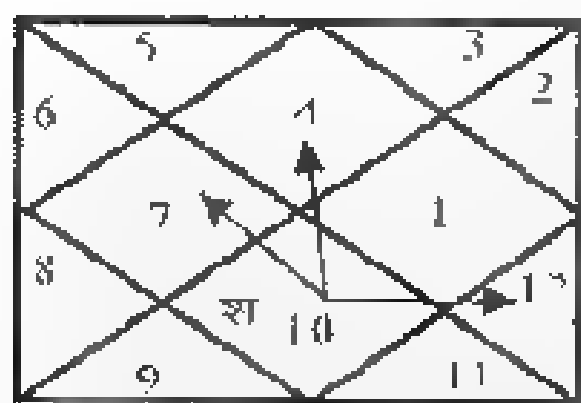
कर्क लग्न में शनि सातवें स्थान में होने से स्वगृही होगा तथा चतुर्थ स्थान, लग्न स्थान एवं भाग्यस्थान पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक अत्यन्त धनी, राज्याधिकारी एवं शक्तिशाली होगा। जातक दीर्घायु वाला एवं ईर्ष्यालु एवं प्रतिक्रियावादी होता है। जातक उच्च कोटि का समाज सेवी होगा।

शशयोग–शनि केन्द्र में स्वगृही होने से यह योग बना है यह पंच महापुरुष योगों में उत्तम योग है। जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख–सुविधाएं उपलब्ध रहती हैं। वह बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है। वाहन सुख उत्तम पर वाहन पुराना होगा।

निशानी–जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक दिखने में ज्यादा सुन्दर नहीं होगा। कुछ श्यामल छाया जातक के शरीर पर होगी जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

ऐसा जातक अन्य जाति की कन्या से विवाह करता है।

दशा–शनि दशा ठीक जाएगी पर उसमें सूर्य या शुक्र का अन्तर मारक होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनेश सूर्य शनि के साथ होने से पत्नी व ससुराल से निश्चय धन मिलेगा
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ यदि चन्द्रमा हो तो **'लग्नाधिपति योग'** बनता है।
3. **शनि+मंगल** शनि के साथ यदि मगल हो तो **'किम्बहुना योग'** बनता है। ऐसा जातक साक्षात राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होता है पर 'कुजयुते' शिश्न चुम्बन पर अत्यन्त कामी होने के कारण जातक गुप्तांगों के साथ खेलता है और उनका चुम्बन करता है।
4. **शनि+बुध**–खर्चेश+पराक्रमेश बुध शनि के साथ सप्तम में होने से जातक की पत्नी बुद्धिमान एव पराक्रमी होगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ यदि गुरु हो तो **'नीचभंग राजयोग'** बनता है।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र हो तो 'शुक्रयुते भग चुम्बनपरः' (सत्यजातकम्) जातक पशु की तरह स्त्री का भग चुम्बन करेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ यदि केतु हो तो 'केतु युते स्त्री सम्भोगी' (सत्यजातकम्) जातक पराई स्त्रियों के साथ सम्भोग करेगा।

कर्क लग्न में शनि अष्टम भाव में
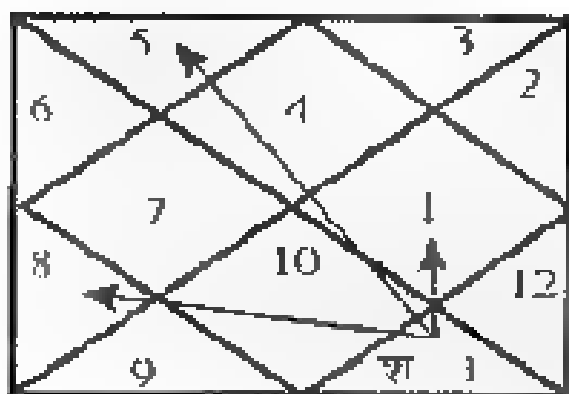
कर्क लग्न में अष्टमस्थ शनि कुम्भ राशि में अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। आठवें स्थान पर बैठकर इसकी दृष्टि धन स्थान पचम स्थान एवं दशम स्थान पर होगी। यह शनि जातक को दीर्घायु देता है, साथ ही जातक पुरानी वस्तुओं का खरीददार व शौकीन होता है। ऐसे जातक को हैंडीक्राफ्ट तथा आयात-निर्यात के धंधे में लाभ होता देखा गया है

द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि होने के कारण जातक को नेत्र रोग, दन्त रोग एव कौटुम्बिक अशांति का सामना करना पड़ेगा

कलत्रहीन योग–सातवें स्थान का स्वामी होकर शनि के आठवें जाने से यह योग बना। शनि सातवें भाव मे दूसरे स्थान पर होने के कारण जातक का वैवाहिक जीवन तो सुखी रहेगा पर पत्नी वृद्धावस्था मे साथ छोड़ देगी पत्नी की मृत्यु जातक से पहले होगी।

निशानी–जातक के अपने पिता के साथ सम्बन्ध ठीक नहीं होंगे। जातक की एक दो सन्तान नष्ट होंगी जातक में किसी भी प्रकरण के बारे तत्काल निर्णय लेने की शक्ति नहीं होगी। जातक कुटुम्बीजनों से भयभीत रहेगा

विद्याभय योग—शनि की दृष्टि पंचम भाव पर होने के कारण विद्या में बाधा आएगी। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता भी रहेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य** -शनि के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाएगा। फलत: आर्थिक परेशानी जातक का पीछा नहीं छोड़ेगी।
2. **शनि+चन्द**—शनि के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' भी बनाएगा। फलत: जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
3. **शनि+मगल**—शनि+मगल की युति से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एव वैभवशाली होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध होने से '**विपरीत राजयोग**' बना। जातक धनवान होगा पर उसका पराक्रम भग जरुर होगा। जातक बदनाम होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु होने से '**भाग्यभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनो बने। ऐसा जातक धनवान होगा परन्तु अचानक भाग्योदय में बाधा आएगी।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र होने से '**सुखहीन योग**' एव 'लाभभंग योग' बनेंगे। जातक के जीवन में अनेक कष्ट आएगे।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु अचानक दुर्घटना कराता है
8. **शनि+केतु**—जातक के पैरों मे कष्ट पहुचेगा।

अष्टम भाव के शनि का उपचार—

1. दशरथकृत शनि स्तोत्र पढ़ें

कर्क लग्न में शनि नवम भाव में
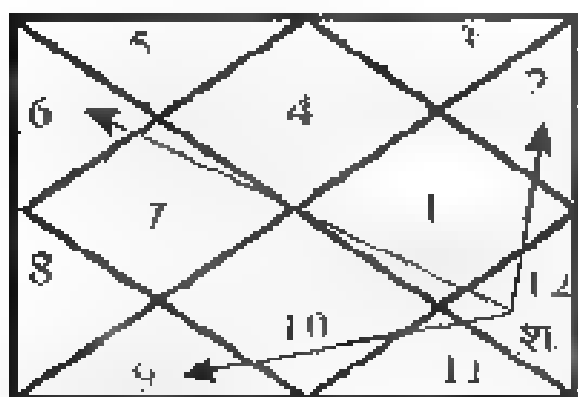
कर्क लग्न में शनि मीन राशि का होकर नवम भाव में बैठने पर तृतीय स्थान, षष्टम स्थान एव एकादश स्थान पर दृष्टि डालेगा।

सप्तमेश होकर शनि भाग्य स्थान में होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। उसकी आयु लम्बी होगी एवं जातक का ससुराल पक्ष से समय-समय पर आर्थिक लाभ होता रहेगा

नवम भाव मे स्थित शनि पिता के लिए ठीक नहीं है। जातक अपने पिता से अधिक कमाएगा तथा धर्म, समाज व परोपकार हेतु अधिक धन खर्च करेगा जातक की नौकरी अच्छी होगी

शनि की एकादश भाव पर दृष्टि होने से जातक का लाभ प्राप्ति थोड़ी देरी में होगी। परिश्रम का लाभ मिलेगा जरूर, पर देरी से।

निशानी– जातक डरपोक स्वभाव का होगा। शनि की दृष्टि यहां अशुभ फलदायक मानी गई है।

शनि का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य जातक को पराक्रमी बनाएगा, परन्तु जातक का सही पराक्रम पिता की मृत्यु के बाद उदय होगा
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ लग्नेश चन्द्रमा भाग्य स्थान में जातक को जलीय पदार्थों से लाभ दिलायेगा
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल हो तो 'राजयोग' बनेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ तृतीयेश+खर्चेश बुध नीच का होगा। ऐसे जातक की बुद्धि ऐन समय पर कुण्ठित हो जाती है।
5. **शनि+गुरु**–यदि गुरु यहां सप्तम या अष्टम भाव में हो तो शनि के घर में होगा एवं शनि गुरु के घर में होगा। परस्पर इस परिवर्तन के बारे ऋषि पाराशर ने कहा है–

   शनि क्षेत्रे यदा जीवो, जीव क्षेत्रे गते शनिः।
   स्थान हानि करो जीवः, स्थान वृद्धि करो शनिः॥

   शनि जिस स्थान मे बैठा है वहां के फल को पुष्ट करेगा, उस स्थान की वृद्धि करेगा पर गुरु उस स्थान को कमजोर करेगा
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ साथ सुखेश+लाभेश शुक्र उच्च का होगा। फलत: जातक के भाग्योदय विवाह के बाद या माता की मृत्यु के बाद होगा
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु संघर्ष के साथ भाग्योदय करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु भाग्य में उतार चढ़ाव लाता रहेगा।

कर्क लग्न में शनि दशम भाव में
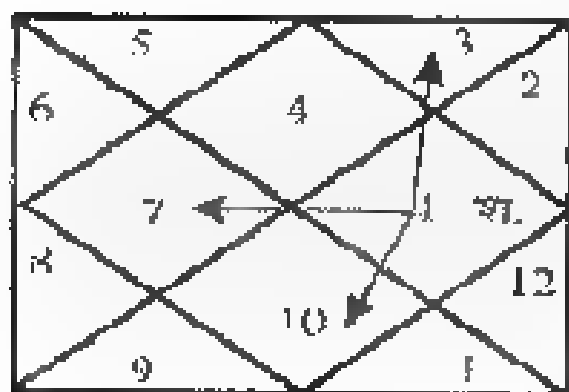
कर्क लग्न में मेष का शनि दशम भाव में नीच का होगा। इस शनि की दृष्टि द्वादश स्थान, चतुर्थ स्थान एवं सप्तम स्थान पर है ऐसा जातक अच्छा कमाता है एवं राजदरबार से, सरकारी क्षेत्र से उसे समय-समय पर सहयोग मिलता रहता है।

सप्तमेश शनि केन्द्र में होने एवं सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखी परन्तु पत्नी व

ससुराल पक्ष जातक के कक्षा स्तर में निम्न होंगे। विवाह देर से होगा।

अष्टमेश होकर शनि दसवें भाव में होने से जातक को कमाने के लिए खूब मेहनत करनी पड़ेगी शनि की दृष्टि बारहवें भाव पर होने के कारण जातक बेकार बहुत खर्च होगा। यात्राओं एवं परदेश गमन पर रुपया खर्च होगा।

शनि की चौथे भाव पर दृष्टि है जो कि उसकी उच्च राशि है ऐसे जातक को मातृ सुख उत्तम प्राप्त होता है एवं रहने का मकान उत्तम एवं वाहन सुख भी उत्तम होता है.

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य यहां **'नीचभंग राजयोग'** बनाएगा। जातक महाधनी होगा। पिता की मृत्यु के जातक की बाद किस्मत चमकेगी।
2. **शनि+चन्द्र**–शनि के साथ चन्द्रमा **'विष योग'** बनाएगा। नौकरी मे बाधा पर बहुधंधी व्यापार में लाभ होगा।
3. **शनि+मंगल** शनि के साथ यदि मंगल हो तो **'नी चभंग राजयोग'** बनता है।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ जातक को पराक्रमी बनाएगा पर सगे भाई-बहनों से कम पटेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को भाग्यशाली बनाएगा पर उसका भाग्योदय धीमी गति से होगा। जातक राजनीति मे विशेष दक्ष होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र जातक को व्यापार में उन्नति रहेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु व्यापार में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु थोड़ी तकलीफ के साथ व्यापार को शुरु करायेगा।
9. यदि मंगल यहां मकर राशि में हो तो सप्तमेश व दशमेश मंगल शनि में परस्पर परिवर्तन योग बनने से इस कारण **पद्मसिंहासन योग** भी बनता है।

कर्क लग्न में शनि एकादश भाव में

5 3 2 4 श 6 7 1 8 12 10 9 11
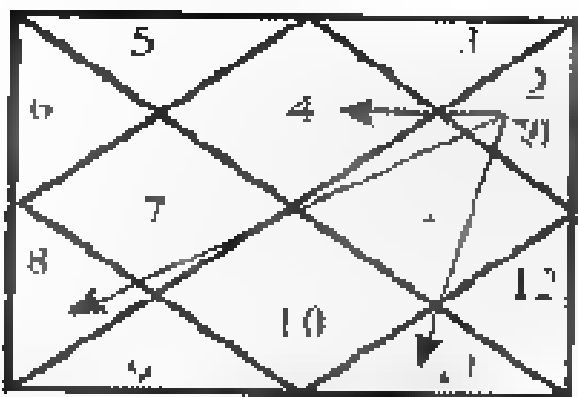
कर्क लग्न मे शनि एकादश भाव मे वृष राशि गत होकर मित्रक्षेत्री होगा। जहा पर बैठ कर शनि लग्न स्थान, पचम स्थान एव अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। शनि की यह स्थिति पूर्णतः लाभदायक है। जातक को बड़े भाई-बहनों, भागीदारों एवं मित्रों से आर्थिक लाभ मिलता रहेगा।

सप्तमेश लाभ स्थान म होने से एव सप्तम भाव से शनि पचम स्थान पर होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।

अष्टमेश शनि एकादश भाव में आकर अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखने के कारण जातक की आयु लम्बी होगी।

निशानी–शनि की लग्न भाव पर दृष्टि होने के कारण जातक का चिन्तन प्रायः नकारात्मक होगा। जातक को छोटी मोटी बीमारियां लगी रहेंगी।

शनि की दृष्टि पंचम स्थान पर होने के कारण जातक की प्रथम सन्तति विलम्ब से होगी सन्तान संबंधी कोई न कोई चिन्ता जातक को लगी रहेगी।

गढ़ा धन मिलेगा–लाभ स्थान में बैठकर शनि की दृष्टि अष्टम भाव पर होने से जातक को जमीन में गड़ा खजाना, गुप्त धन मिलेगा या आकस्मिक धन लाभ होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–शनि के साथ सूर्य विवाह से धन दिलाएगा।
2. **शनि+चन्द**–शनि के साथ चन्द्रमा प्रयत्न से लाभ दिलाएगा। जातक थोड़ा उदासीन स्वभाव का होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल प्रथम पुत्रोत्पत्ति के बाद भाग्योदय कराता है।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को पराक्रमी एवं यात्रा प्रेमी बनाएगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को भाग्यशाली बनेगा पर विवाह के बाद।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र स्वगृही होने से जातक उद्योगपति होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु एक बार चलते उद्योग को रोकेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यापार उद्योग में उतार चढ़ाव लायेगा।

कर्क लग्न में शनि द्वादश भाव में
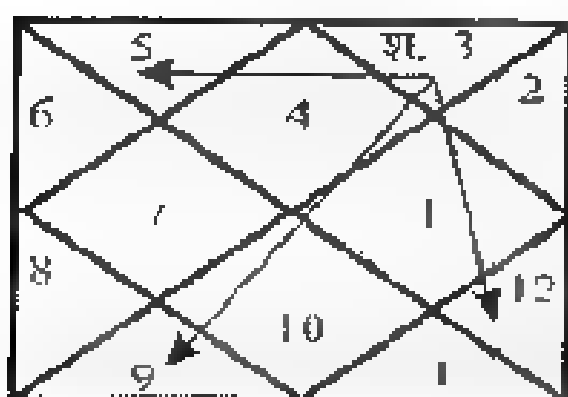
कर्क लग्न में शनि द्वादश स्थान में मिथुन राशि का मित्र के घर में होगा वहां बैठकर धन स्थान, षष्टम् स्थान एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा जातक ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र, गुप्त विद्याओं का जानकार होगा जातक की स्त्री की सेहत खराब होगी

शनि की नवम भाव पर दृष्टि पिता के लिए ठीक नहीं होगी। जातक परदेश में रहेगा या परदेशी के साथ धंधा करेगा

दुर्घटना भय–अष्टमेश शनि बारहवें आने से जातक को अकस्मात् दुर्घटना का भय रहेगा

कोर्ट-कचहरी के चक्कर—अष्टमेश शनि की दृष्टि छठे स्थान पर होने के कारण रोग व शत्रु पर विजय मिलेगी पर जातक को कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगाने होंगे, यदि शनि पर शुभ ग्रहो की दृष्टि न हो तो जातक को जेल भी जाना पड सकता है।

कलत्रहीन योग—सप्तमेश होकर बारहवें जाने से एव सप्तम भाव मे शनि छठे स्थान पर होने से जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय नही होगा। अतर्जातीय विवाह या कुछ विचित्रता बनी रहेगी,

निशानी—जातक सदैव चिन्ताग्रस्त रहेगा।

दशा—शनि की महादशा अंतर्दशा कष्टप्रद होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—शनि के साथ सूर्य जातक को एक आंख से काना बना देगा तथा नेत्र पीड़ा देगा। धनहीन योग के कारण आर्थिक विषमता रहेगी।
2. **शनि+चन्द्र**—जातक को परिश्रम का फल नही मिलेगा। बाईं आख नष्ट होगी।
3. **शनि+मंगल**—जातक की संतान कपूत होगी तथा वह उसकी आज्ञा में नहीं रहेगी।
4. **शनि+बुध**—जातक का पराक्रम भंग होगा। कुटुम्ब से अपयश मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**—जातक का भाग्य विलम्ब से उदय होगा। जातक गुप्त रोगों का शिकार होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ सुखेश+लाभेश शुक्र चलते व्यापार में रुकावट तथा नुकसान करायेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु भ्रमण करायेगा यात्रा में चोरी होगी।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु परोपकार एव शुभकार्यों में धन का अपव्यय करायेगा।

❑❑❑

राहु का वैदिक व पौराणिक स्वरूप

अथर्ववेद मे सर्वप्रथम राहु का उल्लेख सूर्य के प्रसग में आता है जिसका अर्थ अन्धकार है। ऋग्वेद में राहु उस असुर का नाम प्रतीत होता है, जो सूर्य-चन्द्र ग्रहण का कारण बनता है। इसे स्वर्भानु कहा है जो सूर्य के प्रकाश रोकता है। यथा–

> **यत् त्वा सूर्यर्भानु स्तमसाविध्यदासुरः।**
> **अक्षेत्रविद् यथामुग्धो भुवनान्यदीधयुः॥**

—ऋग्वेद 5/40/5

वैदिक साहित्य में निर्दिष्ट **'स्वर्भानु'** का स्थान ही वैदिकोत्तर पुराकथा शास्त्र में राहु के द्वारा लिया गया है।[1] जिस कारण इसे **चन्द्रार्क प्रमर्दन** (चन्द्र सूर्य के तेज को नष्ट करने वाला) कहा गया है।[2] कई पुराणों में इसका नामान्तरण स्वर्भानु बताया गया है। भागवत में इसकी कन्या का नाम **स्वर्भानु पुत्री** कहा गया है। ज्योतिषशास्त्र में भी अनेक स्थलों पर राहु को **'स्वर्भानु'** नाम से पुकारा गया है।[3] महाभारत की कथा के अनुसार समुद्रमथन के उपरान्त देवगण अमृत पान करने लगे, तब यह दानव भी प्रच्छन्न रूप से अमृतपान में शामिल हुआ अमृत इसके गले तक ही पहुच पाया था कि सूर्य व चन्द्र ने इस दैत्य की उपस्थिति की सूचना विष्णु को दी। विष्णु ने तत्काल इसका शिरच्छेद किया। जिससे इसका सिर धड़ (शरीर) से अलग होकर भूमि पर गिरा।[4] इसके सिर से केतु का निर्माण हुआ तथा धड़ वाला राहु सिरविहीन होकर सर्वत्र सबको डराने लगा। सूर्य व चन्द्रमा के प्रति राहु-केतु का द्वेष कम नहीं हुआ और समय आने पर वे ग्रसते है, जिसे क्रमशः सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण कहते हैं।[5] पुराणों में राहु का आकार वृत्ताकार माना गया है इसका व्यास बारह हजार योजन तथा दायरा बयालीस हजार योजन है।[6]

---

1. प्राचीन चरित्रकोश सिद्धेश्वर शास्त्री (1964), भारतीय चरित्रकोश मण्डल, पूना 4 पृष्ठ 747
2. श्रीमद् भागवत महापुराण 5/23/7 (1954), गोरखपुर
3. यकनौ स्वर्भानु नावा भवति हि मनुज, कतुना श्वत कुष्ठी। बृहद् यवनजातक पृष्ठ 28
4. महाभारत आदिपर्व, पंचम स्कन्ध अध्याय 17/4
5. पद्मपुराण ब्रह्मखण्ड 10
6. महाभारत (तृतीय खण्ड) भूमिपर्व अ 12 श्लोक 41, गीताप्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 2572

आचार्य वराहमिहिर ने राहु के तीन नामों में उसका (तम, अगु, असुर) एक नाम **'असुर'** भी माना है।[1] परवर्ती ज्योतिष में राहु सौरमण्डल के नवग्रहों में से एक है जो कि दुष्ट ग्रह माना गया है। बृहत्संहिता में स्वयं वराहमिहिर प्रश्नात्मक शैली में समाधान करते हुए कहते हैं कि यदि राहु ग्रह है तो आकाश में सदा और ग्रहों की तरह क्यों नहीं दिखाई देता? यह काला होने के कारण ब्रह्माजी के वरप्रदान से पर्वकाल से भिन्न समय में दिखाई नहीं देता।[2] वराहमिहिर ने राहुचाराध्याय व केतुचाराध्याय पर अलग से विस्तार में अध्याय लिखकर इसका गणितागत स्पष्टीकरण किया है।

राहु का पौराणिक स्वरूप

राहु की माता का नाम सिंहिका है, जो दैत्यराज हिरण्यकशिपु की पुत्री है। माता के नाम से राहु को सैंहिकेय कहा जाता है। राहु के सौ और भाई थे, इनमें सबसे बड़ा राहु ही था अवस्था में ही नहीं बल में भी राहु सबसे बढ़ा-चढ़ा था। आगे चलकर यह ग्रह बन गया (श्रीमद्भा० 6/6/37)।

समुद्र-मथन से जब अमृतोपलब्धि के बाद राहु छलपूर्वक अमृत-पान के लिए देवताओं की पंक्ति में जा बैठा और चन्द्रमा-सूर्य ने भगवान विष्णु को उसके कपटभाव का रहस्य बतला दिया, तब भगवान ने चक्र से राहु का सिर धड़ से अलग कर दिया, किंतु अमृत पीने से वह अमर हो गया था (श्रीमद्भा० 8/9/24-27) इसी से उसको ब्रह्मा ने यह ग्रह बना दिया **'अजो ग्रहमचीकल्पत्'** (श्रीमद्० 8/9/26)।

राहु ग्रह मण्डलाकार होता है (महा०, भीष्म० 12/40)। ग्रहों के साथ राहु भी ब्रह्मा की सभा में बैठता है (महा०, सभा० 12/29) पृथ्वी की अपनी छाया मण्डलाकार होती है। राहु यहीं भ्रमण करता है (मत्स्य पु० 29/61)। राहु ग्रह छाया का अधिष्ठातृ देवता है। ऋग्वेद में बताया गया है कि असूर्या (सिंहिका) का पुत्र राहु जब सूर्य और चन्द्र को तम से आच्छन्न कर लेता है, तब इतना अंधेरा छा जाता है कि लोग अपने स्थान को ही नहीं पहचान पाते (ऋक्० 5/40/5)। ग्रह बनने के बाद भी राहु वैर भाव से पूर्णिमा को चन्द्रमा पर और अमावस्या को सूर्य पर आक्रमण करता है। इसे ग्रहण या राहु पराग कहते हैं, उपराग के समय अव्रतत्त्व (अपवित्रता) आ जाता है, जिसका प्रतिकार स्नानादि से किया जाता है (ऋक्० 5/40/6-9)

वर्ण–राहु ग्रह का वर्ण नीलमेघ के समान है और इसके सिंहासन का रंग भी नीला है।

वाहन–राहु का रथ अंधकार रूप है। इसे कवच आदि से सजाए हुए वायु के समान वेग वाले आठ काले घोड़े खींचते हैं (मत्स्य पु० 127)।

---

1. राहुस्तमोऽगुरसुरश्च शिखीच केतुः बृहज्जातक अ. 2/श्लोक 3 पृष्ठ 23
2. राहुचाराध्याय, बृहत्संहिता अ. 5/2 श्लोक पृष्ठ 35

राहु का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए

करालवदन: खड्गचर्मशूली वरप्रद:।
नीलसिंहासनस्थश्च राहुरत्र प्रशस्यते।

(मत्स्य पु० 94/7)

'राहु का मुख भयंकर है। उनके हाथों में तलवार, ढाल, त्रिशूल और वरमुद्रा शोभा पाती है तथा वे नीले रंग के सिंहासन पर आसीन होते हैं। ध्यान (प्रतिमा) में ऐसे ही राहु प्रशस्त माने गए हैं।

राहु का अधिदेवता 'काल', प्रत्याधिदेवता 'सर्प' है।

राहु

1. प्रिय अन्न—गेहू	**10. प्रिय दिशा** नैर्ऋत्य
2. प्रिय रत्न—गोमेद रत्न	**11. प्रिय मण्डल**—शूर्पाकं
3. प्रिय पशु—अश्व	**12. नाप**—अंगुल 12
4. प्रिय वस्त्र—नीलवस्त्र	**13. प्रिय देश**—राठिनादेश
5. प्रिय वस्त्र—कंबल	**14. गोत्र**—पैठीनस गोत्र
6. आहुति—तिल	**15. प्रिय रंग**—काला
7. दान—तैल	**16. जप संख्या**—18,000
8. प्रिय धातु—लोह	
9. प्रिय वस्तु अभ्रक	

उत्पत्ति—पुराणों की गाथाओं में समुद्र मंथन की कथा में अमृत की उपलब्धि के बाद देव-दानव सभी अमर होने की इच्छा से भगवान की मोहिनी मूर्ति की ओर निहारते हुए अमृत पीने की प्रतीक्षा में रत थे, तब राहु ने छलपूर्वक अमृत पान के लिए अपने सौ भाइयों की पंक्ति से उठकर सूर्य व चद्र के मध्य आ बैठा। इस छल की तरफ सूर्य व चन्द्र ने भगवान को इशारा किया। अमृत की कुछ बूंदे ही राहु के मुंह में जा पाई थीं कि सुदर्शन चक्र से भगवान ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया परन्तु वह अमृत पीने से अमर हो गया, इसी से ब्रह्मा ने उसे ग्रह बना दिया -**'अजो ग्रह मचीकल्पत'** (श्री मन्दा 08/9/25)

वास्तव में राहु की माता का नाम सिंहिका है जो दैत्यराज हिरण्यकशिपु की पुत्री थी। माता के नाम से इसे सैंहिकेय कहते हैं। राहु के सौ भाई थे। वह इसमें सबसे बड़ा बलवान था। ऐसा भागवत में वर्णन है। एक ही दैत्य के शरीर के दो टुकड़े हुए उसके सिर का राहु व धड़ को केतु कहते हैं केतु भी बहुत से हैं ऐसा मत्स्य पुराण 84/9 में वर्णन है इनमें सबसे प्रधान धूमकेतु है (वायु पुराण 153/10)

राहु को सर्पाकार दिया गया है। उसमें सर्प का मुख राहु और उसकी पूंछ केतु है। वरदान

से अमर बने ये दोनो ग्रह बनकर सातों ग्रहो को पीड़ित करते हैं। उनमें खासकर सूर्य व चन्द्र को। चंद्र+राहु से व सूर्य+केतु से ग्रहण योग बनता है और सभी ग्रहों को अपने मध्य में लेने से **कालसर्प योग** बनता है। 7 ग्रहों को सात वार मिले व उनके नाम से प्रसिद्ध है। इनको कोई वार नहीं मिला क्योंकि इनकी छाया ही ग्रहों को ढकने वाली है। फिर भी ज्योतिष व महर्षियों ने राहु को बुधवार और केतु को मंगलवार दिया। फलादेश में राहु को **शनिवत्** और केतु को **कुजवत्** कह कर इनके फल इन दो मुख्य ग्रहो के अनुरूप दर्शाएं

यद्यपि आज से 100 150 वर्ष पुरानी कुण्डलियों में राहु व केतु का दर्शाते भी नहीं थे, आज भी कई प्राचीन विद्वान इनको स्थान नहीं देते हैं। महाभारत भीष्मपर्व (12/40) में राहु को मण्डलाकार माना है। यह ग्रहों के साथ ब्रह्मा की सभा में बैठता भी है। पृथ्वी की अपनी छाया मण्डलाकार होती है। राहु यही भ्रमण करता है। (मत्स्यपुराण) राहु ग्रह छाया का अधिष्ठातृ देवता है। ऋग्वेद में इसे **असूर्या** कहा गया है। यह सूर्य और चंद्र को तम से आच्छन्न कर लेता है। तब इतना अंधेरा छा जाता है कि लोग अपने स्थान को ही नहीं पहचान पाते।

ग्रह बनने के बाद राहु हर पूर्णिमा को चंद्र को व हर अमावस्या को केतु सूर्य को आच्छादित करता है। अतः ये दोनों तिथियां अव्रतत्व बनती है। लोग इस दिन अन्न ग्रहण नहीं करते हैं। दान पुण्य कर घर के पापो का प्रायश्चित करते हैं। उपराग के समय यह अव्रतत्व इतना होता है। जिसका प्रतीकार स्नानादि से किया जाता है (ऋक् 5/40/8 9) इसलिए हर अमावस्या व पूर्णिमा ग्रह की होती है।

वर्णन– कर्मकाण्ड के ग्रन्थों मे इसके वर्णन पाए जाते हैं।

राहो बब्बर देशे संजातः काय वर्जितः।
गोत्रे पैठेनसि जाति, सिंहारूढ़ो वरप्रदः॥
कराल वदन श्रेष्ठः पूज्यो नैऋतपत्रके।
सिंहिका गर्भ संभूतं, तं राहु प्रणमाम्यहम्॥
केतवो विविधाकारो मलयाद्रि समुद् भवः।
द्विभुजः जैमनि गोत्रे गदाहस्तः वरप्रदः
ब्रह्म व ज्ञान मन्त्रेण, शोभने मारुते दले।

राहु केतु को प्रसन्न करने हेतु वैदिक मंत्र भी हैं पर ज्योतिष आचार्य इन्हें ग्रह नहीं मानते राहु को पैठेनसि गोत्र और केतु को जैमिनी गोत्र मिला लिया है। यह अधकार स्वरूप है। अतः नीलवर्ण है राहु का देश बब्बर है और विविध आकार के केतुओं का देश मलयाद्रि है। इसमें धूमकेतु प्रधान है। राहु का स्थान नैऋत्व कोण व केतु का वायव्य कोण है। केतु द्विभुजाधारी है एक हाथ में ध्वजा रखते हैं, दूसरे हाथ मे गदा है। इनका 9 घोड़ों का रथ वायु वेग से चलता है। यह अपने अंधकार से ग्रहो को ढक देते है। यह ज्योतिष की भाषा मे तमोग्रह कहलाते हैं। राहु का अधिष्ठाता देवता ब्रह्मा व केतु का चित्रगुप्त है। केतु का नाम शिखी है। राहु केवल तम से संबंधित होता है। राहु से 7 स्थान हरदम केतु का रहता है। इसका विचरण हरदम पर्वत शिखरों व घने वनों मे रहता है।

राहु केतु के वर्णन—आचार्य वराहमिहिर, बृहत् पराशर होरा ऋग्वेद अमरकोश, महाभारत, याज्ञवल्क्य स्मृत, जातक परिजात, सारावली, उत्तर कालामृत, बृहत संहिता, होरासार, फलदीपिका, शिव संहिता सकेतनिधि, दैवज्ञाभरण, उदुदाय प्रदीपिका तथा काटवें का राहु विचार आदि ग्रन्थों में परिशीलन से इसका संपूर्ण ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। तदनुसार वर्णनो में आया है, राहु घर मे स्थान लेता है। केतु कोनों में। ये नीचे देखते हैं। इसका रग नीलमणि के समान होता है। रग बिरंगा वस्त्र राहु का और छिद्र युक्त वस्त्र केतु का है। दोनो की जाति चाडाल धातु सीसा, राहु का गोमेद व केतु का लहसुनिया रत्न है राहु शाल वृक्ष का निर्माता व केतु छोटे पौधो का कर्त्ता है। लिंग पुरुष, गुण तामस, अवस्था वृद्ध, रस कसाय स्थान बिवर, समय दोपहर, भूमि ऊसर, धातु लोहा, तत्त्व वायु पापग्रहों में चरग्रह व चरण रहते हैं। खासकर स्थान साप के बिल है। क्योंकि यह सर्पाकार है।

बलवन्ता—मेष, वृश्चिक, कुंभ, कन्या, वृष, कर्क राशि में तथा दशम स्थान में राहु बली होता है। कन्या राशि के अंत मे वृष तथा धनु मे रात्रि मे तथा उत्पात एव धूमकेतु के दर्शन के समय केतु बलवान होता है। संध्या में राहु बली होता है। राहु का मुख प्रायः दक्षिण में होता है। यह 18 मास में राशि बदलता है, सदा वक्री रहता है।

राहु केतु की उच्चता व नीचता के विषय मे ज्योतिषियों में बड़ा मतभेद है।

> **"राहोस्तु कन्यका गेहं, मिथुनं स्वाच्चमं स्मृतम्**
> **कन्या राहु ग्रह प्रोक्त, राहुच्च मिथुन स्मृतम्**
> **राहो नीचं धनुः प्रोक्तं, केतोः सप्तम मेव च"**

राहु का स्वगृह कन्या तथा उच्च राशि मिथुन है नीच राशि धनु है। मूल त्रिकोण कर्क मानी है।

> **राहोस्तु वृषभ केतो वृश्चिके तुंग संज्ञितम्।**
> **मूल त्रिकोणं कुंभं च प्रियं मिथुन उच्यते॥**

कई आचार्यों के मत में राहु की उच्च राशि वृषभ केतु की वृश्चिक, मूल त्रिकोण कुंभ और प्रिय राशि मिथुन मानी है। बृहत्पराशर होरा में राहु का उच्च वृष, केतु का उच्च वृश्चिक, राहु मूल त्रिकोण कर्क केतु का मूल त्रिकोण मिथुन और धनु राहु का स्वगृह कन्या व केतु का स्वगृह मीन माना है। इस तरह स्वगृह, उच्च, मूल त्रिकोण तथा नीच के बारे में किसी एक ज्योतिष का सर्वसम्मत नहीं है। सब आचार्यों ने भिन्न भिन्न मत व्यक्त किए हैं। डॉ. हेनेरी कॉर्वे जर्मनी विद्वान खूब शोध कर अपने निष्कर्ष में कहा है कि हमेशा वक्र गति से चलने वाले केतु के दृष्टि कर्म उल्टे गिने जाए या सीधे अन्य ग्रहा की तरह गिने जाए इसके बारे में मैतक्य नही है। इस तरह इन दोनो छायाओ को ब्रह्मा ने ग्रह होने का वर तो दिया पर उनके क्रम व बल के बारे में आज तक कोई मत नहीं हो पाया। छाया जैसे घूमती है वैसे ही ये ग्रह घूमते है।

अतः परिणाम एक जैसा नहीं मिल पाते है जैसे छाया निश्चित है और अनिश्चित ढग से परिवर्तित होती है वैसे ही ग्रह अकस्मात फल देकर धीरे धीरे परिणाम विपाक करते हैं। अतः इनकी बलवन्ता में मतैक्य नहीं हो पाता।

मित्र-शत्रु—राहु के मित्र बुध, शुक्र और शनि है तो केतु के सूर्य मंगल और गुरु मित्र ग्रह हैं राहु का शत्रु मगल सूर्य, चंद्र, गुरु सम है। राहु का दोष बुध दूर करता है। राहु का फल शनिवत है, केतु का भौमवत है पर इनमें भी मतैक्य नहीं हो पाया है।

दृष्टि

"सुतमदन नवान्ते पूर्णदृष्टिं तमस्य
युगम दशम गेहे चार्य दृष्टिं वदन्ति
सहज रिपुविपक्षान्, पाददृष्टि मनुन्द्रा।
निज भुवन मुपेतो लोचनाद्यः प्रदिष्ट"

राहु की दृष्टि 5-7-9-12 स्थानो पर पूर्ण होती है।2 10 भावों पर आधी होती है। 3 6 पर एक चौथाई दृष्टि होती है। स्वगृह मे हो तो दृष्टि नहीं होती है। परन्तु प्रायः ज्योतिषगण 5-7-9 3-10 4 8 भावो पर अन्य ग्रहों की तरह इसकी एक पाद 3/10 द्विपाद 5/9 संपूर्ण 7 और त्रिपाद 4/8 पर ही मानते हैं। इस तरह यह छाया ग्रह अनिश्चित दृष्टि वाला है। अभी तक का शोध करना अवशिष्ट है।

फल—कई ज्योतिष आचार्य राहु व केतु को ग्रह ही नहीं मानते हैं। उसे केवल बुरी छाया कह कर टालते है। क्योंकि राहु केतु का कोई स्वतंत्र फल नहीं है। केवल फलों में आकस्मिकता, शीघ्रता के ही ये परिचायक है। राहु-केतु किसी ग्रह या भाव में जिस राशि से संबंधित हैं उनके स्वामी के अनुसार ही फल देते हैं। अतः इनके स्वतंत्र फलों का अस्तित्व ही नहीं है। सूर्य आदि ग्रह जैसे स्वतंत्र फल रखते हैं। ऐसा इनका फल कहीं पर दृष्टिगोचर नहीं है। अतः ये ग्रह व्यर्थ के है।

"यद् यद् भावगतौ वापि यद् यद् भावेश सयुतौ।
तद् तद् फलानि प्रबलौ, प्रदिशेता तमो ग्रहौ॥"

(लघुपराशरी श्लोक 13)

राहु केतु जिन जिन भावों में बैठे होते हैं अथवा जिन जिन भावेश के साथ बैठे होते हैं तब उन-उन भावों अथवा उन-उन अधिपतियों के द्वारा मिलने वाले जो फल होंगे वे फल अधिकता से प्राप्त होंगे।

इस श्लोक के टीकाकार-स्व. वि. गो. नवाथे मराठी मे कहते है कि ऐसा इसलिए है कि राहु और केतु किसी भी राशि के अधिपति नहीं है। स्व० श्री रघुनाथ शास्त्री पटवर्धन अपनी टीका में कहते हैं कि राहु और केतु वास्तविक ग्रह ही नहीं हैं, वे तो छाया ग्रह हैं। अतः अन्य ग्रह की छाया का फल करेंगे। सुश्लोक शतक के टीकाकार कहते हैं कि ये छाया ग्रह हैं अतः स्वयं प्रकाशमान नहीं हैं। अतः इनका स्वतंत्र फल नहीं है। श्री विनायक शास्त्री लिखते हैं कि ये ग्रह जिसके भी साथ होंगे उस ग्रह का या भाव का प्रबल फल करेंगे। श्री शास्त्री धीरजगाम

पंड्या का मत है कि "राहुकेत्वोः फलं सर्वम् मंदवत् कथितं बुधैः" अतः राहु केतु का फल शनि की तरह ही माने जाते हैं श्री उत्तमराम मयाराम ठक्कर के मत से ज्योतिषाचार्यो ने इन ग्रहों का प्रमाणभू ग्रन्थों में स्वामित्व नहीं दिया है। अतः प्रमाण में तो 7 ग्रह और 12 भाव ही हैं अतः ये केवल फलों में प्रबलता दे सकते है। इनका कोई महत्त्व नहीं है। ज्योतिषाचार्य तीर्थ पं. सीताराम झा लिखते हैं कि

"विमर्दकत्वादर्केन्द्वोः प्रबलावित्युदीरितो।
बिम्बाभवाच्च तौ स्वं स्वफलं नो दातुमर्हतः।।

राहु केतु ग्रहण में सूर्य और चंद्र के विमर्दक हैं। अतः प्रबल पाप ग्रह हैं। परन्तु आकाश में इनका अपना बिम्ब नहीं है अतः ये स्वतंत्र फल कारक नहीं हैं।

इस तरह हम देखते हैं कि राहु केतु ग्रह वास्तव से स्वतत्र फलदाता नहीं हैं परन्तु पीड़क ग्रह जरूर हैं।

ये कुण्डली में होते हैं तब एक साथ छः भावों को अपने पापकर्त्तरी योग से दूषित कर देते हैं इस तरह जीवन के सपूर्ण सुख में आधा जहर घोल कर अपना अस्तित्व बनाते हैं। शनि चूंकि छाया पुत्र है और दुःख का स्वामित्व रखता है ठीक इसी तरह ये दोनों छाया ग्रह हैं और शनि की तरह दुःखदायक अनुभूति देते हैं।

राहु केतु को ग्रह स्वरूप मानने में प्रमाण—श्री दैवज्ञ नारायण भट्ट ने चमत्कार चिंतामणि ग्रथ में, जीवननाथ दैवज्ञ ने भाव प्रकाश में और स्वयं पाराशर ने अपनी विंशोत्तरी मान्य दशा में राहु कतु को अलग अलग ग्रह मानते हुए अपनी दशा व भावों के फल निर्दिष्ट किए हैं। अतः इन सात ग्रहो की तरह व्यक्तियों पर राहु केतु अपना स्वतंत्र प्रभाव डालते हैं इसमें शक नहीं होना चाहिए। वैदिक साहित्य और पुराण भी इसी के प्रमाण हैं। अतः इन्हे ग्रह मानकर इनका स्वतत्र फल यह है कि यह पृथकताकारी ग्रह है और सदाः प्रभावी है, सर्वसम्मवि विश्वसनीय है।

स्वरूप—राहु और कतु की स्वतत्र राशि व स्वतत्र प्रभाव के फल न होने से ही इनका स्वतंत्र वर्णन कठिन है परन्तु जिन व्यक्तियो का राहु सुधरा हुआ है व बली है। वह राहु प्रधान व्यक्ति स्नेहशील व विचारपूर्वक परीक्षा के बाद कार्य करता है अभिमान परन्तु मान का भूखा होता है। बुद्धि तीव्र व इच्छाए श्रेष्ठ होती हैं। प्रयत्नशील व मितभाषी, अपने वादे का पक्का होता है। लेखन कला में चतुर होता है। स्वभाव सरल, विचार स्वतत्र व्यवस्थित व स्पष्ट होते हैं, अपने उद्योग में मस्त रहता है। किसी काम में दखल नहीं देता है पर दखल भी पसद नहीं करता। प्रभावशाली व्यक्तित्व व रौब से काम लेने वाला होता है यदि राहु बिगडा हुआ है तो इसके फल उल्टे होंगे

कारकत्व—छत्र चामर (राजचिन्ह) देश की समृद्धि, नीच जाति, वाहन जुआ, अयोग्य स्त्री से सबंध, विदेश गमन अपवित्रता, हड्डी गाठ के रोग, झूठ बोलना सपेरा, वन, पर्वत

नेऋत्यदिशा, वात कफ के रोग, सरीसृप, दुर्गा की उपासना मंत्र तंत्र यंत्र, पशु समृद्धि मलेच्छ भाषा, कालाबाजार, भयंकर रोग, सन्निपात, झाड़फूंक, मांत्रिक, ओझा, आकस्मिक प्राकृतिक घटनाएं, झगड़ा, यश, टूटना, अलग होना, श्मशान घाट, पशु मैथुन, केतु मे कुत्ते, मुर्गे गिद्ध, सींगवाले पशु, चुगली, लोभ, भिक्षावृत्ति, दिखावा, शिव उपासना, कारावास, भविष्यवाणी, उद्भुत काम, अत्युद्याम, ज्ञान, मोक्ष, गुफा में निवास, रोग से छुटकारा, प्रसिद्धि, ऋण से मुक्ति, मठ में रहना, चित्रकारी, पर्यटक।

अचूक फल

- ❑ जन्म कालिक राहु पर गोचर में केतु आए या केतु की राशि में राहु आए तो अति अरिष्ट होता है।
- ❑ जन्मदशा से पांचवीं राहु की दशा आए तो अशुभ फल देगी।
- ❑ राहु नवम स्थान में हो और नवमेश बलवान हो विशेषकर बुध नवमेश में हो तो अचानक भाग्य चमकता है।
- ❑ राहु धन भाव, पंचम व लाभ स्थान में हो तो लॉटरी, सट्टा, शेयर में शुभ फल देगा, यदि बुध से युति हो या भावेश बलवान हो।
- ❑ राहु+शनि हो तो धन हानि करेंगे। जिन भावों को राहु देखेगा उसकी हानि करेगा।
- ❑ सूर्य, मंगल, केतु का प्रभाव कहीं पर एकत्रित सीधा अथवा केतु की दृष्टि द्वारा पड़ रहा हो तो उस प्रदर्शित भाव या वस्तु में आग लग जाती है।
- ❑ शुभ स्वक्षेत्री ग्रह के साथ केतु युति विशेष लाभ देगी। जैसे शु+के युति चतुर्थ, पंचम, सप्तम, भाग्य, दशम, लाभ में हो।
- ❑ केतु यदि योगकारक ग्रह के साथ स्थित हो केतु अधिष्ठित राशि का स्वामी अपनी युक्ति से अचानक लॉटरी आदि से धन की प्राप्ति कराएगा।
- ❑ जिन भावों पर षष्ठेश और राहु का साथ-साथ प्रभाव पड़े तो वह वस्तु म्लेच्छ हो जाती है जैसे किसी स्त्री की कुण्डली में षष्ठेश राहु अधिष्ठित राशि के स्वामी का प्रभाव हो तो उस स्त्री का शय्या सुख बिगड़ेगा। उसका पति पराई स्त्रियों का भोग करेगा।
- ❑ राहु की दशा में किसी वक्री ग्रह की दशा आए या वक्री ग्रह की दशा मे राहु की दशा आए तो नष्ट वस्तुओं की पुनः प्राप्ति होती है
- ❑ राहु मंगल का प्रभाव द्वितीय भाव या द्वितीयेश पर पड़े तो मुख टेढ़ा हो जाने का रोग होता है।
- ❑ चंद्र और राहु का अंतर सात अंश से कम हो तो कुण्डली में ग्रहण योग बनेगा।
- ❑ जन्म चक्र 12, 1 8, 9 11 भावों मे राहु चंद्र की युति से ग्रहण का स्पष्ट फल होगा।

- राहु से दादा का और केतु से नाना का विचार किया जाता है। पांचवे भाव में राहु हो तो जातक प्राय: मंत्र, तंत्र, ज्ञाता बनता है।
- राहु केतु जिन राशियों में स्थित हो तो उन राशियों के स्वामी में इन ग्रहों का प्रभाव आएगा वे अपनी दृष्टि से दूसरे ग्रहों पर भी इतना प्रभाव ले जाएंगे राहु में उस भाव से व्यक्ति को अलग करने की शक्ति होगी। जैसे राहु कर्क में स्थित है, कर्क का स्वामी चंद्रमा है केतु शुक्र युति है। वहा पर राहु की 7वीं दृष्टि शुक्र पर पड़ेगी तो शुक्र पर चंद्र का भी प्रभाव पड़ेगा। फलतः पति अपनी पत्नी से पृथक होने में तत्पर रहेगा।
- राहु केतु स्वतंत्र हो किसी के साथ न हो तो एसे राहु की भी दृष्टि खतरनाक होगी। राहु में पृथकता और केतु में क्रूरता या मारकता रहेगी।
- राहु केतु किसी ग्रह के साथ हों तो अपनी दृष्टि के साथ उस ग्रह का भी प्रभाव देंगे। जैसे राहु तथा मंगल दशम में स्थित हो तो पंचम दृष्टि से दूसरे भाव को और नवम से षष्ट भाव को भी देखेंगे।
- शुक्र और बुध के साथ केन्द्र में पड़ा केतु हमेशा शुभ फल देता है।
- बारहवें में पड़ा केतु व्यक्ति को मोक्ष देगा। राहु विदेश यात्रा देगा
- गुरु+केतु युति से **चाण्डाल योग** बनता है। इससे बुद्धि में भ्रम, अल्प धन, लोभ, व हरदम कोई न कोई चिंता बनी रहती है।

उपचार

1. राहु या केतु जो भी अनिष्टकारी है उसका जप कराएं।
2. राहु दोष में दुर्गासप्तशती के पाठ व केतु दोष में शिव जप या लघुरुद्र प्रयोग फलदाई होते हैं।
3. राहु या केतु की वस्तुएं यथा उड़द गेहू, रत्न, नील वस्त्र, कंबल, तिल, तेल, लौह आदि दान करें।
4. कालसर्पयोग बन गया हो तो नित्य शिवपूजन करें या फिर नागपंचमी को नाग पूजन करें।
5. कुत्तों को उड़द से बनी मिठाई मंगल या बुधवार को दे।
6. बुधवार का व्रत करें। केतु में मंगल का व्रत करें।
7. राहु के लिए गोमेद और केतु के लिए लहसुनिया पहने

राहु का खगोलीय स्वरूप

राहु प्रकाश पिण्ड न होकर छाया ग्रह है। आकाश में इसकी कोई स्थिति नहीं है। वेदों और पुराणों में इसकी स्पष्ट उपलब्धि का उल्लेख मिलता है। ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार

चन्द्र-ग्रहण मे भूच्छाया और सूर्य ग्रहण में चन्द्रमा को ढकने वाले पदार्थ को राहु-केतु मानते हैं। कुछ विद्वान लोग पृथ्वी की उत्तरी ध्रुव को राहु और दक्षिणी ध्रुव को केतु कहते हैं.

ये दोनो ग्रह एक दूसरे 6 राशि (180 डिग्री अंश) की दूरी पर रहते हैं तथा इनकी चाल सदैव 3/10/48 रहती है और ये वक्री (उलटी) गति से ही चलते हैं। आधुनिक गणना से 6798 दिन 16 घण्टा 44 मिनट और 24 सेकेंड मे ये ग्रह द्वादश राशि को भोगते हैं। स्थूल मान से 18 वर्ष द्वादश राशि और 18 मास एक राशि 240 दिन एक नक्षत्र और 60 दिन तक एक नक्षत्र-पाद पर रहते हैं

विद्वानों के अनुसार पूर्णिमा के दिन चन्द्र और राहु का अन्त सात अंश से कम हो तो ग्रहण अवश्य होता है। दूसरे शब्दों में पृथ्वी की छाया में जब चन्द्रमा पर आ जाता है तब प्रकाशहीन हो जाता है। इसी को ''चन्द्र ग्रहण'' कहते हैं। यदि चन्द्रमा का पूर्ण पिण्ड पृथ्वी की छाया में आए तब पूर्ण चन्द्र ग्रहण, अधूरा पिण्ड छाया में आए तो खण्ड चन्द्र ग्रहण कहलाता है।

जब पृथ्वी और सूर्य के बीच चन्द्रमा आ जाता है तब सूर्य का कुछ भाग नहीं दिखता है। यह ''सूर्य ग्रहण'' कहलाता है। सूर्य ग्रहण में सूर्य, चन्द्र तथा राहु का विचार किया जाता है। राहु दक्षिण दिशा का स्वामी है तथा अत्यन्त क्रूर माना जाता है।

राहु का ज्योतिषीय स्वरूप

राहु सिंहिका राक्षसी का पुत्र है। यह पैठीनस गौत्र वाला व बर्बर देश का, नैर्ऋत्य दिशा में सूर्याकार मण्डल मे रहता है इस राक्षस का धड़ रूपी शरीर काजल के पहाड़ जैसा, अधकार रूप, भयंकर, महाबलवान है. धुएं की आकृति से युक्त कई बार मुकुट पहने हुए सर्प के समान दिखाई देता है। राहु दशम स्थान मे बलवान माना गया है। यह चण्डाल जाति का है तथा वन में रहता है। इसका धातु शीशा है यह दक्षिण दिशा का स्वामी और धुएं जैसा इसका रंग है। यह पृथकतावादी ग्रह है। जिस घर के भाव में यह स्थित रहता है। उसी मे बाधा पहुचाने की इसकी प्रवृत्ति है। यह जिस ग्रह के साथ बैठता है उसको भी दूषित कर देता है यह भ्रम आभास, पिशाच, भूत, बाधा, जासूसी, निराधार बाते फैलाता है। यह अद्‌भुत और विलक्षण वस्तुओं का कारक ग्रह है। शरीर में यह अपस्मार, चेचक नासूर, भूख प्रेत-पिशाच, बाधा, अरुचि, कीड़े और कोढ़, गुप्त रोग और गुप्त शत्रुओं का कारक ग्रह है इसका रत्न ''गोमेद'' है

❑❑❑

कर्क लग्न में राहु की स्थिति

कर्क लग्न में राहु प्रथम भाव में
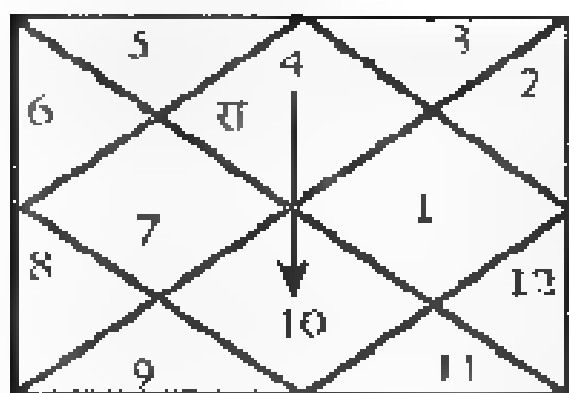
लग्न मे कर्क राशिस्थ राहु शत्रु के घर में होने से जातक दयावान किन्तु ज़िद्दी होता है। इसका जन्म अस्पताल या ननिहाल में होता है जातक राज-दरबार मे इज्जत व मान पाता है इनको अपने कुल व कार्य का बड़ा अभिमान होता है। पर धधे में स्थाईत्व नहीं रहेगा। धधे में बदलाव आता रहेगा।

व्यवहार—ये प्रायः पर छिन्द्रान्वेषी होते हैं। किसी भी कार्य में कमी या दोष ढूढ़ने में कुशल होते हैं। इनके बोलने एवं व्यवहार मे परस्पर मेल नहीं होता अर्थात् मुंह से बोलते कुछ है तथा व्यवहार में करते कुछ और हैं। 'फलदीपिका' के अनुसार लग्न में राहु वाला व्यक्ति धनी और बलवान होता है।

दशा—राहु की दशा अशुभ रहेगी।

विशेष—ऐसा व्यक्ति जीवन मे अनेक प्रकार के धधे करता है। जीवन संघर्षमय रहता है किसी एक कार्य में उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं मिलती कर्क लग्न के लिए राहु विशेष अशुभ फलदायक है क्योंकि लग्न स्वामी चन्द्रमा इसका शत्रु है। जिसे वह राहु ग्रहणकाल में ग्रसित करता है।

राहु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ धनेश सूर्य होने से जातक तेजस्वी व धनवान होगा
2. **राहु+चन्द्र**—राहु के साथ चन्द्रमा '**यामिनीनाथ योग**' बनाता है। ऐसा जातक राजा के समान प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होता है।
3. **राहु+मगल**—राहु के साथ मगल नीच का होगा ऐसा जातक लड़ाकू एव उग्र स्वभाव का व्यक्ति होगा।
4. **राहु+बुध** राहु के साथ बुध यहा शत्रुक्षेत्री होगा ऐसा जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा

5. राहु+गुरु–राहु के साथ गुरु उच्च का 'हंस योग' बनाएगा। ऐसा जातक राजा के तुल्य परम पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा
6. राहु+शुक्र–राहु के साथ शुक्र वाला जातक हठी होगा पर अपने कुल का नाम रोशन करने वाला यशस्वी जातक होगा
7. राहु+शनि–राहु के साथ शनि होने से जातक हठी एवं लड़ाकू होगा जिसका दुष्प्रभाव जातक के गृहस्थ जीवन पर पड़े बिना नहीं रहेगा।
8. चन्द्रग्रहण–यदि लग्न स्थान में ग्रहण योग हो तो व्यक्ति मितव्ययी एवं सदा रोगी रहेगा।

प्रथम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. शनिवार को काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
2. शनिवार के दिन काला वस्त्र न पहनें।
3. सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण के समय दान दक्षिणा, मंत्र पाठ करें।
4. शनिवार के दिन जौ के आटे की गोलियां मछलियों को खिलाएं।
5. राहु के मंत्र का जाप करें, दशांश हवन करें एवं राहु की वस्तुओं का दान करें।
6. हाथीदांत की मूर्ति या वस्तुएं घर में न रखें।

कर्क लग्न में राहु द्वितीय भाव में
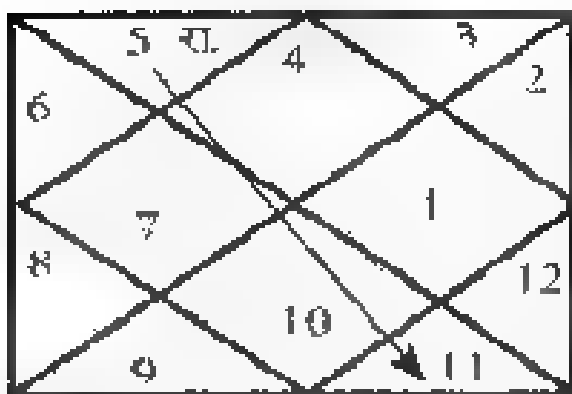
कर्क लग्न में राहु दूसरे में भाव में अग्निसंज्ञक सिंह राशि में होगा। यह राहु के शत्रु का घर है। यह राहु व्यर्थ के धन खर्च को बताता है। धन के घड़े में छेद है। जातक के पास रुपया नहीं टिकेगा। कुटुम्ब में विवाद रहेगा। जातक अनीति से रुपया कमाने में विश्वास रखेगा जो कि कष्ट का कारण होगा। धन कमाने की महत्वाकांक्षा तीव्र रहेगी।

निशानी–जातक की भाषा ओछी व लड़ाकू किस्म की होगी। आंखें निर्बल, निस्तेज होंगी। जातक दंत रोगी हो सकता है।

विशेष–जातक का वैवाहिक जीवन सुखद नहीं होगा। ज्योतिष में राहु को चोर माना गया है द्वितीय स्थान धन और वाणी का स्थान है। ऐसा जातक चौर्यबुद्धि वाला होता है 'फलदीपिका' अ. 8/ श्लोक 25 के अनुसार द्वितीय में राहु होने से मुख रोग होता है अथवा जातक कपटपूर्ण वाणी बोलता है. मेरे निजी अनुभव में द्वितीयस्थ राहु धन के घड़े में छेद का कार्य करता है। फलत: जातक कितना भी कमाये धन एकत्रित नहीं होता किसी की आंखों में गोल धुएं का घेरा जैसा दिखाई दे तो निश्चय ही लग्न स्थान में राहु होता है।

दशा–राहु की दशा अनिष्ट फलदायक होगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–यहां राहु के साथ सूर्य स्वगृही होगा। ऐसा जातक धनवान होगा, पर धन संग्रह के मामले में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा जातक को मानसिक चिंता व तनाव से ग्रसित कर देगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को कटु सत्य बोलने वाला व्यक्ति बनाएगा। ऐसे जातक की अपने परिजनों से कम पटेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को फिजूलखर्च बनाएगा। ऐसा जातक परवंचक होगा, उसकी बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक को वाणी में हकलाहट देगा। धन संग्रह में सफलता बड़ी कठिनाई से मिलेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र धन स्थान में जातक को स्त्री लोलुप बनाएगा। जातक का धन ऐशो–आराम में ज्यादा खर्च होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से जातक कूटनीतिज्ञ होगा एवं गुप्त षड्यंत्र में ज्यादा रुचि लेगा। जातक प्रायः मिथ्याभाषी होगा।
8. **ग्रहणयोग**–यदि धन स्थान में ग्रहण हो तो व्यक्ति को पूर्वार्जित सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती, खुद की मेहनत से ही कमाएगा।

द्वितीय भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. श्रीसूक्त का सुबह-शाम नित्य पाठ करें।
2. श्रीयंत्र+कनकधारा यंत्र+कुबेर यंत्र का नित्य पूजन, दर्शन करें।
3. राहु शान्ति का प्रयोग करें।
4. कड़वा वचन किसी को न बोलें।
5. धन प्राप्ति हेतु दूर्वा एवं काले तिल से राहु का हवन करें।

कर्क लग्न में राहु तृतीय भाव में
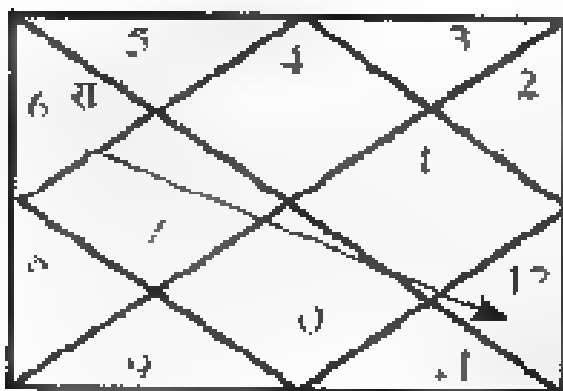
कर्क लग्न में तृतीयस्थ राहु कन्या राशि मित्र क्षेत्री होगा। यह राहु भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

जातक अद्वितीय बहादुर एवं साहसी होगा, भाइयों का सुख ठीक होगा। जातक अदम्य साहसी होते हुए भी अन्दर से डरपोक होगा, पिता के साथ उसके सम्बन्ध ठीक (मधुर) नहीं होंगे। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी

निशानी—जातक अधार्मिक एवं तर्की स्वभाव का होगा।

दशा—राहु की दशा ठीक जाएगी।

विशेष—'त्रिषट् एकादशे राहु:' सूत्र के अनुसार राहु मांगलिक दोष को नष्ट करता हुआ यहां उत्तमफल देगा। यदि यहां चन्द्रमा के साथ राहु हो तो जातक के माता की मृत्यु अल्प आयु में होगी।

'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 25 के अनुसार ऐसा जातक भाइयों का विरोधी तथा दृढ़-निश्चयी होता है। मेरे निजी अनुभव से ऐसे जातक को कुटुम्ब में यश नहीं मिलता।

राहु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**—यहा राहु के साथ सूर्य होने से जातक पराक्रमी होगा। उसके परिजन धनवान होंगे।
2. **राहु+चन्द्र**—यहा राहु के साथ चन्द्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक के मित्र अविश्वासी होंगे। परिजनों से विद्वेष रहेगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल तृतीय स्थान में होने से जातक महान पराक्रमी होगा पर सगे भाइयों से उसकी नहीं निभेगी।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध उच्च का होगा। ऐसा जातक महान पराक्रमी होगा। मित्रों से उसे लाभ रहेगा।
5. **राहु+गुरु**—राहु के साथ षष्टेश गुरु मित्रों से दगा दिलाएगा। बड़े भाई का व्यवहार भी संदिग्ध रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र नीच का होगा। ऐसा जातक स्त्री लोलुप होगा। स्त्री मित्रों से लाभ रहेगा। जातक का चरित्र संदिग्ध रहेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक को अपने ही आत्मीय लोगों के द्वारा भारी धोखा होगा।
8. **ग्रहण योग**—यह जातक की बहनों के लिए घातक योग है। ऐसा व्यक्ति शोरगुल कम पसन्द करता है तथा वह एकान्त प्रिय होता है।

तृतीय भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. भाई-कुटुम्बीजनों को पलटकर जवाब न दें।
2. गलत व्यक्तियों एवं व्यभिचारी स्त्रियों की सोहबत से बचें
3. जौ रात्रि में सिरहाने रखकर सोएं प्रात: जानवरों या किसी गरीब को भेंट करें।
4. बड़े भाई या बहन से लड़ने पर चूल्हे की आग बुझ जाएगी

कर्क लग्न में राहु चतुर्थ भाव में
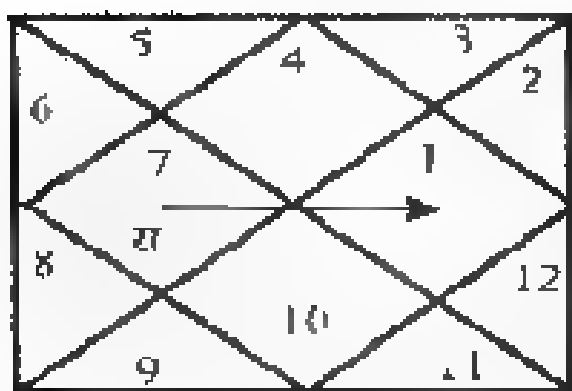
कर्क लग्न में चतुर्थ भाव में स्थित राहु तुला राशि का मित्र के घर में होगा एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

जातक को माता का प्रेम न मिलेगा। रहने का मकान अच्छा नहीं हो। विद्याध्ययन में रुकावट आएगी। जातक को अपने कुटुम्बीजनों से दूर रहना पड़ेगा। जातक जिस काम में हाथ डालेगी उसमें कोई न कोई रुकावट (बाधा) जरूर आएगी।

दशा—राहु की दशा सुख में न्यूनता लाएगी

विशेष—चतुर्थस्थ राहु वाहन सुख एवं मातृ सुख मे न्यूनता कराता है। 'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 25 के अनुसार 'कदाचित्सुखी' ऐसा जातक हठबुद्धि वाला होकर कभी-कभी ही सुखी होता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ नीच का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलती।
2. **राहु+चन्द्र**—राहु के साथ चन्द्रमा जातक को मानसिक संताप कराएगा। ऐसे जातक को माता का सुख कम मिलेगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल कुण्डली को **'डबल मांगलिक'** बनाएगा। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा तथा उसकी एक भूमि विवादित रहेगी।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा पर मामा से उसकी कम पटेगी
5. **राहु+गुरु**—राहु के साथ गुरु **'चाण्डाल योग'** बनाता है जातक सौभाग्यशाली होगा पर जीवन में गुप्त शत्रुओं की स्थिति बनी रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है। **'मालव्य योग'** के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि **'धूर्त योग'** बनाता है। **'शशयोग'** के कारण जातक चार पहियों की गाड़ी का स्वामी होगा। नौकर-चाकर एवं जमीन-भवन से युक्त राजसी जीवन जीएगा।
8. **ग्रहणयोग**—चौथे स्थान मे चन्द्र ग्रहण हो तो माता की मृत्यु सातवें वर्ष में हो जाती है। जातक ज्यादातर किराये के मकान मे रहता है

चतुर्थ भाव के अशुभ राहु का उपचार—

1. तेज गति के वाहन से दूर रहे।
2. माता, बूआ या बड़ी बहन की बीमारी में लापरवाही न रखें उनका दिल न दुःखाए।

3. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप करें।
4. राहु शान्ति का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में राहु पचम भाव में
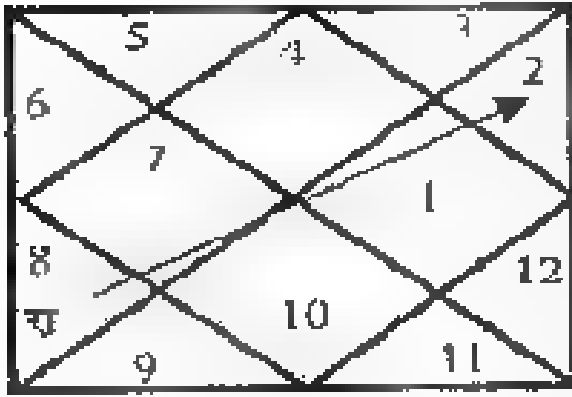
कर्क लग्न में पचम भाव मे स्थित राहु वृश्चिक राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। यह राहु विद्या में रुकावट डालने वाला एवं सन्तान सुख में बाधक है।

निशानी–जातक स्वभाव से लुच्चा होगा पर गुप्त विद्या, रहस्यमय शक्तियों का जानकार होगा। ऐसा व्यक्ति प्रायः नाक से बोलता है।

दशा–राहु की दशा निष्फल जाएगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 26 के अनुसार ऐसा जातक पुत्रहीन, कठोर हृदय वाला होता है मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसे व्यक्ति को पितृदोष एवं सर्पदोष होता है। जिसकी शान्ति कराने से जातक को राहत मिलती है

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक को विद्या हुनर द्वारा लाभ कराएगा। हालांकि जातक की विद्या अधूरी छूटेगी अथवा एक बार उसमे बाधा आएगी।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा जातक को स्व पुरुषार्थ से धनार्जन कराएगा। प्रथम सतति कन्या होगी। कन्या संतति की अधिकता रहेगी। विष भोजन का भय रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल स्वगृही होने से जातक टैक्नीकल व मैकेनिकल कार्यों का जानकार होगा। जातक ठेकेदारी से धन कमाएगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को बुद्धिशाली बनाएगा। परन्तु विद्या का लाभ जातक को जीवन मे नहीं मिल पाएगा। जातक की याददाश्त कमजोर होगी।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु जातक के भाग्य में बाधक है। जातक का गुरुजनों से असहयोग की प्राप्ति होगी। बड़ा भाई अपेक्षित मदद नहीं करेगा
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है। ऐसे जातक को व्यापार में, मातृसुख में अपेक्षित लाभ नही मिलेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि यहां **'धूर्त योग'** बनाएगा। जातक षड्यन्त्रकारी योजनाओं मे रुचि लेगा उसके जीवन मे गुप्त शत्रु की उपस्थिति रहेगी।
8. **ग्रहणयोग**–पुत्र नहीं होने अथवा अल्पायु वाली सन्तति एवं गर्भपात होता है।

पंचम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. संतान गोपाल स्तोत्र का नित्य पाठ करें।
2. राहु के तांत्रिक मंत्रो का जाप, हवन एवं तर्पण करें।
3. राहु की वस्तुओं का दान करें।
4. पितृदोष या कालसर्प योग की शान्ति कराएं।

कर्क लग्न में राहु षष्टम् भाव में

5	4	3
6	7	2
8	1	12
9 रा.	10	11
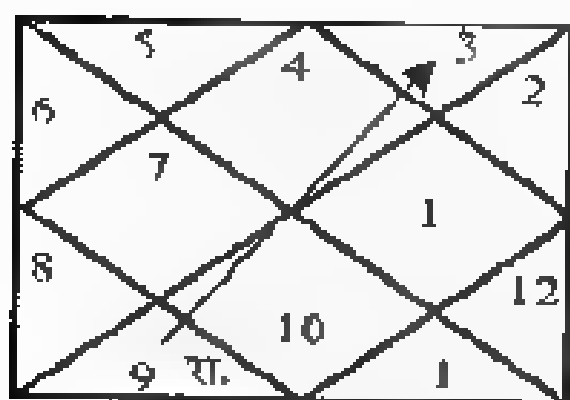
कर्क लग्न में छठे भाव मे स्थित धनु राशि का राहु नीच का एवं उद्विग्न होगा। जहां बैठकर वह अपनी उच्च राशि बारहवें भाव को देखेगा।

ऐसे जातक के गुप्त एवं प्रकट शत्रु बहुत होंगे पर जातक शत्रुओं को सबक सिखाने एवं ठिकाने लगाने में पूर्ण सक्षम होगा।

निशानी–जातक अपना काम निकालने हेतु कोई भी, कैसा भी तरीका काम में ले सकेगा

विशेष–'त्रिषद् एकादशे राहु:' सूत्र के अनुसार राहु यहां मांगलिक दोष को नष्ट करता हुआ उत्तम फल देगा।

दशा–राहु की दशा शत्रु बढ़ाएगी।

सावधानी–जल्दीबाजी में कोई निर्णय न लें। क्रोध पर नियंत्रण रखें एवं धैर्यपूर्वक आगे बढ़ें। 'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 26 के अनुसार ऐसा जातक लक्ष्मीवान और दीर्घायु होता है पर छठे भाव में राहु गुदा रोग कराता है। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसे जातक को शत्रु परेशान करते रहते हैं। उसे शत्रु पक्ष से कोई न कोई चिन्ता बनी रहती है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **धनहीन योग'** बनाता है। जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। यद्यपि जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा पर राजा से दण्डित होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक सदैव भयग्रस्त, चिन्ताग्रस्त रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**राजभंग योग**' एवं '**विद्याहीन योग**' बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' के साथ '**पराक्रम भंगयोग**' भी बनाता है। ऐसा जातक धनी मानी तो होगा पर एक बार उसका पराक्रम भंग होगा।

5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु '**चाण्डाल योग**' बनाता है साथ ही '**विपरीत राजयोग**' भी बनाता है। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्यवान होता है।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनाता है। ऐसा जातक व्यापार में घाटा उठाता है। स्त्री की वजह से उसे बदनामी मिलती है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**विवाहभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा। गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ कमी रहेगी।
8. **ग्रहणयोग**–इस स्थान में रा+च+सू ग्रहण जातक के लिए शुभ होगा परन्तु मामा व मौसियों के लिए ठीक नहीं होता, मौसिया विधवा होती है।

षष्टम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राहु कवच का नित्य पाठ करें।
2. चांदी की ठोस गोली जेब में रखें।
3. राहु पंचविंशति स्तोत्र का हवनात्मक प्रयोग करें।
4. राहु की वस्तुओं का दान करें।
5. रात्रि को गहरी नींद से सोए हुए व्यक्ति को भूरे काले रंग का कम्बल ओढ़ाकर चुपचाप चले जाएं।

कर्क लग्न में राहु सप्तम भाव में

5 4 3 2 6 7 1 8 12 10 रा. 9 11
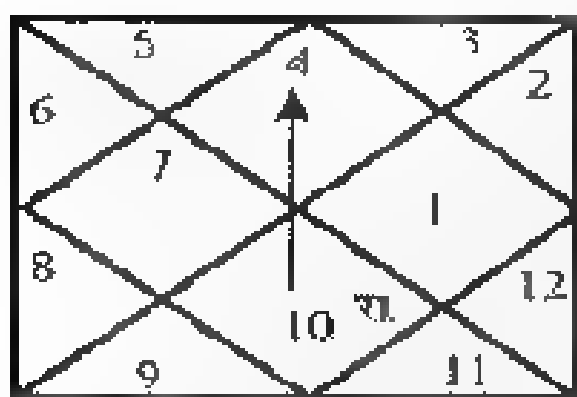
कर्क लग्न में सप्तम भाव मे स्थित मकर राशि का राहु मित्र क्षेत्री होगा तथा लग्न (प्रथम) भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

राहु की स्थिति वैवाहिक सुख में बाधक है। जातक के धंधे में रुकावट होगी। जातक का अंर्तजातीय विवाह हो जातक मानसिक रूप से सदैव चिन्तित रहेगा।

निशानी–जातक अपने पसन्द की शादी करेगा और पसन्द माता-पिता के विपरीत होगी। जातक स्वयं की पत्नी के अलावा अन्य स्त्रियों की तलाश में भटकता रहेगा। फलदीपिका के अ. 8/श्लोक 26 के अनुसार ऐसे जातक का धन स्त्री संग से नष्ट हो जाता है। ऐसा जातक प्राय: विधुर व अवीर्य वाला होता है।

दशा–मध्यम फलकारी है।

विशेष–

1. यदि यहां शनि हो तो जातक अंर्तजातीय विवाह करता है।
2. यदि यहा राहु के साथ शुभ ग्रह हो तो जातक दूसरा विवाह करेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक का विलम्ब विवाह कराएगा। साथ ही विवाह विच्छेद योग भी बनता है
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा जातक को मानसिक चिन्ता देगा। साथ ही कार्य में सफलता भी देगा। जीवनसाथी शक्की मिजाज का होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल उच्च का होने से '**रुचक योग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से जातक का धन जीवनसाथी के रख-रखाव को लेकर खर्च होगा। जातक फिजूल खर्च होगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ नीच का गुरु होने से '**चाण्डाल योग**' बना। ऐसे जातक का संसर्ग अपने से बड़ी उम्र के स्त्री के साथ होता है
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ सप्तम भाव में शुक्र '**लम्पट योग**' बनाएगा। ऐसा जातक चाल-चलन व चरित्र का अच्छा नहीं होता।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि यहां पर '**शशयोग**' बनाएगा। ऐसा व्यक्ति राजा के समान पराक्रमी-ऐश्वर्यशाली होता हुआ भी धूर्त होगा
8. **ग्रहण योग**–यदि यहां सूर्य ग्रहण हो तो 48वें वर्ष में जीवनसाथी की मृत्यु होगी। चन्द्र ग्रहण हो तो स्त्री का स्वभाव अच्छा न होने से गृहस्थ संसार के प्रति जातक उदासीन रहता है।

सप्तम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राहु शान्ति प्रयोग करें।
2. राहु के वैदिक मंत्रों का जाप रुद्राक्ष की माला पर करें
3. राहु की वस्तुओं का दान करें
4. अत्यधिक बूढ़ी एवं बेसहारा स्त्रियों की मदद करें।

कर्क लग्न में राहु अष्टम भाव में

5, 4, 3, 2, 6, 7, 1, 8, 12, 10, 9, रा. 11	
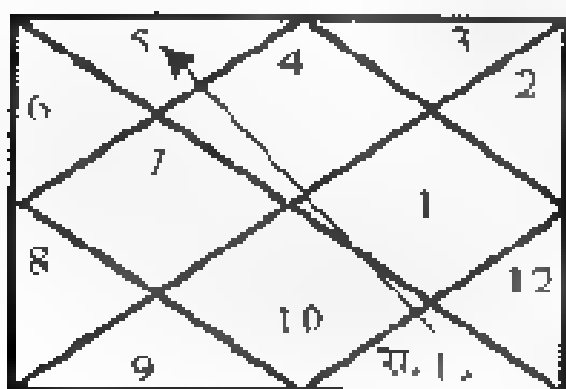
कर्क लग्न में अष्टम भाव में स्थित कुम्भ राशि का राहु मित्रक्षेत्री है जहां बैठकर वह धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

राहु की यह स्थिति पेट में पीड़ा एवं जातक को गुप्त रोग देगी। जातक को धन प्राप्ति में रुकावट महसूस होगी

जातक पारिजात अ. 5/ श्लोक 91 के अनुसार यदि अष्टमस्थ राहु को कोई पाप ग्रह देखता है तो फोड़े फुंसी, उष्ण रोग, सर्पदंश या कोई दवाई के प्रतिरोध से जातक की मृत्यु होगी।

दशा-राहु की दशा अनिष्ट सूचक है। राहु की दशा में जातक को कोई बीमारी हो सकती है।

विशेष–ऐसे जातक का परिवार बड़ा होता है तथा वह आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त होता है। फलदीपिका अनु. 8/26 के अनुसार अष्टमस्थ राहु वाला व्यक्ति विकल, वात रोग से पीड़ित, अल्प सुत वाला, अल्पायु एवं अशुद्ध अकरणीय कर्म करने वाला होता है। मेरे निजी अनुसंधान से ऐसे जातक की वाणी दूषित होती है। ऐसे जातक परिश्रम बहुत करते हैं पर उसका फल उन्हें नहीं मिलता। कुटुम्ब में अपयश एवं आत्मीय जनों से वांछित सम्मान नहीं मिलता।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य यहां '**धनहीन योग**' बनाता है। ऐसे जातक को पग-पग पर आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ता है।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ यहां चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता। जातक मानसिक परेशानी में रहता है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल यहां पर '**विद्याभंग योग**' एवं '**राजभंग योग**' दोनों बनाता है। ऐसा जातक दर दर भटकता है पर सरकार से उसे सहयोग नहीं मिलता। जातक के प्रत्येक कार्य में बाधा आती है.
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध यहा पर '**पराक्रम भंगयोग**' एव '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनाएगा। ऐसा जातक धनवान व ऐश्वर्य सम्पन्न तो होगा पर मानहानि का भय बराबर बना रहेगा।
5. **राहु+गुरु** राहु के साथ गुरु '**भाग्यभंग योग**' एवं षष्टेश अष्टम में होने से **विपरीत राजयोग** दोनों बनाएगा। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होगा पर भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**सुखहीन योग**' एवं '**लग्नभंग योग**' दोनों बनाएगा फलतः जातक को गुप्त रोग गृहस्थ सुख प्राप्ति में बाधक होंगे तथा उसे व्यापार में भी नुकसान उठाना पड़ेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **विलम्ब विवाह योग** कराएगा तथा गृहस्थ सुख में बाधा पहुंचाएगा। परन्तु अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से **विपरीत राजयोग** के कारण जातक धनवान होगा।
8. **ग्रहण योग**–अष्टम भाव में सूर्य ग्रहण हो तो विवाह जल्दी होता है पर पुत्र एक ही होता है। स्त्री की आयु कम होती है। चन्द्र ग्रहण हो तो जातक स्वयं अल्पायु वाला होता है 38वें वर्ष में आयु को खतरा रहता है।

अष्टम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राहु कवच का नित्य पाठ करें।
2. असाध्य बीमारी से बचाव हेतु महामृत्युंजय का पाठ करें।
3. हाथीदांत की वस्तुएं घर मे न रखे, न प्रयोग मे लें।
4. प्राणों पर यदि संकट हो तो अपने वजन के बराबर कच्चा कोयला शनिवार के दिन जल में प्रवाहित करें।
5. यदि बुखार न उतर रहा हो तो 800 ग्राम जौ गौ मूत्र में धोकर शनिवार के दिन जल मे प्रवाहित करें।

कर्क लग्न में राहु नवम् भाव में

5	4	3	2
6	7	1	12 रा.
8	10		
9		11	
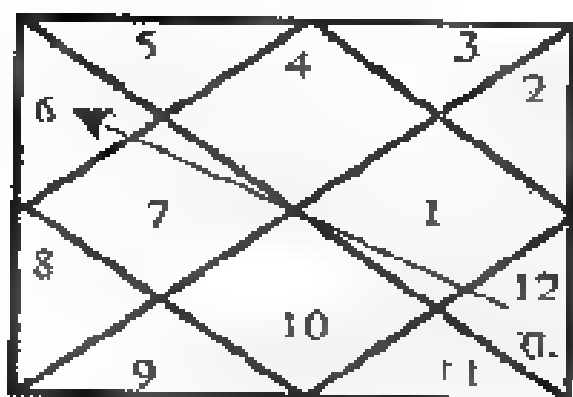
कर्क लग्न में राहु नवम भाव में मीन राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। जहा बैठकर वह तृतीय भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेगा।

राहु की यह स्थिति 45 वर्ष की आयु तक जातक को भाग्योदय हेतु सघर्ष कराती रहेगी। जातक की अपने बड़े भाई के साथ खटपट रहेगी। भागीदारी व्यापार नहीं जमेगा।

निशानी–जातक धर्मग्रन्थों, ज्योतिष तंत्र-मंत्र के गूढ़ रहस्यों का जानकार होगा।

दशा–राहु की दशा व अतर्दशा मध्यम अवस्था के पहले कष्टदायक एवं उसके बाद ठीक रहेगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 27 के अनुसार 'धर्मस्थे प्रतिकूल वाग्- गणपुर ग्रामाधिपो अपुण्यवान्। ऐसा जातक प्रतिकूल वचन बोलने वाला किन्तु किसी समुदाय, नगर या ग्राम का नेता होता है तथा अपुण्यवान, अधार्मिक जातक होता है। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसा जातक भाग्योदय हेतु अनेक प्रयत्न व धधे करता है परन्तु फूटे घड़े में जिस प्रकार से पानी नहीं रहता, उमी प्रकार से भाग्योदय हेतु किए गए प्रयत्नो में सफलता नहीं मिलती

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक को धनी एव रौबीला व्यक्तित्व देगा।
2. **राहु+चन्द्र**– राहु के साथ लग्नेश चन्द्रमा जातक को परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं होने देगा। जातक की माता धार्मिक होगी पर बीमार रहेगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि व जमीन का स्वामी बनाएगा। ऐसा जातक परम प्रतापी होगा

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ नीच का बुध भाग्य स्थान मे जातक को परम पराक्रमी बनाएगा। ऐसे जातक का जनसम्पर्क बहुत तेज (सघन) होगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु बैसे तो यहां '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। परन्तु गुरु स्वगृही होने से जातक राजा तुल्य प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा। धर्म ध्वज होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र उच्च का '**लम्पट योग**' बनाता है। ऐसा जातक व्याभिचारी होगा। स्त्री-मित्रों से खूब लाभ होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**धूर्त योग**' बनाएगा जातक षड्यंत्रकारी होगा, कुटिल होगा परन्तु प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।
8. **ग्रहणयोग**–यहां चन्द्र ग्रहण हो तो जातक की अगली पीढ़ी भाग्यवान होती है। सूर्य ग्रहण हो तो माता-पिता की बचपन में मृत्यु होती है।

नवम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राहु के वैदिक मन्त्रों का जाप, अनुष्ठान करें।
2. राहु शान्ति प्रयोग करें।
3. शीघ्र भाग्योदय हेतु राहु के एक लाख अठारह हजार तांत्रिक मंत्रों का दूर्वा, काले तिल, कर्पूर व कमलगट्टे का हवन करें।

कर्क लग्न में राहु दशम भाव में
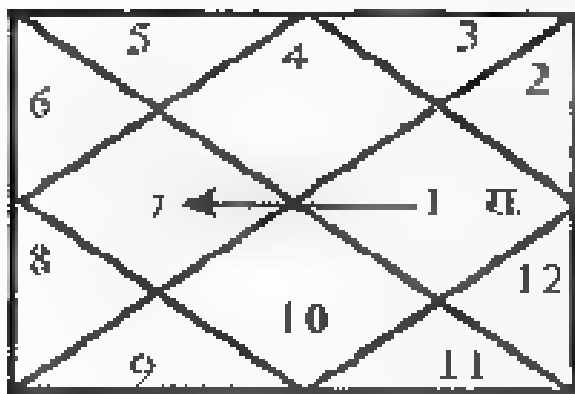
कर्क लग्न में दशम भाव में स्थिति मेष राशि का राहु शत्रुक्षेत्री होगी। इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर रहेगी।

राहु की यह स्थिति जातक के धंधे-व्यवसाय एवं व्यापार के लिए संघर्षपूर्ण राह को बताती है ऐसे जातक पूर्ण परिश्रमी होते हैं पर सरकार की ओर से परेशानी आ सकती है।

निशानी–जातक पूर्ण परिश्रमी एवं साहसी होगा।

दशा–राहु की दशा मध्यम आयु के पूर्व संघर्षकारी एवं बाद में ठीक हो जाएगी.

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 27 के अनुसार ऐसा जातक सत्कर्महीन, थोड़े पुत्र वाला, निर्भय एवं विख्यात (कुख्यात) होता है। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार ऐसे जातक का व्यापारिक या व्यवसायिक जीवन कलहपूर्ण रहता है। परिवार में विग्रह रहता है सरकारी अधिकारियों से अनबन रहती है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य उच्च का होगा '**रविकृत राजयोग**' के कारण जातक परम तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा। सरकार में उसका प्रभाव अक्षुण्ण होगा।

2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा यहां उच्चाभिलाषी होगा। फलत: जातक महत्वाकांक्षी होगा। उसे मातृपक्ष से वांछित सहयोग समय पर नहीं मिलेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ स्वगृही मंगल '**रूचक योग**' बनाएगा, जातक राजा के समान पराक्रमी, एश्वर्य सम्पन्न एवं प्रभावशाली व्यक्ति होगा पर लड़ाकू तथा परम साहसी होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ यहा बुध होने से जातक बुद्धिशाली, पराक्रमी होगा तथा राजा का प्रमुख सलाहकार होगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ यहा पर गुरु '**चाण्डाल योग**' बनाएगा, परन्तु व्यक्ति अपने कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करने से पीछे नहीं रहेगा।
6. **राहु+शुक्र** राहु के साथ शुक्र यहां पर '**लम्पट योग**' बनाता है। ऐसा जातक स्त्री का रसिक एवं अत्यन्त कामी होता है। स्त्रियां भी इनके प्रति सहज ही आकर्षित हो जाती हैं।
7. **राहु+शनि**–यहां पर राहु के साथ नीच का शनि '**धूर्त योग**' बनाता है। ऐसा जातक अत्यन्त चालाक व कूटनीतिज्ञ होता है। इनसे दुश्मनी करना घातक रहता है क्योंकि यह कभी भी, कुछ भी कर सकता है।
8. **ग्रहण योग**–यहा चन्द्र ग्रहण माता की मृत्यु अल्पायु में कराता है। सूर्य ग्रहण हो तो पिता की मृत्यु बचपन में होती है।

दशम भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. राजयोग की प्राप्ति हेतु राहु के तान्त्रित मन्त्रों का हवन करें।
2. राहु की वस्तुओं का दान करें।
3. राहु पंचविंशति नाम स्तोत्र का नित्य पाठ करें
4. राहु के पंचविंशति स्तोत्र का हवनात्मक प्रयोग काले तिल व दूर्वा से करें।

कर्क लग्न में राहु एकादश भाव में

5	4	3	2 रा	6	7	1	8	10	9	1
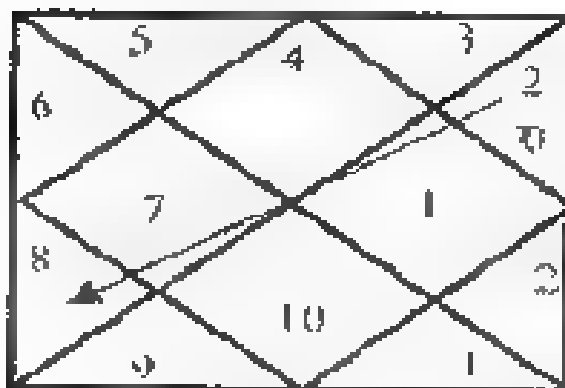
कर्क लग्न में एकादश भाव में स्थित वृष राशि का राहु मित्रक्षेत्री होगा। यहा बैठकर राहु पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होगा, व्यापार व्यवसाय में उसे आकस्मिक लाभ मिलेगा पर प्रेम प्रकरण में बदनामी मिलेगी।

निशानी–जातक को पुत्र सन्तान संबधी चिन्ता रहेगी।

दशा–राहु की दशा अकस्मात लाभ एवं उत्तम फल देगी।

विशेष–'त्रिषट् एकादश राहु:' के सूत्र के अनुसार राहु यहा मांगलिक दोष को नष्ट करता हुआ उत्तम फल देगा। 'फलदीपिका' अ 8/श्लोक के अनुसार ऐसा जातक लक्ष्मीवान एव दीर्घायु होता है परन्तु कान में रोग होता है पुत्र अल्प होते हैं।

मेरे निजी अनुसधान के अनुसार ऐसा व्यक्ति चिन्तातुर रहता है। धन के मामले को लेकर बदनामी या संघर्ष की स्थिति रहती है। सर्वत्र लाभ दिखलाई देता है पर कांच मे दिखाई देने वाले रुपयो की तरह धन हाथ नही लगता।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक को आध्यात्मिक व गूढ़ रहस्यमय विद्याओं का ज्ञाता बनाता है। जातक व्यापार प्रिय होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्र होने से ऐसा व्यक्ति स्वपराक्रम से आगे बढता है। उच्च का चन्द्रमा उसे उच्च कल्पना शक्ति देगा।
3. **राहु+मगल**–राहु के साथ मगल जातक को उद्योगपति बनाएगा तथा वह ऐसा जातक रचनात्मक कार्य करने वाला होता है तथा वह खाली नहीं बैठ सकता।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ यहां पर बुध होने से जातक महान पराक्रमी होगा पर व्यापार-व्यवसाय को लेकर खर्च बढ़े-चढ़े होंगे।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु यहा पर **चाण्डाल योग** बनाता है। ऐसे जातक का जो भी स्वप्न आएगे वे सच होंगे जातक में पूर्वाभास की शक्ति होगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र स्वगृही होकर **'लम्पट योग'** बनाएगा। ऐसा जातक विलासी होगा तथा व्यापार मे खूब धन अर्जित करने में सक्षम होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से **'धूर्त योग'** बनेगा। ऐसा जातक शठ होगा। जातक दूसरो को उल्लू बनाने में समर्थ होगा पर उसका खुद का गृहस्थ जीवन ज्यादा आनन्ददायक नहीं होगा।
8. **ग्रहणयोग**–इस स्थान पर चन्द्र ग्रहण शुभ होता है जातक अनेक प्रकार के धंधों से धन कमाता है। यदि यहा सूर्य ग्रहण हो तो जातक को बड़े भाई के कुटुम्ब का पोषण करना पड़ता है।

एकादश भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. भगी या निम्न वर्ग के व्यक्ति को कभी कभी खैरात दें। उनके जरूरत की वस्तु भेंट करें
2. रात को आराम करने की जगह पर शक्कर की बोरी या सौंफ की बोरी कायम रखने से राहु की अशुभ फल नष्ट होगा।
3. राहु शान्ति प्रयोग करें।

कर्क लग्न में राहु द्वादश भाव में
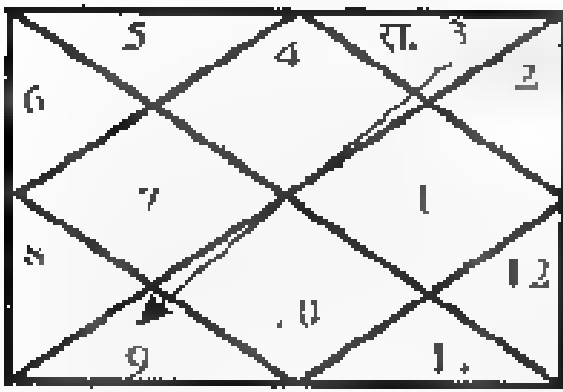
कर्क लग्न में द्वादश भाव में स्थित मिथुन राशि का राहु उच्च का होगा यहां बैठक राहु छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

राहु की यह स्थिति जातक को अधिक यात्राएं करायेगी। ज्यादा यात्रा सार्थक न होगी राहु जातक से बडे-बड़े खर्चे भी कराएगा। यदि खर्च पर नियत्रण न रहा तो जातक कर्जदार भी हो सकता है।

विशेष--राहु की सही स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए राहुगत राशि स्वामी की स्थिति को देखना अनिवार्य है। 'फलदीपिका अ. 8/श्लोक 27 के अनुसार 'प्रच्छन्ना अघरतो बहुव्यय करो' ऐसा जातक प्रच्छन्न पाप करने वाला, आय से अधिक खर्च करने वाला जलोदर रोग से ग्रसित होता है। मेरे निजी अनुसधान के अनुसार ऐसे जातक को मानसिक तनाव सदैव बना रहता है। जातक यात्राए बहुत करता है। धन की भारी चिन्ता रहती है। उधार दिया हुआ पैसा डूब जाता है परन्तु खुद के कर्जे उतारने का परिस्थिति में परेशान रहता है।

दशा–राहु दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध--

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' बनाएगा। ऐसा जातक आर्थिक विषमताओं के मध्य में गुजरेगा एव आध्यात्मिक व्यक्ति होगा। जातक त्यागी व परोपकारी होगा।
2. **राहु+चन्द्र**–राहु के साथ चन्द्रमा होने से जातक मानसिक तनाव में रहेगा एव उसे परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
3. **राहु+मगल**–राहु के साथ मगल '**विद्याभंग योग**' एव '**राजभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक का पुरुषार्थ ज्यादा सफल नहीं होता है। पुत्र भी उसके कहने मे नहीं रहते।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ स्वगृही बुध होने से '**विपरीत राजयोग**' बनता है। ऐसा जातक धनी एव ऐश्वर्यशाली होगा. यात्रा-व्यवसाय एवं बुद्धिबल से खूब धन कमाएगा।
5. **राहु+गुरु**–राहु के साथ गुरु '**भाग्यभंग योग**', '**चाण्डाल योग**' एव '**विपरीत राजयोग**' तीनों योगों के बराबर सृष्टि करेगा। ऐसा जातक ऐश्वर्य सम्पन्न तथा कूटनीतिज्ञ होगा एव समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**सुखहीन**', '**लाभभंग योग**' एवं '**लम्पट योग**' तीनो योगो के बराबर सृष्टि करेगा ऐसा जातक परस्त्री मे बहुत दिलचस्पी लेगा तथा विदेश मे जाकर खूब धन कमाएगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ यहां शनि **'धूर्त योग'**, **'विलम्ब विवाह योग'** एवं **'विपरीत राजयोग'** तीनों योगों की बराबर सृष्टि करेगा। ऐसा जातक ऐश्वर्यवान होगा पर दगा करना उसकी फितरत होगी, उसका गृहस्थ सुख बिगड़ा हुआ होगा।
8. **ग्रहण योग**–यहां चन्द्र ग्रहण हो तो जातक की वृद्धावस्था कष्टमय रहती है। सूर्य ग्रहण हो तो वृद्धावस्था में धन की तकलीफ रहती है।

द्वादश भाव के अशुभ राहु का उपचार–

1. आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए अपनी आय का कुछ हिस्सा पुत्री, बहन, बुआ, भानजी पर खर्च करें।
2. लाल कपड़े की थैली में सौंफ डालकर सिलाई कर लें। यह थैली सिरहाने रखें तो बुरे स्वप्न समाप्त होंगे। राहु का भार मिटेगा।
3. रसोई में बैठकर खाना खाने से राहु का अशुभ प्रभाव नष्ट हो जाता है।
4. राहु कवच का पाठ करें।
5. राहु का तांत्रिक हवन करें।

❑❑❑

केतु का वैदिक व पौराणिक स्वरूप

नवग्रहों में अन्तिम इस छाया ग्रह की गणना दुष्ट ग्रहों में होती है।[1] यह राहु का धड़ माना गया है ज्योतिषशास्त्र में इसके दुष्ट फल का वर्णन इस प्रकार पाया जाता है—"आर्द्रा, आश्लेषा अथवा केतु जिस पक्ष में हो, इन नक्षत्रों में जन्म लेने वाले व्यक्ति को प्राणों का संकट होता है।[2] वराहमिहिर ने 'केतुचाराध्याय' में इसकी गति और क्रूर फल का विस्तृत से वर्णन किया है।[3]

ऋग्वेद में सूर्य और उसकी रश्मियों के लिए 'केतु' शब्द का प्रयोग हुआ है।[4]

बेबर के अनुसार अद्भुत ब्राह्मण में उल्का या धूमकेतु अर्थ से यह शब्द आया है।[5]

तैत्तरीय आरण्यक ब्राह्मण में बहुवचन के साथ इसका प्रयोग मिलता है।[6] ऋग्वेद में अनेक जगह सूर्य और उसकी रश्मियों के लिए 'केतु' शब्द का प्रयोग हुआ है।[7]

वेदों में धूमकेतु का स्वरूप

अथर्ववेद में धूमकेतु शब्द 'शं नो मृत्युर्धूमकेतुः' मृत्यु का विशेषण है। त्सिमर के अनुसार यह पुच्छल तारा के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।[8] इसका अर्थ है धुएं की पताका वाला, जिमर इसका

---

1. "ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी, भानुःशशी भूमिसुतो बुधश्च गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।
   —ब्रह्मनित्यकर्म समुच्चय, प्रातः स्मरणम् 1/श्लोक–11
2. केतुर्यस्मिन्नभ्युदितस्तस्मिन् प्रसूयते जन्तुः। रौद्रे सर्पमुहूर्ते वा प्राणैः सत्यजत्याशु —ज्योतिषतत्व 1/11
3. बृहत्संहिता अध्याय 11, पृष्ठ 96
4. प्र केतुना बृहता यात्यग्नि रा रोदसी वृषभो रोरवीति दिवश्चिदन्तॉं उपमं उदानलपामुपस्थे महिषो ववर्ध। ऋग्वेद 10/8/1
5. वैदिक कोश पृष्ठ 108
6. तैत्तरीय आरण्यक 1/23/2, 1/24/4, 1/3/1/6
7. ऋग्वेद मण्डल, 107 सूक्त 5 मंत्र।
8. अथर्ववेद 12/9।

अर्थ उल्का लगाते हैं। लानमान इससे दाह संस्कार के समय चिता में से निकले धुएं का अर्थ करते हैं। ज्योतिष ग्रन्थों के अनुसार यह पुच्छल तारे का नाम है।[1] अथर्वसंहिता में उल्का-पात का वर्णन विस्तार से मिलता है।[2] इसी सूक्त मे सप्तऋषियों का वर्णन भी मिलता है

वेदों में शकधूम का स्वरूप

शकधूम्र नक्षत्रणि यद्राजानमकुर्वत! अथर्ववेद 6/128/1

अर्थववेद में शकधूम को नक्षत्रों का राजा बताया गया है।[3] शकधूम शब्द का अर्थ है 'गोमयाग्नि से उत्पन्न धूम' बेबर का विचार है कि इसे मौसम की विशेषता समझा जाता है।[4]

ब्लूमफील्ड का मत है कि इस शब्द का अर्थ मौसम का भविष्य वक्ता है जो अग्नि के धूम के आधार पर भविष्यवाणी करता है।[5] राथ ने अपनी डिक्शनरी में लिखा है कि यह कोई नक्षत्र वर्ग का आकाश गंगा हो सकती है।[6] वस्तुतः यह नक्षत्रों का राजा, धुएं की पूछ वाला धूमकेतु का ही वर्णन है

केतु

1. प्रिय रत्न–वैडूर्य
2. प्रिय वस्तु–तिल
3. प्रिय वस्त्र–कंबल
4. प्रिय वस्तु–कस्तूरी
5. प्रिय शस्त्र–तलवार
6. प्रिय वस्त्र–कृष्णवस्त्र
7. दान वस्तु–तैल
8. प्रिय पुष्प –कृष्णपुष्प
9. प्रिय पशु–छाग
10. प्रिय दिशा–वायव्य
11. प्रिय मण्डल–ध्वजाकार
12. नाप–6 अंगुल
13. प्रिय देश–अवन्ति देश
14. गोत्र–जैमिनि गोत्र
15. वर्ण–धूम्रवर्ण
16. जप संख्या–17000

---

1. वैदिक कोश, पृष्ठ 220
2. हिन्दूधर्मकोष डॉ. राजबली पाण्डेय उत्तरप्रदेश, हिन्दी संस्थान लखनऊ, पृष्ठ 343
3. नक्षत्रमुल्काभिहत शमस्तु न। श नोऽभिचाराः शमु सन्तु कृत्याः–अथर्ववेद 19/9/9
4. तस्मै ते नक्षत्रराज शकधूम सदा नमः। अथर्ववेद 6/ 2/4
5. वैदिक कोश, पृष्ठ 501
6. वैदिक कोश, पृष्ठ 502

केतु का पौराणिक स्वरूप

चक्र से कटने पर सिर राहु कहलाया और धड़ केतु। केतु राहु का ही कबन्ध है। केतु बहुत से हैं (मत्स्य पु. 94/8)। इसमें धूमकेतु प्रधान है (वायु पुराण 153/10)

वर्ण–केतु का वर्ण धूम्र, आयुध गदा तथा वाहन गीध है।

केतु के ध्यान का स्वरूप निम्नलिखित है–

धूम्रा द्विबाहवः सर्वे गदिनो विकृताननाः।
गृध्रासनगता नित्यं केतवः स्युर्वरप्रदाः॥

(मत्स्यपु. 94/8)

'सभी केतु द्विबाहु हैं। उसके शरीर आदि धूमवर्ण के हैं। उनके मुख विकृत हैं। वे दोनों हाथों में गदा एवं वरमुद्रा धारण किए हैं और नित्य गीध पर समासीन हैं।

केतु के अधिदेवता 'चित्रगुप्त' एवं प्रत्याधिदेवता 'ब्रह्मा' हैं।

केतु का खगोलीय स्वरूप राहु की तरह केतु का भी आकाश में कोई पिण्ड नहीं है। राहु यदि सिंहिका राक्षसी के पुत्र का सिर है तो केतु उसी राक्षस का धड़ है। यह धूम्र वर्णीय है। कुण्डली में हमेशा केतु राहु से सातवें स्थान पर रहता है। इसलिए इसकी ग्रह चाल राहु के समान ही चलता है अतः इसका अलग से विश्लेषण प्राप्त नहीं होता

वैसे तो राहु की उच्च राशि से सातवीं राशि केतु भी उच्च होनी चाहिए। पाराशर ऋषि ने "धनु" इसकी उच्च राशि मानी है। परन्तु कुछ विद्वानों ने केतु की उच्च राशि वृश्चिक, मूल त्रिकोणीय राशि कुम्भ, अनुकूल व प्रिय राशि कर्क मानी है। कुछ विद्वानों ने तो इसका फल राहु के अनुसार ही माना है। विंशोत्तरी महादशा में केतु की दशा 9 वर्ष की लगायी गयी जब कि अष्टोत्तरी दशापद्धति में केतु को अलग से ग्रह नहीं मानकर उसके दशा की व्यवस्था नहीं की गयी।

केतु का ज्योतिषीय स्वरूप–केतु का प्रतीक ध्वजा है यह ध्वजा विजय, यश, कीर्ति व प्रतिष्ठा का प्रतीक है। फलतः कई आचार्यों ने केतु का प्रभाव राहु से अलग जाना है। यह जैमिनी गोत्र का अवन्ति देश का निवासी एवं ध्वजाकार मण्डल में रहने वाला है। राहु का रत्न "गोमेद" तो केतु का "वैदूर्य" (लहसुनिया) है। राहु नैऋत्य दिशा का स्वामी है तो केतु वायव्य दिशा का स्वामी है। राहु का घर सर्पाकार तथा केतु का स्थान कोना रंगी-बिरंगी गुदड़ी राहु का वस्त्र है तो केतु का वस्त्र कटा हुआ होता है। दोनों का धातु शीशा है केतु यदि अशुभ ग्रहों के साथ हो तो अशुभ फल अधिक तीव्रता से देता है। कुण्डली में शुभ ग्रह के दोष दूर हो जाते हैं। केतु दाद, चर्मरोग, शूल, भूख, हृदय रोग, बुद्धि भ्रम, विद्या बाधा, विष बाधा, पैर के रोग पिशाच-बाधा पत्नी व पुत्र का दुःख ब्राह्मण और क्षेत्र का विरोध, शत्रु से भय, प्रेत बाधा तथा शरीर की मलिनता से उत्पन्न रोग, गूढ़ विद्या ब्रह्म ज्ञान शूद्र लोगों और नीच आत्माओं से कष्ट आदि वस्तुओं का कारक ग्रह है।

❑❑❑

कर्क लग्न में केतु की स्थिति

कर्क लग्न में केतु प्रथम भाव में
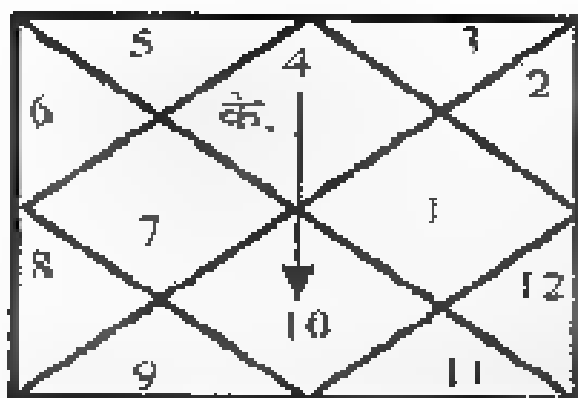
चन्द्रमा के घर मे केतु शत्रुक्षेत्री होगा कर्क लग्न में जातक तेजस्वी होता है। पर प्राय: अंग भग का खतरा बना रहता है। स्त्री के सुख मे कोई न कोई कमी बनी रहती है। जातक मानसिक रूप से शकालु होता है उसके विचारों में स्थिरता नहीं रहती।

निशानी—जातक के हाथ में पसीना बहुत आता है। जन्म से दूसरा महीना जातक के लिए कष्टप्रद रहेगा। प्राय: मित्र बहुत होते हैं पर वफादार नही होते। जातक के चेहरे के आस पास शहद के रंग का तिल होता है।

जातक के मुंह पर कोई स्थाई दाग-चोट का निशान होगा

दशा—केतु की दशा तकलीफदायक साबित होगी।

विशेष—राहु राक्षस का सिर है तथा केतु सम्पूर्ण धड़। राहु सर्प का मुख है, केतु सर्प की पूछ। राहु जहा उग्र अनिष्ट करता है वहा केतु उस अनिष्ट को आधा कर देता है। मेरे निजी अनुसधान के अनुसार राक्षस का सिर राहु जिस भाव (स्थान) में होगा उस भाव की महत्वाकाक्षा जातक को ज्यादा होगी। जहां केतु उस भाव की तृप्ति होगी, पूर्णता होगी। परन्तु उस भाव की वस्तु प्राप्त करने के लिए ज्यादा लालायित रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य होने से व्यक्ति धर्मध्वज होगा। धनी होगा
2. **केतु+चन्द्र**—केतु के साथ चन्द्रमा होने से व्यक्ति सुन्दर आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा एवं जीवन में सफल व्यक्ति होगा
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ नीच का मंगल व्यक्ति को युद्धप्रिय साहसिक एवं शत्रुओं का मानमर्दन करने में सक्षम बनाता है

4. **केतु+बुध**–केतु के साथ तृतीयेश बुध लग्न में होने से व्यक्ति पराक्रमी होगा। स्वय के बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु लग्न में उच्च का होने से **'हंस योग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं साहसी होता है। जातक लालबत्ती की गाड़ी एव झंडी का अधिकारी होता है।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र लग्न मे, व्यक्ति को कुल का नाम रोशन करने वाला कुलदीपक बनाता है। जातक की पत्नी सुन्दर पर कलहप्रिय होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि लग्न में, व्यक्ति को मिथ्या दम्भी, हठी एव कूटनीतिज्ञ बनाता है।
8. यदि चन्द्रमा दु:स्थान या नीच का हो, तो जातक सदैव मानसिक तनाव मे रहेगा।
9. चन्द्रमा यदि सातवें स्थान में राहु के साथ पीड़ित है तो जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद बने रहेंगे तथा जातक मानसिक तनाव में रहेगा।

प्रथम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु के तांत्रिक मंत्र के एक लाख सत्रह हजार जाप कर, दशांश हवन, कुशा, तिल कस्तूरी व कपूर से करें।
2. शनिवार के दिन काले कपड़े का दान करें।

कर्क लग्न में केतु द्वितीय भाव में
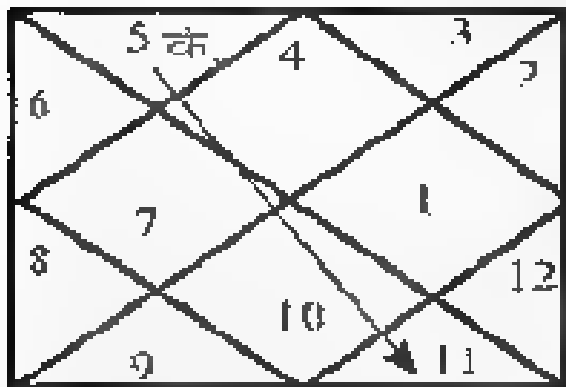
कर्क लग्न में द्वितीय भाव में स्थित केतु सिंह राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। केतु की दृष्टि अष्टम भाव पर होगी।

ऐसा जातक क्रोधी होगा। धन आएगा एवं चला जाएगा। कुटुम्ब सुख में न्यूनता रहेगी। जातक अपने विचार या पक्ष को स्पष्ट रूप से प्रतिपादित कर पाने मे असमर्थ रहेगा।

विशेष–'फलदीपिका' अ 8/श्लोक 28 के अनुसार लग्नस्थ केतु वाला व्यक्ति चुगलखोर एवं कृतघ्न होता है। जातक असज्जनों के साथ रहने वाला (Malefic association) विवर्ण होता है। जातक प्राय: धंधे बदलते रहता है, यह मेरा निजी अनुसंधान है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य यहा स्वगृही होगा। ऐसा जातक धनवान एव सत्यवक्ता होगा पर उसकी वाणी लड़ाकू होगी।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ लग्नेश चन्द्रमा धन स्थान मे व्यक्ति को स्वपुरुषार्थ से आगे बढ़ाएगा व्यक्ति मध्य आयु के बाद धनी होगा।

3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मगल जातक को तकनीकी विद्या में दक्षता देगा पर वाणी पर नियन्त्रण न होने की वजह से जातक का परिजनों मे विरोध होगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ व्ययेश+तृतीयेश बुध वाणी में हकलाहट देगा। जातक को धन संग्रह करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु भी वाणी में स्खलन देगा। जातक नीतिज्ञ होगा एवं सारगर्भित भाषण देने में दक्ष होगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को सुखी सम्पन्न जीवन देगा। जातक व्यापार से धन कमाएगा। जातक की वाणी विलासप्रिय एवं विरोधाभासी होगी।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि की युति जातक का आर्थिक विषमताओं से सामना कराएगी। ऐसा जातक मलिन विचारों वाला होगा.

द्वितीय भाव के अशुभ केतु का उपचार—

1. नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र स्वर्ण में धारण करें।
2. सुबह-शाम श्रीसूक्त के नित्य पाठ करें।
3. केतु शांति का प्रयोग करें।

कर्क लग्न में केतु तृतीय भाव में
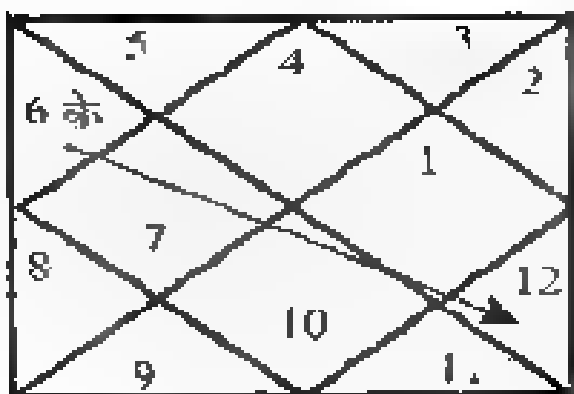
कर्क लग्न में तृतीय भाव में स्थित कन्या राशि का केतु उच्च का होगा। केतु यहा बैठकर भाग्य भवन पर पूर्ण दृष्टि डालेगा।

केतु ध्वज का प्रतीक है। पराक्रम में केतु की स्थिति जातक की कीर्ति पताका कुटुम्ब, समाज एवं कार्यक्षेत्र में अद्वितीय रूप से पहचान में सार्थक साबित होगी। जातक को अपने भाइयो. मित्रों. रिश्तेदारों से अपेक्षित सहयोग उतना ही मिल पाएगा, जितना मिलना चाहिए।

दशा—केतु की दशा राजयोग का फल देगी।

विशेष—'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 29 के अनुसार-आयुर्बल धनयशः प्रमदान्न सौख्यम्' तृतीयस्थ केतु व्यक्ति को धनवान, यशस्वी, बलवान एवं दीर्घायु वाला बनाता है। स्त्री, अन्न और सुन्दर भोजन का सुख भी देता है परन्तु भाई (विशेषकर बड़े भाई) का सुख. सहयोग नहीं मिलता ऐसा मेरा निजी अनुसधान है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य होने से जातक के मित्र पराक्रमी एवं धनी होंगे जातक शहर का प्रसिद्ध व्यक्ति होगा।

2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा होने से जातक को स्व पुरुषार्थ से अर्जित कीर्ति मिलेगी परन्तु भाई-बहनों में विवाद व मनोमालिन्यता रहेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को परम पराक्रमी बनाएगा। तीन भाइयों का योग देगा पर भाइयों से संबंध सामान्य ही रहेंगे।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ उच्च का बुध जातक को परम यशस्वी बनाएगा। जातक को लेखन प्रकाशन से कीर्ति मिलेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ भाग्येश गुरु होने से जातक परम सौभाग्यशाली होगा भाइयों एवं मित्रों से लाभ होने की स्थिति बनेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ नीच का शुक्र जातक को प्रसिद्ध व्यक्ति बनाएगा पर स्त्री-मित्र को लेकर बदनामी भी होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ सप्तमेश+अष्टमेश शनि तृतीय स्थान में परिजनों व मित्रों से धोखा दिलाएगा। जातक स्वयं भी लोगों के साथ कपटपूर्ण व्यवहार करेगा।

तृतीय भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. भाई-बहनों के साथ विनम्र एवं सद् व्यवहार बनाए रखें
2. अजनबी लोगों व मित्रों पर अत्यधिक भरोसा न करें।
3. अश्वगंधा की जड़ अभिमंत्रित कर तावीज में धारण करने से यश की प्राप्ति होगी।
4. केसर चंदन का तिलक नाभि व मस्तिष्क पर लगाएं तो किस्मत खुलेगी।

कर्क लग्न में केतु चतुर्थ भाव में
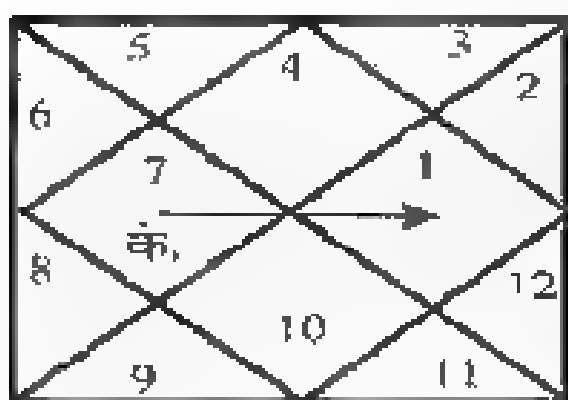
कर्क लग्न में चतुर्थ भाव में स्थित केतु तुला राशि में मित्रक्षेत्री होगा तथा यहां बैठकर वह दशम भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा।

केतु की यह स्थिति माता के लिए कष्टकारक है, माता बीमार रहे अथवा जातक को अपेक्षित प्रेम न दे पाएगी। जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगी जीवन में कष्ट व तकलीफों का सामना करना पड़ेगा

निशानी–जातक का भाग्योदय जन्मस्थान से दूर होगा जातक को अपनी माता का सुख कम मिलता है

विशेष–नौकरी धंधे में स्थान परिवर्तन बार बार होता रहेगा, 'फलदीपिका' अ 8/ श्लोक 29 के अनुसार जातक दूसरे के घर में रहता है। उसकी अपनी भूमि, माता, सुख वित्त नष्ट हो जाते है तथा उसे प्राय: जन्मभूमि छोड़नी पड़ती है।

मेरे निजी अनुसंधान में यदि यहां शुक्र की स्थिति खराब हो तो जातक के घर में नौकर चोरी करता है, धोखा देता है तथा उसको वाहन से दुर्घटना का भय रहता है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ नीच का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा जातक को भौतिक सुख सुविधाओं से सम्पन्न करेगा। पर वाहन या मकान को लेकर विवाद रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ स्वगृहाभिलाषी मंगल जातक को महत्त्वाकांक्षी बनाएगा। जातक कुटुम्ब का भला चाहने वाला पुरुषार्थी व्यक्ति होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को उत्तम वाहन का सुख देगा। जातक पराक्रमी होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ भाग्येश गुरु व्यक्ति को सौभाग्य देगा। जातक अपने कुल-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ स्वगृही शुक्र **'मालव्य योग'** बनाएगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ उच्च का शनि **'शशयोग'** बनाएगा। ऐसा जातक चार पहियों की गाड़ी, लालबत्ती एवं झंडी का हकदार होगा। जातक पराक्रमी होगा।

प्रथम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु अष्टोत्तर शत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।
2. दुर्घटना से बचने के लिए वाहन पर मारुति यंत्र लगाएं।
3. शनिवार के दिन चितकबरे कुत्तों को मीठी रोटी खिलाएं। गुरुवार के दिन कुलपुरोहित को पीले वस्त्र व पीला भोजन भेंट करें।

कर्क लग्न में केतु पंचम भाव में

5 4 3 2 6 7 1 8 के. 12 10 9 11
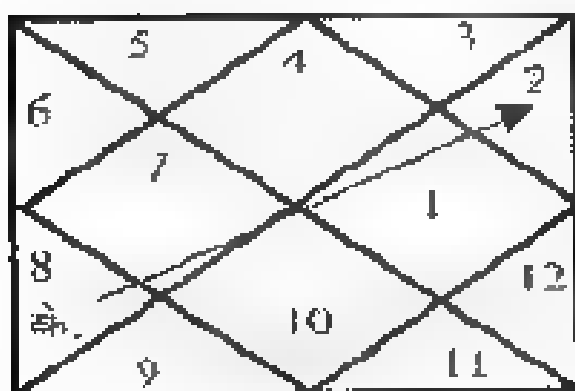
कर्क लग्न में पंचम भाव में स्थित वृश्चिक का केतु शत्रुक्षेत्री होगा। यह केतु लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

केतु की यह स्थिति संतान सुख के लिए ठीक नहीं विद्या में बाधा आएगी। जातक का चरित्र संदेहास्पद होगा तथा उसकी कथनी व करनी में अन्तर होता है।

निशानी–प्रथम गर्भपात या कन्या सन्तति होगी। एकाध सन्तान की अपरिपक्व मृत्यु का संकेत पंचमस्थ केतु देता है।

दशा–केतु की दशा नेष्ट फल देगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 30 के अनुसार 'पुत्रक्षय जठर रोग' पिशाचपीड़नम्' ऐसे जातक के पुत्र क्षय होता है उदर पीड़ा होती है तथा घर परिवार में पिशाच्च बाधा होती है। ऐसे जातक को जादू-टोनों से दूर रखना चाहिए।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य पंचम भाव में जातक को आध्यात्म विद्या का पथिक बनाएगा। ऐसा जातक अल्प संतति वाला होगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा पंचम भाव में नीच का होगा। ऐसा जातक अल्पायु पुत्र वाला होगा। जातक को विद्या में बाधा या विषभोजन का भय रहेगा।
3. **केतु+मगल**–केतु के साथ यहा मगल स्वगृही होने से तीन पुत्रो का योग बनता है। जातक राज दरबार में प्रभाव रखने वाला व्यक्ति होगा। जातक तकनीकी विद्या का जानकार होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ यहां बुध जातक को बुद्धिशाली बनाएगा एकाध गर्भपात एव दो कन्या का संयोग बनाएगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ भाग्येश गुरु जातक को पुत्र व कन्या सतति दोनों देगा। ऐसा जातक उपदेशक एवं धर्मध्वज होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र कन्या संतति की बाहुल्यता देगा। जातक सगीत-साहित्य कला एवं अभिनय प्रिय व्यक्ति होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को विदेशी भाषा में दक्ष बनाएगा। जातक की एकाध संतान की अल्प मृत्यु होगी।

पंचम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. पितृदोष या कालसर्प योग की शांति करवाएं।
2. केतु शाति प्रयोग करें
3. केतु के वैदिक मत्रो का हवनात्मक प्रयोग करे एव केतु सबधी वस्तुओं का दान करे।

कर्क लग्न में केतु षष्टम् भाव में

5 4 3 2 6 7 1 8 12 10 9 के 11
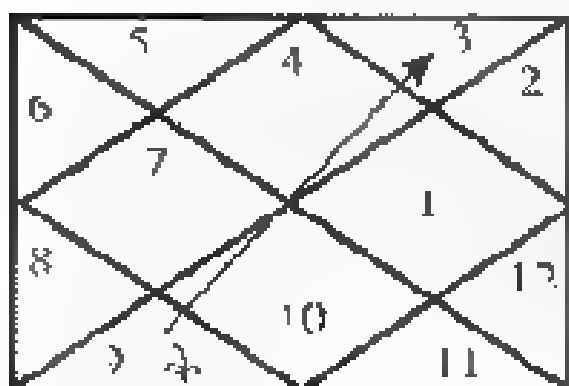
कर्क लग्न में छठे भाव में स्थित धनु का केतु उच्च का होगा। यह केतु व्यय स्थान को पूर्ण दृष्टि में देख रहा है।

केतु की यह स्थिति शत्रुओं पर विजय दिलाने वाली है जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जिस कार्य मे परिश्रम अधिक हो, जो कार्य साहस से भरा व चुनौतीपूर्ण हो, ऐसे कार्य में हाथ डालने पर जातक को अवश्य सफलता मिलेगी।

दशा–केतु की दशा ऋण रोग एवं कर्ज यश हेतु शुभ फल देगी।

विशेष–'फलदीपिका अ. 8/श्लोक 30–'षष्ठे प्रभुत्वं अरिमर्दनं इष्टसिद्धिम्' षष्ट में केतु हो तो जातक उत्तम गुण वाला, दृढप्रतिज्ञ, श्रेष्ठ पद प्राप्त करने वाला अरिमर्दक (शत्रुओं को पराजित करने वाला) एवं इष्ट कार्य में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

मेरे अनुसंधान के अनुसार ऐसे जातक के जीवन में रोग और शत्रुओं को लेकर रुपये खर्च होते रहते हैं।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' की सृष्टि करेगा। ऐसा जातक संघर्षमय जीवन व्यतीत करेगा। उसे नेत्र पीडा भी होगी।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**विद्याभंग योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को जीवन में काफी संघर्ष करना पड़ता है। भूमि को लेकर विवाद रहता है।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' एवं '**पराक्रम भंगयोग**' बनाता है। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होता है पर उसका मानभंग होने का भय बना रहता है।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु **विपरीत राजयोग** एवं '**भाग्यभंग योग**' बनाता है। ऐसा जातक धनवान एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होता है। जातक संघर्ष के साथ आगे बढ़ता है।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र लाभभंग योग एवं सुखहीन योग बनाता है। ऐसे जातक को गुप्त शत्रुओं से नुकसान पहुंचता है एवं व्यापार में भी हानि पहुंचती है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से '**विलम्ब विवाह योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' दोनों बनते हैं। ऐसे जातक का विवाह देरी से होता है परन्तु जातक धन वैभव से परिपूर्ण जीवन जीता है।

षष्टम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. काला कुत्ता पाले या शनिवार के दिन काले कुत्ते को दूध रोटी खिलाए।
3. लहसुन या प्याज शनिवार से शुक्रवार छः दिन तक जल में प्रवाहित करें।
4. अपने बहन, बुआ, पुत्री, मौसी, दोहितें, भाणजे को खुश रखें

कर्क लग्न में केतु सप्तम भाव में

कर्क लग्न में केतु सातवें भाव में मकर राशि का मित्रक्षेत्री होगा। यह केतु लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

केतु की यह स्थिति जातक का दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण बनाती है। जातक कामी एवं व्यभिचारी होता है, उसका अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध रहता है। जातक परिश्रमी होता है
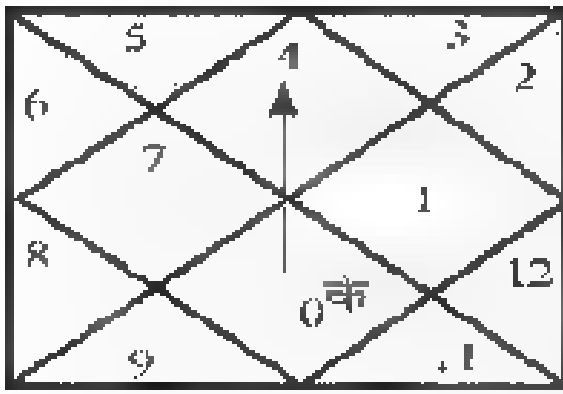
निशानी–ऐसा जातक अपने निर्णय एवं नौकरी-धंधे के स्थान को बार-बार बदलता रहता है।

दशा–केतु की दशा अनिष्टकारक होगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 11 के अनुसार–घूने अवमान असती रतिम्' ऐसे जातक का शेयर मार्केट में अपमान होता है। जातक व्यभिचारिणी स्त्रियों में रत रहता है। जातक को आन्त्र रोग (अलसर) होता है।

मेरे अनुसंधान से जातक का जीवनसाथी रोगी होता है

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–यहां केतु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। जातक अस्थिर चित्तवृत्ति वाला एवं विवाह सुख में न्यूनता पाने वाला होता है।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा जातक को चिन्ताग्रस्त रखेगा परन्तु हाथ में लिए गए कार्यों में उसे बराबर सफलता मिलेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ सप्तम भाव में मंगल उच्च का होगा फलतः **'रुचक योग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली तथा बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को पराक्रमी बनाएगा। ऐसा जातक अपने जीवन साथी पर खूब रुपया खर्च करेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ नीच का गुरु जातक को सौभाग्यशाली बनाएगा विवाह के बाद जातक की किस्मत खुलेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र व्यक्ति को कामी व स्त्री लोलुप बनाएगा। जातक सुखी सम्पन्न जीवन जीता हुआ कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ यहां पर शनि स्वगृही होगा। फलतः **'शशयोग'** बनेगा। ऐसा जातक राजातुल्य पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीएगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

सप्तम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु विंशति नाम का पाठ करें।
2. पूर्ण वैवाहिक सुख की प्राप्ति हेतु केतु अष्टोत्तरशत नामावली का हवनात्मक प्रयोग करें।

कर्क लग्न में केतु अष्टम भाव में

कर्क लग्न में अष्टम भाव में कुम्भ राशि का केतु मित्रक्षेत्री होगा इस केतु की दृष्टि धन स्थान पर पूर्ण रूप से पड़ेगी
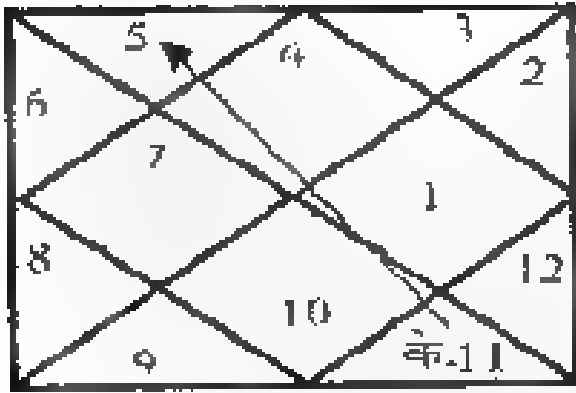
'केतु की यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। जातक को अनेक प्रकार के रोग होंगे। जातक अनीति से धन कमाने का प्रयत्न करेगा पर उसमे भी सफलता बराबर नहीं मिलेगी। धन खर्च में जातक परेशान रहेगा।

निशानी -मित्र विश्वासघाती साबित होंगे।

विशेष—प्रयत्न करने पर भी शत्रुओं पर विजय नहीं मिलेगी 'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 32 के अनुसार अष्टम केतु हो तो प्रियजनों से विरह, कलह हो। मेरे निजी अनुसंधान के अनुसार जातक को दुर्घटना या अन्य कारण से शस्त्र चोट जरूर लगती है।

दशा—केतु की दशा अशुभ है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य **'धनहीन योग'** बनाएगा। ऐसा जातक जीवन में धन एकत्रित करने के विषय में बड़ा कष्ट उठाएगा. जातक की नेत्र को लेकर शल्य चिकित्सा होगी।
2. **केतु+चन्द्र**—केतु के साथ चन्द्रमा **'लग्नभंग योग'** योग बनाएगा ऐसा जातक की माता बीमारी रहेगी। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल यहां **'विद्याभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक को विवाह संबधी समस्या का सामना करना पड़ेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध यहां **'विपरीत राजयोग'** एवं **'पराक्रम भंग योग'** बनाएगा। ऐसा जातक धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न होगा परन्तु मानभंग होने का भय रहेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु यहां **'विपरीत राजयोग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनाता है। ऐसा जातक धन ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है परन्तु सफलता प्रारंभिक संघर्ष के बाद मिलेगी।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक को गुप्त रोग होने का भय बना रहता है। जातक की वाणी ही जातक का शत्रु होती है।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि **'विलम्ब विवाह योग'** एवं **'विपरीत राजयोग'** दोनों बनाता है। ऐसे जातक का विवाह देरी से होता है अथवा गृहस्थ सुख में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहती है फिर भी ऐसा जातक ऐश्वर्य सम्पन्न वैभवशाली जीवन जीता है।

अष्टम भाव के अशुभ केतु का उपचार—

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. कान छिदवा कर सोने का आभूषण पहनें।
3. काला कुत्ते पाले या उसकी सेवा करें।

4. दहेज मे प्राप्त चारपाई पर शयन करने का नियम बन पाए तो केतु अनुकूल होगा
5. दोरंगा कम्बल धर्म स्थान से भेट करें तो शुभ रहेगा।

कर्क लग्न में केतु नवम भाव में

5	4	3	2
6	7	1	12 के.
8	10		
9		11	
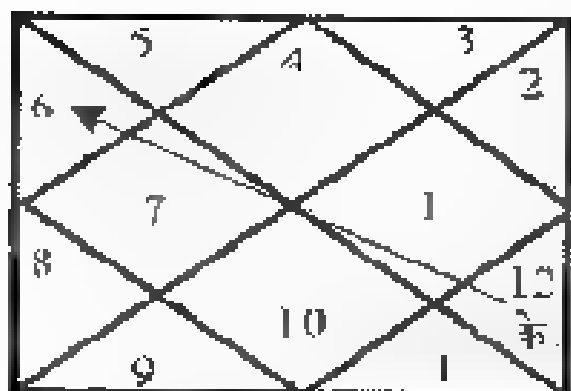
कर्क लग्न में नवम भाव स्थित केतु मीन राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। इस केतु की दृष्टि तृतीय स्थान पर भी पूर्ण रूप से होगी।

जातक की कुण्डली में केतु की यह स्थिति भाग्योदय मे बाधक है. आयु के 45 वर्ष तक सघर्ष की यह स्थिति रहेगी। कमाने के लिए पुरुषार्थ बहुत करना पड़ेगा। व्यक्ति धार्मिक होने का दिखावा करेगा पर अन्तःस्थल में धार्मिक नहीं होगा।

दशा—केतु की दशा संघर्षकारी साबित होगी

विशेष—'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 32 के अनुसार जातक सज्जनों की निन्दा करने वाला, आलोचक, भाग्यहीन होता है। धनप्राप्ति हेतु संघर्ष करता रहता है। मेरे निजी अनुसंधान मे ऐसे जातक का भाग्योदय सद्गुरु की कृपा से होता है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी बनाता है। ऐसा जातक पराक्रमी होता है। राज-सरकार में उसका दबदबा रहता है।
2. **केतु+चन्द्र**—केतु के साथ चन्द्रमा जातक को सुख-सौभाग्य युक्त जीवन देगा। जातक यशस्वी होगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ यहां मगल जातक को महत्वाकांक्षी बनाएगा। जातक को पैतृक सम्पत्ति का कुछ हिस्सा मिलेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध नीच का होगा पर जातक के पराक्रम में वृद्धि करेगा। जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु स्वगृही होगा जातक परम भाग्यशाली होगा तथा उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
6. **केतु+शुक्र** केतु के साथ उच्च का शुक्र व्यक्ति को राजा के तुल्य प्रभावशाली व्यक्तित्व देता है ऐसा जातक व्यापार प्रिय होता है।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को संघर्षमय जीवन देगा। भाग्योदय प्राय: विवाह के बाद होगा।

नवम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. रंग बिरंगे कपड़े न पहने।
2. तिल तैल, काले-नीले पुष्प, कस्तूरी व काले वस्त्रो का दान शनिवार के दिन करें।
3. केतु शान्ति का प्रयोग करे।

कर्क लग्न में केतु दशम भाव में

5, 4, 3, 2, 6, 7, 1 क., 8, 12, 10, 9, 11
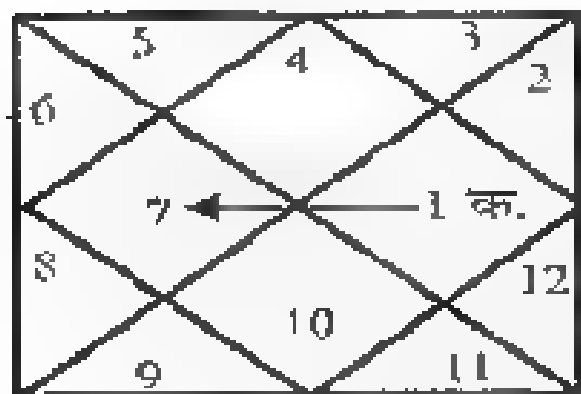
कर्क लग्न में दशम भाव में स्थित मेष राशि का केतु शत्रुक्षेत्री होगा। केतु की दृष्टि चतुर्थ भाव को प्रभावित करेगी।

केतु की यह स्थिति धन्धे व्यापार व्यवसाय हेतु नुकसानदायक है। जातक को सरकारी तन्त्र से परेशानी हो सकती है। घर में माता या मातृतुल्य वृद्ध औरत से भी परेशानी होगी।

निशानी–ऐसे जातक को मित्रों में अपयश मिलेगा। जातक की पीठ पीछे बुराई होगी।

दशा–केतु की आर्थिक दशा कष्टदायक रहेगी।

विशेष–'फलदीपिका' अ. 8/ श्लोक 32 के अनुसार 'तेजस्विन नयमसि शौर्य अतिप्रसिद्धम्' ऐसा जातक अत्यन्त तेजस्वी, शूरवीरता के लिए प्रसिद्ध, शत्रुओं का मान मर्दन करने वाला, सत्कर्म में विघ्न उपस्थित करने वाला तथा संघर्ष के अन्त में सफलता प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है। मेरे निजी अनुसंधान से इस केतु के साथ यदि मंगल हो तो जातक युद्ध में शत्रु को मार देता है।

केतु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–यहा सूर्य उच्च को होने से '**रविकृत राजयोग**' बनेगा जातक सरकारी क्षेत्र में उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ चन्द्रमा व्यक्ति को महत्त्वाकांक्षी बनाएगा। ऐसा जातक धनवान होगा एवं स्वपराक्रम से आगे बढ़ेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल स्वगृही होने से '**रुचक योग**' बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
4. **केतु+बुध** केतु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिशाली होगा। उसका पराक्रम तेज होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु होने से जातक सौभाग्यशाली होगा, उपदेशक एवं धर्मध्वज होगा
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक उत्तम भवन एवं वाहन का स्वामी होगा तथा अपने कुल का नाम रोशन करेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि नीच का होने से जातक कुटिल स्वभाव का होगा।

दशम भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. चितकबरे कुत्ते को सता दिन तक दूध रोटी खिलावे।
2. चितकबरी गाय को चारा खिलावे। इससे अचानक आई विपत्ति दूर होगी।
3. राजयोग की प्राप्ति अभीष्ट हो तो शनिवार के दिन अभिमंत्रित जल से औषध स्नान करे।

कर्क लग्न में केतु एकादश भाव में

5	4	3
6		2 के.
7	1	
8		12
9	10	11
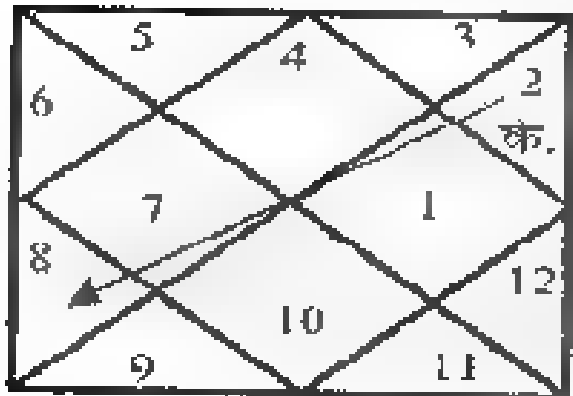
कर्क लग्न में एकादश भाव स्थित वृषराशि का केतु मित्रक्षेत्री होगा यह पचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा।

ऐसे जातक को कठोर परिश्रम करना पड़ता है, तभी भाग्योदय होता है। जातक अनैतिक कार्यों मे कमाने में विश्वास रखता है। केतु की यह स्थिति सन्तान एव विद्या दोनों मे बाधक है। बहुत कोशिश करने पर भी व्यापार ठीक से नहीं चलेगा।

दशा–केतु की दशा मिश्रित फलदायक है।

विशेष–केतु राशि के स्वामी शुक्र की स्थिति ही सही फलादेश बताने में सहायक होगी।

'फलदीपिका' अ. 8/श्लोक 33 के अनुसार **'लाभे अर्थसंचय अनेकगुण सुभोगम्'**

लाभ स्थान मे केतु हो जातक उत्तम द्रव्य वाला, धन सग्रह करने वाला अनेक गुणो से युक्त, उत्तम भोग, ऐश्वर्य को भोगने वाला होता है। मेरे अनुसधान में यदि यहां केतु के साथ शुक्र हो तो जातक के पास सुदर स्त्री, बढ़िया कार, उत्तम दो मंजिला मकान एव चार से अधिक नौकर होते हैं। परन्तु ऐसे में लग्न या चन्द्र दोनों मे से एक का बलवान होना जरूरी है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य होने से जातक गूढ़ एव आध्यात्म विद्या का जानकार होगा।
2. **केतु+चन्द्र**–केतु के साथ यहा चन्द्रमा उच्च का होगा ऐसा जातक उद्योगपति होगा। व्यापार व कम्प्यूटर लाईन में खूब धन कमायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मगल जातक को भूमि लाभ, पुत्र लाभ एवं तकनीकि विद्या का लाभ दिलायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिबल, वकालत या अन्य व्यवसाय से यथेष्ट धन कमायेगा। जातक पराक्रमी होगा।
5. **केतु+गुरु** केतु के साथ गुरु होने से जातक भाग्यशाली होगा। उसे पुत्र सतति की प्राप्ति होगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ स्वगृही शुक्र होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। उसे सभी प्रकार के भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति होगी।

7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक का भाग्योदय विवाह के बाद कराता है। जातक व्यापार प्रिय होगा।

एकादश भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. घर मे छिपकली न घूमने दे।
2. लकड़ी से बनी चारपाई या पलंग दान करें।
3. अश्वगंधा की जड़ को अभिमंत्रित कर लॉकेट में धारण करें।
4. मृत संतान यदि पैदा होती हो तो सफेद मूल स्त्री के सिरहाने रखकर, शनिवार के सवेरे धर्म स्थान में दान देने से नर संतान खुशहाल रहेगी

कर्क लग्न में केतु द्वादश भाव में
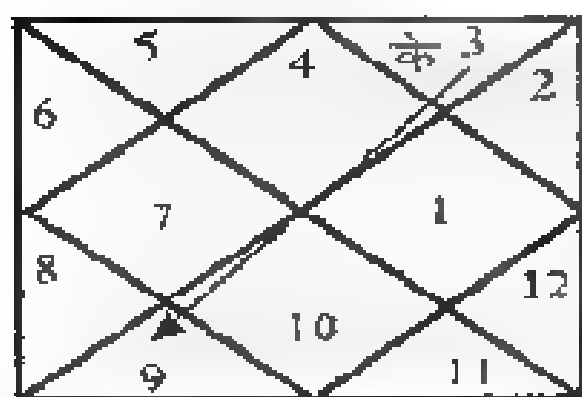
कर्क लग्न में द्वादश भाव में स्थित मिथुन राशि गत केतु नीच का होगा. यहां बैठकर केतु छठे भाव को पूर्ण दृष्टि में देखेगा।

केतु की यह स्थिति जातक को खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति बनाएगी। यात्रा अधिक होगी समाज में, मित्र व कुटुम्बीजनों में वांछित सहयोग मिलता नही। जातक का कमाने के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ेगा बुध की स्थिति अच्छी न हो तो जातक सदैव कर्जदार रहेगा।

दशा–केतु की दशा अशुभ फल देगी।

विशेष–बारहवें केतु सभी जातक को जनन समय में कष्ट देता है। प्राय: 'सिजेरियन' सन्तति उत्पन्न होती है। 'फलदीपिका' अ. 8/श्लो 33 के अनुसार ऐसे जातक गुप्त रूप से, दो नम्बर के कार्यों से, यात्राओं से धन कमाते हैं तथा सज्जनोचित कार्य के विरुद्ध चलते हैं। मेरे अनुसंधान मे केतु के साथ यदि बुध हो तो जातक की हवाई दुर्घटना में मृत्यु होती है

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**धनहीन योग**' की सृष्टि करेगा ऐसे जातक को धन संग्रह के मामले में दिक्कतें आएगी। जातक को नेत्रपीडा होगी।
2. **केतु+चन्द्र**–यहां केतु के साथ चन्द्रमा '**लग्नभंग योग**' बनाएगा। जातक के पुरुषार्थ का लाभ नही मिलेगा। वामनेत्र मे पीड़ा होगी.
3. **केतु+मंगल**–यहां केतु के साथ मंगल '**विद्याहीन योग**', '**राजभंग योग**' एवं कुण्डली में डबल मांगलिक बनाएगा ऐसे जातक के विवाह में विलम्ब, विद्या प्राप्ति मे विलम्ब, रोजी रोजगार में विलम्ब होने का संकेत मिलता है।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ स्वगृही बुध होने से '**विपरीत राजयोग**' एवं 'पराक्रम भंग योग' दोनों बनेगें। ऐसा जातक वैभवशाली एवं ऐश्वर्यसम्पन्न जीवन जीयेगा परन्तु मानभंग होने का भय बना रहेगा

5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु '**विपरीत राजयोग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' बनाएगा। ऐसा जातक धनवान व ऐश्वर्यसम्पन्न होगा परन्तु संघर्ष के बाद ही किस्मत चमकेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ यहां शुक्र '**लाभभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनाता है। ऐसा जातक सुख-ऐश्वर्य प्राप्त करने हेतु निरन्तर संघर्षशील रहता है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ यहां शनि **विलम्ब विवाह योग** बनाता है। **विपरीत राजयोग** के कारण जातक धनी होगा एवं साधन-सम्पन्न होगा।

द्वादश भाव के अशुभ केतु का उपचार–

1. केतु कवच का नित्य पाठ करें।
2. 12 दिन तक निरन्तर गुरुवार को शुरू करके 12 केले प्रतिदिन धर्मस्थान में भेंट करने पर केतु का अशुभत्व नष्ट होता है।
3. 12 दिन तक निरन्तर 12 बार प्रतिदिन दूध व शहद में अंगूठा भिगोकर चूसने से केतु अनुकूल होता है ऐसा लाल किताब वाले कहते हैं।
4. केतु के तांत्रिक मंत्रों का जाप करें।

❑❑❑

अरिष्ट निवारण के उपाय

चंद्र यदि निर्बल या पापकर्त्तरी योग से पीड़ित हो निम्न उपचार करें–

1. बालारिष्ट योगों में–मोती युक्त चंद्रमा बनवाकर बच्चे के गले में 8 वर्ष की आयु तक पहनाएं।
2. मोती या चंद्रकान्त मणि पुष्य नक्षत्र में पुजवा कर पेण्डल बनवा कर गले में धारण करें। अंगूठी कभी भी न पहनें क्योंकि उस पर केमिकल लगने से सब नाश हो जाता है। सफेद वस्तुओं का दान करें तथा सोमवार का व्रत करें।
3. लघुरुद्र प्रयोग करें या नित्य शिव पूजन करें।
4. रात को सोते समय पानी का बर्तन सिर के पास रखें तथा वह सुबह पानी पीएं।
5. नित्य दूध शिव पर चढ़ाए। सफेद फूल भी चढ़ाएं।
6. गृहस्थ दुःख से पीड़ित औरतें पार्वती का पूजन करें उसे मोगरे या सफेद फूलो की माला पहनाएं। सफेद वस्तु का भोग रखें।
7. शिव मानस पूजन का पाठ करें या चंद्रशेखर अष्टक का पाठ करें।
8. सोमवार को सुन्दर काण्ड का पाठ करें।
9. अनिष्ट चद्रमा की शांति के लिए पूर्णिमा व्रत सहित चंद्र मंत्र का विधिवत् अनुष्ठान करना चाहिए।
10. कर्क या वृष के निर्बल चंद्र के लिए भगवती गौरी अथवा पराबा ललिता का पूजन करें।
11. मेष या वृश्चिक राशि के चद्र में दुर्गाजी, मध्य बली चंद्रमा के लिए मा काली, दूषित क्षीण चंद्र में चामुंडा देवी की आराधना करें।
12. भीषण प्रारब्ध कर्मो के नाश के लिए दक्षिणामूर्ति शिव का मत्र और स्त्रोत पाठ करना चाहिए।
13. स्वास्थ्य एव त्रिविध तापो के शमनार्थ महामृत्युंजय जप होम एव कवच पाठ अमोघ है।
14. चद्र निर्बलता में कैलशियम की विशेष कमी हो जाती है, अतः उसका सेवन (विशेषकर बच्चों को) बहुत हितकर होता है
15. भगवती का पूजन करके अंबाशत नाम के द्वारा मा पर सौ श्वेत सुगधित पुष्प चढ़ाना और ललिता सहस्त्र नाम का पाठ भी इष्टप्रद होता है।

16. केतु के साथ चद्र होने पर गणपति उपासना करनी चाहिए।
17. दुर्गा सप्तशती का पाठ चद्र सहित सभी ग्रहों की अनुकूलतादायक एवं सर्वसिद्धिप्रद होता है।
18 बालारिष्ट से बचने हेतु बच्चे के गले में चादी का चद्रमा, अभिमंत्रित करके पहनाए।
19. चद्रमा को मजबूत करना हो तथा धन प्राप्ति की इच्छा हो तो मोती युक्त ''चंद्र यंत्र'' गले में धारण करें।
20. सोमवार का व्रत 5 से 11 या 43 बार रखे।
21. शिव जी का पूजन करें, अमरनाथ जी की यात्रा या पूजा करें।
22. द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा कर, पूजा करें
23. चावल, चांदी, दूध आदि का दान करें।
24. सच्चा मोती (दूधिया रंग) धारण करें, मोती के अभाव में चांदी धारण करें।
25. दूध का बर्तन रात को सिरहाने रख कर सुबह पीकर या यज्ञीय वृक्ष में डालना चाहिए।
26. माता (सास/मासी/मामी एवं घर में बुजुर्ग औरतों) का आशीर्वाद लें।
27. चारपाई के पायों में चांदी की कील गाड़नी चाहिए।
28. आसमानी बर्फ (ओले) शीशी में रखें या गंगा जल का प्रयोग करें।
29. श्मशान भूमि में स्थित कुएं (ट्यूबवैल) पर कभी-कभी स्नान करना अथवा चावल या चांदी श्मशान की चारदीवारी के अंदर गिराएं।
30. चलते पानी में (गंगा) स्नान करना।
31. छत पर पानी की टकी गोल न बनाए (चौरस का वहम नही)
32. पानी टंकी को 3 6 महीने में सफाई करवाते रहें। घर में कहीं भी पानी के सड़ने से चंद्रमा रुष्ट रहता है जिनका चंद्रमा दूषित हो उनको अपने घर के आगे कीचड़ या गंदे पानी का जमाव नहीं होने देना चाहिए।
33. सीढ़ियों के ऊपर/सामने हैंडपम्प न रखें (सीढ़ियों के सामने पानी का साधन न बनाए।)
34. घर की छत के नीचे कुआं या हैंडपंप न लगाए।
35. चंद्रमा उच्च हो तो चंद्र की चीजों का दान न दें।
36. चद्र नीच हो तो चंद्र की चीजों का दान न लें।
37. उपरोक्त उपाय 5 या 11 या 43 दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।
38. मकर लग्न हो सप्तमेश चद्रमा छठे, आठवें या बारहवें हो अथवा पाप-पीड़ित या क्षीण बली हो तो ऐसी स्थिति मे वैवाहिक जीवन पूर्णतः कष्टमय होने की सभावना रहती है भावी वैवाहिक जीवन सुखमय हो इसके लिए विवाह समय में दो बराबर वजन के दूधिया मोती या चादी के टुकड़े अथवा चावल की ढेरी लें। फिर सुखी गृहस्थ जीवन हेतु सकल्प लेकर एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें तथा दूसरा टुकड़ा स्त्री अपने पास रखे जब

तक वह मोती, चांदी का टुकड़ा स्त्री के पास रहेगा, उसका चंद्रमा के अशुभ प्रभाव से बचाव होता रहेगा तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखमय बना रहेगा।

39. चंद्र पीड़ा की विशेष शांति हेतु चांदी, मोती, शंख, सांप, कमल और पंचगव्य मिला कर सात सोमवार तक स्नान करें।
40. शिवचालीसा का नियमित पाठ करें।
41. एक अथवा पंचमुखी रुद्राक्ष को पूजा स्थान पर स्थापित कर उसकी नियमित पूजा करें।
42. दक्षिणावर्ती शंख की पूजा करें।
43. ॐ नमः शिवाय की नित्य एक माला का जप करें।
44. तीन सफेद पुष्प प्रति सोमवार एवं पूर्णिमा को कुएं में अथवा बहती-नदी में प्रवाहित करें।
45. रजत पात्र में जल पिएं।
46. न तो सूर्यास्त के बाद दूध पिएं न पिलाएं।
47. हर सोमवार को बबूल के झाड़ पर दूध चढ़ाएं।
48. यदि संतान प्रतिबंधक ग्रह चंद्रमा है तो माता, मौसी, सास, गुरु पत्नी या किसी अन्य सधवा स्त्री के चित्त का दुःख पहुंचाने के कारण जातक को संतान सुख नहीं होगा। अतः चंद्रमा के वेदोक्त मंत्रों के ग्यारह हजार जप करने चाहिए। चंद्रमा संबंधी वस्तुओं का दान करते हुए सोमवार का नियमित व्रत रखना चाहिए।
49. हरिवंश पुराण के अनुसार ऐसे जातक को शिव की उपासना करनी चाहिए
50. घर में सप्तधातु का श्रीयंत्र स्थापित करें एवं उसके सामने श्रीसूक्त के 15 मंत्रों का नियमित पाठ करें।
51. नवरत्न जड़ित स्पेशल पावरफुल श्रीयंत्र गले में धारण करें।

चंद्राष्टाविंशतिनाम स्तोत्रम्

(चंद्रमा के 28 नामों वाला स्तोत्र)

ध्यान—भगवान शंकर के मस्तिष्क पर मुकुट आभूषण के समान मस्तिष्क पर विराजमान, शीतलता प्रदान करने वाले, प्रज्वलित कान्ति वाले, मयूर का मुकुट धारण करने वाले, चार भुजाओं वाले, मृग पर सवार पूज्य चन्द्र देव को नमस्कार करता हूं आचमन में जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग—

अस्य श्री चंद्राष्टाविंशति नामस्तोत्रस्य गौतम ऋषिः
सोमो देवता, विराट् छन्दः चंद्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।
चंद्रस्य शृणु नामानि शुभदानि महीपते।

यानि श्रुत्वा नरो दु:खान् मुच्यते नोत्र संशय॥1॥
सुधाकरश्च सोमश्च ग्लौरज: कुमुदप्रिय:।
लोक प्रिय शुभ्रभानुश्चन्द्रमा रोहिणीपति:॥2॥
शशी हिमकरो राजा द्विजराजो निशाकार:।
आत्रेय इन्दु: शीतांशुरौषधीश: कलानिधि:॥3॥
जैवात्रको रमाभ्राता क्षीरोदार्णवसम्भव:।
नक्षत्रनायक: शम्भुशिरश्चूडामणिर्विभु:॥4॥
तापहर्ता नभोदीपो नामान्येतानि य: पठेत्।
प्रत्यहं क्रियासंयुक्तस्तस्यपीड़ा विनश्यति॥5॥

फलश्रुति–

तुहिने च पठेद्यस्तु लभेत् सर्वं समीहितम्।
ग्रहादीनां च सर्वेषां भवेच्चंदबलं सदा॥6॥

इस स्तोत्र में चंद्रमा के उपनामों का उल्लेख है, जिस पर भी चंद्रदेव की टेढ़ी दृष्टि हो उसको श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करना चाहिए। इससे वह सर्वदा सुख व चंद्रदेव का कृपा पात्र बना रहेगा।

चंद्र कवच

ध्यान–दोनों हाथ जोड़ कर चंद्रमा का ध्यान करें।

समं चतुर्भुज: वन्दे केयूरमुकुटोज्ज्वलम्।
वासुदेवस्य नयनं, शंकरस्य च भूषणम्॥

आचमनी जल लेकर विनियोग करें।

विनियोग–

अस्य श्रीचंद्रकवचस्तोत्रमंत्रस्य गौतम ऋषि:, अनुष्टुप छन्द:,
श्रीचंद्रोदेवता, चंद्र प्रीत्यर्थे पाठे विनियोग:।
एवं ध्यात्वा जपेन्नित्यं शशिन: कवच शुभम्।
शशी पातु शिरोदेशं भाल पातु कलानिधि:॥1॥

चक्षुषी चंद्रमा पातु श्रुती पातु निशापतिः।
प्राणं क्षपाकरः पातु मुखं कुमुदबान्धवः॥2॥
पातु कण्ठं च मे सोमः स्कंधौ जैवातृकस्तथा।
करौ सुधाकरः पातुः वक्षः पातु निशाकरः॥3॥
हृदयं पातु मे चंद्रो नाभिं शंकरभूषणः।
मध्यं पातु सुरश्रेष्ठः कटिं पातु सुधाकरः॥4॥
उरु तारापतिः पातु मृगाङ्को जानुनी सदा।
अब्धिजः पातु मे जंघे पातु पादौ विधुः सदा॥5॥
सर्वाण्यन्यानि चाङ्गानि पातु चंद्रोऽखिलं वपुः॥6॥

फलश्रुति—

एतद्धि कवचं दिव्यं भुक्ति-मुक्ति प्रदायकम्।
यः पठेच्छृणुयाद्वापि सर्वत्र विजयी भवेत्॥7॥

श्रद्धापूर्वक पाठ करने वाले के लिए यह कवच अत्यंत लाभकारी है जो भी मानव इस कवच का पाठ करता है या अन्य किसी के द्वारा इसका श्रवण करता है, वह कठिन से कठिन कार्य में भी सफलता प्राप्त करता है। इसमें संदेह नहीं है।

आह्वान—

चंद्रः—

द्विजराज सुरश्रेष्ठ तारापत्यत्रि-नन्दनः।
औषधीना सुगमनं सोममावहयाम्यहम्॥1॥

अहोचन्द्रः जगत्प्राण यमुनाविषयोद्भवः।
स श्वेतात्रिगोत्रेय गदापाणी वरप्रदः॥2॥

दशाश्ववाहनायाहि उमारूपीसमाविशः।
हुताशनदलेनेवं मंत्रेणा अश्वग्निनार्चितः॥3॥

ॐ अश्वानेसमीधीष्ट वसोषधीरनुध्यसे।
गर्भेसंजायसे पुनः॥4॥

अग्नि कोणे सोमं स्थापयामि—
पिंगल नामाग्नि समिधा पलाश, फल-इक्षु

वेदोक्त चंद्र मंत्र

वेदोक्त चंद्र मंत्र का विनियोग इस प्रकार है:

इमन्देवेति मंत्रस्य गौतम ऋषिः, द्विपदाविराट्
छन्दः सोमोदेवता, सोम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ॐ इम देवोअसपत्नर्ठ, सुवद्ध्वम्महते क्षत्राय महते ज्येष्ठाययाजमह्वेत, जानराज्जायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विशेषएष वोअमी राजा सोमो स्माक ब्राह्मणानार्ठ राजा॥

वैदिक-काल के पश्चात् पौराणिक और तांत्रिक-युग में भी विभिन्न प्रकार के मंत्रों की रचना हुई थी। उन दिनों मुद्रण-कला का विकास नहीं हुआ था, तब समस्त शिक्षा उपदेश मौखिक रूप से गुरु द्वारा शिष्यों को प्रदान किए जाते थे। पीढ़ियों तक यही परम्परा चलती रही। बाद में इन्हें लिपिबद्ध किया जाने लगा।

पुराणोक्त चंद्र मंत्र—

दधि शंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्॥

दैनिक-पूजा में स्तुति की भांति इस लयबद्ध श्लोक का पाठ करना निश्चित रूप से लाभकारी होता है। समर्थजन इसका पाठ अधिक संख्या मे (1, 2, 5, 7 माला नित्य) जप सकते हैं।

चंद्र गायत्री मंत्र

ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय धीमहि तन्नः सोमः प्रचोदयात्।

अमृत वैदिक अथवा पौराणिक ॐसों सोमाय नमः या अन्य किसी भी मंत्र का जप करके साधक स्वयं को चंद्रदेव का कृपा पात्र बना सकता है।

वैदिक और पौराणिक मंत्रों की भांति तांत्रिक-साधना के मंत्र भी अद्भुत शक्तिशाली होते हैं। यह तो साधक की आस्था और रुचि पर निर्भर है कि वह किस मंत्र द्वारा साधना करके स्वयं को चंद्रदेव का अनुग्रही बनाता है। तांत्रिक चंद्र-मंत्र इस प्रकार है:

तंत्रोक्त चंद्र मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः अथवा ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्राय नमः।

ऊपर दिए गए मंत्रों में से किसी भी एक का मंत्र जप ग्रहपीडित जनों को अवश्य ही करना चाहिए। जप की संख्या ग्यारह हजार है और इसका दशांश हवन भी करना चाहिए।

चंद्र यंत्र–

नमस्कार–दधिशंखतुषाराभं,

क्षीरोदार्णवसन्निभम्।

नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्,

निर्जितारं च शत्रुणां यजमानाधिदेवता:॥

7	2	9
8	6	4
3	10	5

चंद्र यंत्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5
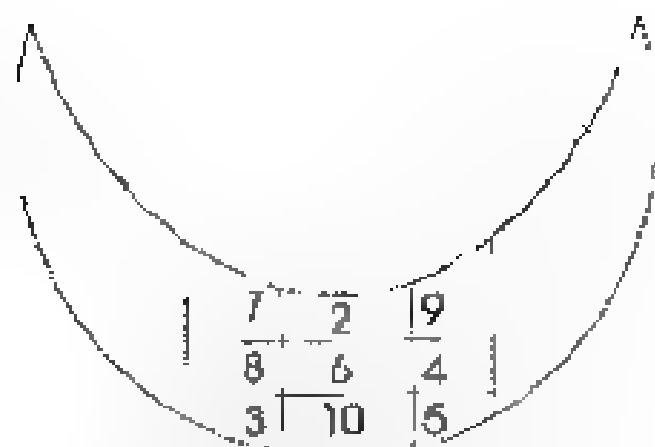
चंद्र यंत्र साक्षात चंद्रदेव की सजीव प्रतिमा होता है प्रायः सभी मंत्रों के विषय में यही धारणा प्रचलित है कि वह संबद्ध देव-शक्ति का रेखांकित स्वरूप होता है। यदि किसी देव शक्ति का मंत्र विधिवत बनाकर पूजा-पाठ और जप, हवन द्वारा सिद्ध कर लिया जाए तो वह आज के भौतिक विज्ञान की मशीनरी से भी अधिक शक्तिशाली और त्वरित प्रभावी सिद्ध होता है, किंतु यह भी एक अति कठोर सत्य है कि आज के युग में यंत्र निर्माण और साधना शत-प्रतिशत शुद्ध रूप में संभव नहीं रह गई, न वे उपादान है, न वातावरण, न आस्था है और न धैर्य, न सहिष्णुता। फिर भी जो कुछ उपलब्ध है उसके आधार पर की गई यंत्र साधना चमत्कारी होती है। चंद्र यंत्र की रचना करके पूजन द्वारा उसका लाभ प्राप्त आज भी संभव है।

जप संख्या–11000 कलौ चतुर्गुणित 44000

रत्न–मोती, **उपरत्न**–चन्द्रमणि, स्फटिक

समिधा–पलाश, औषधि

दान–वंशपात्र, चावल, कपूर, मोती, श्वेत वस्त्र, वृषभ, चांदी, धृत कुम्भ, शंख, कौड़ी, दूध, पाउडर, नमक शक्कर, गन्ना (इक्षुरस) श्वेत पुष्प।

❑❑❑

सोमवार व्रत कथा

चंद्र शांति एवं शीतलता के देवता हैं। चन्द्र देव का वार सोमवार है। चन्द्र देव को भगवान भोलेनाथ अपनी जटाओं में धारण करते हैं इसलिए चन्द्र देव को भगवान शिव की विशेष कृपाएं प्राप्त हैं। चन्द्रदेव की उपासना एवं साधना से चन्द्र देव प्रसन्न होते हैं तथा इच्छित फल प्रदान करते हैं सच्ची श्रद्धा से चन्द्रदेव का पूजन करने से समस्त कष्टों से मुक्ति मिलती है। चन्द्रग्रह की शांति तथा इनकी विशेष कृपा प्राप्त करने के लिए सोमवार का उपवास रखना चाहिए।

विधि विधान—सोमवार के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त होकर घर को स्वच्छ करें। पूजन के स्थान को गोबर अथवा मिट्टी से लीपें तत्पश्चात् चन्द्र देव व शिव की प्रतिमा स्थापित करें। धूप-दीप जलाए तथा चन्द्र के तांत्रिक मंत्र द्वारा इक्कीस अथवा इक्यावन बार जाप करें। तत्पश्चात् अर्घ्य दें। दिन मे एक समय गाय को भोजन का भोग दें, एक समय भोजन करें।

तांत्रिक मंत्र—

ॐ सों सोमाय नमः। ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः॥

व्रत कथा—किसी नगर में एक धनवान साहूकार रहता था। उसके घर में धन-धान्य की कोई कमी नहीं थी। हर प्रकार से सम्पन्न होते हुए भी एक ही कष्ट था, वह निःसंतान था। इसी कारण वह दिन रात दुःखी रहता। पुत्र-प्राप्ति के लिए वह प्रत्येक सोमवार श्रद्धापूर्वक शिवजी का व्रत और पूजन किया करता था तथा शाम को मन्दिर में जाकर शिवजी के सामने दीपक जलाता था। साहूकार की इतनी श्रद्धा व भक्ति को देखकर एक बार माता पार्वती शिव भगवान से बोलीं "हे नाथ! यह साहूकार आपका बड़ा भक्त है, सदैव आपके व्रत का श्रद्धापूर्वक करता है आपको इसकी मनोकामना अवश्य ही पूर्ण करनी चाहिए।" शिवजी महाराज ने पार्वती जी से कहा—"हे गौरी! यह संसार कर्मस्थली है यहां जो जैसा कर्म करता है वैसा ही फल प्राप्त करता है। इस साहूकार के जीवन में पुत्र का सुख नहीं है।" तब माता ने आग्रहपूर्वक कहा "हे प्रभु! यह साहूकार आपका अनन्य भक्त है और इसके कष्ट को यदि आप दूर नहीं करेंगे तो इसका विश्वास आपके ऊपर से उठ जाएगा। हे नाथ! आप तो अपने भक्तों पर दयालु होते हैं और उनके दुःखो को दूर करते हैं।" माता पार्वती का इतना आग्रह

देखकर भोलेनाथ ने कहा ''हे पार्वती! इसके जीवन में पुत्र योग न होने पर भी मैं इसे पुत्र प्राप्ति का वर देता हूं परन्तु वह केवल बारह वर्ष तक ही जीवित रहेगा। इसके पश्चात् वह मृत्यु को प्राप्त हो जाएगा। इसके अतिरिक्त मैं इसके लिए कुछ नहीं कर सकता।'' शिव एवं पार्वती की यह सब बातें साहूकार सुन रहा था। इससे उसे न कोई प्रसन्नता हुई ना कोई दुःख हुआ वह पहले की ही भांति शिवजी की भक्ति मे लगा रहा कुछ समय पश्चात् साहूकार की स्त्री गर्भवती हुई और निश्चित समय पर उसने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। साहूकार के घर में अत्यत खुशिया मनाई गई परन्तु साहूकार ने उसकी बारह वर्ष की आयु जानकर कोई प्रसन्नता प्रकट नहीं की और किसी को यह भेद नहीं बताया। धीरे-धीरे बालक ग्यरह वर्ष का हो गया तो उसकी माता ने साहूकार से उसका विवाह करने के लिए कहा किन्तु साहूकार ने यह कहकर मना कर दिया कि अभी मैं इसका विवाह नहीं करूगा तथा इसे पढ़ने के लिए काशी भेजूगा। साहूकार ने लड़के के मामा को बुलाकर कहा कि तुम इसे काशी पढ़ने के लिए ले जाओ और रास्ते में जिस स्थान पर ठहरो वहा यज्ञ व ब्राह्मणों को भोजन कराते जाना व निर्धनों का दान देना। उसने लड़के के मामा को बहुत सा धन देकर पुत्र सहित विदा किया। दोनों मामा भांजे रास्ते में यज्ञ कराते, ब्राह्मणों को भोजन कराते व दान करते चले जा रहे थे। रास्ते में एक नगर पड़ा। उस शहर के राजा की पुत्री का विवाह था तथा जो राजकुमार उससे शादी करने आ रहा था वह काना था और यह बात राजा को पता न थी। लड़के के माता पिता इस बात से बड़े चिन्तित थे। जब काने राजकुमार के पिता ने सेठ के अत्यंत सुन्दर पुत्र को देखा तो उसने सोचा कि क्यों न समस्त विवाह सस्कार इस लड़के के द्वारा पूर्ण करा दिया जाए, इससे हमारी समस्या भी हल हो जाएगी। ऐसा विचार कर उसने अपने मंत्री से विचार विमर्श कर लडके के मामा से बात की। मामा भांजा समस्त कार्य करने के लिए राजी हो गए। तब राजा साहूकार के लडके को सुन्दर कपड़े पहनाकर तथा घोड़ी पर चढ़ाकर बारात को लेकर चल दिया। तत्पश्चात् वे राजा के द्वार पर पहुचे। समस्त कार्य प्रसन्नता पूर्वक सम्पन्न हो गए। राजकुमार के पिता ने सोचा कि क्यों न फेरों आदि का कार्य भी इसी लडके से पूर्ण करा लिया जाए। राजा ने लड़के के मामा से कहा तो उन्होंने स्वीकृति दे दी फेरों आदि का कार्य भी पूर्ण हो गया। फिर राजकुमारी व राजकुमार मन्दिर में पूजा के लिए गए तो राजकुमारी की चुनरी के पल्ले पर लड़के ने लिख दिया कि तेरा विवाह तो मेरे साथ हुआ है परन्तु जिस राजकुमार के साथ तुम्हें भेजा जाएगा वह एक आंख से काना है और मैं काशी जी पढ़ने जा रहा हू। राजकुमारी ने जब चुनरी पर ऐसा लिखा पाया तो उसने राजकुमार के साथ जाने से मना कर दिया। उसने अपने पिता से कहा कि यह मेरा पति नहीं है मेरा पति तो काशी जी पढ़ने गया है। राजकुमारी के पिता ने उसे विदा नहीं किया और बारात वापस चली गई। सेठ का लड़का और उसका मामा काशी पहुचे। वहा जाकर उस लड़के ने पढ़ना तथा उसके मामा ने यज्ञ करना आरंभ कर दिया। जिस दिन लड़के की आयु बारह वर्ष हुई उस दिन दोनो यज्ञ कर रहे थे। लड़के

ने अपने मामा से कहा 'मामा मेरी तबियत ठीक नहीं है।' मामा ने कहा 'अन्दर जाकर सो जाओ' लड़का अन्दर जाकर सो गया। थोड़ी ही देर मे उसके प्राण पखेरू उड़ गए। कुछ देर पश्चात् लड़के के मामा ने अन्दर जाकर देखा कि उसका भांजा मरा हुआ पड़ा है तो वह बहुत दुःखी हुआ। किन्तु उसने सोचा, यदि मैंने अभी रोना पीटना प्रारंभ कर दिया तो यज्ञ कार्य अधूरा रह जाएगा अतः उसने शीघ्रता से यज्ञ कार्य पूर्ण कर ब्राह्मणों को दान देकर रोना आरंभ किया। संयोग से शिव शंकर पार्वती सहित उधर से आ रहे थे। जब उन्होंने विलाप की आवाज़ सुनी तो पार्वती ने कहा "प्रभु, कोई रो रहा है। जाने उसे क्या कष्ट है। आप उसका दुःख दूर करो।" जब भगवान शंकर पार्वती सहित वहां गए तो देखा कि एक लड़का मरा पड़ा है। उसे देख पार्वती जी ने कहा–"नाथ! यह तो वही लड़का है जो आपके वरदान से पैदा हुआ था।" तब शिवजी ने पार्वती से कहा "देवी! इस लड़के की आयु इतनी ही थी जो पूर्ण हो गई।" पार्वती जी ने विनयपूर्वक कहा "प्रभु, आप कृपा करके इसे जीवित करें अन्यथा माता-पिता इसके वियोग में अपने प्राण दे देंगे।"

पार्वती के हठ करने पर शिवजी ने लड़के को जीवित कर दिया और फिर शिव-पार्वती अपने धाम को चले गए। शिक्षा समाप्त होने पर लड़का और मामा उसी प्रकार यज्ञ करते हुए ब्राह्मणों को भोजन कराते तथा दान देते जा रहे थे। मार्ग में वह शहर पड़ा जहां लड़के की शादी हुई थी। वहां आकर दोनों ने यज्ञ आरंभ कर दिया। लड़के के ससुर ने उसे पहचान लिया तथा अपने महल में ले जाकर उनकी खातिर की तथा कुछ समय पश्चात् उसने लड़के को बहुत से धन, दास-दासियों व अपनी पुत्री सहित विदा कर दिया।

जब वे अपने शहर के निकट पहुंचे तो लड़के के मामा ने कहा कि मैं घर जाकर तुम्हारे माता-पिता को तुम्हारे आने की सूचना देकर आता हूं। जब वह घर पहुंचा तो लड़के के माता पिता छत पर बैठे थे तथा उन्होंने प्रण कर रखा था कि यदि हमारा पुत्र सही सलामत आ गया तो हम नीचे उतर आएंगे अन्यथा छत से कूदकर अपने प्राण दे देंगे। लड़के के मामा ने उन्हें यह सूचना दी कि तुम्हारा पुत्र बहुत-सा धन दास दासियों तथा अपनी पत्नी के साथ आ गया है तो वे दोनों बहुत प्रसन्न हुए और खुशी खुशी नीचे आ गए। उन्हें अपने पुत्र को सामने पाकर बहुत प्रसन्नता हुई और दोनों ने पुत्र व पुत्रवधू का स्वागत किया और प्रसन्नतापूर्वक रहने लगे। इस प्रकार जो कोई भी सोमवार के व्रत को धारण करेगा अथवा इस कथा को पढ़ता अथवा सुनता है उसके सब दुःख दूर होते हैं तथा उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं तथा वह सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर अन्त में शिवलोक को प्राप्त होता है।

❑❑❑

चंद्र देव सोमेश्वर की आरती

हे सोमदेव अविनाशी, प्रभु राखो लाज हमारी।
मैं दुखिया शरण तुम्हारी, हे चन्द्रदेव बलधारी॥
हे देव! जगत निर्मोही मुझको बड़ा सताए।
कदम-कदम पर मुश्किल, अब तो सहा न जाए।
क्या मैं करू कुछ समझ न आए ऐसी है लाचारी।
हे सोमदेव अविनाशी मैं दुनिया शरण तिहारी॥
मुश्किल है इन भीषण दुःखों में जीना।
फटा जाए दुःखों से हाए मेरा सीना
बुद्धि रही चकराए, है सुधबुध सभी बिसारी।
हे महादेव अविनाशी मैं दुखिया शरण तिहारी॥
काम क्रोध मद लोभ ने भरमाया।
दिनों में फेर ने मुझको बड़ा सताया।
टूट चुका हू हे मेरे प्रभु जीवन बाजी हारी।
हे सोमदेव अविनाशी मैं दुखिया शरण तुम्हारी॥
हे प्रभु-सोमेश्वर अपना दरश दिखा दो
कृपा करो हे ईश्वर सारे कष्ट मिटा दो॥
आया हूं प्रभु तेरी शरण में राखो लाज हमारी।
हे सोमदेव अविनाशी मै दुःखिया शरण तुम्हारी॥
चंद्रदेव सोमेश्वरजी की जय!

❑❑❑

सोलह सोमवार व्रत कथा

एक समय महाकाल शिवशंकर पृथ्वी पर भ्रमण की इच्छा से मां पार्वती के साथ भू लोक पर आए। दोनों विदर्भ देश की अमरावती नामक एक सुन्दर नगरी में आए। वह भव्य एवं सर्व प्रकार के सुखों से पूर्ण थी। अमरावती में वहां के राजा के द्वारा बनवाया गया एक विशाल मन्दिर था। भगवान रुद्र, माता पार्वती के साथ उसी मन्दिर में निवास करने लगे। एक बार माता-पार्वती ने शिवजी से कहा-"हे नाथ! आज हम चौसर खेलेंगे।" शिवजी ने पार्वती की बात सहर्ष मान ली और चौसर खेलने लगे। उसी समय मन्दिर का पुजारी पूजा करने के लिए मन्दिर में आया। पार्वती जी ने पुजारी से पूछा -"पुजारी जी, हम दोनों में से कौन जीतेगा?" ब्राह्मण ने शीघ्रता से कह दिया कि भगवान भोलेनाथ की ही जीत होगी। कुछ देर बाद खेल समाप्त हुआ किन्तु पार्वती जी की जीत हुई। पार्वती जी को ब्राह्मण के झूठ बोलने पर बड़ा क्रोध आया और उन्होने पुजारी को कोढ़ी होने का श्राप दे दिया। भोलेनाथ ने पार्वती से ब्राह्मण को क्षमा कर देने को कहा किन्तु पार्वती जी ने उनकी बात नहीं सुनी पुजारी श्राप के कारण कोढ़ से ग्रस्त हो गया। वह अनेक प्रकार के कष्टों को सहता हुआ मन्दिर में रहने लगा। कुछ समय पश्चात शिवपूजा हेतु स्वर्ग की अप्सरा मन्दिर में आई। अप्सरा ने पुजारी को इतने कष्ट में देखकर उसके कोढ़ी हो जाने का कारण पूछा। पुजारी ने दीनतापूर्वक सारी बात अप्सरा को बता दी। अप्सरा ने पुजारी से कहा-"हे पुजारी! तुम्हारे कष्ट के दिन समझो समाप्त हो गए तुम सब प्रकार के व्रतों में श्रेष्ठ 'सोलह सोमवार' के व्रत को नियमपूर्वक रखो। भोलेनाथ की कृपा से तुम्हारे दुःख दूर होंगे।" पुजारी ने अप्सरा से कहा "देवी! कृपा करके मुझे सोलह सोमवार के व्रत की विधि बताओ।" अप्सरा ने बताया -"सोमवार के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त हो स्वच्छ वस्त्र धारण करें सध्या अर्चना के पश्चात आधा सेर गेहू का आटा लेकर उसके तीन भाग बनाए तथा घी, गुड, दीप, नैवेद्य, पुंगीफल, बेलपत्र, जनेऊ जोड़ा, चंदन, अक्षत, पुष्पादि के द्वारा प्रदोषकाल में भगवान शकर का विधि-विधानपूर्वक पूजन करे। पूजन के पश्चात तीन भागों मे से एक शिवजी को श्रद्धापूर्वक अर्पण करें तथा अन्य दो को प्रसाद के रूप मे कथा सुनने वाले व्यक्तियों मे बाट दे तथा स्वय भी ग्रहण करें। इस प्रकार सोलह सोमवार का व्रत करे सत्रहवें सोमवार को पाव-सेर गेहूं के आटे की बाटी बना लें, उसमें घी व गुड़ मिलाकर चूरमा बना लें। शिवजी को भोग लगा प्रसाद को बाट दें, तत्पश्चात स्वय प्रेम से प्रसाद ग्रहण

करें। ऐसा करने से सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।" ऐसा कह अप्सरा स्वर्ग को लौट गई। ब्राह्मण ने विधि-विधान पूर्वक शिवशंकर का व्रत किया तथा भोलेनाथ की कृपा से रोगमुक्त होकर वह पूर्व की भांति रहने लगा। कुछ समय पश्चात शिव-पार्वती फिर मन्दिर में आए। ब्राह्मण को निरोग देखकर पार्वती जी ने उससे इसका कारण पूछा तो ब्राह्मण ने उन्हे सोलह सोमवार के व्रत का महत्त्व कह सुनाया। पार्वती जी अति प्रसन्न हो गईं और उन्होंने ब्राह्मण से व्रत की विधि पूछी तथा स्वयं इस व्रत को किया व्रत के फलस्वरूप उनके पुत्र कार्तिकेय जो उनसे रुष्ट थे, उन्होंने माता से क्षमा मांगी और उनके आज्ञाकारी हो गए। एक दिन कार्तिकेय को अपने हृदय परिवर्तन का रहस्य जानने की इच्छा हुई, तो उन्होंने माता से कहा "हे माता! आपने ऐसा कौन-सा उपाय किया जिससे मेरे हृदय में आपका सम्मान व प्रेम पुनः जाग्रत हुआ?" पार्वती जी ने उन्हें सोलह सोमवार के व्रत की महिमा व विधि बताई। कार्तिकेय जी ने माता से कहा-"मेरा परम मित्र बहुत दुःखी हो दूसरे देश को चला गया है और मुझे उससे मिलने की इच्छा है, मैं भी इस व्रत को करूंगा ताकि मेरा मित्र वापस आ जाए। कार्तिकेय जी ने उस व्रत का पालन किया और उनका परममित्र स्वयं उनके पास चला आया। उनके मित्र ने कार्तिकेय जी से अपने इस प्रकार लौट आने का रहस्य पूछा तो उन्होंने कहा "मित्र! तुम्हारे लिए हमने सोलह सोमवार का व्रत किया था।" ब्राह्मण मित्र ने कार्तिकेय जी से व्रत की विधि पूछी तथा सुन्दर कन्या से विवाह की अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु सोलह सोमवार का व्रत किया। कुछ समय पश्चात जब वह किसी कार्य से विदेश गया तो उस जगह के राजा की कन्या का स्वयंवर था। राजा ने घोषणा की थी कि मेरी पुत्री का विवाह उस व्यक्ति से होगा जिसके गले में रत्न-अलंकारों से सज्जित हथिनी माला डाल देगी। शिव कृपा से ब्राह्मण भी स्वयंवर देखने की इच्छा से वह वहां आया। हथिनी माला लिए आई और उसने अन्य सभी को छोड ब्राह्मण के गले मे माला डाल दी। राजा ने ब्राह्मण का विवाह अपनी रूपवती कन्या से कर दिया। राजा ने बहुत-सा धन देकर अपनी पुत्री को विदा किया। राजकुमारी को पत्नी रूप में पाकर ब्राह्मण प्रसन्नतापूर्वक जीवन यापन करने लगा। एक दिन राजकुमारी ने अपने पति से पूछा-"हे नाथ! आखिर आपने ऐसा कौन-सा पुण्य किया था कि हथिनी ने राजकुल के व्यक्तियों को छोड़कर आपको माला पहनाई?" ब्राह्मण ने पत्नी से कहा-"प्रिये! मैंने सब व्रतों में श्रेष्ठ सोलह सोमवारों के व्रत को निष्ठापूर्वक धारण किया और तुम्हे प्राप्त किया। सोमवार व्रतों की महिमा सुनकर वह भी पुत्र प्राप्ति की कामना हेतु षोडष सोमवार व्रत करने लगी। शिवकृपा से उसे अति सुन्दर पुत्र की प्राप्ति हुई। वह बहुत सुन्दर व गुणवान था। जब वह बड़ा हुआ तो उसने अपनी माता से पूछा "हे माता! आपको किस कर्म के फलस्वरूप आपको मेरे जैसे पुत्र की प्राप्ति हुई?" माता ने पुत्र को सोलह सोमवार व्रत कथा कह सुनाई राज्य प्राप्ति की इच्छा हेतु उसने भी सोलह सोमवार व्रत धारण किया व्रत पूर्ण हो जाने पर एक सम्पन्न देश के राजा ने अपनी राजकुमारी का विवाह ब्राह्मण पुत्र से कर दिया। उस राजा की मृत्यु के पश्चात ब्राह्मण

को राजा बनाया गया और इस प्रकार उसकी मनंकामना पूर्ण हुई। राज्य प्राप्त करने पर भी वह पूर्व की भांति सोलह सोमवार का व्रत करता रहा। जब सत्रहवां सोमवार आया तो उसने अपनी पत्नी से पूजा की सामग्री लेकर अपने साथ मन्दिर चलने को कहा किन्तु उसकी पत्नी ने उसकी बात न मानी। उसने पूजन सामग्री दासियों के द्वारा शिवालय पहुंचा दी परन्तु वह स्वयं नहीं गई राजा अकेला ही मंदिर में गया और जब उसने शिव पूजा समाप्त किया तो आकाशवाणी हुई -''हे राजा! अपनी धर्मविरोधी रानी को घर से तत्काल निकाल दे अन्यथा तेरा सर्वनाश हो जाएगा।'' राजा को आकाशवाणी सुनकर आश्चर्य हुआ। महल में आकर राजा ने अपनी रानी को राज्य छोड़कर चले जाने को कहा। रानी दुःखी होकर विलाप करती हुई वहां से चली गई नंगे पांव भूख से व्याकुल व दुःख से व्यग्र होकर रानी एक गांव में पहुंची। उस गांव में एक बुढ़िया जो सूत बेचने जा रही थी, रानी की ऐसी दशा देखकर बोली 'तू मेरा सूत बाजार में बिकवा दे। मेरी वृद्धावस्था को देखकर कोई मुझे उचित दाम नहीं देता।'' वृद्धा के ऐसे वचन सुन रानी उसकी सूत की पोटली अपने सिर पर रखकर चल दी। कुछ दूर चलने पर बहुत जोर की आंधी आई और वृद्धा की सूत की पोटली उड़ गई वृद्धा ने रानी को मनहूस समझा और उसे बुरे वचन कहकर वहां से चले जाने को कहा। चलती हुई वह एक तेली के घर पहुंची शिवशंकर के क्रोध के कारण तेली के मटके उसी क्षण फूट गए। गुस्से में भरकर तेली ने रानी को घर से निकाल दिया। दुःखी हृदय से तथा थके हुए कदमों से रानी एक नदी के किनारे पहुंची तो नदी का समस्त जल सूख गया। कुछ दूर चलने पर रानी एक तालाब पर पहुंची। उसने पानी पीने के लिए जैसे ही जल का स्पर्श किया वैसे ही सरोवर का निर्मल व स्वच्छ जल अनगिनत कीड़ों से भर गया और दूषित हो गया। रानी ने इसे अपने भाग्य का दोष मानते हुए उसी जल को पी कर अपनी प्यास शांत की। फिर वह विश्राम करने की इच्छा से पेड़ के पीछे पहुंची तो हरे पेड़ के पत्ते झड़ गए। वन, सरोवर, जल की यह दशा देखकर वहां गाय चराते हुए ग्वालों ने जंगल में स्थित मंदिर के पुजारी गुसांई जी से सारा वृतांत कह सुनाया। गुसांई जी ने ग्वालों से रानी को अपने पास ले आने को कहा। कुछ ही देर में ग्वाले रानी को गुसांई जी के पास ले आए रानी के सुन्दर मुख व कोमल शरीर को देख वे समझ गए कि यह अवश्य ही कोई विपत्ति की मारी उच्च कुल की स्त्री है। उन्होंने रानी से कहा -''तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा'' रानी आश्रम में रहने लगी। शिव कोप के कारण रानी जल भरकर लाती तो उसमें कीड़े पड़ जाते, भोजन बनाती तो उसमें भी कीड़े पड़ जाते। रानी की ऐसी दुर्दशा देखकर गुसांई जी को भी बड़ा कष्ट पहुंचा। उन्होंने रानी से कहा-''पुत्री आखिर तुमने ऐसा कौन सा पाप किया है जिसके कारण तुम्हारी यह दशा हुई है?'' रानी ने शिव पूजन को त्यागने की बात गुसांई जी को बताई। तब गुसांई जी ने सर्व प्रकार के कष्टों से मुक्ति देने वाले सोलह सोमवार के व्रत को करने के लिए कहा उन्होंने रानी को व्रत की विधि बताई। गुसांई जी की बात सुनकर रानी ने विधि विधान पूर्वक सोलह सोमवार का व्रत किया, सत्रहवें सोमवार को उसने

विधि-विधान से शिव पूजन किया। व्रत के प्रभाव से रानी के ऊपर जो शिवजी का कोप था वह समाप्त हो गया और तभी राजा के मन में विचार आया कि रानी को गए हुए बहुत समय बीत गया। मुझे उसकी खबर लेनी चाहिए। वह दु:ख की मारी जाने कहां होगी। राजा ने अपने दूतों को चारों ओर भेज दिया जिससे रानी का पता चल जाए रानी को ढूढते हुए सेवक गुसाईं जी के आश्रम में पहुंचे। वहां रानी को देखकर उन्होंने रानी को अपने साथ ले जाने के लिए गुसाईं जी से कहा-'' परन्तु उन्होंने मना कर दिया। दूतों ने आकर राजा को आकर रानी का पता बताया। राजा स्वयं आश्रम में आया और उसने पुजारी जी से अनुग्रह किया। ''हे महाराज! जो स्त्री आपके आश्रम में रह रही है वह मेरी पत्नी है। मैंने शिव कोप के कारण इसे त्याग दिया था किन्तु अब शिवशंकर का कोप समाप्त हो गया अत: इसे मेरे साथ भेजने की कृपा करें।'' तब पुजारी जी ने रानी को राजा के साथ जाने की अनुमति दे दी गुसाईं जी की आज्ञा से रानी राजा के साथ प्रसन्नता पूर्वक महल में आ गई। राज्य में चारों ओर खुशियां मनाई गईं। हर ओर हर्ष का वातावरण था। राजा ने यज्ञादि किए और एक बड़ा भोज किया और गरीबों को दान दिया।

इस प्रकार अनेक प्रकार के सुखों का भोग करते हुए सोलह सोमवार का व्रत करते हुए राजा-रानी शिव पूजन करते हुए भू लोक में नाना प्रकार के सुखों का भोगते हुए शिवलोक को पहुंचे।

इस प्रकार जो भी मनुष्य पूर्ण निष्ठा व भक्ति से सोलह सोमवार का व्रत व पूजन विधि विधान पूर्वक करता है, वह पृथ्वी पर समस्त सुख सुविधा को भोगकर अन्त में शिवलोक को प्राप्त करता है।

भगवान शिव की आरती

जयति जयति जग निवास शंकर सुखकारी।
अजर अमर अज अरूप सत चित आनन्द रूप॥
व्यापक ब्रह्मस्वरूप प्रभु! भय हारी॥ जयति.....॥
शोभित विधुबॉल भाल, सुरसरिमय जटाजाल।
तीन नयन अति विशाल, मदन दहन-कारी॥ जयति...॥
भक्त हेतु धरत शूल, करत कठिन शूल फूल।
हिय की हरन हूल, अचल शान्तकारी॥ जयति...॥
अमल अरुण चरणकमल, सफल करत काम सकल।
भक्ति मुक्ति देव विमल, माया-भ्रम-टारी॥ जयति...॥
कार्तिकेय युत गणेश, हिमतनया सह महेश।
राजत कैलाश-देश अकल कलाधारी॥ जयति...॥
भूषण तन भूति व्याल, मुण्डमाल कर कपाल।
सिंह चर्म हस्ति-खाल, डमरू कर धारी॥ जयति....॥
अशरण जन नित्य शरण, आशुतोष आर्तिहरण।
सब विधि कल्याण करण, जय त्रिपुरारी॥ जयति....॥
जयति जयति जग-निवास शंकर सुखकारी॥

भगवान भोलेनाथ की जय!

❑❑❑

कर्क लग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**—कर्क लग्न के लिए सूर्य धन भाव का स्वामी होगा। इस कुण्डली में सूर्य लग्नेश चन्द्र का मित्र है। अतः इस कुण्डली के जातक को धनाभाव के समय या आखों के कष्ट समय माणिक्य धारण करना चाहिए। धनाभाव मारक भाव भी होता है। अतः माणिक्य यदि मोती साथ धारण किया जाए तो अति लाभदायक फल देता है।
2. **मोती**—कर्क लग्न में चन्द्र 'लग्नेश' है। अतः इस लग्न के जातकों को आजीवन मोती धारण करना चाहिए। मोती उनके स्वास्थ्य की रक्षा करेगा तथा आयु में वृद्धि करेगा। यह आर्थिक सकट में भी रक्षा कवच बना रहेगा। मोती पवित्रता, शुद्धता और विनम्रता का सूचक है। आपका 'जीवन रत्न' मोती है।
3. **मूंगा**—कर्क लग्न के लिए मंगल पचम और दशम भाव का स्वामी होने के कारण एक योगकारक ग्रह है। इसको यदि सद धारण किया जाए तो सतान सुख, बुद्धि-बल, भाग्योन्नति, यश, मान प्रतिष्ठा, राज्य कृपा से सफलता प्राप्त होती है यदि लग्नेश के रत्न मोती के साथ मूंगा धारण किया जाए तो बहुत शुभ फलदायक होता है, विशेषकर स्त्रियो के लिए मगल की महादशा में इसको धारण करना अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होता है
4. **पन्ना**—कर्क लग्न में लग्न बुध दो अशुभ भावों-तृतीय और द्वादश का स्वामी होता है तथा लग्नेश शत्रु है अतः इस लग्न के जातकों को पन्ना नहीं पहनना चाहिए,
5. **पुखराज**—कर्क लग्न के लिए गुरु षष्ठम और नवम घर का स्वामी होता है त्रिकोण का स्वामी गुरु इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना गया है। अतः इस लग्न के जातक को पुखराज धारण करने से सतान सुख, ज्ञान मे वृद्धि, भाग्योन्नति, पितृ सुख, ईश्वर भक्ति की भावना तथा धन की प्राप्ति होती है। जातक की मान व प्रतिष्ठा बढ़ती है। यदि पीला पुखराज इस लग्न का जातक मोती या मूगे के साथ साथ धारण करे तो अत्यन्त लाभप्रद होगा।
6. **हीरा**—कर्क लग्न के लिए शुक्र चतुर्थ एकादश का स्वामी है, शुक्र इस लग्न के लिए अशुभ होता है। इसके अलावा लग्नेश चन्द्रमा और शुक्र परस्पर मित्र नहीं हैं तब भी चतुर्थ और एकादश मे हीरा धारण किया जाए तो शुभ एव फलकारी होता है।

7. **नीलम**—कर्क लग्न के लिए शनि सप्तम (मारक स्थान) और अष्टम (दु:स्थान) भावों का स्वामी होने के कारण अशुभ ग्रह कहा गया है। शनि लग्नेश का शत्रु भी है। अत: इस लग्न के जातक को नीलम कभी नहीं धारण करना चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**—मूंगा सवा पांच रत्ती मोती सवा पाच रत्ती, का ग्रह लॉकेट पहनने से सन्तति होती है पर यह लॉकेट महालक्ष्मी योग का भी काम करेगा फलत: धन भी देगा।
2. **भाग्योदय हेतु**—मूंगा सवा चार रत्ती, पुखराज सवा पाच रत्ती 'बीसायत्र' के साथ जड़वा कर गले में पहनने से शीघ्र भाग्योदय होगा।
3. **आरोग्य हेतु**—मोती सवा पांच रत्ती मूंगा सवा पाच रत्ती पहनने से स्वास्थ्य ठीक रहेगा। यह लॉकेट महालक्ष्मी योग एवं सन्तति योग देता हुआ 'त्रिबल' रूप से काम करेगा।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**—माणिक्य सवा पांच रत्ती, मोती सवा पांच रत्ती, मूंगा सवा पाच रत्ती तीनों रत्नों को मिलाकर लॉकेट में पहनें।

❑❑❑

लालकिताब के प्रचलित व अनुभूत टोटके

जब आम उपाय काम न दे तो घंटों में असर देने वाले यह उपाय काम देंगे।

नाम ग्रह	उपाय
गुरु	केसर नाभि या जुबान पर लगाएं या खाएं।
सूर्य	पानी में गुड़ बहाएं.
चन्द्र	रात्रि को दूध या पानी का बर्तन सिरहाने रखकर सुबह उठते ही कीकर को डाले।
शनि	तेल का छाया पात्र करें। शनि खराब हो तो धन की मन्दी हाल में कौवे को रोटी डाले। औलाद की खराब हालत में काले कुत्ते को रोटी डालें।
शुक्र	गोदान या चरी ज्वार दान करें अथवा गाय को अपने भोजन का भाग दें।
मंगल नेक	मिठाई, मीठा भोजन दान करें या बताशे दरिया में डाले।
मंगल बद	रेवड़ियां पानी में बहाएं–मृगछाला मदद करेगी। मंगल के लिए तन्दूर में मीठी रोटी पका कर लाल कुत्तों को खिलाएं।
बुध	तांबे के टुकड़े में सुराख करके चलते पानी में बहा दे।
राहु	मूली दान करे या कोयले दरिया में डाले। रोटी पकाने की जगह मे ही बैठकर रोटी खाना राहु के मन्दे प्रभाव से बचाता रहेगा।
केतु	कुत्ते को रोटियां डाले।

हर उपाय की अवधि 40 या अधिक से अधिक 43 दिन है। कुल की बेहतरी के लिए उपाय की अवधि 40-43 हफ्तेवार करना है, यानि हर आठवें दिन, जो कि हफ्ता है, करना होगा। उपाय बीच में टूटना नही चाहिए, यानी किसी कारण तोड़ना पड़ जाए तो चावल दूध में धोकर पास रख ले। ऐसा करने से पहले किए का फल निष्फल नहीं होगा। (उपाय के समय चाहे आखिर दिन 39 वें या 40 वें दिन ही भूल जाए या बंद कर बैठे तो सब किया कराया निष्फल हो जायगा। नये सिरे से पूरी मियाद तक पूरी करें)

दृष्टांत कुण्डलियां

अवतारी पुरुष, संत-महात्मा, विद्वान

महर्षि अरविन्दो घोष
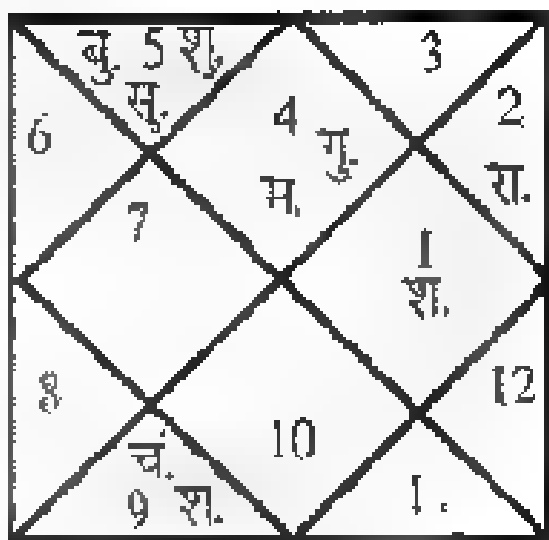
18.5.1872 प्रात: 4 50, कलकत्ता। क्रांतिकारी कवि, लेखक तत्वज्ञ एवं योगी महर्षि अरविन्द अनेक भाषाओं के जानकार एवं धर्म प्राण व्यक्तित्व के धनी थे।

गौतम बुद्ध
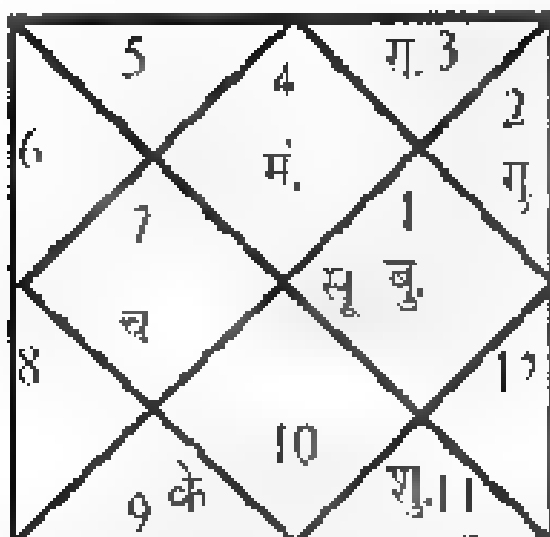
14.4.566, दिन .1 25, कपिलवस्तु। बौद्ध धर्म क संस्थापक राजकुमार गौतम ने युवास्था म ही संसार की भौतिकता को त्याग कर सन्यास ग्रहण कर लिया।

आद्य शंकराचार्य

31 मार्च 670, दोपहर 12.00, कालपी। यतिचक्र चूडामणि आद्य शंकराचार्य का जन्म शाके 592 वैशाख शुक्ल पंचमी रविवार का है। असाधारण, बुद्धि, अलौकिक व्यक्तित्व, तेजस्वीता के कारण इन्हें भगवान शंकर का अवतार माना जाता है। इन्होंने 16 वर्ष की आयु में चारों वेद एवं 108 उपनिषदों पर भाष्य लिख दिये।

प. मदनमोहन मालवीय

25.12.1861, समय 19.00, स्थान इलाहाबाद। काशी के मूर्धन्य विद्वान एवं कांग्रेस के उग्रवादी नेता पं. मदन मोहन मालवीय वेद पुराण व धर्मशास्त्र के मर्मज्ञ ज्ञाता व स्वतंत्रता सेनानी थे।

रामानुजाचार्य

जन्म 4 अप्रैल 1017, समय-12.30 बजे समाज सुधारक, महान दार्शनिक, विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त के संस्थापक संस्कृतज्ञ महान् विद्वान्, रामानुजाचार्य हिन्दू सनातन धर्म के विशिष्ट सन्तों में अग्रगण्य थे।

श्री वी.वी.एस. लक्ष्मण
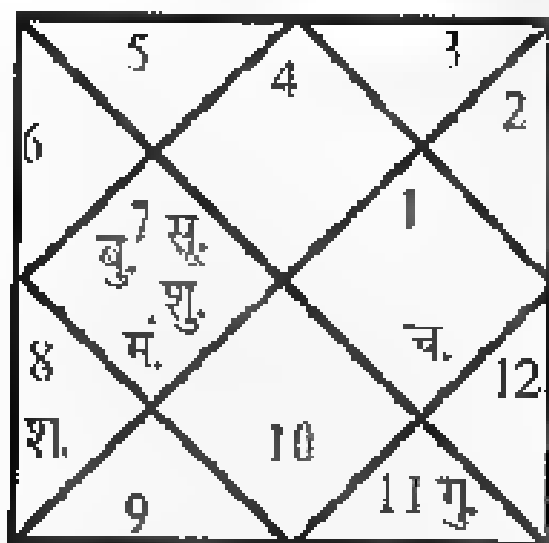
जन्म 23 जुलाई 1936, समय 6.25 बजे।

डा. भोजराज द्विवेदी
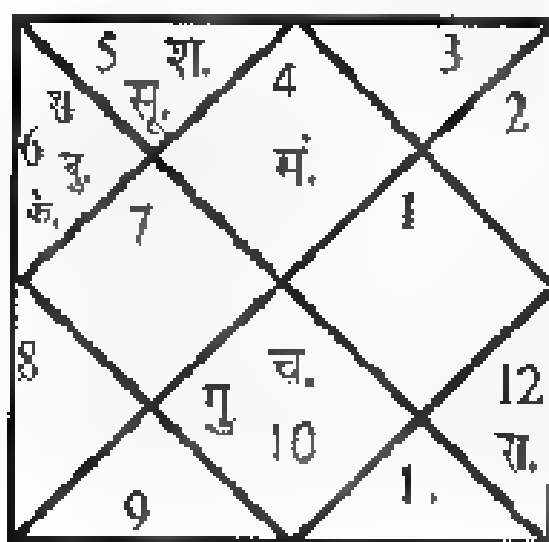
जन्म 4 सितम्बर 1949, समय-4.04 बजे, स्थान जोधपुर (राजस्थान)। चार सौ से अधिक आध्यात्मिक पुस्तकों के लेखक, सम्पादक एवं क्रांतिकारी लेखनी के धनी, प्रखर वक्ता डॉ. भोजराज द्विवेदी काल‌जयी समय के अनमोल हस्ताक्षर है।

सम्राट विक्रमादित्य
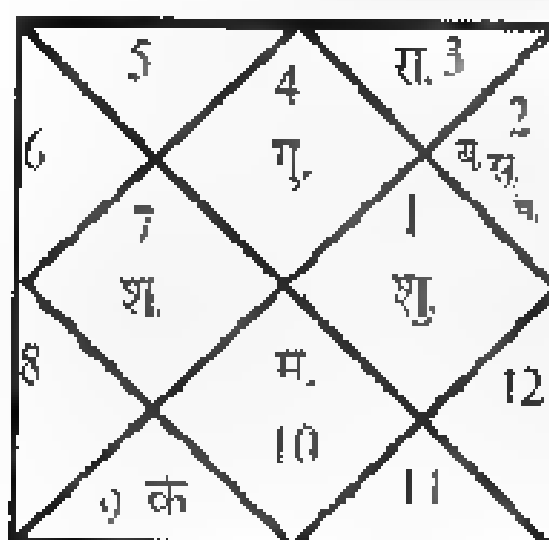
काल्पनिक कुण्डली। विशाल भारत के चक्रवर्ती सम्राट परम प्रतापी विक्रमादित्य की राजधानी उज्जैन थी। विक्रम सम्वत् 2062 के सस्थापक विक्रमादित्य अलौलिक शक्ति के धनी थे

महाराजा युधिष्ठिर
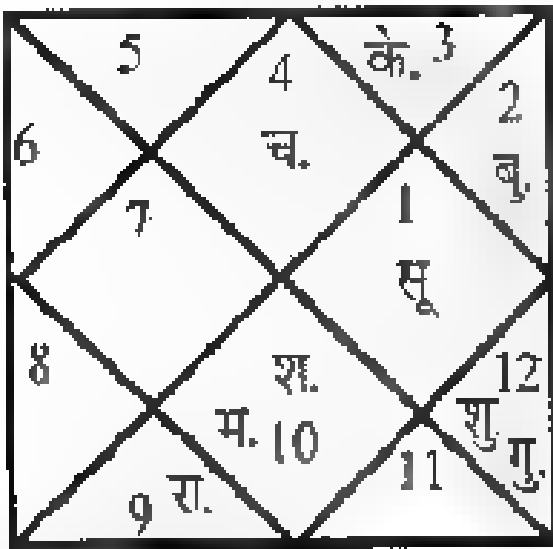
काल्पनिक कुण्डली। महाभारत युद्ध के पश्चात् भारत के चक्रवर्ती सम्राट युधिष्ठर, धर्म न्याय व सत्य के पर्याय थे।

वीरवर अर्जुन
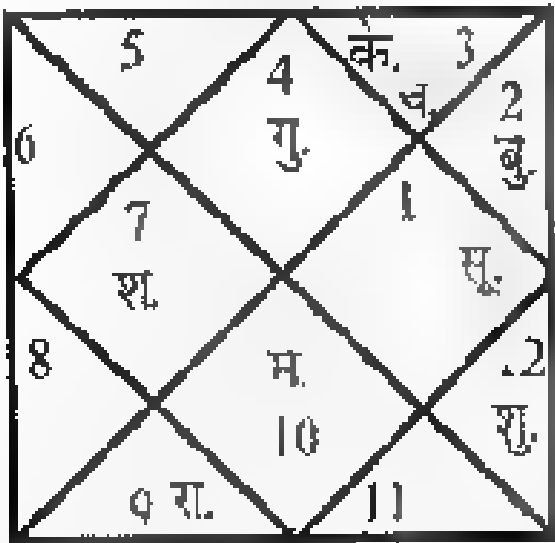
काल्पनिक कुण्डली। महाभारत काल के सबसे तेजस्वी परम पराक्रमी पाण्डुपुत्र वीरवर अर्जुन, भगवान श्रीकृष्ण के परमप्रिय सखा एवं रिश्ते में भाई थे।

महाराजा हरिश्चंद्र
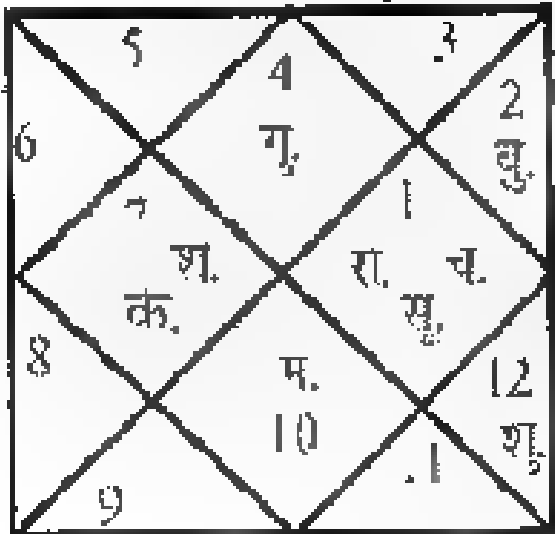
काल्पनिक कुण्डली भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय चक्रवर्ती सम्राट सत्यवादी हरिश्चन्द्र सत्य के अवतार थे।

सद्दाम हुसैन
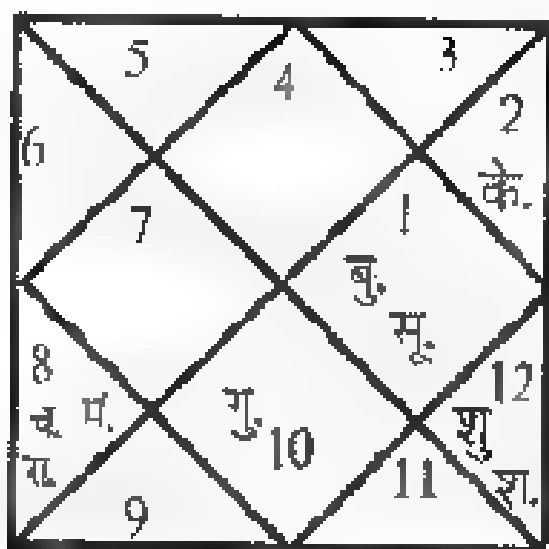
जन्म 28 जुलाई, 1937, समय 12.00 बजे, स्थान-बगदाद। ईराक के तानाशाह राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन की कभी तूती बजती थी, इन दिनों ईराक में ही कैदी बनकर, मौत का इन्तजार कर रहे हैं।

श्री जवागल श्रीनाथ
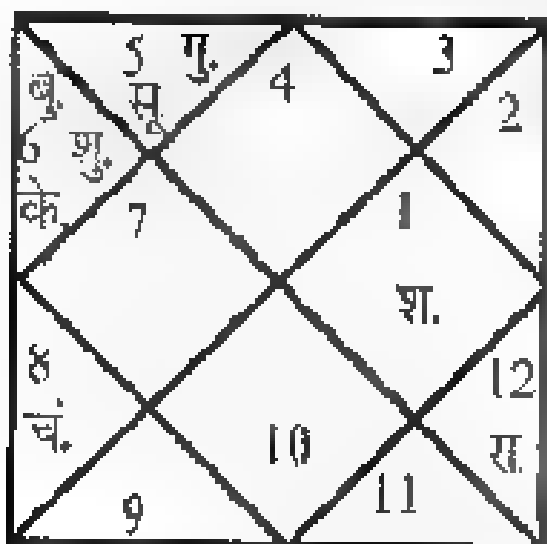
जन्म 19 अगस्त, 1946, समय 5.00, जन्म स्थल-अर्कान्सास (यू.एस.ए.)।

चंगेज खान
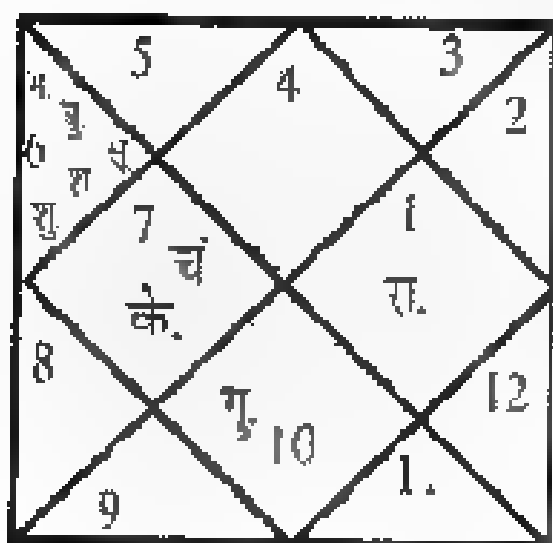
16.9.1186, समय-22.00, स्थान-चीन, दुर्दान्त आतंकवादी व लुटेरा चंगेज खां ने छापामार युद्ध के ज़रिए भारत में लूटमार एवं तबाही मचाई थी।

राजपुरुष, राजनेता

श्री मोतीलाल नेहरू
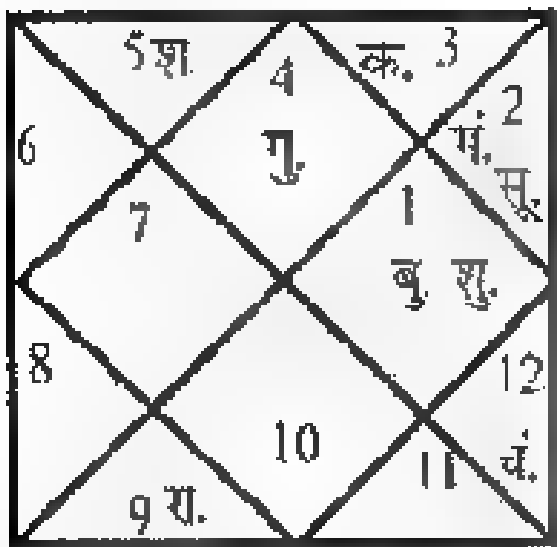
6 मई, 1861, समय-11.00, स्थान-आगरा। पेशेवर हाईकोर्ट वकील एवं पं. जवाहर लाल नेहरु के पिता एवं स्व. मोतीलाल नेहरु अपने जमाने के सबसे तेज वकील, राजनीतिज्ञ एवं धनी व प्रतिष्ठित व्यक्तियों में अग्रगण्य थे।

श्री जवाहरलाल नेहरू
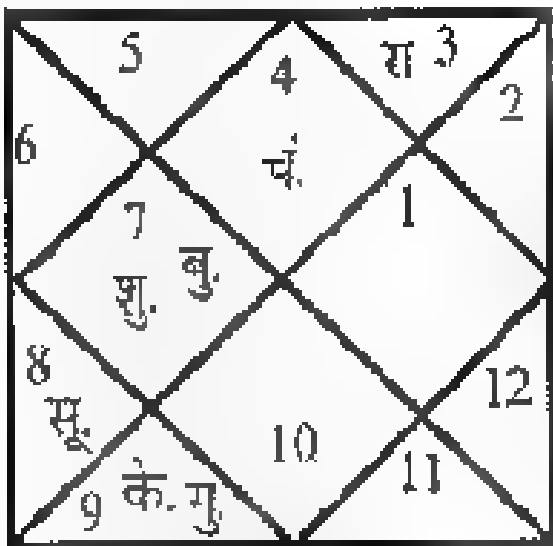
जन्म 14 नवम्बर 1917, समय-11.14 बजे, जन्म स्थल-इलाहाबाद। स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु कांग्रेस के पुरोधा रहे, प्रखर वक्ता, कुशल राजनीतिज्ञ एवं पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित पं. नेहरु भारतीय राजनीति में अमिट हस्ताक्षर रहे।

श्री एम. करुणानिधि

3.6.1924, समय 9.30 बजे, स्थान-त्रिकुलवाई। द्रविड मुन्नेत्र कडगम के अध्यक्ष, पूर्व केन्द्रीय मंत्री तमिलनाडू राज्य के प्रमुख राजनीतिज्ञ हैं।

सरदार वल्लभ भाई पटेल

जन्म 30 अक्टूबर 1875, समय 12.00 बजे, स्थान नडियाद (गुज.)। लौहपुरुष के नाम से विख्यात सरदार पटेल स्वतंत्र भारत के प्रथम गृहमंत्री थे। उपप्रधानमंत्री एवं ख्यातिप्राप्त बैरिस्टर थे।

एच. डी. देवगौड़ा

जन्म 18.5.1933 समय-11.00 बजे, जन्म स्थल-हसन भारत के पूर्व प्रधानमंत्री।

श्रीमति मेनका गांधी
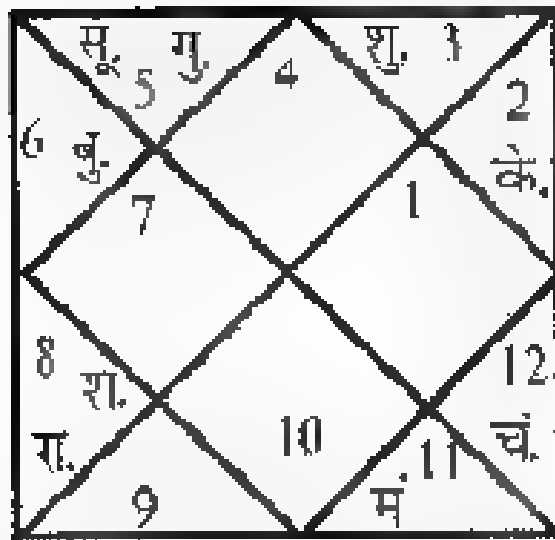
जन्म 26 अगस्त 1956, समय-5.00 बजे, जन्म स्थल-दिल्ली। स्व. संजयगांधी की धर्मपत्नी नेहरु घराने की बहू मैनका गाधी कुशल राजनीतिज्ञ समाज सुधारक, पर्यावरण प्रेमी एवं कई बार केन्द्रीय मंत्री रह चुकी हैं।

महाराजा रणजीत सिंह
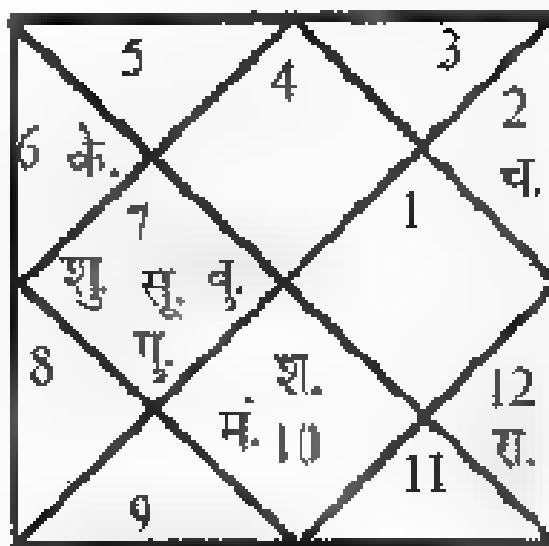
श्री प्रिन्स चार्ल्स
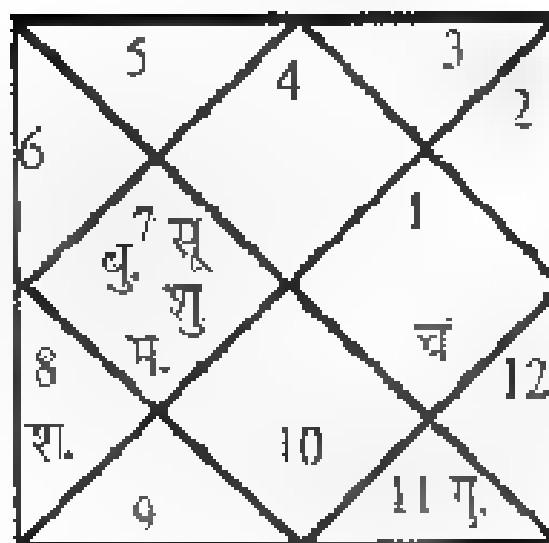
जन्म-14 नवम्बर, 1948, समय-21.15, जन्म स्थल-लन्दन।

जयप्रकाश नारायण
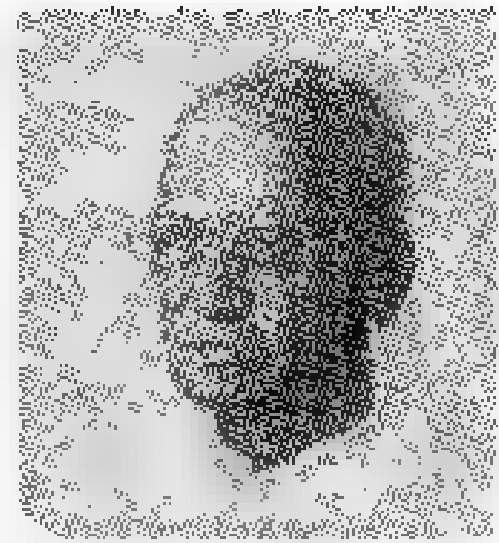
जन्म-12.10.1902, समय-0.40 स्थान-सीतामढ़ी (बिहार) भारत में युवा क्रान्ति के अग्रदूत नेता श्री जयप्रकाश नारायण के आवाहन से केन्द्रीय सत्ता 1977 में बदल गई। इनकी मृत्यु 8 अक्टूबर 1979 में हुई। इनके नेतृत्व मे जनता पार्टी बनी।

राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम

भारत के राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम एक प्रखर वैज्ञानिक, शक्ति पुरुष के नाम से विख्यात, विज्ञान के प्रोफेसर रह चुके है व कवारे हैं।

श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह

जन्म-25.6.1931, समय-7.31, स्थान इलाहाबाद, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, मण्डल-कमण्डल की राजनीति के कारण चर्चित रहे।

श्री इंद्रकुमार गुजराल
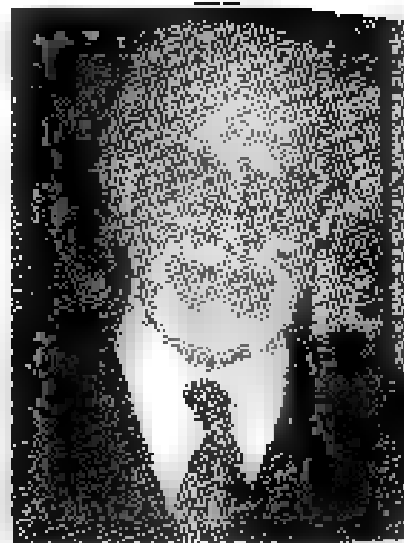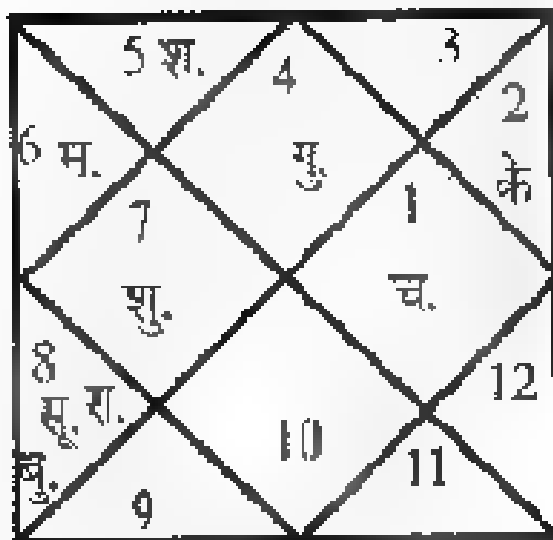
जन्म 4 दिसम्बर 1919, समय 22.00, स्थान झेलम। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री।

कमलापति त्रिपाठी
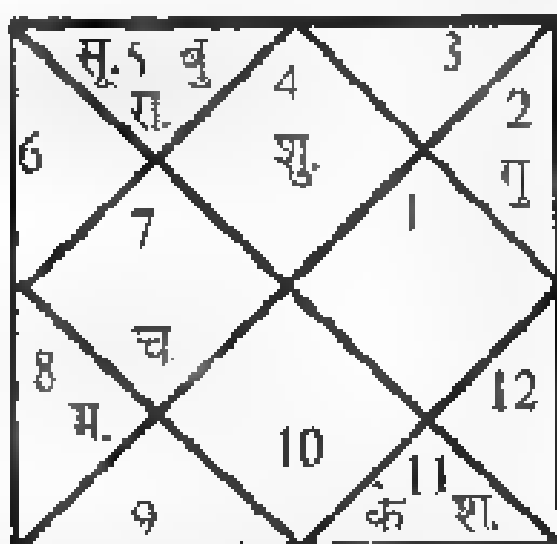
जन्म 4.9.1905, समय-3.00, स्थान-औरंगाबाद, कांग्रेस (आई) के वरिष्ठ नेता, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश। श्री कमलापति त्रिपाठी का व्यक्तित्व गजब का था वे चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी थे।

जार्ज डब्ल्यू बुश
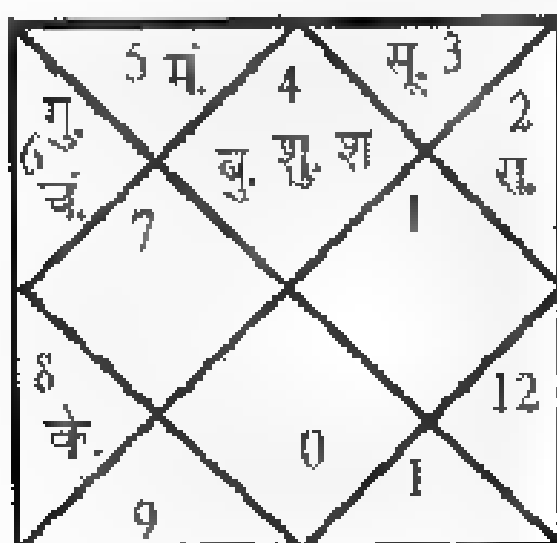
जन्म 6.7.1946, समय-7.26, स्थान-न्यू हैवेन। जार्ज डब्ल्यू बुश अमेरिका के राष्ट्रपति होने के साथ विश्व के सर्वाधिक धनी व शक्तिशाली व्यक्तियों में एक हैं। पर कालसर्पयोग के कारण सदैव चिन्ताग्रस्त एवं उनकी संतति इतनी योग्य नहीं होगी।

वसुंधरा राजे सिंधिया
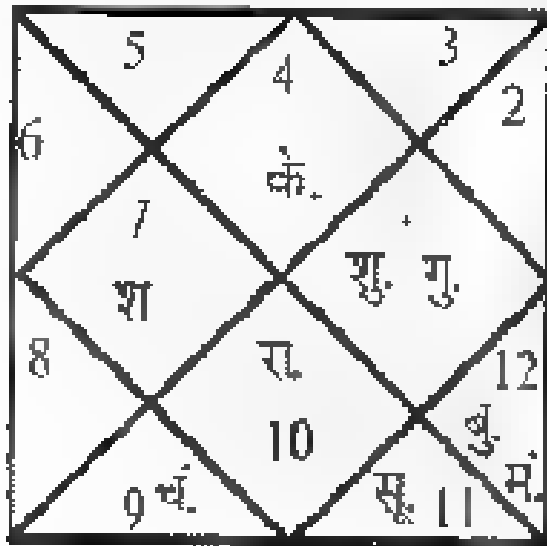
जन्म-8.5.1953, समय-13.00, स्थान मुम्बई राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमति वसुन्धराजे की कुण्डली में चारों केन्द्र भरे हुए 'आसमुद्रात् नामक' राजयोग बना रहे हैं **'शशयोग'** ने उन्हें मुख्यमंत्री बनाया, सप्तम भाव के राहु ने पति सुख छीना।

नेलसन मंडेला
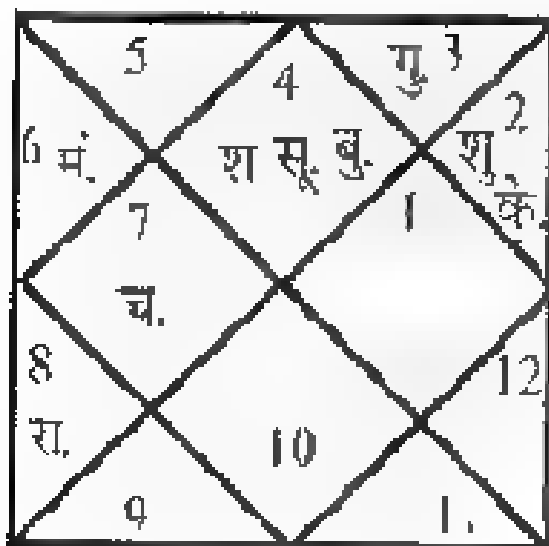
जन्म 18.7.1918, समय 9.00, स्थान दक्षिण अफ्रीका नेलसन मण्डेला विश्व राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। शान्ति के अग्रदूत मण्डेला की कीर्ति अक्षुण्ण है परन्तु पंचम भाव स्थित राहु व कालसर्पयोग के कारण उनकी संतति योग्य नहीं होगी।

मिखाइल गोर्बाचोव
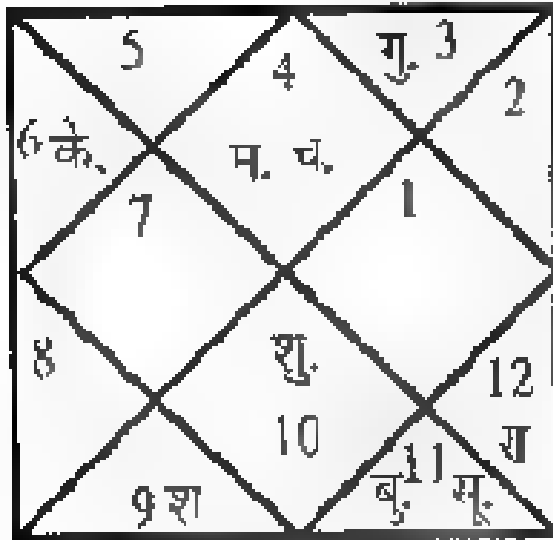
जन्म 2.3.1931, समय 13.45, स्थान स्तावरोपोल। रूस के पूर्व राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचोव विनम्र एवं सरल हृदय के व्यक्ति थे। इन्होंने भारत के साथ कूटनीतिज्ञ एवं मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किये।

लोकमान्य तिलक
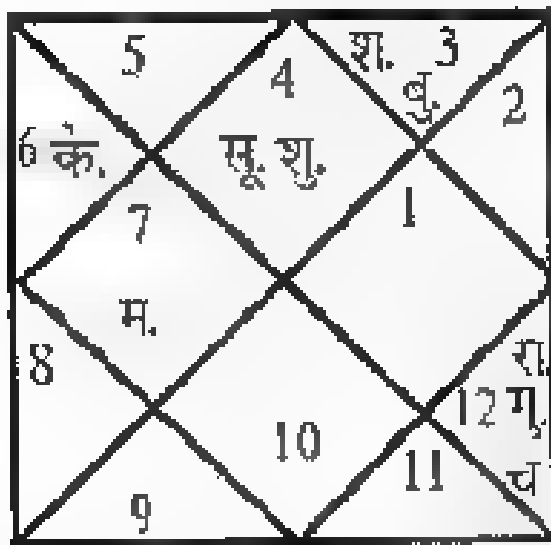
जन्म 23.07.1856, समय-6.25, स्थान-चिखली। वरिष्ठ कांग्रेसी नेता। लोकमान्य तिलक ज्योतिष एवं धर्मशास्त्र के प्रखर ज्ञाता थे। भारत की आजादी में उन्होंने उग्रवादी कांग्रेस दल का समर्थन देकर महत्त्वपूर्ण भूमिका अर्जित की थी।

मायावती
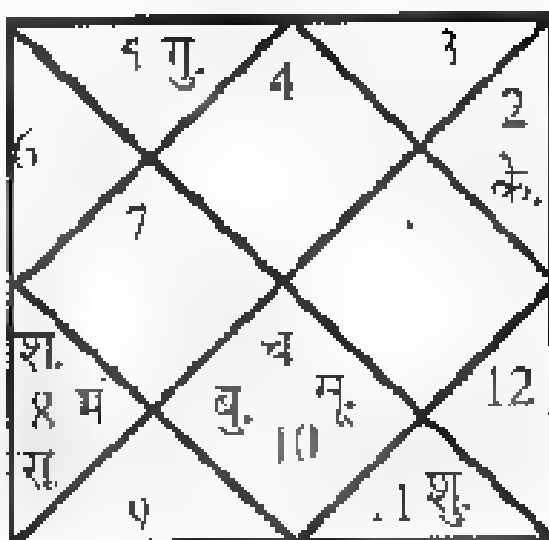
जन्म-15.10.1956, समय-19.50, स्थान-दौलतपुर। उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के संतान भाव एवं सप्तम भाव दोनो ही बिगडे हुए हैं

मोहन छंगाणी
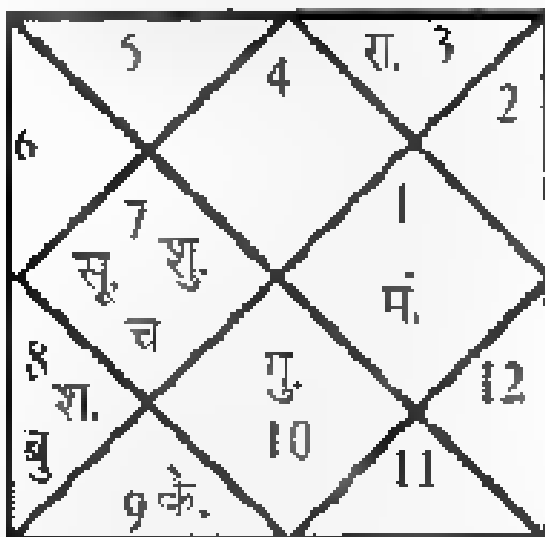
पूर्व मंत्री-राजस्थान, जन्म 4 नवम्बर 1926, समय-23.00 बजे। पूर्व शिक्षामंत्री राजस्थान जोधपुर जिले के फलौदी गाव मे प्रमुख कांग्रेसी नेता।

जनरल अयूब खां (पाकिस्तान)
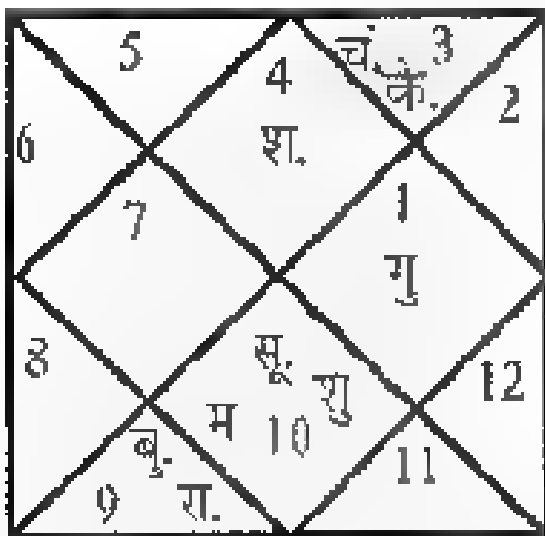
जन्म 25 जून 1931, समय 7.31 बजे सायं जन्म स्थल-इलाहाबाद। पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल अयूब खां तानाशाह नेताओं में अग्रगण्य माने जाते थे।

नजमा हेपतुल्ला
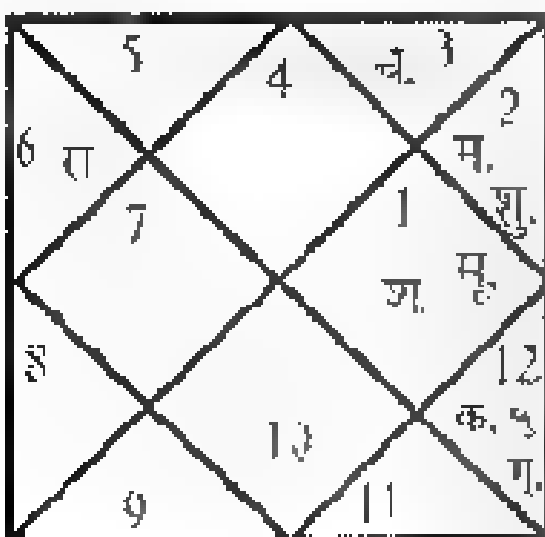
जन्म 13.4.1940, समय 12.30 बजे, जन्म स्थल मुम्बई।

श्री अनिल राधाकृष्णाजी कुम्बले
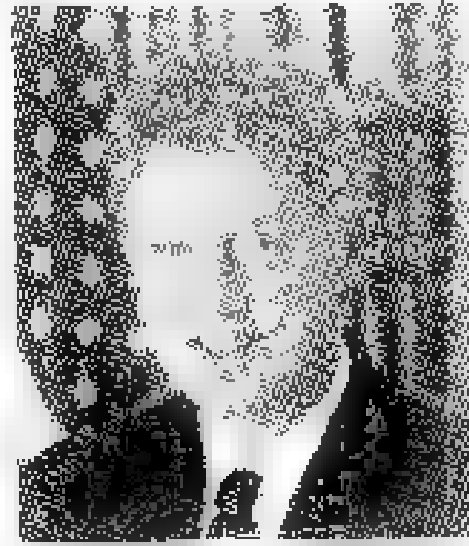
श्री बिल क्लिटंन

जन्म 19.8.1946 समय-5.00, जन्म स्थान-अर्कनसास। अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिटन विश्व के शक्तिशाली व धनाढ्य पुरुषों में अग्रगण्य है।

अभिनेता राजकपूर

फिल्मस्टार, जन्म-14 दिसम्बर, 1924, समय-22.00।

श्रीमति इंदिरा गांधी
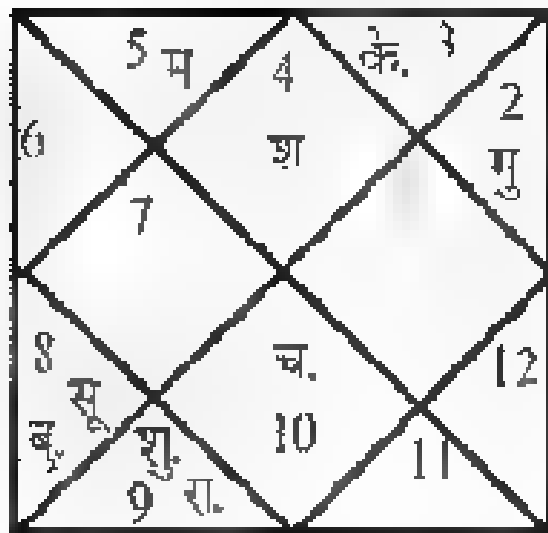
जन्म-19.11.1917, समय-11..4 बजे रात्रि, स्थान इलाहाबाद। भारत की सर्वाधिक लोकप्रिय प्रथम महिला प्रधानमंत्री, श्रीमति इंदिरा गांधी का राजनैतिक जीवन बहुत लम्बा रहा। इनका पुत्र भी प्रधानमंत्री रहा। इनके पति की मृत्यु 1960 में हुई। इनके खुद की मृत्यु 31 अक्टूबर 1984 में हुई।

हेमामालिनी
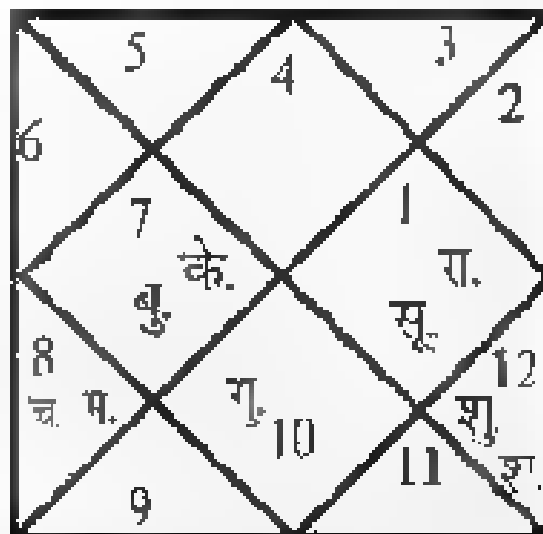
जन्म 16 अक्टूबर, 1948, समय 12.30 रात्रि, जन्म स्थान-तिरुचिरापल्ली अपने जमाने की ड्रीम गर्ल, हेमामालिनी सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री रही तथा सुप्रसिद्ध अभिनेता श्री धर्मेन्द्र से विवाह किया इनका पुत्र सन्नीदेवल की गिनती भी सुपर स्टार में होती है।

पूर्व राष्ट्रपति के. नारायणन्
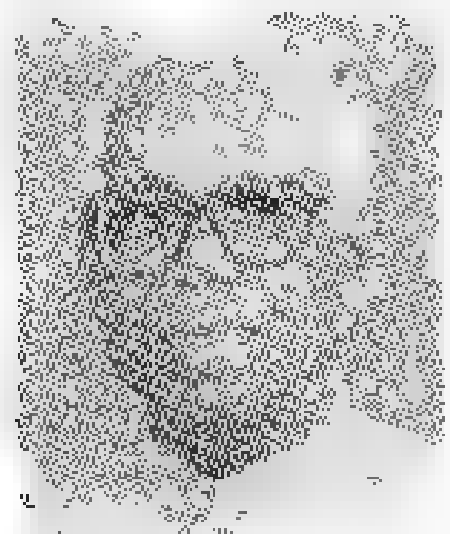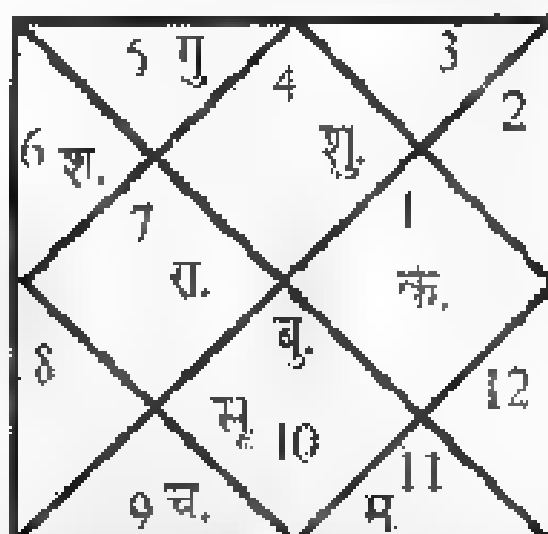
जन्म-4.12.1921 समय-13.00, स्थान-कोचीन।

अरविंद मुफ्तलाल

5 म. 4 के. 3 2 6 श. गु. 7 1 बु 8 12 9 10 11 सू. रा. च शु.

श्रीमति सोनिया गांधी

5 4 च. 3 2 6 श. गु. 1 7 गु शु. 8 बु सू. 12 के. 10 11 9

जन्म -9.12 1946, समय 21.30 बजे, स्थान तुरीन। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की धर्मपत्नी श्रीमति सोनियां गांधी कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष पद पर आरुढ होकर सत्ता की सर्वोच्च कमान को हाथ में संभाले हुए, भारत को कुशल नेतृत्व दे रही हैं।

सी.पी. कृष्णानेयर

5 4 चं. 3 रा. 2 6 श. गु. 7 1 8 सू. 12 शु म. .0 के. 9 11 बु.

होटल उद्योगपति, जन्म 9 फरवरी 922, समय 17.02

श्री वीरेन्द्र सहवाग

5 श.	4 गु.	3	2 च.
6 रा		1	
7 बु. सू. शु. म.			12 के.
8	9	10	11

श्री कुमार मंगल बिड़ला

5 चं.	4 गु. शु.	3 बु.	2 सू.
6 म.		1 रा.	
7 के.			12 श
8	9	10	11

शीर्षस्थ उद्योगपति, जन्म 14 जून 1967, समय 8.45

सिंह लग्नफल

अनुक्रमणिका

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागो में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगो में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिष के लिए किया गया है,[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का सशोधन है।[6] उदाहरणार्थ "कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार स एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवें, फाल्गुण पौर्णमास में

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मल चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।। पाणिनी शिक्षा श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम् फ. ज्यो वि. वृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम्
   -इति वेदांग ज्योतिषम् शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद ब्रतमीपासक "ज्योतिषविवेक (पृ. 4 गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वाग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1

दीक्षित होव' इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुतिवाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषको को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहते हैं कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोने चाहिए? फसल कैसी होगी। वगैरा वगैरा हिन्दू षोडश सस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल,-मुहूर्त में ही किए जाते है। श्रुति कहती है

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा:।

यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवा कुर्वत॥1॥[2]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणा रहित नक्षत्ररहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय लगाकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग मे प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'ज्योतिस्' मे 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीनों शब्द व्युत्पन्न होते है। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र है। अमरकोष की टीका मे व्याकरणाचार्य भरत ने

1. एकाष्टकाया दीक्षरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षरन् तैत्तरीय संहिता 6/4/8/।
2. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
3. ज्योतिषानी दिवाकर 'पुमानपुमक दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोष 1929 पृ. स. 536
4. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. स. 321)

ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[1]

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्यौतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[2]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद' कहा गया है।[3]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों मे मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया।[4] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[5]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमें **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसापूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है। वस्तुतः

---

1. शब्द कल्पद्रुम खण्ड 2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 196 पृ. स. 550
2. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
3. वाचस्पत्यम भाग 4 चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
5. वैदिक सम्पत्ति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
6. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते। शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते। पाणिनीय शिक्षा श्लोक 41 42
7. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa&(Pub 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada POONA CITY page-3

फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए. कहा भी है—यो ज्योतिष वेद स वेद याज्ञान्[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।
उषरे वापित बीज, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है, कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत् स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत, अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रर्कौ यत्र साक्षिणौ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चन्द्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की भ्रमान्ति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्त शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध श्री शिवराज, ई. 1919, आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ।
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप चन्द्रशेखरन्, पृष्ठ 5, मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलटपुलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान् व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।**[5]

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन 1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ठ 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/24
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्या यथा नभः।
   तथा सांवत्सरो राजा भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि। बृहत्संहिता अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी को शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ो रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है तो बीच रास्ते में आप मारे जाएगे ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो बरसात तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक बरसात के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं.

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने से हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं

सच तो यह है कठिनाई के क्षणो में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत तुल्य उपादेय है घोर कठिनाई के क्षणो में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर मस्जिद या गिरजाघरो मे, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते है। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को. स्वयं वराह मिहिर ने कहा है

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैववित् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो शूद्र म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो। इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है, पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से भी नहीं रोकता, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।

मेरे निजी शब्दों में **'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्‌घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'**

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

□□□

---

1. वक्री ग्रह (प्रकाशन 1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ट 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
तथा वेदानधीतोऽपिज्योतिषशास्त्र बिना द्विजः॥–वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/ पृ. 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपा महान लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी परमज्योति है लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं न योगो नैन्दव बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है। 5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अचलों में जनश्रुतियों के आधार पर **लावणी** में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदडी ग्राम के राजज्योतिषी प. भगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नो मे जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप मे संकलित है जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है, प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो **मेषलग्न** में, क्रोध युक्त और महाविकट
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता **वृषभ लग्न**।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के दखे सदा नर, उनके रहती बीमारी,
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुंसक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न**
मकरलग्न मन्द बुद्धि के अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना मृत्यु लोक मे बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेंडेन्ट (Ascendant) कहते है, इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा मे एक ''समय'' विशेष के परिमापन का नाप है जो लगभग दो घटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते है वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है लग्न कुण्डली को जन्माग भी कहते हैं। क्योंकि ''लग्न'' का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते है। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशो मे Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है वस्तुत: आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है और दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह

का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही ''द्वादश घर'' या ''बारह भाव'' कहलाते है। इसका ऊपरी मध्य घर जहा सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली के अनुसार सीधे पूर्व की ओर है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे ''लग्न'' कहते है। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों मे पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटो मे एक घर से दूसरे घर मे जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय मे हुआ था।

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	. 5.30	2.12	पूर्व
10	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	..48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओ की जानकारी आवश्यक है।
1. जन्म तारीख 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एव भारतीय मानक समय मे दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न को स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहा से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्न देहो वर्ग षट्कोऽगानि" लग्न कुण्डली को मानव का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार-

यथा तनूत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

विना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल पुष्प पत्र एव पराग प्रक्रियाओ की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एव फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि-"**लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्**"

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

दाया नेत्र, 2
बाया नेत्र 12
दाहिनी भुजा कधा दोनों
सिर चेहरा 1
11 पिण्डली
4 वक्षस्थल छाती हृदय
हृदय वक्षस्थल सीना 10
5 दाया पैर
7 गुप्तेन्द्री गुदा लिंग
9 जांघ
6 कमर
पैर 8 बाया

जिसमे लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक "**ज्योतिष और आकृति विज्ञान**" पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन उन ग्रहो के स्वभाव व चरित्र में मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली मे कालपुरुष का जो भाव विकृत एव पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा यह निश्चित

द्वितीय भाव
द्वादश भाव
तृतीय भाव
प्रथम भाव
एकादश भाव
चतुर्थ भाव
दशम भाव
पंचम भाव
सप्तम भाव
नवम भाव
षष्ठ भाव
अष्टम भाव
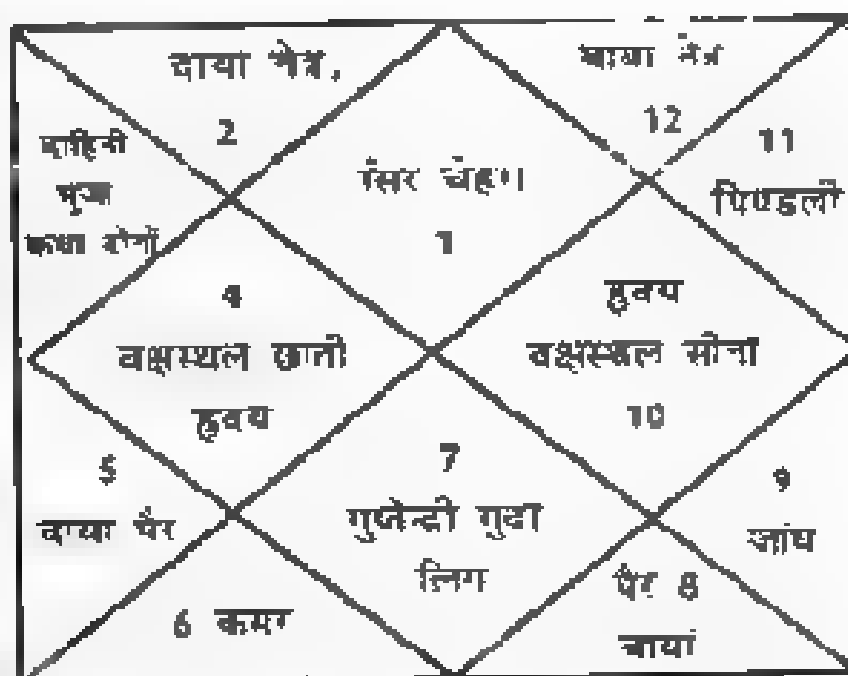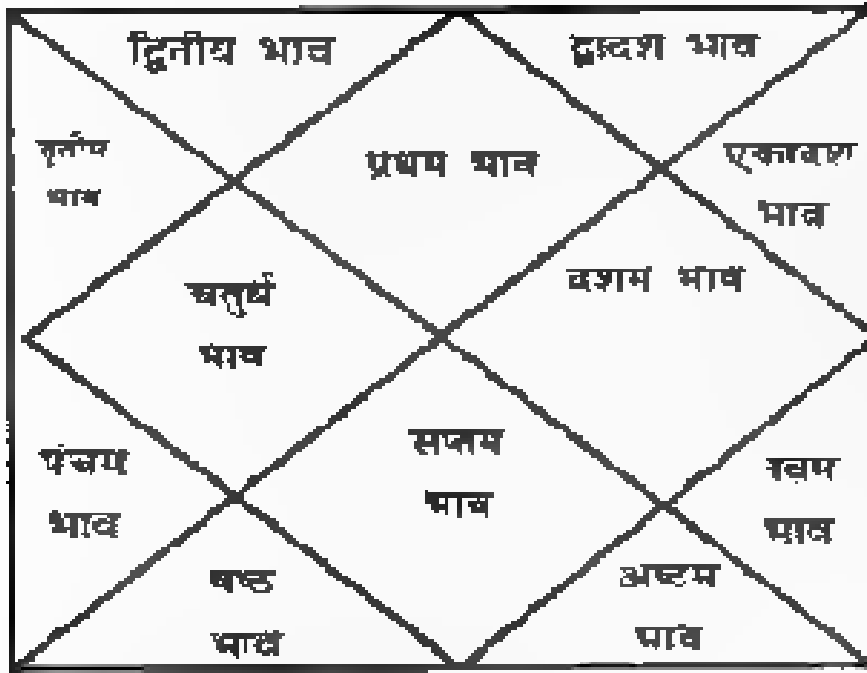
है। अत. अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जायेगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाए से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर मे क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थो में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।

द्रव्य
व्यय
पराक्रम
देहं
लाभ
सुख
राज्य
सुतौ
कलत्र
भाग्यं
शत्रु
वृत्ति

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्य राज्य पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पाचवें में सन्तान एव विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनमत्र मिथ्या॥

विना विलग्न परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्॥

जिस प्रकार स्वय के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्य विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधै।

तत्फल विलयं याति ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

'ज्योतिर्विदभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।8॥

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामो मे बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए॥9।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रद स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफल विचिंत्यम्।

अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्ट॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सम्पूर्ण फल की मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है॥10॥

❑❑❑

सिंहलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

रोहिणेय सितौ पापौ कुजजीवौ शुभावहौ।
प्रभवेद्योगं मात्रेण न शुभ कुजशुक्रयोः॥17॥
(गुरु शुक्रयोः)
वन्ति सौम्यादवः पापा मारकत्वेन लक्षितः।
एवं फलानि वेद्यानि सिंहजस्य मनीषिभिः॥18॥

6 5 4 3
7 सिंह
8 2
9 1
11
10 12
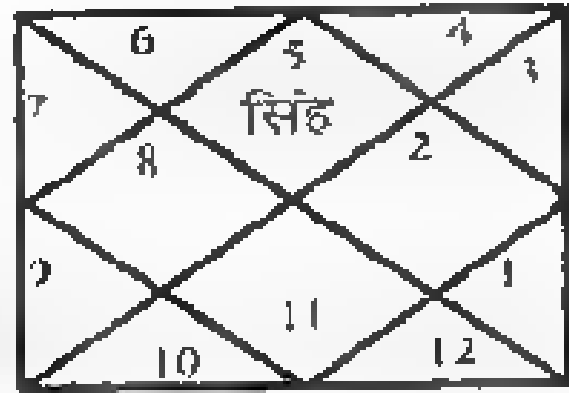
दूसरा पाठ

मन्दसौम्यसिता पापाः कुज एव शुभावहः।
प्रभवेद्योगमात्रेण न शुभ गुरुशुक्रयोः॥12॥
गुरु युक्ता यदा भौमो विशषफलदायकः।
(बुधः) मंदः साक्षान्न हस्तास्थान् मारकत्वेन लक्षितः॥20॥
वन्ति सौम्यादयः पापा मारकत्वेन लक्षितः।
एवं फलानि वेद्यानि सिंहजस्य मनीषिभिः॥21॥

पहला पाठ

बुध और शुक्र ये पाप फल उत्पन्न करने वाले हैं, जिसका कारण बुध एकादश स्थान का और द्वितीय स्थान का स्वामी होता है. मंगल केन्द्र और त्रिकोण का अधिपति होने से शुभ फलदायक है. शुक्र मगल का योग शुभ नहीं होता। गुरु मंगल का योग विशेष शुभ फलदायक है। बुधादि उपरोक्त पाप फलदायक ग्रह अपनी दशान्तर्दशाओं में मनुष्य को मारते (मृत्यु देते) हैं।

द्वितीय पाठ

सिंहलग्न हो तो शनि, बुध, शुक्र अशुभ फल देते है। अकेला मंगल मात्र शुभ फल देता है। गुरु शुक्र का केवल योग शुभ फलदायक नहीं होता। गुरु मंगल योग यदि हो तो विशेष फलदायक होता है। बुध मारक लक्षणों से युक्त हो तो भी स्वयं मारक नहीं होता। कुछ स्थानो में बुध की जगह मंद यानि शनि ऐसा पाठ है। मारक लक्षणों से युक्त ऐसे बुधादि ग्रह मारक होते है। सिंहलग्न मे जन्म हो तो ज्ञाताओं को इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना चाहिये

स्पष्टीकरण—वास्तविक कर्क और सिंहलग्न में शुभाशुभ ग्रह एक ही हैं। परन्तु पहले पाठ में शुक्र यदि मंगल से युति करे तो शुभ फल नहीं देते ऐसा कहा है यह बराबर है, कारण चतुर्थेश एवं भाग्येश मंगल को त्रिषडायपति (और दशमेश) शुक्र मिलता है। वैसे ही शुक्र दशम स्थान (केंद्र का) का अधिपति है। "केन्द्राधिपत्य दोषस्तु बलवान गुरु शुक्रयो" इस नियम के अनुसार शुक्र को दुय्यम (डबल) अशुभत्व का अधिकार प्राप्त हुआ। इसके अलावा शुक्र मंगल का शत्रु है। "भावार्थरत्नाकर" ग्रंथ में श्री रामानुजाचार्य ने कहा है कि सिंहलग्न को शुक्र और मंगल के दशमेश नवमेश होने पर भी इनका योग राजयोग के फल नही देते। पहले पाठ में शनि का विचार ही नहीं किया गया है और दूसरे पाठ में कुछ प्रतियों मे बुध मारक लक्षणो से युक्त होने पर भी स्वयं मारक नहीं होता। वास्तविक बुध एकादश और द्वितीय स्थान का अधिपति है और शनि षष्ठ और सप्तम स्थानों का स्वामी है। द्वितीय और सप्तम ये मारक स्थान है। उसी प्रकार षष्ठ और एकादश ये त्रिषडाय स्थान हैं। रवि और चंद्रमा को विवेचन में पूर्णतः स्थान नही है। मंगल भाग्याधिपति और चतुर्थाधिपति होने से श्लोक 11 के अनुसार अकेला राजयोग करने मे समर्थ है। गुरु शुक्र का योग शुभ फलदायक नहीं होता कारण शुक्र तृतीयाधिपति और दशमाधिपति और गुरु पंचमाधिपति और अष्टमाधिपति होने के कारण से और कोई भी ग्रह अष्टमेश से युक्त हो तो वह दोषी होता है ऐसा ग्रंथ में कहा गया होने से यह योग दोषकारक माना गया है. सूर्य लग्नेश है और वह लग्न (केन्द्र-त्रिकोण) का स्वामी होकर शुभ फल देने वाला है। चंद्रमा व्ययेश और अशुभ फल देने वाला होता है इसलिये उसका विवेचन नहीं किया गया है। परन्तु श्लोक 8 अनुसार सूर्य और चंद्रमा क्रमशः कर्क और सिंहलग्न के लिए द्वितीयेश द्वादशेश होते हैं परंतु दोनों ग्रह को एक ही राशि मे उन्हें सम माना गया है और वे जिन स्थानो में स्थित हो उन स्थानों के अनुरोध से फल करते हैं अर्थात् उन स्थानों के अनुसार शुभाशुभ फल देते हैं

सिंहलग्न के लिए शुभाशुभ योग–

1. **शुभ योग–** मगल निसर्गतः पाप ग्रह होने पर भी नवम (त्रिकोण) का अधिपति होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ माना गया है। वह चतुर्थ स्थान का (केन्द्र स्थान का) स्वामी भी है इसलिए श्लोक 7 के अनुसार शुभ होने से शुभ फल देने वाला है।
2. **शुभ योग–** मंगल तथा गुरु चतुर्थ और पचम स्थानों के अधिपति हैं। गुरु अष्टम स्थान का स्वामी भी है। यहा गुरु पचम और अष्टम स्थान का अधिपति है और उसको नवम स्थान के अधिपति से साहचर्य योग के कारण शुभ माना गया है और वह शुभ फल देने वाला है।
3. **शुभ योग–** सूर्य लग्न का अधिपति होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फल देने वाला है।

सिंहलग्न के लिए अशुभ योग–

1. **अशुभ योग–** बुध द्वितीय (मारक) स्थान का स्वामी होकर एकादश स्थान का स्वामी भी है। श्लोक 6 के अनुसार वह अशुभ होने से अशुभ फल देने वाला है।
2. **अशुभ योग–** शुक्र तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ गिना गया है और दशम केन्द्र का स्वामी होने से श्लोक 7 और 10 के अनुसार दूषित है। इसलिए वह अशुभ फल देने वाला है।
3. **अशुभ योग–** (पाठान्तर के अनुसार) शनि षष्ट स्थान का स्वामी होने से अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला है।

निष्फल योग– 1. मगल+शनि, 2. गुरु+शुक्र 3 गुरु+शनि (दोनों ही दूषित होते हैं

सफल योग– 1. सूर्य+मंगल, 2. सूर्य+गुरु (सदोष), 3. मगल+गुरु (सदोष), 4. मंगल+शुक्र (सदोष), 5. मगल अकेला शुभ फलदायक है कारण वह नवम और चुतर्थ स्थन (त्रिकोण केन्द्र) का स्वामी है।

❑❑❑

सिंहलग्न एक परिचय

1. लग्नेश - सूर्य
2. पराक्रमेश, राज्येश - शुक्र
3. सुखेश, भाग्येश - मगल
4. पंचमेश, अष्टमेश - गुरु
5. षष्ठमेश, सप्तमेश - शनि
6. खर्चेश - चंद्र
7. धनेश, लाभेश - बुध
8. त्रिकोणाधिपति - 5-गुरु, 9-मगल
9. दु:स्थान के स्वामी - 6-शनि, 8-गुरु, 12-चद्र
10. केन्द्राधिपति - 1-सूर्य, 4-मगल, 7-शनि 10-शुक्र
11. पणकर के स्वामी - 2-बुध, 5, 8-गुरु, 11-बुध
12. आपोक्लिम - 3-शुक्र, 6-शनि, 9-मगल, 12-चद्र
13. त्रिकेश - 6-शनि, 8-गुरु, 12-चद्र
14. उपचय के स्वामी - 3-शुक्र, 6-शनि, 10-शुक्र, 11-बुध
15. शुभ योग - 1. मगल, 2. मगल, 3. सूर्य, 4. गुरु
16. अशुभ योग - 1. बुध, 2. शुक्र, 3. शनि
17. निष्फल योग - 1. मगल+शनि, 2. गुरु+शुक्र, 3. गुरु+शनि
18. सफल योग - 1. सूर्य+मगल, 2. सूर्य+गुरु (सदोष)
    3. मंगल+गुरु (सदोष),
    4. मंगल+शुक्र (सदोष) 5. मगल अकेला
19. राजयोगकारक - मंगल व गुरु

20.	**मारकेश**	–	शनि
21.	**पापफलद**	–	गुरु, शनि और शुक्र

विशेष– सिंहलग्न में भी कर्कलग्न की तरह मंगल पूर्ण योगकारक है। शनि मारकेश है, परन्तु इस लग्न में चंद्रमा साहचर्य से शुभ व अशुभ दोनों फल देता है।

❑❑❑

सिंहलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	—	सिंह
2.	लग्न चिह्न	—	शेर
3.	लग्न स्वामी	—	सूर्य
4.	लग्न तत्त्व	—	अग्नि तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	—	स्थिर
6.	लग्न दिशा	—	पूर्व
7.	लग्न लिंग व गुण	—	पुरुष, सतोगुणी
8.	लग्न जाति	—	क्षत्रिय
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव		क्रूर स्वभाव, पित्त प्रकृति
10.	लग्न का अंग	—	हृदय
11.	जीवन रत्न	—	माणिक्य
12.	अनुकूल रंग	—	चमकीला श्वेत व पीला, भगवा
13.	शुभ दिवस	—	रविवार, बुधवार
14.	अनुकूल देवता	—	सूर्य
15.	व्रत, उपवास	—	रविवार
16.	अनुकूल अंक	—	एक
17.	अनुकूल तारीखें	—	1 18/19 28
18.	मित्र लग्न	—	मिथुन, कन्या, मेष व धनु
19.	शत्रु लग्न	—	वृष, तुला, मकर व कुम्भ

20.	व्यक्तित्व	–	प्रबल पराक्रमी, महत्त्वाकांक्षी, अधिकार प्रियता
21.	सकारात्मक तथ्य	–	खुले दिल-दिमाग वाला, उदारमना, गर्मजोशी
22.	नकारात्मक तथ्य	–	घमंडी, अति आत्मविश्वास, अति महत्त्व का प्रदर्शन

❑❑❑

सिंहलग्न के स्वामी सूर्य का वैदिक स्वरूप

ऋग्वेद में एक जगह आश्चर्य के साथ पूछा गया कि सूर्य अपने स्थान पर दृढ़ कैसे है, वह गिर क्यों नहीं जाता?[1] उत्तर है कि सूर्य स्वयं विश्व का विधान का संरक्षक है, उसका चक्र नियमित, अपरिवर्तनीय, सार्वभौम नियम का अनुसरण करता है, विश्व का केन्द्र स्थान है, वह जंगम और स्थावर सभी की आत्मा है। (ऋ. 1/115/1) ज्योतिष में सूर्य को काल की आत्मा माना गया है।

सूर्य, समय निर्माता के रूप में 360 दिन का वर्ष बनाते हैं। जो कि वैदिक जीवन का सामान्य संवत्सर है। यह दिनों (वारों) की गणना और उसका संवर्द्धन भी करता है

इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः।
सोम राजन् प्रण आयूंषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि॥

—ऋग्वेद 8/48/7

ऋग्वेद में सूर्य ग्रहण के बारे में अनेक संदर्भ मिलते हैं, यह कहा गया है कि 'स्वर्भानु' ने अंधकार द्वारा सूर्य को ग्रस लिया, अत्रि ने फिर सूर्य को बाहर निकाला[2]। अथर्ववेद में सूर्य ग्रहण के अनेक प्रसंग आते हैं।[3]

ऋग्वेद में सूर्य की पुत्री को 'सूर्या' कहा गया है।[4] उसे प्रजापति और सविता की पुत्री कहा गया है। उसे अश्विनों की पत्नी कहा गया है। किन्तु सोम से भी उसके

---

1. अनायतो अनिबद्धः कथायं न्यङ्ङुत्तानोऽव पद्यते न।
   कया याति स्वधया को ददर्श दिवः स्कम्भः समृतः पाति नाकम् ॥ ऋग्वेद 4/13/5
2. य वै सूर्य स्वर्भानु स्तमसाविध्यदासुरः।
   अत्रयस्तमन्वविन्दन् नह्य न्ये अशक्नुवन् ॥ ऋग्वेद 5/40/9
3. अ. 19/9/10, 13/2/4, 12/36, शतपथ ब्राह्मण 4/3/2।
4. आ वां रथं दुहिता सूर्यस्य कार्ष्मेवातिष्ठदर्वता जयन्ती
   विश्वे देवा अन्वमन्यन्त हृद्भिः समु श्रिया नासत्या सचेथे । ऋग्वेद 1/116/17

विवाह का उल्लेख मिलता है।[1] ऋग्वेद के बारह सूक्तों में सूर्य की स्तुति की गई है। इसका तेजत्व सबसे अधिक उस समय विकसित होता है जब यह आकाश के मध्य में चढ़ जाता है।[2]

चक्षु और सूर्य का घनिष्ठ संबंध है। यह विराट पुरुष का चक्षु स्थानीय है।[3] एक जगह इसको वरुण का चक्षु भी कहा गया है।[4]

यह सूर्य (आदित्य) छः माह दक्षिणायन रहता है और छः माह उत्तरायण में[5] ऋतुओं का नियमन करके (यह सूर्य) क्रमशः पृथ्वी की पूर्वादि दिशाओं का निर्माण करता है।[6] ऋग्वेद में अलंकारिक भाषा में यह बताया गया है कि सूर्य के रथ में सात घोड़े हैं।[7] वहीं यह भी स्पष्ट कर दिया कि वस्तुतः सूर्य के घोड़े इत्यादि कुछ भी नहीं, वे सूर्य की सात किरणें हैं।[8]

वैदिक काल में सूर्य संक्रान्तियों (बारह राशियों) का स्पष्ट उल्लेख इस प्रकार मिलता है सत्यभृत (आदित्य) का बारह आरों वाला चक्र भूलोक के चारों ओर सतत भ्रमण करते हुए भी नष्ट नहीं होता।[9]

इस बारह परिधियों (12 सूर्य संक्रान्ति), एक चक्र (वर्ष) और तीन नाभि (तीन ऋतु गर्मी, सर्दी, वर्षा) इन्हें कौन जानता है? उस चक्र (वर्ष) में शंकु की तरह 360 चचल आरे (दिन) लगाये हुए हैं।[10]

---

1. उध्वाधीतिः प्रत्यस्य प्रयाम न्यधायि शस्मन्त्समयन्त आ दिशः।
   स्वदामि धर्मं प्रति यन्त्यूतम आ वामूर्जानी रथमश्विनारूहत् ॥ ऋग्वेद 1/119/2
2. चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।
   आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च ॥ ऋग्वेद 1/115/1
   इषिरेण ते मनसा सुतस्य भक्षीमहि पित्र्यस्येव रायः
   सोम राजन् प्रण आयूंषि तारीरहानीव सूर्यो वासराणि ॥ ऋग्वेद 4/48/7
3. चक्षोः सूर्यो अजायत यजुर्वेद-अ. 31/12
4. उदुत्यच्चक्षुर्महि मित्रयोरां एति प्रियं वरुणयोरदब्धम्।
   ऋतस्य शुचि दर्शतमनीकं रुक्मो न दिव उदिता व्यद्यौत् । ऋग्वेद 6/51/1
5. तस्मादादित्यः षण्मासो दक्षिणेनैति षडुत्तरेण ॥ तैत्तरीय संहिता. 6/5/3
   कालात्म दिनकृन्मनश्च हिमगुः —बृहज्जातक अ. 2/1
6. पूर्वामनु प्रदिशं पार्थिवानामृतून् प्रशासद्विदधावनुष्ठु॥ ऋग्वेद संहिता । 1/95/3
7. अमी य सप्तरश्मयः ऋग्वेद 1/105/9
8. सूर्यस्य सप्तम रश्मिभिः ऋग्वेद 8/72/16
9. द्वादशारं न हि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परिद्यामृतस्य ॥ ऋग्वेद 1/164/11
10. द्वादश प्रधश्चक्रमेकं त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत।
    तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः ॥ ऋग्वेद 1/164/48

वैदिक ऋषियों ने चिंतन करते हुए ऐतरेय ब्राह्मण में कहा- 'वह सूर्य न तो कभी अस्त होता है न उदय होता है। यह जो अस्त होना है, वह सचमुच दिन के अंत में जाकर अपने को उलटा घुमाता है। इधर रात करता है और उधर दिन इस प्रकार जो सवेरे उदित होता है वह (वस्तुत) सूर्य कभी भी अस्त नहीं होता

यह सूर्य अपने प्रकाश से चंद्रमा को तेजस्वी करता है।[2] इतना ही नहीं ऋग्वेद 4/28/23, 5/23/4, 10/138/4, में सूर्य ग्रहण के सिद्धांतों का प्रतिपादन भी मिलता है।

❑❑❑

---

1. स वा एष न कदाचनास्तमेति नोदेति तं यदस्तमेतीति मन्यन्तेऽह्न एव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यते रात्रिमेवा वस्तात् कुरुतेऽहः परस्तादथ यदेनं प्रातरुदेतीति मन्यन्ते रात्रेरेव तदन्तमित्वाथात्मानं विपर्यस्यन् हरेवावस्तात् कुरुते रात्रिं परस्तात् स वा एष न कदाचन निम्लोचति—ऐतरेय ब्राह्मण 14/6
2. यमादित्या अं (शुं) शुभाप्याययन्ति—तैत्तरीय संहिता 2/4/14

सूर्य का पौराणिक स्वरूप

सूर्य देवता का एक नाम 'सविता' भी है, जिसका अर्थ है -सृष्टि करने वाला (सविता सर्वस्य प्रसविता–निरुक्त 10/3')। ऋग्वेद में बताया गया है कि आदित्य-मण्डल के अंत:स्थित सूर्य देवता सबके प्रेरक अंतर्यामी, परमात्म स्वरूप हैं। ये ही सम्पूर्ण स्थावर और जन्म के कारण हैं (ऋक्, 1/115/1)।

मार्कण्डेय पुराण ने इस तथ्य का उपबृहण करते हुए कहा है कि सूर्य ब्रह्म स्वरूप है। सूर्य से जगत् उत्पन्न होता है और उन्हीं में स्थित है। इस तरह यह जगत् सूर्य स्वरूप है। सूर्य सर्वभूतस्वरूप सर्वात्मा और सनातन परमात्मा है (मार्क. पु. 18/12 14)।

वेद ब्रह्म स्वरूप हैं, अतः सूर्य देवता भी वेद स्वरूप हैं। इसलिए इन्हें 'त्रयीतनु' कहा गया है। पुराण ने इसके स्पष्टीकरण में एक इतिहास प्रस्तुत किया है। जब ब्रह्मा अण्ड का भेदन कर उत्पन्न हो गये, तब उनके मुख से 'ॐ' यह महाशब्द उच्चरित हुआ। यह ओंकार परब्रह्म है और यही सूर्य देवता का शरीर है

आद्यन्तं यत्परं सूक्ष्ममरूपं परमं स्थितम्।

ओमित्युक्त मया विप्र तत्परं ब्रह्म तद्वपु:॥

(मार्क 98/27)

इस ओंकार से पहले 'भू:' फिर 'भुव:' और बाद मे 'स्व:' उत्पन्न हुआ। ये तीन व्याहृतिया सूर्य के सूक्ष्म स्वरूप हैं। फिर इनसे 'मह:', 'जन:', 'तप:' और 'सत्यम्' उत्पन्न हुए, जो स्थूल से स्थूलतर और स्थूलतम होते चले गये इस तरह 'ॐ' रूप शब्द ब्रह्म से भगवान् सूर्य का स्वरूप प्रकट हुआ (मार्क. पु. 98/22-24)।

ब्रह्मा के चारों मुखों से चार वेद आविर्भूत हुए जो तेज से उद्दीप्त हो रहे थे। ओंकार के तेज ने इन चारों को आवृत कर लिया इस तरह ओंकार के तेज में मिलकर चारों एकीभूत हो गये। यही वैदिक तेजोमय सूर्य देवता हैं। यह सूर्य रूप तेज सृष्टि में सबसे पहले (आदि में) उत्पन्न हुआ। इसलिये इनका नाम 'आदित्य' पड़ा।

इस तरह यह सूर्य विश्व का अव्ययात्मक कारण है (मार्क. पु. 99/1-14)। ऋक यजुः और सामनामवाली त्रयी ही प्रातःकाल, मध्याह्नकाल और अपराह्णकाल में तपती है (मार्क. पु. 99/15)।

इस प्रकार भगवान सूर्य वेदात्मा, वेदसंस्थित और वेद-विद्यामय है।

ततेव भगवान् भास्वान् वेदात्मा वेदसंस्थितः।

वेदविद्यात्मकश्चैव परः पुरुष उच्यते॥

(मार्क. 99/20)

यही भगवान् भास्कर ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र बनकर सृष्टि, स्थिति और संहार करते हैं (मार्क. पु. 99/21)। हम मनुष्य उन्हीं की संतान हैं

'तस्य वा इयं प्रजा यन्मनुष्याः'

(तै. सं. 6/5/6/9)

अदिति के पुत्र रूप में– सनातन विधान के अनुसार ब्रह्मा ने देवताओं को यज्ञ भाग का भोक्ता तथा त्रिभुवन का स्वामी बनाया था, किंतु आगे चलकर इनके सौतेले भाई दैत्यों, दानवों एवं राक्षसों ने संगठित होकर देवताओं के विरुद्ध युद्ध ठान लिया। अंत में देवताओं को पराजित करके इनके पदों और अधिकारों को छीन लिया। देवताओं की माता अदिति अपने पुत्रों की दुर्गति देखकर बहुत उद्विग्न हो गयीं। त्राण पाने के लिये वे भगवान् सूर्य की उपासना करने लगीं। निराहार रहती थीं। उनकी तपस्या से भगवान् सूर्य प्रसन्न हो गये। उन्होंने वरदान दिया कि 'अपने सहस्र अंशों के साथ मैं तुम्हारे गर्भ से अवतीर्ण होकर तुम्हारी मनःकामना पूर्ण करूंगा।' भगवान् ने शीघ्र ही अपने वरदान को फलित किया, अपनी क्रूर दृष्टि से देखकर शत्रुओं का विध्वंस कर वेदमार्ग को फिर से स्थापित कर दिया। देवताओं ने अपने-अपने पद और अधिकार प्राप्त कर लिये। भगवान् सूर्य अदिति के पुत्र हुए, इसलिये आदित्य कहे जाने लगे - **'अदितेपरत्यं पुमान् आदित्यः।'** इसी अर्थ में, वेद में आदित्य (ऋ. 1/50/13) तथा आदितेय (ऋ. 10/88/11) शब्द भी आते हैं।

वर्ण– सूर्य देवता का वर्ण लाल है।

वाहन– इनका वाहन रथ है, जिस प्रकार भगवान् सूर्य वेद स्वरूप हैं, उसी प्रकार उनका रथ भी वेद स्वरूप है। इनके रथ में एक ही चक्र है, जो संवत्सर कहलाता है। इस रथ में मास स्वरूप बारह आरे हैं। ऋतु रूप छः नेमियां हैं और तीन चौमासे रूप तीन नाभियां हैं (श्रीमद्भा. 5/21/13)। इस रथ में अरुण नामक सारथि ने गायत्री आदि छन्दों के सात घोड़े जोते रखे हैं (भा. 5/21/15, ऋक् 1/115/3)। सारथि का मुख भगवान् सूर्य की ओर रहता है। इसके साथ साठ हजार

बालखिल्य स्वस्तिवाचन और स्तुति करते हुए चलते हैं ऋषि गन्धर्व, अप्सरा, नाग, यक्ष, राक्षस और देवता आत्म रूप सूर्य नारायण की उपासना करते हुए चलते हैं.

परिवार– भगवान् सूर्य की दो पत्नियां हैं– संज्ञा और निक्षुभा। संज्ञा के सुरेणु, राज्ञी, द्यौ, त्वाष्ट्री एवं प्रभा आदि अनेक नाम हैं तथा छाया का ही दूसरा नाम निक्षुभा है। संज्ञा विश्वकर्मा त्वष्टा की पुत्री है भगवान् सूर्य को संज्ञा से वैवस्वतमनु, यम यमुना, अश्विनीकुमारद्वय और रैवन्त तथा छाया से शनि, तपती विष्टि और सावर्णिमनु–ये दस संतानें प्राप्त हुई

शक्तियां– इडा सुषुम्ना, विश्वार्चि, इन्दु, प्रमर्दिनी, प्रहर्षिणी, महाकाली, कपिला प्रबोधिनी नीलाम्बरा, घनान्तःस्था और अमृता ये भगवान् सूर्य की बारह शक्तियां हैं (अग्नि पु. 51/8–9)।

आयुध– चक्र, शक्ति, पाश, अंकुश सूर्य देवता के प्रधान आयुध हैं (श्रीतत्वनिधि)।

सूर्य के अधिदेवता शिव (ईश्वर) हैं और प्रत्यधि देवता अग्नि है। सूर्य देवता का ध्यान इस प्रकार करना चाहिये–

पद्मासनः पद्मकरः पद्मगर्भः समद्युतिः।
सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च द्विभुजः स्यात् सदा रविः॥

(मत्स्यपु. 94/1)

'सूर्य देव की दो भुजाएं हैं, वे कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं उनके दोनों हाथो में कमल सुशोभित रहते हैं उनकी कान्ति कमल के भीतरी भाग की-सी है और वे सात घोड़ों पर सात रस्सियों से जुड़े रथ पर आरूढ़ रहते हैं।

सूर्य का पौराणिक स्वरूप– 'सूर्य देव की दो भुजाएं हैं, वे कमल के आसन पर विराजमान रहते हैं। उनके दोनों हाथों में कमल सुशोभित रहते हैं। उनके सिर पर सुंदर स्वर्ण मुकुट तथा गले में रत्नों की माला है। उनकी कान्ति कमल के भीतरी भाग की सी है और वे सात घोड़ो पर सात रस्सियों से जुडे रथ पर आरूढ़ रहते हैं।

सूर्य देवता का एक नाम 'सविता' भी है, जिसका अर्थ है सृष्टि करने वाला सविता सर्वस प्रसविता (निरुक्त 10/31)। ऋग्वेद में बताया गया है कि आदित्य-मण्डल के अंतःस्थित सूर्य देवता सबके प्रेरक, अंतर्यामी, परमात्म स्वरूप हैं। मार्कण्डेय पुराण के अनुसार सूर्य ब्रह्मस्वरूप हैं सूर्य से जगत् उत्पन्न होता है और उन्ही में स्थित है। सूर्य सर्वभूत स्वरूप परमात्मा हैं, यही भगवान् भास्कर, ब्रह्मा, विष्णु और रूद्र बनकर जगत् का सृजन पालन और संहार करते हैं। सूर्य नवग्रहो में सर्वप्रमुख देवता है। वेद ब्रह्म स्वरूप है, अतः सूर्य देवता भी वेद स्वरूप है। इसलिए इन्हें 'त्रयीतनु' कहा गया है।

जब ब्रह्मा अण्ड का भेदन कर उत्पन्न हुए तब उनके मुख से ओ३म् यह महाशब्द उच्चरित हुआ। यह ओंकार परब्रह्म है और यही भगवान् सूर्य देव का शरीर है।

आद्यन्त यत्परं सूक्ष्मरूपं परमं स्थितम्।
ओमित्युक्तं मया विप्र तत्परं ब्रह्म तद्वपुः॥

इस ओंकार से पहले 'भूः' फिर 'भुवः' और बाद में 'स्वः' उत्पन्न हुआ। ये तीन व्याहृतियां सूर्य के सूक्ष्म स्वरूप हैं फिर इनसे 'महः', 'जनः' 'तपः' और 'सत्यम्' उत्पन्न हुए, जो स्थूल से स्थूलतर और स्थूलतम होते चले गये। इस तरह ओ३म रूपशब्द ब्रह्म से भगवान् सूर्य प्रकट हुआ।

ब्रह्मा के चारों मुख से चार वेद आविर्भूत हुए, जो तेज से उद्दीप्त हो रहे थे। ओंकार के तेज ने इन चारों को आवृत कर लिया। इस तरह ओंकार के तेज से मिलकर चारों एकीभूत हो गये। यही वैदिक तेजोमय ओंकार स्वरूप सूर्य देवता है। यह सूर्य स्वरूप तेज सृष्टि के सबसे आदि में प्रकट हुआ, इसलिए इसका नाम आदित्य पड़ा।

भगवान् सूर्य सिंह राशि के स्वामी हैं इनकी महादशा छः वर्ष की होती है। इसकी प्रसन्नता के लिए माणिक्य धारण करना चाहिए तथा गेहूं सवत्सा गाय गुड़ तांबा सोना एवं लाल वस्त्र ब्राह्मण को दान करना चाहिए। सूर्य की शांति के लिए वैदिक मंत्र ''ओ३म् आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।'' पौराणिक मंत्र 'जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।। बीजमंत्र 'ओ३म् ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः' तथा सामान्य मंत्र 'ओ३म् घृणि सूर्याय नमः' हैं इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार एक निश्चित संख्या में जाप करना चाहिए जप की कुल संख्या 7000 तथा समय प्रातः काल है।

अस्तता– सूर्य के समीप जितने अंशों से ग्रहों के आने पर ग्रह अस्त हुए समझे जाते हैं वे निम्न हैं। चंद्र 12 मंगल 17 गुरु 11 शुक्र 9 यदि शुक्र है तो 8 अंश बुध वक्री है तो 12 अंशों तक अस्त होते है.

नीचे व स्वगृह होंगे तो उन ग्रहों का फल टूट जायेगा व अपनी क्षमता खो देंगे जो ग्रह सूर्य के इतने समीप हो जाता है कि 24 घंटे में कभी भी दिखाई न दे वह अस्त कहलाता है इसलिए सूर्य से बैठे ग्रह अस्त उससे 2, 3, 4 स्थानों में शीघ्र गति और 5 से 9 तक वक्री 10 से 12 तक सरल योग कहलाता है।

वक्रता – सूर्य जहां बैठा हो वहां से गिनने पर कोई भी ग्रह 5, 6, 7, 8, 9वां होगा तो वह वक्री होगा चाहे पंचांग में लिखा हो या न हो

वक्री ग्रह– यदि कोई ग्रह अपनी नीच राशि में वक्र होगा तो अपने उच्च का फल देगा। (उत्तरकालामृत के विपरीत राजयोग का यही आधार है।) यदि उच्च राशि में बैठकर वक्र होगा तो शून्य फल देगा।

बलवत्ता– सूर्य मेष राशि में उच्च का होता है। उसके भी 10 अंशों के भीतर परमोच्च का होता है सिंह राशि में स्वगृही होता है सिंह राशि के 15 अंशों तक यह दीप्त रहता है अतः मूल त्रिकोणी कहलाता है 16वें से व कुछ मत से 0 से 20 अंश तक सिंह में मूल त्रिकोणी रहेगा 20 से 30 रहेगा। इसी तरह तुला के 10 अंश तक परम नीच का होगा इसके आगे केवल नीच होगा। दशम भाव में दिग्बली, नवम भाव में हर्षबली बनता है। रवि शुक्र द्वारा पराजित होता है। सूर्य का अपना दृष्टिकोण होगा वार में एक राशि से दूसरी में प्रवेश करते समय मित्र ग्रह के अंशों में बलवान होता है अपने उच्च में सिंह राशि में दोपहर को बलवान होता है।

मित्रादि– सूर्य के मित्र चंद्र, मंगल गुरु बुध सम और शत्रु शनि और शुक्र है। तात्कालिक मित्र बुध गुरु, शुक्र बुध और शत्रु चंद्र, मंगल हैं।

कारक तत्व– रवि 1, 8, 10 भावों का कारक है। नेत्र, पिता, राज्य आत्मा व ज्ञानोदय का कारक है। इसके अलावा शक्ति, अतिक्रूरता, उष्णता, प्रभाव अग्नि, शिव उपासना, धैर्य कांटेदार वृक्ष, राज्य कृपा, कटुता, वृद्धता, गाय भैंस, जमीन, रुचि आत्मविश्वास, ऊंची नजर डरपोक मां का बच्चा, मृत्युलोक, हड्डी, पराक्रम, घास, लम्बे प्रयत्न, जंगल, वन में भ्रमण प्रवास, व्यवहार तपस्या, पित्र, गोलाई, नेत्र रोग, लकड़ी मस्तिष्क के रोग मोती, नारापन आकाश का आधिपत्य, पूर्व दिशा, तांबा रक्ता, लाल कपड़े, खनिज पत्थर, लोक सेवा नदी तट, सैन्य, केसर, मोटी रस्सी।

रवि के रोग– सिर पीड़ा बुखार में वृद्धि, क्षय, अतिसार, हड्डी के रोग, हृदय रोग, कब्ज नेत्र रोग, पित्त में विकार राजदण्ड व ब्रह्मश्राप । 5 8 लग्नों में धन स्थान का 2 6-10 लग्नों में 8वें स्थान का 3 7 11 लग्नों में 12वें स्थान तक 4 8-12 लग्नों में 10वें का छठे स्थान का।

स्वरूप– सिंह की आकृति से मिला जुला चेहरा कुछ चौड़ा व अंडाकार, रौबीला कुछ पीलापन या लालिमा रंग रूप व्यक्ति में चुबकीय आकर्षण होगा। सामान्य मझौला कद, चौड़े व पुष्ट कंधे, पूर्ण विकसित हड्डियां होगी। तेज गति से चलने वाला पतली कमर, कम बोलने वाला, रौबीला व इकहरे बदन का होता है।

गुण– उदार उत्साही रचनात्मक प्रकृति साहसी खुशमिजाज, कुशल प्रबंधक, सत्यनिष्ठ, संवेदनशील दृढ़ निश्चयी अध्ययन चिंतन में लगे श्रेष्ठ पाठक तथा कला व साहित्य प्रेमी। ऊर्जा शक्ति से भरपूर बिना उत्तेजना के सोच समझ कर योजनाबद्ध

तरीकों में काम करने वाला क्षमाशील, मौलिक चिंतन नयी परिस्थिति में स्वयं को ढाल देने में समर्थ ऐसे व्यक्ति डांट डपट से विफल जाते हैं

दोष– अभिमानी अहंकारी व्यर्थ में दूसरे को नीचा दिखाना मिथ्या आडम्बर छोटी-छोटी बात पर भड़कने वाले तुनक मिजाज, कम बोलने वाला।

विशेष– स्वयं अपनी प्रशंसा के इच्छुक व गुणी व्यक्तियों की प्रशंसा करने वाला कुलाभिमान अधिक मात्रा में होवे। अपने कार्य क्षेत्र में उन्नति कर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करें ये लोग सोने के आभूषण कर्त्ता, संगमरमर के पत्थर संबंधित भूगर्भ विज्ञान के कार्यों में सफलता पाते हैं प्रबंध व्यवस्था सरकार के कार्य सेना में अफसर राजनेता उद्योगी होटल के कार्य तकनीकी अनुसंधान पशु प्रजनन, पशु चिकित्सक कृषि अथवा उत्पादों से जीविका पाते हैं। वे अभिनय व खेलकूद में धन व मान भी प्राप्त करते हैं।

अचूक फल

वेशी योग– सूर्य से 2 भाव में चंद्र को छोड़कर ग्रह हो

वासी योग– सूर्य से 12 भाव में चंद्र को छोड़ कर ग्रह हो

उभयचरी योग– सूर्य के दोनों तरफ ग्रह हो।

इन योगों में चंद्र राहु की गिनती नहीं है। ये धनदायक योग हैं शुभ ग्रह हों तो शुभ कार्य में पापग्रह हो तो पापकर्म से दोनों तरफ के ग्रह योग हों तो मिश्र ढंग से यह कमाता है और खाता पीता मध्यम वर्गीय धनाढ्य होता है।

भास्कर योग– सूर्य से दूसरा बुध, बुध से 11 वें चंद्र से 5वां या नवें गुरु हो। इस योग से व्यक्ति धन बलशाली कला प्रेमी व ज्योतिषी बनता है, सुखी रहता है।

बुधादित्य योग– सूर्य+बुध युति से बुधादित्य योग होता है। यह योग व्यक्ति को बुद्धिमान, चतुर व प्रसिद्धि देता है। अध्यापक बैंक अधिकारी लेखाविज्ञ वकीलों में यह ज्यादा पाया जाता है।

राजराजेश्वर योग– मीन का सूर्य, चंद्र कर्क में लाभस्थ हो तो यह प्रबल राजयोग है। व्यक्ति ऐश्वर्य वाला व राजसेवी होता है।

राजभंग योग– तुला के 10 अंश तक सूर्य हो तो दुखी दरिद्री होता है

उन्माद योग– लग्न में सूर्य 7वें मंगल। ऐसा व्यक्ति उन्मादी होता है

भ्रातृनाश योग– 3रे में कुंभ का सूर्य बड़े भाई का नाश करता है।

पिता हानि योग– तीसरे स्वगृही सूर्य+शुक्र शनि की पूर्ण दृष्टि यह छोटे भाई तथा पिता को हानि करे।

जल से मृत्यु– सूर्य+चंद्र नौवें भाव में हो तो उसके पिता की मृत्यु जल से होती है। शुभ दृष्ट हो या न हो।

डॉक्टरी योग– कर्क लग्न हो, सूर्य 2रें भाव पर षष्टेश राहु व शनि के प्रभाव हो तो डॉक्टर बने।

संन्यास योग– कर्क लग्न में सूर्य धनेश तथा चतुर्थेश व चतुर्थ पर द्वादशेश का प्रभाव और द्वादश पर राहु शनि के प्रभाव हो संन्यासी होगा।

गूंगापन या हकलाना– कर्क लग्न में बुधादित्य युति पर राहु शनि व षष्ठेश के प्रभाव। युति में बलवत्ता हो तो ऊँची शिक्षा पेशा प्रोफेसर या अध्यापन कार्य या ज्योतिष होगा।

तृतीयेश होकर सूर्य बली हो तो छोटे भाई उच्च स्तर के बने बाहुबल ज्यादा हो। दीर्घायु हो। सर्वत्र विजयी हो व ससुर उच्च पदस्थ हो, माता का सुख खूब हो।

सुंदर भवन– चतुर्थेश सूर्य बली हो। खुली रोशनी व हवादार मकान में रहे, चतुर्थेश निर्बल हो। राहु शनि का प्रभाव हो तो कई स्थानान्तरण होने व दरिद्र बना रहे।

चोट योग– 5वें भाव में तुला राशि के सूर्य से हड्डियों के रोग व चोट योग बनते हैं।

तेजस्वी योग– मिथुन लग्न में केतु हो तथा सूर्य चौथे, सातवें या दसवें में हो तो व्यक्ति पराक्रमी व तेजस्वी होता है।

श्रेष्ठ सम्पर्क योग– मिथुन लग्न में सूर्य 10 या 11वें भाव में हो तो व्यक्ति उच्च महत्वाकांक्षी व श्रेष्ठतम लोगों से सम्पर्क करेगा,

नृप तुल्य– कर्क लग्न में सूर्य और मंगल की युति 10वें भाव में हो तो राज्य पक्ष प्रबल व स्वयं राजा तुल्य होवे।

राजरोग योग मेष लग्न में सूर्य षष्ठेश युति छठें भाव में या 8वें भाव में हो।

बंध्यास्त्री योग– मेष लग्न में सूर्य+शुक्र युति लग्न में 7वें भाव में हो तो संतान नहीं होती।

बहुपुत्र योग– मेष लग्न में बली सूर्य पर गुरु दृष्टि हो। बहु पुत्र, सट्टा लाटरी से धनी हो। ज्योतिषी हो, बली सूर्य भाग्य वृद्धि करे। परीक्षा में अच्छे अंक लावे।

प्रभावशाली योग– मेष का उच्च का सूर्य दसमें भाव में हो शुभ दृष्ट हो।

अधिकारी योग– लग्न में स्वगृही सूर्य, व्यक्ति स्वाभिमानी प्रशासन में कुशल तथा राज्य उच्चाधिकारी होवें, जनता का सेवक हो।

सम्मान पाना– तुला राशि का सूर्य लग्न में शुभ दृष्ट हो राज्य सम्मान पाना।

पेट के रोग– गुरु+सूर्य युति षष्ठ भाव में।

उत्तम घराने में विवाह– सप्तमेश सूर्य के बली होने से उत्तम घराने में विवाह हो व्यापार बढ़े बंगला होवे राज्य में बड़ा अफसर होवे।

पिता कीर्तिवन्ता– वृश्चिक लग्न मे सूर्य छठे या दसवें में हो।

डूबी हुई रकम मिले– मकर लग्न मे सूर्य बली हो तो डूबी हुई रकम सूर्य दशा में मिले।

माता का द्वेषी– सूर्य से 12वें भाव मे मंगल हो वह परोपकारी होगी पर माता का द्वेषी होगा।

सीडेन्ट योग– कुंभ लग्न मे सूर्य 10वें व चौथे मंगल.

धनी योग– पाचवे भाव में बुधादित्य योग हो

आजन्म रोगी– मेषलग्न मे शनि और छठवें सूर्य।

पैरों में चोट– मेषलग्न में सूर्य 11वें शनि।

पिता से धन प्राप्ति– लग्न से दसवा सूर्य।

राजयोग– मेषलग्न मे सूर्य+चद्र युति।

कन्या का विवाह– तुला लग्न में बली सूर्य हो सात्विक प्रवृत्ति सूर्य दशा में कन्या का विवाह हो व दामाद की भाग्यवृद्धि।

सूर्य जहा बैठता है। उस भाव को बिगाड़ता है जहा 7वी दृष्टि करेगा वहा वह उससे अलग रखेगा

सिंह राशि में मगल व केतु हो तो सूर्य मे आग का प्रभाव होगा। ऐसा सूर्य लग्नेश पचमेश नवमेश व चद्र राशि पर प्रभाव करे तो वहां आग से सपर्क होगा, बिजली या आग से मृत्यु होगी

यदि सूर्य लग्न से 12वें स्थान में बैठा होगा तो वह 1-8-10 भाव का शुभ फल करेगा। क्योंकि वह इन भावो का कारक है।

14 अगस्त से 15 सितम्बर तक जन्म लोगो के लिए विशेष हितकारी है,

रत्न– रवि का रत्न माणिक्य है इसकी धातु सोना, ताबा मुख्य है।

उपचार

1 सोने की श्रीयत्र की पूजा करे, पिरामिड घर मे लगाए।

2 रविवार व्रत जप दान गेहू गुड तावा व लाल फल का दान करे।

3. नित्य सूर्य पजन मूर्य को जल का अर्घ्य दें।
4. बहते पानी म ताबे के सिक्के डाले। नित्य ताबे में रखा जल पीए।
5. घर का मुख्य द्वारा पूर्वाभिमुख रखें। पीली रोशनी आंगन मे लगाए।
6. सफेद कपड़े पहन
7. तांबे का सिक्का काले धागे में पिरोकर गले मे रखे।
8. लाल मुह के बदरो को गुड़ खिलावे।
9. काम शुरू करने से पहले मिठाई खाकर पानी पीये।
10. ससुराल में न रहे।
11. पीतल के या तांबे के बर्तन काम मे लाए।
12. कसाई से बकरा छुड़ावे या पनरियें यत्र का पूजा करे
13. हरिवश पुराण पढ़े या सुने।

कोई चार उपाय काम में लें।

❑❑❑

सूर्य का खगोलीय स्वरूप

वास्तव में सूर्य भी एक तारा ही है, जो अन्य करोड़ो तारों के समान आकाशगंगा का एक सदस्य है, परन्तु पृथ्वी के निकट होने के कारण इसका प्रकाश प्रखर है और बड़ा भी दिखता है सूर्य आकाश में अकेला नहीं है उसके साथ कुछ पिण्डो का परिवार भी है। सूर्य सौरमण्डल का सम्राट है। हमारे सौरमण्डल का व्यास लगभग 20 अरब कि.मी. है। सभी ग्रह सूर्य को केन्द्र मान कर अण्डाकार कक्षा में उसकी परिक्रमा करते हैं। सूर्य भी अपनी कल्पित धुरी पर परिभ्रमण करता है इस प्रकार सूर्य लगभग सवा पच्चीस दिन में एक बार आत्म परिक्रमा कर लेता है। 24 घण्टे के दिन में सूर्य की चक्र में भ्रमण गति एक अंश होती है, सारे भचक्र की परिक्रमा वह 375 दिन और 6 घंटे में करता है कालचक्र से ग्रहों की ग्रहों से उपग्रहों की उत्पत्ति हुई, उन्हे भी चंद्रमा कहते है।

जिस प्रकार पृथ्वी के चारो ओर एक चंद्रमा घूमता है उसी प्रकार मंगल के चारों ओर चंद्रमा घूमता है गुरु के तेरह शनि के नौ अरुण के पांच तथा वरुण के दो चंद्रमा घूमता हैं। बुध, शुक्र यम कुबेर तथा इन्द्र ग्रह के कोई चंद्रमा नहीं है। ब्रह्माण्ड के सभी पदार्थ एक दूसरे को अपनी ओर आकर्षित करते हैं ग्रह अपनी कक्षाओं में जिस समय सूर्य के निकटतम होते हैं उस समय उनकी गति अधिक तीव्र हो जाती है। जब दूर होते है तो इनकी गति मंद हो जाती हैं। वस्तुतः सूर्य का गुरुत्वाकर्षण ही इन ग्रहों की भ्रमण कक्षाओं को बनाता है और उस पर नियंत्रण भी करता है। सूर्य हमारी पृथ्वी से 15,70,00,000 कि.मी. की दूरी पर हैं। इसका व्यास 13,52,800 कि.मी. है। सूर्य यदि भीतर से खोखला हो तो पृथ्वी जैसे 13 लाख पिण्ड उसमें समा सकते हैं। पृथ्वी पर जो वस्तु एक किलो भार की है उसका भार सूर्य पर 29 किलो होगा। सूर्य के रवि विवस्वान भानु भास्कर सविता दिवाकर, प्रभाकर आदित्य अनन्त, मार्तण्ड महोभग आदि अनेक नाम हैं।

सूर्य की गति– सूर्य अपने सम्पूर्ण परिवार (नौ ग्रहो) के साथ किसी अन्य महा सूर्य की परिक्रमा करता है। सूर्य अपनी कल्पित धुरी पर 25 दिन 6 घण्टे में

एक चक्कर (आत्म परिभ्रमण) पूरा कर लेता है। स्थूल माध्यम मान से सूर्य एक महीने में एक राशि, प्रतिदिन एक अंश 14 दिन में एक नक्षत्र और 3 घटी 20 पल में एक नक्षत्र चरण पर रहता है। यह एक सैकेण्ड में 19 मील अपनी जगह से हट जाता है। तथा सारे भचक्र की परिक्रमा 365 दिन और 6 घण्टे में पूरी कर लेता है। यह कभी भी वक्री नहीं दिखलाई पड सकता।

❑❑❑

सिंहलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

सिंहलग्न का स्वरूप

सिंहः सूर्याधिपः सत्वी चतुष्पात् क्षत्रियो वनी।
शीर्षोदयी बृहद्‌गात्रः पाण्डु पूर्वेड् द्युवीर्यवान्॥12॥

–बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 12

सत्वगुणी चतुष्पद क्षत्रिय वनचारी, शीर्षोदय, बृहत् शरीर, पाण्डु वर्ण, पूर्वदिगवासी दिनबली है, इसका स्वामी सूर्य है॥12॥

तीक्ष्णः स्थूलहनुर्विशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः,
स्त्रीद्वेषी प्रियमांस काननगः कुप्यत्यकार्ये चिरम्।
क्षुत्तृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान्,
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमना मातुर्विधेयोऽर्कभे ॥5॥

–बृहज्जातकम् अ. 16/ श्लो. 5

सिंह राशि में स्थित चंद्रमा से जातक तीक्ष्ण स्वभाव वाला अर्थात् असहिष्णु अर्थात् जल्दबाजी में काम करने वाला, मोटी हनु वाला, बड़े मुंह वाला, पिंगल अर्थात काले व पीले मिश्रित नेत्रों वाला, कम पुत्रों वाला, स्त्रियों से द्वेष करने वाला, मांस मदिरा के प्रति आकर्षण रखने वाला, वन व पर्वत प्रदेशों से विशेष स्नेह रखने वाला, बिना प्रसंग के निरर्थक क्रोध करने वाला, भूख प्यास अधिक अनुभव करने वाला, पेट, दांत, मन के विकास का अनुभव करने वाला, त्यागी, पराक्रमी, स्थिर बुद्धि, घमंडी तथा माता के वश में रहने वाला होता है।

सिंह विलग्ने तु भवेत् प्रसूतो नरो विभागी रिपुमर्दनश्च।
लग्ने विधत्ते विधन मनुष्य बह्वाशिनं नित्यविमुक्तलज्जम्।
निन्द्यं सता नीचरतं कृतघ्नम्॥5॥

–वृद्धयवन जातक अ.24 श्लो 5/ पृ.288

सिंहलग्न में मनुष्य का जन्म हो तो जातक शत्रुओं का नाश करने वाला, भाग्य फल में कमी वाला, धन से रहित, अधिक खाने वाला, सदैव लज्जा से रहित व्यवहार करने वाला अर्थात् संकोचहीन होकर व्यवहार करने वाला होता है। सज्जनों द्वारा निन्दित, नीच कार्यों में रत व कृतघ्न होता है।

जातः सिंहविलग्नकेऽल्पतनयः संतुष्टधीर्हिंसकः।

शूरो राजवशीकरो जितरिपुः कामी विदेश गतः॥5॥

—जातक पारिजात श्लो. 5/पृ.678

थोड़े पुत्र, चित्त में संतोष अधिक हो, हिंसक, शूरवीर, राजा को वश में करने वाला (अर्थात् राजा का प्रिय) शत्रुओं पर विजयी, कामी, विदेश जन्म भूमि से अन्यत्र स्थान में रहे।

सिंहादिद्रेष्काणे दाता भर्तारिनिर्जिगीषुः स्यात्।

बहुधनयोषित्सुसुहृद्बहुनृपजनसेवकः सुसत्वश्च॥

—सारावली श्लो. 10/पृ. 466

यदि जन्म लग्न में सिंह राशि व सिंह राशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक दानी, भर्ता अर्थात् भरण (पालन) करने वाला, शत्रु को जीतने वाला, अधिक बलवान अधिक स्त्री वाला, सुन्दर मित्रों से युक्त, अधिक राजाओं का सेवक और बलवान होता है।

सिंहलग्नोदये जातो भोगी शत्रुविमर्दकः।

स्वल्पोदरोऽल्पपुत्रश्च सोत्साहो रण विक्रमी॥

—मानसागरी अ. 1/श्लो. 5

सिंहलग्न वाला जीव संसार भोगी, शत्रु नाशक, अल्पाहारी, परिवार नियोजक, पराक्रमशील, कर्मवादी साथ ही विशेष स्वाभिमानी रहे

भोज संहिता

सिंहलग्न का स्वामी सूर्य है सूर्य ग्रहराज होने के साथ साथ एक तेजस्वी ओजयुक्त पौरुष का प्रतिनिधित्व करता है, इस लग्न वाले व्यक्ति निर्भीक, उदार व अभिमानी होते हैं। इनके चित्त में दृढ़ता, साहस और धैर्य विशेष मात्रा में पाये जाते हैं। सूर्य आत्मकारक ग्रह है यह आत्मशक्ति व आत्म विश्वास का कारण ग्रह माना जाता है। अतः सिंहलग्न वाले पुरुषों में आत्मशक्ति गजब की होती है। ये कठिन से-कठिन परिस्थितियों में भी नहीं घबराते, हिम्मत हारना तो इन्होंने सीखा ही नहीं आपके जन्म समय में सिंहलग्न उदित हो रहा था जिसका स्वामी सूर्य है।

सामान्यतया सिंहलग्न में उत्पन्न जातक तेजस्वी साहसी एवं पराक्रमी होते हैं। इनके अंदर आत्मविश्वास का भावपूर्ण रूप से विद्यमान रहता है तथा अपनी बुद्धि एवं पराक्रम के बल पर वे जीवन में उन्नति प्राप्त करने में समर्थ रहते हैं। धनैश्वर्य वैभव एवं भौतिक सुख समाधनों से ये प्राय: युक्त रहते हैं तथा जीवन में सुखपूर्वक इनका उपयोग करते हैं ये जातक सिद्धान्तवादी होते हैं तथा अपने सिद्धान्तों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। इनकी प्रवृत्ति धार्मिक भी होती है तथा स्वभाव में परोपकार का भाव भी रहता है फलत: ये पूर्ण विकास के योग्य होते हैं इसके अतिरिक्त सरकारी या गैर सरकारी क्षेत्रों में किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं, जिससे सामाजिक मान प्रतिष्ठा या यश समाज में विद्यमान रहता है साथ ही नेतृत्व की क्षमता भी इनमें विद्यमान रहती है

अत: इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक रहेगा जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप निर्भय पुरुष होंगे तथा अपने समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यकलापों को निर्भयता से सम्पन्न करके उनमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगे जिससे जातक को भौतिक सुख समाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा उसकी उन्नति के मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे फलत: आपका जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

जातक हृदय में उदारता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा वह अन्य जनों के प्रति स्नेह के भाव का प्रदर्शन करेगा। आपको स्वपुरुषार्थ से जीवन में सफलता प्राप्त होगी तथा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आप सफल होंगे तथा आपके शत्रु या प्रतिद्वन्द्वी आपसे भयभीत होंगे परन्तु यदि आप अन्य जनों के साथ पूर्ण समानता का व्यवहार करें तो आप समाज में लोकप्रियता तथा अतिरिक्त प्रतिष्ठा भी अर्जित करने में समर्थ हो सकते हैं।

आपमें शारीरिक बल की प्रधानता रहेगी तथा परिश्रम एवं पराक्रम से अपने सांसारिक महत्त्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें इच्छित सफलता प्राप्त करके जीवन में उन्नति के मार्ग प्रशस्त करेंगे। राजनीति या व्यापार आदि में आप उन्नतिशील रहेंगे तथा इन क्षेत्रों में आपकी श्रेष्ठता बनी रहेगी

आपके स्वभाव में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहेगा। अत: यदा कदा आप अनावश्यक क्रोध या उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे योग आदि के प्रति भी आपकी इच्छा विद्यमान तथा समय-समय पर योगाभ्यास करेंगे। आपमें गम्भीरता का भाव विद्यमान होगा। फलत: आपके कार्य धैर्य एवं गंभीरतापूर्वक सम्पन्न होंगे जिससे आपको सफलता प्राप्त होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा आप श्रद्धापूर्वक धार्मिक कार्यकलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इसी परिप्रेक्ष्य में सत्संग आदि में भी

अपना योगदान प्रदान कर सकते है। आपको भ्रमण या पर्वतीय क्षेत्रों में घूमना रुचिकर लगेगा। अतः आप समय समय पर ऐसे स्थानो की सैर करते रहेंगे। इस प्रकार प्रसन्नतापूर्वक समस्त सुखो का उपभोग करते हुए आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

नक्षत्रानुसार फलादेश

मा-मी-मु-मे, मो-टा-टी-टु, टे

मघा 4, पूर्वाफाल्गुनी 4 उत्तराफाल्गुनी 4

"मघा पूर्वाफाल्गुनी उत्तरा च पादमेक सिंह"

मघा नक्षत्र सपूर्ण और पूर्वाफाल्गुनी पूरा तथा उत्तराफाल्गुनी का प्रथम चरण मिलाकर सिह राशि बनती है। मघा केतु का नक्षत्र है और पूर्वाफाल्गुनी शुक्र का नक्षत्र है तथा उत्तराफाल्गुनी सूर्य का नक्षत्र है। यहा केतु+शुक्र+सूर्य के समन्वय से स्वभाव व गुणों में परिवर्तन आयेगे।

मघा नक्षत्र

चरण	अंश	नवमांशेश	राशीश	नक्षत्रेश	उप-नक्षत्रेश	अंश से तक
प्रथम	0.00 से 3.20	मं.	सू.	के.	के. श.	0.0.0 से 0.46.40 0.46.40 से 3.0.0
द्वितीय	3.20 से 6.40	शु.	सू.	के.	सू. च. म.	3.0.0 से 3.40.0 3.40.0 से 4.46.40 4.46.40 से 5.53.20
तृतीय	6.40 से 10.0	बु.	सू.	के	रा. गु.	5.53.20 से 7.33.20 7.33.20 से 9.20.0
चतुर्थ	10.0 से 13.20	च.	सू.	के.	श. बु.	9.20.0 से 11.26.40 11.26.40 से 13.20.0

यदि आपका जन्म 'मघा-नक्षत्र' में हुआ है तो आप ठिगने कद के सुदृढ वक्ष स्थल एव मजबूत जंघाओ के मालिक हैं। गर्दन कुछ मोटी, वाणी मे कुछ

कर्कशता व रूखापन सिंह राशि वाले व्यक्ति की प्रमुख विशेषता है इस नक्षत्र मे जन्म लेने वाले व्यक्तियो के प्राय: 5 व 6 नम्बर के दांत तीखे, जिह्वा चौकोर (Flat) व खुरदरी होती है। मघा नक्षत्र में जन्म व्यक्तियों की आखो में कुछ विशेष आकर्षण होता है, चेहरा शेर के समान भरा हुआ व रोबीला होता है। प्राय: इस राशि वाले व्यक्ति पुरुषार्थ व अपने पौरुष प्रदर्शन के लिए लालायित रहते हैं तथा इनको शानदार मूछे रखने का बडा शौक रहता है कुछ हद तक अभिमानी होने के नाते ये बहुत जल्दी नाराज हो जाते हैं तथा अपनी मर्दानगी तथा बलशाली शक्ति का दुरुपयोग करने में भी नहीं हिचकिचाते।

पूर्वाफाल्गुनी

चरण	अंश	नवमा-शेश	राशीश	नक्षत्रेश	उप-नक्षत्रेश	अंश से तक
प्रथम	13.20 से 16.40	सू.	सू.	शु.	शु. सू.	13 20.0 से 15.33 20 15 33 20 से 16.13 20
द्वितीय	16.40 से 20.00	बु.	सू.	शु.	च. मं. रा.	16.13.20 से 17.20.0 17 20 0 से 18.6.40 18.6.40 से 20.6.40
तृतीय	20.0 से 23.20	शु.	सू.	शु.	गु. शु. बु.	20.6.40 से 21.53.20 21.53.20 से 26.40.00 24.00 से 25.53.20
चतुर्थ	23.20 से 26.40	म.	सू.	शु.	के सु. च.	25 53.20 से 26 40.00 26 40.00 से 27.20.00 27.20.00 से 26.26.40
उत्तराफाल्गुनी						
प्रथम	26.40 से 30.00	गु.	सू.	सू.	म. रा.	28 26.40 से 29 13 20 29 13 20 से 30.00.00

यदि आपका जन्म पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में है तथा आपका नाम 'ट' से प्रारम्भ होता है तो आप उन भाग्यशाली पुरुषों मे से हैं जिनका दूसरे लोग अनुसरण करना

चाहते हैं। आपकी Wil. Power बहुत शक्तिशाली हैं तथा आपमें शासन करने की प्रवृत्ति कुछ विशेष बनी रहती है। यदि आपके कानों पर बाल है तो निश्चित् रूप से आपके अधीनस्थ कर्मचारी आपसे भयभीत रहते हैं। तथा परिवार में सब आपकी आज्ञा का पालन करते है तथा आपकी अनुशासनात्मक प्रवृत्ति पूर्ण रूप से सफल कही जा सकती है। यदि आप सरकारी क्षेत्र में कार्यरत हैं तो आप प्रशासनिक शाखा में गहरा सबंध रखते हैं।

सिंह राशि सम्पूर्ण

यह नक्षत्र सिंह राशि के .3 20 से 26.40 तक पड़ता है। यह नक्षत्र शुक्र का है इसका पर्याय भाग्य भी है। अत: यह भाग्य नक्षत्र है जातक परिजात कहता है– ''फाल्गुन्या चपल: कुकर्मचरित: त्यागी दृढ: कामुक:'' अर्थात् व्यक्ति चचल स्वभाव बुरे कर्मों में लगा हुआ त्यागी, दृढ़निश्चयी व कामी होगा। शुक्र एक कामुक ग्रह है। इस नक्षत्र में मन रूपी चंद्र आते ही चपल व कामातुर हो जाता है शुक्र वीर्य है अत: इस नक्षत्र में लग्न वीर्यशाली एव चद्र भी दृढ़ होता है। शुभ व्ययी होना, त्यागी होना शु.+सू.+च. के प्रकट लक्षण हैं।

चंद्रमा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में

प्रियंवदो भूपति सेवकश्च, दातानर: कान्तियुतो भगर्क्षे।।

यह पूर्वाफाल्गुनी शुक्र का नक्षत्र है इसलिए चंद्र इस लग्न मे या नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति मधुर भाषी, राज्य कर्मचारी दानी व सुदर होता है। शुक्र शुभ ग्रह है अत: इसका व्यवहार मीठा होता है। मंत्री होने से इसका राज्य से घनिष्ठ संबध है। सुन्दरता विशेष गुण है और शुभ ग्रह होने से दानशूरता तो होगी ही!

पूर्वाफाल्गुनी का चरणगत फल

जातक सादीपानुसार चरणों के फल– ''समर्थो धार्मिको राजा रोगी क्रूरोऽल्पजीवित:, पूर्वाफाल्गुनी जातक फल पादचतुष्टये।। प्रथम चरण में चद्र हो तो नवांशेश सूर्य होने से जातक राजा या राजातुल्य ऐश्वर्य वाला बनता है।

पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय चरण में– चद्र हो तो जातक रोगी रहेगा, कारण नवांशेश बुध से शुक्र व चद्र का सबध रोगकारक बनेगा।

पूर्वाफाल्गुनी के तृतीय चरण में व्यक्ति क्रूर होगा। इसमें भी नवांशेश शुक्र है और नक्षत्रेश भी शुक्र है दोनों दानवी ग्रहो का प्रभाव स्वभाव में क्रूरता लायेगा।

पूर्वाफाल्गुनी के चतुर्थ चरण में– अल्पायु भोगने वाला हो। कारण नवांशेश मंगल+शुक्र+चंद्र में चंद्र के मंगल+शुक्र शत्रु हैं। मंगल क्रूर ग्रह होने से चंद्र को हानि देगा। अतः लग्न की आयु कम करेगा।

उत्तराफाल्गुनी प्रथम चरण में– इसमें यद्यपि राशि तो मित्र की है और नक्षत्र भी सूर्य का है, नवांशेश गुरु होगा दोनों विद्या के लिए शुभ हैं। अतः ज्ञान बुद्धि करने में चंद्र मन सहायक होगा। फलस्वरूप व्यक्ति पंडित हो।

सिंहलग्न की स्त्रियां

सिंहलग्न में जन्म लेने वाली स्त्री मोटी चपटी नाक वाली मांस खाने वाली, शक्ति सम्पन्ना और थोड़ी संतति वाली होती है। इसको पित्त प्रकृति होती है और देश विदेश भ्रमण की बहुत शौकीन होती है। अपने बाहुबल से यह पर्याप्त धन पैदा कर सकती है। पति से प्रायः अनबन रहती है। मुंह पर तिल होता है। मतान्तर से इस राशि वाली स्त्री में कई पुत्र और तीन कन्याएं होती हैं सातवें और ग्यारहवें साल में यह अस्वस्थ होती है। आयु 60 वर्ष की हो सकती है इसकी मृत्यु पित्त रोग से ऑपरेशन से अथवा विष से होती है।

सिंहलग्न के विचारणीय बिन्दु

सिंहलग्न में मंगल और सूर्य शुभ फल देते हैं। बुध और शुक्र अशुभ हैं। गुरु चंद्र और शनि सम हैं बुध और शनि मारक होते हैं। धनेश लाभेश बुध व्यापार में धनकारक होता है मुख्य ग्रह सूर्य और मंगल ही होते हैं। शनि विशेष पापी बनता है लग्न में सिंह राशि के समान धीर और वीर बनाती है।

सिंहलग्न की विशेषता

- ❑ व्यक्ति बड़े हाथ पैर वाला, चौड़े हृदय वाला ताम्रवर्ण हो कद औसत हो कंधे चौड़े मुख की आकृति चौड़ी और पुष्ट और आकर्षक हो। आंखें सुंदर और भाव प्रकट करने वाली हों। पतली कमर हो। शरीर का ऊपरी भाग ज्यादा पुष्ट बली हो। नेत्रों में कुछ-कुछ पीलापन हो मोटी दाढ़ी और बड़ा चेहरा होता है।
- ❑ सिंहलग्न में सिंह का चंद्र हो अन्य ग्रह न हो तो स्त्री गोरी होगी। अगर चंद्र शुक्लपक्ष का है तो विशेष गोरी हो। अगर कृष्णपक्ष का चंद्र हो तो रोगिणी हो, कलह प्रिय हो। पतले शरीर की हो व कुछ खराब स्वभाव की हो। ईर्ष्यालु हो। माता की विशेष प्यारी हो।

- तुनक मिजाज हो छोटी सी बात पर क्रोध कर ले, जिस पर क्रोध नहीं करना चाहिए करे, व बडी बात पर शांत रहे। मजबूत मन हो। धीरज वाली हो अपने हृदय की बात भावों से व चेहरे से प्रकट नहीं होने दे। इसका रहस्य कोई न जान सके। किसी कार्यक्रम को चलाने की व नेतृत्व करने की शक्ति हो। तेजस्विनी हो। कठिन परिस्थितियों में भी न घबराये।
- लग्न में शनि बैठा हो तो स्त्री के जीवन में रंगीनता की कमी रहेगी शौकीन नहीं होगी, नीरस जीवन रहेगा।
- वर्ष 5, 10, 27, 30 मे कष्ट हो। आगे 45, 54, 60, 65 में कष्ट हो तथा 70 वर्ष तक की आयु बनती है।
- अभिमानिनी होगी। पराक्रम वाली हों व स्थिर बुद्धि वाली हों। लग्न में सूर्य से नेत्र रोगी बने काणत्व या रतौंधी रोग सम्भव है
- निर्बल सूर्य से आंख के रोग, पेट के रोग, हृदय के रोग, हृदय विकार व राज्य से विरोध पाए।
- हड्डी में कष्ट व पाप प्रभावी सूर्य हो तो दिल या पेट में कष्ट रहें।
- सिंह राशि व सूर्य तथा 5वां भाव पंचमेश यदि पाप प्रभावी हो तो हृदय गतिरोध व पेट के रोग बनते है।
- सिंह राशि में अकेला मंगल हो तो उन्नति, भाग्य योग से होती है। बाकी आदमी या औरत निकम्मे भी पाये जाते हैं परन्तु मंगल पर गुरु दृष्टि हो तो शुभ फल होगा।
- सिंहलग्न मे मंगल हो तो मांगलीक दोष नहीं होता है। सिंहलग्न में मंगल चंद्र, गुरु या बुध से युति करें तो मांगलिक दोष नहीं होता।
- सिंहलग्न मे सूर्य हो उस पर गुरु की दृष्टि हो मंगल भी लग्न में हो तो विशेष धन योग बनेगा। सिंहलग्न में शनि हो तो रक्ताभिसरण दोष देगा। स्वभाव मिलनसार रहेगा और रौबदार भी बना रहेगा।
- लग्न में सिंह राशि का राहु हो तो राजवैभव प्राप्त होगे। सिंहलग्न में मंगल व शनि दोनों ही हो तो अपमृत्यु या अपघात करेगा या जेल जायेगी या रिश्वत का आरोप लगेगा।
- लग्न में सिंह का चंद्र हो तो मनुष्य स्थिर मितभाषी और काम करने मे निराला हो। कामेच्छा थोड़ी हो।
- व्यक्ति साहसी व महत्वाकांक्षी हो। लग्न मे सिंह का शुक्र शत्रुनाशक है परन्तु विवाह में विलम्ब देता है या बना बनाया विवाह भी ध्वस्त कर देता है।

❑ लग्न में सूर्य, शनि, शुक्र तीनों हों तो जातक या जातिका का विवाह नहीं होगा।

सिंहलग्न पुरुष संज्ञक व अग्नि तत्त्व प्रधान राशि है। आप उदार हृदय होने के नाते लोगों को क्षमा कर देते हैं। परन्तु यदि कोई आपके मान, पद व प्रतिष्ठा पर कालिख पोतने की कोशिश करता है तो आप उसे कभी भी क्षमा नहीं करेंगे आप प्रतिष्ठा व सम्मान के लिए सब कुछ करने को उतारू हो जायेंगे। आपके जोश, हिम्मत व रौब के सामने शत्रु के हौंसले पस्त हो जायेंगे। शत्रु आपके सामने आने से हमेशा घबरायेगा। इसलिए पीठ पीछे आपकी बुराई होगी व सन्मुख प्रशंसा आप चापलूस लोगों से बचें।

सिंहलग्न चतुष्पद शीर्षोदय व दिग्बली है। रात्रि के कार्यकलाप आपके लिए अनुकूल नहीं कहे जा सकते आप किसी के अधीनस्थ रहकर कार्य नहीं कर सकते आप स्वच्छंदचारी व स्वतंत्र विचारों वाले व्यक्ति हैं। यदि आप व्यापारी हैं तो आप देखेंगे कि आपका भागीदार आपसे कुछ दबा हुआ व डरा हुआ सा रहेगा। यह आपकी प्रकृति शक्ति व जन्मजात विशेषता है

यदि आपका जन्म 17 अगस्त व 16 सितम्बर के बीच में हुआ है तो 22 वर्ष की अवस्था में आपका भाग्योदय प्रारंभ हो जाता है। वीरता सम्पन्न होने के नाते आप सैनिक या पुलिस विभाग में शीघ्र उन्नति प्राप्त कर सकते हैं सिंह राशि वाले पुरुषों को वसीयत के द्वारा धन जायदाद मिलने की संभावना रहती है जायदाद व बटवारे के कारण संभवतः संबंधियों में मन मुटाव होगा। उत्साही, शूर क्रोधी व तेजस्वी होने के नाते आप शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण समर्थशाली रहेंगे। आप दूसरों का विश्वास सहज ही जीत लेंगे जिससे आपको सामाजिक प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी। सेक्स के मामले में आप कामुक प्रवृत्ति के नहीं हैं। आप संभोग में ज्यादा रुचि नहीं लेते और जब लेते हैं तो पूर्णतया उसी में लीन हो जाते हैं।

सिंहलग्न वालों के पिता पुत्र में कम बनती है। धार्मिक क्षेत्र में आप शक्ति के उपासक हैं भैरू शिव व सूर्य इत्यादि शक्ति प्रधान देवताओं में आपकी रुचि रहेगी। सिंह राशि उष्ण स्वभाव अल्प संतति पीतवर्ण भ्रमणप्रिय व निर्जल राशि है। आपको लम्बाईदार वस्तुओं में रुचि रहेगी। सूर्य का तेजोमय माणिक्य-रत्न आपके लिए सदा सर्वथा अनुकूल व शुभद रहेगा।

❑❑❑

नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मींढा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई उ ए	वृष	शुक्र	मींढा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि. 1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी.	गुरू	16
7	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मींढ़ा	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हम	नाड़ी	वश्य	माया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
8	पुष्य	हू हे हो डा	कर्क	चन्द्र	मेढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि 3 श्वा 1	शनि	19
9	आश्लेष	डी,डू डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10	मघा	मा मी मू,मे	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु	चांदी	मूषक	केतु	7
11	पूर्व फा	मो टा,टी टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु	चांदी	मि. 3 श्वा 1	शुक्र	20
12	उ फा	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु	चांदी	श्वान	सूर्य	6
13	उ. फा.	टो पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू 2	सूर्य	6
13	हस्त	पू ष ण ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मौ 1 मो 1 श्वा 1	चन्द्र	10
14	चित्रा	पे पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15	स्वाति	रू रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि 3 मू 1	राहु	18
16	विशाखा	ती तू ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	6

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरू	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि 2 मृषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरू	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मृ 1 स 1 मू2 कु	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरू	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सि.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु	ताम्बा	सि. ३ वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी खू,खे खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी 2 सर्प	गुरू	6

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27	उ. भा.	दु,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे दो चा ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	7

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

क्र. स.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
1	अश्विनी	अश्वि. कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
2	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
3	कृत्तिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
4	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
6	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
7	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
8	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
9.	आश्लेषा	सर्प	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
11	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
12	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
13.	हस्त	सूर्य	चन्द्रमा	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

क. स.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
4.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
15	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
17	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
18	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
19	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
20	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
21	उ. षा.	विश्वदेव	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
22	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
23.	धनिष्ठा	अष्टवसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
25	पूर्वा भा	अजैकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
26	उ. भा.	अहिर् बुध्न	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
27	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

सिंहलग्न पर अंशात्मक फलादेश

सिंहलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–मघा
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश–4/3/20/0
4. वर्ण– क्षत्रीय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मूषक
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–पितर
10. वर्णाक्षर–मा
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'अपुत्रः'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरों का भक्त होता है। मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से जातक अल्प पुत्र संतति वाला होता है। यहां लग्न स्वामी, नक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी सभी में परस्पर शत्रुता होने से यह योग बनता है।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है। कमजोर है। लग्न बली नहीं होने से जातक का विकास रुका हुआ रहेगा। सूर्य की दशा कमजोर फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–मघा
2. पद–1
3. नक्षत्र अंश 4/3/20/0

4. **वर्ण**–क्षत्रीय	5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक	7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य	9. **नक्षत्र देवता**–पितर
10. **वर्णाक्षर**–मा	11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल	15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु	17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**– अपुत्रः'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरों का भक्त होता है मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से जातक अल्प पुत्र सन्तति वाला होता है।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से 'उदित अंश' का है बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–मघा	2. **पद**–,
3. **नक्षत्र अंश**–4 3-20/0	
4. **वर्ण**–क्षत्रीय	5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–मूषक	7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य	9. **नक्षत्र देवता**–पितर
10. **वर्णाक्षर**–मा	11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल	15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु	17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'अपुत्रः'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरों का भक्त होता है मघा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से जातक अल्प पुत्र सन्तति वाला होता है।

लग्न यहा दो से तीन अंशो के भीतर होने से बलवान है लग्न उदित अशो मे होने से लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मगल की दशा मे भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र—मघा
2. पद—2
3. नक्षत्र अंश—4/3/20/0 से 4/6/40/0 तक
4. वर्ण—क्षत्रीय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—मूषक
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—पितर
10. वर्णाक्षर—मी
11. वर्ग—मूषक
12. लग्न स्वामी—सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'पुत्रवान् भवेत्'

मघा नक्षत्र मे जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरो का भक्त होता है। मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से जातक तेजस्वी पुत्र का पिता होगा।

लग्न यहा तीन से चार अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में बलवान है। लग्न उदित अशो में होने से लग्नेश सूर्य की दशा अच्छा फल देगी। मंगल की दशा में भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र—मघा
2. पद—2
3. नक्षत्र अंश—4/3/20/0 से 4/6/40/0 तक
4. वर्ण—क्षत्रीय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—मूषक
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—पितर
10. वर्णाक्षर—मी
11. वर्ग—मूषक
12. लग्न स्वामी—सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान् भवत्'

मघा नक्षत्र में जन्म व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक, देवताओं व पितरों का भक्त होता है, मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से जातक तेजस्वी पुत्र का पिता होगा।

लग्न यहा चार से पाच अंशो के भीतर होने से बलवान है लग्न उदित अंशो में होने से लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भाग्योदय कारक है पर शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सिंहलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–मघा 2. पद–2

3. नक्षत्र अंश–4.3/20/0 से 4.6/20/0 तक

4. वर्ण–क्षत्रीय 5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि–मूषक 7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–आध 9. नक्षत्र देवता–पितर

10. वर्णाक्षर–मी 11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–सूर्य 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान् भवेत्'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु होने से जातक धार्मिक होगा। ऐसा जातक देवताओं व पितरों का उपासक होता है मघा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से जातक तेजस्वी पुत्र का पिता होगा।

लग्न यहा पांच से छः अंशो के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा भाग्योदय कारक है पर शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा

सिंहलग्न, अंश 6 से 7

1. लग्न नक्षत्र–मघा 2. पद–3

3. नक्षत्र अंश–4/6.40/0 से 4/10/0/0 तक

4. वर्ण–क्षत्रीय

5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि मूषक

7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–पितर

10. वर्णाक्षर–मू

11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–सूर्य

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'तीव्ररोगी'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति धार्मिक होता है वह देवताओं का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्रायः रोगी होता है। जातक को संक्रामक रोग शीघ्र प्रभावित करेंगे।

यहां लग्न छः से सात अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है। बलवान है लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में भाग्योदय होगा पर बुध की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र–मघा

2. पद–3

3. नक्षत्र अंश–4/6/40/0 से 4/10/0/0 तक

4. वर्ण–क्षत्रीय

5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि–मूषक

7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–पितर

10. वर्णाक्षर–मू

11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–सूर्य

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'तीव्ररोगी'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति धार्मिक होता है

वह देवताओं का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्रायः रोगी होता है। जातक को सक्रामक रोग शीघ्र प्रभावित करेंगे।

यहां लग्न सात से आठ अंशों में भीतर होने से 'उदित अंशों' में है। बलवान है लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा पर बुध की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**—मघा
2. **पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—4/6/40/0 से 4/10/0/0 तक
4. **वर्ण**—क्षत्रीय
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—मूषक
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—पितर
10. **वर्णाक्षर**—मू
11. **वर्ग**—मूषक
12. **लग्न स्वामी**—सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'तीव्ररोगी'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्राय. रोगी होता है। इसे सक्रामक रोग शीघ्र प्रभावित करते हैं।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में है 'उदित अंशों' में है, बलवान है। लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा पर धन की प्राप्ति बुध की दशा में होगी।

सिंहलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**—मघा
2. **पद**—4
3. **नक्षत्र अंश**—4/10/0/0 से 4/13/20/0 तक
4. **वर्ण**—क्षत्रीय
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—मूषक
7. **गण**—राक्षस

8. नाड़ी—आघ

9. नक्षत्र देवता—पितर

10. वर्णाक्षर—मे

11. वर्ग—मूषक

12. लग्न स्वामी—सूर्य

13. लग्न नक्षत्र स्वामी—केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—चंद्रमा

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'पण्डितश्च'

मघा नक्षत्र मे जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र मे जन्मा व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं व पितरो का उपासक होता है मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी पण्डित होता है, क्योंकि मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी स्वयं सूर्य है जो कि लग्नेश भी है।

यहां लग्न नौ से दस अशो के भीतर उदित अशों में है, बलवान है। लग्नेश सूर्य की दशा उत्तम फल देगी। मगल की दशा में भाग्योदय होगा। चद्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र—मघा

2. पद—4

3. नक्षत्र अंश—4 10/0/0 से 4.13/20/0 तक

4. वर्ण—क्षत्रीय

5. वश्य—चतुष्पद

6. योनि—मूषक

7. गण—राक्षस

8. नाड़ी—आघ

9. नक्षत्र देवता—पितर

10. वर्णाक्षर—मे

11. वर्ग—मूषक

12. लग्न स्वामी—सूर्य

13. लग्न नक्षत्र स्वामी केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—चंद्रमा

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'पण्डितश्च'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र मे जन्मा व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं व पितरों का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी पण्डित होता है, क्योंकि मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी स्वय सूर्य है जो कि लग्नेश भी है

यहा लग्न दस से ग्यारह अंशा के भीतर आरोह अवस्था में पूर्ण बली है लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र—मघा **2. पद**—4

3. नक्षत्र अंश—4/10/0/0 से 4/13/20/0 तक

4. वर्ण—क्षत्रीय **5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—मूषक **7. गण**—राक्षस

8. नाड़ी—आद्य **9. नक्षत्र देवता**—पितर

10. वर्णाक्षर—मू **11. वर्ग**—मूषक

12. लग्न स्वामी—सूर्य **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—चंद्रमा **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'पण्डितश्च'

मघा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति धार्मिक होता है वह देवताओं व पितरों का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी पण्डित होता है, क्योंकि मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी स्वयं सूर्य है जो कि लग्नेश भी है।

यहा लग्न ग्यारह से बारह अंशा के भीतर आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी मंगल की दशा में भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र—मघा **2. पद**—4

3. नक्षत्र अंश—4/10/0/0 से 4/13/20/0 तक

4. वर्ण—क्षत्रीय **5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—मूषक **7. गण**—राक्षस

8. नाड़ी—आद्य **9. नक्षत्र देवता**—पितर

10. **वर्णाक्षर**–मू

11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–सूर्य

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध** -शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितश्च

मघा नक्षत्र मे जन्मा व्यक्ति परम तेजस्वी होता है। मघा नक्षत्र का देवता पितर है, तथा नक्षत्र स्वामी केतु है। इस नक्षत्र मे जन्म व्यक्ति धार्मिक होता है। वह देवताओं व पितरों का उपासक होता है। मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी पण्डित होता है, क्योंकि मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी स्वयं सूर्य है जो कि लग्नेश भी है।

यहा लग्न बारह से तेरह अशो के मध्य में होने से आरोह अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश सूर्य की दशा श्रेष्ठ फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा चंद्रमा की दशा मध्यम फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाफाल्गुनी

2. **पद**–1

3. **नक्षत्र अंश**–4/16/40/0

4. **वर्ण**–क्षत्रिय

5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–मूषक

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–मध्य

9. **नक्षत्र देवता**–भग

10. **वर्णाक्षर**–मो

11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–सूर्य

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध** शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'समर्थो'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है। जिसका देवता भग एव स्वामी शुक्र कहा गया है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर होता है। पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न एव समर्थ होता है।

यहा लग्न तेरह से चौदह अशो के मध्य आरोह अवस्था मे पूर्ण बली है। लग्नेश सूर्य की दशा श्रेष्ठ फल देगी। मगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**—पूर्वाफाल्गुनी	2. **पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—4/16/40/0	
4. **वर्ण**—क्षत्रिय	5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—मूषक	7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—मध्य	9. **नक्षत्र देवता**—भग
10. **वर्णाक्षर**—मो	11. **वर्ग**—मूषक
12. **लग्न स्वामी**—सूर्य	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—सूर्य	15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु	17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'समर्थो'	

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है। जिसका देवता भग एव स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक मीठा बोलने वाला एव सुंदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण मे जन्मा व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न एवं समर्थ होता है।

यहा लग्न चौदह से पद्रह अशो के भीतर होने से आरोह अवस्था मे पूर्ण बली है लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 15 से 16

1. **लग्न नक्षत्र**—पूर्वाफाल्गुनी	2. **पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—4/16/40/0	
4. **वर्ण**—क्षत्रिय	5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—मूषक	7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—मध्य	9. **नक्षत्र देवता**—भग
10. **वर्णाक्षर**—मो	11. **वर्ग**—मूषक

12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'समर्थो'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एव नक्षत्र स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एव सुदर व्यक्तित्व का धनी होता है, पूर्वाफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मा जातक सर्वगुण सम्पन्न एव समर्थ होता है।

यहां लग्न पंद्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में पूर्ण बली है लग्नेश सूर्य की दशा अति उत्तम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी
2. पद 2
3. नक्षत्र अंश–4/16/40/0 से 4/20/0/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मूषक
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–भग
10. वर्णाक्षर–य
11. वर्ग–श्वान
12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'धार्मिको'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एव स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एव सुंदर व्यक्तित्व का धनी होता है। पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय चरण का स्वामी बुध होने से जातक वेद-शास्त्रों का ज्ञाता एव धर्म शास्त्रों का मर्मज्ञ होता है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में पूर्ण बली है, सूर्य की दशा जातक के लिए स्वास्थ्य वर्धक साबित होगी। मगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा में धन की प्राप्ति होगी

सिंहलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र—पूर्वाफाल्गुनी
2. पद—2
3. नक्षत्र अंश—4/16/40/0 से 4/20/0/0 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—मूषक
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—भग
10. वर्णाक्षर—टा
11. वर्ग—श्वान
12. लग्न स्वामी—सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'धार्मिक'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एव स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एव सुदर व्यक्तित्व का धनी होता है। पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय चरण का स्वामी बुध होने से जातक वेद शास्त्रों एव धर्मशास्त्रों का ज्ञाता होता है।

यहा लग्न सत्रह से अठारह अशो के भीतर मध्य अवस्था मे है पूर्ण बली है। सूर्य की दशा जातक के स्वास्थ्य के लिए उत्तम रहेगी। मगल की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा बुध की दशा मे धन की प्राप्ति होगी

सिंहलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र—पूर्वाफाल्गुनी
2. पद—2
3. नक्षत्र अंश—4/16/40/0 से 4/20/0/0 तक
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—मूषक
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—भग
10. वर्णाक्षर—टा
11. वर्ग—श्वान
12. लग्न स्वामी—सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'धार्मिक'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है इस नक्षत्र का देवता भग एव स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पूर्वाफाल्गुनी के द्वितीय चरण का स्वामी बुध होने से जातक वेद-शास्त्रो एव धर्मशास्त्रो का ज्ञाता होता है

यहा लग्न अठारह से उन्नीस अशो के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। सूर्य की दशा स्वास्थ्यवर्धक होगी। मगल की दशा अतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा मे धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी 2. पद–3

3. नक्षत्र अंश–4/20/0/0 से 4/23/20/0 तक

4. वर्ण–क्षत्रिय 5. वश्य–चतुष्पद

6. योनि–मूषक 7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–भग

10. वर्णाक्षर–टी 11. वर्ग–श्वान

12. लग्न स्वामी–सूर्य 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्न. 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्न.

18. प्रधान विशेषता–'क्रूर'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एव स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एव सुंदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। नक्षत्र स्वामी भी शुक्र है। शुक्र एक दानवी ग्रह है। लग्नेश सूर्य का साथ इसका संबध क्रूर शत्रुता का है फलतः इस नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होगा।

यहा लग्न उन्नीस से बीस अंशो के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। सूर्य की दशा स्वास्थ्यवर्धक होगी। मंगल की दशा-अतर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा मे धन की प्राप्ति होगी।

सिंहलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी 2. पद–3
3. नक्षत्र अंश–4/20/0/0 से 4/23/20/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय 5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मूषक 7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–भग
10. वर्णाक्षर–टी 11. वर्ग–श्वान
12. लग्न स्वामी–सूर्य 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व
18. प्रधान विशेषता–'क्रूर'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एवं सुंदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है। पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। नक्षत्र स्वामी भी शुक्र है। शुक्र एक दानवी ग्रह है, लग्नेश सूर्य के साथ इसका संबंध क्रूर शत्रुता का है फलतः इस नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होगा।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। सूर्य की दशा मध्यम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सिंहलग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी 2. पद–3
3. नक्षत्र अंश–4/20/0/0 से 4/23/20/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय 5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मूषक 7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–भग
10. वर्णाक्षर–टी 11. वर्ग–श्वान
12. लग्न स्वामी–सूर्य 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व. **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. प्रधान विशेषता–'क्रूर'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एव स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति मीठा बोलने वाला एव सुदर व्यक्तित्व का स्वामी होता है पूर्वाफाल्गुनी के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है तथा नक्षत्र स्वामी भी शुक्र है शुक्र एक दानवी ग्रह है, लग्नेश सूर्य के साथ इसका सबध क्रूर शत्रुता का है। फलत: इस नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होगा

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अशो के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है सूर्य की दशा मध्यम फल देगी मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा शुक्र की दशा मे पराक्रम बढ़ेगा।

सिंहलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी **2. पद**–4

3. नक्षत्र अंश–4/23/20/0 से 4.26/40/0 तक

4. वर्ण–क्षत्रिय **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–मूषक **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–भग

10. वर्णाक्षर–टू **11. वर्ग**–श्वान

12. लग्न स्वामी–सूर्य **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'अल्पजीवित'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है इस नक्षत्र का देवता भग एव स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र मे जन्मा व्यक्ति सुन्दर व्यक्तित्व का धनी तथा मीठा बोलने वाला होता है। पूर्वाफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। मंगल नक्षत्र स्वामी शुक्र का शत्रु तथा क्रूर ग्रह है। मगल, सूर्य, शुक्र तेजस्वी ग्रह है। अत: ऐसा जातक संसार मे कम ही जी पाता है।

यहां लग्न बाईस से तैईस अंशों में अवरोह अवस्था में बलवान है। सूर्य की दशा मध्यम फल देगी। मगल की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–4/23/20/0 से 4/26/40/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मूषक
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–भग
10. वर्णाक्षर–टू
11. वर्ग–श्वान
12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'अल्पजीवित'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति सुन्दर व्यक्तित्व का धनी तथा मीठा बोलने वाला होता है। पूर्वाफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। मंगल नक्षत्र स्वामी शुक्र का शत्रु एवं क्रूर ग्रह है। मंगल, सूर्य, शुक्र भी तेजस्वी ग्रह हैं। अतः ऐसा जातक संसार में कम ही जी पाता है।

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशों में अवरोह अवस्था में है तथा बलवान है। सूर्य की दशा मध्यम फल देगी। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाफाल्गुनी
2. पद–4
3. नक्षत्र अंश–4/23/20/0 से 4/26/40/0 तक
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–मूषक
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–भग
10. वर्णाक्षर–टू
11. वर्ग–श्वान
12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'अल्पजीवित'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति सुन्दर व्यक्तित्व का धनी तथा मीठा बोलने वाला होता है पूर्वाफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। मंगल नक्षत्र स्वामी शुक्र का शत्रु एवं क्रूर ग्रह है। मंगल, सूर्य, शुक्र भी तेजस्वी हैं। अतः ऐसा जातक संसार में कम ही जी पाता है

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों में अवरोह अवस्था में है तथा बलवान है सूर्य की दशा स्वास्थ्य वर्धक है। मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा

सिंहलग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र—पूर्वाफाल्गुनी **2. पद**—4

3. नक्षत्र अंश—4/23/20/0 से 4/26/40/0 तक

4. वर्ण—क्षत्रिय **5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—मूषक **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—मध्य **9. नक्षत्र देवता**—भग

10. वर्णाक्षर—टू **11. वर्ग**—श्वान

12. लग्न स्वामी—सूर्य **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी—मंगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'अल्पजीवित'

पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र की आकृति एक पलंग के पाये की तरह होती है। इस नक्षत्र का देवता भग एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति सुन्दर व्यक्तित्व का धनी तथा मीठा बोलने वाला होता है पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। मंगल नक्षत्र स्वामी शुक्र का शत्रु एवं क्रूर ग्रह है। मंगल, सूर्य, शुक्र तेजस्वी ग्रह हैं। अतः ऐसा जातक संसार में कम ही जी पाता है।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। सूर्य की दशा स्वास्थ्य वर्धक है। मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराफाल्गुनी **2. नक्षत्र पद**—1

3. नक्षत्र अंश—4/30/0/0

4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–ट
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितः'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध विद्या में विशारद लड़ाकू व साहसी होता है। यह लोग शेर की तरह अपना शिकार खुद करते हैं। दूसरों के इशारे पर चलना इन्हें बिलकुल पसंद नहीं होता। इस नक्षत्र का देवता अर्यमा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक सुखी, भोगी एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति अपने विषय का विद्वान होता है।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से हीन बली है, सूर्य की दशा में जातक के स्वास्थ्य की रक्षा होगी। मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। गुरु की दशा शुभ फल देगी.

सिंहलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–3/30/0/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–ट
11. **वर्ग**–श्वान
12. **लग्न स्वामी**–सूर्य
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितः'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध विद्या में विशारद लड़ाकू व साहसी होता है। यह लोग शेर की तरह अपना शिकार खुद करते हैं। दूसरों

ईशारे पर चलना इन्हे बिलकुल पसंद नहीं होगा। इस नक्षत्र का देवता अर्यमा एव स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक सुखी, भोगी एव भाग्यशाली होता है उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण मे जन्मा व्यक्ति अपने विषय का विद्वान् होता है।

यहा लग्न सत्ताईस से अठाइस अशो के भीतर होने से हीनबली है। सूर्य की दशा में जातक के स्वास्थ्य की रक्षा होगी। मगल की दशा अतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। गुरु की दशा शुभ फल देगी।

सिंहलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–4/30/0/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–गौ
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अर्यमा
10. वर्णाक्षर–टू
11. वर्ग–श्वान
12. लग्न स्वामी–सूर्य
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'पण्डित:'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध विद्या में विशारद लडाकू व साहसी होता है। यह लोग शेर की तरह अपना शिकार खुद करते हैं। दूसरो के ईशारे पर चलना इन्हे बिलकुल पसंद नहीं होता। इस नक्षत्र का देवता अर्यमा एव स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक सुखी, भोगी एव भाग्यशाली होता है। उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण मे जन्मा व्यक्ति अपने विषय का विद्वान् होता है।

यहा लग्न अठाईस से उन्तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर 'हीन बली' है, जातक का सारा तेज समाप्ति की ओर है। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सिंहलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश-4/30/0/0

4. **वर्ण**—क्षत्रिय

5. **वश्य**—चतुष्पद

6. **योनि**—गो

7. **गण**—मनुष्य

8. **नाडी**—आद्य

9. **नक्षत्र देवता**—अर्यमा

10. **वर्णाक्षर**—टू

11. **वर्ग**—श्वान

12. **लग्न स्वामी**—सूर्य

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—सूर्य

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

18. **प्रधान विशेषता**—'पण्डितः'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति युद्ध विद्या में विशारद, लड़ाकू व साहसी होता है। यह लोग शेर की तरह अपना शिकार खुद करते हैं। दूसरों के ईशारे पर चलना इन्हे बिलकुल पसंद नहीं होता। इस नक्षत्र का देवता अर्यमा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक सुखी, भोगी एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण मे जन्मा व्यक्ति अपने विषय का विद्वान् होता है।

यहा लग्न उनतीस से तीस अंशो वाला अवरोही अवस्था मे मृतावस्था में है एवं निस्तेज है। मंगल की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

□□□

सिंहलग्न और आयुष्य योग

1. सिंहलग्न वालों के लिये बुध परम पापी एवं मुख्य मारकेश का काम करेगा। यहा चद्रमा सहायक मारकेश का काम करेगा। शनि पापी है तथा सूर्य आयुष्य प्रदाता ग्रह है।
2. सिंहलग्न मे जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु वात या पित्त विकार से, शस्त्र से घाव, अतिसार (दस्त) या बदहजमी के रोग से होती है
3. सिंहलग्न वालो की औसत आयु 70 वर्ष मानी गई है। जातक को जन्म के उपरान्त 1, 5, 10 13 15, 22, 25, 28 32, 36, 45, 51, 58 और 61 वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट तथा अल्प मृत्यु का भय रहता है।
4. सिंहलग्न मे गुरु हो, शुक्र कर्क का, चद्रमा द्वितीय स्थान में कन्या राशि का और पाप ग्रह तीसरे छठे एव ग्यारहवें स्थान पर हो तो ऐसा व्यक्ति चिरंजीवी होता है।
5. सिंहलग्न हो, सभी केंद्र में (1/4/7 10) में शुभ ग्रह हो तथा पाप ग्रह तीसरे छठे एव एकादश भाव मे हो तो जातक चिरंजीवी होता है
6. सिंहलग्न में सूर्य हो तो जातक दीर्घ देह वाला एव उत्तम आयु को भोगने वाला होता है।
7. सिंहलग्न मे सूर्य एव मगल हो तो जातक सौ वर्ष तक की स्वस्थ आयु को भोगता है।
8. सिंहलग्न मे सूर्य एव मंगल आठवें हो तथा वृश्चिक का गुरु केन्द्र मे हो तो ऐसा जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है
9. सिंहलग्न मे सिंह का नवमांश हो तथा चार ग्रह त्रिकोण मे हो तो व्यक्ति सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

10. सिंहलग्न में शनि उच्च का यदि तृतीय भाव में हो तो जातक को दीर्घायु देता है।

11. सिंहलग्न में सूर्य के साथ शनि कुम्भ राशि में केन्द्रवर्ती हो तो जातक सौ वर्ष से अधिक दीर्घायु को भोगता है।

12. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु लग्न में हो तथा शुक्र व अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है

13. सिंहलग्न में चंद्रमा छठे मकर का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

14. सिंहलग्न में वृश्चिक का मंगल दशम भाव को देखता हो, बुध एवं शुक्र की युति केंद्र-त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है

15. सिंहलग्न में शनि मेष का, मंगल पांचवें धनु का एवं सूर्य सातवें कुम्भ का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

16. सिंहलग्न में कुम्भ का गुरु पाप ग्रहों के साथ केन्द्र में हो तो ऐसा व्यक्ति ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है

17. शनि लग्न में, वृश्चिक का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है

18. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु सातवें हो तथा पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 56 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

19. सिंहलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक एवं विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य पाप ग्रहों के साथ अष्टम भाव में हो तथा अष्टमेश गुरु पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में किसी भी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक 45 वर्ष की आयु तक ही जी पाता है।

21. सिंहलग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें एवं गुरु छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

22. सिंहलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो लग्नेश सूर्य निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय व द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

23. सिंहलग्न में मेष का गुरु एवं मीन के मंगल के परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

24. सिंहलग्न में लग्नस्थ सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो लग्न से दूसरे एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्न में एकाधिक शत्रु ग्रहों की युति हो तो ऐसे जातक की मृत्यु 47वें वर्ष में अस्त्र शस्त्र एवं विस्फोटक सामग्री से होती है।

25. सिंहलग्न में सूर्य मकर का एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

26. सिंहलग्न के दूसरे घर कन्या राशि में राहु+शुक्र+शनि+सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा कुछ समय के बाद स्वयं भी मर जाता है।

27. सिंहलग्न के प्रथम भाव में सूर्य+शनि+राहु+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र गुजर जाता है।

28. सिंहलग्न के छठे भाव में गुरु+सूर्य+राहु+मंगल हो तथा सातवें शुक्र हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। जातक को कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

29. सिंहलग्न के द्वादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृ घातक होता है।

30. सिंहलग्न के नवम भाव में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृ घातक होता है।

31. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो सप्तम में शनि एवं चंद्रमा निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

32. सिंहलग्न में चंद्रमा पाप ग्रह के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

33. सिंहलग्न में षष्ठेश शनि सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

34. सिंहलग्न में निर्बल चन्द्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

सिंहलग्न और रोग

1. सिंहलग्न में सूर्य सातवें हो तो जातक को नेत्र रोग होता है।
2. सिंहलग्न में शनि हो तो मनुष्य जन्म से अंधा होता है।
3. सिंहलग्न में शनि हो तो मनुष्य भेंगा (बाडा) होता है।
4. सिंहलग्न में षष्ठेश शनि लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
5. सिंहलग्नस्थ सूर्य और चंद्रमा को यदि मंगल किंवा शनि देखे तो मनुष्य नेत्रहीन हो जाता है।
6. सिंहलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश चंद्रमा पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. सिंहलग्न में चतुर्थेश मंगल, अष्टमेश गुरु के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. सिंहलग्न में चतुर्थेश मंगल कर्क राशि का अथवा आठवें हो एवं अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
9. सिंहलग्न में शनि वृश्चिक का चौथे षष्टम भाव में सूर्य अन्य पाप ग्रहो के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
10. जातक पारिजात के अनुसार सिंहलग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
11. सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में शनि हो तथा कुंभ का सूर्य सातवें हो तो जातक को हृदय रोग होता है
12. सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पाप ग्रहो से दृष्ट हो तथा लग्नेश सूर्य निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट अटैक) होता है।
13. सिंहलग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।

14. सिंहलग्न में सूर्य+मंगल+गुरु की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो ऐसे जातक की वाहन दुर्घटना में अकाल मृत्यु होती है।
15. सिंहलग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश सूर्य बलहीन हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है
16. सिंहलग्न में क्षीण चंद्रमा लग्नस्थ हो लग्न को पाप ग्रह देख रहा हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।
17. सिंहलग्न में चंद्रमा छठे मकर का हो अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केंद्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
18. सिंहलग्न में वृश्चिक का मंगल दशम भाव को देखता हो बुध एवं शुक्र की युति केंद्र त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।
19. सिंहलग्न में शनि मेष का, मंगल पांचवें धनु का एवं सूर्य सातवें कुंभ का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।
20. सिंहलग्न में कुंभ का गुरु पाप ग्रहों के साथ केंद्र में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान् होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
21. शनि लग्न में वृश्चिक का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
22. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु सातवें हो तथा पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
23. सिंहलग्न में शनि अन्य किसी भी ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा आठवें या द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एवं विद्वान होता हुआ 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
24. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य पाप ग्रहों के साथ अष्टम भाव में हो तथा अष्टमेश गुरु पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में किसी भी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
25. सिंहलग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें एवं गुरु छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
26. सिंहलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश सूर्य निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय व द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

27. सिंहलग्न में मेष के गुरु एवं मीन के मंगल के परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से 'बालारिष्ठ योग' बनता है। ऐसे जातक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के भीतर होती है।

28. सिंहलग्न में लग्नस्थ सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो लग्न से दूसरे एवं द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्न में एकाधिक शुभ ग्रहों की युति हो तो ऐसे जातक की आयु के 47वें वर्ष में मृत्यु अस्त्र शस्त्र एवं विस्फोटक सामग्री से होती है।

29. सिंहलग्न में सूर्य मकर का एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

30. सिंहलग्न के दूसरे घर कन्या राशि में राहु+शुक्र+सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा कुछ समय बाद स्वयं भी मर जाता है।

31. सिंहलग्न के प्रथम भाव में ही सूर्य+शनि+राहु+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र गुजर जाता है।

32. सिंहलग्न के छठे भाव में गुरु+सूर्य+राहु+मंगल हो तथा सातवें शुक्र हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई-न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

33. सिंहलग्न के द्वादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृ घातक' होता है।

34. सिंहलग्न के नवम भाव में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृ घातक' होता है।

35. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम में शनि एवं चंद्रमा निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

36. सिंहलग्न में चंद्रमा पाप ग्रह के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

37. सिंहलग्न में षष्टेश शनि सप्तम या दशम भाव में हो लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

38. सिंहलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेतबाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

सिंहलग्न और धनयोग

सिंहलग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धन प्रदाता ग्रह बुध होता है। धनेश बुध की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से संबध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, बुध एवं धन स्थान पर पड़ने वाले ग्रहों के दृष्टि संबध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल अचल सम्पत्ति का पता चलता है इसके अतिरिक्त लग्नेश सूर्य, पचमेश गुरु, भाग्येश मगल की अनुकूल स्थितियां सिहलग्न वालों के लिये धन, ऐश्वर्य एव वैभव को बढ़ाने में सहायक होती हैं।

वैसे सिहलग्न के लिये शनि, बुध परम पापी व मुख्य मारकेश का काम करेगा, चद्रमा साहचर्य से अशुभ फल देगा। सूर्य शुभ फलदायक है। सुखेश व नवमेश मगल अति शुभ कारक है।

शुभ योग– गुरु+मंगल, मगल+सूर्य

अशुभ योग– 1 गुरु+शुक्र 2. मंगल+शुक्र, 3. सूर्य+शनि

निष्फल योग– 1. मगल+शनि, 2. गुरु+शुक्र, 3 गुरु+शनि

सफल योग– 1. सूर्य+मगल 2. सूर्य+गुरु, 3 मगल+गुरु

राजयोग कारक– गुरु व मंगल

लक्ष्मी योग– बुध द्वितीय, नवम या एकादश मे सूर्य या शुक्र सप्तम मे, गुरु पंचम में।

विशेष योगायोग

1. सिहलग्न में बुध, मिथुन या कन्या राशि में हो तो जातक धनाध्यक्ष होता है, लक्ष्मी उसका पीछा नहीं छोड़ती।
2. सिहलग्न में बुध, शुक्र के घर में तथा शुक्र, बुध के घर मे परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा खूब धन कमाता है।

3. सिंहलग्न में मंगल मेष या वृश्चिक राशि का हो तो जातक अल्प प्रयत्न से ही बहुत धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति धन के मामले में भाग्यशाली होता है
4. सिंहलग्न में बुध मंगल के घर में तथा मंगल बुध के घर में अर्थात् बुध, मेष व वृश्चिक राशि में हो तथा मंगल मिथुन या कन्या राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है। लक्ष्मी चेरी की तरह उसकी दासी बनी रहती है।
5. सिंहलग्न में शुक्र यदि केंद्र त्रिकोण में हो तथा बुध स्वगृही होकर मिथुन या कन्या राशि में हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर व्यक्ति धीरे धीरे अपने पराक्रम व पुरुषार्थ से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति हो जाता है।
6. सिंहलग्न में सूर्य हो तथा गुरु एवं मंगल से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है तथा धनशाली व्यक्तियों में अग्रगण्य होता है।
7. सिंहलग्न में पंचमस्थ गुरु स्वगृही हो तथा लाभ स्थान में चंद्र, मंगल हो तो जातक महालक्ष्मीवान होता है।
8. सिंहलग्न हो पंचम गुरु तथा लाभ स्थान में बुध स्वगृही हो तो महालक्ष्मी योग बनता है। ऐसा जातक लक्षाधिपति होता है।
9. सिंहलग्न में सूर्य, मिथुन राशि में हो तथा बुध लग्न में सिंह राशि में हो तो जातक 33 वर्ष की आयु में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुये स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।
10. सिंहलग्न हो, लग्नेश सूर्य, धनेश बुध, भाग्येश मंगल अपनी अपनी उच्च व स्वराशि में हो तो जातक करोड़पति होता है।
11. सिंहलग्न के द्वितीय स्थान में राहु शुक्र, मंगल और शनि की युति हो तो जातक अरबपति होता है।
12. सिंहलग्न में धनेश बुध यदि छठे, आठवें और बारहवें स्थान में हो तो ''धनहीन योग'' की सृष्टि होती है जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर पाता ठीक उसी प्रकार ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता। जातक को सदैव रुपयों की कमी बनी रहती है। इस योग की निवृत्ति हेतु गले में अभिमंत्रित ''बुध यंत्र'' धारण करना चाहिये। पाठक चाहे तो ''बुध यंत्र'' हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।
13. सिंहलग्न में धनेश बुध यदि आठवें हो तथा सूर्य यदि लग्न में हो तो जातक को भूमि में गढ़े हुये धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिलता है पर जातक के पास रुपया नहीं टिकता

14. लग्नेश व द्वितीयेश यदि तुला राशि में हो तो जातक को भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होता है और जातक भाइयों द्वारा कमाया गया धन भोगता है।

15. शुक्र सूर्य के नवांश में हो तो जातक ऊन, रुई, घास, धान, सोना, चाँदी आदि के व्यापार से अर्थ उपार्जित करता है।

16. लग्न में गुरु, 10वें बुध या 4-7वें केन्द्र स्थानों में बुध एवं उसे नवमेश देखता हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।

17. राहु वृष राशि का हो, शनि लाभ भाव में हो तथा भाग्येश उसे देख रहा हो एवं लग्नेश नीचस्थ ग्रह से युत न हो तो जातक आनन्दमय जीवन व्यतीत करता है। जातक को आर्थिक चिन्ता कभी नहीं रहती

18. मंगल उच्च का हो, उसे सूर्य, चन्द्र व गुरु देखते हो तो जातक को पूर्ण वाहन सुख, पारिवारिक एवं आर्थिक सुख मिलता है।

19. चन्द्रमा व शनि दशम भाव में हो या सुख स्थान में हो तो ब्रह्माण्ड योग होता है। जातक अतुल सम्पदा प्राप्त करता है।

20. चन्द्रमा मकर का तथा चन्द्रमा के साथ सूर्य हो, उसे शनि देखे तो जातक दुःखी, परेशान, चिन्तित व दरिद्र जीवन व्यतीत करता है।

21. लग्नेश लग्न में हो तथा दशमेश चतुर्थ भाव में एवं चतुर्थ भाव का स्वामी दशम भाव में हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है, जातक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होता है।

22. सूर्य, मंगल, बुध आय भवन में मिथुन राशि में स्थित हो तो जातक धनाढ्य होता है।

23. बुध पंचम भाव, एकादश भाव या दूसरे भाव में हो तथा सिंहलग्न हो तो जातक को यकायक अर्थ लाभ होता है।

24. सिंहलग्न हो तथा शुक्र, गुरु कहीं भी एक साथ बैठ जाय तो जातक को लखपति होने पर भी कंगाल बनना पड़ता है। यदि शुक्र, गुरु, बुध तीनों मेषस्थ हों तो कुबेर को भी कंगाल होना पड़ता है

25. अष्टमेश गुरु 4, 5, 9, 10 स्थानों में हो तथा लग्नेश निर्बल हो तो जातक दिवालिया होता है

26. सिंहलग्न में मंगल मेष या वृश्चिक राशि में हो तो "रुचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अर्थात् भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

27. सिंहलग्न में सुखेश मंगल, लाभेश बुध नवम भाव में शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

28. सिंहलग्न में गुरु-चंद्र की युति कन्या, वृश्चिक, धनु या मेष राशि में हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन प्राप्त होता है।

29. सिंहलग्न में धनेश बुध अष्टम में एवं अष्टमेश गुरु धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, सटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है

30. सिंहलग्न में तृतीयेश शुक्र लाभ स्थान में एवं लाभेश बुध तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

31. सिंहलग्न में बलवान बुध के साथ यदि चतुर्थेश मंगल की युति हो तो व्यक्ति को माता, नौकर, वाहन, भूमि एवं भवन के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

32. सिंहलग्न में यदि बलवान बुध के साथ पंचमेश गुरु हो तथा द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

33. सिंहलग्न में बलवान बुध की यदि षष्ठेश शनि से युति हो तथा धन भाव मंगल से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है

34. सिंहलग्न में बलवान बुध की सप्तमेश शनि से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

35. सिंहलग्न में बलवान बुध की नवमेश मंगल से युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी अनुबन्ध (ठेके) से काफी रुपया कमाता है।

36. सिंहलग्न में बलवान बुध की दशमेश शुक्र से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा सम्पादित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

37. सिंहलग्न में दशम भवन का स्वामी शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक जन्म स्थान में नहीं कमा पाता, उसे धन की सदैव कमी बनी रहती है।

38. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो तथा धनेश बुध निर्बल हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

39. सिंहलग्न के धन भाव में पाप ग्रह बैठा हो तथा लाभेश बुध यदि छठे आठवें बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

40. सिंहलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्र यदि गुरु से छठे आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

41. सिंहलग्न में धनेश बुध यदि अस्त हो नीच राशि (मीन) में हो तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता ही नहीं।

42. सिंहलग्न में लग्नेश बुध यदि छठे आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत एवं पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

43. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु वक्री होकर कहीं बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अतः सावधान रहें।

44. सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत (मकर) या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

सिंहलग्न और विवाह योग

1. सप्तम भाव में मकर का गुरु हो तो जातक को स्त्री का सुख अल्प ही मिलता है
2. गुरु से केन्द्र में शुक्र और लग्नेश हों और नवम भाव का स्वामी बलवान हो तो जातक दीर्घायु, धनी, गुणी चतुर रोग भय से रहित, भूमि सुन्दर स्त्री से युक्त, उच्च पद को प्राप्त करने वाला होता है।
3. सप्तमेश शुभ ग्रह की राशि में हो तथा शुक्र अपनी उच्च की राशि में हो तो जातक का विवाह नौ वर्ष की अवस्था में होता है
4. सिंहलग्न में शनि लग्नस्थ चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
5. सिंहलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय भाव में या द्वादश भाव में सूर्य हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
6. सिंहलग्न में शनि छठे हो, सूर्य आठवें हो तथा शुक्र बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता.
7. सिंहलग्न में सूर्य, शनि के साथ शुक्र भी हो, सूर्य कमजोर या नीच का हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. सिंहलग्न में शुक्र लग्न या द्वादश स्थान में हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. सिंहलग्न में राहु या केतु हो, शुक्र मिथुन, सिंह, कन्या, धनु (वन्ध्या) राशिगत हो तो जातक का विवाह विलम्ब से होता है तथा जातक को जीवन साथी से तृप्ति नहीं मिलती
10. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्रायः अन्तर्जातीय विवाह करता है।

11. सिंहलग्न में द्वितीयेश बुध अस्त हो, द्वितीय भाव में कोई ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है

12. सिंहलग्न में सप्तमेश शनि वक्री हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आते हैं। जातक का विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता

13. सिंहलग्न में चंद्रमा यदि स्थिर (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भ) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अक्षतयोनि होती है।

14. सिंहलग्न में शनि सातवें हो, शुभ ग्रह उसे न देखते हो तो ऐसी स्त्री का पति बूढ़ा तथा पापी होगा।

15. सिंहलग्न में षष्ठेश शनि, मंगल के साथ द्वितीय भाव (कन्या राशि) में अथवा एकादश भाव (मिथुन राशि) में हो तो ऐसा जातक स्त्री सहवास के योग्य नहीं होता अर्थात् नपुंसक होता है।

16. सिंहलग्न में चंद्रमा यदि (1,3,5,7,9,11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक प्रकृति की होती है।

17. सिंहलग्न में यदि सूर्य, मंगल, गुरु, चंद्र, बुध, शुक्र, शनि बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थिति वश परपुरुष की अंकशायिनी बन सकती है।

18. सिंहलग्न में चंद्र और शुक्र लग्नस्थ हो तथा पंचम स्थान पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो वह नारी बन्ध्या होती है

19. सिंहलग्न में सप्तमेश शनि स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक या कुम्भ) में हो तथा चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो तो ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है।

20. सिंहलग्न में स्वगृही सूर्य लग्न में अष्टमेश गुरु के साथ हो तो "द्विभार्या योग" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

21. सिंहलग्न में बुध, शुक्र और शनि ये तीनों यदि दशम भाव में हो तो ऐसा पुरुष व्यभिचारी होता है।

22. सिंहलग्न में सप्तमेश शनि यदि द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा जातक जीवन में अनेक स्त्रियों से सभोग करता है।

23. सिंह का सूर्य लग्न में एवं सातवें भाव में शनि हो तो ऐसे जातक का दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहता है। जातक की अपने जीवन साथी से विचार धारा बिलकुल नहीं मिलती। इसके विपरीत सूर्य सातवें और शनि लग्न में हो तो भी यही योग बनता है।

❑❑❑

सिंहलग्न और संतान योग

1. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु यदि आठवें हो तो जातक के अल्प संतति होती है।
2. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु अस्त हो या पाप ग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
3. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु लग्न में हो तथा मंगल या सूर्य से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक की प्रथम संतान पुत्र ही होगा।
4. सिंहलग्न में पंचमस्थ गुरु धनु राशि में हो तो जातक के पांच पुत्र होते हैं। यदि सूर्य भी साथ में हो तो छः पुत्र होंगे।
5. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु लग्न में हो एवं लग्नेश सूर्य पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरों की संतान गोद में लेकर पालता है।
6. सिंहलग्न में सूर्य+चंद्रमा हो तो तथा मंगल राहु व शनि से युत हो तो ऐसे जातक को मातृ शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती
7. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
8. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु कमजोर हो राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान प्राप्त होती है।
9. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
10. सिंहलग्न में लग्नेश सूर्य द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश गुरु पाप ग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाते हैं।
11. सिंहलग्न में पंचमेश गुरु बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक संसार में विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

12. पचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

13. सिंहलग्न मे पंचमेश गुरु की सप्तमेश शनि से युति हो तो जातक को प्रथम सतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

14. गुरु सिंहलग्न में हो एव पचम भाव पर दृष्टि होने से जातक के पुत्र अधिक होते हैं

15. लग्न मे पाप ग्रह चतुर्थ में चंद्रमा, लग्नेश धनु राशि में पंचम भाव में हो तथा पंचमेश बलहीन हो तो जातक वंश विच्छेदक होता है।

16. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

17. पचमेश गुरु निर्बल हो, लग्नेश सूर्य भी निर्बल हो तथा पचम भाव में राहु हो तो जातक के यहां सर्पदोष के कारण पुत्र संतति नहीं होती।

18. पचम भाव मे राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हो तो पद्म नामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के यहां पुत्र सतान नहीं होती। एसे जातक को वंश वृद्धि की चिन्ता एव मानसिक तनाव रहता है।

19. सूर्य अष्टम हो पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृ दोष होता है तथा पितृ शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

20. लग्न में मगल अष्टम में शनि, पचम में सूर्य एव बारहवें स्थान में राहु या केतु हों तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़ियां नहीं चलती।

21. सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उससे आगे पीढ़िया नहीं चलतीं।

22. तीन केन्द्रों मे पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को "इलाख्य" नामक सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

23. सिंहलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो "अनपत्य योग" बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

24. पचम भाव में मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं होती।

25. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है। ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

26. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती

27. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चद्रमा यदि पचम स्थान मे हो तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

28. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि मे हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र संतान नहीं होता।

❑❑❑

सिंहलग्न और राजयोग

1. जिसका जन्म लग्न सिंह के पूर्णांश पर हो और लग्न में स्वगृही सूर्य पूर्णांश पर हो, गुरु स्वगृही पचम स्थान में हो उच्च का मंगल शत्रु भाव में हो, स्वगृही शनि स्त्री स्थान में हो और उच्चाभिलाषी चद्रमा मेष का भाग्य स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
2. सिंह का लग्न में गुरु, कन्या या नीच का शुक्र दूसरे या धन भाव में, मिथुन का शनि पराक्रम मे और स्वक्षेत्री वृश्चिक का मंगल भी यदि चतुर्थ हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव भोगता है।
3. उच्च का शुक्र, उच्च का मगल तथ शनि चद्रमा कन्या के धन भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव भोगता है।
4. सिंह का गुरु लग्न में हो और शेष सभी गृह पराक्रम या तृतीय, पंचम, छठे तथा द्वादश भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
5. लग्न मे सूर्य, तीसरे शुक्र चतुर्थ में मंगल तथा पचम भाव में गुरु हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
6. भाग्य स्थान में मेष का सूर्य, राज्य स्थान में वृष का चद्रमा, लाभ स्थान में मिथुन का बुध और कुम्भ का शनि सप्तम स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव भोगता है।
7. उच्च का बुध धन स्थान मे, धन का गुरु पुत्र भाव मे, मेष का मंगल भाग्य स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
8. वृष का शुक्र कर्म स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
9. सिंह का सूर्य लग्न में, वृश्चिक का मंगल चतुर्थ में, कुम्भ का शनि सप्तम और वृष राशि का शुक्र दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।

10. सिंह का सूर्य लग्न में, धन का गुरु पंचम में, कुम्भ का शनि सप्तम में, मेष का मंगल भाग्य स्थान में और वृष का चंद्रमा राज्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव भोगता है।
11. उच्च का सूर्य नवम स्थान में हो, उच्च का शनि तीसरे स्थान में हो, उच्च का मंगल छठे भाव में हो और वृष का स्वगृही शुक्र यदि दशम स्थान में हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।
12. यदि सिंह का स्वगृही सूर्य लग्न में पूर्णांश में बलवान हो और धन में रुप गुरु स्वगृही, मंगल के साथ पंचम स्थान में हो तो मनुष्य बहुत धनवान होता है।
13. यदि सिंहलग्न में स्वगृही सूर्य के साथ चंद्रमा और गुरु बैठे हों, कन्या में उच्च का बुध नीच के शुक्र के साथ दूसरे स्थान में बैठा हो, स्वगृही कुम्भ का शनि सप्तम में हो और कर्क में नीच का मंगल द्वादश स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
14. सिंह का गुरु, शुक्र, स्वगृही सूर्य के साथ लग्न में हो, कन्या का बुध, मंगल के साथ दूसरे भाव में हो, कुम्भ का स्वगृही शनि सप्तम स्थान में और कर्क का स्वगृही चंद्रमा द्वादश स्थान में हो तो मनुष्य का भाग्योदय विदेश में होता है।
15. यदि सिंहलग्न वाले मनुष्य की जन्मपत्री में मेष या उच्च का सूर्य भाग्य स्थान में हो, वृष में उच्च का चंद्रमा राज्य स्थान में हो और मिथुन का राहु लाभ स्थान में हो तो वह मनुष्य सुप्रसिद्ध राज्याधिकारी होता है। जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
16. यदि लग्न में सिंह का सूर्य हो, धन का गुरु पंचम हो, नवम स्थान में मेष का चंद्रमा, छठे स्थान में मकर का मंगल हो और सप्तम स्थान में कुम्भ का शनि हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।
17. लाभेश नवम भाव में दशमेश से युक्त हो तो जातक आई.ए.एस. ऑफीसर बनता है।
18. शुक्र कन्या का द्वितीय भाव में हो व लग्नेश मेष का हो तो जातक गुणी, राज्य पूज्य व उच्च शासनाधिकारी होता है।
19. नवमेश जहां स्थित हो, उसका नवांशेश चौथे या 5वें भाव में हो तो रुद्र योग होता है। जातक उच्च पद की प्राप्ति करता है।
20. गुरु कर्क का हो, गुरु का नवांशपति त्रिकोण में हो या उच्च का या स्वगृही हो, बलवान हो और लग्नेश भी बली हो तो जातक राज्य मे उन्नति करता है व दूसरों पर प्रभाव डालता है।

21. गुरु लाभेश परमोच्च होकर द्वितीय स्थान में हो और दशमेश से दृष्ट हो तो धरियाग होता है। जातक के पास कई हाथी, घोड़े होते हैं सज्जन उसके आश्रित रहते हैं तथा 34 वर्ष की आयु में जातक का भाग्योदय होता है।

22. सिंहलग्न में जन्म समय में सिंह वृष, कन्या कर्क इन चारों राशियों में से किसी में भी राहु हो तो जातक महाराजाधिराज और लक्ष्मी से सम्पन्न होता है। राहु उच्च में हो तो हाथी, घोड़ा, मनुष्य तथा नाव की सवारी वाला जमीन वाला, पंडित और अपने कुल का श्रेष्ठ होता है।

23. सिंह में गुरु, तुला, कर्क, धनु मकर में शेष सब ग्रह हों तो जातक प्रान्तपति होता है।

❑❑❑

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में

6	5 सू	4
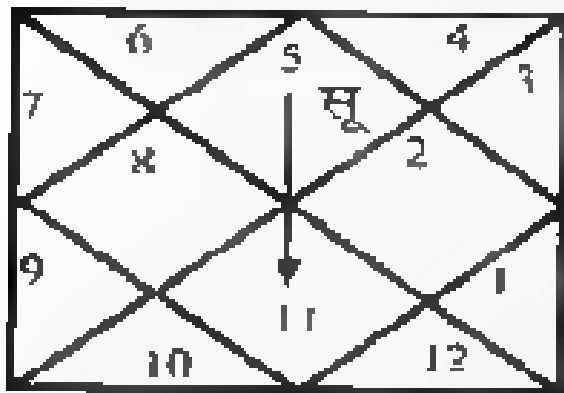
सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देता। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। प्रथम स्थान में सूर्य सिंह राशि में स्वगृही होगा। ऐसे जातक का चेहरा गोल, मुंह चौड़ा, ललाट चमकीला तथा व्यक्तित्व रौबदार होता है। जातक प्रबंधन और शासन कार्य में रुचि रखता है तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में शान समझता है। 'रविकृत राजयोग' के कारण जातक परम पराक्रमी, धनी एवं महत्वाकांक्षी होता है यदि लग्न दस से सोलह अंशों के मध्य हो तो जातक IAS, RJS या उच्चाधिकारी होगा।

निशानी–जातक का जन्म पिता के लिए शुभ, जातक के शरीर के दायें भाग में लाल रंग का चिह्न होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः जातक का जीवन साथी एकांकी स्वभाव का होगा।

दशा–सूर्य की दशा अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। जातक उत्तम स्वास्थ्य का सुख भोगेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है, व्ययेश चंद्र लग्नेश सूर्य के साथ होने से व्यक्ति को नेत्र पीड़ा रहेगी। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा।

2. **सूर्य + मंगल**—भाग्येश मंगल लग्न में सूर्य के साथ होने से जातक राजा या राजा से कम सौभाग्यशाली नहीं होगा।

3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। प्रथम भाव में सिंह राशि गत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायगी। यहां पर यह युति बहुत सार्थक है सूर्य लग्न में होने से रविकृत राजयोग बनेगा बुध यहां उच्चाभिलाषी है जो केन्द्र में कुलदीपक योग बनायेगा इस योग के कारण ऐसा जातक धनवान एवं बुद्धिमान होगा। जातक उच्च पदस्थ राज्याधिकारी होगा। जातक समाज का बहुप्रतिष्ठित व्यक्ति एवं एक सफल व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु लग्न में सूर्य के साथ होने से जातक राजगुरु के पद पर होगा। बड़े-बड़े मंत्री राजनेता उससे सलाह लेंगे।

5. **सूर्य + शुक्र**—तृतीयेश दशमेश शुक्र, सूर्य के साथ लग्न में होने से व्यक्ति शक्तिशाली राजनेता होगा। जातक सरकारी अधिकारी होगा।

6. **सूर्य + शनि**—सिंहलग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की षष्ठेश, सप्तमेश शनि के साथ युति होगी। सूर्य यहां स्वगृही है शनि मारकेश है। ऐसा जातक राजकीय ऐश्वर्य से युक्त होते हुए षड्यंत्र का शिकार होगा।

7. **सूर्य + राहु**—लग्न में यदि राहु के साथ सूर्य हो तो राज्य सुख में बाधा आयगी।

8. **सूर्य + केतु**—लग्न में सूर्य के साथ केतु जातक को यशस्वी बनायेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। यह कभी अशुभ फल नहीं देता। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां द्वितीय स्थान में सूर्य कन्या (सम) राशि में होगा। जातक को विद्या, बुद्धि, धन-सम्पत्ति और कुटुम्ब का उत्तम सुख मिलेगा। जातक अपने पुरुषार्थ पराक्रम से यथेष्ट धन कमायेगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि) पर होगी जातक ऋण रोग व शत्रुओं का दमन करने में सक्षम होगा।

निशानी–सूर्य नीचाभिलाषी होने मे स्त्री व जमीन के झगड़े में धन का नाश होगा। जातक राजदरबार (राजनीति) मे पद तो प्राप्त करता है पर शत्रुओं से घिरा रहेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अतर्दशा में परिश्रम का लाभ मिलकर जातक को धन की प्राप्ति होगी। कुटुम्ब का सुख मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चद्र**–सिहलग्न मे चद्र+सूर्य युति द्वितीय स्थान में होने से जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या प्रात: सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। यहा व्ययेश चंद्रमा के शत्रुक्षेत्री होकर लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को धन संग्रह के मामले में काफी दिक्कतें उठानी पड़ेंगी।
2. **सूर्य + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मगल द्वितीय भाव में सूर्य के साथ होने से जातक अपने पराक्रम से बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। द्वितीय स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां उच्च का होगा। बलवान धनेश की लग्नेश के साथ यहां पर यह युति बहुत ही सार्थक है जातक अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा जातक अपने पुरुषार्थ व बुद्धिबल से बहुत धन कमायेगा। जातक की आयु लम्बी होगी क्योंकि दोनों ग्रहो की दृष्टि अष्टम भाव पर होगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति तथा बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु धन के स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक प्रथम पुत्र के जन्म के बाद धनवान होगा
5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र के साथ सूर्य होने से जातक के परिजन धनवान व प्रतिष्ठित होगे।
6. **सूर्य + शनि**–लग्नेश सूर्य की मारकेश शनि के साथ धन स्थान (कन्या राशि) मे यह युति धन के लिए प्रारंभिक सघर्ष की द्योतक है। पिता की मृत्यु के बाद ही जातक धनवान होगा।
7. **सूर्य + राहु**–सूर्य के साथ राहु होने से जातक अपने व्यक्तित्व को निखारने के लिए धन खर्च करेगा।
8. **सूर्य + केतु**–सूर्य के साथ केतु होने से धन का अपव्यय होगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में
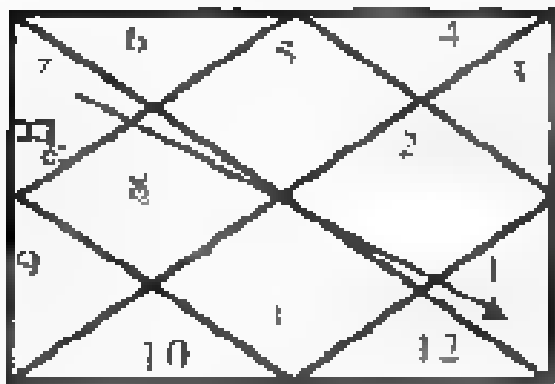
सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां तृतीय स्थान में सूर्य तुला (नीच) राशि का होगा। तुला के दस अंशों में सूर्य परम नीच का होता है जातक को सहोदर व पिता का सुख मिलता है। जातक अत्यन्त पराक्रमी होता है। मित्रों के सहयोग से जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होती है।

दृष्टि—तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्य भवन (मेष राशि) में अपनी उच्च राशि पर होने के कारण जातक भाग्यशाली होगा।

निशानी—जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के ज्येष्ठ भाई का नाश होगा।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा में में जातक का भाग्योदय होगा एवं पराक्रम बढ़ेगा। मित्रों की संख्या में वृद्धि होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति तृतीय स्थान में होने से जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। यहां व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिल पायेगी।
2. **सूर्य + मंगल**—भाग्येश, सुखेश, मंगल के तृतीय स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक भाग्यशाली होगा एवं परिजनों-भाइयों के सहयोग से आगे बढ़ेगा।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। तृतीय स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां नीच राशि का होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलतः जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एवं महा पराक्रमी होगा उसका भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा मित्र परिजनों से जातक को सहायता मिलती रहेगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक का सही विकास पुत्र जन्म के बाद होगा.
5. **सूर्य + शुक्र**—शुक्र की सूर्य के साथ युति से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

6. **सूर्य + शनि**—तृतीय स्थान मे उच्च के शनि के साथ लग्नेश की युति पराक्रम भग करायेगी। यहा 'नीचभग राजयोग' के कारण जातक महान पराक्रमी एव धनी होगा परन्तु कुख्यात होगा। जातक अपने बुरे कार्मा द्वारा पहचाना जायेगा
7. **सूर्य + राहु**—सूर्य के साथ राहु भाइयो मे विग्रह, कोर्ट-केस करायेगा।
8. **सूर्य + केतु**—सूर्य के साथ केतु होने से परिजनों में वैमनस्य रहेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
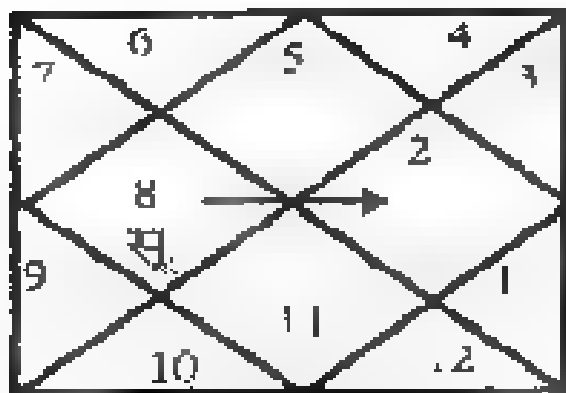
6 5 4 3 7 2 8 सू. 9 1 11 10 12

सिहलग्न मे सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य गह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां चतुर्थस्थ सूर्य वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा सूर्य की यह स्थिति आध्यात्मिक व भौतिक सुखों हेतु लाभकारी है।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत सूर्य की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक को राज दरबार एव सरकारी नौकरी से लाभ होता है।

निशानी—जातक को पिता की सम्पत्ति प्राप्त होगी। जातक विद्यावान होगा परन्तु जातक की विशेष तरक्की 32 वर्ष की आयु के बाद होगी।

दशा—सूर्य की दशा-अतर्दशा में जातक को भौतिक, सासारिक सुखों की प्राप्ति होगी, नौकरी लगेगी एवं आध्यात्मिक लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—सिहलग्न मे चद्र+सूर्य युति चतुर्थ स्थान मे होने से जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 बजे के लगभग होता है। यहा व्ययेश चंद्रमा नीच का होकर लग्नेश सूर्य के साथ होगा। जातक की माता बीमारी रहेगा या कम उम्र में गुजर जायेगी।
2. **सूर्य + मंगल**—भाग्येश, सुखेश मंगल सूर्य के साथ 'मालव्य योग' बनायेगा जातक राजा के समान सुख वैभव से परिपूर्ण जीवन जीयेगा।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार सिहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। चुतर्थ भाव में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध के कैन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। यहा बैठ कर दोनो ग्रह दशम स्थान को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक को माता पिता की सम्पत्ति,

उत्तम वाहन एवं उत्तम भवन का सुख मिलेगा, जातक समाज का उच्च प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु सूर्य के साथ केन्द्र में होने से जातक शिक्षित व सभ्य होगा। जातक की संतान भी पढ़ी-लिखी होगी।

5. **सूर्य + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र केन्द्र में सूर्य के साथ होने से जातक का जीवन सुख-वैभव से परिपूर्ण होगा।

6. **सूर्य + शनि**—चतुर्थ स्थान में लग्नेश व मारकेश शनि की युति जातक की माता को लाईलाज बीमारी से ग्रसित करेगी। माता की मृत्यु के बाद जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक स्वपराक्रम से आगे बढ़ेगा।

7. **सूर्य + राहु**—राहु सूर्य के साथ केन्द्र में हो तो जातक के माता पिता बीमार रहेंगे।

8. **सूर्य + केतु**—सूर्य के साथ केतु होने से घर के सुख में बाधा रहेगी।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
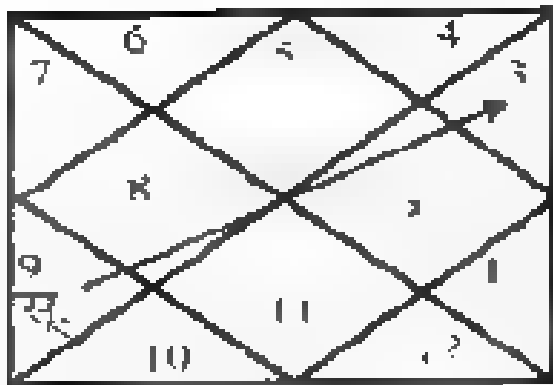
सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है, जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां पंचम स्थान में सूर्य धनु (मित्र) राशि में होगा। जातक आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं व्यवसायिक दृष्टि से उन्नत होगा। जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि (Educational Degree) प्राप्त करेगा। जातक तंत्र, मंत्र एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।

दृष्टि—पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश स्थान (लाभ भाव) मिथुन राशि पर होगी। फलतः जातक को व्यापार, व्यवसाय से लाभ होगा।

निशानी—जातक इष्टबली होगा, उसके पुत्र जरूर होगा। जातक को कोर्ट कचहरी में सदैव विजय मिलेगी।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। जातक को धन-सम्पत्ति एवं संतान की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—सिंहलग्न में चंद्र-सूर्य युति पंचम स्थान में होने से जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 12 के मध्य होता है, व्ययेश चंद्रमा

लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को पुत्र एवं कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक स्वयं शिक्षित होगा तथा उसकी संतति भी शिक्षित व सभ्य होगी।

2. **सूर्य + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल पंचम स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक को पुत्र संतति से लाभ होगा।

3. **सूर्य + बुध**—भ्रगुसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। पंचम भाव में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध का स्वयं का घर है। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक आध्यात्मिक विद्या तंत्र ज्योतिष इत्यादि का जानकार होगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को पुत्र एवं कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु, सूर्य के साथ होने से जातक के पुत्र पराक्रमी होंगे।

5. **सूर्य + शुक्र** तृतीयेश, दशमेश, शुक्र पंचम स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक के पुत्र पुत्री राज्य कर्मचारी होंगे।

6. **सूर्य + शनि**—सिंहलग्न के पंचम स्थान में लग्नेश+षष्टेश की युति जातक की संतान के लिए कष्टदायक है एकाध बालक की अकाल मृत्यु, गृहस्थ सुख में अनबन की स्थिति बनायेगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय होगा

7. **सूर्य + राहु** सूर्य यहां राहु के साथ होने से विद्या व पुत्र संतति में बाधा पहुंचाता है।

8. **सूर्य + केतु**—सूर्य यहां केतु के साथ होने से गर्भपात कराता है।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे. यहां छठे स्थान में सूर्य मकर (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य की इस स्थिति में 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक को किसी भी काम में प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी। जातक महत्वाकांक्षी व घमंडी होगी

दृष्टि—षष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः व्यर्थ की यात्राओं में समय नष्ट होगा।

निशानी—जातक के गुप्त शत्रु जरूर होंगे। जातक के जन्म के समय पिता घर से बाहर होगा जातक का जन्म प्राय: ननिहाल या अस्पताल में होगा।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा में थोड़ी परेशानी आयेगी। जातक के शरीर पर रोग का प्रकोप हो सकता है। शत्रु पीडा पहुंचा सकते हैं

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति छठे स्थान में होने से जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा छठे स्थान में लग्नेश के साथ होने से **विमल** नामक विपरीत राजयोग बनेगा। सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक धनवान ऐश्वर्यवान होगा परन्तु उसे राज सरकार से वांछित सहयोग नहीं मिलेगा।
2. **सूर्य + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल छठे स्थान में उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनायेगा। फलत: जातक पराक्रमी होगा जातक की माता पिता से कम बनेगी।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा षष्टम भाव में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनो ग्रह व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के छठे होने से 'लग्न भंगयोग' बनेगा तथा बुध के कारण धनहीन योग, लाभभंग योग की सृष्टि होगी। फलत: यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं रहेगी। जातक को धन कमाने हेतु एवं भाग्योदय हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। रुपया पास में आयेगा पर टिकेगा नहीं। इस युति के कारण जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा पर उसका जीवन संघर्षशील रहेगा।
4. **सूर्य + गुरु** पंचमेश, अष्टमेश गुरु छठे होने से विपरीत राजयोग बनेगा। जातक पराक्रमी होगा पर संतति को कष्ट रहेगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।
6. **सूर्य + शनि**—सिंहलग्न के छठे स्थान में शनि स्वगृही होकर लग्नेश सूर्य के साथ होगा। षष्टेश षष्टम में स्वगृही होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महाधनी एवं भौतिक सुखों से सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक का जीवन साथी जातक पर हावी रहेगा
7. **सूर्य + राहु**—राहु छठे स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति में दिक्कत आयेगी।

8. **सूर्य + केतु**—सूर्य के साथ केतु होने से जातक उद्विग्न व परेशान रहेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में
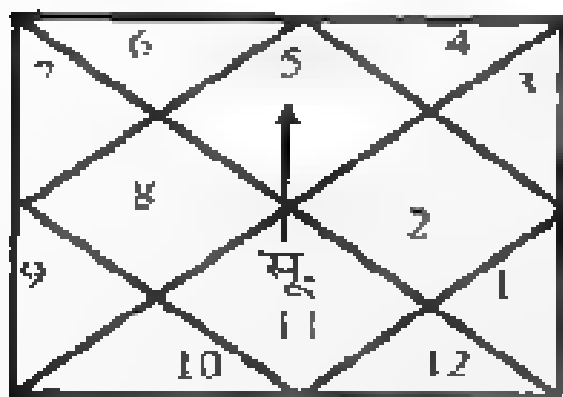
सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां सप्तम स्थान में सूर्य कुंभ (शत्रु) राशि में होगा। फलत: जातक के पत्नी से थोडे वैचारिक मतभेद रहेंगे. जातक एकान्त प्रिय होगा। ऐसे जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकती है। जातक अभिमानी होता है एवं प्राय: विरोधाभासी बयान दे देता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न स्थान अपने ही घर सिंह राशि पर होगी फलत: 'लग्नाधिपति योग' बना। जातक बहुत उन्नति करेगा तथा उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।

निशानी—ऐसा जातक राजनैतिक क्षेत्र मे अपने पराक्रम से आगे बढ़कर उच्च पद को प्राप्त करता है।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा। उसे उन्नति के उचित अवसर प्राप्त होंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति सातवें स्थान में होने से जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 6 से 8 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा सप्तम में पत्नी सुंदर देगा पर पत्नी खर्चीले स्वभाव की होगी। सूर्य के यहां बैठकर लग्न को देखने से परिश्रम पूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में जातक को सफलता मिलेगी। यहां यह युति शुभ फलदायक है।
2. **सूर्य + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल सूर्य के साथ केन्द्रस्थ होने से विवाह सुख में बाधक है तथा विलम्ब से विवाह कराता है।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न मे सूर्य लग्नेश होगा। सप्तम स्थान मे कुम्भ राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश-लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री होगा। दोनों ग्रह यहा बैठकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा एवं बुद्धि बल से आगे बढ़ेगा। उसको अल्प प्रयत्न से ही सफलता प्राप्त हो जायेगी। जातक

धनवान होगा। बुध केन्द्र में होने से कुलदीपक योग बनेगा जिसके कारण जातक कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।

4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु केन्द्रस्थ होकर सूर्य के साथ होने से जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी पर ससुराल पक्ष में खटपट रहेगी।

5. **सूर्य + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र सप्तम स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक को पत्नी सुन्दर देगा। पत्नी व ससुराल पक्ष धनी होगा।

6. **सूर्य + शनि**—सिंहलग्न में सातवें स्थान में शनि मूलत्रिकोण कुंभ राशि का होकर सूर्य के स्थान को लग्नाधिपति योग करके लग्न को देखेगा, लग्नेश+सप्तमेश की यह युति यहां पर सार्थक है। जातक की पत्नी व ससुराल पक्ष धनी होगा। जातक जीवन में एक सफल व समृद्धशाली व्यक्ति होगा।

7. **सूर्य + राहु**—सप्तमस्थ राहु सूर्य के साथ जीवन साथी से विछोह या तलाक करायेगा।

8. **सूर्य + केतु**—सूर्य के साथ केतु की उपस्थिति विवाह सुख में परेशानी उत्पन्न करेगी।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में
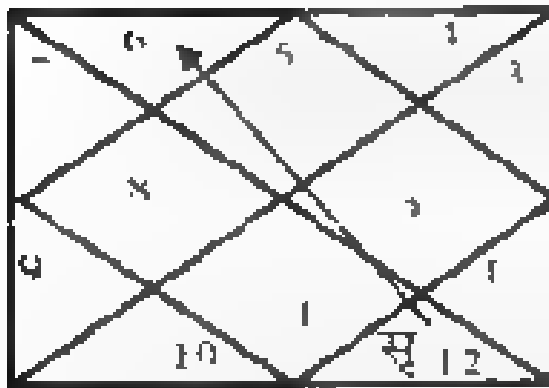
सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां अष्टम स्थान में सूर्य मीन (मित्र) राशि में होगा। लग्नेश आठवें होने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक का पौरुष निस्तेज होगा। उसे प्रत्येक कार्य में दिक्कतें आयेंगी। शत्रु उसे परेशान करते रहेंगे। जातक गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होगा एवं शत्रुओं को समाप्त करने में सफल रहेगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन स्थान (कन्या राशि) पर होने के कारण जातक धनी होगा। समाज में उसकी प्रतिष्ठा होगी। जातक जबान का पक्का होगा।

निशानी—सूर्य उच्चाभिलाषी होने से जातक को उजड़े हुए लोगों का धन मिलता है।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेगा

सूर्य का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न मे चद्र+सूर्य की युति आठवे स्थान में होने से जातक का जन्म चैत्र कृष्णा अमावस्या को सायंकाल 4 से 6 के मध्य होता है। व्ययेश चद्रमा अष्टम स्थान मे जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। सूर्य के कारण लग्नभग योग बनेगा। ऐसा जातक धनवान ऐश्वर्यवान तो होगा परन्तु राज सरकार में दण्डित होगा।
2. **सूर्य + मगल**–भाग्येश, सुखेश मगल आठवें सूर्य के साथ होने से 'द्विविवाह योग' कराता है।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसहिता के अनुसार सिंहलग्न मे सूर्य लग्नेश होगा। अष्टम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहा नीच राशि का होगा, जहां बैठकर बुध अपनी उच्च राशि धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा फलत: जातक बुद्धिमान एवं वैभवशाली होगा बुध के आठवें जाने से 'धनहीन योग', 'लाभभग योग' बनेगा तथा सूर्य आठवें जाने से 'लग्नभग योग' बनगा। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु बहुत सघर्ष करना पड़ेगा। जातक को परिश्रम का योग्य फल मिलेगा एसी विषमता बनी रहेगी। परन्तु जातक का कोई काम धन की कमी से रुका नहीं रहेगा।
4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश व अष्टमेश गुरु अष्टम भाव में विपरीत राजयोग कराता है। पर पुत्र सतति की हानि होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र अष्टम स्थान में सूर्य के साथ होने मे भाईयों से नुकसान करायेगा।
6. **सूर्य + शनि**–सिंहलग्न के अष्टम स्थान में सूर्य के कारण 'लग्नभग योग' शनि के कारण 'विवाहभंग योग' एवं हर्ष नामक विपरीत राजयोग यहा मुखरित हुए है। फलत: जातक का विलम्ब विवाह या दो विवाह हो सकते हैं। जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न व भौतिक संसाधनों से युक्त प्रबल पराक्रमी व्यक्ति होगा।
7. **सूर्य + राहु**–अष्टम स्थान मे राहु सूर्य के साथ दो विवाह का योग बनाता है।
8. **सूर्य + केतु**–अष्टमस्थ सूर्य के साथ केतु की उपस्थिति गृहस्थ सुख म बाधक है.

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एव प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फल
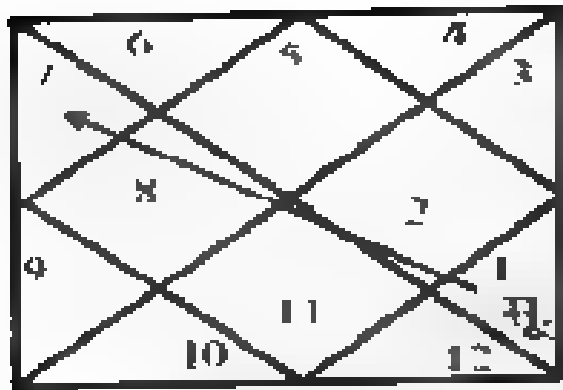
दायक हो जायेंगे। यहां नवम् स्थान में सूर्य मेष राशि में उच्च का होगा। मेष राशि में दस अंशों में सूर्य परमोच्च का होता है। ऐसा जातक परिवार, कुटुम्ब व स्वजाति का पोषक होता है। ऐसा जातक अपनी मेहनत से अपने भाग्य का सितारा चमकाता है। रविकृत राजयोग के कारण जातक लम्बी आयु पाने वाला यशस्वी एवं कुलश्रेष्ठ होता है।

दृष्टि—नवमस्थ सूर्य की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक महान पराक्रमी होगा।

निशानी—जातक को पिता की सम्पत्ति वारिस में मिलेगी।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक अपनी खुद की सम्पत्ति अर्जित करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति नवम् स्थान में होने से जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। क्योंकि चंद्रमा भाग्य स्थान में उच्च के सूर्य के साथ होगा। फलतः जातक महान पराक्रमी होगा। 'रविकृत राजयोग' के कारण जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। थोड़ा संघर्ष होते हुए भी जातक आगे बढ़ेगा।
2. **सूर्य + मंगल**—सूर्य के साथ मंगल हो तो 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? जातक एक स्वतंत्र राजा की तरह धनवान व बलवान होता है। जातक अपने शत्रुओं का समूल नाश करता है।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। नवम स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश-लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा एवं तृतीय स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बलवान लग्नेश की धनेश से युति यहां ज्यादा सार्थक सिद्ध होगी। फलतः जातक बुद्धिशाली धनवान एवं भाग्यशाली होगा। सूर्य की कृपा से जातक को 22 से 24 वर्ष की आयु के मध्य अच्छी लाईन मिल जायेगी। जातक उच्च राज्याधिकारी बन सकता है। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का पराक्रम जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा। जातक समाज का बड़ा प्रतिष्ठित तथा गणमान्य व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु के साथ सूर्य होने से जातक के भाग्य का चरम विकास संतानोत्पत्ति के बाद होगा।

5. **सूर्य + शुक्र**—तृतीयेश दशमेश शुक्र, सूर्य के साथ होने से जातक को भाईयों, मित्रों से लाभ होगा

6. **सूर्य + शनि**—सिंहलग्न के नवम स्थान में उच्च का सूर्य एवं नीच का शनि 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान महान शक्तिशाली एवं वैभवशाली होगा जातक का जीवन साथी भी प्रबल पराक्रमी एवं पुरुषार्थी होगा।

7. **सूर्य + राहु**—सूर्य के साथ राहु होने से भाग्य में बिगाड़ होगा।

8. **सूर्य + केतु**—सूर्य के साथ केतु की उपस्थिति भाग्योदय में विलम्ब करायेगी।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
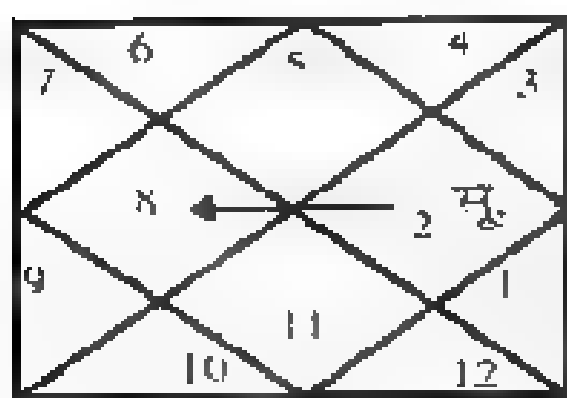
6 5 4 3 7 8 2 सू. 9 1 11 10 12

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे यहां दशम स्थान में सूर्य वृष (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य यहां 'दिग्बली' होने से श्रेष्ठ फल देगा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है। जातक राजनीति के क्षेत्र नाम अर्जित करता है। जातक स्वस्थ एवं सुंदर शरीर का स्वामी होगा।

दृष्टि—दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक के पास उत्तम सवारी होगी।

निशानी—जातक का जन्म पिता के लिए शुभ होगा। जातक को व्यापार मे लाभ होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा मे जातक उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दसवें स्थान में होने से जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 से 2 बजे के मध्य होता है व्ययेश चंद्रमा दशम स्थान में उच्च का होने से 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। सूर्य केन्द्र में होने से व्यक्ति राजा के समान पराक्रमी होगा, परन्तु वाहन दुर्घटना मे अंग-भंग होने के योग बनते हैं।

2. **सूर्य + मंगल**—भाग्येश, सुखेश, मंगल, सूर्य के साथ होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। बड़ी जमीन मिलेगी।

३. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। दशम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। दोनों केन्द्रस्थ ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। फलतः जातक बुद्धिमान, धनवान, उत्तम वाहन व सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक शिक्षित होगा। उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का पराक्रम तेज रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश, गुरु दशम स्थान में होने से राज्य की नौकरी में बाधा पहुंचेगी।

५. **सूर्य + शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने पर 'मालव्य योग' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा या राजपुरुष से कम नहीं होगा। जातक को भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख मिलेगा।

6. **सूर्य + शनि**–सिंहलग्न के दशम स्थान में लग्नेश (सूर्य) एवं सप्तमेश (शनि) केन्द्र में होने से जातक विवाह के बाद सरकारी नौकरी या निजी व्यवसाय स्थापित करेगा। जातक के विचार पिता से नहीं मिलेंगे। नौकरी या रोजगार जन्म स्थान से दूर होगा।

7. **सूर्य + राहु**–दशम स्थान में राहु जातक को राजदण्ड दिलायेगा।

8. **सूर्य + केतु**–दशम स्थान में केतु सरकारी काम में बाधा पहुंचायेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
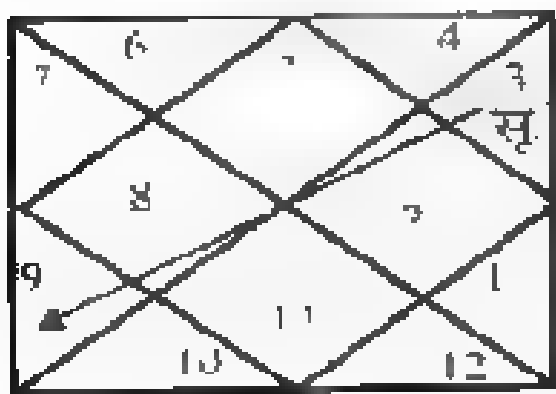
सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फलदायक हो जायेंगे। यहां एकादश स्थान में सूर्य मिथुन (मित्र) राशि में होगा। जातक भाग्यशाली होगा तथा बुरे कामों से दूर रहने वाला होगा। जातक को भाई बहनों का सुख मिलेगा। जातक की महत्त्वाकांक्षा बड़ी चढ़ी होगी। जातक को नौकरी-व्यापार, धन-सम्पत्ति, पत्नी व संतान के उत्तम सुख की प्राप्ति होगी। जातक तंत्र-मंत्र द्वारा भी धन अर्जित करेगा।

निशानी–जातक 25 वर्ष की आयु में उत्तम वाहन सुख प्राप्त करेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत सूर्य पंचम भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक का एक पुत्र अवश्य होगा। पुत्र तेजस्वी होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति की ओर आगे बढ़ेगा तथा उसे व्यापार व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **सूर्य + चंद्र**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति ग्यारहवें स्थान में होने से जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को सुबह 10 से 12 के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को व्यापार में लाभ होगा। जातक धनी होगा पर धन संग्रह में बाधा बनी रहेगी।
2. **सूर्य + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल लाभ स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक बड़ा व्यापारी होगा।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। एकादश स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसा जातक बुद्धिबल से अपना स्वयं का व्यापार उन्नत करेगा। जातक धनवान होगा। यह भी संभव है कि जातक बड़े उद्योग का स्वामी हो। ऐसा जातक शिक्षित होगा तथा उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश बृहस्पति सूर्य के साथ होने से जातक के पुत्र उद्योगपति होंगे।
5. **सूर्य + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र लाभ स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक को मित्रों से एवं मिलने जुलने वालों से लाभ होगा।
6. **सूर्य + शनि**—सिंहलग्न के एकादश स्थान में लग्नेश सूर्य, सप्तमेश शनि के साथ होने से जातक को पत्नी व संतान का पूर्ण सुख रहेगा। जातक सफल व्यवसायी या उद्योगपति होगा। जातक के उद्योग का विकास पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य + राहु**—सूर्य के साथ राहु व्यापार-व्यवसाय में हानि करायेगा।
8. **सूर्य + केतु**—सूर्य के साथ केतु व्यापार में नुकसान करायेगा।

सिंहलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होने के कारण जीवन शक्ति एवं प्राण ऊर्जा प्रदायक ग्रह है। जो कभी अशुभ फल नहीं देगा। अपितु सूर्य की युति से अन्य ग्रह शुभ फल
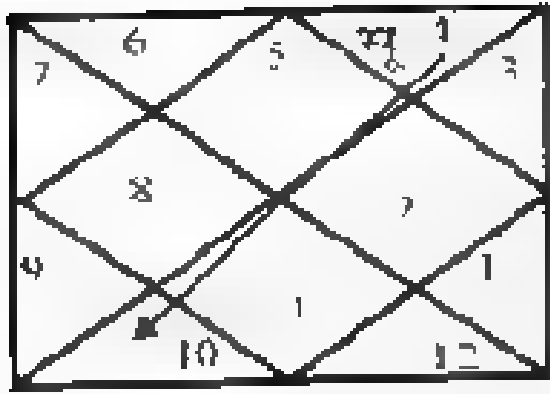
दायक हो जायेंगे। द्वादश स्थान में सूर्य कर्क (मित्र) राशि मे होगा। सूर्य की इस स्थिति में 'लग्नभंग योग' बनता है। जातक को परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं मिलेगा। जातक द्वारा की गई यात्राएं अनुपयोगी एवं निरर्थक साबित होंगी। जातक को राजपुरुषों से वांछित सहयोग नहीं मिलेगा। जातक को दस्तकारी, भूमि, खनिज पदार्थों से लाभ होगा।

दृष्टि–व्यय भावगत सूर्य की दृष्टि छठे भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक के गुप्त शत्रु अवश्य होंगे जो उसे पीड़ा पहुंचायेंगे।

निशानी–जातक की बाई आंख (Left eye) में पीडा रहेगी। आपरेशन होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति द्वादश स्थान में होने से जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को प्रातः 8 से 10 के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा व्यय भाव में स्वगृही होने से विमल नामक 'विपरीत राजयोग' बना। लग्नेश बारहवें होने से 'लग्नभंग योग' बना। जातक को नेत्र पीड़ा रहेगी। जातक धनी, मानी, अभिमानी होगा पर जन्म स्थान से दूर प्रदेशों में भाग्योदय होने का योग है।
2. **सूर्य + मंगल**–भाग्येश, सुखेश मंगल बारहवें भाव में होने से भाग्योदय में बाधक है।
3. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। द्वादश स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के बारहवें स्थान पर जाने से 'धनहीन योग' 'लाभभंग योग' की सृष्टि होगी। जबकि सूर्य के बारहवें स्थान पर जाने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। फलतः यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होते हुए धन संग्रह के प्रति चिंतित रहेगा।
4. **सूर्य + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश, गुरु बारहवें सूर्य के साथ होने से पुत्र द्वारा कीर्ति भंग होगी।

5. **सूर्य + शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र बारहवें होने से नेत्र पीड़ा करायेगा। जातक को भाईयो से नुकसान होगा.

6. **सूर्य + शनि**–सिंहलग्न के द्वादश स्थान में सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' शनि के कारण 'विमलभंग योग' तथा हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। ऐसा जातक धनी होगा। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी। जातक के पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। जातक पिता के साथ भी कम रह पायेगा।

7. **सूर्य + राहु**–राहु बारहवें भाव में व्यर्थ की यात्राओं से राजदण्ड का संकेत देता है।

8. **सूर्य + केतु**–केतु बारहवें भाव में सूर्य के साथ होने से जेल जाने का भय बनायेगा।

❑❑❑

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में
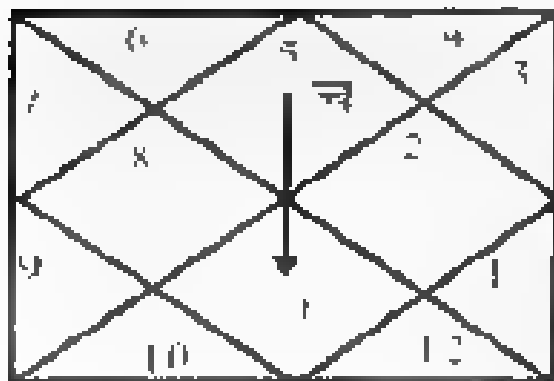
सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां प्रथम स्थान में चंद्रमा सिंह (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक स्वयं सुंदर होगा एवं उसका जीवन साथी भी सुंदर होगा। जातक शृंगार प्रिय, बौद्धिक चातुर्य से परिपूर्ण, स्त्री और संतान सुख से युक्त होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी, फलतः जातक रंगीन मिजाज का होगा तथा अन्य स्त्रियों के प्रति आसक्त रहेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 के मध्य) होता है, व्ययेश चन्द्र लग्नेश सूर्य के साथ होने से व्यक्ति को नेत्र पीड़ा रहेगी। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां प्रथम स्थान सिंह राशि में दोनों ग्रह स्थित होकर चतुर्थ स्थान (वृश्चिक राशि), सप्तम स्थान (कुम्भ राशि) एवं अष्टम स्थान (मीन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अपने घर (वृश्चिक राशि) को देखने के कारण जातक को घर का मकान, वाहन सुख इत्यादि की प्राप्ति होगी पर जातक को उन्नति

विवाह के पश्चात् होगी। दशा-चद्रमा की दशा-अतर्दशा खर्चकारी होगी, जबकि मगल की दशा अतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा एव भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी।

3. **चंद्र+बुध**—धनेश बुध लग्न मे व्ययेश चंद्रमा के साथ होने से जातक जो कमायेगा खर्च होता चला जायेगा।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के प्रथम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चद्रमा की पचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। लग्न में बैठकर दोनों शुभ ग्रह पचम, सप्तम एव भाग्य भवन को प्रभावित करेंगे। फलतः सतान पक्ष, पत्नी पक्ष एव भाग्य पक्ष अपेक्षाकृत मजबूत रहेगे जो भी आप कमायेगे खर्च होता चला जायेगा। फिर भी जीवन में धन की कमी से कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र की युति व्ययेश चंद्रमा के साथ लग्न में होने से जातक पराक्रमी होगा। जातक राजनैतिक प्रभाव वाला होगा।

6. **चंद्र+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि लग्न मे व्ययेश चद्रमा के साथ होने से जातक के गृहस्थ सुख मे बाधा पहुचेगी।

7. **चंद्र+राहु**—व्ययेश चद्रमा के साथ राहु लग्न मे हो तो जातक की बुद्धि भ्रमित रहेगी।

8. **चंद्र+केतु**—व्ययेश चद्रमा के साथ केतु लग्न में हो तो जातक मानसिक तनाव में रहेगा।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में

6 च., 5, 4, 3, 7, 8, 2, 9, 1, 11, 10, 12
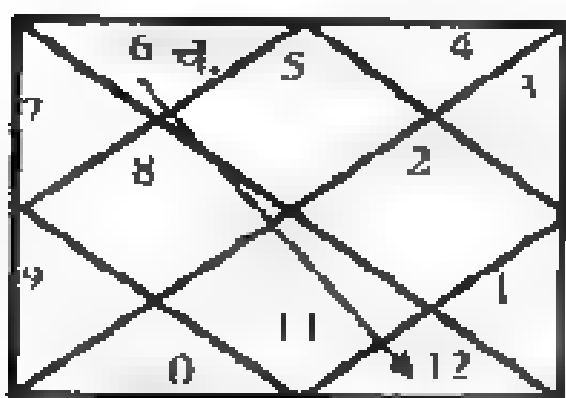
सिंहलग्न मे चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचार्य से अशुभ फल देगा। द्वितीय स्थान मे चद्रमा कन्या राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। जातक वाक्पटु होगा। जातक मीठी व विनम्र वाणी बोलेगा पर ज्यादा धन एकत्रित नहीं कर पायेगा। जातक सगीत-साहित्य, कला, शृंगार व सौन्दर्य प्रिय होगा

दृष्टि—धन भावगत चद्रमा की दृष्टि अष्टम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक गुप्त रोग से ग्रसित होगा। जातक के गुप्त शत्रु अवश्य होंगे।

दशा चंद्रमा की दशा अतर्दशा में जातक धनी होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति द्वितीय स्थान में होने से जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या प्रातः सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। यहा व्ययेश चद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को धन सग्रह के मामले में काफी दिक्कतें उठानी पड़ेंगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहा द्वितीय स्थान में कन्या राशि मे चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव (धनु राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं भाग्य भवन अपने घर मेष राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः 'लक्ष्मी योग' पूर्ण रुप से फलीभूत होगा। ऐसा जातक धनवान, सौभाग्यशाली एवं दीर्घजीवी होगा। प्रथम पुत्र के जन्म के बाद जातक धनी होगा पर धन के स्थाई सग्रह हेतु सघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।
3. **चंद्र+बुध**–धन स्थान में उच्च के धनेश की व्ययेश के साथ युति हो तो जातक अत्यधिक खर्च के कारण ऋणग्रस्त होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के द्वितीय भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। धन स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह षष्टम भाव, अष्टम भाव एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। जातक की आयु पूर्ण होगी। ऐसा जातक रोग व शत्रु का मुकाबला करने मे पूर्ण सक्षम होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र नीच का धनस्थान में व्ययेश चंद्रमा के साथ हो तो धन का सग्रह नहीं हो पायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि धन स्थान में व्ययेश चंद्र के साथ हो तो जातक का धन बीमारी में खर्च होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक धैर्यहीन व कलहकारी होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक का अपनी वाणी पर नियंत्रण नहीं रहेगा।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में

सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा
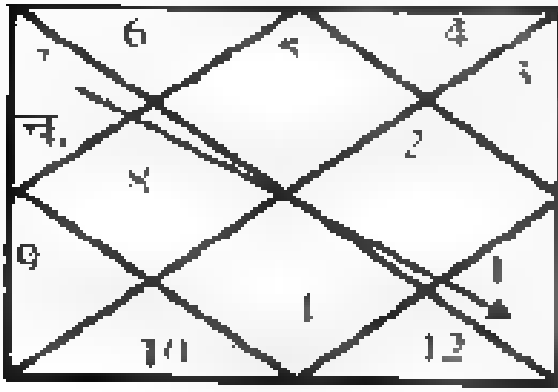
तुला (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को भाई बहनों का सुख उत्तम होगा। जातक भोग विलास में रुचि रखने वाला 'सेक्स प्रेमी' होगा। जातक को स्त्री व संतान का सुख पूर्ण होगा। यात्राओं के द्वारा जातक का पराक्रम बढ़ेगा। विदेश-यात्रा भी होगी। आयात निर्यात से लाभ मिलेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य स्थान (मेष राशि) पर होने के कारण जातक भाग्यशाली होगा तथा इष्ट मित्रों की सहायता से आगे बढ़ेगा

निशानी–शुक्र की राशि मे चद्रमा होने से जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ मिलेगा

दशा-चद्रमा की दशा अंतर्दशा में उत्तम फल मिलेंगे।

चद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिहलग्न में चद्र+सूर्य युति तृतीय स्थान में होने से जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। यहां व्ययेश चद्रमा तृतीय स्थान में लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिल पायेगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहा तृतीय स्थान मे तुला राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे भाव (मकर राशि), भाग्य भाव जो मंगल का स्वयं का घर है (मेष राशि) एव दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान, पराक्रमी एव सौभाग्यशाली होगा। जातक की राजनीति में भी पहुंच होगी। जातक ऋण रोग व शत्रु का नाश करने मे सक्षम होगा।
3. **चंद्र+बुध**–धनेश, लाभेश बुध के साथ व्ययेश चद्रमा तृतीय स्थान में हो तो मित्रों में विवाद रहेगा। जातक मित्रो में धन उड़ायेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिहलग्न का है। सिंहलग्न के तृतीय भाव में गुरु+चद्र की युति व्ययेश चद्रमा की पचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, नवम भाव एव एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को पिता का धन मिलेगा पत्नी व ससुराल पक्ष से लाभ होगा। व्यापार से भी लाभ होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक की रुचि जुए में होगी। जातक को कुसंगति व Drink-parties से बचना चाहिए।

6. **चंद्र+शनि**–षष्ठेश व सप्तमेश शनि व्ययेश चंद्रमा के साथ तृतीय स्थान में होने से शत्रुओं एवं कोर्ट कचहरी पर रुपया खर्च होगा।
7. **चंद्र+राहु**–व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में राहु के साथ हो तो भाइयों में विवाद होगा।
8. **चंद्र+केतु**–व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में केतु के साथ हो तो परिजनों में मनमुटाव रहेगा।

सिंहलग्न मे चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में
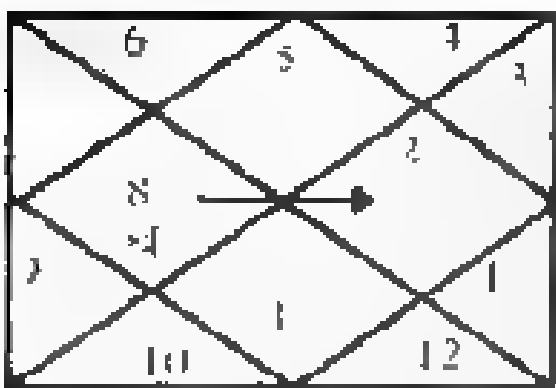
सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य मे शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां चतुर्थ स्थान में चंद्रमा वृश्चिक (नीच) राशि में होगा। वृश्चिक राशि के तीन अंशों तक चंद्रमा परम नीच का होगा। चंद्रमा यहां अपनी राशि से पंचम स्थान पर होने के कारण उसका नीचत्व नष्ट हो गया है। चंद्रमा यहां शुभ फल देगा। ऐसे जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा। जातक उत्तम भवन का स्वामी होगा। जातक को माता की सम्पत्ति या माता का सुख मिलेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (तुला राशि) पर होगी, फलतः जातक का राजनीति में हस्तक्षेप रहेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक का भौतिक विकास होगा तथा उसे वाहन, भूमि एवं मकान का सुख मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न मे चंद्र+सूर्य युति चतुर्थ स्थान मे होने से जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 बजे के लगभग होता है। यहां व्ययेश चंद्रमा नीच का होकर लग्नेश सूर्य के साथ होगा। जातक की माता बीमार रहेगी या छोटी उम्र में गुजर जायेगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान में वृश्चिक राशिगत मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग', 'रूचक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हुई है। मंगल यहां दिग्बली भी है। फलतः 'महालक्ष्मी योग' पुरस्कृत

हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव (कुंभ राशि), दशम भाव (वृष राशि) एवं एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा महाधनी होगा। राज्य सरकार, (राजनीति) में जातक का प्रभाव होगा तथा वह व्यापार व्यवसाय से भी धन अर्जित करेगा।

3. **चंद्र+बुध**—धनेश, लाभेश बुध व्ययेश चंद्रमा के साथ चतुर्थ स्थान में माता को बीमारी दिलायेगा। यहां चंद्रमा नीच का होगा फलतः जातक की माता को लम्बी बीमारी होगी।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। चतुर्थ स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्यय भाव को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक की आयु पूर्ण होगी। राजनीति में ऊंचा पद मिलेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। खर्चीला स्वभाव जातक की कमजोरी होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **चंद्र+शनि**—जातक की माता को कष्ट होगा। माता की या पत्नी की बीमारी में धन खर्च होगा।
7. **चंद्र+राहु**—व्ययेश चंद्रमा के साथ चतुर्थ स्थान में राहु होने से जातक की माता की मृत्यु अल्प आयु में होगी।
8. **चंद्र+केतु**—व्ययेश चंद्रमा के साथ केतु चतुर्थ स्थान में होने से घर के सुख में कुछ न कुछ कमी रहेगी।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में
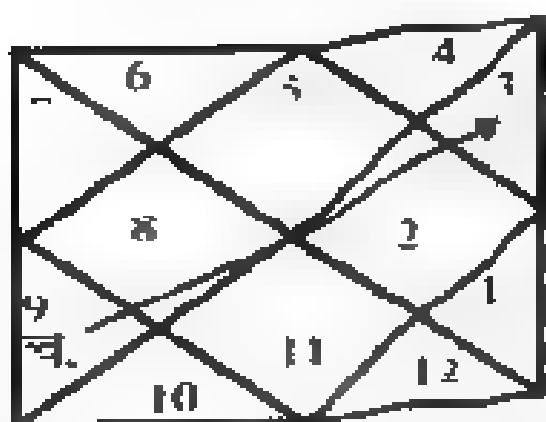
सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां चंद्रमा पंचम स्थान में धनु (सम) राशि का होगा। जातक को विद्या का लाभ होगा तथा उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) मिलेगी। जातक को माता पिता, भाई-बहन का सुख मिलेगा परन्तु पुत्र प्राप्ति हेतु तीर्थ यात्रा, व्रत-अनुष्ठान का सहारा लेना होगा।

दृष्टि—पचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लाभ स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक को स्वतंत्र व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।

दशा-चद्रमा की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी होगी।

चद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति पचम स्थान मे होने से जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 12 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा, लग्नेश सूर्य के साथ होने से जातक को पुत्र एवं कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक स्वयं शिक्षित होगा तथा उसकी संतति भी शिक्षित व सभ्य होगी।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां पचम स्थान में धनु राशि में बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मीन राशि) लाभ स्थान (मिथुन राशि) एवं व्यय भाव (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः इस लक्ष्मी योग के कारण जातक व्यापार-व्यवसाय में यथेष्ट धन अर्जित करेगा। जातक दीर्घजीवी होगा तथा ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **चद्र+बुध**—व्ययेश चद्रमा पचम स्थान में बुध के साथ होने से जातक की प्रथम संतति का गर्भपात होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के पचम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चद्रमा की पचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। पचम स्थान में गुरु स्वगृही होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह नवम स्थान, एकादश भाव एवं लग्न भाव को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा। जातक को व्यक्तिगत सफलता मिलती रहेगी।
5. **चंद्र+शुक्र**—व्ययेश चद्रमा के साथ तृतीयेश, दशमेश शुक्र पंचम स्थान में होने से जातक को पुत्र संतति की अपेक्षाकृत कन्या संतति अधिक होगी।
6. **चंद्र+शनि**—षष्ठेश व सप्तमेश शनि पचम स्थान में व्ययेश चद्रमा के साथ होने से संतति को लेकर ऑपरेशन होगा।
7. **चद्र+राहु**—पचम स्थान में व्ययेश चद्रमा के साथ राहु होने से पुत्र संतति की हानि होगी।
8. **चद्र+केतु**—पचम स्थान में व्ययेश चद्रमा के साथ केतु होने से गर्भपात गर्भस्राव का भय रहेगा

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में
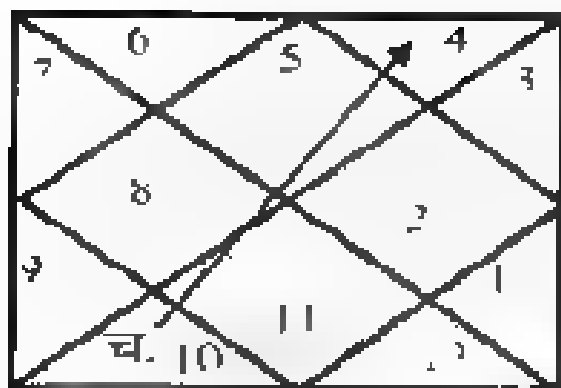
सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां छठे स्थान में चंद्रमा मकर (सम) राशि में होगा। व्ययेश होकर चंद्रमा के छठे जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। फलस्वरूप जातक धनवान व ऐश्वर्यवान होगा। जातक को कार्य में अचानक सफलता मिलेगी

दृष्टि–षष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव अपने ही घर कर्क राशि पर होगी फलतः जातक के ऊपर ऋण व शत्रुओं का बोझ रहेगा। इस कारण जातक का आत्मबल भी कमजोर रहेगा।

दशा चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक भारी उतार चढ़ाव महसूस करता हुआ उन्नति प्राप्त करेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति छठे स्थान में होने से जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है व्ययेश चंद्रमा छठे स्थान में लग्नेश के साथ होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक धनवान ऐश्वर्यवान होगा परन्तु उसे राजसरकार से वांछित सहयोग नहीं मिलेगा
2. **चंद्र+मंगल**–यहां छठे स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होगा। मंगल की यह स्थिति 'सुखभंग योग' एवं 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि करती है पर व्ययेश चंद्रमा के छठे जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि हुई है अतः लक्ष्मी योग बना। ऐसा जातक संघर्ष के बाद धनी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (मेष राशि), व्यय भाव (कर्क राशि) एवं लग्न भाव (सिंह राशि) पर होगी। निश्चय ही जातक भाग्यशाली, धनी होगा एवं व्ययशील (खर्चीली) प्रवृत्ति का स्वामी होगा।
3. **चंद्र+बुध**–व्ययेश चंद्रमा के छठे होने से विपरीत राजयोग तो बना परन्तु धनेश, लाभेश बुध की स्थिति यहां होने से जातक धनी होते हुए भी कष्ट में रहेगा।

4. **चद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के छठे भाव में गुरु चद्र की युति व्ययेश चद्रमा की पचमेश अष्टमेश गुरु के साथ युति है। छठे स्थान में गुरु नीच का होगा एवं 'सतानहीन योग' की सृष्टि करेगा यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव, द्वादश भाव एवं धन भाव को देखेंगे फलतः जातक को राजनीति में नौकरी व व्यापार में धोखा मिलेगा जातक के धन का अपव्यय होगा। पैसा उसके पास में नहीं टिकेगा।

5. **चद्र+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे स्थान में व्ययेश चद्र के साथ हो तो जातक का पराक्रम भंग होगा जातक को सरकारी दण्ड मिलेगा

6. **चद्र+शनि**–षष्ठेश शनि के छठे स्थान में स्वगृही होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा जातक धनी व वैभवशाली होगा पर दो पत्नी का योग बनता है। जातक का गृहस्थ सुख कमजोर रहेगा

7. **चंद्र+राहु**–राहु के साथ चंद्रमा छठे स्थान में हो तो जातक के जीवन में गुप्त शत्रु उसे पीड़ा पहुचायेंगे

8. **चद्र+केतु**–केतु के साथ चद्रमा छठे स्थान में हो तो जातक के गुप्त शत्रु होंगे।

सिंहलग्न मे चद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में
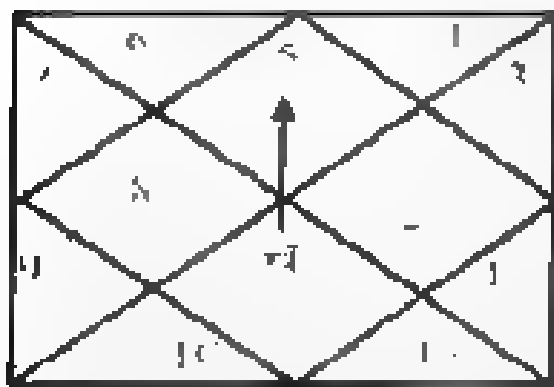
सिंहलग्न में चद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा यहां सप्तम स्थान में चद्रमा कुम्भ (सम) राशि में होगा। जातक की पत्नी सुंदर, रूपवान होगी परन्तु जातक स्वयं चिंतन शील, गंभीर एवं एकांतप्रिय स्वभाव का होगा। जातक अपने जीवन साथी पर धन खर्च करता है पर उसका पूर्ण सुख उसे नहीं मिलता

दृष्टि–सप्तमस्थ चद्रमा की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि) पर होगी फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी- द्वादशेश का सप्तम भाव में होना पाराशर ऋषि के अनुसार ठीक नहीं होता। ऐसा जातक जीवनसाथी के प्रति उद्विग्न (उदास) रहेगा।

दशा–चद्रमा की दशा- अतर्दशा ज्यादा शुभ फल नहीं देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चद्र-सूर्य युति सप्तम स्थान में होने से जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 6 से 8 बजे के मध्य होता है व्ययेश

चंद्रमा सप्तम स्थान में होने से सुंदर पत्नी देगा पर पत्नी खर्चीले स्वभाव की होगी। सूर्य के यहां बैठकर लग्न को देखने से परिश्रम पूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। यहां यह युति शुभ फलदायक है।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां सप्तम स्थान में कुम्भ राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि), लग्न भाव (सिंह राशि) एवं धन भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः 'लक्ष्मी योग' पूर्ण रूप से मुखरित हुआ। ऐसे जातक को हाथ में लिए गए प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक धनवान एवं साधन सम्पन्न होगा। जातक राजनीति में प्रभाव रखने वाला महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा।
3. **चंद्र+बुध**—व्ययेश चंद्रमा के साथ धनेश, लाभेश बुध की युति सप्तम भाव में होने से वैवाहिक सुख में बाधक है।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के सप्तम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ युति है। सप्तम भाव में बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः विवाह के तत्काल बाद जातक की उन्नति होगी। उसका पराक्रम, जनसम्पर्क बढ़ेगा एवं उसे लाभ होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र की युति व्ययेश चंद्रमा के साथ सप्तम स्थान में जातक को पराक्रमी ससुराल देगी।
6. **चंद्र+शनि**—स्वगृही शनि सप्तम स्थान में 'शश योग' बनायेगा। जातक महाधनी होगा परन्तु गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
7. **चंद्र+राहु**—व्ययेश चंद्र के साथ राहु होने पर जातक की पत्नी की अकाल मृत्यु होगी।
8. **चंद्र+केतु**—व्ययेश चंद्र के साथ केतु होने पर जातक को गृहस्थ सुख में बाधा आयेगी।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में
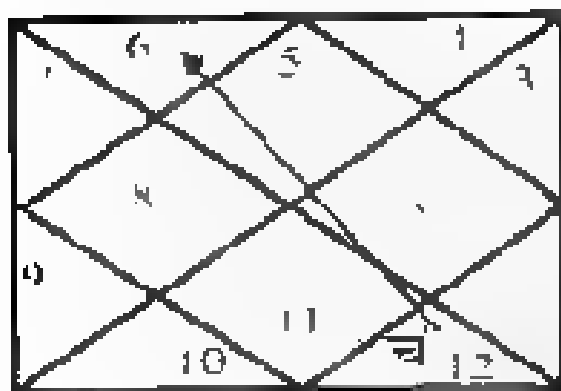
सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य में शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां अष्टम स्थान में चंद्रमा मीन (सम) राशि में होगा। व्ययेश चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनवान एवं ऐश्वर्यवान होगा।

जातक कभी आस्तिक एवं कभी नास्तिक विचारों वाला होगा। कभी आध्यात्मिक, पर कभी भौतिक सुविधाओं पर जोर रहेगा, जातक का मन विचलित, मस्तिष्क अस्थिर विचारों वाला होगा।

दृष्टि—अष्टम भावगत चंद्रमा की दृष्टि धन स्थान (कन्या राशि) पर होगी जिससे विद्या, बुद्धि, धन व कुटुम्ब सुख में वृद्धि होगी।

निशानी—चंद्रमा की निर्बलता के कारण जातक स्वयं अपने लिए परेशानियां उत्पन्न करता रहेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अचानक लाभ भी दे सकती है, पर अनिष्ट फल अवश्य देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य युति आठवें स्थान में होने से जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 4 से 6 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा के अष्टम में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। सूर्य के कारण लग्नभंग योग बनेगा। ऐसा जातक धनवान, ऐश्वर्यवान तो होगा परन्तु राज सरकार से दंडित होगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यह दोनों ग्रह अष्टम स्थान मीन राशि में होंगे। मंगल की यह स्थिति 'सुखभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि करेगी। परन्तु व्ययेश चंद्रमा के अष्टम में जाने से 'सरल' नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होने से 'लक्ष्मी योग' सुरक्षित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (मिथुन राशि), धन भाव (कन्या राशि), एवं पराक्रम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलतः जातक व्यापार व्यवसाय में धन अर्जित करेगा एवं महान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**—अष्टम स्थान में चंद्र+बुध की युति से जातक को गुप्त बीमारी का भय रहेगा अथवा शल्य चिकित्सा का भय रहेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के अष्टम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ युति है। अष्टम स्थान में गुरु स्वगृही होगा। दोनों ग्रह यहां बैठने से 'संतान हीन योग' बनेगा यदि ध्यान नहीं दिया गया तो विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी। खड्डे में गिरे हुए ये दोनों ग्रह खर्च स्थान, धन स्थान एवं चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः धन का अपव्यय होगा। जातक को बढ़ते हुए खर्च के प्रति चिंता रहेगी। माता या वाहन को लेकर भी जातक का रुपया खर्च होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**– अष्टम स्थान में शुक्र पराक्रम भंग करायेगा। जातक राजा से दण्डित होगा।
6. **चंद्र+शनि**–षष्ठेश शनि के आठवें जाने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक गुप्त रोग या गुप्त शत्रु द्वारा पीड़ित होगा। जातक धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
7. **चंद्र+राहु**–अष्टम स्थान में राहु 'द्विभार्या योग' बनाता है।
8. **चंद्र+केतु**–अष्टम स्थान में चंद्रमा के साथ केतु शल्य चिकित्सा का योग बनाता है।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में
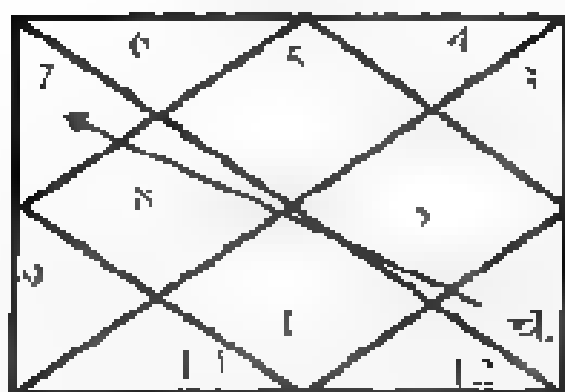
सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां नवम स्थान में चंद्रमा मेष (मित्र) राशि में होगा। फलत: जातक ऊर्जावान होगा। जातक को विद्या, धन, सम्पत्ति स्त्री, संतान, व्यापार-व्यवसाय का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक गणित, वेद विद्या, कम्प्यूटर लाईन का ज्ञाता होगा। जातक अपने द्वारा अर्जित ज्ञान राशि से यथेष्ट धन कमाता है।

दृष्टि -नवम भावगत चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा, कुटुम्ब परिवार का पोषक होगा।

निशानी–जातक को पिता की सम्पत्ति वारिस में मिलेगी। जातक में भरपूर उत्साह, उमंग एवं महत्वाकांक्षा होगी।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र-सूर्य की युति नवमें स्थान में होने से जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा भाग्य भवन में उच्च के सूर्य के साथ होगा। फलत: जातक महान पराक्रमी होगा। 'रविकृत राजयोग' के कारण जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। थोड़ा संघर्ष होते हुए भी जातक आगे बढ़ेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां मेष राशिगत मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा उच्चाभिलाषी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (कर्क राशि), पराक्रम भाव (तुला राशि) एवं चतुर्थ भाव जो कि स्वयं मंगल का मूलत्रिकोण हुआ। ऐसा जातक अति

सौभाग्यशाली एवं धनवान होगा। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी, गांव का मुखिया या प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करेगा। ऐसा जातक व्ययशील, उदार प्रवृत्ति वाला होगा।

3. **चंद्र+बुध**–व्ययेश चंद्रमा के साथ धनेश की युति, जातक को माता-पिता से धन दिलवायेगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म सिंहलग्न का है, सिंहलग्न के नवम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ युति है। नवम स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान जो कि गुरु का स्वयं का घर है, पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः प्रथम संतति के बाद जातक का विशेष भाग्योदय होगा। जातक के मित्र एवं शुभचिंतकों की संख्या में अद्वितीय वृद्धि होगी, राजनीति में आपकी जीत होगी एवं संतान आज्ञाकारी होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र यदि व्ययेश के साथ भाग्य स्थान में हो तो जातक को भाग्योदय के अवसर मित्रों की मदद से प्राप्त होते रहेंगे।
6. **चंद्र+शनि**–षष्ठेश, सप्तमेश शनि भाग्य स्थान में व्ययेश के साथ हो तो जातक का जीवन साथी उड़ाऊ प्रवृत्ति का होगा।
7. **चंद्र+राहु**–भाग्य स्थान में राहु व्ययेश चंद्र के साथ होने से भाग्य में लगातार रुकावटें आती रहेंगी।
8. **चंद्र+केतु**–भाग्य स्थान में केतु यदि व्ययेश चंद्र के साथ हो तो जातक विदेश में धन कमायेगा।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में
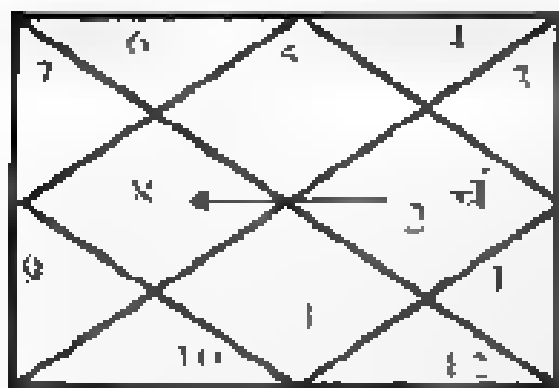
सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा। यहां दशम स्थान में चंद्रमा वृष राशि में उच्च का होगा। वृष राशि के तीन अंशों तक चंद्रमा परमोच्च का होगा। ऐसे जातक शिक्षित होते हैं। यामिनीनाथ योग के कारण जातक ऐश्वर्यवान होगा। ऐसे जातक कुशाग्र बुद्धि के कारण डॉक्टर, वकील, राजनेता एवं ज्योतिषी के रूप में आध्यात्मिक प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं। रत्न, होटल, आयात-निर्यात, वस्त्र व्यवसाय, उद्योग व हैण्डीक्राफ्ट के व्यापार में लाभ की संभावना ज्यादा प्रबल है।

दृष्टि—दशम भावगत चंद्रमा की दृष्टि सुख स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी फलत: जातक को घर सम्पत्ति, माता पिता एवं वाहन का सुख मिलता है।

निशानी—ऐसे जातक को पिता का स्वल्प सुख मिलता है

दशा-चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक की व्यापारिक व्यवसायिक उन्नति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दसम स्थान में होने से जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 से 2 बजे के मध्य होता है व्ययेश चंद्रमा दशम स्थान में उच्च का होने से 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। सूर्य केन्द्र में होने से व्यक्ति राजा के समान पराक्रमी होगा, परन्तु वाहन दुर्घटना में अंग-भंग होने के योग बनते हैं

2. **चंद्र+मंगल**—यहां वृष राशिगत केन्द्रवर्ती चंद्रमा उच्च का होगा। अत: यहां 'यामिनी नाथ योग' बनेगा। मंगल यहां दिक्बली होगा तथा 'कुलदीपक योग' बनायेगा। फलत: यहां 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक महाधनी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि), चतुर्थ भाव जो मंगल का स्वयं का घर है (वृश्चिक राशि) एवं पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक बड़ी भू सम्पत्ति का तथा उत्तम वाहन का स्वामी होगा। जातक का सही अर्थों में भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।

3. **चंद्र+बुध**—धनेश यदि दशम भाव में व्ययेश के साथ हो तो जातक राजनीति में नेतागिरी में रुपया खर्च करेगा और वहीं से कमायेगा भी

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के दशम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश अष्टमेश गुरु के साथ युति है। दशम भाव में चंद्रमा उच्च का होगा एवं 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। दशम भाव में बैठे दोनों शुभ ग्रह धन स्थान चतुर्थ भाव एवं षष्ट भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलत: जातक को 24 वर्ष की आयु के बाद धन प्राप्ति होनी शुरू होगी। जातक अपने शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ होगा एवं 38 वर्ष की आयु के बाद दो मंजिला मकान बनायेगा, अच्छा वाहन खरीदेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—शुक्र के कारण 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? जातक राजा या राजा से कम नहीं होगा।

6. **चंद्र+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि दशम स्थान में व्ययेश के साथ हो तो पत्नी या गुप्त रोग को लेकर रुपया खर्च होगा।

7. **चंद्र+राहु**—यहां चंद्रमा के साथ राहु होने से जातक विलासिता में भटक जायेगा।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु होने से जातक को राजनैतिक परेशानियां रहेंगी।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में
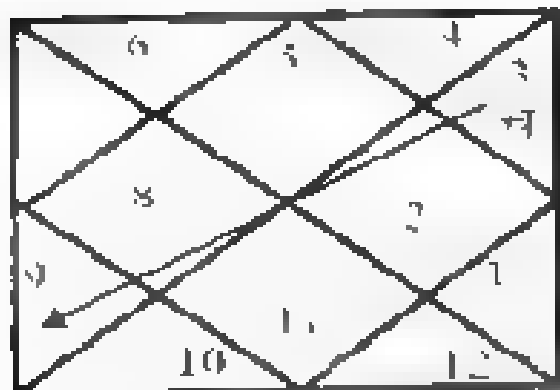
सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य में शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य में अशुभ फल देगा। यहां एकादश स्थान में चंद्रमा मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक को नौकरी व्यापार का सुख प्राप्त होगा। जातक को स्त्री सम्पत्ति का सुख भी पूर्ण मिलेगा। उद्योग व बड़े व्यापार में जातक को अल्प धन लाभ होगा। जातक का मन विचलित रहेगा। जातक के निर्णय दोहरे मापदण्ड वाले होंगे।

दृष्टि—एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक का बौद्धिक स्तर बढ़ा चढ़ा होगा। जातक को संतान सुख उत्तम मिलेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति ग्यारहवें स्थान में होने से जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को सुबह 10 से 12 बजे के मध्य होता है। व्ययेश चंद्रमा के शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में लग्नेश सूर्य के साथ होने से व्यापार में लाभ होगा। जातक धनी होगा पर धन संग्रह में बाधा बनी रहेगी।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां एकादश स्थान में मिथुन राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कन्या राशि), पंचम भाव (धनु राशि) एवं छठे भाव (मकर राशि) को देखेंगे। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक स्थिति प्रथम संतति के बाद सुदृढ़ होगी।
3. **चंद्र+बुध**—बलवान धनेश के साथ व्ययेश के लाभ स्थान में होने से जातक अपने सामर्थ्य से अधिक बढ़ चढ़ कर खर्च करेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के एकादश भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश अष्टमेश गुरु के साथ युति है। एकादश भाव में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपका

पराक्रम बढ़ा चढ़ा रहेगा आपकी विद्या पूर्ण होगी। आपको शैक्षणिक डिग्री मिलेगी पर सम्बन्धों में कुछ न्यूनता अनुभव करेंगे ससुराल अच्छा मिलेगा। जातक को सुन्दर पत्नी मिलेगी। प्रथम संतति के बाद जातक के भाग्योदय की गति में तेजी आयेगी

5. **चंद्र+शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र लाभ स्थान में व्ययेश चंद्रमा के साथ होने से व्यापार में लाभ तो होगा पर उसका बड़ा हिस्सा व्यर्थ में खर्च हो जायेगा
6. **चंद्र+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि के लाभ स्थान में व्ययेश के साथ होने से जातक का चलता उद्योग एक बार बंद होगा
7. **चंद्र+राहु**–राहु के साथ व्ययेश चंद्रमा के लाभ स्थान में होने से व्यापार में लगातार हानि होगी।
8. **चंद्र+केतु**–व्ययेश चंद्र के साथ केतु व्यापार प्रतिष्ठान में चोरी का संकेत देता है।

सिंहलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में
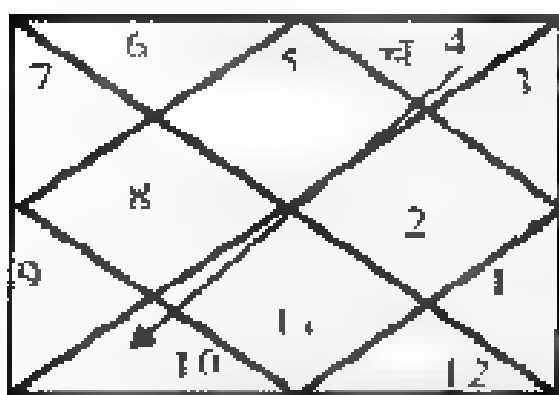
सिंहलग्न में चंद्रमा व्ययेश (खर्चेश) है। यह शुभ ग्रहों के सहचर्य से शुभ फल एवं अशुभ ग्रहों के सहचर्य से अशुभ फल देगा, यहां द्वादश स्थान में चंद्रमा स्वगृही कर्क राशि में होगा। व्यय भाव में व्ययेश के स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होगी ऐसे जातक कल्पनाशील एवं संवेदनशील होते हैं। ऐसे जातक को यात्राओं से लाभ होता है खासकर विदेश यात्रा से फायदा है ऐसे जातक को रत्न व्यवसाय अथवा आयात निर्यात के कार्यों में लाभ होता है जातक ऐश्वर्यवान एवं धनी होगा

दृष्टि–व्यय भावगत चंद्रमा की दृष्टि छठे भाव (मकर राशि) पर होगी फलत: जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–ऐसा जातक परद्वेषी होता है तथा वह दूसरों का सुख नहीं देख सकता।

दशा चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक उन्नति की ओर आगे बढ़ेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–सिंहलग्न में चंद्र+सूर्य की युति द्वादश स्थान में होने से जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 से 10 बजे के मध्य होता है। व्ययेश

चंद्रमा व्यय भाव में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। लग्नेश बारहवें होने से 'लग्नभंग योग' बना। जातक को नेत्रपीड़ा रहेगी। जातक धनी, मानी व अभिमानी होगा पर जन्म स्थान से दूर प्रदेशों में भाग्योदय होने का योग है।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां द्वादश स्थान में कर्क राशि में चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। यद्यपि मंगल के कारण 'सुखभंग योग' तथा 'भाग्यभंग योग' बना था, तथापि व्यय भाव में व्ययेश स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग के कारण मंगल के अशुभ फल नष्ट हो जायेंगे। यहां 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम भाव (तुला राशि), षष्टम भाव (मकर राशि) एवं सप्तम भाव (कुम्भ राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महान पराक्रमी होगा। जातक शत्रुओं का दमन करने में कामयाब होगा, परन्तु जातक सही अर्थों में धनी विवाह के बाद होगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ धनेश बुध के शत्रुक्षेत्री होने से जातक धनी तो होगा पर धनभंग योग के कारण जातक की चल सम्पत्ति खर्च होती चली जायेगी।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के द्वादश भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ युति है। द्वादश स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं गुरु उच्च का होकर 'किम्बहुना योग' बनायेगा। साथ ही गुरु बारहवें होने से 'संतानहीन योग' की सृष्टि भी होगी। शुभ, अशुभ मिश्रित फलों से युक्त होकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः जातक को जीवन में बहुत ही उत्तम श्रेणी का मकान सुख एवं वाहन सुख मिलेगा। जातक की आयु दीर्घ होगी। जातक रोग व शत्रु दोनों का नाश करने में सक्षम होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र व्यय भाव में चंद्रमा के साथ होने से जातक का पराक्रम भंग करायेगा।

6. **चंद्र+शनि**—षष्टेश व सप्तमेश शनि बारहवें चंद्रमा के साथ विवाह में भंग एवं गृहस्थ सुख में बाधा पहुंचायेगा।

7. **चंद्र+राहु**—राहु के साथ व्यय भाव में चंद्रमा होने से जातक को खराब सपने आयेंगे। जातक विक्षिप्त भी हो सकता है।

8. **चंद्र+केतु**—केतु के साथ व्यय भाव में चंद्रमा मानसिक कष्ट देता है।

❑❑❑

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में
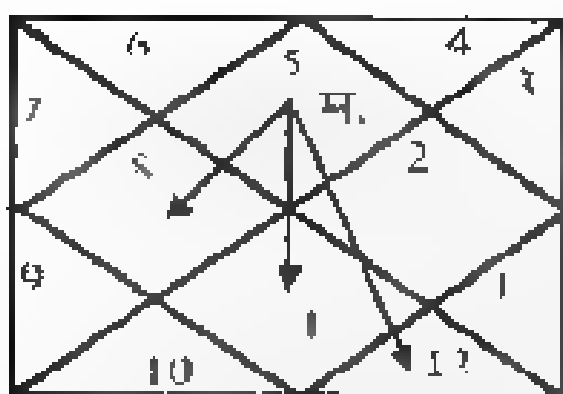
सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों का स्वामी है। लग्नस्थ मंगल सिंह (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक रौबीले व्यक्तित्व वाला, हठी, कामी एवं क्रोधी होता है। इनमें प्रायः धैर्य की कमी रहती है। जातक को क्रोध जितनी तेजी से आता है, उतनी शीघ्रता से चला जाता है। ये लोग हृदय से शुद्ध, सच्चे व सत्यवादी होते हैं तथा कड़वी बात मुंह पर करने में संकोच नहीं करते। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है।

दृष्टि—लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि), सप्तम भाव (कुंभ राशि) एवं अष्टम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक को भूमि लाभ होगा। जातक की आयु में वृद्धि होगी तथा उसे गृहस्थ सुख विलम्ब से मिलेगा। जीवन साथी एवं भागीदार से नोंक-झोंक होती रहेगी।

निशानी—ऐसे जातक प्रायः फौज, पुलिस, प्रशासनिक कार्य, तकनीकी कार्य, इंजीनियरिंग, ठेकेदारी इत्यादि कार्यों में सफल होते हैं।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी। जातक को भूमि लाभ होगा, वाहन सुख एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—'रविकृत योग' के कारण ऐसा जातक अत्यधिक धनी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां प्रथम स्थान सिंह राशि में दोनों ग्रह स्थित होकर चतुर्थ स्थान (वृश्चिक राशि), सप्तम स्थान (कुम्भ राशि) एवं अष्टम स्थान (मीन राशि)

को पूर्ण दृष्टि से देखेगा फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अपने घर (वृश्चिक राशि) को देखने के कारण जातक को घर का मकान, वाहन सुख इत्यादि की प्राप्ति होगी पर जातक की उन्नति विवाह के पश्चात् होगी।

3. **मंगल+बुध**–ऐसा जातक अत्यधिक धनी एवं पराक्रमी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु लग्न में यदि मंगल के साथ होगा तो जातक को गृहस्थी व संतान का पूर्ण सुख मिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र लग्न में मंगल के साथ हो तो जातक को राजनीति में ऊंचा पद दिलायेगा।
6. **मंगल+शनि**–षष्ठेश शनि लग्न में मंगल के साथ होने से जातक को जिद के कारण अपकीर्ति दिलायेगा।
7. **मंगल+राहु**–लग्न में राहु मंगल के साथ होने से जातक को निरंकुश नेता बनायेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु लग्न में जातक को यशस्वी बनायेगा, पर जातक लड़ाकू स्वभाव का स्वामी होगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में
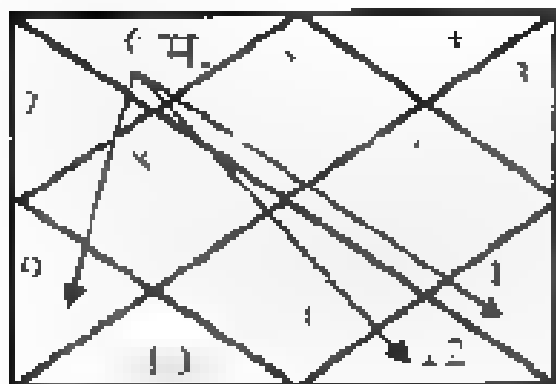
सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों का स्वामी है। यहां द्वितीयस्थ मंगल कन्या (शत्रु) राशि में होगा। द्वितीय भाव में मंगल प्रायः विद्या और संतान सुख में बाधक होता है फिर भी जातक को स्थाई सम्पत्ति, जमीन, जायदाद, कुटुम्ब स्त्री एवं संतान का पूर्ण सुख मिलेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं अपने ही घर मेष राशि (नवम भाव) पर होगी। फलतः जातक को पुत्र संतति होगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा। जातक प्रबल भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के बाद होगा।

दशा–मंगल की दशा, अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

मगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मगल+सूर्य** –लग्नेश सूर्य धन स्थान म मगल के साथ होने मे जातक धनी तथा पराक्रमी होगा।
2. **मगल+चंद्र**–यहा द्वितीय स्थान मे कन्या राशि में चद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा यहां बैठकर दोनों ग्रह पचम भाव (धनु राशि) अष्टम भाव (मीन राशि) एवं भाग्य भवन अपने घर मेष राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगे फलत: 'लक्ष्मी योग' पूर्ण रूप से फलीभूत होगा ऐसा जातक धनवान, सौभाग्यशाली एव दीर्घजीवी होगा प्रथम पुत्र के जन्म के बाद जातक धनी होगा पर धन के स्थाई सग्रह हेतु संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी
3. **मगल+बुध**–मगल+बुध की युति जातक को महाधनी बनायेगी जातक करोड़पति होगा
4. **मगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु के द्वितीय भाव मे मंगल के साथ होने से धन हानि होगी पर जातक वैभव सम्पन्न होगा.
5. **मगल+शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र द्वितीय भाव में मगल के साथ होने से जातक धनवान होगा।
6. **मगल+शनि**–मगल के साथ यहा शनि दाम्पत्य जीवन को नष्ट कर देगा।
7. **मंगल+राहु**–द्वितीय स्थान में मगल के साथ राहु धन का नाश करेगा, जातक की वाणी घमण्ड युक्त एव कड़वी होगी।
8. **मगल+केतु**–द्वितीय स्थान में मगल के साथ केतु जातक को धनशाली व पराक्रमी बनायेगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में
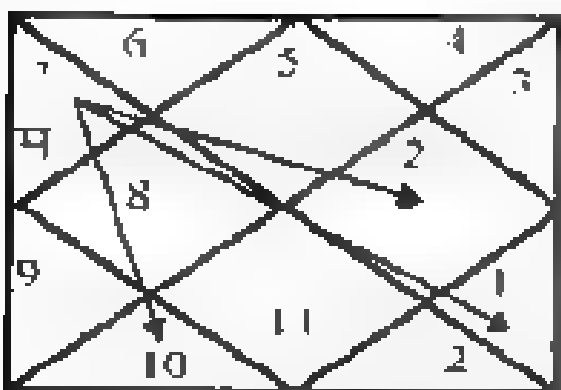
सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मगल केन्द्र एव त्रिकोण दोनो का स्वामी है यहा तृतीयस्थ मंगल तुला (सम) राशि में होगा। मगल की यह स्थिति जातक का पराक्रम बढायेगी जातक को जमीन-जायदाद का सुख प्राप्त होगा जातक अपने अकेला भाई नहीं होगा जातक अपने कुटुम्ब-परिवार के साथ रहना पसंद करेगा। जातक के अनेक मित्र होगे।

दृष्टि—तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि षष्ठम् भाव (मकर राशि), भाग्य भवन (मेष राशि) एवं दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक भाग्यशाली होगा तथा राज सरकार में उसका दबदबा रहेगा।

निशानी—जातक को छोटे भाई का सुख कम मिलेगा।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। नौकरी लगेगी व पराक्रम बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—लग्नेश सूर्य तीसरे स्थान में मंगल के साथ होने से जातक के अनेक भाई होंगे पर छोटे भाई की मृत्यु होगी।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां तृतीय स्थान में तुला राशिगत दोनों ग्रह की दृष्टि छठे भाव (मकर राशि), भाग्य भाव जो मंगल का स्वयं का घर है (मेष राशि) एवं दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान, पराक्रमी एवं सौभाग्यशाली होगा। जातक की पहुंच राजनीति में भी होगी। जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।
3. **मंगल+बुध**—धनेश लाभेश बुध तीसरे स्थान में मंगल के साथ होने से जातक के कुटम्बीजन धनी होंगे।
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु तीसरे स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—दशमेश शुक्र तृतीय स्थान में स्वगृही होकर मंगल के साथ होने से जातक को कुटुम्ब, परिवार, भाई-बहनों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।
6. **मंगल+शनि**—षष्टेश शनि तृतीय स्थान में मंगल के साथ होने से जातक के मित्र लड़ाकू होंगे। जातक की मित्रों से कम बनेगी।
7. **मंगल+राहु**—तृतीय स्थान में मंगल के साथ राहु भाईयों में विरोध व मुकदमा करायेगा।
8. **मंगल+केतु**—तृतीय स्थान में मंगल के साथ केतु जातक को कीर्तिवान बनायेगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों का स्वामी है। यहां चतुर्थ स्थान में मंगल वृश्चिक राशि में स्वगृही है। मंगल की यह स्थिति 'रुचक योग' बना रही है। ऐसा जातक राजा

6	5	4	3
7	8 मं	2	
9		1	1
10		12	
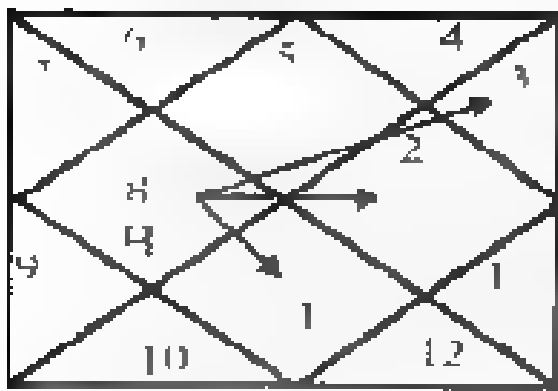
या सजा में किसी भी प्रकार से कम नहीं होता। मगल की यह स्थिति कुण्डली को मागलिक बनाती है ऐसा जातक स्वतंत्र विचारों का कलहकारी एव हठी स्वभाव का किन्तु प्रबल पुरुषार्थी व्यक्ति होगा तथा अपनी बात के लिए मर मिटेगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ मगल की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि) दशम भाव (वृष राशि) एव एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: एेसे जातक के गृहस्थ जीवन मे कुछ कलह प्रशासनिक नौकरी एव उद्योग व्यापार के लिए स्थिति लाभप्रद है.

निशानी–जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी या गाव का मुखिया होगा कृषि भूमि से भी उसे लाभ प्राप्त होगा।

दशा–मंगल की दशा अतर्दशा मे जातक का सर्वांगीण विकास होगा जातक का भाग्योदय होगा उसको नौकरी लगेगी व घर का मकान बनेगा

मगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य चतुर्थ स्थान म मगल के साथ होने से जातक तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान मे वृश्चिक राशिगत मगल स्वगृही एव चद्रमा नीच का होने से 'नीचभग राजयोग', 'रूचक योग' एव 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हुई है मगल यहां दिक्‌बली भी है। फलत: 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनो ग्रहो की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि), दशम भाव (वृष राशि) एव एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: एेसा जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा महाधनी होगा राज्य सरकार (राजनीति) मे जातक का प्रभाव होगा तथा जातक व्यापार व्यवसाय में भी धन अर्जित करेगा.
3. **मंगल+बुध**–धनेश लाभेश बुध चतुर्थ स्थान मे मगल के साथ होने से जातक महाधनी होगा। उसके पास अनेक भवन व अनेक वाहन होंगे।
4. **मगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु मगल के साथ चतुर्थ स्थान में होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी
5. **मगल+शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र चतुर्थ स्थान में मगल के साथ होने से जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक का ननिहाल शक्तिशाली होगा
6. **मगल+शनि**–षष्टेश शनि चतुर्थ स्थान म मगल के साथ होने से जातक की माता का स्वास्थ्य खराब रहेगा जातक की पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की होगी।

7. **मंगल+राहु**–चतुर्थ स्थान में मंगल के साथ राहु माता के लिए कष्टप्रद होता है। भूमि पक्ष में विवाद होगा।
8. **मंगल+केतु**–चतुर्थ स्थान में मंगल के साथ केतु जातक को बड़ा भू सम्पत्ति एवं बड़े वाहन का स्वामी बनायेगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
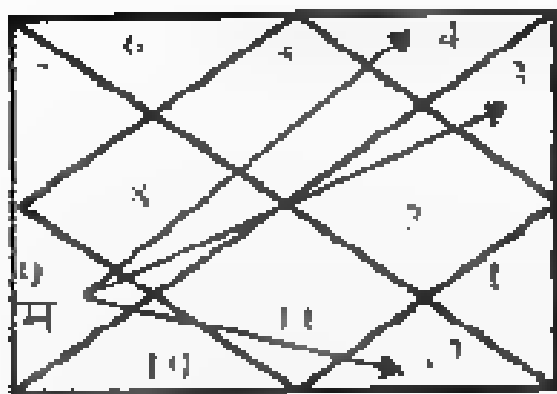
सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। यहां पंचम स्थान में मंगल अपनी मित्र धनु राशि में होगा। मंगल यहां ज्यादा प्रसन्न रहेगा। क्योंकि धनु राशि अग्नि तत्त्व प्रधान है। मंगल भी अग्नि तत्त्व वाला है। मंगल अपनी राशि (मेष) में नवम अर्थात् नवम से नवम स्थान पर है। फलत: जातक परम भाग्यशाली होगा। उसे संतति एवं श्रेष्ठ विद्या सुख प्राप्त होगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख मिलते हैं।

दृष्टि–यहां मंगल की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि), लाभ स्थान (मिथुन राशि) एवं व्यय भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सफल होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्राएं करता रहेगा और उसे यात्राओं से लाभ की प्राप्ति होती रहेगी।

निशानी–जातक का सही भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद शुरू होगा। जातक प्रखर बुद्धिशाली एवं कुलदीपक होगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक की विलक्षण उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य पंचम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक बहुत पुत्रों वाला होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां पंचम स्थान में धनु राशि में बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मीन राशि), लाभ स्थान (मिथुन राशि) एवं व्यय भाव (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: इस लक्ष्मी योग के कारण जातक व्यापार व्यवसाय में यथेष्ट धन अर्जित करेगा। जातक दीर्घजीवी होगा तथा ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

3. **मंगल+बुध**—धनेश लाभेश बुध पंचम स्थान में होने से जातक विद्यावान प्रज्ञावान होगा। जातक को पुत्र पुत्री दोनों का लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु पंचम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को पांच पुत्र देगा। जातक धर्म प्रधान शिक्षा का मर्मज्ञ होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र पंचम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक कलाशास्त्र का जानकार होगा। जातक को पुत्र पुत्री सभी का सुख मिलेगा
6. **मंगल+शनि**—षष्ठेश शनि पंचम स्थान में मंगल के साथ होने से एकाध संतति की अकाल मृत्यु का जिम्मेदार होगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु की पंचम स्थान में उपस्थिति संतान सुख में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु पंचम स्थान में गर्भपात, गर्भस्राव एवं शल्य चिकित्सा का योग बनाता है

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में
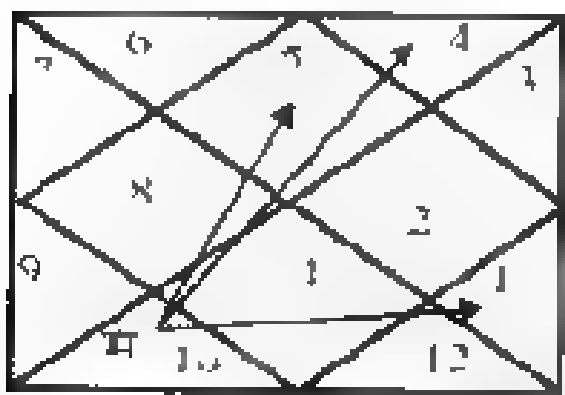
सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। यहा छठे स्थान में मंगल मकर राशि में उच्च का होगा। मंगल मकर राशि के 28 अंशों में परमोच्च का होगा। मंगल की यह स्थिति विपरीत राजयोग कारक है। जातक धनी होगा तथा ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम होगा। ऐसा जातक रौबीले व्यक्तित्व का धनी होगा। जातक बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होगा।

दृष्टि—मकर राशिगत मंगल की दृष्टि भाग्य भवन (मेष राशि), द्वादश भाव (कर्क राशि) एवं लग्न भाव (सिंह राशि) पर होगी। मंगल की यह स्थिति जातक के सौभाग्य में वृद्धि करेगी। जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा। जातक महत्त्वाकांक्षी एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी—जातक की सम्पत्ति विवादास्पद रहेगी। सुखभंग योग एवं भाग्यभंग योग के कारण जातक को प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी। जातक को कार्य की सफलता हेतु निरन्तर परिश्रम एवं बार बार प्रयास करने होंगे।

दशा—मंगल की दशा अन्तर्दशा में भाग्य खिलेगा, पराक्रम बढ़ेगा एवं जातक को परिश्रम का फल मिलेगा

मगल का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य छठे स्थान में होने से जातक का परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा यहां विपरीत राजयोग बनेगा फलत: जातक धनी होगा

2. **मगल+चंद्र**–यहा छठे स्थान मे मकर राशिगत मगल उच्च का होगा मगल की यह स्थिति 'सुखभग योग' एव 'भाग्यभग योग' की सृष्टि करती है पर व्ययेश चंद्रमा के छठे जाने मे सरल नामक विपरीत राजयाग की सृष्टि हुई है अत: लक्ष्मी योग बना। ऐसा जातक संघर्ष के बाद धनी होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रहो की दृष्टि भाग्य स्थान (मेष राशि), व्यय भाव (कर्क राशि) एव लग्न भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक निश्चय ही भाग्यशाली, धनी एव व्ययशील (खर्चीली) प्रवृत्ति का स्वामी होगा।

3. **मगल+बुध**–धनेश, लाभेश बुध मंगल के साथ छठे हो तो जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।

4. **मगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु छठे होने से विपरीत राजयोग एव नीचभग राजयोग बनेगा। जातक राजा या राजा से कम वैभवशाली नही होगा।

5. **मगल+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे होने से जातक का पराक्रम भग होगा।

6. **मगल+शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि छठे स्थान मे मगल के साथ 'किम्बहुना योग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के तुल्य धनी एव पराक्रमी होगा।

7. **मंगल+राहु**–यहा छठे स्थान मे राहु योग कारक है। जातक के गुप्त शत्रु होगें। उनसे सावधान रहना होगा।

8. **मगल+केतु**–छठे स्थान मे मगल के साथ केतु रोग मे वृद्धिकारक है।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में
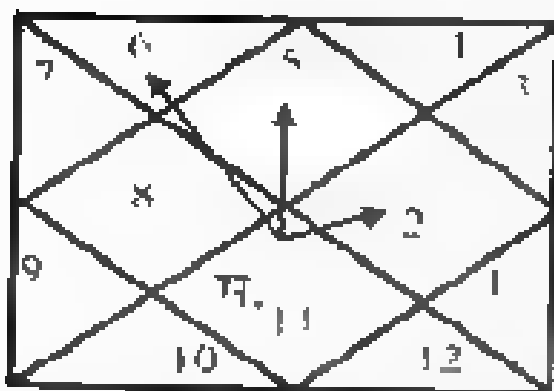
सिंहलग्न मे मगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहा मगल केन्द्र एव त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है सप्तमस्थ मगल यहा कुंभ (शत्रु) राशि मे होगा मगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है। फलत: जातक हठी व क्रोधी होगा। उसका दाम्पत्य जीवन कलहकारी रहेगा। जातक ऊर्जावान रतिक्रिया मे स्त्री को हराने वाला, कर्मठ व तेजस्वी पुरुष होगा

दृष्टि–सप्तम भावगत मगल की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि), लग्न स्थान (सिंह राशि) एव धन भाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक को राजपक्ष मे

लाभ, राजा से सम्मान परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक अपने पुरुषार्थ से धन कमायेगा।

निशानी—ऐसा जातक उत्तम प्रशासक प्रबंधक के रूप में ज्यादा यश प्राप्त करता है।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा। उसे यथेष्ट धन, नौकरी व्यवसाय की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—लग्नेश सूर्य सातवें स्थान में मंगल के साथ शुभ फलदायक है। जातक परिश्रमी एवं ऊर्जावान होगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां सप्तम स्थान में कुम्भ राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि), लग्न भाव (सिंह राशि) एवं धन भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: 'लक्ष्मी योग' पूर्ण रूप से मुखरित हुआ। ऐसे जातक को हाथ में लिए गए प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी जातक धनवान एवं साधन-सम्पन्न होगा। जातक राजनीति में प्रभाव रखने वाला महत्वपूर्ण व्यक्ति होगा
3. **मंगल+बुध**—धनेश, लाभेश बुध सातवें मंगल के साथ होने से जातक को पत्नी पक्ष (ससुराल) से धन की प्राप्ति होगी
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु मंगल के साथ सातवें स्थान में होने पर जातक को गृहस्थ सुख में बाधा पहुंच सकती है
5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र सातवें स्थान में मंगल के साथ होने से जातक महान पराक्रमी व राजनीतिज्ञ होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि 'द्विभार्या योग' कराता है।
7. **मंगल+राहु**—सप्तम स्थान में मंगल के साथ राहु द्विविवाह कराता है।
8. **मंगल+केतु** सप्तम स्थान में मंगल के साथ केतु पत्नी से वैचारिक मतभेद उत्पन्न करता है।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में

सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है यहां अष्टम स्थान में मंगल मीन (मित्र) राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति में सुखभंग योग एवं भाग्यभंग योग की
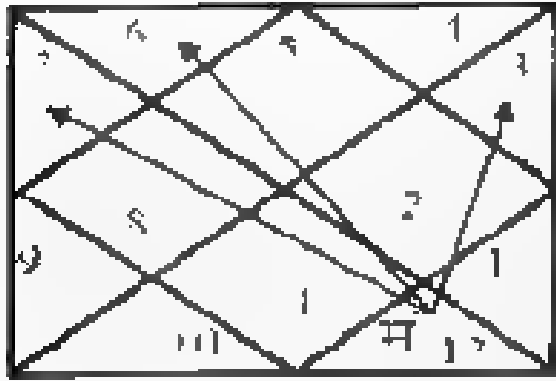
सृष्टि होती है। मंगल की यह स्थिति संघर्ष की द्योतक है। जातक को भौतिक सुखों उपलब्धियों की प्राप्ति आसानी से नहीं होगी। जातक को प्रत्येक सफलता की प्राप्ति हेतु निरन्तर संघर्ष करना पड़ेगा। ऐसी कुण्डली 'मांगलिक' भी होगी। ऐसा मंगल गृहस्थ सुख में विवाद उत्पन्न करता है।

दृष्टि—अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि एकादश स्थान (मिथुन राशि), धन भाव (कन्या राशि) एवं पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। ऐसे जातक को धन लाभ होता है। जातक को व्यापार से लाभ होता है। जातक पराक्रमी होता है।

निशानी—इस भाव में मंगल पित्त रोग, रक्त विकार, फोड़े-फुन्सी, घाव, चीरफाड़, बवासीर, मस्सा, ऑपरेशन इत्यादि को बताता है।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—लग्नेश सूर्य आठवें मंगल के साथ होने से दो विवाह कराता है।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां दोनों ग्रह अष्टम स्थान मीन राशि में होंगे। मंगल की यह स्थिति 'सुखभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि करेगी। परन्तु व्ययेश चंद्रमा के अष्टम में जाने से 'सरल' नाम विपरीत राजयोग की सृष्टि होने से 'लक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (मिथुन राशि), धन भाव (कन्या राशि) एवं पराक्रम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलतः जातक व्यापार व्यवसाय में धन अर्जित करेगा एवं महान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**—धनेश, लाभेश बुध आठवें स्थान में होने से जातक को धनहीन कर देता है।
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु अष्टम स्थान में स्वगृही होकर मंगल के साथ होने से विपरीत राजयोग बना पर गृहस्थ सुख में परेशानी होगी।
5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र अष्टम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को गुप्त रोग देगा।
6. **मंगल+शनि**—षष्ठेश शनि अष्टम स्थान में मंगल के साथ 'विपरीत राजयोग' बनायेगा। परन्तु जातक के पत्नी से विचार नहीं मिलेंगे। वैधव्य योग संभव है।

7. **मंगल+राहु**–अष्टम स्थान में मंगल के साथ राहु होने से दो पत्नी का योग बनता है।

8. **मंगल+केतु**–अष्टम स्थान में मंगल के साथ केतु वैवाहिक सुख में कलह कराता है।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में
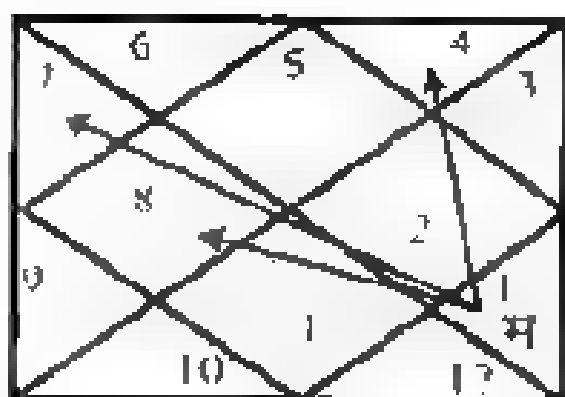
सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। यहां नवमस्थ मंगल मेष राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक महान भाग्यशाली होगा। जातक को उत्तम शिक्षा, सम्पत्ति-स्त्री, संतान, घर-वाहन, नौकर चाकर का पूर्ण सुख मिलता है। जातक ऐश्वर्यशाली एवं वैभवपूर्ण जीवन जीता है।

दृष्टि–स्वगृही मंगल की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि) पराक्रम स्थान (तुला राशि) एवं सुख भाव (वृश्चिक राशि) अपने ही घर पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति होगा। जातक पराक्रमी होगा तथा बड़ी जमीन जायदाद का स्वामी होगा।

दशा मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा उसे जमीन जायदाद की प्राप्ति होगी

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य** भावार्थसंहिता के अनुसार लग्नेश सूर्य मंगल के साथ नवम भाव में हो तो 'किम्बहुना योग' बनता है। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं धनी होगा।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां मेष राशिगत मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा उच्चाभिलाषी होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (कर्क राशि), पराक्रम भाव (तुला राशि) एवं चतुर्थ भाव जो कि स्वयं मंगल का मुखरित हुआ। ऐसा जातक अति सौभाग्यशाली एवं धनवान होगा जातक बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होगा तथा गांव के मुखिया या अन्य प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करेगा। ऐसा जातक व्ययशील (उदार) प्रवृत्ति वाला होगा

3. **मंगल+बुध**–धनेश, लाभेश बुध नवम स्थान में मंगल के साथ होने से जातक व्यापार के द्वारा खूब धन कमायेगा उसे पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

4. **मगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु नवम स्थान में मगल के साथ हो तो जातक का गृहस्थ सुख, स्त्री संतान का सुख पूर्ण प्राप्त होता है
5. **मगल+शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र नवम स्थान में मगल के साथ हो तो जातक को राज सरकार में ऊंचा पद प्राप्त होता है।
6. **मंगल+शनि**–षष्टेश शनि के नवम भाव में मगल के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा होगा तथा किसी भी प्रकार से राजा से कम नहीं होगा
7. **मगल+राहु**–भाग्य स्थान में मगल के साथ राहु का यह योग भाग्योदय में बाधा डालता है फिर भी जातक भाग्यशाली होता है
8. **मंगल+केतु**–भाग्य स्थान मे मगल के साथ केतु भाग्योदय हेतु प्रारम्भिक संघर्ष का द्योतक है।

सिंहलग्न मे मंगल की स्थिति दशम स्थान में
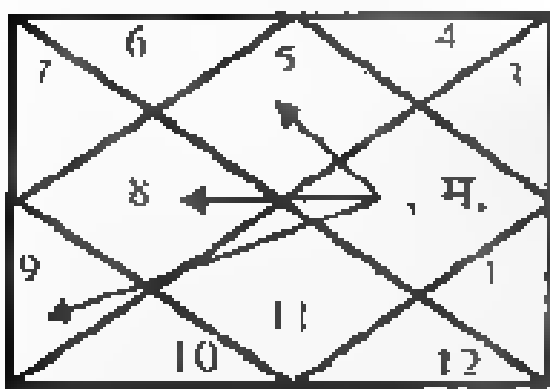
सिहलग्न में मगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है यहा मगल केन्द्र एव त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। यहां दशम स्थान में मंगल वृष (सम) राशि में होगा। मगल यहां दिग्बली होगा। जिसके कारण 'कुलदीपक योग' भी बनेगा। जातक भाग्यशाली होगा। ऐसे जातक को उत्तम संतति, उत्तम भवन उत्तम वाहन, नौकर चाकर इत्यादि का पूर्ण सुख मिलता है जातक कुल परिवार व कुटुम्ब का नाम रोशन करेगा।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल लग्न स्थान (सिंह राशि, सुख भाव (वृश्चिक राशि) एव पचम भाव (धनु राशि) को देखेगा। फलत: जातक को स्वस्थ देह, दृढ़ इच्छा शक्ति, उत्तम संतति एव भौतिक उपलब्धियो की प्राप्ति होगी।

निशानी–जातक के दो या तीन पुत्र जरूर होंगे। जातक IAS, IPS, RJS इत्यादि प्रशासनिक कार्यों मे उत्तम सफलता प्राप्त करेगा।

दशा–मंगल की दशा अन्तर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। जातक को जमीन-जायदाद, संतति एव भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

मगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य दशम स्थान में मगल के साथ हो तो जातक को उच्च राजपुरुष (I.A.S. या I.S.) बनाता है।

2. **मंगल+चंद्र**—यहा वृष राशिगत केन्द्रवर्ती चद्रमा उच्च का होगा 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। मगल यहा दिक्बली होगा तथा 'कुलदीपक योग' बनायेगा. फलत: यहा 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक महाधनी होगा. यहा बैठकर दोनो ग्रहो की दृष्टि लग्न स्थान (सिह राशि) चतुर्थ भाव जो मगल का स्वय का घर है (वृश्चिक राशि) एव पचम भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक बड़ी भू सम्पत्ति तथा उतम वाहन का स्वामी होगा। जातक का सही अर्थो मे भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।

3. **मंगल+बुध**—धनेश, लाभेश बुध दशम स्थान मे मगल के साथ हो तो जातक को भूमि, भवन से धन दिलाता है।

4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु के साथ मंगल दशम स्थान मे होने से जातक शत्रुओं का नाश करता है। जातक विद्यावान व गुणी होगा।

5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र मगल के साथ दशम स्थान में 'मालव्य योग' बनाता है। जातक राजा या बड़ा राजपुरुष होगा।

6. **मंगल+शनि**—षष्टेश शनि का दशम स्थान में मंगल के साथ होना जातक को सरकार में नौकरी दिलायेगा। जातक प्रबन्धन कार्य में श्रेष्ठ होगा।

7. **मंगल+राहु**—दशम स्थान में मंगल के साथ वृष का राहु जातक को हठी व दम्भी राजा बनायेगा।

8. **मंगल+केतु**—दशम स्थान में मंगल के साथ केतु जातक को तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी बनायेगा

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में

6 4 7 3 5 मं. 8 9 1 11 10 12
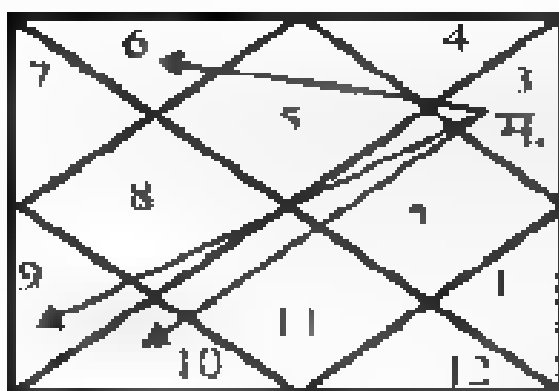
सिंहलग्न में मगल सुखेश एव भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है। यहा मगल केन्द्र एव त्रिकोण दोनो स्थान का स्वामी है। एकादश स्थान में मंगल मिथुन (शत्रु) राशि में होगा यह मंगल जातक के जीवन में भौतिक उपलब्धियो में वृद्धि करायेगा। जातक को बुद्धि, तेज एव प्रखर निर्णय शक्ति देगा

दृष्टि—एकादश भावगत मगल की दृष्टि धन भाव (कन्या राशि), पचम भाव (धनु राशि) एव छठे भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक धनी होगा। जातक को सतति सुख मिलेगा, जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–जातक पुत्रवान होगा। जातक के दो पुत्र अवश्य होंगे।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा व व्यापार चमकेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–लग्नेश सूर्य एकादश स्थान में मंगल के साथ होने से जातक उद्योगपति होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां एकादश स्थान में मिथुन राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कन्या राशि), पंचम भाव (धनु राशि) एवं छठे भाव (मकर राशि) को देखेंगे। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा, जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक स्थिति प्रथम संतति के बाद सुदृढ़ होगी।
3. **मंगल+बुध**–धनेश बुध एकादश स्थान में स्वगृही होकर मंगल के साथ होने से व्यापार व्यवसाय से जातक को धनी बनायेगा।
4. **मंगल+गुरु**–अष्टमेश गुरु एकादश स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को धनी व धार्मिक नेता या राजगुरु का सम्मान देगा।
5. **मंगल+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र एकादश स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को महान पराक्रमी बनायेगा।
6. **मंगल+शनि**–षष्टमेश शनि एकादश स्थान में मंगल के साथ जातक के ससुराल को समाज में प्रतिष्ठित पद देगा।
7. **मंगल+राहु**–एकादश स्थान में मंगल के साथ राहु शुद्ध लाभांश में कटौती करेगा।
8. **मंगल+केतु**–एकादश स्थान में मंगल के साथ केतु धन (लाभांश) का नाश करेगा।

सिंहलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में

6 5 मं 4 7 3 8 2 9 1 10 12
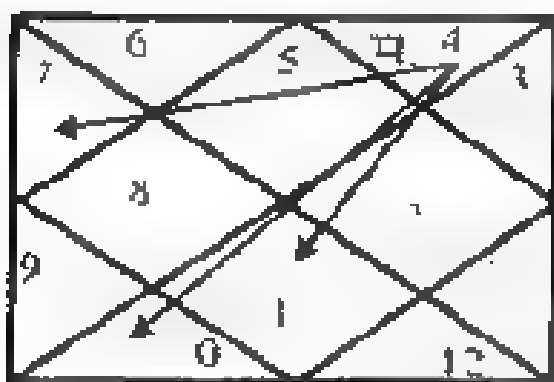
सिंहलग्न में मंगल सुखेश एवं भाग्येश होने के कारण पूर्ण योगकारक है, यहां मंगल केन्द्र एवं त्रिकोण दोनों स्थान का स्वामी है। द्वादश भाव में कर्क राशिगत मंगल यहां नीच का होगा। कर्क राशि के 28 अंशों में मंगल परम नीच का होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'डबल मांगलिक'

बनाती है यह स्थिति जातक के दाम्पत्य सुख के लिए बाधक है तथा विलम्ब विवाह का योग बनाती है मगल के कारण 'सुखभग योग' एव 'भाग्यभग योग' बना। फलतः सुखों की प्राप्ति हेतु जातक को अनेक प्रकार के कष्टों एवं असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

दृष्टि—द्वादश भावगत मगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि), छठे भाव (मकर राशि) एवं सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः सहोदर सुखों की हानि, गुप्त शत्रुओं का प्रकोप, जीवन साथी से वैचारिक भिन्नता जातक को परेशान करते रहेंगे।

निशानी—इस भाव में मंगल नेत्र पीड़ा, रक्त विकार, पुलिस या अदालत के कारण जातक के जीवन में परेशानी उत्पन्न करता है।

दशा—मगल की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिले जुले परिणाम प्राप्त होंगे। कठोर परिश्रम एव प्रारंभिक संघर्ष के बाद ही सफलता हाथ लगेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार लग्नेश सूर्य द्वादश स्थान में मंगल के साथ होने से नेत्र पीड़ा एवं राजदण्ड देगा।
2. **मंगल+चद्र**—यहा द्वादश स्थान में कर्क राशि में चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी यद्यपि मगल के कारण 'सुखभंग योग' तथा 'भाग्यभंग योग' बना था। तथापि व्यय भाव में व्ययेश स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग के कारण मंगल के अशुभ फल नष्ट हो जायेंगे। यहा 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। यहा बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम भाव (तुला राशि), षष्टम भाव (मकर राशि) एव सप्तम भाव (कुम्भ राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महान पराक्रमी होगा एव शत्रुओं का दमन करने में कामयाब होगा, परन्तु जातक सही अर्थों में धनी विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—धनेश, लाभेश, बुध द्वादश स्थान में मंगल के साथ होने से जातक को भूमिहीन व दिवालिया कर देगा।
4. **मंगल+गुरु**—अष्टमेश गुरु द्वादश स्थान में मगल के साथ 'नीचभग राजयोग' बनायेगा। जातक धनी होगा पर संतान पक्ष से चिंतित रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र द्वादश स्थान में मंगल के साथ होने से पराक्रम भंग करेगा जातक को जेल हो सकती है।

6. **मगल+शनि**–षष्टेश शनि के द्वादश के स्थान म मगल क साथ होने म जातक को राजदण्ड क कारण जेल हो सकती है.

7. **मगल-राहु**–द्वादश स्थान म मगल के साथ राहु जातक को भूमिहीन कर देगा। जातक बार बार मकान बदलता रहेगा।

8. **मगल+केतु**–द्वादश स्थान में मगल के साथ केतु जातक को भूमि से कष्ट देगा। भाईयों में विद्वेष होगा

❑❑❑

सिंहलग्न में बुध की स्थिति

सिंहलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
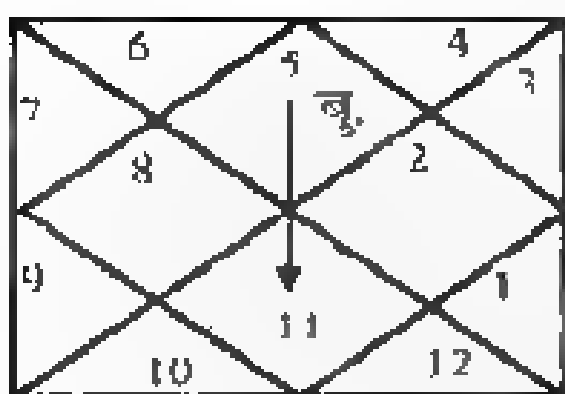
सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है तथा यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां लग्नस्थ बुध सिंह (मित्र) राशि में होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बना। जातक सुगठित व सुन्दर देह का स्वामी होगा। जातक कुशाग्र बुद्धि वाला तेजस्वी व्यक्ति होगा। ऐसा जातक ज्योतिष गणित, तर्कशास्त्र, अध्ययन अध्यापन, लेखन सम्पादन में रुचि रखने वाला, कुटुम्ब-परिवार का नाम रोशन करने वाला प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।

दृष्टि—लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक को गृहस्थ व संतान का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

निशानी—जातक खुशमिजाज होगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक धनी होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

- **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। प्रथम भाव में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश-लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर यह युति बहुत सार्थक है। लग्न में सूर्य होने से रविकृत राजयोग बनेगा। बुध यहां उच्चाभिलाषी है जो केन्द्र में कुलदीपक योग बनायेगा। इस योग के कारण ऐसा जातक धनवान एवं बुद्धिमान होगा। उच्च

पदस्थ राज्याधिकारी होगा। जातक समाज का बहुप्रतिष्ठित तथा एक सफल व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–जातक खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति होगा एवं विदेश यात्रा करेगा।
3. **बुध + मंगल**– जातक अत्यधिक धनी व भाग्यशाली होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक आध्यात्मिक विद्या का जानकार, उच्च कोटि का दार्शनिक होगा।
5. **बुध + शुक्र**–धनेश तृतीयेश की युति से व्यक्ति पुरुषार्थ के द्वारा धन अर्जित करेगा।
6. **बुध + शनि**–धनेश सप्तमेश की युति जातक को ससुराल से धन दिलायेगी।
7. **बुध + राहु**–जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
8. **बुध + केतु**–जातक कीर्तिवान होगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
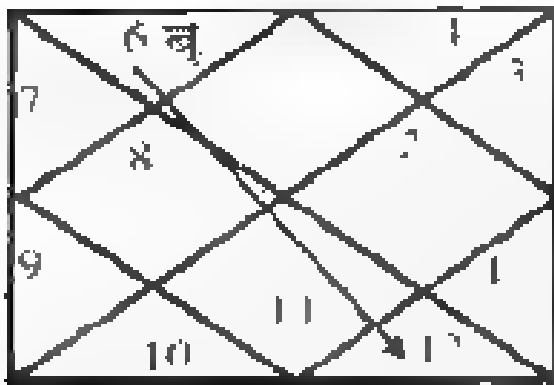
सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां द्वितीय स्थानगत बुध कन्या राशि में उच्च का होगा। कन्या राशि में 15 अंशों तक बुध परमोच्च का होगा। ऐसा जातक महाधनी होगा, जातक की वाणी मीठी व लच्छेदार होगी, जातक व्यापार प्रिय होगा। जातक व्यापार, व्यवसाय व उद्योग के माध्यम से यथेष्ट धन अर्जित करेगा। जातक के कुटम्बी सम्पन्न होंगे, कुटुम्ब में प्रेम रहेगा।

दृष्टि–द्वितीय भावगत बुध की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का रुपया बीमारी पर खर्च होगा।

निशानी–ऐसा जातक वाक्पटु होगा। उसकी वाणी का जादू चलेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक खूब धन कमायेगा, जातक का व्यापार-व्यवसाय उन्नति को प्राप्त करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भाऊसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। द्वितीय स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध

के साथ युति कहलायेगी। बुध यहा उच्च का होगा। बलवान धनेश की लग्नेश के साथ यहा पर यह युति बहुत ही सार्थक है। जातक अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा। जातक अपने पुरुषार्थ व बुद्धिबल से बहुत धन कमायेगा। जातक की आयु लम्बी होगी क्योंकि दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव पर होगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होगा.

2. **बुध + चंद्र** धनेश+खर्चेश की युति जातक के धन का खर्च कराती रहेगी।
3. **बुध + मंगल**—धनेश+भाग्येश की युति के कारण जातक महाधनी एव भाग्यशाली होगा।
4. **बुध + गुरु**—धनेश+पंचमेश की युति से जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र संतति के बाद होगा।
5. **बुध + शुक्र**—धनेश दशमेश की युति से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा जातक को ऊंची नौकरी व बड़ा व्यापार प्राप्त होगा। जातक के मित्र बहुत होंगे।
6. **बुध + शनि**—बलवान धनेश के साथ सप्तमेश की युति से 'कलत्रमूल धनयोग' बनेगा। जातक को ससुराल पक्ष से धन प्राप्त होगा।
7. **बुध + राहु**—बलवान धनेश के साथ राहु की युति जातक की वाणी को घमण्डी बना देगी।
8. **बुध + केतु**—बलवान धनेश के साथ केतु जातक को यशस्वी धनी बनायेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में
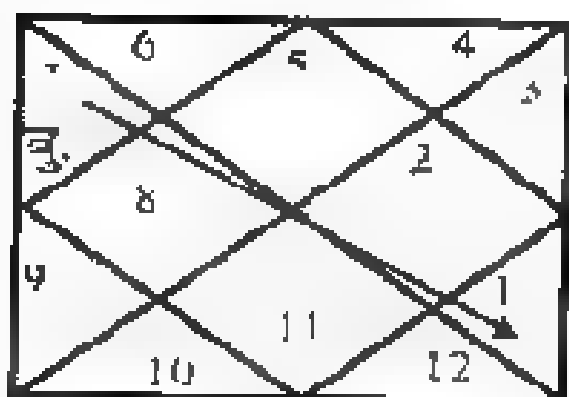
सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नही देगा जितनी अपेक्षा की जाती है। यहा तृतीयस्थ बुध तुला (मित्र) राशि में होगा, मिथुन राशि में पंचम, कन्या राशि से द्वितीय स्थान पर होने के कारण बुध यहा अत्यंत शुभ फलदाई है। जातक पराक्रमी एवं कुशल न्यायाधीश होगा। जातक मित्रों में, कुटुम्ब में हितकर वाणी बोलता हुआ न्याय तौलेगा। जातक धनी व यशस्वी होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। तृतीय स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध

के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां नीच राशि का होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान पर होगी जो सूर्य की उच्च राशि है। फलत: जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एवं पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। जातक को मित्र परिजनों से सहायता मिलती रहेगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा बुध के साथ तृतीय स्थान में होने से जातक को विवादास्पद व्यक्ति बनायेगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल तृतीय स्थान में बुध के साथ होने से जातक का पराक्रम बढ़ायेगा।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में बुध के साथ होने से जातक के मित्र उसे धोखा देंगे।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश दशमेश शुक्र के स्वगृही होकर बुध के साथ होने से जातक महान पराक्रमी व नेता होगा।
6. **बुध + शनि**—षष्ठेश, सप्तमेश शनि उच्च के बुध के साथ होने से जातक का ससुराल धनी होगा। जिसकी वजह से जातक का पराक्रम बढ़ेगा।
7. **बुध + राहु**—तृतीय स्थान में राहु बुध के साथ होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।
8. **बुध + केतु**—तृतीय स्थान में केतु बुध के साथ हो तो कीर्ति देगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में
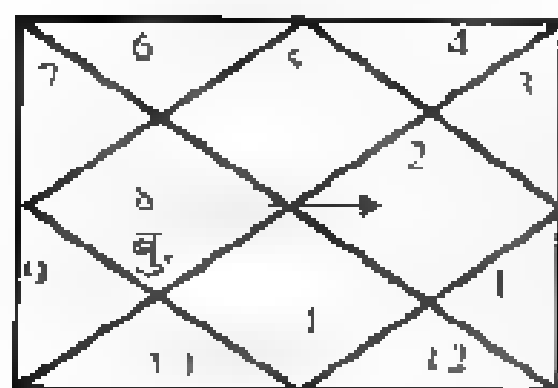
सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां चतुर्थ स्थान में बुध वृश्चिक (सम) राशि में होगा बुध की यह स्थिति 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेगी। बुध कन्या राशि में तीसरे एवं मिथुन राशि में छठे स्थान पर होगा। फलत: जातक का ननिहाल पक्ष सम्पन्न होगा। पर विचारधारा कम मिलेगी। जातक के पास वाहन होगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावस्थ बुध की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक के पास उत्तम नौकरी एवं अच्छा व्यापार होगा।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध के केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठ कर दोनों ग्रह दशम स्थान को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली, सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक को माता पिता की सम्पत्ति उत्तम वाहन एवं उत्तम भवन का सुख मिलेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा नीच का होकर बुध के साथ होने से चतुर्थ भाव में जातक को दो माताओं से पालित करायेगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल बुध के साथ होने से 'रूचक योग' के कारण जातक को राजा के समान पराक्रमी बनायेगा।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु चतुर्थ स्थान में बुध के साथ होने से जातक को धनी बनायेगा पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र बुध के साथ चतुर्थ भाव में होने से जातक के पास अनेक वाहन होंगे,
6. **बुध + शनि**—षष्ठेश सप्तमेश शनि चतुर्थ स्थान में बुध के साथ होने से जातक की माता धनी होगी पर बीमार होगी।
7. **बुध + राहु**—राहु चतुर्थ स्थान में बुध के साथ होने से वाहन दुर्घटना का भय देता है।
8. **बुध + केतु**—केतु चतुर्थ स्थान में बुध के साथ होने से जातक को वैभवशाली जीवन देगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा
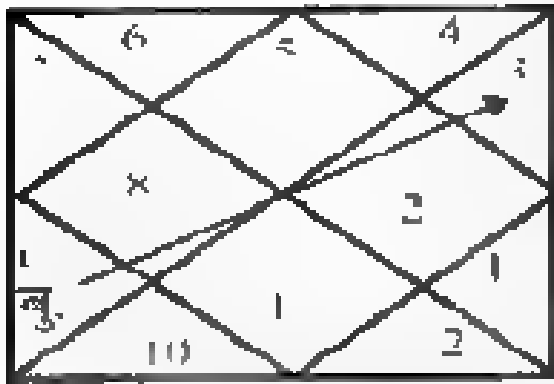
जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां पंचम स्थान में बुध धनु (मंगू) राशि में होगा। बुध मिथुन राशि में सातवें एवं कन्या राशि में चौथे स्थान पर होने से शुभ फलदाई है जातक का उच्च शैक्षणिक डिग्री (Higher Educational Degree) मिलेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। पंचम भाव में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध का स्वयं का घर है फलतः जातक बुद्धिमान होगा। जातक आध्यात्मिक विद्या, तंत्र ज्योतिष इत्यादि का जानकार होगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी जातक को पुत्र एवं कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा पंचम स्थान में बुध के साथ होने से संतान में चिंता करायेगा।
3. **बुध + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल पंचम स्थान में बुध के साथ होने से पुत्र संतति देगा, जातक के पुत्र तेजस्वी होंगे।
4. **बुध + गुरु**–अष्टमेश गुरु पंचम स्थान में बुध के साथ होने से पुत्र संतति जरूर देगा पर जातक के एकाध पुत्र की अकाल मृत्यु होगी
5. **बुध + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र पंचम स्थान में बुध के साथ होने से कन्या संतति की बाहुल्यता देगा
6. **बुध + शनि**–षष्ठेश, सप्तमेश शनि पंचम स्थान में बुध के साथ होने से कन्या संतति की बाहुल्यता देगा परन्तु जातक की एकाध संतति की अकाल मृत्यु होगी।
7. **बुध + राहु**–पंचम स्थान में राहु बुध के साथ होने से संतति प्राप्ति में में बाधक है।
8. **बुध + केतु**–पंचम स्थान में केतु बुध के साथ होने से कन्या संतति देगा

सिंहलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा जितनी अपेक्षा की जाती है। बुध यहां छठे स्थान में मकर (सम) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति से 'धनहीन योग' एवं 'लाभभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को व्यापार में काफी परेशानी-दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। धन कठिनता से एकत्रित होगा।

दृष्टि—षष्टमस्थ बुध की दृष्टि द्वादश भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसे जातक के धन की रक्षा नहीं हो पायेगी।

निशानी—यहां अकेला बुध शत्रुओं की वृद्धि करेगा।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा षष्टम भाव में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। सूर्य के छठे स्थान में होने से 'लग्न भंगयोग' बनेगा तथा बुध के कारण धनहीन योग लाभभंग योग की सृष्टि होगी। फलतः यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं रहेगी। जातक को धन कमाने हेतु भाग्योदय हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। रुपया पास में आयेगा पर टिकेगा नहीं। इस युति के कारण जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा पर जीवन संघर्षशील रहेगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा छठे में स्थान में बुध के साथ होने से धन की हानि होगी। जातक को गुप्त रोग होगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल छठे होने से विपरीत राजयोग बना रहा है बुध के साथ जातक के शत्रु शक्तिशाली होंगे।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु छठे जाने से विपरीत राजयोग बना परंतु बुध के साथ होने से धन का संघर्ष रहेगा।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे बुध के साथ होने से मिश्रित फल देगा।

6. **बुध + शनि**–षष्ठेश शनि यहां विपरीत राजयोग के साथ
7. **बुध + राहु**–राहु छठे होने से राजयोग कारक है पर बुध के साथ होने से जातक को धन की तंगी बनी रहेगी।
8. **बुध + केतु**–केतु छठे बुध के साथ होने से गुप्त शत्रु बढ़ायेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा जितनी अपेक्षा की जाती है यहां सप्तम स्थान में बुध कुम्भ (सम) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति में 'कुलदीपक योग' बना ऐसा जातक धनवान यशोवान होता है। जातक को उत्तम पत्नी व संतान का सुख मिलता है। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ बुध की दृष्टि लग्न स्थान से अपने ही घर कन्या राशि पर होगी। फलतः लग्नाधिपति योग बना। जातक को परिश्रम का पूरा पूरा लाभ मिलेगा।

निशानी–जातक अपनी पसंद से विवाह करेगा जातक की पत्नी सुंदर होगी।

दशा–बुध की दशा अंतर्दशा में जातक को धन की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भाजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। सप्तम स्थान में कुम्भ राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा दोनों ग्रह यहां बैठकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान होगा एवं बुद्धि बल से आगे बढ़ेगा उसको अल्प प्रयत्न से ही सफलता मिल जायेगी। जातक धनवान होगा बुध केन्द्र में होने से कुलदीपक योग बनेगा जिसके कारण जातक कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा
2. **बुध + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा सातवें स्थान में बुध के साथ होने से गृहस्थ सुख में कलह कराता है
3. **बुध + मंगल**–सुखेश भाग्येश मंगल सातवें स्थान में बुध के साथ होने से जातक का ससुराल धनाढ्य व प्रतिष्ठित होगा

4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु के सातवें स्थान में बुध के साथ होने से गृहस्थ व संतान सुख उत्तम है।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र सातवें स्थान में बुध के साथ होने से जातक का जीवनसाथी सुंदर होगा।
6. **बुध + शनि**—षष्टेश सप्तमेश शनि बुध के साथ होने से जातक की पत्नी धनी होगी पर अभिमानी होगी।
7. **बुध + राहु**—राहु सातवें बुध के साथ, गृहस्थ सुख में बाधक होता है।
8. **बुध + केतु**—केतु सातवें बुध के साथ होने से पत्नी से झगड़ा तकरार कराता रहेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में
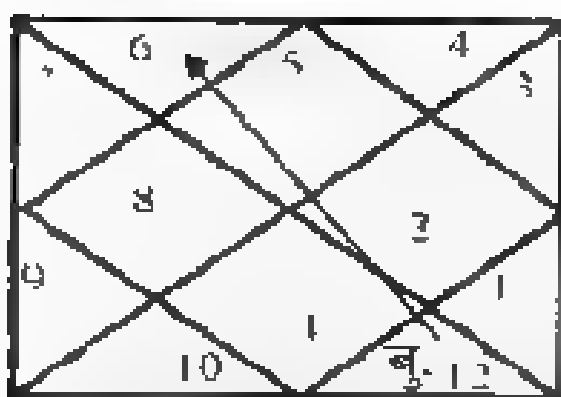
सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। अष्टम स्थान में बुध मीन (नीच) राशि में होगा। मीन राशि के 15 अंशों में बुध परम नीच का होगा। बुध की इस स्थिति में धनहीन योग एवं लाभभंग योग की सृष्टि होगी। फलत: जातक को व्यापार-व्यवसाय में दिक्कतें आयेंगी। लोग उससे अकारण ईर्ष्या द्वेष रखेंगे। जिससे धन प्राप्ति में बाधा आयेगी पर अंतिम सफलता निश्चित है।

दृष्टि—अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धन भाव (कन्या राशि) अपनी उच्च राशि पर होगी। फलत: विद्या बुद्धि, धन व कुटुम्ब सुख की प्राप्ति होती रहेगी।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। अष्टम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां नीच राशि का होगा, जहां बैठकर बुध अपनी उच्च राशि धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा, फलत: जातक बुद्धिमान व वैभवशाली होगा। बुध के आठवें जाने से 'धनहीन योग' 'लाभभंग योग'

बनेगा तथा सूर्य आठवें जाने में 'लग्नभंग योग' बनेगा यहां पर यह युति ज्यादा साधक नहीं है। जातक को धन-ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को ज्यादा परिश्रम का योग्य फल मिलेगा एसी विषमता बनी रहेगी। परन्तु जातक का कोई काम धन की कमी से रुका नहीं रहेगा।

2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा के अष्टम स्थान में होने से विपरीत राजयोग बना बुध के साथ चंद्रमा अष्टम स्थान में शल्य चिकित्सा योग बताता है।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल आठवें स्थान में बुध के साथ होने से व्यक्ति भूमि विवाद में फंसेगा।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश अष्टम में 'नीचभंग राजयोग' भी बना रहा है ऐसा जातक धनी एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र बुध के साथ आठवें होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक धनी एवं प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
6. **बुध + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि आठवें बुध के साथ 'विपरीत राजयोग' बनायेगा जातक धनी होगा पर गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
7. **बुध + राहु**—अष्टम स्थान में राहु बुध के साथ होने से जातक की आयु में कमी आयेगी
8. **बुध + केतु**—अष्टम स्थान में केतु के साथ बुध जातक को बीमार करायेगा ऑपरेशन का भय रहेगा

सिंहलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में
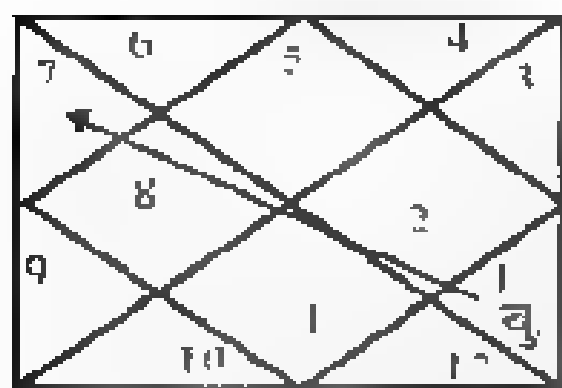
सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां नवम स्थान में बुध मेष (सम) राशि में होगा जातक भाग्यशाली होगा पर हठी, धूर्त निर्लज्ज व स्वेच्छाचारी भी होगा जातक बुद्धिबल से पैसा कमायेगा

दृष्टि—नवमस्थ बुध की दृष्टि तृतीय स्थान (पराक्रम भाव) पर होगी। फलतः जातक भाईयों, परिजनों व मित्रों की मदद करेगा

दशा—बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं उसे धन की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। नवम स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा एवं तृतीय स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बलवान लग्नेश की धनेश से युति यहां सार्थक सिद्ध होगी। फलत: जातक बुद्धिशाली धनवान एवं भाग्यशाली होगा। सूर्य की कृपा से जातक को 22 से 24 वर्ष की आयु के मध्य अच्छी लाईन मिल जायेगी। जातक उच्च राज्यधिकारी बन सकता है, जातक को पिता की सम्पत्ति प्राप्त होगी, जातक का पराक्रम, जनसम्पर्क बहुत तेज रहेगा। जातक समाज का बहु प्रतिष्ठित व गणमान्य व्यक्ति होगा
2. **बुध + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा भाग्य स्थान में बुध के साथ होने से जातक के भाग्य में उतार–चढ़ाव आयेंगा।
3. **बुध + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल बुध के साथ नवम स्थान में स्वगृही होने से जातक भाग्यशाली एवं महाधनी होगा
4. **बुध + गुरु**–अष्टमेश गुरु नवम स्थान में बुध के साथ होने से जातक धनी होगा, पर जातक के जीवन में उतार–चढ़ाव आयगा,
5. **बुध + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र भाग्य स्थान में बुध के साथ होने से जातक महान पराक्रमी होगा।
6. **बुध + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि नीच का भाग्य स्थान में बुध के साथ होने से जातक के भाग्य में उतार–चढ़ाव बहुत ज्यादा आयेंगा।
7. **बुध + राहु**–भाग्य स्थान में राहु के साथ बुध धन व भाग्य की हानि करायेगा
8. **बुध + केतु**–भाग्य स्थान में केतु जातक का भाग्योदय तेजी से करायेगा

सिंहलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में
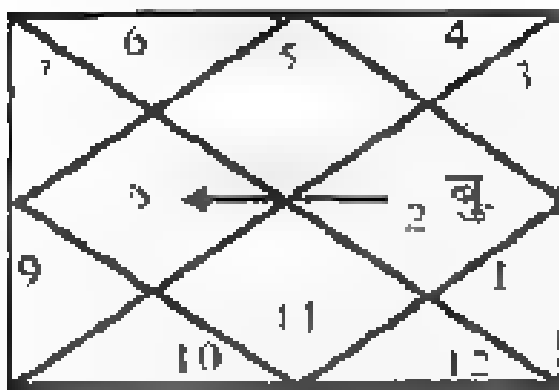
सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अत: अशुभ फल देगा बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा, जितनी अपेक्षा की जाती है। दशम भाव में बुध वृष (मित्र) राशि में होगा। बुध स्वगृहाभिलाषी होगा एवं कुलदीपक योग की सृष्टि करेगा, जातक के लिए उत्तम नौकरी, व्यवसाय का योग है। जातक घर का मकान दो मंजिला बनायेगा, माता की सेवा करेगा, जातक महत्त्वाकांक्षी होगा।

दृष्टि—दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी फलतः जातक शिक्षित होगा। उसकी राजनैतिक एवं व्यवसायिक उन्नति होगी।

निशानी—जातक के पास अनेक वाहन होंगे।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी एवं प्रभाव बढ़ेगा आय के साधन बढ़ेंगे

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। दशम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। दोनों केन्द्रस्थ ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। फलतः जातक बुद्धिमान, धनवान, उत्तम वाहन व सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक शिक्षित होगा। उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी जातक का पराक्रम तेज रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा दशम स्थान में बुध के साथ होने से 'यामिनीनाथ योग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी होगा.
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल दशम स्थान में बुध के साथ होने से जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु दशम स्थान में बुध के साथ होने से जातक राजनीति में प्रभावशाली रहेगा।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश शुक्र दशम स्थान में बुध के साथ स्वगृही होने से 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक निश्चय ही राजा होगा।
6. **बुध + शनि**—षष्टेश सप्तमेश शनि दशम स्थान में बुध के साथ होने से जातक धनी होगा पर जातक का भाग्योदय देरी से होगा।
7. **बुध + राहु**—दशम स्थान में बुध के साथ राहु होने से पिता की सम्पत्ति में विवाद करायेगा.
8. **बुध + केतु**—दशम स्थान में बुध के साथ केतु कीर्ति देगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में

सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा.
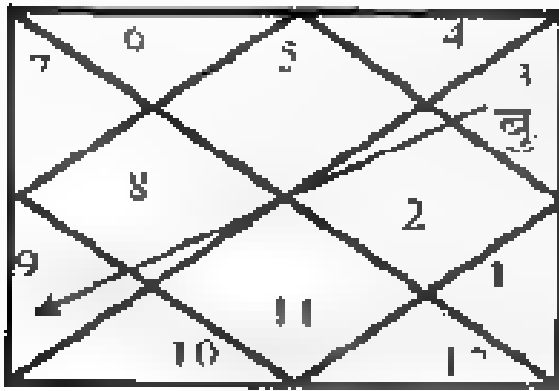
जितनी अपेक्षा की जाती है। एकादश स्थान में बुध मिथुन राशि में स्वगृही होगा एसे लोग आर्थिक रूप से सम्पन्न होते हैं जातक को उत्तम पत्नी उत्तम संतति की प्राप्ति होगी पर जातक की किस्मत प्रथम संतति उत्पन्न होने के बाद चमकेगी।

दृष्टि—यहां एकादश भावगत बुध की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक विद्यावान होगा तथा उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक की संतान भी शिक्षित व सभ्य होगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश होगा। एकादश स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा जहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसा जातक बुद्धिबल से अपना स्वयं का व्यापार उन्नत करेगा जातक धनवान होगा। यह भी संभव है कि वह बड़े उद्योग का स्वामी होगा। ऐसा जातक शिक्षित होगा तथा उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा लाभ स्थान में स्वगृही बुध के साथ होने से जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल एकादश स्थान में होने से जातक को बड़ा उद्योगपति बनायेंगे।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु लाभ स्थान में बुध के साथ होने से जातक को उत्तम गृहस्थ सुख मिलेगा जातक की पुत्र संतति तेजस्वी होगी।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र लाभ स्थान में बुध के साथ होने से जातक बड़े उद्योग का स्वामी होगा
6. **बुध + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि लाभ स्थान में बुध के साथ होने से जातक का ससुराल धनी होगा.
7. **बुध + राहु**—लाभ स्थान में स्वगृही बुध के साथ राहु जातक को राजा तुल्य पराक्रमी बनायेगा।
8. **बुध + केतु**—लाभ स्थान में स्वगृही बुध के साथ केतु जातक को यशस्वी बनायेगा।

सिंहलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में
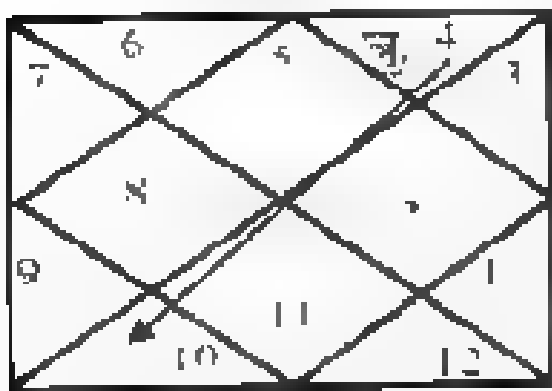
सिंहलग्न में बुध धनेश एवं लाभेश है। यह मारक स्थान का स्वामी है अतः अशुभ फल देगा। बुध सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से इतना अशुभ फल नहीं देगा जितनी अपेक्षा की जाती है। यहां द्वादश स्थान में बुध कर्क (शत्रु) राशि में होगा। बुध की यह स्थिति 'धनहीन योग' एवं 'लाभभंग योग' बनाती है। ऐसे जातक में आत्मविश्वास की कमी होती है उसे आर्थिक व सामाजिक उन्नति में बाधा महसूस होगी। जातक यात्रा पर ज्यादा रहेगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत बुध की दृष्टि छठे स्थान (मकर राशि) पर होगी फलतः जातक पर ऋण, रोग व शत्रु हावी रहेंगे।

निशानी—जातक व्यर्थ के कार्यों में रुपया खर्च करेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फलों का अनुभव होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार सिंह सूर्य लग्न में लग्नेश होगा। द्वादश स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः लग्नेश सूर्य की धनेश+लाभेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के बारहवें स्थान पर जाने से 'धनहीन योग', 'लाभभंग योग' की सृष्टि होगी। जबकि सूर्य के बारहवें स्थान पर जाने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। फलतः यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को धन तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होते हुए धन संग्रह के प्रति चिंतित रहेगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा बारहवें स्थान में बुध के साथ होने से जातक दिवालिया होगा। विपरीत राजयोग के कारण जातक वैभवशाली जीवन जीयेगा।
3. **बुध + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल बारहवें बुध के साथ होने से जातक की स्थाई सम्पत्ति में दिक्कतें पैदा करेगा।
4. **बुध + गुरु**—अष्टमेश गुरु व्यय स्थान में बुध के साथ होने से संतान की चिंता रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र बारहवें बुध के साथ होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।

6. **बुध + शनि**–षष्टेश सप्तमेश शनि बारहवें बुध के साथ होने से विलम्ब विवाह योग, विवाह सुख में बाधा का योग बनता है।
7. **बुध +** राहु–बारहवें राहु के बुध के साथ होने से जातक को दिवालिया करायेगा।
8. **बुध + केतु**–बारहवें केतु के बुध के साथ होने से जातक का धन यात्राओं में व्यय होगा।

❑❑❑

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में
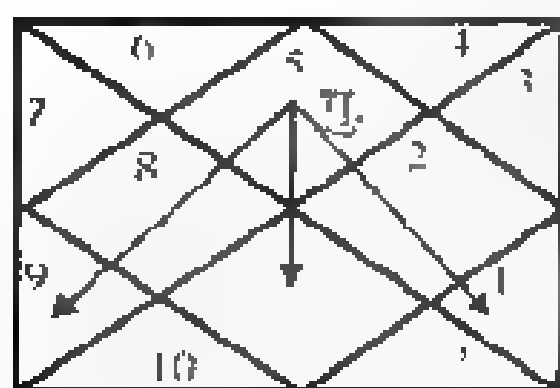
सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां प्रथम स्थान स्थान में गुरु सिंह (मित्र) राशि में होगा। यहां बैठकर गुरु 'कुलदीपक योग' एवं 'केसरी योग' बना रहा है। ऐसा जातक न्यायप्रिय, सिद्धान्त प्रिय व सत्यवक्ता होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) मिलेगी। जातक को भारतीय प्राच्य विद्याओं, ज्योतिष, तंत्र मंत्र, वेद वेदान्त, दर्शन में रुचि बढ़ेगी। जातक ईश्वर में विश्वास रखने वाला आस्तिक व धार्मिक होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ गुरु की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि), सप्तम भाव (कुंभ राशि) एवं भाग्य भाव (मेष राशि) होगी। फलत: जातक को विद्या बुद्धि, उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। जातक को सुन्दर पत्नी मिलेगी। जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।

दशा–गुरु की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा तथा उसे उत्तम शिक्षा मिलेगी एवं गृहस्थ सुख मिलेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–लग्नेश सूर्य के साथ गुरु व्यक्ति को प्रखर ज्ञानवान, पुण्यशील, परोपकारी एवं धर्मात्मा बनाता है।
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के प्रथम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ युति है।

लग्न में बैठकर दोनों शुभ ग्रह पंचम, सप्तम एवं भाग्य भवन को प्रभावित करेंगे। फलतः संतान पक्ष, पत्नी पक्ष एवं भाग्य पक्ष अपेक्षाकृत मजबूत रहेंगे। जो भी आप कमायेंगे खर्च होता चला जायेगा। फिर भी जीवन में धन की कमी से कोई काम रुका नहीं रहेगा.

3. **गुरु + मंगल**—भाग्येश, सुखेश मंगल यदि गुरु के साथ लग्न स्थान में हो तो जातक परमभाग्यशाली होगा। रचनात्मक कार्यों में रुचि रखने वाला आस्तिक बुद्धि का स्वामी होगा।

4. **गुरु + बुध**—धनेश बुध की युति योगकारक गुरु के साथ लग्न स्थान में होने से जातक आध्यात्मिक विद्या का जानकार व दार्शनिक होगा। जातक कम्प्यूटर लाईन का भी जानकार होगा।

5. **गुरु + शुक्र**—पराक्रमेश, दशमेश, शुक्र लग्न में यदि गुरु के साथ हो तो जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

6. **गुरु + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि यदि लग्न में गुरु के साथ हो तो जातक डिप्लोमेट, कूट राजनीतिज्ञ होगा।

7. **गुरु + राहु**—यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु के साथ प्रथम स्थान में राहु होने से जातक का मन-मस्तिष्क उद्विग्न रहेगा। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक देव-ब्राह्मणों एवं देहसुख से हीन होता है।

8. **गुरु + केतु**—गुरु के साथ केतु जातक को कीर्तिवान् बनायेगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में
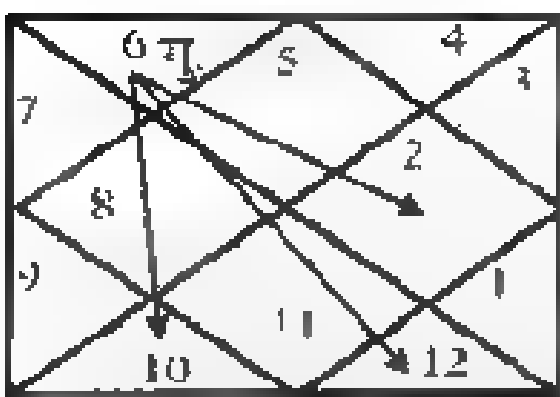
सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा. यहां द्वितीय स्थान में गुरु कन्या (शत्रु) राशि में होगा, जातक को धन संग्रह में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। कुटुम्ब सुख में परेशानियां आयेंगी।

दृष्टि—द्वितीय भावगत गुरु की दृष्टि छठे स्थान (मकर राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं दशम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु में वृद्धि होगी। जातक के शत्रुओं का नाश होगा। जातक का राजनैतिक वर्चस्व रहेगा।

निशानी—जातक की वाणी सत्य से प्रभावित होगी।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे। जातक की तरक्की होगी पर धीमी गति से होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—अष्टमेश पंचमेश गुरु के धन स्थान सूर्य के साथ होने से जातक बुद्धिबल, विद्याबल से धनार्जन करेगा।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के द्वितीय भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ युति है धन स्थान में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्ठम भाव, अष्टम भाव एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी जातक की आयु पूर्ण होगी ऐसा जातक रोग व शत्रु का मुकाबला करने में पूर्ण सक्षम होगा।
3. **गुरु + मंगल**—भाग्येश सुखेश मंगल धन स्थान में गुरु के साथ होने से जातक का भाग्योदय पुत्र संतति के जन्म के पश्चात होगा।
4. **गुरु + बुध**—बलवान धनेश के साथ पंचमेश होने से पुत्रमूल धनयोग एवं शत्रुकुल धनयोग बनेगा। जातक का भाग्योदय संतान द्वारा होगा। जातक को शत्रुओं से भी रुपया मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—दशमेश तृतीयेश शुक्र धन स्थान में हो तो जातक का रुपया निम्न कार्यों में खर्च होगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि यदि धन स्थान में गुरु के साथ हो तो बीमारी में रुपया खर्च होगा।
7. **गुरु + राहु**—सिंहलग्न के द्वितीय स्थान में पंचमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बना। जिसके कारण जातक भुजबल से हीन होता है तथा जो कुछ उसका नष्ट चोरी हो जाता है या जो धन उधार चला जाता है, वो वापस नहीं मिलता
8. **गुरु + केतु**—गुरु के साथ केतु हो तो कुटुम्ब में कम बनेगी।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा यहां गुरु तृतीय स्थान में तुला (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक धनी प्रतिष्ठित एवं आकर्षक
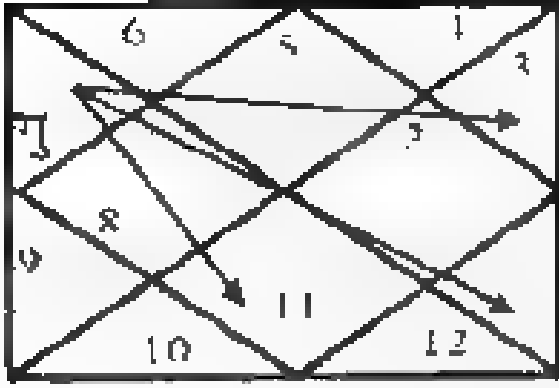
व्यक्तित्व का स्वामी होगा जातक को सहोदर भ्राता का सुख, पिता का सुख मिलेगा।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि), भाग्य भाव (मेष राशि) एवं एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी जातक को गृहस्थ सुख पूर्ण मिलेगा। व्यापार मे लाभ होगा। जातक भाग्यशाली होगा एवं सन्मार्ग (न्यायमार्ग) पर चलेगा।

दशा–गुरु की दशा अतर्दशा मे जातक व्यापार द्वारा धन अर्जित करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–अष्टमेश गुरु के साथ लग्नेश सूर्य की युति जातक को धार्मिक नेता एवं पराक्रमी बनायेगी.
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिहलग्न का है। सिहलग्न के तृतीय भाव मे गुरु+चद्र की युति व्ययेश चद्रमा की पचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ युति है। तृतीय स्थान में बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव नवम भाव एवं एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलतः जातक को पिता का धन मिलेगा। पत्नी व ससुराल से लाभ होगा व्यापार से भी लाभ होगा।
3. **गुरु + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मगल तृतीय स्थान में गुरु के साथ होने से जातक पराक्रमी होगा। जातक के तीन से अधिक भाई होगे।
4. **गुरु + बुध**–धनेश, लाभेश बुध तृतीय स्थान मे गुरु के साथ होने से जातक को पराक्रमी बनायेगा। धनी बनायेगा।
5. **गुरु + शुक्र** दशमेश शुक्र तृतीय स्थान में गुरु के साथ होने से जातक स्वगृही होगा। ऐसा जातक महान पराक्रमी एव धार्मिक होगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्ठेश सप्तमेश शनि तृतीय स्थान मे उच्च का होकर गुरु के साथ होने से जातक महान पराक्रमी एवं मित्र-समुदाय का चहेता होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहा सिहलग्न में अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान मे राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक सहोदर भाइयो के सुखों से हीन होकर मित्रों से धोखा खाता है।
8. **गुरु + केतु**–तृतीय स्थान मे गुरु के साथ केतु जातक को मित्रों मे यश दिलायेगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
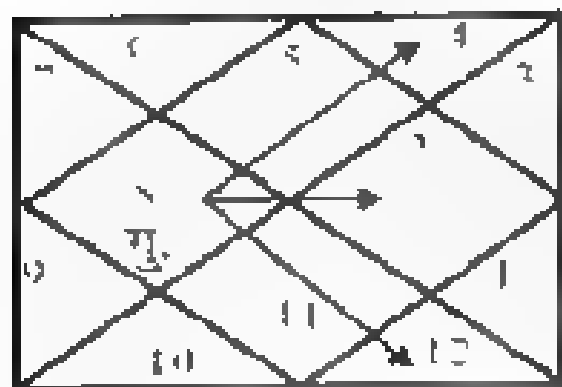
सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां चतुर्थ भावगत गुरु वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। यहां गुरु स्वगृहाभिलाषी होते हुए 'केसरी योग' एवं कुलदीपक योग बनायेगा। फलतः जातक धर्मनिष्ठ होते हुए महत्त्वाकांक्षी होगा। जातक की संतति व पत्नी धार्मिक व स्वामीभक्त होंगे।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत गुरु की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि), दशम भाव (वृष राशि) एवं व्यय भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसा जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम, राज सरकार (राजनीति) में ऊंचे पद को प्राप्त करने वाला, धार्मिक एवं परोपकार के कार्य में रुपया खर्च करने में विश्वास रखता है।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा एवं उत्तम फल प्राप्त करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—लग्नेश सूर्य चतुर्थ स्थान में गुरु के साथ होने से जातक धन-वैभव से परिपूर्ण जीवन जीयेगा।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के चतुर्थ भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। चतुर्थ स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्यय भाव को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक की आयु पूर्ण होगी। जातक को राजनीति में ऊंचा पद मिलेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। खर्चीला स्वभाव जातक की कमजोरी होगी।
3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल गुरु के साथ चतुर्थ स्थान में 'रुचक योग' बनायेगा। जातक का घर का बड़ा मकान, खेती, भूमि, धार्मिक संस्थान होगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश बुध गुरु के साथ होने से चतुर्थ भाव में जातक के एकाधिक वाहन योग बनाता है।

5. **गुरु + शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र गुरु के साथ चतुर्थ स्थान में होने से जातक को राजनैतिक पद प्रतिष्ठा दिलायगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्ठेश, सप्तमेश शनि चतुर्थ भाव गुरु के साथ म होने से वाहन दुर्घटना का योग करायगा पर जातक को कुछ नहीं होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहा सिहलग्न मे अष्टमेश गुरु चतुर्थ स्थान मे राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक मातृसुख से हीन होना है। घर जमीन से रहित होकर जातक मित्रो का द्रोही होता है।
8. **गुरु + केतु**–चतुर्थ भाव मे गुरु के साथ केतु माता को बीमार करायेगा।

सिंहलग्न मे गुरु की स्थिति पंचम स्थान मे
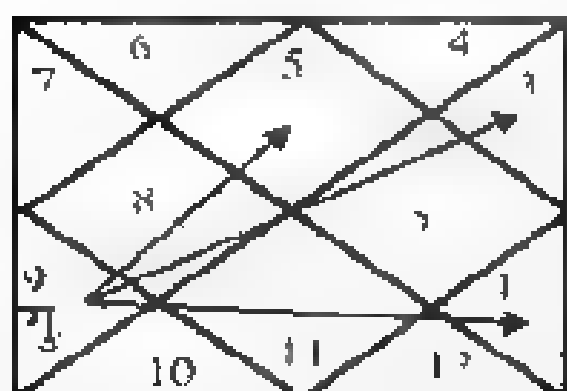
सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एव अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा यहा पंचम स्थान मे गुरु स्वगृही धनु राशि में होगा धनु राशि के दस अंशो तक गुरु मूल त्रिकोणी होकर अत्यन्त शुभ फल देगा ऐसे जातक को विद्या बुद्धि, धन सम्पत्ति का खूब लाभ मिलेगा ऐसा जातक ऋण- रोग व शत्रुओ का नाश करने मे सक्षम होगा।

दृष्टि–पचमस्थ गुरु की दृष्टि भाग्य भाव (मेष राशि) लाभ स्थान (मिथुन राशि) एव लग्न भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक परम भाग्यशाली होगा। व्यापार से धन कमायेगा तथा उसे परिश्रम का पूरा पूरा लाभ मिलेगा।

निशानी–जातक के पाच पुत्र होगे अथवा पुत्र सतति अधिक होगी।

दशा–गुरु की दशा अंतर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा। शत्रुओं का नाश होगा

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–लग्नेश सूर्य पचम में स्वगृही गुरु के साथ होने से जातक को राजगुरु की पदवी दिलायेगा। घर समाज राजनीति म लोग जातक का मार्गदर्शन प्राप्त करेंगे।
2. **गुरु + चद्र**–आपका जन्म सिहलग्न का है। सिहलग्न के पचम भाव म गुरु+चद्र की युति व्ययेश चद्रमा की पचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है पचम स्थान

में गुरु स्वगृही होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह नवम स्थान एकादश भाव एवं लग्न भाव को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा। व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा, जातक को व्यक्तिगत सफलता मिलती रहेगी।

3. **गुरु + मंगल**—सुखेश भाग्येश मंगल पंचम स्थान में गुरु के साथ होने से जातक के पांच पुत्र होंगे पुत्र तेजस्वी होंगे।
4. **गुरु + बुध**—धनेश लाभेश बुध पंचम भाव में गुरु के साथ होने से जातक धनी होगा। उसे पुत्र व पुत्री दोनों का सुख मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र पंचम भाव में गुरु के साथ होने से अनेक संतति देगा जातक के पुत्र व कन्याएं प्रचुर मात्रा में होंगे।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश पंचम भाव में गुरु के साथ होने संतति को लेकर चिंता करायेगा।
7. **गुरु + राहु**—यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु पंचम स्थान में स्वगृही होकर राहु के साथ होने से चाण्डाल योग बना। जातक को प्रथमतः पुत्र न हों पुत्र होंगे तो भी मूर्ख व संस्कारहीन होंगे। विद्या में बाधा निश्चित है जातक का खान-पान दूषित होगा।
8. **गुरु + केतु**—पंचम भाव में गुरु के साथ केतु जातक के गर्भपात करायेगा। जातक की संतति शल्य चिकित्सा द्वारा होगी।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति षष्टम स्थान में

6	5	4	3
7	8	9	1
गु. 10	11	12	2
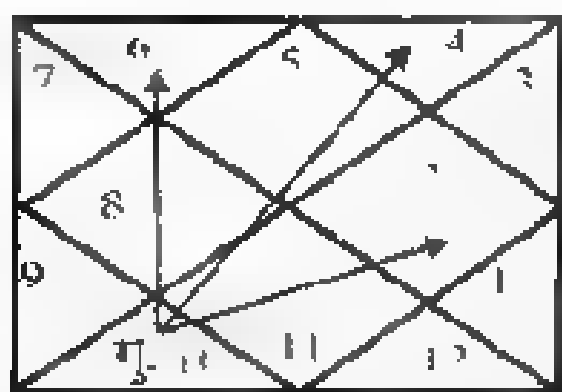
सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां छठे स्थान पर गुरु मकर (नीच) राशि में होगा। मकर राशि के पांच अंशों तक चंद्रमा परम नीच का होगा। गुरु की यह स्थिति 'संतानहीन योग' की सृष्टि करती है परन्तु अष्टमेश गुरु के छठे स्थान में जाने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बनेगा। फलतः जातक बहुत धनी सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को वाहन सुख मिलेगा। भूमि-भवन का लाभ होगा।

दृष्टि—षष्टमस्थ गुरु की दृष्टि दशम भाव (वृष राशि) व्यय भाव (कर्क राशि) एवं पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को गुप्त रोग संभव है खर्च व ऋण की चिन्ता रहेगा। मित्रों से लाभ निश्चित है।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक विपरीत परिस्थितियों में होते हुए भी आगे बढ़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–सूर्य लग्नेश होकर छठे स्थान में गुरु के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक की मनोकामना पूर्ण नहीं होगी
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है सिंहलग्न के छठे भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। छठे स्थान में गुरु नीच का होगा एवं 'संतानहीन योग' की सृष्टि करेगा यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव द्वादश भाव एवं धन भाव को देखेंगे। फलतः राजनीति में धोखा मिलेगा नौकरी व व्यापार से धोखा मिलेगा। धन का अपव्यय होगा। पैसा पास में टिकेगा नहीं
3. **गुरु + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल यहां 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा या राजगुरु तथा महान् पराक्रमी होगा।
4. **गुरु + बुध**–धनेश लाभेश बुध गुरु के साथ होने से धनहीन योग बना। यद्यपि विपरीत राजयोग के कारण जातक वैभवशाली जीवन जीयेगा।
5. **गुरु + शुक्र** तृतीयेश दशमेश शुक्र गुरु के साथ छठे स्थान में जातक का पराक्रम भंग करायेगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्टेश शनि गुरु के साथ 'नीचभंग राजयोग' बना रहा है। ऐसा जातक राजनेताओं का गुरु या महामण्डलेश्वर होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु छठे स्थान में नीच राशि का होकर राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बनायेगा। ऐसे जातक को बाल्यावस्था में जलभय, सर्पदंश का भय रहता है। आयु का 6, 8, 18 व 20 वर्ष घातक है।
8. **गुरु + केतु**–गुरु के साथ केतु गुप्त शत्रुओं का प्रकोप बढ़ायेगा

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण स्थान का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा. सप्तम स्थान में गुरु कुम्भ (शत्रु) राशि में होगा। गुरु के कारण यहां केसरी योग एवं
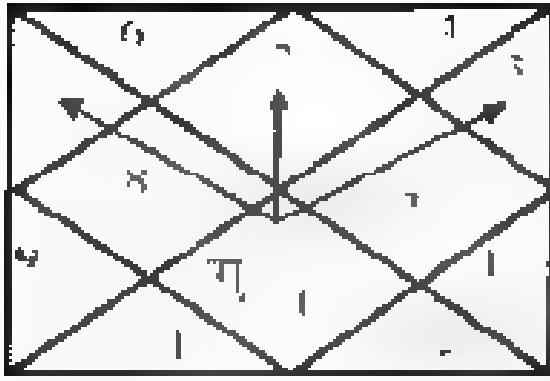
कुलदीपक योग बना। जातक का धन, विद्या, यश पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी होगा। जातक शिक्षित व सभ्य होगा एवं पुरातन मान्यताओं में विश्वास रखेगा।

दृष्टि—सप्तम भावगत गुरु की दृष्टि लाभ स्थान (मिथुन राशि), लग्न स्थान (सिंह राशि) एवं पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। व्यापार-व्यवसाय में भी लाभ होगा। जातक का परिश्रम (जनसम्पर्क) तेज होगा।

दशा—गुरु की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**–लग्नेश सूर्य सप्तम स्थान में होने से जातक को धर्मप्रिय एवं वफादार जीवनसाथी देगा।
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के सप्तम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश अष्टमेश गुरु के साथ युति है। सप्तम भाव में बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः विवाह के तत्काल बाद जातक की उन्नति होगी उसका पराक्रम, जनसम्पर्क बढ़ेगा एवं उसे लाभ होगा
3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल सप्तम भाव में भाग्यशाली पत्नी देगा। जातक को ससुराल से मदद मिलती रहेगी।
4. **गुरु + बुध**—धनेश लाभेश मंगल सप्तम भाव में गुरु के साथ होने से जातक की पत्नी भाग्यशाली होगी एवं उसका बैंक बैलेंस अच्छा होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र सप्तम भाव में सुंदर व सुशील पत्नी देगा। पत्नी का शरीर मांसल व पुष्ट होगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश शनि सप्तम भाव में गुरु के साथ 'शश योग' बनायेगा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **गुरु + राहु**—सिंहलग्न में सातवें स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से क्रूर 'चाण्डाल योग' बनेगा। जातक की मृत्यु परदेश में अथवा धीमी गति के जहर के कारण शान्ति पूर्वक होगा। जातक की पत्नी विधवा होगी
8. **गुरु + केतु**—सप्तम भाव में गुरु के साथ केतु पत्नी से मनमुटाव देगा

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में
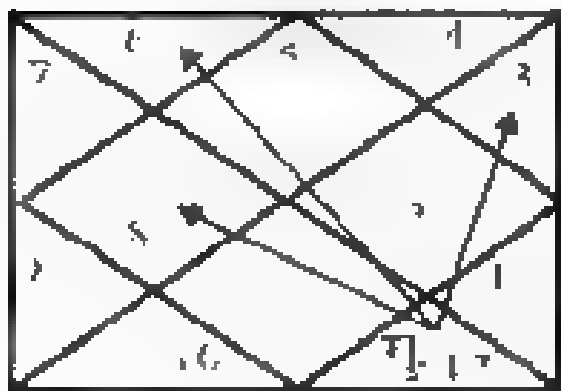
सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। अष्टम स्थान में गुरु स्वगृही मीन राशि में होगा। गुरु की यह स्थिति संतानहीन योग बना रहा है। अष्टमेश अष्टम भाव में स्वगृही होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। ऐसा जातक विद्या, बुद्धि, संतान से युक्त, दीर्घायु एवं यशस्वी होता है। जातक आलोचक, चिंतक, समालोचक एवं व्यंगकार होता है।

दृष्टि—अष्टमस्थ गुरु की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि) धन भाव (कन्या राशि) एवं चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक धनवान होगा। उसके पास सभी सुख सुविधाएं होंगी।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—लग्नेश सूर्य अष्टम भाव में गुरु के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा परन्तु विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के अष्टम भाव में गुरु-चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। अष्टम स्थान में गुरु स्वगृही होगा। दोनों ग्रह यहां बैठने से 'संतानहीन योग' बनेगा। यदि ध्यान नहीं दिया गया तो विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी। खड्डे में गिरे हुए ये दोनों ग्रह खर्च स्थान, धन स्थान एवं चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः धन का अपव्यय होगा। बढ़ते हुए खर्च के प्रति चिंता रहेगी। माता या वाहन को लेकर भी रुपया खर्च होगा।
3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल अष्टम स्थान में गुरु के साथ होने से जातक के भाग्योदय में दिक्कतें पैदा करेगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश बुध अष्टम स्थान में गुरु के साथ 'नीचभंग राजयोग' बनाता है। ऐसा जातक राजा के समान महान् पराक्रमी होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र अष्टम स्थान में गुरु के साथ होने से शारीरिक सौष्ठव प्रदान करेगा।

6. **गुरु + शनि**–अष्टमेश गुरु के साथ षष्ठेश शनि अंग भंग कराता है तथा दुर्घटना योग बनाता है।
7. **गुरु + राहु**–सिंहलग्न के आठवें स्थान में अष्टमेश गुरु होने से सरल नाम विपरीत राजयोग होगा पर यहां राहु होने से चाण्डाल योग बना। जातक धन-वैभव से परिपूर्ण जीवन जीयेगा। परन्तु अचानक दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **गुरु + केतु**–अष्टम स्थान में गुरु के साथ केतु शल्य चिकित्सा करायेगा।

सिंहलग्न मे गुरु की स्थिति नवम स्थान मे
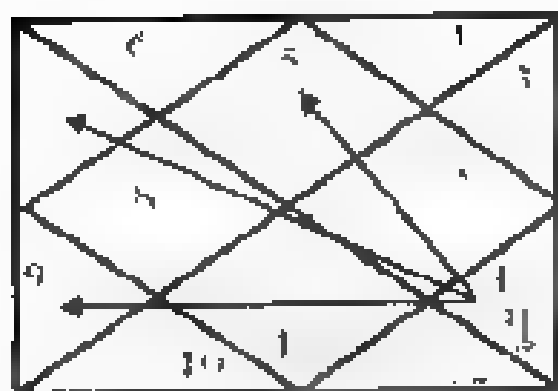
सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभफल ही देगा। नवम स्थान में गुरु मेष (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक पूर्ण धर्मात्मा, ज्ञानवान, उदार हृदय एवं सद्विचारों से ओतप्रोत व्यक्ति होगा। जातक को स्त्री का सुख, पुत्र संतति का सुख, नौकरी-व्यवसाय का सुख पूर्ण होगा।

दृष्टि–यहां नवमस्थ गुरु की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि), तृतीय स्थान (तुला राशि) एवं पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः ऐसे जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा। जातक पराक्रमी, विद्यावान् एवं यशस्वी होगा।

दशा–गुरु की दशा अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय, सर्वांगीण विकास व उन्नति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–लग्नेश सूर्य गुरु के साथ नवम का होने से जातक महान सौभाग्यशाली होगा। रविकृत राजयोग के कारण जातक राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करेगा।
2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के नवम भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। नवम स्थान में बैठकर दोनों शुभ ग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान जो कि गुरु का स्वयं का घर है पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः प्रथम संतति के बाद

आपका विशेष भाग्योदय होगा। आपके मित्र एवं शुभचिंतकों की संख्या में अद्वितीय वृद्धि होगी। राजनीति में आपकी जीत होगी एवं संतान आज्ञाकारी होगी।

3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल स्वगृही भाग्यस्थान में गुरु के साथ होने से जातक परम भाग्यशाली तथा बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश, बुध, गुरु के साथ भाग्य स्थान में होने से जातक को महाधनी बनायेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र भाग्य स्थान में गुरु के साथ जातक को उच्च राजनेता बनायेगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश शनि नीच होकर, भाग्य स्थान में गुरु के साथ होने से भाग्य में उतार-चढ़ाव का झटका देता रहेगा।
7. **गुरु + राहु**—सिंहलग्न में नवम स्थान में अष्टमेश बृहस्पति के साथ राहु होने से चाण्डाल योग बनता है। ऐसा जातक परनिन्दक होता है। जातक धर्म के विपरीत आचरण करता है व नास्तिक होता है। जातक परधन हर्ता एवं दुःशीला स्त्रियों के साथ रहता है।
8. **गुरु + केतु**—गुरु के साथ केतु भाग्य स्थान में होने से जातक को भाग्य में बढ़ावा देगा।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में
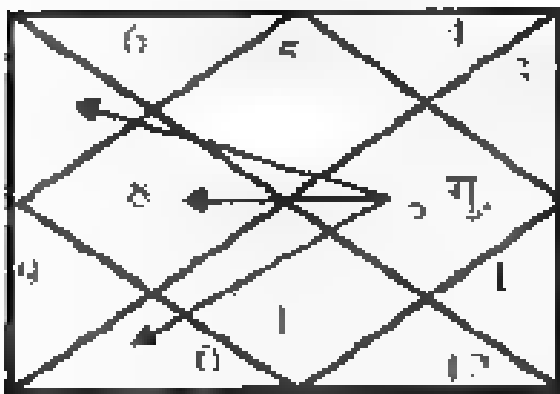
सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां दशम भावगत गुरु वृष (शत्रु) राशि में होगा। गुरु की इस स्थिति में 'कुलदीपक योग' एवं 'केमद्रुम योग' बनेगा। जातक राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करेगा तथा अध्ययन-अध्यापन में ज्यादा कीर्ति प्राप्त करेगा, यदि धनेश बुध की स्थिति सुदृढ़ हो तो जातक उद्योगपति होगा।

दृष्टि—दशम भावगत गुरु की दृष्टि धन स्थान (कन्या राशि), चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) एवं छठे भाव (मकर राशि) पर रहेगी। फलतः ऐसा जातक धनवान होगा। उसे सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

दशा—गुरु की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। जातक की तरक्की होगी एवं उसे राजनीति में सफलता मिलेगी

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—लग्नेश सूर्य दशम स्थान में गुरु के साथ जातक को सरकारी नौकरी एवं सरकारी काम-काज के लिए शुभ है।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न में दशम भाव के गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश गुरु के साथ युति है। दशम भाव में चंद्रमा उच्च का होगा एवं 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। दशम भाव में बैठे दोनों शुभ ग्रह धन स्थान, चतुर्थ भाव एवं षष्ट भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः 24 वर्ष की आयु के बाद धनप्राप्ति होनी शुरू होगी। जातक अपने शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ होगा एवं 38 वर्ष की आयु के बाद दो मंजिला मकान बनायेगा, अच्छा वाहन खरीदेगा।
3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल दशम स्थान में गुरु के साथ होने से जातक को उच्च पद व प्रतिष्ठा दिलायेगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश बुध दशम भाव में गुरु के साथ होने से व्यापार में भारी धन दिलायेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र दशम भाव में गुरु के साथ 'मालव्य योग' बनायेगा, ऐसा जातक राजा से कम नहीं होगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश शनि दशम भाव में गुरु के साथ होने से ससुराल से, पत्नी व पुत्र से धन दिलायेगा।
7. **गुरु + राहु**—सिंहलग्न के दशम स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से चाण्डाल योग बनता है। ऐसा जातक पिता के सुख से हीन, चुगलखोर एवं कर्महीन होता है
8. **गुरु + केतु**—दशम स्थान में गुरु के साथ केतु जातक को राजदरबार में प्रतिष्ठा दिलायेगा

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में

सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां एकादश
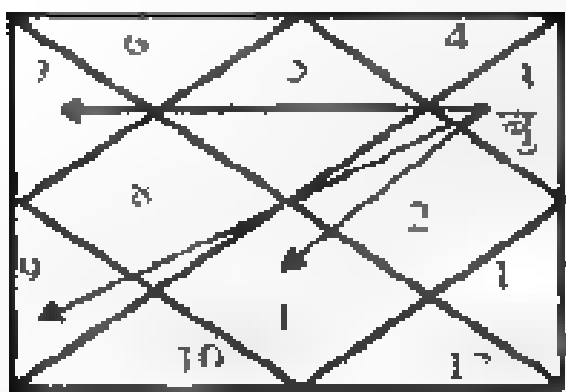
स्थान में गुरु मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक उच्च विद्या प्राप्ति, अति बुद्धिशाली व्यक्ति होगा। व्यापार के लाभांश में रुकावट आयेगी। जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी।

दृष्टि—एकादश भाव में स्थित गुरु की दृष्टि पराक्रम भाव (तुला राशि), पंचम भाव (धनु राशि) एवं सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक अपने सहोदर एवं संतान से सुखी होता है। जातक की पत्नी आज्ञाकारी होती है। जातक का गृहस्थ जीवन सुखमय होता है।

निशानी—जातक के बड़ा भाई नहीं होगा।

दशा—गुरु की दशा अंतर्दशा में धन लाभ होगा। व्यापार बढ़ेगा। नौकरी में उन्नति होगी

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—लग्नेश सूर्य लाभ स्थान में गुरु के साथ होने से जातक को व्यापार में घाटा होने का संकेत देता है।
2. **गुरु + चंद्र**—आपका जन्म सिंहलग्न का है। सिंहलग्न के एकादश भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। एकादश भाव में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे। फलतः आपका पराक्रम बढ़ा-चढ़ा रहेगा। आपकी विद्या पूर्ण होगी। आपको शैक्षणिक डिग्री मिलेगी पर नम्बरों में कुछ न्यूनता अनुभव करेंगे। ससुराल अच्छा मिलेगा। पत्नी सुन्दर मिलेगी, प्रथम संतति के बाद जातक के भाग्योदय की गति में तेजी आयेगी।
3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल के लाभ स्थान में गुरु के साथ होने से जातक उद्योगपति होगा
4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश बुध लाभ स्थान स्वगृही होकर, गुरु के साथ बैठने से जातक पराक्रमी होगा। उसे स्त्री संतान का पूर्ण सुख मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, सुखेश शुक्र लाभ स्थान में गुरु के साथ होने से जातक का राजनीति में उच्च लोगों से सम्पर्क होगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश शनि एकादश स्थान में होने से लाभ में बाधा पहुंचेगी। जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होगा।

7. **गुरु + राहु**–सिंहलग्न के एकादश स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बनता है। ऐसा जातक बचपन में दुःखी, धनहीन एवं कपट आचरण करने में माहिर होता है। जातक जैसा दिखता है, वैसा होता नहीं।

8. **गुरु + केतु**–गुरु के साथ केतु एकादश स्थान में होने पर जातक को व्यापार में नुकसान पहुंच सकता है।

सिंहलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में
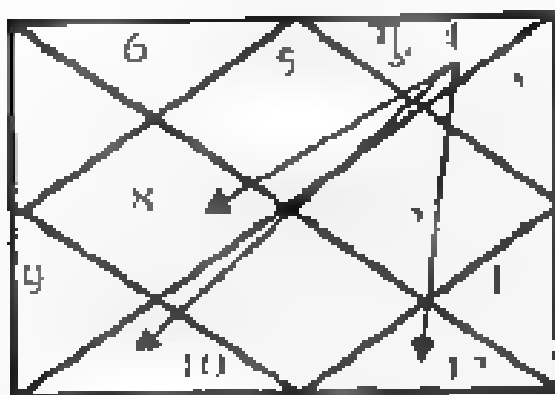
सिंहलग्न में गुरु पंचमेश एवं अष्टमेश होगा। गुरु यहां त्रिकोण का अधिपति होने से तथा लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक मित्र होने से शुभ फल ही देगा। यहां द्वादश स्थान में कर्क राशि में उच्च का होगा। कर्क राशि में पांच अंशों तक गुरु परमोच्च का होगा। गुरु की यह स्थिति 'संतानहीन योग' बनाती है। अष्टमेश के द्वादश स्थान में उच्च का होने से सरल नाम विपरीत राजयोग बना जातक धनी होगा। ऋण रोग व शत्रु समूह का मान मर्दन करने में पूर्णतः समर्थ होगा। जातक की निजी कार गाड़ी, बंगला इत्यादि होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत गुरु की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि), छठे भाव (मकर राशि) तथा अष्टम भाव (मीन राशि) पर होगी, फलतः जातक भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, रोग व शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाला, लम्बी आयु का भोगने वाला जातक होगा।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक अचानक उन्नति को प्राप्त करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–लग्नेश का व्ययभाव में जाना नेत्र पीड़ा देगा। गुरु यहां दीर्घायु को कम करेगा।

2. **गुरु + चंद्र**–आपका जन्म सिंहलग्न का है, सिंहलग्न के द्वादश भाव में गुरु+चंद्र की युति व्ययेश चंद्रमा की पंचमेश, अष्टमेश, गुरु के साथ युति है। द्वादश स्थान में चंद्रमा स्वगृही होगा एवं गुरु उच्च का होकर 'किम्बहुना योग' बनायेगा, साथ ही गुरु बारहवें होने से 'संतानहीन योग' की सृष्टि भी होगी। शुभ, अशुभ मिश्रित फलों से युक्त होकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव पर पूर्ण दृष्टि डालेंगे, फलतः आपको जीवन में बहुत ही उत्तम

श्रेणी का मकान सुख एवं वाहन सुख मिलेगा। आपकी आयु दीर्घ होगी रोग व शत्रु दोनों का नाश करने में आप सक्षम होंगे।

3. **गुरु + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल व्यय भाव में गुरु के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा से कम नहीं होगा।
4. **गुरु + बुध**—धनेश, लाभेश बुध व्यय भाव में गुरु के साथ होने से व्यापार में हानि का संकेत देता है।
5. **गुरु + शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र व्यय भाव में गुरु के साथ होने से पराक्रम भंग करेगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि व्यय भाव में गुरु के साथ गृहस्थ सुख में न्यूनता एवं मानभंग का संकेत देता है।
7. **गुरु + राहु**—सिंहलग्न के द्वादश स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक गलत कार्य में रुपया खर्च करता है। जातक अल्पायु होता है तथा पापकर्मों में निमग्न रहता है।
8. **गुरु + केतु**—गुरु के साथ केतु व्यय भाव में होने से यात्रा से धनहानि होगी। आपरेशन से नुकसान होगा।

❑❑❑

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में

सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। लग्नस्थ शुक्र यहां सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक दिखने में सुंदर, आकर्षक होगा। जातक अपने कार्य से परिवार-कुटुम्ब का नाम रोशन करने वाला होगा। ऐसा जातक नित नूतन वेश पहनने वाला, आभूषणों का शौकीन होगा। यहां 'पद्मसिंहासन योग' भी बन रहा है।

दृष्टि–शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी, फलतः जातक का जीवन साथी सुंदर होगा।

निशानी–ऐसे जातक को जन्मगत नेत्र विकार या नेत्र दोष संभव है। शुक्र यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो व्यक्ति जन्म से अंधा होता है अथवा शुक्र की दशा में अंधा हो जाता है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में शारीरिक व स्वास्थ्य संबंधी प्रतिकूलता होगी। व्यवसाय या नौकरी में दिक्कतें पैदा होंगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य शुक्र के साथ होने से जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा पर उसका चरित्र दोहरा होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–ऐसा जातक विदेश जाने में रुचि रखेगा तथा जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर कमायेगा।

3. **शुक्र + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल लग्न में शुक्र के साथ होने से जातक को सौभाग्यशाली एवं बड़ी जमीन का स्वामी बनायेगा।

4. **शुक्र + बुध**—धनेश, लाभेश बुध लग्न में शुक्र के साथ होने से जातक धनी होगा।

5. **शुक्र + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु लग्न स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

6. **शुक्र + शनि**—षष्टेश व सप्तमेश शनि लग्न में होने से जातक का एक समय में दो स्त्रियों से सम्पर्क होगा।

7. **शुक्र + राहु**—ऐसा जातक विदेश में घर बसायेगा। जातक अपने जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर धन कमायेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में
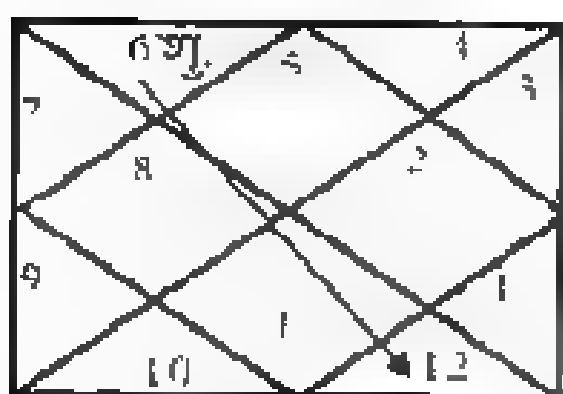
सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां द्वितीय स्थान में शुक्र कन्या (नीच) राशि में होगा। कन्या राशि के 27 अंशों में शुक्र परम नीच का होगा। ऐसा जातक कामातुर, पर स्त्रीरत, सौंदर्य प्रेमी, कला-संगीत का प्रेमी होता है। ऐसा जातक क्लबों, गोष्ठियों व पार्टियों का शौकीन होता है।

दृष्टि—द्वितीय भावगत शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग होंगे।

निशानी—ऐसे जातक के गुप्त शत्रु जरूर होंगे।

दशा—शुक्र की दशा, अंतर्दशा में जातक धन कमायेगा। उसकी नौकरी लगेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश सूर्य द्वितीय स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।

2. **शुक्र + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर द्वितीय स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक व्यभिचार में रुपया खर्च करेगा।

3. **शुक्र + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल द्वितीय स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक भाग्य से खूब धन कमायेगा।

4. **शुक्र + बुध**—धनेश लाभेश बुध धन स्थान में शुक्र के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' करायेगा। जातक राजा के समान धनी एवं वैभवशाली होगा।

5. **शुक्र + गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु धन स्थान में शुक्र के साथ हो तो धन हानि करायेगा।

6. **शुक्र + शनि**—षष्टेश व सप्तमेश शनि धन स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक का जीवनसाथी खुद कमाने वाला होगा।

7. **शुक्र + राहु**—राहु यदि शुक्र के साथ हो तो जातक को धन की कमी रहेगी। धन हानि होगी।

8. **शुक्र + केतु**—केतु यदि शुक्र के साथ हो तो जातक निम्न कार्यों में धन खर्च करेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में
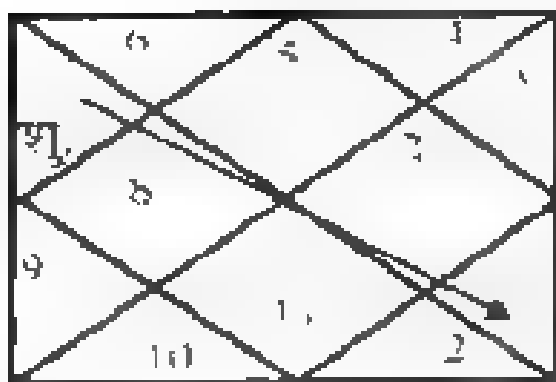
सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां तृतीय स्थान में शुक्र तुला राशि में स्वगृही होगा। तुला राशि के 15 अंशों तक शुक्र मूलत्रिकोणी होकर अत्यंत शुभ फल देगा। ऐसे जातक को भाई-बहन का सुख, स्त्री-संतान का सुख, नौकरी व्यापार का सुख मिलेगा। जातक का जनसम्पर्क (मित्र सम्पर्क) तेज रहेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि भाग्य भवन (मेष राशि) पर होगी फलतः जातक भाग्यशाली होगा मित्रों की मदद से जातक को भाग्योदय में मदद मिलेगी।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा नौकरी लगेगी एवं पराक्रम बढ़ेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश सूर्य यहां होने पर 'नीचभंग योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

2. **शुक्र + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को परिवार तथा बहनों का सुख भी प्राप्त होगा।

4. **शुक्र + बुध**–धनेश, लाभेश बुध यदि पंचम स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक की संतान धनी व भाग्यशाली होगी।
5. **शुक्र + गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु यदि शुक्र के साथ पंचम स्थान में हो तो पांच पुत्र व दो कन्या होती है।
6. **शुक्र + शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि पंचम स्थान में हो तो जातक की संतान की अकाल मृत्यु संभव है।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से संतान बाधा का योग बनता है।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से संतान शल्य क्रिया से होगी

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में
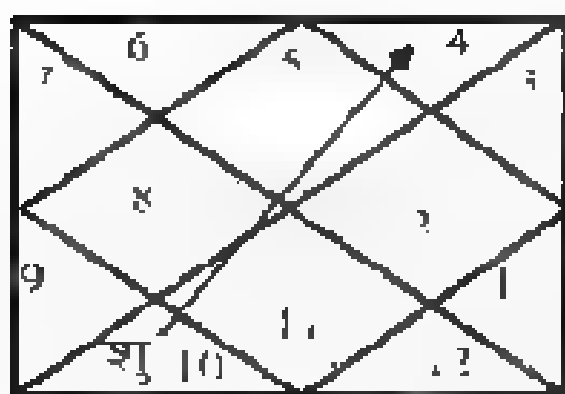
सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है, उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां छठे स्थान में शुक्र मकर (मित्र) राशि में होगा। शुक्र की यह स्थिति 'पराक्रमभंग योग' तथा 'राजभंग योग' की सृष्टि करती है। ऐसा जातक रोग, शत्रु और निर्धनता से परेशान रहता है। जातक के मित्र प्रायः दगा देते हैं। जातक नौकरी-व्यापार व रोजगार को लेकर परेशानी उठाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी नहीं होगा।

दृष्टि–छठे भावगत शुक्र की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसे जातक की शिक्षा अधूरी रहेगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य के छठे स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक की मानहानि होगी।
2. **शुक्र + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा छठे जाने से विपरीत राजयोग बना। जातक धनी होगा पर उसका मान भंग होगा।
3. **शुक्र + मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल छठे स्थान में शुक्र के साथ उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनायेगा। जातक धनी होगा पर वाहन दुर्घटना संभव है

4. **शुक्र + बुध**—धनेश, लाभेश, बुध छठे स्थान में शुक्र के साथ हो तो धनहीन योग बनेगा। जातक आर्थिक विषमता में रहेगा।

5. **शुक्र + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु छठे स्थान शुक्र के साथ होने से विपरीत राजयोग बनेगा जातक धनी एवं वैभवशाली व्यक्ति होगा।

6. **शुक्र + शनि**—षष्ठेश सप्तमेश शनि छठे स्थान में स्वगृही होकर शुक्र के साथ होने से विपरीत राजयोग बनेगा जातक के दो विवाह हो सकते है।

7. **शुक्र + राहु**—यहां शुक्र के साथ राहु गुप्त रोग देगा।

8. **शुक्र + केतु**—यहां शुक्र के साथ केतु शल्य चिकित्सा कराता है।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान मे
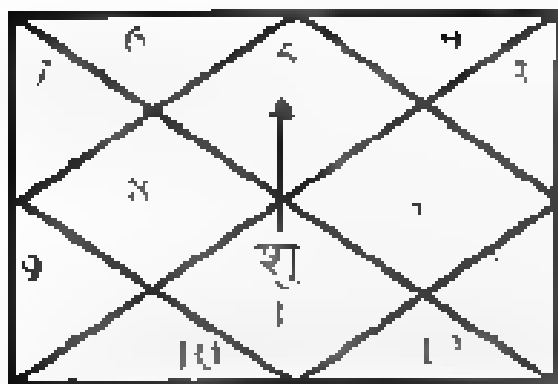
सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां सप्तम भाव में शुक्र कुम्भ (मित्र) राशि में होगा। शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' एवं 'पद्मसिंहासन योग' बना। ऐसा जातक प्रायः प्रेम विवाह करता है। जातक का जीवनसाथी सुंदर पुष्ट शरीर वाला, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। जातक विद्यावान बुद्धिवान होता है। जातक को पत्नी संतान, वाहन, पद प्रतिष्ठा का पूरा सुख मिलता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि) पर होगी एसे जातक को अपने द्वारा किये गये परिश्रम पुरुषार्थ का पूरा-पूरा लाभ मिलता है

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक की नौकरी लगेगी व पराक्रम बढ़ेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश सूर्य सातवें स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को सुंदर पत्नी देगा। जातक का ससुराल पक्ष धनी होगा।

2. **शुक्र + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा सप्तम स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक की पत्नी अति सुंदर होगी।

3. **शुक्र + मंगल**—सुखेश भाग्येश मंगल सप्तम भाव में शुक्र के साथ होने से जातक की पत्नी भाग्यशाली होगी।

4. **शुक्र + बुध**—धनेश, लाभेश बुध सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी धनी होगी।

5. **शुक्र + गुरु**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ पंचमेश गुरु होने से गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा।
6. **शुक्र + शनि**—षष्ठेश, सप्तमेश शनि शुक्र के साथ सप्तम भाव में होने पर 'शश योग' बनेगा।
7. **शुक्र + राहु**—सप्तम स्थान में राहु के साथ शुक्र पत्नी से वैमनस्य करायेगा।
8. **शुक्र + केतु**—सप्तम स्थान में केतु के साथ शुक्र सेक्स संबंधी बीमारी करा सकता है।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में
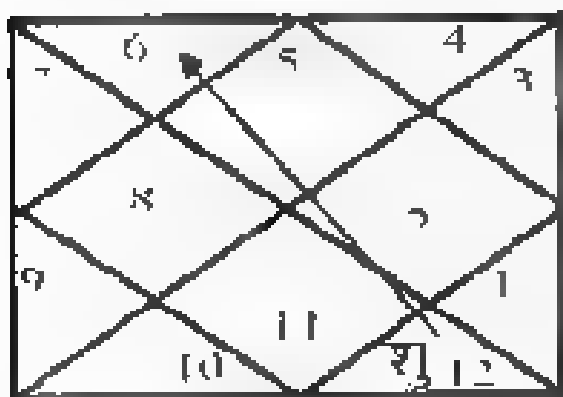
सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां अष्टम भावगत शुक्र मीन उच्च राशि में होगा। मीन राशि के 27 अंशों तक शुक्र परमोच्च का होगा। शुक्र की यह स्थिति 'पराक्रमभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि कर रही है। जातक पारिजात के अनुसार दशम भाव का स्वामी अष्टम स्थान में उच्च का हो तो राजयोग बनता है। फलत: जातक धनवान, स्त्री-संतान, विद्या, बुद्धि सुख से युक्त होकर समाज का अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्ति होगा।

दृष्टि—जातक को सेक्सुअल बीमारी रहेगी। वैवाहिक जीवन में कष्ट की संभावना है।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे पर जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश सूर्य अष्टम स्थान में शुक्र के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**—व्ययेश अष्टम स्थान में शुक्र के साथ होने से विपरीत राजयोग बनता है। जातक धनी होगा।
3. **शुक्र + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल अष्टम स्थान में शुक्र के साथ द्विविवाह योग करता है।
4. **शुक्र + बुध**—धनेश, लाभेश बुध अष्टम स्थान में शुक्र के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' कराता है। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

5. **शुक्र + गुरु**–पंचमेश गुरु शुक्र के साथ अष्टम में होने से 'किम्बहुना योग' बना, अतः जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

6. **शुक्र + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि अष्टम में शुक्र के साथ होने से 'द्विभार्या योग' बनायेगा।

7. **शुक्र + राहु**–अष्टम स्थान में शुक्र के साथ राहु वाहन से दुर्घटना कराता है।

8. **शुक्र + केतु**–अष्टम स्थान में शुक्र के साथ केतु गुप्त बीमारी कराता है

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में
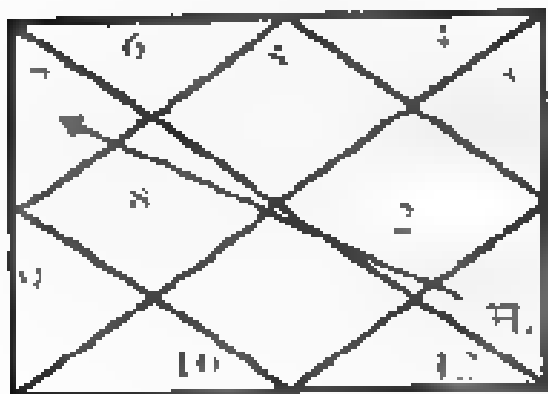
सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां नवम स्थान में शुक्र मेष (शत्रु) राशि में होगा। जातक फिर भी भाग्यशाली होगा। जातक धनी होगा उसे माता-पिता, भाई-बहन, स्त्री-संतान सभी का सुख मिलेगा। जातक को उत्तम वाहन का सुख प्राप्त होगा।

दृष्टि–नवम भावगत शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक को सहोदर भाई-बहनों का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक को विदेश यात्रा से लाभ मिलेगा अथवा विदेशी कारोबार में लाभ होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य नवम भाव में शुक्र के साथ यदि हो तो जातक परम भाग्यशाली तथा सुन्दर होगा।

2. **शुक्र + चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा शुक्र के साथ यदि नवम भाव में हो तो जातक का भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।

3. **शुक्र + मंगल**–सुखेश भाग्येश मंगल शुक्र के साथ नवम भाव में हो तो 28 वर्ष की आयु में जातक की किस्मत चमकेगी।

4. **शुक्र + बुध**–धनेश लाभेश बुध भाग्य स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक धनी एवं व्यापारी होगा।

5. **शुक्र + गुरु**—पंचमेश अष्टमेश भाग्य स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक का भाग्योदय धीमी गति से 32 वर्ष की आयु में होगा।

6. **शुक्र + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि भाग्य स्थान में यदि शुक्र के साथ हो तो भाग्योदय में दिक्कतें आयेंगी।

7. **शुक्र + राहु**—भाग्य स्थान में राहु यदि शुक्र के साथ हो तो भाग्य में भटकाव आयेगा। स्त्री की मदद से जातक आगे बढ़ेगा।

8. **शुक्र + केतु**—भाग्य स्थान में केतु यदि शुक्र के साथ हो तो जातक का भाग्योदय तीव्रता से होगा। जातक 26 से 32 वर्ष की आयु में चार साल लगातार आगे बढ़ेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में
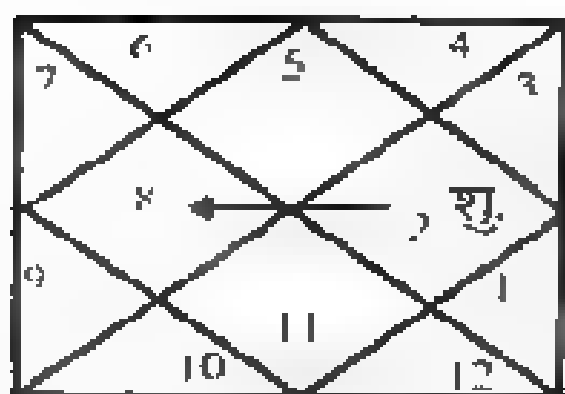
सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा। यहां दशम स्थान में शुक्र वृष राशि में स्वगृही होगा। वृष राशि के 16 से 30 अंशों तक शुक्र ज्यादा शुभ फल देगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण यहां क्रमशः कुलदीपक योग, पद्मसिंहासन योग एवं मालव्य योग की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक राजा या किसी भी सूरत में राजा से कम नहीं होता है। जातक के पास उत्तम वाहन, उत्तम भवन, नौकर चाकर एवं सभी प्रकार के ऐशो-आराम की सामग्री उपलब्ध रहेगी।

दृष्टि—दशम स्थान में स्थित शुक्र की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी—जातक काव्य सौंदर्य का प्रेमी एवं रसिक मिजाज होगा।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक का वैभव बढ़ेगा व उन्नति होगी। धन की प्राप्ति होगी एवं पराक्रम बढ़ेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश सूर्य शुक्र के साथ दशम स्थान में हो तो जातक राजा से कम नहीं होगा। जातक का राजनीति में वर्चस्व रहेगा।

2. **शुक्र + चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा दशम स्थान में शुक्र के साथ होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा ही होगा। स्त्रियां उसकी मददगार होंगी।

3. **शुक्र + मंगल**–सुखेश भाग्येश मंगल यदि शुक्र के साथ दशम स्थान में हो तो जातक बड़ी जमीन जायदाद का स्वामी होगा।
4. **शुक्र + बुध**–धनेश लाभेश बुध यदि शुक्र के साथ दशम स्थान में हो तो जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
5. **शुक्र + गुरु**–पंचमेश अष्टमेश गुरु दशम स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक के अनेक मकान होंगे।
6. **शुक्र + शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शुक्र के साथ केन्द्र स्थान में हो तो जातक की पत्नी रंगीन मिजाज की होगी
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु दशम स्थान में जातक को प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी बनायेगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु दशम स्थान में जातक को यशस्वी व्यक्तित्व का धनी बनायेगा

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में
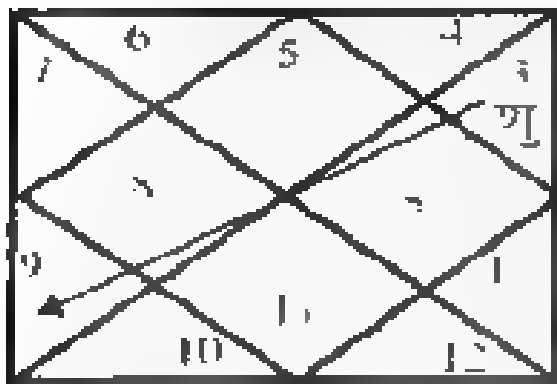
सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल ही देगा, यहां एकादश स्थान में शुक्र मिथुन (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा। जातक धनी व उद्योगपति होगा। जातक महान पराक्रमी होगा। जातक को मिलने जुलने वाले व मित्रों से बराबर लाभ होता रहेगा।

दृष्टि–लाभ भावगत शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक को विद्या, बुद्धि, संतान, धन-संपत्ति की प्राप्ति होगी।

निशानी–जातक को स्त्री मित्रों से लाभ होगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। व्यापार व्यवसाय में जातक को धन की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–लग्नेश सूर्य लाभ स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक कुशल व्यापारी होता है
2. **शुक्र + चंद्र**–व्ययेश लाभ स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक व्यापार के फैलाव में खूब रुपया खर्च करता है

3. **शुक्र + मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल यदि लाभ स्थान में हो तो जातक महासम्पत्ति होगा।

4. **शुक्र + बुध**—धनेश बुध लाभ स्थान में स्वगृही होकर शुक्र के साथ हो तो जातक महाधनी एवं बड़ा व्यापारी होगा

5. **शुक्र + गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु लाभ स्थान में शुक्र के साथ होने से लाभ की प्राप्ति टुकड़ों में करायेगा।

6. **शुक्र + शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि लाभ स्थान में शुक्र के साथ हो तो जातक पत्नी के नाम से धन कमायेगा।

7. **शुक्र + राहु**—लाभ स्थान में राहु शुक्र के साथ होने से लाभ में कमी करायेगा

8. **शुक्र + केतु**—लाभ स्थान में केतु शुक्र के साथ मध्यम लाभ दिलायेगा।

सिंहलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में
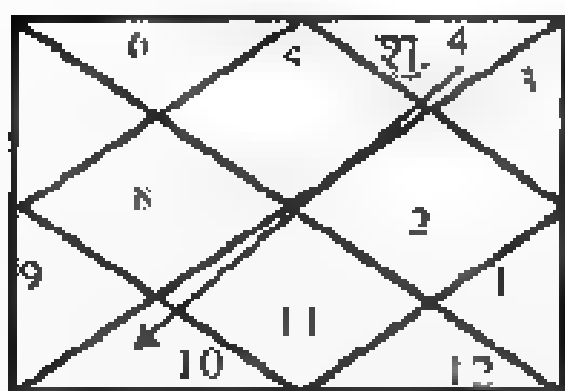
सिंहलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं राज्येश है। उपचय स्थान का स्वामी होने से शुक्र अशुभ फल देगा। द्वादश स्थान में शुक्र कर्क (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र की यह स्थिति कुण्डली में 'पराक्रमभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि करती है। जातक एक जगह पर स्थिर होकर नहीं बैठ (कमा) पायेगा। विदेशी व्यापार या विदेशी यात्रा से जातक को लाभ होगा। ऐसा जातक प्रेम प्रसंग में बदनाम होगा एवं उसकी प्रतिष्ठा भंग होगी

दृष्टि—द्वादश भावगत शुक्र की दृष्टि छठे भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु रहेंगे। गुप्त बीमारी रहेगी।

निशानी—जातक की बाईं आंख कमजोर होगी। जातक रोमांटिक व रसिक मिजाज का व्यक्ति होगा।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—लग्नेश व्यय भाव में शुक्र के साथ होने से नेत्रपीड़ा देगा।

2. **शुक्र + चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा व्यय भाव में होने से नेत्र पीड़ा देगा

3. **शुक्र + मंगल**—शुक्र के साथ मंगल व्यय भाव में होने से जातक का वाहन चोरी चला जायेगा।

4. **शुक्र + बुध**—बुध के साथ शुक्र व्यय भाव में होने से, जातक का धन चोरी चला जायेगा।
5. **शुक्र + गुरु**—अष्टमेश गुरु शुक्र के साथ व्यय भाव में हो तो जातक के साथ दुर्घटना करायेगा।
6. **शुक्र + शनि**—षष्ठेश सप्तमेश शनि व्यय भाव में शुक्र के साथ होने से जातक की पत्नी घर से भाग जायगी।
7. **शुक्र + राहु**—शुक्र के साथ राहु होने से धार्मिक कार्यों में जातक की रुचि होगी।
8. **शुक्र + केतु**—शुक्र के साथ केतु व्यय भाव में हो तो जातक खूब यात्राएं करेगा।

❑❑❑

सिंहलग्न में शनि की स्थिति

सिंहलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
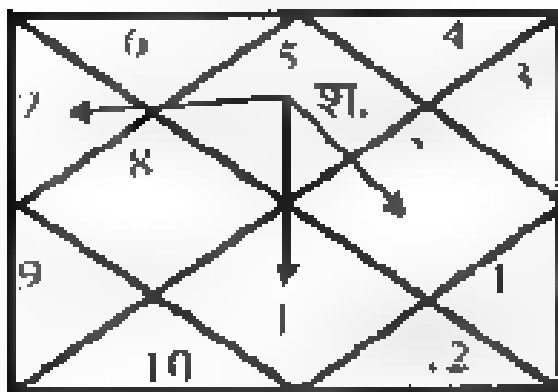
सिहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। लग्नस्थ शनि यहा सिंह (शत्रु) राशि मे होगा। शनि की यह स्थिति प्रत्येक कार्य में असफलता या विलम्ब की सूचक है। लग्न में शनि व्यक्ति को ईर्ष्यालु व षड्यंत्रकारी बनाता है

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (तुला राशि), सप्तम भाव (कुंभ राशि) एव दशम भाव (वृष राशि) पर होगी जिससे सहोदर सुखों में हानि, विलम्ब विवाह एव नौकरी व्यवसाय में विलम्ब किंवा परेशानिया उत्पन्न होती हैं।

निशानी–जातक को निश्चित रूप से नेत्र पीडा होगी। जातक की आखें टेढ़ी मेढ़ी होती हैं या आंखों में दोष पाया जाता है। यदि शनि या सूर्य पर शुभ ग्रहा की दृष्टि न हो तो जातक धीरे धीरे अंधा हो जाता है। जातक को रीढ़ की हड्डी, स्नायु व उदर संबधी विकार भी हो सकते हैं।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1 **शनि+सूर्य**–सिंहलग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: लग्नेश सूर्य की षष्ठेश सप्तमेश शनि के साथ युति होगी। सूर्य यहा स्वगृही है। शनि मारकेश है। ऐसा जातक राजकीय ऐश्वर्य से युक्त होते हुए षड्यंत्र का शिकार होगा।

2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा के शनि के साथ होने से प्रत्येक कार्य में विलम्ब होगा।
3. **शनि+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल शनि के साथ हो तो जातक, साहसी लड़ाकू व ईर्ष्यालु होगा।
4. **शनि+बुध**—धनेश, लाभेश बुध शनि के साथ लग्न में हो तो जातक धनवान होगा एवं विवाह के बाद धन कमायेगा।
5. **शनि+गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु शनि के साथ लग्न में हो तो जातक का दुर्घटना में अंग-भंग होगा।
6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र शनि के साथ हो तो जातक कामी एवं लम्पट होगा।
7. **शनि+राहु**—लग्न में शनि के साथ राहु हो तो जातक षड्यंत्रकारी एवं विस्फोटक स्वभाव का होगा।
8. **शनि+केतु**—लग्न में शनि के साथ केतु जातक को लड़ाकू बनायेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में
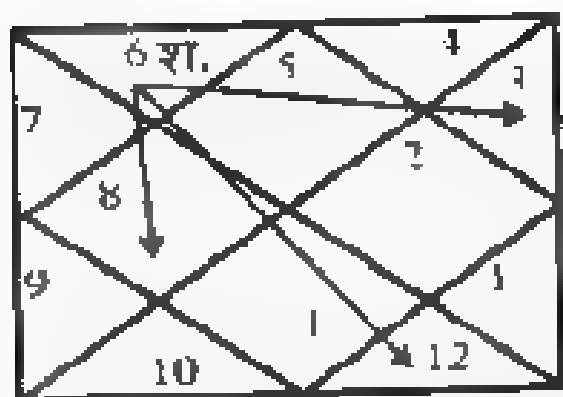
सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां द्वितीय स्थान में शनि कन्या (मित्र) राशि में होगा। जातक के धन प्राप्ति के माध्यम दूषित होंगे। जातक की वाणी भी व्यंगात्मक (कड़वी) होगी। जीवन साथी से असंतोष, अनबन रहेगी। शनि की यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए शुभ नहीं है। जरा सी असावधानी जातक को लम्बी बीमारी की ओर धकेल देगी।

दृष्टि—द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं एकादश भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक की माता को कष्ट, बड़े भाई को कष्ट होगा एवं प्रकट व गुप्त शत्रुओं से जातक को पीड़ा पहुंचेगी।

दशा—शनि की दशा, अंतर्दशा में अशुभ फल मिलेंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—लग्नेश सूर्य की मारकेश शनि के साथ धन स्थान (कन्या राशि) में यह युति धन के लिए प्रारंभिक संघर्ष की द्योतक है, जातक पिता की मृत्यु के बाद ही धनवान होगा।

2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा धन स्थान में शनि के साथ होने से धन हानि करायेगा।

3. **शनि+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल धन स्थान में शनि के साथ होने पर सम्पत्ति में विवाद करायेगा।

4. **शनि+बुध**—बुध द्वितीय स्थान में उच्च का होकर शनि के साथ हो तो जातक धनवान होगा। पर जातक की वाणी में दोष रहेगा।

5. **शनि+गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु द्वितीय स्थान में शनि के साथ होने से वाणी में हकलाहट लायेगा। जातक का धन संग्रह में रुकावट आयेगी।

6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र यदि शनि के साथ द्वितीय स्थान में हो तो जातक का धन रोग-बीमारी व शत्रु नाश पर खर्च होगा

7. **शनि+राहु**—धन स्थान में शनि के साथ राहु होने से धन के घड़े में छेद जैसा है जातक को धन संग्रह में बाधा रहेगी

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु धन स्थान में धनार्जन हेतु संघर्ष करायेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में
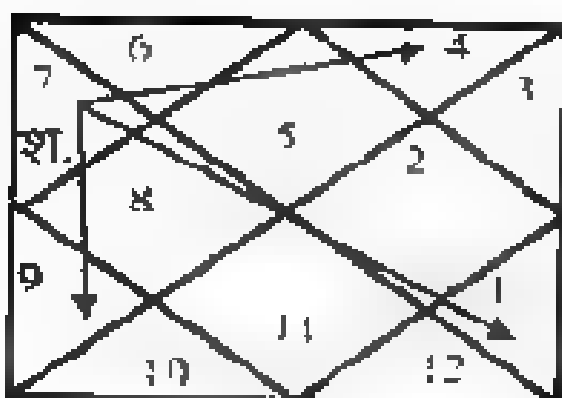
सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय स्थान का स्वामी होने लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां तृतीय भावगत शनि तुला राशि में उच्च का होगा। तुला राशि में 20 अंशों तक शनि परमोच्च का होकर अत्यन्त शुभ फल देगा ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी महान साहसी, धनी, हठी व उदण्ड होता है। यहां अकेला शनि सहोदर भ्राता व पिता से धन लाभ सम्पत्ति दिलवाता है परन्तु पाप ग्रहों की यदि युति हो तो परिणाम बदल जायेंगे। जातक कुख्यात होगा व अपने नाम से सर्वत्र पहचाना जायेगा

दृष्टि—तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (धनु राशि), भाग्य भवन (मेष राशि) एवं द्वादश भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को उत्तम पुत्र संतति की प्राप्ति होगी जातक भाग्यशाली होगा तथा खूब धन खर्च करेगा।

निशानी—यहां शनि छोटे भाई का नाश करता है।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में थोड़ा अनिष्ट मिश्रित शुभ परिणाम मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–तृतीय स्थान में उच्च के शनि के साथ लग्नेश की युति जातक का पराक्रम भंग करायेगी। यहां 'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा परन्तु कुख्यात होगा। जातक अपने बुरे कामों द्वारा पहचाना जायेगा।
2. **शनि+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा तृतीय स्थान में शनि के साथ हो तो जातक का पराक्रम भंग होगा।
3. **शनि+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल, तृतीय स्थान में शनि के साथ हो तो जातक मित्रों से झगड़ा करता रहेगा।
4. **शनि+बुध**–धनेश, लाभेश बुध तृतीय स्थान में शनि के साथ हो तो जातक धनी व पराक्रमी होगा।
5. **शनि+गुरु**–पंचमेश अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में शनि के साथ होने से जातक के भाईयों की उम्र लम्बी नहीं होगी।
6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश शुक्र यदि शनि के साथ होगा तो 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक धनी एवं प्रबल पराक्रमी होगा।
7. **शनि+राहु**–यहां राहु यदि शनि के साथ हो तो जातक का भाईयों से विवाद रहेगा।
8. **शनि+केतु**–यहां केतु यदि शनि के साथ हो तो मित्रों से मनमुटाव होगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में
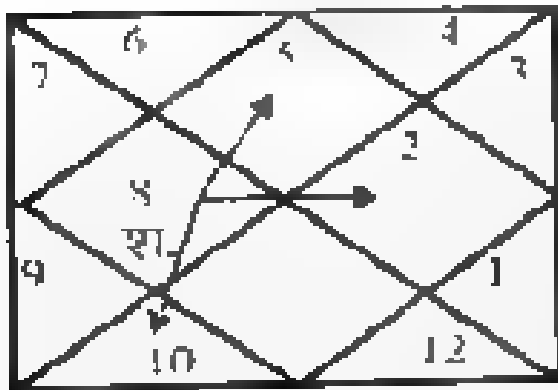
7	6	५	४ ३
	८ श.	२	
९		1	
	10	12	

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा यहां चतुर्थ स्थान में शनि वृश्चिक (शत्रु) राशि में होगा। जातक को धन, यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक नौकरी व्यवसाय रोजी-रोजगार के मामले में सुखी होगा। ऐसे जातक को ठेकेदारी से लाभ होता है। जमीन-जायदाद का भी लाभ होगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि छठे स्थान (मकर राशि) दशम स्थान (वृष राशि) एवं लग्न स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक के जीवन में शत्रु जरुर होंगे। जातक को राजनीति में लाभ मिलेगा। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—चतुर्थ स्थान में लग्नेश व मारकेश शनि की युति जातक की माता को लाईलाज बीमारी से ग्रसित करेगी। माता की मृत्यु के बाद जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक स्वपराक्रम से आगे बढ़ेगा।
2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा चौथे स्थान में शनि के साथ नीच का होने से जातक की माता बीमार रहेगी। विष भोजन का भय रहेगा।
3. **शनि+मंगल**—मंगल की युति शनि के साथ चतुर्थ स्थान में होने से 'रूचक योग' बनेगा। जातक राजा के सामन भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **शनि+बुध**—धनेश, लाभेश बुध चतुर्थ स्थान में शनि के साथ हो तो जातक धनी होगा एवं उसे ससुराल से धन मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश, गुरु यदि शनि के साथ चतुर्थ स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग रहेगा।
6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र यदि शनि के साथ चतुर्थ भाव में हो तो जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु माता को अल्पायु देता है।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु माता को लम्बी बीमारी देगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में
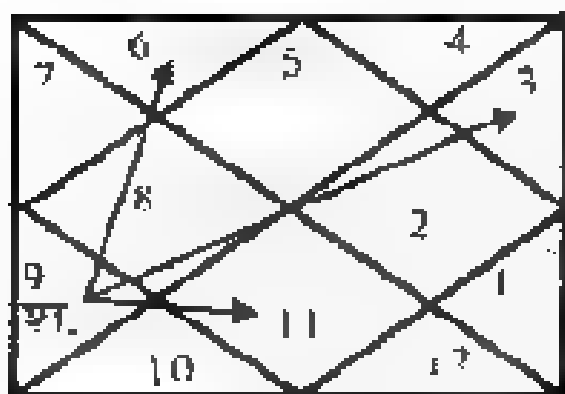
सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां पंचम स्थान में शनि धनु (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक विद्यावान, बुद्धिमान होता है पर विदेशी भाषा पढ़ेगा। ऐसा जातक बहकावे में आकर कभी-कभी गलत काम करता है। षड्यंत्र, हेरा-फेरी एवं अनैतिक कार्य में रुचि जातक को मुसीबत में डाल देती है.

दृष्टि—पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (कुंभ राशि) लाभ स्थान (मिथुन राशि) एवं धन भाव (कन्या रशि) पर होगी। फलत: जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक धनी होगा। उसे अपने धंधों कारोबार से लाभ मिलेगा

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–सिंहलग्न के पंचम स्थान में लग्नेश+षष्टेश की युति संतान के लिए कष्टदायक है तथा एकाध बालक की अकाल मृत्यु, गृहस्थ सुख में अनबन की स्थिति बनायेगी। जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा पंचम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक की एकाध संतान की अल्प मृत्यु होगी।
3. **शनि+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल पंचम स्थान में शनि के साथ होने से जातक की संतति भाग्यशाली होगी।
4. **शनि+बुध**–धनेश, लाभेश बुध पंचम में शनि के साथ होने से जातक धनवान होगा तथा उसकी संतति भी धनवान होगी।
5. **शनि+गुरु**–षष्टेश, सप्तमेश शनि के साथ अष्टमेश गुरु भी पंचम स्थान में हो तो जातक की एक-दो संतति की अकाल मृत्यु होगी।
6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र यदि शनि के साथ पांचवें हो तो जातक शिक्षा के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित करेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु यहां संतानोत्पत्ति (वंश वृद्धि) में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु संतान हानि कराता है।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में
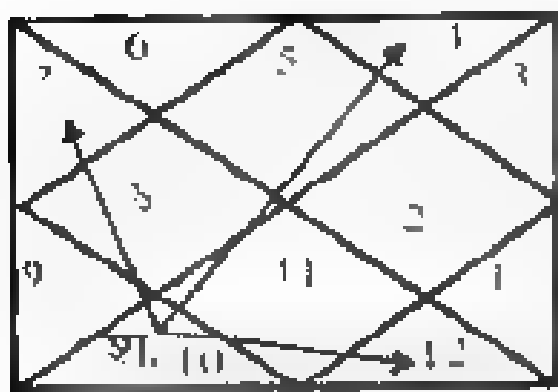
सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां छठे स्थान में शनि मकर राशि में स्वगृही होगा। मकर राशि के 21 से 30 अंशों तक शनि ज्यादा शक्तिशाली होगा। शनि के कारण यहां 'विलम्ब विवाह योग' बना परन्तु षष्टेश षष्टम भाव में स्वगृही होने से हर्ष नामक 'विपरीत राजयोग' भी बनेगा। जातक धनी शहर का प्रतिष्ठित व्यक्ति, गाड़ी, वाहन व बंगले का स्वामी होगा। जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय हो सकता है।

दृष्टि—षष्टमस्थ शनि की दृष्टि अष्टम भाव (मीन राशि), व्यय भाव (कर्क राशि) एवं तृतीय भाव (तुला राशि) पर होगी, फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा तथा अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक पूर्ण पराक्रमी होगा।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा में जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—सिंहलग्न के छठे स्थान में शनि स्वगृही होकर लग्नेश सूर्य के साथ होगा। षष्टेश के षष्टम में स्वगृही होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महाधनी एवं भौतिक सुखों से सम्पन्न व्यक्ति होगा। जातक का जीवनसाथी जातक पर हावी रहेगा.
2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा अष्टम स्थान में विपरीत राजयोग बनाता है पर शनि के साथ होने से जातक का मन अशांत रहेगा जातक धनी होगा।
3. **शनि+मंगल**—मंगल शनि की युति से यहां 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा के समान शक्तिशाली होगा।
4. **शनि+बुध**—धनेश, लाभेश बुध के छठे स्थान में शनि के साथ होने से जातक को आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
5. **शनि+गुरु**—अष्टमेश गुरु, शनि के साथ 'विपरीत राजयोग' एवं 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र शनि के साथ छठे होने पर जातक का पराक्रम भंग होगा।
7. **शनि+राहु**—राहु यहां राजयोग प्रदाता है पर जातक को शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए।
8. **शनि+केतु**—केतु शनि के साथ होने से जातक के शत्रु षड्यन्त्रकारी गतिविधियां करते रहेंगे।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में
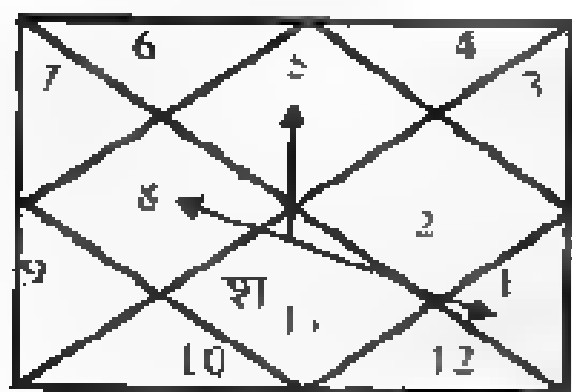
6 5 4 3 7 8 2 9 1 श 11 10 12

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां सप्तम स्थान में शनि कुंभ राशि में स्वगृही होगा। कुंभ राशि के एक में

बीस अंशों तक शनि मूल त्रिकोणी होकर अत्यन्त शुभ फल देगा। शनि की यह स्थिति 'शश योग' बनाती है। ऐसा जातक राजा के समान प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होता है। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा उसे भागीदारी व साझे के कार्यों में लाभ होता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य भवन (मेष राशि), लग्न स्थान (सिंह राशि) एवं चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक भाग्यशाली होगा। उसे सभी भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज में हो जायगी जातक अपने परिश्रम से आगे बढ़ेगा

निशानी—जातक का ससुराल पक्ष बहुत धनी व शक्तिशाली होगा।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—सिंहलग्न के सातवें स्थान में शनि मूलत्रिकोण कुंभ राशि का होकर सूर्य के स्थान का लग्नाधिपति योग करके लग्न को देखेगा। लग्नेश-सप्तमेश की यह युति यहां पर सार्थक है जातक की पत्नी व ससुराल पक्ष धनी होगा जातक जीवन में एक सफल व समृद्धशाली व्यक्ति होगा।
2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा सप्तम स्थान में शनि के साथ हो तो विवाह सुख में कमी करायेगा।
3. **शनि+मंगल**—सुखेश भाग्येश सप्तम स्थान में शनि के साथ होने से जातक को पराक्रमी बनायेगा पर गृहस्थ सुख में अशांति रहेगी।
4. **शनि+बुध** धनेश लाभेश बुध सातवें होने से जातक की पत्नी धनवान होगी।
5. **शनि+गुरु**—अष्टमेश गुरु शनि के साथ सातवें हो तो विवाह विच्छेद होगा
6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र सातवें स्थान में शनि के साथ हो तो जातक का जीवनसाथी स्वयं धनोपार्जन करेगा।
7. **शनि+राहु**—राहु शनि के साथ सप्तम स्थान में होने से विवाह विच्छेद (तलाक) करायेगा।
8. **शनि+केतु**—केतु शनि के साथ सप्तम स्थान में हो तो जीवनसाथी से मनमुटाव रहेगा

सिंहलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है शनि यहां मुख्य मारकेश है उपचय का स्वामी होने लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल दो
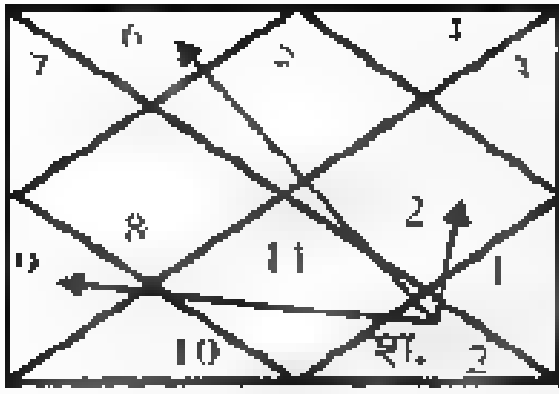
देगा। यहां अष्टम स्थान में शनि मीन (सम) राशि में होगा। शनि अष्टम में होने से 'विवाहभग योग' बना। षष्टेश के अष्टम में जाने से हर्ष नामक 'विपरीत राजयोग' बना. जातक धनी मानी एवं अभिमानी होगा। उसे सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी परन्तु वैवाहिक सुख में गड़बड़ रहेगी। जीवनसाथी के साथ दीर्घ रोग या दुर्घटना की सभावना रहेगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि लाभ स्थान (मिथुन राशि), धन भाव (कन्या राशि) एवं पचम भाव (धनु राशि) पर होगी फलत: शनि यहां व्यापार में तथा, कुटुम्ब सुख मे बाधा तथा सतति को लेकर परेशानी उत्पन्न करेगा।

दशा–शनि की दशा अतर्दशा मे जातक को गुप्त परेशानियो का सामना करना पड़ सकता है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–सिंहलग्न के अष्टम स्थान में सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' शनि के कारण 'विवाहभग योग' एव हर्ष नामक विपरीत राजयोग यहा मुखरित हुए है। फलत: जातक का विलम्ब विवाह होगा या दो विवाह हो सकते हैं। जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न भौतिक ससाधनों से युक्त प्रबल पराक्रमी व्यक्ति होगा।
2. **शनि+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ होने से अचानक दुर्घटना करायेगा।
3. **शनि+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मगल आठवें शनि के साथ होने से दो विवाह का संकेत देता है।
4. **शनि+बुध**–धनेश लाभेश बुध आठवें हो तो धन की हानि करायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु होने से विपरीत राजयोग की ताकत 'सरल नामक' योग के कारण बढ़ जायेगी।
6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र आठवें शनि के साथ होने से गुप्त बीमारी देगा।
7. **शनि+राहु**–जीवनसाथी के साथ दुर्घटना का सकेत मिलता है
8. **शनि+केतु**–जीवनसाथी की शल्य चिकित्सा होगी.

सिंहलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में
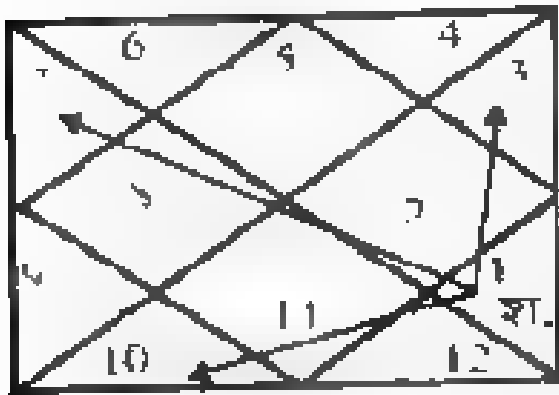
सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने से एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां नवम स्थान में शनि मेष राशि में नीच का होगा मेष राशि के 20 अंशों में शनि परम नीच का होता है। ऐसा जातक क्रियाशील होता है पर उसके सभी काम प्रायः उल्टे होते है। जातक को विरोधी परिस्थितियों एवं स्वव्यवसाय में विरोधियों दोनों का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि—नवम भावगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (मिथुन राशि), पराक्रम स्थान (तुला राशि) एवं षष्टम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक को व्यापार व्यवसाय में रुकावट, सहोदर भाइयों से मनमुटाव एवं शारीरिक रोग व शत्रुओं का मुकाबला करना पड़ेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। इन दिनों संघर्ष की पराकाष्ठा रहेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—सिंहलग्न के नवम स्थान में उच्च का सूर्य एवं नीच का शनि 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान महान शक्तिशाली एवं वैभवशाली होगा। जातक का जीवन साथी भी प्रबल पराक्रमी एवं पुरुषार्थी होगा।
2. **शनि+चन्द्र**—व्ययेश चन्द्रमा भाग्य स्थान में नीच के शनि के साथ होने से जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव आता रहेगा।
3. **शनि+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल स्वगृही भाग्य स्थान में शनि के साथ 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा जातक राजा होगा राजा से कम नहीं होगा।
4. **शनि+बुध**—धनेश, लाभेश बुध शनि के साथ भाग्य स्थान में जातक को धनी व अभिमानी व्यक्तित्व वाला बनायेगा।
5. **शनि+गुरु**—अष्टमेश गुरु भाग्य स्थान में शनि के साथ हो तो जातक के भाग्य में उतार तेजी से आयेंगे, चढ़ाव कम आयेंगे
6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र जातक का भाग्योदय महिला की मदद से होने का संकेत देता है।

7. **शनि+राहु**—यहां राहु शनि के साथ होने में भाग्य में भटकाव देगा। जातक अपना रास्ता तय नहीं कर पायेगा।

8. **शनि+केतु**—यहा केतु के साथ शनि जातक का भाग्योदय उल्टे (साहसिक) कार्य से करायेगा।

सिहलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में
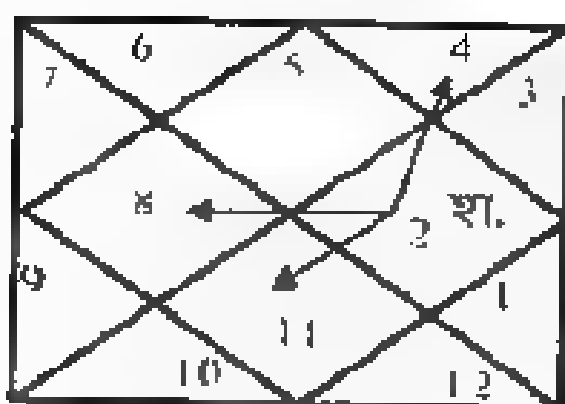
सिहलग्न में शनि षष्ठमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने से एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा. यहा दशम स्थान में शनि वृष (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक प्रभावशाली होगा। कोर्ट कचहरी, राज-दरबार में जातक की तूती बोलेगी। जातक सिद्धान्तवादी होगा एव हरेक से कुछ न कुछ पगा लेने की कोशिश करेगा।

दृष्टि—दशम भावगत शनि की दृष्टि व्यय भाव (कर्क राशि), चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) एव सप्तम भाव अपने स्वय के घर कुभ राशि पर होगी फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक का ससुराल धनी होगा। जातक का निजी मकान बडा व वैभवशाली होगा।

दशा—शनि की दशा अतर्दशा उन्नतिदायक होगी पर कुछ फल अशुभ भी होगे.

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—सिंहलग्न के दशम स्थान मे लग्नेश (सूर्य) एव सप्तमेश (शनि) केन्द्र में होने से जातक विवाह के बाद सरकारी नौकरी या निजी व्यवसाय स्थापित करेगा। जातक के विचार पिता से नहीं मिलेगे। जातक की नौकरी या रोजगार जन्म स्थान से दूर होगा।

2. **शनि+चंद्र**—व्ययेश चद्रमा दशम भाव में उच्च का 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। यहा शनि के साथ चद्रमा जातक को राजा के समान पराक्रमी बनायेगा।

3. **शनि+मगल**—सुखेश भाग्येश मगल दशम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. **शनि+बुध**—धनेश, लाभेश बुध दशम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक को पत्नी को धनवान बनायेगा।
5. **शनि+गुरु**—पंचमेश, अष्टमेश गुरु दशम स्थान में शनि के साथ होने से जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा।
6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र शनि के साथ 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा से कम नहीं होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ दशम स्थान में राहु जातक को जिद्दी व हठी बनायेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ दशम स्थान में केतु जातक को यश दिलायेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में
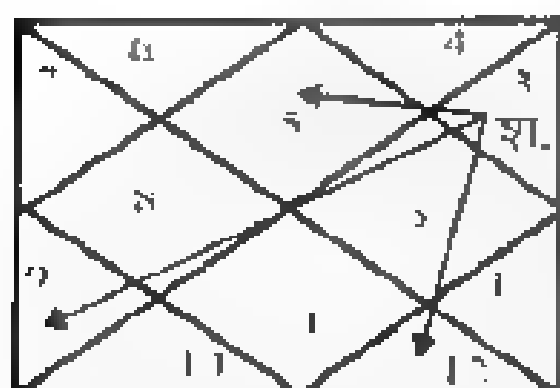
सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है, शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने से एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां एकादश स्थान में शनि मिथुन (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक बुद्धिमान व शिक्षित होगा। जातक को पत्नी व संतान का सुख प्राप्त होगा। जातक अच्छी जमीन जायदाद का स्वामी, धनवान, यशवान होगा। परन्तु संपत्ति में विवाद रहेगा।

दृष्टि—एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (सिंह राशि), पंचम स्थान (धनु राशि) एवं अष्टम स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक स्वपरिश्रम से आगे बढ़ेगा। जातक विद्यावान तथा शिक्षित होगा। जातक अपने शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फलदायक होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—सिंहलग्न के एकादश स्थान में लग्नेश सूर्य के सप्तमेश शनि के साथ होने से जातक को पत्नी व संतान का पूर्ण सुख रहेगा। जातक सफल व्यवसायी या उद्योगपति होगा। जातक के उद्योग का विकास पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**—चंद्रमा का व्ययेश होकर लाभ स्थान में शनि के साथ होने से लाभ में रुकावट आयेगी।

3. **शनि+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल, शनि के साथ लाभ स्थान में होने से जातक को उद्योगपति बनायेगा।

4. **शनि+बुध**—धनेश बुध स्वगृही होकर शनि के साथ व्यापार में उत्तम धन लाभ दिलायेगा।

5. **शनि+गुरु**—अष्टमेश गुरु लाभ स्थान में शनि के साथ होने से शुद्ध लाभ में 60% रुकावट दिलायेगा।

6. **शनि+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र लाभ स्थान में शनि के साथ हो तो पत्नी के नाम की सम्पत्ति से लाभ दिलायेगा।

7. **शनि+राहु**—लाभ स्थान में शनि के साथ राहु लाभांश को तोड़ेगा।

8. **शनि+केतु**—लाभ स्थान में शनि के साथ केतु व्यापार में 30% लाभ को नष्ट करेगा।

सिंहलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में
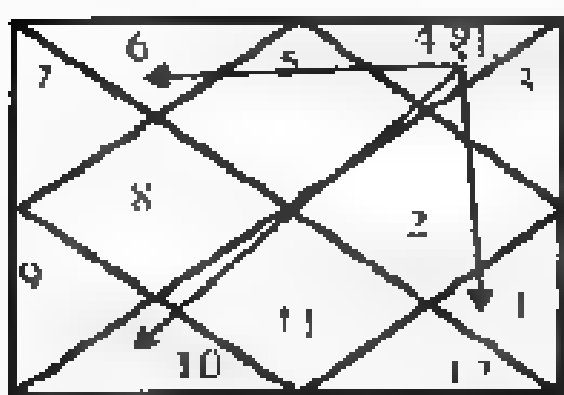
6 5 4 श. 3 7 8 2 9 11 1 10 12

सिंहलग्न में शनि षष्टमेश एवं सप्तमेश है। शनि यहां मुख्य मारकेश है। उपचय का स्वामी होने से एवं लग्नेश सूर्य का नैसर्गिक शत्रु होने से शनि अशुभ फल ही देगा। यहां द्वादश स्थान में शनि कर्क (शत्रु) राशि में होगा। शनि की इस स्थिति के कारण 'विलम्बविवाह योग' बना। षष्ठेश शनि का द्वादश स्थान में जाने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। जातक के पास स्थाई सम्पत्ति बहुत होगी पर चल सम्पत्ति धन संग्रह में जातक बराबर बाधा बनी रहेगी। ऋण-रोग व शत्रु जातक को जीवन पर्यन्त परेशान करते रहेंगे। जातक के जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर नहीं होंगे।

दृष्टि—द्वादश भावगत शनि की दृष्टि धन स्थान (कन्या राशि), छठे भाव (मकर राशि) एवं भाग्य भवन (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक धनी होगा पर धन खर्च होता चला जायेगा। जातक भाग्यशाली होगा पर उसका भाग्य साथ देना कम कर देगा। जातक के जीवन में गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा में चिंता बढ़ेगी। व्यर्थ की यात्राएं होंगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—सिंहलग्न के द्वादश स्थान में सूर्य के कारण 'लग्नभंग योग' शनि के कारण 'विमलभंग योग' तथा 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बना। ऐसा

जातक धनी होगा। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी। जातक के पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। जातक पिता के साथ भी कम रह पायेगा।

2. **शनि+चंद्र**–स्वगृही चंद्रमा शनि के साथ 'विपरीत राजयोग' के साथ जातक को धनी बनायेगा। पर जातक के पत्नी से विचार कम मिलेंगे

3. **शनि+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल शनि के साथ होने से जातक की स्थाई सम्पत्ति में बाधा आयेगी।

4. **शनि+बुध**–धनेश लाभेश बुध बारहवें शनि के साथ होने से जातक को दिवालिया करेगा।

5. **शनि+गुरु**–अष्टमेश गुरु बारहवें होने से जातक को संतान को लेकर चिंता रहेगी।

6. **शनि+शुक्र**–तृतीयेश दशमेश शुक्र शनि के साथ बारहवें होने से जातक का पराक्रम भंग होगा

7. **शनि+राहु**–राहु बारहवें शनि के साथ होने से जातक के जीवन में दुर्घटना होती रहेगी।

8. **शनि+केतु**–केतु बारहवें शनि के साथ हो तो जातक को विवाह सुख में बाधा आयेगी

❑❑❑

सिंहलग्न में राहु की स्थिति

सिंहलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में
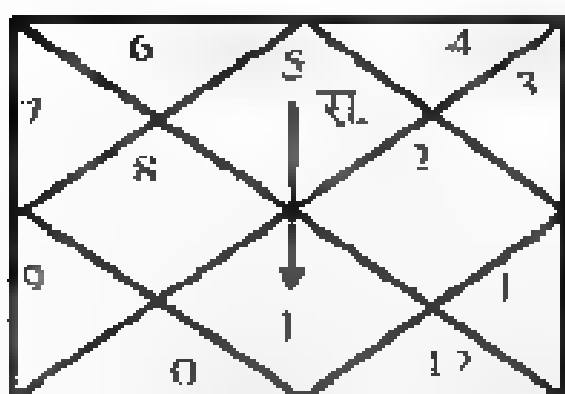
सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंद राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां प्रथम स्थान में राहु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। लग्नस्थ राहु वाला व्यक्ति उम्र से अधिक दिखता है। सिंह के राहु लग्न में होने से दंत रोग उत्पन्न होता है। जातक के दांत समय से पहले गिर जाते हैं। जातक क्रोधी एवं हठी होता है।

प्रभाव—सप्तम भाव पर राहु का प्रभाव विवाह सुख में बाधक है।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा जातक के जीवन में भटकाव एवं संघर्ष करायेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु सूर्य की युति राज सरकार से दण्ड दिलाती है।
2. **राहु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा राहु के साथ होने से जातक की आर्थिक स्थिति को विकृत करेगा। जातक एक स्थान पर टिक कर नहीं बैठ पायेगा।
3. **राहु+मंगल**—भाग्येश मंगल लग्न में राहु के साथ हो तो जातक को भाग्यशाली तो बनाता है पर जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव बहुत आयेगा।
4. **राहु+बुध**—धनेश बुध राहु के साथ होने से धन प्राप्ति के अवसर मिलेंगे।

5. **राहु+गुरु**—यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु के साथ प्रथम स्थान में राहु होने से जातक का मन-मस्तिष्क उद्विग्न रहेगा। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक देव-ब्राह्मणों एवं देहसुख में हीन होता है।
6. **राहु+शुक्र**—जातक का पराक्रम भंग होगा।
7. **राहु+शनि**—षष्ठेश शनि लग्न में राहु के साथ होने से जीवनसाथी से मनमुटाव करायेगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में
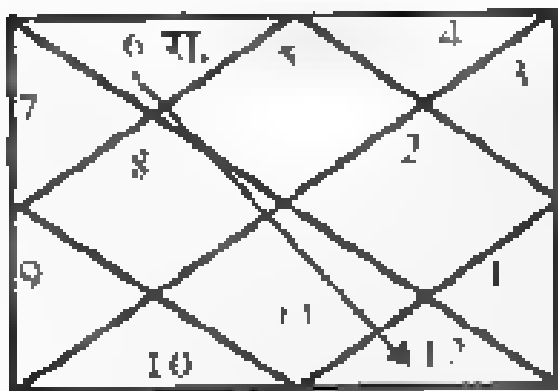
सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इसमें श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है यहां द्वितीय स्थान में राहु कन्या राशि में उच्च का होगा। यहां राहु धन के घड़े में छेद करता है पर राहु बुध की कन्या राशि में होने से ज्यादा नुकसानदायक साबित नहीं होगा, क्योंकि कन्या का राहु अपने घर में अंधा होता है। जातक अनीति से कमायेगा।

प्रभाव—राहु का प्रभाव अष्टम स्थान पर, शत्रुओं का नाश करायेगा।

निशानी—जातक की वाणी कड़वी होगी।

दशा—राहु की दशा अन्तर्दशा में जातक के धन का नाश होगा पर साथ में शत्रुओं का भी नाश होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य धन के घड़े में छेद करेगा।
2. **राहु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा के साथ राहु धन का नाश करेगा।
3. **राहु+मंगल**—भाग्येश, सुखेश मंगल के साथ राहु सुख का नाश करेगा।
4. **राहु+बुध**—बलवान धनेश के साथ राहु जातक को धनी बनायेगा पर अचानक धन का नाश भी करायेगा।
5. **राहु+गुरु**—सिंहलग्न के द्वितीय स्थान में पंचमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बना जिसके कारण जातक भुजबल से हीन होता है तथा जा

कुछ उसका नष्ट (चोरी) हो जाता है या जो धन उधार चला जाता है, वो वापस नहीं मिलता।

6. **राहु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ धन स्थान में राहु जातक के भाग्योदय मे दिक्कतें पैदा करेगा।

7. **राहु+शनि**—षष्टेश शनि के साथ राहु धन स्थान मे जातक के धन का नाश करायेगा। जातक मुहफट भी होगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में
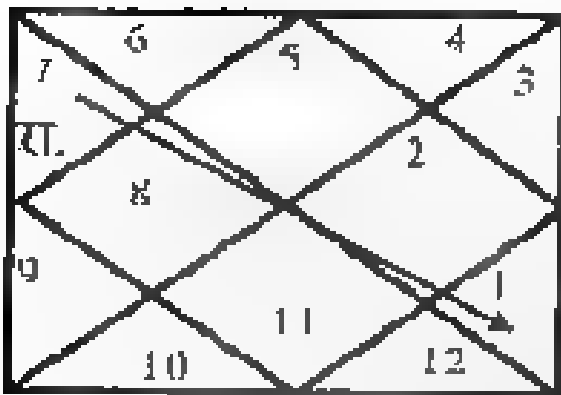
सिंहलग्न मे राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदे राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहा तृतीय स्थान में राहु तुला (मित्र) राशि म होगा ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम होता है तथा आक्रामक रणनीति से अपना काम कराने में सक्षम होता है जातक की आयु लम्बी एवं पत्नी सुंदर होगी।

प्रभाव नवम स्थान (मेष राशि) पर राहु की दृष्टि भाई व पिता से अनबन करायेगी।

निशानी—जातक को शत्रुओं पर बराबर विजय मिलेगी।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा मे जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**—तृतीय स्थान मे नीच के सूर्य के साथ राहु भाईयो, परिजनों से बैर करायेगा।

2. **राहु+चंद्र**—व्ययेश चद्र के साथ राहु तृतीय स्थान मे होने से परिजनों मे धन को लेकर विवाद करायेगा.

3. **राहु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश, मंगल के साथ राहु जमीन-जायदाद को लेकर परिजनों में विवाद करायेगा।

4. **राहु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध के साथ तृतीयस्थ राहु मित्रों से धन हानि करायेगा। जातक द्वारा मित्रों को उधार दिया गया पैसा डूब जायेगा।

5. **राहु+गुरु**—यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु तृतीय स्थान में राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक सहोदर भाईयों के सुखों से हीन होकर मित्रों से धोखा खाता है.

6. **राहु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश स्वगृही शुक्र के साथ राहु नौकरी या सरकारी कार्य में धनहानि करायेगा।

7. **राहु+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि के साथ राहु पत्नी या ससुराल से विवाद में धनहानि करायेगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
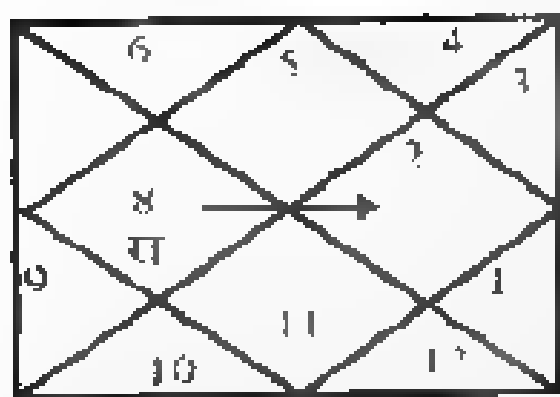
सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंद राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां चतुर्थ स्थान में राहु वृश्चिक (नीच) राशि में होगा. राहु की यह स्थिति जातक को धन, यश, पद-प्रतिष्ठा दिलाती है. जातक के पास स्थाई जमीन जायदाद भी होती है पर उसमें विवाद रहेगा। राजनैतिक क्षेत्र में जातक को वांछित सफलता नहीं मिलती।

प्रभाव—राहु का प्रभाव दशम भाव (वृष राशि) पर होने से जमीन जायदाद का विवाद होगा एवं मानसिक चिन्ता बनी रहेगी।

निशानी—जातक की दो माताएं होती हैं

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा खराब फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य चतुर्थ भाव में राहु के साथ हो तो पैतृक सम्पत्ति को लेकर विवाद होता है.

2. **राहु+चंद्र**—यहां चंद्रमा हो तो जातक को मानसिक अस्थिरता रहेगी

3. **राहु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश, मंगल चतुर्थ स्थान में स्वगृही होने से 'रुचक योग' बना। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं साहसी होता है.

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध की युति मानसिक अस्थिरता व धन हानि देगी।

5. **राहु+गुरु**—यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु चतुर्थ स्थान में राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक मातृसुख से हीन होता है। जातक घर, जमीन से रहित होकर मित्रों का द्रोही होता है

6. **राहु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र चतुर्थ भाव में राहु के साथ होने से जातक का माता से विवाद कराता है।

7. **राहु+शनि**—षष्ठेश, सप्तमेश शनि राहु के साथ गृहस्थ सुख में न्यूनता एवं विवाह में बाधा डालता है।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में
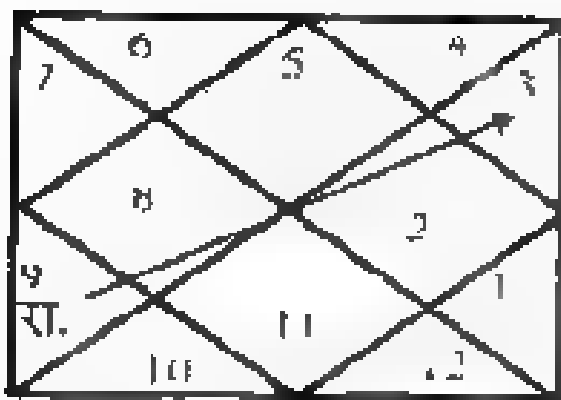
सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां पंचम स्थान में राहु धनु (नीच) का होगा। ऐसे जातक को पुत्रों का अभाव रहता है। जातक की माता की मृत्यु भी शीघ्र होती है फिर भी जातक को अच्छी शिक्षा मिलती है, धार्मिक मनोवृत्ति के कारण जातक को पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक सर्पदोष, पितृदोष से परेशान रहेगा

प्रभाव—पंचमस्थ राहु का प्रभाव एकादश स्थान (मिथुन राशि) पर होने से जातक को नौकर अच्छे नहीं मिलेंगे। नौकर वफादार नहीं होंगे।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा में चिंताएं बढ़ेंगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—पंचमस्थ राहु के साथ सूर्य ईश्वर उपासना के बाद उत्तम संतति का सुख देगा।

2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्रमा पुत्र संतान का नाश करायेगा।

3. **राहु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल के साथ राहु जातक को तीन पुत्रों का लाभ देगा।

4. **राहु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध के साथ राहु जातक को कन्या संतति भी देगा। जातक की संतति धनवान होगी।

5. **राहु+गुरु**–यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु पंचम स्थान में स्वगृही होकर राहु के साथ होने से चाण्डाल योग बना। जातक को प्रथमतः पुत्र नहीं होगा। पुत्र होगा तो भी मूर्ख एवं संस्कारहीन होगा। विद्या में बाधा निश्चित है। जातक का खान-पान दूषित होगा।

6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ राहु कन्या संतति देगा। जातक की सन्तति पराक्रमी होगी।

7. **राहु+शनि**–षष्टेश, सप्तमेश शनि के साथ राहु गर्भपात, दुर्घटना से संतान नाश का संकेत देता है।
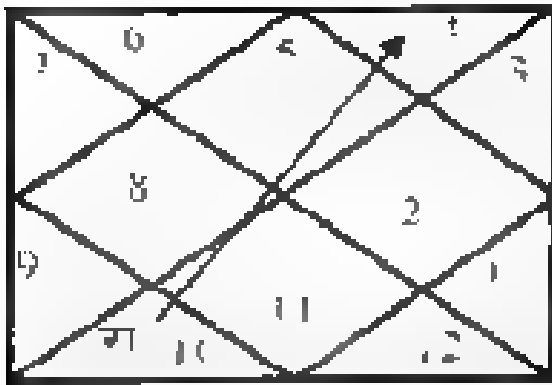
सिंहलग्न में राहु की स्थिति षष्टम् स्थान में

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। छठे स्थान में राहु मकर (सम) राशि का होगा। छठे स्थान में राहु राजयोग कारक होता है, ऐसा जातक विषम परिस्थितियों में भी निरन्तर आगे बढ़ता है। जातक का स्वभाव कलहकारी होता है फलतः शत्रुओं की वृद्धि होती है। ऐसे जातक का अधिकतम समय शत्रुओं का दमन करने में नष्ट हो जाता है। जातक की आवक गुप्त होगी।

प्रभाव–षष्टमस्थ राहु का प्रभाव द्वादश भाव (कर्क राशि) पर होने से जातक को लकवा या कोढ़ की बीमारी हो सकती है।

निशानी–जातक को पुत्र संतान का सुख प्राप्त होगा।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा में भययुक्त जीवन, दुर्घटना या मृत्यु का भय रहेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–छठे भाव में राहु के साथ सूर्य जातक के पुरुषार्थ को नष्ट करता है।
2. **राहु+चंद्र**–छठे स्थान में व्ययेश चंद्र के साथ राहु जातक को विदेश व निन्दित कार्यों से जोड़ता है।
3. **राहु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश उच्च के मंगल के साथ राहु हो तो जातक को धनी बनाता है पर वाहन दुर्घटना से नुकसान का संकेत देता है।

4. **राहु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध के साथ राहु धन का संग्रह कष्ट से कराता है।
5. **राहु+गुरु**—यहां सिंहलग्न में अष्टमेश गुरु छठे स्थान में नीच राशि का होकर राहु के साथ होने से 'चाण्डाल योग' बनायेगा। ऐसे जातक को बाल्यावस्था में जलभय, सर्पदंश का भय रहता है। जातक के लिए आयु का 6, 8, 18 व 20वां वर्ष घातक है।
6. **राहु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ राहु पराक्रम भंग करता है या सरकारी अनदेखी से नुकसान पहुंचाता है।
7. **राहु+शनि**—षष्ठेश, सप्तमेश शनि विपरीत राजयोग के साथ राहु की युति से दुश्मनों की संख्या में वृद्धि करेगा.

सिंहलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में
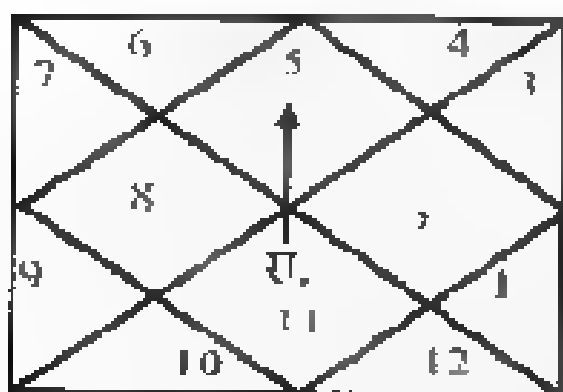
सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया, तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। सप्तम भाव में राहु कुंभ स्वगृही मूलत्रिकोण राशि में होगा, जातक को गृहस्थ व स्त्री का सुख कमजोर रहेगा, जातक की पत्नी एवं उसे स्वयं को प्रमेह, मधुमेह, गुप्तेन्द्री में रोग हो सकता हैं। ऑपरेशन की संभावना रहेगी।

प्रभाव—सप्तमस्थ राहु का प्रभाव लग्न स्थान (सिंह राशि) पर रहेगा, फलतः जातक स्वयं एवं उसकी पत्नी उड़ाऊ स्वभाव की होगी।

निशानी—जातक प्रायः अन्य जाति में विवाह करता है। स्त्रियों के कारण जातक के धन का नाश होगा।

दशा—राहु की दशा, अंतर्दशा में जातक को अशुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—सप्तमस्थ राहु के साथ लग्नेश की युति जातक को आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगी।
2. **राहु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा सप्तम स्थान में राहु के साथ होने से गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर विचार नहीं मिलेंगे।

3. **राहु+मंगल**—सुखेश भाग्येश मंगल के साथ राहु द्विभार्या योग बनाता है।

4. **राहु+बुध**—धनेश लाभेश बुध के साथ राहु पत्नी को लेकर धन खर्च करायेगा।

5. **राहु+गुरु**—सिंहलग्न के सातवें स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से क्रूर 'चाण्डाल योग' बनेगा। जातक की मृत्यु सर्पदंश से अथवा धीमी गति के जहर के कारण शान्ति पूर्वक होगी। जातक की पत्नी विधवा होगी।

6. **राहु+शुक्र**—तृतीयेश दशमेश शुक्र के साथ राहु सप्तम स्थान में होने से पत्नी को घमण्डी बनायेगा।

7. **राहु+शनि**—षष्ठेश सप्तमेश शनि के साथ राहु पत्नी को विधवा बनाता है।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
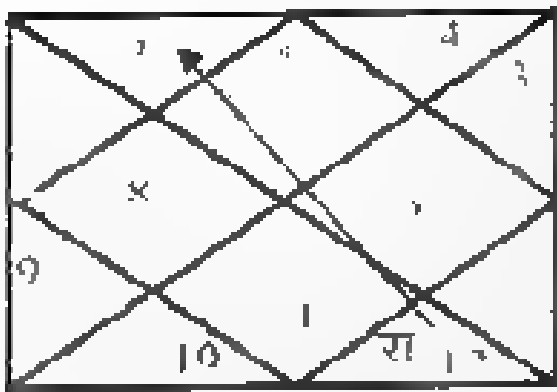
सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की। इसमें श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंद राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां राहु अष्टम स्थान में मीन (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक का गृहस्थ सुख कमजोर रहता है। जातक बीमार रहेगा। जातक की आयु कम होगी।

उपाय—नवरत्न जड़ित महामृत्युंजय का लॉकेट पहनें।

प्रभाव—राहु की सप्तम दृष्टि का प्रभाव द्वितीय स्थान (कन्या राशि) पर होने से जातक हकला कर, अटक-अटक कर बिना सोचे समझे बोलता है।

निशानी—जातक की स्त्री विधवा होगी।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक एकान्तवासी होगा एवं जातक की आत्मघाती मनोवृत्ति को बल मिलेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य अष्टम स्थान में राहु के साथ होने से अकाल मृत्यु का द्योतक है।

2. **राहु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा अष्टम राहु के साथ शल्य चिकित्सा के दौरान जातक की मृत्यु का द्योतक है।

3. **राहु+मंगल**—सुखेश भाग्येश मंगल के साथ राहु भाग्य में रुकावट लायेगा।

4. राहु+बुध—धनेश, लाभेश बुध के साथ राहु धनहीन योग से जातक को दिवालिया बना देगा।
5. राहु+गुरु—सिंहलग्न के आठवें स्थान में अष्टमेश गुरु होने से सरल नाम विपरीत राजयोग होगा पर यहां राहु होने से चाण्डाल योग बना। जातक धन वैभव से परिपूर्ण जीवन जीयेगा। परन्तु अचानक दुर्घटना का भय रहेगा।
6. राहु+शुक्र—तृतीयेश, दशमेश शुक्र के साथ राहु होने से जातक मित्रों के षड्यंत्र से फंसेगा।
7. राहु+शनि—षष्ठेश, सप्तमेश शनि के साथ राहु हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरी स्त्री से विवाह करायेगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में
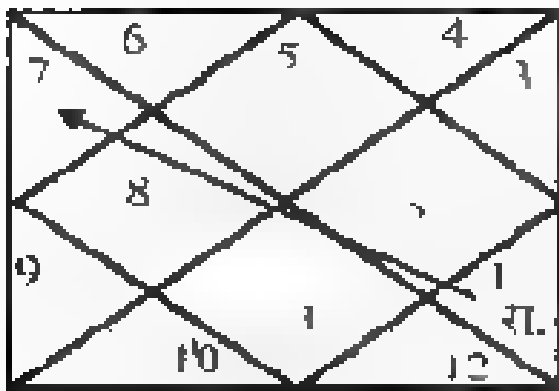
सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां नवम स्थान में राहु मेष (सम) राशि में होगा जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। नवम भाव में मेष के राहु की उपस्थिति पिता के लिए शुभ नहीं है। असावधानी पर जातक शत्रु द्वारा पराजित हो सकता है।

प्रभाव—नवमस्थ राहु की दृष्टि तृतीय स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक का सगे भाईयों के साथ मन-मुटाव रहेगा

निशानी—जातक कूटनीतिज्ञ होता है।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा में पिता की मृत्यु सम्भव है। जातक परदेश जाएगा जातक के धन का नाश होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. राहु+सूर्य—लग्नेश सूर्य उच्च के राहु के साथ भाग्य स्थान में होने से जातक का भाग्य प्रबल होगा पर उतार चढ़ाव आते रहेंगे।
2. राहु+चंद्र—व्ययेश चंद्रमा भाग्य स्थान में राहु के साथ होने से जातक मानसिक रूप से उद्विग्न रहेगा। जातक क्रोधी व चिड़चिड़ा होगा
3. राहु+मंगल—भाग्येश, सुखेश मंगल स्वगृही राहु के साथ होने से जातक बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. **राहु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध का भाग्य स्थान में राहु के साथ होना जातक की उन्नति में सहायक है।

5. **राहु+गुरु**–सिंहलग्न में नवम स्थान में अष्टमेश बृहस्पति के साथ राहु होने से चाण्डाल योग बनता है, ऐसा जातक परनिन्दक होता है, जातक धर्म के विपरीत आचरण करता है तथा नास्तिक होता है। जातक परधन हर्ता एवं दुःशीला स्त्रियों के साथ रहता है।

6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र राहु के साथ होने से जातक के पराक्रम में वृद्धि करायेगा। जातक की पीठ पीछे उसकी निन्दा होगी।

7. **राहु+शनि**–षष्ठेश, सप्तमेश शनि नीच का होकर राहु के साथ होने से जातक को नौकरी में व्यापार में अपने ही विश्वस्त व्यक्ति द्वारा भारी धोखा होगा।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में
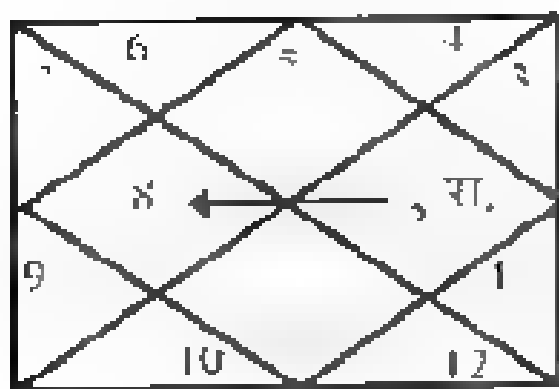
सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्रीविष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदें राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहां दशम भाव में राहु वृष राशि में उच्च का होगा। दशम स्थान में राहु की यह स्थिति राजयोग कारक है। ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ता है, जातक दूसरों के धन पर गिद्ध दृष्टि रखेगा, जातक की अपने पिता के साथ नहीं बनेगी।

प्रभाव–दशमस्थ राहु का प्रभाव चतुर्थ भाव (वृश्चिक राशि) पर होगा फलतः जातक की माता का स्वास्थ्य खराब होगा।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा में जातक को नौकरी मिलेगी। (जातक की यात्राएं शुभद रहेंगी)।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य दशम भाव में राहु के साथ होने से राज्य पक्ष में गड़बड़ का संकेत देता है.

2. **राहु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा उच्च का होकर राहु के साथ 'राजयोग' तो देता है पर जातक को राज्य पक्ष के षड्यंत्र का शिकार होना पड़ेगा।

3. **राहु+मंगल**—भाग्येश, सुखेश मंगल राहु के साथ दशम भाव में होने पर जातक को राजा के समान ऐश्वर्यशाली बनायेगा।

4. **राहु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध दशम स्थान में राहु के साथ जातक को वाहन सुख देगा साथ में वाहन दुर्घटना भी करायेगा।

5. **राहु+गुरु**—सिंहलग्न के दशम स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से चाण्डाल योग बनता है। ऐसा जातक पिता के सुख से हीन चुगलखोर एवं कर्महीन होता है।

6. **राहु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र दशम स्थान में स्वगृही होने से 'मालव्य योग' बनायेगा। फलत: जातक राजा के सामन पराक्रमी होगा, पर कभी-कभी बहक जायेगा।

7. **राहु+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि दशम भाव में होने से जातक के लिए राजा के द्वारा, कोर्ट के द्वारा दण्डित होने का योग है।

सिंहलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान मे
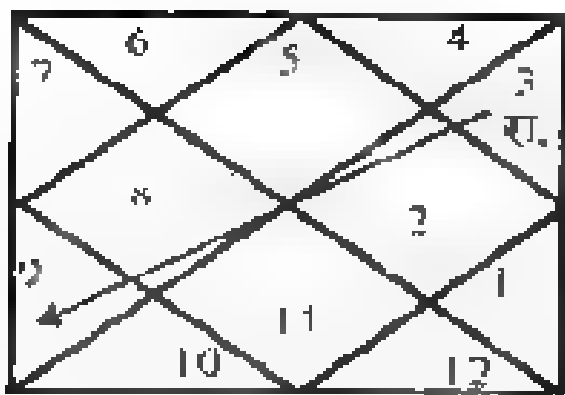
6, 5, 4, 7, 3 रा., 8, 2, 9, 1, 11, 10, 12	

सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की इससे श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंद राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहा एकादश स्थान में राहु मिथुन (उच्च) राशि का होगा। एकादश स्थान में राहु की यह स्थिति राजयोग कारक है। ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों में आगे बढ़ता है। जातक विज्ञान एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा। जातक को भूमि की प्राप्ति होगी

प्रभाव—एकादश भावगत राहु की दृष्टि पचम स्थान (धनु राशि) पर होगी फलत: जातक की विद्या में बाधा सभव है।

निशानी—जातक को कान का रोग होगा।

दशा—राहु की दशा-अन्तर्दशा में राज-सरकार से मान-सम्मान या धन मिलेगा

राहु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य राहु के साथ एकादश स्थान में होने से जातक को उद्योगपति बनायेगा।
2. **राहु+चंद्र**–व्ययेश चद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर यदि एकादश में हो तो चलती फैक्टी बन्द होगी।
3. **राहु+मगल**–सुखेश भाग्येश, मगल एकादश स्थान मे होने से जातक को धनी बनायेगा
4. **राहु+बुध**–धनेश बुध एकादश मे स्वगृही होकर राहु के साथ होने से जातक उद्योग-फैक्टरी का स्वामी होगा।
5. **राहु+गुरु**–सिंहलग्न के एकादश स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बनता है। ऐसा जातक बचपन से दुःखी, धनहीन एवं कपट आचरण करने में माहिर होता है। जातक जैसा दिखता है, वैसा नहीं होता।
6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश, शुक्र एकादश स्थान में राहु के साथ होने से पराक्रम से धन कमाने का योग बनाता है।
7. **राहु+शनि**–षष्टेश सप्तमेश शनि राहु के साथ चलते व्यापार एवं कार्य मे शत्रु के द्वारा रुकावट पैदा करता है

सिंहलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में
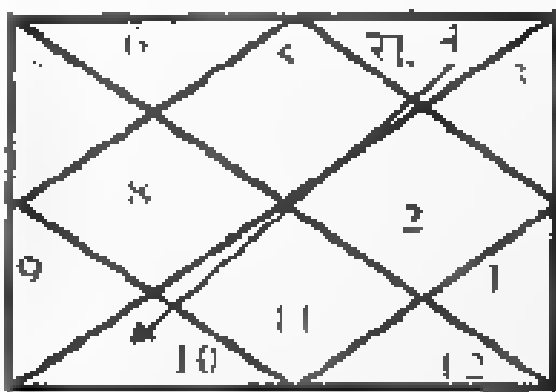
सिंहलग्न में राहु लग्नेश सूर्य का परम शत्रु ग्रह है। सूर्य देवता ने राक्षसराज राहु को छल से अमृतपान करते हुए देख लिया और इसकी शिकायत श्रीविष्णु से की, इससे श्री विष्णु ने राहु का सिर चक्र से काट डाला परन्तु अमृत की बूंदे राक्षसराज के कण्ठ में जाने से वह अमर हो गया। तब से राहु सूर्य का पूर्ण शत्रु है। यहा द्वादश स्थान मे राहु कर्क (शत्रु) राशि मे होगा। द्वादश स्थान मे राहु व्यर्थ की यात्राओं से नुकसान कराता है जातक अनेक प्रयत्न करने पर भी धन संग्रह नहीं कर पाता

प्रभाव–द्वादश भावगत राहु का प्रभाव छठे स्थान (मकर राशि) पर होने से जातक निराशावादी होगा। जातक को खराब सपने आयेंगे

दशा–राहु की दशा अन्तर्दशा मे जातक को नुकसान, मानसिक कष्ट तथा धन हानि होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य द्वादश स्थान में राहु के साथ होने से जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा
2. **राहु+चंद्र**–व्ययेश चन्द्रमा व्यय भाव में धन खर्च करायेगा। यात्रा में ज्यादा रुपया खर्च होगा।
3. **राहु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल बारहवें राहु के साथ होने से विदेश यात्रा करायेगा।
4. **राहु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध राहु के साथ होने से धन हानि करायेगा। जातक के दिवालिया होने का योग है.
5. **राहु+गुरु**–सिंहलग्न के द्वादश स्थान में अष्टमेश गुरु के साथ राहु होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक गलत कार्य में रुपया खर्च करता है। जातक अल्पायु होता है तथा पाप कर्मों में निमग्न रहता है।
6. **राहु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र राहु के साथ व्यय भाव में होने से जातक सेक्स के कारण, नशे के कारण फंसेगा
7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि राहु के साथ होने से गृहस्थ सुख में बाधा होगी। जातक जेल भी जा सकता है

❑❑❑

सिंहलग्न में केतु की स्थिति

सिंहलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
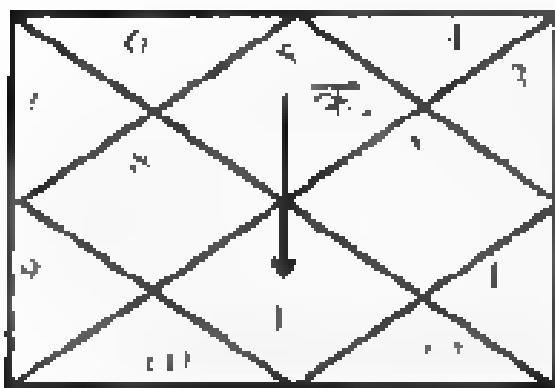
सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है, सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां प्रथम स्थान में केतु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा। केतु यहां शुभ ग्रहों से युत हो तो शुभ फल देगा। अशुभ ग्रहों से युत हो तो अशुभ फल देगा।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा में शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को कीर्ति देगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ व्ययेश चंद्रमा जातक को मानसिक परेशानी देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ भाग्येश, सुखेश मंगल होने से भाग्य बलवान होगा।
4. **केतु+बुध**–धनेश, लाभेश बुध लग्न में केतु के साथ होने से जातक पुरुषार्थ में विश्वास रखेगा एवं पुरुषार्थ से धन कमाएगा।
5. **केतु+गुरु**–पंचमेश, अष्टमेश गुरु लग्न में संतति द्वारा धनार्जन का संकेत देता है।
6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र लग्न में केतु के साथ पराक्रम बढ़ाएगा।
7. **केतु+शनि**–षष्ठेश, सप्तमेश शनि लग्न में केतु के साथ दुर्घटना योग कराता है।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में
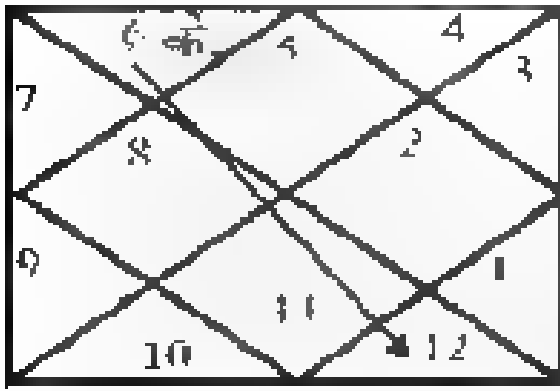
सिहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिह मे केतु उद्विग्न रहता है, असतुष्ट रहता है, यहा द्वितीय स्थान में केतु कन्या (नीच) राशि मे होगा। कुटुम्बियो का सहयोग मिलेगा। धन शुभ कार्यों मे खर्च होगा। केतु के साथ यदि पापग्रह हो तो जातक दु:खी होगा। व्यर्थ के कार्यों में धन खर्च होगा जातक का विवाह विलम्ब से होगा।

दशा—केतु की दशा अतर्दशा में शुभ फल मिलेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—सूर्य द्वितीय मे, धन स्थान में केतु साथ धन हानि का सकेत देता है
2. **केतु+चंद्र**—व्ययश चद्रमा धन स्थान में केतु के साथ धन सग्रह मे बाधक है
3. **केतु+मंगल**—भाग्येश, सुखेश मगल धन स्थान मे केतु के साथ, जातक को स्थाई सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा।
4. **केतु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध बलवान होकर केतु के साथ होने से जातक धनी होगा
5. **केतु+गुरु**—पचमेश अष्टमेश गुरु धन स्थान में केतु के साथ होने से धन हानि होगी।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश व दशमेश शुक्र केतु के साथ धन हानि करायेगा
7. **केतु+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि केतु के साथ वाणी मे दोष, हकलाहट लायेगा।

सिहलग्न मे केतु की स्थिति तृतीय स्थान में
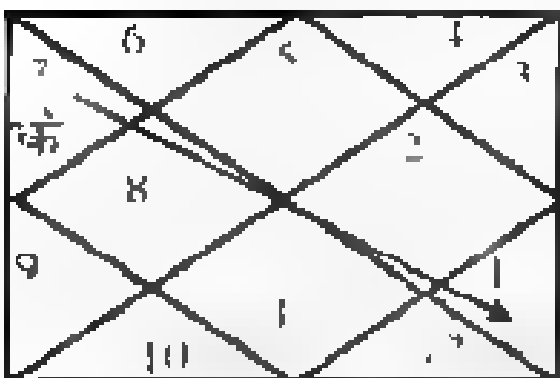
सिहलग्न मे केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहा तृतीय स्थान में केतु तुला (मित्र) राशि मे होगा। भाइयो की मदद मिलेगी छोटे भाई को कष्ट होगा। केतु के साथ पाप ग्रह हो तो भाईयों में विवाद होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में यश की प्राप्ति होगी। पराक्रम बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–सूर्य लग्नेश होकर नीच का तृतीय स्थान में केतु के साथ पराक्रम भंग कराता है।
2. **केतु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा केतु के साथ तृतीय में परिजनों से मनमुटाव कराता है।
3. **केतु+मंगल**–सुखेश भाग्येश मंगल तृतीय स्थान में केतु के साथ भाइयों से मित्रों से धन लाभ कराता है
4. **केतु+बुध**–धनेश लाभेश बुध तृतीय स्थान में मित्रों से धन कराता है।
5. **केतु+गुरु**–पंचमेश अष्टमेश गुरु तृतीय में भाईयों से नुकसान कराता है। दुर्घटना का भय रहता है।
6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश दशमेश स्वगृही शुक्र के साथ केतु मित्रों से संपर्क कराता है
7. **केतु+शनि**–षष्टेश व सप्तमेश शनि के साथ केतु मित्रों या पत्नी से धोखा दिलवाता है।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
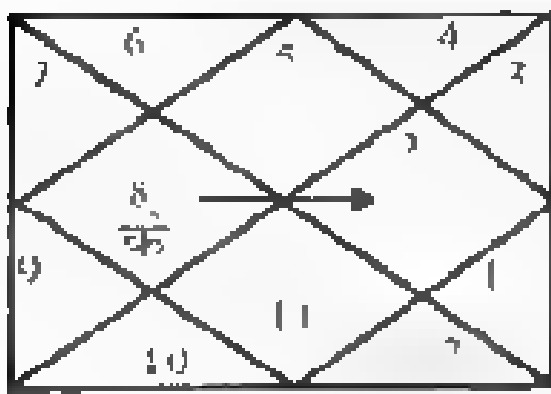
सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है असंतुष्ट रहता है। यहां चतुर्थ स्थान में केतु वृश्चिक (उच्च) राशि का होगा। परिवार-कुटुम्ब का सुख होगा। भौतिक सुखों उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। केतु के साथ पापग्रह हो तो सुख में कमी आयेगी। माता की मृत्यु बचपन में संभव

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में भौतिक सुखों में वृद्धि होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य चतुर्थ में केतु के साथ माता के लिए कष्टकारक है
2. **केतु+चंद्र**–व्ययेश नीच का होकर चतुर्थ स्थान केतु के साथ माता को लम्बी बीमारी देता है।

3. **केतु+मंगल**—सुखेश भाग्येश मंगल स्वगृही केतु के साथ होने से 'रुचक योग' बनेगा। जातक राजा के समान वैभवशाली एवं पराक्रमी होगा।
4. **केतु+बुध**—तृतीयेश, लाभेश बुध केतु के साथ होने से जातक सुख सुविधा वैभव से सम्पन्न होगा।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु के साथ केतु चतुर्थ भाव में होने से वाहन दुर्घटना का भय है। जातक की टांग टूटेगी।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश दशमेश शुक्र केतु के साथ चतुर्थ स्थान में शुभ है।
7. **केतु+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि चतुर्थ स्थान में केतु के साथ अशुभ है जातक के माता की मृत्यु होगी।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में
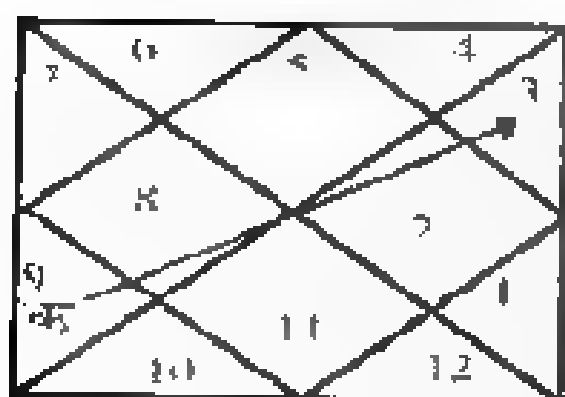
सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है सिंह में केतु उद्विग्न रहता है असंतुष्ट रहता है। यहां पंचम स्थान में केतु धनु (उच्च) राशि में होगा जातक धर्मशास्त्र का ज्ञाता एवं विद्वान होगा। संतान सुख उत्तम। केतु पापग्रहों के साथ हो विद्या एवं संतान सुख में बाधा आयेगी।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य पंचम स्थान में केतु के साथ गर्भपात एवं गर्भस्राव कराता है। जातक रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।
2. **केतु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा पंचम में केतु के साथ कन्या संतति की अकाल मृत्यु का संकेत देता है।
3. **केतु+मंगल**—भाग्येश, सुखेश मंगल पंचम स्थान में पुत्र संतति की बाहुल्यता देगा।
4. **केतु+बुध** धनेश, लाभेश बुध पंचम स्थान में कन्या संतति की बाहुल्यता देगा।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु केतु के साथ आठवें संतान की अकाल मृत्यु कराता है।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश दशमेश शुक्र पंचम स्थान में केतु के साथ कन्या संतान की बाहुल्यता देता है

7. **केतु+शनि**—षष्टेश व सप्तमेश शनि केतु के साथ आपरेशन से संतति की मृत्यु का संकेत है

सिंहलग्न में केतु की स्थिति षष्टम् स्थान में
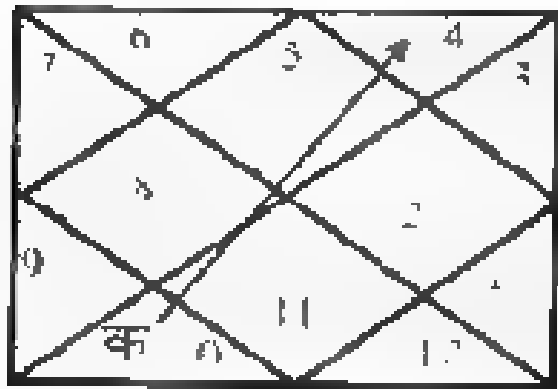
सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है, सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां छठे स्थान में केतु मकर (मूल त्रिकोण) राशि में होगा जातक का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। जातक के शत्रु भी जातक से मित्रता का व्यवहार करेंगे। केतु के साथ अन्य पापग्रह हो तो रोग व शत्रु का भय रहेगा

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलदायक रहेगी.

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य छठे स्थान में केतु के साथ परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा
2. **केतु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा छठे विपरीत राजयोग कराता है। जातक सम्पन्न व धनी होगा परन्तु गुप्त शत्रु बहुत रहेंगे।
3. **केतु+मंगल**—सुखेश भाग्येश मंगल छठे स्थान में विपरीत राजयोग करायेगा पर जातक की भूमि विवादास्पद रहेगी
4. **केतु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध छठे स्थान में केतु के साथ धनहीन योग बनायेगा। जातक को धन की कमी सताती रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु छठे स्थान में विपरीत राजयोग बनायेगा। परन्तु गुप्त शत्रु नुकसान पहुंचायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र छठे केतु के साथ होने से पराक्रम भंग होगा। मानहानि होगी।
7. **केतु+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि केतु के साथ विपरीत राजयोग करायेगा जातक सम्पन्न तो होगा, पर गृहस्थ सुख कमजोर होगा

सिंहलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है,
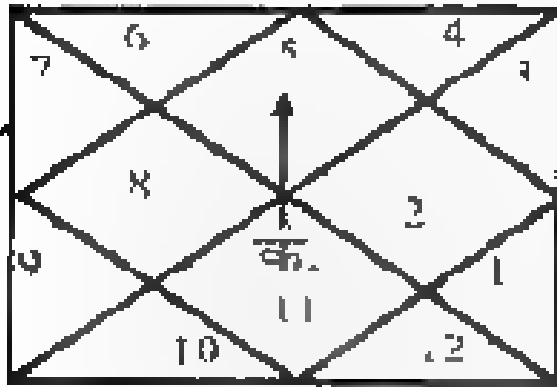
असंतुष्ट रहता है. यहां सप्तम स्थान में केतु कुम्भ (मित्र) राशि म होगा। जातक की पत्नी सुंदर व सभ्य होगी। गृहस्थ जीवन सामान्य व सुखद होगा। यदि केतु के साथ अन्य पापग्रह हैं तो जीवन साथी के साथ तलाक होगा।

निशानी—जातक अपनी पसंद का विवाह करेगा।

दशा—केतु की दशा-अतर्दशा में शुभ फलदायक रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—सप्तम भाव में सूर्य शत्रु क्षेत्री होकर केतु के साथ विवाह सुख मे बाधक है।
2. **केतु+चंद्र**—व्ययेश चद्रमा सातवें केतु के साथ पत्नी सुंदर देगा पर पत्नी झगड़ालू होगी।
3. **केतु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल सातवे केतु के साथ विवाह बाद भाग्योदय करायेगा। पर खटपट रहेगी
4. **केतु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध सातवं ससुराल मे धन दिलायेगा पर खटपट रहेगी
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु सातवें और केतु सातवें होने से संतान प्राप्ति के बाद उन्नति होगी।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र सातवें केतु के साथ होने से ससुराल पराक्रमी होगा
7. **केतु+शनि**—षष्टेश, सप्तमेश शनि सातवें केतु के साथ होने से जीवनसाथी से तलाक होगा

सिंहलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में
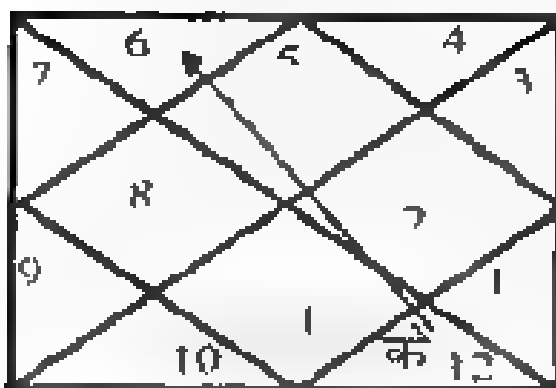
सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है सिंह में केतु उद्विग्न रहता है असंतुष्ट रहता है यहां अष्टम स्थान में केतु मीन मे स्वगृही होगा। यह केतु अचानक कार्य सिद्धि कराता है। यदि अन्य पापग्रह साथ है तो अचानक दुर्घटना से मृत्यु संभव है। आपरेशन के प्रति सावधान रहना जरूरी है।

दशा -केतु की दशा अंतर्दशा में थोड़ी चिंता के साथ सफलता देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य आठवें केतु के साथ होने से परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा
2. **केतु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा आठवें विपरीत राजयोग बना रहा है। केतु के साथ यह शल्य चिकित्सा से घात कराता है। जल भय भी है।
3. **केतु+मंगल**–सुखेश, भाग्येश मंगल आठवें केतु के साथ होने से जातक के दो विवाह होंगे
4. **केतु+बुध**–तृतीयेश, दशमेश शुक्र आठवें केतु के साथ विवाह सुख में न्यूनता लाता है।
5. **केतु+गुरु**–पंचमेश व अष्टमेश गुरु आठवें होने से 'विपरीत राजयोग' बनता है। दो विवाह का योग बनता है।
6. **केतु+शुक्र**–तृतीयेश दसमेश शुक्र आठवें होने से पराक्रम भंग योग बनता है
7. **केतु+शनि**–षष्ठेश सप्तमेश शनि आठवें दो विवाह का योग बनाता है।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में
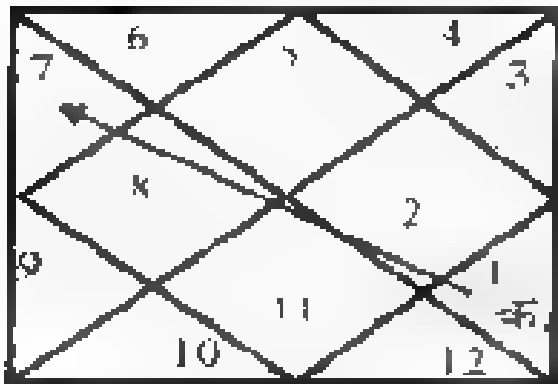
सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां नवम स्थान में केतु मेष (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को जीवन में पिता एवं गुरु का आशीर्वाद मिलता रहेगा। यदि अन्य पापग्रह साथ हो तो भाग्योदय में बाधा आयेगी। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा में भाग्योदय कारक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–लग्नेश सूर्य उच्च का केतु के साथ सरकारी क्षेत्र में कीर्ति मिलेगी।
2. **केतु+चंद्र**–व्ययेश चंद्रमा भाग्यस्थान के केतु के साथ होने से भाग्य में उतार-चढ़ाव होगा।
3. **केतु+मंगल**–सुखेश भाग्येश मंगल केतु के साथ होने से भाग्य 28 वर्ष बाद चमकेगा

4. **केतु+बुध**—धनेश लाभेश बुध नवम भाव में केतु के साथ होने से पिता को सम्पत्ति मिलेगी पर विवाद रहेगा।
5. **केतु+गुरु**—पचमेश अष्टमेश गुरु भाग्य मे पुत्र सतति के बाद भाग्योदय होगा।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश
7. **केतु+शनि**—षष्ठेश, सप्तेश शनि नीच का होकर नवम स्थान मे केतु के साथ होने से

सिंहलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में
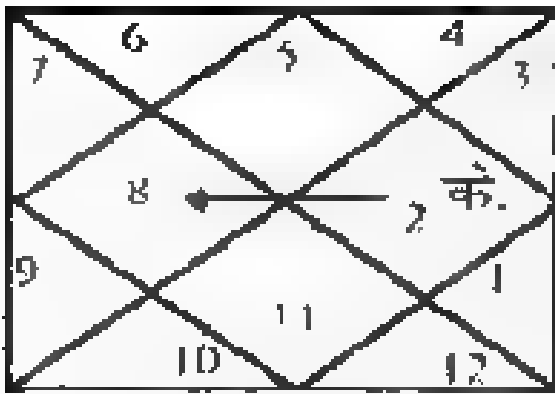
सिहलग्न मे केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिह में केतु उद्विग्न रहता है, असतुष्ट रहता है। यहां दशम स्थान मे केतु वृष (नीच) राशि का होगा। जातक सिद्धातवादी होगा। न्यायप्रिय होगा। जातक को धंधे, व्यापार व्यवसाय मे यश कीर्ति मिलेगा। यदि पापग्रह साथ में हो तो व्यापार में धन हानि होगी। भारी धोखा होगा।

दशा—केतु की दशा-अतर्दशा मे रोजगार मिलेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य दशम भाव में केतु के साथ होने से राज्यपक्ष से लाभ रहेगा।
2. **केतु+चद्र**—व्ययेश चद्रमा दशम भाव मे उच्च का होकर केतु के साथ होने से 'यामिनीनाथ योग' बनेगा। जातक ऐश्वर्यशाली होगा।
3. **केतु+मंगल**—सुखेश-भाग्येश मंगल दशम स्थान में केतु के साथ होने से जातक प्रबल पराक्रमी एवं प्रतापी होगा
4. **केतु+बुध**—धनेश, लाभेश बुध दशम भाव मे केतु के साथ होने से जातक कुशल व्यापारी का प्रबधक होगा।
5. **केतु+गुरु**—पचमेश अष्टमेश गुरु दशम स्थान मे केतु के साथ होने से जातक पराक्रमी होगा। पुत्र जन्म के बाद जातक की उन्नति होगी।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश, दशमेश शुक्र स्थान मे केतु के साथ होने से 'मालव्य योग' बनेगा। जातक राजा या राजा से कम नही होगा।

7. **केतु+शनि**—षष्ठेश सप्तमेश शनि दशम में होने से राज सरकार में कष्ट पहुंचेगा।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में
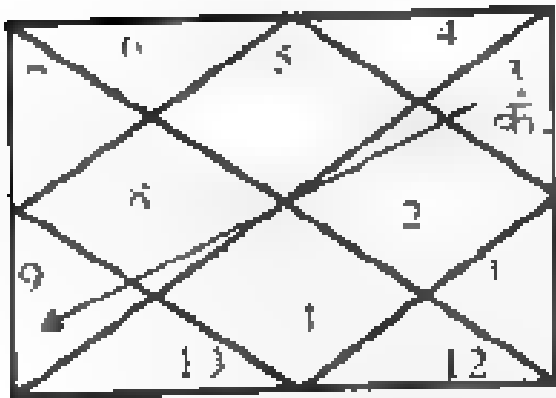
सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असन्तुष्ट रहता है। यहां एकादश स्थान में केतु मिथुन (नीच) राशि में होगा। जातक के भिन्न उत्तम होंगे। जातक को व्यापार में लाभ होगा। यदि केतु के साथ अन्य पापग्रह हो तो जातक को वैराग्य एवं निराशा घेर लेगी।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य एकादश स्थान में केतु के साथ व्यापार से लाभ करायेगा।
2. **केतु+चंद्र**—व्ययेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में केतु के साथ व्यापार से भारी नुकसान करायेगा।
3. **केतु+मंगल**—सुखेश भाग्येश मंगल एकादश स्थान में केतु के साथ होने से जातक को उद्योगपति बनायेगा।
4. **केतु+बुध**—धनेश बुध एकादश में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से जातक धनी संगीत होगा।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु एकादश स्थान में चलते व्यापार को नष्ट करेगा। जातक की उन्नति प्रथम संतान के बाद होगी।
6. **केतु+शुक्र**—तृतीयेश दशमेश शुक्र एकादश स्थान में केतु के साथ जातक को व्यापार से धन दिलायेगा।
7. **केतु+शनि**—षष्ठेश सप्तमेश शनि एकादश स्थान में केतु के साथ व्यापार में अचानक नौकर द्वारा धोखा दिलायेगा।

सिंहलग्न में केतु की स्थिति द्वादश स्थान में

सिंहलग्न में केतु लग्नेश सूर्य का शत्रु ग्रह है। सिंह में केतु उद्विग्न रहता है, असंतुष्ट रहता है। यहां द्वादश स्थान में केतु कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक
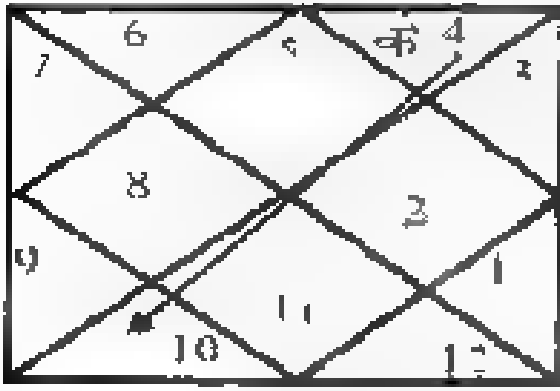
के पास धन का संग्रह बड़ी कठिनता से रहेगा। खर्च बढ़ चढ़कर होगा। जातक देश-परदेश की यात्राएं बहुत करेगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में विदेश गमन होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—लग्नेश सूर्य बारहवें केतु के साथ नेत्र विकार देगा। बाईं आंख का ऑपरेशन होगा।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ स्वगृही चंद्रमा विपरीत राजयोग के कारण जातक को विदेश में धन दिलायेगा।
3. **केतु+मंगल**—सुखेश, भाग्येश मंगल बारहवें केतु के साथ होने से द्विविवाह का योग बनता है
4. **केतु+बुध**—धनेश लग्नेश बुध बारहवें स्थान में केतु के साथ जातक को दिवालिया बना देगा।
5. **केतु+गुरु**—पंचमेश अष्टमेश गुरु केतु के साथ उच्च का होकर जातक को व्यर्थ का भटकायेगा अनुष्ठान सफल नहीं होंगे।
6. **केतु+शुक्र** तृतीयेश, दशमेश शुक्र केतु के साथ बारहवें नेत्र पीड़ा, सेक्स रोग देगा।
7. **केतु+शनि**—षष्टेश और सप्तमेश शनि बारहवें केतु के साथ होने से 'द्विभार्या योग' करायेगा

❑❑❑

अथ सूर्य मंत्र

विनियोग–ॐ आकृष्णेति मन्त्रस्य हिरण्यस्तूपांगिरस ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

(नीचे कोष्ठक में लिखे गये अंशों को हाथ की पांचों उंगलियों से छूते रहें।)

आह्वान–

उदय त महातेज तेजस्वी अभयप्रद
दुर्निरक्षसुगमनं सूर्यमावहवयाम्यहम्।।1।।
भो भो सूर्यगृहाध्यक्ष कलिंगविषयोद्भवः
रक्त काश्यप गोत्रेय द्विभुज पद्मलोचनः।।2।।
सप्ताश्ववाहनागच्छ पद्ममध्यवरप्रदः
अग्निदूतेति मन्त्रेण रुद्रीरूपीप्रतिष्ठित ।।3।।
ॐ अग्निदूतम्पुरादधे हव्यवाहमुपब्रुवे
देवां 2 आसादयादिह ।।22·17।।

देहागन्यास–आकृष्णेन शिरसि (सिर)। रजसा ललाटे (माथा)। वर्तमानो मुखं (मुह) निवेशयन् हृदय (हृदय)। अमृतं नाभौ (नाभि), मर्त्यं च कट्याम् (कमर)। हिरण्ययेन सविता ऊर्व्वोः (छाती)। रथेना जान्वोः (घुटना) देवो याति जंघयोः (जांघ)। भुवनानि पश्यन् पादयोः (पैर)।

अथ करन्यास–आकृष्णेन रजसा अंगुष्ठाभ्यां नमः। वर्तमानो निवेशयन् तर्जनीभ्यां नमः। अमृतं मर्त्यं च मध्यमाभ्यां नमः। हिरण्ययेन अनामिकाभ्यां नमः। सविता रथेना कनिष्ठिकाभ्यां नमः। देवो याति भुवनानि पश्यन् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यास–आकृष्णेन रजसा हृदयाय नमः (हृदय)। वर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा (सिर)। अमृतं मर्त्यं च शिखायै वषट् (शिखा)। हिरण्ययेन कवचाय हुं (दोनों कंधों)। सविता रथेना नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र)। देवो याति भुवनानि पश्यन्

अस्त्राय फट् (दाएं हाथ को सिर से ऊपर घुमाकर दाए हाथ की पहली दोनों उंगलियों से बाएं हाथ पर ताली बजायें।)

अथ ध्यानम्–पद् मासन: पद् मकरो द्विबाहु: पद् मद्युति, सप्ततुरगवाहन.।

दिवाकरो लोकगुरु किरीटी मयि प्रसाद विदधातु देव:।।

सूर्य गायत्री–ॐ आदित्याय विदमहे दिवाकराय धीमहि तन्न: सूर्य प्रचोदयात्।

सूर्य बीज मंत्र–ॐ ह्रा ह्री ह्रौ स: ॐ भूर्भुव: स्व: ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमाना निवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ॐ स्व: भुव: भू: ॐ स: ह्रौं ह्रीं ह्रां ॐ सूर्याय नम.

जपमंत्र–ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम: (नित्य जप 7000 प्रतिदिन)

सूर्याष्टक स्तोत्रम्

पदच्छेद एवं सन्धिच्छेद सहित

आदिदेव:, नमस्तुभ्यम्, प्रसीद, मम भास्कर।
दिवाकर, नमस्तुभ्यम्, प्रभाकर नमो, अस्तु ते।
सप्त, अश्वरथम्, आरूढम्, प्रचंडम् कश्यप आत्मजम्।
श्वेतम्, पद्मधरम्, देवम् तम्, सूर्यम्, प्रणमामि अहम्।।
लोहितम्, रथम्, आरूढम् सर्वलोकम्, पितामहम्।
महा, पापहरम् देवम् तम, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम्।।
त्रैगुण्यम् च महाशूरम्, ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वरम्।
महा पापहरम्, देवम्, तम्, सूर्यम् प्रणमामि अहम्।
बृंहितम्, तेज:, पुंजम्, च, वायुम्, आकाशम्, एव, च।
प्रभुम्, च, सर्वलोकानाम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम्।
बन्धूक, पुष्प, सकाशम्, हार, कुण्डल, भूषितम्।
एक-चक्र धरम्, देवम्, तम्, सूर्यम्, प्रणमामि, अहम्।
तम् सूर्यम्, जगत् कर्तारम्, महा-तेज: प्रदीपनम्।
महापाप-हरम्, देवम्, तम् सूर्यम्, प्रणमामि, अहम्।।
सूर्य अष्टकम्, पठेत् नित्यम्, ग्रह पीडा, प्रणाशनम्,
अपुत्र:, लभते, पुत्रम्, दरिद्र:, धनवान्, भवेत्।।

आमिषम्, मधुपानम्, च यः करोति, रवेः, दिने।
सप्त जन्म भवेत्, रोगी, प्रतिजन्म दरिद्रता।।
स्त्री, तैल मधु, मांसानि, यः त्यजेत् तु रवेर् दिने
न, व्याधि, शोक, दारिद्रयम्, सूर्यलोकम्, न गच्छति।

नोट—सूर्याष्टक सिद्ध स्तोत्र है। प्रातः स्नानोपरान्त तांबे के पात्र से सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए तदुपरान्त सूर्य के सामने खड़े होकर सूर्य को देखते हुए 108 पाठ नित्य करने चाहिए नित्य पाठ करने से मान सम्मान, नेत्र की ज्योति जीवन पर्यन्त बनी रहेगी।

आदित्यहृदयस्तोत्रम्

विनियोग—ॐ अस्य आदित्यहृदयस्तोत्रस्यागस्त्यऋषिरनुष्टुप् छन्दः, आदित्यहृदयभूतो भगवान् ब्रह्मा देवता निरस्ताशेषविघ्नतया ब्रह्मविद्यासिद्धौ सर्वत्र जयसिद्धौ च विनियोगः।

ऋष्यादिन्यास—ॐ अगस्त्यऋषये नमः शिरसि। अनुष्टुपछन्दसे नमः, मुखे। आदित्य हृदयभूत ब्रह्मदेवताये नमः हृदि। ॐ बीजाय नमः, गुह्ये। रश्मिमते शक्तये नमः, पादयोः। ॐ तत्सवितुरित्यादिगायत्रीकीलकाय नमः नाभौ।

करन्यास—इस स्तोत्र के अङ्गन्यास और करन्यास तीन प्रकार से किये जाते हैं केवल प्रणव से गायत्री मंत्र से अथवा 'रश्मिमते नमः' इत्यादि छः नाम-मंत्रों से यहां नाम मंत्रों से किये जाने वाले न्यास का प्रकार बताया जाता है—

ॐरश्मिमते अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ समुद्यते तर्जनीभ्यां नमः ॐ देवासुरनमस्कृताय मध्यमाभ्यां नमः ॐ विवस्वते अनामिकाभ्यां नमः। ॐ भास्कराय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ भुवनेश्वराय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि अङ्गन्यास—ॐ रश्मिमते हृदयाय नमः ॐ समुद्यते शिरसे स्वाहा ॐ देवासुरनमस्कृताय शिखायै वषट् ॐ विवस्वते कवचाय हुम् ॐ भास्कराय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ भुवनेश्वराय अस्त्राय फट्। इस प्रकार न्यास करके निम्नांकित मंत्र से भगवान सूर्य का ध्यान एवं नमस्कार करना चाहिए

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। तत्पश्चात् 'आदित्यहृदय' स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

ततो युद्धपरिश्रान्तं समरे चिन्तया स्थितम्।
रावणं चाग्रतो दृष्ट्वा युद्धाय समुपस्थितम्।।1।।
दैवतैश्च समागम्य द्रष्टुमभ्यागतो रणम्।
उपागम्याब्रवीद् राममगस्त्यो भगवांस्तदा।।2।।

'उधर श्री रामचन्द्र जी युद्ध से थककर चिंता करते हुए रणभूमि में खड़े थे इतने में रावण भी युद्ध के लिये उनके सामने उपस्थित हो गया। यह देखकर भगवान अगस्त्य मुनि जो देवताओं के साथ युद्ध देखने के लिये आये थे, श्री राम के पास जाकर बोले' ।।1-2।

राम राम महाबाहो शृणु गुह्यं सनातनम्।
येन सर्वानरीन् वत्स समरे विजयिष्यसे ।3।
आदित्यहृदयं पुण्यं सर्वशत्रुविनाशनम्।
जयावहं जपं नित्यमक्षयं परमं शिवम्।।4।।
सर्वमंगलमांगल्यं सर्वपापप्रणाशनम्
चिन्ताशोकप्रशमनमायुर्वर्धनमुत्तमम् ।5।

'सबके हृदय में रमण करने वाले महाबाहो राम! यह सनातन गोपनीय स्तोत्र सुनो वत्स! इसके जप से तुम युद्ध में अपने समस्त शत्रुओं पर विजय पा जाओगे। इस गोपनीय स्तोत्र का नाम है आदित्यहृदय। यह परम पवित्र एवं सम्पूर्ण शत्रुओं का नाश करने वाला है। इसके जाप से सदा विजय की प्राप्ति होती है। यह नित्य अक्षय और परम कल्याणमय स्तोत्र है। सम्पूर्ण मंगलों का भी मंगल है। इससे सब पापों का नाश हो जाता है। यह चिंता और शोक को मिटाने तथा आयु को बढ़ाने वाला उत्तम साधन है'।3-5।

रश्मिमन्तं समुद्यन्तं देवासुरनमस्कृतम्।
पूजयस्व विवस्वन्तं भास्करं भुवनेश्वरम्।।6।
सर्वदेवात्मको ह्येष तेजस्वी रश्मिभावनः।
एष देवासुरगणाल्लोकान् पाति गभस्तिभिः ।7।।
एष ब्रह्मा च विष्णुश्च शिवः स्कन्दः प्रजापतिः।
महेन्द्रो धनदः कालो यमः सोमो ह्यपां पतिः।।8।।
पितरो वसवः साध्या अश्विनौ मरुतो मनुः।
वायुर्वह्निः प्रजाः प्राण ऋतुकर्ता प्रभाकरः।।9।।
आदित्यः सविता सूर्यः खगः पूषा गभस्तिमान्।
सुवर्णसदृशो भानुर्हिरण्यरेता दिवाकरः।।10।
हरिदश्वः सहस्रार्चिः सप्तसप्तिर्मरीचिमान्।
तिमिरोन्मथनः शम्भुस्त्वष्टा मार्तण्डकोऽशुमान्।।11।

हिरण्यगर्भः शिशिरस्तपनोऽहस्करो रविः।
अग्निगर्भोऽदितेः पुत्रः शङ्खः शिशिरनाशनः॥ 2॥
व्योमनाथस्तमोभेदी ऋग्यजुःसामपारगः।
घनवृष्टिरपां मित्रो विन्ध्यवीथीप्लवंगमः॥13॥
आतपी मण्डली मृत्युः पिङ्गलः सर्वतापनः।
कविर्विश्वो महातेजा रक्तः सर्वभवोद्भवः॥14॥
नक्षत्रग्रहताराणामधिपो विश्वभावनः।
तेजसामपि तेजस्वी द्वादशात्मन् नमोऽस्तु ते॥15॥

भगवान् सूर्य अपनी अनंत किरणों से सुशोभित (प्रकाशित) हैं। ये नित्य उदय होने वाले (समुद्यन) देवता और असुरों से नमस्कृत, विवस्वान नाम से प्रसिद्ध, प्रभा का विस्तार करने वाले भास्कर और संसार के स्वामी (भुवनेश्वर) हैं।

तुम इनका (रश्मिमते नमः, समुद्यते नमः, देवासुरनमस्कृताय नमः, विवस्वते नमः, भास्कराय नमः, भुवनेश्वराय नमः – इन नाम मंत्रों के द्वारा) पूजन करो। सम्पूर्ण देवता इन्हीं के स्वरूप हैं। ये तेज की राशि तथा अपनी किरणों से जगत को सत्ता एवं स्फूर्ति प्रदान करने वाले हैं। ये ही अपनी रश्मियों का प्रसार करके देवता और असुरों सहित सम्पूर्ण लोकों का पालन करते हैं। ये ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव, स्कन्द, प्रजापति, इन्द्र, कुबेर, काल, यम, चन्द्रमा, वरुण, पितर, वसु, साध्य, अश्विनीकुमार, मरुद्गण, मनु, वायु, अग्नि, प्रजा, प्राण, ऋतुओं को प्रकट करने वाले तथा प्रभा के पुत्र हैं। इन्हीं के नाम आदित्य (अदितिपुत्र), सविता (जगत् को उत्पन्न करने वाले), सूर्य (सर्वव्यापक), खग (आकाश में विचरनेवाले), पूषा (पोषण करने वाले), गभस्तिमान् (प्रकाशमान), सुवर्णसदृश, भानु (प्रकाशक), हिरण्यरेता (ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के बीज), दिवाकर (रात्रि का अंधकार दूर करके दिन का प्रकाश फैलानेवाले), हरिदश्व (दिशाओं में व्यापक अथवा हरे रंग के घोड़े वाले), सहस्रार्चि (हजारों किरणों से सुशोभित), सप्तसप्ति (सात घोड़ों वाले), मरीचिमान (किरणों से सुशोभित), तिमिरोन्मथन (अंधकार का नाश करनेवाले), शम्भु (कल्याण के उद्गम स्थान), त्वष्टा (भक्तों का दुःख दूर करने अथवा जगत् का संहार करने वाले), मार्तण्डक (ब्रह्माण्ड को जीवन प्रदान करने वाले), अंशुमान (किरण धारण करने वाले), हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा), शिशिर (स्वभाव से ही सुख देने वाले), तपन (गर्मी पैदा करने वाले), अहस्कर (दिनकर), रवि (सबकी स्तुति के पात्र), अग्निगर्भ (अग्नि को गर्भ में धारण करने वाले), अदितिपुत्र, शंख (आनन्दस्वरूप एवं व्यापक), शिशिरनाशक (शीत का नाश करने वाले), व्योमनाथ (आकाश के

स्वामी, तमोभेदी (अंधकार को नष्ट करने वाले), ऋग्, यजु: और सामवेद के पारगामी, घनवृष्टि (घनी वृष्टि के कारण), अपां मित्र (जल को उत्पन्न करने वाले), विन्ध्यवीथीप्लवङ्गम (आकाश में तीव्र वेग से चलनेवाले), आतपी (घाम उत्पन्न करने वाले), मण्डली (किरण समूह को धारण करने वाले), मृत्यु (मौत के कारण), पिङ्गल (भूरे रंग वाले), सर्वतापन (सबको ताप देने वाले), कवि (त्रिकालदर्शी), विश्व (सर्वस्वरूप), महातेजस्वी, रक्त (लाल रंग वाले), सर्वभवोद्भव (सबकी उत्पत्ति के कारण), नक्षत्र, ग्रह और तारों के स्वामी, विश्वभावन (जगत् की रक्षा करनेवाले), तेजस्वियों में भी अति तेजस्वी तथा द्वादशात्मक (बारह स्वरूपों में अभिव्यक्त) हैं। (इन सभी नामों से प्रसिद्ध सूर्यदेव! आपको नमस्कार है)'॥6-15॥

नमः पूर्वाय गिरये पश्चिमायाद्रये नमः।
ज्योतिर्गणानां पतये दिनाधिपतये नमः॥16॥
जयाय जयभद्राय हर्यश्वाय नमो नमः।
नमो नमः सहस्रांशो आदित्याय नमो नमः॥17॥
नम उग्राय वीराय सारङ्गाय नमो नमः।
नमः पद्मप्रबोधाय प्रचण्डाय नमोऽस्तु ते॥18॥
ब्रह्मेशानाच्युतेशाय सूरायादित्यवर्चसे
भास्वते सर्वभक्षाय रौद्राय वपुषे नमः॥19॥
तमोघ्नाय हिमघ्नाय शत्रुघ्नायामितात्मने।
कृतघ्नघ्नाय देवाय ज्योतिषां पतये नमः॥20॥
तप्तचामीकराभाय हरये विश्वकर्मणे।
नमस्तमोऽभिनिघ्नाय रुचये लोकसाक्षिणे॥21॥

'पूर्वगिरि-उदयाचल तथा पश्चिमगिरि-अस्ताचल के रूप में आपको नमस्कार है। ज्योतिर्गणों (ग्रहों और तारों) के स्वामी तथा दिन के अधिपति आपको प्रणाम है। आप जय स्वरूप तथा विजय और कल्याण के दाता हैं। आपके रथ में हरे रंग के घोड़े जुते रहते हैं। आपको बारबार नमस्कार है। सहस्रों किरणों से सुशोभित भगवान् सूर्य! आपको बारंबार प्रणाम है। आप अदिति के पुत्र होने के कारण आदित्यनाम से प्रसिद्ध हैं, आपको नमस्कार है। उग्र (अभक्तों के लिये भयंकर), वीर (शक्ति-सम्पन्न) और सारङ्ग (शीघ्रगामी) सूर्यदेव को नमस्कार है। कमलों को विकसित करने वाले प्रचण्ड तेजधारी मार्तण्ड को प्रणाम है। (परात्पर रूप में) आप ब्रह्मा, शिव और विष्णु के भी स्वामी हैं। सूर आपकी संज्ञा है, यह सूर्यमण्डल आपका

एतच्छ्रुत्वा महातेजा नष्टशोकोऽभवत् तदा।
धारयामास सुप्रीतो राघवः प्रयतात्मवान्।।28।।

आदित्यं प्रेक्ष्य जप्त्वेदं परं हर्षमवाप्तवान्।
त्रिराचम्य शुचिर्भूत्वा धनुरादाय वीर्यवान्।।29

रावणं प्रेक्ष्य हृष्टात्मा जयार्थं समुपागमत्।
सर्वयत्नेन महता वृतस्तस्य वधेऽभवत्।।30।।

अथ रविरवदन्निरीक्ष्य रामं मुदितमनाः परमं प्रहृष्यमाणः।
निशिचरपतिसंक्षयं विदित्वा सुरगणमध्यगतो वचस्त्वरेति ।।31।।

'उनका उपदेश सुनकर महातेजस्वी श्रीरामचन्द्रजी का शोक दूर हो गया। उन्होंने प्रसन्न होकर शुद्धचित्त से आदित्य हृदय को धारण किया और तीन बार आचमन करके शुद्ध हो भगवान सूर्य की ओर देखते हुए इसका तीन बार जप किया। इससे उन्हें बड़ा हर्ष हुआ। फिर परम पराक्रमी रघुनाथ जी ने धनुष उठाकर रावण की ओर देखा और उत्साह पूर्वक विजय पाने के लिये वे आगे बढ़े। उन्होंने पूरा प्रयत्न करके रावण वध का निश्चय किया उस समय देवताओं के मध्य में खड़े हुए भगवान सूर्य ने प्रसन्न होकर श्रीरामचन्द्रजी की ओर देखा और निशाचर राज रावण के विनाश का समय निकट जानकर हर्षपूर्वक कहा 'रघुनन्दन! अब जल्दी करो' ।।28 31।।

रविवार व्रत कथा

शास्त्रों के अनुसार सूर्य को देवता का स्थान दिया गया है, सूर्य का वार रविवार होता है। सूर्य नवग्रहों के भी प्रथम देवता हैं, सूर्य देव महान् तेजस्वी एवं बली हैं, रविवार व्रत का पालन करने से मानसिक क्लेशों से मुक्ति मिलती है तथा हृदय को शांति प्राप्त होती है। रोग दूर होते हैं, संतान की प्राप्ति होती है तथा निर्धनों को धन की प्राप्ति होती है, अर्थात् सूर्यदेव के पूजन व उपवास से समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है.

सूर्य का तांत्रिक मंत्र– ॐ ह्रीं घृणिः सूर्याय नमः। ॐ सूर्याय नमः ॥

विधि विधान–रविवार को प्रातःकाल शय्या त्याग कर तथा शौचादि नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण करने चाहिए। तत्पश्चात् पूजन के स्थान को गोबर से लीप लें। तत्पश्चात् सूर्यदेव की प्रतिमा के समक्ष धूप दीप जलाएं व सूर्य के तांत्रिक मंत्र का इक्कीस बार जाप करें। तत्पश्चात् व्रतकथा पढ़ें, दिन में एक समय भोजन करें तथा भोजन से पूर्व सूर्य देव को भोग लगाएं।

व्रत कथा–किसी नगर में एक वृद्धा रहती थी, प्रत्येक रविवार को प्रातःकाल वह अपने घर को गोबर से लीपकर, नहा धोकर सूर्यदेव की पूजा करती थी, तत्पश्चात् वह भोजन बनाकर भगवान को भोग लगाकर तब स्वयं भोजन करती थी, सूर्यदेव की कृपा से वृद्धा के घर में धन धान्य व सुख समृद्धि की वृद्धि होने लगी व उसे कोई कष्ट नहीं होता, वृद्धा रविवार को अपना घर लीपने के लिए जिस पड़ोसिन के यहां से गोबर लाती थी, वह वृद्धा की प्रतिष्ठा एवं सम्पन्नता देखकर उससे ईर्ष्या करने लगी, उसने अपनी गाय को घर के अंदर बांधना आरम्भ कर दिया। रविवार के दिन उस वृद्धा को गोबर नहीं मिला और वह घर को न लीप पाई। दुःखी हो उसने न तो स्नान किया, न भोजन बनाया तथा न ही भगवान को भोग लगाया, सारा दिन ऐसे ही बीत गया, वह रात्रि को भूखी प्यासी ही सो गई। रात में भगवान ने उसे सपने में दर्शन दिए तथा उससे भोग न लगाने का कारण पूछा, बुढ़िया ने कहा, "भगवन मुझे आज गोबर नहीं मिला और इसीलिए मैंने भोजन नहीं बनाया और

न ही भोग लगाया।" सूर्य देव वृद्धा से बोले "माता! हम तुम्हें ऐसी गाय प्रदान करते हैं जो तुम्हारी प्रत्येक इच्छा पूर्ण करेगी। तुम्हारी भक्ति व निष्ठा से मैं बहुत प्रसन्न हूं। आप सदैव सुखी रहें एवं आपकी समस्त इच्छाएं पूर्ण हों।" ऐसा वरदान देकर सूर्यदेव अंतर्ध्यान हो गए। सवेरे जब वृद्धा सोकर उठी तो उसने अपने घर में अति सुन्दर गाय को खड़ी पाया, उसके समीप ही उसका बछड़ा बंधा हुआ था। वृद्धा गाय व बछड़े को पाकर बहुत खुश हुई तथा वह गाय और बछड़े को घर से बाहर बांध आई। वृद्धा का समय गाय की सेवा में बहुत अच्छा व्यतीत होने लगा। जब पड़ोसिन ने वृद्धा के घर सुन्दर गाय व बछड़े को बंधा देखा तो वह द्वेष और ईर्ष्या से जल उठी। अगले दिन सवेरे जब पड़ोसिन घर के बाहर आई तो उसने देखा कि वृद्धा की गाय ने सोने का गोबर दिया है तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह जल्दी से सारा गोबर उठा ले गई और अपनी गाय का गोबर वहां डाल गयी। प्रतिदिन यह क्रम बन गया परन्तु वृद्धा को इसकी खबर न लगी। सूर्य देव ने जब देखा कि सीधी सादी वृद्धा को उसकी पड़ोसिन मूर्ख बना रही है तो उन्होंने एक दिन सायंकाल को बहुत तेज आंधी चलाई। आंधी के कारण वृद्धा ने गाय व बछड़े को अंदर बांध लिया। जब वृद्धा सुबह उठी तो उसने गाय के पास सोने का गोबर पड़ा हुआ पाया। यह देख उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वृद्धा अब प्रतिदिन गाय को घर में बांधने लगी। यह देख पड़ोसिन बुरी तरह जल उठी। पड़ोसिन जलकर नगर के राजा के पास गई और कहा -"महाराज मेरे घर के निकट एक वृद्धा रहती है जिसकी गाय सोने का गोबर देती है। उस वृद्धा का इतने सोने का क्या काम? आप उसे अपने महल में ले आईये।" राजा ने उसकी बात सुनकर तुरन्त ही सैनिकों को वृद्धा के यहां से गाय को ले आने का आदेश दिया। कुछ ही देर में राजा के सेवक वृद्धा के घर गए और उसकी गाय को खोलकर ले गए। वृद्धा ने बहुत विनती की परन्तु उन्होंने वृद्धा की कोई बात न सुनी। वृद्धा ने गाय के चले जाने पर दुःखी हो भोजन नहीं किया और वह सूर्यदेव का स्मरण करती हुई रोती रोती भूमि पर ही सो गई। इधर राजा गाय को पाकर अति प्रसन्न हुआ। उसने गाय को महल में बंधवा दिया। प्रातःकाल राजा ने उठकर देखा कि सारा महल गोबर से भरा हुआ है। यह देखकर वह क्रोध में चिल्लाया और सेवकों से महल साफ करने के लिए कहा। रात्रि में सूर्य देव ने राजा को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा "राजन जो गाय तूने वृद्धा से छीनी है वह उसे वापस कर दे अन्यथा तेरा सर्वनाश हो जाएगा।" प्रातःकाल ही राजा ने सेवकों को आज्ञा दी कि वृद्धा की गाय को सम्मान सहित उसके घर दे आओ। राजा ने पड़ोसिन को दण्ड दिया तथा नगर वासियों को कहा कि राज्य की खुशहाली के लिए रविवार को उपवास करें व पूजन करें।

व्रत के पालन करने से राजा के नगर में हर ओर सुख-समृद्धि का वास हो गया और सभी आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। इस प्रकार जो भी रविवार का व्रत करता है उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है

रविवार की आरती

कहुं लगि आरती दास करेंगे
सकल जगत जाकी जोत विराजे।टेक।
अमित कोटि जाके बाजा बाजे
कहा भयो झनकार करे हो राम।
सात समुद्र जाके चरणनि बसे,
कहा भयो जल कुम्भ भरे हो राम।
चार वेद जाके मुख की शोभा
कहा भयो ब्रह्म वेद पढ़े हो राम।
कोटि भानु जाके नख की शोभा,
कहा भयो मन्दिर दीप धरे हो राम।
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक,
नारद मुनि जाको ध्यान धरे हो राम।
भार अठारह रामा बलि जाके,
कहा भयो शिर पुष्प धरे हो राम।
हिम मदार जाको पवन झकोरे
कहा भयो शिर चंवर ढुरे हो राम।
छप्पन भोग जाके नितप्रति लागे,
कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम।
लख चौरासी बन्द छुड़ाये
केवल हरियश नामदेव गाये हो राम

❑❑❑

सिंहलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–सिंहलग्न में सूर्य लग्नेश है। अतः इस लग्न के लिए माणिक्य अत्यन्त शुभ फलदायक होता है। इस लग्न के जातकों को आजीवन माणिक्य धारण करना चाहिए। इसके धारण करने से जातक शत्रुओं के मध्य निर्भय होकर रह सकेंगे और शत्रु पक्ष से उनके विरुद्ध जो भी कार्यवाही होगी उससे उनकी रक्षा होती रहेगी यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की रक्षा करेगा और जातक की आयु में वृद्धि होगी। इस लग्न के जातक अत्यंत भावुक होते हैं। अतः अपने मानसिक संतुलन को बनाये रखने के लिए तथा आत्मबल की उन्नति के लिए सदा माणिक्य धारण करना चाहिए। आपका जीवन रत्न माणिक्य है।
2. **मोती**–सिंहलग्न में चन्द्र द्वादश भाव का स्वामी है। अतः इस लग्न के जातक को मोती धारण नहीं करना चाहिए, यदि चंद्र द्वादश भाव में स्वराशि में स्थित हो तो चंद्र की महादशा में मोती धारण किया जा सकता है।
3. **मूंगा**–सिंहलग्न में भी चतुर्थ और नवम भावों का स्वामी होने के कारण मंगल कारक ग्रह माना जाता है। इसके धारण करने से मानसिक शान्ति, गृह तथा भूमि लाभ धन-लाभ, मातृ-सुख, यश, मान-प्रतिष्ठा और भाग्योन्नति होती है। यदि यह रत्न माणिक्य के साथ धारण किया जाये तो विशेष फल प्रदान करता है
4. **पन्ना**–सिंहलग्न के लिए बुध द्वितीय और एकादश का स्वामी होता है। इस लग्न के जातक को बुध की महादशा में पन्ना धारण करने से संतान सुख पारिवारिक सुख, अतुल धन-लाभ, मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति है।
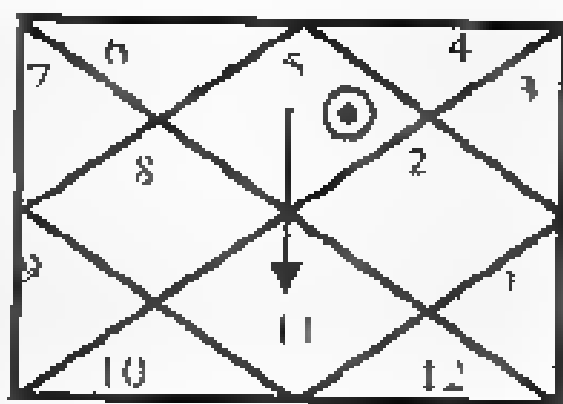
5. **पुखराज**—सिंहलग्न के लिए गुरु पंचम त्रिकोण और अष्ट भाव का स्वामी होता है। पंचम त्रिकोण का स्वामी होने के कारण वह इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना जाता है अत: सिंहलग्न के जातकों के लिए पीला पुखराज धारण करना अत्यन्त लाभदायक होगा। यदि यह माणिक्य के साथ धारण किया जाय तो अति उत्तम अत्यन्त शुभ ग्रह है। इस लग्न के जातक पीला पुखराज सदा रक्षा कवच के समान धारण कर सकते हैं गुरु की महादशा में यह अत्यन्त लाभदायक होता है। पुखराज यदि नवम स्थान (भाग्य) के स्वामी सूर्य के रत्न माणिक्य के साथ धारण किया जाय तो उससे शुभ फल में वृद्धि होगी

6. **हीरा**—हीरा लग्न के लिए शुक्र तृतीय व एकादश का स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह नहीं माना जाता। परन्तु यदि यह एकादश का स्वामी हो तो शुक्र की महादशा में हीरा धारण करने से धन प्राप्ति तथा मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

7. **नीलम**—सिंहलग्न के लिए शनि षष्ठ (दु:खस्थान) और सप्तम (मारक) भावों का स्वामी होने के कारण अशुभ ग्रह माना गया है शनि लग्नेश सूर्य का शत्रु भी है। अत: इस लग्न के जातक को नीलम धारण नहीं करना चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्य पूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**—पुखराज सवा पांच रत्ती माणिक्य सवा पांच रत्ती।
2. **भाग्योदय हेतु**—माणिक्य सवा पांच रत्ती, मूंगा सवा पांच रत्ती।
3. **आरोग्य हेतु**—माणिक्य सवा पांच रत्ती मूंगा सवा पांच रत्ती
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**—माणिक्य-पन्ना-मूंगा तीनों सवा चार चार रत्ती संयुक्त रूप से बीसा यंत्र में धारण करें।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

सिख धर्म के संस्थापक गुरुनानक देव
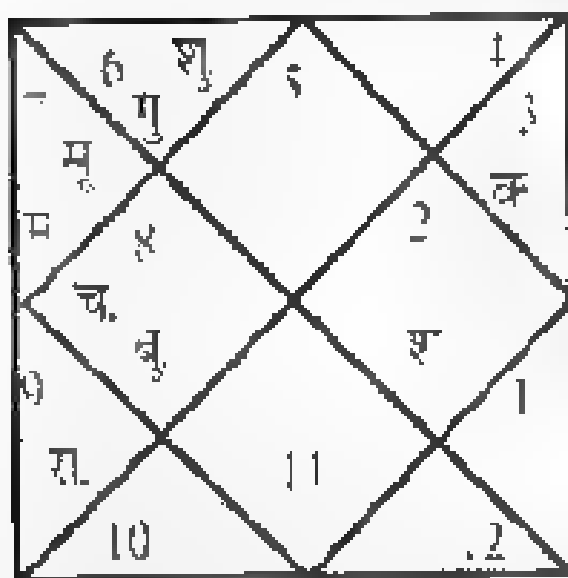
जन्म तिथि 8.11 1470, समय रात्रि 1.00, स्थान- पाकिस्तान (ननकाना), सिख धर्म के संस्थापक सतगुरु नानकदेव का काल इतिहास में (1469 1539) माना गया है। पर इनका असली जन्म विक्रम सम्वत् 1526 वैशाख शुक्ल तृतीया लाहौर जिले में स्थित 'राईभोईका' गांव में हुआ। इस गांव का नाम बाद में 'ननकाना' पड़ा क्योंकि नानकदेव का जन्म यहां हुआ था श्री नानकदेव के घरेलू ज्योतिषी एवं पुरोहित का नाम श्री हरदयाल था जिनसे यह कुण्डली प्राप्त हुई श्री नानकदेव महान् कवि थे। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने हिन्दू व मुस्लिम एकता का पाठ सबको पढ़ाया। हिन्दू व मुस्लिम धर्म में फैली कुरीतियों के प्रति जेहाद छेड़ा तथा सभी धर्मों के सच्चे व अच्छे उपदेशों को 'गुरु ग्रंथ साहब' और गुरुवाणी' में स्थान दिया गुरु नानक देव 68 वर्ष तक जीवे इनका स्वर्गवास सम्वत् 1595 आसोज सुदी दशमी को हुआ

चंद्र पश्येद्यदादित्यं बुधः पश्येन्निशापतिम्।
अस्मिन्योगे तु यो जातः स भवेद्वसुधाधिपः॥

–मानसागरी श्लोक 5 पृ 221

जिसके जन्म काल में चंद्रमा सूर्य को देखता हो और बुध चंद्रमा को देखता हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है। ईश्वरीय अवतार श्री गुरु नानक देव की कुण्डली में
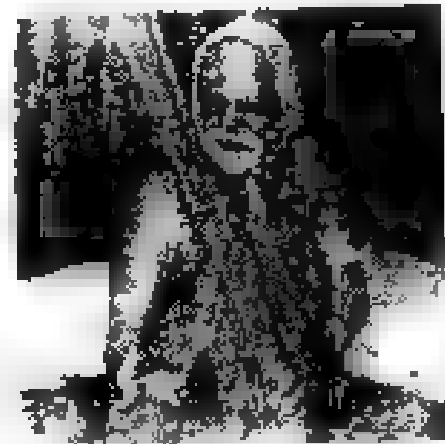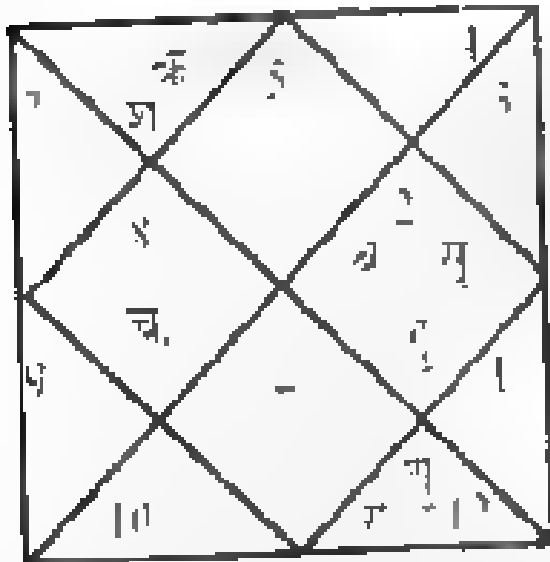
का परस्पर परिवर्तन योग, 5. अष्टमेश गुरु छठे होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। इन्होंने सम्वत् 1982 पौष कृष्ण पचमी को सन्यास की दीक्षा ली।

महान् दार्शनिक राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन्

7
6 शु. बु.
5 च. सू.
रा. श. 4
3
2
8 मं. गु.
9
1
11
10 के.
12
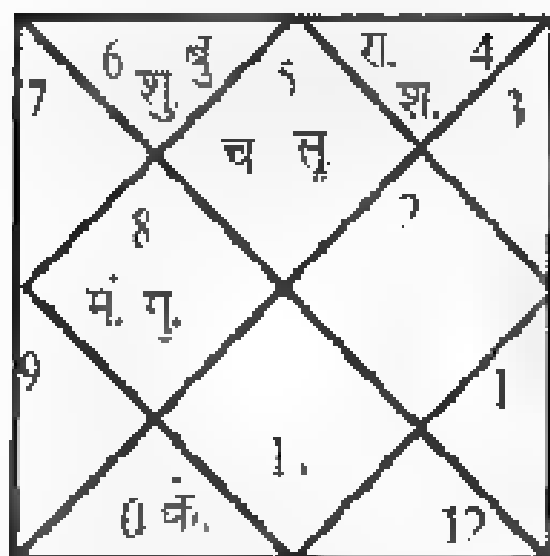
जन्म तिथि 5/6 सितम्बर 1888 समय 6.00 प्रातः स्थान मद्रास, डॉ. राधाकृष्णन के नाम से 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है, ज्योतिष के प्रसिद्ध ग्रंथ मानसागरी के श्लोक 4 पृष्ठ 221 के अनुसार जिस कुंडली में एक भी ग्रह बलवान होकर केंद्र या त्रिकोण में हो तो राजयोग श्रेष्ठ होता है। इस कुण्डली में लग्नाधिपति सूर्य चंद्रमा के साथ लग्न में स्थित है भाग्येश मंगल राजयोग कारक होकर स्वगृही है केंद्र में है। बुध उच्च का है शुक्र व बुध की युति 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि कर रही है गुरु राजयोगकारक है, स्वगृहाभिलाषी है एवं केंद्र में है, इन सब योगों के कारण डॉ राधाकृष्णन् ने भारत के सर्वोच्च गरिमामय, राष्ट्रपति पद की शोभा बढ़ाई पंचमेश गुरु विद्या भवन का अधिपति होकर मंगल के साथ होने से इन्होंने दर्शन व इतिहास के क्षेत्र में भी रचनात्मक कार्य कर चिरस्थाई यश की प्राप्ति की।

डॉ. शंकर दयाल शर्मा, पूर्व राष्ट्रपति

7 म
6
5 बु. सू.
शु. श. 4
3 गु
2 के
8 रा.
9 च
1
11
10
12
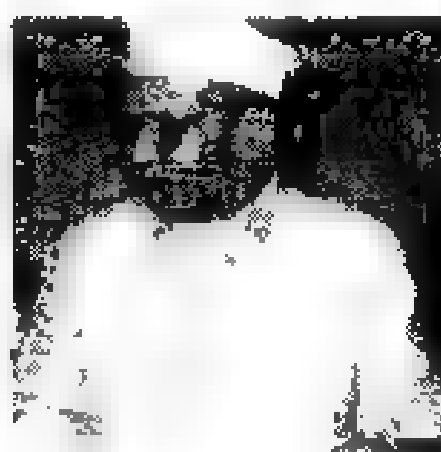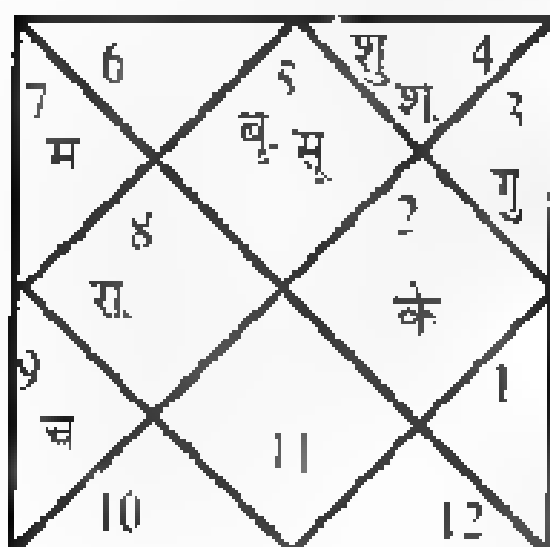
जन्म तिथि 19.8.1918 समय 1.00 प्रातः स्थान-भोपाल (मध्य प्रदेश)। बहुत ही लंबे अंतराल से डा. शंकर दयाल शर्मा साहित्यिक गतिविधियों के साथ भारतीय राजनीति से जुड़े रहे। जीवन की सुदूर लंबी यात्रा के अंतिम चरण में भारत के सर्वोच्च सर्वप्रभुत्वसंपन्न एवं महिमामंडित राष्ट्रपति के गरिमामय पद पर नवम राष्ट्रपति के रूप में 25 जुलाई 1992 को पदासीन हुए।

ज्योतिष की दृष्टि से लग्नेश सूर्य अपनी मूलत्रिकोण राशि में 'बुधादित्य' योग के साथ लग्न में बैठकर प्रबल राजयोग की सृष्टि कर रहा है। गुरु चंद्र की परस्पर दृष्टि संबंध 'गजकेसरी योग' द्वारा राजयोग की पुष्टि कर रहा है। सिंहलग्न में गुरु एवं मंगल दो ग्रह ही राजयोग प्रदाता होते हैं। मंगल इस कुंडली में स्वगृहाभिलाषी होकर अपनी उच्च राशि को, स्वराशि मेष को एवं राज्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखता हुआ उत्तम राजयोग की सृष्टि कर रहा है।

जैनाचार्य श्री पद्मसागर सूरी

जन्म 9 10 सितम्बर 1935 मंदिर मार्ग के महान् संत श्री जैनाचार्य सूरी की कुण्डली में 1. कुलदीपक योग, 2. उभयचरी योग, 3. दुर्घटना योग 4. रविकृत राजयोग 5. रूचक योग, जैसे महान् योग पड़े हैं

जयगुरुदेव

जयगुरुदेव के नाम से अलग सम्प्रदाय चलाने वाले टाट के कपड़े पहनकर चुनावों में खड़े होने वाले एवं ज्योतिषी बनकर भविष्यवाणियों के माध्यम से भय फैलाने वाले जयगुरुदेव का अलग इतिहास है

मराठा सरदार छत्रपति शिवाजी
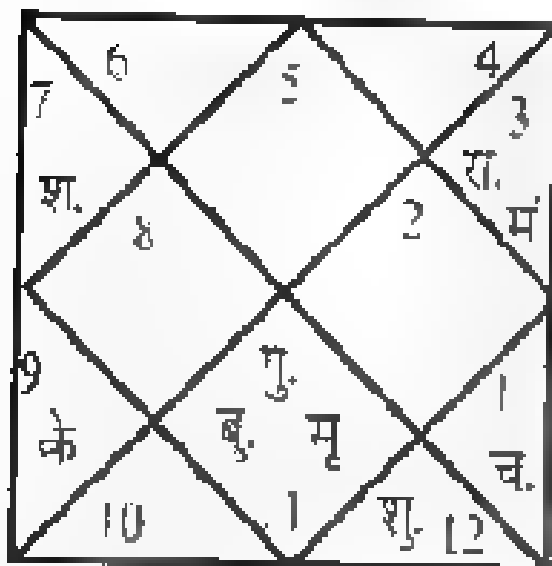
जन्म तिथि 19.2.1630, समय- 8.26 बजे, स्थान-बीजापुर। छत्रपति वीर शिवाजी का जन्म बीजापुर (महाराष्ट्र) में शाहजी भोंसले के घर में हुआ। जो कि अहमदनगर स्टेट के प्रमुख सेनापति थे शिवाजी जन्म से ही नेतृत्व गुणों से परिपूर्ण युद्धकला में प्रवीण महानायक थे। उन्होंने 'हिन्दू साम्राज्य' स्थापना के उद्देश्य से छापामार प्रणाली के द्वारा 'शिवसेना' की स्थापना की। उन्होंने तत्कालीन मुगल सम्राट औरंगजेब के छक्के छुड़ा दिये। औरंगजेब के खूंखार सेनापति अफजल खां को शेर नाखूनों से चीरकर मार डाला। मुगल सल्तनत को समाप्त करने में छत्रपति शिवाजी का योगदान सबसे अधिक रहा। उन्होंने स्वतंत्र 'महाराष्ट्र' की स्थापना की

तीसरे घर का स्वामी त्रिकोण में हो तो 'कुलदीपक नाम' का राजयोग होता है।

कुलदीपकयोगः स्याद्भ्रातृपो यदि कोणगः।
परोपकारयुक्तः स्याद्योगे स्मिन् मनुजस्तदा॥

—योगचिंतामणि श्लोक 8/पृ. 4

तीसरे घर का स्वामी नवम या पांचवें स्थान में हो तो कुलदीपक नाम का राजयोग होता है। शनि उच्च का गुरु सूर्य केंद्र में तथा भाग्य भवन में शुक्र होने के कारण ये परम साहसी उत्कृष्ट योद्धा सफल राजनीतिज्ञ एवं प्रबल पराक्रमी छत्रधारी राजा हुए

छठे घर का स्वामी शनि पराक्रम स्थान में उच्च का होने से ये समूल नाश करने में पूर्णत: सक्षम व समर्थ थे।

जनरल माणेक शा
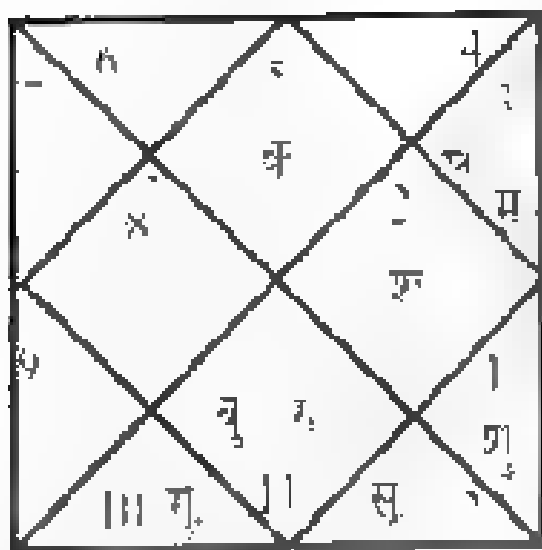
कीर्तिमस्त थल सेनाध्यक्ष समार के पहले जनरल जिन्होंने एक लाख पाकिस्तानी सैनिकों को बिना खून की एक बूंद बहाये गिरफ्तार कर लिया।

स्व. राजीव गांधी (पूर्व प्रधानमंत्री)
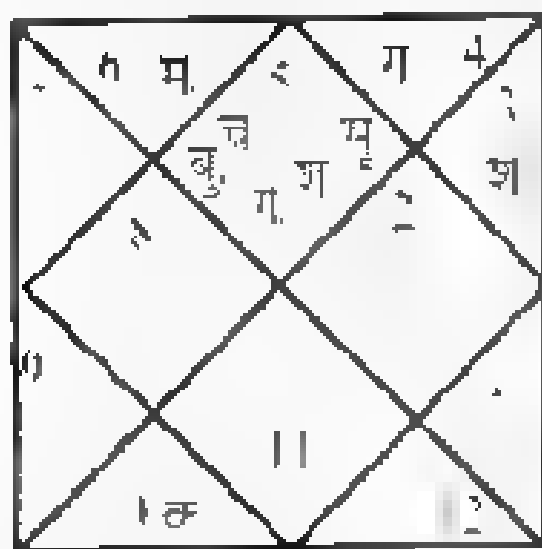
जन्म तिथि 20.8.1944 जन्म समय-7.30 प्रात. प्रस्तुत कुण्डली में लग्नस्थ पंचग्रह युति के कारण ही प्रबल राजयोग बना। केन्द्र त्रिकोण ग्रहों का परस्पर संबंध बना तथा 'त्रिपुष्करलक्ष्मी योग' की सृष्टि हुई। भास्कर योग बुधादित्य योग, यामिनी नाथयोग, गजकेसरी योग उभयचारी योग दुधरयोग के साथ भाव भावेश संबंध ने उन्हें प्रधानमंत्री जैसे उच्च पद पर सहज में ही पहुंचा दिया। परन्तु परस्पर शत्रु ग्रहों की युति के कारण 'शस्त्रहत योग' की भी सृष्टि हुई। श्री राजीव गांधी पर प्राणघातक हमला होगा जिसमें वे मारे जाएंगे यह अचूक भविष्यवाणी हत्या के एक वर्ष पूर्व हमारे द्वारा 'गल्फ न्यूज' 'खलीज टाइम्स', 'जलते दीप' वगैरह में कर दी गई थी जो अक्षरश: सत्य हुई

श्री रविशंकर शुक्ला, पूर्व मुख्यमंत्री (मध्यप्रदेश)

जन्म तिथि-31 [illegible] 18[illegible] जन्म समय 9.00, स्थान मध्यप्रदेश। प्रस्तुत कुण्डली मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री प. रविशंकर शुक्ला की है

त्रिकोण सप्तमे लग्ने भवति च यदा ग्रहा।
हंसयोग विजानीयात्स्ववशम्यात्र पालकः॥

लग्न चंद्रिका, श्लोक 30/पृ. 14
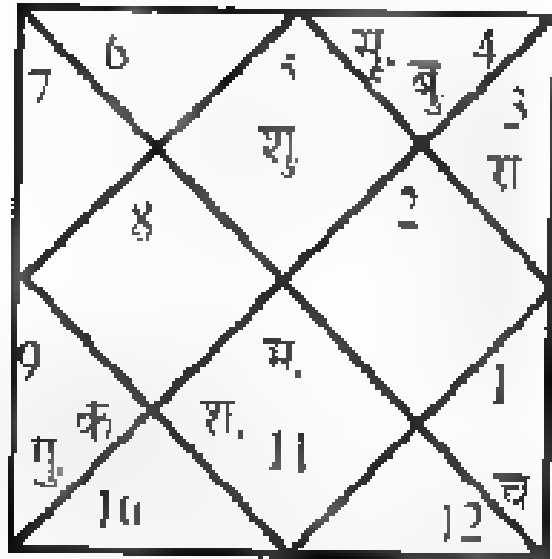
त्रिकोण में सातवें लग्न में ग्रह हों तो यह सबको पालन करने वाले वाला हंस नाम का श्रेष्ट राजयोग होता है। इस कुंडली में शनि अपनी मूल त्रिकोण राशि में बैठकर लग्न को देख रहा है लग्न शुभ ग्रह के प्रभाव में है स्वगृही गुरु पंचमस्थ होकर पूर्ण ताकत से लग्न को देख रहा है। दशमेश शुक्र लग्न में जाने से "पद्मसिंहासन योग" बना। भाग्य स्थान में चंद्रमा उच्चाभिलाषी है सूर्य-बुध की युति "बुधादित्य योग" बना रही है फलत: जातक मुख्यमंत्री के पद तक पहुंचा।

श्री वाई. एस. चव्हाण, गृहमंत्री भारत सरकार
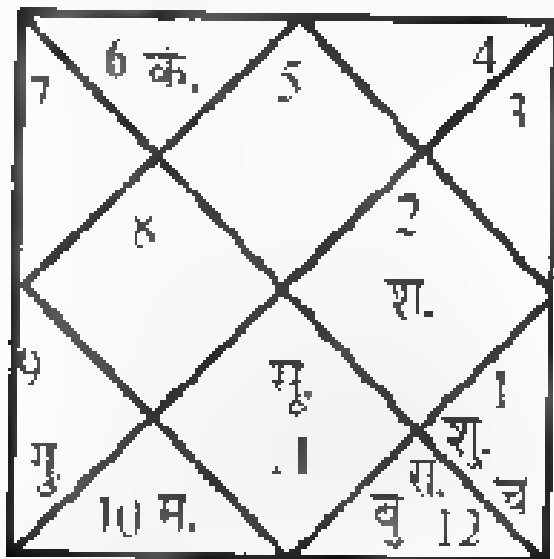
जन्म तिथि-12.3.1913, जन्म समय- 7.00 स्थान मुम्बई। प्रस्तुत कुंडली भारत के पूर्व गृहमंत्री श्री यशवंतराव चव्हाण की है। शास्त्रानुसार सब ग्रह लगातार क्रम में हों तो 'एकावली नामक' श्रेष्ठ राजयोग होता है इनकी कुंडली में पूर्व प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई पूर्व राष्ट्रपति अय्यूब खान जैसा ही एकावली नामक राजयोग पड़ा है. पंचम भाव में राजयोग कारक गुरु स्वगृही होकर भाग्य लाभ व लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। मंगल उच्च का है। चंद्रमा उच्चाभिलाषी है, शुक्र

स्वगृहाभिलाषी है तथा शनि केन्द्रस्थ है, लग्नेश सूर्य लग्न को देखता हुआ 'लग्नाधिपति योग' बना रहा है।

अब्दुल रहमान अंतुले
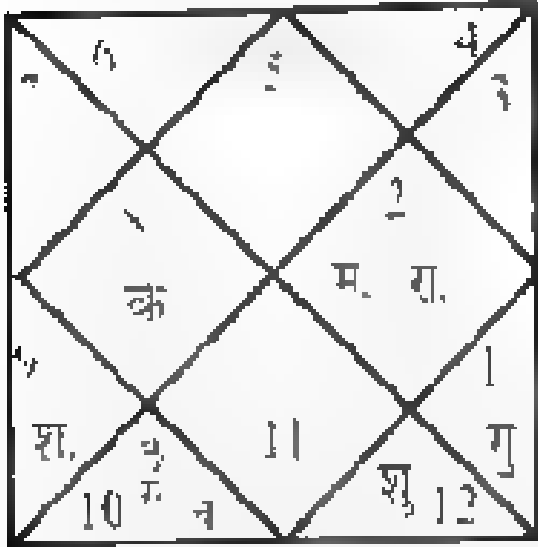
जन्म तिथि-9.2.1929 जन्म समय-15.45 स्थान आम्बेत (महाराष्ट्र)। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री श्री अब्दुल रहमान अंतुले काफी चर्चित व्यक्तित्व रहे। वे केन्द्र में स्वास्थ्य मंत्री भी रहे, इनके राजयोग में मंगल व राहु की भूमिका प्रधान है। चंद्रमा के कारण विमल नामक विपरीत राजयोग भी बना।

डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी
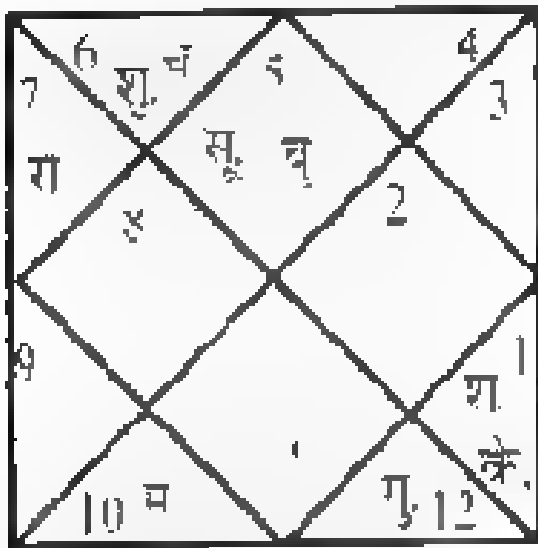
जन्म तिथि 16.9.1939, जन्म समय 4.30 बजे प्रातः स्थान मद्रास। सुब्रह्मण्यम स्वामी मूलतः अर्थशास्त्री हैं, परन्तु एक तेज तर्रार राजनेता हैं, मंगल शनि का परस्पर परिवर्तन योग, बुधादित्य योग ने उन्हें उच्च पदस्थ राजनेताओं के निकट लाया पर तृतीयस्थ राहु के कारण वे किसी के सच्चे मित्र नहीं रहे

श्री शिवचरण माथुर, पूर्व मुख्यमंत्री राजस्थान

जन्म तिथि 14.2.1926, जन्म समय 6.30 सायं स्थान-गुना (मध्य प्रदेश) श्री शिवचरण माथुर 14 जुलाई 1981 को राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तथा 20 जनवरी
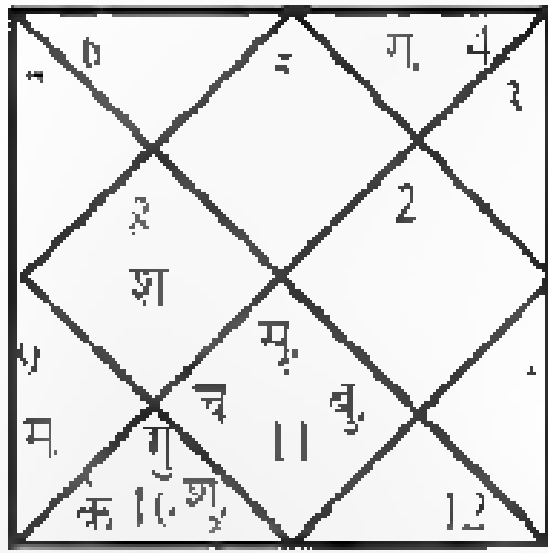
1988 को पुन. मुख्यमंत्री बने परन्तु 2003 को नवम्बर में हुए विधानसभा चुनाव में वे विधायक पद के उम्मीदवार का भी चुनाव हार गये। इनकी कुण्डली में विपरीत राजयोग खासतौर पर दृष्टव्य है। ग्रह राज्य देते हैं और राज्य हर भी लेते हैं यह कहावत इस कुण्डली पर लागू होती है।

डॉ. कर्ण सिंह
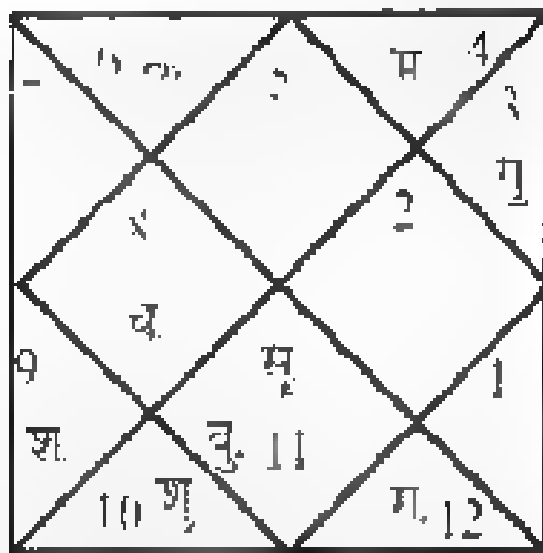
जन्म तिथि 0.3.1931 समय-16.15, स्थान- कान्स (फ्रांस)। जम्मू कश्मीर के महाराजा डॉ. कर्णसिंह का भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान है। यहां मंगल एवं चंद्र का परिवर्तन योग विशेष महत्वपूर्ण है, राजयोग प्रदाता है।

श्री बंशीलाल
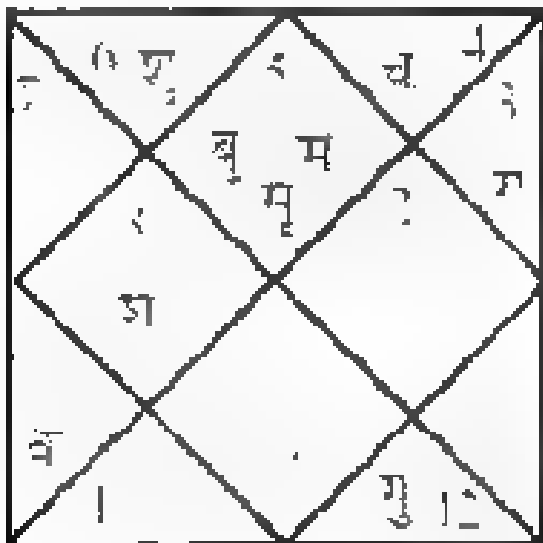
जन्म तिथि- 26.8.1927 जन्म समय 6.00 बजे प्रातः स्थान भिवानी (हरियाणा)। श्री बंसीलाल भारत सरकार के रक्षामंत्री भी रह चुके हैं। इनका राजयोग बुधादित्य योग के कारण, मंगल व चंद्र के कारण विपरीत राजयोग देता है। गुरु भी सरल नामक 'विपरीत राजयोग' देता है

आर. के धवन
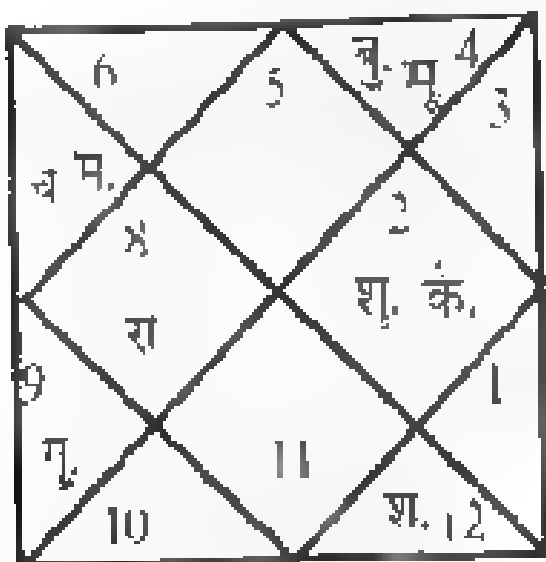
जन्म तिथि- 16.7.1937, जन्म समय 8.30 बजे प्रातः, स्थान-चिनकोट (पाक) आर. के. धवन स्व. इंदिरा गांधी के प्रमुख सलाहकारों में से एक थे। राजनीति में वे कांग्रेस के कई प्रमुख नेताओं के सलाहकार रहे हैं

श्री मोहन मेघवाल
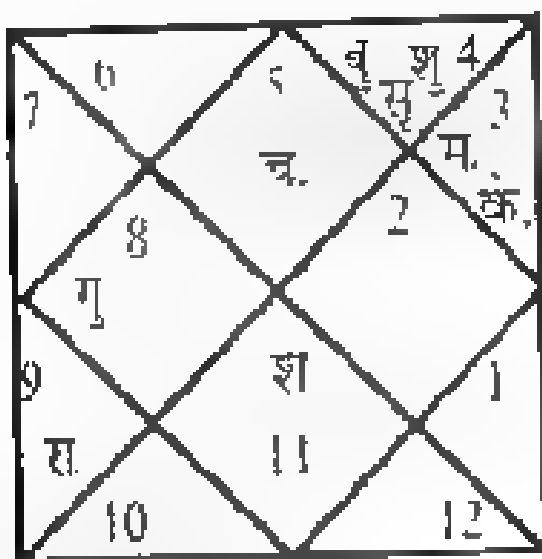
जन्म तिथि 2..7.1935, जन्म समय 9.00, स्थान-सूरसागर। श्री मोहन मेघवाल भाजपा के विधायक एवं राजस्थान सरकार के पूर्व मंत्री रह चुके हैं सूर्य+चंद्र के परिवर्तन योग के कारण इनकी कुण्डली में राजयोग बना। 2003 में वे भाजपा के विधायक के रूप में पुनः सूरसागर विधानसभा क्षेत्र से चुन लिये गये

श्री राजेन्द्र गहलोत
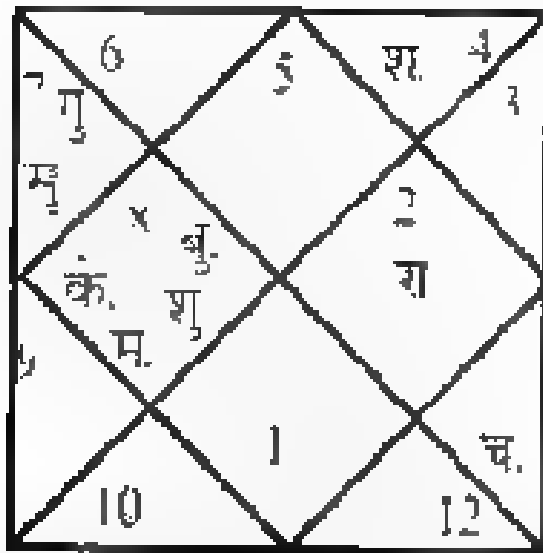
जन्म तिथि 8.11.1946, जन्म समय 3.00 बजे प्रातः, स्थान जोधपुर। आंशिक कालसर्पयोग, दो बार विधायक रहे भाजपा के पूर्वमंत्री रह चुके राजेन्द्र गहलोत को राहु की दशा चलते 2003 मे पार्टी का टिकट तक न मिल सका

टोनी ब्लेयर
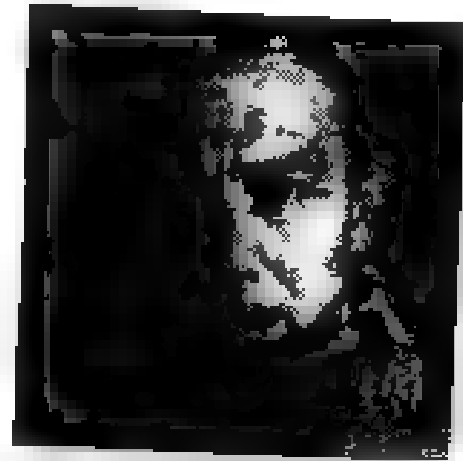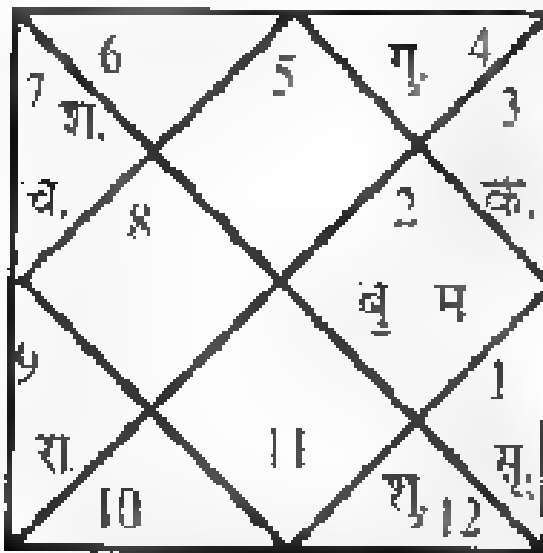
ब्रिटिश प्रधानमंत्री जन्म तिथि 6.5.1955, जन्म समय 14.00, स्थान लंदन।

श्री बोरिस येलस्तिन
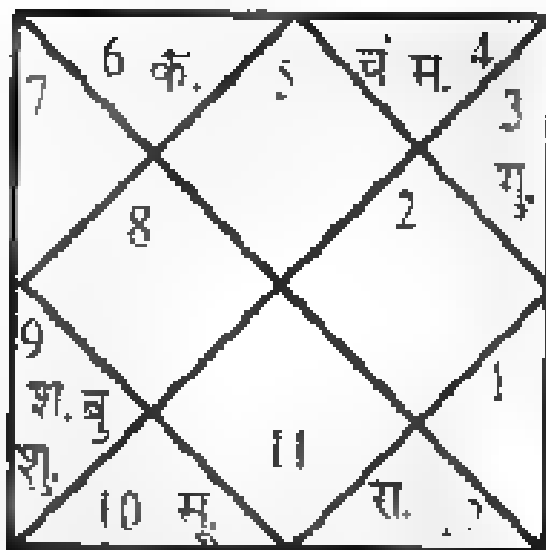
रूस के राष्ट्रपति जन्म तिथि-3.4.1930, जन्म समय-17.12, गुरु एवं बुध का परस्पर परिवर्तन योग पंचम स्थान एवं लाभ स्थान को पुष्ट करता है।

श्री नेल्सन मण्डेला
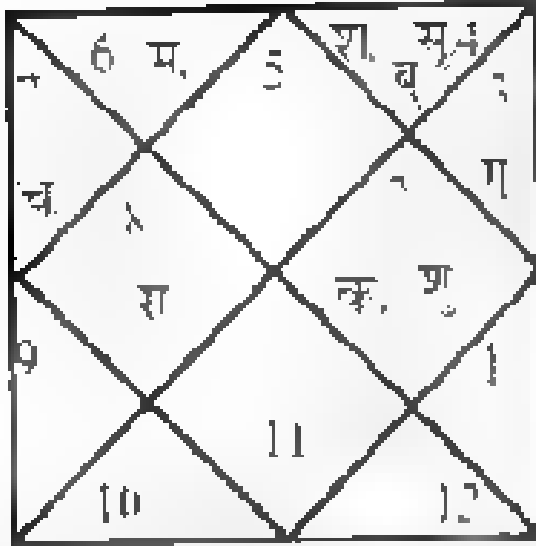
राष्ट्रपति दक्षिण अफ्रीका। जन्म तिथि 18.7.1918 जन्म समय-9.00 बजे प्रातः स्थान-उमताता (दक्षिण अफ्रीका)।

व्लीदिमीर पुतिन (रूस)
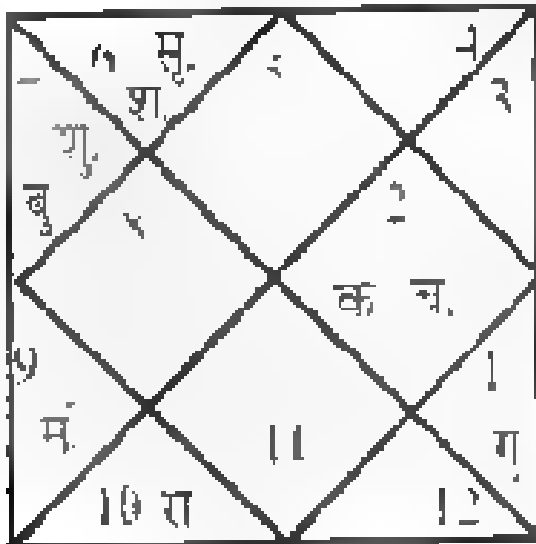
रूस जन्म तिथि 7.10.1952 जन्म समय 9.30 बजे प्रातः, स्थान-पीटर बर्ग।

चौधरी चरणसिंह
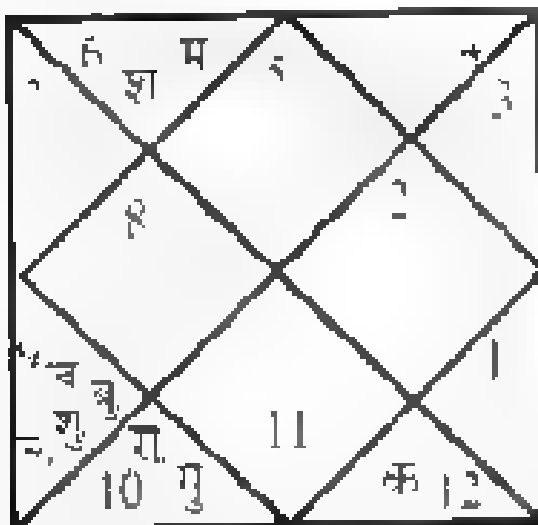
जन्म तिथि-23.12.1902 जन्म समय-22.00, स्थान-नूरपुर (मेरठ) एक वकील से भारत के प्रधानमन्त्री पद पर पहुंचे पहले किसान नेता विपरीत राजयोग वाली कुण्डली के अनुपम उदाहरण है

राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन

6 के. 5 4 7 3 8 2 श. 9 गु. बु. सू. प. शु. 1. 10 चं. रा. 12
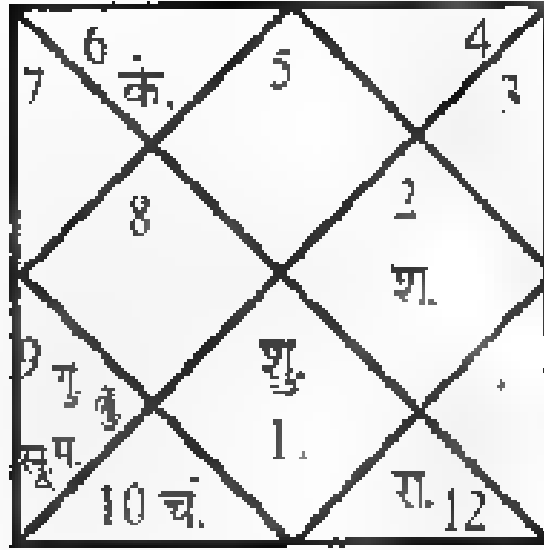
जन्म तिथि 8.1.1913 जन्म समय 21.30, स्थान-अमेरिका

राष्ट्रपति जॉनसन

6 5 4 7 3 सू. चं. म. गु. बु. शु. 8 2 रा. 9 के. 1 11 10 श. 12
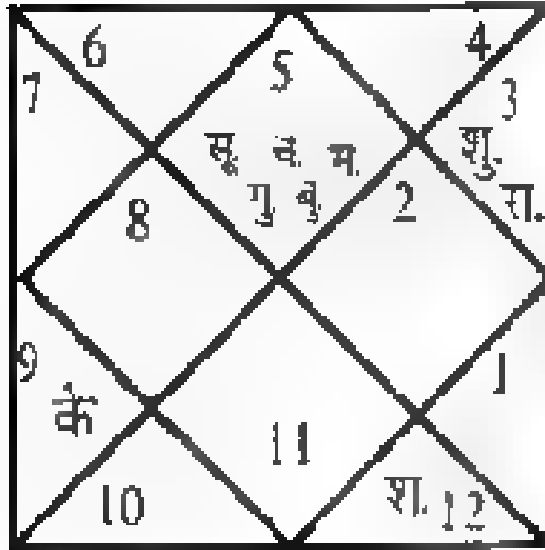
जन्म तिथि 27.8.1908 जन्म समय-7.00 बजे प्रातः, स्थान-अमेरिका।

हेराल्ड विल्सन

6 5 म. के. 4 7 3 श. 8 2 चं. 9 सू. बु. 1. शु. 10 रा. गु. 12
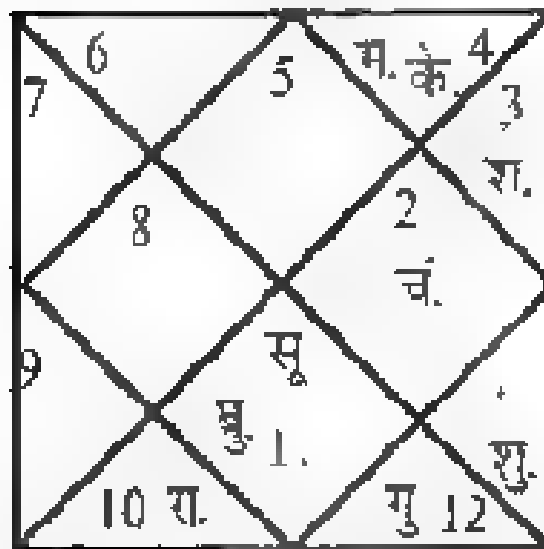
जन्म तिथि-10.3.1916, जन्म समय 18.30, स्थान-इंगलैंड।

श्री जसवंत सिह

वित्तमत्री (भारत सरकार), जन्म तिथि-3.1.1938, स्थान-जसौल (बाड़मेर)।

श्री मनोहर श्याम जोशी

पूर्व मुख्यमत्री महाराष्ट्र। जन्म तिथि- 26.12.1937, जन्म समय- 22.46 स्थान-रायगढ़। वर्तमान मे लोकसभा अध्यक्ष भारत सरकार

श्री मोहन छगाणी

जन्म तिथि 4.4.1926 जन्म समय- 12.00 रात्रि, स्थान फलौदी। जनता दल के प्रत्याशी बनकर चुनाव जीत मोहन- छगाणी राजस्थान के शिक्षामत्री रह चुके हैं।

जार्ज बुश

अमेरीकी राष्ट्रपति। जन्म तिथि- 12.6 1924, जन्म समय-10 05, स्थान-मिल्टन।

प्रेसिडेन्ट रुजबेल्ट

जन्म तिथि 30 1.1882, जन्म समय 20.00, रेखांश-40.45 N, अक्षांश 73.59 W

धर्मराज युधिष्ठर

शेख अब्दुल्ला

6, 7	5	4, 3
8 सू. शु.		2 गु.
9 बु.	शं. कं. 11	1
10 म.		च 12
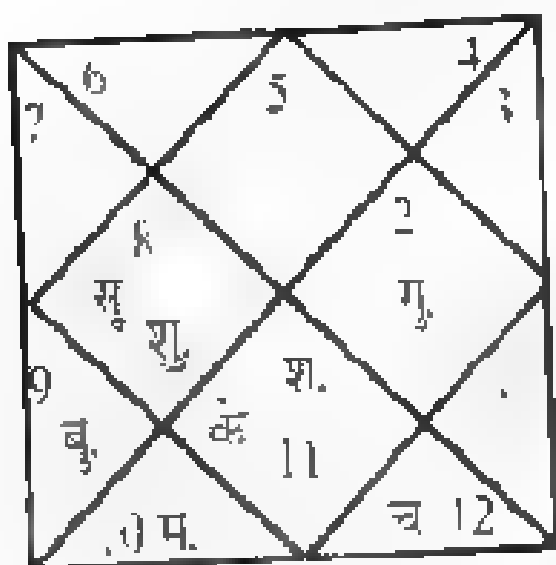
पाकिस्तान, जन्म तिथि-6.12.19051

श्री सुनील दत्त

6, 7 कं.	5	म 4, 3
8		2 बु. च सू. गु.
9 श	11	1 रा. शु.
10		12
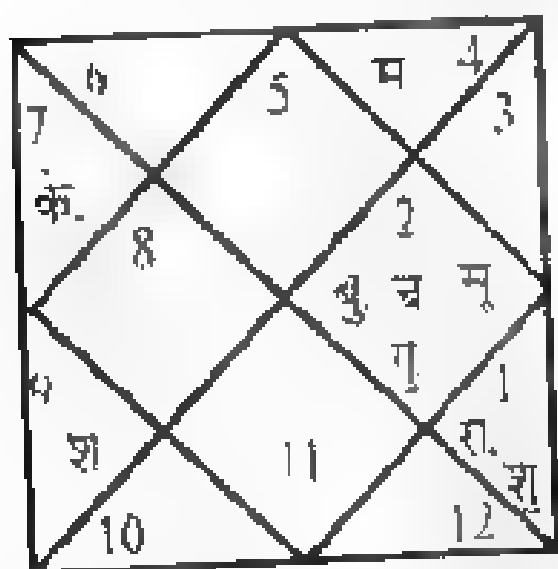
जन्म तिथि 6.6.1929 जन्म समय-11.00 बजे स्थान पाकिस्तान। अभिनेता सुनील दत्त ने अभिनय ही नहीं अपितु राजनीति के क्षेत्र में कांग्रेस के सांसद रहकर, मंत्री रहकर लगातार नाम कमाया। दशम स्थान में यामिनीनाथ योग, बुधादित्य योग, पद्मसिंहासन योग एवं चतुर्ग्रह युति इस योग को सार्थक कर रही है।

शाहरुख खान

6, 7 सू.	5	4, 3 गु.
8 बु. म. कं.		2 रा.
9 शु.	श. 11	1
10 च		12
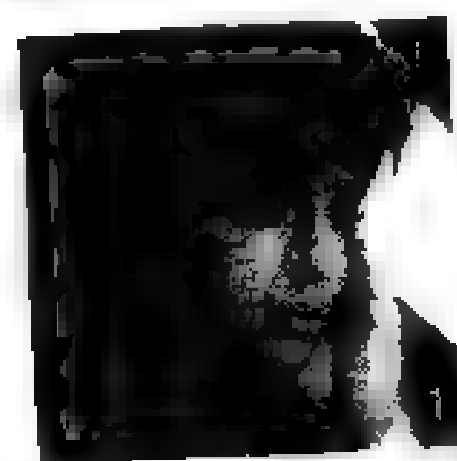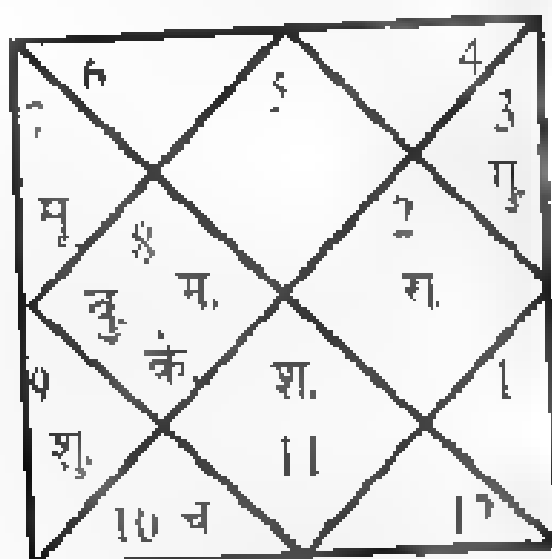
जन्म तिथि 2.11.1965, जन्म समय 2.30 रात्रि स्थान-दिल्ली।

सनी देओल

रजनीकान्त
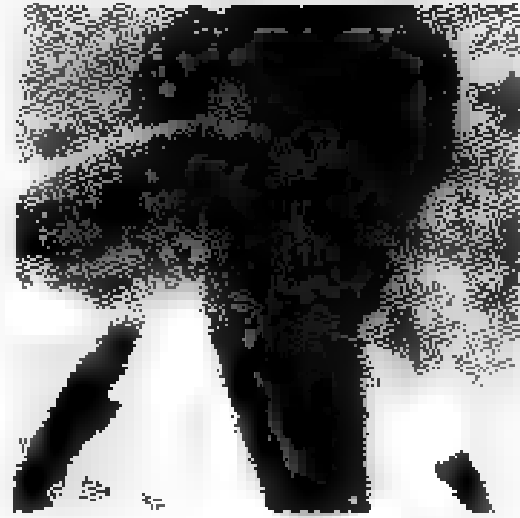
जन्म तिथि-12.12.1950, जन्म समय-23.50, स्थान चेन्नई।

दादा साहब फाल्के

जन्म तिथि 19.3.1871, जन्म समय-20.00, स्थान-त्र्यम्बकेश्वर।

अभिनेत्री माला सिन्हा

जन्म तिथि-.1 11 1936 जन्म समय-..50, स्थान कोलकाता।

करिश्मा कपूर

फिल्म अभिनेत्री। जन्म तिथि 25.6.1975, जन्म समय 12.00, स्थान मुम्बई।

अभिनेत्री रेखा

जन्म तिथि-10.10.1954

युवराज सिंह

जन्म तिथि 22.12.1981, जन्म स्थान चंडीगढ़ (पंजाब)

मोहम्मद कैफ

क्रिकेट खिलाड़ी, जन्म तिथि-1.12.1980

श्री विनोद महेश्वरी

जन्म तिथि- 25.2.1946 जन्म समय-18.26 स्थान मोदीनगर। जातक जन्म से करोड़पति है। आधा मोदीनगर इनका है। सप्तमेश लाभ में, धनेश बुध सप्तम भाव में शनि बुध के परस्पर परिवर्तन से जातक कांग्रेस का उपाध्यक्ष व नगर पालिका अध्यक्ष भी रहा

श्री जयनारायण व्यास

जन्म र्तिथ ,0.2.1929 जन्म समय- 18.49 स्थान जोधपुर। सुख स्थान में पूर्ण काल्सर्प योग होने से गृहस्थ सुख में निरन्तर बाधा, शनि पंचम स्थान में होने से जातक के पांच पुत्र हैं। व्ययेश चन्द्र सप्तम में, शुक्र आठवें होने से जातक के दो विवाह हुए

श्री हर्षद मेहता
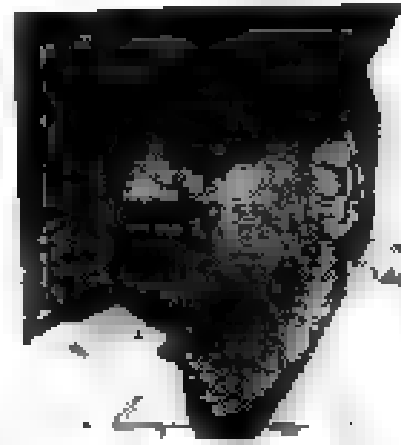
जन्म तिथि- 29.7.1954 जन्म समय 10.30 स्थान मुम्बई।

डॉ. कुसुम मंगल

जन्म तिथि 15.9..951, जन्म समय 4.27, स्थान-जोधपुर। सप्तम भाव में राहु ने अन्तर्जातीय विवाह कराया। पति डाक्टर है। उससे दो पुत्र है परन्तु व्ययेश चंद्र सप्तम स्थान मे आठवें गुरु के कारण पति से तलाक हो गया।

श्री भुवनेश भट्ट
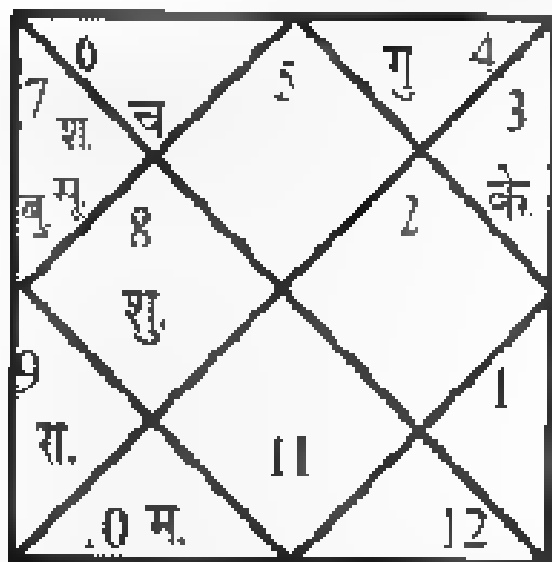
जन्म तिथि 26.10.1954 जन्म समय 2.57 रात्रि, स्थान सोजत। यहा गुरु ने विपरीत राजयोग बनाया, जिससे जातक मजिस्ट्रेट है सप्तमेश शनि, सूर्य (शत्रु) के साथ, गुरु बारहवें होने से जातक अविवाहित है।

❑❑❑

कन्या लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को 'बीज' कहा जाता है, इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन अर्थात् विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या को कम्प्यूटर ने समाप्त कर दिया परंतु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है कई बार विद्वान् व्यक्ति व व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक-एक ग्रह को भिन्न भिन्न भावों में रखा गया है। लग्न बारह हैं, ग्रह नौ हैं, फलतः 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह स्थितियां बनी। प्रत्येक ग्रह की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में अभी तक नहीं हुआ वह है—'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।' वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह चतुर्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया, इसलिए फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा का कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह की युति होने पर, उसका भी विचार यहां किया गया है। इस प्रकार

से 108 ग्रह स्थितियो को पुन: नौ ग्रहो की भिन्न भिन्न युति से जोड़ा जाए तो एक लग्न में 972 प्रकार की द्विग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्न में 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्विग्रह युतियां बनेंगी। ग्यारह हजार छ: सौ चौसठ प्रकार की द्विग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।

हम एक छोटा सा उदाहरण **'गजकेसरी योग'** **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मी योग'** से ले सकते हैं। क्या गुरु+चंद्र की युति से बना गजकेसरी योग सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधिया इसका नकारात्मक उत्तर देगी। गजकेसरी योग का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा। गजकेसरी योग की बारह लग्नो मे बारह प्रकार की स्थितियां अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनती है अकेला गजकेसरी योग 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होगे। गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, **'मकरलग्न'** या **'कुम्भलग्न'** मे देखी जा सकती है। यदि **मकरलग्न** में **गजकेसरी योग** छठे स्थान या आठवें स्थान में है तो जातक की पत्नी दूसरो के साथ भाग जाएगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर बृहस्पति छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चंद्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अत: यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि उन्होंने फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नही पहचाना। मैंने पाराशर लाइट प्रोग्राम (ज्योतिष साफ्टवेयर) मे इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न' एवं **'कर्कलग्न'** की पुस्तकें अक्टूबर में, तथा **'वृषलग्न'** एवं **'तुलालग्न'** नवम्बर 2003 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह 'कन्यालग्न' की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। कन्यालग्न में महात्मा गौतम, मोरारी बापू, महात्मा यीशू, ज्योति बसु, बादशाह शाहजहां, रामविलास पासवान, पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्ण, शैख मुजीबर्रहमान, किरण बेदी, शेयर किंग हर्षद मेहता, मोहम्मद अजहरूदीन, सचिन तेंदुलकर जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। कन्यालग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। कन्यालग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की जीरो डिग्री से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हो, फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है, जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुंडली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्मलग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम 'सृष्टि' के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल रूप से इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियो' से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला कदम सार्थक होगा।

डॉ. भोजराज द्विवेदी
20.01.2004

लेखक परिचय

4 सितम्बर 1949 को "कर्कलग्न" के अतर्गत जन्में डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं।

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 250 से अधिक पुस्तकें देश विदेश की अनेक भाषाओं में पढी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एव श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

डॉ द्विवेदी को अनेक स्वर्ण पदक व सैकड़ों मानद उपाधिया अनेक सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश विदेशों मे हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाये जा रहे हैं। जिनकी शाखाए देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर है, जो कि युग पुरुष के रूप में याद किए जाएगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेद भगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता का स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिष के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करो।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योति: शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदायम् शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंद: पादौ तु वेदम्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्त श्रोत्रमुच्यते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, या ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. कृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम्
   –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1

सभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[1] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? फसलें कैसी होगी। वगैरह वगैरह। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन निश्चित काल एवं मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।

यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवा कुर्वत॥1॥[2]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणारहित, नक्षत्ररहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय–लगाकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोश के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'ज्योतिस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीनों शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

---

1 एकाष्टकायां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन् तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

2. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4

3. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुंसकं दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोश 1929 पृ. स. 536

4. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 967 (पृ. स. 321)

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र है। अमरकोश की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।

हलायुधकोश में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[2]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[3]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[4] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[5]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध सिद्धान्तों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक परिचय हमें **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है।

---

1. शब्द कल्पद्रुम खण्ड 2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. सं. 550
2. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
3. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
5. वैदिक सम्पत्ति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ कैसल, बम्बई पृ. 90
6. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्
तस्मात्साङ्गमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते ॥ पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41, 42

तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।'[1] इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है **यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[2]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्

ऊषरे वापितं बीज, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[3]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एव लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।

प्रत्यक्ष ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥3॥[4]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एव सार्थकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्त शुभाशुभम्।

ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[5]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए है जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है वह जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याए हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नही देतीं,

---

1 Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY page-3

2 ज्योतिर्निबन्ध श्री शिवराज (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालये पूना पृष्ठ।

3 ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2

4 जातकसार दीप-चन्द्रशखरन् (पृष्ट 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज मद्रास

5 शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है यह क्या कम महत्त्व की बात है।

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।

यात्रासमये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी श्रृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक को ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलटपुलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान् व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनाधिकारी लोगों की संगत में यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा में इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

---

1. सुगम ज्योतिष-प. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली पृष्ठ 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय । 37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय । 24
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्या यथा नभः।
   तथा सांवत्सरो राजा भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि।। बृहत्संहिता 2 । 74
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय । 26

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ो रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो बरसात तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक बरसात के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य को सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणो में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणो में, विपत्ति की घड़ियों में या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनो का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है–

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30।

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक (भली भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो जाता है इस दिव्य ज्ञान की गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं अपितु सही समय(काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

मेरे निजी शब्दों में **'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'**

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[2]

❑❑❑

---

1. वक्री ग्रह (प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः
   तथा वेदाध्यायोऽपि ज्योतिषशास्त्रं बिना द्विजः।। वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध [illegible] पृ 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।

लग्नं दीपो महान लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार मे कोई नहीं है, क्योंकि गुरु ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है

न तिर्थिन च नक्षत्रं न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नमेव प्रशंसन्ति गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाम्भो, लग्न च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

ज्योतिर्विवरण मे कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न मे किया जाता है। वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदिया विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचित्यम्।

अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सम्पूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

- जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राज ज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में सकलित है जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एव अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एव संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यो यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो **मेषलग्न** में क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करें गुरु की सेवा सदा नर जिसका होता **वृषभलग्न**।
तरह तरह के शाल दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक खेले जुआ और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर जिसका होता **धनुलग्न**
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेंडेन्ट (Ascendant) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं ज्योतिष की भाषा में एक 'समय' विशेष के परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि 'लग्न' का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाए तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुत: आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है और दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह का भाग देने

पर 2½ घंटों का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के क्रम से निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही 'द्वादश घर' या 'बारह भाव' कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे 'लग्न' कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटो में पूर्ण कर लेती है इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटो में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। 1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचागों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणिया, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का विशेष महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहा से जन्मपत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने 'लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगानि' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्पादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एव फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–''**लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्**''

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन भागों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

दाया नेत्र, 2
बाया नेत्र 12
दाहिनी भुजा कंधा दोनों
11 पिण्डली
सिर चेहरा 1
4 वक्षस्थल छाती हृदय
हृदय वक्षस्थल सीना 10
5 बायां पैर
7 गुप्तेन्द्री गुदा, लिंग
9 जांघ
6 कमर
पैर 8 बायां

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक '**ज्योतिष और आकृति विज्ञान**' पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अग विशेष रूप से विकृत होगा यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली

द्वितीय भाव
द्वादश भाव
तृतीय भाव
प्रथम भाव
एकादश भाव
चतुर्थ भाव
दशम भाव
पंचम भाव
सप्तम भाव
नवम भाव
षष्ठ भाव
अष्टम भाव

पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।

द्रव्य
व्यय
पराक्रमं
देह
लाभ
सुख
राज्य
सुतौ
कलत्र
भाग्यं
शत्रु
वृत्ति

देहं द्रव्यं
पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्र वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ व्यये लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवे स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

कन्यालग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, राज्येश	-	बुध
2.	धनेश, भाग्येश	-	शुक्र
3.	पराक्रमेश, अष्टमेश	-	मंगल
4.	सुखेश, सप्तमेश	-	गुरु
5.	पचमेश, षष्ठेश		शनि
6.	लाभेश	-	चंद्र
7.	खर्चेश	-	सूर्य
8.	त्रिकोणाधिपति	-	5-शनि, 9-शुक्र
9.	दु:स्थान के स्वामी		6-शनि, 8 मगल, 12-सूर्य
10.	केन्द्राधिपति	-	1-बुध, 4, 7-गुरु, 10-बुध
11.	पणफर के स्वामी		2 शुक्र, 5-शनि, 8-मगल, 11-चंद्र
12.	आपोक्लिम	-	3-मंगल, 6-शनि, 9-शुक्र, 12-सूर्य
13	त्रिकेश	-	6-शनि, 8-मंगल, 12-सूर्य
14.	उपचय के स्वामी	-	3-मंगल, 6-शनि, 10-बुध, 11-चंद्र
15.	शुभ योग	–	1. शुक्र मध्य योग, 2. बुध (बुध+शुक्र) 3. अतिशुभकारक-बुध
16.	अशुभ योग	–	1. मंगल, 2. गुरु, 3. चंद्र, 4. शनि
17.	निष्फल योग	–	1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि
18.	सफल योग	–	1. बुध+शुक्र, 2. बुध+शनि सदोष
19.	राजयोगकारक	–	गुरु, शुक्र, शनि मिश्रित
20.	मारकेश	–	मुख्य मारक शुक्र

21. पापकर्त्ता — चंद्र शनि, परमपापी-मंगल

विशेष कन्यालग्न के लिए लग्नेश बुध की स्थिति ज्यादा महत्वपूर्ण है। शनि त्रिकोणाधिपति होते हुए भी षष्ठेश है। अतः मिश्रित फलदायक है। मुख्य मारकेश शुक्र है। जो सहचर्य से शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के फल देता है।

❑❑❑

कन्यालग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

कुजजीवेन्दवः पापा एक एव भृगुः शुभः।
भार्गवेन्दु सुतावेव (देव) भवेतां योगकारकौ।22।।
निहन्ता कविरन्ये तु (अपि) मारकास्तु कुजादयः।
प्रतीक्षेत फलान्युक्तान्येव कन्याभवे बुधैः।।23।।

दूसरा पाठ

पापासितेन्दु गुर्वारिभाग्येशो भार्गवः शुभः।
राजयोगकरः सौम्यो भृगुपुत्रसमन्वितः।।24।।
न हन्ति रविरन्ये तु मारकाख्या कुजादयः।
घ्नन्ति पापाः शुभान्यूह्मान्येव कन्याभवो बुधः।।25।।

तीसरा पाठ

कुजजीवेन्दवः पापा एको भृगुसुतः शुभः।
राजयोगकरः सौम्यो भृगुपुत्रसमन्वितः।।25।।
न हन्ति रविरन्ये तु मारकाख्याः कुजादयः।
घ्नन्ति पापाः शुभान्यूह्मान्येवं कन्याभूवो बुधैः।। 25।।

कुछ प्रतियों में 'भार्गवेन्दुसुतौद्वौच' 'सुतावेव' की जगह 'सुतादेव' 'निहन्ता' की जगह 'न हन्ता' ऐसा पाठान्तर है।

पहला पाठः—मंगल तृतीयेश और अष्टमेश होता है इसलिए, गुरु चतुर्थेश और बलवान मारक स्थान का (सप्तम स्थान का) स्वामी होता है। इसलिए, चंद्रमा एकादश

स्थान का स्वामी होता है इसी कारणवश यह ग्रह अशुभ फल देते है। अकेला शुक्र बलवान नवम स्थान का स्वामी होता है इसलिए ग्रंथकार ने इसे राजयोग का स्थान दिया। शुक्र के साथ बुध हो तो योगकारक होते हैं। शुक्र यदि प्रथम मारक स्थान का (द्वितीय स्थान का) अधिपति हो फिर भी वह स्वयं मारक नहीं होता मंगल आदि करके जो पाप ग्रह कहे हुए हैं वे मारक होते है। इस प्रकार कन्यालग्न के शुभाशुभ ग्रहों का विवेचन हुआ।

दूसरा पाठ–शुक्र धनेश (प्रथम मारक स्थान) होता है इसलिए, चंद्रमा एकादश होता है। इसलिए, गुरु बलवान मारक स्थान का (सप्तम स्थान का) अधिपति और चतुर्थ केन्द्र इन दो केन्द्रों का स्वामी होता है, और मंगल तृतीय और अष्टम स्थानों का अधिपति होता है इसलिए, ये ग्रह अशुभ फल देते है। रवि व्ययेश होता है इसलिए स्वयं मारक नहीं बनता। शुक्र राजयोग कारक होता है। बुध लग्नेश और दशमेश होने से बुध–शुक्र की युति राजयोग कारक होती है। मंगल आदि अशुभ फल कारक होते हैं। इस प्रकार कन्यालग्न के शुभाशुभ फल कहे।

तीसरा पाठ–कन्यालग्न हो तो मंगल, गुरु और चंद्रमा अशुभ फल देते हैं। अकेला शुक्र शुभ फल देता है। यदि बुध–शुक्र योग हो तो वह राजयोग कारक है। रवि स्वयं मारक नहीं बनता। मंगल आदि करके अशुभ ग्रह मारक बनते हैं, कन्यालग्न मे जन्म हो तो ज्ञातियों ने इस प्रकार शुभाशुभ फल जानना।

स्पष्टीकरण–'न हन्ता' व 'निहन्ता' इन शब्दों के कारण कुछ विद्वानों के मत में शुक्र द्वितीयेश होने से मारक बनता है। और कुछ में 'शुक्र' मारक होने पर भी (नवमेश होने के कारण से) मारक नहीं बनता, शनि पंचम स्थान का स्वामी है परन्तु षष्टम स्थान का भी स्वामी होने से दूषित है।

मंगल नैसर्गिक पाप ग्रह है और वह इस लग्न के लिए तृतीय और अष्टम स्थानों का स्वामी होने से पाप ग्रह माना गया है। गुरु और चंद्रमा शुभ ग्रह हैं। परन्तु उन्हें वहां पर अशुभ फल देने वाले कहा है। चंद्रमा एकादश स्थान का स्वामी होने से अशुभ है और गुरु चतुर्थ तथा सप्तम केन्द्रों का स्वामी होने से मारकेश भी है और इसलिए वह अशुभ फल देने वाला है। गुरु मात्र सप्तम केन्द्र का स्वामी होने से इस लग्न के लिए निश्चय ही मारक बनता है। इसमें संदेह नहीं है। ग्रंथकार ने एक जगह शुभ फलदायक कहा है और तुरन्त ही बाद में निहन्ता कवि: ऐसा कहा है, इस पर से ऐसा मालूम पड़ता है कि शुक्र नवम (भाग्य भवन) का अधिपति होने से शुभ फल देने वाला माना है। किन्तु बाद मे विचार के अंत में ग्रंथकार ने ऐसा भी कहा है कि गुरु द्वितीय (मारक) स्थान का स्वामी होने से मारक बनता है। इस पर से तात्पर्य इस प्रकार निकलता है कि शुक्र अपनी दशान्तर्दशा में अशुभ फल नहीं

देगा। परन्तु यदि वह पाप ग्रह युक्त हो तो अशुभ फल देने में चूकेगा नहीं। अन्यथा वह शुभ फल देने वाला है।

यहा लग्न की कन्या राशि का अधिपति बुध और द्वितीय स्थान की राशि तुला का अधिपति शुक्र इन दोनों का स्थानाधिपति के नाते और उसी प्रकार नवम स्थान की राशि वृषभ का स्वामी शुक्र और दशम स्थान की राशि मिथुन का स्वामी बुध इन दोनों ग्रहों का साहचर्य योग उत्तम प्रकार का योग मानकर वे संबंध करें तो राजयोग माना जायेगा, और वे एक दूसरे की दशान्तर्दशा में उत्तम फल प्रदान करेंगे इसमें संदेह नहीं है।

रवि और शनि के सम्बन्ध में यहा पर कुछ भी उल्लेख नहीं है जिसके कारण वे खास शुभ अथवा अशुभ फल देने वाले प्रतीत नहीं होते हैं, क्योंकि शनि पंचम स्थान का स्वामी होकर षष्टम स्थान का स्वामी भी है अर्थात् (सदोष) है और रवि द्वादश स्थान का स्वामी होने से दूसरे ग्रहों के साहचर्य से फल देने वाला है इसलिए इन दोनों ग्रहों का कुछ भी उल्लेख नहीं किया गया है।

कन्यालग्न को राजयोग करने के लिए पूर्ण निर्दोष ऐसा कोई भी ग्रह नहीं है उदाहरणार्थ रवि व्ययेश, चंद्रमा एकादशेश, मंगल तृतीयेश और अष्टमेश, बुध लग्नेश और दशमेश (दो केन्द्रों का स्वामी होने से), गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश (मारकेश) इन दोनों केन्द्रों का स्वामी होने से, शुक्र धनेश (प्रथम मारक स्थान का स्वामी) होने से और शनि षष्ठेश होने से दोषयुक्त हैं इनमें से मंगल, शनि और चंद्रमा त्रिषडायपति हैं। शुक्र और गुरु मारक स्थान के अधिपति हैं इसलिए ग्रंथकार ने अनिच्छुकता से (नाई लाज वश होकर) बुध को लेकर ऊपर कहे अनुसार शुक्र का उत्तम योग-राजयोग कहा।

दूसरे पाठ के 25वें श्लोक में गलती मालूम पड़ती है, जिसका कारण 'र' का 'क' की जगह गलती से लिखा गया दिखाई देता है।

कन्यालग्न के लिए शुभाशुभ योग–

1. **शुभ योग**–शुक्र नवम स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फल देने वाला होता है। (वह द्वितीय मारक स्थान का स्वामी होने से अशुभ फल देने वाला होता है) यह मध्य योग है।
2. **शुभ योग**–लग्नाधिपति बुध और द्वितीय स्थान का स्वामी शुक्र और नवम स्थानाधिपति शुक्र और दशम स्थानाधिपति बुध इन दोनों के सह स्थान और

साहचर्य योगों के कारण (सामान्य केन्द्राधिपत्य दोष होते हुए भी) राजयोग कारक होने से शुभ फलदायक है।

कन्यालग्न के लिए अशुभ योग–

1. **अशुभ योग**–मंगल स्वयं पाप ग्रह होकर श्लोक 6 के अनुसार तृतीय और अष्टम स्थानों का स्वामी होने से अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है
2. **अशुभ योग**–गुरु चतुर्थ और सप्तम केन्द्रों का स्वामी होने से श्लोक 7 और 10वें के अनुसार बलवान् केन्द्राधिपतित्व दोष के कारण और सप्तम-कारक स्थान का भी स्वामी होने से अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला होता है
3. **अशुभ योग**–चंद्रमा एकादश स्थान का अधिपति होकर श्लोक 6 के अनुसार अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला होता है।
4. **अशुभ योग**–शनि पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होकर स्वयं पाप ग्रह है और षष्ठ स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फल देने वाला होता है।

निष्फल योग–1. गुरु-शुक्र, 2. गुरु-शनि, (दोनों ही ग्रह दूषित होते है।)

सफल योग–2. बुध शुक्र, 2. बुध शनि (सदोष), शनि दूषित होने से सदोष राजयोग है परन्तु श्लोक 15 के अनुसार एक ही ग्रह दूषित हो तो राजयोग में बाधा नहीं पहुंचती.

❑❑❑

कन्यालग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	—	कन्या
2.	लग्न चिह्न	—	हाथ में धान व अग्नि लिए हुए कुंवारी कन्या
3.	लग्न स्वामी	—	बुध
4.	लग्न तत्त्व	—	पृथ्वी तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	—	द्विस्वभाव
6.	लग्न दिशा	—	दक्षिण
7.	लग्न लिंग व गुण	—	स्त्री
8.	लग्न जाति	—	वैश्य
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	—	सौम्य स्वभाव, वात प्रकृति
10.	लग्न का अंग	—	उदर (पेट)
11.	जीवन रत्न	—	पन्ना
12.	अनुकूल रंग	—	हरा
13.	शुभ दिवस	—	बुधवार, रविवार
14.	अनुकूल देवता	—	गणपति
15.	व्रत, उपवास	—	बुधवार
16.	अनुकूल अंक	—	5
17.	अनुकूल तारीखें	—	5/14/23
18.	मित्र लग्न	—	मेष, मिथुन, सिंह, तुला

19.	शत्रु लग्न	–	कर्क
20.	व्यक्तित्व	–	दोहरा व्यक्तित्व, विद्वान, युद्ध भीरु, आलोचक, लेखक
21.	सकारात्मक तथ्य	–	निरन्तर क्रियाशीलता, व्यावहारिक ज्ञान
22.	नकारात्मक तथ्य	–	अति छिद्रान्वेषी, बुराई ढूढ़ना, कलह प्रियता, अशुभ चिन्तन, नपुंसकता

❑❑❑

कन्यालग्न के स्वामी बुध का वैदिक स्वरूप

बुध ग्रह सूर्य का अति समीपस्थ ग्रह है। यह ग्रहों में सबसे छोटा ग्रह है। यह सूर्य से 27 अंश से अधिक दूर कभी नहीं जाता। चंद्रमा की तरह बुध की भी कलाओं में क्षय व वृद्धि होती है। यह एक वर्ष में लगभग 6 बार उदित एवं अस्त होता है। उदित होने पर यह 21 से 43 दिनों तक दिखायी देता है। ग्रह लाघव के अनुसार बुध पूर्व दिशा में अस्त होने के 32 दिन बाद पश्चिम में उदित होता है तथा उसके 32 दिन बाद वक्री होता है। उसके 3 दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है, उसके 16 दिन बाद पूर्व में उदित होता है, उसके 3 दिन बाद मार्गी और उसके 32 दिन बाद पूर्व में अस्त हो जाता है। इस प्रकार मध्यम मान से 118 दिनों में इसके उदयास्त का एक चक्र पूरा होता है।

अथर्ववेद के एक मंत्र में बुध का उल्लेख मिलता है जो इस प्रकार है

सोमस्यांशो युधां पतेऽनूनो नाम वा असि।
अनून दर्श मा कृधि प्रजया च धनेन च॥

अर्थात् हे सोम के अंश बुध! तुम वीरों के पालनकर्त्ता हो। तुम दर्शन योग्य हो हव्यादि देकर तुम्हें प्रसन्न करता हुआ मैं पुत्रादि धन से युक्त होऊं।

'सोमस्यांशो' पद का भाष्य करते हुए आचार्य सायण ने सोम पुत्र बुध कहा है। इसमें बुध को दर्शनीय तथा अनून कहा गया है तथा बुध ग्रह को भावी युद्ध में विजय का शुभ प्रतीक माना गया है। बुध ग्रह को धन, समृद्धि और संतान वृद्धि का कारक माना गया है।

पंचविंशति ब्राह्मण के एक संदर्भ में बुध ग्रह को सौमायन (सौम्य) कहा गया है। **बुधो हि सौमायन: प्रोक्त:।** (पंचविंशतिब्राह्मण 24/18/6)

बुध को रोहिणेय तथा सौम्य भी कहा गया है। वैदिक काल में किसी समय जब चंद्रमा ने रोहिणी नक्षत्र के पास स्थित बुध को ढक दिया होगा तथा ऋषियों

ने रोहिणी एवं बुध दोनों को चंद्र बिम्ब से बाहर निकलते देखा होगा तभी से बुध को रोहिणी एवं चंद्रमा का पुत्र कहना प्रारम्भ किया होगा।

यजुर्वेद 18/61 का मंत्र प्राचीन काल में बुध के पूजन, हवन एव शांतिकर्म में प्रयोग होता रहा है। इसमें बुध को बुद्धि का प्रतीक माना गया है। कालान्तर में ज्योतिष ग्रंथों में बुध को बुद्धि ही कहा गया है। मंत्र इस प्रकार है–

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते स सृजेथामयं च।

अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत्॥

अर्थात् हे अग्ने (ग्रह), तुम जागो। तुम बुद्धिमान् होकर इस अभीष्ट पूर्ति वाले कर्म में यजमान से सुसंगत होओ। हे विश्वेदेव निमित्त कर्म करने वाला यह यजमान देवताओं के साथ रहने योग्य होता हुआ श्रेष्ठ स्वर्ग में चिरकाल तक रहे।

❑❑❑

कन्यालग्न के स्वामी बुध का पौराणिक स्वरूप

पीतमाल्याम्बरधरः कर्णिकारसमद्युतिः।
खड्गचर्मगदापाणिः सिंहस्थो वरदो बुधः॥

बुध पीले रंग की पुष्प माला और पीला वस्त्र धारण करते हैं। उनके शरीर की कान्ति कनेर के पुष्प जैसी है। वे अपने चारों हाथों में क्रमशः तलवार, ढाल, गदा और वर मुद्रा धारण किए रहते हैं। वे अपने सिर पर सोने का मुकुट तथा गले मे सुन्दर माला धारण करते है। उनका वाहन सिह है।

बुध की उत्पत्ति

अत्रि ऋषि के पुत्र चंद्र हुए उन्होंने एक बार देवगुरु बृहस्पति को पत्नी तारा का अपहरण कर लिया था। इससे देवासुर संग्राम हो गया। अन्त मे ब्रह्मा जी ने बीच में पड़ कर तारा को बृहस्पति को दिला दिया। गुरु ने तारा को गर्भवती पाया। उन्होंने अपने क्षेत्र मे दूसरे का बीज देखकर तारा को गर्भस्राव करने की आज्ञा दी। तारा ने एक सुनहले अणु को गर्भ से बाहर निकाला। उस अण्डे से एक बालक का जन्म हुआ। वह अति सुन्दर था। उसे देखकर चंद्र और गुरु दोनों ही मोहित हो गये। यह किसका पुत्र है? तारा लज्जावश जब कुछ न कह सकी तो बालक ने मां की झूठी लज्जा से क्रोधित होकर उसे सत्य बोलने पर विवश किया। इस बुद्धिमत्ता से प्रभावित होकर ब्रह्मा जी ने उसका नाम बुध रख दिया। यह बुद्धिदाता रहेगा, ऐसा वरदान दिया। बालक को चंद्रमा को सौंप दिया गया। तब से बुध चंद्र पुत्र कहलाये। उनके जन्म के बाद उनकी प्रेरणा से भौतिक ज्ञान का उजागर करने वाली वेद विद्या अर्थववेद के रूप में प्रसिद्ध हुई। अर्थशास्त्र, गणित व विज्ञान कला कौशल व्यापार के सूत्र उसमे समाहित थे। इसी कारणवश बुध का सम्बन्ध व्यापार से बन गया।

अतः बुध सौम्य ग्रह कहलाया व शुभ ग्रह माना गया है। यह गुरु, चंद्र व तारा तीनो के मिश्रण का स्वरूप है। गुरु का रंग पीला, चंद्र का सफेद व तारा का लाल

था, अतः इनके मिश्रण से इस ग्रह का रंग दूर्वादल श्याम हरा रंग बना। वास्तव में वात, पित्त और कफ का मिश्रण बुध है। यह कल्पना इसमें रूपात्मकता से दी गई है। गुरु का क्षेत्र और चंद्र का वीर्य होने से यह दोनों से शत्रुता रखने वाला ग्रह बना। साथ ही अन्य क्षेत्र में उत्पन्न होने से यह वर्ण संकर अर्थात् नपुंसक ग्रह कहलाया ऐसा गीता में कहा गया है।

अथर्ववेद के अनुसार बुध के पिता का नाम चंद्रमा और माता का नाम तारा है। ब्रह्माजी ने इनका नाम बुध रखा, क्योंकि इनकी बुद्धि बड़ी गम्भीर थी। श्रीमद्भागवत के अनुसार ये सभी शास्त्रों में पारंगत तथा चंद्रमा के समान ही कान्तिमान हैं मत्स्य पुराण (24/1/2) के अनुसार इनको सर्वाधिक योग्य देखकर ब्रह्मा जी ने इन्हें भूतल का स्वामी तथा ग्रह बना दिया।

महाभारत की एक कथा के अनुसार इनकी विद्या बुद्धि से प्रभावित होकर महाराज मनु ने अपनी गुणवती कन्या इला का इनके साथ विवाह कर दिया। इला और बुध के संयोग से महाराज पुरुरवा की उत्पत्ति हुई। इस तरह चंद्र वंश का विस्तार होता चला गया।

श्रीमद्भागवत (4/22/13) के अनुसार बुध ग्रह की स्थिति शुक्र से दो लाख योजन ऊपर है। बुध प्रायः मंगल ही करते हैं। किन्तु जब यह सूर्य की गति का उल्लंघन करते हैं, तब आंधी-पानी और सूखे का भय प्राप्त होता है।

मत्स्य पुराण के अनुसार बुध ग्रह का वर्ण कनेर के पुष्प की तरह पीला है। बुध का रथ श्वेत और प्रकाश से दीप्त है। इसमें वायु के समान वेग वाले घोड़े जुते रहते हैं। उनके नाम—श्वेत, पिसंग, सारंग, नील, पीत, विलोहित, कृष्ण, हरित, पृष और पृष्णि हैं।

बुध ग्रह के अधिदेवता और प्रत्यधिदेवता भगवान विष्णु हैं। बुध मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है। इनकी महादशा 17 वर्ष की होती है

बुध ग्रह की शान्ति के लिए प्रत्येक अमावस्या को व्रत करना चाहिये तथा पन्ना धारण करना चाहिये। ब्राह्मण को हाथी दांत, हरा, वस्त्र, मूगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शस्त्र, फल, षट्रस, भोजन तथा घृत का दान करना चाहिए। नवग्रह मण्डल में बुध पूजा ईशान कोण में की जाती है। इनका प्रतीक बाण है तथा रंग हरा है। इनके जप का वैदिक मंत्र—**'ओ३म उद्बुध्यास्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सँ सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥'**, पौराणिक मंत्र **'प्रियकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥'** बीज मंत्र **'ओ३म ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।'** सामान्य मंत्र **ओ३म बुं बुधाय नमः।** इनमें से किसी का भी नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप की कुल

संख्या 9000 तथा समय ९ घड़ी दिन है। इसके लिए विशेष परिस्थितियों में विद्वान ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

व्यापारी

नाना प्रकार के रसों का संग्रह करने वाला व्यक्ति व्यापारी होता है यह भोजन के सभी रसों को बनाकर उनको स्नायुओं में संचालित करता है। अतः यह स्नायु मंडल का अधिकारी है। सुन्दर रस परिपाचक से त्वचा सुन्दर बनती है। अतः यह त्वचा पर पूर्ण अधिकार रखता है। इसकी मूलतः दो राशियां हैं। नकारात्मक राशि मिथुन और सकारात्मक राशि कन्या है।

राशि के प्रतीक स्वरूप मिथुन राशि में स्त्री पुरुष का जोड़ा बताया गया है और कन्या राशि में सुन्दर कन्या हाथ में ज्वाला लिए दिखाई गई है। मिथुन वायु तत्त्व प्रधान राशि है और कन्या पृथ्वी तत्त्व प्रधान है अतः वायु और पृथ्वी का मिश्रण बुध है।

बुध का अधिकार क्षेत्र

वायु तत्त्व प्रधान बुध का प्रभाव स्कंध, फेफड़ा, ऊपरी पसली, कन्धे, हाथ, बाजू, स्वर अंग, श्वास नली व कोशिकाओं पर पड़ता है। तत्पश्चात् पृथ्वी तत्त्व से नाभिचक्र आमाशय, कमर मेखला और आंतों पर प्रभाव होगा। बलवान बुध इनमें विकार नहीं आने देगा और बिगड़ा हुआ इनमें से भावानुसार कोई रोग देगा।

बुध के अधिकारियों में स्नायुतंत्र, जीभ, आंत, वाणी, नाक, कान, गला, फेफड़े आते हैं। नैसर्गिक कुण्डली में यह तीसरे और षष्ठम भाव का प्रतिनिधित्व करता है बुध के बिगड़ने पर, उसकी विंशोत्तरी दशा में मस्तिष्क विकार, दद्रु रक्त कमजोर होना, पक्षाघात, हकलाहट, दौरे पड़ना, सूंघने, सुनने और बोलने की शक्ति का ह्रास होता है।

खेलकूद, हंसी मजाक इसके प्रिय क्षेत्र है। रेडियो, तार, टेलीफोन इसके अधिकारियों में हैं। इसकी मुख्य धातु पारा है। इसका शुभ रत्न पन्ना है तथा यह सदा कुमार ही रहता है। बाल्यावस्था पर इसका अधिकार है। सबसे छोटा ग्रह होने से इसे क्षुद्र ग्रह भी कहते हैं।

बुध का स्वरूप

मिथुन राशि के प्रतीक स्वरूप स्त्री पुरुषों का मिथुन चित्र है। यह दूर्वादल श्याम रंग का होता है अतः इसका गेहुआं रंग होता है। कन्या राशि के प्रतीक स्वरूप

अग्नि का अस्त्र भाण्ड हाथ में लिए नाव मे बैठी कन्या का चित्र है। यह कन्या रूपवान तथा कुछ गौर वर्ण की है। मिथुन मे कद लम्बा होता है क्योंकि यह पुरुष राशि है और कन्या मे मझौला कद होगा। सामान्यत: चेहरा भरा हुआ, नेत्र काले और बालों में कुछ घुंघरालापन होगा। नाक, ऊंची, हाथ पैर लम्बे और दुबले होंगे। दोनों राशियों मे ऊष्मा की कमी रहेगी व नेत्र आकर्षक होगे जातक सुन्दर व मतवाले होगे। केश राशि आकर्षक घनी होगी।

कन्या राशि या लग्न वालो में स्त्री स्वभाव की झलक पाई जाती है। इसमें जन्म लेने वाले जातक दोनों दो विरोधी पक्षों से मेल रखने में माहिर होगे। मीठा बोलकर अपना काम बनायेंगे। दोनों मनोरंजन के शौकीन, विलासी, प्रसन्न रहने वाले, कुछ मजाक करने वाला व चंचल मस्तिष्क वाले होंगे। बुध प्रधान व्यक्ति सिखावट में शीघ्र आने वाले होते हैं एवं सोहबत का असर भी इन पर शीघ्र होगा। ऐसे व्यक्ति दूसरों की भूलों को सूक्ष्मता से निकालने मे होशियार होंगे व सामने वाले की मंशा शीघ्र समझ जायेंगे।

मिथुन जातक का व्यक्तित्व विद्रोही होगा। जातक कठोर परिश्रमी होगा, साहसी होगा तथा जोखिम उठा सकेगा। इनका विचारने का तरीका तर्कसंगत व वैज्ञानिक होगा। जातक चतुर, चालाक, वाचाल व कुशल व्यापारी होगा। पठन-पाठन में जातक की रुचि भी रहेगी। जातक की मैकेनिकल कार्य में भी रुचि रहेगी।

कन्या में जन्मा जातक पराया धन, भवन, वाहन का लाभ पाएगा। जातक कुशाग्र बुद्धि व पढ़ने मे होशियार होगा। विद्वता रहेगी, राजनीति में सफलता, मेडिकल लाईन, सामाजिक कार्य में रुचि रहेगी। यह भावुक ज्यादा होंगे। बिना सोचे समझे कार्य कर लेंगे। जातक की प्रकृति कोमल होगी। संकट में शीघ्र घबराने वाले प्रेम के क्षेत्र में असफल रहेंगे। पत्नी पक्ष से परेशान होंगे पुत्र संतान कम होगी। बुध प्रधान व्यक्ति दो विरोधियों पार्टियो मे मेल रखने में माहिर होंगे।

बुध की बलवत्ता

कन्या मिथुन राशि में, कन्या मूल त्रिकोणी, बुधवार को, द्रेष्काण तथा नवांश में स्वगृह मे धनु राशि मे (रवि के साथ न हो तो) रात को तथा दिन को विसुव के उत्तर में, तथा शनि के मध्य भाग में, लग्न में अकेला हो तो बली होता है। बली होने पर यश और बल की वृद्धि करता है। लग्न में दिग्बली होता है। हर्ष बली होता है। यह चतुर्थ व दशम भाव का कारक ग्रह है। मीन में नीच का होता है। सूर्य से 13 अंशों के भीतर अस्त भी होता है। प्राय: सूर्य बुध साथ ही देखे जाते हैं। अत: अस्त, वक्री और मार्गी बनता रहता है। इसकी राशि बदलने की अवधि 1 माह है। सूर्य, राहु, शुक्र इसके मित्र हैं। गुरु, मंगल, शनि सम हैं। चंद्र से इनकी शत्रुता है।

कन्या के 15 अंश तक मूल त्रिकोण में होने से ज्यादा बलवान रहता है तथा परमोच्च का कहलता है, मीन के 15 अंशों तक परम नीच रहता है। नीच होकर यदि यह वक्री हो तो शुभ फल देता है। प्रातः सूर्योदय के 2 घंटे तक बलवान रहता है

विवेचन

यह राहु के दोष को दूर करता है। 'राहुदोष बुधो हन्यात्' प्रसिद्ध है। यह चौथे स्थान में विफल होता है। अतः चौथे भवन में बैठकर निर्बल हो जाता है। शुक्र से बुध की पराजय होती है। इसकी दृष्टि तिरछी है। वैसे सातवें तो देखता है ही पर अपनी एक राशि को देखते ही दूसरी राशि को भी देख लेता है इसकी दृष्टि विशेष नहीं है। इसकी दिशा उत्तर मानी गई है।

ईशान कोण इसका निवास माना गया है। इसका घर बाण आकार का है जन्मभूमि मगध देश है। इसके देवता विष्णु हैं। इसे प्रसन्न करने हेतु 'विष्णु सहस्र नाम' का पाठ श्रेष्ठ रहता है। यह यज्ञ और ज्ञान का अधिष्ठाता है। यह रजोगुणी ब्राह्मण है क्योंकि अण्ड और जन्म यह दोनों अणुज द्विज हैं। 'दाम्यां जन्म संस्कारत् जायते इति द्विज' यह प्रसिद्ध है। यह यों तो सर्वदा बली माना गया है। यह शीघ्र फलदाता है। यह आयु के 32वें वर्ष में भाग्योदय करता है। मेष, सिंह, धनु इसकी शुभ राशिया हैं। वृष, कन्या, मकर साधारण तथा मिथुन, तुला, कुम्भ उत्तम, कर्क, वृश्चिक, मीन अशुभ राशियां हैं। बुध को दी हुई वस्तु शीघ्र नहीं आती है। बुध के दिन विद्या प्रारम्भ का निषेध है व किसी वस्तु को देना भी मना है। व्यापार प्रारम्भ की दृष्टि से बुध श्रेष्ठ है।

बुध के अचूक फल

- बुध अकेला किसी भाव में कम ही पाया जाता है। अतः इसके अकेले के फल के वर्णन मिलने कठिन है। क्योंकि बुध सूर्य या शुक्र प्रायः साथ मे या आगे पीछे रहते हैं। अतः इनके परिप्रेक्ष्य में फल मिलते रहते हैं।
- लग्न में अकेला बुध शुभ फल करेगा, शुभ दृष्टि हो तो व्यापार से धनी बनायेगा (लग्न+कन्या+मिथुन)।
- सातवें भाव में अकेला बुध हो तो प्रायः नपुंसकता ही देगा चाहे शुभ दृष्टि ही क्यों न हो (लग्न कन्या, बुध) विवाह शीघ्र होगा।
- तीसरे भाव में बुध व्यक्ति को ज्योतिषी, डॉक्टर, लेखक और न्यायाधीश बनाता है (लग्न कर्क, कन्या, धनु)।

- यदि धन स्थान में बुध व तीसरे शुक्र हो तो जातक ज्योतिषी, सुन्दर हस्ताक्षर वाला तीव्र स्मरणशक्ति वाला होगा। आयु के 24, 30, 36वें वर्ष में भाग्योदय होगा।
- चौथे बुध गु+शु+श के साथ हो तो उत्तम व्यापार व वाहन योग बनेगा। यदि राहु साथ हो तो जमीन योग निर्बल रहेगा।
- मिथुन लग्न में पाप प्रभावी बुध चर्म रोग देता है। सू+च. के साथ हो तो।
- द्वितीयेश बुध का पाप प्रभाव घर से भागने की प्रवृत्ति को प्रबल करेगा।
- तृतीयेश बुध (लग्न, मेष, कर्क) हो तो पाप पीड़ित अकाल मृत्यु सभव है।
- अष्टमेश बुध (लग्न वृश्चिक, कुम्भ) सट्टे से धन दिलाने वाला हो तो निर्बल धन नाश होगा।
- मिथुन राशि में बुध तृतीय व भावेश पाप प्रभावी हो तो सास की नली, दमा खांसी के रोग होंगे।
- कन्या राशि में बुध षष्ठ भाव भावेश पीड़ित हो तो कब्ज, टायफाईड, हर्निया, आंत्रशोध होंगे.
- तृतीयेश बुध के साथ हो तो कण्ठ रोग होगा।
- षष्ठेश और बुध लग्न में हो तो जातक गूंगा होता है।
- चंद्र+मंगल+बुध तीनों ग्रह राहु व शनि से पीड़ित हों तो कुष्ठ रोग होगा।
- चंद्र और बुध पाप प्रभावी हो तो पागलपन की संभावना रहेगी।
- शनि की राशियों में बुध या मंगल हो तो जातक हसी दिल्लगी वाला होगा।
- बुध का गुरु से संबंध हो तो जातक हंसोड़ प्रवृत्ति प्रधान होगा।
- बुध के साथ चद्र तथा चौथा भाव भी पीड़ित हो तो त्वचा रोग होगा।
- यदि धनेश वक्री हो बुध स्थान में दरिद्र योग बनेगा।
- केन्द्र में स्वगृही या उच्च का बुध हो तो भद्रयोग बनेगा। व्यक्ति धनी बनेगा।
- सातवें नीच का बुध हो तो जातक का विवाह देर से होगा
- 5वें बुध (लग्न कर्क, वृश्चिक, मीन) प्रथम पुत्री हो बाद में पुत्र होगा (कुम्भ में संतान की कमी)।
- मेष, सिंह, धनु राशि में व्यक्ति को ज्योतिषी, गणितज्ञ, तत्त्वज्ञानी, इजीनियर, वृष, कन्या मकर में होती पदार्थ, विज्ञान, हस्तरेखा मिथुन, तुला, कुम्भ

चिकित्सक व्याकरणी व्यापारी। कर्क, वृश्चिक मीन म जातक टाइपिंग अंगूठे का विशेषज्ञ होगा।

- बुधादित्य योग सरकारी नौकरी देना, शिक्षक या डॉक्टर, वकील बनायेगा क्लर्क, बैंक में नौकरी की सभावना है।
- दशम भाव में बुध राशि 1 5, 9 का हो तो जातक इंजीनियर, गणितज्ञ, क्लर्क, शिक्षक होगा। 2 6 10 व्यापारी, कमीशन एजेन्ट, ठेकेदार होगा। 3, 7, 12 समाचार सम्पादक मुद्रक, प्रकाशक होगा।
- 11वें भाव म बुध राशि 1, 5, 9 में हो तो 1 या 2 पुत्र होंगे 2, 6 10 में जातक चित्रकार, टाइपिस्ट, कम्पाउण्डर होगा। 3, 7, 11 में शिक्षा डिमोस्टेटर 4, 8, 12 में हो तो स्वतत्र व्यापार की सभावना है।
- 12वें भाव मे बुध हो तो व्यक्ति खर्चीला, ज्ञानी व विद्वान होगा एवं समाज में अग्रणी होगा।

उपाय

निर्बल बुध को बलवान करने तथा बुध दोष दूर करने हेतु।

1. विष्णु पूजन, यज्ञ व विष्णु सहस्र नाम का पाठ करें।
2. बुध रत्न पन्ना 7 से 8 रत्ती तक का, विषम संख्या लॉलडी या हरा काच भी पहन सकते है। हरी चड्डी या बनियान पहनें।
3. बुधवार को यम की पूजा करें और ब्राह्मण से जप कराएं।
4. बुधवार को गणपति दर्शन कर भोग लगाएं। गणपति को दूध चढ़ाएं
5. गाय को हरी घास दें। हरी सब्जी, अन्न क्षेत्र म द व हरा वस्तु मंदिर म चढ़ाए
6. हाथी को नारियल दे।
7. सत्यनारायण व्रत व कथा करें.
8. कासे के पात्र में सुवर्णतुष डालकर छायादान करें।
9. गौ को मूंग की दाल, गुड़ तथा हर बुधवार को रोटी दे।
10. तोते को हरी मिर्च दें, तोता पालें।
11. वैष्णव संत के घर हर बुधवार 'सीधा' का सामान दें।
12. एकादशी का व्रत करे व साधुओं को हरे फल दान दे।
13. पारद शिवलिंग, बुधवार व्रत कथा व बुधवार को व्रत करना भी श्रेष्ठ होता है

❑❑❑

बुध का खगोलीय स्वरूप

बुध सूर्य के सबसे निकटतम ग्रह है। इसी कारण इस पर भयंकर उष्णता है। बुध सूर्य से 5,80,00,000 कि.मी. की दूरी पर स्थित है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 88 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। बुध सदैव अपना एक भाग सूर्य के सम्मुख रखकर सूर्य की परिक्रमा करता है यह हमारे सौर मण्डल का सबसे छोटा ग्रह है। इसका व्यास केवल 5160 कि.मी. है और इसका गुरुत्व भी हमारी पृथ्वी से एक चौथाई है। पृथ्वी पर छः फुट कूदने वाला व्यक्ति बुध पर चौबीस फुट ऊंचा कूद सकेगा। सूर्य का निकटतम ग्रह होने के कारण इसे देखा जाना भी कठिन है। यह सूर्य के साहचर्य में न होने पर, सूर्योदय के कुछ मिनट पहले पूर्वी क्षितिज पर अथवा सूर्यास्त के कुछ ही मिनट बाद तक पश्चिमी क्षितिज पर, प्रथम कक्षा के तारे के समान चमकता हुआ दिखाई देता है। बुध पूर्व दिशा में अस्त होने के बत्तीस दिन बाद वक्री होता है। वक्री होने के चार दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है तथा अस्त होने के सोलह दिन बाद पूर्व में उदय, उदय के चार दिन बाद मार्गी, मार्गी के बत्तीस दिन बाद पूर्व में पुनः अस्त हो जाता है।

बुध को क्षैतिज, सौम्य, बोधन, शान्त, कुमार हेम्न, उतारूद आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

बुध की गति बुध अपनी धुरी पर 24 घण्टा 5 मिनट में पूरी तरह घूम लेता है तथा 87 दिन 23 घण्टा 15 मिनट और 16 सैकेण्ड में सूर्य की परिक्रमा कर लेता है। जिस समय यह सूर्य के निकट होता है तब प्रति सैकेण्ड 35 मील, दूर रहने पर प्रति सैकेण्ड 23 मील और मध्यम गति 29 मील प्रति सैकेण्ड की गति से परिभ्रमण करता है। यह एक घण्टे में एक लाख नौ हजार मील की गति से चलता है। स्थूल मान से बुध एक राशि पर 25 दिन व एक नक्षत्र पर 8 1/2 दिन रहता है।

सूर्य से 27 डिग्री अंश की दूरी से आगे होने पर यह वक्री हो जाता है। जिस राशि पर यह वक्री होता है, उस पर 25 दिन ही रह पाता है। सूर्य की गति से भी तीव्र गति वाला होने के कारण यह पूर्व में अस्त और पश्चिम में उदय होता है और

जब यह वक्री होता है तब पश्चिम में अस्त व पूर्व में उदय होता है। वक्री होने की स्थिति में यह सूर्य से 12 डिग्री अंश की दूरी पर तथा मार्गी होने पर 13 डिग्री अंश पर अस्त हो जाता है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर आने से वक्री और बारहवीं पर शीघ्रगामी होता है। यह 92 दिन मार्गी और 23 दिन वक्री रहता है। मार्गी होने पर 37 दिन उदित और 36 दिन अस्त रहता है। वक्री होने पर 33 दिन उदय और 16 दिन अस्त रहता है। जब बुध की गति 113.32 घटी पल की होती है तब यह परम शीघ्रगामी या अतिचारी हो जाता है और इस स्थिति में 20 दिन रहता है। यह एक वर्ष में तीन बार वक्री होता है। बुध वक्री होने पर एक दिन आगे या पीछे स्थिर सा प्रतिभासित भी होता है।

❑❑❑

कन्यालग्न की चारित्रिक विशेषताएं

कन्यालग्न का स्वरूप

पार्वतीयाथ कन्याख्या राशिर्दिनबलान्विता।
शीर्षोदया च मध्याङ्गा द्विपाद्याम्यचरा च सा ॥13॥
सा सस्यदहना वैश्या चित्रवर्णा प्रभंजिनी।
कुमारी तमसा युक्ता बालाभावा बुधाधिपा॥14॥

बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 13

पर्वतचारिणी, दिवाबली, शीर्षोदय, मध्यम देह, द्विपद, दक्षिण वासिनी, अन्न और अग्नि हाथ में रखने वाली, वैश्य जाति, चित्रवर्ण, वायुतत्त्व, कुमारी तथा तमोगुण से युक्त कन्यालग्न का स्वामी बुध है॥13-14॥

क्रीडामन्थरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसबाहुः सुखी,
श्लक्ष्णः सत्यरतः कलासु निपुणः शास्त्रार्थविद् धार्मिकः।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहैर्वित्तैश्च संयुज्यते,
कन्यायां परदेशगः प्रियवचाः कन्याप्रजोऽल्पात्मजः ॥6॥

–बृहज्जातकम् अ. 16/ श्लो. 6

कन्या राशि में चंद्रमा हो तो मनुष्य लज्जा व संकोच के कारण स्त्रियोचित हाव भाव से युक्त दृष्टि व गति (चाल) वाला, झुके हुए कन्धों व लटके हुए हाथों (भुजाओं) वाला, सुखी कोमल तन-मन वाला, सत्य का पक्षधर, कलाओं में निपुण, शास्त्रों के अर्थ को समझने वाला, धार्मिक, बुद्धिमान्, सभोग प्रिय, दूसरे के धन व मकान को पाने वाला, जन्म स्थान से अन्यत्र रहने वाला, प्रियभाषी, अधिक कन्या संतति वाला, कम पुत्रों वाला होता है।

कन्याविलग्ने तु नरः प्रसूतो विज्ञानविद्यागमशास्त्रलुब्ध.।
लुब्धो गुरुणा रतिलालसश्च मानी च सौभाग्यगुणैश्च युक्तः॥6॥

–वृद्धयवन जातक अ.24/श्लो.6/ पृ.288

यदि कन्यालग्न में जन्म हो तो मनुष्य विशेष ज्ञान की लालसा रखने वाला विद्यार्जन करने वाला, शास्त्रों के मर्म को जानने वाला, लोभी स्वभाव वाला गुरुओं की संगति चाहने वाला, रति क्रिया में प्रेम करने वाला, मान-सम्मान वाला, सौभाग्यशाली व गुणों से युक्त होता है।

कन्यालग्नभवः क्रियासुनिपुणः श्रीमान् सुधीः पंडितः
मेधावी वनिताविलासरसिको बन्धुप्रियः सात्विकः ॥6॥

–जातक पारिजात श्लो.6/पृ.678

कन्यालग्न में उत्पन्न जातक विविध क्रियाओं में अत्यन्त निपुण धनी, बुद्धिमान पंडित, मेधावी, बन्धुओं से प्रेम करने वाला, स्त्रियो के विलास का रसिक सात्विक (वैसे तो प्रत्येक मनुष्य में सत्व रज, तम तीनों गुण रहते हैं परन्तु सत्वगुण जिसमें अधिक हो उसे सात्विक कहते हैं), बन्धुओं से प्रेम करने वाला होता है।

श्यामः सुवाग्विनीतः प्राशु सुकुमारमूर्तिरबलाढ्यो।
स्त्रीभ्योऽर्थभागनिष्ठो दीर्घशिरा मधुसमाक्षश्च॥1॥

–सारावली श्लो. 10/पृ. 466

यदि जन्म लग्न में कन्या राशि व कन्या रशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक काले वर्ण का, सुन्दर वालों वाला, विनीत, नम्र, लम्बा कद, सुन्दर स्वरूप स्त्रियों के द्वारा धन प्राप्त करने वाला, लम्बे ललाट वाला और सहरद के समान नेत्र वाला होता है।

कन्यालग्नभवो बालो, नानाशास्त्र विशारदः।
सौभाग्यगुण सम्पन्नः सुन्दरः सुरतप्रियः॥

–मानसागरी अ. 1/श्लो. 6

कन्यालग्न वाला मनुष्य विविध कलाओं में प्रवीण, रुचिशील, कल्याण-शान्ति-विधायक, सौन्दर्य अभिलाषी, साफ स्वच्छता का प्रेमी, नित्य लक्ष्मीयुत तथा कामी वासना प्रधानमति एव विषय ज्ञानी होता है।

नक्षत्र चरणानुसार फलादेश

टो-पा-पी　　　पू-ष-ण-ठ　　　पे-पो

उत्तराफाल्गुनी　　　हस्त-4　　　चित्रा-2

उत्तरायास्त्रय: पादा हस्त चित्रार्द्ध कन्या।।

उत्तराफाल्गुनी (सूर्य नक्षत्र), हस्त (चंद्र नक्षत्र) तथा चित्रा (मंगल नक्षत्र) इन तीनों के मेल से कन्या राशि की उत्पत्ति होती है। तेजस्विता, कोमलता और कठोरता तीनों का समन्वय कन्या राशि में मौजूद है।

चरण	अंश	नवमां.-शेश	राशी.श	नक्षत्रेश	उप-नक्षत्रेश	स्वामी अंश से तक
द्वितीय	3.20.0	श.	बु.	सू.	रा.	0.00.00 से 1.13.20
तृतीय	6.40.0	श	बु.	सू.	गु.	1.13.20 से 3.0.0
चतुर्थ	10.00..00	गु.	बु	सू.	रा. बु. के. शु.	3.0.0 से 5.6.40 5.6.40 से 7.0.0 7 0.0 से 7.46.40 7.46.40 से 10.0.0

उत्तराफाल्गुनी शेष 3 चरण

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र सिंह राशि के 26.40 अंश से कन्या राशि 10.00.00 अंश तक पड़ता है। इसके लिए अर्यमा शब्द का प्रयोग भी होता है। इसका अर्थ यम, सयम, तथा काबू मे रखना भी है। इस तरह यह नक्षत्र शासन व राज्य से संबंधित होकर सूर्य के नक्षत्र के रूप में प्रयुक्त है।

जातक परिजात के अध्याय 7 में वर्णन है ''भोगी चोत्तर फाल्गुनी जनितो मानी परस्त्रीरत:'' अर्थात् सिंह का चंद्र भी हो व उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में कन्या में भी चद्र होगा तो भी सूर्य के नक्षत्र में होने से फल अच्छा करेगा। वह राजशाही होने से भोगी भी रहेगा और परस्त्री में रत भी बन सकता है. सूर्य राजा है वह सब तरह की भोग सामग्री से युक्त है उसके नक्षत्र में चद्रमा का भोग सम्पन्न हो जाना स्वाभाविक है। सूर्य मान का कारक ग्रह माना गया है। शुभ ग्रह चंद्र से प्रभावित हो तो इसका नक्षत्र

नाम की अभिव्यक्ति कर सकता है सूर्य के नक्षत्र में चंद्रमा अपनी स्वाभाविक स्थिति से विपरीत दिशा में ज्ञान से परस्त्री रत व्यक्ति बन जायेगा।

चंद्रमा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में—'विद्यार्थ युक्त सुख भोग भागी सौभाग्य युक्तोऽर्थमर्म शशांक।' चंद्र उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति विद्या और धन से युक्त सुखी और भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य है। इसलिए विद्या तथा राजसी भोगों का चंद्रमा की इस नक्षत्र में स्थिति से प्राप्त होना उपयुक्त होगा क्योंकि ये सब गुण सूर्य में पाए जाते हैं।

सारदीप के अनुसार—*'उत्तराफाल्गुनी पाद चतुर्णा तद् भवस्यच पण्डितः पृथ्वीपालो विजयी धार्मिको भवत्'*

उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण में जन्म—व्यक्ति पंडित होगा इसका कारक इस पाद का नवांशेश गुरु है। नक्षत्रेश, सूर्य दोनों विद्या के लिए अच्छे हैं, दोनों का चंद्र पर प्रभाव पंडित बनायेगा।

चरण	अंश के अवधि	नवमा-शेश	राशी-श	नक्षत्र स्वामी	उपनक्षत्र स्वामी	स्वामी अंश से तक
प्रथम	13.20.0	म	बु.	च.	चं.	10.0.0 से 11.6.40
द्वितीय	16.40.0	श.	बु.	च.	म.	11.6.40 से 11.53.20
तृतीय	20.0.0	बृ.	बु.	च.	रा.	11.53.20 से 13.53.20
चतुर्थ	23.20.0	च.	बु.	चं.	गु. श. बु. के. शु.	13.53.20 से 15.40.00 15.40.00 से 17.46.00 17.46.40 से 19.40.00 19.40.00 से 20.26.40 20.26.40 से 22.40.00

उत्तराफाल्गुनी के दूसरे चरण में जन्म—हो तो व्यक्ति राजा होता है इसका नवांशेश शनि है और नक्षत्रेश सूर्य है जहां तक चंद्र पर नक्षत्र स्वामी सूर्य के प्रभाव का प्रश्न है यह प्रभाव राजा बना सकता है क्योंकि सूर्य राज्य का कारक है परन्तु शनि नक्षत्र चरण का स्वामी है अतः परस्पर विरोध रहेगा। अतः जहां तक स्वयं शनि के अपने गुणों का प्रश्न है जैसे क्षेत्र वह बहुमूल्य हो जाएंगे क्योंकि उसका संपर्क दो राजकीय ग्रह सूर्य और चंद्र से हो जायेगा।

उत्तराफाल्गुनी के तीसरे चरण में जन्म—इस नक्षत्र चरण मे यदि चद्र स्थित होगा तो व्यक्ति विजयी होगा। इसके नवांश का स्वामी भी शनि है। शनि+चद्र परस्पर शत्रु हैं और शनि सूर्य का भी शत्रु है। अत: शत्रु रूप शनि को सूर्य और चंद्र से हानि उठानी होगी। अत: व्यक्ति विजयी होगा।

उत्तराफाल्गुनी के चौथे चरण मे जन्म—इस नक्षत्र चरण में चद्र होने स जातक धार्मिक होगा। इस चरण का नवांशेश गुरु है जो कि धार्मिक है और नक्षत्रेश स्वामी सूर्य का आत्मरूप सात्विक है। अत: चद्र पर दोनों ओर से धार्मिक प्रभाव के कारण व्यक्ति धार्मिक बनेगा।

हस्त नक्षत्र

नक्षत्रेश—चंद्रमा, **राशीश**—बुध

हस्त नक्षत्र फल—*'चोरोघृणी पापरतोऽतिधूर्त उत्साहवान् शीत करे करस्थे।'* यदि चंद्र हस्त नक्षत्र में हो तो मनुष्य चोर, घृणा योग्य, पापरत, धूर्त व उत्साही होगा।

नोट—इस श्लोक में जिन-जिन अवगुणों का वर्णन है उससे ठीक उलट इसी संदर्भ में 'जातक-परिजात' में आये हैं। हस्तर्क्षे यदि काम धर्मनिरत प्राज्ञोपकर्त्ता धनी 666। उनका कथन है कि हस्त नक्षत्र मे जन्मा व्यक्ति धार्मिक होता है, उपकार करने वाला तथा बुद्धिमान होता है। अस्तु यहां फल जातक परिजात का श्रेष्ठ प्रतीत होता है।

हस्त नक्षण का चरणगत फल—*'हस्ते जातो यदा बाल शूरोवादी च रोगवान, धनधान्य युत: श्रीमान् फलस्यात प्रथमाधित:'*

चरण	अंश से तक	नवांशेश	राशीश	नक्षत्रेश	स्वामी अंश से तक
प्रथम	23.20.0 से 26.40.0 तक	सू.	बु.	मं. रा.	23.20.00 से 24.06.40 26.06.40 से 27.53.20
द्वितीय	26.40.0 से 30.00.0 तक	बु.	बु.	श.	27.53.20 से 30.00.00

हस्त के प्रथम चरण में जन्म—इसमें जन्मा जातक शूर तथा झगड़ा जीतने वाला होगा। जिसका कारण यह चरण मंगल के नवांश का है। चंद्र-मंगल का विशेष प्रभाव इसमें होने से शूरवीर व झगडालू दोनों ही गुण होंगे।

हस्त के द्वितीय चरण में जन्म—इसमें जन्मे जातक को रोग विरासत में मिलेगा। कारण नवांशेश शुक्र+चंद्र परस्पर शत्रु हैं। अत: रोगी बनने की संभावना रहती है।

हस्त के तृतीय चरण में जन्म—इसमें जन्मा व्यक्ति धनी पैदा होता है कारण नवांशेश बुध का पूर्ण प्रभाव रहता है। अत: धन धान्य में वृद्धि होगी ही।

हस्त के चतुर्थ चरण में जन्म अगर जातक इस नक्षण चरण में पैदा हो तो इसका नवांशेश चंद्र ही होगा। स्व नक्षत्र में चल आदि गुणों में वृद्धि करके श्रीमान बनायेगा.

चित्रा नक्षत्र

नक्षत्र स्वामी—मंगल, **राशि**—कन्या, **स्वामी ग्रह**-बुध

चंद्रमा चित्रा नक्षत्र में—*"चित्रासु चित्रांबरमाल्यधारी सुलोचनांग पुरुषश्च जात:"* चित्रा नक्षत्र में स्थित चंद्र से जातक कई प्रकार के वस्त्र व आभूषण पहनता है। उसकी आंखें और अंग सुंदर होते हैं। चित्रा स्वयं मंगल का नक्षत्र होने से यह दोनों मित्र हैं इसलिए शुभ फल देगा।

चित्रा के दो चरणों का फल—*"चित्रायां प्रथमात्पादात फलं जातस्य कथ्यते चोर चित्रकार: स स्यात् परदारगामी च पीड़ित।"*

चित्रा के प्रथम चरण में जन्म—इस चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चोर होगा। क्योंकि इसका नवांशेश सूर्य है नक्षत्रेश मंगल है। अत: सूर्य+मंगल+चंद्र का प्रभाव होगा।

चित्रा के द्वितीय चरण में जन्म—इस चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चित्रकार होगा। इस चरण का स्वामी बुध नवांशेश है। बुध+मंगल+चंद्र योग से चित्राकारिता प्रकट होती है ये दो चरण कन्या राशि के अन्तर्गत आते हैं शेष दो चरण तुला राशि के अन्तर्गत आते हैं।

भोज संहिता

कन्यालग्न में उत्पन्न स्त्री—कन्या चूंकि बुध राशि का लग्न है, इसका स्वामी बुध विद्या का स्वामी एवं व्यापारी भी है। अत: इस लग्न में जन्मी जातिका विनय सम्पन्न व्यवहार कुशल होगी। वह सादे स्वभाव की तथा सभी प्रकार के सुख सौभाग्य को प्राप्त करने वाली होगी। वह अपने परिवार एवं बंधुवर्ग के प्रति स्नेहाधीन और बहुत सी कलाओं की जानकारी रखने वाली होगी। यह कन्या नारी इच्छाओं का दमन करने में माहिर होगी।

कन्यालग्न व राशि के शुभाशुभ ग्रह—लग्नेश और दशमेश बुध प्रधान ग्रह है और सदा ही शुभ रहते हैं।

- भाग्येश और धनेश (मारकेश) होता हुआ भी शुक्र त्रिकोण राशि का स्वामी होने से सदा शुभ होता है व बुध और शुक्र दोनों इस लग्न व राशि के प्रधान ग्रह हैं तथा हमेशा प्रायः शुभ ही करते हैं।
- इस लग्न का परम शत्रु अष्टमेश तृतीयेश मंगल है। जहां भी बैठेगा उस भाव को बिगाड़ देगा। यह जितना पीड़ित रहेगा उतना ही अच्छा फल प्रदान करेगा।
- यहां पर चतुर्थ सप्तमेश होकर भी गुरु पापी है। केन्द्राधिपत्य दोष उसको है। यह अगर स्वगृही हो तो हंस योग बनकर शुभ फल देगा। द्विस्वभाव लग्न के कारण सप्तमेश गुरु बाधक ग्रह है।
- लाभेश होने से चंद्र सदैव पापी होता है चंद्र निर्बल होकर लाभ देगा।
- पंचमेश षष्ठेश शनि (दूषित) ग्रह है। यह सम फल प्रदान करता है। आधा अच्छा आधा बुरा।
- राजयोग कारक ग्रह शुक्र व बुध हैं। शुक्र त्रिकोणेश है। बुध दशमेश है। दोनों के संबंध से राजयोग व लक्ष्मी योग बनता है।
- सूर्य द्वादशेश है तथा पृथकता कारक ग्रह है। परंतु यह साहचर्य से फल देता है। इसका फल सम होता है। मारकेश निश्चित तौर पर गुरु महादशा में शनि की अंतर्दशा है। या फिर शुक्र में शनि की अंतर्दशा बनेगी।
- शुक्र अपनी दशा अंतर्दशा में अशुभ फल नहीं देगा परन्तु वह पाप ग्रह के साथ हो तो अशुभ फल देगा चोट, धोखा या धनहानि देगा.
- शुक्र में शनि की दशा अंतर्दशा में जातक योगहीन बनेगा.
- यहां गुरु+शुक्र, गुरु+शनि के योग निष्फल योग देंगे।

रोग

कन्या राशि बुध व षष्ठ भाव षष्ठेश पर पाप प्रभाव हो तो कब्ज, टाइफाइड, हर्निया या आंत्र रोग बनते रहेंगे। क्योंकि षष्ठ स्थान और कन्या राशि काल पुरुष का षष्ठ अंग आंतड़ियां है।

राशिगत स्वभाव

कन्या राशि वाली कोई भी स्त्री हो वह गौर वर्ण लिए हुए होगी। ग्रह प्रभाव हो तो जातिका का रंग कुछ साफ रहेगा। वह सदैव अपने शरीर को स्वच्छ रखेगी और उपयुक्त वेशभूषा धारण करेगी। यह सौभाग्यमती होगी। इस राशि में जन्मी

जातिका की सतति तो होती है पर अधिक भी हो सकती है। उसमे कन्या की सभावना ज्यादा रहती है जातिका घर के विविध कार्यों म कुशल पढ़ी लिखी धर्मवती और परिजनो को प्यारी होती है। इसके पेट मे प्राय: दर्द रहता है। आयु के 8वे वर्ष मे गिरने का भय 10वे वर्ष में लम्बी बीमारी का भय रहता है और बचे तो 70 वर्ष की आयु पार कर सकती है। प्राय: ऑपरेशन से पित रोग मे या सदमे स मृत्यु की संभावना बनती है। प्राय: आयु के 3, 5 10, 18, 42 40वे वर्ष मे सकट आते है

स्वरुप—प्राय: मझोला कद, गाल भरे हुए, बाहु और कंधे छोटे, बड़े नेत्र स्थूल तथा सामान्य शरीर, कंधे व बाहु ढीले होते हैं। स्वभाव में स्त्री वर्गीय झलक होगी। रंग गोरापन लिए गेहुआ आकर्षक व घनी केश वाली।

स्वभाव—नेत्रो मे लज्जा, कामी प्रवृत्ति उष्मा का अभाव। दूसरों की भूलों को बारीकी से निकालने वाली पढ़ने में होशियार हो, चतुर व चालक हो विदूषी भी होगी। पराये धन व मकानो का लाभ पावें। व्यापारी लाइन मन में हो, मेडिकल लाइन में होशियार, सामाजिक कार्य मे रुचि वाली राजनीति में होशियार व सफल होगी पति पक्ष से परेशान रहेगी एव पुत्र कम पुत्री ज्यादा होंगी। स्वयं भावुक हो। जातिका में बहकाने मे शीघ्र आये बिना सोचे समझे काम करने की प्रवृत्ति प्रधान होगी। कोमल प्रकृति होगी, उसके मन की थाह पा लेना कठिन है। जातिका दोहरा जीवन जीने वाली होगी। दो विरोधी पार्टियो मे मेल रख सकने वाली पर स्वभाव से स्वार्थी होगी। प्रेम के क्षेत्र मे सदा असफल रहेगी। संकट में शीघ्र हारने वाली होगी।

अन्य योग

- ❑ कन्यालग्न मे लग्न में नीच का शुक्र भी बहुत अच्छा धन देता है। प्रथम कोटि का व्यक्ति विद्वान व सुखी होगा।
- ❑ कन्यालग्न में बुध जातिका को विदूषी व धनी बनाता है। लग्न मे बुध राजयोग प्रदाता होता है। जिसके प्रभाव से नेता व मत्री तक बनते हैं। लग्न में बुध चौथे, चद्र गुरु व मगल हो तो जातिका मंत्री, शासनाधिकारिणी बनती है।
- ❑ लग्न व दशम मे बुध के होने से भद्र योग बनेगा। इन स्थितियों मे बुध अच्छी सम्पति व राजयोग देगा और चतुर्थ एवं द्वादश में गुरु हंसयोग से धनी बनायेगा।
- ❑ कन्यालग्न में बुध+शुक्र का योग कहीं भी हो व्यक्ति को धनी मानी व यशस्वी बनाता है।
- ❑ लग्न में मगल हो तो बुरा प्रभाव होता है। कन्यालग्न का परम शत्रु ही मगल है परन्तु सातवे भाव मे मंगल+राहु का संयोग हो तो वह कुण्डली के

मांगलिक दोष को तोड़ देता है। ''नभतल मगल राहु यौगे'' उल्टे अच्छे फल प्राप्त होते हैं।

- कन्यालग्न में मंगल अगर शुभ दृष्ट व पाप दृष्ट दोनों ही हो तो उत्तम फल देगा जातक हट्टा कट्टा, स्वाभिमानी, पराक्रमी होगा, जमीन सर्वे पर कार्य अच्छा रहता है।
- 50 वर्ष की जातिका भी 30 वर्ष की दिखती है। जवानी बनी रहती है।
- लग्न में सूर्य अनिष्ट फल देगा। सेहत खराब रखेगा। कन्यालग्न में चंद्र हो तो जातिका सर्वांग सुंदर बुद्धिमति राजसेवी होगी।
- कन्यालग्न में सूर्य+मंगल साथ हों तो 30वें वर्ष में आंत्रशोथ होगा व ऑपरेशन का योग भी बनता है।
- लग्न में शनि मूत्रकृच्छ की बीमारी देगा। घरेलू जीवन अच्छा नहीं होगा।
- कन्यालग्न में अकेले राहु से भी कुण्डली भौमपच्चक दोष वाली बनती है। व्यक्ति लोगों के काम में दखल ज्यादा देते हैं। जातिका व्यवहार में अव्यवस्थित होती है। जातिका के विवाह में देरी होती है।
- कन्यालग्न में केतु हो तो अच्छा धनयोग रहता है पर सातवे में मगल राहु, शनि के कारण राहु की दशा में शनि की अंतर्दशा में काफी धन हानि हो जाती है।
- कन्यालग्न में मंगल अकेला दूसरे भाव में तुला का हो तो धन सग्रह होगा। जातक खर्च में कंजूस होगा। यह डॉक्टर व वकील को खूब धन देता है।

❑❑❑

नक्षत्रों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी

क.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
1	अश्विनी	चू,चे,चो,लु	मेष	मगल	अश्व	देव	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	माना	मिह १ हि. ।	केतु	7
2.	भरणी	,ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृत्तिका	अ	मेष	मगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
3.	कृत्तिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरूड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग । हि ३	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विपद	सोना	बिल्लाड	मगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विपद	चादी	बि २ मि	राहु	8
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विपद	चादी	बि.२ मी. ।	गुरु	6
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विपद	चादी	मीढ़ा	गुरु	6

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा क्षर्म
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मोढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विपद	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वान	बुध	17
10	मघा	मा,मी,मू,मो	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मि. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मी. 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरू	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हम	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
17	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प । हिरण 3	बुध	17
9.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरू	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि 2 मृग 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरू	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	। पृ । म । मू कु	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरू	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु	ताम्बा	1 मू. 2 मि	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	मि 3 नि	11	.
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाव	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाव	मगल	7
24.	धनिष्ठा	गू,गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाव	मगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	नि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 मी 1 सप	गुरू	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
26	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरू	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरू	16
27.	उ भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरू	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरू	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

नक्षत्रों के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्वि	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
	2	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	3.	कृत्तिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
कर्क	8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9	आश्लेषा	सर्प	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम
सिंह	10.	मघा	पितृ	केतु	शत्रु	महाशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	11.	पूर्व फा.	भग	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमण	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	आदित्य	चन्द्रमा	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	बृहस्पति	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
शनि	7	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
धनु	19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	सम
	20.	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ षा.	विश्वदेव	सूर्य	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	अभिजित्	ब्रह्मा										
	23.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	धनिष्ठा	अष्टावसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
कुंभ	25.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	26.	पूर्वा भा.	अजैकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	सम	सम	सम
मीन	27.	उ. भा.	अहिर् बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	28.	रेवती	पूषा	बुध	मित्र	शत्रु	सम	सम	सम	मित्र	सम	सम	सम

कन्यालग्न पर अंशात्मक फलादेश

कन्यालग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराफाल्गुनी   2. नक्षत्र पद—2

3. नक्षत्र अंश—5 3 20/0

4. वर्ण—वैश्य   5. वश्य—द्विपद

6. योनि—गौ   7. गण—मनुष्य

8. नाड़ी—आद्य   9. नक्षत्र देवता—अर्यमा

10. वर्णाक्षर—टो   11. वर्ग—श्वान

12. लग्न स्वामी—बुध   13. लग्न नक्षत्र स्वामी—सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि   15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र   17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'पृथ्वीपालो'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यशाली होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी होगा।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है एवं कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। लग्नेश बुध की दशा कमजोर फल देने वाली साबित होगी। भाग्येश शुक्र भी उत्तम फल नहीं दे पायेगा।

कन्यालग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराफाल्गुनी   2. नक्षत्र पद—2

3. नक्षत्र अंश—6 3 20/0

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**-गौ

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा

10. **वर्णाक्षर**–टो

11. **वर्ग**–श्वान

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध** शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पृथ्वीपालो'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी होगा।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से 'उदित अंशों' का है तथा बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

कन्यालग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी

2. **नक्षत्र पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–5/3/20/0

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–गौ

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा

10. **वर्णाक्षर**–टो

11. **वर्ग**–श्वान

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पृथ्वीपालो'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और

देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी होगा।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–5/10/20/0 से 5/6/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अर्यमा
10. **वर्णाक्षर**–पा
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'विजयी'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म लेने से ऐसा जातक सर्वत्र विजयश्री का वरण करेगा। जातक प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश बुध की दशा अच्छा फल देगी। शनि अनिष्ट फल नहीं देगा। शनि व शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 4 से 5

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराफाल्गुनी
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–5/10/20/0 से 5/6/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–अर्यमा

10. वर्णाक्षर–पा

11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15 लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'विजयी'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से ऐसा जातक सर्वत्र विजयश्री का वरण करता है। जातक प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करेगा।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशो में होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शनि व शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी

2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–5/10/20/0 से 5/6/40/0

4. वर्ण–वैश्य

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–गौ

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–अर्यमा

10. वर्णाक्षर–पा

11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'विजयी'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से ऐसा जातक सर्वत्र विजयश्री का वरण करता है। जातक प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करता है,

लग्न यहा पाप से छ: अशो के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अशो मे होने से लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी शनि व शुक्र की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 6 से 7

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–5/6/40/0 से 5/10/0/0

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–गौ **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–अर्यमा

10. वर्णाक्षर–पी **11. वर्ग**–मूषक

12. लग्न स्वामी–बुध **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'धार्मिक'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा हैं। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला, सस्कारी एवं सभ्य होगा।

यहा लग्न छः से सात अशो के भीतर होने से 'उदित अशो' मे है एवं बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी, शुक्र की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा भी शुभ फल देगी,

कन्यालग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–5/6/40/0 से 5/10/0/0

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–गौ **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–अर्यमा

10. वर्णाक्षर–पी **11. वर्ग**–मूषक

12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी -गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'धार्मिक'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला, संस्कारी एवं सभ्य होगा।

यहा लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में है। बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा भी उत्तम फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–5/6/40/0 से 5/10/0/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–गौ
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अर्यमा
10. वर्णाक्षर–पी
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'धार्मिक'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला, सस्कारी एव सभ्य होगा।

यहा लग्न आठ से नौ अंशों में है। उदित अशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा भी अत्यंत शुभ फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराफाल्गुनी
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–5/6/40/0 से 5/10/0/0 तक
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–गौ
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अर्यमा
10. वर्णाक्षर–पी
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'धार्मिक'

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति विद्या और धन से युक्त होता है। ऐसा जातक सुखी, भोगी और भाग्यवान होता है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य और देवता अर्यमा है। उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धार्मिक मनोवृत्ति वाला, संस्कारी एवं सभ्य होगा।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट फल नहीं देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बृहस्पति की दशा भी अत्यन्त शुभ फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–5/13/20/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–सूर्य
10. वर्णाक्षर–पू
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चन्द्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'शूरो वादी च'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है हस्त का अर्थ होता है हाथ। जिस तरह हाथ म पाच अगुलियां होती है उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एव नक्षत्र स्वामी चद्र है। हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न व्यक्ति शूरवीर एव तर्कशास्त्री होता है।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर 'आरोह अवस्था' मे है व पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–5/13/20/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–सूर्य
10. वर्णाक्षर–पू
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चंद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता 'शूरो वादी च'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पाच अगुलियां होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पाच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न व्यक्ति शूरवीर एवं तर्कशास्त्र का ज्ञाता होता है।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर आरोह अवस्था मे पूर्णबली है। बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–5/13/20/0

4. **वर्ण**—वैश्य

5. **वश्य**—द्विपद

6. **योनि**—भैंस

7. **गण**—देव

8. **नाड़ी**—आद्य

9. **नक्षत्र देवता**—सूर्य

10. **वर्णाक्षर**—पू

11. **वर्ग**—मूषक

12. **लग्न स्वामी**—बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—मंगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

18. **प्रधान विशेषता**—'शूरो वादी च'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है—हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के प्रथम चरण में उत्पन्न व्यक्ति शूरवीर एवं तर्कशास्त्री होता है.

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के भीतर आरोह अवस्था में है एवं पूर्णबली है. बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**—हस्त

2. **नक्षत्र पद**—2

3. **नक्षत्र अंश**—5/13/20/0 से 5/16/40/0 तक

4. **वर्ण**—वैश्य

5. **वश्य**—द्विपद

6. **योनि**—भैंस

7. **गण**—देव

8. **नाड़ी**—आद्य

9. **नक्षत्र देवता**—सूर्य

10. **वर्णाक्षर**—ष

11. **वर्ग**—मीढ़ा

12. **लग्न स्वामी**—बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**—'रोगवान'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है—हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी

पाच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चद्र है। हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म होने से व्यक्ति रोगी होता है। जातक के शरीर में स्थाई बीमारी रहेगी।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य आरोह अवस्था में है एवं पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा जातक को आगे बढ़ायेगी एव उत्तरोत्तर उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। चद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–5/13/20/0 से 5/16/40/0 तक
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–सूर्य
10. वर्णाक्षर–ष
11. वर्ग–मीढ़
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'रोगवान'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है–हाथ। जिस तरह हाथ में पाच अगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म होने से व्यक्ति रोगी होता है। जातक के शरीर में स्थाई बीमारी रहेगी।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है एवं पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–5/12/20/0 से 5/16/40/0 तक

4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—भैंस
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—सूर्य
10. **वर्णाक्षर**—ष
11. **वर्ग**—मेढा
12. **लग्न स्वामी**—बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'रोगवान'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्ता होता है. हस्त का अर्थ होता है—हाथ. जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चद्र है। हस्त नक्षत्र के दूसरे चरण में जन्म होने से व्यक्ति रोगी होता है। जातक के शरीर में स्थाई बीमारी रहेगी।

यहा लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है तथा पूर्ण बली है. लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। चद्रमा भी उत्तम फल देगा।

कन्यालग्न, अंश 16 से 17

1. **लग्न नक्षत्र**—हस्त
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—5/16.40/0 से 5/20/0/0 तक
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—भैंस
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—सूर्य
10. **वर्णाक्षर**—ण
11. **वर्ग**—मेढ़ा
12. **लग्न स्वामी**—बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.
18. **प्रधान विशेषता**—'धन-धान्य युक्त'

हस्त नक्षत्र मे जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है--हाथ। जिस तरह हाथ में पाच अंगुलिया होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी

पाच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एव नक्षत्र स्वामी चद्र है। हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से जातक धन-धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होगा।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है एव पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। चद्रमा की दशा भी ठीक रहेगी।

कन्यालग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–5/16/40/0 से 5/20/0/0 तक
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–सूर्य
10. वर्णाक्षर–ण
11. वर्ग–मीढ़
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
18. प्रधान विशेषता–'धन धान्य युक्त'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है हाथ। जिस तरह हाथ में पाच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पाच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से जातक धन धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होगा।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अशो के भीतर मध्य अवस्था में है एव 'पूर्ण बली' है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एव चंद्रमा की दशा भी ठीक रहेगी।

कन्यालग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–5/16 40/0 से 5/20/0/0 तक
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद

6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–सूर्य
10. वर्णाक्षर–ण
11. वर्ग–मीढ़ा
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चंद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
18. प्रधान विशेषता–'धन-धान्य युक्त'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है- हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने से जातक धन धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होगा

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है तथा पूर्ण बली है लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं चंद्रमा की दशा भी ठीक जायेगी।

कन्यालग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–हस्त
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–5/20/0/0 से 5/23/20/0 तक
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–सूर्य
10. वर्णाक्षर–ठ
11. वर्ग–मीढ़ा
12. लग्न स्वामी–बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चंद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चंद्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व.
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
18. प्रधान विशेषता–'श्रीमान्'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्ता होता है हस्त का अर्थ होता है हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती है। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी

पाच तारों के सहयोग स बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एव नक्षत्र स्वामी चंद्र है। ऐसा जातक धनवान एव ऐश्वर्यवान् होता है।

यहां लग्न उन्नीस अशों से बीस अशो के भीतर होने से मध्य अवस्था मे है एवं पूर्ण बली है। लग्नेश बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एव चंद्रमा की दशा भी उत्तम फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–हस्त | **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–5 20/0/0 से 5/23/20/0 तक

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–भैंस | **7. गण**–देव

8. नाड़ी–आद्य | **9. नक्षत्र देवता**–सूर्य

10. वर्णाक्षर–ठ | **11. वर्ग**–मीढ़

12. लग्न स्वामी–बुध | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–चद्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–चंद्र | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व. | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. प्रधान विशेषता–'श्रीमान्'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है -हाथ। जिस तरह हाथ में पांच अंगुलियां होती हैं। उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धन धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होता है

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था मे बलवान है। लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं चंद्रमा की दशा भी ठीक जायेगी।

कन्यालग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र–हस्त | **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–5/20/0/0 से 5/23/20/0 तक

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–भैंस

-7. **गण**–देव

8 **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य

10. **वर्णाक्षर**–ठ

11. **वर्ग**–श्वान

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'श्रीमान्'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है -हाथ। जिस तरह हाथ मे पाच अगुलिया होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चद्र है। हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धन-धान्य मे परिपूर्ण एव सम्पन्न होता है।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशो के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है एव बलवान है लग्नेश बुध की दशा उत्तम फल देगी। शुक्र की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा एव चंद्रमा की दशा भी ठीक जायेगी।

कन्यालग्न, अंश 22 से 23

1. **लग्न नक्षत्र**–हस्त

2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अश**–5/20/0/0 से 5/23/20/0 तक

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–भैंस

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–सूर्य

10. **वर्णाक्षर**–ठ

11. **वर्ग**–श्वान

12. **लग्न स्वामी**–बुध

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चद्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'श्रीमान्'

हस्त नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति उत्साही व कर्मठ कार्यकर्त्ता होता है। हस्त का अर्थ होता है हाथ। जिस तरह हाथ मे पाच अगुलिया होती हैं उसी तरह हस्त नक्षत्र भी

पांच तारों के सहयोग से बनता है। हस्त नक्षत्र का देवता सूर्य एवं नक्षत्र स्वामी चंद्र है। हस्त नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म होने से जातक धन-धान्य से परिपूर्ण एवं सम्पन्न होता है।

यहां लग्न बाईस से तेईस अंशों में अवरोह अवस्था में है एवं बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा भी ठीक जायेगी.

कन्यालग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा 2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश** 5/26/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य 5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र 7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य 9. **नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा
10. **वर्णाक्षर**–पे 11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–बुध 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'चोर'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चोर कार्य, तस्करी में रुचि रखता है।

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशों में अवरोह अवस्था में है तथा बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। सूर्य की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

कन्यालग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा 2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–5/26.40/0
4. **वर्ण**–वैश्य 5. **वश्य**–द्विपद

6. योनि—व्याघ्र

7. गण—राक्षस

8. नाड़ी—मध्य

9. नक्षत्र देवता—त्वष्टा

10. वर्णाक्षर—पे

11. वर्ग—मूषक

12. लग्न स्वामी—बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी—मंगल

14. नक्षत्र चरण स्वामी—सूर्य

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र

18. प्रधान विशेषता—'चोर'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंख और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चोर कार्य, तस्करी में रुचि रखता है।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य अवरोह अवस्था में है एवं बलवान है। लग्नेश बुध की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट नहीं करेगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।।

कन्यालग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र—चित्रा

2. नक्षत्र पद—1

3. नक्षत्र अंश—5/26/40/0

4. वर्ण—वैश्य

5. वश्य—द्विपद

6. योनि—व्याघ्र

7. गण—राक्षस

8. नाड़ी—मध्य

9. नक्षत्र देवता—त्वष्टा

10. वर्णाक्षर—पे

11. वर्ग—मूषक

12. लग्न स्वामी—बुध

13. लग्न नक्षत्र स्वामी—मंगल

14. नक्षत्र चरण स्वामी—सूर्य

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र

18. प्रधान विशेषता—'चोर'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति चोर कार्य, तस्करी में रुचि रखता है।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी। मगल मिश्रित फल देगा। सूर्य की दशा अपेक्षित अनिष्ट नहीं करेगी। शुक्र की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा **2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–5/26/40/0 से 5/30/0/0 तक

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–व्याघ्र **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा

10. वर्णाक्षर–पो **11. वर्ग**–मूषक

12. लग्न स्वामी–बुध **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'चित्रकार स्यात्'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अंग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला जातक कलाकार, संगीत सौंदर्य प्रेमी, चित्रकार या फोटोग्राफर होता है।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा **2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–5/26/40/0 से 5/30/0/0

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–व्याघ्र **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा

10. वर्णाक्षर–पो **11. वर्ग**–मूषक

12. लग्न स्वामी–बुध **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–मगल

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'चित्रकार स्यात्'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आंखें और अग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाए व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला जातक कलाकार, सगीत-सौंदर्य प्रेमी, चित्रकार या फोटोग्राफर होता है।

यहा लग्न सत्ताईस मे अठ्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है, लग्नेश बुध की दशा मध्यम फल देगी।

कन्यालग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**—चित्रा
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—5/26/40/0 से 5/30/0/0 तक
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—व्याघ्र
7. **गण** राक्षस
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—विश्वकर्मा
10. **वर्णाक्षर**—पी
11. **वर्ग**—मूषक
12. **लग्न स्वामी**—बुध
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—मगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'चित्रकार स्यात्'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आखें और अग सुन्दर होते है। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाए व आभूषण धारण करता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला जातक कलाकार, संगीत-सौंदर्य प्रेमी, चित्रकार या फोटोग्राफर होता है।

यहां लग्न अठाईस से उन्नतीस अशों वाला अवरोही अवस्था में "हीनबली" होने से सारा तेज समाप्ति की ओर है।

कन्यालग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**—चित्रा
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अश**—5/20/40/0 से 5/30/0/0 तक

4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—व्याघ्र
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—त्वष्टा
10. वर्णाक्षर—पो
11. वर्ग—मूषक
12. लग्न स्वामी—बुध
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—'चित्रकार स्यात्'

चित्रा नक्षत्र में जन्मे व्यक्ति की आखें और अग सुन्दर होते हैं। ऐसा जातक नित नूतन वस्त्र, मालाएं व आभूषण धारण करता है चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एव देवता त्वष्टा है। चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाला जातक कलाकार, सगीत-सौंदर्य प्रेमी, चित्रकार या फोटोग्राफर होता है।

यहा लग्न उन्नतीस से तीस अशो वाला अवरोही अवस्था मे जाकर मृतावस्था में है एवं निस्तेज है।

❑❑❑

कन्यालग्न और आयुष्य योग

1. कन्यालग्न वालो के लिये शुक्र द्वितीयेश होते हुए भी योगकारक व शुभ फलदाता है, सूर्य यहा मुख्य मारकेश का काम करेगा। मगल अष्टमेश होने से सहायक मारकेश है। आयुष्य प्रदाता ग्रह बुध है
2. कन्यालग्न वालों की मृत्यु दूसरों के आक्रमण, शास्त्रास्त्र द्वारा परदेश में, कफजन्य रोगों से संभव है।
3. कन्यालग्न वालों की औसत आयु 84 वर्ष की होती है। जन्म के उपरान्त 3 8 11 माह तथा 1, 2, 3, 6, 9, 10, 11, 17, 22, 26, 30, 33 41 49 57, 62, 68 72, 75 एव 78 वर्ष की आयु मे शारीरिक कष्ट एव अल्प मृत्यु सभव है।
4. यदि कन्यालग्न में, कन्या का नवमाश हो, बुध सातवें बृहस्पति गोपुर में शनि मृदु अश मे हो तो ऐसा जातक पूर्ण यशस्वी एव चिरजीवी होता है
5. कन्यालग्न में बुध हो तो जातक दीर्घ देह वाला एव उत्तम आयु को भोगने वाला प्राणी होता है।
6. कन्यालग्न म बुध, बृहस्पति एव शुक्र छठे हो तथा मगल सातवे या शनि आठवे नीच का हो तो व्यक्ति कुबडा होता है।
7. कन्यालग्न 15 अशो मे हो, सभी सौम्य ग्रह लग्न से पूर्वार्द्ध एक से सप्तम भाव तक बेठे हो, कोई भी तीन ग्रह उच्च के हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को प्राप्त करता है।
8. कन्यालग्न मे अष्टमेश मंगल लग्न मे हो तथा गुरु एव शुक्र से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
9. कन्यालग्न मे चंद्रमा छठे कुम्भ राशि का हो अष्टम स्थान मे कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हो तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

10. कन्यालग्न में वृश्चिक का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोणवर्ती हो तो जातक 85 वर्ष की आयु भोगता है।

11. कन्यालग्न में बुध लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हो तो जातक 84 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

12. कन्यालग्न में मंगल पांचवें, सूर्य सातवें एवं शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

13. कन्यालग्न में सूर्य+चंद्रमा दशम भाव में, शनि लग्न में एवं स्वगृही बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो तो एक प्रकार का उच्च राजयोग बनता है पर ऐसा जातक मात्र 68 वर्ष तक ही जी पाता है।

14. शनि लग्न में, धनु का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

15. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल सातवें हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष मे गुजर जाता है।

16. कन्यालग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक एवं विद्वान होते हुये 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

17. कन्यालग्न में लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ अष्टम स्थान में हो तो अष्टमेश मंगल पाप ग्रहों के साथ छठे भाव मे किसी भी शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है

18. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल यदि मेष या सिंह राशि में हो तो जातक 42 वर्ष तक ही जी पाता है

19. कन्यालग्न में शनि+मंगल हो चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

20. कन्यालग्न के द्वितीय या द्वादश भाव मे पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

21. कन्यालग्न में मेष का बृहस्पति एवं मीन का मंगल के परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से बालारिष्ठ योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के भीतर होती है।

22. कन्यालग्न में सूर्य-शनि-मंगल आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। यदि उपाय न किया जाए तो ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में होती है।

23. कन्यालग्न में सूर्य कुम्भ राशि में एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हो तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो बाल्यारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता है।

24. कन्यालग्न में राहु-बुध-शनि द्वादश में हो, गुरु पंचम में हो तथा अन्य शुभ योग न हो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है

25. कन्यालग्न में पंचम या छठे स्थान में सूर्य-बृहस्पति-राहु-मंगल हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है

26. कन्यालग्न के आठवें स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है

27. कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

28. कन्यालग्न के एकादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

29. कन्यालग्न में लग्नेश बुध एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो सप्तम स्थान में भी पाप ग्रह हो आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

30. कन्यालग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

31. कन्यालग्न में षष्ठेश शनि सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

32. कन्यालग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा और शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

कन्यालग्न और रोग

1. कन्यालग्न में षष्ठेश शनि लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
2. कन्यालग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश बृहस्पति पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. कन्यालग्न में चतुर्थेश बृहस्पति यदि अष्टमेश मंगल के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. कन्यालग्न में चतुर्थेश बृहस्पति मकर राशि में निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. कन्यालग्न के चतुर्थ स्थान में शनि धनु का एवं छठे स्थान में सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
6. जातक परिजात के अनुसार कन्यालग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
7. कन्यालग्न के चतुर्थ भाव में शनि एवं कुंभ का सूर्य छठे हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. कन्यालग्न के चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट-अटैक) का कष्ट होता है।
9. कन्यालग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. कन्यालग्न में बुध+बृहस्पति+मंगल की एक साथ युति दु:स्थानों में हो तो ऐसे जातक की वाहन दुर्घटना से अकाल मृत्यु होती है।
11. कन्यालग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।
12. कन्यालग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न को पाप ग्रह देखता हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

13. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल लग्न में हो, लग्नेश बुध अष्टम में हो, लग्न को कोई पाप ग्रह देखता हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता सदैव रोगी रहता है।
14. कन्यालग्न में लग्नेश बुध चौथे या बारहवें मंगल और शनि के साथ हो तो जातक को कुष्ठ (कोढ़) रोग होता है।
15. कन्यालग्न में शनि+चंद्रमा+बृहस्पति छठे स्थान में हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।
16. कन्यालग्न में शुक्र+शनि हो, बृहस्पति पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक को वीर्यस्राव का रोग होता है।
17. कन्यालग्न में शुक्र+शनि हो तथा सूर्य+बुध की युति कहीं भी हो तो व्यक्ति में नपुंसकता आती है
18. कन्यालग्न में मंगल+शनि सप्तम भाव में हो तो जातक की स्त्री व संतान को कष्ट होता है।
19. कन्यालग्न में षष्ठम भाव में स्थित राहु जातक को रोगी बनाता है
20. कन्यालग्न के दूसरे भाव में शनि हो छठे राहु तथा द्वादश में मंगल जातक को भयंकर नेत्र पीड़ा व दिमाग में गर्मी देता है।
21. कन्यालग्न में नीच का शनि अष्टमस्थ होने से जातक को मूत्र विकार (Urine problem) की समस्या रहती है।
22. कन्यालग्न में नीचस्थ शनि के साथ सप्तमेश गुरु भी आठवें हो तो मधुमेह, अर्श रोग तथा गुह्य रोगों के कारण जातक पीड़ित रहता है।
23. कन्यालग्न पर शनि व बुध का प्रभाव हो तथा शुक्र मकर या कुंभ राशि में हो तो जातक अपनी पत्नी को संतुष्ट नहीं कर पाता।
24. कन्यालग्न में मंगल+शुक्र छठे हो तथा उन पर शनि या गुरु की दृष्टि हो तो जातक के पेट में घाव (अल्सर) होता है।
25. कन्यालग्न में चंद्रमा अष्टम भाव में हो तथा बुध+सूर्य+मंगल की युति कहीं भी हो तो जातक का पाचन तंत्र खराब होता है तथा जातक ब्लडप्रेशर के कारण मृत्यु को प्राप्त करता है।
26. कन्यालग्न के तीसरे भाव में मंगल व राहु तुला के हो तो जातक के अंडकोश पर जहरीला कीड़ा काटता है अथवा जातक को अंडकोश का ऑपरेशन (प्रोस्टग्लैंड) होता है।

27. कन्यालग्न में सूर्य+शनि सप्तमस्थ हों तथा बुध व चंद्रमा छठे स्थान में हों तो जातक को मूर्च्छा रोग (मिर्गी की बीमारी) होती है।
28. कन्यालग्न में चंद्रमा, अष्टम में गुरु एवं नवम में राहु हो तो राहु की दशा तथा गुरु के अन्तर में जातक को भयंकर शारीरिक कष्ट होता है।
29. कन्यालग्न में राहु+चंद्रमा चतुर्थ में हों तथा उस पर शनि का प्रभाव हो शुभ ग्रह न देखते हों तो व्यक्ति को टी.बी. का रोग अवश्य होता है।
30. कन्यालग्न में शनि पंचम भाव में मकर का, तथा बुध+गुरु सप्तम में मीन राशि के हों तो जातक नपुंसक होता है
31. कन्यालग्न में मंगल पांचवें, सूर्य सातवें एवं शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को भोगता है।
32. कन्यालग्न में सूर्य+चंद्रमा दशम भाव में, शनि लग्न में एवं स्वगृही बृहस्पति चतुर्थ भाव में हो तो एक प्रकार का उच्च राजयोग बनता है पर ऐसा जातक मात्र 68 वर्ष तक ही जी पाता है।
33. शनि लग्न में, धनु का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दसवें स्थान में किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
34. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल सातवें हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
35. कन्यालग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
36. कन्यालग्न में लग्नेश बुध पाप ग्रहों के साथ अष्टम स्थान में हो तो अष्टमेश मंगल पाप ग्रहों के साथ छठे भाव में किसी भी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है.
37. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल यदि मेष या सिंह राशि में हो तो जातक 42 वर्ष तक ही जी पाता है।
38. कन्यालग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति छठे हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
39. कन्यालग्न के द्वितीय या द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

40. कन्यालग्न में मेष का बृहस्पति एवं मीन का मंगल परस्पर घर परिवर्तन करके बैठने से बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के भीतर होती है।

41. कन्यालग्न में सूर्य+शनि+मंगल आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो बालारिष्ट योग बनता है, यदि उपाय न किया जाए तो ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष की आयु में होती है।

42. कन्यालग्न में सूर्य कुंभ राशि में एवं शनि सिंह राशि में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हों तो 'बालारिष्ट योग' बनता है ऐसा जातक 12 वर्ष की आयु के पूर्व मृत्यु को प्राप्त होता है

43. कन्यालग्न में राहु-बुध+शनि द्वादश स्थान में हो, गुरु पंचम स्थान में हो तथा अन्य शुभ योग न हो ऐसा बालक जन्म लेते ही गुजर जाता है।

44. कन्यालग्न के पंचम या छठे स्थान में सूर्य+बृहस्पति+राहु+मंगल हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट में जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

45. कन्यालग्न के आठवें स्थान में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है

46. कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

47. कन्यालग्न के एकादश स्थान में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

48. कन्यालग्न में लग्नेश बुध एवं राहु दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान में भी पाप ग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर 'आत्महत्या' करता है।

49. कन्यालग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम स्थान में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

50. कन्यालग्न में षष्ठेश शनि सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

51. कन्यालग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ 'अकाल मृत्यु' को प्राप्त करता है।

❑❑❑

कन्यालग्न और धनयोग

कन्यालग्न मे जन्म लेने वाले जातको के लिए शुक्र धनप्रदाता ग्रह है। धनेश शुक्र की शुभाशुभ स्थिति से, धन स्थान से सबंध जोडने वाले ग्रहों की स्थिति एव योगायोग, सूर्य एव धन स्थान पर पड़ने वाले ग्रहो के दृष्टि सबंध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्त्रोतों तथा चल-अचल सपत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश बुध, पंचमेश शनि, भाग्येश शुक्र एवं लाभेश चंद्रमा को अनुकूल स्थितियां कन्यालग्न वाले व्यक्तियों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को बढ़ाने मे सहायक होती हैं।

वैसे कन्यालग्न के लिए मंगल गुरु चद्र अशुभ होते हैं। अकेला शुक्र शुभ फलदायक होता है। शुक्र और बुध योग कारक हैं। मंगल अष्टमेश होने से महामारकेश है। कन्यालग्न के लिए सूर्य मारक का काम करेगा पर वह अकेला नहीं मारेगा मगल वगैरह पाप ग्रह मारकेश के सहयोगी बनेंगे।

राजयोगकारक–गुरु शुक्र

सफल योग– 1. बुध+शुक्र, . 2. बुध+शनि

अशुभ योग– 1. बुध+मंगल, 2. बुध+गुरु 3. बुध+चद्र

निष्फल योग–1. गुरु+शुक्र, 2. गुरु+शनि

लक्ष्मी योग–शुक्र केन्द्र त्रिकोण मे, चद्रमा सप्तम में बुध लग्न या दशम में।

विशेष योगायोग

1. कन्यालग्न मे, लग्न में बुध के साथ शुक्र व शनि हो अथवा लग्न में स्थित बुध को शुक्र, शनि देखते हों तो जातक शहर का प्रतिष्ठित धनवान व्यक्ति होता है।

2. कन्यालग्न में पंचम स्थान में शनि, लाभ स्थान में कर्क का बुध हो तो जातक अपनी विद्या या हुनर के द्वारा धन कमाता हुआ शहर का प्रतिष्ठित धनवान व्यक्ति होता है।

3. कन्यालग्न में शुक्र यदि वृष, तुला या मीन राशि में हो तो व्यक्ति धनाध्यक्ष होता है, लक्ष्मी उसका पीछा नहीं छोड़ती।

4. कन्यालग्न में शुक्र, बुध के घर में तथा बुध, शुक्र के घर में अर्थात् शुक्र, मिथुन या कन्या राशि में तथा बुध, वृष या तुला राशि में हो तो व्यक्ति जीवन में व्यापार के द्वारा खूब धन कमाता हुआ लक्ष्मीवान होता है।

5. कन्यालग्न में शुक्र चंद्रमा के घर में तथा चंद्रमा शुक्र के घर में अर्थात् चंद्रमा वृष या तुला राशि में हो तो शुक्र, कर्क राशि में हो तो जातक महाभाग्यशाली होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्य के जोर से खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी दासी रहती है।

6. कन्यालग्न में शुक्र, वृष, तुला या मीन राशि का हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत रुपया कमाता है तथा इनका भाग्योदय प्रायः विवाह के बाद होता है ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली होता है।

7. कन्यालग्न में बुध यदि केन्द्र त्रिकोण में हो तथा शुक्र स्वगृही हो तो कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी व्यक्ति धीरे धीरे अपने पुरुषार्थ एवं पराक्रम से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति बन जाता है।

8. कन्यालग्न में बुध लग्नगत हो तथा गुरु का शनि से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक महाधनी होता है।

9. कन्यालग्न में पंचमस्थ शनि स्वगृही हो तथा लाभ स्थान में सूर्य-चंद्रमा हो तो जातक महालक्ष्मीवान होता है। उसके पास खूब रुपया एवं सम्पत्ति होती है।

10. कन्यालग्न में बुध, कर्क राशि में हो तथा चंद्रमा लग्न में हो तो जातक 33 वर्ष की आयु में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

11. कन्यालग्न हो, लग्नेश बुध, धनेश शुक्र, भाग्येश शुक्र तथा लाभेश चंद्रमा अपनी-अपनी उच्च एवं स्वराशि में हों तो व्यक्ति करोड़पति होता है।

12. कन्यालग्न में राहु, शुक्र, मंगल और शनि चार ग्रहों की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

13. कन्यालग्न में धनेश शुक्र यदि छठे आठवें या बारहवें स्थान में हो तो "धनहीन योग" की सृष्टि होती है जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमे पानी नही ठहर पाता ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता, सदैव रुपये की कमी रहती है। इस योग की निवृत्ति हेतु गले में अभिमंत्रित "शुक्र यंत्र" धारण करना चाहिये। (पाठक चाहे तो "शुक्र यंत्र" हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।)

14. कन्यालग्न में धनेश शुक्र यदि आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।

15. कन्यालग्न मे मंगल पंचम स्थान में मकर राशि का हो तो "रुचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

16. कन्यालग्न में सुखेश गुरु लाभेश चंद्र नवम भाव में एवं मंगल से दृष्ट हो तो जातक को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

17. कन्यालग्न में गुरु+चंद्र की युति तुला, धनु, मकर या वृष राशि से हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

18. कन्यालग्न में धनेश शुक्र अष्टम मे एवं अष्टमेश मंगल धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

19. कन्यालग्न में तृतीयेश मंगल लाभ स्थान में एवं लाभेश चंद्र तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, भागीदार एवं मित्रो द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

20. कन्यालग्न में बलवान शुक्र के साथ यदि चतुर्थेश गुरु की युति हो तो व्यक्ति को माता के द्वारा धन की प्राप्ति होती है

21. लग्नेश बुध, आयेश चंद्र तथा पंचमेश तीनो अष्टम भाव में हो सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो अर्थात् उच्च का व केन्द्र में तो ऐसे जातक का भाग्य ससुराल से बनता है धन भी मिलता है।

22. शुक्र व केतु दूसरे भाव में हो तो व्यक्ति धनाढ्य होता है तथा उसे आकस्मिक ढंग से अर्थ की प्राप्ति होती है।

23. कहीं भी सूर्य शुक्र या सूर्य चंद्र साथ बैठे हों तो सूर्य की दशा में विशेष धन लाभ, सम्मान एवं ऐश्वर्य प्राप्त होता है।

24. कन्यालग्न हो, लग्न से दसवें स्थान में चंद्रमा, गुरु और शुक्र हों और उस पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के बाद होता है। अर्थात् ऐसा जातक 28 वर्ष की आयु के बाद धन कमाता है

25. सूर्य यदि अपनी उच्च राशि मेष का परमोच्च अंश में हो और शुक्र 12वें स्थान में हो तथा उस पर शुभ स्थान के स्वामी की दृष्टि हो तो जातक का भाग्योदय वृद्धावस्था में होता है, अर्थात् ऐसा जातक वृद्धावस्था में धन कमाता है,

26. चंद्रमा 10वें स्थान में मिथुन राशि का हो, दशमेश बुध लग्न में हो तथा भाग्येश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तो जातक धनवान, भाग्यवान व उच्च पदाधिकारी होता है।

27. कन्यालग्न में सूर्य-चंद्रमा यदि कुम्भ राशि में हो तीन-चार ग्रह नीच के हों तो व्यक्ति करोड़पति के घर में जन्म लेकर भी दरिद्री होता है।

28. कन्यालग्न में यदि बलवान शुक्र की पंचमेश शनि से युति हो, द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है। किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

29. कन्यालग्न में बलवान शुक्र की यदि षष्ठेश शनि से युति हो तथा धन भाव पर मंगल की दृष्टि हो तो ऐसे जातक का शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है, ऐसा जातक कोर्ट कचहरी में शत्रुओं को पराजित करता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

30. कन्यालग्न में बलवान शुक्र की यदि सप्तमेश गुरु से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

31. कन्यालग्न में बलवान शुक्र की बुध से युति हो तथा नवम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो, तो ऐसा जातक राजा, से राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों, अनुबंध (ठेको) से काफी धन कमाता है

32. कन्यालग्न में बलवान शुक्र की दशमेश बुध से युति हो, दशम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा अर्जित धन की प्राप्ति होती है, ऐसे जातक के लिए पिता का व्यवसाय भाग्योदय में सहायक होता है

33. कन्यालग्न में दशम भवन का स्वामी बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक जन्म स्थान में नहीं कमा पाता, उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

34. कन्यालग्न में लग्नेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा सूर्य यदि छठे स्थान में कुम्भ राशि का हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा उसकी आर्थिक स्थिति दयनीय होती है।

35. कन्यालग्न में धन भाव में यदि पाप ग्रह हो तथा लाभेश चंद्रमा यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है

36. कन्यालग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा यदि बृहस्पति से छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

37. कन्यालग्न में धनेश शुक्र यदि अस्त हो नीच राशि (कन्या) में हो तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता ही नहीं।

38. कन्यालग्न में लाभेश चंद्रमा यदि छठे आठवें या बारहवें स्थान में हो, तथा लाभेश अस्तगत हो, पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

39. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल वक्री होकर कहीं भी बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अतः सावधान रहें।

40. कन्यालग्न में अष्टमेश मंगल शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

कन्यालग्न और विवाहयोग

1. लग्नेश बुध आयेश चंद्र तथा पंचमेश तीनों अष्टम भाव में हो सप्तम भाव में मीन का शुक्र हो अर्थात् उच्च का व केन्द्र में हो तो ऐसे जातक का भाग्य ससुराल से बनता है तथा धन भी मिलता है
2. कन्यालग्न हो तथा चंद्रमा द्वादश भाव में हो तो जातक की प्रसिद्धि विपक्षियों में खूब होती है। दाम्पत्य जीवन सुखी एवं आय के अनेक स्रोत होते हैं। यात्राएं खूब करता है
3. कन्यालग्न हो तथा चंद्र शुक्र सप्तम भाव हो, गुरु 11वें भाव में, सूर्य अष्टम भाव में हो तो व्यक्ति को श्रेष्ठतम ससुराल से अर्थ प्राप्ति व गुणवान पत्नी प्राप्त होती है।
4. कन्या राशि का सूर्य लग्न में हो, सप्तम (मीन) शनि हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु होगी।
5. शुक्र सुख स्थान में हो तथा सप्तम भाव में शनि एवं एकादश स्थान में मंगल हो तो जातक की पत्नी की मृत्यु अग्नि से होती है।
6. यदि सप्तम में चंद्रमा व शनि हो तो जातक की पत्नी पर प्रिया होती है
7. कन्यालग्न हो सप्तम में मीन का मंगल हो और मंगल शनि की युति हो तो जातक स्त्रीहीन, पुत्रहीन होता है।
8. शुक्र मीन का सप्तम स्थान में हो, वह शुक्र मंगल या शनि के षड्वर्ग में हो या शनि मंगल से दृष्ट हो तो जातक परस्त्रीगामी होता है।
9. सातवें भाव में चंद्रमा, मंगल और शनि एक साथ हो और शुक्र-शनि मंगल के वर्ग में बैठकर उनको देखता हो तो जातक तथा उनकी पत्नी दोनों अन्य गामी होते हैं।
10. स्त्री की कुण्डली हो तथा कन्यालग्न हो लग्न या चंद्रमा से सप्तम स्थान में कोई ग्रह न हो और वह स्थान दुर्बल बन जावे तो स्त्री का पति कापुरुष अर्थात् भीरु होता है।

11. स्त्री की कुण्डली मे (कन्यालग्न) सप्तम भाव मे मगल हो तो वैधव्य योग होता है। सूर्य हो तो पति द्वारा त्याज्य, शनि हो और पाप ग्रह की दृष्टि हो तो विवाह देर से हो अन्य पाप ग्रह भी वैधव्य योग बनाते है।

12. सप्तमेश सप्तम मे बुध युक्त हो, राहु लग्न में तथा शनि स्व का मकर राशि का हो तो जातक नपुंसक या पुरुषत्वहीन हो।

13. कन्यालग्न मे शनि लग्नस्थ, चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव मे सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह मे भयकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।

14. कन्यालग्न में शनि द्वादशस्थ हो, सूर्य द्वितीय भाव मे हो, लग्नेश बुध निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

15. कन्यालग्न मे शनि छठे हो, सूर्य अष्टम मे हो तथा सप्तमेश बृहस्पति बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

16. कन्यालग्न में सूर्य, शनि और शुक्र की युति हो तो सप्तमेश, बृहस्पति भी बलहीन हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।

17. कन्यालग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि में हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो ऐसे जातक का विवाह नही होता

18. कन्यालग्न में राहु या केतु हो, शुक्र, मिथुन, सिंह, कन्या, धन (बन्ध्या) राशिगत हो तो विवाह विलम्ब से होता है तथा जातक को अपने जीवनसाथी से तृप्ति नहीं मिलती।

19. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव मे क्रूर ग्रह से युक्त होकर बैठे हो तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्रायः अन्तर्जातीय विवाह करता है।

20. कन्यालग्न मे द्वितीयेश शुक्र वक्री हो अथवा द्वितीय स्थान मे कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह मे अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है

21. कन्यालग्न में सप्तमेश गुरु वक्र हो, सप्तम भाव मे कोई ग्रह वक्री हो, अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह मे अवरोध आता है। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

22. कन्यालग्न में सप्तमेश बृहस्पति स्वराशिगत, उच्च का अथवा उच्चाभिलाषी हो तो जातक एक पत्नीव्रत एवं भारतीय परम्परा में विश्वास रखता है। आयु के 34वें वर्ष मे जातक को विशिष्ट पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की प्राप्ति होती है ससुराल से प्रचुर धन एवं मान मिलता है।

23. कन्यालग्न में राहु यदि आठवें स्थान में हो तो ऐसी स्त्री को वैधव्य दुःख भोगना पड़ता है।

24. कन्यालग्न में मंगल आठवें हो तो ऐसी स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल स्वभाव की होती है। ऐसी स्त्री प्रायः प्रेम विवाह करती है तथा स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है।

25. कन्यालग्न में चंद्रमा बारहवें हो, शुक्र शनि के साथ हो, शुक्र से दूसरे स्थान पर सूर्य हो, चौथे राहु हो तो जातक को भरी जवानी में पत्नी व बच्चे का वियोग देखना पड़ता है। उसके पत्नी व बच्चे की अकाल मृत्यु होती है।

26. कन्यालग्न में गुरु शनि के साथ हो, राहु चंद्र बारहवें हो, सप्तम भाव शुभ ग्रहों से दृष्टि गोचर न हो तो ऐसी कन्या युवावस्था के बीत जाने पर, पर पति को तरसती रहती है, उसका विवाह नहीं होता।

27. कन्यालग्न में बृहस्पति यदि सातवें हो तो जातक की पत्नी बहुत ही सुन्दर व आकर्षक होगी। ऐसे जातक की पत्नी पति के भाग्य को चमकाने वाली, स्त्री परायण एवं पतिव्रता होती है।

28. कन्यालग्न में षष्ठेश शनि लग्न में बुध के साथ हो तो ऐसा पुरुष स्त्री सहवास के योग्य नहीं होता अर्थात् नपुंसक होता है।

29. कन्यालग्न में षष्ठेश शनि के साथ मंगल लग्न या दशम भाव में हो तो ऐसा पुरुष स्त्री सहवास के योग्य नहीं होता अर्थात् नपुंसक होता है।

30. कन्यालग्न में बुध उच्च का एवं गुरु बारहवें जिस कन्या की कुण्डली में हो वह राजपत्नी अथवा रानी के समान ऐश्वर्य को भोगने वाली होती है तथा उसकी गणना संसार की प्रसिद्ध स्त्रियों में होती है।

31. कन्यालग्न में शुक्र सप्तम भाव में हो पाप ग्रहों के मध्य हो अथवा दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री घर छोड़कर स्वेच्छा से व्यभिचार कर्म करती है।

32. कन्यालग्न में द्वितीयेश शुक्र यदि राहु से युत हो तो ऐसी स्त्री व्यभिचारी हो सकती है।

33. कन्यालग्न में चंद्रमा यदि (2-4-6-8-10-12) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अत्यंत कोमल एवं मृदु स्वभाव की होती है।

34. कन्यालग्न में गुरु, बुध, शुक्र एवं मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात विदुषी एवं सच्चरित्र वाली सभ्य महिला होती है।

35. जातक पारिजात के अनुसार कन्यालग्न में उत्पन्न कन्याएं सुन्दर होती हैं, चंद्रमा यदि लग्न में हो तो ऐसी स्त्री पति की प्रिया, प्राणवल्लभा होती है।

36. कन्यालग्न में बुध स्वगृही लग्न में अष्टमेश मंगल के साथ हो तो ''द्विभार्या योग'' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।
37. कन्यालग्न में सप्तमेश बृहस्पति यदि द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा जातक जीवन में अनेक स्त्रियों से संभोग करता है।
38. कन्यालग्न में सूर्य और शनि यदि सातवें हो तो ऐसे जातक की पत्नी अल्पजीवी होती है।

❑❑❑

कन्यालग्न और संतान योग

1. कन्यालग्न में चंद्रमा नवम भाव में वृष राशि का हो तो जातक का एक पुत्र होता है।
2. कन्यालग्न में पंचमेश शनि यदि आठवें हो तो जातक के अल्प सनति होती है।
3. कन्यालग्न में पचमेश शनि अस्त हो या पाप ग्रस्त होकर छठे आठवे या बारहवे हो तो जातक के यहा पुत्र नहीं होता।
4. कन्यालग्न में पचमेश शनि लग्न (कन्या राशि) मे हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम पुत्र ही होता है।
5. कन्यालग्न में पंचमस्थ शनि मकर राशि का हो तो व्यक्ति के तीन पुत्र होते है। यदि साथ मे सूर्य हो तो चार पुत्र होते हैं।
6. कन्यालग्न में पचमेश शनि लग्न मे हो तथा लग्नेश बुध पचम मे परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरों की संतान गोद लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
7. कन्यालग्न में पचम भाव मे शनि हो तो जातक के यहां सात पुत्रिया होती है।
8. कन्यालग्न हो, पंचम भाव में शनि यदि चद्र शुक्र या बुध द्वारा देखा जाता हो तो जातक के आठ पुत्रियां होती हैं। इसके साथ ही पचम भाव पर यदि किसी पुरुष ग्रह की दृष्टि हो तो ईश्वर की कृपा से एक पुत्र भी हो जाता है.
9. कन्यालग्न मे पचमेश शनि पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र सतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय करने से दोष की शांति हो जाती है।
10. राहु, सूर्य एव मगल पचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा मे ऐसे बालक को ''सिजेरियन चाइल्ड'' कहते है।

11. कन्यालग्न में पंचमेश शनि कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक के यहा वृद्धावस्था मे संतान होती है।
12. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
13. कन्यालग्न में लग्नेश बुध द्वितीय स्थान मे हो तथा पंचमेश शनि पाप ग्रस्त अथवा पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के बाद नष्ट हो जाते हैं।
14. कन्यालग्न में पंचमेश शनि बारहवें स्थान में शुभ ग्रहो से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु होती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।
15. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्या राशि की प्राप्ति होती है।
16. कन्यालग्न में पंचमेश शनि की सप्तमेश गुरु से युति हो तो जातक के प्रथम संतान के रूप मे कन्या रत्न की प्राप्ति होती है,
17. सूर्य और चंद्रमा लग्न से 6/12 मे हो। 6ठे सूर्य 12वें चंद्रमा या 12वें भाव में सूर्य व 6ठे भाव में चंद्रमा हो तो पत्नी पति दोनो काने हों तथा 1 ही पुत्र होता है।
18. कन्यालग्न हो सप्तम में मीन का मंगल हो और मंगल शनि की युति हो तो जातक स्त्रीहीन पुत्रहीन होता है।
19. चंद्रमा वृष, सिंह, कन्या या वृश्चिक राशि का हो तो संतान कम होती है।
20. सम राशि (2, 4, 6, 8, 10 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।
21. पंचमेश शनि निर्बल हो, लग्नेश बुध भी निर्बल हो तथा पंचम भाव में राहु हो तो जातक के यहां सर्प दोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
22. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हो तो पद्म नामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के यहां पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।
23. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती
24. लग्न में मंगल, अष्टम मे शनि, पंचम मे सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़ियां नही चलती।

25. कन्यालग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो ''वंशविच्छेद योग'' बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलती।

26. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को ''इलाख्य नामक'' सर्पयोग बनता है इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती

27. कन्यालग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो ''अनपत्य योग'' बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है

28. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के यहां जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

29. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

30. जिस स्त्री का जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो ''अनगर्भा योग'' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती

3. शुभ ग्रहो के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो ''कुलवर्द्धन योग'' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानो को उत्पन्न करती है।

32. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है, पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

कन्यालग्न और राजयोग

1. जिसका जन्म लग्न पूर्णांश पर कन्या हो, उसमें उच्च का बुध विराजमान हो, चतुर्थ स्थान में गुरु, शुक्र, चंद्रमा और पंचम स्थान में शनि मंगल हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. उच्च का बुध लग्न में, उच्च का मंगल शनि के साथ पंचम स्थान में, स्वगृही मीन का गुरु चंद्रमा के साथ सप्तम भाव में तथा मिथुन का शुक्र दशम स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
3. मकर का शनि, मगल के साथ पंचम स्थान मे हो, मीन का शुक्र सप्तम में हो मिथुन का बुध दशम स्थान में हो और कर्क का बृहस्पति लाभ या एकादश स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है
4. उच्च का बुध लग्न में, स्वगृही शुक्र धन भाव में, वृश्चिक का मंगल पराक्रम या तीसरे स्थान में और धन का स्वगृही बृहस्पति चतुर्थ भाव मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. उच्च का मंगल पंचम स्थान मे, कुम्भ का शनि छठे स्थान में, मीन का गुरु सप्तम स्थान में और वृष या उच्च का चंद्रमा भाग्य स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. मीन का गुरु सप्तम में, वृष का शुक्र नवम मे, मिथुन का बुध दशम में तथा कर्क का चंद्रमा एकादश मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. उच्च का शुक्र सप्तम में, उच्च का चंद्रमा नवम मे, स्वगृही बुध दशम तथा उच्च का गुरु एकादश में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है
8. उच्च का बुध लग्न में, उच्च का शनि धन मे, स्वगृही गुरु चतुर्थ में तथा उच्च का मंगल पंचम मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

9. उच्च का शनि धन मे, स्वगृही गुरु सप्तम मे उच्च का चद्रमा भाग्य स्थान मे स्वगृही बुध दशम या राज्य स्थान म हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

10. उच्च का शनि धन मे, उच्च का चद्रमा भाग्य स्थान एव उच्च का गुरु लाभ में हो तो जातक राजा के सामन ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

11. उच्च का शुक्र सप्तम मे हो तो या उच्च का बुध लग्न में हो, तीसरे भाव मे स्वगृही मगल के साथ सूर्य हो, कुम्भ का स्वगृही शनि छठे स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

12. मीन स्वगृही बृहस्पति सप्तम स्थान मे हो तो जातक के शत्रु दबे रहते है और वह स्वय बड़ा आदमी होता है।

13. यदि कन्यालग्न मे उच्च का बुध हो पचम स्थान में मकर का मंगल या शनि हो सप्तम स्थान मे गुरु चद्रमा मीन राशि मे हो और वृष राशि का शुक्र भाग्य स्थान मे हो तो मनुष्य बहुत बड़ा राज्य कर्मचारी होता है तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

14. कन्यालग्न मे बुध हो मकर का मंगल पंचम में शुक्र मीन का सप्तम, गुरु और चद्रमा धन राशि का चतुर्थ स्थान में हो तो मनुष्य बहुत बड़ा आदमी होता है।

15. कन्यालग्न हो तथा शुक्र बुध यदि नवम भाव मे या 10वें भाव मे हो तो दशमेश नवम भाव में न नवमेश 10वें भाव म या नवमेश नवम व दशम भाव में हो तो, चारो अवस्थाओ मे उत्तर राजयोग होता है।

16. पचमेश व दशमेश या तो पंचम स्थान में हो या दशम स्थान में अथवा परस्पर स्थान परिवर्तन हो या दोनो स्वगृही हो तो भी उत्तम राजयोग होता है।

17. दशमेश दशम भाव मे हो, सूर्य उच्च का हो तथा 9वें भाव में गुरु हो, मीन राशि का चद्रमा हो तो पूर्ण राजयोग होता है

18. भाग्येश पंचम स्थान मे हो तथा पंचमेश द्वितीय भाव मे उच्च का हो और द्वितीयेश शुक्र अपनी उच्च राशि मीन में सप्तम स्थान में हो जातक गुणी होता है तथा उच्च पदाधिकारी होता है।

19. चद्रमा 10वे स्थान मे मिथुन राशि का हो दशमेश बुध लग्न मे हो तथा भाग्येश शुक्र द्वितीय स्थान में हो तो जातक धनवान भाग्यवान व उच्च पदाधिकारी होता है।

20. कन्यालग्न हो, उच्च का बुध मगल, शनि 5वें भाव मे हो चतुर्थ स्थान में चद्रमा, गुरु व शुक्र हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है।

21. लग्नेश उच्च का लग्न में, गुरु शुक्र चतुर्थ भाव में अन्य ग्रह लग्न में द्वितीय नवम् या उपचय (3 6, 10, 11) मं हों तो उत्तम राजयोग होता है।

22. कन्यालग्न में बुध हो, शुक्र दशम में, सप्तम में बृहस्पति तथा चंद्रमा हो। लग्न में पंचम मंगल शनि से युक्त हो तो राजयोग होता है।

23. कन्यालग्न में मीन का शुक्र यदि केन्द्र (1/4/7/10) में बैठा हो तो विद्या, कला, बहुगुणों से शोभित कामधेनु के बराबर भोग से पूर्ण सुन्दरी स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, देश नगर, देखने में व्यस्त राजा होता है।

24. कन्यालग्न मे जन्म समय में सिंह, वृष, कन्या, कर्क इन चारों राशियों में से किसी में भी राहु हो तो जातक महाराजाधिराज और लक्ष्मी से सम्पन्न होता है। राहु उच्च में हो तो हाथी, घोड़ा मनुष्य तथा नाव की सवारी वाला, जमीन वाला, पंडित और अपने कुल का श्रेष्ठ होता है

25. कन्यालग्न में दसवें में बुध-सूर्य हो और मगल राहु छठे मे हो तो इस राजयोग मे उत्पन्न जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

26. कन्यालग्न मे चंद्रमा लाभ स्थान में शुक्र बृहस्पति के साथ मगल उच्च का मकर राशि के शनि के साथ हो और लग्न में कन्या का बुध हो तो बहुत विद्वान होकर राजयोग होता है

27. कन्यालग्न में धन का बृहस्पति चद्रमा से युक्त, मकर का मंगल और लग्न में उच्च का शुक्र अथवा बुध हो तो राजयोग होता है।

28. कन्यालग्न में उच्च का बुध, मीन का बृहस्पति, मिथुन का चंद्रमा, मकर का मगल शनि मिथुन का शुक्र हो तो वैभव सम्पन्न राजयोग होता है।

❑❑❑

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान मे
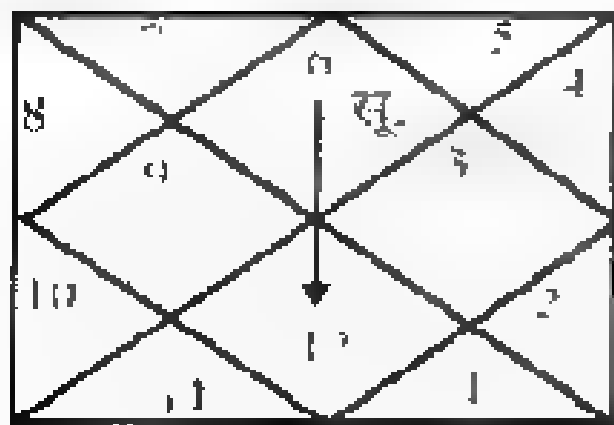
कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां प्रथम स्थान में सूर्य कन्या राशि अपनी मित्र राशि में है ऐसे जातक बुद्धिमान, उच्च कोटि के लेखक आलोचक पत्रकार, दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक होते हैं। ऐसे जातक दृढ़ इच्छा शक्ति वाले एवं अन्याय के प्रति न झुकने वाले हठी होते हैं। जातक राज्याधिकारी होता है, पर तनाव में रहता है।

दृष्टि–सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी जातक की पत्नी धार्मिक किन्तु थोड़ा उग्र स्वभाव की होगी।

निशानी–जातक फिजूल खर्ची होता है, जातक धन एवं विद्या (ज्ञान) संग्रह के प्रति लापरवाह होता है

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि मे होंगे। ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के समय 5 से 7 बजे के मध्य होता है। चंद्रमा यहा शत्रुक्षेत्री होगा। इन दोनों ग्रहो की

दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक पराक्रमी होगा। उसकी पत्नी सुन्दर होगी, स्वामीभक्त होगी।

2. **सूर्य + मंगल**—मंगल की युति से जातक परम पराक्रमी होगा।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। प्रथम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत व्ययेश सूर्य की लग्नेश-दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां उच्च का होकर 'भग योग व कुलदीपक योग' की सृष्टि करेगा। यहां पर यह युति उत्तम फल (राजयोग) को देने वाली होगी फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा एवं राजातुल्य ऐश्वर्य, पराक्रम एवं वैभव को भोगेगा। जातक धनवान, बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक अपने कुल, परिवार, जाति का मुखिया एवं अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—जातक भाग्यशाली होगा। राजा का प्रमुख व्यक्ति किंवा राजनेता होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—जातक धनी होगा।
6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न के प्रथम स्थान मे सूर्य+शनि की युति वस्तुतः पचमेश षष्ठेश शनि की व्ययेश सूर्य के साथ निष्फल युति है। जातक अति महत्वकांक्षी, चालाक एव विचलित मन मस्तिष्क वाला होगा। जातक के शरीर में बीमारी रहेगी
7. **सूर्य + राहु**—जातक अत्यधिक साहसी एव पराक्रमी होगा।
8. **सूर्य + केतु**—जातक गर्म मिजाज वाला होगा।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
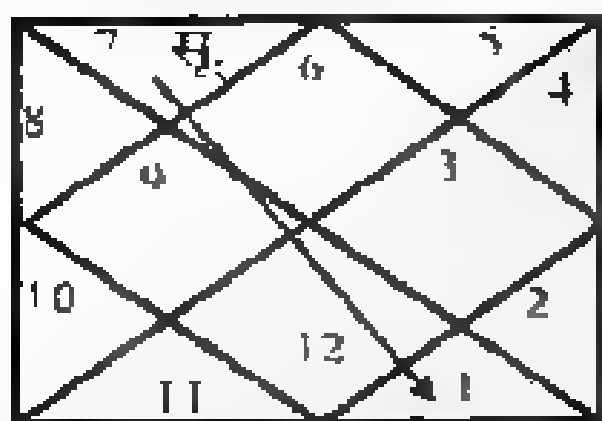
7 सू.	6	5
8	9 / 3	4
10	12	2
11		1

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहो के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। द्वितीय स्थान में सूर्य तुला राशि में नीच का होगा। तुला राशि अंशों पर सूर्य परम नीच का होगा। जातक को विद्या, बुद्धि, धन और कुटुम्ब के सुख में कुछ न कुछ कमी अखरती रहेगी। जातक का धन चोर, अग्नि, टैक्स, जुआ, लॉटरी, सट्टा आदि कार्यों में नष्ट होता रहेगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी।

निशानी—सूर्य की यह स्थिति एक हजार राजयोग नष्ट करती है।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चद्र**—कन्यालग्न म चद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां द्वितीय स्थान म दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रात:काल सूर्योदय के पूर्व 4 से 5 बजे के मध्य होता है। सूर्य यहां नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करता है। यहा दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होता है।
2. **सूर्य + मगल**—जातक की वाणी में गर्मी व कड़वाहट होगी।
3. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। द्वितीय स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहा नीच राशि का होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान होगा एव धनवान भी होगा। जातक अपने स्वयं के पराक्रम एवं पुरुषार्थ से धन कमाता हुआ आगे बढ़ता है। जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा रोग (बीमारी) से लड़ने की क्षमता रखता हुआ दीर्घजीवी होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—जातक धनी तथा धार्मिक होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—नीचभंग राजयोग के कारण जातक महाधनी व ऐश्वर्यशाली होगा
6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में शनि उच्च का एवं सूर्य नीच का होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर पैसा पास में टिकेगा नहीं। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनवान होगा। जातक की वाणी अप्रिय रहेगी।
7. **सूर्य + राहु**—धन के घड़े में बड़ा छेद होगा।
8. **सूर्य + केतु**—कुटुम्ब एवं धन संग्रह में कष्टानुभूति होगी।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी
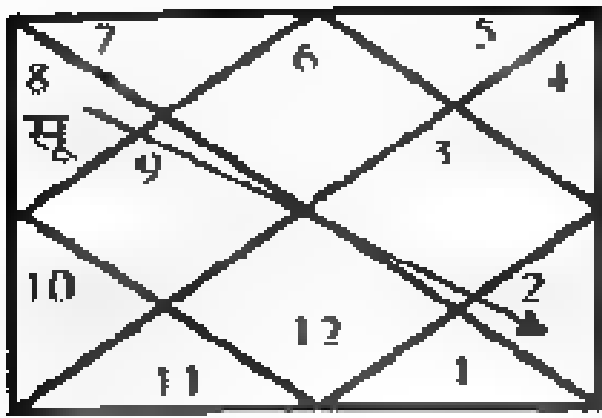
दे सकता है यहां तृतीय स्थान में सूर्य वृश्चिक राशि का होगा सूर्य अपनी (सिंह) राशि से चौथे स्थान पर होगा। फलत: जातक बहुत ही शूरवीर, परिश्रमी, साहसी एवं पराक्रमी होगा। जातक भौतिक एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होगा। ऐसा जातक परद्वेषी होता है। स्वय के भाई-बहनों के मध्य अहं (Ego) का टकराव रहता है।

दृष्टि—तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी। फलत: व्यक्ति सौभाग्यशाली होगा। राजनीतिज्ञ होगा या उद्योगपति होगा।

निशानी—पाराशर ऋषि के अनुसार जातक के बड़े भाई की मृत्यु जातक के सामने होगी, अथवा बड़े भाई का सुख नहीं होगा।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी पर पराक्रम में वृद्धि करायेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **सूर्य + चंद्र**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व रात्रि 3 बजे के आस-पास होगा। यहा बैठकर दोनो ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। फलत: जातक भाग्यशाली एवं पराक्रमी होगा। उसे भाई-बहन दोनों का सुख प्राप्त होगा।
2. **सूर्य + मगल**—सहोदर सुख में हानि होगी, छोटे भाई की मृत्यु सभव है।
3. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। तृतीय स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान व पराक्रमी होगा। मित्रों एव परिजनों से लाभ होगा। जातक अपने बुद्धिबल से 24 वर्ष की आयु तक अपना उन्नति कार्य निश्चित कर लेगा। जातक धनी व्यक्ति होगा तथा समाज में अपने कार्यों में अपनी पहचान अलग से बनायेगा।
4. **सूर्य + गुरु**—जातक के भाई पराक्रमी एव धार्मिक होंगे।
5. **सूर्य + शुक्र**—जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा।

6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न के तृतीय स्थान में सूर्य+शनि की युति अप्रिय होगी। जातक का छोटा बड़ा किसी भाई से नहीं बनेगी। भाईयों का सुख कमजोर होगा। जातक के मित्र परिजन भी विश्वास योग्य नहीं होंगे। दोनों ग्रहों की दृष्टि पञ्चम (मकर राशि), नवम् (वृष राशि) एवं व्यय भाव (सिंह राशि) पर होने से सन्तति योग उत्तम पर सन्तानों में झगड़ा रहेगा। भाग्योदय में संघर्ष एवं खर्च की प्राबल्यता रहेगी।
7. **सूर्य + राहु**—भाईयों में विवाद रहेगा।
8. **सूर्य + केतु**—मित्रों से धोखा संभव है।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
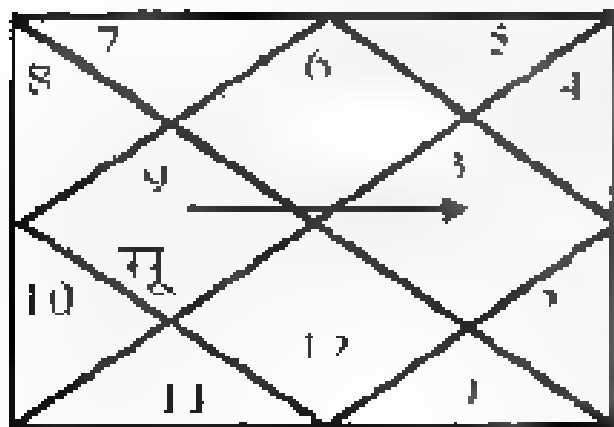
7	6	5
8		4
9 सू		3
10	12	2
11		1

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां चतुर्थ स्थान में सूर्य धनु राशि में अपनी मित्र राशि में होगा। सूर्य अपनी (सिंह) राशि से पांचवे स्थान पर होने से शुभ फलदायक है। जातक को वाहन सुख मिलेगा। जातक उत्तम भवन का स्वामी होगा। जातक धनी मानी व अभिमानी होगा परन्तु जातक एवं उसके माता पिता ज्यादा भाग्यशाली नहीं होते। राजकीय हस्तक्षेप से जातक की खुशियां बरबाद हो सकती है।

दृष्टि—चतुर्थ स्थानगत सूर्य की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी जातक का राजदरबार में दबदबा रहेगा।

निशानी—जातक को माता, घर, वाहन-सुख में कुछ-न-कुछ बाधा बनी रहेगी।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां चतुर्थ सथान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म पौषकृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होगा यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के पास वाहन भी होगा पर वाहन दुर्घटना में विकलांग होने का भय रहेगा।

2. **सूर्य + मंगल**—भौतिक सुखों में व्यवधान रहेगा।
3. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। चतुर्थ स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध केन्द्रवर्ती होने के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक बुद्धिमान होगा तथा ज्योतिष, तंत्र व आध्यात्मिक विद्या का जानकार होगा। जातक उत्तम-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक के पास एकाधिक वाहन रहेंगे। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक व्यापार-व्यवसाय में कमायेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—यहां बृहस्पति स्वगृही होगा। फलत: जातक दीर्घायु होगा। जातक राजपक्ष व राजनीति में बहुमान्य होगा। जातक दानी होगा। परोपकार व सामाजिक कार्यों में जातक रुपया खर्च होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—व्यक्ति धनी एवं भाग्यशाली होगा।
6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न में चतुर्थ स्थान में सूर्य+शनि की युति से जातक की माता बीमार रहेगी। वाहन की दुर्घटना होगी। यहा धनु राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे स्थान (कुम्भ राशि) दशम भाव (मिथुन राशि) एवं लग्न स्थान (कन्या राशि) पर रहेगी। फलत: जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा जातक खुद की मेहनत से आगे बढ़ेगा, परन्तु उसके जीवन का सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक कृपण/कंजूस होगा।
7. **सूर्य + राहु**—जातक के माता पिता बीमार रहेंगे। घरेलू सुख सुविधाओं में बाधा बनी रहेगी।
8. **सूर्य + केतु**—जातक धन-सम्पत्ति, भौतिक सुखों से रहित होगा।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
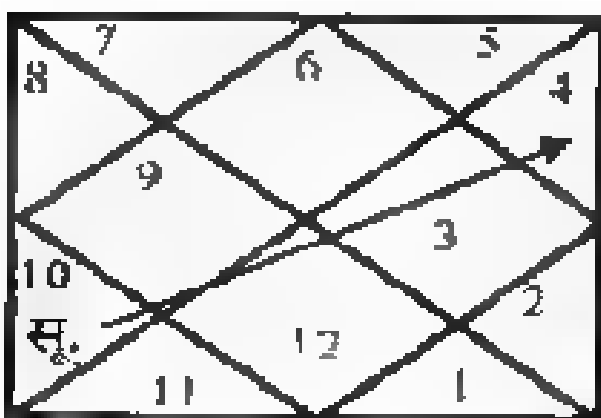
कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां पंचम स्थान में सूर्य मकर (शत्रु) राशि में है द्वादशेश पंचम में होने से पंचम भाव के शुभ फलों की हानि होती है। ऐसे जातक को विद्या एवं पुत्र संतति की प्राप्ति में विलम्ब होता है। ऐसा जातक हृदय रोग से पीड़ित होता है। लग्नेश (बुध) यदि बलवान न हो तो आयु कम रहती है

दृष्टि—पंचम भावगत सूर्य की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होगी फलत: लाभ प्राप्ति में न्यूनता महसूस होती रहेगी।

निशानी—जातक का भाग्योदय संतान (पुत्र) के जन्म के बाद ही होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल नहीं देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे ऐसे जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या रात्रि 10 बजे के आस-पास होगा। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह लाभ स्थान (कर्क राशि) को देखेंगे जो चंद्रमा का स्वयं का घर है। ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा परन्तु एकाध संतति का क्षरण अकाल मृत्यु, गर्भपात सम्भव है।
2. **सूर्य + मंगल**—उच्च का मंगल व्यापार में लाभ दिलायेगा।
3. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा पंचम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में स्थित 'कर्क राशि' को उत्पीड़ित करेगा, जो बुध की शत्रु राशि है। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**—बृहस्पति यहां नीच का होगा। जातक विद्यावान होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—विद्या प्राप्ति में संघर्ष रहेगा।
6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न के पंचम स्थान में शनि स्वगृही होगा एवं सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर उद्विग्न होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), लाभ स्थान (कर्क राशि) एवं धन भाव (तुला राशि) पर होगी फलत: जातक प्रज्ञावान तथा धनवान होगा, पर शत्रुओं की कमी नहीं होगी खुद की संतान ही जातक से वैर भाव रखेगी। प्रारंभिक विद्या में रुकावट आयेगी।
7. **सूर्य + राहु**—संतान (पुत्र) प्राप्ति में बाधा होगी।
8. **सूर्य + केतु**—गर्भपात या गर्भस्राव संभव है

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में
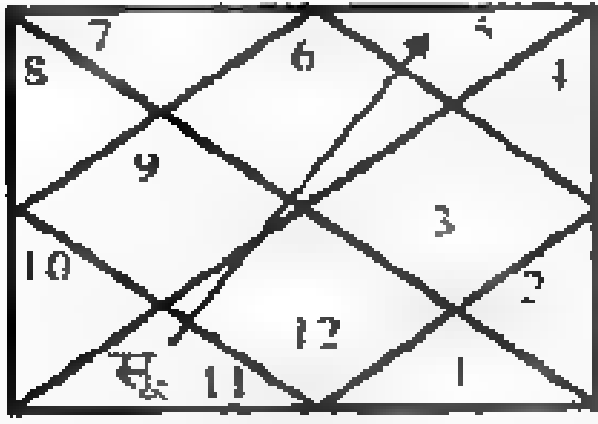
कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां षष्टम स्थान में सूर्य कुम्भ राशि (शत्रु राशि) में है। द्वादशेश छठे होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। ऐसा जातक बहुत अच्छा राजनीतिज्ञ तथा सफल व प्रसिद्ध व्यक्ति होता है। ऐसे जातक की सामाजिक व आर्थिक उन्नति चरम सीमा पर होती है इस सूर्य को 'आग जला' कहते हैं। ऐसा जातक बेफिक्र होता है। ऐसे जातक को रुपये पैसे की चिंता नहीं होती वह क्रोध में आकर किसी का भी नुकसान कर सकता है। जातक को अपने-पराये का ध्यान नहीं रहता।

दृष्टि—षष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि अपने ही घर (सिंह राशि) व्यय भाव पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होता है।

निशानी—ऐसे व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु किसी की भी हानि कर सकते हैं।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा मध्यम (मिश्रित) फल देती है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या रात्रि 8 बजे के आस-पास होगा। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। चंद्रमा छठे जाने से लाभभंग योग बना परन्तु व्ययेश सूर्य के छठे जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना, फलत: आर्थिक तंगी रहेगी। खर्च की अधिकता जातक को परेशान करती रहेगी। आर्थिक स्थिति का सही मूल्यांकन शुक्र की स्थिति से होगा।
2. **सूर्य + मंगल**—विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी-अभिमानी होगा।
3. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। छठे स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश-धनेश बुध के साथ युति कहलायगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होकर व्यय स्थान को पूर्ण दृष्टि

से देखेगा। बुध छठे स्थान पर जाने से 'लग्नभंग योग' 'राजभंग योग' बना। यहां पर ग्रह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक बुद्धिमान एवं धनवान होगा पर उसे परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। सरकार में रुपया अटक जायेगा।

4. **सूर्य + गुरु**–विवाह विलम्ब से होगा। द्विभार्या योग बनता है।
5. **सूर्य + शुक्र**–
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के छठे स्थान में शनि स्वगृही एवं सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा पर दोनों ही ग्रह यहां विपरीत राजयोग करके बैठेंगे। शनि के कारण हर्ष योग एवं सूर्य के कारण सरल योग बनेगा। जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का शमन करने में सक्षम होगा। जातक उत्तम धन-सम्पति एवं वाहन का स्वामी होगा।
7. **सूर्य + राहु**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी व अभिमानी होगा।
8. **सूर्य + केतु**–विपरीत राजयोग के कारण जातक साहसी होगा।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में
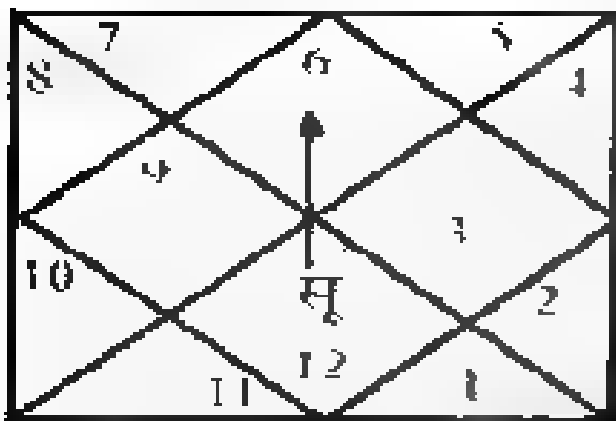
कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां सप्तम स्थान में सूर्य मीन (मित्र) राशि में है जातक उन्नतिशील होगा, पर हठी, द्वेषी एवं स्वतंत्र विचारों का पोषक होगा। ऐसे जातक का रंग गोरा व सिर पर बाल कम होंगे। जातक के मित्र कम होंगे एवं उनके साथ मित्रता निभाने में जातक को कठिनाई महसूस होगी। जातक सम्पन्न होगा जातक का आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक स्तर मध्यम होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक द्वारा किये गये परिश्रम प्रायः सार्थक होंगे। जातक को मेहनत का फल मिलेगा।

निशानी–ऐसे जातक को परदेश में प्रसिद्धि मिलती है। जातक विदेशी वस्तुओं को पसंद करेगा। जातक की शादी विलम्ब से होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक उन्नति मार्ग पर आगे बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के

साथ निरर्थक युति है। यहां सातवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्रकृष्ण अमावस्या को सायंकाल सूर्यास्त के समय होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (कन्या राशि) को देखेंगे। फलतः जातक उन्नति मार्ग की ओर बढ़ेगा। जातक की पत्नी सुंदर होगी पर झगड़ालू स्वभाव की होगी।

2. **सूर्य + मंगल**–जातक का दाम्पत्य जीवन कष्टदायक होगा।
3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। सप्तम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बुध नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा एवं 'लग्नाधिपति योग' भी बनेगा, फलतः जातक बुद्धिमान एवं धनवान होगा। जातक जिस कार्य में हाथ डालेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित एवं धनी व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–'हंस योग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–'मालव्य योग' के कारण जातक राजातुल्य वैभवशाली होगा।
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के सप्तम स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री एवं सूर्य मित्रक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं चतुर्थ भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलतः जातक का विवाह विलम्ब से होगा। जातक को गृहस्थ सुख में बाधा, भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति में भारी संघर्ष, भाग्योदय में संघर्ष, किसी भी कार्य में प्रथम प्रयास से सफलता नहीं मिलेगी।
7. **सूर्य + राहु**–जातक के दाम्पत्य जीवन में बिछोह की स्थिति बन सकती है।
8. **सूर्य + केतु**–जातक के गृहस्थ सुख में कड़वाहट रहेगी।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में

7	6	5
8	9	4
10	3	3
11	2	सू. 1
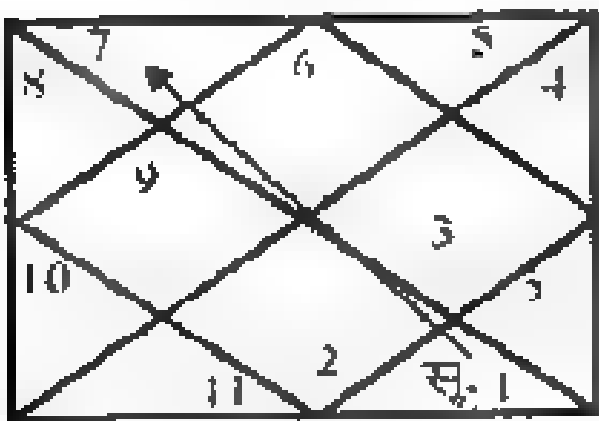
कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य में मारकेश का फल भी दे सकता है। यहां अष्टम स्थान में सूर्य मेष राशि में उच्च का है मेष राशि के अंशों में सूर्य परमोच्च का होता है। व्ययेश सूर्य आठवें होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बनता है। ऐसे जातक की आयु लम्बी

होती है जातक का शरीर स्वस्थ रहता है। जातक क्रोधी व महत्त्वकांक्षी होते हुए भी आकर्षक व कुशल वक्ता होता है। जातक अपने परिश्रम के बल पर धन पद प्रतिष्ठा को प्राप्त करते है पर गलत सोहबत इन्हे बर्बाद कर देगी इस बात पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।

दृष्टि–अष्टम स्थानगत सूर्य की दृष्टि धन भाव (तुला राशि) पर होगी जातक खर्चीले स्वभाव का होता है। जातक को धन एकत्रित करने में कठिनाई महसूस होगी

निशानी–ऐसा जातक मुसीबत में घिरे लोगो को बचाने में पूर्ण रुचि लेता है तथा 'शरणागत वत्सल' होता है। जातक अपनी शरण में आये व्यक्ति के लिए अपने प्राण भी न्योछावर करने में नहीं हिचकिचायगा।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा। जातक को राजपक्ष में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत. लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहा अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सायंकाल चार बजे के लगभग होगा सूर्य यहा उच्च का होगा। व्ययेश सूर्य के आठवें जाने से सरल नाम विपरीत राजयोग बनता है। जबकि चंद्रमा लाभभंग योग की सृष्टि करता है। ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होता है। पर व्यापार में नुकसान उठाता है दोनों ग्रहों की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक धनी व समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + मंगल**–इस युति से 'किम्बहुना योग' बनता है। जातक को अचानक धन मिलता है जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है.
3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। अष्टम भाव में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश-दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहा उच्च का होगा। दोनो ग्रह धन भाव को देखेंगे फलत: यहा यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। बुध के कारण 'लग्नभंग योग' एव 'राजभंग योग' बनेगा। फलत: जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। महनत का फल नहीं मिलेगा फिर भी जातक बुद्धिमान होगा व्ययेश सूर्य आठवें जाने से 'विमल योग' बना। ऐसा जातक समाज का श्रेष्ठ प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**—जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न के अष्टम स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री नीच का तो सूर्य उच्च का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। यहां शनि के कारण 'हर्ष योग' एवं सूर्य के कारण सरल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि हुई। यहा बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (मिथुन राशि), धन भाव (तुला राशि) एवं पंचम भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक पुत्रवान एवं महाधनी होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं अपने शत्रुओं को समूल नष्ट करने वाला होगा।
7. **सूर्य + राहु**—जातक दीर्घायु होगा। वह धनी होगा।
8. **सूर्य + केतु**—जातक धनी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति नवम् स्थान में
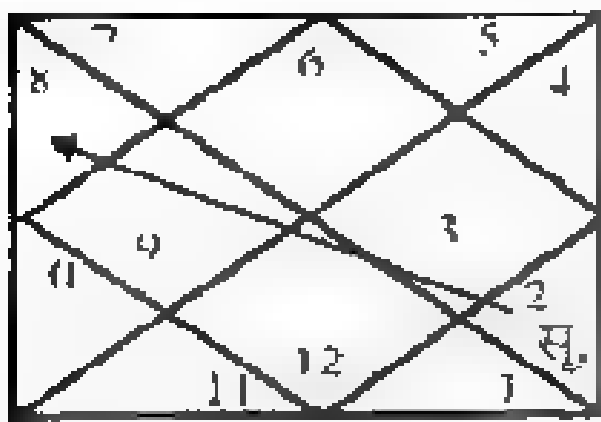
कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। यहा नवम स्थान में सूर्य वृष (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक सौभाग्यशाली एवं प्रतिष्ठावान होते हैं तथा अपने खानदान की प्रतिष्ठा के लिए सब कुछ कुर्बान करने को तैयार रहते हैं, परन्तु अन्त:करण से स्वार्थी होते हैं। जातक का भाग्योदय 25 वर्ष की आयु के बाद ही होता है। ऐसा जातक यदि कुछ भी गलत, अनैतिक अचारण करेगा तो यह सूर्य उसे दण्डित करने में जरा भी रहम नहीं करेगा।

दृष्टि—नवम स्थानगत सूर्य की दृष्टि पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा।

निशानी—ऐसे जातक का भाग्योदय प्राय: विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अपने पिता के विचारों का सम्मान नहीं करता।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के

साथ निरर्थक युति है। यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को दोपहर दो बजे के आस पास होगा। यहां बैठे दोनों ग्रह पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक भाग्यशाली एवं प्रबल पराक्रमी होगा। यहां चन्द्रमा उच्च का होने से 'चन्द्रकृत राजयोग' बनेगा। ऐसे जातक को मित्रों एवं व्यापारी वर्गीय लोगों से लाभ होगा।

2. **सूर्य + मंगल**—अष्टमेश भाग्य स्थान में होने से जातक के भाग्योदय में प्रारंभिक संघर्ष रहेगा।

3. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा नवम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। दोनों ग्रह यहां बैठकर पराक्रम स्थान को देखेंगे फलत: जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली, पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पैतृक सम्पत्ति भी मिलेगी। जातक को मित्रों, परिजनों का सहयोग मिलता रहेगा।

4. **सूर्य + गुरु**—जातक धार्मिक होगा।

5. **सूर्य + शुक्र**—जातक महाभाग्यशाली होगा।

6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न के नवम स्थान में शनि मित्र राशि में हो तो सूर्य शत्रु राशि में होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (कर्क राशि), पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं छठे स्थान (कुम्भ राशि) को देखेंगे। ऐसे जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

7. **सूर्य + राहु**—जातक का भाग्योदय रुकावट के साथ होगा।

8. **सूर्य + केतु**—जातक का जीवन संघर्षपूर्ण होगा।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
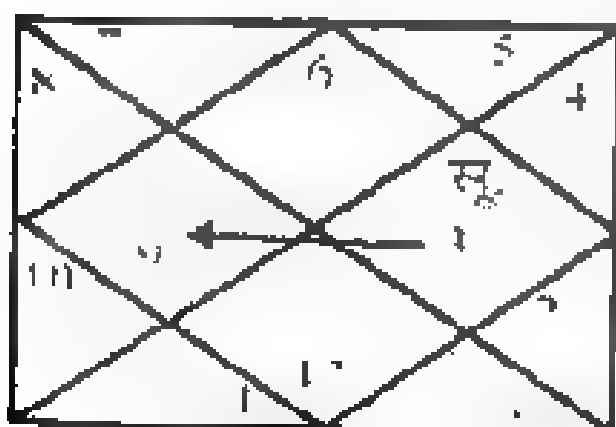
कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। दशम स्थान में सूर्य मिथुन (मित्र) राशि में है यहां सूर्य दिक्बल को प्राप्त है। जिसके कारण उसके द्वादशेश होने

का पापत्व नष्ट हो गया है। ऐसा जातक समाज का प्रभावशाली धनी व मानी व्यक्ति होगा। उसके जीवन में सभी कार्यों में उसे लगातार सफलता मिलती रहेगी। जातक तीव्र बुद्धि वाला इष्टबली होगा। उसे पुत्र, सवारी और प्रसिद्धि सभी बराबर मात्रा में मिलेंगे।

दृष्टि—दशम भावगत सूर्य की दृष्टि सुख स्थान धनु राशि पर होगी, फलतः जातक को माता पिता का सुख एवं सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी—ऐसे व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में शीघ्र आगे बढ़ते हैं।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा एवं सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे ऐसे जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या दोपहर 12 बजे के आस-पास होता है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी, ऐसे जातक को माता-पिता की आंशिक सम्पत्ति मिलती है जातक का सरकार में, राजनीति मे दबदबा रहता है।
2. **सूर्य + मंगल**—राज्यपक्ष में विरोध रहेगा।
3. **सूर्य + बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। दशम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा, फलतः 'भद्र योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि हो रही है यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां यह युति ज्यादा खिलेगी जातक बुद्धिमान एवं राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। राज्य में इसका वर्चस्व होगा। जातक की खुद की गाड़ी व बंगला होगा। जातक कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **सूर्य + गुरु**—जातक धार्मिक स्वभाव का होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—जातक भाग्यशाली होगा।
6. **सूर्य + शनि**—कन्यालग्न के दशम स्थान में शनि व सूर्य दोनों ही केन्द्रवर्ती होकर मित्रक्षेत्री होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि), चतुर्थ भाव (धनु राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलतः राज्य पक्ष (सरकार) से विवाद रहेगा शत्रुनाश एवं कोर्ट कचहरी को लेकर धन खर्च

होगा जातक की माता एवं पत्नी बीमार रहेगी। जातक की पिता के साथ विचारधारा नहीं मिलेगी।

6. **सूर्य + राहु**—जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **सूर्य + केतु**—जातक को सरकारी काम काज में विफलता मिलेगी

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
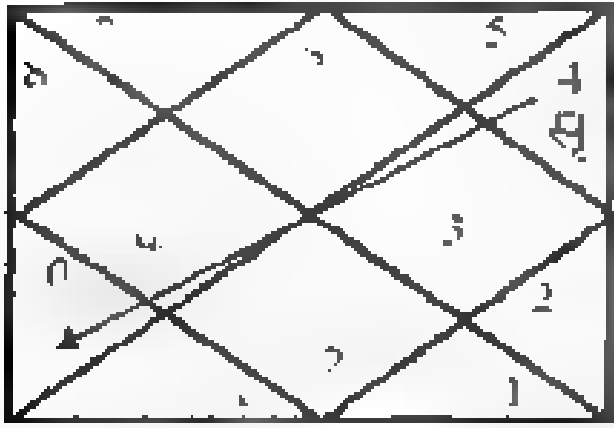
कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है। एकादश स्थान मे सूर्य कर्क (मित्र) राशि मे है। अपनी राशि (सिंह) से द्वादश स्थान मे होने से इसका पापत्व नष्ट हो गया है ऐसा जातक काफी धनी होगा एवं उसकी आयु लम्बी होगी। जातक को पत्नी पुत्र और नौकरों का पूर्ण सुख मिलेगा। उसे राज्य एवं सरकारी क्षेत्र में पूरा सहयोग मिलेगा। ऐसे जातक को अल्प प्रयत्न से ही पूर्ण सफलता मिलती है।

दृष्टि एकादश स्थानगत सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि पर होगी फलत: जातक की संतति सुयोग्य होगी।

निशानी—जातक को पुत्र सुख जरूर मिलेगा।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा मे जातक सर्वांगीण उन्नति, यश व धन की प्राप्ति करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + चंद्र**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां एकादश स्थान मे दोनो ग्रह कर्क राशि मे होगे। ऐसे जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को सुबह दस बजे के आस-पास होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव मकर राशि को देखेंगे। चंद्रमा यहा स्वगृही होगा। ऐसा जातक पढ़ा-लिखा होता है। उसे पुत्र पुत्री दोनों की प्राप्ति होती है। जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
2. **सूर्य + मंगल**—मंगल यहा नीच का होगा। बड़े भाई के सुख मे हानि होगी।

3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। एकादश स्थान में कर्क राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान व शिक्षित होगा। उसकी संतान भी शिक्षित होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जातक व्यापारी होगा। उसकी रुचि व्यापार में होगी तथा व्यापार से धन की प्राप्ति होगी जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य + गुरु**–गुरु यहां उच्च का होगा। बड़े भाई का पूर्ण सुख होगा।

5. **सूर्य + शुक्र**–बड़ी बहन का सुख होगा।

6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के एकादश में शनि व सूर्य दोनों शत्रुक्षेत्री होंगे यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (कन्या राशि), पंचम भाव (मकर राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) को देखेंगे. फलतः लाभ में कमी होगा, जातक का मन-मस्तिष्क अस्थिर रहेगा। जातक की संतान पढ़ी लिखी होगी। जातक दीर्घायु को प्राप्त होगा।

6. **सूर्य + राहु**–लाभ में हानि। उद्योग में घाटा होगा।

7 **सूर्य + केतु**–लाभ में कमी महसूस होगी।

कन्यालग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में
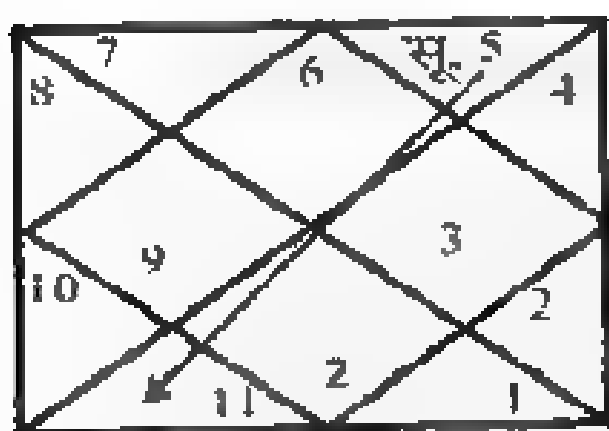
7	6	सू. 5	4
8	9	3	2
10	11	2	1

कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होने के कारण हानिकारक होगा। यद्यपि सूर्य लग्नेश बुध का मित्र है तथापि सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साहचर्य से मारकेश का फल भी दे सकता है यहां द्वादश स्थान में सूर्य सिंह राशि में स्वगृही है। सिंह राशि में अंशों में सूर्य मूल त्रिकोण का कहलाता है। व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनता है। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रु का सम्पूर्ण नाश करने में समर्थ होता है। ऐसा जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होता है। जातक परोपकार, धर्म व अध्यात्म के कामों में रुपया खर्च करता है।

दृष्टि–व्यय भावगत सूर्य की दृष्टि छठे स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक शत्रुहन्ता होता है। जातक अपने द्वेषी को कभी क्षमा नहीं करता है।

निशानी–जातक के बायें नेत्र में विकार हो सकता है। जातक क्रोधी होता है।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा में जातक अधिक यात्राएं करेगा तथा धन, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + चंद्र**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है, सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को प्रात: 4 बजे के आस पास होगा। सूर्य यहां स्वगृही होगा। व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। चंद्रमा बारहवें होने से 'लाभभंग योग' बना। फलत: जातक को व्यापार में लाभ की कमी महसूस होगी। जातक को नेत्र पीड़ा (बाईं आंख) में रहेगी। जातक का कोई काम रुका नहीं रहेगा। दोनों ग्रह की दृष्टि छठे स्थान कुंभ राशि पर होने से जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
2. **सूर्य + मंगल**–जातक मांगलिक होगा। विवाह सुख में विलम्ब होगा।
3. **सूर्य + बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। द्वादश स्थान में सिंह राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश-दशमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य स्वगृही होगा। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। बलवान खर्चेश की लग्नेश के साथ की युति जातक को खर्चीले स्वभाव का बनायेगी। जातक राज्य क्षेत्र में उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा। जातक धार्मिक यात्राएं, तीर्थाटन, देशाटन करेगा। व्ययेश सूर्य के बारहवें जाने से 'विमल योग' बना। ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य + गुरु**–विलम्ब विवाह या विवाह सुख में बाधा होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**–भाग्य सुख में बाधा होगी।
6. **सूर्य + शनि**–कन्यालग्न के द्वादश स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री और सूर्य स्वगृही होगा। जातक को नेत्र पीड़ा होगी। इन दोनों ग्रहों की इस स्थिति से हर्ष योग व सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि धन भाव (तुला राशि), षष्टम भाव (कुम्भ राशि) एवं भाग्य भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक महाधनी एवं भाग्यशाली होगा तथा ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।
6. **सूर्य + राहु**–यात्रा अधिक होगी।
7. **सूर्य + केतु**–तीर्थयात्रा होगी।

❑❑❑

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में
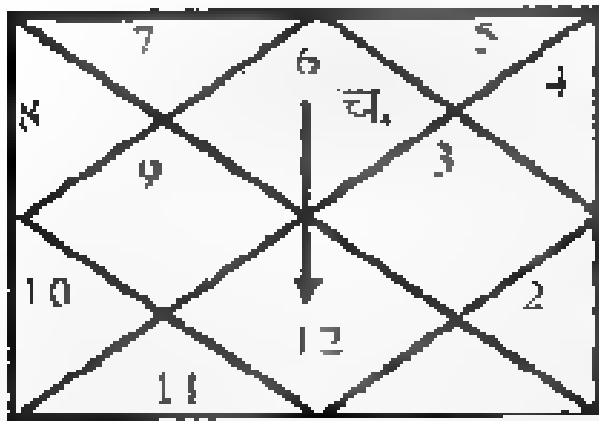
कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां चंद्रमा कन्या (शत्रु) राशि में है। पाराशर ऋषि के अनुसार लाभेश लग्न में हो तो जातक को धन, यश, सुख व सम्मान की बराबर प्राप्ति होती रहती है। ऐसा जातक उच्छृंखल व आराम तलब होगा। चंद्रमा केन्द्र में होने से 'यामिनीनाथ योग' बना फलत: चंद्रमा की सकारात्मक शक्ति बढ़ेगी जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का जनसंपर्क अच्छा होगा। जातक की कल्पना शक्ति उर्वरक होगी।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक की पत्नी पतिव्रता एवं शुभलक्षणा होगी। विवाह के बाद जातक की पारिवारिक स्थिति सुधरेगी।

निशानी–ऐसे जातक के भाग्य एवं जीवन में लगातार परिवर्तन (Ups & Down) आते रहेंगे।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है. यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि मे होंगे। ऐसे जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रात:काल सूर्योदय के समय 5 से 7 बजे के मध्य होता है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा इन दोनों ग्रहों की दृष्टि

सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगा। फलत: ऐसा जातक पराक्रमी होगा तथा उसकी पत्नी सुन्दर व स्वामीभक्त होगी।

2. **चंद्र+मंगल**–प्रथम स्थान में कन्या राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ स्थान (धनु राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक दीर्घजीवी तो होगा पर भौतिक सुख समाधनों की प्राप्ति हेतु सदैव संघर्षशील रहेगा। जातक धनी तो होगा पर धन की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन शुक्र ग्रह की स्थिति से होगा। दशा-मंगल की दशा अन्तर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा जबकि चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा लाभकारी होगी।
3. **चंद्र+बुध**–जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली पर विवादास्पद व्यक्ति होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–कन्यालग्न में यह युति शुभ फलदायक है। भले ही चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है, इस गजकेसरी योग का प्रभाव पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक को उत्तम संतति सुख मिलेगा। जातक की पत्नी सुन्दर व संस्कार युक्त होगी। जातक का भाग्य बलवान होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–शुक्र यहां नीच का होगा।
6. **चंद्र+शनि**–ऐसा जातक हमेशा चिन्तित रहेगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक उन्मादी व्यक्तित्व का स्वामी होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक विचलित मन मस्तिष्क वाला होगा।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में
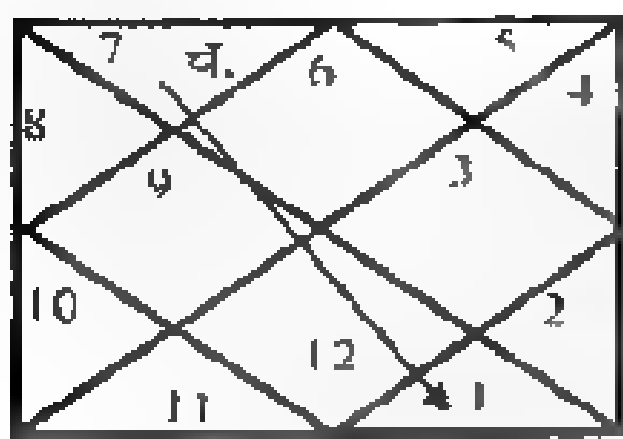
7 चं.	6	5	4
8	9	3	
10	12	2	
11		1	

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है, जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां द्वितीय स्थान में चंद्रमा तुला (मित्र) राशि में है। पाराशर ऋषि के अनुसार लाभेश धन स्थान में होने से 'महाधनी योग' बनता है। जातक को स्त्रियों से धन की प्राप्ति होगी। जातक बड़े परिवार वाला होगा। जातक को उत्तम गृहस्थ सुख, संतति सुख, धन-वैभव एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक वाणी के द्वारा भी धन कमा सकता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर रहेगी। जातक लम्बी आयु वाला होगा।

निशानी–जातक को स्त्री मित्र (Female Friend) से लाभ होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक धनवान होगा। व्यापार व्यवसाय व नौकरी में लाभ होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रातःकाल सूर्योदय के पूर्व 4 से 5 बजे के मध्य होता है। सूर्य यहां नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करता है। यहां दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होता है।
2. **चंद्र+मंगल**–कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में तुला राशिगत मंगल एवं चंद्रमा दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव में जो कि मंगल के स्वयं का घर है (मेष राशि) पर होगी। फलतः लक्ष्मी योग के साथ जातक दीर्घजीवी होगा. इस योग में जन्मा जातक दो चरणों में धनाढ्य होने की दिशा में आगे बढ़ेगा। प्रथम विवाह के बाद तथा प्रथम संतति के पश्चात् जातक आर्थिक सफलता को प्राप्त करेगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली पर विवादास्पद होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–यहां यह युति शुभ है। इस 'गजकेसरी योग' का प्रभाव छठे स्थान, आठवें स्थान एवं कुण्डली के दशम स्थान (राज्य भाव) पर पड़ेगा। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी जातक में ऋण, रोग व शत्रु को नष्ट करने का पूर्ण सामर्थ्य होगा। कोर्ट-कचहरी में जातक का दबदबा रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक महाधनी एवं भाग्यशाली होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक महाधनी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **चंद्र+राहु**–धन के घड़े में छेद होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक को धन प्राप्ति एवं लाभ में बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु

है। जबकि चंद्रमा बुध में वैरभाव नहीं रखता। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा वृश्चिक राशि में नीच का है वृश्चिक राशि के अंशों में चंद्रमा परमनीच का माना है। ऐसे जातक की उम्र लम्बी होती है। जातक को भाई बहन, स्त्री-सन्तान का पूर्ण सुख मिलता है जातक कुछ नास्तिक विचारों वाला होता है, जातक के व्यवसाय एवं चरित्र में लगातार परिवर्तन आता रहता है। जातक की पुरातन विद्याओं, धर्म-कर्म, अध्यात्म, ज्योतिष, तंत्र मंत्र में रुचि होती है।

दृष्टि—तृतीय स्थान में स्थित चंद्रमा की दृष्टि नवम स्थान (धनु राशि) पर होगी ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होता है।

निशानी—ऐसे जातक के घर में अकाल मृत्यु नहीं होती। जातक का जन्म परिवार में अकाल मृत्यु रोकता है।

दशा-चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा। जातक का भाग्योदय भी होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व रात्रि 3 बजे के आस पास होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। फलतः जातक भाग्यशाली एवं पराक्रमी होगा। उसे भाई-बहन दोनों का सुख प्राप्त होगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां तृतीय स्थान में मंगल स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव (कुंभ राशि), भाग्य भाव (वृष राशि) एवं दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे यहां महालक्ष्मी योग बनेगा। ऐसा जातक भाग्यशाली होता है एवं अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम धनी, मानी एवं महान पराक्रमी होता है।
3. **चंद्र+बुध**—जातक की बहनें अधिक होंगी। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—तृतीय स्थान में चंद्रमा नीच का होगा। पर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव भाग्य भाव एवं लाभ भाव पर होगी। ऐसे जातक का जीवन साथी सुन्दर

होगा। जातक का भाग्योदय छोटी उम्र म होगा। जातक को कोर्ट-कचहरी राजदरबार म सदैव विजय मिलेगी।

5. **चद्र+शुक्र**–जातक का स्त्री-मित्रो से लाभ होगा।
6. **चद्र+शनि**–जातक के मित्र विश्वासनीय नही हागे।
7. **चंद्र+राहु**–भाईयों में विवाद रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–भाई बहनों में मनमुटाव रहेगा।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में
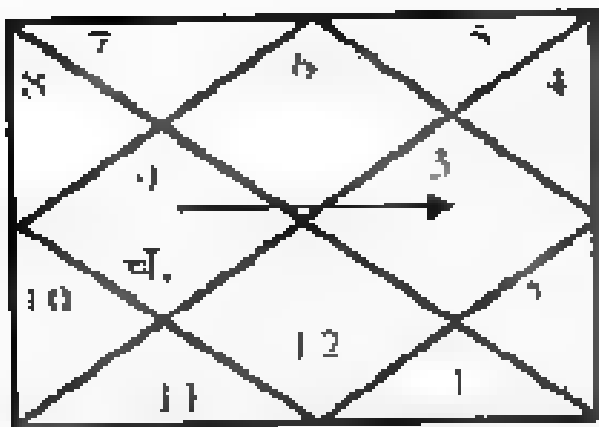
कन्यालग्न में चद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न मे थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहा चतुर्थ स्थान में चंद्रमा धनु (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक का अपना मकान होगा और संबंधियों से उसे सुख मिलता रहेगा। जातक को पैतृक संपत्ति, धन सम्पत्ति एव वाहन का सुख मिलेगा। जातक को भौतिक सुख, एश्वर्य की प्राप्ति होगी। यहा चद्रमा के कारण बना 'यामिनीनाथ योग' अधिक सार्थक होगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ चद्रमा की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को राज्य पक्ष में, सरकारी नौकरी, व्यवसाय में उन्नति मिलती है।

निशानी–ऐसे व्यक्ति की आमदनी खर्च करने पर बढ़ती रहती है। माता पिता की सेवा करने पर जातक की विशेष तरक्की होती है।

दशा–चद्रमा की दशा-अतर्दशा में जातक को भौतिक सुख ऐश्वर्य तथा उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

चद्रमा का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **चद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनो की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहा चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म पौषकृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होगा। यहा बैठकर दोना ग्रह दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। फलतः जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के पास वाहन भी होगा पर वाहन दुर्घटना से विकलाग होने का भय रहेगा।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां चतुर्थ स्थान में धनु राशिगत चंद्र, मंगल केन्द्रवर्ती होंगे, मंगल यहां दिग्बली होगा एवं चंद्रमा के कारण यामिनीनाथ योग बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (मीन राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं एकादश भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। फलत: इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक की आर्थिक स्थिति में सम्पन्नता विवाह के बाद आयेगी। जातक व्यापार व्यवसाय एवं राजनीति में भी प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **चंद्र+बुध**—जातक की माता बीमार रहेगी।

4. **चंद्र+गुरु**—यहां गुरु+चंद्र की युति हंस योग, कुलदीपक योग, कमरी योग एवं यामिनीनाथ योग की सृष्टि करेगा। यह गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति है यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह अष्टम भाव, राज्य भाव एवं द्वादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक की आयु बढ़ेगी। कोर्ट-कचहरी में आपका दबदबा रहेगा। यात्राओं से लाभ होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—जातक भाग्यशाली होगा तथा परिवार का नाम रोशन करेगा।

6. **चंद्र+शनि**—जातक की माता बीमार होगी।

7. **चंद्र+राहु**—जातक की माता की मृत्यु जल्दी होगी।

8. **चंद्र+केतु**—जातक का वाहन दुर्घटनाग्रस्त होगा।

कन्यालग्न में चन्द्रमा की स्थिति पंचम स्थान में
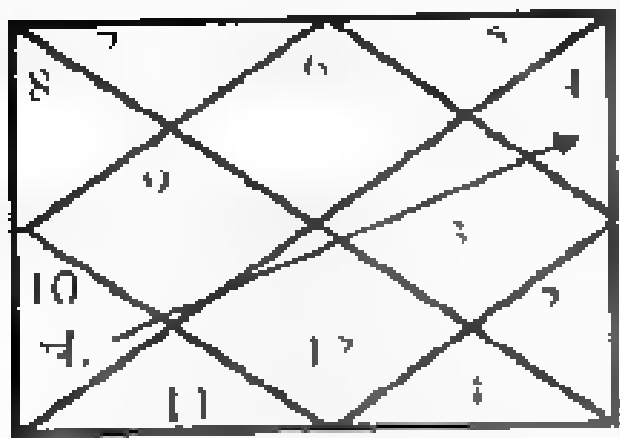
कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां पंचम स्थान में चंद्रमा मकर (सम) राशि में है। ऐसे जातक की शिक्षा पूर्ण होती है। उसे शैक्षणिक डिग्री मिलती है। उसे भूमि, कीमती पत्थर (रत्न) की प्राप्ति होती है। जातक विनम्र, विद्वान एवं ईश्वर की सत्ता में विश्वास रखने वाला शत्रुहीन होगा।

दृष्टि—पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होगी जो चंद्रमा का स्वयं का घर है। जातक को राज्य सेवा में रहने का अवसर मिलेगा। जातक एक प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

निशानी—ऐसे व्यक्ति के जन्म के बाद जातक के परिवार की उन्नति होती है

दशा–चंद्रमा की दशा–अन्तर्दशा में जातक की शिक्षा पूर्ण होगी। जातक को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी जातक को रोजी रोटी व्यवसाय में उत्तम अवसर प्राप्त होंगे

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य–**कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या रात्रि 10 बजे के आस-पास होगा। यहां सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह लाभ स्थान (कर्क राशि) को देखेंगे जो चंद्रमा का स्वयं का घर है। ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा परन्तु एकाध संतति का क्षरण, अकाल मृत्यु, गर्भपात संभव है।
2. **चंद्र+मंगल–**यहां पंचम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मेष राशि), लाभ भाव (कर्क राशि) एवं व्यय भाव (सिंह राशि) को देखेंगे। यहां 'लक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा। जातक व्यापार–व्यवसाय में यथेष्ट धन अर्जित करेगा परन्तु जातक उदार मनोवृत्ति (खर्चीली प्रवृत्ति) का होगा।
3. **चंद्र+बुध–**जातक प्रज्ञावान होगा। दो कन्याएं अवश्य होंगी।
4. **चंद्र+गुरु–**पंचम स्थान में नीचस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान पर होगी, फलत: जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होगा। जातक की व्यापार व्यवसाय में उन्नति, जीवन में सर्वांगीण विकास होगा।
5. **चंद्र+शुक्र** कन्याएं अधिक होंगी जातक की संतान भाग्यशाली होगी।
6. **चंद्र+शनि–**जातक की कन्याएं अधिक होंगी।
7. **चंद्र+राहु–**जातक को संतान प्राप्ति में बाधा आयेगी।
8. **चंद्र+केतु–**गर्भपात या गर्भस्राव होगा.

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में
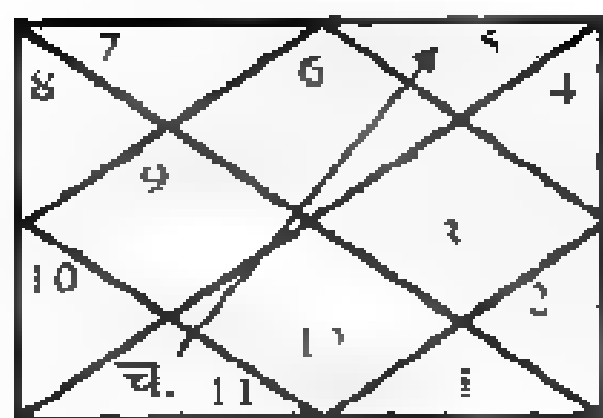
कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैरभाव नही रखता। यहां छठे स्थान में चंद्रमा कुम्भ

(सम) राशि में है। चंद्रमा की इस स्थिति के कारण 'लाभ भंग योग' बनेगा। इसमें बालारिष्ट योग एवं बचपन में स्वास्थ्य खराब होने का संकेत मिलता है। ऐसा जातक एकाग्रचित होकर अपनी समस्याओं व शत्रुओं के बारे में विचार करके महत्वपूर्ण निर्णय लेता है। जातक को युवावस्था में व्यापार-व्यवसाय हेतु संघर्ष करना पड़ता है

दृष्टि—छठे भावगत चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का होता है। जातक धन संग्रह के प्रति लापरवाह रहता है

निशानी—ऐसे जातक को रात्रि में दूध पीने या बासी खाना खाने पर 'विष भोजन' का भय रहता है। जातक के गुप्त शत्रु अवश्य होते हैं पर वह उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में मिश्रित फलों की प्राप्ति होगी। उन्नति होगी पर उन्नति के साथ कोई न कोई चिंता लगी रहेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या रात्रि 8 बजे के आस पास होगा। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे चंद्रमा छठे जाने से लाभभंग योग बना परन्तु व्ययेश सूर्य के छठे जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। फलतः आर्थिक तंगी रहेगी। खर्च की अधिकता जातक को परेशानी करती रहेगी. जातक की आर्थिक स्थिति का सही मूल्यांकन शुक्र की स्थिति से होगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां छठे स्थान में कुंभ राशिगत मंगल के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। चंद्रमा के कारण 'लाभभंग योग' भी बनेगा, परन्तु षष्टमेश मंगल के छठे स्थान में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि), व्यय भाव (सिंह राशि) एवं लग्न भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा पर 'लक्ष्मी योग' के कारण धन की आवक बनी रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा उसे धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी।
3. **चंद्र+बुध**—मेहनत का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—यहां चंद्रमा व बृहस्पति के कारण 'सुखभंग योग' 'विवाहभंग योग' एवं 'लाभभंग योग' बनेगा। फलतः जातक के पराक्रम में कमी आयेगी खर्चे बढ़ चढ़ कर होंगे। राज्य पक्ष से भय होगा। जातक का विवाह सुख में बाधा

आयेगी। जातक का कोई काम इस योग के कारण रुका हुआ नहीं रहेगा। संघर्ष के बाद अंतिम सफलता निश्चित है।

5. **चंद्र+शुक्र**—भाग्योदय में बाधा आयेगी।
6. **चंद्र+शनि**—संतान विलम्ब से होगी।
7. **चंद्र+राहु**—जातक के गुप्त शत्रु होंगे
8. **चंद्र+केतु**—जातक के मित्र षड्यंत्रकारी होंगे

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में
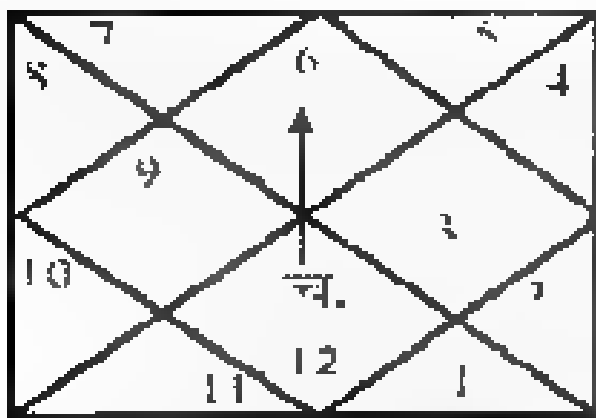
7, 6, 5, 4, 8, 9, 3, 10, 2, 11, 12, 1, च.

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां सप्तम स्थान में चंद्रमा (मीन) मित्र राशि में है। ऐसा जातक कामुक प्रवृत्ति प्रधान होगा। जातक की पत्नी सुन्दर, सुशील भावुक व मांसल होगी पर जातक अन्य स्त्रियों में ज्यादा रुचि लेगा। जातक दूसरों से आसानी से ईर्ष्या करने लगेगा। पति पत्नी में प्रेम रहेगा। गृहस्थ सुख, परिवार संतान सुख मध्यम रहेगा। जातक समाज का प्रिय व्यक्ति होगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक जिस कार्य को हाथ में लेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी।

निशानी—ऐसे जातक की युवावस्था में मां की मृत्यु हो जाती है।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होती है। जातक को व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां सातवें स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को सायंकाल सूर्यास्त के समय होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (कन्या राशि) को देखेंगे। फलतः जातक उन्नति मार्ग की ओर बढ़ेगा। जातक की पत्नी सुंदर होगी पर झगड़ालू स्वभाव की होगी।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में केन्द्रस्थ होंगे। चंद्रमा के कारण 'यामिनीनाथ योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं धन स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक धनी होगा। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। जातक का राज्य सरकार व राजनीति में दबदबा होगा। जातक समाज का धनी, मानी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक भाग्यशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—दोनों ग्रह केन्द्रस्थ होने के कारण कुलदीपक योग, हंस योग, केसरी योग एवं यामिनीनाथ योग की सृष्टि करेंगे। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलतः विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक का जीवनसाथी सुयोग्य व सुन्दर होगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक का पराक्रम राजातुल्य होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—मालव्य योग के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा।
6. **चंद्र+शनि**—पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव है।
7. **चंद्र+राहु**—जातक का पत्नी से विवाद रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**—पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव है।

कन्यालग्न में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में
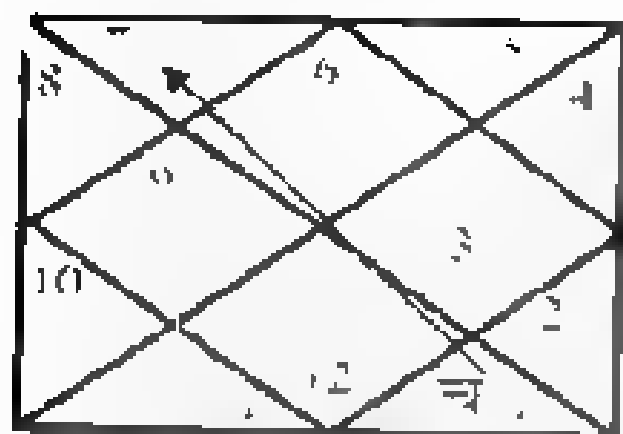
कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां अष्टम स्थान में चंद्रमा मेष (मित्र) राशि में है। चंद्रमा की इस स्थिति से 'लाभभंग योग' बनता है। इससे बालारिष्ट योग एवं बचपन में स्वास्थ्य खराब होने का संकेत मिलता है। परन्तु चंद्रमा मेष में होने के कारण अपनी ऊर्जा नहीं खोता। ऐसा जातक अपनी किस्मत आप बनाने वाला, परम यशस्वी होता है। जातक का शरीर पतला एवं आंखें कमजोर होंगी। जातक का मन कभी अचानक विचलित होने से कई बार आत्मविश्वास की कमी महसूस होगी।

दृष्टि—अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा। धन प्राप्ति के प्रयास हेतु जातक को कठोर परिश्रम करना होगा, पर सफलता अवश्य मिलेगी। आर्थिक सम्पन्नता धनेश शुक्र की स्थिति पर निर्भर है।

निशानी–ऐसे जातक की बाल्यावस्था में माता की मृत्यु सम्भव है। जातक को पसीना ज्यादा आयेगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहा अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे ऐसे जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सायकाल चार बजे के लगभग होगा। सूर्य यहां उच्च का होगा व्ययेश सूर्य के आठवें जाने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनता है, जबकि चंद्रमा लाभभंग योग की सृष्टि करता है। ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होता है। जातक दीर्घजीवी होता है पर व्यापार में नुकसान उठाता है। दोनों ग्रहों की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक धनी व समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहा अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। जहां मंगल स्वगृही होगा। मंगल के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा तथा चंद्रमा के कारण 'लाभभंग योग' बनेगा। परन्तु अष्टमेश के अष्टम भाव में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होगी। यहा बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ भवन (कर्क राशि), धन भाव (तुला राशि) एवं पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक व्यापार व्यवसाय के द्वारा यथेष्ट धन कमायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा एव अपने शत्रुओं को नष्ट करने म सक्षम होगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–यहां गुरु+चंद्र की इस स्थिति के कारण 'सुखभंग योग, विवाहभग योग एव लाभभग योग' बनेगा। फलत: जातक के जीवन में धन की बचत नहीं होगी तथा उसके गृहस्थ जीवन में कलह रहेगी। फिर भी जीवन की गाड़ी पार लग जायेगी। जातक का कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक आर्थिक रूप में सदैव संकट ग्रस्त रहेगा। जातक भाग्यहीन होगा क्योंकि शुक्र के कारण 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यभंग योग' बनेगा।
6. **चंद्र+शनि**–शनि के कारण विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी होगा।
7. **चंद्र+राहु**–राहु यहां दुर्घटना को आमंत्रित करता है
8. **चंद्र+केतु**–केतु शल्य चिकित्सा करायेगा।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में
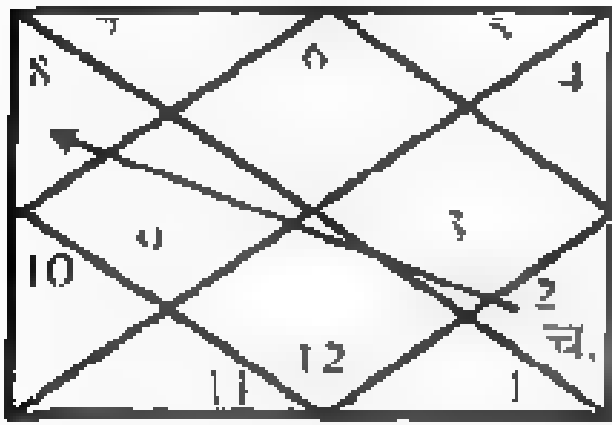
कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां नवम स्थान में चंद्रमा उच्च का है। वृष राशि के अंशों में चंद्रमा परमोच्च का होता है फलत: जातक की विद्या पूर्ण होगी, जातक दूरदर्शी होगा। जातक को उच्च शिक्षा (Higher Educational Degree) की उपाधि मिलेगी। जातक सौभाग्यशाली होगा, उसे सर्वत्र प्रसिद्धि व सफलता मिलेगी। जातक को सामाजिक व राजनैतिक योजनाओं में सफलता मिलेगी। जातक को सरकार से सम्मान मिलेगा

दृष्टि–नवमस्थ चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी फलत: जातक महान पराक्रमी होगा।

निशानी–जातक 'शरणागत वत्सल' होगा। जातक अपनी शरण में आये व्यक्ति की जान देकर भी रक्षा करेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक का परम भाग्योदय होगा उसे व्यापार व्यवसाय या नौकरी से धन मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को दोपहर दो बजे के आस-पास होगा। यहां बैठे दोनों ग्रह पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक भाग्यशाली एवं प्रबल पराक्रमी होगा। यहां चंद्रमा उच्च का होने से 'चंद्रकृत राजयोग' बनेगा। ऐसे जातक को मित्रों एवं व्यापारी वर्गीय लोगों से लाभ होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। जहां चंद्रमा उच्च का होगा फलत: महालक्ष्मीयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि) पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं चतुर्थ भाव (धनु राशि) को देखेंगे फलत: जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति

होगी, जातक धनी एवं पराक्रमी होगा। एवं उदार मनोवृत्ति (खर्चीले स्वभाव) का व्यक्ति होगा।

3. **चंद्र+बुध**–जातक प्रबल भाग्यशाली होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–चंद्रमा यहा उच्च का होकर, बृहस्पति के साथ लग्न स्थान, पराक्रम भाव एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक को पिता की सम्पत्ति एवं परिजनों का प्रेम मिलेगा। जातक की संतान पढ़ी लिखी व सुशील होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–यहां शुक्र स्वगृही एवं चंद्रमा उच्च का होने से 'किम्बहुना' नामक राजयोग बनेगा। जातक राजा या राजमंत्री से कम नहीं होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक पराक्रमी एवं भाग्यशाली होगा।
7. **चंद्र+राहु**–जातक राजा होगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक का भाग्योदय संघर्षपूर्ण होगा

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में
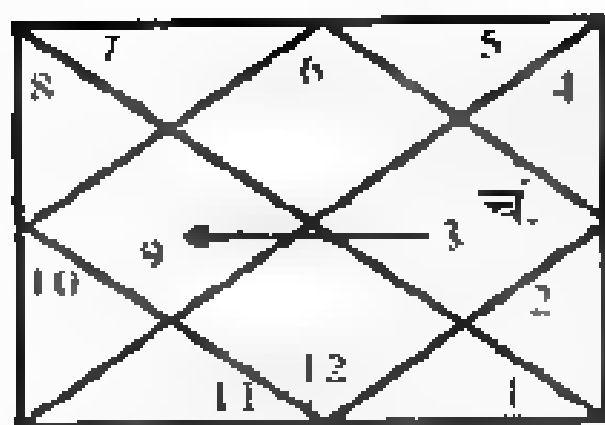
कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहा दशम स्थान में चंद्रमा मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को पिता, नौकरी, व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा जातक तीव्र बुद्धि वाला एवं बहादुर होगा। जातक अमीर होगा एव सुन्दर आभूषणों से युक्त स्त्री का स्वामी होगा। जातक कला- कुशल होगा। सरकारी क्षेत्र में जातक का प्रभाव होगा।

दृष्टि–दशम स्थान गत चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को माता पिता एवं वाहन का सुख पूर्ण मिलेगा।

निशानी–घर मे दुधारू पशु या दूध वाले वृक्ष या एकाधिक वाहन होंगे।

दशा-चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा मे जातक को नौकरी, व्यवसाय व व्यापार मे लाभ होगा। जातक को धन की प्राप्ति भी होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न मे चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ

निरर्थक युति है। यहा दशम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म आषाढ कृष्ण अमावस्या दोपहर 12 बजे के आस पास होता है। यहा बैठकर दोनो ग्रहो की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी ऐसे जातक को माता-पिता की आंशिक सम्पत्ति मिलती है, जातक का सरकार में, राजनीति मे दबदबा रहता है।

2 **चंद्र+मगल**—यहा दशम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि मे होकर लग्न स्थान (कन्या राशि), चतुर्थ स्थान (धनु राशि) एवं पचम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे। मगल यहा दिक्बल को प्राप्त करके अपनी उच्च राशि को देखेगा। चद्रमा यहा 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। फलतः 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ ऐसा जातक धनवान होगा तथा उसे जीवन मे सभी भौतिक सुख ससाधनों की प्राप्ति होगी। जातक अच्छी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक की आर्थिक उन्नति सही अर्थों मे प्रथम सतति के बाद होती है।

3. **चंद्र+बुध**—जातक राजा होगा।

4. **चंद्र+गुरु** दशम भाव मे चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां पर केसरी योग, कुलदीपक योग एव यामिनीनाथ योग बनेगा। दोनों ग्रह धन स्थान, सुख स्थान एव अष्टम भाव को देखेंगे। फलतः राज्य पक्ष, कोर्ट कचहरी में दबदबा रहेगा। जातक को निर्बाध गति से धन प्राप्ति होती रहेगी एव सुख प्राप्ति के ससाधन मिलते रहेंगे। जातक को वाहन की प्राप्ति 24 व 32 वर्ष की आयु म होगी

5. **चद्र+शुक्र**—जातक भाग्यशाली होगा।

6. **चद्र+शनि**—जातक का राजनीति में वर्चस्व होगा।

7. **चंद्र+राहु**—जातक महान पराक्रमी राजा होगा।

8. **चंद्र+केतु**—जातक को राज्यपक्ष से बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में
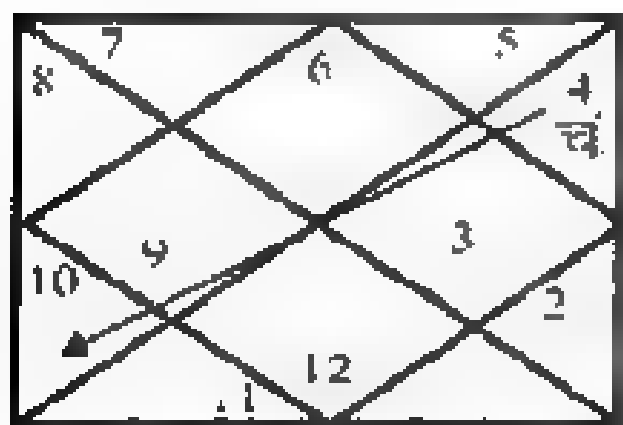
7 6 5 8 4 चं 9 3 10 2 12 1

कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है। क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां एकादश स्थान में चंद्रमा कर्क राशि में स्वगृही होगा। ऐसे जातक का भाग्योदय प्रथम सतति के बाद होगा। जातक को धन सम्पत्ति, वैभव, ऐश्वर्य, माता और ज्येष्ठ

भाई का सुख मिलेगा। जातक स्वभाव से शांतिप्रिय होता है। जातक के पास काफी भू सम्पत्ति एवं बैंक बैलेंस (Bank balance) होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी, ऐसे जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री (Higher Education Degree) मिलेगी।

निशानी–जातक की कन्या संतति अधिक होगी। जातक को स्त्री मित्र (Female Friend) से लाभ होगा।

दशा-चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनी होगा। उसके हाथ में ली गई महत्त्वकांक्षी योजनाएं सफल होंगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुतः लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म श्रावणकृष्ण अमावस्या को सुबह दस बजे के आस-पास होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव मकर राशि को देखेंगे। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। ऐसा जातक पढ़ा लिखा होता है। उसे पुत्र-पुत्री दोनों की प्राप्ति होती है। जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। कर्क में जहां चंद्रमा स्वगृही होगा वहीं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। फलतः यहां 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (तुला राशि), पंचम भाव (मकर राशि) एवं छठे भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक अपने शत्रुओं का मान भंग करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद ही होगी।
3. **चंद्र+बुध**–जातक उद्योगपति होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–बृहस्पति यहां उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होगा। किम्बहुना योग के साथ ये दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को देखेंगे। फलतः जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक छोटे भाई बहनों, पुत्र पुत्रियों पर धन खर्च करेगा तथा परिजनों से प्रेम करेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक विद्यावान होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी

7. चंद्र+राहु–विद्या में रुकावट।
8. चंद्र+केतु–लाभ में रुकावट।

कन्यालग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में
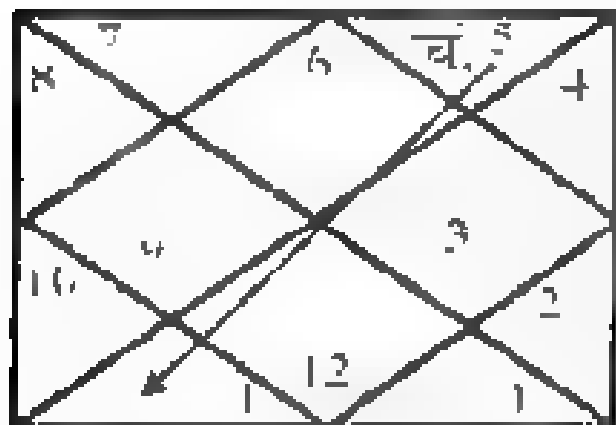
कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने के कारण पाप फलप्रद है। चंद्रमा अपने पुत्र बुध के लग्न में थोड़ा उद्विग्न रहता है क्योंकि बुध अपने पिता चंद्रमा का परम शत्रु है। जबकि चंद्रमा बुध से वैर भाव नहीं रखता। यहां द्वादश भाव में चंद्रमा सिंह राशि (मित्र राशि) में है। चंद्रमा की यह स्थिति 'लाभभंग योग' की सृष्टि करती है। इसमें बालारिष्ट योग एवं बचपन में स्वास्थ्य खराब होने का संकेत मिलता है। जातक एकान्त में निराशावादी चिंतन करता है। जातक जल्दी हताश होता है। जातक यात्राएं अधिक करता है। विदेश यात्रा से विशेष लाभ है। जातक माता पिता व गुरु की सेवा करने में रुचि रखता है। जातक खर्चीले स्वभाव का होता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ चंद्रमा की दृष्टि छठे भाव (कुम्भ राशि) पर होगी जातक के गुप्त शत्रु जरूर होंगे। गुप्त रोग की संभावना भी रहेगी।

निशानी–जातक के किसी अंग में असमानता होगी। उसकी बाई आंख (Left eye) कमजोर होगी। जातक की विद्या अधूरी छूट जाती है।

दशा-चंद्रमा की दशा अन्तदशा में यात्राएं सार्थक रहेंगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–कन्यालग्न में चंद्रमा लाभेश होने से पापी है। सूर्य व्ययेश होने से अशुभ फलदाता है। इन दोनों की युति वस्तुत: लाभेश चंद्र की व्ययेश के साथ निरर्थक युति है। यहा द्वादश स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। ऐसे जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 बजे के आस पास होगा। सूर्य यहां स्वगृही होगा। व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। चंद्रमा बारहवें होने से 'लाभभंग योग' बना फलत: व्यापार में लाभ की कमी महसूस होगी। जातक को नेत्र पीड़ा (बाई आंख) में रहेगी। पर जातक का कोई काम रुका नहीं रहेगा। दोनों ग्रह की दृष्टि छठे स्थान कुंभ राशि पर होने से जातक ऋण-रोग व शत्रुओं के नाश करने में सक्षम होगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां द्वादश भाव मे सिंह राशि होगी। मंगल की यहा उपस्थिति से पराक्रमभंग योग बनेगा तथा चंद्रमा की उपस्थिति से 'लाभभंग योग' बना। परन्तु अष्टमेश मंगल के द्वादश स्थान में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। यहा बैठकर दोनो ग्रह पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) छठे स्थान (कुंभ राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) को देखेंगे, फलतः ऐसा जातक धनी एवं महान पराक्रमी होगा परन्तु आर्थिक सपन्नता विवाह के बाद आयेगी।
3. **चंद्र+बुध**–लग्नभंग योग के कारण जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–यहां दोनो ग्रहो की इस स्थिति के कारण सुखभंग योग, विवाहभंग योग एवं लाभभंग योग बनेगा। फलतः विवाह में विलम्ब का सकेत है। जातक की माता बीमार रहेगी वाहन सुख मे भी तकलीफ आयेगी। जातक के जीवन में संघर्ष की स्थिति रहेगी। फिर भी इस गजकेसरी योग के कारण सभी कार्यों में अंतिम सफलता मिलेगी। कोई भी काम साधन के अभाव मे रुका नहीं रहेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–
6. **चंद्र+शनि**–यात्रा में नुकसान होगा।
7. **चंद्र+राहु**–ऐसे जातक को नींद कम आयेगी।
8. **चंद्र+केतु**–सपने खराब आयेंगे।

❑❑❑

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में
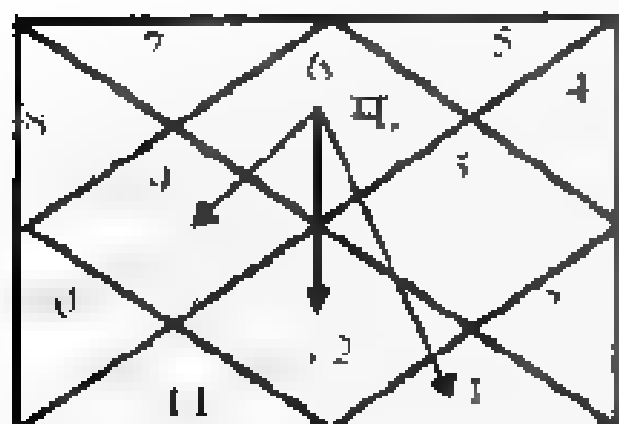
कन्यालग्न मे मगल तृतीयेश व अष्टमेश होने स परम पापी है। कन्यालग्न में मगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां प्रथम स्थान मे मगल कन्या (शत्रु) राशि मे है जातक के चेहरे पर फोडा फुन्सी चेचक के दाग इत्यादि हो सकते हैं। जातक की उन्नति भाईयो के सहयोग से होगी। परन्तु जातक हठी, ईर्ष्यालु एव कलहकारी स्वभाव का होगा। जातक की विध्वसंक कार्यों मे रुचि होगी तथा जातक कामक्रीड़ा मे स्त्री को परास्त करेगा। जातक व्यभिचारी होते हुए प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।

दृष्टि–कन्या राशिगत लग्नस्थ मगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि, सप्तम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसे जातक को वाहन का सुख, गृहस्थ का सुख मिलेगा। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा

निशानी–जातक की किस्मत 28 वर्ष की आयु के बाद चमकेगी। ऐसे जातक को माता-पिता के सुख में कमी रहेगी।

दशा–मगल की दशा-अन्तर्दशा मे जातक को विभिन्न प्रकार के लाभो की प्राप्ति होगी। जातक को वाहन सुख मिलेगा एवं गृहस्थ सुख की प्राप्ति होती है

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक क्रोधी किन्तु पराक्रमी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–प्रथम स्थान में कन्या राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ स्थान (धनु राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एव अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक दीर्घजीवी तो होगा पर भौतिक सुख संसाधनो की प्राप्ति

हेतु सदैव संघर्षशील रहेगा। जातक धनी तो होगा पर धन की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन शुक्र ग्रह की स्थिति से होगा।

3. **मंगल+बुध**–'भद्रयोग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का गृहस्थ जीवन उत्तम होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक अपने पुरुषार्थ से खूब धन कमायेगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक भाग्यशाली होगा पर उसका व्यक्तित्व विवादास्पद होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक पराक्रमी किन्तु लड़ाकू होगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक का गृहस्थ जीवन विवादास्पद होगा।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में

7 मं 6 5 4 8 9 3 10 2 12 11 1
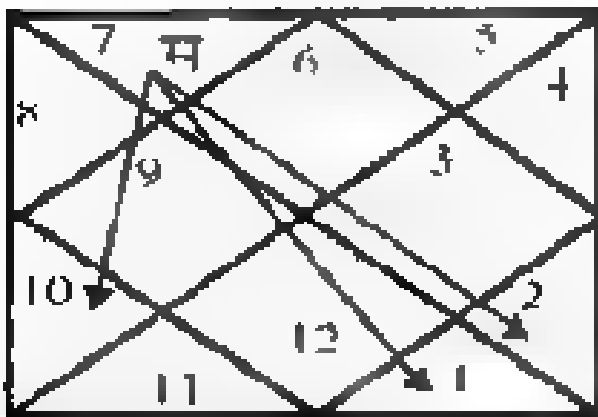
कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां तुला राशिगत द्वितीयस्थ मंगल समराशि में है ऐसा जातक कामी होता है। जातक की वाणी कटु होती है। धन कमाने की प्रबल उत्कण्ठा में जातक कुछ भी कर सकता है। जातक पराये धन व पराये माल पर बुरी नीयत रखता है। जातक का भाग्योदय जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेशों में प्रायः विदेश में होता है। जातक की संतान प्रायः उसका कहना नहीं मानती और जातक जीवनसाथी से असंतुष्ट रहता है। जातक का भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के पहले संभव नहीं।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि), अष्टम भाव (मेष राशि) एवं नवम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक का भाग्योदय विलम्ब से होगा। संतान उत्पत्ति भी विलम्ब से होगी। गर्भपात होंगे पर जातक दीर्घजीवी होगा।

निशानी–ऐसा जातक झगड़ालू स्वभाव का होता है।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक की वाणी तेजस्वी होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में तुला राशिगत मंगल एवं चंद्रमा दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि) सप्तम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम

भाव जो कि मंगल का स्वयं का घर है (मेष राशि) पर होगी। फलत: लक्ष्मी योग के साथ जातक दीर्घजीवी होगा। इस योग में जन्मा जातक दो चरणों में धनाढ्य होने की दिशा में आगे बढ़ेगा प्रथम विवाह के बाद, द्वितीय प्रथम सतान के पश्चात् जातक आर्थिक सफलता को प्राप्त होगा।

3. **मंगल+बुध**–जातक वाक्पटु होगा
4. **मंगल+गुरु**–जातक की वाणी धार्मिक होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक महाधनी एवं भाग्यशाली होगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक महाधनी होगा पर उसे धनहरण (चोरी) का भय रहेगा
7. **मंगल+राहु**–जातक को धन की तकलीफ रहेगी।
8. **मंगल+केतु**–जातक को धन संग्रह में बाधा महसूस होगी।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में
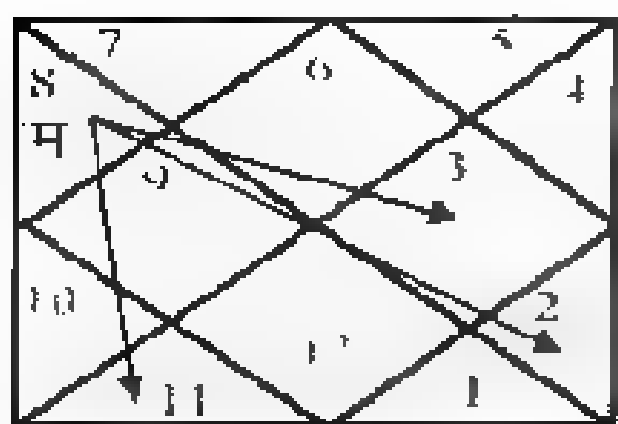
कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है यहा वृश्चिक राशिगत तृतीयस्थ मंगल स्वगृही है। मंगल तीसरे स्थान का कारक ग्रह भी है। फलत: ऐसा जातक महान पराक्रमी साहसी युद्ध में विजयश्री का वरण करने वाला, शत्रुहन्ता एव तेजस्वी होता है। जातक अपने कुटुम्ब एवं भुजाओं के बल पर जरूरत से ज्यादा विश्वास करता है। पंचमेश शनि की स्थिति यदि खराब हो तो जातक को संतान का अभाव रहेगा जातक कुटुम्ब का पालक एवं मित्रों का रक्षक होगा। जातक जबान का सच्चा एव वायदे का पक्का होगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि षष्टम भाव (कुम्भ राशि), भाग्य भाव (वृष राशि) एवं दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। 28 वर्ष की आयु के बाद जातक का भाग्योदय तत्काल होगा

निशानी–जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा। उसका भाग्योदय होगा

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के अनेक चचेरे भाई होंगे, जातक के छोटा भाई जरूर होगा।

2. **मंगल+चद्र**—यहां तृतीय स्थान में मगल स्वगृही एव चद्रमा नीच का होने से नीचभग राजयोग बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव (कुंभ राशि), भाग्य भाव (वृष राशि) एव दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। यहा महालक्ष्मी योग बनेगा। ऐसा जातक भाग्यशाली होता है। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णत: सक्षम, धनी मानी एव महान पराक्रमी होता है।
3. **मंगल+बुध**—जातक का सरकार में दबदबा रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**—जातक का बड़ा भाई जरूर होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—जातक की बहनें जरूर होंगी।
6. **मंगल+शनि**—जातक को सतति सुख होगा।
7. **मंगल+राहु**—जातक के भाइयों में विवाद होगा
8. **मंगल+केतु**—मित्र धोखा देंगे।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में

8	7	6	5
	9 म.		4
10		1	2
	11	12	3
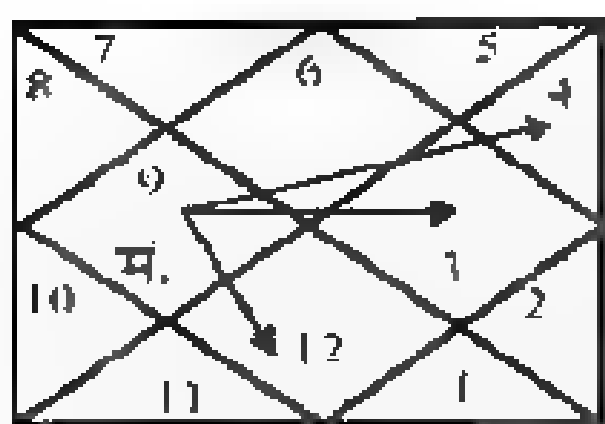
कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहा मंगल दिक्बली व केन्द्रस्थ है तथा अपनी मित्र धनु राशि में स्थित है। ऐसे जातक का राजनैतिक जीवन सफल होता है। जातक का खुद का मकान एव वाहन होगा। मगल चतुर्थ भाव में होने से यह कुण्डली मागलिक होगी। फलत: जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण हो सकता है। माता-पिता के साथ तथा अपने से उच्च अफसरों के साथ जातक की कम बनेगी। वैचारिक मतभेद रहेंगे ऐसा जातक दूसरो के बहकावे में शीघ्र आ जायेगा।

दृष्टि—चतुर्थस्थ मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं एकादश भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर विचार कम मिलेंगे। पिता की सम्पत्ति के प्रति जातक उदासीन रहेगा।

निशानी—जातक क्रोधी, हठी व दम्भी स्वभाव का होगा।

दशा—मंगल की दशा अन्तर्दशा में जातक का चहुमुखी विकास होगा। जीवनसाथी मिलेगा। नौकरी लगेगी किंवा भूमि लाभ होगा।

मंगल का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

. **मंगल+सूर्य**—जातक की मा बीमार रहेगी।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान में धनु राशिगत चंद्र, मंगल केन्द्रवर्ती होगा, मंगल यहां दिक्बली होगा एवं चंद्रमा के कारण यामिनीनाथ योग बनेगा, यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (मीन राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं एकादश भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। फलतः इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक की आर्थिक स्थिति में सम्पन्नता विवाह के बाद आयेगी। जातक व्यापार व्यवसाय एवं राजनीति में भी प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी।
4. **मंगल+गुरु**–गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक के पास श्रेष्ठ वाहन होंगे।
6. **मंगल+शनि**–जातक की मामा से कम बनेगी।
7. **मंगल+राहु**–जातक क्रोधावेश में आत्महत्या कर सकता है।
8. **मंगल+केतु**–जातक की मनोवृत्ति उसे आत्महत्या के लिए प्रेरित कर सकती है।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
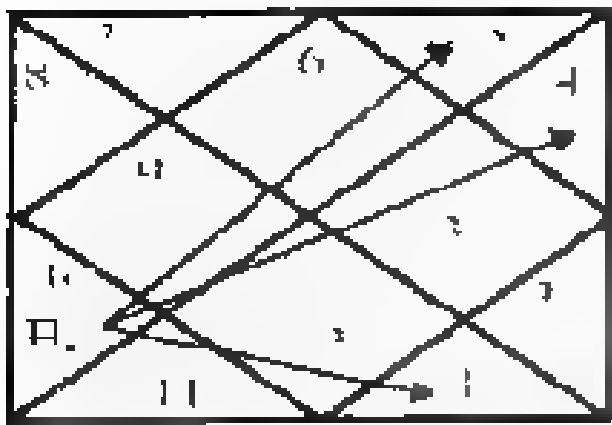
कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां पंचमस्थ मंगल अपनी उच्च राशि मकर में है, जहां 28 अंशों में यह परमोच्च का हो जाता है। लालकिताब वालों ने इस मंगल को 'रईसों का बाप दादा' कहा है। ऐसा जातक बहुखर्ची होता है तथा एक समय में बहुत से कार्य एक साथ करने का सामर्थ्य रखता है। जातक की कृतत्व शक्ति विलक्षण होती है। जातक का दिमाग कम्प्यूटर की तरह तेज काम करेगा. ऐसा जातक सेक्स के आनन्द में मस्त रहता है, अति सेक्स से जातक का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है। उसे गुप्त बीमारी भी लग सकती है.

दृष्टि–पंचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि), एकादश भाव (कर्क राशि) एवं द्वादश भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसे व्यक्ति की आयु दीर्घ होती है, जातक का राजनीति में वर्चस्व होता है। जातक देशाटन करने वाला एवं खर्चीले स्वभाव का होता है।

निशानी–जातक के प्रायः तीन पुत्र होते हैं। ऐसे जातक की स्त्री की प्रथम संतति कष्टपूर्ण (सिजेरियन) होने की भविष्यवाणी की जा सकती है।

दशा–मंगल की दशा, अन्तर्दशा में जातक का विकास चरमावस्था में होगा

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—जातक को पुत्र सुख होगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां पचम स्थान में मकर राशिगत मंगल उच्च का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (मेष राशि), लाभ भाव (कर्क राशि) एव व्यय भाव (सिंह राशि) को देखेंगे। यहा 'लक्ष्मी योग' मुखरित हुआ है। ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा तथा व्यापार व्यवसाय में यथेष्ट धन अर्जित करेगा। परंतु जातक उदार मनोवृत्ति (खर्चीली प्रवृत्ति) का होगा।
3. **मंगल+बुध**—जातक के यहा पुत्र-पुत्री दोनों होंगे।
4. **मंगल+गुरु**—यहा नीचभग राजयोग होने के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा
5. **मंगल+शुक्र**—जातक प्रबल भाग्यशाली एव धनी होगा।
6. **मंगल+शनि**—यहा 'किम्बहुना नामक' राजयोग बना। जातक महान ऐश्वर्यशाली होगा। जातक का पुत्र उससे बड़ा नाम कमायेगा।
7. **मंगल+राहु**—जातक के पुत्र बीमार रहेंगे।
8. **मंगल+केतु**—जातक की संतति पर सकट आयेंगे।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में

7	6	5
8	9	4
10	12	3
मं. 11	1	2
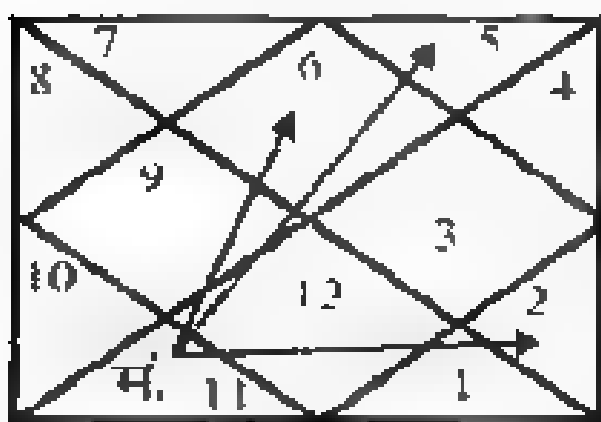
कन्यालग्न मे मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहा मंगल कुंभ राशि अपनी शत्रु राशि में है परन्तु अष्टमेश के षष्टम भाव मे होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनता है, साथ में पराक्रम भगयोग भी बना। ऐसा जातक शौर्यवान, पराक्रमी व शत्रुओं का मान मर्दन करने मे पूर्ण सक्षम होता है परन्तु उसे जीवन में बहुत कष्ट उठाने पड़ते हैं। ऐसे जातक को कुशल राजनीतिज्ञ एवं शासक के रूप में सफलता मिलती है।

दृष्टि—यहा षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य भवन (वृष राशि), व्यय भाव (सिंह राशि) एव लग्न भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय विलम्ब से होगा। देशाटन या शुभ कार्यों मे धन खर्च होगा पर अतिम सफलता निश्चित है।

निशानी—जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के पहले नहीं होता। जातक को शत्रु पीड़ा पहुचायेगा कोर्ट-केस में धन खर्च होगा।

दशा—मंगल की दशा अन्तर्दशा में रोग, ऋण व दुर्घटना का भय रहेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—यहां विपरीत राजयोग के कारण जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां छठे स्थान में कुंभ राशिगत मंगल के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। चंद्रमा के कारण 'लाभभंग योग' भी बनेगा, परन्तु षष्टमेश मंगल के छठे स्थान में जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि), व्यय भाव (सिंह राशि) एवं लग्न भाव (कन्या राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा पर 'लक्ष्मी योग' के कारण धन की आवक बनी रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा उसे धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों में सफलता मिलेगी।
3. **मंगल+बुध**—लग्नभंग योग के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**—जातक को मधुमेह या डायबीटिज होगी।
5. **मंगल+शुक्र**—विपरीत राजयोग जातक को धनी बनायेगा, पर संघर्ष बना रहेगा।
6. **मंगल+शनि**—विपरीत राजयोग के कारण जातक महापराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**—ऐसे जातक की मृत्यु प्राय: आत्महत्या के कारण होगी, परन्तु जातक को राजनैतिक उपलब्धि जरूर मिलेगी।
8. **मंगल+केतु**—ऐसा जातक प्राय: जहर खाकर मरेगा अथवा अति नशे से जातक की जान चली जायगी।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में

कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां सप्तमस्थ मीन (मित्र) राशि में व केन्द्र में है। वृश्चिक राशि में पंचम स्थान पर होने के कारण यहां मंगल शुभ फलकारी है। जातक को जीवन में नौकरी-व्यापार, उद्योग एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज में होगी। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है। जातक अति कामुक होगा, जिससे उसकी पत्नी परेशान रहेगी। जहां विनम्रता असफल रहेगी। वहां ऐसा जातक अपना काम डांट-डपट से निकाल लेगा। जातक का पुरुषार्थ कभी विफल नहीं जायेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि), लग्न भाव (कन्या राशि) एवं धन भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक उद्यमी होगा। जातक राजपक्ष में प्रभावशाली एवं धनी होगा।

निशानी–जातक का अन्य स्त्रियों के साथ भी शारीरिक सम्पर्क रहेगा। गृहस्थ सुख में कलह या असंतोष रहेगा।

दशा–मंगल की दशा अन्तर्दशा में जातक का बहुमुखी विकास होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–विवाह में विच्छेद की संभावना है अथवा एक दो सगाई होकर छूटने की संभावना है।।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में केन्द्रस्थ होंगे। चंद्रमा के कारण 'यामिनीनाथ योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं धन स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक धनी होगा। उसे जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। जातक का राज्य सरकार व राजनीति में दबदबा होगा। जातक समाज का धनी, मानी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक का ससुराल धनी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मालव्य योग के कारण जातक महाधनी होगा।
6. **मंगल+शनि**–विवाह सुख में बाधा रहेगी।
7. **मंगल+राहु**–जातक व्यभिचारी होगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक व्यभिचार में भटक जायेगा।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में
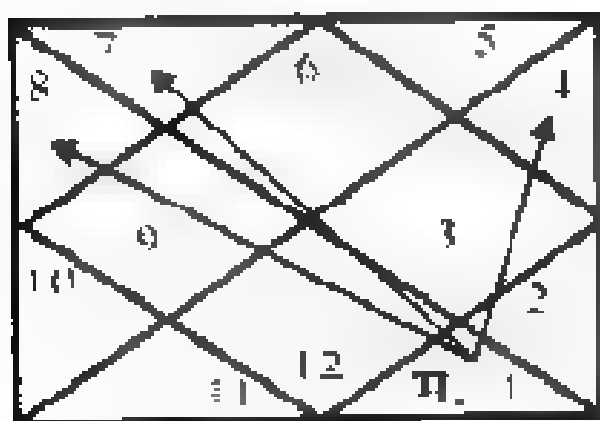
कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां अष्टमस्थ मंगल मेष राशि में है और स्वगृही है। अष्टमेश के अष्टम में होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बना। साथ में पराक्रमभंग योग भी बना। ऐसा जातक महान पराक्रमी, लम्बी उम्र वाला एवं शत्रुओं का समूल नाश करने में समर्थ होता है। ऐसे जातक में कार्य करने की विलक्षण प्रतिभा होती है, जिसमें जातक की कीर्ति, पराक्रम एवं

वैभव बढ़ता है। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को प्रबल मांगलिक बनाती है, ऐसे जातक का गृहस्थ जीवन प्रायः कलह कारक रहता है, तथा बच्चे कम होते है।

दृष्टि—अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि), धन स्थान (तुला राशि) एवं पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक को बड़े भाई के सुख में कमी रहेगी। जातक का छोटा भाई जरूर होगा। जातक की विद्या में रुकावट जरूर आयेगी।

निशानी—जातक के जीवन साथी की मृत्यु उसके सामने होगी, जातक को बवासीर, मस्सा या खून की बीमारी होगी।

दशा—मंगल की दशा- अंर्तदशा में जातक राजयोग को भोगेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—जातक का रुपया बीमारी में खर्च होगा.
2. **मंगल+चंद्र**—यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे, जहां मंगल स्वगृही होगा, मंगल के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा तथा चंद्रमा के कारण 'लाभ भंग योग' बनेगा। परन्तु अष्टमेश के अष्टम भाव में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ भवन (कर्क राशि), धन भाव (तुला राशि) एवं पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी, फलतः जातक व्यापार व्यवसाय के द्वारा यथेष्ट धन कमायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा एवं अपने शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा।
3. **मंगल+बुध**—लग्नभंग योग के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**—विवाह सुख में बाधा होगी।
5. **मंगल+शुक्र**—भाग्यभंग योग के कारण धन की कमी रहेगी।
6. **मंगल+शनि**—विपरीत राजयोग धन-वैभव बढ़ायेगा।
7. **मंगल+राहु**—यहां राहु होने से जातक को अस्त्र-शस्त्र का भय रहेगा
8. **मंगल+केतु**—यहां केतु होने से स्नायु रोग, बवासीर, दुर्घटना, रक्त-स्राव का भय रहेगा

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में

कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है, कन्यालग्न में मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां नवमस्थ मंगल वृष (शत्रु) राशि में है ऐसा जातक अधिकार सम्पन्न धनी व्यक्ति होगा। जातक के स्वयं के पुत्र अवश्य
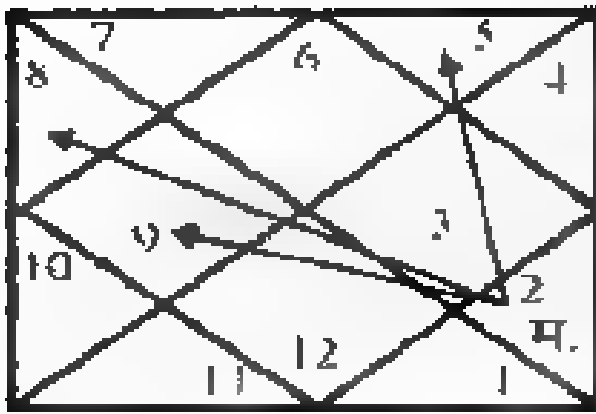
कीर्तिवान होगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा एवं प्राय: स्त्री-मित्र की मदद से आगे बढ़ेगा, विदेश यात्रा भी सम्भव है। जातक की समाज में बहुत प्रतिष्ठा होगी। भाईयों का सुख भी होगा तथा मित्र-मण्डली भी विस्तृत होगी।

दृष्टि—नवमस्थ मंगल की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि), पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं सुख स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे में जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक भाईयो व कुटुम्बी जनों का समर्थक होगा। जातक सुखी व सम्पन्न व्यक्ति होगा।

निशानी—ऐसे जातक के पिता की प्रतिष्ठा स्वास्थ्य व धन की हानि अवश्य होती है जातक प्राय: पिता का वफादार पुत्र नहीं होता।

दशा—मगल की दशा अतर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—जातक के भाई व मित्र पराक्रमी होंगे।
2. **मगल+चंद्र**—यहां नवम स्थान में दोनो ग्रह वृष राशि मे होगे। जहा चंद्रमा उच्च का होगा। फलत: महालक्ष्मीयोग बना, यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि), पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एव चतुर्थ भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलत: जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक धनी एव पराक्रमी होगा एव उदार मनोवृत्ति (खर्चीले स्वभाव) का व्यक्ति होगा।
3. **मंगल+बुध**—राज्यपक्ष से लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**—विवाह के बाद जातक का भाग्योदय निश्चित है।
5. **मंगल+शुक्र**—यदि शुक्र मगल के साथ हो तो जातक की दो पत्नियां होती हैं। जातक प्राय: विदेश में रहता है।
6. **मंगल+शनि**—जातक का अन्य स्त्री से रहस्यमय सबध होता है।
7. **मंगल+राहु**—भाग्य मे सघर्ष पर भविष्य उज्जवल है।
8. **मगल+केतु**—थोड़ संघर्ष के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में

कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां दशमस्थ मगल दिग्बली है मिथुन (सम)
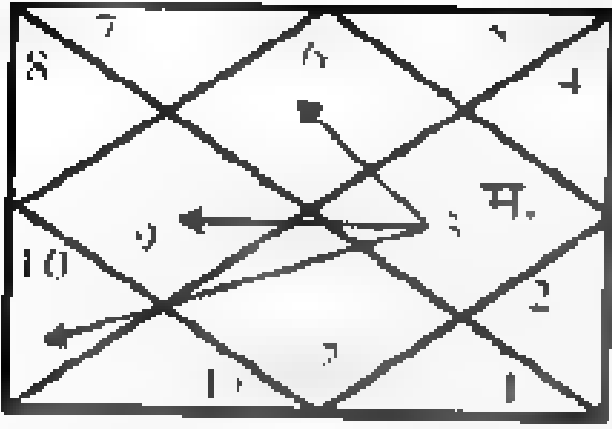
राशि में है एवं केन्द्रस्थ है तथा कुलदीपक योग बना रहा है। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली धनी व्यक्ति होगा परन्तु अपनी प्रशंसा व स्तुति सुनने का शौकीन होगा। जातक प्रायः अपने कार्य-क्षेत्र में साहसी कदम उठायेगा एवं खूब धनी होगा 'लाल किताब' वालों ने ऐसे मंगल को चींटी के घर भगवान की संज्ञा दी है। ऐसा जातक अपने पूरे खानदान कुटुम्बीजनों का कल्याण करता हुआ परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि—दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि), सुख स्थान (धनु राशि) एवं पंचम स्थान (मकर राशि) पर होगी। फलतः ऐसे जातक को आर्थिक, राजनैतिक व भौतिक उन्नति के अवसर प्रचुर मात्रा में प्राप्त होते रहेंगे, जातक को प्रयत्नों में बराबर सफलता मिलती रहेगी।

निशानी—ऐसा जातक स्वपराक्रम से धन कमाता है। और खुले दिल से खर्च करता है।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक राजा तुल्य वैभव एवं उत्कर्ष प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—जातक प्रशासनिक अधिकारी होगा अथवा प्रशासन कार्यों में कुशल होगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होकर लग्न स्थान (कन्या राशि), चतुर्थ स्थान (धनु राशि) एवं पंचम स्थान (मकर राशि) को देखेंगे। मंगल यहां दिक्बल को प्राप्त करके अपनी उच्च राशि को देखेगा चंद्रमा यहां 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। फलतः 'महालक्ष्मी योग' मुखरित हुआ। ऐसा जातक धनवान होगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक अच्छी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। ऐसे जातक की सही अर्थों में आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होती है।
3. **मंगल+बुध**—जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ यदि बृहस्पति हो तो जातक निम्न वर्ग या मजदूरों का नेता होता है।
5. **मंगल+शुक्र**—जातक के पास अनेक मकान होंगे।

6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि हो तो जातक विदेश में व्यापार करेगा और साहसी होगा।
7. **मंगल+राहु**—जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
8. **मंगल+केतु**—जातक राजकाज में बाधा महसूस करेगा।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में
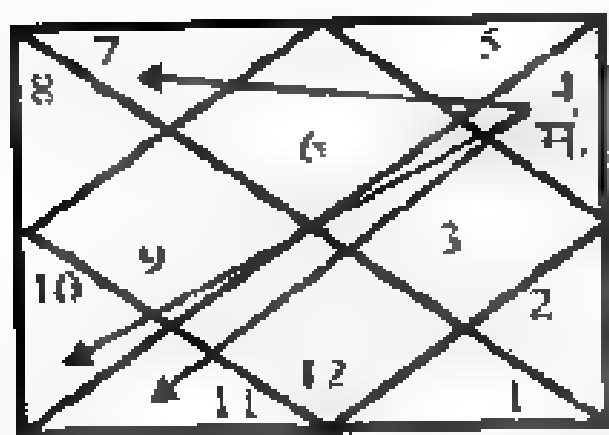
कन्यालग्न में मंगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न में मगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां एकादश स्थान मे मगल अपनी नीच कर्क राशि में है तथा 28 अंशों में यह परम नीच का हो जाता है। ऐसे जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं का लाभ सहज मे प्राप्त होता रहता है। ऐसा जातक स्वाभिमनी होता है पर उसे ज्येष्ठ भ्राता का सुख नहीं होता। जातक होशियार व अमीर होता है तथा प्राय: उद्योगपति होता है तथा उच्च वर्ग मे अपनी प्रतिष्ठा व प्रभाव का दबदबा बनाये रखता है।

दृष्टि—एकादशस्थ मंगल की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पचम भाव (मकर राशि) एव षष्टम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: जातक को धन सग्रह मे कठिनाई, विद्याध्ययन में कठिनाई एवं शत्रु नाश में कठिनाई का सामना करना पड़ेगा।

निशानी—जातक पुत्रवान होगा। उसे पुरुष एवं कन्या दोनों सतति की प्राप्ति होगी।

दशा—मगल की दशा-अर्तदशा में जातक की उन्नति होगी। जातक धनवान होगा। जातक प्रज्ञावान होगा एवं उसका पराक्रम बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मगल+सूर्य**—जातक के उद्योग बीमार रहेंगे।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां एकादश स्थान मे दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। कर्क में जहा चद्रमा स्वगृही होगा वहीं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। फलत: यहा 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि होगी यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (तुला राशि) पंचम भाव (मकर राशि) एव छठे भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा। अपने शत्रुओं का मान भंग करने मे सक्षम हागा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम सतति के बाद ही होगी।

3. **मंगल+बुध**–लाभांश विवादास्पद रहेगा।
4. **मगल+गुरु**–नीचभग राजयोग के कारण जातक करोडपति होगा
5. **मंगल+शनि**–जातक महाधनी होगा।
6. **मगल+शनि**–जातक सतानवान होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक झगड़ालू प्रवृत्ति का होगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक की उन्नति में लगातार बाधाएं आयेंगी।

कन्यालग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में
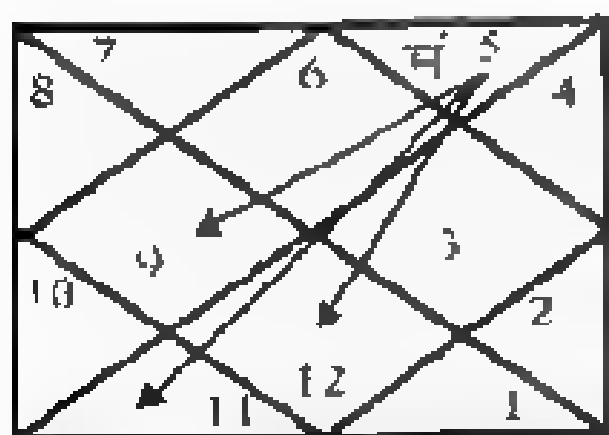
कन्यालग्न मे मगल तृतीयेश व अष्टमेश होने से परम पापी है। कन्यालग्न मे मंगल नकारात्मक ऊर्जा प्रदायक है। यहां द्वादश भावस्थ मंगल सिह (मित्र) राशि में है। अष्टमेश के द्वादश मे जाने से विमल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होती है, साथ ही पराक्रमभंग योग भी बनता है। ऐसा जातक अत्यधिक पराक्रमी, साहसी व क्रोधी होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को मागलिक बनाती है। फलत: ऐसे जातक में धैर्य की कमी रहेगी। जिसके कारण वह प्राय: अपने भाई बहन व पत्नी से उलझता रहेगा। प्राय: जाति व समाज मे प्रतिष्ठा की हानि के अवसर उपस्थित होते रहेंगे।

दृष्टि–द्वादशस्थ मगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि), षष्टम भाव (कुम्भ राशि) एव सप्तम भाव (मीन राशि) पर रहेगी, फलत: जातक मकान-वाहन सुखो से युक्त होगा पर शत्रु जरुर रहेंगे। गृहस्थ जीवन विवादास्पद रहेगा।

निशानी–जातक के पुनर्विवाह की संभावना प्रबल रहती है। जातक के जीवनसाथी की मृत्यु उसके सामने हो जायेगी। यदि सातवे या आठवें भाव मे अन्य पाप ग्रह हो तो पहली पत्नी के होते हुए भी जातक की दूसरी पत्नी होगी।

दशा–मगल की दशा-अन्तर्दशा मे जातक को मिश्रित परिणाम मिलेंगे। धन खर्च होगा शत्रु बढ़ेंगे। सुख की प्राप्ति होगी पर दु:ख भी साथ में मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–नेत्र-पीड़ा अवश्य होगी।
2. **मंगल+चद्र**–यहां द्वादश भाव में सिह राशि होगी। मंगल की यहां उपस्थिति से पराक्रमभग योग बनेगा तथा चद्रमा की उपस्थिति से 'लाभभंग योग' बना। परंतु

अष्टमेश मगल के द्वादश स्थान में जाने से विमल नाम विपरीत राजयोग बना। यहा बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि), छठे स्थान (कुभ राशि) एव सप्तम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक धनी तथा महान पराक्रमी होगा। परन्तु आर्थिक सपन्नता विवाह के बाद आयेगी।

3. **मंगल+बुध**—सरकार से दण्डित होने का योग है।
4. **मंगल+गुरु**—जातक धार्मिक आचरण वाला होगा।
5. **मगल+शनि**—जातक विलासी तथा लापरवाह होगा।
6. **मंगल+शनि**—जातक जेल जायेगा।
7. **मंगल+राहु**—जातक विदेश यात्रा में कष्ठ उठायेगा.
8. **मंगल+केतु**—जातक की यात्राए मुसीबत का कारण बनेंगी।

❑❑❑

कन्यालग्न में बुध की स्थिति

कन्यालग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
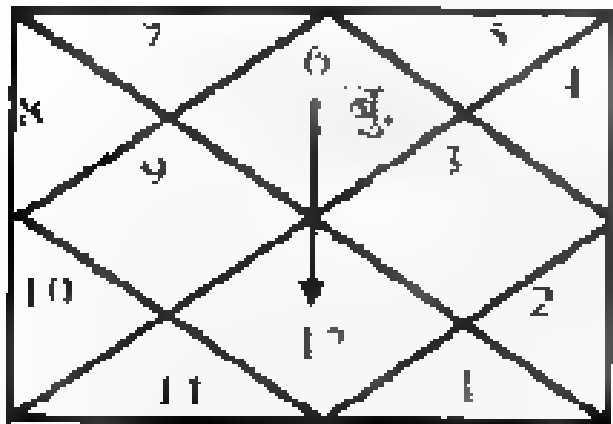
कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां लग्नस्थ बुध कन्या राशि में होगा जो कि उसकी उच्च राशि है। बुध यहां 15 अंशों तक परमोच्च एवं 16 से 20 अंशों तक मूलत्रिकोण का कहलाता है। बुध की इस स्थिति के कारण क्रमशः कुलदीपक योग, भद्रयोग एवं पद्मसिंहासन नामक योग बनता है। बुध यहां 'दिग्बली' भी है। ऐसा जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं धनवान होता है। ऐसा जातक विद्या व्यवसनी, विद्वान एवं राजनीति में कुशल होकर उच्च पद को प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। ऐसा जातक जिस क्षेत्र में भी कार्य करेगा, उस क्षेत्र में शीर्ष पद प्राप्त करेगा।

दृष्टि—लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक की पत्नी आज्ञाकारी, धर्मभीरु व पतिव्रता होगी।

निशानी—इनके व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण होता है, जिसके कारण अजान से अजान व्यक्ति भी इनकी ओर आकृष्ट हो जाता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी। उसका भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। प्रथम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध

के साथ युति कहलायेगी। बुध यहा उच्च का होकर 'भद्रयोग व कुलदीपक योग' की सृष्टि करेगा। यहा पर यह युति उत्तम फल (राजयोग) को देने वाली होगी। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा तथा राजातुल्य ऐश्वर्य, पराक्रम एवं वैभव को भोगेगा. जातक धनवान होगा। बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होगा। अपने कुल-परिवार जाति का मुखिया एव अग्रगण्य व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चन्द्र**—जातक प्रखर बुद्धिमान होगा पर अपने निर्णय बदलते रहेगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक का पराक्रम अत्यन्त तेजस्वी होगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक मर्यादित व्यवहार वाला और धार्मिक होगा।
5. **बुध + शुक्र**—जातक महाभाग्यशाली एवं धनी होगा।
6. **बुध + शनि**—जातक की संतति उत्तम होगी।
7. **बुध + राहु**—जातक प्रत्युत्पन्न मति वाला, हठी व्यक्ति होगा।
8. **बुध + केतु**—जातक कीर्तिवान् एव तेजस्वी होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
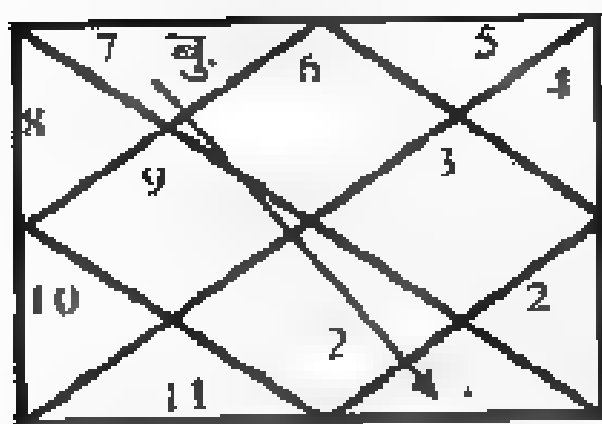
कन्यालग्न मे बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहा बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। द्वितीय स्थान मे बुध तुला राशि का होगा। ऐसा जातक सबको तारने वाला, हाजिर जबाब, प्रत्युत्पन्न मति वाला, धनवान एव सुखी होता है। ऐसा जातक जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख व ऐश्वर्य को सहज ही प्राप्त करता है। ऐसा जातक धन कमाने में होशियार सावधान एवं मितव्ययी होता है।

दृष्टि—द्वितीय भावगत बुध की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक की उम्र लम्बी होगी।

निशानी—बुध की दशा-अन्तर्दशा मे जातक धनवान होगा। स्वास्थ्य लाभ भी ठीक रहेगा।

दशा—

बुध का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। द्वितीय स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध

के साथ युति होगी। सूर्य यहा नीच राशि का होगा यहा बैठकर दोनो ग्रह अष्टम स्थान को देखेंगे, फलत: जातक बुद्धिमान होगा एव धनवान भी होगा। जातक अपने स्वय के पराक्रम एव पुरुषार्थ से धन कमाता हुआ आगे बढ़ता है जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा रोग (बीमारी) से लड़ने की क्षमता रखता हुआ दीर्घजीवी होगा।

2. **बुध + चंद्र**—जातक की वाणी विनम्र होगी।
3. **बुध + मगल**—जातक अन्तकपटी होगा। जातक की वाणी कपटपूर्ण होगी।
4. **बुध + गुरु**—जातक धार्मिक-दार्शनिक व आध्यात्म प्रेमी होगा
5. **बुध + शुक्र**—जातक महाधनी होग।
6. **बुध + शनि**—जातक महाधनी होगा जातक की संतति भी धनवान होगी।
7. **बुध + राहु**—धन के घड़े में छेद होने पर भी रुपया आता रहेगा।
8. **बुध + केतु**—धन सग्रह मे बाधा महसूस होगी पर अतिम रुप से धनसग्रह विवेकपूर्ण कार्यों में होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में
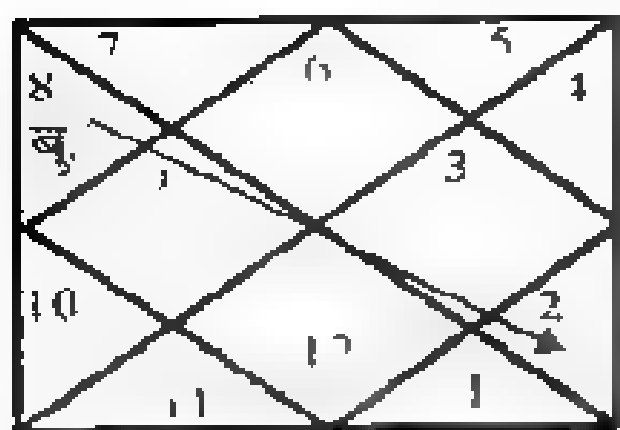
7 6 5 4 8 बु. 3 10 2 11 1

कन्यालग्न मे बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहा बुध अति शुभ फलदायक एव सफल योगकारक ग्रह है। तृतीय स्थान मे स्थित बुध वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। एसा जातक तेज बुद्धि वाला होगा। जातक लिखन-पढ़ने का शौकीन होगा ऐसा जातक जो कार्य-प्रारम्भ करता है, उसे समाप्त करके ही दम लेता है। ऐसे जातक को पिता सहोदर (भाई बहनों) का सुख मिलता है जातक को नौकरी-व्यापार-व्यवसाय से लाभ प्राप्त होता रहेगा। जातक बुद्धि बल एव मित्रों के सहयोग से धन कमायेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ बुध की दृष्टि भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी। इससे भाग्य व धर्म का उन्नयन होगा। जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु तक होता है।

निशानी—जातक को भाई बहन का पूर्ण सुख मिलेगा।

दशा—बुध की दशा अन्तरदशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा व नौकरी लगेगी। व्यापार-व्यवसाय में उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। तृतीय स्थान मे वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान व पराक्रमी होगा। जातक को मित्र एवं परिजनो से लाभ होगा। जातक अपन बुद्धिबल से 24 वर्ष की आयु तक अपना उन्नति कार्य निश्चित कर लेगा। जातक धनी व्यक्ति होगा तथा समाज में अपने कार्यों से अपनी पहचान अलग से बनायेगा।
2. **बुध + चंद्र**–चद्रमा नीच का होने से कुटम्बीजनों में वैमनस्य रहगा।
3. **बुध + मंगल**–मंगल स्वगृही होने से भाई बहनो का सुख होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक के मित्र युवा एवं वृद्ध दोनो होगे।
5. **बुध + शुक्र**–जातक भाग्यशाली होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक की संतति उत्तम होगी।
7. **बुध + राहु**–भाईयों मे विवाद रहेगा।
8. **बुध + केतु**–जातक का पराक्रम यश तेज रहेगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में
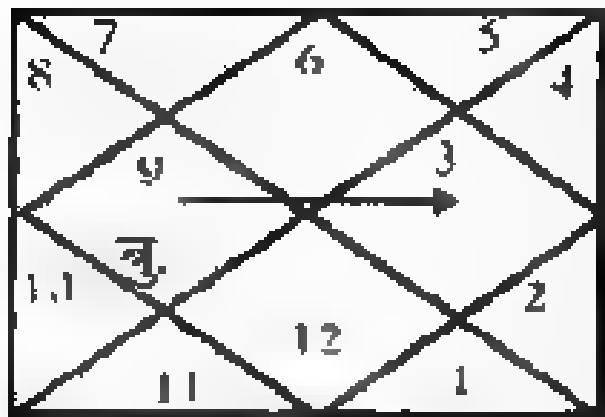
7 / 8	6	5 / 4
9	→	3
10 बु.	12	2
11		1

कन्यालग्न मे बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एव सफल योगकारक ग्रह है। चतुर्थ भावस्थ बुध धनु (सम) राशि में है। बुध की यह स्थिति कुलदीपक योग, पद्मसिंहासन योग की सृष्टि करती है जातक शिक्षा शास्त्री या राजनीतिज्ञ होगा। जातक अपने कर्मों से पुरुषार्थ और परिश्रम से महानता के पद पर पहुंचेगा जातक में शिष्टाचार, अध्यात्म एव दार्शनिक तत्त्व की प्रबलता होगी। जातक गणक रुप मे ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त करेगा अपने कुटुम्बी परिवार का नाम दीपक के सामन रोशन करेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावस्थ बुध की दृष्टि अपने ही घर दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक को पैतृक सम्पत्ति, जमीन जायदाद मिलगी।

निशानी–जातक के वाहन और फोन जरुर होगा।

दशा–बुध की दशा अंतर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा। उसे सभी प्रकार की सुख सुविधाएं प्राप्त होगी।

बुध का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य–**'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा. चतुर्थ स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध के केन्द्रवर्ती होने के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा जातक बुद्धिमान होगा। जातक ज्योतिष, तंत्र व आध्यात्मिक विद्या का जानकार होगा जातक उत्तम-सम्पत्ति का स्वामी होगा. जातक के पास एकाधिक वाहन रहेंगे व उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक व्यापार-व्यवसाय में कमायेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र–**जातक को माता-बहन का सुख होगा।
3. **बुध + मंगल–**जातक को वाहन सुख मिलेगा।
4. **बुध + गुरु–**जातक के पास एकाधिक वाहन होंगे। जातक महान ऐश्वर्यशाली होगा
5. **बुध + शुक्र–**जातक परम सौभाग्यशाली होगा।
6. **बुध + शनि–**जातक की संतति उत्तम होगी।
7. **बुध + राहु** जातक की मां बीमारी होगी।
8. **बुध + केतु–**वाहन दुर्घटना, विस्फोट, अग्निकाण्ड का भय रहेगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में
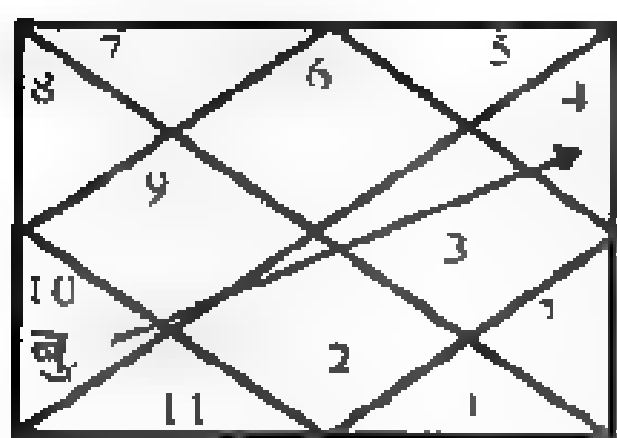
कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। पंचमस्थ बुध यहां मकर (सम) राशि में है। लालकिताब वालो ने इस बुध को 'पीर का आशीर्वाद' कहा है। पंचम भाव विद्या व बुद्धि का कारक भाव है। यहां बुद्धि प्रदाता बुध की उपस्थिति से जातक विद्यावान, बुद्धिमान होगा। उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि (Educational Degree) मिलेगी। वह प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता है। जातक प्रजावान होगा उसे संतान सुख भी उत्तम मिलेगा। जातक मेडिकल लाईन, कम्प्यूटर लाईन में ज्यादा सफल होगा। ऐसा जातक सलाहकार मंत्री के रुप में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक को बड़े भाई, माता-पिता, धन दौलत का पूर्ण सुख मिलेगा।

निशानी–जातक को प्रथम कन्या होगी। जातक के अनेक बच्चे होंगे।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का चहुमुखी विकास होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। पंचम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होकर एकादश स्थान में स्थित 'कर्क राशि' को उत्पीड़ित करेगा, जो बुध का शत्रु राशि है। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार-व्यवसाय के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक के कन्या संतति अधिक होगी।
3. **बुध + मंगल**–जातक की संतति पराक्रमी होगी।
4. **बुध + गुरु**–जातक को पुत्र रत्न की प्राप्ति अवश्य होगी। कन्या योग भी है।
5. **बुध + शुक्र**–कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध + शनि**–दो कन्या एवं पांच पुत्रों का योग है यदि परिवार नियोजन न हुआ तो।
7. **बुध + राहु**–पुत्र प्राप्ति में रुकावट संभव।
8. **बुध + केतु**–संतति में बाधा एकाध गर्भपात संभव।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में
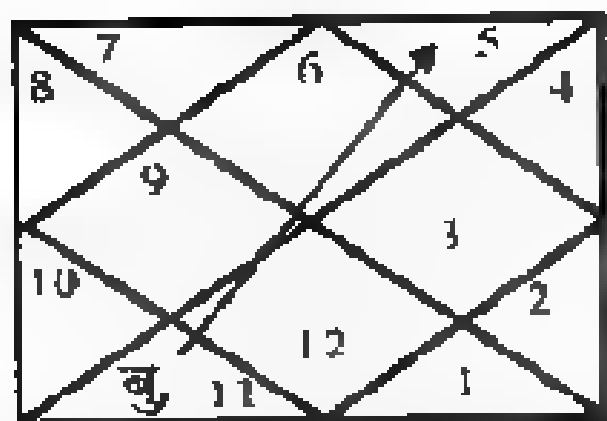
7 / 8	6	5 / 4
9	3	
10	12	2
बु. 11		1

कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां छठे स्थान में बुध कुम्भ (सम) राशि का होगा। बुध के छठे जाने से 'लग्नभंग योग' तथा 'राजभंग योग' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जातक व्याधि ग्रस्त रहता है। शिक्षा प्राप्ति के समय बीच बीच में रुकावट संभव है। लालकिताब वालों ने इस

जातक को 'दिल का राजा' कहा है। ऐसा व्यक्ति दिल का साफ होता है। मन में कुछ नहीं रखता

दृष्टि–षष्टमस्थ बुध की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी, जातक का धन ऋण, रोग व शत्रु का मुकाबला करने मे खर्च होता रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक कलह प्रिय एव निष्ठुर भाषी होता है जातक मानसिक श्रम में खोया रहता है। शारीरिक श्रम इसके वश की बात नहीं होती।

दशा–बुध की दशा-अतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। छठे स्थान में कुभ राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+धनेश बुध के साथ युति कहलायगी सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री होकर व्यय स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। बुध छठे स्थान पर जाने से 'लग्नभग योग', 'राजभंग योग' बना यहा पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक बुद्धिमान होगा। जातक धनवान होगा पर परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। सरकार में रुपया अटक जायेगा
2. **बुध + चंद्र**–लाभ मे रुकावट, परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
3. **बुध + मगल**–विपरीत राजयोग के कारण जातक धनवान होगा,
4. **बुध + गुरु**–विवाह से विलम्ब या गृहस्थ सुख में बाधा होगी।
5. **बुध + शुक्र**–भाग्य मे लगातार रुकावट आयेगी।
6. **बुध + शनि**–यदि शनि साथ हो तो उत्तेजना से पागलपन का खतरा रहता है।
7. **बुध + राहु**–यहा पर राहु के कारण जातक उन्मादी या पागल हो सकता है।
8. **बुध + केतु**–जातक का दिमाग अस्थिर होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान मे
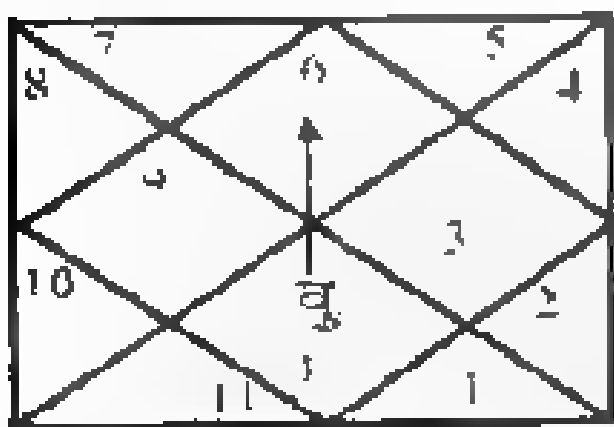
7	6	5
8	9 / 3	4
10	बु / 12	2
11		1

कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहा बुध अति शुभ फलदायक एव सफल योगकारक ग्रह है। सप्तम भव में बुध मीन (नीच) राशि का होगा। यहा 16 से 20 अशों तक बुध परम नीच का हो जाता है बुध की यह स्थिति 'कुलदीपक योग' एव 'पद्मसिंहासन योग' की सृष्टि करती है ऐसा जातक

एवं उसका जीवनसाथी दोनों ही सुन्दर व आकर्षक होंगे। जातक का विवाह अमीर स्त्री से होगा। जातक कानून, ज्योतिष, मंत्र-तंत्र का जानकार होते हुए भी सदाचारी एवं मिलनसार होगा।

दृष्टि-सप्तमस्थ बुध लग्न स्थान अपने घर कन्या राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। लग्नेश लग्न को देखेगा फलतः लग्नाधिपति योग बनेगा। यह एक राजयोग है। जो जातक के परिश्रम को सार्थक कर, उसे ऊंचा नाम देगा।

निशानी-जातक का जीवन साथी वफादार होगा एवं विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी।

दशा-बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य भोगेगा, जातक का चहुमुखी विकास होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **बुध + सूर्य**-'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। सप्तम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बुध नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा एवं 'लग्नाधिपति योग' भी बनेगा। फलतः जातक बुद्धिमान तथा धनवान होगा। जातक जिस कार्य में हाथ डालेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित एवं धनी व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**-जातक की पत्नी अति सुदर होगी।
3. **बुध + मंगल**-जातक की पत्नी कुछ झगड़ालू होगी।
4. **बुध + गुरु**-नीचभंग राजयोग के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **बुध + शुक्र**-नीचभंग राजयोग के कारण जातक राजा के समान विलासी जीवन जीयेगा।
6. **बुध + शनि**-जातक महाधनी होगा। जातक की संतान उत्तम होगी।
7. **बुध + राहु**-विवाह सुख में बाधा।
8. **बुध + केतु**-पत्नी से मनमुटाव रहेगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में

कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता, यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल
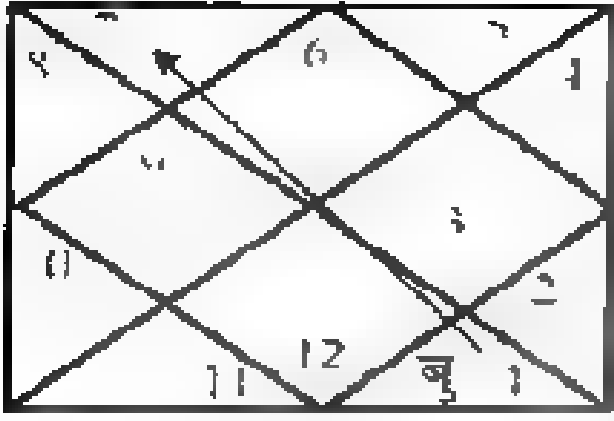
योगकारक ग्रह है। अष्टमस्थ बुध यहां मेष राशि में होगा। फलतः लग्नभंग योग एवं राजभंग योग की सृष्टि होगी। जातक को अपने जीवन में अनेक कष्टों व दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। जातक के व्यक्तित्व, दैहिक सौन्दर्य, नौकरी-व्यापार में हानि होगी। फिर भी जातक विद्वान होगा एवं अनेक विषयों का जानकार होगा। जातक के विचार क्रियात्मक शक्ति से युक्त होंगे, जातक बुद्धिबल से शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक का धन रोगोपचार व शत्रुनाश में खर्च होगा। परन्तु कुटुम्ब के प्रति आकर्षण बना रहेगा।

निशानी—जातक षड्यन्त्रकारी एवं अदूरदर्शी होगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को परेशानी उठानी पड़ेगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। अष्टम भाव में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः व्ययेश सूर्य का लग्नेश-दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी, सूर्य यहां उच्च का होगा। दोनों ग्रह धन भाव को देखेंगे। फलतः यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। बुध के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनेगा। फलतः जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। मेहनत का फल नहीं मिलेगा फिर भी जातक बुद्धिमान होगा, व्ययेश सूर्य बारहवें जाने से 'विमल योग' बना, ऐसा जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**—जातक का मानसिक चिंतन अवरुद्ध रहेगा।
3. **बुध + मंगल**—विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।
4. **बुध + गुरु**—गृहस्थ सुख में बाधा। द्विभार्या योग।
5. **बुध + शुक्र**—भाग्य में रुकावट होगी।
6. **बुध + शनि**—संतान में रुकावट होगी।
7. **बुध + राहु**—दुर्घटना योग।
8. **बुध + केतु**—शल्य चिकित्सा की प्रबल संभावना बनी रहेगी।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में
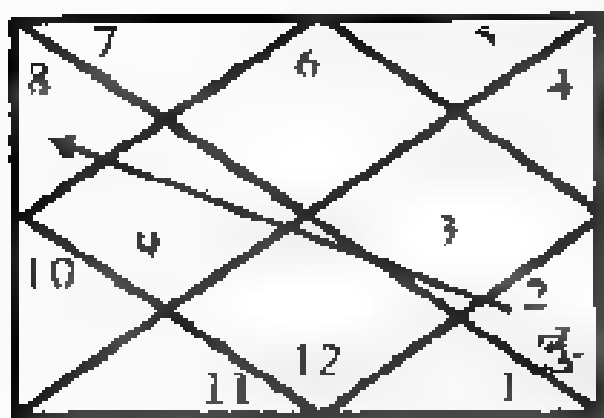
कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां नवमस्थ बुध वृष राशि में होगा। लग्नेश बुध का भाग्य स्थान होने से जातक भाग्यशाली होता है। जातक की रुचि संगीत, साहित्य एवं वैज्ञानिक अन्वेषण में होती है। जातक अपने कार्यक्षेत्र में लोकप्रिय होता है तथा बड़ा भारी नाम कमाता है। जातक माता-पिता, गुरु का भक्त, आज्ञाकारी, स्त्री संतान, भाई बहन के सुखों से युक्त व्यापार प्रिय व्यक्ति होता है। जातक समाज का अग्रपूज्य धनी व्यक्ति होता है।

दृष्टि—नवमस्थ बुध की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा तथा इष्ट-मित्रों, कुटम्बीजनों का शुभचिंतक होगा।

निशानी—ऐसा व्यक्ति राजनीति में प्रभावशाली होगा। उसकी जबान से निकला हुआ शब्द प्राय: सच होगा।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा। नवम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत: व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। दोनों ग्रह यहां बैठकर पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली तथा पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पैतृक सम्पति भी मिलेगी। जातक को मित्रों, परिजनों का सहयोग मिलता रहेगा
2. **बुध + चंद्र**—जातक महाभाग्यशाली होगा।
3. **बुध + मंगल**—भाग्योदय 28 वर्ष बाद होगा।
4. **बुध + गुरु**—विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।
5. **बुध + शुक्र**—यदि यहां शुक्र हो तो जातक अत्यधिक धनी होगा।
6. **बुध + शनि**—जातक महाधनी होगा।
7. **बुध + राहु**—जातक का भाग्य तेजस्वी होगा।
8. **बुध + केतु**—संघर्ष के साथ भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में
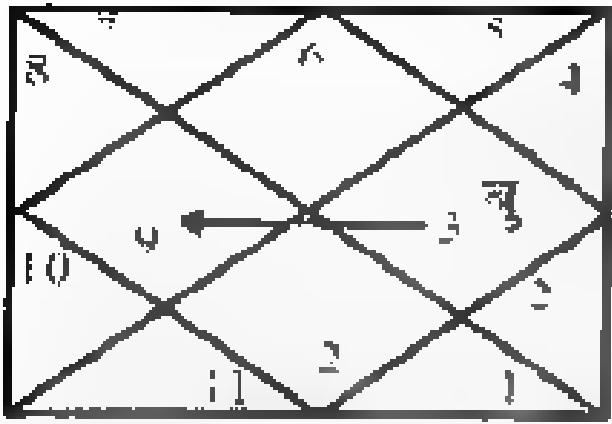
कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां दशमस्थ बुध स्वगृही होगा। बुध की यह स्थिति क्रमशः कुलदीपक योग, पद्मसिंहासन योग एवं भद्रयोग की सृष्टि करती है ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली, पुरुषों में प्रधान व श्रेष्ठ पद को प्राप्त करने वाला महत्वकांक्षी व्यक्ति होगा। ऐसा जातक अपने से बड़े व्यक्ति के प्रति वफादार एवं विनम्र होता है। जातक गुणग्राही प्रवृत्ति का होता है। जातक गुणवान एवं विद्वानों का आदर करता हुआ मेहमान प्रिय व्यक्ति होता है

दृष्टि—दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी ऐसे जातक को मकान एवं वाहन का पूर्ण सुख तथा पिता की सम्पत्ति भी मिलेगी।

निशानी—जातक मीठी एवं विनम्र वाणी का अधिपति होता है।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक को ऊंचा पद एवं धन वैभव की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा दशम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश-दशमेश के साथ युति होगी बुध यहां स्वगृही होगा फलतः 'भद्रयोग' एवं 'कुलदीपक योग' की पुष्टि हो रही है। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे यहां यह युति ज्यादा खिलेगी। जातक बुद्धिमान तथा राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। राज्य में उसका वर्चस्व होगा। खुद की गाड़ी बंगला होगा। जातक कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
2. **बुध + चंद्र**—जातक राजा के समान पराक्रमी एवं बुद्धिमान होगा।
3. **बुध + मंगल**—जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
4. **बुध + गुरु**—यहां बृहस्पति जातक को सरकार व राजा के पास प्रधान पद पर नियुक्त करायेगा पर संतान की चिंता बनी रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**—यदि यहां शुक्र हो तो जातक की पत्नी अत्यधिक सुन्दर एवं धनवान होगी।

6. **बुध + शनि**–यदि यहां शनि साथ हो तो जातक परिश्रमशील, रीडर, सम्पादक एवं लिपिक होगा।
7. **बुध + राहु**–जातक राजा के समान हठी व जिद्दी होगा।
8. **बुध + केतु**–जातक का प्रत्येक कार्य कुछ रुकावट के साथ होगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में
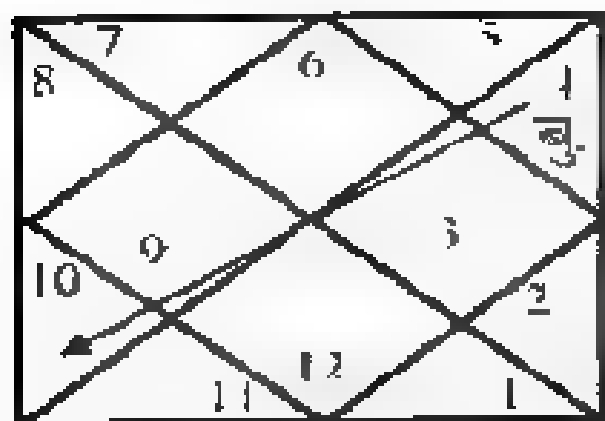
कन्यालग्न मे बुध लग्नेश व राज्येश है। दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहा बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। एकादश स्थान मे बुध कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक अनेक विद्याओं का जानकार बहुधधी होता है। जातक प्राय: टैक्नीकल व इजीनियरिंग कार्यों में ज्यादा रुचि रखता है। जातक जलीय कार्य, विदेश से लाभ कमाता है। जातक प्राय: उद्योगपति होता है तथा अनेक विश्वासनीय नौकरों से युक्त होता है ऐसा जातक राजनीति में भी सफलता प्राप्त करता है। जातक उदारवादी, मिलनसार एवं सहिष्णु होता है।

दृष्टि–एकादश भाव में स्थित बुध की दृष्टि पचम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक विद्यावान होता है। प्राय: कन्या सतति अधिक होती है।

निशानी–ऐसा व्यक्ति प्रज्ञावान होता है प्राय: भाग्योदय 34 वर्ष की आयु के बाद होता है।

दशा–बुध की दशा अंतर्दशा में मिश्रित फल मिलेंगे। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न मे सूर्य व्ययेश होगा। एकादश स्थान में कर्क राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश के साथ युति होगी। यहा बैठकर दोनो ग्रह पंचम भाव को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान तथा शिक्षित होगा। उसकी सतान भी शिक्षित होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जातक व्यापारी होगा उसकी रुचि व्यापार में होगी, जातक को व्यापार से धन की प्राप्ति होगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–जातक महाधनी होगा।

3. **बुध + मंगल**–जातक पराक्रमी होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।
5. **बुध + शुक्र**–जातक उद्योगपति होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक महाधनी होगा। फैक्टरी उद्योग का स्वामी होगा.
7. **बुध + राहु**–जातक के कार्य में, लाभ में दिक्कतें आयेगी।
8. **बुध + केतु**–जातक के कार्य में संघर्ष रहेगा।

कन्यालग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में
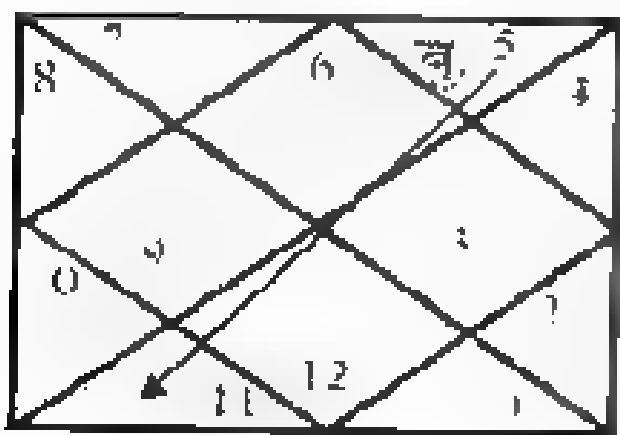
7	6	बु. 5	4
8	9	3	2
10	11	12	1

कन्यालग्न में बुध लग्नेश व राज्येश है दो केन्द्रों का अधिपति होने पर भी इसे 'केन्द्राधिपत्य दोष' नहीं लगता। यहां बुध अति शुभ फलदायक एवं सफल योगकारक ग्रह है। यहां द्वादशस्थ बुध सिंह (मित्र) राशि में होगा। बुध की यह स्थिति 'लग्नभंग योग' व 'राजभंग योग' की सृष्टि करती है। जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला एवं थका हुआ सा रहेगा। जातक को परिश्रम का फल कम मिलेगा. लालकिताब वालों ने इस बुध को नेक स्वभाव मगर किस्मत का मारा कहा है। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। नेक कार्य, धार्मिक कार्य व सामाजिक कार्य पर रुपया खर्च करता रहेगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत बुध की दृष्टि षष्टम् स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक को गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग परेशान करते रहेंगे।

निशानी–जातक के बच्चे कम होंगे।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कन्यालग्न में सूर्य व्ययेश होगा द्वादश भाव में सिंह राशिगत यह युति व्ययेश सूर्य की लग्नेश+दशमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य स्वगृही होगा फलतः जातक बुद्धिशाली होगा। बलवान खर्चेश की लग्नेश के साथ युति जातक को खर्चीले स्वभाव का बनायेगी। जातक राज्य क्षेत्र में उच्च पद तथा प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा। जातक धार्मिक यात्राएं, तीर्थाटन देशाटन

करेगा। व्ययेश सूर्य के बारहवें जाने से 'विमल योग' बना ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**—जातक खर्चीले स्वभाव का होगा.
3. **बुध + मंगल**—जातक का पराक्रम भंग होगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक के विवाह में बाधा, विलम्ब विवाह योग भी है।
5. **बुध + शुक्र**—जातक के भाग्योदय में बाधा आयगी।
6. **बुध + शनि**—संतति में बाधा सम्भव है।
7. **बुध + राहु**—यात्राकाल में चोरी होगी
8. **बुध + केतु**—यात्राएं अप्रिय अनुभवों से परिपूर्ण होंगी।

❑❑❑

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में
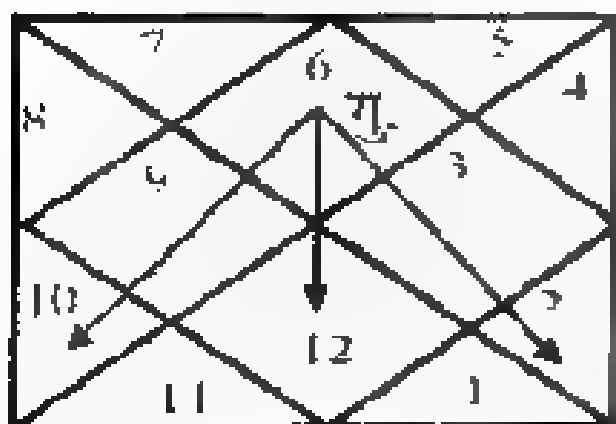
कन्यालग्न मे गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहा लग्नस्थ बृहस्पति कन्या राशि मे होकर 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' बनायेगा। ऐसा जातक बुद्धिमान, क्षमाशील, धैर्यवान होते हुए धनी होता है। जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। उसे जीवन मे सभी भौतिक एव आध्यात्मिक सुख मिलेंगे। प्रथम भाव में बलवान सुखेश दैहिक सौन्दर्य, स्त्री सतान का पूर्ण सुख, उत्तम घर एवं वाहन सुख देगा। जातक उपदेशक होगा

दृष्टि—लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पचम भाव (मकर राशि), सप्तम भाव (मीन राशि) एव भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक की संतति उत्तम होगी। जातक की पत्नी वफादार व सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

निशानी—जातक अध्ययन व अध्यापन के कार्यो मे रुचि लेगा।

दशा—बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—जातक धार्मिक किन्तु क्रोधी होगा।
2. **गुरु + चद्र**—कन्यालग्न मे यह युति शुभ फलदायक है। भले ही चद्रमा यहा शत्रुक्षेत्री है। इस गजकेसरी योग का प्रभाव पचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक को उत्तम संतति सुख मिलेगा।

जातक की पत्नी सुन्दर व संस्कार युक्त होगी। जातक का भाग्य बलवान होगा जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा

3. **गुरु + मंगल**—जातक 'भद्रयोग' के कारण राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक धार्मिक किन्तु घमण्डी होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक धनवान एवं भाग्यशाली होगा।
6. **गुरु + शनि**—जातक धनवान एवं विद्यावान होगा
7. **गुरु + राहु**—यहां दोनों ग्रह प्रथम स्थान कन्या राशि में होंगे। राहु अपनी मित्र राशि एवं बृहस्पति शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा। इस योग के कारण जातक हठी, आध्यात्मिक होते हुए भी कुटिल स्वभाव का होगा। ऐसा जातक प्रायः धार्मिक आडम्बर करेगा।
8. **गुरु + केतु**—जातक थोडा चिडचिडे स्वभाव का होगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में
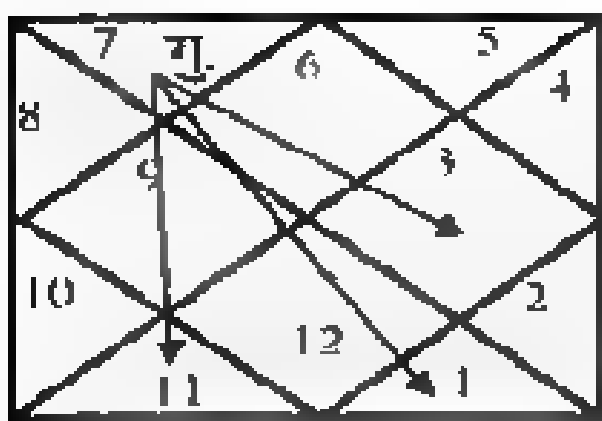
कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां गुरु तुला (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को उच्च शिक्षा, दूरदर्शिता एवं प्रतिष्ठित पद की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक लड़ाकू नहीं होता। जातक कवि लेखक ज्योतिष किंवा वैज्ञानिक होगा तथा इन कार्यों में धन व यश की प्राप्ति करेगा। लाल किताब वालों ने इस बृहस्पति को सभी को तारने वाला जगत् गुरु कहा है। ऐसा जातक सभी का भला चाहने वाला परोपकारी सत-स्वभाव का होता है।

दृष्टि—द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (कुम्भ राशि), अष्टम भाव (मेष राशि) एवं दशम भाव (मिथुन राशि) को देखेगा ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।

निशानी—जातक धार्मिक वक्ता किंवा उपदेशक होगा।

दशा—बृहस्पति की दशा अंतर्दशा में जातक धनी होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—सूर्य यहां नीच का होगा। धन प्राप्ति में बाधा आयेगी। एक हजार राजयोग नष्ट होंगे।

2. **गुरु + चंद्र**—यहां यह युति शुभ है। इस 'गजकेसरी योग' का प्रभाव छठे स्थान आठवें स्थान एवं कुण्डली के दशम स्थान (राज्य भाव) पर पड़ेगा। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी। जातक के शत्रु नाश होंगे। जातक में ऋण, रोग व शत्रु को नष्ट करने का पूर्ण सामर्थ्य होगा। कोर्ट-कचहरी में जातक का दबदबा रहेगा।

3. **गुरु + मंगल**—जातक मेहनती व धनी होगा।

4. **गुरु + बुध**—जातक की वाणी गंभीर होगी तथा वह घमण्डी होगा।

5. **गुरु + शुक्र**—जातक धनी एवं विनम्र होगा। जातक की वाणी शीतल होगी।

6. **गुरु + शनि**—जातक महाधनी होगा।

7. **गुरु + राहु**—यहां दोनों ग्रह द्वितीय स्थान में तुला राशि के होंगे। राहु यहां मित्र राशि में एवं बृहस्पति शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा। इस योग के कारण जातक दार्शनिक होगा। जातक सच्चाई का साथ देने वाला परोपकारी व्यक्ति होगा।

8. **गुरु + केतु**—जातक को धन संग्रह में लगातार बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में
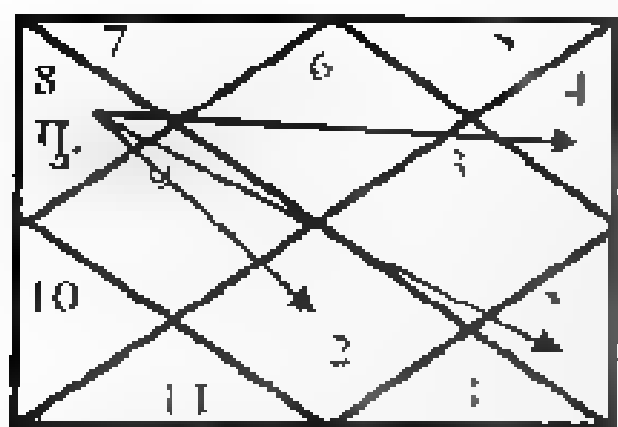
कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां तृतीयस्थ बृहस्पति वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। ऐसा व्यक्ति आस्तिक विचारों वाला एवं दार्शनिक होता है। उसके कई भाई होंगे। ऐसे जातक को उच्च श्रेणी की विद्या मिलती है। जातक को माता-पिता, मकान, जमीन-जायदाद का पूरा सुख मिलता है। ऐसा जातक बहुत हिम्मत वाला होता है। लाल किताब वालों ने इस बृहस्पति को 'गरजते शेर' की संज्ञा दी है, जो विपरीत परिस्थितियों में भी अपना धैर्य नहीं खोता।

दृष्टि—तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), भाग्य भवन (वृष राशि) एवं लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक को समर्पित भावनाओं वाला जीवन साथी मिलेगा। जातक भाग्यशूर होगा तथा व्यापार-व्यवसाय में भारी धन अर्जित करेगा।

निशानी—जातक के बड़ा भाई होना चाहिए अथवा अपने से बड़ी उम्र के लोगों से जातक को लाभ होगा।

दशा—बृहस्पति की दशा अंतर्दशा मे जातक का पराक्रम बढ़ेगा तथा सौभाग्य में वृद्धि होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—जातक के छोटे-बड़े दोनों भाई होंगे।
2. **गुरु + चंद्र**—तृतीय स्थान मे चंद्रमा नीच का होगा। पर दोनों ग्रहों को दृष्टि सप्तम भाव, भाग्य भाव एवं लाभ भाव पर होगी। ऐसे जातक का जीवन साथी सुन्दर होगा एवं उसका भाग्योदय छोटी उम्र में होगा जातक को कोर्ट कचहरी, राजदरबार में सदैव विजय मिलेगी।
3. **गुरु + मंगल**—जातक को भाई-बहन दोनों का सुख प्राप्त होगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक को सगे व चचेरे भाईयों की कमी नहीं रहेगी।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक के बड़े भाई एवं बहनें भी होंगी।
6. **गुरु + शनि**—जातक की संतति पराक्रमी होगी
7. **गुरु + राहु**—यहा बृहस्पति मित्र राशि में होगा तो राहु अपनी नीच (वृश्चिक) राशि में होगा। फलत: 'चाण्डाल योग' बनेगा। ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों मे भी धैर्य नहीं खोता। जातक को परिजनों व मित्रों से कभी सहयोग, कभी असहयोग मिलता रहेगा।
8. **गुरु + केतु**—भाईयों से वृद्ध कुटुम्बियों से जातक का मनमुटाव रहेगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
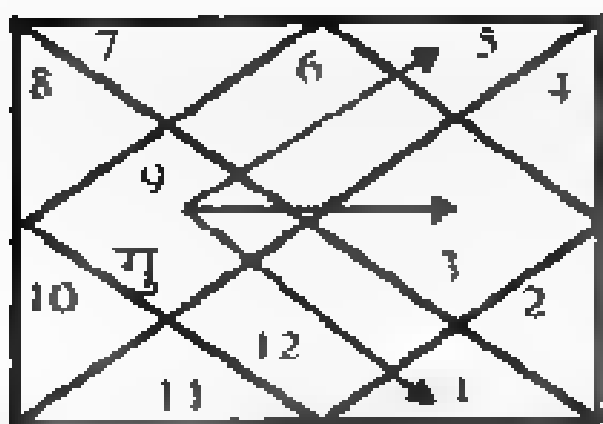
7 8 6 5 4 9 गु 10 3 2 12 11 1

कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां चतुर्थस्थ बृहस्पति स्वगृही होगा। फलत: कुलदीपक योग, केसरी योग एव 'हंस योग' बना। ऐसा जातक राजा के समान महान पराक्रमी एव ऐश्वर्यशाली होता है। जातक 'नेकराह का मुसाफिर' होता है व अच्छी सलाह देता है, अच्छे लोगों की सगत करता है। जातक दार्शनिक एवं स्वयं विद्वान होता है तथा विद्वानों का सम्मान करता है। पारिवारिक वातावरण अनुकूल रहता है।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम स्थान (मेष राशि), राज्य स्थान (मिथुन राशि) एव व्यय स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक को

शत्रुओं का भय रहेगा। जातक को राजनीति में ऊंचा पद मिलेगा एवं जातक धार्मिक कार्यों, परोपकार व सामाजिक कार्यों पर रुपया खर्च करेगा।

निशानी—जातक मितव्ययी होते हुए भी बड़े बड़े खर्च करने में नहीं हिचकिचायेगा

दशा—बृहस्पति की दशा अंतर्दशा में जातक को उच्च पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी.

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**—जातक राजा के समान तेजस्वी होगा। वाहन का सुख, मकान का सुख श्रेष्ठ होगा। पर इन दोनों को लेकर रुपये खर्च होंगे
2. **गुरु + चंद्र**—यहां गुरु+चंद्र की युति हंसयोग, कुलदीपक योग, केसरी योग एवं यामिनीनाथ योग की सृष्टि करेंगे। यह गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह अष्टम भाव, राज्य भाव एवं द्वादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक की आयु बढ़ेगी। कोर्ट कचहरी में जातक का दबदबा रहेगा। यात्राओं से लाभ होगा।
3. **गुरु + मंगल**—मकान को लेकर पैसा खर्च होगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक बुद्धिमत्ता से धन कमायेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक के पास एकाधिक वाहन होंगे।
6. **गुरु + शनि**—जातक स्वयं पढ़ा लिखा एवं उसकी संतति भी पढ़ी लिखी होगी
7. **गुरु + राहु**—यहां गुरु के कारण हंस योग, केसरी योग, कुलदीपक योग बना राहु यहां शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होते हुए भी माता का सुख प्राप्त नहीं कर पायेगा
8. **गुरु + केतु**—जातक की माता बीमार रहेगी।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में
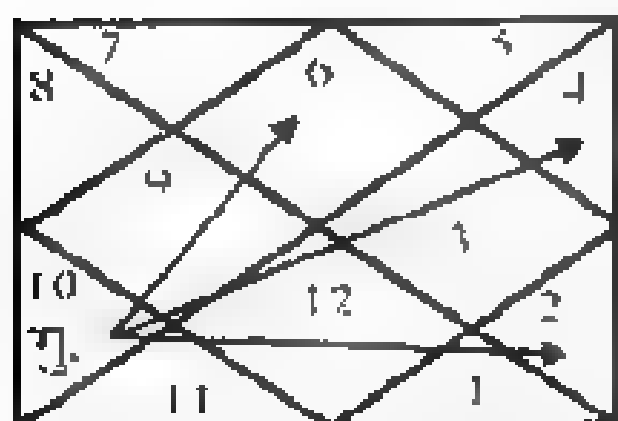
7	6	5	4
8	9	3	
10 गु.	12	2	
11	1		

कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां पंचमस्थ गुरु मकर राशि में नीच का होगा। बृहस्पति पांच अंशों में परम नीच का होगा। लाल किताब वालों ने इस गुरु को 'ब्रह्मज्ञानी' की संज्ञा दी है। ऐसा जातक तर्कशास्त्र ज्योतिष, मंत्रशास्त्र, अध्यात्म वगैरह का उपदेशक होगा। जातक किसी

राजा या राजतुल्य का प्रमुख सलाहकार होगा। जातक के अनेक बच्चे और मित्र होंगे, जिससे जातक सुखी व्यक्तियों श्रेणी में अग्रगण्य होगा।

दृष्टि—पंचम भावगत बृहस्पति की दृष्टि भाग्य स्थान (वृष राशि), लाभ स्थान (कर्क राशि) एवं लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक भाग्यशूर, धनवान एवं अपने परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ उठाने वाला परिश्रमी जातक होगा।

निशानी—जातक के पास सब कुछ होते हुए भी वह व्यापार, नौकरी व संतान पक्ष से असंतुष्ट रहेगा।

दशा—बृहस्पति की दशा अंतर्दशा मे जातक की उन्नति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—सूर्य शत्रुक्षेत्री होने से संतान मे बाधा रहेगी।
2. **गुरु + चंद्र**—पंचम स्थान मे नीचस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान पर होगी। फलतः जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु से प्रारम्भ होगा। व्यापार व्यवसाय में उन्नति, जीवन में सर्वांगीण विकास होगा।
3. **गुरु + मंगल**—मंगल उच्च का, गुरु नीच का होने से नीचभंग राजयोग बना। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा एवं उसकी संतति धनवान होगी।
4. **गुरु + बुध**—जातक को पुत्र व कन्या दोनो की प्राप्ति होगी।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक भाग्यशाली तथा धनी होगा
6. **गुरु + शनि**—शनि के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा।
7. **गुरु + राहु**—बृहस्पति यहा नीच राशि में तथा राहु अपनी मित्र (मकर राशि) में होने से यहां 'चाण्डाल योग' बना। जातक को उच्च विद्या एवं पुत्र संतति की प्राप्ति में रुकावट संभव है। जातक ब्रह्मज्ञानी होगा।
8. **गुरु + केतु**—गर्भस्राव एवं गर्भपात के अवसर ज्यादा हैं।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति षष्टम स्थान में
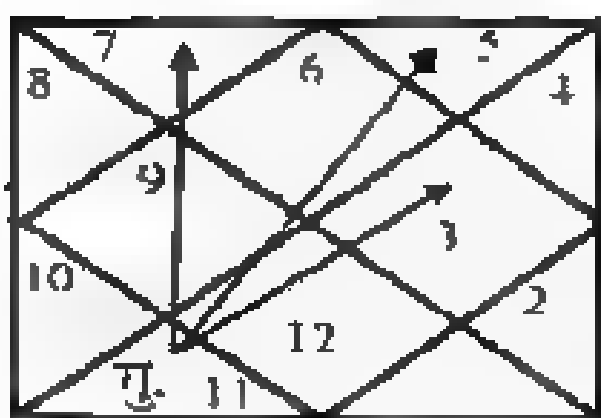
कन्यालग्न में गुरू चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप मे काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां छठे स्थान में गुरु कुम्भ (शत्रु) राशि में है। यहा सुखभंग योग तथा विवाह भंग योग बनता है। ऐसे जातक के गृहस्थ सुख में बाधा आती है। जातक

का विवाह विलम्ब से होता है। प्राय: जातक असम्मानित व्यक्ति होता है। जातक काला जादू, रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है पर अपनी योग्यता का दुरुपयोग करने से नहीं चूकता। जातक के अपनी पत्नी से वैचारिक मतभेद सम्भव है।

दृष्टि–छठे स्थान में स्थित बृहस्पति की दृष्टि राज्य स्थान (मिथुन राशि), व्यय स्थान (सिंह राशि) एवं धन स्थान (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक मितव्ययी होगा व धन संग्रह करेगा। जातक का रोजी-रोजगार भी ठीक होगा।

निशानी–ऐसा जातक शत्रुओं से भयभीत रहता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–सूर्य छठे गुरु के साथ होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। ऐसा जातक धनवान एवं पराक्रमी होगा।
2. **गुरु + चंद्र**–यहां चंद्रमा व बृहस्पति के कारण 'सुखभंग योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'लाभभंग योग' बनेगा, फलत: पराक्रम में कमी आयेगी। खर्चे बढ़-चढ़ कर होंगे। राज्यपक्ष से धोखा होगा। जातक को विवाह सुख में बाधा आयेगी। फिर भी कोई काम इस योग के कारण रुका हुआ नहीं रहेगा पर संघर्ष के बाद अंतिम सफलता निश्चित है।
3. **गुरु + मंगल**–अष्टमेश मंगल के छठे जाने से 'विमल नामक' विपरीत राजयोग बना। जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।
4. **गुरु + बुध**–बुध छठे जाने से लग्नभंग योग बना। जातक के प्रत्येक कार्य में रुकावटें आयेंगी। परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **गुरु + शुक्र**–शुक्र छठे जाने से धनहीन योग एवं भाग्यभंग योग बनेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **गुरु + शनि**–षष्टेश शनि छठे होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। जातक धनी होगा।
7. **गुरु + राहु**–बृहस्पति कुम्भ (शत्रु) राशि एवं राहु मित्र राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है। जातक के अपनी पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव हैं। जातक अपनी योग्यता का दुरुपयोग करने में नहीं चूकेगा।
8. **गुरु + केतु**–केतु छठे ज्यादा अशुभ नहीं होता। जातक धनी होगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में
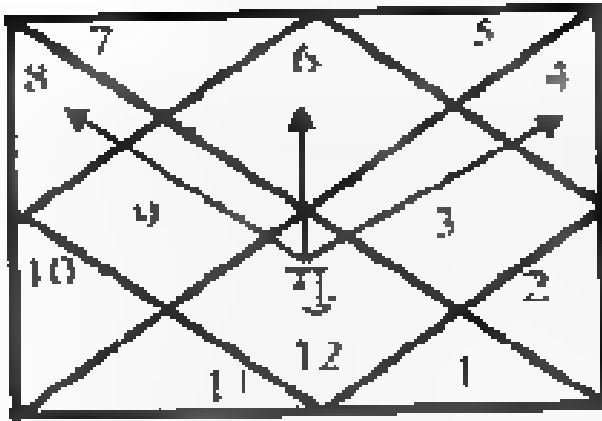
7 5 8 6 4 9 3 10 गु. 2 12 11 1

कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। सप्तम भावस्थ बृहस्पति मीन राशि में स्वगृही होगा। फलतः कुलदीपक योग, केसरी योग, हंस योग की क्रमशः सृष्टि होगी। यहा गुरु सर्वोत्तम स्थिति में है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य, पराक्रम को भोगता है। जातक की पत्नी सुन्दर एवं समर्पित भाव वाली महिला होगी। जातक अपने कार्यक्षेत्र में कीर्तिवान होगा। जातक प्रायः उच्च बनने का नाटक करेगा पर अन्दर की चेष्टा मलीन होगी।

दृष्टि—सप्तमस्थ गुरु की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः आवक अच्छी होगी। परिश्रम का फल मिलेगा। जातक को भाईयों से लाभ होगा।

निशानी—जातक का विवाह प्रायः विलम्ब से होता है तथा जातक की संतति पिता से अधिक विद्यावान होती है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में दुर्घटना का भय रहेगा क्योंकि यहा बृहस्पति मारक का काम करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—व्ययेश सूर्य सातवें होने से विवाह सुख में विलम्ब का योग बनता है।
2. **गुरु + चंद्र**—दोनों ग्रह केन्द्रस्थ होने के कारण कुलदीपक योग, हंस योग केसरी योग एवं यामिनीनाथ योग की सृष्टि करेंगे। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का जीवन साथी सुयोग्य व सुन्दर होगा व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक का पराक्रम राजातुल्य होगा।
3. **गुरु + मंगल**—अष्टमेश मंगल के सातवें होने से जीवन साथी के साथ खटपट, भागीदारों से अनबन रहेगी।
4. **गुरु + बुध**—बुध यहां होने से नीचभंग राजयोग बनता है। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा। विवाह के बाद तरक्की होगी।
5. **गुरु + शुक्र**—शुक्र यहा होने से 'किम्बहुना नामक' सफल राजयोग बनेगा।

अर्थात् इससे अधिक और क्या ? जातक करोड़पति होगा तथा जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा।

6. गुरु + शनि—पंचमेश शनि के सप्तमेश के साथ होने से संतान के जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

7. गुरु + राहु—गुरु स्वगृही होने के कारण कुलदीपक योग, केसरी योग, हंस योग बनायेगा, राहु शत्रुक्षेत्री होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होते हुए भी निम्न हरकत करने वाला, अपने से बड़ी उम्र वाली एवं विधवा स्त्री से सहवास करता है, सम्पर्क रखता है।

8. गुरु + केतु—सप्तम स्थान में केतु गृहस्थ जीवन में कलह करायेगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में
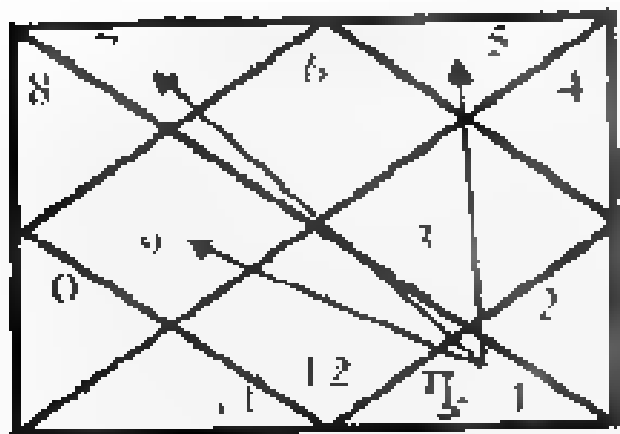
कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। अष्टमस्थ बृहस्पति यहां मेष (मित्र) राशि में होगा। बृहस्पति यहां सुखभंग योग एवं विवाहभंग योग की सृष्टि कर रहा है, फलतः विलम्ब विवाह की स्थिति रहती है। जातक के पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव है। यह गुरु राजगुरु या सम्मानित पद पाने में बाधक का काम करेगा। जातक राजनीति में रुचि लेगा पर सफलता संदिग्ध है। जातक दानी होगा पर इसे दान का वांछित यशोगान प्राप्त नहीं होगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ गुरु की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि), धन भाव (तुला राशि), एवं अपने स्वयं के घर सुख भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक दीर्घायु वाला होगा पर अत्यधिक खर्च के कारण कर्जे रहें।

निशानी—गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए जातक को पीले रंग का रूमाल जेब में रखना चाहिए तथा पीले पुष्प मंदिर में चढ़ाने चाहिए। बृहस्पति वार का उपवास रखना चाहिए।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक को कई परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. गुरु + सूर्य—द्वादशेश सूर्य आठवें उच्च का होने से 'सरल नामक' विपरीत

राजयोग बना। ऐसा जातक महाधनी होगा एवं पराक्रमी होगा जीवन में सफल होगा।

2. **गुरु + चंद्र**—यहां गुरु+चंद्र की इस स्थिति के कारण 'सुखभंग योग, विवाहभंग योग एवं लाभभंग योग' बनेगा। फलत: जातक के जीवन में धन की बचत नहीं होगी। गृहस्थ जीवन में कलह होगी। फिर भी जीवन की गाड़ी पार लग जायेगी। जातक का कोई काम रुका हुआ नहीं रहेगा।

3. **गुरु + बुध**—बुध अष्टम में होने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा।

4. **गुरु + बुध**—मंगल अष्टम स्थान में, अष्टमेश अष्टम भाव में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा।

5. **गुरु + शुक्र**—भाग्येश धनेश यहां अष्टम स्थान में भाग्यभंग योग एवं धनहीन योग बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।

6. **गुरु + शनि**—शनि षष्टेश होकर अष्टम में जाने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। जातक धनी व पराक्रमी होगा।

7. **गुरु + राहु**—गुरु के कारण विवाहभंग योग सुखभंग योग बनेगा, परंतु राहु यहां शत्रुक्षेत्री होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक के गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी। प्रत्येक भौतिक उपलब्धि कुछ मुसीबत लेकर आयेगी।

8. **गुरु + केतु**—केतु आठवें स्थान में होने से शल्य चिकित्सा करायेगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में
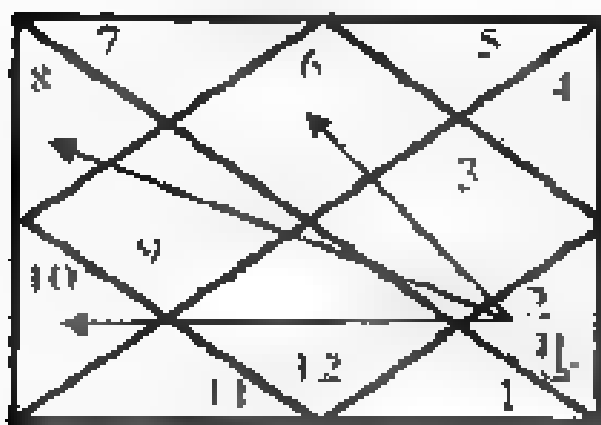
7 6 5 4 3 2 गु. 1 12 11 10 9 8

कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां बृहस्पति नवम स्थान में वृषभ (शत्रु) राशि में होगा। जातक अनेक समारोहों का आयोजन करने वाला, सफल संयोजक व नेता होता है। जातक पिता को काफी सुख देता है। जातक महत्वाकांक्षी होते हुए भी विनम्र व सभ्य व्यक्ति होगा। लाल किताब वालों ने इस गुरु को 'दहकता हुआ सोना' कहा है फलत: जातक का राजनीति, कोर्ट कचहरी एवं समाज में दबदबा रहेगा।

दृष्टि नवमस्थ गुरु की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि), पराक्रम स्थान

(वृश्चिक राशि) एवं पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक का परिश्रम सार्थक रहेगा। भाईयों, मित्रों एवं संतान पक्ष में जातक भाग्यशाली होगा।

निशानी—जातक को सफलता अत्यधिक परिश्रम के बाद मिलती है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में भाग्योदय होकर सम्पूर्ण विकास होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + सूर्य**—व्ययेश सूर्य भाग्य स्थान में गुरु के साथ होने से जातक का भाग्योदय रुकावट के साथ धीमी गति से होगा।
2. **गुरु + चंद्र**—चंद्रमा यहां उच्च का होकर, गुरु के साथ लग्न स्थान, पराक्रम भाव एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत: जातक को पिता की सम्पत्ति एवं परिजनों का प्रेम मिलेगा। जातक की संतान पढ़ी-लिखी व सुशील होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
3. **गुरु + बुध**—गुरु के साथ बुध होने से जातक भाग्यशाली तथा पराक्रमी होगा।
4. **गुरु + मंगल**—अष्टमेश मंगल भाग्य स्थान में धीमी गति से भाग्योदय करायेगा।
5. **गुरु + शुक्र**—शुक्र धनेश होकर, स्वगृही होकर गुरु के साथ होने से व्यक्ति परम सौभाग्यशाली होगा।
6. **गुरु + शनि**—पंचमेश, षष्ठेश शनि भाग्य में व्यापार द्वारा धनार्जन करायेगा।
7. **गुरु + राहु**—गुरु यहां शत्रु राशि में जबकि राहु यहां उच्च (वृष) का होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक को पिता पक्ष, राज्य पक्ष से धोखा होगा।
8. **गुरु + केतु**—केतु भाग्य स्थान में गुरु के साथ संघर्ष के साथ 34 वर्ष की आयु के बाद भाग्योदय करायेगा।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में
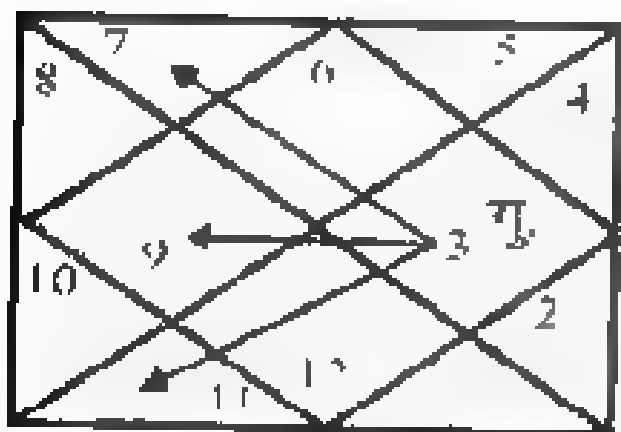
7	6	5
8		4
9	3 गु.	
10		2
11	12	

कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। यहां दशम स्थान में गुरु मिथुन (शत्रु) राशि का होगा। बृहस्पति के कारण यहां 'कुलदीपक योग' एवं 'केमद्रुम योग' बना। ऐसा जातक राजनीति में रुचि रखता है तथा लेबर यूनियन अथवा सामाजिक संगठनों में नेता पद को प्राप्त करता है। जातक को माता, पिता, पत्नी एवं

संतान का पूर्ण सुख मिलता है। जातक सिद्धान्तवादी होगा। ऐसे जातक का अध्ययन-अध्यापन के कार्यों में रुचि होती है

दृष्टि–दशमस्थ गुरु की दृष्टि धन भाव (तुला राशि), सुख स्थान (धनु राशि) एवं छठे भाव (कुम्भ राशि) पर होगी फलतः जातक धनी एवं सुखी होगा तथा शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा

निशानी–ऐसे जातक को प्रायः भौतिक सुखों के प्रति लगाव नहीं होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की सर्वांगीण उन्नति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–व्ययेश दशम स्थान में होने से राज्य सरकार, कोर्ट कचहरी में दिक्कतें आयेगी।
2. **गुरु + चंद्र**–दशम भाव में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां पर केसरी योग, कुलदीपक योग एवं यामिनीनाथ योग बनेगा। दोनों ग्रह धन स्थान, सुख स्थान एवं अष्टम भाव को देखेंगे। फलतः राज्यपक्ष, कोर्ट-कचहरी में जातक का दबदबा रहेगा। धन प्राप्ति निर्बाध गति से होती रहेगी। सुख प्राप्ति के संसाधन मिलते रहेंगे। जातक को वाहन की प्राप्ति 24 व 32 वर्ष की आयु में होगी।
3. **गुरु + बुध**–बुध के कारण 'भद्रयोग' बनेगा। जातक राजा का मंत्री या राजगुरु होगा।
4. **गुरु + मंगल**–अष्टमेश के दशम स्थान में होने से सरकारी अधिकारी धोखा देंगे।
5. **गुरु + शुक्र**–धनेश, भाग्येश, शुक्र केन्द्र में बृहस्पति के साथ होने से व्यक्ति धार्मिक माध्यमों से आगे बढ़ेगा
6. **गुरु + शनि**–
7. **गुरु + राहु**–गुरु यहां शत्रु राशि में होगा जबकि राहु स्वगृही (मिथुन राशि में) होगा। फलतः 'चाण्डाल योग' बना। जातक नेता निम्न मनोवृत्ति वाला तथा स्वार्थ प्रवृत्ति वाला होगा।
8. **गुरु + केतु**–

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में

कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। एकादश स्थान में गुरु यहां कर्क राशि में उच्च का होगा जहां

8	7	5	4 गु.
	6	3	
10	9		2
	12		1
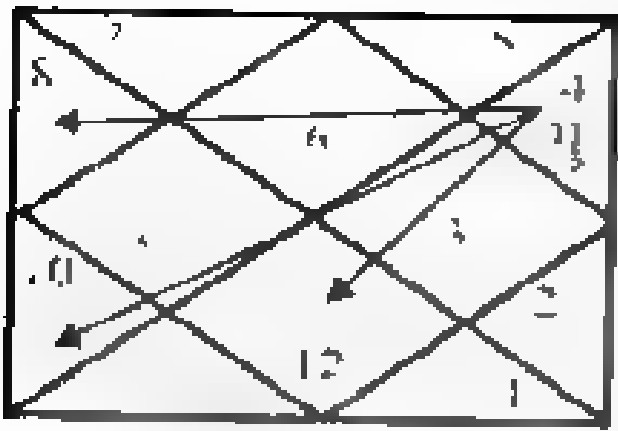
अंशों में गुरु परमोच्च का कहलाता है। ऐसा जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। उसका जीवनसाथी भी आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है। ऐसा जातक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कीर्ति अर्जित करता है। जातक को वाहन सुख, भवन सुख, नौकर-चाकर का पूर्ण सुख मिलेगा।

दृष्टि—एकादश बृहस्पति की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि), पंचम भाव (मकर राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक को भाई-बहनों का सुख, जीवन साथी का सुख एवं संतति का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है।

निशानी—जातक के अनेक मित्र होंगे पर पुत्र कम होंगे।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा। जातक की उन्नति चारों ओर से होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**—व्ययेश सूर्य लाभ स्थान में होने से लाभ में बाधा होगी परन्तु जातक धनी होगा। सरकारी बाधा, आपत्ति महसूस होगी।
2. **गुरु + चंद्र**—बृहस्पति यहां उच्च का एवं चंद्रमा स्वगृही होगा। किम्बहुना योग के साथ ये दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को देखेंगे। फलतः जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक छोटे भाई-बहनों, पुत्र-पुत्रियों पर धन खर्च करेगा एवं परिजनों से प्रेम करेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी तथा उसका गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा।
3. **गुरु + बुध**—बुध शत्रुक्षेत्री होगा, फिर भी जातक बुद्धिबल से धन कमायेगा।
4. **गुरु + मंगल**—अष्टमेश मंगल यहां नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा, जातक करोड़पति होगा। जातक वाहन, बंगला, नौकर-चाकर से युक्त होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—भाग्येश शुक्र बृहस्पति के साथ होने से जातक का भाग्य पग-पग पर जातक का साथ देगा।
6. **गुरु + शनि**—षष्टेश शनि लाभ स्थान में गुरु के साथ होने से वास्तविक लाभ में रोक लगाता है।
7. **गुरु + राहु**—गुरु यहां उच्च का होगा परन्तु राहु शत्रु (कर्क राशि) का होगा। यहां दोनों की युति से 'चाण्डाल योग' बना। जातक राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय कीर्ति अर्जित करता हुआ भी बदनाम होगा। जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी।

8. **गुरु + केतु**–केतु यहां शत्रुक्षेत्री गुरु के साथ होने से लाभ में रुकावट आयेगी।

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में
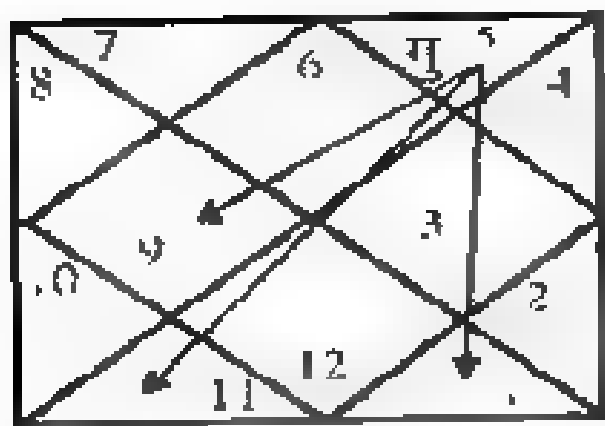
कन्यालग्न में गुरु चतुर्थेश व सप्तमेश होने के कारण अशुभ फल देने वाले मारक एवं पापी ग्रह के रूप में काम करेगा। गुरु को कन्यालग्न में 'केन्द्राधिपत्य दोष' भी लगेगा। द्वादशस्थ बृहस्पति यहा सिंह राशि में होगा। गुरु के कारण यहा 'सुखहीन योग' एवं 'विवाहभग योग' बना। जातक का विवाह विलम्ब से होता है। जातक को राजनीति से धोखा मिलता है। ऐसा जातक लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है एव धार्मिक कार्यों मे, परोपकार के कार्यों मे धन खर्च करता है। जातक तीर्थ यात्रा देशाटन का शौकीन होता है। ऐसे जातक का आचरण एवं व्यवहार कई बार संदिग्ध होता है।

दृष्टि द्वादश भावगत गुरु की दृष्टि सुख भाव (धनु राशि) षष्टम भाव कुम्भ राशि) एव अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रु से परेशान रहेगा

निशानी–जातक हमेशा अपने वाहनों, आभूषणों-कपड़ों, (नौकरो के प्रति चिंतित रहेगा।

दशा–

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + सूर्य**–व्ययेश व्यय भाव में स्वगृही गुरु के साथ होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक महाधनी एवं महादानी होगा।
2. **गुरु + चंद्र**–यहा दोनो ग्रहों की इस स्थिति के कारण सुखभग योग विवाहभग योग एवं लाभभंग योग बनेगा। फलतः विवाह में विलम्ब का संकेत है। जातक की माता बीमार रहेगी। वाहन सुख में भी तकलीफ आयेगी। जातक के जीवन मे संघर्ष की स्थिति रहेगी। फिर भी इस गजकेसरी योग के कारण सभी कार्यों में अंतिम सफलता मिलेगी कोई भी काम साधन के अभाव में रुका नही रहेगा।
3. **गुरु + बुध**–बुध व्यय स्थान में लग्नभग योग बनायेगा। जातक को परिश्रम का सही लाभ नहीं मिलेगा।

4. **गुरु + बुध**—अष्टमेश के व्यय भाव में होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनवान एवं पराक्रमी होगा। जातक की संतान उत्तम होगी।

5. **गुरु + शुक्र**—भाग्येश, धनेश शुक्र बारहवें होने से जातक को भाग्य में रुकावट के साथ आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।

6. **गुरु + शनि**—षष्टेश शनि बारहवें होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना जातक करोड़पति होगा।

7. **गुरु + राहु**—गुरु यहां मित्र राशि में परन्तु राहु शत्रु राशि (सिंह) में होगा। फलतः यहां 'चाण्डाल योग' बना। जातक घुमक्कड़, परोपकारी एवं शठ होगा। वह तीर्थ स्थलों में भी गड़बड़ी करने में नहीं चूकेगा।

8. **गुरु + केतु**—केतु बारहवें होने से यात्राओं से हानि करायेगा।

❑❑❑

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में

7	6	5	4
8	9	शु. 3	
10	12	2	
11		1	
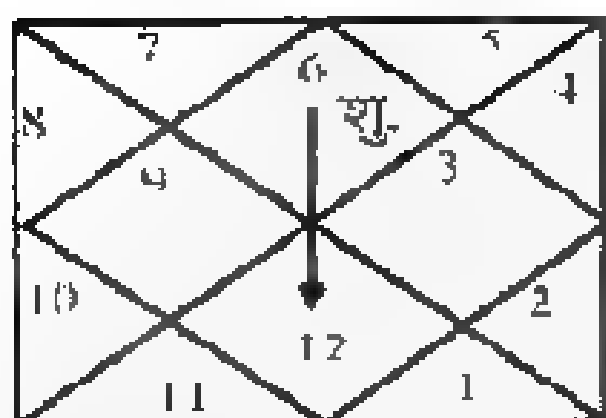
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अतः योगकारक होकर शुभ फलप्रदाता है। यहां प्रथम स्थान में शुक्र अपनी नीच राशि कन्या में होगा। जहां यह 27 अंशों में परम नीच का होता है। शुक्र की इस स्थिति में 'कुलदीपक योग' बनता है। यदि अन्य ग्रह बाधक न हो तो जातक का विवाह शीघ्र होता है। लाल किताब वालों ने इस ग्रह का नाम 'रंग बिरंगा मामा' दिया है। ऐसे जातक संगीत-कला, सौन्दर्य, नाटक, सेंट, इत्र फुलेल लगाने के शौकीन होते हैं। विपरीत सेक्स वाले ऐसे जातक के प्रशंसक होते हैं। जातक को धन, विद्या, भवन वाहन, गृहस्थ सुख पूरा मिला।

दृष्टि–लग्नस्थ शुक्र की सप्तम भाव पर दृष्टि होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक स्त्री के वशीभूत रहेगा। जातक अति कामी होगा।

निशानी–ऐसा व्यक्ति जीवन में अनेक स्त्रियों का सुख भोगता है। जातक के जीवन का सही विकास विवाह के बाद होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–व्ययेश सूर्य लग्न में शत्रु ग्रह के साथ होने से जातक परस्पर विरोधाभासी निर्णय लेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–लाभेश एवं भाग्येश की लग्न स्थान में युति जातक को भाग्यशाली बनायेगी।

3. **शुक्र + बुध**—बुध उच्च का एवं शुक्र नीच का होने से यहां 'नीचभंग राजयोग' बना। जातक महाधनी तथा राजनैतिक हस्ती होगा।
4. **शुक्र + मंगल**—अष्टमेश मंगल लग्न में होने से परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक का स्वभाव लड़ाकू होगा।
5. **शुक्र + गुरु**—सप्तमेश गुरु लग्न में बैठकर पंचम, सप्तम एवं भाग्य स्थान को देखेगा। फलत: जातक भाग्यशाली होगा। जातक की पत्नी परम सुन्दर एवं संतति भी सुंदर होगी।
6. **शुक्र + शनि**—लग्न में शनि उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्त्वाकांक्षी होगा। जातक विद्यावान होगा।
7. **शुक्र + राहु**—शुक्र के साथ राहु होने से जातक विलासी प्रवृत्ति का स्वामी होगा।
8. **शुक्र + केतु**—शुक्र के साथ केतु होने से जातक के मन में भटकाव ज्यादा होगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में
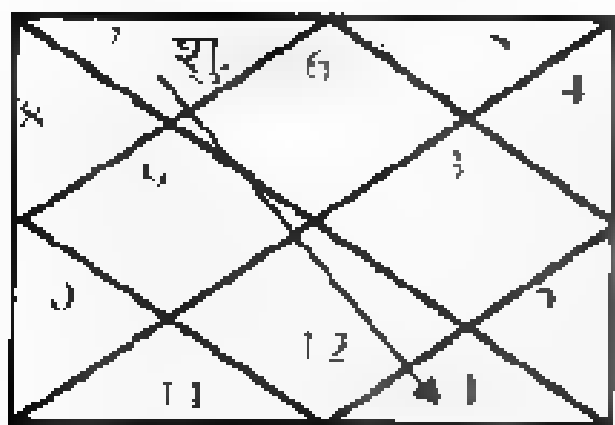
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां द्वितीय स्थान में शुक्र स्वगृही होगा। धनेश का स्वगृही होना बहुत बड़ी बात है। ऐसा जातक धनवान होगा। जातक की खुद की गाड़ी होगी। जातक अच्छा भोजन करेगा। जातक अच्छी वाणी बोलेगा। जातक विनम्र होगा, जातक की आर्थिक सम्पन्नता प्रथम संतति के बाद विशेष रुप से मुखरित होगी। जातक को पूर्ण गृहस्थ सुख मिलेगा।

दृष्टि—शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (मेष राशि) पर होगी फलत: जातक की उम्र लम्बी होगी।

निशानी—ऐसे जातक को देवी की उपासना ज्यादा फलवती होगी एवं स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।

दशा—शुक्र की दशा, अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा। जातक को धन की विशेष प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—यहां सूर्य होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। जातक राजा तुल्य

प्रभावशाली एवं धनी व्यक्ति होगा पर खर्चीले स्वभाव का होगा पैसा हाथ में टिकेगा नहीं।

2. **शुक्र + चंद्र**—धन स्थान में शुक्र के साथ चंद्रमा होने से जातक महाधनी होगा।
3. **शुक्र + बुध**—शुक्र के साथ बुध होने से जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**—शुक्र के साथ मंगल होने से जातक के धन का नाश होता रहेगा।
5. **शुक्र + गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक धार्मिक तथा पराक्रमी होगा
6. **शुक्र + शनि**—यहां शनि उच्च का होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक करोड़पति होगा। जातक अपने नाम से जाना-पहचाना जायेगा।
7. **शुक्र + राहु**—शुक्र के साथ राहु होने से जातक के अर्जित धन का नाश होगा
8. **शुक्र + केतु**—शुक्र के साथ केतु होने से धन का अपव्यय होता रहेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में

8 7 6 5 4 शु. 9 3 10 2 12 11 1
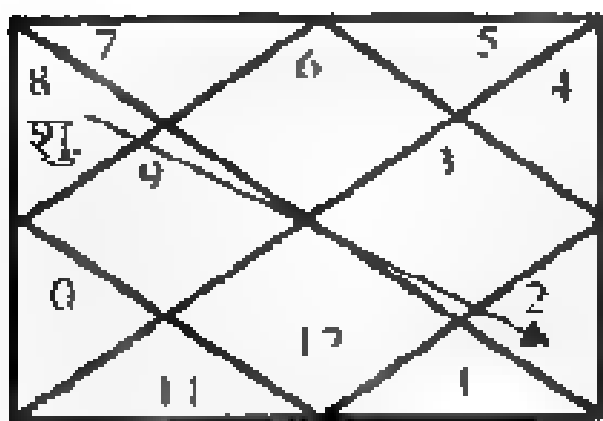
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है यहां तीसरे स्थान में शुक्र वृश्चिक राशि में होगा लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'इश्क का परवाना' कहा है। ऐसा जातक पराई स्त्रियों पर डोरे डालता है तथा अनैतिक सम्पर्क साधने की चेष्टा करता है। भाई-बहनों में कम पटती है पर जातक यार दोस्तों पर ज्यादा रुपया खर्च करता है। जातक फिजूलखर्च होता है।

दृष्टि—तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि अपने ही घर भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी। ऐसा व्यक्ति भाग्यशूर होता है तथा थोड़ी मेहनत से उत्तम फलों की प्राप्ति करता है।

निशानी—जातक की प्रगति विवाह के बाद होती है।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ता है एवं भाग्योदय होता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक का पराक्रम भंग होगा तथा छोटे भाई की मृत्यु होगी।

2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र होने से जातक की बहनें अधिक होंगी। बहनें सम्पन्न होंगी।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक को मेहनत का फल मिलेगा। जातक के मित्र वफादार होंगे।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल स्वगृही होने से जातक को भाई बहनों का सुख तो प्राप्त होगा पर आपस में विचार नहीं मिलेंगे।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा और जातक पर बड़े भाई की कृपा रहेगी।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक पढ़ा लिखा होगा। जातक की संतति भी पढ़ी-लिखी होगी।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक का पराक्रम भंग होगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से भाई बहनों में मनमुटाव रहेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में
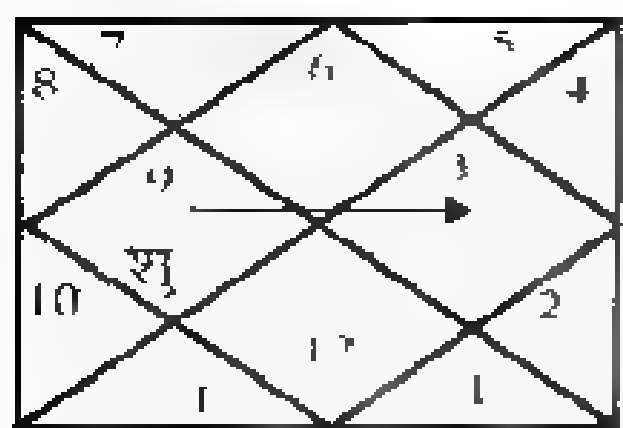
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां शुक्र धनु राशि में होगा तथा केन्द्रस्थ होने से 'कुलदीपक योग' बनायेगा। जातक के पास उत्तम बंगला, गाड़ी, वाहन, नौकर चाकर का सुख होगा। ऐसा जातक यदि राजनीति में हो तो राजा का मंत्री होता है। जातक शिक्षित एवं सभ्य होगा। जातक को गृहस्थ, स्त्री व संतान का सुख पूर्ण होगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ शुक्र की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक का दबदबा राज्य (सरकार), कोर्ट-कचहरी में रहेगा।

निशानी–जातक अच्छे स्वभाव का स्वामी होगा। जातक का मां के साथ विशेष संबंध होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों व उपलब्धियों की प्राप्ति होगी तथा उसका भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक की माता प्राय: बीमार रहेगी।

2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा होने से जातक को माता एवं बड़ी बहन का सुख मिलेगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ लग्नेश बुध होने से जातक महान उपलब्धियां अर्जित करेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल होने से जातक की विद्या में रुकावट आयेगी।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ यदि बृहस्पति हो तो हंस योग के कारण जातक निश्चय ही राजा के समान प्रभावशाली होती है तथा राजपुरोहित, राजगुरु के पद को प्राप्त करेगा
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ पंचमेश शनि होने से जातक विद्या व्यसनी होगा।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक की माता को कष्ट रहेगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक की मां बीमार रहेगी। जातक को हृदय रोग होने की संभावना रहेगी।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में

7 6 5 8 4 9 3 10 शु. 2 11 12 1
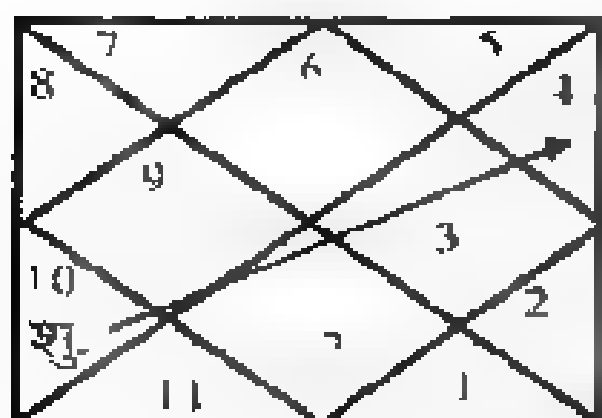
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अतः योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है यहां पंचम स्थान में शुक्र मकर राशि का होगा। ऐसे जातक को अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'बच्चों से भरे घर-परिवार' वाला कहा है। ऐसे जातक को स्त्री-संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक की संतति सुंदर होगी। जातक स्वयं कवि, संगीत प्रेमी, कलाकार, होशियार एवं चालाक होगा। ऐसे जातक को राजा (राज्य सरकार) से सम्मान अवश्य मिलेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक को व्यापार व्यवसाय एवं लघु उद्योग से यथेष्ट धन की प्राप्ति होगी।

निशानी–जातक प्रज्ञावान होता है तथा उसकी प्रायः चार या छः कन्याएं होती हैं। जातक का सट्टे तथा शेयर बाजार से लाभ होगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं उसे उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य होने से संतान प्राप्ति, वांछित विद्या प्राप्ति में दिक्कतें महसूस होगी।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा कन्या संतति की बाहुल्यता करायेगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ लग्नेश बुध बुद्धि, तेज एवं संतति तेजस्वी करायेगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
4. **शुक्र + मंगल**–
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से जातक को पत्नी पक्ष से लाभ मिलेगा तथा पुत्र संतति की प्राप्ति होगी।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ स्वगृही शनि कन्या संतति में बाहुल्यता एवं पुत्र योग भी देता है।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु की उपस्थिति पुत्र संतति में बाधक है।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु गर्भपात, गर्भस्राव कराता है।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में
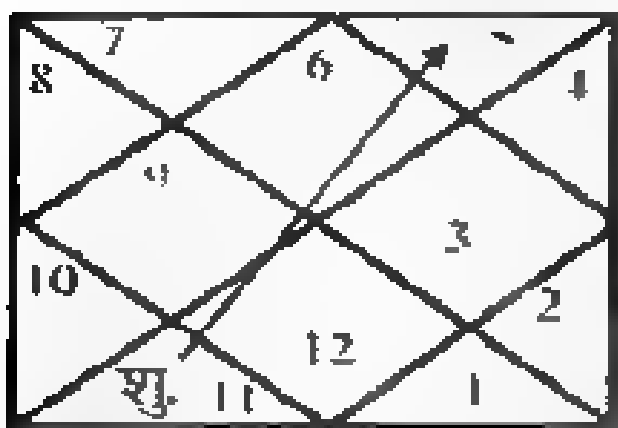
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अतः योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां छठे स्थान में शुक्र कुम्भ राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति से धनहीन योग एवं भाग्यभंग योग की सृष्टि होती है। ऐसे जातक को धनार्जन एवं भाग्योदय हेतु कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। जातक स्त्रियों का अनुग्रह पाने के लिए लालायित रहेगा एवं किसी युवा स्त्री द्वारा भ्रष्ट होगा। जातक का चरित्र व स्वभाव विवादास्पद होगा।

दृष्टि–छठे भावगत शुक्र की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक के पास धन का संग्रह नहीं हो पायेगा।

निशानी–कामुक स्वभाव के कारण जातक के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा जातक के लिए कष्टप्रद साबित होगी

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ यदि सूर्य हो तो 'विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक करोड़पति होगा। इसे विमल नामक राजयोग कहते हैं।
2. **शुक्र + चन्द्र**–शुक्र के साथ लाभेश चन्द्रमा नियमित लाभ के अनुपात को तोड़ देगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ बुध 'लग्नभग योग' करायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ यदि मगल हो तो 'विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक करोड़पति होगा। इसे 'सरल नामक' राजयोग कहते हैं।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ सप्तमेश बृहस्पति विलम्ब विवाह योग या द्विभार्या योग कराता है।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ यहा पर शनि हो तो 'विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक करोड़पति होगा। इसे 'हर्ष योग' भी कहते हैं।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु की उपस्थिति राजयोग कारक है। जातक के रोग का नाश होगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के शरीर पर रोग का प्रकोप करायेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
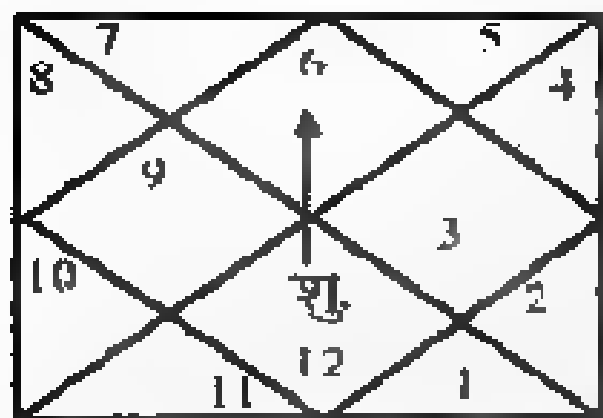
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहा त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है अतः योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। शुक्र यहां अपनी उच्च राशि मीन में होगा। जहां यह 27 अंशों में परमोच्च का कहलाता है। शुक्र की इस स्थिति के कारण 'कुलदीपक योग' एवं 'मालव्य योग' की सृष्टि होगी। जातक राजा के समान पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीयेगा। जातक की पत्नी रति के समान सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक को विपरीत सेक्स वालों से लाभ होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक अल्प प्रयत्न से अधिक कमाता है तथा बहुत भाग्यशाली होता है।

निशानी–ऐसा जातक विदेश में, जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर धन कमाता है।

दशा—शुक्र की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी एवं सर्वांगीण विकास होगा। इसे भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य विवाह सुख में कलह करायेगा। जातक की पत्नी लड़ाकू होगी।
2. **शुक्र + चंद्र**—शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा होने से जातक की पत्नी परम सुन्दरी व विनम्र होगी।
3. **शुक्र + बुध**—शुक्र के साथ बुध होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक की पत्नी कमाऊ होगी। जातक को ससुराल से धन की प्राप्ति होगी।
4. **शुक्र + मंगल**—शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल की उपस्थिति विवाह सुख में बाधक है।
5. **शुक्र + गुरु**—बलवान धनेश की सप्तमेश से युति 'कलहमूल धनयोग' बनाती है। जातक को ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होगी।
6. **शुक्र + शनि**—षष्ठेश शनि सप्तम स्थान में शुक्र के साथ होने से, जीवन साथी से वैचारिक मतभेद करायेगा।
7. **शुक्र + राहु**—सप्तम स्थान में राहु गृहस्थ सुख में बाधक है।
8. **शुक्र + केतु**—सप्तम स्थान में केतु वैचारिक मतभेद करायेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में
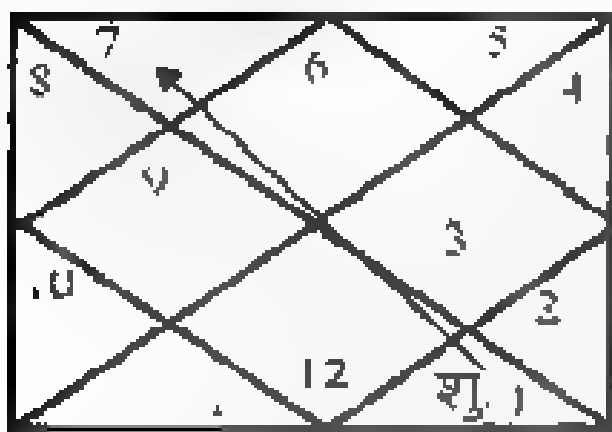
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अतः योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। यहां अष्टमस्थ शुक्र मेष राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण धनहीन योग एवं भाग्यभंग योग की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को धनार्जन एवं भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी जातक को उच्च श्रेणी की विद्या, वाहन, धन व ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक की माता की आयु कम होगी। अति सेक्स, गुप्त बीमारी का कारण होगा।

दृष्टि—अष्टम भावगत शुक्र की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होगी, फलतः जातक को जीवन में धन की कमी नहीं रहेगी।

निशानी—जातक यदि अपनी पत्नी को तंग करेगा तो उसके जीवन में परेशानियां बढ़ेंगी। शुक्र का शुभत्व बढ़ाने के लिए दूध का दान करना चाहिए

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य, अष्टम स्थान में होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी एवं वाहन सुख से युक्त होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**—शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा अष्टम स्थान में होने से शल्य चिकित्सा करायेगा। जातक को हरनिया इत्यादि गुप्त रोग हो सकते हैं।
3. **शुक्र + बुध**—शुक्र के साथ लग्नेश बुध यहां 'लग्नभंग योग' करायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**—शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल, अष्टम स्थान में स्वगृही होने से विमल नामक विपरीत राजयोग करायेगा। जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा।
5. **शुक्र + गुरु**—शुक्र के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से विलम्ब विवाह योग बनेगा। इसमें द्विभार्या योग भी संभव है।
6. **शुक्र + शनि**—शुक्र के साथ षष्ठेश शनि होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी पराक्रमी एवं वाहन सुख से युक्त होगा।
7. **शुक्र + राहु**—शुक्र के साथ राहु का होना गुप्त बीमारी का संकेतक है।
8. **शुक्र + केतु**—शुक्र के साथ केतु गुप्त रोगों की शल्य चिकित्सा कराता है।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में
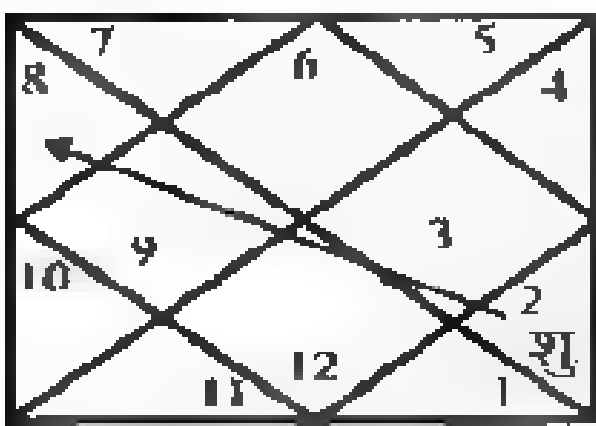
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अतः योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। नवमस्थ शुक्र यहां स्वगृही होगा। यह शुक्र पंचम भाव से पंचम है, पिता की दीर्घायु होगी। जातक जन्म से ही भाग्यशाली होगा। जातक को स्त्री, धन, पुत्र-संतति, विद्या-बुद्धि व सौभाग्य का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। जातक जन्म से भाग्यशाली होता है। जातक को भाई-बहनों का पूर्ण सुख होगा।

दृष्टि—नवमस्थ शुक्र की दृष्टि पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक प्रबल पराक्रमी होगा। जातक का जनसम्पर्क बहुत तेज होगा।

निशानी–ऐसा जातक यदि स्त्रियों का अपमान करेगा तो उसका भाग्य विपरीत होगा।

दशा–शुक्र की दशा अन्तर्दशा में जातक का चहुंमुखी भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य हो तो जातक बातचीत में कुलीन होगा पर शरीर में कष्ट रहेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा उच्च का होने से 'किम्बहुना योग' बनायेगा, इससे अधिक और क्या? जातक महाधनी एवं सौभाग्यशाली होगा।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ दशमेश बुध होने से व्यक्ति महान भाग्यशाली होगा। जातक की नौकरी अच्छी होगी।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक के भाग्य में रुकावट होगी किन्तु जातक का पराक्रम तेज होगा।
5. **शुक्र + गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति की उपस्थिति विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय कराता है।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक का भाग्योदय विद्या द्वारा होगा।
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ उच्च का राहु व्यक्ति को पराक्रमी बनायेगा।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक के भाग्योदय में बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

7 8 6 5 4 10 9 3 शु. 2 11 12 1
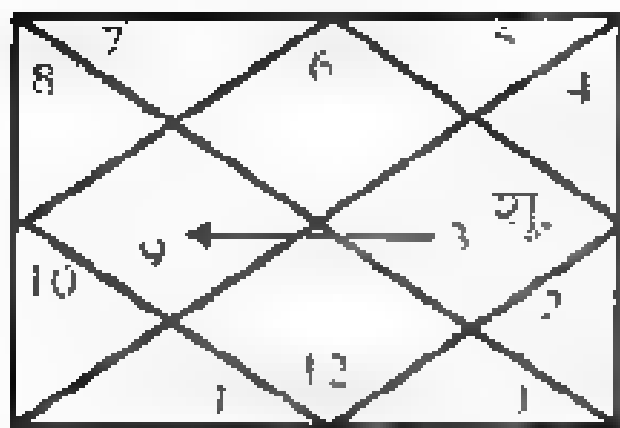
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अतः योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। दशम भावगत शुक्र यहां मिथुन राशि में होगा। केन्द्रवर्ती शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। जातक को आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक सफलताओं की प्राप्ति होगी। जातक को जमीन–जायदाद, आर्थिक सम्पदाओं की प्राप्ति होगी। जातक का राजनीति में प्रभाव होगा। यदि बुध की स्थिति अच्छी हो तो राजनैतिक पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होगी।

दृष्टि–दशमस्थ शुक्र की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को सुन्दर भवन, सुन्दर वाहन का सुख मिलेगा।

निशानी—जातक के अनेक वाहन व मकान होंगे, जिससे आय की संभावना भी रहेगी

दशा—शुक्र की दशा- अंतर्दशा में जातक उन्नति प्राप्त करेगा

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक को सरकार (कोर्ट कचहरी) द्वारा नुकसान होगा
2. **शुक्र + चंद्र**—शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। जातक को सरकारी नौकरी में लाभ है
3. **शुक्र + बुध**—शुक्र के साथ बुध होने से 'भद्र योग' के कारण जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
4. **शुक्र + मंगल**—शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल राज्य की नौकरी में कष्ट दायक होगा।
5. **शुक्र + गुरु** शुक्र के साथ सप्तमेश गुरु विवाह के बाद नौकरी लगवाता है।
6. **शुक्र + शनि**—शुक्र के साथ पंचमेश शनि हो तो जातक को विदेश यात्रा से लाभ कराता है।
7. **शुक्र + राहु**—शुक्र के साथ स्वगृही राहु जातक को हठी राजा बनाता है
8. **शुक्र + केतु**—शुक्र के साथ केतु, दशम भाव के शुभ फल को तोड़ता है।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में
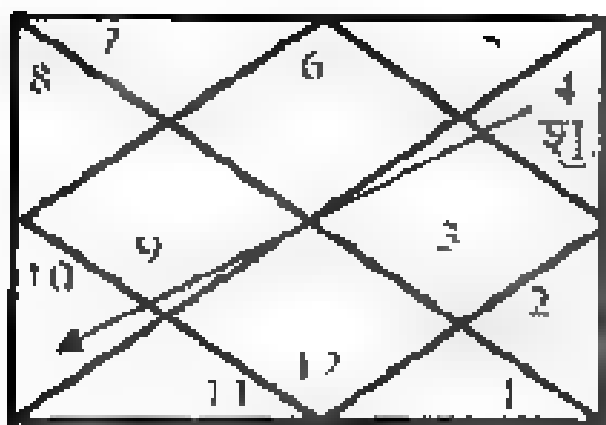
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एवं भाग्येश है। शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है एकादश भावगत शुक्र यहां कर्क राशि में होगा जातक लोकप्रिय होगा एवं घुमक्कड़ स्वभाव का होगा लाल किताब वालों ने इस शुक्र को 'माया के लिए घृपता व्यक्ति' कहा है जातक को अनेक मित्र होंगे, जातक धनी एवं प्रजावान होगा। जातक की अच्छी शिक्षा-दीक्षा होगी। जातक के पास ऐशो-आराम के अनेक साधन होंगे

दृष्टि—एकादश स्थान में स्थित शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक विद्यावान होगा तथा उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा।

निशानी–स्त्रिया जातक की कमजोरी होगी। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक को व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य, लाभ में कमी कराता है जातक के उद्योग में विवाद रहेगा।
2. **शुक्र + चंद**–शुक्र के साथ लाभेश स्वगृही चद्रमा बड़ी बहन, मौसी या बुआ से लाभ दिलवाता है।
3. **शुक्र + बुध**–शुक्र के साथ लग्नेश बुध होने से जातक व्यापार से धन कमायेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–शुक्र के साथ अष्टमेश मगल होने से मगल नीच के लाभ के प्रतिशत को तोड़ता है।
5. **शुक्र + गुरु** शुक्र के साथ बृहस्पति उच्च का होकर विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय करायेगा।
6. **शुक्र + शनि**–शुक्र के साथ षष्टेश शनि लाभ के प्रतिशत में गिरावट करायेगा.
7. **शुक्र + राहु**–शुक्र के साथ राहु का होना भाग्य में मदी, लाभ में रुकावट का सकेत देता है।
8. **शुक्र + केतु**–शुक्र के साथ केतु उद्योग को बीमार करेगा।

कन्यालग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में
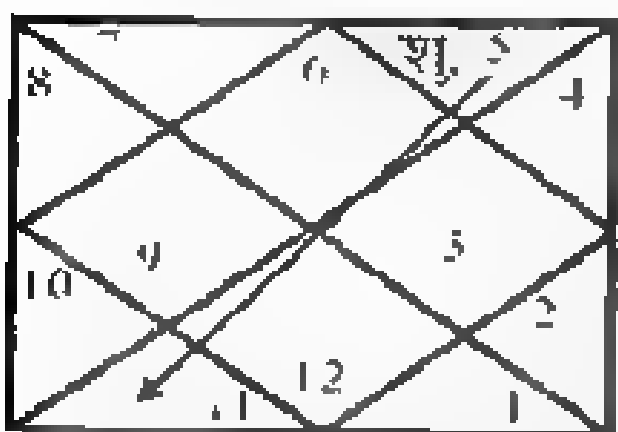
कन्यालग्न में शुक्र द्वितीयेश एव भाग्येश है शुक्र यहां त्रिकोण का स्वामी होने से मारकेश के दोष से मुक्त हो गया है। अत: योगकारक होकर शुभ फल प्रदाता है। द्वादश भावगत शुक्र यहां सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि होगी। फलत: ऐसे जातक को धनार्जन एवं भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को ऋण-रोग व शत्रुओं से परेशानी होती रहेगी। फिर भी जातक धनवान, तेजस्वी एव यशोवान होगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ शुक्र की दृष्टि छठे स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। अतः जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—व्यक्ति को ट्रेवलिंग या विदेशी व्यापार से लाभ होगा। जातक संबंधियो से दूर रहेगा।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा मे जातक सुखी एवं सम्पन्न होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + सूर्य**—शुक्र के साथ व्ययेश सूर्य स्वगृही होने हर्ष नामक विपरीत राजयोग बनेगा जातक महान पराक्रमी व धनी होगा।
2. **शुक्र + चंद्र** शुक्र के साथ लाभेश चंद्रमा जातक की बाईं आंख को कष्ट पहुंचायेगा। नेत्र-पीड़ा के कारण आपरेशन होगा।
3. **शुक्र + बुध**—शुक्र के साथ लग्नेश बुध बारहवें होने से 'लग्नभंग योग' बनेगा। जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**—शुक्र के साथ अष्टमेश मंगल होने से विपरीत राजयोग बनेगा। कुण्डली मांगलिक होगी। जातक के विवाह में विलम्ब होगा। द्विभार्या योग बनता है।
5. **शुक्र + गुरु**—शुक्र के साथ सप्तमेश बृहस्पति विवाह में विलम्ब एवं द्विभार्या योग बनाता है।
6. **शुक्र + शनि**—शुक्र के साथ षष्टेश शनि विपरीत राजयोग से धन दिलवाता है पर जातक को संतान संबंधी चिंता बनी रहेगी।
7. **शुक्र + राहु**—शुक्र के साथ राहु व्यर्थ की यात्रा में धन खर्च कराता है।
8. **शुक्र + केतु**—शुक्र के साथ केतु यात्रा में चिंता एवं विलासिता की आपूर्ति में धन खर्च कराता है।

❑❑❑

कन्यालग्न में शनि की स्थिति

कन्यालग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
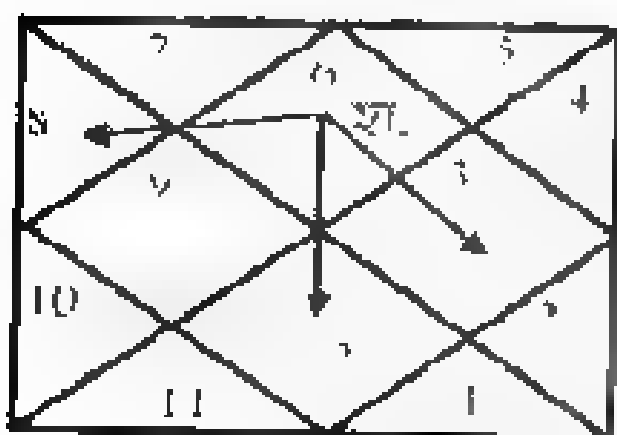
कन्यालग्न में शनि पचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नही मिली है। अत: शनि पापी एव निष्फल योगकर्त्ता है। यहां प्रथम स्थान मे शनि कन्या (मित्र) राशि में रहेगा। ऐसा जातक बुद्धिमान एवं गभीर स्वभाव का होता है। यहा लग्नस्थ शनि उच्चाभिलाषी है फलत: धन सम्पत्ति, नौकरी व्यवसाय और स्त्री सतान का पूर्ण सुख देता है। जातक का शरीर पूर्ण हष्ट पुष्ट नहीं होता। जातक के गृहस्थ सुख मे कुछ न कुछ कमी रहेगी।

दृष्टि—लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि), सप्तम स्थान (मीन राशि) एव दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा जातक की विचार धारा पत्नी से कम मिलेगी। राज्य (सरकार) मे जातक का दबदबा रहेगा।

निशानी—ऐसा जातक महत्वकाक्षी होता है परन्तु जातक की किस्मत प्राय: वृद्धावस्था में चमकती है।

दशा—शनि की दशा-अतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शनि का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—कन्यालग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: पचमेश षष्टेश शनि की व्ययेश सूर्य के साथ निष्फल युति है। जातक अति महत्वाकाक्षी चालाक एव विचलित मन मस्तिष्क वाला होगा। जातक के शरीर मे बीमारी रहगी

2. **शनि+चंद्र**–यदि यहा चंद्रमा हो तो जातक अधर्मी होगा। उसे वायु विकार एव पागलपन की शिकायत हो सकती है.

3. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध का होना व्यक्ति को भद्रयोग के कारण राजातुल्य वैभव देगा।

4. **शनि+मगल**–शनि के साथ मगल हो तो जातक जेल यात्रा कर सकता है, जातक हठी स्वभाव का होगा।

5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति जातक को सुन्दर व सभ्य जीवन साथी देगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ भाग्येश शुक्र नीच का होकर भी भाग्य एवं धन में वृद्धि करायेगा.

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से जातक षड्यंत्रकारी एवं कलहप्रिय होगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु हो तो जातक छिन्द्रावेषक दूसरों की कमी ढूंढने वाला होता है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में
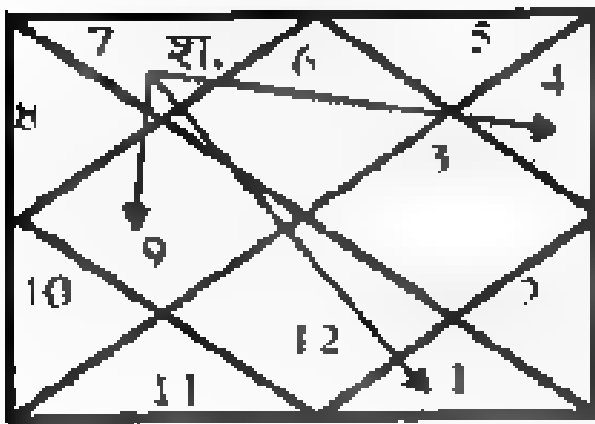
कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहा शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नही मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फल योगकर्त्ता है। यहां द्वितीय स्थान मे शनि उच्च का होगा। तुला राशि के 20 अशों में शनि परमोच्च का होगा। ऐसा जातक महाधनी होगा। उसे विद्या धन, सतान और कुटुम्ब का पूर्ण सुख मिलेगा। ऐसा जातक बाहर से कुछ दिखता है, अदर से कुछ होता है। जातक वस्तुत: आंतरिक रूप से शक्तिशाली होता है।

दृष्टि–द्वितीय भावगत शनि की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि), अष्टम भाव (मेष राशि) एव लाभ भाव (कर्क राशि) पर होगी फलत: जातक के पास वाहन होगा। जातक रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा तथा व्यापार-व्यवसाय में अच्छा धन कमायेगा।

निशानी–प्राय: जातक को धातु, भण्डारण, खनन, श्रमिक-कार्यों से लाभ होता है।

दशा–शनि की दशा अन्तर्दशा में जातक धनवान, विद्यावान एवं यशोवान होगा

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के द्वितीय स्थान में शनि उच्च का एवं सूर्य नीच का होने से नीचभंग राजयोग बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर जातक के पास में पैसा टिकेगा नहीं पिता की मृत्यु के बाद जातक धनवान होगा। जातक की वाणी अप्रिय होगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा जातक को भरपूर धन प्रदान करेगा। जातक मृदुभाषी होगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक को यथेष्ट परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ प्राप्त होगा। जातक धनी व व्यापारी होगा।
4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल जातक के धन संग्रह में रुकावट का काम करेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सुखेश गुरु होने से जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल होगा जातक के पुत्र पराक्रमी होंगे।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ भाग्येश शुक्र यहां 'किम्बहुना योग' बनायगा। इससे अधिक और क्या? जातक करोड़पति होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु धन के घड़े में छेद के समान है। जातक अर्जित धन के सर्वस्व भाग को एकदम अचानक खर्च करने में नहीं हिचकचायेगा।
8. **शनि+केतु**–जातक को धनसंग्रह करने में कष्ट आयेगा।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में
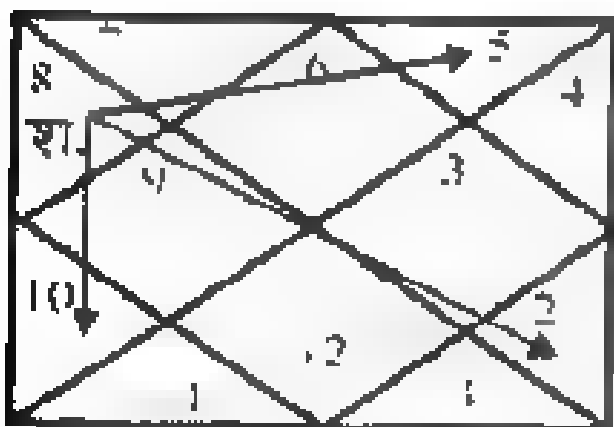
कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फलयोग कर्त्ता है तृतीयस्थ शनि, वृश्चिक (शत्रु) शनि में होगा। ऐसा जातक साहसी, पराक्रमी व दृढ़ निश्चयी होता है। जातक के भाई-बहन होंगे, पर उनसे कम निभेगी। जातक कठोर परिश्रमी होगा। परिवार-कुटुम्ब एवं मित्रों के लिए सब कुछ करते हुए भी उसे वांछित यश नहीं मिलेगा। जातक को उसकी

पीठ पीछे बुराई होगी एव उसके गुप्त-शत्रु भी बने रहेंगे। जातक मनकी एव कठोर निर्णय लेने वाला व्यक्ति होगा

दृष्टि—तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पचम भाव (मकर राशि), भाग्य स्थान (वृष राशि) तथा व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी जातक प्रज्ञावान भाग्यशाली, एव खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी—जातक अपने से छोटे भाई बहनो के सुख मे कमी महसूस करेगा शनि की यह स्थिति जातक के छोटे भाई की आयु के लिए घातक है।

दशा—शनि की दशा अतर्दशा मिश्रित फल देगी

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—कन्यालग्न के तृतीय स्थान में सूर्य+शनि की युति अप्रिय होगी जातक की छोटे बड़े किसी भाई से नहीं बनेगी। भाईयों का सुख कमजोर होगी। जातक के मित्र परिजन भी विश्वास योग्य नही होगे। दोनों ग्रहो की दृष्टि पंचम (मकर राशि), नवम (वृष राशि) एव व्यय भाव (सिह राशि) पर होने से संतति योग उत्तम पर संतानों मे झगड़ा रहेगा। जातक के भाग्योदय में संघर्ष एवं खर्च की प्राबल्यता रहेगी।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ लाभेश चद्रमा जातक का पराक्रम बढ़ायेगा पर बडे भाई का सुख कमजोर होगा।
3. **शनि+बुध**—शनि के साथ लग्नेश बुध, भाई-बहनों का सुख देगा। जातक के मित्र मददगार होंगे।
4. **शनि+मंगल**—शनि के साथ अष्टमेश मंगल तीन भाईयों का सुख देगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ सप्तमेश गुरु होने से जातक का ससुराल पक्ष पराक्रमी होगा
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ भाग्येश शुक्र होने से जातक के मित्र व कुटुम्बीजन भाग्यशाली होंगे।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु होने से भाईयों में बैर रहेगा
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु अपकीर्ति दिलायेगा जातक कुख्यात होगा।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में

कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहा शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नही मिली है। अत: शनि पापी एव निष्फल
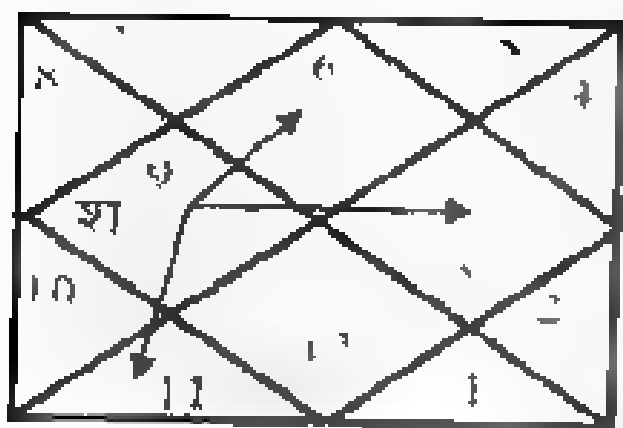
योग कर्ता है यहां चतुर्थ स्थान में शनि केन्द्रस्थ होकर धनु राशि में होगा जो इसकी शत्रु राशि है, ऐसा जातक प्राय: क्रोधी व भड़कीले स्वभाव का स्वामी होगा। जातक की प्रारम्भिक शिक्षा-दीक्षा में रुकावट आ सकती है। जातक की मां बीमार हो सकती है अथवा जातक मां के सुख से वंचित रह सकता है ऐसे जातक को वाहन या मकान के सुख में बाधा आयेगी। जातक की पैतृक सम्पत्ति विवादास्पद रहेगी।

दृष्टि—चतुर्थस्थ शनि की दृष्टि छठे भाव (कुम्भ राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी. फलत: जातक शत्रु व रोग का नाश करने में सक्षम होगा। जातक को विलम्ब से ही सही पर परिश्रम का फल जरूर मिलेगा।

निशानी—जातक स्वार्थी प्रवृत्ति का व्यक्ति होगा, पर भाग्यशाली होगा। पंचमेश का केन्द्रस्थ होना शुभ है। प्रथम संतति के बाद जातक की उन्नति होगी।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—कन्यालग्न में चतुर्थ स्थान में सूर्य+शनि की युति से जातक की माता बीमार रहेगी। वाहन दुर्घटना होगी। यहां धनु राशिगत दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे स्थान (कुम्भ राशि), दशम भाव (मिथुन राशि) एवं लग्न स्थान (कन्या राशि) पर रहेगी। फलत: जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक अपनी खुद की मेहनत से आगे बढ़ेगा, परन्तु जातक के जीवन का सही विकास पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक कंजूस होगा।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ सुखेश चंद्रमा जातक को वाहन तथा माता का सुख देगा परन्तु जातक की माता उद्विग्न या बीमार रहेगी।
3. **शनि+बुध**—शनि के साथ लग्नेश बुध जातक को प्रसिद्ध व्यक्ति बनायेगा।
4. **शनि+मंगल**—शनि के साथ अष्टमेश मंगल, भाईयों में मनमुटाव करायेगा
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से हसयोग बनेगा। जातक अनेक वाहन, अनेक भवनों का स्वामी होगा। उसके अनेक सेवक होंगे।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ धनेश शुक्र होने से जातक को मकान के माध्यम से धन मिलेगा। जातक को पिता माता की सम्पत्ति मिलेगी।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक की माता की अकाल मृत्यु कराता है
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देता है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में
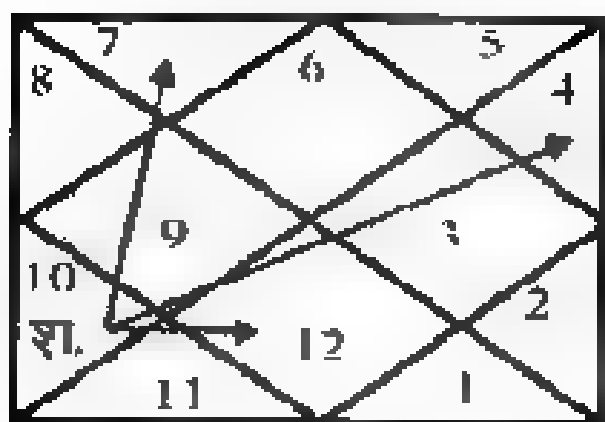
कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अतः शनि पापी एवं निष्फल योगकर्ता है। यहां पंचमस्थ शनि मकर राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक विद्यावान, प्रज्ञावान तथा दूरदर्शी होगा। प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व आगे पीछे सोचने वाला, चिंतन मनन करने वाला समझदार व्यक्ति होगा जीवन में गुप्त शत्रु अवश्य होंगे। संबंधियों से झगड़ा रहेगा। जातक को धन-दौलत की कमी नहीं रहेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), एकादश भाव (कर्क राशि) एवं धन भाव (तुला राशि) पर होगी फलतः जातक धनी होगा। स्वतंत्र रोज़गार या व्यापार मे धन बढ़ेगा। गृहस्थी भी ठीक-ठाक होगी।

निशानी–जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। यदि परिवार नियोजन का सहारा न लिया तो सात कन्याएं हो सकती हैं।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**.-कन्यालग्न के पंचम स्थान में शनि स्वगृही होगा एवं सूर्य शत्रुक्षेत्री होकर उद्विग्न होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि), लाभ स्थान (कर्क राशि) एवं धन भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक प्रज्ञावान व धनवान होगा। जातक के शत्रुओं की कमी नहीं होगी। जातक की खुद की संतान ही जातक से वैरभाव रखेगी। प्रारंभिक विद्या में रुकावट आयेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्र, कन्या संतति की वृद्धि करेगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध होने से जातक बुद्धि, बल, विद्या व हुनर से धन कमायेगा।

4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा इससे अधिक और क्या? जातक करोड़पति होगा। जातक की संतति जातक से अधिक धनवान होगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से नीचभंग राजयोग बनेगा जातक राजा के समान वैभवशाली होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से जातक परम सौभाग्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु पुत्र संतान की प्राप्ति में बाधक है.
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु संतति हेतु शल्य चिकित्सा करायेगा।

कन्यालग्न में की स्थिति शनि षष्टम स्थान में

7 6 5 4 8 9 3 10 12 2 श. 11 1
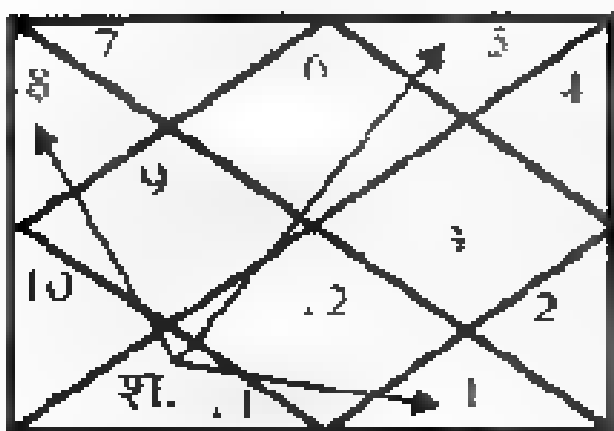
कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहा शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अतः शनि पापी एवं निष्फलयोग कर्ता है। यहा छठे स्थान मे शनि स्वगृही अपनी मूल त्रिकोण कुंभ राशि मे होगा। शनि की यह स्थिति विलम्ब संतति योग बनाती है पर साथ में विपरीत राजयोग भी बनता है। षष्टेश षष्टम स्थान में स्वगृही 'हर्षनामक' राजयोग की सृष्टि करता है। ऐसा जातक अपना भाग्य खुद बनाता है जातक उत्तम धन सम्पत्ति का स्वामी होता है तथा उसे गृहस्थ सुख, पत्नी-संतान सुख जीवन में मिलता है। जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने मे सक्षम व समर्थ होता है।

दृष्टि–छठे भावगत शनि की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि), व्यय भाव (सिंह राशि) एव पराक्रम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले तथा कलहकारी स्वभाव का होगा। जातक की पीठ पीछे उसकी बुराई होती रहेगी.

निशानी–जातक की गुप्त शत्रु अवश्य होंगे।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के छठे स्थान में शनि स्वगृही एवं सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा पर दोनो ही ग्रह यहा विपरीत राजयोग करके बैठेंगे। शनि के कारण हर्ष योग एव सूर्य के कारण सरल योग बनेगा। जातक ऋण, रोग व शत्रुओ का सामना करने में सक्षम होगा। जातक उत्तम धन सम्पति एवं वाहन का स्वामी होगा।

2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ लाभेश चंद्रमा छठ्ठे मे होने से लाभभग योग बनेगा। जातक को व्यापार में नुकसान होगा।
3. **शनि+बुध**—शनि के साथ लग्नेश बुध होने से लग्नभग योग बना
4. **शनि+मंगल**—यदि यहां मंगल हो तो जातक को कोई खतरनाक रोग होगा जिसमे जातक का आपरेशन करना पड़ेगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति विलम्ब विवाह योग एवं भौतिक सुख में बाधा उत्पन्न करेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र भाग्यभग योग एवं धनभग योग बनायेगा जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा
7. **शनि+राहु**—यदि यहां राहु है तो व्यक्ति हिस्टीरिया से पीड़ित होगा।
8. **शनि+केतु**—यहां शनि के साथ केतु होने से जातक उन्मादी प्रवृति का होगा

कन्यालग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में
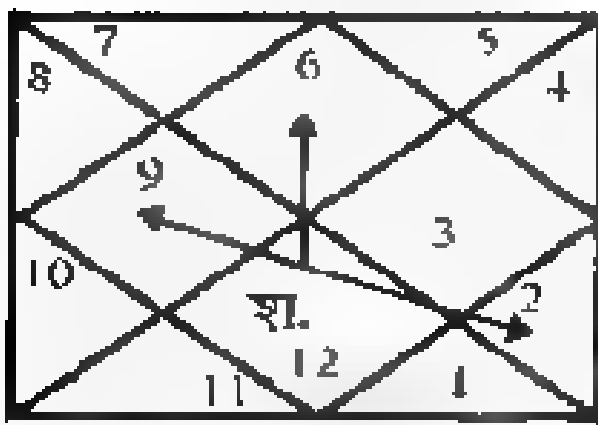
कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहा शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नही मिली है। अत: शनि पापी एवं निष्फल योगकर्ता है यहां सप्तमस्थ शनि मीन (सम) राशि मे होगा। ऐसे जातक को धन की कमी नहीं रहेगी। जातक का दाम्पत्य सुख, पत्नी-सुख, संतान सुख ठीक रहेगा। पर प्राय: पत्नी जातक से बड़ी उम्र की होगी, षष्टेश शनि सप्तम में होने के कारण उपरोक्त सभी सुखो में कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहेगी लाल किताब वालों ने इस शनि को विधाता की कलम कहा है। जातक का चरित्र रहस्यमय होता है। जातक अपनी किस्मत खुद बनाता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य स्थान (वृष राशि) लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी फलत: जातक भाग्यशाली होगा। उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा संकल्प पूर्वक किये गये कार्यों में सफलता मिलेगी।

निशानी—प्राय: ऐसे जातक की एकाधिक शादी होगी। विलम्ब विवाह भी संभव है।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को मिश्रित फल देगी पर उन्नति भी जरूर करायेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के सप्तम स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री एवं सूर्य मित्रक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान (वृष राशि), लग्न स्थान (कन्या राशि) एवं चतुर्थ भाव (धनु राशि) को देखेंगे। फलतः जातक का विवाह विलम्ब से होगा। जातक को गृहस्थ सुख में बाधा, भौतिक सुख सम्पाधनों की प्राप्ति में भारी संघर्ष, भाग्योदय में संघर्ष, किसी भी कार्य के प्रथम प्रयास में सफलता नहीं मिलेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा सुन्दर पत्नी दिलायेगा। विवाह के बाद जातक की उन्नति होगी।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध होने से 'लग्नाधिपति योग' बनेगा। जातक परिश्रम के साथ शीघ्र आगे बढ़ेगा।
4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल होने से विवाह सुख में बाधा होगी। जातक की कुण्डली डबल मांगलिक हो जायेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ स्वगृही बृहस्पति के कारण 'हंस योग' बनेगा, जातक धनवान होगा। जातक की पत्नी सुन्दर व सभ्य होगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ उच्च का शुक्र होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। प्रथम संतति के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से विवाह विच्छेद योग बनता है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु गृहस्थ सुख में विवाद कराता है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में
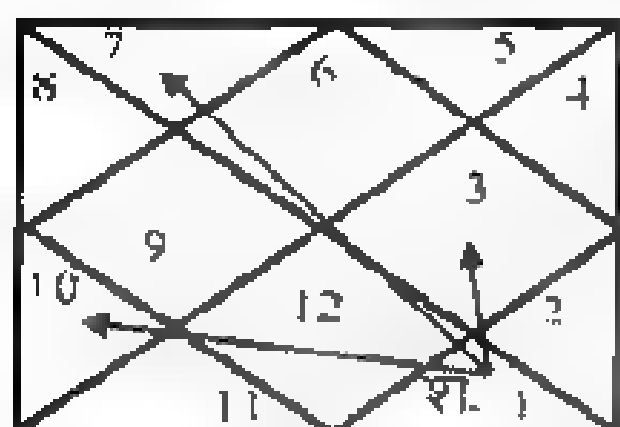
कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अतः शनि पापी एवं निष्फल योगकर्त्ता है। यहां अष्टम स्थान में शनि मेष (शत्रु) राशि में होगा। शनि यहां नीच राशि का है तथा 20 अंशो में परम नीच का होगा। शनि की यह स्थिति विलम्ब संतति योग, विद्या भंग योग बनाती है। परन्तु षष्टेश शनि अष्टम स्थान में होने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि होती है। इसके कारण जातक धनी होगा। वाहन व नौकर सुख भी होगा। परन्तु ऐसा जातक हठी एवं अपने मनमर्जी का मालिक होता है। जातक अभिमानी होता है। प्रायः दूसरों की सलाह मानना पसन्द नहीं करता।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि राज्य स्थान (मिथुन राशि) धन स्थान (तुला राशि) एवं पंचम स्थान (मकर राशि) पर होगी जो कि शनि की स्वराशि है। फलतः जातक का राज्य (सरकार) में रुतबा होगा। जातक धनी, विद्यावान व संतान युक्त होगा।

निशानी–जातक अपनी जाति से बाहर की स्त्रियों में रुचि रखेगा।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा मे जातक को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। वह भौतिक सुखों की प्राप्ति करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के अष्टम स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री, नीच का तो सूर्य उच्च का होने से 'नीचभग राजयोग' बनेगा। यहा शनि के कारण 'हर्ष योग' एवं सूर्य के कारण सरल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि हुई। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (मिथुन राशि), धन भाव (तुला राशि) एवं पंचम भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलतः जातक पुत्रवान व महाधनी होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं अपने शत्रुओं को समूल नष्ट करने वाला होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ यदि चंद्रमा हो तो जातक को पीलिया, यकृत रोग, उदर रोग, वायु विकार एवं खून की कमी रहेगी।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ मंगल विपरीत राजयोग करता है यहा हर्ष योग एव विमल योग दोनों योग बनेगे। जिससे जातक को लाभ होगा।
4. **शनि+मंगल**–जातक को दमे या फेफड़े की बीमारी संभव है गुप्त रोग होने से शल्य चिकित्सा संभव है।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से द्विभार्या योग बनेगा अथवा एक सगाई होकर छूट जायेगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' बनेगा। जातक को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से लम्बी बीमारी संभव है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु शल्य चिकित्सा योग का सकेत देता है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में

कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहा शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अतः शनि पापी एवं निष्फल
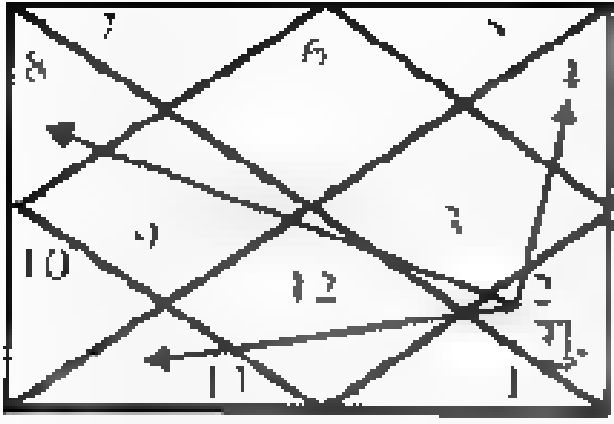
योगकर्ता है। यहा नवम भावगत शनि वृष (मित्र, राशि में होगा। पंचमेश शनि भाग्य में होने के कारण जातक का बौद्धिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास होगा। जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा। लाल किताब वालो ने इस शनि को 'आक के पेड़' की संज्ञा दी है। ऐसा जातक बोली का कडवा होता है एव दूसरों का भला नहीं करता। प्राय: अकेला चलने में विश्वास रखता है।

दृष्टि—नवम भावगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि), पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं षष्टम भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा। उसके शत्रु नष्ट होंगे। जातक व्यापार प्रिय होगा। व्यापार से धन कमायेगा।

निशानी—ऐसा जातक एकांकी जीवन बिताता है। जातक वीरता के लिए विख्यात होगा।

दशा—शनि की दशा अतर्दशा में जातक का भौतिक विकास होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—कन्यालग्न के नवम स्थान में शनि मित्र राशि में हो तो सूर्य शत्रु राशि में होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (कर्क राशि) पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) एव छठे स्थान (कुम्भ राशि) को देखेंगे। ऐसे जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा। जातक पराक्रमी होगा एव शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
2. **शनि+चद्र**—शनि के साथ लाभेश चंद्रमा होने से उच्च का होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा।
3. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध होने से जातक अविश्वासी व धोखेबाज होगा
4. **शनि+मंगल**—शनि के साथ अष्टमेश मगल होने से जातक का भाग्योदय में बाधा आयेगी।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र स्वगृही होने से जातक सौभाग्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के राहु होने से भाग्य में रुकावट महसूस करेंगे।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु भाग्योदय में बाधक है।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में

कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहा शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है अतः शनि पापी है। निष्फल योगकर्ता है यहां दशम स्थान में शनि मिथुन (मित्र) राशि में होगा जातक धनवान होगा। जातक न्यायप्रिय एवं न्यायाधीश होने की क्षमता रखता है। जातक शासक या मंत्री होता है। राजनीति में जातक उच्च पद तथा प्रसिद्धि को प्राप्त करता है जातक माता पिता का भक्त होता है। लाल किताब वालों ने इस शनि को किस्मत जगाने वाला मुसाफिर कहा है। जातक ऐश्वर्यशाली व तेजस्वी जीवन जीता है।

दृष्टि—दशमस्थ शनि की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि), चतुर्थ भाव (धनु राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक को उत्तम वाहन एवं भवन की प्राप्ति होती है। जातक खर्चीले स्वभाव का परोपकारी जीव होता है।

निशानी—जीवन के अंतिम समय में जातक पवित्र नदियों तीर्थस्थलो पर जाता है एवं संन्यासी हो जाता है

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक का आर्थिक व सामाजिक विकास होता है

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—कन्यालग्न के दशम स्थान में शनि व सूर्य दोनों ही केन्द्रवर्ती होकर मित्रक्षेत्री होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (सिंह राशि) चतुर्थ भाव (धनु राशि) एवं सप्तम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। फलतः राज्यपक्ष (सरकार) से विवाद रहेगा। शत्रुनाश एवं कोर्ट कचहरी को लेकर धन खर्च होगा। जातक की माता एवं पत्नी बीमार रहेगी। पिता से विचारधारा नहीं मिलेगी
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ लाभेश चंद्रमा होने से जातक राज्य में, सरकार में, उचित मान-सम्मान को प्राप्त करेगा।
3. **शनि+बुध**—शनि के साथ दशमेश बुध स्वगृही होने से 'भद्रयोग' बना। जातक राजा के समान प्रबल पराक्रमी होगा।

4. **शनि+मंगल**—शनि के साथ अष्टमेश मंगल होने से राजयोग में बाधा आयेगी
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से जातक धार्मिक नेता एवं राजनीति में प्रमुख व्यक्ति होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र होने से व्यक्ति भाग्यशाली एवं धनवान होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ स्वगृही राहु होने से जातक हठी राजा होगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु होने से जातक की सरकारी नौकरी में भटकाव आयेगा

कन्यालग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में
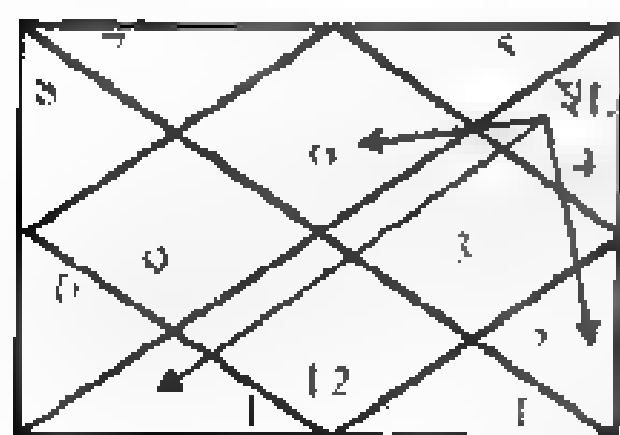
कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्ठेश है त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहा शनि को षष्ठेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अतः शनि पापी है। निष्फल योगकर्ता है। यहा एकादश स्थान में शनि कर्क (शत्रु) राशि में होगा। फिर भी जातक को विद्या लाभ, धन सम्पत्ति की प्राप्ति होगी जातक प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होगा। ऐसा जातक प्रायः उद्योगपति होता है। वह अनेक पुरुष महिलाओं को रोजगार पर लगाकर धन कमायेगा। लाल किताब वालों ने इस शनि को खुद का विधाता कहा है। जातक अपना भाग्य खुद बनाता है। जातक दीर्घजीवी होता है।

दृष्टि—एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि), पंचम स्थान (मकर राशि) एवं अष्टम स्थान (मेष राशि) पर होगी फलतः जातक विद्यावान होगा। जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सफल होगा

निशानी—जातक के मित्र बहुत कम होंगे।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक अनेक क्षेत्रों में लाभान्वित होता है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—कन्यालग्न के एकादश स्थान में शनि व सूर्य दोनों शत्रुक्षेत्री होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (कन्या राशि), पंचम भाव (मकर राशि) एवं अष्टम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलतः लाभ में कमी मन-मस्तिष्क अस्थिर रहेगा संतान पक्ष लिखी होगी। जातक दीर्घायु को प्राप्त होगा

2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ लाभेश चंद्रमा स्वगृही होने से जातक को व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।
3. **शनि+बुध**—शनि के साथ लग्नेश बुध शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक का मन उद्विग्न रहेगा। चित्त परेशान रहेगा।
4. **शनि+मंगल**—शनि के साथ अष्टमेश मंगल नीच का होगा। जातक के व्यापार-व्यवसाय में विवाद रहेगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति उच्च का होगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ भाग्येश शुक्र होने से जातक का भाग्योदय व्यापार में होगा। जातक उद्योगपति होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु होने से व्यापार में बाधाएं आयेंगी।
8. **शनि+केतु**—शनि के केतु होने से व्यापार में रुकावटें आयेंगी।

कन्यालग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में

7 8 5 श. 4 6 9 3 10 2 12 11 1

कन्यालग्न में शनि पंचमेश व षष्टेश है। त्रिकोण का अधिपति होते हुए भी यहां शनि को षष्टेश के दोष से मुक्ति नहीं मिली है। अतः शनि पापी है। निष्फल योगकर्ता है। यहां द्वादश स्थान में शनि सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शनि की यह स्थिति विलम्ब संतति योग, विद्याभंग योग बनाती है। परंतु षष्टेश शनि बारहवें जाने से हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना। फलतः जातक भाग्यशाली धनवान एवं सम्पन्न होगा। यात्राएं अधिक करेगा। जातक यदि सुस्त और आलसी रहा तो एकत्रित धन का नाश होगा। व्यापार में अतिविश्वास के कारण जातक को हानि उठानी पड़ेगी।

दृष्टि—द्वादश भावगत शनि की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि), छठे स्थान (कुम्भ राशि) एवं भाग्य स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान एवं भाग्यशाली होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—जातक की आंखें भैंगी होगी या कोई अंग विकृत होगा

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में खर्च बढ़ेगा, पर भौतिक उपलब्धियां की प्राप्ति भी होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–कन्यालग्न के द्वादश स्थान में शनि शत्रुक्षेत्री और सूर्य स्वगृही होगा। जातक को नेत्र पीड़ा होगी। इन दोनों ग्रहों की इस स्थिति से हर्ष योग व सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि धन भाव (तुला राशि), षष्टम भाव (कुम्भ राशि) एवं भाग्य भाव (वृष राशि) पर होगी, फलत: जातक महाधनी, भाग्यशाली तथा ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ लाभेश चंद्रमा होने से जातक को व्यापार-व्यवसाय में नुकसान होगा।
3. **शनि+बुध**–शनि के साथ लग्नेश बुध होने से जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलेगा। कोई भी कार्य प्रथम प्रयास में सफल नहीं होगा।
4. **शनि+मंगल**–शनि के साथ अष्टमेश मंगल बारहवें होने से विमल नामक विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी होगा पर डबल मांगलिक होने से जातक के विवाह में विलम्ब या व्यवधान होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ सप्तमेश बृहस्पति होने से 'द्विभार्या योग' बनता है जातक की एक सगाई होकर छूट जाएगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ भाग्येश शुक्र होने से भाग्योदय एवं धनोपार्जन में बाधाएं आयेंगी।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से यात्रा में चोरी व धोखा होगा
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु होने से यात्रा अप्रिय रहेगी। जातक द्वारा उधार दिया हुआ पैसा डूब जायेगा।

❑❑❑

कन्यालग्न में राहु की स्थिति

कन्यालग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में
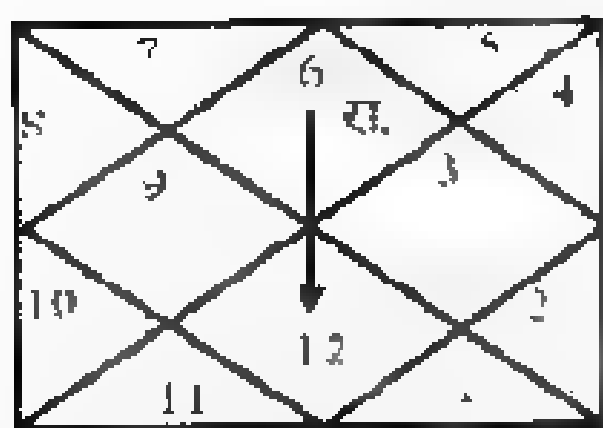
कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न से ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां लग्नस्थ राहु कन्या (मित्र) राशि में ही है। राहु की यह स्थिति राजयोग प्रदायक है ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी होता है उसमें आत्म विश्वास कूट-कूट कर भरा होता है जातक में आंतरिक विश्वास विलक्षण होता है। जातक प्रायः जादू टोना व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है। लग्नेश बुध की स्थिति यदि प्रतिकूल हो तो जातक के सभी संबंधी उसके शत्रु हो जायेंगे। जातक निरुद्देश्य घूमता रहेगा।

दृष्टि—राहु की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी जातक के गृहस्थ सुख में कुछ न-कुछ न्यूनता (कमी) बनी रहेगी।

निशानी—ऐसा जातक जीवन की असफलताओं से आगे बढ़ने की प्रेरणा प्राप्त करता है

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक भड़कीले व उग्र स्वभाव का होगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ लाभेश चंद्रमा जातक के लाभ प्राप्ति के कार्यों में बाधक सिद्ध होगा

3. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा अथवा राजा से कम नहीं होगा।

4. **राहु+मंगल**—राहु के साथ अष्टमेश मंगल जातक को पराक्रमी व झगड़ालू बनायेगा।

5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह प्रथम स्थान कन्या राशि में होंगे, राहु अपनी मित्र राशि एवं बृहस्पति शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा, इस योग के कारण जातक हठी, आध्यात्मिक होते हुए भी कुटिल स्वभाव का होगा, ऐसा जातक प्रायः धार्मिक आडम्बर किया करेगा।

6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ षष्टेश शनि जातक के शत्रु पैदा करता रहेगा।

7. **राहु+शनि**—राहु के साथ भाग्येश शुक्र जातक को धनवान एवं भाग्यशाली बनायेगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में

कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है, कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है, इसलिए यह राहु के स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां द्वितीय भाव में राहु तुला (मित्र) राशि का होगा, ऐसे जातक को कष्ट, संघर्ष, आर्थिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। धन का संग्रह नहीं हो पायेगा, पर धन की कमी को लेकर जातक का कोई काम अटका हुआ नहीं रहेगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को राजगुरु का मानदण्ड कहा है, ऐसा जातक राजनेताओं का मार्गदर्शक होता है।

दृष्टि—राहु की दृष्टि अष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। राहु की यह स्थिति जातक की दीर्घायु में बाधक है।

निशानी—जातक अभागी गरीबी की छाया में पलकर बड़ा होता है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा में धनहानि या मानहानि की संभावना बनी रहती है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ व्ययेश सूर्य होने से धन की भारी हानि होने की संभावना बनी रहेगी।

2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ लाभेश चंद्रमा लाभ करायेगा, पर लाभ का काफी प्रतिशत व्यर्थ में चला जायेगा।

3. **राहु+बुध**–राहु के साथ लग्नेश बुध होने से जातक को धनार्जन कठोर परिश्रम से होगा।
4. **राहु+मंगल**–राहु के साथ अष्टमेश मगल होने से जातक की वाणी दूषित होगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह द्वितीय स्थान में तुला राशि के होंगे। राहु यहां मित्र राशि में एव बृहस्पति शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बनेगा। इस योग के कारण जातक दार्शनिक, सच्चाई का साथ देने वाला परोपकारी होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ भाग्येश शुक्र होने से जातक धनवान तथा भाग्यशाली होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ षष्ठेश शनि होने से शत्रुओं से बीच बचाव में जातक का धन खर्च होगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में
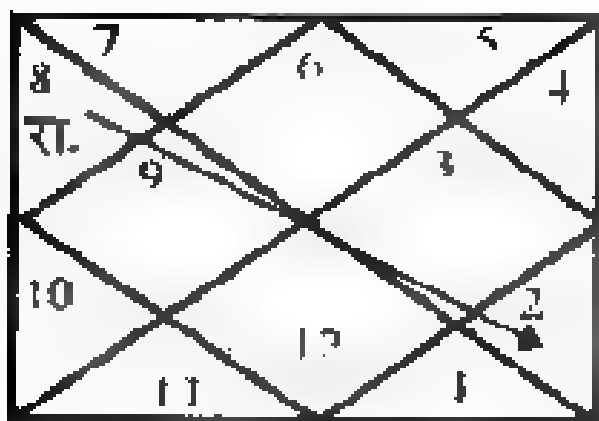
कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहा तीसरे स्थान में राहु वृश्चिक (मीन) राशि का होगा। ऐसा जातक अपनी उन्नति के लिए बुरे से बुरा काम करने के लिए नहीं हिचकिचायेगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को अगरक्षक कहा है। ऐसा जातक, दूसरों की रक्षा के लिए अपने प्राण दे देगा। राहु की यह स्थिति जातक के भाईयों के लिए साधारणतः ठीक नहीं होती। भाई कुटुम्बीजनों में मनमुटाव रहेगा। मित्र दगा देंगे।

दृष्टि–तृतीयस्थ राहु की दृष्टि नवम स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलत. जातक के भाग्य में कुछ-न कुछ न्यूनता का अनुभव रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक साम दाम दण्ड भेद की नीति से अपना काम निकालने में माहिर होता है।

दशा–राहु की दशा-अतर्दशा में अप्रत्याशित समाचार मिलेंगे तथा विरोधियों का सामना करना पड़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक का पराक्रम भग होगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ लाभेश चद्रमा नीच का होगा। फलतः भाई-बहनों में मनमुटाव होगा

3. **राहु+बुध**–राहु के साथ लग्नेश तृतीय स्थान में होने से पराक्रम तेज रहेगा।
4. **राहु+मंगल**–राहु के साथ अष्टमेश मंगल होने से भाइयों में विरोध रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां बृहस्पति मित्र राशि में तो राहु अपनी नीच (वृश्चिक) राशि में होगा, फलतः 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य नहीं खोता। परिजनों व मित्रों से कभी सहयोग, कभी असहयोग मिलता रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ धनेश, भाग्येश शुक्र होने से जातक को बहनों से लाभ होगा। स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ षष्टेश शनि तृतीय स्थान में होने से बड़े भाई से बैर रहेगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
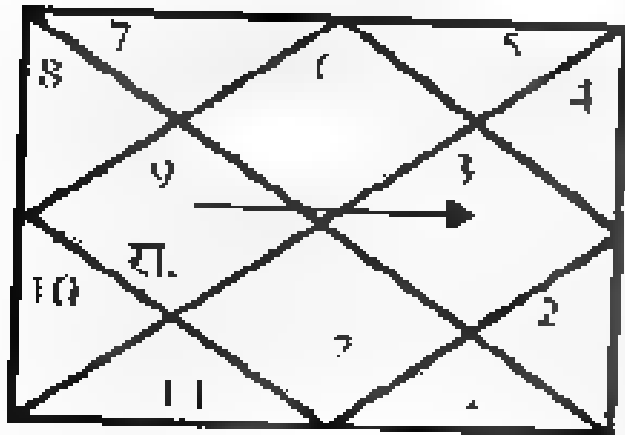
8	7	6	5
9	3 →	4	
10	रा. 9	2	
11	12	1	

कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु की स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा, चतुर्थ स्थान में राहु धनु (शत्रु) राशि में होगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'धर्मी' कहा है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक व परोपकारी होता है। परन्तु जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। माता-पिता का अल्प सुख मिलता है। वाहन से दुर्घटना संभव है। भूमि-भवन के मामले को लेकर विवाद होगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ राहु की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को राजा (सरकार) द्वारा सम्मान मिलता है।

निशानी–जातक की शिक्षा अधूरी रह जाती है।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा में जातक कपट कार्य हेतु दोषी ठहराया जायेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति में बाधा आयेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–चतुर्थ स्थान में राहु के साथ व्ययेश सूर्य होने से जातक की माता बीमार रहेगी
2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा राहु के साथ होने से जातक की माता को कष्ट, मामा से अनबन संभव है।

3. **राहु+बुध**—लग्नेश बुध राहु के साथ होने से जातक को सुख-ससाधनों में कमी महसूस होगी।
4. **राहु+मंगल**—अष्टमेश मगल राहु के साथ होने से वाहन से दुर्घटना संभव है।
5. **राहु+गुरु**—यहा बृहस्पति के कारण हस योग, केसरी योग, कुलदीपक योग बना। राहु यहां शत्रु राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होते हुए भी माता का सुख प्राप्त नही कर पायेगा।
6. **राहु+शुक्र**—धनेश, भाग्येश शुक्र यदि राहु के साथ हो तो जातक भाग्यशाली एव धनवान होगा परन्तु जातक की जाति या समाज में प्रतिष्ठा नही होगी।
7. **राहु+शनि**—षष्टेश शनि राहु के साथ होने से मामा, ननिहाल व मातृ पक्ष को कष्ट होगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में
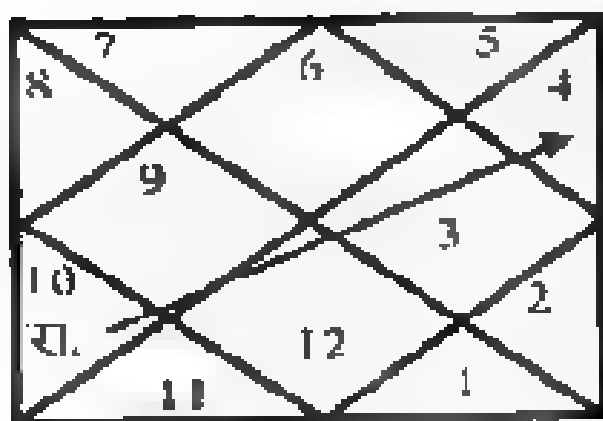
7 6 5 8 4 9 3 10 रा. 2 12 11 1

कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नही करेगा। यहां पचमस्थ राहु मकर (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक का उदर शूल होगा। जातक अपने मित्रो द्वारा गलत समझा जायेगा। 'लाल किताब' वालों ने इस राहु को 'शरारती' कहा है। ऐसे जातक को पुत्र सुख विलम्ब से मिलता है जातक प्रायः व्यर्थ के वाद-विवाद में उलझा रहेगा अथवा हृदय रोग से पीडित होगा

दृष्टि—पंचमस्थ राहु की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः व्यापार व्यवसाय में प्रारम्भिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा

निशानी—जातक के अनेक बच्चों की मृत्यु होगी व गर्भस्थ शिशु का नाश होगा।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक को मिश्रित फल मिलेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य पचम स्थान में शत्रुक्षेत्री होकर राहु के साथ संतान प्राप्ति में हानि करायेगा तथा बाधक होगा
2. **राहु+चद्र**—लाभेश चंद्रमा पचम स्थान पर राहु के साथ लाभकारी स्थिति का द्योतक है। जातक को संघर्ष के बाद विद्या प्राप्ति में सफलता मिलेगी

3. **राहु+बुध**—लग्नेश बुध राहु के साथ होने से जातक बुद्धिमान होगा।
4. **राहु+मंगल**—अष्टमेश मंगल राहु के साथ होने से विद्या व संतति प्राप्ति में बाधा के योग बनते है।
5. **राहु+गुरु**—बृहस्पति यहां नीच राशि में तथा राहु अपनी मित्र (मकर राशि) में होने से यहां 'चाण्डाल योग' बना। जातक को उच्च विद्या एवं पुत्र संतति प्राप्ति की प्राप्ति में रुकावट सम्भव है। जातक ब्रह्मज्ञानी होगा।
6. **राहु+शुक्र**—धनेश, भाग्येश शुक्र राहु के साथ होने से जातक का भाग्य कुंठित होगा।
7. **राहु+शनि**—षष्ठेश शनि राहु के साथ होने से जातक की संतान रोगी होगी

कन्यालग्न में राहु की स्थिति षष्टम् स्थान में
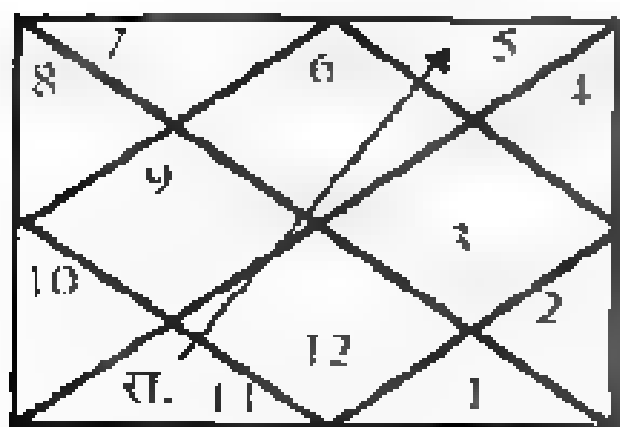
8, 7, 6, 5, 4, 9, 3, 10, 2, 12, रा. 11, 1

कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। छठे स्थान में यहां राहु कुम्भ (मित्र) राशि में होगा शास्त्रकारों ने छठे राहु को राजयोग कारक माना है फलत: ऐसा जातक लम्बी उम्र वाला एवं धनी व्यक्ति होता है। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'फांसी काटने वाला मददगार हाथी कहा' कहा है ऐसे व्यक्ति को कोई भी बाधा अधिक समय तक पीड़ित नहीं कर सकती। ऐसे जातक को प्रेतो से कष्ट और गुप्तांग में रोग होता है।

दृष्टि—षष्टमस्थ राहु की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक परोपकारी एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी—ऐसा जातक भाग्यवादी न होकर कठोर पुरुषार्थ द्वारा भाग्य को बदलने का सामर्थ्य रखता है। जातक के अनेक चचेरे भाई होंगे।

दशा—राहु के दशा-अंतर्दशा में रोगोत्पत्ति संभव है। इसकी दशा में सामाजिक व राजनैतिक संघर्ष संभव है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य छठे स्थान में राहु के साथ विपरीत राजयोग बनायेगा जातक धनी होगा।

2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्रमा हो तो जातक विक्षिप्त होगा। जातक मनोव्याधि से ग्रसित होगा।
3. **राहु+बुध**—लग्नेश बुध राहु के साथ होने से जातक का परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **राहु+मंगल**—अष्टमेश मंगल राहु के साथ होने से भाईयों में विरोध रहेगा।
5. **राहु+गुरु**—बृहस्पति कुम्भ (शत्रु) राशि एवं राहु मित्र राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है। पत्नी से वैचारिक मतभेद संभव है जातक अपनी योग्यता का दुरुपयोग करने से नहीं चूकेगा।
6. **राहु+शुक्र**—धनेश, भाग्येश शुक्र राहु के साथ होने से जातक को धन प्राप्ति में बाधा होगी एव वह भाग्योदय में रुकावट महसूस करेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि हो तो जातक विक्षिप्त अथवा मनोव्याधि से ग्रसित होगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में
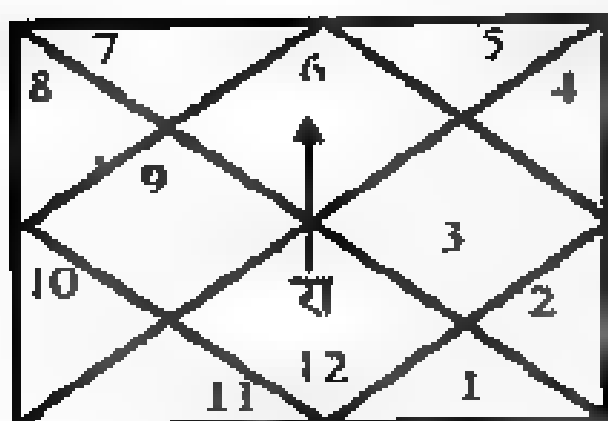
7 6 5 8 4 9 3 10 रा 2 11 12 1

कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां सप्तमस्थ राहु मीन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक की पत्नी प्रायः रोगग्रस्त रहती है। जातक विजातीय एव विदेशी स्त्रियों में रुचि रखता है। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'दौलत का धुंआ निकालने वाला चाण्डाल' कहा है। जातक अपने ऐशो-आराम के लिए धन का अपव्यय करेगा। उसे साझेदारी एवं गुप्त व्यापार से नुकसान उठाना पड़ेगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ राहु की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी।

निशानी—जातक मधुमेह, प्रेतों एवं अप्राकृतिक वस्तुओं से पीड़ित रहता है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य सप्तम स्थान में होने से जातक का विवाह विलम्ब से होगा। जातक को पत्नी का, गृहस्थ जीवन का पूर्ण सुख नहीं मिलेगा।
2. **राहु+चंद्र**—लाभेश चंद्रमा सप्तम स्थान में होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर उनमें वैचारिक मतभेद रहेंगे।

3. **राहु+बुध**—लग्नेश बुध सप्तम स्थान में राहु के साथ होने से जातक की पत्नी बुद्धिशाली होगी तथा जातक की उन्नति में सहायक होगी।

4. **राहु+मंगल**—

5. **राहु+गुरु**—बृहस्पति स्वगृही होने के कारण कुलदीपक योग, केमद्रुम योग, हंस योग बनायेगा। राहु शत्रुक्षेत्री होने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होते हुए भी निम्न हरकत करने वाला, अपने से बड़ी उम्र वाली एवं विधवा स्त्री से सहवास करता है, सम्पर्क रखता है।

6. **राहु+शुक्र**—धनेश भाग्येश शुक्र राहु के साथ होने से जातक की पत्नी सुन्दर पर कामी होगी।

7. **राहु+शनि**—षष्ठेश शनि सप्तम स्थान में राहु के साथ होने से जातक के जीवन साथी को गुप्त बीमारी रहेगी।

कन्यालग्न मे राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
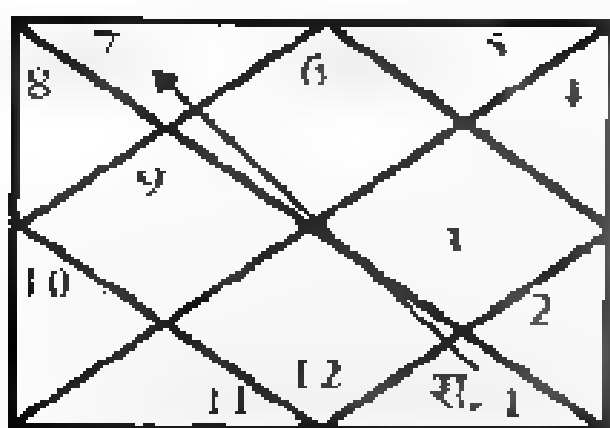
कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां अष्टमस्थ राहु मेष (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को गुप्त शत्रु, दैहिक कष्ट व दुर्घटना का भय रहेगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'कड़वा धुआं' कहा है। ऐसा जातक अच्छे परिवार में जन्म लेकर भी गंदी हरकतों के कारण लोकनिंदा से पीड़ित होगा। जातक प्रायः मानसिक तनाव मे रहता है अथवा हीनभावना से ग्रसित होता है

दृष्टि—अष्टमस्थ राहु की दृष्टि धन भाव (तुला राशि) पर होगी फलतः जातक का धन की हानि एवं पारिवारिक कष्ट होंगे। जातक बोली का कड़वा होगा।

निशानी—ऐसे जातक सीधे रास्तो पर नहीं चलते, कटकाकीर्ण मार्ग ही उन्हें पसद होता है।

दशा—राहु की दशा-अतर्दशा में जातक को दैहिक, आर्थिक एवं सामाजिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य अष्टम स्थान में राहु के साथ उच्च का विपरीत राजयोग बना रहा है जातक धनी एवं महान पराक्रमी होगा।

2. **राहु+चंद्र**—लाभेश चद्रमा अष्टम स्थान में राहु के साथ होने से व्यापार में लाभ का प्रतिशत तोड़ेगा। व्यापार में अचानक नुकसान होगा।
3. **राहु+बुध**—लग्नेश आठवें राहु के साथ 'लग्नभग योग' बनायेगा जातक को परिश्रम का लाभ नही मिलेगा।
4. **राहु+मंगल**—अष्टमेश मगल स्वगृही होकर अष्टम भाव में राहु के साथ विपरीत राजयोग बनायेगा। जातक धनी व पराक्रमी होगा।
5. **राहु+गुरु**—बृहस्पति के कारण विवाहभंग योग सुख भगयोग बनेगा परंतु राहु यहा शत्रुक्षेत्र में होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक के गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी। प्रत्येक भौतिक उपलब्धि कुछ मुसीबत लेकर आयेगी।
6. **राहु+शुक्र**—धनेश व भाग्येश शुक्र अष्टम भाव मे राहु के साथ होने से धनार्जन में रुकावट का संकेत देता है। जातक का भाग्योदय काफी संघर्ष के बाद होगा।
7. **राहु+शनि**—षष्टेश शनि अष्टम स्थान में राहु के साथ हर्षनामक विपरीत राजयोग बनायेगा। जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति नवम् स्थान में
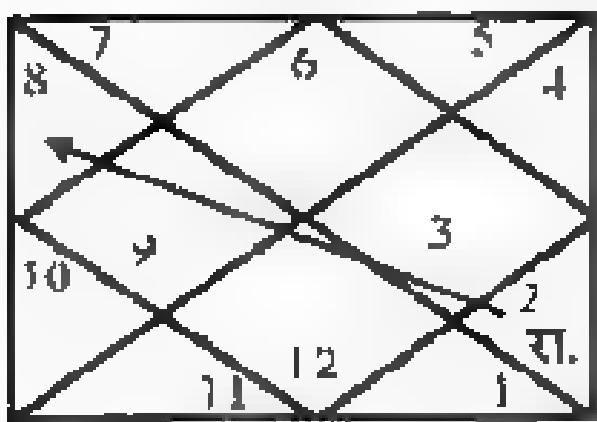
7 6 5 4 8 9 3 10 2 रा. 12 11 1

कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न से ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां नवम भावगत राहु वृष राशि में उच्च का होगा। ऐसे व्यक्ति का राजा तुल्य पराक्रम एव वैभव होता है। साहस, पराक्रम और वीरता इनमें कूट-कूट कर भर होती है। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'पागलों का सरताज हकीम' कहा है। ऐसा जातक स्व प्रयासों से प्राय: उलझे हुए जटिल मामलों को सुलझा देता है

दृष्टि—नवम भावगत राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी जातक अपने परिवार व कुटुम्ब का चहेता तथा मित्रो का मददगार होता है।

निशानी—जातक की पत्नी निरंकुश और पति को तंग करने वाली होगी।

दशा—राहु की दशा-अतर्दशा में जातक धन-सम्पति एवं वैभव की प्राप्ति करता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य नवम भाव में राहु के साथ होने से भाग्य में रुकावट का संकेत देता है

2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा नवम भाव में उच्च का होकर भाग्य भवन में व्यापार में अचानक लाभ का संकेत देता है।

3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध नवम भाव में राहु के साथ होने से जातक बुद्धिबल से धन कमायेगा।

4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल नवम स्थान में राहु के साथ होने से भाग्य में रुकावट का संकेत देता है।

5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति यहां शत्रु राशि में है जबकि राहु यहां उच्च (वृष) का होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक को पिता पक्ष, राज्य पक्ष से धोखा होगा।

6. **राहु+शुक्र**–धनेश भाग्येश शुक्र नवम भाव में राहु के साथ अचानक भाग्य में उन्नति दिलायेगा।

7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि नवम भाव में राहु के साथ होने से भाग्य में बाधक है

कन्यालग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में
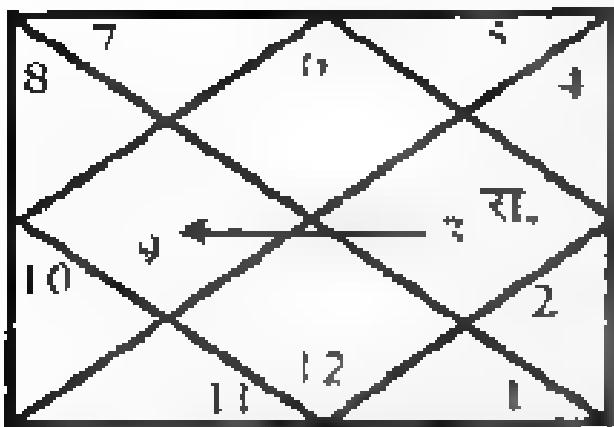
कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। यहां दशम स्थान में राहु मिथुन राशि में स्वगृही है दशम भाव में राहु की बड़ी भारी महिमा है यह राहु राजयोग प्रदाता है। यह राहु जातक को समुचित धन, यश व प्रतिष्ठा दिलायेगा लाल किताब वालों ने इस राहु को सांप की मणि कहा है। ऐसा जातक दौलतमंद होता है व खतरों से खेलता है। ऐसा जातक राजनीति में महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप रखेगा। जातक दुस्साहसी होगा।

दृष्टि–दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी फलतः ऐसे जातक के पास सुन्दर वाहन एवं भवन होता है।

निशानी–ऐसा जातक विधवा स्त्रियों में रुचि रखेगा। उसके बच्चे कम होंगे

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य दशम भाव में राहु के साथ होने से जातक को सरकार कोर्ट-कचहरी से धोखा हो सकता है।
2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा दशम भाव में शत्रुक्षेत्र में होने से लाभ का प्रतिशत तोड़ेगा। सरकारी अधिकारी पीठ पीछे से वार करेंगे।
3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध स्वगृही होने से 'भद्र योग' बनेगा। ऐसा जातक राजा होगा पर हठी होगा। जातक राजा से कम नहीं होगा।
4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल दशम भाव में राहु के साथ होने से जातक को सरकारी दण्ड मिलेगा।
5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति यहां शत्रु राशि में होगा जबकि राहु स्वगृही (मिथुन राशि में) होगा। फलतः 'चाण्डाल योग' बना। जातक नेता होगा, परन्तु निम्न मनोवृत्ति वाला, स्वार्थी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति होगा।
6. **राहु+शुक्र**–दशम भाव में भाग्येश, धनेश शुक्र राहु के साथ हो तो अचानक लाटरी, सट्टे, शेयर से धन मिलेगा।
7. **राहु+शनि**–दशम भाव में षष्ठेश शनि राहु के साथ हो तो जातक को पुत्र द्वारा कष्ट मिलेगा।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में
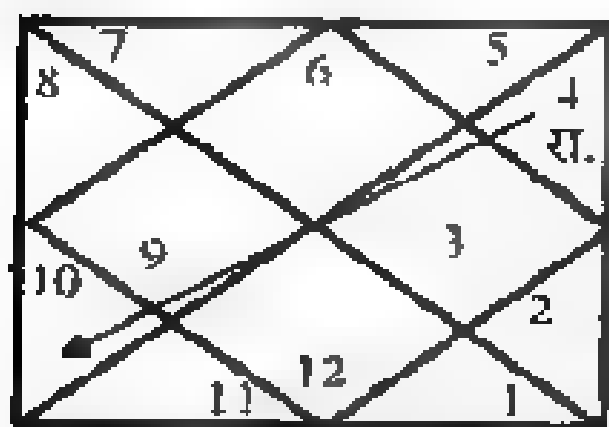
7	6	5
8		4 रा.
9		3
10		2
11	12	1

कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है। कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है। इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा। एकादश भावगत राहु यहा कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक के जीवन में भौतिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक दिक्कतें आती हैं। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'कष्ट कारक' माना है। ऐसे जातक की वजह से आयु में बड़े भाई-बहनो को कष्ट उठाना पड़ता है। जातक जल-थल सेना में उच्च अधिकारी हो सकता है। जातक कुछ नया करने का जोश रखता है। जातक का मनोबल ऊंचा होता है।

दृष्टि–एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम स्थान (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक की विद्या प्राप्ति में रुकावट संभव है।

निशानी–जातक को कान की बीमारी होगी। प्राय: जातक को ज्येष्ठ सहोदर के सुख का अभाव होता है।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा में संघर्ष की स्थिति व दिक्कतें आयेंगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य लाभ स्थान में राहु के साथ लाभ प्राप्ति में बाधक है।
2. **राहु+चंद्र**–लाभेश चंद्र लाभ स्थान में स्वगृही होकर राहु के साथ होने से चिंतादायक स्थिति बनायेगा।
3. **राहु+बुध**–लग्नेश बुध एकादश में राहु के साथ परिश्रम में भटकाव लायेगा।
4. **राहु+मंगल**–अष्टमेश मंगल लाभ स्थान में नीच का लाभ तोड़ेगा।
5. **राहु+गुरु**–बृहस्पति यहां उच्च का होगा परन्तु राहु शत्रु (कर्क राशि) का होगा। यहां दोनों की युति से 'चाण्डाल योग' बना। जातक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कीर्ति अर्जित करता हुआ भी बदनाम होगा।
6. **राहु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र एकादश स्थान में राहु के साथ हो तो हल्की रुकावट के बाद धन लाभ होकर भाग्योदय होगा।
7. **राहु+शनि**–षष्टेश शनि लाभ स्थान में हो तो व्यापार में रुकावट का संकेत देता है।

कन्यालग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में
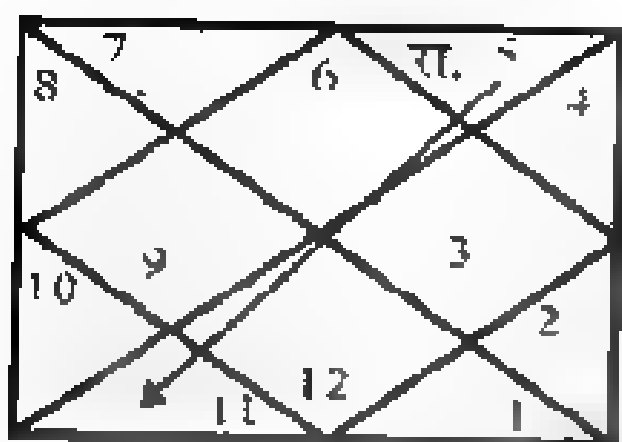
कन्यालग्न में राहु लग्नेश बुध का मित्र है कन्या राशि राहु की स्वराशि भी कही गई है इसलिए यह राहु का स्वयं का लग्न होने से राहु कन्यालग्न में ज्यादा नुकसान नहीं करेगा, द्वादश भावगत राहु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। जातक घुमक्कड़ एवं खर्चीले स्वभाव का होगा। लाल किताब वालों ने इस राहु को 'शेखचिल्ली' कहा है। ऐसा जातक प्राय: बढ़-चढ़कर व्यर्थ की बातें करता है जो सच्चाई से कोसों दूर होती हैं। बिना सोच-समझकर काम करने से कई बार ऐसा जातक मुसीबत में उलझ जाता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ राहु की दृष्टि छठे भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलत: जातक के गुप्त शत्रु अवश्य होते हैं।

निशानी–जातक की आंखों में कष्ट होगा।

दशा—राहु की दशा अतर्दशा में व्यर्थ की यात्राएं होंगी। जातक के खर्चे फालतू बढ़ जायेंगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—जातक की दाईं आंख (Right eye) में पीड़ा होगी।
2. **राहु+चंद्र**—जातक की बाईं (Left eye) आंख में पीड़ा होगी।
3. **राहु+बुध**—लग्नेश बुध व्यय भाव में राहु के साथ होने से परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा
4. **राहु+मंगल**—अष्टमेश मंगल व्यय भाव में राहु के साथ अचानक दुर्घटना करायेगा।
5. **राहु+गुरु**—बृहस्पति यहां मित्र राशि में है परन्तु राहु शत्रु राशि (सिंह) में होगा। फलत: यहां 'चाण्डाल योग' बना। जातक घुमक्कड़, परोपकारी एवं शठ होगा। वह तीर्थ स्थलों में भी गड़बड़ी करने में नहीं चूकेगा।
6. **राहु+शुक्र**—धनेश, भाग्येश, शुक्र द्वादश भाव में राहु के साथ होने से धन हानि करायेगा।
7. **राहु+शनि**—षष्टेश शनि व्यय भाव में राहु के साथ हो तो बीमारी में धन खर्च करायेगा।

❑❑❑

कन्यालग्न में केतु की स्थिति

कन्यालग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
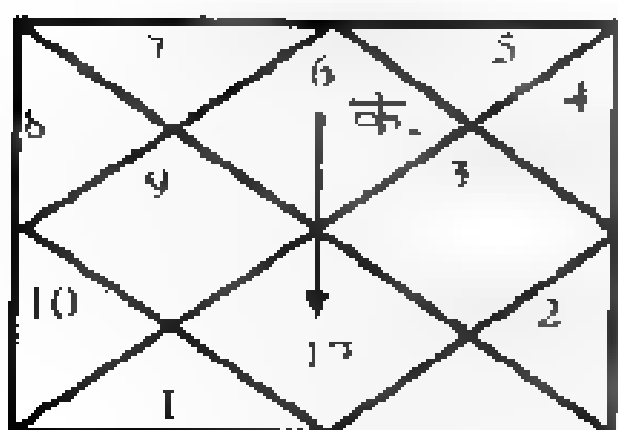
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न मे केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। केतु यहा प्रथम स्थान मे कन्या राशि में स्वगृही (मूलत्रिकोण) में होगा। ऐसे जातक का शरीर पतला या कमजोर रहेगा। प्राय. बीमारी मे औषधिया काम नहीं कर पायेंगी तंत्र मंत्र से आध्यात्मिक ऊर्जा मिलगी। यदि सप्तमेश बृहस्पति की स्थिति भी प्रतिकूल हो तो 'द्विभार्या योग' बनेगा

दृष्टि–लग्नस्थ केतु की दृष्टि सप्तम भाव (मीन राशि) पर होगी। वैवाहिक (गृहस्थ) सुख में तनाव रहेगा।

निशानी–अधिक गर्मी के कारण शरीर पर फोड़े-फुसी होंगे। जातक का उच्च स्थान से गिरने का भय रहगा।

दशा–केतु की दशा-अतर्दशा मे जातक संघर्ष के साथ उन्नति करेगा

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–व्ययेश सूर्य लग्न में केतु के साथ होने से जातक गलत निर्णय लेने का अभ्यासी होगा।
2. **केतु+सूर्य**–लाभेश चद्रमा केतु के साथ शत्रुक्षेत्री होन से लाभ के बारे में गलत भ्रम फैला रहेगा।
3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध उच्च के केतु के साथ होने से जातक राजा का कम नहीं होगा तथा बहुत प्रसिद्ध व्यक्ति होगा।

4. **केतु+मंगल**—अष्टमेश मगल लग्न में केतु के साथ होने से जातक लड़ाकू होगा पर लडाई झगड़े में सदैव विजयी होगा।

5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश गुरु लग्न मे केतु के साथ से जातक को पत्नी सुन्दर किन्तु तेज स्वभाव की होगी।

6. **केतु+शुक्र**—भाग्येश, धनेश शुक्र लग्न में होने से जातक भाग्यशाली एव धनी होगा।

7. **केतु+शनि**—षष्टेश शनि लग्न में केतु के साथ होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में
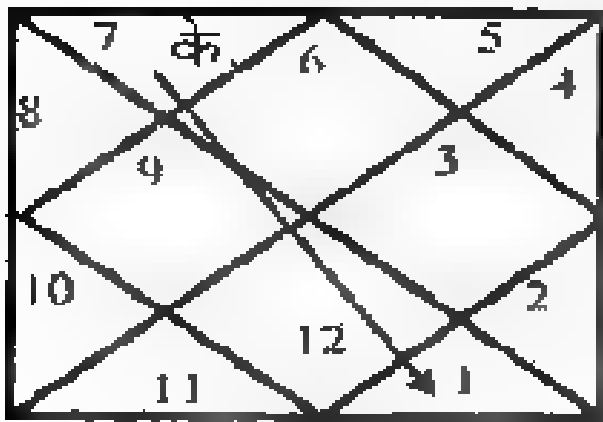
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न मे केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहा द्वितीय स्थान में केतु तुला (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक मनोवांछित धन एकत्रित नहीं कर पायेगा। लाल किताब वालो ने इस केतु को अच्छा हुक्मरान कहा है। ऐसा व्यक्ति वाचाल होता है। दूसरों पर ज्यादा हुक्म चलाता है। कुटुम्ब में भी कड़वाहट रहेगी।

दृष्टि—केतु की दृष्टि अष्टम स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक को गुप्त बीमारी सभव है।

निशानी—यहां केतु धन के घडे में छेद को बताता है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा धन संग्रह में बाधक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—व्ययेश सूर्य धन स्थान में नीच का होकर केतु के साथ होने से धन का अपव्यय होगा।

2. **केतु+सूर्य**—लाभेश चद्रमा धन स्थान में केतु के साथ होने से धनागमन तो होगा पर बचत नहीं हो पायगी।

3. **केतु+बुध**—लग्नेश बुध धन स्थान केतु के साथ होने से धन की प्राप्ति पुरुषार्थ द्वारा अवश्य होगी।

4. **केतु+मंगल**—अष्टमेश मगल धन स्थान में केतु के साथ होने से धन प्राप्ति में बाधा, वाणी में कड़वाहट रहगी।

5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश बृहस्पति धन स्थान में केतु के साथ होने से सुख प्राप्ति में बाधा आयेगी।

6. **केतु+शुक्र**—धनेश व लाभेश शुक्र स्वगृही होकर केतु के साथ जातक को धनी तो बनायेगा पर धन का क्षरण होता रहेगा।

7. **केतु+शनि**—षष्टेश शनि द्वितीय स्थान में केतु के साथ उच्च का होकर विपरीत राजयोग बनायेगा। जातक धनवान होगा एवं गलत तरीके से धन कमायेगा

कन्यालग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में
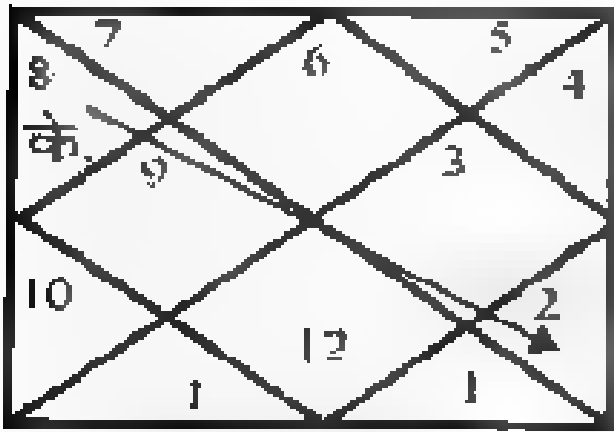
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत. कन्यालग्न मे केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां तृतीय स्थान में केतु वृश्चिक (उच्च) राशि में है। तृतीय स्थान मे केतु 'कीर्ति पताका' कहलाता है। जातक को समाज मे, मित्रों मे, कुटुम्ब में यश मिलेगा। लेखनी से यश मिलेगा। जनसंपर्क से लाभ होगा कीर्ति देश विदेश में फैलेगी। जातक कुटुम्बी प्रेमी होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ केतु की दृष्टि भाग्य भवन (वृष राशि) पर होगी फलत: जातक भाग्यादय में हल्की रुकावट महसूस करेगा।

निशानी—जहां समझौते के अन्य उपाय निरर्थक साबित होते हैं वहा यह जातक डांट डपट मे काम निकलवाने में सफलता प्राप्त करेगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा मे जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चद्र**—व्ययेश सूर्य तृतीय स्थान मे कतु के साथ मित्रों में मतभेद उत्पन्न करेगा फिर भी जातक कुख्यात व्यक्ति होगा।

2. **केतु+सूर्य**—लाभेश चंद्रमा तृतीय स्थान मे नीच का होगा, केतु के साथ होने से विषभोजन का भय रहेगा। फेफड़े का ऑपरेशन हो सकता है।

3. **केतु+मंगल**—लग्नेश बुध तृतीय स्थान में केतु के साथ होने से भाई-बहनों का सुख होगा। परिवार भरा-पूरा होगा।

4. **केतु+बुध**—अष्टमेश मंगल तृतीय स्थान मे स्वगृही होकर केतु के साथ होने से तीन से अधिक भाई होंगे। चचेरे भाईयों की भी कमी नही होगी।

5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश बृहस्पति तृतीय स्थान में स्वगृहाभिलाषी होकर केतु के साथ होने से बड़े भाई का सुख होगा। जातक कीर्तिवान होगा।
6. **केतु+शुक्र**—धनेश भाग्येश शुक्र तृतीय स्थान में केतु के साथ हो, तो जातक को बहनों व बुआ का सुख मिलेगा।
7. **केतु+शनि**—षष्टेश शनि तृतीय स्थान में केतु के साथ हो तो जातक के भाई बीमार रहेंगे।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
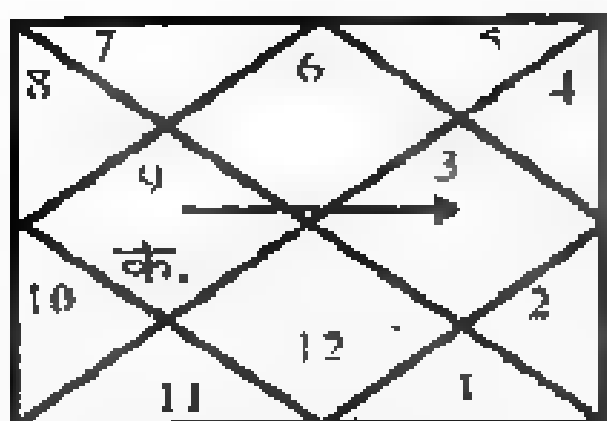
कन्यालग्न मे केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अतः कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहा चतुर्थ स्थान में केतु धनु राशि में स्वगृही होगा। जातक के पास वाहन अवश्य होगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'डरावना कुत्ता' कहा है। ऐसा कुत्ता जो काटता नहीं है। अशुभ की आशंका बनी रहेगी पर अशुभ होगा नही जातक का घर का मकान होगा। जातक की उन्नति 36 वर्ष की आयु के बाद होगी.

दृष्टि—चतुर्थस्थ केतु की दृष्टि दशम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। राज्य (सरकार) से परेशानी होगी।

निशानी—जातक की मा बीमार रहेगा। माता का सुख कमजोर होगा।

दशा—केतु के दशा-अंतर्दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य चतुर्थ भाव में केतु के साथ होने से वाहन को लेकर अचानक खर्च करायेगा।
2. **केतु+चंद्र**—लाभेश चंद्र चतुर्थ स्थान में केतु के साथ होने से माता की शल्य चिकित्सा का संकेत देता है
3. **केतु+बुध**—लग्नेश बुध चतुर्थ भाव में केतु के साथ होने से जातक को यथेष्ट ख्याति देगा।
4. **केतु+मंगल**—अष्टमेश मगल चतुर्थ स्थान में केतु के साथ होने से जमीन व मकान को लेकर भारी खर्च करायेगा।

5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश बृहस्पति चतुर्थ स्थान के केतु के साथ व्यक्ति को 'हंस योग' के कारण धनी बनायेगा। जातक का ससुराल धनी होगा।
6. **केतु+शुक्र**—धनेश भाग्येश शुक्र चतुर्थ भाव में केतु के साथ होने से जातक महाधनी होगा। जातक के पास एकाधिक मकान होंगे।
7. **केतु+शनि**—षष्ठेश शनि चतुर्थ भाव में केतु के साथ होने से वाहन पर खर्च होगा।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में
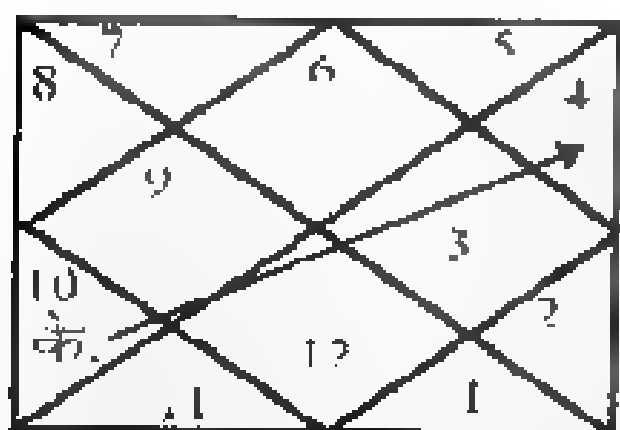
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अतः कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां पंचमस्थ केतु मकर (मित्र) राशि में होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता होगी। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'रक्षक' की संज्ञा दी है उच्च विद्या एवं पुत्र संतति की प्राप्ति हेतु प्रारंभिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा परन्तु धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से, निरन्तर प्रयत्न करने पर उच्च शैक्षणिक उपाधि एवं तेजस्वी संतति की प्राप्ति होगी।

दृष्टि—पंचमस्थ केतु की दृष्टि लाभ स्थान (कर्क राशि) पर होने के कारण लाभ में रुकावट महसूस होगी।

निशानी—जातक प्रजावान होगा। एकाध संतान हाथ न लगेगी गर्भस्राव भी होगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में संघर्ष के साथ सफलता मिलेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य पंचम भाव में शत्रुक्षेत्री होकर केतु के साथ होने से उत्तम संतति में बाधा का योग है।
2. **केतु+चंद्र**—लाभेश चंद्रमा पंचम स्थान में केतु के साथ होने से एकाध गर्भपात एवं दो कन्या संतति देगा।
3. **केतु+बुध**—लग्नेश बुध पंचम भाव में बुद्धिबल से धनार्जन का संकेत देता है
4. **केतु+मंगल**—अष्टमेश मंगल पंचम स्थान में उच्च के केतु के साथ होने से एकाध गर्भपात एवं पुत्र संतान भी देगा।

5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश बृहस्पति पचम भाव मे नीच का होकर केतु के साथ होने से पुत्र संतति अवश्य होगी।

6. **केतु+शुक्र**—धनेश, भाग्येश शुक्र पंचम भाव मे केतु के साथ होने से कन्या संतति की बाहुल्यता करायेगा।

7. **केतु+शनि**—षष्टेश शनि पचम भाव में स्वगृही होने से पुत्र संतति अवश्य होगी।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति षष्टम् स्थान में
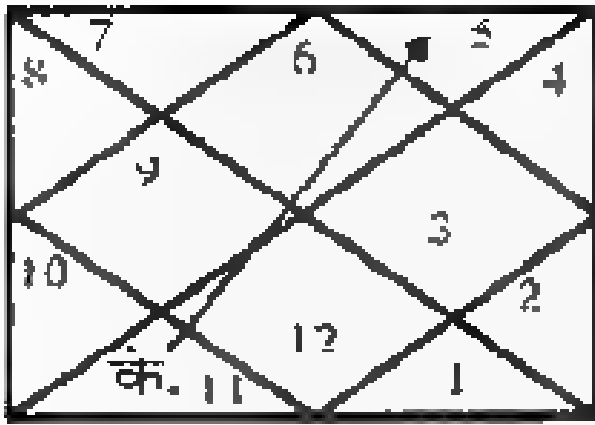
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अतः कन्यालग्न मे केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां छठे स्थान में केतु कुभ (मित्र) राशि का होगा छठे भाव में केतु की स्थिति राजयोगकारक है। लाल किताब वालों ने षष्टमस्थ केतु को शेर के समान खूखार कुत्ता कहा है। जातक से ईर्ष्या करने वाले अनेक शत्रु होंगे पर जातक अपने शत्रुओं का समूल नाश करने में सक्षम होगा।

दृष्टि—छठे भावगत केतु की दृष्टि व्यय भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक घुमक्कड़ मनोवृत्ति का होगा खर्च अधिक करेगा।

निशानी—जातक को गुप्त रोग होने की सभावना है जो औषधियों से ठीक नहीं होगा।

दशा केतु की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य छठे स्थान में शत्रुक्षेत्री होकर केतु के साथ होने से विपरीत राजयोग बना जातक धनी, पराक्रमी एवं तेजस्वी होगा।

2. **केतु+चंद्र**—लाभेश चंद्रमा खड्डे (6th house) में होने से लाभ मे कमी आयेगी। व्यापार व्यवसाय में ज्यादा लाभ नही होगा।

3. **केतु+बुध**—लग्नेश बुध छठे स्थान में केतु के साथ होने से परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

4. **केतु+मंगल**—अष्टमेश मंगल छठे स्थान में केतु के साथ होने से विपरीत राजयोग बना। जातक धनी व पराक्रमी होगा।

5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश बृहस्पति छठे स्थान में केतु के साथ विलम्ब विवाह योग कराता है।

6. **केतु+शुक्र**–धनेश भाग्येश, शुक्र छठे केतु के साथ होने से आर्थिक विषमता होगी एवं भाग्योदय में संघर्ष आयेगा।

7. **केतु+शनि**–यदि शनि केतु के साथ हो तो संतान सुख में बाधा आयेगी।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में
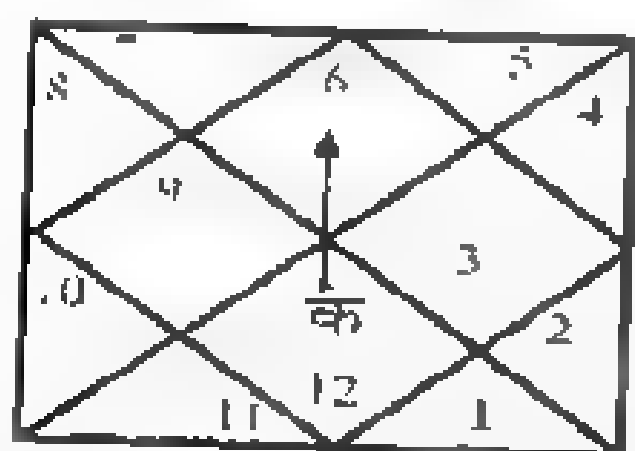
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अतः कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां सप्तमस्थ केतु मीन राशि में है जो कि केतु की स्वराशि मानी गई है। जातक अध्यात्म व तंत्र-मंत्र का जानकार होगा। लाल किताब वालों ने सप्तमस्थ केतु को गडरिए का पालतू कुत्ता कहा है। ऐसा जातक अपने इर्द-गिर्द रहने वाले का, भाई कुटुम्बियों व मित्रों का भला चाहता है। जातक यदि अध्यात्म की राह पकड़ ले तो उसके शत्रु अपने आप तबाह व बरबाद हो जायेंगे.

दृष्टि–सप्तमस्थ केतु की दृष्टि लग्न स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक विचलित मनोवृत्ति वाला होगा। प्रत्येक कार्य को शंका की दृष्टि से देखेगा।

निशानी–ऐसा व्यक्ति अपने से बडी उम्र की औरत के साथ संसर्ग करेगा।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य सातवें स्थान में केतु के साथ होने से विवाह सुख में बाधा आयेगी।

2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा सातवें स्थान पर केतु के साथ होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी।

3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध सप्तम स्थान में नीच का होकर केतु के साथ होने से ससुराल से वैमनस्य रहेगा।

4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल सप्तम भाव के केतु के साथ विवाह विच्छेद का संकेत है

5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति सप्तम भाव में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से जातक की पत्नी वफादार एवं सुसंस्कृत होगी।

6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र सप्तम में उच्च का होकर केतु के साथ होने से जीवन साथी सुन्दर होगा।

7 **केतु+शनि**–षष्टेश शनि सप्तम भाव में केतु के साथ होन से गृहस्थ सुख में न्यूनता आयेगी।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में

8 7 6 5 4
9 3
10 2
11 12 के 1
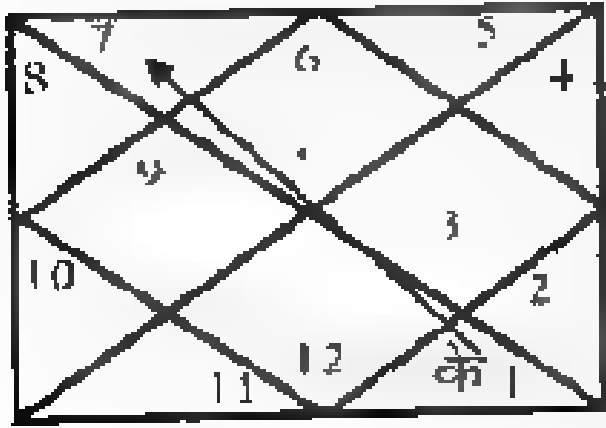
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अतः कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां अष्टमस्थ केतु मेष (मित्र) राशि में है। केतु की यह स्थिति गुप्त शत्रुओं में वृद्धिकारक है। लाल किताब वालों ने इस केतु को छत पर रोने वाल कुत्ता कहा है। ऐसे जातक में अशुभ की आशंका कूट कूट कर भरी होती है। जातक को खराब सपने आयेंगे। जातक की संतति की अकाल मृत्यु होने की संभावना है। जातक की प्रत्येक समस्या का समाधान तंत्र-मंत्र मे छिपा होगा।

दृष्टि–अष्टम भावगत केतु की दृष्टि धन स्थान (तुला राशि) पर होगी फलतः धन के स्थाई संकलन मे निरंतर बाधा आती रहेगी।

निशानी–जातक प्रायः कड़वी व कटु वाणी बोलेगा। बोलते हुए हकलायेगा। मुंहफट होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में अशुभ परिणाम अधिक मिलगे।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययश सूर्य अष्टम स्थान में केतु के साथ विपरीत राजयोग बना रहा है। जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।
2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा अष्टम स्थान में केतु के साथ होने से लाभ में कमी आयेगी। व्यापार-व्यवसाय में घाटा होगा।
3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध आठवें स्थान में केतु के साथ होने से परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल अष्टम भाव में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से विपरीत राजयोग बना, जताक धनवान व पराक्रमी होगा।
5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति आठवें स्थान में केतु के साथ होने से विलम्ब एवं द्विभार्या योग बनता है
6. **केतु+शुक्र**–धनेश, भाग्येश शुक्र आठवें केतु के साथ होने से व्यक्ति दुर्भाग्यशाली होगा एवं आर्थिक विषमताओं से घिरा रहेगा।

7 **केतु+शनि**–षष्ठेश शनि अष्टम स्थान में केतु के साथ होने से द्विभार्या योग बनता है।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में
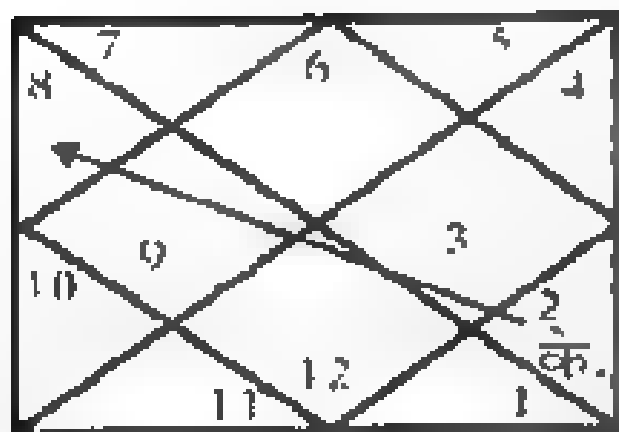
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अत: कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां नवम भावगत केतु वृष (नीच) राशि का होगा। केतु भाग्योदय में बाधा पहुंचाने का कार्य करेगा परन्तु 38 वर्ष की आयु के बाद जातक का भाग्योदय हो जायेगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'बाप का आज्ञाकारी बेटा' कहा है। ऐसा जातक सौभाग्यशाली एवं पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र के बाद होगा। जातक के मित्र वफादार नहीं होंगे।

दृष्टि–नवमस्थ केतु की दृष्टि तृतीय स्थान (वृश्चिक) राशि पर होगी। फलत: जातक का अपने भाईयों से मनमुटाव रहेगा।

निशानी–जातक को जन्मभूमि से दूरस्थ प्रदेशों में लाभ होगा। जातक का भाग्योदय प्राय: दूर प्रदेश या विदेशों में होगा।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। जातक का भाग्योदय होगा पर संघर्ष के साथ भाग्योदय होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–व्ययेश सूर्य नवम स्थान में केतु के साथ होने से भाग्योदय में रुकावटें आयेंगी।
2. **केतु+चंद्र**–लाभेश चंद्रमा नवम स्थान में उच्च का होकर केतु के साथ होने से जातक को व्यापार में यथेष्ट धनलाभ होगा।
3. **केतु+बुध**–लग्नेश बुध नवम स्थान में केतु के साथ भाग्योदय कारक है। जातक बड़ा व्यापारी होगा।
4. **केतु+मंगल**–अष्टमेश मंगल नवम भाव में केतु के साथ होने से भाग्योदय में बाधा आयेगी।
5. **केतु+गुरु**–सप्तमेश बृहस्पति नवम भाव में केतु के साथ होने से व्यक्ति की उन्नति धीमी गति से होगी।

6. **केतु+शुक्र**—धनेश, भाग्येश शुक्र भाग्य स्थान में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से जातक का जबरदस्त भाग्योदय होगा।

7. **केतु+शनि**—षष्टेश शनि भाग्य स्थान में केतु के साथ भाग्योदय में बाधा कारक है।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में
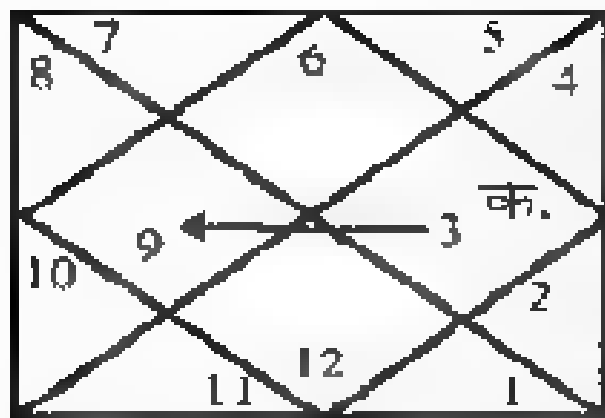
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अतः कन्यालग्न मे केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। केतु दशम भाव में मिथुन (शत्रु) राशि का होगा। यह केतु नौकरी, व्यापार व्यवसाय में बाधक है। नौकर धोखा देंगे। कोर्ट कचहरी में पराजय का सामना करना पड़ सकता है। शत्रु आपका पराक्रम नष्ट कर सकते हैं, सावधान रहना होगा। शत्रु एवं बाधाओं के नाश हेतु बगुला यंत्र अथवा तांत्रिक अनुष्ठानों का सहारा लेना होगा।

दृष्टि—दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थ भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः भौतिक सुखो में बाधा, वाहन पर धन खर्च होगा।

निशानी—जातक की मां बीमार रहेगी। मातृपक्ष से कम बनेगी।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में परेशानियां बढ़ेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य दशम स्थान में केतु के साथ होने से राज्य पक्ष, सरकार कोर्ट-कचहरी में अप्रिय समाचार दिलायेगा।

2. **केतु+चंद्र**—लाभेश चद्रमा दशम भाव में शत्रुक्षेत्री होकर केतु के साथ बैठने से जातक को व्यापार में लाभ होगा।

3. **केतु+बुध**—लग्नेश बुध दशम में स्वगृही होने से 'भद्र योग' बनेगा। ऐसा जातक राजा से कम नहीं होगा। परन्तु कुख्यात होगा।

4. **केतु+मंगल**—अष्टमेश मंगल दशम भाव में केतु के साथ राजयोग दिलाने मे बाधक होगा।

5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश बृहस्पति दशम भाव मे केतु के साथ होने से जातक का ससुराल पराक्रमी व राजनैतिक वर्चस्व वाला होगा।

6. **केतु+शुक्र**—षष्टेश शनि दशम भाव में केतु के साथ होने से राजनीति में बदनामी दिलायेगा।
7. **केतु+शनि**—धनेश, भाग्येश शुक्र दशम भाव में केतु के साथ होने से व्यक्ति को राजा से सम्मान दिलायेगा।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में

7	6	5	4 के.
8	9	3	2
10	11	12	1
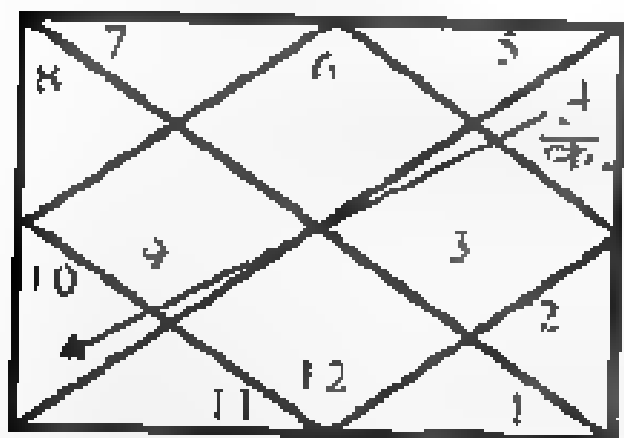
कन्यालग्न में केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है। अतः कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां एकादश भावगत केतु कर्क (शत्रु) राशि में होगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'गीदड़ स्वभाव' का कहा है। ऐसा जातक लड़ाकू होते हुए भी डरपोक स्वभाव का होगा। जल भय बना रहेगा। व्यापार-व्यवसाय में बाधा व उद्योग में रुकावट आयेगी। ऐसा जातक अपने कठोर परिश्रम से अपना भाग्य खुद बनायेगा।

दृष्टि—एकादश भावगत केतु की दृष्टि पंचम भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः पुत्र संतति में बाधा का योग है।

निशानी—जातक को विद्या प्राप्ति में प्रारंभिक रुकावटें आयेगी।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **केतु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य एकादश स्थान में केतु के साथ होने से जातक को फैक्ट्री व उद्योग में लाभ नहीं होगा। सरकारी धन की कमी रहेगी।
2. **केतु+चंद्र**—लाभेश चंद्रमा लाभ स्थान में स्वगृही केतु के साथ होने से उद्योग-फैक्ट्री से धन लाभ होने का संकेत है।
3. **केतु+बुध**—लग्नेश बुध एकादश स्थान में शत्रुक्षेत्री होकर केतु के साथ होने से परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
4. **केतु+मंगल**—अष्टमेश मंगल नीच का एकादश स्थान में केतु के साथ होने से चलता उद्योग बीमार पड़ जायेगा।
5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश बृहस्पति उच्च का एकादश में केतु के साथ होने से जातक की उन्नति धीमी गति से होगी।

6. **केतु+शुक्र**—धनेश, भाग्येश, शुक्र एकादश स्थान में होने से जातक धनी एवं भाग्यशाली होगा।
7. **केतु+शनि**—षष्ठेश शनि एकादश स्थान में केतु के साथ होने से जातक का बड़ा भाई बीमार रहेगा।

कन्यालग्न में केतु की स्थिति द्वादश स्थान में
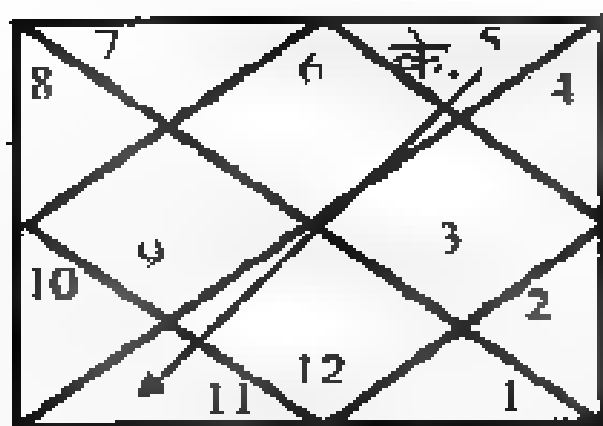
कन्यालग्न की केतु लग्नेश बुध से शत्रु भाव रखता है। कन्या केतु की नीच राशि भी कही गयी है अतः कन्यालग्न में केतु ज्यादा नुकसानदायक साबित होगा। यहां द्वादश स्थान मे केतु सिंह (शत्रु) राशि में होगा। लाल किताब वालों ने इस केतु को 'शुभ फल' देने वाला कहा है पर यह केतु खर्चीले स्वभाव का है तथा व्यर्थ की यात्राओं में जातक का धन खर्च करायेगा। ऐसा जातक कुछ हठी व क्रोधी स्वभाव का भी होता है। जिद् पर आकर पैसे खर्च करने की परवाह नहीं करता। अपना सब कुछ फूंक डालता है।

दृष्टि—द्वादश भावगत केतु की दृष्टि छठे स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक शत्रुओं का नाश करने मे सक्षम होगा।

निशानी—ऐसे जातक को किसी संतानहीन व्यक्ति से कोई वस्तु नहीं खरीदनी चाहिए अन्यथा उसक दुष्परिणाम भोगने होंगे।

दशा—केतु के दशा अंतर्दशा परेशानी देने वाली साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—व्ययेश सूर्य व्यय स्थान में स्वगृही होकर केतु के साथ होने से जातक धनी होगा। यहां हर्ष नामक विपरीत राजयोग बना।
2. **केतु+चंद्र**—लाभेश बारहवें स्थान में केतु के साथ होने से व्यापार-व्यवसाय में लाभ नहीं होने देगा।
3. **केतु+बुध**—लग्नेश बुध बारहवें केतु के साथ होने से परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **केतु+मंगल**—अष्टमेश मंगल केतु के साथ बारहवें स्थान में होने से कुण्डली मांगलिक हुई। जातक की कुण्डली में द्विभार्या योग बनता हैं
5. **केतु+गुरु**—सप्तमेश बृहस्पति बारहवें स्थान से केतु के साथ होने से गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी। जातक के द्विभार्या योग बनता है।

6. **केतु+शुक्र**—धनेश, भाग्येश शुक्र बारहवें केतु के साथ होने के कारण धन प्राप्ति एवं भाग्योदय हेतु जातक को बहुत संघर्ष करना पड़ेगा
7. **केतु+शनि**—षष्ठेश शनि बारहवें केतु के साथ होने से विपरीत राजयोग बना जातक का पुत्र ही जातक का गुप्त शत्रु होगा।

❑❑❑

बुधवार व्रत कथा

बुध मनुष्य की विद्या, वाक्‌पटुता व बुद्धि को प्रभावित करता है। बुध को ग्रहों का राजकुमार कहा जाता है। बुध बुद्धि व स्वास्थ लाभ प्रदान करने वाला है। बुध ग्रह की शांति व सुख-समृद्धि के लिए बुधवार का पूजन विशेष लाभकारी होता है। मनोकामनाओं की पूर्ति व शांति हेतु स्त्री-पुरुषों को बुधवार का व्रत रखना चाहिए।

बुध का तांत्रिक मंत्र—ॐ बुं बुधाय नमः।

विधि विधान—बुधवार का उपवास विशाखा नक्षत्र वाले बुधवार से आरंभ करना चाहिए। इस व्रत में सफेद वस्तुओं का ही प्रयोग करना चाहिए। यह व्रत सात, सत्रह अथवा सत्ताईस बुधवारों को करना चाहिए दिन में एक ही समय भोजन करना चाहिए। सर्वप्रथम बुधवार के दिन नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर, स्वच्छ स्थान पर पूजन की सामग्री रखें तथा बुध के तांत्रिक मंत्र का जाप इक्कीस बार करें। तत्पश्चात् कथा पढ़ें, कथा के मध्य में न तो उठें, ना ही बीच में बोलें। कथा सुनकर आरती करके प्रसाद ग्रहण करना चाहिए।

व्रत कथा—एक बार एक व्यक्ति जिसकी पत्नी अपने मायके गई हुई थी, वह अपनी पत्नी को विदा करवाने के लिए अपनी ससुराल गया। कुछ दिन वहां रहने के पश्चात् उसने सास-ससुर से जाने के लिए आज्ञा मांगी। किंतु सास-ससुर ने कहा आज बुधवार का दिन है। आज के दिन गमन नहीं करते। उसने किसी की बात नहीं सुनी और अपनी पत्नी को विदा करवाकर अपने नगर के लिए चल पड़ा। मार्ग में उसकी पत्नी को प्यास लगी वह व्यक्ति गाड़ी से उतरकर पात्र लेकर जल की खोज में चल पड़ा। कुछ देर पश्चात् वह वापस आया तो उसने देखा कि उसके जैसी शक्ल-सूरत, वेशभूषा वाला एक व्यक्ति उसकी पत्नी के पास बैठा है। यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और क्रोध भी आया। वह क्रोध में बोला "तू कौन है और मेरी पत्नी के निकट क्यों बैठा है?" दूसरे व्यक्ति ने कहा—"यह मेरी पत्नी है। मैं अभी अपनी ससुराल से इसे विदा कराकर ला रहा हूं।" दोनों मे परस्पर झगड़ा होने लगा। तभी उधर से राज्य के सैनिक जा रहे थे, उन्होंने सारा हाल सुनकर स्त्री से पूछा—"तुम्हारा

पति इन दोनों में से कौन है?" उसकी पत्नी चुप थी क्योंकि दोनों व्यक्ति बिलकुल एक जैसे थे और उनमें से असली की पहचान पाना मुश्किल था। असली व्यक्ति ने ईश्वर से प्रार्थना की "हे प्रभु! यह कैसी माया है कि पराया व्यक्ति मेरी पत्नी को अपना बना रहा है।" तभी आकाशवाणी हुई कि हे मूर्ख, बुधवार के दिन तूने गमन किया तूने किसी की बात नहीं मानी, अतः बुध देव की माया से तुझे इस कष्ट का सामना करना पड़ा है।

उसने भगवान बुध देव से क्षमा याचना की। मनुष्य के रूप में आए भगवान बुध देव अंतर्ध्यान हो गए। वह व्यक्ति खुशी-खुशी अपनी पत्नी को लेकर अपने घर आया। इसके पश्चात् पति पत्नी दोनों नियमपूर्वक बुधवार का उपवास करने लगे। इस प्रकार जो कोई भी बुधवार का उपवास रखता है तथा श्रद्धापूर्वक व्रत कथा को सुनता है उसे बुधवार के दिन गमन करने का दोष नहीं लगता है तथा उसे सर्व प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है और उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

बुध देव की आरती

जय श्री बुध देवा,
स्वामी जय श्री बुध देवा।
छोटे बड़े सभी नर नारी,
करें तेरी सेवा।। स्वामी जय०।।
सुख करता दुःख हरता,
जय जय आनन्द दाता।
जो प्रेम भाव से पूजे,
वह सब कुछ है पाता ।।स्वामी जय०।।
सिंह आपका वाहन है,
है ज्योति सबसे न्यारी।
शरणागत प्रतिपालक,
हो भक्तन के हितकारी ।।स्वामी जय०।।
तुम हो दीनदयाल दयानिधि,
भय बंधन हारी।
वेद पुराण बखानत,
तुम हो भय पातक हारी ।।स्वामी जय०।।

सद गृहस्थ हृदय में,
बुधराजा तेरा ध्यान करें।
जग के सब नर-नारी,
व्रत पूजा पाठ करें।।स्वामी जय०।।
विश्व चराचर पालक,
कृपासिन्धु शुभ करता।
सफल मनोरथ पूर्ण करता,
भव बन्धन हरता।।स्वामी जय०।।
श्री बुधदेव की आरती,
जो प्रेम सहित गावे।
सब संकट मिट जाएं
अतुलित वैभव पावे।।स्वामी जय०।।

बुध के वैदिक, पौराणिक व तांत्रिक मंत्र

ध्यानम्—

सौम्योदङ्मुख पीतवर्ण मगधश्चात्रेय गोत्रेद्भवो।
बाणेशानिदिशः सुहृच्छनिभृगुः शत्रु सदा शीतगुः॥
कन्या युग्मपतिदशाष्ट चतुरः षड्नेत्रकः शोभनो।
विष्णुः पौरुषदेवने शशिसुतः कुर्यान् सदा मंगलम्॥

बुध की उत्पत्ति अत्रि गोत्र में मानी जाती है। बुध चेतना, इच्छा, सदाचार, मानव जीवन में तरक्की और चेतना शक्ति का मुख्य रूप से प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐश्वर्य, प्रेम, उदारता, आकांक्षा, आत्मविश्वास आदि के ये संतुलनकर्ता हैं। ये पुरातत्त्ववेत्ता, आविष्कर्ता, राजा, मंत्री आदि का भी प्रतिनिधित्व करते हैं। हृदय, रक्त का संचालन, आंख, कान, हड्डी आदि पर भी बुध अपना अधिक-से-अधिक प्रभाव डालते हैं।

आह्वान्–

बुधोबुद्धिप्रदाता च सौम्यदृष्टिर्महायशः
यजमान-हितार्थाय बुधमावाहयाम्यहम्॥1॥
अहो चंद्र सुत श्रीमान् मागधायसमुद्भवः।
अत्रिगोत्रः चतुर्बाहुः खड्गखेटक धारकः॥2॥
गदावरदसिंहस्य सुवर्णाभश्समाविश।
कृष्णवर्दि सपत्रे च इदं विष्णु प्रपूजयेत्॥3॥
ॐ इदं विष्णुविचक्रमेवेधानिदधेपदम।
समूढमस्यपा ठं सुरे स्वाहा ॥15/15॥
इशाने बुधं स्थापयामि–

वैदिक मंत्र

विनियोग–ॐ उद्बुध्यस्वेति मंत्रस्य परमेष्ठीऋषिः बृहती छन्दः बुधो देवता। त्वमिष्ठापूर्तसम् इति बीजं बुधप्रीतये जपे विनियोगः।'ॐ परमेष्ठीऋषये नमः शिरसि' 1 'ॐ बृहतीछन्दसे नमः मुखे 2'

न्यास–'ॐ बुधायै नमः हृदये' 'ॐ त्वमिष्टापूर्तेसम्' इति बीजाय नमः गुह्ये 4 'ॐ बुधप्रीतये जपे विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे' 5 इति ऋष्यादिन्यासः। 'ॐ उद्बुद्धयस्वाग्नेप्रतिजागृहि' अङ्गुष्ठाभ्या नमः 1 'ॐ त्वमिष्ठापूर्तेसम्' तर्जनीभ्या नमः 2 'ॐ सृजेयामयञ्व' मध्यमाभ्यां नमः 3 'ॐ अस्मिन्त्सध स्थे ऽअध्युत्तरस्मिन्' अनामिकाभ्यां नमः 4 ॐ विश्वेदेवा' कनिष्ठिकाभ्यां नम. 5 'ॐ यजमानश्चसीदत करतलकरपृष्ठाभ्या नमः 6 इति करन्यासः।

हृदयादिन्यास–ॐ त्वमिष्टा पूर्तेसम् इति शिरसे स्वाहा 2 'ॐ सृजेथामयञ्व' इति शिखायै वषट् 3 'ॐ अस्मिन्त्वसधस्थेऽअध्युत्तरस्मिन्' इति कवचाय हुम् 4 'ॐ विश्वेदेवा' नेत्रत्रयाय वौषट् ॐ यजमानश्च सीदत इति अस्त्राय फट् 6 इति हृदयादिन्यासः।

'ॐ उदबुध्यस्व इति शिरसि। 'ॐ अग्नेप्रति' इति ललाटे 2 'ॐ जागृहित्वम्'। इति मुखे 3 'ॐ इष्टापूर्तेसम् इति हृदये 4 'ॐ सजेथामयञ्च' इति कण्ठ्याम् 6 'ॐ अध्युत्तरस्मिन्' इत्यूर्वोः 7 'ॐ विश्वदेवा' नाभौ 5 'ॐ अस्मिन्त्सधस्थ' इति जानुनोः 8 'ॐ यजमानश्च' ति पादयो· 9 'ॐ सिदत' इति सर्वाङ्गे 10 एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्–'ॐ पीताम्बरः पीतवायुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी।

चर्मासिधृक् सोमसुतः सदा मे सिंहाधिरूढो वरदो 'बुधयच' . इति ध्यात्वाजय कुर्यात्

जप योग्य वैदिक मंत्र–ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वामिष्टापूर्ते सं सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत।

यह वैदिक मंत्र है। यद्यपि यह उच्चारण की दृष्टि से कठिन होने के कारण सर्व साध्य नहीं है. व्यावहारिक दृष्टि में सरल उच्चारण में सहज और सर्वसाध्य मंत्र निम्न है।

तंत्रोक्त बुध मंत्र–ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।

पुराणोक्त बुध मंत्र–

ह्रीं प्रियंगु कलिकाश्यामं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्य गुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्॥

यदि दैनिक पूजा में स्नानोपरांत कोई व्यक्ति इस मंत्र को प्रतिदिन 5-7 माला जपता रहे तो कुछ समय उपरांत वह किसी स्थिति में सुखद परिवर्तन का अनुभव करेगा। यह पौराणिक और अत्यंत सरल मंत्र है। इसके अतिरिक्त वैदिक और तांत्रिक मंत्र भी प्राप्त होते हैं, जो इस प्रकार हैं-

इन तीनों मंत्रों में से किसी एक मंत्र का नौ हजार जप अवश्य करना चाहिए जप के प्रभाव से ग्रह पीड़ा में परिवर्तन होना स्वाभाविक है. जपकर्त्ता 108 दाने की माला से ही जाप करें।

बुध गायत्री मंत्र–

ॐ सौम्य रूपाय विद्महे वाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्

इस बुध गायत्री मंत्र का जप उनके लिए अत्यधिक आवश्यक है, जिन पर बुध की कठोर दृष्टि है। यदि वे इस मंत्र का जाप नियमित रूप से एवं पवित्रता से करें तो उसके लिए अत्यंत ही लाभकारी होगा। कम-से-कम एक माला प्रतिदिन जपनी चाहिए।

बुध यंत्र–बुध यंत्र को काष्ठ पीठिका पर बिछे श्वेत या हरित वस्त्र खण्ड पर स्थापित करें. गंगाजल अथवा शुद्ध जल छिड़क कर इसे स्नान कराएं. तत्पश्चात् चंदन, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप आदि से पूजन करके किसी मीठी वस्तु का नैवेद्य अर्पित करें यह समस्त प्रक्रिया पूर्व की ओर मुख करके की जानी चाहिए

यंत्र की पूजा कर चुकने के पश्चात् यथा-सामर्थ्य 1, 5 या 7 माला बुध मंत्र जपना चाहिए। उपवास भी आवश्यक होता है। इस प्रकार 7, 11 या 12 बुधवारों तक लगातार बुध-यंत्र की नियमित रूप से श्रद्धापूर्वक उपासना करने से अवश्य ही लाभ होता है।

9	4	11
10	8	6
5	12	7

उपरोक्त बताई गई रीति के अनुसार ही यंत्र पूजन कर तावीज में भरकर धारण करना चाहिए।

बुधमंत्र–जपसंख्या 400, रत्न–पन्ना, समिधा–अपामार्ग, दान–मूंग, नीलवस्त्र, कांस्य, कस्तूरी, घी, पचरत्न, हाथी, दासी।

बुध कवच

विनियोग–अस्य श्रीबुधकवचस्तोत्रमंत्रस्य कश्यप ऋषिः अनुष्टुप छन्दः बुधो देवता -बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधस्तु पुस्तकधरः कुंकुमस्य समद्युतिः।
पीताम्बरधरः पातु पीतामाल्यानुलेपनः॥
कटिं च पातु मे सौम्यः शिरोदेश बुधस्तथा।
नेत्र ज्ञानमयः पातु श्रुति पातु निशाप्रियः॥
घ्राणं गंधप्रियः पातु जिह्वां विद्याप्रदो मम।
कण्ठं पातु विधोः पुत्रो भुजौ पुस्तक भूषणः॥
वक्षः पातु वराङ्गश्च हृदयं रोहिणीसुतः।
नाभिं पातु सुराराध्यो मध्यं पातु खगेश्वरः॥
जानुनी रोहिणेयश्च पातु जङ्घेऽखिलप्रदः।
पादौ मे बोधनः पातु पातु सौम्योऽखिलं वपुः।
एतद्धि कवचं दिव्यं सर्वपाप प्रणाशनम्।
सर्वरोग प्रशमनं सर्वदुख निवारणम्।
आयुरारोग्यशुभदं पुत्रपौत्र प्रवर्धनम्।
यः पठेच्छृणुयाद वाऽपि सर्वत्र विजयी भवेत्॥

उक्त बुध कवच ब्रह्मवैवर्त पुराण में वर्णित है। कवच का पाठ करने वाला प्राणी यदि नियमित रूप से एकाग्र होकर पूजन करे तो उस पर बुध ग्रह की अवश्य ही कृपा बनी रहेगी तथा दीर्घ आयु, निरोगी, वंश वृद्धि होने के साथ ही दुखों का सर्वनाश होना स्वाभाविक है।

बुधपंचविंशतिनाम स्तोत्र

विनियोग–अस्य श्रीबुधपञ्चविंशतिनाम स्तोत्रस्य प्रजापति ऋषिः त्रिष्टुपछन्दः बुधो देवता बुध प्रीत्यर्थे पाठे विनियोगः।

बुधो बुद्धिमतां श्रेष्ठो बुद्धिदाता धनप्रदः।
प्रियंगुकलिकाश्यामः कञ्जनेत्रो मनोहरः॥
ग्रहोपमो रौहिणेयो नक्षत्रेशो दयाकरः।
विरुद्धकार्यहन्ता च सौम्यो बुद्धिविवर्धनः॥
चंद्रात्मजोविष्णुरूपी ज्ञानी ज्ञो ज्ञानिनायकः।
ग्रहपीडाहरो दार पुत्र धान्य पशुप्रदः।
लोकप्रियः सौम्यमूर्तिर्गुणदो गुणिवत्सलः।
पंचविंशतिनामानि बुधस्यैतानि यः पठेत्॥
स्मृत्वा बुधं सदा तस्य पीडा सर्वा विनश्यति।
तद्दिने वा पठेद्यस्तु लभते स मनोगतम्॥

❑❑❑

कन्यालग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–कन्यालग्न में सूर्य द्वादश का स्वामी होता है। इस लग्न में जातक को माणिक्य कभी धारण नहीं करना चाहिए। धारण करने से लाभ की अपेक्षा हानि होगी।
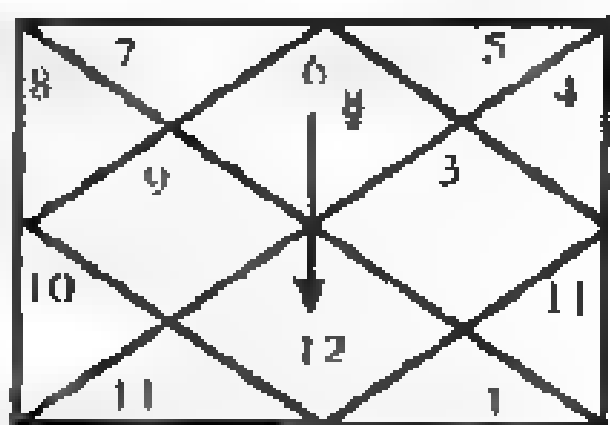
2. **मोती**–कन्यालग्न में चंद्र एकादश (लाभ) भाव का स्वामी होता है। चंद्र की महादशा में मोती धारण करने से आर्थिक लाभ, यश प्राप्ति तथा संतान सुख प्राप्त हो सकता है।

3. **मूंगा**–कन्यालग्न में मंगल तृतीय और अष्टम दो अशुभ भावों का स्वामी है। कन्यालग्न के जातक को मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।

4. **पन्ना**–कन्यालग्न के लिए बुध लग्न तथा दशम भाव का स्वामी है। इस लग्न के जातक को सदा पन्ना धारण करना चाहिए। वह शरीर स्वास्थ्य की रक्षा करता है तथा आयु बढ़ाता है। बुध की दशा में पन्ना विशेष रूप से फलदायक होता है। आपका जीवन रत्न पन्ना है।

5. **पुखराज**–कन्यालग्न के लिए बृहस्पति चतुर्थ एवं सप्तम का स्वामी होता है। अतः यह केन्द्राधिपति दोष से दूषित होता हुआ प्रबल मारकेश है। तब भी यदि बृहस्पति लग्न, द्वितीय चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम, दशम या एकादश में स्थित हो तो बृहस्पति की महादशा में इससे संतान सुख, ज्ञान, विद्या, धन, मान प्रतिष्ठा प्राप्त होगी।

6. **हीरा**–कन्यालग्न के लिए हीरा द्वितीय, नवम भाव का स्वामी होने से अत्यन्त शुभ और योगकारक ग्रह माना जाता है। अतः हीरा धारण करने से लग्न के

जातक को हर प्रकार की उन्नति प्राप्ति होगी. यदि हीरा पन्ने के साथ धारण किया जाये तो अति उत्तम होगा।

7. **नीलम**–कन्यालग्न के लिए शनि पंचम और षष्ठम भावों का स्वामी होने के कारण शनि को इस लग्न के लिए अशुभ ग्रह नहीं माना गया है अतः शनि की महादशा में इसका जातक नीलम धारण करके लाभ उठा सकता है

विशिष्ट उद्देश्य पूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–नीलम सवा पांच रत्ती, पन्ना सवा पांच रत्ती।
2. **भाग्योदय हेतु**–पन्ना सवा छः रत्ती, हीरा सवा चार रत्ती।
3. **आरोग्य हेतु**–पन्ना सवा छः रत्ती अकेला बुध यंत्र के साथ सुवर्ण में।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–हीरा सवा पाच रत्ती, पन्ना सवा पाच रत्ती।

❑❑❑

बुध अनिष्ट से बचने हेतु लाल किताब में वर्णित टोटके

1. बुध की अनिष्टता दूर करने के लिए छेद वाला तांबे का सिक्का पानी में प्रवाहित करें।
2. बुध की अनिष्टता दूर करने के लिए कौड़ियों की राख बनाकर उसे समुद्र में प्रवाहित करें।
3. बुध केतु युक्त लग्न को छोड़कर किसी भी स्थान मे होने पर अनिष्ट फल देता है। ऐसे जातक को अपनी उम्र के 34वें साल तक आर्थिक कठिनाईयों से जूझना पडता है। विवाह में भी काफी विलंब होता है। इस अनिष्टता को दूर कराने के लिए ऐसे जातक अपनी नाक छिदवा लें तथा फिटकरी से अपने दात साफ करें। मंदिर में केश अर्पण करे तथा पीले रंग का हलवा बालिकाओं को खिलाए।
4. इस अनिष्ट फल को दूर करने के लिए मगलवार रात को मूंग की दाल पानी में भिगोकर रखें और बुधवार प्रातः पक्षियो को चुगाए। 43 दिन तक यही क्रम अपनाए। हरे मूग दान मे दे।
5. बुध तृतीय स्थान में बैठा हो तो, इसके शत्रु ग्रह चद्र, केतु या शुक्र छठे या सातवें स्थान में हो तो पैतृक सपत्ति मे विघ्न खड़े होत हैं मामा, मौसी एवं नाऊ का स्वास्थ्य ठीक नहीं रह पाता। ऐसे समय इस कुप्रभाव को दूर करने हेतु जातक अपने दांतों के लिए मजन के रूप में फिटकरी का प्रयोग करें।
6. सप्तम स्थान मे बुध अनिष्ट फल प्रदान करता है। जातक की बहन एवं बुआ को कष्ट रहता है। इस अनिष्टता को दूर करने हेतु हरे मूंग का दान करें
7. वरधारा वनस्पति तावीज मे डालकर धारण करें।
8. गहुला वनस्पति स्नान के समय पानी में डालकर स्नान करें।
9. मिट्टी के बरतन मे पानी पीएं तो बुध ग्रह प्रसन्न रहता है।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

करुणावतार हजरत ईसा मसीह
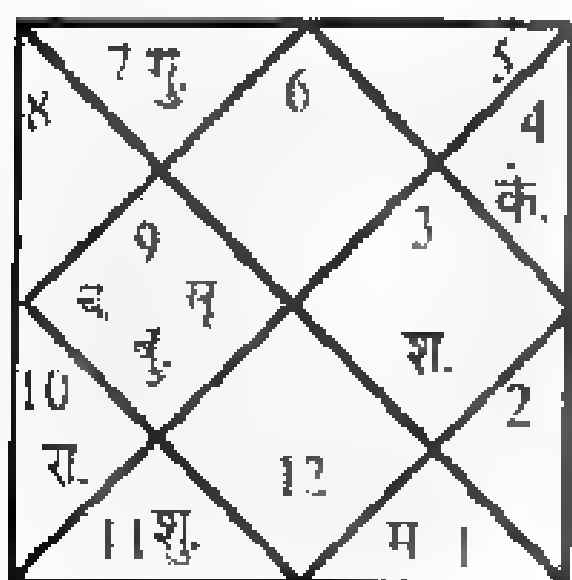
हजरत ईसा का जन्म विक्रम् सम्वत् 57 पौष कृष्ण 14 सोमवार को रात्रि ठीक 11 बजकर 59 मिनट 38 सैकण्ड को यहूदियों के प्रति "बैथलहम्" नगर में हुआ। उस समय कन्यालग्न 20 अंशों में उदित था। उनके जन्म के समय "पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र समूह" इतने जोर से चमका की, सभी खगोल शास्त्री अचंभित हो गये और उन्हें लगा कि ईश्वरीय शक्ति ने कहीं जन्म लिया है। शायद उस दिन चंद्र-ग्रहण था। जन्म के ठीक 40 दिन बाद यहूदियों के भय से यीशु को "बैथहंलम" से इजिप्ट (मिश्र) में एक सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। वहीं ये बड़े हुए।

12 वर्ष की लघु आयु में यीशु ने "जैसललेम" के चर्च में पहला धार्मिक शास्त्रार्थ जीता और अतुल कीर्ति अर्जित की। उस समय इन्हें शुक्र की महादशा चल रही थी 25 वर्ष की आयु में उन्हें ईसाई धर्मगुरु के रुप में आचार्य पद की प्राप्ति हुई। चंद्रमा की महादशा में 29 वर्ष की आयु में ईसा मसीह दीवान पद पर आरूढ़ हुए। तबसे इनका शत्रुपक्ष बढ़ा। "कन्यालग्न" के कारण यीशु के शरीर में स्त्रियोचित कोमलता थी वे विनम्र, सौम्य और मृदु स्वभाव के थे। अपने जीवन की 32 वर्ष 3 महीने 11 दिन की अवस्था में यहूदियों की कपट सलाह से वह सूली पर चढ़ गये

और वहीं उनकी दर्दनाक मृत्यु हुई। उस दिन रात्रि को चंद्र ग्रहण हुआ। ठीक वैसा ही जैसा इनके जन्म समय पर था। इनका विवाह नहीं हुआ था वे बाल ब्रह्मचारी थे। मृत्यु के ठीक तीसरे दिन वे पुनर्जीवित हो उठे।

उन्होंने कई असाध्य रोगियों को अपने मधुर स्पर्श से ठीक कर दिया था तथा अनेक मृतकों को जिला दिया इनके द्वारा मृत्युपरान्त किये गये चमत्कारों से ये प्रभु ईसा मसीह बन गये। इन्होंने सबसे पहले अपने शत्रुओं, ईर्ष्यालु, अलभज्ञ व नासमझ लोगों को क्षमा दान दिया। इन्होंने समग्र विश्व को मानवता, प्रेम, दया, करुणा व परोपकार का संदेश दिया और इतिहास में अमर हो गये। जिस क्रास पर इन्हें सूली चढ़ाया गया वही क्रास का चिह्न ईसाई धर्म का परम पवित्र चिह्न हो गया।

क्लज स्थित एस्ट्रोनॉमिक ऑब्जरवेटरी इंस्टीट्यूट के दो खगोल शास्त्रियों ने अपनी गणना के आधार पर ईसा मसीह की मृत्यु 3 अप्रैल 33 ए.डी. को दोपहर के बाद 3 बजे हुई थी और उस दिन शुक्रवार था। रविवार 5 अप्रैल, 33 ए.डी. को वे फिर से जीवित हो उठे थे। इन खगोल शास्त्रियों का कहना है कि इस खोज के लिए इन्होंने बाइबल के संदर्भों और खगोल शास्त्रीय गणनाओं का सहारा लिया है। न्यू टेस्टामेंट में यह कहा गया है कि ईसा मसीह की मृत्यु, पूर्ण चंद्रमा वाली रात के अगले दिन हुई थी। इस आधार पर वैज्ञानिक ने 26 से 35 ए.डी. के बीच के 9 सालों के कैलेंडर की जांच पड़ताल की। इस तरह बाइबिल मे यह भी कहा गया है कि उस साल ''यरूशलम'' मे सूर्य ग्रहण हुआ था।

इस महान आत्मा की याद में आज भी समग्र विश्व में 25 दिसम्बर का दिन ''क्रिसमिस डे'' के रूप में मनाया जाता है। ईसा मसीह परम दयालु एवं परोपकारी संत थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को अहिंसा व शांति का पाठ पढ़ाया एवं सन्मार्ग पर चलना सिखाया। इनकी मृत्यु के बाद लोगों ने इन्हे ईश्वर का साक्षात् अवतार माना और ''प्रभु'' कहकर पश्चाताप किया। ईसाईयो के सबसे पवित्र ग्रंथ ''बाइबिल'' मे प्रभु ईसा के उपदेश भरे पड़े हैं।

पं. लेखराज द्विवेदी

7 बु.
6
5
4
8
सू.के.
श.
9
शु.
3
मं.
10
2
रा.
12
गु.
च.
11
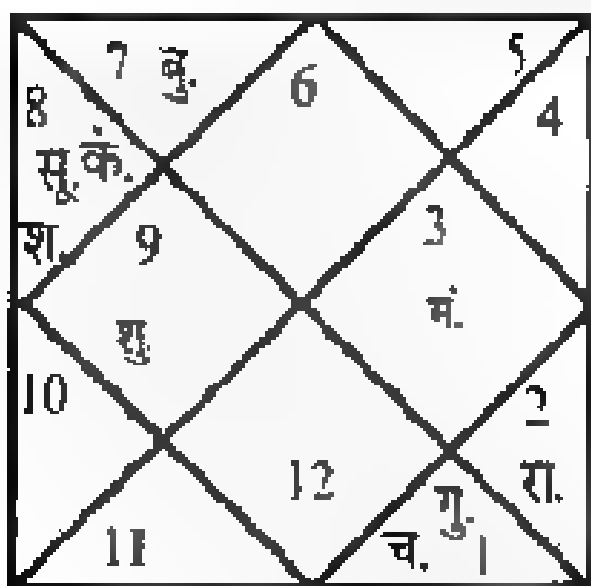
जन्म तिथि–26.11.1928 जन्म समय–4.00 बजे प्रातः जन्म स्थान जोधपुर कर्मकाण्ड, ज्योतिष संस्कृत के महान विद्वान पं. लेखराज द्विवेदी पुस्तक लेखक के सहोदर ज्येष्ठ भ्राता हैं। इनकी कुण्डली में अष्टकन्या योग एवं एक पुत्र योग स्पष्ट है। इनकी सशक्त लेखनी से अनेक पुस्तकों का प्रादुर्भाव हुआ है। ये राजस्थान संस्कृत अकादमी से पुरस्कृत विद्वान हैं।

श्री मोरारी बापू
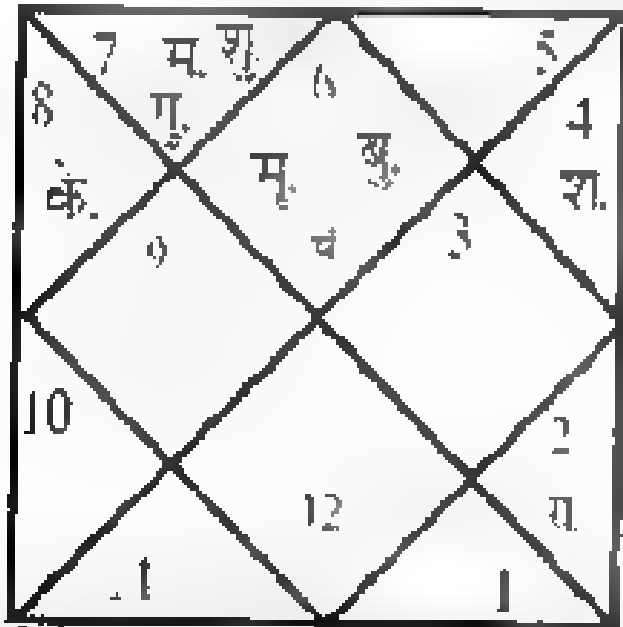
जन्म तिथि 25.9.1946 जन्म समय 6.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान महू (सौराष्ट्र

चैतन्य महाप्रभु
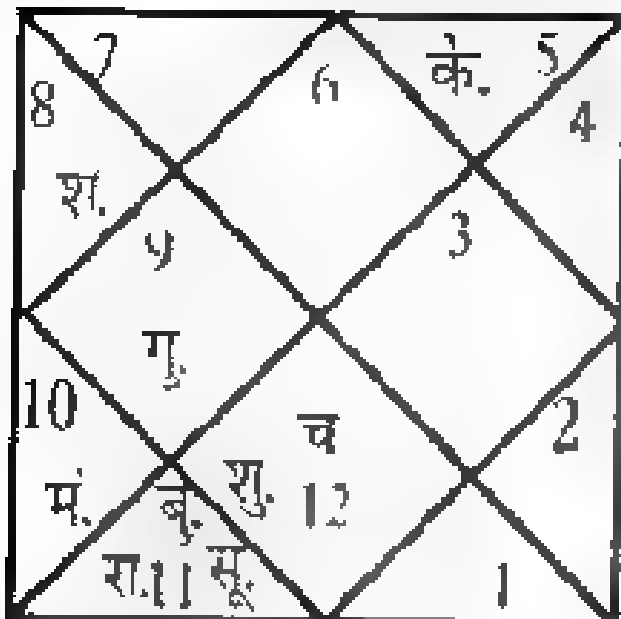
जन्म तिथि 18.2.1486, जन्म समय–8.54 बजे रात्रि, जन्म स्थान–नडियाद

महात्मा गौतम बुद्ध
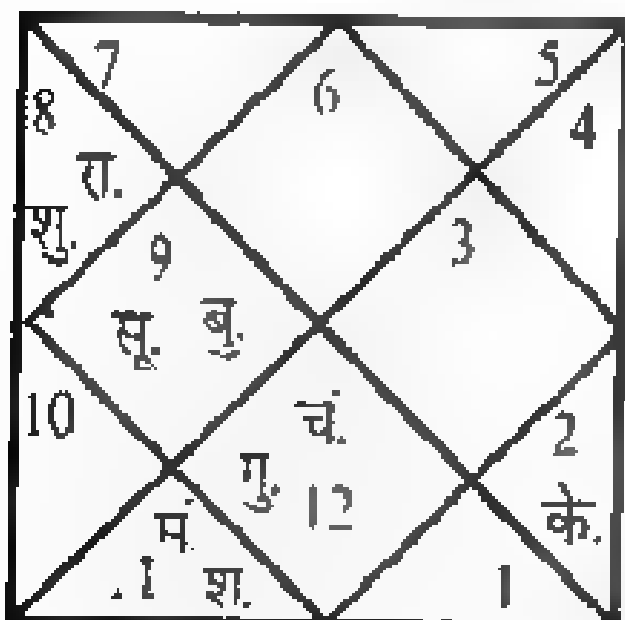
श्री गुरु गोविन्द सिंह
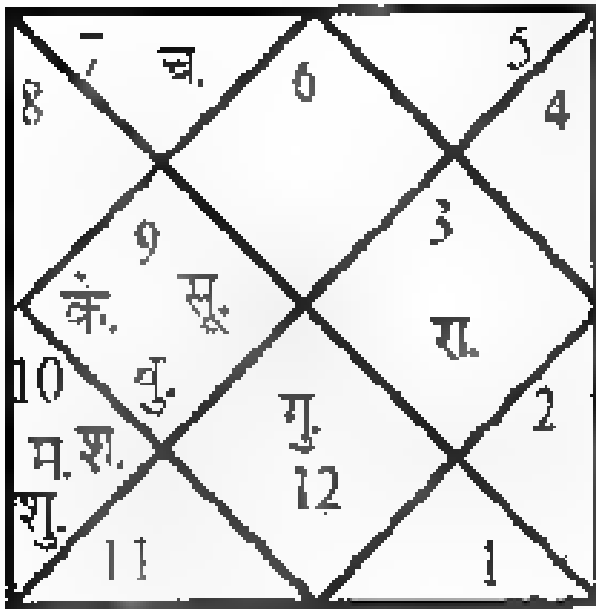
श्री सुकुमार वर्मा
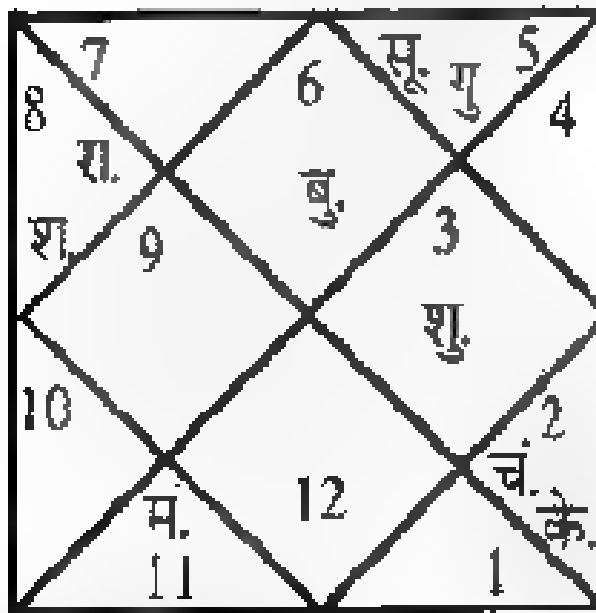
जन्म तिथि 30.8.1956, जन्म समय–8.45 बजे प्रातः, जन्म स्थान- जोधपुर, प्रसिद्ध पत्रकार राजस्थान पत्रिका

प्रो. बेजान दारुवाला
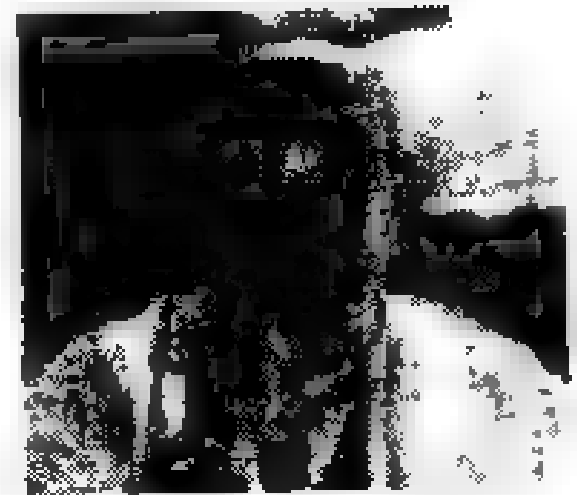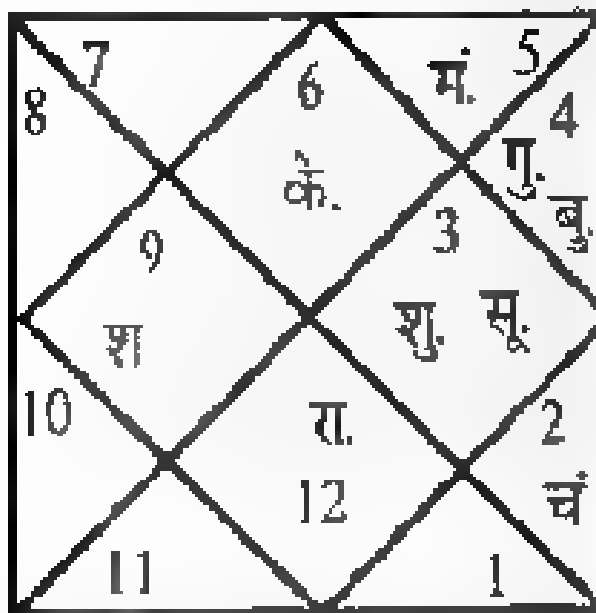
प्रसिद्ध अंकशास्त्री एवं भविष्य- वक्ता, जातक वाक्पटु है। गणपति का भक्त है। पारसी होते हुए भी गणपति महाराजा के उच्चारण बिना ज्योतिष की बात नहीं करता।

डॉ. हरिकृष्ण छंगाणी (ज्योतिषशास्त्र मर्मज्ञ)

ज्योतिषशास्त्र एवं हिन्दी के प्रख्यात अध्यापक डॉ. हरिकृष्ण छगाणी का नाम फलौदी मे बहुत ही सम्मान व आदर के साथ लिया जाता हैं। पंचम भाव मे स्थित त्रिग्रह युति से वे अनेक पुस्तकों के यशस्वी लेखक एवं ज्योतिष अनुसधान पत्रिका के सम्पादक हैं।

सम्राट शाहजहां

जन्म स्थान-18.8.1583, जन्म समय 8.00 प्रातः. जन्म स्थान दिल्ली, सम्राट अकबर का पुत्र था जहांगीर, जहांगीर का पुत्र का नाम शाहजहां था इनका शासनकाल (1627-1659) रहा। दिल्ली स्थित लालकिला स्थित दीवाने-आम दीवाने-खास, जामा मस्जिद, मोती मस्जिद इनका बनाया हुआ है आगरा का प्रसिद्ध ताजमहल भी शाहजहां के प्रेम की निशानी है।

श्री भैरोसिंह शेखावत (उपराष्ट्रपति, भारत सरकार)

जन्म स्थान-23.10.1923, जन्म समय-4.30, जन्म स्थान खारचियावास (सीकर राजस्थान।
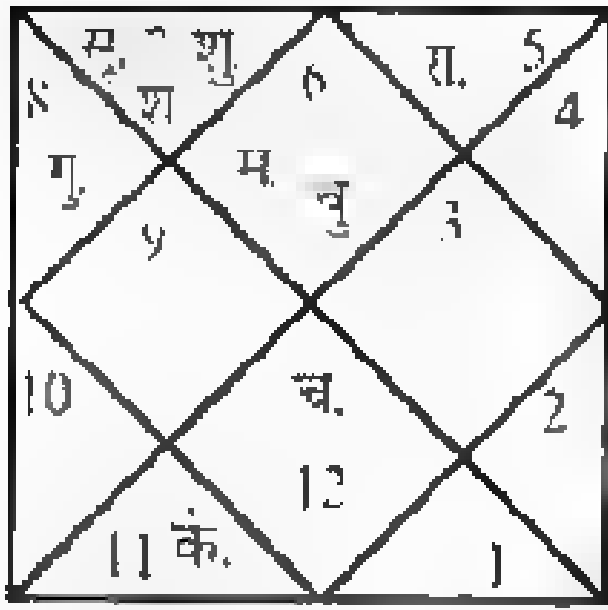
- श्री भैरोंसिंह 1974 से 1977 के बीच राज्यसभा के सदस्य रहे। आपातकाल में दौरान बारहवें राहु के कारण वे 19 महीने तक जेल में रहे।
- 22 जून 1977 को वे राज्यस्थान राज्य में पहली बार गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्री बने।
- सातवीं व आठवीं विधानसभा में वे प्रतिपक्ष के नेता रहे.
- 4 मार्च 1990 को दूसरी बार राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तथा वर्तमान वर्ष 2003 में वे भारत सरकार के उपराष्ट्रपति पद पर आरुढ़ हुए।

इनकी जन्म कुण्डली में 'भद्रनामक' महान राजयोग लग्न में है। 'किम्बहुना' नामक राजयोग धन स्थान में है। चद्र+मंगल, लक्ष्मी योग, नीचभंग राजयोग वगैरह महत्त्वपूर्ण योग कुण्डली में स्थित होने से कन्यालग्न की यह कुण्डली हर दृष्टि से संग्रहणीय है।

श्री मदनलाल खुराना
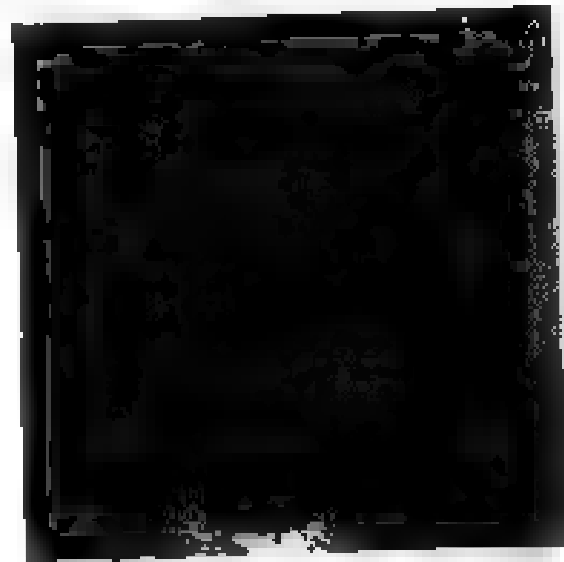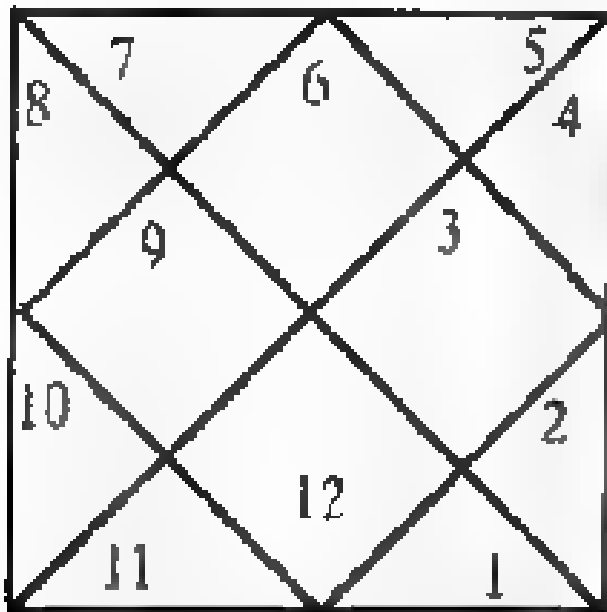
जन्म स्थान 15.10.1936, जन्म समय 6.10 प्रातः, जन्म स्थान लायलपुर (पाकिस्तान)। श्री मदनलाल खुराना का जन्म 15 अक्टूबर 1936 को पाकिस्तान के लायलपुर में सुबह 6 बजकर 10 मिनट पर हुआ। वर्तमान में उन्हें बुध की महादशा में, चद्रमा के अंतर व राहु के प्रत्यंतर में चल रहे हैं। उनकी कुंडली मे दशमेश बुध उच्च का होकर लग्न में स्थित है। इस प्रकार उनकी कुंडली में "भद्रनामक" महान

राजयोग बना। इसके अलावा तृतीय भाव को मंगल चतुर्थ दृष्टि से शनि दशम दृष्टि से देख रहा है। तृतीय भाव में ही बृहस्पति भी स्थित है। यह स्थिति इन्हें कुशल वक्ता, साहसी व महत्वाकांक्षी राजनेता बना रही है। षष्ठेश शनि की तृतीय भाव पर दृष्टि जातक को सहनशील, बार बार प्रयास करने वाला, हार न मानने वाला बनाती है। राहु केतु का चतुर्थ दशम भाव से सम्बन्ध होना जातक के जीवन को पानी की लहर की भांति ऊपर नीचे होते रहने का संकेत देता है।

वर्तमान में उनके जीवन में बुध की महादशा चल रही है जो उनकी कुंडली में लग्नेश होकर उच्च का है तथा दशमेश है और लग्न व दशम में भी सम्बंधित है बुध महान राजयोग कारक है। उनकी कुंडली में बुध की महादशा में चंद्रमा का अंतर चल रहा है। चंद्रमा उनकी कुंडली में एकादशेश है तथा लग्न में स्थित है और दशमेश से भी संबंध बना रहा है। नवांश में चंद्रमा चतुर्थ भाव में, मित्र की राशि में स्थित है इसके अलावा उनके जीवन में बुध की महादशा में राहु का प्रत्यंतर चल रहा है और राहु चतुर्थ भाव में बुध की राशि में स्वयं ही है। इस स्थिति में वे सत्ता को प्राप्त कर सकते हैं।

श्री नरसिम्हा राव (पूर्व प्रधानमंत्री भारत)
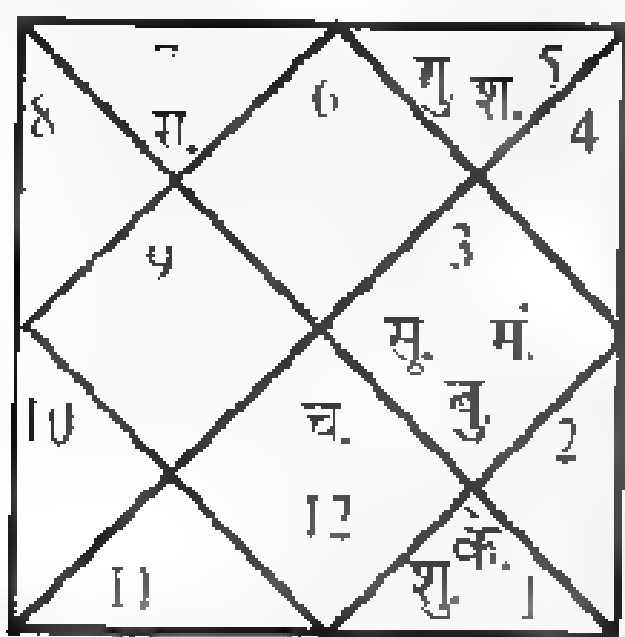
प्रस्तुत कुंडली में लग्नेश बुध दशम में स्थित होने से "पद्मसिंहासन योग" बना। बुध स्वगृही होने के कारण "भद्र योग" भी बना जो कि पंचमहापुरुष योगों में से एक है। बुध-बुधादित्य योग के कारण बलवान राजयोग की सृष्टि कर रहा है। मंगल दशम भाव में दिक्‌बली होकर प्रबल राजयोग बना रहा है। केवल बुध और मंगल के कारण श्री नरसिम्हा राव संसद में तीन बार अविश्वास प्रस्ताव आने के बाद भी प्रधानमंत्री पद पर बराबर आरूढ़ रहे।

राजबहादुर श्री फतेहसिंह भोंसले

जन्म स्थान-27.11.1891, जन्म समय-2.00 रात्रि, जन्म स्थान जयपुर (राजस्थान)। प्रस्तुत कुंडली नागपुर के प्रसिद्ध महाराजा राजबहादुर फतेहसिंह राव भोंसले की है।
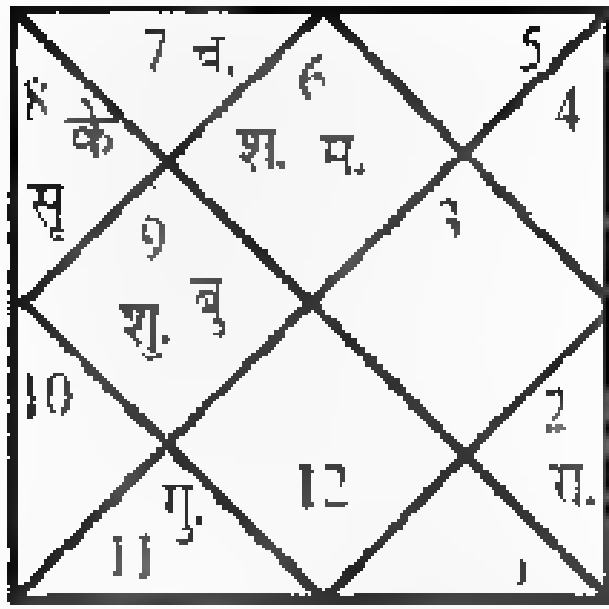
लग्नेश बुध केंद्र में है। शास्त्र कहता है

लग्नाधिपतिः केंद्रे बलपरिपूर्णः करोति नृपतुल्यम्।
गोपालकुलेऽपि जातं किं पुनरिह नृपतिसंभूतम्।

मानसागरी श्लोक 79/पृ. 230

बलवान होकर लग्न का स्वामी केंद्र मे स्थित हो तो राजयोग होता है। चाहे भले ही जातक का जन्म ग्वालिए के घर में ही हुआ हो। यहां लग्नेश बुध राजयोग कारक व भाग्येश शुक्र के साथ केंद्रस्थ है। तथा 'पद्मसिंहासन योग' की सृष्टि कर रहा है। शनि राजयोगकारक योग लग्न मे बैठा है तथा उच्चाभिलाषी है। उच्चाभिलाषी गृह उच्च से भी बलवान होते हैं। इस बात की साक्षी यह कुंडली प्रत्यक्ष रूप से दे रही है।

राजस्थान में महासंग्राम,
अशोक गलहोत बनाम वसुन्धरा राजे

इस बार चुनावी रंगत जोरों पर है। मुख्यमंत्री अशोक गलहोत ने जोधपुर की सरदारपुरा सीट से चुनाव लड़ा, जबकि वसुन्धरा राजे भी झालावाड़ से चुनाव लड़ने का मन बना चुकी थी, दोनों ही मुख्यमत्री पद के उम्मीदवार अपनी अपनी जीत के प्रति आश्वस्त थे, अखबारों के सर्वेक्षण प्रायः पार्टी द्वारा आयोजित होते हैं, जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता। ऐसे मे जन्मकुंडली ही एक मात्र आधार है जिसके शास्त्रीय विवेचन पर विश्वास किया जा सकता है।

- ❑ अशोक गलहोत राजस्थान के पुनः मुख्यमत्री नही बन पायेगे।
- ❑ राजस्थान मे इस बार तीसरी शक्ति का उदय होगा।
- ❑ नई सरकार के गठन मे बसपा, सामाजिक न्याय मंच, इनेलो एवं निर्दलीय व्यक्तियों का हाथ होगा।

- सोनिया गांधी कभी भी भारत के प्रधानमंत्री पद पर नहीं पहुंच पायेंगी
- राजस्थान विधानसभा चुनावों में इस बार कांग्रेस अपनी पिछली स्थिति प्रतिष्ठा (151) सीटों को नहीं बचा पायेगी।
- भाजपा की सीटों में निश्चित रूप से बढ़ोतरी होगी।

अशोक गहलोत

8, 7	6 श.	के. 5, 4
9		3
10	चं गु. 12	2 शु.
11 रा.		बु. मं. 1 सू.
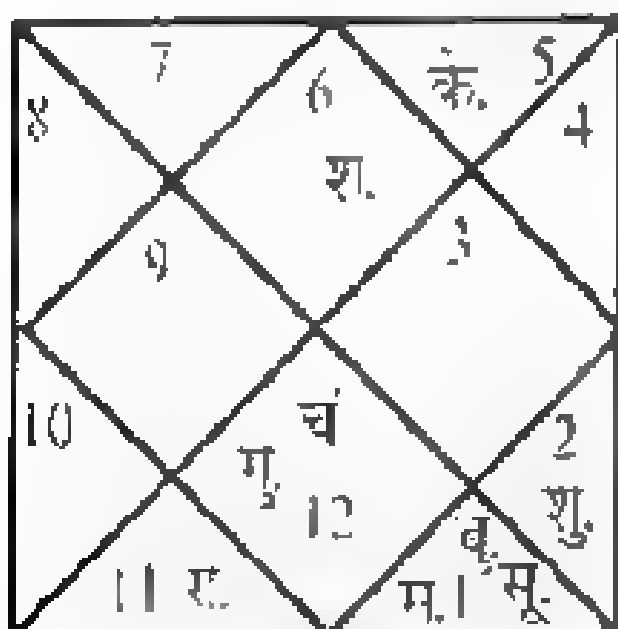
जन्म स्थान 3.5.1956, जन्म समय 16.00 सायं, जन्म स्थान-जोधपुर श्री अशोक गहलोत की कुण्डली में 1. कुलदीपक योग, 2. गजकेसरी योग, 3 हंस योग 4. किम्बहुना योग, 5. विमल नामक विपरीत राजयोग बना है 6. उभयचारी योग 7 मीन के नवमांश में है। जहां शनि स्वगृही, मंगल स्वगृही बृहस्पति व शुक्र केन्द्रवर्ती होने से बलवान है। श्री अशोक गहलोत को इस समय चंद्रमा की महादशा में शनि का अंतर चल रहा है। चंद्रमा लाभेश होकर केन्द्र में है। शनि पंचमेश व षष्टमेश होकर लग्न में है। अत: मिश्रित फलकारी है जो कि 10.8.2002 से 11.3.2004 तक चलेगा. इसमें बुध का प्रत्यन्तर 10.11.2002 से लगेगा जो कि 31.1.2004 तक चलेगा तथा लग्नेश राज्येश होकर खड्डे आठवें स्थान में जाने से लग्नभंग योग एवं राज्यभंग योग बना है। उपरोक्त कुण्डली मुझे स्व. बाबू लक्ष्मण सिंह गहलोत के माध्यम से प्राप्त हुई है। जिसमें सूर्योदयात् इष्ट घटी 24.56/07 दी गई है जबकि श्री अशोक की मिथुनलग्न वाली कुण्डली ज्यादा प्रचलित है जिस पर चर्चा जयपुर में आयोजित एक ज्योतिष सम्मेलन पर विशेष रूप से हुई थी। इस प्रकार दैनिक भास्कर में श्री अशोक गहलोत की मीनलग्न वाली कुण्डली प्रकाशित हुई है। यदि कन्यालग्न वाली कुण्डली सही है तो इस बार अशोक गहलोत अपना नेतृत्व नहीं बचा पायेंगे

वसुन्धरा राजे

जन्म स्थान-8.3.1953, जन्म समय 16.45 रात्रि जन्म स्थान मुम्बई। श्रीमति वसुन्धरा राजे की कुण्डली में 1. कुलदीपक योग 2. शशनामक राजयोग, 3. केसरी
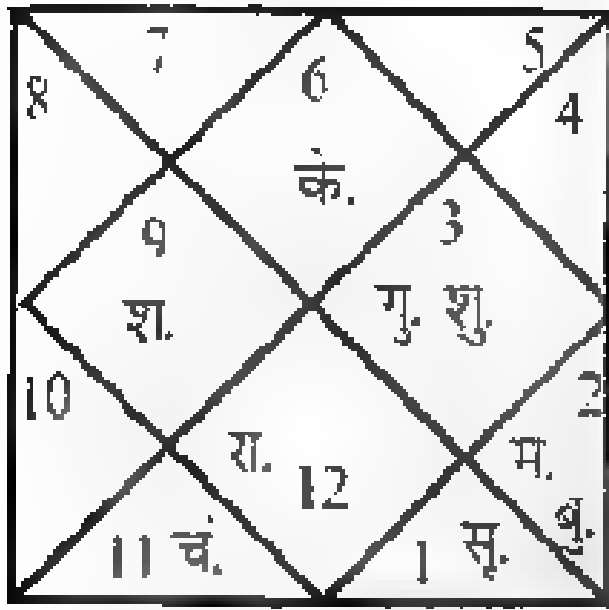
योग, 4. आसमुद्रांत नामक राजयोग, 5. उभयचारी योग बना। श्री वसुन्धरा राजे की नवमांश कुण्डली भी मीनलग्न वाली है जहा बुध उच्च का, चंद्रमा उच्च का, शुक्र स्वगृही होने से किम्बहुना नामक राजयोग बना इसके साथ शनि वर्गोत्तमी होने से महाबलशाली है। श्रीमति वसुन्धरा राजे को इस समय राहु की महादशा मे गुरु का अतर चल रहा है। राहु सप्तम स्थान मे मित्र राशि में है। जबकि बृहस्पति षष्टमेश व भाग्येश होकर केन्द्र में है जो 12.10.2003 से 6.3.2006 तक रहेगा। निश्चय ही दशा उन्हें उत्कर्ष की ओर ले जा रही है। इस समय बृहस्पति की अतर दशा मे बृहस्पति का प्रत्यंतर चल रहा है जो कि 12.10 2003 से 6.2.2004 तक चलेगा। बृहस्पति सुखेश व राज्येश शुक्र के साथ युति करके बैठा है, यदि उपलब्ध जन्मकुडली सही है वो भाग्येश बृहस्पति वसुन्धरा राजे का भाग्योदय करायेगा और परिवर्तन की जो लहर उन्होंने अपने एजेन्डा मे चलाई है उसमें उन्हें काफी कुछ सफलता मिलेगी। गोचर का बृहस्पति श्री वसुन्धरा राजे की कुण्डली में जन्म के बृहस्पति का देख रहा है। फलत: यह स्थिति बहुत ही अनुकूल है जबकि अशोक गहलोत की कुडली में बृहस्पति का बारहवे होना ज्यादा शुभद नहीं है।

शेख मुजीबर्रहमान (प्रधानमंत्री-बंगलादेश)
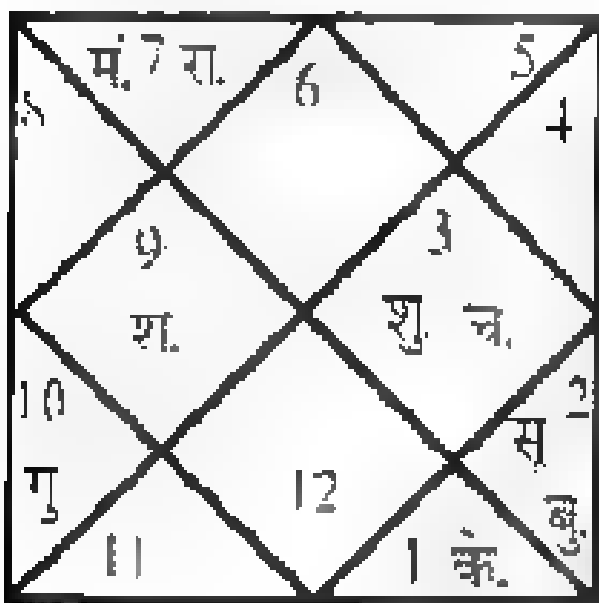
शेख मुजीबुर्रहमान बंगलादेश के क्रांतिकारी नेता 'बंगबंधु' के नाम से विश्व में पहचाने जाते थे। उनके परिवार की निर्मम हत्या पाकिस्तान के सैनिक आक्रमण में हुई जिसके लिए अष्टमेश मंगल एवं राहु जिम्मेदार रहे।

श्री गोपीचंद अग्रवाल (मुख्य कमिश्नर आयकर)

7 सू. | 6 शु. | के. गु. 5 | 4 मं. | 8 बु. | 9 चं. | 3 | 10 श. | 2 | 11 रा. | 12 | 1
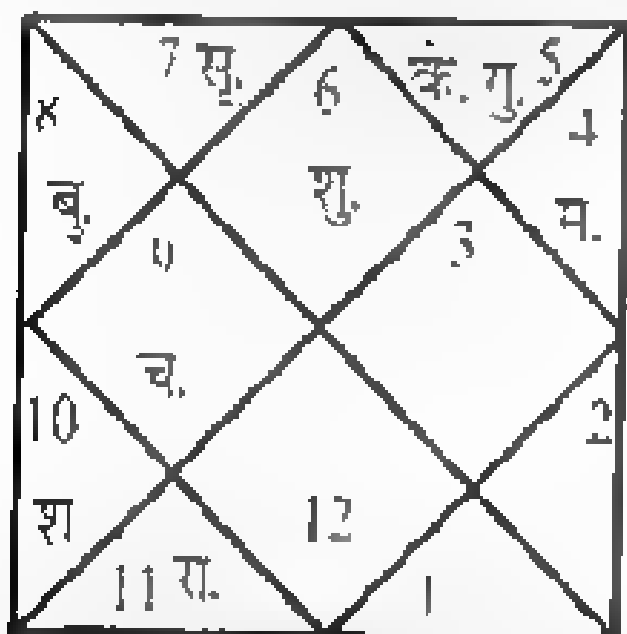
वि.स. 1989 कार्तिक कृष्ण 4, जन्म स्थान कानपुर, इष्ट 56/1, श्री गोपीचंद्र जी अग्रवाल धार्मिक मनोवृत्ति वाले, सात्विक स्वभाव के उच्च पदाधिकारी हैं। वे ट्रिब्यूनल के सदस्य भी रहे एवं आयकर विभाग के उच्चस्थ पदों को सुशोभित करते रहे। उनके राजयोग में शनि की भूमिका प्रबल रही है।

श्री रामसिंह विश्नोई (कृषि मंत्री, राजस्थान सरकार)

7 सू. | 6 बु. | शु. 5 | 4 चं. | 8 गु. | 9 रा. मं. | 3 के. | 10 | 2 | 11 श. | 12 | 1
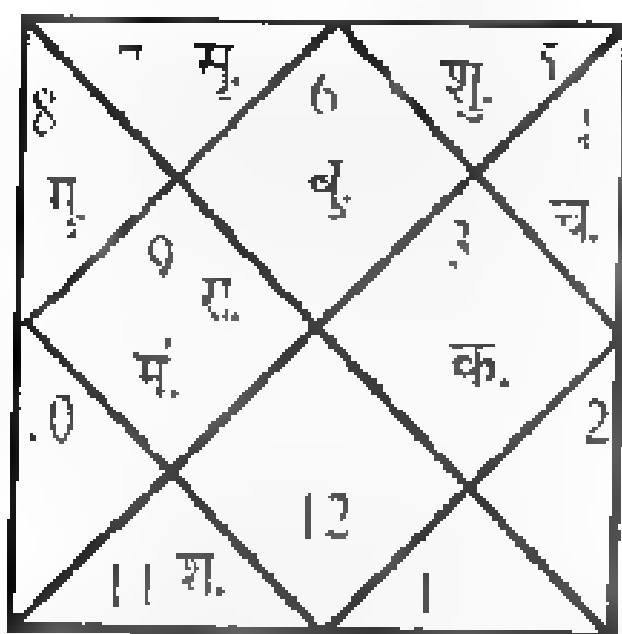
जन्म तिथि-20.10.1935, जन्म समय-4.36 बजे प्रातः, जन्म स्थान तिलवासनी। लूणी विधानसभा क्षेत्र के ग्रामीण अंचल से श्री रामसिंह विश्नोई छः बार से अधिक विधायक पद पर चुने गये हैं। वे कांग्रेस के कद्दावर एवं दिग्गज नेता हैं जो जमीन से जुड़े हुए हैं। पंचमेश शनि छठे (6th house) में जाने के कारण, अपनी संतान के कारण दो बार उन्हें मंत्री पद से त्याग-पत्र देना पड़ा। वर्तमान में उन्हें चंद्रमा की महादशा में सूर्य का अंतर चल रहा है। चंद्रमा स्वगृही है परन्तु सूर्य व्ययेश होकर नीच का है फलतः दशा अत्यधिक संघर्षमय है।

श्री पूनमचन्द विश्नोई (पूर्व मंत्री, विधानसभा अध्यक्ष)
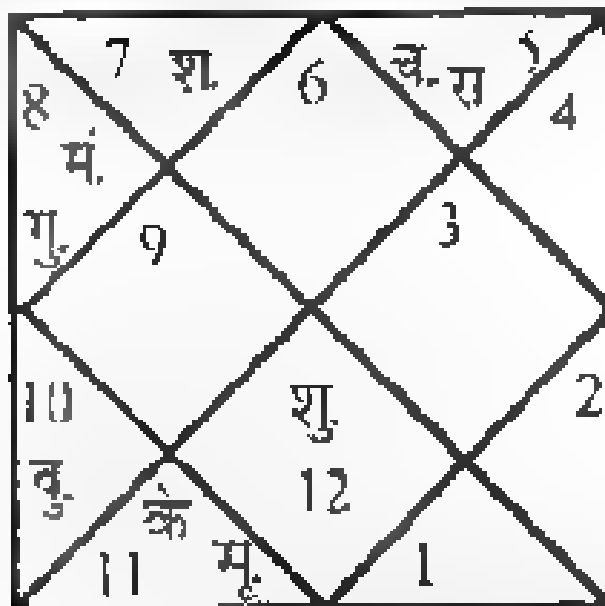
शुक्र उच्च का केन्द्र में होने के कारण 'मालव्य' नामक महान राजयोग बना। जिसके कारण उन्होंने कई वर्षों तक सत्ता सुख को भोगा।

डॉ. राधाकृष्ण (पूर्व राष्ट्रपति)
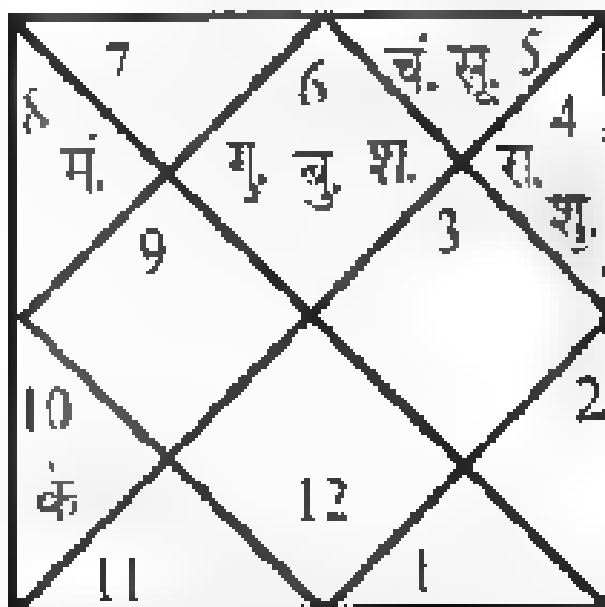
जन्म तिथि 5.9.1888, जन्म समय–8.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान- तिरुतनी (मद्रास)

ज्योति बसु (पूर्व मुख्यमंत्री) पं. बंगाल
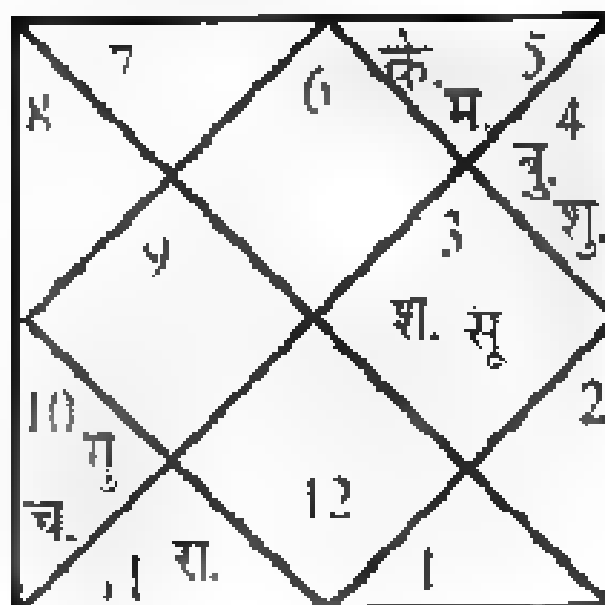
जन्म तिथि 8.7.1914, जन्म समय 11.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान कलकत्ता।
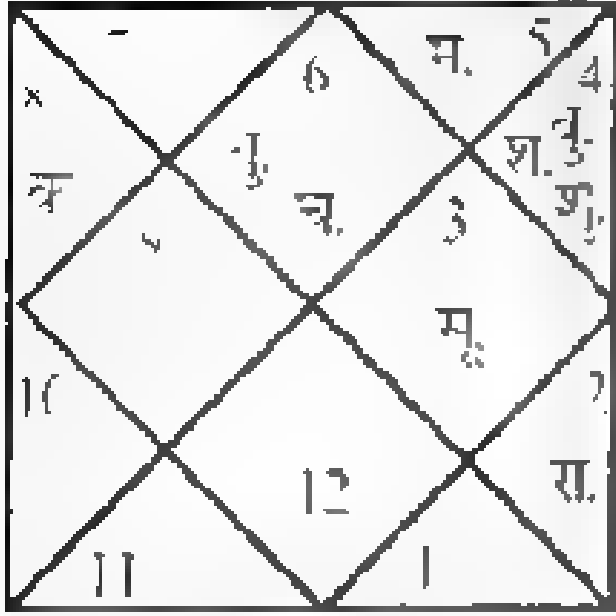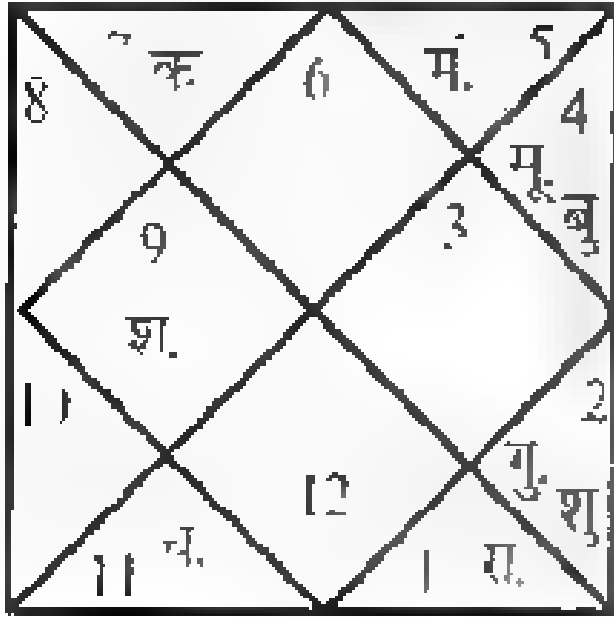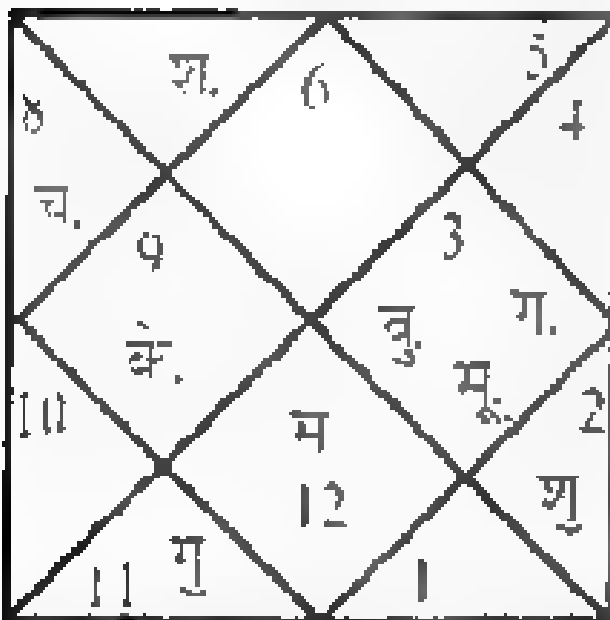
श्रीमति किरण बेदी (D.G.)
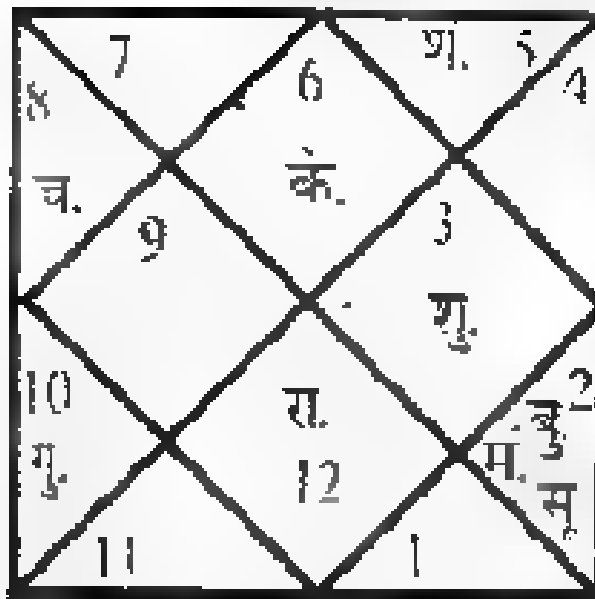
जन्म तिथि–9.6.1949, जन्म समय 14.10 बजे , जन्म स्थान–अमृतसर।

श्री जार्ज कैनेडी
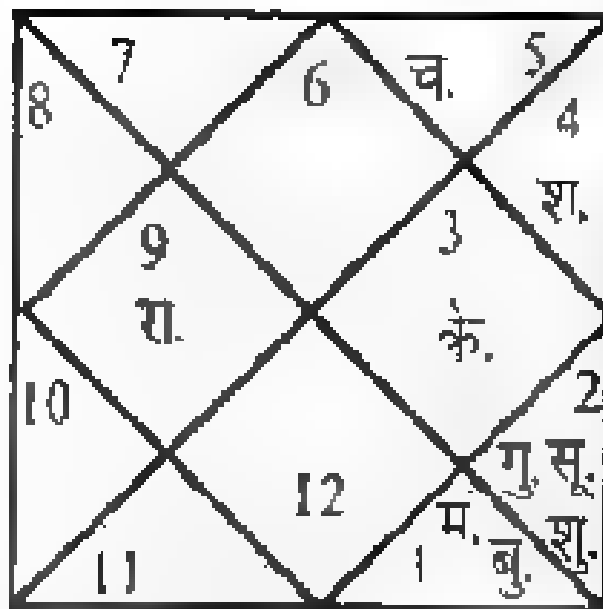
पूर्व राष्ट्रपति, अमेरिका।

श्री नारायणदत्त तिवारी
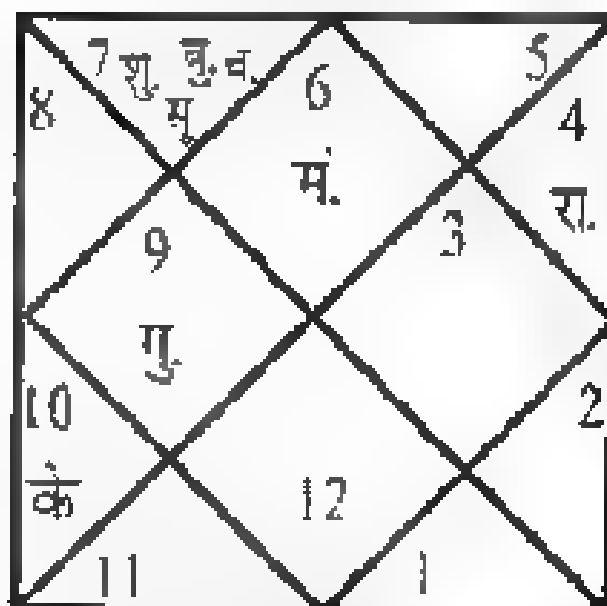
जन्म तिथि–18.10.1925, जन्म समय–5.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान- उत्तर प्रदेश (मुख्यमंत्री, उत्तरांचल)।

पार्श्व गायक मुकेश
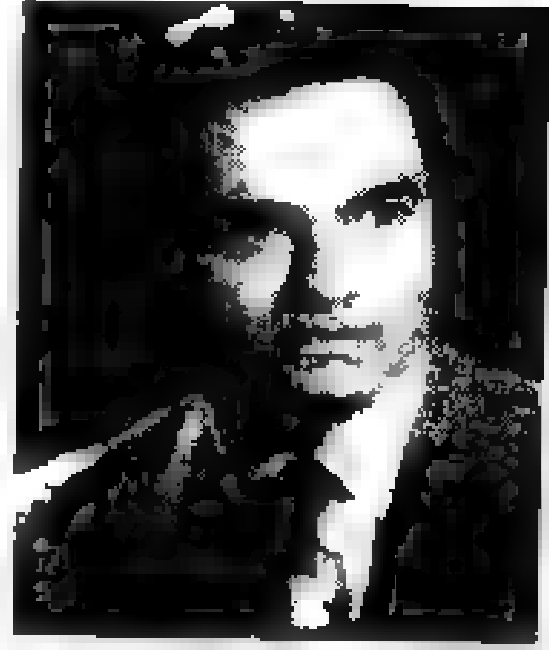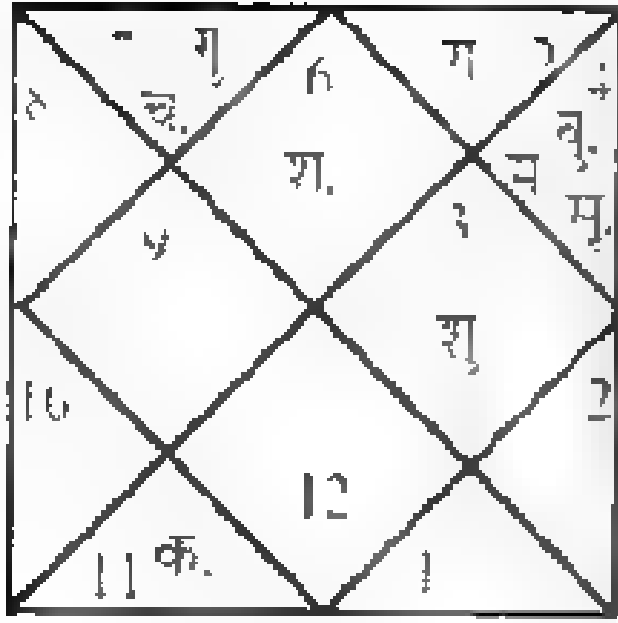
मल्लिका सुरैया (ईरान)
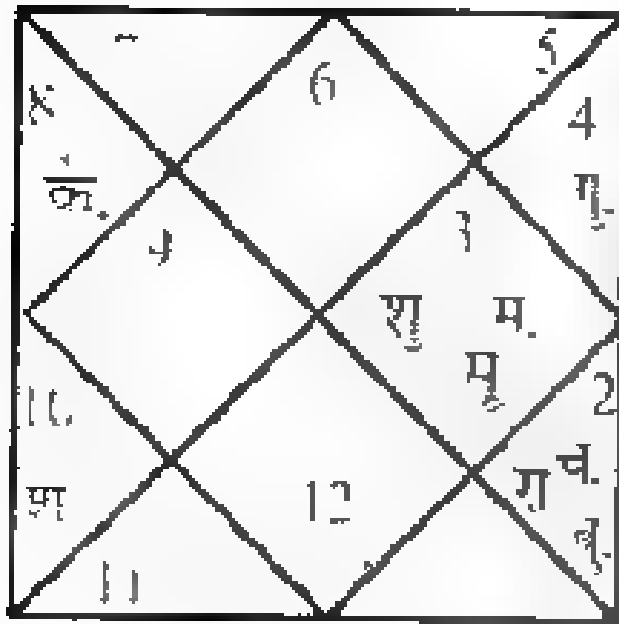
फिल्म अभिनेता स्व. गुरुदत्त
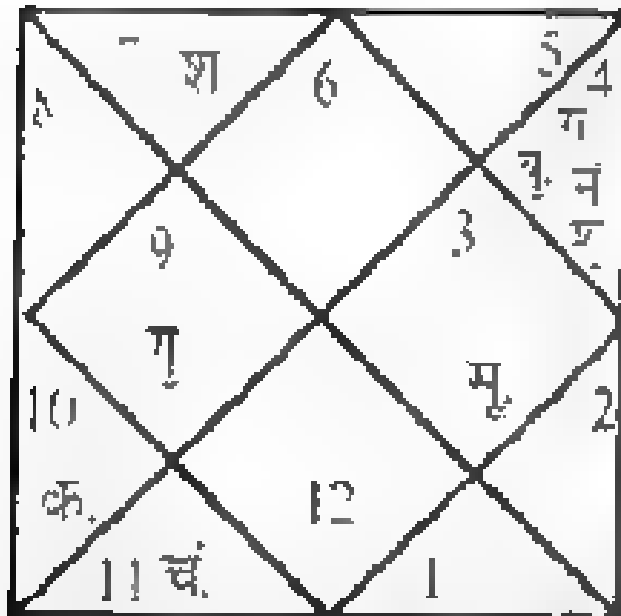
जन्म तिथि 19.7.1925, जन्म समय 12.00 बजे, जन्म स्थान-बंगलौर

अभिनेत्री नूतन
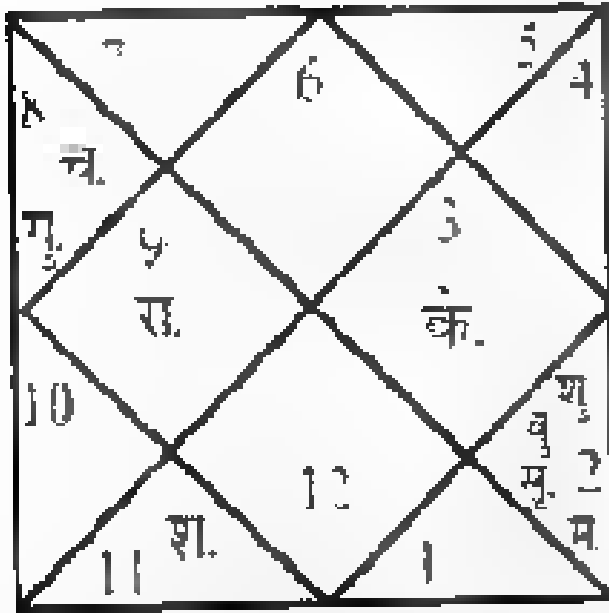
जन्म तिथि 4.6.1936 जन्म समय 14.15 बजे प्रातः जन्म स्थान मुम्बई।

अभिनेता जयराज
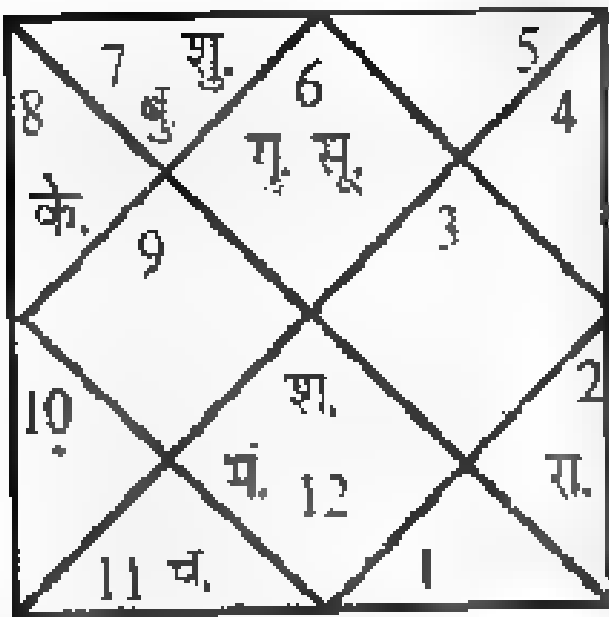
लम्बी उम्र के अभिनेता। जन्म तिथि 28.9.1909, जन्म समय-6.30

भारत सुन्दरी, अभिनेत्री ऐश्वर्या राय
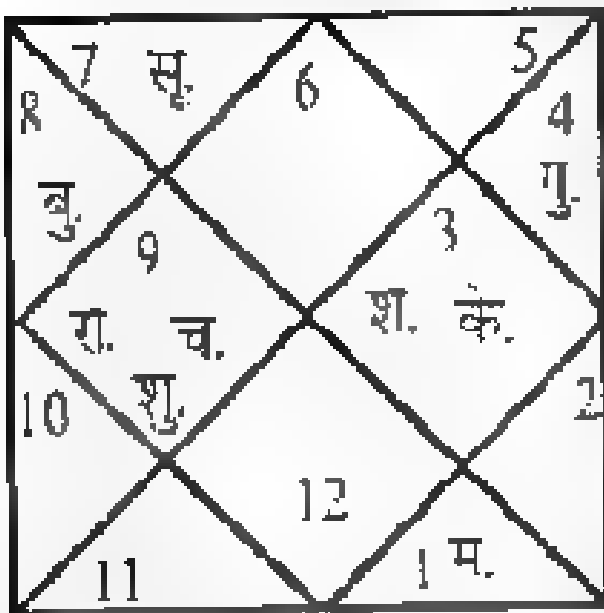
जन्म तिथि 1.11.1973, जन्म समय 4.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान मंगलोर (कर्नाटक)।

ऐलिजाबेथ टेलर
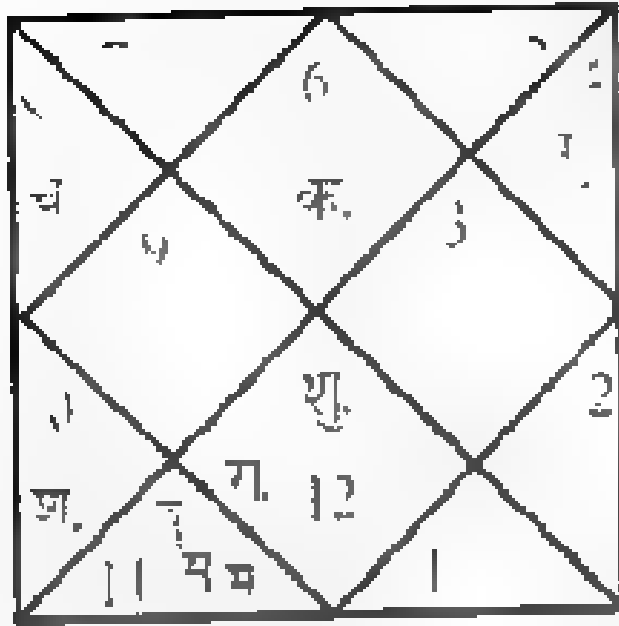
जन्म तिथि - 27.2.1932, जन्म समय - 9.00 बजे।

अल्का याज्ञिक
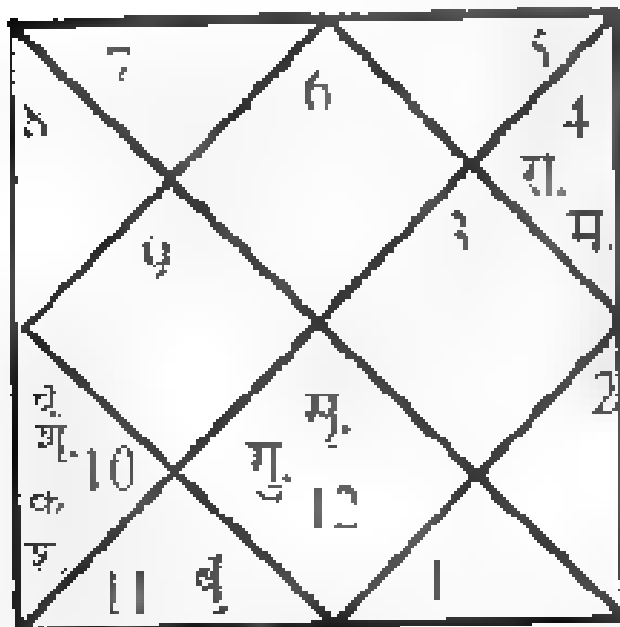
जन्म तिथि 20.3.1963 जन्म समय 19.02 बजे साय, जन्म स्थान कलकत्ता बंगाल)। बृहस्पति के कारण इस कुण्डली में बना हंसयोग। सूर्य और गुरु ने इन्हें सौन्दर्य दिया तथा शुक्र+चंद्र की युति ने दी बेपनाह खूबसूरती।

मोहम्मद अजहर
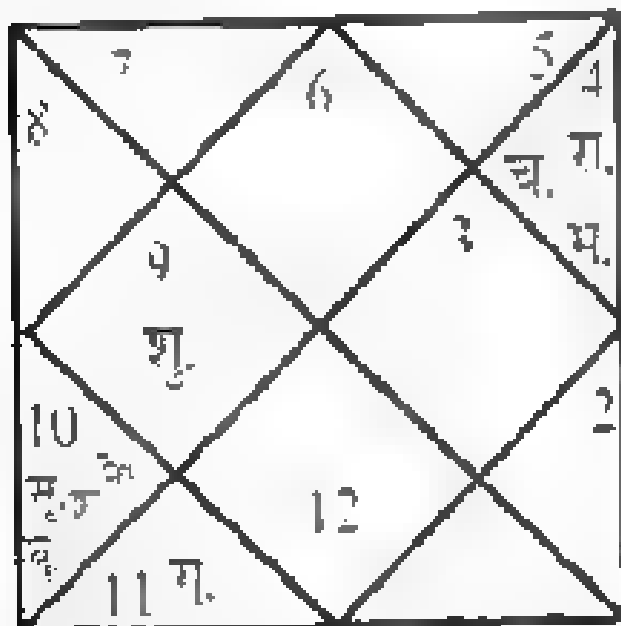
जन्म तिथि- 8.2.1963 जन्म समय 10.40 रात्रि, जन्म स्थान- हैदराबाद

सचिन तेंदुलकर

जन्म तिथि–2..4.1973, जन्म समय 18.00 बजे जन्म स्थान- मुम्बई।

शान पोलक

कप्तान दक्षिण अफ्रीका। जन्म तिथि–16.6.1966 जन्म नक्षत्र– श्रवण, जन्म स्थान डरबन।

कार्ल हूपर

कप्तान वेस्ट इंडीज, जन्म तिथि 15.12.1966, जन्म समय--4 बजे, जन्म स्थान- गयाना।

विश्व का क्रूर तानाशाह एडोल्फ हिटलर

जन्म तिथि 20.4.1889, जन्म समय-5.30 बजे सायं, जन्म स्थान-जर्मन

हिटलर का जन्म एक कस्टम अधिकारी की तीसरी बीवी से तीसरे पुत्र के रूप में 20 अप्रैल 1889 को बेवेरिया के एस्ट्रो-जर्मन फ्रंटियर के पास ब्रस्नोफ अम इन्सर नामक कस्बे में हुआ। उसका जन्म केतु शनि की दशा में तब हुआ था जब पूर्व क्षितिज पर कन्यालग्न अपने अंतिम चरण में था। उसके अष्टम भाव (दुष्ट स्थान) में जुड़े केतु के इन्द्र (मस्तिष्क) पर तीव्र प्रभाव पूर्व जन्मों की दुष्ट प्रवृत्तियों का संकेत देता है। लग्न का अष्टमेश मंगल के नक्षत्र में तथा लग्नेश बुध का अष्टम में होना भी इस प्रवृत्ति की पुष्टि करता है। केतु की छाया में कर्म स्थान को देखता हुआ गजकेसरी योग प्रतिशोधयुक्त आत्म सम्मान एवं नवांश का केतु तथा मंगल (क्रूरता व मारक शुक्र के साथ पराक्रम स्थान में होना जातक के खूनी पराक्रम को दर्शा रहा है।

उसकी कुण्डली में सबसे विस्फोटक योग है अष्टमेश मंगल व षष्टेश शनि का आपस में दृष्ट होना। ये दोनों योग तानाशाही, नेतृत्व की ताकत के साथ ही साथ अकाल मृत्यु की ओर भी संकेत करते हैं। यही कारण है कि 1894 के मारक तत्त्व लिए शुक्र की दशा में हिटलर की जिंदगी तनावपूर्ण एवं झटकों से भरी रही। 1895 में फशल्हम गांव व लिंज के स्कूल में पढ़े हिटलर को छाती के रोग के कारण कई साल तक घर बैठना पड़ा। शुक्र राहु की दशा में (1903) में पिता की मृत्यु के बाद तो उस पर जैसे मुसीबतों का पहाड़ ही टूट पड़ा।

फ्रांस की चाल की मोहरा बनी बावेरियन सरकार के साए में 1913 तक हिटलर दर-दर की ठोकरें खाता रहा। 1914 से 1920 तक उच्च के द्वादशेश सूर्य की दशा ने उसके क्रूर मस्तिष्क में फ्रांसीसियों के प्रति नफरत को और प्रचंड कर दिया। 1920 से 1930 तक चंद्र की दशा में (गजकेसरी योग) बावेरियन सरकार के खिलाफ हिटलर की बगावत सामने आ गई। 26 जनवरी 1924 को चंद्र गुरु (गजकेसरी योग) की दशा में बगावत के जुर्म में स्थानीय "पीपल्स कोर्ट" ने उस

जेल की सजा सुनाई। इसके बाद तो हिटलर के बागी तेवर पर जर्मन प्रभाव हावी होता गया। 1930 से 1937 तक मंगल (पराक्रम) की दशा ने अपना रंग दिखाया और हिटलर ने बागी तेवर से जर्मन के तमाम प्रांतों को मिलाकर उस नाजी हसरत को जन्म दिया, जिसने 1937 से शुरू हुई राहु की दशा में हिटलर के क्रूर प्रकोप ने पूरे संसार को हिलाकर रख दिया। इस विश्व युद्ध में हजारों लोगों की बलि चढ़ी और लाखों घर बर्बाद हुए। 1942 से शुरू हुए शनि की अंतर ने हिटलर के अंतर्मन को इतना प्रचंड कर दिया कि खुद हिटलर भी उसमें समा गया। शनि-मंगल के दुष्प्रभाव से ग्रस्त यह दशा हिटलर के लिए आखिरकार घातक सिद्ध हुई।

इजराइल राष्ट्र की कुण्डली
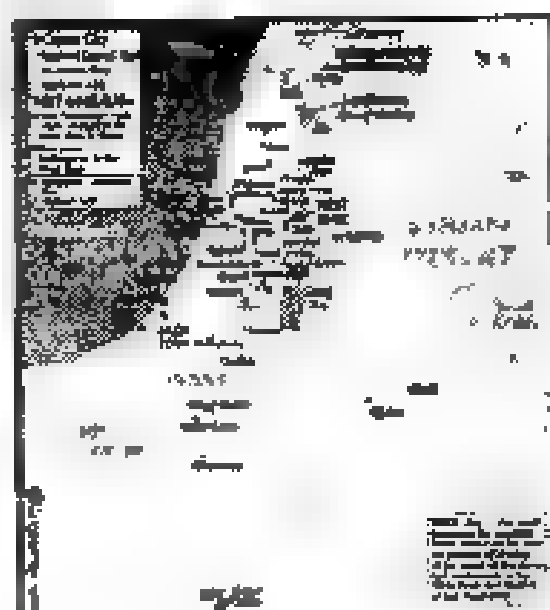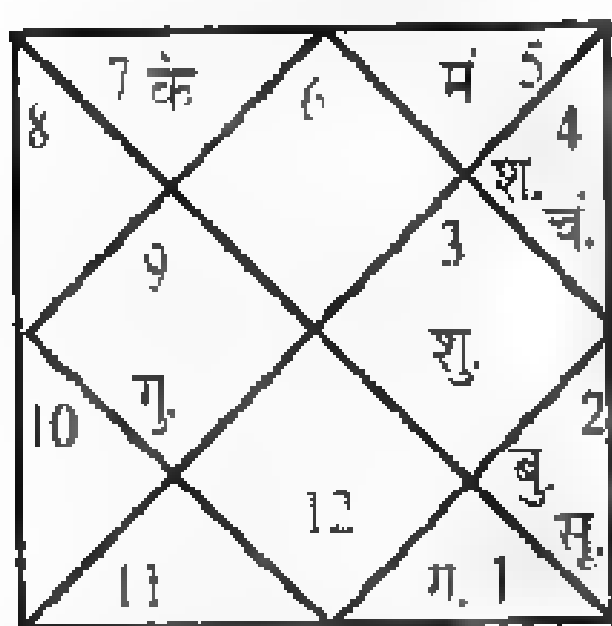
जन्म तिथि-14.5.1948 जन्म समय-15.50 बजे जन्म स्थान-तेलहबीब इजराइल। इजराइल के जन्म की कहानी बड़ी रोमांचक है। विश्व का प्राचीनतम धर्म यहूदी धर्म है। किन्तु ईसाई और इस्लाम धर्मों के उद्भव के बाद यहूदियों को अपना जन्म स्थान (मातृभूमि) छोड़कर भागना पड़ा। फिलीस्तीन, तेल अबीब, येरूशलम् यहूदियों की जन्मभूमि है। प्रथम महायुद्ध समाप्त होने पर अंग्रेज साम्राज्यवादियों ने यहूदियों को उनकी जन्मभूमि वापस सौंपने का फैसला 'बाल्फर डिक्लेरेशन' में किया। इसके बाद 14 मई 1948 को इजराइल का जन्म कन्यालग्न में दोपहर 3.50 को हुआ। कर्क के शनि ने इजराइल को आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिर भी यहूदियों व पड़ोसी राष्ट्र मुस्लिम देशों के मध्य विस्फोट धार्मिक उन्माद इजराइल की सम्प्रभुता के लिए खतरा बन चुका है।

वकील तेजप्रकाश

जन्म तिथि-28.10.1951, जन्म समय-4.52 बजे प्रातः, जन्म स्थान-अमरावती। जातक का पंचमेश शनि उच्च का है। पंचम स्थान में मंगल उच्च का, बृहस्पति उच्च
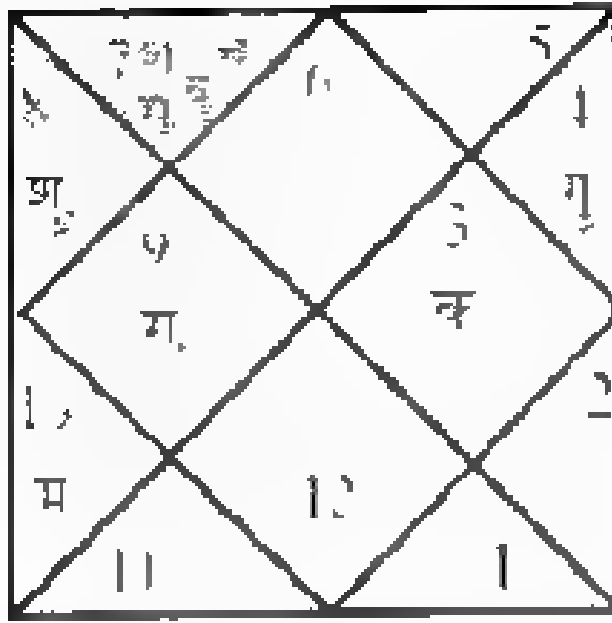
का है। परस्पर नीच दृष्टि संबंध है। जातक की पुत्र संतति नहीं है, एक कन्या है। आर्थिक स्थिति अत्यन्त श्रेष्ठ है।

भंवरलाल धींगरा
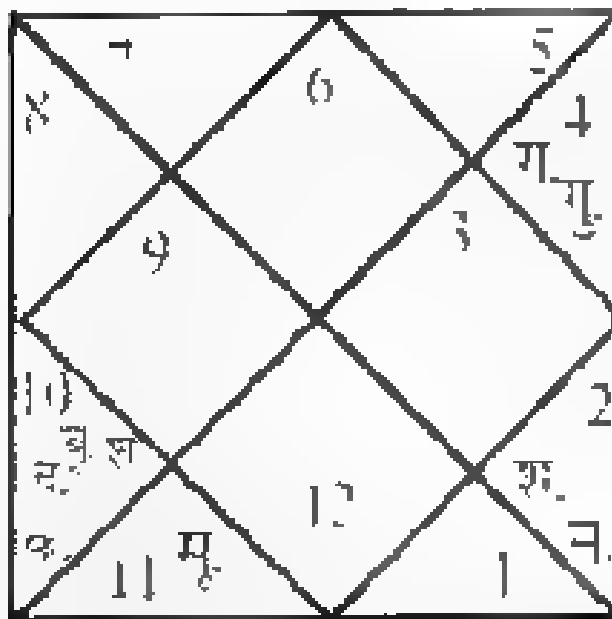
जन्म तिथि 22.2.1944, जन्म समय 22.40 बजे, जन्म स्थान मोनमान, जातक के छः कन्याएं हैं कोई पुत्र नहीं है। पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा पंचम स्थान में चारों ग्रह स्त्रीकारक हैं।

श्री राजेन्द्र अरोड़ा
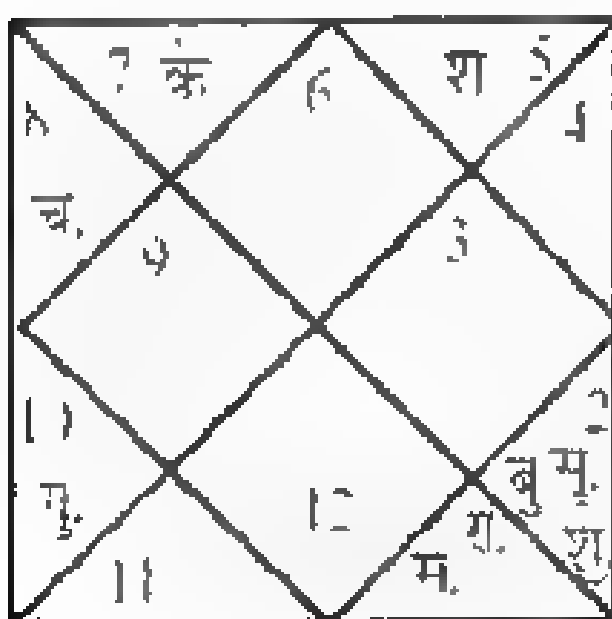
जन्म तिथि 16.5.1949, जन्म समय 16.30 बजे, जन्म स्थान-दिल्ली। जातक के 'द्विभार्या योग' है। पहली पत्नी की मृत्यु भयंकर दुर्घटना में 9.10.1991 को हुई। दूसरी पत्नी मानसिक विक्षिप्त रहती है। प्रथम कन्या सन्तान हुई। फिर एक पुत्र है। द्विभार्या योग राहु+मंगल आठवें होने से बना।

चार्ल्स ई. ओ. कार्टर
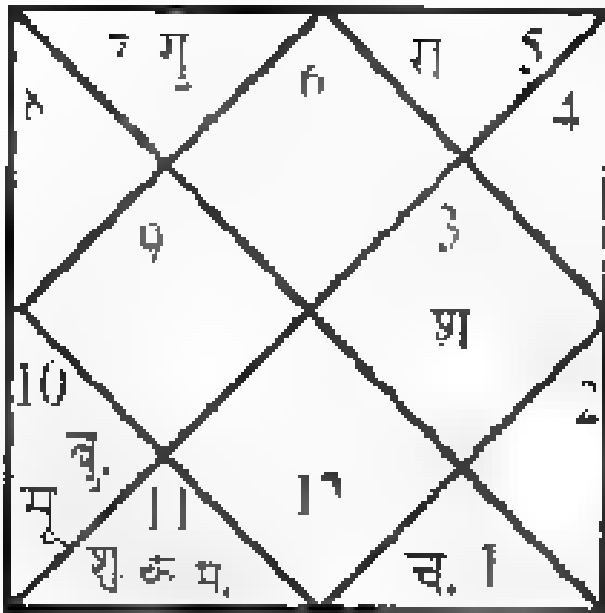
जन्म तिथि 31.1.1887, जन्म समय 22.55 बजे प्रातः, जन्म स्थान-दिल्ली। जातक महान धनी व्यक्ति है। दिमाग से सनकी है यद्यपि धनेश शुक्र खड्डे (6th house) में है परन्तु अष्टमेश मंगल छठे जाने से विपरीत राजयोग बना। जिससे जातक अरब-खरबपति है।

मोनिका लेविंस्की
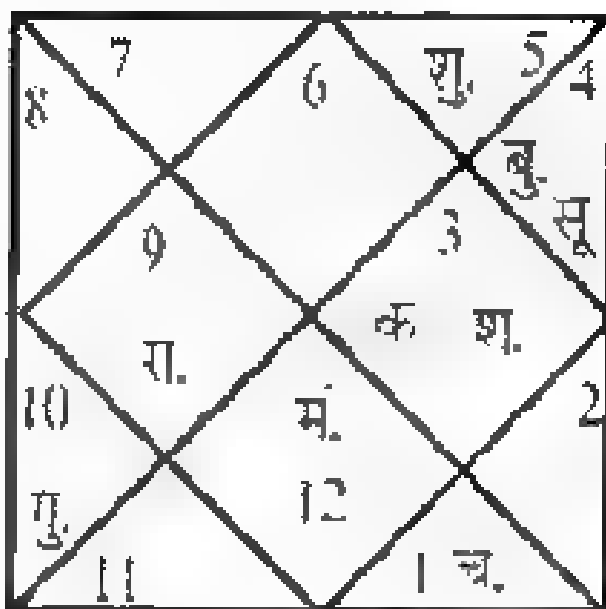
जन्म तिथि-23.7.1973, जन्म समय-11.00 बजे, जन्म स्थान-सेन फ्रांसिस्को।

❑❑❑

तुला लग्नफल

अनुक्रमणिका

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालवित, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने **'ऋग्वेदभाष्यभूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवें, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवें[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।। -पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम्–फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागाना मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम् इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद प्रतमीमांसक "ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वाग्निमाधीत तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकायां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्–तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदाग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा-वगैरा। हिन्दू षोडश-सस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त मे ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।

यच्च किंच कुर्वंत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वंत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय–लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुसक लिग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदाग शास्त्र विशेष है अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहो की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक–दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष–1929. पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सावत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों मे मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एव वेध सिद्धातों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[5]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
5. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥–पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41–42
7. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa&(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की श्रृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ.
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप-चंद्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

अर्थार्जने सहाय पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों मे मित्र व शुभचिन्तकों लम्बी श्रृंखला खडी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योकि द्रव्योपार्जन मे यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पुलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की सगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वर वादी सज्जनों एव कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए सत्य की निरन्तर खोज मे एव अनवरत अनुसधान परीक्षणों में सलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1 सुगम ज्योतिष प देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ट 17

2 बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37

3 बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25

4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः।
तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि।। बृहत्संहिता, अ.1/24

5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोडों रूपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे मे प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने से हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए। क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एव बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते है।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एव भौतिक ससाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण मे जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर मस्जिद और गिरजाघरों मे पडे निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत मे विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते है। भविष्य वक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्य वक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वय वराहमिहिर ने कहा है-

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक मे 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारो के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्गमय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय(काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्‌घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[2]

❑❑❑

---

1. वक्री ग्रह-(प्रकाशन 1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ट 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदावधीतोऽप्यज्योतिषशास्त्रस्त बिना द्विजाः।।-वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/ पृ. 2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी लग्नं ज्योतिः परं मतम्।

लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नेमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाअम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशों अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पावनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या॥

विना विलग्न परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्॥

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

ज्योतिर्विवरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदिया विलीन हो जाती है।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अत: समस्त कामो में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचित्यम्।

अतीव तुच्छ फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब को करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेलें जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाता है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनुलग्न।
मकरलग्न मन्द बुद्दि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बडे अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का महत्त्व

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घटे का होता है। ज्योतिष की भाषा मे जिसे जन्मकुण्डली कहते है वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं। क्योंकि "लग्न" का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी ने इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत मे इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुत: आकाश में दिखने वाली बारह राशिया ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न

होते है। 60 में बारह का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही ''द्वादश घर'' या ''बारह भाव'' कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली की सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे ''लग्न'' कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घटों के समय में हुआ था।

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.12	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है।
1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों मे आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय स्टेण्डर्ड समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्नं देहो वर्गं षट्कोऽङ्गानि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार—

यथा तन्त्वादनमन्तरेव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि—"**लग्न बल सर्वबलेषु प्रधानम्**"

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है.

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा इस पर हमारी पुस्तक **''ज्योतिष और आकृति विज्ञान''** पढ़िए। लग्न पर जिन जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाए से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते है। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यो न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ने ग्रन्थों काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है

देहं द्रव्य पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नवमे स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एव बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑
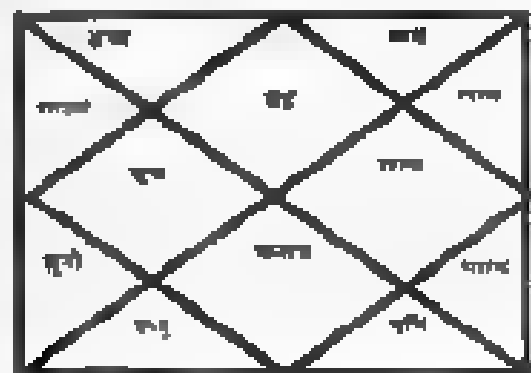
तुलालग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

जीवार्कमहिजाः पापाः,
शनैश्चरबुधौ शुभौ।
भवेतां राजयोगस्य कारकौ,
चद्रतत्सुतौ।।28।।
कुजो निहन्ति जीवाद्याः,
परे मारकलक्षणाः।
निहन्तारः फलान्येव काव्यो न तु तुलाभुवः।।29।।

दूसरा पाठ

जीवार्कभूसुताः पापाः शनैश्चरबुधौ शुभौ।
भवेता राजयोगस्य कारकौ चद्र चंद्रजौ। 30।।
कुजो निहन्ता जीवाद्याः पर मारकलक्षणाः।
निहन्तार. फलान्यत्र ज्ञातव्यानि तुलाभवे ।31। ।

तीसरा पाठ

राजयोगकरः साक्षादेक एवांशुमत्सुतः।।32।

चौथा पाठ

जीवार्कमाहिजाः पापाः शनैश्चरबुधौ शुभौ।
राजयोगकरः साक्षाद् एक एवांशुमत्सुतः।।33।।

भवेतां राजयोगस्य कारकाविन्दु तत्सुतौ।

कुजः साक्षान्न हन्ता स्यान् मारकत्वेन लक्षितः॥34॥

जीवाद्यो निहन्तारो भवेयुः पापिनो ग्रहाः।

शुभाशुभफलान्येव ज्ञातव्यानि तुलाभुवः॥35॥

पहला पाठ—गुरु, रवि और मगल पाप उत्पन्न करन वाले है शनि और बुध शुभफलदायक हैं। कारण गुरु तृतीय और षष्ठ स्थानों का स्वामी है, रवि एकादश स्थान का स्वामी है, और मगल द्वितीय और सप्तम स्थानो का स्वामी होने से मारकेश है।

शनि त्रिकोण और केन्द्र का अधिपति है और बुध त्रिकोणपति है। इसलिये ये दोनों ग्रह शुभ फल उत्पन्न करत है। चद्रमा दशम स्थान का स्वामी है और बुध नवम्-भाग्य स्थान का स्वामी है इसलिए इन दोनों का योग राजयोग करने वाला होता है। मगल द्वितीय और सप्तम स्थान का स्वामी होने से मारक है। गुरु, रवि और मगल इनकी दशान्तर्दशाओं में मृत्यु की सभावना होती है। शुक्र लग्नश और अष्टमेश होन से शुभ है।

दूसरा पाठ—इस पाठ में शुक्र का उल्लेख नहीं है। शेष सब पहले पाठ के अनुसार ही शुभाशुभ ग्रह है।

तीसरा पाठ—इस पाठ मे शनि अकेला राजयोग करता है ऐसा कहा है कारण वह चतुर्थ (केन्द्र) और पचम (त्रिकोण) का स्वामी है। इस पर से यह स्पष्ट है कि दूसरे (2) पाठ मे बुध चंद्र के योग को अधिक महत्त्व नही दिया गया है।

चौथा पाठ—तुलालग्न हो तो, गुरु रवि और मगल अशुभ फल देते हैं। शनि और बुध शुभ फल देते हैं। अकेला शनि प्रत्यक्ष रूप से राजयोग कारक होता है। मंगल मारक लक्षणों से युक्त हो फिर भी स्वयं मारक नहीं बनता। गुरु आदि करके अशुभ ग्रह मारक हैं। तुलालग्न में जन्म हो तो ने इस प्रकार शुभाशुभ फल समझना चाहिए।

स्पष्टीकरण

तुलालग्न हो तो गुरु, रवि और मंगल अशुभ फल देते हैं। शनि अकेला राजयोग करता है। कारण वह केन्द्र और त्रिकोण दोनों का स्वामी है। बुध द्वादशेश होने से अशुभ होता है। परन्तु वह त्रिकोणपति होने से उसका शुभ ग्रह से संबध शुभ फलदायक माना गया है। पहले पाठ के अंतिम चरण मे ग्रथकार ने कहा है कि ''काव्यो न तु तुलाभव·'' याने मगल, गुरु और सूर्य जिस प्रकार से मारक होकर मनुष्य का नाश करने वाले होते हैं उस प्रकार शुक्र नहीं है। इस पर से ऐसा मालूम

होता है कि ग्रंथकार ने शुक्र के संबंध में यहां कुछ भी नहीं लिखा है। पाठ 2, 3 4 इसमें तो शुक्र का कुछ भी उल्लेख नहीं है। शुक्र लग्नेश होने के नाते केन्द्राधिपति है और केन्द्राधिपति होने के कारण वह कदाचित् अशुभ फल देता है और वह क्वचित् शुभ फल देगा क्योंकि वह अष्टम स्थान का स्वामी भी है। इसलिए कदाचित् ग्रंथकार ने शुक्र का विशेष उल्लेख किया हुआ नहीं है। परंतु श्लोक 9 के अनुसार यदि अष्टमेश लग्नेश भी हो तो अशुभ फल नहीं देता ऐसा कहा है।

तुलालग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभयोग**—शनि निसर्गतः स्वयं पाप ग्रह होकर भी चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार वह शुभ माना गया है और साथ ही वह पंचम (त्रिकोण) का स्वामी भी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फल देने वाला होता है।
2. **शुभयोग**—बुध नैसर्गिक शुभ ग्रह है और वह नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होकर शुभ फल देने वाला होता है।
3. **शुभयोग**—दशम केन्द्र का अधिपति चंद्रमा श्लोक 11 के अनुसार दूषित नहीं होता और उसका नवमाधिपति बुध से स्थानाधिपत्य साहचर्य योग हुआ हो तो वह राजयोग होता है और शुभ फलदायक होता है।
4. **शुभयोग**—शुक्र प्रथम (निर्बल) केन्द्र का स्वामी होकर अष्टम स्थान का भी स्वामी होता है। श्लोक 9 के अनुसार वह लग्नेश होने के कारण शुभ होता है और शुभ फल देनेवाला होता है।

तुलालग्न के लिए अशुभयोग

1. **अशुभयोग**—गुरु तृतीय और षष्ठ स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फल देने वाला होता है।
2. **अशुभयोग**—सूर्य नैसर्गिक स्वयं पाप ग्रह है और वह एकादश स्थान का स्वामी होने से अशुभ होता है और अशुभ फल करता है।
3. **अशुभयोग**—मंगल स्वयं पाप ग्रह है और वह द्वितीय तथा सप्तम स्थानों का स्वामी (मारक स्थानों का स्वामी) होने से अशुभ फल देता है।

तुलालग्न के लिए निष्फल योग

1. मंगल-बुध

तुलालग्न के लिए सफल योग

1. शुक्र-शनि, 2. शनि अकेला 3. बुध-शनि (श्रेष्ठ) दो त्रिकोणेश का कन्द्रेश के साथ संबध होता है 4. शनि चंद्रमा, 5. चद्र बुध, 6. बुध-शुक्र, 7. मगल-शनि (निकृष्ट और सदोष) कारण मंगल मारकेश होता है और दो मारक स्थानों का स्वामी है।

तुलालग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, अष्टमेश	–	शुक्र
2.	धनेश, सप्तमेश	–	मंगल
3.	पराक्रमेश, षष्ठेश	–	गुरु
4.	सुखेश, पंचमेश	–	शनि
5.	भाग्येश, खर्चेश	–	बुध
6.	राज्येश	–	चद्र
7.	लाभेश	–	सूर्य
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-शनि, 9 बुध
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6-गुरु, 8-शुक्र, 12-बुध
10.	केन्द्राधिपति	–	1-शुक्र, 4-शनि, 7-मंगल, 10-चद्र
11.	पणफर के स्वामी	–	2-मगल, 5-शनि, 8 शुक्र, 11-सूर्य
12.	आपोक्लिम	–	3-गुरु, 6-शनि, 9, 12-बुध
13.	त्रिकेश	–	6-गुरु, 8-शुक्र, 12-बुध
14.	उपचय के स्वामी	–	3 6-गुरु, 10-चद्र, 11-सूर्य
15.	शुभ योग	–	1. शनि, 2. बुध, 3. चंद्र+बुध, 4. शुक्र
16.	अशुभ योग	–	1. गुरु, 2. सूर्य, 3. मंगल
17.	निष्फल योग	–	1. मंगल+बुध
18.	सफल योग	–	1. शुक्र+शनि, 2. शनि अकेला, 3. बुध+शनि, 4.शनि+चंद्र, 5. चद्र+बुध 6. बुध+शुक्र, 7. मंगल+शनि (निकृष्ट सदोष)

19.	राजयोग कारक	–	चंद्र, बुध, शनि
20.	मारकेश	–	मंगल मारकेश द्वितीय मारकेश गुरु
21.	पापफलद	–	सूर्य, गुरु, मगल, परमपापी-गुरु
22.	शुभयुति	–	
23.	अशुभयुति	–	

विशेष-तुलालग्न के लिए मुख्य मारकेश मंगल पर द्वितीय मारकेश के रूप में गुरु भी काम करता है।

❑❑❑

तुलालग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	– तुला
2.	लग्न चिह्न	– तराजू
3.	लग्न स्वामी	– शुक्र
4.	लग्न तत्त्व	– वायु तत्त्व
5.	लग्न उदय	–
6.	लग्न स्वरूप	– चर
7.	लग्न अवधि	–
8.	लग्न दिशा	– पश्चिम
9.	लग्न लिंग व गुण	– पुरुष, रजोगुणी
10.	लग्न जाति	– शुक्र
11.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	– क्रूर स्वभाव, त्रिधातु प्रकृति
12.	लग्न का अंग	– गुप्तांग
13.	जीवन रत्न	– हीरा
14.	अनुकूल रंग	– सफेद
15.	शुभ दिवस	– शुक्रवार
16.	अनुकूल देवता	– लक्ष्मी/सतोषी माता
17.	व्रत, उपवास	– शुक्रवार
18.	अनुकूल अंक	– छः
19.	अनुकूल तारीखें	– 6/15/24
20.	मित्र लग्न	– मिथुन, मकर कुम्भ, धनु, कर्क
21.	शत्रु लग्न	– सिंह

22.	व्यक्तित्व	–	अन्वेषक, खोजी, मास्टर माइन्ड
23.	सकारात्मक तथ्य	–	आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी
24.	नकारात्मक तथ्य	–	ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्यः शुक्रः –शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो य एष तपति शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्य)

–शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

असैव शुक्र आद्यो मन्थी –शतपथ ब्राह्मण 4/2/1 13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् –ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् –शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है–शुक्र और मंथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये '**अय वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जराय् रजसोविमाने**' मंत्र बड़ा प्रसिद्ध है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है कुछ लोग इसे वेन देवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामंथिनौ। तद्वा एष एव शुक्रो य तप तपति तद्य देष एतपत्सि तेपैषशुक्रश्चद्रमा एव मथी।।–शतपथ ब्राह्मण 4/2/1 मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है भारतीय ज्योतिष–श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (वलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष–शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतुः रुद्रातिग्मतेजसः।। –अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विध्याध्यदासुरः। ऋग्वेद 5/40/9

22.	व्यक्तित्व	–	अन्वेषक खोजी, मास्टर माइन्ड
23.	सकारात्मक तथ्य	–	आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी
24.	नकारात्मक तथ्य	–	ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्यः शुक्रः –शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो व एष तपति शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्य)

–शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी –शतपथ ब्राह्मण 4/2/1/13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् –ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् –शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है–शुक्र और मथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये **'अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जराय् रजसोविमाने'**[4] मंत्र बड़ा प्रसिद्धि है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे वेन देवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य
   तप तपति तद्य देष एतपत्त्स तेनैषशुक्रश्चद्रमा एव मथी।।–शतपथ ब्राह्मण 4/2/1
   मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष–श बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष–शकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. श नो ग्रहाश्चान्द्रमासाः शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतु· रुद्रातिग्मतेजसः।। –अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुखः ऋग्वेद 5/40/9

22.	व्यक्तित्व	–	अन्वेषक, खोजी, मास्टर माइन्ड
23.	सकारात्मक तथ्य	–	आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी
24.	नकारात्मक तथ्य	–	ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों मे अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अधिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्यः शुक्रः -शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो व एष तपति शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्य)

-शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

अत्रैव शुक्र आद्यो मन्थी -शतपथ ब्राह्मण 4/2/' 13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् -ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् -शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है—शुक्र और मथी उसकी दो आँखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये **'अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जराय् रजसोविमाने'**' मंत्र बड़ा प्रसिद्ध है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे वेन दैवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य
   एष तपति तद्य देष एतपत्ति तंपैषशुक्रश्चद्रमा एव मंथी।।—शतपथ ब्राह्मण 4/2/1
   मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष—श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष—शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. शं नो ग्रहाश्चान्द्रमाया: शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतु: रुद्रातिग्मतेजस:।। -अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुख: ऋग्वेद 5/40/9

22. **व्यक्तित्व** – अन्वेषक खोजी, मास्टर माइन्ड

23. **सकारात्मक तथ्य** – आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी

24. **नकारात्मक तथ्य** – ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मंत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्य. शुक्रः -शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो व एष तपति शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्य)

-शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

असौव शुक्र आद्यो मन्थी -शतपथ ब्राह्मण 4/2/' 13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् -ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् -शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है-शुक्र और मथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चंद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये '**अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायु रजसोविमाने**'[4] मंत्र बड़ा प्रसिद्ध है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे वेन दैवतात्मक सूत्र मानते है। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगंगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामंथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य तप तपति तद्य देष एतपत्तिस तंपैषशुक्रश्चद्रमा एव मथी।।-शतपथ ब्राह्मण 4/2/। मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष- श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3, स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष-शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. शं नो ग्रहाश्चान्द्रमासाः शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतुः रुद्रातिग्मतेजसः।। -अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुरः। ऋग्वेद 5.40/9

22.	**व्यक्तित्व**	–	अन्वेषक, खोजी, मास्टर माइन्ड
23.	**सकारात्मक तथ्य**	–	आत्मविश्वासी, आकर्षक वाणी
24.	**नकारात्मक तथ्य**	–	ईर्ष्या, घमण्ड, अति धूर्तता।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का वैदिक स्वरूप

वैदिक मत्रों में अनेक जगह शुक्र का उल्लेख मिलता है।[1] तिलक के अनुसार शुक्र शब्द से आकाशीय ग्रह अभिप्रेत है।[2]

असौ वा आदित्यः शुक्रः –शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/21

एष वै शुक्रो व एष तपति शतपथ ब्राह्मण 4/3/1/26

अस्य (अग्नेः) एवैतानि नामानि (छत्री अक्रः शुक्रः ज्योतिः सूर्य)

–शतपथ ब्राह्मण 9/4/2/25

अत्तैव शुक्र आद्यो मन्थी –शतपथ ब्राह्मण 4/2/1 13

ज्योतिर्वैशुक्रं हिरण्यम् –ऐतरेय ब्राह्मण 7/12

सत्यं वै शुक्रम् –शतपथ ब्राह्मण 3/9/3/25

शतपथ ब्राह्मण में शुक्र की चर्चा इस प्रकार से है शुक्र और मंथी उसकी दो आंखें हैं। शुक्र वही है जो चमकता है। यह चमकता है इसलिए इसको शुक्र कहा गया है। चद्रमा मंथी है।[3]

शुक्र के लिये '**अयं वेनश्चोदयत् पृश्निगर्भा ज्योतिर्जरायु रजसोविमाने**'[4] मंत्र बड़ा प्रसिद्धि है, जिसमें शुक्र के उदय का वर्णन मिलता है। कुछ लोग इसे वेन देवतात्मक सूत्र मानते हैं। लेटिन भाषा में शुक्र का नाम 'वीनस' है। बालगगाधर तिलक ने वेन और शुक्र से सादृश्य स्थापित किया।[5]

---

1. चक्षुषी हवा अस्य शुक्रामथिनौ। तद्वा एष एवं शुक्रो य
   वष तपति तद्य देष एतपन्सि तेपैषशुक्रश्चंद्रमा एवं मंथी। –शतपथ ब्राह्मण 4/2/
   मन्थिन शब्द से शनि ग्रह का ग्रहण भी किया गया है। भारतीय ज्योतिष–श. बा. दीक्षित पृ. 87
2. ऋग्वेद 10/12/3 स्वाध्याय मण्डली पारडी (बलसाड) गुजरात
3. भारतीय ज्योतिष–शंकर बालकृष्ण दीक्षित पृ. 87
4. श नो ग्रहाश्चान्द्रमामा, शमादित्यश्च राहुणा।
   शं नो मृत्युर्धूमकेतुः रुद्रातिग्मतेजसः॥ –अथर्ववेद 19/9/10
5. यं वै सूर्य स्वर्भानुतमसा विद्याध्यदासुख.। ऋग्वेद 5/40/9

आचार्य शुक्र

शुक्राचार्य दानवों के पुरोहित है (तै. सं 2.5 8.5, ता ब्रा 7 5.20)। ये योग के आचार्य है। अपने शिष्य दानवों पर इनकी कृपा बरसती रहती है। मृतमजीवनी विद्या के बल पर ये मरे हुए दानवों को जिला देते हैं (महाभा., आदि. 76/8)। असुरों के कल्याण के लिये इन्होंने एक ऐसे कठोर व्रत का अनुष्ठान किया, जिसे आज तक कोई कर नहीं सका था। इस व्रत से इन्होने देवाधिदेव शकर को प्रसन्न कर लिया। औढरदानी ने वरदान दिया कि तुम देवताओं को पराजित कर दोगे और तुम्हें कोई मार नहीं सकेगा (मत्स्य पु., अ. 47)। अन्य वरदान देकर भगवान ने इन्हे धनों का अध्यक्ष और प्रजापति भी बना दिया।

इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक में जितनी सम्पत्तिया हैं, सबके स्वामी बन गए (महाभा., आदि 78/39)। सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य तो समग्र औषधियों, मंत्रो और रसों के भी स्वामी हैं (मत्स्य पु. 47/64)। इन्होने अपनी समस्त सम्पत्तियो को अपने शिष्य असुरो को प्रदान कर दिया था (मत्स्य पु 67/65)। दैत्यगुरु शुक्राचार्य का सामर्थ्य अद्भुत है।

ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोकों के प्राण का परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि अभी अवृष्टि, कभी भय और कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियो के योग क्षेम का कार्य पूरा करते हैं (महाभा. आदि. 66.42 44)। ग्रह के रूप में ये ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित होते हैं (महाभा., सभा. 11/29)। लोकों के लिये ये अनुकूल ग्रह हैं। ये वर्षा रोकने वाले ग्रहों को शान्त कर देते हैं (श्रीमद्भा. 5/22/12)। इनके अधिदेवता इन्द्र और प्रत्याधिदेवता इन्द्राणी हैं।

वर्ण—शुक्राचार्य का वर्ण श्वेत है (मत्स्य.पु. 94/5)।

वाहन—इनके वाहन रथ में अग्नि के समान वर्ण वाले आठ घोड़े जुते रहते हैं। रथ पर ध्वजाएं फहराती रहती हैं (मत्स्य.पु. 127/7)।

आयुध—दण्ड इनका आयुध है (मत्स्य.पु. 94/5)।

परिवार—शुक्राचार्य की दो पत्नियां हैं। एक का नाम 'गो' है जो पितरों की कन्या है, दूसरी पत्नी का नाम जयन्ती है, जो देवराज इन्द्र की पुत्री है। गो से इनके चार पुत्र हुए—त्वष्ठा, वरुत्री, शड और अमर्क। जयन्ती से देवयानी का जन्म हुआ।

❑❑❑

शुक्र का खगोलीय स्वरूप

सौरमण्डल में बुध के बाद दूसरा स्थान शुक्र का है। शुक्र ग्रह सूर्य से 10,80,00,000 किमी. की दूरी पर स्थित है और अपने परिभ्रमण मार्ग पर 225 दिन मे सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है इसका व्यास 12,600 किमी. है तथा गुरुत्व लगभग पृथ्वी के समान है। सूर्य तथा चंद्रमा के बाद शुक्र ही आकाश में सबसे अधिक तेजस्वी ग्रह है। इसके संबंध में सबसे विचित्र बात यह है कि चंद्रमा की भांति इसकी भी कलाये हैं, जो किसी भी दूरदर्शी यंत्र द्वारा सुगमता से देखी जा सकती हैं। शुक्र सूर्योदय के समय पूर्व में अथवा सूर्यास्त के समय पश्चिम में देखा जाता है। इसे "सध्या" तथा "प्रभात का तारा" भी कहते हैं। शुक्र ग्रह पूर्व में अस्त होने के 75 दिन बाद उदय होता है उदय के 240 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 23 दिन बाद पश्चिम में अस्त होता है। पश्चिम में अस्त होने के 6 दिन बाद पूर्व में उदित होता है। पूर्वोदय मे 23 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 240 दिन बाद पुनः पूर्व में अस्त होता है। शुक्र ग्रह सूर्यास्त के एक-दो घण्टे तक सूर्योदय से एक दो घण्टे पूर्व ही दिखाई देने लगता है। अर्थात् सूर्य को छोड़कर 45 अंश अधिक दूर कभी नहीं जाता।

शुक्र को भृगु, कवि, सीत, आच्छा, ऊशना, कारक, आस्फुजित, दानवेज्य, दैत्यगुरु आदि विभिन्न नाम दिये गये हैं।

शुक्र की गति—यह अपनी धुरी पर 23 घण्टा 21 मिनट में पूरा घूम लेता है तथा सूर्य की परिक्रमा 224 दिन 42 घटी 2 पल में पूरी कर लेता है। इसकी गति एक सैकेण्ड में 22 मील है। स्थूल मान से यह एक राशि पर एक मास, एक नक्षत्र पर 11 दिन रहता है।

यह एक वर्ष वक्री और एक वर्ष मार्गी रहता है। वक्री अवस्था में यह पूर्व में उदय और पश्चिम में अस्त होता है। यह मार्गी अवस्था में सूर्य से 9 डिग्री अंश पर और वक्री अवस्था में 8 डिग्री अंशों पर अस्त रहता है। इसी प्रकार मार्गी अवस्था में 250 और वक्री अवस्था में 248 दिन उदय रहता है। इस ग्रह की मार्गी अवस्था

510 दिन और वक्री अवस्था 45 दिन तक रहती है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर वक्री, बारहवीं पर शीघ्रगामी, तीसरी और ग्यारहवीं पर समचारी रहता है। जब इसकी गति 75.42 होती है तब यह परम शीघ्रगामी हो जाती है। अविचारी अवस्था में यह 10 दिन तक ही रह पाता है। वक्री होने के दो दिन आगे या पीछे यह स्थिर भी प्रतिभासित होता है।

शुक्र कई बार सूर्योदय के कुछ समय पहले तेजी से चमकता हुआ पूर्व दिशा में दिखलाई पड़ता है। फलतः लोग इसे प्रभात या भोर का तारा भी कहते हैं। कई बार यह सूर्यास्त के समय पश्चिम दिशा में भी चमकता हुआ दिखलाई देता है। ऐसी वेला में इसे ''सध्या'' का तारा भी कहते हैं। किन्तु शुक्र ग्रह जब भी पूर्व दिशा में अस्त होता है तो 15 दिन बाद ही उदय हो पाता है। उदय के प्रायः 250 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 23 दिन बाद पश्चिम दिशा में अस्त हो जाता है। पश्चिम में अस्त होने के 9 दिन बाद पूर्व में पुनः उदित होता है। पूर्वोदय के 23 दिन बाद मार्गी तथा मार्गी के 250 दिन बाद पुनः पूर्व में अस्त हो जाता है यह क्रम चलता ही रहता है।

❑❑❑

तुलालग्न के स्वामी शुक्र का पौराणिक स्वरूप

दैत्यो के गुरु शुक्र का वर्ण श्वेत है। उनके सिर पर सुन्दर मुकुट तथा गले में माला है। वे श्वेत कमल के आसन पर विराजमान हैं। उनके चार हाथों में क्रमशः दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र तथा वरमुद्रा सुशोभित रहती है। शुक्राचार्य की दो पत्नियां हैं एक का नाम 'गो' है जो पितरों की कन्या है, दूसरी पत्नी का नाम जयन्ती है, जो देवराज इन्द्र की पुत्री है। गो से इनको चार पुत्र हुए–त्वष्टा, वरूत्री, शंड और अमर्क। जयन्ती से देवयानी का जन्म हुआ

शुक्राचार्य दानवो के पुरोहित हैं। ये योग के आचार्य हैं। अपने शिष्य दानवों पर इनकी कृपा सर्वदा बरसती है। इन्होंने भगवान शिव की कठोर तपस्या करके उनसे मृतसंजीवनी विद्या प्राप्त की थी। उसके बल से ये युद्ध में मरे हुए दानवों को जिन्दा करते थे (महाभारत आदि. 73/8)

मत्स्य पुराण के अनुसार शुक्राचार्य ने असुरों के कल्याण के लिए ऐसे कठोर व्रत का अनुष्ठान किया जैसा आज तक कोई नहीं कर सका। इस व्रत से इन्होंने देवाधिदेव शंकर को प्रसन्न कर लिया। शिव ने इन्हें वरदान दिया कि तुम युद्ध में देवताओं को पराजित कर दोगे और तुम्हें कोई नहीं मार सकेगा। भगवान शिव ने इन्हें धन का भी अध्यक्ष बना दिया। इसी वरदान के आधार पर शुक्राचार्य इस लोक और परलोक की सारी सम्पत्तियों के स्वामी बन गये।

महाभारत आदिपर्व (78/39) के अनुसार सम्पत्ति ही नहीं, शुक्राचार्य औषधियो, मंत्रों तथा रसों के भी स्वामी हैं। इनकी सामर्थ्य अद्‌भुत है। इन्होंने अपनी समस्त सम्पत्ति अपने शिष्य असुरों को दे दी और स्वयं तपस्वी जीवन ही स्वीकार किया।

ब्रह्मा की प्रेरणा से शुक्राचार्य ग्रह बनकर तीनों लोकों के प्राण का परित्राण करने लगे। कभी वृष्टि, कभी अवृष्टि, कभी भय, कभी अभय उत्पन्न कर ये प्राणियों

के योग-क्षेम का कार्य पूरा करते हैं। ये ग्रह के रूप में ब्रह्मा की सभा में भी उपस्थित होते है। लोकों के लिए ये अनुकूल ग्रह है तथा वर्षा रोकने वाले ग्रहो को शान्त कर देते हैं। इनके अधिदेवता इन्द्राणी तथा प्रत्यधिदेवता इन्द्र हैं। मत्स्य पुराण (14/4) के अनुसार इनका वाहन रथ है, उसमें अग्नि के सामन आठ घोड़े जुते रहते हैं। रथ पर ध्वजाएं फहराती रहती हैं। इनका आयुध दण्ड है। शुक्र वृष और तुला राशि के स्वामी है तथा इनकी महादशा 20 वर्ष की होती है

शुक्र ग्रह की शान्ति के लिए गो पूजा करनी चाहिए तथा हीरा धारण करना चाहिए। चादी सोना, चावल, घी, सफेद वस्त्र, सफेद चदन, हीरा, सफेद अश्व, दही चीनी गौ और भूमि ब्राह्मणों को दान देनी चाहिए।

नवग्रह मण्डल मे शुक्र का प्रतीक पूर्व में श्वेत पचकोण है शुक्र की प्रतिकूल दशा मे इनकी अनुकूलता और प्रसन्नता हेतु वैदिक मत्र 'ओउम् अन्नात्परिस्त्रुतो रस ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्र पय: सोम प्रजापति:। ऋतेन सत्यमिन्द्रिय विपान शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृत मधु।।' पौराणिक मंत्र–'हिमकुन्दमृणालाभ दैत्यानां परम गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारम् भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।' बीज मत्र–'ओउम द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:', तथा सामान्य मत्र 'ओउम शु शुक्राय नम:' है। इनमें से किसी एक का नित्य एक निश्चित सख्या में जप करना चाहिए। कुल जप सख्या 16000 तथा जप का समय सूर्योदयकाल है। विशेष वस्था मे विद्वान ब्राह्मण का सहयोग लेना चाहिए।

ज्योतिषीय स्वरूप–हमारे शास्त्रों में लक्ष्मी की उत्पत्ति की तीन गाथाए चल रहीं हैं। 1. समुद्र मथन, 2. ज्वाला से उत्पत्ति, 3 भृगु कन्या के रूप में श्रीमाल पुराण में। ये तीनो कथायें रहस्यवाद व छायावाद से ओत-प्रोत होकर प्रतीकात्मक रही है। कथन का तात्पर्य है। 1. विचार मन्थन से सृजनात्मक शक्ति द्वारा श्री प्राप्ति 2. संगठनात्मक के तेज से लक्ष्मी को प्रकट करना। 3. भृगु की तपस्या से, तप से व ब्रह्मचर्य द्वारा लक्ष्मी प्राप्त करना। इन कथाओ में दो तत्त्व जल प्रकट होते हैं, इन दोनों का संबध शुक्र से है। भृगु से लक्ष्मी के जन्म की कथा ने ही भृगु शुक्र से लक्ष्मी का सबध जोड़ा है।

ज्योषित शास्त्र में देव गुरु बृहस्पति को धन दायक ग्रह नही माना गया है। नैसर्गिक कुण्डली में भी भाग्य भवन खर्च के अधिपति गुरु हैं, अत: यह विद्यादायक हैं धन दायक नहीं है। जबकि शुक्र नैसर्गिक कुण्डली में धनेश बनता है। दोनों ही स्थान ऐश्वर्य और व्यापार से सबंधित हैं। "व्यापारो वर्धत लक्ष्मी:" व्यापार से लक्ष्मी बढ़ती है। ऐश्वर्य से शाभा बढ़ती है अत: हमारे भृगु शुक्र का श्री से सम्पूर्ण सबध है।

शुक्र का एक पर्यायवाचक नाम वन्त है मदन है और कवि है। यह ऐश्वर्य का उपभोक्ता ग्रह है संजीवनी विद्या का सर्जक है, दैत्य गुरु है, दैत्य ही धन का

संग्रह करते थे। यह क्रम है। अत: मदन है ऋतु बसन्त मदन उद्दीपक है। वीर्य ही संजीवनी है, वीर्य रक्षण ही प्रधान तत्त्व है। धर्मशास्त्रों की प्रत्येक क्रिया पुण्याहवाचन से प्रारम्भ होती है। उसमें ग्रहो के क्रम में "शुक्रोङ्गरका बृहस्पति शनैश्चर राहु केतु सोम सहिता आदित्याद्या सर्वेग्रहा-प्रीयन्ताम" का उद्घोष क्रम, क्रमश: शुक्र मंगल, बुध, गुरु, शनि, राहु, केतु, सोम और सूर्य का चयन करता है। इसका मुख्य कारण वीर्य प्रधानता है। जब आप का वीर्य ही बलवान नहीं तो आप के जीवन में क्या रहेगा? न सुख का उपयोग कर सकेंगे न काम की प्रेरणा प्राप्त कर सकेंगे। गुरु बसा प्रधान ग्रह है जबकि शुक्र वीर्य प्रधान ग्रह है। अत: वीर्यवान व्यक्ति ही धन प्राप्त करने में समर्थ होता है। वीर्यवान बनने के लिए 25 वर्षों तक ब्रह्मचर्य आवश्यक है। अत: शुक्र से संबंधित भाग्योदय की आयु का 25वां वर्ष है। "नाय आत्मा बलहीनेन लभ्य" आत्मा साक्षात्कारी भी बलहीन नहीं कर सकता अत: इस लोक में परलोक दोनो की प्राप्ति शुक्र की बलवत्ता से संभव मानी गई है। यही कारण रहा है कि धर्मशास्त्रो ने भी शुक्र को ही प्रमुख स्थान दिया।

शुक्र का विवेचन—शुक्र की दो राशियां उनकी अपनी हैं। 1. वृषभ और 2. तुला। वृषभ राशि में बैल का स्वरूप है तो तुला में तराजू हाथ में तौलते हुए मनुष्य का स्वरूप है।

अत: वृषभ लग्न हो चाहे राशि हो उसके जातक दृढ़ स्कंध वाले पाए जाएगे। प्राय: गौर वर्ण से संबंधित होंगे। अपनी धुन के पक्के व कामी होंगे, ऐश्वर्यशाली बनेंगे। हठ पर दृढ़ रहेंगे। उनमें शासन क्षमता होगी भावुक होंगे और अनुचित कार्य पर पछतावा भी करेंगे। इनकी हंसी लुभावनी होगी। स्वार्थी तो होंगे पर अपने स्वार्थ के लिए दूसरों का कम नुकसान करेंगे। इनमें कुछ कला झगड़ने की भी पाई जाएगी।

जबकि तुला राशि शुक्र की मूल त्रिकोणीय राशि है। तुलालग्न व राशि वाले अगर किसी के लिए 10 रुपये खर्च करेंगे तो 100 का लाभ उठाना चाहेंगे। अपने स्वार्थ को साधने में दूसरो का भरपूर नुकसान कर देंगे। ये भी विलासी व व्यसनी होंगे पर व्यापारी क्रिया में दक्ष होने से मीठा बोल कर अपना काम निकालेंगे। इंसाफ पसंद, धीरज वाले धार्मिक भी होंगे। वे न्यायाधीश भी होंगे।

शुक्र की उच्च राशि मीन जो जलग्रह है और नीच राशि कन्या अत: शुक्र प्रधान, जलविहार व घूमना पसंद करेंगे और स्त्रियों के प्रति उनका आकर्षण गहरा होगा। वे चरित्र भ्रष्ट भी बन सकते हैं। शुक्र पंच कोण का सितारा है। " पंच कोणतु भार्गवे" ऐसा वर्णन है। यह दूर्वादल श्याम वर्ण का है न अधिक गोरा और न काला। गेहूंआ वर्ण कह सकते हैं।

लग्नस्थ शुक्र पर जब चद्र व गुरु की दृष्टि हो तो वह गौर वर्ण का जातक होगा। अन्यथा कुछ कालापन लिए गेहुआ रंग का होगा। लग्नस्थ शुक्र के पति-पत्नी में एक सा रंग कुछ कालापन का होगा। इसे चित्रभानु भी कहा गया है। अतः यह स्त्रियों जैसा आचरण करने वाला जातक होता है। स्त्रियोचित विभिन्न कपड़े पहनती रहती है। इसकी ऋतु बसंत है बसंत ऋतु में ही प्रायः प्रकृति पुष्पित, सुरभित होती है। और काम उद्दीप्त होती है इसकी देवी इंद्राणी व लक्ष्मी हैं। यह इंद्रिय है और ऐश्वर्यशाली है। वैभव सम्पन्न लोग ही भोग विलास का आनन्द उठाते हैं। इसकी दिशा पूर्व और दक्षिण है परन्तु अग्नि कोण मुख्य स्थान है। क्योंकि यह आर्द्र भी है, और आग भी है। इसमें जल व तेज का समन्वय है। इसकी जाति ब्राह्मण है। क्योंकि यह तपस्वी 25 वर्ष के ब्रह्मचर्य धारण से वीर्य परिपक्व होता है। यह रजोगुणी है, क्योंकि यह ग्रह भोग प्रधान ग्रह है। यह सदैव शुभ रहता है क्योंकि यह शुभ वर्ण का है इसमें गौरता प्रमुख पाई जाती है।

यह हमेशा मनोरंजन में आसन्न रहता है क्योंकि इसका जातक दर्शनीय शरीर वाला, सुन्दर नेत्र वाला, लहरीले केशों वाला तथा कफवान प्रधान प्रकृति वाला होता है जिस पर स्त्रियां आसक्त रहती हैं। यह कवि है, क्योंकि प्राकृतिक सौन्दर्य पर इसका अधिकार है प्रातः वेला में ही कवि व संगीतकार अपने काव्य व संगीत की साधना करते हैं।

शुक्र की बलवत्ता—प्राकृतिक कुण्डली में चतुर्थ स्थान चंद्र का है पर शुक्र 4थे भाव में बैठकर बली होता है। पुरुषों की कुण्डली, स्त्री राशियों मे बैठा शुक्र जातक की कुण्डलियों में पुरुष राशि में बैठा शुक्र बलवान होता है।

चौथे भाव में शुक्र दिग्बली और 5वें भाव में हर्षबली होता है शुक्र सप्तम भाव का कारक है। अतः सप्तमस्थ शुक्र शुभ फल नहीं देता है। ''कारको भावनाशाय'' ऐसा प्रसिद्धि है। सप्तम का शुक्र कामेच्छा बलवान करता है। शुक्र राशि के मध्य भाग में अपनी उच्च राशि में द्रेष्काण में और नवांश कुण्डली मे स्वगृह में दिन में तीसरे, चौथे, षष्ठ तथा व्यय स्थान मे, तीसरे पहर मे ग्रह मुहूर्त मे चंद्र के साथ तथा वक्री ग्रह के साथ सूर्य के आगे गया हुआ बलवान होता है। परन्तु वक्री बुध के साथ शुक्र कर्म होता है। शुक्र का बल चंद्र तोड़ देता है। यह षष्ट स्थान में विफल रहता है। इसमें विवाद भी है।

शुक्र का उदयास्त—पूर्व का शुक्र, द्वितीय भाव लग्न और व्यय स्थान में होता है। पश्चिम का शुक्र छठवें, सातवें और आठवें स्थान मे होता है।

द्वितीय भाव षष्ठ और सप्तम में यह नजर नहीं आता और लग्न, व्यय और अष्टम में दिखाई देता है। शुक्र पश्चिम की ओर उदय होता है तब यह सूर्य के पीछे

रहता है उस समय यह सांवला दिखाई देता है। जब शुक्र पूर्व की ओर हो तो सूर्य के आगे होता है इस समय यह अति तेजस्वी होता है। सूर्य के साथ बैठा शुक्र अस्त हो जाता है। शुक्र हमेशा सूर्य के आगे या पीछे घर में रहता है।

शुक्र के रत्न—शुक्र के रत्नों में मोती, हीरा व स्फटिक हैं। इसकी धातु सफेद सोना (प्लेटिनम) और चादी है। निर्बल शुक्र को रत्न पहना कर बलवान किया जा सकता है।

शुक्र के फल

1. कन्या लग्न में नीच का शुक्र उत्तम वैभव देता है।
2. चतुर्थ स्थान में बैठा शुक्र किसी भी राशि में हो उसे उम्र सुख से गुजार देता है।
3. शुक्र धनदाता ग्रह है। शुक्र प्रधान व्यक्ति सुखी रहता है। शुक्र की दशा विंशोतरी में 20 वर्ष की होती है।
4. धन स्थान में शुक्र धनवान बनाता है।
5. तीनों लग्नों में 12वें गया शुक्र राजा के तुल्य धन देता है।
6. शनि+शुक्र का संबध एक दूसरे का पूरक है।
7. शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा, शनि की महादशा में शुक्र की अतर्दशा धनु और मीन राशि व लग्न के जातकों को छोड़कर सभी को योग हीन बना देती है
8. जिस भाव मे शनि+शुक्र की युति होती है उस भाव के फल में प्रायः वृद्धि होती है। परन्तु 7वें भाव में यह व्यक्ति का चरित्र गिरा देती है।
9. चौथे भाव में शनि+शुक्र की युति अनेक स्त्रियों से धन प्राप्ति और दशम मे हो तो राजा तुल्य वैभव देगी।
10. मकर व कुम्भलग्न में शुक्र योगकारक है। वहा शुक्र+शनि की युति ज्यादा लाभप्रद है।
11. तुला व वृष लग्नो मे शनि+शुक्र युति विशेष फल नहीं करेगी केवल शनि अकेला योग कारक होगा।
12. शुक्र से 4-8वे 12वें श., म. या पाप ग्रह हो तो दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद रहेगा अगर शुभ दृष्ट हो तो और बात है।
13. मं +शु समसप्तक हो तो कामी विशेष बना देगा।

14 वक्री ग्रह स क साथ या अन्य वक्री ग्रह बुध को छोड़ कर बैठा शुक्र वैभव से पूर्ण करेगा।

15 शुक्र की एक पाद द्विपाद, त्रिपाद या सम्पूर्ण दृष्टि से शून्य मगल होगा तो संतान का अभाव रहेगा।

निर्बल शुक्र को शांत करने व बलवान करने के उपाय

1. श्री यंत्र का पूजन नित्य करें।
2. श्री सूक्त या लक्ष्मी स्रोत वा कनक धारा स्रोत का पाठ करें।
3. ब्राह्मणों द्वारा शुक्र व बाधक ग्रह के जाप करवाए।
4. नित्य 1 मुट्ठी ताजे चावल सूर्योदय से पहले बनवाकर घी शक्कर डालकर सूर्योदय से पहले गौ को दें गौ पालतू न हो सफेद व काली हो तो श्रेष्ठ ऐसा 28 रोज करे.
5. हर शुक्र को मछलियों को चुग्गा दे।
6. बीमारी हो तो हर शुक्रवार मोरों को चने चुगाए।
7. हर शुक्र, मगल को कुत्तों को दूध और डबल रोटी देते रहे।
8. लेख में प्रदर्शित शुक्र के रत्न धारण करें।
9. मंदिर में हर शुक्र को सफेद वस्तु, दूध, दही चावल या शक्कर का दान करें
10. शुक्र की अनिष्टता के परिहारार्थ दूध ज्वारी का दान सतत् करते रहे। भोजन के पूर्व थाली म परोसी सभी चीज थोड़ी थोड़ी निकालकर सफेद गाय या सफेद बैल को खिलाए।
11. लग्न मे स्थित शुक्र अनिष्ट हो एव सप्तम तथा दशम स्थान में कोई ग्रह न हो तो ऐसे जातक का विवाह 25वे साल में होता है। विवाह के बाद वह कंगाल बनता है। उसकी पत्नी उसे छोड़ देती है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए घास (जवस) की चटनी बनाकर नित्य भोजन में ले। गोमूत्र रोज सेवन करें। सप्तधान्य इकट्ठा करके पंछियों को खिलाएं।
12. अनिष्ट शुक्र द्वितीय स्थान मे और बृहस्पति 8, 9 या 10 मे से किसी स्थान मे हो तो जातक का वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण रहता है। पत्नी नौकरी करती हो तो उसका चरित्र भ्रष्ट होता है। जातक जीवन भर दु.खी रहता है। जातक को गुप्त रोग एव शीघ्र वीर्यपतन के विकार होते हैं। यह अनिष्टता दूर करने के लिए प्रवाल भस्म का सेवन करें।

13. अनिष्ट शुक्र पंचम स्थान में हो एवं राहु लग्न में या सप्तम स्थान में हो तो जातक कामातुर रहता है उसको संतान आज्ञाकारी नहीं रहती है। चोरी का डर रहता है। इस अनिष्टता के निवारण के लिए गाय की सेवा करें। स्वयं का चरित्र शुद्ध रखें जातक स्त्री या पुरुष दोनों ही दही-दूध से अपने गुप्तांग स्वच्छ करें इससे आय में बढ़ोतरी होकर जीवन सौभाग्यशाली बनेगा।

14. शुक्र अष्टम स्थान में हो तो अनिष्ट फल देता है। इस अनिष्टता को दूर करने के लिए सफेद सिक्का चवन्नी, अठन्नी या रुपया सफेद पुष्प के साथ गंदे पानी में प्रवाहित करें। देवी के मंदिर में जाकर नित्य प्रार्थना करें।

15. नवम स्थान में शुक्र होने पर जातक धनी तथा उद्योगपति बनता है उसकी बुद्धि की कुशाग्रता को बढ़ावा मिलता है। यदि नवमस्थ शुक्र अनिष्ट हो तो उसके शुभ फल न मिलकर अशुभ फल ही प्राप्त होंगे। इन अशुभ फलों की निवृत्ति के लिए चांदी के चौकोर टुकड़े कड़वे नीम के पेड़ के नीचे गाड़ दें। नवम स्थान में शुक्र के साथ चंद्र व मंगल हो तो गृह निर्माण के समय एक छोटे-से मिट्टी के पात्र में शहद भरकर यह मधुघट मकान की नींव में गाड़ दें।

16. बारहवें स्थान में शुक्र पत्नी के लिए अनिष्टकर होता है, इस अनिष्टता को दूर करने के लिए नीले या बैंगनी रंग के कुछ फूल संध्या समय जंगल में गाड़ दें

17. बारहवें स्थान में शुक्र एवं 2, 6 7 12 में से किसी एक स्थान में राहु होने पर जातक की उम्र के 25वें साल तक स्थिति कष्टकारक रहती है इस अनिष्टता को दूर करने के लिए काली गाय या भैंस पालें।

18. चांदी, चावल, चित्र विचित्र रंग के वस्त्र, बछड़े सहित गाय, हीरा, रूपा, इसमें से जो संभव हो उसका दान करें।

19 वाघाटी की जड़ तावीज में धारण करें।

20. हर शुक्रवार को सफेद सीसा पानी में डालकर स्नान करें।

शनि अनिष्ट से बचने हेतु टोटके

21. कुण्डली में शनि शुभ हो तो उसे और शुभ बनाने के लिए मकान में लोहे के फर्नीचर का इस्तेमाल करें। भोजन में काला नमक और काली मिर्च का प्रयोग करें। आंखों में काजल या काला सुरमा लगाएं।

22. शनि की अनिष्टता साढ़ेसाती या ढैय्या में होने वाले कष्ट कम करने के लिए भोजन के लिए थाली में परोसे सभी पदार्थ थोड़े-थोड़े अलग निकालकर रखें। यह पदार्थ कौओं को खिलाएं।

23. संतति प्राप्ति में शनि रोड़े अटकाता हो या अनिष्ट शनि के कारण गर्भपात होता हो तो ऐसी स्त्री भोजन पूर्व थाली में परोसे सभी पदार्थ से थोड़ा-थोड़ा अलग निकालकर काले कुत्ते को खिलाए।

24. अनिष्ट शनि की अनिष्टता निवारण के लिए सरसों या तिल का एवं शनि तेल का दान करें।

25 अनिष्ट शनि होने पर उस जातक के मकान का प्रवेश द्वार पश्चिम दिशा में होता है। जातक को आयु के 36, 42, 45, 48वें साल क्लेशदायक बीतते हैं। शिक्षा पूर्ण नहीं होती। अपच की शिकायत रहती है। ऐसे जातक सुरमा खरीदकर जमीन में गाड़ दें। सुरमा एवं बड़ की जड़ दूध में उबालकर उसका तिलक स्वयं के माथे पर करें। इससे शरीर की मानसिक एवं आर्थिक अड़चनें दूर होती हैं।

26. चतुर्थ स्थान में शनि हो, ऐसे जातक रात को दूध न पीएं। क्योंकि दूध जहरीला बनकर शनि की अनिष्टता बढ़ाता है।

27. चतुर्थ स्थान में शनि हो तो ऐसे जातक काले सांप को दूध पिलाएं, भैंस को घास खिलाएं, मजदूरों को भोजन दें। हमेशा आर्थिक तंगी रहती हो तो कुएं में कच्चा दूध डालें।

❑❑❑

तुलालग्न की चारित्रिक विशेषताएं

तुलालग्न का स्वरूप

शीर्षोदयी द्युवीर्याढ्यरूतुल: कृष्णो रजोगुणी।

पश्चिमो भूचरो घाती शूद्रो मध्यतनुद्विपात् ॥15॥

—बृहत्पाराशरहोराशास्त्र/अ. 4/श्लो. 15

तुला शीर्षोदय, दिगबली, कृष्णवर्ण, रजोगुणी पश्चिमवासी, भूमिचारी, हिंसक, शूद्रजाति, मध्यदेह है, इसका स्वामी शुक्र है।।15।।

देवब्राह्मणसाधुपूजनरत: प्राज्ञ: शुचि: स्त्रीजित:

प्राशु सोन्नतनासिक: कृशचलद्गात्रोऽटनोऽर्थान्वित:।

हीनांग: कय-विक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुग,

बन्धूनामुपकारकद् विरुषितस्त्यक्तश्च तै: सप्तमे॥1।7।

बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 7

तुला में चंद्रमा रहने पर देवता, ब्राह्मणा व साधु सज्जनों का सत्कार करने वाला, बुद्धिमान, पवि आचरण करने वाला अर्थात् दूसरो की स्त्री व धनादि का अलोलुप, सत्याचारणशील, स्त्री द्वारा वश मे किया गया, ऊंचे कद वाला, ऊंची नामक वाला, कमजोर एवं अस्वस्थप्राय शरीर वाला, यात्रा प्रेमी, धनी, अगहीन, क्रय विक्रय मे कुशल, देवता वाचक किसी द्वितीय नाम वाला अर्थात् सामान्यत: दो नामों वाला, रोगी, अपने बधु बान्धवों का उपकार करने वाला किन्तु अपने ही बन्धुओं से तिरस्कृत व त्यक्त होता है।

तुलाविलग्ने तु नर: प्रसूत: स्वकर्मणा जीवति बुद्धिमांश्च।

विद्वत्प्रिय: सर्वकलास्वभिज्ञश्चलस्वभावो वनिताजितश्च॥7॥

वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो. 7/पृ. 288

यदि जन्म समय में तुलालग्न विद्यमान हो तो मनुष्य बुद्धिमान, अपने कार्य में

संलग्न रहने वाला या पैतृक कार्य से जीविका कमाने वाला, विद्वानों का प्यारा, सभी कलाओं का जानकार, चंचल स्वभाव वाला, स्त्री से पराजित होने वाला होता है।

ललितवदननेत्रो राजपूज्यश्च विद्वान् मदनरतिविलोल: स्त्रीधनक्षत्रशाली।

विरलदशनमुख्य: शान्तबुद्धिर्विषादी चलमतिरतिभीरुर्जायते तौलिलग्ने।।

–जातक पारिजात श्लो. 7/पृ. 678

सुन्दर चेहरा (मुखाकृति) और नेत्र, राजपूज्य (राजा में सम्मानित), विद्वान, स्त्रियों से रति के लिये जिसका चित्त चंचल रहे। स्त्री, धन और क्षेत्र (खेत, भूमि) से युक्त, विरल (परस्पर भिड़े हुए नहीं) दांत, मुख्य (प्रधान), शान्त बुद्धि, विषादी (किसी एक विचार पर दृढ़ न रहना अस्थिर मति का लक्षण है), अत्यन्त भीरु (डरपोक) हो।

कन्दर्परूपनिकपुणस्तुलादिभागेऽध्वसेवज्ञ:।

श्यामकला पणयरतो नियोगधीर: सपेधावी ।।10।।

–सारावली पृ. 466/श्लो. 10

यदि जन्म लग्न में तुला राशि व तुला राशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक कामदेव के तुल्य स्वरूपवान, चतुर मार्ग सेवन की विधि का ज्ञाता, कृष्ण वर्ण, व्यापार में लीन, वियोग में धैर्यवान् और सुन्दर मेधावी होता है।

तुलालग्नोदये जात: सुधी: सत्कर्म जीविक:।

विद्वान सर्वकलाभिज्ञो धनाढ्यो जनपूजित:।।

–मानसागरी

तुलालग्न वाला जीव ज्ञानशील, विवेकी, सतकार्य युक्त, मान-सम्मान वाला, धनसम्पदाशील, अनेक कलाओं द्वारा जीवनयापन करने वाला, जनसमाज में पूज्य, वाणिज्य कार्य में कुशल रहे।

भोज संहिता

तुला राशि का स्वामी शुक्र है। शुक्र ऐश्वर्यशाली व विलास पूर्ण ग्रह है। गौर वर्ण, मध्यम कद तथा सुन्दर, आकर्षक चेहरा इस राशि वाले जातक के प्रारम्भिक लक्षण हैं।

यह राशि चर संज्ञक, वायु तत्त्व प्रधान व पश्चिम दिशा की स्वामिनी है। इसका प्राकृतिक स्वभाव वृष तुल्य होते हुए भी विशेषत: इस राशि वाले जातक विचारशील, ज्ञानप्रिय, कुशल कार्य सम्पादक व राजनीतिज्ञ होते हैं।

इस राशि का चिह्न तुला (तराजू) है। तराजू दो वस्तुओं के संतुलन का परीक्षण करते हुए हल्की व भारी वस्तु का बोध कराती है। अतः इस राशि वाले व्यक्ति की संतुलन शक्ति बड़ी गजब की होती है। यदि आपका जन्म चित्रा नक्षत्र में है तो आप किसी भी व्यक्ति के मन की थाह पा लेते है। कोई व्यक्ति क्या कहना चाहता है ये बोलने से पहले ही उसके हृदय की बात समझ लेते है अपनी इसी फुर्तीली निर्णयात्मक शक्ति के कारण आप शीघ्र ही लोगो पर छा जाते हैं ''तराजू'' जैसे व्यापार का परिचायक है इस राशि वाले बड़े कुशल व्यापारी होते है तथा लोक व्यवहार में चतुर होने के कारण इनको व्यापारिक सफलता शीघ्र मिल जाती है।

तुला राशि पुरुष जाति सूचक व क्रूर स्वभाव राशि मानी जाती हैं। यदि आपका जन्म स्वाति नक्षत्र में है तो आपमें एक जबरदस्त व्यापारी के समस्त गुण विद्यमान हैं। आप सच्चा व खरा परीक्षण करने की क्षमता रखते है। आप सहज में ही किसी व्यक्ति के छलावे मे नहीं आ सकते। आप राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। जन्मकुण्डली में यदि शुक्र की स्थिति अच्छी है तो कुशल अभिनेता भी बन सकते हैं।

नक्षत्र चरणानुसार फलादेश

रा-री	रू-रे-रो-ता	ती तू ते
चित्रा	स्वाति	विशाखा

चित्रार्द्धम् स्वाति विशाखा पादत्रयं तुला।

तुला नक्षत्र में चित्रा -मंगल+स्वाति--राहु+विशाखा गुरु इन ग्रहों का समावेश है। तब ही तुला के सौन्दर्य का आकार विकसित होगा यह हमारा स्पष्ट ध्यातव्य है।

चित्रा नक्षत्र

चित्रासु चित्रांबरमाल्यधारी सुलोचनागः पुरुष जातः।

चरण	नक्षत्रांश	राशि	नक्षत्र स्वामी	उ. नक्ष. स्वामी	अंश
तृतीय	0.00 से 3.20 शु.	शुक्र शुक्र शुक्र	मंगल मंगल मंगल	बुध केतु शुक्र	0.0.0 से 1.53.20 1.43.20 से 2.40.0 2.40.0 से 4.53.20
चतुर्थ	3.20 से 6.40 मं	शुक्र शुक्र	मंगल मंगल	सूर्य चंद्र	4.53.20. से 4.33.2 4.33.20 से 6.40.0

चद्रमा जब चित्रा नक्षत्र में हो–चद्रमा जब चित्रा नक्षत्र में स्थित हो तो जातक कई प्रकार के वस्त्र और मालाए धारण करता है। उसकी आखें और अग सुन्दर होते हैं। मगल का नक्षत्र होने से चित्रा के लिए मित्र है और शुभप्रद है।

चित्रा नक्षत्र तृतीय चरण में हो–चित्रा नक्षत्र तृतीय चरण में यदि चद्र हो तो जातक परदारगामी होता है। यह पाद शुक्र का नक्षत्र है, स्वामी मगल और शुक्र दोनों कामुक हैं। अतः परदारगामी होना उपयुक्त है।

चित्रा नक्षत्र चतुर्थ चरण में हो–चित्रा नक्षत्र चतुर्थ चरण में यदि चद्र जन्म समय में हो तो जातक पीड़ित रहता है अर्थात् कोई चोट खाता रहता है। इस पाद का स्वामी मंगल है। इस नक्षत्र का स्वामी भी मगल है। अतः मगल का चंद्र पर बहुत प्रभाव रहेगा जिसके फलस्वरूप शरीर (चंद्र) पर चोट आदि का बहुधा लगना व्यक्त होगा।

आपके जन्म समय में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। सामान्यतया तुला राशि में उत्पन्न जातक सुन्दर एवं दर्शनीय होते हैं तथा उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग उनसे प्रभावित रहते है। उनकी प्रवृत्ति हास्यप्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। सुन्दर दृश्यों एव वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। स्वाभाविक रूप से ये अन्य जनो को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते हैं तथा सबके साथ समानता का व्यवहार करते हैं जिससे समाज में ये सम्मानित, प्रतिष्ठित तथा प्रसिद्ध रहते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है तथा अच्छे कार्यों से ये अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। नीति ज्ञान मे ये चतुर होते हैं अतः राजनीति के क्षेत्र में इनको नेतृत्व प्राप्त हो जाता है परन्तु इनका कोई निश्चित सिद्धान्त नही होता तथा समयानुसार ये परिवर्तन करते है।

अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक सौष्ठव व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जनों को प्रभावित करने मे समर्थ होंगे। आपकी प्रवृत्ति हास्यप्रिय होगी तथा गम्भीरता आपको विशेष अच्छी नही लगेगी। बच्चो के प्रति आपके मन मे स्नेह का भाव रहेगा तथा प्राकृतिक दृश्यो के प्रति आपके मन मे आकर्षण रहेगा। साथ ही कला से आपका भावनात्मक सबध रहेगा।

आप सभी लोगों से समानता का व्यवहार करेंगे तथा आपके मन में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र मे आपका प्रभाव रहेगा तथा आपके अधिकारी एव सहयोगी आपसे प्रसन्न तथा सतुष्ट रहेंगे। आप किसी नवीन सिद्धान्त या ग्रथ की भी रचना कर सकते हैं जिससे आपको यश की प्राप्ति होगी।

आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमत्ता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे तथा इनमें आपको इच्छित सफलताएं भी मिलती रहेंगी। आपकी प्रवृत्ति विलासी होगी तथा भौतिकता के प्रति अत्यधिक आकर्षण रहेगा जिससे आपकी प्रवृत्ति काफी व्ययशील होगी। आपकी प्रवृत्ति भ्रमण प्रिय होगी तथा यात्रा आदि भी समय पर सम्पन्न करते रहेंगे। कला एवं संगीत में आप निपुण होंगे तथा कार्य करने में अत्यन्त ही दक्ष होंगे।

चंद्रमा स्वाति नक्षत्र में

दाता कृपालु प्रियवाक् धनी च धर्माश्रितः शीतकरेऽनिलर्क्षे।

चरण	नक्षत्रांश	राशि	नक्षत्र स्वामी	उ. नक्ष. स्वामी	अंश
प्रथम	6.40 से 10.0 गु.	शुक्र शुक्र	राहु राहु	राहु गुरु	6.40.0 से 8.40.0 8.40 से 10.26.40
द्वितीय	10.0 से 13.20 श.	शुक्र शुक्र	राहु राहु	शनि बुध	10.26.040 से 12.33.20 12.33.20 से 14.26.40
तृतीय	13.20 से 16.40 श.	शुक्र शुक्र	राहु राहु	केतु शुक्र	14.26.40 से 15.13.20 15.13.20 से 17.26.40
चतुर्थ	16.40 से 20.00 गु.	शुक्र शुक्र शुक्र	राहु राहु राहु	सूर्य चंद्र मंगल	17.26.40 से 18.6.40 18.5.40 से 19.13.20 19.13.20 से 20.00

चंद्रमा यदि स्वाति नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति दाता, कृपालु, मीठा बोलने वाला, धनी तथा धार्मिक होता है। यह उल्लेख उस फल से मिलता है जो कि जातक पारिजात ने इस सन्दर्भ में दिया है, हम इस फल से अधिक सहमत नहीं हैं। हमारी टिप्पणी जातक पारिजात से उद्धृत विवरण में देखिए

स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण में चंद्रमा—स्वाति नक्षत्र प्रथम चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर व्यक्ति चोर होता है। यहां नक्षत्र स्वामी राहु और पाद स्वामी गुरु है। राहु गुरु को बिगाड़ देगा और अपना फल देकर चोर बना देगा।

स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण में चंद्रमा—स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर व्यक्ति की आयु थोड़ी होती है। इस पाद का स्वामी भी

शनि है, इस नक्षत्र का स्वामी राहु है राहु और शनि दोनों चंद्र के शत्रु हैं। चंद्र लग्न रूप होने से आयु का प्रतिनिधि है। अतः दो पापी प्रभावों में आकर आयु को अल्प करता है।

स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण में चंद्रमा—स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर जातक धार्मिक होता है। इस पाद का स्वामी भी शनि है। नक्षत्र का स्वामी राहु है। राहु और शनि चंद्र पर प्रभाव डालकर धार्मिक कैसे बना सकते हैं यह विचारणीय विषय है, हां, वैराग्यवान अवश्य बना सकते हैं, क्योंकि चंद्र का मन है और शनि और राहु दोनों वैराग्य के प्रतिनिधि हैं।

स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में चंद्रमा—स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर जातक राजा होता है। इस चरण का स्वामी गुरु है। नक्षत्र यद्यपि राहु का है, परन्तु ऐसा लगता है कि राहु यहां गुरु के प्रभाव में आ गया है और चंद्र और गुरु मिलकर राजयोग का फल कर रहे हैं। परन्तु यह विचारणीय है कि कहीं राहु गुरु को बिगाड़ कर उल्टा फल तो न करेगा।

आपमें सहनशीलता का भाव विद्यमान होगा तथा धैर्यपूर्वक कार्यों को सम्पन्न करके उसमें सफलता की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आपको समय-समय पर धनार्जन होता रहेगा आपमें शारीरिक बल की भी प्रचुरता रहेगी फलतः परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करके आप जीवन में मनोवांछित सफलताओं को अर्जित करेंगे जिससे समाज में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपका आदर करेंगे। साथ ही यश भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल आप धार्मिक कृत्यों को विनयपूर्वक सम्पन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति की अनुभूति होगी। मित्र वर्ग के मध्य आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे आपको वांछित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा।

चंद्रमा विशाखा नक्षत्र में

ईर्ष्युर्नरः कान्तियुतोऽतिलुब्धो द्विदैवते वाक्चतुरः कुलेप्सु।

चंद्रमा जब जन्म कुण्डली में विशाखा नक्षत्र में हो मनुष्य ईर्ष्या करने वाला, सुन्दर कान्ति वाला होता है। यह फलादेश भी जातक पारिजात में दिए फलादेश से बहुत कुछ मिलता-जुलता है। इस सन्दर्भ में हमारी टिप्पणी वहां देखिए।

विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण में यदि जन्म समय में चंद्रमा स्थित हो तो जातक नीति को जानने वाला होता है। यह पाद मंगल ग्रह का है और नक्षत्र है गुरु का।

चरण	नक्षत्रांश	राशि	नक्षत्र स्वामी	उ. नक्ष. स्वामी	अंश
प्रथम	20.0 से 23 20 म.	शुक्र शुक्र	गुरु गुरु	गुरु शनि	20.0.0 से 21.46.40 21.46.40 से 23 53 20
द्वितीय	23 20 से 26.40 शु.	शुक्र शुक्र	गुरु गुरु	बुध केतु	23 53.20 से 25 46.50 25.46.40 से 26.33 20
तृतीय	26.40 से 30.0 बु.	शुक्र शुक्र	गुरु	शुक्र सूर्य चंद्र	26.33.20 से 28 46.40 28.46.40 से 29 26.40 29.26.40 से 30.0.0

अतः चंद्र पर गुरु और मगल राजकीय तथा तर्कशील ग्रहों का प्रभाव पड़ेगा जिसके फलस्वरूप मनुष्य नीति में निपुण होगा।

विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म के समय चद्र स्थित हो तो जातक शास्त्रवेत्ता अर्थात् शास्त्रों को जानने वाला होता है। इस पाद का स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र का स्वामी गुरु है। दोनों आचार्य हैं, विद्वान है, इसलिए शास्त्रवेत्ता कहा। दोनों का प्रभाव लग्नरूप चंद्र पर पड़ेगा ही।

यदि आपका जन्म ''विशाखा'' नक्षत्र मे हुआ है तो शारीरिक श्रम न तो आपके वश की बात है और न ही उससे आपका भाग्योदय हो सकता है। इसके विपरीत मानसिक श्रम से आप लाभ उठा सकते है। आप वाक पटु हैं। सेल्समैन शिप आपके लिए सर्वथा लाभप्रद है। ब्लैक मार्केटिग से भी आपका सबध हो सकता है सेक्स के मामले में आप बहुत ही रंगीले व्यक्ति हैं। लड़किया सहज ही आपकी ओर आकर्षित हो जाती हैं, और इस बात का आपने हमेशा फायदा उठाया है।

यदि आपका जन्म 17 अक्टूबर से 13 नवम्बर के बीच मे हुआ है तो आपका आत्मबल कमजोर है। इन दिनो सूर्य तुला राशि पर भ्रमण करता है। पराशर के मतानुसार ''तुला का सूर्य'' 1000 राजयोग नष्ट करता है। ऐसे व्यक्तियों की दिमागी उपज बहुत तेज होती है तथा कला, विज्ञान व मशीनरी कार्य में रुचि रखते है। जीवन के 24 वर्ष के पश्चात् इनका भाग्योदय होता है। बाल्यपन में जीवन निरुद्देश्य व लापरवाही से ही बीतेगा तथा माता-पिता से भी कुछ मनमुटाव रहेगा। विशेषकर पिता के साथ।

तुला राशि वाले व्यक्ति को विवाह से धन प्राप्ति के अवसर बनते है तथा विवाहोपरान्त इनके जीवन में कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे जा सकते हैं। समुद्री यात्रा

आपके लिए कोई विशेष लाभप्रद नहीं है।

शुक्र एक विलासी, शीतल व सौम्य ग्रह है। यह रात्रि को हल्की श्वेत झलकदार किरणें बिखेरता है। अतः श्वेत रंग व साफ सुथरी व ऐश्वर्य प्रधान वस्तुओं का व्यापार आपके अनुकूल कहा जा सकता है। आपका सदा सर्वदा अनुकूल रत्न "हीरा" है।

तुलालग्न स्त्री जातक

इस लग्न में जन्मी कन्या वैसे तो काफी सुंदर होती है परन्तु गर्दन कुछ छोटी होना स्वाभाविक है। वह चचल स्वभाव की होगी, माता-पिता आदि गुरुजनों की भक्त होगी। उपकार को मानने वाली धर्मशीला। वर्ष पर्यन्त तीर्थयात्रा करने वाली दर्शनीय स्थानों को देखने की इच्छुक और कुल के अनुसार अच्छे धन वाली होती है। बचपन से ही यह प्रिय वचन बोलने में कुशल होती है उसके मस्तक पर प्रायः तिल होता है। शरीर मे कभी-कभी दर्द बना रहता है। इसके लिए हर शनिवार शुभ होता है। साथी कम व शत्रु अधिक होते है। प्रकृति पित्त की होती है संतान अधिक होती है। वर्ष 2 में अग्नि, 8वें जल भय रहता है वर्ष 15, 18, 22 में कष्ट होते है। उम्र लम्बी होती है। 70 से ऊपर जा सकती है। जातक की मृत्यु किसी प्रियजन के वियोग का आघात लगने से या ज्यादा उपवास व्रतों से कफ द्वारा होती है।

तुलालग्न के शुभाशुभ फल

- ❑ लग्नेश शुक्र फल। शुक्र अष्टमेश है इसका दोष भी है। अतः कुछ पापी है अतः यह सम फल प्रदान करेगा।
- ❑ धनेश सप्तमेश मंगल मारक भी है। साथ में गुरु योग हो तो ज्यादा मारक होगा।
- ❑ तृतीयेश षष्ठेश गुरु पाप फल करता है, मारक भी बन जाता है।
- ❑ चतुर्थेश, पचमेश शनि शुभ फलकर्ता है। तुलालग्न में शनि योगकारक होता है। वृषलग्न से भी ज्यादा शुभ होता है। यह शनि जहां बैठेगा वहा उस भाव के फल में वृद्धि करेगा।
- ❑ भाग्येश द्वादशेश बुध है, शुभ फल देता है।
- ❑ दशमेश चद्र पाप फलदाता है। यदि बलवान तिथि का हो तो मध्य का फल और चद्र+बुध योग बना हो तो शुभ फल देगा। चद्रमा को केन्द्राधिपति दोष है।

- एकादशेश सूर्य पापी है। चर लग्न होने से यह सूर्य बाधक भी है।
- इस लग्न में चंद्र+बुध ही राजयोगकर्त्ता है। सफलयोग युति–1. शुक्र+शनि, 2. शनि अकेला, 3. बुध+शनि, 4. शनि+चंद्र, 5 चद्र+बुध, 6. बुध+शुक्र 7. मंगल+शनि

रोग

- यह कालपुरुष का सातवां स्थान है। अतः गुप्तेन्द्रिय है। अतः तुला राशि शुक्र एव सप्तम भाव या सप्तमेश पाप प्रभाव में हो तो गुप्तेन्द्रियों के रोग होगे।
- लग्न में मगल और सातवें गुरु हो तो उच्च रक्तचाप रहेगा।

राजयोग

- लग्न में शनि शश योग देगा
- लग्न में शुक्र मालव्य योग करेगा।
- चौथे शनि शश योग करेगा।
- सातवें मंगल रूचक योग करेगा।
- शनि लग्न में दसवें चंद्र में हो तो राजयोग होगा।
- दसवें चद्र+शनि योग हो तो उत्तम राजयोग बनेगा।
- चं+बु की युति भी राजयोग करेगी।

विलम्ब विवाह योग

कर्क या सिह का शुक्र विलम्ब से विवाह करायेगा। एक बार निश्चित शादी छुड़वा कर फिर विवाह होगा।

स्वरूप

- लम्बा कद या औसत लम्बा कद होगा।
- चेहरा थोड़ा-सा लम्बाई लिए, नाक-नक्श सुदर।
- गौण वर्ण होगी। नजाकत वाली हो, चंद्र लग्न में सुंदर, शुक्र लग्न में या तो स्वयं गौर हो पति गेहुआ हो या स्वय गेहुए रंग वाली हो तो पति गौर वर्ण मिलेगा।
- मोटी नासिका, लम्बी आकृति सुंदर नेत्र।

- चेहरे पर लावण्यतामय आकर्षकता रहेगी।
- दांत सुंदर सफेद चमक वाले।
- सीना चौड़ा होगा। रूप में यौवनमद रहेगा, स्तन कुछ कठोर पर अति सुंदर होंगे
- कफ प्रधान प्रकृति होगी। चंचल हो, स्वभाव लचीला होगा।

विशेषताएं

- विलासी शौकीन हो। व्यसनप्रिय हो। ऐश्वर्य पूर्ण हो। सेक्स के मामले में अत्यधिक रंगीली होगी
- स्वयं को आकर्षक व दूसरों को भी आकर्षित करने का प्रयत्न हो। घूमने की शौकीन होगी।
- अपना मतलब सिद्ध करने व दूसरों से धन ग्रहण की प्रवृत्ति होगी।
- अपना स्वार्थ साधते वक्त दूसरों के हितों की परवाह न करे। 10 रु. खर्च करें तो 100 रुपये वसूलने की प्रवृत्ति हो।
- गप्प मारने व झूठ बोलने में रुचि ज्यादा होगी। मीठा बोलकर काम निकाले।
- देव, ब्राह्मण, गुरु भक्त हो व इंसाफ पसंद हो, धार्मिक होगी।
- मस्तिष्क क्रियाशील, बुद्धि संतुलित, ज्ञानप्रिय, कुशाग्र बुद्धि दक्ष राजनीतिज्ञ व सम्पादिका भी हो सकती है
- खरीद फरोख्त में अति होशियार, कुशल व्यापारी व व्यवसायिक सफलता शीघ्र प्राप्त करेगी।
- भाग्योदय देर से होगा। संतान भी सीमित होगी।
- कला कौशल, विज्ञान व मशीनरी के कामों में रुचि होगी।
- नौकरी करे तो सेक्रेटरी, न्यायाधीश, निर्देशक हो व पुस्तक लेखिका, काव्यप्रेमी साहित्य प्रेमी हो। स्मगलर, अभिनेत्री, पंच सरपंच, प्रधानमंत्री आदि उत्तम पद पाती है।
- शुक्र बलवान हो व बुध गुरु से प्रभावित हो तो सत्यप्रिय तथा धार्मिक एवं दीर्घायु होवे। शुक्र ज्यादा पाप प्रभावी हो तो अल्पायु।

तुलालग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–तुलालग्न की कुण्डली में सूर्य जो लग्नेश शुक्र का शत्रु है, एकादश (लाभ) भाव का स्वामी है। इस लग्न के जातक के माणिक्य केवल सूर्य
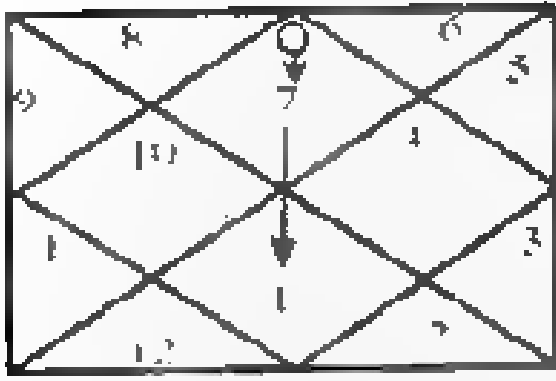
की महादशा में धारण करना आर्थिक लाभ के लिये शुभ फलदायक होगा।

2. मोती—कन्या लग्न में चंद्र दशम भाव का स्वामी होता है। यद्यपि चंद्र और लग्नेश मित्र नहीं है परन्तु तुलालग्न वाले को मोती धारण करने से राज्य कृपा, यश, मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। नौकरी या व्यवसाय में उन्नति होती है। महादशा में मोती धारण बड़ा लाभदायक होता है।

3. **मूंगा**—तुलालग्न में मंगल द्वितीय भाव में स्वराशि में हो तो मंगल की महादशा में यदि उनकी मृत्यु का समय निकट न आ गया हो तो मूंगा धारण करके धन-लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

4. **पन्ना**—तुलालग्न के लिए नवम और द्वादश भावों का स्वामी होता है। द्वादश में इसकी मूल त्रिकोण राशि पड़ती है। परन्तु जब भी नवम त्रिकोण का स्वामी होने के कारण बुध इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना गया है इसके जातक के पन्ने को हीरे के साथ धारण करना चाहिए।

5. **पुखराज**—तुलालग्न के लिए बृहस्पति व षष्ठ का स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह माना गया है। इसके अतिरिक्त लग्नेश मंगल और बृहस्पति परस्पर मित्र हैं अतः वृश्चिक लग्न के जातकों को पीला पुखराज तथा तुलालग्न के जातक को यह धारण नहीं करना चाहिए।

6. **हीरा**—तुलालग्न के लिए शुक्र लग्न का स्वामी है अतः इस लग्न के जातक को हीरा धारण करने से स्वास्थ्य लाभ आयु में वृद्धि, यश, मान तथा भाव शुक्र की महादशा में धारण करने में अति लाभकारी होगा। आपका जीवन रत्न हीरा है। शुक्र अष्टमेश है पर लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगता।

7. **नीलम**—तुलालग्न के लिए चतुर्थ और पंचम का स्वामी होने के कारण अत्यन्त शुभ और योगकारक ग्रह माना गया है यह लग्नेश शुक्र का अभिन्न मित्र है। अतः इस लग्न का जातक इस रत्न को धारण करके सब प्रकार सुख प्राप्त कर सकता है शनि की महादशा में यह विशेष रूप से फलदायी होता है। लग्नेश शुक्र का रत्न हीरा या नवम् भाव के स्थाई बुध का रत्न पन्ना है।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **सन्तान हेतु**—नीलम सवा पांच रत्ती, जिरकॉन सवा पांच रत्ती

2. **भाग्योदय हेतु**—पन्ना सवा चार रत्ती, हीरा सवा चार रत्ती।

3. आरोग्य हेतु–सवा आठ रत्ती जिरकॉन चांदी में शुक्र यंत्र के साथ।

4. स्थाई लक्ष्मी हेतु -मूंगा सवा चार रत्ती, हीरा (जिरकॉन) सवा चार रत्ती, पन्ना सवा चार रत्ती बीसा यंत्र में धारण कर लॉकेट गले में पहने। अथवा नीलम सवा पांच रत्ती, पन्ना सवा पांच रत्ती भी त्रिधातु में पहन सकते हैं।

नक्षत्रो के अनुसार ग्रहो की शत्रुता मित्रता पहचानने की टेबुल

क्र	नक्षत्र	देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
1	अश्विनी	अश्विनी	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
2	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व	सम	मित्र	मित्र
3.	कृत्तिका	अग्नि	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
4	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
5	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
7	पुनर्वसु	अदिति	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व	शत्रु	सम	सम	सम
8.	पुष्य	बृहस्पति	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व	मित्र	मित्र
9	आश्लेषा	सर्प	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व	सम	मित्र	सम	सम	सम
10.	मघा	पितास	केतु	शत्रु	महाशत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
11	पूर्व फा	भग	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व	सम	मित्र	मित्र
12	उ. फा	अर्यमण	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
13	हस्त	आदित्य	चन्द्रमा	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
14.	चित्रा	त्वष्टा	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	बृहस्पति	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	स्व	शत्रु	सम	सम	सम
17	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
18	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	सम
19.	मूल	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व
20	पूर्वाषाढ़ा	जल	शुक्र	शत्रु	महाशत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	सम	मित्र	मित्र
21	उ. षा.	विश्वदेव	सूर्य	स्व	मित्र	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
23	धनिष्ठा	अष्टवसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	शत्रु
24	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
25	पूर्वा भा	अजैकपाद	बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	सम	सम	सम
26.	उ भा	अहिर्बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
27	रेवती	पूषा	बुध	मित्र	शत्रु	सम	स्व.	सम	मित्र	सम	सम	सम

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2 भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु	0/3.20/0	1	म.	ली.	0.16.40/0	1	सू.	आ	0.30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.		–	–	
चो	0/10/0/0	3	बु	ले	0.23/20/0	3	शु.	–	–		
ला	0/ 3/20/4/	4	च.	लो	0/26/40/0	4	म.	–		–	

वृष राशि											
3. कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चद्र)				5. मृगशिरा (मगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	म.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1 16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–		
ए	1/10/0/0	4	म.	वु	1/23/20/0	4	च.	-			

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.
की	2/6/40/0	4	मं.

6. आर्द्रा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
कु	2/10/0/0	1	गु.
घ	2/13/20/0	2	श.
ड़	2/16/40/0	3	श.
छ	2/20/0/0	4	गु.

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
के	2/23/20/0	1	म.
को	2/26/40/0	2	शु.
हा	2/30/0/0	3	बु.
–		–	–

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	च.
		–	–
-	–	–	–
	–	-	

8. पुष्य (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
हु	3/6/40/0	1	सू.
हे	3/10/0/0	2	बु.
हो	3/13/20/0	3	शु.
डा	3/16/40/0	4	मं.

9. आश्लेषा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
डी	3/20/0/0	1	गु.
डू	3/23/20/0	2	श.
डे	3/26/40/0	3	श.
डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)				1.. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)				12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	म.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु.
मी	4/6/40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु				
मू	4/10/0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
मे	4/.3/20/0	4	च.	टू	4/26/40/0	4	म.	-	–	–	-

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)				13. हस्त (चंद्र)				14. चित्रा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	म.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी	5/10/0/0	4	गु	ण	5/20/0/0	3	बु	–	–	–	–
		-	-	ठ	5/23/20/0	4	च.		–	–	

तुला राशि

14. चित्रा (मगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.
री	6/6/40/0	4	मं.
		–	–

15. स्वाति (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
रू	6/.0/0/0	1	गु.
रे	6/13/20/0	2	श.
रो	6/16/40/0	3	श.
ता	6/20/0/0	4	गु.

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ती	6/23/20/0	1	म
तू	6/26/40/0	2	शु
ते	6/30/0/0	3	बु.
–		–	

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.
–	–	–	–
	–		–
	–		.

17 अनुराधा (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
ना	7/6/40/0	1	सू.
नी	7/10/0/0	2	बु.
नू	7/13/20/0	3	शु.
ने	7/.6/40/0	4	म.

.8. ज्येष्ठा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
नो	7/20/0/0	1	गु.
या	7/23/20/0	2	श.
यी	7/26/40/0	3	श.
यू	7/30/0/0	4	शु

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18 पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.		–	-	
भा	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु	–	–	–	–
भी	8/13/20/0	4	च.	ढा	8/26/40/0	4	म		–		

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22 श्रावण (चंद्र)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9 13 20/0	1	मं	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु		–	–	–
			–	खो	9/23/20/0	4	च.	–	–		–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.
गे	.0/6/40/0	4	मं.
-		–	-
–	–		–

24. शतभिषा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
गो	10/10/0/0	1	गु.
ता	10/13/20/0	2	श.
ती	10/16/40/0	3	श.
तू	10/19/0/04	4	गु.

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ते	10/23/20/0	1	म.
तो	10/26/40/0	2	श.
दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–		–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	च.
–		–	-
-	–	–	–
–	–	–	

27. उत्तराभाद्रपद (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
दू	11/6/40/4	1	सू.
थ	11/10/0/0	2	बु.
झ	11/13/20/0	3	शु.
ञ	11/16/40/0	4	गु

28. रेवती (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
दे	11/20/0/0	1	गु
दो	1./23/20/0	2	श.
चा	11/26/40/0	3	श.
ची	11/30/0/0	4	गु

तुलालग्न पर अंशात्मक फलादेश

तुलालग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–5/30/0 से 6/13/20 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–व्याघ्र
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वकर्मा
10. वर्णाक्षर–रा
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'परदारगामी'

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा हैं। चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्न नक्षत्र का स्वामी मंगल, लग्नेश एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र दोनों ग्रह कामुक हैं। फलतः जातक कामी होगी एवं पराई स्त्रियों में अत्यधिक रुचि रखेगा।

लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था में है। अत्यन्त कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा, लग्नेश शुक्र एवं मंगल की दशा बैठकर जायेगी।

तुलालग्न, अंश 1 से 2

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/3/20 से 6/6/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा
10. **वर्णाक्षर**–र
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'परदारगामी'

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखे सुन्दर होती है ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्न नक्षत्र का स्वामी मंगल, लग्नेश एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र दोनों ग्रह कामुक है। फलतः जातक कामी होगा एवं पराई स्त्रियों में अत्यधिक रुचि रखेगा।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से उदित अंशों का है। बलवान है। जातक लग्नबली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश शुक्र एवं धनेश मंगल की दशा बेकार जायेगी।

तुलालग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–चित्रा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/3/20 से 6/6/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (चर)
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा
10. **वर्णाक्षर**–र
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु　　17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**—परदारगामी

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती है। ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्न नक्षत्र का स्वामी मंगल लग्नेश एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र दोनों ग्रह कामुक हैं। फलतः जातक कामी होगा एवं पराई स्त्रियों में अत्यधिक रुचि रखेगा।

लग्न दो से तीन अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है। शुक्र की दशा अच्छा फल देगी परन्तु धनेश मंगल की दशा नेष्ट फल देगी क्योंकि उसकी लग्नेश से शत्रुता है।

तुलालग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**—चित्रा　　2. **नक्षत्र पद**—4

3. **नक्षत्र अंश**—6/6/40 से 6/10/0 तक

4. **वर्ण**—शूद्र　　5. **वश्य**—द्विपद

6. **योनि**—व्याघ्र　　7. **गण**—राक्षस

8. **नाड़ी**—मध्य　　9. **नक्षत्र देवता**—विश्वकर्मा

10. **वर्णाक्षर**—री　　11. **वर्ग**—हरिण

12. **लग्न स्वामी**—शुक्र　　13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—मंगल

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—मंगल　　15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—स्वगृह　　17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**—'पीड़ित'

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी भी मंगल है। मंगल शरीर पर चोट अथवा पीड़ा का निशान देगा।

लग्न तीन से चार अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' वाला है, बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल और नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल होने से मंगल की दशा भी उत्तम फल देगी।

तुलालग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा 2. नक्षत्र पद -4
3. नक्षत्र अंश–6/6/40 से 6/10/0 तक
4. वर्ण–शूद्र 5. वश्य–द्विपद
6. योनि–व्याघ्र 7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–विश्वकर्मा
10. वर्णाक्षर–री 11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्वगृह 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–पीड़ित

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलंकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एवं देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी भी मंगल है। मंगल शरीर पर चोट अथवा पीड़ा का निशान देगा।

लग्न चार से पांच अंशो के भीतर होने से 'उदित अंशों' वाला है, बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल एवं नक्षत्र, चरण स्वामी भी मंगल होने से मंगल की दशा भी उत्तम फल देगी।

तुलालग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा 2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–6/6/40 से 6/10/0 तक
4. वर्ण–शूद्र 5. वश्य–द्विपद
6. योनि–व्याघ्र 7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–विश्वकर्मा
10. वर्णाक्षर–री 11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शुत्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्वगृह 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता –पीड़ित

चित्रा नक्षत्र मे जन्म लेने वाले व्यक्ति के अग व आखें सुन्दर होती हैं ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मगल एव देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी भी मंगल है। मंगल शरीर पर चोट अथवा पीड़ा का निशान देगा।

लग्न पांच से छः अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशो' वाला है। बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी मगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल होने से मंगल की दशा उत्तम फल देगी।

तुलालग्न, अंश 6 से 7

1. लग्न नक्षत्र–चित्रा　　**2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–6/6/40 से 6/10/0 तक

4. वर्ण–शूद्र　　**5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–व्याघ्र　　**7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–मध्य　　**9. नक्षत्र देवता**–विश्वकर्मा

10. वर्णाक्षर–री　　**11. वर्ग**–हरिण

12. लग्न स्वामी–शुक्र　　**13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल　　**15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शुत्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्वगृह　　**17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–पीड़ित

चित्रा नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति के अंग व आंखें सुन्दर होती हैं। ऐसा जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, आभूषण, माला व अलकार धारण करने का शौकीन होता है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल एव देवता विश्वकर्मा है। चित्रा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी भी मंगल है। मगल शरीर पर चोट अथवा पीड़ा का निशान देता है।

लग्न छः से सात अंशों के भीतर 'उदित अंशों' में होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र मंगल एवं नक्षत्र चरण स्वामी भी मंगल होने से मंगल की दशा भी उत्तम फल देगी।

तुलालग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र–स्वाति　　**2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश 6/10/0 से 6/13/20 तक

4. वर्ण–शूद्र　　**5. वश्य**–द्विपद

6. योनि—भैंस	**7. गण**—देव
8. नाड़ी—अन्त्य	**9. नक्षत्र देवता**—वायु
10. वर्णाक्षर—रू	**11. वर्ग**—हरिण
12. लग्न स्वामी—शुक्र	**13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—गुरु	**15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु	**17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—तस्कर	

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है, यहां नक्षत्र स्वामी राहु राक्षसों का सेनापति है। राहु गुरु की सद्बुद्धि को बिगाड़ देता है। फलतः जातक की मनोवृत्ति चौर्य कार्य की ओर प्रेरित होती है। जातक तस्करी में रुचि रखता है।

लग्न सात से आठ अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है, लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु दोनों परस्पर शत्रु होने से राहु व गुरु की दशा प्रतिकूल (खराब) फल देगी।

तुलालग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र—स्वाति	**2. नक्षत्र पद**—1
3. नक्षत्र अंश—6/10/0 से 6/13/20 तक	
4. वर्ण—शूद्र	**5. वश्य**—द्विपद (नर)
6. योनि—भैंस	**7. गण**—देव
8. नाड़ी—अन्त्य	**9. नक्षत्र देवता**—वायु
10. वर्णाक्षर—रू	**11. वर्ग**—हरिण
12. लग्न स्वामी—शुक्र	**13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—गुरु	**15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु	**17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—तस्कर	

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु

राक्षसों का सेनापति है। राहु, गुरु की सद्बुद्धि को बिगाड़ देता है। फलतः जातक की मनोवृत्ति चौर्य कार्य की ओर प्रेरित होती है। जातक तस्करी में रुचि रखता है।

तुलालग्न आठ से नौ अंशों के भीतर, उदित अंशों में होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु, नक्षत्र चरण स्वामी गुरु दोनों में परस्पर शत्रुता होने से राहु एवं गुरु दोनों की दशाएं प्रतिकूल (खराब फल देंगी

तुलालग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**—स्वाति
2. **नक्षत्र पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—6/10/0 से 6/13/20 तक
4. **वर्ण**—शूद्र
5. **वश्य**—द्विपद (नर)
6. **योनि**—भैंस
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—वायु
10. **वर्णाक्षर**—रू
11. **वर्ग**—हरिण
12. **लग्न स्वामी**—शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—तस्कर

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु राक्षसों का सेनापति है। राहु, गुरु की सद्बुद्धि को बिगाड़ देता है। फलतः जातक की मनोवृत्ति चौर्य कार्य की ओर प्रेरित होती है। जातक तस्करी में रुचि रखता है।

तुलालग्न नौ से दस अंशों के भीतर उदित अंशों में होने से बलवान है लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु, दोनों में परस्पर शत्रुता होने से राहु एवं गुरु दोनों की दशाएं प्रतिकूल (खराब) फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**—स्वाति
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—6/13/20 से 6/16/40 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रे
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–अल्पायुषी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। लग्न राहु व शनि दो पापग्रहों के प्रभाव में आने से जातक को अल्पायु वाला घोषित करता है।

तुलालग्न दस से ग्यारह अंशो के भीतर 'आरोह अवस्था' में होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छी जायेगी। नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शनि परस्पर मित्र हैं। फिर भी इन दोनों की दशाएं स्वास्थ्य के लिए सावधानी रखने योग्य हैं।

तुलालग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–6/13/20 से 6/16/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रे
11. **वर्ग** हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–अल्पायुषी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है।

स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। लग्न राहु व शनि दो पापग्रहों के प्रभाव में होने से जातक को अल्पायु वाला घोषित करता है।

तुलालग्न ग्यारह से बारह अशो के भीतर आरोह अवस्था मे होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अच्छी जायेगी। नक्षत्र स्वामी राहु एव नक्षत्र चरण स्वामी शनि परस्पर मित्र है फिर भी इन दोनों की दशाए स्वास्थ्य के लिए सावधानी रखने योग्य है।

तुलालग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र–स्वाति
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अश–6/13/20 से 6/16/40 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–वायु
10. वर्णाक्षर–रे
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–अल्पायुषी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एव धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एव देवता वायु है स्वाति नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। लग्न राहु व शनि दो पापग्रहों के प्रभाव मे होने से जातक को अल्पायु वाला घोषित करता है।

तुलालग्न बारह से तेरह के अशों के भीतर होने से 'आरोह अवस्था' मे है बलवान है। फलत: शुक्र की दशा अच्छा फल देगी लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शनि परस्पर मित्र है फिर भी राहु एव शनि की दशा स्वास्थ्य के लिए सावधानी रखने योग्य है।

तुलालग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र–स्वाति
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अश–6/16/40 से 6/20/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रे
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–धर्मी

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। यहा शनि व राहु के प्रभाव के से जातक में वैराग्य भाव जल्दी आयेगा। फलत: जातक धार्मिक होगा।

तुलालग्न तेरह से चौदह अंशो के भीतर होने से 'आरोह अवस्था' मे है। बलवान है। फलत: लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। यहा लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एव नक्षत्र चरण स्वामी शनि दोनो परस्पर मित्र हैं। फिर भी राहु एव शनि की दशा स्वास्थ्य के लिए सावधानी रखने योग्य है।

तुलालग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**–स्वाति
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/16/40 से 6/20/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–भैंस
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वायु
10. **वर्णाक्षर**–रो
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–धर्मी

स्वाति नक्षत्र मे जन्म लेने वाले व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला धार्मिक एव धनी व्यक्ति होता है स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एव देवता वायु है।

स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है यहा शनि व राहु के प्रभाव मे जातक मे वैराग्य भाव जल्दी आयेगा। फलत: जातक धार्मिक होगा।

तुलालग्न चौदह से पन्द्रह अंशो के भीतर होने से 'आरोह अवस्था' मे है, पूर्ण बलवान है। फलत: लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। नक्षत्र स्वामी राहु एव नक्षत्र चरण स्वामी शनि मे परस्पर मित्रता है फिर भी राहु व शनि की दशा स्वास्थ्य के लिए ध्यान रखने योग्य है।

तुलालग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–स्वाति
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–6/16/40 से 6/20/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद (नर)
6. योनि–भैंस
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–वायु
10. वर्णाक्षर–रो
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–धर्मी

स्वाति नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एव धनी व्यक्ति होता है, स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एव देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। यहा शनि व राहु के प्रभाव से जातक मे वैराग्य भाव जल्दी आयेगा फलत: जातक धार्मिक होगा।

तुलालग्न चौदह से पन्द्रह अशों के भीतर होने से आरोह अवस्था मे है, पूर्ण बलवान है। फलत: लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शनि मे परस्पर मित्रता है। फिर भी राहु व शनि की दशा स्वास्थ्य के लिए ध्यान रखने योग्य है।

तुलालग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र–स्वाति
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–6/20/0 से 6/20/0 तक

4. **वर्ण**—शूद्र
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—भैंस
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—वायु
10. **वर्णाक्षर**—ता
11. **वर्ग**—हरिण
12. **लग्न स्वामी**—शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—नृपति

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है। स्वाति न त्र के चतुर्थ चरण में जन्मा व्यक्ति राजा होता है तथा बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होता है।

तुलालग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर होने से 'मध्यबली' है। बलवान है। फलतः लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु में परस्पर शत्रुता है अतः राहु व गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देगी.

तुलालग्न, अंश 17 से 18

1. **लग्न नक्षत्र**—स्वाति
2. **नक्षत्र पद**—4
3. **नक्षत्र अंश**—6/20/0 से 6/20/0 तक
4. **वर्ण**—शूद्र
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—भैंस
7. **गण**—देव
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—वायु
10. **वर्णाक्षर**—ता
11. **वर्ग**—हरिण
12. **लग्न स्वामी**—शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—नृपति

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है।

स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा व्यक्ति राजा होता है तथा बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है।

तुलालग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर होने से 'मध्यबली' है। बलवान है। फलतः लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु में परस्पर शत्रुता है अतः राहु व गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र—स्वाति
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—6/20/0 से 6/20/0 तक
4. वर्ण—शूद्र
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—भैंस
7. गण—देव
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—वायु
10. वर्णाक्षर—ता
11. वर्ग—सर्प
12. लग्न स्वामी—शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—नृपति

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा व्यक्ति राजा होता है तथा बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होता है।

तुलालग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से 'मध्यबली' है। बलवान है। फलतः लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु में परस्पर शत्रुता है अतः राहु व गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र—स्वाति
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—6/20/0 से 6/20/0 तक

4. वर्ण—शूद्र | **5. वश्य**—द्विपद
6. योनि—भैंस | **7. गण**—देव
8. नाड़ी—अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**—वायु
10. वर्णाक्षर—ता | **11. वर्ग**—सर्प
12. लग्न स्वामी—शुक्र | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—गुरु | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—नृपति

स्वाति नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति दाता, दयालु, मीठा वचन बोलने वाला, धार्मिक एवं धनी व्यक्ति होता है। स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु एवं देवता वायु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है। स्वाति नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा व्यक्ति राजा होता है तथा बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होता है।

तुलालग्न उन्नीस से बीस अंशों के भीतर होने से 'मध्यबली' होने से बलवान है लग्नेश शुक्र की दशा अच्छा फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी राहु एवं नक्षत्र चरण स्वामी गुरु में परस्पर शत्रुता होने से राहु व गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र—विशाखा | **2. नक्षत्र पद**—1
3. नक्षत्र अंश—6/20/0 से 6/23/20 तक
4. वर्ण—शूद्र | **5. वश्य**—द्विपद (नर)
6. योनि—व्याघ्र | **7. गण**—राक्षस
8. नाड़ी—अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**—इन्द्राग्नि
10. वर्णाक्षर—ती | **11. वर्ग**—सर्प
12. लग्न स्वामी—शुक्र | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—गुरु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—मंगल | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—नीतिज्ञ

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के

प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्न पर गुरु, मंगल एवं शुक्र के प्रभाव से जातक तर्कशील एवं नीतिशास्त्र में निपुण होता है।

तुलालग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर मध्यबली होने से बलवान है। लग्नेश शुक्र की दशा अति उत्तम फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में परस्पर शत्रुता होने से गुरु एवं धनेश मंगल दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र–विशाखा | **2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–6/20/0 से 6/23/20 तक

4. वर्ण–शूद्र | **5. वश्य**–द्विपद (नर)

6. योनि–व्याघ्र | **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि

10. वर्णाक्षर–तो | **11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–शुक्र | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–नीतिज्ञ

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्न पर गुरु, मंगल एवं शुक्र के प्रभाव से जातक तर्कशील एवं नीतिशास्त्र में निपुण होता है।

तुलालग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर 'अवरोह अवस्था' में होने से थोड़ा उतार में है। फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा शुभ फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में परस्पर शत्रुता होने से धनेश मंगल एवं पराक्रमेश गुरु दोनों ही दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–विशाखा | **2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–6/20/0 से 6/23/20 तक

4. वर्ण–शूद्र | **5. वश्य**–द्विपद (नर)

6. **योनि**–व्याघ्र | 7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य | 9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ती | 11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मगल | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–नीतिज्ञ

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एव देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्न पर गुरु, मगल एवं शुक्र के प्रभाव से जातक तर्कशील एव नीतिशास्त्र में निपुण होता है।

तुलालग्न बाईस से तेईस अंशों के भीतर होने से 'अवरोह अवस्था' में है। फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी मगल मे परस्पर शत्रुता है। अत: धनेश मगल एव पराक्रमेश गुरु दोनों की दशाएं नेष्ट फल देंगी।

तुलालग्न, अश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा | 2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अश**–6/23/20 से 6/26/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र | 5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र | 7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य | 9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–तू | 11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्वगृह | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–शास्त्रवेत्ता

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एव देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र

के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। गुरु व शुक्र के प्रभाव से जातक धार्मिक शास्त्रों का ज्ञाता, दार्शनिक व शास्त्रवेत्ता होता है।

तुलालग्न तेईस से चौबीस अशों के भीतर होने से 'अवरोह अवस्था' मे है फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एव नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र मे परस्पर शत्रुता है। अत· तृतीयेश गुरु की दशा नेष्ट फल देगी गुरु में शुक्र या शुक्र मे गुरु का अन्तर भी नेष्ट फल देगा।

तुलालग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा 2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अश**–6/23/20 से 6/26/40 तक
4. **वर्ण**–शूद्र 5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र 7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य 9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–तू 11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्वगृह 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–शास्त्रवेत्ता

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एव देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। गुरु व शुक्र के प्रभाव स जातक धार्मिक शास्त्रों का ज्ञाता, दार्शनिक व शास्त्रवेत्ता होता है।

तुलालग्न चौबीस से पच्चीस अशो के भीतर होने से 'अवरोह अवस्था' मे है फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र मे परस्पर शत्रुता है। अतः तृतीयेश गुरु की दशा नेष्ट फल देगी। गुरु मे शुक्र या शुक्र में गुरु का अन्तर भी नेष्ट फल देगा।

तुलालग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा 2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अश**–6/23/20 से 6/26/40 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–तू
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्वगृह
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–शास्त्रवेत्ता

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। गुरु व शुक्र के प्रभाव से जातक धार्मिक शास्त्रों का ज्ञाता, दार्शनिक व शास्त्रवेत्ता होता है।

तुलालग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के भीतर होने से 'अवरोह अवस्था' में है, फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देगी. लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र में परस्पर शत्रुता है अतः तृतीयेश गुरु की दशा नेष्ट फल देगी। गुरु में शुक्र या शुक्र में गुरु का अन्त भी नष्ट फल देगा।

तुलालग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/26/40 से 6/30/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद (नर)
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ते
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–वादी

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र

के तृतीय चरण का स्वामी बुध है गुरु ज्ञान का एव बुध तर्क का प्रतीक है। ऐसे जातक मे वाद विवाद, तर्क करने की प्रखरता रहती है।

तुलालग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशो के मध्य होने से 'अवरोह अवस्था' का है। फिर भी लग्नेश शुक्र की दशा उत्तम फल देने वाली साबित होगी। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एव नक्षत्र चरण स्वामी बुध मे परस्पर शत्रुता है। अत: तृतीयेश गुरु एव व्ययेश बुध दोनो की दशाए जातक के लिए नेष्ट (अशुभ) साबित होगी।

तुलालग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र–विशाखा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–6/26/40 से 6/30/0 तक
4. वर्ण–शूद्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–व्याघ्र
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–इन्द्राग्नि
10. वर्णाक्षर–ते
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–शुक्र
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–गुरु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–वादी

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एव देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। गुरु ज्ञान का एव बुध तर्क का प्रतीक है। ऐसे जातक में वाद विवाद, तर्क करने की प्रखरता रहती है।

तुलालग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अशों में होने से 'अवरोह अवस्था' में हीन बली है। यहां लग्नेश शुक्र की दशा मध्यम फल देगी। नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता होने से तृतीयेश गुरु एवं व्ययेश बुध दोनों की दशा नेष्ट फल देगी।

तुलालग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–विशाखा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–6/26/40 से 6/30/0 तक

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण** राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ते
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16 **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–वादी

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। गुरु ज्ञान का एवं बुध तर्क का प्रतीक है। ऐसे जातक में वाद-विवाद, तर्क करने की प्रखरता रहती है।

तुलालग्न अट्ठाईस से उन्तीस अंशो मे होने से 'अवरोह अवस्था' में हीन बली है। यहां लग्नेश शुक्र की दशा मध्यम फल देगी। नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता होने से तृतीयेश गुरु एव व्ययेश बुध दोनो की दशा नेष्ट फल देगी।

तुलालग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–6/26/40 से 6/30/0 तक
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–ते
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शुक्र
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–वादी

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्तिवाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र

के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। गुरु ज्ञान का एवं बुध तर्क का प्रतीक है ऐसे जातक में वाद विवाद, तर्क करने की प्रखरता रहती है।

तुलालग्न उनतीस से तीस अंशों के मध्य होने से लग्न 'मृतावस्था' में है तथा निस्तेज है। लग्न नक्षत्र स्वामी गुरु एवं नक्षत्र चरण स्वामी बुध में परस्पर शत्रुता होने से तृतीयेश गुरु एवं व्ययेश बुध दोनों की दशा नेष्ट फल देगी।

❑❑❑

तुलालग्न और आयुष्य योग

1. तुलालग्न वालों के लिए मंगल द्वितीयेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। गुरु षष्टेश होने से अशुभ फलदायक है सूर्य व शुक्र पापी है. मगल साहचार्य से मारक का कार्य करेगा। आयुष्य प्रदाता ग्रह शुक्र है।
2. तुलालग्न वालो की मृत्यु कफ जनित रोगों से, मृत्यु प्राय जन्म स्थल एव घर में होती है।
3. तुलालग्न वालो की औसत आयु 85 वर्ष मानी गई है। जन्म उपरान्त 4 8 माह और 1, 2, 4, 8, 12, 16, 20, 25, 27, 31, 40, 51, 55, 59, 60, 61, 65, 69, 72 और 76 वर्ष शारीरिक कष्ट या अल्प मृत्यु के कहे गए हैं।
4. तुलालग्न में कन्या का सूर्य द्वादश मे हो तो ऐसा जातक सौ वर्ष जीता है
5. तुलालग्न में शुक्र हो तो जातक दीर्घ देह वाला एवं उत्तम आयु को भोगने वाला प्राणी होता है।
6. तुलालग्न मे बुध, बृहस्पति व शुक्र छठे हो तथा मंगल आठवें या नीच का शनि सातवें हो अन्य ग्रह चंद्रमा के पीछे हो तो व्यक्ति कुबडा होता है।
7. तुलालग्न में शनि हो, शुक्र या बृहस्पति केन्द्र में हो. सभी पाप ग्रह तीसरे छठे या ग्यारहवे स्थान में हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु का भोगता है।
8. तुलालग्न में शनि शुक्र के साथ चौथे स्थान मकर राशि मे हो तो जातक सौ वर्ष से ऊपर स्वस्थ दीर्घायु को भोगता है।
9. तुलालग्न मे शुक्र गुरु एव अन्य शुभग्रहों से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
10. तुलालग्न में चंद्रमा छठे मीन का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तो तथा सभी शुभग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
11. तुलालग्न में शुक्र लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्र मे हो तो जातक 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

12. तुलालग्न में मेष का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु प्राप्त करता है।
13. तुलालग्न में उच्च का बृहस्पति केन्द्र में हो, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शुक्र बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु भोगता है।
14. तुलालग्न में मंगल पांचवें कुम्भ का, शनि मेष का सूर्य सातवें शनि के साथ हो जातक 70 वर्ष की आयु को प्राप्त करता है।
15. तुलालग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को भोगता है।
16. शनि लग्न में, मकर का चंद्र चौथे, मंगल स्वगृही सातवें, सूर्य दसवें किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. तुलालग्न में अष्टमेश शुक्र सातवें हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18. तुलालग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा व्यक्ति सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
19. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा षष्टम भाव में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
20. तुलालग्न में शनि+मंगल हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें एवं बृहस्पति छठे पाप ग्रहों के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करता हुआ 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।
21. तुलालग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शुक्र निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है
22. तुलालग्न में बृहस्पति मेष का तथा मंगल मीन का परस्पर घर बदल कर बैठे तो बालारिष्ट योग बनता है ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।
23. तुलालग्न में बुध यदि छठे हो, लग्न व चंद्रमा कमजोर हो तो बालारिष्ट योग बनता है, उपचार न करने पर ऐसा जातक छः वर्ष के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।
24. तुलालग्न में शनि सप्तम में नीच का एवं द्वादश भाव में गुरु+शुक्र+राहु हो अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त होता है।

25. तुलालग्न में सूर्य चौथे, अष्टम में बृहस्पति, द्वादश में चद्रमा हो तथा लग्नेश शुक्र कमजोर हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।
26. तुलालग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मगल+चद्र की युति शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।
27. तुलालग्न के दूसरे स्थान में वृश्चिक का मगल हो तथा चतुर्थ एव दशम भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।
28. तुलालग्न के सप्तम भाव में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।
29. तुलालग्न में लग्नस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।
30. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र एवं मंगल दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।
31. तुला(चर)लग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार कर्म से पीड़ित रहता है।
32. तुलालग्न में षष्टेश बृहस्पति सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।
33. तुलालग्न में निर्बल चद्रमा अष्टमा स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

तुलालग्न और रोग

1. तुलालग्न में षष्टेश गुरु लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
2. तुलालग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश शनि पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक का हृदय रोग होता है।
3. तुलालग्न में चतुर्थेश शनि यदि अष्टमेश शुक्र के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. तुलालग्न में चतुर्थेश शनि मेष, सिंह या वृश्चिक राशि में हो, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. तुलालग्न में चतुर्थ स्थान मे शनि एवं छठे स्थान में सूर्य अन्य पाप ग्रहों के साथ हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
6. तुलालग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को हृदय रोग होता है।
7. तुलालग्न के चतुर्थ भाव में शनि एवं पंचम भाव में कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. तुलालग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. तुलालग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. तुलालग्न में शुक्र+शनि+गुरु की युति एक साथ दु:स्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना से अकाल मृत्यु होती है।
11. तुलालग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश शुक्र बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।
12. तुलालग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न पाप ग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

13. तुलालग्न मे अष्टमेश शुक्र लग्न मे हों, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तथा लग्न पर एकाधिक पाप ग्रहो का प्रभाव हो तो ऐसा व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

14. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र चौथे या द्वादश भाव में मगल+बुध के साथ हो तो जातक कुष्ट रोग से पीड़ित रहता है।

15. तुलालग्न मे चद्र+शनि+बृहस्पति छठे स्थान मे हो तो जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित रहता है।

16. तुलालग्न मे उच्च का बृहस्पति केंद्र में हों, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शुक्र बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

17. तुलालग्न मे मगल पाचवें कुभ का, शनि मेष का, सूर्य सातवें शनि के साथ हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को प्राप्त करता है

18. तुलालग्न में सूर्य+मगल+शनि हो, चद्रमा द्वादश में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष की आयु को भोगता है।

19. शनि लग्न में मकर का चद्र चौथे, मगल स्वगृही सातवें, सूर्य दसवें किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. तुलालग्न मे अष्टमेश शुक्र सातवें हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान मे हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. तुलालग्न मे शनि किसी भी अन्य पाप ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चद्रमा पाप ग्रहो के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा व्यक्ति सैद्धांतिक, चरित्रवान एव विद्वान् होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

22. तुलालग्न मे लग्नेश शुक्र पाप ग्रहों के साथ आठवे हो तथा षष्टम भाव में चद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

23. तुलालग्न में शनि+मगल हो, चद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवे एवं वृहस्पति छठे पाप ग्रहों के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करता हुआ मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

24. तुलालग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो लग्नेश शुक्र निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो जातक 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

25. तुलालग्न में बृहस्पति मेष का तथा मंगल मीन का परस्पर घर बदल कर बैठे तो 'बालारिष्ट योग' बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

26. तुलालग्न में बुध यदि छठे हो, लग्न व चंद्रमा कमजोर हो तो 'बालारिष्ट योग' बनता है उपाय न करने पर ऐसा जातक छः वर्ष के पूर्व मृत्यु को प्राप्त करता है।

27. तुलालग्न में शनि सप्तम में नीच का एवं द्वादश भाव में गुरु+शुक्र+राहु हो अन्य शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त होता है।

28. तुलालग्न में सूर्य चौथे, अष्टम में बृहस्पति, द्वादश में चंद्रमा हो तथा लग्नेश शुक्र कमजोर हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही 'शीघ्र मृत्यु' को प्राप्त होता है।

29. तुलालग्न में सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्र की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा बालक 'शीघ्र मृत्यु' को प्राप्त होता है

30. तुलालग्न के दूसरे स्थान में वृश्चिक का मंगल हो तथा चतुर्थ एवं दशम भाव में भी पाप ग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

31. तुलालग्न के सप्तम भाव में शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक 'मातृघातक' होता है।

32. तुलालग्न में लग्नस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक 'मातृघातक' होता है।

33. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम में पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर 'आत्महत्या' करता है।

34. तुला(चर)लग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार कर्म से पीड़ित रहता है।

35. तुलालग्न में षष्ठेश बृहस्पति सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है

36. तुलालग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

तुलालग्न और विवाहयोग

1. लग्न में शनि तथा चंद्रमा हो, छठे भवन में शुक्र हो, तो जातक राज्य-मान्य, अतिकामी व पत्नी को भोगने वाला होता है।
2. यदि स्त्री को कुण्डली में लग्नेश सप्तमेश, नवमेश और चंद्र स्थित राशि उन सबके स्वामी शुभ ग्रहों के उत्तम स्थानों में स्थित हों पर अस्त न हो तो स्त्री भाग्यशालिनी, सुन्दरी, बन्धुओं में पूज्य और पुण्य कर्म करने में कुशल होती है।
3. तुलालग्न हो, शुक्र बली हो तो स्त्री संचित धन द्वारा सहायता करे।
4. शुक्र के नवमांश में शनि और शनि के नवमांश में शुक्र हो दोनों में परस्पर दृष्टि हो तो वह स्त्री कामातुर होकर पुरुष की आकृति बनाती हुई, अपनी सहेली आदि स्त्री के साथ मैथुन क्रिया से कामाग्नि को शान्त कराती है।
5. मंगल द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशि का हो, शुक्र भी वृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक स्त्री आत्महत्या करती है।
6. तुलालग्न मे शनि सप्तम भाव मे चद्रमा के साथ से तथा लग्न में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है, अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
7. तुलालग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय स्थान में सूर्य हो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. तुलालग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एवं सप्तमेश मंगल बलहीन हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।
9. तुलालग्न में सूर्य, शनि और शुक्र की युति हो, सप्तमेश मंगल बलहीन हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।
10. तुलालग्न में शुक्र दशम या लाभ स्थान में हो, शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में सूर्य या चद्रमा हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।

11. तुलालग्न में द्वितीयेश मंगल वक्री हो अथवा द्वितीय स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

12. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

13. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल वक्री हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी भी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आते हैं और विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

14. तुलालग्न वालों के लिए शनि का द्वितीयस्थ होना और मंगल का अष्टमस्थ होना अनिष्टकारक है। ऐसे जातक का विवाह नहीं होता। विवाह हो भी जाए तो जातक का वैवाहिक सुख से वंचित रहना पड़ता है।

15. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल यदि शनि से दृष्ट हो तो विवाह में विलम्ब व ससुराल से खटपट रहती है।

16. तुलालग्न में राहु यदि सप्तम भाव में मंगल की राशि में हो तो ऐसी स्त्री को वैधव्य दु:ख भोगना पड़ता है।

17. तुलालग्न में चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो, पाप ग्रह केन्द्र में हो शुभ ग्रह उन्हें न देखते हो तो ऐसी स्त्री विवाह के पूर्व अन्य पुरुषों से संसर्ग करती है।

18. तुलालग्न में सप्तम भावस्थ मंगल पर शनि की दृष्टि हो तो जातक में प्रबल कामवासना होती है। ऐसा जातक स्त्री के यौनांग का स्पर्श अपने मुंह से करता है। यदि ऐसे मंगल के साथ राहु हो तो जातक अपने आश्रम में रहने वाली सेविका से यौन संबंध रखता है।

19. तुलालग्न वाली कुण्डली में कुम्भ का नवमांश हो तो ऐसी स्त्री की सहायता से अपनी कामपिपासा शान्त करती है अर्थात् अपने साथ रमण कराने के लिए अन्य स्त्री से पुरुष के समान आचरण कराती है। यदि यह योग पुरुष की कुण्डली में हो तो जातक समलैंगिक यौनाचार करता है।

20. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल यदि चर राशि में हो तो स्त्री का पति परदेश में रहेगा। ऐसे में यदि बुध व शनि सप्तम भाव में हो तो स्त्री का पति नपुंसक होगा।

21. तुलालग्न में मंगल आठवें हो तो स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल होती है। ऐसी स्त्री प्रेम विवाह करती है तथा स्वच्छंद यौनाचार में विश्वास करती है।

22. तुलालग्न में लग्नस्थ सूर्य और मंगल यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री विधवा होती है।

23. तुलालग्न में द्वितीयेश मंगल शनि से युत हो एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, तो ऐसी स्त्री व्याभिचारिणी होती है।

24. तुलालग्न में चंद्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष की तरह कठोर स्वभाव वाली एवं साहसिक प्रकृति की महिला होती है

25. तुलालग्न में यदि सूर्य, मंगल, गुरु चंद्र, बुध, शुक्र व शनि बलवान हों तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थिति वश पर पुरुष को अकर्शायिनी बन सकती है।

26. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल यदि चर राशि (1,4/7/10) में हो तो ऐसी स्त्री का पति निरन्तर प्रवास में रहता है।

27. जातक पारिजात के अनुसार तुलालग्न में उत्पन्न कन्याएं सुन्दर होती है। यदि चंद्रमा लग्न में हो तो ऐसी स्त्री पति की प्रिया प्राण-वल्लभा होती है।

28. तुलालग्न में स्वगृही शुक्र लग्न में हो तो "द्विभार्या योग" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

29. तुलालग्न में सप्तमेश मंगल द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो पूर्ण व्यभिचारी योग बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों से सम्भोग करता है।

❑❑❑

तुलालग्न और धनयोग

तुलालग्न में जन्म लेने वाले जातकों के लिए धन प्रदाता ग्रह मंगल है। धनेश मंगल की शुभाशुभ स्थिति से धन स्थान से सम्बन्ध जोड़ने वाले ग्रहों की स्थिति एवं योगायोग, मंगल एवं धनस्थान पर पडने वाले ग्रहों की दृष्टि सम्बन्ध से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल सम्पति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश शुक्र, पचमेश शनि, भाग्येश बुध एव लाभेश सूर्य की अनुकूल परिस्थितियां तुलालग्न वालों के लिए धन ऐश्वर्य एव वैभव को बढ़ाने में पूर्ण सहायक होती है।

तुलालग्न के लिए गुरु, सूर्य और मगल अशुभ फल देते हैं। शनि, बुध शुभ होते हैं। चद्र और बुध राजयाग कारक है। मंगल प्रधान मारकेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। गुरु षष्टेश होने से अशुभ फलदायक है। गुरु परम पापी है। सूर्य व शुक्र भी पापी हैं। शनि अतिशुभ फलदायक है। मंगल साहचार्य से मारक का कार्य करेगा।

शुभयोग– 1. शुक्र+शनि, 2. शुक्र+बुध, 3 चंद्र+बुध,

सफल योग– 1. गु.+श. 2. बु.+श. 3 श.+चं., 4. म.+श.

योगकारक–चंद्र, बुध, शनि।

निष्फल योग–मंगल + बुध

लक्ष्मी योग–मंगल द्वितीय, सप्तम या नवम में, सूर्य सप्तम या एकादश में, शनि केन्द्र त्रिकोण मे।

विशेष योगायोग

1. तुलालग्न में शुक्र हो, शनि, बुध से युत किंवा दृष्ट हो तो जातक शहर का प्रतिष्ठित धनवान व्यक्ति होता है।

2. तुलालग्न हो, पंचम स्थान मे शनि हो लाभ स्थान मे सिह का बुध हो तो जातक अपनी विद्या, हुनर के द्वारा लाखो रुपया कमाता हुआ, शहर का प्रतिष्ठित धनवान व्यक्ति होता है।

3. तुलालग्न के पचम स्थान में शनि तथा लाभ स्थान मे सिह का मगल हो तो जातक शहर का माना हुआ धनवान होता है।

4. तुलालग्न में बुध, मिथुन या सिह राशि में हो तो जातक अल्प प्रदान से बहुत रुपया कमाता है। धन के मामले में ऐसा व्यक्ति भाग्यशाली कहलाता है।

5. तुलालग्न में मंगल मेष, वृश्चिक या मकर राशि में हो तो व्यक्ति धनाध्यक्ष होता है, लक्ष्मी चेरी की तरह उस व्यक्ति की सेवा करती है।

6. तुलालग्न मे मगल बुध के घर में तथा बुध मगल के घर मे हो तो अर्थात् बुध मेष या वृश्चिक राशि मे हो तो तथा मगल मिथुन या कन्या राशि मे परिवर्तन योग करके बैठा हो तो व्यक्ति भाग्यशाली होता है तथा जीवन में खूब धन कमाता है।

7. तुलालग्न मे मगल यदि सूर्य के घर में तथा सूर्य मगल के घर में हो अर्थात् मगल सिह राशि का हो तथा सूर्य मेष या वृश्चिक का हो तो जातक महाभाग्यशाली होता है। ऐसे व्यक्ति की लक्ष्मी दासी के समान सेवा करती है।

8. तुलालग्न में यदि चद्रमा केन्द्र त्रिकोण मे हो तथा मगल स्वगृही हो तो जातक कीचड़ मे कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार मे जन्म लेकर धीरे-धीरे अपने पुरुषार्थ व पराक्रम से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति हो जाता है यह स्थिति प्राय: 28 वर्ष के बाद होती है।

9. तुलालग्न मे शुक्र, चद्रमा और सूर्य की युति हो तो जातक महाधनी होता है तथा धनशाली व्यक्तियो में अग्रगण्य गिना जाता है।

10. तुलालग्न मे शनि मकर या कुम्भ का हो तो जातक धनवान होता है।

11. तुलालग्न में शुक्र सिह राशि में एव सूर्य तुला राशि में हो तो जातक 33वें वर्ष मे पाच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओ का नाश करते हुये स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन मे अचानक रुपया मिलता है।

12. तुलालग्न हो, लग्नेश शुक्र धनेश मंगल भाग्येश बुध तथा लाभेश सूर्य अपनी-अपनी उच्च एव स्वराशि मे हों तो जातक करोड़पति होता है।

13. तुलालग्न में धनेश मगल यदि छठे, आठवे और बारहवे स्थान मे हो तो "धनहीन योग" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार से घड़े में छिद्र होने के कारण उसमे पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नही

ठहर पाता, सदैव रुपयों की तंगी बनी रहती है। इस दुर्योग से बचने के लिए गले मे अभिमन्त्रित "मंगल यन्त्र" धारण करना चाहिए पाठक चाहें तो "मंगल यन्त्र" हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

14. तुलालग्न मे धनेश मंगल यदि आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि मे गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर रुपया पास मे टिकेगा नहीं।

15. तुलालग्न में मंगल यदि मेष या मकर राशि मे हो तो "रूचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजतुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

16. तुलालग्न में सुखेश शनि, लाभेश सूर्य यदि नवम भाव मे मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

17. तुलालग्न में गुरु + चंद्र की युति वृश्चिक, मकर, कुम्भ या मिथुन राशि में हो तो इस प्रकार के गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

18. तुलालग्न में धनेश मंगल अष्टम स्थान में एवं अष्टमेश शुक्र धन स्थान मे परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, सट्टा, घुड़रेस स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

19. तुलालग्न मे तृतीयेश गुरु लाभ स्थान में एवं लाभेश गुरु तृतीय स्थान मे परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एवं भागीदारो द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

20. तुलालग्न में बलवान मंगल के साथ यदि चतुर्थेश शनि हो तो व्यक्ति को मातृपक्ष के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

21. गुरु धनु राशि का हो, बुध भाग्य भवन में तथा शनि स्वगृही हो तो जातक अतुल धनवान होता है।

22. जन्म का लग्न तुला हो तथा राहु, शुक्र, मंगल, शनि 12वें भाव में यानी कन्या राशि में हो तो जातक कुबेर से भी अधिक धनवान होता है।

23. यदि लग्न में वर्गोत्तम नवांश हो और चंद्रमा भी वर्गोत्तम नवांश हो और लग्न को चंद्रमा के अतिरिक्त 4 अन्य ग्रह देखते हो, ऐसा जातक अधम से अधम घर में जन्म लेकर भी उत्तम शुभ सुख भोगता है, लक्ष्मीवान होता है।

24. तुलालग्न हो, पंचम भाव में शनि बैठा हो तो जातक का पुत्र गोद जाता है। वहां से उसे धन मिलता है।

25. शुक्र यदि केतु सहित द्वितीय भाव में हो तो जातक को निश्चय ही लक्ष्याधिपति बना देता है.

26. षष्टापति का तथा लग्नाधिपति का परस्पर परिवर्तन योग बनता हो तो जातक ऋण ग्रस्त रहता है।

27. शुक्र-शनि की युति धनु राशि में हो तथा गुरु की भाग्य भवन से दृष्टि हो, मंगल कर्क का हो तथा सूर्य व बुध चतुर्थ भावस्थ हो तो जातक अतुल धनवान होता है।

28. सूर्य मेष का सप्तम भाव में एवं चंद्रमा द्वादश भाव में हो, बुध शत्रु भाव में स्थित हो, गुरु की 5वीं दृष्टि चंद्रमा पर हो तो जातक मंत्री बनता है तथा खूब धनोपार्जन करता है।

29. तुलालग्न हो तथा मंगल यदि बलवान हो तो स्त्री पक्ष से अर्थ की प्राप्ति होती है।

30. तुलालग्न हो, शुक्र बली हो तो स्त्री संचित धन द्वारा सहायता करे

31. पंचम स्थान में चंद्रमा हो उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो जातक को लॉटरी इत्यादि से यकायक धन मिलता है।

32. लग्नेश धन भाव में हो तथा धनेश अष्टमस्थ हो तो भूमि से धन प्राप्ति होती है।

33. सूर्य, बुध, मंगल व शनि एक साथ 10वें, 5वें 9वें भाव में हों तो जातक लक्ष्याधिपति होता है।

34. तुलालग्न में यदि बलवान मंगल पंचमेश शनि के साथ हो तथा द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है, किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

35. तुलालग्न में बलवान मंगल की यदि षष्टेश गुरु से युति हो तथा धन भाव शनि से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट कचहरी में शत्रुओं को पराजित करता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है

36. तुलालग्न में बलवान मंगल की शुक्र से युति हो, सप्तम भाव में शुभग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

37. तुलालग्न में बलवान मंगल की नवमेश बुध से युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य पक्ष में, सरकारी अधिकारियों, अनुबन्ध (ठेकों) से काफी धन कमाता है।

38. तुलालग्न में बलवान मंगल की दशमेश चंद्रमा से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलती है। पिता द्वारा सम्पादित धन की प्राप्ति होती है तथा पैतृक व्यवसाय में जातक को लाभ होता है।

39. तुलालग्न में दशम भवन का स्वामी चंद्रमा यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलता। ऐसा जातक जन्म स्थान पर नहीं कमाता उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है

40. तुलालग्न में लग्नेश शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

41. धन स्थान में पाप ग्रह हो तथा लाभेश सूर्य यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

42. तुलालग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा बृहस्पति से यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव रहता है।

43. तुलालग्न में धनेश मंगल अस्त हो, नीच राशि (कर्क) में हो एवं धन स्थान तथा अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋण ग्रस्त रहता है।

44. तुलालग्न में लाभेश सूर्य यदि छठे आठवें या बारहवें स्थान में हो, लाभेश अस्तगत हो तथा पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है

45. तुलालग्न में अष्टमेश शुक्र वक्री होकर कहीं भी बैठा हो या अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है।

46. तुलालग्न में अष्टमेश शुक्र शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

तुलालग्न एवं संतान योग

1. तुलालग्न मे शनि पाचवे स्थान मे बैठा हो तो पांच पुत्र होते हैं।
2. तुलालग्न मे पचमेश शनि आठवे हो तो जातक के अल्प सन्तति होती है।
3. तुलालग्न में पचमेश शनि अस्त हो या पाप ग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
4. तुलालग्न मे पंचमेश शनि लग्न (तुला राशि) में हो, गुरु से युत या दृष्ट हो तो जातक की प्रथम सन्तति पुत्र ही होता है।
5. तुलालग्न में पचमेश शनि कुम्भ राशि का हो तो जातक के पाच पुत्र होते हैं
6. तुलालग्न में पचमेश शनि लग्न मे हो एवं लग्नेश शुक्र पचम मे परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरों की सन्तान गोद मे लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
7. तुलालग्न मे पचमेश शनि पचम, षष्ठ या द्वादश भावो मे हो तो "अनपत्य योग" बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र सन्तान नही होती पर उपाय करने से इस योग की शांति हो जाती है
8. राहु, सूर्य एव मगल पचम भाव मे हो तो ऐसे जातक को शल्य चिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
9. तुलालग्न में पचमेश शनि कमजोर हो तथा राहु एकादश में हो तो जातक को वृद्धावस्था में सन्तान की प्राप्ति होती है।
10. पचम स्थान मे राहु केतु या शनि इत्यादि पापग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
11. तुलालग्न मे लग्नेश शुक्र द्वितीय स्थान मे हो तथा पचमेश, शनि पापग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होने के साथ नष्ट हो जाता है।

12. तुलालग्न मे पचमेश शनि बारहवें स्थान में शुभ ग्रहो से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धवस्था मे अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक ससार में विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख हो जाता है।

13. पचमेश यदि वृष कर्क, कन्या या तुला राशि म हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप मे कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

14. तुलालग्न में पंचमेश शनि की सप्तमेश मगल से युति हो तो जातक को प्रथम सन्तति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

15. चंद्रमा सिह राशिस्थ हो तथा गुरु स्वराशि (9, 12) में हो तथा पाप व शुभ ग्रह 1/4/7/10 स्थानों में हो तो जातक 5 सन्तान को नाश करने वाला होता है।

16. जातक की कुण्डली में यदि गुरु, शुक्र और चंद्रमा तीनो मीन राशि में हों तो उसकी पत्नी के पुत्र अधिक होते हैं।

17. समराशि (2,4,6,8 10,12) में गया हुआ बुध कन्या सन्तति की वाहुल्यता देता है। यदि चद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

18. पचमेश निर्बल हो, लग्नेश शुक्र भी निर्बल हो तथा पचम भाव मे राहु हो तो जातक के सर्पदोष के कारण जातक के पुत्र सन्तान नहीं होती। ऐसे जातक को वश की वृद्धि की चिन्ता एवं मानसिक तनाव रहता है।

19. पचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्मनामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के पुत्र सन्तान नहीं होती। ऐसे जातक को वश वृद्धि की चिन्ता एव मानसिक तनाव रहता है।

20. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृ दोष होता है तथा पितृ शाप के कारण पुत्र सन्तान नहीं होती।

21. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पचम मे सूर्य एव बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक के स्वय का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़िया नहीं चलती।

22. तुलालग्न के चतुर्थ भाव मे पाप ग्रह हो तथा चद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवे स्थान मे पाप ग्रह हो तो "वशविच्छेद योग" बनता है ऐसे जातक के स्वय का वंश समाप्त हो जाता है, उसके आगे पीढ़ियां नही चलती।

23. तीन केन्द्रों मे पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को "इलाख्य नामक" सर्पयोग बनता है।

इस दोष के कारण जातक को पुत्र सन्तान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

24. तुलालग्न में पचमेश पचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो "अनपत्य योग" बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सन्तान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शात हो जाता है।

25. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवे हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो "अनगर्भा योग" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

26. पचम भाव मगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा सन्तान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

27 जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न मे और शनि यदि सातवे हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो "अनगर्भा योग" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

28. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मगल छठे या चौथे स्थान में हो तो "अनगर्भा योग" बनता है ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

29 शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो "कुलवर्द्धन योग" बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एव ऐश्वर्यशाली सन्तानों को उत्पन्न करती है।

30. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पचमेश और पचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को "केवल कन्या योग" होता है। पुत्र सन्तान नहीं होती।

❑❑❑

तुलालग्न और राजयोग

1. यदि तुलालग्न अपने पूर्णांश पर उच्च के शनि से युक्त हो तो और साथ ही उच्च का एकाकी मंगल चतुर्थ स्थान में हो, उच्च सूर्य सप्तम स्थान में हो और उच्च का बृहस्पति दशम में अपने उच्चांश पर हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है
2. उच्च का शनि लग्न में, सप्तम में तथा उच्च का गुरु दशम में हो तो या उच्च का शनि लग्न में उच्च का मंगल चतुर्थ में और उच्च का सूर्य सप्तम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का शनि लग्न में हो, उच्च का मंगल चतुर्थ में और उच्च का गुरु दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का शनि लग्न में उच्च का सूर्य सप्तम में और स्वगृही कर्क का चंद्रमा दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. उच्च का शनि लग्न में और उच्च का बृहस्पति स्वगृही चंद्र के साथ दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. उच्च का शनि लग्न में उच्च का मंगल चतुर्थ और स्वगृही कर्क का चंद्रमा दशम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. उच्च का मंगल चतुर्थ स्वगृही शनि पंचम उच्च का सूर्य सप्तम तथा स्वगृही बुध नवम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है
8. वृश्चिक का मंगल धन स्थान में, मकर का शनि चतुर्थ स्थान में, कर्क का चंद्रमा दशम स्थान में और सिंह का सूर्य एकादश या लाभ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
9. वृश्चिक का मंगल धन भाव में, मेष का सूर्य सप्तम भाव में, कर्क का बृहस्पति दशम में और उच्च का शनि लग्न में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है

10. तुलालग्न में शुक्र शनि व कर्क का, गुरु दशम हो, कन्या का सूर्य द्वादश में बुध के साथ मेष का मंगल सप्तम स्थान में, वृष का चंद्रमा अष्टम स्थान में पूर्ण हो जातक बड़ा आदमी बनता है।

11. गुरु तीसरे स्थान में हो शुक्र छठे स्थान में हो तो शेष सभी ग्रह गुरु व शुक्र के मध्य हो तो यह एक उत्तम राजयोग होता है।

12. शुक्र, मंगल धन भाव में हो, गुरु मीन राशि में हो, तुला में बुध शनि व चंद्रमा नीच के क्रमशः मेष वृश्चिक में बैठे हो तो यह निश्चित राजयोग होता है

13. व्ययेश बुध 1,2,4,5,9,10 भावों में से किसी भाव में हो तो उत्तम नौकरी का योग बनता है।

14. लग्नेश व जन्म राशि का अधिपति केन्द्र में हो तथा शुभ व मित्र ग्रहों से दृष्ट हो, शत्रु और पाप ग्रहों की दृष्टि न हो तथा जन्म राशि के स्वामी से चंद्रमा 9वें भाव में हो तो वह जातक एम. पी. या एम. एल. ए. होता है।

15. जन्म समय में सभी ग्रह योग कारक हों तो जातक राष्ट्रपति होता है। दो तीन ग्रहों के योग कारक होने से राज्यपाल होने का योग बनता है यदि एक ग्रह भी अपने पंचमांश में हो तो एम० एल० ए० योग होता है।

16. तुलालग्न हो तथा गुरु उच्च त्रिकोण या स्वराशि में स्थिति होकर चंद्रमा को सम्पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक को निश्चय ही मंत्री पद प्राप्त होता है

17. यदि गुरु, बुध चंद्रमा 2,5,11 वें भाव में हों, दो ग्रह षष्ट भाव में, शेष दो ग्रह सप्तम भाव में हो तो व्यक्ति राजदूत का पद प्राप्त करता है।

18. तुलालग्न हो तथा शुक्र द्वादश भाव में हो, शनि शत्रु भवन में हो सूर्य, चंद्र लग्न में हो तो जातक खूब धन प्राप्त करता है तथा कुशल नीतिज्ञ मंत्री होता है

19. सूर्य, शुक्र, मकर राशि में चतुर्थ भाव से तथा चंद्र शनि दशम भाव में हो परस्पर दृष्टि डाल रहे होने से जातक को उत्तम धन योग व राजयोग होता है।

20. शनि प्रथम भाव में मंगल उच्च का, सूर्य उच्च का 7वें भाव में हो तो जातक राज्य में उच्चाति उच्च पद प्राप्त करता है। तथा मंत्री होता है।

21. शनि षष्ट भाव में नीच का हो, पद वक्री व बलवान हो उस पर शनि की दृष्टि हो, सूर्य-चंद्र लग्न में हो तो असाधारण राजयोग बनता है।

22. लग्न की राशि तुला हो, चंद्र व शनि तथा शुक्र केन्द्र स्थानों में हो लग्नेश मकर राशि का हो, गुरु अष्टम भाव में हो सूर्य व शुक्र की युति हो तो जातक राज्य में उच्च स्थान प्राप्त करता है।

23. तुलालग्न में जन्म काल में तुला, धनु, मीन व लग्न में शनि बैठा हो तो जातक का राजकुल में जन्म और वह राजा होता है.

24. तुलालग्न में जलचर राशि में छठा चंद्रमा हो लग्न में उदित शुभ ग्रह और केन्द्र में पाप ग्रह न हो तो राजयोग होता है।

❑❑❑

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में

8	7 चं	6
9	10 / 4	5
1		3
12		2
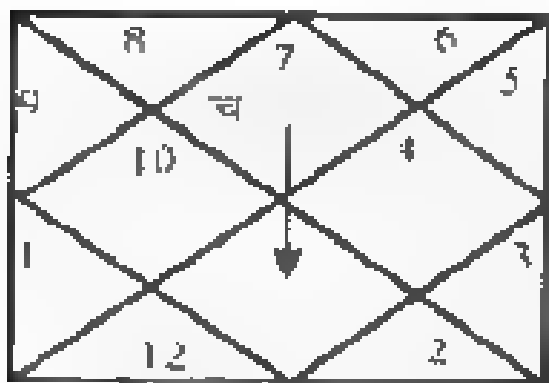
तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है यह लग्नेश शुक्र का मित्र है यहां प्रथम स्थान में चंद्रमा तुला राशि का होगा। ऐसा जातक विख्यात कवि लेखक कला संगीत मर्मज्ञ होता है इसे संसार के सभी सुख ऐश्वर्य, भोग विलास की सामग्री सहज में प्राप्त हो जाती है।

दृष्टि—चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि) पर होने से जीवन साथी।

निशानी—ऐसे व्यक्ति के नेत्र कमनीय, चंचल व शरीर सुन्दर होता है। जातक सुन्दर, सौम्य और विनम्र स्वभाव का होगा

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. चंद्र के साथ गुरु होने से तुलालग्न के प्रथम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह पंचम स्थान, सप्तम भाव एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। तुलालग्न में यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है क्योंकि तुलालग्न के लिए बृहस्पति पापी ग्रह है अशुभ फल प्रदाता है। फलत: ऐसे जातक के पराक्रम में न्यूनता आएगी। जातक की प्रथम सन्तति की मृत्यु होगी। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर अन्तिम रूप से सफल रहेंगे।
2. चंद्र के साथ सूर्य होने से तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने पर जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रात: 6 से 8 बजे के मध्य

होगा। सूर्य+चंद्र की तुला राशिगत प्रथम स्थान में यह युति वस्तुतः दशमेश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलायेगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, जबकि लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से सूर्य अशुभ फलदायक है, सूर्य लग्न में नीच राशि का भी है। जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी फिर भी जातक पराक्रमी होगा। जातक की पत्नी सुंदर होगी

3. तुलालग्न में यदि चंद्र के साथ बुध हो तो जातक के स्वयं के निर्णय विवादास्पद रहेंगे।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल होने से जातक महाधनी होगा।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक का व्यक्तित्व सुन्दर होगा। चेहरा भी सुन्दर होगा।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो 'शश योग' के कारण जातक चक्रवर्ती राजा के समान धनी होगा।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो यहां पर राहु की दशा में रोगोत्पत्ति होगी। जातक हठी होगा।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो जातक जिद्दी होगा। निर्णय संदिग्ध होंगे।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में
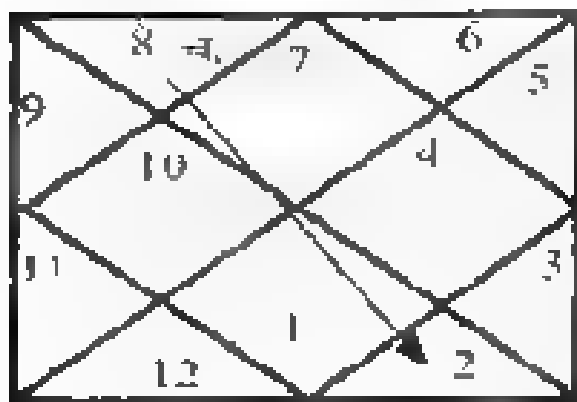
तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां चंद्रमा द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशि का होगा जो कि इसकी नीच राशि है। इसके तीन अंशों तक यह परम नीच का होता है परन्तु अपनी राशि से पांचवें स्थान पर होने के कारण नीच होते हुए भी चंद्रमा यहां शुभ फल देगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक राजमान्य, गुणी, धनी, अतिदानी और पिता के सुख से युक्त सम्पन्न व्यक्ति होगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक लंबी उम्र जीने वाला व्यक्ति होगा।

निशानी—जातक की वाणी विष बुझे के तीर की तरह विषैली होगी।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक धनवान होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. चंद्र के साथ गुरु तुलालग्न के द्वितीय स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। चंद्रमा यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह षष्टम स्थान, अष्टम स्थान एवं राज्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे, यह युति यहां ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक के शत्रुओं का नाश होगा। जातक की आयु बढ़ेगी। राजपक्ष में प्रभाव बढ़ेगा। ऋण, रोग और शत्रु का भय तो रहेगा परन्तु इस शुभ योग के कारण जातक का बचाव होता रहेगा। मुसीबत में मदद मिलती रहेगी।
2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कार्तिक कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व प्रातः पांच बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की वृश्चिक राशिगत धन स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश होने से शुभ फलदायक है। जबकि लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से सूर्य प्रतिकूल है। चंद्रमा यहां नीच का होगा। ये दोनों ग्रह यहां धन हानि देने वाले हैं अष्टम स्थान (वृष राशि) पर इनकी दृष्टि जातक के जीवन में रोग उत्पन्न कराने वाली है तथा आयु के लिए अनिष्ट सूचक है।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो 'नीचभंग राजयोग' एवं 'महालक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी एवं पराक्रमी होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो धन का अपव्यय होगा। रोकना कठिन है।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख मिलेंगे
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो धन के घड़े में भारी छेद है।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो धन का अपव्यय होगा। संग्रह कठिन है।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में
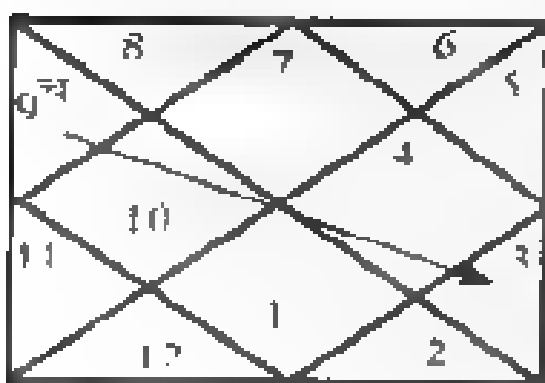
तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है यहां पर तृतीयस्थ चंद्रमा धनु राशि में होगा जो कि चंद्रमा की मित्र राशि है ऐसा जातक धन-धान्य, पद-प्रतिष्ठा से

युक्त, भाई व नौकरों से युक्त, पराक्रमी, गुणी व सत्यवक्ता होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य भवन (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक के भाग्य में 24 वर्ष की आयु के बाद दिन-प्रतिदिन वृद्धि होती रहेगी।

निशानी–ऐसा जातक कुछ क्रोधी स्वभाव का एवं महत्वकांक्षी होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में उन्नति होगी, पराक्रम बढ़ेगा, नौकरी लगेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. चंद्र के साथ गुरु होने से तुलालग्न के तृतीय स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति तुलालग्न के लिए पापी व अशुभ फलकर्त्ता है। परन्तु यहां तृतीय स्थान में धनु राशि में बृहस्पति स्वगृही होगा। जहां से वह सप्तम भाव, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः आपका पराक्रम तेज रहेगा। विवाह के बाद शीघ्र आपका भाग्योदय होगा आपकी गिनती भाग्यशाली लोगों में होगी। इस गजकेसरी योग के कारण आपको व्यापार-व्यवसाय में भी उचित लाभ होता रहेगा।
2. चंद्र के साथ सूर्य होने से तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति तृतीय स्थान में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व रात्रि 3 बजे के आस पास होगा। सूर्य+चंद्र की धनु राशिगत तृतीय स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है जबकि शुक्र का शत्रु होने के कारण सूर्य प्रतिकूल है। ये दोनों अग्नि संज्ञक राशि में होने से तृतीय स्थान के शुभ फल को नष्ट करेंगे पर इनकी दृष्टि भाग्य स्थान पर शुभ है। ऐसे जातक को भाई-बहन दोनों का सुख रहेगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो भाई-बहनों का सुख होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाई बहनों का सुख होगा, बहन अधिक होगी
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो बहनें अधिक होंगी।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो बहनें अधिक होंगी पर सभी सुखी होंगी।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो भाई बहनों में विवाद रहेगा।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो परिजनों में अविश्वास रहेगा।

तुलालग्न में चद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में
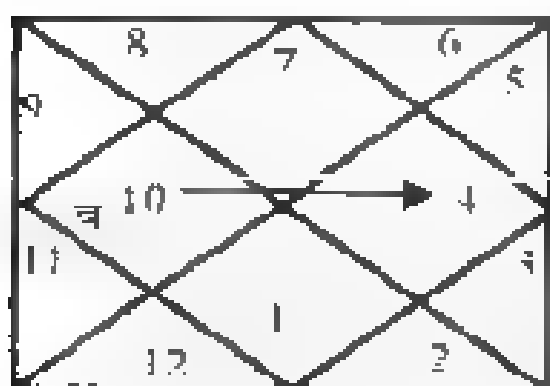
तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां चतुर्थ स्थान में चद्रमा दिग्बली होकर मकर राशि में होगा जो कि इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक माता-पिता, वृद्धजन के आदर सत्कार, सेवा भाव में विश्वास रखता है। ऐसा जातक सुनीति एवं न्याय में विश्वास रखता है। जातक राजनीति में हस्तक्षेप रखता है।

दृष्टि—चतुर्थ भाव स्थित चद्रमा की दृष्टि अपने स्वगृह (कर्क राशि) दशम भाव पर होगी। फलत: जातक को उत्तम मकान एव वाहन का परिपूर्ण सुख मिलेगा।

निशानी—ऐसा जातक घर की आन्तरिक सजावट पर विशेष ध्यान देता है।

दशा—चंद्रमा की दशा सुख में वृद्धि करेगी। यह दशा उन्नति दायक एव प्रतिष्ठा वर्धक होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. तुलालग्न के चतुर्थ स्थान में चद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश वृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां नीच तथा पपी भी है। परन्तु केन्द्रवर्ती होने से शुभ फलदायक होगा। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव राज्य स्थान एवं व्यय भाव पर होगी। इस युति के कारण आपको माता का सुख मिलेगा, आयु लबी होगी। धन खर्च बहुत होगा पर खर्चा शुभ होगा जीवन में कोई कार्य रुका हुआ नहीं रहेगा। अन्तिम सफलता निश्चित है
2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति चतुर्थ स्थान में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चद्र की मकर राशिगत चतुर्थ स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से अशुभ फलदायक है। ऐसे जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी। भले ही वह सम्पत्ति ज्यादा मात्रा में न हो। ऐसे जातक के जीवन में वाहन दुर्घटना के द्वारा विकलांग होने का भय रहता है

3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो यहां मंगल उच्च का 'रूचक योग', 'महालक्ष्मी योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पृथ्वीपति व धनवान होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाग्य उत्तम पर माता के निर्णय ज्यादा ठीक नहीं होंगे।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। जातक के पास एकाधिक वाहन होंगे।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो यहां शनि स्वगृही होने से 'शश योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पृथ्वीपति एवं धनवान होगा।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो वाहन में चोट पहुंचेगी। वाहन खर्चीला होगा।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में
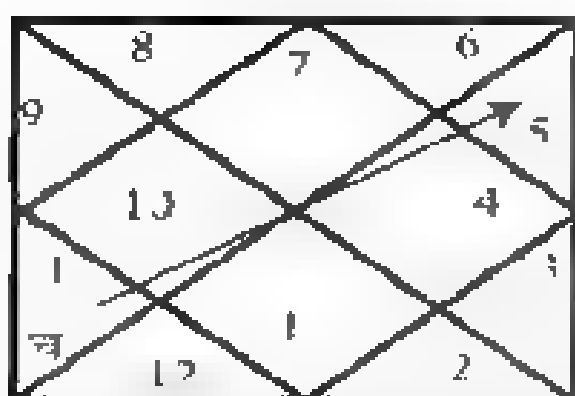
तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां पंचम स्थान में चंद्रमा कुंभ राशि का होगा। चंद्रमा की यह स्थिति अपनी राशि में आठवें स्थान पर होने से थोड़ी अशुभ फलदायक है। जातक एकान्त प्रिय तथा थोड़ा ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है ऐसा जातक धनी होता है। दार्शनिक होता है। ज्योतिष एवं अन्य रहस्यमय विद्याओं का ज्ञाता होता है।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक को रहस्यमय विद्याओं व व्यापार से लाभ होगा।

निशानी–जातक को कन्या सन्तति अधिक होती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मध्यम फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के पंचम स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां पापी व अशुभ ग्रह होते हुए भी आपको शुभ सन्तति देगा। इसकी दृष्टि भाग्य भाव, लाभ भवन एवं लग्न स्थान पर है। फलतः आपके भाग्य का उदय किसी की मदद

से होगा। व्यापार-व्यवसाय में आपको समय समय लाभ पर मिलता रहेगा। आपकी उन्नति चहुमुखी होगी। एक साथ अनेक कार्यों से आपको लाभ होगा।

2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति पंचम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या रात्रि 10 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की कुंभ राशिगत पंचम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से अशुभ फलदायक है। ऐसे जातक की सन्तति का क्षरण होता है या मृत सन्तति हाथ लगती है।

3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो सन्तति का गर्भपात होगा

4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो शल्य चिकित्सा होगी खासकर पत्नी की।

5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो पत्नी की शल्य चिकित्सा, सिजेरियन चाइल्ड सम्भव।

6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो शनि यहां त्रिकोण में स्वगृही होने से राजयोग बनता है।

7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो राहु यहां मानसिक उन्माद उत्पन्न करेगा। सन्तान में बाधा होगी.

8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो कन्या सन्तति ऑपरेशन से होगी।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम् स्थान में

8, 7, 6, 9, 5, 10, 4, 1, 3, 1, चं 12, 2
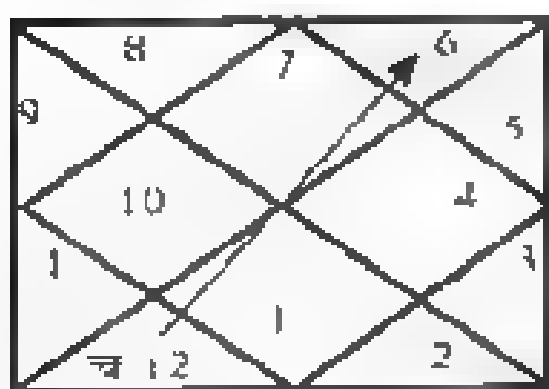
तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां षष्ट स्थान में चंद्रमा होने से मीन राशि का होगा। चंद्रमा छठे जाने से 'राजभंग योग' बनेगा। जीवन में नौकरी, व्यापार, रोजी रोजगार के लिए संघर्ष की स्थिति रहेगी। जातक मानसिक परेशानी व तनाव में रहेगा। ऐसा जातक पिता सुख से हीन व शत्रुओं से तंग रहता है।

दृष्टि—छठे भाव में स्थित चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि) पर रहेगी, फलतः जातक खर्चों के प्रति चिन्तित रहेगा।

निशानी—जातक चतुर होने पर भी धन की कमी रहती है।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा रोग व शत्रुओं के प्रति सावधानी रखने की है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के षष्ट्म स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुतः राज्येश चद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहा स्वगृही होगा। तथा उसकी दृष्टि दशम भाव, व्यय स्थान एव धन स्थान पर होगी। फलतः रोग का नाश होगा। यहा पर क्रमशः 'पराक्रमभग योग' एव 'राज्यभग योग' की सृष्टि दु:खद है। कोई अन्यतम मित्र, जिस पर आप ज्यादा भरोसा करते है, धोखा देगा। सरकार से, कोर्ट कचहरी से दण्ड भी मिल सकता है, सावधान रहे। फिर भी कुल मिलाकर आपको इस योग के कारण कोई गंभीर नुकसान नहीं होगा। प्रतिष्ठा बनी रहेगी।
2. तुलालग्न म चंद्र+सूर्य की युति छठे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या रात्रि 8 बजे के आस पास होगा। सूर्य+चद्र की मकर राशिगत चतुर्थ स्थान मे यह युति वस्तुतः राज्येश चद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। चंद्रमा खड्डे मे जाने से 'राजभग योग' तथा सूर्य के खड्डे में जाने से 'लाभभग योग' बना। इन दोनों ग्रहो की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राज्य प्राप्ति (सरकारी नौकरी) एव व्यापार व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त सघर्ष करना पड़ेगा।
3. तुलालग्न मे चद्र के साथ मंगल हो तो पत्नी व गृहस्थ सुख में विवाद होगा।
4. तुलालग्न में चद्र के साथ बुध हो तो भाग्योदय मे रुकावट होगी।
5. तुलालग्न चंद्र के साथ में शुक्र हो तो प्रारम्भ मे परिश्रम का फल नहीं पर अन्तिम सफलता जोरदार होगी
6. तुलालग्न मे चंद्र के साथ शनि हो तो सुख समाधनों व सन्तति प्राप्ति में बाधा रहेगी।
7. तुलालग्न में चद्र के साथ राहु हो तो रोग सघर्ष में मुक्ति नहीं मिलेगी।
8. तुलालग्न म चद्र के साथ केतु हो तो संघर्ष में वृद्धि होती रहेगी।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में
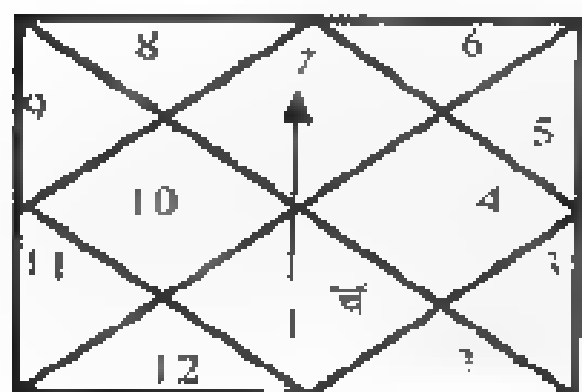
तुलालग्न में चद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहा सप्तम भाव चंद्रमा मेष राशि अपनी मित्र राशि में है। चंद्रमा की यह स्थिति स्वराशि मे दशम अर्थात् दशम भाव मे होने से महत्वपूर्ण है। एसे जातक

सुन्दर आकर्षक व प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी होते हैं। जीवन साथी भी प्रभावशाली एवं सुन्दर होता है। जातक माता पिता, राज्य, नौकरी-व्यवसाय व सन्तान से सुखी होता है।

दृष्टि—चंद्रमा की दृष्टि लग्न भाव(तुला राशि) पर होने से जातक शीघ्र उन्नति करेगा।

निशानी—जातक सत्य खोजी व अन्वेषण (अनुसंधान) में रुचि रखता है।

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक उन्नति, राजपद, प्रतिष्ठा एवं पिता की सम्पत्ति को प्राप्त करता है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. तुलालग्न के सप्तम स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहा दोनों केन्द्रस्थ होने से 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि कर रहे हैं। इन दोनों शुभ ग्रहो की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान पर होगी। फलतः आपके कारोबार में आपको तरक्की-उन्नति मिलेगी। व्यापार-व्यवसाय में समय-समय पर धन की प्राप्ति होती रहेगी। और पराक्रम से, मित्र सर्किल, समाज में कीर्ति व यश की प्राप्ति होगी। बृहस्पति व चंद्रमा दोनों की दशाएं शुभ फल देंगी।
2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति सप्तम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होगा। सूर्य+चंद्र की मेष राशिगत सप्तम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। सूर्य यहां उच्च का है अतः 'रविकृत राजयोग' बना रहा है चंद्रमा राज्येश होकर उच्चभिलाषी है। जातक महत्वाकांक्षी होगा एवं राजातुल्य ऐश्वर्य व राजलक्ष्मी को भोगेगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो 'महालक्ष्मी योग' के कारण धन की बरकत रहेगी।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाग्य बलवान रहेगा पर निर्णय विवादास्पद होंगे।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो जातक की उन्नति होती रहेगी।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो जातक को सन्तान व शिक्षा का सुख मिलेगा।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो पति-पत्नी में समर्पण की भावना का अभाव रहेगा
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो पति पत्नी में मनमुटाव रहेगा।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में
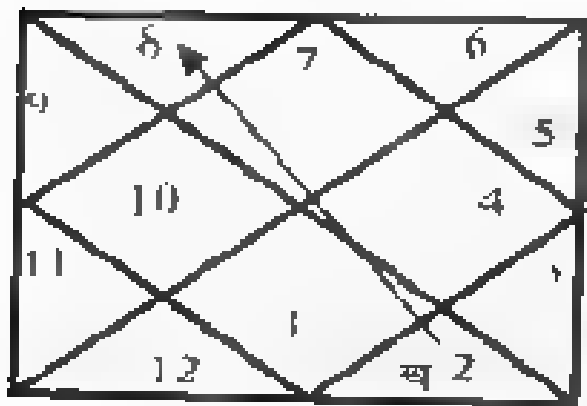
तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां अष्टमस्थ चंद्रमा वृष राशि का होगा। यह चंद्रमा की उच्च राशि है। इसके तीन अंशों तक चंद्रमा परमोच्च का होता है। चंद्रमा अष्टम में जाने से 'राजभंग योग' की सृष्टि हुई। उच्च के चंद्रमा के कारण जातक दीर्घजीवी होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक कर्महीन एवं पर निन्दक होगा. जातक को धन की कमी चिन्तित करती रहेगी।

दृष्टि–अष्टम भावगत चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक खर्च की अधिकता को लेकर चिन्तित रहेगा।

निशानी–जातक को माता पिता के सुख में न्यूनता रहेगी।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के अष्टम स्थान में चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा उच्च का होगा तथा दोनों ग्रह की दृष्टि व्यय भाव, धन स्थान एवं सुख स्थान पर होगी। फलत: खर्च ज्यादा होगा। रुपयों की बरकत नहीं होगी तथा सुख प्राप्ति में कुछ न कुछ बाधा आती रहेगी यहां बृहस्पति के कारण पराक्रमभंग योग एवं चंद्रमा के कारण राज्यभंग योग भी बन रहा है। इसका प्रभाव भी 40 प्रतिशत जातक के जीवन पर पड़ेगा अत: सरकारी अधिकारियों से न उलझें तथा मित्रों के साथ व्यवहार सही रखें।
2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति अष्टम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या सायंकाल 4 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की वृष राशिगत अष्टम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। सूर्य के खड्डे में गिरने से 'राजभंग योग' बना। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। हालांकि चंद्रमा यहां उच्च का होगा। जातक को राज्य, (सरकारी नौकरी) प्राप्ति एवं व्यापार व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन भर संघर्ष करना पड़ेगा।

3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो धन का अभाव रहेगा। गृहस्थ सुख मे बाधा रहेगी।
4. तुलालग्न मे चंद्र के साथ बुध हो तो भाग्य में रुकावट पर अन्तिम सफलता।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो परिश्रम का लाभ विलम्ब से मिलेगा।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो शिक्षा व सन्तति में बाधा होगी।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो गुप्त रोग की सम्भावना तथा मानसिक पीड़ा रहेगी।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो जातक को मानसिक सन्ताप रहेगा।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

8 7 6 9 5 10 4 11 3 चं. 1 12 2
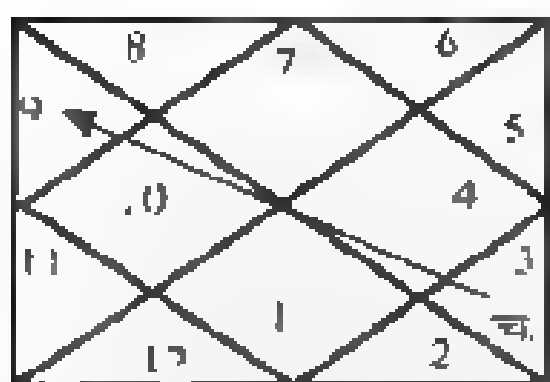
तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है यहां नवम भाव गत चंद्रमा मिथुन राशि में होगा। जो कि चंद्रमा की शत्रु राशि है। यहां दशमेश चंद्रमा अपनी राशि में द्वादश भाव में स्थित होकर जातक के जीवन में गौरव एवं प्रतिष्ठाशाली रोजगार की कमी दिलवाता है। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक राजकुलोत्पन्न राजा या राजपुरुष होता है। परन्तु पूर्वजों की प्रतिष्ठा कायम नहीं रख पाता

दृष्टि–नवम भावगत चंद्रमा की दृष्टि तृतीय स्थान (धनु राशि) पर होगी फलत: जातक प्रबल पराक्रमी होगा।

निशानी–जातक का जन्म उच्चकुल मे होगा

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा में जातक शक्ति-सम्पन्न होगा तथा राजपद को प्राप्त करेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. चंद्र के साथ गुरु तुलालग्न के नवम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है तथा बृहस्पति पापी है। इन दोनो शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एव पंचम भाव पर है फलत: जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जाएगा जातक की उन्नति भाग्योदय थोड़े संघर्ष के बाद होगा। जातक प्रभावान होगा। संघर्ष के बाद विजय मिलेगी जीवन सफल रहेगा।

2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति नवम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की मिथुन राशिगत नवम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। राज्येश चंद्रमा यहां शत्रु क्षेत्री है। सुखेश सूर्य का भाग्य स्थान में बैठना शुभ है। जातक के भाग्योदय को लेकर संघर्ष की स्थिति रहेगी। फिर भी चंद्रमा पराक्रमी व धनी होगा।
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो जातक धनी होगा।
4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो भाग्य में वृद्धि होती रहेगी।
5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो परिश्रम का लाभ बराबर मिलेगा।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो तो जातक को शिक्षा व सन्तति का लाभ मिलेगा।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो धन प्राप्ति हेतु संघर्ष रहेगा।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो भाग्य में रुकावटें आएंगी।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में

8	7	6
9	च.	5
10 ←		4
11		3
12	1	2
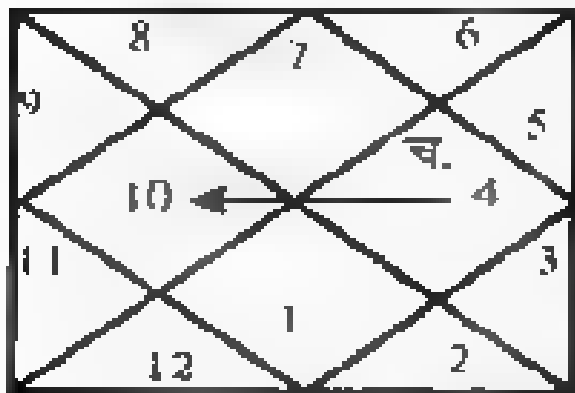
तुलालग्न में चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। दशम भावगत चंद्रमा यहां स्वगृही होगा। यहां 'यामिनीनाथ योग' 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा। ऐसा जातक उत्तम नौकरी व्यवसाय को प्राप्त करता है। माता-पिता के सुख से युक्त, माता-पिता की सम्पत्ति को प्राप्त करता है। गुरु की भक्ति व शक्ति को प्राप्त करता है। जातक धनी व यशस्वी होता है।

दृष्टि–दशमस्थ चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि) पर होगी फलतः जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। माता का घर, ननिहाल समृद्ध होगा।

निशानी–जातक की माता दीर्घायु होती है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक अद्वितीय कीर्ति, धन, यश व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. तुलालग्न के दशम स्थान में चंद्र के साथ गुरु की युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा स्वगृही का एवं

बृहस्पति उच्च का होगा। 'किम्बहुना योग' के कारण यह इस योग की सर्वोत्तम स्थिति है। इन दोनो शुभ ग्रहो की दृष्टि व धन स्थान, सुख स्थान एव षष्टम भाव पर है। फलतः धन की प्राप्ति 24 वर्ष की आयु से होनी शुरु हो जाएगी। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी। मां का सुख मिलेगा एवं जातक अपने शत्रुओ का नाश करने मे पूर्ण सक्षम होगा।

2. तुलालग्न में चद्र+सूर्य की युति दशम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को दिन के 2 बजे के आस पास होगा। सूर्य+चद्र की कर्क राशिगत दशम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। चंद्रमा यहां स्वगृही होकर 'चद्रकृत राजयोग' बनायेगा। सूर्य केन्द्रवर्ती होकर स्वगृहाभिलाषी होगा। ऐसा जातक राजातुल्य प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होगा।

3. तुलालग्न में चद्र के साथ मगल हो तो यहां 'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक महाधनी होगा। पराक्रमी होगा एव बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. तुलालग्न में चद्र के साथ बुध हो तो जातक भाग्यशाली होगा पर भाग्योदय विलम्ब से होगा।

5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक आगे बढेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा। सरकारी काम फटाफट होंगे।

6. तुलालग्न मे चद्र के साथ शनि हो तो जातक के पास एकाधिक वाहन व बगले होंगे।

7. तुलालग्न में चद्र के साथ राहु हो तो सरकारी काम में बाधा, राजनीति के लाभ पर पीठ पीछे बदनामी होगी।

8. तुलालग्न में चद्र के साथ केतु हो तो जातक की उन्नति में छोटी-छोटी बाधाए आती रहेंगी।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान मे

8 7 6 च. 9 5 10 4 11 3 1 12 2
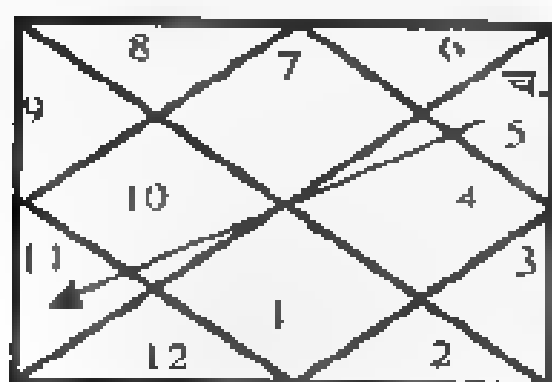
तुलालग्न में चद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहा एकादश भाव में चंद्रमा सिह राशि में होगा जो कि उसके मित्र की राशि है। ऐसे जातक को पिता, राज्य नौकरी व्यवसाय से, बड़े भाई से धन व यश

की प्राप्ति होती है पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक धन-पुत्र-पौत्रादि से युक्त होकर दीर्घजीवी होता है.

दृष्टि-सिंहस्थ चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (कुंभ राशि) पर होगी फलतः विद्या, बुद्धि एवं संतान के उत्तम सुख की प्राप्ति होती है।

निशानी-जातक व्यवहार कुशल होगा तथा दूसरों से अपना काम निकलवाने में माहिर होगा

दशा-चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा मे जातक को यथेष्ट लाभ की प्राप्ति होती रहेगी

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. तुलालग्न के एकादश स्थान मे चंद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहा बैठकर दोनों शुभ ग्रह पराक्रम भाव, पंचम स्थान एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक का पराक्रम बढ़ेगा। उसे पुत्र सन्तति की प्राप्ति होगी। पत्नी सुन्दर मिलेगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।
2. तुलालग्न में चंद्र+सूर्य की युति एकादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या सुबह 10 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की सिंह राशिगत एकादश स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। यहा सूर्य स्वगृही होकर 'रविकृत राजयोग' बनायेगा व उत्तम सन्तति देगा। जातक राजातुल्य प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होगा
3. तुलालग्न में चंद्र के साथ मंगल हो तो जातक उद्योगपति व धनी होगा
4. तुलालग्न मे चंद्र के साथ बुध हो तो जातक भाग्यशाली व धनी होगा।
5. तुलालग्न मे चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक उन्नति पथ पर आगे बढता आएगा।
6. तुलालग्न में चंद्र के साथ शनि हो जातक महाधनी होगा। सन्तति उत्तम होगी।
7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो लाभांश मे बाधा रहेगी।
8. तुलालग्न में चंद्र के साथ केतु हो तो आध्यात्मिक सुख में वृद्धि पर भौतिक सुख में संघर्ष रहेगा।

तुलालग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में

तुलालग्न मे चंद्रमा दशम स्थान का स्वामी, राज्येश होने से शुभ फल प्रदाता व राजयोग कारक है, यह लग्नेश शुक्र का मित्र है। यहां द्वादश स्थान में चंद्रमा कन्या
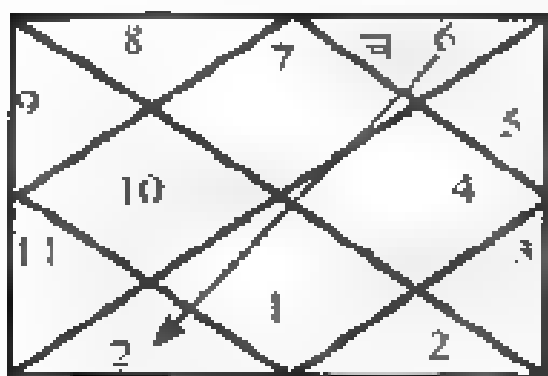
राशि अपनी शत्रु राशि मे होगा। ऐसा जातक प्राय: नेत्र रोगी होता है, खासकर बांयी आख कमजोर होगी। 'राजभग योग' के कारण जातक मान-प्रतिष्ठा, नौकरी-व्यवसाय, पिता राजनीति, शासन व कोर्ट- कचहरी द्वार कष्ट अपमान व परेशानियों का अनुभव करता है।

दृष्टि—द्वादश चद्रमा की दृष्टि छठे भाव (मीन राशि) पर होगी फलत: जातक रोग व शत्रु पक्ष से पीड़ित रहेगा।

निशानी—व्यक्ति चतुर होने पर भी सदा चिन्तित रहता है पर यात्राओं में धन अर्जित करने में कुशल होता है। विदेश यात्रा करता है

दशा—चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा में जातक शासन से राजनीति से सम्बन्धित कार्यों में कष्ट पाता है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. तुलालग्न के द्वादश स्थान में चद्र के साथ गुरु यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर यह दोनों शुभ ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम स्थान एव अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगे तथा 'पराक्रमभंग योग' एव 'राजभग योग' की सृष्टि भी करेंगे फलत: गजकेसरी योग की यहां ज्यादा सार्थकता नहीं है। फिर भी सुख में वृद्धि होगी। शत्रुओं का नाश होगा तथा जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। जातक को सघर्ष के बाद सफलताए मिलती रहेंगी जो कि सफल जीवन के लिए बहुत जरूरी है।
2. चंद्र के साथ सूर्य होने से तुलालग्न में चद्र+सूर्य की युति द्वादश स्थान मे होने के कारण जातक का जन्म आश्विनी कृष्ण अमावस्या सुबह 8 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की कन्या राशिगत द्वादश स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति होगी। चद्रमा बारहवें होने से 'राजभग योग' तथा सूर्य का बारहवा होने से 'लाभभंग योग' की सृष्टि होती है। इन दोनो ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राज्य (सरकारी नौकरी) की प्राप्ति हेतु एव व्यापार-व्यवसाय मे लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन भर सघर्ष करना पड़ेगा।
3. तुलालग्न मे चंद्र के साथ मगल हो तो इस युति के कारण पारिवारिक सुखों में हानि होगी।

4. तुलालग्न में चंद्र के साथ बुध हो तो यहा बुध उच्च का होगा। जातक का भाग्य यात्राओं से चमकेगा। ट्रांसपोर्ट, ट्रेवल ऐजेन्सी व कारियर के व्यवसाय में लाभ होगा।

5. तुलालग्न में चंद्र के साथ शुक्र हो तो जातक के अन्य स्त्रियों के साथ यौन सम्बन्ध, कभी लाभ, कभी हानि की स्थिति रहेगी शुक्र यहा नीच का होने से गुप्त रोगो की शल्य चिकित्सा भी सम्भव है।

6. तुलालग्न मे चद्र के साथ शनि हो तो जातक को शिक्षा एवं सन्तान सुख मे बाधा महसूस होगी।

7. तुलालग्न में चंद्र के साथ राहु हो तो यहा यह युति शुभ है। जातक ऊर्जावान होगा व देश-विदेश में ख्याति अर्जित करेगा.

8. तुलालग्न मे चद्र के साथ केतु हो तो जातक ईर्ष्यालु व झगड़ालू स्वभाव का होगा।

❑❑❑

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में
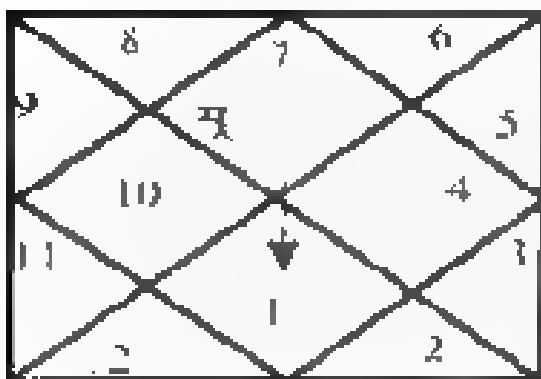
तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहा पाप फलप्रद है। लग्नस्थ सूर्य यहां तुला राशि में है। तुला राशि सूर्य की नीच राशि है, यहां सूर्य 10 अंशों तक परम नीच का होता है ज्योतिष शास्त्र के अनुसार तुलालग्न में यदि सूर्य, बुध और शुक्र लग्नस्थ हो तो जातक भाग्यशाली व धनवान होता है। यहां सूर्य अपनी राशि से तीसरे स्थान पर है अत: जातक पराक्रमी होगा, पर थोड़ा रूखा एवं उष्ण स्वभाव का होगा तुला राशिगत सूर्य की दृष्टि सातवें भाव (मेष राशि) पर होगी जो कि उसकी उच्च राशि है फलत: जातक का ससुराल सम्पन्न व प्रतिष्ठित होगा जातक स्वयं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।

निशानी–जातक की देह पर कम बाल होंगे।

दशा–सूर्य की दशा-अन्तर्दशा लाभकारी व उन्नतिदायक साबित होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। प्रथम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां नीच का है। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जहां सूर्य उच्च राशि स्थित है। फलत: जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होगा विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। बुध के लग्न में स्थित होने में 'कुलदीपक योग' बना। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा इस कारण अपनी जाति, कुटुम्ब, परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने पर जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रातः 6 से 8 बजे के मध्य होगा सूर्य+चंद्र की तुला राशिगत प्रथम स्थान में यह युति वस्तुतः दशमेश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, जबकि लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से सूर्य अशुभ फलदायक है। सूर्य लग्न मे नीच राशि का भी है जातक को सरकारी नौकरी नहीं मिलेगी। फिर भी जातक पराक्रमी होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
3. **सूर्य + मंगल**–लाभेश सूर्य के साथ धनेश, सप्तमेश मंगल, ससुराल से लाभ की प्राप्ति, व्यापार से लाभ की प्राप्ति कराने में सहायक है।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–लाभेश सूर्य की षष्टेश (पापी) बृहस्पति के साथ युति कष्टदायक है।
5. **सूर्य + शुक्र**–यहां 'नीचभग राजयोग' बना क्योंकि शुक्र स्वगृही है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक बुद्धिमान होगा एवं उच्चविद्या प्राप्त करेगा।
6. **सूर्य + शनि**–यहां 'नीचभंग राजयोग' बना। क्योंकि शनि उच्च का है, ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। यहा शनि राजयोग कारक होने से यह युति बहुत लाभप्रद है
7. **सूर्य + राहु**–राहु सूर्य के तेज को नष्ट करता है, जातक निरंकुश होगा।
8. **सूर्य + केतु**–केतु के साथ सूर्य निर्बल होगा।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में

8 सू.	7	6	
9			5
10			4
11			3
12	1	2	
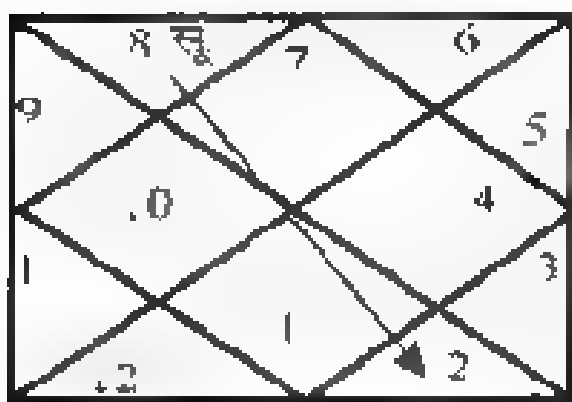
तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहा पाप फलदायक है। तुलालग्न के द्वितीय स्थान में सूर्य वृश्चिक राशि में है। वृश्चिक राशि सूर्य की मित्र राशि है। सूर्य लाभेश होकर धन स्थान में होने से धन संग्रह मे सहायक है, ऐसा जातक सब कार्य में सिद्धि पाने वाला धर्मात्मा व सुखी होता है।

दृष्टि–सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि) पर होने से जातक निरोगी होगा एव कर्मशील होगा। कार्य करने मे भरपूर विश्वास रखेगा।

दशा–सूर्य की दशा जातक को धनवान बनाएगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे फलत. जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा। जातक में रोग व शत्रु से लड़ने की शक्ति होगी जातक भाग्यशाली भी होगा तथा समाज के लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्तियों में जातक का नाम होगा।
2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान में होने पर जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व प्रातः 5 बजे के आस-पास होगा सूर्य+चंद्र की वृश्चिक राशिगत द्वितीय स्थान में यह युति वस्तुतः दशमेश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, जबकि लग्नेश शुक्र का शत्रु होने के कारण सूर्य प्रतिकूल है। चंद्रमा यहां नीच का होगा। ये दोनों ग्रह यहां धन हानि देने वाले हैं। अष्टम स्थान (वृष राशि) पर इनकी दृष्टि जातक के जीवन में रोग उत्पन्न कराने वाली है तथा आयु के लिए अनिष्ट सूचक है
3. **सूर्य + मंगल**–मंगल यहां स्वगृही होगा। फलतः जातक को ससुराल से धन लाभ होगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा जातक धनी होगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–जातक पराक्रमी होगा पर धीमी गति से कमाएगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–जातक धनी होगा एवं संघर्षशील रहेगा।
6. **सूर्य + शनि**–जातक बहुत पैसे वाला होगा पर भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य + राहु**–धन की स्थिति कष्टदायक होगी।
8. **सूर्य + केतु**–धन को लेकर संघर्ष बना रहेगा।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

8	7	6
सू. 9		5
10		4
11		3
12	1	2
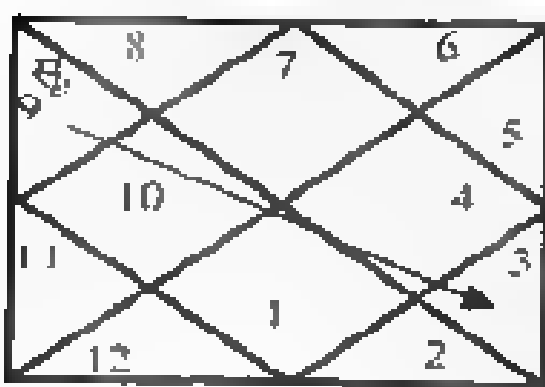
तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। तुलालग्न के तृतीय स्थान में सूर्य धनु का होगा। यह इसकी मित्र राशि है। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी एवं निर्भीक होते हैं। यहां सूर्य की स्थिति अपनी सिंह राशि से पंचम

स्थान पर होने से जातक को धन, पद, प्रतिष्ठा, वीरता, पराक्रम एवं उत्तम भवन, मित्रों की प्राप्ति कराता है। पाराशर ऋषि कहते हैं 'धनी भ्रातृसुखोपेतः शूलरोगभय क्वचित्' ऐसे जातक को भाईयों का सुख रहता है। जातक धनी होता है पर कभी कभी शूल रोग से पीड़ित रहता है।

दृष्टि—धनु राशिगत सूर्य की दृष्टि भाग्य स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु में होगा.

दशा—सूर्य की दशा उन्नतिदायक रहेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**-भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। तृतीय स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह नवम भाव को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान, पराक्रमी एवं भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक को जीवन में परिजनो व मित्रो का सहयोग मिलता रहेगा। मित्रों के सहयोग से जातक का भाग्योदय होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + चंद्र**-तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान में होने पर जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय के पूर्व रात्रि 3 बजे के आस पास होगा। सूर्य+चंद्र की धनु राशिगत तृतीय स्थान मे यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। तुलालग्न मे चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है जबकि शुक्र का शत्रु होने के कारण सूर्य प्रतिकूल है ये दोनो अग्नि संज्ञक राशि में होने से तृतीय स्थान के शुभ फल को नष्ट करेंगे पर इनकी दृष्टि भाग्य स्थान पर शुभ है। ऐसे जातक को भाई-बहन दोनों का सुख रहेगा।
3. **सूर्य + मंगल**—मित्रों से, भाईयों की मदद से बिगड़े कार्य सुधरेंगे।
4. **सूर्य + बृहस्पति**—जातक को बड़े भाई का सुख मिलेगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—मित्रों से लाभ रहेगा
6. **सूर्य + शनि**—जातक के मित्र सम्पन्न होंगे। पुत्र उत्पत्ति के बाद जातक का पराक्रम बढ़ेगा छोटे बड़े भाईयों की मृत्यु के लिए ग्रह स्थिति जिम्मेदार है।
7. **सूर्य + राहु** भाईयों से धोखा होगा। राज्यपक्ष से भी धोखा होगा।
8. **सूर्य + केतु**—मित्र दगा देंगे, बड़े भाई की मृत्यु हेतु यह स्थिति जिम्मेदार है।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
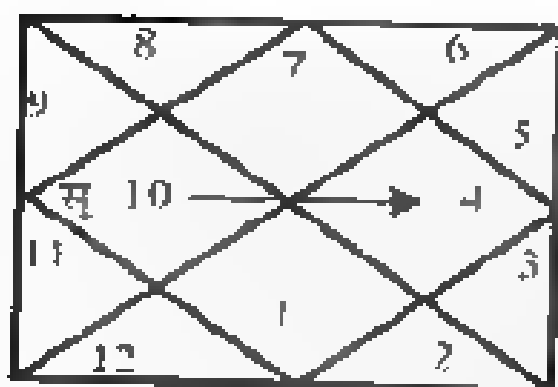
तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है, यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहा पाप फलदायक है। चतुर्थ स्थान में सूर्य मकर राशि मे होने से शत्रुक्षेत्री होगा। इस स्थान में सूर्य अपनी राशि में छटे स्थान पर होन से सुखों में कमी कराएगा। ऐसे जातक को माता के सुख में कमी व भूमि सुख मे विवाद की स्थिति रहती है। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी सघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि—मकर राशिगत सूर्य की दृष्टि राज्य स्थान (कर्क राशि) पर होगी फलत: जातक को साधारण नौकरी मिलेगी।

निशानी—जातक को उच्च रक्तचाप होगा या किराए के मकान मे रहेगा।

दशा—सूर्य की दशा सघर्षमय रहेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—भोजसहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। चतुर्थ स्थान मे मकर राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहा पर शत्रुक्षेत्री होगा। बुध केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बना। यहा बैठकर दोनो ग्रह दशम भाव को देखेगे। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। उसे माता की सपत्ति मिलगी। उसे उत्तम वाहन सुख, उत्तम मकान का सुख भी मिलेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. तुलालग्न में सूर्य+चद्र की युति चतुथ स्थान में होने पर जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होगा. सूर्य+चद्र की मकर राशिगत चतुर्थ स्थान मे यह युति वस्तुत: राज्येश चद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। तुलालग्न मे चद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, पर सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से अशुभ फलदायक है। ऐसे जातक को माता पिता की सम्पत्ति मिलेगी। भले ही वह सम्पत्ति ज्यादा मात्रा में न हो. ऐसे जातक के जीवन में वाहन दुर्घटना के द्वारा विकलाग होने का भय रहता है।

3. **सूर्य + मंगल**—यहा मगल उच्च का होने से सूर्य बलवान होकर 'राजयोग' बनायेगा। 'रूचक योग' के कारण जातक धनवान होगा। राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

4. **सूर्य + बृहस्पति**—षष्ठेश गुरु यहां नीच का होगा। फलतः अशुभ फलों में वृद्धि होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**—लग्नेश केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बनेगा परन्तु शुभ ग्रह के साथ होने से सुख प्राप्ति हेतु संघर्ष की स्थिति रहेगी
6. **सूर्य + शनि**—शनि यहा स्वगृही होगा। 'शश योग' बनाएगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगेगा, पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा
7. **सूर्य + राहु**—जातक मस्तिष्क रोगी, एकान्तवासी, पैतृक सम्पत्ति से हीन होगा।
8. **सूर्य + केतु**—जातक को पिता का सुख कम मिलेगा। सिर दर्द की शिकायत रहेगी

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में

8 7 6 9 5 10 4 11 3 सू. 1 12 2
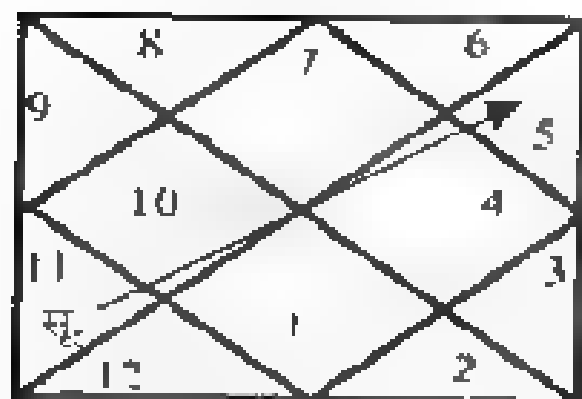
तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है, यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहा पाप फलदायक है। यहा पचमस्थ सूर्य कुभ राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। परन्तु अपनी सिंह राशि से सातवें स्थान पर होकर अपने ही घर लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक को धन पद प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, मकान व संतान का सुख मिलेगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसे जातक के पुत्र सुखी एवं विद्वान होते हैं। जातक स्वय सुशील, धर्मात्मा एव सुखी होता है।

निशानी—पुत्र सन्तति जरूर होगी।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। पंचम स्थान में कुम्भ राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां पर शत्रुक्षेत्री होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को देखेंगे। जो कि कन्या सन्तति की अधिकता रहेगी पर सूर्य की कृपा से एक पुत्र भी होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. तुलालग्न में सूर्य+चद्र की युति पचम स्थान में होने पर जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 बजे के आस-पास होगा सूर्य+चद्र की कुभ राशिगत पंचम स्थान में यह युति वस्तुत. राज्येश चद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। तुलालग्न में चंद्रमा राज्येश होने से शुभ फलदायक है, जबकि

सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होने से अशुभ फलदायक है। ऐसे जातक सन्तति का क्षरण होता है या मृत सन्तति हाथ लगती है।

3. **सूर्य + मंगल**—मंगल साथ होने से गुप्त शत्रु पीड़ा पहुंचाएंगे।
4. **सूर्य + बृहस्पति**—एकाध पुत्र सन्तति को अकाल मृत्यु सम्भव है।
5. **सूर्य + शुक्र**—प्रथम सन्तति के बाद उन्नति होगी।
6. **सूर्य + शनि**—जातक को पुत्र व कन्या दोनों सन्तति होगी
7. **सूर्य + राहु**—भृगुसूत्र के अनुसार ''सर्पशापात् सुत, क्षय'' सर्पदोष से पुत्र सन्तति नष्ट होगी।
8. **सूर्य + केतु**—भृगुसूत्र के अनुसार - ''सर्पशापात् सुत: क्षय'' सर्पदोष से पुत्र सन्तति नष्ट होगी।

तुलालग्न मे सूर्य की स्थिति षष्ट्म स्थान में

8 7 6 9 5 10 4 11 3 12 सू. 1 2
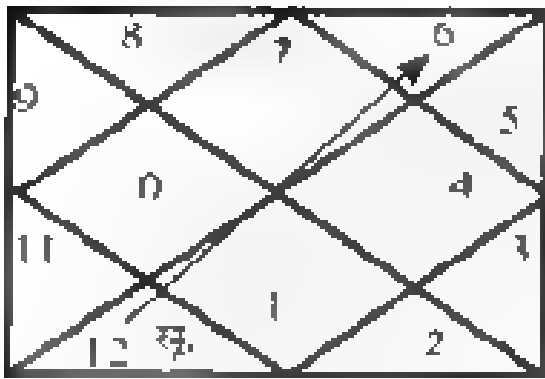
तुलालग्न में सूर्य लाभेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां छठे स्थान में सूर्य मीन राशि का होगा अपनी मित्र राशि में होगा फिर भी 'लाभभंग योग' के कारण जीवन में उन्नति, लाभ की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि—मीन राशिगत सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी फलत: रोग मे रुपया खर्च होगा। यदि जातक को कोई रोग नहीं है तो ईर्ष्या, राग द्वेष के कारण, अहम् की प्राप्ति हेतु रुपया खर्च करेगा।

निशानी—ऋषि पाराशर के अनुसार 'लभ्ययाप्रश्च भवेतु दीर्घ प्रथमे मरण स्त्रिय:' जातक की स्त्री का मरण उसके समक्ष होगा अथवा जातक शत्रुओं से पीड़ित रहेगा। स्व जाति में शत्रुओं की बाहुल्यता रहेगी।

दशा—सूर्य की दशा अनिष्ट सूचक नहीं होगी परन्तु जातक को जमीन-जायदाद का लाभ कराएगी

सूर्य का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध** भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। छठे स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देख रहे हैं। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा व शत्रुओं का नाश करने मे सक्षम होगा। सूर्य छठे

जाने से 'लाभभग योग' तथ बुध के छठे जाने से 'भाग्यभग योग' बना। फलत. यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नही है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी सघर्ष करना पड़ेगा। व्यापार मे लाभ के प्रति जातक शंकित रहेगा। व्ययेश छठे जाने से विमल योग बना इस योग के कारण जातक समाज का लब्ध व्यक्ति होगा।

2. **सूर्य + चंद्र**–तुलालग्न में सूर्य+चद्र की युति छठे स्थान में होने पर जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 बजे के आस पास होगा। सूर्य+चंद्र की मीन राशिगत षष्टम स्थान मे यह युति वस्तुतः राज्येश चद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। चद्रमा खड्डे में जाने से 'राजभंग योग' तथा सूर्य के खड्डे में जाने से 'लाभभग योग' बना। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राज्य प्राप्ति (सरकारी नौकरी) एव व्यापार-व्यवसाय मे लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन पर्यन्त सघर्ष करना पड़ेगा।
3. **सूर्य + मगल**–धन व गृहस्थ सुख मे लगातार कमी रहेगी।
4. **सूर्य + बृहस्पति**–पराक्रम भग होगा। मित्रो व रिश्तेदारों से धोखा मिलेगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा
6. **सूर्य + शनि**–पुत्र सन्तति में बाधा। भौतिक सुख में लगातार बाधा मिलेगी।
7. **सूर्य + राहु**–लाभ प्राप्ति में रुकावट, रोग म वृद्धि व राज्यसुख मिलेगा।
8. **सूर्य + केतु**–व्यापार में हानि सम्भव।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

8	7	6
9	10	5
4	1	3
सू	12	2
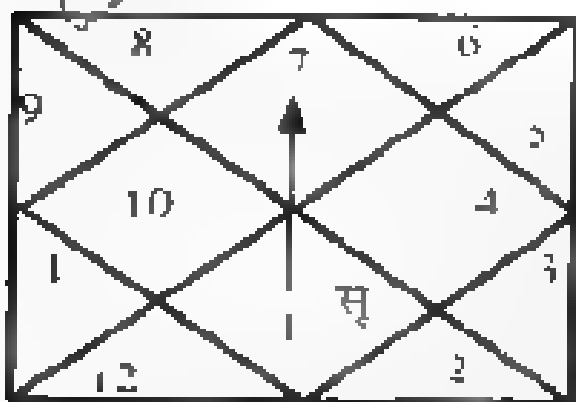
तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहा पाप फलदायक है. यहा सूर्य सप्तम भाव में मित्र राशि मे बैठकर उच्च का होगा यहा सूर्य दस अशो तक परमोच्च का होगा। फलतः कुण्डली में 'रविकृतभग योग' बना। फलतः जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक महान बुद्धिमान, ज्ञानी एव दार्शनिक होगा। ऐसा जातक ससुराल से लाभ पाने वाला, विवाह के पश्चात् उन्नति को प्राप्त करता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न भाव (तुला राशि) पर होगी फलतः जातक अपने स्वय के पराक्रम व पुरुषार्थ से उन्नति प्राप्त करेगा, अपने आगे बढ़ने का मार्ग स्वय बनाएगा पर स्वार्थी व लम्पट होगा।

निशानी– भोजसंहिता' के अनुसार-''कामीजनो भार्याविशानुग:'' ऐसा जातक

अति कामी होगा। कामाग्नि तृप्त नही होगी जातक सदैव पत्नी की आज्ञा (वश) मे रहेगा।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न मे सूर्य लाभेश होगा। सप्तम स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी यहा बैठकर सूर्य उच्च का होगा तथा दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली व भाग्यशाली होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। 'कुलदीपक योग' एवं 'रविगत राजयोग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा एव सरकारी क्षेत्र मे उच्च पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति करेगा।
2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति सप्तम स्थान में होने पर जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होगा। सूर्य+चद्र की मेष राशिगत सप्तम स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां उच्च का है अत: 'रविकृत योग' बना रहा है। चंद्रमा राज्येश होकर उच्चाभिलाषी है। जातक महत्वाकाक्षी होगा एवं राजातुल्य ऐश्वर्य व राजलक्ष्मी को भोगेगा।
3. **सूर्य + मंगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? ऐसा जातक अति घमण्डी एव अमानवीय व्यवहार से ओत प्रोत रहेगा
4. **सूर्य + बृहस्पति**—षष्टेश गुरु की सूर्य से युति के कारण जातक को गुप्त रोग एवं गुप्त शत्रु पीड़ा पहुचाएगें।
5. **सूर्य + शुक्र**—शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' 'लग्नाधिपति योग' बनेगा। जातक जाति व समाज में नामचीन व्यक्ति, एक सफल व्यक्ति होगा परन्तु अति कामुकता के कारण उसे गुप्त रोग रहेगा।
6. **सूर्य + शनि**—यहा 'नीचभग राजयोग' की सृष्टि होगी। जातक निश्चय ही धनी एव बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा पर पत्नी के लिए समर्पित नहीं होगा।
7. **सूर्य + राहु**—ऐसा जातक अपने जीवन साथी के प्रति अव्यवहारिक होगा। अमानवीय दृष्टिकोण रहेगा।
8. **सूर्य + केतु**—जीवन साथी से विचार नहीं मिलेंगे।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान मे
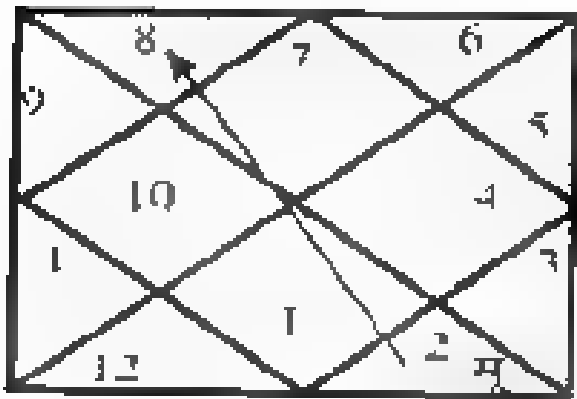
तुलालग्न मे सूर्य लाभेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहा पाप फलदायक है। यहा सूर्य वृष राशि मे शत्रुक्षेत्री होगा यह 'लाभभग योग' बनाएगा। सूर्य की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसा जातक दुर्बल, रुग्ण व रोगी होगा। व्यापार मे लाभ की कमी एव हृदय मे उत्साह की कमी रहेगी। प्रत्येक कार्य में हानि की सम्भावना अधिक रहेगी।

निशानी—पाराशर ऋषि के अनुसार 'तस्य आयुश्च भवेतु दीर्घं प्रथमे मरणं स्त्रियः' जातक की स्त्री का मरण उसके समक्ष होगा। जातक स्वय दीर्घजीवी होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी। बचाव अनिवार्य है।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—भावसहिता के अनुसार तुलालग्न मे सूर्य लाभेश होगा। अष्टम स्थान मे वृष राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी यहा बैठकर दोनों ग्रह 'धन भाव' को देखगे। सूर्य आठवे जाने से 'लाभभग योग' तथा बुध आठवे जाने से 'भाग्यभग योग' की सृष्टि होगी। फलतः यहा यह युति ज्यादा सार्थक नही है। जातक बुद्धिशाली होगा। भाग्यशाली भी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु सघर्ष बहुत करना पड़ेगा। व्यापार-व्यवसाय मे लाभ के प्रति भी जातक आशंकित रहेगा। व्ययेश आठवें जाने से 'विमल योग' बना अतः जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा
2. तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति अष्टम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को सायकाल 4 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की वृष राशिगत अष्टम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। सूर्य के खड्डे में गिरने से 'राजभंग योग' बना। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। हालांकि चंद्रमा यहा उच्च का होगा। जातक को राज्य (सरकारी नौकरी) प्राप्ति एव व्यापार-व्यवसाय मे लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन भर सघर्ष करना पड़ेगा।
3. **सूर्य + मंगल**—पत्नी से उग्र विवाद, तलाक (बिछोह), मुकदमा बाजी की सम्भावना रहेगी।

4. **सूर्य + बृहस्पति**–'हर्ष योग' के कारण दुर्घटना से बचाव सम्भव पर दुर्घटना जरूर होगी।
5. **सूर्य + शुक्र**–पैर में चोट, रोग, कष्ट की प्राप्ति सम्भव है।
6. **सूर्य + शनि**–पैर में चोट, वाहन दुर्घटना सम्भव।
7. **सूर्य + राहु**–अचानक दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **सूर्य + केतु**–लड़ाई-झगड़े से मृत्यु सभव है

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में
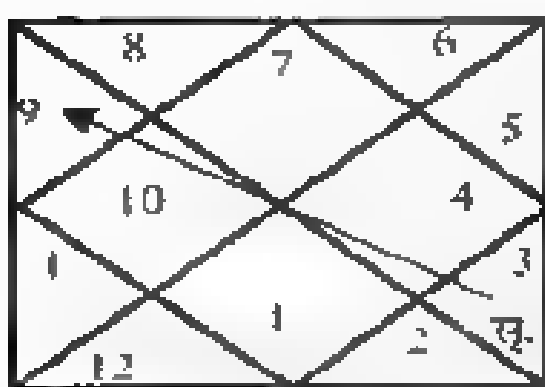
तुलालग्न में सूर्य लाभेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहा पाप फलदायक है। यहा नवमस्थ सूर्य मिथुन राशि मे होकर तृतीय स्थान (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। सूर्य यहा अपनी सिंह राशि से एकादश स्थान को प्राप्त होकर त्रिकोण मे स्थित होने से अत्यन्त शुभ फलदायक हो गया है। ऐसे जातक को निश्चय ही धन, विद्या, बुद्धि सौभाग्य एव पराक्रम वृद्धि का सुख प्राप्त होगा।

पाराशर ऋषि के अनुसार-'लाभेशे भाग्यभवस्थे भाग्यवान् जायते नरः' लाभेश भाग्य स्थान मे होने से जातक धनवान एवं भाग्यशाली होगा।

निशानी–जातक का भाग्योदय 22 व 24 वर्ष के मध्य होगा।

दशा–सूर्य की दशा अन्तर्दशा जातक का भाग्योदय तीव्रगति से करायेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **सूर्य + बुध**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। नवम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली भाग्यशाली एवं महान पराक्रमी होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी तथा मित्रों एवं परिजनो का सहयोग समय-समय मिलता रहेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + चंद्र**–तुलालग्न मे सूर्य+चद्र की युति नवम स्थान मे होने पर जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या का दोपहर 2 बजे के आस पास होगा। सूर्य+चद्र की मिथुन राशिगत नवम स्थान मे यह युति वस्तुतः राज्येश चद्र की लाभेश

सूर्य के साथ युति कहलायेगी। राज्येश चद्रमा यहा शत्रुक्षेत्री है। सुखेश सूर्य का भाग्य स्थान मे बैठना शुभ है जातक क भाग्योदय को लेकर संघर्ष की स्थिति रहेगी। फिर भी चंद्रमा पराक्रमी व धनी होगा।

3. **सूर्य + मंगल** -व्यापार में अद्वितीय लाभ होगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति** - पराक्रम बढ़ेगा, मित्र लाभ देंगे।
5. **सूर्य + शुक्र** -भाग्योदय तीव्रगति से होगा। व्यापार में लाभ होगा।
6. **सूर्य + शनि** -जीवन में सभी प्रसार के भौतिक सुखो की प्राप्ति होगी।
6. **सूर्य + राहु** -पिता के सुख में कमी रहेगी।
7. **सूर्य + केतु** - पिता के सुख में न्यूनता रहेगी।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
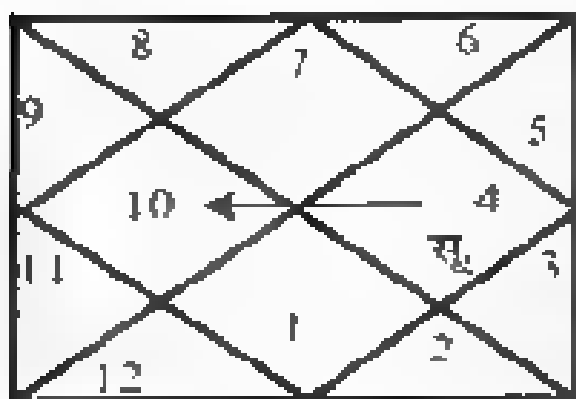
तुलालग्न में सूर्य लाभेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां पर दशम स्थान में सूर्य कर्क राशि का होगा। जातक को धन, यश, पद-प्रतिष्ठा की बराबर प्राप्ति होगी। जातक राजमान्य होगा। राजनीति क्षेत्र में उसका हस्तक्षेप रहेगा। ऐसा जातक सत्य वक्ता एवं जितेन्द्रिय होगा।

दृष्टि—कर्कस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि) पर होगी फलत: जातक का घर का मकान एवं निजी वाहन होगा। सूर्य के साथ शुभ ग्रह हो तो जातक नौकर-चाकर से युक्त होकर अनेक भवनो का स्वामी होगा।

निशानी—जातक प्राय: मातृभक्त एव पितृद्वेषी होगा।

दशा—सूर्य की दशा अन्तर्दशा में उन्नति होगी। नौकरी लगेगी। सुख की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**-भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। दशम स्थान मे कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को देखेंगे। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। राज्य पक्ष, सरकारी क्षेत्र मे उसका दबदबा, वर्चस्व होगा जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। 'कुलदीपक

योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **सूर्य + चंद्र**–तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति दशम स्थान में होने पर जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को दिन के 2 बजे के आस-पास होगा। सूर्य+चंद्र की कर्क राशिगत दशम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी, चंद्रमा यहां स्वगृही होकर 'चंद्रकृत राजयोग' बनाएगा, सूर्य केन्द्रवर्ती होकर स्वगृहाभिलाषी होगा ऐसा जातक राजातुल्य प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
3. **सूर्य + मंगल**–व्यापार में अद्वितीय लाभ होगा
4. **सूर्य + बृहस्पति**–यहां बृहस्पति उच्च का होगा। 'हंस योग' 'पद्मसिंहासन योग' के कारण जातक अनेक भवन, एकाधिक वाहनों एवं नौकरों का स्वामी होकर राजा तुल्य ऐश्वर्य को प्राप्त करेगा।
5. **सूर्य + शुक्र**–परिश्रम व पुरुषार्थ से धन की प्राप्ति होगी। पिता की सम्पत्ति भी मिलेगी
6. **सूर्य + शनि**–वाहन सुख मिलेगा। पुत्र सुख मिलेगा। पुत्र पराक्रमी होगा।
7. **सूर्य + राहु**–राज्य से दण्ड मिलेगा। नौकरी छूटेगी
8. **सूर्य + केतु**–नौकरी में अवनति। व्यापार में नुकसान सम्भव.

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
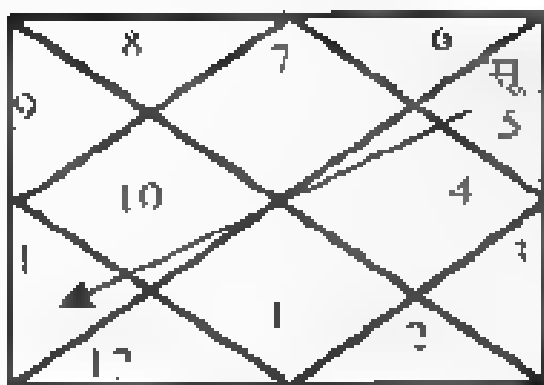
तुलालग्न में सूर्य लग्नेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां पर एकादश स्थान में सूर्य स्वगृही होकर सिंह राशि का होगा। सूर्य यहां अंशों तक मूल त्रिकोण का होकर उच्च जैसा फल देगा। ऐसा जातक धन, स्त्री, पुत्र-पौत्र, वाहन, नौकरी एवं व्यापार से युक्त समृद्धिशाली, ऐश्वर्यशाली जीवन का यापन करता है। ऐसा जातक पण्डित विद्वान व सुखी होगा। 22 वर्ष की आयु के पश्चात उसे दिन प्रतिदिन हर कार्य में सफलता मिलती जाएगी।

दृष्टि–एकादशस्थ सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (कुंभ राशि) पर होगी फलतः जातक स्वयं शिक्षित होगा। संतान भी सुशिक्षित होगी।

निशानी–जातक राष्ट्रभक्त होगा। पुत्र-पौत्र से युक्त होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **सूर्य + बुध** भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। एकादश स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां सूर्य स्वगृही होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव पर होगी। फलत. जातक बुद्धिशाली व शिक्षित होगा। जातक की सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार में रुचि लेगा तथा उसकी आमदनी के जरिए एक से अधिक होंगे। जातक भाग्यशाली होगा.
2. **सूर्य + चंद्र**-तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को सुबह 10 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की सिंह राशिगत एकादश स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। यहां सूर्य स्वगृही होकर 'रविकृत राजयोग' बनाएगा। उत्तम सन्तति देगा। जातक राजातुल्य प्रतापी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
3. **सूर्य + मंगल** -यदि यहां मंगल हो तो व्यक्ति अदम्य साहसी होगा धर्म व न्याय के लिए मर मिटेगा
4. **सूर्य + बृहस्पति** -बड़े भाई का सुख मिलेगा। बुजुर्गों की सलाह से लाभ।
5. **सूर्य + शुक्र** व्यापार में लाभ पुरुषार्थ परिश्रम से लाभ होगा।
6. **सूर्य + शनि** -भौतिक सुख, सम्पन्नता में वृद्धि, व्यापार से लाभ, सन्तति शिक्षित होगी।
7. **सूर्य + राहु** -विद्या एवं व्यापार में रुकावट
8. **सूर्य + केतु** -व्यापार में बदलाव होता रहेगा।

तुलालग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

8	7 सू 6	5
9	10 · 4	3
11	1 · 12	2
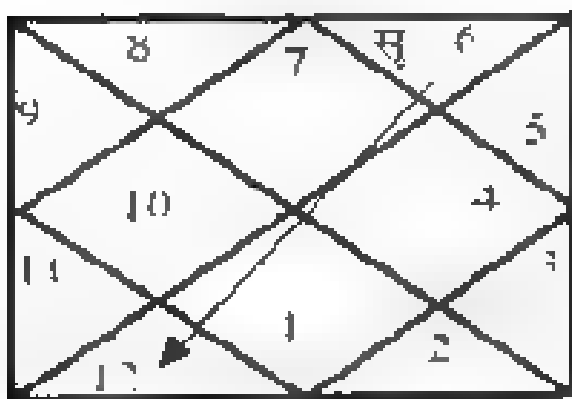
तुलालग्न में सूर्य लाभेश है। यह लग्नेश शुक्र का शत्रु होने से यहां पाप फलदायक है। यहां द्वादश स्थान में सूर्य कन्या राशि में होकर नीचाभिलाषी होगा। सूर्य अपनी राशि (सिंह) में दूसरे स्थान पर होने के कारण धन का खर्च शुभकार्य, परोपकार, धार्मिक क्रिया-कलाप में होगा। जातक विदेशी सम्बन्ध एवं विदेशी व्यापार के माध्यम से ज्यादा धन कमाने में सक्षम होगा।

दृष्टि—कन्या राशिगत सूर्य की दृष्टि छठे स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक अपने शत्रुओं व रोगों का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा।

निशानी—सपने सच आएंगे।

दशा—सूर्य की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल एवं आध्यात्मिक लाभ देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य + बुध**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। द्वादश स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। बुध बारहवें जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा सूर्य के कारण 'लाभभंग योग' बना। अतः जातक एक बार ऊपर चढ़कर नीचे गिरेगा। खर्च अधिक करेगा। तीर्थाटन, धार्मिक यात्राओं में रुपया खर्च करेगा। व्ययेश स्वगृही होकर बारहवें होगा जातक परोपकारी, दानी एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **सूर्य + चंद्र**—तुलालग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान में होने पर जातक का जन्म आश्विनी कृष्ण अमावस्या को सुबह 8 बजे के लगभग होगा। सूर्य+चंद्र की कन्या राशिगत द्वादश स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्र की लाभेश सूर्य के साथ युति कहलाएगी। चंद्रमा बारहवें में होने से 'राजभंग योग' तथा सूर्य बारहवां होने से 'लाभभंग योग' की सृष्टि होती है। इन दोनों ग्रहों की यह स्थिति निकृष्ट है। जातक को राज्य (सरकारी नौकरी) की प्राप्ति हेतु एवं व्यापार-व्यवसाय में लाभ की प्राप्ति हेतु जीवन भर संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **सूर्य + मंगल**—प्रखर वक्ता, जातक का स्वभाव खर्चीला होगा।
4. **सूर्य + बृहस्पति**—जातक महाविद्वान, ज्योतिषी होगा।
5. **सूर्य + शुक्र**—विद्वान होगा पर परिश्रम का लाभ नहीं। 'लग्नभंग योग' बनेगा।
6. **सूर्य + शनि**—अस्पष्टभाषी, जुआरी व विद्या व्यसनी होगा।
7. **सूर्य + राहु**—वाणी में स्खलन, यात्रा में नुकसान होगा या चोरी होगी।
8. **सूर्य + केतु**—यात्रा में धन लाभ एवं खर्च दोनों होंगे।

❑❑❑

तुलालग्न में मंगल की स्थिति

तुलालग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में
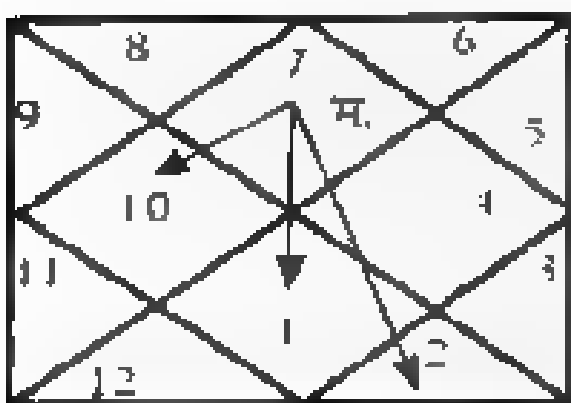
तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एव अशुभ फल को देने वाला है। यहां लग्नस्थ मगल तुला राशि मे है यह मंगल की शत्रु राशि है। जातक का स्वभाव कर्मठ, क्रोधी एव उत्साही होगा। जातक की जबान का शब्द पत्थर की लकीर होगा जातक वीर एवं निर्भीक होगा। उसके पास जमीन जायदाद, धन सम्पत्ति की कमी नहीं होगी।

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि), सप्तम भाव (मेष राशि) एवं अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक को वाहन का सुख, पत्नी एवं दीर्घ आयु का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक पुत्रवान होगा आप अकेला भाई न होगा। बड़ा भाई जरूर होगा पर बड़े भाई का सुख किस्मत में ज्यादा नहीं रहेगा।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनवान होगा। उसका व्यक्तित्व निखरेगा। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–चद्रमा की युति के कारण 'लक्ष्मी योग' बनेगा। जातक महाधनी होगा पत्नी सुदर होगी।
2. **मंगल + सूर्य**–सूर्य यहा नीच का होते हुए विपरीत राजयोग बनाएगा जातक राजा का सेनापति होगा अथवा उसके समकक्ष पद को धारण करेगा।

3. **मगल + बुध**—भाग्यश व धनश की युति व्यक्ति के सौभाग्य मे अपूर्व वृद्धि करेगी

4. **मगल + बृहस्पति**—धनेश व तृतीयेश की युति भाईयो व मित्रो से धन दिलाएगी

5. **मंगल + शुक्र**—यहा स्वगृही शुक्र 'मालव्य योग' एव अन्य राजयोग बनाएगा जातक की व्यक्तिगत, सामाजिक एव राजनैतिक उन्नति होगी।

6. **मंगल + शनि**—यहा उच्च का शनि 'शश योग' एव अन्य राजयोग बनाएगा जातक की व्यक्तिगत सामाजिक एव राजनैतिक उन्नति होगी।

7 **मगल + राहु**—जातक जिद्दी व हठी होगा। परन्तु राजा तुल्य एश्वर्यशाली होगा।

8. **मंगल + केतु**—जातक क्रोधी होगा।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में

8 मं. 7 6 9 5 10 4 11 3 1 2 12
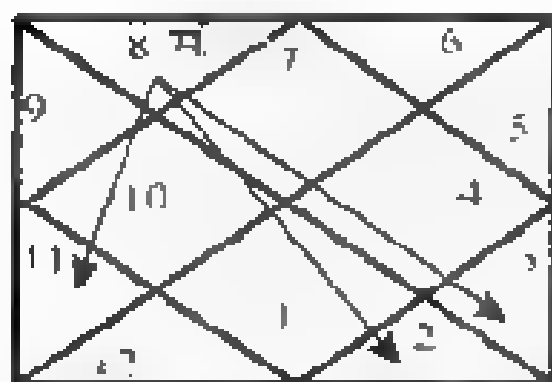
तुलालग्न में मगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है यह निष्फल योग कर्त्ता एव अशुभ फल को देने वाला है। यहा द्वितीय स्थान मे मगल वृश्चिक राशि का होकर स्वगृही होगा। ऐसे जातक का जन्म पिता के लिए शुभ होता है। जातक के जन्म के बाद पिता की तरक्की होती है। विवाह के बाद जातक की तरक्की होती है। जातक को स्त्री द्वारा धन लाभ होता है। जातक दीर्घसूत्री होता है। जातक की वाणी स्पष्ट, तेज व प्रखर होती है जमीन-जायदाद मे धन लाभ होता है जातक समाज का धनी व्यक्ति होता है।

दृष्टि—द्वितीयस्थ मगल की दृष्टि पचम भाव (कुंभ राशि) अष्टम भाव (वृष राशि) एवं भाग्य भवन (मिथुन राशि) पर होगी। फलत; जातक को विद्या लाभ सन्तान लाभ, दीर्घायु के साथ भाग्य मे उन्नति होगी।

निशानी—जातक गुप्त विद्याओं का जानकार होता है।

दशा—मगल की दशा अन्तर्दशा मे जातक धनाढ्य होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1 **मंगल + चंद्र**—चद्र के कारण 'नीचभग राजयोग' बनेगा। जातक महाधनी होगा

2. **मंगल + सूर्य**—जातक को व्यापार मे नौकरी से अतिरिक्त आय होगी।

3. **मंगल + बुध**—जातक धनी व भाग्यशाली होगा

4. **मंगल + बृहस्पति**–भाईयों से धन लाभ होगा।
5. **मगल + शुक्र**–परिश्रम का यथष्ट पुरस्कार मिलेगा
6. **मंगल + शनि**–जातक को शिक्षा व सन्तान से धन मिलेगा।
7. **मंगल + राहु**–जितना कमाएगा खर्च हाता चला जाएगा।
8. **मंगल + केतु**–धन आएगा पर बरकत कम होगी।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में
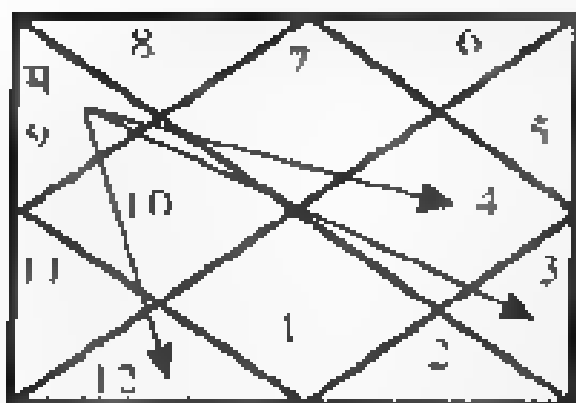
तुलालग्न में मगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह हैं। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां तृतीय स्थान में मंगल धनु राशि पर होगा। यह मगल की मित्र राशि है। ऐसे जातक के छोटे-बड़े भाई-बहन जरूर होंगे प्राय: जातक की किस्मत चमकती है। जातक को कोर्ट-कचहरी में विजय मिलगी ऐसा जातक नीतिवान एव सिद्धान्तवादी होगा। जातक के बहुत यत्न मे एक पुत्र जीवित रह सकता है। मगल की यह स्थिति प्राय: सन्तति सम्बन्धी कष्ट का सकेत देती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे स्थान (मीन राशि), भाग्य स्थान (मिथुन राशि) एव राज्य स्थान (कर्क राशि) पर होगी फलत: जातक रोग और शत्रु पर विजय प्राप्त करने में सक्षम होगा जातक सौभाग्यशाली होगा तथा उसका राजनीति में भी हस्तक्षेप रहेगा।

निशानी–जातक के तीन भाई होंगे।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा मे जातक का वास्तविक पराक्रम बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मगल + चद्र**–जातक धनी होगा। राजनीति व प्रशासन मे उसका हस्तक्षेप रहेगा।
2. **मंगल + सूर्य**–जातक सरकारी क्षेत्र मे प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
3. **मगल + बुध**–जातक बुद्धिमान तथा परम सौभाग्यशाली होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–जातक को बड़े भाई का सुख होगा।
5. **मगल + शुक्र**–जातक मित्रों की मदद से आगे बढेगा। व्यापार वर्गीय होगा।
6. **मगल + शनि**–जातक को छोटे भाई का सुख नहीं होगा।

7. **मंगल + राहु**–भृगुसूत्र के अनुसार 'राहु केतु युते वैश्या सगम' जातक अन्य स्त्रियों से शारीरिक सम्बन्ध रखता है।

8. **मंगल + केतु**–भृगुसूत्र के अनुसार 'राहु केतु युते वैश्या सगम' जातक पर स्त्री गामी होता है।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में

8	7	6	5	4	3	2	1	12	11	मं. 10	9
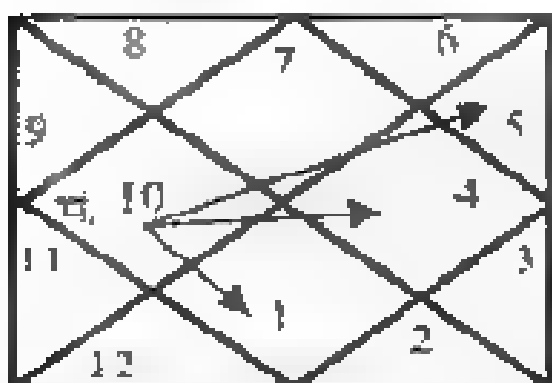
तुलालग्न में मगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है यह निष्फल योग कर्त्ता एव अशुभ फल को देने वाला है। यहा चतुर्थ भावगत मगल मकर राशि मे है मकर राशि मे मगल उच्च का होता है तथा 28 अशो मे परमोच्च का होता है। फलतः कुण्डली मे 'रूचक योग' बनता है। मंगल यहां दिग्बली होने से जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली, वैभव सम्पन्न एवं बड़ी भूमि व सम्पत्ति पाता है। जातक चार पहिए के वाहन का स्वामी होता है। दो मंजिला मकान एवं नौकर-चाकर के सुख से परिपूर्ण जीवन जीता है

दृष्टि–चतुर्थ भावगत मगल की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि), दशम भाव (कर्क राशि) तथा लाभ भाव (सिह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक को पैतृक सम्पत्ति मिलेगी। राज्य (सरकार) में उसका वर्चस्व होगा तथा व्यापार में उसे बराबर लाभ मिलता रहेगा।

निशानी–ऐसे जातक अपने काम में दूसरे का हस्तक्षेप हर्गिज बर्दाश्त नही करेंगे। मंगल यहा मांगलिक योग' बनाएगा जो कहीं न कहीं जीवन साथी के साथ मनमुटाव की स्थिति उत्पन्न करेगा।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक भूमि, भवन एव वाहन सुख की प्राप्ति करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–चद्र की युति से 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। जातक अत्यधिक धनी व्यक्ति होगा। सरकार से धन मिलेगा। पिता को सम्पत्ति मिलेगी।

2. **मगल + सूर्य**–सूर्य की युति से जातक महान तेजस्वी व्यक्ति होगा एव व्यापार मे लाभ अर्जित करेगा।

3. **मगल + बुध**–बुध की युति जातक को महाभाग्यशाली' बनाएगी। जातक बुद्धिबल से कुल का नाम रोशन करेगा।

4. **मगल + बृहस्पति**–गुरु के कारण 'नीचभग राजयोग', 'केसरी योग', 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक कुल श्रेष्ठ पूजनीय व्यक्ति होगा।
5. **मंगल + शुक्र**–शुक्र के कारण जातक परिश्रम से धन अर्जित करेगा। खूब रुपया कमाएगा।
6. **मगल + शनि**–शनि के कारण 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा या राजा से किसी भी प्रकार से कम न होगा।
7. **मंगल + राहु**–राहु यहां सुख मे बाधक है। माता व भाईयो मे विक्षेप करेगा।
8. **मगल + केतु**–केतु भी मातृसुख में बाधक है। वाहन से दुर्घटना सम्भव है।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
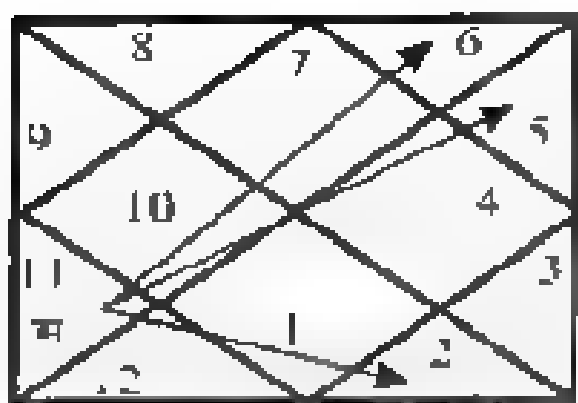
तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एव अशुभ फल को देने वाला है। यहां पचम स्थान में मंगल कुभ राशि का होगा। जो इसकी शत्रु राशि है। फिर भी ऐसा जातक धनी होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक का पुत्र भी धनी होगा। जातक के बाप दादा धनी होंगे। जातक को स्त्री सुख, पुत्र सुख की प्राप्त होगी। परन्तु मगल के कारण गर्भपात होंगे तथा एक दो सन्तानों की अकाल, अपरिपक्व मृत्यु सम्भव है।

दृष्टि–पचमस्थ मगल की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि), लाभ स्थान (सिह राशि) एवं व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक की आयु दीर्घ होगी उसे व्यापार में लाभ होगा जातक का धन शुभ कार्य मे खर्च होगा।

निशानी–जातक के नर सन्तति जरूर होंगी।

दशा–मगल की दशा-अन्तर्दशा मे जातक को पुत्र व धन का लाभ होगा।

मंगल का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चद्र**–जातक को पुत्र पुत्री दोनों होंगे।
2. **मंगल + सूर्य**–जातक के पुत्र तेजस्वी होंगे।
3. **मंगल + बुध**–जातक को पुत्र-पुत्री दोनो होंगे।
4. **मगल + बृहस्पति**–भाग्यवान सन्तति उत्पन्न होगी। पुत्र अधिक होंगे।
5. **मंगल + शुक्र**–कन्या सन्तति अधिक, पुत्र भी होंगे।

6. **मंगल + शनि**–शनि यहा स्वगृही हाने के कारण 'राजयोग' बनेगा, जातक का धन, पद, प्रतिष्ठा व अधिकारों की प्राप्ति होगी।

7. **मंगल + राहु**–एकाध पुत्र सन्तति का गर्भपात सम्भव है।

8. **मंगल + केतु**–गर्भस्राव अवश्य होगा

तुलालग्न में मंगल की स्थिति षष्ट्म स्थान में
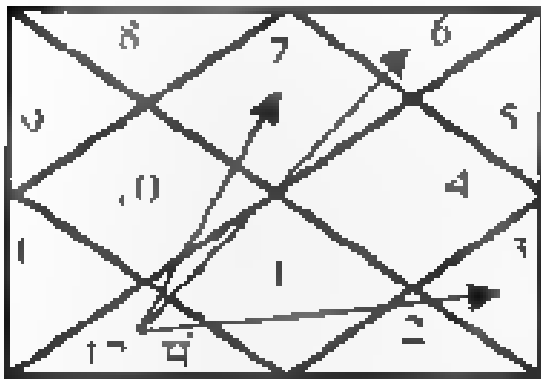
तुलालग्न म मंगल द्वितीयेश एव सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एव अशुभ फल को देने वाला है। यहा छठे स्थान मे मगल मीन राशि का हागा। मीन इसकी मित्र राशि है। मगल की यह स्थिति 'धनहीन योग' एवं 'विवाहभंग योग' की सृष्टि करती है। ऐसा जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है, परन्तु धन प्राप्ति एव गृहस्थ सुख की प्राप्ति हेतु यह स्थिति कष्टदायक है।

दृष्टि–षष्टस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य भाव (मिथुन राशि), व्यय भाव (कन्या राशि) एव लग्न भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक सौभाग्यशाली होगा। उन्नति प्राप्त करेगा। एव खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–जातक विलम्ब से तरस कर ली गई सतान होगा।

दशा–मगल की दशा मिश्रित फल देगी

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मगल + चंद्र**–राजपक्ष कमजोर रहेगा।
2. **मंगल + सूर्य**–राजा से आर्थिक दण्ड मिलेगा।
3. **मगल + बुध**–भाग्य में लगातार रुकावटें आएगी।
4. **मगल + बृहस्पति**–गुरु यहा स्वगृही होगा, भाईयों से खटपट रहेगी।
5. **मंगल + शुक्र**–शुक्र यहा नीच का रहेगा। परिश्रम का लाभ नही मिलेगा।
6. **मगल + शनि**–सन्तति की चिन्ता रहेगी।
7. **मगल + राहु**–शत्रु परेशान करेंगे।
8. **मगल + केतु**–शत्रु गुप्त चिन्ता देंगे।

तुलालग्न मे मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में
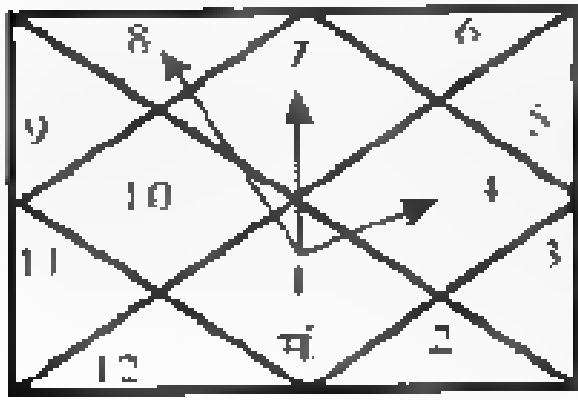
तुलालग्न में मगल द्वितीयेश एव सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एव अशुभ फल को देने वाला है। यहा सप्तम स्थान में स्थित मगल मेष राशि का होकर स्वगृही होगा। फलत: 'रूचक योग' की सृष्टि होगी। एसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली, धनवान एव भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा जातक सुंदर पतली देह का स्वामी होगा। जातक क्रोधी तथा कामुक होगा। जातक भाईयो से मुक्त होगा तथ जातक के स्वयं का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। ससुराल से लाभ की प्राप्ति होगी। यह स्थिति कुण्डली को 'मागलिक' भी बनाती है। फलत: सुख में व्यवधान पडता है। विलम्ब विवाह सम्भव है

दृष्टि–सप्तमस्थ मगल की दृष्टि राज्य स्थान (कर्क राशि), लग्न स्थान (तुला राशि) एव धन स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढने वाला, धनी तथा राजनीति मे प्रवीण होगा।

निशानी–जीवनसाथी मे असंतोष एव उच्च रक्तचाप की बीमारी सम्भव है।

दशा–मगल की दशा अन्तर्दशा मे जातक धनी होगा, उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। उसे पद व प्रतिष्ठा मिलेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–जातक महाधनी होगा। लक्ष्मी प्रसन्न रहेगी।
2. **मंगल + बुध**–सूर्य के कारण 'रविकृत राजयोग', 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा के समान वैभवशाली पराक्रमी होगा। उसके पास धन की कमी नहीं रहेगी
3. **मंगल + बुध**–जातक परम भाग्यशाली होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–भाईयों व परिजनो से लाभ संभव है।
5. **मगल + शुक्र**–मेहनत का मीठा फल मिलेगा।
6. **मंगल + शनि**–शनि के कारण 'नीचभग राजयोग' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा के समान वैभवशाली, पराक्रमी होगा शनि के साथ 'शिश्नचुम्बन योग'
7. **मंगल + राहु**–गृहस्थ सुख मे कलह ज्यादा रहेगी। अह का टकराव होगा
8. **मगल + केतु**–गृहस्थी मे विवाद रहेगा।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में
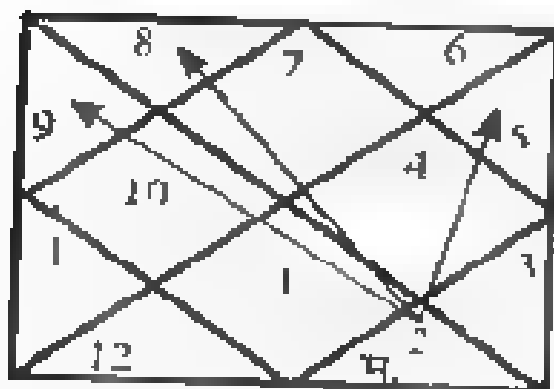
तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां अष्टम स्थान में मंगल वृष राशि का होगा। वृष मंगल की शत्रु राशि है। मंगल की इस स्थिति से 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं कुण्डली 'मांगलिक दोष' से युक्त होगी। ऐसा जातक शत्रु को जीतने वाला मेहनती व पराक्रमी होगा। परन्तु धन की कमी, गृहस्थ सुख में कमी बराबर अखरती रहेगी, परन्तु जातक निर्भीक व साहसी होगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ भाव (सिंह राशि), धन भाव (वृश्चिक राशि) एवं पराक्रम भाव (धनु राशि) पर होगी।

निशानी–जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चंद्र**–राज्यपक्ष कमजोर होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–राजा से दण्डित होने के योग हैं।
3. **मंगल + बुध**–भाग्य में पग पग पर रुकावट महसूस करेगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–भाईयों से मनमुटाव रहेगा।
5. **मंगल + शुक्र**–गुप्त बीमारी, रक्त विकार वीर्यदोष सम्भव।
6. **मंगल + शनि**–सन्तति की बीमारी से जातक चिंत्रित रहेगा।
7. **मंगल + राहु**–आयु में रुकावट, दुर्घटना से अंग भंग सम्भव।
8. **मंगल + केतु**–लम्बी बीमारी रहेगी। रक्तविकार सम्भव

तुलालग्न मे मंगल की स्थिति नवम स्थान में
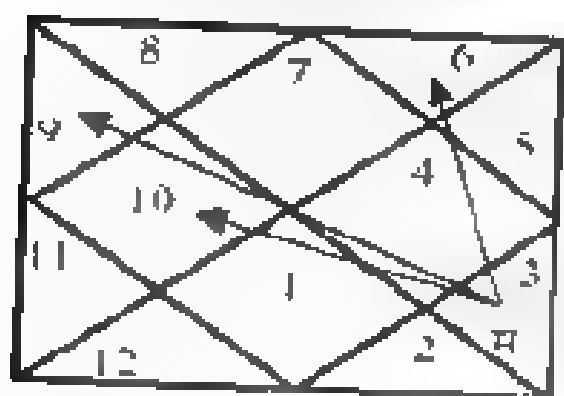
तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां नवम स्थान में मंगल मिथुन राशि में होगा। मिथुन मंगल की मित्र राशि है। जातक स्वाभिमानी होगा। युद्ध के

मैदान में, कोर्ट कचहरी में बुद्धिबल से शत्रु को परास्त करता हुआ विजय श्री का वरण करेगा। ऐसा जातक भाईयों, कुटम्बी-परिजनों के साथ रहना पसन्द करेगा।

दृष्टि–नवम स्थान गत मंगल की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि) पराक्रम स्थान (धनुराशि) एवं चतुर्थभाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी होगा। जीवन मे वाहन सुख एवं सभी प्रकार के भौतिक सुखों को प्राप्त करने वाला, खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–ऐसा जातक अपनी किस्मत आप जगायेगा।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। जातक को धन, स्त्री सुख इत्यादि की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध -

1. **मंगल + चंद्र**–जातक महाधनी होगा।
2. **मंगल + सूर्य**–जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा।
3. **मंगल + बुध**–जातक करोड़पति होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–भाईयों से लाभ रहेगा।
5. **मंगल + शुक्र**–मेहनत की मीठी रोटी मिलेगी।
6. **मंगल + शनि**–जातक शिक्षित होगा। सभ्य होगा।
7. **मंगल + राहु**–भाग्य मे ठोकरे बहुत आयेगी।
8. **मंगल + केतु**–भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में

8 7 6 9 5 10 4 मं. 11 1 3 12 2
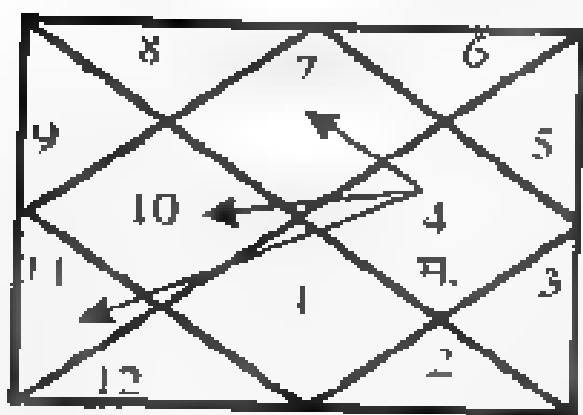
तुलालग्न मे मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्त्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहा दशम स्थान में मंगल नीच राशि (कर्क) मे होगा। कर्क के अंशों में मंगल परम नीच का होगा। मंगल यहां दिग्बली है। दिग्बली मंगल 'कुलदीपक योग' की सृष्टि भी करेगा। ऐसा जातक मैकेनिक व टैक्नीकल, इंजिनियरिंग, ठेकेदारी निर्माण कार्य में दक्ष होगा। जातक बड़ी जमीन-जायदाद का स्वामी होगा। जातक फौजी कार्य साहस के कार्य मे रुचि रखेगा।

दृष्टि–दसमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (तुला राशि), चतुर्थ स्थान (मकर राशि) एवं पंचम भाव (कुंभ राशि) पर होगी। ऐसे जातक को अपने परिश्रम-पुरुषार्थ

का पूरा पूरा लाभ मिलेगा। जातक को उत्तम वाहन भवन की प्राप्ति होगी। जातक विद्यावान होगा।

निशानी–जातक के जन्म मे माता पिता एव पूरे परिवार की उन्नति होगी

दशा–मगल की दशा अन्तर्दशा में जातक आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक उन्नति को प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चद्र**–चद्रमा यहा स्वगृही होने से 'नीचभग राजयोग' बनेगा। 'पद्मसिहासन योग' भी बनेगा। जातक महाधनी होगा।
2. **मगल + सूर्य**–जातक का राज्य में वर्चस्व रहेगा।
3. **मंगल + बुध**–जातक भाग्यशली होगा। धनवान होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**–बृहस्पति उच्च का होकर 'नीचभग राजयोग' बनायेगा जातक राजा तुल्य पराक्रमी ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **मंगल + शुक्र**–जातक उत्तम वाहन से युक्त होगा।
6. **मंगल + शनि**–जातक एकाधिक मकानों का स्वामी होगा।
7. **मंगल + राहु**–पिता की सम्पत्ति में विवाद, भाईयों में झगड़ा होगा।
8. **मंगल + केतु**–पैतृक सम्पत्ति विवादात्मक होगी

तुलालग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में
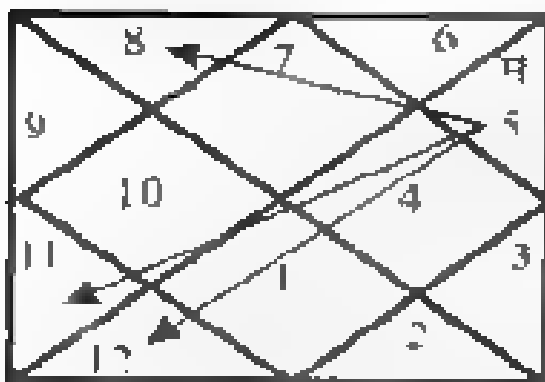
तुलालग्न मे मगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्ता एव अशुभ फल को देने वाला है। यहा एकादश स्थान में मंगल सिह राशि में होगा सिंह राशि मंगल की मित्र राशि है। जातक धनवान होगा यहा मगल बहुत श्रेष्ठ फल देगा। जातक अपने पराक्रम से पुरुषार्थ से उत्तम धन एव उत्तम विद्या को अर्जित करेगा। जातक गुरुभक्त होगा। अपने बड़े-बुढ्ढो व बुजुर्गों का सम्मान करेगा। अपने ऊपर किये गये एहसान को भूलेगा नही। जातक कृतज्ञ, व्यवहारिक होगा। एव कुछ रौबीले स्वभाव का होगा।

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित मंगल की दृष्टि धन स्थान जो कि मगल का स्वगृह है (वृश्चिक राशि), पचम स्थान (कुंभ राशि) एवं षष्ठम स्थान (मीन राशि)

पर होगी। फलतः जातक धन सम्बन्धी उत्तम लाभ अर्जित करेगा। जातक विद्या सम्बन्धी लाभ उच्च शैक्षणिक डिग्री मिलेगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—जातक का चरम भाग्योदय 28 से 32 वर्ष के बीच होगा।

दशा—मंगल की दशा-अन्तर्दशा में जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ेगा धन अर्जित करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल + चंद्र**—
2. **मंगल + सूर्य**—यहां पर यदि सूर्य हो तो स्वगृही होगा फलतः 'रविकृत राजयोग' बनेगा. जातक खूब धन, यश व पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
3. **मंगल + बुध**—जातक उद्योगपति होगा।
4. **मंगल + बृहस्पति**—जातक का उद्योग दिक्कतों से परिपूर्ण होगा।
5. **मंगल + शुक्र**—जातक को व्यापार से लाभ होगा।
6. **मंगल + शनि**—जातक सफल उद्योगपति होगा
7. **मंगल + राहु**—उद्योग फैक्ट्री में ग्रहण लगा रहेगा।
8. **मंगल + केतु**—व्यापार में संघर्ष रहेगा।

तुलालग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में

8	7	मं 6	
9			5
10		4	
11			3
12	1	2	
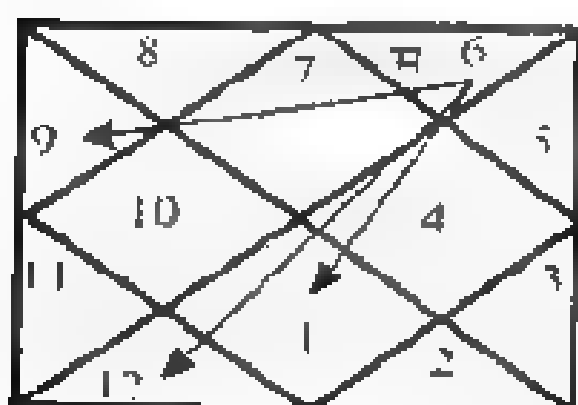
तुलालग्न में मंगल द्वितीयेश एवं सप्तमेश होने से मुख्य मारक ग्रह है। यह निष्फल योग कर्ता एवं अशुभ फल को देने वाला है। यहां द्वादश स्थान में मंगल कन्या राशि में होगा। कन्या मंगल की मित्र राशि है. मंगल की इस स्थिति में कुण्डली में 'धनहीन योग', 'विवाहभंग योग' एवं 'मांगलिक योग' बनेगा। निश्चय ही जातक को धन प्राप्ति हेतु, जीवनसाथी के चयन हेतु, विवाह के बाद सुखी दाम्पत्य सुख हेतु कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (धनु राशि), षष्टम भाव (मीन राशि) एवं सप्तम भाव स्वयं के घर (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा, दीर्घ आयु वाला होगा। पत्नी पक्ष में खटपट रहेगी। समझौता वादी दृष्टिकोण से ही जीवन सुखी रहेगा।

निशानी–जातक प्राय: धूर्त, स्वार्थी, रिश्वतखोर, पराये धन पर नजर रखने वाला होता है।

दशा–मंगल की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल + चद्र**–धन प्राप्ति होगी पर खर्च प्रबल रहेगा।
2. **मगल + सूर्य**–राज्यपक्ष से मदद टूटेगी। नौकरी छूटेगी।
3. **मंगल + बुध**–भाग्य में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
4. **मगल + बृहस्पति**–भाईयों मे विवाद होगा। कोर्ट केस सम्भव।
5. **मंगल + शुक्र**–परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
6. **मंगल + शनि**–विद्या में रुकावट, संतान में बाधा।
7. **मंगल + राहु**–'पापयुते दाम्भिक' जातक महा घमण्डी होगा।
8. **मंगल + केतु**–'पापयुते दाम्भिक' जातक घमण्डी होगा।

❑❑❑

तुलालग्न में बुध की स्थिति

तुलालग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
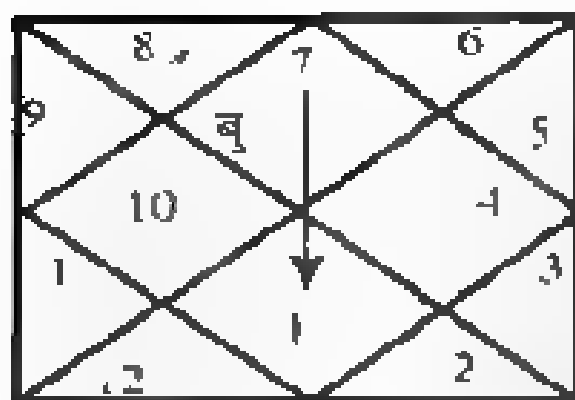
तुलालग्न में बुध खर्चेश एव भाग्येश होने से राजयोग कारक है एवं शुभ फलो को देने वाला ग्रह है। यहां लग्नस्थ बुध तुला राशि में है जो इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक गोरे रंग का, विनम्र, सौम्य एव मृदु स्वभाव का व्यक्ति होता है। ऐसा जातक भाग्यवान, राजमान्य, विद्वान एवं लोकपूज्य होता है

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि) पर होगी। फलत: जातक का जीवन साथी सुदर व सौभाग्यशाली होगा।

निशानी–जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। जातक का बौद्धिक विकास व उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न मे सूर्य लाभेश होगा। प्रथम स्थान मे तुला राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहां नीच का है। यहां बैठकर दोनो ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जहां सूर्य की उच्च राशि स्थित है फलत: जातक बुद्धिमान एव भाग्यशाली होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। बुध के लग्न में स्थित होने में 'कुलदीपक योग' बना। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। इस कारण अपनी जाति, कुटुम्ब, परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

2. **बुध + चंद्र**—जातक का जीवन सभी सुंदर होगा।
3. **बुध + मंगल**—धनेश व भाग्येश की युति लग्न स्थान में जातक को सौभाग्यशाली बना देगी।
4. **बुध + गुरु**—जातक को मित्रों से लाभ होगा। मित्र भाग्यशाली होगा।
5. **बुध + शुक्र**—जातक शान्ति प्रिय एवं सहज जिन्दगी जीने वाला परन्तु 'मालव्य योग' के कारण राजा का प्रिय व्यक्ति होगा। राजनीति में महत्वपूर्ण पद प्राप्त करेगा।
6. **बुध + शनि**—यहां शनि उच्च का होने से 'शश योग' बनेगा, जातक राजा होगा। महान राजनीतिज्ञ होगा। जातक का जीवन ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **बुध + राहु**—राहु व्यक्ति को हठी बनाएगा। ऐसा जातक व्यापार बदलता रहेगा
8. **बुध + केतु**—जातक का दिमाग बदलता रहेगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
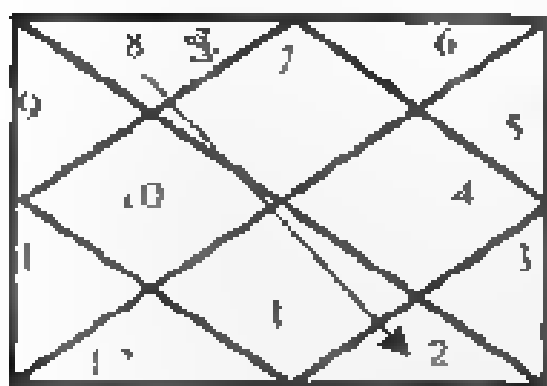
तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक है एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां द्वितीय स्थान में बुध वृश्चिक राशि का होगा। ऐसा जातक वाक्पटु होगा। इसके मुख और वाणी में आकर्षण रहेगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसे जातक महापण्डित, लोकप्रिय, धनी एवं पुत्र-पौत्रादि से युक्त सुखी इंसान होते हैं।

दृष्टि—द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः ऐसे जातक ऋण व रोगों का नाश करने में सक्षम होते हैं।

निशानी—ऐसे जातक अपने वाक्चातुर्य के द्वारा दूसरों को प्रभावित करने में कुशल होते हैं।

दशा—बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक धनवान होगा। उसका भाग्योदय होगा

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। द्वितीय स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे फलतः जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा। जातक में रोग व शत्रु से लड़ने की शक्ति होगी। जातक भाग्यशाली होगा तथा समाज के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति में जातक का नाम होगा।

2. **बुध + चद्र**—चद्रमा यहा नीच का होगा धन हेतु स्थिति सघर्षशील रहगी.
3. **बुध + मगल**—मगल की युति से जातक का भाग्योदय 28 एव 32 वर्ष की आयु के मध्य होगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक के ज्ञान में आध्यात्मिक वृद्धि होगी।
5. **बुध + शुक्र**—जातक अपने पुरुषार्थ से खूब धन कमाएगा।
6. **बुध + शनि**—जातक धनवान होगा, ऊचे भवन का स्वामी होगा।
7. **बुध + राहु**—जातक की वाणी दूषित होगी।
8. **बुध + केतु**—जातक की बुद्धि कपटी एव मायावी होती है।

तुलालग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में
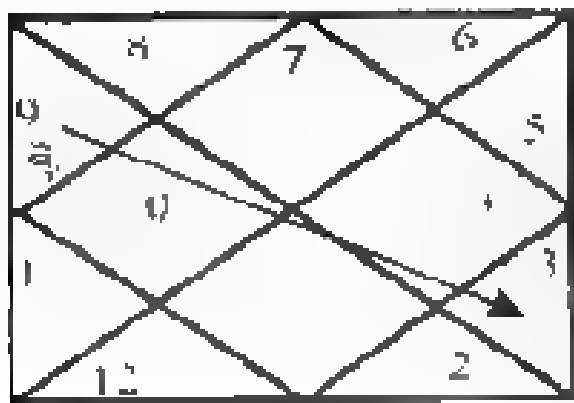
तुलालग्न में बुध खर्चेश एव भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहा तृतीयस्थ बुध धनु राशि में है। यह बुध की राशि है। तृतीयेश बुध भाई-बहन का सुख देता है। ऐसा जातक धनी व गुणी होता है। उसे मित्रों का सहयोग भी पग-पग पर मिलता रहेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ बुध की दृष्टि भाग्य भवन (मिथुन राशि) पर है जो कि उसके स्वय का स्वगृह है। फलत: जातक को धर्म भाग्य, पिता के सुखो में वृद्धि होगी।

निशानी—जातक परद्वेषी व स्वार्थी होता है।

दशा—बुध की दशा अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा पराक्रम बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न मे सूर्य लाभेश होगा। तृतीय स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश-खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहा बैठकर दोनो ग्रह नवम भाव को देखेगे फलत: जातक बुद्धिमान, पराक्रमी एव भाग्यशाली होगा जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक को परिजनो व मित्रों का सहयोग जीवन में मिलता रहेगा। मित्रों के सहयोग से जातक का भाग्योदय होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चद्र**—चद्रमा की युति से बहने अधिक होंगी।
3. **बुध + मगल**—मगल से मित्रो द्वारा धन मिलेगा।

4. **बुध + गुरु**—गुरु यहा स्वगृही होगा। जातक का भाग्योदय परिजनों व मित्रों द्वारा होगा।
5. **बुध + शुक्र**—शुक्र की युति के कारण जातक स्वय पराक्रमी होगा।
6. **बुध + शनि**—शनि की युति से जातक को शिक्षा व भूमि से लाभ होगा।
7. **बुध + राहु**—राहु पराक्रम भंग करेगा।
8. **बुध + केतु**—केतु कपट मित्र उत्पन्न करेगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में
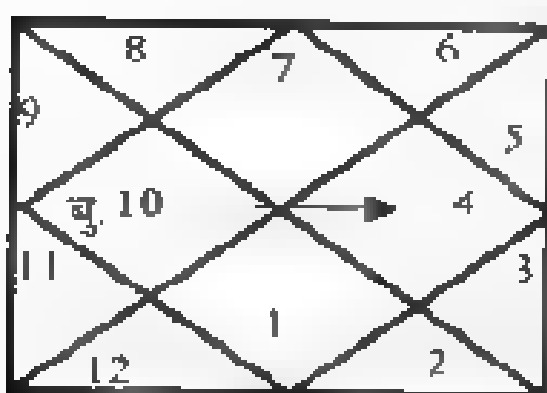
तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एव शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहा चतुर्थ स्थान में बुध मकर राशि का होगा जो कि इसकी मित्र राशि है। ऐसे जातक को माता पिता, जमीन जायदाद का पूर्ण सुख मिलता है। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम रोशन करता है। उसे पैतृक सम्पत्ति एव नौकर वाहन इत्यादि का सुख मिलता है।

दृष्टि—चतुर्थ भावस्थ बुध की दृष्टि दशम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक को प्रथम नौकरी, उसके बाद व्यापार मे लाभ होगा।

निशानी—वाहन व नौकरों के रख-रखाव में खर्चा होता रहेगा।

दशा—बुध की दशा अन्तर्दशा में जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। चतुर्थ स्थान मे मकर राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री होगा। बुध केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बना। यहा बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। उसे माता की संपत्ति मिलेगी। उसे उत्तम वाहन सुख, उत्तम मकान का सुख भी मिलेगा। जातक समाज का लब्ध एव प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चद्र**—जातक को माता की सपत्ति मिलेगी।

3. **बुध + मंगल**—जातक का भाग्य पग-पग पर साथ देगा। 'रूचक योग' के कारण जातक राजा या राजपुरुष से कम नहीं होगा।
4. **बुध + गुरु**—गुरु यहां नीच का होगा पर केंद्रस्थ होने से जातक को जीवन में सफलताएं मिलती रहेंगी।
5. **बुध + शुक्र**—शुक्र लग्नेश होकर केंद्र में 'कुलदीपक योग' बनाएगा। जातक यशस्वी होगा। धनवान होगा।
6. **बुध + शनि**—शनि स्वगृही होने के कारण 'शश योग' बनेगा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
7. **बुध + राहु**—माता-पिता के सुख में कमी रहेगी।
8. **बुध + केतु**—जीवन में संघर्ष अधिक होगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में

8	7	6
9		5
10		4
11 बु.		3
12	1	2
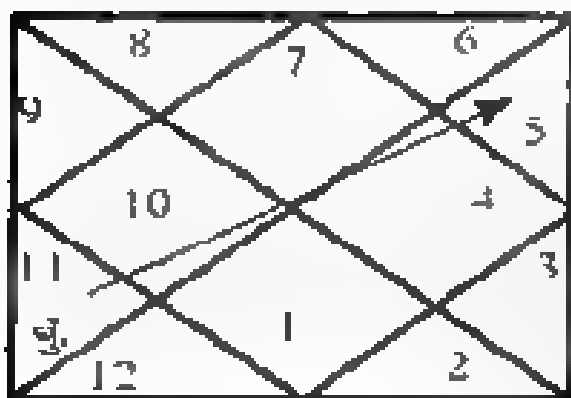
तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां पंचमस्थ बुध कुंभ राशि का होगा। जो कि उसकी मित्र राशि है। बुध को यहां पंचम एवं नवम दोनों भाव का बल मिलता है. जातक विद्या, बुद्धि व धर्म के मामले में अग्रगण्य सम्मानित व्यक्ति होता है उसे शैक्षणिक डिग्री मिलती है। जातक की सन्तति आज्ञाकारी व शिक्षित होती है। कम्प्यूटर कार्यों से जातक को लाभ होगा।

दृष्टि—पंचम भावस्थ बुध की दृष्टि लाभ स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलत: जातक व्यापार व्यवसाय में धन अर्जित करेगा।

निशानी—जातक पुत्र के लिए तीर्थ, व्रत व खर्च करने वाला होता है। जातक के दो कन्या होती है।

दशा—बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक को शैक्षणिक उपाधि, कीर्ति, यश की प्राप्ति होगी। जातक के व्यापार व्यवसाय में उन्नति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**-भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। पंचम स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ

स्थान का दखेगा जो कि सूर्य का स्वय का घर है, फलत: जातक बुद्धिशाली शिक्षित होगा जातक की सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक को कन्या सन्तति की अधिकता रहेगी, पर सूर्य की कृपा से एक पुत्र भी होगा। जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**—कन्या सन्तति की बाहुल्यता रहेगी.
3. **बुध + मंगल**—बौद्धिक चातुर्य बढ़ेगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक धर्मगुरु व महान दार्शनिक होगा
5. **बुध + शुक्र**—तीव्र बुद्धि कन्या सन्तति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध + शनि**—जातक दूरदर्शिता से परिपूर्ण होगा, भाग्योदय शीघातिशीघ्र होगा।
7. **बुध + राहु**—जातक विपरीत बात कहने वाला पुत्र सन्तति मे बाधा पाता है। 'सर्पशापात युत: क्षय' होता है।
8. **बुध + केतु**—जातक की विद्या में हल्की रुकावट आती है। गर्भपात का भय रहता है

तुलालग्न मे बुध की स्थिति षष्ट्म स्थान में
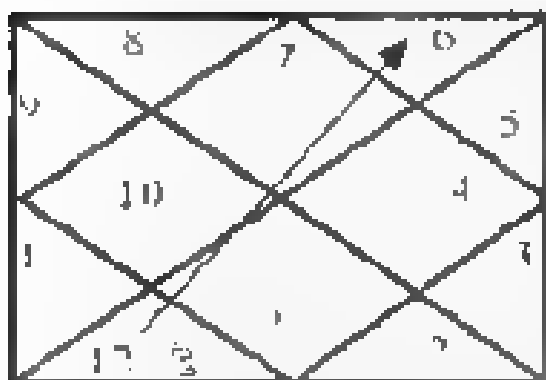
तुलालग्न में बुध खर्चेश एव भाग्येश होने से राजयोग कारक एव शुभ फलो को देने वाला ग्रह है यहां छठे स्थान में बुध मीन राशि का होगा। जो कि इसकी शत्रु राशि है बुध यहां नीच का है जातक के गृहस्थ सुख में बाधाएं आएगी। यहा भाग्यभंग योग बनने से जातक की उन्नति में बहुत बाधाए आएगी उसे शत्रु बहुत परेशान करेंगे। विद्या कई बार कुण्ठित रहेगी। यहा 'सरल योग' के कारण जातक शत्रुओं को परास्त करने मे समर्थ होगा।

दृष्टि—षष्टम बुध की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी जो कि उसके स्वय का स्वगृह है। फलत: जातक परोपकार, धर्मकार्य में रुपया खर्च करेगा।

निशानी—जातक परस्त्री गामी होता है।

दशा—बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। खर्च भी प्रबल होगा पर मिले-जुले परिणाम प्राप्त होंगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न मे सूर्य लाभेश होगा षष्ट्म स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध

के साथ युति कहलाएगी यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देख रहे हैं फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा सूर्य छठे जाने से 'लाभभंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'भाग्यभंग योग' बना। फलत यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा, व्यापार में लाभ के प्रति जातक शंकित रहेगा। व्ययेश छठे जाने से 'विमल योग' बना इस योग के कारण जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–जातक की आय अनैतिक संसाधनों से होगी।
3. **बुध + मंगल**–जातक का आर्थिक पतन होगा।
4. **बुध + गुरु**–जातक का 'पराक्रम भंग' होगा
5. **बुध + शुक्र** शुक्र के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव का स्वामी होगा पर जीवन का उन्नति मार्ग कंटकपूर्ण होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक का पतन होगा। संतान प्राप्ति में बाधाएं आएगी। विद्या में रुकावटें आएगी।
7. **बुध + राहु**–जातक पर शत्रुओं का प्रकोप रहेगा
8. **बुध + केतु** जातक को बौद्धिक परेशानी रहेगी।

तुलालग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में

8 7 6 9 5 10 4 11 3 बु 12 2
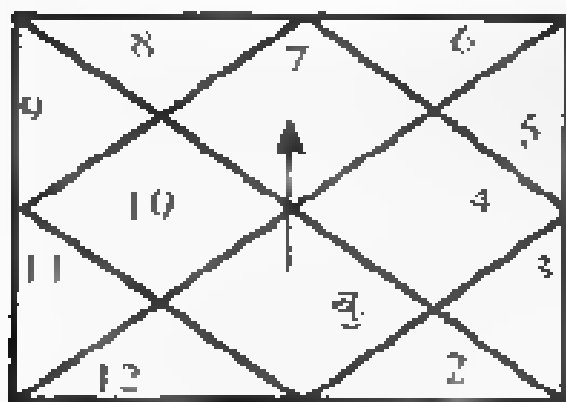
तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है यहां सप्तमस्थ बुध मेष राशि का होगा। ऐसा जातक हठी, क्रोधी निर्लज्ज व स्वच्छाचारी होगा। जातक को ससुराल व स्त्रीकुल से धनलाभ होगा। जातक का जीवन साथी भाग्यशाली होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ बुध की दृष्टि लग्न स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।

निशानी–स्त्री सुख में बीमारी या अन्य कारणों से कुछ न कुछ न्यूनता बनी रहती है।

दशा–बुध की दशा अन्तर्दशा में भाग्योदय होगा। उन्नति के नये मार्ग खुलेंगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। सप्तम स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध

के साथ युति कहलाएगी। यहा बैठकर सूर्य उच्च का होगा तथा दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत. जातक बुद्धिशाली व भाग्यशाली होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। 'कुलदीपक योग' एव 'रविगत राजयोग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा एव सरकारी क्षेत्र मे उच्चपद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति करेगा।

2. **बुध + चंद्र** जातक को पत्नी सुंदर होगी। पेट का ऑपरेशन होगा।
3. **बुध + मगल**–यहा 'रूचक योग' के कारण जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य धन को भोगेगा।
4. **बुध + गुरु**–पेट की बीमारी सम्भव है।
5. **बुध + शुक्र**–जातक निर्दयी व सेक्सी होगा।
6. **बुध + शनि**–जातक परम भाग्यशाली होगा।
7. **बुध + राहु**–जातक की प्रवृत्ति आपराधिक होगी।
8. **बुध + केतु**–जातक स्वेच्छाचारी होगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में

8	7	6
9		5
10		4
11		3
12	1	बु 2
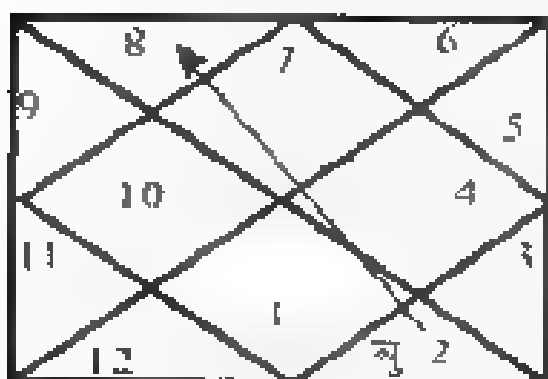
तुलालग्न में बुध खर्चेश एव भाग्येश होने से राजयोग कारक एव शुभ फलो को देने वाला ग्रह है। यहा अष्टमस्थ होने से बुध वृष राशि का होगा। जो कि इसकी मित्र राशि है पर यहां 'भाग्यभग योग' के कारण जातक के भाग्योदय में देरी होगी भाग्योदय हेतु थोडा सघर्ष करना पड़ेगा। परन्तु व्ययेश का अष्टम स्थान में जाना 'सरल योग' के कारण शुभ माना गया है। जातक को सघर्ष के बाद सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक को धन की कमी नहीं रहेगी।

निशानी–जातक को खर्च की अधिकता के कारण कर्ज लेना पड़ेगा।

दशा–बुध की दशा अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय तो होगा परन्तु सघर्ष से मुक्ति नही मिलेगी। जातक को यह दशा मिश्रित फलकारी होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिता के अनुसार तुलालग्न मे सूर्य लाभेश होगा। अष्टम

स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत. लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव को देखेंगे सूर्य के आठवें जाने से 'लाभभंग योग' तथा बुध आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि होगी। फलत: यहां यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिशाली होगा। भाग्यशाली भी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। व्यापार-व्यवसाय में लाभ के प्रति भी जातक आशंकित रहेगा। व्ययेश आठवें जाने से 'विमल योग' बना अत: जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध + चंद्र**–रोग के कारण शल्य चिकित्सा होगी।
3. **बुध + मंगल**–धन की कमी सताती रहेगी।
4. **बुध + गुरु**–गुप्त बीमारी होगी।
5. **बुध + शुक्र**–जातक सांसारिक सुख एवं वासनाओं से ग्रसित होगा।
6. **बुध + शनि**–पुत्र को लेकर चिन्ता होगी।
7. **बुध + राहु**–गुप्त बीमारियां होंगी।
8. **बुध + केतु**–लम्बी बीमारी सम्भव है।

तुलालग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में
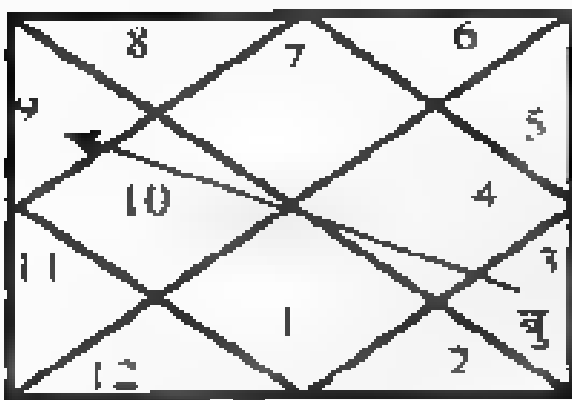
तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक है एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहा नवम भावस्थ बुध मिथुन राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक महान सौभाग्यशाली व भाग्यवान होगा। ऐसा जातक शालीन व विनम्र होता है। अपनी व्यवहार कुशलता के कारण मित्रों व समाज में जातक की अच्छी छवि होती है। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यवान, न्यायप्रिय एवं बुद्धिशाली होता है।

दृष्टि–नवम भावस्थ बुध की दृष्टि तृतीय भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को मित्रों व सहोदरों से लाभ होगा।

निशानी–जातक सदैव आशावादी एवं रचनात्मक कार्यों में रुचि लेगा।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा में जातक का जबरदस्त भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा। नवम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के

साथ युति कहलाएगी। यहा बैठकर दोनो ग्रह पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एव महान पराक्रमी होगा। जातक को पिता की सपत्ति मिलेगी तथा मित्रों एव परिजनों का सहयोग समय-समय पर मिलता रहेगा। जातक समाज का लब्ध एव प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा योग घटित होने के समय सूर्य की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी। बुध की दशा-अन्तर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा।

2. **बुध + चद्र**–पिता (पैतृक) की संपत्ति मिलेगी।
3. **बुध + मगल**–जातक महाधनी होगा।
4. **बुध + गुरु**–भाईयो व परिजनों की मदद बहुत रहेगी।
5. **बुध + शुक्र**–परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक व्यापारी होगा
6. **बुध + शनि**–जातक शिक्षित होगा व विदेशी भाषा पढ़ेगा।
7. **बुध + राहु**–भाग्योदय में रुकावट, बना काम बिगड़ेगा।
8. **बुध + केतु**–भाग्योदय में सघर्ष महसूस होगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में

8	7	6
9	10 ← बु 4	5
11	1	3
12		2
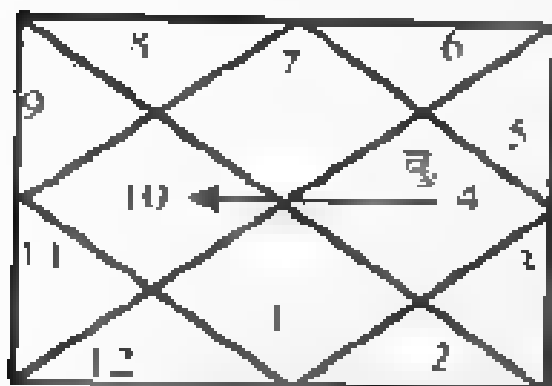
तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एव शुभ फलों को देने वाला ग्रह है यहा दशम स्थान में बुध कर्क राशि मे होगा। जो इसकी शत्रु राशि है ऐसे जातक की प्रतिष्ठा अपनी जाति व समाज मे बहुत होती है। जातक आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक दृष्टि से सुख सम्पन्न होता है जातक जर-जोरू, जमीन-जायदाद, व पैतृक सपत्ति के पक्ष में सुखी होता है। जातक की सोच सकारात्मक होती है। बुद्धि प्रौढ़ होती है। जातक अच्छे सलाहकार के रूप मे विख्यात 'कुलदीपक' होता है।

दृष्टि–दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि पर होगी। फलतः जातक को वाहन व नौकर-चाकर का पूर्णसुख होगा।

निशानी–जातक को पिता का सुख स्वल्प होना है। जातक लोकमान्य होता है।

दशा–बुध की दशा अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे उत्तम नौकरी की प्राप्ति होगी। उसका व्यापार व्यवसाय बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य—**भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न में सूर्य लाभेश होगा दशम स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलायेगी यहां बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को देखेंगे। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः जातक बुद्धिशाली होगा राज्य पक्ष, सरकारी क्षेत्र में उसका दबदबा, वर्चस्व होगा जातक को माता की संपत्ति मिलेगी। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र—**जातक को अच्छी नौकरी, अच्छा वाहन मिलेगा।
3. **बुध + मंगल** जातक धनी होगा। मंगल यहां दिग्बली होगा.
4. **बुध + गुरु—**मित्रों से लाभ होगा 'हंस योग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
5. **बुध + शुक्र—**जातक सम्पन्न होगा। उसके पास एकाधिक वाहन होंगे।
6. **बुध + शनि—**जातक के पास बड़ी गाडी व बड़ा बंगला होगा।
7. **बुध + राहु—**राज्यपथ में रुकावट।
8. **बुध + केतु** वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में
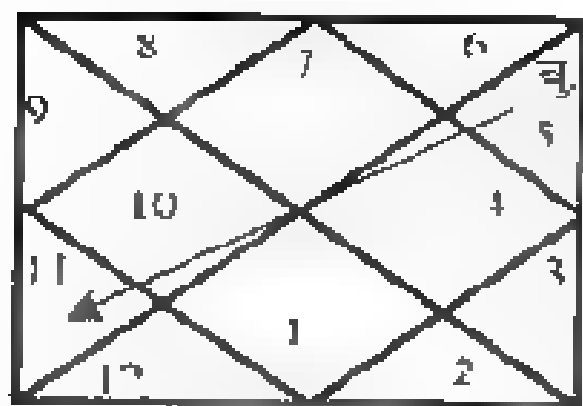
तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक एवं शुभ फलों को देने वाला ग्रह है। यहां एकादश स्थान में बुध सिंह राशि में होगा जो इसकी मित्र राशि है। ऐसे जातक उत्तम लेखक साहित्यकार, सम्पादक व प्रकाशक होते हैं। जातक संवेदनशील होता है तथा लोगों के मनोभावों को समझने की संवेदना, योग्यता रखता है। जातक गुरुजनों का भक्त एवं पुण्यात्मा होता है।

दृष्टि—एकादश भाव में स्थित बुध की दृष्टि पंचम भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः जातक को शैक्षणिक डिग्री मिलेगी. जातक विद्या बुद्धि, पद-प्रतिष्ठा, स्त्री व संतान से सुखी होता है।

निशानी—जातक को दूसरों का धन मिलता है। यात्राएं जातक के लिए लाभप्रद होंगी।

दशा—बुध की दशा अन्तर्दशा मे जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध + सूर्य**—भोजसंहिता के अनुसार तुलालग्न मे सूर्य लाभेश होगा। एकादश स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। यहां सूर्य स्वगृही होगा तथा यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को देखेंगे, फलतः जातक बुद्धिशाली होगा व शिक्षित होगा। जातक की सन्तति भी शिक्षित होगी। जातक व्यापार में रुचि लेगा तथा उसको आमदनी के जरिए एक से अधिक होंगे। जातक भाग्यशाली होगा।
2. **बुध + चंद्र**—व्यापार में लाभ होगा।
3. **बुध + मंगल**—व्यापार मे धन लाभ, पत्नी के नाम वाले धंधे मे लाभ होगा।
4. **बुध + गुरु**—जातक के पुत्र जरूर होगा।
5. **बुध + शुक्र**—कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
6. **बुध + शनि**—कन्या व पुत्र दोनों के योग।
7. **बुध + राहु**—लाभ में व्यवधान।
8. **बुध + केतु**—व्यापार में घाटा होगा।

तुलालग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में

8	7	बु 6	
9	10	4	5
11	1	3	
12	2		
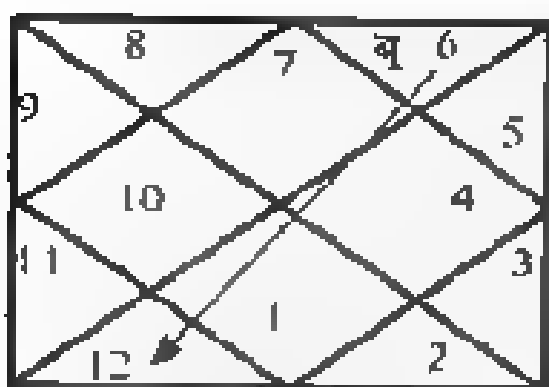
तुलालग्न में बुध खर्चेश एवं भाग्येश होने से राजयोग कारक है एवं शुभ फलों का देने वाला ग्रह है। यहां द्वादश स्थान में बुध अपनी स्वराशि कन्या मे होगा। जो इसकी उच्च राशि है। जहा अंशों तक बुध परमोच्च कहलाता है। जातक महान दानी होता है। परोपकारी एवं पुण्यात्मा होता है। 'भाग्यभंग योग' के कारण जातक मेहमान नवाज होता है। अतिथियों के आदर सत्कार एवं यारबाजी, दोस्ती निभाने में खूब रुपया खर्च करता है। द्वादशेश का द्वादश में होना 'सरल योग' बनाता है। जिससे जातक विदेश में Export-Import के कार्य में धन कमाने में विशेष सफलता प्राप्त करता है

दृष्टि—द्वादशस्थ बुध की दृष्टि छठे भाव (मीन राशि) पर होगी फलतः जातक रोग व शत्रुओं का नाश करने मे पूर्णतः सक्षम होता है।

दशा—बुध की दशा अन्तर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। खूब धन आएगा पर खर्च भी होता रहेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध + सूर्य**–भोजसहिता के अनुसार तुलालग्न मे सूर्य लाभेश होगा। द्वादश स्थान मे कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: लाभेश सूर्य की भाग्येश+खर्चेश बुध के साथ युति कहलाएगी। बुध बारहवें जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा सूर्य के कारण 'लाभभंग योग' योग बना। अत: जातक एक बार ऊपर चढ़कर नीचे गिरेगा। खर्च अधिक होगा। तीर्थाटन धार्मिक यात्राओं में रुपया खर्च करेगा। व्ययेश स्वगृही होकर बारहवे होने से जातक परोपकारी दानी एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध + चंद्र**–चंद्र यहा शत्रु राशि में अपने पुत्र परन्तु प्रच्छन्न शत्रु के साथ स्थित होने से उद्विग्न रहेगा।
3. **बुध + मंगल**–मगल भग होने से जातक सट्टेबाज होगा। जुआ में जातक की रुचि रहेगी।
4. **बुध + गुरु**–गुरु साथ होने से 'पराक्रमभग योग' होगा। जातक के चलते कार्य में रुकावटें बहुत आएगी।
5. **बुध + शुक्र**–शुक्र साथ होने से 'नीचभग राजयोग' बनेगा। जातक का शैय्या सुख मिलेगा। पर स्त्रियों से यौन सपर्क रहेगा।
6. **बुध + शनि**–यहा शनि साथ होने से 'विद्याभग योग' एवं 'सुखहीन योग' क्रमश: बनेंगे। जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु काफी सघर्ष करना पड़ेगा।
7. **बुध + राहु**–तीर्थ यात्रा मे चोरी, बौद्धिक परेशानी रहेगी।
8. **बुध + केतु**–तीर्थ यात्रा में धन खर्च होगा।

❑❑❑

तुलालग्न में गुरु की स्थिति

तुलालग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में
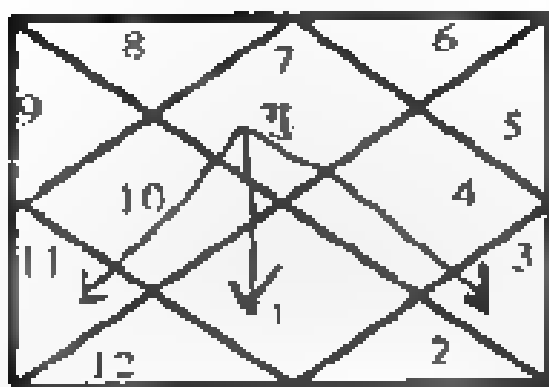
तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है, यहां लग्नस्थ बृहस्पति तुला राशि में होगा जो इसकी शत्रु राशि है। ऐसा जातक धर्म न्याय व नैतिक आचरणों से परिपूर्ण जीवन को जीयेगा। लग्नस्थ बृहस्पति 'केसरी योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेगा। जातक अपने परिवार कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जीवन में कोई काम अटका हुआ नहीं रहेगा।

दृष्टि—लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव (कुंभ राशि), सप्तम भाव (मेष राशि) एवं नवम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। इसके कारण स्वस्थ देह स्त्री सुख, संतान सुख की प्राप्ति होगी।

निशानी—जातक अपने सम्बन्धियों से ईर्ष्या रखता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक को विद्या सुख, स्त्री सुख, संतान सुख की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चंद्र**-तुलालग्न के प्रथम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह पंचम स्थान, सप्तम भाव एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। तुलालग्न में यह योग ज्यादा सार्थक नहीं है। क्योंकि तुलालग्न के लिए बृहस्पति पापी ग्रह है। अशुभ फल प्रदाता है। फलतः ऐसे जातक के पराक्रम में न्यूनता आएगी।

जातक की प्रथम सन्तति की मृत्यु होगी। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी अन्तिम रूप से सफल रहेगे।

2. **गुरु + सूर्य**–सूर्य नीच का होकर एक हजार राजयोग नष्ट करेगा जातक को प्राईवेट नौकरी करनी पड़ेगी।
3. **गुरु + मंगल**–भाईयों तथा मित्रों से लाभ होगा।
4. **गुरु + बुध**–भाग्य प्रबल रहेगा। बुद्धिबल से लाभ होगा।
5. **गुरु + शुक्र**– मालव्ययोग' के कारण जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **गुरु + शनि**–'शश योग' के कारण जातक निश्चय ही राजातुल्य पराक्रमी होगा। धर्म शास्त्र का ज्ञाता होगा।
7. **गुरु + राहु**–यहां राहु व्यक्ति को धर्म का ज्ञाता व तार्किक स्वभाव का बनायेगा।
8. **गुरु + केतु**–जातक कुछ क्रोधी होगा पर गंभीर होगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में

8 गु, 7, 6, 9, 5, 10, 4, 11, 3, 1, 12, 2
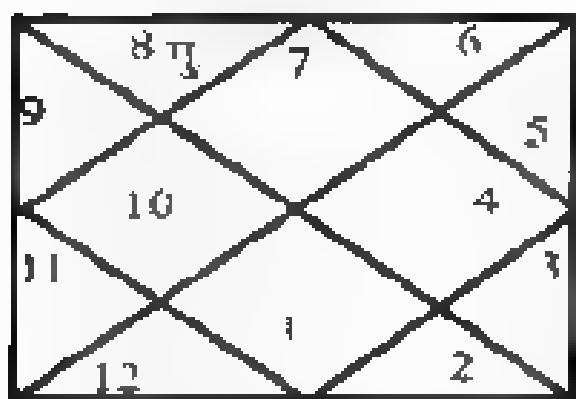
तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां द्वितीयस्थ बृहस्पति वृश्चिक राशि में होगा जो इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक वाक्‌पटु होता है। मीठा एवं नीतिप्रिय वाणी को बोलता है। ऐसा जातक अध्ययन-अध्यापन, वकील, ज्योतिषी, धर्मोपदेशक के रूप में ज्यादा कीर्ति अर्जित करता है।

दृष्टि–द्वितीय भाव में स्थित बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (मीन राशि), अष्टम भाव तुला राशि एवं दसम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा। राज सरकार व राजनीति में भी उसका हस्तक्षेप होगा।

निशानी–जातक विदेशवासी, परस्त्रीगामी एवं साहसी होता है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**-तुलालग्न के द्वितीय स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह

षष्टम स्थान, अष्टम स्थान एव राज्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यह युति यहा ज्यादा सार्थक नहीं है। फिर भी जातक के शत्रुओं का नाश होगा। जातक की आयु बढ़ेगी। राजपक्ष मे प्रभाव पड़ेगा। ऋण-रोग और शत्रु का भय तो रहेगा परन्तु इस शुभ योग के कारण जातक का बचाव होता रहेगा। मुसीबत में मदद मिलती रहेगी।

2. **गुरु + सूर्य**—जातक को स्वतन्त्र व्यापार मे लाभ होगा।
3. **गुरु + मगल**—जातक धनी होगा। भाईयों व मित्रों से लाभ होगा।
4. **गुरु + बुध**—जातक भाग्यशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**—जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा।
6. **गुरु + शनि**—जातक धनी होगा। सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।
7. **गुरु + राहु**—धन के घड़े मे छेद है। जो कुछ प्राप्त होगा, नष्ट होता चला जाएगा
8. **गुरु + केतु**—धन प्राप्ति में संघर्ष है।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में

8 7 6 9 गु. 5 10 4 11 3 1 12 2
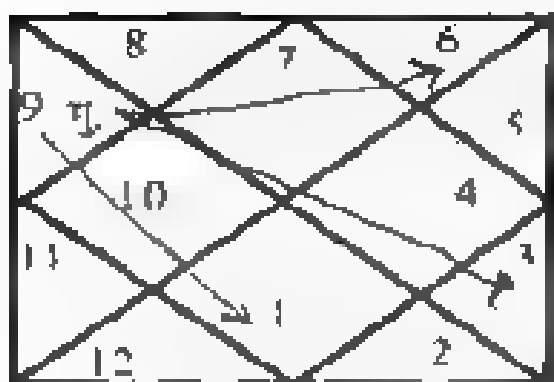
तुलालग्न मे गुरु तृतीयेश एव षष्ठेश होने से पाप फलदायक है बृहस्पति तुलालग्न वालो के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है. यहा तृतीय स्थान मे बृहस्पति धनु राशि मे होकर स्वगृही होगा। ऐसा जातक पराक्रमी होता है जातक पिता, बड़े भाई, छोटे भाई-बहन व परिवार की सेवा करने वाला, मित्रों में सच्चा मित्र होता है जातक लेखक, सम्पादक, प्रकाशक, धार्मिक कार्य व जनसम्पर्क से धनोपार्जन करने मे सक्षम होगा

दृष्टि—तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि) भाग्य भवन (मिथुन राशि) एव व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक की पत्नी पतिव्रता, धार्मिक होगी। जातक सौभाग्यशाली होगा एवं परोपकार के कार्यों में धन का व्यय करेगा।

निशानी—जातक हमेशा समझौते वादी दृष्टिकोण में विश्वास रखेगा। अपने परम शत्रु से भी सौहार्दपूर्ण व प्रेमपूर्ण तरीके से बात करना चाहेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के तृतीय स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति तुलालग्न के लिए पापी व अशुभ फलकर्त्ता है। परन्तु यहा तृतीय स्थान में धनु राशि मे बृहस्पति स्वगृही होगा। जहां से वह सप्तम भाव, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलत. आपका पराक्रम तेज रहेगा। विवाह के शीघ्र आपका भाग्योदय होगा। आपकी गणना भाग्यशाली लोगों में होगी। इस गजकेसरी योग के कारण आपको व्यापार व्यवसाय मे भी उचित लाभ होता रहेगा।
2. **गुरु + सूर्य**–जातक पराक्रमी होगा जनसम्पर्क से लाभ होगा।
3. **गुरु + मंगल**–जातक को मित्रों द्वारा धन मिलेगा। बड़े भाई से लाभ होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक परम सौभाग्यशाली होगा। गुरुजनों से लाभ होगा
5. **गुरु + शुक्र**–जातक को परिश्रम का मीठा फल मिलेगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक धनी होगा।
7. **गुरु + राहु**–धन के घड़े में छेद मित्रों के कारण होगा।
8. **गुरु + केतु**–भाईयों से मनमुटाव रहेगा।

तुलालग्न मे गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

8 7 6 9 5 10 गु 4 11 3 1 12 2
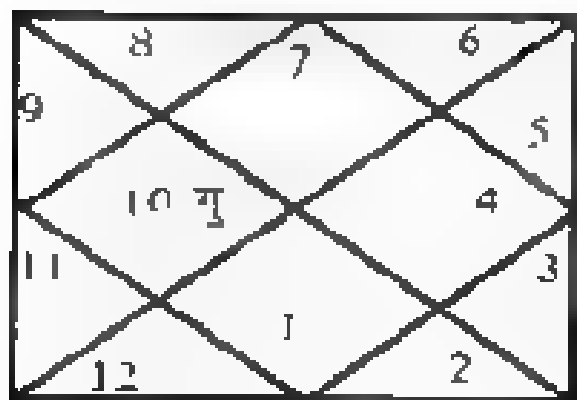
तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति मकर राशि मे होकर नीच का होगा। बृहस्पति अशो पर परम नीच का होगा। बृहस्पति केन्द्रस्थ होने के कारण 'केसरी योग' एव 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक कुल का नाम रोशन करने वाला, रोग व ऋण का नाश करने में समर्थ होगा। फिर भी शत्रुओ के कारण धन व मान की हानि होगी। मातृ पक्ष से कष्ट, पुलिस व अदालत के कार्यों में धन व समय का अपव्यय होगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावस्थ बृहस्पति की दृष्टि अष्टम भाव (वृष राशि), दशम भाव (कर्क राशि) एव व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक लम्बी आयु वाला, राज पक्ष में सम्मान पाने वाला एव धार्मिक कार्य मे रुपया खर्च करने वाला उदार हृदय का व्यक्ति होगा

निशानी–जातक दुष्टा स्त्री का पति होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के चतुर्थ स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। इन दोनो शुभ ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव, राज्य स्थान एवं व्यय भाव पर होगी। इस युति के कारण माता का सुख मिलेगा, आयु लंबी होगी। धन खर्च बहुत होगा पर खर्चा शुभ होगा। जीवन मे कोई कार्य रुका हुआ नहीं रहेगा। अन्तिम सफलता निश्चित है।
2. **गुरु + सूर्य**–जातक पराक्रमी होगा। व्यापार से धन कमाएगा।
3. **गुरु + मंगल**–'रूचक योग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। 'यहा नीचभंग राजयोग' भी बनेगा। जातक के पास अनेक वाहन व मकान होंगे।
4. **गुरु + बुध**–जातक भाग्यशाली होगा। बुद्धि बल से धन कमाएगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक धनी व एकाधिक वाहनो का स्वामी होगा।
6. **गुरु + शनि**–'शश योग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। यहा 'नीचभग राजयोग' भी बनेगा जातक के पास अनेक वाहन व मकान होंगे।
7. **गुरु + राहु**–जातक की माता बीमार रहेगी।
8. **गुरु + केतु**–माता का सुख कमजोर रहेगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में

8 7 6 9 5 10 4 11 3 गु. 12 1 2
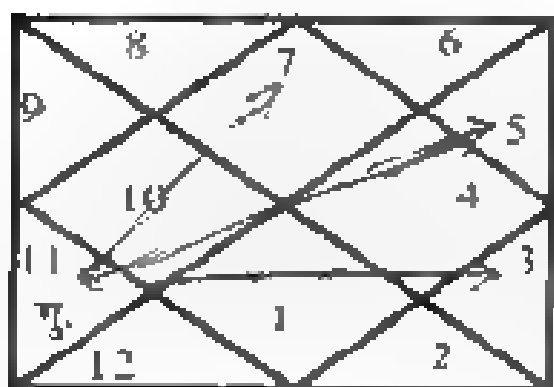
तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालो के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एव परम पापी है। यहा पचम स्थान बृहस्पति कुभ राशि मे होगा। गुरु यहा षष्टम भाव से द्वादश स्थान पर होने के कारण पाप फल से मुक्त होगा ऐसा जातक बौद्धिक गुणो से भरपूर-चिन्तनशील प्रवृत्ति का होगा। जातक दार्शनिक एव धार्मिक उपदेशक होगा। जातक भरे पूरे कुटुम्ब का स्वामी होगा। जातक चुपचाप उन्नति पथ पर आगे बढने वाला, कठोर परिश्रमी होगा।

दृष्टि–पचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि नवम भाव (मिथुन राशि) एकादश भाव (सिह राशि) एवं लग्न भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक सौभाग्यशाली होगा। स्वय के पुरुषार्थ से धनार्जन करेगा पर गति धीमी होगी।

निशानी–जातक प्रायः तीन या पाच पुत्रों से युक्त होगा परन्तु पुत्रों से विचार नहीं मिलेंगे

दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी जातक आगे बढ़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1 **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के पचम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहा पापी ग्रह व अशुभ फलकर्त्ता होते हुए भी आपको शुभ सन्तति देगा। इसकी दृष्टि भाग्य भाव, लाभ भवन एव लग्न स्थान पर है। फलतः आपके भाग्य का उदय किसी की मदद से होगा। व्यापार-व्यवसाय में भी आपको लाभ समय समय पर मिलता रहेगा आपकी उन्नति चहुमुखी होगी। एक साथ अनेक कार्यों से आपको लाभ होगा।

2 **गुरु + सूर्य**-जातक को पुत्र अवश्य होगा एव व्यापार मे भी लाभ होगा।

3 **गुरु + मंगल** –जातक धनवान होगा पुत्रवान होगा।

4 **गुरु + बुध** जातक को कन्या व पुरुष दोनों सन्तति की प्राप्ति होगी।

5 **गुरु + शुक्र**–जातक को कन्या व पुरुष दोनो सन्तति की प्राप्ति होगी।

6 **गुरु + शनि** –जातक का पाच पुत्र हो सकते है।

7 **गुरु + राहु** –संतान प्राप्ति में बाधा सम्भव है।

8 **गुरु + केतु** –एक-दो गर्भपात सम्भव है।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति षष्ठम स्थान में
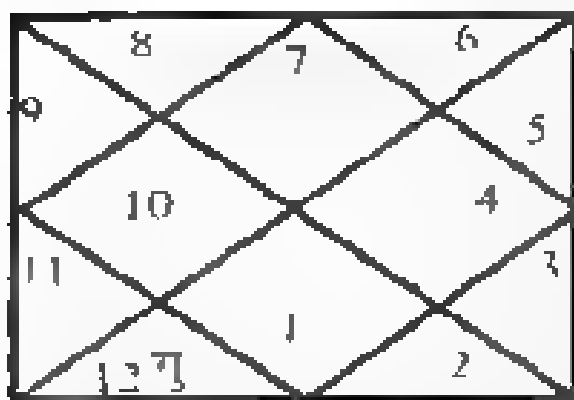
तुलालग्न मे गुरु तृतीयेश एव षष्ठेश होने से पाप फलदायक है बृहस्पति तुलालग्न वालो के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहा छठे स्थान में स्थित बृहस्पति मीन राशि में होगा जो इसकी स्वय की राशि है। बृहस्पति के यहा स्थित होने पर 'पराक्रमभग योग' की सृष्टि होगी। जातक के मित्र एवं कुटुम्बी विश्वास योग्य नहीं होते। षष्ठेश षष्टम में स्वगृही होने से 'हर्षयोग' बना। इसके कारण जातक को नौकरी, व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा। पिता पक्ष मजबूत रहेगा। पद-प्रतिष्ठा बरकरार बनी रहेगी

दृष्टि–छठे भावगत बृहस्पति की दृष्टि दशम भाव (कर्क राशि), व्यय भाव (कन्या राशि) एवं धन भाव (वृश्चिक राशि) पर रहेगी। फलतः जातक धनप्राप्ति के प्रयासों में सफलता प्राप्त करेगा। राजनीति मे जातक का वर्चस्व रहेगा एव परोपकार के कार्यों में भी जातक रुचि लेगा।

निशानी–जातक की स्वगोत्रियो से शत्रुता परन्तु जाति के अतिरिक्त अन्य लोगों से मित्रता रहेगी।

दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1 **गुरु + चंद्र**-तुलालग्न के षष्ट्म स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा उसकी दृष्टि दशम भाव, व्यय स्थान एव धन स्थान पर होगी, फलतः रोग का नाश होगा। यहा पर क्रमश: 'पराक्रमभग योग' एव 'राज्यभग योग' की सृष्टि दु:खद है। कोई अन्यतम मित्र, जिस पर आप ज्यादा भरोसा करते हैं, धोखा देगा सरकार से, कोर्ट कचहरी से दण्ड भी मिल सकता है सावधान रहें। फिर भी कुल मिलाकर आपको इस योग के कारण कोई गभीर नुकसान नहीं होगा। प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

2. **गुरु + सूर्य**-राजदण्ड की प्राप्ति सम्भव है।

3. **गुरु + मंगल** -धन का अभाव रहेगा। गृहस्थ सुख मे कलह रहेगी।

4. **गुरु + बुध** -भाग्य में रुकावट परन्तु 'नीचभग राजयोग' के कारण अन्तिम सफलता निश्चित है। 'हर्ष योग' से बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट होगा।

5. **गुरु + शुक्र**-शुक्र के कारण 'किबहुना राजयोग' बना। 'हर्ष योग' के कारण बृहस्पति का अशुभत्व नष्ट होगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।

6. **गुरु + शनि** -भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु सघर्ष रहेगा। सन्तति में बाधा का योग बनता है।

7 **गुरु + राहु** -राहु राजयोग देता है परन्तु गुप्त शत्रु हावी रहेगे।

8. **गुरु + केतु** -शत्रुओं से सावधान रहना अनिवार्य है

तुलालग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में

तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालो के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एव परम पापी है। यहा सप्तम स्थान मे बृहस्पति मेष राशि में होगा जो इसकी मित्र राशि है। इसके साथ ही
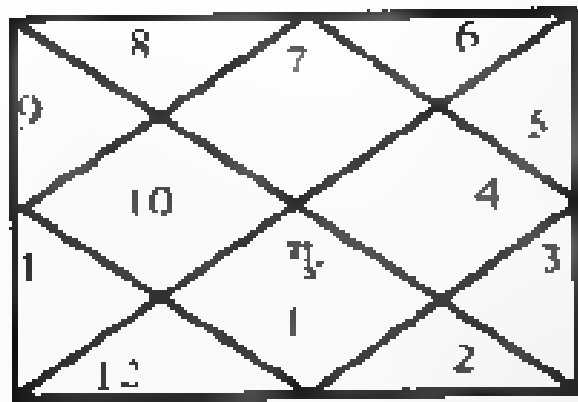
'केसरी योग' एव 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी ऐसा जातक कुल म श्रेष्ठ, अपने उत्साह एव परिश्रम के द्वारा सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करता है जातक धार्मिक पुस्तकों का लेखक, कर्मकाण्ड का ज्ञाता, ज्योतिष तन्त्र-मन्त्र शास्त्र का ज्ञाता होता है तथा जनसम्पर्क के माध्यम से धनार्जन करने मे कुशल होता है।

दृष्टि–बृहस्पति की दृष्टि लाभ भाव (सिह राशि), लग्न भाव (तुला राशि) एवं पराक्रम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक महान पराक्रमी होगा। व्यापार-व्यवसाय व नौकरी के द्वारा लाभ अर्जित करने वाला, पुरुषार्थ के द्वारा सफलता प्राप्त करने मे सफल होता है।

निशानी–जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। जातक की अन्तिम अवस्था सुखमय होती है।

गुरु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के सप्तम स्थान मे यह युति वस्तुत: राज्येश चद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। इन दोनो शुभ ग्रहो की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एव पराक्रम स्थान पर होगी। फलत: आपके कारोबार में आपको तरक्की-उन्नति मिलेगी। व्यापार व्यवसाय मे समय समय पर धन की प्राप्ति होती रहेगी और पराक्रम से, मित्र सर्किल, समाज में कीर्ति व यश की प्राप्ति होगी। बृहस्पति व चद्रमा दोनों की दशाए शुभ फल देगी।
2. **गुरु + सूर्य**–यहां सूर्य उच्च का होगा। 'रविकृत राजयोग' के कारण राजकीय नौकरी का योग बनता है।
3. **गुरु + मंगल**–यहां मंगल स्वगृही होने से 'रूचक योग' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक भाग्यशाली होगा। भाईयों से लाभ होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक मित्रों व परिजनों की मदद से उन्नति मार्ग की ओर आगे बढेगा।
6. **गुरु + शनि**–शनि यहा भले ही नीच का है फलत: जातक सुखी भी होगा। सन्तति वाला भी होगा।
7. **गुरु + राहु**–गृहस्थ सुख में बाधा है पर गुरु की वजह से सब कुछ सामान्य रहेगा।

8. **गुरु + केतु** -गृहस्थ सुख में टकराव होगा पर गुरु की वजह से टकराव टल जायेगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में

8	7	6
9		5
10		4
11	1	3
12		गु 2
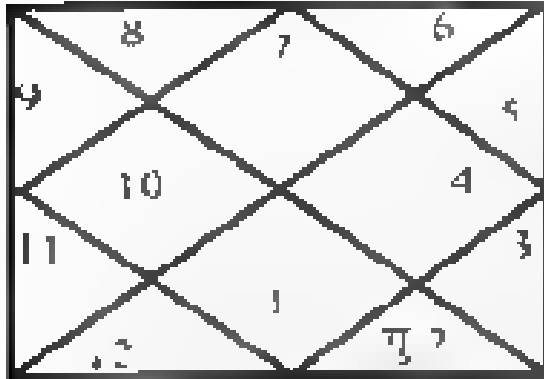
तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है एवं बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां अष्टम भाव में बृहस्पति वृष राशि में होगा जो इसकी शत्रु राशि है। बृहस्पति आठवें जाने से 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि होती है ऐसे जातक को राजा द्वारा दण्डित होने की सम्भावना रहती है। जातक पण्डितों का शत्रु एवं स्वजाति का द्वेषी होता है षष्ठेश का अष्टम स्थान में होने से 'हर्ष योग' बनता है। जिसके कारण अशुभ फलो की निवृत्ति होकर शुभ फलों की प्राप्ति होती है। जातक को धन, भवन जमीन जायदाद प्रतिष्ठा, अच्छी नौकरी एवं भौतिक सुखो की प्राप्ति होती है।

दृष्टि–बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि), धन भाव (वृश्चिक राशि), एवं चतुर्थ भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी उसे धन की कमी नहीं रहेगी। उसे मातृपक्ष से सहयोग मिलेगा।

निशानी–जातक दीन दुःखियों की सेवा करेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के अष्टम स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा उच्च का होगा तथा दोनों ग्रहों की दृष्टि व्यय भाव, धन स्थान एवं सुख स्थान पर होगी। रुपयों की बरकत नहीं होगी तथा सुख प्राप्ति में कुछ न कुछ बाधा आती रहेगी। यहां बृहस्पति के कारण पराक्रमभंग योग एवं चंद्रमा के कारण 'राज्यभंग योग' भी बन रहा है। इसका प्रभाव भी 40 प्रतिशत जातक के जीवन पर पड़ेगा अतः सरकारी अधिकारियों से न उलझें तथा मित्रों के साथ व्यवहार सही रखें।
2. **गुरु + सूर्य**–राजदण्ड सम्भव है।
3. **गुरु + मंगल**–धन का अभाव रहेगा। गृहस्थ सुख में बाधा पड़ेगी।
4. **गुरु + बुध**–'भाग्यभंग योग' के कारण भाग्योदय में बाधा आएगी।

5. गुरु + शुक्र–'लग्नभग योग' के कारण परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
6. गुरु + शनि–'सुखभग योग' एव 'सतानहीन योग' बनता है
7. गुरु + राहु–गुप्त बीमारी रहेगी। बीमारी के प्रति लापरवाह न रहे।
8. गुरु + केतु–दुर्घटना योग बनता है। सावधानी अनिवार्य है।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान मे

8	7	6
9		5
10		4
11		3 गु.
12	1	2
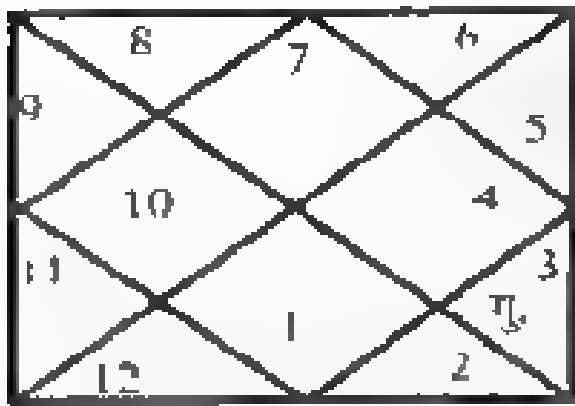
तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एव षष्ठेश होने स पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एव परम पापी है यहां नवम स्थान मे बृहस्पति मिथुन राशि मे होगा जो इसकी मित्र राशि है। ऐसे जातक का बौद्धिक स्तर उच्च से उच्चतर होगा। जातक धर्माधिकारी या न्यायाधीश होगा जातक उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा। जातक उच्च श्रेणी का ग्रन्थकार, पत्रकार अथवा राजनीतिज्ञ होग जातक धर्मशास्त्र, नीति शास्त्र अथवा व्यवहार-शास्त्र का सच्चा उपदेशक होगा।

दृष्टि–नवम भावगत बृहस्पति की दृष्टि लग्न स्थान (तुला राशि), पराक्रम स्थान (धनु राशि), एव पचम भाव (कुभ राशि) पर होगी फलत: जातक महान पराक्रमी, बुद्धिमान, एवं उन्नति पथ पर निरन्तर गतिमान होगा।

निशानी–जातक मे योगी व भोगी दोनों के गुण होगे।

दशा–बृहस्पति की दशा-अन्तर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. गुरु + चद्र–तुलालग्न के नवम स्थान मे यह युति वस्तुत: राज्येश चद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। चद्रमा शत्रुक्षेत्री है तथा बृहस्पति पापी है। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान पराक्रम स्थान एव पचम भाव पर है। फलत: जातक का भाग्योदय 24 वर्ष की आयु मे हो जाएगा जातक की उन्नति, भाग्योदय थोड़े सघर्ष के बाद होगा। जातक प्रजावान होगा। सघर्ष के बाद विजय मिलेगी व जीवन सफल रहगा।
2. गुरु + सूर्य–जातक भाग्यशाली होगा। जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा।
3. गुरु + मंगल–जातक धनवान होगा। गृहस्थ सुख उत्तम होगा।
4. गुरु + बुध–जातक महाभाग्यवान होगा। मित्र व जनसम्पर्क से लाभ सभावित है।

5. **गुरु + शुक्र**–जातक का भाग्य पग-पग पर जातक का साथ देगा।
6. **गुरु + शनि**–जातक उच्च भवन का स्वामी होगा।
7. **गुरु + राहु**–जातक भाग्योदय में रुकावट महसूस करेगा पर अन्तिम सफलता निश्चित है।
8. **गुरु + केतु**–जातक का भाग्योदय कुछ विलम्ब से होगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में

तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहा दशम भाव में बृहस्पति कर्क राशि में होगा फलतः उच्च का होगा। कर्क राशि के अंशों में बृहस्पति परमोच्च का कहलाता है। बृहस्पति की इस स्थिति के कारण यहा 'हर्ष योग', 'केसरी योग' व 'कुलदीपक योग' क्रमशः उत्पन्न हुए। ऐसा जातक राजा, राजातुल्य ऐश्वर्य व सुखों को प्राप्त करता है। व्यक्ति को पैतृक सपत्ति उत्तम भवन एव नौकर-चाकर के सुख की प्राप्ति सहज मे ही हो जाती है। जातक समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा।

दृष्टि–दशमस्थ उच्च के बृहस्पति की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि), चतुर्थ भाव (मकर राशि) एव छठे भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक को माता का सुख, धन प्राप्ति का सुख एव रोग, ऋण व शत्रु को नाश करने का सुख मिलेगा।

निशानी–जातक विदेश जाकर ज्यादा सुखी होता है

दशा–बृहस्पति की दशा अन्तर्दशा में जातक को राजं ऐश्वर्य, भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के दशम स्थान मे यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चद्रमा स्वगृही एव बृहस्पति उच्च का होगा। 'किबहुना योग' के कारण यह इस योग की सर्वोत्तम स्थिति है। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम भाव पर है। फलतः धन की प्राप्ति 24 वर्ष की आयु से होनी शुरू हो जाएगी। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी मां का सुख मिलेगा एव जातक अपने शत्रुओं का नाश करने मे पूर्ण सक्षम होगा।

2. **गुरु + सूर्य**–जातक को राष्ट्रीय स्तर पर राजकीय सम्मान मिलेगा।
3. **गुरु + मंगल**–'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक पराक्रमी राजा जैसा जीवन जीएगा।
4. **गुरु + बुध**–जातक परम सौभाग्यशाली होगा।
5. **गुरु + शुक्र**–जातक को उच्च वाहन व पैतृक संपत्ति मिलेगी।
6. **गुरु + शनि**–जातक को माता की संपत्ति मिलेगी। वाहन भी मिलेगा।
7. **गुरु + राहु**–राज्य पक्ष से कष्ट पहुंचेगा।
8. **गुरु + केतु**–राजा से संकट का संदेश आएगा।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में

8	7	6 गु.
9	10	5
11	4	3
12	1	2
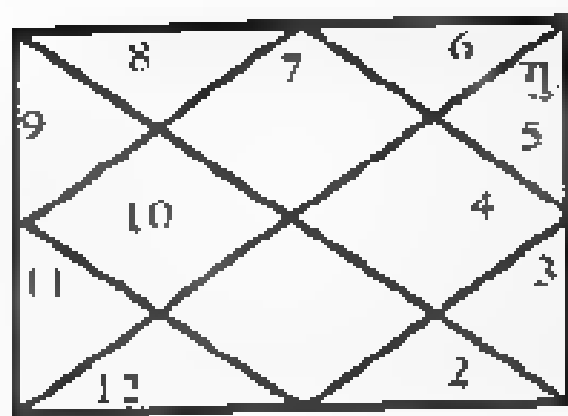
तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां एकादश भाव में बृहस्पति सिंह राशि में होगा जो इसकी मित्र राशि है। ऐसा जातक शत्रु से धन पाने वाला होता है। जातक साहसी एवं दूसरों की सेवा करने वाला परोपकारी व्यक्ति होता है। जातक प्रतिष्ठावान होता है।

दृष्टि–सिंहस्थ बृहस्पति की दृष्टि यहां तृतीय स्थान (धनु राशि), पंचम भाव (कुंभ राशि), एवं सप्तम भाव (मेष राशि) पर होगी, फलतः जातक पराक्रमी होगा। पर स्त्री व संतान सम्बन्धी कुछ कष्ट पाने वाला होता है।

निशानी–जातक संतान वृद्धि में रुकावट महसूस करेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु + चंद्र**–तुलालग्न के एकादश स्थान में यह युति वस्तुतः राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर यह दोनों शुभ ग्रह पराक्रम भाव, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का पराक्रम बढ़ेगा। उसे पुत्र सन्तति की प्राप्ति होगी। पत्नी सुंदर मिलेगी जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।
2. **गुरु + सूर्य**–राजकीय सम्मान मिलेगा। कुटुम्ब पक्ष मजबूत रहेगा।
3. **गुरु + मंगल**–धन की प्राप्ति होगी। व्यापार से लाभ होगा।
4. **गुरु + बुध**–भाग्य मजबूत रहेगा। मित्रों से लाभ होगा।

5. **गुरु + शुक्र**—जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ता रहेगा। बुजुर्गों की सलाह लाभप्रद रहेगी।
6. **गुरु + शनि**—जातक उद्योगपति होगा एवं उसे सभी सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी। पुत्र लाभ भी होगा।
7. **गुरु + राहु**—लाभांश में रुकावट है।
8. **गुरु + केतु**—लाभ प्राप्ति में बाधा आएगी।

तुलालग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में

8	7	गु 6
9		5
10		4
1		3
12	1	2
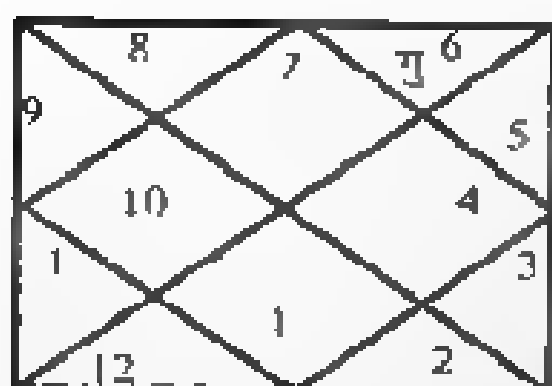
तुलालग्न में गुरु तृतीयेश एवं षष्ठेश होने से पाप फलदायक है। बृहस्पति तुलालग्न वालों के लिए द्वितीय मारकेश का काम करेगा एवं परम पापी है। यहां द्वादश भाव में बृहस्पति कन्या राशि में होगा जो इसकी शत्रु राशि है। बृहस्पति की यह स्थिति 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करती है। ऐसे जातक के मित्र एवं परिजन अविश्वसनीय होते हैं। जातक की मान-प्रतिष्ठा भंग हो सकती है। यहां षष्टेश का बारहवें स्थान पर होने से 'हर्ष योग' बना। इससे बृहस्पति का अशुभत्व समाप्त हो गया फलत: जातक धनी, मानी, सुखी एवं समाज का जाना पहचाना व्यक्ति होता है। जातक का जनसम्पर्क विस्तृत होता है।

दृष्टि—द्वादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि चतुर्थ भाव (मकर राशि), षष्टम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रु को नष्ट करने में सक्षम व समर्थ होता है।

निशानी—जातक व्यसन में रुपया खर्च करता है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु + चंद्र**—तुलालग्न के द्वादश स्थान में यह युति वस्तुत: राज्येश चंद्रमा की तृतीयेश+षष्ठेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। तथा 'पराक्रमभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' की सृष्टि भी करेंगे फलत: गजकेसरी योग की यहां ज्यादा सार्थकता नहीं है फिर भी सुख में वृद्धि होगी, शत्रुओं का नाश होगा तथा जातक का दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। जातक को संघर्ष के बाद सफलताएं मिलती रहेंगी। जो कि सफल जीवन के लिए बहुत जरूरी है।

2. **गुरु + सूर्य**-राजदण्ड की सम्भावना है।
3. **गुरु + मंगल**–धन की तकलीफ आएगी गृहस्थ सुख में बाधा होगी।
4. **गुरु + बुध**–भाग्योदय में रुकावट आएगी।
5. **गुरु + शुक्र**–परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
6. **गुरु + शनि**–शिक्षा में रुकावट, सन्तति में बाधा सम्भव है।
7. **गुरु + राहु**–राहु के कारण जातक चिन्ताग्रस्त रहेगा। नींद कम आएगी।
8. **गुरु + केतु**–केतु के कारण नींद कम आएगी

❏❏❏

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में
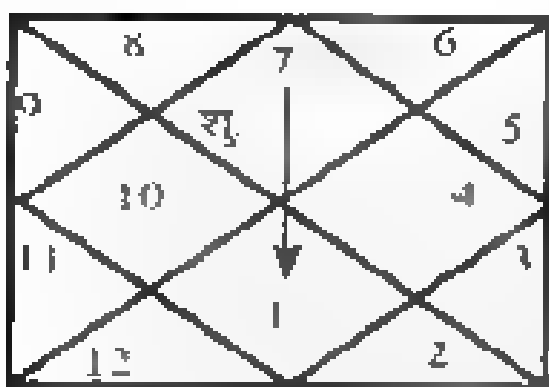
तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है, फलतः दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र यहां तुला राशि में स्वगृही होकर सप्तम भाव (मेष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। शुक्र यहां केन्द्र में होने से 'कुलदीपक योग' बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला यशस्वी होता है।

मालव्य योग–स्वगृही शुक्र लग्न में होने से यह योग बना। यह पंचमहापुरुष योगों में से उत्तम योग है। ऐसा जातक दूसरों को पालने वाला, सुंदर वाहन एवं चौपायों का स्वामी होता है। जातक अपने परिश्रम व पुरुषार्थ से दो मंजिला सुंदर भवन बनाता है। जातक कूटनीतिज्ञ होता है।

निशानी–'भोजसंहिता' के अनुसार जातक दिखने में कामदेव स्वरूप सुंदर धनी, मानी व अभिमानी होता है। सुंदर पत्नी व बच्चों का स्वामी होता है

विशेष–जातक अन्य स्त्रियों को अपनी ओर आकर्षित करने में शत-प्रतिशत सफल होता है यदि पत्नी के अलावा कोई अन्य स्त्री साथ हो तो जातक राजनीति एवं व्यापार के क्षेत्र में अद्वितीय सफलता प्राप्त करता है।

दिशा शुक्र की दशा में जातक का विशेष भाग्योदय होगा। शनि एवं बुध की दशाएं भी उत्तरोत्तर उत्तम फल देगी

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1 **किम्बहुना योग**–शुक्र + शनि की युति से यह योग बनेगा। यहां लग्नेश शुक्र स्वगृही एवं योगकारक शनि उच्च का होने से इससे अधिक और क्या? यह

योग बनेगा। जातक राजाओं का राजा एव अति पराक्रमी व्यक्ति होगा। यहा 'शश योग' एवं 'मालव्य योग' दोनो ही दिव्य योग स्वत: ही मुखरित हो रहे हैं। जातक के पराक्रम का उल्लघन कोई नहीं कर पाएगा। जातक बड़ी भू-सपत्ति का स्वामी होगा

2. **नीचभंग राजयोग**—शुक्र+सूर्य से यह युति बनेगी। सूर्य यहां नैसर्गिक रूप से पापी एव नीच का होकर अशुभ फल देने वाला है। परन्तु शुक्र के साथ होने से उसका अशुभत्व नष्ट हो जाएगा। जातक व्यापार व्यवसाय व नौकरी में लाभ प्राप्त करने में सक्षम होगा।
3. **शुक्र + मगल** यह युति चोट, दुर्घटना व भय उत्पन्न करेगी क्योंकि मंगल दो मारक स्थानों का स्वामी होकर मारकेश है
4. **शुक्र + बृहस्पति**—बृहस्पति यहा अशुभ फल देने वाला होकर व्यक्ति को रोग-ग्रसित करेगा।
5. **शुक्र + चंद्र**—जातक स्वय सुदर होगा, पत्नी भी सुदर होगी।
6. **शुक्र + बुध**—लग्नेश, भाग्येश की युति जातक को परम सौभाग्यशाली बना देगी।
7. **शुक्र + राहु**—जातक राजा होगा पर हठी व तुनक मिजाजी होगा।
8. **शुक्र + केतु**—जातक का मस्तिष्क चलायमान रहेगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में
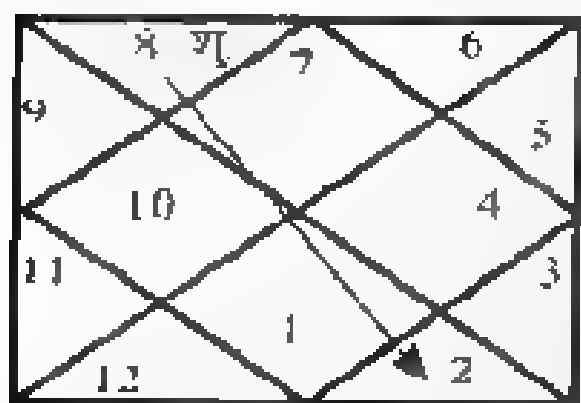
8 शु. 7		6
9	10	5 4
11	1	3
12		2

तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ साथ अष्टमेश भी है फलत: दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा शुक्र यहा द्वितीय स्थान मे वृश्चिक राशिगत होकर अष्टम भाव, अपने घर वृष राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा जातक धनी व्यक्ति होगा स्त्री व सतान से परिपूर्ण होकर जातक का भाग्योदय 32 वे वर्ष होगा। ऐसा जातक कामी होगा तथा शरीर की पुष्टि हेतु औषधियों का सेवन करेगा या व्यसनी होगा, सुख दु:ख की छाया जीवन मे आती रहेगी पर जातक ऐशो-आराम से परिपूर्ण जीवन सुख को भोगने की इच्छा से ग्रसित होगा।

निशानी—जातक प्रजावान होगा पर प्रथम सन्तति विलम्ब से होगी। साठ वर्ष की आयु में जातक गाव का मुखिया होगा।

दिशा—शुक्र की दशा में जातक धनवान होगा। जातक का भाग्योदय बुध या शनि की दशा में होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + मंगल**—यह युति अशुभ है क्योंकि मंगल दो मारक स्थानों का स्वामी होकर मुख्य मारकेश है तथा यहां स्वगृही होने से बलवान भी है। यह युति चोट, दुर्घटना एवं भय को जन्म देगी। यह युति यहां निष्फल है।
2. **शुक्र + चंद्र**—चंद्रमा तुलालग्न वालों के लिए अशुभ नहीं है परन्तु द्वितीय भाव में नीच राशिगत होने से जातक की वाणी दूषित एवं षड्यन्त्रकारी होगी। जातक का मन निष्कपट एवं स्वच्छ नहीं होगा।
3. **शुक्र + बुध**—लग्नेश, भाग्येश की युति जातक को धनवान बनाएगी।
4. **शुक्र + सूर्य**—लाभेश, लग्नेश की युति धन स्थान में व्यापार से लाभ दिलाएगी।
5. **शुक्र + गुरु**—पराक्रमेश, लग्नेश की युति मित्रों से लाभ देगी।
6. **शुक्र + शनि**—सुखेश, पंचमेश शनि की युति शुक्र से संतान द्वारा धन लाभ दिलाएगी।
7. **शुक्र + राहु**—धन के घड़े में छेद है खर्च अधिक होगा।
8. **शुक्र + केतु**—आर्थिक परेशानी रहेगी, पुरुषार्थ का अपव्यय होगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में
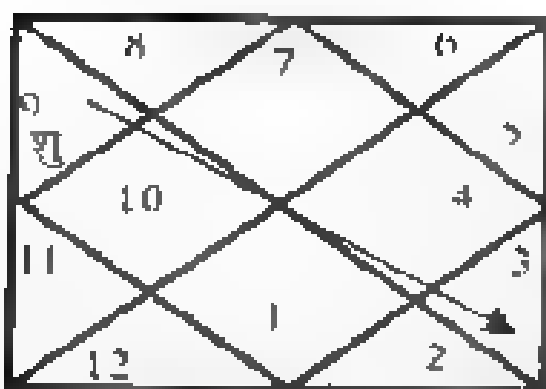
तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ साथ अष्टमेश भी है फलतः दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र यहां तृतीय स्थान में धनु राशि का होगा तथा भाग्य स्थान (नवम भाव, मिथुन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक पराक्रमी व लक्षाधिपति होते हुए भी दुःखी रहता है। जातक को पिता की संपत्ति (पैतृक धरोहर) मिलती है पर जो लाभ वास्तव में मिलना चाहिए, वो नहीं मिल पाएगा। जातक के अन्य स्त्रियों से भी गहरे सम्पर्क होंगे। आवक के जरिए दो-तीन प्रकार के होंगे।

निशानी—जातक के अन्य भाई बहन जरूर होंगे पर उनसे सम्बन्ध मधुर नहीं रहेंगे।

दिशा- शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + बृहस्पति**–बृहस्पति यहां स्वगृही होगा। जातक को बड़े भाई व बहनों का सुख मिलेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–बहनों का सुख अधिक होगा। जातक को स्त्री मित्रों से लाभ होगा।
3. **शुक्र + सूर्य**–बड़े भाई का सुख कम होगा। भाई-बहन दोनों का सुख मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–ससुराल पराक्रमी होगा।
5. **शुक्र + बुध**–मित्रों से भाग्योदय होगा।
6. **शुक्र + शनि**–पुत्र उत्पत्ति के बाद भाग्योदय होगा।
7. **शुक्र + राहु**–परिजनों से धोखा होगा।
8. **शुक्र + केतु**–मित्रों में अविश्वास रहेगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में
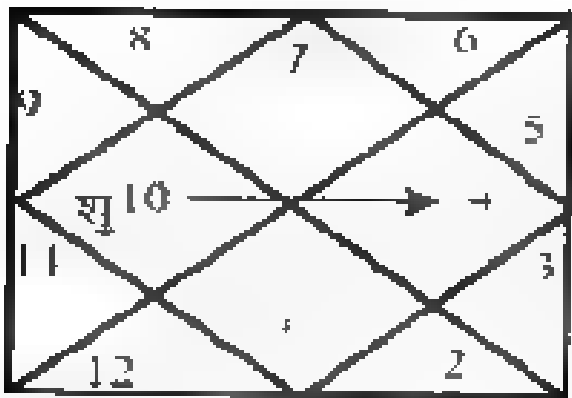
तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ साथ अष्टमेश भी है, फलतः एक दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र यहां चतुर्थ भाव में मकर राशि का होकर दशम भाव (कर्क राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। शुक्र यहां 'दिग्बली' एवं केन्द्रवर्ती होकर 'कुलदीपक योग' बना रहा है।

ऐसा जातक अपने परिवार व कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।

विशेष–जातक राजनीति व कूटनीति में रुचि रखने वाला। जातक माता-पिता की सेवा करने वाला, जमीन-जायदाद का स्वामी, वाहन एवं गृहस्थ सुख से सम्पन्न सुखी व्यक्ति होता है।

निशानी–जातक का अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रहेगा एवं राज में पाशा रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा श्रेष्ठ उन्नति दायक है। जबकि शनि की दशा भाग्योदय कराएगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + शनि** शनि के कारण 'शश योग' बनेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।
3. **शुक्र + मंगल**–यहा उच्च का मंगल होने के कारण 'रूचक योग' बनेगा। जातक सेनापति या राजा का मन्त्री होगा। वाहन सुख तेज रहेगा।
4. **शुक्र + सूर्य**–जातक का राजनीति में हस्तक्षेप रहेगा।
5. **शुक्र + गुरु**–बृहस्पति नीच का केन्द्रस्थ होने से जातक पराक्रमी एवं भौतिक ऐश्वर्य से परिपूर्ण होगा।
6. **शुक्र + बुध**–भाग्येश व लग्नेश की युति केन्द्र में सार्थक रहेगी। जातक भाग्यशाली होगा।
7. **शुक्र + राहु**–माता के सुख मे कमी रहेगी।
8. **शुक्र + केतु**–वाहन से दुर्घटना का भय रहेगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में
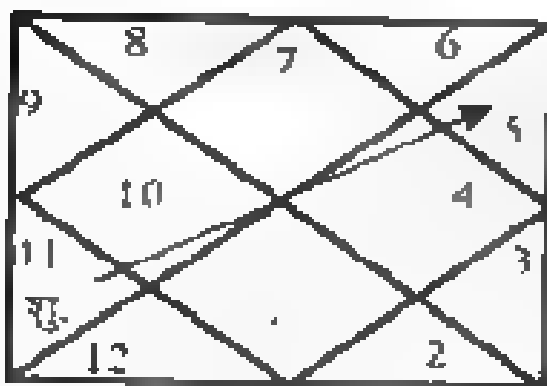
तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ साथ अष्टमेश भी है। फलतः एक दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहा अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र पचम स्थान मे कुंभ राशि का है तथा एकादश स्थान (सिह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। जातक की पत्नी उच्च घराने की होती है। ऐसा जातक चाल-चलन का पक्का, दृढ़ निश्चयी, अचानक लॉटरी, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, विद्या व्यसनी व सतान पक्ष से सुखी होता है। जातक को राजनीति में सफलता मिलती है

निशानी–यदि किसी पुरुष ग्रह की दृष्टि पचम भाव पर न हो तो जातक को कन्या सतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक सूफी धर्मात्मा होगा।

दिशा–शुक्र की दशा बहुत उत्तम फल देगी। शनि की दशा भाग्योदय कराएगी एव बुध की दशा अन्तर्दशा में विशेष उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + शनि**–शुक्र शनि की युति राजयोग कारक है। जातक को सुयोग्य पुत्र रत्नों की प्राप्ति होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगने वाला परम तेजस्वी

एवं यशस्वी जातक होता है।

2. **शुक्र + चंद्र**—जातक को कन्या संतति अधिक होगी। यदि यहा पर शनि, मगल छठे, आठवें या बारहवे हो तो जातक के संतान नहीं होती।
3. **शुक्र + सूर्य**—जातक की पुत्र+कन्या दोनों सतति होंगी।
4. **शुक्र + बुध**—जातक को कन्या सतति अधिक होगी।
5. **शुक्र + मंगल**—जातक को पुत्र+कन्या दोनों संतति होगी।
6. **शुक्र + गुरु**—जातक को मित्रों से लाभ होगा।
7. **शुक्र + राहु**—सतति में बाधा, खासकर पुत्र संतति में बाधा रहेगी।
8. **शुक्र + केतु**—विद्या में रुकावट एव एक दो गर्भपात सम्भव है।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति षष्ट्म स्थान में
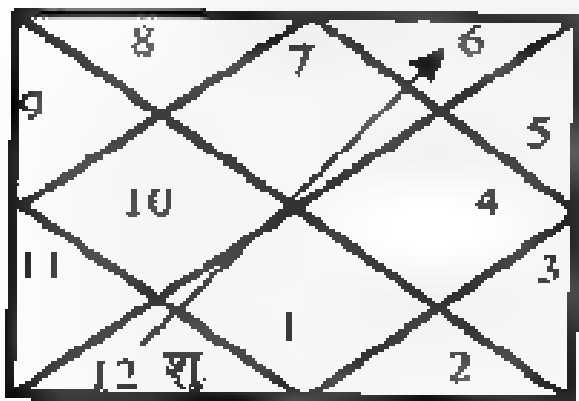
तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है। फलतः दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है, परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नही लगेगा फलतः शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र यहां षष्ट्म स्थान मे उच्च राशि (मीन) का है तथा उसकी दृष्टि द्वादश स्थान (कन्या) राशि पर है। ऐसा जातक शत्रुओं का मान-मर्दन करने में पूर्ण सक्षम होता है। जातक महत्त्वाकांक्षी होता है।

लग्नभंग योग—लग्नेश छठे होने से यह योग बना। जातक को किए गए प्रयत्न व परिश्रम का पूरा फल नहीं मिलता

निशानी—जातक की लड़किया अधिक होंगी व स्त्री को नगे पाव रहने की आदत होगी।

दिशा—शुक्र की दशा कष्टपूर्ण होगी व मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + बृहस्पति**—शुक्र, बृहस्पति की युति से 'किम्बहुना योग' बनेगा। शुक्र उच्च का व बृहस्पति स्वगृही, इससे अधिक और क्या हो? जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा.
2. **शुक्र + चंद्र**—जातक को राज्यपक्ष से नुकसान पहुंचेगा।
3. **शुक्र + बुध**—शुक्र, बुध की युति से यहा 'नीचभग राजयोग' की सृष्टि होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा

4. **शुक्र + सूर्य**—जातक को व्यापार में नुकसान होगा।
5. **शुक्र + मंगल**—मगल 'धनहीन योग' बनाएगा। जातक का गृहस्थ जीवन कष्टमय रहेगा।
6. **शुक्र + शनि**—जातक को विद्या में बाधा पहुचेगी भौतिक सुखो की उपलब्धि भी कष्टपूर्ण रहेगी।
7. **शुक्र + राहु**—गुप्त शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।
8. **शुक्र + केतु**-जातक को गुप्तेन्द्री मे रोग होगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
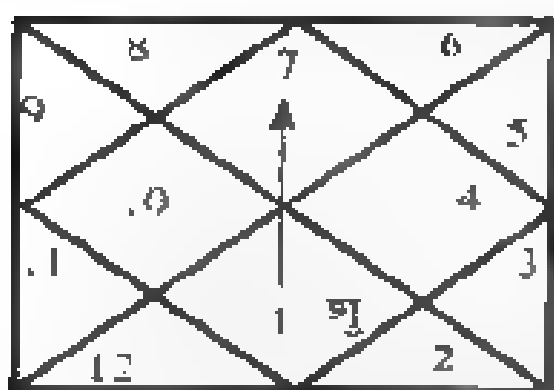
8	7	6
9		5
10		4
11		3
12	1 शु	2

तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है। फलत: एक दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहा अशुभ फल नहीं देगा। सप्तम भाव में स्थित शुक्र मेष (शत्रु) राशि में स्थित होकर अपने ही घर तुला राशि को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक सुदर स्त्री वाला एव कामुक प्रवृत्ति का जातक होता है। ससुराल व स्त्री से धन लाभ होने पर भी दोनों स्थानों से असन्तुष्ट रहता है।

कुलदीपक योग—शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला सबका चहेता व प्यारा होता है।

निशानी—स्त्री प्राय: रोगी रहती है। शरीर मे गुप्तरोग रहता है।

दिशा—शुक्र की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **शुक्र + मंगल**—की युति के कारण जातक के विरोधी बहुत होते है। जातक को गुप्तरोग एवं दुर्घटना का भय रहेगा।
2. **शुक्र + चंद्र**-जातक का जीवन साथी सुदर होगा। पत्नी धन की देवी होगी।
3. **शुक्र + सूर्य**—जातक को व्यापार में मुनाफा होगा।
4. **शुक्र + बुध**—लग्नेश, भाग्येश की युति जातक को सौभाग्यशाली बनाएगी।
5. **शुक्र + गुरु**—तृतीयेश+लग्नेश की युति से जातक को मित्रों से लाभ होगा।

6. **शुक्र + शनि**–सुखेश शनि यहां नीच का होगा। उसकी दृष्टि उच्च की होगी तथा जातक खूब धनवान होगा।
7. **शुक्र + राहु**–जातक का गृहस्थ जीवन दु:खमय होगा
8. **शुक्र + केतु**–जातक का गृहस्थ जीवन विषैला होगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में
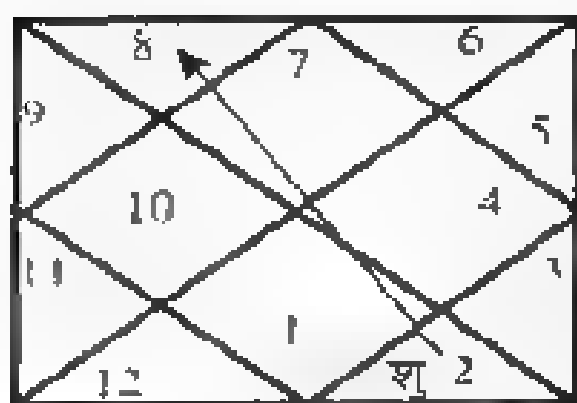
तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है फलत: दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र अष्टम भाव में स्थित होने से स्वगृही तुला राशि का होगा एवं द्वितीय भाव (वृश्चिक राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसे जातक की स्त्री की जबान का शब्द पत्थर की लकीर होगा। विवाह 25 वर्ष की आयु के बाद होगा विवाह के बाद किस्मत चमकेगी।

सरलयोग–अष्टमेश अष्टम स्थान में स्वगृही होने से यह योग बना। जातक को शत्रु का अशुभ फल न मिलकर, शुभफल ही मिलेगा।

निशानी–अशुभ वचन जो अनायास मुंह से निकलेंगे, सच हो जाएंगे

दिशा–शुक्र की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + चंद्र**–राज्यपक्ष से दण्ड मिल सकता है, पर चंद्रमा की वजह से 'किम्बहुना योग' बनेगा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होगा।
2. **शुक्र + सूर्य**–व्यापार में परेशानी, जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा
3. **शुक्र + मंगल**–धन की परेशानी रहेगी गृहस्थ जीवन कष्टमय होगा।
4. **शुक्र + बुध**–बुध के कारण 'भाग्यभंग योग' बनेगा। जातक भाग्यहीन होगा।
5. **शुक्र + गुरु**–गुरु के कारण 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। मित्रों से यश नहीं मिलेगा।
6. **शुक्र + शनि**–शनि के कारण 'सुखभंग योग' व 'संतानहीन योग' बनेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा
7. **शुक्र + राहु**–राहु आयु में हानि करेगा व गुप्त बीमारी देगा।

8. **शुक्र + केतु**–केतु भी यहा कष्ट दायक है। जातक के जीवन मे दो बार ऑपरेशन होगें।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में
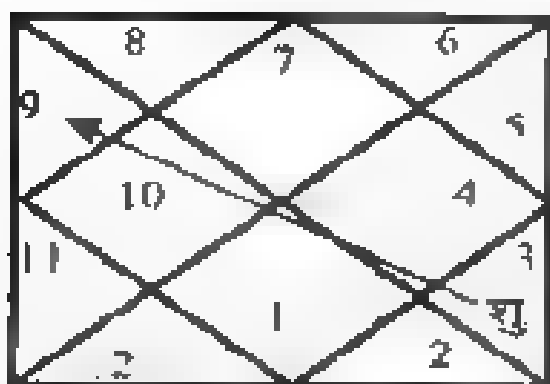
तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ साथ अष्टमेश भी है फलतः एक दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहा अशुभ फल नहीं देगा शुक्र भाग्य (नवम) स्थान में मिथुन राशि का मित्र क्षेत्र में है तथा तृतीय भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक का जन्म, माता-पिता एव दादा-दादी के लिए शुभ होता है। जातक राजनीति में निर्विघ्न सफलता प्राप्त करता है। जातक देशाटन करने वाला जनता का सेवक, समाज में प्रतिष्ठित एव पूर्ण यशस्वी व्यक्ति होता है।

दिशा–शुक्र की दशा अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + बुध**–बुध यहा स्वगृही होने स जातक को राजा तुल्य ऐश्वर्य एवं धनवान बनाएगा।
2. **शुक्र + सूर्य**–लाभेश व लग्नेश की युति भाग्य में वृद्धि करेगी।
3. **शुक्र + चद्र**–चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। फिर भी जातक को राज्य से सम्मान मिलेगा।
4. **शुक्र + मंगल**–जातक धनवान व भाग्यशाली होगा
5. **शुक्र + गुरु**–गुरु के कारण जातक को भाईयों का सुख मिलेगा।
6. **शुक्र + शनि**–जातक बड़ी जमीन-जायदाद का स्वामी होगा।
7. **शुक्र + राहु**–जातक के भाग्य द्वार में रुकावट होगी।
8. **शुक्र + केतु**–भाग्योदय हेतु जातक को काफी कष्ट उठाने पड़ेगे।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

तुलालग्न मे शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है, फलतः दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहा अशुभ फल नहीं देगा दशम स्थान मे कर्क राशिगत शुक्र
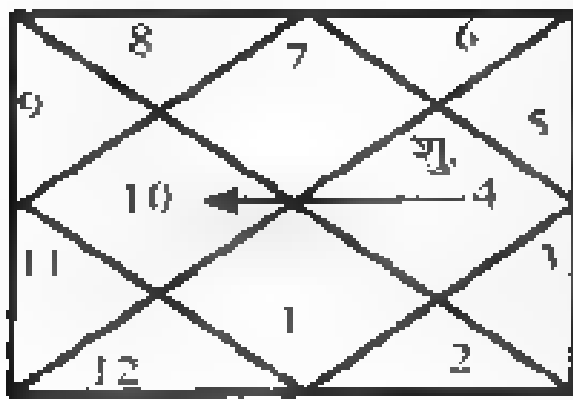
चतुर्थ भाव (मकर राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। शुक्र की यह स्थिति अत्यन्त शुभ फलदायी है। ऐसा जातक इंसाफ तोलने वाला, न्यायप्रिय, चतुर वक्ता, राजमंत्री अथवा प्रसिद्ध जनसेवक होता है। ऐसा जातक जमीन जायदाद भूमि से लाभ प्राप्त करने वाला, सुंदर मकान व नौकर-चाकर से युक्त होता है।

कुलदीपक योग—शुक्र केन्द्र में होने से यह योग बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करने वाला, सबका चहेता व प्यारा होता है।

दिशा—शुक्र की दशा-अन्तर्दशा में राजकीय सम्मान व यश मिलेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र + चंद्र**—यहां 'यामिनीनाथ योग' के कारण जातक राजातुल्य शक्तिशाली होगा।
2. **शुक्र + सूर्य**—सूर्य की युति से व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।
3. **शुक्र + मंगल**—मंगल धन दौलत को बढ़ाएगा।
4. **शुक्र + बुध**—बुध की युति राज्य में पद दिलाएगी।
5. **शुक्र + गुरु**—गुरु यहां उच्च का होकर 'हंसयोग' बनाएगा। जातक राजा या राजा से कम नहीं होगा।
6. **शुक्र + शनि**—शनि की युति भूमि एवं वाहन सुख की दृष्टि करेगी।
7. **शुक्र + राहु**—राजपक्ष से हानि, पिता से विवाद रहेगा।
8. **शुक्र + केतु**—व्यापार में कष्ट, पिता से मनमुटाव रहेगा।

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में
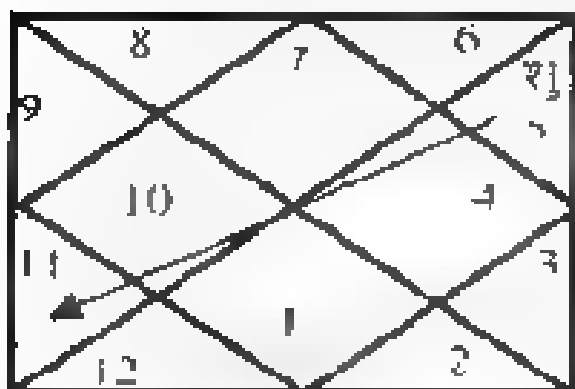
तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ-साथ अष्टमेश भी है फलतः दुःस्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलतः शुक्र यहां अशुभ फल नहीं देगा। शुक्र एकादश स्थान में शत्रुक्षेत्री सिंह राशि का होकर पंचम भाव (कुंभ राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। ऐसा जातक राजनीति, कूटनीति एवं युद्धनीति का ज्ञाता होता है। जातक

सुदर एव सुयोग्य सतति का स्वामी होता है। जातक ज्योतिष, तन्त्र मन्त्र एव अध्यातम विद्या का ज्ञाता होता है। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक सुशील कीर्तिवान व यशस्वी होगा।

निशानी–स्त्री के प्राय: तीन भाई होते है। जातक को कन्या सतति की बाहुल्यता रहती है

दिशा–शुक्र की दशा-अन्तर्दशा व्यापार म लाभ देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + सूर्य**–यहा शुक्र शत्रुक्षेत्री पर सूर्य स्वगृही है। जातक को सरकारी ठेके से लाभ होगा।
2. **शुक्र + चंद्र**–जातक को राज्यपक्ष से लाभ होगा।
3. **शुक्र + शनि**–यहा पर दोनो ग्रह शत्रक्षेत्री हैं। फलत: लाभ प्राप्ति में विवाद रहेगा।
4. **शुक्र + मगल**–मगल की युति स जातक व्यापार स धन कमाएगा।
5. **शुक्र + बुध**–बुध की युति सौभाग्य को बढ़ाएगी।
6. **शुक्र + गुरु**–गुरु की युति ज्यादा ठीक नहीं।
7. **शुक्र + राहु**–राहु लाभाश में कटौती करेगा।
8. **शुक्र + केतु**–केतु की यहा उपस्थिति से लाभाश का प्रतिशत घट जाएगा

तुलालग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में
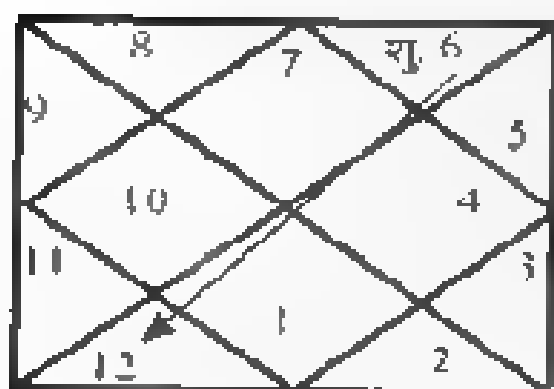
8 7 शु. 6 9 5 10 4 11 3 1 12 2

तुलालग्न में शुक्र लग्नेश होने के साथ साथ अष्टमेश भी है फलत: दु:स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदाता है। परन्तु लग्नेश को अष्टमेश का दोष नहीं लगेगा फलत: शुक्र यहा अशुभ फल नही देगा। लग्नेश द्वादश भाव में स्थित होने से इस कुण्डली के योगकारक ग्रह बुध की राशि मे होते हुए भी नीच का होता है। कन्या राशि में स्थित शुक्र यहा स्वगृहाभिलाषी होता हुआ छठे स्थान (मीन राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक सभी प्रकार की सुख-सुविधा व ऐश्वर्य को भोगने वाला होकर राजनीति मे अत्यधिक रुचि लेगा, पर राजनीति में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

यदि सप्तमेश मंगल की स्थिति अच्छी न हो तो जातक के 'द्विभार्या योग' बनता है। जातक कामुक एवं प्रतिपल स्त्री सहवास की कामना रखने वाला अन्य स्त्रियों में भी ज्यादा रुचि लेता है।

निशानी–ऐसे जातक की स्त्री की सेहत खराब रहती है एवं प्रथम संतति कन्या होती है

द्वादशशुक्र योग–जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र + बुध**–बुध उच्च का, शुक्र नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। ऐसे में दोनों ग्रह राजयोग कारक स्थिति बनाएंगे। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य, वैभव एवं संपत्ति को भोगेगा।
2. **शुक्र + मंगल**–मंगल की युति 'धनहीन योग' बनाएगी। गृहस्थ सुख में कमी रहेगी
3. **शुक्र + सूर्य**–सूर्य के कारण व्यापार में हानि होगी
4. **शुक्र + शनि**–सुख में कमी विद्या में बाधा आएगी।
5. **शुक्र + चंद्र**–चंद्रमा की युति राज्यसुख, पिता के सुख में बाधक है।
6. **शुक्र + गुरु**–गुरु भाईयों के सुख में बाधक है
7. **शुक्र + राहु**–राहु यात्राएं कराएगा नींद में बाधक है।
8. **शुक्र + केतु**–केतु जातक को दुःस्वप्न देगा

❑❑❑

तुलालग्न में शनि की स्थिति

तुलालग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
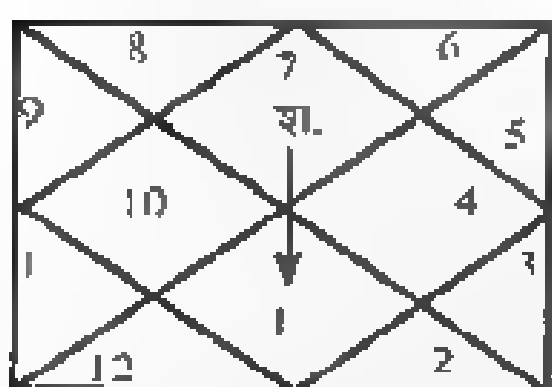
तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां लग्नस्थ शनि तुला मे होगा। तुला राशि में शनि उच्च का होता है। फलत: 'शश योग' की सृष्टि होगी। जातक राजा या राजा का मंत्री होगा। जातक अपने आप मे पूर्ण सक्षम व समर्थ व्यक्ति होता है।

दृष्टि—लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम भाव (धनु राशि) सप्तम भाव (मेष राशि) एवं दशम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक महान पराक्रमी होगा। पत्नी का सुख एवं राज्य सरकार में जातक का अच्छा दबदबा (प्रभाव) रहेगा।

निशानी—जातक पुत्रवान होगा तथा मातृपक्ष से सुखी होगा।

दशा—शनि की दशा अन्तर्दशा में जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। वाहन सुख व संतति सुख मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा।
2. **शनि + चंद्र**—जातक की पत्नी सुंदर एवं लक्ष्मी स्वरूप होगी।
3. **शनि + मंगल**—जातक अति धनवान होगा पर लड़ाकू होगा।
4. **शनि + बुध**—जातक परम भाग्यशाली एवं धनवान होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—जातक समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
6. **शनि + शुक्र**—यहां 'किम्बहुना योग' बनेगा। इससे अधिक और क्या? जातक

निश्चय ही राजा होगा। राजपुरुष होगा। यहां 'मालव्य योग' व 'शश योग' की संयुक्त सृष्टि होगी।

7. **शनि + राहु**—जातक हठी व जिद्दी नेता होगा। अपना नुकसान खुद करेगा।
8. **शनि + केतु**—जातक जिद्दी होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में

8 श. 7 6 9 5 10 4 11 3 12 2
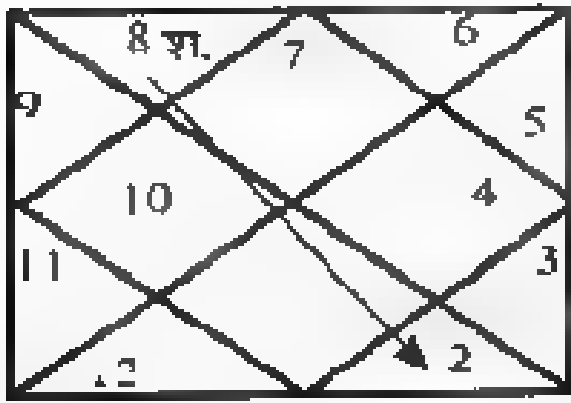
तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां द्वितीय स्थान में शनि वृश्चिक राशि का होगा। यह शनि की शत्रु राशि है। फिर भी जातक धन, मकान, भूमि, विद्या बुद्धि स्त्री व संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक को पुत्र संतति होगी तथा पुत्र द्वारा धन लाभ भी होगा। जातक के आवक के जरिए मायावी (गुप्त) होंगे।

दृष्टि—द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि सुख स्थान (मकर राशि), अष्टम स्थान (वृष राशि) एवं लाभ स्थान (सिंह राशि) पर होगी, फलत: जातक की आयु लंबी होगी। उसे वाहन का सुख मिलेगा। व्यापार में यथेष्ट धन लाभ होगा।

निशानी—जातक को परिश्रम के अनुसार फल मिलेगा।

दशा—शनि की दशा अन्तर्दशा में धन, ऐश्वर्य सुख-संपत्ति एवं उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + चंद्र**—जातक की वाणी कड़वी, जहरीली होगी।
2. **शनि + सूर्य**—जातक की वाणी में विरोधाभास होगा।
3. **शनि + मंगल**—शनि के साथ मंगल हो तो जातक हकला कर बोलेगा पर बलवान धने की सुखेश पंचमेश के साथ होने पर 'मातृमूल धनयोग' एवं 'पुत्रमूल धनयोग' के कारण पुत्र से, माता से एवं भूमि से जातक को धन मिलेगा।
4. **शनि + बुध**—जातक सौभाग्यशाली व कूटनीतिज्ञ होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—जातक की वाणी में विद्वत्ता, गम्भीरता होगी।

6. **शनि + शुक्र**–जातक धनवान होगा। परिश्रम का मीठा फल मिलेगा।
7. **शनि + राहु**–जातक की वाणी कर्कश होगी फलत: धन का नुकसान होगा।
8. **शनि + केतु**–जातक की वाणी में प्रतिशोध होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में

8	7	6
9 श		5
10		4
11	1	3
12		2
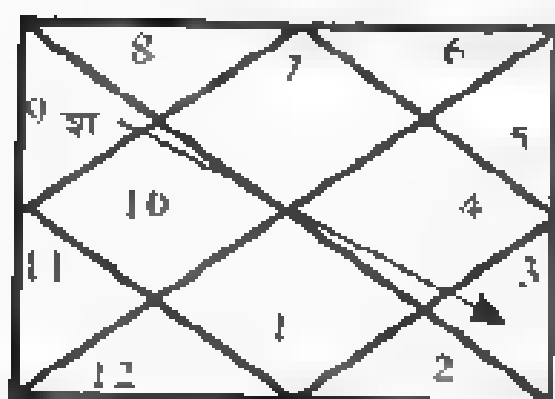
तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहा तृतीयस्थ शनि धनु राशि में होगा। यहा शनि आध्यात्मिक ग्रह का चरित्र धारण करेगा। ऐसा जातक धार्मिक होगा एवं सहोदरों का प्रिय होगा। ऐसा जातक पराक्रमी, नौकरों से युक्त, अच्छे मित्रों वाला, सम्पन्न व सुखी होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पचम भाव अपने स्वयं के घर (कुंभ राशि), भाग्य भवन (मिथुन राशि), एवं व्यय भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक को पुत्र से लाभ मिलेगा। जातक विद्यावान व अनुभवी होगा। जातक का भाग्य सदैव जातक का साथ देगा। जातक का रुपया शुभ कार्यों में खर्च होगा।

निशानी–जातक के छोटे भाई का नाश होता है। पाराशर ऋषि भी इस बात का समर्थन करते हैं–"अग्रेजान रविर्हन्ति, पृष्ठे जात शनैश्चर:"।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक को भौतिक एवं आध्यात्मिक सुखों की प्राप्ति होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + सूर्य**–जातक को छोटे बड़े दोनों भाईयों का नुकसान होगा।
2. **शनि + चंद्र**–जातक को भाई-बहनो का सुख मिलेगा।
3. **शनि + मगल**–जातक को भाईयो का सुख मिलेगा पर मन नहीं मिलेगा।
4. **शनि + बुध**–जातक को बहन अधिक होंगी।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक को बड़े भाई का सुख रहेगा।
6. **शनि + शुक्र**–जातक के पुरुषार्थ से पराक्रम बढ़ेगा।
7. **शनि + राहु**–जातक के परिजनों में प्रेम नहीं होगा।
8. **शनि + केतु**–जातक के परिजनो में अविश्वास अधिक होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में
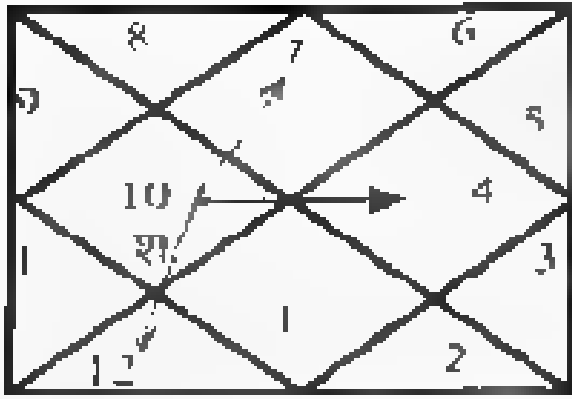
तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है यहा चतुर्थ भाव में शनि मकर राशि का होकर स्वगृही होगा एव कुण्डली में 'शश योग' का निर्माण करेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी, साहसी व धनवान होता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ शनि की दृष्टि छठे भाव (मीन राशि) राज्य भाव (कर्क राशि) एव लग्न स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक रोग व शत्रुओं का नाश करने मे समर्थ होता है। जातक राजनीति में प्रवीण होगा एव उन्नति पथ की ओर बढ़ता रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा मे जातक सभी प्रकार के सुखो को प्राप्त करेगा। जातक को सतति की प्राप्ति होगी। ज्ञानार्जन मे विशेष वृद्धि होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चद्र**–जातक को माता का सुख मिलेगा।
2. **शनि + सूर्य**–जातक का भाग्योदय पिता की मृत्यु से होगा।
3. **शनि + मगल**–यदि मगल साथ हो तो 'किम्बहुना योग' नामक 'राजयोग' बनेगा। इससे अधिक और क्या जातक निश्चय ही राजपुरुष होगा।
4. **शनि + बुध**–जातक के पास अनेक वाहन एव मकान होंगे।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक के अनेक नौकर होंगे पर मित्रवत् होंगे।
6. **शनि + शुक्र**–यहा शुक्र की युति 'कुलदीपक योग' के साथ राजयोग प्रदाता है।
7. **शनि + राहु**–जातक की माता बीमार रहेगी। हृदय रोग संभव है।
8. **शनि + केतु**–जातक की माता को अस्थमा होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में

तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहा पचमस्थ शनि कुभ राशि मे होगा कुंभ शनि की मूलत्रिकोण राशि है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है तथा
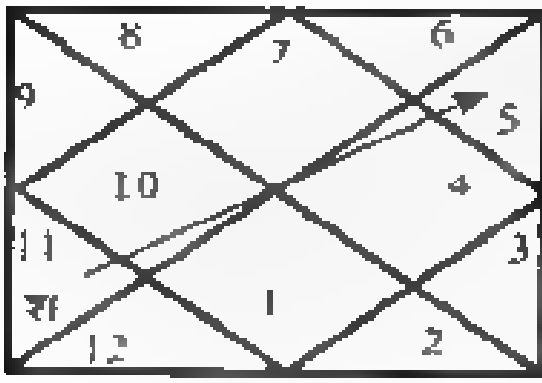
राजनीति में भाग लेकर उच्च पद को प्राप्त करता है। जातक विद्या, स्त्री-पुत्र, धन इत्यादि सुखों से परिपूर्ण गृहस्थ सुख को भोगता है।

दृष्टि—पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (मेष राशि), लाभ स्थान (सिंह राशि) एवं धन स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी।

निशानी—जातक के प्राय: पांच पुत्र होते हैं।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + सूर्य**—पुत्र जरूर होगा। व्यापार में लाभ होगा।
2. **शनि + चंद्र**—पुत्र-पुत्री दोनों होंगे। दो कन्या जरूर होगी।
3. **शनि + मंगल**—जातक को तीन या पांच पुत्र जरूर होंगे।
4. **शनि + बुध**—जातक को पुत्र-पुत्री दोनों का लाभ होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—जातक के पांच पुत्र होते हैं।
6. **शनि + शुक्र**—जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।
7. **शनि + राहु**—जातक के पुत्र संतति में बाधा आएगी।
8. **शनि + केतु**—जातक के पुत्र संतति विलम्ब से होगी।

तुलालग्न में शनि की स्थिति षष्ठम स्थान में
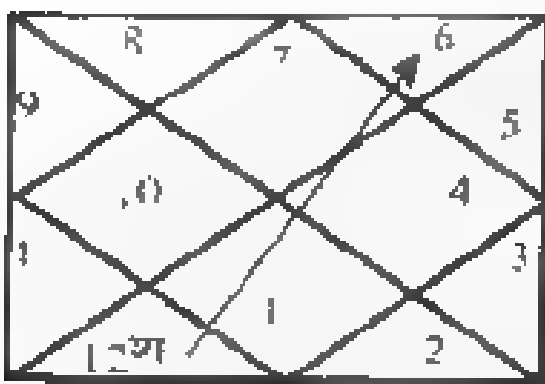
तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है यहां छठे भाव में शनि मीन राशि में होगा। मीन राशि शनि की सम राशि है ऐसा जातक भौतिक सुख समृद्धि एवं भौतिक उन्नति की प्राप्ति में विश्वास रखते हैं। शनि के छठे जाने से 'सुखभंग योग' एवं 'संततिहीन योग' की सृष्टि हुई है। जातक कानून व गूढ़ शास्त्रों का ज्ञाता होगा। परन्तु भौतिक सुखों व उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि—छठे भावगत शनि की दृष्टि अष्टम स्थान (वृष राशि), व्यय भाव (कन्या राशि) एवं पराक्रम भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक ऋण, रोग व शत्रु से बाधित रहेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी—ऐसा जातक माता के सुख से हीन अथवा दत्तक पुत्र वाला होता है।

दशा—शनि की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + चंद्र**—राज्यपक्ष में विरोध मिलेगा। मुकदमे हारेंगे।
2. **शनि + सूर्य**—सरकारी दण्ड मिलेगा।
3. **शनि + मंगल**—भृगुसूत्र के अनुसार 'कुजयुतें देशान्तर संचारी' जातक विदेश में जाकर धन कमाएगा।
4. **शनि + बुध**—'भाग्यभंग योग' के कारण भाग्योदय में अनेक बाधाएं आएंगी।
5. **शनि + बृहस्पति**—हर्ष योग के कारण जातक पराक्रमी होगा।
6. **शनि + शुक्र**—जातक के उत्साह में कमी रहेगी।
7. **शनि + राहु**—शत्रु परेशान करेंगे पर जातक शत्रुओं को नष्ट करने में समर्थ होगा।
8. **शनि + केतु**—गुप्त शत्रु होंगे।

तुलालग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में

8	7	6
9		5
10		4
11	श.	3
12		2
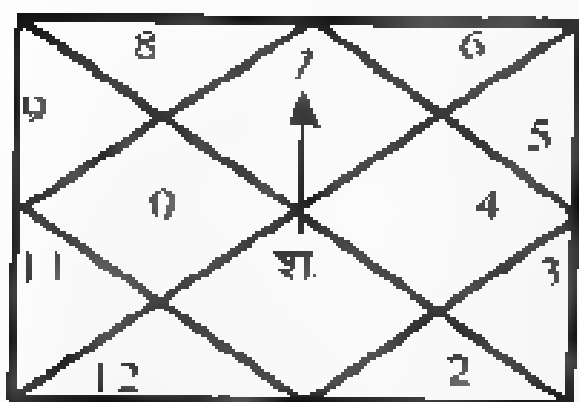
तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां सप्तम स्थान में शनि मेष राशि में होगा। जो कि शनि की नीच राशि है यहां शनि व 20 अंशों में परम नीच का होगा। ऐसे जातक की शिक्षा पूर्ण नहीं होती। पाराशर ऋषि कहते है-''सभाया मूकवद भवेत्'' कि जातक सभा में गूंगा हो जाता है जो बात जहां कहनी चाहिए, कह नहीं पाता जातक परोपकारी होता है पर जीवनसाथी से विचार कम मिलते है। गृहस्थ सुख में खटपट होती रहती है।

दृष्टि—सप्तमस्थ नीच के शनि की दृष्टि भाग्य भवन (मिथुन राशि), लग्न स्थान (तुला राशि) एवं चतुर्थ भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक उत्तम वाहन वाला, अच्छे व्यक्तित्व व प्रभाव वाला भाग्यशाली जातक होगा।

निशानी—जातक प्रेम या अन्तर्जातीय विवाह के लिए उत्सुक रहता है तथा अपने जीवन साथी से असंतुष्ट रहता है।

दशा—शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक की पत्नी सुदर होगी पर क्रोधी स्वभाव की होगी।
2. **शनि + सूर्य**–'नीचभंग राजयोग' के कारण जातक राजपुरुष होगा। पराक्रमी होगा
3. **शनि + मंगल**–मगल की युति से 'नीचभग राजयोग' बनेगा। जातक स्त्री की योनि 'गुप्तांगों' का चुम्बन करता है.
4. **शनि + बुध**–जातक बौद्धिक क्षमता से धनार्जन करेगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक को मित्रों व परिजनों से लाभ होगा।
6. **शनि + शुक्र**–शास्त्रकार कहते हैं ''शुक्रयुते भग चुम्बन पर:'' शनि के साथ शुक्र होने पर जातक अत्यधिक कामी होकर भग चुम्बन करता है
7. **शनि + राहु**–गृहस्थ सुख में अहम् का टकराव रहेगा.
8. **शनि + केतु**–भृगुसूत्र के अनुसार "केतुयुते स्त्री सम्भोगी" जातक अन्य स्त्रियों के सपर्क में रहता है।

तुलालग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

8, 7, 6, 9, 5, 10, 4, 1, 3, 12, 1, श 2
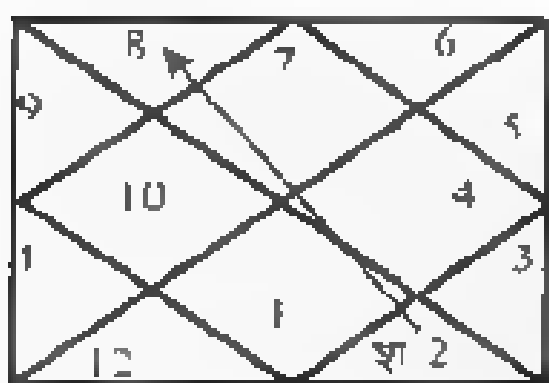
तुलालग्न मे शनि चतुर्थेश व पचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहा अष्टमस्थ शनि वृष राशि मे होगा जो कि शनि की मित्र राशि है। शनि की इस स्थिति से 'सुखहीन योग' एव 'सततिहीन योग' की सृष्टि होती है। ऐसा जातक दीर्घायु को प्राप्त तो करता है परतु अच्छे मकान, अच्छे वाहन, अच्छी शिक्षा की प्राप्ति हेतु जीवन भर सघर्ष करता रहता है। पर सघर्ष के बाद अन्तिम सफलता निश्चित है। जातक प्राय: क्रोधी अथवा नपुसक होता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ शनि की दृष्टि राज्य भाव (कर्क राशि), धन भाव (वृश्चिक राशि) एव पचम भाव स्वय की (कुभ राशि) राशि पर होगी। फलत. जातक राजनीति में सिद्ध हस्त होगा। जातक धनवान होगा एवं पुत्रवान भी होगा।

निशानी–जातक की पीठ पीछे जातक की बहुत बुराई होगी।

दशा–शनि की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फल, शुभ अशुभ दोनों परिणाम देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. शनि + चंद्र–चद्रमा उच्च का होते हुए भी राजा से भय मिलेगा।

2. **शनि + सूर्य**–राजदण्ड की सम्भावना प्रबल है।
3. **शनि + मंगल**–धन की हानि, गृहस्थ सुख मे बाधा रहेगी।
4. **शनि + बुध**–'भाग्यभंग योग' के कारण भाग्योदय में रुकावटें आएगी। जातक भौतिक सुखो की प्राप्ति हेतु तरसेगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक को भाईयों से विरोध मिलेगा।
6. **शनि + शुक्र**–'लग्नभंग योग' के कारण उत्साह में कमी रहेगी। वीर्य दूषित होगा।
7. **शनि + राहु**–गुप्त बीमारी होगी। बीमारी स्थाई होगी।
8. **शनि + केतु**–हल्की दुर्घटना का भय रहेगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में
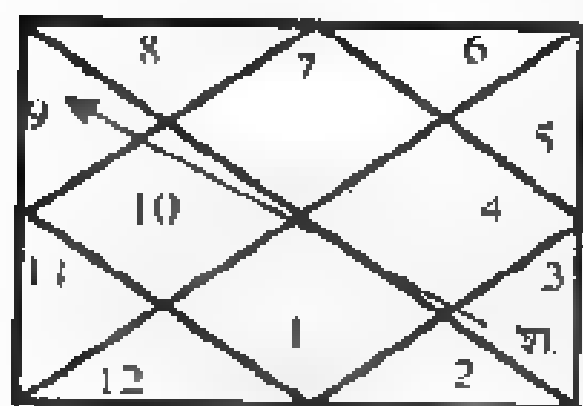
तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहा नवम स्थान में शनि मिथुन राशि मे होगा। यह इसकी मित्र राशि है शनि की यह स्थिति राजयोग प्रदायक है। जातक किस्मत वाला होता है, परिवार की तरक्की करने वाला होता है। जातक को विद्या, बुद्धि, स्त्री सुख, संतान सुख की प्राप्ति सहज में ही हो जाती है। जातक को व्यापार, व्यवसाय, ठेकेदारी के कार्य में लाभ होगा।

दृष्टि–नवम भावगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (सिंह राशि), तृतीय भाव (धनु राशि) एवं छठे स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा। मित्रों से लाभ पाने वाला, रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ एवं व्यापार (ठेकेदारी) से धन प्राप्त करता है।

निशानी–ऐसे जातक का पुत्र राजातुल्य पराक्रमी होता है।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा मे जातक का भाग्योदय होता है। उसे सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक राज्यपक्ष में अति प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
2. **शनि + सूर्य**–सरकारी क्षेत्र मे सम्मान मिलेगा।

3. **शनि + मगल**–धन की प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासो मे सफलता तथा भूमि लाभ मिलेगा।
4. **शनि + बुध**–जीवन के 34वें वर्ष मे कोई बड़ा धार्मिक कार्य हाथ में होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–परिजनो इष्टमित्रों से लाभ सभव है।
6. **शनि + शुक्र**–जातक भाग्यशाली होगा भाग्य पग-पग पर मदद करेगा।
7. **शनि + राहु**–भाग्योदय में विलम्ब पर सफलता सुनिश्चित है।
8. **शनि + केतु**–विलम्ब से भाग्योदय होगा।

तुलालग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में

8	7	6
9		5
10 ←	श	4
11		3
12	1	2
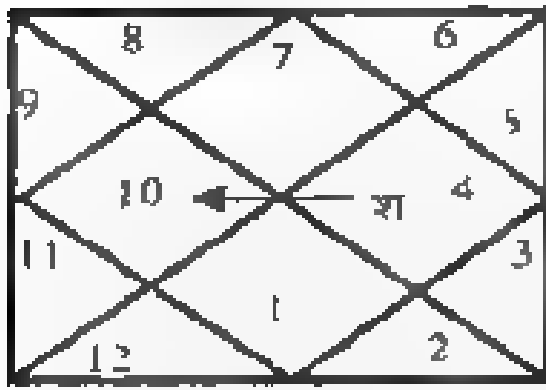
तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहां दशम स्थान में शनि कर्क राशि में होगा। यह शनि की मित्र राशि है। शनि की यह स्थिति राजयोग प्रदायक है ऐसा जातक मानसागरी के अनुसार ग्राम का मुखिया, नगर दण्डनायक, न्यायाधीश, सरपंच, राजनेता होता है। ऐसे जातक को माता पिता का सुख, स्त्री-सतान का सुख, विद्या, ज्ञान व शास्त्रों का अर्जन सहज मे ही प्राप्त होता है।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि व्यय भाव (कन्या राशि), चतुर्थ भाव (मकर राशि) एवं सप्तम भाव (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक को माता का सुख, वाहन का सुख मिलेगा। जातक परोपकारी होगा। पुरुषार्थ व परोपकार के कार्य मे धन का सदुपयोग करेगा।

दशा–शनि की दशा अन्तर्दशा में जातक की नौकरी-व्यवसाय में उन्नति होगी

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक परमभाग्यशाली व प्रदेश का प्रमुख व्यक्ति होगा।
2. **शनि + सूर्य**–जातक सरकारी क्षेत्र का प्रधान होगा।
3. **शनि + बुध**–बौद्धिक क्षमता से जातक की उन्नति होगी।
4. **शनि + मगल**–जातक खूखार व्यक्तित्व का धनी होगा। मंगल के दिग्बली होने से शक्ति सकारात्मक कार्यों में खर्च होगी

5. **शनि + बृहस्पति**—गुरु उच्च का होने से 'हंस योग' के कारण जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
6. **शनि + शुक्र**—जातक सुखी होगा। एकाधिक वाहनों का स्वामी होगा।
7. **शनि + राहु**—जातक को राजकार्य में बाधा मिलेगी। धोखा होगा।
8. **शनि + केतु**—सरकारी क्षेत्र मे काम आसानी से नही होंगे

तुलालग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में

8	7	6
9		श 5
10		4
11		3
12	1	2
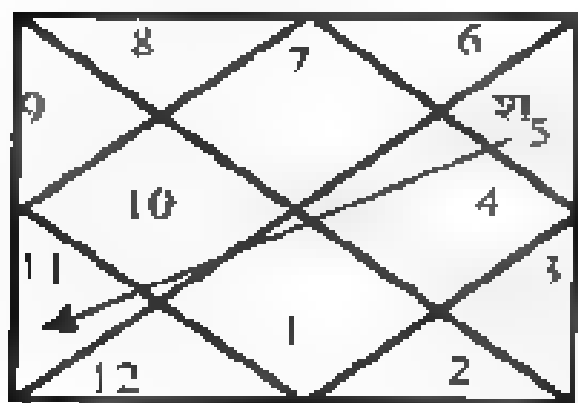
तुलालग्न मे शनि चतुर्थेश व पचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है। यहा एकादश स्थान में शनि सिह राशि में होगा। जो कि शनि की शत्रु राशि है। जातक को उत्तम भवन, उत्तम नौकरी, व्यापार व्यवसाय की प्राप्ति होगी। जातक राजपूजक होता है। उसको सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी ठेकों से लाभ होता है।

निशानी—जातक बहुत पुत्र वाला एवं महाधनी व्यक्ति होगा। ऐसा जातक उम्र से अधिक वय वाला दिखाई देगा।

दृष्टि—एकादश भाव में स्थित शनि की दृष्टि लग्न भाव (तुला राशि), पंचम भाव (कुंभ राशि) अपनी राशि तथा अष्टम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक को उच्च श्रेणी की विद्या बुद्धि, सतान लबी आयु एव उच्च उन्नति की प्राप्ति होगी।

दशा—शनि का दशा-अन्तर्दशा में जातक का भौतिक सुखों व राजकीय सम्मान की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि + चद्र**—जातक उद्योगपति होगा। जातक की संतति भी धनवान होगी।
2. **शनि + सूर्य**—जातक सरकारी क्षेत्र में प्रभावशाली होगा। राजकीय सम्मान मिलेगा।
3. **शनि + मगल**—जातक को पुत्र से, शिक्षा से लाप मिलेगा।
4. **शनि + बुध**—जातक का भाग्य बलवान होगा। जातक उद्योगपति होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**—जातक पराक्रमी होगा। मित्रवर्ग श्रेष्ठ होगा।
6. **शनि + शुक्र**—जातक उन्नतिशील होगा। निरन्तर आगे बढ़ेगा।

7 **शनि + राहु**–लाभांश में भारी रुकावट होगी।

8. **शनि + केतु**–लाभ में बाधा आएगी।

तुलालग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में
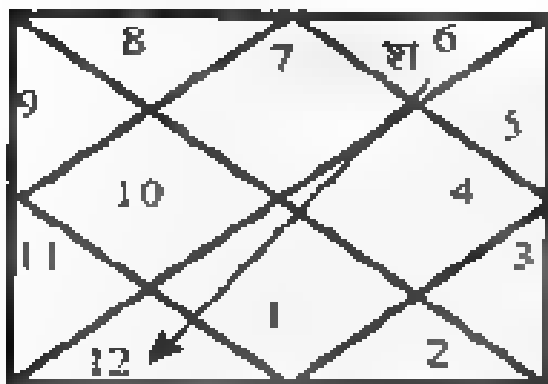
तुलालग्न में शनि चतुर्थेश व पंचमेश होने से राजयोग कारक होकर शुभ फलदाई है। यह लग्नेश शुक्र का मित्र भी है यहां द्वादश स्थान में शनि कन्या राशि में होगा। यह शनि की मित्र राशि है। हालांकि शनि की इस स्थिति में 'सुखभंग योग' एवं 'संतानहीन योग' की सृष्टि हुई है। यह स्थिति ज्यादा नुकसानदायक नहीं है। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति में बाधा, घर, धन, वाहन, नौकर-चाकर, सुख में बाधा महसूस होगी। संतान सुख भी विलम्ब से प्राप्त होगा। जातक को दत्तक पुत्र की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–द्वादशस्थ शनि की दृष्टि धन भाव (वृश्चिक राशि), अष्टम भाव (मीन राशि) एवं भाग्य भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः धन संग्रह में बाधा रहेगी। कुटुम्ब सुख में कमी एवं भाग्योदय में रुकावट महसूस होगी।

निशानी–जातक आलसी होगा।

दशा–शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक परेशान भी होगा और उपलब्धियों को भी प्राप्त करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि + चंद्र**–जातक को राजदण्ड का भय रहेगा।
2. **शनि + सूर्य**–व्यापार में राजदण्ड मिलेगा।
3. **शनि + मंगल**–'पापयुत नरक प्राप्ति' जातक को अकाल मृत्यु का भय रहेगा।
4. **शनि + बुध**–जातक कर्जदार होगा।
5. **शनि + बृहस्पति**–जातक का पराक्रम भंग होगा। मानहानि होगी।
6. **शनि + शुक्र**–जातक को जेल जाने का भय रहेगा।
7. **शनि + राहु**–भृगुसूत्र के अनुसार 'पापयुते नेत्रच्छेद' जातक को नेत्र विकार होगा।
8. **शनि + केतु**–जातक को नेत्र विकार होगा।

❑❑❑

तुलालग्न में राहु की स्थिति

तुलालग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में

8, 7, 6, 9, रा, 5, 10, 4, 11, 3, 1, 12, 2
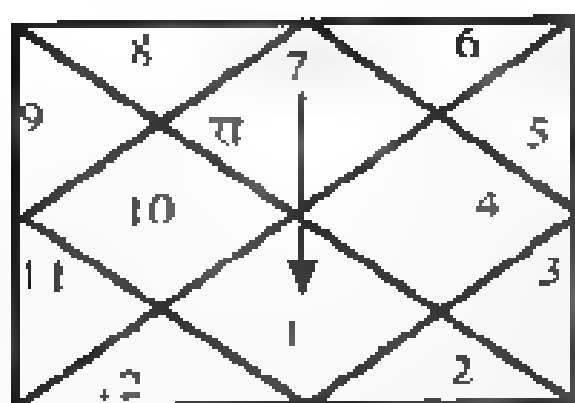
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। तुलालग्न मे लग्नस्थ राहु मित्र क्षेत्री होगा। ऐसा जातक विषयासक्त, असयमी, व्यसनी, दुराचारी, लम्पट और स्वेच्छाचारी होता है। इनका पारिवारिक जीवन गृहस्थ जीवन असतोष जनक होता है। जातक को शिक्षा नौकरी व व्यवसाय में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा।

निशानी—जातक का जन्म ननिहाल या अस्पताल मे होता है।

दशा—यदि कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चद्र**—कार्य मे रुकावट, नौकरी में रुकावट होगी।
2. **राहु + सूर्य**—सरकारी पक्ष मे रुकावट।
3. **राहु + मंगल**—भाईयों में विवाद।
4. **राहु + बुध**—भाग्य में रुकावट।
5. **राहु + बृहस्पति**—मित्रों से मनमुटाव
6. **राहु + शुक्र**—परिश्रम का लाभ नहीं।
7. **राहु + शनि**—शिक्षा में रुकावट सम्भव

तुलालग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में

तुलालग्न मे राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहा द्वितीय स्थान में राहु वृश्चिक राशि का होगा। वृश्चिक राशि मे राहु
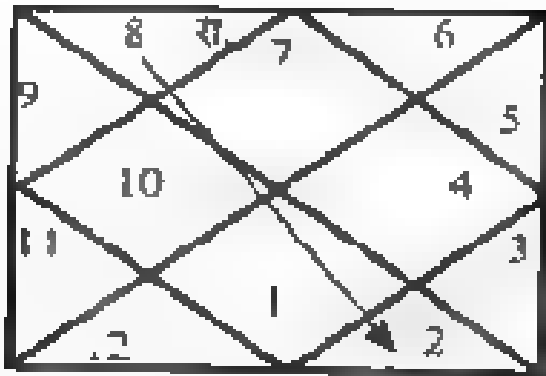
नीच का होता है। यहा राहु की उपस्थिति धन के घड़े मे छेद के समान है। जातक में वाणी दोष, गुप्तरोग, कुटुम्ब में असंतोष, प्रारम्भिक विद्या में रुकावट होगी।

दशा—राहु की दशा धन प्राप्ति मे बाधक होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु + **चंद्र**—नेत्र विकार सम्भव है।
2. राहु + **सूर्य**—राजदण्ड से धननाश होगा। नेत्र विकार सम्भव।
3. राहु + **मंगल**—धन आएगा पर खर्च होता चला जाएगा।
4. राहु + **बुध**—भाग्य में रुकावटें।
5. राहु + **बृहस्पति**—धन के कारण भाईयों में विवाद सम्भव।
6. राहु + **शुक्र**—परिश्रम के धन मे विवाद सम्भव।
7. राहु + **शनि**—विद्या में व्यवधान.

तुलालग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में
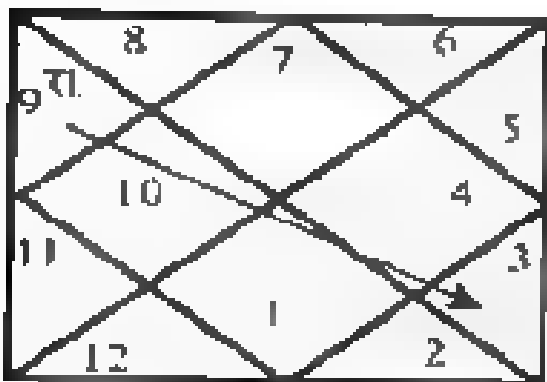
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहा तृतीय स्थान में राहु धनु राशि का होगा। धनु राशि राहु की शत्रु राशि है। ऐसे जातक को धन, यश व कीर्ति अर्जित करने मे बाधा होगी परिजनों में, भाईयों में, भागीदारो में अविश्वास की स्थिति रहेगी।

दशा—राहु की दशा से पराक्रम में रुकावट होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु + **चंद्र**—भाई-बहनों में विवाद।
2. राहु + **सूर्य**—सरकारी कर्मचारियों में विवाद।
3. राहु + **मंगल**—एकाध भाई की अकाल मृत्यु।
4. राहु + **बुध**—शिक्षा में रुकावट।
5. राहु + **बृहस्पति**—बड़ो के प्रति अनादर की भावना।
6. राहु + **शुक्र**—परिश्रम में रुकावट।
7. राहु + **शनि**—शिक्षा व संतति में रुकावट।

तुलालग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
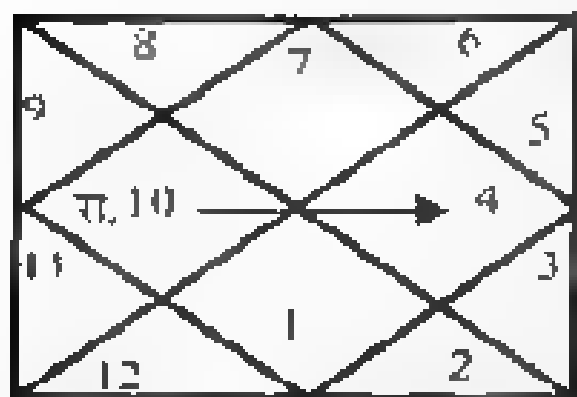
तुलालग्न मे राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां चतुर्थ स्थान मे राहु मकर राशि का होगा। मकर राशि राहु की सम राशि है। ऐसे जातक जमीन-जायदाद, आर्थिक मामलो, वैभव, ऐश्वर्य एवं प्रतिष्ठा के मामले मे खुश किस्मत नहीं होते। जीवन में प्रगति एव सामान्य सुख से वंचित रहते हैं। अच्छा घर, अच्छा वाहन, एव अच्छे नौकर के मामले मे भाग्यशाली नहीं होते।

दशा—राहु की दशा में सुख प्राप्ति में बाधा आएगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**—माता को कष्ट।
2. **राहु + सूर्य**—पिता को कष्ट।
3. **राहु + मगल**—भाईयों को कष्ट, धन हानि।
4. **राहु + बुध**—उच्च शिक्षा में व्यवधान।
5. **राहु + बृहस्पति**—गुरु से द्वेष, बड़ों का अनादर।
6. **राहु + शुक्र**—वाहन दुर्घटना योग।
7. **राहु + शनि**—वाहन से चोट पहुंचेगी।

तुलालग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में
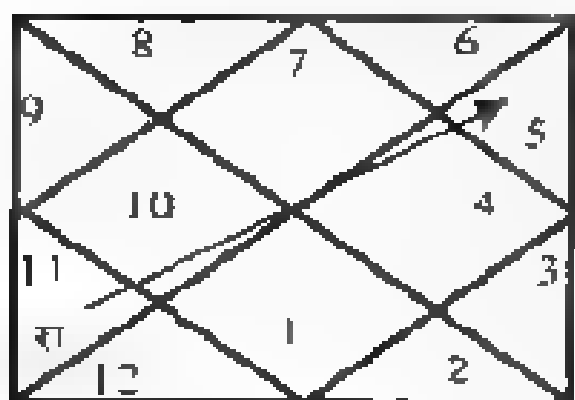
तुलालग्न मे राहु अपनी मित्र राशि मे है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां पचम स्थान में राहु कुंभ राशि का होगा। कुंभ राशि राहु की स्वराशि है। ऐसे जातक की विद्या में बाधा आती है। बुद्धि एव प्रतियोगी परीक्षा, लॉटरी सट्टे व शेयर में भाग्य साथ नहीं देता।

राहु की यह स्थिति पुत्र सतान को प्राप्ति मे बाधक है।

दशा—राहु की दशा चिन्ताकारक, विद्या-सतान में रुकावट वाली सिद्ध होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**—कन्या की अकाल मृत्यु।

2. **राहु + सूर्य**—पुत्र संतति का नाश।
3. **राहु + मंगल**—पुत्र व भाई का नाश।
4. **राहु + बुध**—पुत्री का नाश।
5. **राहु + बृहस्पति**—गुरु व ज्ञान का शोषण।
6. **राहु + शुक्र**—गुप्त बीमारी।
7. **राहु + शनि**—शिक्षा में बाधा। सुख में बाधा।

तुलालग्न में राहु की स्थिति षष्ट्म स्थान में
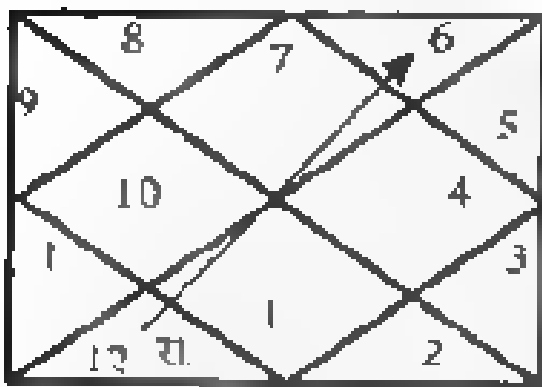
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां छठे स्थान मे राहु मीन राशि का होगा। मीन राशि राहु की प्रिय राशि नही है। शास्त्रकारों ने छठे स्थान में राहु की स्थिति को राजयोग कारक माना है। कहा गया है-''भिषा एकादशे राहु राजयोगो प्रकश्यते''ऐसे जातक फलत: ऐसे जातक का जीवन उन्नतिशील, प्रतिष्ठा जनक, आर्थिक एवं भौतिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होता है। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम व समर्थ होता है।

दशा—यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो राहु की दशा शुभफल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चद्र**—राज्य सम्मान में बाधा।
2. **राहु + सूर्य**—सरकारी कार्य में रोड़ा।
3. **राहु + मगल**—भाईयो द्वारा धन नाश.
4. **राहु + बुध**—बहनों का सुख नहीं।
5. **राहु + बृहस्पति**—गुरुजनों का सम्मान।
6. **राहु + शुक्र**—परिश्रम के फल में बाधा।
7. **राहु + शनि**—शिक्षा व सुख में बाधा।

तुलालग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में

तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहा सप्तम स्थान में राहु मेष राशि का होगा. मेष राशि राहु की सम राशि
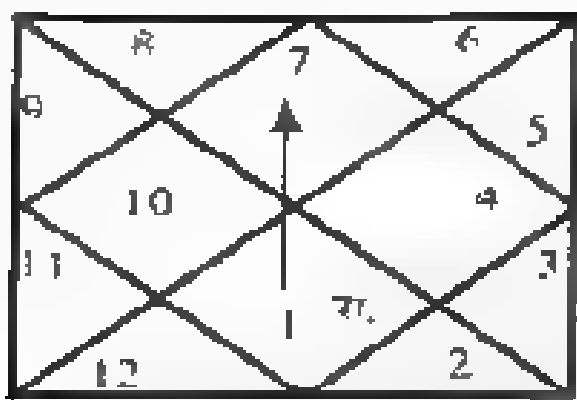
हैं। ऐसे जातक को धन पद, प्रतिष्ठा, नौकरी एवं व्यापार में भरपूर सफलता मिलती है। ऐसे जातक राजनीतिज्ञ व कूटनीतिज्ञ होते हैं।

गृहस्थ सुख, पत्नी सुख में राहु की यह स्थिति बाधक होती है। जीवन साथी से मनमुटाव, खटपट, तनाव या विद्रोह की स्थिति बनती है।

निशानी–जातक स्वेच्छाचारी एवं व्याभिचारी होता है।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**–पत्नी सुंदर पर गृहस्थ सुख में विवाद रहेगा।
2. **राहु + सूर्य**–राज्यपथ में लाभ पर नौकरी में विवाद रहेगा।
3. **राहु + मंगल**–भाईयों से लाभ पर व्यक्तिगत विवाद रहेगा।
4. **राहु + बुध**–बुद्धि में लाभ पर बुद्धि कुण्ठित होगी।
5. **राहु + बृहस्पति**–भाईयों से लाभ, ज्ञान से लाभ पर कुतर्क अधिक।
6. **राहु + शुक्र**–परिश्रम का पूरा लाभ पर खुद के निर्णय कई बार गलत होंगे।
7. **राहु + शनि**–सुख प्राप्ति पर उपकरण (रास्ता) गलत। विदेशी पढ़ाई व स्त्री में रुचि, अर्न्तजातीय विवाह।

तुलालग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
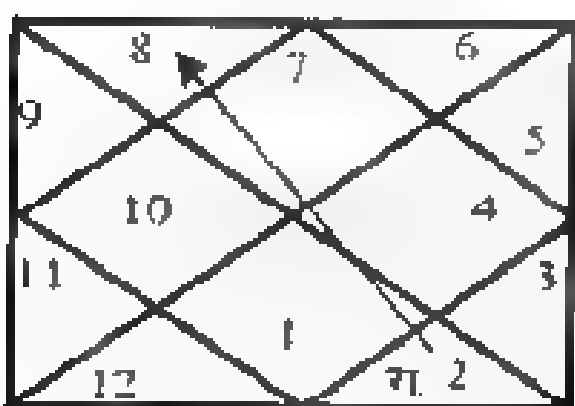
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां अष्टम स्थान में राहु वृष राशि का होगा। वृष राशि में राहु उच्च का कहलता है। यहा राहु की स्थिति दीर्घायु व उत्तम स्वास्थ्य घातक है। राहु गुप्त रोग देता है अचानक दुर्घटना की स्थिति बनती है। जातक के पैरों में कष्ट हो सकता है। यदि लापरवाही रही तो लाइलाज बीमारी होगी।

दशा–राहु की दशा-अन्तर्दशा कष्ट पूर्ण होगी। यदि कुण्डली में कालसर्पयोग है तो आयु के लिए घातक दशा होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु + **चंद्र**—दुर्घटना भय, जलभय रहेगा।
2. राहु + **सूर्य**—दुर्घटना भय, अग्निभय रहेगा।
3. राहु + **मंगल**—दुर्घटना भय, रक्तचाप रहेगा।
4. राहु + **बुध**—भाग्योदय में भयकर बाधा होगी।
5. राहु + **बृहस्पति**—पिता, श्वसुर, बड़े भाई की चिंता होगी।
6. राहु + **शुक्र**—परिश्रम के लाभ में रुकावट।
7. राहु + **शनि**—शिक्षा व संतति में बाधा। पुत्र की दुर्घटना सम्भव है।

तुलालग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में
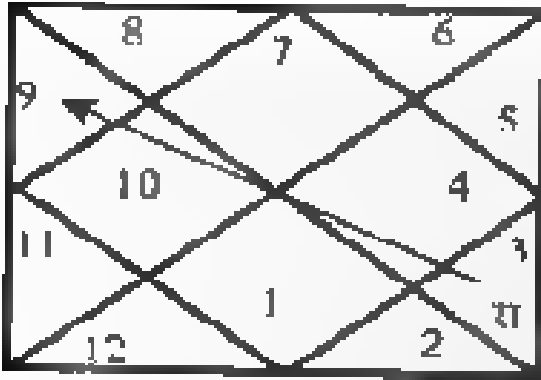
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहां नवम स्थान में राहु मिथुन राशि का होगा। मिथुन राशि में राहु स्वगृही राशि कहा गया है। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होता है। राहु राक्षसों का सेनापति है अतः ऐसा जातक साहस, वीरता में अजेय होता है। जातक बुद्धिमान, राजनीतिज्ञ व कूटनीतिज्ञ होता है।

दशा—राहु की दशा-अन्तर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा उसे वैभव, पद प्रतिष्ठा, व धन की प्राप्ति होगी। यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो दशा शुभफल ही देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. राहु + **चंद्र**—भाग्योदय के निर्णय में विवाद रहेगा।
2. राहु + **सूर्य**—व्यापार के निर्णय मे विवाद होगा।
3. राहु + **मगल**—भाईयों के निर्णय में विवाद रहेगा एवं सगाई के निर्णय मे विवाद रहेगा।
4. राहु + **बुध**—विद्या सम्बन्धी निर्णय में विवाद रहेगा।
5. राहु + **बृहस्पति**—गुरुजनों के निर्णय मे विवाद रहेगा।
6. राहु + **शुक्र**—स्वय के निर्णय विवादास्पद होंगे।
7. राहु + **शनि**—संतति के निर्णय मे विवाद रहेगा।

तुलालग्न मे राहु की स्थिति दशम स्थान में

8 7 6 9 5 रा 10 4 11 3 1 12 2
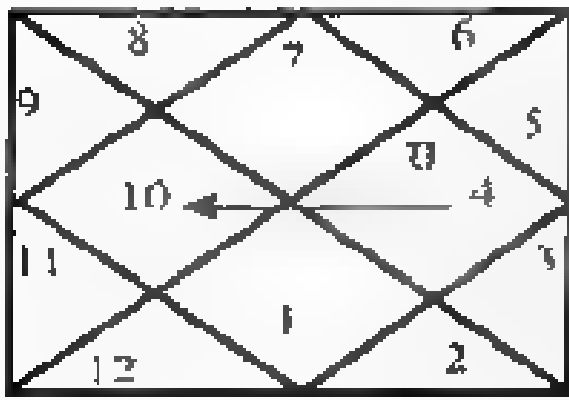
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहा दशम स्थान में राहु कर्क राशि का होगा। कर्क राशि राहु की शत्रु राशि है. राहु की केन्द्रगत यह स्थिति जातक को पराक्रमी प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रदान करती है। जातक हठी, अति अभिमानी एव समाजसेवी होता है परन्तु नौकरी, व्यवसाय, व्यापार एव राजकार्य मे बाधा महसूस होगी।

दशा—राहु की दशा अन्तर्दशा में मिले-जुले फल मिलेंगे। यदि कुण्डली में कालसर्प योग है तो नौकरी एव सुख ससाधनों की प्राप्ति में विशेष संघर्ष की दशा होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1 **राहु + चंद्र**—राज्य व नौकरी पक्ष ठीक पर बाधाएं निरन्तर रहेंगी।

2 **राहु + सूर्य**—सरकारी क्षेत्र मे कष्ट पहुंचेगा।

3. **राहु + मंगल**—पत्नी व भाईयो मे विवाद रहेगा

4. **राहु + बुध**—भाग्य में बाधा बनी रहेगी।

5. **राहु + बृहस्पति**—'हसयोग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा, परतु परिजनों में विवाद रहेगा।

6. **राहु + शुक्र**—जातक उन्नति पथ पर ठोकर खाकर आगे बढ़ेगा।

7. **राहु + शनि**—सुख प्राप्ति एव शिक्षा में बाधा। सतति आज्ञा में नहीं रहेगी।

तुलालग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में

8 7 6 9 रा. 5 10 4 11 3 1 12 2
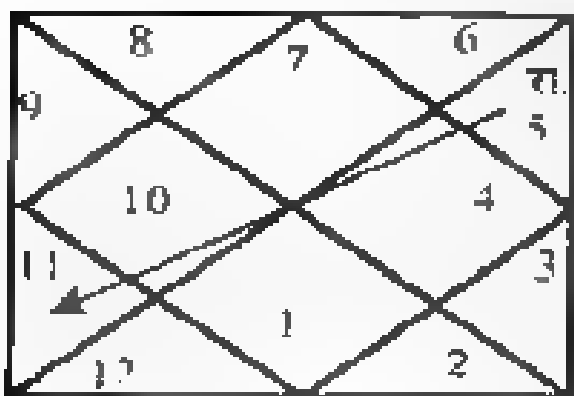
तुलालग्न में राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहा एकादश स्थान में राहु सिंह राशि का होगा। सिह राशि राहु के परम शत्रु सूर्य की राशि है. शास्त्रकारों ने एकादश स्थान में स्थित राहु को राजयोग कारक माना है। जातक महान् पराक्रमी एवं शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। जातक परिश्रम एव बौद्धिक चातुर्य के माध्यम से जीवन के कंटकाकीर्ण मार्गों में सफलता प्राप्त करता है।

दशा—राहु की दशा अन्तर्दशा में शुभफलो की प्राप्ति होगी यदि कुण्डली मे कालसर्प योग है तो दशा एकदम नेष्ट अशुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**—जातक लोकप्रिय व्यापारी होगा।
2. **राहु + सूर्य**—जातक राज्य सरकार से फायदा उठाएगा।
3. **राहु + मंगल**—जातक को पत्नी के नाम के व्यापार से लाभ मिलेगा।
4. **राहु + बुध**—जातक उद्योगपति होगा पर स्थिति संघर्षशील रहेगी।
5. **राहु + बृहस्पति**—जातक के परिजनो मे विवाद रहेगा
6. **राहु + शुक्र**—उन्नति मे बाधा पर अन्त मे लाभ होगा।
7. **राहु + शनि**—सुख व सतति मे बाधा पर अन्त में लाभ होगा।

तुलालग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में

तुलालग्न मे राहु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र राहु का मित्र ग्रह है। यहा द्वादश स्थान में राहु कन्या राशि का होगा कन्या राशि मे राहु स्वगृही माना गया है। ऐसा जातक विदेशो मे कमाता है, Export-Import का काम इनके अनुकूल रहता है। जातक की आर्थिक, सामाजिक व व्यवसायिक स्थिति अच्छी होती है। ऐसा जातक कभी भी निराश व हताश नही होता। जातक का आत्मबल एवं बुद्धिबल बढ़ा-चढ़ा होता है।
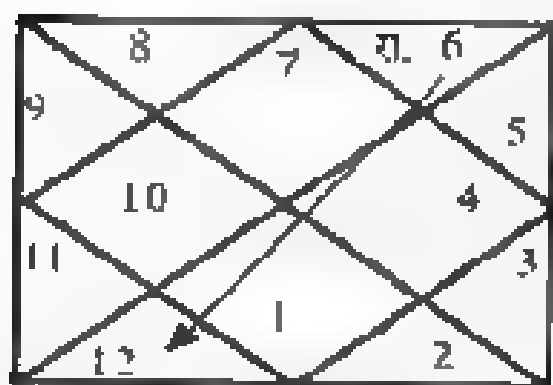
दशा—राहु की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी। यदि कुण्डली में कालसर्पयोग है तो यह दशा अशुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **राहु + चंद्र**—नेत्र विकार, पीड़ा।
2. **राहु + सूर्य**—नेत्र विकार, पीड़ा, सरकारी नुकसान।
3. **राहु + मंगल**—धन का अपव्यय अधिक। पत्नी से झगड़ा।
4. **राहु + बुध**—भाग्योदय होगा पर संघर्ष का साथ यात्रा ट्रेवल्स-ऐजेन्सी से लाभ होगा।
5. **राहु + बृहस्पति**—भाईयो से मनमुटाव या सुख नहीं मिलेगा।
6. **राहु + शुक्र**—परिश्रम का लाभ कठिनता से मिलेगा।
7. **राहु + शनि**—शिक्षा व संतति मे विलम्ब होगा.

❑❑❑

तुलालग्न में केतु की स्थिति

तुलालग्न में केतु की स्थिति प्रथम भाव में
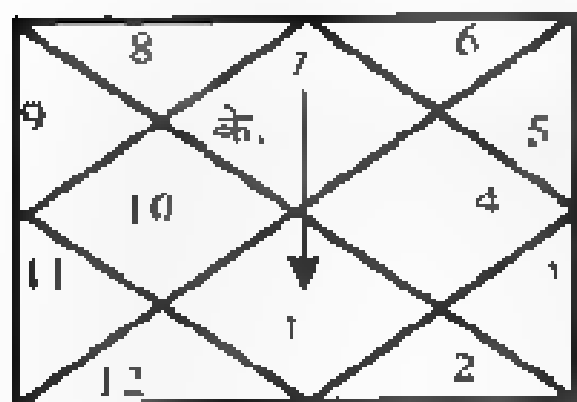
8	7 के.	6
9	10	5
11	1	4
12	2	3

तुलालग्न मे केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। जातक में पद-प्रतिष्ठा ऊंचा स्थान प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा रहेगी जातक उन्नति मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए चेष्टावान्, प्रयत्नशील रहेगा। उसमें उसे सफलता भी मिलेगी। जातक बुजुर्गों के मार्गदर्शन में आगे बढ़ेगा।

निशानी जातक संयुक्त परिवार मे रहना पसन्द करेगा।

दशा—केतु की दशा अन्तर्दशा उन्नति दायक साबित होगी। यदि कुण्डली में कालसर्प योग न हो तो केतु शुभ रहेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु + चंद्र**—कार्य मे रुकावट, नौकरी मे रुकावट होगी।
2. **केतु + सूर्य**—सरकारी पथ में रुकावट।
3. **केतु + मंगल**—भाईयों में विवाद।
4. **केतु + बुध**—भाग्य में रुकावट।
5. **केतु + बृहस्पति**—मित्रों से मनमुटाव।
6. **केतु + शुक्र**—परिश्रम का लाभ नहीं।
7. **केतु + शनि**—शिक्षा में रुकावट सम्भव।

तुलालग्न में केतु की स्थिति द्वितीय भाव में
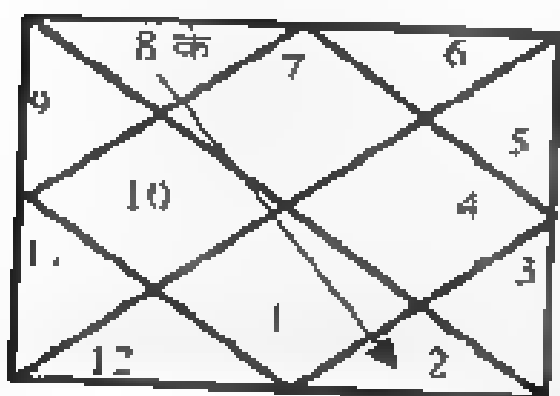
तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने सामने रहते है यहा द्वितीय स्थान में केतु वृश्चिक राशि मे होगा वृश्चिक राशि मे केतु उच्च का होता है। केतु की यह स्थिति धन के घड़े में छेद को बताती है। जातक कमाएगा बहुत पर धन की बरकत नहीं होगी। जातक की वाणी दूषित होगी। धनेश मंगल की स्थिति आर्थिक स्थिति को सुस्पष्ट करेगी। अन्यथा आर्थिक सघर्ष का संकेत स्पष्ट है।

निशानी–वाणी में थोड़ी कटुता रहेगी।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा संघर्ष की सकेतक है। यदि कुण्डली में कालसर्प योग बना है तो यह दशा कष्टदायक रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–नेत्र विकार सम्भव है।
2. **केतु + सूर्य**–राज दण्ड से धन नाश होगा, नेत्र विकार सम्भव है।
3. **केतु + मंगल**–धन आएगा पर खर्च होता चला जाएगा।
4. **केतु + बुध**–भाग्य में रुकावटें।
5. **केतु + बृहस्पति**–धन के कारण भाईयों मे विवाद सम्भव।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम के धन मे विवाद सम्भव।
7. **केतु + शनि**–विद्या में व्यवधान।

तुलालग्न में केतु की स्थिति तृतीय भाव में
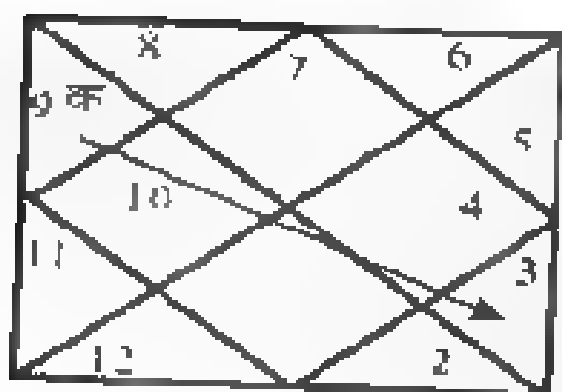
तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनो आमने सामने रहते हैं यहां तृतीय स्थान मे केतु धनु राशि का होगा। धनु राशि मे केतु स्वग्रही होता है, केतु की

यह स्थिति व्यक्ति के पराक्रम को बढ़ाती है। जातक धार्मिक अभिरुचि से ओतप्रोत होता है। जातक को आध्यात्मिक मित्रों की तलाश रहेगी। जाताक भाई बहनों, परिजनों से अच्छा सम्बन्ध बनाने हेतु लालायित रहेगा।

निशानी–जातक धार्मिक ग्रन्थों का अध्येता होगा।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा कीर्ति मे वृद्धि करेगी। परतु कुण्डली में यदि कालसर्प योग है तो दशा प्रतिकूल रहेगी। पराक्रम भंग होगा।

केतु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–भाई-बहनों में विवाद।
2. **केतु + सूर्य**–सरकारी कर्मचारियों से विवाद।
3. **केतु + मंगल**–एकाध भाई की अकाल मृत्यु।
4. **केतु + बुध**–शिक्षा में रुकावट।
5. **केतु + बृहस्पति**–बड़ो के प्रति अनादर की भावना।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम में रुकावट।
7. **केतु + शनि**–शिक्षा व सन्तति में रुकावट.

तुलालग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ भाव मे
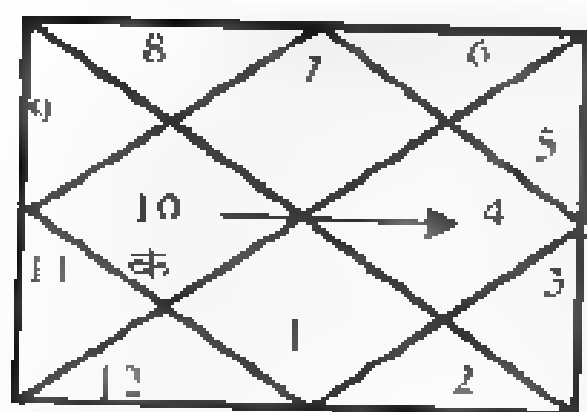
तुलालग्न मे केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनो आमने-सामने रहते हैं। यहा चतुर्थ स्थान मे केतु मकर राशि का होगा। मकर राशि केतु की मूलत्रिकोण राशि है। केतु की यह स्थिति मातृसुख मे बाधक है। शास्त्रों में पांच प्रकार की माताए कही गई है। राजा की पत्नी, (राजमाता) पिता की पत्नी (जन्म देने वाली माता), स्वसुर की पत्नी (सासु मा), गुरु की पत्नी, गुरु मा, एव वृद्ध मित्र की पत्नी माता तुल्य कही गई हैं। इनको लेकर कष्ट अथवा जमीन जायदाद को लेकर कष्ट हो सकता है।

निशानी–वाहन को लेकर खर्चा होता रहेगा.

दशा–केतु की दशा अन्तर्दशा मध्यम फल देगी परतु कुण्डली में यदि कालसर्प योग है तो पूर्णतः अनिष्ट फल देगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चद्र**–माता को कष्ट।
2. **केतु + सूर्य**–पिता को कष्ट।
3. **केतु + मंगल**–भाईयों को कष्ट, धन हानि।
4. **केतु + बुध**–उच्च शिक्षा में व्यवधान।
5. **केतु + बृहस्पति**–गुरु से द्वेष, बड़ों का अनादर.
6. **केतु + शुक्र**–वाहन दुर्घटना योग।
7. **केतु + शनि**–वाहन से चोट पहुंचे।

तुलालग्न में केतु की स्थिति पंचम भाव में
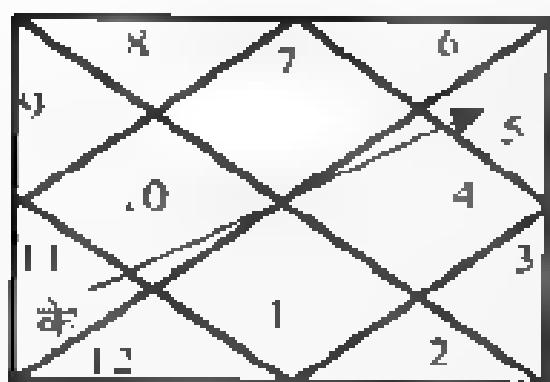
तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दानों आमने-सामने रहते हैं। यहा पचम स्थान मे केतु कुंभ राशि का होगा। कुंभ राशि केतु को मित्र राशि है। ऐसे जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री की प्राप्ति में दिक्कतों का सामना करना पडता है। सतान के मामले में एक दो गर्भपात होते हैं। विद्या प्राय: अधूरी छूट जाती है।

दशा–केतु की दशा प्रतिकूल फल को देने वाली है यदि कुण्डली में कालसर्प योग की स्थिति हो तो यह प्रतिकूलता ज्यादा बढ़ जाएगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–कन्या की अकाल मृत्यु।
2. **केतु + सूर्य**–पुत्र सतति का नाश।
3. **केतु + मंगल**–पुत्र व भाई का नाश।
4. **केतु + बुध**–पुत्री का नाश।
5. **केतु + बृहस्पति**–गुरु व ज्ञान का शोषण।
6. **केतु + शुक्र**–गुप्त बीमारी.
7. **केतु + शनि**–शिक्षा में बाधा, सुख में बाधा।

तुलालग्न में केतु की स्थिति षष्ट्म भाव में
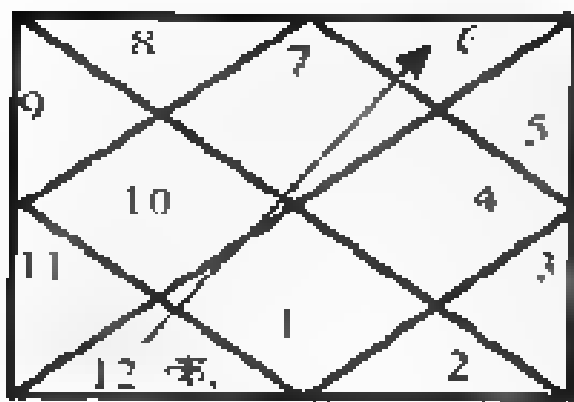
8 7 6 9 5 10 4 11 3 1 12 के. 2

तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है. पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने सामने रहते हैं। यहां षष्ट्म स्थान में केतु मीन राशि का होगा। मीन राशि केतु की स्वराशि है। ऐसे जातक के स्वजन ही जातक के शत्रु होते हैं। जातक के जीवन में गुप्त शत्रुओं की बाहुल्यता रहेगी। गुप्त रोग भी जातक को परेशान करते रहेगे जातक उद्विग्न रहेगा। दिमागी शान्ति भग रहेगी।

दशा—केतु की दशा अन्तर्दशा अशांति देगी। यदि कुण्डली में कालसर्प योग है तो अशांति चरम सीमा पर रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1 **केतु + चंद्र**—राज्य सम्मान में बाधा।

2 **केतु + सूर्य**—सरकारी कार्य में रोड़ा।

3. **केतु + मंगल**—भाईयों द्वारा धन नाश।

4. **केतु + बुध**—बहनों का सुख नही।

5. **केतु + बृहस्पति**—गुरुजनों का अपमान।

6. **केतु + शुक्र**—परिश्रम के फल में बाधा।

7 **केतु + शनि**—शिक्षा व सुख में बाधा।

तुलालग्न में केतु की स्थिति सप्तम भाव में
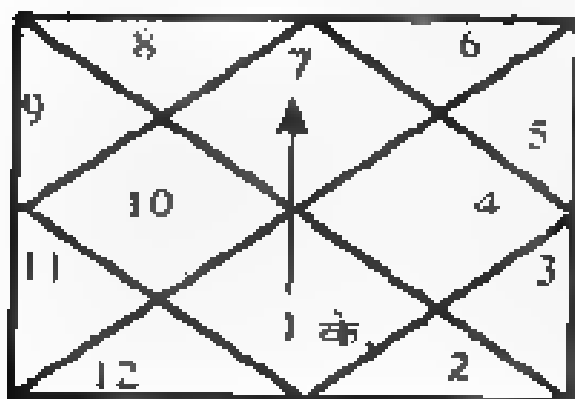
8 7 6 9 5 10 4 11 3 1 के. 12 2

तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनो आमने-सामने रहते हैं। यहा सप्तम स्थान में केतु मेष राशि का होगा। मेष राशि केतु की मित्र राशि है। जातक के विचार जीवन साथी से नहीं मिलेंगे। गृहस्था सुख की समरसता हेतु जातक को एक

तरफा समझौता (Adjustment) करना होगा। गुप्त समझौते के लिए भी केतु की यह स्थिति ठीक नहीं है।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फलकारी रहेगी। यदि कुण्डली मे कालसर्प योग हो तो केतु की दशा ज्यादा कष्टदायक होगी

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–पत्नी सुंदर व गृहस्थ सुख में विवाद।
2. **केतु + सूर्य**–राज्यपक्ष से लाभ पर नौकरी में विवाद।
3. **केतु + मगल**–भाईयो से लाभ पर व्यक्तिगत विवाद रहेगा।
4. **केतु + बुध**–बुद्धि से लाभ पर बुद्धि कुण्ठित।
5. **केतु + बृहस्पति**–भाईयों से लाभ, ज्ञान से लाभ पर कुतर्क अधिक।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम का पूरा लाभ पर खुद के निर्णय कई बार गलत होंगे।
7. **केतु + शनि**–सुख प्राप्ति पर उपकरण (रास्ता) गलत। विदेशी पढाई व स्त्री में रुचि, अर्न्तजातीय विवाह।

तुलालग्न में केतु की स्थिति अष्टम भाव में
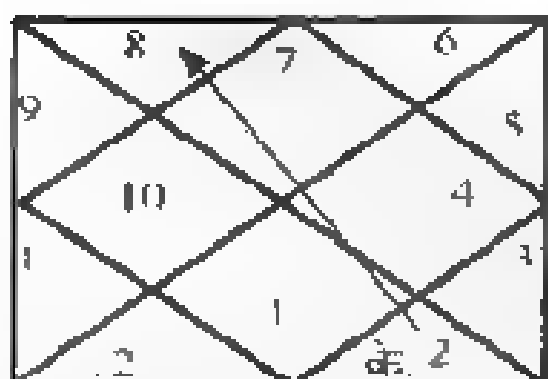
तुलालग्न मे केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने सामने रहते है। यहा अष्टम स्थान मे केतु वृष राशि का होगा। वृष राशि में केतु नीच का कहा गया है। केतु की यह स्थिति स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल है। अचानक दुर्घटना से चोट पहुच सकती है। गुप्त बीमारी भी सम्भव है. सतान के जन्म के बाद जातक की आयु को खतरा नहीं है।

दशा–केतु की दशा अन्तर्दशा स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल है यदि कुण्डली में कालसर्प योग हो तो केतु ज्यादा कष्टदायक रहेगा।

विशेष–यदि जातक के मकान की छत पर कुत्ता रोए तो केतु अनिष्ट फल देगा लाल किताब वालो ने केतु को कुत्ता कहा है। भूरे रग का कुत्ता।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–दुर्घटना भय, जलभय।

2 केतु + **सूर्य**—दुर्घटना भय, अग्नि भय।

3. केतु + **मंगल**—दुर्घटना भय, रक्तस्राव।

4. केतु + **बुध**—भाग्योदय में भयंकर बाधा।

5. केतु + **बृहस्पति**—पिता, श्वसुर, बड़े भाई को चिंता।

6. केतु + **शुक्र**—परिश्रम के लाभ में रुकावट।

7 केतु + **शनि**—शिक्षा व संतति में बाधा। पुत्र की दुर्घटना संभव है।

तुलालग्न में केतु की स्थिति नवम भाव में
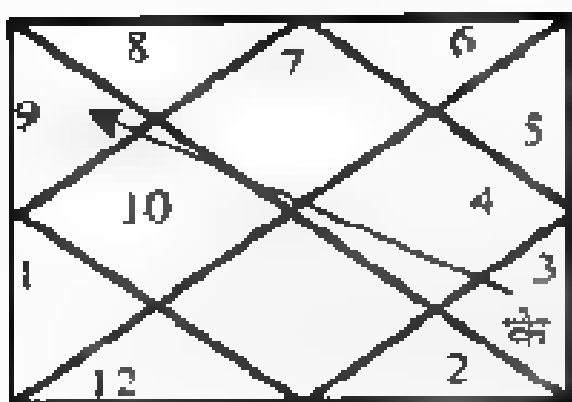
तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहां नवम स्थान में केतु मिथुन राशि का होगा। मिथुन राशि में केतु नीच का कहा गया है। नवम स्थान भाग्य का द्वार है। केतु यहा भाग्योदय में बाधा डालता है। नवम स्थान में केतु हो व्यक्ति की संतान बलवान एवं उन्नतिशील होती है।

निशानी—यदि ऐसे व्यक्ति की नीयत में बेईमानी आ जाए तो वह कभी दौलतमंद नहीं बन सकता।

दशा—केतु की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी। यदि कुण्डली मे कालसर्प योग हो तो केतु की दशा भाग्योदय मे पूर्ण बाधक का कार्य करेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. केतु + **चंद्र**—भाग्योदय के निर्णय में विवाद रहेगा।

2 केतु + **सूर्य**—व्यापार के निर्णय में विवाद रहेगा।

3. केतु + **मंगल**—भाईयों के निर्णय में विवाद रहेगा एवं सगाई के निर्णय में विवाद रहेगा।

4. केतु + **बुध**—विद्या सम्बन्धी निर्णय में विवाद रहेगा।

5. केतु + **बृहस्पति**—गुरुजनों के निर्णय में विवाद रहेगा।

6. केतु + **शुक्र**—स्वय के निर्णय विवादात्मक होंगे।

7 केतु + **शनि**—संतति के निर्णय में विवाद रहेगा।

तुलालग्न में केतु की स्थिति दशम भाव में
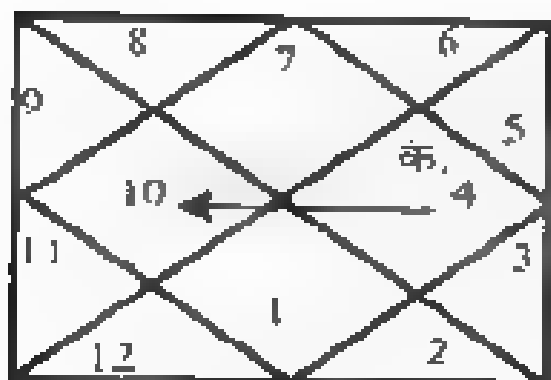
तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया को राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहते हैं। यहा दशम स्थान में केतु कर्क राशि का होगा। जो इसकी शत्रु राशि है। ऐसे जातक को राजकीय व्यक्ति अथवा किसी सरकारी अधिकारी द्वारा धोखा हो सकता है । पिता की सपत्ति में बाधा या पिता की अकृपा सभव है। शास्त्रों मे पाच प्रकार के पिता कहे गए हैं। जन्म देने वाला पिता, अन्न देने वाला राजा पिता कहा गया है। भय से बचाने वाला सकट के समय में मदद करने वाला व्यक्ति पिता होता है। सासु का पति भी पिता एव ज्ञान देने वाला मार्गदर्शक गुरु को भी पिता ही कहा गया है। इनमें से किसी का भी असन्तुष्ट होना केतु की यह स्थिति बताती है।

निशानी–जातक अपनी किस्मत से असन्तुष्ट रहेगा।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा अशुभ ही रहेगी। यदि कालसर्प योग है तो यह दशा ज्यादा अशुभ होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–राज्य व नौकरी पक्ष ठीक पर बाधाए निरन्तर रहेगी।
2. **केतु + सूर्य**–सरकारी क्षेत्र मे कष्ट पहुचेगा।
3. **केतु + मंगल**–पत्नी व भाईयों से विवाद रहेगा।
4. **केतु + बुध**–भाग्य में बाधा बनी रहेगी।
5. **केतु + बृहस्पति**–'हसयोग' के कारण जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
6. **केतु + शुक्र**–जातक उन्नति पथ पर ठोकर खाकर आगे बढ़ेगा।
7. **केतु + शनि**–सुख प्राप्ति एवं शिक्षा मे बाधा। सतति आज्ञा में नहीं रहेगी।

तुलालग्न मे केतु की स्थिति एकादश भाव में

तुलालग्न मे केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग की छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने-सामने रहत हैं। यहा एकादश स्थान में केतु सिंह राशि
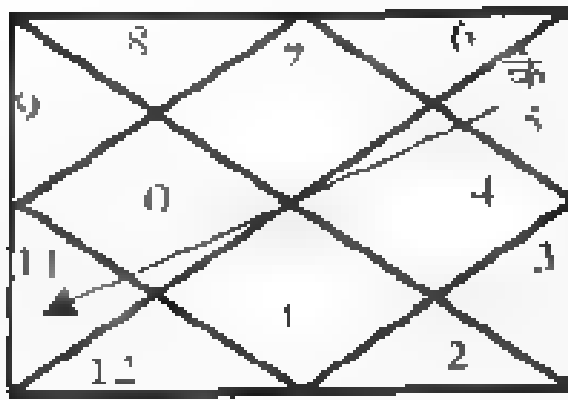
का होगा। जो कि केतु की शत्रु राशि कही गई है। ऐसे जातक के भाग्योदय में बाधा, व्यापार-व्यवसाय की उन्नति में लगातार रुकावट के संकेत केतु की यह स्थिति देती है। सरकारी ठेके एवं धार्मिक कार्यों में यश नहीं मिलेगा।

निशानी—जातक अपने व्यापार कारोबार, नौकरी से असतुष्ट रहेगा।

दशा—केतु की दशा-अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु + चंद्र**—जातक लोकप्रिय व्यापारी होगा।
2. **केतु + सूर्य**—जातक राज्य सरकार से फायदा उठाएगा।
3. **केतु + मंगल**—जातक को पत्नी के नाम के व्यापार से लाभ होगा।
4. **केतु + बुध**—जातक उद्योगपति होगा पर स्थिति संघर्षशील रहेगी।
5. **केतु + बृहस्पति**—जातक के परिजनों में विवाद रहेगा।
6. **केतु + शुक्र**—उन्नति में बाधा पर अन्त में लाभ।
7. **केतु + शनि**—सुख व संतति में बाधा पर अंत में लाभ।

तुलालग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में
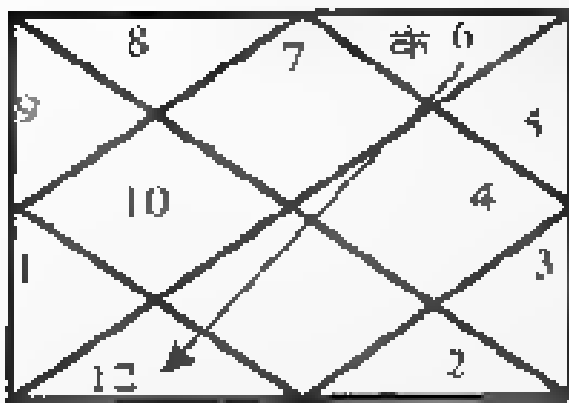
तुलालग्न में केतु अपनी मित्र राशि में है क्योंकि लग्नेश शुक्र केतु का मित्र ग्रह है। पृथ्वी के दक्षिण भाग को छाया राहु तथा उत्तरी छाया को केतु कहा गया है। इसलिए ये दोनों आमने सामने रहते हैं। यहां द्वादश स्थान में केतु कन्या राशि का होगा कन्या राशि केतु की मूलत्रिकोण राशि है। केतु की यह स्थिति अनवरत यात्रा को बताती है एवं यात्राओं में लाभ होने का, यश कीर्ति मिलने का संकेत भी देती है। जातक धार्मिक कार्य परोपकार के कार्य, समाज-सेवा में बढ़-चढ़कर रुचि लेगा जातक की बुद्धि तीव्र होगी। जातक 'प्लानिंग मास्टर' होगा।

निशानी—जातक को विदेशी व्यापार से लाभ होगा।

दशा—केतु की दशा अन्तर्दशा में आध्यात्मिक लाभ होगा। यदि कुण्डली में कालसर्प योग की स्थिति है तो दशा अशुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु + चंद्र**–नेत्र विकार, पीड़ा।
2. **केतु + सूर्य**–नेत्र विकार, पीड़ा, सरकारी नुकसान।
3. **केतु + मंगल**–धन का अपव्यय अधिक, पत्नी से झगड़ा।
4. **केतु + बुध**–भाग्योदय होगा पर संघर्ष के साथ, यात्रा ट्रेवल-ऐजेन्सी से लाभ होगा।
5. **केतु + बृहस्पति**–भाईयों से मनमुटाव या सुख नहीं।
6. **केतु + शुक्र**–परिश्रम का लाभ कठिनता से मिलेगा।
7. **केतु + शनि**–शिक्षा व संतति से विलम्ब होगा।

❑❑❑

शुक्रवार व्रत कथा

शुक्रवार का उपवास शुक्र ग्रह की शांति हेतु किया जाता है, दूसरी ओर यह व्रत संतोषी माता के निमित्त सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए भी किया जाता है। शुक्रवार को मां संतोषी का भी वार कहा जाता है। इस व्रत को चाहे संतोषी मां को प्रसन्न करने के लिए किया जाए अथवा शुक्र ग्रह की शांति के लिए, यह दोनों ही स्थितियों में सर्व मनोकामनाओं की पूर्ति करने वाला है।

शुक्र का तांत्रिक मंत्र—ॐ शु शुक्राय नमः।

विधि विधान—शुक्रवार का व्रत अन्य व्रतों की अपेक्षा ब्रह्ममुहूर्त में किया जाता है। प्रातः काल सूर्योदय के पूर्व उठकर स्नानादि से निवृत्त हो पूर्व दिशा की ओर मुख करके शुक्र के तांत्रिक मंत्र का ग्यारह बार जाप करें। व्रत के पूजन व प्रसाद में सफेद वस्तुओं का पूजन करें। इस व्रत में खट्टी चीजें नहीं खानी चाहिए तथा भोजन एक ही समय करना चाहिए।

व्रत कथा—एक समय की बात है कि एक नगर में कायस्थ ब्राह्मण तथा वैश्य जाति के तीन लड़कों में परस्पर गहरी मित्रता थी। उन तीनों मित्रों का विवाह हो गया था। ब्राह्मण तथा कायस्थ के लड़कों का गौना हो गया था परन्तु वैश्य के लड़के का अभी गौना नहीं हुआ था।

एक दिन कायस्थ के लड़के ने कहा कि हे मित्र तुम भी मुकलावा करके अपनी स्त्री को ले आओ। स्त्री के बिना घर अत्यधिक सूना लगता है यह बात वैश्य के लड़के को अच्छी लगी।

वह कहने लगा कि मैं अभी जाकर मुकलावा लेकर आता हूं। ब्राह्मण के लड़के ने कहा कि मित्र तुम अभी अपनी स्त्री को लेने मत जाओ क्योंकि शुक्र अस्त हो रहा है। जब उदय हो जाए तब जाकर ले आना।

परन्तु वैश्य का लड़का अपनी जिद पर अड़ गया तथा किसी प्रकार से नहीं माना। उसके घरवालों ने भी उसे बहुत समझाया किंतु सबकी बातें अनसुनी करके वह अपनी स्त्री को लेने के लिए ससुराल चला गया

उसको आया देखकर ससुराल वाले भी चकराए। दामाद का स्वागत सत्कार करने के बाद उन्होंने उसके आने का कारण पूछा। वैश्य पुत्र ने कहा कि मैं अपनी स्त्री को लेने के लिए आया हूं। ससुराल के व्यक्तियों ने भी उसे अनेक प्रकार से समझाया किंतु वह अपनी बात पर अडिग रहा।

जब वैश्य पुत्र नाना प्रकार से समझाने पर भी न माना तो ससुराल के व्यक्तियों ने लाचार होकर अपनी पुत्री को विदा कर दिया। वैश्य पुत्र पत्नी को रथ में बिठाकर चल दिया। थोड़ी दूर जाने के बाद मार्ग में रथ का पहिया टूट गया तथा बैल का पैर भी टूट गया।

उसकी पत्नी भी गिरकर घायल हो गई तथा रास्ते में डाकुओं ने उनके वस्त्राभूषण छीन लिए। इस प्रकार अनेक कष्टों को सहते हुए वे पति पत्नी घर पहुंचे तो घर आते ही वैश्य पुत्र को सर्प ने काट लिया। वैध ने भी कह दिया कि यह तीन दिन बाद मर जाएगा। जब उसके दोनों मित्रों को यह सूचना प्राप्त हुई तो उन्होंने कहा कि यदि वह पुनः अपनी स्त्री के साथ ससुराल जाए तथा शुक्रोदय पर लौटे तो निश्चय ही विघ्न टल जाएगा।

सेठ ने अपने पुत्र तथा वधू को तत्काल ही ससुराल पहुंचा दिया। वहां पर पहुंचते ही वैश्य पुत्र की मूर्छा दूर हो गई तथा वह साधारण उपचार के द्वारा ही स्वस्थ हो गया।

ससुराल वाले अति प्रसन्न हुए तथा वैश्य पुत्र अपनी ससुराल में स्वास्थ्य लाभ करता रहा इसके पश्चात् शुक्र उदय होने पर अपनी स्त्री को लेकर पुनः घर लौट गया।

अथ शुक्रवार की आरती

आरती लक्ष्मण बालजती की। असुर संहारन प्राणपति की।।
जगमग ज्योति अवधपुरी राजे। शेषाचल पर आप विराजे।।
घंटाताल पखावज बाजै कोटि देव आरती साजै।।
क्रीट मुकुट कर धनुष विराजै। तीन लोक जाकि शोभा राजै।।
कंचन थार कपूर सोहाई। आरती करत सुमित्रा माई।।
प्रेम मगन होय आरती गावैं। बसि बैकुण्ठ बहुरि नहीं आवैं।।
भक्त हेतु हरि लाड़ लड़ावैं। जब घनश्याम परम पद पावैं।।

शुक्रस्तवराजः

अस्य श्रीशुक्रस्तवराजस्य प्रजापतिर्ऋषिः, अनुष्टुप् – छन्दः ।
शुक्रो देवता शुक्रप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।।
नमस्ते, भार्गव श्रेष्ठ, दैत्य – दानव – पूजितः।
वृष्टि रोध प्रकर्त्रे, च, वृष्टि कर्त्रे, नमो नमः।।
देवयानि, पितः तुभ्यम्, वेद वेदांग पारग।
परेण, तपसा, शुद्धः, शंकरः, लोक सुन्दरः।
प्राप्तः, विद्या, जीवनाख्या, तस्मै, शुक्रात्मने नमः।
नमः, तस्मै भगवते भृगु पुत्राय् वेधसे।।
तारा मण्डल, मध्यस्थ, स्व भासा - सित अम्बर।
यस्य - उदये, जगत् – सर्वम्, मंगल - अर्ह भवेत् – इह।।
अस्तम् यः ते, हिं-अरिष्टम्, स्यात् - तस्मै मंगल रूपिणे।
त्रिपुरा वासिनः, दैत्यान्, शिव बाण प्रपीडितान्।।
विद्यया अजीवयः, शुक्रः नमस्ते, भृगु नन्दन।
ययाति, गुरवे, तुभ्यम्, नमस्ते, कवि, नन्दन।।
बलि राज्य प्रदः जीवः, तस्मै, जीवात्मने, नमः।
भार्गवाय, मः, तुभ्यम्, पूर्व गीर्वाण वन्दितः।।
जीव पुत्राय्, यः, विद्याम्, प्रादात् तस्मै, नमः नमः।
नमः शुक्राय काव्याय्, भृगुपुत्राय्ः धीमहि।।
नमः, कारण रूपाय् नमस्ते, कारणात्मने।
स्तवराजम् इमम्, पुण्यम्, भार्गवस्य, महात्मनः।।
यः, पठेत्, श्रृणुयात्, वा, अपि, लभते, वाञ्छितम्, फलम्।
पुत्रकामः, लभेत्, पुत्रान्, श्रीकामः, लभते श्रियम्।।
राज्य कामः लभेत् राज्यम् स्त्री कामः, स्त्रियम्, उत्तमाम्।

भृगूवारे, प्रयत्नेन, पठितव्यम्, समाहितैः।।
अन्य वारे, तु, होरायाम्, पूजयेत् भृगु नन्दनम्।
रोगार्तः, मुच्यते रोगात्, भयार्तः मच्यते भयात्।।
यत् - यत् प्रार्थयते, जन्तुः तत् तत् प्राप्नोति सर्वदा।
प्रातः काले प्रकर्तव्या भृगु पूजा प्रयत्नता।।
सर्व पाप विनिर्मुक्त प्राप्नुयात् शिव संनि धिम्।।

नोट–सभी प्रकार के ऐश्वर्य तथा पूर्ण रति सुख प्राप्ति हेतु नित्य 108 पाठ करने चाहिए।

शुक्र मंत्र

अन्नात्परिसुत इति मत्रस्य पराशरऋषि: शक्वरीछन्द: शुक्रोदेवता रस ब्रह्मणो इति बीज शुक्रपीत्यर्थे जपे विनियोग: ॐ पराशरऋषये नमः शिरसि १ॐ शक्वरी छन्दसे नमः इति मुखे २.ॐ शुक्रदेवतायै नम: हृदये ३. ॐ रसब्रह्म इति बीजाय नम: गुह्ये ४ इति ऋष्यादिन्यास:। 'ॐ अन्नातपरिसुत:' इत्यङ्गुष्ठाभयां नम: १ 'ॐ रसब्रह्मणा व्यपिबत्' इति तर्जनीभ्यां नमः २ 'ॐ क्षत्रं पय:' इति मध्यामाभ्या नमः ३. 'ॐ सप्रजापति:' इत्यनामिकाभ्या नम: ४. 'ॐ इति ऋष्यादिन्न्यास: 'ॐ अन्नातपरिस्रुत: ' इत्यङगुष्ठाभ्यां नम: १ 'ॐ रसब्रह्मण व्यपिबत्' इति तर्जनीभ्यां नम: २ ' ॐ क्षत्र पय: ' इति मध्यामायां नम: ३. 'ॐ सोमप्रजापति: 'इत्यनामिकाभ्या नम: ४. 'ऋतेनसत्यमिन्द्रय विपानर्ठ. शुक्रमन्धस: 'इति कनिष्ठिकाभयां नम: ५. 'इन्द्रस्येन्द्रियमिदपयोमृतमधु' इति करतलकरपृष्ठाभयां नम: ६. इति करन्यास:।

'ॐ अन्नात्परिसुत: 'इति हृदयाम नम: १ ' ॐ रसब्रह्मणाव्यापिबत्' इति शिरसे स्वाहा २ ' ॐ क्षत्रपय:' इति शिखायै वषट ३.' ॐ सोमंप्रजापति:' इति कवचाय हुम ४' ' ॐ ऋतेन-सत्यमिन्द्रिय विपानर्ट. शुक्र मन्धस: इति नेत्रयायं वौषट् ५ ' ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिद पयोमृतमधु' 'इत्यस्राय फट्' ६ इति हृदयादिन्यास:।

'ॐ अन्नात्परिस्रुत:'ति शिरसि १ ॐ रसब्रह्मणा इति ललाटे २ 'ॐ व्यपिबतक्षत्रम्' इति मुखे ३ 'ॐ पय: सोमम्' इति हृदये ४ 'ॐ प्रजापति: 'इत नाभौ ५ 'ॐ ऋतेन सत्यम्' इति कट्याम् ६ 'इन्द्रिय विपानम्' इति गुदे ७ ॐ शुक्रम्' इति वृषणयो: 'ॐ अधस' इत्युर्वो: १ 'ॐ इन्द्रस्येन्द्रियमिद पय: ''इति जानुनो: ११ 'ॐ अमृतम्' इति पादयो: १ ' ॐ मधु' इति सर्वाङ्गं २ इति मत्रन्यासं कृत्वा ध्यायेत्-ॐ श्वेताम्बर: श्वेतवपु किरीटी चतर्भुजो दैत्यगुरु: प्रशान्त:।

तक्षाक्षसूत्रश्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च विभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम १ इति ध्यात्वा जपेत् ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रण व्यपिबत् क्षत्रवय: सोमं प्रजापति:।

शुक्र: ध्यानाम्—श्वेताम्बर: श्वेतवपु: किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरु: प्रशान्त: तथा ऽसमुत्रञ्च कमण्डलुश्च, दण्डश्च विप्रदवरदोऽस्तु मह्यम् ।

यह शुक्र परम तेजस्वी श्वेत वस्त्रों को धारण किए हुए हैं। श्वेत शरीर वाला है। श्वेत चमकीला मुकुट पहने हुए है। चार हाथ वाला है। दैत्यों का गुरु है शान्त है। रूद्राक्ष की माला पहने हुए है। हाथ में कमण्डल है, एक हाथ में दण्ड है तत्काल वर देने वाला है। मुझे भी वरदायक फलदायक हो जावे ऐसे तेजस्वी शुक्र का हम ध्यानपूर्वक आह्वान करते हैं।

आह्वान–

शुक्र हाटक नामाग्नि, समिधा–उदुम्बर

(उभटा) फल–खारक, मिश्री

सोमतुल्योदितिप्राज्ञो दानवानां च पुरोहितः। त्राता च सर्वदैत्यानां शुक्रमावहयाम्यहम्।।1।।

भोभो भोजकटेजात शुक्रश्वेताश्ववाहनः। समागच्छश्चतुर्बाहु भृगुगात्रविभूषणः ।।2।।

परिधाक्ष बलिहस्त कमण्डलु धरप्रदः। पूर्वपत्रेति शुक्रश्च प्राचयां शुक्र निधापयेत्।।3।।

ॐ शुक्रज्योतिश्चचित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च।

ज्योतिष्मांश्च शुक्रश्च ऋतपाश्चातय ठं हाः।।17।। 80।।

1. शुक्र ग्रह का वैदिक मन्त्र–ॐ अन्नात्परिस्रुतोरसम्ब्रह्मणा व्यपि वत्क्षत्रम्पयः सोमम्प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ठं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतम्मधु ।।19/75।। पूर्वे शुक्रं स्थापयामि–

2. शुक्र का यन्त्र–

11	6	13
12	10	8
7	14	9

3. तान्त्रिक मन्त्र–ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।'

4. शुक्र गायत्री–ॐ भृगुवंशजाताय विद्महे श्वेतवाहनाय धीमहि तन्नः कविः प्रचोदयात्

विशेष–शुक्र के मन्त्रों के सोलह हजार (16,000) जाप से शुक्र प्रसन्न हो जाता है।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

चैतन्य महाप्रभु

8 श. 7 6 5 के. 9 गु. 10 4 मं. चं. 11 रा. सू. शु. 1 3 बु. 12 2
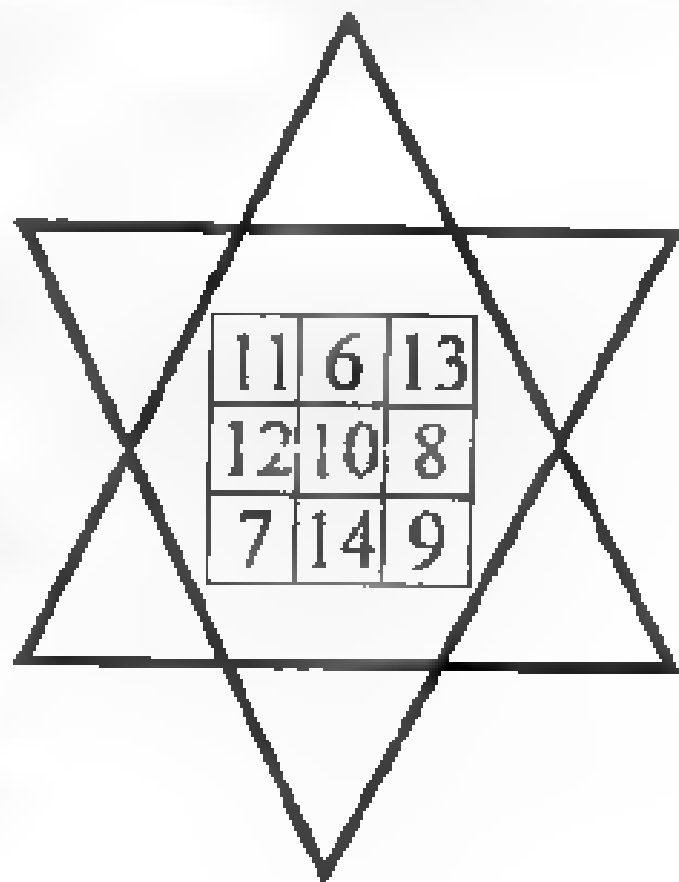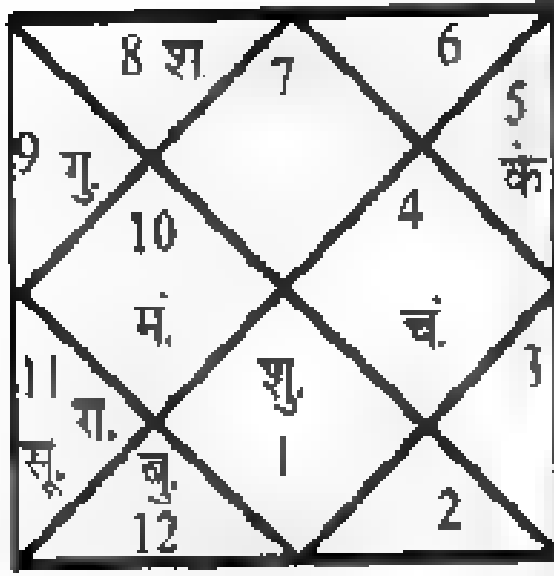
जन्मतिथि 27.2.1488, समय - 8.45 सायं स्थान-नदिया।

महर्षि रमण

बु 8 शु. 7 6 5 9 रा. सू. 10 4 11 गु. मं. 1 3 च के. 12 श. 2
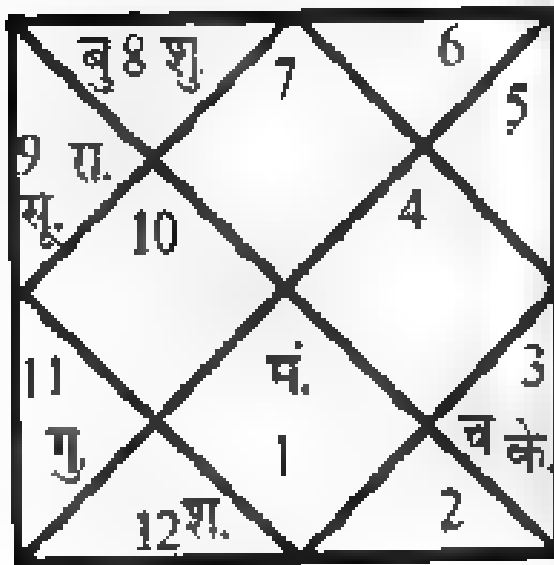
जन्मतिथि-30.12.1879, समय - 1.30 साय, स्थान-मदुरै।

श्री राम शर्मा आचार्य

जन्मस्थान-आंवल खेड़ा (आगरा), जन्म 20.9.1911 प्रातः 9.50

लंकापति रावण

जन्म समय 7.30 बजे सायं, लंकेश रावण भगवान श्रीराम के समकालीन थे। इसलिए उनकी कुण्डली के बहुत से ग्रह श्रीराम की कुण्डली से मिलते हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी (पूर्व प्रधानमंत्री)

जन्म 25.12.1926, जन्म समय- 2.30 रात्रि, ग्वालियर।

सन्त गोस्वामी तुलसीदास
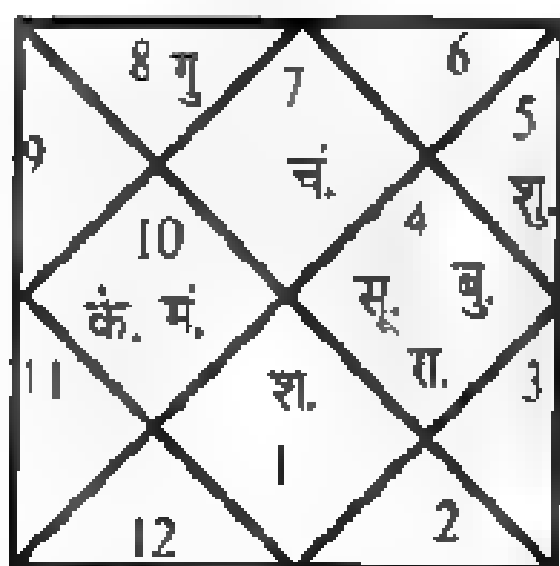
महान् सन्त, कवि गोस्वामी तुलसीदास का ज्योतिषीय परिचय

भारतवर्ष के पवित्र तीर्थ प्रयागराज के पास बांदा जिले में राजापुर नामक एक गांव में सरयू पारीण ब्राह्मण श्री आत्माराज दुबे एव उनकी धर्मपत्नी हुलसी के गर्भ से महान् सन्त गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सवत् 1554 श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन तदनुसार 19 7 1497 को प्रातः 11 बजे हुआ। जन्मते समय बालक के मुख से रोने की जगह 'राम' शब्द निकला। जन्म के समय मुख में दांत थे। मां के गर्भ में बारह महीने रहने के कारण जन्म के समय शिशु का वजन भी बहुत भारी था। तुरन्त सारे गाव-देहात में इस अद्भुत बालक के जन्म की चर्चा शुरू हुई। लोगो ने इसका नाम 'रामबोला' रखा। इस बालक के जन्म से ठीक दसवे दिन माता की मृत्यु हो गई। दासी चुनिया ने इस बालक का पालन पोषण किया। तुलसीदास तुला राशि के हिसाब से इनका जन्म नाम था। जब तुलसीदास लगभग साढ़े पाच वर्ष के हुए तो चुनियां का भी देहात हो गया। जनश्रुति है कि जगत् जननी पार्वती ने ब्राह्मणी का वेश धारण कर इस अनाथ बालक को खाना खिलाया। ज्योतिषशास्त्र कहता है कि चद्रमा से चौथे पापग्रह हो तो बालक माता के दूध से नहीं बकरी के दूध से पालित होगा।

विक्रम संवत् 1561 माघ शुक्ल पचमी शुक्रवार को ठीक सात वर्ष की आयु मे इस बालक को यज्ञोपवीत सस्कार श्री नरहरि जी महाराज ने अयोध्या मे किया। विद्याध्ययन के रूप में रामबोला नामक इस बालक को नरहरि महाराज ने रामचरित्र मानस पढ़ाया। इसके बाद रामबोला ने काशी मे शेष सनातन जी के पास रहकर वेद वेदांग का अध्ययन पद्रह वर्ष तक किया। तत्पश्चात् गुरु आज्ञा लेकर प्रयाग लौट आए

यहां पर वे सबको रामकथा बड़े प्रेम से सुनाने लगा। सवत् 1583 ज्येष्ठ शुक्ल 13 गुरुवार को भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न सुंदरी नामक कन्या से उनका विवाह 29 वर्ष की आयु में हुआ। क्योंकि मांगलिक प्रभाव वाली कुण्डलियो को 28 वर्ष बाद विवाह का सुख मिलता है। तुलसीदास जी की कुण्डली पूर्ण रुप से त्रिबल मांगलिक थी

वे अपनी पत्नी के प्यार में पागल थे। एक बार उनकी पत्नी वर्षा ऋतु में मायके चली गई। अंधेरी रात्रि में तुलसीदास जी भी ससुराल पहुंच गए तथा घर की छत पर सांप को रस्सी समझ कर सीधा छत पर पहुंच गए। पत्नी ने इस पर उन्हें बहुत धिक्कारा और कहा-

''हाड़मांस की देह मम, तापर जितनी प्रीति।
तिसु आधी जो राम प्रति, अवसि मिटिहिं भवभीति।''

तुलसीदास को ये शब्द बाण की तरह चुभ गये, सप्तमेश शनि नीच का काम कर गया और वहीं से गृहस्थ धर्म त्यागकर साथ साधु वेश ग्रहण कर काशी चले गए। वे वहां घर घर रामकथा कहने लगे। एक बार काशी के मरघट पर रामकथा सुनने से एक प्रेत की मुक्ति हुई। उस प्रेत ने उन्हें हनुमान जी का पता बताया, तुलसीदास जी अपने साधना बल एवं राम भक्ति बल के प्रभाव से हनुमान जी से मिले और हनुमान जी से श्री रघुनाथ जी के दर्शन की प्रार्थना की हनुमान जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि तुम्हें चित्रकूट के रामघाट पर रघुनाथ जी के दर्शन होंगे तुलसीदास ने अपना आसन चित्रकूट में जमाया और श्री राम तुलसीदास के सामने बालक रूप में प्रकट होकर चन्दन मांगा, पर तुलसीदास जी इतने मोहित हो गए कि श्रीराम को चन्दन देना ही भूल गए। जनश्रुति में दोहा प्रचलित है।

''चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर।
तुलसीदास चन्दन घिसे, तिलक करें रघुवीर।।''

संवत् 1628 में श्री हनुमान जी आज्ञा से तुलसीदास जी अयोध्या गए। वहां प्रयागराज में कुंभ मेला था। वहीं इन्हें भारद्वाज ऋषि याज्ञवलक्य मुनि के दर्शन हुए और इनमें कवित्व शक्ति का स्फुरण हुआ। स्वप्न में भगवान् शंकर ने उन्हें आदेश दिया तुम ग्रामीण (बृज) भाषा में काव्य रचना करो। विक्रम संवत् 1631 में रामनवमी के दिन प्रातः काल में श्री तुलसीदास ने 77 वर्ष की आयु में श्रीरामचरित मानस की रचना प्रारम्भ की। दो वर्ष, सात महीने, छब्बीस दिन के अन्तराल में संवत् 1633 के मार्ग शीर्ष शुक्ल पक्ष रामविवाह के दिन सातों काण्ड पूरे हो गए। रामकथा का श्रवण करते करते श्री तुलसीदास जी ने 126 वर्ष की आयु में परिपूर्ण करके विक्रम संवत् 1880 श्रावण शुक्ल तृतीया शनिवार को असीघाट पर राम राम जपते हुए अपनी शरीर का त्याग किया तथा हिन्दी साहित्य में अजर अमर हो गए।

संत शिरोमणि तुलसीदास की कुण्डली में चारों केन्द्र भरे हुए होने से **'आसमुद्रात् योग'** बना फलतः उनकी कीर्ति दिग्दिन्तर में सात समुद्र पार फैली। पूरे विश्व में संत शिरोमणि तुलसीदास के सानी कोई भक्त कवि नहीं हुआ। जिनकी पूजा भगवान श्रीराम के समकक्ष की जाती है। भक्ति रस में डूबी उनकी चौपाईयां आज भी अमोघ मन्त्र की तरह साधकों के कष्ट-रोग व शोक को दूर करने में अमृत तुल्य उपादेय का काम करती है। संत श्री तुलसीदास का जन्म राहु की महादशा में

हुआ तथा उनकी मृत्यु भी राहु की महादशा में हुई इस प्रकार उन्होंने विंशोत्तरी दशा क्रम का एक परिभ्रमण पूरा करके 120 वर्ष की आयु गणना पर सत्यता की मोहर लगा दी।

श्रीमती हिलेरी क्लिंटन

जन्म स्थान-शिकागो, जन्म तिथि 26.10.1947, जन्म समय 8.00 प्रातः।

श्री रामनिवास मिर्धा

जन्म स्थान-कुचेरा (नागौर), जन्म तिथि-24.8.1924।

श्री रोमेश भण्डारी

राज्यपाल, जन्म तिथि-29.3.1928, जन्म समय 20.30, जन्म स्थल-पटियाला।

महात्मा गांधी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और राजयोग
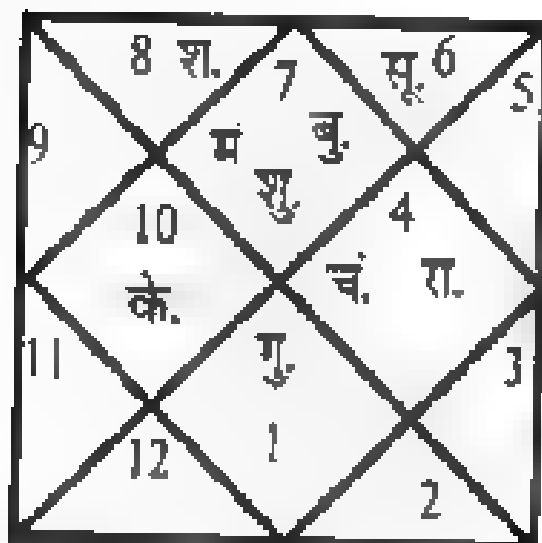
चारों केंद्र में शुभ या पाप ग्रह हुए तो 'चतुः सागर' नाम का राजयोग होता है। भाग्येश बुध राजयोग कारक होकर लग्न में है। मंगल उच्च का शुक्र स्वगृही लग्न में है। सूर्य तुला या बारहवें स्थान में हो तो मानसागरी के अनुसार एक हजार राजयोग नष्ट करता है। फलतः महात्मा गांधी किसी ऊंचे सरकारी पद पर आरूढ़ न हो सके क्योंकि दशम भाव में राहु भी है। परंतु राष्ट्रपिता के रूप में उन्होंने मरणोपरांत जो ख्याति प्राप्त की, उस दृष्टि से इस कुंडली में उपस्थित 'चतुः सागर' योग सार्थक होकर मुखरित हुआ।

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को प्रातः 8.25 मिनट पर पोरबन्दर कच्छ) गुजरात में हुआ। उनकी कुण्डली में राहु दशमेश चंद्रमा के साथ दशम भाव में स्थित है। किसी भी जन्म कुण्डली के दूसरे, तीसरे, आठवें और बारहवें भाव का सम्बन्ध जातक को जेल अवश्य ले जाता है जब खासकर राहु का सम्बन्ध इन भावों में हो। महात्मा गांधी की कुण्डली में द्वितीय व द्वादश भाव में अशुभ ग्रह बैठे हैं। फलतः महात्मा गांधी आजादी के लिए अनेक बार जेल गए।

महात्मा गांधी की कुण्डली में सबसे अहम् घटना है उनकी गोली मारकर हत्या करना। यहां अष्टमेश शुक्र है मुख्य मारकेश मंगल द्वितीयेश, बुध भी होकर अष्टमेश के साथ है। इन दोनों की अशुभता बढ़ाने के लिए व्ययेश बुध भी इनके साथ युति कर बैठा फलतः जातक अष्टमेश, द्वितीयेश, व्ययेश की युति ही उनकी हत्या के लिए जिम्मेदार है। इनकी मृत्यु 1947 में परम पापी बृहस्पति की महादशा में हुई क्योंकि यहां बृहस्पति तृतीयेश व षष्टेश होकर वक्री है तथा मुख्य मारकेश मंगल की राशि में है। आंशिक कालसर्प योग' के कारण वे जीवन भर तनाव में रहे।

ननी पालकीवाला

च.8 शु. रा. 7 6 5
9 बु म. श.
10 सू. 4 गु.
11 3
12 1 के. 2

जन्म 16.1.1920, जन्म समय 00.45 रात्रि, जन्म स्थान-नवसारी

बारोनेस मार्गेट थेचर

8 शु. 7 सू. 6 म. 5
9 गु. श. बु च.
10 के. 4 रा.
11 3
12 1 2

जन्म तिथि-13.10.1928, जन्म समय-9.00, जन्म स्थल-लंदन (यू.के.)

स्व. माधवराव सिन्धिया

8 सू. 7 6 5
9 गु. बु. श. शु.
10 के. 4 रा.
11 3
12 मं. 1 च. 2

जन्म तिथि 9.3.1945, जन्म समय 00.00 रात्रि, जन्म स्थान ग्वालियर

श्री गोपीनाथ मुण्डे

9 चं.	8	7 रा. सू. बु. शु.
6	5	10 मं
4	11	के. श. 1
3	12 गु.	2

(पुर्व. उपमुख्यमंत्री) महाराष्ट्र 18.10.1939 समय 7.30 प्रातः मुम्बई।

प्रस्तुत कुण्डली महाराष्ट्र के पूर्व उपमुख्यमंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के प्रमुख नेता श्री गोपीनाथ मुंडे की है। इनका जन्म 18 अक्टूबर 1939 को प्रात 7.30 पर बम्बई में हुआ। इनका जन्म "तुलालग्न" लग्न में शुक्र व सूर्य के साथ हुआ फलतः ये जन्म से ही सिद्धांतवादी एवं स्वाभिमानी व्यक्ति थे। इनका जन्म केतु की दशा में हुआ। फलतः बचपन व युवावस्था संघर्ष में ही व्यतीत हुई।

इनकी कुंडली में राजयोग का प्रबल कारक ग्रह मंगल है जोकि दिग्बली एवं उच्च का होकर केंद्र में बैठा है। इस मंगल के कारण इस कुंडली में "रुचक योग" नामक राजयोग की सृष्टि हुई है जो कि पंचमहापुरुष योगों में से एक योग है। सन् 1995 के लगते ही इनका यह राजयोग प्रबल रुप से प्रभावी हुआ। कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि बंबई में कभी भाजपा का शासन होगा एवं गोपीनाथ मुंडे उसके उपमुख्यमंत्री बनेंगे।

"श्रीचंडमार्तंड पंचांग" ने दीपावली 1994 को ही लिख दिया था कि आगामी चुनावों में शिवसेना एवं भाजपा गठबंधन उभरेगा। जब 18 मार्च 95 को ये पंक्तियां अक्षरशः सत्य हुईं तो ये शब्द सोने से भी अनमोल हो गए।

उपरोक्त कुंडली हमें मराठी पत्रिका "ग्रहांकित" के फरवरी अंक से प्राप्त हुई। इस दृष्टि से इस समय श्री मुंडे को राहु की महादशा में बुध का अंतर चल रहा है भाग्येश है तथा लग्न में "बुधादित्ययोग" करके बैठा है फलतः बलवान् है। यह दशा श्री मुंडे के भाग्योदय की दशा है, जो कुछ इनको जीवन में अब तक न मिला, इस दशा में मिला।

राष्ट्रपति हिटलर (तानाशाह)

जन्म 20.4.1889, जन्म समय-18.30 प्रात, जन्म स्थान-जर्मनी

एकाधिक ग्रह जन्म लग्न को देखने से राजयोग हुआ।

सर्वैर्गगन-भ्रमणैर्दृष्टे लग्ने भवेन्महिपालः।
बलिभिः सौख्यार्थ-युतो विगतभयो दीर्घजीवी च।

–मानसागरी, श्लोक 88/पृ. 233

जन्म लग्न को संपूर्ण ग्रह देखते हो तो बलवान सौख्य व अर्थ से युक्त भयरहित राजयोग होता है। लग्नेश लग्न को देखने से 'लग्नाधिपतियोग' बना। उच्च का सूर्य, स्वगृही मंगल ने सप्तम में बैठकर जबरदस्त राजयोग की सृष्टि की है। उच्च का सूर्य एवं स्वगृही मंगल वाला व्यक्ति जीवन में किसी से भी दबता नहीं। कठोर अनुशासन एवं हुक्म चलाना इनकी जन्मजात प्रवृत्ति होती है। तानाशाह हिटलर की यही सबसे बड़ी विशेषता थी।

हिटलर की कुंडली में तृतीय स्थान से नवम भाव वाला **'वासुकी नामक कालसर्पयोग'** बना। जिसके कारण अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए।

स्टालिन

जन्म तिथि 31.12.1878, जन्म समय-02.00 (रात्रि), जन्म स्थान सोवियत रूस।

प्रस्तुत कुंडली सोवियत गणराज्य (रूस) के महान नेता स्टॉलिन की है। मानसागरी श्लोक 2 पृष्ठ 220 के अनुसार

एकः शुक्रो जनमसमये लाभसंस्थे च केन्द्रे
जातो वै जन्मराशौ यदि सहजगते प्राप्ते वा त्रिकोणे।
विद्या विज्ञान युक्तो भवति नरपतिः विश्वविख्यात कीर्तिः
दानी मानी च शूरो हयगणसहितः मद्गजै सेव्यमानः।

केंद्र में तुला का अकेला शुक्र राजयोग करता है। फिर स्वगृही मंगल दशम भाव, लग्न एवं स्वराशि वृश्चिक को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। गुरु एवं शनि ने परस्पर राशि परिवर्तन किया। गुरु स्वग्रहाभिलाषी है तथा क्रमशः भाग्यस्थान एवं लग्नस्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है।

सम्राट महान् अकबर
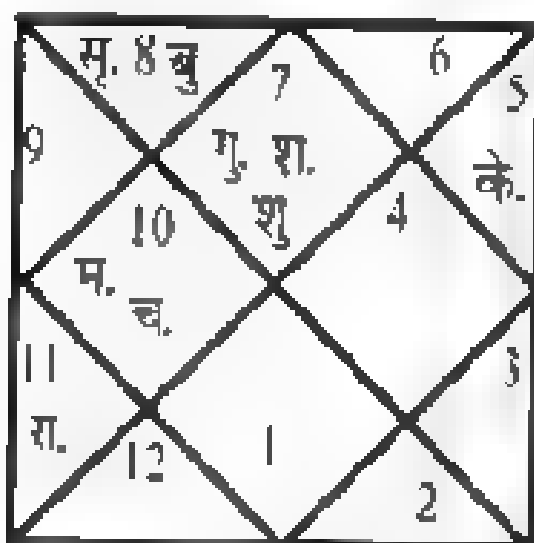
जन्म स्थान अमरकोट (पाकिस्तान), जन्म तिथि-24.11.1542, जन्म समय दोपहर 12.30।

मुगल सम्राट हुमायू के पुत्र अकबर 14 वर्ष की छोटी आयु में ही हिन्दुस्तान के बादशाह बन गये। अकबर के मुख्य संरक्षक बेहराम खान ने सन् 1556 को पानीपत के युद्ध में हेमु को हटाकर अकबर को बादशाह घोषित कर दिया। उस समय अकबर की मंगल महादशा चल रही थी। मंगल के कारण 'रुचकयोग' शनि के कारण 'शशयोग' व 'पद्मसिंहासन योग' ने अकबर को चक्रवर्ती सम्राट बना दिया।

इसकी कुंडली की प्रमुख बात है कि अकबर की अनेक पत्नियां होते हुए भी उसके पुत्र नहीं था। पंचमस्थ राहु 'कालसर्पयोग' के कारण पुत्र संतति में बाधक था। फलतः जातक अनेक धार्मिक अनुष्ठान हुए। अकबर नंगे पांव दिल्ली से अजमेर गया और पुत्र के लिए दुआ मांगी। शिवलिंग की स्थापना की तब एक पुत्र हुआ जहांगीर। अकबर का शासन (1556-1605) तक चला। उसने दिने-ईलाही धर्म चलाया एवं फतेपुर सीकरी का निर्माण किया उसने राजपूत कन्याओं से विवाह किया तथा अपने दरबार में 'राजज्योतिषी' का पद स्थापित किया। अकबर ने भास्कराचार्य की 'लीलावती' का उर्दू व फारसी में अनुवाद किया। अकबर के समय में 'ताजिक नीलकण्ठी' का भरपूर प्रचार हो चुका था।

केंद्र या त्रिकोण में बुध बृहस्पति, शुक्र इनमें से कोई भी ग्रह हो तो धर्म धन, विद्या, यश, कीर्ति लाभ देने वाला राजयोग होता है।

केन्द्रत्रिकोणे बुधजीवशुक्राः स्थितान्तराणा यदि जन्मकाले।
धर्मार्थ-विद्या-यश-कीर्ति-लाभ-शान, सुशील स नराधिपः स्यात्॥

जन्म समय बुध, बृहस्पति और शुक्र केंद्र या त्रिकोण में हों तो धर्म, अर्थ, विद्या यश कीर्ति, लाभ, शान स्वभाव और सुंदर शील इनसे युक्त राजयोग होता है। लग्न में शनि उच्च का, गुरु, एवं स्वगृही तथा चतुर्थ में उच्च का मंगल ने इन्हे बादशाह के पद पर पहुंचाया एवं कीर्ति प्रदान की। पंचम भाव मे राहु के कारण कुपुत्र से ये जीवन भर दु:खी रहे। इस कुंडली में एकादश स्थान से लेकर 'विषधर नामक पूर्ण कालसर्पयोग' है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव इनके संपूर्ण जीवन पर पड़ा।

सम्राट औरंगजेब
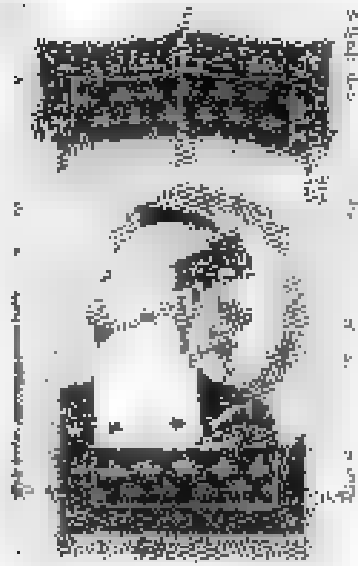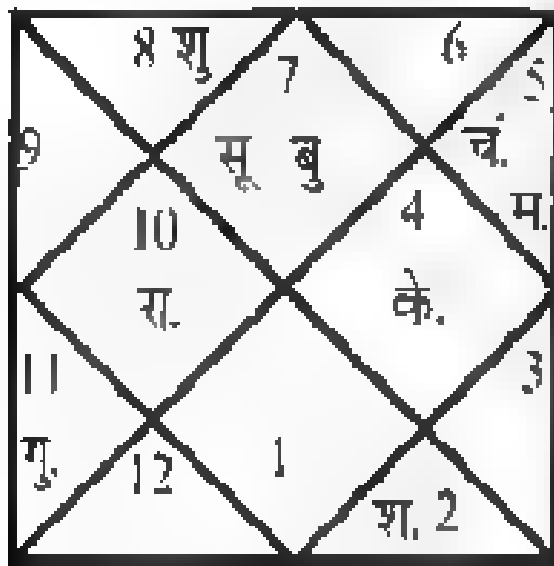
जन्म समय-7 18 प्रात:, जन्म तिथि-14 10 1618 जन्म स्थान उज्जैन (म. प्रदेश)

मुगल सल्तनत का अन्तिम शासक औरंगजेब का जन्म 14.10.1618 प्रात: 7 18 मिनट पर तुलालग्न के 19 अंशों में हुआ। इतिहास मे औरंगजेब का कृतघ्न पुत्र तथा अभागा पिता के रूप में याद किया जाता है। मंगल की महादशा तथा राहु व शनि के अन्तर मे औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को आगरा किला में कैद कर खुद शासक बन बैठा। इतना ही नहीं अपने पिता को नित नई यातनाएं देकर अन्न व दाल के लिए तरसा-तरसा कर मार डाला। पंचम स्थान में गुरु होने के कारण इसके पांच पुत्र थे औरंगजेब ने अपने दो पुत्रो की खुद ही हत्या कर दी, एक पुत्री को देश निकाला दे दिया। ईस्वी सन् 1662 व 1680 के मध्य औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता चरम सीमा पर पहुंची। उसने हिन्दुओं पर 'जजिया कर' लगाया। यह अपने प्र पितामह अकबर की नीतियों के खिलाफ था। यह 90 वर्ष तक जिया 1705 मे बीमार पड़ा। गृहकलह के चलते इसके पुत्र ने ही इसे क्रूर यातना के साथ मारा। इसके 17 पोते थे। सब इसके दुश्मन थे। पर इसका कोई भी वंशज गद्दी पर काबिज नहीं हुआ। मुगल साम्राज्य बिखर गया। इसकी मृत्यु 1707 में हुई। फिर 1719 मे मोहम्मद शाह नामक अन्य व्यक्ति दिल्ली की गद्दी पर बैठा वीर दुर्गादास राठौड़ (जोधपुर) एवं छत्रपति शिवाजी ने औरंगजेब से लोहा लिया। मुगल साम्राज्य के बाद हिन्दुस्तान पर अंग्रेजों का शासन आया।

अंग्रेजों से लोहा लेने वाली रणचण्डी रानी लक्ष्मीबाई
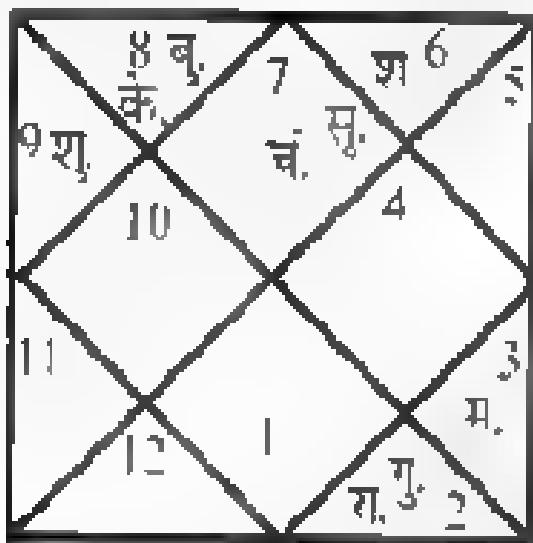
शुक्र, बुध, बृहस्पति-इनमें से कोई भी ग्रह केंद्र में हो और दशम मंगल में हो तो 'कुलदीपक' नाम का राजयोग होता है, ऐसा मानसागरीकार कहते हैं। परंतु यहां मंगल भाग्य भाव में बैठा अपनी उच्च राशि को देख रहा है। फलतः झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई के आत्मबल का कोई मुकाबला नहीं था। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में वो टक्कर ली कि अंग्रेजों के दांत खट्टे हो गए।

उच्च का शनि लग्न में चंद्रमा के साथ होने पर उच्च श्रेणी का 'शश नामक' राजयोग बनाया। पर शनि+चंद्र के कारण ग्रहण योग बना, लग्न में बुध+केतु दो परस्पर शत्रुग्रहों की युति से 'शास्त्रहता योग' बना, गुरु के साथ राहु होने के कारण चांडाल योग की सृष्टि हुई, अपनों ने ही धोखा दिया और महारानी अंतिम समय तक बड़ी बहादुरी से लड़ती हुई वीरगति को प्राप्त हुई। विश्व के इतिहास में महारानी लक्ष्मीबाई जैसा व्यक्तित्व आज तक नहीं हुआ। इस कुंडली में अष्टम भाव से द्वितीय तक की ग्रह स्थिति के कारण 'आंशिक कालसर्पयोग' की सृष्टि हुई जिसका प्रभाव इनके जीवन पर अमिट छाप छोड़ गया।

पंचमेश शनि बारहवें होने से पुत्र पर आयुष्य का संकट आया। जिसका मुकाबला महारानी ने बड़ी वीरता से किया। तुला का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। इसलिए महारानी राजसिंहासन प्राप्त नहीं कर पाई।

करिश्मा कपूर

शुक्र ने दी करिश्मा को बेपनाह खूबसूरती एवं सफलता

करिश्मा अपने जीवन के 28वें खूबसूरत वर्ष में प्रवेश कर चुकी है। 25 जून, 1975 को सुप्रसिद्ध फिल्म स्टार रणधीर कपूर एवं अभिनेत्री बबीता की कोख से 'तुला लग्न' और 'धनुराशि' में जन्मी करिश्मा का घरेलू नाम 'लालो' था। 50 से अधिक महत्वपूर्ण मैग्जीन के मुखपृष्ठ पर छपी करिश्मा ने प्रिन्ट मीडिया एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को अपनी खूबसूरती व ग्लैमर के चकाचौंध से मोहित कर रखा है, तुला
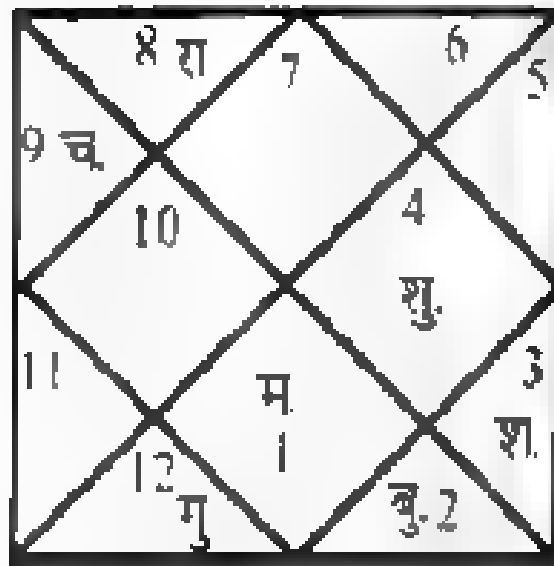
लग्न के माध्यम से कुदरत ने उसे सुंदरता के साचे में ढाला। वहीं लग्नेश शुक्र ने केंद्रस्थ होकर करिश्मा की सुंदरता, सौन्दर्य एवं अभिनय की प्रतिभा में चार चांद लगा दिये। शुक्र चंद्रमा की राशि में है और चंद्रमा धनुराशि में है, जिसका स्वामी बृहस्पति इनकी कुण्डली मे स्वगृही है। नवमांश में बृहस्पति, चंद्र एवं मंगल वर्गोत्तमी है।

अभिनय का गुण करिश्मा को परम्परागत पैतृक धरोहर के रुप में प्राप्त था। फिर भी इन्होंने अपने कैरियर की शुरुआत बकायदा संगीत एवं नृत्य कॉलेज मे ग्रेजुएशन प्राप्त करके प्रारम्भ की। सन् 1994 में 19 वर्ष की आयु में ही इन्होंने फिल्मी दुनिया में प्रवेश कर लिया। इस समय मंगल की दशा चल रही थी। इनकी अभिनय प्रतिभा ने सफलता के चरण छू लिए। 21 वर्ष की आयु मे ही करिश्मा को 'सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री' का फिल्म अवार्ड 'राजा हिन्दुस्तानी' के रिलीज होने पर मिला। यहीं से इनके उत्तरोत्तर उत्तम कैरियर की शुरुआत सोने की कलम से लिखी गई करिश्मा को राहु की महादशा लगी। राहु जो इनके धन स्थान में है यात्रा कराने लगा तथा यात्राओं के द्वारा धन बरसने लगा। वृश्चिक का राहु, मंगल तुल्य कार्य करने लगा। मंगल जिसके कारण इनकी कुंडली में 'मालव्य नामक' महान् राजयोग बना। करिश्मा को 1997 में लक्स जी सिने से फिर श्रेष्ठ अभिनेत्री अवार्ड से नवाजा गया और इसके साथ ही पुन: फिल्मफेयर अवार्ड सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री 'दिल तो पागल है' में मिला इस समय मंगल में चंद्रमा का अन्तर चल रहा था, इसके साथ ही 'साजन चले ससुराल', 'जीत, 'राजा हिन्दुस्तानी, 'युद्ध' की बाक्स ऑफिस सफलता ने बालीवुड की दुनिया में तहलका मचा दिया। 22 वर्ष की आयु तक पहुंचते पहुंचते करिश्मा को इतनी उत्साहवर्धक सफलताएं मिली जितनी किसी को भी उम्मीद नहीं थी। सितारों ने अपना काम किया। करिश्मा अब नई फिल्मों को साइन करने के लिए 75 लाख से एक एक करोड़ रुपये की डिमाण्ड करने लगी। हर माह अब उनकी नई फिल्मों के कान्ट्रेक्ट होने लगे। ज्यादा समय विदेशी शूटिंग में बीतने लगा। इन्हीं दिनों करिश्मा व अभिषेक बच्चन के प्रेम प्रसंग सूर्खियों में छपने लगे। अमिताभ बच्चन ने एक भव्य समारोह के अन्दर करिश्मा के सगाई के साथ विवाह

की घोषणा कर दी परंतु किस्मत को कुछ और मंजूर था। राहु की महादशा में शनि के अन्तर ने यह सगाई तोड़ दी। करिश्मा की कुंडली पूर्णतः मांगलिक है। ऐसा होना इसके लिए एक शुभ घटना थी क्योंकि मांगलिक कुंडली वालों का एक सगाई होकर टूटना या विवाह होकर छूटना आने वाले जीवन साथी के लिए शुभ संकेत है।

करिश्मा को इस समय राहु की महादशा में शनि और उसमें सूर्य का प्रत्यन्तर चल रहा है फलतः यह शत्रुदशा है इस समय कुछ बदनामी भी होगी तथा सफलता भी संदिग्ध रहेगी। यह समय 9.8.2003 तक है इसके बाद शनि में चंद्रमा का प्रत्यन्तर लगेगा। चंद्रमा दशमेश है और गुरु की राशि में बैठा हुआ भाग्यभवन की पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। यह समय 25.12.2003 तक है जिसमें करिश्मा के लिए सफलता के नये द्वार खुलेंगे।

स्व. राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा
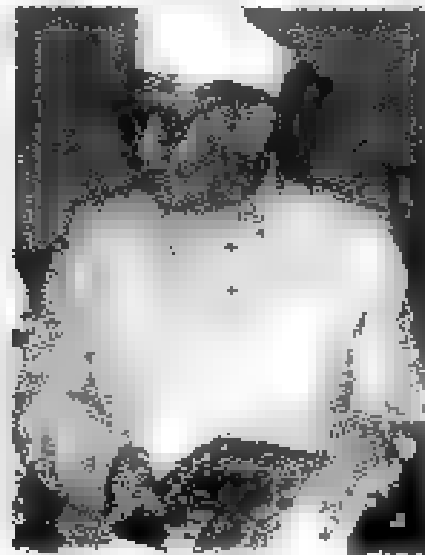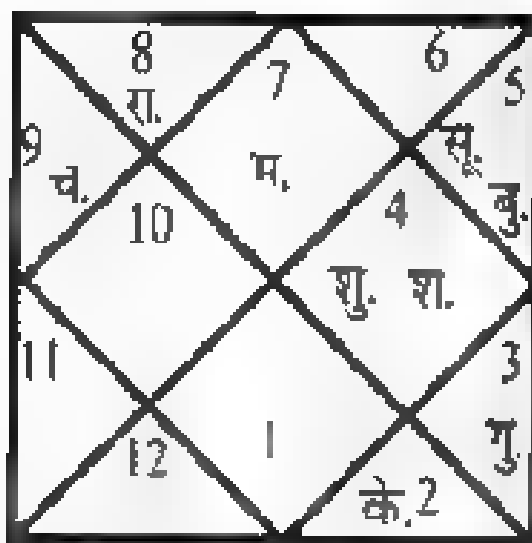
जन्म तिथि-19.8.1918, प्रातः 10.30, जन्म स्थान-भोपाल (म.प्र.)

प्रधानमंत्री श्रीलंका श्रीमती चन्द्रिका कुमार तुंगे
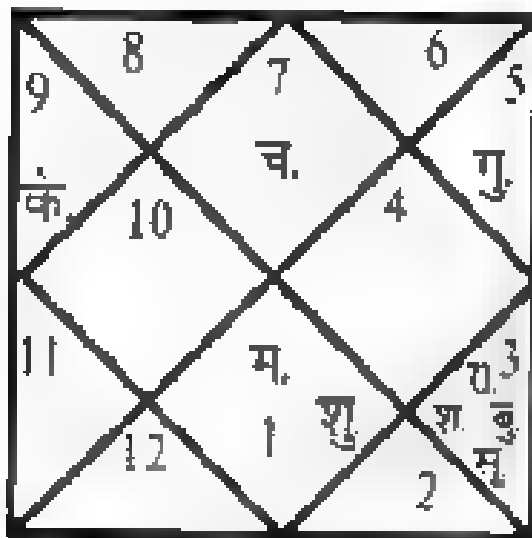
जन्म स्थान श्रीलंका जन्म तिथि-29.6.1945, जन्म समय-दोपहर 14.30

लारा दत्ता

भारत सुन्दरी, जन्म तिथि-6.4.1978, जन्म समय-सायं 19.30

अभिनेता देवानन्द

जन्म स्थान-गुरदासपुर, जन्म तिथि-26.9.1923, जन्म समय दोपहर 9.30

चार्ली चैप्लीन (हास्य अभिनेता)

जन्म स्थान-लन्दन, जन्म तिथि-16.4.1889, जन्म समय 20.00

श्री कपिलदेव

क्रिकेट कैप्टन, जन्म स्थान-चंडीगढ़, जन्म तिथि-6.9.1959, जन्म समय 2.20 रात्रि।

श्री अजीत आगरकर

जन्म तिथि 4.12.1977

अभिनेत्री मीना कुमारी

जन्म स्थान मुम्बई, जन्म तिथि- 1.12.1932, जन्म समय- .1.55

अभिनेत्री तब्बू

जन्म स्थान मुबई, जन्म तिथि- 4.1...974, जन्म समय-7.00 प्रात:

फिल्म अभिनेत्री रिंकी खन्ना
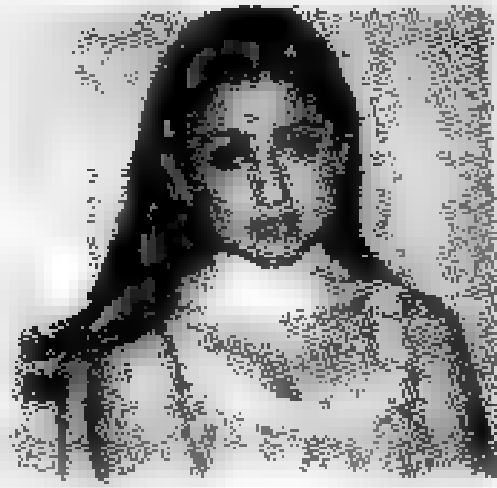
जन्म स्थान दिल्ली, जन्म तिथि 20.11.1976, जन्म समय-4.46 प्रात:

विंस्टन चर्चिल

जन्म स्थान-लन्दन, जन्म तिथि 30.11.1874, जन्म समय 5.00

प्रस्तुत कुंडली के प्रधानमंत्री सर विंस्टन चर्चिल की है ज्योतिष शास्त्रानुसार लग्न से या अन्य किसी भी स्थान से क्रमशः सब ग्रह होने से 'एकावली नामक' श्रेष्ठ राजयोग होता है। जैसा कि राष्ट्रपति अय्यूब खान, प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई, गृहमंत्री यशवंतराव चव्हाण की कुंडली में यही योग मुखरित हुआ। यहां लग्नस्थ बृहस्पति पूर्ण दृष्टि से भाग्यस्थान को देख रहा है। लग्नेश शुक्र ने बृहस्पति के साथ राशि परिवर्तन योग बनाया है। राजयोगकारक शनि स्वगृही होकर केंद्रस्थ में बैठा राजयोग बना रहा है तथा अपनी उच्च राशि (लग्न) को पूर्ण ताकत प्रदान कर रहा है। इसी प्रकार मंगल बुध के घर में तथा बुध मंगल के घर में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठा है।

बिपाशा बसु (अभिनेत्री)
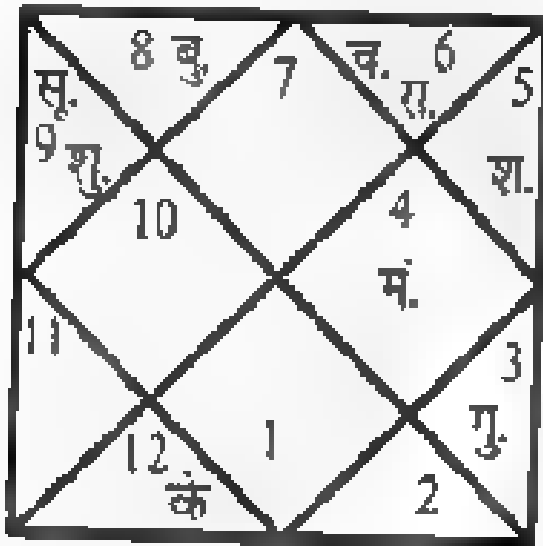
जन्म तिथि–1 जनवरी 1978।

स्व. श्री एन. टी. रामाराव
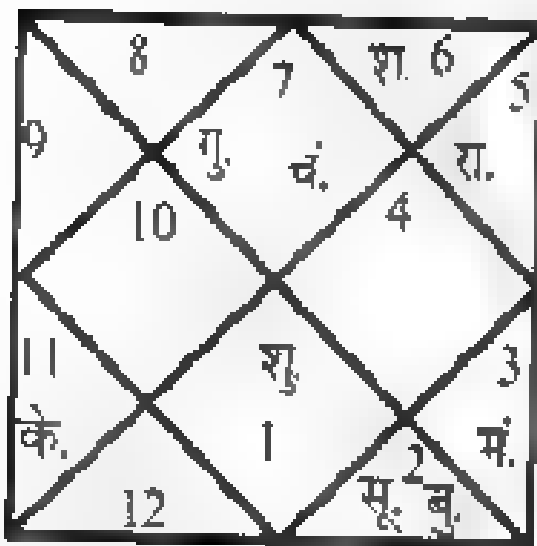
जन्म स्थान-निम्माकुर (आंध्र प्रदेश), जन्म 28.5.1923 सायं. 16.23।

फिदेल कास्ट्रो

जन्म तिथि 13.8.1926 जन्म समय 11.10, जन्म स्थान-हवाना (क्यूबा)

एस. बी चव्हाण

जन्म स्थान पैथन (महाराष्ट्र), जन्म तिथि- 14 7 1920, जन्म समय दोपहर 12.30

न्यूटन (वैज्ञानिक)

जन्म स्थान-इग्लैण्ड जन्म तिथि 25.12.1642 जन्म समय-2.00 प्रात:

हरिवंश राय बच्चन (कवि)

जन्म स्थान-प्रयाग जन्म तिथि- 29.11.1907 जन्म समय- 5.30 प्रातः।

जहांगीर (प्रेमी) सम्राट
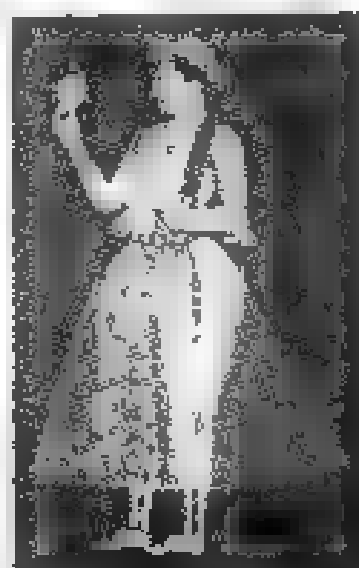
जन्म तिथि 30.8.1559, जन्म समय-14.20, जन्म स्थान-आगरा (उत्तर प्रदेश)

जहांगीर नामा के अनुसार 30 अगस्त 1559 को राजधानी आगरा में तुलालग्न के 24 अंशो मे जहांगीर का जन्म जोधाबाई के कोख से हुआ। जहांगीर अकबर का नालायक बेटा था। उसने पिता के खिलाफ विद्रोह किया। रसिक मिजाज का होने के कारण उसने अपनी दासी नूरजहां से विवाह पिता की मर्जी के खिलाफ किया, जहांगीर के कमजोर नेतृत्व से मुगल सल्तनत का पतन शुरू हुआ। जहांगीर के भी पंचमस्थ केतु के कारण संतान समस्या रही। इसके भी अनेक पत्नियां थीं। पत्थर-पत्थर को भगवान की तरह पूजने के बाद दुआ कामयाब हुई और इसके भी एक पुत्र हुआ-शाहजहां। इसे बचपन में चेचक हो गई थी, पर बच गया। इसे लोग 'शाहशूजा' के नाम से भी पुकारते थे। शाहजहां अपने पिता की नालायक औलाद निकला। इसने भी अपने पिता के खिलाफ तलवार उठाई।

श्री नाथूराम मिर्धा
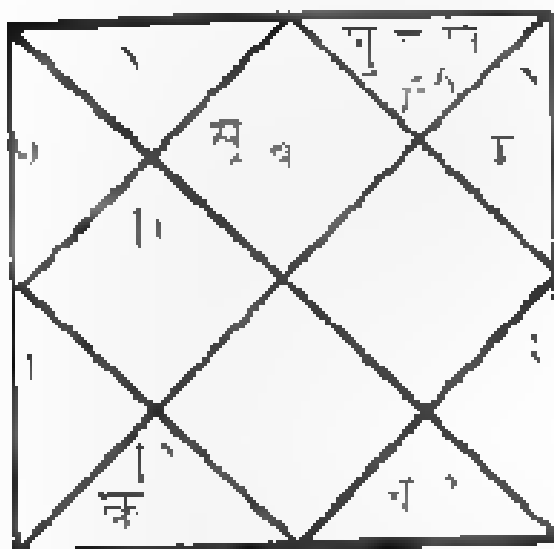
जन्म 20.10.1921 जन्म समय-7.00 प्रात, जन्म स्थान कुचरा (नागौर)

स्व. हैदरअली
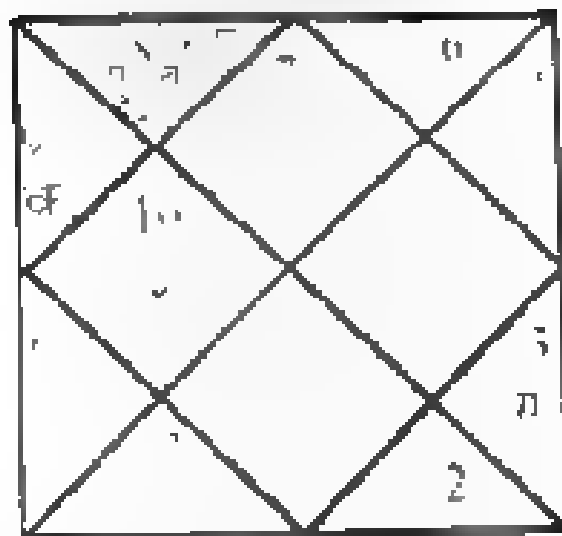
जन्म तिथि 8.12.1722

पं. कुंजीलाल दुबे (विधानसभाध्यक्ष) और राजयोग

जन्म तिथि-9.3.18्6, जन्म समय 21.30 (रात्रि), जन्म स्थान-मध्यप्रदेश

प्रस्तुत कुंडली मध्य प्रदेश के विधानसभाध्यक्ष पं. कुंजीलाल दुबे की है शास्त्रकार कहते हैं कि-

जनयति नृपमेकोऽप्युच्चगो मित्रदृष्टः।
प्रचुरधनसमेत मित्रयोगाच्च सिद्धम्।

सर्वार्थ चिंतामणि श्लोक 5/पृ. 165
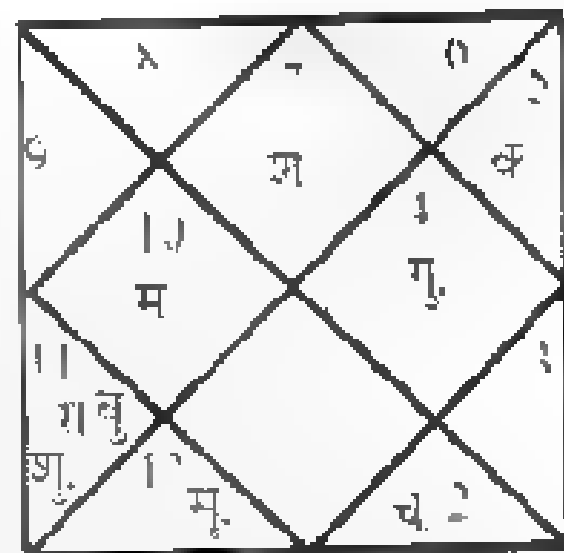
एक भी ग्रह उच्चगत मित्र ग्रह हो तो बहुत धनसहित मित्र मंडली में संपन्न ऐसा राजयोग होता है परन्तु यहां तो शनि, मंगल, चंद्र और गुरु चार ग्रह उच्च के हैं उच्चाभिलाषी हैं। अतः यह बहुत ही यशस्वी एवं प्रतिष्ठावर्द्धक राजयोग की दृष्टांत कुंडली है।

एलिजाबेथ टेलर (हॉलीवुड)

श्री खेत सिंह राठौड़

कानून मंत्री (राजस्थान) जन्म तिथि 11.12 ?974 प्रातः 3.30

❑❑❑

वृश्चिक लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में **'लग्न'** का बड़ा महत्त्व है ज्योतिष में लग्न को बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है कई बार विद्वान् व्यक्ति तथा, व्यावसायिक पण्डित भी जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते हैं, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तकों का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है प्रत्येक लग्न में एक एक ग्रह को भिन्न भिन्न भावों में घुमाया गया है। एक अकेले ग्रह के भिन्न भिन्न भावों में घूमने से, विभिन्न प्रकार के योगों की सृष्टि होती है। जिसकी प्रमाणिक चर्चा पहली बार आप इस पुस्तक में देख पायेंगे। लग्न बारह होते हैं, ग्रह नौ होते हैं, फलतः 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह स्थितिया एक लग्न में निर्मित होती हैं। बारह लग्नों मे 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितिया बनती हैं। प्रत्येक ग्रहों की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश इन पुस्तकों में डाला गया है निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया मे आज तक नहीं हुआ वह है **'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहा? किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!! फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा-का-कच्चा ही रह गया। इस

पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह से युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुनः नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 प्रकार की द्वि-ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारहे लग्नों में कुल 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्वि-ग्रह युतियां बनेगी। **ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्वि ग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है। इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

एक छोटा सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमगल लक्ष्मी योग'** का ले सकते हैं। क्या बृहस्पति+चंद्र की युति से बना **'गजकेसरी योग'** सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी!!! **'गजकेसरी योग'** का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा? **'गजकेसरी योग'** की बारह लग्नो में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितिया बनेंगी। अकेला **'गजकेसरी योग'** 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। **'गजकेसरी योग'** की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, **'मकर लग्न'** या **'कुम्भलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में **'गजकेसरी योग'** छठे स्थान या आठवें स्थान में हो तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर बृहस्पति छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चंद्रमा छठे आठवें होने से जातक का गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पाराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष साफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न', **'कर्कलग्न'**, **'वृषलग्न'**, **'तुलालग्न'**, **'मिथुनलग्न'**, **'कन्यालग्न'**, **'सिंहलग्न'**, **'धनुलग्न'**, **'मीनलग्न'**, की पुस्तके प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी है। जिसका ज्योतिष की दुनिया मे जोरदार स्वागत हुआ है। अब यह **'वृश्चिकलग्न'** की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। वृश्चिकलग्न में कलियुगी अवतार बाबा रामदेव, श्री सत्य साई बाबा, पोप जॉन पॉल, जान मिल्टन, राजगोपालाचार्य, ग्लाबियर महाराजा माधवराज सिंधिया,

गृहमंत्री लालकृष्ण आडवाणी, लाल बहादुर शास्त्री, श्री पाण्डुरंगशास्त्री, श्री अरुण शौरी राजनेता शरद् पवार, प्रधानमंत्री अय्यूब खां, उपराष्ट्रपति श्री भैरोंसिंह शेखावत, हेनरी फोर्ड, इमरान खान, नेपोलियन बोनापार्ट, शेख हुसैन बाजेद, अभिनेता धर्मेन्द्र, जैना युवाचार्य नथमलजी जैसे व्यक्ति इस लग्न में हुए। वृश्चिकलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। वृश्चिकलग्न की स्त्री जातकों पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की जीरो डिग्री से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हों फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है

एक और बड़ा फायदा जो इन पुस्तकों के माध्यम से ज्योतिष प्रेमियों को प्राप्त होगा वह यह है कि संधिगत लग्न मे प्रायः दो जन्मकुण्डलियों के बीच व्यक्ति दिग्भ्रमित हो जाता है। कई बार एक जातक की दो-तीन प्रकार की कुण्डलियों में भी व्यक्ति भ्रमित हो जाता है? किसे सही माने? ऐसा व्यक्ति प्रायः भिन्न-भिन्न ज्योतिषियों के पास जाता है और भिन्न भिन्न बातों से फलादेश से व्यक्ति पूर्णतः भ्रमित हो जाता है। ऐसे में यह पुस्तक एक दीप शिखा का कार्य करेगी। आप प्रत्येक कुण्डली को लग्न के हिसाब से अलग अलग भावों की ग्रह स्थिति-जन्म कसौटी पर कस कर देखें। आपको स्वतः ही सही रास्ता मिल जायेगा। आपको पता चल जायेगा कि आपकी सही जन्मकुण्डली, सही लग्न कौन-सा है? यदि आपको इस प्रकार के संकट से मुक्ति मिलती है तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सार्थक हो गया।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वय पढ़कर एव अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नो का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर प्रोग्राम **'सृष्टि'** के नाम से भी बना रहे है जो

अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई **'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों'** से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने मे और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ, जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

इन दिनों भारत और विदेशों में ज्योतिष सम्मेलन भी बहुत हो रहे हैं वर्ष भर के शनि, रविवार में शायद ही कोई वार खाली हो, जिस दिन भारत में कहीं-न-कहीं सम्मेलन न होता हो। ज्ञान विज्ञान की चर्चा कम परन्तु परस्पर एक-दूसरे का सम्मान व उपाधि पत्रों का वितरण ही सम्मेलन का आकर्षण बिन्दु रह गया है। इसमें ज्योतिष शास्त्र का उन्नयन नहीं हो रहा है तथा न ही आम जिज्ञासुओं को इन निरर्थक सम्मेलनों से कुछ लाभ मिल रहा है। यदि प्रत्येक लग्न पर प्रत्येक ग्रह पर, प्रत्येक योग पर प्रखर विद्वानों को सम्मान पूर्वक बुलाकर तीन-पांच दिन की विचार गोष्ठी, पत्रवाचन या व्यक्तिगत अनुभवों पर खुलकर चर्चा की जाये, उनका प्रकाशन किया जाये तो मैं समझता हूं, आम जनता को, ज्योतिष शास्त्र को इसका विलक्षण लाभ होगा। नवीन शोध आगे बढ़ेगे जिससे आने वाली पीढ़ी हमारी ऋणी रहेगी।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

अज्ञातदर्शन बिल्डिंग, प्रथम बी. रोड, गोल बिल्डिग के पीछे

श्रीमाली स्ट्रीट, सरदारपुरा, जोधपुर (राजस्थान)-342001

दूरभाष 0291 2637359, फैक्स 0291 2431883,

मोबाइल--098280-25883

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर है। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र तंत्र मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती है। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को **"कर्कलग्न"** के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी है। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे है। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे है, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य है तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि **'युग पुरुष'** के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

1. हस्तरेखा विभाग—सन् 1981 में डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा **'अंगुष्ठ से भविष्य ज्ञान'** एवं **'पांव तले भविष्य'** नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। सामुद्रिक शास्त्र की दुनिया में इस नये विषय को लेकर हंगामा मच गया। पाठकों ने इन पुस्तकों को सराहा तथा इनके अनेक सस्करण छपे. सन् 1992 में **'ज्योतिष और आकृति'** तथा सन् 1996 में **'हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन'** दो भागों में प्रकाशित हुए। अपने 40 वर्षों के सघन अनुसंधान में दो लाख से अधिक हस्तप्रिन्ट के परीक्षण व अध्ययन से अनुभूत प्रस्तुत पुस्तक पर इस विषय पर छठे पुष्प के रूप में पाठकों को समर्पित

की है। **'हस्तरेखाओं का रहस्यमय संसार'** नामक यह कृति किसी भारतीय विद्वान् द्वारा लिखी गई संसार की श्रेष्ठ एवं बेजोड़ पुस्तकों में सर्वोपरि है। इस पुस्तक की कीर्ति ने जरमिन, कीरो एवं बेन्हाम जैसे विदेशी विद्वानों को मीलों पीछे छोड़ दिया। डॉ. द्विवेदी भारत के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होने हस्तरेखाओं को कम्प्यूटर पर लाने का अद्‌भुत प्रयास किया है। अभी यह कार्यक्रम 'अंग्रेजी' में है। शीघ्र ही हिन्दी, गुजराती, मराठी व अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद व संशोधन हो रहा है। हस्तरेखा विभाग में अनुभवी विद्वान् दिन-रात काम कर रहे है। आप अपना हैण्ड प्रिन्ट भेजकर, उनका फलादेश डाक द्वारा प्राप्त कर सकते है। प्रिन्ट पर प्रश्न भी पूछ सकते हैं। यह विभाग भारत ही नहीं, अपितु विदेशों में अपने ढग का अनोखा एवं सर्वोच्च कीर्ति प्राप्त करने वाला विभाग होगा। जहा से इस विषय में लोगों को नया प्रकाश व प्रेरणा बराबर मिलती रहेगी।

2. ज्योतिष विभाग—इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न कम्प्यूटर लगे हैं जो गणित एवं फलित दोनों प्रकार की जन्मपत्रियों का निर्माण करते हैं। व्यक्ति की जन्म तारीख, जन्म समय एवं जन्म स्थान के माध्यम से जन्मपत्रिका, वर्षफल, विवाह पत्रिका, प्रश्न पत्रिका आदि का निर्माण सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित सूत्रों द्वारा होता है। सही जन्मपत्रिका यदि बनी हुई है तो उस पर विभिन्न प्रकार के फलादेश करवाने की व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमारे यहा 'हैण्ड-प्रिण्ट' देखने की सुविधा एवं चेहरा देखकर भविष्य बताने की विद्या का चमत्कार केवल उन्हीं सज्जनों को प्राप्त है, जो हमारी संस्था **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के संस्थापक, संरक्षक या आजीवन सदस्य हैं। **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के सदस्यो, व्यापारियों व उद्योगपतियों को वरीयता के साथ हम नियमित ज्योतिष सेवाए घर बैठे भेजते हैं। इसके लिये नि.शुल्क प्रपत्र अलग से प्राप्त करें। डॉ. द्विवेदी द्वारा हजारों लाखो भविष्यवाणियां लोगों के व्यक्तिगत जीवन हेतु की गई जो चमत्कारिक रूप से सत्य हुई हैं। इसके साथ ही अब तक 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां जो समाचार पत्रों में प्रकाशित हुईं, समय चक्र के साथ साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं। यह एक ऐसा अपूर्ण रिकार्ड है, जो ज्योतिष के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा है। यह एक ऐसा गौरवपूर्ण रिकार्ड है, जिसकी सीमा का लंघन कोई भी दैवज्ञ अब तक नहीं कर पाया है। डॉ. द्विवेदी वैदिक ज्योतिष पर एक अपूर्व सॉफ्टवेयर 'सृष्टि' का निर्माण कर रहे हैं।

3. वास्तु विभाग—हमने 'इंटरनेशनल वास्तु एसोशिएसन' की स्थापना कर रखी है। हमारे केन्द्र के वास्तुशास्त्रियों द्वारा वास्तु संबंधी विभिन्न त्रुटियों व दोषों का परिहार पूर्ण विधि विधान से किया जाता है यदि व्यक्ति नक्शा भेजता है तो उस पर भी विचार-विमर्श करके सही स्थानों को चिह्नित व संशोधित करके नक्शा वापस भेज दिया जाता है। जो सज्जन 'वास्तु विजिट' कराना चाहते हैं उन्हें एडवांस ड्राफ्ट भेजकर

समय निश्चित कराना चाहिए वास्तु संबंधी दोषों का परिहार जहां तक हो सके बिना तोड़-फोड़ करके कर दिया जाता है। इस विषय में परम पूज्य गुरुदेव डॉ भोजराज द्विवेदी द्वारा लिखित पुस्तकें मार्गदर्शन हेतु काम में ली जा सकती हैं

4. यंत्र विभाग–विद्वान् ब्राह्मणों की देखरेख में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण शुभ नक्षत्र, दिन व मुहूर्त में किया जाता है। यंत्र बनने के पश्चात् उसमें विधिवत् प्राण-प्रतिष्ठा करके ही भेजे जाते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि सभी यंत्र यजमान द्वारा निर्दिष्ट धातु मे सर्वशुद्ध तरीके से बनाए जाते हैं। सभी यंत्र लॉकेट मे उभरे हुए होते हैं तथा बनने के पश्चात् निर्दिष्ट गतव्य पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दिए जाते हैं। वी.पी. नहीं की जाती। वी.पी. के लिए आधा एडवांस प्राप्त होना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा अभिमंत्रित व सिद्ध यंत्रों का सम्पूर्ण सूची-पत्र अलग से प्रार्थना कर, प्राप्त किया जा सकता है।

5. रत्न विभाग–अनेक जिज्ञासु सज्जनों के विशेष आग्रह पर हमारे यहा विभिन्न रत्नो एवं राशि रत्नों के विक्रय की व्यवस्था की गई है। भाग्यवर्द्धक अंगूठियां एव लॉकेट भी पूर्ण विधि-विधान के साथ बनाए जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक मालाएं, पारद शिवलिंग, हत्था जोड़ी, सभी प्रकार के तंत्र की सामग्री असली होने की गारटी के साथ दी जाती है। इस हेतु सम्पूर्ण जानकारी हेतु सूची-पत्र अलग से प्राप्त करें।

6. विविध धार्मिक अनुष्ठान–संस्थान द्वारा 108 कुण्डीय पवित्र यज्ञ-कुण्डों, दस महाविद्याओं की जागृत 'श्रीपीठ' की स्थापना हो चुकी है। यहां पर विभिन्न प्रकार के दुर्योगों की शांति हेतु, व्यापार-व्यवसाय में रुकावट दूर करने हेतु, दुःख, क्लेश, भय रोग से निवारण हेतु प्रेत बाधा एवं शत्रु को नष्ट करने हेतु, राजयोग, पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पाठ एव शांति कराने की सभी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

7. प्रकाशन विभाग–जो कुछ भी शोध कार्य कार्यालय के विद्वानों द्वारा होता है उसको निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा एवं प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या संबंधी पुस्तको का प्रकाशन भी विभाग द्वारा किया जाता है। अब तक डॉ. द्विवेदी द्वारा 300 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें से 250 के लगभग प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालय से दो नियतकालीन प्रकाशन अनवरत रूप से चल रहे हैं।

1 अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) 1977 से प्रकाशित, 2. चण्डमार्तण्ड पचाग एवं कैलेण्डर (वार्षिक) 1987 से नियमित प्रकाशित होते रहते हैं।

हमारे कार्यालय की दिन-प्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता के कारण नित्यप्रति डाक से अनेकों पत्र आते हैं। बहुत से पत्रों मे लम्बी-चौड़ी कहानिया एव व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन के बारे म बहुत अधिक लिखा होता है जिनको पढ़ने मात्र में

बहुत सा कीमती समय नष्ट हो जाता है। अपने बहुमूल्य समय का आदर करना सीखें और दूसरों को भी ऐसा करने दें। कृपा कर स्नेहिल पाठकों से निवेदन है कि कृपया अत्यन्त संक्षिप्त में सार की बात ही लिखा करें। कार्यालय द्वारा केवल उन्हीं पत्रों का जवाब दिया जाता है, जिसके साथ स्पष्ट पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा संलग्न हो। परमपूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत सम्पर्क व शंका समाधान के लिए 'अज्ञातदर्शन' अथवा 'श्रीविद्या साधक परिवार' के आजीवन सदस्य का उल्लेख अवश्य होना चाहिए। कई बार ऐसे मनीऑर्डर भी प्राप्त होते हैं जिनपर पूर्ण संदेश एवं पता लिखा नहीं होता। पाठक लोग प्राय: ऐसा समझते हैं कि हमारा पत्र महत्वपूर्ण एवं कार्यालय में हमारा पत्र जन्मपत्रिकाएं एवं नक्शे सुरक्षित पड़े होंगे एवं पुराने पत्र से हमारा पता देख लेंगे, पर ऐसा संभव नहीं है। क्योंकि हमारे पास इतनी डाक आती है कि हर तीसरे चौथे दिन डाक नष्ट करनी पड़ती है। अन्यथा ऑफिस में बैठने की जगह नहीं बच पाती। प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि जितनी बार पत्र व्यवहार करें, अपना पूरा पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा साथ भेजें।

8. श्रीविद्या साधक परिवार–प्राय: सम्मोहन, यंत्र-मंत्र तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले अनेक जिज्ञासु सज्जनों, छात्र-छात्राओं के अनेक फोन व पत्र पूज्य गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु उनसे दीक्षा प्राप्त करने हेतु, मंत्र शिविरों में भाग लेने हेतु आते हैं। ऐसे जिज्ञासु साधकों को सर्वप्रथम 'श्रीविद्या साधक परिवार' का सदस्य बनना होता है। श्रीविद्या साधक परिवार से जुड़ने के बाद ही ऐसे जिज्ञासु सज्जनों को परमपूज्य गुरुदेव का पत्र या स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सर्वधर्म सद्भाव सेवा ट्रस्ट, अन्तर्राष्ट्रीय वास्तु एसोसिएसन, लायंस क्लब इंटरनेशनल इत्यादि अनेक संस्थाओं के प्रमुख पद पर प्रतिष्ठापित होकर डॉ. भोजराज द्विवेदी का बहुआयामी व्यस्त व्यक्तित्व, मानव सेवा के अनेक संगठनों व रचनात्मक कार्यों से जुड़ा हुआ है। अत: बिना पूर्व सूचना व स्वीकृति के मिलने की चेष्टा न करें।

विनम्र निवेदन–बाहर से पधारने वाले जिज्ञासु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि बिना कोई अत्यधिक ठोस कारण के परमपूज्य गुरुदेव से मिलने का दुराग्रह न रखें। सर्वश्री डॉ. भोजराज द्विवेदी से मिलने के लिए टेलीफोन नंबर 2431883, फैक्स 2637359, मोबाइल 098280 25883 पर पूर्व समय निश्चित करके ही मिला करें। यह आपकी और कार्यालय दोनों की सुविधा के लिए अत्यन्त जरूरी है।

इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन (रजि.)–डॉ. भोजराज द्विवेदी उनके मित्रगण, अनुयायी व भक्तगणों से मिलकर 19 फरवरी, 1993 को एक ऐसे संगठन का गठन किया जिससे ज्योतिष, मंत्र-तंत्र, वास्तु विज्ञान का प्रचार-प्रसार जात-पात से रहित मानवमात्र में सर्वधर्म सद्भाव, भाईचारा एवं मैत्रीभाव परस्पर विश्व बंधुत्व स्थापित हो सके इस उद्देश्य से संस्था का एक भवन बन रहा है।

–आचार्य सोमतीर्थ

ज्योतिषशास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों में विभाजित ज्योतिषशास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है। पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदाग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ के रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिषशास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदागों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदागों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करे।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना सम्भव नहीं है। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवें, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवें[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

1, सिद्धान्त संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
वेदस्य निर्मल चक्षुर्ज्योति शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते।
ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तः श्रोत्रमुच्यते, पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिद कालविधान शास्त्र, यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम्—भ. ज्यो. वि वृ समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणां नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदागशास्त्राणां ज्योतिष मूर्धनि संस्थितम् —इति वेदाग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ '655
6 वेद व्रतमीमासक ''ज्योतिषविवेक (पृ., 4) बृहस्पतिकुल सिंहपुरा राहतक सन् 1976
7 कृतिकास्वग्निमाधीत—तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2 1
8 एकाष्टकाया दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षरन्—तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहते है कि पानी कब बरसेगा खेतों में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा वगैरा। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है-

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।

यच्च किंचत् कुर्वंत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय है, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार ''ज्योतिष'' सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ मे तथा पुल्लिग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतिस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीन शब्द व्युतपन्न होते हैं। जो ज्योतिषशास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदाग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिष्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष-1929 पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सावत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओ के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय **ब्राह्मण** एव शतपथ **ब्राह्मण** मे ऐसे अनेक सकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं प. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** म मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियो का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एव वेध सिद्धांतो का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवत: ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिषशास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[7]

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ 3162
३. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति प. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
5. छन्द पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयन चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
   शिक्षा घ्राण तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥-पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42

7 Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa &(Pub 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भाँति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त, चंद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देतीं, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ1
2. ज्योतिर्निबन्धं श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप-चंद्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 550

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।

यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपर.।।5।।[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोड़कर मनुष्य का कोई सच्चा मित्र नहीं है क्योंकि द्रव्योपार्जन मे यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र मे नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है एवं जनसम्पर्क बनाता है। स्वय वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट पलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका मे ही वराहमिहिर कहते है कि **दीपहीन रात्रि और सूर्यहीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में नेत्रविहीन की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी का अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की सगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानो ने अपने-अपने ढग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसधान परीक्षणो में सलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल तिल जलाकर अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष प. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन 1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृष्ठ 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि।।-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे मे प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते है।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में, जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरो में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर-मस्जिद और गिरजाघरों मे पड़े निर्जीव पत्थर तो नहीं बोलते, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिषशास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है-

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।

ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विज.।।1।।[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है, फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चित रूप ही होती है।

इस श्लोक मे 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है सम्यक् ज्ञान बृहस्पति कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप बृहस्पति के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में बृहस्पति का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या बृहस्पतिमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से भी नहीं रोकता, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने को प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला को सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

□□□

---

1. वक्री ग्रह–(प्रकाशन 1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदानधीतोऽपिज्योतिशास्त्रं बिना द्विजाः॥–वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।
लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् बृहस्पतिः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि बृहस्पति रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।
लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है। 5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाभ्मो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।
फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अन्चलो में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. भगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में सकलित है, जो कि निरन्तर अनुसधान, अनुभव एव अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे बृहस्पति की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न*** ।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण।
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी,
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेले खाते हैं।

ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न।**
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख है। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष के परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्म कुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते है क्योंकि "लग्न" का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाए तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी मे इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते है। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते है 60 में बारह

3.30 से 5.30 A.M.
5.30 से 7.30 A.M. सूर्योदय
7.30 से 9.30
3.30 से 11.30
9.30 से 11.30
11.30 से अर्धरात्रि 1.30
दोपहर 1.30 से 11.30
सूर्यास्त 5.30 से 7.30 P.M.
7.30 से 3.30
1.30 से 3.30
3.30 से 5.30
7.30 से 3.30 P.M.

का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्म कुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों मे पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घटो में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

9 | 8 प्रथम स्थान लग्न | 7
10 | 11 | 5 | 6 स.
12 के. | 2 बु. सू. | 4 श.
1 चं शु | 3 गु.

मिथुन सू. बु. / वृष चं.शु	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन / कुम्भ
कर्क, गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि / कन्या म.	तुला राहु	धनु / वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. शु.	मिथुन सु. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

10 / 9	प्रथम स्थान के. 8	7 रा. 6
11	बंगाल	5
12 के. चं. 1 शु.	2 सू. बु.	3 गु. 4 श.

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुंभ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है।

1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पचांगों मे आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हे देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्नं देहो वर्ग षट्कोऽगानि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्पादनमन्तरैव
परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।
बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः
ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प–पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–''**लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्**''।

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक ''**ज्योतिष और आकृति विज्ञान**'' पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता-जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर

दायां नेत्र, 2
बायां नेत्र 12
दाहिनी भुजा 3 कंधा दोनों
सिर चेहरा 1
11 पिण्डली
4 वक्षस्थल छाती हृदय
हृदय, वक्षस्थल, सीना 10
5 दाया पैर
7 गुप्तेन्द्री, गुदा, लिंग
9 जांघ
6 कमर
पैर 8 बायां

द्वितीय भाव
द्वादश भाव
तृतीय भाव
प्रथम भाव
एकादश भाव
चतुर्थ भाव
दशम भाव
पंचम भाव
सप्तम भाव
नवम भाव
षष्ठ भाव
अष्टम भाव

फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते है। चाहे इस भाव मे कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है–

द्रव्यं
व्यय
पराक्रम
देह
लाभ
सुख
राज्य
सुतौ
कलत्रं
भाग्यं
शत्रु
वृत्तिं

देह द्रव्यं पराक्रम, सुख, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययौ लग्नतः।।

अर्थात् पहले भाव में देह शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे मे पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पाचवें मे सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें मे आयु, नौवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या॥
विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्॥

जिस प्रकार् स्वय के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

'ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं॥8॥

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए॥9॥

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफल विचिंत्यम्।
अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त मे अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है॥10॥

❑❑❑

लग्नवाराही

आचार्य वराहमिहिर ने जन्मलग्न में ग्रहो की स्थिति पर कुछ फलादेश संकेत रूप में चिह्नित किये हैं। प्रबुद्ध पाठकों को इन बिन्दुओं पर भी ध्यान देना चाहिए। अतः मूल संस्कृत श्लोकों सहित 'लग्न पुरुषकुण्डल्याम् वाराही' यहां प्रस्तुत की जा रही है.।

प्रथमभावफलम्–

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां
पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम्।
छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखरोग
जीवेदुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः॥1॥

यस्या बलेन भुवनं सृजते विधाता, यस्या बलेन भुवनम्परिपाति चक्री।
यस्या बलेन भुवनं हरते पिनाकी साऽऽद्या सद विशतु नो मनसेप्सितं यत्॥1॥

जन्मलग्न में सूर्य हो तो शरीर में पीड़ा, मंगल हो तो रक्त विकार तथा शनि हो तो अनेक प्रकार का दुःख और बृहस्पति, चंद्रमा, शुक्र तथा बुध हों तो सुख-सौन्दर्य देते हैं।।1।।

द्वितीयभावफलम्–

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा
वित्तस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ।
चन्द्रो बुधः सुरबृहस्पतिर्भृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थाः॥2॥

सूर्य, शनि और मंगल यदि जन्मलग्न से दूसरे स्थान मे हो तो अनेक प्रकार के दुखः तथा धन का नाश करते हैं तथा चद्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र दूसरे भाव में हो तो अनेक प्रकार से धन की वृद्धि करते हैं।।2।।

तृतीयभावफलम्–

भानुः करोति विरुजं रजनीपतिश्च
कीर्त्याश्रयं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम् ।
सिद्धिर्बुधः सुधिषणं च सुनीतिप्रज्ञं
स्त्रीणां प्रिय बृहस्पतिकवी रविजस्तृतीये॥3॥

जन्मलग्न से तीसरे भाव मे सूर्य हो तो सम्पूर्ण रोगों का नाश करता है, चंद्रमा हो तो यशस्वी होता है और मंगल कोपाधिक्य तथा बुध सिद्धि देता है। बृहस्पति, शुक्र एवं शनि यदि लग्न में तीसरे भाव में हों तो अच्छी बुद्धि वाला तथा नीतिशास्त्र का ज्ञाता और स्त्रियों का प्रिय होता है।।3।।

चतुर्थभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्म विफलं निहिताश्चतुर्थे।
सोमो बुधः सुरबृहस्पतिर्भृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं नृपयशः कुरुते प्रवृद्धिम्॥4॥

जन्म लग्न से चतुर्थ भाव में सूर्य, मंगल, शनि हों तो सुखरहित शरीर वाला तथा निष्फल जन्म वाला होता है और चंद्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र हों तो सुख से युक्त, राजा से कीर्तिलाभ तथा धन की वृद्धि होती है।।4।।

पंचमभावफलम्–

कोपान्वितं प्रकुरुते तपनश्च पुत्रं
निस्सन्ततिं च विधुजः कुसुतं कुजार्की।
शुक्रेन्दुदेवबृहस्पतिवः सुतधामसंस्थाः
कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुधियं सुरूपम॥5॥

जिसके लग्न में पचम स्थान में सूर्य हो उसका पुत्र क्रोधी होता है और बुध हो तो पुत्ररहित होता है। मंगल और शनि हो तो दुष्ट स्वभाववाला पुत्र होता है, शुक्र, चद्रमा और बृहस्पति हो तो सुदर एवं बुद्धिमान बहुत पुत्र होते हैं।।5।।

षष्ठभावफलम्–

मार्तण्डभूमितनयौ ह्यरिपक्षनाशं
मन्दः करोति पुरुषं बहुराज्यमानम्।

शुक्रोबुधो हि कुमति सरुजं च जीव-
श्चंद्रः करोति विकलं विफलप्रयत्नम्॥6॥

जन्म लग्न से षष्ट स्थान में सूर्य और मगल हों तो शत्रुपक्ष का नाश, शनि हो तो राजमान्य और षष्ठ भाव में शुक्र, बुध हों तो दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा बृहस्पति हो तो रोगी और चंद्रमा हो तो मनुष्य का प्रयत्न विफल होता है, अतएव वह सदा ही विकल रहता है॥6॥

सप्तमभावफलम्-

तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था
जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्ततिं च।
जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्ता
रूपान्वितां जनमनोहरशीलरूपाम्॥7॥

यदि जन्मलग्न मे सातवें स्थान में सूर्य, भौम और शनि हों तो उसकी स्त्री आचारभ्रष्टा तथा थोडी संतान वाली होती है, और बृहस्पति, चंद्रमा, शुक्र, बुध सातवें भाव में हों तो उसकी स्त्री बहुत संतान वाली तथा अत्यंत सुन्दरी, सबको अपने गुणों से प्रसन्न करने वाली तथा सुशीला होती है॥7॥

अष्टमभावफलम्-

सर्वे ग्रहाः दिनकरप्रमुखा नितान्तं
मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम्।
शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभागं
बुद्ध्या विहीनमतिरोगगणैरुपेतम्॥8॥

सूर्यादि नव ग्रहों में से कोई भी जन्म लग्न के आठवे भाव में हो तो प्राणी दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा उसके किसी भी अंग मे शस्त्राभिघात होता है और बुद्धिहीन तथा अनेक रोगों से युक्त होता है॥8॥

नवमभावफलम्

धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः
कुर्वन्ति धर्मनिधनं जनयन्ति पापम्।
चंद्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमन्त्री
धर्मप्रधानधिषणं कुरुते मनुष्यम्॥9॥

रवि, शनि और मगल जन्म लग्न से नवम स्थान मे हों तो धर्म का नाश तथा पाप की उत्पति करते हैं; चंद्रमा, बुध, शुक्र, बृहस्पति यदि नवम स्थान मे हो तो मनुष्य की बुद्धि प्रधान रूप से धर्मकार्य में लीनरहती है॥9॥

दशमभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः
कुर्य्युर्नरं बहुकुकर्मकरं दरिद्रम्।
चंद्रश्च कीर्तिमुशना बहुपुत्रयुक्तं
कुर्यात् सुकर्मनिरतं विधुजो गुरुश्च॥10॥

सूर्य, मंगल और शनि, यदि दशम भाव मे हो तो मनुष्य कुत्सित कर्म करने वाला तथा दरिद्र होता है, चंद्रमा हो तो कीर्तिशाली, शुक्र हो तो बहुत पुत्र वाला तथा बुध और बृहस्पति हों तो अच्छे कार्यों में निरत रहता है।.10॥

एकादशभावफलम्–

लाभस्थितो दिनपतिर्नृपलाभकारी
तारापतिर्बहुधनं क्षितिजश्च नारीः।
सौम्यो विवेकसहितं सुभगं च जीवः
शुक्रः करोति सधनं रविजः सुकान्तिम्॥11॥

एकादश भाव में सूर्य हो तो राजा से लाभ, चंद्र हो तो बहुत धन, मंगल हो तो स्त्रीसुख, बुध हो तो उत्तम विवेक, बृहस्पति हो तो सौभाग्य, शुक्र हो तो धनयुक्त और शनि हो तो अच्छी कान्ति देते हैं॥11 ।

द्वादशभावफलम्–

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशालं
कारणं शशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम्।
चंद्रात्मजः प्रकुरुते निधनं धनानां
जीवः कृशं शनिकवी निजराज्यनाशम्॥12॥

यदि सूर्य जन्मलग्न से द्वादश भाव में हो तो वह पुरुष विशाल शरीर वाला होता है और चद्रमा हो तो काना और मंगल हो तो बहुत पाप करने वाला, बुध हो तो धन का नाश करने वाला, बृहस्पति हो तो कृश शरीर तथा शनि और शुक्र व्यय भाव में हों तो अपने राज्य का नाश करने वाला होता है॥12॥

स्त्री जातक की कुण्डली

प्रथमभावफलम्–

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च
राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम्।

शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-
मायुष्मतीं प्रकुरुते च विभावरीशः॥1॥

जिस स्त्री के जन्म लग्न में सूर्य या मंगल हो वह विधवा, राहु हो तो मृतवत्सा, शनि हो तो दरिद्रा और शुक्र, बुध, बृहस्पति में से कोई हो तो अच्छी स्वभाव वाली पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो दीर्घायु होती है॥1॥

द्वितीयभावफलम्-

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमाः
दारिद्रयदु:खमतुलं निहिताः द्वितीये।
वित्तेश्वरीमविधवां बृहस्पतिशुक्रसौम्या
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः॥2॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न से दूसरे स्थान में सूर्य, शनि, राहु और मंगल हो तो वह स्त्री दुःख दारिद्रय से युक्त और बृहस्पति, शुक्र, बुध हों तो धनवती तथा भाग्यवती और चद्रमा दूसरे भाव में हो तो बहुत पुत्रों से युक्त होती है। 2 ।

तृतीयभावफलम्-

शुक्रेन्दुभौमबृहस्पतिसूर्यबुधास्तृतीये
कुर्युः सतीं बहुसुता धनभोगिनीं च ।
कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां
पुष्टिं करोति नियतं खलु सैंहिकेयः॥3 ।

जिस स्त्री के तृतीय भाव में शुक्र, चंद्रमा, भौम, सूर्य, बुध इन ग्रहों में से कोई भी हो तो वह स्त्री पतिव्रता, बहुत पुत्रों से युक्त और धन का भोग करने वाली होती है और जिस कन्या के जन्मलग्न में तृतीय भाव में शनि हो तो वह अति धनवती और राहु हो तो पुष्ट शरीर वाली होती है. 3॥

चतुर्थभावफलम्

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुतौ चतुर्थे
सौभाग्यशीलरहिता कुरुते शशाङ्कः।
राहुः सपत्निसहितां क्षितिवित्तलाभं
दद्याद् बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम्॥4॥

जिस स्त्री के मंगल और शनि, चतुर्थ भाव में हों तो व अल्प दुग्ध देने वाली, चद्रमा हो तो सौभाग्य शील से रहित, राहु हो तो सपत्नी से युक्त, बुध हो तो धन, भूमि का लाभ करने वाली और बृहस्पति तथा शुक्र हो तो सौख्यवती होती है।

पंचमभावफलम्—

नष्टात्मजा रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ
चंद्रात्मजो बहुसुतां बृहस्पतिभार्गवौ च।
राहुर्ददाति मरणं रविजश्च रोगं
कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशाङ्क॥5॥

स्त्री के पंचम भाव में सूर्य अथवा मंगल हो तो उसकी संतति मर जाती है, यदि बुध, बृहस्पति, शुक्र हों तो पुत्र-पुत्रियों से युक्त होती है एवं पंचम भाव मे राहु से मरण, शनि से रोग तथा चंद्रमा से बहुत कन्याएं होती हैं॥5॥

षष्ठभावफलम्—

षष्ठे शनैश्चरबुधा रविराहुजीवाः
भौमः करोति सुभगां पतिसेविनीं च।
चंद्रः करोति विधवामुशना दरिद्रां
वेश्या शशाङ्कतनयः कलहप्रियां वा॥6॥

स्त्री के षष्ठ भाव मे शनि, बुध, सूर्य, राहु, बृहस्पति और मंगल इन ग्रहों में से कोई हो तो सौभाग्यवती, पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो विधवा, शुक्र हो तो दरिद्रा तथा वेश्या और बुध हो तो कलह करने वाली होती है॥6॥

सप्तमभावफलम्—

सूर्यः क्षितीन्दुसुतजीवशनीन्दुशुक्राः
दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः।
वैधव्यबन्धनमृतिं किल वित्तनाशं
व्याधिं विदेशगमनं च यथाक्रमेण॥7॥

स्त्री के जन्म लग्न से सप्तम भाव मे सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति शनि, चंद्रमा, शुक्र हो तो क्रम से मरण, वैधव्य, बन्धन, धननाश, रोग, विदेश-गमन ये फल देते हैं॥7॥

अष्टमभावफलम्—

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ निहितौ वियोग
मृत्युं शशाङ्कभृगुजौ च तथैव राहुः।
सूर्यः करोति विधवा सुभगां महीजः
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च॥8॥

स्त्री के जन्मलग्न में अष्टम स्थान में बृहस्पति और बुध हों तो पति से वियोग,

चंद्रमा, शुक्र और राहु हो तो मरण, सूर्य हो तो वैधव्य, मंगल हो तो सौभाग्य, शनि हो तो बहुत संतान वाली तथा पति-प्रिया होती है।।8।

नवमभावफलम्–

चंद्रात्मजो भृगुदिवाकरदेवपूज्या
धर्मस्थिता विदधते किल धर्मनिष्ठाम्।
भौमो रुजं च खलु सूर्यसुतश्च रण्डां
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः।।9।।

जिस स्त्री के नवम भाव में बुध, शुक्र, सूर्य, बृहस्पति इनमें से कोई हो तो वह धर्म में निष्ठा रखने वाली, भौम के रहने से रोगी तथा शनि से विधवा और चंद्रमा से बहुत संतान वाली होती है।9।।

दशमभावफलम्–

राहुः करोति विधवां यदि कर्मणि स्यात्
पापे रतिं दिनकरश्च शनैश्चरश्च।
मृत्यु कुजोऽर्थरहितां कुलटां च चंद्रः
शेषाः ग्रहा धनवतीं सुभगां च कुर्युः।।10।।

जिस स्त्री के दशम भाव में राहु हो वह विधवा; सूर्य, शनि हो तो पापकर्म करने वाली तथा मंगल हो तो अल्पायु, चंद्रमा हो तो धनरहित तथा कुलटा और शेष ग्रह (बुध, बृहस्पति, शुक्र) यदि जन्म लग्न से दशम भाव में हो तो धनवती तथा सौभाग्यवती होती है।।10।

एकादशभावफलम्–

आये स्थितश्च तपनः कुरुते सुपुत्रां
पुत्रीमतीं च महितोऽर्थवतीं हि चंद्रः।
आयुष्मतीं सुरबृहस्पतिश्च तथैव सौम्यो
राहुः करोति विधवां भृगुरर्थयुक्ताम्।।11।।

स्त्री के एकादश भाव में सूर्य हो तो अच्छे पुत्र वाली, मंगल हो तो कन्या वाली चंद्रमा हो तो धन वाली होती है। ग्यारहवें भाव में बृहस्पति अथवा बुध हो तो दीर्घायु, राहु हो तो विधवा और शुक्र हो तो धनवती होती है।।11।

द्वादशभावफलम्–

अन्ते गुरुहं विधवां दिनकृद् दरिद्रां
चंद्रो धनव्ययकरां कुलटां च राहुः।

साध्वीं तथा भृगुबुधौ बहुपुत्रपौत्रां
प्राणेशसक्तहृदयां सुहृदां कुजश्च॥12॥

जिस स्त्री के जन्म लग्न से द्वादश स्थान में बृहस्पति हो वह विधवा, सूर्य हो तो दरिद्रा, चंद्रमा हो तो धन का अधिक खर्च करने वाली, राहु हो तो व्यभिचारिणी, शुक्र तथा बुध हों तो सच्चरित्रा और मंगल हो तो बहुत पुत्र-पौत्रों से युक्त, पति में प्रेम करने वाली तथा सुशीला होती है॥12।

अन्ययोगाः -

लग्ने शौरिस्तथा चंद्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ।
कर्मस्थाने भवेद् भौमो राजयोगस्तदा भवेत्॥1॥

लग्न में शनि और चंद्रमा हों, त्रिकोण अर्थात् नवम-पंचम में बृहस्पति तथा सूर्य हों और दशम भाव में मंगल हो तो राजयोग देता है॥1॥

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदि।
तस्यः भ्राता न जीवेत एकाकी हि भवेच्च सः॥2॥

यदि अपनी राशि का होकर सूर्य नवम भाव में हो तो जातक का भाई नहीं जीता है और वह एकाकी ही रहता है॥2॥

कर्मस्थाने. निजक्षेत्रे रविराहू यदा गतौ।
भौमशुक्रबुधैर्युक्तौ क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः॥3॥

यदि रवि और राहु अपने गृह के होकर कर्म भाव में हो और भौम, शुक्र, बुध से युक्त हो तो क्षण ही में उसका धन वृद्धि तथा ह्रास को प्राप्त होता है॥3।

लग्ने क्रूरे व्यये क्रूरे धने सौम्ये तथैव च।
सप्तमे भवने क्रूरे परिवारक्षयंकरः॥4॥

लग्न, द्वादश तथा सप्तम भाव में पाप ग्रह हों और दूसरे भाव में शुभ ग्रह हो तो परिवार का नाश करने वाला होता है॥4॥

षष्ठे च भवने सोमः सप्तमे राहुसम्भवः।
अष्टमे च यदा शौरिर्भार्या तस्य न जीवति॥5॥

जिसके षष्ठ भाव मे चद्रमा, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो उसका स्त्री नहीं जीती है॥5॥

लग्नस्थाने यदा शौरी रिपुस्थाने च चंद्रमाः।
कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति॥6॥

यदि जन्मलग्न में शनि, षष्ठ भाव में चंद्रमा, सप्तम भाव में मंगल हो तो उसका पिता नहीं जीता है। 6।।

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रोऽथ वा शशी।

सर्वकार्याणि सिद्ध्यन्ति राजमान्यो भवेन्नरः।।7।।

जिसके दशम भाव में बृहस्पति, बुध, शुक्र या चंद्रमा हो उसके सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा वह राज्यमान्य होता है।।7।।

कुंभे शौरिर्धने सूर्यो मेषे भवति चंद्रमाः।

मकरे च यदा शुक्रः स भुङ्क्ते पैतृकं धनम्।।8।।

कुंभ में शनि, धन भाव में सूर्य, मेष में चंद्रमा और मकर में शुक्र हो तो पिता के धन का भोग करने वाला होता है।।8।।

शुक्रो नास्ति बुधो नास्ति नास्ति केन्द्र बृहस्पतिः।

दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति।।9।।

जिसके केन्द्र स्थान में शुक्र, बुध, बृहस्पति न हों और दशम भाव में मंगल न हो तो वह मनुष्य कुछ नहीं कर सकता।।9।।

त्रिभिः स्वगृहगैर्मन्त्री त्रिभिरुश्चगतैनृपः।

त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासः त्रिभिरस्तैर्निरर्थकः।।10।।

जन्म समय में 3 ग्रह स्वराशि के हों तो मंत्री, 3 ग्रह उच्च के हों तो राजा, 3 ग्रह नीच के हो तो दास और 3 ग्रह अस्त के हों तो निरर्थक होता है।।10।।

लग्ने शुक्रबुधौ यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।

दशमेऽङ्गारको यस्य स जातः कुलदीपकः।।11।।

जिसके लग्न में शुक्र, बुध और केन्द्र स्थान में बृहस्पति, दशम भाव में मंगल हो वह पुरुष कुल को प्रकाशित करने वाला होता है।।11।।

आदौ जीवः सितः प्रान्ते अन्ये मध्ये निरन्तरम्।

राजयोगं विजानीयात् स्वकुटुम्बविवर्धनः।।12।।

लग्न में बृहस्पति, द्वादश में शुक्र और शेष ग्रह मध्य में निरन्तर (लगातार) हों तो राजयोग होता है और वह मनुष्य अपने कुटुम्ब को बढ़ाने वाला होता है।

क्रूराश्चतुर्थके लग्नात् यदि क्रूरा धनेषु च।

दरिद्रयोगं जानीयात् पितृपक्षक्षयङ्करः।।13।।

लग्न से चतुर्थ और द्वितीय भाव मे पाप ग्रह हों तो दरिद्र योग होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य पिता के कुल का नाश करने वाला होता है।।13।।

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिस्तथा भवेत्।

राहुश्च सहजस्थाने तस्य माता न जीवति।।114।।

लग्न में बृहस्पति, धनभाव में शनि तथा तीसरे स्थान में राहु हो तो उसकी माता शीघ्र मर जाती है।।14।।

सप्तमे भवने चंद्रो स्त्री? राहुश्च मङ्गलः।

सप्तमे दिवसे मृत्युः सप्तमासे न संशयः।।15।।

जन्मलग्न से सप्तम भाव में चंद्रमा, सूर्य, राहु और मंगल हों तो जातक सात ही दिन में अथवा सात मास में ही अवश्य ही मर जाता है।।15।।

उच्चस्थाने यदा भौमो रविराहुसमन्वितः।

तीव्रपीड़ा भवेत्तस्यं स्वस्थाने नैव तिष्ठति।।16।।

जन्मकाल में उच्च राशि का मंगल सूर्य और राहु के साथ हो तो शरीर में बड़ी पीड़ा होती है और वह अपने स्थान में नहीं रहता है।।16।।

क्रूरक्षेत्रे गते जीवे रविराहुधरासुते।

सप्तमे भवने शुक्रे देहे कष्टं भवेदिति।।17।।

यदि रवि, राहु, मंगल और बृहस्पति क्रूर ग्रह (6/8/12) में हों और सप्तम भाव में शुक्र हो तो शरीर में कष्ट होता है ।।17।।

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधाशौरी तथैव च।

यस्य जातस्य दीर्घायुः सम्पदस्तु पदे पदे।।18।।

यदि बृहस्पति, बुध, शनि, अपने गृह में हों तो जातक दीर्घायु और पद-पद में धन संपत्ति देने वाला होता है।।18।।

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार

वृश्चिकलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

सौम्यभौमासिताः पापाः शुभौ गुरु निशाकरौ।
सूर्याचंद्रमसावेव भवेतां योगकारकौ।।36।।
जीवो निहन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकाह्वयः।
तत्वफलानि विज्ञेयान्येवं वृश्चिकजन्मनः।।37।

दूसरा पाठ

बुधशुक्रार्कतनयाः पापाः सुरगुरु शुभः।
सूर्याचद्रमसावेद भवेतां यागकारकौ।।38।।
जीवो निहन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकाहृयाः
तत्तफलानि, विज्ञानन्येवं वृश्चिकजन्मनः।।39।

तीसरा पाठ

सौम्यभौमसिताः पापाः शुभौ रवि निशाकरौ।
सूर्याचद्रमसावेव भवेता योगकारकौ।।40।।
जीवो निहन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकाहृयाः।
तत्तफलानि विज्ञेयान्येचं वृश्चिकजन्मनः।।41।।

चौथा पाठ

बुधशुक्रार्कतनयाः पापाः सुरबृहस्पति शुभः।
सूर्याचंद्रसावेव भवेतां योगकारकौ।।42।।

जीवो न हन्ता सौम्याद्या हन्तारो मारकह्वयाः।
तत्फलानि विज्ञेयान्येव वृश्चिक जन्मनः।।43।।

पहला पाठ–बुध अष्टमेश और एकादशेश होता है। इसलिए, मंगल लग्नेश और षष्टेश है। इसलिए, शनि तृतीयेश और चतुर्थेश होता है। इसलिए, तीनों ही ग्रह त्रिषडायेश होते हैं इसलिए, अशुभ फल देते हैं। बृहस्पति धनेश एवं मारक स्थान का स्वामी होता है फिर भी पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होता है इसलिए अशुभफल देता है। रवि दशमेश और चद्रमा नवमेश होता है इसलिए इनकी युति होने से राजयोग उत्पन्न करता है। बृहस्पति और शुक्र ये मारक स्थानो के अधिपति हैं परन्तु इनका यदि बुधादि पाप ग्रहों से संबंध (योग) हो तो वे मनुष्य के लिए मारक बनते हैं। इस प्रकार वृश्चिकलग्न के लिये शुभाशुभ ग्रह कहे हैं।

दूसरा पाठ–प्रथम पाठ के समान ही अशुभ फल बुध और शनि को कहकर उनमें मंगल की जगह शुक्र लिया गया है कारण वह व्ययेश और सप्तमेश होता है। इसलिए अशुभ फल देता है। प्रथम पाठ में बृहस्पति चंद्र इनको शुभ कहा है तो इस पाठ में चंद्रमा को उड़ा दिया है। शेष सब प्रथम पाठ के अनुसार है।

तीसरा पाठ–प्रथम पाठ के अनुसार अशुभ ग्रह लिए हैं परन्तु शुभ ग्रहों में बृहस्पति को उड़ा दिया गया है और रवि को लिया है। तीनों पाठों में रवि चंद्र का ही राजयोग कहा है। बृहस्पति स्वयं मारक नहीं बनता ऐसा दूसरे और तीसरे पाठ में कहा है।

चौथा पाठ–वृश्चिकलग्न के लिए बुध, शुक्र और शनि अशुभ फल देते हैं। बृहस्पति शुभ फल देता है। रवि चंद्र का योग राजकारक योग होता है। मंगल स्वयं मारक नहीं होता। बुध आदि करके अशुभ ग्रह मारक होते हैं। वृश्चिकलग्न के लिए ज्ञाताओं को इस प्रकार शुभाशुभफल समझना चाहिए।

स्पष्टीकरण–वृश्चिकलग्न के लिए बुध नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर भी यहां पर अष्टम और एकादश स्थानों का स्वामी होने से पाप ग्रह के समान माना गया है। कारण वह शुभ फल देने वाला होता है। मगल और शनि ये स्वाभाविक तौर पर पाप ग्रह है। फिर भी यहा पर मंगल लग्नेश और षष्टेश होने से अशुभ है और शनि चतुर्थेश होने से शुभ है। लेकिन तृतीयेश होने के कारण से अशुभ हुआ। इस प्रकार बुध, मंगल और शनि ये तीनों त्रिषडायपति हैं। रवि चंद्र का योग नवमेश (त्रिकोण) और दशमेश (केन्द्र) का होने से राजयोग कहा है और यह श्रेष्ठ योग है। पहले पाठ में बृहस्पति चंद्र का योग राजयोगकारक कहा है उसका कारण बृहस्पति धनेश होने से अशुभ परन्तु पंचमेश (त्रिकोणेश) होने से शुभ माना है और उसका चद्रमा से (नवमेश) यानि दो त्रिकोणपति का योग होता है इसलिए राजयोग कहा है परन्तु

यह योग रवि चंद्र के योग की अपेक्षा कम श्रेणी का राजयोग होता है। यहां पर एक जगह तो बृहस्पति का शुभ कह कर तुरन्त ही "जीवानिहन्ता" ऐसा कहा है अर्थात् बृहस्पति मनुष्य का विनाश करता है ऐसा कहा है। इस पर से ऐसा मालमू पड़ता है कि शुरू त्रिकोणेश होने से उसे शुभत्व-प्रदान कर दिया, वह धनेश हैं याने मारकेश है इसलिए उसे विनाशकर्त्ता माना गया है। यह भी स्वाभाविक ही है। परन्तु विचार करते ऐसा दिखाई पड़ता है कि बृहस्पति और शुक्र ये दोनो मारक स्थानों के अधिपति होकर भी उनका यदि बुधादि ग्रहों से योग हो तो वे मारकेश के समान अशुभ फल देते हैं ऐसा भी कहा है। ऐसा योग नहीं होता हो तो इसका अर्थ तो ऐसा हुआ कि बृहस्पति और शुक्र मारक नहीं बनेंगे। बुधादि अशुभ ग्रह जो कहे गये हैं उनकी दशान्तर्दशा में अनिष्ट फल मिलेगा और मनुष्य के सौख्य का विनाश होगा यह स्पष्ट है। लेखक के मत में वृश्चिकलग्न को शनि की महादशा में बृहस्पति की अतर्दशा अथवा शुक्र की अंतर्दशा मारक होगी।

वृश्चिकलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–बृहस्पति पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से शुभ है और शुभ फलदायक होता है।
2. **शुभ योग**–चंद्रमा नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से शुभ है और शुभ फलदायक होता है।
3. **शुभ योग**–बुध दशम (केन्द्र) का स्वामी होने से शुभ और सूर्य नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से इन दोनों का सहस्थानपतित्व योग उत्तम होकर शुभ फलदायक होता है।
4. **शुभयोग**–सूर्य दशम (केन्द्र) का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार शुभ फलदायक है। (पाठान्तर के अनुसार)

वृश्चिकलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग** -बुध अष्टम और एकादश स्थान का स्वामी होने से अशुभ और अशुभ फलदायक है।
2. **अशुभ योग**–मंगल स्वाभाविकतः पाप ग्रह है और षष्ट स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है (और निर्बल लग्न केन्द्र का स्वामी होने से निर्बली है) और अशुभ फलदायक है।
3. **अशुभ योग**–शनि स्वय स्वाभाविक पाप ग्रह है और वह चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होकर तृतीय स्थान का अधिपति होने से अशुभ है और श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फलदायक है।

4. **अशुभ योग**–बृहस्पति शुभ योगकारक जो भी माना गया है फिर वह मारक (द्वितीय) स्थान का स्वामी होने से अशुभ फल देने वाला है।
5. **अशुभ योग**–शुक्र (सप्तम) मारक स्थान का स्वामी होकर केन्द्राधिपति होने से श्लोक 7 और 10 के अनुसार अशुभ और अशुभ फलदायक हैं।

वृश्चिकलग्न के लिए निष्फल योग

1. मंगल+बृहस्पति, 2. बृहस्पति+शुक्र (दोनों ग्रह दूषित होते हैं।)

वृश्चिकलग्न के लिए सफल योग

1. चंद्र+मंगल (सदोष), 2. चंद्र+शनि (सदोष), 3. चंद्र+सूर्य, 4. चंद्र+शुक्र (सदोष)।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	— वृश्चिक
2.	लग्न चिह्न	— बिच्छु
3.	लग्न स्वामी	— मंगल
4.	लग्न तत्त्व	— जल तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	— स्थिर
6.	लग्न दिशा	— उत्तर
7.	लग्न लिंग व गुण	— स्त्री
8.	लग्न जाति	— ब्राह्मण
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	— सौम्य स्वभाव, कफ प्रकृति
10.	लग्न का अंग	— पीठ (गुदा)
11.	जीवन रत्न	— मूंगा
12.	अनुकूल रंग	— लाल
13.	शुभ दिवस	— मंगलवार
14.	अनुकूल देवता	— शिवजी, भैरव, हनुमान
15.	व्रत, उपवास	— मंगलवार
16.	अनुकूल अंक	— 9
17.	अनुकूल तारीखें	— 9/18/27
18.	जातक भोजन रुचि	— तिक्त, खट्टा-चटपटा
19.	मित्र लग्न	— कर्क, मीन
20.	शत्रु लग्न	— मेष, सिंह व धनु

21.	व्यक्तित्व	– कानूनबाज, गणक, सन्त, समीक्षक
22.	सकारात्मक तथ्य	– बुद्धिमान, निडर, प्रकृति प्रेमी
23.	नकारात्मक तथ्य	– ईर्ष्यालु प्रवृत्ति

❑❑❑

वृश्चिकलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, षष्ठेश	–	मंगल
2.	धनेश, पंचमेश	–	बृहस्पति
3.	पराक्रमेश, सुखेश	–	शनि
4.	सप्तमेश, खर्चेश	–	शुक्र
5.	अष्टमेश, लाभेश	–	बुध
6.	भाग्येश	–	चंद्रमा
7.	राज्येश	–	सूर्य
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-बृहस्पति, 9-चंद्रमा
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6-मंगल, 8-बुध, 12-शुक्र
10.	केन्द्राधिपति	–	1-मंगल, 4- शनि, 7- शुक्र, 10-सूर्य
11.	पणफर के स्वामी	–	2- 5-बृहस्पति, 8, 11-बुध
12.	आपोक्लिम	–	3-शनि, 6 मंगल, 9-चंद्र, 12 शुक्र
13.	त्रिकेश	–	6-मंगल, 8 बुध, 12 शुक्र
14.	उपचय के स्वामी	–	3-शनि, 6-मंगल, 10-सूर्य, 11-बुध
15.	शुभ योग	–	1. बृहस्पति, 2. चंद्र
16.	अशुभ योग	–	1. मंगल+बुध, 2. मंगल+शनि, 3 मंगल+शुक्र
17.	निष्फल योग	–	1. मंगल+बृहस्पति, 2. बृहस्पति+शुक्र
18.	सफल योग	–	1. चंद्र+मंगल, 2 चंद्र+शनि, 3. चंद्र+सूर्य, 4. चंद्र+शुक्र

19.	**राजयोग कारक**	–	सूर्य, चंद्र, बृहस्पति
20.	**मारकेश**	–	शुक्र
21.	**पापफलद**	–	शुक्र, बुध, शनि, परमपापी-बुध

विशेष -वृश्चिकलग्न वालों के लिये मंगल लग्नेश होते हुए भी पापी है। यदि मंगल स्वगृही हो तो कारक होगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न के स्वामी मंगल का वैदिक स्वरूप

चारों वेदों में मंगल या भौम से सम्बन्धित कोई सूक्त नहीं मिलता। 'पृथ्वीसूक्त' एवं पृथ्वी के बारे में रहस्यमय जानकारियों से परिपूर्ण अनेक मंत्र ऋग्वेद मे हैं परन्तु इनके साथ मगल ग्रह का कोई तारतम्य नही बैठता। वेदो मे मगल ग्रह की आराधना-पूजा व प्रतिष्ठा हेतु एक मंत्र सर्वाधिक प्रचलित है।

मंगल का वैदिक मंत्र

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्यांऽअयम्।
अपा ७ँ रेता ७ँ सिजिन्वति॥
ॐ भौमाय नमः

—यजुर्वेद अ.3/म. 12

जिसका शब्दिक अर्थ इस प्रकार है "यह अग्नि द्युलोक के शिर के समान महान है और समस्त पृथ्वीलोक इस अग्नि के तेज से महान है. यही अग्नि जलो मे सार (तेज) रूप से (दृष्टि उत्पादन निमित्त) विद्यमान है।"

सम्भवतः ऋषियों ने द्यौलोक (अन्तरिक्ष) में ऐसा ज्वलनशील पिण्ड देखा हो, जिसमें जल जीव व सृष्टि की सम्भावना हो तथा पृथ्वी से जिसका गहरा सम्बन्ध हो और उसे मगल या भूमिपुत्र 'भौम' कह दिया हो। इस मत्र के शब्दार्थ में तो कहीं नहीं, परन्तु गूढ़ार्थ व समाधि भाषा मे ऐसा भाव झलकता है। इस मंत्र के पीछे ॐ भौमाय नमः जोड़ दिया गया है। जिसका अर्थ है मगल के ऐसे दिव्य रूप को नमस्कार है। कर्मकाण्ड (पूजा पाठ) में अनादिकाल से मगल क पूजन हेतु इसी मत्र का प्रयोग होता है मंगल के बारे मे इससे अधिक जानकारी वेदो मे नहीं है पर पौराणिक काल में मगल का दिव्य रूप धीरे-धीरे स्पष्टतः मुखरित होता चला गया।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न के स्वामी मंगल का पौराणिक स्वरूप

उत्पत्ति कथा—वाराहकल्प की बात है। भगवान वाराह ने रसातल से पृथ्वी का उद्धार कर उसको अपनी कक्षा मे स्थापित कर दिया था। पृथ्वी देवी की उद्विग्नता मिट गई थी और वे स्वस्थ हो गई थीं। उनकी इच्छा भगवान को पति के रूप में पाने की हो गई। उस समय वाराह भगवान का तेज करोड़ों सूर्य के सदृश्य असह्य था। पृथ्वी की अधिष्ठात्री देवी की कामना की पूर्ति के लिए भगवान वाराह अपने मनोरम रूप में आ गए और पृथ्वी देवी के साथ वे दिव्य वर्ष तक एकान्त में रहे। इसके बाद वाराह रूप में आकर पृथ्वी देवी का पूजन किया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/29–33)। उस समय पृथ्वी देवी गर्भवती हो चुकी थीं, उन्होंने मंगल नामक ग्रह को जन्म दिया (ब्रह्मवै. पु. 2/8/43)। विभिन्न कल्पों में मंगल ग्रह की उत्पत्ति की विभिन्न कथाए हैं आजकल पूजा के प्रयोग में इन्हे भारद्वाज गोत्र कहकर सम्बोधित किया जाता है। यह कथा गणेश पुराण में आती है।

मंगल ग्रह के पूजन की बड़ी महिमा है। भौमव्रत में ताम्रपत्र पर भौम यत्र लिखकर मंगल की सुवर्णमय प्रतिमा प्रतिष्ठित कर पूजा करने का विधान है (भविष्य पुराण)। जिस मंगलवार को स्वाति नक्षत्र मिले, उसमे भौमवार व्रत करने का विधान है। मंगल देवता के नामों का पाठ करने से ऋण से मुक्ति मिलती है। (पद्म पुराण)। अंगारक-व्रत की विधि मत्स्य पुराण के बहत्तरवें अध्याय में लिखी गई है। मगल अशुभ ग्रह माने जाते हैं। यदि ये वक्र गति से चले तो एक-एक राशि को तीन-तीन पक्ष में भोगते हुए बारह राशियों को पार करते हैं (श्रीमद्भा. 5/22/14)।

वर्ण—मंगल ग्रह का वर्ण लाल होता है और इनके रोम भी लाल हैं। (मत्स्य पु. 94/3)।

वाहन—मंगल देवता का रथ सुवर्ण-निर्मित है। लाल रंग वाले घोड़े इस रथ में जुते रहते हैं। रथ पर अग्नि से उत्पन्न ध्वज लहराती रहती है। इस रथ पर बैठकर

मंगल देवता कभी सीधी, कभी वक्र गति से विचरण करते हैं। (मत्स्य पु. .27/4-5)। कहीं-कहीं इनका वाहन मेष (भेड़ा) बताया गया है (श्रीतत्त्वनिधि)।

मंगल देवता का ध्यान इस प्रकार करना चाहिए-

रक्तमाल्याम्बरधरः शक्तिशूलगदाधरः।
चतुर्भुजः रक्तरोमा वरद स्याद् धरासुत.॥

(मत्स्य पु. 94/3)

'भूमिपुत्र मंगल देवता चतुर्भुज है। इनके शरीर के रोए लाल हैं। इनके हाथों में क्रम से शक्ति, त्रिशूल, गदा और वरदमुद्रा है। उन्होंने लाल मालाएं और लाल वस्त्र धारण कर रखे हैं।'

मंगल के अधिदेवता स्कन्ध, प्रत्याधिदेवता पृथ्वी है।

मंगल की उत्पत्ति-पृथ्वी के पिता सूर्य और उसकी माता चद्र है। मंगल पृथ्वी का पुत्र है सूर्य और चंद्र इसके नाना नानी है। ननिहाल के पूर्ण गुण भी इसमें हैं और पृथ्वी से सघर्ष कर यह उससे अलग हुआ है। अतः इसमे मारकत्व भी है। सूर्य का तेजस्व और चद्र की शीतलता इसमें है। यह प्रबल साहसी है। शक्ति का नेतृत्व इसका प्रतीक है। उज्जैन में इसकी उत्पत्ति मानी गई है। यह चतुर्भुज रूप है। शूल, गदा ये इसके शस्त्र हैं। यह भारद्वाज कुलीन क्षत्रिय है। मेष इसका वाहन है। इसका देवता कार्तिक स्वामी है, अग्नि तत्त्व है वर्षा में चमकती बिजली के समान इसकी कांति है

रग-मगल शत्रुओं का विजेता, युद्ध प्रिय, ऋणकर्त्ता, ऋणहर्ता दोनो के रूप में प्रसिद्ध है। यह रक्त का प्रतीक होने से लाल रग का है वैद्यनाथ ने इसे "संरक्तः गौरः कुजः" से लाल और सफेद के मिश्रण का रंग बताया है। वराह मिहिर ने इसे किंशुक के फूलों जैसा लाल बताया है। तपे हुए ताबे के समान इसकी कांति दर्शाई है। विदेशी विद्वानो ने इसे अग्नि ज्वाला सम वर्ण बताया है।

बलवत्ता-इसका कद नाटा है। यह मेष और वृश्चिक राशियो का स्वामी है। मेष इसकी मूल त्रिकोण राशि है। मकर में यह उच्च का होता है और कन्या में नीच का बनता है। नवाश व द्रेष्काण में स्वगृही होकर बली होता है मीन, वृश्चिक, कुंभ मकर मेष राशि के प्रारम्भ मे बली होता है. मीन और कर्क में सुखप्रद होता है नैसर्गिक कुण्डली मे लग्नेश और अष्टमेश बनकर जन्म व मृत्यु पर यह अधिकार रखता है यह रात्रिबली, कृष्ण पक्ष में बली व दक्षिण दिशा मे बली होता है अपनी होरा अपने मास पर्व और काल में बली होता है। ग्रीष्म ऋतु तथा चतुर्थ स्थान में इसका बल कमजोर रहता है दशम स्थान मे यह दिग्बली होता है। षष्ठ मे हर्षबली

होता है। यह तीसरे व षष्ठ भाव का कारक है, वहां भाव का नाश करता है। वह पुरुष ग्रह है, अतः स्त्री राशियों में ज्यादा सुखदायी रहता है। वक्री होने पर शुभ फल प्रदान करता है।

कार्य और धंधे—मंगल में शारीरिक व मानसिक कार्य का सामर्थ्य होता है। इसका प्रधान गुण है दूसरों के लिए खुद को भी कष्ट में डालना। थोड़े से इशारे से ये बात को फौरन समझ जाना, तर्क की प्रबल शक्ति का विकास इनमें होता है—इसलिए राजनेता, वकील, बिजली के कार्य, वैज्ञानिक, मिस्त्री, व्यापारी, मशीनरी के कार्य, इंजीनियर, ओवरसिअर, भूस्वामी, जागीरदार, सुनार, दर्जी, लुहार, चमार, रसोईया, औषधि विक्रेता, चोर, डकैत, स्मगलर, नायक, सेनापति, सिपाही इन धंधों में मंगल की प्रधानता पाई जाती है।

धातु—सोना व तांबा है। रत्न मूंगा (प्रवाल) है। 5 से 9 रत्ती तक का मूंगा पहनने से यह फलता है।

दृष्टि—इसकी उर्ध्व दृष्टि है। 4, 7, 8वीं सम्पूर्ण दृष्टियां हैं, 3, 10 एकपाद 5, 9 द्विपाद दृष्टियां हैं।

यह दशम भाव पर पूर्ण दृष्टि का प्रभाव रखता है। केवल अपने घर को देखकर बुरा प्रभाव नहीं करता है, पर इसकी सप्तम दृष्टि प्रायः शत्रुता रखती है।

मित्रादि—मंगल के मित्र ग्रहों में सूर्य, बृहस्पति, चंद्र हैं। बुध और राहु शत्रु है। शुक्र, शनि सम होते हैं। राहु की शत्रुता समता भाव पर निर्धारित है।

स्वरूप—जिन व्यक्तियों की मेष या वृश्चिक राशि होती है, या जिनके लग्न उपरोक्त होते हैं। वे प्रायः बिना सोचे समझे सामने वाले व्यक्ति से टकरा जाते है। वे बहुत उतावले व त्वरित परिणाम चाहने वाले होते है। ये लोग तेजस्वी व दबंग होते हैं तुरन्त निर्णय लेने में सक्षम होते हैं अपनी प्रतिभा से ऊंचे उठते हैं। क्रोधी व साहसी होते हैं।

उनका चेहरा ललाई लिए हुए कुछ गोरे रंग का या गेहुआ होगा। मध्यम औसत कद, गर्दन लम्बी, बाल कुछ घुंघुराले, नेत्रो मे तीखापन, चेहरा कुछ लम्बा, आंखें गोल, दांत सुदंर, जातक के चेहरे के किसी भाग मे चोट या मस्सा या लहसुन का निशान होगा, घुटने कमजोर होंगे। ललाट चौडा भी हो व बालों में हल घुंघरालापन रहेगा। इनका व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। व्यक्ति स्वतंत्र विचार वाला होगा।

अचूक फल

- ❑ मंगल 12, 1 4, 7, 9 भावों में स्थित हो तो कुण्डली मांगलिक होती है। कुछ अन्य ज्योतिषियो के आधुनिक शोध ने दूसरे स्थान के मगल से कुण्डली को

मांगलिक माना है मांगलिक कुण्डली स्त्री व पुरुषों के लिए पारिवारिक रूप से कष्टदाई बनती है। पाप ग्रहों की इन स्थानों मे स्थिति से मांगलिक तुल्य बनती है। शुक्र से 4थे व 8वें मंगल भी कष्टदायी बनते हैं गृहस्थ ठीक से नहीं चलता।

- ❑ केन्द्र में स्वगृही व उच्च राशि में स्थित मंगल से रूचक महायोग बनता है। जो साहस व शौर्य से धन, भूमि व वैभव का स्वामी बनाता है।
- ❑ मंगल+शनि के संबंध से बिजली, विज्ञान व दो नंबर के धंधे बनते हैं। मंगल में शनि व शनि में मंगल की दशा बीमारी या कष्ट देती है।
- ❑ तीसरा मंगल छोटे भाई को देने वाला व उसका मारक भी होता है।
- ❑ पंचम व एकादश भवन के मंगल पुत्र कारक और मारक भी होते हैं।
- ❑ दूसरे स्थान में स्थित मंगल पुत्र को अग्नि सम्बन्ध या एक्सीडेण्ट से हानि देते हैं।
- ❑ 6, 7, 12वे स्थान मे स्थित मंगल शत्रु और रोग की वृद्धि करता है।
- ❑ मंगल यदि बृहस्पति से नियंत्रित हो जाए तो शुभ फल करेगा। बृहस्पति से दृष्ट मंगल शुभ फल देने वाला होता है। परन्तु अभी शोध से मांगलिक स्थानों का मंगल बृहस्पति से दृष्ट होकर प्रबल मंगल मारक बनता है। ऐसा फल दृष्टव्य है
- ❑ मंगल का बल शुक्र तोड़ देता है। (मं.+शु) हो उस मंगल की दृष्टि से मृत्यु नहीं होती है। यह सेक्स बढ़ाता है।
- ❑ मंगल का शुक्र से किसी प्रकार का संबंध हो तो वह संतान योग देता है।
- ❑ अष्टमस्थ या अष्टम पर दृष्टिकर्त्ता अनियंत्रित मंगल (जिस मंगल पर किसी शुभ व अशुभ ग्रह का असर न हो वह मंगल, उम्र कम करता है। अचानक एक्सीडेण्ट से मृत्यु देता है।
- ❑ सूर्य+मंगल का योग हो ले सूर्य से नियंत्रित मंगल अकस्मात् दुर्घटना देता है।
- ❑ चंद्र व शुक्र के संबध में मंगल दूषित होता है। व्यक्ति कुमार्गगामी, क्रोधी व व्यसनी बनाता है।
- ❑ 5, 7, 12वें भाव में मंगल के लोग परनिन्दक होते हैं।
- ❑ 2, 4, 6, 8, 12वें भावों में मंगल वाले जातक डिग्रीयां प्राप्त करते हैं। परन्तु उनके मन की अवस्था अविकसित रहती है।
- ❑ शुक्र या मंगल जन्म में केन्द्र में हो तो जब जब मंगल उसी राशि पर आएगा चोट देगा।

रहता है। जब यह सूर्य से 135 डिग्री अंश की दूरी पर जाता है तो वक्री हो जाता है उस समय इसकी चाल 65 दिन में 12 डिग्री अंश तक की हो जाती है। यह सूर्य से 17 डिग्री अंश की दूरी पर अस्त हो जाता है अस्त होने पर 120 दिन बाद फिर उदय होता है। उदय के 300 दिन बाद वक्री हो जाता है। तथा वक्री के 60 दिन बाद यह मार्गी हो जाता है। जब इसकी गति 46/11 होती है तो यह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो जाता है।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

वृश्चिकलग्न का स्वरूप

स्वल्पांगो बहुपाद्ब्राह्मणो बिली।
सौम्यस्थो दिनवीर्यढ्यः पिशङ्गो जलभूवहः॥16॥
रोमस्वाढ्योऽतितीक्ष्णाग्रो वृश्चिकश्च कुजाधिपः।

—बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 16

स्वल्प शरीर, बहुपद, ब्राह्मण जाति, बिल में रहने वाला उत्तरवासी, दिनबली, पिंगलवर्ण, जलतत्त्व, भूचारी, रोमयुक्त, तीक्ष्ण अग्रभाग वाला है, इसका स्वामी मंगल है॥16॥

पृथुलनवक्षा वृत्तजङ्घोरुजानु
र्जनकगुरुवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।
नरपतिकुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो,
क्षषकुलिशखगांकश्छ्पन्नपापोऽलिजातः॥18॥

—बृहज्जातकम् अ. 18/श्लो. 8

वृश्चिक राशि में चंद्रमा हो तो मनुष्य बड़ी आंखों व छाती वाला, गोल पिण्डली, जांघ व घुटनों वाला, पिता व बृहस्पति से वियुक्त, बाल्यकाल में रोगी रहने वाला राजकुल मे सम्मान पाने वाला, पिंगल वर्ण, क्रूर चेष्टाओं वाला, हाथ या पैर से मछली, वज्र या पक्षी के चिह्नों से युक्त, गुप्त रूप से पापकर्म करने वाला होता है।

जातो विलग्ने खलु वृश्चिके स्याच्चण्डोऽभिमानी पुरुषोऽतिशूरः।
विज्ञानवान् काव्यकरः कृतज्ञः स्यात् सविभागी बहुरोषचित्तः॥8॥

वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.8/ पृ.288

यदि जन्म समय में वृश्चिकलग्न का उदय हो तो मनुष्य प्रचण्ड स्वभाव वाला, उग्र, अत्यधिक अभिमानी, अत्यधिक शूर, विशिष्ट ज्ञान विज्ञान वाला, काव्यकर्ता,

किए गए उपकार को मानने वाला, अत्यधिक क्रोधी स्वभाव वाला एवं विकीर्ण भाग्य सम्पत्ति वाला होता है।

मूर्खः करविलोचनोऽतिचपलो मानी चिरायुर्धनी
विद्वान् वृश्चिकलग्नजश्च सुजनद्वेषी विवादप्रियः॥

—जातक पारिजात श्लो. 8/ पृ. 678

वृश्चिक मूर्ख (बुद्धिमान् नहीं), क्रूर नेत्र, अत्यन्त चपल, मानी गर्व सहित दीर्घायु, धनी, विद्वान्, सज्जनों से द्वेष करने वाला, विवादप्रिय।

गौरः स्थिरः प्रचण्डो रणोत्कटः स्यान्नरो विशालाक्षः
स्थूलविशालशरीरः कलिप्रियो वृश्चिकाद्यांशे॥

—सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न मे वृश्चिक राशि व वृश्चिक राशि का पहिला द्रेष्काण हो तो जातक शुभ्रवर्ण, स्थिर, उग्र, सग्राम प्रेमी, विशाल नेत्र वाला, मोटा व विशाल शरीर वाला और कलह प्रेमी होता है।

वृश्चिककोदयसञ्जातः शौर्यवानतिदुष्टधीः।
विज्ञान ज्ञान सम्पन्न सुखोसुविग्रहः सुधीः॥

—मानसागरी अ. 1/ श्लो. 8

वृश्चिकलग्न वाला जीव पराक्रम शक्तिशाली, प्रपंचकर्ता, चतुर, स्वार्थी, वाद-विवाद में प्रवीण, विचारशील, वश में प्रधान, हठवादी साथ ही ज्ञान दम्भशील रहे।

भोजसंहिता

वृश्चिकलग्न का अधिपति मंगल है। मंगल तेजोमय व अग्नितत्त्व प्रधान होता है। ऐसा जातक दबंग व क्रोध युक्त होता है। यह स्त्री सूचक राशि है। इसका प्राकृतिक स्वभाव दम्भ, हठी, दृढ़ प्रतिज्ञ व स्पष्टवादी पुरुषों का प्रजनन है। 'विशाखा' नक्षत्र में जन्मे जातक को क्रोध बहुत ही शीघ्र आता है। कोई जरा सी भी विपरीत बात कह दे तो इनको सहन नहीं होती। ये बिना आगे पीछे की परवाह किए अगले व्यक्ति से टकरा जाते हैं। स्त्री संज्ञक राशि होने से फिर ये मन ही-मन घबराते हैं, परन्तु अपनी घबराहट बाहर प्रकट नहीं होने देते। क्रोध में बहुत कुछ अंटशंट कह डालते हैं। तथा बाद में पछताते हैं।

यदि आपका जन्म 'अनुराधा' नक्षत्र में है तो आप साहसी व कर्मठ हैं। परिस्थितियों की मार के सामने आप झुकने वाले नहीं आप चुपचाप अबाध गति से

आगे बढ़ने वाले व्यक्तियो में से हैं। आपकी इच्छाशक्ति बड़ी दृढ़ है। तथा आपकी बुद्धि भी तीक्ष्ण है।

'वृश्चिक' राशि का चिह्न डकदार बिच्छू है। बिच्छू के करीब 32 नेत्र शरीर के भिन्न-भिन्न अगो पर होते है सो इस राशि वाला जातक सहस्र चक्षुओं से किसी वस्तु का अवलोकन करता है। विषय की बारीकी को सहज ही पकडकर अपने काम की वस्तु उसमें से ग्रहण कर लेता है। बिच्छु बड़ा ही तेज स्वभाव का व शीघ्र डंक मारने वाला प्राणी होता है। सदैव इस राशि वाले व्यक्ति भी फौरन कार्य करने वाले, शीघ्र बदला लेने वाले व क्रियाशील व्यक्ति होते हैं। इस राशि वाले व्यक्ति दूसरों की असावधानी का शीघ्र फायदा उठाने मे तत्पर रहते हैं, बिच्छु के आगे का आधा हिस्सा मृदु तथा एक प्रकार से अप्रभावशाली होता है। विष की तीक्ष्णता उत्तरार्द्ध में है अत: इस राशि में उत्पन्न व्यक्तियों का पूर्वार्द्ध साधारण तथा जीवन के अंतिम दिनों मे ये भरे पूरे व सर्व प्रभुत्व सम्पन्न बन जाते है।

वृश्चिकलग्न स्त्री जाति सूचक, जल तत्त्व प्रधान व रात्रि बली होती है। तदैव इस राशि वाले सज्जन रात्रि में अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं। यदि आपका नाम य से प्रारभ होता है। आपको एक बार क्रोध आ जाने पर आप क्षमा करना नहीं जानते। इनके मन में क्रोधाग्नि भीतर ही भीतर धधकती रहती है और यद्यपि बाहर से यह मालूम होता है कि आप शान्त हो गये परन्तु प्रतिहिंसा की भावना आपके अंदर और भी भयानक रूप धारण कर लेती है आप प्रतिद्वन्दी को निर्दयता से हानि पहुंचाने की चेष्टा करते हैं, इनको अगर जहरीले इंसान कह दिया जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी ये शत्रु को धर दबोचने वाले, झगड़ालू व उन्मत शरीर के व्यक्ति होते हैं।

सामान्यतया इस लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एव बलवान होते हैं तथा परिश्रम एव लगन के द्वारा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। विभिन्न विषयों का इनको ज्ञान रहता है तथा एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है कुल या परिवार में ये श्रेष्ठ रहते हैं तथा मित्र एव बन्धुवर्ग के मध्य सम्मानीय रहते हैं। आत्मशक्ति की इनमे प्रबलता रहती है तथा महत्वाकाक्षा की भी तीव्र भावना से युक्त रहते हैं। धन सग्रह के प्रति भी ये रुचिशील रहते हैं तथा धनार्जन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इनमें भावुकता अल्प रहती है तथा बुद्धि के द्वारा ही अधिकाश कार्यों को सम्पन्न करते हैं साथ ही विज्ञान एव गणित के क्षेत्र में ये ख्याति अर्जित करते हैं।

अत: इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान पुरुष होंगे तथा सर्वपराक्रम एव परिश्रम से सासारिक कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन मे धनैश्वर्य वैभव एव सुख ससाधनो को अर्जित करके सुखपूर्वक

इनका उपभोग करेंगे। आपमें निर्भयता तथा लगनशीलता का भाव भी विद्यमान होगा फलत: कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली होंगे तथा उन्नति मार्ग पर अग्रसर होंगे।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगे। धन संग्रह के प्रति भी आपकी रुचि रहेगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग यदा-कदा असुविधा की अनुभूति करेंगे। भावुकता से आप जीवन में कम ही कार्य करेंगे फलत: प्रसन्नतापूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

आप एक सहनशील स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा धैर्यपूर्वक अपने सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न करके उसमें वांछित सफलता प्राप्त करेंगे। साथ ही आप धैर्यपूर्वक सफलता प्राप्ति की प्रतीक्षा करने में समर्थ होंगे। सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप नित्य आर्थिक लाभ अर्जित करेंगे तथा इनसे आपको सहयोग भी मिलता रहेगा। जिससे आपके अन्य कार्य भी यथा समय सिद्ध होंगे।

आपके स्वभाव में दया एवं उदारता का भाव भी विद्यमान होगा तथा आप अवसरानुकूल अन्या जनों को सुख-दु:ख में सेवा तथा सहयोग प्रदान करेंगे। धनैश्चर्य एवं भौतिक सुखों के प्रति आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इनकी प्राप्ति में आप अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करेंगे।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समय-समय पर धार्मिक कार्यकलापों या तीर्थयात्रओं को मानसिक शान्ति के लिए सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग मे भी आप श्रेष्ठ एवं आदरणीय रहेंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे इस प्रकार आप परिश्रमी संग्रहकर्ता एवं महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा धनैश्वर्य से युक्त होकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

बिच्छु की आयु कम होती है सो वृश्चिक राशि वाले व्यक्ति अल्पायु को प्राप्त होते देखे गये है। अचानक आक्रमण तथा घटनाचक्र के मोड़ से यह शीघ्र ही काबू में आ जाते है। इनको प्राय: तिक्त (खट्टा) स्वाद पसद होता है तथा खाना खाते वक्त नीबू का प्रयोग ज्यादा करते हैं।

यदि आपका जन्म 14 नवम्बर से 14 दिसम्बर के बीच हुआ है तो आपको विरासत में सम्पत्ति मिलने का योग है। ऐसे जातक का भाग्योदय 28 वर्ष की आयु में होता है। तथा प्रथम पत्नी का सुख प्राय: कम रहता है। भाग्योदय के लिए संघर्ष करना पड़ता है। मित्र बहुत होंगे, परन्तु शत्रुओं की भी कमी न रहेगी। शत्रु अकारण पैदा होंगे। आप दूसरों के हृदय की बात भांप लेते हैं। परन्तु आपके पेट की थाह पाना कठिन है। लाल व ज्वलनशील पदार्थों का व्यापार आपके अनुकूल कहा जा सकता है। औषधि ज्ञान व विष चिकित्सा में आप शीघ्र सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

नक्षत्रानुसार फलादेश

तो	ना नी नु ने	नो या यी यू
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा

विशाखा पादमेकं अनुराधा ज्येष्ठान्तं वृश्चिकः

विशाखा का चतुर्थ चरण, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र मिलाकर वृश्चिक राशि बनती है। विशाखा का नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है। अनुराधा का नक्षत्र स्वामी शनि और ज्येष्ठा नक्षत्र स्वामी का बुध है।

विशाखा के चतुर्थ पाद—विशाखा के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति लम्बी आयु वाला होता है। यहा पाद का स्वामी स्वयं चंद्र हैं, मानों स्वक्षेत्री चंद्र पर बृहस्पति (नक्षत्र स्वामी) का प्रभाव हो जिसके फलस्वरूप आयु का बढना उपयुक्त ही है, क्योंकि चंद्र लग्न रूप होने से बलवान् होकर आयु को बढ़ाएगा।

चंद्रमा अनुराधा नक्षत्र में

विदेशवासी धनवान् क्षुधालुः

चंद्रेऽनुराधास्वटनो नरः स्यात।

चंद्रमा यदि जन्म समय में अनुराधा नक्षत्र में हो तो मनुष्य विदेश में रहने वाला, धनी भूख से व्याकुल तथा भ्रमणशील होता है। उपर्युक्त फलादेश हम समझते हैं कि सत्य के अधिक समीप है अपेक्षाकृत उस फलादेश के कि जो जातक पारिजात ने इस विषय में दिया है अनुराधा नक्षत्र का स्वामी शनि है जो कि चंद्रमा का शत्रु है और अशुभ भी है। शनि पृथकता और विच्छेद के लिए विख्यात है। अत: उसके नक्षत्र में लग्नरूप चंद्रमा के आ जाने से जन्म भूमि (जो कि लग्न प्रदर्शित होती है) से पृथक विदेशवास करना उपयुक्त कहा है। चंद्रमा को और अधिक अस्थिर बनाकर मनुष्य को भ्रमणशील बनाने का कार्य भी शनि के नक्षत्र के लिए उपयुक्त ही है। क्षुधालु विशेषण भी बहुत उपयुक्त है क्योंकि चंद्रमा का खाने पीने से बहुत घनिष्ठ संबंध है और शनि हुआ कमी और अभाव का कारक है अत: जब यह खाद्य पदार्थों की कमी करेगा तो क्षुधालु होने की स्थिति उत्पन्न हो जाएगी।

यहा हम धनी होने के गुण से सहमत नहीं हैं क्योंकि शनि का काम कमी उत्पन्न करना है और लग्नरूप होने से चंद्रमा धन का द्योतक है अत: धन में कमी आनी चाहिए न कि वृद्धि।

अनुराधा का प्रथम चरण—अनुराधा के प्रथम चरण मे यदि जन्म समय में चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य तीव्र स्वभाव का होता है। इस पाद का स्वामी सूर्य है और

नक्षत्र का स्वामी शनि। दोनों तीव्र हैं बल्कि शनि तो क्रूर भी है। अतः सूर्य और कुछ हद तक शनि के चंद्रमा पर प्रभाव के कारण स्वभाव में तीव्रता आ जाएगी।

अनुराधा का द्वितीय चरण–अनुराधा के द्वितीय चरण में चंद्रमा के स्थिर होने पर मनुष्य धर्म कार्यों में लगा रहने वाला होगा। इस पाद का स्वामी बुध है। बुध आप जानते हैं परोपकार और यज्ञीय कर्म करने में विख्यात है। शनि भी अपने वैराग्य में बुध को इस कार्य में सहायता देगा और दोनों (नक्षत्र स्वामी और नक्षत्र पाद स्वामी) मिलकर मनुष्य को वास्तविक अर्थों में धार्मिक बना देंगे।

अनुराधा का तृतीय चरण–अनुराधा के तृतीय चरण में चंद्रमा के स्थित होने पर व्यक्ति लंबी आयु भोगने वाला होता है। इस चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र एक शुभ ग्रह है, यह और चंद्र दोनों मिलकर अनुराधा के स्वामी शनि को मानो प्रभावित करेंगे जिसके फलस्वरुप शनि आयुष्य को दीर्घ कर देगा। या इस प्रकार की कह सकते हैं कि शुक्र आयुष्यकारक शनि को भी लाभ पहुंचायेगा और आयुष्य द्योतक चद्र को भी।

अनुराधा का चतुर्थ चरण–अनुराधा के चतुर्थ चरण में जन्म समय पर चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति नपुंसकता युक्त होता है। इस चरण का स्वामी मंगल है। शनि जो नक्षत्र स्वामी है वह नपुसकता की ओर ले जाए तो ले जा सकता है। परन्तु चरण स्वामी मंगल जो कामपूर्ण तथा सक्रिय ग्रह है वह शनि को इस कार्य में सहायता करेगा अथवा नहीं, यह विषय विचारणीय है।

चंद्रमा ज्येष्ठा नक्षत्र में

ज्येष्ठासु सन्तोषपरतोऽतिकोपी,

न भूरिमित्रो निरतश्च धर्मे।

यदि चंद्रमा जन्म समय में ज्येष्ठा नक्षत्र में स्थित हो तो जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोडे मित्रों वाला परन्तु धर्म में रत होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र का स्वामी बुध होता है जो कि नैसर्गिक रूप से एक शुभ एव परम भागवत ग्रह है, विष्णु रूप परोपकारी और धार्मिक है। अतः इस प्रकार के धार्मिक ग्रह के नक्षत्र मे आकर मन रूपी चंद्रमा यदि संतोषप्रिय हो जाए तो उपयुक्त ही है। धर्म में सदा लगा रहे यह भी इसीलिए उपयुक्त है। चद्रमा के लिए चूंकि बुध शत्रु है, अतः अधिक मित्र न हों, ऐसा कहा है। अतिकोपी भी संभवतया इसी शत्रुत्व के कारण कहा, क्योंकि शत्रुत्व और कोप में संबंध है ही।

ज्येष्ठा का प्रथम चरण ज्येष्ठा के प्रथम चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति क्रूर स्वभाव वाला होता है। नक्षत्र का स्वामी बुध है और नक्षत्र पाद का बृहस्पति। बुध से तो चंद्रमा की कोई मित्रता नहीं। बृहस्पति मित्र अवश्य है, परन्तु इसकी भी मूल त्रिकोण राशि चंद्र की राशि से छठे पड़ती है। अतः शत्रुत्व और क्रूरता का व्यवहार देखने में आ सकता है।

ज्येष्ठा का द्वितीय चरण–ज्येष्ठा के द्वितीय चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति भोगी होता है। इस पाद का स्वामी शनि है और नक्षत्र का बुध। दोनों मिलकर कुटिल मार्ग पर ले जा सकते हैं।

ज्येष्ठा का तृतीय चरण–ज्येष्ठा के तृतीय चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो जातक पुत्र से युक्त होता है। इस पाद का स्वामी बृहस्पति है और नक्षत्र का स्वामी बुध। बुध को तो बृहस्पति की बात माननी है, अतः बृहस्पति जो पुत्रकारक है पुत्रदायक सिद्ध हो सकता है।

वृश्चिकलग्न की महिला जातक

वृश्चिकलग्न में जन्म लेने वाली स्त्री लंबे मुख और पेट वाली, पित्त प्रकृति की, पिंगल नेत्रों वाली और अतिशय खर्च करने वाली होती है। यह कुटिल स्वभाव की और धर्म को आडंबर मानने वाली होती है। यही कारण है कि वह अपने पति को विशेष महत्त्व नहीं देती। प्रायः इनके दांत में दर्द रहता है। बृहस्पतिवार इनके सब कार्यों के लिए सर्वोत्तम है। इनकी पीठ पर प्राय तिल होता है। गौर वर्ण की स्त्रियों से सदैव शत्रुता रहती है। इनके चार तक पुत्र और दो कन्याएं होने की संभावना बनी रहती है। अपने जीवन मे तीन बार इसे खतरा बनता है। चौथे और तेरहवें वर्ष में बीमारी का और तीसवें साल में गिरने का इनकी आयु प्रायः 70 वर्ष के ऊपर जाती है। यह जन्मकुण्डली पर निर्भर है। प्रायः रोग से या दुर्घटना से अथवा ऑपरेशन के बिगड़ने से मौत होती है।

वृश्चिकलग्न के शुभाशुभ फल

- ❑ वृश्चिकलग्न के प्रधान ग्रह सूर्य व चंद्र हैं।
- ❑ शुभ ग्रह भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य तथा धनेश पंचमेश बन कर बृहस्पति है।
- ❑ पाप ग्रह सप्तमेश द्वादशेश शुक्र और लाभेश अष्टमेश बुध है। परन्तु कुछ लोग शनि भी मानते हैं।
- ❑ लग्नेश मंगल षष्ठेश भी है अतः सम है और तृतीयेश चतुर्थेश होने से शनि भी इस कुण्डली का सम ग्रह है।

- इसमें मारक ग्रह शुक्र बनता है।
- राजयोग कारक ग्रह सूर्य व चंद्र हैं।
- यह कुण्डली कालपुरुष के आठवें भाव की राशि की होने से अंडकोष का स्थान लेती है। अतः वृश्चिक राशि का मंगल एवं आठवां भाव या अष्टमेश पाप प्रभावी होगा तो अंडकोष की वृद्धि, बवासीर, भगंदर जैसे रोग संभव है।
- यहां लग्न में मंगल स्वगृही होकर **रुचक योग** बनायेगा। साहस से धन प्राप्त होगा।
- लग्न में चंद्र हो तो सुंदर व चतुर पुरुष या पुरुष की कुंडली में सुंदर पत्नी मिलेगी ऐसे हाल मे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
- लग्न में मंगल+चंद्र की युति गले के रोग की संभावना पैदा करेगी।
- वृश्चिकलग्न या राशि में प्रायः स्वभाव उग्र होगा। जातक अपनी मनमानी करने वाला होगा। क्रोध करने वाला पर कर्मठ व हठी होगी। पुरुष या स्त्री सैनिक वृत्ति वाले होंगे। यदि मंगल बली हो तो शत्रु पर विजय पाने वाली होगा।
- इस कुंडली में मंगल+शनि मिलकर जिस भाव में होंगे व जिस भाव को देखेंगे उस भाव का कड़ा विरोध करेंगे पर चरित्र शुद्ध होगा। लग्न का मंगल कुंडली को मांगलिक बनाता है। पर वह हल्का है बुरा फल कम ही करेगा।
- लग्न में शनि कब्जी रोग देगा।
- लग्नस्थ शनि पर मंगल दृष्टि से दूषित हो तो अपघात करता है या कारावास भी बन सकता है।
- लग्नस्थ शुक्र शुभ नहीं होगा। व्यकित व्याभिचारी बनेगा।
- मंगल+शुक्र लग्न मे हो, शुभ दृष्ट हो तो जातक चित्रकार, शिल्पी, अभिनेता, गायक बन सकता है
- लग्न मे केवल शुक्र एक ही पति या पत्नी का सुख देता है। सुख अच्छा होगा, अधिक प्रेम रहेगा।
- लग्न में सूर्य या राहु रोगप्रद होंगे इससे कुंडली भौमपंचक दोष वाली होगी।
- वृश्चिकलग्न में मंगल प्रधान राशि षष्ठ स्थान में होती है। अतः मंगल का रत्न नहीं पहनाना चाहिए।

उपाय

- इस कुण्डली वाले को मोती या माणिक्य पहनाना हितकर है।
- सुंदरकांड या हनुमान चालीसा के पाठ फायदे वाले है।

- मगल व्रत हमेशा ही श्रेष्ठ रहेगा। स्त्री हो तो मंगला गौरी व्रत करें अर्थात् मगल के दिन पार्वती की पूजा कर व्रत करे
- रविवार व्रत श्रेष्ठ है। इस लग्न के लिए चद्र बाधक भी है स्थिर लग्न में नवम भाव भावेश बाधक होता है

❑❑❑

जन्माक्षर (जन्मपत्रिका) भरने के लिये विशेष चार्ट

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मगल	अश्व	देव	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3, हि. 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मगल	गज	मनु.	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1, हि. 3	चंद्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 3, सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चंद्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	हु,हे,हो डा	कर्क	चद्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चादी	मी. 3, श्वा. .	शनि	19
9	आश्लेषा	डी,डु,डे,डो	कर्क	चद्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चान्दी	श्वान	बुध	17
10	मघा	मा मी,मू मे	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चादी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु	चांदी	मू. 3, श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु. .	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चादी	श्वा. 1, मू. 2	सूर्य	6
13	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चान्दी	मू. 1, मी. 1, श्वा.2	चंद्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चादी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चादी	हिरण	मगल	7
15.	स्वाति	रू,रे रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16	विशाखा	तो	वृश्चिक	मगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1, हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2, मू. 2	केतु	7
20	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू, 1 स, 1 मृ, 1 श्वान	शुक्र	20
21	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं. 3, बि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलौड़	चंद्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि., 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी., 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प, 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प, 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृत्तिका	अग्नि	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चंद्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	.3	हस्त	सूर्य	चंद्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	.4.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वेदेव	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
कुंभ	25.	पू. भा.	अजचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
मीन	27	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

नक्षत्र चरण, नक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृत्तिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चू	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	अ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	.			–
ला	0/13/20/4	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	.	–		–
वृष राशि											
3. कृत्तिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/26/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	गु.	वू	1/23/20/0	4	चं.	-	–		

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मगल)				6. आर्द्रा (राहु)				7. पुनर्वसु (बृहस्पति)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	म.
की	2/6/40/0	4	मं.	घ	2.13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ङ	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.	—	—	—	—

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (बृहस्पति)				8. पुष्य (शनि)				9 आश्लेषा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/3/20/0	4	च.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
—		—		हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
	—		—	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
—		—		डा	3.16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.
मी	4/6/40/0	2	शु.
मू	4/10/0/0	3	बु.
मे	4/13/20/0	4	च.

11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
मो	4/16/40/0	1	सू.
टा	4/20/0/0	2	बु.
टी	4/23/20/0	3	शु.
टू	4/26/40/0	4	म.

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टे	4/30/0/0	1	गु.
–	–	–	–
	–	–	
-		–	–

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.
पा	5/6/40/0	3	श.
पी	5/10/0/0	4	गु.
	–	–	–

13. हस्त (चंद्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
पू	5/13/20/0	1	म.
ष	5/16/40/0	2	शु.
ण	5/20/0/0	3	बु.
ठ	5/23/20/0	4	चं.

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
पे	5/26/40/0	1	सू.
पो	5/30/0/0	2	बु.
–	–	–	–
	–	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.
री	6/6/40/0	4	मं.
–	–		
–	–		

15. स्वाति (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
रू	6/10/0/0	1	गु.
रे	6/13/20/0	2	श.
रो	6/16/40/0	3	श.
ता	6/20/0/0	4	गु.

16. विशाखा (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
ती	6/23/20/0	1	मं.
तू	6/26/40/0	2	शु
ते	6/30/0/0	3	बु.
			-

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.
		–	–
.	–	–	–
–	–		–

17. अनुराधा (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
ना	7/6/40/0	1	सू
नी	7/10/0/0	2	बु.
नू	7/13/20/0	3	शु.
ने	7/16/40/0	4	म.

18. ज्येष्ठा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
नो	7/20/0/0	1	गु.
या	7/23/20/0	2	श.
यी	7/26/40/0	3	श.
यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.
यो	8/6/40/0	2	शु.
या	8/10/0/0	3	बु.
यी	8/13/20/0	4	चं.

18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
भू	8/16/40/0	1	सू.
धा	8/20/0/0	2	बु.
फा	8/23/20/0	3	शु.
ढा	8/26/40/0	4	मं.

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भे	8/30/0/0	1	गु.
–	–	–	–
–	–	–	
	–	–	

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.
जा	9/6/40/0	3	श.
जी	9/10/0/0	4	गु.
–	–	–	–

22. श्रवण (चंद्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
खी	9/13/20/0	1	मं.
खू	9/16/40/0	2	शु.
खे	9/20/0/0	3	बु.
खो	9/23/20/0	4	चं.

23. धनिष्ठा (मगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गा	9/26/40/0	1	सू.
गी	9/30/0/0	2	बु.
–	–	–	–
–		–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गू	.0/3/20/0	3	शु.
गे	·0/6/40/0	4	मं.
–			
		–	

24. शतभिषा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
गो	10/10/0/0	1	गु.
सा	10/13/20/0	2	श.
सी	10/16/40/0	3	श.
सू	10/19/0/04	4	गु.

26. पूर्वाभाद्रपद (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
से	10/23/20/0	1	म.
सो	10/26/40/0	2	श.
दा	10/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.
–	–	–	-
		–	–
–	–	–	–

27 उत्तराभाद्रपद (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
दू	.1/6/40/4	1	सू.
थ	11/10/0/0	2	बु.
झ	11/13/20/0	3	शु.
ञ	11/16/40/0	4	गु.

28. रेवती (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
दे	11/20/0/0	1	गु.
दो	11/23/20/0	2	श.
चा	11/26/40/0	3	श.
चो	11/30/0/0	4	गु.

वृश्चिकलग्न पर अंशात्मक फलादेश

वृश्चिकलग्न, अंश 0 से 1

1. **लग्न नक्षत्र**–विशाखा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/3/20/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–व्याघ्र
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्राग्नि
10. **वर्णाक्षर**–तो
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–चंद्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'दीर्घायुषो'

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्ति वाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एव देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक लम्बी उम्र वाला होता है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है। चंद्रमा लग्नेश मंगल का मित्र है तथा चंद्रमा लगनन क्षत्र स्वामी बृहस्पति का भी मित्र है। फलत चद्रमा की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) मे है, कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से उसका विकास रुका हुआ रहेगा।

वृश्चिकलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र—विशाखा 2. नक्षत्र पद -4
3. नक्षत्र अंश—7/3/20/0
4. वर्ण—विप्र 5. वश्य—कीट
6. योनि—व्याघ्र 7. गण -राक्षस
8. नाड़ी—अन्त्य 9. नक्षत्र देवता—इन्द्राग्नि
10. वर्णाक्षर—तो 11. वर्ग—सर्प
12. लग्न स्वामी—मंगल 13. लग्न नक्षत्र स्वामी—बृहस्पति
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—चंद्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'दीर्घायुषो'

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्ति वाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक लम्बी उम्र वाला होता है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है। चंद्रमा लग्नेश मंगल का मित्र है तथा चंद्रमा लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति का भी मित्र है। फलत: चंद्रमा की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मंगल की दशा भी शुभ फल देगी।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से 'उदित अंशों' का है, बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी. मंगल मेष राशि के 12 अंशों तक मूलत्रिकोणी रहता है तथा मेष के 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। अत: यहां मंगल शुभ फलदायी है।

वृश्चिकलग्न, अंश 2 से 3

1. लग्न नक्षत्र—विशाखा 2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—7/3/20/0
4. वर्ण—विप्र 5. वश्य—कीट
6. योनि—व्याघ्र 7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—अन्त्य 9. नक्षत्र देवता—इन्द्राग्नि
10. वर्णाक्षर—तो 11. वर्ग—सर्प

12. लग्न स्वामी–मंगल

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति

14. नक्षत्र चरण स्वामी–चंद्र

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'दीर्घायुषो'

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्ति वाला किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक लम्बी उम्र वाला होता है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्रमा है चंद्रमा लग्नेश मंगल का मित्र है तथा चंद्रमा लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति का भी मित्र है। फलतः चंद्रमा की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मगल की दशा भी शुभ फल देगी।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है लग्न उदित अंशों मे होने से लग्नेश मंगल की दशा उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मगल मूलत्रिकोणी तथा मेष के 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। अतः यहां मंगल अति शुभफल ही देगा।

वृश्चिकलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–विशाखा

2. नक्षत्र पद–4

3. नक्षत्र अंश–7/3/20/0

4. वर्ण–विप्र

5. वश्य–कीट

6. योनि–व्याघ्र

7. गण–राक्षस

8. नाड़ी–अन्त्य

9. नक्षत्र देवता–इन्द्राग्नि

10. वर्णाक्षर–तो

11. वर्ग–सर्प

12. लग्न स्वामी–मगल

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति

14. नक्षत्र चरण स्वामी–चद्र

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'दीर्घायुषो'

विशाखा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सुन्दर कान्ति वाला, किन्तु ईर्ष्यालु होता है। विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति एवं देवता इन्द्राग्नि है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाला जातक लम्बी उम्र वाला होता है। विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चद्रमा है चद्रमा लग्नेश मंगल का मित्र है तथा चंद्रमा

लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति का भी मित्र है। फलतः चंद्रमा की दशा में जातक का भाग्योदय होगा मंगल की दशा भी शुभ फल देगी

लग्न यहा तीन से चार अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' में बलवान है लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश मंगल की दशा उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशो तक मगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। अतः यहा मगल की दशा अति शुभफल देगी

वृश्चिकलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र—अनुराधा **2. नक्षत्र पद**—1

3. नक्षत्र अंश—7/3/20/0 से 7/6/40/0

4. वर्ण—विप्र **5. वश्य**—कीट

6. योनि—मृग **7. गण**—देव

8. नाड़ी—मध्य **9. नक्षत्र देवता**—मित्र

10. वर्णाक्षर—ना **11. वर्ग**—सर्प

12. लग्न स्वामी—मंगल **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी—सूर्य **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'तीव्रो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में होने के कारण आप तीव्र, उतावले स्वभाव के जातक होंगे। अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्न स्वामी मगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी का शत्रु है। सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी, जबकि शनि की दशा मे भौतिक उपलब्धिया मिलेंगी, पराक्रम बढ़ेगा

लग्न यहां चार से पाच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अशों में होने से लग्नेश मगल की दशा उत्तम फल देगी। मंगल 12 अशो तक मूल त्रिकोणी होता है। फलतः मंगल की दशा उन्नतिदायक होगी

वृश्चिकलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र—अनुराधा **2. नक्षत्र पद**—1

3. नक्षत्र अंश—7/3/20/0 से 7/6/40/0

4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–मित्र
10. वर्णाक्षर–ना
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'तीव्रो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में होने के कारण आप तीव्र, उतावले स्वभाव के जातक होंगे। अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्न स्वामी मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी का शत्रु है। सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी। जबकि शनि की दशा मे भौतिक उपलब्धियां मिलेंगी, पराक्रम बढ़ेगा।

लग्न यहां पांच से छः अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों मे होने से लग्नेश मंगल की दशा उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने के कारण विशेष बलवान है। अतः यहां लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 6 से 7

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–7/3/20/0 से 7/6/40/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–मित्र
10. वर्णाक्षर–ना
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'तीव्रो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण में होने के कारण आप तीव्र, उतावले स्वभाव के जातक होंगे। अनुराधा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्न स्वामी मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी का शत्रु है। सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी। जबकि शनि की दशा में भौतिक उपलब्धियां मिलेगी, पराक्रम बढ़ेगा।

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने के कारण विशेष बलवान है अतः यहां लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा 2. नक्षत्र पद–2

3. नक्षत्र अंश 7/6/40/0 से 7/10/0/0

4. वर्ण–विप्र 5. वश्य–कीट

6. योनि–मृग 7. गण–देव

8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–मित्र

10. वर्णाक्षर–नी 11. वर्ग–सर्प

12. लग्न स्वामी–मंगल 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'धर्मकरो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप एक धर्मभीरु व्यक्ति है। अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है, बुध लग्न नक्षत्र स्वामी शनि का मित्र एवं लग्नेश मंगल का शत्रु है। बुध में शनि का अन्तर अथवा शनि में बुध का अन्तर शुभ

फलदाई होगा, परन्तु मंगल में शनि का अन्तर या शनि में मंगल का अतर नेष्ट (अशुभ) फलदायक होगा।

यहां लग्न सात से आठ अंशो के भीतर होने से 'उदित अंशों' में है, बलवान है। लग्नेश मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों मंगल तक मूलत्रिकोणी कहलाता है फलतः मंगल की दशा उन्नतिदायक है।

वृश्चिकलग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा **2. नक्षत्र पद**–2
3. नक्षत्र अंश–7/6/40/0 से 7/10/0/0
4. वर्ण विप्र **5. वश्य**–कीट
6. योनि–मृग **7. गण**–देव
8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–मित्र
10. वर्णाक्षर–नी **11. वर्ग**–सर्प
12. लग्न स्वामी–मंगल **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'धर्मकरो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप एक धर्मभीरु व्यक्ति हैं। अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है बुध लग्न नक्षत्र स्वामी शनि का मित्र एव लग्नेश मंगल का शत्रु है। बुध में शनि का अन्तर अथवा शनि में बुध का अन्तर शुभ फलदाई होगा, परन्तु मंगल में शनि का अन्तर या शनि में मंगल का अंतर नेष्ट (अशुभ) फलदायक होगा।

यहां लग्न आठ से नौ अशों मे उदित अशों मे है, बलवान है। लग्नेश मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अशो तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है यहां लग्न 12 अशों के भीतर होने के कारण विशेष बलवान है। अत: यहां लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा **2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–7/6/40/0 से 7/10/0/0

4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–मित्र
10. वर्णाक्षर–नी
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'धर्मकरो'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप एक धर्मभीरु व्यक्ति हैं। अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्न नक्षत्र स्वामी शनि का मित्र एवं लग्नेश मंगल का शत्रु है। बुध में शनि का अन्तर अथवा शनि में बुध का अन्तर शुभ फलदाई होगा, परन्तु मंगल में शनि का अन्तर या शनि में मंगल का अंतर नेष्ट (अशुभ) फलदायक होगा।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर उदित अंशों में है, बलवान है। लग्नेश मंगल की दशा उत्तम फल देगी मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने के कारण विशेष बलवान है। अतः लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–7/10/0/0 से 7/13/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–मित्र
10. वर्णाक्षर–नू
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'दीर्घजीवी'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति दीर्घजीवी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र शनि का शत्रु परन्तु लग्नेश मंगल का मित्र है। फलतः शुक्र की दशा मध्यम फल देगी। शनि की दशा में पराक्रम बढ़ेगा तथा भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहा लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में पूर्ण बली है। लग्नेश मंगल की दशा अति उत्तम फल देगी। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 12 अंशों के भीतर होने से बलवान है अतः लग्नेश मंगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा 2. **नक्षत्र पद**–3

3. **नक्षत्र अंश**–7/10/0/0 से 7/13/20/0

4. **बर्ण**–विप्र 5. **वश्य**–कीट

6. **योनि**–मृग 7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–मध्य 9. **नक्षत्र देवता**–मित्र

10. **वर्णाक्षर**–नू 11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–मंगल 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध** -शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'दीर्घजीवी'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति दीर्घजीवी होता है। अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र मंगल का शत्रु परन्तु लग्नेश मंगल का मित्र है। फलतः शुक्र की दशा मध्यम फल देगी। शनि की दशा में पराक्रम बढ़ेगा एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहा लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में पूर्ण बली है। मगल की दशा अति उत्तम फल देगी. मेष राशि के 12 अशों तक मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अशो तक स्वगृही कहलाता है यहां लग्न 2 अंशों के भीतर होने से बलवान है। अत: लग्नेश मगल की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–7/10/0/0 से 7/13/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–मित्र
10. वर्णाक्षर–नू
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'दीर्घजीवी'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है अनुराधा नक्षत्र के तीसरे चरण में जन्मा व्यक्ति दीर्घजीवी होता है अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है, शुक्र मगल का शत्रु परन्तु लग्नेश मंगल का मित्र है। फलत: शुक्र की दशा मध्यम फल देगी शनि की दशा में पराक्रम बढ़ेगा तथा भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहा लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से **'आरोह अवस्था'** मे पूर्ण बली है। मेष राशि के 12 अंशों तक मंगल मूलत्रिकोणी तथा 13 से 30 अंशों तक स्वगृही कहलाता है। यहा लग्न 12 से 13 अंशों के भीतर होने के कारण पूर्ण बलवान है। फलत: लग्नेश मगल की दशा अति उत्तम शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–7/13/20/0 से 7/16/40/0

4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–मित्र
10. **वर्णाक्षर**–ने
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'नपुंसक'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे जन्मा जातक प्राय: नपुसक होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्न स्वामी भी मगल है। फलत: मंगल की दशा में जातक की उन्नति होगी। जबकि शनि की दशा मध्यम फल देगी क्योंकि लग्न नक्षत्र स्वामी शनि लग्नेश मंगल का शत्रु है।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य **'आरोह अवस्था'** में पूर्ण बली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मंगल की दशा-अन्तरदशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 14 से 15

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/13/20/0 से 7/16/40/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–मित्र
10. **वर्णाक्षर**–ने
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'नपुंसक'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा जातक प्रायः नपुंसक होता है अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्न स्वामी भी मंगल है। फलतः मगल की दशा में जातक की उन्नति होगी। जबकि शनि की दशा मध्यम फल देगी क्योंकि लग्न नक्षत्र स्वामी शनि लग्नेश मंगल का शत्रु है।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में मध्य बली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशो के भीतर होने से बलवान है, फलतः लग्नेश मंगल की दशा अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–अनुराधा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–7/13/20/0 से 7/16/40/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–देव
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–मित्र
10. वर्णाक्षर–ने
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'नपुसक'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे जन्मा जातक प्रायः नपुसक होता है, अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मगल है। लग्न स्वामी भी मंगल है। फलतः मगल की दशा मे जातक की उन्नति होगी। जबकि शनि की दशा मध्यम फल देगी क्योंकि लग्न नक्षत्र स्वामी शनि लग्नेश मंगल का शत्रु है।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों में अवरोह अवस्था में है। अतः लग्न मध्यबली है। परन्तु मेष राशि के 13 से 30 अशो तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहा लग्न 13 अशों के बाद एवं 30 अशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलो से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 16 से 17

1. **लग्न नक्षत्र**–अनुराधा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/13/20/0 से 7/16/40/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–मित्र
10. **वर्णाक्षर**–ने
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'नपुंसक'

अनुराधा नक्षत्र का देवता मित्र एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक भूख से व्याकुल, विदेश में रहने वाला, भ्रमणशील व धनी होता है अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्मा जातक प्रायः नपुंसक होता है। अनुराधा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्न स्वामी भी मंगल है। फलतः मंगल की दशा में जातक की उन्नति होगी। जबकि शनि की दशा मध्यम फल देगी क्योंकि लग्न नक्षत्र स्वामी शनि लग्नेश मंगल का शत्रु है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशो में अवरोह अवस्था है। अतः लग्न मध्बली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एव 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा अतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी

वृश्चिकलग्न, अंश 17 से 18

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–7/20/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–नो
11. **वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी—मंगल	13. लग्न नक्षत्र स्वामी—बुध

14. नक्षत्र चरण स्वामी—बृहस्पति	15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु	17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'क्रूरो'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होता है ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति लग्नेश: मंगल का शत्रु है तथा नक्षत्र स्वामी बुध का भी शत्रु है। अत: बुध या मंगल की दशा में बृहस्पति की अंतर्दशा अशुभ फलदायक होगी। जबकि बृहस्पति की स्वतंत्र दशा शुभ फलदायक साबित होगी।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों में अवरोह अवस्था में है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है यहा लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र—ज्येष्ठा	2. नक्षत्र पद -1

3. नक्षत्र अंश—7/20/0/0

4. वर्ण—विप्र	5. वश्य—कीट

6. योनि—मृग	7. गण—राक्षस

8. नाड़ी—आद्य	9. नक्षत्र देवता—इन्द्र

10. वर्णाक्षर—नो	11. वर्ग—सर्प

12. लग्न स्वामी—मंगल	13. लग्न नक्षत्र स्वामी—बुध

14. नक्षत्र चरण स्वामी—बृहस्पति	15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु	17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'क्रूरो'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला बहुत क्रोधी थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है बृहस्पति लग्नेश: मंगल का शत्रु है तथा नक्षत्र स्वामी बुध

का भी शत्रु है। अत: बुध या मंगल की दशा में बृहस्पति की अंतर्दशा अशुभ फलदायक होगी। जबकि बृहस्पति की स्वतंत्र दशा शुभ फलदायक साबित होगी।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशो तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहा लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी

वृश्चिकलग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–ज्येष्ठा	**2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–7/20/0/0

4. वर्ण–विप्र	**5. वश्य**–कीट

6. योनि–मृग	**7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य	**9. नक्षत्र देवता**–इन्द्र

10. वर्णाक्षर–नो	**11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–मंगल	**13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति	**15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु	**17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'क्रूरो'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्मा व्यक्ति क्रूर होता है ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति लग्नेश: मंगल का शत्रु है तथा नक्षत्र स्वामी बुध का भी शत्रु है। अत: बुध या मंगल की दशा में बृहस्पति की अंतर्दशा अशुभ फलदायक होगी। जबकि बृहस्पति की स्वतंत्र दशा शुभ फलदायक साबित होगी।

यहां लग्न उन्नीस अंशों से बीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशो तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलो से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–ज्येष्ठा	**2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–7/20/0/0 से 7/23/20/0

4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–या
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आपका जीवन भोग-विलास में डूबा रहेगा। ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी भी बुध है, अत: बुध की दशा यहां उत्तम फल देगी। जबकि बुध मे मगल का अतर या मंगल में बुध का अंतर प्रतिकूल (नेष्ट) फलदायक रहेगा

यहा लग्न बीस से इक्कीस अंशों में अवरोह अवस्था मे है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अशो तक मगल स्वगृही कहलाता है। यहा लग्न 13 अंशों के बाद एव 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी

वृश्चिकलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–7/20/0/0 से 7/23/20/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–या
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आपका जीवन भोग-विलास में डूबा रहेगा। ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी भी बुध है। अतः बुध की दशा यहां उत्तम फल देगी। जबकि बुध में मंगल का अंतर या मंगल में बुध का अंतर प्रतिकूल (नेष्ट) फलदायक रहेगा।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों मे अवरोह अवस्था में है अतः लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशो तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र—ज्येष्ठा   **2. नक्षत्र पद**—2

3. नक्षत्र अंश—7/20/0/0 से 7/23/20/0

4. वर्ण—विप्र   **5. वश्य**—कीट

6. योनि—मृग   **7. गण**—राक्षस

8. नाड़ी—आद्य   **9. नक्षत्र देवता**—इन्द्र

10. वर्णाक्षर—या   **11. वर्ग**—हरिण

12. लग्न स्वामी—मंगल   **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—बुध

14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध   **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु   **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'भोगी'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक सतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रो वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण मे होने के कारण आपका जीवन भोग-विलास में डूबा रहेगा। ज्येष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी भी बुध है। अतः बुध की दशा यहां उत्तम फल देगी। जबकि बुध में मंगल का अंतर या मगल में बुध का अंतर प्रतिकूल (नेष्ट) फलदायक रहेगा।

यहां लग्न बाईस से तेईस अशों में अवरोह अवस्था में है। अतः लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13

अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है फलत: लग्नेश मंगल की दशा–अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी

वृश्चिकलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–ज्येष्ठा **2. नक्षत्र पद**–3

3. नक्षत्र अंश–7/23/20/0 से 7/26/40/0

4. वर्ण–विप्र **5. वश्य**–कीट

6. योनि–मृग **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–इन्द्र

10. वर्णाक्षर–यी **11. वर्ग**–हरिण

12. लग्न स्वामी–मंगल **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध** शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'विद्वान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप विद्वान व्यक्ति होंगे। ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु परन्तु लग्ननक्षत्र स्वामी बुध का मित्र है। ऐसे में शनि में बुध का अन्तर या बुध में शनि का अन्तर शुभ फल देगा। परन्तु शनि में मंगल या मंगल में शनि का अन्तर अशुभ फल देगा।

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशों में अवरोह अवस्था में है अत: लग्न मध्यबली है मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अंशों के बाद एवं 30 अंशों के भीतर होने से बलवान है फलत: लग्नेश मंगल की दशा–अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र–ज्येष्ठा **2. नक्षत्र पद**–3

3. नक्षत्र अंश–7/23/20/0 से 7/26/40/0

4. वर्ण–विप्र **5. वश्य**–कीट

6. योनि–मृग **7. गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**—आद्य | 9. **नक्षत्र देवता**—इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**—यी | 11. **वर्ग**—हरिण
12. **लग्न स्वामी**—मंगल | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शनि | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'विद्वान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप विद्वान व्यक्ति होंगे। ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्न मंगल का शत्रु परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का मित्र है ऐसे में शनि मे बुध का अन्तर या बुध में शनि का अन्तर शुभ फल देगा। परन्तु शनि में मंगल या मंगल मे शनि का अन्तर अशुभ फल देगा।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अतः लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अशों के बाद एवं 30 अंशो के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**—ज्येष्ठा | 2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश** -7/23/20/0 से 7/26/40/0
4. **वर्ण**—विप्र | 5. **वश्य**—कीट
6. **योनि**—मृग | 7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—आद्य | 9. **नक्षत्र देवता**—इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**—यी | 11. **वर्ग**—हरिण
12. **लग्न स्वामी**—मंगल | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—शनि | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'विद्वान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एव स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रो वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। आपका

जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप विद्वान व्यक्ति होगे ज्येष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है शनि लग्न मंगल का शत्रु परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का मित्र है। ऐसे में शनि मे बुध का अन्तर या बुध में शनि का अन्तर शुभ फल देगा। परन्तु शनि मे मगल या मंगल में शनि का अन्तर अशुभ फल देगा।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों में अवरोह अवस्था में है। अत: लग्न मध्यबली है। मेष राशि के 13 से 30 अंशों तक मंगल स्वगृही कहलाता है। यहां लग्न 13 अशों के बाद एव 30 अशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश मगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फलों से परिपूर्ण होगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/26/40/0 से 7/30/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–यू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक को पुत्र सुख अवश्य मिलता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश मगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का शत्रु है। फलत: शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

यहां लग्न छब्बीस से सताईस अशों के भीतर होने से हीनबली है। मंगल प्राय 28 अशो के पास जाता है तो विशेष रुप से शुभ अशुभ फल देने वाला हो जाता है। मगल की इस नैसर्गिक विशेषता के कारण यहा लग्न बलवान माना जायेगा। फलत: लग्नेश मंगल की दशा यहां अति शुभ फल देगी

वृश्चिकलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/26/40/0 से 7/30/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–यू
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–मंगल
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक सतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक को पुत्र सुख अवश्य मिलता है। ज्येष्ठ नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का शत्रु है। फलतः शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

यहां लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अशों के भीतर होने से हीनबली है। परन्तु मंगल कर्क राशि के 28 अंशों में परमनीच तथा मकर राशि के 28 अंशों में परम उच्च का होता है। अतः 28 अशों में यहां लग्न एव मंगल दोनों परम बली ही होगा। इसलिए मंगल की दशा यहां अतिशुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**–ज्येष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–7/26/40/0 से 7/30/0/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–कीट
6. **योनि**–मृग
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–इन्द्र
10. **वर्णाक्षर**–यू
11. **वर्ग**–हरिण

12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा. ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक को पुत्र सुख अवश्य मिलता है। ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी शुक्र है शुक्र लग्नेश मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का शत्रु है। फलतः शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी

यहां लग्न अट्ठाईस से उनतीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर 'हीनबली' है। उसका सारा तेज समाप्ति की ओर है। परन्तु मंगल कर्क राशि के 28 अंशों में परमनीच तथा मकरराशि के 28 अंशों में परम उच्च का होता है. अतः यहां पूर्ण अंशों में होने के कारण लग्न व मंगल परमबली है इसलिए मंगल की दशा यहां अतिशुभ फल देगी।

वृश्चिकलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–ज्येष्ठा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–7/26/40/0 से 7/30/0/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–कीट
6. योनि–मृग
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–इन्द्र
10. वर्णाक्षर–यू
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–मंगल
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान्'

ज्येष्ठा नक्षत्र का देवता इन्द्र एवं स्वामी बुध होगा। ऐसा जातक संतोष करने वाला, बहुत क्रोधी, थोड़े मित्रों वाला परन्तु धर्म के प्रति आस्थावान होता है ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म लेने वाले जातक को पुत्र सुख अवश्य मिलता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश मंगल का मित्र है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध का शत्रु है। फलतः शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

यहां लग्न उनतीस से तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था में है। निस्तेज है। परन्तु मंगल कर्क राशि के 28 अंशों में परम नीच तथा मकर राशि के 28 अंशों में परम उच्च का कहलाता है। अतः यहा पूर्ण अंशों में होते हुए भी लग्न परमबली है। इसलिए मंगल की दशा यहां अति शुभ फल देगी।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न और आयुष्य योग

1. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश होकर भी मारक का काम नहीं करेगा। जबकि बुध अष्टमेश होकर मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र व्ययेश होने से सहायक मारकेश है। शनि अशुभ है। आयुष्य प्रदाता ग्रह मगंल है।
2. वृश्चिकलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु पाण्डुरोग (पीलिया), गुदा-जन्य रोग, प्रमाद अथवा छोटे भाई द्वारा संभव है।
3. वृश्चिकलग्न वालों की औसत आयु 75 वर्ष 2 माह मानी गई है। जन्म के उपरान्त 2, 6, 9 व 11 माह तथा 2, 3, 6, 8, 13, 16, 20, 23, 29, 32, 35, 38, 42, 45, 52, 65 और 72 वर्ष की आयु मे शारीरिक कष्ट एवं अल्पमृत्यु संभव है।
4. वृश्चिकलग्न हो तथा मंगल कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होता है।
5. वृश्चिकलग्न में मंगल हो तो जातक दीर्घ देह वाला एवं उत्तम आयु को भोगने वाला प्राणी होता है
6. वृश्चिकलग्न में मगंल के साथ शनि कुंभ राशि में केन्द्रवर्ती हो तो जातक स्वस्थ सौ वर्ष से अधिक दीर्घायु को भोगता है
7. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध लग्न में, बृहस्पति एव शुक्र द्वारा दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
8. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा छठे मेष का हो, अष्टम स्थान मे कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हो तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
9. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मगंल लग्न को देखता हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हों तो जातक 75 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
10. वृश्चिकलग्न में मंगल पांचवें मीन का, शनि मेष का और सूर्य सातवें वृष का हो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

11. वृश्चिकलग्न में कुंभ का बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ केन्द्र में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान् होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

12. शनि लग्न में, कुंभ का चंद्र चौथे, मंगल सातवे तथा दशम भाव में स्वगृही सूर्य किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

13. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध सातवें हो तथा चंद्रमा किसी पाप ग्रह के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

14. वृश्चिकलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान् होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

15. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल पाप ग्रहों के साथ आठवें स्थान में हो, अष्टमेश बुध पाप ग्रहों के साथ छठे भाव मे अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

16. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा मेष या मिथुन राशि का शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र मे न हो तो जातक मात्र 33 वर्ष तक ही जी पाता है।

17. वृश्चिकलग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

18. वृश्चिकलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश मंगल निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

19. वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्रमा यदि मिथुन राशि में, किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो **बालारिष्ट योग** बनता है। ऐसा बालक नौ वर्ष की आयु तक मृत्यु को प्राप्त कर जाता है।

20. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति मेष का और चंद्रमा आठवें, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **बालारिष्ट योग** बनता है। ऐसा बालक आठ वर्ष तक ही जी पाता है।

21. वृश्चिकलग्न में सूर्य द्वादश में, चंद्रमा आठवें, शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसे जातक की तत्काल मृत्यु होती है।

22. वृश्चिकलग्न के छठे भाव में सूर्य+मंगल+बृहस्पति+राहु हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।

23 वृश्चिकलग्न में द्वादशस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

24. वृश्चिकलग्न में षष्ठस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।

25. वृश्चिकलग्न में नवम भाव स्थित मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

26. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल एवं लग्न दोनों पाप ग्रहो के मध्य हो, सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

27. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

28. वृश्चिकलग्न में षष्ठेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर किसी क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

29. वृश्चिकलग्न मे निर्बल चंद्रमा अष्टम भाव में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न और रोग

1. वृश्चिकलग्न में षष्टेश मंगल लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा हो जाता है।
2. वृश्चिकलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तो तथा चतुर्थेश शनि पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. वृश्चिकलग्न में चतुर्थेश शनि यदि अष्टमेश बुध के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. वृश्चिकलग्न में चतुर्थेश शनि मेष, सिंह या वृश्चिक राशि में हो तथा निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. वृश्चिकलग्न के चतुर्थ स्थान में शनि पाप ग्रहों से दृष्ट एवं छठे स्थान में सूर्य पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. वृश्चिकलग्न के चौथे एवं पांचवें भाव मे पाप ग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. वृश्चिकलग्न के चतुर्थ भाव मे राहु अन्य पाप ग्रहो से दृष्ट हो तो तथा लग्नेश शुक्र निर्बल हो तो जातक को असहय हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
8. वृश्चिकलग्न के चतुर्थ स्थान में शनि एवं कुंभ का सूर्य साथ में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
9. वृश्चिकलग्न में लग्नस्थ सूर्य यदि दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. वृश्चिकलग्न में मंगल+शनि+बुध की युति एक साथ दु:स्थानों में हो तो जातक की अकाल मृत्यु वाहन दुर्घटना से होती है
11. वृश्चिकलग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश मंगल बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

12. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा बैठा हो, लग्न पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसा जातक रोगग्रस्त रहता है।
13. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध लग्न मे हो, लग्नेश मंगल आठवें हो, लग्न पर पाप ग्रहों का प्रभाव हो तो ऐसा व्यक्ति दवाई लेने पर ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।
14. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल चौथे या द्वादश भाव मे बुध+शनि के साथ हो तो जातक कुष्ठ रोग से ग्रसित रहता है।
15. शनि लग्न में, कुंभ का चंद्र चौथे, मंगल सातवें तथा दशम भाव में स्वगृही सूर्य किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
16. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध सातवें हो तथा चंद्रमा किसी पाप ग्रह के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. वृश्चिकलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक, चरित्रवान एव विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल पाप ग्रहों के साथ आठवें स्थान में हो, अष्टमेश बुध पाप ग्रहो के साथ छठे भाव में अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
19. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा मेष या मिथुन राशि का शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, कोई भी शुभ ग्रह केन्द्र में न हो तो जातक मात्र 33 वर्ष तक ही जी पाता है
20. वृश्चिकलग्न में शनि+मंगल लगनस्थ हो, चंद्रमा आठवें, बृहस्पति छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
21. वृश्चिकलग्न के द्वितीय व द्वादश भाव में पाप ग्रह हो लग्नेश मंगल निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।
22. वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्रमा यदि मिथुन राशि में किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो **बालारिष्ट योग** बनता है। ऐसा बालक नौ वर्ष की आयु तक मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
23. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति मेष का और चंद्रमा आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **बालारिष्ट योग** बनता है ऐसा बालक आठ वर्ष तक ही जी जाता है

24. वृश्चिकलग्न में सूर्य द्वादश मे, चंद्रमा आठवें, शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसे जातक की तत्काल मृत्यु होती है।
25. वृश्चिकलग्न के छठे भाव में सूर्य+मंगल+बृहस्पति+राहु हो तथा शुक्र सातवें हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी ही रहती है।
26. वृश्चिकलग्न में द्वादश सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।
27. वृश्चिकलग्न में षष्ठस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।
28. वृश्चिकलग्न में नवम भाव स्थित मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।
29. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मंगल एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर आत्महत्या करता है।
30. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।
31. वृश्चिकलग्न में षष्ठेश मंगल सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर किसी क्रूर ग्रह की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।
32. वृश्चिकलग्न में निर्बल चद्रमा अष्टम भाव में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एव शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ **'अकाल मृत्यु'** को प्राप्त करता है।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न और धन योग

वृश्चिकलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धन प्रदाता ग्रह बृहस्पति है। धनेश बृहस्पति की शुभाशुभ स्थिति से, धन स्थान से संबंध स्थापित करने वाले ग्रहों की स्थिति, योगायोग एव बृहस्पति तथा धन भाव पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश मगल, भाग्येश चंद्र एवं लाभेश बुध की अनुकूल स्थितिया वृश्चिकलग्न में जन्मे जातको के धन ऐश्वर्य एव वैभव को बढ़ाने मे सहायक होती है।

वैसे वृश्चिकलग्न के लिए बुध, मंगल, शनि अशुभ होते हैं बृहस्पति शुभ। सूर्य चंद्र राजयोगकारक होते हैं बृहस्पति मारकेश होते हुए भी मारक नहीं होता। बुध अष्टमेश होने से अनिष्ट फलदायक है। यह पूर्ण मारकेश का कार्य करेगा वृश्चिकलग्न के लिए बुध परम पापी है। शुक्र व्ययेश होने से मारक है।

राजयोगकारक– सूर्य, चंद्र, बृहस्पति, यदि मंगल स्वगृही हो तो राजयोगकारक होगा।

सफल योग– 1. चद्र+मगल 2. चद्र+शनि 3 चंद्र+सूर्य 4. चंद्र+शुक्र।

निष्फल योग– 1. मगल+बृहस्पति, 2. बृहस्पति+शुक्र।

अशुभ योग– 1 मगल+बुध, 2. मगल+शनि, 3. मंगल+शुक्र।

लक्ष्मी योग–बृहस्पति केन्द्र त्रिकोण में, बुध दशम या एकादश में, मंगल तृतीय में।

विशेष योगायोग

1. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति यदि कन्या राशि में तथा बुध यदि धनु या मीन राशि में परस्पर परिवर्तन योग करके बैठा हो तो जातक भाग्यशाली होता है तथा जीवन में खूब धन कमाता है।

2. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति कर्क, धनु, मीन राशि में हो तो व्यक्ति धनाध्यक्ष होता है, लक्ष्मी ऐसे जातक की चेरी के समान सेवा करती है।

3. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा कर्क या वृष राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से ही बहुत धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति धन के मामले को लेकर भाग्यशाली होता है।

4. वृश्चिकलग्न हो, द्वितीयस्थ बृहस्पति, बुध व शुक्र के साथ हो, अथवा द्वितीयस्थ बृहस्पति एवं बुध शुक्र से दृष्ट हो तो व्यक्ति राजा के समान धनशाली व ऐश्वर्यवान होता है।

5. वृश्चिकलग्न में मंगल, शनि, शुक्र और बुध इन चार ग्रहों की युति हो तो जातक महाधनी होता है।

6. वृश्चिकलग्न हो, पंचम में स्वगृही बृहस्पति हो, लाभ स्थान में चंद्र एवं मंगल हो तो **महालक्ष्मी योग** बनता है। ऐसा जातक खूब धनवान होता है।

7. वृश्चिकलग्न हो, पंचमस्थ बृहस्पति हो तथा लाभ स्थान में स्वगृही बुध हो तो जातक अति धनाढ्य होता है। ऐसा जातक अपने भुजबल से शत्रुओं को परास्त करता हुआ अखण्ड राज्यलक्ष्मी को भोगता है।

8. वृश्चिकलग्न में मंगल कन्या राशि में हो एवं लाभेश बुध लग्न में हो तो जातक 33 वर्ष की आयु में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को अचानक रुपया मिलता है।

9. वृश्चिकलग्न में सूर्य यदि केन्द्र-त्रिकोण में हो तथा बृहस्पति स्वगृही हो तो जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् व्यक्ति सामान्य परिवार में जन्म लेकर धीरे-धीरे अपने पराक्रम व पुरुषार्थ से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति हो जाता है। ऐसे जातक का भाग्योदय प्रायः 28 से 32 वर्ष की आयु में होता है।

10. वृश्चिकलग्न हो, लग्नेश मंगल, धनेश बृहस्पति, भाग्येश बुध और लाभेश सूर्य यदि अपनी अपनी उच्च या स्वराशि में हो तो जातक करोड़पति होगा।

11. वृश्चिकलग्न हो, लग्न में मंगल, बुध, शुक्र एवं शनि हो तो जातक करोड़पति होता है।

12. वृश्चिकलग्न के लाभ स्थान में राहु, शुक्र, शनि और मंगल की युति हो जातक अरबपति होता है

13. वृश्चिकलग्न में धनेश बृहस्पति यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान मे हो ''**धनहीन योग**' की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घडे में छिद्र होने के कारण

उसमें पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता। सदैव रुपयों की कमी बनी रहता है. इस योग की निवृत्ति हेतु गले मे अभिमंत्रित ''गुरुयंत्र'' धारण करना चाहिए। पाठक चाहे तो ''गुरुयंत्र'' हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

14. वृश्चिकलग्न में धनेश बृहस्पति आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न में हो या लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़ हुये धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर रुपया पास में टिकेगा नहीं।

15. चंद्रमा से 3/6/10/11वें स्थान में शुभ ग्रह हो तो **'वसुमति योग'** बनता है। इस योग के कारण जातक युवावस्था में ही लखपति हो जाता है।

16. वृश्चिकलग्न में मंगल यदि लग्नस्थ हो तो **'रुचक योग'** बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

17 वृश्चिकलग्न में सुखेश शनि, लाभेश बुध नवम भाव में हो एवं मंगल से दृष्ट हो तो जातक को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

18. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति+चंद्र की युति धनु राशि, कुंभ राशि, मीन राशि या कर्क राशि में हो तो इस प्रकार के **'गजकेसरी योग'** के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत से अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

19. वृश्चिकलग्न में धनेश बृहस्पति अष्टम में, अष्टमेश मंगल धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

20. वृश्चिकलग्न में तृतीयेश शनि लाभ स्थान में एव लाभेश बुध यदि तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, भागीदार एव मित्रों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

21. वृश्चिकलग्न में बलवान बृहस्पति के साथ यदि चतुर्थेश शनि की युति हो तो व्यक्ति को माता, मातृपक्ष द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

22. लग्न से 10वें स्थान में शुक्र हो अथवा चंद्रमा से 10वें स्थान पर शुभ ग्रह बैठा हो तो जातक प्रसिद्ध, गुणवान, ख्याति प्राप्त, चरित्रवान एवं धनवान होता है।

23. लग्न में बृहस्पति वृश्चिक राशि का हो, बुध कहीं केन्द्र मे हो तथा नवमेश अथवा एकादशेश से युक्त हो तो जातक धनवान होता है।

24. लग्न में शनि, मंगल हो तथा बृहस्पति साथ में हो या बुध हो तो भिक्षुक योग अवश्यमेव होता है।
25. बृहस्पति का संबंध षष्ठेश-अष्टमेश या द्वादशेश के साथ हो तो जातक महादरिद्री होता है।
26. चंद्रमा दूसरे घर में स्थित हो, लग्नेश षष्टम भवन में तथा छठे घर का स्वामी लग्न में हो तो दरिद्र योग होता है।
27. बृहस्पति व बुध पंचम स्थान में हो तथा चंद्रमा 11वें भावस्थ हो तो जातक करोड़पति होता है।
28. बुध 10वें स्थान में तथा बृहस्पति चौथे भाव में बैठकर परस्पर दृष्ट डाल रहे हों तथा भाग्येश उच्च का सप्तम भाव में विराजमान हो तो जातक का ससुराल प्रबल व धनाढ्य होता है।
29. बृहस्पति, शुक्र दोनों मकर राशि में तृतीय स्थान में हों तो उस जातक के संचित धन को कुपुत्र उड़ा देते हैं तथा उसे संतान सुख प्राप्त नहीं होता।
30. बृहस्पति दशम भाव में शनि चतुर्थ भाव में हो तो जातक को भूमि से अत्यधिक लाभ होता है।
31. छठे भाव में बुध हो तो जातक रोगी एवं लक्ष्याधिपति दोनों साथ-साथ होता है।
32. लग्नेश जहां बैठा हो, उस राशि का स्वामी यदि स्वगृही या 5/9 भवन में या अपने मूल त्रिकोण अथवा केन्द्र में बैठा हो तो 45 वर्ष में जातक का भाग्योदय होता है तथा भूसंपत्ति प्राप्ति करता है।
33 भाग्येश जिस नवांश में हो उसका स्वामी यदि उच्च राशि में पंचमेश के साथ भाग्य स्थान मे हो तो जातक लक्ष्मीवान पुत्रवान व जातक समृद्धिशाली होता है।
34. लग्नेश धन भावगत हो या धनेश लाभेश बृहस्पति, बुध एवं लग्नेश मगल के साथ लाभस्थ हो तो गुप्त धन की प्राप्ति होती है।
35. सूर्य लग्न, चंद्र लग्न, लग्नेश तथा शुभ द्वितीय, पंचमेश, बृहस्पति सब की परस्पर युति या दृष्टि हो तथा जातक धनवान एव उच्च पदाधिकारी होता है।
36. चद्रमा केन्द्र में हो, चंद्रमा उच्च का हो, वृश्चिक का सूर्य लग्न में हो तुला का स्वगृही शुक्र द्वादश भावस्थ हो, बृहस्पति धुव केन्द्र में हो, बुध चंद्र से 8वें पड़ा हो तो जातक का मासिक आय कई सहस्र होती है।
37. वृश्चिकलग्न में यदि मीन का बृहस्पति पंचम में हो, प्रथम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

38. वृश्चिकलग्न में बलवान बृहस्पति यदि षष्टेश मंगल से युति करके बैठा हो तथा धनवान शनि से दृष्ट हो तो जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट कचहरी में शत्रु को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

39. वृश्चिकलग्न में बलवान बृहस्पति की सप्तमेश शुक्र से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

40. वृश्चिकलग्न मे बलवान बृहस्पति की नवमेश सूर्य से युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य सरकार, सरकारी अधिकारी एवं ठेकों से काफी धन कमाता है।

41. वृश्चिकलग्न में बलवान बृहस्पति की दशमेश बुध से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा सरक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय मे सहायक होता है।

42. वृश्चिकलग्न में दशम भाव का स्वामी बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। ऐसा जातक जन्म स्थान में नहीं कमा पाता, उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है

43. वृश्चिकलग्न में लग्नेश मगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान मे हो एव सूर्य तुला राशि में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

44. धन स्थान मे पाप ग्रह हो तथा लाभेश बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्री होता है।

45. वृश्चिकलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा बृहस्पति से छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो **शकट योग** बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव रहता है।

46. वृश्चिकलग्न में धनेश बृहस्पति अस्त हो, नीच राशि (मकर) में हो, तथा धन स्थान एव अष्टम स्थान मे कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋण ग्रस्त रहता है, कर्जा उसके सिर से नहीं उतरता।

47 वृश्चिकलग्न में लाभेश बुध वक्री होकर कहीं भी बैठा हो या अष्टम स्थान मे कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात धनहानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले मे परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अतः सावधान रहे।

48. वृश्चिकलग्न में लाभेश बुध यदि छठे, आठवे या बारहवें हो तथा लाभेश अस्तगत हो व पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

49. वृश्चिकलग्न में अष्टमेश बुध शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न और विवाह योग

1. चतुर्थ भाव में अकेला शनि हो तो घर में पत्नी का शासन चलता है तथा जातक के वीर्य में न्यूनता रहती है।
2. सप्तम भाव में शुक्र, शनि व राहु की युति व्यक्ति को धूर्त, लंपट व निश्चय ही पर स्त्रीगामी या पर पुरुषगामी बना देती है।
3. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा हो, शुक्र वृश्चिक राशि का हो और उसे पाप ग्रह देखते हों तो जातक स्त्री पर पुरुषगामिनी होती है।
4. वृश्चिकलग्न में शनि लग्नस्थ चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह मे भयंकर बाधा आती है विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थित भी बन सकती है.
5. वृश्चिकलग्न में शनि, छठे आठवें या बारहवें हो, सूर्य द्वितीय भाव में हो और लग्नेश मगल निर्बल हो तो जातक का विवाह नही होता।
6. वृश्चिकलग्न मे शनि छठे हो, सूर्य अष्टम में हो एव सप्तमेश शुक्र बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
7. वृश्चिकलग्न में सूर्य, शनि व शुक्र कही भी एकत्रित हों, मगल निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. वृश्चिकलग्न में शुक्र आठवें हो, शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में सूर्य या चंद्रमा हो तो जातक का विवाह नही होता।
9. वृश्चिकलग्न में सप्तमेश शुक्र के साथ सूर्य और चद्रमा स्थित हो तो ऐसे में शुक्र अत्यन्त पापी हो जाता है ऐसी स्थिति मे प्रथमत: जातक का विवाह नहीं होता. यदि विवाह हो भी जाता है तो जातक को अविवाहित की तरह जीवन यापन करना पड़ता है

10. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्रायः अंतर्जातीय विवाह करता है।

11. वृश्चिकलग्न मे शनि या मंगल लग्नगत हो या नवमांश कुण्डली लग्न से सप्तम भाव वाली हो तो जातक को दो विवाह होते हैं

12. वृश्चिकलग्न में द्वितीयेश बृहस्पति वक्री हो अथवा द्वितीय भाव में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

13. वृश्चिकलग्न में सप्तमेश शुक्र वक्री हो सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी भी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आता है। विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

14. वृश्चिकलग्न हो, लग्न मे चद्रमा व शुक्र हो, पाप ग्रह उन्हें देखते हो तो ऐसी स्त्री पर पुरुषगामिनी होती है। उसके व्याभिचार कर्म में उसकी माता या मातातुल्य किसी वृद्धा स्त्री का पूर्ण सहयोग होता है।

15. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा यदि (वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ) राशि में हो तो ऐसी स्त्री अक्षतयोनि होती है।

16. वृश्चिकलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नूतन वस्त्र पहन कर पर पुरुषों का संग करती है एवं कुल की मर्यादा को नष्ट कर देती है।

17. वृश्चिकलग्न में मंगल आठवें हो तो स्त्री मृगनयनी एव कुटिल होती है। ऐसी स्त्री प्रेमविवाह करती है तथा स्वच्छन्द यौनाचार मे विश्वास रखती हैं।

18. वृश्चिकलग्न में सप्तमेश शुक्र बारहवें हो साथ में सूर्य, चंद्र एवं बुध हो तो ऐसे जातक की पत्नी अल्पायु में गुजर जाती है। जातक अपनी साली या ससुराल पक्ष की अन्य स्त्री से विवाह करता है।

19. वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तम में हो, शुभ ग्रह उसे देखते हों तो जातक की पत्नी अत्यन्त सुन्दर, स्त्री धर्म परायण एवं पतिव्रता होती है तथा विवाह के बाद पति के सौभाग्य को चमकाती है।

20. वृश्चिक में उच्च का चंद्र यदि सप्तम भाव में हो स्त्री सुन्दर, चतुर, पतिव्रता, मधुरभाषिणी, धार्मिक, लज्जाशील विवेकयुक्त, धनी एव पतिसुख से परिपूर्ण होती है।

21. वृश्चिकलग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट शुक्र एवं चंद्रमा कहीं भी बैठें हों तो ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

22. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा यदि (2 4/6/8 10/12) राशि मे हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त कोमल व मृदु स्वभाव की महिला होती है।

23. वृश्चिकलग्न मे बृहस्पति बुध, शुक्र एव मगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात विदुषी सच्चरित्र वाली एवं सभ्य महिला होती है

24. वृश्चिकलग्न में चंद्र और शुक्र लग्नस्थ, पाप ग्रहों से दृष्ट हों, तो ऐसी स्त्री अपनी माता सहित पर पुरुषगामिनी होती है।

25 वृश्चिकलग्न मे चंद्र और शुक्र लग्नस्थ हो तथा पंचम स्थान पाप ग्रहों से दृष्ट हो वह नारी वन्ध्या होती है।

26. वृश्चिकलग्न में चंद्रमा आठवें स्वगृही बुध के साथ हो तो ऐसी स्त्री काकवन्ध्या होती है अर्थात् एक बार ही प्रसूता होती है।

27 वृश्चिकलग्न में सप्तमेश शुक्र स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक या कुंभ) में हो तथा चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला या मकर) में हो तो ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है।

28. वृश्चिकलग्न में लग्नस्थ स्वगृही मगल के साथ अष्टमेश बुध हो तो **''द्विभार्या योग''** बनता है ऐसा जातक दो नारियों से रमण करता है।

28. वृश्चिकलग्न मे सप्तमेश शुक्र यदि द्वितीय या द्वादश भाव में हो तो पूर्ण **'व्याभिचारी योग'** बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न और संतान योग

1. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति यदि आठवें हो तो जातक के अल्प संतति होती है।
2. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति अस्त हो, या पाप पीड़ित, पाप ग्रस्त होकर छठे, आठवें या बारहवे हो तो जातक के पुत्र नहीं होता।
3. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति यदि कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक की पहली संतान कन्या होती है।
4. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति विषम राशियों में हो तथा सूर्य या मंगल से युत या दृष्ट हो तो जातक के प्रथम संतान पुत्र ही होता है।
5. वृश्चिकलग्न में पंचमस्थ बृहस्पति मीन राशि में हो तो जातक के पांच पुत्र होते हैं। यदि सूर्य भी साथ में हो तो छः पुत्र होते हैं।
6. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति लग्न में एव लग्नेश मंगल पंचम मे परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरों की संतान को अपने पुत्र तरह पालता है।
7. वृश्चिकलग्न में शनि बैठा हो, चौथे स्थान में पाप ग्रह एवं पंचम में चंद्रमा हो तो व्यक्ति को माता के शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पचम भाव में हों तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
9. वृश्चिकलग्न हो, पंचमेश बृहस्पति कमजोर हो तथा राहु एकादश भाव में हो तो जातक के वृद्धावस्था में संतान होती है
10. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।

11. वृश्चिकलग्न हो लग्नेश मगल द्वितीय स्थान में तथा पंचमेश बृहस्पति पाप ग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो ऐसे जातक के पुत्र सतान नष्ट हो जाते हैं।

12. वृश्चिकलग्न में पचमेश बृहस्पति बारहवें स्थान मे शुभ ग्रहो से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिसके कारण जातक ससार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

13. पचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि मे हो तो जातक को प्रथम सतति के रुप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

14. वृश्चिकलग्न में पंचमेश बृहस्पति के साथ सप्तमेश शुक्र की युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रुप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

15. 4/10, 12वें घर में पाप ग्रह हों तो मां-बाप दोनों मरें, मंगल, शनि राहु नवम या 11वें हों तो पिता मरे और दूसरें भाव में सूर्य, मंगल, बुध शनि मिल जायें व बृहस्पति प्रथम स्थान में हो तो पिता पुत्र के विवाह में ही मर जाए।

16. द्वितीय एवं तृतीय भाव में जितने ग्रह हों उतने छोटे भाई एव 11/12 भाव मे जितने ग्रह हों उतने ही बड़े भाई होते हैं।

17. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है। यदि चद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

18. पचमेश बृहस्पति निर्बल हो, लग्नेश मंगल भी निर्बल हो तथा राहु पंचम भाव मे हो तो जातक के सर्पदोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

19. पचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो **'पद्मनामक कालसर्प योग'** के कारण जातक के पुत्र संतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एव मानसिक तनाव रहता है।

20. सूर्य अष्टम हो, पचम भाव मे शनि हो, पचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र सतान नहीं होती।

21. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो **'वंशविच्छेद योग'** बनता है। ऐसे जातक के स्वय का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़ियां नहीं चलती।

22. वृश्चिकलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहा बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो **'वशविच्छेद योग'** बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलतीं

23. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को **'इलाख्य नामक सर्पयोग'** बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

24. वृश्चिकलग्न में पंचमेश पचम, षष्ट या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'अनपत्य योग'** बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

25. पंचम भाव में मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं होती।

26. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न मे और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो **'अनगर्भा योग'** बनता है। ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती।

27. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान मे हो तो **'अनगर्भा योग'** बनता है ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

28. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पचम स्थान में हो तो **'कुलवर्द्धन योग'** बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एव ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

29. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को **'केवल कन्या योग'** होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न और राजयोग

1. यदि लग्न अपने पूर्णांश पर स्वगृही मंगल से युक्त हो, शनि और सूर्य से युक्त तथा उच्च के बृहस्पति से दृष्ट हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. धन का बृहस्पति धन भाव में, मंगल पराक्रम स्थान में, कुंभ का शनि चतुर्थ स्थान में और उच्च का शुक्र पंचम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. उच्च का मंगल तीसरे स्थान में, मीन का बृहस्पति पंचम भाव में, स्वगृही शुक्र वृष का सप्तम स्थान में, कर्क का चंद्रमा नवम और सिंह का सूर्य दशम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. मकर का शनि पराक्रम स्थान में, उच्च का बृहस्पति भाग्य स्थान में, उच्च का बुध लाभ स्थान में, वृश्चिक का मंगल लग्न में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. स्वगृही मंगल लग्न में, स्वगृही शनि चतुर्थ स्थान में, स्वगृही शुक्र सप्तम स्थान में, स्वगृही चंद्रमा नवम स्थान में और स्वगृही सूर्य दशम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. उच्च का मंगल तीसरे भाव में, उच्च का शुक्र पंचम स्थान में, उच्च का बृहस्पति नवम स्थान और उच्च का बुध एकादश स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. सूर्य, बुध तथा शुक्र तीनों सप्तम स्थान में वृष राशि में स्थित हों तो बुध की महादशा जातक के जीवन की श्रेष्ठतम दशा होगी तथा इस समय उसे यश, ख्याति, सम्मान व कीर्ति प्राप्त होगी
8. सूर्य लग्न, चंद्र लग्न, लग्नेश तथा शुभ द्वितीय, पंचमेश, बृहस्पति सब की परस्पर युति या दृष्टि हो तथा जातक धनवान एवं उच्च पदाधिकारी होता है।

9 पाप ग्रहों से रहित बृहस्पति केन्द्र स्थान में हो वह जातक सम्मान पाने वाला, दान तथा गुण पात्रों से परीक्षित, कलाओं की खान, गान विद्या एवं नृत्य कुशल, मंत्रियों का अधिपति और राजसभा के विचारों को जानने वाला होता है।

10. वृश्चिकलग्न में दसम स्थान में बुध-सूर्य हो और मगल व राहु छठे स्थान में हो तो इस राजयोग में उत्पन्न जातक मनुष्यों में श्रेष्ठ होता है।

11. वृश्चिकलग्न में दशम स्थान में बृहस्पति, बुध, शुक्र, चंद्रमा हो तो जातक का सब कार्य सिद्ध होता है और वह राजमान्य होता है।

12. वृश्चिकलग्न में द्वितीय स्थान में शुक्र, 10वें स्थान में बृहस्पति और छठें स्थान में राहु हो तो राजा पराक्रमी होता है।

13. कन्या में राहु, शुक्र, मंगल, शनि हों तो जातक कुबेर से भी अधिक धनवान होता है।

14. वृश्चिकलग्न में दशम स्थान में बुध सूर्य, छठे स्थान में राहु मंगल हो तो इस राजयोग में उत्पन्न व्यक्ति मनुष्यों मे श्रेष्ठ होता है।

15. वृश्चिकलग्न में लग्नेश तृतीय अथवा सप्तम स्थान में अपने मित्र से युत, मित्र के घर में हो तो जातक शत्रु रहित पृथ्वीपति होता है।

16. वृश्चिकलग्न में लग्न से चतुर्थ स्थान में शुक्र और दशम में मंगल व सूर्य शनैश्चर के साथ हों तो जातक निश्चित राजा होता है।

17. वृश्चिकलग्न में लग्न से पंचम नवम, तृतीय घर मे बृहस्पति चद्रमा और सूर्य हो तो वह मनुष्य धन के विषय में कुबेर के समान होता है।

18. वृश्चिकलग्न में अपने घर में सूर्य, तुला में शुक्र और मिथुन में शनि हो तो राजयोग होता है।

19. वृश्चिकलग्न में त्रिकोण में बुध, बृहस्पति शुक्र हों और बुध व शनि क्रम से तीसरे छठे हों और सप्तम स्थान में पूर्ण बली चंद्रमा हो तो इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति राजा के समान होता है।

20. वृश्चिकलग्न में बृहस्पति शुक्र और चंद्रमा ये तीनों मीन राशि के हों तो इस योग में जन्म लेने वाले को राज्य प्राप्ति होती है और उसकी पत्नी अनेक पुत्र वाली होती है।

21. वृश्चिकलग्न में राशियाधिपति नवम स्थान मे हो और चंद्रमा लग्न में हो तो राजयोग होता है।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में
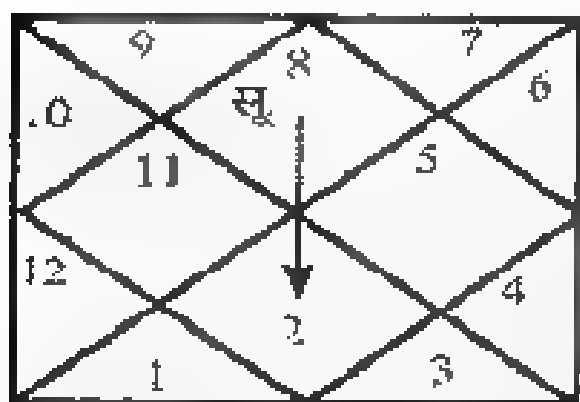
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत. यहां शुभ फल ही देगा। यहा प्रथम भाव मे सूर्य वृश्चिक राशि का होकर मित्रक्षेत्री है। सूर्य अपने स्थान (सिंह राशि) से चौथे एवं पितृ कारक स्थान नवमे भाव से पांचवे स्थान पर होकर शुभ फल देगा। जातक को पिता का सुख एवं पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक अदम्य साहसी व तेजस्वी होगा। जातक को नौकरी-व्यवसाय, राज्य से धन-वैभव व सम्मान की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि) पर है। ऐसे जातक को पेट का दर्द होगा। जातक के विवाह में अनावश्यक विलम्ब होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 1 के अनुसार दशमेश यदि लग्न में हो तो जातक मे कवित्व शक्ति होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान वृश्चिक राशि में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति लग्न स्थान मे होने से जातक परम भाग्यशाली होगा। जातक स्वय सुन्दर होगा, जातक की पत्नी भी अत्यधिक सुन्दर होगी।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा उसका व्यक्तित्व आकर्षक होगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा प्रथम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध केन्द्र में होने से **'कुलदीपक योग'** बनेगा। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, राज्य में प्रभाव रखने वाला व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा उसका भाग्योदय विवाह के बाद शीघ्र होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को आध्यात्मिक विद्या का रसिक बनायेगा। जातक तत्वदर्शी व उपदेशक होगा।

5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को सुन्दर व आकर्षक जीवनसाथी देगा। जातक का विवाह शीघ्र होगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहा दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। शनि पराक्रमेश व सुखेश तथा सूर्य दशमेश होकर लग्न में बैठेगा। फलतः जातक महान पराक्रमी होगा तथा राज (सरकार) में उसका प्रभाव रहेगा जातक का राजनैतिक वर्चस्व पिता की मृत्यु के बाद मुखरित होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। ऐसा जातक हठी, जिद्दी व लड़ाकू स्वभाव का होगा. जातक सरकारी कर्मचारियों से परेशान रहेगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को उच्च महत्वाकांक्षी बनायेगा। जातक यशस्वी होगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
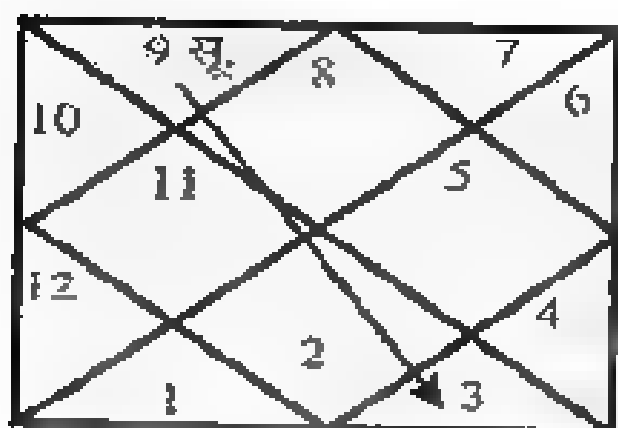
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अतः यहां शुभ फल ही देगा। यहां द्वितीय स्थान में सूर्य धनु राशि का होकर मित्रक्षेत्री है। यह सूर्य धन प्रदाता है जातक को विद्या, बुद्धि, मान-सम्मान, दैहिक सौन्दर्य की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक प्रखर वक्ता होता है। जातक को आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति होगी। जातक का आत्मबल मजबूत होता है।

दृष्टि–द्वितीयभावगत सूर्य की दृष्टि अष्टम स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। जातक दीर्घजीवी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 5 के अनुसार दशमेश यदि द्वितीय स्थान में हो तो जातक बड़ा स्पष्टवक्ता, सत्यभाषी एवं धर्मपरायण होता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में धन की प्राप्ति होगी। जातक को रोजी रोजगार के उत्तम अवसरों की प्राप्ति होगी

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति धन स्थान में होने से जातक धनवान होगा। जातक की वाणी अत्यधिक प्रभावशाली एवं विनम्र होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से जातक को परिश्रम का लाभ मिलता है। जातक अपने पुरुषार्थ से खूब धन कमाता है।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। द्वितीय स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनो ग्रह अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। अष्टम स्थान बुध का स्वयं का घर है। फलतः जातक बुद्धिशाली एवं व्यापार प्रिय होगा। जातक व्यापार में काफी धन कमायेगा तथा उसकी आमदनी के जरिए दो तीन प्रकार के होंगे. जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा. जातक में रोग से लड़ने की शक्ति रहेगी एवं वह दीर्घजीवी होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति होने से जातक को **'राजमूल धनयोग'** के कारण सरकार से रुपया-सम्मान मिलेगा. सरकारी अधिकारी जातक की सेवा में रहेंगे।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से जातक धनवान होगा तथा उसकी वाणी रौबीली होगी।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्रक्षेत्री तो शनि सम क्षेत्री होगा। दशमेश होकर सूर्य एवं पराक्रमेश सुखेश होकर शनि के धन स्थान में बैठने से जातक धनी होगा। जातक पराक्रमी एवं दीर्घजीवी होगा। उसके मित्र बहुत होंगे, परन्तु जातक के सही पराक्रम का उदय उसके पिता की मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को सरकारी आय से संतुष्टि नहीं होगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु धन संग्रह में बाधक रहेगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में
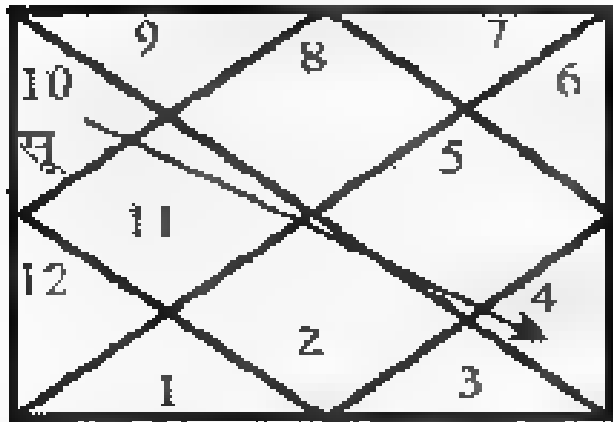
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अतः यहां शुभ फल ही देगा। यहां तृतीय स्थान में सूर्य मकर राशि का होकर शत्रुक्षेत्री है। ऐसा जातक साहसी, पराक्रमी, परिश्रमी एव शूरवीर होता है। सूर्य अपने घर से छठे स्थान पर होने के कारण जातक को सरकारी नौकरी का योग कम होगा। जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। मित्रों से मनमुटाव रहेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्य भवन (कर्क राशि) पर होगी। ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। रोजी-रोजगार के अवसर सहज प्राप्त होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 5 के अनुसार दशमेश यदि तृतीय स्थान में हो तो जातक बड़ा स्पष्टवक्ता, सत्यभाषी एवं धर्मपरायण होता है।

दशा–सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति पराक्रम स्थान में होने से जातक बहुत पराक्रमी होगा। जातक का भाई बहनों के साथ अच्छा सबंध रहेगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा तथा पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ उच्च का मंगल जातक को महान पराक्रमी एवं यशस्वी बनायेगा। जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। तृतीय स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा फलतः जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एवं

महान व्यक्ति होगा। उसका भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से धन लाभ दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र पराक्रम में विवाद उत्पन्न करेगा। मित्रों में कलह होगी।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे. सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री तो शनि स्वगृही होगा दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश शनि की युति तृतीय भाव में होने से जातक जबरदस्त पराक्रमी एवं धनी व्यक्ति होगा। उसे जीवन मे सभी प्रकार के भौतिक ससाधनों व सुखों की प्राप्ति होगी पर जातक को छोटे बड़े भाईयों का सुख प्राप्त नहीं होगा। अन्य परिजनों से वैरभाव या कटुता रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक के बड़े भाई की अचानक मृत्यु होगी।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक को मित्रों से यश देगा जातक कीर्तिवान् होगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में

9	8	7
10	5	6
11 सू.	→	4
12	2	3
1		
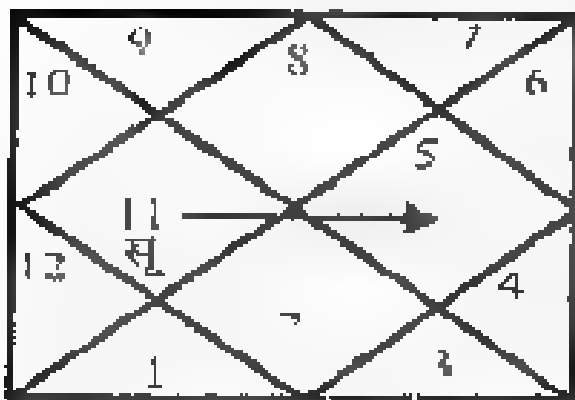
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। यहां चतुर्थ स्थान में सूर्य केन्द्रगत होकर कुंभ राशि में शत्रुक्षेत्री होगा सूर्य अपने स्थान से सातवें एवं पितृकारक स्थान नवम भाव से आठवें होगा. फलत: जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। जातक को भौतिक सुख-संसाधनों, धन दौलत की प्राप्ति होगी जातक का घर का मकान होगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत सूर्य की दृष्टि दशम भाव अपने ही घर सिंह राशि पर होगी। फलत: जातक को सरकारी-अर्धसरकारी नौकरी ठेका या अनुदान राशि की प्राप्ति होगी।

निशानी—'बृहद्पाराशर होराशास्त्र' अध्याय 24/श्लोक .12 के अनुसार दशम भाव का स्वामी चौथे स्थान में हो तो जातक सुखी, माता का भक्त, सवारी भूमि व धन सुख से परिपूर्ण होता है।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को मध्यरात्रि 12 बजे के आस-पास होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति चतुर्थ भाव में होने से जातक को अच्छी नौकरी व पिता का सहयोग मिलेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ केन्द्रस्थ मंगल जातक को माता-पिता का सुख दिलायेगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। चतुर्थ स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी. बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि राज्य स्थान (दशम भाव) पर रहेगी। फलतः जातक बुद्धिमान एवं माता-पिता के सुख से युक्त होगा। जातक को मां की सम्पत्ति मिलेगी, इसके लिए चंद्रमा की स्थिति भी देखनी होगी पर वाहन सुख, उत्तम मकान का सुख जातक को अवश्य मिलेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ केन्द्रस्थ बृहस्पति जातक को धनी एवं पूर्ण सुखी व्यक्तित्व देगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा। जातक के पास खुद का मकान होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहा दोनों ग्रह कुंभ राशि में होगे। सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री तो शनि मूलत्रिकोण राशि में होगा. शनि के कारण यहा **'शशयोग'** बनेगा। ऐसा व्यक्ति निश्चित रुप से राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा। पिता की मृत्यु के बाद राजनीति में जातक का वर्चस्व बढ़ेगा। सुखेश व राज्येश की युति यहां जातक के व्यक्तिगत जीवन के लिए शुभ परन्तु उसकी माता के नितान्त अशुभ है।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक के माता-पिता की मृत्यु बाल्यावस्था में होगी.
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में

वृश्चिकलग्न मे सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मगल का मित्र भी है। अत: यहां शुभ फल ही देगा। सूर्य यहा पचम स्थान में मीन (मित्र)
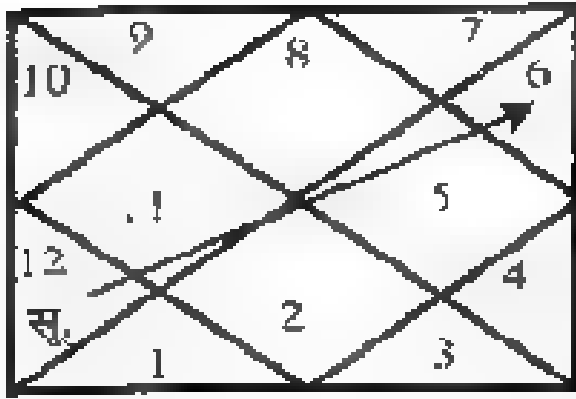
राशि में है। सूर्य यहां अपने घर (सिंह राशि) से आठवें एवं पितृ कारक भाव नवम भाव से नवम स्थान पर है। जातक को पिता का सुख मिलेगा। ऐसे जातक को शिक्षा एवं प्रशासन में उच्च पद की प्राप्ति होगी. जातक विद्या, बुद्धि एवं तर्कशक्ति से युक्त होगा। जातक को एक पुत्र का पूर्ण सुख मिलेगा।

दृष्टि—पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को व्यापार में लाभ होगा। उसे बड़े भाई का सुख मिलेगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 2 के अनुसार दशमेश यदि पंचम भाव में हो तो जातक सदैव प्रसन्न रहने वाला, धनवान, पुत्रवान एवं सम्पूर्ण सुखी होता है।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति पंचम स्थान (मीन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 बजे के मध्य होता है भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति पंचम भाव में होने से जातक को उत्तम संतति एवं विद्या का सुख मिलेगा
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल जातक को आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक ज्ञान देगा। जातक के चार पुत्र होंगे
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। पंचम स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी जहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को देखेंगे फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली एवं शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को पुत्र व कन्या दोनों संतति की प्राप्ति होगी। जातक ज्योतिष, तंत्र व गूढ़ रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा। जातक धनवान होगा एवं समाज के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तियों में अग्रगण्य होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति स्वगृही होने से '**राजमूल धनयोग**' बना जातक को उच्च सरकारी नौकरी, राजकीय सम्मान व प्रतिष्ठा मिलेगी
5. **सूर्य+शुक्र** सूर्य के साथ उच्च का शुक्र जातक को धनवान ससुराल देगा। जातक को पत्नी से आर्थिक लाभ होगा। विवाह के बाद जातक का भाग्य चमकेगा

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि मे होंगे। सूर्य यहां मित्रक्षेत्री तो शनि सम राशि में होगा। दशमेश सूर्य व सुखेश शनि पचम भाव में होने से जातक विद्यावान होगा। शैक्षणिक उपाधि के साथ उसे अनुभवों का बड़ा गहन व गम्भीर ज्ञान होगा परन्तु विद्या अधूरी रहेगी। संतान सुख में भी कन्या संतति को लेकर जातक को विशेष चिंता रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। फलतः विद्या में बाधा एवं पुत्र संतान में रुकावट होगी। अल्प सतति होगी।
8. **सूर्य+केतु** सूर्य के साथ केतु गर्भपात करायेगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में

9	8	7	6
10	11	5	4
12	1 सू.	2	3
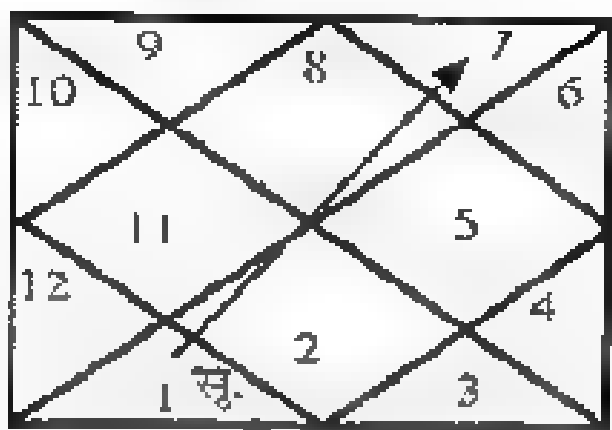
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मगल का मित्र भी है अतः यहा शुभ फल ही देगा। छठे स्थान में सूर्य मेष राशि में उच्च का है। मेष राशि के दस अशों तक सूर्य परमोच्च का कहलाता है। सूर्य अपने स्थान से नवम एवं पितृकारक भाव में दशम स्थान पर है। सूर्य की यह स्थिति '**राजभंग योग**' बना रही है। ऐसे जातक को जीवन में संघर्ष के उपरान्त विजय मिलती है। जातक के प्रतिस्पर्धी बहुत होते हैं। इससे जातक घबराता नहीं अपितु जातक अपनी आक्रामक नीति से शत्रुओं का परास्त करता है। ऐसे जातक जन्मजात योद्धा होते हैं।

दृष्टि–षष्ट भावगत सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक वाचाल एवं वाक्पटु होता है पर जातक सरकारी अधिकारियों से पीड़ित रहता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 3 के अनुसार दशमेश यदि छठे स्थान में हों तो मनुष्य अपने शत्रुओ से दुःख पाता है।

दशा–सूर्य की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (मेष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 8 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दसमेश सूर्य की युति छठे भाव में होने से '**भाग्यभंग योग**' व '**राजभंग योग**' बनेगा। जातक को अच्छी नौकरी प्राप्त करने व भाग्योदय हेतु बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मगल **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भाजसहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। छठे स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहा उच्च का होगा। जहां बैठकर दोनो ग्रह व्यय स्थान को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा परन्तु सूर्य छठे जाने से **'राज्यभंग योग'** तथा बुध छठे जाने से **'लाभभंग योग'** बना। अतः जातक को व्यापार से धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। सरकारी नौकरी के अवसर कम मिलेंगे अथवा सरकार द्वारा मिलने वाला लाभ अटक जायेगा। अष्टमेश का छठे जाने से **'सरल योग'** बनेगा। जातक दीर्घजीवी होगा एवं समाज का अग्रगण्य, लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु** सूर्य के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** व **'संतानहीन योग'** बनेगा। जातक को धन व संतति संबंधी चिंता रहेगी।

5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र **'विलम्ब विवाह योग'** बनायेगा जातक धनी तो होगा पर दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा

6. **सूर्य+शनि**–यहा दोनो ग्रह मेष राशि में होंगे। सूर्य यहा मित्रक्षेत्री होकर उच्च का होगा तो शनि शत्रुक्षेत्री होगा। राज्येश सूर्य व सुखेश शनि की इस युति से **'राजभग योग'**, **'पराक्रमभग योग'**, **'सुखभंग योग'** के साथ साथ **'नीचभंग राजयोग'** की स्थिति बनेगी। फलत जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली व धनी होगा, परन्तु समाज म उसकी कीर्ति नहीं होगी जातक की पीठ पीछे उसकी निन्दा बहुत होगी।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को गुप्त रोग होगा, जातक को गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को पैरो म बीमारी देगा। पेट के नीचे के अंगों में शल्य चिकित्सा सभव है

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

9	8	7
10		6
11		5
12	2 सू.	4
1		3
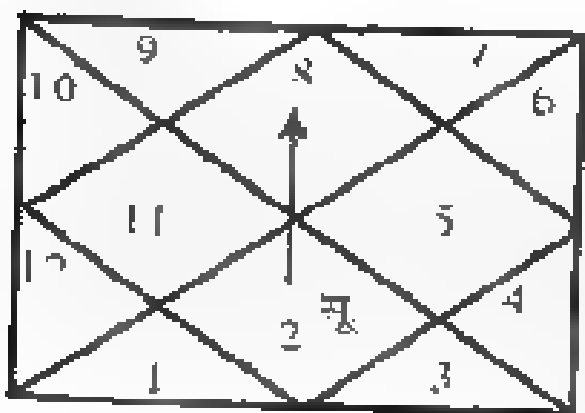
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है सूर्य लग्नेश मगल का मित्र भी है। अतः यहां शुभ फल ही देगा सूर्य यहां सप्तम स्थान में वृष (शत्रु) राशि म है। सूर्य अपने घर से दसवें एवं पितृकारक भाव से ग्यारहवे स्थान पर है, ऐसा

जातक महत्वाकांक्षी एवं स्वतंत्र विचारों वाला होता है। जिससे उसका अपनी पत्नी के टकराव होता रहता है। कई बार पिता से भी विचार नहीं मिलते। फिर भी ऐसे जातक व्यवहार कुशल, कठोर परिश्रमी एव खुशमिजाज होते है। राजकाज व राजनीति में जातक का प्रभाव होता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसे जातक को परिश्रम का मीठा फल अवश्य मिलता है गृहस्थ सुख उत्तम होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 5 के अनुसार दशमेश यदि सातवें स्थान में हो तो जातक स्पष्टवक्ता, सत्यवादी एवं धर्मपरायण होता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी। गृहस्थ सुख बढ़ेगा, सरकारी अधिकारी मददगार साबित होंगे।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (वृष राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की युति सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी अत्यन्त रुपवती होगी। उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा। **'यामिनीनाथ योग'** के कारण जातक भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक के गृहस्थ सुख में कमी करायेगा। जातक की धर्मपत्नी क्रोधी स्वभाव की होगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। सातवे स्थान मे वृष राशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक को अल्प प्रयत्न से बहु लाभ होगा। ऐसा जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा। बुध केन्द्रवर्ती होने के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नामक दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति गृहस्थ सुख में वृद्धि करायेगा। जातक को राजा से सम्मान मिलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान् होगा
6. **सूर्य+शनि**–यहा दोनों ग्रह वृष राशि मे होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मित्रक्षेत्री होगा। दशमेश सूर्य व पराक्रमेश, सुखेश शनि सप्तम भाव म होने

के कारण जातक का गृहस्थ व संतान सुख उत्तम होगा। जातक स्वयं पराक्रमी तथा उसका ससुराल भी पराक्रमी, प्रभावशाली होगा परन्तु पति पत्नी मे कलह चरम सीमा पर होती रहेगी पिता की मृत्यु के बाद घर मे सुख-शांति का साम्राज्य होगा।

7 **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा जो जातक के गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक का जीवनसाथी के साथ बिछोह सभव है.

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु विवाह में विवाद करायेगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में
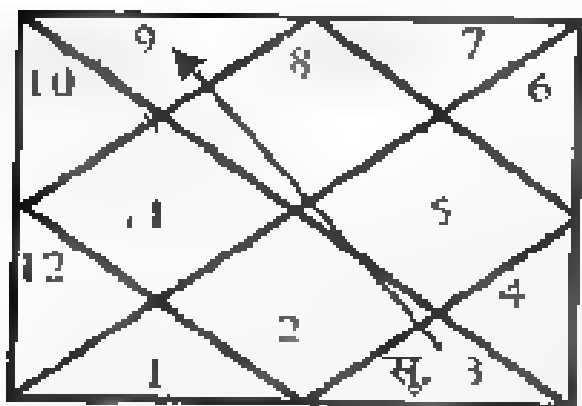
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है, सूर्य लग्नेश मगल का मित्र भी है। अत: यहा शुभ फल ही देगा। अष्टम स्थान में सूर्य मिथुन (सम) राशि में होगा सूर्य अपने घर से ग्यारहवे एव पितृ कारक भाव से बारहवें स्थान पर होगा. सूर्य की यह स्थिति '**राजभंग योग**' बना रही है। ऐसे जातक को धन यश, पद-प्रतिष्ठा, विद्या, मान-सम्मान की प्राप्ति में रुकावटें आयेंगी। जातक को पिता का सुख कमजोर होगा। जातक का आत्मबल भी कमजोर रहेगा।

दृष्टि अष्टम स्थानगत सूर्य की दृष्टि धन स्थान (धनु राशि) पर होगी। फलत॰ जातक का धन अव्यर्थ कार्यों में खर्च होगा।

निशानी–'लामेश सहिता' अध्याय 10/श्लोक 3 के अनुसार दशमेश यदि अष्टम स्थान मे हो तो व्यक्ति अपने शत्रुओं से दु-खी रहता है

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1 **सूर्य+चद्रमा**– भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चद्र व दशमेश सूर्य की यह युति आठवें भाव में होने से '**भाग्यभंग योग**' व '**राजभंग योग**' बनेगा। जातक को उत्तम व्यवसाय, नौकरी प्राप्त हेतु भाग्योदय हेतु अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

2 **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मगल '**लग्नभग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

3. **सूर्य+बुध**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश है। आठवें स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य आठवें होने से '**राजभंग योग**' तथा बुध आठवें होने से '**लाभभंग योग**' बना परन्तु अष्टम स्थान में स्वगृही होने से '**सरल योग**' बना। फलतः यह योग यहां मिले-जुले फल देगा। जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। '**सरल योग**' के कारण जातक दीर्घजीवी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु उसे संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक चिंता एवं संतान संबंधी चिंता भी रहेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक को दाम्पत्य सुख में कमी आयेगी।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि मे होंगे। सूर्य यहा सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। राज्येश सूर्य व सुखेश शनि की इस युति से क्रमशः '**राजभंग योग**', '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखभंग योग**' की सृष्टि होगी। फलतः ऐसे जातक की यश-कीर्ति भंग होगी एव उसके मित्र दगा देंगे। सरकारी नौकरी में रुकावट के साथ, जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक के साथ अचानक दुर्घटना हो सकती है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को गुप्त रोग एवं परेशानिया देगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में
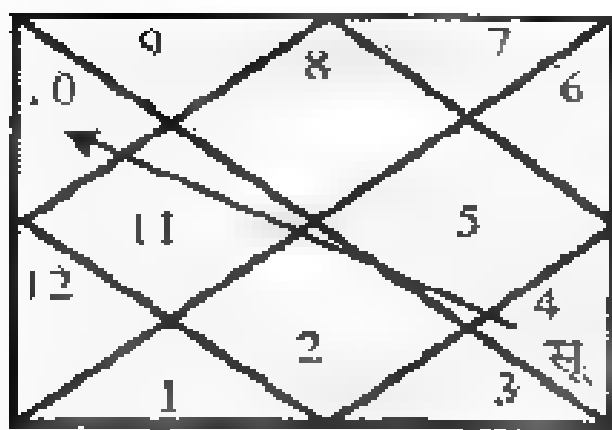
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अतः यहां शुभ फल ही देगा। सूर्य यहां नवम स्थान में कर्क(मित्र) राशि का है। सूर्य अपने घर से बारहवें स्थान पर है। अतः जातक अपने पिता व परिजनों से ज्यादा प्रेम न रखकर समझौतावादी दृष्टिकोण अपनायेगा। जातक भाग्यशाली होगा। उसको सरकारी नौकरी, पद प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की प्राप्ति सहज में होगी।

दृष्टि–नवम स्थान में स्थित सूर्य की दृष्टि पराक्रम भाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा उसके मित्र बहुत होंगे। जातक का जनसम्पर्क तेज होगा

निशानी–'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' अध्याय 10/श्लोक 117 के अनुसार दशमेश यदि भाग्यभवन में हो तो जातक भाग्यवान, गुणी सहोदरों के सुख से युक्त परम तेजस्वी होता है।

दशा–सूर्य की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा** –'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य नवम स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति भाग्य स्थान में होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक परम भाग्यशाली होगा। उसको नौकरी-व्यवसाय की उत्तम प्राप्ति होगी।
2. **सूर्य+मंगल** -सूर्य के साथ नीच का मंगल, जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा। जातक के भाईयों में प्रेम रहेगा
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। नवम स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान व भाग्यशाली होगा, जातक को पिता की सम्पति मिलेगी। जातक को परिजनों, मित्रों की मदद समय समय पर मिलती रहेगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति उच्च का होगा। ऐसे जातक को राजा से सम्मान तथा भाईयों से लाभ मिलेगा। जातक महान् पराक्रमी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र विवाह से सुख-शांति एवं समृद्धि देगा। जातक को पिता का सुख मिलेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश, सुखेश शनि की युति भाग्य स्थान में होने से जातक को सरकारी नौकरी राज्य कृपा या राजकीय सम्मान वगैरह मिलेगा। जातक व्यवसाय की दृष्टि से उन्नत होगा परन्तु उसकी अपने भाईयों से नहीं बनेगी, सुख प्राप्ति के संसाधनों हेतु जातक निरन्तर परेशान रहेगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को पिता के सुख में कमी होगी। जातक के पिता की मृत्यु उसकी बाल्यवस्था में होगी।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगा। जातक की महत्वाकांक्षाएं पूरी होगी।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
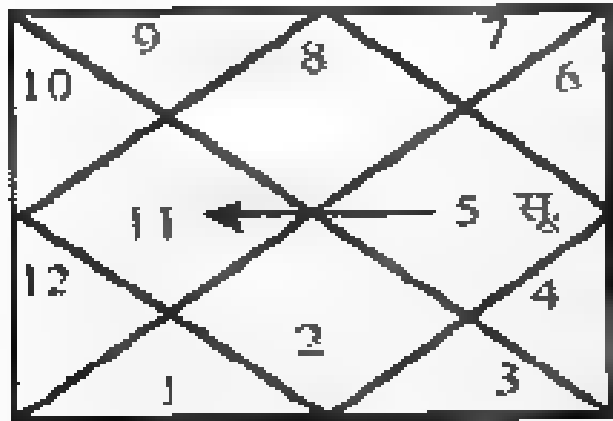
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है। अतः यहां शुभ फल ही देगा। सूर्य यहां दशम स्थान में स्वगृही होकर **'रविकृत राजयोग'** देगा। जातक को माता-पिता का सुख, धन-दौलत, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। बहुत संभव है जातक को राजनीति में लालबत्ती वाली गाड़ी प्राप्त हो। जातक का आत्मबल तेज होगा। इष्ट-फल उत्तम होगा। जातक पर ईश्वरीय कृपा रहेगी।

दृष्टि–दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) पर है। जातक को मकान का सुख मिलेगा।

निशानी–'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' अध्याय 24/श्लोक 118 के अनुसार जातक राजकुल में उत्पन्न राजा के समान ऐश्वर्यशाली होता है।

दशा–सूर्य की दशा-अतर्दशा में नौकरी लगेगी एवं राजबल प्राप्त होगा।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दशम स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या की दोपहर 12 बजे के आस पास होगा भाग्येश चंद्र व दसमेश सूर्य की यह युति दशम भाव में होने से जातक को **'रविकृत राजयोग'** का लाभ मिलेगा। जातक को सरकारी घर प्रतिष्ठा मिलेगी। जातक को उत्तम भवन, उत्तम वाहन का सुख मिलेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मगल 'दिक्बली' होकर **'कुलदीपक योग'** बनायेगा। जातक को राजा से सम्मान, सहयोग मिलेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। दशम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा तथा **'रविकृत राजयोग'** की सृष्टि करेगा। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। बहुत उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्वाकाक्षी होगा फलतः ऐसा जातक बुद्धि बल से धन कमाने

वाला, राज्य (सरकार) में ऊंचा पद प्रतिष्ठा पाने वाला घर का दो मंजिला मकान एक से अधिक वाहनों का स्वामी होगा। जातक का पराक्रम तेज होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति होने से जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी तथा विद्या एवं संतान से धन लाभ होगा
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र राजनीति में संघर्ष का द्योतक है
6. **सूर्य+शनि** यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही तो शनि परम शत्रु राशि में होगा। सूर्य के कारण यहां **रविकृत राजयोग** बनेगा। दशमेश व सुखेश, पराक्रमेश की युति दशम भाव में होने से जातक को रोजी रोजगार के उन्नत अवसर प्राप्त होंगे परन्तु माता का सुख प्राप्त नहीं होगा जातक का मकान या वाहन पुराना होगा, उस पर मरम्मत को लेकर बहुत खर्चा करना पड़ेगा
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। सरकारी नौकरी में बाधा होगी। सरकारी सुख में बाधा बनी रहेगी।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक को राजा से सम्मान दिलायेगा। जातक महत्वाकांक्षी होगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
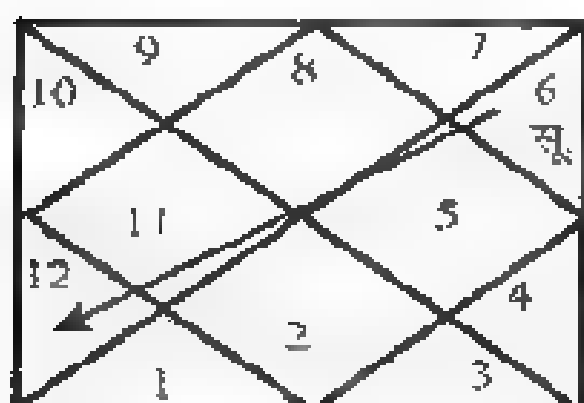
वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र भी है अतः यहां शुभ फल ही देगा यहां एकादश भावगत सूर्य कन्या (सम) राशि में है। सूर्य अपनी राशि में दूसरे एवं पितृ कारक भाव से तीसरे स्थान पर है। ऐसे जातक को पिता का सुख उत्तम होता है जातक को राजा का सुख उत्तम व सरकारी नौकरी, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, धन-दौलत की प्राप्ति होगी। जातक का अपने परिजनों-रिश्तेदारों के प्रति अदम्य-उत्साह व अनुराग होगा।

दृष्टि—एकादश भावगत सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (मीन राशि) पर है ऐसे जातक को श्रेष्ठ विद्या सुख एवं पुत्र रत्न की प्राप्ति होगी।

निशानी—'लोमश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 2 के अनुसार दशमेश यदि एकादश भाव में हो तो जातक सदैव प्रसन्न रहने वाला धनवान, पुत्रवान एवं सम्पूर्ण सुखी होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रातः 10 से 12 बजे के मध्य होगा। भाग्येश चद्र व दशमेश सूर्य की यह युति एकादश भाव में होने से जातक को उत्तम विद्या, उत्तम संतति की प्राप्ति होगी. जातक व्यापार-व्यवसाय से अच्छा धन कमायेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक को भाईयों से लाभ मिलेगा
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा एकादश स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर बुध उच्च का होगा। दशमेश एवं बलवान लाभेश की यह युति राजयोग कारक है। जातक बुद्धिमान एवं महा-धनवान व्यक्ति होगा। जातक उद्योगपति होगा एवं भाग्यशाली होगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। ऐसा जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति होने से जातक को पुत्र संतति का लाभ मिलेगा। जातक को उत्तम विद्या का लाभ मिलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र व्यापार में उतार-चढ़ाव लायेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे सूर्य यहां समराशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश, सुखेश शनि की युति यहा एकादश स्थान में होने से जातक विद्यावान होगा तथा तंत्र-मत्र एवं गुप्त विद्याओं का जानकार होगा, परन्तु जातक को सरकारी नौकरी में दिक्कते आयेगी। जातक को निजी व्यापार व्यवसाय में भी परेशानी उठानी पड़ेगी। पिता गुजरने के बाद ही जातक का रोजगार अर्थात् आमदनी सुदृढ़ होगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को व्यापार में नुकसान व परेशानी आयेगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को उच्च महत्वाकांक्षी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होने से राजयोग कारक है। सूर्य लग्नेश मगल का मित्र भी है। अतः यहा शुभ फल ही देगा। द्वादश स्थानगत सूर्य तुला राशि मे
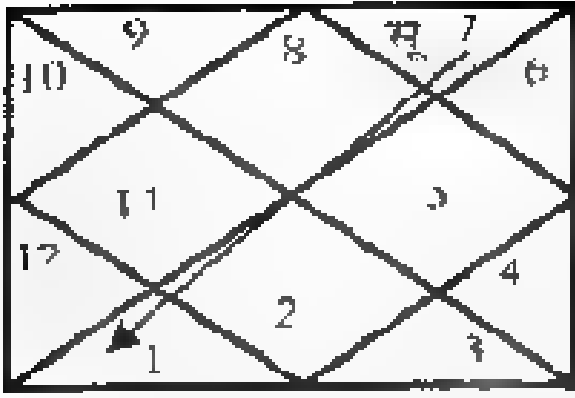
नीच का है। तुला राशि के दस अंशो में सूर्य परम नीच का होगा। सूर्य यहां अपने घर में तीसरे स्थान एवं पितृकारक भाव में चौथे स्थान पर है। सूर्य की इस स्थिति से **'राजभंग योग'** बना। जातक के एक हजार राजयोग नष्ट होते हैं उसकी सरकारी नौकरी नहीं लगती। जातक को पिता-व्यवसाय, सम्मान व पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति में बाधा आयेगी। जातक को नेत्र पीड़ा होगी

दृष्टि–द्वादश भावगत सूर्य की दृष्टि छठे भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु होंगे पर जातक उनको नष्ट करने में सक्षम होगा

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 10/श्लोक 3 के अनुसार दशमेश यदि द्वादश स्थान में हो तो व्यक्ति अपने शत्रुओं से पीड़ित रहता है।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

सूर्य की अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (तुला राशि) के होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रातः 8 से 10 बजे के मध्य होगा भाग्येश चंद्र और दशमेश सूर्य की यह युति बारहवे स्थान में होने के कारण **'भाग्यभंग योग'** एवं **'राज्यभंग योग'** बनेगा। ऐसे जातक को राजकीय नौकरी नहीं मिलेगी। जातक को उत्तम नौकरी, व्यापार की प्राप्ति हेतु दिक्कतें आयेगी। जातक को नेत्र पीड़ा होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। द्वादश स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर सूर्य नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य के बारहवें जाने से **'राजभंग योग'** बनेगा तथा बुध बारहवें होने से **'लग्नभंग योग'** बनेगा अष्टमेश के बारहवें जाने से **'सरल योग'** भी बनता है फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। **'सरल योग'** के कारण वह दीर्घजीवी होगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित एवं गणमान्य व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। ऐसे जातक को आर्थिक दिक्कतों एवं संतान संबंधी परेशानियां रहेंगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र 'विवाहभंग योग' बनायेगा। जातक को दाम्पत्य सुख विलम्ब से मिलेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य यहां नीच राशि का तो शनि उच्च राशि का होकर '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। साथ ही '**राजभंग योग**', '**पराक्रम भंगयोग**' एवं '**सुखभंग योग**' की सृष्टि हुई। फलतः जातक राजा तुल्य पराक्रमी व ऐश्वर्य सम्पन्न तो होगा। परन्तु समाज में उसकी कीर्ति नहीं होगी। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे, जिन्हें परास्त करने में जातक सफल होगा परन्तु इसके लिए उसे परिश्रम बहुत करना पड़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को नेत्र पीड़ा होगी। जातक को सरकारी दण्ड मिलेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक को परदेश में लाभ देगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में
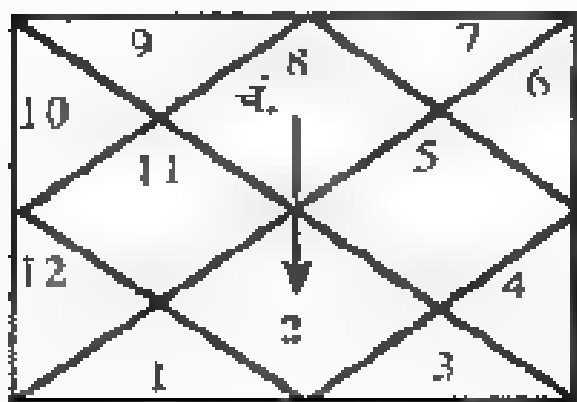
वृश्चिकलग्न में चद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां प्रथम स्थान में चद्रमा नीच का है। वृश्चिक राशि के तीन अशों तक चंद्रमा परम नीच का होगा। ऐसे जातक में कवित्व शक्ति परिपूर्ण होती है। जातक में कल्पना शक्ति तीव्र होती है। जातक धनवान किन्तु थोड़ा ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है। जातक भाग्यशाली होगा। ऐसे जातक को कला, लेखन, अभिनय एवं सामाजिक कार्यों में सम्मान मिलता है

दृष्टि—लग्नस्थ चद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा

निशानी—'लोमेश सहिता' अध्याय 10/श्लोक 4 के अनुसार 24 वर्ष की आयु के बाद जातक के पास दिनों दिन धन बढ़ता है और वह मनुष्य सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहो से सबंध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान वृश्चिक राशि में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। भाग्येश चद्र व दशमेश सूर्य की यह युति लग्न स्थान मे होने से जातक परम भाग्यशाली होगा जातक स्वय सुन्दर होगा तथा उसकी पत्नी भी अत्यधिक सुन्दर होगी।

2. **चंद्र+मंगल**—यहा प्रथम स्थान मे दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। जहा मंगल स्वगृही होगा तथा चंद्रमा नीच राशि का होने से '**नीचभंग राजयोग** बनेगा। मंगल के कारण '**रुचक योग**' भी बनेगा। फलतः यहां '**महालक्ष्मी योग**' भलीभांति मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मकर राशि), सप्तम स्थान (मेष राशि) एव अष्टम स्थान (वृष राशि) पर होगी। ये सभी राशियां इन ग्रहों की स्व एव उच्च राशियां हैं। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा विवाह के बाद धनी होगा। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का मान मर्दन करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक के पास उत्तम वाहन, भवन एवं सुख-सुविधाएं होंगी

3. **चंद्र+बुध**—चंद्र के साथ बुध होने से ऐसा जातक प्रत्येक बात पर दो बार सोचेगा। जातक विद्यवान बुद्धिमान होगा परन्तु मानसिक अंतर्द्वन्द बना रहेगा।

4. **चंद्र+गुरु**—वृश्चिकलग्न के प्रथम भाव मे यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है जो पूर्णतः शुभ फलदायक है। चंद्रमा यहां नीच का होगा। पर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव, सप्तम भाव एव नवम भाव पर होगी। फलतः जातक विद्यावान होगी जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक की गिनती सफल एवं भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्र के साथ शुक्र जातक को आकर्षक शरीर व चेहरा देगा। जातक की पत्नी भी सुन्दर होगी।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्र के साथ शनि जीवन मे सभी प्रकार की सुख सुविधाएं एव सम्पन्नता देगा।

7. **चद्र+राहु**—चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक उद्विग्न रहेगा तथा मानसिक तानव में रहेगा।

8. **चंद्र+केतु**—चद्र के साथ केतु व्यक्ति को महत्वाकांक्षी बनायेगा। ऐसा जातक संघर्ष के साथ आगे बढ़ेगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में

9 च., 8, 7, 6, 10, 11, 5, 12, 4, 2, 1, 3
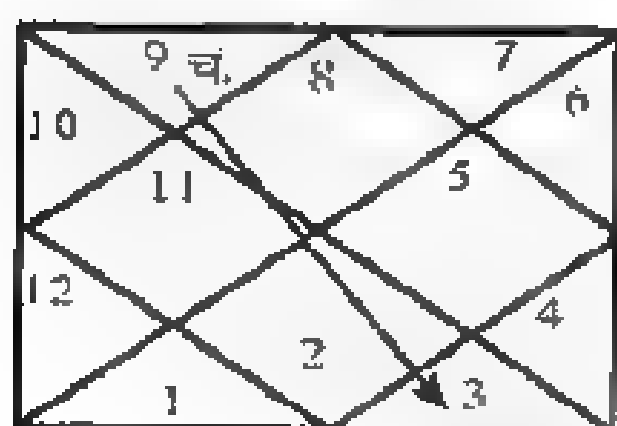
वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां द्वितीय स्थान में चंद्रमा धनु (सम) राशि में है। ऐसे जातक को धन व कुटुम्ब का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। जातक

विनम्र एवं मिष्टभाषी होता है। चंद्रमा यहां अपनी राशि (कर्क) से छठे स्थान में होने से ज्यादा शुभ नहीं है जातक को भाग्योदय हेतु थोड़ा परिश्रम करना पड़ेगा

दृष्टि—द्वितीयस्थ चद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि, पर होगी ऐसे जातक के गुप्त शत्रु होते है पर जातक दीर्घजीवी होता है।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 6 के अनुसार ऐसा जातक धनवान, गुणवान, अपने विषय का विद्वान, मनुष्यों को प्रिय, बड़ा ऑफिसर एवं मनुष्यों पर शासन करने वाला होता है।

दशा—चद्रमा की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी जातक का भाग्योदय होगा जातक को चंद्रमा की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **चद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद की युति द्वितीय स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चद्र व दशमेश सूर्य की यह युति धन स्थान में होने से जातक धनवान होगा। जातक की वाणी अत्यधिक प्रभावशाली एवं विनम्र होगी।
2. **चंद्र+मंगल**—यहा द्वितीय स्थान में दोनों धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव (मीन राशि), अष्टम भाव (मिथुन राशि) एव भाग्य भवन (कर्क राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनी एव सौभाग्यशाली होगा। अपने जातक शत्रुओं का मान मर्दन करने में सक्षम होगा जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के प्रजनन के बाद होगी।
3. **चद्र+बुध**—चद्र के साथ बुध जातक को व्यापार-व्यवसाय से खूब लाभ दिलायेगा। जातक की वाणी विनम्र एवं उसका स्वभाव सौम्य होगा।
4. **चद्र+गुरु**—वृश्चिकलग्न में धनु राशि के अतर्गत द्वितीय भाव में हो रही यह युति, वस्तुतः भाग्येश चद्रमा की धनेश+पचमेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति यहा स्वगृही होगा तथा इसकी दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एव राज्य (दसवें) स्थान पर होगी फलतः आप ऋण रोग एव शत्रु से बचे रहेंगे आपका भाग्योदय शीघ्र होगा। आपको उच्च शैक्षणिक डिग्री भी प्राप्त होगी तथा आपकी आयु भी लंबी होगी यह योग आपके लिए अत्यत शुभ फलदायक है।
5. **चंद्र+शुक्र** चद्र के साथ शुक्र व्यक्ति को सुसस्कृत एव सभ्य वाणी देगा। जातक धनी होगा तथा उसे अचानक पैसा मिलेगा।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्र के साथ शनि होने से जातक भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, धनी, मानी एवं पराक्रमी होगा।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्र के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताएं बनी रहेंगी।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्र के साथ केतु की युति धनहानि में सहायक होती है।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में

9	8	7	6	10 च.	5	11	12	4	2	1	3
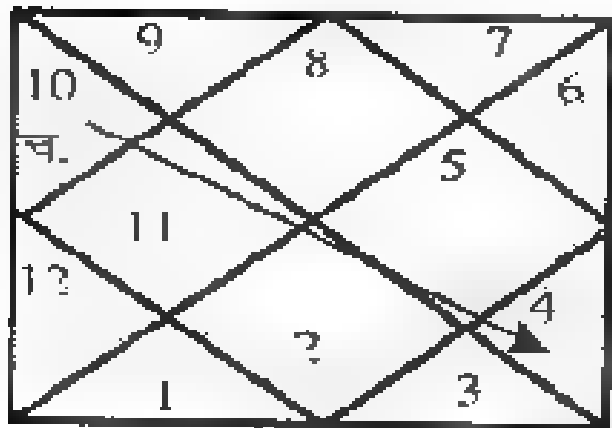
वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा यहा तृतीय स्थान में चंद्रमा मकर (सम) राशि में है। ऐसे जातक को माता पिता का सुख, भाई बहन का सुख, जमीन-जायदाद का सुख, पद प्रतिष्ठा, सामाजिक व राजनैतिक सम्मान मिलेगा. चंद्रमा अपनी राशि (कर्क) से सातवें स्थान पर होने से पत्नी का सुख, गृहस्थ का सुख उत्तम रहेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य भवन अपने ही घर (कर्क राशि) पर होगी। ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होता है। जातक के मित्र उसके जीवन में मददगार साबित होगे।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 6 के अनुसार ऐसा जातक धनवान, गुणवान अपने विषय का विद्वान, मनुष्यों को प्रिय, बड़ा ऑफिसर एवं मनुष्यों पर शासन करने वाला होता है।

दशा—चंद्रमा की दशा अतर्दशा में पराक्रम बढेगा।

चंद्रमा की अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति पराक्रम स्थान मे होने से जातक बहुत पराक्रमी होगा। जातक का भाई-बहनों के साथ अच्छा संबध रहेगा. जातक को मित्रों से लाभ होगा तथा पिता की सम्पत्ति मिलेगी
2. **चंद्र+मंगल**—यहा तृतीय स्थान मे दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे. मकर राशि में मगल उच्च का होगा. फलतः यहां **'महालक्ष्मी योग'** मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि षष्टमभाव (मेष राशि), भाग्यभवन (कर्क राशि)

एवं दशम भाव (सिंह राशि) पर होगी फलतः जातक धनी होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक भाग्यशाली एवं महान् पराक्रमी होगा। जातक का सशक्त प्रभाव देश की राजनीति में भी होगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्र के साथ बुध जातक को अधिक बहनें देगा। जातक पराक्रमी होगा
4. **चंद्र+गुरु**—वृश्चिकलग्न के तृतीय भाव में मकर राशि में बृहस्पति+चंद्र की युति हो रही है यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है तृतीय स्थान में बृहस्पति नीच का होगा। इसकी दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एवं दशम भाव पर होगी। फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। आपकी आयु दीर्घ होगी तथा आप अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम रहेंगे। राज्य (सरकार), कोर्ट-कचहरी में भी जातक को विजय मिलेगी। जातक की गिनती योग्य एवं सफल व्यक्तियों में होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्र के साथ शुक्र होने से जातक का ससुराल पराक्रमी होगा
6. **चंद्र+शनि**—चंद्र के साथ शनि स्वगृही होने से जातक को भाई बहनों का पूर्ण सुख मिलेगा।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्र के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बना रहा है। अतः जातक भाईयों की ओर से चिंतित रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्र के साथ केतु जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक कीर्तिवन्त होगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में

9 8 7 10 6 चं 5 11 12 4 2 1 3
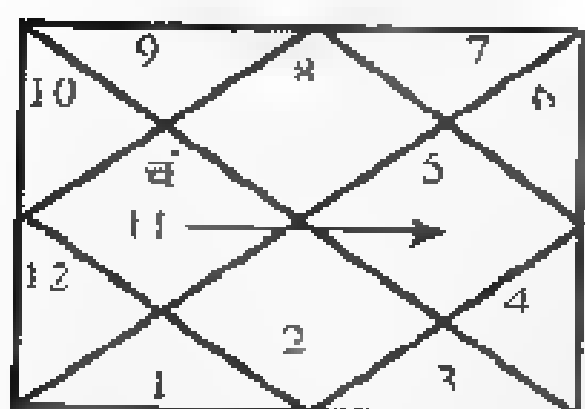
वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा यहां चतुर्थ स्थान में चंद्रमा कुंभ (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को माता-पिता का सुख, वाहन का सुख जमीन, जायदाद व पैतृक सम्पत्ति का सुख मिलता है जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक धैर्यशाली, संयमी एवं अतिथिप्रिय होता है।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसे जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति शीघ्र होता है। जातक का भाग्य उन्नत होता है

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 9 श्लोक 2 के अनुसार भाग्येश यदि चतुर्थ स्थान में हो तो जातक राज्यमंत्री, सेनापति अथवा शासन का प्रमुख व्यक्ति होता है.

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। एवं उसका भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 बजे के आस-पास होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति चतुर्थ भाव में होने से जातक को अच्छी नौकरी व पिता का सहयोग मिलेगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान मे दोनों कुभ राशि में होंगे। मंगल यहां **'दिक्बली'** होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को देखेंगे। फलतः जातक धनी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में अच्छा धन कमायेगा। ऐसा जातक विवाह के बाद आर्थिक सामाजिक एव राजनैतिक ऊंचाइयों को स्पर्श करेगा।
3. **चंद्र+बुध**–चद्र के साथ बुध जातक को विद्यावान् बनायेगा। जातक को माता-पिता का सुख प्राप्त होगा।
4. **चंद्र+बृहस्पति**–वृश्चिकलग्न मे चतुर्थ भावगत यह युति कुंभ राशि में हो रही है। यह वस्तुतः भाग्येश चद्रंमा की धनेश-पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ भाव में ये दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक दीर्घायु होगा। उसका दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। राज्यपक्ष (कोर्ट-कचहरी) में विजय मिलेगी जातक के हाथ से शुभ कार्य में धन खर्च होगा। जिससे जातक को यश मिलेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चद्र के साथ शुक्र होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होगे।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। जातक महाधनी होगा। उसके पास उत्तम वाहन एवं भवन होगा। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक मानसिक परेशानी में रहेगा। जातक को माता का सुख कमजोर होगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में
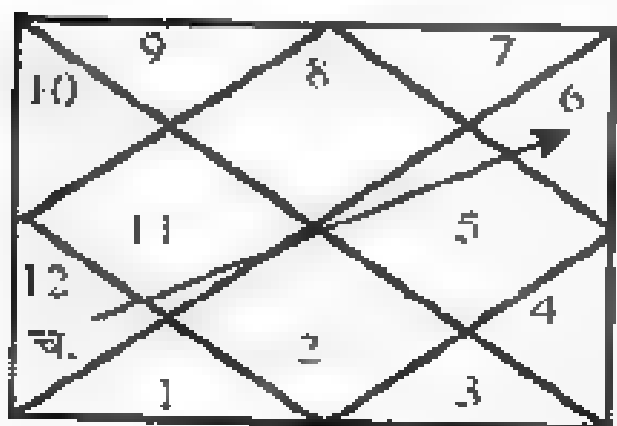
वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा यहां पंचम स्थान में चद्रमा मीन (सम) राशि में है। चद्रमा अपने घर से दसवे एव मातृकारक तरीके मातृ भाव से दूसरे

स्थान पर होगा। जातक को माता का सुख मिलेगा। जातक अत्यधिक भावुक कल्पनाशील होता है। जातक विद्यावान् होगा। उसे शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक को संतति लाभ भी होगा। परन्तु प्रथम संतति कन्या होने की सम्भावना अधिक रहेगी।

दृष्टि—पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लाभ स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक को व्यापार में लाभ होगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 3 के अनुसार भाग्येश यदि पांचवें स्थान में हो तो मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली, जनप्रिय, बृहस्पतिभक्त, धैर्यवान् एवं अनेक सद्गुणों से युक्त होता है

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में व्यापार व्यवसाय बढ़ेगा। दूरस्थ प्रदेशों की यात्रा होगी। परिवार सहित तीर्थ यात्रा भी सम्भव है

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति पंचम स्थान (मीन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति पंचम भाव में होने से जातक को उत्तम संतति एवं विद्या का सुख मिलेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि), लाभ स्थान (कन्या राशि) एवं व्यय भाव (तुला राशि) पर होगी। इस '**लक्ष्मी योग**' के कारण जातक धनवान होगा। जातक लम्बी उम्र वाला होगा तथा व्यापार-व्यवसाय व नौकरी से यथेष्ट धन अर्जित करेगा। साथ ही जातक व्ययशील प्रवृत्ति, खर्चीले स्वभाव का परोपकारी व दानी होगा।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्र के साथ बुध नीच का होने से जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। विद्या से किस्मत बदलेगी।
4. **चंद्र+गुरु**—वृश्चिकलग्न के पंचम भाव में यह युति मीनराशि में हो रही है यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। यह शुभ फलकारी है। क्योंकि बृहस्पति यहां स्वगृही होकर भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को देख रहा है। फलतः आपका भाग्योदय शीघ्र होगा। व्यापार में आपको लाभ होगा तथा विद्या एवं प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण रहेंगे। आपके व्यक्तित्व का चहुमुखी विकास इस चंद्र+गुरु के कारण होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्र के साथ शुक्र उच्च का होने से जातक प्रज्ञावान होगा तथा ऊंची विद्या पढ़ेगा जिससे जातक की किस्मत चमकेगी।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्र के साथ शनि होने से जातक पुत्रवान् होगा। विद्या व संतान से जातक की कीर्ति बढ़ेगी।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को संतान संबंधी चिंता बनी रहेगी।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्र के साथ केतु होने से जातक की संतति शल्य चिकित्सा द्वारा होगी।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में
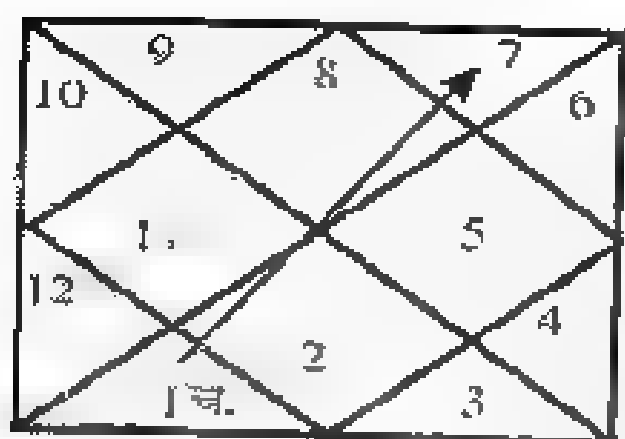
वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां षष्टम स्थान में चंद्रमा मेष (सम) राशि में है। चंद्रमा अपने घर से दसवें एवं मातृकारक तरीके मातृभाव से तीसरे स्थान पर है। चंद्रमा के कारण यहां '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। जातक को भाग्योदय हेतु कुछ दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। एक अन्य मत के अनुसार यहां चंद्रमा को षष्टम भाव में जाने का दोष नहीं लगता। मंगल की राशि में चंद्रमा होने से जातक ऊर्जावान् होगा।

दृष्टि—षष्टम स्थानगत चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक यात्रा करता रहेगा पर ऋणी नही होगा.

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 4 के अनुसार भाग्येश यदि छठे स्थान पर हो तो ऐसे जातक को बड़े भाई व मामा का सुख नहीं मिलता।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (मेष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की युति छठे भाव में होने से '**भाग्यभंग योग**' व '**राजभंग योग**' बनेगा। जातक को अच्छी नौकरी प्राप्त करने व भाग्योदय हेतु बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां षष्टम स्थान में दोनो ग्रह मेष राशि में होंगे। मंगल यहा स्वगृही होगा। चंद्रमा खड्डे में जाने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल खड्डे

में गिरने से '**लग्नभंग योग**' भी बनता है। परन्तु षष्ठेश का षष्ठम भाव में स्वगृही होने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होती है जो मगल की ऊर्जा को सकारात्मक बल देती है फलतः एसा जातक धनी होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य भवन (कर्क राशि), व्यय भाव (तुला राशि) एव लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी जिससे जातक भाग्यशाली एव खर्चीले स्वभाव का होगा और जो कार्य हाथ में लेगा उसमे उसे बराबर सफलता मिलेगी।

3. **चद्र+बुध**–चद्र के साथ बुध छठे स्थान '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा जातक को भाग्योदय हतु काफी दिक्कतें उठानी पड़ेगी।
4. **चद्र+गुरु**–'भोजसंहिता के अनुसार वृश्चिकलग्न में छठे स्थान मे यह युति मेष राशि में हो रही है। यह युति वस्तुतः भाग्येश चद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति+चंद्र षष्टमस्थ होने से '**धनहीन योग**', '**सतानहीन योग**' एव '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि हुई है षष्टमस्थ बृहस्पति और चद्रमा भाग्य भवन, लाभ स्थान एव लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः शत्रु नाश होंगे, व्यापार–व्यवसाय में लाभ हानि का उपक्रम चलता रहेगा, इस शुभ योग के कारण जातक को कोई गंभीर नुकसान नहीं पहुंचेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चद्र के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' कराता है, जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एव '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक को मित्रों से दगा मिलेगा।
7. **चद्र+राहु**–चद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक के भाग्य में जबरदस्त बाधा आयेगी
8. **चंद्र+केतु**–चद्र के साथ केतु गुप्त शत्रु बढ़ायेगा।

वृश्चिकलग्न मे चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में
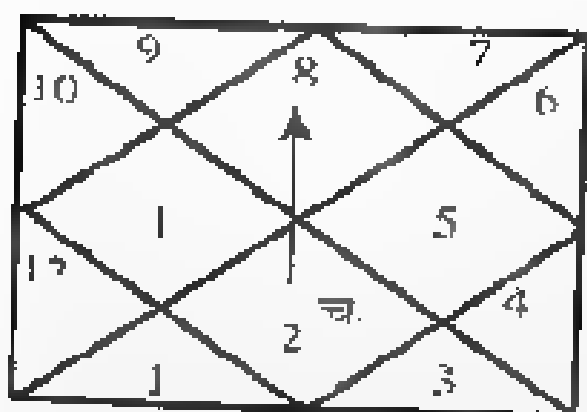
वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है, यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां सप्तम स्थान में चंद्रमा उच्च का है। वृष राशि के तीन अंशो तक चद्रमा परमोच्च का होगा। चद्रमा यहा अपने घर से ग्यारहवें एवं मातृकारक तरीके मातृभाव से चौथे स्थान पर है। जातक को माता का सुख मिलेगा। जातक की पत्नी अत्यधिक सुन्दर होगी जातक को विद्या, बुद्धि, धन, पद, प्रतिष्ठा व सौभाग्य की प्राप्ति होगी

दृष्टि—सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक सुन्दर, विनम्र, सौम्य एवं दूसरों का आदर करने वाला होता है।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 2 के अनुसार भाग्येश यदि सातवें हो तो जातक बड़ा ही गुणवान, यशस्वी व कीर्तिवान् होता है।

दशा—चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में भाग्योदय होगा जातक को पत्नी का सुख तथा ऐश्वर्य संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

चंद्रमा की अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय होता है। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की युति सप्तम भाव में होने से जातक की पत्नी अत्यन्त रुपवती होगी। उसे परिश्रम का लाभ मिलेगा। '**यामिनीनाथ योग**' के कारण जातक भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा.
2. **चंद्र+मंगल**—यहा सप्तम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। चंद्रमा वृष राशि में उच्च का होगा। फलतः यहां '**महालक्ष्मी योग**' बनेगा एवं '**यामिनीनाथ योग**' भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (सिंह राशि), लग्न भाव (वृश्चिक राशि) एवं धन भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक महाधनी होगा। राज्य (सरकार) राजनीति में उसका दबदबा होगा। जातक जो भी कार्य हाथ मे लेगा, उसमे उसे बराबर सफलता मिलेगा जातक समाज का धनी-मानी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्र के साथ बुध होने से जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सप्तमस्थ बृहस्पति+चंद्र वृष राशि में होंगे। यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा '**गजकेसरी योग**' की केन्द्रगत यह स्थिति शक्तिशाली है जो क्रमशः '**कुलदीपक योग**' एवं '**यामिनीनाथ योग**' की सृष्टि कर रहा हैं। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान पर होगी। फलतः जातक के व्यक्तित्व का विकास द्रुतगति से होगा, जातक के मित्र सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित होंगे। जातक को व्यापार व्यवसाय में आशातीत लाभ होते रहेंगे।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्र के साथ शुक्र होने से '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनेगा। जातक की पत्नी अति सुन्दर होगी। जातक की किस्मत विवाह के बाद चमकेगी।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्र के साथ शनि जातक के भौतिक ऐश्वर्य व सुख सम्पत्ति में वृद्धि करेगा।
7. **चद्र+राहु**—चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक के वैवाहिक सुख में व्यवधान पड़ेगा एवं समरसता बिगड़ेगी।
8. **चद्र+केतु**—चंद्र के साथ केतु पेट का ऑपरेशन करायेगा। जातक को गुर्दे की तकलीफ भी हो सकती पर ठीक हो जायेगी

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में

9	8	7	6	10	11	5	12	4	2	1	चं. 3
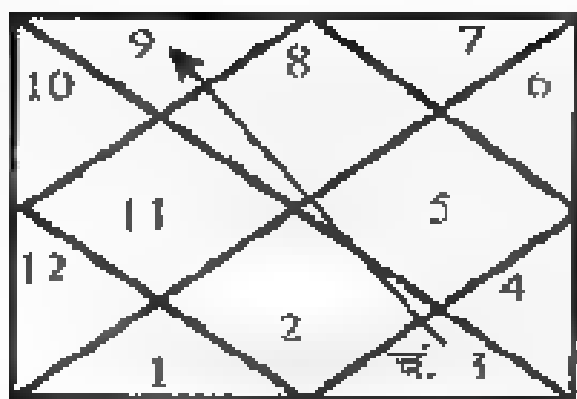
वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां अष्टम स्थान में चंद्रमा मिथुन (शत्रु) राशि में है। चंद्रमा के कारण यहां '**राजभंग योग**' बना। चंद्रमा अपनी स्वराशि से बारहवें तथा मातृकारक तरीके मातभाव से पांचवें स्थान पर है। ऐसे जातक का दैहिक व मानसिक सुख कमजोर होता है। यहा पर चंद्रमा '**बालारिष्ट योग**' उत्पन्न करता है। पाप ग्रहों की युति से यह योग बलवान हो जाता हैं। जातक को पिता का सुख कमजोर होता है।

दृष्टि—अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक का धन व्यर्थ मे खर्च होता चला जायेगा।

निशानी—'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' अध्याय 23/श्लोक 104 के अनुसार '**ज्येष्ठभ्रातस्य सुख नैव तस्य जातस्य जायते**'। ऐसे जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होता।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चद्र की युति आठवें स्थान (मिथुन राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्णा अमावस्या को साय 4 से 6 बजे के मध्य होता है। भाग्येश चद्र व दशमेश सूर्य की यह युति आठवें भाव मे होने से '**भाग्यभंग योग**' व '**राजभंग योग**' बनेगा।

जातक को उत्तम व्यवसाय नौकरी प्राप्त करने हेतु भाग्योदय हेतु अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां अष्टम स्थान में दोनों मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (कन्या राशि), धन स्थान (धनु राशि) एवं पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होकर अष्टम में होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा. मंगल के अष्टम में जाने से '**लग्नभंग योग**' बनता है परन्तु षष्टेश के अष्टम भाव में जाने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होने से मंगल को सकारात्मक ऊर्जा का बल मिला है। फलतः ऐसा जातक धनवान होगा। जातक व्यापार–व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। जातक महान पराक्रमी होगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्र के साथ बुध '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय मे नुकसान होगा।

4. **चंद्र+गुरु**—वृश्चिकलग्न में अष्टमस्थ, बृहस्पति+चंद्र की युति मिथुन राशि में होगी। यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। 'भोजसंहिता' के अनुसार यहां चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठने से '**धनहीन योग**', '**संतानहीन योग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि होती है। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय स्थान, धन स्थान एवं सुख स्थान को देखते हैं. फलतः जातक को धन की हानि, सुख साधन की कमी अखरेगी। इसके साथ ही बढ़े हुए खर्च के कारण जातक को चिंता बनी रहेगी परन्तु इस शुभ योग के कारण जातक को सभी प्रकार की चिन्ताओ से मुक्ति मिल जाएगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्र के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनाता है। जातक को गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्र के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। जातक के परिजन व मित्र पीठ पीछे जातक की निन्दा करेंगे।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्र के साथ राहु '**बालारिष्ट योग**' बना रहा है। जन्म से आठवां वर्ष 20 व 32 वां वर्ष जातक के लिए घातक है आयु का खतरा है।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्र के साथ केतु होने से जन्म का आठवां वर्ष घातक होगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां चंद्रमा स्वगृही है। मातृकारक
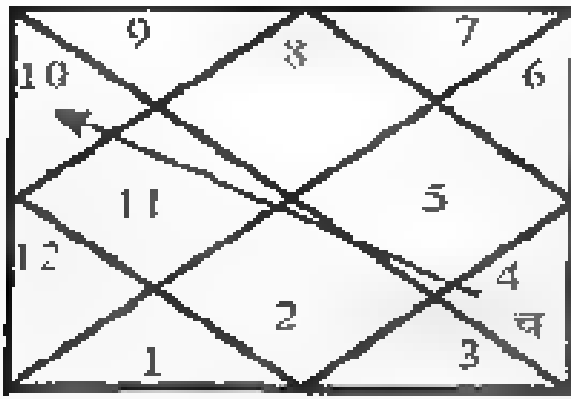
तरीके चंद्रमा मातृ भाव से छठे स्थान पर है ऐसा जातक धनी, मानी भाग्यशाली एवं समाज का गणमान्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है ऐसे जातक दानशील, क्षमाशील, समाज व जाति के सदैव हितैषी होते हैं, जातक अनेक मित्रों वाला लोकप्रिय व्यक्ति होता है।

दृष्टि—नवम भावगत चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक के अनेक भाई-बहन होते है। सभी सुखी होते हैं।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 1 के अनुसार भाग्येश यदि भाग्य स्थान में ही हो तो जातक धन धान्य, अन्न धन, सम्पत्ति, जमीन-जायदाद से युक्त आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होता है

दशा -चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक का जबरदस्त भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य नवमे स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति भाग्य स्थान में होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी जातक परम भाग्यशाली होगा। उसको नौकरी व्यवसाय की उत्तम प्राप्ति होगी
2. **चंद्र+मंगल**—यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि मे होंगे। यहां चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच राशि का होने के से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। फलतः **'महालक्ष्मी योग'** मुखरित होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (तुला राशि) पराक्रम भाव (मकर राशि) एवं चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलतः जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा जातक खुले दिल से धन खर्च करने वाला परोपकारी व दानी होगा। जातक के कुटुम्बी एवं मित्रजन प्रत्येक कार्य मे जातक का साथ देंगे, सहयोग करेंगे।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्र के साथ बुध जातक को व्यापार में लाभ दिलायेगा जातक बुद्धिमान होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—वृश्चिकलग्न के नवम भाव में बृहस्पति+चंद्र की युति कर्क राशि के अंतर्गत होगी 'भोजसहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्र की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति होगी **'गजकेसरी योग'** की यह सर्वोत्तम स्थिति है क्योंकि यहां चंद्रमा स्वगृही एवं बृहस्पति उच्च का होकर

लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान को देखेंगे। फलतः आपको धन की कोई कमी नहीं रहेगी। आपका पराक्रम तेज होगा। मित्र वर्ग सम्पन्न एवं सहयोगात्मक भावना वाला होगा। आपको शिक्षा संबधी उच्च डिग्री मिलेगी तथा आपकी संतति भी सुयोग्य एवं संस्कारी होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि होने से जातक को भाईयों-परिजनों व मित्रों का सहयोग मिलेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' से भाग्योदय में बाधा उत्पन्न करता है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु की युति जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगी

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में

9 8 7 10 6 11 5 चं. 12 4 2 1 3
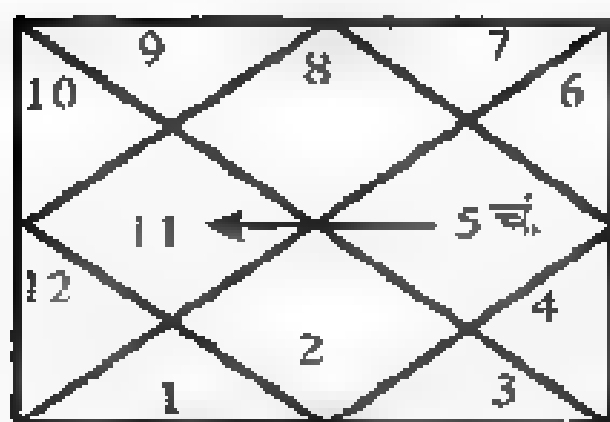
वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां दशम भाव में चंद्रमा सिंह (मित्र) राशि में है। चंद्रमा अपनी राशि से दूसरे तथा मातृकारक तरीके मातृ भाव से सातवें स्थान पर है। जातक को माता का सुख मिलेगा। ऐसा जातक उच्च कोटि के पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा। जातक धनी होगा उसे उत्तम वाहन सुख मिलेगा। जातक को पैतृक मकान भी मिलेगा।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (कुभ राशि) पर होगी। जातक की शिक्षा उत्तम होगी। उसे उत्तम मकान का सुख मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 2 के अनुसार भाग्येश यदि दसवें स्थान पर हो तो जातक राजमंत्री, सेनापति अथवा शासन का प्रमुख व्यक्ति होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में रोजी-रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। जातक का भाग्योदय होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दशम स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या की दोपहर 12 बजे के आस-पास होगा। भाग्येश चद्र व दशमेश सूर्य की यह

युति दशम भाव में होने से जातक को '**रविकृत राजयोग**' का लाभ मिलेगा। जातक को सरकारी घर, प्रतिष्ठा, उत्तम भवन, उत्तम वाहन का सुख मिलेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। मंगल यहां 'दिक्बली' होगा एवं '**कुलदीपक योग**' बनायेगा. यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) एवं पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनी होगा तथा भौतिक सुख उपलब्धियों से परिपूर्ण जीवन जीयेगा। ऐसा जातक जो कार्य हाथ में लेगा, उसमें उसे बराबर सफलता मिलेगी। जातक विद्यावान् होगा ऐसे जातक का आर्थिक व सामाजिक विकास प्रथम पुत्र के जन्म के पश्चात् होता है।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्र के साथ बुध '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी होगा समाज में उसकी भारी इज्जत व प्रतिष्ठा होगी।
4. **चंद्र+गुरु**–वृश्चिकलग्न के दशम भाव में बृहस्पति+चंद्र की युति सिंह राशि में होगी। '**भोजसंहिता**' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश के साथ युति होगी। यहां दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर क्रमशः '**यामिनीनाथ योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' की सृष्टि कर रहे हैं। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति अल्प प्रयासों से होती रहेगी। सुख में वृद्धि होगी। जातक को वाहन की प्राप्ति होगी एवं उसके शत्रुओं का नाश होगा। यह योग आपके लिए अत्यन्त शुभ है।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र जातक को धनवान बनायेगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि जातक को घर का बढ़िया मकान देगा। जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक की माता बीमार होगी। जातक को मानसिक तनाव रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्र के साथ केतु जातक को महत्त्वाकांक्षी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां एकादश स्थान में चंद्रमा कन्या (शत्रु राशि) में है। चंद्रमा यहां अपनी राशि से तीसरे एवं मातृकारक तरीके मातृभाव
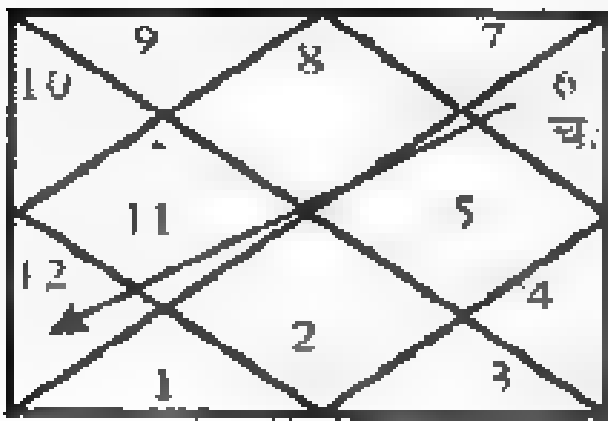
से आठवें स्थान पर है फलतः माता का सुख कमजोर रहेगा। ऐसा जातक आत्मज्ञानी होता है। उसका सर्वांगीण विकास होता है। उसे व्यापार-व्यवसाय से लाभ होता है। जातक को विदेशी व्यापार एवं जलीय वस्तुओं से लाभ होता है।

दृष्टि—एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक को विद्या बुद्धि बल, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 9/श्लोक 3 के अनुसार भाग्यश यदि एकादश में हो तो मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली, जनप्रिय, बृहस्पतिभक्त, धैर्यवान् एव अनके सद्गुणों से युक्त होता है।

दशा—चंद्रमा की दशा अतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा की अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रातः 10 से 12 बजे के मध्य होगा। भाग्येश चंद्र व दशमेश सूर्य की यह युति एकादश भाव में होने से जातक को उत्तम विद्या, उत्तम सतति की प्राप्ति होगी। जातक व्यापार-व्यवसाय में अच्छा धन कमायेगा।
2. **चद्र+मंगल**—यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे चद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (धनु राशि), पचम भाव (मीन राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलतः **'लक्ष्मी योग'** के कारण जातक धनवान होगा। जातक ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक व सामाजिक उन्नति प्रथम संतति के जन्म के पश्चात होगी।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्र के साथ उच्च का बुध जातक को उद्योगपति बनायेगा जातक धनी होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—वृश्चिकलग्न के एकादश भाव में बृहस्पति+चद्र की युति कन्या राशि में होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम स्थान एवं सप्तम स्थान को देखेगे फलतः जातक का पराक्रम बढ़ेगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। इसके बाद प्रथम संतति के

बाद जातक का दूसरा भाग्योदय होगा। जातक समाज का धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्र के साथ शुक्र विवाह के बाद जातक को उन्नति करायेगा। जातक की व्यापार में उन्नति होगी।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्र के साथ शनि जातक का पराक्रम बढ़ायेगा एवं उसे भौतिक सुख सुविधाएं मिलती रहेंगी।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को मानसिक तनाव रहेगा। जातक की माता बीमार रहेगी
8. **चंद्र+केतु** चंद्र के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में
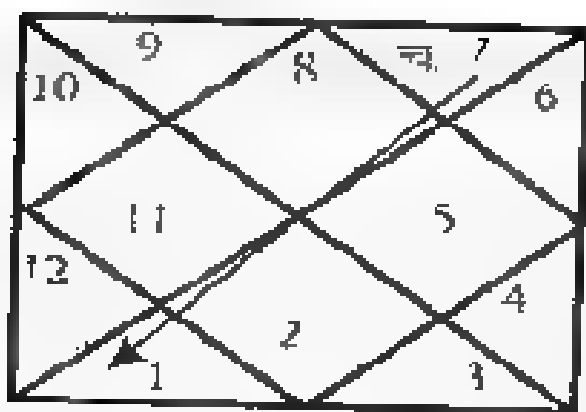
वृश्चिकलग्न में चंद्रमा भाग्येश है। यह लग्नेश मंगल का मित्र होने से परम योगकारक ग्रह होकर शुभ फलों में वृद्धि करेगा। यहां द्वादश स्थान में चंद्रमा तुला (सम) राशि में है। चंद्रमा के कारण यहां '**राजभंग योग**' बना। चंद्रमा अपने घर से चौथे तथा मातृकारक तरीके मातृभाव से नवम स्थान पर होने से शुभ है। जातक को माता का सुख मिलेगा। ऐसे जातक के भाग्योदय में कुछ विलम्ब तो होगा परन्तु भाग्य खराब नहीं होगा। जातक की बाईं आंख कमजोर होगी

दृष्टि–द्वादश स्थानगत चंद्रमा की दृष्टि छठे भाव (मेष राशि) पर होगी ऐसे जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 9,श्लोक 4 के अनुसार भाग्येश यदि बारहवें स्थान पर हो तो जातक को बड़े भाई व मामा का सुख नहीं मिलेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (तुला राशि) के होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को प्रातः 8 से 10 बजे के मध्य होगा भाग्येश चंद्र और दशमेश सूर्य की यह युति बारहवें स्थान में होने के कारण '**भाग्यभंग योग**' एवं '**राज्यभंग योग**' बनेगा, ऐसे जातक को राजकीय नौकरी नहीं मिलेगी। जातक

को उत्तम नौकरी, व्यापार की प्राप्ति हेतु दिक्कतें आयेंगी। जातक को नेत्र पीडा होगी।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, पराक्रम स्थान (मकर राशि), षष्टम स्थान (मेष राशि) एवं सप्तम स्थान (वृष राशि) का देखेंगे। चंद्रमा द्वादश में होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल द्वादश में हाने से '**लग्नभंग योग**' बनता है परन्तु षष्टेश के द्वादश स्थान में जाने से 'हर्षनामक **विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होती है। जिससे मगल में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ जाती है। ऐसा जातक धनी होता है। ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। ऐसे जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होता है। जातक यात्राओ में एवं व्यक्तिगत मौज-शौक में अधिक धन व्यय करेगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्र के साथ बुध '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक को व्यापार में हानि होगी।

4. **चंद्र+बृहस्पति**—वृश्चिकलग्न के द्वादशस्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति तुला राशि मे होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश के साथ युति होगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह सुख स्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को देखेंगे। द्वादशस्थ इन दोनों ग्रह के कारण क्रमशः '**धनहीन योग**', '**संतानहीन योग**' एवं '**भाग्यहीन योग**' की सृष्टि होगी फलतः यहां '**गजकेसरी योग**' की ज्यादा सार्थकता नहीं है। ऐसे जातक को धनहानि का सामना करना पड़ेगा। संतान प्राप्ति में विलम्ब होगा तथा भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। पर इस '**गजकेसरी योग**' के कारण जातक सभी संकटों व संघर्षों से पार पा लेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्र के साथ शुक्र स्वगृही '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक के दाम्पत्य सुख में कमी रहेगी।

6. **चंद्र+शनि**—चद्र के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। जातक के परिजन व मित्रों में निन्दा उसकी होगी।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्र के साथ राहु '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक यात्रा अधिक करेगा। जातक के विवाह में विलम्ब होगा एवं उसे नींद कम आयेगी।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्र के साथ केतु जातक को आध्यात्मिक मार्ग की ओर मोड़ेगा। जातक परापेकार में रुपया खर्च करेगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति

वृश्चिकलग्न में मगल की स्थिति प्रथम स्थान में
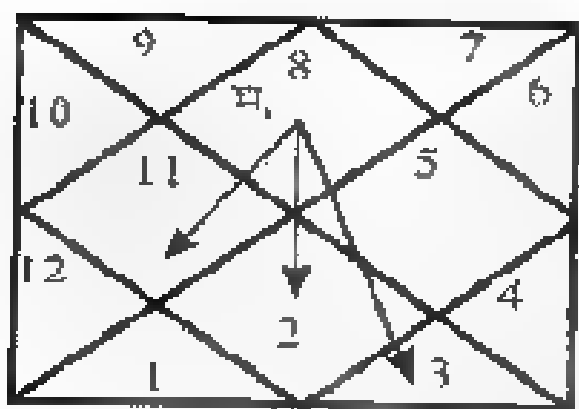
मगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है. मंगल यहां लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। प्रथम स्थान मे मगल वृश्चिक राशि का स्वगृही होने से '**रुचक योग**' बना रहा है ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं एश्वर्यवान् होगा। मगल की यह स्थिति कुण्डली को '**मांगलिक**' बनायेगी। ऐसा जातक सिंह के समान पराक्रमी व स्वाभिमानी होता है ऐसा जातक सच्चाई एव सिद्धान्त के लिए लड़ता है कमजोरों की सहायता करता है। ऐसे जातक के स्वाभिमान का लोग उसका उग्र स्वभाव समझते हैं

दृष्टि—लग्नस्थ मगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (कुंभ राशि), सप्तम भाव (वृष राशि) एवं अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक की अपनी माता के साथ कम बनेगी। जातक के विवाह में विलम्ब होगा। जातक के शत्रु स्वत: ही नष्ट हो जायेंगे।

निशानी—ऐसे जातक का भाग्योदय 28 से 33 वर्ष की आयु के मध्य होता है। 'लोमेश सहिता' के अनुसार लग्नेश यदि लग्न मे हो तो ऐसा जातक एक साथ दो स्त्रियो से संबंध रखता है

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की विशेष उन्नति होगी तथा उसे भौतिक सुखों-ससाधनो की प्राप्ति होगी जातक का ऐश्वर्य बढ़ेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **मंगल+सूर्य**—मगल के साथ सूर्य जातक को पैतृक जमीन-जायदाद एव स्वय की

सम्पत्ति के संबंध में उत्तम लाभ देगा। जातक को शत्रुओं पर सदा विजय एवं राज दरबार में सदैव सफलता मिलेगी। यहां 'पद्मसिंहासन योग' भी बनेगा।

2. **मंगल+चंद्र**—यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। जहां मंगल स्वगृही होगा तथा चंद्रमा नीच राशि का होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। मंगल के कारण '**रुचक योग**' भी बनेगा। फलतः यहां '**महालक्ष्मी योग**' भलीभांति मुखरित हुआ है। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मकर राशि), सप्तम स्थान (मेष राशि) एवं अष्टम स्थान (वृष राशि) पर होगी। ये सभी राशियां इन ग्रहों की स्व एवं उच्च राशियां हैं। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा परंतु जातक विवाह के बाद धनी होगा। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का मान-मर्दन करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक के पास उत्तम वाहन, भवन एवं सभी सुख सुविधाएं होंगी।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध की युति '**कुलदीपक योग**' बनायेगी। जातक सोचेगा बहुत, व्यापार में लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बनायेगा। जातक आर्थिक रुप से सुदृढ़ होगा। पराक्रम के बहुत धन कमायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक स्वयं 'कुलदीपक' की तरह परिवार का नाम रोशन करेगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि यहां शुभफलदायक है। व्यक्ति यात्राओं के कारोबार से कमायेगा व्यक्ति पराक्रमी एवं सुखी होगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसा जातक निसंदेह लड़ाकू योद्धा होता है तथा कभी भी अपनी हार नहीं मानता। यहां बहुविवाह योग बनता है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु की युति जातक को कोर्ट-केस में विजय देगी।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में
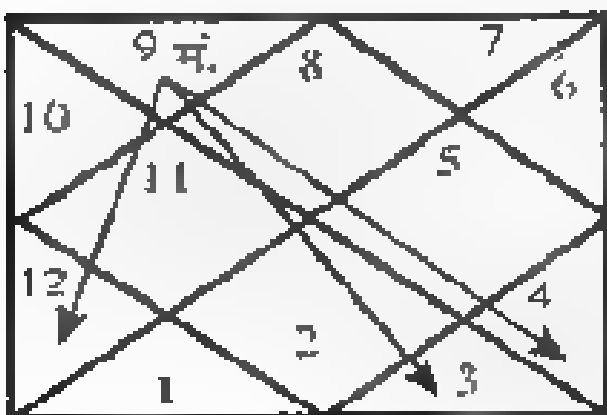
9 मं. 8 7 6 10 11 5 12 4 2 1 3

मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा यहां द्वितीय स्थान में मंगल धनु (मित्र) राशि में है

ऐसे जातक को परिश्रम का फल मिलेगा। जातक अपने परिश्रम से खूब धन कमायेगा उसे पत्नी द्वारा भी धन मिलेगा। जातक की वाणी कठोर एवं गंभीर अर्थवाली होगी 'लोमेश संहिता' के अनुसार षष्टेश यदि द्वितीय भाव में हो तो ऐसा जातक परदेश में जाकर सुख पाता है।

दृष्टि—द्वितीय भावगत मंगल की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि), अष्टम स्थान (मिथुन राशि) एवं भाग्यस्थान (कर्क राशि) पर होगी जातक विद्या, बुद्धि का उत्तम लाभ होगा। जातक दीर्घजीवी होगा। ऐसा जातक भाग्यवान होगा।

निशानी—जातक का जन्म बड़े कुटुम्ब-परिवार में होता है। ऐसे जातक से जो वाद-विवाद करता है, वह हार जाता है

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कराता है। व्यक्ति अपने पुरुषार्थ से बहुत कमाता है तथा पुश्तैनी धन भी होती है।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां द्वितीय स्थान में दोनों धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव (मीन राशि), अष्टम भाव (मिथुन राशि) एवं भाग्यभवन (कर्क राशि) को देखेंगे, फलतः जातक धनी होगा। सौभाग्यशाली होगा। अपने शत्रुओं का मान मर्दन करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के प्रजनन के बाद होगी।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध धन संग्रह में कठिनाई देगा। अष्टमेश व षष्टेश की युति धनस्थान में जातक की वाक्शक्ति को कुण्ठित करता है
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति 'शत्रुमूल धनयोग' बनायेगा। ऐसे जातक को शत्रु से धनलाभ होगा। मित्र भी हर समय मदद के लिए तैयार मिलेंगे
5. **मंगल+शुक्र** मंगल के साथ शुक्र जातक को विवाह के बाद धनी बनायेगा ससुराल का खानदान अच्छा होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि व्यक्ति को धनी व सुखी बनायेगा।
7. **मंगल+राहु** मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। यहां दत्तक पुत्र का योग बनाता है व्यक्ति को धनी व सुखी बनाने में यह युति बाधक है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु जहां धन संग्रह में बाधक है। वहां कुटुम्बी जनों में अकारण रंजिश भी कराता है।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में
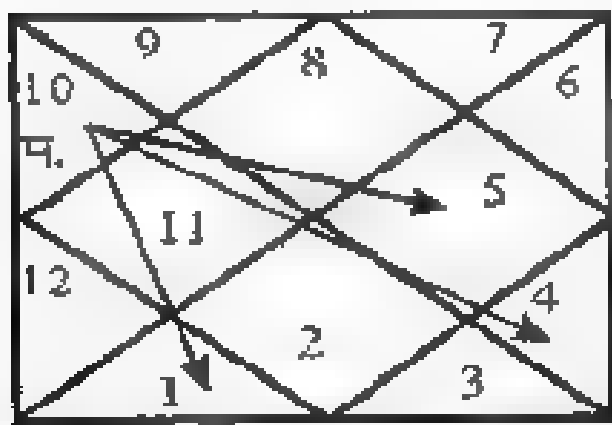
मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां तृतीय भाव मे मंगल उच्च का है। मकर राशि के 28 अशों में मगल परमोच्च का होता है। एसा जातक महान् पराक्रमी, साहसी शौर्यवान् एवं कर्त्तव्यपारायण होता है। जातक ऊर्जावान होगा। ऐसे जातक के दो भार्या होती है। तथा तीन भाईयों का योग होता है। जातक आप अकेला नहीं होता।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि षष्टम भाव (मेषराशि), भाग्य भवन (कर्क राशि) एवं दशम भाव (सिंह राशि) पर होगी जातक के शत्रुओं का नाश होगा। जातक भाग्यशाली होगा। उसे राजदरबार में मान सम्मान (प्रतिष्ठा) मिलेगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 6 के अनुसार यदि तीसरे स्थान में हो तो ऐसा मनुष्य बड़ा क्रोध करने वाला होता है। उसके नेत्र हरदम लाल रहते हैं। ऐसा व्यक्ति दूसरों से द्वेष रखता है।

दशा–मगल की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य व्यक्ति को महान् पराक्रमी बनाता है। पर जीवन में बहुत ऊंची सफलताओं को प्राप्त करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां तृतीय स्थान में दोनो ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर राशि मे मंगल उच्च का होगा। फलतः यहां '**महालक्ष्मी योग**' मुखरित हुआ है। यहा बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि षष्टमभाव (मेष राशि), भाग्यभवन (कर्क राशि) एवं दशम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक धनी होगा। अपने शत्रुओं का नाश करने मे सक्षम होगा जातक भाग्यशाली एवं महान् पराक्रमी होगा। जातक का सशक्त प्रभाव देश की राजनीति मे भी होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध व्यक्ति को चचल स्वभा का बनाता है। ऐसा जातक व्यापार प्रिय होता है।
4. **मंगल+गुरु**–मगल के साथ बृहस्पति होने से व्यक्ति बुजुर्गो द्वारा प्रदत्त धन की रक्षा करता है उसे बढाता है घटाता नहीं।

5. **मंगल+शुक्र**—मगल के साथ शुक्र शुभ है। ऐसे व्यक्ति का धन उसके भाईयो के काम आता है। जातक को स्त्री मित्रो से लाभ है

6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनाता है। जातक जीवन में विशेष उपलब्धियों की बुलन्दियों को छूयेगा।

7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा जातक के बड़े भाई नही होते। भाई की अकाल मृत्यु भी होगी।

8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु भाईयों में लड़ाई कराता रहेगा। इसका प्रभाव बेटो पर भी पड़ेगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में
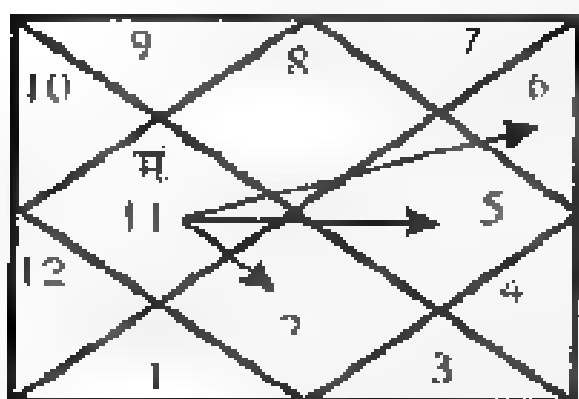
9 8 7 10 6 मं. 11 5 12 4 2 1 3

मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मगल यदि कुण्डली मे बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां चतुर्थ स्थान मे मंगल कुभ (सम) राशि में होकर कुण्डली 'मागलिक' बनायेगा ऐसे जातक की भाई-बहन व माता के साथ कम बनेगी विद्या विलम्ब से होगी। 'लोमेश सहिता' अध्याय 1/श्लोक 4 के अनुसार लग्नेश यदि चतुर्थ मे हो तोऐसा जातक माता-पिता की छात्र छाया में आगे बढ़ता है। उसके अनेक भाई-बहन होते हैं उसे सरकारी नौकरी प्राप्त करने के अवसर मिलेगे।

दृष्टि—चतुर्थ स्थानगत मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि) दसम भाव (सिह राशि) एव एकादश भाव (कन्या राशि) पर होगी। विवाह मे विलम्ब होगा। रोजी-रोजगार की प्राप्ति विलम्ब से होगी। बड़े भाई का लाभ नहीं होगा।

निशानी—ऐसे जातक पुराने वाहन खरीदेगे एव पुराने मकान में रहेंगे

दशा—मगल की दशा अतर्दशा मे रोग, ऋण व शत्रुओं से सघर्ष रहेगा। मानसिक परेशानियां रहेगी

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **मंगल+सूर्य** मगल के साथ सूर्य 'पद्मसिंहासन योग' बनायेगा। जातक को माता पिता का सुख मिलेगा। जातक स्वय कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ, उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

2. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान मे दोनों कुभ राशि में होंगे। मंगल यहां **'दिग्बली'** होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा। व्यापार-व्यवसाय में अच्छा धन कमायेगा। ऐसा जातक विवाह के बाद आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक ऊचाइयो को स्पर्श करेगा।

3. **मंगल+बुध**–मगल के साथ बुध **'कुलदीपक योग'** बनायेगा। ऐसा व्यक्ति किसी का बुरा नहीं चाहता पर दूसरें लोग उसका बुरा जरुर चाहेंगे। जातक क्षमाशील होगा।

4. **मगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति होने से व्यक्ति के घर के लोगों की गिनती में कमी नहीं आयेगी। व्यक्ति कुल का नाम रोशन करेगा। धनी होगा।

5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र व्यक्ति के ननिहाल पर बुरा असर डालता है। जातक की पत्नी का स्वास्थ्य खराब रहता है। जातक कुलदीपक की तरह परिवार का नाम रोशन करेगा।

6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि 'शश योग' बनायेगा। जातक राजा के समान बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा पर सम्पत्ति मे विवाद रहेगा।

7. **मंगल+राहु**–मगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। जातक का निवास स्थान दोषपूर्ण होगा। घर में पिशाच बाधा संभव है।

8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु होने से जातक कठिनाइयों से घिरा रहेगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
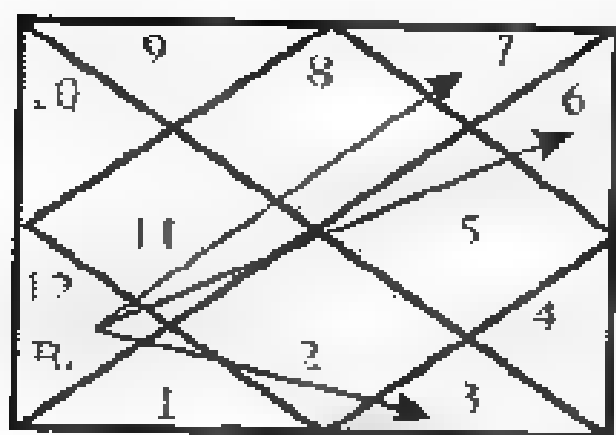
9 8 7 10 6 11 5 12 म. 4 2 1 3

मगल यहां लग्नेश एव षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां पचम स्थान में मंगल मीन (मित्र) राशि में है. ऐसे जातक की विद्या, बुद्धि, तर्क शक्ति तेज रहेगी। जातक को पुत्र लाभ होगा। सतानसुख उत्तम पर सतान संबंधी चिंता जरुर रहेगी। मगल अपनी राशि (मेष) से बारहवें होने के कारण भाईयों से कम बनेगी परन्तु उस व्यक्ति के सड़क चलते बहुत से मित्र होते हैं

दृष्टि–पंचम भावगत मंगल की दृष्टि अष्टम स्थान (मिथुन राशि), लाभ भाव (कन्या राशि) एवं द्वादश भाव (तुला राशि) पर है। जातक दीर्घजीवी होगा। व्यापार मे लाभ रहेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी जातक को तीन या पांच पुत्र होंगे। 'लोमेश संहिता' अध्याय 1/श्लोक 5 के अनुसार लग्नेश यदि पाचवें हो तो जातक के सबसे बड़ी संतान की मृत्यु उसकी आखों के सामने हो जाती है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य 'पद्मसिंहासन योग' बनाता है। जातक मध्यम परिवार में जन्म लेकर भी शिक्षा व अध्यात्मक के क्षेत्र में ऊंची उपलब्धियां को प्राप्त करेगा। जातक के अनेक पुत्र होंगे पर एक पुत्र अत्यन्त तेजस्वी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां अष्टम भाव (मिथुन राशि), लाभ स्थान (कन्या राशि) एवं व्यय भाव (तुला राशि) पर होगी। इस 'लक्ष्मीयोग' के कारण जातक धनवान होगा। जातक लम्बी उम्र वाला होगा व्यापार-व्यवसाय व नौकरी से यथेष्ट धन अर्जित करेगा। साथ ही चंद्रमा व्ययशील प्रवृति, खर्चीले स्वभावत का परोपकारी व दानी होगा
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ यहां नीच का बुध कई बार शिक्षा अधूरी छुड़ा देता है। जातक के निर्णय कई बार गलत हो जाता है।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ स्वगृही बृहस्पति पांच पुत्रों का योग देता है। ऐसे जातक को दूसरों से दान या भेंट नहीं लेना चाहिए अपितु समय समय पर दूसरों को दान व भेंट देने से जातक का भाग्य दिन दुना रात चौगुना खिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ उच्च का शुक्र व्यक्ति को कामी बनायेगा। जातक कला संगीत, अभिनय का प्रेमी होता है। विद्या के क्षेत्र में जातक आगे बढ़ेगा इंजीनियर होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को उन्नति देगा। प्रथम पुत्र उत्पन्न के साथ ही जातक का भाग्य खिलने लगेगा
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा स्त्री को ऋतु संबंधी रोग होगा। गर्भपात की संभावना भी रहेगी।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु विद्या व संतान मे रुकावट देगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में

मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नही लगेगा मंगल यदि कुण्डली मे बलवान हो तो शुभ
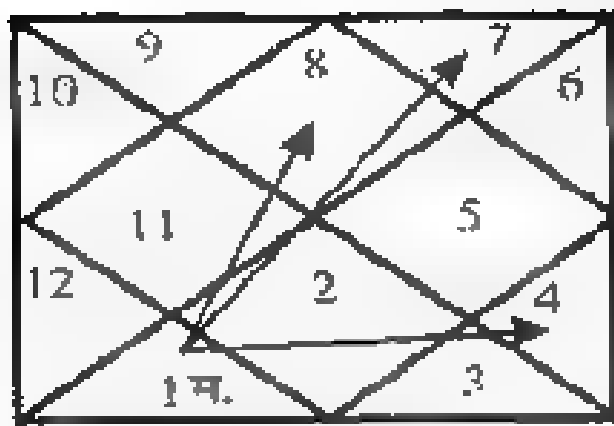
फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। षष्टम स्थान में मंगल स्वगृही होगा। मगल की इस स्थिति से '**लग्नभंग योग**' बना। षष्टेश छठे स्थान में स्वगृही होने से 'हर्षनामक विपरीत रायजोग' भी बना। ऐसे जातक कुशल योद्धा होते हैं इन्हें शत्रुओं का भय नहीं रहता। जातक धनी होगा। उसके एक साथ दो स्त्रियों से संबंध होगा।

दृष्टि–षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य भवन (कर्क राशि), व्यय भाव (तुला राशि) एवं लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होगा। आवक व खर्च बराबर रहेगा। जातक अपने कठोर परिश्रम से भाग्य की रेखाओं को बदलने की सामर्थ्य रखेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 1 के अनुसार छठे भाव का स्वामी यदि छठे हो तो ऐसा मनुष्य अपनी जाति, स्वजन में शत्रु जैसा व्यवहार करता है, परन्तु अन्य जाति से मित्रता रखता है।

दशा–मंगल की दशा–अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मगल के साथ सूर्य '**राजभग योग**' बनायेगा। जातक की कीर्ति नष्ट होगी। परन्तु '**किम्बहुना नामक राजयोग**' के कारण राजा के सम्मान जरूर मिलेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां षष्टम स्थान से दोनो ग्रह मेषराशि में होंगे। मंगल यह स्वगृही होगा। चद्रमा खड्डे मे जाने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल खड्डे में गिरने से '**लग्नभंग योग**' भी बनता है। परन्तु षष्टेश का षष्टम भाव में स्वगृही होने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होती है जो मंगल की ऊर्जा को सकारात्मक बल देती है। फलतः ऐसा जातक धनी होगा। दोनो ग्रहों की दृष्टि भाग्यभवन (कर्क राशि), व्ययभाव (तुला राशि) एवं लग्नभाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जिससे जातक भाग्यशाली होगा। खर्चीले स्वभाव का होगा और जो कार्य हाथ में लेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी।
3. **मंगल+बुध**–मगल के साथ बुध 'सरल नामक **विपरीत राजयोग**' बनायेगा जातक धनी होगा। ऐश्वर्यशाली होगा.
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति हो तो ऐसा व्यक्ति खुद ही बड़ा भाई होता है। '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' के कारण आर्थिक विषमताएं आयेगी। सतान विलम्ब से होगें

5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनाता है जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगी। प्रेम में बदनामी होगी।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि '**पराक्रमभग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक के मित्र दगेबाज होंगे। जातक को पेट की बीमारियां होंगी।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक को शारीरिक सुख कमजोर रहेगा। रक्त विकार संभव है। ऐसा व्यक्ति अपने शत्रुओं को पराजित करके ही दम लेता है।
8. **मगल+केतु**—मंगल के साथ केतु के गुप्त शत्रु बढ़ायेगा जिसका असर भाई व बेटों पर भी होगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में
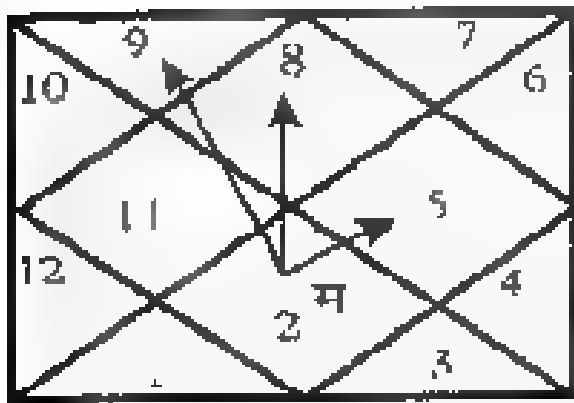
9	8	7
10		6
11		5
12	2 म	4
1		3

मगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। सप्तम स्थान में मंगल वृष (सम) राशि में है। फलतः यह कुण्डली 'मागलिक' एवं 'लग्नाधिपति योग' वाली बनी जातक का विवाह विलम्ब से हो पर गृहस्थ सुखों की समृद्धि होगी। जातक कामी होगा यौन ऊर्जा तेज रहेगी। जातक का अन्य स्त्रियो से संबध होगी।

दृष्टि—सप्तमस्थान पर स्थित मगल की दृष्टि दशम भाव (सिह राशि), लग्न भाव (वृश्चिक राशि) एव धन भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक का राज सरकार में वर्चस्व होगा। जातक धनी हागा एवं परिश्रम का पूरा पूरा लाभ मिलेगा

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 6 के अनुसार लग्नेश यदि सातवें हो तो उस जातक की पत्नी जातक के सामने ही मर जाती है और जातक विरक्त हो जाता है।

दशा—मंगल की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य गृहस्थ सुख में कमी कराता है। जातक की पत्नी गुस्सैल होगी।
2. **मगल+चंद्र**—यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह वृषराशि में होगे। चंद्रमा वृष राशि में उच्च का होगा। फलतः यहा '**महालक्ष्मी योग**' बनेगा एवं '**यामिनीनाथ**

योग' भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (सिंह राशि), लग्नभाव (वृश्चिक राशि) एवं धनभाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक महाधनी होगा। राज्य (सरकार) राजनीति में उसका दबदबा होगा। जो भी कार्य हाथ में लेगा, उसमें बराबर सफलता मिलेगा जातक समाज का धनी-मानी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध '**कुलदीपक योग**' बनाता है। पर जातक अपनी पत्नी के साथ खटपट रहेगी क्योंकि यहां सप्तम भाव में षष्टेश व अष्टमेश की युति होगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति उत्तम गृहस्थी का सुख देगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा। जातक कुलदीपक होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व मौज-शौक वाला होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि यहां 'मांगलिक दोष' को दूना करेगा जातक धनवान होगा। ससुराल पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक का विवाह देरी से होता है। विवाह प्रायः दो होते हैं पहली स्त्री से नहीं निभने के कारण दूसरा विवाह होता है।
8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु विवाह सुख मे बाधक है। जातक की भागीदारों के साथ नहीं बनेगी।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में
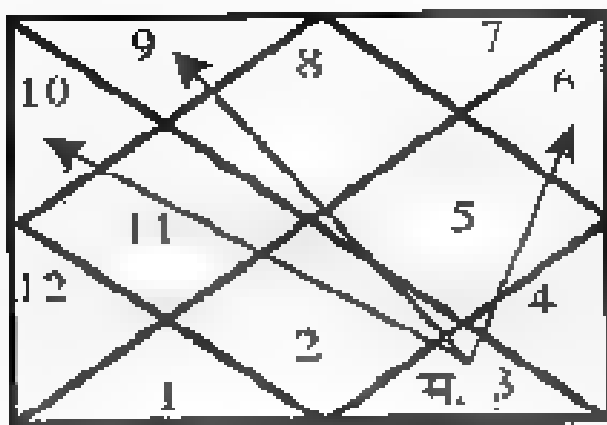
मगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां अष्टम स्थान में मंगल मिथुन (शत्रु) राशि में है। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली 'मांगलिक' बनी। यहां '**लग्नभंग योग**' एवं 'हर्षनामक **विपरीत राजयोग**' भी बना। ऐसा जातक धनी होगा। उसे अचानक धन, यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। भौतिक सुखों की प्राप्ति थोड़े संघर्ष के बाद होगी। ऐसा जातक तंत्र विद्या का जानकार व तांत्रिक होता है।

दृष्टि—अष्टम भावगत मंगल की दृष्टि एकादश भाव (कन्या राशि), धन भाव (धनु राशि) एवं पराक्रम भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को व्यापार में लाभ होगा। जातक धनवान होगा एवं पराक्रमी होगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 3 के अनुसार छठे भाव का स्वामी आठवें हो तो मनुष्य सदैव बीमार रहने वाला एवं दूसरों की भार्या से गमन करने वाला होता है।

दशा—मंगल की दशा-अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' करायेगा। जातक को सरकारी कर्मचारी तंग करेंगे।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां अष्टम स्थान में दोनों मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां लाभस्थान (कन्या राशि) धन स्थान (धनु राशि) एवं पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होकर अष्टम में होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल के अष्टम में जाने से '**लग्नभंग योग**' बनता है परन्तु षष्टेश का अष्टमभाव में जाने से '**हर्ष नामक विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होने से मंगल को सकारात्मक ऊर्जा का बल मिला है। फलतः ऐसे जातक धनवान होगा, व्यापार व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। जातक महान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक को धनी बनायेगा, परन्तु मामा का पक्ष कमजोर रहेगा, धन का अभाव रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनाता है। ऐसे जातक को आर्थिक विषमता के साथ सुयोग्य पुत्र
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करेगा। जातक को दाम्पत्य सुख विलम्ब (देरी) से मिलेगा। जातक को गुप्त रोग होंगे।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' व '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्षशील रहेगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। जादू रसायन के पीछे सम्पत्ति नष्ट करता है। आयु मध्यम होती है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु जातक को गुस्सैल बनाता है। इसका प्रभाव जातक के पुत्र एवं भाई पर भी होगा।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में
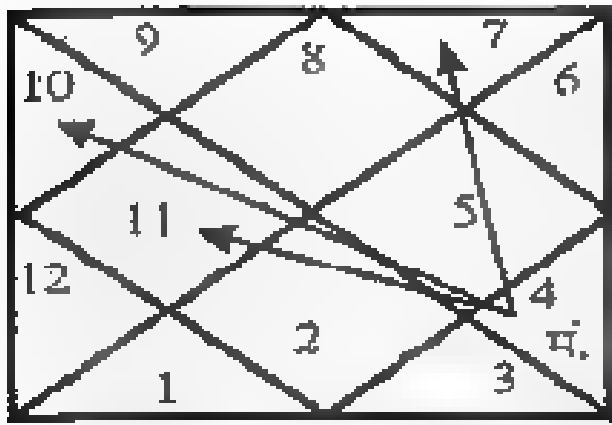
9	8	7	6
10	11	5	4 मं.
12	1	2	3

मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहा मगल नवम स्थान में नीच का है। कर्कराशि के 20 अशाके में मंगल परमनीच का कहलायेगा। लग्नेश मंगल का भाग्य स्थान में होने से जातक का भाग्य 28 वर्ष के बाद उन्नति मार्ग की ओर प्रशस्त होगा। जातक को माता-पिता, भाई-बहन, स्त्री-सतान का सुख होता है। जातक को समाज में मान सम्मान, पद-प्रतिष्ठा व यश की प्राप्ति होती है।

दृष्टि—नवम भावगत मंगल की दृष्टि द्वादश भाव (तुला राशि), पराक्रम भाव (मकर राशि) एव चतुर्थ भाव (कुभ राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। प्रबल पराक्रमी होगा एवं जातक के पास उत्तम वाहन होगे।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 1/श्लोक 8 के अनुसार लग्नेश यदि नवमें स्थान में हो तो जातक भाग्यवानएवं जनवल्लभ होता है। वह चतुर वक्ता होता है। अन्न-धन, वैभव से परिपूर्ण होता है।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। भाग्योदय का अवसर प्रदान करेगी।

मगल का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य 'पद्मसिंहासन योग' बनायेगा। ऐसा जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ राजा के पास उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहा नवम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। यहां चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच राशि का होने के से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। फलत: **'महालक्ष्मी योग'** मुखरित होगा यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (तुला राशि), पराक्रम भाव (मकर राशि) एवं चतुर्थ भाव (कुभ राशि) को देखेंगे। फलत: जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा। जातक खुले दिल से धन खर्च करने वाला परोपकारी व दानी होगा। उसके कुटुम्बी एवं मित्रजन उसके प्रत्येक कार्य में जातक का साथ देंगे, सहयोग करेंगे।

3. **मंगल+बुध** मगल के साथ बुध जातक को कुण्ठित व चालक बुद्धिवाला बनायेगा। जातक को व्यापार में लाभ होगा।

4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति यहां '**नीचभंग राजयोग**' करायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व धनवान होगा।

5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा। जातक की पत्नी का स्वास्थ्य नरम रहेगा।

6. **मंगल+शनि**—मगल के साथ शनि वाला व्यक्ति अच्छे,परिवार में जन्म लेता है। जातक द्वारा निरन्तर यज्ञ या धार्मिक अनुष्ठान करने से किस्मत चमकेगी।

7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा ऐसे जातक को बड़े भाई-बहनों का सुख नहीं। भाग्योदय में बाधा रहती है

8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु संघर्ष के साथ भाग्योदय कराता है ऐसा व्यक्ति मूलत: झगड़ालू होता है।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में
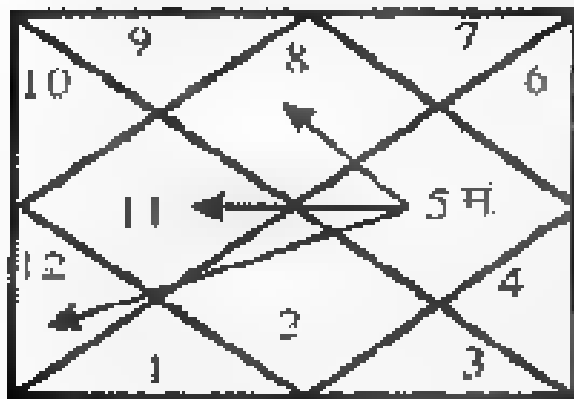
9 8 7 6 10 11 5 मं. 12 4 2 1 3

मंगल यहां लग्नेश एव षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा मगल यदि कुण्डली में बलबान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां दशम स्थान में मगल सिंह (मित्र) राशि में होकर 'दिक्बली' होकर '**कुलदीपक योग**' बनायेगा ऐसे जातक को धन सम्पत्ति, नौकरी व्यवसाय से उन्नति, समाज-जाति में मान सम्मान की प्राप्ति होगी। एक अन्य मत के अनुसार षष्टेश यदि दशवें स्थान में हो तो जातक परदेश जातक उत्तम धन व यश कमाता है सुखी होता है.

दृष्टि—दशमस्थ मगल की दृष्टि लग्न भाव (वृश्चिक राशि) चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) एवं पचम भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। जातक के पास भरपूर भूमि एवं वाहन सुख होगा। विद्या एवं संतान सुख उत्तम मिलेगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 1/श्लोक 4 के अनुसार लग्नेश यदि दसवें हो तो ऐसा जातक माता-पिता की छत्र-छाया में आगे बढ़ता है। उसे भाई बहन का सुख होता है तथा सरकारी नौकरी प्राप्त करने के अवसर भी उसे मिलते हैं।

दशा—मगल की दशा-अंतर्दशा से जातक की अपूर्व उन्नति होगी

मंगल का अन्य ग्रहों से सबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य '**रविकृत राजयोग**' एवं '**पद्मसिंहासन योग**' के कारण जातक को राज-सरकार में ऊंचा पद दिलायेगा। जातक अपने व्यापार-व्यवसाय में ऊंचाईयों तक पहुंचेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। मंगल यहां '**दिक्बली**' होगा एवं '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि), चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) एवं पचंम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनी होगा। भौतिक सुख उपलब्धियों से परिपूर्ण जीवन जीयेगा। ऐसा जातक जो कार्य हाथ में लेगा, उसमें बराबर सफलता मिलेगी। जातक विद्यावान होगा ऐसे जातक का आर्थिक व सामाजिक विकास प्रथम पुत्र प्रजनन के पश्चात् होता है।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक की शक्ति का अपव्यय गलत कार्यो में करायेगा। फिर भी जातक कुल का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
4. **मंगल+गुरु** -मंगल के साथ बृहस्पति जातक को विद्यावान बनायेगा। जातक धनी होगा '**कुलदीपक योग**' एवं '**केसरी योग**' के कारण जीवन में कोई भी काम रुका हुआ नहीं रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा। जातक की पत्नी अभिमानी होगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से जातक के पास जमीन-जायदाद बहुत होगी। जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु '**अंगारक योग**' बनाता है। ऐसा जातक लड़ाकू व उद्दण्ड होगा। सरकार से बाधा संभव है
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु होने से जातक को समाज में ऊचा स्थान प्राप्त करने हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को पुत्र प्राप्ति देरी से होगी।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में
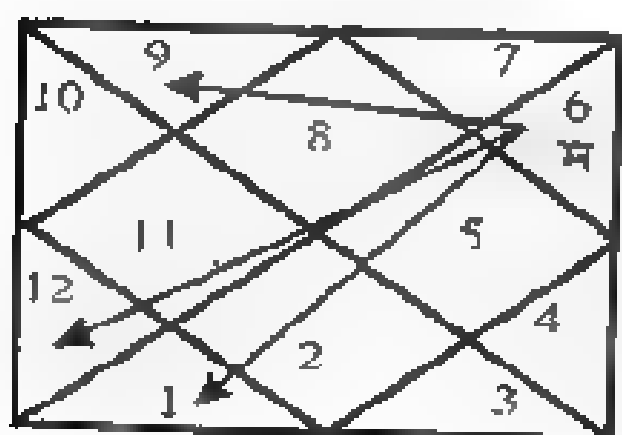
9 7 10 8 6 मं 11 5 12 4 2 1 3

मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। यहां एकादश स्थान में मंगल कन्या (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक को धन पद, प्रतिष्ठा,

जमीन-जायदाद, ठेकेदारी व्यवसाय से लाभ होता है। लग्नेश एकादश में हो तो मनुष्य परिश्रम में रत रहने वाला होता है। पुरुषार्थी होता है तथा पुरुषार्थ से धन कमाता है।

दृष्टि—एकादश भावगत मंगल की दृष्टि धनभाव (धनु राशि), पंचम भाव (मीन राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक विविध स्रोतों से धन कमायेगा। उसे टैक्नीकल विद्या की प्राप्ति होगी जातक रोग व शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में सफल होगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 1/श्लोक 2 के अनुसार ऐसा जातक कीर्तिवान्, गुणवान् धनवान, स्वाभिमानी व साहसी होता है पर उसे पुत्र सुख में न्यूनता रहेगी।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को उत्तम जायदाद देगा जातक उद्योगपति होगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा यहां बैठकर दोनों ग्रह धनभाव (धनु राशि), पंचम भाव (मीन राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) को देखेंगे फलतः 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा, जातक की आर्थिक व सामाजिक उन्नति प्रथम संतति प्रजनन के पश्चात होगी।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध उच्च का होकर जातक को व्यापार-व्यवसाय में भारी लाभ दिलायेगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति जातक को परिश्रम का पूरा लाभ देगा। जातक का पिता या भाई यदि जातक के साथ हो तो जातक करोड़ों में खेलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र नीच का शुक्र जातक को व्यापार में उन्नति दिलायेगा। पत्नी की भागीदारी व्यापार में शुभ रहेगी।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि होने से जातक के आमदनी के स्रोत अच्छे रहेंगे। मित्र मदद के लिए तैयार खड़े मिलेंगे
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होता, व्यापार में नुकसान होता है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु व्यापार में संघर्ष रहेगा। जातक को पुत्र के विषय में चिंता लगी रहेगी।

वृश्चिकलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में
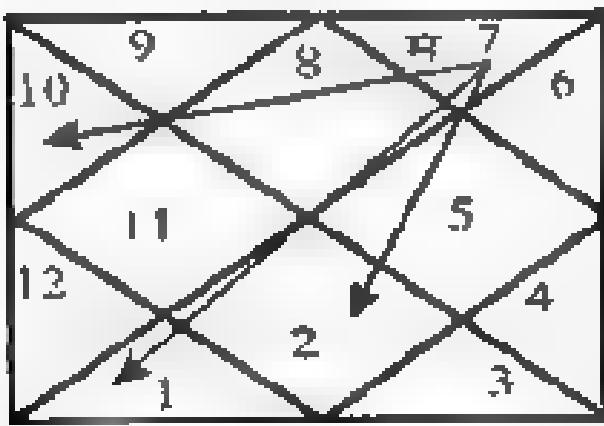
मंगल यहां लग्नेश एवं षष्टेश है। मंगल यह लग्नेश होते हुए भी पापी है पर उसे षष्टेश का दोष नहीं लगेगा। मंगल यदि कुण्डली में बलवान हो तो शुभ फल देगा अन्यथा अशुभ फल देगा। द्वादश स्थान में मंगल तुला (सम) राशि में है। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली 'मांगलिक' होकर '**लग्नभंग योग**' बनायेगी। षष्टेश मंगल द्वादश में होने से 'हर्षनामक **विपरीत राजयोग**' भी बनता। ऐसा जातक धनी-मानी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। ऐसा जातक तांत्रिक होता है। मंत्र तंत्र विद्या का जानकार एवं हिंसक स्वभाव का होता है।

दृष्टि–द्वादशस्थानगत मंगल की दृष्टि पराक्रम भाव (मकर राशि), सप्तम भाव (मेष राशि) एवं सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। उसके दाम्पत्य-जीवन में कटुता रहेगी। जातक पराक्रमी होगा पर पीठ पीछे निन्दा बहुत होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 6/श्लोक 2 के अनुसार षष्टेश यदि बारहवें स्थान पर हो तो मनुष्य सदैव बीमार रहता है तथा विद्वानों में ईर्ष्या रखता है।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य नीच का होकर '**राजभंग योग**' बनायेगा। ऐसा व्यक्ति क्रोधी होता है तथा क्रोध से अपना ही काम बिगाड़ता है।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह, पराक्रम स्थान (मकर राशि), षष्टम स्थान (मेष राशि) एवं सप्तम स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। चंद्रमा द्वादश में होने से '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। मंगल द्वादश में होने से '**लग्नभंग योग**' बनता है परन्तु षष्टेश का द्वादश स्थान में जाने से 'हर्षनामक **विपरीत राजयोग**' की सृष्टि होती है। जिससे मंगल में सकारात्मक ऊर्जा बढ़ जती है। ऐसा जातक धनी होता है। ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होता है। ऐसे जातक की आर्थिक विकास विवाह के बाद होता है। जातक यात्राओं में एवं व्यक्तिगत मौज-शौक में अधिक व्यय करेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक को धनी मानी बनायेगा। पर ऐसा जातक अक्सर जल्दबाजी में गलत निर्णय लेकर

बाद में पछताता है

4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति होने से जातक परिवार बढ़ेगा। परन्तु **'धनहीन योग'** के कारण अर्थाभाव रहेगा। ऐसा जातक जिसको भी आशीर्वाद देगा, फलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र **'विलम्ब विवाह योग'** बनायेगा। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा। जातक का धन शुभ कार्यों में खर्च होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि उच्च का होकर अच्छा फल देगा। जातक की शक्ति को सकारात्मक मोड़ देगा। जातक धनी व दानी होगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु 'अंगारक योग' बनायेगा। ऐसे जातक को स्त्री सुख नहीं मिलता। रक्त, पित्त, कोढ़, विष बाधा की संभावना रहती है
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु होने से व्यक्ति अपने जीवन में बहुत से शत्रु पैदा कर लेगा। खर्च अधिक करेगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
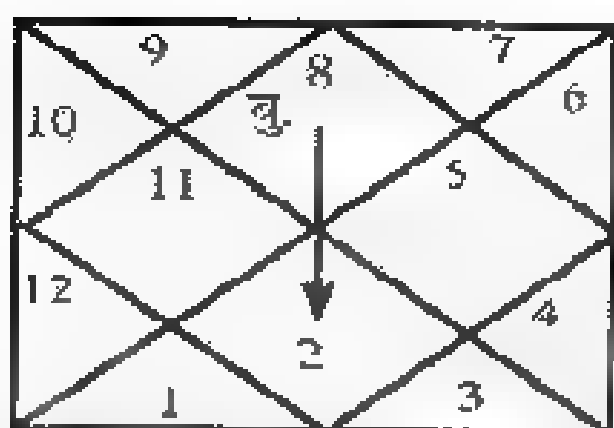
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है. फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है, अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहा प्रथम स्थान मे बुध वृश्चिक (मित्र) राशि में है। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना बुध की यह स्थिति स्वास्थ्य, बुद्धि, विद्या व आयु में वृद्धिकारक है। ऐसा जातक कुशाग्र बुद्धि वाला होता है तथा अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव पर होने से ऐसे जातक का जीवनसाथी बुद्धिमान व सुन्दर होता है। जातक की पत्नी वफादार होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 1 के अनुसार यदि लग्न स्थान में हो तो ऐसा जातक महामहोपदेशक, कौतुहलपूर्ण व अचम्भे में डालने वाली वाणी बोलता है।

दशा–बुध की दशा अंतर्दशा में जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। प्रथम में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध केन्द्र में होने से **'कुलदीपक योग'** बनेगा। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। राज्य में प्रभाव रखने वाला व्यक्ति होगा। अपने कुटुम्ब परिवार

का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा उसका भाग्योदय विवाह के बाद शीघ्र होगा।

2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा नीच का जातक के सोच को कुलषित करेगा पर जातक भाग्यशाली होगा। व्यापार व जलीय वस्तुओं से कमायेगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल '**रुचक योग**', '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।

4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को पुरुषार्थ के द्वारा महाधनी व्यक्ति बनायेगा.

5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक का शीघ्र विवाह करायेगा। जातक धनी व सुखी व्यक्ति होगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से जातक पराक्रमी, सुखी एवं साधन-सम्पन्न व्यक्ति होगा

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसे जातक खुद को होशियार एवं दूसरो को महामूर्ख समझता है। ऐसे जातक को अपने व्यक्तित्व विकास हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक का उग्र स्वभाव का किंतु शत्रुजेयी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में

9 बु. 8 7 6 10 11 5 2 4 1 2 3
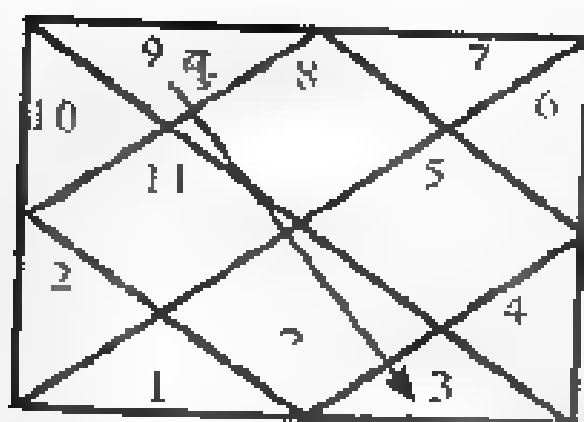
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां द्वितीय स्थान में बुध धनु (मित्र) राशि में है। ऐसा जातक वाक्यपटु होगा। सभ्य व शिष्ट वाणी बोलेगा। जातक धनी होगा। धन-संतान, स्त्री-पुत्र का सुख उसे मिलेगा। ऐसे जातक का धन व्यापार से बढ़ेगा।

दृष्टि–द्वितीय भावगत बुध की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) अपने ही घर पर होगी। फलतः जातक दीर्घजीवी होगा। उसके गुप्त गुण एव रहस्यमय बुद्धि के कारण जातक समाज में प्रशंसित व्यक्ति होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 5 के अनुसार ऐसा जातक सदैव तीर्थयात्रा के लिए तत्पर रहता है। परन्तु उसे शूल का दर्द सदैव रहेगा।

दशा–बुध की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी। जातक धनवान होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से संबध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। द्वितीय स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनो ग्रह अष्टम स्थान को पूर्ण दृष्ट से देखेंगे। अष्टम स्थान बुध का स्वयं का घर है। फलतः जात बुद्धिशाली होगा। व्यापार प्रिय होगा। व्यापार में काफी धन कमायेगा। आमदनी के जरिए दो तीन प्रकार के होंगे। जातक का समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक में रोग से लड़ने की शक्ति रहेगी एवं वह दीर्घजीवी होगा।
2. **बुध+चन्द्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को महाधनी बनायेगा। जातक की वाणी विनम्र एवं मिष्ट होगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को परिश्रमी बनायेगा। ऐसा जातक कठोर परिश्रम के द्वारा अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करता हैं
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को व्यापार के द्वारा धनी बनाता है। जातक उच्च विद्या प्राप्त करेगा
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को विवाह के बाद धनी बनायेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को पराक्रमी व सुखी व्यक्ति बनायेगा। मित्रों से धन की प्राप्ति होगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। ऐसे जातक को आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु धन संग्रह में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में
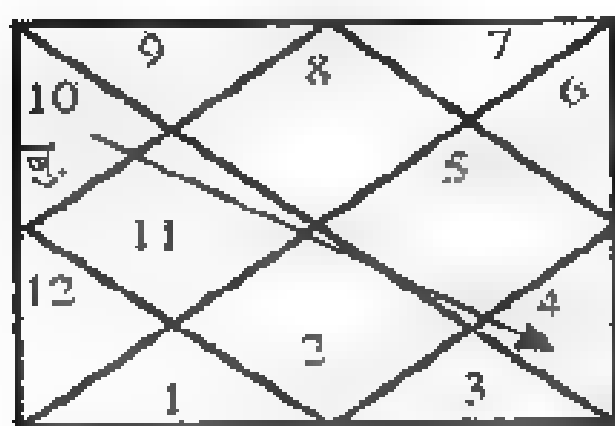
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। बुध यहां तृतीय स्थान में मकर (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को भाई-बहन, माता-पिता का पूर्ण सुख मिलता है। जातक का जनसम्पर्क सघन होगा एव जातक पराक्रमी होता है।

दृष्टि–तृतीयभावगत बुध की दृष्टि भाग्य स्थान (कर्क राशि) पर होगी ऐसे

जातक भाग्योदय शीघ्र होता है। जातक को नौकरी-व्यवसाय से उत्तम धन की प्राप्ति होती है

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 5 के अनुसार लाभेश यदि तृतीय स्थान में हो तो मनुष्य सदैव तीर्थयात्रा के लिए तत्पर रहता है। पर उसे शूल (सिर दर्द) का रोग रहेगा

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। तृतीय स्थान में मकरराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्यस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा फलतः जातक बुद्धिशाली, भाग्यशाली एवं महान् व्यक्ति होगा। उसका भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा को भाई-बहनों से लाभ दिलायेगा। जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल उच्च का होकर जातक को पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि करेगा जातक को भाई-बहनों का पूर्ण सुख होगा।
4. **बुध+गुरु** बुध के साथ बृहस्पति होने से जातक को व्यापार में अद्वितीय लाभ मिलेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक को बहनें अधिक होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि स्वगृही होगा। जातक के मित्र एवं परिजन सच्चे मददगार साबित होंगे।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग** बनादेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। जातक को भाईयो का सुख नहीं होगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को अद्वितीय कीर्ति देगा

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में

वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां चतुर्थ स्थान
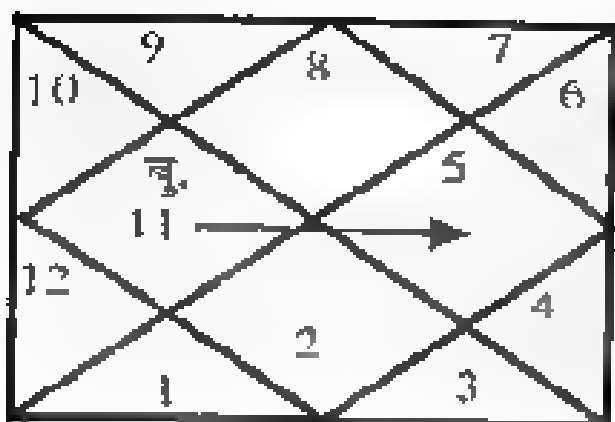
में बुध कुंभ (मित्र) राशि में है। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। ऐसे जातक को माता-पिता, जमीन-जायदाद, वाहन, मकान एवं भूमि सुख की प्राप्ति होती है। जातक अपने परिवार कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–चतुर्थभावगत बुध की दृष्टि दशम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। ऐसे जात को राजकीय अथवा व्यवसायिक क्षेत्र में सुख-सम्मान व सफलता की प्राप्ति होती है

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 4 के अनुसार लाभेश यदि चौथे स्थान में हो तो मनुष्य अनेक प्रकार से सुखी होता है। उसके पुत्र भी होते हैं जातक ईश्वर मे विश्वास रखने वाला आस्तिक बुद्धि का व्यक्ति होता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में भौतिक सुखो की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। चतुर्थ स्थान में कुंभराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बना। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि राज्य स्थान (दशम भाव) पर रहेगी। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। माता-पिता के सुख से युक्त होगा मां की सम्पत्ति मिलेगी, इसके लिए चंद्रमा की स्थिति भी देखनी होगी पर वाहन सुख, उत्तम मकान का सुख जातक को अवश्य मिलेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चद्रमा माता का सुख एव सम्पत्ति का लाभ मिलेगा जातक के पास अच्छे वाहन होगे।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मगल होने से जातक को भाईयों का सुख मिलेगा। परिश्रम का लाभ होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। जातक उच्च शिक्षित होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र पत्नी सुन्दर देगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि 'शश योग' बनायेगा जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरो को महामूर्ख समझता है जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा।

8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु वाहन दुर्घटना देगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में
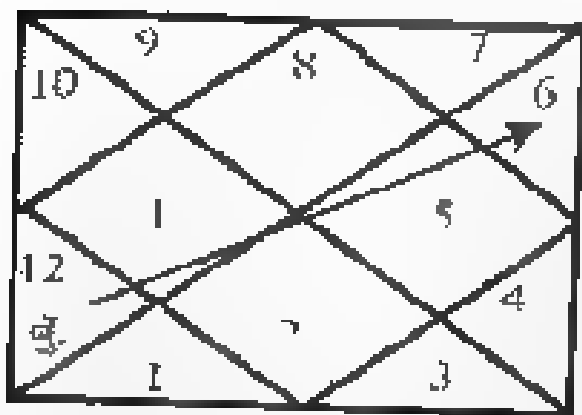
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहा पंचम स्थान में बुध नीच का है। मीन राशि के 15 अंशों में बुध परमनीच का हो जाता है ऐसे जातक को उच्च शैक्षणिका उपाधि एवं प्रतियोगी परीक्षाओ में सफलता मिलती है पर उससे जातक संतुष्ट नहीं होता। व्यापार में लाभ मिलता है। हाथ में लिए गये कार्य में सफलता मिलती है पर मानसिक असतोष रहता है।

दृष्टि—पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश स्थान अपने ही घर कन्या राशि पर होगी। ऐसे जातक को धन सम्पत्ति का बहुत लाभ होता है।

निशानी—'लाभेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 4 के अनुसार लाभेश यदि पांचवें स्थान में हो तो मनुष्य अनेक प्रकार से सुखी होता है उसे पुत्र सुख भी उत्तम होता है। जातक धार्मिक एवं ईश्वरीय शक्ति में विश्वास रखने वाला होता है

दशा—बुध की दशा- अतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को विद्या सुख मिलेगा। ज्ञानार्जन होगा। व्यापार में लाभ एवं गृहस्थ जीवन में सतान सुख मिलेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा पंचम स्थान में मीन नराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी, जहां बैठकर दोनो ग्रह लाभस्थान को देखेंगे। फलत. ऐसा जातक बुद्धिशाली होगा, शिक्षित होगा उसकी सतति भी शिक्षित होगी। जातक को पुत्र व कन्या दोनो सतति की प्राप्ति होगी जातक ज्योतिष, तत्र व गूढ़ रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा जातक धनवान होगा एवं समाज के लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्तियों में अग्रगण्य होगा।

2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा उत्तम सतति का सुख देगा। जातक की कल्पना शक्ति तीव्र होगी। विद्या में थोड़ा संघर्ष रहेगा, पर डिग्री मिलेगी।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मगल प्रथम संतति को नष्ट करेगा। जातक टैक्नीकल व्यक्ति होगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं बुद्धिशाली व सुखी होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एव ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि जातक का पराक्रम बढ़ायेगा। भौतिक सुख संसाधनों की वृद्धि करेगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनाता है। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। विद्या व संतान में निश्चित रुप से बाधा आयेगी।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु विद्या अधूरी देगी।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में

9 8 7 6 10 11 5 12 4 2 1 बु 3
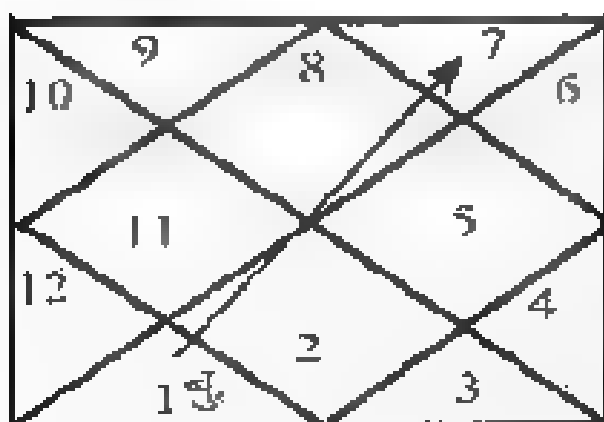
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहा अशुभफल ही देगा। यहा छठे स्थान में बुध मेष का है। बुध के कारण जहां '**लाभभंग योग**' बना वही अष्टमेश छठे जाने से 'सरल नामक **विपरीत राजयोग**' भी बना। ऐसा जातक धनी मानी व अभिमानी होगा। उसे सभी भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होती है। परन्तु जातक ऋण, रोग व शत्रु से परेशान रहता है।

दृष्टि—षष्टम भावगत बुध की दृष्टि व्ययभाव (तुला राशि) पर होगी ऐसा जातक खर्चील स्वभाव का होता है। गुप्त बीमारी को लेकर कोर्ट कचहरी इत्यादि में जातक का पैसा खर्च होगा।

निशानी—'लोमेश सहिता' अध्याय 11/श्लोक 6 के अनुसार ऐसा जातक परदेश रहने वाला, नौकरी पेशा से उदरपूर्ति करने वाला एवं सुखी होता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **बुध+सूर्य** 'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। छठे स्थान में मेषराशिगत यह युति वस्तु दशमेश सूर्य को अष्टमेश+लाभेश बुध क

साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहा उच्च का होगा। जहा बैठकर दोनों ग्रह व्यय स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिशाली होगा। धनवान होगा परन्तु सूर्य छठे जाने से '**राज्यभंग योग**' तथा बुध छठे जाने से '**लाभभंग योग**' बना अत: जातक को व्यापार से धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। सरकारी नौकरी के अवसर कम मिलेंगे अथवा सरकार द्वारा मिलने वाला लाभ अटक जायेगा। अष्टमेश का छठे जाने से '**सरल योग**' बनेगा। जातक दीर्घजीवी होगा एवं जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा

2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक के भाग्योदय में रुकावटें आयेगी
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल '**विपरीत राजयोग**' के साथ जातक को धनी, मानी, स्वाभिमानी बनायेगा। जातक के गुप्त शत्रु होंगे।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एव '**संतति हीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक सकटों का सामना करना पड़ेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक को गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार दूसरों को महामुर्ख समझता है। जातक शत्रुओं का मान-मर्दन करने में सक्षम होगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु उदार विकार एव पेट सबंधित रोग देगा

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में

9	8	7
10		6
11		5
12		4
1	2 बु	3
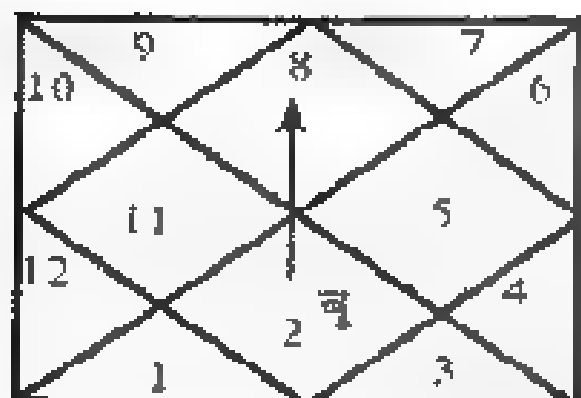
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है, फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां सप्तम स्थान में बुध वृष राशि में है। बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बन रहा है। ऐसा जातक सुन्दर, आकर्षक, व्यवहार कुशल सभ्य एव शिष्टाचार युक्त होता है। जातक की पत्नी सुन्दर होती है। जातक स्वय खुशमिजाजी एव प्रतिभासम्पन्न होता है। तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के सामन रोशन करता है

दृष्टि—सप्तमभावगत बुध की दृष्टि लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी ऐसा जातक परिश्रमी होता है तथा उसे परिश्रम का मीठा फल भी मिलता है

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 7 के अनुसार यदि लाभेश सातवें स्थान पर हो तो उस जातक का स्त्री की मृत्यु के सामने होती है। जातक विद्वान होते हुए मुर्ख जैसा व्यवहार करता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। सातवें स्थान पर वृषराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। धनवान होगा। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक को अल्प प्रयत्न से बहु-लाभ होगा। ऐसा जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा। बुध केन्द्रवर्ती होने के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नामक दीपक के समान रोशन करेगा।
2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ उच्च का चंद्रमा **'यामिनीनाथ योग'** बनायेगा। जातक का सौभाग्यशाली होगा। पत्नी रुप की रानी होगी
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल विवाह में विलम्ब करायेगा। परन्तु पत्नी से तकरार भी कराता रहेगा
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति होने से जातक विवाह के बाद धनी होगा। पुत्र की प्राप्ति के बाद और अधिक धनी होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि जातक को पराक्रमी एवं सुख संसाधनों से परिपूर्ण जीवन देगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। जातक के पत्नी की मृत्यु पहले होगी।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु सुख को विवादित करेगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में

9	8	7
10		6
11		5
12		4
1	2	बु. 3
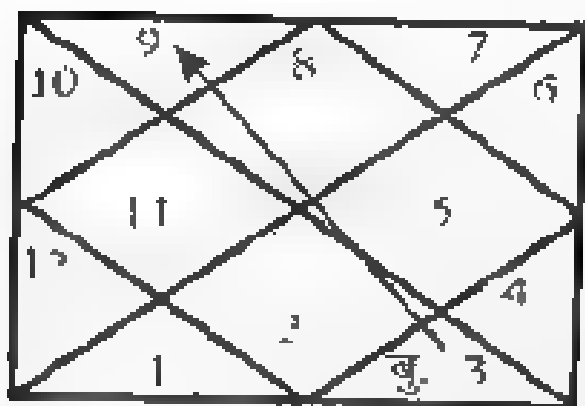
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहा अष्टम स्थान में बुध मिथुन राशि का स्वगृही होगा। बुध इस स्थिति से जहां **'लाभभंग योग'** बना। वही अष्टमेश अष्टम मे स्वगृही होने से 'सरल नामक **विपरीत राजयोग** भी बना। ऐसा जातक धनी-मानी होगा। उसे भौतिक सुख-सुविधाएं सहज में प्राप्त होगी। व्यापार में लाभ होगा। पर जीवन मे उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

दृष्टि–अष्टम भावगत बुध की दृष्टि धन स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक का धन शुभ कार्यों में खर्च होगा जातक व्यापार द्वारा धन अर्जित करेगा

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 7 के अनुसार लाभेश यदि आठवें हो तो ऐसे जातक के स्त्री की मृत्यु उसके सामने हो जाती है। ऐसा जातक विद्वान् होते हुए भी मूर्खवत् आचरण करता है।

दशा–बुध की दशा-अतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न मे सूर्य दशमेश है। आठवें स्थान में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी सूर्य आठवें होने से **'राजभंग योग'** तथा बुध आठवें होने से **'लाभभंग योग'** बना परन्तु अष्टम स्थान मे स्वगृही होने से **'सरल योग'** बना फलत: यह योग यहा मिले-जुले फल देगा. जातक बुद्धिमान होगा धनवान होगा। **'सरल योग'** के कारण दीर्घजीवी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु सघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र** बुध के साथ चद्रमा **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। व्यापार में घाटा एव गुप्त बीमारी से परेशानी रहेगी।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मगल **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं 'संतान हीन योग' बनायेगा. जातक धन व संतान को लेकर चिंतित रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र **'विलम्ब विवाह योग'** करायेगा। जातक को दाम्पत्य समरसता का सुख नहीं मिलेगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'सुखभंग योग'** बनायेगा। जातक को पीछे पीछे निन्दा होगी।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है ऐसे जातक को गुप्त रोग होगा। मधुमेह होगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा। स्वास्थ्य में गिरावट एवं मध्यम आयु देगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में
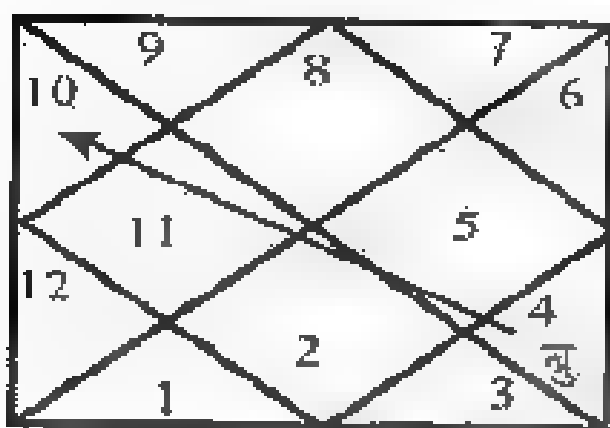
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है, फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां नवम स्थान मे बुध कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। जातक को जाति–समाज व राजनीति में उच्च पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक धनी व यशस्वी होगा।

दृष्टि–नवम भावगत बुध की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा भाई–बहन, मित्रों से लाभान्वित होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 8 के अनुसार 'लाभेशे दशमे धर्मे राज्यपूजो धनाधिपः' ऐसा मनुष्य राजा से सम्मान पाने वाला। बड़ा अधिकारी, सेनापति, कोषाध्यक्ष व धनाधित होता है।

दशा–बुध की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी। जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलगन में सूर्य दशमेश होगा। नवम स्थान में कर्कराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान होगा, भाग्यशाली होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को परिजनों, मित्रो की मदद समय-समय पर मिलती रहेगी। जातक समाज का लब्ध–प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा जातक का भाग्योदय शीघ्र करायेगा जातक व्यापार द्वारा विपुल धन आर्जित करेगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मगल जातक पुरुषार्थ परिश्रम का लाभ देगा। भाईयों का सुख देगा।

4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। जातक विद्यावान् एवं पुत्रवान होगा।

5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र विवाह के बाद भाग्योदय करायेगा जातक व्यापार द्वारा धर्नाजन करेगा।

6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि मित्रों से धन दिलायेगा। जातक को धन यश व प्रतिष्ठा मिलेगी।

7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। भग्योदय राहु जड़त्व बुद्धि के कारण रुकावट देगा।

8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु भाग्योदय हेतु हल्का सघर्ष करायेगा। फिर सफलता देगा

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में
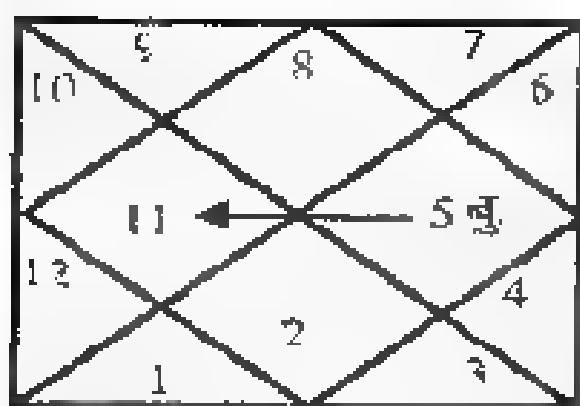
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहा अशुभफल ही देगा। यहा दशम स्थान में बुध यहां सिंह राशि में है। बुध उच्चाभिलाषी है तथा यहां '**कुलदीपक योग**' की सृष्टि कर रहा है। ऐसे जातक को उच्च विद्या, बुद्धि बल से लाभ, समाज में यश, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। पिता का सुख मध्यम। जातक के स्वयं का मकान अवश्य होगा। खुद का व्यापार भी होगा।

दृष्टि—दशमभावगत बुध की दृष्टि चतुर्थ स्थान (कुंभराशि) पर होगी। जातक को उत्तम वाहन का सुख मिलेगा

निशानी—'लोमश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 8 के अनुसार लाभेश यदि दशम भाव में स्थित हो तो ऐसा व्यक्ति राजा से सम्मान पाने वाला, बड़ा अधिकारी, सेनपति, कोषाध्यक्ष व धनाधिप होता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। धन की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा दशम स्थान में सिंहराशिगत यह युति वस्तुत: दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा तथा '**रविकृत राजयोग**' की सृष्टि करेगा। बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बना। बहुत उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्वकांक्षी होगा। फलत: ऐसा जातक बुद्धि बल से धन कमाने वाला, राज्य (सरकार) में ऊंचा पद, प्रतिष्ठा पाने वाला, घर का दो मंजिला मकान एक से अधिक वाहनों का धनी होगा। जातक का पराक्रम तेज होगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को राजनीति में लाभ व पद दिलायेगा। कोर्ट कचहरी में विजय होगी
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को एक से अधिक वाहन देगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। जातक अध्ययन-अध्यापन व आध्यात्मिक लाईन में रुचि रखेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक के विवाह के बाद समाज में ऊंचा पद व प्रतिष्ठा दिलायेगा। व्यापार से लाभ होगा
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को 'करोड़पति' बनायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। राज्य से दण्ड संभव है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु राज-दरबार में पराजय एवं कोर्ट कचहरी में हार दिलायेगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में

9 8 7 10 6 बु. 11 5 12 4 2 1 3
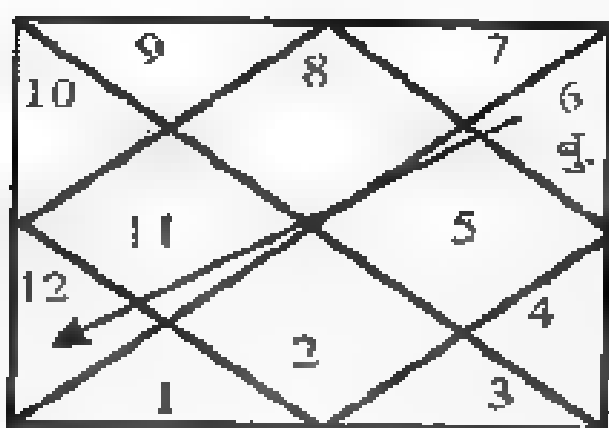
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है। फलत: परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अत: बुध यहां अशुभफल ही देगा। एकादश स्थान में बुध उच्च का है। कन्या राशि के 15 अंशों में बुध परमोच्च का कहलाता है। ऐसे जातक को उच्च पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। धन-सम्पत्ति, स्वास्थ्य, आयु की वृद्धि होगी जातक का दिमाग कम्प्यूटर की तरह तेज होगा।

दृष्टि—एकादश भावगत बुध की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को उत्तम शिक्षा व उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 1 के अनुसार लाभेश यदि लाभस्थान में हो तो जातक प्रखर वक्ता होता है। कवित्व शक्ति से परिपूर्ण, प्लानिंग मास्टर होता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को उत्तम व्यापार व्यवसाय की प्राप्ति होगी। जातक धनी होगा। बुध की दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। एकादश स्थान में कन्याराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर बुध उच्च का होगा। दशमेश एवं बलवान लाभेश की यहां युति राजयोग कारक है। जातक बुद्धिमान एवं महा-धनवान व्यक्ति होगा। जातक उद्योगपति होगा। भाग्यशाली होगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। ऐसा जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।
2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा जातक को बड़ा उद्योगपति बनायेगा। पर व्यापार में संघर्ष भी कराता रहेगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि जातक को सुख-संसाधनों से परिपूर्ण जीवन देगा। मित्र लोग मदद में तैयार खड़े मिलेंगे.
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु **'जड़त्व योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। ऐसे जातक को चलते व्यापार व उद्योग को एक बार बन्द करना पड़ता है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु जातक को व्यापार में परेशानी देगा।

वृश्चिकलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में

9	8	बु 7	6
10	11	5	4
12	2	1	3
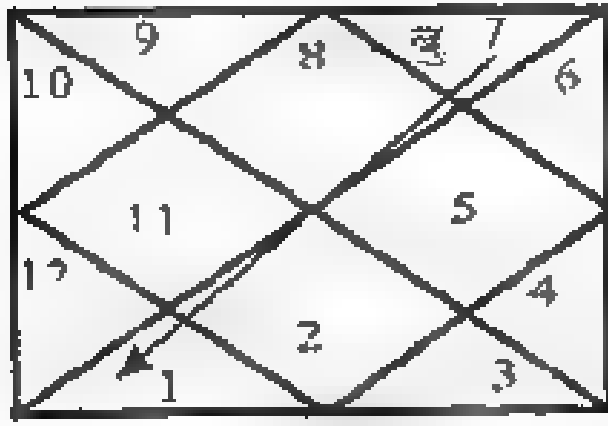
वृश्चिकलग्न में बुध अष्टमेश व लाभेश है फलतः परमपापी है। बुध लग्नेश मंगल से शत्रुभाव रखता है। अतः बुध यहां अशुभफल ही देगा। यहां द्वादश स्थान में बुध तुला (मित्र) राशि में है। बुध की इस स्थिति से '**लाभभंग योग**' बना। सही षष्टमेश तरीके बुध द्वादश स्थान में होने से '**सरल नामक विपरीत राजयोग**' भी बना। ऐसा जातक धनी, मानी होगा। उसे धन-सम्पत्ति, जमीन जायदाद, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है पर वांछित यश नहीं मिलेगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत बुध की दृष्टि छठे स्थान (मेष राशि) पर होगी। ऐसे जातक के गुप्त व प्रकट शत्रु बहुत होंगे।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 11/श्लोक 2 के अनुसार लाभेश व्यय भाव में हो तो व्यक्ति म्लेच्छ या नीच जाति के साथ रहने वाला, बड़ा कामी एवं अनेक स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सूर्य दशमेश होगा। द्वादश स्थान में तुलाराशिगत यह युति वस्तुतः दशमेश सूर्य की अष्टमेश+लाभेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर सूर्य नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य के बारहवें जाने से '**राजभंग योग**' बनेगा तथा बुध बारहवें होने से '**लग्नभंग योग**' बनेगा। अष्टमेश के बारहवें जाने से '**सरल योग**' भी बनता है फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। '**सरल योग**' के कारण वह दीर्घजीवी होगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठि एवं गणमान्य व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' बनाता है। जातक का भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मगल '**लग्नभंग योग**' बनाता है जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनाता है। जातक को आर्थिक परेशानी व दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करायेगा। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं **सुखहीन योग**' बनाता है। जातक की पीठ पीछे निन्दा व बुराई होगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु '**जड़त्व योग**' बनायेगा। ऐसा जातक खुद को होशियार और दूसरों को महामूर्ख समझता है। जातक को यात्रा में भय मिलेगा। बुरे सपने आयेंगे।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु आध्यात्म में रुचि देगा। धार्मिक यात्राएं होगी।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति प्रथम स्थान में
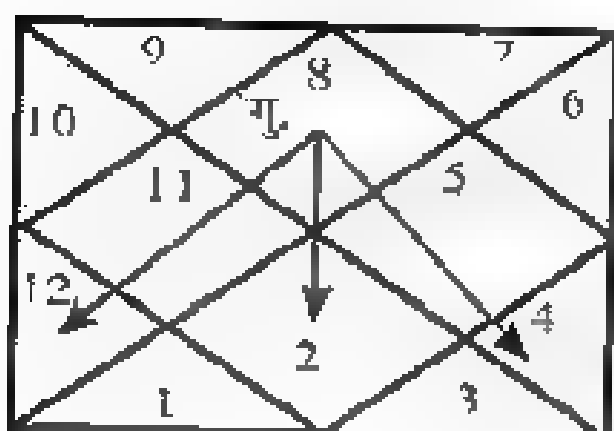
वृश्चिकलग्न मे बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। प्रथम स्थान में बृहस्पति वृश्चिक (मित्र) राशि में है बृहस्पति के कारण **'केसरी योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** बना। ऐसा जातक स्वस्थ शरीर एवं दीर्घायु वाला होता है। व्यक्तित्व आकर्षक, वाणी में आत्मीयता का मिठास होता है। जातक आध्यात्मक जीवन मे रुचि रखता है पुरानी मान्यताओं एव ईश्वर के प्रति विश्वास रखता है। जातक धनवान होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि), सप्तम स्थान (वृष राशि) एव भाग्य भाव (कर्क राशि) पर होगी जातक को संतान सुख श्रेष्ठ, पत्नी सुख श्रेष्ठ एवं भाग्य का सुख श्रेष्ठ होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 7 के अनुसार पंचमेश यदि लग्न मे हो तो व्यक्ति चुगलखोर तो होता ही है साथ में बड़ा भारी कंजूस, कृपण, मक्खीचूस होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मे उन्नति होगी, पुत्र संतान एवं धन की प्राप्ति होगी। मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को जबरदस्त राजयोग देगा, ऐसा जातक धनी होगा। उसका राजनीति में प्रभाव होगा।

2. **बृहस्पति+चंद्र**—वृश्चिकलग्न के प्रथम भाव में यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है जो पूर्णतः शुभफलदायक है चंद्रमा यहां नीच का होगा। पर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव, सप्तम भाव एवं नवम भाव पर होगी। फलतः जातक विद्यावान होगी। पत्नी सुन्दर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक की गिनती सफल एवं भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी।

3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल '**रुचक योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली व्यक्ति होगा

4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध होने से जातक को विद्या लाभ होगा उसको उत्तम पुत्र संतान की प्राप्ति होगी

5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को सुन्दर, सुशील व सभ्य जीवन साथी देगा।

6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि जातक को पराक्रम, उसके पुरुषार्थ से बढ़ेगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख-सुविधाएं सहज में प्राप्त होगी

7. **बृहस्पति+राहु**—यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में है। बृहस्पति यहां नीच राशि में है तो राहु नीच राशि में होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' एवं '**केसरी योग**' बना रहा है। ऐसा जातक जिद्दी हठी व लड़ाकू होगा। फिर भी एक सफल राजनीतिज्ञ व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु जातक को उन्नति में संघर्ष देगा पर एक कामयाब व्यक्ति बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वितीय स्थान में

9 गु, 8, 7, 6, 10, 5, 11, 12, 4, 3, 1, 2
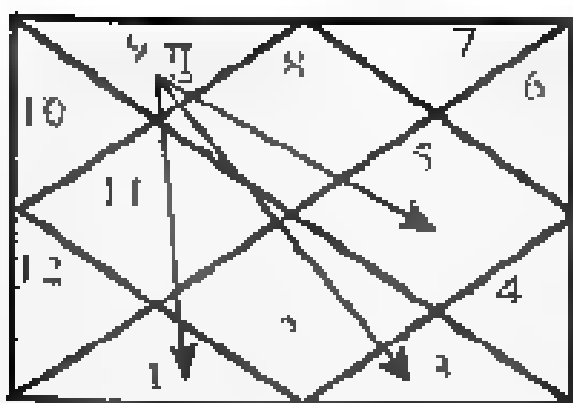
वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है यह शुभ फल ही देगा बृहस्पति द्वितीय स्थान में स्वगृही होगा। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब-परिजनों का विशेष प्रेमी होता है। मिष्टभाषी, सभ्य एवं हितकारी वचन बोलता है। व्यक्ति धनवान होता है ऐसा जातक सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक जिम्मेदारियों का पालन बखूबी से करता है

दृष्टि–द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (मेष राशि), अष्टम स्थान (सिंह राशि) एवं दशम स्थान (सिह राशि) पर होगी। जातक के शत्रु नष्ट होते हैं। जातक दीर्घजीवी होता है तथा राज्य (सरकार) से मान-सम्मान प्राप्त करता है

निशानी–'लोनेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 4 के अनुसार पचमेश यदि द्वितीय स्थान में हो तो व्यक्ति धनवान तो होता है पर उसके बहुत सी लड़कियां होगी।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन की प्राप्ति होगी। राजकीय सम्मान, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को महाधनी बनायेगा। जातक आध्यात्मिक शक्ति से सम्पन्न, तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा। **'राजमूल धनयोग'** के कारण जातक को सरकार से पैसा मिलेगा।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न के धनुराशि के अतर्गत द्वितीयभाव में हो रही यह युति, वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पचमेश बृहस्पति के साथ युति है बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा इसकी दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एव राज्य (दसवें) स्थान पर होगी। फलत: आप ऋण-रोग एवं शत्रु से बचे रहेंगे, आपका भाग्योदय शीघ्र होगा, आपको उच्च शैक्षणिक डिग्री भी प्राप्त होगी तथा आपकी आयु भी लंबी होगी। यह योग आपके लिए अत्यंत शुभफलदायक है।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक भूमि का अधिपति, गावं का मुखिया बनेगा। जातक अपनी मेहनत से आगे बढ़ेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को विनम्र एवं धार्मिकता से ओतप्रोत वाणी एवं धन देगा। जातक शत्रुओं से भी पैसा कमायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि होने से **'मातृमूल धनयोग'** एवं 'मित्रमूल धनयोग' बनेगा। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। भाईयों एव मित्रों से भी धन मिलेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में है। बृहस्पति यहां स्वगृही तो राहु अपनी नीचराशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। ऐसे व्यक्ति धनवान होगा, पुत्रवान होगा। परन्तु धन जितनी तेजी से आयेगा, उतनी तेजी से खर्च होता चला जायेगा। जातक को संतति सबधी चिता रहेगी।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु धनसंग्रह में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति तृतीय स्थान में
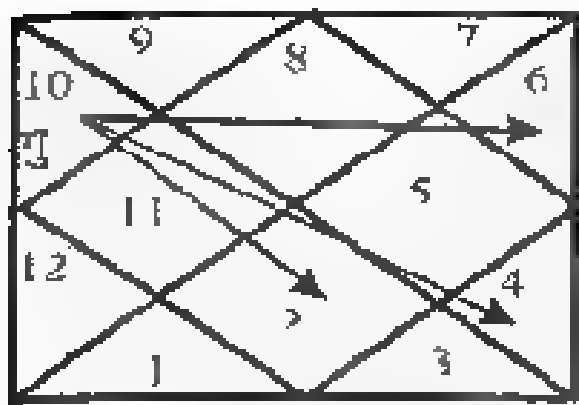
वृश्चिकलग्न मे बृहस्पति धनेश एव पचमेश है बृहस्पति पचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नही लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। यहा तृतीय स्थान में बृहस्पति नीच का होगा। मकरराशि के पांच अंशों मे परमनीच का होगा। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। उसे समाज में पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी जातक ऐश्वर्य सम्पन्न होगा, प्रभावशाली होगा जातक यशस्वी होगा। परिजनों का प्रिय होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि), नवम भाव (कर्क राशि) एव एकादश स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक का गृहस्थ जीवन उत्तम होगा। जातक भाग्यशाली होगा, उसे धन व पद की प्राप्ति होगी। जातक धनी होगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 7 के अनुसार पंचमेश यदि तृतीय स्थान में हो तो व्यक्ति चुगलखोर तो होता ही है साथ में बड़ा भारी कंजूस, कृपण, मक्खीचूस होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी। जातक उन्नति करायेगी। उसे गृहस्थ सुख देगी। जातक का रोजी-रोजगार एव भाग्य उन्नति के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **बृहस्पति+सूर्य**—बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा जातक को छोटे भाई का सुख नहीं होता।
2. **बृहस्पति+चंद्र**—वृश्चिकलग्न में तृतीय भाव मे मकर राशि मे बृहस्पति+चद्र की युति हो रही है यह युति वस्तुतः भाग्येश चद्रमा की धनेश+पचमेश बृहस्पति के साथ युति है। तृतीय स्थान में बृहस्पति नीच का होगा। इसकी दृष्टि छठे स्थान, आठवें स्थान एव दशम भाव पर होगी, फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा आपकी आयु दीर्घ होगी। आप अपने शत्रुओं का नाश करने मे सक्षम रहेंगे। राज्य (सरकार) कोर्ट-कचहरी मे भी जातक को विजय मिलेगी। जातक की गिनती योग्य एव सफल व्यक्तियों में होगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मगल उच्च का जातक को प्रबल पराक्रमी बनायेगा। जातक अपने शत्रुओं के लिए जबरदस्त आतंकवादी व्यक्ति होगा 'नीचभंग योग' के कारण जातक राजा के समान वैभवशाली होगा।

4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध जातक को भाई बहनों का सुख देगा। समाज में प्रतिष्ठा देगा

5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र व्यक्ति को ससुराल या पत्नी से धन व सम्मान दिलाता रहेगा।

6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

7. **बृहस्पति+राहु**—यहां दोनों ग्रह मकर राशि में हैं। बृहस्पति यहां नीच का तो राहु सम राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। परन्तु सगे भाई बहन, रिश्तेदारों से कम पटेंगे। मित्र ठीक जरूरत के वक्त पर धोखा देंगे।

8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु जातक को जाति, समाज व मित्रों में कीर्ति दिलायेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति चतुर्थ स्थान में
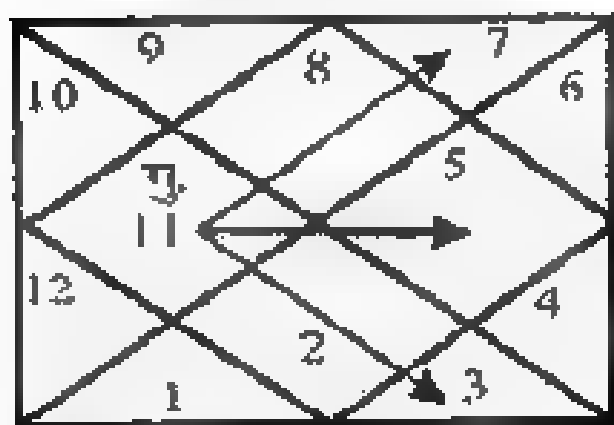
वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। चतुर्थ स्थान में बृहस्पति कुंभ (सम) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'केसरी योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** बना रहा है। जातक को जीवन में सभी सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक को माता-पिता का सुख मिलेगा। जातक पैतृक मकान में रहेगा। जातक का निजी वाहन होगा।

दृष्टि—चतुर्थभावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम स्थान (मिथुन राशि), दशम भाव (सिंह राशि) एवं द्वादश भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक दीर्घजीवी होगा। राज्य सरकार में ऊंचा पद मिलेगा। जातक परोपकारी होगा। शुभ कार्यों में धन का खर्च होगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 8 के अनुसार पंचमेश यदि चतुर्थ स्थान में हो तो जातक को मातृसुख बहुत समय तक मिलता है। जातक धनवान तो होगा पर राज्य संबंध में उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में भौतिक सुख, संसाधनों की वृद्धि होगी। नौकरी-रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे बृहस्पति की दशा शुभ जायेगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य** - बृहस्पति के साथ सूर्य पिता की सम्पत्ति दिलायेगा। जातक के पास पुश्तैनी जायदाद के अलावा खुद का पुरुषार्थ से बनाया हुआ बड़ा मकान भी होगा।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न के चतुर्थ भावगत कुंभराशि में यह युति हो रही है यह वस्तुतः भाग्येश चद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। चतुर्थ भाव मे ये दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर अष्टम स्थान, दशम भाव एवं व्ययभाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक दीर्घायु होगा। उसका दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा राज्यपक्ष (कोर्ट कचहरी) में विजय मिलेगा शुभ खर्च जातक के हाथ से होगा। जिससे जातक को यश मिलेगा।
3. **बृहस्पति+मगल**–बृहस्पति के साथ मगल जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुविधाए, भूमि, भवन एव वाहन सुखों में वृद्धि करायेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध व्यापार से लाभ है। एव जातक को पूर्ण विद्या Educational Degree दिलायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र विवाह से धन, पत्नी से धन लाभ करायेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि '**शशयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एव वैभवशाली होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहा दोनों ग्रह कुभ राशि में है। बृहस्पति यहा समराशि में है तो राहु मूलत्रिकोण राशि मे स्वगृही होने से '**चाण्डाल योग**' बना, बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' '**केसरी योग**' बना। ऐसे जातक को माता पिता का सुख कमजोर होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु भौतिक सुख-सुविधाओं में बाधक का कार्य करेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति पंचम स्थान में

9
8
7
10
6
11
5
12
गु.
2
4
3
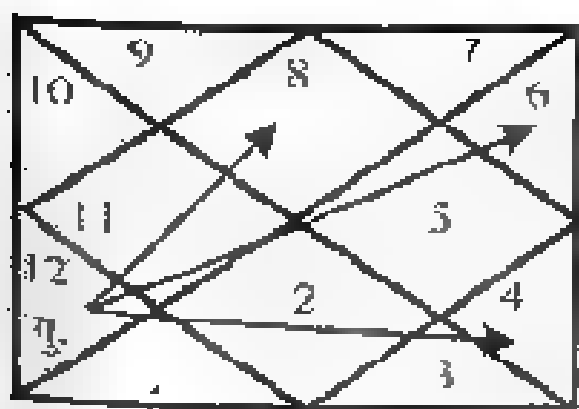
वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एव पंचमेश है बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। यहां पंचम स्थान में बृहस्पति स्वगृही होगा ऐसा जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। जातक

भाग्यवान्, धार्मिक व यशस्वी होता है। उसे उच्च पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। वैसे तो जातक के पांच पुत्र होने चाहिए पर 'जातक पारिजात अध्याय 13/श्लोक 30 के अनुसार वृश्चिकलग्न में स्वगृही बृहस्पति अल्प संतति देगा। परन्तु तुला लग्न में कुंभ का बृहस्पति पंचम में हो तो संतति होगी ही नहीं।

दृष्टि–पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्यभवन (कर्क राशि), लाभ स्थान (कन्या राशि) एवं लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा, उसे व्यापार में लाभ होगा तथा परिश्रम का मीठा फल भी मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 1 के अनुसार–सुतेश: पंचमे यस्य, तस्य पुत्रों न जीवति:, सुतेश स्वयं पंचम स्थान में स्वगृही हो तो उसका प्रथम पुत्र जीवित नही रहता, उसके सामने ही मर जाता है।

दशा–बृहस्पति की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक बृहस्पति की की दशा में धन कमायेगा। पद प्रतिष्ठा, सामाजिक व राजनैतिक महत्व बृहस्पति की दशा में बढ़ेगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य **'राजमूल धनयोग'** बना रहा है। जातक को सरकार में ऊंची नौकरी-पद मिलेगा। सरकार से धन मिलेगा। पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न में पंचम भाव से युति मीनराशि में रही है। यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। यह शुभफलकारी है। क्योंकि बृहस्पति यहा स्वगृही होकर भाग्यस्थान, लाभस्थान एवं लग्नस्थान को देख रहा है। फलत: आपका भाग्योदय शीघ्र होगा। व्यापार में आपको लाभ होगा तथा विशेष प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण रहेंगे। आपके व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास इस चंद्र+बृहस्पति के कारण होगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'शत्रुमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को शत्रु से रुपया मिलेगा। जमीन से रुपया मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को व्यापार से धन दिलायेगा संतान से धन दिलायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'मातृमूल धनयोग'** एवं **'भातृमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को माता की सम्पत्ति विरासत मे मिलेगी। भाईयों एव मित्रों से धन मिलेगा।

7 **बृहस्पति+राहु**–यहा दोनों ग्रह मीन राशि मे हैं। बृहस्पति यहा स्वगृही होगा तथा राहु अपनी नीच राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। जातक को पाच पुत्रों का योग बनता है परन्तु राहु पुत्र सुख तोड़ेगा। जातक धनवान होगा। विद्यावान होगा। परन्तु राहु विद्या का सही लाभ नहीं होने देगा।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु सतान उत्पत्ति में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति षष्टम स्थान में
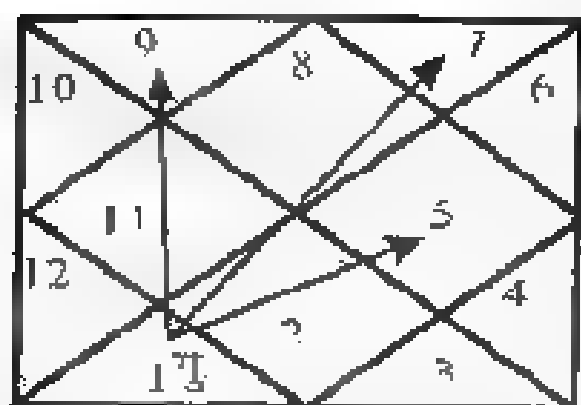
वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। यहा छठे स्थान में बृहस्पति मेष (मित्र) राशि में है। बृहस्पति के कारण '**धनहीन योग**' एव '**संतानहीन योग**' की सृष्टि हुई। ऐसे व्यक्ति ऊर्जावान होते है पर महत्वकाक्षाओ व सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति भारी संघर्ष के बाद होती हैं धन सबधी चिता एव सतान संबधी चिता जीवन पर्यन्त रहेगी।

दृष्टि–छठे भाव में स्थित बृहस्पति की दृष्टि दशम भाव (सिह राशि), द्वादश भाव (तुला राशि) एवं धन भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को राजद्वार से सम्मान मिलेगा। जातक का शुभ कार्यों में धन खर्च होगा जातक धनी होगा।

निशानी–'लोमेश सहिता' अध्याय 5/श्लोक 2 के अनुसार पचमेश यदि छठे स्थान में हो तो लड़का अपने पिता से शत्रुओं जैसा व्यवहार करता है। जातक का पिता दूसरा लड़का गोद में लेता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मे जातक भारी उन्नति को प्राप्त करेगा। दशा संघर्ष के बाद सफलता देगी, अतः मिश्रित फलकारी होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सबध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी प्राप्त करने हेतु बहुत दिक्कतो का सामना करना पड़ेगा राजकीय सहयोग नही मिल पायेगा।

2. **बृहस्पति+चंद्र**–'भोजसंहिता के अनुसार वृश्चिकलग्न में छठे स्थान मे यह युति मेषराशि मे हो रही है। यह युति वस्तुतः भाग्येश चद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है बृहस्पति+चंद्र षष्टमस्थ होने से '**धनहीन योग**',

'**संतानहीन योग**' एवं '**भाग्यभंग योग**' की सृष्टि हुई है। षष्टमस्थ बृहस्पति और चंद्रमा भाग्यभवन, लाभस्थान एवं लग्नस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः शत्रु नाश होंगें, व्यापार-व्यवसाय में लाभ हानि का उपक्रम चलता रहेगा। इस शुभ योग के कारण जातक को कोई गंभीर नुकसान नहीं पहुंचेगा।

3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी व अभमानी होगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनाता है। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' व '**सुखभंग योग**' बनाता हैं जातक के पीठ पीछे उसकी निन्दा होगी।
7. **बृहस्पति+राहु**—यहा दोनों ग्रह मेष राशि में है। बृहस्पति यहां मित्र राशि में तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। बृहस्पति के कारण यहां '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनेगा. ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। प्रारंभिक विद्या में बाधा एवं पुत्र संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी.
8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु शत्रुओं का नाश करने में सहायक होगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति सप्तम स्थान में

9 8 7 6 10 11 5 12 2 गु 4 1 3
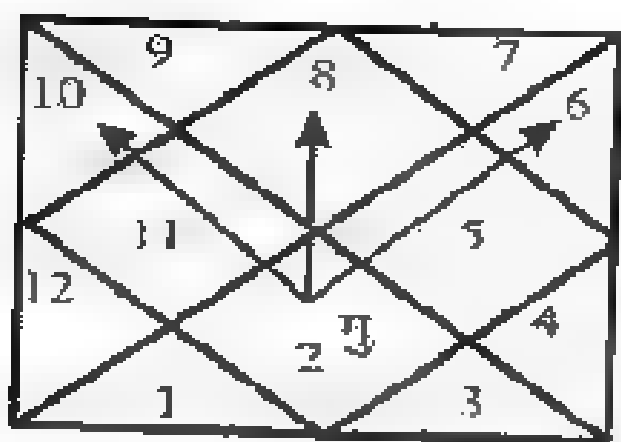
वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। बृहस्पति यहां सप्तम स्थान में वृष (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति के कारण '**केसरी योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' बनेगा। ऐसे जातक को पत्नी सुन्दर व श्रेष्ठ विचारों वाला मिलेगी। गृहस्थ सुख उत्तम संतान सुख उत्तम। परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक पराक्रमी, धनवान एवं यशस्वी होगा। जातक की राय सभी लोग मानेंगे।

दृष्टि—सप्तमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लाभस्थान (कन्या राशि), लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) एवं पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक को व्यापार में

लाभ होगा। परिश्रम का फल मिलेगा। जातक का जनसम्पर्क सघन होगा। जातक लोकप्रिय व्यक्ति होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 3 के अनुसार पंचमेश यदि सातवें स्थान पर हो तो ऐसा जातक दूसरे से अधिक सम्मान चाहता है तथा सभी धर्मों में समान आस्था रखता है।

दशा–बृहस्पति की दशा अंतर्दशा में सर्वांगीण विकास होगा। मित्रों से लाभ, नवीन पराक्रम का उदय होगा, व्यापार में लाभ होगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य विवाह के बाद जातक को नौकरी, विद्या, धन व तरक्की दिलायेगा।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार वृश्चिकलग्न में सप्तमस्थ बृहस्पति+चंद्र वृषराशि में होंगे। यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है यहां चंद्रमा उच्च का होगा। '**गजकेसरी योग**' की केन्द्रगत यह स्थिति शक्तिशाली है जो क्रमशः '**कुलदीपक योग**' एवं '**यामिनीनाथ योग**' की सृष्टि कर रहे हैं, इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लाभस्थान, लग्नस्थान एवं पराक्रम स्थान पर होगी। फलतः जातक का व्यक्तित्व का विकास द्रुतगति से होगा, जातक के मित्र सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित होंगे। जातक का व्यापार-व्यवसाय में आशातीत लाभ होते रहेंगे।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल '**लग्नाधिपति योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम पूर्वक किये गये पुरुषार्थ का मीठा फल मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को व्यापार द्वारा धन देगा। बुद्धि बल से जातक आगे बढ़ेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व धनी होगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति करायेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु उच्च राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बनेगा, बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' भी बन रहा है। जातक धनी होगा। ऐश्वर्यशाली होगा पर पति-पत्नी के मध्य वैचारिक मतभेदों से द्वंद चलता रहेगा।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु विवाह सुख में विच्छेदक है।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति अष्टम स्थान में
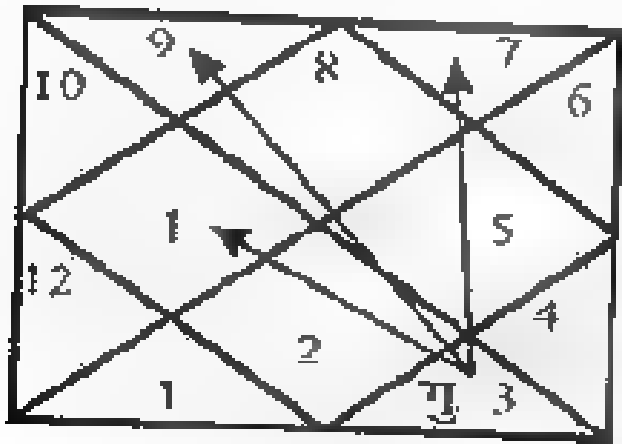
वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। यहां अष्टम स्थान में बृहस्पति मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। बृहस्पति की इस स्थिति से **'धनहीन योग'** एवं **'संतानहीन योग'** बनता है। ऐसे जातक को सामाजिक मान-सम्मान, पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति तो होगी पर अर्थाभाव रहेगा। धन व संतान की प्राप्ति हेतु विविध पुरुषार्थ करने पड़ेगे

दृष्टि–अष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि द्वादश भाव (तुला राशि), धन भाव (धनु राशि) एवं चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा पर धन शुभ कार्यों में खर्च होगा। जातक को भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 4 के अनुसार पंचमेश यदि आठवें स्थान में हो तो मनुष्य धनवान तो होता ही है पर उसके बहुत सारी लड़कियां होगी।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य आठवें स्थान में होने से **'राजभंग योग'** बनेगा। फलतः जातक को सरकारी नौकरी प्राप्त करने में दिक्कतें आयेगी जीवन में राजभय बना रहेगा।

2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न में अष्टमस्थ, बृहस्पति+चंद्र की युति मिथुन राशि में होगी। यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति है। 'भोजसंहिता' के अनुसार यहा चंद्रमा शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठने से **'धनहीन योग'**, **'सतानहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि होती है। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय स्थान, धनस्थान एवं सुख स्थान को देखते हैं। फलतः जातक को धन की हानि, सुख साधन की कमी अखरेगी। इसके साथ ही बढ़े हुए खर्च के कारण जातक को चिंता बनी रहेगी परन्तु इस शुभयोग के कारण जातक को सभी प्रकार की चिन्ताओं से मुक्ति मिल जाएगी।

3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी-मानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक के दाम्पत्य सुख में कमी रहेगी।

6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक की पीठ पीछे निन्दा होती रहेगी।

7. **बृहस्पति+राहु**—यहा दोनों ग्रह मिथुन राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि मे तो राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण '**धनहीन योग**' एव '**सतानहीन योग**' भी बनेगा। ऐसे जातक को आर्थिक विषमताए सहन करनी होगी। विद्या मे बाधा एवं पुत्र सतान को लेकर चिंता जीवन पर्यन्त बनी रहेगी।

8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु गुप्त रोग देगा। जातक कर्जदार होगा। जातक की आयु मध्यम होगी।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति नवम स्थान मे

9 8 7 6 10 11 5 12 4 गु. 2 3
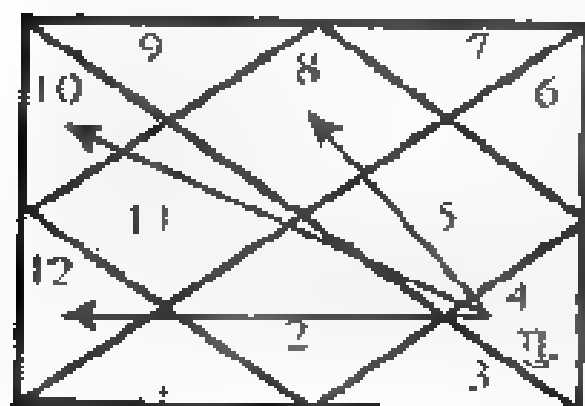
वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है, यह शुभ फल ही देगा बृहस्पति यहां नवम स्थान मे उच्च का होगा। कर्क राशि के पाच अंशों मे बृहस्पति परमोच्च का होता है। ऐसे जातक को धन, घर जमीन-जायदाद, माता-पिता का सुख, स्त्री सतान का सुख, कुटुम्ब-परिवार का सुख पूर्ण रुप से मिलेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऊंची नौकरी या ऊंचे व्यापार व्यवसाय की प्राप्ति होगी।

दृष्टि—नवमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि), पराक्रम स्थान (मकर राशि) एव पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक लोकप्रिय व्यक्तित्व का धनी होगा। जातक को उच्च विद्या व संतति की प्राप्ति होगी।

निशानी—'**लोमेश संहिता**' अध्याय 5/श्लोक 5 के अनुसार-सुतेश नवमे कार्ये पुत्रो भूपसमो भवेत्' पचमेश यदि नवम स्थान मे हो तो जातक राजा के समान

ऐश्वर्यशाली, राज्य में बड़ा अधिकारी, बडा ग्रंथकर्त्ता या पत्रकार होता है। कुल का नाम रोशन करता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक की किस्मत चमक जायेगी। जातक का मान सम्मान मिलेगा। नित नूतन पराक्रम बढ़ेगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को उत्तम राजयोग देगा। जातक को सरकारी नौकरी लगेगी सरकार से सम्मान व राजकीय मदद मिलती रहेगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न में नवमभाव में बृहस्पति+चंद्र की युति कर्कराशि के अंतर्गत होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्र की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति होगी। **'गजकेसरी योग'** की यह सर्वोत्तम स्थिति है क्योंकि यहां चंद्रमा स्वगृही एवं बृहस्पति उच्च का होकर, लग्नस्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान को देखेंगे। 'किम्बहुनायोग' के कारण आपको धन की कोई कमी नहीं रहेगी आपका पराक्रम तेज होगा। मित्र वर्ग सम्पन्न एवं सहयोगात्मक भावना वाले होंगे। आपको शिक्षा संबधी उच्च डिग्री मिलेगी तथा आपकी संतति भी सुयोग्य एवं संस्कारी होगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'शत्रुमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को शत्रुओं द्वारा धन मिलेगा। कोर्ट-कचहरी से धन मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को व्यापार से धन दिलायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'कलत्रमूलधन योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलती है।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'मातृमूल धनयोग'** एव **भ्रातृमूल धनयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक माता का धन मिलेगा। भाईयो से रक्षित धन मिलेगा। मित्रों से धन मिलेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहा दोनों ग्रह कर्क राशि में है। बृहस्पति यहां उच्च का तो राहु शत्रु क्षेत्री होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। ऐसा जातक धनी एव विद्वान् होगा। जातक की संतति भी विद्वान व कीर्तिवान होगी। परन्तु भाग्योदय में बाधा आती रहेगी जातक भाग्य संबंधी, संतान संबंधी गुप्त परेशानियों से घिरा रहेगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक का भाग्योदय संघर्ष के साथ करायेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति दशम स्थान में
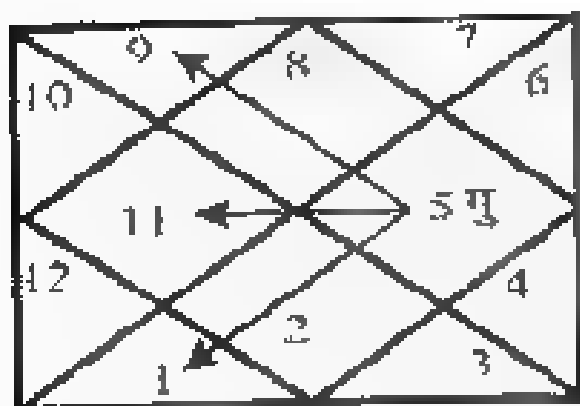
वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है। इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। बृहस्पति यहां दशम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में है। बृहस्पति के कारण 'केसरीयोग' एवं **'कुलदीपक योग'** बनाता है ऐसा जातक राज सरकार व राजनीति में **'कुलदीपक योग'** बनाता है। ऐसा जातक राज-सरकार व राजनीति में बड़ा भारी प्रभाव रखेगा जातक को माता पिता का सुख मिलेगा। स्त्री-संतान का सुख मिलेगा। जातक को अध्ययन-अध्यापन कार्यों में रुचि होगी। जातक धर्मोपदेशक होगा।

दृष्टि—दशमस्थ बृहस्पति की दृष्टि धनभाव (धनु राशि), चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी गुप्त शत्रु होंगे। जो परेशान करेंगे।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 5 के अनुसार पंचमेश यदि दशम स्थान में हो तो व्यक्ति राजा के समान ऐश्वर्य भोगने वाला, राज्य में उच्चा अधिकारी, ग्रंथकर्त्ता या प्रसिद्ध पत्रकार होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा में जातक को राजकीय पद प्रतिष्ठा सम्मान मिलेगा। धन की प्रप्ति होगी भौतिक उपलब्धियां की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **बृहस्पति+सूर्य**—बृहस्पति के साथ सूर्य **'रविकृत राजयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक को राज्य (सरकार) में उच्च पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी
2. **बृहस्पति+चंद्र**—वृश्चिकलग्न के दशम भाव में बृहस्पति+चंद्र की युति सिंह राशि में होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुत: भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश के साथ युति होगी। यहां दोनों ग्रह केन्द्रवर्ती होकर क्रमश: **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि कर रहे हैं। यहां बैठकर दोनों ग्रह धनस्थान, सुख स्थान एवं षष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति अल्प प्रयासो से होती रहेगी। सुख में वृद्धि होगी। आपको वाहन की प्राप्ति होगी शत्रुओं का नाश होगा। यह योग आपके लिए अत्यन्त शुभ है

3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगलहोने से जातक नगर, गाव का प्रमुख एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को व्यापार से धन दिलायेगा। जातक बुद्धि बल से बड़ा नाम व धन कमायेगा।

5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को विवाह के बाद धनी बनायेगा। जातक का जीवनसाथी सुन्दर व धनी होगा।

6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को 'करोड़पति' बनायेगा। उसे जीवन के सभी भौतिक सुखों की प्राप्ति सहज में होगी।

7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में है। बृहस्पति यहां मित्र राशि में तो राहु शत्रु राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। केन्द्रस्थ बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' भी बन रहा है। जातक को सरकारी नौकरी में बाधा आयेगी, व्यापार में रुकावट, फिर भी जातक यशस्वी होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु राजसुख मे बाधक है।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति एकादश स्थान में
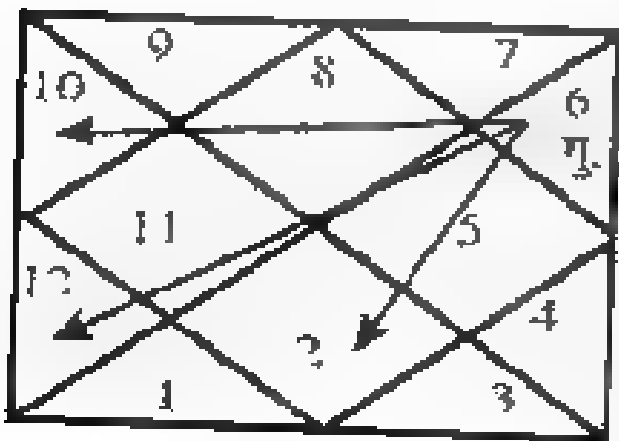
वृश्चिकलग्न में बृहस्पति धनेश एवं पंचमेश है। बृहस्पति पंचमेश होने से राजयोगकारक है इसे मारकेश का दोष नहीं लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा। एकादश स्थान मे बृहस्पति कन्या (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान, दूरदर्शी होगा। जातक को जमीन-जायदाद का लाभ होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि Educational Degree मिलेगी। प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होगा।

दृष्टि–एकादश स्थान मे बृहस्पति की दृष्टि तृतीय स्थान (मकर राशि), पंचम भाव (मीन राशि) एवं सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। उसे उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। पत्नी सुन्दर, सुशील व पतिव्रता होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 6 के अनुसार पचमेश यदि एकादश स्थान में हो तो व्यक्ति बड़ा विद्वान, महान् लेखक, धनवान एवं लोकप्रिय व्यक्ति होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ देगी। धन-विधा में बढ़ोत्तरी देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को बड़े भाई का सुख देगा। व्यापार में लाभ देगा।
2. **बृहस्पति+चंद्र**–वृश्चिकलग्न में एकादश भाव मे बृहस्पति+चंद्र की युति कन्या राशि में होगी 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चंद्रमा की धनेश+पंचमेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पचम स्थान एव सप्तम स्थान को देखेगे फलतः जातक का पराक्रम बढ़ेगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। इसके बाद प्रथम संतति के बाद जातक का दूसरा भाग्योदय होगा। जातक समाज का धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मगल जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक के पास स्थाई सम्पत्ति होगी.
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ उच्च का बुध जातक को व्यापार से धन देगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ नीच का शुक्र जातक को विवाह के बाद धनी बनायेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को भौतिक उपलब्धियों से परिपूर्ण करेगा
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनो ग्रह कन्या राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। ऐसा जातक विद्यावान होगा। पुत्रवान व धनी होगा, गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा परन्तु राहु के कारण व्यापार व्यवसाय मे बाधा आती रहेगी। तथा सतान की उन्नति मे भी जातक को निरन्तर बाधा-रूकावट महसूस होती रहेगी.
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक का चलता उद्योग या व्यापार बन्द करायेगा।

वृश्चिकलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वादश स्थान में
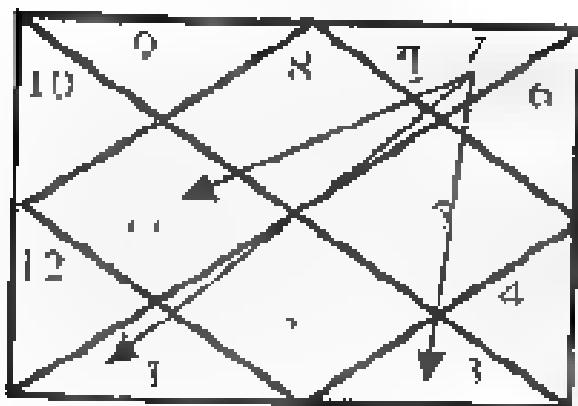
वृश्चिकलग्न मे बृहस्पति धनेश एव पचमेश है। बृहस्पति पचमेश होने मे राजयोगकारक है इसे मारकेश का दोष नही लग रहा है। यह शुभ फल ही देगा यहा द्वादश स्थान में बृहस्पति तुला (शत्रु) राशि म है बृहस्पति के कारण 'धनहीन

योग' एवं **'संतानहीन योग'** बनेगा। ऐसे जातक की विद्या अधूरी छूट जायेगी। संतान को लेकर परेशानी रहेगी। जातक को धन प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पडेगा। योग्य (पुत्र) संतान की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठानों का सहारा लेना पड़ेगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि), षष्टम भाव (मेष राशि) एवं अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। जातक ऋण, रोग व शत्रुओं से परेशान रहेगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 5/श्लोक 2 के अनुसार पंचमेश यदि बारहवें स्थान पर हो तो ऐसा जातक अपने पिता से शत्रुओं जैसा व्यवहार करता है। उसका पिता दूसरे का लड़का गोद में लेता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **बृहस्पति+सूर्य**—बृहस्पति के साथ सूर्य **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी प्राप्त करने में दिक्कतें आयेगी। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।
2. **बृहस्पति+चंद्र**—वृश्चिकलग्न के द्वादशस्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति तुला राशि में होगी। 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः भाग्येश चन्द्रमा की धनेश+पंचमेश के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सुखस्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को देखेंगे। द्वादशस्थ इन दोनों ग्रह के कारण क्रमशः **'धनहीन योग'**, **'संतानहीन योग'** एवं 'भाग्यहीन योग' की सृष्टि होगी। फलतः यहां **'गजकेसरी योग'** की ज्यादा सार्थकता नहीं है। ऐसे जातक को धनहानि का सामना करना पड़ेगा। संतान प्राप्ति मे विलम्ब होगा तथा भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। पर इस **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक सभी संकट व सघर्ष से पार पा लेगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मगल **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को परिस्रम का फल नही मिलेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध यहां **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी-मानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा.
5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र **'विलम्ब विवाह योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को विवाह का सुख नहीं मिलेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि उच्च का **'पराक्रमभंग योग'** एवं

'**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक के पीछे पीछे निन्दा होगा। जातक के भौतिक सुखो में बाधा आती रहेगी।

7. **बृहस्पति+राहु**—यहां दोनों ग्रह तुला राशि मे है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु मित्र राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है, बृहस्पति की इस स्थिति के कारण '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' भी बनेगा, ऐसे जातक को धनसंग्रह में बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। पुत्र संतति को लेकर चिंता रहेगी। जातक परोपकार, ब्राह्मण भोजन, धार्मिक अनुष्ठान एवं यात्राओं में रुपया खर्च करेगा।

8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु होने से जातक धार्मिक होगा एवं परोपकार में रुपया खर्च करेगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में

9	7
10	6
8 शु.	5
11	4
12	3
2	1
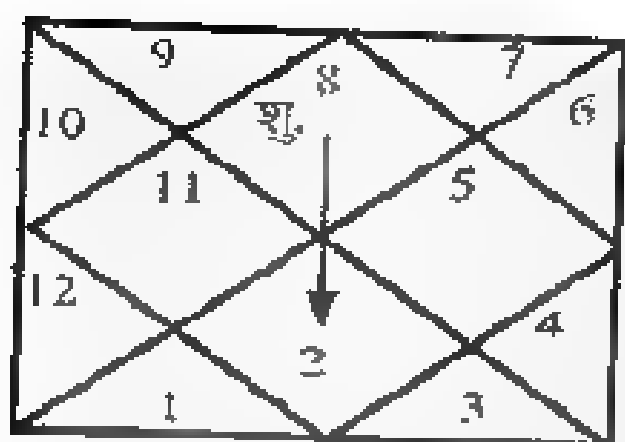
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न मे शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां शुक्र प्रथम स्थान में वृश्चिक (सम) का होने से '**कुलदीपक योग**' बना रहा है। ऐसा जातक सुन्दर, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्ति का धनी होगा शुक्र यहां वृष राशि से सातवें एवं तुला राशि से दूसरे स्थान पर होने से जातक को नजला, कफ, जुकाम आदि की शिकायत रहेगी।

दृष्टि–लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव अपने ही घर वृष राशि पर होगी। ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी, सुन्दर सुघड़ होगी, सभ्य व विनम्र होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 1 के अनुसार सप्तमेश यदि लग्न में हो तो व्यक्ति परस्त्री गमन करता है एव हृदयरोगी होता है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य 'पद्मसिंहासन योग' बनायेगा। जातक कीचड मे कमल के साथ खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है ऐसा जातक
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चद्र होने से जातक परम सौभाग्यशाली, सुंदर एव यशस्वी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मगल '**रुचक योग**' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक व्यापार प्रिय एवं वैभवशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक धनवान होगा। आध्यात्मिक होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक को सांसारिक सुख पूर्ण मात्रा में मिलेंगे। जातक की पत्नी पतिव्रता एवं व्यवहारिक ज्ञान से परिपूर्ण होगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक विलासी एवं धूर्त होगा। वैवाहिक सुख में बाधा बनी रहेगी
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को धैर्यहीन बनायेगा जातक कामी होगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में
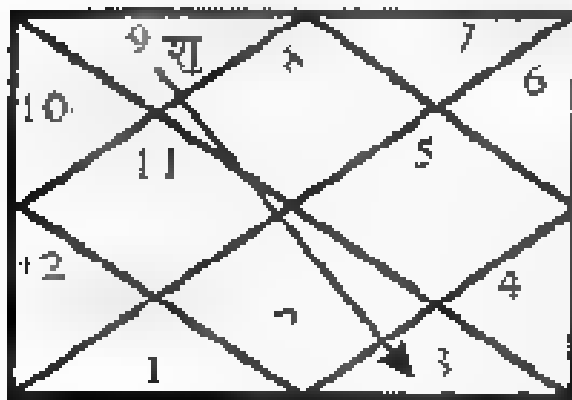
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। शुक्र यहां द्वितीय स्थान में धनु (सम) राशि में है। ऐसा जातक विवाह के बाद धनी होता है। शुक्र यहां वृषभ राशि में अष्टम एवं तुला राशि मे तृतीय स्थान पर होने के कारण धन, यश, पद-प्रतिष्ठा प्राप्ति में हल्की सी रुकावट महसूस होगी। जातक को धनसंग्रह में भी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ शुक्र की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक दीर्घजीवी होगा पर उसके गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 3 के अनुसार ऐसा जातक अनेक स्त्रियों से समागम करने वाला होता है

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी। शुक्र की दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को धनी बनायेगा। विवाह के बाद 'राजयोग' दिलायेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र जातक को महाधनी बनायेगा। जातक की वाणी अत्यन्त विनम्र एवं शिष्टाचार से युक्त होगी।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को आर्थिक विषमता के साथ सफलता देगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक अर्थ संकट देगा। यहां अष्टमेश व्ययेश की युति वाणी में दोष उत्पन्न करेगी।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को महाधनी बनायेगा। भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि मित्रों से धन लाभ एवं जीवन में सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएं सहज मे प्राप्त होगी।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक का धन गलत कार्यों में खर्च होगा। अर्थाभाव रहेगा।

8. **शुक्र+केतु** शुक्र के साथ केतु धन संग्रह मे बाधक है। जातक शौक-मौज मे बहुत पैसा खर्च करेगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में
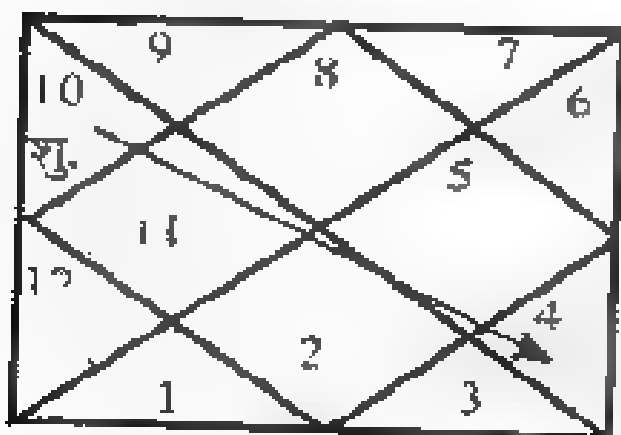
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां तृतीय स्थान में शुक्र मकर (मित्र) राशि में है। शुक्र पिता व सहोदर का सुख देगा, जातक पराक्रमी होगा मित्रो से लाभ होगा। खासकर स्त्री-मित्रों से लाभ होगा। जातक को सामाजिक पद प्रतिष्ठा, मान सम्मान की प्राप्ति होगी। जातक को विदेश यात्रा या प्रतियोगी परीक्षाओं मे सफलता मिलेगी।

दृष्टि–तृतीय भावगत शुक्र की दृष्टि भाग्य स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 5 के अनुसार सप्तमेश तृतीय में हो तो उस मनुष्य का पुत्र जीवित नही रहता कदाचित् कन्या के पश्चात् उत्पन्न हुआ पुत्र ही जीवित रहता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र भाई-बहनों का सुख देगा। व्यक्ति भाग्यशाली होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल उच्च का जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को अधिक बहनों का सुख देगा। स्त्री-मित्रों से लाभ रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति नीच का जातक को भाई-बहन दोनों का सुख देगा। मित्रों द्वारा धन प्राप्ति भी होगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि स्वगृही मित्र वर्ग से लाभ देगा
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक को झूठी बदनामी मिलेगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु कीर्तिदायक है स्त्री मित्रों से लाभ है।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में

9 8 7 10 6 शु 11 5 12 4 2 1 3
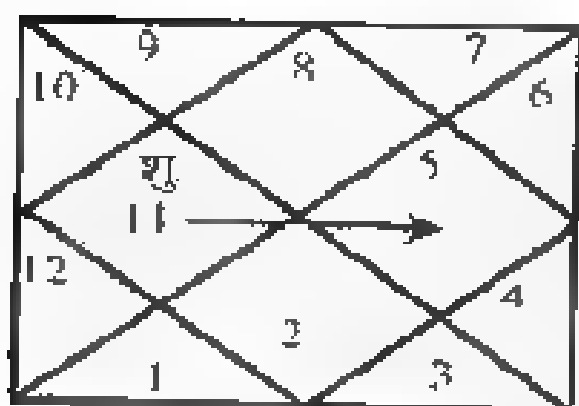
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न मे शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है. यहां चतुर्थ स्थान मे शुक्र कुंभ (मित्र) राशि में है। शुक्र के कारण यहां '**कुलदीपक योग**' बनेगा। ऐसे जातक को माता-पिता, घर, जमीन-जायदाद का सुख होता है। जातक को उत्तम वाहन की प्राप्ति होती है. उसे पैतृक सुख आंशिक मिलेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शुक्र की दृष्टि दशम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। जातक की राजनीति मे रुचि रहेगी राजा (सरकार) से सम्मान मिलेगा।

निशानी– लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 4 के अनुसार सप्तमेश यदि चतुर्थ स्थान में हो तो मनुष्य की स्त्री पतिव्रता नहीं होती। जातक को दांतों मे कोई न कोई रोग अवश्य होगा।

दशा शुक्र की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**पद्मसिंहासन योग**' बनायेगा। जातक मध्यम परिवार में जन्म लेकर कीचड में कमल की तरह आगे बढेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र माता का सुख देगा। जातक के पास उत्तम वाहन होंगे।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल भूमि लाभ देगा। जातक को भाईयों का सुख मिलेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ देगा। मामा का पक्ष मजबूत होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति ससुराल से धन दिलायेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'शश योग' करायेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व धनी होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को सुख प्राप्ति में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में

9 8 7 10 6 11 5 12 4 शु. 2 1 3
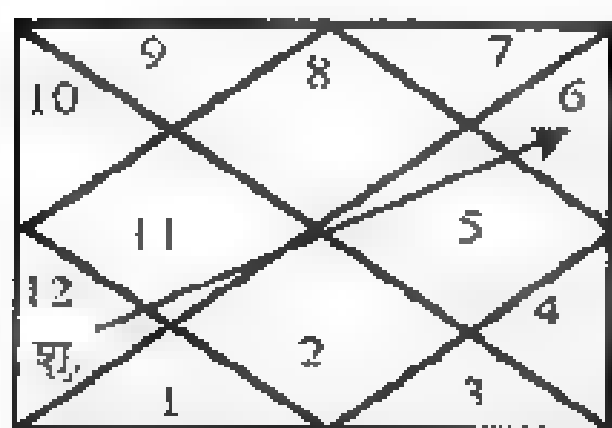
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है, वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है, यहां पंचम भाव में शुक्र उच्च का है। मीन राशि के 27 अंशों मे शुक्र परमोच्च का कहलाता है। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक को उत्तम संतान सुख की प्राप्ति होगी। जातक को प्रतियोग परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। ऐसे जातक को उच्च पद, प्रतिष्ठा, मान सम्मान की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–पंचमभावगत शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक को व्यापार-व्यवसाय में आशातीत लाभ होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 7 के अनुसार सप्तमेश यदि पचम स्थान में हो तो जातक सर्वगुण सम्पन्न होता है तथा सदैव प्रसन्न चित्त रहेगा। आशावादी व खुशमिजाजी होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अतर्दशा अत्यंत शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को एक पुत्र का योग देता है। जातक विद्यावान होगा।

2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्र कन्या संतति की बाहुल्यता देगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल पुत्र सुख देगा। जातक धनी व्यक्ति होगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध '**नीचभंग राजयोग**' जातक को राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी बनायेगा जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति '**किम्बहुनानामक राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि जातक को भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति देगा। जातक की संतति पढ़ी-लिखी होगी
7. **शुक्र+राहु**—जातक का विवाह आकस्मिक होगा। '**लम्पट योग**' होते हुए भी अशुभ फल नहीं मिलेगा। पर दाम्पत्य जीवन की समरसता में कमी रहेगी
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु संतान सुख मे बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में
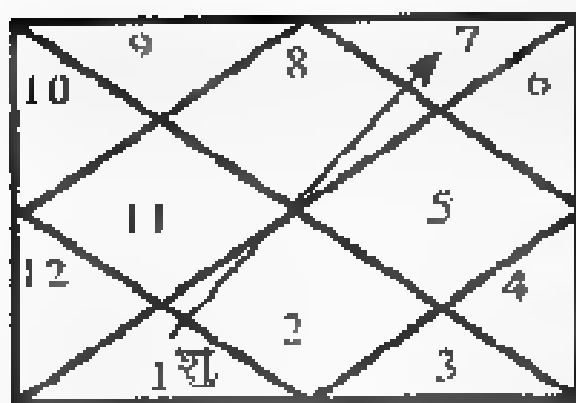
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां छठे स्थान में शुक्र मेष (सम) राशि मे होगा। शुक्र के कारण '**विलम्ब विवाह योग**' बनेगा परन्तु व्ययेश होकर शुक्र छठे जाने से '**विमल नामक विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनी मानी एवं अभिमानी होगा। जातक के पास उत्तम वाहन होगा पर वैवाहिक सुख क्षीण होगा। जातक को गुप्त रोगों व गुप्त शत्रुओं का भय रहेगा

दृष्टि—षष्टम भावगत शुक्र की दृष्टि व्ययभाव (तुला राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव के कारण ऋणी होगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 2 के अनुसार यदि सप्तमेश छठे हो तो जातक की स्त्री सदैव बीमारी रहेगी।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' करता है। जातक को सरकारी नौकरी प्राप्ति हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नही मिलेगा.
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी–मानी होगा। परन्तु व्यापार में नुकसान होने का योग बना रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक को धन प्राप्ति हेतु दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**पराक्रमभग योग**', '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक को सामाजिक बदनामी मिलेगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा. जातक को गुप्त रोग की सभावना रहेगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्त शत्रु बढ़ायेगा। गुप्त बीमारी की संभावना भी रहेगी।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
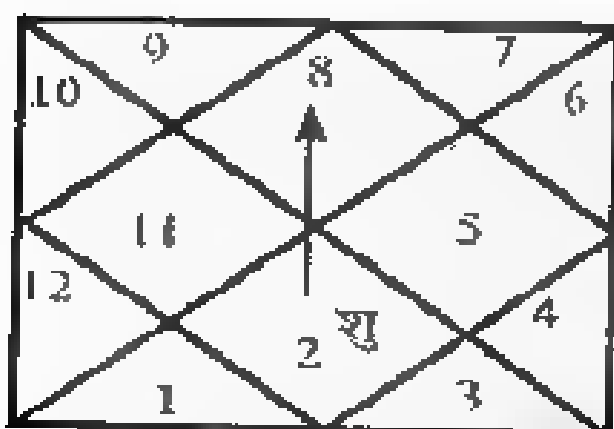
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। शुक्र यहां सप्तम स्थान में स्वगृही है. शुक्र के कारण '**कुलदीपक योग**' एवं '**मालव्य योग**' होगी। जातक कामी होगा। जातक उच्च पदासीन एवं उत्तम श्रेणी का व्यापारी होगा। जातक महाधनी होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा। ऐसे जातक के व्यक्तित्व में ओज व आकर्षण होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 1 के अनुसार सप्तमेश यदि सप्तम में हो तो जातक पर स्त्री रमण करता है एवं हृदयरोगी होता है।

दशा–शुक्र की दशा–अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुख व ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक यात्राएं बहुत करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को उग्र स्वभाव की पत्नी देगा। जातक की पत्नी कमाऊ महिला होगी।

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चद्र जातक की पत्नी सुन्दरतम महिला होगा। यहा '**किम्बहुनानामक राजयोग**' के कारण जातक राजा के समान मौज-शौक का भोगेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मगल 'लग्नाधिपति योग' बनायेगा। जातक कामी होगा। उसे परिश्रम में सफलता मिलेगी।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ देगा। जातक का ससुराल व्यापार-प्रिय होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को पत्नी से धन दिलायेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को भौतिक सुख-समाधन एव उपलब्धिया देगा
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक का विवाह आकस्मिक होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु विवाह सुख मे बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में
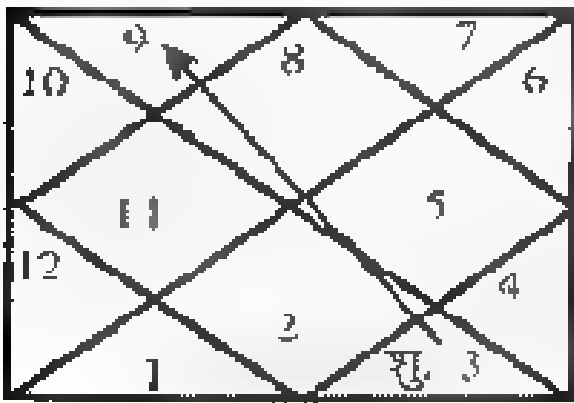
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एव व्ययेश है. वृश्चिकलग्न मे शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां अष्टम स्थान में शुक्र मिथुन (मित्र) राशि में है शुक्र के कारण '**विलम्ब विवाह योग**' बना। परन्तु व्ययेश होकर आठवें जाने से 'विमल नामक **विपरीत राजयोग**' बना जातक दीर्घजीवी होगा। जातक का दाम्पत्य जीवन कष्टमय होगा। जातक को यौन रोग होंगे। गुप्त शत्रु भी जातक को परेशान करेंगे।

दृष्टि–अष्टम भावगत शुक्र की दृष्टि धनस्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक की गुप्त बीमारी में धन खर्च होगा।

निशानी–'लोमेश सहिता' अध्याय 7/श्लोक 2 के अनुसार यदि सप्तमेश आठवे हो तो जातक की स्त्री सदैव बीमार रहेगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी

शुक्र का अन्य ग्रहों से सबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी की प्राप्ति हेतु बहुत परेशानी उठानी पड़ेगी।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें उठानी पड़ेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक को धनी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन देगा.
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**'एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक को मित्रों से बदनामी मिलेगी। समाज में अपकीर्ति होगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक कामी होगा। सम्भवतः अन्य स्त्रियों से निरन्त शारीरिक सम्पर्क रहेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्त रोग या सैक्स संबधी बीमारी देगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में
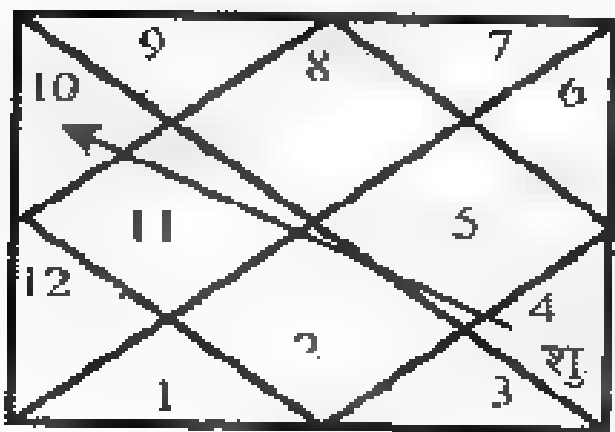
वृश्चिकलग्न मे शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। नवम भाव मे शुक्र कर्क (शत्रु) राशि में है। जातक परम सौभाग्यशाली होगा। उसे माता-पिता, भाई-बहन, जमीन-जायदाद, सुन्दर स्त्री का सुख मिलेगा। ऐसे जातक का ससुराल धनी होगा। जातक का सही भाग्योदय विवाह के बाद होता है।

दृष्टि–नवमभावगत शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक को सहोदर भाईयों का सुख, इष्ट-मित्रों का सुख मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 3 के अनुसार सप्तमेश यदि नवम स्थान में हो तो ऐसा जातक अनेक स्त्रियों के साथ समागम करता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा जातक का भाग्योदय करायेगी। जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक का भाग्य विवाह के बाद चमकायेगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चद्र जातक का शीघ्र भाग्योदय देगा। जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मगल नीच का भाईयों से लाभ एवं परिश्रम का फल देगा.
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार प्रिय बनायेगा
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति उच्च का जातक को महाधनी बनायेगा। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक महान् सुखी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक के भाग्योदय मे भारी बाधा आयेगी
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को सघर्ष के साथ उन्नति देगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

9 8 7 10 6 11 ← 5 शु. 12 4 2 1 3
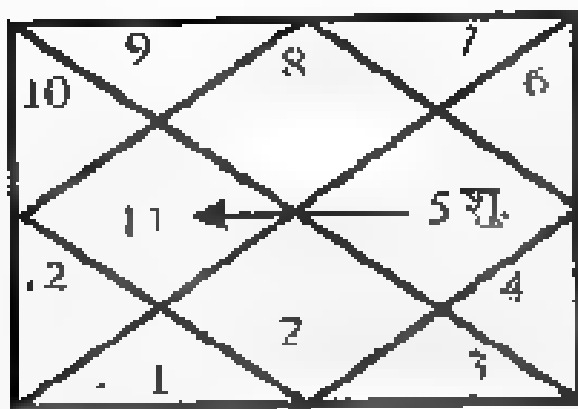
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहा दशम स्थान में शुक्र सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र के कारण '**कुलदीपक योग**' बनेगा। ऐसे जातक बुद्धिमान, साहित्यकार, कलाकार, सगीत, अभिनय का शौकीन होता है। जातक को माता-पिता, भाई-बहन, पत्नी-सतान, पद-प्रतिष्ठा का सुख मिलेगा। जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा।

दृष्टि–दशमभावगत शुक्र की दृष्टि चतुर्थ स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। ऐसे जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा। जातक का निजी सुंदर भवन होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 4 के अनुसार सप्तमेश यदि दशम में हो तो मनुष्य की स्त्री पतिव्रता नहीं होती। जातक के दांतो में कोई न कोई रोग अवश्य होगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**रविकृत राजयोग**' देगा। जातक को सरकार में उच्च पद प्रतिष्ठा की प्राप्त होगी। जातक राज्याधिकारी होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र जातक को राजनीति में लाभ देगा। जातक भाग्यशाली होगा। उसका प्रभाव सरकारी क्षेत्र में होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक की बड़ी भूमि-जायदाद, सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार प्रिय व्यक्तित्व देगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को पत्नी ससुराल से धन लाभ देगा। राजनीति में भी लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति करायेगा। जातक 'करोड़पति' होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक को राज्यपक्ष से नुकसान होगा। सरकारी कर्मचारी धोखा देंगे।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु सरकारी-क्षेत्र में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में

9 8 7 10 6 शु. 11 5 12 4 2 1 3
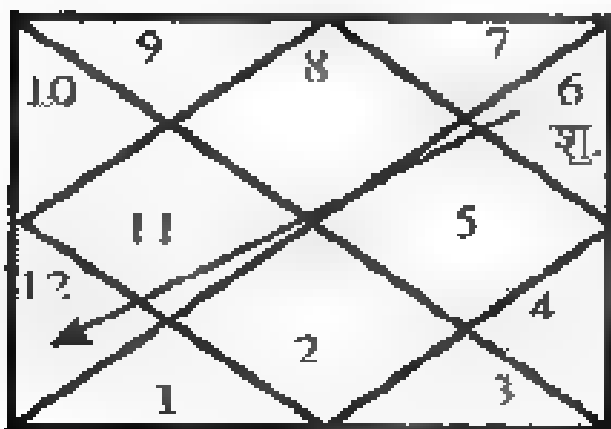
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। एकादश स्थान मे शुक्र नीच का है। ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। उसे बौद्धिक, भौतिक और आर्थिक सुखों की प्राप्ति होगी। उसका राजनैतिक वर्चस्व भी बढ़ेगा। पर जातक का वीर्य दूषित होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत शुक्र की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को उत्तम विद्या एवं उत्तम संतति का सुख मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 5 के अनुसार यदि सप्तमेश एकादश स्थान में हो तो उस मनुष्य का पुत्र जीवित नहीं रहता। कदाचित कन्या के पश्चात् उत्पन्न हुआ पुत्र ही जीवित रहेगा

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। शुक्र की दशा में व्यापार-व्यवसाय में बढ़ोत्तरी होगी

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ देगा।
2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्र जलीय पदार्थों में लाभ देगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध जातक को व्यापार से धनी बनायेगा। बुध उच्च का होकर '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। जातक को ससुराल से लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि जातक को तमाम सांसारिक सुख देगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक का चलता व्यापार (उद्योग) यकायक बन्द होगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु जातक को व्यापार में निरन्तर उतार चढाव लायेगा।

वृश्चिकलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में

10	9	8
शु. 7	6	11
5	12	4
2	1	3
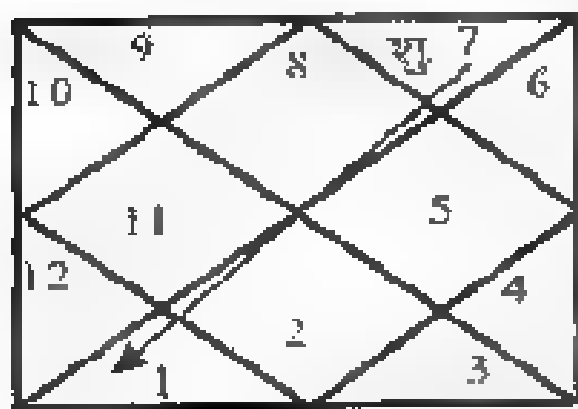
वृश्चिकलग्न में शुक्र सप्तमेश एवं व्ययेश है। वृश्चिकलग्न में शुक्र मुख्य मारकेश है, इसलिए इससे शुभफल की अपेक्षा रखना व्यर्थ है। यहां द्वादश स्थान में शुक्र स्वगृही होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण '**विलम्ब विवाह योग**' बनाता है परन्तु द्वादश स्थान में द्वादशेश स्वगृही होने से 'विमल नामक **विपरीत राजयोग**' भी बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी व अभिमानी होता है। जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी। जातक को वाहन सुख मिलेगा। जातक को विदेश यात्रा से लाभ होगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत शुक्र की दृष्टि षष्टम स्थान (मेष राशि) पर होगी जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 7/श्लोक 6 के अनुसार ऐसे जातक की पत्नी व कन्या देखने में सुंदर होगी।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी की प्राप्ति हेतु बहुत परेशानियां उठानी पड़ेगी।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक का भाग्योदय अनेक दिक्कतों के बाद भी कहीं होगा. जातक की बाई आंख कमजोर होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मगल '**लग्नभंग योग**' करायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा। मौज-शौक में रुपया खर्च करेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग** बनायेगा। जातक की आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्याश होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा ऐसा जातक व्याभिचारी होगा। सैक्स स्कैण्डल में फंसेगा। स्त्रियों के कारण बदनाम होगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को मोक्ष मार्ग का पथिक बनायेगा। जातक आध्यात्मिक प्राणी होगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
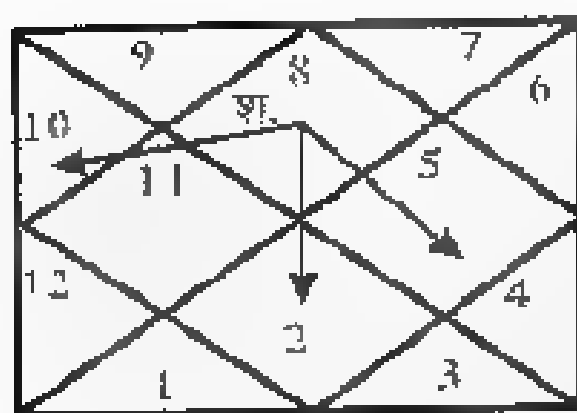
वृश्चिकलग्न मे शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मगल का शत्रु भी है। फलतः यहा अशुभ फल ही देगा। शनि यहा प्रथम स्थान में वृश्चिक (शत्रु) राशि मे है। ऐसा जातक हठी व जिद्दी होता है उसे जमीन जायदाद का सुख, भौतिक संसाधन, सासारिक ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। परन्तु आसानी से नहीं। जातक को इन सुखो की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ता है। सघर्ष के बाद जातक लोकप्रिय जननेता बन जाता है

दृष्टि—शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि), सप्तम (वृष राशि) एव दशम भाव (सिह राशि) पर होगी। ऐसे जातक को भाई-बहन का सुख मिलता है। पत्नी-सतान का सुख मिलता है। रोजी-रोजगार का सुख भी मिलता है पर राजगार का सुख कुछ विलम्ब से मिलेगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार यदि तृतीयेश लग्न में हो तो ऐसा व्यक्ति अपने उद्यम तथा पराक्रम से धनवान होता है तथा सदा दूसरों की सेवा में तत्पर रहता है। परन्तु सुखेश लग्न मे होने से जातक पिता के हाथ आये धन को भी छोड़ देता है।

दशा—शनि की दशा अतर्दशा शुभ फल देगी, पर जीवन में निखार सघर्ष के बाद ही आयेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सबध—

1. **शनि+सूर्य**—यहा दोनों ग्रह वृश्चिक राशि मे होंगे। सूर्य यहां मित्रराशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा शनि पराक्रमेश व सुखेश तथा सूर्य दशमेश होकर

लग्न में बैठेगा। फलत: जातक महान् पराक्रमी होगा। राज (सरकार) में उसका प्रभाव रहेगा। पर जातक का राजनैतिक वर्चस्व पिता की मृत्यु के बाद मुखरित होगा।

2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चद्र जातक का पराक्रम बढ़ायेगा। जातक को उन्नति शीघ्र होगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक की कुण्डली में **'रुचक योग'** बनेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को व्यापार प्रिय बनायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक अपने परिश्रम से खूब धन कमायेगा एवं स्थाई सम्पत्ति खरीदेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक के वैवाहिक सुख एवं भौतिक सामग्री–सुविधाएं देगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** के कारण जातक को दम्भी व हठी बनायेगा। जातक की उन्नति में बाधाएं आती रहेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को महत्वकाक्षी बनायेगा। एव गलत कार्य करने को प्रेरित करेगा

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान मे
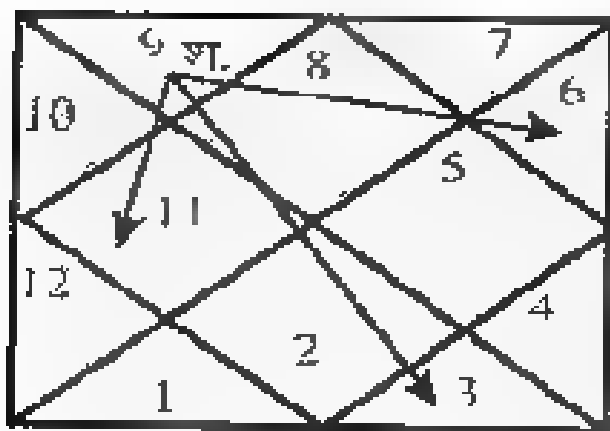
वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलत: यहां अशुभ फल ही देगा। द्वितीय स्थान मे शनि धनु (सम) राशि में है। ऐसे व्यक्ति को धन-प्रतिष्ठा, स्त्री सतान, जमीन जायदाद, वाहन, मकान का पूर्ण सुख मिलेगे। जातक की वाणी घमण्डी व अंहकारपूर्ण होगी। जातक अपने स्वयं के पुरुषार्थ व पराक्रम से विपुल धन कमायेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ की दृष्टि चतुर्थ भाव (कुभराशि), अष्टम भाव (मिथुन राशि) एव एकादश भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को भौतिक सुखो की प्राप्ति होगी। जातक दीर्घजीवी होगा। जातक व्यापार से कमायेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय ३/श्लोक 7 के अनुसार तृतीयेश यदि धनस्थान में व्यक्ति स्थूल शरीर वाला गुदाभजक होता है। परन्तु सुखेश द्वितीय में होने से व्यक्ति भोग विलास मे धन का उपयोग करता हुआ पराक्रमी होता है

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। भौतिक सुखो की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे सूर्य यहा मित्रक्षेत्री तो शनि सम क्षेत्री होगा दसमेश होकर सूर्य एव पराक्रमेश सुखश होकर शनि के धन स्थान में बैठने से जातक धनी होगा। जातक पराक्रमी होगा। दीर्घजीवी होगा। उसके मित्र बहुत होगे परन्तु जातक के सही पराक्रम का उदय उसके पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक को धनी बनायेगा। जातक जनसम्पर्क के माध्यम से कमायेगा
3. **शनि+मंगल**– शनि के साथ मंगल होने से जातक अपने पराक्रम पुरुषार्थ से अपना क्षत्र खुद बनायेगा और समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा.
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक व्यापार के द्वारा धनार्जन करेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से 'मातृमूल धनयोग' एवं **भ्रातृमूल धनयोग**' बनेगा। जातक को माता की सम्पति मिलेगी। भाईयों व मित्रों द्वारा रक्षित धन मिलेगा। भागीदारी से लाभ होगा.
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से ससुराल पराक्रमी होगा। पत्नी का व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** के कारण जातक अप्रिय व कर्णकटु वाणी बोलेगा। इसलिए उसके कुटम्बीजन उसके विरोधी होंगे।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु वाणी के स्खलन दोष प्रकट करता है।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में

वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एव चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है, फलतः यहा अशुभ फल ही देगा। यहां तृतीय स्थान में शनि स्वगृही है। ऐसे जातक को भाई बहनों, इष्ट मित्रों का लाभ होगा, जातक को माता पिता जमीन–जायदाद, स्त्री–संतान का सुख मिलेगा। जाति मे, समाज में सम्मान होगा। पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी एसा जातक विदेशी व्यापार से कमायेगा। परदेश की भूमि में लाभ है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (मीन राशि), भाग्यभवन (कर्क राशि) एवं द्वादश भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक विद्यावान होगा पर विदेशी भाषा पढ़ेगा। जातक का भाग्योदय 32वें वर्ष में होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार तृतीय में स्वगृही होने से व्यक्ति बड़ा पराक्रमी एवं पुत्र सुख से युक्त होता है परन्तु बड़े भाई का सुख नहीं होता।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा अत्यन्त शुभफल देगी। भौतिक सुख-वैभव की प्राप्ति होगी। पराक्रम बढ़ेगा एवं भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि स्वगृही होगा। दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश शनि की युति तृतीय भाव में होने से जातक जबरदस्त पराक्रमी एवं धनी व्यक्ति होगा। उसे जीवन में सभी प्रकार के भौतिक संसाधनों व सुखों की प्राप्ति होगी पर जातक को छोटे-बड़े भाईयों का सुख नहीं होगा। अन्य परिजनों से वैरभाव या कटुता रहेगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक को पराक्रमी बनायेगा। भाई-बहनों का सुख देगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनायेगा। जातक महान् पराक्रमी, चर्चित व कुख्यात होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को भाई बहन, इष्ट मित्रों का सुख देगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति '**नीचभंग योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक का वैवाहिक सुख समृद्धि बनायेगा। जातक को स्त्री-सुख से लाभ होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' के कारण भाईयों में विद्वेष-कलह करायेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु परिजनो में विद्वेष करायेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में

वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलत: यहां अशुभ फल ही देगा. यहां चतुर्थ स्थान में शनि अपनी
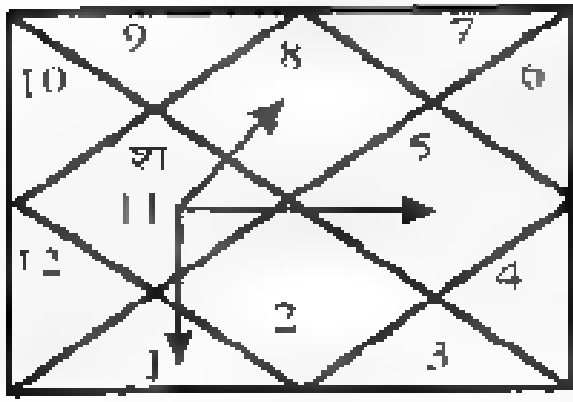
मूलत्रिकोण कुंभराशि में है। जिसके कारण **'शशयोग'** बना। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं सुख-ससाधनों से सम्पन्न होगा। ऐसे जातक को माता-पिता, भाई-बहन, स्त्री सतान का पूर्ण सुख होता है जातक बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होता है। उत्तम वाहन, नौकर व जमीन-जायदाद का सुख होता है।

दृष्टि—चतुर्थभावगत शनि की दृष्टि छठे स्थान (मेष राशि), दशम भाव (सिंह राशि) एव लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक का राज मे पाया होगा, इसे परिश्रम का फल मिलेगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार सुखेश यदि सुखस्थान में स्वगृही हो तो जातक राजा का मंत्री, सरकार मे उच्च पद को प्राप्त करता है। परन्तु तृतीयेश चतुर्थ भाव में होने से ऐसे जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होती है

दशा—शनि की दशा-अन्तर्दशा में जातक को भौतिक सुखों-संसाधनों की प्राप्ति होगी जातक को रोजी-रोजगार का, व्यापार का लाभ मिलेगा शनि की दशा मे शत्रु परास्त होंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से संबध—

1. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि मे होगे। सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री तो शनि मूलत्रिकोण राशि में होगा शनि के कारण यहा **'शशयोग'** बनेगा। ऐसा व्यक्ति निश्चय ही राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा, पिता की मृत्यु के बाद राजनीति में जातक का वर्चस्व बढ़ेगा सुखेश व राज्येश की युति यहा जातक के व्यक्तिगत जीवन के लिए शुभ परन्तु उसकी माता के नितान्त अशुभव है।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चद्र जातक का राजयोग देता है। जातक के पास एक से अधिक वाहन होगे। जातक को माता का सुख-सम्पत्ति मिलेगी
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मगल जातक को एक से अधिक मकान देगा। जातक के पास स्थाई सम्पत्ति जायदाद होगी।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध व्यापार में लाभ देगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति माता की सम्पत्ति देगा पिता का सुख देगा एवं मित्रो स लाभ देगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को ससुराल से धन वैभवशाली सामग्री दिलायेगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' के कारण माता का सुख तोड़ेगा। सांसारिक सुख में कमी लायेगा

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु माता की लम्बी बीमारी देगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में

9 8 7 10 6 11 5 12 4 श. 2 1 3
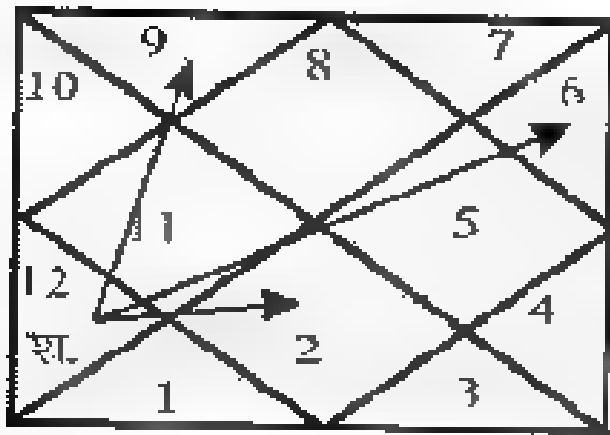
वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। यहां पंचम स्थान में शनि मीन (सम) राशि में है। इस भाव में शनि होने से जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त होगी। जातक को विद्या, बुद्धि, संतान, जमीन जायदाद के सुखों की प्राप्ति होगी। ऐसे जातक की आमदनी के जरिए दो-तीन प्रकार के होंगे। "Source of income will be two and three sided."

दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि), एकादश भाव (कन्या राशि) एवं धनभाव (धनु राशि) पर होगी जातक की पत्नी पराक्रमी होगा। जातक को व्यापार में लाभ होगा। जातक अनेक विधि से धन कमायेगा।

निशानी–'लोमेश सहिता' अध्याय 3/श्लोक 2 के अनुसार सुखेश यदि पांचवे हो तो जातक ईश्वर में विश्वास रखने वाला एवं मामात-पिता की सम्पत्ति का तिरस्कार कर खुद के पुरुषार्थ से धन कमाता है, परन्तु जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा शुभफल देगी। जातक की बहुविद्या प्रतिभा चमकेगी। शनि की दशा में धन की प्राप्ति होगी। पराक्रम बढ़ेगा। भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि सम राशि में होगा। दशमेश सूर्य व सुखेश शनि पंचम भाव मे होने से जातक विद्यावान होगा। शैक्षणिक उपाधि के साथ उसे अनुभवों का बड़ा गहन व

गम्भीर ज्ञान होगा परन्तु विद्या अधूरी रहेगी। सतान सुख में भी कन्या संतति को लेकर जातक को विशेष चिंता रहेगी।

2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्र जातक को पुत्र व कन्या दोनों संतति देगा जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा एवं विदेश जाकर उन्नति करेगा
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल तीन पुत्रों का सुख देगा जातक इंजीनियरिंग पढ़ेगा। टैक्नीकल-मैकेनिकल व्यक्ति होगा
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध नीच का, जातक को निम्नगामी सोच, नकारात्मक चिंतन देगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति जातक को उत्तम विद्या एवं बहुमुखी प्रतिभा देगा। जिससे जातक धनी होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र धनवान ससुराल एवं पढ़ी-लिखी पत्नी देगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी.
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' के कारण सतान में बाधा एवं प्रारंभिक विद्या में रुकावट पैदा करेगा।
8. **शनि+केतु** शनि के साथ केतु जातक के संतति की शल्य चिकित्सा करायेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में
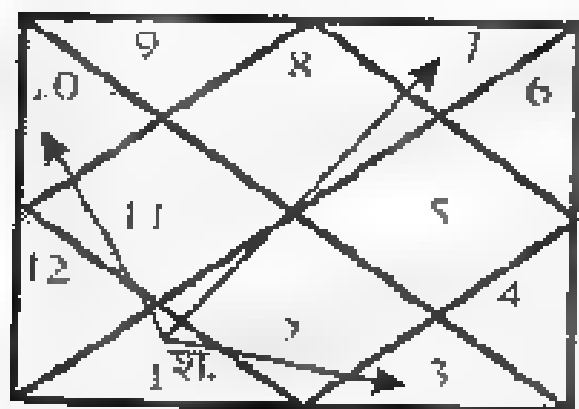
वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है, शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। यहा छठे स्थान में शनि नीच का होगा। मेष राशि के 20 अंशो में शनि परमनीच का होता है। यहा शनि के कारण '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनाता है। ऐसे जातक को माता पिता, सहोदर भाई-बहनों का सुख अल्प मात्रा में ही मिलता है जातक ऋण, रोग व शत्रु में परेशान रहेगा.

दृष्टि—षष्टम भावगत शनि की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) द्वादश भाव (तुला राशि) एवं पराक्रम भाव अपने ही घर मकर राशि पर होगी जातक दीर्घजीवी होगा। गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक पराक्रमी होगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 4/श्लोक ३ के अनुसार ऐसे जातक के अनेक माताएं होती है। ऐसा जातक मंत्र तंत्र जादू टोना चोर कार्य में प्रवीण होता है। परन्तु तृतीयेश छठे होने से जातक का भाई एवं माता जातक से शत्रुता रखता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्रक्षेत्री होकर उच्च का होगा तो शनि शत्रुक्षेत्री होगा। राज्येश सूर्य व सुखेश शनि की इस युति से '**राजभंग योग**', '**पराक्रमभंग योग**', '**सुखभंग योग**' के साथ-साथ '**नीचभंग राजयोग**' की स्थिति बनेगी। फलत जातक राजा के तुल्य ऐश्वर्यशाली व धनी होगा, परन्तु समाज में उसकी कीर्ति नहीं होगी। पीठ पीछे निन्दा बहुत होगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र '**भाग्यभग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। जातक गांव का मुखिया होगा। ऐसा जातक बलपूर्वक वस्तुओं व पद को प्राप्त करने में रुचि रखता है।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा। ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनाता है। जातक की आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करायेगा जातक के दाम्पत्य सुख में विघ्न आयेंगे।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक को गुप्त रोग बीमारी होगा। मित्र '**पराक्रमभग योग**' के कारण धोखा देगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु मित्रो से, समाज से फायदे की वनस्पित नुकसान दिलायेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में

9 8 7 10 6 11 5 12 4 2 श 1 3
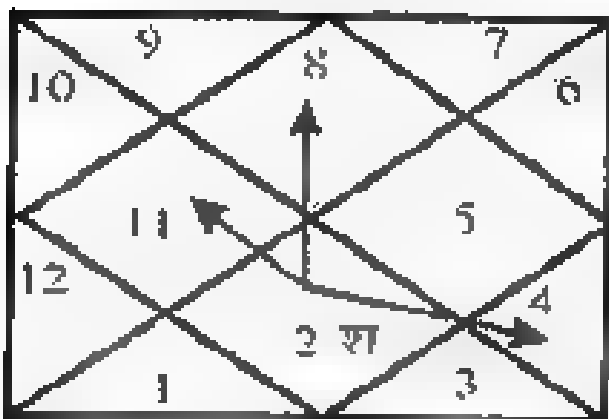
वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। सप्तम स्थान में शनि वृष (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को स्त्री का सुख पूर्ण होता है। व्यापार-व्यवसाय भागीदारी, सांझे के कार्य में सफलता मिलेगी। जातक को धन यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

दृष्टि—सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्यभवन (कर्क राशि), लग्न स्थान (वृश्चिक राशि) एवं सुखस्थान (कुंभराशि) पर होगी जातक भाग्यशाली होगा। परिश्रम का लाभ मिलेगा। भौतिक सुख एवं उत्तम वाहन की प्राप्ति होगी

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार तृतीयेश की यदि सातवें स्थान में हो तो ऐसे जातक की मृत्यु राजदण्ड से होती है परन्तु सुखेश सप्तम में होने से व्यक्ति पिता से हाथ आये हुए धन को भी छोड देता है।

दशा—ऐसे जातक की शनि की दशा शुभफल देगी। पराक्रम बढ़ेगा। भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **शनि+सूर्य**—यहा दोनों ग्रह वृष राशि मे होगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मित्रक्षेत्री होगा। दशमेश सूर्य व पराक्रमेश, सुखेश शनि सप्तम भाव मे होने के कारण जात गृहस्थ व संतान सुख उत्तम। जातक स्वयं पराक्रमी तथा उसका ससुराल भी पराक्रमी, प्रभावशाली होगा, परन्तु पति-पत्नी में कलह चरम सीमा पर होता रहेगा। पिता की मृत्यु के बाद घर में सुख-शांति का साम्राज्य होगा
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्र उच्च का **'यामिनीनाथ योग'** बनायेगा। जातक की पत्नी सुन्दर व सौम्य स्वभाव की होगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को हाथ में लिये गये काम में सफलता देगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध होने से जातक का सुसराल व्यापार प्रिय होगा। पराक्रमी होगा.
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति ससुराल से धन दिलायेगा जातक की पत्नी कमाऊ महिला होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** बनायेगा जातक की पत्नी की अकाल मृत्यु संभव है।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु दाम्पत्य समरसता मे बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। यहां अष्टम स्थान मे शनि मिथुन
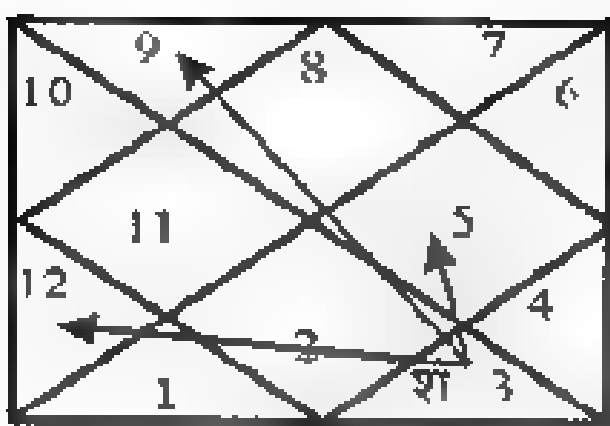
(मित्र) राशि में है। शनि की इस स्थिति में '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' की सृष्टि हुई है। ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा। माता-पिता, भाई-बहन, जमीन-जायदाद के सुखों की होगी। जातक को संतान संबंधी चिंता रहेगी। पढ़ाई अधूरी छूट जायेगी।

दृष्टि—अष्टमभावगत शनि की दृष्टि दशम भाव (सिंह राशि), द्वितीय भाव (धनु राशि) एवं पंचम भाव (मीन राशि) पर होगी। राजनीति क्षेत्र में बाधा, धन की हानि एवं विद्या में रुकावट आयेगी।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार तृतीयेश यदि अष्टम स्थान में हो तो ऐसे जातक की मृत्यु राजदण्ड में होती है। परन्तु सुखेश आठवें होने से व्यक्ति नपुंसक होता है।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। राज्येश सूर्य व सुखेश शनि की इस युति से क्रमशः '**राजभंग योग**', '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखभंग योग**' की सृष्टि होगी। फलतः ऐसे जातक की यश-कीर्ति भंग होगी। मित्र दगा देंगे। सरकारी नौकरी में रुकावट के साथ, जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी-मानी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जायेगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक आर्थिक संकट में जीयेगा। विद्या अधूरी छूटेगी व संतान की चिंता रहेगी।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करायेगा। जातक के दाम्पत्य सुख की समरसता भंग होगी।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक की आयु कम होगी। उसका पराक्रम भंग होगी।

8. शनि+केतु–शनि के साथ केतु गृहस्थ सुख में बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में
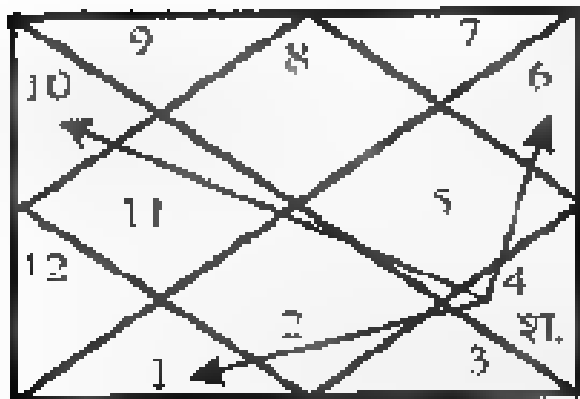
वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहा अशुभ फल ही देगा। यहा नवम स्थान मे शनि कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक की भाई-बहन, धन यश, पराक्रम पद-प्रतिष्ठा, पिता के सुख-ऐश्वर्य में वृद्धि होगी। जातक को ठेकेदारी को कार्यों में लाभ होगा। धंधे बहुत प्रकार के होगे पर पीठ पीछे निन्दा होगी।

दृष्टि–नवमभावगत शनि की दृष्टि लाभभाव (कन्या राशि), पराक्रम भाव (मकर राशि) एवं षष्टम भाव (मेष राशि) पर होगी जातक को व्यापार से लाभ होगा। जातक पराकमी होगा एवं अपने शत्रुओं को नष्ट करने में सक्षम होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 4/श्लोक 2 के अनुसार सुखेश यदि नवमें हो तो जातक ईश्वर में विश्वास रखने वाला एव माता-पिता की सम्पत्ति का तिरस्कार कर खुद के पुरुषार्थ में धन कमाता है। ऐसे जातक का भाग्योदय स्त्री होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। पर 33% अशुभफल देगी। संघर्ष की स्थिति रहेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे सूर्य यहां मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि मे होगा। दशमेश सूर्य एव पराक्रमेश, सुखेश शनि की युति भाग्य स्थान मे होने से जातक को सरकारी नौकरी, राज्य कृपा या राजकीय सम्मान वगैरा मिलेगा। जातक व्यवसाय की दृष्टि से उन्नत होगा। परन्तु भाईयों से नहीं बनेगी। सुख प्राप्ति के ससाधनो हेतु जातक निरन्तर परेशान रहेगी
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चद्र जातक को भाई बहन इष्ट-मित्रो का पूरा सुख देगा जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा।
3. **शनि+मगल**–शनि के साथ मगल नीच का जातक को परिश्रम का लाभ देगा। जातक सफल व्यक्ति होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध व्यापार में लाभ देगा जातक बुद्धिमान एवं व्यवहारिक ज्ञान से सम्पन्न व्यक्ति होगा।

5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ उच्च का बृहस्पति **'मातृमूलधन योग'** एव **'भ्रातृमूल धनयोग'** बनायेगा। ऐसे जातक को माता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होगी। भाईयों व मित्रों से भी धन लाभ होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक का भाग्योदय बाधित होगा। उन्नति मार्ग की ओर दिक्कतें आयेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु भाग्योदय में भारी संघर्ष करायेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में

9	8	7
10		6
11		5 श.
12		4
1	2	3
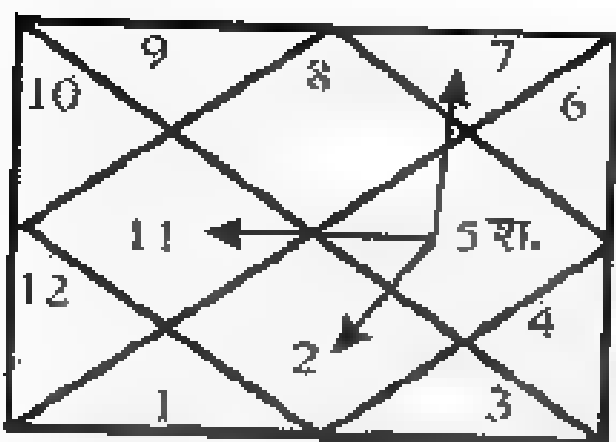
वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। दशम स्थान में शनि सिंह (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक संघर्ष करते हुए 'करोड़पति' पद पर पहुंच जाता है। जातक को पिता का सुख कमजोर, पिता से विचारधारा कम मिलेगी। भाई बहन सुख मध्यम, किन्तु इष्ट–मित्रों का पूर्ण सुख मिलेगा जातक को उच्च पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। राजनीति क्षेत्र में जातक को ज्यादा सफलता मिलेगी।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि द्वादश भाव (तुला राशि) चतुर्थ भाव (कुंभ राशि) एवं सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 4/श्लोक 6 के अनुसार सुखेश यदि दशम में हो तो व्यक्ति सरकारी नौकरी में ऊंचे पद होता है। परन्तु तृतीयेश दसवें होने से जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा शुभफल देगी। जातक को राजकीय सम्मान-प्रतिष्ठा मिलेगी। राजनीति से लाभ एव जनसम्पर्क से लाभ मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही तो शनि परमशत्रु राशि में होगा। सूर्य के कारण यहां **रविकृत राजयोग** बनेगा। दशमेश व सुखेश, पराक्रमेश की युति दशम भाव में होने से जातक को रोजी–रोजगार के उन्नत अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु माता का सुख नहीं होगा। मकान या वाहन पुराना होगा, उस पर मरम्मत को लेकर बहुत खर्चा करना पड़ेगा।

2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र राजयोग देगा। जातक धनी होगा, भाग्यशाली होगा।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल 'दिक्बली' होगा। जातक की स्थाई सम्पत्ति भवन, जायदाद की प्राप्ति होगी।

4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध व्यापार योग बढ़ायेगा, जातक बुद्धिशाली होगा

5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति धनयोग में वृद्धि करेगा। जातक 'करोड़पति' होगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र विवाह के बाद भाग्योदय करायेगा। जातक का ससुराल प्रभावशाली होगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक को सरकारी क्षेत्र से धोखा होगा। सरकारी कर्मचारी तगल करेंगे।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यापार व्यवसाय की उन्नति मे बाधक है।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान मे

9 8 7 10 6 श. 1 5 12 4 2 3 1
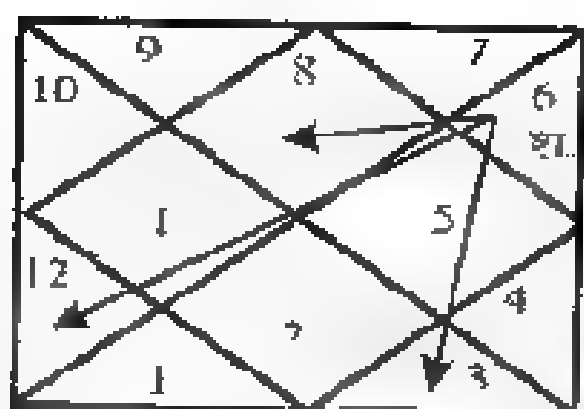
वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। यहां एकादश स्थान में शनि कन्या (मित्र) राशि में है। जातक उद्योगपति होगा। उसे व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा। जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) प्राप्त करेगा। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। विदेशी रहन सहन में विश्वास रखता है। राजनीति मे सफलता मिलेगी जातक की प्रतिभा बहुमुखी होगी तथा आमदनी के जरिए भी दो से अधिक होगे।

दृष्टि–एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि), पंचम भाव (मीन राशि) एवं अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का फल मिलेगा विद्या व पुत्र की प्राप्ति होगी। जातक दीर्घजीवी होगा

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार यदि तृतीयेश एकादश में हो तो जातक अपने उद्यम व पराक्रम से खूब धन कमाता है, तथा सदैव दूसरों की सहायता हेतु तत्पर रहता है। परन्तु सुखेश एकादश में होने से जातक सदैव बीमार रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अतर्दशा शुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। सूर्य यहां समराशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। दशमेश सूर्य एवं पराक्रमेश, सुखेश शनि की युति यहां एकादश स्थान में होने से जातक विद्यावान होगा तथा तंत्र-मत्र एवं गुप्त विद्याओं का जानकार होगा, परन्तु जातक को सरकारी नौकरी में दिक्कतें आयेगी। जातक को निजी व्यापार-व्यवसाय में भी परेशानी उठानी पड़ेगी पिता गुजरने के बाद ही जातक का रोजगार अर्थात् आमदनी सुदृढ़ होगी।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र जातक को उद्योगपति बनायेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मगल जातक को भाग्य में उन्नति देगा। बड़े भाई का सुख होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को बड़ा व्यापारी बनायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति जातक को मित्रो से परिजनों से लाभ दिलायेगा। सहयोग दिलायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को विवाह के बाद उन्नति देगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु **'मान्दी योग'** बनायेगा। राहु यहां एक बार चलता उद्योग-व्यापार बन्द करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यापार में व्यवधान उत्पन्न करता रहेगा।

वृश्चिकलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में

9 10 8 7 श. 6 11 5 12 4 2 1 3
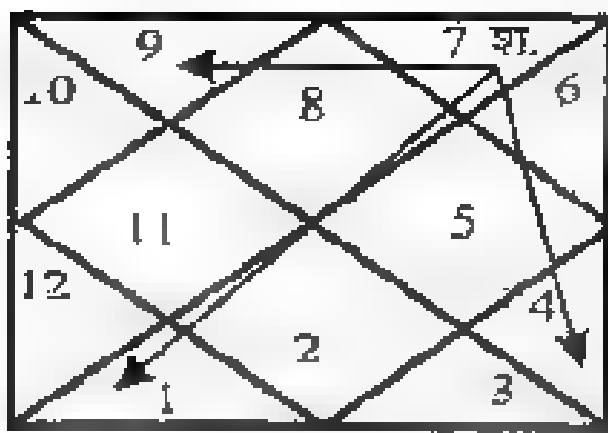
वृश्चिकलग्न में शनि तृतीयेश एवं चतुर्थेश होने से पापी है। शनि लग्नेश मंगल का शत्रु भी है। फलतः यहां अशुभ फल ही देगा। यहां द्वादश स्थान में शनि उच्च का है। तुला राशि के 30 अंशों तक शनि परमोच्च का होता है। ऐसे जातक आवक से अधिक खर्च करेंगे जिसे **'सुखहीन योग'** बनेगा। जातक भौतिक सुखों के पीछे दौड़ेगा, जिससे **'पराक्रमभंग योग'** होगा। जातक को परिजनों व मित्रों से लाभ नहीं होने से पीठ पीछे जातक की निन्दा होगी।

दृष्टि–द्वादश भावगत शनि की दृष्टि द्वितीय स्थान (धनु राशि), षष्टम स्थान (मेष राशि) एवं भाग्यस्थान (कर्क राशि) पर होगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3,श्लोक 4 के अनुसार यदि तृतीयेश द्वादश में हो तो जातक का भाग्योदय स्त्री द्वारा होता है परन्तु सुखेश बारहवें स्थान पर होने से व्यक्ति नपुंसक होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य यहां नीच राशि का तो शनि उच्च राशि का होकर '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। साथ ही '**राजभंग योग**', '**पराक्रम भंगयोग**' एवं '**सुखभंग योग**' की सृष्टि हुई। फलतः जातक राजा तुल्य पराक्रमी व ऐश्वर्य सम्पन्न तो होगा। परन्तु समाज में कीर्ति नहीं होगी। गुप्त शत्रु बहुत होंगे, जिन्हें परास्त करने में जातक सफल होगा। परन्तु परिश्रम बहुत करना पड़ेगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्र '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें आयेगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नही मिलेगा.
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा. जातक धनी, मानी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' व '**संतानहीन योग**' बनायेगा। जातक की पढ़ाई अधूरी छूटेगी। आर्थिक परेशानी भी बनी रहेगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र '**किम्बहुनानामक राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा एवं ऐश मौज में धन उड़ायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु '**मान्दी योग**' बनायेगा जातक के जीवन में अचानक दुर्घटना हो सकती है जिससे पूरे परिवार का सुख-चैन भंग हो जायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु धार्मिक यात्राएं करायेगा। परोपकार में रुपया खर्च करेगा।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में

9	8 रा.	7	6
10	11	5	
12	2	4	
1		3	
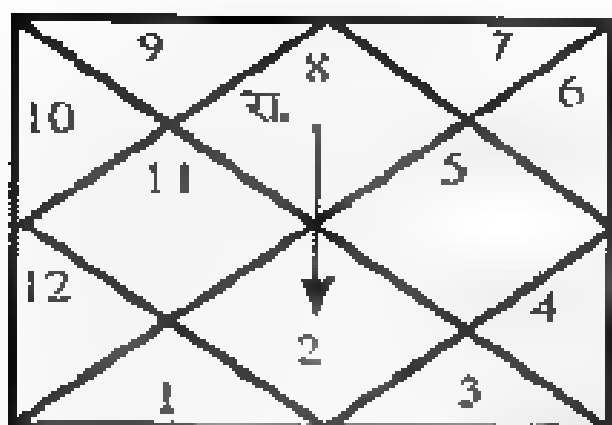
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। राहु यहां प्रथम स्थान में वृश्चिक राशि का नीच का होगा। ऐसा व्यक्ति ओज आकर्षण और प्रभाव से रहित होता है। दूरदर्शिता व त्याग की भावना का नितान्त अभाव होता है। ऐसा व्यक्ति क्रोधी-स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित होता है। लोगों की परवाह नहीं करते और शिक्षा पर विशेष ध्यान नहीं देते।

दृष्टि–राहु की दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि) पर होने से जातक के दाम्पत्य जीवन में असंतोष रहेगा। असाध्य गुप्त बीमारियां जातक के शरीर पर आक्रमण करेंगी।

निशानी–ऐसे जातक को वात रोग से पीड़ा होती है।

दशा–राहु की दशा अशुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य** राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को राजदण्ड मिल सकता है। सरकारी अधिकारी तंग करेंगे।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक मानसिक तनाव में रहेगा। चंद्रमा यहां नीच का होने से विषैला होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक निसंदेह लड़ाकू, योद्धा होगा। जो कभी भी अपनी हार नहीं मानेगा। **'रुचक योग'** के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक के निर्णय गलत होंगे।

5. **राहु+गुरु**–यहा दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में है बृहस्पति यहां नीच राशि में हैं तो राहु नीच राशि मे होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। बृहस्पति के कारण **'कुलदीपक योग'** एव **'केसरी योग'** बना रहा है ऐसा जातक जिद्दी, हठी व लड़ाकू होगा। फिर भी एक सफल राजनीतिज्ञ व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्यभिचारी होगा। कामी होगा।

7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक षड्यंत्रकारी किन्तु पराक्रमी होगा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में

9 रा. 8 7 6 10 11 5 12 4 2 1 3
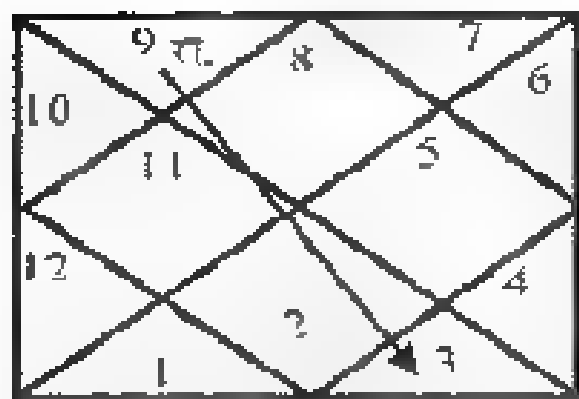
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहा उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहा द्वितीय स्थान मे राहु धनु राशि का होगा। ऐसे जातक के प्रारंभिक जीवन का महत्वपूर्ण भाग कष्ट और दुःखानुभूति में बीतता है विद्या अधूरी रह जाती है और रोजगार की प्राप्ति हेतु कठोर परिश्रम करना पड़ता है। जातक की वाणी कटु होती है

दृष्टि–राहु की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर होने से जातक की सामाजिक प्रतिष्ठा नहीं होगी उसे राजनैतिक विफलताओं का सामना करना पड़ता है.

निशानी–ऐसे जातक को राजा से भय एव मुख में रोग होता है

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का धन अव्यर्थ कार्यों मे खर्च होगा।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चद्र **'ग्रहण योग'** बनायेगा. जातक धन को लेकर चिंताग्रस्त रहेगा।

3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। जातक को भाईयों में नहीं बनेगी। शत्रु से भय रहेगा।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक का रुपया दवाईयों में खर्च होगा।

5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह धनु राशि में है बृहस्पति यहा स्वगृही तो राहु अपनी नीचराशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना ऐसे व्यक्ति धनवान होगा, पुत्रवान होगा। परन्तु धन जितनी तेजी से आयेगा, उतनी तेजी से खर्च होता चला जायेगा। जातक को संतति संबंधी चिंता रहेगी।

6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक शौक-मौज मे पैसा उठायेगा। स्त्रियों पर धन खर्च करेगा।

7. **राहु+राहु**—राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक भौतिक सुख-सुविधाआ की प्राप्ति हेतु धन खर्च करेगा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में
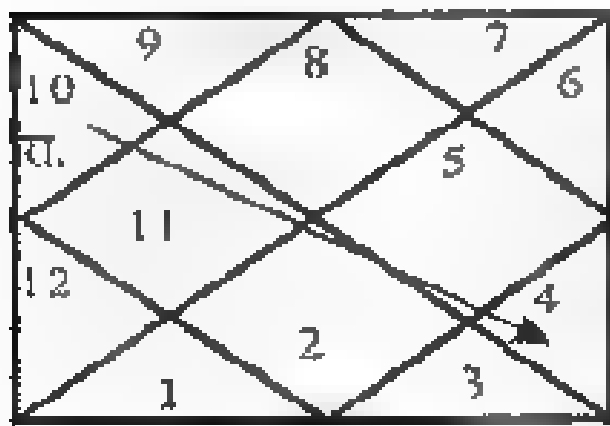
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां तृतीय स्थान में राहु मकर (सम) राशि का होगा। ऐसे जातक महान पुरुषार्थी, परिश्रमी कठिन कार्य में रुचि वाले होते है। तृतीयस्थ राहु जातक के बल, पराक्रम और शौर्य में अद्वितीय वृद्धि करते है। ऐसे जातक महान कार्य करते हैं। जिसमें उनका नाम इतिहास में अमर हो जाता है।

दृष्टि—तृतीयस्थ राहु की दृष्टि भाग्यस्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक तीव्र महत्वकांक्षी होता है तथा उसकी इच्छाएं शीघ्र पूर्ण होती हे।

निशानी—ऐसे जातक के भाई नहीं होते अथवा किसी अपघात से भाई की मृत्यु होगी।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक का पराक्रम भग होगा। बदनामी होगी।

2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक चिंताग्रस्त रहेगा। परिजनों में वैमनस्य रहेगा।

3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। जातक महान् पराक्रमी होगा।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक को गलत निर्णयों के कारण व्यापार में हानि होगी।

5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह मकर राशि में हैं। बृहस्पति यहां नीच का तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। परन्तु सगे भाई बहन, रिश्तेदारो से कम पटेंगे। मित्र ठीक जरुरत के वक्त पर धोखा देंगे।

6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। गलत सौबत में धन खर्च करायगा।

7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा राहु के साथ शनि स्वगृही होने से वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

9 8 7 10 6 रा. 11 5 12 4 2 1 3
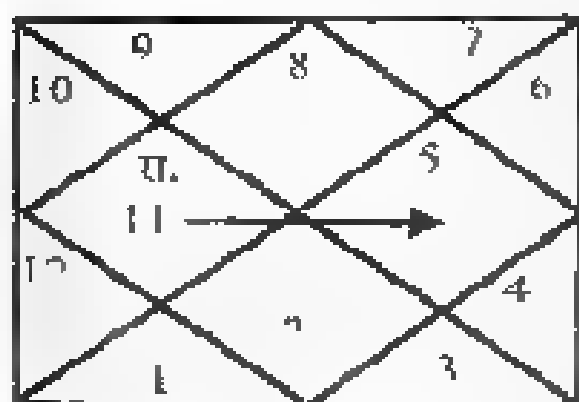
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न मे राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा यहां चतुर्थ स्थान में राहु कुंभ (मूलत्रिकोण) राशि में होकर स्वगृही होगा ऐसे जातक को माता-पिता के सुख में कमी रहती है। बचपन कष्ट अभावो में व्यतीत होगा। जातक के मित्र कम होते है जातक के विवाह या सौतली माता का योग बनता है

दृष्टि—चतुर्थस्थ राहु की दृष्टि (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक को राजकीय कार्य में बाधा बनी रहेगी। सरकार से अपेक्षित सहयोग नही मिलेगा।

निशानी—जातक की माता को वातरोग होता है किसी अपघात से माता की मृत्यु होती है।

दशा—राहु की दशा मिश्रित फलकारी साबित होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बना रहा है। जातक को पिता का सुख नहीं मिलेगा। पिता की मृत्यु बाल्यवस्था मे होगी

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बना रहा है। जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा। जातक को माता की मृत्यु बाल्यावस्था में होगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगारक योग**' बना रहा है। ऐसे जातक को शत्रुओं से परेशानी होगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बना रहा है। जातक को हृदय रोग की बीमारी रहेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। बृहस्पति यहां समराशि मे है तो राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होने से '**चाण्डाल योग**' बना। बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बना ऐसे जातक को माता-पिता का सुख कमजारे होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बना रहा है। जातक के वाहन-नौकर रख-रखाव में रुपया खर्च होगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बना रहा है। शनि के कारण '**शशयोग**' बना। जातक को व्यापार से पैसा मिलेगा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में
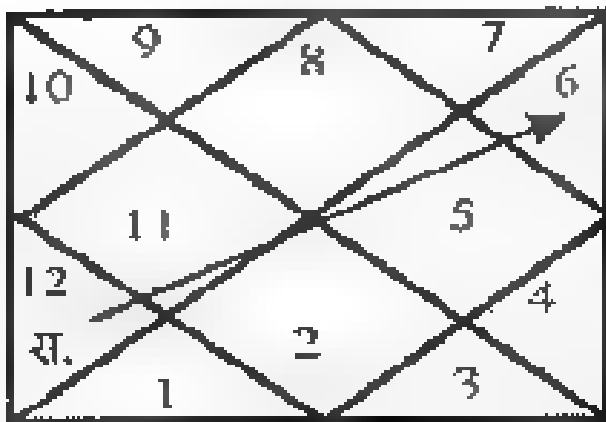
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहा उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहा पंचम स्थान में राहु मीन राशि में नीच का होगा। यहा राहु उच्च विद्या में बाधक है। परन्तु बौद्धिक चातुर्य, कूटनीति में वृद्धि होगी। जातक के संतान सुख में वृद्धि होगी। जातक प्रजावान होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ राहु की दृष्टि एकादश स्थान (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक को व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा।

निशानी–जातक पानी से डरने वाला होता है तथा विदेश जाने का इच्छुक होता है।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को विद्या में रुकावट आयेगी।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा जातक मानसिक चिंता में रहेगा। पुत्र संतति में बाधा आयेगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगारक योग**' बनायेगा जातक की ज्येष्ठ संतति जीवित नही रहेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक के शरीर मे स्वास्थ्य-संबंधी गड़बडी रहेगी
5. **शनि+गुरु**–यहा दोनो ग्रह मीन राशि में हैं। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा राहु अपनी नीच राशि मे होने से '**चाण्डाल योग**' बना। जातक को पांच पुत्रों का योग बनता है परन्तु राहु पुत्र सुख तोड़ेगा। जातक धनवान होगा, विद्यावान होगा परन्तु राहु विद्या का सही लाभ नही होने देगा
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। होगा। जिससे घर वाले परेशान रहेगा
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। मित्र दगाबाज होगे। खास जरुरत के वक्त धोखा देंगे

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति षष्ठ

राहु वृश्चिक राशि में ...

9	8	7
10	8	6
11		5
2	3	4
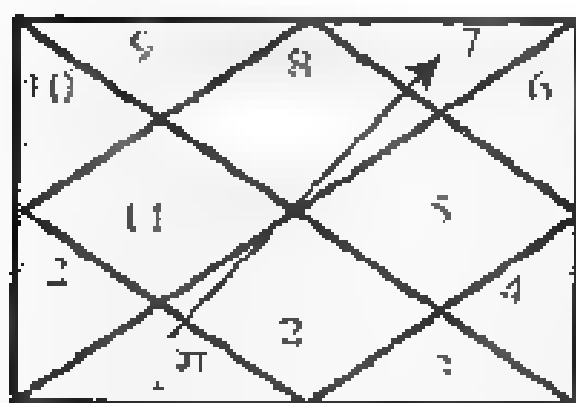
राहु यहा उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न मे राहु जहां बैठा होगा वहा के शुभ फल को तोड़ेगा यहां छठे स्थान में राहु मेष (सम) राशि मे है। यहा पर राहु राजयोगकारक एवं ऊर्जावान् है। ऐसा जातक कमजोर परिश्रमी पराक्रमी व उत्साही होता है उसमे शत्रुओ को नाश करने की सम्पूर्ण क्षमता होती है ऐसे जातक मे हिम्मत व निर्भयता का विलक्षण समावेश होता है।

दृष्टि–षष्टम भावगत राहु की दृष्टि व्ययभाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक आध्यात्मिक क्षेत्र मे रुचि रखता है तथा परोपकार व समाज सेवा के कार्य मे विशेष ख्याति अर्जित करता है

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में अवरोध दूर होकर शत्रुओं का नाश होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। यहा '**राजभंग योग**' के कारण जातक को सरकारी कर्मचारियो से भय रहेगा।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। यहां '**भाग्यभंग योग**' के कारण भाग्योदय में निरन्तर बाधाएं आयेंगी।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। यहां '**लग्नभंग योग**' के कारण जातक का पुरुषार्थ निष्फल जायेगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। यहां '**लाभभंग योग**' के कारण व्यापार से नुकसान होगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मेष राशि में है, बृहस्पति यहां मित्र राशि में तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। बृहस्पति के कारण यहा '**धनहीन योग**' एवं '**सतानहीन योग**' बनेगा। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। प्रारंभिक विद्या में बाधा एवं पुत्र संतान को लेकर

बनायेगा। यहा 'विवाहभग योग'

क के मामा को पुत्र सतति नही
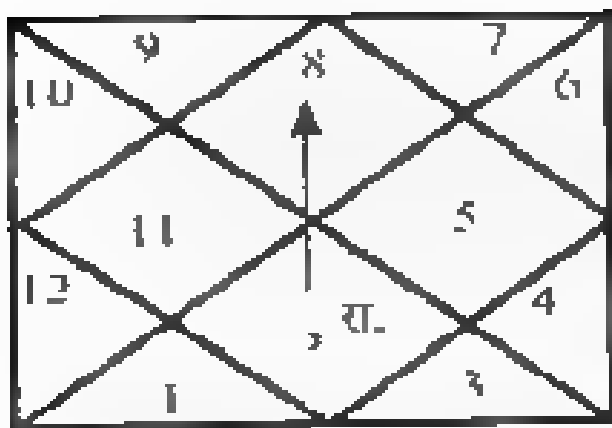
ति सप्तम स्थान में

राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहा के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां सप्तम स्थान मे राहु वृष राशि में उच्च का होगा। सपतम राहु किन्हीं-न-किन्ही कारणों से जातक का दाम्पत्य जीवन बिगाड़ता है। वैवाहिक सुख, गृहस्थ सुख की समरसता में यह राहु बाधक है, गुप्त समझौत एव भागीदारी के कार्य में विवाद पैदा होता है।

दृष्टि–सप्तमस्थ राहु की दृष्टि लग्न भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी फलत: जातक महत्वकाक्षी होता है तथा आगे बढ़ने की प्रबल उत्कण्ठा रहती है। ऐसा जातक अपने कठोर परिश्रम से भरपूर उन्नति प्राप्त करता है।

निशानी–ऐसे राहु स्त्री का नाश करता है। जातक दूसरा विवाह करता है।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनेगा। जातक को जीवन साथी से विरक्ति होगी। बिछोह या तलाक संभव।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनेगा। चंद्रमा उच्च का होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। विवाह के बाद भाग्योदय होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अंगारक योग**' बनेगा। जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनेगा। जातक को व्यापार में नुकसान होगा। पत्नी के साथ अनबन रहेगी साझेदारी का व्यापार भंग होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि में हैं। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु उच्च राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बनेगा बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' भी बन रहा है। जातक धनी होगा। ऐश्वर्यशाली होगा पर पति पत्नी के मध्य वैचारिक मतभेदों से द्वंद चलता रहेगा।
6. **राहु+शुक्र** राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनेगा शुक्र यहां '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होकर सुरा सुन्दरी का शौकीन होगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनेगा जातक सांसारिक सुखों में न्यूनता रहेगी। पत्नी से कम बनेगी

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
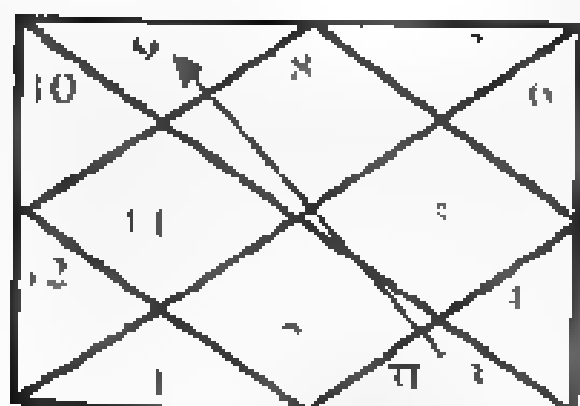
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा यहां अष्टम स्थान में राहु मिथुन राशि में मूलत्रिकोण का होकर स्वगृही होगा। ऐसे जातक में विशेष साहस व प्रतिभा होती है जो विपरीत परिस्थितियों में निखरती है। ऐसे जातक में अपने शत्रु, विरोधियों को गुप्त रूप से परास्त करने की विशेष योग्यता होती है। शत्रु को परास्त करके ही जातक दम लेगा

दृष्टि– अष्टमस्थ राहु की दृष्टि द्वितीय भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक कुटुम्ब-परिवार में उच्च कार्य करके यशस्वी होगा।

निशानी -जातक को 32वें या 45वें वर्ष में भीषण रोग होने की संभावना रहेगी।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। यहां '**राजभंग योग**' के कारण जातक राजा से दण्डित होगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। यहा '**भाग्यभंग योग**' बनेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगारक योग**' बनायेगा। यहा '**लग्नभंग योग**' बनेगा। जातक को पुरुषार्थ का फल नहीं मिलेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। यहां '**लग्नभंग योग**' बनेगा। जातक को व्यापार मे नुकसान होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहा दोनो ग्रह मिथुन राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण '**धनहीन योग**' एव '**संतानहीन योग**' भी बनेगा। ऐसे जातक को आर्थिक विषमताएं सहन करनी होगी। विद्या में बाधा एवं पुत्र संतान को लेकर चिंता जीवन पर्यन्त बनी रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। शुक्र यहां '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक को गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। शनि यहा '**पराक्रमभग योग**' बनायेगा। जातक को मित्रो से धोखा बदनामी मिलेगी।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में
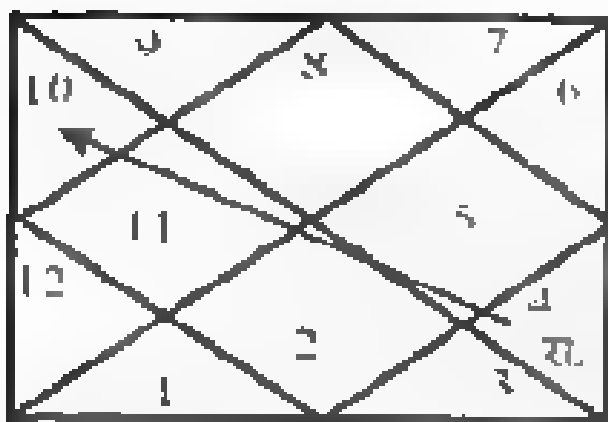
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहा उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहा नवम स्थान मे राहु कर्क राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक का जीवन संघर्षमय होता है। वे जीवन में योद्धाओं की भांति संघर्षशील रहते हैं, दृढ़ निश्चय के कारण सफलता इनकी चेरी होती है। जीवन मे धन, यश भाग्य पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति अवश्य होगी

दृष्टि—नवमस्थ राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी फलत: जातक पराक्रमी होगा। जनसम्पर्क सघन रहेगा।

निशानी—ऐसा जातक हाथ में लिए हुए काम को अधूरा नहीं छोड़ता।

दशा—राहु की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को पिता का सुख कमजोर रहेगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को माता का सुख कमजोर रहेगा। पर स्वगृही चंद्रमा के कारण जातक भाग्यशाली होगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल '**अंगारक योग**' बनायेगा। जातक को भाइयों का सुख कमजोर मिलेगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में है। बृहस्पति यहां उच्च का तो राहु शत्रु क्षेत्री होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। ऐसा जातक धनी एवं विद्वान् होगा। जातक की संतति भी विद्वान व कीर्तिवान होगी। परन्तु भाग्योदय में बाधा आती रहेगी। जातक भाग्य संबंधी, संतान संबंधी गुप्त परेशानियों से घिरा रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक के भाग्योदय में स्त्री सहायक होगी।
7. **राहु+राहु**—राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक भाईयों व मित्रों के सहयोग से आगे बढ़ेगा।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में

9	8	7
10		6
11 ←		5 रा
12		4
1	2	3
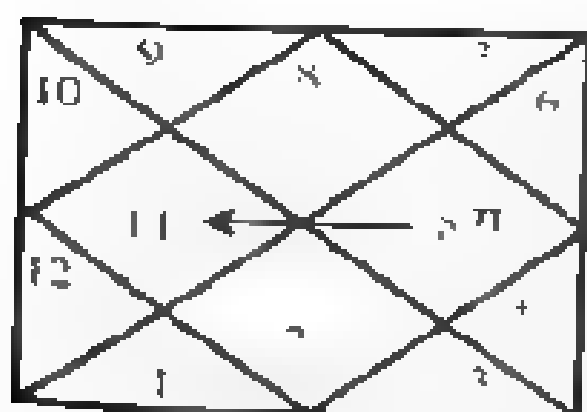
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां दशम स्थान में राहु सिंह राशि का शत्रुक्षेत्री होगा ऐसा जातक साहसी पराक्रमी एवं दृढ़ विचारों वाला होगा। ऐसा जातक समाज व सरकार द्वारा सम्मानित होता है। ऐसा जातक पिता की तुलना अधिक धनी, मानी व यशस्वी होता है।

दृष्टि—दशमभावगत राहु की दृष्टि चतुर्थ स्थान (कुंभराशि) पर होगी। जातक को माता का सुख कमजोर रहेगा।

निशानी—ऐसे जातक युद्धप्रिय होता है। माता या पिता की मृत्यु बचपन में हो जाती है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। '**रविकृत राजयोग**' के कारण जातक राज में, राजनीति में उच्च पद प्राप्त करेगा
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक को राजा से सम्मान मिलेगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। 'दिग्बली' मंगल जातक को अतुल कीर्ति देगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा। '**कुलदीपक योग** के कारण जातक परिवार का नाम रोशन करेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में है। बृहस्पति यहां मित्र राशि में तो राहु शत्रु राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। केन्द्रस्थ बृहस्पति के कारण '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' भी बन रहा है। जातक को सरकारी नौकरी में बाधा आयेगी। व्यापार में रुकावट, फिर भी जातक यशस्वी होगा तथा अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।
7. **राहु+राहु**—राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। जातक को सभी प्रकार के भौतिक व सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में
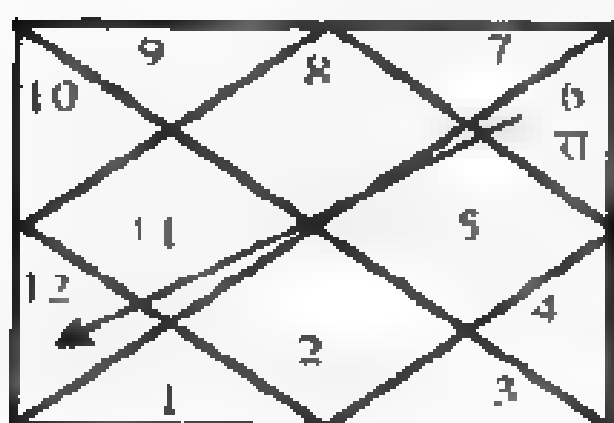
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है। राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहा बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां एकादश स्थान मे राहु कन्या का स्वगृही होगा। एकादश स्थान मे राहु राजयोग प्रदाता है। ऐसा

व्यक्ति दृढ़ निश्चयी साहसी एवं परिश्रमी होता है ऐसा जातक समाज व सरकार द्वारा सम्मानित होता है। व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा।

दृष्टि—एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम स्थान (मीन राशि) पर होगी फलतः ऐसे जातक के प्रारंभिक विद्या में रुकावट आयेंगी

निशानी-ऐसे जातक विदेशियों से ज्यादा सम्पर्क करता है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक का व्यापार-व्यवास से लाभ होगा
2. **राहु+चंद्र** राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। जातक के व्यापार-व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल '**अंगारक योग**' बनायेगा। जातक को उद्योग में लाभ होगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। उच्च के बुध के कारण जातक महाधनी होगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग** बना रहा है ऐसा जातक विद्यावान होगा। पुत्रवान व धनी होगा गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा परन्तु राहु के कारण व्यापार-व्यवसाय में बाधा आती रहेगी। तथा संतान की उन्नति में भी जातक को निरन्तर बाधा रुकावट महसूस होती रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा नीच का शुक्र जातक को कामी एवं व्यभिचारी बनायेगा
7. **राहु+राहु**—राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा जातक व्यापार प्रिय होगा एवं व्यापार-व्यवसाय से धन की प्राप्ति होती रहेगी।

वृश्चिकलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में

10	9	8	7
11			6
12	1	2	5
		3	4
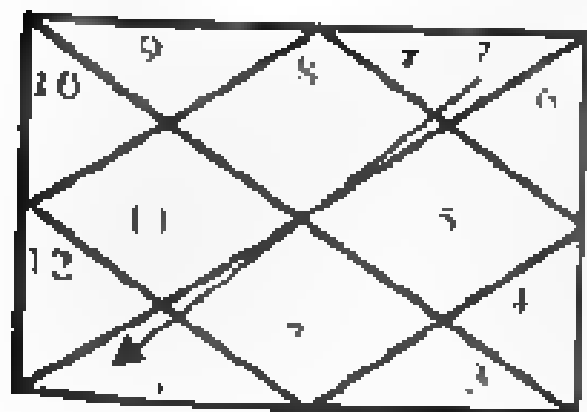
राहु वृश्चिक राशि में नीच का माना गया है राहु यहां उद्विग्न रहेगा। वृश्चिकलग्न में राहु जहां बैठा होगा वहां के शुभ फल को तोड़ेगा। यहां द्वादश स्थान में राहु राशि में मित्रक्षेत्री होगा। ऐसे जातक को अचानक लाभ या अचानक हानि

होने की सभावना अधिक रहती हैं ऐसा जातक आध्यात्मिक विचारों वाला होता। परोपकारी व दानी होता है। ऐसे जातक को जन्मभूमि से अतिरिक्त परदेश व विदेश मे ज्यादा कीर्ति यश व धन की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–द्वादशस्थ राहु की दृष्टि छठे स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलतः ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होता है।

निशानी–ऐसे जातक के आंख में रोग व पाव में आघात होते है।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा मिश्रित फलकारक होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से संबंध

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य '**ग्रहण योग**' बनायेगा। सूर्य नीच का भय या राजदण्ड दिलायेगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्र '**ग्रहण योग**' बनायेगा। चंद्रमा यहां '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक का भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**अगांरक योग**' बनायेगा। '**लग्नभंग योग**' के कारण परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**जड़त्व योग**' बनायेगा। **लाभभंग योग** के काण व्यापार से नुकसान होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहा दोनों ग्रह तुला राशि मे है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि मे तो राहु मित्र राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति की इस स्थिति के कारण '**धनहीन योग**' एवं '**संतानहीन योग**' भी बनेगा। ऐसे जातक को धनसग्रह में बाधाओ का सामना करना पड़ेगा। पुत्र सतति को लेकर चिंता रहेगी। जातक परोपकार, ब्राह्मण भोजन, धार्मिक अनुष्ठान एव यात्राओं में रुपया खर्च करेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**लम्पट योग**' बनायेगा। '**विलम्ब विवाह योग**' के कारण जातक को गृहस्थ सुख देरी से मिलेगा।
7. **राहु+राहु**–राहु के साथ शनि '**मान्दी योग**' बनायेगा। '**पराक्रमभग योग**' के कारण मित्रो से धोखा एव समाज में बदनामी मिलेगी।

❑❑❑

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
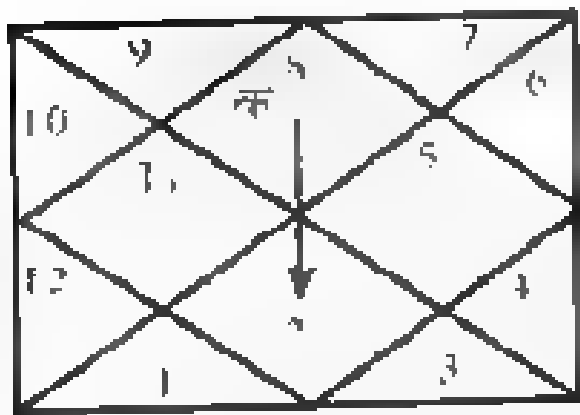
केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी यहां प्रथम स्थान में केतु वृश्चिक राशि में उच्च का होगा ऐसा जातक कृशकाय, दुबला, उदास, क्रोधी और लड़ाकू स्वभाव का होता है जातक कठोर परिश्रम करके अपना भाग्य खुद बनायेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ केतु दृष्टि सप्तम भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसा जातक कामी होगा और जीवन साथी के साथ अप्राकृतिक मैथुन करेगा।

निशानी–ऐसे जातक के हाथ में पसीना बहुत आयेगा। जातक के चेहरे पर चेचक इत्यादि के स्थाई चिह्न हो सकते हैं

दशा–केतु की दशा अन्तर्दशा उत्तम फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य** केतु के साथ सूर्य जातक के व्यक्तित्व विकास में संघर्ष करायेगा
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ नीच चंद्रमा जातक को तनावग्रस्त रखेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**रुचक योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व प्रभावशाली होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक की बुद्धि को भ्रमित करेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को आध्यात्मिक ऊर्जा देगा।

6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को सैक्स की ओर ज्यादा आकर्षित करेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को नकारात्मक ऊर्जा प्रदान करेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में
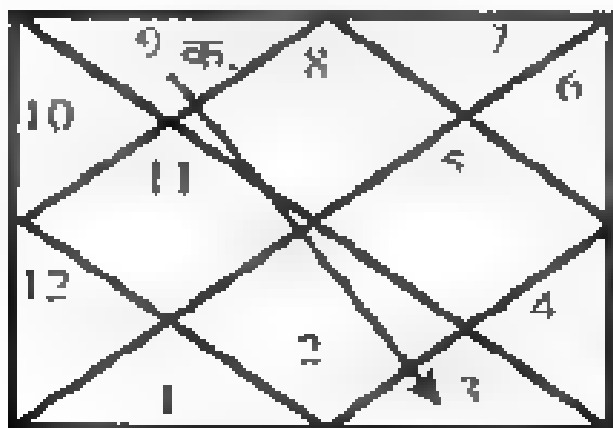
केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है केतु यहा हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न मे केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहा द्वितीय स्थान मे धनु राशि के केतु उच्च का होगा। ऐसे जातक को मुख रोग और कुटुम्ब से विरोध रहता है। राजा से भय रहता है। यहां केतु धनसंग्रह में रुकावट डालता है। ऐसा जातक अपनी प्रतिष्ठा बचाएं रखने के लिए विशेष रुप से प्रयत्नशील रहेगा पर कौटम्बिक सुख में कुछ न कुछ कमी रहेगी।

दृष्टि—द्वितीयस्थ केतु की दृष्टि अष्टम भाव (मिथुन राशि) पर रहेगी। जातक दीर्घजीवी होगा।

निशानी—ऐसा जातक शत्रु जैसी वाणी बोलता है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को धनी बनायेगा पर धन का 60% भाग व्यर्थ में खर्च हो जायेगा।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को मानसिक तनाव देगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक के धन को व्यर्थ में नष्ट भ्रष्ट करेगा
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध कुटुम्ब में अशांति देगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। परन्तु धन का 60% भाग व्यर्थ में खर्च हो जायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को विवाह से कष्ट पैदा करेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि धन का बिगाड़ करेगा कुटुम्ब के कलह करायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में

केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां तृतीय स्थान में
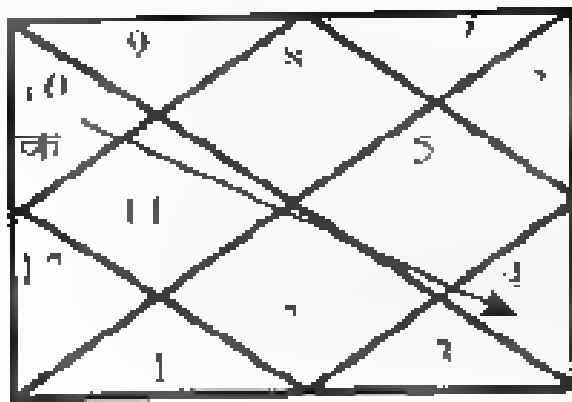
केतु की स्थिति मकर राशि में मूलत्रिकोणी में होगी ऐसा जातक शत्रु का नाश करने वाला लोकप्रिय व बलवान होता है। साझेदारी से हमेशा लाभ कमाता है, प्रवास में भाग्यवृद्धि होती है। ऐसा जातक परिश्रमी मेहनती व धैर्यवान् होता है। भाई बहनों के संबंधों में कुछ कटुता रहती है।

दृष्टि—तृतीयस्थ केतु की दृष्टि भाग्य भवन (कर्क राशि) पर होगी। जातक का भाग्योदय कठिनता से होगा। ऐसा व्यक्ति भीतर से कमजोर पर बाहर से बड़ी हिम्मत का प्रदर्शन करता है

निशानी -छोटे भाई का कष्ट होता है व कान में रोग होते है

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. केतु+सूर्य—केतु के साथ सूर्य जातक को पराक्रमी बनायेगा पर बदनामी पीठ पीछे चलती रहेगी।
2. केतु+चंद्र केतु के साथ चंद्रमा परिजनों में मनमुटाव करायेगा
3. केतु+मंगल—केतु के साथ मंगल उच्च का जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।
4. केतु+बुध—केतु के साथ बुध जातक को व्यवहारिक बनायेगा।
5. केतु+गुरु—केतु के साथ बृहस्पति मित्रों से आर्थिक मदद एवं सहायता दिलायेगा।
6. केतु+शुक्र—केतु के साथ शुक्र पराक्रम में गड़बड़ी करायेगा, जातक यार-दोस्तों पर फिजूल रुपया खर्च करेगा।
7. केतु+शनि—केतु के साथ स्वगृही शनि भाइयों से लाभ देगा पर तकरार भी करायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
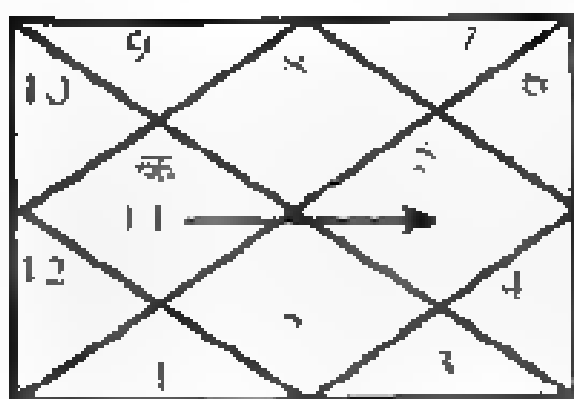
केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी, यहां चतुर्थ स्थान में केतु कुंभ राशि में मित्रक्षेत्री होगी केतु यहां राजयोग देगा वाहन सुख देगा। स्वभाव अस्थिर

होता है। जातक को माता के कारण कुछ परेशानी उठानी पड़ती है मकान सुख में कुछ कमी। व्यक्ति अंदर से परेशान रहता है।

दृष्टि--चतुर्थभावस्थ केतु की दृष्टि दशम स्थान (सिंह राशि) पर होगी जातक को राजा से भय रहेगा। कोर्ट कचहरी में प्रतिकूल परिणाम मिलेंगे।

निशानी–ऐसा जातक पित्त प्रकृति एवं वितण्डवादी होता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य माता पिता को बीमारी या कष्ट देगा। पिता की सम्पत्ति जातक को नहीं मिलेगी।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा माता को बीमारी या वाहन से कष्ट देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को भौतिक सुख सुविधा में कष्ट देगा।
4. **केतु+बुध**-केतु के साथ बुध मामा को कष्ट देगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को अपना भवन-मकान, भूमि व वाहन देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र विवाह में विलम्ब करायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**शशयोग**' के कारण जातक को राजा तुल्य पराक्रमी बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में
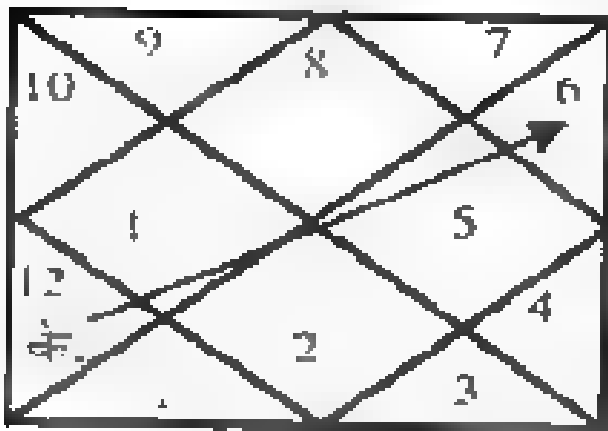
केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां पंचम स्थान में केतु मीन राशि में स्वगृही होगा ऐसा जातक आध्यात्म प्रेमी होता है। उसे तीर्थ यात्रा का शौक रहता है। जातक उपदेशक होता है। राजयोग के कारण मठाधीश महंत या सामाजिक संस्था, ट्रस्ट का अध्यक्ष होता है। जातक के विद्याध्ययन में रुकावट आयेगी। संतान से कम बनेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ केतु की दृष्टि एकादश स्थान (कन्या राशि) पर होगी। राज (सरका) पक्ष से गुप्त चिंताएं बनी रहेंगी

निशानी–ऐसे जातक को परदेश में रहने की प्रवृत्ति होती है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य विद्या प्राप्ति में बाधक है।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को उच्च शिक्षा दिलायेगा। प्रथम सन्तति कन्या होगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को उत्तम विद्या, व्यावसायिक विद्या व टैक्नीकल विद्या का ज्ञाता बनायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ नीच का बुध जातक की बुद्धि को मलिन करेगा। जातक को दो कन्या होंगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति स्वगृही जातक को आध्यात्मिक ज्ञान एवं पुत्र संतान की प्राप्ति करायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र उच्च का जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा पर विवाह विलम्ब से होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को विदेशी विद्या में रुचि देगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में
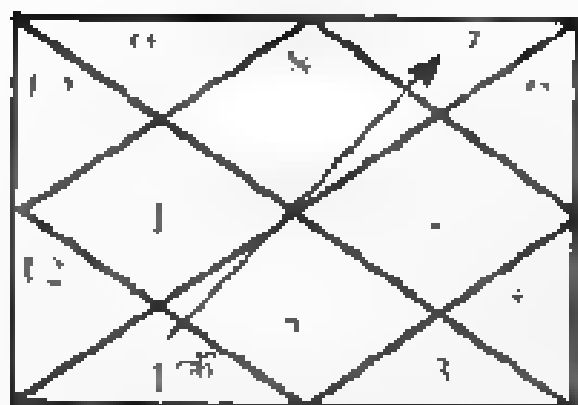
केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां छठे स्थान में केतु मेषराशि में मित्रक्षेत्री होगा। ऐसा जातक शत्रु का नाश करने वाला सदैव विजयी होता है। चौपायों का लाभ अथवा वाहन अनेक होते हैं। ऐसा जातक ऊर्जावान् होता है। अन्य लोगों को तुच्छ समझकर लापरवाह रहता है। जातक बड़ा परिश्रमी होता है तथा अपने प्रभाव का विस्तार करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहता है।

दृष्टि–षष्ठम भावगत केतु की दृष्टि द्वादश भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक धन को खर्च अच्छे कामों में करता है।

निशानी–शरीर निरोग रहता है। जातक का ननिहाल पक्ष कमजोर होता है।

दशा–केतु की दशा-अन्तर्दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**राजभंग योग**' करायेगा। जातक को सरकारी नौकरी प्राप्त करने मे दिक्कत आयेगी।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' करायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु परेशानी उठानी पड़ेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी एव ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक की कुण्डली में '**धनहीन योग**' व 'विद्याभग योग' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताएं रहेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' कराता है। जातक को दाम्पत्य सुख देरी से मिलेगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। '**सुखहीन योग**' भी बनायेगा। जातक को बदनामी का सामना करना पड़ेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में
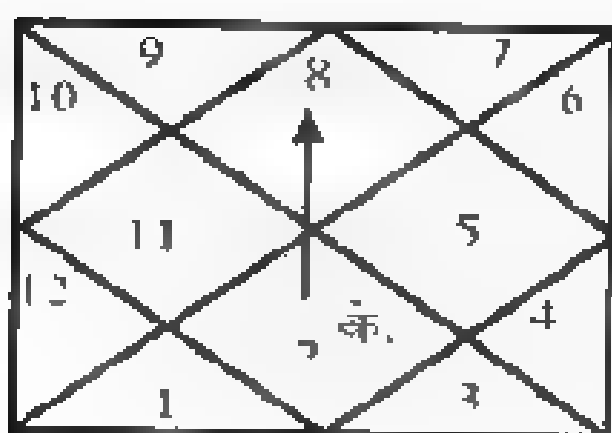
केतु वृश्चिकराशि मे उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहा सप्तम स्थान में केतु वृषराशि में नीच का होगा। ऐसे जातक को राजा की अवकृपा एवं शत्रुओ से भय रहता है। कोर्ट कचहरी से अपमान का भय रहता है। ऐसा जातक अतिकामुक एव अनैतिक संबंधो में विश्वास रखता है। उसके जननेन्द्रिय में विकार रहता है.

दृष्टि–सप्तम भावगत केतु की दृष्टि लग्नस्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसा जातक अपने वाक्चातुर्य, गुप्त युक्ति, साहस व धैय के बल पर सभी प्रकार के काम करने में सफल होता है।

निशानी–ऐसा जातक नीचजाति की स्त्री से अवैध संबंध रखता है.

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य—**केतु के साथ सूर्य विवाह विच्छेद का योग बनाता है।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा उच्च का पत्नी सुन्दर देगा
3. **केतु+मंगल—**केतु के साथ मंगल होने से जातक अत्यधिक कामी होगा।
4. **केतु+बुध—**केतु के साथ बुध जातक को व्यापार प्रिय बनायेगा पर गृहस्थ सुख में कमी रहेगी
5. **केतु+गुरु—**केतु के साथ बृहस्पति गृहस्थ सुख देगा पर कुछ-न-कुछ न्यूनता बनी रहेगी।
6. **केतु+शुक्र—**केतु के साथ शुक्र होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
7. **केतु+शनि—**केतु के साथ शनि जातक का वैवाहिक जीवन कलुषित होगा

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में
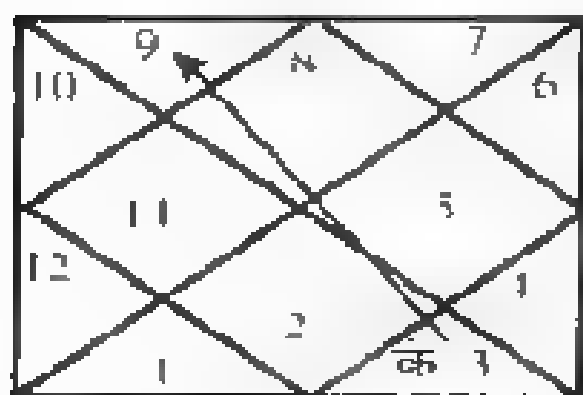
केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां अष्टम स्थान में केतु मिथुन राशि में नीच का होगा। ऐसा जातक दीर्घजीवी होता है। परस्त्री में आसक्त रहता है। जातक दुराचारी व नेत्र रोगी होता है। ऐसे जातक को आयु के संबंध में अनेक बार मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है

दृष्टि—अष्टमस्थ केतु की दृष्टि द्वितीय स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को अपना जीवन निर्वाह करने के लिए आर्थिक कष्टों का मुकाबला करना पड़ता है

निशानी—जातक की वाणी कड़वी होगी।

दशा—केतु की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फलदायक होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य—**केतु के साथ सूर्य **'राजभंग योग'** कराता है। जातक को सरकारी नौकरी को लेकर परेशानी आयेगी।

2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चद्रमा '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक के उन्नति में बाधक है

3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी एव ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीयेगा।

5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। विद्या में रुकावट आयेगी।

6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' करायेगा। जातक के दाम्पत्य जीवन के सुखों में न्यूनता रहेगी।

7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा। जातक के पीठ पीछे जातक की निन्दा होगी।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में

9 8 7 10 6 11 5 12 4 के. 2 3 1
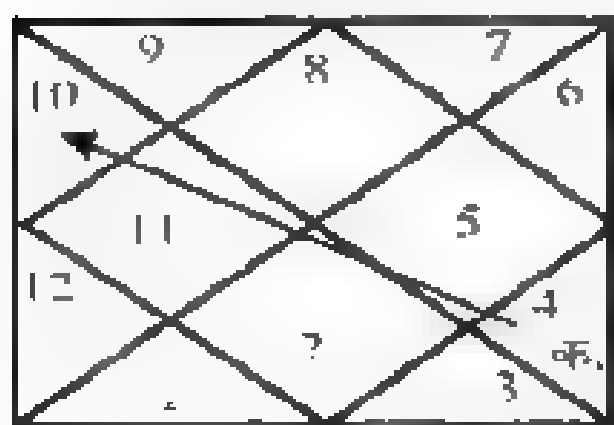
केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां नवम स्थान में केतु कर्क राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसा जातक सघर्ष के द्वारा ऊचे पद को प्राप्त करता है। जातक धर्मविरोधी है पर राजा का मंत्री, सलाहकार व राज में ऊचा पद प्राप्त करता है ऐसे जातक के भाग्योदय में मकान सकट आता है, जातक हर समय मानसिक चिंताओं से घिरा रहता है।

दृष्टि—नवमस्थ केतु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक के भाईयों में परस्पर वैर रहता है।

निशानी—सगे भाई का सुख नहीं।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य राजयोग बनायेगा। जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी। या सरकार से सम्मान मिलेगा।

2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चद्रमा जातक का भाग्योदय शीघ्र करायेगा। पर सघर्ष रहेगा।

3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल नीच का जातक को भूमि लाभ दिलायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध व्यापार में लाभ दिलायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति उच्च का जातक को उत्तम विद्या का सुख देगा। राजनीति में सम्मान व सफलता देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को मित्रों से परिजनों से लाभ देगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में

9, 8, 7, 10, 6, 11, 5 के., 12, 4, 2, 1, 3
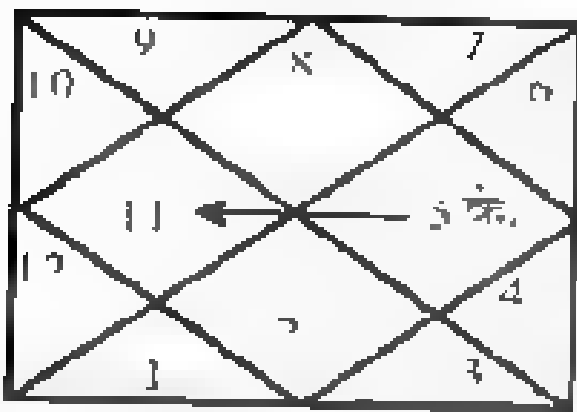
केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा, वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां दशम स्थान में केतु सिंह राशि में मूलत्रिकोणी होगा। ऐसे जातक को माता पिता का सुख नहीं वाहन दुर्घटना का भय रहता है। जातक शत्रुओं का नाश करने में कुशल होता है। युद्ध में शत्रु भी इसकी कीर्ति गाते हैं। जातक अपने धैर्य, साहस व गुप्त युक्तियों से जीवन में सफलता प्राप्त कर लेता है।

दृष्टि–दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थभाव (कुंभराशि) पर होगी। जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा। तथा पिता से विचार नहीं मिलेंगे।

निशानी–जातक का प्रभाव राज दरबार में रहेगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**रविकृत राजयोग**' बनायेगा। जातक को राजा (सरकार) से उच्च पद, प्रतिष्ठा मिलेगी।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा राजा से सम्मान दिलायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी या गांव का मुखिया बनायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को व्यापार में सफलता देगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति आध्यात्मिक ज्ञान तथा अध्ययन-अध्यापन में सफलता देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को व्यापार में बाधा देगा।

7 **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को 'करोड़पति' बनायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में

9	8	7
10		6 के.
11		5
12		4
1	2	3
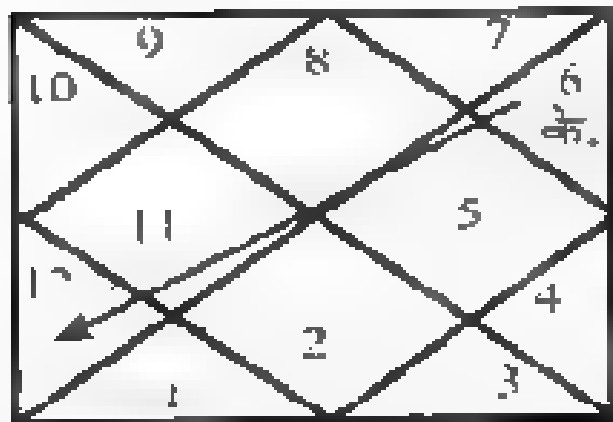
केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी यहां एकादश भाव के केतु कन्या राशि में नीच का होगा। जातक विनोदी स्वभाव का होगा एवं मीठा (मधुर) वाणी बोलेगा। जातक शास्त्रों का रसिक, परोपकारी, दयालु होता है। राजा द्वारा सम्मानित होता है। ऐसे जातक को आकस्मिक धन लाभ होता है। ऐसा जातक संकटों का समाना बड़े धैर्य, चालाकी एवं बुद्धि चातुर्थ से करता है।

दृष्टि–एकादश भावगत केतु की दृष्टि पंचम भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को प्रारंभिक विद्या में रुकावट आती है तथा फिर आगे बढ़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी व चालबाज होता है।

निशानी–जातक को व्यापार में यश मिलता है।

दशा–केतु की दशा-अनर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य व्यापार में लाभ देगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चद्रमा व्यापार में उतार चढ़ाव लाता रहेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल उद्योग में लाभ दिलायेगा।
4. **केतु+बुध** केतु के साथ उच्च का बुध व्यापार में लाभ देगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति आध्यात्मिक सुख देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र नीच का बड़े भाई का सुख को नष्ट करेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि व्यापार में रुकावट डालेगा। जातक विदेश में कमायेगा।

वृश्चिकलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में

केतु वृश्चिकराशि में उच्च का माना गया है। केतु यहां हर्षित रहेगा। वृश्चिकलग्न में केतु जहां होगा वहां उत्साह की प्रवृत्ति रहेगी। यहां द्वादश स्थान में
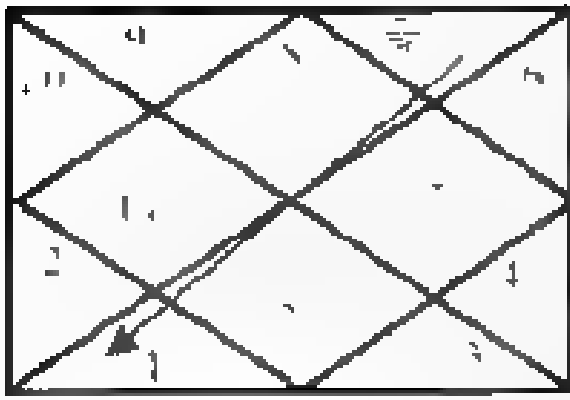
केतु तुला राशि में मित्रक्षेत्री होगा। ऐसा जातक लड़ाई में डरपोक एवं कंजूस स्वभाव का होता है। जातक कवि, शास्त्रज्ञ एवं जीतेन्द्रिय होता है। ऐसा जातक अधिक खर्च करता है पर बड़ी चतुराई परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों से अपने खर्चे को चलाता रहता है। अपने सहास व धैर्य को नहीं खोता।

दृष्टि—द्वादश भावगत केतु की दृष्टि छठे स्थान (मेष राशि) पर रहेगी। जातक ऋण व रोग को समाप्त करने में सफल होता है।

निशानी—ऐसा जातक शक्ति का उपासक, देवी का भक्त एवं साधक होता है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी

केतु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य होने से जातक को राज्य से दण्ड मिलने का भय रहेगा, सरकारी अधिकारी विरोध में रहेंगे।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा, जातक को भाग्योदय हेतु भारी संघर्ष करना पड़ेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल '**लग्नभंग योग**' बनायेगा, जातक को परिश्रम का फलनहीं मिलेगा
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा, जातक धनी मानी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' व '**विद्याहीन योग**' बनाता है जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र '**विलम्ब विवाह योग**' बनायेगा। जातक को पूर्ण गृहस्थ सुख में परेशानियां आयेंगी।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**सुखहीन योग**' बनायेगा जातक के मित्र, परिजन ही जातक की निन्दा करेंगे।

❑❑❑

मंगलवार व्रत कथा

मगल बहादुरी व साहस के देवता हैं। ये भय तथा शत्रुओं का नाश करने वाले हैं। मंगलवार का व्रत व पूजन करने से सब प्रकार के अनिष्टों से मुक्ति होती है। मगलवार के व्रत का नियम-पूर्वक पालन करने से धन-सपत्ति की प्राप्ति होती है।

मगल की दशा कड़ी होने, तथा मंगलदेव की शांति हेतु इस उपवास को इक्कीस मगलवार तक किया जाता है।

मंगल का तांत्रिक मंत्र–ॐ ह्रों श्रीं भौमाय नमः।

विधि विधान–यह व्रत मंगलवार को रखा जाता है तथा दिन में एक ही बार मीठा भोजन करना चाहिए। भोजन सूर्यास्त से पहले कर लेना चाहिए। प्रातः काल शय्या त्याग कर नित्यकर्मों से निवृत्त हो स्वच्छ वस्त्र धारण करें तत्पश्चात् शुद्ध स्थान पर मंगलदेव की प्रतिमा स्थापित कर लाल चंदन, सिंदूर, लाल पुष्पों द्वारा मंगल देव की पूजा करें तथा मंगल के तांत्रिक मत्र का इक्कीस बार जाप करें तथा व्रत कथा का पाठ करें।

व्रत कथा–एक नगर में एक ब्राह्मण दम्पत्ति रहते थे। किन्तु वे निःसन्तान थे। इसी कारण दोनों पति-पत्नी दु:खी रहते थे। पुत्र प्राप्ति की इच्छा से ब्राह्मण वन में हनुमान जी की उपासना व तपस्या करने चला गया।

ब्राह्मण की पत्नी भी प्रत्येक मंगलवार को मंगल का उपवास व पूजन करती थी। मगलवार को व्रत के लिए वह प्रेम से भोजन पकाती तथा फिर वह उस भोजन को निष्ठापूर्वक हनुमान जी को भोग लगाती तथा फिर श्रद्धा व प्रेम से स्वयं एक समय भोजन करती थी।

एक बार पड़ोस में कोई शादी होने के कारण ब्राह्मणी को वहां जाना पड़ गया इसलिए उस दिन ब्राह्मणी भोजन न पका सकी और सारा दिन वहीं विवाह में व्यस्त रही। घर पर भोजन न पका सकने के कारण ब्राह्मणी ने हनुमान जी को भी भोग नहीं लगाया। वह अपने मन में ऐसा प्रण करके सो गई कि अब अगले मंगलवार को ही भोग लगाकर, अन्न ग्रहण करूंगी

वह भूखी-प्यासी छः दिन तक पड़ी रही। मंगलवार के दिन उसे मूर्छा आ गई। हनुमान जी उसकी लगन और निष्ठा को देखकर प्रसन्न हो गए। उन्होंने उसे दर्शन दिए और कहा, "मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं। मैं तुम्हें एक सुन्दर बालक देता हूं, जो तेरी बहुत सेवा किया करेगा।

सुन्दर बालक पाकर ब्राह्मणी अति प्रसन्न हुई। ब्राह्मणी ने बालक का नाम मंगल रखा। कुछ समय पश्चात् ब्राह्मण वन से लौटकर आया। एक प्रसन्नचित्त सुन्दर बालक को घर में क्रीड़ा करते देखकर, ब्राह्मण ने अपनी पत्नी से पूछा, "यह बालक कौन है?" पत्नी ने कहा, "मंगलवार के व्रत से प्रसन्न हो हनुमान जी ने दर्शन देकर मुझे यह बालक दिया है।" ब्राह्मण को पत्नी की बात पर विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा यह कुलटा, व्यभिचारिणी अपनी कलुषता छिपाने के लिए बात बना रही है।

एक दिन ब्राह्मण कुएं पर पानी भरने गया तो ब्राह्मणी ने कहा कि मंगल को भी अपने साथ ले जाओ। ब्राह्मण मंगल को साथ ले गया परन्तु वह उस बालक को नाजायज मानता था इसलिए वह बालक को कुएं में डालकर पानी भरकर घर वापस आ गया। ब्राह्मणी ने ब्राह्मण से पूछा कि मंगल कहां है। तभी मंगल हंसता हुआ घर वापस आ गया, उसे वापस आया देखकर ब्राह्मण बहुत आश्चर्यचकित हो गया। उसने सोचा, अभी तो मैं इसे कुएं में धक्का देकर आया था फिर यह कहां से आ गया? रात्रि को उसे स्वप्न में हनुमान जी ने दर्शन दिए और कहा, "यह बालक मेरा दिया हुआ है। तुम अपनी पत्नी पर व्यर्थ ही लांछन क्यों लगाते हो?" ब्राह्मण को सत्य जानकर बड़ी ग्लानि हुई। उसने अपनी पत्नी से क्षमा मांगी और फिर ब्राह्मण दम्पत्ति मंगलवार का व्रत करते हुए आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। इस प्रकार जो भी मंगलवार का व्रत रखता है, उसकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं और वह सब कष्टों से मुक्ति पाता है।

मंगलवार व्रत की दूसरी कथा

एक वृद्धा मंगलवार को अपना इष्टदेव मानती थी और प्रत्येक मंगलवार को व्रत रखती व मंगल देव का पूजन करती। उसका एक पुत्र था जिसका नाम मंगलिया था। मंगलवार को वह न घर लीपती न ही पृथ्वी खोदती थी। एक दिन स्वयं मंगलदेव उसकी श्रद्धा की परीक्षा लेने के लिए साधु का रूप धारण कर आए और उसके द्वार पर आकर आवाज दी। बुढ़िया घर से बाहर आई और साधु को खड़ा देख हाथ जोड़कर बोली, "महाराज क्या आज्ञा है?" साधु ने कहा- "मुझे बहुत भूख लगी है, भोजन बनाना है। इसके लिए तू थोड़ी सी पृथ्वी लीप दे तो तेरा पुण्य होगा।" यह

सुन बुढ़िया ने कहा "महाराज आज मैं मंगलवार की व्रती हूं इसलिए मैं चौका नहीं लगा सकती। कहें तो जल का छिड़काव कर दूं। वहां पर भोजन बना लें।" साधु ने कहा–"मैं गोबर से ही लिपे चौके पर खाना बनाता हूं।" बुढ़िया ने कहा–"पृथ्वी लीपने के अलावा और कोई सेवा हो तो मैं वह करने के लिए उपस्थित हूं।" साधु ने कहा–"सोच समझकर उत्तर दो। जो कुछ भी मैं कहूंगा वह तुमको करना होगा।" बुढ़िया कहने लगी–"महाराज पृथ्वी लीपने के अलावा जो भी आप आज्ञा करेंगे उसका मैं अवश्य पालन करूंगी" बुढ़िया ने ऐसा वचन तीन बार दिया। तब साधु ने कहा -"तू अपने लड़के को बुलाकर औंधा लिटा दे, मैं उसकी पीठ पर भोजन बनाऊंगा।" साधु की बात सुनकर बुढ़िया चुप रह गई। तब साधु ने कहा "बुला लड़के को, अब सोच विचार क्या करती है?" बुढ़िया 'मंगलिया...मंगलिया' कहकर अपने पुत्र को पुकारने लगी। थोड़ी देर बाद उसका लड़का आ गया। बुढ़िया ने कहा–"जा बेटे तुझको साधु महाराज बुला रहे हैं।" लड़के ने मां की बात सुनकर उसकी आज्ञा का पालन किया और बाबा के पास जाकर कहा -"महाराज क्या आज्ञा है?" साधु ने कहा "जा, जाकर अपनी माता को ले आओ।" जब माता आ गई तो साधु ने कहा कि इसे जमीन पर लिटा दे। बुढ़िया ने कहा ठीक है और मंगलदेव का स्मरण करके लड़के को उल्टा लिटा दिया और उसकी कमर पर अंगीठी रख दी। तब वृद्धा दु:खी मन से बोली–"महाराज अब आपको जो कुछ करना है करो, मैं जाकर अपना काम करती हूं।" साधु ने अंगीठी में आग जलाई और उस पर भोजन बनाया। जब भोजन बन गया तो साधु ने वृद्धा से कहा कि आओ माई तुम भी भोग लगा लो और अपने पुत्र को भी बुलाओ कि वह भी भोजन ले जाए। वृद्धा ने दु:खी मन से कहा "बाबा जी यह क्या कहते हो ? आपने खुद ही तो अभी उसकी पीठ पर आग जलाई है और उसी को बुला रहे हैं। अब आप मुझे उसको याद न दिलाओ। वह तो कब का मर चुका होगा। आप भोजन करके जहां जाना हो चले जाएं।" साधु ने कहा -"तू आवाज तो लगा।" वृद्धा ने कहा ठीक है महाराज, जैसी आपकी इच्छा।" और जैसे ही उसने मंगलिया कहकर पुकारा वैसे ही मंगलिया दौड़ता हुआ आ गया। साधु ने कहा–"माता तुम्हारा व्रत सफल हुआ। तेरी निष्ठा पक्की है, अब तुझे कभी कोई कष्ट नहीं होगा।"

□□□

मंगलवार की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।
जाके बल से गिरिवर कांपै।
रोग दोष जाके निकट न झांपै।
अंजनि पुत्र महाबल दाई।
संतन के प्रभु सदा सहाई।
दे बीरा रघुनाथ पठाये।
लंका जारि सिया सुधि लाये।
लंका सो कोट समुद्र सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज संवारे।
लक्ष्मण मूर्च्छित पड़े सकारे
लाए संजीवन प्राण उबारे।
पैठी पाताल तोरि जम कारे
अहिरावण की भुजा उखारे।
बाएं भुजा असुर दल मारे।
दाहिने भुजा संत जन तारे।
सुर नर मुनि आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें।।
कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई।
जो हनुमान जो की आरती गावै
बसि बैकुंठ परमपद पावै।।
लंक विध्वंस कीन्ह रघुराई
तुलसीदास प्रभु कीरति गाई।।

❑❑❑

कर्जनाशक व दाम्पत्य सुख कारक मंगलयन्त्र

जन्मपत्री के 1, 4, 7, 8, 12 भावो मे मगल हो तो कुण्डली मांगलिक बनती है। पुरुष की कुण्डली में इस स्थिति वाले मगल को "मौलिया मंगल" एवं स्त्री की कुण्डली में होने से इसे "चुनरी मंगल" कहते हैं। यह देखने में आता है कि इस प्रकार की ग्रह स्थिति वाले लड़कियों की शादी प्रायः नहीं होती, होती भी है तो बहुत देरी से, तथा होने के बाद भी यह देखने में आता है कि उनका दाम्पत्य जीवन कलह पूर्ण होता है। जन्मपत्री हो चाहे न हो उपरोक्त स्थितियां जब भी जीवन में आती हैं उसका मुख्य कारण मंगल ग्रह का दूषित होना है। चाहे वह गोचर प्रभाव हो या जन्म स्थिति से।

विवाह योग्य कन्या या पुत्र के विवाह में बाधा आना, विवाहित दम्पति के जीवन में दीर्घकाल तक सन्तानाभाव रहना, गर्भपात होकर सन्तान हाथ न लगना, मनुष्य का ऋण लेते हुए कर्जग्रस्त होने के बाद, कर्ज चुकाने के आसार से निराश हो जाना, इन तीनों दु:खों को दूर करने के लिए ज्योतिषशास्त्र में मगल व्रत का विधान है।

मगल व्रत का नाम सुनते ही जनसाधारण एक समय भोजन कर, हनुमान जी का दर्शन करके छुट्टी मना लेते हैं फिर काम पूर्ण न होने पर धन्य देव को पकड़ते हैं। यह सब जानकारी के अभाव में होता है।

- कर्मकाण्ड शास्त्र ज्योतिषशास्त्र से प्रदर्शित अनिष्ट का निवारण करवाता है। कर्मकाण्ड के अंग-उपासना, जप, पूजन, यज्ञादि हैं। अतः शास्त्रीय पद्धति से किया हुआ कार्य कभी भी निष्फल नहीं जाता। गीता में कहा है–

"तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते" "ज्ञात्वा शास्त्र विधानोक्तम् कर्म कर्तुं मिहार्हसि।" यत्न करने पर भाग्य भी फलता है, बनता है और संचित होता है। यत्न करने पर भी कार्य न हो तो "यत्नं कृते यदि न सिद्धयति कोऽत्रदोषः" कार्य के यत्न में कहीं त्रुटि

है ऐसा शास्त्रकार ने कहा है उसे निकालकर यत्न करें तो काम बन ही जाता है।

मंगल भूमि पुत्र और ग्रहों का सेनापति है। मंगल के व्रत में "मंगल मन्त्र" के पूजन का विधान है। प्राचीन समय में कई घरों में यह मंत्र पाया जाता रहा है परन्तु आने वाली पीढ़ी अज्ञान वश इसके पूजन एवं विधान से अनभिज्ञ है।

हमारे कार्यालय में ऐसे अनेक केस आते हैं कि लड़कियां 30 से 40 वर्ष की आयु तक पहुंच जाती हैं परन्तु मांगलिक दोष के कारण विवाह तो दूर सगाई तक नहीं बैठती। दूसरी ओर वर पक्ष से ऐसे-ऐसे उदाहरण आते हैं कि दो दो, तीन तीन विवाह कर लिए परन्तु 'मंगली दोष' के कारण पत्नी का सुख नहीं। मंगली दोष से व्यक्ति कर्जदार होता और कर्जदार भी ऐसा कि उसका कर्जा उसकी मृत्यु पर्यन्त उसके साथ रहता है। ऐसे जातकों की भी कमी नहीं जो आमूलचूल कर्ज से डूबे हुए हैं, उन्होंने लक्ष्मी साधना श्रीमन्त्र एवं रुपया की प्राप्ति हेतु कई यत्न व अनुष्ठान भी किए परन्तु पैसा आता है वह चला जाता है, रुकने का नाम नहीं लेता। ऐसे जातकों को पहले 'मंगल मन्त्र' की साधना से अपने मांगलिक दोष की निवृत्ति करनी चाहिए। हमने प्रयोग किए और पाया कि 'मंगल मन्त्र' की विधिवत उपासना के पश्चात्, 21 मंगलवार पूर्ण होते होते लोगों को अपने अपने अभीष्ट कार्यों में बराबर सफलता मिली है। कई परिवारों में विवाह के पश्चात् सन्तान बाधा हेतु भी इसके प्रयोग किए। सभी को अनुकूल लाभ हुए। यदि किसी जातक का पंचमेश मंगल हो, या पंचम भाव में मंगल हो या मंगल की दृष्टि हो तो तेजस्वी पुत्र संतान की प्राप्ति हेतु 'मंगल मन्त्र' का सहारा लेना चाहिए।

सर्वजन हित मंगल व्रत और मंगल यन्त्र पूजन की सम्पूर्ण विधि संस्कृत के साथ-साथ अत्यधिक सरल ढंग से हिन्दी में भी दी जा रही है ताकि साधारण पढ़े लिखे लोग भी इसका लाभ ले सकें।

मंगल यन्त्र का चित्र यहां दिया हुआ है। ऐसा चित्र तांबे की प्लेट पर बनवा दें तांबा मंगल की मुख्य धातु है। परन्तु ध्यान रहे तांबे की प्लेट पर मन्त्र खुदा हुआ नहीं होना चाहिए। उत्कीर्ण (खुदा) हुआ यन्त्र शास्त्रानुसार निकृष्ट होता है। आप चाहें तो भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखकर भी इस यन्त्र को बना सकते हैं अष्टगन्ध में शुद्ध कस्तूरी, केसर, गोरोचन कंकुम चन्दन का ही प्रयोग लेना चाहिए। यदि असुविधा हो तो यह दोनों प्रकार यन्त्र कार्यालय में सम्पर्क साध कर प्राप्त किए जा सकते हैं।

पूजन विधि—हर मंगलवार के दिन पूजन सूर्योदय बेला में सुन्दर रहता है परन्तु दोपहर बारह बजे के पहले पूजन कर लेना चाहिये स्नान करके धुले हुए वस्त्र पहनें लाल वस्त्र हो तो उत्तम, नहीं तो लाल ऊन का आसन जरूरी है। पूजन सामग्री में

धूप, दीप के अलावा लाल फूल, लाल चावल कंकुम में किए हुए या लाल चंदन जरूरी है। गुड़ का भोग लगाएं, लाल फल रखें। मौली चढ़ाएं, फिर पंचामृत से तत्पश्चात् शुद्ध जल से धोकर, लाल वस्त्र से पोंछ ले उसके पश्चात् यंत्र में एक दो के क्रम से 21 बिंदिया लगाएं। कुंकु गुलाल डालकर वस्त्र दीप नैवेद्य फल दक्षिणा धरें तब प्रार्थना करें। इस तरह 21 मंगलवार व्रत रखने से काम पूर्ण रूप से हो जाता है या प्रगति पर आ जाता है। एक कामना लेकर, श्रद्धा विश्वास से व्रत करें, एक कामना पूर्ण होने पर उद्यापन करके, तब कोई दूसरी इच्छा हो तो उसके हेतु व्रत पुनः शुरू करें। एक ही कामना से व्रत आरंभ करने के बाद उसमें दूसरी इच्छाएं नहीं जोड़नी चाहिए। यंत्र प्राण प्रतिष्ठा युक्त ले या घर पर बनवायें तो विद्वान् ब्राह्मण से प्राण-प्रतिष्ठा करवा लें।

संकल्प–दायें हाथ में जल लेकर संकल्प करें। "**ॐ अद्य पूर्वोच्चरितस्य गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ मम (अमुक) स्थाने स्थित भौम जनित दोष**

परिहारार्थं तथाच आजन्म पर्यन्त स्त्रीसुख गृहस्थसुख प्राप्त्यर्थं अनेन भौमजपाख्येनकर्मणा भगवान् भौम प्रीयताम्।''

हिन्दी भाषा मे इस प्रकार करें–मैं (अपना नाम, आज (अमुक) वर्ष के (अमुक) मास (अमुक) तिथि (अमुक) वार का श्री मंगल देवता को प्रसन्न करने हेतु तथा मेरी कुण्डली में अमुक स्थान में स्थित मंगल दोष के निराकरण हेतु भक्ति के साथ (अमुक कामना) की पूर्ति हेतु 'मंगलयंत्र' का पूजन और व्रत करता हूं (कहकर जल छोड दें) फिर न्यास, ध्यान के साथ यन्त्र में यन्त्रस्थ देवता का आह्वान कर, यन्त्र की पूजा करें। उसके बाद कवच व स्तोत्र का पाठ करना होता है।

न्यास–

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यांनमः
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यांनमः। ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यांनमः
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यांनमः। ॐ ह्रः करतलपृष्ठाभ्यांनमः।
ॐ ह्रां हृदयायनमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।
ॐ ह्रूं शिखायै नमः। ॐ ह्रैं कवचाय हुम्॥
ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्॥ ॐ ह्रः अस्त्राय फट्॥
ॐ खंखः इति दिग्बन्धः॥

न्यास–सबसे पहले न्यास करें यानि मूल में जो न्यास के मंत्र लिखे हैं उन मंत्रों को बोलते जाएं और उन उन अंगों का स्पर्श करते जाएं जो कि, मूल मंत्रों में ही लिखे हैं हाथ की पांचों अंगुलियों का नाम संस्कृत में क्रम से 1 अंगुष्ठ (अंगूठा) 2 तर्जनी (अंगूठे के पास की उंगली) 3 मध्यमा (बिचली) 4 अनामिका (चौथी) कनिष्टिका, सबसे छोटी अंगुली कही जाती है करतल हथेली तथा पृष्ठ, हाथ की पीठ कही जाती है हृदय-छाती, शिर खोपड़ी, शिखा-चोटी कवच भुजाएं नेत्रय तीन नेत्र कहे जाते है इन संस्कृत के शब्दों वाले पदों से इनका स्पर्श होता है। ये दोनो करन्यास और अंगन्यास कहलाते हैं। "अस्त्राय फट्" कहर अपने दोनो ओर हाथ घुमा ताली बजाने तथा ओम खंखः कहकर चुटकी बजाने से दिग्बन्ध हो जाता है

ध्यानम्–

एह्येहि भगवन्भौम अङ्गारक महाप्रभो॥
त्वयि सर्वं समायात त्रैलोक्य सचराचरम्॥
भौममावाहयिष्यामि तेजोमूर्ति दुरासदम्॥
रूद्ररूपमनिर्देश्चवक्त्रच रुधिरप्रभम्॥

विनियोग–अग्निर्मूर्धाङ्गिरसो विरूपोङ्गारको गायत्री।
मङ्गलावाहने विनियोगः॥

ध्यानम्–रक्तमाला पहने, शक्ति शूल और गदा हाथ में लिए हुए चतुर्भुजी तथा मेढ़े की सवारी रखने वाले धरानन्दन वर दिया करते हैं, इस प्रकार धयान करें। हे अगारक महाप्रभो भौम! पधारिये, आपके आने से चराचर समेत तीनों लोक आ गए; लोहू जैसा लाल लाल मुख, साक्षात रुद्र रुपी तेजोमूर्ति दुरासद मंगल का आह्वान करता हूं।

मगल आह्वान–ॐ अग्निर्मूर्धाः॥ ॐ नमो भगवते धनसमृद्धिदाय मंङ्गलाय नमः॥ मगलमावाह्यामि इत्यावाह्य अग्निर्मूर्धेति मन्त्रेण मंगलगायत्र्या वा आसनादि पुष्पान्तं पूजयित्वा यन्त्रस्थैकविंशतिकोष्ठेष्वङ्गन्येकविंशतिनामभिः पूजयेत्॥

मंगल आह्वान–"अग्निर्मूर्धा" इस मंत्र के आंगिरस विरूप ऋषि है; मगल देवता है, गायत्री छन्द है, मंगल के आह्वान में विनियोग होता है। "ओम् अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्यां अयम्। अपांघू रेताघुसि जिन्वति।" यह पृथ्वी का पुत्र भौम, दिवका मूर्धा तथा सबका अग्रणी है। सबका पालक तथा सबसे श्रेष्ठ है, यही पानी के सारों को पुष्ट करता या व्यापकों को बल देता है। इस मत्र से अथवा धन समृद्धि देने वाले भगवान् मंगल के लिए नमस्कार करता हूं! मंगल का आह्वान करता हू, इस मंत्र से आह्वान हुआ।

अंग पूजा–1. ॐ मंगलाय नमः पादौ पूजयामि 2. भूमि-पुत्राय नमः गुल्फौ पूजयामि। 3. ऋणहर्त्रे नमः जघौ पूजयामि 4. धानप्रदाय नमः जानुनी पूजयामि। 5. स्थिरासनाय नमः उरुं ॐ पूजयामि। 6. महाकायाय नमः कटीं पूजयामि। 7. सर्वकर्मावरोधकाय नमः नाभिं पू.। 8. लोहिताय उदरं पू.। 9. लोहिताक्षाय हृदयं पूजयामि। 10. सामगानांकृपाकराय करौ पू. 11. धरात्मजाय नमः बाहु पूजयामि 12. कुजाय स्कन्धौ पू.। 13. भौमाय नमः कण्ठं पूजयामि 14. भूतिदाय हनुं पू.। 15. भूमिनदनाय मुखं पूजयामि। 16. अङ्गारकाय नासिके पू.। 17. यमाय नमः कर्णौ पूजयामि 18. सर्वरोगापहारकाय नमः चक्षुषी पू.। 19. वृष्टिकत्रे नमः ललाटं पूजयामि। 20. वृष्टिहत्रे नमः मूर्धानं पूजयामि। 21. सर्वकामफलप्रदाय नमः शिखाम् पूजयामि॥

ततो धूपादिपुष्पाजल्यन्तं कृत्वा एतैरेव नामभिरेकविंशत्यध्यन्दिद्यात्॥

अंग पूजा–"अग्निमूर्धा" इस मन्त्र से तथा "ॐ अंगारकाय विद्महे शक्ति हस्ताय धीमहि तननो भौमः प्रचोदयात्" इस मगल गायत्री से आसन से लेकर पुष्प समर्पण तक की पूजा करें। यन्त्र को गंगा जल में धोएं फिर यन्त्र के जिस कोष्ठ में जो नाम मन्त्र लिखे जाते हैं, उन्हीं इक्कीस नाम मंत्रों मे उन-इन कोष्ठों में क्रमशः अंगो का पूजन करते हुए बिन्दिया लगाएं। बिन्दी लगाते समय सर्वत्र ॐ शब्द एवं

उन-उन कोष्टकों के नाम मन्त्रों का उच्चारण करें, अगपूजा मगल के लिए नमस्कार चरणों को पूजता हू, भूमिपुत्र के लिए गुल्फों का, ऋण हर्ता के लिए जंघाओं का धन देने वाले के लिए जानुओं को, स्थिरासन के लिए उरुओं का, महाकाय के लिए कटि का, सब कर्मों के अवरोध के लिए नाभि को, लोहित के उदर को, लोहिताक्ष के लिए हृदय को, साम के जानने वालों पर कृपा करने वालों के लिए हाथों का धरात्मज के लिए बाहुओं को, कुज के लिए स्कन्धों का, भौम के लिए कंठ का भूति के देने वाले के लिए हनु को, भूमिनन्दन के लिए मुख को, अंगारक के लिए नासिकाओं को, यम के लिए कर्णों को, सब रोगों के नष्ट करने वाले के लिए नेत्रों का, दृष्टि के करने वाले के लिए ललाट को, वृष्टि के हर्ता के लिए मूर्धा का, सब कामों के फल देने वाले के लिए नमस्कार शिखा का पूजता हू। अंग पूजा के पश्चात दश दिशाओं में भी बिन्दियां लगाए, पुष्प लगाए।

मंगल कवच–

शिखायां मंगलः पातु भूमिपुत्रश्च मूर्धनि॥
ललाटे ऋणहर्ता च चक्षुषोश्च धनप्रदः।
स्थिरासनः श्रोत्रयोश्च महाकायश्च नासिके॥
आस्यदन्तोष्ट जिह्वासु सर्वकर्माविरोधकः॥
हनौ मे लोहितः पातु लोहिताक्षश्च कण्ठके।
स्कन्धयोरूभयो रक्षेत्सामगानां कृपाकरः॥
धरात्मजो भुजौ पातु कुजो रक्षेत्करद्वयम्॥
भौमो मे हृदय पातु भूतिदस्तु तथोदरे॥
भूमिनन्दनो नाभौ तु गुह्ये त्वङ्गारकोऽवतु॥
उरू मम यमो रक्षेज्जाधन रोगापहारकः॥
जघयोर्वृष्टिकर्ता च अपहर्ता च गुल्फयोः॥
पादांगुष्टा च गुल्फौ च सर्वकामफलप्रद.॥
शक्तिर्मे पूर्वतो रक्षेच्छूलं रक्षेच्च दक्षिणे॥
पश्चिमे च धनुः पातु उत्तरे च शरस्तथा॥
उर्ध्वं पिण्डाननः पातु अधस्तात्पृथिवी मम॥
एवं न्यस्तशरीरोऽसौ चिन्तयेद्भूमिनन्दनम्॥

मंगल कवच–शिखा की मगल रक्षा करे, भूमिपुत्र मूर्धा की, ऋणहर्ता ललाट की, धनप्रद नेत्रों की, स्थिरासन श्रोत्रों की, नासिकाओं की महाकाय, सर्व कर्माविरोधक मुख, दन्त, ओष्ठ और जिह्वा की, लोहित हनु की, लोहिताक्ष कंठ की, सामगों पर

कृपा करने वाला दोनों स्कन्धों की, धारात्मज भुजाओं की, कुज दोनों हाथों की भौम हृदय की, भूतिद उदर की, भूमिनन्दन नाभ की, अंगारक गुह्य की, यम उरूओं की, रोगापहारक जानुओं की, वृष्टिकर्ता जांघों की, अपहर्ता गुल्फों की सर्वकाम फलप्रद, पाद अंगुष्ठ और गुल्फों की रक्षा करे। शक्ति मेरी पूर्व से रक्षा करे। दक्षिण में शूल रक्षा करें। पश्चिम में धनुष रक्षा करे। उत्तर में शर रक्षा करे, ऊपर पिण्डानन तथा नीचे पृथ्वी रक्षा करे इस प्रकार शरीर मे न्यास या रक्षा के लिए इन रूपों को यहां बिठा कर मंगल का ध्यान करे। (ये न्यास कहे हुए अंगों पर रक्षा के लिए किए जाते है इस कारण हमने सीधा रक्षा करें यह अर्थ कर दिया है।) इस प्रकार कवच का पाठ करें।

मंगल गायत्री–

ॐ अंङ्गारकाय विद्महे शक्ति हस्तायधीमहि।
तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥

मंगल गायत्री–अंगार के समान रक्त वर्णीय, दोनों हाथों में शक्ति धारण करने वाले तेजस्वरूप तेजस्वी मंगल ग्रह को नमस्कार है। अथवा यहां 'ॐ ह्रीं भौमाय नमः' की एक माला फेंरे। इसके बाद मंगल स्तोत्र का पाठ करें।

मंगल स्तोत्र–

मंगलो भूमिपुत्रश्च ऋणहर्ता धनप्रदः।
स्थिरासनो महाकायः सर्वकर्माविरोधाकः॥
लोहितो लोहिताक्षश्च सामगानां कृपाकरः।
धारात्मजः कुजो भौमो भूतिदो भूमिनन्दनः॥
अंङ्गारको यमश्चैव सर्वरोगापहारकः।
वृष्टिकर्ताऽपहर्ता च सर्वकामफलप्रदः॥
एतानि कुजनामानि नित्यं यः प्रयतः पठेत्।
ऋणं न जायते तस्य सन्तानं वर्धते सदा॥
एकविंशतिनामानि पठित्वा तु दिनान्तके।
रूपवान् धनवानश्चैव जायते नात्र संशयः॥
एककालं द्विकालं वा यः पठेत्सुसमाहितः।
एवं कृते न सन्देहो ऋणं हित्वा सुखी भवेत्॥

मंगल स्तोत्र–मंगल, भूमिपुत्र ऋणहर्ता धनप्रद स्थिरासन, महाकाय सर्वकर्मविरोधक, लोहित, लोहितताक्ष, सामगाना कृपाकर, धरात्मज, कुज भौम, भूतिद, भूमिनन्दन,

अंगारक, यम, सर्वरोगापहारक, वृष्टिकर्ता, वृष्टिअपहर्ता, सर्वकामफलप्रद ये मंगल के 21 नाम हैं। जो रोज सावधानी के साथ इन्हें पढ़ता है, उस पर कष्ट नहीं होता तथा सन्तान की वृद्धि होती है। सायं-काल के समय इन इक्कीस नामों को पढ़कर, रूपवान और धनवान हो जाता है। इसमें सन्देह नहीं है। एक बार या दो बार एकाग्र चित्त हो पढ़ें, इस प्रकार नित्य करने पर ऋण को चुका, व्यक्ति सुखी हो जाता है। रुचि के अनुसार काव्यात्मक इस स्तोत्र को भी पढ़ सकते हैं

काव्यात्मक मंगल स्तोत्र–

भारद्वाज कुल उज्ज्वल कर उज्जैन में वास लिया तुमने हे चारभुजाधारी, मंगल। हे शूलशक्ति वर धाम कुंजे करते स्तुति देव सदा मिलकर दानव गंधर्व सदा भजते करता कल्याण सदा उनका जो पूर्ण मनोरथ से भजते।। धरणी गर्भ में जन्म लिया, बिजली सी चमक उससे पाई है। सेनापति देवों के, विजय देव हो! सुखदाई हैं रक्त वर्ण, है लाल नेत्र, मींढ़ा है वाहन मनभाया हे मंगल! शक्ति हाथ तेरे, कर मम मंगल सुखदाया। मैं नमन करूं अब बार-बार, तुमने भक्तों को दिया तार, तुम नष्ट करो ऋण सब मेरा कर दो अपनी करुणा अपार मम रोग हरो, भव ताप हरो, अपमृत्यु हरो मेरी साईं हरो दरिद्रता इस जन की बरदो! सन्तान, बड़े भाई। धान दो, सब पाप मिटे मेरे करदो मम सन्तान सगाई, हे ऋणहर्ता है, नमस्कार, सुख, सौभाग्य, मुझे दे दो दो पुत्र मुझे, जिससे सुख हो, हे देव देव भक्ति तब दो हे धारणी नन्द। हे मंगल, हे बाल कुमार विनय सुन ले तेरी पूजा से जन-जन-मन पाते मंगल, मंगल कर दो।

नमस्कार–

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

नमस्कार– भूमि के गर्भ से उत्पन्न होने वाले की कान्ति के समान प्रभा वाले, शक्ति हाथ में लिए कुमार मंगल को बारम्बार प्रणाम करता हूं इस प्रकार कहकर हाथ जोड़कर नमस्कार करें

तीन रेखाओं का प्रयोग–

(खदिरांगारेण रेखात्रयं कृत्वा)–

अंङ्गारक महीपुत्र भगवन्भक्तवत्सल।
त्वां नमस्यामि मेऽशेष ऋणमाशु विनाशय।।1।।
ऋणरोगादिदारिद्रयपापक्षुधापमृत्यव.
भवक्लेशमनस्तापः नश्यन्तु मम सर्वदा।।2।।

ऋणदु:ख विनाशाय पुत्रसन्तानहेतवे।
मार्जयाम्यसिता रेखास्तिस्त्रे जन्मसमुद्भवा:॥3॥
दु:खदौर्भाग्यनाशाय सुखन्तानहेतवे॥
कृतं रेखात्रयं वामपादेन मार्जयाम्यहम्॥4॥

तीन रेखाओं का प्रयोग–इसके बाद आरती उतारकर खैर की लकड़ी के कोयले से अथवा खेजड़ी कोयले से तीन रेखाएं जमीन पर खींचे, फिर उन रेखाओं को बाएं पैर से उपरोक्त मंत्र या हिन्दी के पद को बोलते हुए मिटाएं। खैर के अंगार से तीन रेखा करके कहें हे भगवन् अंगारक! हे महीपुत्र! हे भक्तवत्सल! मैं आपको नमस्कार करता हूं, मेरा समस्त ऋण नष्ट करिए, ऋण रोगादि, दारिद्र, पाप, क्षुद्रता अपमृत्यु, भव के क्लेश, ये मरे मन के ताप सदा नष्ट हों! ऋण के दु:ख को नष्ट करने तथा पुत्र और सन्तान के लिए, तीन जन्म से होने वाली तीनों ग्रसित रेखाओ का मार्जन करता हूं। जिससे दु:ख और दुर्भाग्य का नाश तथा सुख और सन्तान की प्राप्ति हो, दुर्भाग्य सूचक तीनों रेखाओं का बाएं पैर से मार्जन करता हूं, इन मंत्रों से रेखाओं का मार्जन करें।

रेखाओं को मिटाते वक्त बोलने का पद–

हे अंगारक ! हे महीपुत्र, भगवान् भक्तों के प्यारे,
मैं नमस्कार करता तुमको, जो नमें उन्हें, तुमने तारे।
तीन जन्म की ये रेखाएं, मेरी भाग्य बाधक प्यारे,
काली रेखा ऋण-रोगों की, दुर्भाग्य मिटाता हूं प्यारे।
सुख सन्तान बढ़े मेरे, या दे दो सुन्दर पति/पत्नी तुम प्यारे,
कन्या मेरी अब बढ़ी हुई, उसको पति दो तुम प्यारे॥

मंगल प्रार्थना–

ऋणहत्रे नमस्तेऽस्तु दु:खदारिद्र्यनाशक:।
सुखसौभाग्यधनदो भव मे धरणीसुत:॥
ग्रहराज नमस्तेऽस्तु सर्वकल्याणकारक.।
प्रसादात्तव देवेश सदा कल्याणभाजन:॥
देवदानवगन्धर्वयक्षराक्षसपन्नगा:।
प्राप्नुवन्ति शिवं सर्वे सदा पूर्णमनोरथा:॥
प्रसादं कुरु मे भौम सौभाग्यं मंगलप्रद:॥

बाल: कुमारको वसतु स भौम: प्रार्थितो मया।
उज्जयिन्या समुत्पन्नो, नमो भौम चतुर्भुज।
भरद्वाजकुले जात: शूलशक्तिगदाधर:॥

मंगल प्रार्थना—हे दु:ख और दरिद्रता के नाश करने वाले तुझ ऋणनाशक के लिए नमस्कार है हे धरणी के पुत्र! मुझे सुख और सौभाग्य का देने वाला बन जा हे सबके कल्याण के करने वाले! तुझ ग्रहराज के लिए नमस्कार है। हे देवेश! आपकी कृपा से सदा कल्याण हो क्योंकि आप सदा ही कल्याण के भाजन हैं देव दानव, गन्धर्व, दक्ष, राक्षस, पन्नग ये सब सदा ही पूर्ण मनोरथ होकर कल्याण को पाते हैं हे भौम! मुझ पर कृपा करिए, हे मंगल के देने वाले! सौभाग्य दें। जो चतुर्भुज बालकुमार उज्जयनी में उत्पन्न हुआ है उसी से प्रार्थना कर रहा हूं। उसी के लिए मेरी ये नमस्कारें भी हैं। जो भरद्वाज के कुल में पैदा हुआ है। शक्ति शूल और गदा धारण करने वाला है यह प्रार्थना करके फिर स्त्रोत्र पढ़ना चाहिये।

वायनदानम्—

तिलगुड मिश्रितेनैकविंशतिलड्डूकान्
गोधूमभवान्फल दक्षिणासहितान्वेदविदे दद्यात्॥

वायनदानम्—तिल गुड़ मिले हुए गेहूं के इक्कीस लड्डू फल और दक्षिणा के साथ वेद के जानने वाले ब्राह्मण को दे, सब मंगलों के देने वाले तुझ मंगल के लिए नमस्कार है इस से संतुष्ट होकर मेरे मनोरथों को पूरा करिए, ''देवस्य त्व.'' इस मन्त्र को बोलकर कहे कि, इस दान से मंगल देव प्रसन्न हो; पीछे दे दें। यह वायने के दान का मन्त्र है। यदि सन्तान की चाहना हो तो 21 लाल रंग की गोलियां छोटे-छोटे बच्चों को बांटे यदि ऋण उतारना हो तो गाय को गुड़ खिलाएं यदि रोग मिटाना हो तो ब्राह्मण व साधु को तृप्त भोजन कराए उसके बाद भोग लगाकर स्वयं भोजन करें कार्य की सिद्धि हो जाने पर उद्यापन में 21 लाल रंग की वस्तु लाल पुष्प या लड्डू सत्पुरुषों में बांट दे। दशांश हवन करें हवन करने पर ब्राह्मण भोजन अवश्य कराए।

दानमन्त्र—

मंगलाय नमस्तुभ्यं सर्वमंगलदायक॥
वायनेन च संतुष्ट: कुरु मे त्वं मनोरथान्॥
देवस्यत्वेति मन्त्रेण मंङ्गल: प्रीयतामिति दद्यात्॥
(आवाहनं न जानामि, इति पूजनम्)

फल स्तुति–

तस्य वै ग्रहपीड़ा च न भवेत्तु कदाचन॥
भूतवेतालशाकिन्यो न भवन्ति च हिंसका:॥ 1॥
दारिद्र्यं नश्यते तस्य पुत्रपौत्राश्च वर्धते॥
एवमुक्त्वा च तत्रैव मंगलोऽपि दिवं गत:॥ 2॥
एवं व्रतं समाख्यातं सर्वसौख्यप्रदायकम्॥
इदं व्रतं करिष्यन्ति तेषां पीडा न जायते॥ 3॥
स्त्रीभिर्वतं प्रकर्त्तव्यं पुरुषैश्च विशेषत:॥
तेषां मुक्तिर्भवत्येव स्वर्गवासो न संशय:॥ 4॥

फल स्तुति–उसे कभी ग्रह पीड़ा नही होगी। उसे भूत प्रेत बेताल की बाधा और दारिद्र्य नष्ट हो जाता है और बेटा नातियों के साथ वृद्धि को प्राप्त होता है। यह कह कर मंगल देव अन्तरिक्ष में चले गए। यह सब सुखों का देने वाला व्रत मैंने कह दिया है। जो इस व्रत को करेगे उन्हें कभी भी ऋण की पीड़ा नहीं होगी। इस व्रत को स्त्रियों को करना चाहिए। विशेष करके पुरुष भी इसी व्रत को करे। उनकी मुक्ति और स्वर्गवास होगा इसमें सन्देह नहीं है। यह प्रयोग हर प्रकार से सुख सम्पत्ति व प्रसन्नता को देने वाला कहा गया है।

दीर्घायु, रोग निवारण एवं उत्तम स्वास्थ्य हेतु–

1. चद्रमा का जीवन रत्न मोती सवा पांच रत्ती और जीवन शक्तिदायक मंगल का रत्न 'मूंगा' सवा पांच रत्ती संयुक्त रूप से लॉकेट बनाकर गले या अंगूठी में धारण करें। यह लॉकेट '**महालक्ष्मी योग**' का भी काम करने के कारण दोहरे चमत्कार वाला साबित होगा।
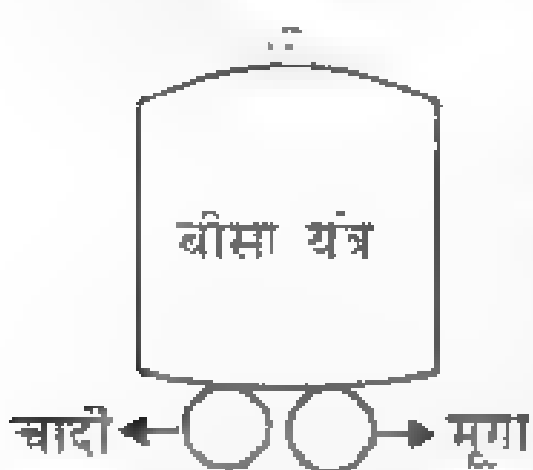
बीसा यंत्र
चांदी
मूंगा

बीसा यंत्र में ये दोनों रत्न 'लक्ष्मी योग' को प्रबल करते हैं। बीसा यंत्र मे कोई भी रत्न प्रतिकूल कार्य नही करता और जातक का वांछित धन लाभ देता है। जिन लोगों के हाथ में पैसा नहीं टिकता एवं जिन लोगों के धन स्थान में राहु बैठा हो तो धन के घड़े में छेद हो, उन लोगों को यह यंत्र अवश्य धारण करना चाहिए यह हमारा अनुभूत प्रयोग है कि कुण्डली जन्य दुर्बल योग दरिद्रयोग इस यंत्र के धारण करने से नष्ट हो जाते

है। सकट योग, **धनहीन योग** एवं केमद्रुम योग में जन्म लेने वाले जातक के लिए यह यंत्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है।

2. रुद्राक्ष की माला पर महामृत्युंजय मंत्र का नित्य जाप करें।
3. बालारिष्ट योग व अकाल मृत्यु से बचने हेतु बच्चे के गले में मोतीयुक्त चांदी का चंद्रमा अभिमंत्रित करके पहनाएं,
4. अनिष्ट चंद्रमा के कारण बालारिष्ट योग की शान्ति हेतु चंद्र कवच पढ़े चंद्रमा के वैदिक मंत्रों का 11000 या 44000 हजार जप करें दशांश हवन करें बच्चे के गले में रक्षा सूत्र या चंद्रमा पहनाएं।
5. रात को चांदी के बर्तन में सिरहाने पर दूध रखना तथा प्रातःकाल बिना कुछ बोले कीकर पीपल या बिल्व वृक्ष मे दूध "ॐ नमः शिवाय" मंत्र का जाप करते हुए डालें तो तत्काल कष्ट दूर होगा।
6. शिवजी की नित्य उपासना करें एवं सोमवार का व्रत रखे।
7. सोम प्रदोष का व्रत रखने से शिव-पार्वती शीघ्र प्रसन्न होते हैं
8. प्रत्येक जन्मदिन या पुष्य नक्षत्र पर दूध व गंगाजल से रुद्राभिषेक कराएं एवं वैदिक मंत्रों के साथ अभिषेक लें।
9. विशेष अवस्था में रोग निवारण हेतु मंत्रपूत औषधियों के साथ पुष्य नक्षत्र स्नान करें
10. माता (सास) मासी मामी एवं घर में बुजुर्ग औरतों का आशीर्वाद लें
11. मरणासन्न व्यक्ति के लिए, जहां दवाईयों ने काम करना कर दिया हो बीमारी गम्भीर व लाईलाज हो वहां त्रिविध तापों के नाश हेतु महामृत्युंजय का सवालक्ष जप दशांश हवन एवं कवच पाठ अमोघ फल को देने वाला है।
12. चंद्रमा की निर्बलता में कैल्शियम की विशेष कमी पाई जाती है अतः केल्स, इत्यादि सेवन बच्चों के लिए हितकर रहता है।
13. आषाढ़ कृष्ण योगिनी। एकादशी का व्रत नियमित करना चाहिए इससे शरीर स्वस्थ हो जाता है

योगिनी एकादशी– यह एकादशी आषाढ़ कृष्ण पक्ष में मनाई जाती है। इस दिन व्रत रखकर भगवान नारायण की मूर्ति का स्नान कराके भोग लगाते हुए धूप दीप से आरती उतारनी चाहिए गरीब ब्राह्मणों को दान देना परम श्रेयस्कर होता है इस एकादशी के प्रभाव से पीपल वृक्ष को काटने से उत्पन्न पाप नष्ट हो जाते हैं और अन्त में स्वर्ग लोक की प्राप्ति होती है

कथा—प्राचीन समय की बात है अलकापुरी में धनद कुबेर के यहा एक हेम नामक माली रहता था। वह भगवान शंकर के पूजनार्थ नित्य प्रति मानसरोवर से फूल लाया करता था। एक दिन की बात है वह कामोन्मत हो अपनी स्त्री के साथ स्वच्छन्द विहार करने के कारण फूल लाने में प्रमाद कर बैठा तथा कुबेर के दरबार मे विलम्ब से पहुचा। क्रोधी कुबेर के शाप से वह कोढ़ी हो गया। कोढ़ी रूप में जब वह मार्कण्डेय ऋषि के पास पहुचा तब उन्होंने योगिनी एकादशी व्रत उन्हें रखने का आज्ञा दी। व्रत के प्रभाव से उसका कोढ़ समाप्त हो गया तथा वह दिव्य शरीर वाला होकर स्वर्गलोक को गया।

14. इसी प्रकार निर्जला एकादशी ज्येष्ठ शुक्ल को करनी चाहिए इससे दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

निर्जला एकादशी—ज्येष्ठ शुक्ल पक्षीय एकादशी को निर्जला एकादशी या 'भीमसेनी एकादशी' कहते हैं, क्योंकि वेदव्यास के आज्ञानुसार भीमसेन ने इसे धारण किया था। शास्त्रों के अनुसार इस एकादशी के व्रत से दीर्घायु तथा मोक्ष मिलता है, इस दिन जल नहीं पीना चाहिए। इस एकादशी का व्रत रखने से वर्ष की पूरी (24) एकादशियों का फल मिलता है। यह व्रत करने के पश्चात् द्वादशी को ब्रह्म-बेला में उठकर स्नान, दान तथा ब्राह्मण को भोजन कराना चाहिए। इस दिन 'ऊ नमो भगवते वासुदेवाय' मंत्र का जाप करके गोदान, वस्त्रदान, छत्र, फल आदि दान करना वांछनीय है।

कथा—एक समय की बात है भीमसेन ने व्यास जी से कहा कि हे भगवान्! युधिष्ठर, अर्जुन नकुल, सहदेव, कुन्ती तथा द्रौपदी सभी एकादशी के दिन उपवास करते हैं। तथा मुझसे भी यह कार्य करने को कहते हैं, मगर मैं कहता हू कि मैं भूख बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैं दान देकर तथा वासुदेव भगवान की अर्चना करके उन्हें प्रसन्न कर लूंगा। बिना व्रत किए जिस तरह से हो सके मुझे एकादशी व्रत का फल बताइए। मैं बिना काया क्लेश के ही फल चाहता हूं।

इस पर वेदव्यास बोले—हे वृकोदर! यदि तुम्हें स्वर्गलोक प्रिय है तथा नरक जाने से सुरक्षित रहना चाहते हो तो दोनो एकादशियों का व्रत रखना होगा।

भीमसेन बोले—हे देव! एक समय का भोजन करने से तो मेरा काम न चल सकेगा। मेरे उदर में वृक नाम अग्नि निरन्तर प्रज्वलित रहती है। पर्याप्त भोजन

करने पर भी मेरी क्षुधा शांत नहीं होती है. हे ऋषिवर! आप कृपा करके मुझे ऐसा व्रत बताइए कि जिसके करने मात्र से मेरा कल्याण हो सके।

व्यासजी बोले -हे भद्र! ज्येष्ठ की एकादशी का निर्जला व्रत कीजिए। तुम जीवन पर्यन्त इस व्रत का पालन करो। इससे तुम्हारे पूर्वकृत समस्त एकादशियों के अन्न खाने का पाप समूल विनष्ट हो जाएगा. व्यासाज्ञानुसार भीमसेन ने बड़े साहस के साथ निर्जला एकादशी का यह व्रत किया जिसके परिणामस्वरूप वे प्रातः होते होते संज्ञाहीन हो गये। तब पांडवों ने गंगाजल तुलसी चरणामृत प्रसाद देकर उसकी मूर्च्छा दूर की। तभी से भीमसेन पाप मुक्त हो गए।

15. आयुष्य आरोग्य की वृद्धि हेतु 'रविप्रदोष' का व्रत करना चाहिए, परन्तु रोगों से मुक्ति हेतु उत्तम स्वास्थ्य के लिए 'मंगल प्रदोष' का व्रत करना चाहिए.

ऋण मुक्ति, धन प्राप्ति, स्थिर लक्ष्मी की प्राप्ति हेतु–

1. स्थाई लक्ष्मी हेतु माणिक्य सवा पांच रत्ती मोती सवा पांच रत्ती और मूंगा सवा पांच रत्ती का लॉकेट बनाकर धारण करें।
2. प्रति पूर्णिमा को श्रीसूक्त का हवन, गोघृत, कर्पूर एवं खोपरे, मिष्ठान या खीर से करें।
3. चंद्रमा यदि नीच का पंचम भाव में हो तो चंद्रमा की चीजों का दान न लें।
4. चंद्रमा यदि उच्च का लाभ स्थान में हो तो चंद्रमा की चीजों का दान न दें।
5. छत पर पानी की टंकी हो तो उसकी नियमित सफाई 3 4 महीनों में कराते रहें। घर में कहीं भी पानी के पड़ने से चंद्रमा रुष्ट रहता है। जिसका चंद्रमा दूषित हो उनको अपने घर के आगे कीचड़ या गन्दे पानी का जमाव नहीं होने देना चाहिए।
6. घर में खड़ी लक्ष्मी की तस्वीर का पूजन न करें।
7. लक्ष्मीजी की तस्वीर या श्रीयंत्र कागज, एल्युमीनियम या कांच के न हों।
8. श्रीयंत्र कभी भी तांबे या पीतल का न हो।
9. गृहलक्ष्मी से नित्य बहस या कलह करने से घर का ऐश्वर्य एवं लक्ष्मी दोनों ही नष्ट हो जाते हैं।
10. भूलकर भी प्रमादवश माता या मातृतुल्य औरतों का अपमान न करें, इससे चंद्रमा शीघ्र अप्रसन्न हो जाता है।

11. गन्दे एव पसीने वाले वस्त्रों के धारण से भी चद्रमा शीघ्र नाराज होकर प्रतिकूल हो जाता है।
12. घर की स्त्रियां यदि 'श्रीसूक्त' का पाठ करें तो लक्ष्मी जल्दी प्रसन्न होती है।
13. दुकान, फैक्टरी या कामर्शियल स्थल पर श्रीयत्र-कुबेर यंत्र-कनकधारा यंत्र एक फ्रेम में जड़वाकर नित्य धूप अगरबत्ती दें। श्रीसूक्त का नियमित पाठ करें।
14. नवरत्न जड़ित 'श्रीयंत्र' गले में धारण करें।

इस यत्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनन्त ऐश्वर्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

हीरा
माणिक
गोमेद
मोती
श्री यत्र
पन्ना
मूगा
नीलम
लहसुनिया
पुखराज
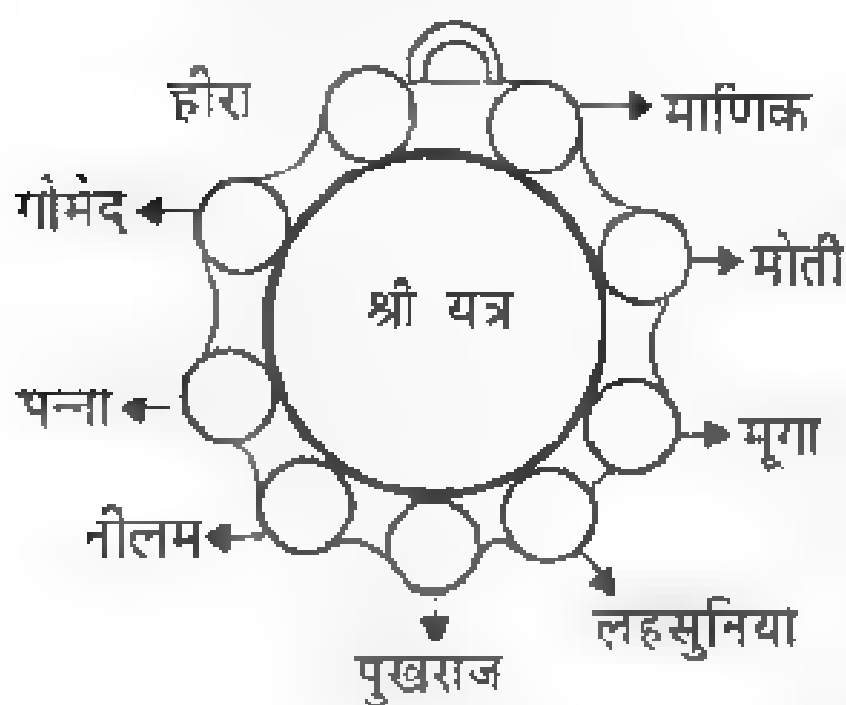
व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे लक्ष्मी उसके साथ है नवग्रह श्रीयंत्र से बंधे हुए होने के कारण ग्रहों की प्रतिकूल दशा का असर धारण करने वाले व्यक्ति पर नहीं होता। गले में होने के कारण यह यंत्र पवित्र रहता है एवं स्नान करते समय इस यत्र से स्पर्श होकर जो जल बिन्दु शरीर को लगते हैं वह गंगा जल के समान पवित्र हो जाते हैं। अपरोक्ष रूप से एक प्रकार से व्यक्ति का नित्य प्रति रत्न स्नान भी हो जाता है। इसलिए यह सबसे सशक्त श्रीयत्र कहलाता है। जिस प्रकार अमृत से ऊपर कोई औषधि नहीं उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिए इस श्रीयंत्र से बढ़िया अन्य कोई यंत्र संसार में नहीं है। इस प्रकार के श्रीयत्र शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके हमारे कार्यालय में बनाए जाते है।

15. कर्ज अधिक हो तो 'दरिद्रतानाशक' अंगूठी धारण करें।

दरिद्रता नाशक अंगूठी—यदि हाथ में भाग्य रेखा छिन्न-भिन्न अवस्था में है। धनरेखा गायब है, तथा जीवन में रुपयों-पैसों की कमी लगातार बनी रहती है तो यह अंगूठी धारण करना बहुत जरूरी है। तंत्रोक्त 'शारदा तिलक' के अनुसार–

तारताम्र सुवर्णानांअर्क षोडशखेन्दुभिः।
पुष्यार्के घटिका मुद्री ऋणदारिद्र्य नाशिनी॥

अर्थात् सोलह रत्ती तांबा, बारह रत्ती चांदी एवं दस रत्ती सुवर्ण इन तीनों धातु की अंगूठी पुष्य नक्षत्र के घटीपल में बनाकर मंत्रपूत करके पहना जाए तो कैसी भी दरिद्रता हो धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है, कैसा भी कर्ज हो उतर जाता है, यह अनुभूत है, इस अंगूठी को धार्मिक भाषा में 'पवित्री' भी कहते हैं। यह धातु स्पर्श चिकित्सा का सबसे चमत्कारी पहलू है। किसी भी प्रकार की असुविधा होने पर उपर्युक्त सभी सामग्रियां हमारे जोधपुर कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।

16. वैशाख पूर्णिमा का व्रत, हवन एवं तीर्थ स्नान करने से स्थाई धन की प्राप्ति होती है।

वैशाखी पूर्णिमा–वैशाखी पूर्णिमा स्नान लाभ की दृष्टि से अंतिम पर्व है। इस दिन गंगा जैसी पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए। दान के लिए मिष्ठान, सत्तू, वस्त्र आदि का विशेष महत्त्व है। श्रीकृष्ण के बचपन के सहपाठी दरिद्र ब्राह्मण सुदामा जब द्वारिका उनसे मिलने गए तो उन्होंने सत्य विनायक व्रत का उनको विधान बताया। इसी व्रत के प्रभाव से सुदामा की सब दरिद्रता जाती रही तथा वह अत्यन्त ऐश्वर्यशाली हो गए।

17. अभीष्ट सिद्धि हेतु घर की स्त्रियां को 'सोमप्रदोष' का व्रत करना चाहिए

सोम त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सूत जी बताने लगे- सोम त्रयोदशी प्रदोष व्रत से शिव-पार्वती प्रसन्न होते हैं। व्रती के समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं।'

एक नगर में एक ब्राह्मणी रहती थी, उसके पति का स्वर्गवास हो गया था। उसका अब कोई आश्रयदाता नहीं था, इसलिए प्रातः होते ही वह अपने पुत्र के साथ भीख मांगने निकल पड़ती थी। भिक्षाटन से ही वह स्वयं व पुत्र का पेट पालती थी। एक दिन ब्राह्मणी घर लौट रही थी तो उसे एक लड़का घायल अवस्था में कराहता हुआ मिला। ब्राह्मणी दयावश उसे अपने घर ले आई।

वह लड़का विदर्भ का राजकुमार था, शत्रु सैनिकों ने उसके राज्य पर आक्रमण कर उसके पिता को बन्दी बना लिया था और राज्य पर नियंत्रण कर लिया था, इसलिए वह मारा-मारा फिर रहा था। राजकुमार ब्राह्मण पुत्र के साथ ब्राह्मणी के घर रहने लगा, एक दिन अंशुमति नामक एक गंधर्व कन्या ने राजकुमार को देखा और उस पर मोहित हो गई। अगले दिन अंशुमति अपने माता-पिता को राजकुमार से मिलाने लाई, उन्हें भी राजकुमार भा गया। कुछ

दिनो बाद अशुमति के माता पिता को शकर भगवान ने स्वप्न में आदेश दिया कि राजकुमार और अंशुमति का विवाह कर दिया जाए। उन्होंने वैसे ही किया। ब्राह्मणी प्रदोष व्रत करती थी। उसके व्रत के प्रभाव और गंधर्वराज की सेना की सहायता से राजकुमार ने विदर्भ से शत्रुओ को खदेड़ दिया और पिता के राज्य को पुनः प्राप्त कर आनन्दपूर्वक रहने लगा। राजकुमार ने ब्राह्मण पुत्र को अपना प्रधानमंत्री बनाया। ब्राह्मणी के प्रदोष व्रत के महात्म्य से जैसे राजकुमार और ब्राह्मण पुत्र के दिन फिरे, वैसे ही शकर भगवान अपने दूसरे भक्तों के दिन फेरते हैं।

आकर्षण बढ़ाने हेतु, यश प्राप्ति एवं पराक्रम वृद्धि हेतु–

1. स्फटिक माला डॉयमण्ड कटिंग वाली गले में धारण करे। इसे आकर्षण मत्रो द्वारा अभिमंत्रित करके पहनें तो शीघ्र प्रभाव होगा।
2. तृतीयेश बुध का रत्न पन्ना कनिष्ठिका अगुली में सवा छः रत्ती का धारण करे। कर्क लग्न में बुध दो अशुभ भावों तृतीय एवं द्वादश का स्वामी होता है। अतः यह रत्न सुवर्ण धातु में पहनना चाहिए चादी में नहीं।
3. यदि कुण्डली में शुक्र की स्थिति अच्छी हो तो पन्ने के साथ हीरा या जिरकॉन भी समान वजन के पहन सकते हैं।
4. भगवती जगदम्बा को सौ सुगन्धित मालती के पुष्प 'चंद्र कवच' को पढते हुए चढ़ाए।
5. जेब में सफेद रुमाल रखें।
6. चमेली या मालती का अत्तर या स्प्रे प्रति सोमवार काम में लिया करें।
7. सोमवार को जब भी घर से बाहर निकले कांच में मुंह देखकर निकले।

माता, मकान एवं घर में सुख शान्ति हेतु–

1. आपकी कुण्डली की चतुर्थेश शुक्र का रत्न 'हीरा' या 'जिरकान' सवा पाच रत्ती, सवा चार रत्ती मोती के साथ 'बीसा यंत्र' में धारण करे तो माता के सुख, मकान के सुख, नौकर-चाकर के सुख, वाहन के सुख में अकल्पनीय वृद्धि होगी।
2. चंद्रमा के पौराणिक मंत्र का मोती की माला पर जप करें।
3. 28 सोमवार का नियमित व्रत करे।

4. दुर्गासप्तशती का पाठ वैदिक चंद्रमा के मंत्रों से सम्पुष्टित करके हवन करें तो तीन माह के भीतर नए मकान की प्राप्ति होती है
5. सवा चार रत्ती का मोतीयुक्त चंद्रमा गले में धारण करें तो घर में कलह नहीं होगी।

सन्तान प्राप्ति हेतु

1. मूंगा सवा पांच रत्ती एवं मोती सवा पांच रत्ती दाना रत्न शुद्ध सुवर्ण धातु में 'बीसा यंत्र' के साथ जड़वा कर मंत्रपूत करके गले में धारण करें।
2. प्रदोष व्रत के साथ शिवजी की विशिष्ट उपासना व अनुष्ठान प्रारम्भ करें।
3. सन्तान गोपाल स्तोत्र का पाठ करें।
4. पंचमेश का रत्न मूंगा सवा आठ रत्ती का धारण करना चाहिए।
5. श्रावण शुक्ला पंचमी (नागपंचमी) को व्रत रखना चाहिए। नाग की पूजा करनी चाहिए। दूध खीर का भोग लगाना चाहिए। इससे सर्प दोष, पितृ दोष एवं कालसर्पजनिक दोष की शान्ति होकर 'पुत्र रत्न' की प्राप्ति होती है

नागपंचमी—श्रावण शुक्ल पंचमी को नाग पंचमी कहते हैं, इस दिन नागों की पूजा की जाती है। गरुड़ पुराण में ऐसा सुझाव दिया गया है कि नागपंचमी के दिन घर के दोनों बगल में नाग की मूर्ति खींचकर अनन्तर प्रमुख महानागों का पूजन किया जाए।

पंचमी नागों की तिथि है, ज्योतिष के अनुसार पंचमी तिथि के स्वामी नाग हैं। अर्थात् शेष आदि सर्पराजों का पूजन पंचमी को होना चाहिए सुगंधित पुष्प तथा दूध सर्पों को अति प्रिय है। गांवों में इसे 'नागचैया' भी कहते हैं। इस दिन ग्रामीण लड़कियां किसी जलाशय में गुड़ियों का विसर्जन करती हैं, ग्रामीण बच्चे तैरती हुई इन निर्जीव गुडियों को डंडे से खूब पीटते भी हैं। तत्पश्चात् बहन उन्हें रुपया की भेंट तथा आशीर्वाद देती है,

कथा—प्राचीन दन्त-कथाओं से ज्ञात होता है कि किसी ब्राह्मण के सात पुत्रवधूएं थीं। सावन मास लगते ही छः बहुएं तो भाई के साथ मायके चली गई, परन्तु अभागी सातवीं के कोई भाई ही न था कौन बुलाने आता? बेचारी ने अति दुखित होकर पृथ्वी को धारण करने वाले शेषनाग को भाई रूप में याद किया। करुणायुक्त, दीन वाणी को सुनकर शेष जी वृद्ध ब्राह्मण के रूप

में आए, और उसे लिवाकर चल दिए। थोड़ी दूर रास्ता तय करने पर उन्हो अपना असली रूप धारण कर लिया। कुल परम्परा में नागों के बहुत से बच्चे ने जन्म लिया। उस नाग बच्चों को सर्वत्र विचरण करते देख शेष नागरानी ' उस वधू को पीतल का एक दीपक दिया तथा बताया कि इसके प्रकाश र तुम अंधेरे में भी सब कुछ देख सकोगी। एक दिन अकस्मात् उसके हाथ र दीपक नाग टहलते हुए नाग बच्चों पर गिर गया। परिणामस्वरूप उन सबकी थोड़ी पूंछ कट गई।

यह घटना घटित होते ही कुछ समय बाद वह ससुराल भेज दी गई। जब अगला सावन आया तो वह वधू दीवाल पर नागदेवता को उकेर कर उसकी विधिवत् पूजा तथा मंगल कामना करने लगी। इधर क्रोधित नाग बालक माताओं से अपनी पूंछ काटने का आदिकारण जानकर इस वधू को मारकर बदला चुकाने के लिय आए थे, लेकिन अपनी ही पूजा में श्रद्धावनत देखकर वे सब प्रसन्न हुए और उनका क्रोध समाप्त हो गया। बहन स्वरूपा उस वधू के हाथ से प्रसाद रूप में उन लोगो ने दूध तथा चावल भी खाया। नागो ने उसे सर्पकुल से निर्भय होने का वर तथा उपहार में मणियो की माला दी। उन्होंने यह भी बताया कि श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की पचमी को हमें भाई रूप में जो पूजेगा उसकी हम रक्षा करते रहेंगे।

6. श्रावण शुक्ला एकादशी एवं पौष शुक्ला एकादशी, पुत्रदा एकादशी कहलाती है। इस दिन विष्णु भगवान की पूजन कर व्रत रखने से 'पुत्र रत्न' की प्राप्ति होती है।

पुत्रदा एकादशी—यह एकादशी सावन शुक्ल पक्ष में 'पुत्रदा एकादशी' के नाम से मनाई जाती है। इस दिन भगवान विष्णु के नाम पर व्रत रख कर पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात् वेदपाठी ब्राह्मणों को भोजन कराके दान देकर आशीर्वाद लेना चाहिये। सारा दिन भगवान के वंदन, कीर्तन में बिताएं तथा रात्रि में भगवान की मूर्ति के पास ही सोना चाहिए। इस व्रत को रखने वाले निःसंतान व्यक्ति को पुत्ररत्न की प्राप्ति होती है।

कथा—प्राचीन समय में महिष्मती नगरी में महीसिन नामक राजा राज्य करते थे। अत्यन्त धर्मात्मा, शान्ति प्रिय तथा दानी होने पर भी उनके कोई संतान नहीं थी। इसी से राजा अत्यन्त दुःखी थे। एक बार राजा ने अपने राज्य के समस्त ऋषियों को बुलाया तथा संतान प्राप्ति का उपाय पूछा। इस पर परम ज्ञानी लोमश ऋषि ने बताया कि आपने पिछले सावन मास की एकादशी को अपने तालाब से प्यासी गाय को पानी पीने से हटा दिया था। उसी के शाप से आपके

कोई सतान नही हो रही है। इसलिए आप सावन माह की पुत्रदा एकादशी का नियमपूर्वक व्रत रखिए तथा रात्रि जागरण कीजिए, पुत्र अवश्य प्राप्त होगा ऋषि के आज्ञानुसार राजा ने परिवार सहित एकादशी व्रत रखा और उसे इससे पुत्ररत्न प्राप्त हुआ.

7 कार्तिक शुक्ला एकादशी को तुलसी विवाह करने से भी व्यक्ति को उत्तम संतति की प्राप्ति होती है।

8. हरिवंश पुराण की कथा का विधिपूर्वक श्रवण करने से भी उत्तम संतति की पुत्र प्राप्ति होती है। जिनके संतान होकर जीवित न रहती हो उन्हें आश्विन कृष्ण अष्टमी का जीवित पुत्रिका व्रत व कथा करनी चाहिए।

9. पुत्र सन्तान की प्राप्ति हेतु घर की स्त्रियों को 'शनिप्रदोष' का व्रत करना चाहिये

शनि त्रयोदशी प्रदोष व्रत—सूत जी बोले

'पुत्र कामना हेतु यदि, हो विचार शुभ शुद्ध।
शनि प्रदोष व्रत परायण, करे सुभक्त विशुद्ध ।'

कथा—प्राचीन समय की बात है। एक नगर सेठ धन दौलत और वैभव से सम्पन्न था, वह अत्यन्त दयालु था। उसके यहां से कभी कोई भी खाली हाथ नही लौटता था। वह सभी को जी भरकर दान-दक्षिणा देता था। लेकिन दूसरों को सुखी देखने वाले सेठ और उसकी पत्नी स्वयं काफी दुःखी थे. दु:ख का कारण था उनके संतान का न होना, संतानहीनता के कारण दोनों घुले जा रहे थे। एकदिन उन्होंने तीर्थयात्रा पर जाने का निश्चय किया और अपने काम-काज सेवकों को सौंप कर चल पड़े. अभी वे नगर से बाहर ही निकले थे कि उन्हें एक विशाल वृक्ष के नीचे समाधि लगाए, एक तेजस्वी साधु दिखाई पड़े दोनों ने सोचा कि साधु महाराज से आशीर्वाद लेकर आगे की यात्रा शुरू की जाए। पति पत्नी दोनों समाधिलीन साधु के सामने हाथ जोड़कर बैठ गए और उनकी समाधि टूटने की प्रतीक्षा करने लगे। सुबह से शाम फिर रात हो गई, लेकिन साधु की समाधि नहीं टूटी मगर सेठ पति पत्नी धैर्यपूर्वक हाथ जोड़े पूर्ववत् बैठे रहे।

अततः अगले दिन प्रातः काल साधु समाधि से उठे। सेठ पति पत्नी को देख मन्द मन्द मुस्कराए और आशीर्वाद स्वरूप हाथ उठाकर बोले "मैं तुम्हारे अन्तर्मन की कथा भाप गया हू वत्स। मैं तुम्हारे धैर्य और भक्तिभाव से अत्यन्त प्रसन्न हू। साधु ने संतान प्राप्ति के लिए उन्हें शनि प्रदोष व्रत करने की विधि समझाई और शंकर भगवान की निम्न वन्दना बताई

हे! रुद्रदेव शिव नमस्कार। शिव शंकर जगद्बृहस्पति नमस्कार॥
हे! नीलकंठ सुर नमस्कार। शशि मौलि चंद्र सुख नमस्कार॥
हे! उमाकान्त सुधि नमस्कार। उग्रत्व रूप मन नमस्कार॥
ईशान ईश प्रभु नमस्कार। विश्वेश्वर प्रभु शिव नमस्कार॥

तीर्थयात्रा के बाद दोनो वापस घर लौटे और नियमपूर्वक शनि प्रदोष व्रत करने लगे। कालान्तर में सेठ की पत्नी ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। शनि प्रदोष व्रत के प्रभाव से उनके यहां छाया अंधकार लुप्त हो गया। दोनों आनंदपूर्वक रहने लगे।

गुप्त एवं प्रकट शत्रु नाश तथा मुकदमे में विजय के लिए–

1. नित्य चंद्र कवच एवं चंद्रमा के अठाईस नामों वाले स्रोत का पाठ करें।
2. बगुलामुखी का जाप एवं दशांश हवन का अनुष्ठान करें।
3. बगुलामुखी यंत्र गले में धारण करें।

इस यंत्र को लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति अपने शत्रु को नष्ट करने मे सक्षम व समर्थ हो जाता है। व्यक्ति को ऐसा आभास होता है जैसे कोई गुप्त शक्ति उसके साथ चल रही है। इस यंत्र को हर समय नहीं पहनना चाहिए। रात्रिकाल में गृहस्थ के समय इसको उतार लेना चाहिए। इस यंत्र को पहनकर व्यक्ति कोर्ट में खड़ा हो जाए तो मन मे बगलामुखी यंत्र का उच्चारण करता रहे तो प्रतिकूल मजिस्ट्रेट (न्यायाधीश) भी उसके खिलाफ फैसला नहीं दे सकता। कहने का तात्पर्य यह है कि इसे पहन कर व्यक्ति यदि जलती आग में भी कूद जाए एवं शत्रुओं के बीच में भी घुस जाए तो उस का बाल बांका नहीं होता है, यह अनुभूत है।

4. खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त हो जाए एवं सभी शत्रु नष्ट हो जाएं इसके लिए भाद्र शुक्ल एकादशी, परिवर्तनी एकादशी का व्रत व कथा करनी चाहिए।

परिवर्तनी एकादशी–भाद्रपद शुक्ल पक्ष की एकादशी को पद्मा एकादशी भी कहते हैं यह श्रीलक्ष्मी जी का परम आह्लादकारी व्रत है। इस दिन भगवान

विष्णु क्षीर सागर में शेष शय्या पर शयन करते हुए करवट बदलते हैं। इसीलिए इस करवटनी एकादशी भी कहा जाता है. इस दिन लक्ष्मी पूजन करना श्रेष्ठ होता है, क्योंकि देवताओं ने अपने पुन: राज्य को पाने के लिए महालक्ष्मी का ही पूजन किया था।

5. चंद्रमा कुण्डली में कमजोर हो, नीच का हो, पदच्युत हो, तो चंद्रमा को बलवान व प्रसन्न करने के लिए मार्गशीर्ष पूर्णिमा को व्रत एवं हवन करना चाहिए.
6. इसी प्रकार कोर्ट-कचहरी व मुकदमों में विजय प्राप्त करने के लिए माघ शुक्ल एकादशी 'विजया एकादशी' का व्रत रखकर हवन करना चाहिए।

विजया एकादशी–यह व्रत फाल्गुन कृष्ण पक्ष एकादशी को किया जाता है। इस दिन भगवान विष्णु की पूजा करने से अत्यन्त पुण्य होता है। पूजन में धूप, दीप, नैवेद्य, नारियल आदि चढ़ाया जाता है।

सप्त अन्न युक्त घट का स्थापन किया जाता है। जिसके ऊपर विष्णु की मूर्ति रखी जाती है. इस तिथि को 24 घंटे कीर्तन करके दिन-रात बिताना चाहिये। द्वादशी के दिन अन्न भरा घडा ब्राह्मण को दिया जाता है। इस व्रत को प्रभाव से दु:ख दारिद्रय दूर हो जाते हैं, समग्र कार्य में विजय प्राप्त होती है। इसकी कथा भगवान राम की लंका विजय से सम्बन्धित है.

7. शत्रुनाश हेतु घर के स्त्री पुरुषों को 'शुक्र प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

शीघ्र विवाह, सुयोग्य सुन्दर जीवनसाथी की प्राप्ति एवं दाम्पत्य सुख में वृद्धि हेतु–

1. आपकी कुण्डली में शनि सप्तमेश है अत: जीवनसाथी की प्राप्ति हेतु शनि का रत्न 'नीलम' अभिमंत्रित करके नीले रंग के रुमाल के साथ दो माह तक जेब में रखें. शनि की वस्तुओं का दान करें। कर्कलग्न वालो को नीलम तो भूल कर भी नही पहनना चाहिए क्योंकि वह सप्तम (मारक स्थान) और अष्टम (दु:ख स्थान) का स्वामी होने के कारण अशुभ है।
2. ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को वट-सावित्री पूजन कथा करने से सुहागिन स्त्रिओं के पति को दीर्घायु की प्राप्ति होती है।
3. श्रावण मास में जितने भी मंगलवार आते हैं उनका व्रत मंगलागौरी व्रत कहलाता है यह प्राय: सुहागिन स्त्रियां अपने पति की दीर्घायु के लिए करती है। यदि कुंवारी कन्या भी करे तो उसे उत्तम पति की प्राप्ति होती है

4. भाद्रशुक्ल तीज हरितालिका तीज कहलाती है। इस दिन उपवास रखने पर पति प्रसन्न हो जाता है। पति-पत्नी के मध्य प्रेम बढ़ जाता है।
5. कार्तिक कृष्ण चतुर्थी करवा चौथ का व्रत करने से पति की आयु बढ़ती है। यह व्रत विवाहित स्त्री के लिए है।
6. माघ शुक्ल एकादशी 'जया एकादशी' का व्रत रखने पर गुस्सैल पत्नी भी अनुकूल हो जाती है। यह व्रत केवल पुरुषों के लिए है।

   जया एकादशी—यह व्रत माघ शुक्ल पक्ष एकादशी को किया जाता है। इस तिथि को भगवान केशव (कृष्ण) की पुष्प, जल, अक्षत, रोली तथा विशिष्ट सुगंधित पदार्थों से पूजन करके आरती उतारनी चाहिए। भगवान को भोग लगाये गए प्रसाद को भक्त स्वयं खाये।

   कथा—एक समय की बात है इन्द्र की सभा में एक गंधर्व गीत गा रहा था, परन्तु उसका मन अपनी नवयौवना सुन्दरी में आसक्त था। अतएव स्वर, लय भंग हो रहा था। यह लीला इन्द्र को बहुत बुरी तरह खटकी, तब उन्होंने क्रोधित होकर कहा हे दुष्ट गंधर्व! तू जिसकी याद में मस्त है वह राक्षसी हो जाएगी। यह शाप सुनकर वह बहुत घबराया और इन्द्र से क्षमा याचना करने लगा। इन्द्र के कुछ न बोलने पर वह घर चला आया, यहां आकर देखने पर उसकी पत्नी सचमुच पिशाचिनी रूप में मिली। शाप निवृत्ति के लिए उसने करोड़ों यत्न किए, परन्तु सब असफल रहे तब हार कर बैठ गया। अकस्मात् एक दिन उसका साक्षात्कार ऋषि नारद से हो गया। तब उन्होंने दुःख का कारण पूछा। गंधर्व ने सब बातें यथावत् बता दी। वह सुनकर नारद ने माघ शुक्ल पक्ष की जया एकादशी का व्रत तथा भगवत कीर्तन करने को कहा। गंधर्व ने एकादशी का व्रत किया जिसके प्रभाव से उसकी पत्नी अत्यन्त सौन्दर्यशाली हो गई।

7. पति-पत्नि में मनमुटाव हो जाए, तलाक की नौबत आ जाए तो कार्तिक कृष्ण एकादशी 'रम्भा एकादशी' का व्रत रखने से दोनो में प्रेम हो जाएगा।
8. सौभाग्य एवं स्त्री की समृद्धि हेतु पुरुष जातक को 'शुक्र प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

नौकरी प्राप्ति, व्यापार-व्यवसाय में उन्नति एवं शीघ्र भाग्योदय हेतु—

1. भाग्योदय हेतु मूंगा सवा पांच रत्ती एवं भाग्येश बृहस्पति का रत्न 'पुखराज' सवा पांच रत्ती का पैण्डल सुवर्ण धातु में 'बीसा यंत्र' के साथ बनवाकर गले में पहनना चाहिए।

बीसा यंत्र में यह दोनों रत्न **गजकेसरी योग** को प्रबल पुष्ट करते हैं जिन लोगों को परिश्रम करने पर भी मेहनत का बराबर फल नहीं मिलता जिनका प्रमोशन पदोन्नति नहीं हो रहा हो, अथवा जिनको अपने राजनैतिक व सामाजिक महत्त्व का पूरा लाभ नहीं मिल रहा हो, उनको यह यंत्र अवश्य धारण करना चाहिए। यह हमारा अद्भुत प्रयोग है कि इस यंत्र को धारण करने से व्यक्ति का प्रभाव पराक्रम प्रभुत्व बढ़ जाता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों को शीघ्र प्रभावित करके अपना कार्य दूसरों से निकलवाने में सक्षम व समर्थ हो जाता है। महत्त्वाकांक्षी लोगों के लिए यह यंत्र अमृततुल्य उपादेय औषधि है जो ताकत की-कार्यकुशलता को कई गुना बढ़ा देता है

बीसा यंत्र

चांदी ← → मूंगा

2. चाहें तो उपरोक्त संयुक्त रत्नों की अंगूठी भी तर्जनी या अनामिका अंगुली में धारण कर सकते हैं।

3. मूंगा सवा चार रत्ती पुखराज सवा चार रत्ती, मोती सवा चार रत्ती इन तीनों रत्नों को त्रिलौह धातु या शुद्ध सुवर्ण में लॉकेट बनाकर मंत्रपूरित करके पहनें तो मार्ग रुकावट दूर होकर शीघ्र भाग्योदय होगा।

4. चार श्वेत पुष्प प्रति सोमवार एवं पूर्णिमा को कुएं या बहते पानी में प्रवाहित करें। ऐसा 28 बार करने से कई बार अचानक भाग्योदय हो जाता है।

5. चांदी के बर्तनों में भोजन करें, जल पियें।

6. प्रत्येक सोमवार को बिल्व वृक्ष में दूध चढ़ाएं

7. नवरत्न जड़ित मेराल (?) श्रीयंत्र सुवर्ण में धारण करें

पिता सुख, राज्य व व्यापार में तरक्की हेतु—

1. नित्य शिवजी की पूजा करें। शिवरात्रि को व्रत एवं जागरण रखें।

महाशिवरात्रि व्रत— फाल्गुन कृष्णा पक्ष चतुर्दशी को शिवरात्रि का महात्म्य मनाया जाता है। त्रयोदशी को एक बार भोजन करके चतुर्दशी को दिन भर अन्न ग्रहण करना नहीं चाहिए। काले तिलों से स्नान करके रात्रि में विधिवत् शिव पूजन करना चाहिए शिव पूजन विधान में बेलपत्र सबसे प्रमुख है। शिवजी पर पका आम चढ़ाने से विशेष फल प्राप्त होता है शिवलिंग पर चढ़ाए गए पुष्प, फल तथा जल को नहीं ग्रहण करना चाहिए।

2. अमरनाथ की यात्रा अथवा द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा करें

3. घर की छत के नीचे कुआ या हैण्ड पम्प न लगाएं।
4. चद्र दोष पीड़ित व्यक्ति को प्रदोष व्रत एवं श्रावण के सोमवार को रुद्राभिषेक शिव पूजन अवश्य करना चाहिए।
5. पंचमुखी रुद्राक्ष को पूजा स्थान पर रखकर नियमित पूजन करें।
6. 'ॐ नमः शिवाय' पंचाक्षर मत्र की माला का नित्य जाप करें

भागीदारी एवं मित्रों से लाभ प्राप्ति हेतु–

1. सोलह सोमवार की कथा करें।
2. चावल, चांदी, दूध का दान छोटे बच्चों को करें।
3. सवा चार रत्ती सच्चे मोती की अंगूठी, चादी मे बनवाकर अभिमंत्रित करके पहनें।
4. ग्यारह ब्राह्मणो से दुग्ध-भांग मिश्रित रूद्राभिषेक करवा कर, ब्राह्मणों को खीर का भोजन कराएं।
5. शिव चालीसा का नियमित पाठ करें।

मानसिक तनाव कम करने, आत्मबल में वृद्धि एवं सुखपूर्वक नींद प्राप्त करने हेतु–

1. शुद्ध, सच्चे एवं गोल मोतियों की माला गले में धारण करें।
2. माला यदि मंत्रों द्वारा प्राण प्रतिष्ठित–अभिमंत्रित करके पहनें तो ज्यादा लाभ होगा।
3. चादी की चार कीलें पलंग के सिरहाने वाले पाए पर लगाएं।
4. शयन करने के पूर्व हाथ–पाव धोकर 'रात्रिसूक्त' का पाठ करें।
5. शयनकक्ष मे ऊंटपटांग चित्र, डरावने फोटो, मूर्तियां, लाल रंग की बत्ती वगैरह नहीं होनी चाहिए।
6. तनाव रहित जीवन जीने हेतु, सर्वकामना सिद्धि हेतु घर के स्त्री–पुरुषों को 'बुध प्रदोष' का व्रत करना चाहिए।

बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत–सुत जी आगे बोले 'बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत से सर्व कामनाएं पूर्ण होती हैं। इस व्रत में हरी वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए। शङ्कर भगवान की आराधना धूप, बेल-पत्रादि से करनी चाहिए।'

व्रत कथा—एक पुरुष का नया-नया विवाह हुआ। विवाह के दो दिनों बाद उसकी पत्नी मायके चली गई। कुछ दिनों बाद वह पुरुष पत्नी को लेने उसके यहां गया। बुधवार को जब वह पत्नी के साथ लौटने लगा तो ससुराल पक्ष ने उसे रोकने का प्रयत्न किया कि विदाई के लिए बुधवार शुभ नहीं होता। लेकिन वह नहीं माना और पत्नी के साथ चल पड़ा। नगर के बाहर पहुंचने पर पत्नी को प्यास लगी। पुरुष लोटा लेकर पानी की तलाश में चल पड़ा। पत्नी एक पेड़ के नीचे बैठ गई। थोड़ी देर बाद पुरुष पानी लेकर वापस लौटा, उसने देखा कि उसकी पत्नी किसी के साथ हंस-हंसकर बातें कर रही है और उसके लोटे से पानी पी रही है। उसको क्रोध आ गया। वह निकट पहुंचा तो उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा। उस आदमी की सूरत उसी की भांति थी। पत्नी भी सोच में पड़ गई। दोनों पुरुष झगड़ने लगे। भीड़ इकट्ठी हो गई। सिपाही आ गए। हमशक्ल आदमियों को देख वे भी आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने स्त्री से पूछा—'उसका पति कौन है?' वह किंकर्तव्यविमूढ़ हो गई। तब वह पुरुष शंकर भगवान से प्रार्थना करने लगा—'हे भगवान् हमारी रक्षा करें, मुझसे बड़ी भूल हुई कि मैंने सास-श्वसुर की बात नहीं मानी और बुधवार को पत्नी को विदा कर लाया। लोकोक्ति भी प्रचलित है—बुध बेटी, कभी न भेंटी। मैं भविष्य में ऐसा कदापि नहीं करूंगा।' जैसे ही उसकी प्रार्थना पूरी हुई, दूसरा पुरुष अन्तर्धान हो गया। पति-पत्नी सकुशल अपने घर पहुंच गए। उस दिन के बाद से पति-पत्नी नियमपूर्वक बुध त्रयोदशी प्रदोष व्रत रखने लगे और सुखपूर्वक रहने लगे।

आह्वान—

ऋषिभिः स्तूयमानं च भौममावाहयाम्यहम्॥ 1॥
उज्जयिन्यां समुत्पन्नो भौमो भौमश्चतुर्भुजः।
भारद्वाजकुले जातः खड्गशक्तिगदाधारः॥ 2॥
वरदो मेषमारूढः स्कन्दप्रावृड्तडित्प्रभो।
स्योना पृथ्वीति मन्त्रेण दलेशाग्ने प्रतिष्ठितः॥ 3॥
ॐ स्योनापृथिवीनोभवान्नृक्षरानिवेशनी
पृच्छानः शर्म्मसप्रथाः। 4॥
दक्षिणे भौमं स्थापयामि—

धूमकेतु नामगान समिधा खैर, खदिर फल सुपारी मंगल यंत्र की स्थापना करें।

मंगल ग्रह की प्रतिष्ठा का वैदिक मन्त्र

ॐ अग्निमूर्द्धादिव: ककुत्पति: पृथिव्याऽअयम्।
अपा: रेता: सिञ्जिन्वति।।

तान्त्रिक मन्त्र

ॐ क्राँ क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:।

मंगल अरिष्ट नाशन के विविध उपाय

1. मंगलकृत अरिष्ट निवारणार्थ मंगल व्रत सहित मंगल मन्त्र का विधिवत अनुष्ठान करना चाहिए।
2. समर्थ बृहस्पति के निर्देशन में भैरव (विशेष रूप से आपदुद्धारक बटुक भैरव) मन्त्र का प्रयोग पापक्रान्त या नीच राशिस्थ भौम के लिए अयोग्य है
3. सिंह और धनु राशिस्थ मंगल के लिए कार्तिकेय एवं द्विस्वभाव (3, 6, 12) राशिस्थ मंगल के लिए चामुण्डा की उपासना करनी चाहिए
4. संयमी और शुद्ध चरित्र का व्यक्ति हनुमान जी की भी साधना कर सकता है
5. मंगल की दशान्तर्दशा में आचार्य शंकर कृत सुब्रह्मण्यम भुजंग स्तोत्र या कार्तिकेय स्तोत्र का पाठ एवं कुमार कार्तिकेय की पूजा लाभदायक रहती है। इसके साथ , प्रदोष तिथियों में रुद्राभिषेक करना चाहिए।
6. शत्रुबाधा अथवा अभिचार पीड़ा में भगवती प्रत्यंगिरा अथवा पीताम्बरा के पंचांग का प्रयोग करना चाहिए.
7. वंश वृद्धि के लिए मंगल यंत्र को प्राण प्रतिष्ठित कर उसका विधिवत जप और पूजन करें।
8. ऋण और धन नाश की स्थिति में ऋण मोचन अंगारक स्तोत्र एवं वाल्मीकि रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ लाभदायक रहता है।
9. कन्याओं के मंगली दोष में श्रीमद् भागवत के अठारहवें अध्याय के नवम श्लोक का जप करें।
10. रक्त पुष्पों से मंगल की पूजा 'तब जनक पाइ वशिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै' इस सम्पुट के साथ तुलसी रामायण के सुन्दर काण्ड का पाठ द्वारा पूजन सहित अभीष्ट प्रद है।
11. मंगल यंत्र अथवा कवच और निर्दोष मूंगा धारण करना एवं यथा शक्ति दान भी हितकारी सिद्ध होता है।

12. सामान्य मंगल पीड़ा बजरंग बाण एवं हनुमान जी के मंदिर में दीपदान से भी दूर होती है।
13. लक्ष्मी स्तोत्र, देवी कवच, गणपति स्तोत्र अथवा मोचन स्तोत्र में से किसी भी एक का नियमित वाचन करें।
14. 21 मंगलवार, 21 संकटीव्रत तथा 21 विनायकी व्रत करें।
15. ताम्रपात्र से जल पीएं.
16. मसूर की दाल तथा गुड़ अवश्य ही मंगलवार को ग्रहण करें।
17. श्री गणेश जी के दर्शन करें।
18. देवी भगवत का पाठन अथवा श्रवण करें।
19. लाल पुष्पों को जल में प्रवाहित करें।
20. तुलसी पत्र का भक्षण करें। काली मिर्च भी खाएं।
21. तुलसी के पौधों में जल चढ़ाएं।
22. मंगल के होरा में निर्जल रहें।
23. वृष या तुला लग्न में मंगल छठे आठवें, बारहवें हो या कुण्डली मांगलिक हो तो भावी वैवाहिक जीवन की मंगल कामना के लिए, विवाह के समय दो बराबर वजन के मूंगे लें। फिर संकल्पपूर्वक एक मूंगा पानी में बहा दें तथा दूसरा मूंगा अपने पास रखें। जब तक यह मूंगा व्यक्ति के पास रहेगा। उसको मंगल का अशुभ प्रभाव स्पर्श नहीं करेगा तथा उसका वैवाहिक जीवन पूर्णतः सुखी रहेगा।
24. मंगलवार के नियमित 28 व्रत रखें। ध्यान रहे बीच में नियम टूटने पर पुनः 28 मंगलवार करने पड़ेंगे। कार्य सिद्ध होने पर मंगल का उद्यापन अनिवार्य है।
25. महागायत्री का पाठ करें, हनुमान जी को सिन्दूर लगाएं एवं खुद भी हनुमान जी के पैरों में रखे हुए सिन्दूर को लगाएं
26. दाल मसूर, मूंगा, शहद या सिन्दूर आदि का दान देना या जल प्रवाह करना चाहिए।
27. खाने के बाद महमानों को मीठा (सौंफ, चीनी या मिश्री) खिलाना चाहिए।
28. मंगल (अशुभ हो तो) रेवड़ियां (गुड़ + तिल) जल में प्रवाहित करनी चाहिए.
29. मंगल (शुभ हो तो) मिठाई-मीठा भोजन का दान या बताशे चलते पानी में बहाए।
30. मूंगा (लाल) धारण करें, मूंगे के अभाव में तांबा धारण करें।

31. भाई की सेवा करें।
32. मृगशाला (हिरण की खाल) पर सोए।
33. जौ (अनाज) को गऊ मूत्र में धोकर लाल कपड़े में बांध कर रखें।
34. लाल वस्त्र धारण करें या लाल रुमाल पास रखें।
35 खालिस चांदी धारण करें
36. ढक, काना, काला, गंजा, निःसन्तान से दूर रहें।
37. मंगल उच्च हो तो उसकी चीजों का दान न दें।
38. मंगल नीच या अशुभ हो तो उसकी चीजों का दान न लें उपरोक्त उपाय 5, 11 या 43 दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।
39. मंगल को शक्तिशाली बनाने के लिये ''मंगलयन्त्र'' धारण करें।
40. जिसको सुयोग्य जीवन साथी की अभिलाषा हो वह ''मंगलयन्त्र'' धारण करके, 28 मंगलवार का व्रत रखे निश्चय लाभ होगा।
41. निवृत्ति की इच्छा के साथ जिस जातक को धनसंग्रह की कामना हो तो ''मंगलयन्त्र'' में मूंगे के साथ मोती लगाए तो लक्ष्मीदेवी की कृपा हो जाएगी।
42. कर्जा अधिक बढ़ गया हो, उतर नहीं रहा हो तो ''ऋणमोचन मंगल स्तोत्र'' का नियमित पाठ करें।
43. मंगल पीड़ा की विशेष शान्ति हेतु बेलफल, जटामांसी मुसली, लाल चंदन, बला, लाख पुष्प एवं हिंगलु मिला कर 8 मंगलवार तक स्नान करें।
44. यदि सन्तान प्रतिबन्धक ग्रह मंगल हो तो ग्रामदेवता, भगवान कार्तिक स्वामी अथवा भाई-कुटम्बीजनों के शाप के कारण जातक को सन्तान सुख प्राप्ति नहीं होता। ऐसे में मंगल के वेदक्त मन्त्र का दस हजार जप करना चाहिए मंगल सम्बन्धी वस्तुओं का दान करते हुए, मंगलवार का नियमित व्रत रखना चाहिए
45 हरिवंश पुराण के अनुसार ऐसे जातक को महारुद्र या अतिरुद्र यज्ञ कराना चाहिए।
46. बाधक मंगल यदि गुणों से युक्त हो तो कुछ बताशे लेकर बहती नदी में डालें। श्रेष्ठफल देगा
47. मंगल का अनिष्ट फल समाप्त करने हेतु मृगचर्म का आसन नित्य प्रयोग में लाए।
48. मीठी रोटियां गरीबों में बांटे।
49. यवों को दूध में धोकर, चलते पानी में बहाए

50. यदि जातक की कुण्डली में मगल चौथे स्थान में हो, कुण्डली में ''मांगलिक दोष'' हो, माता, सास व दादी का स्वास्थ्य चिन्ता का विषय हो, घर मे अशान्ति, आर्थिक नुकसान रहता हो, वैवाहिक चिन्ता रहती हो तो जातक सुबह उठते ही नित्य कुएं के जल से दातुन किया करे।

51. मीठे दूध, बड़ की जड़ व जमीन की मिट्टी से मिश्रित तिलक को ललाट पर लगाएं, ऐसा करने से पेट की बीमारी को शीघ्र आराम मिलेगा।

52. यदि अग्निभय रहता हो तो शक्कर की बोरी छत पर डाल दें तथा छत के सबसे ऊपरी हिस्से पर कुछ शक्कर डाल दें

53. यदि बीमारी की वजह से संतान व पत्नी के आयु का भय हो तो एक बर्तन में शहद डालकर शमशान घाट पहुंचा दे।

54. लम्बी बीमारी से बचने के लिए मृगचर्म अधिक से अधिक काम में लें तथा घर के दक्षिण द्वार की ओर लोहे के नाखून लटका दें या रख दें।

55. यदि मंगल आठवें स्थान में हो, जातक शत्रुओं से पीड़ित हो अथवा लम्बी बीमारी भुगत रहा हो तो मीठी रोटियां अथवा पराठें में मास डालकर (लाल) कुत्तों को खिलाना चाहिए।

56. यदि पापी मंगल एकादश स्थान में हो, तीसरा घर खाली हो तो, जातक को पैतृक सम्पत्ति नुकसानदायक साबित होती है, जिन्दगी कर्जदार बीतती है। ऐसे जातक को घर में कुत्ता पालना लाभदायक रहता है।

57. मंगल द्वादश में हो, बुध 3, 8, 9, व 12 हो, तो जातक को द्वादश मंगल के दुष्परिणाम अवश्य भुगतने पड़ते हैं। ऐसी स्थिति में दूध में शहद डालकर दान करना चाहिए। कुत्तों को मीठी रोटी तथा हनुमान के मन्दिर में बताशे चढ़ाने चाहिए।

वृश्चिकलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–वृश्चिकलग्न में सूर्य दशम भाव का स्वामी है। यहा सूर्य लग्नेश का मित्र होता है। अत: राज्य कृपा, प्रतिष्ठामान, व्यवसाय या नौकरी मे उन्नति प्राप्त करने के लिए माणिक्य धारण करना शुभ फलदायक होता है। सूर्य की महादशा में इसका धारण करना विशेष रूप से शुभ होगा।
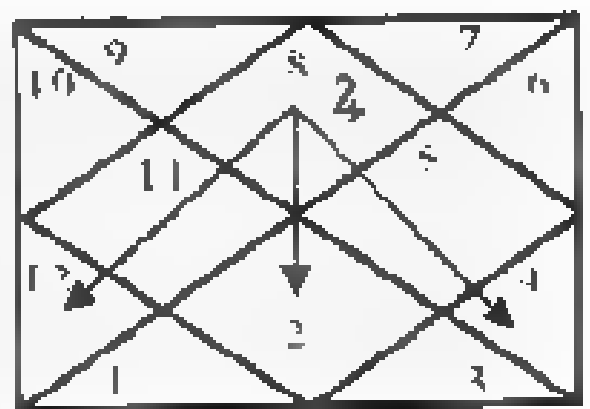
2. **मोती**–वृश्चिकलग्न में चंद्र नवम (भाग्य) स्थान का स्वामी होता है। अत: मोती धारण करने से धर्म, कर्म और भाग्य मे उन्नति होती है पितृसुख प्राप्त होता है, यश बढ़ता है।

3. **मूगा**–वृश्चिकलग्न में मगल लग्नेश है अत. इस लग्न के जातक के लिए मूगा धारण करना उतना ही लाभप्रद होगा यह आपका जीवन रत्न है यह षष्ठेश भी है लग्नेश को षष्ठेश का दोष नही लगता

4. **पन्ना**–वृश्चिकलग्न के लिए बुध अष्टम और एकादश स्थान का स्वामी है। लग्नेश मंगल और बुध परस्पर मित्र नही है। अत: बुध इस लग्न के लिए शुद्ध ग्रह नही है तब भी यदि एकादश का स्वामी होने के कारण बुध के लग्न द्वितीय, चतुर्थ या पचम तथा नवम या एकादश स्थान मे स्थित होने के कारण ही बुध की महादशा में पन्ना धारण करने मे आर्थिक लाभ होगा, सम्पन्ना में वृद्धि होगी।

5. **पुखराज**–वृश्चिकलग्न के लिए बृहस्पति द्वितीय एव पचम त्रिकोण का स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह माने गये है। इसके अतिरिक्त लग्नेश मंगल और

बृहस्पति परस्पर मित्र हैं। अतः वृश्चिकलग्न के जातकों को पीला पुखराज पहनना चाहिए।

6. **हीरा**–वृश्चिकलग्न के लिए शुक्र व्यय भाव तथा सप्तम भाव (कारक स्थान) का स्वामी होता है। इसके अतिरिक्त लग्नेश मंगल और शुक्र में परस्पर मित्रता नहीं होती। अतः इन जातकों को हीरा धारण नहीं करना चाहिए।

7. **नीलम**–वृश्चिकलग्न के लिए शनि तृतीय और चुर्तथ स्थान का स्वामी है। शनि इस लग्न के लिए शुभ ग्रह नहीं माना जाता है। तब भी यदि शनि चतुर्थ का स्वामी होकर पंचम, नवम, दशम और एकादश में हो तो शनि की महादशा में रत्न धारण किया जा सकता है। क्योंकि शनि और लग्नेश मंगल परस्पर मित्र नहीं हैं। एक अग्नि है और दूसरा बर्फ है।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–पुखराज सवा पांच रत्ती, मंगल सवा पांच रत्ती।
2. **भाग्योदय हेतु**–मूंगा सवा पांच रत्ती। यह लक्ष्मी योग भी बनाता है।
3. **आरोग्य हेतु**–मूंगा सवा पांच रत्ती, मोती सवा पांच रत्ती त्रिलोह में
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–पुखराज-मोती-मूंगा सवा चार-चार रत्ती संयुक्त से बीसायंत्र में धारण करें तो यह '**गजकेसरी योग** के साथ किम्बहुना योग भी बनाता है। इसे स्वर्ण में पहनने से जातक तीनों लोकों मे सभी प्रकार का काम कराने में समर्थ हो जाता है।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें। फलादेश करते समय अपने खुद के साथ जोर-जबरदस्ती न करें। यथा आपका ध्यान अन्य कार्य में है आपके पास समय का अभाव है, परन्तु सामने वाला पृच्छक आप पर दबाव डाल रहा है कि मेरी तो ट्रेन जा रही है, बस जा रही है, प्लेन जा रहा है अभी के अभी बताओ क्या होने वाला है? जो फलादेश आवेश व जल्दीबाजी में होगा वो फलादेश गलत हो जायेगा। क्योंकि फलादेश करते समय चित्त शान्त होना चाहिए।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें। गम्भीरतापूर्वक करें। आलतू-फालतू लोगों को पास न बैठायें। जहां तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

   रिक्त पाणि न पश्येत् राजानां देवतां गुरुः।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके उसे प्रभु चरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्र वचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर लें और प्रत्युत्तर हमेशा हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेंगे।

7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए फलित सत्य होने पर, स्व प्रशसा न करें, ज्यादा फूले नहीं? क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित असत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होती है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हममे है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐस विश्वास रखना चाहिए।

8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखें।

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
को वक्ता तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना॥

ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ ज्योतिषी शुभ अशुभ फलों की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा? फिर भी ईश्वर के पश्चात् ज्योतिषी वह पहला व्यक्ति है, जो निश्चयपूर्वक आपके भूत, भविष्य एवं वर्तमान बताने का सामर्थ्य रखता है।

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
ते योगा: किं करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

ग्रहों का अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहों के शुभ अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अंतर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष फल मिलता है।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदु:।**
केन्द्रत्रिकोणेप्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते॥

मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना चाहिए केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानों में मित्र ग्रहों से युक्त ग्रह हों तो शुभ फल जानना चाहिये।

12. **मित्रराशिगते वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।**
मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नर:॥

मित्र ग्रहो के स्थान मे स्थित, मित्रग्रह से युक्त और दिग्बली एव अशो मे बलवान ऐसा ग्रह यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब उस ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उस दशा में बहुत दु:ख, कष्ट एवं परेशानी होती है।

15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा (Direction) में मिलती है, जिस दिशा का वह ग्रह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह (शनि, राहु, केतु या दु:स्थान के स्वामी) की महादशा हो और उसमें शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो, तो आरंभ में कष्ट होता है और अंत में सुख होता है।

17. जब शुभ ग्रह की (चंद्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र) महादशा हो और उसमें पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अंत में भय होता है।

18. जब क्रूर (सूर्य या मंगल) ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अंतर्दशा, यदि वे दोनों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हों तो उनकी अंतर्दशा में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल (मारकेश) की महादशा में शनि (अन्य मारकेश) की अंतर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह, क्रूर या शत्रु राशि में स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हो शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हो, तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अंतर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8, 12 स्थानों में स्थित ग्रह की अंतर्दशा शुभ नहीं होती है, शेष स्थानों में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पाप ग्रह की अंतर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब दशम लग्न, लाभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण (पंचम, नवम) स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हो तो उस ग्रह की दशा शुभ होती है। परन्तु जो ग्रह 8-12, 6, 7, 2 स्थानों में अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर का हो पाप ग्रह हो, अथवा नीच का हो अथवा अस्तगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में, मित्र ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा मे शत्रु ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अतर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अतर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल प्राप्त होता है।

26. उक्त दशाओं के साथ साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर अवश्य पड़ता है। इस तथ्य को घटित करके देखना चाहिए तथा बाद मे अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए

27. पृच्छक जब आपके पास आता है। उस समय शकुन क्या कहते हैं? प्रकृति की रहस्यमय घटनाओ का सूक्ष्म अध्ययन भी मन-मस्तिष्क में रखना चाहिए। वे तत्काल फल चमत्कारी रूप में देते हैं। मान लीजिए कोई आपसे प्रश्न पूछने आया और बिजली चली गई। कोई बर्तन अचानक गिर कर टूट गया? पास में रोने की, झगड़े का कलह की आवाजें आ गई तो जातक का कार्य हर्गिज नहीं होगा। जिज्ञासु सज्जन के आते ही कहीं से कोई फल-मिठाई पुष्प लेकर आ गया। अचानक रोशनी आ गई। टेलीफोन से अचानक शुभ समाचार मिल गये। बैन्ड-बाजे, नगाड़े की आवाज आ गई तो निश्चित ही आगन्तुक सज्जन का कार्य होगा। ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् को शुभाशुभ शकुन शास्त्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

A. अवतार, संत-महात्मा एवं विद्वान्

श्री सत्य साईं बाबा
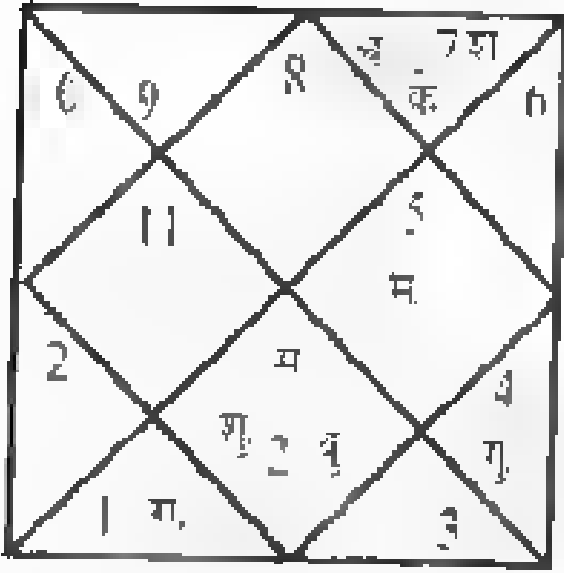
जन्म तिथि-23.11.1926 जन्म समय-6.00 प्रातः।

शिरडी के साईं बाबा
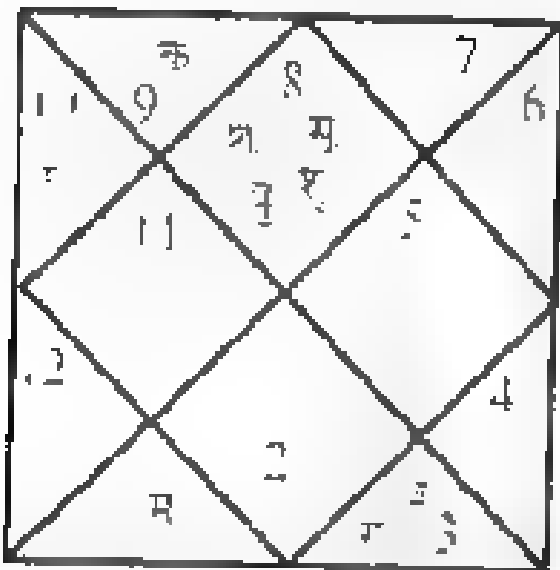
जन्म तिथि- 8.3.1837 जन्म समय 10.2 रात्रि जन्म स्थान पथरी।

पोप जॉन पॉल (ईसाई धर्मगुरु)
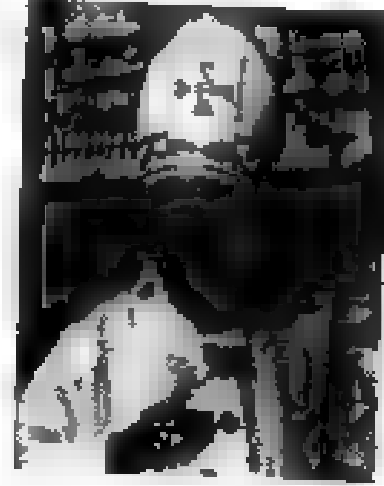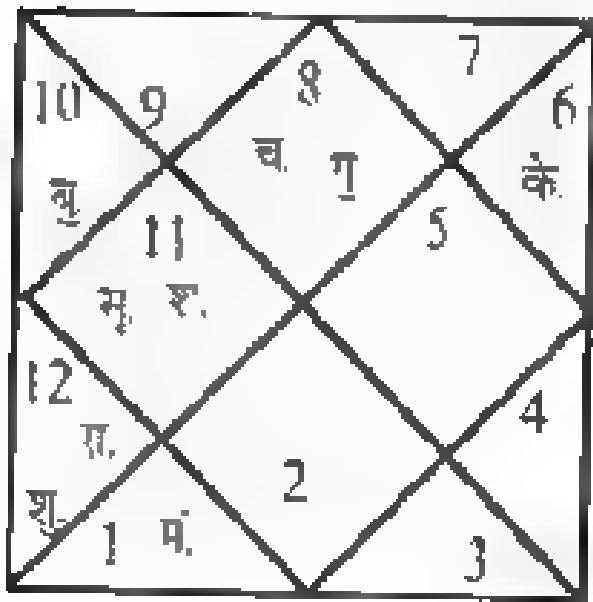
लग्न में बृहस्पति होने से व्यक्ति धार्मिक होता है। बृहस्पति+चंद्र की युति से '**गजकेसरी योग**' बना। शनि केन्द्र में स्वगृही होने से '**शशयोग**' बना। ऐसे व्यक्ति का पराक्रम राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं प्रतापी होता है। शुक्र उच्च का होने से ऐसा व्यक्ति धर्मध्वज होता है।

चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य
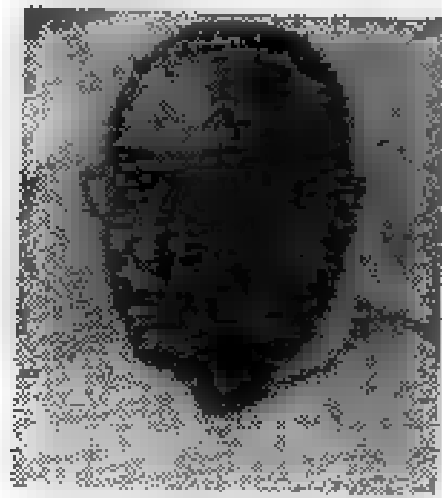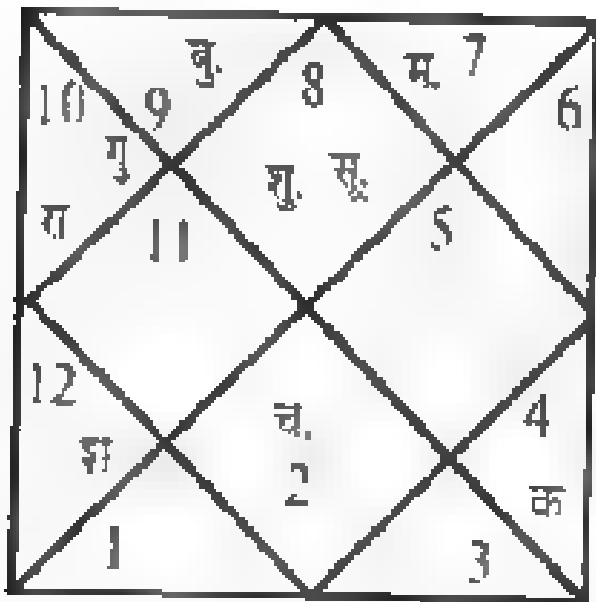
जन्म तिथि 19.11.1978, जन्म समय 7.00 प्रातः, जन्म स्थान-कलकत्ता। एक ही ग्रह बलवान होकर केंद्र या त्रिकोण में हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है।

एकोपिकेंद्रभवने नवपंचमे वा।
भास्वन्मयूख-विमली कृत दिग्विभाग।
निःशेषदोषमहत्य शुभप्रसूतं।
दीर्घायुषं विगतरोगभयं करोति।।

—मानसागरी श्लोक 3/पृ. 223

जन्म समय में कोई एक भी ग्रह केंद्र या त्रिकोण स्थान मे स्थित हो तो वह सूर्य की किरणों के समान प्रकाशमान बड़ी उमर वाला, रोगरहित मनुष्यों का राजयोग

करता है। यह भारत के सर्वप्रथम जनरल की जन्मकुण्डली है अत: बड़ी महत्त्व की कुंडली है। राजयोग कारक उच्च का चंद्रमा लग्न को देखकर, **'लग्नाधिपति योग'** की सृष्टि कर रहा है। दशमेश सूर्य से शुभ ग्रह के साथ है। शनि एवं बृहस्पति से उत्तम श्रेणी एवं पंचमेश ने परस्पर **'परिवर्तन योग'** बनाया जो कि हर प्रकार से उत्तम श्रेणी का राजयोग कहा गया है। चंद्रमा ने **'यामिनीनाथ योग'** तथा सूर्य ने **'पद्मसिंहासन योग'** बनाया है।

जॉन मिल्टन (विश्व कवि)
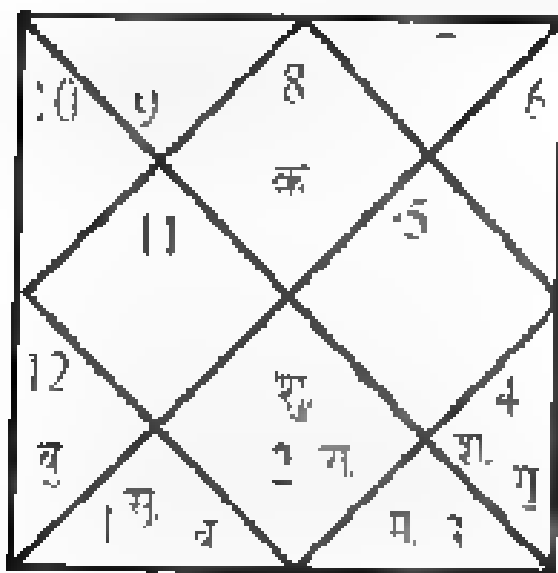
जॉन मिल्टन जन्म से अंधे थे। सूर्य एवं चंद्रमा छठे स्थान में नेत्र ज्योति का नाश करते हैं। शुक्र राहु के साथ पाप पीड़ित होने से व्यक्ति अंधा होता है। क्योंकि ये तीनों रोशनी देने वाले ग्रह पापाक्रान्त हैं। स्वगृही शुक्र के केन्द्रस्थ होने से **'मालव्य योग'** बना। उच्च का बृहस्पति भाग्य स्थान में होने से इस जातक को उत्तम कवित्व शक्ति एवं ईश्वरीय प्रेरणाएं मिलीं।

विश्वप्रसिद्ध अंकशास्त्री कीरो
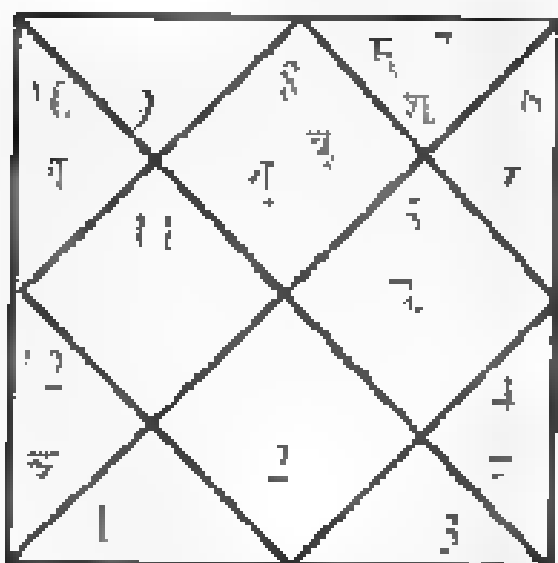
विश्व विख्यात हस्तरेखा विशेषज्ञ एवं अंकशास्त्री 'कीरो' की कुण्डली में द्वादश स्थान में **'किम्बहुनानामक राजयोग'** बना। लग्न में बुध ने बुद्धि की प्रखरता

प्रदान की। मंगल व बृहस्पति का परस्पर उच्च दृष्टि सबंध होने से जातक **'भाग्य शूर'** एवं पराक्रमी था।

श्री पाण्डुरंग शास्त्री आठवले (महाराष्ट्र)
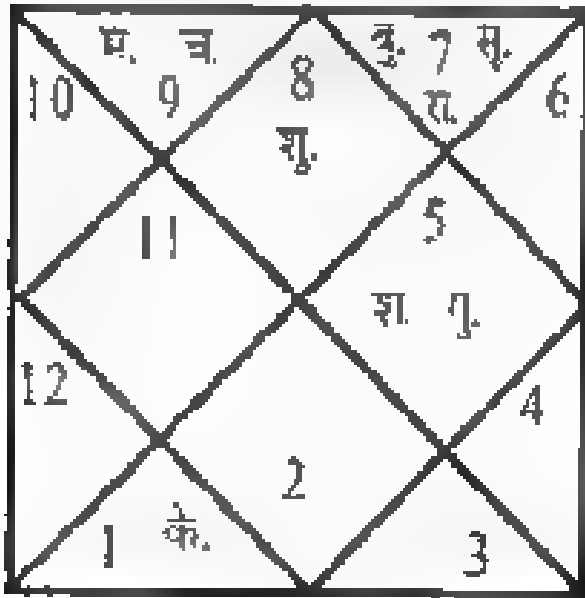
स्वाध्याय मण्डल के प्रणेता। चंद्र+मगल युति के कारण धन स्थान में **'महालक्ष्मी योग'** के कारण जातक के ट्रस्ट के पास करोड़ों अरबों की सम्पति है। सूर्य+बुध की युति द्वादश भाव में **'बुधादित्य योग'** बना रही है। जिससे जताक को देश से ज्यादा विदेश में कीर्ति मिली। **आंशिक कालसर्पयोग** के काररण जातक को पुत्र संतति का अभाव रहा।

प्रो. दयानन्द भार्गव
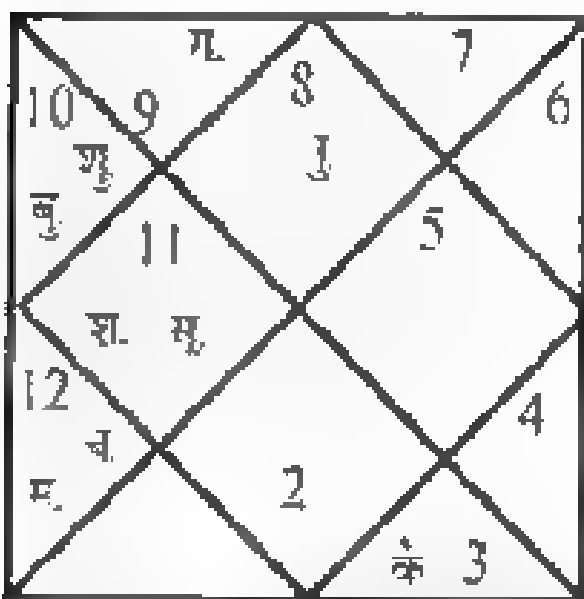
अध्यक्ष व आचार्य संस्कृत विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय। चंद्र+मगल युति पचम स्थान में होने के कारण जातक के पुत्र अत्यधिक विद्या सम्पन्न एवं पैसे वाले होंगे बृहस्पति लग्न में जातक को धर्मध्वज, धार्मिक शिक्षक एवं विद्वान के रुप में प्रतिष्ठा दिलायेगा। उच्च का मंगल जनसम्पर्क एव पराक्रम की दृष्टि से अतिश्रेष्ठ है।

तांत्रिक जे. नाथ
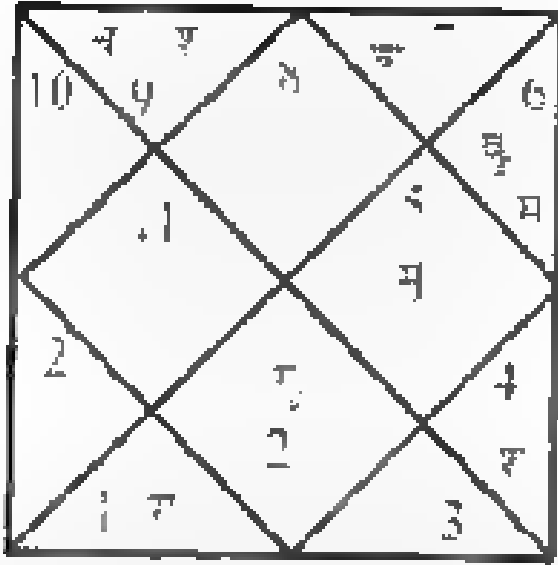
जन्म तिथि 13.9.1929, जन्म समय 13.20 जन्म स्थान सिरसा। यहां दशम भाव में सूर्य स्वगृही होने से जातक की कुण्डली में **रविकृत राजयोग** बना। जातक भाभा परमाणु संस्थान में उच्च वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत रहा एवं केंद्र में बृहस्पति होने से पुनः तंत्र-मंत्र व आध्यात्म के क्षेत्र में प्रवेश किया।

पं. जगन्नाथ भारद्वाज
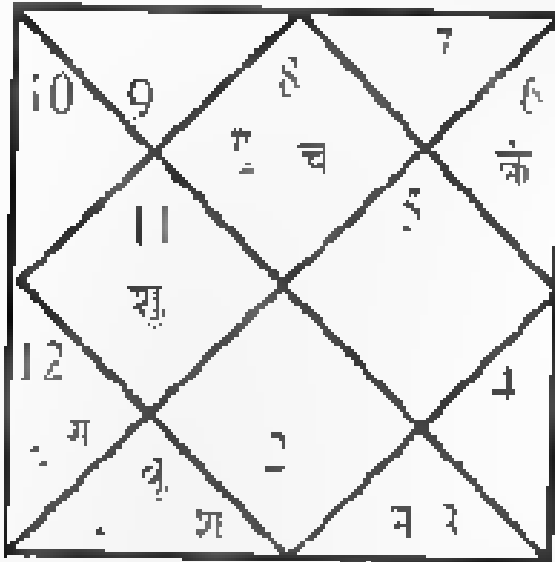
पं. जगन्नाथ भारद्वाज का नाम भारत व विदेशों में अग्रगण्य है। ज्योतिष में **'लग्नमापक यंत्र', 'दशागणना यंत्र'** की महान रचना करके एवं भारतीय खगोल विज्ञान पर पुस्तक लिखकर इन्होंने अपना विशिष्ट स्थान ज्योतिष जगत में बनाया है।

B. राजा, राजपुरुष व राजनेता

श्री नरेन्द्र मोदी, मुख्यमंत्री (गुजरात)
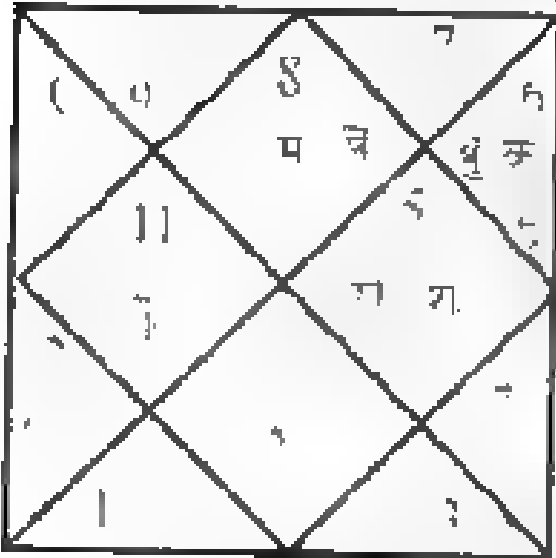
जन्म तिथि-17.9.1950, जन्म समय-11.00 प्रातः, जन्म स्थान-मेहसाना। श्री नरेन्द्र मोदी का प्रादुर्भाव गुजरात की राजनीति में भूचाल की तरह हुआ। उन्होंने भाजपा की कार्यशैली को रचनात्मक रुप देकर नया मोड़ दिया। लग्न में मंगल के कारण वे दबंग व साहसी व अदम्य पराक्रम के धनी हैं।

श्री शरद पवार, (महाराष्ट्र क्षत्रप एवं राष्ट्रीय राजनेता)
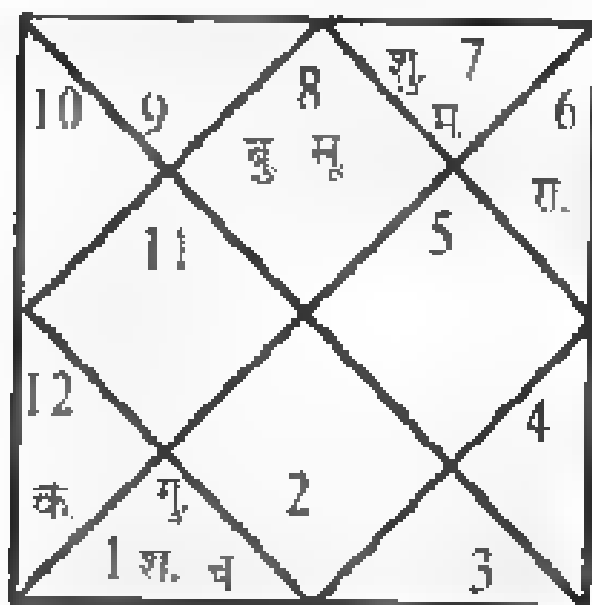
जन्म तिथि-12.12.1940, जन्म समय-5.30 प्रातः, जन्म स्थान-बारामती। लग्नस्थान में सूर्य+बुध युति **'राजयोग'** प्रदाता है। द्वादश स्थान में स्वगृही शुक्र एवं मंगल होने से हर्षनामक **'विपरीत राजयोग'** बन रहा है, कुण्डली मे आंशिक **'कालसर्प योग'** संतति सुख, पराक्रम सुख को भंग कर रहा है।

श्री अरुण शौरी (प्रसिद्ध पत्रकार एवं केन्द्रीय मंत्री)
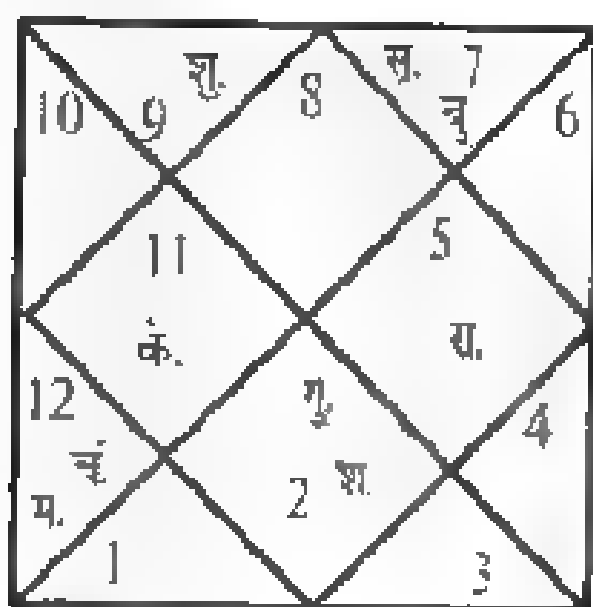
जन्म तिथि-2.11.1941, जन्म समय-9.01 प्रातः, जन्म स्थान-प. पाकिस्तान। केन्द्रस्थ बृहस्पति शनि के साथ **'राजयोग कारक'** है। चंद्र+मंगल **'लक्ष्मी योग'** एवं द्वादश भाव में **'बुधादित्य योग'** भी राजयोग प्रदाता है। यहां कुण्डली मे बृहस्पति व शुक्र का परस्पर राशि परिवर्तन योग भी विशेष दृष्टव्य है।

प्रिंसेज डायना
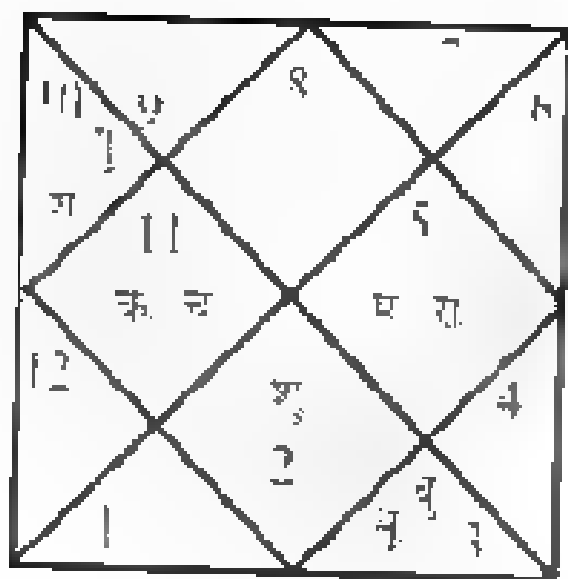
जन्म तिथि 1.7.1961, जन्म समय-17.00 प्रातः, जन्म स्थान-लंदन (सेंडरिंघम)। प्रिंसेज डायना **'आंशिक कालसर्प योग'** के कारण अकाल मृत्यु का शिकार हुई। केन्द्रस्थ स्वगृही शुक्र ने **'मालव्य योग'** के कारण राजकुल में जन्म दिया। बृहस्पति-शनि की युति से **'नीचभंग राजयोग'** भी यहां दृष्टव्य है। बुधादित्य योग अष्टम भाव में है। अष्टमेश अष्टम में बलवान होने से अकाल मृत्यु कराता है।

श्री माधवराव सिंधिया
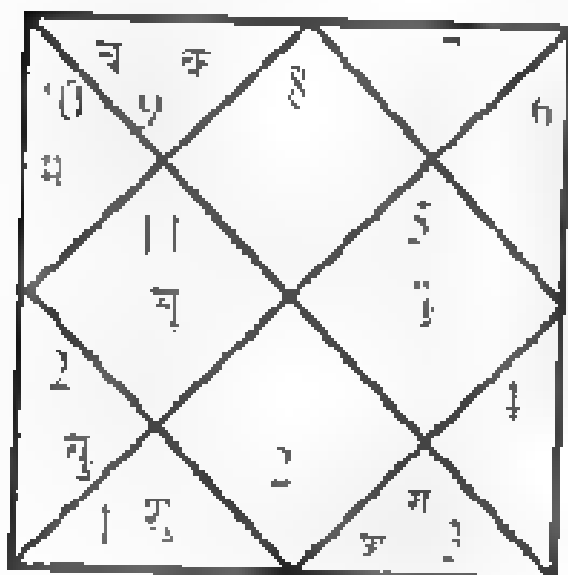
जन्म तिथि 9.3.1945, जन्म समय 24.00 रात्रि, जन्म स्थान-ग्वालियर। केन्द्रस्थ शुक्र राजयोग बना रहा है, दशमेश दशम को पूर्ण दृष्टि देने से भी बलवान राजयोग बना। उच्च का मंगल पराक्रम स्थान में होने से श्री सिंधिया का पराक्रम अद्वितीय था, वे प्रधानमंत्री पद के दावेदार थे, परन्तु **'आंशिक कालसर्प योग'** सप्तमेश का छूट जाना तथा शनि के आठवें स्थान में राहु के साथ जाने से अकाल मृत्यु हुई

श्रीमति हुसैन वाजेद (प्रधानमंत्री बंगलादेश)
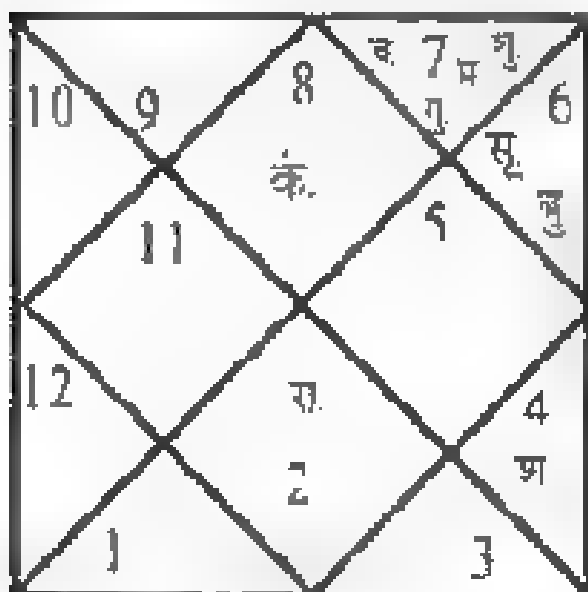
जन्म तिथि 28.9.1946, जन्म समय-11.00 प्रातः, जन्म स्थान ढाका। बंगलादेश की प्रधानमंत्री की कुण्डली में एकादश स्थान में उच्च के बुध तथा **'बुधादित्य योग'** ने उन्हें प्रधानमंत्री पद की कुर्सी दी। बारहवें स्वगृही शुक्र ने भी उन्हें राजयोग दिया परन्तु **'पूर्ण कालसर्प योग'** के कारण पति का सुख नहीं मिला। उनका कार्यकाल यशस्वी नहीं रहा। वे सदैव मानसिक तनाव में रहीं। उल्लेखनीय है कि कुण्डली के आधार पर ही हमने बेगम खालिदा के पुनः प्रधानमंत्री बनने की भविष्यवाणी 'राशिफल 2000' में की थी और वे 2002 में पुनः प्रधानमंत्री बन गईं।

नेपोलियन बोनापार्ट
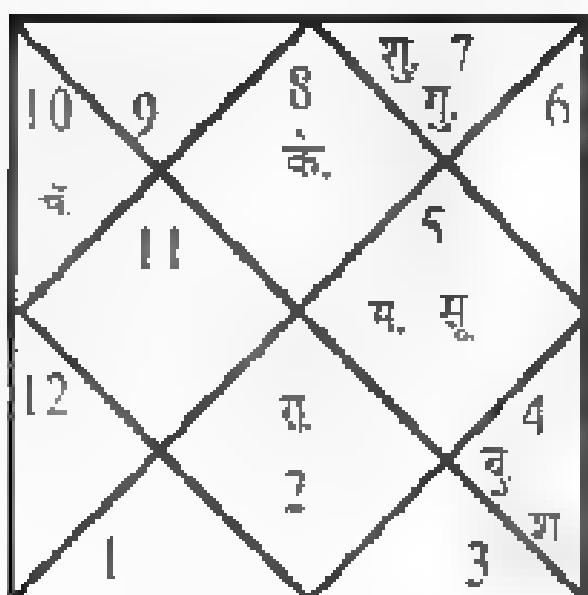
जन्म तिथि- 5.8.1769। इस कुण्डली में दशम भाव में स्थित **'रविकृत राजयोग'** बना रहा है। साथ में दिक्बली मंगल भी राजयोग दे रहा है। द्वादश में स्थित स्वगृही शुक्र भी 'राजयोग' प्रदाता है। **'आंशिक कालसर्पयोग'** के कारण उनकी दुखान्त मृत्यु हुई।

मुसोलिनी
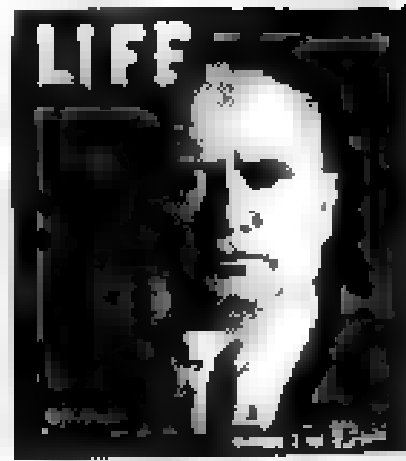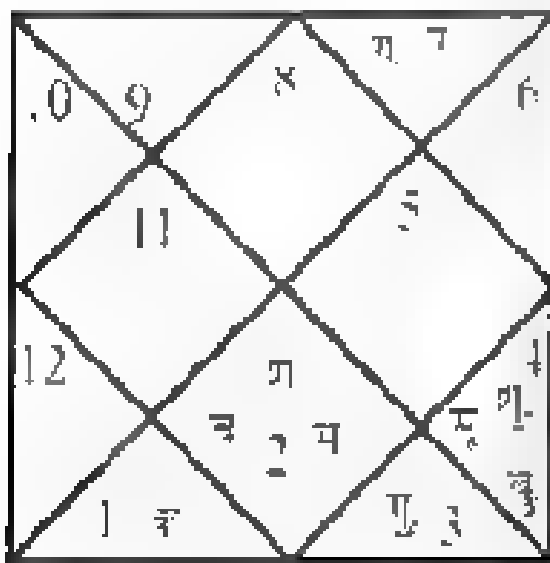
जन्म तिथि- 29.7.1883 जन्म समय 15.00 दोपहर, जन्म स्थान इटली (फ्रांस)। प्रस्तुत कुंडली इटली के शासक व प्रबल राजनेता श्री मुसोलिनी की है लग्न से या अन्य कोई भी स्थानों से क्रम से सब ग्रह लगातार होने से श्रेष्ठ राजयोग हुआ। यह 'एकावली' नाम राजयोग सर्वश्रेष्ठ राजयोग कहा गया हैं उच्च का चंद्रमा मंगल के साथ लग्न को देख रहा है। जिससे **'लग्नाधिपति योग'** की सृष्टि हुई। सूर्य दशमेश होकर भाग्य स्थान में होने से **'पद्मसिंहासन योग'** बना। शनि पराक्रमेश, सुखेश होकर लग्न को देखने से व्यक्ति का पराक्रम अक्षुण्ण बना रहा शुक्र व चंद्रमा अर्थात् भाग्येश एवं सप्तमेश ने परस्पर स्थान बदलकर 'परिवर्तन योग' की सृष्टि की है। **'पूर्ण कालसर्पयोग'** ने उन्हें दु:खान्त मृत्यु दी।

श्री भैरोसिंह शेखावत (उपराष्ट्रपति) भारत सरकार
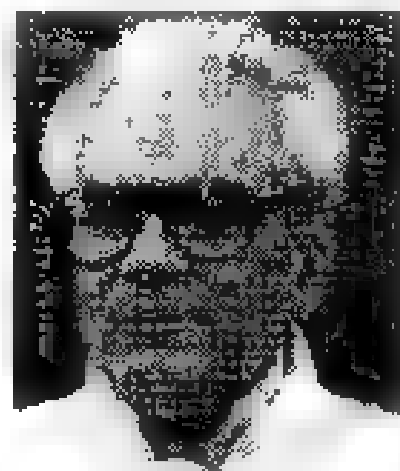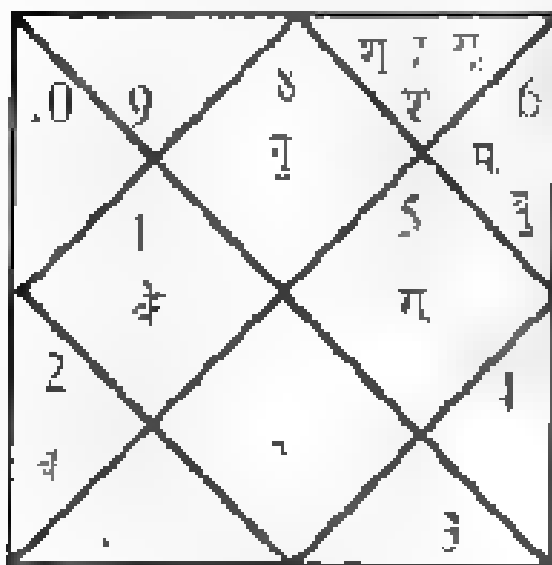
जन्म तिथि 28.10.1923, जन्म समय 9.30 प्रातः जन्म स्थान खाचरियावास। राजयोग की कुंडली के संदर्भ में श्री भैरोसिंह शेखावत की कुंडली सबसे विचित्र है। बृहस्पति केंद्र में तथा लग्नेश मंगल लाभ स्थान में उच्च के बुध के साथ स्थित है। भाग्येश चंद्रमा पंचम भाव में राजयोग की सृष्टि कर रहा है। सबसे उत्तम योग

शुक्र+सूर्य+शनि की युति है। यह **'नीचभंग राजयोग'** का उत्कृष्ट उदाहरण है। जिसके कारण शेरे राजस्थान श्री भैरोंसिंह शेखावत तीन बार विपक्षी नेता के रूप में जीत कर राजस्थान के मुख्यमंत्री पद पर आरुढ़ हुए तथा अपने क्षेत्र के अजेय कीर्तिशाली नेता माने जाते हैं, जिसकी तुलना में दूसरे किसी नेता का नाम नहीं लिया जा सकता।

यह विरोधी नेता के रुप में सफलता प्राप्त कर, सत्ता के विरुद्ध संघर्ष करके अनुपम विजय प्राप्त करने वाले नेता की विलक्षण कुंडली है जो ज्योतिष प्रेमियो का मार्गदर्शन करेगी।

माधव सेन मधोक (आई. जी., पुलिस)
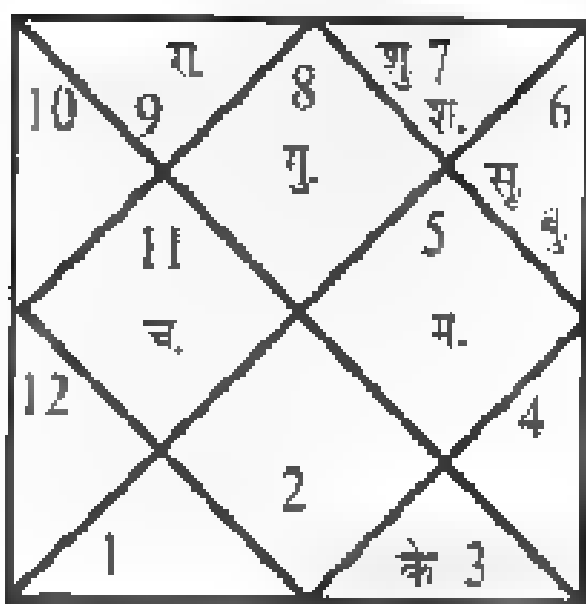
डी.आई.जी माधव सेन पुलिस विभाग मे विशिष्ट पहचान रखते हैं। लग्न में बृहस्पति होने के कारण जातक तंत्र-मंत्र के जानकार व आध्यात्म के पूरे जानकार रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री
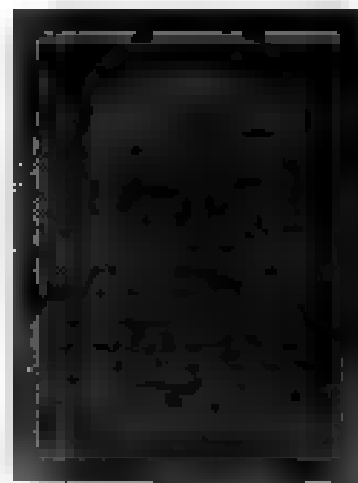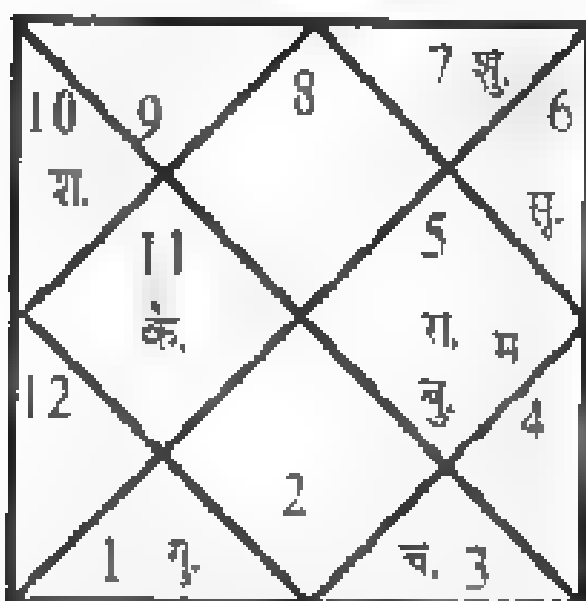
जन्म तिथि-2.10.1904, जन्म समय-10.10 प्रातः, जन्म स्थान वाराणसी। लग्न का स्वामी केंद्र या त्रिकोण में बलवान् हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है। यहा मंगल दिग्बली है। बुध केंद्रवर्ती होकर उच्चाभिलाषी है तथा चलित में उच्च का हो गया है। शुक्र एवं शनि स्वगृही हैं। फलतः एक ग्रह उच्चाभिलाषी दो स्वगृही, एक

दिग्बली होने के कारण प्रबल राजयोग बना जिसमें वे भारत के प्रधानमंत्री के पद तक पहुंच गए। यद्यपि नवमांश में सब केंद्रवर्ती होकर सुधर गए हैं तथापि दशमेश एवं लाभेश सूर्य बुध के परस्पर स्थान परिवर्तन ने भी सुदृढ़ राजयोग की सृष्टि की है जिसे नहीं भूलना चाहिए। चलित में बुध उच्च का हो गया है। तृतीय भाव में स्वगृही शनि ने इन्हें अद्वितीय कीर्ति दी फलतः भारत की धरती में इनके जैसा लोकप्रिय, ईमानदार एवं निष्ठावान प्रधानमंत्री आज तक नहीं हुआ। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर आठवें में जाने से इनकी अकाल मृत्यु हुई।

राष्ट्रपति अय्यूब खान (पाकिस्तान)
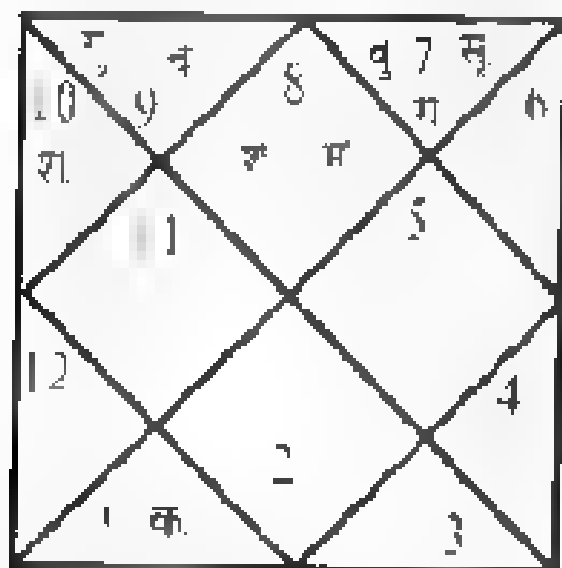
जन्म तिथि 18.10.1901, जन्म समय 10.00 प्रातः जन्म स्थान रावलपिंडी (पाकि.)। यह कुंडली पाकिस्तान के क्रूर राष्ट्रपति अय्यूब खान की है। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार यदि 2/6/8/12 स्थानों में ग्रह हों तो **'सिंहासन नामक'** श्रेष्ठ राजयोग होता है। यही योग भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री मोरार जी देसाई के कुंडली में पड़ा है। यहां मंगल लग्न में स्वगृही, राजयोग कारक बृहस्पति स्वगृही होकर चंद्रमा के साथ **'गजकेसरी योग'** बना रहा है। पराक्रमेश शनि स्वगृही होकर भाग्य स्थान एवं अपनी उच्चराशि को देख रहा है।

महाराजा भवानी सिंह (जयपुर)
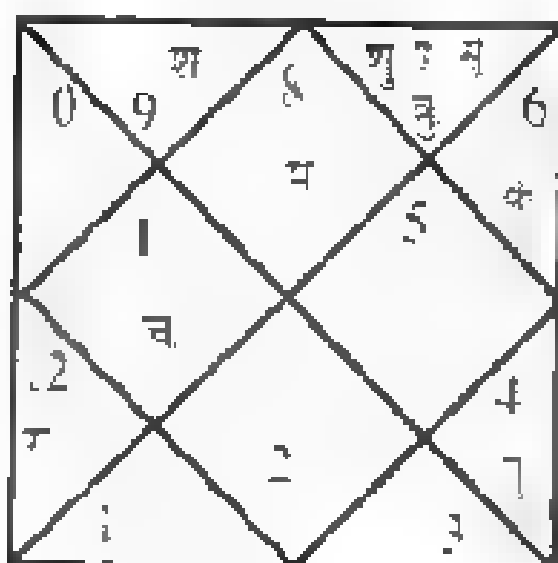
लग्न में स्वगृही मंगल ने इन्हें '**रुचक योग**' में जन्म दिया फलतः वे जन्म से ही राजा थे तथा बड़े होकर सेना में उच्च पद को मंगल के कारण ही प्राप्त किया। द्वादश भावे सूर्य+शुक्र युति से '**नीचभंग राजयोग**' एवं '**बुधादित्य योग**' ने उनकी कुण्डली को ताकतवर बनाया।

राजनेता नाथूराम मिर्धा

10 9 8 7 सू. बु. 6 शु. रा. श. गु. 11 5 मं. 12 चं. 4 के. 2 1 3
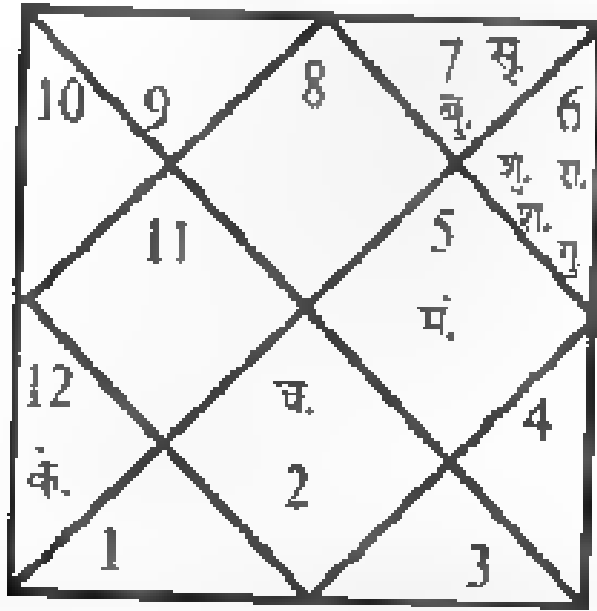
जन्म तिथि-20.10.1921, जन्म स्थान कुचेरा (नागौर)। पूर्व खाद्यमंत्री एवं राजस्थान के अजेय राजनेता को केन्द्रस्थ मंगल ने '**राजयोग**' दिया तथा उच्च का चंद्रमा केन्द्र में होने से '**यामिनीनाथ**' नामक बलवान राजयोग दिया। द्वादश में '**बुधादित्य योग**' ने उन्हें राजस्थान का मंत्री बनाया। लाभ स्थान में चतुष्ग्रह युति ने उन्हें अपने क्षेत्र का अजेय व यशस्वी राजनेता बनाया।

श्रीमति सूर्यकान्ता व्यास, (विधायक जोधपुर)

10 9 8 7 6 गु रा. च. 5 11 बु. सू. शु. 12 के. 4 मं. श. 2 1 3
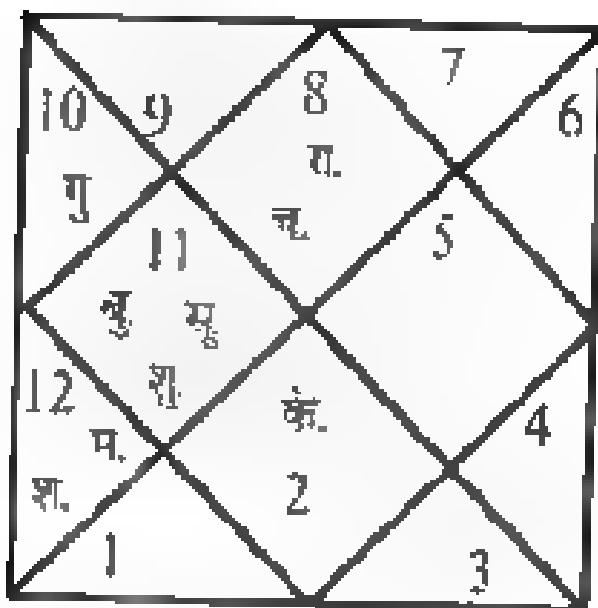
जन्म तिथि-22.2.1934, जन्म समय-2.12 रात्रि, जन्म स्थान-जोधपुर। जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा होने से इनका नाम पड़ा जेठीबाई पर जोधपुर के सभी लोग 'जीजी' के नाम से पुकारते हैं। केन्द्र में '**बुधादित्य योग**' ने उन्हें उत्तम राजयोग दिया। सूर्य

अपने स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। बृहस्पति नीच का है। चंद्रमा नीच का है। **'पूर्ण कालसर्प योग'** है दो बार अच्छे मतों से विधायक पद पर निर्वाचित होने के बाद भी वे मंत्री पद पर नहीं पहुंच पाईं।

श्री चम्पालाल सालेचा
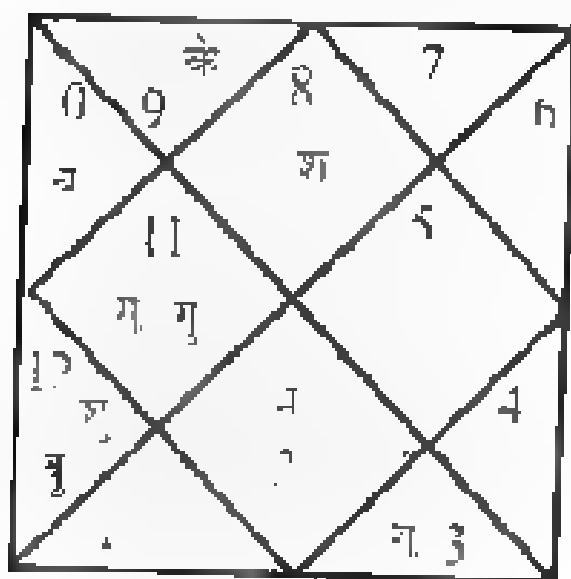
जन्म तिथि 28.2.1927, इष्ट 43/45, जन्म स्थान पचपदरा (बालोतरा)। पंचम भाव में शुक्र+बुध की युति **'नीचभंग राजयोग'** बना रही है। केन्द्रस्थ सूर्य की दृष्टि दशम भाव में राजयोग बना रही है। फलत. श्री चम्पालाल जी जोधपुर के मेयर पद को सुशोभित कर चुके हैं, जोधपुर के संघ चालक रह चुके हैं तथा समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता रह चुके हैं
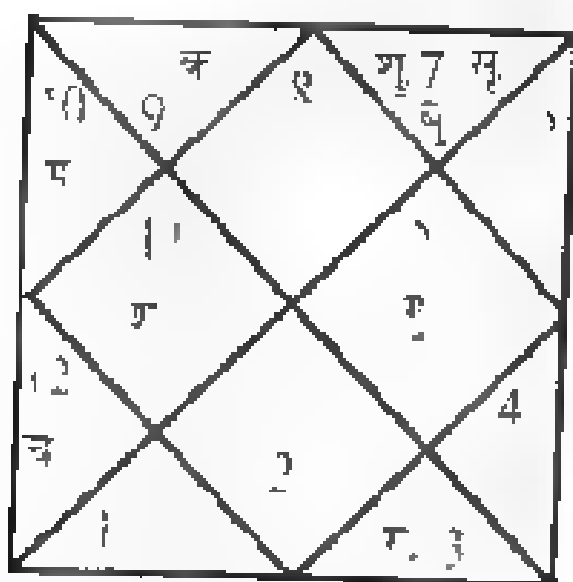
शहीद भगतसिंह

जन्म तिथि-19.10.1907 जन्म समय 9.00 बजे, जन्म स्थान-लायलपुर (पाकिस्तान)। शहीद भगतसिंह की कुण्डली में स्वगृही शनि ने **'शशयोग'** बनाया। उच्च का बृहस्पति भाग्य स्थान में होने से जातक में उत्तम संस्कार कूट कूट कर भरे हुए थे। साथ ही चंद्र एवं बृहस्पति ने परस्पर राशि परिवर्तन भी किया। द्वादश सूर्य बुध व शुक्र ने उनको कीर्ति भी दी तथा अकाल मृत्यु भी दी।

शेख मुजीबुर्रहमान (बंगबन्धु)

जन्म तिथि 17.3.1920, जन्म समय-11.30 रात्रि, जन्म स्थान बंगाल। बंगलादेश के राष्ट्रपति शेख मुजीबुर्रहमान 'बंगबन्धु' के नाम से विख्यात थे। **'बुधादित्य योग'** ने उत्तम राजयोग दिया। उच्च के बृहस्पति ने राष्ट्रभक्ति व लोकप्रियता दी परन्तु मंगल व राहु द्वादश में होने से उन्हें अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ा।

(शिवसेना प्रमुख) श्री बाल ठाकरे

जन्म तिथि-23.1.1927, जन्म समय-3.30 प्रातः, जन्म स्थान-महाराष्ट्र। केन्द्र में बृहस्पति 'राजयोग' दे रहा है। छठे मंगल स्वगृही होने से शत्रुनाश की ताकत प्रदान कर रहा है। आठवें राहु उन्हें दीर्घजीवी बना रहा है। पराक्रम स्थान में **'बुधादित्य योग'** से जनसम्पर्क तेज रहेगा। पराक्रम स्थान मे तीन-तीन ग्रहों की युति जातक का पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि करती है।

(युवा राजनेता) श्री प्रमोद महाजन
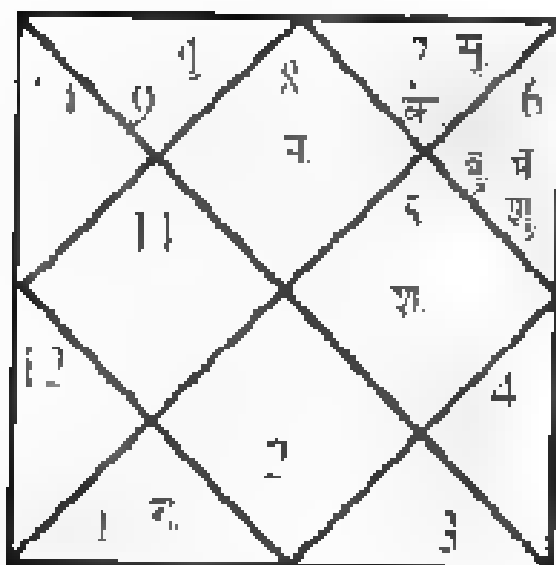
जन्म तिथि 30..0.1948 जन्म समय-13 5 प्रातः जन्म स्थान-महबूब नगर। लग्न में स्वगृही मंगल '**रुचक योग**' बना रहा है। यह एक ही तेजस्वी योग जातक को महान् ऊंचाईयों के पद पर स्थापित कर रहा है धन स्थान में स्वगृही बृहस्पति जातक की वाक्शक्ति मे, भाषा मे शिष्टता-सौम्यता में वृद्धि कर रहा है लाभ स्थान मे उच्च का बुध '**त्रिग्रह युति**' करके बैठा है। यह भी जातक के राजनैतिक प्रभाव को बढ़ा रहा है

श्री रामनिवास मिर्धा (पूर्व केन्द्रीय मंत्री)
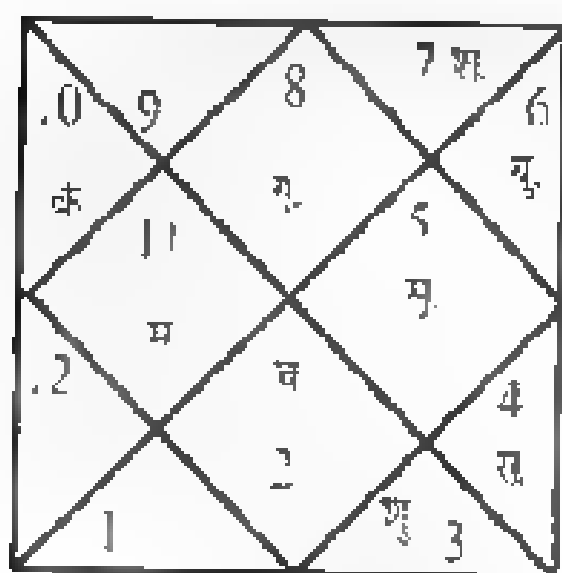
जन्म तिथि-24.8. 924, जन्म समय-12.00 प्रातः, जन्म स्थान कुचेरा (नागौर, राज.। चारों केंद्र भरे हुए होने से '**आसमुद्रात योग**' बना। फलतः राजनेता व जाटनेता के रुप मे जातक की कीर्ति अक्षुण्ण रही। दशम भाव में '**रविकृत राजयोग**' बना इसके कारण जातक हमेशा केन्द्र मे मंत्री पद ही आरुढ़ रहे। सांसद रहे तथा राजस्थान की राजनीति में इनका प्रभाव अक्षुण्ण है।

श्री धर्मनारायण माथुर (राजनेता)
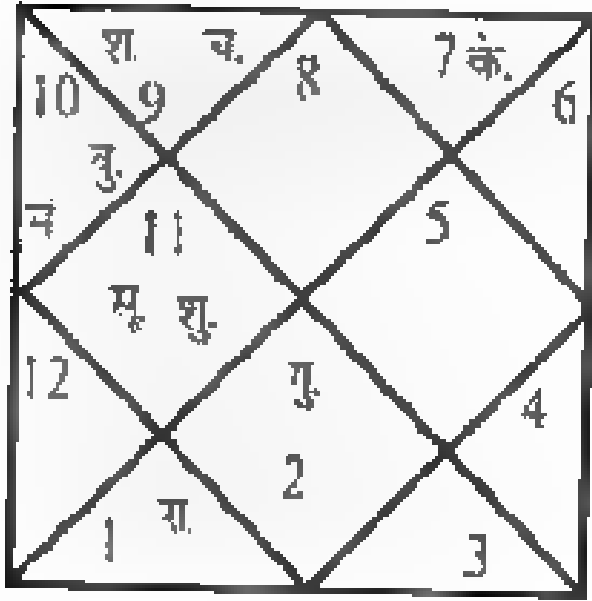
जोधपुर में वयोवृद्ध कांग्रेसी नेताओं में अग्रगण्य धर्मनारायण माथुर के तृतीय स्थान में मंगल उच्च का पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि कर रहा है। केन्द्रस्थ बृहस्पति भी राजयोग कारक है। सूर्य दशम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। यह भी राजयोग की दृष्टि से उत्तम संकेत है।

श्री रामकृष्ण हेगड़े (मुख्यमंत्री कर्नाटक)
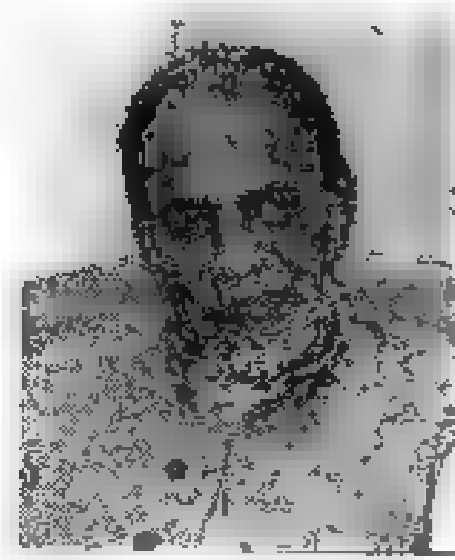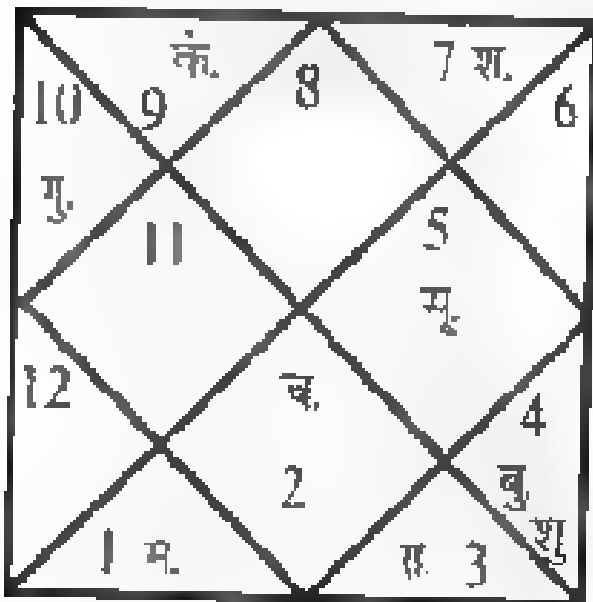
जन्म तिथि-29.9.1926, जन्म समय-12.15 दोपहर, जन्म स्थान-बैंगलोर। इस कुण्डली में दशम भाव में **'रविकृत राजयोग'** ने इन्हें कर्नाटक के मुख्यमंत्री पद पर पहुंचाया। उच्च का चद्र केन्द्र में होने से **'यामिनीनाथ योग'** तथा स्वगृही मंगल छठे होने **'विपरीत राजयोग'** ने इन्हें राजा जैसा वैभव वर्चस्व दिया। यहां अष्टम राहु ने दीर्घायु दी है।

श्री पी. चिदम्बरम् (केन्द्रीय मंत्री)
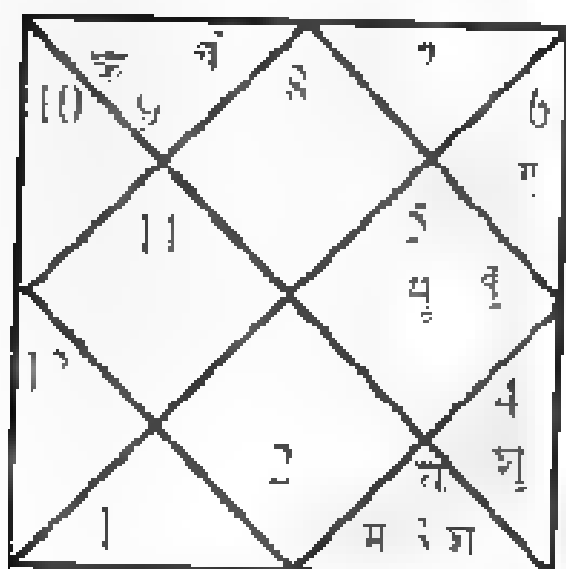
जन्म तिथि 16.9.1945, जन्म समय-11.47, जन्म स्थान केरीकुड्डी। पी. चिदम्बर की कुण्डली में 'बुधादित्य योग' शक्तिशाली है परन्तु दसम स्थान में स्वगृही सूर्य के कारण '**रविकृत राजयोग**' ने इन्हें केन्द्र में मंत्री पद दिया। षष्टेश होकर मंगल का अष्टम में जाने से 'हर्षनामक' **विपरीत राजयोग** भी दिया।

C. फिल्म अभिनेता

अभिनेता धर्मेन्द्र
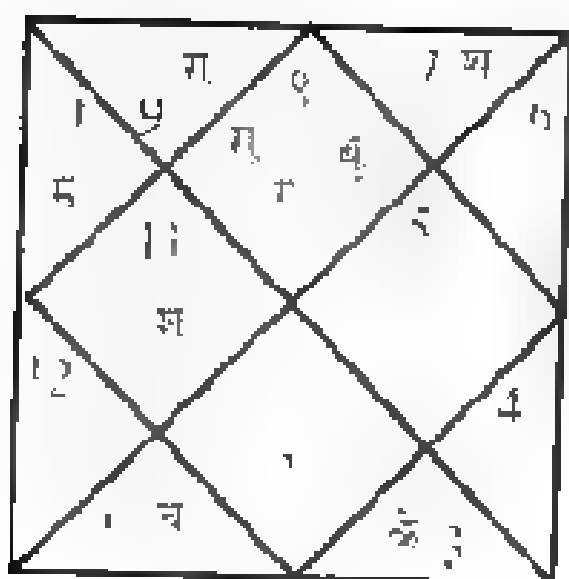
जन्म तिथि 8.12. 935 जन्म समय 6.00 प्रातः जन्म स्थान दिल्ली। केन्द्र में शनि ने '**शशयोग**' बनाया। जिससे उनको परम राजातुल्य ऐश्वर्य है, लग्न में 'बुधादित्य योग' ने उन्हें फिल्मों में सफलता दी तथा स्वगृही शुक्र द्वादश में होने से उन्हें अभिनय के क्षेत्र में अद्वितीय सफलता देता है।

संजय दत्त
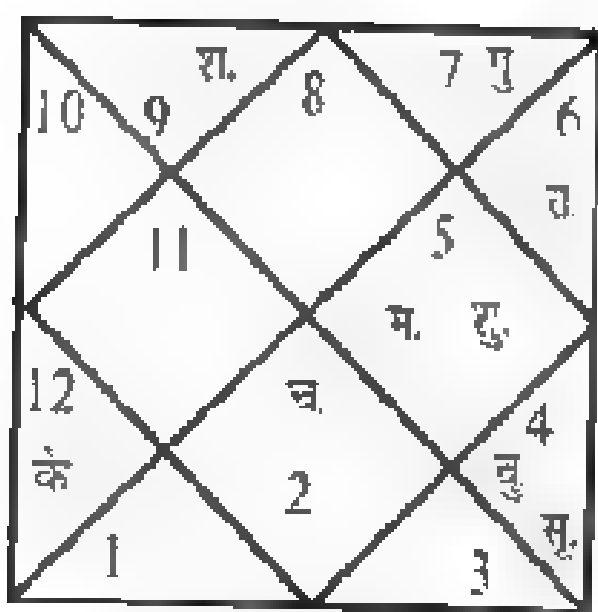
जन्म तिथि 29.7.1957, जन्म समय 15.00 दोपहरः, जन्म स्थान-मुम्बई संजयदत्त की कुण्डली में केन्द्रस्थ शुक्र अभिनय की विशे प्रतिभा देता है। भाग्य स्थान में 'बुधादित्य योग' ने इन्हें पिता का ऐश्वर्य व सम्पत्ति दी। '**यामिनीनाथ योग**' माता का अच्छा नाम विरासत में देता है परन्तु द्वादश स्थान में बृहस्पति उनकी राष्ट्र भक्ति के संदेह के घेरे में डालता है।

'खलनायक' फिल्म से संजय दत्त को बहुत प्रसिद्धि मिली। उनकी कुडली मे भी खलनायक वाले ग्रह दिखाई दे रहे है। वृश्चिकलग्न वाले व्यक्ति धनु के धनी और दुःसाहसी होते है। फिल धनस्थान में शनि, पंचक भाव में केतु, केन्द्र में शुक्र और मंगल व्यक्ति को अधैर्यशाली एवं नकारात्मक प्रवृत्तियों से जोड़ देता है। धर्म, समाज सेवा एव परोपकार का कारक पचमेश बृहस्पति बारहवें चला गया है फलतः व्यक्ति को धर्म, परोपकार, जनकल्या व स्वजाति सेवा प्राचीन संस्कारो के प्रति श्रद्धा से दूर कर देता है। इतना ही नहीं इनकी सतान भी इन कार्यों से दूर रहेगा, क्योंकि पंचमेश दूषित है।

शनि का प्रभाव संज की वृषभ राशि की साढ़े साती दिनाक 17.4.98 से शुरु हुई। दिनांक 23.7.2002 को सुबह से शनि मिथुन राशि मे प्रवेश कर गया है। यहां से उनकी राशि से शनि दूसरे भाव में रहेगा। अढ़ाई वष तक शनि की साढ़े साती का अंतिम चरण रहेगा। बृहस्पति शुभप्रद रहेगा और शनि देव के अशुभ फलों को कम करेगा। शनि की साढ़े साती का भ्रमण इनके लिए परेशानी का कारण बनेगा

जन्म पत्रिका मे सप्तम भाव में उच्च का चद्रमा निर्बल है क्योंकि उसके दूसरे व बारहवें भाव खाली हैं। कोई भी शुभ ग्रह चद्रमा को नहीं देख रहा है। अतः पत्नी सुदर होगी, पर उससे खट-पट होती रहेगी, चंद्रमा लग्न पर अपनी नीच राशि को देख रहा है। फलतः आत्मशांति के साधन कमजोर रहेंगे। आतरिक दृष्टि स जातक मे हीनभावना रहेगी। बन्दूक वाली घटना जिसको लेकर उन्हें जेल भेजा गया, कोई

साधारण घटना नहीं थी, इनकी मानसिकता इसी चंद्रमा के कारण अति विचित्र है। केन्द्र में मंगल और शुक्र की अग्नि राशि में विस्फोटक स्थिति है। वे कहीं भी कुछ भी कर सकते हैं, क्योंकि नवमांश में मंगल वक्री वर्गोत्तमी होकर नीच राशि में है।

आने वाला समय- आने वाला समय चुनौतियों और खतरे से परिपूर्ण होगा। बृहस्पति में बुध व केतु का अंतर 2006 तक कठिन परिस्थितियों का सूचक होगा। 7 अप्रैल 2000 से 5 सितम्बर 2004 तक का समय शनि प्रभावित रहेगा, इस समय दाम्पत्य जीवन में कटुता आएगी।

व्यापार में रुकावट, शारीरिक कष्ट, अशांति और तनाव रहेगा। शनि का उपाय ही जातक को शांति प्रदान करेगा।

अभिनेत्री माधुरी दीक्षित
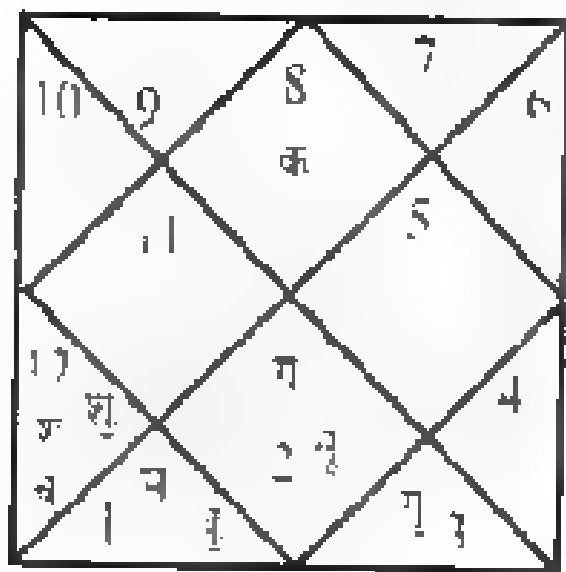
जन्म तिथि- 5.5.1966, जन्म समय 20.00, जन्म स्थान रतनगिरि, पंचम स्थान में उच्च का शुक्र ने इन्हें अभिनय क्षेत्र में सफलता दी, उच्च का शुक्र के साथ चंद्रमा ने इन्हें अद्वितीय सौन्दर्य दिया। छठे स्थान में स्वगृही मंगल उन्हें **'विपरीत राजयोग'** व उच्च का ससुराल सुख देता है।

अभिनेत्री आशा पारिख
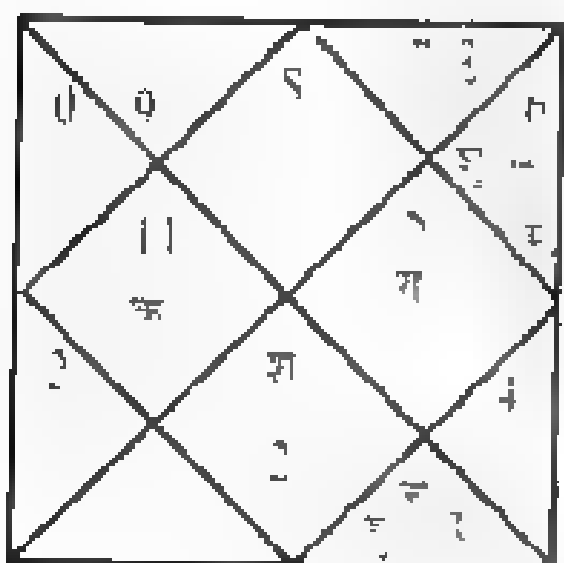
जन्म तिथि 2.10.1942, जन्म समय 12.00, जन्म स्थान-मुम्बई। आशा पारीख की कुण्डली में **'गजकेसरी योग'** बना है। लाभ स्थान में शुक्र अभिनय क्षेत्र में बड़ा नाम दिया। लाभ स्थान में **'त्रिग्रह युति'** ने आशा पारीख को अपने व्यवसाय में उन्नति दी, बड़ा नाम पद व प्रतिष्ठा पदान की।

अभिनेत्री सायराबानो
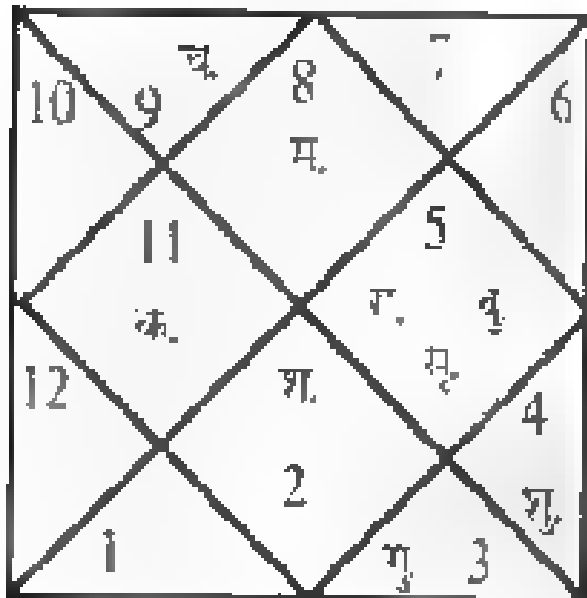
श्रीमति सायराबानो की कुण्डली मे **'रुचक योग'**, **'रविकृत राजयोग'**, **'बुधादित्य योग'** विशेष दृष्टव्य है। भाग्य में शुक्र ने अभिनय क्षेत्र में सफलता दी। परन्तु वैभवशाली पति का सुख उपरोक्त तीनों राजयोग ने दिया। पंचमेश बृहस्पति आठवें होने से **'संतानहीन योग'** बना।

D. खिलाड़ी

खिलाड़ी इमारान खान
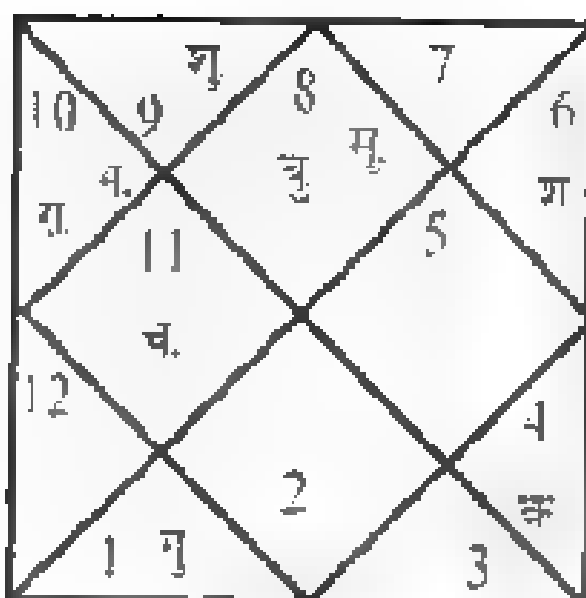
जन्म तिथि-25.11.1952 जन्म समय-6.45, जन्म स्थान-लाहौर (पाक.)। इमरान खान की कुण्डली में **'बुधादित्य योग'** मुखरित है। तृतीय स्थान में मंगल उच्च का है भाग्येश चद्रमा केन्द्र में उत्तम कीर्ति एवं क्रिकेट खेलों में सफलता दे रहा है।

श्री अनिल कुंबले
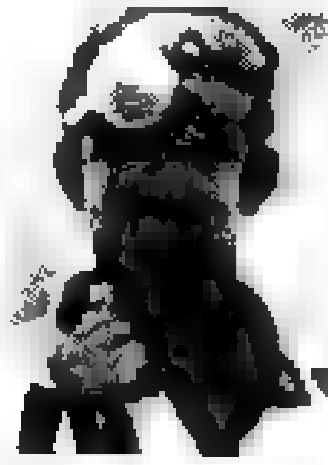
जन्म तिथि 17.10.1970, जन्म समय 9.50 प्रात: जन्म स्थान बैंगलोर। चारों ग्रह केंद्र में होने से '**आसमुद्रात् योग**' बना है चंद्रमा उच्च का '**यामिनीनाथ योग**' बना रहा है। एकादश भाव में बुध उच्च का होकर '**बुधादित्य योग**' बनाकर इन्हें खेल के मैदान में बराबर सफलता दे रहा है

श्री हरभजन सिंह
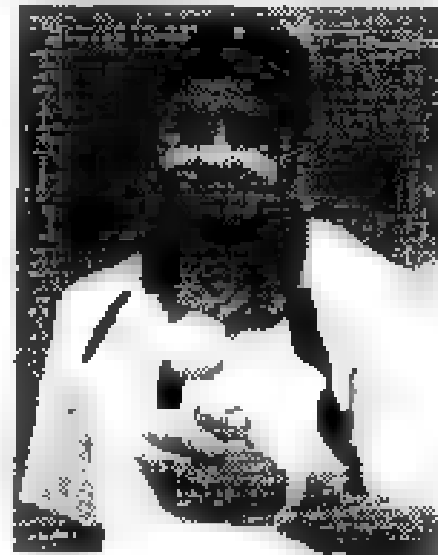
जन्म तिथि 3.7.1980 जन्म स्थान पंजाब, शुक्र स्वगृही होकर केन्द्र में होने से '**मालव्य योग**' बना। बृहस्पति केन्द्र में तथा मंगल लाभ स्थान में होने से खेलों में बराबर लाभ हुआ, सफलता मिली तथा कीर्ति मिली। चंद्रमा भाग्येश होकर केतु में है, शनि दशम में '**करोड़पति योग**' बना रहा है

पार्थिव

जन्म तिथि 9.3.1985, जन्म स्थान अहमदाबाद (गुजरात)। यहां मंगल स्वगृही होकर छठे होने से '**हर्षनामक विपरीत राजयोग**' के कारण खेल में सफलता मिली। सूर्य अपने घर दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। शुक्र एवं बुध के कारण '**नीचभंग राजयोग**' बना। जो पूर्ण सुख, साम्राज्य व सफलता दे रहा है।

E. चर्चित व्यक्तित्व

हर्षद मेहता, प्रसिद्ध शेयर ब्रोकर
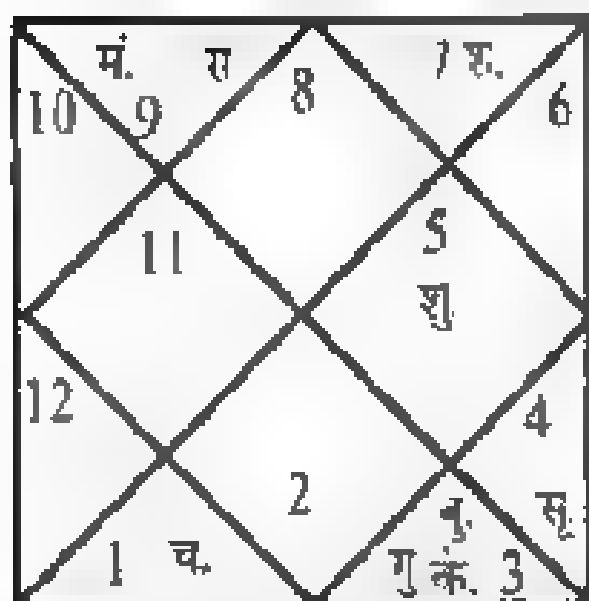
जन्म तिथि-24.7.1954, जन्म समय-14.30 प्रात:। हर्षद मेहता की कुण्डली में शनि उच्च का है। शुक्र केन्द्रवर्ती है। बुध अष्टम स्थान में स्वगृही है। अत: '**सरल नामक विपरीत राजयोग**' बना। हर्षद मेहता के धन स्थान में राहु ने उन्हें दिवालिया घोषित किया। तथा अष्टम स्थान में बृहस्पति+बुध+केतु तथा छठें चंद्रमा ने अकाल मृत्यु दी।

माईकल जैकसन (पॉप सिंगर)
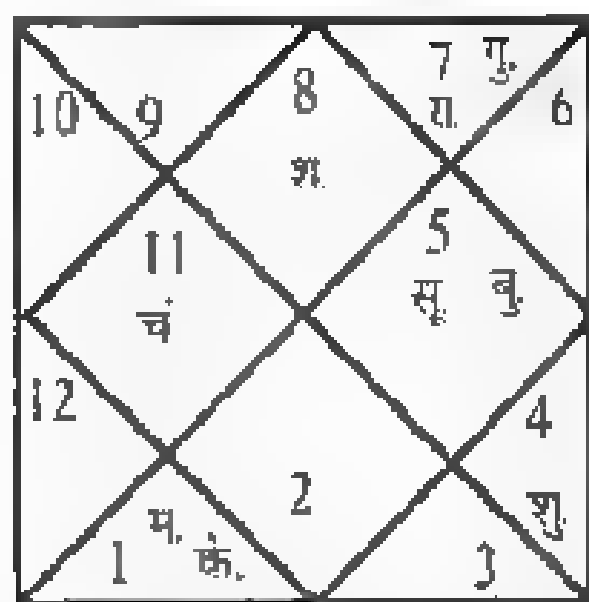
जन्म तिथि-29.8.1958, जन्म समय-13.30, जन्म स्थान-अमेरिका। माईकल जैकसन की कुण्डली में '**रविकृत राजयोग**', '**बुधादित्य योग**' शक्तिशाली है। षष्टेश मंगल छठे स्थान स्वगृही होने से '**हर्षनामक विपरीत राजयोग**' बना। शनि लग्न में होने से रंग काला है तथा बृहस्पति बारहवें अपसंस्कृति के प्रणेता के रुप में इन्हें प्रसिद्धि दे रहा है।

कुख्यात डाकू मानसिंह
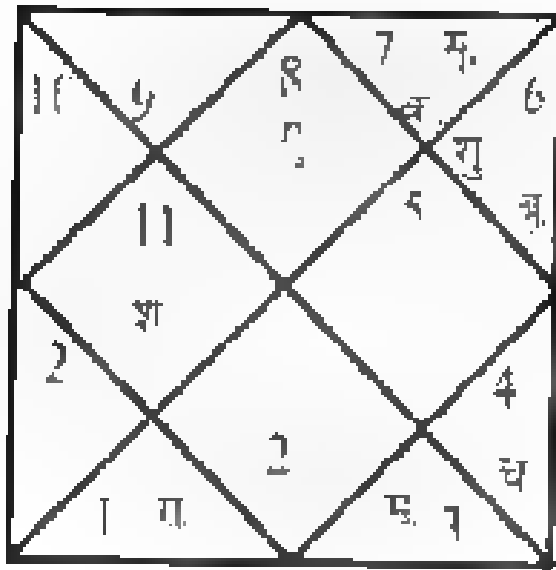
कुख्यात डाकू मानसिंह की कुण्डली में शनि केन्द्रस्थ होकर **'शश योग'** बना रहा है। चद्रमा स्वगृही भाग्य में होने से भाग्यशूर रहे। उच्च बुध लाभ स्थान में **'नीचभंग राजयोग'** बना रहा है। लग्नस्थ बृहस्पति होने से राष्ट्रीयता इनमें कूट कूट कर भरी हुई थी। राहु छठे होने शत्रु इनके नाम से भयभीत रहते थे।

श्री धीरुभाई अम्बानी, प्रसिद्ध उद्योगपति
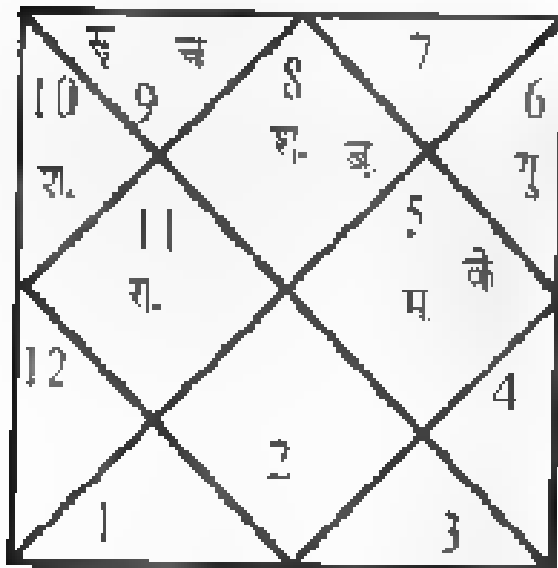
जन्म तिथि 28.12.1932, जन्म समय 6.37 प्रातः, जन्म स्थान चोरवाड। धीरु भाई अम्बानी के धन स्थान में सूर्य एवं चद्रमा दोनों राजा ग्रह होने से वे महाधनी रहे। शनि स्वगृही पराक्रम स्थान में होने से पराक्रम तेज रहेगा। शुक्र केन्द्र में मंगल केन्द्र में बुध केन्द्र में राजयोग में वृद्धि दे रहे हैं।

श्रीमति राधा भालोटिया
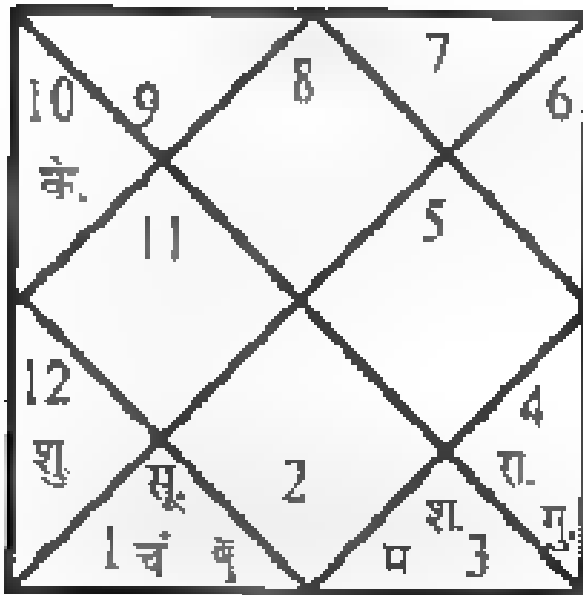
जन्म तिथि–23.4.1944, जन्म समय- 22.00, जन्म स्थान -मुम्बई। चारों केन्द्र खाली होते हुए भी शुक्र उच्च का, बृहस्पति उच्च का सूर्य उच्च का है। फलत: जातक अरबपति है। कलकत्ता, गोरना व जोधपुर में व्यापार है।

F. अनुभव का खजाना

श्री चैनसिंह (S.H.O.)
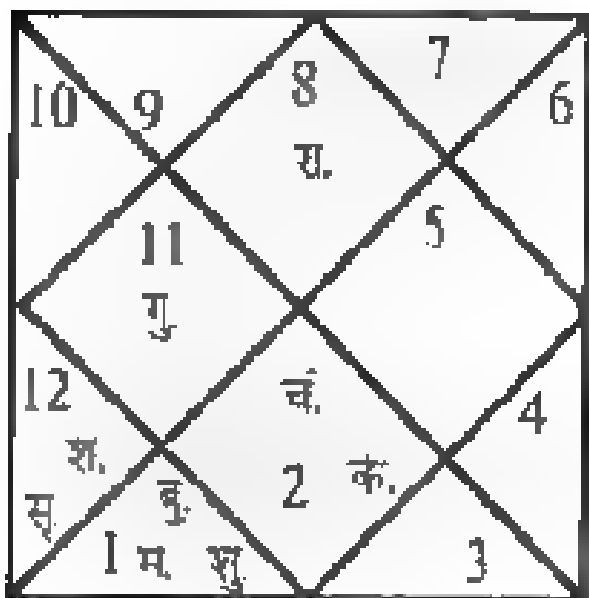
'पूर्ण कालसर्पयोग' जातक को लगातार मानसिक चिंता एवं तनाव में रख रहा है। बृहस्पति केन्द्र में, चंद्रमा उच्च का केन्द्र में **'यामिनीनाथ योग'** बना रहा है। मंगल षष्टेश होकर षष्टम में स्वगृही **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बना रहा है। जातक पुलिस विभाग S.H.O. पद पर रहा और यशस्वी रहा।

श्रीमति गायत्री देवी
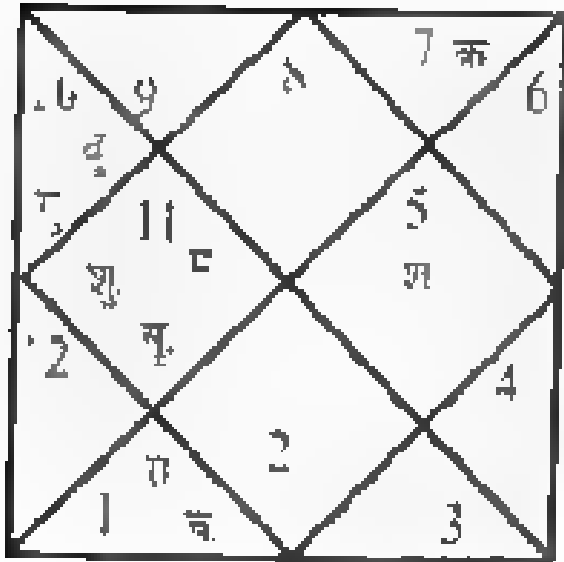
जन्म तिथि-5.3.1949, इष्ट 46/14, जन्म स्थान जोधपुर। मंगल केन्द्र में सूर्य की दृष्टि दशम भाव में होने से सरकारी नौकरी मिली। सप्तमेश शुक्र अपने शत्रु ग्रह के साथ पाप पीड़ित है। कुण्डली 'मांगलिक' है। राहु छठे होने से पति की अकाल मृत्यु हुई। पुत्रवधू की भी मृत्यु हुई, चंद्रमा भाग्येश होकर छठे होने से 'भाग्यभंग योग' बना। चंद्रमा छठे मानसिक तनाव एवं गृहस्थ सुख में न्यूनता देता है।

श्री उत्तमचंद बाघमार
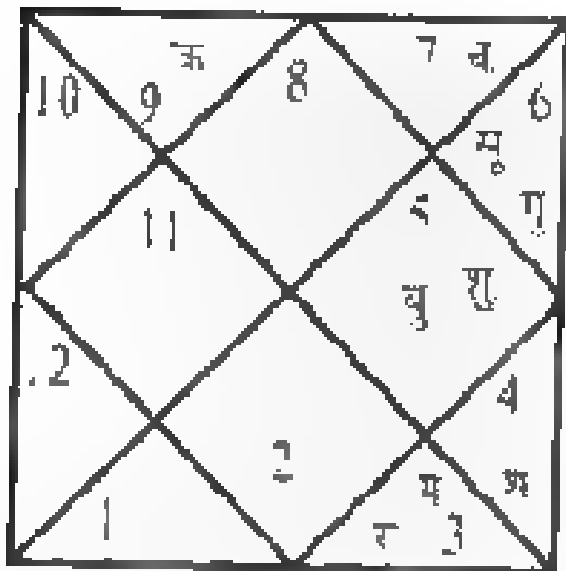
जन्म तिथि-9.11.1950 जन्म समय-8.15 प्रात: जन्म स्थान पीपाड़ (राज.), लग्नेश आठवें '**लग्नभंग योग**' बना रहा है। मंगल आठवें राहु के साथ '**द्विभार्यायोग**' बना रहा है, जातक के दो विवाह हुए। चंद्रमा बारहवें '**भाग्यभंग योग**' बना रहा है भाग्य साथ नहीं देगा

सेठ चुन्नी लाल दवे
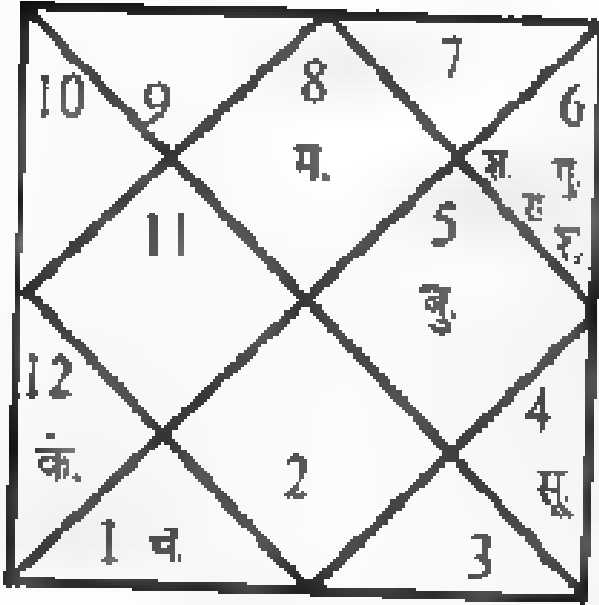
जन्म तिथि-14.8.1922, जन्म समय 13.52, जन्म स्थान-समदडी (राजस्थान)। लग्न में मंगल '**रुचक योग**' बना रहा है। जिसके कारण श्रीमाली ब्राह्मण समाज में वे 'सेठ' के नाम से प्रसिद्ध हुए। शनि, शुक्र, बृहस्पति व राहु की चतुर्ग्रह युति लाभ स्थान में होने से उन्हें व्यापार में चारों दिशाओं से लाभ हुआ। पंचम भाव में केतु होने से पुत्र उनके मुकाबले यशस्वी नहीं हो पाये। केन्द्रस्थ बुध होने से जातक ने समाज जाति व कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन किया।

श्री डी.पी. शर्मा सीनियर स्टेशन मास्टर
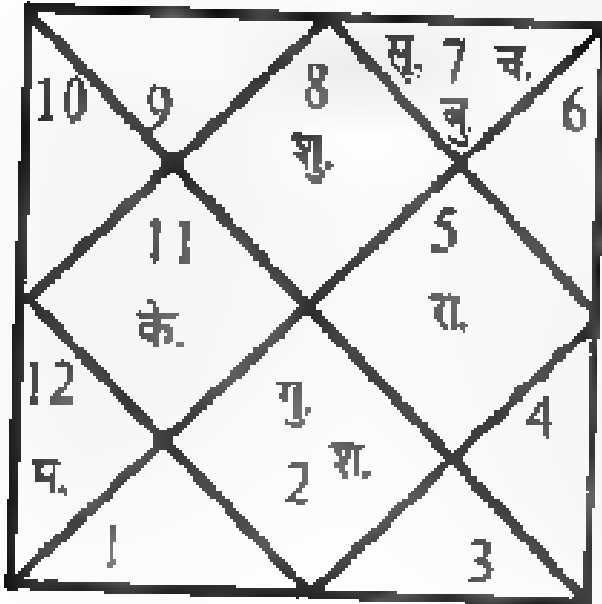
जन्म तिथि-22.10.1941, जन्म समय-10.18 प्रातः, जन्म स्थान-मेरठ। चारों ग्रह केन्द्र में भरे हुए होने से राजयोग शक्तिशाली रहा। वे गृहमंत्री बूटासिंह के निजी सचिव रहे। बृहस्पति की दृष्टि लग्न पर होने से जातक धार्मिक, सैद्धान्तिक एवं आध्यात्मिक स्वभाव का है।

श्री अशोक दवे ज्योतिषी
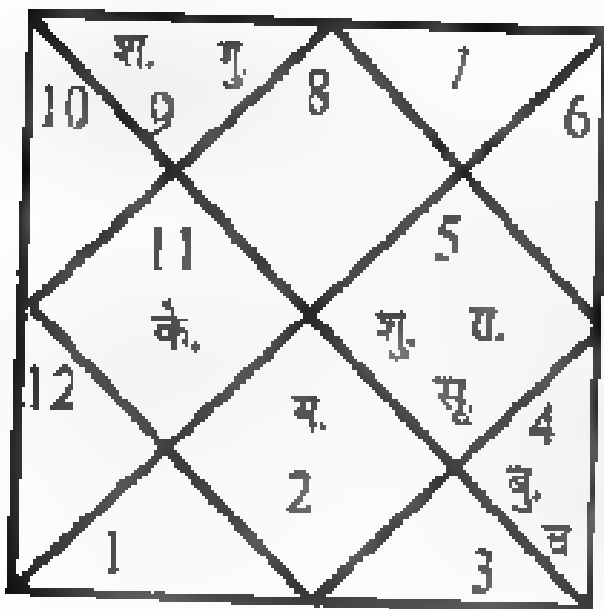
जन्म तिथि 21.8.1960, जन्म समय-14.00 प्रातः, जन्म स्थान-पाली (राजस्थान)। सूर्य यहा '**रविकृत राजयोग**' बना रहा है परन्तु साथ में राहु बाधक है। चंद्रमा भाग्य स्थान में स्वगृही है। जातक कीर्तिवान् होगा। जातक को पंडिताई, कर्मकाण्ड से फायदा होता रहेगा।

❑❑❑

धनु लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों मे **'लग्न'** का बडा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को **'वीर्य'** एव बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बार विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी. जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तकों का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक एक ग्रह को भिन्न भिन्न भावो मे घुमाया गया है। यह अकेले ग्रह के भिन्न भिन्न भावों में घूमने से, विभिन्न प्रकार के योगो की सृष्टि होती है। जिसकी प्रमाणिक चर्चा पहली बार आप इस पुस्तक मे देख पायेंगे। लग्न बारह है, ग्रह नौ हैं, फलत. 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह स्थितिया बनीं। प्रत्येक ग्रहों की दृष्टियां को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश इन पुस्तको मे डाला गया है निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया मे आज दिन तक नही हुआ वह है **'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह तीन ग्रह, चतुष्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन सी राशि मे हैं? किस लग्न मे हैं? और कहा? किस भाव (घर) मे हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा का कच्चा ही रह गया। इस

पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह से युति होने पर उसका भी विचार किया गया है इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुनः नौ ग्रहो की भिन्न भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 प्रकार की द्वि ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्नों मे कुल 972 × 12 - 11664 प्रकार की द्वि-ग्रह युतिया बनेंगी। **ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्वि-ग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है। इन किताबो का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

एक छोटा-सा उदाहरण हम '**गजकेसरी योग**', '**बुधादित्य योग**' अथवा '**चंद्रमंगल लक्ष्मी योग**' का ले सकते हैं। क्या गुरु+चन्द्र की युति से बना 'गजकेसरी योग' सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की सख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी!!! 'गजकेसरी योग' का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नही होगा? 'गजकेसरी योग' की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेंगी। अकेला 'गजकेसरी योग' 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। 'गजकेसरी योग' की सर्वोत्तम स्थिति '**मीनलग्न**' या '**कर्कलग्न**' के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति '**तुलालग्न**', 'मकर' या '**कुम्भलग्न**' में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में 'गजकेसरी योग' छठे स्थान या आठवें स्थान में है तो जातक की पत्नी दूसरो के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर गुरु छठे, आठवे एव सप्तमेश होकर चद्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष साफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'**मेषलग्न**' एव '**कर्कलग्न**' की पुस्तकें अक्टूबर में, तथा '**वृषलग्न**' एवं '**तुलालग्न**' नवम्बर 2003 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी है। जिसका ज्योतिष की दुनिया मे जोरदार स्वागत हुआ। अब यह '**धनुलग्न**' की पुस्तक को पाठकों के हाथों मे सौपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है धनुलग्न मे स्वामी विवेकानन्द, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दलाईलामा, बेनजीर भुट्टो, किसान नेता अजीत सिंह, पूर्व चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन, महर्षि महेश योगी, रोम सम्राट नीरो, पूर्व

राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद, महारानी एलिजाबेथ, डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार, धीरूभाई अम्बानी श्री रतन टाटा, अभिनेत्री रेखा, माधुरी दीक्षित जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। धनुलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। धनुलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की Zero Degree से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों में प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हो फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम **'सृष्टि'** के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई **'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों'** से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ, जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

4.12.2003

लेखक परिचय

अंतराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं. इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को **"कर्कलग्न"** के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्ण पदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अन्तर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश विदेशों में हो चुके है तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार प्रसार कर रहे है। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि *'युग पुरुष'* के रूप में याद किए जाएंगे इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है

अध्यक्ष, इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन

.30 'ए' रोड, अज्ञातदर्शन काम्पलेक्स, परदीप अपार्टमेन्ट, जोधपुर (राज.)

दूरभाष–0291-2637359, मोबाईल 0291-3129105

ज्योतिष शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् मे सिद्धात संहिता व होरा इन तीन भागो में विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छ: अगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदाग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छ: वेदागों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदागो में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वय सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ ''कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करे'[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना सभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवें[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं

---

1. सिद्धात संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मल चक्षुर्ज्योति शास्त्रमकल्मषम्। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयन चक्षुर्निरुक्त श्रोत्रमुच्यते।। पाणिनी शिक्षा श्लोक 41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिद कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिष वेद स वद यज्ञम् -फ ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागाना मणयो यथा तद्वद्वेदागशास्त्राणा ज्योतिष मूर्धनि संस्थितम् —इति वेदाग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ 655
6. वद वतमीमासक ''ज्योतिषविवेक (पृ 4) गुरुकुल सिहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमादधीत—तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामा दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन् तैत्तरीय संहिता 6/4/8 1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतो मे बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरा वगैरा। हिन्दू षोडश संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं। श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्रा:।

यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत।। 1 ।।[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग मे अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी ज्योतिषिक ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है.[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषमनौ दिवाकरे 'पुमान्नपुंसकं दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष 1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड 2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यो व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारो का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण मे ऐसे अनेक संकेत व सूचनाए मिलती है। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक '**ओरायन**' के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं प. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक '**वैदिक-सम्पत्ति**' मे मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध सिद्धातो का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमे '**वेदांग ज्योतिष**' नामक ग्रन्थ मे मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिषशास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[5]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. स. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति प. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई पृ. 90
5. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥—पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa &(Pub 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए कहा भी है–**यो ज्योतिषं**

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।
उषरे वापित बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ।।2।।[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत् स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआ, बगीचा, देवालय मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत अनुष्ठान, व्यापार गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते अत: सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्ष ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ।।3।।[3]

ससार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय है अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है जिसकी साक्षी सूर्य और चद्रमा घूम घूम कर दे रहे है। सूर्य, चद्र ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चद्रोदय, चद्रास्त ग्रहो की शृगोन्नति वेध, गति, उदय अस्त इस शास्त्र की सत्यता एव सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ।4।।[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है वह जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। ससार में ज्ञान विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नही मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध श्री शिवराज, (पृ. 19,9), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ1
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृष्ठ 2
3. जातकसार दीप चद्रशेखरन् (पृष्ठ 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृष्ठ 551

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी श्रृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र मे भारी धन यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोडकर मनुष्य का कोई सच्चा मित्र नहीं है क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र मे नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल मे सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जनसम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते है कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट पलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका मे ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्यहीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।**[4] **अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।**[5]

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1 सुगम ज्योतिष प. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन 1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली पृष्ठ 17

2 बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37

3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25

4 अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः
तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥ बृहत्संहिता, अ.1/24

5 बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय [illegible]

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है, यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है, घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में आकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो नहीं बोलते, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्य वक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है भारत में भविष्य वक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिषशास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है–

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विज.॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक मे 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला को सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

□□□

---

1. वर्की ग्रह-(प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदानधीत्य विप्रो ज्योतिषं विना द्विजः।- वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध, 20 पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।

लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि, नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है।5।।

इन्दुः सर्वत्र बीजाभो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है, लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या।।

विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फल विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

'ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए। 9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।

अतीव तुच्छ फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है ।।10।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी मे 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दो मे देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख है। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्म कुण्डली कहते हैं वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है, लग्न कुण्डली को जन्माग भो कहते हैं क्योंकि "लग्न" का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते है। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth Horoscope कहते हैं इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत मे इसका प्रचलन नगण्य है वस्तुतः आकाश मे दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है, 60 घटी में बारह लग्न होते हैं 60 में बारह

10 8 लग्न 9 7 12 6 1 3 5 2 4

3.30 से 5.30 A.M.
5.30 से 7.30 A.M. सूर्योदय
7.30 से 9.30
9.30 से 11.30
3.30 से 11.30
11.30 से अर्धरात्रि 1.30
दोपहर 1.30 से 11.30
सूर्यास्त 5.30 से 7.30 P.M.
1.30 से 3.30
1.30 से 5.30
3.30 से 5.30
7.30 से 3.30 P.M.

का भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहा से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्म कुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहा सूर्य दिखाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है, इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली मे सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घटो में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटो के समय में हुआ था।

10 11 9 8 7
प्रथम स्थान लग्न
12 6 रा.
1 के. 3 बु. सू. 5 श.
2 मं. शु. 4 गु.

वृष / मिथुन च.शु. सु. बु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन / कुम्भ
कर्क, गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि / कन्या मं.	तुला राहु	धनु / वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. शु.	मिथुन सू. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श.
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

10 / 11	प्रथम स्थान के. 9	8 रा / 7
12	बंगाल	6
1 के / च. 2 शु.	3 सू. बु.	4 गु. / 5 श.

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदड़ी ग्राम के राजज्योतिषी प. भगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्न में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण।
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनो काल बतलाता है।। टेर ।।
कर्कलग्न के देखे सदा नर, इनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेला खाते हैं।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर जिसका होता **धनुलग्न।**
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपनी धुन मे वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक मे बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुंभ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है।
1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न-भिन्न देशो की दैनिक लग्न सारणिया, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका. निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्न देहो वर्ग षट्कोऽगानि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्पादनमत्तैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–'**लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्**"।

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

दायां नेत्र. 2
बायां नेत्र 12
दाहिनी भुजा 3 कंधा दोनों
11 पिण्डली
सिर चेहरा 1
4 वक्षस्थल छाती हृदय
हृदय. वक्षस्थल सीना 10
5 दाया पैर
7 गुप्तेन्द्री, गुदा, लिंग
9 जांघ
6 कमर
पैर 8 बायां

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा

द्वितीय भाव | द्वादश भाव | तृतीय भाव | प्रथम भाव | एकादश भाव | चतुर्थ भाव | दशम भाव | पंचम भाव | सप्तम भाव | नवम भाव | षष्ठ भाव | अष्टम भाव

सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है, एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है–

द्रव्य | व्यय | पराक्रम | देह | लाभ | सुख | राज्य | सुतौ | कलत्रं | भाग्यं | शत्रु | मृत्ति

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं मृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययौ लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन सम्पर्क, भाई बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छटे में शत्रु व रोग, सातवे में पत्नी, आठवें में आयु, नौवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवे में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

धनुलग्न एक परिचय

1. लग्नेश, सुखेश – गुरु
2. धनेश, पराक्रमेश – शनि
3. पंचमेश, खर्चेश – मंगल
4. षष्ठेश, लाभेश – शुक्र
5. सप्तमेश, राज्येश – बुध
6. भाग्येश – सूर्य
7. अष्टमेश – चंद्रमा
8. त्रिकोणाधिपति – 5 मंगल, 9–सूर्य
9. दु:स्थान के स्वामी – 6–शुक्र, 8–चंद्र, 12–मंगल
10. केन्द्राधिपति – , 4–गुरु, 7, 10–बुध
11. पणफर के स्वामी – 2–शनि, 5–मंगल, 8–चंद्र, 11–शुक्र
12. आपोक्लिम – 3 शनि, 6 शुक्र, 9–सूर्य, 12–मंगल
13. त्रिकेश – 6–शुक्र, 8–चंद्र, 12–मंगल
14. उपचय के स्वामी – 3–शनि, 6–शुक्र, 10 बुध, 11 शुक्र
15. शुभ योग – 1. मंगल, 2. सूर्य
16. अशुभ योग – 1. गुरु+शुक्र 2. गुरु+शनि, 3. गुरु+बुध 4. गुरु+चंद्र
17. निष्फल योग – 1. मंगल+बुध
18. सफल योग – 1. मंगल+गुरु, 2. सूर्य+गुरु, 3. सूर्य+बुध
19. राजयोग कारक – सूर्य और गुरु योगकारक बुध

20.	मारकेश	–	शुक्र मारकेश और बुध सहायक मारकेश।
21.	पापफलद	–	शनि चंद्र
22.	परमपापी	–	शुक्र

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार

धनुलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

एक एव कविः पापः शुभौ सौम्यदिवाकरौ।
योगो भास्कर सौम्याभ्या निहन्ता भास्वतः सुतः॥44॥
ध्नन्ति शुक्रादयः पापा मारकत्वेन लक्षिताः।
ज्ञातव्यानि फलान्यैवं चापजस्य मनीषिभिः॥45॥

दूसरा पाठ

एक पापः कविर्ज्ञापि शुभौ भौमदिवाकरौ।
युक्तौ भास्करभौमाभ्याम् न हन्ति रविनन्दनः॥46॥
ध्नन्ति शुक्रादयः पापा हन्तृलक्षणलक्षिताः
ज्ञातव्यानि फलान्येवं [illegible] ॥

तीसरा [illegible]

एक एव कविः पापः शुभौ भौमदिवाकरौ।
योगो भास्करसौम्याभ्या न तु हन्तांशु मत्सुतः॥48॥
ध्नन्ति शुक्रादयः पापाः मारकत्वेन लक्षिताः।
ज्ञातव्यानि फलान्येवं धनुष्यश्च मनीषिभिः॥49॥

स्पष्टीकरण

पहला पाठ—धनुलग्न के लिए शुक्र एक मात्र पाप फल देने वाला है कारण वह [illegible] और एकादश, स्थानों का स्वामी है। [illegible] और रवि शुभ [illegible]

बुध सप्तम और दशम स्थानों का स्वामी होकर सूर्य नवम (भाग्य) का स्वामी है इन दोनों ग्रहों का योग हो तो राजयोग जानना चाहिए शनि मृत्युदायक है। उसी प्रकार शुक्रादि पाप ग्रह अपनी दशान्तर्दशा में मृत्युप्रद होते हैं।

दूसरा पाठ—शुक्र षष्ठेश और एकादशेश होता है इसलिए बुध बलवान (सप्तम) मारक स्थान का स्वामी और दशम केन्द्र का स्वामी होता है। इसलिए ये दोनों ग्रह अशुभ फल देते हैं। मंगल पंचमेश और द्वादशेश होता है इसलिए शुभ फल देता है। सूर्य नवम स्थान का स्वामी होता है इन दोनों की युति हो तो योगकारक होती है। शनि स्वयं मारक नहीं बनता। शेष सब पहले पाठ के अनुसार होता है.

तीसरा पाठ—अकेला शुक्र अशुभ फल देता है (पहले पाठ के अनुसार) मंगल और सूर्य शुभ फल देते है। (दूसरे पाठ के अनुसार) रवि बुध का योग पहले पाठ के अनुसार लिया है पहले और तीसरे पाठ में बुध का अशुभत्व नहीं दिया है। शनि मारक होता है। (पहले पाठ के अनुसार) शनि स्वयं मारक नहीं होता (दूसरे और तीसरे पाठों के अनुसार)।

शुक्र को तीनों पाठों में मारक होता है ऐसा कहा गया है दूसरे पाठ में बुध की अशुभ ग्रहों मे गणना की गई है। उसका कारण कदाचित् बुध केन्द्राधिपति और मारक स्थान का स्वामी होता है। ऐसा मालूम होता है। दूसरे पाठ में बुध को निकालकर उसकी जगह मंगल को लिया है। परन्तु मंगल पंचमेश और व्ययेश होता है। इस ग्रंथकार की एक विशिष्ठ विचारधारा दिखाई पड़ती है वह ऐसी है कि व्ययेश पाप ग्रह हो तो वह पाप फल नहीं दे सकता और वह शुभ फल देता है। प्रसंगों में शुभ ग्रह भी व्ययेश हो तो शुभ फल देते हैं, ऐसा मिथुन और तुला लग्नों के विवेचनों में बुध और शुक्र की राजयोगों मे गणना की गई है इस पर से व्यय स्थान अथवा व्ययेश पाप फल देने वाले नहीं होते यह सिद्ध होता है वे अन्य ग्रहों के साहचर्यानुसार फल देते है। इस पर से रवि बुध का योग प्रथम श्रेणी का होता है। तो रवि मंगल योग द्वितीय श्रेणी का होता है। परन्तु धनुलग्न को शुक्र को छोड़कर शेष सब ग्रह शुभ फल देते हैं। मात्र चंद्रमा धनुलग्न के लिए अष्टमेश होता है। इससे अष्टमेश का दोष नहीं होगा। परन्तु अपनी दशान्तर्दशा मे अनिष्ट फल देता है। इस प्रकार धनुलग्न के ग्रहों के शुभाशुभत्व के विचार हैं.

सूर्य पुत्र शनि को इस लग्न के लिए पहले पाठ मे विघातक माना गया है कारण यह द्वितीय और तृतीय इन दोनो अशुभ स्थलो का स्वामी होता है द्वितीय और तृतीय इन दोनो स्थानों मे क्रमशः मकर और कुंभ राशियां आती है और उनका स्वामी शनि ही होता है इसलिए शनि अनिष्टकारक होकर मारकेश है। निसर्गतः शनि स्वयं पाप ग्रह है और इन सब कारणो की वजह से वह पाप ग्रह ठहराया गया है और वह अपनी दशान्तर्दशा में अशुभफल देगा इसमे संदेह नही है गुरु और चंद्रमा के

विषय में यहां पर कुछ भी उल्लेख नहीं है गुरु चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होने से शुभ फल देने वाला नहीं होता और उसी प्रकार चंद्रमा अष्टम स्थान का अधिपति होने के कारण से शुभ फल देने वाला नहीं होता।

धनुलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–सूर्य निसर्गतः पाप ग्रह है फिर भी नवम (त्रिकोण) का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ माना गया है और शुभ फलदायक होता है।
2. **शुभ योग**–मंगल नैसर्गिक पाप ग्रह है फिर भी पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ माना गया होकर शुभ फलदायक होता है
3. **शुभ योग**–बुध दशम केन्द्र का स्वामी होने से और सूर्य नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से इन दोनों का स्थान सहचर्य योग उत्तम माना गया है और वह उत्तम फलदायक होता है

धनुलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**–शुक्र नैसर्गिक शुभ ग्रह होने पर भी षष्ठ और एकादश स्थानों का स्वामी होने से अशुभ होकर अशुभ फल देने वाला होता है।
2. **अशुभ योग**–शनि द्वितीय स्थान का स्वामी होकर तृतीय अशुभ स्थान का स्वामी होने से वह अशुभफलदायक होता है।
3. **अशुभ योग**–बुध सप्तम (मारक) स्थान का और दशम (केन्द्र स्थान) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार अशुभ फल देन वाला होता है।
4. **अशुभ योग**–गुरु लग्न और चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होने से श्लोक 7 और 10 के अनुसार अशुभ फलदायक होता है
5. **अशुभ योग**–चंद्रमा अष्टम स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदायक होता है।

धनुलग्न के लिए निष्फल योग

1. मंगल-बुध

धनुलग्न के लिए सफल योग

1 मंगल-गुरु, 2. सूर्य गुरु, 3. सूर्य-बुध (निकृष्ट)

❑❑❑

धनुलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

क्र.	विशेषता		विवरण
1.	लग्न	–	धनु
2.	लग्न चिह्न	–	दो पैर और अन्त में चार पैर वाला धनुर्धारी
3.	लग्न स्वामी	–	गुरु
4.	लग्न तत्त्व	–	अग्नि तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	–	द्विस्वभाव
6.	लग्न दिशा	–	पूर्व
7.	लग्न लिंग व गुण	–	पुरुष, सतोगुणी
8.	लग्न जाति	–	क्षत्रिय
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	क्रूर स्वभाव, पित्त प्रकृति
10.	लग्न का अंग	–	[illegible] (जांघ)
11.	जीवन रत्न	–	[illegible]
[illegible]	अनुकूल रंग	–	[illegible]
[illegible]	[illegible]	–	[illegible]
14.	अनुकूल [illegible]	–	विष्णु
15.	व्रत, उपवास	–	गुरुवार
16.	अनुकूल अंक	–	3
17.	अनुकूल तारीखें	–	3/12/30
18.	मित्र लग्न	–	मेष व सिंह
19.	शत्रु लग्न	–	कर्क, वृश्चिक व मीन
20.	व्यक्तित्व	–	गुणग्राही प्रकृति, अध्ययन प्रियता

21.	सकारात्मक तथ्य	–	बुद्धिवादी तर्क, लक्ष्य प्राप्ति की ओर सचेष्ट
22.	नकारात्मक तथ्य	–	अतिधूर्तता, अव्यवहारिकता

❑❑❑

धनुलग्न के स्वामी गुरु का वैदिक स्वरूप

वैदिक साहित्य में गुरु का नाम अनेक मंत्रो में आया है।[1] थिबो का कहना है कि यह गुरु ग्रह का नाम है, चिन्त्य है।[2] 'तैत्तिरीय ब्राह्मण' में गुरु के जन्म का उल्लेख मिलता है।

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानस्तिष्यं नक्षत्रमभिसम्बभूव।
श्रेष्ठो देवाना पृतनासु जिष्णु: दिशो नु सर्वा अभय नो अस्तु॥

–तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/1/1/5

अर्थात् जब गुरु पहले प्रकट हुआ तब वह तिष्य (पुष्य) नक्षत्र के पास था। शंकर बालकृष्ण दीक्षित के अनुसार कभी पुष्य तारा गुरु ग्रह की ओट में हो गया होगा ज्योतिष की दृष्टि से यह संभव है। अपनी गति के कारण जब दो चार घंटे में गुरु पुष्य से पृथक हुआ होगा तो लोगो ने समझा होगा कि गुरु का जन्म हुआ। उस समय गुरु पुष्य के निकट रहा होगा।[4]

तिष्य शब्द का अर्थ पुष्य नक्षत्र है और पुष्य के देवता गुरु कहे गये हैं। ज्योतिष ग्रंथों म गुरु पुष्य योग अत्यधिक सुखद माना गया है। चंद्रमा, तारा एवं गुरु के संदर्भ में जो पौराणिक आख्यान है उस विषय में ऋग्वेद मे वर्णन आता है कि गुरु ने अपनी पत्नी जुहू छोड़ी, सोम राजा ने उसे पुनः भेजा, मित्रावरुण ने समर्थन किया और अग्नि ने हाथ पकड़कर स्वयं पहुंचाया तब सोम द्वारा लायी जाया को गुरु ने पुनः स्वीकार कर लिया।

तैत्तिरीय संहिता मे शुक्र व चन्द्रादि ग्रहों के साथ गुरु ग्रह का नाम भी आया है।

1. बृहस्पते अतिअदर्यो अर्हाद् ऋग्वेद अ. 2 मण्डल 23/15
2. ऐस्ट्रोनोमी ऐस्ट्रोलजी एण्ड मैथमेटिक पृष्ठ स. 6
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास–डॉ. गोरख प्रसाद, पृष्ठ 3.
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास–डॉ. गोरख प्रसाद, पृष्ठ 32

'वस्व्यसि रुद्रास्यदितिरस्यादित्यासि शुक्रासि चद्रासि बृहस्पतिस्त्वा सुम्ने कृण्वतु।'[1]

अर्थात् हे सोम को खरीदने वाले तू वस्वी है, अर्थात् वसु आदि देवों का रूप है। रुद्र है, अदिति है, आदित्य है शुक्र है, चंद्र है, गुरु है। तू सुख से रह।

ऋग्वेद में गुरु के ग्रहत्व को स्पष्ट करते हुए यह कहा गया कि "गुरु प्रथम महान् प्रकाश के अत्यन्त उच्च स्वर्ग (कक्ष) में उत्पन्न हुआ।'[2]

गुरु ग्रह को देवगुरु, आंगिरस, गुरु तथा जीव आदि नामों से कहा गया है। यह सम्पूर्ण नक्षत्र मंडल का लगभग 12 वर्षों में भ्रमण पूरा करता है। ग्रह लाघव के अनुसार यह अस्त होने के बाद 1 महीने के पश्चात् उदित होता है। उसके बाद लगभग 4 महीने पश्चात् वक्री होता है तथा चार मास वक्री होने के पश्चात् मार्गी होता है तथा पुनः 4 महीने बाद अस्त हो जाता है। यह इसका मध्यम मान है यह सूर्य से अधिक दूर है तथा सूर्य के ही प्रकाश से प्रकाशित है। इसे शुभ ग्रह माना गया है।

ऋग्वेद के इस आख्यानक के अनुसार इसका अर्थ यह है कि राजा सोम अर्थात् चद्रमा का प्रत्येक 27वें दिन पुष्य नक्षत्र से संयोग होता है किन्तु गुरु उसे एक बार छोड़ने के पश्चात् लगभग 12 वर्ष पश्चात् पुनः उस नक्षत्र (पुष्य) में आता है। इस बीच में मित्र वरुण और अग्नि देव उससे कई बार मिल लेते हैं। ये देव सम्भवतः सूर्य, बुध, शुक्र है जो प्रत्येक वर्ष में एक बार पुष्य नक्षत्र से संयुक्त होते हैं अर्थात् पुष्य नक्षत्र की सीध में आ जाते हैं। वेदों में गुरु को ब्रह्म अथवा ज्ञान का प्रतीक भी कहा गया है। पुष्य नक्षत्र बुद्धि का प्रतीक है तथा गुरु ज्ञान का अतः बुद्धि में ज्ञान यदा-कदा उदित होता है जबकि मन में काम, अर्थ आदि प्रायः आते रहते हैं यही गुरु, तारा और चद्रमा की कथा है।

गुरु के पूजन, हवन तथा शांतिकर्म में प्रयुक्त होने वाला वैदिक मंत्र इस प्रकार है

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हा द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवस् ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविण देहि चित्रम्॥

❑❑❑

---

1. तैत्तिरीय संहिता 1/2/5
2. गुरुः प्रथमञ्जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्

– ऋग्वेद 4/50/4
– अथर्ववेद 20/88/4
तैत्तरीय ब्राह्मण 2/8/2

धनुलग्न के स्वामी गुरु का पौराणिक स्वरूप

देवगुरु गुरु पीत वर्ण के हैं। इनके सिर पर स्वर्ण मुकुट तथा गले में सुन्दर माला है। वे पीत वस्त्र धारण करते हैं तथा कमल के आसन पर विराजमान हैं। इनके चारों हाथों में क्रमशः दण्ड, रुद्राक्ष की माला, पात्र और वरदमुद्रा सुशोभित है।

महाभारत आदिपर्व और तै. स. के अनुसार गुरु महर्षि अंगिरा के पुत्र तथा देवताओं के पुरोहित हैं ये अपने प्रकृष्ट ज्ञान से देवताओं को उनका यज्ञ- भाग प्राप्त करा देते है असुर यज्ञ में विघ्न डालकर देवताओं को भूखों मार देना चाहते हैं। ऐसी परिस्थितियों में देवगुरु गुरु रक्षोघ्न मंत्रों का प्रयोग कर देवताओं की रक्षा करते हैं तथा दैत्यों को दूर भगा देते हैं।

इन्हें देवताओं का आचार्यत्व और ग्रहत्व कैसे प्राप्त हुआ? इसका विस्तृत वर्णन स्कन्द पुराण में प्राप्त होता है। गुरु ने प्रभास तीर्थ में जाकर भगवान शंकर की कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शंकर ने उन्हें देवगुरु का पद तथा ग्रहत्व प्राप्त करने का वर दिया। (श्रीमद. 5 22/15)

गुरु एक एक राशि पर एक एक वर्ष रहते हैं। वक्र गति होने पर इसमें अंतर आ जाता है

ऋग्वेद के अनुसार गुरु अत्यन्त सुन्दर है। इनका आवास स्वर्ण निर्मित है। ये विश्व के लिए वरणीय हैं। ये अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उन्हें सम्पत्ति तथा बुद्धि से सम्पन्न कर देते हैं, उन्हें सन्मार्ग पर चलाते हैं और विपत्ति में उनकी रक्षा भी करते हैं शरणागतवत्सलता का गुण इनमें कूट-कूटकर भरा हुआ है। देवगुरु गुरु का वर्ण पीत है। इनका वाहन रथ है, जो सोने का बना है तथा अत्यन्त सुखकर और सूर्य के समान भास्वर है। इसमें वायु के समान वेग वाले पीले रंग के आठ घोड़े जुते रहते हैं। ऋग्वेद के अनुसार इनका आयुध स्वर्ण निर्मित दण्ड है।

देवगुरु गुरु की एक पत्नी का नाम शुभा और दूसरी का तारा है। शुभा से सात कन्याएं उत्पन्न हुईं भानुमती राका, अर्चिष्मति, महामती, महिष्मती, सिनीवाली और हविष्मती तारा से सात पुत्र व एक कन्या उत्पन्न हुई उनकी तीसरी पत्नी ममता से भारद्वाज और कच नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। गुरु के अधिदेवता इंद्र और प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा हैं।

गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। इनकी महादशा सोलह वर्ष की होती है। इनकी शान्ति के लिये प्रत्येक अमावस्या को गुरु का व्रत करना चाहिए और पीला पुखराज धारण करना चाहिए। ब्राह्मणों को दान में पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला अन्न, पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु, लवण, शर्करा, भूमि और छत्र देना चाहिए।

इनकी शान्ति के लिए वैदिक मंत्र–"**ओ३म् बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥**"

पौराणिक मंत्र–"**देवानां च ऋषीणां च गुरुं कान्चनसन्निभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्॥**"

बीज मंत्र '**ओ३म ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः**'

तथा सामान्य मंत्र–'**ओ३म् बृं बृहस्पतये नमः**' है।

इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य निश्चित संख्या में जप करना चाहिए जप का समय संध्या काल तथा जप संख्या 11,000 है।

❑❑❑

धनुलग्न के स्वामी गुरु का खगोलीय स्वरूप

गुरु एक पीत वर्ण का ग्रह है। इसका सौर मंडल में पाचवां स्थान है। यह सूर्य से लगभग 77.80,00000 कि.मी. की दूरी पर है और लगभग 11 वर्षों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। पृथ्वी से बहुत दूर होते हुए भी गुरु अत्यधिक देदीप्यमान् दिखाई देता है। यह सौर मण्डल का सम्राट ग्रह है अत: शास्त्रों में इसके लिए ''गुरु'' तथा ''गुरु'' नामों का प्रयोग किया गया है। इसका व्यास 1,43,640 किमी. है। गुरु यदि भीतर से खोखला हो तो पृथ्वी जैसे 600 पिण्ड उसमें समा सकते हैं। इसका गुरुत्व भी पृथ्वी से 317 गुना है। यदि कोई व्यक्ति पृथ्वी पर 77 कि.ग्रा. भार का हो तो ''गुरु'' पर जाकर उसका भार 22 टन हो जायेगा। गुरु के चद्रमाओं की सख्या तेरह है। गुरु ग्रह अस्त होने के 30 दिन बाद वक्री होता है। उदय के 129 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 128 दिन बाद मार्गी होता है तथा मार्गी के 129 दिन बाद पुन: अस्त होता है।

गुरु के अतिरिक्त गुरु, देवगुरु वांगीश, अंगिरा, जीव आदि नाम भी इसके पर्याय माने गये हैं।

गुरु की गति—गुरु अपनी धुरी पर 9 घंटा 55 मिनट में एक चक्कर लगाता है। यह एक सैकड में 8 मील चलता है तथा सूर्य की परिक्रमा 4,332 दिन 35 घटे 5 पल में पूरी करता है। स्थूल तौर पर यह 12 या 13 महीनों में एक राशि, 160 दिन में एक नक्षत्र, 43 दिन एक चरण पर रहता है।

गुरु ग्रह अस्त होने के 30 दिन बाद उदय होता है। उदय के 128 दिन बाद वक्री होता है। वक्री के 120 दिन बाद मार्गी होता है तथा मार्गी के 128 दिन बाद पुन: अस्त हो जाता है।

गणितागत स्पष्टीकरण से चार राशि या 120 डिग्री अश के पीछे रहने पर गुरु वक्री हो जाता है सूर्य से चार राशि 120 डिग्री अंश के आगे रहने पर यह मार्गी

होता है। वक्री अवस्था में 12 डिग्री अंश तक पीछे हटता है तथा चार मास तक वक्री रहता है तथा पुन: 8 मास तक मार्गी रहता है। जब इसकी गति 14/4 की होती है तब यह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो जाता है। गुरु 45 दिन तक अतिचारी रहता है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर शीघ्रगामी, तीसरी पर समचारी, चौथी पर मंदचारी, पांचवीं और छठी पर वक्री, सातवीं और आठवीं पर अतिवक्री, नवम और दशम पर कुटिल और ग्यारहवीं तथा बारहवीं राशि पर पुनः शीघ्रगामी हो जाता है। वक्री होने के पांच दिन आगे या पीछे यह स्थिर रहता है।

❑❑❑

धनुलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

धनुलग्न का स्वरूप

पृष्ठोदयी त्वथ धनुर्गुरुस्वामी च सात्विकः॥17॥
पिंगलो निशिवीर्याढ्यः पावकः क्षत्रियो द्विपात्।
आदावन्ते चतुष्पादः समगात्रो धनुर्धरः॥18॥
पूर्वस्थो वसुधाचारी तेजस्वी ब्रह्मणा कृतः।

बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4 श्लो. 18

धनु पृष्ठोदय सत्वगुणी, पिंगलवर्ण, रात्रिबली, अग्नितत्त्व, क्षत्रिय, 25 अंश तक द्विपद, उसके बाद चतुष्पद समदेह धनुषधारी, पूर्व दिशावासी, भूचारी तेजस्वी है, इसका स्वामी गुरु है।17-18॥

व्यादीर्घास्य शिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्,
वक्ता स्थूलरदश्रवोधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान् धर्मवित्,
बन्धुद्विड् न बलात् समेति च वशं साम्नैकसाध्योऽश्विजः॥9॥

बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 9

धनु राशि में चंद्रमा रहने पर जातक बड़े मुख व लम्बी गर्दन वाला, पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, त्यागी अर्थात् दानशील, काव्यादि को समझने वाला या कवि पराक्रमी या अधिक वीर्य वाला, अच्छा वक्तव्य देने वाला, दांत, कान होंठ व नाक पर मोटाई लिए हुए सदैव कर्मशील, शिल्प कला जानने वाला, आगे को झुके हुए कन्धों वाला तथा कन्धों के पीछे उठी हड्डी वाला, नाखूनों में विकार से युक्त, मांसल भुजाओं वाला, प्रगल्भतायुक्त अर्थात् प्रतिभाशाली, धर्मवेत्ता, अपने बन्धुओं से द्वेष करने वाला हठ व शक्ति से वश में न होने वाला अर्थात् बल प्रयोग से अधिक असाध्य हो जाने वाला, प्रेम व कोमल व्यवहार मात्र से ही नियंत्रित होने वाला होता है।

धनुर्विलग्ने भवति प्रसूतः कुलप्रधानः सुभगो मनुष्यः।
शूरोऽर्थवान् भीतिपरः कृतज्ञो बन्धूपभोग्यो द्रविणो वपुष्मान्॥9॥

– वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.9/ पृ.289

यदि जन्म समय में धनुलग्न का उदय हो तो मनुष्य अपने कुल मे प्रधानता पाने वाला, सौभाग्य से युक्त शूरवीर, धनवान, भययुक्त रहने वाला, लोकधर्म में भीरु, कृतज्ञता से युक्त बन्धु-बान्धवों की सहायता करने वाला, अच्छे स्वस्थ शरीर वाला एव धनी होता है

प्राज्ञश्चापविलग्नजः कुलवरः श्रीमान् यशोवित्तवा

–जातक पारिजात श्लो. 9/ पृ. 678

धनु प्राज्ञ कुल मे श्रेष्ठ, धनी, यशस्वी द्रव्यवान्। मूल मे श्रीमान् और वित्तवान् यह दो शब्द आये है अभिप्राय दोनो का एक ही है।

परिमण्डलाक्षवक्त्रो गणेषु मुख्यो धनुर्दृगाणाद्ये
स्वोपचितस्वाचारस्तथा मृदुर्भवति संजातः॥

सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में धनु राशि व धनु राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो जातक गोल नेत्र व मुख वाला, समुदाय में प्रधान, स्वयं वृद्धि करने वाला, सुन्दर आचरण कर्त्ता व कोमल हृदय वाला होता है।

धनुर्लग्नोदये जातो नीतिमान् धर्मवान्, सुधीः।
कुलमध्ये प्रधानश्च प्राज्ञ. सर्वस्य पोषकः॥

मानसागरी अ. 1/ श्लो. 9

धनुलग्न वाला जीव धर्मिष्ठ कुल वश में प्रधान सभी का परिपालक, सुन्दर, ज्ञानी दृढ सकल्प वाला, राजसेवा कार्य तथा नीतिरीति निपुण होता है।

भोजसंहिता

धनुलग्न का स्वामी गुरु है। गुरु देवगुरु माने गये हैं तथा धार्मिक प्रवृत्तियों के परिसूचक भी है यह काचन वर्ण, द्विस्वभाव व अर्द्धजल राशि है इसका प्राकृतिक स्वभाव अधिकार प्रिय करुणामय और मर्यादा इच्छुक है। इस राशि वाले व्यक्ति विशेषत: पीले रग, गेहुए शरीर व बड़ी-बड़ी आख, उन्नत ललाट, गाल फूले हुए वाले तथा बुद्धिजीवी होते है अध्ययन व अध्यापन कराते हुए पठन पाठन में रुचि लेने वाले ये व्यक्ति धार्मिक स्वभाव के होते हैं।

सामान्यतया: धनुलग्न मे उत्पन्न जातक स्वस्थ्य एव बलवान होते है। स्वभाव

में यद्यपि ये शान्त होते हैं परन्तु यदा कदा अभिमान के भाव का भी प्रदर्शन करते है। ये धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं तथा अत्यन्त ही बुद्धिमत्ता से अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते है फलत: जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करने में समर्थ रहते है। ये आदर्शवाद एवं आध्यात्मिकता के मध्य प्रवृत्त होकर भौतिक सुखों के प्रति आकृष्ट रहकर उनका उपभोग करते हैं. ये अपने समस्त कार्यों को नियमानुसार सम्पन्न करते है. अन्य जनों के ये विश्वास पात्र होते हैं परन्तु स्वयं दूसरे पर कम ही विश्वास करते हैं। दानशीलता का भाव भी इनमें विद्यमान रहता है तथा समाज में मान प्रतिष्ठा तथा यश अर्जित करने में समर्थ रहते हैं। राजनीति कानून गणित या ज्योतिष आदि विषयों मे इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रमपूर्वक इन क्षेत्रों में सफलता प्राप्त करते हैं इनको प्रेम से ही वश में किया जा सकता है अन्य प्रलोभनो से नही।

धनुलग्न के प्रभाव से आप स्वस्थ्य एवं बलशाली होगे तथा परिश्रम एव बुद्धिमत्तापूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करके, उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। आप एक अध्ययनशील पुरुष को लेकर जीवन संघर्ष करेंगे तथा किसी के प्रति भी मन में अनावश्यक द्वेष या ईर्ष्या का भाव नहीं रखेंगे फलत: समाज में आप आदरणीय होंगे। शत्रु एवं विरोधी पक्ष से भी आप उदारता का व्यवहार करके उनको प्रभावित करेंगे। साथ ही अपनी व्यवहार कुशलता एवं धैर्ययुक्त प्रवृत्ति से कार्यक्षेत्र में उन्नति मार्ग पर प्रशस्त होकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।

आप एक बुद्धिमान पुरुष होंगे तथा बुद्धिमत्तापूर्वक सांसारिक कार्यों मे सफलता अर्जित करके धनैश्वर्य एवं सुख संसाधनों को अर्जित करेंगे। आप में उदारता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनो की सेवा तथा सहायता करने में तत्पर होंगे। आर्थिक रूप से आपकी स्थिति सुदृढ़ रहेगी तथा प्रचुर मात्रा मे धन एवं लाभ अर्जित करने मे आपको सफलता मिलेगी

आपमे तेजस्विता का भाव भी विद्यमान होगा तथा आप यदा-कदा उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगे। राजकार्य या सरकारी सेवा मे आप तत्पर रहेंगे तथा राजनीति के क्षेत्र मे भी आपको सफलता की प्राप्ति हो सकती है। आपकी श्रेष्ठ कार्यों मे रुचि रहेगी तथा इन्हीं कार्यकलापो से आपकी प्रतिष्ठा बनेगी।

आप एक आस्तिक व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपके मन मे पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा निष्ठापूर्वक आप धार्मिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे साथ ही आप समय समय पर तीर्थयात्राएं भी करते रहेंगे। मित्र एवं बन्धुवर्ग के आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त होता रहेगा। इस प्रकार आप उदार, दानशील तेजस्वी, महत्त्वाकांक्षी एवं व्यवहार कुशल व्यक्ति होंगे तथा आनन्दपूर्वक सुखों का उपभोग करते हुए अपना समय व्यतीत करेंगे।

धनु राशि पुरुष जाति, अल्पमतति व दिवाबली है। इस राशि का चिह्न प्रत्यचा चढ़ा हुआ धनुष है। ऐसे व्यक्ति लक्ष्य भेदन मे पटु होते हैं इनके जीवन का एक निश्चित (टारगेट) लक्ष्य होता है तथा ये बड़े दत्तचित्त होकर एकाग्रता से अपने कार्य को सफल बनाने में प्रयत्नशील रहते है। ऐसे व्यक्ति सभा सम्मेलनो व भाषण इत्यादि में बढ़ चढ़कर भाग लेते हैं। मित्रों के हिसाब से ये श्रेष्ठतर मित्र साबित हो सकते हैं।

यदि आपका जन्म 15 दिसम्बर से 23 जनवरी के बीच में हुआ तो आपका भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के पश्चात् सम्भव है। बचपन मे आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती है ऐसे व्यक्ति यौवनकाल मे ही विवाह करने के पक्ष मे रहते हैं। आपको व्यवसाय व प्रेम दोनों क्षेत्रों में शत्रुओ से सघर्ष करना पड़ेगा। गुरु पीतवर्णित होने से पीले रग की वस्तु आपके अनुकूल रहेगी। यदि आप अनुसधानात्मक कार्यों में रुचि लेंगे तो सफलता आपके कदम चूमेगी। आपका जीवन रत्न पुखराज है

नक्षत्रानुसार फलादेश

ये यो भा भी   भू धा फा ढा   भे

मूल   पूर्वाषाढ़ा   उत्तराषाढ़ा

मूलं च पूर्वाषाढोत्तराषाढा पादैको धनु:

धनु राशि मे मूल नक्षत्र संपूर्ण और पूर्वाषाढा संपूर्ण तथा उत्तराषाढ़ा का प्रथम चरण आता है। इस तरह 0/0.0 अंश से 30.00/00 तक एक राशि धनु सपूर्ण होती है। धनु राशि का स्वामी गुरु है। अत: यह राशि गुरु के संपूर्ण प्रभुत्व मे है

मूल नक्षत्र के चारो चरणो मे नवाशेश क्रमश: म. शु. 1 बु. व च. है। इनका केतु व गुरु से समन्वय होकर फलादेश बनता है

चंद्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में

व्यभीष्टितानंदकलत्रमानी,

नरोम्बुदैवेदृढसौहृदश्च।

यदि जन्म समय पर चद्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र मे हो तो मनुष्य को हर प्रकार का सुख प्राप्त होता है वह कलत्रवान, मानी तथा पक्का प्रेमी होता है पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का स्वामी शुक्र ग्रह है शुक्र का भोग सामग्री तथा स्त्री और प्रेम से सबंध होने के कारण उक्त गुणो को प्राप्ति का होना हेतुपूर्ण है।

पूर्वाषाढ़ा प्रथम पाद--पूर्वाषाढ़ा के प्रथम पाद में यदि जन्म समय में चद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति श्रेष्ठ होता है। इस नक्षत्र का स्वामी सूर्य है जो राजा होने के

नाते नर श्रेष्ठ है। वह अपने प्रभाव से चंद्रमा को उच्च श्रेणी वाला श्रेष्ठ बनायेगा

पूर्वाषाढ़ा द्वितीय पाद—पूर्वाषाढ़ा के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा जन्म समय में यहां स्थित हो तो मनुष्य राजा होता है। इस पाद का स्वामी बुध है और इस नक्षत्र का स्वामी शुक्र है। शुक्र और बुध दोनों शुभ ग्रह हैं। संभव है ये अपने प्रबल प्रभाव के कारण व्यक्ति की स्थिति को एक राजा की सी स्थिति बना दें

पूर्वाषाढ़ा तृतीय पाद—पूर्वाषाढ़ा के तृतीय पाद में यदि जन्म समय में चंद्र यहां स्थित हो तो मनुष्य मीठा बोलने वाला होता है। यहां नक्षत्र स्वामी भी शुक्र है और नक्षत्र पाद स्वामी भी शुक्र है। अतः स्पष्ट है कि चंद्रमा पर शुक्र का प्रभाव अत्यधिक होगा। शुक्र एक सुसंस्कृत ग्रह है और यह सभ्य और मीठे ढंग से बोलना खूब जानता है। इसलिए इसका फल भी मीठा कहा गया है।

पूर्वाषाढ़ा चतुर्थ पाद—पूर्वाषाढ़ा के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति धनवान होता है यहां नक्षत्र का स्वामी शुक्र है और नक्षत्र पाद का स्वामी मंगल है प्रायः आप देखते आये होंगे कि मंगल के प्रभाव से चंद्रमा का धनदायक गुण बढ़ता है नक्षत्र रोड़ा नहीं अटकाता

चंद्रमा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में

वैश्वे विनीतो बहुमित्रधर्म

युतः कृतज्ञः सुभगः शशांके।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में स्थित हो तो जातक बहुत नम्र, बहुत मित्रों वाला, धार्मिक कृतज्ञ भाग्यशाली होता है। उत्तराषाढ़ा सूर्य का नक्षत्र है जो कि चंद्रमा का मित्र है, इसलिए यह सब शुभ फल प्रदाता है

अगर आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में है तो आप स्पष्टवादी होते हुए यथार्थता पर जोर देंगे धार्मिक दृष्टिकोण से आप व्यर्थ के पाखण्ड में विश्वास नहीं रखते हैं। मानव मात्र से प्रेम करना आप अपना पवित्र कर्म मानते हैं प्रत्येक धर्म के अच्छे सिद्धान्त आपको ग्राह्य हैं। अतः आप विश्वसनीय व सत्यवादी व्यक्ति हैं।

उत्तराषाढ़ा प्रथम पाद—उत्तराषाढ़ा के प्रथम पाद में यदि चंद्र जन्मकुंडली में यहां स्थित हो तो जातक राजा के समान होता है यहां नक्षत्र पाद स्वामी गुरु है और नक्षत्र स्वामी सूर्य। चंद्रमा, सूर्य और गुरु तीनों राजकीय ग्रह हैं, अतः सूर्य और गुरु का चंद्र पर प्रभाव राज्यसत्ता की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।

उत्तराषाढ़ा द्वितीय पाद—उत्तराषाढ़ा के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा जन्मकुंडली में यहां स्थित हो तो व्यक्ति मित्रों का विरोधी होता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी

शनि बनता है जो कि चंद्र का शत्रु है और नक्षत्र स्वामी सूर्य का भी। अत: विरोध की भावना चंद्र में उत्पन्न हो सकती है

उत्तराषाढ़ा तृतीय पाद–उत्तराषाढ़ा के तृतीय पाद मे यदि चंद्रमा जन्मकुंडली में स्थित हो तो व्यक्ति मान प्राप्त करता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी शनि है। यह कैसे मान दे सकता है विचारणीय विषय है। केवल सूर्य मानप्रद है, अत: व्यक्ति का सम्मान विवादास्पद विषय हो जायेगा।

उत्तराषाढ़ा चतुर्थ पाद–उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ पाद में यदि चंद्रमा जन्मकुंडली मे यहा स्थित हो तो मनुष्य का धर्म से लगाव वाला होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी एक परम धार्मिक ग्रह गुरु है जिसके प्रभाव द्वारा व्यक्ति का धार्मिक हो जाना सहज ही मे समझा जा सकता है। नक्षत्र स्वामी सूर्य भी धार्मिक अथवा सात्विक है, अत: यह भी इस दिशा मे सहायक ही है, बाधक नही।

धनुलग्न की महिला जातक

धनुलग्न मे जन्मी कन्या स्थूल होठ, स्थूल दांत और नाक वाली, कफ वात प्रकृति, पुष्ट बाहु और जांघ वाली, ज्ञानवती होती है गृह काम करने मे अति चतुर लेकिन पति की बातो का विरोध भी करती है। जातिका मनपसंद कार्य की तरफ झुकाव ज्यादा रखती है। प्राय: पेट दर्द की शिकायत या गैस ट्रबल बनी रहती है। अन्य औरतों के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार बहुत ही कम रखती है। बुधवार व्रत, चैत्र महीना ये हमेशा हर नवीन कार्य के लिए शुभ रहता है संतान नियोजित न कराने पर अधिक संतान दे सकती हैं। इसे गिरकर चोट लगना, आग का भय बार-बार बन सकता है अंत में मुख रोग या कफ से आयु क्षीण होती है जातिका की आयु 50-65 वर्ष तक होती है। आगे का फल विशेष योगायोगों पर निर्भर है।

इस लग्न वाली औरतों की संतान सुंदर होती है। परन्तु उनमे ज्यादातर झगड़े की शौकीन होती है या फिर साहसी कर्म मे लग जाती है। जातिका कठोर स्वभाव की होती है। धनुलग्न वाली जातिका स्वयं भी प्रेम कर और दिखावा ज्यादा करती है। अत: लोगो से प्रेम इसे कम मिलता है।

धनुलग्नानुसार शुभाशुभ फल देने वाले ग्रह

- ❑ लग्नेश और चतुर्थेश गुरु शुभ ग्रह है। फिर भी इसको केन्द्राधिपति दोष होने के कारण इसका फल मध्यम प्राप्त होता है। यदि गुरु स्वगृही होगा तो 'हंस योग' करेगा और उत्तम फल देगा।
- ❑ धनेश और तृतीयेश शनि मारक भी है और अशुभ फल प्रदान करता है
- ❑ पंचमेश और द्वादशेश मंगल त्रिकोणेश होने से शुभ फल प्रदान करता है

- ❑ षष्ठेश और लाभेश शुक्र पाप ग्रह है तथा अशुभ फल करने वाला है।
- ❑ सप्तमेश और दशमेश बुध मारक ग्रह है और केन्द्राधिपति दोषी है। यह अशुभ फल प्रदान करता है। बुध स्वगृही होने पर 'भद्र योग' करेगा। अच्छा फल देगा इसलिए मध्यम है।
- ❑ अष्टमेश चद्रमा पापी है यहा पर 'गजकेसरी योग' आदि बनते हो तो वे शुभ फल प्रदान नहीं करते है। यह चद्रमा सम है फिर भी जिस भाव मे बैठेगा उसका फल कमजोर करेगा
- ❑ नवमेश सूर्य उत्तम फल प्रदान करेगा और शुभ है इस कुंडली मे मंगल और सूर्य की युति या कोई संबंध हो तो शुभ योग होगा। इस कुंडली का प्रधान ग्रह सूर्य है उसका गुरु से योग व सबध भी शुभ होगा, सफल योग देगा।
- ❑ धनु राशि कालपुरुष का नवां अग नितंब है। यानि हीपस है। इसलिए धनु राशि में गुरु नवम भाव और नवमेश सूर्य अगर पाप प्रभावी हो तो नितबो मे रोग होंगे।
- ❑ इस कुडली मे मगल और बुध की युति केन्द्र और त्रिकोण का सबंध होने पर भी 'निष्फल योग' होगा, फलदायी नहीं होगा
- ❑ इस कुडली में मंगल और गुरु के योग या बुध व सूर्य क योग लक्ष्मीदायक होगे।

उदाहरण–

11 के. | 10 | 9 च. शु. | सू. 8 | 7 बु. | 6 | 12 म. | 1 श. | 3 | 5 रा. | 2 गु. | 4

- ❑ यह स्त्री रसायन शास्त्र की व्याख्याता है। लग्न में चद्रमा और शुक्र की युति होने के कारण अंतर्जातीय विवाह हुआ, अष्टमेश और एकादशेश की युति लग्न मे और मंगल का उस पर दशम प्रभाव होने के कारण अतर्जातीय विवाह हुआ
- ❑ कुडली मे सूर्य और मगल मगलीक है। इसलिए विलम्ब से विवाह हुआ
- ❑ गुरु का सूर्य से संबंध होने से भाग्येश और लग्नेश का संबंध हो गया। इससे खूब धन, भवन, वाहन सरकारी नौकरी पति का सुख पूर्ण।
- ❑ पंचम स्थान म शनि नीच का वक्रीय होने से सतानहीन।
- ❑ सप्तमेश बुध लाभ भवन में गुरु के साथ होने से शुभ मध्यत्व मे पति प्रोफेसर मिला, विवाह 30 वर्ष के पश्चात् हुआ।
- ❑ तृतीय शनि नीच का वक्री होने से पाच बहनें हो गईं और सभी की उच्च घराने में शादी हुई।
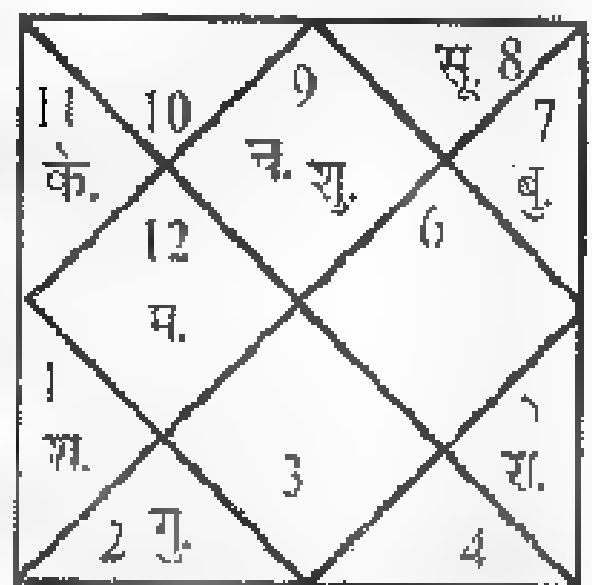
- तृतीयेश शनि तीसरे से तीसरा होने के कारण 'विपरीत राजयोग' से धन की वृद्धि खूब हुई।
- मंगल का चंद्रमा पर प्रभाव होने प्रसिद्धि और जिद्दी।
- बुध का शनि से संबंध होने से कमीशन द्वारा लाखों की आय।
- भाग्येश 12वें और भाग्य स्थान में राहु का स्थान परिवर्तन।
- गुरु और शुक्र का आपस में स्थान परिवर्तन होने से अतिधनाढ्य और वैभवशाली जीवन।

अन्य योग

- लग्न में शनि होने से उत्तम फल की प्राप्ति राज्य से भी सुख की प्राप्ति व राजा के समान बने।
- लग्न में गुरु 'हंस योग' से सुखी पाप प्रभावी हो तो पेट तिल्ली में रोग, नितम्ब में कष्ट, जनता के क्रोध का भागी।
- लग्नस्थ शनि+मंगल योग वाला होने से जातक आत्महत्या करेगा।
- गुरु बलवान हो तो माता व छोटे भाइयों से लाभ होगा।
- लग्न में शनि+शुक्र हो तो विवाह सुख अच्छा नहीं मिलता
- लग्न में चंद्र+शुक्र हो तो विवाह देर से होगा व सुख कमजोर होगा।
- शनि उच्चस्थ हो तो सुंदर फल देगा। जातक उच्च कोटि के तर्क का धनी होगा। धन प्राप्ति छोटे बहन या भाइयों से होगा।
- पंचम भाव में नीच का शनि अपनी दशा में खूब सुख देता है तथा धनी बना देता है।
- केवल शुक्र लग्न में हो तो विवाह विलम्ब से होगा पर पति अच्छा मिलेगा। प्रेम भी खूब रहेगा। धन स्थान में गुरु।शनि युति से लक्ष्मी योग बनेगा पर शनि या गुरु वक्री हो तो साधारण योग ही रहेगा।

चंद्रमा मूल नक्षत्र में

सुखी न हिंस्रो धनमानभोग
युतः स्थिरो मूलगतेशशांके।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा मूल नक्षत्र में स्थिर हो तो मनुष्य सुख से युक्त, हिंसा रहित धनी, मानी, भोगी और स्थिरता होता है।

मूल नक्षत्र का स्वामी केतु है जो कि चंद्रमा के मित्र मंगल का फल प्रदान करता है। अतः धन, मान, भोग, सुख सभी उपयुक्त हैं। मंगल यद्यपि हिंसक है, परन्तु यहां मोक्ष कारक के रूप में होकर तथा चंद्रमा के प्रभाव में आकर यह हिंसा को त्याग कर कार्य करता है।

यदि आपका जन्म मूल नक्षत्र में हुआ है तो आप विशेष प्रभावशाली व्यक्ति होने के साथ-साथ बुद्धिमान ईमानदार तथा उदार हृदय के हैं। पागड़े जीत वाली कहावत आप पर लागू होती है। आप बिना प्रत्युत्तर की भावना के दूसरों की भलाई करते रहते हैं। मानव मात्र की सेवा आपका धर्म है आप सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेते हैं गुरु से प्रभावित व्यक्तियों में बड़े गजब की नेतृत्व शक्ति होती है यदि आप राजनीतिक कार्य कलापों में सक्रिय हिस्सा लें तो शीघ्र ही आप उच्च पदस्थ नेता बन सकते हैं।

मूल नक्षत्र

यह गंडात नक्षत्र है। इसकी कर्मकांडी लोग शांति भी करवाते हैं। मूल नक्षत्र धनु राशि के 3 20/0 अंश से प्रारंभ होकर धनु के 12/20/00 तक रहता है। प्रत्येक चरण 3/20 00 का होता है।

मूल नक्षत्र प्रथम चरण—मूल नक्षत्र के प्रथम चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति भोगी होता है यहां नक्षत्र चरण का स्वामी मंगल है और नक्षत्र का स्वामी केतु। केतु भी मंगल रूप है। मंगल चूंकि भौतिकता प्रिय भोगी ग्रह है इसके प्रभाव से भोग का गुण आ जाना स्वाभाविक ही है।

मूल नक्षत्र द्वितीय चरण—मूल नक्षत्र के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य त्यागी होता है। इस नक्षत्र चरण का स्वामी शुक्र होता है शुक्र प्रेम करने वाला ग्रह है अतः अपने प्रभाव द्वारा चंद्रमा में प्रेम का गुण भरकर त्याग करवा सकता है।

मूल नक्षत्र तृतीय चरण—मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य अच्छे मित्रों वाला होता है। इस नक्षत्र चरण का स्वामी बुध है जिसे केतु का फल करना है तथा केतु मंगलवत् फल करता है और मंगल चंद्र का मित्र है, अतः मित्रों वाली बात घट सकती है।

मूल नक्षत्र चतुर्थ चरण—मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण में यदि चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति राजा होता है इस नक्षत्र चरण का स्वामी चंद्र है अपने ही नक्षत्र चरण में और केतु द्वारा सहायता पाकर चंद्र भाव का अर्थात् धन भाव पदवी का उत्तम फल कर सकता है। इसी उत्तम फल का नाम राज्य है

❑❑❑

जन्माक्षर (जन्मपत्रिका) भरने के लिये विशेष चार्ट

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु	सोना	सिंह 3 हि. 1	केतु	7
2	भरणी	ली,लू,ले,ला	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु	सोना	हिरण	शुक्र	20
3	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड	सूर्य	6
4	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चंद्र	10
5.	मृगशिरा	वे वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 3 सि.1	राहु	18
.	पुनर्वसु	के,को ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 मी. 1	गुरु	16
7	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	हू,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मींढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चादी	मी. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चादी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी,मू,मे	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चादी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चादी	मू. 3 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चादी	श्वान	सूर्य	6
12	उ. फा.	टो,प,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चादी	श्वा. 1 मू. 2	सूय	6
13	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू. 1 मी. 1 श्वा. 2	चद्र	10
14	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चादी	मूषक	मगल	7
14.	चिञा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चादी	हिरण	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चादी	हि 3 सर्प 1	राहु	18
16	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16	त्रिशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्षा
17	अनुराधा	ना,नो,नू,न	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	ये,यो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू, 1 स, 1 मू, 1 श्वान	शुक्र	20
21	उ. षा	भ	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
22	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सिं 3 बि. 1	×	×
23	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी 1 सर्प	गुरु	16

क.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुज्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26	पूर्व भा	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष		अश्विनी	अश्वि कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सर्प	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
सिंह	10.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा	अर्यमा	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	महाशत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	आदित्य	चन्द्र	मित्र	स्व	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चंद	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
धनु	19.	मूला	नैर्ऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	20.	पू. षा	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21	उ. षा	विश्वेदेव	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
कुंभ	25	पू. भा	अजकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	सम	सम
	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
मीन	27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	सम

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चू	0/3/20/0	1	म.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.	–			–
चो	0/10/0/0	3	बु	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	च.	लो	0/26/40/0	4	मं.		–	–	–
वृष राशि											
3 कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	म.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	.	–
ए	1/10/0/0	4	म.	वू	1/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

मिथुन राशि											
5. **मृगशिरा** (मगल)				6. **आर्द्रा** (राहु)				7. **पुनर्वसु** (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2 3/20/0	3	शु	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2 6/40/0	4	मं.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु
				ङ	2/16/40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु
				छ	2/20/0/0	4	गु	—	—	—	—

कर्क राशि											
7. **पुनर्वसु** (गुरु)				8. **पुष्य** (शनि)				9. **आश्लेषा** (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
—	—	—	—	हे	3/10/0/0	2	बु	डू	3/23/20/0	2	श.
		—	—	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
		—	—	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.
मी	4/6/40/0	2	शु.
मू	4/10/0/0	3	बु.
मे	4/13/20/0	4	चं.

11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
मो	4/16/40/0	1	सू.
टा	4/20/0/0	2	बु.
टी	4/23/20/0	3	शु.
टू	4/26/40/0	4	मं.

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टे	4/30/0/0	1	गु.
–			
–	–	–	

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.
पा	5/6/40/0	3	श.
पी	5/10/0/0	4	गु.
–	–	–	–

13. हस्त (चंद्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
पू	5/13/20/0	1	मं.
ष	5/16/40/0	2	शु.
ण	5/20/0/0	3	बु.
ठ	5/23/20/0	4	चं.

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
पे	5/26/40/0	1	सू.
पे	5/30/0/0	2	बु.
–			
–	–	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)				15. स्वाति (राहु)				16. विशाखा (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
र	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
–	–	–	–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	-	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	ने	7/16/40/0	4	मं.	यू	7/30/0/0	4	शु

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3 20/0	1	म.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8 6 40/0	2	शु	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	
या	8/10/0/0	3	बु	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20.0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रवण (चंद्र)				23. धनिष्ठा (मगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3 20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26.40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9 16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.		–		
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	च.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.
गे	10/6/40/0	4	मं.

24. शतभिषा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
गो	10/10/0/0	1	गु.
सा	.0/13 20/0	2	श.
सी	.0/16.40.0	3	श
सू	.0/19.0/04	4	गु.

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
से	10/23/20/0	1	म.
सो	10'26/40/0	2	श.
दा	10 30/0/0	3	बु.
	—		

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.
–	-	-	–
–			-
–	–	–	–

27. उत्तराभाद्रपद (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
दु	11/6.40/4	1	सू.
थ	11/10/0/0	2	बु
झ	11/13/20/0	3	शु.
ञ	.1/16.40/0	4	गु.

28. रेवती (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
दे	11'20/0/0	.	गु.
दो	11/23/20/0	2	श.
चा	11'26/40/0	3	श.
ची	11 30/0/0	4	गु

धनुलग्न पर अंशात्मक फलादेश

धनुलग्न, अश 0 से 1

1. **लग्न नक्षत्र**–मूल
2. **नक्षत्र पद**–I
3. **नक्षत्र अंश**–8/3/20/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–नैर्ऋति
10. **वर्णाक्षर**–ये
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित धनी मानी, भोगी एव स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैर्ऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शुत्रता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी केतु से शत्रुता है फलत: जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी सघर्ष करना पड़ेगा।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) मे है कमजोर है जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। लग्नेश गुरु की दशा निर्बल रहेगी। सूर्य की दशा अच्छी जायेगी।

धनुलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–मूल
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–8/3/20/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–नैर्ऋति
10. वर्णाक्षर–ये
11. वर्ग–हरिण
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'भोगी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैर्ऋति व स्वामी केतु है मूल नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शुत्रता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी केतु से शत्रुता है। फलतः जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से 'उदित अंशों' का है, बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी लग्नेश गुरु की दशा निर्बल रहेगा। सूर्य की दशा अच्छी जायेगी। धनु राशि के दस अंशो तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलायेगा।

धनुलग्न, अंश 2 से 3

1. लग्न नक्षत्र–मूल
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–8/3/20/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–नैर्ऋति
10. वर्णाक्षर–ये
11. वर्ग–हरिण

12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी–मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है. मूल नक्षत्र का देवता नैर्ऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है. लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी केतु से शत्रुता है। फलत: जातक का भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। धनु राशि के दस अंशो तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है। अत: अत्यधिक श्रेष्ठ फल देगा।

धनुलग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–मूल
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–8/3/20/0 से 8/6/40/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–श्वान
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–नैऋति
10. **वर्णाक्षर**–यो
11. **वर्ग**–हरिण
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'त्यागी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एव स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है. परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र की केतु से मित्रता है ऐसे जातक में त्याग (दान देने) की प्रवृत्ति ज्यादा होगी।

लग्न यहां तीन से चार अशों के भीतर होने से उदित अंशो में बलवान है लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा खराब नही होगी केतु की दशा भी शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अशो तक गुरु मूल त्रिकोण का होगा अत: अति उत्तम फल देगा।

धनुलंग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र—मूल
2. नक्षत्र पद—2
3. नक्षत्र अंश—8/3/20/0 से 8/6/40/0
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—श्वान
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—नैऋति
10. वर्णाक्षर—यो
11. वर्ग—हरिण
12. लग्न स्वामी—गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'त्यागी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेन वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला हिंसा रहित धनी मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र की केतु से मित्रता है। ऐसे जातक में त्याग (दान देने) की प्रवृत्ति ज्यादा होगी।

लग्न यहां चार से पाच अशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशो में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा खराब नहीं जायेगी। केतु की दशा भी शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अंशो तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलायेगा। अत: अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र—मूल
2. नक्षत्र पद—2
3. नक्षत्र अंश—8/3/20/0 से 8/6/40/0
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—द्विपद

6. **योनि**–श्वान | 7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य | 9. **नक्षत्र देवता**–नैऋति

10. **वर्णाक्षर**–यो | 11. **वर्ग**–हरिण

12. **लग्न स्वामी**–गुरु | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'त्यागी'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी, मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है, परन्तु नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र की केतु से मित्रता है। ऐसे जातक में त्याग (दान देने) की प्रवृत्ति ज्यादा होगी।

लग्न यहां पांच से छः अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा खराब नहीं होगी। केतु की दशा भी शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का होगा। अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–मूल | 2. **नक्षत्र पद**–3

3. **नक्षत्र अंश**–8/6/40/0 से 8/10/0/0

4. **वर्ण**–क्षत्रिय | 5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–श्वान | 7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आद्य | 9. **नक्षत्र देवता**–नैऋति

10. **वर्णाक्षर**–या | 11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–गुरु | 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध | 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र | 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'सुमित्रश्च'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी–मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु का मित्र है। ऐसे जातक के अनेक मित्र होंगे एवं सभी सुयोग्य होंगे।

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। केतु एवं बुध की दशाएं शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है, अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र–मूल
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–8/6/40/0 से 8/10/0/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–श्वान
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–नैऋति
10. वर्णाक्षर–या
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'सुमित्रश्च'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु का मित्र है। ऐसे जातक के अनेक मित्र होंगे एवं सभी सुयोग्य होंगे।

यहां लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। केतु एवं बुध की दशाएं शुभ फल देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र—मूल
2. नक्षत्र पद—3
3. नक्षत्र अंश—8/6/40/0 से 8/10/0/0
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—श्वान
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—नैऋति
10. वर्णाक्षर—या
11. वर्ग—मूषक
12. लग्न स्वामी—गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'सुमित्रश्च'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी बुध केतु का मित्र है। ऐसे जातक के अनेक मित्र होंगे एवं सभी सुयोग्य होंगे।

यहां लग्न आठ से नौ अंशो में उदित अंशो में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। केतु व बुध की दशाएं शुभ फल देंगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है। अतः अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र—मूल
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—8/10/0/0 से 8/13/20/0
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—श्वान
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—नैऋति
10. वर्णाक्षर—भो
11. वर्ग—मूषक

12. लग्न स्वामी—गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—चंद्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता 'नृपति'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्र है लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी चद्र की भी केतु से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को प्राप्त करता है, क्योंकि लग्नेश गुरु एव चंद्रमा की परस्पर मित्रता है।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर उदित अंशों मे है बलवान है लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। चंद्रमा की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। धनु राशि के दस अंशों तक गुरु मूल त्रिकोण का कहलाता है अत: अति उत्तम फल देगा।

धनुलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र—मूल
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—8.10/0/0 से 8/13/20/0
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—श्वान
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—नैऋति
10. वर्णाक्षर—भी
11. वर्ग—मूषक
12. लग्न स्वामी—गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—केतु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—चंद्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—'नृपति'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख—सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी चद्र का भी

केतु से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को प्राप्त करता है, क्योंकि लग्नेश गुरु एवं चंद्रमा की परस्पर मित्रता है।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर 'आरोह अवस्था' में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। केतु व चंद्र की दशाएं भी शुभ फल देंगी।

धनुलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र—मूल **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—8/10/0/0 से 8/13/20/0

4. वर्ण—क्षत्रिय **5. वश्य**—द्विपद

6. योनि—श्वान **7. गण**—राक्षस

8. नाड़ी—आद्य **9. नक्षत्र देवता**—नैऋति

10. वर्णाक्षर—भी **11. वर्ग**—मूषक

12. लग्न स्वामी—गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—केतु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—चंद्र **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र

18. प्रधान विशेषता—'नृपति'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है। मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्र है। लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है नक्षत्र चरण स्वामी चंद्र की भी केतु से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को प्राप्त करता है, क्योंकि लग्नेश गुरु एवं चंद्रमा की परस्पर मित्रता है।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर 'आरोह अवस्था' में पूर्ण बली है। गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा केतु और चंद्र की दशाएं भी शुभ फल देंगी

धनुलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र—मूल **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—8/10/0/0 से 8/13/20/0

4. **वर्ण**–क्षत्रिय

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–श्वान

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता** -नैऋति

10. **वर्णाक्षर**–भी

11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–केतु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध** शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'नृपति'

मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीने वाला, हिंसा रहित, धनी-मानी, भोगी एवं स्थिर स्वभाव का होता है। मूल नक्षत्र का देवता नैऋति व स्वामी केतु है मूल नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चंद्र है लग्नेश गुरु की नक्षत्र स्वामी केतु से शत्रुता है। नक्षत्र चरण स्वामी चंद्र की भी केतु से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को प्राप्त करता है, क्योंकि लग्नेश गुरु एवं चंद्रमा की परस्पर मित्रता है

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से 'आरोह अवस्था' में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाषाढ़ा

2. **नक्षत्र पद**–1

3. **नक्षत्र अंश**–8/16/40/0

4. **वर्ण**–क्षत्रिय

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–कपि

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–मध्य

9. **नक्षत्र देवता**–उदक

10. **वर्णाक्षर**–भू

11. **वर्ग**–मूषक

12. **लग्न स्वामी**–गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'श्रेष्ठी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। दोनो ग्रह परस्पर शत्रु होते हुए भी तेजस्वी है। फलत. ऐसा जातक अपनी जाति का तेजस्वी एवं श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

यहा लग्न तेरह से चौदह अंशो के मध्य 'आरोह अवस्था' में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अत्यन्त श्रेष्ठ फल देगी। सूर्य की दशा मे जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा एवं शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी.

धनुलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा | **2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–8/16.40/0

4. वर्ण–क्षत्रिय | **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–कपि | **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य | **9. नक्षत्र देवता**–उदक

10. वर्णाक्षर–भू | **11. वर्ग**–मूषक

12. लग्न स्वामी–गुरु | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'श्रेष्ठी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है दोनो ग्रह परस्पर शत्रु होते हुए भी तेजस्वी है। फलतः ऐसा जातक अपनी जाति का तेजस्वी एवं श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशो के भीतर होने से आरोह अवस्था में पूर्ण बली है लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा | **2. नक्षत्र पद**–I

3. नक्षत्र अंश–8/16/40/0

4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—उदक
10. **वर्णाक्षर**—भू
11. **वर्ग**—मूषक
12. **लग्न स्वामी**—गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'श्रेष्ठी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। दोनों ग्रह परस्पर शत्रु होते हुए भी तेजस्वी हैं। फलतः ऐसा जातक अपनी जाति का तेजस्वी एवं श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से आरोह अवस्था में है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 16 से 17

1. **लग्न नक्षत्र**—पूर्वाषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**—I
3. **नक्षत्र अंश**—8/16/40/0
4. **वर्ण**—क्षत्रिय
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—मध्य
9. **नक्षत्र देवता**—उदक
10. **वर्णाक्षर**—भू
11. **वर्ग**—मूषक
12. **लग्न स्वामी**—गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'श्रेष्ठी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक एवं स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। दोनों ग्रह परस्पर शत्रु होते हुए भी तेजस्वी हैं फलतः ऐसा जातक अपनी जाति का तेजस्वी एवं श्रेष्ठ व्यक्ति होता है।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में पूर्ण बली है, लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र—पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद—2
3. नक्षत्र अंश—8/16/40/0 से 8/20/0/0
4. वर्ण—क्षत्रिय
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—कपि
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—मध्य
9. नक्षत्र देवता—उदक
10. वर्णाक्षर—धा
11. वर्ग—सर्प
12. लग्न स्वामी—गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र
18. प्रधान विशेषता—'राजा'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। दोनों ही बुद्धि प्रधान ग्रह हैं। नक्षत्र चरण स्वामी बुध की नक्षत्र स्वामी शुक्र से मित्रता है। फलतः ऐसा व्यक्ति राजा तुल्य पराक्रमी एवं बुद्धिशाली होगा।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा भी श्रेष्ठ फल देगी शुक्र अनिष्ट फल नहीं देगा, क्योंकि यह लग्न नक्षत्र का स्वामी ग्रह है।

धनुलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा 2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–8/16/40/0 से 8/20/0/0
4. वर्ण–क्षत्रिय 5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि 7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–धा 11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'राजा'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है, स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है, दोनों ही बुद्धि प्रधान ग्रह हैं। नक्षत्र चरण स्वामी बुध की नक्षत्र स्वामी शुक्र से मित्रता है। फलत: ऐसा व्यक्ति राजा तुल्य पराक्रमी बुद्धिशाली होगा।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा भी श्रेष्ठ फल देगी। शुक्र अनिष्ट फल नहीं देगा क्योंकि यह लग्न नक्षत्र का स्वामी ग्रह है।

धनुलग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा 2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–8/16/40/0 से 8/20/0/0
4. वर्ण–क्षत्रिय 5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि 7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–धा 11. वर्ग–सर्प

12. लग्न स्वामी–गुरु — 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध — 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र — 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'राजा'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-सतान के सुख स युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है इस नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है दोनो ही बुद्धि प्रधान ग्रह है। नक्षत्र चरण स्वामी बुध की नक्षत्र स्वामी शुक्र से मित्रता है। फलत: ऐसा व्यक्ति राजा तुल्य पराक्रमी एवं बुद्धिशाली होगा।

यहा लग्न उन्नीस अशो से बीस अशो के भीतर होने से मध्य अवस्था मे है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। बुध की दशा भी श्रेष्ठ फल देगी। शुक्र अनिष्ट फल नहीं देगा, क्योंकि यह लग्न नक्षत्र का स्वामी ग्रह है।

धनुलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा — 2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–8/20/0/0 से 8/23/20/0

4. वर्ण–क्षत्रिय — 5. वश्य–द्विपद

6. योनि–कपि — 7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य — 9. नक्षत्र देवता–उदक

10. वर्णाक्षर–फा — 11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–गुरु — 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र — 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–सम — 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–सम

18. प्रधान विशेषता–'प्रियवादी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है।

यहां नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से ऐसा जातक प्रिय, मीठी एवं हितकारी वाणी बोलेगा।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शुक्र की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाषाढ़ा   2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–8/20/0/0 से 8/23/20/0
4. **वर्ण**–क्षत्रिय   5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–कपि   7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य   9. **नक्षत्र देवता**–उदक
10. **वर्णाक्षर**–फा   11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–गुरु   13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र   15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–सम   17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–सम
18. **प्रधान विशेषता**–'प्रियवादी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी भी शुक्र है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है यहा नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से ऐसा जातक प्रिय, मीठी एवं हितकारी वाणी बोलेगा।

यहां लग्न इक्कीस से बाईस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। यहां शुक्र की दशा कभी भी अनिष्ट फल नही देगी।

धनुलग्न, अंश 22 से 23

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाषाढ़ा   2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–8/20/0/0 से 8/23/20/0

4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–फा
11. वर्ग–मूषक
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–सम
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–सम
18. प्रधान विशेषता–'प्रियवादी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है. इस नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। यहा नक्षत्र चरण स्वामी शुक्र होने से ऐसा जातक प्रिय, मीठी एव हितकारी वाणी बोलेगा।

यहा लग्न बाईस से तेईस अंशो में अवरोह अवस्था म बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। यहा शुक्र की दशा कभी भी अनिष्ट फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–8/23/20/0 से 8/26/40/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–ढा
11. वर्ग–कुत्ता
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'धनी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र मे जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी शुक्र से शत्रुता है फिर भी ऐसा जातक संघर्ष के रहते हुए भी धनी होगा।

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशो मे अवरोह अवस्था मे बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा मे जातक का भाग्योदय होगा मंगल की दशा मे जातक देशाटन, तीर्थाटन करेगा। यहा शुक्र की दशा अशुभ फल नही देगी

धनुलग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाषाढ़ा	2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–8/23/20/0 से 8/26/40/0	
4. **वर्ण**–क्षत्रिय	5. **वश्य** द्विपद
6. **योनि**–कपि	7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य	9. **नक्षत्र देवता**–उदक
10. **वर्णाक्षर**–ढा	11. **वर्ग**–कुत्ता
12. **लग्न स्वामी**–गुरु	13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शुक्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल	15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु	17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'धनी'	

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी शुक्र से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक संघर्ष के रहते हुए भी धनी होगा।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य अवरोह अवस्था मे बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा। मंगल की दशा में जातक देशाटन, तीर्थयात्रा करेगा। यहा शुक्र की दशा अशुभ फल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–8/23/20/0 से 8/26/40/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–ढा
11. वर्ग कुत्ता
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'धनी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है स्त्री संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक, स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य से परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी मंगल को भी शुक्र से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक संघर्ष के रहते हुए भी धनी होगा।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। लग्नेश गुरु की दशा शुभ फल देगी। सूर्य की दशा में भाग्योदय होगा। मंगल की दशा में जातक देशाटन, तीर्थयात्रा करेगा। यहा शुक्र की दशा अशुभफल नहीं देगी।

धनुलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–8/23.20/0 से 8/26/40/0
4. वर्ण–क्षत्रिय
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–कपि
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–उदक
10. वर्णाक्षर–ढा
11. वर्ग–कुत्ता
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शुक्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'धनी'

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में जन्म लेने वाला व्यक्ति हर प्रकार से सुखी होता है। स्त्री-संतान के सुख से युक्त ऐसा जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का देवता उदक स्वामी शुक्र है। इस नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु देवाचार्य एवं नक्षत्र स्वामी शुक्र दैत्याचार्य में परस्पर शत्रुता है। यहां नक्षत्र चरण स्वामी मंगल की भी शुक्र से शत्रुता है। फिर भी ऐसा जातक संघर्ष के रहते हुए भी धनी होगा।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश गुरु की दशा मध्यम फल देगी। मंगल की दशा में जातक देशाटन, तीर्थयात्रा करेगा। सूर्य की दशा में भाग्योदय होगा।

धनुलग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा 2. नक्षत्र पद–1

3. नक्षत्र अंश–8/26.40/0 से 8.30/0/0

4. वर्ण–क्षत्रिय 5. वश्य–द्विपद

6. योनि–नकुल 7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य 9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा

10. वर्णाक्षर–ये 11. वर्ग–मूषक

12. लग्न स्वामी–गुरु 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'नृपो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति बहुत मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा, स्वामी सूर्य है। उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण का स्वामी गुरु, नक्षत्र स्वामी सूर्य एवं गुरु में मित्रता है। लग्नेश भी गुरु होने से यहां गुरु ग्रह का प्रभाव ज्यादा बलशाली है। ऐसा जातक निश्चय ही राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा।

यहां लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश गुरु की दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा। सूर्य की दशा अन्तर्दशा में जातक का प्रबल भाग्योदय होगा।

धनुलग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**—उत्तराषाढ़ा 2. **नक्षत्र पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—8/26/40/0 से 8/30/0/0
4. **वर्ण**—क्षत्रिय 5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—नकुल 7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—अन्त्य 9. **नक्षत्र देवता** विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**—ये 11. **वर्ग**—मूषक
12 **लग्न स्वामी**—गुरु 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—सम
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18 **प्रधान विशेषता**—'नृपो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र मे जन्मा व्यक्ति बहुत मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एव भाग्यशाली होता है उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एव स्वामी सूर्य है। उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण का स्वामी गुरु, नक्षत्र स्वामी सूर्य एवं गुरु में मित्रता है। लग्नेश भी गुरु होने से यहा गुरु ग्रह का प्रभाव ज्यादा बलशाली है। ऐसा जातक निश्चय ही राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा

यहां लग्न अट्ठाईस से उनतीस अशों वाला अवरोही अवस्था में होकर 'हीनबली' है। उसका सारा तेज समाप्ति की ओर है। गुरु की दशा मध्यम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

धनुलग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**—उत्तराषाढ़ा 2. **नक्षत्र पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—8/26/40/0 से 8/30/0/0
4. **वर्ण**—क्षत्रिय 5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—नकुल 7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—अन्त्य 9. **नक्षत्र देवता** विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**—ये 11. **वर्ग**—मूषक
12. **लग्न स्वामी**—गुरु 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—गुरु 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—सम

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'नृपो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में जन्मा व्यक्ति बहुत मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एव भाग्यशाली होता है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं स्वामी सूर्य है। उत्तराषाढ़ा के प्रथम चरण का स्वामी गुरु, नक्षत्र स्वामी सूर्य एवं गुरु में मित्रता है। लग्नेश भी गुरु होने से यहां गुरु ग्रह का प्रभाव ज्यादा बलशाली है। ऐसा जातक निश्चय ही राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा।

यहां लग्न उनतीस से तीस अंशो वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था (Combust) में है। निस्तेज है। लग्नेश गुरु की दशा मध्यम फल देगी। सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

❑❑❑

धनुलग्न और आयुष्य योग

1. धनुलग्न वालों के लिये शनि मारकेश है पर शुक्र षष्टेश होने पर भी मुख्य मारकेश का काम करेगा। आयुष्य प्रदाता ग्रह गुरु है।
2. धनुलग्न में जन्म लेने वाले की मृत्यु जल में डूबने से, जलीय पदार्थों से, जल-जन्तु, मछली, मगरमच्छ, भयंकर शस्त्रास्त्र, दूसरों के हाथों एवं परदेश में होती है।
3. धनुलग्न वालों की औसत आयु 85 वर्ष की होती है। जन्म उपरान्त 5, 9, 11 माह तथा 1, 3, 13, 16, 24, 30, 34, 39, 42, 47, 50, 57, 61, 65, 69 और 72 वर्ष की आयु में शारीरिक कष्ट एवं अल्प मृत्यु संभव है।
4. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा यदि शुभ द्रेष्कोण में हो तो दिन रात में हर प्रकार के खतरे से रक्षा करता हुआ जातक को दीर्घायु देता है।
5. धनुलग्न में मेष का नवमांश हो, शुक्र लग्न में हो, गुरु सातवें हो, चंद्रमा कन्या में हो तो ऐसा जातक ब्रह्मा के समान यशस्वी एवं चिरंजीवी होता है।
6. धनुलग्न में बुध, गुरु व शुक्र छठे हो, शनि सातवें व नीच का मंगल आठवें हो, चंद्रमा के पीछे शेष ग्रह हों तो व्यक्ति कुबड़ा होता है।
7. धनुलग्न में गुरु हो, चौथे शुक्र हो, चंद्रमा शनि से युत होकर कहीं भी बैठा हो, परन्तु दशम स्थान में कोई पाप ग्रह हो तो जातक 120 वर्ष की 'परमायु' को भोगता है।
8. धनुलग्न में शनि उच्च का एकादश भाव में हो तो जातक को दीर्घायु देता है।
9. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा लग्न में हो तथा गुरु एवं शुक्र से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ दीर्घायु को प्राप्त करता है।
10. धनुलग्न में चंद्रमा मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुंभ राशि में हो तथा अन्य सभी ग्रह भी इन्हीं राशियों में हों तो जातक नब्बे वर्ष की उत्तम आयु को भोगता है।

11. धनुलग्न में चंद्रमा छठे वृष का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हो तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
12. धनुलग्न में गुरु लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो जातक 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
13. धनुलग्न में मंगल पांचवें एवं शनि मेष के साथ हो एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।
14. धनुलग्न मे सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष तक जीता है।
15. धनुलग्न में सूर्य+चंद्रमा दसवें, शनि लग्न मे तथा स्वगृही गुरु चौथे स्थान में हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है परन्तु ऐसा व्यक्ति मात्र 68 वर्ष की आयु को ही भोग पाता है।
16. धनुलग्न में गुरु+बुध+सूर्य लग्नस्थ हो, शनि मीन का केन्द्र में तथा वृश्चिक राशि का चंद्रमा द्वादश स्थान म हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है पर ऐसे जातक की आयु मात्र 60 वर्ष की होती है।
17. शनि लग्न में मीन का चंद्र हो चौथे, मंगल सातवे एव दसवे स्थान में सूर्य किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18 धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा सातवे हो तथा लग्नेश पाप ग्रहो के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु मे गुजर जाता है।
19. धनुलग्न मे शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवे या द्वादश भाव मे हो तो व्यक्ति सैद्धान्तिक चरित्रवान एव विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
20. धनुलग्न मे गुरु लग्नस्थ हो तथा मंगल और राहु आठवें हो तो जातक 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
21. धनुलग्न में लग्नेश गुरु पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश चंद्रमा पाप ग्रहो के साथ छठे, अन्य किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
22. धनुलग्न में शनि+मंगल हो पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा आठवें गुरु छठ हो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

23. धनुलग्न मे द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश गुरु निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
24. धनुलग्न में गुरु वृश्चिक राशि में एव मंगल धनु राशि में परस्पर घर परिवर्तन करके बैठे तो बालारिष्ट योग बनता है ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के की आयु भीतर हो जाती है
25. धनुलग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष की आयु में हो जाती है।
26. धनुलग्न के सप्तम भाव मे शनि+राहु+मगल+चद्रमा की युति शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।
27. धनुलग्न के दूसरे भाव में मकर का शनि हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी क्रूर ग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।
28. धनुलग्न के द्वितीय, तृतीय या द्वादश भाव में सूर्य+मगल+राहु+गुरु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।
29. धनुलग्न के अष्टम भाव मे मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।
30. धनुलग्न मे पंचमस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक मातृघातक होता है।
31. धनुलग्न में लग्नेश गुरु एव लग्न दोनो पाप ग्रहो के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।
32. धनुलग्न में षष्ठेश शुक्र सप्तम या दशम स्थान में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।
33. धनुलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान मे शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एव शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

धनुलग्न और रोग

1. धनुलग्न में षष्टेश शुक्र लग्न में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा हो जाता है।
2. धनुलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा चतुर्थेश गुरु पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. धनुलग्न में चतुर्थेश गुरु यदि अष्टमेश चंद्र के साथ अष्टम स्थान में पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. धनुलग्न में चतुर्थेश गुरु मकर राशि में, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. धनुलग्न में शनि चतुर्थ भाव में मीन का, षष्टेश चद्रमा एवं सूर्य पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. जातक पारिजात के अनुसार धनुलग्न में चतुर्थ एवं पंचम भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. धनुलग्न में मीन का शनि चतुर्थ स्थान में एवं कुंभ का सूर्य तृतीय स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. धनुलग्न में चतुर्थ भाव मे राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो, लग्नेश, गुरु निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. धनु में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है
10. धनुलग्न में वृश्चिक+चंद्रमा+शुक्र की युति एक साथ दुःस्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना से अकाल मृत्यु होती है।
11. धनुलग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश गुरु बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।
12. धनुलग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो तो ऐसा जातक रोगग्रस्त रहता है।

13. धनुलग्न मे अष्टमेश चद्रमा लग्न में हो, लग्नेश गुरु अष्टम में हो, लग्न पाप दृष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति दवाई लेने पर ठीक नही होता। व्यक्ति सदैव रोगी रहता है।

14. धनुलग्न में गुरु लग्न को देखता हो तथा सभी शुभ ग्रह केंद्र में हो तो जातक 85 वर्ष की स्वस्थ आयु को भोगता है।

15. धनुलग्न मे मंगल पांचवें, शनि मेष के साथ हो एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।

16. धनुलग्न मे सूर्य+मगल+शनि हो, चंद्रमा द्वादश स्थान में हो, गुरु बलहीन हो तो जातक 70 वर्ष तक जीता है।

17. धनुलग्न म सूर्य+चंद्रमा दसवें, शनि लग्न मे तथा स्वगृही गुरु चौथे स्थान मे हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है परतु ऐसा व्यक्ति मात्र 68 वर्ष तक की आयु को ही भोग पाता है।

18. धनुलग्न में गुरु+बुध+सूर्य लग्नस्थ हो, शनि मीन का केंद्र में तथा वृश्चिक राशि का चंद्रमा द्वादश स्थान मे हो तो एक प्रकार का राजयोग बनता है पर ऐसे जातक की आयु मात्र 66 वर्ष की होती है

19. शनि लग्न में, मीन का चद्र चौथे हो, मगल सातवें एव दसवें स्थान में सूर्य किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. धनुलग्न मे अष्टमेश चद्रमा सातवें हो तथा लग्नेश पाप ग्रहो के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21 धनुलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव मे हो तो व्यक्ति सैद्धांतिक चरित्रवान एव विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

22 धनुलग्न में गुरु लग्नस्थ हो तथा मगल और राहु आठवें स्थान में हो तो जातक 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

23 धनुलग्न में लग्नेश गुरु पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे, अन्य किसी शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

24. धनुलग्न में शनि+मगल हो पाप ग्रहो के साथ चद्रमा आठवे, गुरु छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है

25. धनुलग्न में द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो लग्नेश गुरु निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।

26. धनुलग्न मे गुरु वृश्चिक राशि में एवं मंगल धनु राशि में परस्पर परिवर्तन करके बैठे तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर हो जाती है।

27. धनुलग्न में मंगल+सूर्य+शनि अष्टम स्थान मे, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। उपाय न करने पर ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष मे हो जाती है।

28. धनुलग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है

29. धनुलग्न के दूसरे भाव मे मकर का शनि हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी क्रूर ग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।

30. धनुलग्न के द्वितीय, तृतीय या द्वादश भाव में सूर्य+मंगल+राहु+गुरु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है जातक को कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

31. धनुलग्न के अष्टम भाव में मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

32. धनुलग्न में पंचमस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा जातक **'मातृघातक'** होता है।

33. धनुलग्न में लग्नेश गुरु एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम मे शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

34. धनुलग्न में षष्ठेश शुक्र सप्तम या दशम स्थान में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है

35. धनुलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता हुआ 'अकाल मृत्यु' को प्राप्त करता है।

❑❑❑

धनुलग्न और धन योग

धनुलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धन प्रदाता ग्रह मंगल है। धनेश मंगल की शुभाशुभ स्थिति से, धन स्थान से सबध स्थापित करने वाले ग्रहो की स्थिति से, योगायोग, मगल तथा धन भाव पर पड़ने वाले ग्रहो की दृष्टि से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त लग्नश गुरु भाग्येश सूर्य एव लाभेश शुक्र की अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियां धनुलग्न के जातकों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को घटाने बढ़ाने में सहायक होती हैं।

वैसे धनुलग्न के लिए शुक्र षष्टेश होने से अशुभ है। बुध व सूर्य शुभ होते हैं, शनि मारकेश होते हुए भी मारक नही होता। इस लग्न के लिए शुक्र मारकेश का काम करेगा। शनि, चंद्र भी पापी है। सप्तमेश होने से बुध सहायक मारकेश है। पंचमेश होने से मगल शुभ फलदायक बन गया है। लग्नेश गुरु चतुर्थ स्थान का स्वामी होने के कारण अति शुभ कारकत्व वाला ग्रह बन गया है।

राजयोग कारक– 1. बुध+शुक्र एव गुरु

सफल योग– 1. मगल+ गुरु 2. सूर्य+गुरु 3. सूर्य+बुध

निष्फल योग– 1. मगल+बुध

अशुभ योग– 1. गुरु+शुक्र 2. गुरु+शनि 3. गुरु+बुध 4. गुरु+चद्र।

लक्ष्मी योग–गुरु केन्द्र-त्रिकोण में, शनि तृतीय में, बुध केन्द्र में।

विशेष योगायोग

1. धनुलग्न मे सूर्य सिंह या मेष राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से बहुत धन कमाता है।

2. धनुलग्न में शनि, मकर कुंभ या तुला राशि मे हो तो जातक धनपति होता है, लक्ष्मी उसका पीछा नहीं छोड़ती।

3. धनुलग्न में शनि सूर्य के घर मे तथा सूर्य शनि के घर में परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठा हो अर्थात् शनि, सिंह राशि में तथा सूर्य मकर या कुंभ राशि में हो तो जातक महाभाग्यशाली होता है। लक्ष्मी ऐसे जातक की अनुचरी होती है।

4. धनुलग्न में शनि, मिथुन या कन्या राशि में तथा बुध मकर या कुंभ राशि में परस्पर परिवर्तन योग करके बैठा हो तो व्यक्ति भाग्यशाली होता है ऐसा व्यक्ति जीवन में बहुत धन कमाता है।

5. धनुलग्न में गुरु हो, बुध एव शनि अपनी-अपनी स्वराशि में हो तो ऐसा व्यक्ति धनवानों में अग्रगण्य होता है तथा पग-पग पर लक्ष्मी उसके साथ चलती है।

6. धनुलग्न में गुरु लग्न में बुध एवं मगल से युत हो अथवा लग्नस्थ गुरु, बुध मंगल से दृष्ट हो तो जातक महाधनशाली होता है।

7. धनुलग्न के पंचम भाव में स्वगृही मंगल हो, तथा स्वगृही शुक्र लाभ स्थान हो तो जातक महालक्ष्मीशाली होता है।

8. धनुलग्न में बुध यदि केन्द्र-त्रिकोण में हो तथा शनि स्वगृही (मकर, कुंभ राशि में) हो, तो जातक कीचड मे कमल की तरह खिलता है। अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी जातक धीरे-धीरे अपने पुरुषार्थ व पराक्रम से लक्षाधिपति, कोट्याधिपति हो जाता है।

9. धनुलग्न में गुरु+चंद्र+मगल की युति हो तो 'महालक्ष्मी योग' बनता है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी, अति धनवान, ऐश्वर्यवान एवं महाप्रतापी होता है।

10. धनुलग्न में गुरु+बुध एवं मंगल से युत हो तो 'महालक्ष्मी योग' बनता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से शत्रुओं को परास्त करता हुआ महाधनी एवं अतिप्रतापी होता है।

11. धनुलग्न में गुरु तुला राशि में हो तथा लाभेश शुक्र लग्न स्थान में हो तो जातक आयु के 33वें वर्ष में पाच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुये स्वअर्जित धन लक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन मे अचानक रुपया मिलता है।

12. धनुलग्न हो, लग्नेश गुरु, धनेश शनि, भाग्येश सूर्य तथा लाभेश शुक्र अपनी-अपनी उच्च राशि या स्वराशि में हों तो जातक करोड़पति होता है।

13. धनुलग्न हो तथा दशम भाव में राहु, शुक्र, शनि और मंगल की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

14. धनुलग्न में धनेश शनि यदि छठे आठवें, बारहवें स्थान में हो तो **'धनहीन योग'** की सृष्टि होती है। जिस प्रकार छिद्र वाले घड़े में कभी पानी नहीं रहता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे जातक के पास रुपया टिकता नहीं। धन की कमी सदैव बनी रहती है। इस दुर्भाग्य से बचने के लिए जातक को अभिमंत्रित शनि यंत्र धारण करना चाहिये। पाठक चाहे तो यह यंत्र हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

15. धनुलग्न में धनेश शनि यदि आठवें स्थान में हो तथा सूर्य लग्न को देखता हो तो जातक को पृथ्वी में गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है अथवा लॉटरी से रुपया मिलता है पर रुपया पास मे टिकता नहीं।

16. धनुलग्न में मंगल यदि मेष राशि मे पंचमस्थ हो तो **'रुचक योग'** बनता है। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

17. धनुलग्न मे सुखेश गुरु, लाभेश शुक्र यदि नवम भाव में मंगल से दृष्ट हो तो जातक को अचानक धन की प्राप्ति होगी।

18. धनुलग्न में चंद्र+गुरु की युति यदि मकर, मीन, मेष या सिंह राशि में हो तो इस प्रकार के **'गजकेसरी योग'** के कारण जातक को अचानक उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर मार्केट या अन्य व्यापारिक स्रोत के कारण अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

19. धनुलग्न में धनेश शनि अष्टम मे एवं अष्टमेश चंद्र धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ सटका, घुडरेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

20. धनुलग्न मे तृतीयेश शनि लाभ स्थान में एवं लाभेश शुक्र तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति का भाई, भागीदार एवं मित्रों द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

21 धनुलग्न मे बलवान शनि के साथ यदि चतुर्थेश गुरु हो तो व्यक्ति को माता एवं ननिहाल पक्ष के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

22. लग्नेश व धनेश प्रथम भवन अर्थात् लग्न में हो तो जातक स्वयं श्रम करके अर्थोपार्जन करता है।

23. केन्द्र में चार पाप ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु हो, धन भवन में पाप ग्रह हो, सूर्य, शुक्र शनि साथ हो अथवा धन भवन में शनि-सूर्य और शनि-मंगल साथ हों तो जातक दरिद्र ही होता है।
24. चंद्रमा 9वें भाव में हो तथा 10वें व 9वें भाव मे कोई ग्रह न हो तो जातक दरिद्र ही होता है।
25. सूर्य एकादश स्थान में हो तथा द्वादश व दशम भाव में कोई ग्रह न हो तो जातक दरिद्र ही होता है।
26. बुध, सूर्य 5वें भवन में पड़ा हो तो जातक धनवान होता है.
27. लग्नेश पचम भाव में हो या 11वें हो तो जातक देह से पुष्ट व दीर्घायु होता है। शुक्र 1वें भाव में हो और द्वादश या सप्तम भाव में गुरु हो, राहु छठे हो तो जातक अतुल सपत्ति प्राप्त करता है
28. सूर्य से द्वितीय स्थान में गुरु हो, लग्न अपने नवाश मे हो और 1 4, 9, 10 स्थानो मे बुध, शुक्र, चद्रादि हों तो जातक के घर सदैव लक्ष्मी निवास करती है
29. चद्रमा 8वे भाव में हो, कर्क राशि में सूर्य, शुक्र, शनि स्थित हों तो विख्यात, शिल्पादि कलाओं का जानकार, पतला पर दृढ़ शरीर से युक्त अनेक सतानो से युक्त व निरतर सपत्तिवान रहता है।
30. नवमेश सूर्य तथा शुक्र एकादशेश साथ साथ बैठे हों तो पैतृक धन की प्राप्ति होती है।
31. धनुलग्न की कुण्डली में सूर्य, चद्र कही साथ-साथ बैठे हो तो दरिद्र योग होता है।
32. दशमेश नवमेश के नवमाश में हो तथा दशमेश व नवमेश द्वितीय स्थान में हों तो जातक विष्णु भक्त एव लक्ष्मीवान होता है।
33. पंचमेश भाग्य भवन में हो तथा एकादशेश चंद्र युक्त लग्न से द्वितीय हो तो भाग्य योग व प्रबल धन योग बनता है
34. राहु कन्या राशि में स्थित हो तथा कन्यापति बुध अपने में उच्च का विराजमान हो तथा शनि चतुर्थ भावस्थ होकर बुध को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो जातक बड़ा व्यापारी एवं धनी होता है।
35. धनुलग्न मे गुरु बारहवे हो, लग्न शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो अकस्मात् धन की हानि होती है।

36. धनुलग्न में यदि बलवान शनि की पचमेश मंगल से युति हो, द्वितीय भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है। किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

37. धनुलग्न में बलवान शनि की यदि षष्टेश शुक्र से युति हो तथा धन भाव मगल से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी मे शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

38. धनुलग्न मे बलवान शनि की सप्तमेश बुध से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

39. धनुलग्न में बलवान शनि की नवमेश सूर्य से युति हो तो ऐसे जातक को राजा से, राज्य सरकार, सरकारी अधिकारियों, सरकारी अनुबधों एवं ठेकों से काफी धन मिलता है।

40. धनुलग्न मे बलवान शनि की दशमेश बुध से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

41. धनुलग्न में दशम स्थान का स्वामी बुध यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। जन्म स्थान में जातक नहीं कमा पाता तथा उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है

42. धनुलग्न मे लग्नेश गुरु यदि छठे, आठवे या बारहवें स्थान में हो एव सूर्य आठवें भाव (कर्क राशि) में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

43. धनु स्थान में पाप ग्रह हो तथा लाभेश शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान मे हो तो जातक दरिद्र होता है।

44. धनुलग्न के केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा गुरु से यदि छठे, आठवे या बारहवें स्थान मे हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

45. धनुलग्न में धनेश शनि अस्त हो, नीच राशि (मेष) में हो तथा धन स्थान एवं अष्टम स्थान मे कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता नहीं।

46. धनुलग्न में लाभेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तागत व पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्र होता है।

47. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा निर्बल होकर कहीं बैठा हो तथा अष्टम स्थान में कोई ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धन हानि का योग बनता है। अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है। फलतः सावधान रहें।

48. धनुलग्न में अष्टमेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत हो तथा शनि निर्बल हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

धनुलग्न और विवाह योग

1. चंद्रमा से 1/8/7/4/12 इन स्थानों में राहु तथा मंगल व शनि हो तो उस पुरुष की स्त्री का नाश होता है।
2. सप्तम भाव में मिथुन का मंगल हो तो व्यक्ति शौकीन, परस्त्रीगामी व कामान्ध होता है।
3. मिथुन राशि के सप्तम स्थान में मगल-शुक्र हों तो उस जातक की स्त्री की मृत्यु जलने से या घावों के सड़ने से होती है।
4. लग्न में चंद्रमा और शुक्र यदि शनि या मंगल से युक्त हो तथा पंचम भाव पर पाप ग्रह की दृष्टि हो तो वह स्त्री वंध्या होती।
5. धनुलग्न में शनि लग्नस्थ चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
6. धनुलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय भाव मे सूर्य हो और लग्नेश गुरु निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
7. धनुलग्न में शनि छठे हो, सूर्य अष्टम स्थान में हो एवं सप्तमेश बुध बलहीन हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
8. धनुलग्न में सूर्य, शनि एवं शुक्र साथ में कहीं भी बैठे हों, सप्तमेश बुध कमजोर हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. धनुलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि का हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
10. धनुलग्न में राहु या केतु हो, शुक्र, मिथुन, सिंह, कन्या, धनु (वंध्या) राशिगत हो तो जातक को विवाह विलम्ब से होता है तथा जातक को अपने जीवनसाथी से तृप्ति नहीं मिलती।

11. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहो से युक्त होकर बैठे हों तो निश्चित ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है. ऐसा जातक प्राय: अन्तर्जातीय विवाह करता है।

12. धनुलग्न में द्वितीयेश शनि वक्री हो अथवा द्वितीय स्थान मे कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

13. धनुलग्न में सप्तमेश बुध अस्त हो, सप्तम भाव में कोई वक्री ग्रह हो, अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह मे अवरोध आता है और विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

14. धनुलग्न में द्वितीयेश शनि मगल से परस्पर दृष्ट हो तो जातक का विवाह विलम्ब से होता है तथा ससुराल से खटपट रहती है।

15. धनुलग्न में राहु यदि मगल की राशि मे बारहवे स्थान मे हो तो ऐसी स्त्री को वैधव्य दु:ख भोगना पड़ता है

16. धनुलग्न में सप्तमेश बुध आठवें स्थान मे पाप ग्रहो से युत हो या पाप मध्य हो तो ऐसा जातक अपने जीवनसाथी की हत्या करता है।

17. धनुलग्न में सूर्य आठवें शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नित नूतन वस्त्र-अलंकार पहन कर परपुरुषों का सग करती है और कुल की मर्यादा को नष्ट कर देती है।

18. धनुलग्न में मगल आठवें हो तो ऐसी स्त्री मृगनयनी एव कुटिल स्वभाव की होती है। प्राय: प्रेम विवाह करती हुई, स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है।

19. धनुलग्न में सप्तम भाव में चंद्रमा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, सप्तमेश बुध पाप ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसा जातक अंतर्जातीय विवाह करता है।

20. धनुलग्न में सप्तमेश बुध के साथ शुक्र छठे स्थान मे हो तो ऐसा व्यक्ति सहवास के अयोग्य होता है अर्थात् व्यक्ति नपुंसक होता है।

21. धनुलग्न में शुक्र सप्तम भाव में हो तथा आठवें स्थान मे मगल या शनि हो तो ऐसी स्त्री कुल को कलक लगाने वाली, कई घरो मे निवास करती हुई अंत में वंध्या का जीवन व्यतीत करती है।

22. धनुलग्न में चद्रमा यदि (1/3/5/7/9/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष के समान कठोर स्वभाव वाली एव साहसिक प्रकृति की महिला होती है

23 धनुलग्न मे यदि सूर्य, मगल, गुरु, चंद्र, बुध व शुक्र बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थिति वश परपुरुष की अंकशायिनी बन सकती है।

24. धनुलग्न में चंद्रमा अष्टम स्थान में कर्क राशि का स्वगृही हो तो ऐसी कन्या बाझ होती है।
25. धनुलग्न मे चंद्रमा अष्टम स्थान मे कर्क राशि के बुध के साथ हो तो ऐसी स्त्री काकवंध्या होती है अर्थात् एक बार प्रसूता होती है।
26. धनुलग्न मे लग्नस्थ गुरु के साथ यदि चंद्रमा हो तो ''द्विभार्या योग'' बनता है। ऐसा जातक दो नारियो के साथ रमण करता है।
27. धनुलग्न में बुध सप्तम भाव मे शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक एक साथ में दो स्त्रियों से प्रेम रखता है अर्थात् विवाहित पत्नी के अतिरिक्त उसकी उपपत्नी भी होती है
28. धनुलग्न मे सप्तमेश बुध यदि द्वितीय या द्वादश भाव मे हो तो पूर्ण 'व्याभिचारी योग' बनता है। ऐसा पुरुष जीवन मे अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

❑❑❑

धनुलग्न एवं संतान योग

1. धनुलग्न में पंचमेश मंगल कर्क, वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक की पहल संतति कन्या होती है
2. धनुलग्न में पंचमेश मंगल आठवें हो तो जातक को अल्प संतति की प्राप्ति होती है।
3. धनुलग्न मे पंचमेश मंगल अस्त हो, पाप पीड़ित या पाप ग्रस्त होकर छठे आठवें या बारहवें स्थान मे हो तो व्यक्ति के पुत्र नही होता।
4. धनुलग्न मे पंचमेश मंगल लग्न (धनु राशि) में हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम पुत्र ही होता है।
5. धनुलग्न मे पंचमस्थ मंगल मेष राशि का हो तो जातक के तीन पुत्र होते हैं।
6. धनुलग्न में पंचमेश मंगल लग्न में हो तो एवं लग्नेश गुरु पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरों की संतान गोद लेकर उसे अपने पुत्र की तरह पालता है।
7. धनुलग्न के पंचम भाव मे मेष राशि होने से, अन्य कोई दुर्योग न हो तो जातक के विवाहोपरान्त शीघ्र संतति होती है।
8. धनुलग्न के पंचम भाव में राहु हो तथा राहु मंगल के द्वारा दृष्ट हो तो ऐसे जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता इसके पुत्र तो होता है पर कुल कालान्तर के बाद मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
9. धनुलग्न में पंचमेश मंगल पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो 'अनपत्य योग' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र संतान की प्राप्ति नहीं होती पर उपाय करने से दोष शांत हो जाता है।
10. धनुलग्न में गुरु कमजोर हो साथ मे पंचमेश मंगल और सप्तमेश बुध भी बलहीन हो तो 'अनपत्य योग' बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह पुत्र संतान की प्राप्ति नही होती पर उपाय करने से दोष शांत हो जाता है

11. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हों तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को **'सिजेरियन चाइल्ड'** कहते हैं

12. धनुलग्न मे पचमेश मगल कमजोर हो तथा राहु ग्यारहवें हो तो जातक के वृद्धावस्था में सतान होती है।

13. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है

14. धनुलग्न में लग्नेश गुरु द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश मगल पापग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो ऐसे व्यक्ति की पुत्र सतान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती है

15. धनुलग्न मे पंचमेश मगल बारहवें शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक संसार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

16. पचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि मे हो तो जातक को प्रथम सतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

17. धनुलग्न म पचमेश गुरु की सप्तमेश बुध के साथ युति हो तो जातक को प्रथम सतान के रूप म कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

18. सप्तम में राहु से युक्त सूर्य अथवा अष्टम भाव में राहु से युक्त गुरु और शुक्र हो, पंचम भाव पापयुक्त हो तो वह स्त्री निश्चय ही मृतवत्सा होती है।

19. समराशि (2 4, 6 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

20. पंचमेश व लग्नेश गुरु निर्बल हो, पंचम भाव में राहु हो तो जातक के यहां सर्पदोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

21. पचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान मे स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हों तो पद्मनामक **'कालसर्प योग'** के कारण जातक के यहा पुत्र सतान नही होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।

22. सूर्य अष्टम हो, पचम भाव मे शनि हो, पचमेश राहु स युत हो तो जातक को पितृदोष रहता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

23. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम मे सूर्य और बारहवे स्थान मे राहु या केतु हो तो 'वंशविच्छेद योग' बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़िया नहीं चलती।

24. धनुलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो **'वंशविच्छेद योग'** बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलतीं।

25. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति को **'इलाख्य नामक'** सर्पयोग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

26. धनुलग्न में पंचमेश पंचम षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'अनपत्य योग' बनता है ऐसे जातक का निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

27. पंचम भाव में मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

28. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो 'अनगर्भा योग' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण के योग्य नहीं होती।

29. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो 'अनगर्भायोग' बनता है। ऐसी स्त्री गर्भधारण करने के योग्य नहीं होती।

30. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो **''कुलवर्द्धन योग''** बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

31. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को ''केवल कन्या योग'' होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

धनुलग्न और राजयोग

1 यदि धनुलग्न अपने पूर्णांश पर हो जिसमे स्वगृही गुरु अपने उच्चाश पर विराजमान हो, उच्च या मीन का शुक्र चतुर्थ स्थान में हो और उच्च या कन्या का बुध दशम स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

2 उच्च का या मकर का मगल दूसरे या धन स्थान में हो, कुंभ का शनि पराक्रम या तीसरे स्थान मे हो, मीन का स्वगृही गुरु चतुर्थ में हो, उच्च का सूर्य पन्चम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

3. धन का गुरु स्वगृही लग्न में हो, उच्च का मगल स्वगृही शनि के साथ मकर के धन भाव में हो, स्वगृही सूर्य सिंह का भाग्य या नवम स्थान म हो और कन्या का बुध दशम मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

4. उच्च का शुक्र, स्वगृही मीन के गुरु के साथ चतुर्थ स्थान मे हो, उच्च का सूर्य मेष के स्वगृही मगल के साथ पंचम स्थान में हो, सप्तम मे मिथुन का स्वगृही बुध हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

5. सिंह का स्वगृही सूर्य भाग्य स्थान मे हो, उच्च का बुध कर्म या राज्य स्थान में हो और तुला में उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ लाभ स्थान में लग्न में स्वगृही गुरु हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

6. उच्च का मंगल धन स्थान में, उच्च का शुक्र चतुर्थ स्थान में, उच्च का सूर्य पंचम स्थान में, उच्च का बुध राज्य स्थान में और उच्च का शनि एकादश स्थान में हो तो जातक राजा के·समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

7. इसमें से कोई भी चार ग्रह अपने उच्च के उच्चाश पर होने से राजयोग करते है, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है.

8. स्वगृही शनि पराक्रम स्थान में, स्वगृही गुरु चतुर्थ स्थान में, स्वगृही मंगल पंचम स्थान मे स्वगृही बुध सप्तम स्थान में, स्वगृही सूर्य नवम स्थान में, स्वगृही बुध दशम स्थान और स्वगृही शुक्र एकादश में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है

9. इसमें से कोई चार या पांच या छह ग्रह स्वगृही पूर्णांश में होने से पूर्ण राजयोग करते हैं

10. चंद्रमा 8वें भाव में हो, कर्क राशि में सूर्य, शुक्र, शनि स्थित हो तो जातक विख्यात शिल्पादि कलाओं का जानकार पतला पर दृढ़ शरीर से युक्त अनेक संतानों से युक्त व निरन्तर संपत्तिवान रहता है।

11. चंद्रमा सूर्य को देखता हो तथा चंद्रमा बुध द्वारा देखा जाता हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

12. धनुलग्न में 10वें स्थान में शनि हो तो जातक धनवान, विद्वान, शूरवीर, उच्च पदासीन नेता व प्रधान पद प्राप्त करता है।

13. दशम भाव में शुभ राशि कन्या हो, दशमेश त्रिकोण मे हो अर्थात्, बुध की स्थिति 5, 9वें भाव मे हो अथवा वह उच्च का हो, सूर्य 10वें भाव में हो तो उत्तम राजयोग होता हैं

14. पूर्ण चंद्रमा हो उस पर समस्त ग्रहों की दृष्टि हो तो जातक उच्च शासनाधिकारी होता है।

15. पूर्ण चंद्रमा अपनी उच्च राशि वृष पर हो तथा उस पर शुभ ग्रहो की दृष्टि हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है।

16. गुरु कर्क राशि मे तथा चंद्रमा वृष राशि मे हो अर्थात् गुरु, चंद्र दोनों उच्च के हों तो जातक नेता होता है।

17. लग्न में शनि हो, गुरु 7वें भाव में हो और उस पर शुक्र की दृष्टि हो तो व्यक्ति राज्य में उच्च पद प्राप्त करता है।

18. दशम भाव में बुध हो तथा सुख स्थान में राहु या शनि अथवा राहु मंगल हों तो जातक राज्य सेवा में उच्च पद पाकर पतनोन्मुख होता है।

19. राहु व केतु केन्द्र मे हो और त्रिकोणपति से संबंध करे या राहु, केतु त्रिकोण में हो और केन्द्रेश से संबंध करें तो उत्तमोत्तम राजयोग होता है।

20. धनुलग्न में जन्म काल में तुला, धनु मीन व लग्न मे शनि बैठा हो तो जातक राजकुल में जन्म होता है और वह राजा होता है।

21. धनुलग्न में मीन का शुक्र यदि केन्द्र (1/4 7/10) में बैठा हो तो विद्या, कला, बहुगुणों से शोभित कामधेनु के बराबर भोग से पूर्ण, सुंदरी स्त्रियों के साथ विलास करने वाला, देश नगर देखने मे व्यस्त राजा होता है.

22. धनुलग्न में दसवें स्थान में बुध सूर्य हो और मगल राहु छठे स्थान मे हो तो इस राजयोग में उत्पन्न जातक मनुष्यों मे श्रेष्ठ होता है।

23 धनुलग्न में अपने घर का होकर सूर्य यदि नवम स्थान में हो तो उसका भाई नहीं जीता है। यदि कोई भाई जी भी गया तो राजा होता है।

24. धनुलग्न में दशम स्थान में गुरु, बुध, शुक्र, चद्रमा हो तो जातक का सब कार्य सिद्ध होता है और वह राजमान्य होता है।

25 धनुलग्न मे अपने उच्च के समीप रहकर सूर्य यदि त्रिकोण में हो तो नीच कुलोत्पन्न भी राजा होता है।

26. धनुलग्न में उच्चाभिलाषी मीन राशि का होता हुआ सूर्य यदि जन्म लग्न से त्रिकोण में हो तथा चद्रमा लग्न में और गुरु केन्द्रगत हो तो वह बहु रत्न पूर्ण पृथ्वी का पालन करता है।

27. धनुलग्न में लग्न से चतुर्थ स्थान मे शुक्र और दशम में मगल सूर्य शनैश्चर के साथ हो तो वह निश्चित ही राजा होता है।

28. धनुलग्न में धन का गुरु, तुला राशि में शनि चंद्रमा से युक्त और मेष का सूर्य लग्न मे हो, तो कीर्तिमान राजयोग होता है।

❑❑❑

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में

10	9	8	7
11	सू.	6	
12			5
2	3	4	
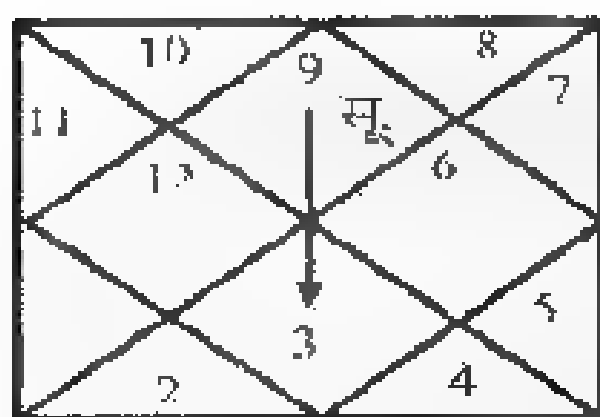
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक एवं शुभ फलदायक है सूर्य यहां प्रथम स्थान में धनुराशि का होगा। ऐसा जातक आत्मविश्वासी, परिश्रमी, पराक्रमी, उद्यमी-उत्साही एव प्रबल महत्त्वाकांक्षी होता है. जातक ऊंचे लम्बे कद, हृष्ट-पुष्ट शरीर का स्वामी होता है। जातक के शरीर को वात पित्तादि विकार पीड़ित करते रहेंगे।

दृष्टि—लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः भार्या, पुत्र, बन्धु बान्धव के विषय में मन में विकलता रहेगी।

निशानी—जातक का जन्म सूर्योदय के समय होगा तथा उससे शरीर के दायें भाग मे सिर से लेकर भुजा तक लाल रंग का निशान होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति लग्न स्थान मे होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 के मध्य) होता है। भाग्येश व अष्टमेश की युति लग्न स्थान में है। जहा सूर्य मित्र राशि एव चंद्रमा सम राशि में होगा। ऐसा जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला और उद्विग्न (विकल) अंगों वाला होगा
2. **सूर्य+मंगल**—जातक महान भाग्यशाली, राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। प्रथम स्थान पर धनु राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान बड़ा व्यापारी होगा। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। बुध सप्तम भाव में स्थित अपनी राशि को देखेगा। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा एवं अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

4. **सूर्य+गुरु**—गुरु के कारण यहां 'हंस योग' बनता है। भाग्येश और लग्नेश की युति से व्यक्ति राजगुरु के पद को प्राप्त करता हुआ, धन, वैभव व समृद्धि को प्राप्त करता है।

5. **सूर्य+शुक्र**—जातक के भाग्योदय में रुकावट आयेगी, संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी

6. **सूर्य+शनि**—धनुलग्न के प्रथम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः धनेश, पराक्रमेश शनि एवं भाग्येश सूर्य की युति होगी। सूर्य यहां मित्र स्थान में एवं शनि सम राशि में है। जातक स्वयं के पराक्रम व पुरुषार्थ से धन अर्जित करेगा परन्तु पिता की मृत्यु के बाद ही जातक की पुरुषार्थ रंग लायेगा।

7. **सूर्य+राहु**—भाग्योदय में बाधा रुकावटें आयेंगी।

8. **सूर्य+केतु**—जातक यशस्वी होगा तेजस्वी होगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में

सू. 10 9 8 7 11 12 6 1 5 3 4 2
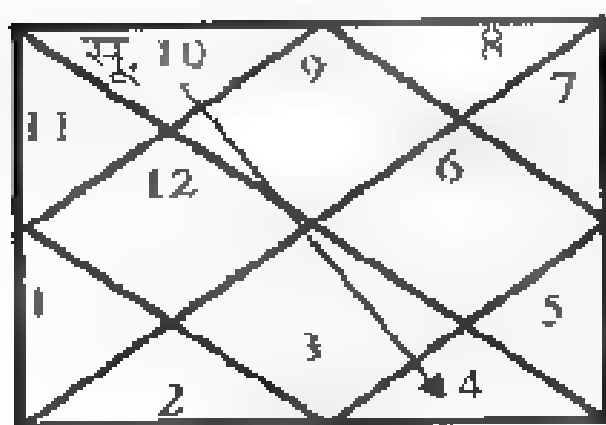
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां द्वितीय स्थान में मकर (शत्रु) राशि का होगा। जातक धनी होगा। उसे कुटुम्ब व भाग्य का सुख मिलता रहेगा। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से राज-दरबार में उत्तम पद को प्राप्त करता है।

दृष्टि—द्वितीयस्थ सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होता है।

निशानी—जातक को मुख रोग सम्भव है। जातक राजा (कोर्ट) से दण्डित हो सकता है।

दशा—सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दूसरे स्थान मे होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय से पूर्व (4 से 6 के मध्य) होता है। भाग्येश+अष्टमेश की युति मकर राशि मे है। जहा सूर्य शत्रु क्षेत्री होगा। चद्रमा सम राशि में होगा जातक धनवान होगा तथा उसकी वाणी ओजस्वी होगी।
2. **सूर्य+मगल**– जातक महाधनी होगा। जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र के जन्म के बाद होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न मे सूर्य भाग्येश होगा। द्वितीय स्थान मे मकर राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री होगा। यहा बैठकर दानो ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान एव व्यापारी होगा। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा ऐसा जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक की आमदनी के जरिए दो तीन प्रकार के रहेंगे।
4. **सूर्य+गुरु**–यहा गुरु नीच का होगा पर सूर्य के साथ होने से व्यक्ति पुरोहिताई एवं तंत्र-मंत्र से धन कमायेगा
5. **सूर्य+शुक्र**–धन प्राप्ति के संसाधनों में लगातार संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।
6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश+धनेश, पराक्रमेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां स्वगृही है व सूर्य शत्रु क्षेत्री है। फलतः जातक धनवान एव भाग्यशाली होगा पिता की मृत्यु के बाद ही जातक धनवान होगा
7. **सूर्य+राहु**–धन के घड़े मे भारी छेद, धन आयेगा व खर्च होता चला जायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सघर्ष की स्थिति रहेगी

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

सू. 10 9 8 7 11 12 6 1 5 3 2 4
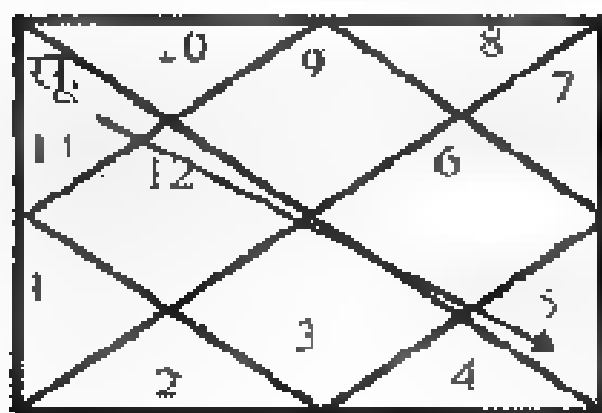
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक एव शुभ फलदायक है। सूर्य यहा तृतीय स्थान मे कुभ (शत्रु) राशि मे होगा। ऐसा जातक परम पराक्रमी, प्रतापी व तेजस्वी होता है, ऐसे जातक कष्ट दुःख

व सन्घर्ष से नहीं घबराते। सहोदर भ्राता के व्यवहार से जातक व्याकुल रहता है।

दृष्टि लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्यस्थान अपने ही घर (सिंह) राशि पर होगी। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी परन्तु उसमें विवाद रहेगा

दशा–सूर्य की दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं पराक्रम बढ़ेगा

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति तीसरे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या की रात्रि 2 से 4 के मध्य होता है. भाग्येश+अष्टमेश की युति कुंभ राशि में होने से जातक महान पराक्रमी होगा तथा समाज के द्वारा अथवा राजा (शासन) के द्वारा सम्मानित होगा।
2. **सूर्य+मंगल** जातक महान पराक्रमी होगा उसके अनेक भाई व शुभचिंतक मित्र होंगे। परन्तु जातक के छोटे भाई की अकाल मृत्यु होगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा तृतीय स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। 26 वर्ष की आयु में जातक की किस्मत जरूर चमकेगी। जातक बुद्धिमान तथा समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा
4. **सूर्य+गुरु**–यहां गुरु होने से व्यक्ति कर्मकाण्ड व पण्डिताई में निपुण होता है। जातक राजा का मंत्री होता है।
5. **सूर्य+शुक्र**–भाइयों कुटम्बीजनों के मध्य मनमुटाव रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के तृतीय स्थान में सूर्य+शनि युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। फलतः जातक पराक्रमी होगा उसे बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। बड़े भाई की मृत्यु के बाद जातक की किस्मत चमकेगी
7. **सूर्य+राहु**–भाइयों में वैमनस्य रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**–जातक यशस्वी होगा। मित्रों का साथ रहेगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
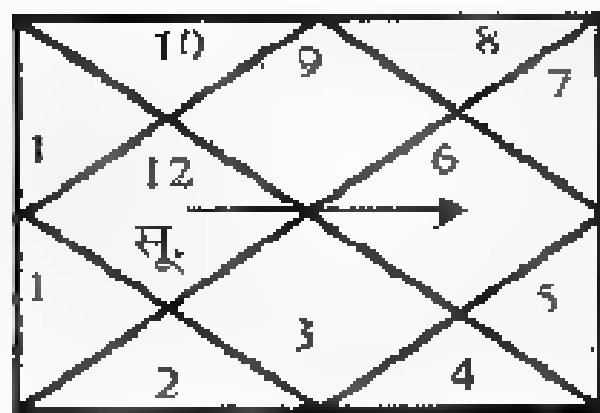
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोगकारक शुभ फलदायक है। सूर्य यहां चतुर्थ स्थान मे मीन (मित्र) राशि का होगा। जातक को जमीन-जायदाद माता-घर, आध्यात्म व भाग्योदय का सुख मिलेगा। जातक अपनी खुद का भव्य भवन अपनी स्वयं की कमाई से बनायेगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत सूर्य की दृष्टि दशम स्थान (कन्या राशि) पर होने से जातक को पिता, राज्य शासन से धन, यश व पद की प्राप्ति होगी।

दशा—सूर्य की दशा-अतर्दशा मे जातक की नौकरी लगेगी व उसका भाग्योदय होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोज संहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति चौथे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि को 12 से 2 के बजे मध्य होता है। भाग्येश सूर्य व अष्टमेश चंद्र की युति यहा केन्द्र में हैं। ऐसे जातक के चेहरे पर सदा हंसी व प्रसन्नता रहती है। जातक के पास उत्तम वाहन होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—जातक के पास भौतिक सुविधाएं पूर्ण रूप से बनी रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। चतुर्थ स्थान मे मीन राशिगत यह युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहा नीच राशि का होगा। दोनो ग्रह यहा बैठकर दशम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध की उच्च राशि होगी फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक की किस्मत का सितारा 26 वर्ष की आयु में चमकेगा।। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—यहां गुरु के कारण 'हंस योग' बनेगा। ऐसा जातक राजगुरु के पद को प्राप्त करता हुआ, धन-वैभव को प्राप्त करता है।
5. **सूर्य+शुक्र**—भौतिक ससाधनो की प्राप्ति हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

6. **सूर्य+शनि**—धनुलग्न के चतुर्थ स्थान मे सूर्य+शनि की युति वस्तुत. भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां मीन शत्रु राशि में एवं सूर्य मित्र राशि मे होगा। जातक के माता–पिता बीमार रहेगे। जातक धनवान होगा एवं सभी प्रकार की सुख सुविधाओ से युक्त जीवन जीयेगा।

7. **सूर्य+राहु**—जातक को माता-पिता का सुख कम मिलेगा.

8. **सूर्य+केतु**—जातक को भौतिक सुखों संसाधनों की प्राप्ति अचानक होगी।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
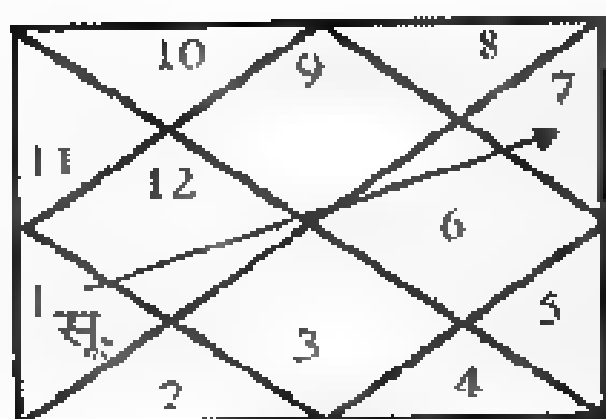
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होन से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां पचम भाव में मेष (उच्च) राशि में होगा मेष राशि के 10 अंशो तक सूर्य परमोच्च का होगा। यहा सूर्य शुभ व उन्नतिकारक है। जातक राजा व राजा के समान उच्च वैभव से युक्त, उच्च शिक्षा से युक्त होगा।

दृष्टि—पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को व्यापार व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा।

निशानी—जातक प्रथम पुत्र के विषय मे सतप्त रहेगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे उत्तम संतति व सर्वत्र सफलता मिलेगी.

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चद्र+सूर्य युति पांचवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 12 बजे के मध्य होता है अष्टमेश चद्र व भाग्येश सूर्य पंचम भाव में होने पर सूर्य उच्च का होगा। ऐसा जातक परम महत्त्वाकांक्षी होगा जातक उच्च शिक्षित व राज्याधिकारी होगा। जातक की संतति भी शिक्षित व तेजस्वी होगी।

2. **सूर्य+मंगल**—'किम्बहुना योग' के कारण जातक का पराक्रम राजा से बढ़कर होगा उसकी संतति भी तेजस्वी होगी। जातक शिक्षित होगा। जातक को आध्यात्मिक ऊर्जा की प्राप्ति होती रहेगी

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। पंचम स्थान में 'मेष राशिगत' यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। यहां पर यह युति खिलेगी। दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसा जातक बुद्धिमान, शिक्षित, प्रज्ञावान होगा। ईश्वर कृपा से एक तेजस्वी पुत्र अवश्य होगा। कन्या संतति भी होगी। जातक भाग्यशाली होगा। सरकारी क्षेत्र का राजनीति में जातक का दबदबा रहेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ लग्नेश गुरु जातक को प्राचीन शास्त्रों का जानकार बनाता है एवं राजगुरु की पदवी दिलाता है।

5. **सूर्य+शुक्र**–जातक को विद्या अध्ययन में रुकावटें आयेंगी।

6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के पंचम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी. शनि यहां नीच के सूर्य के साथ होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा। जातक की भाइयों से कम बनेगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक की उन्नति होगी।

7. **सूर्य+राहु**–भृगुसूत्र के अनुसार 'राहु केतु युते सर्पशापात सुतक्षयः' जातक को अपुत्र का योग बनता है पर पूजा-पाठ करने पर संतान होगी।

8. **सूर्य+केतु**–संतति में बाधा संभव है।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में
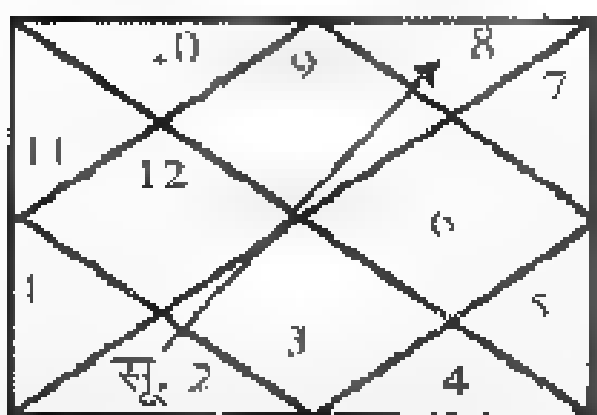
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है. सूर्य यहां छठे स्थान में वृष (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य की यह स्थिति 'भाग्यभंग योग' बनाती है। ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। भृगुसूत्र के अनुसार 'जातिशत्रु बाहुल्यम्' जातक के अपनी जाति में ही उसके शत्रु बहुत होंगे।

दृष्टि–छठे स्थान में स्थित सूर्य की दृष्टि द्वादश भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा तथा यात्राएं बहुत करेगा।

निशानी–जातक के जन्म समय पर पिता घर से बाहर होगा।

दशा–सूर्य की दशा, अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा–**'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति सातवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश चंद्रमा उच्च का, सूर्य के साथ होने से 'सरल नामक विपरीत राजयोग' बना। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा। परन्तु दुर्घटना का भय या शत्रु द्वारा नुकसान पहुंचने का योग है।
2. **सूर्य+मंगल–**मंगल के कारण 'संततिहीन योग' अथवा 'विद्याबाधा योग' बनेगा। प्रारम्भिक विद्या में बाधाएं आयेंगी
3. **सूर्य+बुध–**'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। छठे स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देखेंगे। सूर्य के छठे जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'विवाहभंग योग' तथा 'राजभंग योग' भी बनेगा। फलतः यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। भाग्योदय हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु–**गुरु के छठे जाने से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' भी बनेगा ऐसा जातक प्राचीन मंत्र-तंत्र विद्या का जानकार होता है पर अपनी प्रतिष्ठा बराबर नहीं जमा पाता।
5. **सूर्य+शुक्र–**शुक्र के कारण 'हर्ष नामक' विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा, पर शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।
6. **सूर्य+शनि–**धनुलग्न के छठे स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। जातक को धन कमाने हेतु प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु एवं भाग्योदय हेतु बहुत परेशानी उठानी पड़ेगी। पिता के जीवित रहते जातक का भाग्योदय नहीं होगा।
7. **सूर्य+राहु–**राहु यहां नेत्र रोग एवं भाग्योदय में कष्ट देगा।
8. **सूर्य+केतु–**केतु नेत्रों का ऑपरेशन करायेगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक है। शुभ फलदायक है। सूर्य यहां सप्तम स्थान में मिथुन (सम) राशि में होगा।
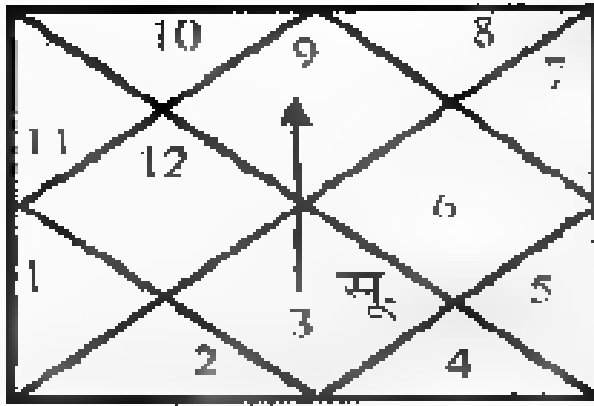
सप्तमस्थ सूर्य को प्रायः पत्नी के लिए अच्छा नहीं माना गया परन्तु यहां सूर्य अपनी राशि से एकादश स्थान में होने से स्त्री नौकरी व्यवसाय का सुख देता है जातक राजनीति, शासन-प्रबंधन के क्षेत्र में आगे बढ़ता है।

दृष्टि—सूर्य की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि) पर होने से जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में सफलता निश्चित रूप से मिलेगी।

निशानी—जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक की पत्नी अभिमानी घमण्डी होगी।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा एवं इच्छित उन्नति मिलेगी सूर्य की दशा में बुध व शनि के अंर्तदशा में जातक की तबियत खराब होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा** -'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चद्र+सूर्य की युति सातवे स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आषढ़ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय साय 6 बजे के लगभग होता है। अष्टमेश चंद्रमा व भाग्येश सूर्य यहां केंद्र मे है। जातक की पत्नी से कम निभेगी। वाहन दुर्घटना से अंग-भग होने का भय रहेगा
2. **सूर्य+मंगल**—जातक का गृहस्थ सुख उत्तम परन्तु उसकी पत्नी उग्र स्वभाव की झगड़ालू होगी।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न मे सूर्य भाग्येश होगा। सातवे स्थान पर मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां स्वगृही होगा फलतः 'भद्र योग' एवं 'कुल दीपक योग' की सृष्टि होगी यहा बैठकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक परम बुद्धिमान, धनवान होगा। विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा। जातक की पत्नी तेज स्वभाव की होगी। जातक राजा के समान महान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—यहा गुरु होने से 'केसरी योग' एव 'कुलदीपक योग' बनता है। ऐसा जातक राजगुरु के पद को प्राप्त करता है तथा राजनेताओ को मार्गदर्शन देता है।

5. **सूर्य+शुक्र** -जातक के पेट में तकलीफ, आंतों में सूजन एवं कब्ज की बीमारी गर्मी की शिकायत रहेगी।
6. **सूर्य+शनि**—धनुलग्न के सातवें स्थान में मिथुन राशिगत सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। सूर्य एवं शनि दोनों की दृष्टि लग्न स्थान पर होने से जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। जातक पराक्रमी होगा, जातक का ससुराल धनाढ्य होगा, फिर भी पत्नी से विचार कम मिलेंगे
7. **सूर्य+राहु**—पत्नी से वैमनस्य विस्फोटक होगा, तलाक सम्भव है.
8. **सूर्य+केतु**—उदर या गुदा के लिए शल्य चिकित्सा सम्भव है

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में

10	9	8	7
11	12	6	5
1	3	2	4 सू.
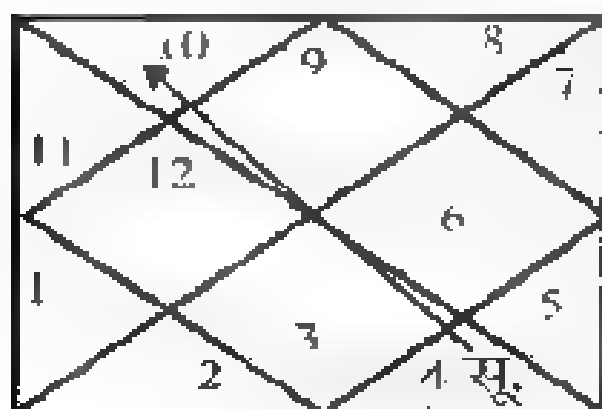
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां अष्टम स्थान में कर्क (मित्र) राशि में होगा। सूर्य की इस स्थिति में 'भाग्यभंग योग' बनेगा। सूर्य अपनी राशि से बारहवें होने के कारण जातक को भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। यदि यहां गुरु बलवान न हो तो जातक का पिता छोटी उम्र में ही गुजर जायेगा। कुटुम्बी मददगार नहीं होंगे।

दृष्टि— अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन स्थान (मकर राशि) पर होने से जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। जातक अपने बाहुबल से रुपया कमायेगा

निशानी—जातक की दाईं आंख नकली होगी एवं वाणी कड़वी होगी

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा कष्टदायक रहेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति आठवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को सायंकाल 4 से 6 बजे के मध्य होता है, अष्टमेश चंद्रमा अष्टम भाव में स्वगृही होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। जातक धनी मानी, अभिमानी होगा पर शत्रु द्वारा चोट या वाहन दुर्घटना से भय होने का योग बनता है।
2. **सूर्य+मंगल**—मंगल नीच का होकर सूर्य के साथ होने से वैवाहिक समस्या या राजकीय अधिकारियों द्वारा परेशानियां आयेंगी।

3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। अष्टम स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य आठवें आने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध आठवें आने से 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बना। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान तथा भाग्यशाली होगा परन्तु इसे भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—यहां सूर्य के साथ गुरु उच्च का होगा तथा 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक राजगुरु का पद प्राप्त करेगा पर संघर्ष बहुत रहेगा।

5. **सूर्य+शुक्र**—शुक्र सूर्य के साथ होने से 'हर्ष नामक' विपरीत राजयोग बनेगा। जातक के साथ दुर्घटना हो सकती है। टांग में चोट लग सकती है।

6. **सूर्य+शनि**—धनुलग्न के आठवें स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' की क्रमशः सृष्टि होगी। ऐसे जातक को धन कमाने हेतु, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु एवं भाग्योदय हेतु बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ेंगी। जातक के शत्रु बहुत होंगे। पिता पुत्र की नहीं बनेगी।

7. **सूर्य+राहु**—यहां पर राहु शत्रुओं द्वारा हानि पहुंचायेगा।

8. **सूर्य+केतु**—यहां केतु अनहोनी दुर्घटना करा सकता है, पर बचाव होगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में

10 9 8 7 11 12 6 1 5 सू. 3 2 4
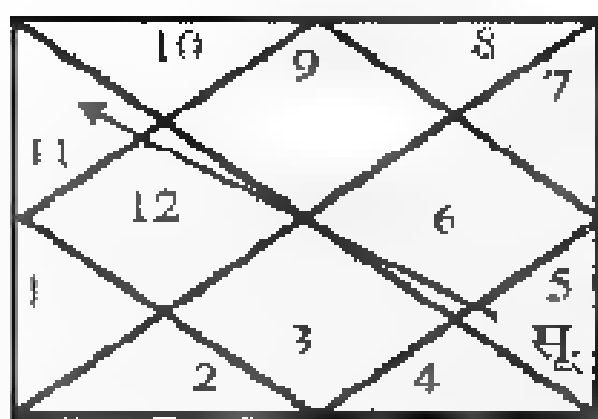
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां नवम स्थान में सिंह राशि का होकर स्वगृही होगा। सिंह राशि के 20 अंशों तक सूर्य मूलत्रिकोण का कहलायेगा। ऐसे जातक का भाग्य बहुत बलवान होगा। जातक का पिता प्रतिष्ठित, धनवान एवं दीर्घायु वाला होगा। जातक अपने भाग्यबल से खूब धन कमायेगा।

दृष्टि—नवमस्थ सूर्य की दृष्टि तृतीय स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। ऐसे जातक की छोटे भाइयों के साथ पटेगी। जातक कुटम्बीजनों का सहायक एवं अच्छा मित्र साबित होगा।

निशानी—जातक यात्रा का शौकीन होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। किस्मत खुलेगी एवं धन की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति नवम स्थान मे होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। यहां भाग्येश सूर्य स्वगृही होकर अष्टमेश चंद्रमा के साथ भाग्य मे वृद्धि करायेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धर्मात्मा व परोपकारी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—मंगल की युति से राजयोग बनेगा। जातक के पास बड़ी जमीन-जायदाद होगी।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। नवम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा। फलतः व्यक्ति बुद्धिशाली होगा। बलवान भाग्येश की दशमेश के साथ युति होने के कारण जातक के भाग्य का सितारा 26 वर्ष की आयु मे चमकेगा। यहां पर यह युति खिलेगी। जातक पराक्रमी होगा तथा उसे मित्र, परिजनों की मदद मिलती रहेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु होने से जातक राजगुरु की उच्च पदवी या राजा के तुल्य उच्च पद को प्राप्त करेगा। जातक धार्मिक होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—परस्पर शत्रु ग्रहों की युति से भाग्योदय हेतु संघर्ष रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**—धनुलग्न मे नवम स्थान में स्वगृही सूर्य के साथ की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ होगी। ऐसे जातक का पिता सम्पन्न होगा, परन्तु जातक की पिता के साथ कम पटेगी। भाइयों से भी कम निभेगी। जातक का सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**—ऐसे जातक अति उत्साही होते हैं जिसके कारण कई बार काम बिगड़ जाता है।
8. **सूर्य+केतु**—जातक यशस्वी जीवन जीयेगा। उसे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहेगी।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
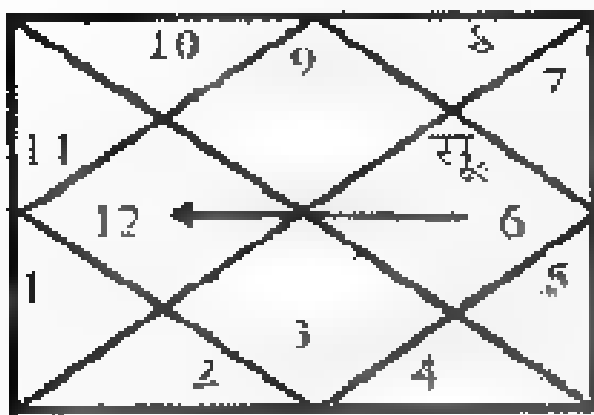
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां दशम स्थान में कन्या (सम) राशि में होगा। सूर्य यहां 'दिग्बली' होगा। ऐसा जातक सरकारी, अर्ध सरकारी नौकरी में उच्च पद प्राप्त करेगा। यदि जातक खुद का व्यापार करेगा तो भी उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। जातक को मकान, वाहन, भवन का पूर्ण सुख मिलेगा।

दृष्टि–दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी, फलतः जातक की माता थोड़ी बीमार रहेगी।

निशानी–जातक को पिता व राजनैतिक सहयोग मिलता रहेगा।

दशा–सूर्य की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति व भाग्योदय होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दशम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 बजे के आस पास होता है। अष्टमेश चंद्र एवं भाग्येश सूर्य के केन्द्र में होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे, जातक को वाहन दुर्घटना से अंग-भंग होने का भय बना रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–मंगल के यहां 'दिग्बली' होकर सूर्य के साथ होने से जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करके विदेश जायेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। दशम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां उच्च का होगा, जिसके कारण क्रमशः 'भद्र योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। उसके एक से अधिक वाहन होंगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। राज्य (सरकार) में उसका दबदबा रहेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–यहां सूर्य के साथ गुरु 'केसरीयोग' एवं कुलदीपक योग की सृष्टि करेगा। जातक राजगुरु के उच्च पद को प्राप्त करेगा। जातक को तंत्र-मंत्र की पूरी जानकारी होगी।

5. **सूर्य+शुक्र**—जातक का सरकारी नौकरी प्राप्ति हेतु सघर्ष करना पड़ेगा। जातक के पास एकाधिक वाहन होगे।
6. **सूर्य+शनि**—धनुलग्न के दशम स्थान मे सूर्य+शनि की युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। जातक के पास एक से अधिक मकान होगे। सरकारी नौकरी या काम काज में विवाद रहेगा। जातक की उन्नति धीमी गति से हागी। जातक को ज्यादा फायदा व्यापार मे रहेगा।
7. **सूर्य+राहु**—राहु दशम स्थान में राज्य सुख में बाधक है
8. **सूर्य+केतु**—केतु दशम स्थान में सूर्य के साथ होने से जातक सरकारी केस मे उलझेगा।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
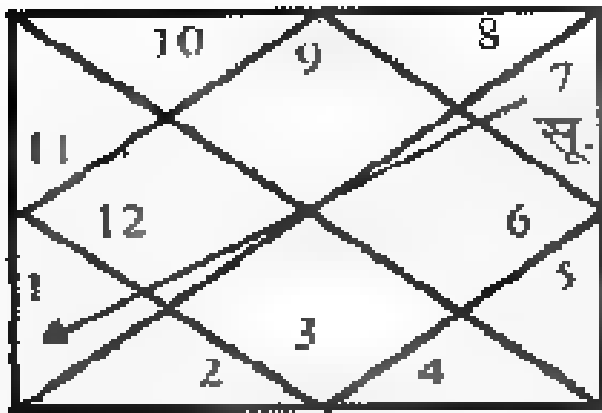
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहां एकादश स्थान में तुला राशि में नीच का होगा। तुला राशि के दस अंशो तक सूर्य परम नीच का होता है। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलती है। जातक पिता से भी खूब आगे बढ़ता है। जातक खूब अच्छी विद्या प्राप्त करेगा। जातक व्यापार से भी खूब धन कमायेगा। जातक को भाग्योदय में सफलता थोड़े सघर्ष व परिश्रम के बाद मिलती है

दृष्टि—एकादश भावगत सूर्य की दृष्टि पचम स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक के पुत्र सतति एकाध होगी पर उससे चिता रहेगी।

निशानी—जातक का बड़े भाई के साथ प्रेम रहेगा। मित्र अच्छे होगे। एक हजार राजयोग नष्ट होगे।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी। भाग्योदय करायेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति एकादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की सुबह 10 से 12 के मध्य होगी। यहां भाग्येश सूर्य नीच का होकर अष्टमेश से युति करेगा। फलत: जातक का राजयोग नष्ट होगा। जातक को कोर्ट-कचहरी से परेशानी होगी।

2. **सूर्य+मंगल**—यहा मगल साथ होने पर जातक अनैतिक कार्यों से धन कमायेगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा एकादश स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहा नीच राशिगत होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह पचम भाव को देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। जातक की सतान भी शिक्षित होगी, जातक व्यापार के द्वारा धन कमायेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु होने से जातक 'राजगुरु' के पद को प्राप्त करेगा तथा तत्र-मत्र व गूढ़ विद्याओ का ज्ञाता होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—शुक्र की युति के कारण 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **सूर्य+शनि**—धनुलग्न के एकादश स्थान में सूर्य+शनि की युति 'नीचभग राजयोग' बनायेगी। जातक राजा के समान पराक्रमी वैभवशाली होगा। स्त्री संतान सुख उत्तम होगा, पर पिता से विचार नहीं मिलेंगे पिता जब तक जीवित रहेगा, जातक स्वतत्र धनार्जन नहीं कर पायेगा।
7. **सूर्य+राहु**—जातक की चलती फैक्टरी बद होगी। सरकारी कष्ट आयगा।
8. **सूर्य+केतु**—जातक की सरकारी नौकरी नहीं लग पायेगी।

धनुलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में
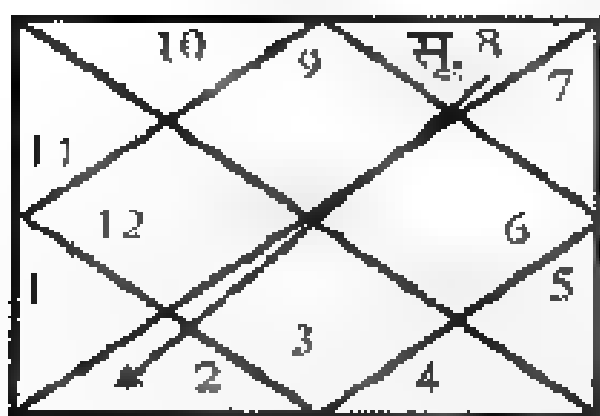
धनुलग्न में सूर्य भाग्येश है। लग्नेश गुरु का मित्र होने से यह पूर्ण राजयोग कारक तथा शुभ फलदायक है। सूर्य यहा व्यय भाव मे वृश्चिक (मित्र) राशि का होगा। सूर्य की यह स्थिति 'भाग्यभग योग' बताती है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी सघर्ष करना पड़ेगा। जातक फालतू कार्यों में धन व शक्ति का अपव्यय करेगा। रोग व शत्रु जातक को पीड़ा पहुंचाते रहेंगे। जातक का भाग्य ज्यादा निर्बल नहीं होगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत सूर्य की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी जिससे शत्रु पराजित होंगे। रोगों का शमन होगा।

निशानी—जातक के पिता की मृत्यु छोटी उम्र में हो जायेगी।

दशा—सूर्य की दशा-अतर्दशा थोड़ी कष्टदादायक होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य युति द्वादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या की प्रातः 8 से 10 बजे के मध्य होगा। अष्टमेश चन्द्रमा भाग्येश सूर्य के साथ व्यय भाव में जाने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। जातक धनी, मानी अभिमानी होगा। यात्रा में दुर्घटना या विष भोजन का भय बना रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–मंगल के कारण यहां 'विमल नामक विपरीत राजयोग' बनेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। द्वादश स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली एवं भाग्यशाली होगा। सूर्य बारहवें होने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध बारहवें होने से 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि होगी। फलतः ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–गुरु के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' बनेगा। ऐसा जातक तंत्र-मंत्र का जानकार होता हुआ भी अपने आप को स्थापित नहीं कर पायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–शुक्र के कारण यहां 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक धनवान होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–धनुलग्न के बारहवें स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को धन कमाने, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु एवं भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को यात्रा में नुकसान होगा। दुर्घटना भी हो सकती है।
7. **सूर्य+राहु**–जातक को यात्रा में नुकसान होगा। नेत्र पीड़ा संभव है।
8. **सूर्य+केतु**–जातक को पूर्वाभास होगा। जातक के सपने सच होंगे।

❑❑❑

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में
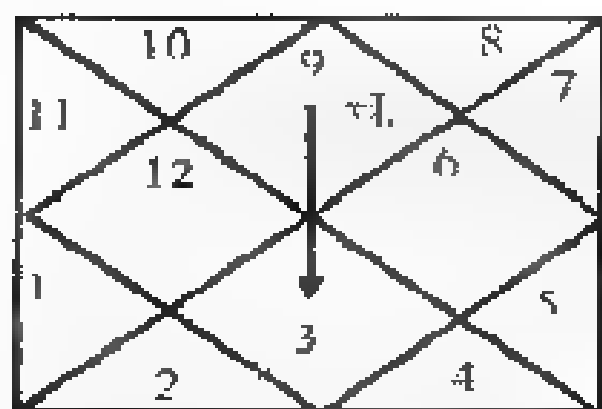
धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहा प्रथम स्थान में धनु (सम) राशि मे होगा। ऐसे जातक का शरीर स्वस्थ व सुन्दर होगा। जातक का मन-मस्तिष्क अस्थिर स्वभाव का रहेगा जातक थोड़ा अधैर्यशाली व क्रोधी होगा ऐसे जातक बौद्धिक परिश्रम से, कल्पना के माध्यम से आगे बढ़ेंगे। जातक यदि व्यापारी होगा तो उसके व्यापार में उतार-चढ़ाव आता रहेगा

दृष्टि—चंद्रमा की दृष्टि सप्तम स्थान पर होने से पत्नी सुन्दर, सभ्य व सुशील मिलेगी।

निशानी—ऐसे जातक न्यायप्रिय तो होते हैं पर किसी के सच्चे मित्र साबित नहीं हो सकते।

दशा—चद्रमा की दशा अंतर्दशा नेष्ट फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न मे चंद्र+सूर्य की युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। भाग्येश व अष्टमेश की युति लग्न स्थान मे है। जहां सूर्य मित्र राशि एव चद्रमा सम राशि मे होगा। ऐसा जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला और उद्विग्न (विकल) अंगों वाला होगा।
2. **चंद्र+मगल**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में मगल पचमेश एव व्ययेश होने से शुभ है। चद्रमा यहा अष्टमेश होने से पापी है चद्र+मंगल की यह युति

वस्तुतः अष्टमेश की पंचमेश+व्ययेश के साथ युति कहलायेगी। जो मिश्रित फलकारी है। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि), सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी तथा दीर्घजीवी होगा। जातक को भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति होगी पर जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

3. **चंद्र+बुध**–जातक का वैवाहिक जीवन मानसिक तनाव देने वाला साबित होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। भोजसंहिता के अनुसार धनुलग्न के प्रथम स्थान में गुरु+चंद्र की युति धनु राशि में होगी यह युति वस्तुतः अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान, सप्तम स्थान एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। गुरु यहां स्वगृही होने से बलवान है। यहां 'हंस योग', 'कुलदीपक योग', 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हो रही है। फलतः जातक को उत्तम संतान सुख एवं विद्या क्षेत्र में उपलब्धि मिलेगी विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक की गिनती समाज के विशिष्ट भाग्यशाली एवं प्रतिष्ठित लोगों में होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–जातक के अंग भंग होने का योग बनता है
6. **चंद्र+शनि**–जातक धनी होगा पर धन प्राप्ति हेतु उसे बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।
7. **चंद्र+राहु**–शारीरिक दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **चंद्र+केतु**–जातक के जीवन में शल्य चिकित्सा जरूर होगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में
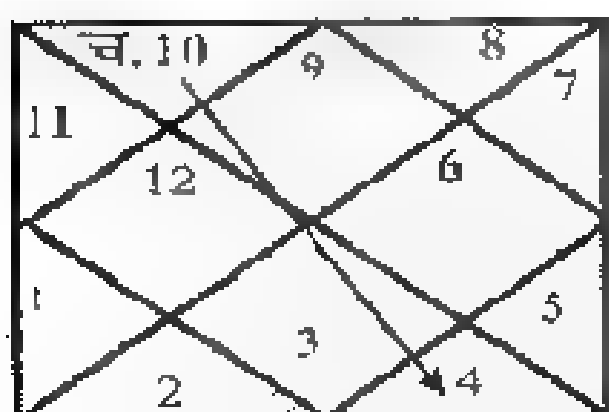
धनुलग्न में अष्टमेश है फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां द्वितीय स्थान में मकर (सम) राशि का होगा। जातक वाकपटु होगा एवं उसकी वाणी विनम्र होगी। जातक वकील, प्रोफेसर, अभिनेता, गायक के रूप में ज्यादा प्रसिद्धि प्राप्त करेगा। जातक को कुटुम्ब सुख कमजोर मिलेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अपने घर आठवें भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसा जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

निशानी—मातृकारक चद्रमा माता के घर से एकादश स्थान पर होने से माता द्वारा जातक को लाभ मिलेगा। माता जातक से अत्यधिक लगाव रखेगी

दशा—चंद्रमा मारक स्थान मे होने से अशुभ फल देगा। चद्रमा में शनि या बुध का अतर खराब जायेगा। जीवन के कटु अनुभव इस समय मिलेंगे।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दूसरे स्थान मे होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय से पूर्व (4 से 6 के मध्य) होता है। भाग्येश+अष्टमेश की युति मकर राशि में है। जहां सूर्य शत्रु क्षेत्री होगा। चंद्रमा सम राशि मे होगा। जातक धनवान होगा तथा उसकी वाणी ओजस्वी होगी।
2. **चद्र+मंगल**—यहा द्वितीय स्थान मे दोनो ग्रह मकर राशि में होंगे। मंगल यहां उच्च का होगा। धन स्थान में योग कारक ग्रह के उच्च का होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि) अष्टम भाव (कर्क राशि) एव भाग्य भवन (सिह राशि) पर होगी। फलतः जातक महाधनी तथा पुत्रवान होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक भाग्यशाली होगा परन्तु आर्थिक भाग्योदय प्रथम सतति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**—गुप्त शत्रु बहुत होंगे जो परेशान करते रहेंगे।
4. **चंद्र+गुरु** आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के द्वितीय स्थान में गुरु+चंद्र की युति 'मकर राशि' में होगी। यहां वस्तुतः अष्टमेश चद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि छठे स्थान, आठवे स्थान एवं दशम भाव पर होगी। गुरु नीच राशि पर भी होगा। फलतः जातक की लंबी आयु होगी। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। शत्रुओं का नाश भी होगा तथा राजपक्ष में शुभ घटना भी घटित हो सकती है।
5. **चंद्र+शुक्र**—जातक की वाणी दूषित होगी ऐसा जातक जो बोलना चाहता है नहीं बोल पायेगा।
6. **चंद्र+शनि**—शनि स्वगृही होने से जातक धनी होगा पर बीमारी में पैसा खर्च होता चला जायेगा।
7. **चद्र+राहु**—यह युति धन के धड़े में भारी छेद के समान है, धन की बरकत नहीं होगी।
8. **चद्र+केतु**—धन एकत्रित करने के सभी प्रयास विफल होंगे।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में
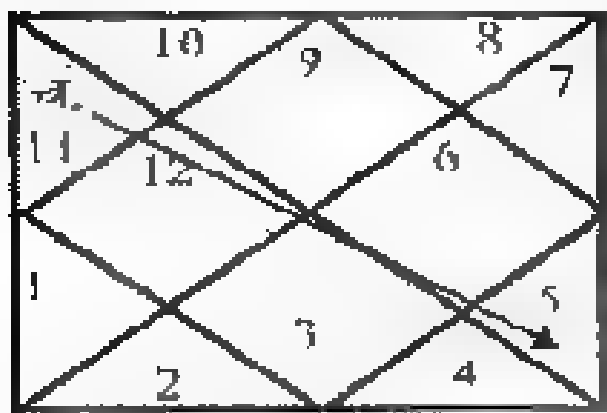
धनुलग्न मे अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चद्रमा यहां तृतीय स्थान में कुंभ (सम) राशि मे होगा। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। उसे भाई बहनो का सुख होगा। जातक संगीत, शिल्प, कला साहित्य और आध्यात्म विद्या मे रुचि रखता हुआ, यश प्राप्त करेगा। जातक राजा (सरकार) द्वारा सम्मानित होगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ चद्रमा की दृष्टि नवम भाव (सिह राशि) पर होगी। ऐसा जातक धार्मिक परोपकारी एवं दानी होगा.

निशानी- चंद्रमा मातृभाव में बारहवें होने पर जातक की माता या नानी बीमार रहेगी या जातक माता से दूर रहेगा

दशा–चद्रमा यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युत हो तो शुभ फल, अशुभ ग्रह से युत या दृष्ट हो तो अशुभ फल मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **चद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चद्र+सूर्य युति तीसरे स्थान मे होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 के मध्य होता है। भाग्येश+अष्टमेश की युति कुभ राशि में होने से जातक महान पराक्रमी होगा तथा समाज के द्वारा अथवा राजा (शासन) के द्वारा सम्मानित होगा।
2. **चंद्र+मंगल** यहां तृतीय स्थान मे दोनों ग्रह कुभ राशि मे होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान (वृष राशि), भाग्य स्थान (सिंह राशि) एवं दशम भाव (कन्या राशि) को देखेंगे। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक भाग्यशाली होगा तथा सरकारी कार्यों, कोर्ट कचहरी में विजय प्राप्त करेगा।
3. **चंद्र+बुध**–जातक की बहनें अधिक होंगी। बहनें मददगार होंगी। भाइयों का भी योग है।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति तृतीय स्थान गत कुभ राशि में होगी। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहा बैठकर दोनो

शुभ ग्रह सप्तम भाव, भाग्य स्थान एव लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलत: जातक को विवाह सुख, भाग्य सुख एव व्यापार-सुख मिलेगा। जातक को ये तीनो सुख पूर्ण गुणवत्ता के साथ मिलेंगे। जातक सुखी व्यक्ति होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–भाई-बहनों में मुकदमेबाजी हो सकती है, अथवा किसी का अंग भग हो सकता है। जातक का स्वयं का दाया हाथ दोषपूर्ण होगा।
6. **चंद्र+शनि**–जातक पराक्रमी होगा। भाई बहन, मित्रों का सहयोग जातक के आगे बढ़ने में सहायक होगा।
7. **चंद्र+राहु**–भाइयों में मुकद्मे बाजी, कलह होगी
8. **चंद्र+केतु**–भाई बहनों में वैमनस्यता रहेगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में

10	9	8	7	11	12 चं.	6	3	5	2	1	4
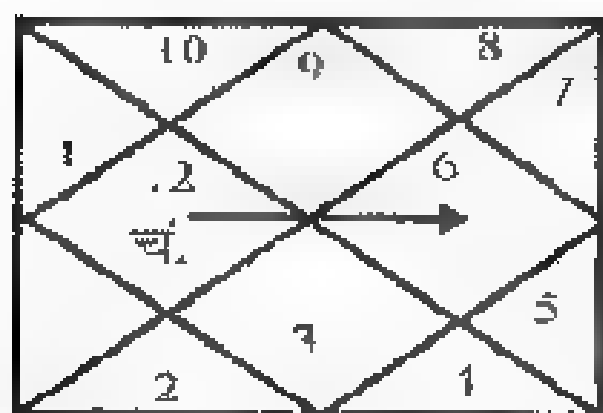
धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां चतुर्थ स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा जल तत्त्व में होने से यहा प्रसन्न है। जातक को मकान, वाहन, भवन, पद प्रतिष्ठा का उत्तम सुख मिलेगा जातक क्षमाशील व दयालु होगा। जातक को माता की सम्पत्ति, सहानुभूति एवं प्रेम मिलेगा। जातक को कृषि एवं जल संबधी वस्तुओं से लाभ होगा।

दृष्टि–चतुर्थस्थ चद्रमा की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि) पर होने से जातक को रोजी-रोजगार सबधी परेशानी नहीं रहेगी।

निशानी–जातक अपने जन्म स्थान से दूर नौकरी व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोज संहिता' के अनुसार धनुलग्न में चद्र+सूर्य युति चौथ स्थान में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या की मध्य रात्रि को 12 से 2 बजे के मध्य होता है। भाग्येश सूर्य व अष्टमेश चंद्र की युति यहां केन्द्र मे है। ऐसे जातक के चेहरे पर सदा हंसी व प्रसन्नता रहती है। जातक के पास उत्तम वाहन होगा

2. **चंद्र+मंगल**—यहा चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'यामिनीनाथ योग' बना एव मगल यहां दिक्बली को प्राप्त है। ये दोनों ग्रह सप्तम भाव (मिथुन राशि), दशम भाव (कन्या राशि), एकादश भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलत: 'लक्ष्मी योग' बना जातक धनवान होगा। जातक व्यापार से लाभ कमायेगा। राजनीति से भी लाभ प्राप्त करेगा। जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा

3. **चंद्र+बुध**—जातक की माता से कम बनेगी अथवा जातक की दो माताए होंगी।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म धनुलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद की युति चतुर्थ भावगत मीन राशि मे होगी यहा यह युति वस्तुत: अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश के साथ युति होगी। गुरु यहा स्वगृही होंगे, केन्द्र मं बैठकर दोनों शुभ ग्रह 'हंस योग', 'यामिनीनाथ योग' एव 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेंगे। इनकी दृष्टि अष्टम स्थान, दशम स्थान एवं व्यय स्थान पर होंगी फलत: जातक की आयु दीर्घ होगी। वह रोग एवं दुर्घटनाओ का मुकाबला करन मे सक्षम होगा। जातक राज्य (सरकार) मे उत्तम पद को प्राप्त करेगा। यात्राओ एव शुभ कार्यों (परोपकार क कार्यों) में रुपया खर्च करेगा

5. **चंद्र+शुक्र**—जातक के पास अनेक वाहन एवं खूबसूरत बंगला होगा। 'मालव्य योग' क कारण जातक का वैभव भी राजा से कम नहीं होगा।

6. **चंद्र+शनि**—जातक धनी होगा जातक की माता के पास निजी सम्पत्ति होगी

7. **चंद्र+राहु**—जातक की माता की मृत्यु छोटी उम्र मे संभव है।

8. **चंद्र+केतु**—जातक का वाहन चोरी हो जायेगा। वाहन दुर्घटना का योग है।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में

10	9	8	7
11	12	6	5
1 चं.	2	3	4
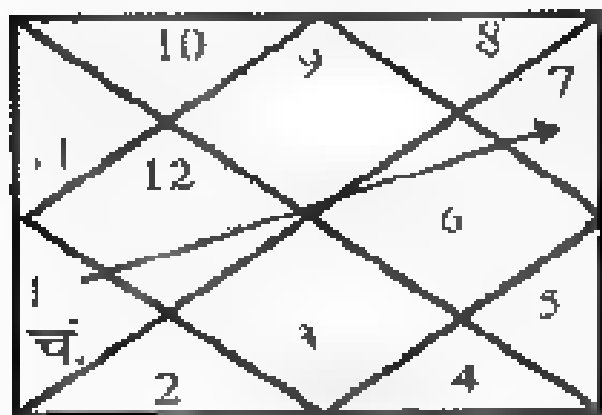
धनुलग्न में अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहा पचम स्थान में मेष (सम) राशि मे होगा। ऐसा जातक उत्तम विद्या प्राप्त करेगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी जातक को माता का सुख मिलेगा, जातक के मित्र अच्छे होंगे जातक स्वाभिमानी, कुछ हठी एव महत्त्वाकांक्षी होगा। चंद्रमा यदि निर्बल हो तो संतान सुख मे बाधा पहुंचायेगा।

दृष्टि—पचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक को शेयर, सट्टा बाजार व उद्योग से लाभ होगा

निशानी–जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक की पहली संतति शल्य चिकित्सा से होगी।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न मे चंद्र+सूर्य युति पांचवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 12 के मध्य होता है। अष्टमेश चंद्र व भाग्येश सूर्य पंचम भाव में होने पर सूर्य उच्च का होगा। ऐसा जातक परम महत्त्वाकांक्षी होगा। जातक उच्च शिक्षित व राज्याधिकारी होगा। जातक की संतति भी शिक्षित व तेजस्वी होगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। मंगल यहा स्वगृही होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। यहा बैठकर दोनो ग्रह अष्टम भाव (कर्क राशि) लाभ स्थान (तुला राशि) एवं व्यय भाव (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा। लक्ष्मी उम्र का स्वामी होगा। जातक व्यापार व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। परन्तु जातक व्ययशील खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक को पुत्र जरूर होगा। पुत्र जन्म के बाद जातक का आर्थिक विकास होगा।
3. **चद्र+बुध**–कन्या सतति की बाहुल्यता होगी। परिवार नियोजन के हिसाब से दो कन्या एक पुत्र का योग बनता है।
4. **चद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चद्र की युति पंचम भावस्थ 'मेष राशि' में होगी यह युति वस्तुत: अष्टमेश चद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहा बैठकर ये दोनो शुभ ग्रह भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक की उन्नति, उसका भाग्योदय 24 वर्ष की आयु मे हो जायेगा। जातक धनवान एव विद्वान् होगा। व्यापार-व्यवसाय में उसे लाभ बराबर मिलता रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–सतति नाश का पक्का योग है। शल्य चिकित्सा से सतान होगी।
6. **चंद्र+शनि**–जातक विद्यावान होगा। विदेशी भाषा, विदेशी विद्या पढ़ेगा।
7. **चंद्र+राहु**–गर्भपात, गर्भस्राव एवं जवान सतति की मृत्यु का योग है।
8. **चंद्र+केतु**–जातक की एक सतान गुम हो जायेगी अथवा सतान सबधी चिंता बनी रहेगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में
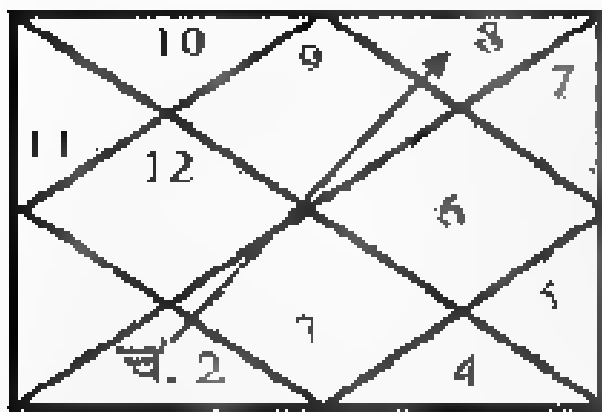
धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां छठे स्थान मे वृष राशि में उच्च का होगा। वृष राशि के तीन अंशो तक चंद्रमा परमोच्च का होगा। अष्टमेश छठे होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। जातक धनी, मानी व अभिमानी होगा। माता व ननिहाल का सुख श्रेष्ठ होगा। रोग व शत्रु कभी भी हावी नहीं होंगे

दृष्टि—चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होने से जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक यात्रा का शौकीन होगा

निशानी—जातक परदेश जायेगा तो बड़ा भारी धन कमायेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**- 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति सातवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश चंद्रमा उच्च का, सूर्य के साथ होने से सरल नामक 'विपरीत राजयोग' बना। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा, दुर्घटना का भय या शत्रु द्वारा नुकसान पहुंचने का योग है।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां छठे स्थान मे दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। चंद्रमा यहां उच्च का होगा मंगल के कारण सनतिहीन योग बनता है व्ययेश मंगल छठे होने से 'सरलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। अष्टमेश चंद्रमा होने से 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा इससे जातक धनी एवं लम्बी उम्र का स्वामी होगा। दोनों ग्रहो की दृष्टि भाग्य भवन (सिंह राशि) एवं लग्न स्थान (धनु राशि) पर होने के कारण जातक भाग्यशाली होगा तथ उसे प्रत्येक कार्य मे सफलता मिलेगी।
3. **चंद्र+बुध**—जातक धनी होगा पर पत्नी से नहीं बनेगी। 'द्विभार्या योग' बनता है।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म धनुलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति षष्टम भावगत वृष राशि में है। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहा उच्च का होगा अष्टमेश का षष्टम मे जाना अच्छा माना गया है। परन्तु गुरु के कारण

'लग्नभंग योग' तथा 'सुखभंग योग' की सृष्टि हुई फलत: जातक को ऋण रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। सुख प्राप्ति के संसाधनों में कमी महसूस करेंगे तथा कई बार ऐसा भी लगेगा कि प्रयत्न (प्रयासों) का पूरा लाभ नहीं मिल रहा है। पर इस शुभ योग के कारण अन्तिम सफलता निश्चित है

5. **चंद्र+शुक्र**–'किम्बहुनायोग' के कारण जातक राजा के सामन पराक्रमी होगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को दमा, टी.बी., श्वास की बीमारी देगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु होने पर मूत्राशय के रोग होंगे। जातक की अल्पायु मे मृत्यु हो सकती है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को क्षय रोग, चमड़ी का रोग देगा।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में

10	9	8	7
11	12	6	5
1	3 चं	2	4
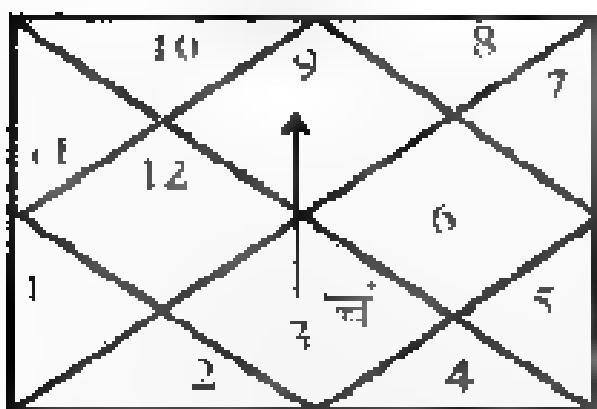
धनुलग्न मे अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां सप्तम भाव में मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। जातक की पत्नी सुन्दर रूप की रानी होगी पर उसे अभिमान रहेगा जिससे गृहस्थ सुख में खटपट रहेगी। जातक को परस्त्रियों के प्रति आकर्षण रहेगा। ऐसे जातक को धन, वाहन माता-पिता, स्त्री-संतान का सुख रहेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न भाव (धनु राशि) पर होगी फलत: थोड़े से अवरोध के बाद कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी।

निशानी–जातक कामी होगा एवं भौतिक सुखों के पीछे दौड़ेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा मिश्रित फल देगी बुध व शनि के अंतर में कष्टानुभूति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति सातवें स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को सूर्यास्त के समय सांय 6 बजे के लगभग होता है। अष्टमेश चंद्रमा व भाग्येश सूर्य यहां केंद्र में हैं। जातक की पत्नी से कम निभेगी वाहन दुर्घटना से अंग-भंग होने का भय रहेगा।

2. **चद्र+मगल**–यहा सप्तम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। चद्रमा यहा शत्रुक्षेत्री है। यहा बैठकर दोनो ग्रह दशम भाव (कन्या राशि) लग्न भाव (धनु राशि) एव धन भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। उसे जीवन के प्रत्येक कार्य मे सफलता मिलेगी। जातक राजनीति के क्षेत्र में भी प्रभावशाली एव प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा

3. **चद्र+बुध**–जातक का सुसराल धनी होगा पर सुसराल वालो से कम बनेगी।

4. **चद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चद्र की युति सातवे भाव में मिथुन राशि के अतर्गत होगी। वस्तुत: यह युति अष्टमेश चद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है. यह युति केन्द्रवर्ती है चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है. इन दोनो ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एव पराक्रम स्थान पर है साथ ही 'कुलदीपक योग' एव 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि भी हो रही है फलत: जातक के व्यक्तित्व मे निखार आयेगा, वह समाज का अग्रगण्य, प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय के द्वारा धन की प्राप्ति करेगा एव उसका जनसम्पर्क सघन होने से पराक्रम तेज रहेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–पति-पत्नी मे खटपट का पक्का योग है पत्नी सुन्दर होते हुए भी विचारों के मतभेद उग्रता से उभरेंगे।

6. **चंद्र+शनि**–जातक को पत्नी से धन मिलेगा पर असंतोष की स्थिति रहेगी।

7. **चद्र+राहु**–पेट का आपरेशन सभव है। आतो की बीमारी होगी

8. **चद्र+केतु**–शल्य चिकित्सा से परेशानी आयगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में
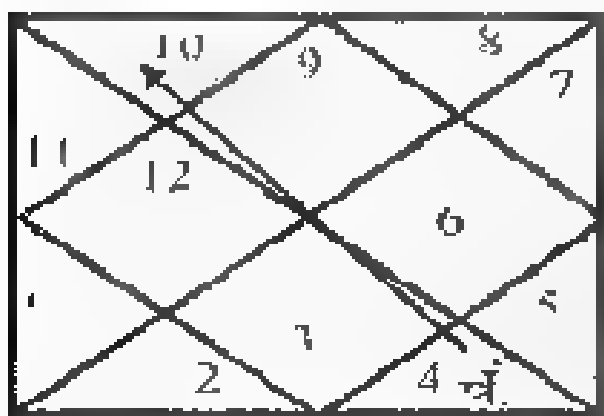
धनुलग्न में अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है चंद्रमा यहा अष्टम स्थान मे स्वगृही कर्क राशि का होगा। फलत: सरल नामक विपरीत राजयोग बनेगा जातक महाधनी होगा तथा गुप्त व रमणीय स्थानों का भ्रमण करेगा। जातक को माता का सुख अल्प होगा। जातक को घर-परिवार, धन, सम्पत्ति सोना-चादी कीमती वस्तुओं का सुख देगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ चद्रमा की दृष्टि धन भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक की आयु दीर्घ होगी। जातक की भाषा विनम्र होगी।

निशानी—जातक को जलघात सम्भव है कफ प्रवृति एवं जलीय रोग की सभावना रहेगी।

दशा—चंद्रमा जातक को धनी बनायेगा पर शरीर मे बीमारी भी देगा।

चद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1 **चद्र+सूर्य**—'भोजसहिता' के अनुसार धनुलग्न मे चद्र+सूर्य की युति आठवें स्थान म होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को सायकाल 4 से 6 बजे के मध्य होता है अष्टमेश चंद्रमा अष्टम भाव में स्वगृही होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा पर शत्रु द्वारा चोट या वाहन दुर्घटना स भय होने का योग बनता है।

2. **चद्र+मगल**—यहा अष्टम स्थान मे दोनों ग्रह कर्क राशि में होगे। चंद्रमा यहां स्वगृही एवं मंगल नीच का होने स 'नीचभग राजयोग' बनेगा। यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। अष्टमेश चद्रमा अष्टम स्थान मे स्वगृही होने से 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बना। व्ययेश मगल अष्टम मे होने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (तुला राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं पराक्रम भाव (कुंभ राशि) को देखेगे। फलत: जातक महाधनी होगा। जातक उद्योगपति होगा तथा राजा के समान पराक्रमी होगा।

3. **चंद्र+बुध**—'द्विभार्या योग' बनते हैं एक पत्नी की मृत्यु संभव है।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति आठवें भाव में कर्क राशि मे अंतर्गत होगी। वस्तुत: यह युति अष्टमेश चद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है, गुरु अष्टम मे जाने से 'लग्नभग योग' एवं 'सुखभग योग' की सृष्टि होगी। चंद्रमा वस्तुत: अष्टमेश होकर अष्टम भाव में स्वगृही है अत: जातक की आयु मे वृद्धिकर्त्ता ही है। अष्टम स्थान में बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव, धन भाव एवं सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को प्रयत्न करने पर यथेष्ट धन की प्राप्ति तो होगी पर वह धन खर्च होता चला जायेगा। जातक का जीवन मे सभी प्रकार के भौतिक सुख, ससाधन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—लाभेश के आठवे जाने से दरिद्र योग बनता है। बीमारी में रुपया खर्च होगा।

6. **चंद्र+शनि**—धनहीन योग बनता है। जातक का एक बार पराक्रम भग होगा। बदनामी होगी।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु आयु के आठवे या बीसवें वर्ष मे जलघात देगा।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु गुर्दे या मूत्राशय के ऑपरेशन में जातक का अपघात करायेगा

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में
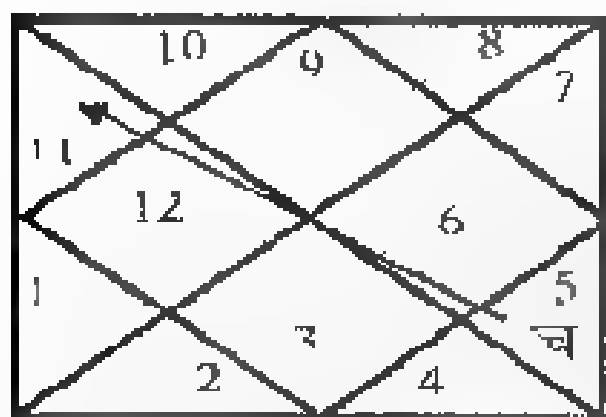
धनुलग्न में अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां नवम स्थान मे सिंह राशि (मित्र राशि) मे होगा। जातक के धर्म, भाग्य व आयु में वृद्धि होगी जातक को स्त्री संतान, माता पिता नौकरी व्यवसाय के सभी सुख मिलेंगे। जातक को विदेश व्यापार (Export-Import) से लाभ होगा। जातक को पिता का सुख मिलेगा। जातक भाग्यशाली होगा पर उसके भाग्य में उतार-चढ़ाव आता रहेगा।

दृष्टि–नवमस्थ चंद्रमा की दृष्टि तृतीय स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: जातक पराक्रमी होगा

निशानी–चंद्रमा मातृ स्थान से छठे होने से जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा ज्यादा अच्छी नहीं जायेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति नवम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है यहां भाग्येश सूर्य स्वगृही होकर अष्टमेश चंद्रमा के साथ भाग्य में वृद्धि करायेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धर्मात्मा व परोपकारी होगा
2. **चंद्र+मंगल**–यहां नवम स्थान मे दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) एवं चतुर्थ भाव (मीन राशि) को देखेंगे। 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी होगा। जातक थोड़े खर्चीले स्वभाव का होगा सभी भौतिक संसाधनों की प्राप्ति उसे सहज मे हो जायेगी। ऐसा जातक महान पराक्रमी एवं धनी होगा
3. **चंद्र+बुध**–विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा जातक का जीवनसाथी मददगार रहेगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति नवम भाव में 'सिंह राशि' के अंतर्गत हो रही है। वस्तुत:

यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न भाव, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक के व्यक्तित्व में निखार आयेगा। उसका चहुंमुखी विकास होगा। प्रथम संतति के बाद जातक का भाग्य तेजी से चमकेगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। जातक की स्त्री मित्र घातक साबित होगी।
6. **चंद्र+शनि**—जातक के जातक धनी, पराक्रमी एवं बहुत मित्रों वाला होगा।
7. **चंद्र+राहु**—जातक के भाग्य में अकारण बाधाएं रुकावटें आयेंगी।
8. **चंद्र+केतु**—जातक के भाग्योदय में दिक्कतें आयेंगी।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में
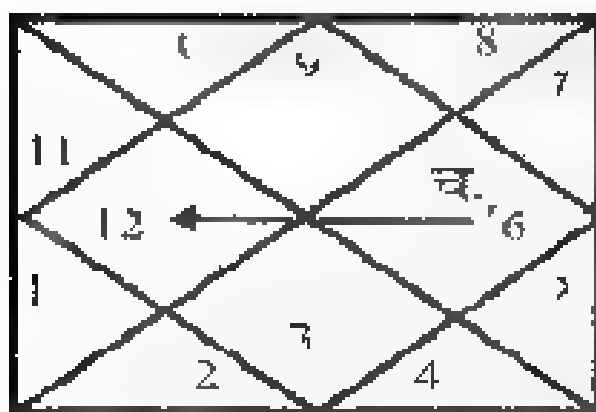
धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चंद्रमा यहां दशम भाव में कन्या (शत्रु) राशि में होगा। जातक को माता, वाहन एवं भवन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। ऐसे जातक को रोजी रोजगार की प्राप्ति हेतु विशेष मेहनत करनी पड़ेगी जातक को सहोदर भ्राता, पिता, नौकरी-व्यापार से लाभ होता रहेगा। जातक की शिक्षा उत्तम होगी

दृष्टि—दशमस्थ चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को प्रायः कन्या संतति अधिक होगी।

निशानी—जातक केमीकल, रत्न या धातु का व्यापार, जलीय वस्तुओं में कमायेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति दशम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 बजे के आस पास होता है अष्टमेश चंद्र एवं भाग्येश सूर्य केन्द्र में होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक को वाहन दुर्घटना से अंग-भंग होने का भय बना रहेगा।

2. **चंद्र+मंगल**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। मंगल यहां दिग्बली होकर 'कुलदीपक योग' बनायेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्नभाव (धनु राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं पंचम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। जातक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। ऐसे जातक को भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।

3. **चंद्र+बुध** 'भद्र योग' के कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल प्रभावशाली होगा।

4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के दशम भाव में गुरु+चंद्र की युति कन्या राशि मे होगी। वस्तुत: यह युति अष्टमेश चद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। परन्तु केन्द्रवर्ती होने से 'यामिनीनाथ योग' बना गुरु केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' बना। इन दोनों ग्रहों की दृष्टियां धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान पर हैं फलत: ऐसा जातक खूब धन कमायेगा व भौतिक ऐश्वर्य प्राप्त करेगा। जातक रोग और शत्रुओं का नाश करने मे पूर्ण सक्षम होगा। जातक का नाम समाज के सौभाग्यशाली एवं सफल व्यक्तियों में से एक होगा

5. **चंद्र+शुक्र**–राज्य (सरकार) से दण्डित होने का योग अथवा किसी सेक्स स्केन्डल में फंसने का योग है।

6. **चंद्र+शनि**–जातक धनवान, पराक्रमी एवं व्यापार प्रिय होगा।

7. **चंद्र+राहु**–सरकारी क्षेत्र में यकायक आफत आयेगी।

8. **चंद्र+केतु**–राजनीति में नुकसान का योग पक्का है।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में
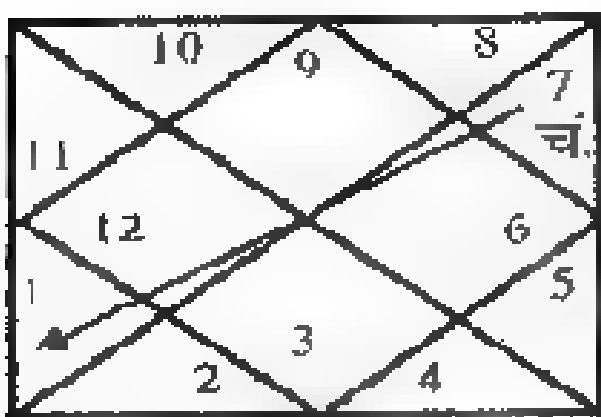
धनुलग्न में अष्टमेश है। फलत: पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चद्रमा यहां एकादश स्थान में तुला (सम राशि) में होगा। जातक सौम्य, शिष्ट व उदार स्वभाव का होगा। जातक की बहनें अधिक होंगी। पुत्रियां भी अधिक होंगी। जातक को धन यश, प्रतिष्ठा, स्त्री संतान का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। जातक को विदेश यात्रा या विदेशी कारोबार में लाभ होगा।

दृष्टि–एकादश भावस्थ चंद्रमा की दृष्टि पचम स्थान (मेष राशि) पर होगी।

निशानी–चंद्रमा मातृ स्थान से आठवें होने से माता की मृत्यु छोटी उम्र में होगी या जातक माता से दूर रहेगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा ज्यादा शुभ फल नहीं देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य–**'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चंद्र+सूर्य की युति एकादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की सुबह 10 से 12 बजे के मध्य होगा। यहा भाग्येश सूर्य नीच का होकर अष्टमेश से युति करेगा। फलतः जातक का राजयोग नष्ट होगा जातक को कोर्ट कचहरी से परेशानी होगी।
2. **चंद्र+मगल–**यहां एकादश स्थान मे दोनों ग्रह तुला राशि में होगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहो की दृष्टि धन भाव (मकर राशि), पचम भाव (मेष राशि) एवं षष्टम् भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान होगा। एसा जातक ऋण रोग व शत्रुओ का नाश करने में सक्षम होगा जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
3. **चंद्र+बुध–**इस युति से पत्नी व सतान पक्ष से कष्ट सभव है।
4. **चंद्र+गुरु** आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में एकादश भाव में गुरु+चंद्र की युति तुला राशि में होगी। यह युति अष्टमेश चद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एव सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगे फलतः जातक का विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम सतति के बाद होगा। जातक का जनसम्पर्क सघन होगा। जातक महान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **चंद्र+शुक्र–**जातक को व्यापार में निश्चित घाटा होगा।
6. **चंद्र+शनि–**जातक उद्योगपति होगा पर उद्योग में घाटा लगेगा।
7. **चंद्र+राहु–**जातक का चलता व्यापार बंद होगा।
8. **चंद्र+केतु–**व्यापार में शत्रु पक्ष हावी रहेगा।

धनुलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में

धनुलग्न में अष्टमेश है। फलतः पापी है व अशुभ फल देने वाला है। चद्रमा यहां द्वादश स्थान मे वृश्चिक राशि में नीच का होगा। वृश्चिक राशि में तीन अशों
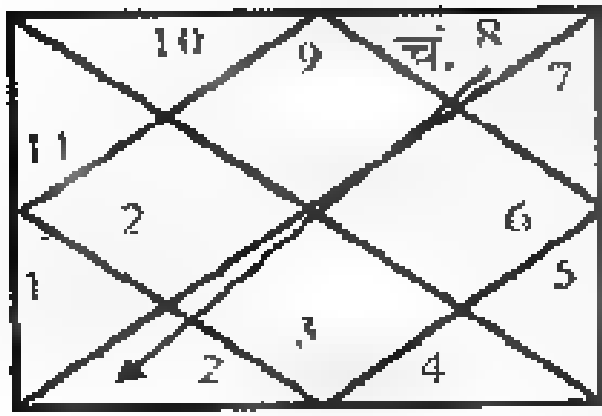
तक चद्रमा परम नीच का होगा। चद्रमा की यह स्थिति सरल नामक विपरीत राजयोग की सृष्टि करती है. फलतः जातक धन-प्रतिष्ठा, यश, ऐश्वर्य, वैभव व सम्पन्नता को प्राप्त करेगा। जातक की माता की छोटी उम्र में मृत्यु होगी। जातक को मानसिक अस्थिरता व अशान्ति रहेगी।

दृष्टि—व्यय भावस्थ चद्रमा की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक को रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा।

निशानी—जातक का खर्च शुभ मार्ग में खर्च होगा। जातक परदेश जाकर कमायेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में आवक के साथ खर्च की भारी बढ़ोत्तरी होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में चद्र+सूर्य युति द्वादश स्थान में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या को प्रातः 8 स 10 बजे के मध्य होगा। अष्टमेश चंद्रमा, भाग्येश सूर्य के साथ व्यय भाव में जाने से 'सरल नामक' विपरीत राजयोग बना जातक धनी मानी अभिमानी होगा। यात्रा में दुर्घटना या विष भोजन का भय बना रहेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां बैठकर दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। वृश्चिक राशि मे मगल स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। व्ययेश के व्यय भाव मे स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना। फलतः जातक धनवान् होगा। यहां बैठकर दोनो ग्रह पराक्रम भाव (कुंभ राशि), षष्टम् भाव (वृष राशि) एवं सप्तम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक धनी एव महान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**—जातक के दो विवाह संभव है। पत्नी से अनबन रहेगी।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के द्वादश भाव में गुरु+चद्र की युति 'वृश्चिक राशि' मे होगी। वस्तुत यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चद्रमा वृश्चिक राशि में नीच का होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम् भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक रोग व शत्रु का मुकाबला करने में पूर्ण समर्थ होकर दीर्घायु

को प्राप्त करेगा जातक को उत्तम वाहन, भवन एवं वैभव की प्राप्ति होगी. जातक तीर्थयात्राएं करेगा एवं परोपकार के कार्य में रुपया खर्च करेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**–जातक व्यसनी होगा। विलासी होगा, एवं 'दरिद्र योग' के कारण परेशान रहेगा।
6. **चंद्र+शनि**–'पराक्रमभंग योग' एवं 'धनहीन योग' एक साथ बनते हैं, सावधान रहें। मित्र दगा देंगे।
7. **चंद्र+राहु** नेत्रपीड़ा, ऑपरेशन होगा। चोरी का भय है। दुर्घटना का भी भय है।
8. **चंद्र+केतु**–जातक को यात्रा में कष्टानुभूति होगी।

❑❑❑

धनुलग्न में मंगल की स्थिति

धनुलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में
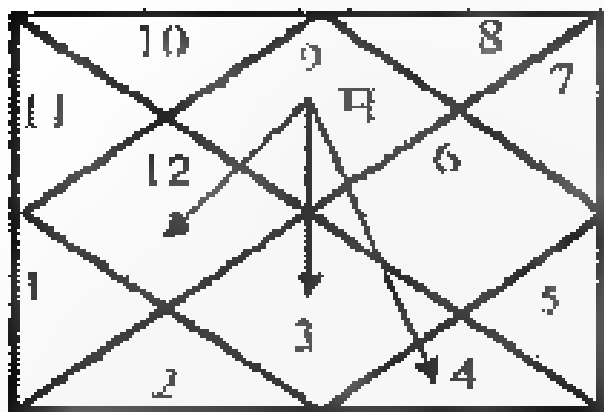
धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योगप्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां प्रथम स्थान के धनु (मित्र) राशि में है। पंचमेश लग्न में होने से जातक का पूर्व पुण्य उत्तम, ऐसे जातक को उत्तम संतति, उत्तम विद्या की प्राप्ति होगी। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है। ऐसे जातक का जीवनसाथी रोगी व कृशकाय होता है जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक पूर्ण पराक्रमी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है। अंतिम सफलता सदैव जातक के साथ रहेगी

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी फलतः माता बीमार रहेगी या माता से कम निभेगी पत्नी से विवाद एवं शत्रु परेशान करेंगे।

निशानी–ऐसा जातक उग्र स्वभाव का एवं अधैर्यशाली होगी। जातक फालतू कार्यों में खूब पैसा खर्च करेगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक महान भाग्यशाली होगा जातक राजा के समान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में मंगल पंचमेश एवं व्ययेश होने से शुभ है चंद्रमा यह अष्टमेश होने से पापी है। चंद्र+मंगल की यह युति वस्तुतः अष्टमेश की पंचमेश+व्ययेश के साथ युति कहलायेगी। जो मिश्रित

फलकारी है। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि), सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी एवं दीर्घजीवी होगा जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं की प्राप्ति होगी पर जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा

3. **मंगल+बुध**—जातक पत्नी एवं संतान पक्ष से सुखी व्यक्ति होगा।
4. **मंगल+गुरु**—जातक की आयु की रक्षा होगी। दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—उन्नति में बाधाएं आयेंगी पर अंतिम सफलता निश्चित है.
6. **मंगल+शनि**—जातक को परिश्रम का फल मिलेगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु होने से अकस्मात् मृत्यु होती है।
8. **मंगल+केतु**—अचानक दुर्घटना सभव है।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में

म. 10, 9, 8, 7, 11, 12, 6, 1, 5, 3, 2, 4
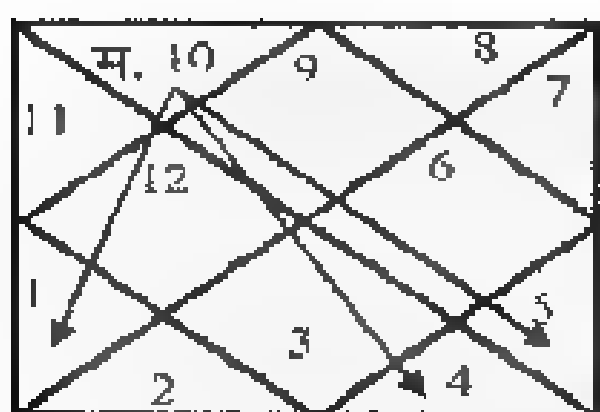
धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मगल खर्चेश होते हुए भी शुभयोग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मगल यहां द्वितीय स्थान मे उच्च का होगा मकर राशि के 28 अंशो में मंगल परमोच्च का कहलाता है। जातक महाधनी होगा धन यश कुटुम्ब स्त्री सतान सुख श्रेष्ठ होंगे। जातक की बाईं आंख निर्बल हो। व्ययेश धन भाव में होने से धन आयेगा व खर्च होता चला जायेगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ मगल की दृष्टि पचमभाव (मेष राशि), अष्टम भाव (कर्क राशि) एवं भाग्य भाव (सिंह राशि) पर होगी जातक को पुत्र सुख मिलेगा। जातक के शत्रु दबेगे। जातक दीर्घजीवी एवं भाग्यशाली होगा।

निशानी—जातक की वाणी कड़क होगी। इससे कुटम्बीजन नाराज रहेगें। पचमेश धनभाव में उच्च का होकर पचम भाव को देखने से सतान उत्तम होगी सतान के जन्म के बाद जातक का भाग्योदय होगा।

दशा—मंगल की दशा अतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। शत्रुनाश होगा

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मगल+सूर्य**—जातक पूर्ण धनी एवं भाग्यशाली होगा। विद्या योग उत्तम।

2. **मंगल+चंद्र**–यहा द्वितीय स्थान मे दोनों ग्रह मकर राशि म होंगे। मगल यहा उच्च का होगा। धन स्थान में योगकारक ग्रह का उच्च होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रहो की दृष्टि पचम भाव (मेष राशि), अष्टम भाव (कर्क राशि) एवं भाग्य भवन (सिंह राशि) पर होगी फलत: जातक महाधनी तथा पुत्रवान होगा। जातक लम्बी उम्र का स्वामी एवं भाग्यशाली होगा परन्तु आर्थिक भाग्योदय प्रथम सतति के बाद होगा।
3. **मगल+बुध**–जातक का सुसराल धनी होगा। जातक के शत्रु जातक द्वारा परास्त होंगे।
4. **मंगल+गुरु**–गुरु के कारण 'नीचभग राजयोग' बनेगा। जातक के पास धन की कमी नहीं होगी। राजसी ठाट बाट होगा
5. **मगल+शुक्र**–जातक की वाणी में हकलाहट रहेगी जातक बोलना कुछ चाहेगा, पर बोलेगा कुछ।
6. **मंगल+शनि**–'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक का पराक्रम व धन दौलत किसी राजा से कम नहीं होगी।
7. **मगल+राहु**–राहु की मगल से युति से जातक गुप्त शक्तियों का स्वामी होगी।
8. **मगल+केतु**–जातक रहस्यमय व्यक्ति होगा।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में

10 9 8 7 11 म 6 12 1 5 2 3 4
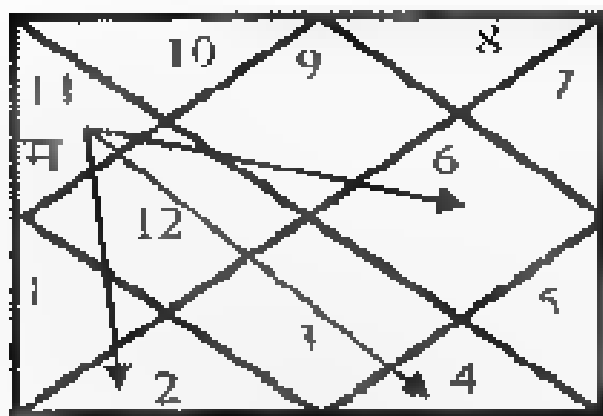
धनुलग्न में मगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योगप्रदाता है क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहा तृतीय स्थान में कुंभ (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक महान पराक्रमी व साहसी होगा। ऐसा जातक यात्राओं का शौकीन होगा। पंचमेश मंगल पंचम भाव क एकादश स्थान म स्थित होने से जातक को संतान सुख उत्तम, सतान से लाभ मिलेगा। विद्या उत्तम विद्या से लाभ प्राप्ति का योग है भूमि-भवन व ठेकेदारी के कामों से लाभ प्राप्ति का योग है।

दृष्टि–तृतीयस्थ मगल की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि), भाग्य स्थान (सिंह राशि) एवं दशम भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: जातक अपने शुत्रओं का नाश करने में समर्थ होगा

निशानी–जातक को छोटे भाई बहनों का सुख प्राप्त नहीं होगा। जातक की पहली संतति का नाश होगा, पिता के साथ जातक के विचार नहीं मिलेंगे। मामा का सुख कमजोर।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के बड़े भाई की मृत्यु होगी तथा मित्र मददगार साबित होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां तृतीय स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान (वृष राशि), भाग्य स्थान (सिंह राशि) एवं दशम भाव (कन्या राशि) को देखेंगे। इस 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनवान होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक भाग्यशाली होगा तथा सरकारी कार्यों, कोर्ट कचहरी में विजय प्राप्त करेगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जातक का राज्य (सरकार) में वर्चस्व रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक पराक्रमी होगा तथा परिश्रम से अपनी प्रतिष्ठा खुद बनायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक की भुजा में तकलीफ होगी। भाइयों से कष्ट पहुंचेगा।
6. **मंगल+शनि**–जातक के छोटे भाई की मृत्यु होगी तथा जातक धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**–भाइयों से कलह, मुकद्दमेबाजी हो सकती है।
8. **मंगल+केतु**–कुटम्बीजनों में मनोमालिन्यता रहेगी पर जातक यशस्वी होगा।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में
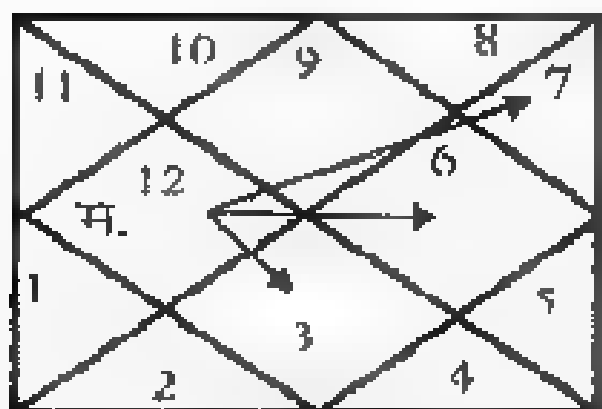
धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहा चतुर्थ स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली 'मांगलिक' होगी। मंगल यहा मेष राशि से बारहवें स्थान पर होने से जातक की माता बीमार होगी। जातक को मकान भूमि का सुख तो होगा पर विद्या में बाधा आयेगी। मांगलिक होने से जातक का विवाह में विलम्ब होगा। यदि गुरु व शुक्र खराब हो तो विवाह नरक हो जायेगा। जातक के मित्र अच्छे होंगे पर उनकी जातक से बनेगी नहीं।

दृष्टि–चतुर्थ भावस्थ मंगल की दृष्टि सप्तम स्थान (मिथुन राशि), दशम भाव (कन्या राशि) एवं एकादश भाव (तुला राशि) पर होगी फलतः विवाह में बाधा, नौकरी में दिक्कतें एवं व्यापार–व्यवसाय में परेशानी आयेगी।

निशानी–जातक का दैनिक जीवन संघर्षमय होगा। जातक को ठेकेदारी व भूमि संबंधी कार्यों में ज्यादा लाभ होगा।

दशा–मगल की दशा अतर्दशा में जातक को सामाजिक या राजकीय सम्मान मिलेगा जातक को मगल की दशा में धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ मिलेगा.

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण 'यामिनीनाथ योग' बना एव मगल यहा 'दिक्बली' को प्राप्त है। ये दोनों ग्रह सप्तम भाव (मिथुन राशि), दशम भाव (कन्या राशि), एकादश भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलत: 'लक्ष्मी योग' बना जिसके कारण जातक धनवान होगा। जातक व्यापार से लाभ कमायेगा तथा राजनीति से भी लाभ प्राप्त करेगा। जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक का ससुराल धनाढ्य होगा एव उसकी पत्नी प्रभावशाली महिला होगी।
4. **मंगल+गुरु**–'हंस योग' के कारण जातक राजा के समान साधन-सम्पन्न व ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **मगल+शुक्र**–'मालव्य योग' के कारण जातक राजसी ठाट-बाट में रहेगा। उसके पास अनेक वाहन होंगे।
6. **मगल+शनि**–जातक की माता का स्वास्थ्य खराब रहेगा.
7. **मंगल+राहु**–जातक के विवाह में विलम्ब, माता की मृत्यु सभव है।
8. **मंगल+केतु**–विवाह में देरी, माता को लम्बी बीमारी होगी।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
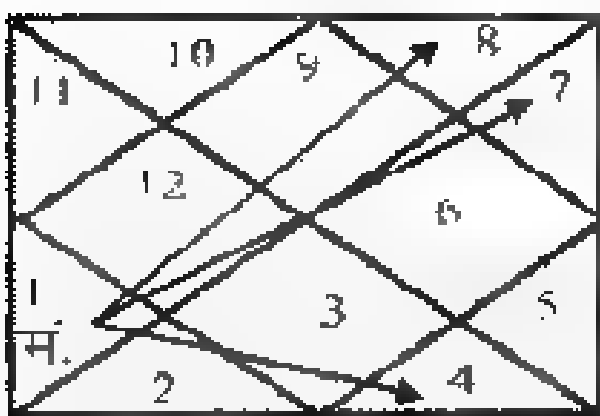
धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है, मगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मगल यहा पंचम स्थान में स्वगृही होगा। मेष राशि के 12 अंशों तक मगल मूल त्रिकोण का कहलाता है। पूर्व जन्म के पुण्य के कारण जातक को धन, पद, बौद्धिक चातुर्य, यश व संतान का सुख मिलेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा, फिर भी उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

दृष्टि–पचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टम स्थान (कर्क राशि), एकादश स्थान (तुला राशि) एवं व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक लम्बी उम्र वाला, भाइयो के उत्तम सुखवाला, जातक यात्राओ का शौकीन होगा।

निशानी–ऐसे जातक का भाग्योदय प्रथम पुत्र सतति के बाद तेजी से होगा।

दशा–मगल की दशा अंतर्दशा में जातक को मान प्रतिष्ठा मिलेगी, सतान एवं विद्या का लाभ होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–'किम्बहुना योग' के कारण जातक विद्यावान परम तेजस्वी पुत्रों का पिता होगा। पूर्व जन्म के पुण्य बहुत तेज होंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां पचम स्थान म दोनो ग्रह मेष राशि में होगे। मगल यहा स्वगृही होने से 'महालक्ष्मी योग' बना। यहा बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (कर्क राशि) लाभ स्थान (तुला राशि) एवं व्यय भाव (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा, लक्ष्मी उम्र का स्वामी होगा। जातक व्यापार व्यवसाय में धन अर्जित करेगा। परन्तु जातक व्ययशील स्वभाव का होगा। जातक को पुत्र जरूर होगा। पुत्र जन्म के बाद जातक का आर्थिक विकास होगा।
3. **मंगल+बुध**–जातक का गृहस्थ सुख उत्तम होगा। पत्नी धनाढ्य एव सुयोग्य पुत्रों की माता होगी।
4. **मंगल+गुरु**–जातक को परिश्रम का फल, विद्या हुनर का लाभ मिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–सतान को कष्ट जातक के यहा सतान शल्य चिकित्सा द्वारा होगी।
6. **मगल+शनि**–'नीचभग राजयोग' क कारण जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। जातक का प्रभाव वर्चस्व तेज रहेगा।
7. **मंगल+राहु**–पुत्र संतान को लेकर चिता रहेगी।
8. **मंगल+केतु**–गर्भपात, गर्भस्राव का भय, विद्या में बाधा संभव है।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में
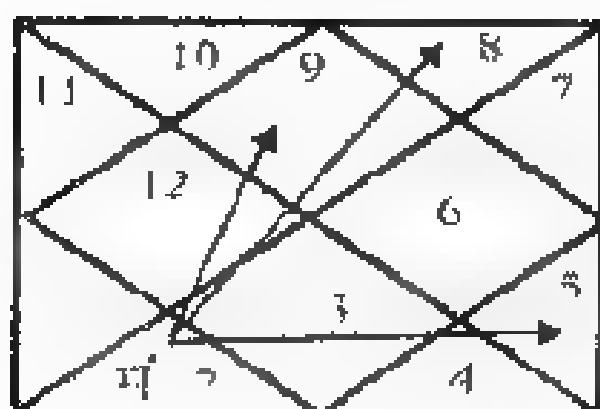
धनुलग्न में मगल पचमेश व खर्चेश है। मगल खर्चेश होते हुए भी शुभ याग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मगल यहां छठे स्थान मे वृष (सम) राशि में होगा। मंगल के कारण 'सतानभंग योग' एवं 'विमल नामक विपरीत राजयोग'

बनेगा। ऐसा जातक भौतिक सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होगा। जातक शत्रुओं का दमन करने में सक्षम होता है।

दृष्टि—छठे स्थान पर बैठे मंगल की दृष्टि भाग्य भवन (सिंह राशि), व्यय भाव (वृश्चिक राशि) एवं लग्न स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक को पिता का पूर्ण सुख नहीं मिलेगा। गुप्त शत्रुओं का प्रकोप रहेगा। जातक की ननिहाल पक्ष से अनबन रहेगी।

निशानी—जातक के छोटे भाई जरूर होंगे।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—सूर्य की युति से 'भाग्यबाधा योग' बनेगा। जातक के भाग्योदय में अनेक रुकावटें आयेंगी।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां छठे स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। चंद्रमा यहां उच्च का होगा। मंगल के कारण 'संततिहीन योग' बनता है। व्ययेश मंगल छठे होने से 'सरलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। अष्टमेश चंद्रमा होने से 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। इससे जातक धनी व लम्बी उम्र का स्वामी होगा। दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य भवन (सिंह राशि) एवं लग्न स्थान (धनु राशि) पर होने के कारण जातक भाग्यशाली होगा तथ उसे प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
3. **मंगल+बुध**—यहां विलम्ब विवाह योग के कारण नौकरी भी देरी से लगेगी।
4. **मंगल+गुरु**—यहां गुरु के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' बनेगा। जातक को बहुत परिश्रम करने पर भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।
5. **मंगल+शुक्र**—शुक्र के कारण 'हर्षनामक राजयोग' बनेगा। जातक धनी होगा। पर धन की प्राप्ति के प्रति, आवक के प्रति असंतोष रहेगा.
6. **मंगल+शनि**—शनि के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। जातक की प्रतिष्ठा संदेहास्पद रहेगी।
7. **मंगल+राहु**—राहु के कारण गुप्त शत्रु एवं रोग जातक को पीड़ा पहुचायेंगे।
8. **मंगल+केतु**—केतु के कारण जातक के शत्रु गुप्त होंगे। जातक की पीठ पीछे निन्दा होगी।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में

धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां सप्तम स्थान में मिथुन (शत्रु)
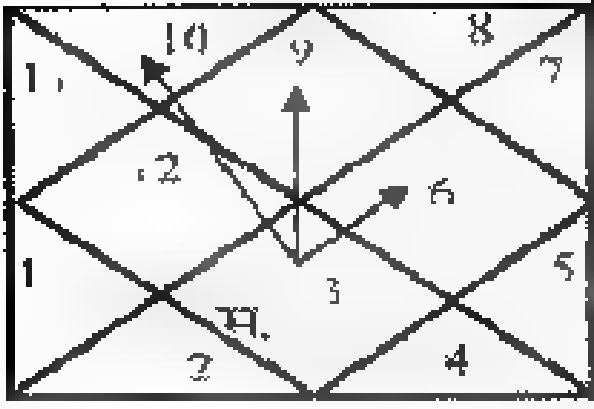
राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है। ऐसे जातक का विवाह प्रायः विलम्ब से होता है तथा उसका वैवाहिक जीवन कष्टमय होता है यदि गुरु, शुक्र इत्यादि कमजोर हो तो जातक का गृहस्थ जीवन नरकमय हो जायेगा। जातक को भाइयों का सुख प्राप्त होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि), लग्न स्थान (धनु राशि) एवं धन स्थान (मकर राशि) पर होगी, फलतः जातक धनी होगा। जातक बड़ा व्यापारी ठेकेदार या इंजीनियर होगा।

निशानी–जातक का अन्य स्त्रियों (युवतियों) से प्रेम प्रसंग होगा। जातक की वाणी रौबीली होगी

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा मे जातक की उन्नति होगी। रोजी रोजगार का अवसर मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–जातक को उत्तम गृहस्थ एवं संतान सुख मिलेगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा
2. **मंगल+चंद्र**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि मे होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है, यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (कन्या राशि), लग्न भाव (धनु राशि) एवं धन भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। उसे जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी जातक राजनीति के क्षेत्र में भी प्रभावशाली एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **मंगल+बुध**–'भद्र योग' के कारण जातक राजा के समान पराक्रमी तथा प्रतिष्ठित होगा।
4. **मंगल+गुरु**–जातक की उन्नति पुरुषार्थ के माध्यम से एवं स्वप्रयास से होगी। गुरु के कारण 'लग्नाधिपति योग' बनेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–जातक के वैवाहिक सुख में खटपट रहेगी। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
6. **मंगल+शनि**–जातक के जातक को ससुराल से धन मिलेगा। ससुराल पक्ष पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**–जातक के वैवाहिक सुख में व्यवधान आयेगा।
8. **मंगल+केतु**–जातक के गृहस्थ सुख में मनोमालिन्यता बनी रहगी।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में

10	9	8	7
11	12	6	5
1	3	2	मं. 4
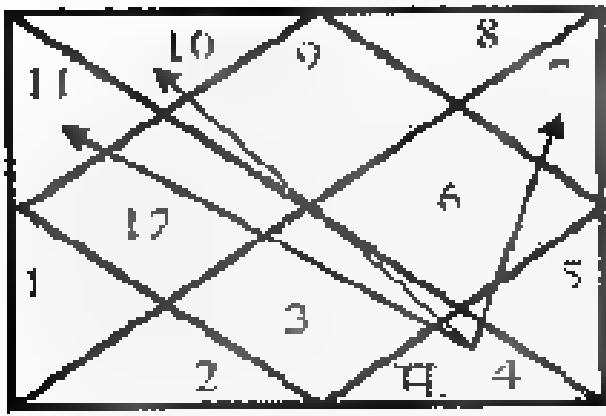
धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है मंगल यहां अष्टम स्थान में नीच का होगा कर्क राशि के 28 अंशों में मंगल परम नीच का होगा। मंगल की इस स्थिति में कुण्डली मांगलिक होगी तथा 'संतानभंग योग' एवं 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक को जीवन में काफी तकलीफों का सामना करना पड़ेगा जातक बोली का अच्छा होगा। मंगल के साथ अन्य पाप ग्रह हो तो दो विवाह का योग बनेगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (तुला राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी फलतः जातक पराक्रमी होगा। भाई बहनों से बनेगी।

निशानी—जातक की स्त्री रोगग्रस्त होगी। जातक की संतति विलम्ब से होगी। जातक को दांत व गले का रोग होगा।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में अनिष्ट फल मिलेंगे।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—सूर्य के साथ मंगल होने के कारण 'भाग्यभंग योग' बनेगा.
2. **मंगल+चंद्र**—यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे चंद्रमा यहां स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। यहां 'महालक्ष्मी योग' बना। अष्टमेश चंद्रमा अष्टम स्थान में स्वगृही होने से 'विमलनामक विपरीत राजयोग' बना, व्ययेश मंगल अष्टम स्थान में होने से 'सरल नामक विपरीत राजयोग' बना यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (तुला राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं पराक्रम भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी, उद्योगपति तथा राजा के समान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**—इस युति के कारण गृहस्थ सुख में बाधा, 'द्विभार्या योग' बनता है।
4. **मंगल+गुरु**—गुरु के कारण यहां 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—शुक्र यहां 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' की सृष्टि करेगा। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा।

6. **मंगल+शनि**–शनि मंगल के साथ होने से 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभग योग' बनेगा जातक को आर्थिक परेशानी होगी तथा उसकी बदनामी भी होगी।
7. **मंगल+राहु**–जातक की दो पत्नियां होगी।
8. **मंगल+केतु**–जातक के गृहस्थ जीवन में बहुत परेशानिया आयेंगी

धनुलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में
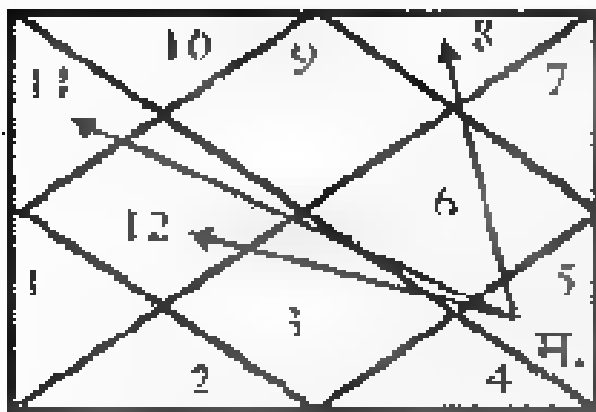
धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहा नवम स्थान मे सिंह (मित्र) राशि मे होगा। मेष राशि में मगल पांचवे स्थान में होने से पूर्व जन्म के पुण्य के कारण जातक को उत्तम सतान सुख, पिता का सुख मिलगा। जातक अपने परिश्रम से स्वय का दो मजिला भवन बनायेगा। विद्या योग उत्तम है। विद्या अर्थकारी होगी।

दृष्टि–नवमस्थ मगल की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि), पराक्रम स्थान (कुभ राशि) एव चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का तथा पराक्रमी होगा तथा उसे जीवन में भौतिक उपलब्धियां मिलती रहेगी।

निशानी–जातक का भाग्योदय परदेश में होगा। यात्रा योग उत्तम है। यात्राओं से लाभ होगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा उत्तम फल देगी। जातक को राजकीय-सामाजिक पद-प्रतिष्ठा मिलगी।

मगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मगल के साथ सूर्य जातक को 'राजयोग' देगा। ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को सरकार या राजनीति में ऊंचा पद मिलेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहा नवम स्थान मे दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (वृश्चिक राशि), पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) एवं चतुर्थ भाव (मीन राशि) को देखेंगे। 'लक्ष्मी योग' के कारण जातक धनी होगा। जातक थोडे खर्चीले स्वभाव का होगा। सभी भौतिक संसाधनों की प्राप्ति उसे सहज में हो जायेगी। ऐसा जातक महान पराक्रमी तथा धनी होगा।
3. **मंगल+बुध**–बुध की युति से जातक का भाग्योदय बुद्धि बल से तथा विवाह के बाद होगा।

4. **मंगल+गुरु** गुरु यहा मंगल के साथ होने से जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाओ से सम्पन्न करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–शुक्र मगल के साथ होने से जातक के भाग्योदय में हल्की रुकावट देगा।
6. **मंगल+शनि**–धनेश, तृतीयेश शनि मगल के साथ भाग्य स्थान मे हो तो जातक के पास स्थाई सम्पत्ति होगी।
7. **मंगल+राहु**–राहु यहां भाग्योदय में रुकावट देगा।
8. **मंगल+केतु**–केतु यहां भाग्योदय म संघर्ष दिलायेगा।

धनुलग्न में मगल की स्थिति दशम स्थान में
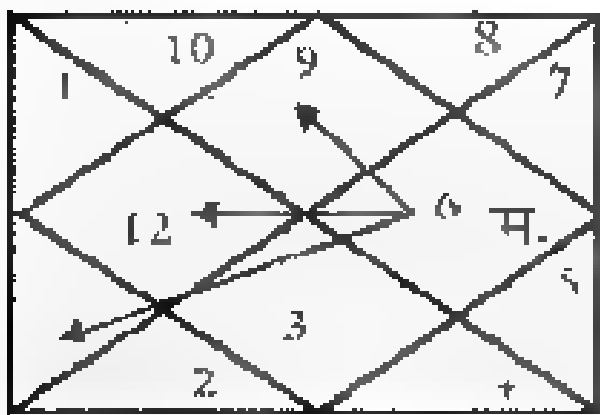
धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शु भयोग प्रदाता है, क्योकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहा दशम स्थान मे कन्या (शत्रु) राशि मे होगा। मंगल यहा दिग्बली होने से 'कुलदीपक योग' बनायेगा ऐसे जातक को राजनैतिक व प्रशासनिक कार्यों में पद प्रतिष्ठा मिलगी। प्राय: विद्या मे रुकावट या सतान सुख में विलम्ब होगा। जातक को मकान, वाहन, नौकर-चाकर का पूर्ण सुख मिलेगा

दृष्टि-दशमस्थ मगल की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं पचम भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ प्राप्त होगा। भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी, जातक का भाग्योदय प्रथम सतति के बाद होगा।

निशानी–ऐसे जातक को खेत कृषि जमीन जायदाद दलाली व ठेकेदारी के कामों में लाभ होगा।

दशा–मगल की दशा अंतर्दशा में शुभ परिणाम मिलेंगे। जातक को राजनैतिक या सामाजिक पद-प्रतिष्ठा मिलेगी।

मगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मगल+सूर्य**–मंगल के साथ भाग्येश सूर्य दशम स्थान मे होने से व्यक्ति राजा या राजपुरुष से कम नहीं होता। जातक गाव का मुखिया एवं बड़ी भूमि का स्वामी होता है कोर्ट-केस में सदैव विजय मिलती है।

2. **मंगल+चंद्र**—यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। मंगल यहां दिक्बली होकर 'कुलदीपकयोग' बनायेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न भाव (धनु राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं पंचम भाव (मेष राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। ऐसे जातक को भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।

3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ यहां बुध होने से 'भद्र योग' बनेगा। व्यक्ति राजा के तुल्य ऐश्वर्य व सम्पत्ति का स्वामी होगा।

4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु होने से 'केसरी योग' बनेगा। जातक धनी होगा एवं आध्यात्मिक मार्ग का पथिक होगा।

5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र होने से जातक के पास अनेक वाहन होंगे। जातक का अधिकतम धन वाहन व नौकरों की देखभाल में खर्च होगा।

6. **मंगल+शनि**—सरकारी क्षेत्र या राजनीति में विवाद की स्थिति उत्पन्न होगी। जिसमें अंतिम विजय जातक की होगी।

7. **मंगल+राहु**—जातक के माता-पिता की मृत्यु बचपन में तथा आयु के 36 या 42वें वर्ष में सुखों की प्राप्ति होती है।

8. **मंगल+केतु**—दशम स्थान में केतु केवल पिता के लिए घातक है, माता के लिए नहीं। राज-काज में विजय मिलती है।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में
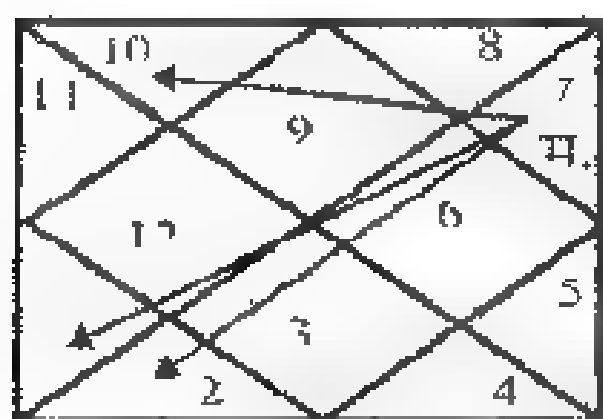
धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां एकादश स्थान में तुला (सम) राशि में होगा। यहां मंगल वृश्चिक राशि में द्वादश स्थान पर होने से द्वादशेश के दोष को नष्ट करता है। जातक को जीवन में पर्याप्त यश, धन, पद-प्रतिष्ठा, व्यापार की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्तियों में आत्म बल गजब का होता है। ऐसे जातक विरोधियों से बिलकुल नहीं घबराते। जातक के मित्र अच्छे होंगे। भाइयों से अच्छा प्रेम रहेगा।

दृष्टि—एकादश भाव मंगल की दृष्टि धन स्थान (मकर राशि), पंचम स्थान (मेष राशि) एवं छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक धनवान व प्रजावान होगा। जातक का भाग्योदय संतति के बाद होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी। इष्ट-मित्रों में सम्मान मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–यहां मंगल के साथ सूर्य जातक को सरकारी मदद से उद्योग खुलवायेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहो की दृष्टि धन भाव (मकर राशि), पंचम भाव (मेष राशि) एवं षष्टम् भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसा जातक धनवान होगा। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक को व्यापार में लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु बड़े भाई का सुख देगा।
5. **मंगल+शुक्र**–शुक्र यहां स्वगृही होने से जातक को पुत्र-पुत्री दोनों का सुख मिलेगा। जातक की संतान तेजस्वी होगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि यहां उच्च राशि में होकर जातक को अपार धन देगा। जातक महान पराक्रमी होगा।
7. **मंगल+राहु**–राहु की यह स्थिति औद्योगिक लाभ में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**–केतु यहां उद्योग में संघर्ष के बाद सफलता देगा।

धनुलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में

10 मं. 8
11 9 7
12 6
1 3 5
2 4
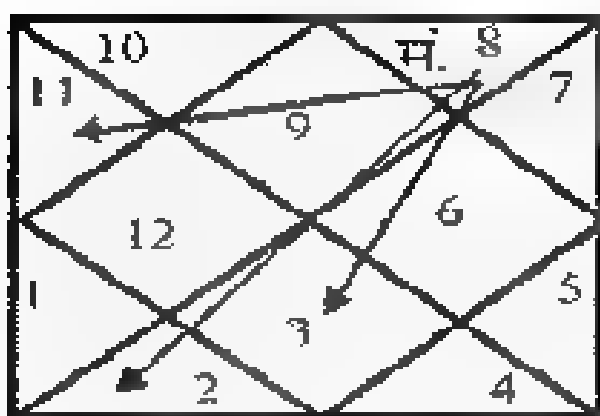
धनुलग्न में मंगल पंचमेश व खर्चेश है। मंगल खर्चेश होते हुए भी शुभ योग प्रदाता है, क्योंकि यह गुरु का मित्र है। मंगल यहां द्वादश स्थान में स्वगृही होगा। मंगल की इस स्थिति के कारण कुण्डली 'मांगलिक' होगी तथा 'संतान भंगयोग' एवं 'विमल नाम विपरीत राजयोग' की सृष्टि होगी। जातक धनवान एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा। परन्तु जातक के भाई-बहनों के साथ संबंध अच्छे नहीं होंगे।

दृष्टि–द्वादश भावगत मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि), छठे स्थान (वृष राशि) एवं सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। जातक के शत्रु बहुत होंगे तथा उसके गृहस्थ जीवन में कलह रहेगी।

निशानी–जातक विद्या पूरी न कर सकेगा शैक्षणिक उपाधि अपूर्ण रह जायेगी। विलम्ब विवाह का योग बनते हैं।

दशा मंगल की दशा अंतर्दशा मे धन व्यय अधिक होगा। जातक विदेश यात्रा करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक को कष्टानुभूति होगी। भाग्योदय मे दिक्कतें आयेंगी
2. **मंगल+चंद्र**–यहां बैठकर दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। वृश्चिक राशि में मगल स्वगृही एवं चद्रमा नीच का होने से 'नीचभग राजयोग' बनेगा। व्ययेश व्यय भाव म स्वगृही होने से सरल नामक विपरीत राजयोग बना फलत: जातक धनवान होगा यहा बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम भाव (कुंभ राशि), षष्टम् भाव (वृष राशि) एव सप्तम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक धनी एवं महान पराक्रमी होगा.
3. **मंगल+बुध**–बुध यहां 'द्विभार्या योग' करायेगा। जातक की अपनी पत्नी से कम बनेगी
4. **मंगल+गुरु**–गुरु 'लग्नभग योग' बनायेगा। जातक को पुरुषार्थ का लाभ नहीं मिलेगा
5. **मंगल+शुक्र**–शुक्र मगल के साथ होने पर 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। जातक निश्चय ही धनवान होगा परन्तु कर्जदार रहेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि 'धनहीन योग', 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक मित्रों के कारण बदनाम होगा। संतान की चिंता भी रहेगी।
7. **मंगल+राहु**–राहु बारहवें मंगल के साथ होने से स्त्री हमेशा बीमार रहेगी। जातक व्याभिचारी होकर अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रखेगा।
8. **मंगल+केतु**–केतु बारहवें मगल के साथ होने से जातक प्रवास बहुत करेगा एवं सदैव ऋणग्रस्त रहेगा।

❑❑❑

धनुलग्न में बुध की स्थिति

धनुलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
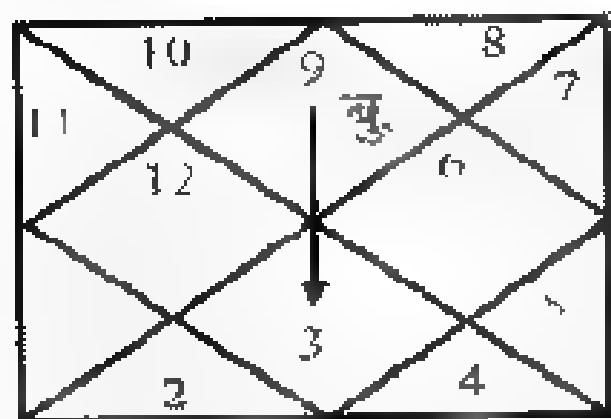
धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है बुध यहां प्रथम स्थान में धनु (सम) राशि में होगा बुध के कारण 'कुलदीपक योग' तथा 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा। बुध यहां 'दिग्बली' भी है। ऐसा जातक सुगठित देह वाला, सुन्दर शरीर वाला, तीव्र बुद्धि वाला, जातक विनोदी स्वभाव वाला एवं वाचाल होता है।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी। गृहस्थ सुख उत्तम, जातक का विवाह शीघ्र होगा।

निशानी–जातक पठन पाठन, एकाउण्ट, कम्प्यूटर, लेखन व प्रकाशन कार्यों में आगे बढ़ेगा।

दशा–बुध की दशा अति उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। प्रथम स्थान पर धनु राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। जातक बड़ा व्यापारी होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बना। बुध सप्तम भाव में स्थित अपनी राशि को

देखेगा। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा एवं अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

2. **बुध+चंद्र**–ऐसा जातक विचलित मन-मस्तिष्क वाला होगा
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मगल वैवाहिक सुख मे विलम्ब कराता है।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से 'हस योग' के कारण जातक राजा होगा तथा वह वैभवशाली जीवन जीयेगा.
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को व्यापार में उन्नति देगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को पुरुषार्थ का समुचित लाभ देकर धनी बनायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक अति बुद्धिमान होगा। जातक खुद को होशियार एव दूसरो को मूर्ख समझेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को उत्साही बनायेगा तथा जातक की बुद्धि को विकृत नहीं करेगा।

धनुलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
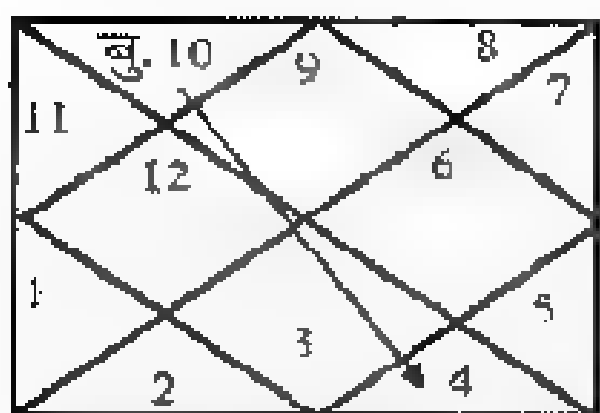
धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहा मिश्रित फलदायक है। बुध यहा द्वितीय स्थान मे मकर (सम) राशि में होगा। जातक की मुखाकृति सुन्दर, आकर्षक एवं प्रभावशाली होगी। जातक वाक्पटु एव श्रेष्ठ वक्ता होगा तथा वह अपनी वाणी से श्रोताओं को भाव विभोर कर देगा। ऐसा जातक धनी एव प्रतिष्ठित प्रतिभा वाला होगा

दृष्टि–द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः वैवाहिक जीवन योग कष्ट पूर्ण बनता है।

निशानी–जातक की आर्थिक, सामाजिक एव आध्यात्मिक उन्नति ठीक होगी।

दशा–बुध की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी बुध की दशा में चद्रमा का अंतर कष्टदायक होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। द्वितीय स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, धनवान तथा व्यापारी होगा। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा ऐसा जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक की आमदनी के जरिए दो तीन के प्रकार के रहेंगे।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक के एकात्रित धन का नाश करायेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल जातक को महाधनी बनायेगा। जातक के पुत्र जातक को कमाकर देंगे।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु जातक की वाणी को गंभीर, धैर्ययुक्त एवं प्रभावशाली बनायेगा। जातक कुशल वक्ता होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र वाणी में विकार देगा। जातक का धन भी आलतू-फालतू कार्यों में खर्च होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को सुसराल से धन सम्पति 'कलत्रमूलधन योग' के कारण दिलायेगा।
7. **बुध+राहु**–राहु यहां जातक धन नाश करेगा।
8. **बुध+केतु**–केतु यहां जातक को फिजूलखर्च बनायेगा।

धनुलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में
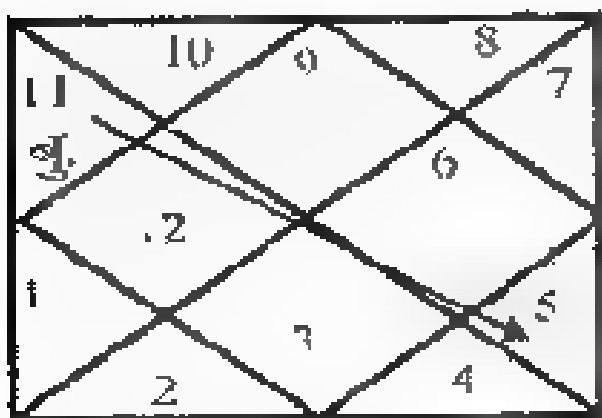
10 9 8 7 11 बु. 6 12 1 3 5 2 4

धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां तृतीय स्थान में कुंभ (सम) राशि का होगा। ऐसा जातक बुद्धिमान, धैर्यवान, विवेकशील पर डरपोक प्रवृत्ति का होगा। ऐसे जातक का गृहस्थ जीवन सुखी एवं पिता का सुख उत्तम होता है। जातक धर्मभीरु, परिश्रमी, पराक्रमी होगा। जातक को मेहनत का मीठा फल भी मिलता रहेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ बुध की दृष्टि नवम भाव (सिंह राशि) पर होगी।

निशानी—ऐसा जातक युद्ध प्रिय एवं कलहकारी नहीं होता। जातक की बहनें अधिक होंगी। एक आचार्य के अनुसार दशम स्थान का स्वामी तीसरे होने से राजयोग नष्ट होकर व्यापार योग बनाता है। फलतः जातक को व्यापार से लाभ रहेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। तृतीय स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा। 26 वर्ष की आयु में जातक की किस्मत जरूर चमकेगी। जातक बुद्धिमान एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा होने से भाई-बहनों में मनमुटाव की स्थिति बनेगी।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल होने से जातक पराक्रमी होगा। उसे भाई-बहनों व कुटम्ब का सुख मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु जातक को बड़े भाई का सुख अथवा अपने से बड़ी उम्र के लोगों के साथ मित्रता से लाभ होगा।
5. **बुध+शुक्र**—शुक्र यहां अधिक बहनें दिलायेगा अथवा जातक को स्त्री मित्रों से लाभ होगा।
6. **बुध+शनि**—शनि यहां मूलत्रिकोण राशि में बुध के साथ होने से जातक को जनसम्पर्क, पत्रकारिता, लेखन के कार्यों से लाभ होगा।
7. **बुध+राहु**—तृतीय स्थान में राहु भाइयों में वैमनस्य फैलायेगा।
8. **बुध+केतु**—तृतीय स्थान में केतु कीर्ति देगा। जातक के बुद्धि का लोहा सभी लोग मानेंगे।

धनुलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में
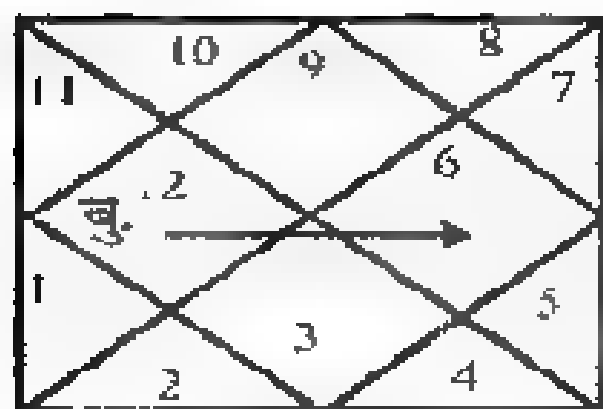
धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध

यहा चतुर्थ स्थान मे मीन (नीच) राशि का होगा। मीन राशि के 15 अशा तक बुध परमन ीच का होगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' एव 'पद्मसिहासन योग' बना। ऐसे जातक को वाहन एव मकान का सुख अति उत्तम होता है। जातक के लिए माता का सुख उत्तम जातक का ससुराल या जीवनसाथी उससे थोड़े छोटे कद का होगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत बुध की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि) पर होने से जातक महत्त्वाकाक्षी होगा तथा अपने धंधे मे खूब आगे बढ़ेगा

निशानी–जातक बड़ी-बड़ी बातें एवं ऊंची ऊंची योजनाएं बनायेगा पर व्यवहारिक धरातल पर कम चलेगा। विद्या प्राप्ति मे एक दो बार रुकावट आयेगी।

दशा–बुध की दशा-अतर्दशा मे जातक लगातार आगे बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। चतुर्थ स्थान मे मीन राशिगत यह युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच राशि का होगा. दोनो ग्रह यहा बैठकर दशम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध की उच्च राशि होगी। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान होगा। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक की किस्मत का सितारा 26 वर्ष की आयु मे चमकेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्र होने से जातक को माता-पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। विवाद रहेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल होने से जातक को माता पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी, सुख-सुविधाओं से युक्त होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा के समान वैभव सम्पन्न होगा। उसके पास अनेक वाहन होगे।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से जातक का ससुराल धनी होगा। जातक की पत्नी कमाऊ होगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु भौतिक सुखो मे बिगाड़ करता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु वाहन दुर्घटना देता है।

धनुलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में
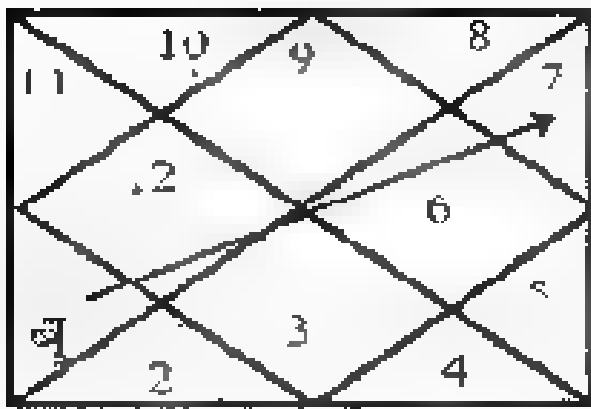
धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहा योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला भी है। यह धुनलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है बुध यहां पंचम स्थान में मेष (सम) राशि में होगा। इसके कारण पद्मसिंहासन योग' बनेगा ऐसा जातक स्वेच्छाचारी धूर्त व निर्लज्ज होता है। जातक बड़े भई व बहनों से उत्तम संबंध रखेगा। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। बुध दशम भाव से आठवें होने के कारण जातक को धंधे व्यापार, रोजगार की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक को विद्या का लाभ मिलेगा। जातक के मित्र अच्छे होंगे।

निशानी यह बुध संतान देने में विलम्ब करता है। खासकर पुत्र संतान, गुरु की दृष्टि या कृपा से होगी।

दशा–बुध की दशा–अंतर्दशा में जातक उन्नति करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। पंचम स्थान में 'मेष राशिगत' यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश-दशमेश बुध के साथ युति होगी सूर्य यहां उच्च का होगा। यहां पर यह युति खिलेगी। दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। ऐसा जातक बुद्धिमान, शिक्षित, प्रज्ञावान होगा। ईश्वर कृपा से एक तेजस्वी पुत्र अवश्य होगा कन्या संतति भी होगी। जातक भाग्यशाली होगी सरकारी क्षेत्र मे, राजनीति में जातक का दबदबा रहेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–गर्भसुख, गर्भपात का भय अथवा शल्य चिकित्सा से संतति की संभावना है।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल स्वगृही होने से पुत्र संतति जरूर होगी। विद्यायोग उत्तम है जातक की संतान तेजस्वी होगी
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु उच्च शिक्षा को बताते हैं। जातक स्वयं शिक्षित होगा। उसकी संतान भी शिक्षित होगी।

5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र विद्या में एक दो बार रुकावट (बाधा) का संकेत देता है।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि होने से विद्या अर्थकारी एवं व्यवहारिक होगी।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु पढ़ाई अधूरी छुड़वा देता है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु संघर्ष के साथ विद्या दिलाता है।

धनुलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में
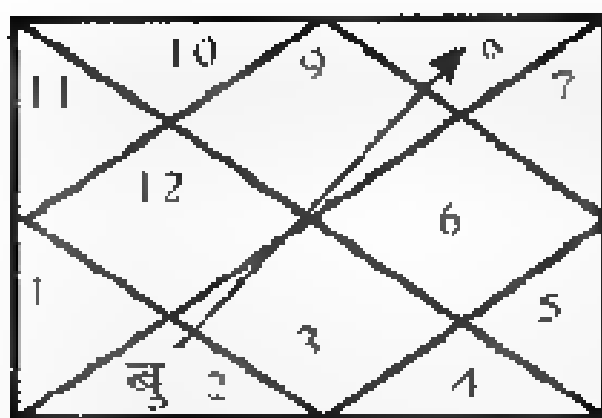
धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां छठे स्थान में वृष (मित्र) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति के कारण 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनता है। फलतः या तो विलम्ब विवाह होगा अथवा पत्नी से विचार नहीं मिलेगा। धंधे रोजी रोजगार की प्राप्ति हेतु जातक को संघर्ष करना पड़ेगा। ननिहाल का सुख उत्तम नहीं होगा। शत्रु बहुत होंगे।

दृष्टि—षष्टमस्थ बुध की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होने से जातक के खर्चे बढ़-चढ़ कर होंगे।

निशानी—जातक को चर्मरोग संभव है। दवाइयों में व्यर्थ का पैसा लगेगा

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी। जातक ऋण, रोग व शत्रुओं से परेशान रहेगा।

विशेष—दशमेश बुध के छठे होने से 'दुर्योग' बनता है। जातक कर्जदार एवं स्वार्थी होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। छठे स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देखेंगे। सूर्य के छठे जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध के छठे जाने से 'विवाहभंग योग' तथा 'राजभंग योग' भी बनेगा। फलतः यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है। जातक बुद्धिमान होगा। भाग्योदय हेतु जातक को काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा यहां उच्च का होगा। 'सरल नामक विपरीत राज योग' के कारण जातक धनवान एवं साधन सम्पन्न होगा परन्तु सही समय पर सही निर्णय लेने में चूक जायेगा
3. **बुध+मंगल**—मंगल तथा बुध की युति के कारण विद्या में बाधाएं आयेगी।
4. **बुध+गुरु** बुध, गुरु की युति के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा।
5. **बुध+शुक्र**—शुक्र की युति के कारण 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनेगा, ऐसा जातक धनी होगा पर उसके गृहस्थ सुख म कमी रहेगी।
6. **बुध+शनि**—बुध तथा शनि की युति यहा धनहीन योग, पराक्रमभग योग बनायेगी। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा एव उसकी प्रतिष्ठा भग होगी।
7. **बुध+राहु**—राहु एव बुध छठे स्थान में होने से जातक को हिस्टीरिया या स्मृतिनाश की बीमारी होगी।
8. **बुध+केतु**—केतु एव बुध छठे स्थान मे होने से जातक को मस्तिष्क विकार होते है।

धनुलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में
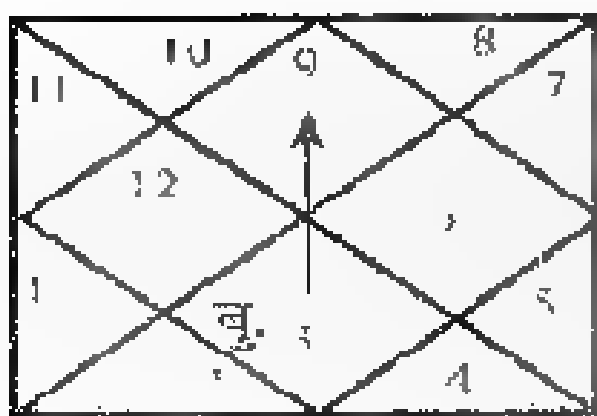
धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है, बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहा मिश्रित फलदायक है। बुध यहां सप्तम में मिथुन राशि का स्वगृही होने से 'कुलदीपक योग' एव 'भद्र योग' बनेगा। पद्मसिंहासन योग भी बनेगा, ऐसा जातक राजा या राजपुरुषो से कम वैभवशाली नहीं होगा। जातक को उच्च शिक्षा, प्रतिष्ठा एवं पद मिलेगा। जातक का विवाह शीघ्र होगा एवं विवाह के बाद तीव्रता से भाग्योदय होगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ बुध की दृष्टि लग्न भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को मेहनत का मिलेगा।

निशानी—जातक की जीवन साथी सुन्दर व सौम्य होगा जातक स्वयं एव उसका जीवनसाथी क्षमाशील प्रवृत्ति का होगा

दशा—बुध की दशा अतर्दशा मे विशेष उन्नति व भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से संम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य–**'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। सातवें स्थान पर मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहा स्वगृही होगा फलत: 'भद्र योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलत: जातक परम बुद्धिमान, धनवान होगा। विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा। पत्नी तेज स्वभाव की होगी। जातक राजा के समान महान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
2. **बुध+चंद्र–**ऐसा जातक साधन सम्पन्न होते हुए पत्नी पक्ष से पीड़ित रहेगा।
3. **बुध+मंगल–**बुध के साथ मंगल होने से विद्या एवं संतान सुख अति उत्तम होंगे।
4. **बुध+गुरु–**बुध के साथ गुरु जातक को परिश्रम का भरपूर लाभ देगा
5. **बुध+शुक्र–**बुध के साथ शुक्र होने से सुन्दर पत्नी होगी, कामुक होगी पर जातक उससे संतुष्ट नहीं होगा।
6. **बुध+शनि** बुध के साथ शनि जातक को ससुराल से धन दिलायेगा।
7. **बुध+राहु–**जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा तथा वह अपने निर्णय पर दृढ़ रहेगा।
8. **बुध+केतु–**गृहस्थ सुख मे थोड़ी खटपट रहेगी।

धनुलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में

10 9 8 7 11 12 6 1 5 3 2 बु 4
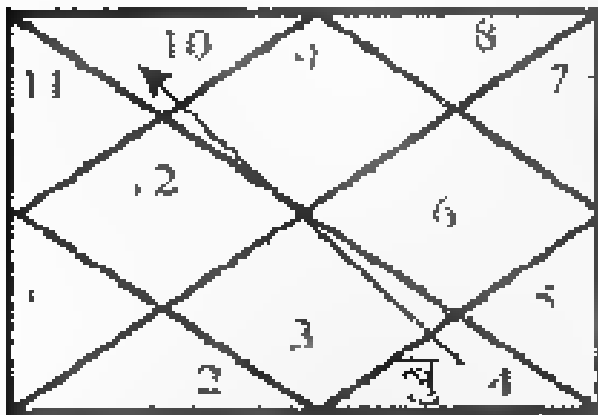
धनुलग्न मे बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहा योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का भी काम करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहा मिश्रित फलदायक है। बुध यह अष्टम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति से 'विवाहभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' की स्थिति बनेगी। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है अथवा पत्नी से विचार बिलकुल नहीं मिलते, पिता सुख, राज्य प्रतिष्ठा, मित्र रिश्तेदारों से धोखा मिलता है। दाम्पत्य जीवन में कटुता या तलाक की स्थिति आती है।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धन भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को धनार्जन हेतु बहुत परिश्रम करना पड़ेगा।

निशानी–जातक बुद्धिशाली होगा। जातक शारीरिक परिश्रम की बजाये दिमागी परिश्रम से कमायेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

विशेष—दशमेश बुध के आठवें होने से 'दुर्योग' बनता है। जातक स्वार्थी एवं कर्जदार होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। अष्टम स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां शत्रुक्षेत्री है। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य आठवें जाने से 'भाग्यभंग योग' तथा बुध आठवें जाने से 'विवाहभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बना। यहां पर यह युति ज्यादा सार्थक नहीं है, ऐसा जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होगा परन्तु भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**—सरलनामक 'विपरीतराज योग' के कारण जातक धनी एवं साधन सम्पन्न होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल जातक के दो विवाह योग बनाता है।
4. **बुध+गुरु**—गुरु उच्च का होकर बुध से युति करेगा। जातक प्रबल महत्त्वाकांक्षी होगा पर योजनाएं फलीभूत नहीं होगी।
5. **बुध+शुक्र**—जातक की पत्नी मीठी वाणी बोलने वाली, लेखक, गीतकार, कवि तथा शौकीन मिजाज एवं अत्यधिक खर्चीली प्रवृत्ति की होगी। पति के रुचि की परवाह नहीं करेगी।
6. **बुध+शनि**—'धनहीन योग', 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। फलतः पत्नी से तलाक जीवनसाथी की अकाल मृत्यु जैसी घटनाएं हो सकती है।
7. **बुध+राहु**—जातक के जीवनसाथी की अकाल मृत्यु हो सकती है।
8. **बुध+केतु**—जातक का जीवन साथी लम्बी बीमारी भोग सकता है।

धनुलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में
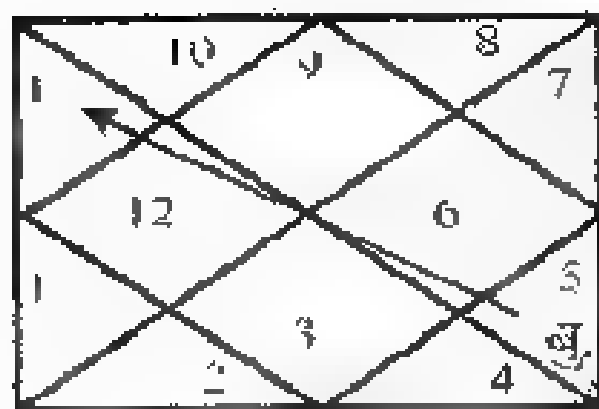
धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है, पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां नवम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा।

जिसके कारण 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा ऐसा जातक बुद्धिमान, धार्मिक, दीर्घायु, धनवान, पुत्रवान, स्त्री-संतान से युक्त, सुखी व भाग्यशाली व्यक्ति होता है जातक के पिता के साथ मधुर संबंध होते हैं।

दृष्टि—नवमस्थ बुध की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। फलत. जातक पराक्रमी होगा भाई बहनो, मित्रों के साथ निभेगी।

निशानी—जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होता है। गृहस्थ सुख श्रेष्ठ रहेगा

दशा—बुध की दशा- अंतर्दशा भाग्योदय करायेगी। गृहस्थ सुख एव रोजी रोजगार के अवसर प्रदान करेगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। नवम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहा स्वगृही होगा फलतः व्यक्ति बुद्धिशाली होगा बलवान भाग्येश की दशमेश के साथ युति होने के कारण जातक के भाग्य का सितारा 26 वर्ष की आयु में चमकेगा. यहा पर यह युति खिलेगी। जातक पराक्रमी होगा। मित्र परिजनों की मदद मिलती रहेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चद्र**—जातक के भाग्य में अवरोध क साथ उन्नति होगी। किसी भी कार्य में आसानी से सफलता नही मिलेगी।
3. **बुध+मंगल** जातक अपनी बुद्धि से विद्या व हुनर से खूब कमायेगा, किस्मत साथ देगी।
4. **बुध+गुरु**—जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं मिलेंगी। जातक आध्यात्मिक शक्ति से युक्त होगा।
5. **बुध+शुक्र**—जातक व्यापार के माध्यम से आगे बढ़ेगा।
6. **बुध+शनि**—जातक धनी, पराक्रमी होगा तथा मित्रों से लाभान्वित होता रहेगा
7. **बुध+राहु** जातक कभी भी पहली श्रेणी में उत्तीर्ण नहीं होगा, फिर भी दूरदर्शिता बुद्धिमत्ता उत्तम होगी।
8. **बुध+केतु**—जातक में खोजी प्रवृत्ति प्रधान रहेगी तथा बुद्धि तेज रहेगी।

धनुलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में
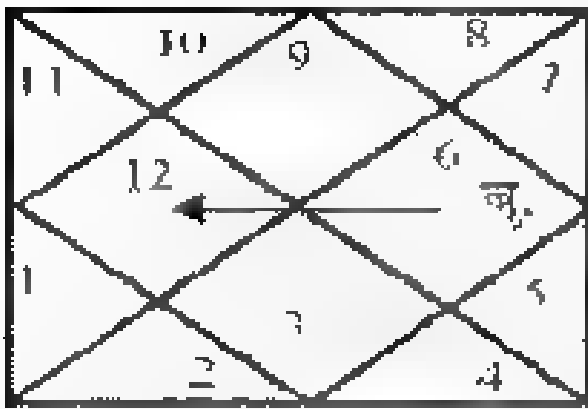
10	9	8
11		7
12	6 बु.	
1	3	5
2		4

धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है बुध यहां दशम स्थान में उच्च का होगा। कन्या राशि के 15 अंशो मे बुध परमोच्च का होगा। बुध की इस स्थिति के कारण 'कुलदीपक योग', 'पद्मसिंहासन योग' एव 'भद्र योग' बना ऐसा जातक शक्तिशाली राजा तुल्य पराक्रमी होता है। ऐसे जातक को उत्तम वाहन एवं भवन का सुख तथा नौकर चाकर का सुख मिलता है। जातक की आमदनी उत्तम होगी।

दृष्टि—दशमस्थ बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी—जातक को ससुराल अपने से उच्च श्रेणी का मिलेगा। जातक की पत्नी सुन्दर तथा गृहस्थ सुख उत्तम होगा।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक जीवन के चरमोत्कर्ष व विकास को प्राप्त करेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। दशम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहा उच्च का होगा जिसके कारण क्रमशः 'भद्र योग' एव 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा उसके एक से अधिक वाहन होंगे। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा तथा राज्य (सरकार) में उसका दबदबा रहेगा
2. **बुध+चंद्र**—राजयोग मे बाधा होगी राजनीति मे जैसा चाहेंगे, वैसा पद नहीं मिलेगा।
3. **बुध+मंगल**—मंगल बुध के साथ 'दिग्बली' होकर राजयोग मे दुगनी शक्ति भर देगा जातक राजा तुल्य शक्तिशाली होगा।
4. **बुध+गुरु**—गुरु यहा 'केसरी योग' एव 'कुलदीपक योग' को दुगना कर देगा। जातक के पास उत्तम श्रेणी के वाहन होंगे
5. **बुध+शुक्र**—शुक्र की युति से 'नीचभग राजयोग' बनेगा जातक के पास अनेक वाहन एवं अनेक मकान होंगे।

6. **बुध+शनि**–शनि की युति के कारण जातक का ससुराल बहुत धनवान होगा। जातक की पत्नी कमाऊ होगी।
7. **बुध+राहु**–राहु यहां राजयोग को प्रबलता प्रदान करेगा। जातक राजनीति में नाम कमा सकता है।
8. **बुध+केतु**–केतु यहां कीर्ति देगा। धन के साथ कीर्ति जुड़ी रहेगी।

धनुलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में
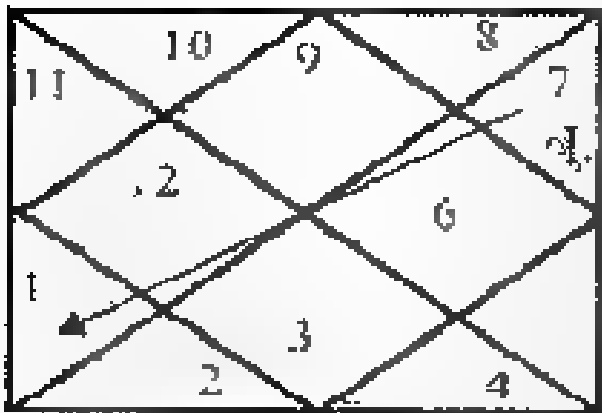
धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वाला के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां एकादश भाव में तुला (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को पिता का सहयोग, स्त्री–संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक को व्यापार–नौकरी में भरपूर धन व प्रतिष्ठा मिलेगी। विद्या-बुद्धि, विवेक से जातक अच्छा धन कमायेगा। मित्र वर्ग भी उत्तम श्रेणी के होंगे।

दृष्टि–एकादश भावगत बुध की दृष्टि पञ्चम स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक प्रज्ञावान होगा जातक की संतति उत्तम होगी।

निशानी–कन्या संतति अधिक होगी जातक धनी होगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। एकादश स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां नीच राशिगत होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को देखेंगे फलतः जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा जातक की संतान भी शिक्षित होगी जातक व्यापार के द्वारा धन कमायेगा जातक समाज का लब्ध–प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **बुध+चंद्र**–जातक को व्यापार व्यवसाय में हानि उठानी पड़ेगी।
3. **बुध+मंगल**–जातक की बुद्धि धृष्ट एवं ईर्ष्यालु तथा लड़ाई की भावना से ओत-प्रोत होगी
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा।

5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ स्वगृही शुक्र होने से जातक को उद्योग-व्यापार में लाभ देगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ उच्च का शनि जातक को महाधनी एवं पराक्रमी बनायेगा।
7. **बुध+राहु**–जातक मिथ्यावादी एवं अविश्वासी होगा।
8. **बुध+केतु**–जातक की बुद्धि चालाक व शातिर किस्म की होगी। दूसरों को हानि पहुंचाने में आनन्द समझेगा।

धनुलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में
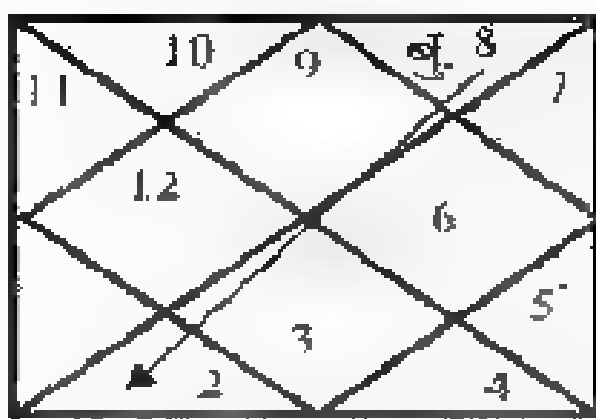
धनुलग्न में बुध सप्तमेश व राज्येश है। बुध यहां योगकारक है पर सप्तमेश होने से अशुभ फल देने वाला है। यह धनुलग्न वालों के लिए सहायक मारकेश का काम भी करेगा। द्विस्वभाव लग्न होने से बुध यहां मिश्रित फलदायक है। बुध यहां द्वादश स्थान में वृश्चिक (शत्रु) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति में 'विवाहभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' बनता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा अथवा पत्नी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। जातक को रोजी रोजगार, नौकरी व्यापार हेतु काफी परेशानी उठानी पड़ेगी। बुध सप्तम भाव में 'षडाष्टक योग' करके बैठा है, फलतः पत्नी के कारण जातक को परेशानी आयेगी। गृहस्थ जीवन में नित्य कलह रहेगी।

दृष्टि–द्वादश भावगत बुध की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी, फलतः मामा से वैर रहेगा।

निशानी–रोग, ऋण व शत्रु जातक को परेशान करते रहेंगे। जातक अवसर पर कार्य करने में चूक जायेगा।

दशा–बुध की दशा अन्तर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

विशेष–दशमेश बुध के बारहवें स्थान में जाने से 'दुर्योग' बनता है। जातक स्वार्थी व कर्जदार होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार धनुलग्न में सूर्य भाग्येश होगा। द्वादश स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की सप्तमेश+दशमेश बुध

के साथ युति कहलायेगी। यहा बैठकर दोनो ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलत: जातक बुद्धिशाली तथा भाग्यशाली होगा. सूर्य बारहवें होने से 'भाग्यभग योग' तथा बुध बारहवें होने से 'विवाहभग योग' एवं 'राजभंग योग' की सृष्टि होगी। फलत: ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

2. **बुध+चद्र**—बुध के साथ नीच का चद्रमा जातक की बुद्धि मलिन करेगा। जातक की सोच निराशावादी एवं 'नेगेटिव' होगी।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ स्वगृही मंगल विदेश में धन देगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु परिश्रम का लाभ नहीं मिलने देगा जातक की शिक्षा व्यर्थ जायेगी।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र 'हर्षनामक विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी होगा पर व्यभिचारी होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि 'धनहीन योग' 'पराक्रमभंग योग' बनायेगा। जातक को अपने गलत फैंसले पर पछताना पड़ेगा। प्रतिष्ठा कम होगी।
7. **बुध+राहु**—जातक को स्मृतिनाश एव हिस्टीरिया जैसी बीमारी हो सकती है।
8. **बुध+केतु** मस्तिष्क विकृति सभव है। जातक द्वारा जल्दीबाजी में लिये गये निर्णय सदैव दु:खदाई होंगे।

❑❑❑

धनुलग्न में गुरु की स्थिति

धनुलग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में
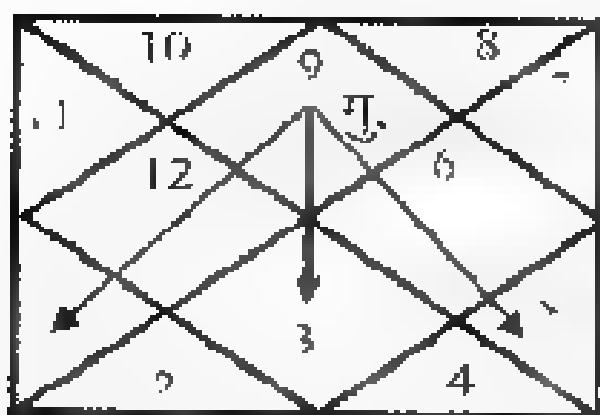
धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां प्रथम स्थान में स्वगृही होगा फलत: 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' एवं 'हंस योग' बनेगा। ऐसे जातक पर ईश्वर की विशेष अनुकम्पा के कारण उसका भाग्योदय शीघ्र होता है जातक को बुजुर्गों की जमीन-जायदाद मिलती है। जातक विद्वान, शिक्षित होगा तथा राजा किंवा राजा से कम ऐश्वर्यवान नहीं होगा।

दृष्टि--लग्नस्थ गुरु की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि), सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं भाग्य भवन (सिंह राशि) पर होगी। जातक को जीवन साथी उत्तम मिलेगा तथा पुत्र-संतान की प्राप्ति होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति, सहयोग मिलेगा।

निशानी--ऐसे जातक के जन्म से पिता की किस्मत चमकती है।

दशा--गुरु की दशा-अंतर्दशा में गृहस्थ सुख की प्राप्ति होगी। भाग्योदय होगा। जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध--

1. **गुरु+सूर्य**--गुरु के साथ सूर्य, गुरु की गुणवत्ता को बढ़ायेगा। जातक प्रबल भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 25 वर्ष की आयु से शुरु हो जायेगा।
2. **गुरु+चंद्र** आपका जन्म धनुलग्न में है। भोजसंहिता के अनुसार धनुलग्न के प्रथम स्थान में गुरु+चंद्र की युति धनु राशि में होगी यह युति वस्तुतः अष्टमेश

चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान, सप्तम स्थान एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देख रहे हैं। गुरु यहां स्वगृही होने से बलवान है यहां 'हंस योग', 'कुलदीपक योग', 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हो रही है। फलतः जातक को उत्तम संतान सुख एवं विद्या क्षेत्र में उपलब्धि मिलेगी। विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा जातक की गिनती समाज के विशिष्ट भाग्यशाली एवं प्रतिष्ठित लोगों में होगी। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल गुरु की गुणवत्ता में चार चांद लगायेगा जातक प्रबल आत्मविश्वासी, साहसी एवं ठोक बजाकर निर्णय लेने वाला होगा
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध जातक को धनी ससुराल देगा। जातक की पत्नी कमाकर देने वाली, वफादार होगी।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र रोग व शत्रु पर विजय दिलायेगा। जातक की पत्नी कामदेव की प्रतिमूर्ति होगी,
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि जातक का जन्म धनी परिवार में करायेगा, जातक को बुजुर्गों की सम्पत्ति वसीयत में मिलेगी।
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में लग्नेश गुरु के साथ प्रथम स्थान में अग्नि संज्ञक राहु अपनी नीच राशि में है 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की मनोवृत्ति कुटिल होगी। ऐसा जातक दूसरों को बुद्धू समझाते हुए अपने धन, पराक्रम एवं प्रभाव का दुरुपयोग करेगा। यहां 'हंस योग' के कारण जातक महाधनी होगा।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु कीर्ति देगा

धनुलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में
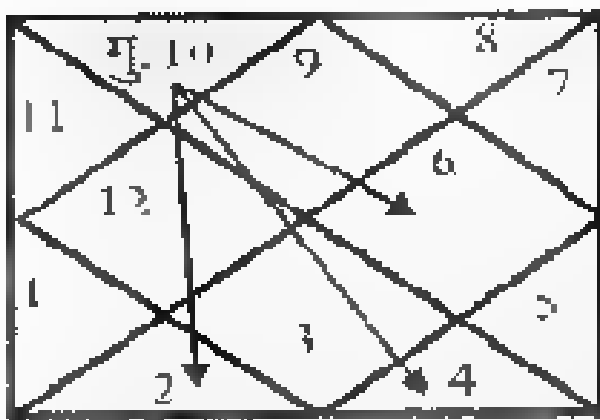
गु. 10	9	8	7
11	12	6	
1	3	5	
2		4	

धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां द्वितीय स्थान में नीच का होगा। मकर राशि के 5 अंशों में गुरु परम नीच का होगा। ऐसा जातक बाल्यावस्था में बीमार होगा। जातक कुटुम्ब प्रेमी होगी। आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा पर कितना भी कमाये बचत नहीं होगी। जातक को वाहन, संतान सुख उत्तम प्राप्त होगा ऐसा जातक डॉक्टर, वकील, ज्योतिष, न्यायाधीश या राजगुरु के रूप में ज्यादा यशस्वी होगा।

दृष्टि–गुरु की दृष्टि छठे स्थान (वृष राशि), अष्टम स्थान (कर्क राशि) एवं दशम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग, शत्रु का नाश करने में सक्षम होता है। जातक को नौकरी अच्छी मिलेगी.

निशानी–जातक भोजन का शौकीन होगा। जातक का शरीर चर्बी वाला होगा।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा बहुत अच्छी जायेगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–यहा नीच के गुरु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। गुप्त रोग की संभावना भी रहगी।
2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न मे है। 'भोजसहिता' के अनुसार धनुलग्न के द्वितीय स्थान मे गुरु+चद्र की युति 'मकर राशि' में होगी यहां वस्तुतः अष्टमेश चद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति होगी। जहा बैठकर दोनों ग्रहो की दृष्टि छठे स्थान आठवें स्थान एव दशम भाव पर होगी। गुरु नीच राशि पर ही होगा। फलतः जातक की लंबी आयु होगी। दुर्घटनाओं से बचाव होगा। शत्रुओं का नाश भी होगा तथा राजपक्ष मे शुभ घटना भी घटित हो सकती है।
3. **गुरु+मंगल**–यहा पर मंगल होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एव वैभवशाली होगा। जातक के पास स्थाई सम्पत्ति होगी।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध होने से जातक वाक्पटु, कुशल वक्ता एवं धार्मिक व्यक्ति होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र होने से जातक का धन व्यर्थ के कामों में खर्च होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि 'नीचभग राजयोग' की सृष्टि करेगा। जातक राजातुल्य वैभव, ऐश्वर्य को भोगेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां धनुलग्न में नीच के गुरु के साथ द्वितीय स्थान में राहु मकर (सम) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक का धन गलत कार्यों में खर्च होगा। धन सग्रह हेतु किये गये प्रयासों में सफलता नहीं मिलेगी
8. **गुरु+केतु**–जातक फिजूलखर्च होगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में

धनुलग्न मे गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ
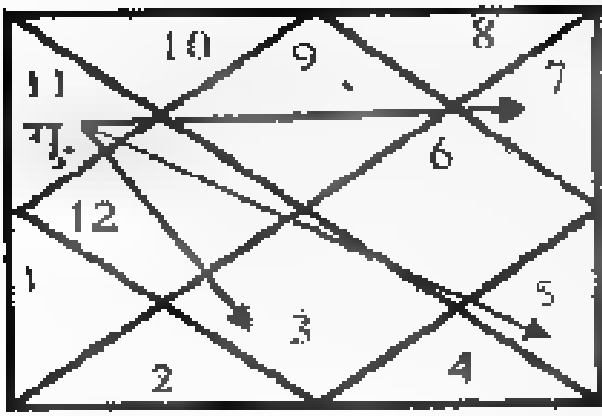
ग्रहो की युति से यह कही कही अशुभ फल भी देगा। गुरु यहा तृतीय स्थान में कुंभ (सम) राशि में होगा। जातक धार्मिक होगा एव उसे पिता की ओर से सही सम्मान भी मिलेगा। माता का सुख कम, मकान तथा वाहन का सुख मध्यम होगा। भाई-बहनों मे प्रेम होगा। राजनीति, शिक्षा व धर्म के क्षेत्र में जातक को बड़ी भारी सफलता मिलेगी।

दृष्टि—तृतीयस्थ गुरु की दृष्टि सप्तम भाव (मिथुन राशि), भाग्य स्थान (सिंह राशि) एव लाभ स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक भाग्यशाली होगा उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

दशा—गुरु की दशा-अतर्दशा बहुत उत्तम जायेगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—यहा गुरु के साथ सूर्य होने से जातक बहुत भाग्यशाली होगा। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी।
2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चद्र की युति तृतीय स्थानगत कुभ राशि मे होगी। वस्तुत: यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को विवाह सुख, भाग्य सुख एवं व्यापार-सुख मिलेगा। जातक को ये तीनों सुख पूर्ण गुणवत्ता के साथ मिलेंगे। जातक सुखी व्यक्ति होगा।
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल भाइयों कुटम्बीजनों का सुख देगा।
4. **गुरु+बुध**—यहां गुरु के साथ बुध होने से जातक को बड़े भाई का सुख, छोटे भाई-बहनों का सुख मिलेगा। जातक को मित्रों से लाभ होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र भाइयो बहनों व बुआ के मध्य मनमुटाव की स्थिति लायेगा।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि मूल त्रिकोण राशि में होगा। जातक के भाई व नजदीकी रिश्तेदार धनवान होंगे।
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न मे कुंभ के गुरु के साथ तृतीय स्थान में राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि मे है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक का पराक्रम भग होगा। जातक की अपने भाइयों-परिजनों के साथ कम बनेगी। बराबरी की भावना से संबंध बिगड़ जायेंगे।

8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु भाइयों से यश दिलायेगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
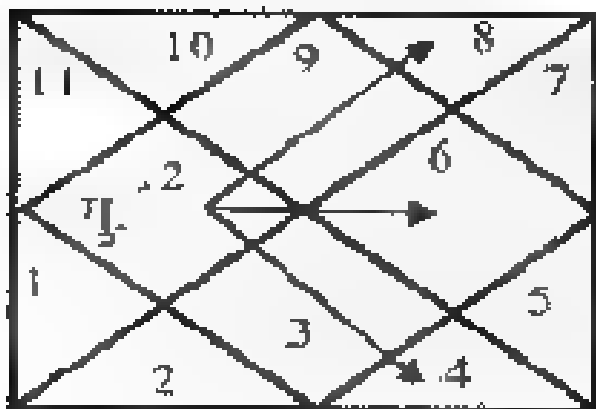
धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां चतुर्थ स्थान में स्वगृही होगा। फलतः कुलदीपक योग, केसरी योग एवं हंस योग बनेगा ऐसा जातक राजा के समान महान ऐश्वर्यशाली व यशस्वी होगा। जातक को जमीन-जायदाद, वाहन, मित्र बंधु, माता पिता का पूर्ण सुख मिलता है।

दृष्टि–चतुर्थस्थ गुरु की दृष्टि अष्टम स्थान (कर्क राशि) दशम स्थान (कन्या राशि) एवं व्यय स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। अष्टम भाव पर दृष्टि होने से यह जातक को दीर्घायु देता है।

निशानी–जातक को नौकरी-व्यवसाय में यश-सम्मान मिलेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का दानी परोपकारी व्यक्ति होता है।

दशा–गुरु की दशा-अन्तर्दशा में जातक की भौतिक व आध्यात्मिक उन्नति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य राजयोग को दूना कर देगा जातक को पिता का सुख तथा सम्पत्ति मिलेगी।
2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति चतुर्थ भावगत मीन राशि में होगी। यहां यह युति वस्तुतः अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश के साथ युति होगी गुरु यहां स्वगृही होंगे, केन्द्र में बैठकर दोनों शुभ ग्रह 'हंस योग', 'यामिनीनाथ योग' एवं 'कुलदीपक योग' की सृष्टि करेंगे। इनकी दृष्टि अष्टम स्थान, दशम स्थान एवं व्यय स्थान पर होगी। फलतः जातक की आयु दीर्घ होगी। वह रोग एवं दुर्घटनाओं का मुकाबला करने में सक्षम होगा। जातक राज्य (सरकार) में उत्तम पद को प्राप्त करेगा तथा यात्राओं एवं शुभकार्यों (परोपकार के कार्यों) में रुपया खर्च करेगा।

3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल जातक को गांव का मुखिया एवं बड़ी सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा।

4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिबल से खूब रुपया कमायेगा। जातक को ननिहाल से लाभ होगा।

5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र 'किम्बहुना योग' बनायेगा। जातक राजा होगा। उसके पास कई वाहन होंगे।

6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि होने से जातक की मां धनवान एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली होगी।

7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में स्वगृही गुरु के साथ चतुर्थ स्थान में राहु अपनी नीच राशि में है 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की माता गुजर जायेगी। 'हंस योग' के कारण जातक महाधनी होगा परन्तु माता का सुख कमजोर रहेगा।

8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु जातक को धार्मिक कार्यों से यश देगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में
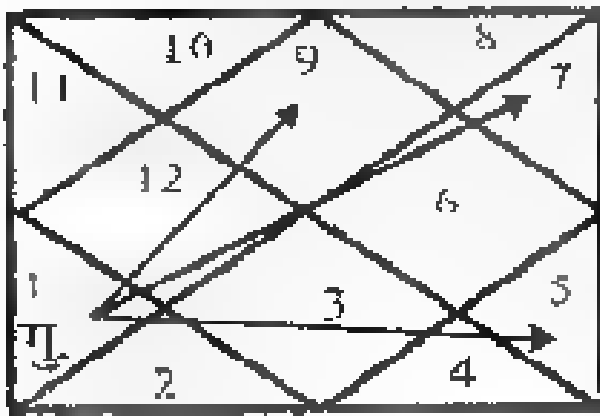
धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां पंचम स्थान में मेष (मित्र) राशि का होगा जातक का स्वास्थ्य उत्तम होगा। उसे उत्तम भवन एवं वाहन का सुख मिलेगा। जातक का पिता के साथ उत्तम सबंध होगा। जातक शिक्षित, सभ्य एवं विद्वान होगा

दृष्टि—पंचमस्थ गुरु की दृष्टि भाग्य स्थान (सिंह राशि), लाभ स्थान (तुला राशि) एवं अपने ही घर लग्न स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय मे लाभ होगा। जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।

निशानी—जातक चुगलखोर होगा

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में व्यापार-व्यवसाय बढ़ेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य उच्च का होने से जातक उच्च विद्या, प्रशासनिक नौकरी में उच्च पद प्राप्त करेगा।

2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति पंचम भावस्थ 'मेष राशि' में होगी। यह युति वस्तुतः अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह, भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक की उन्नति उसका भाग्योदय 24 वर्ष की आयु में हो जायेगा। जातक धनवान एवं विद्वान् होगा व्यापार-व्यवसाय में उसे लाभ बराबर मिलता रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा

3. **गुरु+मंगल**-गुरु के साथ मंगल स्वगृही होगा। ऐसा जातक उत्तम शिक्षा प्राप्त करेगा। उसकी संतति सुयोग्य एवं प्रभावशाली होगी।

4. **गुरु+बुध**-गुरु के साथ बुध जातक को प्रखर बुद्धि का स्वामी बनायेगा। जातक कम्प्यूटर मास्टर होगा। जातक सी.ए., गणक, गणितज्ञ एवं वैज्ञानिक के रूप में उत्तम प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।

5. **गुरु+शुक्र**-गुरु के साथ शुक्र होने से एकाध बार विद्या प्राप्ति में रुकावट संभव है जातक व्यापार प्रेमी होगा।

6. **गुरु+शनि**-गुरु के साथ शनि यहां नीच राशि में होगा जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा व विदेश जायेगा।

7. **गुरु+राहु**-यहां धनुलग्न में गुरु के साथ पंचम स्थान में राहु मेष (सम) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण विद्या में रुकावट, संतान में रुकावट संभव है। जातक परेशान व अशांत रहेगा।

8. **गुरु+केतु**-यहां केतु उत्तम संतति देता है।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति षष्टम स्थान में
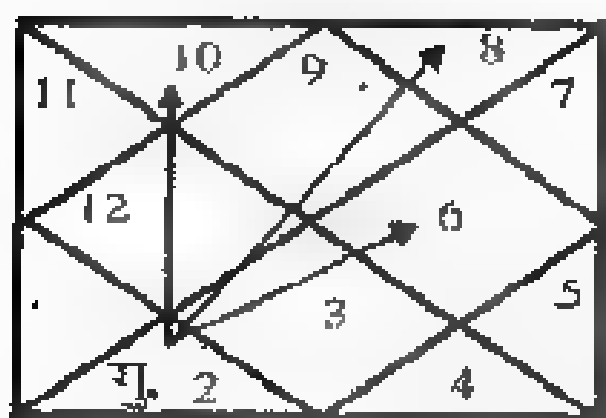
11	10	9	8
12			7
	3	6	5
गु. 2		4	

धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं कहीं अशुभफल भी देगा। गुरु यहां छठे स्थान में वृष (शत्रु) राशि में होगा। गुरु के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' बनेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति बड़े संघर्ष के बाद होगी। जातक का कुटुम्ब बड़ा होगा। जातक को मकान-वाहन का सुख संतोषजनक नहीं होगा।

दृष्टि—षष्टमस्थ गुरु की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि), व्यय भाव (वृश्चिक राशि) एवं धन भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक का धंधा व्यापार ठीक चालेगा जातक का खर्च आवक से अधिक होगा।

निशानी—जातक को मूत्राशय का रोग हो सकता है। जातक को मदाग्नि की शिकायत सभव है।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' में वृद्धि करता है। जातक को काफी दिक्कतों व परेशानी का सामना करना पड़ेगा।
2. **गुरु+चंद्र** आपका जन्म धनुलग्न में है 'भोजसहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति छठे भावगत वृष राशि में है। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहा उच्च का होगा अष्टमेश का षष्टम में जाना अच्छा माना गया है परन्तु गुरु के कारण 'लग्नभग योग' तथा 'सुखभंग योग' की सृष्टि हुई फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नही रहेगा सुख प्राप्ति के संसाधनो म कमी महसूस करेगे तथा कई बार ऐसा भी लगेगा कि प्रयत्न (प्रयासों) का पूरा लाभ नहीं मिल रहा है। इस शुभ योग के कारण अन्तिम सफलता निश्चित है
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल होने से 'विद्याभग योग' बनता है। जातक को संतान संबंधी परेशानियो का सामना करना पड़ सकता है।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध विलम्ब विवाह योग बनाता है। 'विवाहभंग योग' भी बनाता है। शादी होकर छूट सकती है।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' की सृष्टि करती है। जातक धनी मानी अभिमानी होगा। गुप्तेन्द्री का रोग सभव है
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि 'धनहीन योग', पराक्रमभग योग बनाता है। जातक को आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा। कई बार प्रतिष्ठा भग होने के अवसर उपस्थित होंगे।
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ छठे स्थान में राहु वृष (उच्च) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण परिश्रम का लाभ नहीं होगा। कार्य मे सफलता नहीं मिलेगी। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा
8. **गुरु+केतु**—यह केतु के कारण गुप्त रोग की संभावना है।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति सप्तम स्थान में
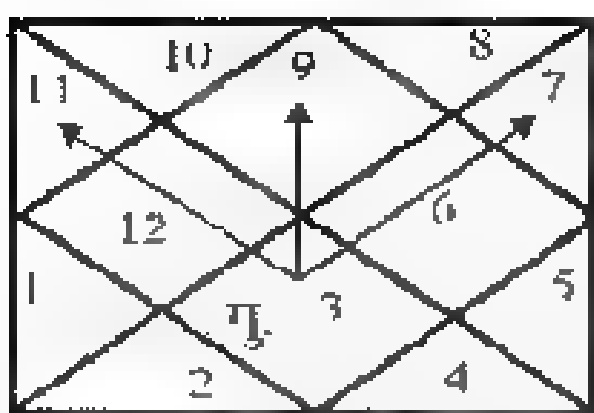
धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां सप्तम स्थान में मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। गुरु के कारण 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' बनेगा। ऐसे जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली व आकर्षक होगा। लग्नेश के लग्न को देखने से 'लग्नाधिपति योग' बना। जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। विजयश्री हाथ लगेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ गुरु की दृष्टि लाभ स्थान (तुला राशि), लग्न स्थान (धनु राशि) एवं पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक को व्यापार में लाभ होगा, स्वास्थ्य उत्तम होगा। जातक पराक्रमी होगा।

निशानी–जातक को माता, वाहन का सुख उत्तम मिलेगा।

दशा–गुरु की दशा अंतर्दशा शुभ होगी, परन्तु गुरु में शनि का अंतर मारक होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य होने से जातक का सुसराल धनवान होगा।
2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है, 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति सातवें भाव में मिथुन राशि के अंतर्गत होगी। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। यह युति केन्द्रवर्ती है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान पर है साथ ही 'कुलदीपक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि भी हो रही है, फलतः जातक के व्यक्तित्व में निखार आयेगा, जातक समाज का अग्रगण्य, प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक व्यापार व्यवसाय के द्वारा धन की प्राप्ति करेगा एवं उसका जनसम्पर्क सघन होने से पराक्रम तेज रहेगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से 'मांगलिक दोष' समाप्त होगा। जातक को स्त्री-संतान सुख मिलेगा।
4. **गुरु+बुध**–जातक राजा के समान पराक्रमी तथा वैभवशाली होगा। 'भद्र योग' के कारण जातक की पत्नी अत्यन्त सुन्दर एवं वफादार होगी।

5 **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र होने से जातक की पत्नी विशेष सुन्दर व हृष्ट–पुष्ट शरीर वाली होगी पति–पत्नी मे नोक-झोक होती रहेगी।

6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि होने से जातक का ससुराल धनवान होगा पत्नी कमाऊं होगी।

7. **गुरु+राहु**—यहा धनुलग्न में गुरु के साथ सातवे स्थान में राहु मिथुन (मूलत्रिकोण) राशि मे है। 'चाण्डाल योग' के कारण गृहस्थ सुख में बाधा होगी। जातक को अपनी पत्नी से विचारधारा कम मिलेगी पत्नी के रहते दूसरी औरत से संबंध होगे।

8. **गुरु+केतु**—यहा केतु पट मे शल्य चिकित्सा करा सकता है।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में
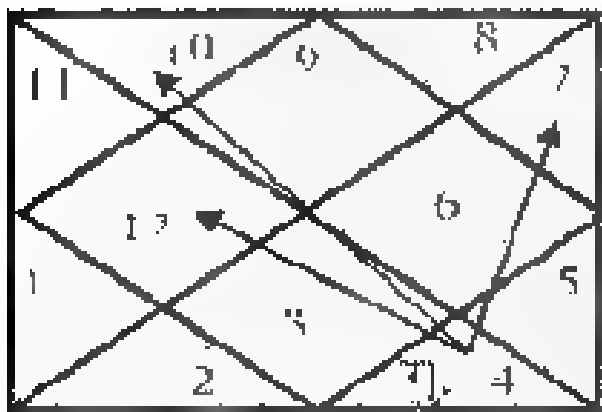
धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं–कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां अष्टम स्थान में उच्च का होगा। कर्क राशि के पाच अंशों में गुरु परमोच्च का कहलायेगा। गुरु की इस स्थिति के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभग याग' बनेगा। ऐसे जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पडेगा। यह गुरु अल्पायु का दर्शाता है। जातक को उत्तम विद्या की प्राप्ति होगी।

दृष्टि—अष्टमस्थ गुरु की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का खर्च बढ़ा चढ़ा होगा। माता की बीमारी को लेकर धन खर्च होगा।

दशा—गुरु की दशा अतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य 'भाग्यभग योग' की सृष्टि करेगा जातक के जीवन में सरकारी परेशानियां आयेंगी

2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चद्र की युति आठवे भाव में कर्क राशि में अंतर्गत होगी। वस्तुतः यह युति अष्टमेश चद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है गुरु अष्टम में जाने

से 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखभंग योग' की सृष्टि होगी। चंद्रमा वस्तुतः अष्टमेश होकर अष्टम भाव में स्वगृही है अतः जातक की आयु मे वृद्धिकर्ता ही है। अष्टम स्थान में बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव, धन भाव एवं सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को प्रयत्न करने पर यथेष्ट धन की प्राप्ति तो होगी पर वह धन खर्च होता चला जायेगा। जातक को जीवन मे सभी प्रकार के भौतिक सुख, संसाधन एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी।

3. **गुरु+मंगल**–यहां मंगल के कारण 'नीचभंग योग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली तथा पराक्रमी होगा। 'विपरीत राजयोग' भी बना है। जातक को राजनीति में हस्तक्षेप होगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध दो विवाह करायेगा गृहस्थ सुख मे बाधा (न्यूनता) बनी रहेगी।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र के कारण 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक धनवान एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनता है। जातक को आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ेगा तथा मान-प्रतिष्ठा भंग होने के अवसर उपस्थित होंगे।
7. **गुरु+राहु**–यहां धनुलग्न मे गुरु के साथ आठवें स्थान में राहु कर्क (शत्रु) राशि में है 'चाण्डाल योग' के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। कार्य मे सफलता नहीं मिलेगी दुर्घटना से अंग-भंग होने का खतरा है।
8. **गुरु+केतु**–यहां केतु शल्य चिकित्सा का योग कराता है।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में
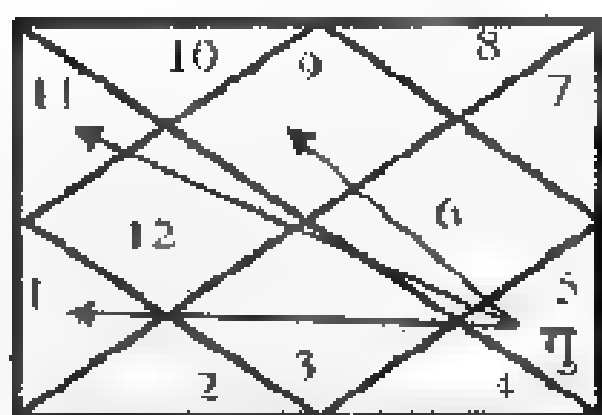
11	10	9	8	7
12		6		
1			5 गु	
	2	3	4	

धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति मे यह कहीं कहीं अशुभ फल भी देगा गुरु यहां नवम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा। ऐसे व्यक्तियों पर ईश्वर की अनुकम्पा रहती है। संघर्ष न्यून एवं भाग्योदय शीघ्र होता है। ऐसे जातक का व्यक्तित्व प्रभावशाली, स्वास्थ्य उत्तम एवं आयु दीर्घ होती है। जातक को माता पिता का सुख

एव सम्पत्ति मिलती है छोटे भाई बहनों का सुख पत्नी संतान का सुख उत्तम होता है।

दृष्टि–नवमस्थ गुरु की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि), पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) एवं संतान भाव (मेष राशि) पर होगी फलत: जातक पराक्रमी होगा जातक को प्रत्येक कार्य मे सफलता मिलेगी। जातक की संतति कुल का नाम रोशन करेगी।

निशानी–जातक को बेटे-पोतों का पूर्ण सुख मिलता है

दशा–गुरु की दशा अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–सूर्य यहां स्वगृही होकर प्रबल राजयोग बनायेगा। ऐसा जातक तेजी से उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा। योजनाए सफल होंगी
2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में गुरु+चंद्र की युति नवमे भाव में 'सिंह राशि' के अंतर्गत हो रही है वस्तुत: यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश-सुखेश के साथ युति है। यहां बैठकर दोनो ग्रह लग्न भाव, पराक्रम स्थान एवं पंचम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत जातक के व्यक्तित्व में निखार आयेगा उनका बहुमुखी विकास होगा। उसकी प्रथम संतति के बाद उसका भाग्य तेजी से चमकेगा। जातक स्वयं शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक महान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
3. **गुरु+मंगल**–यहा पर मंगल जातक को बड़ी भू सम्पत्ति एव तेजस्वी पुत्र का स्वामी बनायेगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध जातक को पत्नी की मदद से उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ायेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र होने से जातक के भाग्य में उतार-चढ़ाव बहुत आयेगे
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि होने से जातक धनवान एव प्रबल पराक्रमी होगा
7. **गुरु+राहु**–यहा धनुलग्न में गुरु के साथ नवमें स्थान में राहु सिंह (शत्रु) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण भाग्योदय मे बाधा होगी सरकारी नौकरी से पदच्युत होने का भय एवं झूठा आरोप लगेगा।
8. **गुरु+केतु**–यहा केतु भाग्य में वृद्धि करायेगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में
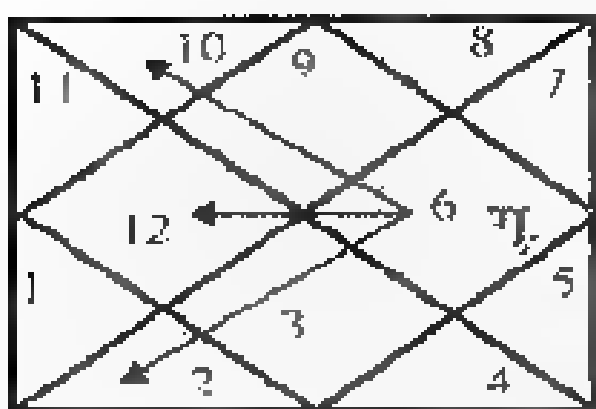
धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है, लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां दशम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में होगा। इसके कारण कुलदीपक योग, केसरी योग बनेगा। ऐसे जातक को मकान, वाहन एवं माता का सुख उत्तम होगा। पिता सुख उत्तम, पत्नी-संतान का सुख उत्तम मिलेगा। जातक दूरदर्शी, न्यायप्रिय, धार्मिक एवं परोपकारी होगा जातक राजनीति में भी प्रभावशाली व्यक्ति होगा। जातक की समाज में उत्तम प्रतिष्ठा होगी। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।

दृष्टि–दशमस्थ गुरु की दृष्टि धन स्थान (मकर राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक धनी, भौतिक उपलब्धियों से परिपूर्ण तथा शत्रु रहित होगा।

निशानी–ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य भोगता है।

दशा–गुरु की दशा अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों व राजकीय सम्मान की प्राप्ति होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य जातक को अनेक बड़े मकानों का स्वामी बनायेगा।
2. **गुरु+चंद्र**- आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के दशम भाव मे गुरु+चंद्र की युति कन्या राशि में होगी. वस्तुत: यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। परन्तु केन्द्रवर्ती होने से 'यामिनीनाथ योग' बना। गुरु केन्द्रवर्ती होने से 'कुलदीपक योग' बना। इन दोनों ग्रहों की दृष्टि धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान पर है। फलत: ऐसा जातक खूब धन कमायेगा व भौतिक ऐश्वर्य, प्राप्त करेगा। जातक रोग और शत्रुओ का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक का नाम समाज के सौभाग्यशाली एवं सफल व्यक्तियों में से एक होगा।
3. **गुरु+मंगल** यहा मंगल 'दिग्बली' होकर जातक को राजा तुल्य पराक्रमी बनायेगा।

4. **गुरु+बुध**–यहा गुरु के साथ बुध 'भद्र योग' बनाकर जातक को राजा के समान ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी एव बुद्धिशाली बनायेगा।

5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र नीच का होगा। जातक को राजकीय समस्याओं का सामना करना पड़ेगा

6. **गुरु+शनि** गुरु के साथ शनि होने से जातक महाधनी एवं पराक्रमी होगा।

7. **गुरु+राहु**–यहा धनुलग्न मे गुरु के साथ दसवें स्थान मे राहु कन्या राशि में स्वगृही है। 'चाण्डाल योग' के कारण राजकाज में बाधा होगी। शत्रुओं को हराने में, कोर्ट कचहरी में रुपया बरबाद होगा, रोजी-रोजगार मे दिक्कते आयेगी।

8. **गुरु+केतु**–यहां केतु जातक को पराक्रमी बनायेगा।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में
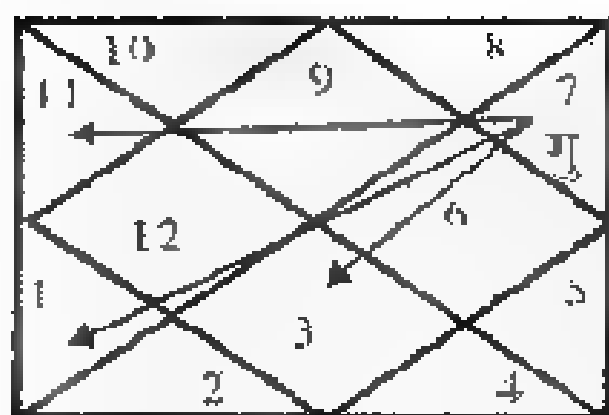
धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहो की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां एकादश स्थान में तुला (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं पाने वाला, राज-दरबार में मान-सम्मान पाने वाला, नौकर चाकर, वाहन, मकान सुख से युक्त यशस्वी जातक होता है। जातक का धंधा-व्यापार ठीक होगा

दृष्टि–एकादश भावगत गुरु की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि), संतान भाव (मेष राशि, एवं सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। पत्नी का सुख उत्तम, जातक का पुत्र धर्मवीर होगा।

निशानी–जातक का राष्ट्रीय राजनीति में हस्तक्षेप होगा।

दशा–गुरु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य नीच का होगा। एसे जातक को उच्च विद्या तथा पुत्र सुख मिलेगा। जातक का पुत्र तेजस्वी होगा।

2. **गुरु+चंद्र**–आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न में एकादश भाव मे गुरु+चंद्र की युति तुला राशि में होगी। यह युति अष्टमेश

चंद्रमा की लग्नेश-सुखेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा. जातक का जनसम्पर्क सघन होगा। जातक महान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

3. **गुरु+मंगल**—यहां मंगल जातक को उच्च तकनीकी शिक्षा देगा। जातक को भूमि-भवन से लाभ होगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिमान, कम्प्यूटर विद्या का जानकार होगा। अथवा उद्योगपति होगा
5. **गुरु+शुक्र**—यहां शुक्र स्वगृही होगा। जातक के व्यापार व्यवसाय में उतार-चढ़ाव आता रहेगा
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ उच्च का शनि जातक को करोड़पति बनायेगा।
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ एकादश स्थान में राहु तुला (मित्र) राशि में है 'चाण्डाल योग' के कारण लाभ में बाधा होगी। व्यापार व्यवसाय में नुकसान होगा धनागमन में रुकावट महसूस होगी
8. **गुरु+केतु**—जातक उद्योगपति होगी।

धनुलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में
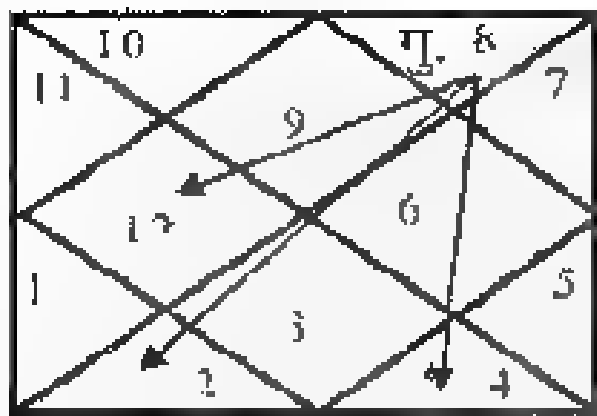
धनुलग्न में गुरु लग्नेश व सुखेश है। लग्नेश होने से यह जीवन (आयु) प्रदाता व शुभ फलदायक ग्रह है, परन्तु केन्द्राधिपत्य दोष से दूषित होने के कारण अशुभ ग्रहों की युति से यह कहीं-कहीं अशुभ फल भी देगा। गुरु यहां द्वादश स्थान में वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। गुरु के कारण लग्नभंग योग एवं सुखभंग योग बना। ऐसे जातक को मकान, वाहन एवं माता का सुख कमजोर होता है जातक का जीवन दुःख, संघर्ष व कष्टों से भरा रहेगा। जातक पर दुःख, कातर, परोपकारी एवं दानी होगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत गुरु की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मीन राशि), षष्टम भाव (वृष राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। माता के सुख में न्यूनता होगी जातक को गुप्त शत्रु एवं रोग परेशान करते रहेंगे

निशानी—जातक पारिवारिक, सामाजिक व दैनिक कार्यों के बोझ के नीचे दबा रहेगा।

दशा—गुरु की दशा अंतर्दशा निर्बल फल देने वाली साबित होगी

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' बनायेगा। जातक को अनेक परेशानियों, दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
2. **गुरु+चंद्र**-आपका जन्म धनुलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार धनुलग्न के द्वादश भाव में गुरु+चंद्र की युति 'वृश्चिक राशि' में होगी वस्तुतः यह युति अष्टमेश चंद्रमा की लग्नेश+सुखेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा वृश्चिक राशि में नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव, षष्टम् भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा जातक रोग व शत्रु का मुकाबला करने में पूर्ण समर्थ होकर दीर्घायु को प्राप्त करेगा। जातक को उत्तम वाहन, भवन एवं वैभव की प्राप्ति होगी। जातक तीर्थयात्राएं करेगा एवं परोपकार के कार्य में रुपया खर्च करेगा।
3. **गुरु+मंगल**—मंगल यहां 'विमल नामक विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनवान एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध 'विवाहभंग योग' कराता है जातक दो विवाह करेगा। गृहस्थ भंग होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—शुक्र गुरु के साथ 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' करायेगा। जातक धनी-मानी अभिमानी होगी।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि 'धनहीन योग', 'पराक्रमभंग योग' कराता है जातक आर्थिक विषमताओं का सामना करेगा। जातक का मानभंग होगा
7. **गुरु+राहु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ द्वादश स्थान में राहु वृश्चिक (नीच) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होगा। कार्य में बाधा। यात्रा में चोरी होगी। दुर्घटना में अंग भंग होने का खतरा है।
8. **गुरु+केतु**—केतु जातक को परोपकारी, धार्मिक एवं मोक्ष मार्ग का पथिक बनायेगा।

❑❑❑

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में
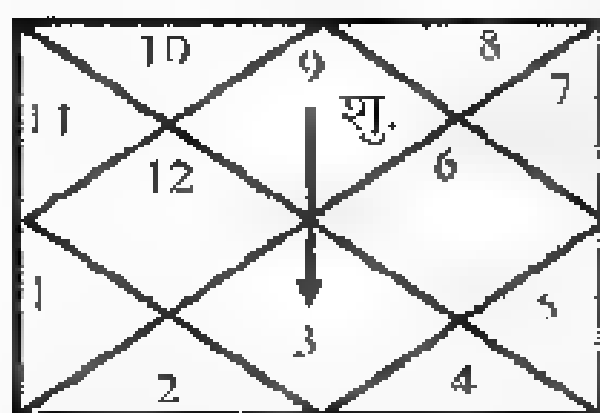
धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां प्रथम स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। ऐसा जातक स्वयं आकर्षक व सुन्दर होगा तथा उसकी पत्नी भी सुन्दर व रूपवान होगी। जातक वस्त्रलंकार का शौकीन, रसिक मिजाज, कलाप्रिय व सौन्दर्य प्रेमी होगा। जातक को नौकर-चाकर का सुख उत्तम, मित्र मंडल श्रेष्ठ मिलेगा। जातक फल फूल, इंत्र सुगन्ध एवं स्वादिष्ट भोजन का शौकीन होगा।

निशानी—जातक को बड़े भाई के साथ मधुर संबंध रहेगा।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। परन्तु जातक को आंतरिक रोगों का सामना करना पड़ सकता है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी बनायेगा। जातक भाग्यशाली होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा दुर्घटना योग बनाता है।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल जातक को पराक्रमी एवं धनी बनायेगा। परन्तु जातक का भाग्योदय प्रथम संतान के बाद होगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध उत्तम गृहस्थ सुख देगा। जातक की पत्नी रम्भा के समान सुन्दर होगी।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु होने से जातक को पतिव्रता पत्नी मिलेगी। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
6. **शुक्र+शनि** -शुक्र के शनि जातक का मेहनत का पूरा लाभ देगा। जातक धनवान होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक के शरीर मे गुप्त या प्रकट रोग करायेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु शुभ है

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में
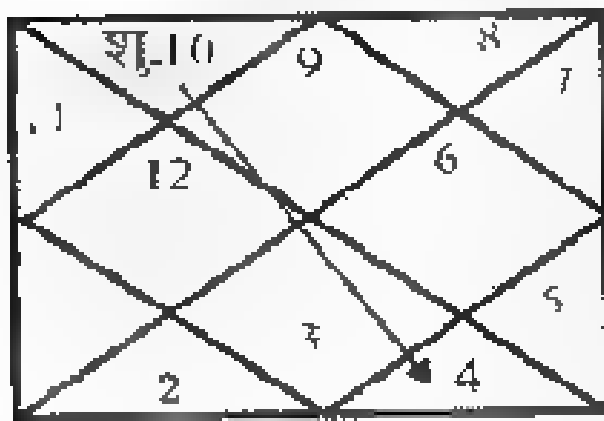
धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहा परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह हैं। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहा द्वितीय स्थान मे मकर (मित्र) राशि में होगा। यह शुक्र कुटुम्ब सुख श्रेष्ठ देता है। यह शुक्र धन की वृद्धि करायेगा। शुक्र जातक को विनम्र व मीठी वाणी देता है। षष्टेश के धन स्थान में होने से जातक पर व्यर्थ के खर्च व जजाल आते रहेंगे। यहां शुक्र जातक को उच्च प्रतिष्ठा व धन लाभ देगा।

दृष्टि–द्वितीय भावगत शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक के अकारण शत्रु पैदा होंगे

निशानी–जातक को स्त्री-मित्रों से धोखा होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अतर्दशा मे जातक की पत्नी बीमारी होगी। पत्नी को लेकर व्यर्थ का खर्च होगा। शुक्र में शनि के अन्तर से पत्नी की मृत्यु संभव है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। जातक भाग्यशाली तथा धनवान होगा।
2. **शुक्र+चद्र**–शुक्र के साथ अष्टमेश चंद्रमा धनहानि देगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ यहां मंगल उच्च का होने से जातक महाधनी होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक की पत्नी धनवान होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु नीच का होगा ऐसे जातक की वाणी मीठी व गम्भीर होगी।

6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि स्वगृही होगा ऐसे जातक की वाणी कुटिल होगी। जातक धनवान होगा।

7 **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु धन के घड़े में छेद के समान है जातक आर्थिक सकटो से गुजरेगा

8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु भी धन प्राप्ति में बाधक ग्रह का काम करेगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में
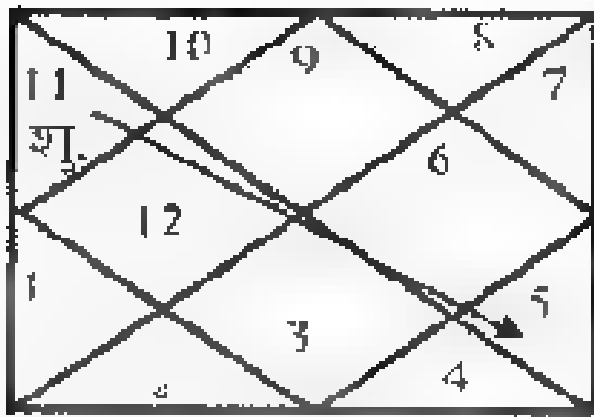
11 शु.	10	9
12		8 7 6
1	2 3 4	5

धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहा परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां तृतीय स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में होगा। शुक्र छठे भाव से दसवें तथा एकादश भाव से पाचवें स्थान पर होने से शुभ फलदाई हो गया है जातक गीत-सगीत, कला, सौन्दर्य साहित्य का शौकीन होगा। जातक को सहोदर भाई व पिता का सुख मिलता है जातक का भाग्योदय शीघ्र होता है। ऐसा जातक ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि भाग्य स्थान (सिह राशि) पर होने से मित्र वर्ग जातक को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे।

निशानी—जातक की बहनें बहुत ज्यादा होंगी जातक को स्त्री मित्रो से लाभ होगा। पत्नी प्रायः आर्थिक योजनाओं को सफल बनाने मे सहभागी होगी

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी शुक्र की दशा में चद्रमा का अंतर घातक होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य जातक को कुटुम्ब सुख भाई बहनों के साथ रहने का सुख देगा

2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ अष्टमेश चंद्र भाई बहनों में मनमुटाव व सुख में कमी दिलाता है।

3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल होने से जातक पराक्रमी होगा। जातक के मित्र बहुत होगे।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक बुद्धिमान होगा व उसके ससुराल वाले पराक्रमी होंगे।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु बड़े भाई का सुख देगा। जातक की समाज में बड़ी भारी प्रतिष्ठा होगी
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि अपनी मूलत्रिकोण राशि मे होने से मित्र व परिजनों से लाभ दिलायेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु परिजनों में विवाद उत्पन्न करेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु परिजनो में गलतफहमी पैदा करेगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में
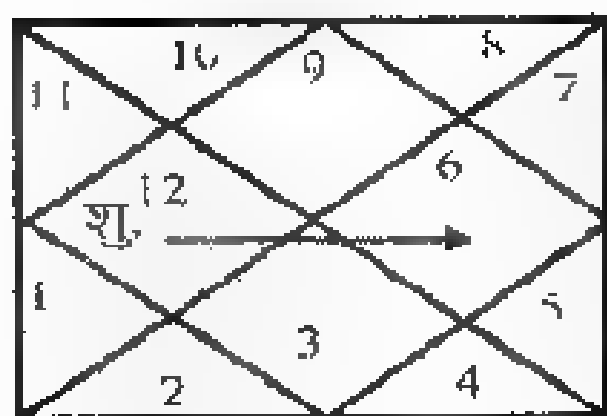
धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां चतुर्थ स्थान मे उच्च का होगा। मीन राशि के 27 अशों में शुक्र परमोच्च का होगा। शुक्र की इस स्थिति से 'कुलदीपक योग' एव 'मालव्य योग' बना, ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व प्रभावशाली होगा। जातक की पढ़ाई अच्छी होगी। माता या मामा का सुख उत्तम होगा। शुक्र केन्द्र मे होने से जातक का धधा व्यापार उत्तम होगा। जातक के पास उत्तम वाहन व भवन होगा। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शुक्र की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलत: यश, धन पद व सुख ससाधनो में बराबर वृद्धि होगी।

निशानी–जातक कामी होगा एव गलत (निम्न) कार्यों मे पैसा खर्च करेगा।

दशा–शुक्र की दशा मे भौतिक सुखों की वृद्धि होगी पर शारीरिक तन्दुरस्ती ठीक नही रहेगी। शुक्र मे शनि का अन्तर बहुत खराब जायेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य होने से जातक को राजकार्य, राजनीति में लाभ मिलेगा। सरकार मे, राजनीति में जातक का वर्चस्व होगा।
2. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक बडी भूमि का स्वामी होगा। जातक के पुत्र आज्ञाकारी होंगे जातक करोड़पति होगा।

3. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध होने से 'नीचभंगराज योग' बनेगा। ऐसा जातक राजा ही होगा। जातक का सुसराल धनवान व प्रतिष्ठित होगा

4. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु होने से 'किम्बहुना योग' बनता है। ऐसा जातक दम्भी होगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

5. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि होने से जातक महाधनी एवं महापराक्रमी होगा।

6. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु जातक की माता को बीमार रखेगा

7. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु वाहन दुर्घटना का भय देगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में
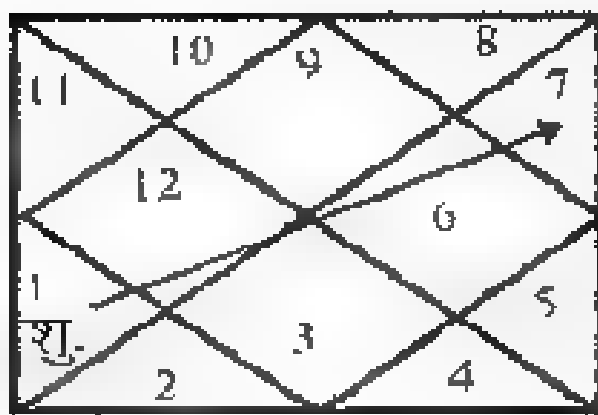
धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल का देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां पंचम स्थान में मेष (सम) राशि में होगा। यह शुक्र जातक को उच्च शिक्षा (Higher Educationa Degree) देगा। जातक का गृहस्थ सुख उत्तम होगा। पत्नी द्वारा धन लाभ संभव है। जातक को कन्या संतति अधिक होगी, कन्याएं तेजस्वी होंगी, जातक का एक पुत्र भी होगा। जातक समझौतावादी सिद्धान्त में विश्वास रखेगा

दृष्टि—पंचमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश भाव अपने स्थान (तुला राशि) पर होगी। इससे आमदनी के स्रोत बढ़ेंगे। जातक एकाधिक कार्यों से धनार्जन करेगा।

निशानी—जातक को स्त्री मित्रों से लाभ होगा।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। चंद्रमा का अंतर घातक होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य उच्च का होगा ऐसा जातक महान तेजस्वी होगा एवं उच्च शिक्षा को प्राप्त करेगा उसकी संतति भी तेजस्वी होगी

2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ अष्टमेश चंद्रमा विद्या में बाधा पहुंचायेगा, जातक कला प्रेमी होगा।

3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल स्वगृही होगा। ऐसा जातक तकनीकी विद्याओं का जानकार होगा। जातक व्यापार में लाभ प्राप्त करेगा।

4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध जातक को उत्तम पत्नी एवं संतान सुख देगा। जातक बुद्धिमान एवं शैक्षणिक उपाधियों से परिपूर्ण होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु जातक को कठोर परिश्रमी एवं शिक्षक बनायेगा। ऐसा जातक उपदेशक तथा धर्म शास्त्रों का जानकार होगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि नीच राशि का होगा। ऐसा जातक धनी होगा। जातक कला के माध्यम से, हुनर से धन व यश दोनों अर्जित करेगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु पुत्र संतति के सुख में बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु जातक की विद्या अधूरी छुड़वा देगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में
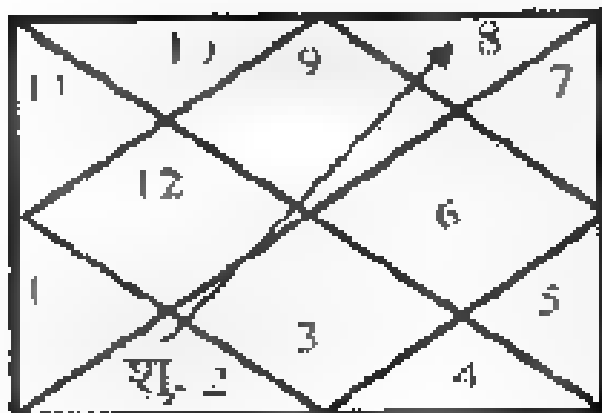
11	10	9	8	7	
12		6			
1		3		5	
शु. 2			4		

धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है. लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां छठे स्थान में वृष राशि में स्वगृही होगा। षष्टेश के छठे स्थान में स्वगृही होने से 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। 'लाभभंग योग' भी बनेगा। ऐसा जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा जातक फालतू के कार्यों में खूब पैसा खर्च करेगा। षष्टेश षष्टम स्थान में स्वगृही होने से जातक को ऋण व रोग का भय नहीं रहेगा। जातक फिजूल खर्च होगा।

दृष्टि—षष्टमस्थ शुक्र की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी ऐसा जातक विलासी स्वभाव का एवं व्यसनी होगा

निशानी—जातक का विलम्ब विवाह होगा।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी

विशेष—लाभेश के छठे जाने से 'दरिद्र योग' बनता है। जातक धन की कमी से परेशान होगा। इसे कर्णदोष भी होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य 'भाग्यबाधा योग' उत्पन्न करेगा। जातक को भाग्योदय हेतु बड़ी परेशानी उठानी पड़ेगी
2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा हो तो 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक ड्रग ऐडीक्ट हो सकता है। जातक का धन गलत कार्य में खर्च होगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल विद्या में बाधा 'संततिहीन योग' भी बनाता है। यह योग पुत्र संतान के सुख में न्यूनता (कमी) बनाता है।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध विलम्ब विवाह योग कराता है। सही जीवनसाथी के चुनाव मे देरी होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं सुखभंग योग' कराता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा भौतिक सुखों की प्राप्ति विलम्ब से होगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' उत्पन्न करता है। जातक को आर्थिक एवं सामाजिक विडम्बनाओं से गुजरना पड़ेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गुप्त बीमारियां व रोग उत्पन्न करता है
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्तांगो का ऑपरेशन कराता है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
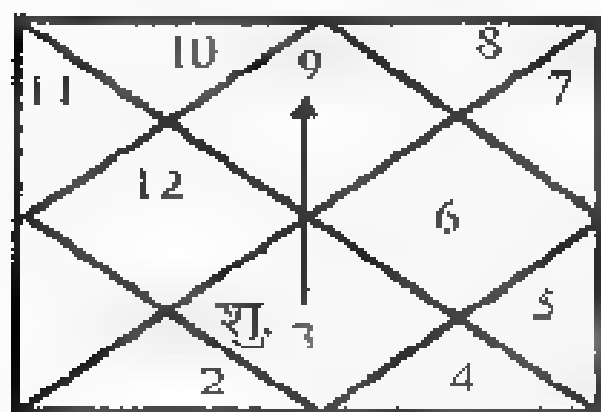
(कुंडली: 9 – ↑ लग्न, 10, 8, 11, 7, 12, 6, शु. 3, 5, 2, 4)

धनुलग्न में शुक्र षष्ठेश व लाभेश है। शुक्र यहा परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वाला के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहा सप्तम स्थान मे मिथुन (मित्र) राशि मे होगा। फलतः कुलदीपक योग बनेगा। शुक्र यहा छठे भाव से दूसरे एव ग्यारहवें भाव से नवमे स्थान पर होने से शुभ है। जातक का विवाह देरी से होता है जातक के रज, वीर्य एव यौनांग पुष्ट होते हैं। जातक कामी होता है। उसे धन, सुख व ऐश्वर्य का पूरा लाभ मिलता है

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि) पर होगी फलतः जातक को प्रत्येक काम मे सफलता मिलती रहेगी।

निशानी–जातक अन्य स्त्रियों के चक्कर मे रहता है। जातक के गुप्त शत्रु होते हैं।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक के भाग्योदय में वृद्धि करायेगा जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा वैवाहिक सुख में विलम्ब कराता है पर जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल विवाह में विलम्ब कराता है तथा गृहस्थ सुख में खटपट को भी बताता है।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु 'लग्नाधिपति योग' बनायेगा लग्नेश लग्न को देखेगा। जातक निर्बाध गति से उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक का ससुराल धनी होगा। ससुराल से जातक को लाभ होता है
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु तलाक का योग बनाता है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु वैवाहिक जीवन में गड़बड़ी उत्पन्न करता है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में
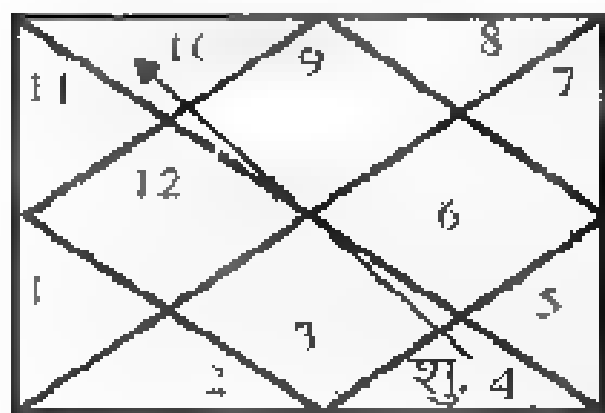
धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल का देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां अष्टम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति में लाभभंग योग तथा 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' बनेगा। जातक को व्यापार व्यवसाय में लाभ प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। फिर भी जातक समाज का प्रतिष्ठित एवं धनी व्यक्ति होगा। जातक मिथ्यावादी, कलहवादी एवं विवेकहीन निर्णय लेगा। जातक के शत्रु अकारण पैदा होते रहेंगे।

दृष्टि–अष्टमस्थ शुक्र की दृष्टि धनभाव (मकर राशि) पर होगी जातक धनी होगा।

निशानी–जातक का धन अदालत व फालतू कार्यों में खर्च होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी। जातक के शत्रु या गुप्त रोग जातक को परेशानी करेंगे।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु विशेष संघर्ष करना पड़ेगा

2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा स्वगृही होकर 'विपरीत राजयोग' बनायेगा। दोहरे राजयोग के कारण जातक धनी तथा वाहन सुख से युक्त होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल नीच राशि में होगा। ऐसे विद्याबाधा योग एवं 'लाभभंग योग' की सृष्टि होती है। जातक की प्रारंभिक विद्या में बाधा आयेगी।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक के दो विवाह होने की सम्भावना रहती है।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु भी 'द्विभार्या योग' बनाता है।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' की सृष्टि करता है। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु 'द्विभार्या योग' बनाता है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक की पत्नी की अकाल मृत्यु कराता है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में
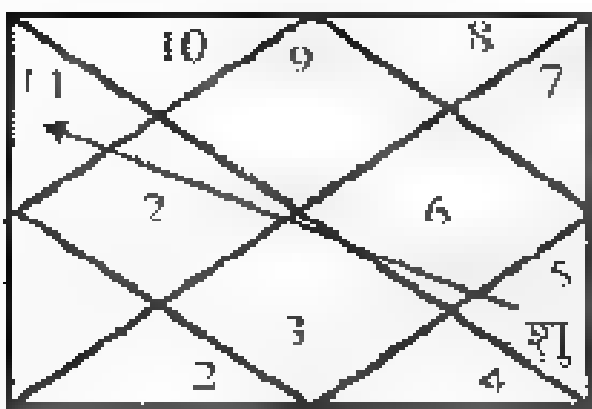
10 9 8 7 11 2 6 5 3 शु 2 4

धनुलग्न में शुक्र षष्ठेश व लाभेश है. शुक्र यहा परम पापी व अशुभ फल का देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालो के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां नवम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। जातक को पिता का सुख मिलेगा। जातक धार्मिक होगा। जातक को धंधे व्यापार में खूब लाभ होगा। जातक साहित्य, सौन्दर्य व श्रृंगार प्रिय होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

दृष्टि–नवमस्थ शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक को सहोदर सुख मिलेगा। मित्र अच्छे होंगे.

निशानी–जातक विपरीत लिंगियों के प्रति जबरदस्त आकर्षित रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा म धन की प्राप्ति होगी पर स्वास्थ्य की हानि होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक का उत्तम भाग्योदय कराता है एवं सरकारी नौकरी दिलाता है
2. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा होने से जातक कला प्रेमी बनता है। जातक के जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आयेगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ शनि जातक के पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि करेगा। जातक धनवान होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने पर जातक का सुसराल धनवान तथा पराक्रमी होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु जातक को पुरुषार्थ का लाभ देगा 'लग्नाधिपति योग' बनायेगा जातक निर्बाध गति से उन्नति पथ की ओर बढ़ता चला जायेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा जातक प्रबल पराक्रमी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधक होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु संघर्ष का द्योतक है।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में
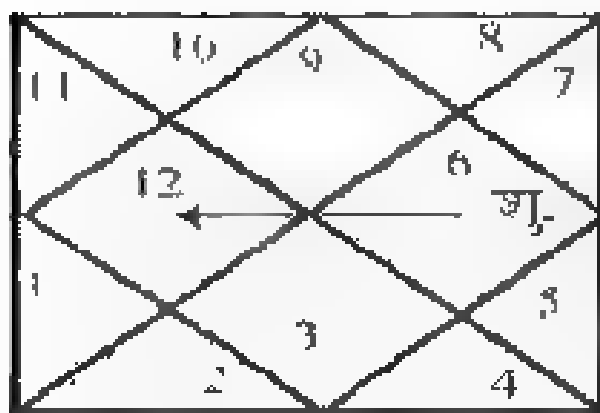
धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां दशम स्थान में नीच का होगा। कन्या राशि के 27 अंशों में शुक्र परम नीच का होगा। शुक्र के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक व्यापार धंधे में आगे बढ़ेगा। जातक को वाहन का सुख, उत्तम भवन व नौकर-चाकर का सुख मिलेगा। जातक ऋण, रोग व शत्रु को दबाने में समर्थ होगा

दृष्टि–दशमस्थ शुक्र की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक को माता का सुख प्राप्त होगा

निशानी–जातक को सुगन्धित द्रव्य, टी.वी., इलेक्ट्रोनिक्स सामान, ज्वेलरी इत्यादि से विशेष लाभ होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को 'राजयोग' तथा रोजी रोजगार के उत्तम अवसर प्रदान करेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को कला प्रेमी, पर्यटन व संगीत का शौकीन बनायेगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल जातक को बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा। जातक शिक्षित होगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु जातक को धनी बनायेगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में उन्नति करेगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा। जातक के पास उत्तम वाहन होंगे।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु राज्य सुख में बाधक है। फिर भी जातक पराक्रमी होगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु सरकारी कार्यों में बदनामी दिलायेगा।

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में
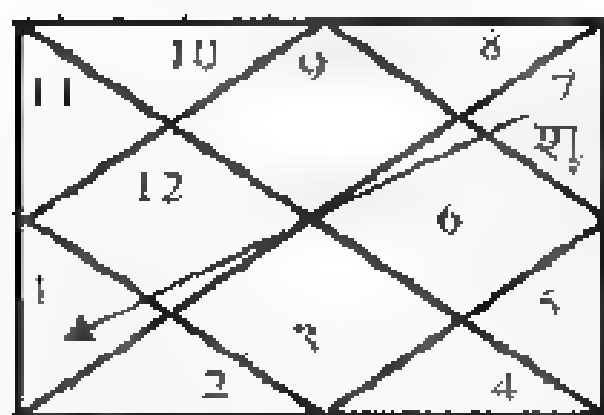
धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है। शुक्र यहां परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है। लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र यहां एकादश स्थान में स्वगृही होगा। तुला राशि के 20 अंशो तक शुक्र मूल त्रिकोण राशि का कहलाता है। ऐसा जातक सफल उद्यमी होता है। वह बुद्धि चातुर्य से विरोधियों पर विजय प्राप्त करता है। जातक को माता-पिता, स्त्री-संतान का पूर्ण सुख मिलता है। जातक को नौकर उत्तम मिलते हैं। जातक धनी होता है एवं व्यापार से लाभ कमाता है।

दृष्टि—एकादश भावस्थ शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि) पर होगी फलतः जातक को उच्च श्रेणी की विद्या (Higher Educational Degree) मिलेगी।

निशानी—जातक की कन्या संतति अधिक होगी।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा में लाभ होगा। शुभ फल मिलेंगे।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली तथा पराक्रमी होगा।

2. **शुक्र+चंद्र**-शुक्र के साथ चंद्रमा लाभ प्राप्ति में बाधक है। जातक कला के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा।

3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल जातक को उच्च पद, प्रतिष्ठा दिलायेगा।

4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध जातक को भागीदारी में लाभ दिलायेगा। जातक को ससुराल से मदद मिलती रहेगी।

5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु होने से जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा, शिक्षित होगा।

6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि होने से जातक 'किम्बहुना योग' के कारण राजा तुल्य ऐश्वर्य, वैभव को भोगेगा जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा विदेश जायेगा।

7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु व्यापार व्यवसाय में बाधक है

8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु व्यापार में रुकावट डालता है

धनुलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में
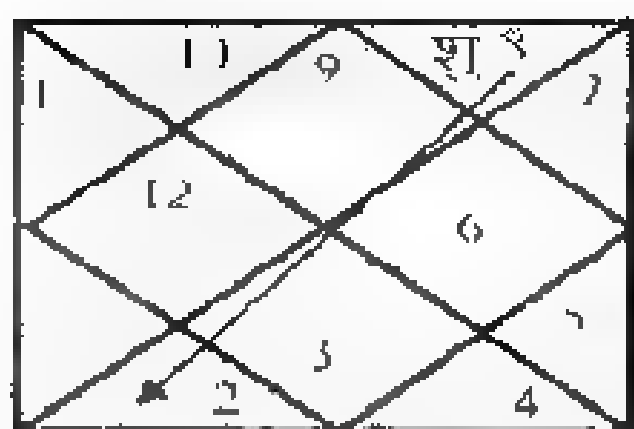
धनुलग्न में शुक्र षष्टेश व लाभेश है शुक्र यहा परम पापी व अशुभ फल को देने वाला ग्रह है लग्नेश गुरु का शत्रु होने से धनुलग्न वालों के लिए शुक्र मुख्य मारकेश का काम करेगा शुक्र यहां द्वादश स्थान में वृश्चिक (सम) राशि का होगा। शुक्र के कारण 'लाभभंग योग' एव हर्ष नामक 'विपरीत राजयोग' बनेगा ऐसा जातक धनी, मानी व अभिमानी होता है। जातक का सामाजिक स्तर उत्तम होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक की काम वासना विकृत होगी

दृष्टि—व्यय भावस्थ शुक्र की दृष्टि अपने घर छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी, फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने मे सक्षम होगा।

निशानी—जातक के मूत्राशय, गुर्दे या गुप्तांग मे रोग सभव है।

दशा—शुक्र की दशा अतर्दशा मिश्रित फल देगी

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य, 'भाग्यभग योग' की सृष्टि करेगा। जातक परिश्रम करने के बाद भी अनुकूल परिणाम नही प्राप्त कर पायेगा।

2. **शुक्र+चंद्र**–ऐसा जातक व्यसनी या ड्रग एडिक्ट होगा जातक के धन का खर्च गलत कार्यों में होगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल 'विमल नामक विपरीत राजयोग' को बनायेगा जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा। जीवन की सारी सुख-सुविधाए उसे प्राप्त होंगी।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से दो विवाह का योग बनता है।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु पुरुषार्थ का लाभ नहीं देता।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'धनहीन योग' एव 'पराक्रमभग योग' बनाता है। जातक को धनार्जन हेतु एव प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु बहुत सघर्ष करना पडेगा।

7. **शुक्र+राहु** शुक्र के साथ राहु यात्रा मे चोरी, घर मे चोरी, पत्नी के आभूषणों की चोरी का संकेत देता है।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु नींद न आने की बीमारी देगा। जातक को कामुक सपने आयेंगे।

❑❑❑

धनुलग्न में शनि की स्थिति

धनुलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
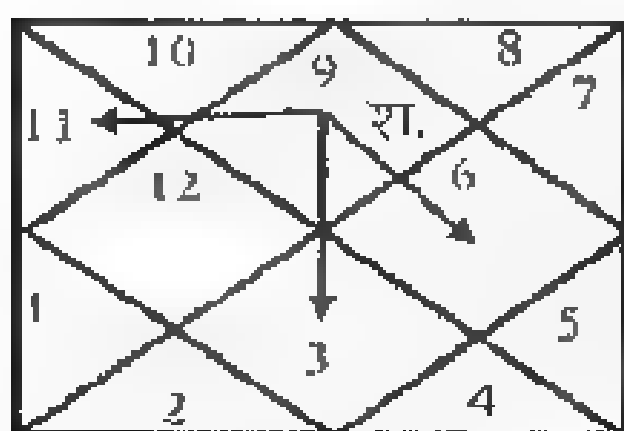
धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा, क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां प्रथम स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक धन, यश, विद्या एवं बुद्धि से सुसम्पन्न व्यक्ति होता है। जातक का अपने छोटे भाई-बहनो के साथ उत्तम सबंध होगा। जातक दूरदर्शी व दार्शनिक होगा।

दृष्टि--लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि), सप्तम भाव (मिथुन राशि) एवं दशम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा, विवाह सुख में कुछ बाधा तथा जातक को नौकरी भी कुछ विलम्ब से मिलेगी।

निशानी--जातक का विलम्ब विवाह होगा। कई बार पुरुष जातक को विधवा स्त्री तथा स्त्री जातक को दूज वर से विवाह करना पड़ता है।

दशा--शनि की दशा-अंतर्दशा मध्यम फल देगी

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध--

1. **शनि+सूर्य**--धनुलग्न के प्रथम स्थान मे सूर्य+शनि की युति वस्तुतः धनेश, पराक्रमेश शनि एवं भाग्येश सूर्य की युति होगी। सूर्य यहां मित्र स्थान मे एवं शनि सम राशि में है। जातक स्वयं के पराक्रम व पुरुषार्थ में धन अर्जित करेगा। पिता की मृत्यु के बाद ही जातक का पुरुषार्थ रंग लायेगा.
2. **शनि+चंद्र**--शनि के साथ चंद्रमा जातक को नकारात्मक सोच देगा।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक के व्यक्तित्व को विवादित बनायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध सावली पर सुन्दर पत्नी देगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य एश्वर्य-वैभव को भोगेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र पत्नी सुन्दर देगा। जातक का ससुराल पक्ष धनवान होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को प्रेतबाधा से ग्रसित कर सकता है। जातक के विचार विध्वंसात्मक होंगे.
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक के मन-मस्तिष्क को दूषित करेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में
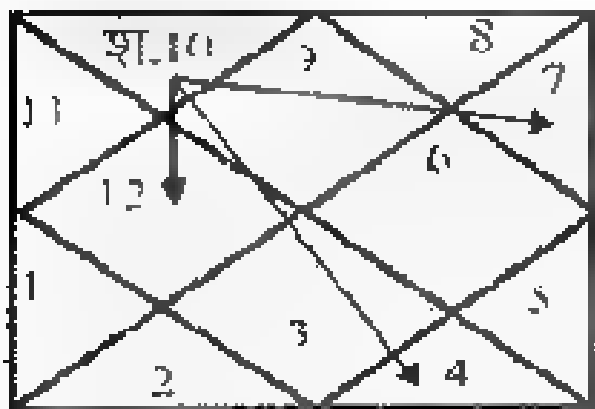
धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा, क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां द्वितीय स्थान में स्वगृही होगा। जातक महाधनी होगा। जातक को धन-संतान, कुटुम्ब का पूर्ण सुख मिलेगा जातक उद्योगपति होगा। जातक की माता बीमार रहेगी। जातक के वाहन को लेकर रुपया खर्च होगा। जातक महान पराक्रमी होगा.

दृष्टि–द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मीन राशि), अष्टम स्थान (कर्क राशि) एवं एकादश स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को माता, जन्म भूमि से दूर जाना पड़ेगा। जातक के गुप्त शत्रु होंगे तथा जातक को व्यापार से लाभ होगा

निशानी–जातक के छोटे भाई-बहन जरूर होंगे पर उनसे कम बनेगी

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा में धन व पराक्रम बढ़ेगा। शनि में बुध का अंतर अशुभ फल देगा

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न में सूर्य-शनि की युति वस्तुतः भाग्येश+धनेश, पराक्रमेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां स्वगृही है व सूर्य शत्रु क्षेत्री है। फलतः जातक धनवान तथा भाग्यशाली होगा। परन्तु पिता की मृत्यु के बाद ही जातक धनवान होगा।

2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा धन हानि तथा कुटुम्ब में विग्रह करायेगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा होगा। जातक महाधनी करोड़पति होगा। जातक का भाग्योदय पुत्र जन्म के बाद होगा
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध होने से जातक को ससुराल से पैसा मिलेगा। जातक की पत्नी कमाऊ होगी। 'कलत्रमूलधन योग' उत्तम फल देगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु होने से 'नीचभंग राजयोग' बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव भोगेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र जातक को व्यापार से लाभ दिलायेगा। जातक कलाप्रिय होगा। जातक संगीत तथा सौंदर्य की उपासना पर धन खर्च करेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु होने से जातक की वाणी दूषित होगी। जातक का धन फालतू कार्यों में खर्च होगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु कुछ अंशों में धन हानि कराता है।

धनुलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में
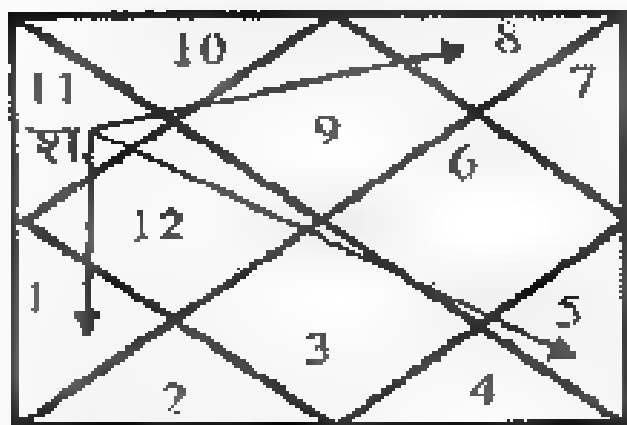
10, 8, 7, 11, श, 9, 6, 12, 1, 5, 3, 2, 4

धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। ग्रह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां तृतीय स्थान में कुंभ राशि के मूल त्रिकोण का होगा। ऐसे जातक को कुटुम्ब व धन सुख उत्तम होता है। जातक को प्रारम्भिक विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी। ऐसा जातक अधार्मिक होगा। पिता से उसकी नहीं निभेगी। जातक की संतान भी जातक के साथ नहीं रहेगी। जातक परदेश में कमायेगा तथा वह व्यसनी होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि) भाग्य भवन (सिंह राशि) एवं व्यय भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक भाग्यवान होगा। उसे संतति सुख होगा पर अत्यधिक खर्चीले स्वभाव से आर्थिक विषमताएं बनी रहेंगी।

निशानी—जातक को संतान सुख विलम्ब से मिलता है। विद्या में एकाध बार रुकावट आयेगी। जातक डरपोक होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन की प्राप्ति होगी जातक का पराक्रम बढ़ेगा। परन्तु अन्य तकलीफें भी आयेंगी

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के तृतीय स्थान में सूर्य+शनि युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। फलतः जातक पराक्रमी होगा। उसे बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। बड़े भाई की मृत्यु के बाद जातक की किस्मत चमकेगी
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा भाइयों में मनोमालिन्यता उत्पन्न करेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक की संतान पराक्रमी होगी। जातक को मित्रों से लाभ होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से 'कलत्रमूलधन योग' बनेगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा। ससुराल पराक्रमी होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को पुरुषार्थ का पूरा लाभ देगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को स्त्री-मित्रों से धन दिलायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु भाइयों व कुटम्बीजनों का सुख नष्ट करेगा।
8. **शनि+केतु**–भाइयों व परिजनों में कीर्ति देगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में
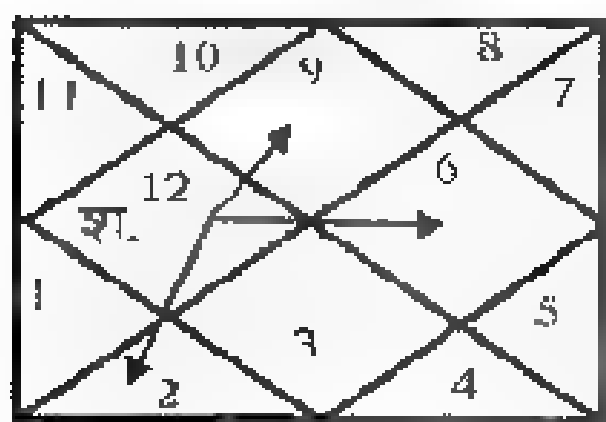
10 9 8 11 7 12 6 श. 1 5 3 2 4

धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां चतुर्थ स्थान में मीन (सम) राशि का होगा ऐसे जातक के जन्म के समय माता को कष्ट होगा तथा बाद में भी माता का सुख नहीं मिलेगा। मीन राशि का शनि यदि पाप ग्रहों से युक्त हो तो जातक को भूमि, भवन माता विद्या-बुद्धि व नौकरी का सुख मिलेगा। अन्यथा अच्छी नौकरी की प्राप्ति हेतु जातक को बहुत परिश्रम करना पड़ेगा। जातक धन संग्रह करेगा पर उसको भोग नहीं सकेगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि), छठे स्थान (शत्रु राशि) एवं दशम भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक को रोग का प्रकोप नौकरी में कष्ट एवं परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

निशानी–व्यक्ति पुराने मकान में मरम्मत करवा कर रहेगा। जातक का स्वभाव ईर्ष्यालु होगा, तथा छोटी-मोटी बीमारियां लगी रहेंगी। इस शनि पर यदि शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक के पिता की लम्बी रहेगी

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा में दिक्कतें बढ़ेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के चतुर्थ स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की तृतीयेश धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहा मीन शत्रु राशि में एवं सूर्य मित्र राशि में होगा जातक के माता पिता बीमार रहेंगे। जातक धनवान एवं सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन जीयेगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा होने से जातक सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीयेगा, जातक की माता बीमार होगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को भूमि से लाभ देगा जातक विद्यावान् होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध **'भद्र योग'** बनायेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्य वैभव का भोगेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु **'हंस योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी, वैभवशाली एवं धनवान होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक राजा से कम विलासी नहीं होगा। ऐश्वर्य भोगेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु माता के सुख को नष्ट कर देगा। जातक की अपने मामा से भी नहीं बनेगी।
8. **शनि+केतु** शनि के साथ केतु जातक का धन वाहन व नौकरों के रख रखाव में खर्च करायेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में
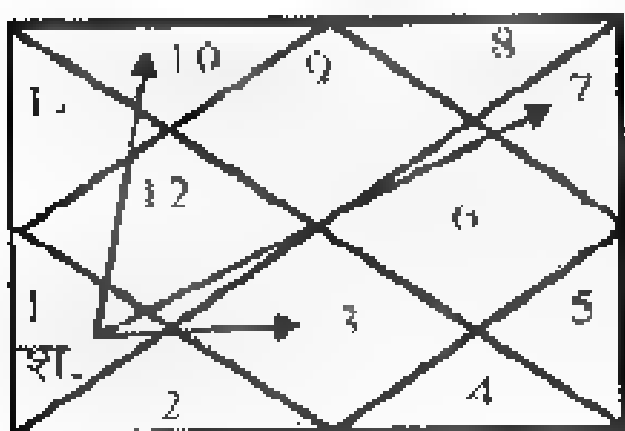
10, 9, 8, 11, 7, 12, 6, 1, 3, 5, श., 2, 4

धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अत: अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां पंचम स्थान में नीच का होगा। मेष राशि में 20

अशो में शनि परम नीच का होता है। ऐसे जातक को उच्च विद्या व संतान के प्रति असंतोष रहेगा। विद्या प्राप्त होगी पर मेहनत बहुत करनी पड़ेगी जातक के मित्र कम होंगे पर छोटे भाई बहनों के साथ बनेगी। जातक स्वार्थी, मिथ्यावादी होता है अतः समाज में उसकी प्रतिष्ठा नही होगी।

दृष्टि—शनि की दृष्टि सप्तम भाव (मिथुन राशि) एकादश भाव (तुला राशि) एवं छठे भाव (मकर राशि) पर होगी। फलतः विलम्ब विवाह, लाभ में हानि होगी पर जातक धन संग्रह जरूर करेगा।

निशानी—जातक का विवाह देरी से होगा पर जातक को लड़का जरूर होगा। प्रायः जातक का छोटा भाई नहीं होगा तथा बड़े भाई का भी नाश होता है।

दशा—यहां शनि की दशा योगकारक होकर उत्तम फल देगी परन्तु जातक को कुछ बुरे फल भी शनि की दशा में प्राप्त होंगे।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—धनुलग्न में पंचम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की तृतीयेश, धनेश शनि के साथ युति होगी। शनि यहां नीच का तथा सूर्य उच्च का होने से 'नीचभंग राजयोग' की सृष्टि होगी। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा जातक की अपने भाइयों से कम बनेगी पिता की मृत्यु के बाद जातक की उन्नति होगी
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को नकारात्मक एवं निराशाजनक सोच देगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल 'नीचभंग राजयोग' बनायेगा। जातक शिक्षित एवं राजा के समान ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध ससुराल का धन दिलायेगा। पर वह धन ज्यादा शुभदायक नहीं होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु जातक को धर्म-शास्त्रों का ज्ञाता एवं दार्शनिक बनायेगा पर जातक एकान्तप्रिय होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र प्रारंभिक विद्या में बाधा पहुंचायेगा। जातक विद्या में ऊंचे अंकों को प्राप्त नहीं कर पायेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु होने से जातक की संतति प्रेत बाधा से ग्रसित होगी
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु होने से जातककी विद्या अधूरी छूट जायेगी।

धनुलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में
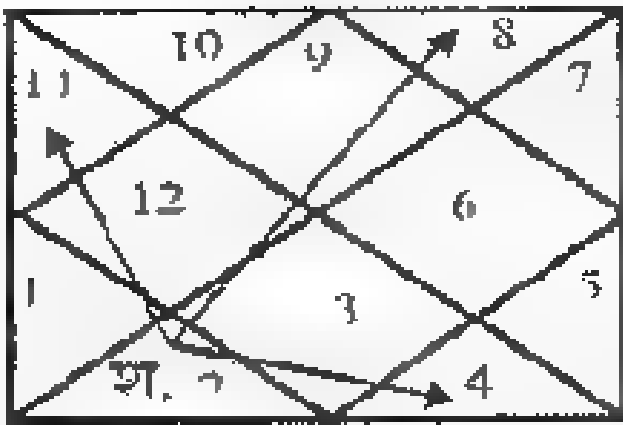
धनुलग्न मे शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अत: अशुभ फल ही देगा अशुभ ग्रह के साथ होने से इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा। क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है शनि यहां छठे स्थान में वृष (मित्र) राशि में होगा। शनि के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को धन सग्रह एवं कुटुम्ब सुख में हानि होती है। मामा-ननिहाल का सुख कमजोर, नौकर का सुख कमजोर रहेगा। जातक की छोटे भाई-बहनों से बनेगी नहीं। मूत्राशय के रक्तदोष की बीमारी रहेगी।

दृष्टि—शनि की दृष्टि अष्टम भाव (कर्क राशि), व्यय भाव (वृश्चिक राशि) एव पराक्रम भाव (कुभ राशि) पर होगी जातक की आयु लम्बी होगी पर बीमारी बनी रहेगी।

निशानी—आवक से अधिक खर्च रहेगा। कई बार जातक को ऋण लेना पड़ेगा।

दशा—शनि को दशा अतर्दशा में बुरे दिनों की अनुभूति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—धनुलग्न के छठे स्थान मे सूर्य+शनि की युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एव 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। जातक को धन कमाने हेतु, प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु एवं भाग्योदय हेतु बहुत परेशानी उठानी पड़ेगी। पिता के जीवित रहते जातक का भाग्योदय नहीं होगा।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चद्रमा विपरीत राजयोग बनायेगा। दोहरे राजयोग के कारण जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मगल 'विद्याबाधा योग' एवं 'सरल नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक धनी मानी अभिमानी तथा वाहन सुख से युक्त होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध होने से विलम्ब विवाह योग बनता है। शादी विवाह होकर छूट भी सकता है।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' बनायेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नही मिलेगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी एवं वाहन सुख से युक्त होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु गुप्त रोग एवं गुप्त शत्रु उत्पन्न करेगा
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु गुप्त बीमारी से जातक को परेशान करेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में
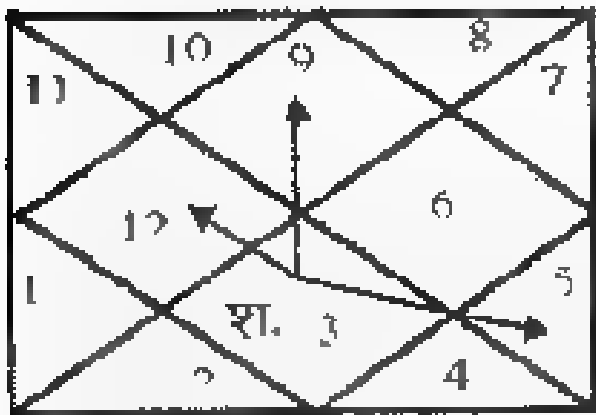
10 9 8 7 11 12 6 1 5 श. 3 2 4

धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां सप्तम स्थान में मिथुन (मित्र) राशि में होगा शनि यहां 'दिग्बली' होने से इस भाव का ज्यादा नुकसान नहीं होगा। यह शनि जातक के धन कुटुम्ब व दाम्पत्य सुख में वृद्धि करता है पर यदि पाप पीड़ित हो तो जातक को दाम्पत्य सुख से वंचित कर देगा। जातक को माता पिता का धन नहीं मिलेगा।

दृष्टि सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य स्थान (सिंह राशि), लग्न स्थान (धनु राशि) एवं चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक को परिश्रम पूर्वक किये गये प्रयत्नों का लाभ तो मिलेगा पर विलम्ब से। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति भी विलम्ब से होगी।

निशानी–जातक अपनी उम्र से बड़ा दिखेगा। जातक के जीवनसाथी एवं उसके मध्य उम्र का अंतराल ज्यादा रहेगा। जातक भोग विलास के प्रति उदासीन रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा वैसे तो शुभ फल देगी पर शनि मारक स्थान में होने से स्वास्थ्य में प्रतिकूलता देगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के सातवें स्थान में मिथुन राशिगत सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। सूर्य एवं शनि दोनों की दृष्टि लग्न स्थान पर होने से जातक उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ेगा. जातक पराक्रमी होगा. जातक का ससुराल धनाढ्य होगा. फिर भी पत्नी से विचार कम मिलेंगे।

2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ अष्टमेश चंद्र की युति विवाह सुख में बाधक है जातक की पत्नी को गुप्त बीमारी होगी।

3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को उत्तम गृहस्थ सुख देगा। पत्नी संतान का सुख देगा पर पत्नी से हमेशा खटपट चलती रहेगी।

4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा पर विवाह के बाद, पहले नहीं।

5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु जातक को उत्तम विद्या, आदर्श शिक्षा देगा। 'लग्नाधिपति योग' के कारण जातक निर्बाध गति से आगे बढ़ता चला जायगा।

6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र पत्नी सुन्दर देगा चाहे रंग सांवला हो। पत्नी के गुप्तांग में बीमारी या गुप्त रोग रहेगा।

7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु वैधव्य योग देता है।

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु विवाह-विच्छेद कराता है।

धनुलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में
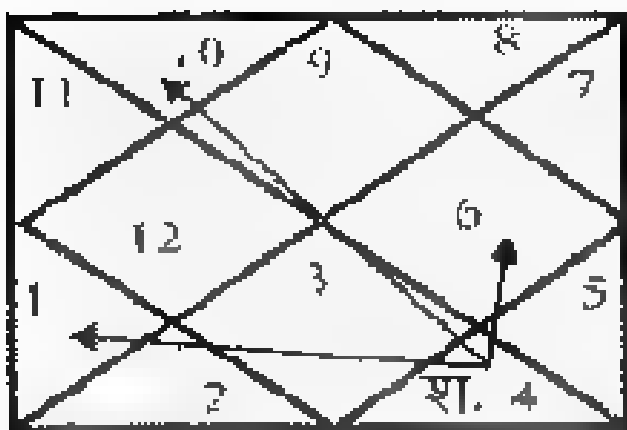
धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां अष्टम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि मे होगा। शनि के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा। वैसे तो जातक को यश, धन, दीर्घायु व कुटुम्ब सुख की प्राप्ति होगी। पाप ग्रहो के सान्निध्य व प्रभाव से रोग, कष्ट, दुख व संघर्षों में वृद्धि होगी. जातक की भाषा कड़वी होने से कुटुम्बीजनों से कम निभेगी।

दृष्टि—अष्टमस्थ शनि की दृष्टि दशम भाव (कन्या राशि), धन भाव (मकर राशि) एवं पंचम भाव (मेष राशि) पर होगी जातक को नौकरी-व्यापार, धन प्राप्ति व संतान सुख हेतु दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

निशानी—ऐसे जातक की संतति विलम्ब से होगी। संतान के नाश या मृत्यु से जातक परेशान रहेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभ जायेगी

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के आठवें स्थान मे सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभग योग' 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभग योग' की क्रमशः सृष्टि होगी। ऐसे जातक के धन कमाने हेतु, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु एवं भाग्योदय हेतु बड़ी दिक्कतें उठानी पड़ेंगी जातक के शत्रु बहुत होगे, पिता-पुत्र की नही बनेगी.
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ स्वगृही चद्रमा 'सरलनामक विपरीत राजयोग' देता है। जातक धनी, मानी, अभिमानी एव सम्पन्न होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल नीच का होकर 'विमल नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। जातक धनी मानी, अभिमानी एवं वाहन सुख से युक्त होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध विवाह सुख में बाधा देता है, यहा 'द्विभार्या योग' बनता है।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु 'द्विभार्या योग' कराता है। जातक को 'लग्नभंग योग', 'सुखभंग योग' के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' कराता है। जातक धनी मानी व अभिमानी होगा। वाहन सुख होगा। सम्पन्न होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु दुर्घटना योग बनाता है। मृत्यु भी संभव है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक की दाईं टाग को चोट पहुंचाता है, एक बार हड्डी जरूर तोड़ेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में
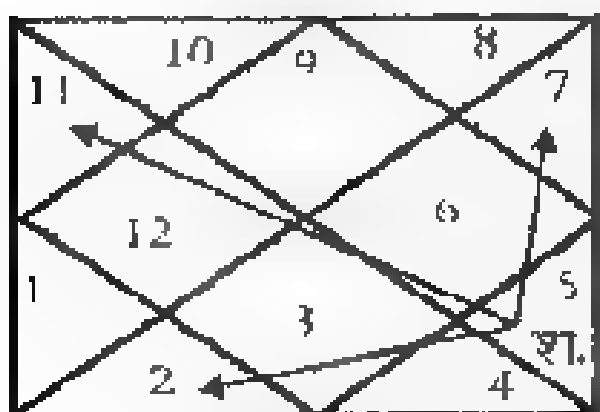
धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है शनि यहा नवम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा ऐसे जातक को पिता का सुख नहीं मिलेगा। भाई बहनों का सुख होगा पर पिता व भाई-बहनो से बनेगी नहीं। ऐसा जातक स्वतंत्र विचारों का होगा अतः उसकी किसी के साथ बनेगी नहीं।

दृष्टि–नवमस्थ शनि की दृष्टि एकादश स्थान (तुला राशि), पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) एव छठे स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक के जीवन में व्यापार में नुकसान, पराक्रम में कमी एवं शत्रुओं की वृद्धि रहेगी।

निशानी–नैराश्य की भावना आर्थिक हानि से जातक अंतिम अवस्था में वैराग्य के कारण संन्यास लेगा।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा में कष्टानुभूति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–धनुलग्न के नवम स्थान में स्वगृही सूर्य के साथ की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ होगी। ऐसे जातक का पिता सम्पन्न होगा, परन्तु जातक की पिता के साथ कम पटेगी। जातक की अपने भाइयों से भी कम निभेगी। जातक का सही भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
2. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा भाग्योदय के प्रयास में रुकावट डालेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को विवादास्पद व्यक्ति बनायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध विवाह के बाद भाग्योदय करायेगा। जातक धनी होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक की कुण्डली में 'लग्नाधिपति योग' बनायेगा। जातक निर्बाध गति से उन्नति मार्ग पर बढ़ता ही चला जायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक के भाग्योदय में रुकावट डालेगा। जातक नीच व्यक्ति की सोहबत करेगा.
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु भाग्य में रुकावट का काम करेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु नीच व्यक्तियों की सोहबत करायेगा

धनुलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में
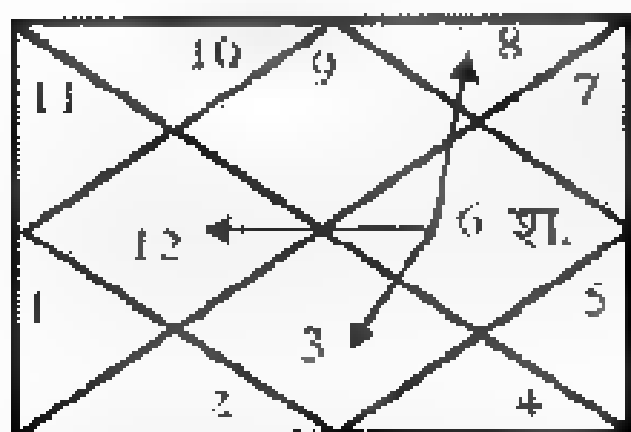
धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अतः अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां दशम स्थान में कन्या (मित्र) राशि में होगा, यहां शनि राजयोग प्रदाता है। ऐसे जातक को धन, यश, पद प्रतिष्ठा, माता पिता, स्त्री संतान शासन प्रशासन का पूरा सुख मिलता है। जातक को उच्च शिक्षा मिलेगी पर मेहनत खूब करनी पड़ेगी। विदेश जाने का योग बनेगा।

दृष्टि—दशमस्थ शनि की दृष्टि व्यय भाव (वृश्चिक राशि), चतुर्थ भाव (मीन राशि) एवं सप्तम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक को भौतिक सुख, गृहस्थ सुख की प्राप्ति होगी पर जातक का स्वभाव खर्चीला होगा।

निशानी—जातक पुराने मकान में रहेगा। स्वयं के शरीर या जीवनसाथी के शरीर में बीमारी को लेकर जातक का धन खर्च होता रहेगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी पर खर्च की अधिकता से जातक परेशान रहेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—धनुलग्न के दशम स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुत: भाग्येश सूर्य की मारकेश, तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे। सरकारी नौकरी या काम काज में विवाद रहेगा। जातक की उन्नति धीमी गति से होगी। ज्यादा फायदा व्यापार में रहेगा।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ अष्टमेश चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होकर सरकारी काम में बाधा डालेगा तथा जातक की माता को बीमार रखेगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक के व्यक्तित्व एवं कार्यों को विवादास्पद बनायेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक को धनी बनायेगा परन्तु विवाह के बाद ही धन, वैभव में बढोत्तरी होगी।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु जातक को सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से युक्त जीवन प्रदान करेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ नीच का शुक्र जातक को एकाधिक वाहन देगा परन्तु वाहन खूब खर्चा करायेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु होने से जातक को प्रेत बाधा पहुचेगी।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक को राजकीय परेशानी में डालेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में
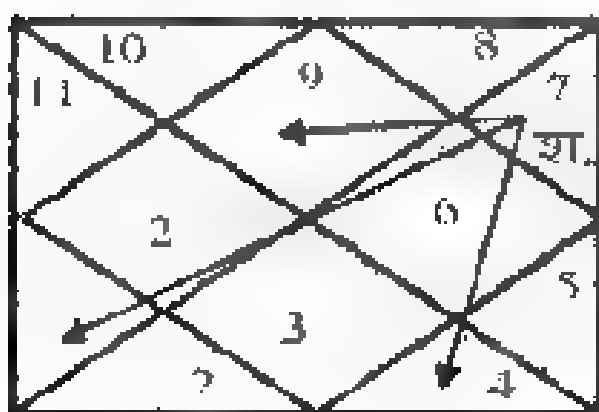
धनुलग्न में शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अत: अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां एकादश स्थान में उच्च का होगा। तुला राशि के

20 अंशो में शनि परमोच्च का होता है। शनि यहा मकर राशि में दशम एवं कुंभ राशि से नवम स्थान पर होने से शुभ फल देगा। धनुलग्न में यह शनि की सर्वोत्तम सुख स्थिति है ऐसे जातक को शेयर, सट्टा, जुआ, स्मगलिंग से लाभ होगा। जातक की अपनी सतान से बनेगी नहीं।

दृष्टि—एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (धनु राशि), पचम स्थान (मेष राशि) एवं अष्टम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलत जातक की उम्र लम्बी होगी पर जातक दीर्घकालिक बीमारी से ग्रसित रहेगा। परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयास का लाभ अवश्य मिलेगा।

निशानी—जातक को नौकरी से अधिक व्यापार में लाभ होगा।

दशा—शनि की दशा-अतर्दशा अति उत्तम फल देगी। जातक उच्च स्थान पर पहुचेगा पर स्वास्थ्य सुख खो देगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—धनुलग्न के एकादश स्थान में सूर्य+शनि की युति 'नीचभंग राजयोग' बनायेगी। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा। स्त्री सतान सुख उत्तम, पर पिता से विचार नहीं मिलेगे। पिता जब तक जीवित रहेगा, जातक स्वतत्र धनार्जन नहीं कर पायेगा।
2. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ अष्टमेश चद्रमा लाभ को तोड़ेगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मगल जातक के लाभश में विवाद पैदा करेग पर जातक भरपूर पढ़ा लिखा होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक को भागीदारी से लाभ देगा। जातक का गृहस्थ सुख उत्तम होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु जातक को उच्च शिक्षा देगा। जातक विदेशी भाषा पढेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र 'किम्बहुना योग' बनायेगा। जातक राजा एवं करोड़पति होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु जातक की धन कमाने की शक्ति को बढ़ायेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक को धंधे मे यशस्वी बनायेगा।

धनुलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में

धनुलग्न मे शनि धनेश व पराक्रमेश है। यह पापी ग्रह है अत: अशुभ फल ही देगा। अशुभ ग्रह के साथ इसका अशुभत्त्व ज्यादा बढ़ जायेगा क्योंकि यह लग्नेश
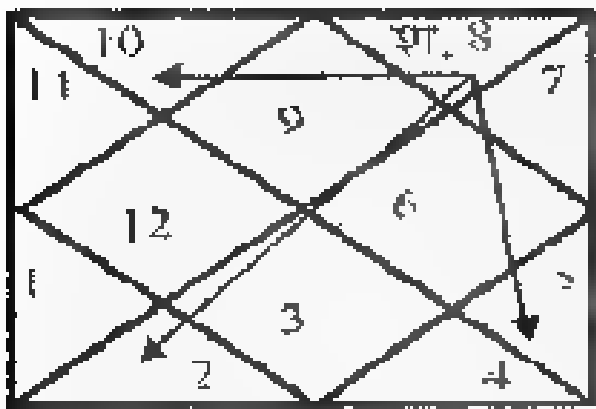
गुरु से शत्रु भाव रखता है। शनि यहां व्ययभाव में वृश्चिक (शत्रु) राशि में होगा शनि की इस स्थिति के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनता है। ऐसा जातक धन, यश, पद प्रतिष्ठा, कुटुम्ब सुख एव भाग्योदय के मामले में काफी दिक्कतें उठायेगा। परेशानी एक के बाद एक उसका पीछा नहीं छोड़ेगी जातक को ननिहाल, मामा एव पिता पक्ष से कम बनेगी। जातक विदेश जाकर फंस जायेगा।

दृष्टि—द्वादशभावगत शनि की दृष्टि धन स्थान (मकर राशि) छठे स्थान (वृष राशि) एव भाग्य स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः धन आयेगा व खर्च होता चला जायेगा। ऐसा जातक फालतू खर्चों से परेशान होगा।

निशानी -ऐसा जातक अपनी जन्म भूमि से दूर जाकर ही कमायेगा जातक की दृष्टि कमजोर होगी। दंत रोग होगा वाणी विषैली होगी, जिससे उसके शत्रु बढ़ेंगे।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा बहुत अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1 **शनि+सूर्य**—धनुलग्न के बारहवें स्थान में सूर्य+शनि की युति वस्तुतः भाग्येश सूर्य की मारकेश तृतीयेश शनि के साथ युति होगी। इस युति के कारण 'भाग्यभंग योग', 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा ऐसे जातक को धन कमाने, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु एव भाग्योदय हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा जातक को यात्रा में नुकसान होगा दुर्घटना भी हो सकती है।

2 **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा नीच का होकर 'सरल नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। ऐसा जातक धनी मानी अभिमानी एवं सभी प्रकार के सुखों से युक्त होगा।

3 **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक की कुण्डली में 'विमल नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा। जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा जातक का अन्य स्त्रियों से शारीरिक संबंध होगा।

4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध विवाह में विलम्ब करायेगा। जातक का विवाह भंग भी हो सकता है दो विवाह के योग बनते है।

5 **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' बनाता है, जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।

6. **शनि+शुक्र**--शनि के साथ शुक्र 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनाता है। जातक धनी, मानी, अभिमानी होकर विलासपूर्ण जीवन जीयेगा। जातक विदेश (परदेश) जाकर धन कमायेगा।
7. **शनि+राहु**--शनि के साथ राहु जातक की हत्या षड्यंत्र से करायेगा। अकाल मृत्यु संभव है।
8. **शनि+केतु** शनि के साथ केतु खराब सपने लायेगा। प्रतिपल अशुभ की आशंका रहेगी।

❑❑❑

धनुलग्न में राहु की स्थिति

धनुलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में
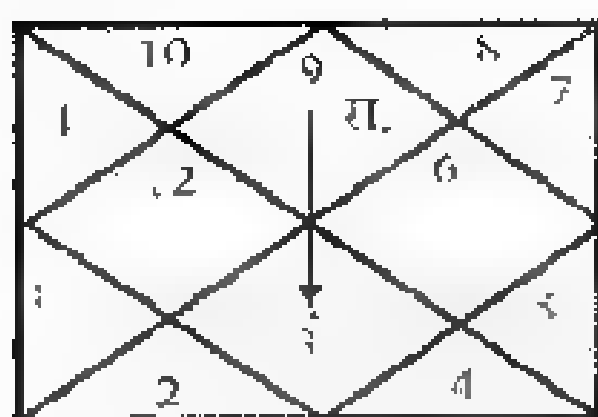
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं हैक्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है अग्नितत्त्व में होने से राहु यहां विस्फोटक है। राहु यहां प्रथम स्थान मे होने से धनु (नीच) राशि में है, ऐसा जातक अभिमानी, क्रोधी व रोगी होता है। जातक धनु का पक्का एव दृढ़ निश्चयी होता है। ऐसा जातक कुछ हद तक डरपोक एवं जबाबदारी से मुक्ति चाहता है

दृष्टि–सप्तम भाव पर राहु की दृष्टि होने से जातक के वैवाहिक जीवन मे असतोष रहेगा।

निशानी–जातक लम्बे कद का कृशकाय व दन्त रोग से पीड़ित व्यक्ति होता है। पचास वर्ष की आयु के पहले अधिकांश दात नष्ट हो जाते हैं

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा मे अशुभ फलों की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–यहा राहु के साथ सूर्य राजयोग देगा। राहु इतना अनिष्टप्रद नही रहेगा, जितना होना चाहिए।
2. **राहु+चंद्र**–यहां राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को नकारात्मक विचार देगा। जातक के चेहरे या शरीर पर चोट के निशान लगेंगे
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मगल कुण्डली में विस्फोटक ताकत लायेगा। ऐसा व्यक्ति शत्रुहंता एव सर्वकार्य में समर्थ होता है।
4. **राहु+बुध** राहु के साथ बुध जातक को स्त्री व संतान सुख देगा परन्तु दोनो में परस्पर ज्यादा प्रेम नहीं होगा।

5. **राहु+गुरु**—यहा धनुलग्न मे लग्नेश गुरु के साथ प्रथम स्थान में अग्निसंज्ञक राहु अपनी नीच राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की मनोवृत्ति कुटिल होगी। ऐसा जातक दूसरो को बुद्धू समझते हुए अपने धन, पराक्रम एवं प्रभाव का दुरुपयोग करेगा। यहां 'हंस योग' के कारण जातक महाधनी होगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र जातक के दुर्घटना योग की पुष्टि करता है. जातक सौन्दर्य प्रेमी, शौकीन होगा पर यात्रा मे कष्ट पायेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि जातक को धनी बनायेगा पर जातक भूत-प्रेत विद्या, तंत्र-मंत्र टोटके करने में रुचि रखेगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में

रा. 10	9	8	7
11	12	6	
1	3	5	
2	4		
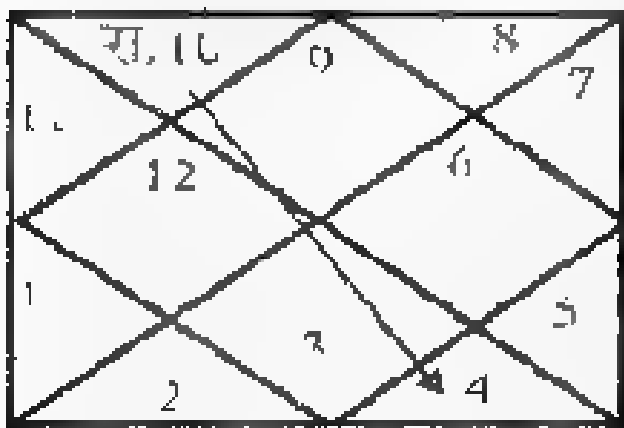
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि मे यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां द्वितीय स्थान मे मकर (सम) राशि में होगा ऐसे जातक को धन, यश, कुटुम्ब सुखों का अभाव रहता है। जातक की शिक्षा अपूर्ण रहती है। आजीविका के साधन के लिए जातक को जन्म स्थान से दूर जाना पड़ता है व्यापार में लगातार घाटा होता है। जातक खान-पान का भ्रष्ट होगा।

दृष्टि—राहु की दृष्टि अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होने से जातक के गुप्त शत्रु जातक को पीड़ा पहुंचायेंगे।

निशानी—जातक मिथ्याभाषी होगा। जातक की भाषा कडवी व रहस्यमय होगी. जातक अपनी वाणी से लोगो को सतोष देता है

दशा—राहु की दशा धन प्राप्ति हेतु दिक्कतें पैदा करेगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—यहा राहु के साथ सूर्य भाग्योदय एवं धन प्राप्ति के प्रयासों मे लगातार कष्ट देगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा धन हानि देगा। जातक द्वारा उधार दिया गया पूरा धन डूब जायेगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल जातक को महाधनी बनायेगा पर धन के घड़े में छेद होने से जातक का रुपया खर्च होता चला जायेगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध ससुराल में विवाद या मनोमालिन्यता दर्शाता है।

5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में नीच के गुरु के साथ द्वितीय स्थान में राहु मकर (सम) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक का धन गलत कार्यों में खर्च होगा। धन संग्रह हेतु किये गये प्रयासों में सफलता नहीं मिलेगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र वाणी में हकलाहट देगा। जातक की वाणी एवं बातचीत का तरीका अश्लील होगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा पर जातक की वाणी अप्रिय होगी

धनुलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में
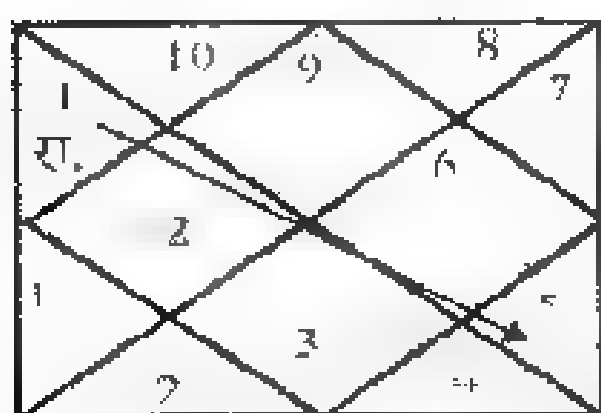
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां तीसरे स्थान में कुंभ मूल त्रिकोण राशि में होगा। तीसरे स्थान में राहु भाई-बहनों के सुख में बाधक है क्योंकि ऐसा जातक स्वार्थी एवं कुछ विद्रोही स्वभाव का होता है। 'त्रिषट् एकादश राहु' सूत्र के अनुसार महाराहु राजयोग कारक है। ऐसे जातक का अच्छा नाम, पद व प्रतिष्ठा मिलेगी। जातक धनी होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक अल्प संतति वाला होगा जातक बहादुर व साहसी होगा।

निशानी– जातक को शत्रु पर निश्चित रूप से विजय मिलेगी

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा में जातक की कीर्ति बढ़ेगी एवं उसे समाज व राजनीति में पद-प्रतिष्ठा मिलेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य भाइयों में बिखराव पैदा करेगा।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को बदनामी देगा। जातक को अपनी बहन या बेटी के कारण नीचा देखना पड़ेगा।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को महान पराक्रमी बनायेगा। जातक के मित्र बहुत होंगे। कुटम्बी जन जातक की मदद करेंगे परन्तु परस्पर विचार नहीं मिलेंगे।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध होने से जातक के मित्र बुद्धिमान होंगे। जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा परन्तु जातक की अपनी पत्नी से विवाद रहेगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न मे कुंभ के गुरु के साथ तृतीय स्थान में राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक का पराक्रम भंग होगा। जातक की अपने भाइयों परिजनों के साथ कम बनेगी। बराबरी की भावना से संबंध बिगड़ जायेंगे

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र शरीर का दांया अंग भंग करायेगा। स्त्री मित्रों के कारण बदनामी होगी।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से जातक धनी, पराक्रमी एवं साहसी होगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
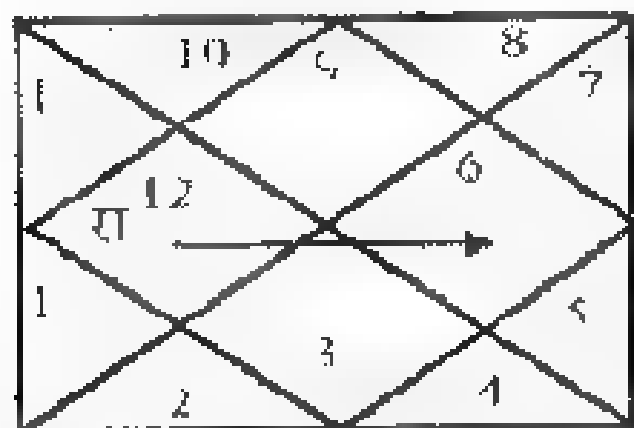
धनुलग्न वालो के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहा चौथे स्थान मे मीन (नीच) राशि में होगा। जातक की पाचक शक्ति कमजोर होगी तथा बात बात पर अपनी माता को धिक्कारेगा। ऐसे जातक के जीवन के सामान्य सुख नष्ट होते हैं तथा भौतिकवादी जीवन से मोह नष्ट हो जाता है जातक अपने आत्मीय स्वजनों से घृणा करता है तथा मध्य आयु के बाद साधु-संन्यासी हो जाता है जातक की संगत प्रायः हल्के या ओछे लोगों से होती है।

दृष्टि–ऐसा जातक आजीविका की प्राप्ति हेतु दर-दर भटकता है।

निशानी–जातक की दो पत्नी होंगी या वह दो माताओं द्वारा पालित होगा। ऐसा जातक एकान्तप्रिय होता है तथा अपनी दुनिया में खोया रहता है

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा खराब जायेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य होने से जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। भौतिक सुखों में भी न्यूनता रहेगी।

2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा अल्पायु में माता की मृत्यु देता है।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ पंचमेश मंगल विद्या देगा पर संतान संबधी चिंता भी अवश्य देगा।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध जातक को पत्नी के साथ समरसता में बाधा डालगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां धनुलग्न में स्वगृही गुरु क साथ चतुर्थ स्थान में राहु अपनी नीच राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की माता गुजर जायेगी। 'हंस योग' के कारण जातक महाधनी होगा, परन्तु माता का सुख कमजोर रहेगा।
6. **राहु+शुक्र** -राहु के साथ शुक्र वाहन दुर्घटना में शरीर के दायें अंगों में चोट पहुचायेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि यहा जातक को उत्तम भवन का निर्माता बनायेगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में

10 9 11 7 12 6 1 रा. 5 3 2 4
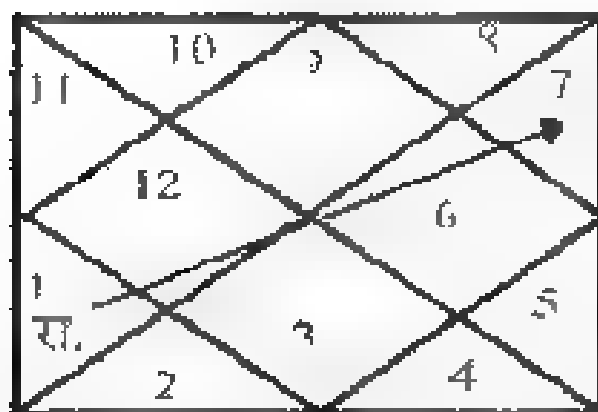
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहा पाचवें स्थान मे मेष (शत्रु) राशि में होगा ऐसे जातक का दिमाग गर्म रहेगा मानसिक चिंता अधिक रहेगी। प्रायः सर्पदोष के कारण सतान प्राप्ति में बाधा पहुचती है तथा विद्या में रुकावट होती है। ऐसा जातक अति उत्साही होगा। कार्य प्रारम्भ तो कर देगा पर उसे बीच में छोड़ देगा.

दृष्टि—राहु का प्रभाव एकादश स्थान (तुला राशि) पर होने से व्यापार में घाटा एवं बार-बार बदलाव आता रहेगा।

निशानी—ऐसा जातक क्रोधी व क्रूर होगा।

दशा—राहु का दशा-अतर्दशा अशुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य यहां उच्च का होकर जातक को उच्च शिक्षा देगा विदेशी भाषा पढ़ायेगा तथा विदेश ले जायेगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्रमा हो तो पुत्र संतान का नाश अवश्य होगा जातक का पाचन तंत्र कमजोर होगा
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल यहा स्वगृही होगा एव जातक को उत्तम संतति देगा जातक स्वय शिक्षित होगा और उसकी सतति भी उच्च शिक्षा को प्राप्त करेगी।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध जातक को बुद्धिमान बनायेगा एवं वैज्ञानिक अनुसंधानों की ओर ले जायेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ पंचम स्थान में राहु मेष (सम) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण विद्या में रुकावट, संतान में रुकावट संभव है। जातक परेशान व अशांत रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र होने से संतति का नुकसान तथा शल्यचिकित्सा का योग करायेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि जातक का विद्यार्जन के द्वारा यशस्वी एवं पराक्रमी बनायेगा.

धनुलग्न में राहु की स्थिति षष्टम स्थान में
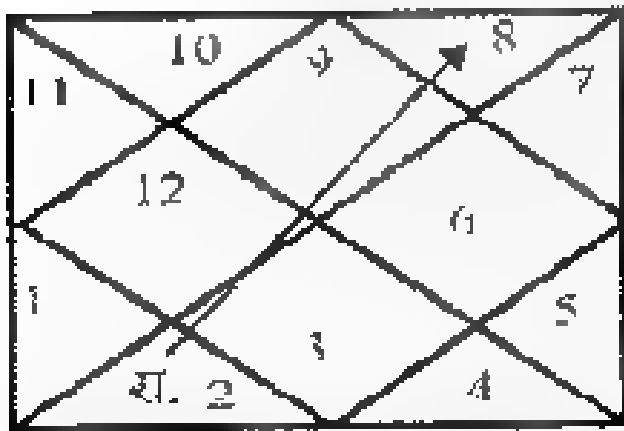
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धन् राशि में यह नीच का होता है. यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां छठे स्थान में वृष उच्च का होगा। ऐसे जातक शत्रुहन्ता व पराक्रमी होते हैं। 'शिष्ट् एकादशे राहु' सूत्र के अनुसार राहु यहां राजयोग प्रदाता है। जातक को धन-प्रतिष्ठा, स्त्री-संतान, नौकरी व्यापार धंधा-कारोबार का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक की गुप्त आवक होगी। जातक आशावादी होगा।

दृष्टि—राहु की दृष्टि द्वादश भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक यात्रा करेगा तथा यात्राओं से धन कमायेगा। जातक विदेश जायेगा।

निशानी—ऐसे जातक मुसीबतों से घबराते नहीं अपितु सबक सीख कर आगे बढ़ते है जातक को कमर दर्द, कोढ़ या लकवे की शिकायत सम्भव है ऐसे में 'महामृत्युंजय' का अनुष्ठान करें। उसका लॉकेट पहनें।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' कराता है। जातक को अनेक परेशानी व दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा 'सरल नामक विपरीत राजयोग' की सृष्टि करने से ऐसा जातक धनी, मानी, अभिमानी होगा। पर शत्रु बहुत होंगे।

3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल विद्या में बाधा डालेगा। जातक की पढ़ाई अधूरी छूट जायेगी। विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी, मानी अभिमानी होगा। उसके पास उत्तम वाहन होगा।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध पत्नी का वियोग देगा। पर बुद्धिमानी से काम लेने पर समस्या सुलझ जायेगी

5. **राहु+गुरु**—यहा धनुलग्न म गुरु के साथ छठे स्थान में राहु वृष (उच्च) राशि में है 'चाण्डाल योग' के कारण जातक की परिश्रम का लाभ नहीं होगा। कार्य में सफलता नही मिलेगी एवं वाहन दुर्घटना का भय रहेगा

6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र स्वगृही होकर 'हर्ष नामक विपरीत राजयोग' बनायेगा ऐसा जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा तथा सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से सम्पन्न होगा।

7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रम भंगयोग' की सृष्टि करत है फलत: जातक आर्थिक विषमताओ मे उलझा रहेगा जातक का सामाजिक यश भी कम मिलेगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में

10	9	8	
11			7
12		6	
1	रा. 3		5
2		4	
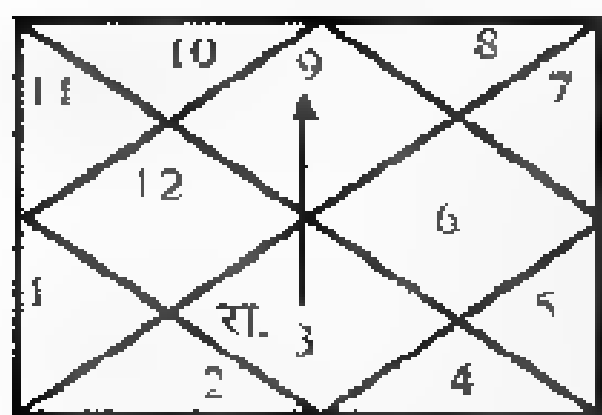
धनुलग्न वालो के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां सातवे स्थान में मिथुन (उच्च) राशि का होगा। ऐसे जातक का विवाह.प्राय: विलम्ब से होता है। जातक को स्त्री व संतान सुख मिलता है पर पत्नी उड़ाऊ, खर्चीली स्वभाव की होगी। उसका चरित्र शंकास्पद होगा। जातक को प्रेम के मामले में निराशा-हताशा हाथ लगेगी। ऐसे जातक के पास गुप्त शक्ति होगी तथा परिश्रमपूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।

दृष्टि—सप्तमस्थ राहु का प्रभाव लग्न स्थान (धनुराशि) पर होने के कारण जातक भड़कीले स्वभाव का होगा।

निशानी—स्त्री को सर्पदंश या वैधव्य का भय रहेगा। ऐसे मे पितृदोष, सर्पदोष की शांति करानी होगी

दशा—राहु का दशा अंतर्दशा मिश्रित फलकारी होगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **राहु+सूर्य**-राहु के साथ सूर्य विवाह विच्छेदक है। जीवनसाथी के साथ तलाक की नौबत आ सकती है।
2. **राहु+चंद्र**-राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक को गुप्त रोग एवं उसके जीवनसाथी के गुप्त भाग में ऑपरेशन होने का संकेत देता है
3. **राहु+मंगल**-राहु के साथ मंगल 'द्विभार्या योग' बनाता है।
4. **राहु+बुध**-राहु के साथ बुध 'भद्र योग' की सृष्टि करता है। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली, वैभवपूर्ण जीवन जीयेगा।
5. **राहु+गुरु**-यहां धनुलग्न में गुरु के साथ सातवें स्थान में राहु मिथुन (मूलत्रिकोण) राशि में है 'चाण्डाल योग' के कारण गृहस्थ सुख में बाधा होगी। पत्नी से विचारधारा कम मिलेगी। पत्नी के रहते दूसरी औरत से संबंध होंगे।
6. **राहु+शुक्र**-राहु के साथ शुक्र शल्य चिकित्सा योग बताता है। जातक को पेट या गुर्दे की बीमारी होगी।
7. **राहु+शनि**-राहु के साथ शनि वैवाहिक सुख में बाधक है। जातक का जीवन साथी धनवान होगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
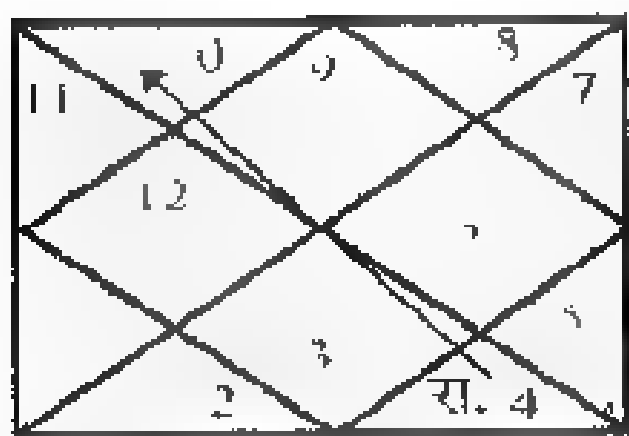
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां आठवें स्थान में कर्क (शत्रु) राशि का होगा। ऐसे जातक को घर-परिवार धन-सम्पत्ति एवं स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता बनी रहेगी। अचानक रोग, दुर्घटना व शत्रु का भय रहेगा ऐसा जातक सदैव मानसिक तनाव एवं चिंता में रहेगा। जातक की मनोवृत्ति आपघाती होगी। जातक खुद को खत्म करने मे, स्वयं को तबाह व बरबाद करने में रुचि रखेगा। ऐसा जातक किसी का मित्र नहीं होता

दृष्टि-अष्टमस्थ राहु की दृष्टि धन भाव (मकर राशि) पर होगी फलतः ऐसा जातक धन का खर्च बिना सोचे समझे करेगा।

निशानी-राहु की यह स्थिति स्त्रियों को वैधव्य प्रदान करती है। जातक को चोरी करने की स्वभावतः आदत होती है। दूसरो का नुकसान पहुंचाना उसकी आदत मे शुमार होता है।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—यहां राहु के साथ सूर्य **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि करते हैं जातक को भाग्योदय हेतु अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्रमा **'सरल नामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी मानी एवं अभिमानी होगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल विद्या में बाधा डालेगा द्विभार्या योग के अवसर भी बनेंगे।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध विवाह विच्छेदक योग बनाता है
5. **राहु+गुरु**—यहा धनुलग्न में गुरु के साथ आठवे स्थान मे राहु कर्क (शत्रु) राशि मे है। **'चाण्डाल योग'** के कारण परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। कार्य में सफलता नहीं मिलेगी दुर्घटना से अंग-भंग होने का खतरा है।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र 'हर्षनामक विपरीत राजयोग' बनाता है जातक धनी मानी व अभिमानी होगा। उसके पास उत्तम वाहन होगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनाता है। जातक की प्रतिष्ठा भंग होगी और आर्थिक विषमताएं बढ़ी चढ़ी होगी।

धनुलग्न मे राहु की स्थिति नवम स्थान में

10 9 8 7 11 12 6 1 5 रा. 3 2 4
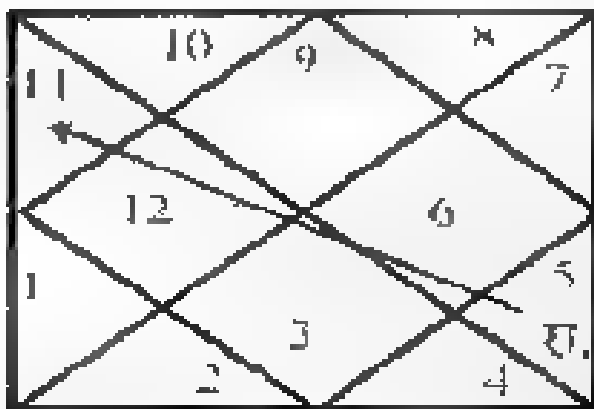
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि मे यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहा नवमें स्थान में सिंह शत्रु राशि में होगा। ऐसा जातक आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति मे विश्वास रखेगा। ऐसा जातक ऊपर से आस्तिक परन्तु अंदर से नास्तिक होगा। अच्छे ग्रहो के सान्निध्य या उनकी दृष्टि से जातक को ऊंचे पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक का वैवाहिक जीवन में असंतोष, संतान प्रसंग में असंतोष रहेगा।

दृष्टि—नवम भावगत राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। यदि जातक असावधान रहा तो शत्रुओं से परास्त होगा। जातक के धन का नाश फालतू के कार्यों में होगा।

निशानी–ऐसा जातक पुरातन विचार एवं रूढ़िवादी परम्पराओं को बिलकुल नहीं मानेगा। जातक पराक्रमी, परिश्रमी एवं युद्धप्रिय होगा।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा में तीर्थ स्नान होगा। परदेश जाने का अवसर मिलेंगे। जातक के पिता की मृत्यु होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य यहां स्वगृही होकर राजयोग बनायेगा। जातक जीवन में विशेष उन्नति, तरक्की प्राप्त करेगा।
2. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा भाग्य में अनिश्चित उतार चढ़ाव लायेगा।
3. **राहु+मगल**–राहु के साथ मंगल जातक को भूमि लाभ देगा। जातक की संतति उत्तम होगी। विद्या सुख मध्यम होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध के कारण विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक का जीवनसाथी कमाऊ होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ नवम स्थान में राहु सिंह (शत्रु) राशि में है। 'चाण्डाल योग' के कारण भाग्योदय में बाधा होगी। सरकारी नौकरी से पदच्युत होने का भय एवं झूठा आरोप लगेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र भाग्य में अनिश्चित उतार चढ़ाव, संघर्ष का द्योतक है।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक के पराक्रम को बढ़ायेगा। जातक धनी तथा साधन सम्पन्न होगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में
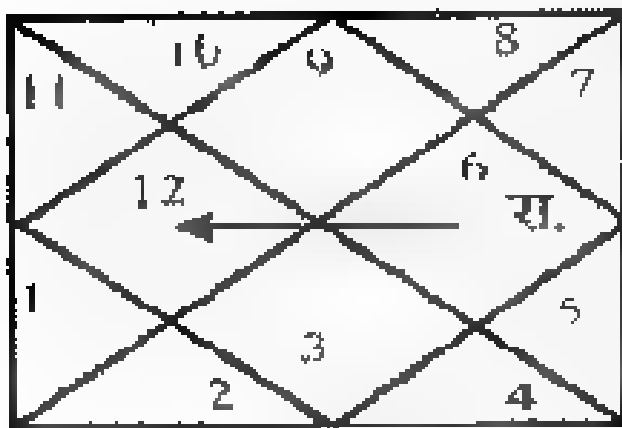
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां दसवें स्थान में कन्या राशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक बुद्धिमान, चतुर, दूरदर्शी, साहसी व कर्त्तव्यनिष्ठ होगा। बुद्धिबल के कारण जातक को राजनीति, समाज व सरकार में उच्च पद की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक दूसरों का धन फौरन पचा जायेगा, डकार भी नहीं लेगा। जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला होगा। जातक प्रायः इधर-उधर भटकता रहेगा।

दृष्टि–दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थ भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक भौतिक सुख, ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु भटकता रहेगा जातक का चरित्र संदेहास्पद होगा।

निशानी–जातक कवि हृदय व भावुक होगा परन्तु पिता से उसके विचार नहीं मिलेंगे।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के संग सूर्य होने से जातक के पिता की मृत्यु शीघ्र होगा
2. **राहु+चंद्र**–राहु के संग चंद्रमा होने से जातक की माता की मृत्यु शीघ्र होगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल 'दिग्बली' होगा। फलत: जातक के पास बहुत सी सम्पत्ति होगी। जातक विद्यावान होगा पर विद्या काम न आ पायेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध यहां 'भद्र योग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा
5. **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ दसवें स्थान में राहु कन्या राशि में स्वगृही है 'चाण्डाल योग' के कारण राजकाज मे बाधा होगी। शत्रुओं को हराने मे, कोर्ट कचहरी मे जातक का रुपया बरबाद होगा। रोजी रोजगार मे दिक्कतें आयेंगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र यहां नीच राशि में होगा। ऐसे जातक राजकाज कोर्ट-कचहरी में मुकदमा हारेंगे।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा पर जातक तरह-तरह के धंधे बदलता रहेगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में
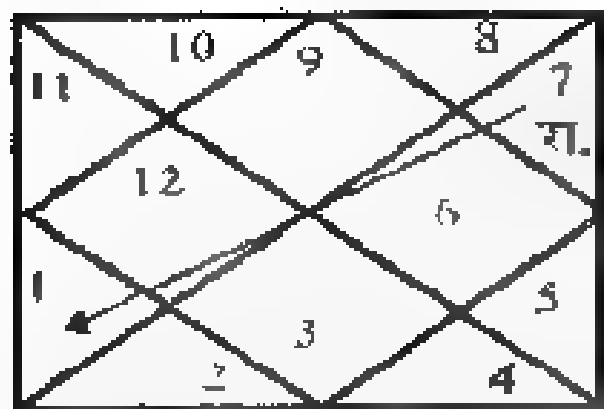
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां एकादश स्थान में तुला (मित्र) राशि का होगा। 'त्रिषट् एकादशे राहु' सूत्र के अनुसार राहु यहां राजयोग कारक है 'फलदीपिका' अ. 8 श्लोक 27 के अनुसार ऐसा जातक लक्ष्मीवान एवं दीर्घायु वाला होता है। जातक के पुत्र थोड़े होते हैं। पर कान में रोग होता है।

दृष्टि—एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम भाव (मेष राशि) पर होने से जातक प्रज्ञावान होगा। जातक की संतति उत्तम होगी। परन्तु एकाध गर्भपात होगा या बालक होकर खो जायेगा।

निशानी—ऐसा जातक प्राचीन शास्त्र एवं विज्ञान का जानकार होता है। जातक को स्त्री-संतान का सुख मिलता है पर विद्याध्ययन में रुकावट आती है।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ नीच का सूर्य **'राजयोग भंग'** करता है। जातक परेशानियों से घिरा रहेगा।
2. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ अष्टमेश चंद्रमा व्यापार व्यवसाय में नुकसान देगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल विद्या में विजय एवं सार्वजनिक जीत देगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध व्यापार में वृद्धि करायेगा। जातक उद्योगपति होगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां धनुलग्न में गुरु के साथ एकादश स्थान में राहु तुला (मित्र) राशि में है। **'चाण्डाल योग'** के कारण लाभ में बाधा। व्यापार व्यवसाय में नुकसान होगा। धनागमन में रुकावट महसूस होगी।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र स्वगृही होने से व्यापार के लिए ठीक है। जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि यहां उच्च का होगा। जातक उद्योगपति होगा।

धनुलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में
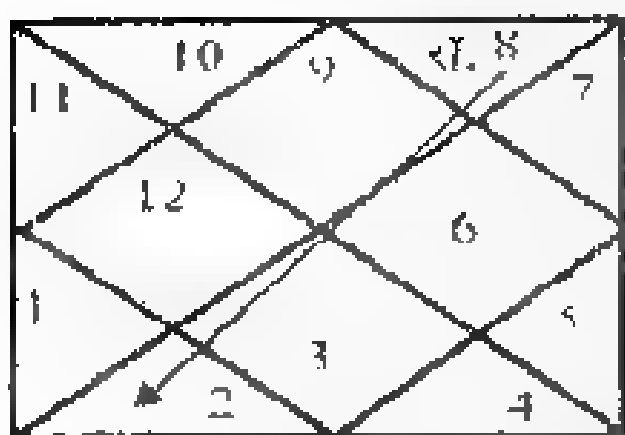
धनुलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि धनु राशि में यह नीच का होता है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। राहु यहां द्वादश स्थान में मीन राशि में नीच का होगा। ऐसा जातक प्रच्छन्न पापी होता है। प्रायः अशुभ की आशंका बनी रहती है। जातक को खराब सपने आते हैं तथा नींद कम आती है। जातक की सोच नकारात्मक होती है। जातक की मनोवृत्ति आत्मघाती होती है। जातक खुद को नुकसान पहुंचाने एवं बरबाद करने में अपनी महानता समझता है।

दृष्टि—द्वादश भावगत राहु की दृष्टि छठे (वृष राशि) पर होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक को गुप्त रोग भी होंगे। प्रायः ऐसा जातक अपनी पत्नी व बच्चों से दूर रहता है।

निशानी–फलदीपिका अ. 8/श्लोक 27 के अनुसार ऐसा जातक जलरोग से पीड़ित रहता है जातक बहुत अधिक व्यय खर्च) करता है तथा असंतुष्ट रहता है।

दशा–राहु की दशा अन्तर्दशा नेष्ट जायेगी। जातक व्यर्थ की यात्राएं करेगा तथा उसके धन का अपव्यय होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1 **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि करेगा ऐसा जातक परेशान रहेगा तथा सरकारी नौकरी के लिए दर दर भटकेगा

2 **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा यहां नीच का होगा एवं **'सरल नामक विपरीत राजयोग'** की सृष्टि करेगा। ऐसा जातक धनी मानी अभिमानी होगा।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल स्वगृही होकर **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** की सृष्टि करेगा। जातक धनी मानी–अभिमानी एवं सुख साधन सम्पन्न होगा।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'विवाहभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक के दो विवाह होते हैं।

5 **राहु+गुरु**–यहां धनुलग्न में गुरु के साथ द्वादश स्थान में राहु वृश्चिक (नीच) राशि में है। **'चाण्डाल योग'** के कारण परिश्रम का लाभ प्राप्त नहीं होता कार्य में बाधा, यात्रा में चोरी होगी तथा दुर्घटना में अंग–भंग होने का खतरा है।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र होने से **'हर्ष नामक विपरीत राजयोग'** बनता है जातक धनी मानी–अभिमानी होगा। सभी प्रकार की सुख सुविधाओं से युक्त जीवन होगा।

7 **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से **'धनहीन योग'** एवं **'पराक्रम भंगयोग'** बनता है। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा जातक की मान–प्रतिष्ठा भंग होगी।

❑❑❑

धनुलग्न में केतु की स्थिति

धनुलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
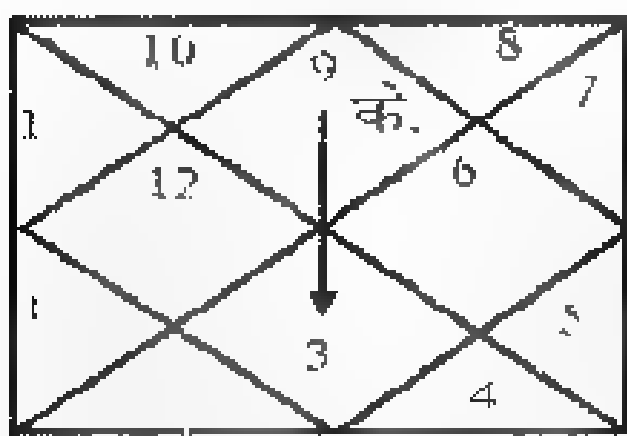
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है तथा धनु राशि में केतु मूलत्रिकोण माना गया है, जो उच्च के ग्रह जैसा शुभ फल देगा। केतु यहां प्रथम स्थान में धनु राशि का ही है। ऐसा जातक लड़ाकू, कृतघ्न, चुगलखोर व असज्जनों के साथ रहने वाला होता है, जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। केतु यहां शुभ ग्रहों के साथ शुभ फल देगा तथा अशुभ ग्रहों के साथ अशुभ फल देगा।

निशानी–ऐसा जातक वात रोगी होता है व उद्विग्न रहता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य राजयोग को पुष्ट करेगा। जातक समाज का प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा जातक की निर्णयशक्ति नष्ट कर देगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल होने से जातक पुरुषार्थी होगा। जातक भाग्यशाली होगा पर कुण्डली 'मांगलिक' होने के कारण पत्नी पक्ष से चिंतित रहेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक 'कुल का दीपक' होगा। पत्नी सुन्दर होगी। गृहस्थ सुख ठीक होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु होने से हंस योग बनेगा जातक राजा होगा व वैभवशाली जीवन जीयेगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक के शरीर का कोई भाग अवश्य (भंग) टूटेगा। अपघात भी संभव है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को धनी एवं पराक्रमी व्यक्ति बनायेगा। जातक हठी होगा। जातक की सोच लड़ाकू होगी

धनुलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में

के 10	9	8	7
11	12	6	5
1	3	4	
2			
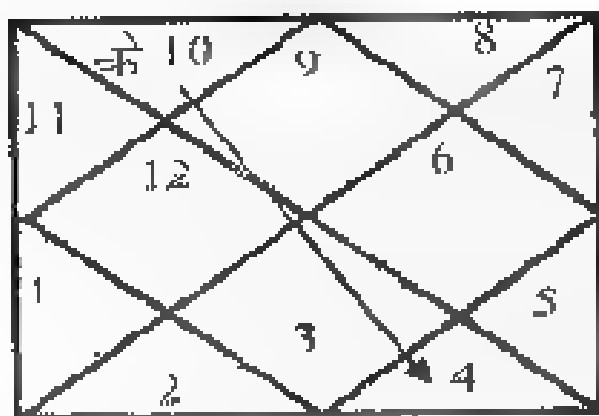
धनुलग्न वालो के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहा द्वितीय स्थान में मकर (मूल त्रिकोण, राशि का है। जातक का धन शुभ कार्य में खर्च होगा कुटम्बीजनों का सहयोग मिलता रहेगा। विद्या कम और अनुभव ज्यादा होगा। जातक को मुख का रोग सभव है जातक विघ्न सतोषी स्वभाव का होता है।

निशानी–विवाह में विलम्ब होगा। 'ढुंढिराज' के अनुसार ऐसा जातक कुटुम्बीजनों का विरोधी होता है। असत्य बोलता है।

दशा केतु की दशा अतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। जातक अहकारी होगा एव उसकी वाणी धमण्डी होगी।
2. **केतु+चंद्र** केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा अशुद्ध वाणी देगा। धन का व्यर्थ खर्च करायेगा।
3. **केतु+मगल**–केतु के साथ मंगल उच्च का होगा। जातक महाधनी होगा एव क्रोधी होगा। लड़ाकू होगा। जातक की वाणी में डाट डपट, झगड़े की भावना अधिक रहेगी।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध राजा से एव पत्नी से झगड़ा करायेगा। झगडा सुलझ जायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु नीच का होगा। जातक की वाणी गंभीर होगा धन धीमी गति से कमायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र दातो मे कष्ट एव तकलीफ देगा। मुख रोग या मुख का कैंसर सभव है।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि स्वगृही होने से जातक महाधनी एव पराक्रमी होगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में
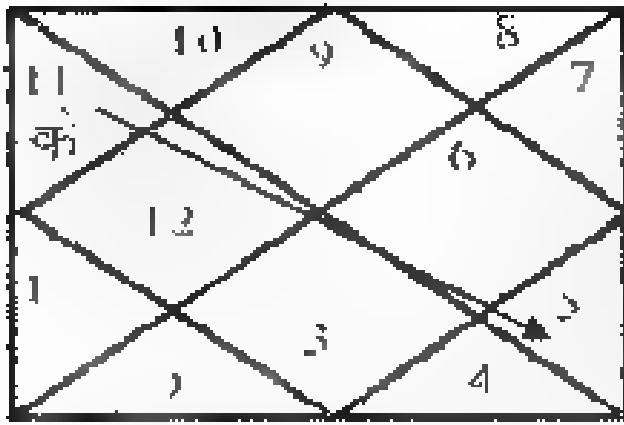
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहां तृतीय स्थान में कुंभ (मित्र) राशि का है। जातक पराक्रमी एवं कीर्तिवान होगा। जातक का प्रत्येक कार्य में भाई एवं मित्रों की मदद मिलेगी। जातक की बुद्धि सकारात्मक व अच्छी होगी। ऐसा जातक लोकप्रिय एवं बाहुबली होगा। भोजसंहिता के अनुसार 'सदा धीरता शत्रुनाश करोति' ऐसा जातक धैर्यशाली होता तथा अपने शत्रुओं का समूल नाश करने वाला पराक्रमी व्यक्ति होता है।

निशानी—जातक के छोटे भाई नहीं होंगे।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ जायेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक का भाग्योदय शीघ्र करायेगा। जातक पराक्रमी एवं राजवर्चस्वी होगा।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा भाई-बहनों में विरोध करायेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को विद्यावान एवं सुयोग्य संतति का स्वामी बनायेगा। ऐसा जातक कुटम्बीजनों के साथ रहना पसंद करता है।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को पराक्रमी ससुराल देगा। राज्य सरकार में जातक का प्रभाव होगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं देगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ षष्टेश शुक्र शत्रु पीड़ा देगा। बाद में कष्ट देगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि होने से जातक धनी, मानी एवं प्रबल पराक्रमी होगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
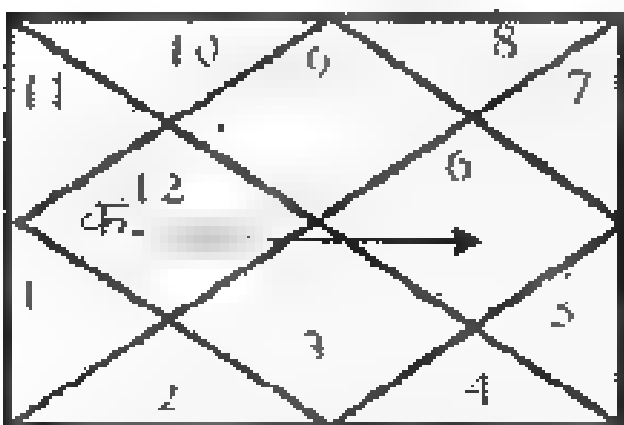
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहां चतुर्थ स्थान में मीन (उच्च) राशि का है। जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं मिलेंगी। जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा। केतु यहां एक प्रकार का राजयोग बनाता है। जातक को अकस्मात् उत्तम सुख सुविधाएं मिलेंगी।

निशानी–ऐसा जातक दूसरो की आलोचना बहुत करता है। अतः लोग ऐसे जातक से दूर रहना पसंद करते है

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मे भौतिक सुखो की प्राप्ति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य राज्यसुख कारक है जातक का घर का सुन्दर मकान होगा
2. **केतु+चद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चद्रमा माता को अल्पायु मे मृत्यु देगा
3. **केतु+मगल**–केतु के साथ मंगल जातक को उत्तम विद्या एव संतति सुख प्रदान करेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ 'कुलदीपक योग' बनायेगा। ऐसा जातक अपने उत्तम कार्यो से कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा के समान वैभवशाली एवं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीयेगा जातक के पास अनेक वाहन होंगे।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से जातक धनवान एवं पराक्रमी होगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में
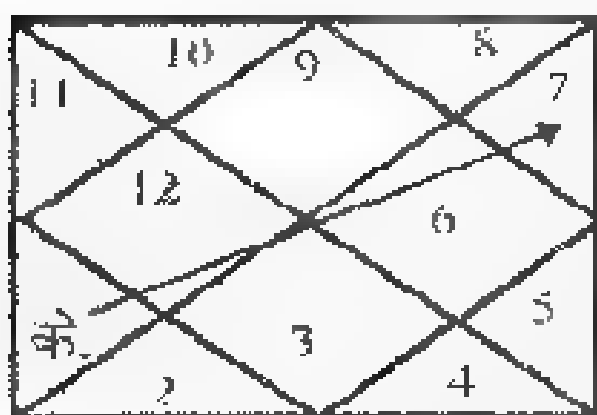
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहा पचम स्थान में मेष (मित्र) राशि का है। संतान सुख उत्तम होगा। जातक शास्त्रों का ज्ञाता एवं विद्वान होगा। जातक के बन्धु सुखी होते हैं जातक का शत्रुओ से वाद-विवाद होता रहता है पर जातक किसी से डरता नहीं

निशानी–ऐसा जातक मठाधीश होता है जातक मत्र-तत्र व कपट से धन एव वैभव की प्राप्ति करता है। ऐसा जातक पानी से बहुत डरता है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य उच्च का होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक की सतति भी पढ़ी-लिखी होगी

2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा विद्या में बाधा, संतान में रुकावट देगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल स्वगृही होने से ऐसा जातक शास्त्रार्थ में हमेशा विजयी रहता है
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध होने से जातक की पत्नी पढ़ी लिखी एवं समझदार होगी। जातक स्वयं बुद्धिमान होगा
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु जातक को धर्मशास्त्रों का ज्ञाता बनायगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र गर्भपात, गर्भस्राव एवं संतति नाश करायेगा। जातक की शिक्षा अधूरी छूटेगी।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि नीच का होगा एवं जातक की विद्या में बाधा उत्पन्न होगी। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में

धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहां छठे स्थान में वृष (नीच) राशि का है। जातक का स्वास्थ्य ठीक रहेगा

भोजसंहिता के अनुसार

पुरेशाधिकारी गृहे रम्यवासी, गले पुष्पमाला कुले श्रीविशाला।
मति मर्दने विद्विषा तस्य मानं भवेद् यस्य षष्ठे गृहे केतुनामा॥

10	9	8	7	11	12	6	1	3	5	के. 2	4
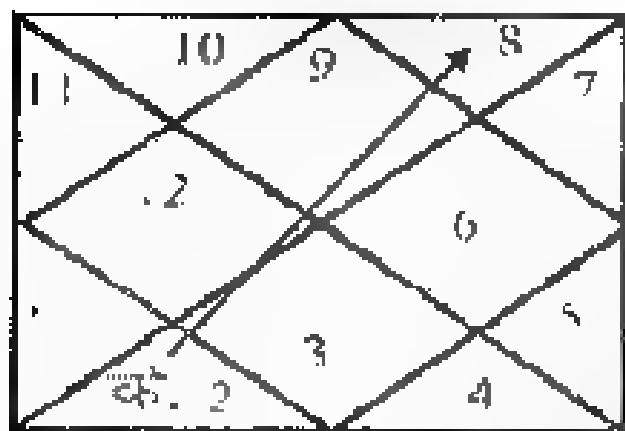
अर्थात् ऐसा जातक नगर का प्रमुख अधिकारी, अच्छे घर में विलास के साथ रहने वाला, शत्रुओं का नाश कर विजय श्री वरण का करने वाला सम्मानित एवं अच्छे कुल में जन्म लेता है।

निशानी—जातक के शत्रु भी मित्र बनने की चेष्टा करेंगे जातक मामा से वैर (द्वेष) रखता है।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा में शत्रुओं की तरफ से विशेष लाभ मिलता है।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' बनायेगा जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतों, परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा 'सरल नामक' विपरीतराज योग बनायेगा। जातक धनी मानी, अभिमानी एवं भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त होगा।

3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल 'संतानहीन योग' बनाता है साथ ही 'विमल नामक' 'विपरीतराज योग' भी बनाएगा। जातक धनी मानी अभिमानी होगा उसे संसार की सभी सुख सुविधाएं मिलेंगी।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से 'विलम्बविवाह योग' बनता है। कभी कभी अविवाह योग भी बनता है।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु 'सुखहीन योग' एवं 'लग्नभंग योग' बनता है। जातक को परिश्रम का फल नही मिलता।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र यहां 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगा। जातक धनी मानी अभिमानी होगा एवं समस्त प्रकार के भौतिक सुख ससाधनों से युक्त होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनायेगा। ऐसा जातक आर्थिक विषमताओं से परेशान होगा। कई बार मान भंग के अवसर भी आयगें।

धनुलग्न मे केतु की स्थिति सप्तम स्थान में

11, 10, 9, 8, 7, 12, 6, 1, के. 3, 5, 2, 4	
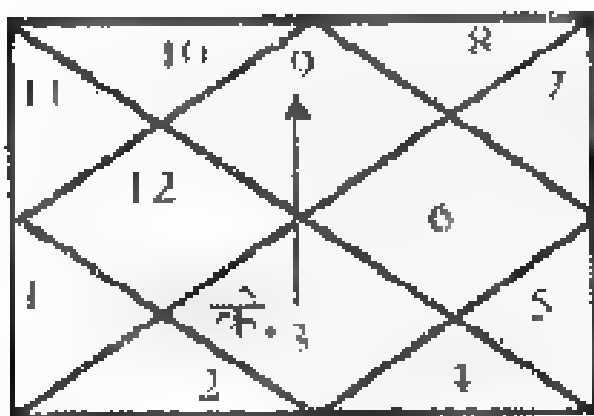
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है। केतु यहा सातवें स्थान मे मिथुन राशि मे नीच का है, जातक की पत्नी धार्मिक होगी। जातक स्वयं व्यभिचारी एवं अस्थिर स्वभाव का होता है। बार बार जगह बदलता रहता है। जातक को हृदय में राजा की अकृपा, सरकार (अदालत) से दण्ड का भय रहता है। ऐसा जातक शत्रुओं से भी भयभीत रहता है।

निशानी–ऐसा जातक अतिकामी होने के कारण विधवा या नीच जाति की स्त्री मे अवैध संबध रखता है

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य गृहस्थ सुख मे विच्छेदक कराने वाला है पर जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा, जीवन साथी की अकाल मृत्यु करायेगा।

3. **केतु+मंगल**—पत्नी से तकरार या तलाक होगी।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु गृहस्थ सुख के लिए उत्तम है, लग्नाधिपति योग के कारण जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को गुदारोग, गुप्तरोग करायेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ होने से जातक का ससुराल धनी होगा। जीवनसाथी कमाऊ होगा।

धनुलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में
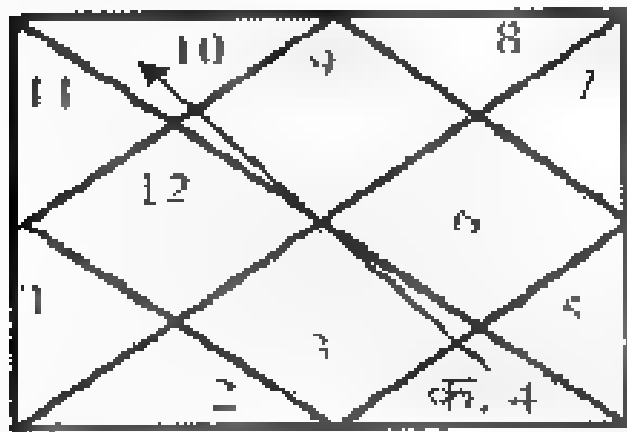
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। केतु यहां आठवें स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में है। जातक को अचानक अकाल्पनिक मदद मिलेगी। ऐसे जातक के शुभ कर्म धीरे-धीरे, पर पापकर्म तत्काल प्रकट होते है। जीवन में शल्य चिकित्सा जरूर होगी। बायें पैर को चोट पहुंच सकती है।

निशानी—ऐसा जातक परस्त्री में आसक्त व नेत्ररोगी होता है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य 'भाग्यहीन योग' की सृष्टि करेगा। जातक को भाग्योदय, रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा स्वगृही होने से 'सरलनामक' विपरीत राज योग बनेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा तथा सांसारिक सुख एवं वैभव से युक्त जीवन जीयेगा।
3. **केतु+मंगल**—अचानक दुर्घटना संभव।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध होने से 'द्विविनाह योग' बनते हैं। जातक के गृहस्थ सुख में न्यूनता बनी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु उच्च का होगा परन्तु 'लग्नभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' बनायेगा। ऐसा जातक कठोर परिश्रमी होने के बावजूद भी उसे वांछित सफलताएं नहीं मिलेगी।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से हर्षनामक ''विपरीत राज योग' बनेगा। जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त जीवन जीयेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से 'धनहीन योग' एवं पराक्रम भंग योग की सृष्टि होगी ऐसा जातक आर्थिक विषमताओं से घिरा रहेगा तथा अनेक बार मान-प्रतिष्ठा भंग होने के अवसर भी आयेंगे

धनुलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में
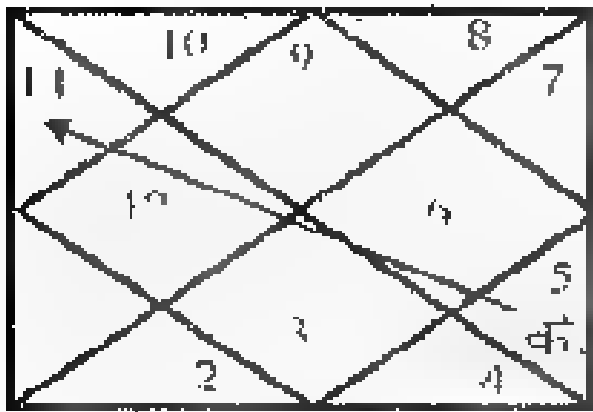
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है. केतु यहां नवम् स्थान में सिंह मूलत्रिकोण राशि में होगा। फलतः उच्च जैसा फल देगा। ऐसे जातक को पिता एवं गुरु का आशीर्वाद मिलता रहेगा।

भोजसंहिता के अनुसार–

गृहे केतु नाम्नि स्थिते धर्मयागे,
श्रियो राजराजाधिपो देव मंत्री।

ऐसा जातक राजा अथवा राजमंत्री न्यायकर्त्ता या न्यायाधीश होता है। जातक कीर्तिवन्त, दयालु व धार्मिक होता है।

- **निशानी**–जातक शूरवीर व अभिमानी होता है। सच्चे काम का साथ देता है
दशा–केतु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य स्वगृही राज योग देगा। जातक राजसरकार (राजनीति) में उच्च पद प्राप्त करेगा सरकारी नौकरी के अवसर प्राप्त होंगे
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्र होने से जीवन के उतार-चढ़ाव बहुत आएंगे। भाग्य में झटका लगेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल होने से जातक पढ़ा लिखा शिक्षित होगा उसकी संतानें भी शिक्षित होंगी। जातक बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा जातक स्वयं तेजस्वी तीव्र बुद्धि का स्वामी होगा।

5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु होने से जातक को परिश्रम का मीठा फल मिलेगा जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से भाग्य में बाधाएं आयगी। स्त्री मित्र जातक के लिए घातक साबित होंगे।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से जातक धनी होगा। पराक्रमी होगा जीवन में संघर्ष तो रहेगा परन्तु अंतिम सफलता जातक के साथ रहेगी।

धनुलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में
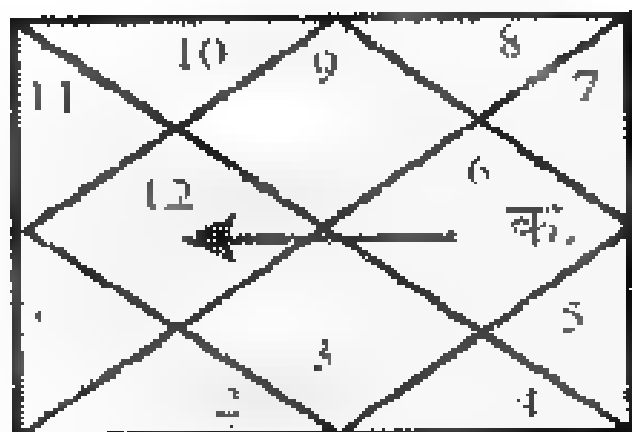
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु को मित्र है। केतु यहां दशम स्थान में कन्या राशि में नीच का होगा। जातक सिद्धान्तवादी होगा। उसे समाज में, राजनीति व सरकार में यश कीर्ति मिलेगी। ऐसे जातक को पिता का सुख नहीं मिलता। जातक दुर्भागी, वाहनो से पीड़ित तथा वातरोगी होता है केतु कन्या राशि में होने से जातक को सुख और दुःख दोनों का अनुभव होता है। जातक अपने शत्रु समूह का नाश अवश्य करता है

निशानी–भोजसंहिता के अनुसार, शत्रकाऽपि रणप्रागणे तस्य गायन्ति कीर्तिम् शत्रु भी युद्ध के मैदान में जातक के शौर्य की कीर्ति गाते हैं

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा सफलता एवं विजय दिलाने वाली होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य राजयोग में वृद्धि करता है। जातक को अच्छी नौकरी लगेगी।
2. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चंद्रमा नौकरी में कष्ट तकलीफ देगा। जातक की माता बीमार रहेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को उत्तम भूमि, भवन का सुख देगा। 'दिग्बली' मंगल के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक उत्तम भवन, वाहन एवं उत्तम नौकरों का स्वामी बनायेगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र कोर्ट-कचहरी मे पराजय देगा शुक्र यहा नीच का होकर व्यापार मे हानि करायेगा।

7 **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि की युति जातक को धनी एवं पराक्रमी बनायेगी।

धनुलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में
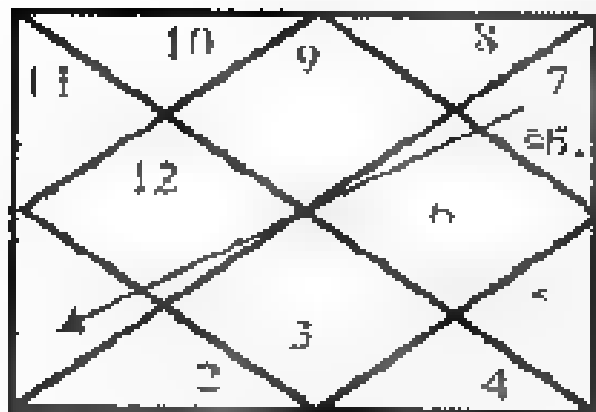
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है। केतु यहां एकादश स्थान में तुला (मित्र) राशि मे होगा जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा। जातक को मित्र-मण्डली से वैराग्य हो जायेगा। ऐसा जातक मीठा बोलता है। विनोदी स्वभाव का होता है विद्वान्, ऐश्वर्य सम्पन्न, तेजस्वी, उत्तम आभूषणों एव श्रेष्ठ वस्त्र अलकारों को धारण करता है। ऐसा जातक जीवन मे एक बार राजा द्वारा सम्मानित भी होता है

निशानी–ऐसा जातक हाथ में लिया हुआ कार्य अधूरा नहीं छोड़ता

दशा–केतु की दशा अतर्दशा शुभ फल देगी

केतु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1 **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य नीच का होने से एकहजार राज योग नष्ट करेगा। जातक व्यापार-व्यवसाय में धन कमायेगा।

2 **केतु+चंद्र**–केतु के साथ अष्टमेश चद्रमा जातक के चलते व्यापार को तोड़ेगा। जातक को रोजी रोजगार हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

3. **केतु+मगल**–केतु के साथ मंगल जातक को उच्च शिक्षा देगा। जातक को सतान सुख भी मिलेगा जातक धनी व सुखी व्यक्ति होगा।

4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को उत्तम विवाह सुख देगा जातक बुद्धिबल में खूब धन कमायेगा।

5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाए देगा। जातक एक धनी व्यक्ति होगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ स्वगृही शुक्र व्यापार में लाभ तो देगा परन्तु हानि भी देगा। जातक स्त्री मित्रों से बचें।

7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि यहा उच्च का होगा। जातक एक धनी व्यक्ति होगा। उद्योगपति होगा। समाज मे उसकी प्रतिष्ठा होगी।

धनुलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में
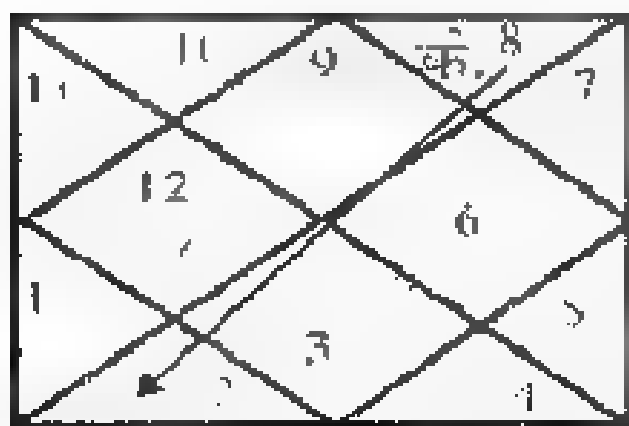
धनुलग्न वालों के लिए केतु लग्नेश गुरु की मित्र है केतु यहां द्वादश स्थान में वृश्चिक मित्र राशि में होगा जातक तीर्थ- यात्रा, देशाटन करेगा। खर्च बढ़-चढ़ कर होंगे। जातक का धन शुभकार्य व परोपकार मे खर्च होगा। ऐसा जातक लड़ाई मे डरपोक होता है।

निशानी—ऐसा जातक प्रवास बहुत करता है तथा खर्चीले स्वभाव का होने से ऋणग्रस्त रहता है।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध--

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य 'भाग्यभंग योग' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें एव परेशानियो का सामना करना पड़ेगा।
2. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को व्याभिचारी बनायेगा।
3. **केतु+मंगल**- केतु के साथ स्वगृही मंगल के कारण 'विमल नामक' विपरीत राजयोग बनेगा। जातक धनी-मानी एवं अभिमानी व्यक्ति होगा उसके पास उत्तम वाहन होगा
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध 'द्विभार्या योग' बनाता है, गृहस्थ सुख में बाधा, सरकारी नौकरी मे भी बाधा का योग बनता है।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु 'सुखहीन योग' एवं 'लग्नभंग योग' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को व्यभिचारी बनायेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि होने के कारण 'धनहीन योग' एवं 'पराक्रमभंग योग' बनेगा। ऐसे जातक को अपने जीवन में आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा तथा कई बार मानहानि के प्रसंग भी उपस्थित होंगे।

□□□

गुरुवार व्रत कथा

बृहस्पति देव देवताओं के गुरु हैं। देवगुरु गुरु देव श्री विद्या, बुद्धि, धन वैभव, मान, सम्मान, यश पद तथा संतान प्रदान करने वाले कृपालु व दया के सागर हैं नवग्रहों में गुरु बृहस्पति सबसे बड़े व शक्तिशाली हैं तथा विद्वान हैं। बृहस्पतिवार के उपवास एवं श्रद्धापूर्वक पूजन से गुरु ग्रह सहित सभी ग्रह प्रसन्न रहते हैं।

गुरु का तान्त्रिक मंत्र–ॐ बृं बृहस्पते नमः।

विधि विधान–बृहस्पतिवार को नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर किसी पवित्र स्थान पर श्री नारायण भगवान की प्रतिमा स्थापित करें। जल के लोटे में गुड़ व चने की दाल डालकर रखें, प्रसाद के रूप में चने व मुनक्का का प्रयोग करें गुरु के तांत्रिक मंत्र का जाप इक्कीस अथवा ग्यारह बार जाप करें तत्पश्चात् व्रत कथा पढ़ें और अंत में केले के पेड़ को जल दें। गुड़ व चने का भोग प्रभु को लगा स्वयं भी प्रेम से प्रसाद खाएं तथा दिन में एक समय भोजन करें। भोजन में पीली वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए।

व्रत कथा–किसी नगर में एक व्यापारी रहता था वह दूर-दूर देशों की यात्रा करता और व्यापार किया करता था। उसका व्यापार बहुत अच्छा चल रहा था उसे धन सम्पत्ति की कोई कमी न थी। वह निर्धनों को दान किया करता था उसके द्वार से कोई याचक खाली नहीं लौटता था. व्यापारी की पत्नी उसके सर्वथा विपरीत थी। उसे पति के दान कर्म से बहुत चिढ़ होती वह किसी को एक पैसा भी नहीं देना चाहती थी।

एक बार व्यापारी दूसरे देश की यात्रा पर गया था। उसके पीछे बृहस्पति देव एक भिक्षुक का वेष धरकर व्यापारी की कंजूस पत्नी के पास पहुंचे और उससे भिक्षा की याचना करने लगे। व्यापारी की पत्नी ने कहा- ''हे साधु महाराज, मैं अपने पति के दान-पुण्य से तंग आ गई हूं वह अपने धन को दूसरों को बांटकर व्यर्थ ही नष्ट करता है। आप कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे मेरा सारा धन नष्ट हो जाए, न धन होगा और न ही मुझे उसे व्यर्थ ही नष्ट होते देख दुःख होगा '' बृहस्पति देव

जी ने कहा "पुत्री, तुम भी विचित्र स्त्री हो। प्रत्येक स्त्री की कामना होती है कि उसका घर धन धान्य से पूर्ण हो और तुम चाहती हो कि तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जाए यदि तुम्हारे पास अधिक धन है तो तुम उस धन को पुण्य के कामों में खर्च करो धर्मशालाएं बनवाओ, प्यासों के लिए प्याऊ खुलवाओ इससे तुम्हें प्रसिद्धि भी मिलेगी और तुम मोक्ष की भी भागी बनोगी।"

व्यापारी की पत्नी भी बड़ी जिद्दी थी। उस पर महात्मा जी की बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने कहा–"मुझे आपकी सलाह नहीं चाहिए। यदि आप मुझे सलाह ही देना चाहते हैं तो कृपया मुझे धन को नष्ट करने का कोई उपाय बताइये "

साधु का रूप धरे हुए बृहस्पति देव जी ने कहा "ठीक है, यदि तेरी ऐसी ही इच्छा है तो यही सही। सात बृहस्पतिवार तक घर को लीपना पीली मिट्टी से बालों को धोना, भट्टी चढ़ाकर कपड़े धोना, मांस मदिरा का सेवन करना, ऐसा करने से तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जाएगा।"

उस स्त्री ने गुरु देवता के कहे अनुसार कार्य किए। केवल छः बृहस्पतिवार ही व्यतीत हुए और उसका सम्पूर्ण धन ही नष्ट हो गया यहां तक कि उसे दोनों वक्त के खाने के भी लाले पड़ गए, उधर उस स्त्री का पति जहाज से वापस लौट रहा था कि उसका माल से भरा जहाज समुद्र में डूब गया वह किसी प्रकार अपने प्राण बचाकर अपने देश लौटा घर आकर उसने देखा कि उसका सब कुछ नष्ट हो गया है। उसकी लड़की ने रोते हुए बताया कि उसकी पत्नी भी परलोक सिधार गई। व्यापारी ने अपनी पुत्री से इसका कारण पूछा तो लडकी ने सारा वृतांत कह सुनाया।

अब व्यापारी जंगल से लकड़ियां ले आता और उन्हें नगर में ले जाकर बेच देता और उससे जो भी कुछ प्राप्त होता उससे उसका अपना और अपनी पुत्री का पेट भरता था किंतु उनका निर्वाह बड़ी मुश्किल से हो पाता था।

एक दिन उसकी पुत्री ने दही खाने की इच्छा प्रकट की किन्तु व्यापारी के पास एक भी पैसा नहीं था। किंतु पुत्री से किस प्रकार कहता कि कल का सेठ आज अपनी एकमात्र पुत्री को दही भी नहीं खिला सकता। वह पुत्री से दही लाने के लिए कहकर जंगल में लकड़ियां काटने चल दिया। चलते हुए वह सोचने लगा कि पहले मैं क्या था। चलते-चलते थककर व्यापारी पेड़ के नीचे बैठ गया और बहुत व्याकुल हुआ उस दिन बृहस्पतिवार था। उसकी ऐसी दशा देखकर बृहस्पति देव साधु का वेश बनाकर उसके पास आए और उससे बोले–"इस सुनसान जंगल में अकेले बैठकर क्या सोच रहे हो?" व्यापारी ने दुःखी मन से सारा वृतांत साधु को कह सुनाया बृहस्पति देव जी ने कहा, तुम्हारा इसमें कोई दोष नहीं। तुम्हारी पत्नी ने बृहस्पति भगवान का अपमान किया था जिस कारण तुम्हें इतना कष्ट पहुंचा, किंतु अब तुम्हारे

दिन फिर जाएगें। तुम नियमानुसार बृहस्पतिदेव जी का पूजन व उपवास बृहस्पतिवार के दिन किया करो।

दो पैसे के चने व मुनक्का मगाकर जल के लोटे में थोड़ी सी शक्कर डालकर उस अमृत और प्रसाद को सारे परिवार वालो तथा कथा सुनने वालों में बाटा करो तथा स्वयं भी प्रेमपूर्वक प्रसाद को खाया करो। बृहस्पति देव तुम्हारे कष्टों को अवश्य और शीघ्र ही दूर करेंगे।"

साधु के ऐसे वचनो को सुनकर व्यापारी ने कहा–"हे महाराज! मुझे लकड़िया बेचकर इतना भी धन नहीं मिलता कि मैं अपनी एकमात्र पुत्री को दही भी खिला पाऊ। अपनी पुत्री को रोज यह आश्वसान देकर आता हूं कि आज उसे दही अवश्य ही खिलाऊंगा आज भी इसी सोच मे यहा बैठा हूं "

बृहस्पति देव जी ने कहा–"हे वत्स! तुम चिंतित न हो। बृहस्पतिवार के दिन तुम लकड़िया बेचने शहर जाना। उस दिन तुम्हें लकड़ियो के विक्रय मे चार पैसे अधिक प्राप्त होगे उन पैसो में से दो पैसे की दही लाकर तुम अपनी पुत्री को खिलाना तथा दो पैसे के चना और मुनक्का लाकर बृहस्पति देव जी की कथा करना, जल में थोड़ी सी शक्कर डालकर अमृत बनाना तथा कथा का प्रसाद सब में बाटना और खुद भी खाना तो तुम्हारे सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण हो जाएगे।" इतना कहकर बृहस्पति देव जी अन्तर्ध्यान हो गए।

गुरुवार के दिन उस व्यापारी ने जगल मे से लकड़िया एकत्र कीं और शहर मे बेचने के लिए गया। उस दिन उसे पहले से चार पैसे अधिक मिले। उस धन से उसने दो पैसे की दही लाकर अपनी कन्या को दी तथा दो पैसे के चने और मुनक्का मगाकर अमृत बनाकर प्रसाद बांटा तथा प्रेम से खाया।

उसी दिन से उसकी सभी कठिनाइया दूर हो गईं। वह सुखपूर्वक रहने लगा, किंतु अगले बृहस्पतिवार को वह व्यापारी भगवान बृहस्पति देव की कथा करना तथा व्रत रखना भूल गया

भगवान बृहस्पति देव उससे रुष्ट हो गए शुक्रवार को उस नगर के राजा ने अपने महल मे बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया और अपने नगर में घोषणा करवाई कि आज कोई भी व्यक्ति अपने घर में अग्नि न प्रज्वलित करे तथा समस्त जनता मेरे महल में आकर भोजन ग्रहण करे जो इस आज्ञा का अवहेलना करेगा। उसे सूली पर लटकाया जाएगा।

राजा की आज्ञानुसार सभी नगरवासी राजा के महल मे भोजन करने के लिये गए किंतु वह व्यापारी और उसकी लडकी तनिक विलंब से पहुचे। अत: राजा ने उन दोनों को अपने महल के भीतर ले जाकर भोजन कराया।

जब वह पिता पुत्री दोनो भोजन करके चले गए तो महारानी की दृष्टि उस खूंटी पर पड़ी जिस पर उसका नौलखा हार टगा हुआ था। उस खूंटी पर अब हार नहीं था। महारानी को विश्वास हो गया कि हार लकड़हारा और उसकी लड़की ही ले गए हैं।

उसने तत्काल सिपाहियों को बुलाकर दोनों बाप-बेटी को कैद करके जेल में डलवा दिया। जेल में कैद होकर बाप बेटी दोनों अत्यत दु:खी हो गए। वहा उन्होंने भगवान बृहस्पति देव का स्मरण किया उसकी पुकार सुनकर भगवान बृहस्पति जी जेल में प्रकट हुए तथा कहने लगे कि हे भक्त राज, तुम पिछले सप्ताह बृहस्पति देवता की कथा करना भूल गए थे जिसके कारण तुम्हारा यह हाल हुआ है।

परन्तु अब भी तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो अगले बृहस्पतिवार के दिन तुम्हे कैदखाने के द्वार पर दो पैसे पड़े मिलेंगे। तुम वह पैसे उठाकर चने तथा मुनक्का मंगा लेना तथा विधिपूर्वक बृहस्पति देवता का पूजन तथा कथा करना तो तुम्हारे सब दु:ख दूर हो जाएगे

बृहस्पतिवार के दिन उस व्यापारी को जेल के मुख्य द्वार पर दो पैसे पड़े हुए मिले। बाहर सड़क पर एक स्त्री जा रही थी। व्यापारी ने उस स्त्री को बुलाकर कहा कि बहन तुम मुझे बाजार से दो पैसे के चने और मुनक्का ला दो ताकि मैं भगवान बृहस्पति देव की कथा कर सकूं।

उस स्त्री ने कहा कि मैं अपने बेटे के विवाह के लिये कपड़े सिलवाने जा रही हू। अत: मैं तुम्हारे बृहस्पति भगवान को क्या जानू. इतना कहकर वह स्त्री वहां से चली गई व्यापारी दु:खी हो गया।

थोड़ी देर के बाद वहा से एक और स्त्री निकली व्यापारी ने उस स्त्री को बुलाकर कहा कि बहन मुझे बाजार से दो पैसे के चने और मुनक्का ला दो, मुझे बृहस्पति देव की कथा करनी है।

वह स्त्री भगवान बृहस्पति का नाम सुनकर गद्‌गद होकर बोली "बलिहारी जाऊं, भगवान के नाम पर मै तुम्हें अभी चने और मुनक्का लाकर देती हू मेरा इकलौता बेटा मर गया है मैं तो उसके लिये कफन लेने जा रही थी मगर अब पहले तुम्हारा काम करूंगी इसके बाद बेटे के लिये कफन लाऊगी।"

इतना कहकर उस स्त्री ने व्यापारी से पैसे लिये और बाजार से चने मुनक्का ले आई और स्वयं भी बृहस्पति देवता की कथा सुनकर प्रसाद लेकर अपने घर की ओर रवाना हुई।

स्त्री ने देखा कि लोग उसके बेटे की लाश को 'राम नाम सत्य है', कहते हुए श्मशान की ओर लेकर जा रहे है। उस स्त्री ने कहा कि भाई मुझे अपने लाडले का

पुत्र तो देख लेने दो लोगों ने अर्थी को जमीन पर रखा। तब उसी स्त्री ने प्रसाद और अमृत अपने मृत पुत्र के मुख में डाला। प्रसाद और अमृत के मुख में पड़ते ही उसका मृत पुत्र उठ खड़ा हुआ और अपनी माता से प्रेमपूर्वक मिला।

दूसरी ओर जिस स्त्री ने भगवान बृहस्पति का निरादर किया था। वह जब अपने पुत्र के विवाह के लिये कपड़े लेकर लौटी तो घोड़ी ने एक ऐसी छलांग मारी कि उसका पुत्र घोड़ी से जमीन पर आ गिरा और घायल हो गया एवं कुछ क्षण पश्चात् ही मर गया।

तब वह स्त्री रोकर बृहस्पति भगवान से कहने लगी कि हे देव मेरा अपराध क्षमा करो, मेरा अपराध क्षमा करो। उसकी पुकार सुनकर भगवान बृहस्पति देवता साधु का रूप धरकर वहां आए और कहने लगे ' देवी, अधिक शोर मचाने की कोई आवश्यकता नहीं। तुमने बृहस्पति देवता का निरादर किया था जिसका यह फल तुम्हें मिला है तुम जेल खाने जाकर उस भक्त से क्षमा याचना करो तो सब ठीक हो जाएगा। ऐसा सुनकर वह स्त्री शीघ्रतापूर्वक जेलखाने पहुंची तथा उस व्यापारी से हाथ जोड़कर कहने लगी 'हे भक्तराज,'मैंने तुम्हारा कहना नहीं माना तथा तुम्हें चने और मुनक्का लाकर नहीं दिया इस कारण बृहस्पति देवता मुझसे रुष्ट हो गए तथा मेरा इकलौता बेटा घोड़ी से गिरकर मर गया.''

व्यापारी ने कहा--''हे माता तू चिंता मत कर। बृहस्पति देवता सबका कल्याण करेंगे। तुम अगले बृहस्पतिवार को आकर बृहस्पति देव की कथा सुनना, तब तक अपने पुत्र के शव को फूल, इत्र, घी आदि सुगंधित वस्तुओं में डालकर रख दो।'' उस स्त्री ने ऐसा ही किया। बृहस्पतिवार का दिन भी आ गया। वह स्त्री दो पैसे के चने और मुनक्का लेकर तथा पवित्र जल का लोटा भरकर जेलखाने पहुंची तथा श्रद्धा के साथ भगवान बृहस्पति की कथा सुनी। जब कथा समाप्त हुई तो अमृत और प्रसाद लाकर अपने मृत पुत्र के मुख में डाला। प्रसाद के मुख में पड़ते ही उसके पुत्र की सांस आने लगी तथा वह उठकर खड़ा हो गया तब वह स्त्री प्रेमपूर्वक भगवान का गुणगान करती हुई अपने पुत्र के साथ घर को रवाना हुई

उसी रात्रि स्वप्न में राजा को बृहस्पति देवता ने दर्शन दिये तथा कहा ''हे राजा! तूने जिस व्यापारी और उसकी पुत्री को जेल में बंद कर रखा है वह दोनों निर्दोष हैं अब तू दिन निकलते ही दोनों को मुक्त कर दे तेरा नौलखाहार उसी खूंटी पर लटका है।'' दिन निकला तो रानी ने अपना हार खूंटी पर लटका देखा। राजा ने उस व्यापारी को जेल से मुक्त कर अपने अपराध के लिये क्षमा मांगी तथा उसको अपना आधा राज्य देकर तथा उसकी लड़की का उच्च कुल में विवाह कर दहेज में अनमोल हीरे-जवाहरात दिये इस प्रकार वह दोनों पिता-पुत्री सुखपूर्वक जीवन यापन करने लगे

गुरुवार व्रत का दूसरी कथा

एक दिन इन्द्र अहंकारपूर्वक सिंहासन पर बैठे थे और बहुत से देवता ऋषि, गन्धर्व किन्नर आदि सभी सभा में उपस्थित थे. जिस समय बृहस्पति जी सभा मे आए तो सभी देवतागण उसके सम्मान मे खड़े हो गए किंतु इंद्रराज गर्व के कारण अपने सिंहासन से न उठे। यद्यपि वह सदैव उनके आदर के लिये उठते थे। बृहस्पति जी इसे अपना अनादर समझकर वहा से उठकर चले गए।

तब इन्द्र को बड़ा दुःख हुआ कि मैंने गुरुदेव का अनादर किया. मुझसे बहुत भारी भूल हो गई उनकी कृपा से ही तो मुझे यह वैभव प्राप्त हुआ है। उनके क्रोध से यह सब वैभव नष्ट हो जाएगा अतः मुझे उनके पास जाकर क्षमा माग लेनी चाहिए जिससे उनका क्रोध शांत होगा तथा मेरा कल्याण होगा ऐसा विचार कर इंद्र बृहस्पति जी के पास गए।

गुरु बृहस्पति जी ने अपने योगबल के द्वारा यह जान लिया था कि इन्द्र अपन अपराध के लिये क्षमा मागने आ रहे है किंतु क्रोधवश उनसे भेंट करना उचित ना समझकर बृहस्पति देव अन्तर्ध्यान हो गए। जब इंद्र ने बृहस्पति जी को आश्रम में न देखा तो वे निराश होकर लौट गए जब दैत्यों के राजा वृष वर्मा ने यह समाचार सुना तो उसने अपने गुरु शुक्राचार्य की आज्ञा से इंद्रपुरी को चारों ओर से घेर लिया। गुरु की कृपा न प्राप्त होने के कारण देवता हारने लगे।

तब देवताओं ने जाकर ब्रह्माजी से सारा वृतान्त कह सुनाया तथा उनसे रक्षा के लिये निवेदन किया। ब्रह्माजी ने कहा कि तुमने बृहस्पति देवता को क्रोधित कर घोर अपराध किया है। त्वष्टा ऋषि के पुत्र विश्वरूपा बड़े तपस्वी और ज्ञानी है. तुम उन्हें अपना पुरोहित बनाओ, तभी कल्याण हो सकता है यह सुनकर इंद्र त्वष्टा ऋषि के पास गये। तथा विनयपूर्वक कहने लगे कि आप हमारे पुरोहित बन जाए ताकि हमारा कल्याण हो। त्वष्टा ऋषि ने उत्तर दिया कि पुरोहित बनने से तपोबल घट जाता है किंतु तुम्हारे कहने से मेरा पुत्र विश्वरूपा पुरोहित बनकर तुम्हारी रक्षा करेगा।

विश्वरूपा ने पुरोहित बनकर देवताओं की सहायता की तथा हरी इच्छा से इन्द्र वृष वर्मा से युद्ध में जीतकर इंद्रासन पर स्थित हुए। विश्वरूपा के तीन मुख थे। एक मुख से वह सोम पल्ली लता का रस निकालकर पीते थे। दूसरे मुख से मदिरा पीते थे तथा तीसरे मुख से अन्नादि भोजन करते थे। इंद्र ने कुछ समयोपरान्त कहा कि हे देव मैं आपकी कृपा से यज्ञ करना चाहता हू। विश्वरूपा की आज्ञानुसार यज्ञ प्रारम्भ हो गया। एक दैत्य ने आकर विश्वरूपा से कहा कि तुम्हारी माता दैत्य की कन्या है। इस कारण दैत्यों के कल्याण के लिये एक आहुति दैत्यो के नाम पर भी दे दिया करो।

विश्वरूपा उस दैत्य का कहा मानकर आहुति देते समय दैत्यों का नाम भी धीरे से लेने लगे। इसी कारण यज्ञ के द्वारा देवताओं के तेज में वृद्धि नहीं हुई। इंद्र ने यह वृतान्त जानते ही क्रोधित होकर विश्वरूपा के तीनों सिर काट डाले। मद्यपान करने वाले मुख से भंवरा, सोमपल्ली का रस पीने वाले मुख से कबूतर तथा अन्न खाने वाले मुख से तीतर उत्पन्न हुआ।

विश्वरूपा के मरते ही इंद्र का स्वरूप ब्रह्महत्या के प्रभाव से बदल गया। देवताओं द्वारा एक वर्ष तक पश्चाताप करने पर भी ब्रह्महत्या का वह पाप कम न हुआ तो सब देवताओं की विनती पर ब्रह्माजी गुरु बृहस्पति जी को साथ लेकर इन्द्रपुरी पहुंचे। उस ब्रह्महत्या के चार भाग किये। उसमें से एक भाग पृथ्वी को दिया। इस कारण पृथ्वी असमतल तथा कहीं कहीं बीज बोने योग्य भी नहीं होती, साथ ही ब्रह्मा जी ने यह वरदान भी दिया कि पृथ्वी में गड्ढा होगा जो समय पाकर स्वयं भर जाएगा।

दूसरा भाग वृक्षों को दिया जिसमें से गोंद बहता है इसी के कारण गूगल के अतिरिक्त सभी प्रकार के वृक्षों के गोंद अशुद्ध समझा जाता है। वृक्षों को यह वरदान भी दिया कि ऊपर से सूख जाने पर जड़ पुनः फूट जाएगी।

तीसरा भाग स्त्रियों को दिया, इसी कारण स्त्रियां हर महीने रजस्वला होकर पहले दिन चाण्डालिनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी और तीसरे दिन धोबिन के समान रहकर चौथे दिन शुद्ध होती हैं साथ ही उनको संतान प्राप्ति का वरदान दिया।

चौथा भाग समुद्र को दिया जिससे फेन तथा सिवाल आदि जल के ऊपर आ जाते हैं। जल को यह वरदान दिया कि वह जिस वस्तु में डाला जाएगा वह बोझ से बढ़ जाएगी। इस प्रकार से ब्रह्मा जी ने सभी देवताओं को ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त किया।

बृहस्पति देवता अत्यंत दयालु हैं। जैसी जिसकी कामना होती है वह पूर्ण करते हैं। इस व्रत को करने से व्यक्ति अनेक प्रकार के कष्टों से मुक्ति पाता है। जो व्यक्ति प्रेम पूर्वक यह कथा पढ़ेगा उसकी सभी इच्छाएं पूर्ण होंगी।

बृहस्पति देव की आरती

ॐ जय बृहस्पति देवा ॐ जय बृहस्पति देवा।
छिन छिन भोग लगाऊं कदली फल मेवा।।ॐ
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्तर्यामी।
जगत पिता जगदीश्वर तुम सबके स्वामी।।ॐ
चरणामृत निज निर्मल सब पातक हर्ता।

सकल मनोरथ दायक कृपा करो भर्ता।।ॐ

तन मन धन अपर्णकर जो जन शरण पड़े।

प्रभु प्रकट तब होकर आकर द्वार खड़े।।ॐ

दीन दयाल, दया निधि भक्तन हितकारी।

पाप दोष सब हर्ता भव बंधन हारी।।ॐ

सकल मनोरथ दायक सब संशय तारी।

विषय विकार मिटाओ संतन सुखकारी।।ॐ

जो कोई आरती प्रेम सहित गावे।

ज्येष्ठानन्द आनदकर सो निश्चय पावे।।ॐ

❑❑❑

बृहस्पति स्तोत्रम्
पदच्छेद-एवम्-सन्धिच्छेद सहित

विनियोग–

अस्य श्री बृहस्पतिस्तोत्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः बृहस्पतिर्देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

स्त्रोतम्–

गुरुः, बृहस्पतिः, जीवः सुराचार्यः, विदाम्बरः।
वागीशः, धिषणः, दीर्घ, श्मश्रुः, पीताम्बरः, युवा।
सुधाद्रष्टिः, ग्रहाधीशः, ग्रहपीड़ा, अपहारकः।
दयाकर, सौम्य मूर्तिः, सुरार्च्यः कुड्मल द्युतिः।।
लोक पूज्यः, लोक गुरु, नीतिज्ञः, नीति कारकः।
तारापति, च, आंङ्गिरसः, वेद विद्या पिता महः।।
भक्त्या बृहस्पतिम्, स्मृत्वा, नामानि, एतानि, य, पठेत्।
अरोगी, बलवान्, श्रीमान्, पुत्रवान्, स., भवेत्, नरः।।
जीवेत् वर्षशतम्, मर्त्यः पापम् नश्यति नश्यतिः।
यः पूजयेत् गुरुदिने पीतगन्धा क्षतास्मरैः।
पुष्प दीप उपहारश्चः च पूजयित्वा बृहस्पतिम्
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीड़ा शांतिः भवेत् सुरोः।।

बृहस्पति मंगल स्त्रोतम्

जीवः न आङ्गिर गोत्रज उत्तर मुखः दीर्घ उत्तरा संस्थितः
पीत, अश्वत्थ, समिद्ध-सिन्धु जनितः च आपः, अथ, मीनाधिपः।

सूर्येन्दु क्षितिज-प्रियः बुध सितो शत्रु समा न अपरे,
सप्ताङ्कात् विभवः शुभ, सुरगुरुः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

नोट—भगवान बृहस्पति बुद्धि प्रदाता देव हैं इसलिए यह देव गुरु हैं। बुद्धि विहीन जातक पशुतुल्य होता है। हर क्षेत्र में बुद्धि बल की आवश्यकता पड़ती है। अतः उपरोक्त स्तोत्र का नित्य 108 बार पाठ करने से बुद्धि बल समान रूप से जीवन पर्यन्त बना रहता है।

अथ बृहस्पति मंत्र

विनियोग—बृहस्पतेति मंत्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुपछन्दः, ब्रह्म देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

(नीचे लिखे कोष्ठक के अंगों को छूते रहें)

अथ देहाङ्गन्यास—बृहस्पति शिरसि (सिर) अतियदर्य्यो, ललाटे (माथा), अर्हाद्युमत् मुखे (मुख), विभाति क्रतुमत् हृदये (हृदय), जनेषु नाभौ (नाभि), यद्दीदयत् कट्याम (कमर), शवसऋतप्रजात ऊर्वो (जांघें), तदस्मासु द्रविण जान्वोः (घुटने), धेहि गुल्फाया (गुल्फ), चित्रं पादयोः (पैर)।

अथ करन्यास—बृहस्पतेऽतियदर्य्यो अंगुष्ठाभ्यां नमः। अर्हाद्युमत् तर्जनीभ्यां नमः। विभाति क्रतुमत् मध्यमाभ्या नमः। जनेषु अनाभिकाभ्या नमः। यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नमः द्रविणधेहि चित्रम् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यास—बृहस्पतेऽअतिदर्य्यो हृदय नमः (हृदय) अर्हाद्युमत् शिरसे स्वाहा। विभाति क्रतुमत् शिखायै वषट् (शिखा)। जनेषु कवचाय हु (दोनों कन्धे) यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र)। द्रविणं धेहि चित्रम् अस्त्राय फट्। (दायां हाथ सिर से घुमा कर बायें हाथ पर दो अंगुलियों से ताली बजाए।)

अथ ध्यानम्—पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजः देव गुरुः प्रशान्तः।
तथा अक्ष सूत्रम् कमण्डलुम् च दण्डम् च विभ्रद् वरदः अस्तु मह्यम्।।

बृहस्पति का आह्वान—

बृध्यायस्यसमोनास्ति देवताना च पुरोहितः।
त्राता च सर्वदेवानां गुरुमावहयाम्यहम्।।1।।
अहो वाचस्पतापीत संजातः सिधुमण्डले।
एह्या ऽगिरसगोत्रेय हयारूढचतुर्भुजः।।2।।

दण्डाक्षसूत्रवरदः · कमण्डलुधरप्रभो।
महाइन्द्रेति संपूज्यो विधवत्युत्तरेदले।।3।

ॐ महाइन्द्रोवज्रहस्तः षोडशीषर्म्ययच्छतु
हंतुपाप्मान यास्मयान्द्वेष्टियं च वय दिष्मः।।26/10।।

उत्तरें गुरु स्थापयामि--

गुरुगायत्री–ॐ अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

बीज मंत्र ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः भूर्भुव स्वः ॐ

बृहस्पतेऽ अतियदर्य्योऽ अर्हाद्युमद्विभाति। क्रुतमज्जनेषु यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम्.

ॐ स्वः भुवः भू सः ग्रौ ग्रीं ॐ सः गुरुवे नमः।

जपमंत्र–ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरुवे नमः एकोनविंशतिसहस्त्राणि। 19000 प्रतिदिन।

❑❑❑

रत्न चिकित्सा

धनुलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–धनुलग्न में सूर्य नवम (भाग्य) भाव का स्वामी होता है और यहां भी वह लग्नेश का मित्र होता है। अतः धनुलग्न के जातक माणिक्य भाग्योन्नति, आत्मोन्नति तथा पितृ सुख के लिए आवश्यकतानुसार धारण कर सकते हैं। सूर्य की महादशा में माणिक्य विशेष रूप से लाभदायक होगा।

2. **मोती**–धनुलग्न में चंद्र अष्टम स्थान का स्वामी होता है। अतः इस लग्न के जातक को मोती कभी धारण नहीं करना चाहिए।

3. **मूंगा**–धनुलग्न में मंगल पंचम त्रिकोण तथा द्वादश भाव का स्वामी होता है। एक त्रिकोण स्वामी होने के कारण मंगल इस लग्न के लिए शुभ ग्रह माना गया है। इसे धारण करने से संतान, धन, यश व भाग्योदय होता है।

4. **पन्ना**–धनुलग्न के लिए बुध सप्तम और दशम भाव का स्वामी होता है यह केन्द्राधिपति दोष से दूषित होता है। तब भी बुध लग्न द्वितीय, पंचम, नवम्, दशम या एकादश भाव में स्थित हो तो बुध की महादशा में आर्थिक लाभ, व्यवसाय में उन्नति और समृद्धि होगी। यदि बुध किसी निकृष्ट भाव में स्थित हो तो पन्ना पहनना ही श्रेयकर होगा।

5. **पुखराज**–धनुलग्न के लिए गुरु लग्न और चतुर्थ का स्वामी होने के कारण अत्यन्त शुभ ग्रह है। इस लग्न के जातक पीला पुखराज सदा रक्षा कवच के समान धारण कर सकते हैं। गुरु की महादशा में यह अत्यन्त लाभप्रद होता है। पुखराज यदि नवम (भाग्य) के स्वामी सूर्य के रत्न माणिक के साथ धारण किया जाये तो उससे शुभ फल में वृद्धि होगी। पुखराज आपका जीवन रत्न है।
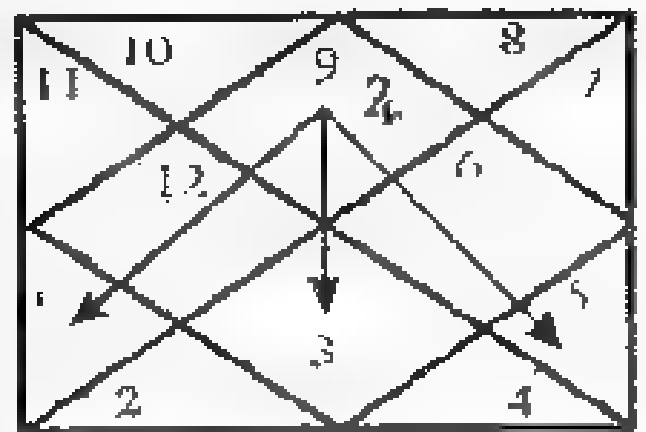
6. **हीरा**—धनुलग्न के लिए शुक्र षष्ठ और एकादश का स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह नहीं माना जाता है। इसके अलावा शुक्र लग्नेश गुरु का शत्रु है तब भी यदि एकादश का स्वामी होकर कुण्डली में शुक्र द्वितीय, चतुर्थ पंचम, नवम एकादश या लग्न में स्थित हो तो शुक्र की महादशा मे हीरा धारण करने से आर्थिक लाभ और भाग्योन्नति होगी।

7. **नीलम**—धनुलग्न के लिए शनि द्वितीय (मारक स्थान) और तृतीय भावों का स्वामी होने के कारण इस लग्न के लिए अशुभ ग्रह माना गया है। इसके अतिरिक्त शनि लग्नेश गुरु का शत्रु है। इस जातक को नीलम धारण नहीं करना चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**—मूंगा सवा पाच रत्ती, पुखराज सवा पाच रत्ती स्वर्ण मे।
2. **भाग्योदय हेतु**—पुखराज-माणिक सवा पांच रत्ती स्वर्ण मे।
3. **आरोग्य हेतु**—पुखराज-माणिक मूंगा सवा चार-चार रत्ती त्रिलोह में।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**—नीलम सवा पाच रत्ती, पुखराज सवा चार रत्ती त्रिलाह मे पहने

❑❑❑

गुरु की शांति के विविध उपाय

1. गुरु के कारण उत्पन्न समस्त अरिष्टों के शमन के लिए रुद्राष्टाध्यायी एवं शिवसहस्त्र नाम का पाठ अथवा नित्य रुद्राभिषेक करना अमोघ है।
2. वैदिक या तांत्रिक गुरु मंत्र का जप तथा कवच एवं स्तोत्र पाठ अथवा भगवान दत्तात्रेय के तांत्रिक मंत्र का अनुष्ठान भी लाभप्रद है।
3. सौभाग्यवश जो लोग किसी समर्थ गुरुदेव की चरण-शरण में हैं, वे नित्य गुरु पूजन एवं गुरुध्यान करने से समस्त भौतिक एवं अभौतिक तापों से निवृत्त हो जाते हैं।
4. प्रश्नमार्ग के अनुसार गुरु महाविष्णु का प्रतिनिधित्व करता है अतः कम-से-कम पुरुष सूक्त का जप और हवन अथवा सुदर्शन होम भी कल्याणकारी है।
5. अधिक न कर सकें, तो मासिक सत्य नारायण व्रत कथा एवं गुरुवार तथा एकादशी का व्रत ही कर लें।
6. राहु मंगल आदि क्रूर एवं पाप ग्रहों से दूषित गुरु कृत 'संतानबाधा योग' में शतचंडी अथवा हरिवंश पुराण एवं संतान गोपाल मंत्र का अनुष्ठान करें।
7. ब्राह्मण एवं देवता के सम्मान, सदाचरण, फलदार वृक्ष लगवाने एवं फलों के दान (विशेषकर केला, नारंगी आदि पीले फल) से बृहस्पति देव प्रसन्न होते हैं।
8. पंचम भाव स्थित शनि गुरु के अरिष्ट शमनार्थ 40 दिन तक वट वृक्ष की 108 प्रदक्षिणा करना बहुत हितकारी होता है।
9. जिन स्त्रियों के विवाह में गुरु कृत बाधा से विलंब सूचित हो, उन्हें उत्तम पुखराज धारण करना चाहिए तथा केला या पीपल वृक्ष का पूजन करना चाहिए।
10. गुरु को बलवान करने एवं धन प्राप्ति हेतु पुखराज युक्त "गुरुयंत्र" धारण करें।
11. चमेली के पुष्प (9 अथवा 12) लेकर उन्हें जल में प्रवाहित करें।
12. पीले कनेर के पुष्प गुरु प्रतिमा पर चढ़ाएं।

13. 13 अथवा 21 गुरुवार का व्रत रखें।

14. गुरु लीलामृत का पाठन अथवा श्रवण करें।

15. दत्त भगवान का विधिवत् पूजन करें।

16. कुछ स्वर्ण का दान करें - सिर्फ गुरुवार के दिन ही।

17. स्वर्ण जल का पान करें "स्वर्ण जल" से तात्पर्य ऐसे जल से है जिसमें स्वर्ण को डुबोया गया हो।

18. पीत- वस्त्रों का दान किसी सौभाग्यवती को दें।

19. "स्वर्ण जल" से स्नान करें

20. गुरु के होरा में निर्जल रहे।

21. मिथुन या कन्या लग्न में गुरु छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो गुरु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए शुद्ध सोने के दो टुकड़ या पुखराज रत्न बराबर वजन के लें। विवाह समय एक टुकड़ा संकल्पपूर्वक नदी में बहा दें तथा दूसरा अपने पास रखें। जब तक दूसरा टुकड़ा जातक के पास रहेगा उसको गुरु का कुप्रभाव स्पर्श नहीं कर पाएगा तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा।

22. बृहस्पतिवार का व्रत 5 या 11 या 43 बार रखना चाहिए।

23. हरि पूजन करना या पीपल का पालन करना चाहिए।

24. श्रीविष्णु भगवान् को नमस्कार करना।

25. पुखराज पहनना पुखराज के अभाव में हल्दी की गट्टी पीले रंग के धागे में बांध कर दायीं भुजा पर बांधना।

26. चांदी की कटोरी में केसर/हल्दी का तिलक करना।

27. शुद्ध सोना धारण करना (गुरु षष्ठ भाव को छोड़कर)।

28. नाभि (धुनी) पर केसर लगाना या केसर खाना

29. ब्राह्मण, कुल पुरोहित या साधु की सेवा करना।

30. गरुड़ पूजा (गरुड़ पुराण) का पाठ करना

31. घर की दीवारों पर पीला रंग करना

32. पीले फूल (गेंदा या सूरजमुखी) लगाना।

33. गुरु उच्च का हो तो गुरु की चीजों का दान न देना।

34. गुरु नीच का हो तो गुरु की चीजों का दान न लेना।

उपरोक्त उपाय 5 या 11, या 43, दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।

35 गुरु पीड़ा की विशेष शांति हेतु सफेद सरसों दमयंती के पुत्र मुलैठी और मालती के पुष्प मिलाकर 9 बृहस्पतिवार तक नियमित स्नान करें।

36 गुरु पीड़ा की विशेष शांति हेतु कोई तीन जाति के श्वेत पुष्प श्री गुरुदेव एवं इष्ट का ध्यान करते हुए 9 बृहस्पतिवार तक नियमित स्नान करें।

37 यदि गुरु बिगड़ा हुआ है तो ऐसे व्यक्ति ने इस जन्म या पूर्व जन्म में फलदार वृक्षों को कटाया है। कुलगुरु, कुल देवता या किसी आदरणीय व्यक्ति का अपमान किया है जिसके कारण जातक को संतान सुख नहीं होता। ऐसे में जातक को गुरु के वैदिक मंत्रों को 19,000 बार जप करने चाहिए गुरु संबंधी वस्तुओं का दान करते हुए, वृद्ध लोगों का आदर करते हुए गुरु की सेवा करें एवं गुरुवार को नियमित व्रत करें

38. हरिवंश पुराण के अनुसार पितरों की तिथि, श्राद्ध यज्ञ करना चाहिए।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें। फलादेश करते समय अपने खुद के साथ जोर-जबरदस्ती न करें। यथा आपका ध्यान अन्य कार्य में है। आपके पास समय का अभाव है, परन्तु सामने वाला पृच्छक आप पर दबाव डाल रहा है कि मेरी तो ट्रेन जा रही है, बस जा रही है, प्लेन जा रहा है, अभी का अभी बताओ क्या होने वाला है? जो फलादेश आवेश व जल्दीबाजी में होगा वो फलादेश गलत हो जायेगा क्योंकि फलादेश करते समय चित्त शान्त होना चाहिए।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें। गम्भीरतापूर्वक करें। आलतू-फालतू लोगों को पास न बैठायें। जहां तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

   रिक्त पाणि न पश्येत् राजानां दैवतां गुरुः।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके, उसे प्रभु चरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्र वचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर लें और प्रत्युत्तर हमेशा हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनो बढ़ेंगे।

7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एव असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर, स्व प्रशसा न करे, ज्यादा फूले नहीं? क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित असत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होती है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हममे है ऋषियो की वाणी में नहीं, ऐस विश्वास रखना चाहिए।

8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखे

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**

को वक्तां तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना॥

ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ ज्योतिषी शुभ-अशुभ फलों की सूचना करते है, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा? फिर भी ईश्वर के पश्चात् ज्योतिषी वह पहला व्यक्ति है जो निश्चयपूर्वक आपके भूत, भविष्य एवं वर्तमान बताने का सामर्थ्य रखता है।

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**

ते योगा: किं करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

ग्रहो का अशुभत्व नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नही आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होगे? और क्यो मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहों के शुभ अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अन्तर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा मे विशेष फल मिलता है।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदु:।**

केन्द्रत्रिकोणेप्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते॥

मित्र और शत्रु ग्रहो का योग हो तो मिश्रफल जानना चाहिए केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानों मे मित्र ग्रहो से युक्त ग्रह हो तो शुभ फल जानना चाहिये।

12. **मित्रराशिगते वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।**

मित्रयुक्तो बलवपि राजतुल्यो भवेन्नर:॥

मित्र ग्रहो के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और दिग्बली एवं अशों में बलवान ऐसा ग्रह यदि गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उस दशा में बहुत दुःख, कष्ट एवं परेशानी होती है।

15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा मे बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा (D rect on) मे मिलती है, जिस दिशा का वह ग्रह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह (शनि राहु, केतु या दु:स्थान के स्वामी) की महादशा हो, और उसमें शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो आरंभ में कष्ट होता है और अंत में सुख होता है

17. जब शुभ ग्रह की (चद्र बुध, गुरु, शुक्र) महादशा हो, और उसमें पाप ग्रह की अतर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अंत मे भय होता है।

18. जब क्रूर (सूर्य या मंगल) ग्रह की महादशा हो, उसमे क्रूर ग्रह की अंतर्दशा यदि वे दानों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हो तो उनकी अंतर्दशा में बड़ा भय होता है

20. जब मंगल (मारकेश) की महादशा मे शनि (अन्य मारकेश) की अंतर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह क्रूर या शत्रु राशि में स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हो, तो अपनी दशा मे मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अंतर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8, 12 स्थानों में स्थित ग्रह की अंतर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानो में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पाप ग्रह की अंतर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब दशम लग्न लाभ पराक्रम सुख तथा त्रिकोण (पंचम, नवम) स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हो तो उस ग्रह की दशा शुभ होती है। परन्तु जो ग्रह 8 12, 6 7 2 स्थानों मे अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर का हो पाप ग्रह हो, अथवा नीच का हो अथवा अस्तगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में, मित्र ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अंतर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल होता है.

26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर अवश्य पड़ता है। इस तथ्य को घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

27. पृच्छक जब आपके पास आता है। उस समय शकुन क्या कहते हैं? प्रकृति की रहस्यमय घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन भी मन-मस्तिष्क में रखना चाहिए। वे तत्काल फल चमत्कारी रूप में देते हैं. मान लीजिए कोई आपसे प्रश्न पूछने आया और बिजली चली गई। कोई बर्तन अचानक गिर कर टूट गया? पास में रोने की, झगड़े का कलह की आवाज आ गई तो जातक का कार्य हर्गिज नहीं होगा। जिज्ञासु सज्जन के आते ही कहीं से कोई फल मिठाई पुष्प लेकर आ गया। अचानक रोशनी आ गई टेलीफोन से अचानक शुभ समाचार मिल गये। बैन्ड बाजे, नगाड़े की आवाज आ गई तो निश्चित ही आगन्तुक सज्जन का कार्य होगा। ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् को शुभाशुभ शकुन शास्त्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

स्वामी विवेकानन्द जी
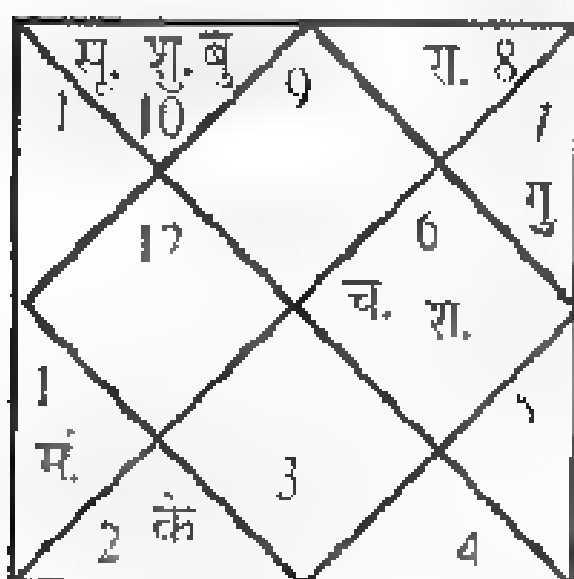
जन्म तिथि 12 जनवरी 1862, जन्म समय 5.52 बजे सुबह जन्म स्थान कलकत्ता स्वामी विवेकानन्द के बारे में प्रमुख रूप से निम्न तथ्य ज्यादा प्रचलित थे।

1. आकर्षक व्यक्तित्व, 2 अविवाहित जीवन, 3. प्रखर वक्तव्य शैली 4 ब्रह्म ज्ञान की तेजस्विता सरस्वती योग कई जगह विवेकानन्द की कुण्डली 'मकरलग्न' मे भी दी गई है।

तुलनात्मक अध्ययन—मकर लग्न भौतिकता वादी है इसका स्वामी शनि स्वार्थी ग्रह है तथा शत्रुक्षेत्री चंद्रमा के साथ है जबकि धनुलग्न आध्यात्मिक व्यक्तित्व देता है

धनुलग्न में सूर्य व्यक्ति को तेजस्वी एव दिव्य ज्ञान से ओत-प्रोत करता है, आकर्षक व्यक्तित्व देता है, जबकि मकर लग्न मे बारहवा सूर्य व्यक्तित्व को नष्ट-भ्रष्ट कर देता है

धनुलग्न मे सप्तमेश बुध है जो कि शत्रुक्षेत्री सूर्य के साथ युति किये हुए है। सप्तमेश बुध की दृष्टि अष्टमभाव पर है राहु बारहवें है जिससे अविवाह योग बनाता है। मकरलग्न मे सप्तमेश चद्रमा है जो शत्रुक्षेत्री है। मगल चौथे होने से कुण्डली मांगलिक बनी। मगल की नीच दृष्टि सप्तम भाव पर अविवाह योग बनाती है।

द्वितीय भाव वाणी का होता है मकरलग्न में वाणी का अधिपति शनि होगा जो कि शत्रुक्षेत्री चंद्रमा के साथ होने से दूषित वाणी देगा। जबकि धनुलग्न में भी वाणी का अधिपति शनि ही होगा परन्तु द्वितीय भाव में बुध+शुक्र युति जातक को ओजस्वी वाणी एवं प्रखर वक्ता बनायेगी.

पंचम भाव में स्वगृही मंगल सरस्वती योग बनाता है। जबकि मकर लग्न के पंचम भाव में केतु विद्या में बाधक है धनुलग्न में द्वादश राहु विदेश यात्रा योग बनाता है तथा द्वादश भाव का स्वामी मंगल स्वगृही होने से विदेश यात्रा से कीर्ति भी दिलाता है जबकि यह योग मकरलग्न में घटित नहीं होता। फलत: धनुलग्न की विवेकानन्द की कुण्डली प्रभावी रूप में सही सत्य मुखरित होती है।

महर्षि महेश योगी
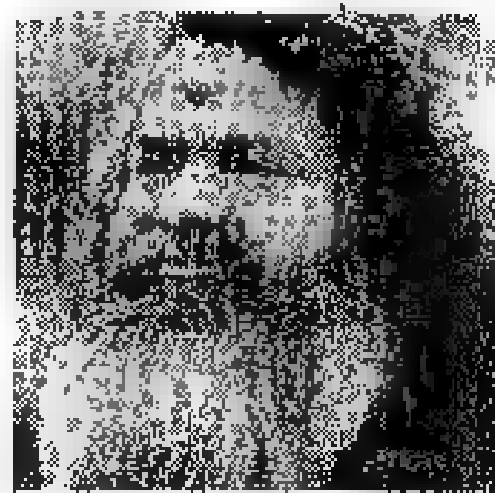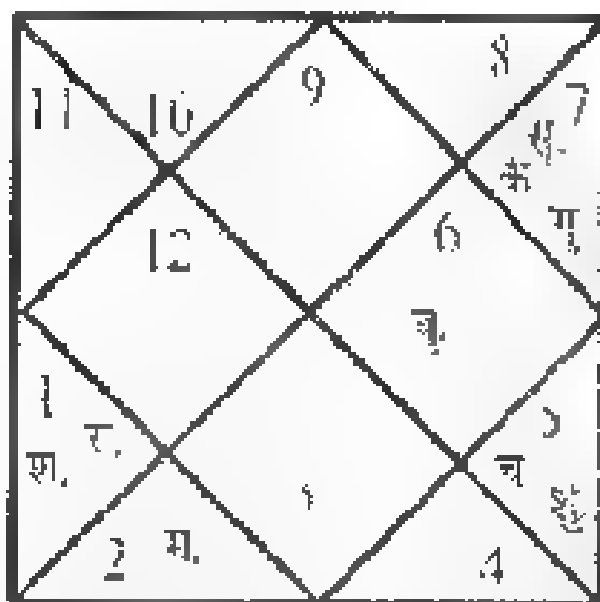
जन्म स्थान- उत्तरकाशी जन्म समय 12.00, जन्मतिथि-18.10.1911 'पद्मनाभक पूर्ण कालसर्प योग' के कारण महर्षि महेश योगी के कोई संतान नहीं है तथा न ही अब तक कोई योग्य उत्तराधिकारी भी इन्हें मिला है यह 'कालसर्प योग' की सत्यता का अनुपम उदाहरण है।

स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि, महामण्डलेश्वर

जन्म स्थान आगरा, जन्मतिथि 19 सितम्बर 1932

श्री गुरु गोलवरकरजी (सरसंघ चालक)

डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार

जन्म समय–1.13 रात्रि जन्म तिथि–1.4.1889, जन्म स्थान नागपुर, संस्थापक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ।

आचार्य विनोबा भावे
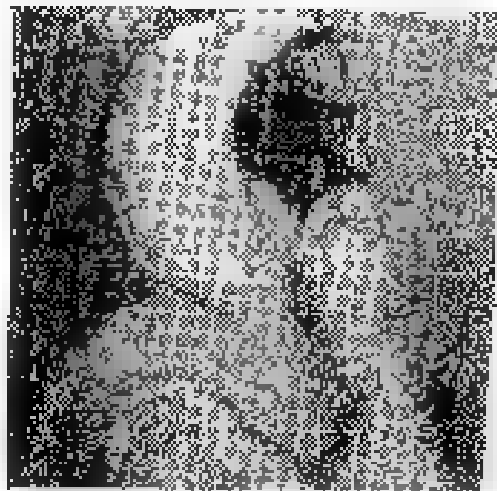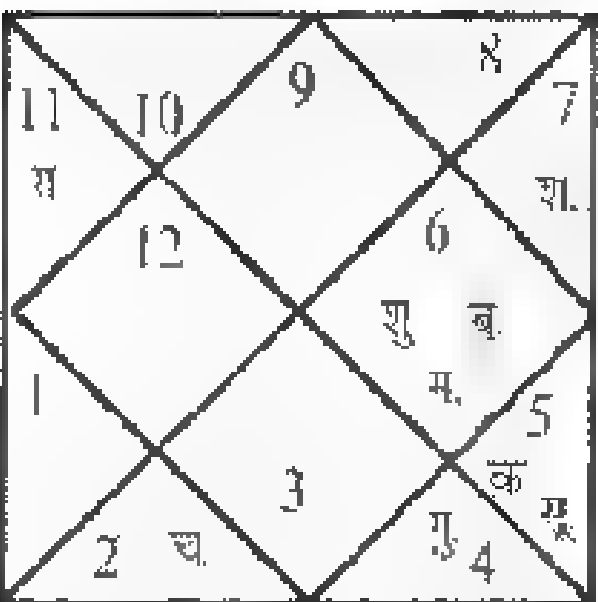
जन्म समय–14.30, जन्म तिथि–11.9.1895 जन्म स्थान–वर्धा। मानसागरी श्लोक 7 पृष्ठ 222 के अनुसार जिस जातक की कुंडली में बुध, शुक्र या गुरु केंद्र

में होकर मंगल दशम में हो तो राजयोग होता है। यद्यपि भूदान यज्ञ के प्रवर्तक आचार्य विनोबा भावे किसी राजनैतिक पद या सरकारी पद पर प्रतिष्ठित नहीं हुए तथापि बड़े बड़े राजा महाराजा, जागीरदार व जमींदार के सिर उनके चरणों में झुकते थे स्वतंत्र भारत के राष्ट्रपति एवं प्रधानमंत्री उनकी आज्ञा के पालन हेतु आतुर रहते थे अतः उनकी कुंडली ज्योतिष प्रेमियों हेतु विशेष रूप से दृष्टव्य है। उच्च का बुध केंद्र में होने से 'पद्मसिंहासन योग' एवं 'भद्रयोग' का सृष्टि कर रहा है। लग्नेश गुरु उच्च का, चंद्रमा उच्च का एवं सूर्य स्वगृही भाग्य भवन में, एवं शनि उच्च का लाभस्थान में बैठा है लग्नेश अष्टम में जाने से 'लग्नभंग योग' बना जिसके कारण वे किसी भी प्रभावशाली पद पर आरूढ़ नहीं हो सके इस कुंडली की सत्यता को प्रमाणित कर रहा है।

योगी महेश्वरानन्द जी, जाडन आश्रम

भाव	राशि	ग्रह
1	6	श
2	7	
3	8	
4	9	
5	10	
6	11	रा.
7	12	गु
8	1	
9	2	
10	3	
11	4	चं. सू.
12	5	बु कं शु व.
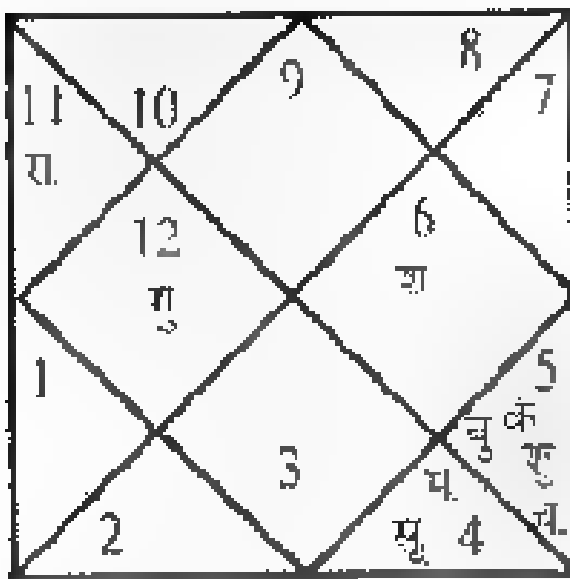
जन्म तिथि-15.6.1952।

महान संत दलाई लामा

भाव	राशि	ग्रह
1	6	म.
2	7	गु
3	8	
4	9	
5	10	रा.
6	11	श
7	12	
8	1	सू.
9	2	बु. शु. चं.
10	3	
11	4	कं
12	5	
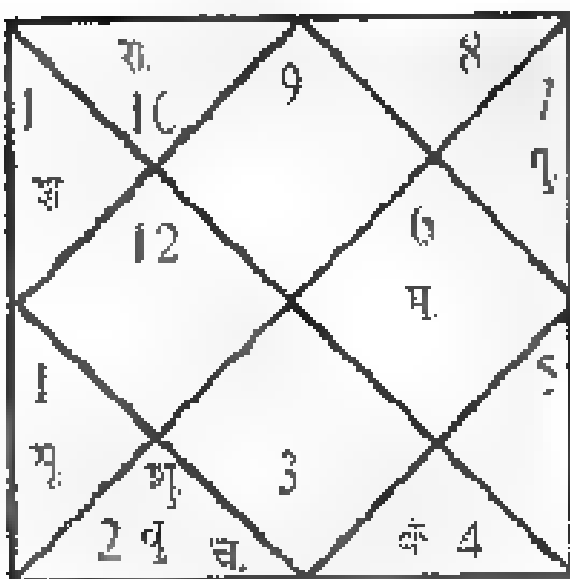
जन्म तिथि-5.5.1935, जन्मसमय-22.00, जन्म स्थान-तक्तसर (तिब्बत)।

विलियम शेक्सपियर महान नाटककार
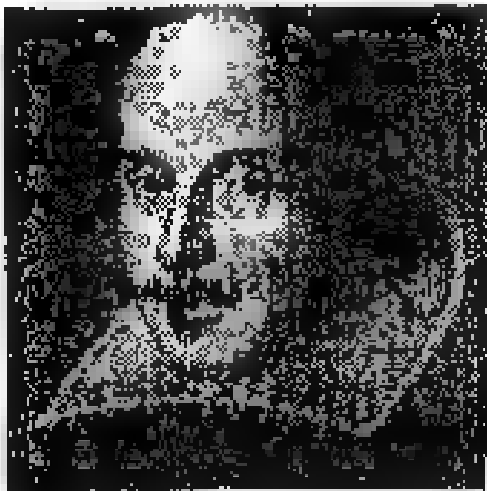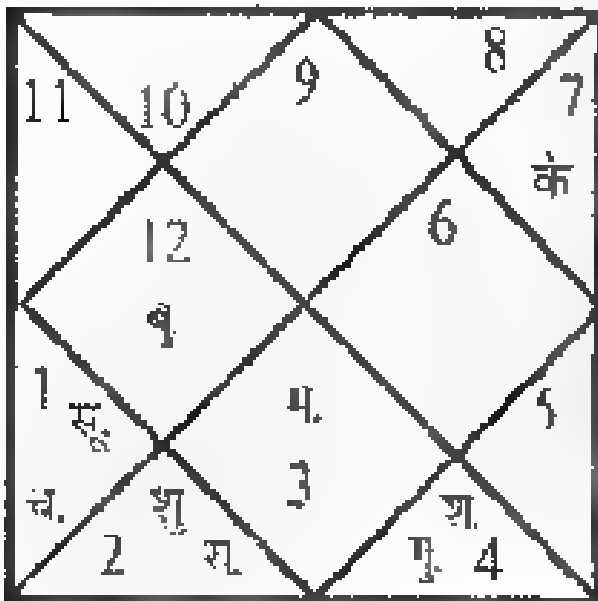
जॉन मिल्टन, विश्व विख्यात कवि
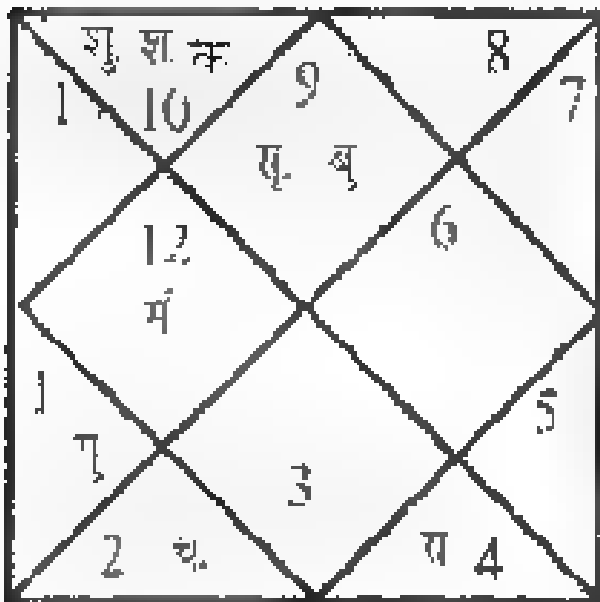
एडगर एलॉन पो (अमेरिका)
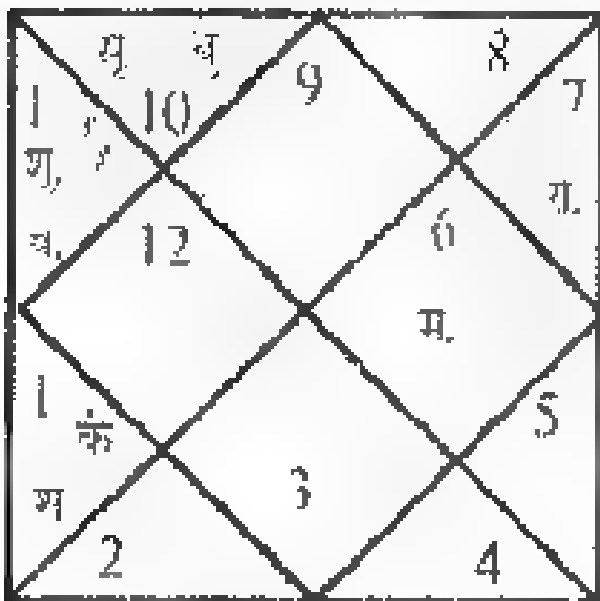
एक ऐसा अमेरिकन कवि व आलोचक जिसने अपनी मृत्यु स्वप्न में देखी और ठीक वैसे ही उसकी मृत्यु स्वप्नावस्था में हुई।

किंग ऑफ असन्तेज (घाना)

जन्म तिथि-30.11.1919 जन्म समय-9.09।

पीर ऑफ पेगारो स्थान हैदराबाद (पाकि.)

जन्म तिथि 22.11.1928, जन्म समय 10.32।

श्री मोहनलाल सुखाडिया

मुख्यमंत्री राजस्थान जन्म समय 27.7.1916, जन्म समय 16.40, जन्म स्थान झालरापाटन। मुख्यमंत्री काल 13 नवम्बर 1954 से 13 मार्च 1967, 26 अप्रैल 1967 से 8 जुलाई 1971। निधन 2 फरवरी 1982।

महारानी ऐलिजाबेथ द्वितीय

11 शु	म. रा. 10	9 के.
12 बु		शा. 8 7
1 च	3 रा	6
2	सू. 4	5
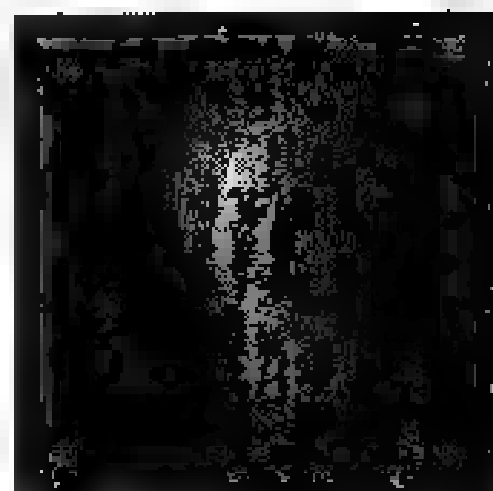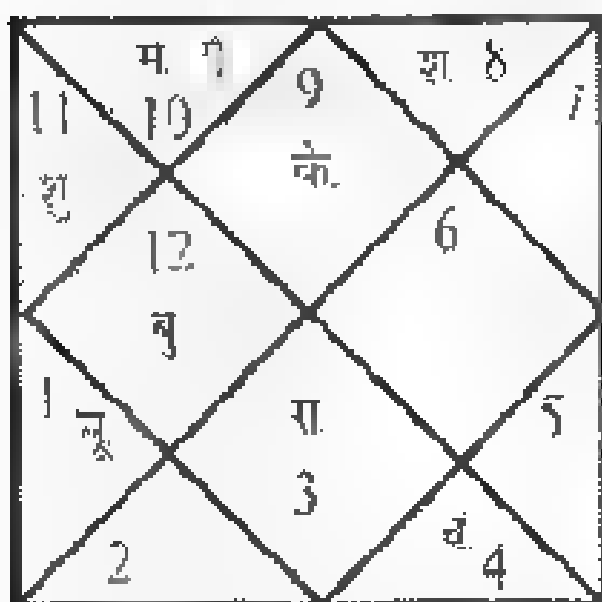
जन्म तिथि 21.4.1926। 25 वर्ष की अल्पायु मे महारानी ऐलिजाबेथ का राज्याभिषेक ब्रिटिश साम्राज्य की राजगद्दी पर फरवरी 1952 में हुआ जब उनके पिता जार्ज पंचम की मृत्यु हो गई

प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

11	10	9 म के.
12 च		बु. 8
1	3 श.	7 शु
2 च.	4	6 रा 5 गु
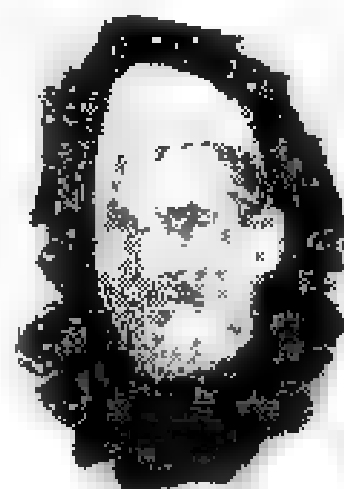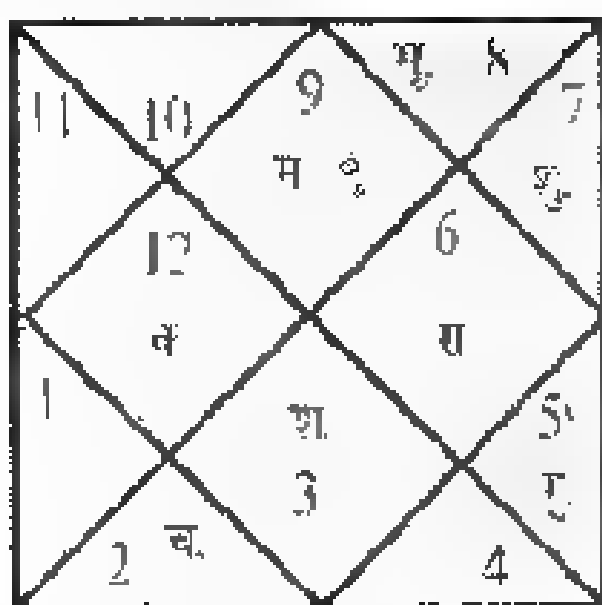
जन्म तिथि 3.12.1884, जन्म समय प्रात: 9.00, जन्म स्थान-कोलकाता। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार चारों केंद्रो में शुभ या पाप ग्रह होंगे तो चतु: सागर नाम का राजयोग होता है। यथा

चतुर्ष केन्द्रस्थानेषु सौम्यपाप ग्रह स्थिति:।
चतु: सागर योगो यं, राज्यदो धनदो भवेत्॥

लग्न चद्रिका, श्लोक 55/पृ. 12

इस कुंडली में लग्नेश गुरु पूर्ण ताकत से अपनी राशि (लग्न स्थान) को देख रहा है। शुक्र स्वगृही लाभ स्थान में है। चद्रमा उच्च का है। लग्न को चार ग्रहो का बल मिल रहा है। बुध 'पद्मसिहासन' योग करके बैठा है। इन योगों के कारण ही डॉ. श्री राजेन्द्र प्रसाद ने स्वतत्र भारत को प्रथम राष्ट्रपति के रूप मे यशस्वी शासन प्रदान किया।

राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम
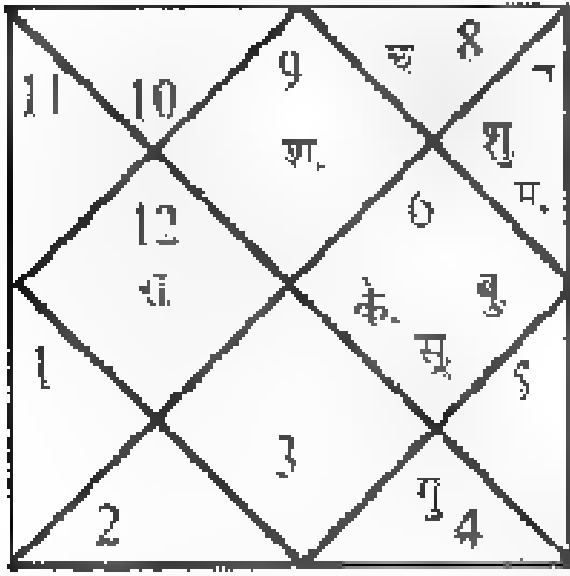
जन्म तिथि–15.10.1931, जन्म समय–11.30 दोपहर जन्म स्थान–रामेश्वरम्

अविवाहित राष्ट्रपति

पंचमेश नीच राशिगत, शत्रुक्षेत्री, अस्त या षष्ठ, अष्टम अथवा द्वादश भाव में स्थित हो तो अविवाहित रहने का योग होता है। यदि क्रूर ग्रह पंचम, अष्टम तथा द्वादश भावों में स्थित हों तो विवाह कारक अन्य योगों के न होने पर जातक अविवाहित जीवन व्यतीत करता है। सूर्य और शनि क्रमशः द्वितीय और द्वादश भावों में स्थित हों तथा लग्नेश बलहीन हो तो विवाह नहीं होता। अधिकतर अविवाहितों की कुण्डलियों में शुक्र से द्वितीयस्थ सूर्य की स्थिति उत्तरदायी होती है। पंचम भाव में मंगल, सूर्य, राहु, शनि आदि पाप ग्रहों की दृष्टि विवाहित जीवन से हीन करती है। शनि की दृष्टि से सप्तम भाव और सप्तमेश दोनों पीड़ित हैं। भाग्येश सूर्य पर भी शनि की दृष्टि है तथा सप्तमेश बुध, सूर्य से अस्त है, कुटुम्ब भाव पर मंगल की दृष्टि है। उक्त कारणों से डॉ. कलाम अविवाहित रहे।

श्री टी.एन. शेषन
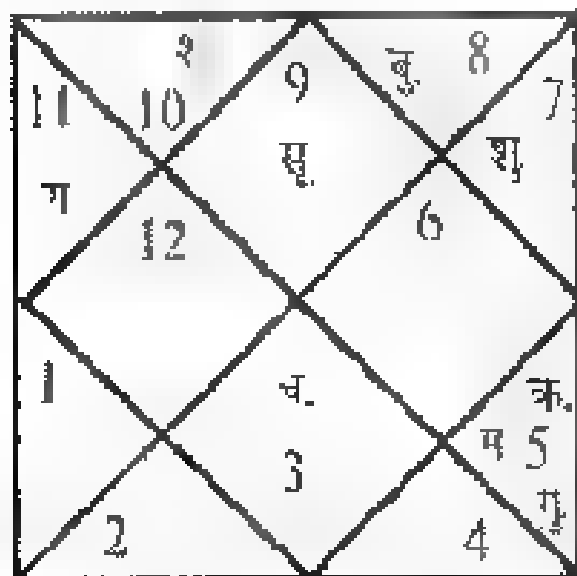
भारत का प्रभावशाली चुनाव आयुक्त जिसने अपनी अलग पहचान बनाई। जन्म तिथि 15.12.1932, जन्म समय 8.00, जन्म स्थान पालघाट।

डॉ. मनमोहन सिंह
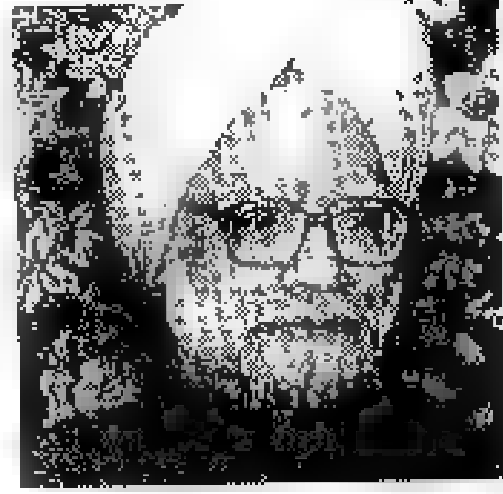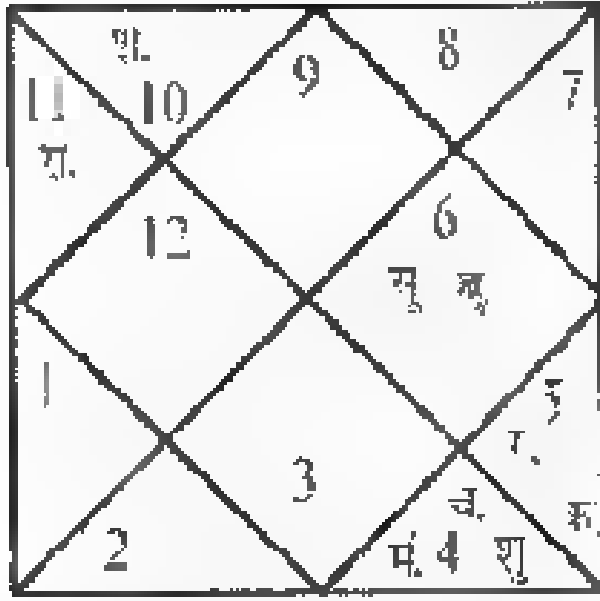
जन्म तिथि-26.9.1932, जन्म समय-14.00 जन्म स्थान-झेलम (पाकिस्तान)। भारत के यशस्वी वित्तमंत्री कार्यकाल 199 -1996।

टीपू सुल्तान
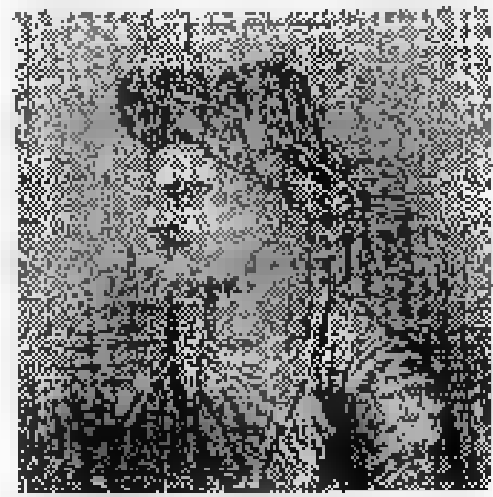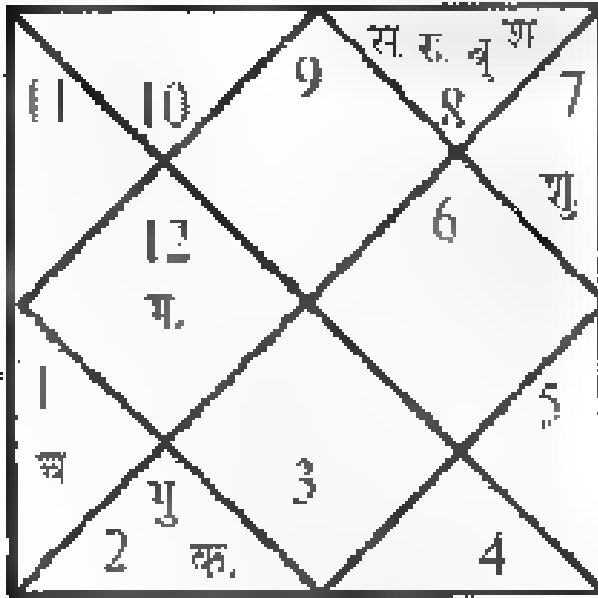
जन्म तिथि-1.12.1751, जन्म समय 8.00।

श्री अजीतसिंह (किसान नेता)
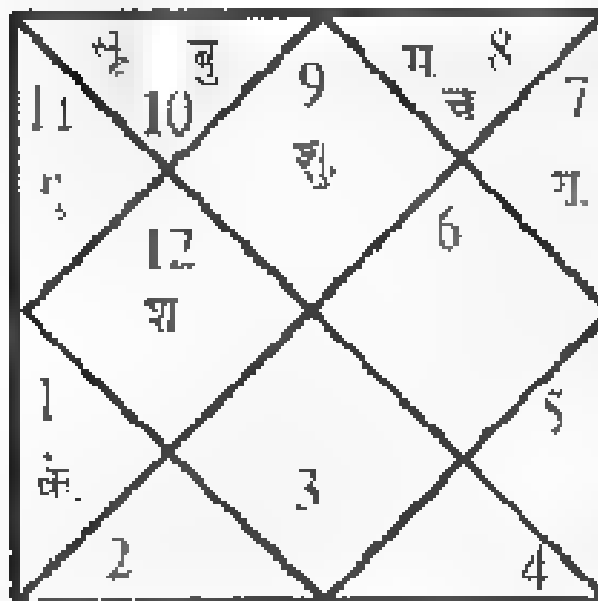
किसान नेता एवं मंत्री। जन्म समय-12.2.1939, जन्म समय-4.00, जन्म स्थान बागपत।

फारुक अब्दुला

पूर्व मुख्यमंत्री—जम्मू कश्मीर। जन्म तिथि-21.10.1937, जन्म समय-12.30 जन्म स्थान-श्रीनगर।

बेनजीर भुट्टो

पूर्व प्रधानमंत्री पाकिस्तान। जन्म तिथि 21.6.1953, जन्म समय 20.15, जन्म स्थान कराची

रोम सम्राट नीरो

सयाजी गायकवाड़
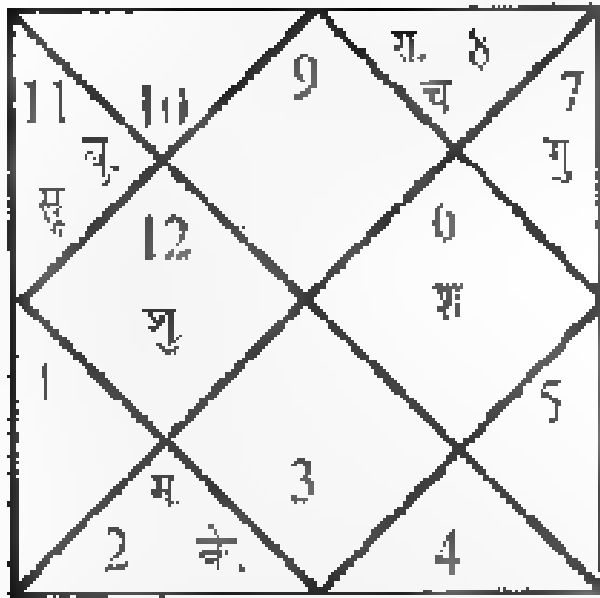
जन्म तिथि 18.3.1863, जन्म समय-2.20, जन्म स्थान-बड़ौदा (गुजरात)
प्रस्तुत जन्म कुंडली हिंदुस्तान के प्रसिद्ध महाराज बड़ौदा नरेश स्व. श्री सयाजी राव गायकवाड़ की है। शुक्र उच्च का शुभ ग्रह केंद्र में हो तो नीच कुल, में पैदा हुए बालक का राजयोग होता है। मानसागरीकार कहते हैं–

उच्चस्थानागताः सौम्याः केंद्रस्थाने भवंति चेत्।
ध्रुवं राज्य भवेत्तस्य यदि नीचसुतो भवेत्॥

–मानसागरी श्लोक 38/पृ. 226

जिसके उच्च स्थान में प्राप्त शुभ ग्रह केंद्र स्थान में स्थित हो निम्न कुल में पैदा हो तो भी राजयोग होता है। राजयोग के लिए व्यक्ति के जन्म कुल परिवार एवं परंपरा का विशेष ध्यान देना पड़ता है। ऊंचे कुल में जन्म लेना भी अपने आप में एक राजयोग है। सयाजी गायकवाड़ का जन्म बड़ौदा राजघराने के अति धनाढ्य व उच्च कुल में हुआ कन्या का शनि केंद्र में उच्चाभिलाषी है। लाभ स्थान में अधिष्ठित गुरु शुक्र राशि में, लाभेश शुक्र-गुरु की राशि में जाने से लग्नेश लाभेश का 'परिवर्तन' उत्तम राजयोग की सृष्टि करने वाला कहा गया है।

श्री लालकृष्ण आडवाणी
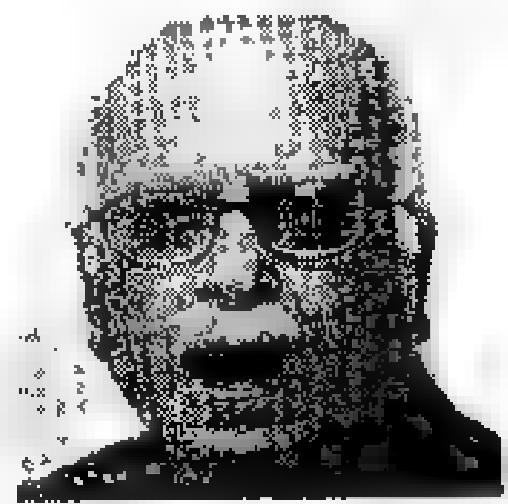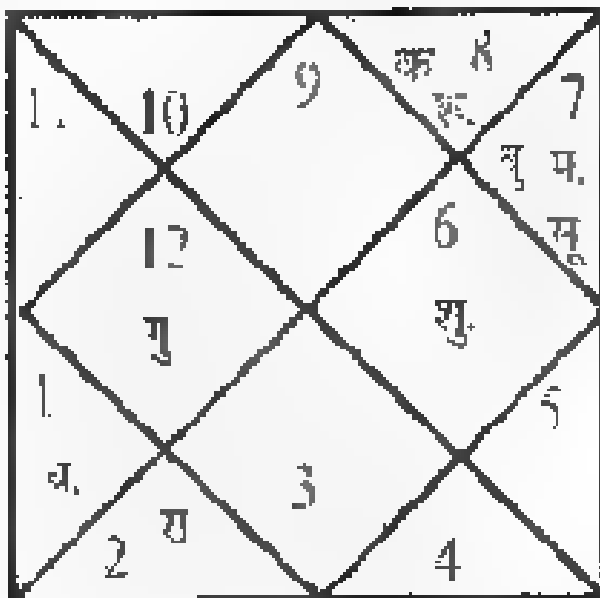
गृहमंत्री भारत सरकार एवं उपप्रधान मंत्री भारत सरकार।
जन्म तिथि-8.11.1927, जन्म समय-9.20, जन्म स्थान-हैदराबाद।

सुषमा स्वराज
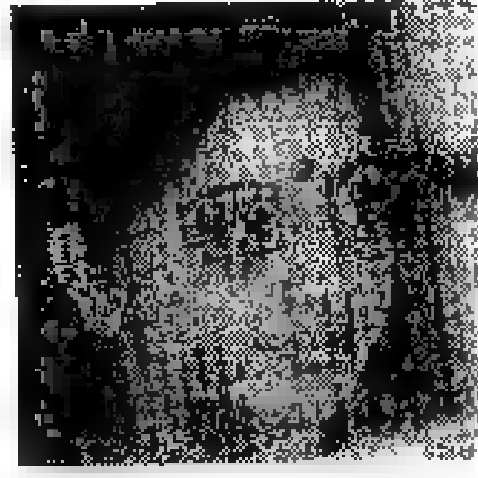
जन्म तिथि-14.2.1952, जन्म समय--4.15, जन्म स्थान-अम्बाला। पूर्व मुख्यमंत्री दिल्ली, स्वास्थ्य मंत्री भारत सरकार तथा प्रखर वक्ता।

वीर सावरकर

जन्म तिथि 28 5.1883 जन्म समय 21.25, जन्म स्थान-नासिक (महाराष्ट्र)।

सर्वोदयी नेता जयप्रकाश नारायण

जन्म समय 11.10.1902, जन्म समय 11 50 दोपहर

अभिनेता किशोर कुमार

जन्म तिथि-4.8.1929, जन्म समय-16.00, जन्म स्थान-खण्डवा।

ऋषिकेश मुखर्जी
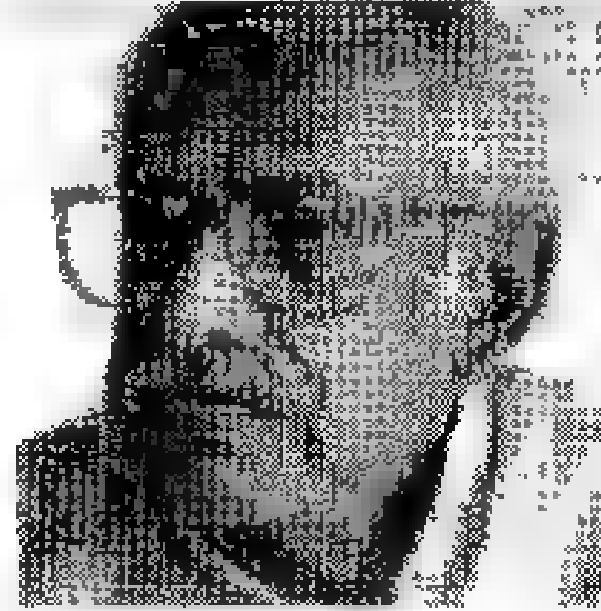
जन्म तिथि-30.9.1922 जन्म समय 5.52, जन्म स्थान-कोलकाता।

मनोज कुमार

जन्म समय-24.7.1937, जन्म समय-5.30, जन्म स्थान-इलाहाबाद

संगीत सम्राट अनूप जलोटा
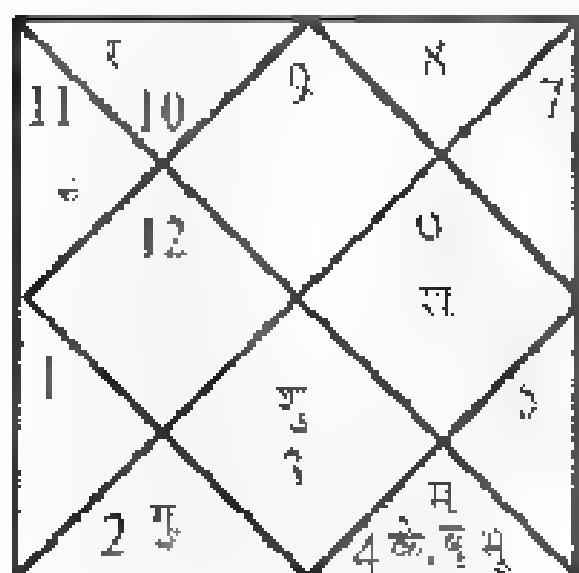
जन्म तिथि 29.7.1953 जन्म समय 17.00, जन्म स्थान नैनीताल।

विश्वसुन्दरी ऐश्वर्या राय
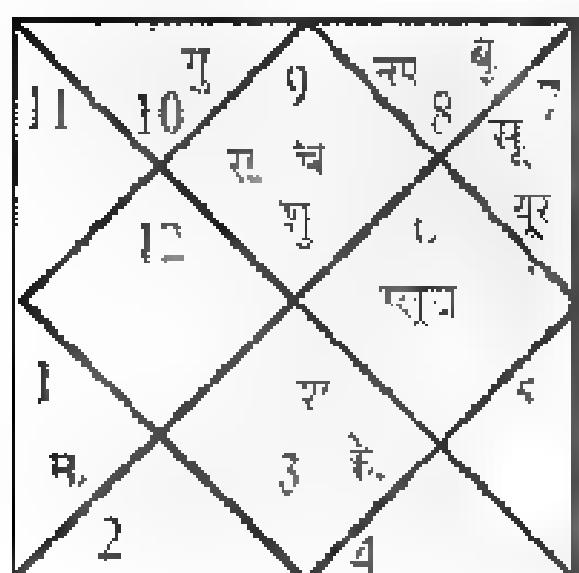
धनुलग्न एवं 'धनु राशि' में जन्मी ऐश्वर्या राय की जन्म कुण्डली का स्वामी देवगुरु गुरु गौरवर्णीय ग्रह है शुक्र एवं चंद्रमा की युति ने इन्हें विश्व सुन्दरी बनने में सहायता की लग्नेश गुरु नवमांश में मेष राशिगत है, लग्न वर्गोत्तमी है। केन्द्र में मंगल स्वगृही होने से 'रूचक योग' बना। जो कि पंचमहापुरुष योगों में से उत्तम योग है। इसके कारण ऐश्वर्या के पास बहुत सुन्दर कार एवं बहुत सुन्दर बंगला होगा नौकर चाकर एवं जीवन की सभी ऐश्वर्यशाली भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति उसे सहज में हो जायगी। मंगल की शानदार रंगीन दशा इन्हें 1994 में लगी तब से इनका भाग्योदय होना प्रारंभ हो गया। शुक्र रंगीन इसलिए है कि शुक्र इनकी कुण्डली में षष्ठमेश एवं दशमेश होने से परम योगकारक ग्रह है।

शुक्र व गुरु ने इन्हें भरपूर सौंदर्य दिया पर अभिनय के क्षेत्र में इन्हें वो सफलता नहीं मिल पाई जो मिलनी चाहिए थी क्योंकि शुक्र के साथ पाप ग्रह राहु

की उपस्थिति अभिनय के क्षेत्र में पूर्ण सफलता दिलाने में बाधक रही। यही कारण है जो भी फिल्म शुक्रवार को रिलीज हुई वो सफल नही हो पाई। मोहब्बतें, हम किसी से कम नहीं, देवदास सभी शुक्रवार को रिलीज हुईं इन फिल्मों की असफलता के बाद इन पर फ्लाप का ऐसा ठप्पा लग गया कि बड़ी फिल्मों के निर्माता इनको साइन करने से कतराने लगे सुभाष घई ने ऐश्वर्या की नई फिल्म 'स्टारर' को ठंड बस्ते में डाल दिया। सुभाई घई के बैनर तले बनी 'उत्तर दक्षिण, त्रिमूर्ति, राहुल, बधाई हो बधाई' सभी फिल्में फ्लाप रही

इन दिनों ऐश्वर्या और सलमान खान के प्यार व तकरार दोनो की बातें मीडिया ने उछाली। पता चला कि सलमान ऐश्वर्या के प्यार का इतना दीवाना हो गया कि उसने मर्यादा की सारी सीमाएं तोड़ दी, सलमान अपनी पुरुष प्रवृत्ति, बढ़ी-चढ़ी दौलत एवं शोहरत के चलते ऐश्वर्या को कम करके आंकते रहे। परन्तु केन्द्रस्थ स्वगृही शुक्र एवं शनि के कारण ऐश्वर्या खुद को किसी भी तरह सलमान से नीचे या पीछे नहीं मानती थी। इस सोच के कारण ऐश्वर्या ने हालीवुड की फिल्मों में हीरोइन बनने का गौरव प्राप्त किया मंगल ग्रहों का सेनापति एवं शौर्यप्रधान अति बहादुर ग्रह है जो कि सलमान की कुण्डली में अपेक्षाकृत कमजोर है। यही कारण है कि सलमान ऐश्वर्या से पीटते-पीटते बचे एवं पलायन कर गये। सलमान का पलायन उनकी कमजोरी का प्रतीक था। ऐश्वर्या राहु से प्रभावित है फलतः सभी ग्रह ऐश्वर्या के लग्न को पूरी शक्ति के साथ प्रभावित कर रहे हैं। स्वाभिमानी एवं साहसी है। ऐश्वर्या की कुण्डली मे सप्तमेश बुध बारहवें स्थान मे है। चंद्रमा वहा राहु के साथ पाप पीड़ित है। सप्तम भाव में शनि व केतु होने से 'लग्नभंग योग' बना शनि पाप ग्रह केतु के साथ है। फलतः ऐसा जातक अन्तर्जातीय विवाह करता है पर वैवाहिक जीवन कष्टमय होता है। ग्रहो की इन स्थितियों ने ऐश्वर्या के वैवाहिक सुख पर प्रश्नवाचक चिह्न लगा दिया है?

वर्तमान में इन्हे राहु की महादशा चल रही है। तथा राहु की महादशा मे राहु का अंतर चल रहा है, जो कि 30 अप्रैल, 2004 तक प्रभावी रहेगा। राहु लग्न में अग्निराशि मे है। राहु यहा गुरु का प्रतिनिधित्व कर रहा है एक बात ऐश्वर्या की कुण्डली मे सबसे विचित्र है कि राहु और केतु दोनो ग्रहो का परस्पर उच्च दृष्टि संबंध है। फलतः ऐश्वर्या का पति फिल्म स्टार व करोड़पति होगा। परंतु सप्तमस्थ शनि केतु एवं राहु की सप्तम भाव पर दृष्टि क्या गुल खिलाएगी यह कहना बहुत मुश्किल है।

प्रीति जिन्टा
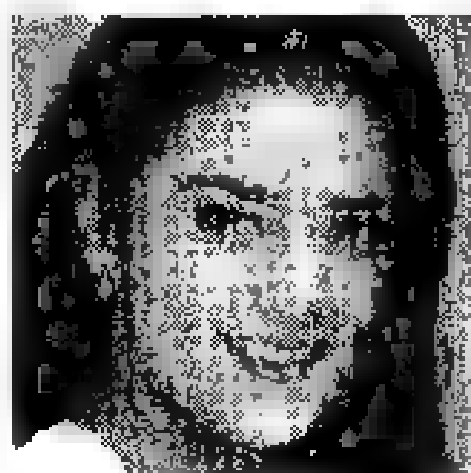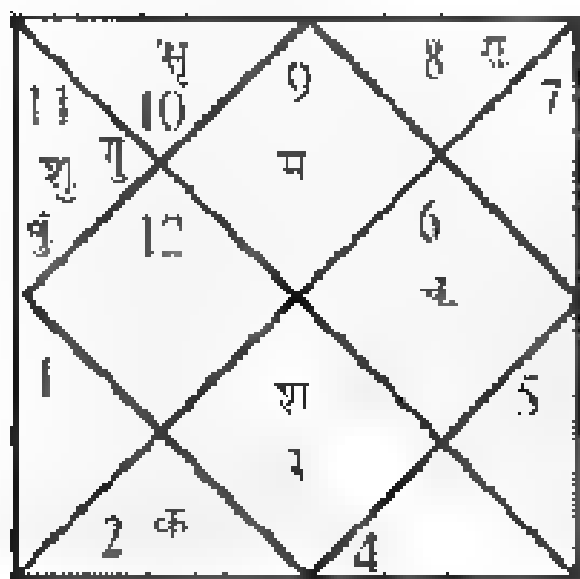
मॉडलिंग से अपना कैरियर आरम्भ करने वाली प्रीति जिन्टा बॉलीवुड की शीर्ष अभिनेत्रियों में से एक है। सन् 1994-95 में 'लिरिल' गर्ल के नाम से मशहूर इस अभिनेत्री का जन्म 31 जनवरी 1975 को धनुलग्न के तुला नवांश में हुआ। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस लग्न के इस नवांश में जन्मा व्यक्ति अति सुंदर, प्रसिद्ध तथा सर्वकला प्रवीण होता है। अभिनेत्री माधुरी दीक्षित भी इसी लग्न और इसी नवांश की है। नवांश कुंडली के लग्न में बुध की स्थिति 'कलानिधि योग' का निर्माण कर रही है। ऐसा जातक कला के क्षेत्र में भारी प्रसिद्धि पाता है। यह योग कई फिल्म कलाकारों की जन्म कुण्डली में पाया जाता है

प्रीति के जन्म में लग्न का स्वामी गुरु तृतीय भाव में स्थित है। वहां पर इसकी युति दो अन्य ग्रहों बुध और शुक्र से हो रही है। इस प्रकार तृतीय भाव में तीन ग्रहों की युति हो रही है। ये तीनों ग्रह ज्योतिष के अनुसार शुभ ग्रह कहलाते हैं। इन तीनों शुभ ग्रहों की युति यदि एक भाव में हो जाए तो उस भाव से संबंधित फलों में वृद्धि करते हैं। तृतीय भाव से इन तीनों ग्रहों की पूर्ण दृष्टि भाग्य भाव पर पड़ रही है। जिससे भाग्य की वृद्धि हो रही है। फलित ज्योतिष में कहा गया है कि कुण्डली में बुध और शुक्र की युति होने पर व्यक्ति कला और साहित्य के क्षेत्र में उन्नति करता है -

बुध गुरु शुक्रा मिलिताः कुर्वन्ति महिपतिं जातम्।
सुसमृद्धं विनयाख्य माण्डलिकं कीर्ति सम्पन्नम्।

(होरासार)

इस योग के अतिरिक्त इन तीनों शुभ ग्रहों का प्रभाव भी पूरी कुण्डली पर है, जिससे प्रसिद्धि मिलती है पाराशरीय सिद्धांत के अनुसार केन्द्र और त्रिकोण भावों के स्वामी की युति उत्तम राजयोग कारक होती है यह योग व्यक्ति को कम आयु में ही सफलता दिलाता है।

प्रीति की कुण्डली में राहु की महादशा के आरम्भ होते ही उन्होंने कला मनोरंजन के क्षेत्र में पदार्पण किया। गुरु की अंतर्दशा में फिल्म 'दिल से' में शाहरुख के साथ काम कर अपना फिल्मी कैरियर आरम्भ किया। गुरु इनकी कुण्डली में लग्नेश है तथा इसका संबंध दशमेश बुध से होने पर कैरियर पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। अगस्त 1999 से इन्हें शनि की अंतर्दशा आरंभ हुई, जो जुलाई 2002 तक रही। शनि की कुंडली में बुध के साथ राशि परिवर्तन योग हो रहा है जिस कारण इस अवधि में इन्हें भारी सफलता मिलेगी, इस दौरान इनकी कई फिल्में 'दिल चाहता है', 'क्या कहना', 'चोरी चोरी चुपके-चुपके' आदि हिट रही, इस अवधि में ही इन्होंने चर्चित फिल्म 'कोई मिल गया' भी साइन की। इसमें इनके सह कलाकार ऋतिक रोशन हैं।

सचिन तेन्दुलकर, कामयाब क्रिकेट खिलाड़ी
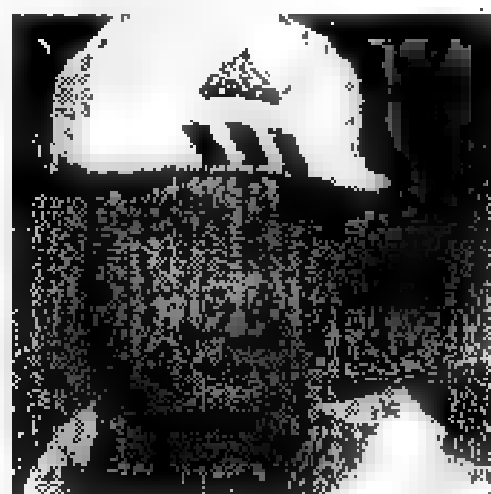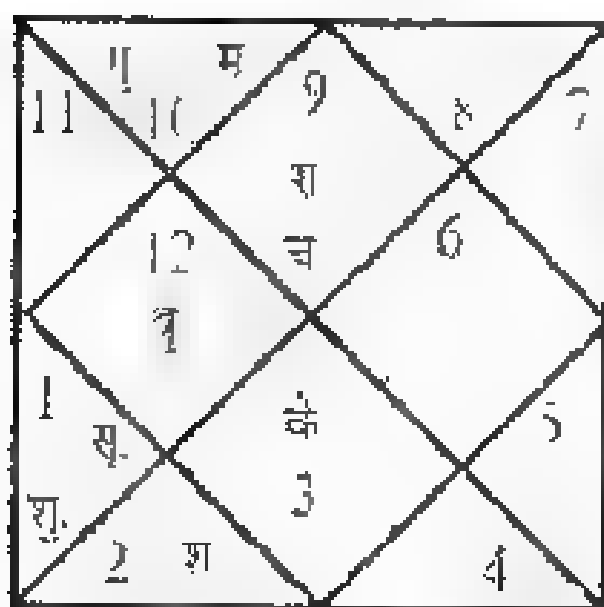
जन्म तिथि 24.4.1973, जन्म समय 5.30, जन्म स्थान मुम्बई।

श्री संजय मांजरेकर
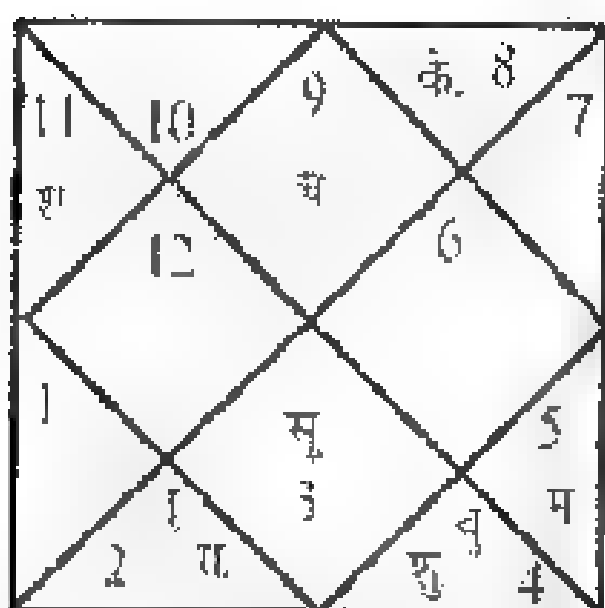
जन्म तिथि-12.7.1965, जन्म समय-5.30, जन्म स्थान-मैंगलोर।

श्री धीरुभाई अम्बानी (प्रसिद्ध उद्योगपति)
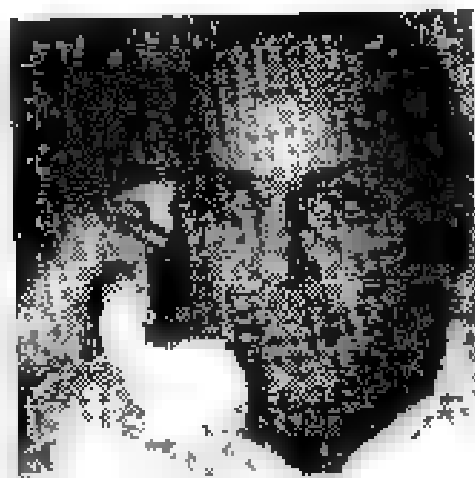
जन्म तिथि- 28.12.1932, जन्म समय-7.30।

श्री रतन टाटा (प्रसिद्ध उद्योगपति)

जन्म तिथि-28.12.1937, जन्म समय 6.30, जन्म स्थान मुम्बई।

श्री अरविन्द मफतलाल (प्रसिद्ध उद्योगपति)

जन्म समय 4.4.1918, जन्म समय 1.45, जन्म स्थान अहमदाबाद।

श्री नरेन्द्र वर्मा (प्रसिद्ध प्रकाशक)
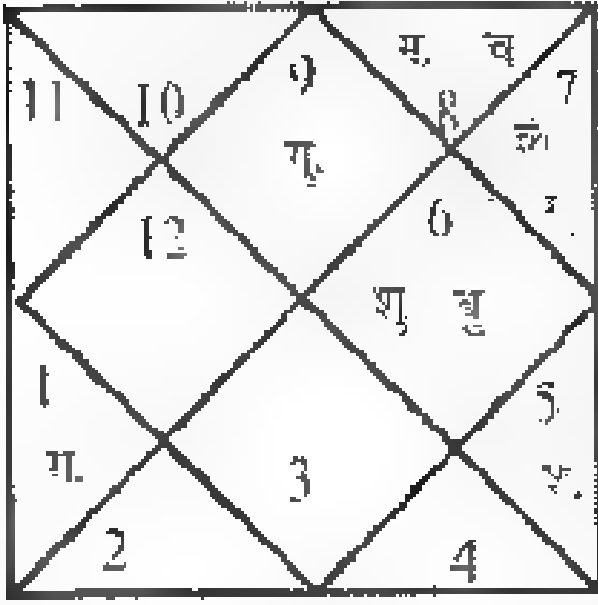
जन्म तिथि-3.1..1948, जन्म समय -12.30 दोपहर, जन्म स्थान -दिल्ली।

श्री. त्रिलोक दीप सिंह
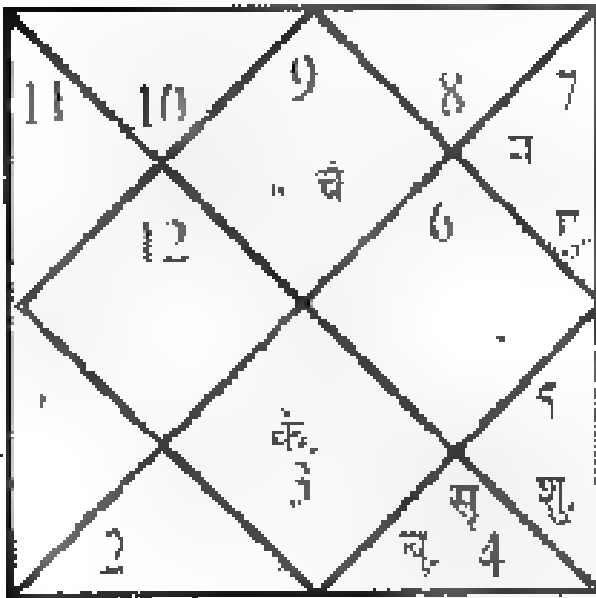
जन्म तिथि 11.8.1935, जन्म समय 16.00। यह विख्यात पत्रकार हैं तथा यह डालमिया ग्रुप से जुड़े समाजसेवी व्यक्ति हैं।

श्री के.के. सिंघवी
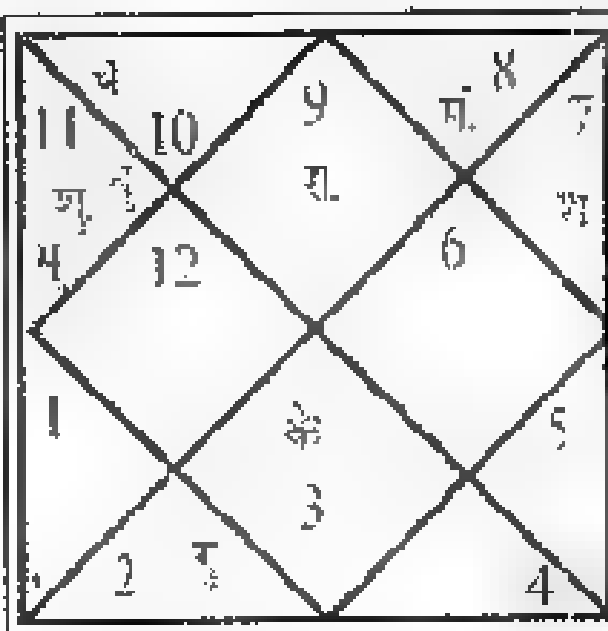
जन्म समय 23 मार्च 1954, जन्म समय 4.18, जन्म स्थान- मन्दिरपेढ़ी (जोधपुर)

यह कुण्डली एक युवा व तेजस्वी व्यक्ति की है तृतीय स्थान मे परस्पर शत्रु ग्रहों की युति से कोई भाई बहन नही है। माता पिता नही है। लग्नस्थ राहु अनेक प्रकार के धंधे कराता है पर उल्लेखनीय सफलता किसी में नहीं। लग्नेश सुखेश गुरु छठे धार्मिक बुद्धि की कमी देता है.

डॉ. अरविंद माथुर
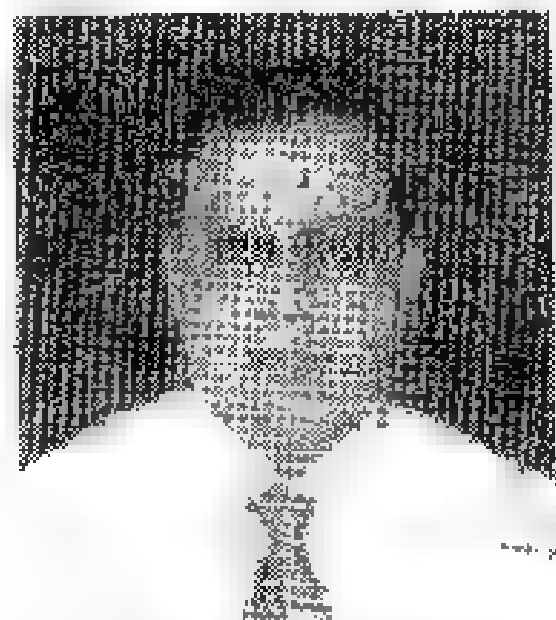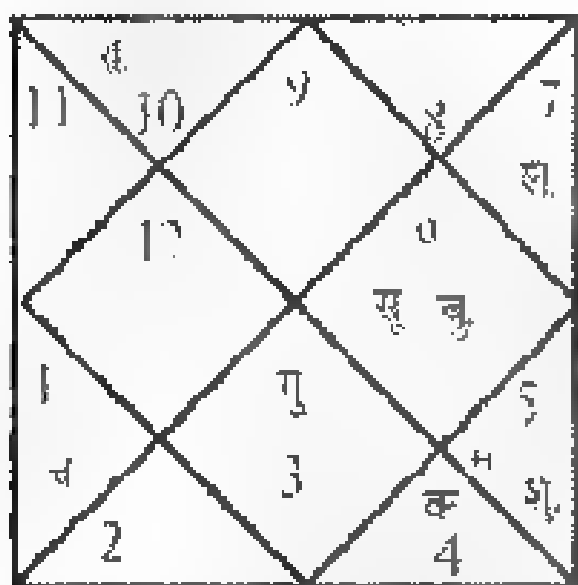
जन्म तिथि 25.9.1953, जन्म समय 13.35, जन्म स्थान जोधपुर। डॉ अरविन्द माथुर जोधपुर शहर के वरिष्ठ फिजिशियन हैं जहा दिन रात मरीजों की लाईन लगी रहती है दशम भाव में स्थित बुध उच्च का **'भद्र योग'** 'बुधादित्य योग' बना रहा है। जिससे इन्हे अपार यश मिला।

पं. घनश्याम द्विवेदी
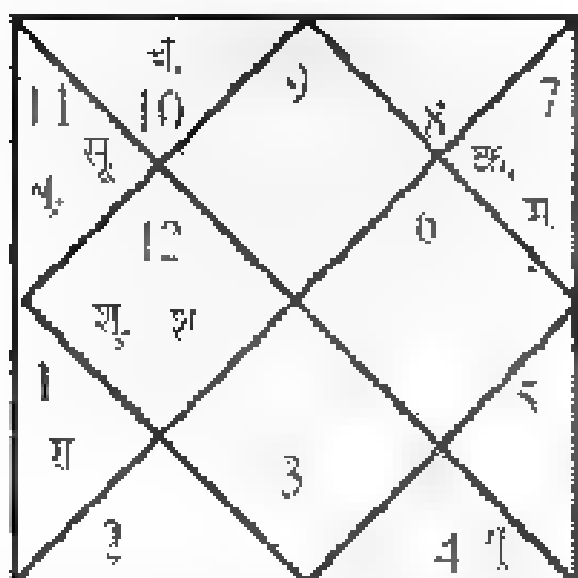
जन्म तिथि 9.3.1967, जन्म समय 3 50 बजे सुबह। 'मालव्य योग' के कारण व्यक्ति ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा। चतुर्थेश गुरु ने अष्टम जाकर माता का सुख भग कर दिया पराक्रम स्थान में शनि की राशि बुध ने भाई नही दिया आठ बहनें दी। पचम स्थान मे राहु सतान सबधी चिंता कारक है। धनेश केन्द्र स्थान होने से धन की कमी जीवन पर्यन्त नही रहेगी। शनि+शुक्र कार का योग बनाते हैं

डॉ. सुरेश जैन
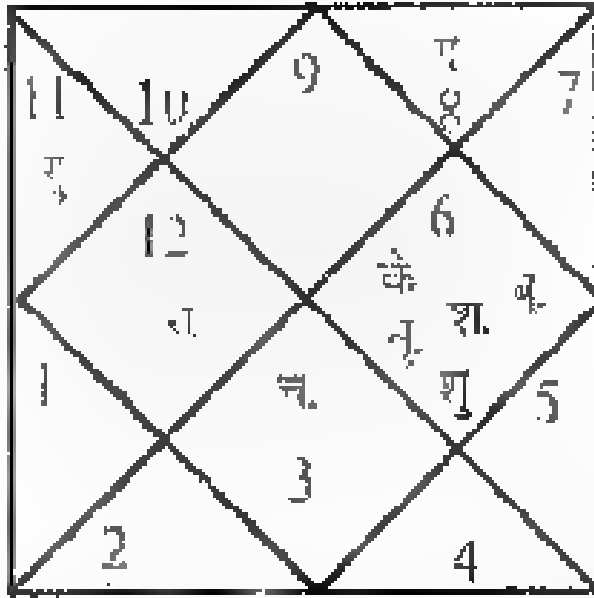
जन्म तिथि-5. 0.1950, जन्म समय-13.00 दोपहर जन्म स्थान-जोधपुर। डॉ. जैन जोधपुर शहर के प्रख्यात शल्यचिकित्सक है जो ज्योतिष एव मेडिकल साइंस को साथ लेकर रोगों का निदान करते हैं। ऐसा योग दशम भाव में स्थित पंचग्रह युति के कारण बना

श्री रामू भाटी
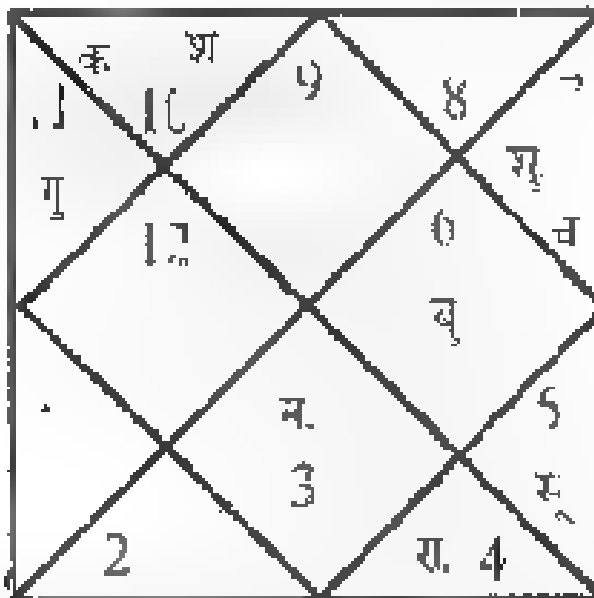
जन्म तिथि 3.9.1962 जन्म समय 16.10, जन्म स्थान भिवाना। यह बाधक कुण्डली का अन्यतम उदाहरण है। शनि स्वगृही, शुक्र स्वगृही, बुध उच्च का होते हुए जातक की किस्मत नहीं चमकी।

श्री पुरुषोत्तम आवस्थी
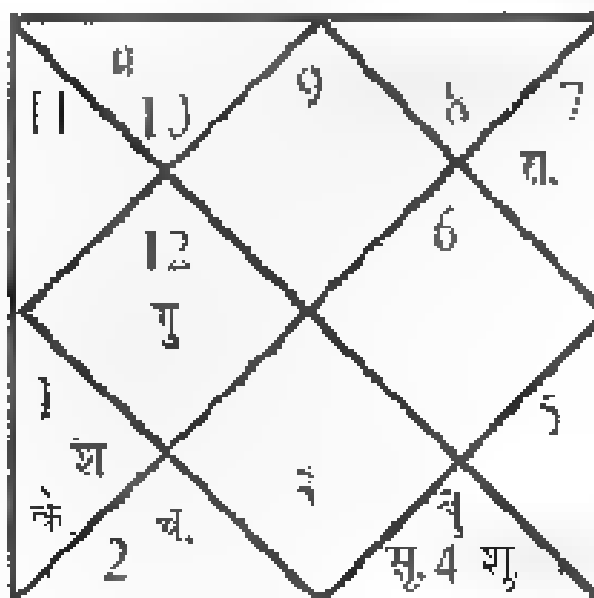
जन्म तिथि-10.8.1939, जन्म समय 16.00 जन्म स्थान-जोधपुर। केवल दो पुत्र कोई कन्या नहीं। चंद्रमा उच्च का छठे सरल नामक विपरीत राजयोग एवं शुक्र आठवें हर्ष नामक विपरीत राजयोग से व्यक्ति गरीबी से उठा और करोड़पति (उद्योगपति) बन गया।

पराया बीज
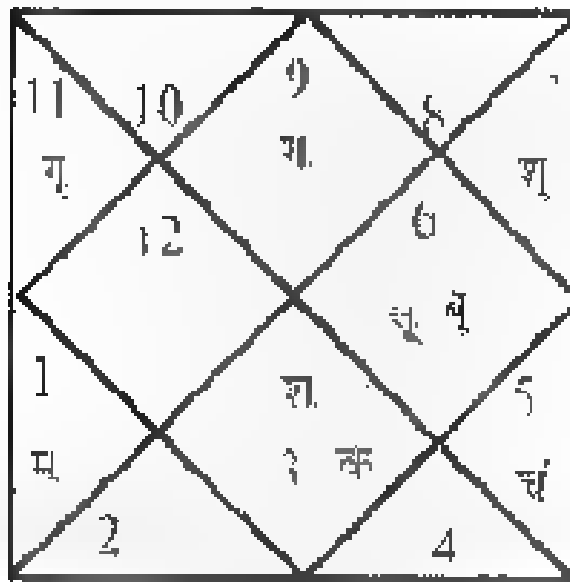
जन्म स्थान समदंडी (राज.) जन्म नक्षत्र उत्तरा फाल्गुनी।

ज्योतिष का एक सूत्र है–

चौथ नाम और चवदस जाण
वार शनि के मंगल भाण
उत्तरातीनु बालक जायो
निश्चय बीज पराया लायो।

अर्थात् शनि या मंगलवार हो, उस दिन तिथि चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी हो तथा उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद में से कोई भी नक्षत्र हो तो उस दिन जन्मा बालक अपने पिता की संतान नहीं होता। यह कुण्डली इसका अन्यतम उदाहरण है।

❑❑❑

edj yXuQy

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में **'लग्न'** का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को बीज कहा गया है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या को कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यो मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बाद विद्वान् व्यक्ति तथा व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते है, कतराते हैं। अत: इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तकों का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न मे एक-एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है। अकेले ग्रह के भिन्न-भिन्न भावों मे घूमने से, विभिन्न प्रकार के योगो की सृष्टि होती है। जिसकी प्रमाणिक चर्चा पहली बार आप इस पुस्तक में देख पायेंगे। लग्न बारह है, ग्रह नौ हैं, फलत: 12 × 9 - 108 प्रकार की ग्रह-स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × .2 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितियां बनीं। प्रत्येक ग्रह की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश, इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज तक नहीं हुआ वह है **'सयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन-सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां? किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलत: ज्योतिष का फलादेश कच्चा-का-कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह से युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुन: नौ ग्रहों की भिन्न भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 **प्रकार की द्वि-ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्न में कुल 972 × 12 = 11664**

प्रकार की द्वि-ग्रह युतियां बनेगी। ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्वि-ग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होगी। यही कारण है। इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।

एक छोटा सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मी योग'** का ले सकते हैं। क्या गुरु+चंद्र की युति से बना **गजकेसरी योग** सदैव एक-सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी!!! **गजकेसरी योग** का फल किसी भी हालत में सदैव एक-सा नहीं होगा? **गजकेसरी योग** की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेगी। अकेला **गजकेसरी योग** 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। **गजकेसरी योग** की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, **'मकरलग्न'** या **'कुम्भलग्न'** में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में **गजकेसरी योग** छठे स्थान या आठवें स्थान में हो तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर गुरु छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चंद्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष सॉफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया गया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न', **'कर्कलग्न'**, **'वृषलग्न**, **'तुलालग्न 'सिंहलग्न**, **'कन्यालग्न'**, **'मिथुनलग्न'**, **'मीनलग्न'** और **'धनुलग्न'** 2003-04 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब **'मकरलग्न'** की पुस्तक को पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। मकरलग्न में महाराणा प्रताप, गुरु गोलवलकर, सरदार वल्लभभाई पटेल, संजय गांधी, चीनी प्रधानमंत्री माओ-त्से-तुंग, बाला साहेब ठाकरे, विधिवेत्ता रामजेठमलानी, क्वीन एलिजाबेथ, मेधा पाटकर, सुनील गावस्कर, अभिनेता दिलीप कुमार, अशोक कुमार, ब्रिटिश उच्चायुक्त डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, सेठ विद्याभूषण (पूर्व पर्यटन मंत्री) जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। मकरलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। मकरलग्न की स्त्री जातकों पर भी हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की जीरो डिग्री (Zero Degree)से लेकर तीस (30) अंशो तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व मे पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों मे प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हो फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसंधान की आवश्यकता है।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एव अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन-रात में आकाश में बारह लग्नों का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम **'सृष्टि'** के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह व अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों मे लिखे। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ, जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को **''कर्कलग्न''** के अंतर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे है। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि 'युग पुरुष' के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

1. हस्तरेखा विभाग–सन् 1981 में डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा **'अंगुष्ठ से भविष्य ज्ञान'** एवं **'पाव तले भविष्य'** नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। सामुद्रिक शास्त्र की दुनिया में इस नये विषय को लेकर हंगामा मच गया। पाठकों ने इन पुस्तकों को सराहा तथा इनके अनेक संस्करण छपे। सन् 1992 में **'ज्योतिष और आकृति'** तथा सन् 1996 में **'हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन'** दो भागों में प्रकाशित हुए। अपने 40 वर्षों के सघन अनुसंधान में दो लाख से अधिक हस्तप्रिन्ट के परीक्षण व अध्ययन से अनुभूत प्रस्तुत पुस्तक पर इस विषय पर छठे पुष्प के रूप में पाठकों को समर्पित

की है। **'हस्तरेखाओं का रहस्यमय संसार'** नामक यह कृति किसी भारतीय विद्वान् द्वारा लिखी गई संसार की श्रेष्ठ एवं बेजोड़ पुस्तकों में सर्वोपरि है। इस पुस्तक की कीर्ति ने जरभिन, कीरो एवं बेन्हाम जैसे विदेशी विद्वानों को मीलों पीछे छोड़ दिया। डॉ. द्विवेदी भारत के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने हस्तरेखाओं को कम्प्यूटर पर लाने का अद्‌भुत प्रयास किया है। अभी यह कार्यक्रम 'अंग्रेजी' में है। शीघ्र ही हिन्दी, गुजराती, मराठी व अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद व संशोधन हो रहा है। हस्तरेखा विभाग में अनुभवी विद्वान् दिन-रात काम कर रहे हैं। आप अपना हैण्ड प्रिन्ट भेजकर, उनका फलादेश डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। प्रिन्ट पर प्रश्न भी पूछ सकते हैं। यह विभाग भारत ही नहीं, अपितु विदेशों में अपने ढंग का अनोखा एवं सर्वोच्च कीर्ति प्राप्त करने वाला विभाग होगा। जहां से इस विषय में लोगों को नया प्रकाश व प्रेरणा बराबर मिलती रहेगी।

2. ज्योतिष विभाग--इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न कम्प्यूटर लगे हैं जो गणित एवं फलित दोनों प्रकार की जन्मपत्रियों का निर्माण करते हैं। व्यक्ति की जन्म तारीख, जन्म समय एवं जन्म स्थान के माध्यम से जन्मपत्रिका, वर्षफल, विवाह पत्रिका, प्रश्न पत्रिका आदि का निर्माण सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित सूत्रों द्वारा होता है। सही जन्मपत्रिका यदि बनी हुई है तो उस पर विभिन्न प्रकार के फलादेश करवाने की व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमारे यहां 'हैण्ड-प्रिण्ट' देखने की सुविधा एवं चेहरा देखकर भविष्य बताने की विद्या का चमत्कार केवल उन्हीं सज्जनों को प्राप्त है, जो हमारी संस्था **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के संस्थापक, संरक्षक या आजीवन सदस्य हैं। **'अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज'** के सदस्यों, व्यापारियों व उद्योगपतियों को वरीयता के साथ हम नियमित ज्योतिष सेवाएं घर बैठे भेजते हैं। इसके लिये निःशुल्क प्रपत्र अलग से प्राप्त करें। डॉ. द्विवेदी द्वारा हजारों-लाखों भविष्यवाणियां लोगों के व्यक्तिगत जीवन हेतु की गई जो चमत्कारिक रूप से सत्य हुई हैं। इसके साथ ही अब तक 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां जो समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुई, समय-चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं। यह एक ऐसा अपूर्ण रिकार्ड है, जो ज्योतिष के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा है। यह एक ऐसा गौरवपूर्ण रिकार्ड है, जिसकी सीमा का लंघन कोई भी दैवज्ञ अब तक नहीं कर पाया है. डॉ. द्विवेदी वैदिक ज्योतिष पर एक अपूर्व सॉफ्टवेयर 'सृष्टि' का निर्माण कर रहे हैं।

3. वास्तु विभाग--हमने 'इंटरनेशनल वास्तु एसोशिएसन' की स्थापना कर रखी है। हमारे केन्द्र के वास्तुशास्त्रियों द्वारा वास्तु संबंधी विभिन्न त्रुटियों व दोषों का परिहार पूर्ण विधि-विधान से किया जाता है यदि व्यक्ति नक्शा भेजता है तो उस पर भी विचार विमर्श करके सही स्थानों को चिह्नित व संशोधित करके नक्शा वापस भेज दिया जाता है। जो सज्जन 'वास्तु विजिट' कराना चाहते हैं उन्हें एडवांस ड्राफ्ट भेजकर

समय निश्चित कराना चाहिए। वास्तु संबंधी दोषों का परिहार जहां तक हो सके बिना तोड़ फोड़ करके कर दिया जाता है। इस विषय में परम पूज्य गुरुदेव डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा लिखित पुस्तकें मार्गदर्शन हेतु काम में ली जा सकती हैं।

4. यंत्र विभाग–विद्वान् ब्राह्मणों की देखरेख मे विभिन्न प्रकार के यन्त्रों का निर्माण शुभ नक्षत्र, दिन व मुहूर्त में किया जाता है। यंत्र बनने के पश्चात् उसमें विधिवत् प्राण-प्रतिष्ठा करके ही भेजे जाते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि सभी यंत्र यजमान द्वारा निर्दिष्ट धातु में सर्वशुद्ध तरीके से बनाए जाते हैं। सभी यंत्र लॉकेट में उभरे हुए होते हैं तथा बनने के पश्चात् निर्दिष्ट गंतव्य पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दिए जाते हैं। वी.पी. नहीं की जाती। वी.पी. के लिए आधा एडवांस प्राप्त होना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा अभिमंत्रित व सिद्ध यंत्रों का सम्पूर्ण सूची-पत्र अलग से प्रार्थना कर, प्राप्त किया जा सकता है।

5. रत्न विभाग– अनेक जिज्ञासु सज्जनों के विशेष आग्रह पर हमारे यहां विभिन्न रत्नों एवं राशि रत्नों के विक्रय की व्यवस्था की गई है। भाग्यवर्द्धक अंगूठियां एवं लॉकेट भी पूर्ण विधि-विधान के साथ बनाए जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक मालाएं, पारद शिवलिंग, हत्था जोड़ी सभी प्रकार के तंत्र की सामग्री असली होने की गारंटी के साथ दी जाती है। इस हेतु सम्पूर्ण जानकारी हेतु सूची-पत्र अलग से प्राप्त करें।

6. विविध धार्मिक अनुष्ठान–संस्थान द्वारा 108 कुण्डीय पवित्र यज्ञ कुण्डों, दस महाविद्याओं की जागृत 'श्रीपीठ' की स्थापना हो चुकी है। यहां पर विभिन्न प्रकार के दुर्योगों की शांति हेतु, व्यापार-व्यवसाय में रुकावट दूर करने हेतु, दुःख, क्लेश, भय, रोग से निवारण हेतु प्रेत बाधा एवं शत्रु को नष्ट करने हेतु राजयोग, पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा-पाठ एवं शांति कराने की सभी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

7. प्रकाशन विभाग–जो कुछ भी शोध कार्य कार्यालय के विद्वानों द्वारा होता है उसको निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा एवं प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन भी विभाग द्वारा किया जाता है। अब तक डॉ. द्विवेदी द्वारा 300 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें से 250 के लगभग प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालय से दो नियतकालीन प्रकाशन अनवरत रूप से चल रहे हैं।

1. अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) 1977 से प्रकाशित, 2. चण्डमार्तण्ड पंचांग एवं कैलेण्डर (वार्षिक) 1987 से नियमित प्रकाशित होते रहते हैं।

हमारे कार्यालय की दिन-प्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता के कारण नित्यप्रति डाक से अनेकों पत्र आते हैं। बहुत से पत्रों में लम्बी-चौड़ी कहानियां एवं व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन के बारे में बहुत अधिक लिखा होता है, जिनको पढ़ने मात्र में

बहुत-सा कीमती समय नष्ट हो जाता है। अपने बहुमूल्य समय का आदर करना सीखें और दूसरों को भी ऐसा करने दें। कृपा कर स्नेहिल पाठकों से निवेदन है कि कृपया अत्यन्त संक्षिप्त में सार की बात ही लिखा करें। कार्यालय द्वारा केवल उन्हीं पत्रों का जवाब दिया जाता है, जिसके साथ स्पष्ट पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा संलग्न हो। परमपूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत सम्पर्क व शंका समाधान के लिए 'अज्ञातदर्शन' अथवा 'श्रीविद्या साधक परिवार' के आजीवन सदस्य का उल्लेख अवश्य होना चाहिए। कई बार ऐसे मनीऑर्डर भी प्राप्त होते हैं जिनपर पूर्ण संदेश एव पता लिखा नहीं होता। पाठक लोग प्रायः ऐसा समझते हैं कि हमारा पत्र महत्वपूर्ण एवं कार्यालय में हमारा पत्र जन्मपत्रिकाएं एवं नक्शे सुरक्षित पड़े होगे एवं पुराने पत्र से हमारा पता देख लेंगे पर ऐसा संभव नहीं है। क्योंकि हमारे पास इतनी डाक आती है कि हर तीसरे-चौथे दिन डाक नष्ट करनी पड़ती है। अन्यथा ऑफिस मे बैठने को जगह नही बच पाती। प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि जितनी बार पत्र-व्यवहार करे, अपना पूरा पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा साथ भेजे।

8. श्रीविद्या साधक परिवार—प्रायः सम्मोहन, यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले अनेक जिज्ञासु सज्जनों, छात्र-छात्राओं के अनेक फोन व पत्र पूज्य गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु उनसे दीक्षा प्राप्त करने हेतु, मंत्र शिविरों मे भाग लेने हेतु आते हैं। ऐसे जिज्ञासु साधकों को सर्वप्रथम 'श्रीविद्या साधक परिवार' का सदस्य बनना होता है। श्रीविद्या साधक परिवार से जुड़ने के बाद ही ऐसे जिज्ञासु सज्जनों को परमपूज्य गुरुदेव का पत्र या स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सर्वधर्म सद्भाव सेवा ट्रस्ट, अन्तर्राष्ट्रीय वास्तु एसोसिएसन, लायंस क्लब इंटरनेशनल इत्यादि अनेक सस्थाओं के प्रमुख पद पर प्रतिष्ठापित होकर डॉ. भोजराज द्विवेदी का बहुआयामी व्यस्त व्यक्तित्व, मानव सेवा के अनेक संगठनों व रचनात्मक कार्यों से जुड़ा हुआ है अतः बिना पूर्व सूचना व स्वीकृति के मिलने की चेष्टा न करे।

विनम्र निवेदन—बाहर से पधारने वाले जिज्ञासु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि बिना कोई अत्यधिक ठोस कारण के परमपूज्य गुरुदेव से मिलने का दुराग्रह न रखें। सर्वश्री डॉ. भोजराज द्विवेदी से मिलने के लिए टेलीफोन नंबर-2431883, फैक्स 2637359, मोबाइल-098280 25883 पर पूर्व समय निश्चित करके ही मिला करें। यह आपकी और कार्यालय दोनों की सुविधा के लिए अत्यन्त जरूरी है।

इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन (रजि.)—डॉ. भोजराज द्विवेदी उनके मित्रगण, अनुयायी व भक्तगणों से मिलकर 19 फरवरी, 1993 को एक ऐसे संगठन का गठन किया जिससे ज्योतिष, मंत्र-तंत्र, वास्तु विज्ञान का प्रचार प्रसार, जात पात से रहित मानवमात्र में सर्वधर्म सद्भाव, भाईचारा एवं मैत्रीभाव परस्पर विश्व बंधुत्व स्थापित हो सके, इस उद्देश्य से संस्था का एक भवन बन रहा है।

—आचार्य सोमतीर्थ

ज्योतिष शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों मे विभाजित ज्योतिषशास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमे प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने **'ऋग्वेद भाष्य भूमिका'** में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र में अग्नि का आधान ज्योतिष संबधी ज्ञान के बिना संभव नहीं। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंदः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयन चक्षुर्निरुक्त श्रोत्रमुच्यते।।–पाणिनी शिक्षा, श्लोक/4।
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम् फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागानां मणयो यथा तद्वद्वेदागशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकामां दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन् -तैत्तरीय संहिता 6/4/8/1

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पडती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतों मे बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरह वगैरह। हिन्दू षोडश-संस्कार एव यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते है। श्रुति कहती है-

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।
यच्च किंचत् कुर्वत सतां कृत्यामेवाऽकुर्वत॥ 1 ॥[1]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुमार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय-लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीन शब्द व्युत्पन्न होते हैं। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्पुसंक-दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 536
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. स. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिष शास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिष शास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक '**ओरायन**' के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक '**वैदिक सम्पत्ति**' में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमें '**वेदांग ज्योतिष**' नामक ग्रन्थ में मिलता है।[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिष शास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[7]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703
2. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
4. वैदिक सम्पति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, मुम्बई पृ. 90
5. **छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।**
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥—पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42
7. Vedic Chronology and Veoanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page-3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्।**[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।
उषरे वापितं बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

संसार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चंद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चद्रोदय, चंद्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है वह जन्म-मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याएं हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देतीं, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध-श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृ.1
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृ. 2
3. जातकसार दीप-चद्रशेखरन् (पृ. 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज, मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृ. 550

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिष शास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र नहीं है क्योंकि यह द्रव्योपार्जन में सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलट-पलट हो जाएं।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।**[4] **अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।**[5]

ज्योतिष शास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन 1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृ. 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यां यथा नभः।
   तथाऽसावत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे। यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग में ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ हैं। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते है।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो नहीं बोलते, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते है। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है-

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

जाता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है। सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में गुरु का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

'ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला को सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।'

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

❑❑❑

---

1. वक्री ग्रह-(प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली, पृ. 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदावधीतोऽपिज्योतिशास्त्रत बिना द्विजाः॥-वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।

लग्नं दीपो महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरुः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक संसार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाअम्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशो अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. भगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र-मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं सग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न।***
तरह-तरह के शाल-दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण।
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआं और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेले खाते हैं।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न।**
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं क्योंकि "लग्न" का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाए तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुतः आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह का

3.30 से 5.30 A.M. | 7.30 से 9.30 | 5.30 से 7.30 A.M. सूर्योदय | 9.30 से 11.30 | 3.30 से 11.30 | 11.30 से अर्धरात्रि 1.30 | दोपहर 1.30 से 11.30 | सूर्यास्त 5.30 से 7.30 P.M. | 1.30 से 3.30 | 1.30 से 3.30 | 3.30 से 5.30 | 7.30 से 3.30 P.M.

भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहां से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसको ऊपरी मध्य घर में जहां सूर्य दिखाई देता है पहला घर माना जाता है यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

11 | 9 रा. | 12 | प्रथम स्थान 10 लग्न | 8 | 1 | 7 श. | चं. 4 शु. | 2 | 6 गु. | 3 के. | 5 सू. बु.

बुध / मिथुन वृ शु. / सू. बु.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन / कुम्भ
कर्क गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि / कन्या मं.	तुला राहु	धनु / वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष चं. शु.	मिथुन सू. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श.
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या मं.

चन्द्र 3 शुक्र 5 सूर्य 5 बुध 6	प्रथम स्थान के. 2	
गुरु 9	बंगाल	
श. 11 मं. 14	रा. 16	लग्न 17

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओ की जानकारी आवश्यक है।
1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचागों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ-साथ, भिन्न भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्न देहो वर्ग षट्कोऽगानि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवत्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल–पुष्प–पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–''**लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्**''।

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

दायां नेत्र, 2
बायां नेत्र 12
बाहिनी भुजा कंधा दोनों
11 पिण्डली
सिर, चेहरा 1
4 वक्षस्थल, छाती, हृदय
हृदय, वक्षस्थल, सीना 10
5 दायां पैर
7 गुप्तेन्द्री, गुदा, लिंग
9 जांघ
6 कमर
पैर 8 बायां

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक ''**ज्योतिष और आकृति विज्ञान**'' पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता–जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप

द्वितीय भाव
द्वादश भाव
तृतीय भाव
प्रथम भाव
एकादश भाव
चतुर्थ भाव
दशम भाव
पंचम भाव
सप्तम भाव
नवम भाव
षष्ठ भाव
अष्टम भाव

पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है। अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते है। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमे कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है—

द्रव्य
व्यय
पराक्रमं
देह
लाभ
सुख
राज्य
सुतौ
कलत्रं
भाग्यं
शत्रु
वृत्ति

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्य पदे क्रमेण, गदिता लाभ-व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव मे देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई-बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें मे पत्नी, आठवें में आयु, नौवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए.

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या॥

विना विलग्नं परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्॥

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा॥8॥

'ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदिया विलीन हो जाती हैं॥8॥

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए॥9॥

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।

अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः॥10॥

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है॥10॥

❑❑❑

मकरलग्न एक परिचय

लग्नेश, धनेश	–	शनि
पराक्रमेश, खर्चेश	–	गुरु
सुखेश, लाभेश	–	मंगल
पंचमेश, राज्येश	–	शुक्र
षष्ठेश, भाग्येश	–	बुध
सप्तमेश	–	चंद्र
अष्टमेश	–	सूर्य
त्रिकोणाधिपति	–	5-शुक्र, 9-बुध
दु:स्थान के स्वामी	–	6-बुध, 8-सूर्य, 12-गुरु
केन्द्राधिपति	–	1-शनि, 4-मंगल, 7-चंद्र, 10-शुक्र
पणकर के स्वामी	–	2-शनि, 5-शुक्र, 8-सूर्य, 11-मंगल
आपोक्लिम	–	3-मंगल, 6, 9-बुध, 12-गुरु
त्रिकेश	–	6-बुध, 8-सूर्य, 12-गुरु
उपचय के स्वामी	–	3-गुरु, 6-बुध, 10-शुक्र, 11-मंगल
शुभ योग	–	1. शुक्र, 2. बुध
अशुभ योग	–	1. शनि+मंगल, 2. शनि+गुरु, 3. शनि+चंद्र
निष्फल योग	–	इस लग्न मे कोई नहीं होता।
सफल योग	–	1. शनि+शुक्र, 2. बुध+शुक्र, 3. शुक्र+मंगल 4. मंगल+बुध, 5. चंद्र+शुक्र
राजयोग कारक	–	शुक्र योगकारक-बुध

20. **मारकेश** – मंगल

21. **पापफलद** – शनि और शुक्र, परमपापी-गुरु

विशेष–मकरलग्न वालों के लिये शनि लग्नेश होने से स्वयं मारक नहीं होता। मंगल इत्यादि पापी ग्रह मारक का काम करेंगे। सूर्य द्वितीय मारकेश का काम कभी-कभी कर देता है।

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार मकरलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

कृजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्ग्वचन्द्रजौ
स्वयं चैव निहन्ता स्यान्मन्दौ भौमादयः परे॥50॥
तल्लक्षणा निहन्तारः कविरेकः सुयोगकृत्
ज्ञातव्यानि फलान्येवं विबुधैर्मृगजन्मनः॥51॥

दूसरा पाठ

कुजजीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ।
राजयोगकरः साक्षाद् एक एव भृगोः सुतः॥52॥
चन्द्रात्मजेन संयुक्तो विशेषफलदायकः।
स्वयं चैव न हन्ता स्यात् मन्दो भौमादयः परे॥53॥
निहन्तारः पापिनस्ते मारकत्वेन लक्षिताः।
ज्ञातव्यानि बुधैरेवं फलानि मगजन्मनः॥54॥

तीसरा पाठ

कुज-जीवेन्दवः पापाः शुभौ भार्गवचन्द्रजौ।
स्वयं मन्दो न हन्ता स्याद्घ्नन्ति भौमादयः परे॥55॥
तल्लक्षणसमायुक्ताः कविरेकः सुयोगकृत्।
मृगलग्नोद्भवस्यैवं फलान्यूह्मानि सुरिभिः॥56॥

स्पष्टीकरण

पहला पाठ—मकरलग्न हो तो मंगल, गुरु और चद्रमा पापफल प्रदान करने वाले होते हैं। कारण मंगल एकादश स्थान का स्वामी होता है, गुरु तृतीय स्थान का स्वामी होता है और चद्रमा सप्तम स्थान (मारक स्थान) का स्वामी होता है। शुक्र और बुध शुभ फलदायक हैं कारण शुक्र त्रिकोण और दशम केन्द्र का स्वामी होता है और बुध त्रिकोण का स्वामी होता है। शनि और भौमादि पाप फलदायक ग्रह अपनी दशा और अन्तर्दशा में मृत्युप्रद होते हैं।

दूसरा पाठ—मकरलग्न हो तो मगल, गुरु और चंद्रमा अशुभ फल देते हैं। शुक्र और बुध शुभ फल देते हैं। अकेला शुक्र राजयोगकारक होता है। बुध शुक्र योग हो तो विशेष फलदायक होता है। शनि स्वयं मारक नहीं बनता। मंगल आदि करके अशुभ ग्रह मारक लक्षणों से युक्त हों तो मारक बनते है। मकर लग्न में जन्म हो तो ज्ञातों ने इस प्रकार शुभाशुभ फल समझना।

तीसरा पाठ—मकरलग्न हो तो मंगल, गुरु और चंद्रमा पाप फलप्रद होते हैं। बुध और शुक शुभ फलदायक होते हैं। शनि मारक होने पर भी स्वय मारक नहा बनता। मंगल, गुरु, चद्रमा मारक लक्षणों से युक्त हों तो मारक बनते हैं।

शुक्र अकेला सुयोग करने वाला होता है, मंगल चतुर्थेश और एकादशेश, गुरु तृतीयेश और व्ययेश और चंद्रमा सप्तम (मारक) केन्द्र का बलवान मारक स्थान का स्वामी होने से अशुभ फलदायक है, शुक्र दशमेश (याने केन्द्र का) और पंचमेश (त्रिकोण) होने से अकेला राजयोग कारक बनता है। इस शुक्र के साथ बुध का योग हो तो उत्तम राजयोग होगा, कारण बुध षष्ठेश होने पर भी नवम (त्रिकोण) का स्वामी होने से बुध-शुक्र योग श्रेष्ठ प्रकार का राजयोग करने वाला है। शनि स्वयं लग्नेश होकर द्वितीय स्थान का स्वामी है। फिर भी मारकेश होने पर मारक नहीं बनता। मारक शनि स्वय लग्नेश है। मगल आदि पाप ग्रह मारक लक्षणों से युक्त हों तो मारक बनते हैं। यहां पर रवि को बिल्कुल नहीं लिया है कारण रवि अष्टम स्थान का स्वामी होकर उसे अष्टमेश होने का दोष नहीं होता। चंद्रमा सप्तम (मारक स्थान) और केन्द्र का स्वामी होने से उसे अल्पदोष है।

मकरलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1 **शुभ योग**—शुक्र स्वय शुभ ग्रह है वह पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ है और दशम स्थान का अधिपति होने से प्रबल दूषित होता है। परन्तु बुध के साथ नवम स्थानाधिपत्य के साहचर्य योग के कारण वह शुभ बनता है और शुभ फल देता है।

2. **शुभ योग**—बुध स्वय शुभ ग्रह है और नवम (त्रिकोण स्थान) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ होता है परन्तु षष्ठ स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ होता है। उससे शुक्र के साथ स्थानाधिपत्य साहचर्य के योग के कारण वह शुभ होता है और शुभ फल देता है।

मकरलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**—मंगल पाप ग्रह है। वह चतुर्थ केन्द्र स्थान का स्वामी होने से श्लोक 7 के अनुसार शुभ होता है परन्तु एकादश स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है।
2. **अशुभ योग**—गुरु स्वयं शुभ ग्रह है परन्तु वह तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है। गुरु व्यय स्थान का भी स्वामी होने से अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है।
3. **अशुभ योग**—चद्रमा शुभ ग्रह है। वह सप्तम (मारक स्थान) स्थान का अधिपति है और केन्द्राधिपत्य दोष के कारण श्लोक 11 के अनुसार स्वल्प दूषित होता है इसलिए वह अशुभ माना गया है और अशुभ फल देता है।
4. **अशुभ योग**—शनि स्वय पाप ग्रह है और वह द्वितीय (मारक) स्थान का स्वामी होने से अशुभ फल देने वाला होता है।

मकरलग्न के लिए निष्फल योग

यह एक ऐसी कुण्डली है जिसमें निष्फल योग नहीं बनता।

मकरलग्न के लिए सफल योग

1. शुक्र अकेला राजयोग करने वाला है, 2. शुक्र-शनि, 3. बुध-शुक्र श्रेष्ठ योग श्लोक 20 के अनुसार, 4. शुक्र मंगल (सदोष), 5 बुध-शनि (सदोष), 6. चंद्र बुध (सदोष), 7. चंद्र-शुक्र (सदोष) चंद्रमा दोष युक्त है 8. मंगल बुध (कनिष्ठ) कारक मंगल एकादशेश होने से दूषित है और बुध षष्ठेश होने से दूषित है। दोनों दूषित होने से निकृष्ट योग होता है।

❑❑❑

मकरलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	–	मकर
2.	लग्न चिह्न	–	मगरमच्छ
3.	लग्न स्वामी	–	शनि
4.	लग्न तत्त्व	–	पृथ्वी तत्व
5.	लग्न स्वरूप	–	चर
6.	लग्न दिशा	–	दक्षिण
7.	लग्न लिंग व गुण	–	स्त्री, तमोगुणी
8.	लग्न जाति	–	वैश्य
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	सौम्य स्वभाव, वात प्रकृति
10.	लग्न का अंग	–	घुटना (टखने)
11.	जीवन रत्न	–	नीलम
12.	अनुकूल रंग	–	नीला, आसमानी, काला
13.	शुभ दिवस	–	शनिवार
14.	अनुकूल देवता	–	शनिदेव
15.	व्रत, उपवास	–	शनिवार
16.	अनुकूल अंक	–	आठ
17.	अनुकूल तारीखें	–	8.17/26
18.	मित्र लग्न	–	कुंभ
19.	शत्रु लग्न	–	सिंह
20.	व्यक्तित्व	–	परोपकारी, दया का अवतार, प्रशासक

21.	सकारात्मक तथ्य	–	व्यावहारिक धरातल पर चलने वाला कठोर परिश्रमी, सही सलाह देने वाला
22.	नकारात्मक तथ्य	–	संदेहास्पद प्रवृत्ति, कठिनता से मानने वाला

❑❑❑

मकरलग्न के स्वामी शनि का वैदिक स्वरूप

नवग्रहों के वैदिक मंत्रों एव कर्मकाण्ड में शनि संबंधित जो मंत्र प्रयुक्त होता है। वह निम्न है–

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये

शंय्योरभि प्रवन्तु नः।

–ऋग्वेद10/9/4, यजुर्वेद 36/12

अर्थात् देदीप्यमान जल (जल रूप शनि देव) हमारे पान के लिए सुखरूप हों तथा रोगों का नाश करे। यहा शनि को जल स्वरूप कहा गया है। जल सूर्य से ही उत्पन्न हुआ अतः वह सूर्य पुत्र है। इसीलिए शनि को सम्भवतः सूर्य पुत्र कहा गया है। पञ्चविंशति ब्राह्मण 24/8/6 से शनिस्तु सौरः कहा गया है।

शम् का अर्थ पाप नाशक देवता के रूप में भी किया जाता है। **'शं'**, मतलब होता है कल्याणकारी, शान्ति प्रदान करने वाला ग्रह। **'शनि शमयते पापम्'** शनि ग्रह हमारे पापो का शमन करता है। पापों का नाश करता है। इसलिए इसे शनि कहा गया है।

अर्थर्ववेद 19/9/7 में शनि ग्रह की प्रार्थना इस प्रकार है–

शं नो मित्र शं वरुणः शं विवस्वान् शमन्तकः।

उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शन्नो दिविचरा ग्रहाः॥

अर्थात् मित्र, वरुण, सूर्य, अन्तक (शनि), पृथिवी और अन्तरिक्ष में होने वाले उत्पाद और आकाश में विचरण करने वाले ग्रह हमारे लिए शन्तिप्रद हों।

अथर्ववेद के इसी काण्ड के एक मत्र मे नव ग्रहो का उल्लेख इस प्रकार से गूढ़ात्मक भाषा में मिलता है। मंत्र है–

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा।
शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः॥

–(अथर्ववेद 19/9/10)

इसमें (चांद्रमसाः) चद्रमा, बुध, आदित्य अर्थात् सूर्य, राहु, मृत्यु अर्थात् शनि, केतु, रुद्र से मंगल तथा तिग्मतेजसः से गुरु ग्रह का अर्थ निकलता है।

शनि के अनेक नामों में से 'मृत्यु' यमाग्रज, शनैश्नद, मन्द, सौरि, छायासुत, तरणितनय, महिषवाहन, खंज, सूर्य सुमन, असित, पगु, दास, कृष्ण अश्वरोही, नीलकाय, क्रूर, कृशाग, कपिलाक्ष, कोण, रविपुत्र, नीलांजन, गिद्धवाहन, वगैरह है। अग्रेजी में सैटर्न तथा उर्दू-फारसी में गृदुल या कोद्वान संस्कृत में असति श्यामलांग, कालदृष्टि, शितिकण्ठ, शमीपुष्पप्रियः नीलश्छाया, रविनन्दन कहा गया है।

❑❑❑

मकरलग्न के स्वामी शनि का पौराणिक स्वरूप

शनैश्चर की शरीर-कान्ति इन्द्र नीलमणि के समान है. इनके सिर पर स्वर्णमुकुट, गले में माला और शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित हैं। ये गीध पर सवार रहते हैं। यह हाथों में क्रमशः धनुष, बाण, त्रिशूल और वरमुद्रा धारण करते हैं।

शनि भगवान् सूर्य तथा छाया (सुवर्णा) के पुत्र हैं। ये क्रूर ग्रह माने जाते हैं। इनकी दृष्टि में जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नी के शाप के कारण है। ब्रह्म पुराण में इनकी कथा इस प्रकार आयी हैं–बचपन से शनि देवता भगवान श्री कृष्ण के परम भक्त थे। वे श्रीकृष्ण के अनुराग में निमग्न रहा करते थे। वयस्क होने पर इनके पिता ने चित्ररथ की कन्या से इनका विवाह कर दिया। इनकी पत्नी सती-साध्वी और परम तेजस्विनी थी। एक रात वह ऋतु-स्नान करके पुत्र प्राप्ति की इच्छा से इनके पास पहुंची, पर यह श्रीकृष्ण के ध्यान में निमग्न थे। इन्हे बाह्य संसार की सुधि ही नहीं थी पत्नी प्रतीक्षा करके थक गयी। उसका ऋतुकाल निष्फल हो गया। इसीलिए उसने क्रुद्ध होकर शनिदेव को शाप दे दिया कि आज से जिसे तुम देख लोगे, वह नष्ट हो जायेगा। ध्यान टूटने पर शनि ने अपनी पत्नी को मनाया। पत्नी को भी अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ, किन्तु शाप के प्रतीकार की शक्ति उसमें न थी, तभी से शनि देवता अपना सिर नीचा करके रहने लगे। क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि इनके द्वारा किसी को अनिष्ट हो।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शनि ग्रह यदि कहीं रोहिणी शंकट भेदन कर दे तो पृथ्वी पर बारह वर्ष घोर दुर्भिक्ष पड़ जाये और प्राणियों का बचना ही कठिन हो जाये। शनि ग्रह जब रोहिणी का भेदन कर बढ़ जाता है, तब यह योग आता है। यह योग महाराज दशरथ के समय में आने वाला था। जब ज्योतिषियों ने महाराज दशरथ को बताया कि यदि शनि का योग आ जायेगा तो प्रजा अन्न-जल के बिना तड़प-तड़प कर मर जायेगी। प्रजा को इस कष्ट से बचाने के लिए महाराज दशरथ अपने रथ पर

सवार होकर नक्षत्र मण्डल में पहुंचे पहले तो महाराज दशरथ ने शनि देवता को नित्य की भांति प्रणाम किया और बाद में क्षत्रिय-धर्म के अनुसार उनसे युद्ध करते हुए उन पर संहारस्त्र का सधान किया। शनि देवता महाराज की कर्त्तव्यनिष्ठा से परम प्रसन्न हुए और उनसे वर मागने के लिए कहा। शनि देव की कृपा देखकर महाराज को रोमाच आ गया उन्होने रथ में धनुष डाल दिया और उनकी पूजा की। उसके बाद सरस्वती तथा गणेश का ध्यान कर स्त्रोत की रचना की। इस स्तुति से शनि देवता संतुष्ट हो गये तथा बाद में महाराज दशरथ ने वर मांगा कि जब तक सूर्य, नक्षत्र आदि विद्यमान हैं, तब तक आप शंकट-भेदन न करें। व भगवन् देवता, मानव, पशु-पक्षी, किसी को आप कष्ट न दें। शनि देवता ने एक शर्त के साथ यह वरदान भी दे दिया शर्त यह थी कि यदि किसी की कुण्डली या गोचर में मृत्यु स्थान, जन्म स्थान अथवा चतुर्थ स्थान में मैं रहूं, तब मैं उसे मृत्यु का कष्ट दे सकता हूं किंतु यदि वह मेरी प्रतिमा की पूजा करेगा या तुम्हारे द्वारा किये गये स्रोत्र पाठ का पाठन करेगा तो उसे मैं कभी पीड़ा नहीं दूंगा।

शनि के अधिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता यम हैं। इनका वर्ण कृष्ण, वाहन गिद्ध तथा रथ लोहे का बना हुआ है। यह एक-एक राशि में तीस-तीस महीने रहते हैं यह मकर और कुंभ राशि का स्वामी है तथा इनकी महादशा 11 वर्ष की होती है। इनकी शांति के लिए मृत्युजंय जप, नीलम-धारण तथा ब्राह्मण को तिल, उड़द भैंस, लोहा, तेल, काला वस्त्र, नीलम, काली, गौ, जूता, कस्तूरी और स्वर्ण का दान देना चाहिए।

इसके जप के लिए वैदिक मंत्र-

'ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शय्योरभि स्त्रवन्तु नः॥'

पौराणिक मंत्र–

नीलाअन्चनसमाभांस रविपुत्र यमाग्रजम्।

छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामी शनैश्चरम्॥

बीज मत्र

'ओ३ प्रां प्रीं प्रौ सः शनैश्चराय नमः।'

सामान्य मंत्र -

'ओ३म् शं शनैश्चराव नमः।'

इनमें किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्याकाल तथा कुल संख्या 23,000 होनी चाहिए।

उत्पत्ति–सभी पुराणो में शनि की उत्पत्ति छाया के गर्भ से व सूर्य के पुत्र के रूप में प्रदर्शित की गई है। आदि देव त्रयी (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) में भगवान शकर ने सृष्टि के नियमन व उसे अनुशासित करने हेतु गणों का जब प्रादुर्भाव किया तब भगवान भास्कर की एक पत्नी छाया के गर्भ से 9 पुत्रों ने जन्म लिया। उसमें शनि व यम ये भयोगतपादक दैवी शक्तियों के रूप में प्रकट हुये। शनि बड़े पुत्र हैं यम इनके अनुज हैं। सृष्टि को दण्डित करने का काम शनि और संहार का काम यम ने लिया। दोनो ही शिव की सेवा में दत्तचित्त होने से शिवोपासना से नियंत्रित रहते हैं। ये दोनों कार्य शिवशक्ति से ही इन्हें प्राप्त हैं।

गाथाएं–शनि के बारे में अनेक गाथाएं व किंवदन्तियां प्रचलित हैं। 1. शनि एवं हरिशचन्द्र 2. शनि एवं दशरथ, 3. शनि एवं विक्रमादित्य, 4. शनि एवं नल, 5. शनि एवं पिप्लाद मुनि, 6. शनि एवं श्री हनुमान 7. शनि एवं पाण्डेय, 8. शनि व शकर का युद्ध। अलग-अलग पुराणों में अन्य भी भिन्न भिन्न गाथाएं दृष्टिगोचर होती हैं।

पुराणों की कथाओं से मन्तव्य–प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शारीरिक, कष्ट, अर्थहीनता, मानहानि, काम में रुकावटें, पलायन, निष्कासन, कभी कारावास, दरिद्रता, विनम्र शत्रुभय रोग आदि दुःखद स्थितियां आती हैं, यह ध्रुव सत्य है इनका निवारणकर्ता भी है और इसके कारण शनि का हाथ किसी न किसी रूप में रहता है। इसकी प्रसन्नता व शुभ ग्रह संबंध से वैभव, ऐश्वर्य और धन धान्य से भी समृद्धि आती है। अतः इन कथाओं का ज्यादातर मन्तव्य है जगत् में अचानक आई आपत्तियों का निराकरण और जीवन को सुव्यवस्थित करना है।

जगत् में मानव के जीवन में सच्चे और झूठे का भेद समझाने की शक्ति यह शनि का विशेष गुण है। क्योंकि विपत्ति, कष्ट और निर्धनता ये सबसे बड़े गुरु व शिक्षक हैं। जब तक शनि की सीमा से प्राणी बाहर नहीं होता ससार में उन्नति सभव नहीं है।

शनि दृष्टि–पुराणों में इसकी दृष्टि भयावह है। ऐसे वर्णन मिलते हैं। इसकी दृष्टि अपने घर से तीसरे, सातवें और दसवें स्थान पर पूर्ण मानी गई है वैसे एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद, दृष्टियां भी काम पूर्णतया करती हैं। शनि जी की गाथाओं में आता है, "मेरी दृष्टि बुरी है, राजा को पूजा का करूं अकाजा"।

आचार्य वराह मिहिर ने तो शनैश्चराध्याय लिखा है। उसमें शनि विषमयी दृष्टि का वर्णन है। 1. पिता सूर्य पर दृष्टि पर पड़ी तो कुष्ठ रोग हो गया 2. माता पार्वती के पुत्र पर पड़ी तो पुत्र मस्तक कट गया जिससे गज मुख का जन्म हुआ। 3. सूर्य के सारथी पर पड़ी तो वह पंगु हो गया तथा उसके घोड़े अंधे हो गये। ऐसी अनेक

कथाए दृष्टि के सबंध में विख्यात हैं। इसका कारण ब्रह्म 'वैवर्तपुराण' में इनकी पत्नी का श्राप है। तब से शनि प्राय: अधोदृष्टि से व्यवहार करते है शनि को पुराणो में विष्णु भक्त बताया गया है। अत: इनकी शक्ति से कृपा दृष्टि लोगों को मालामाल कर देती है। शनि को धनप्रदाता ग्रह माना गया है यह आनंद व सुख सर्जक दृष्टि भी शुभ संबंध से देते हैं।

शनि मे त्यागमयी प्रवृत्ति होने से त्यागी, वैरागी व आध्यात्मिक लोग शनि प्रभाव से पूर्ण पाये जाते हैं। अतः यह केवल दु:ख ही नहीं सुख का सर्जक भी है। शनि जहां बैठता है वहा सुख करता है और जहा देखता है बिगाड़ करता है। यह एकान्त प्रिय है सदा उदासीन रहता है।

शनि पनौती—शनि चक्र में यह सबसे दूर का ग्रह है। इसकी एक राशि में परिक्रमा 29 वर्ष 5 मास 27 दिन 5 घटी मे पूर्ण होती है। इसकी मध्यम गति 2 कला, 1 विकला, दैनिक गति 3 से 6 कला तक होती है। दक्षिण ओर 2 अंश 49 कला रहता है। यह .40 दिन वक्री रहता है तथा वक्री होते समय और मार्गी होते समय 5 दिन सम्मित रहता है। यह बहुत चमकीला तथा प्रकाशमान नहीं है। इसकी गति मंद हैं इसकी पनोती ढ़ाई वर्ष की है। 30 मास में एक राशि बदलता है।

शनि का रंग—मत्स्य पुराण मे कृष्णवर्णी शनि को नीलात्जनसम का वर्णन किया गया है। मनोविज्ञान के आधार पर नीला रंग बल पौरुष और वीर भाव का प्रतीक है। हमारे सिर पर विस्तृत आकाश नील वर्ण है। अत: शनि नीले रंग का होता है। नीला रंग सहिष्णुता का प्रतीक है। यह सर्वव्यापक रग होने से नीले रग वाले पौरुष के प्रतीक होते है। यह नाटा भी है और कहीं लम्बा कद भी मिलता है। अत: नीलकण्ठ शिव शनि के आराध्य देव हैं। शिव भक्ति से शनि प्रसन्न होते हैं।

शनि का बलवत्ता—इसके मित्र ग्रह बुध, राहु, शुक्र हैं। समग्रह गुरु है। शत्रु सूर्य, चंद्र, मगल है। दशम मे शनि कारक है। षष्ठ व आठवें द्वादश का कारक है। तुला, मकर व कुंभ राशि मे, स्त्रियो के स्थान मे, विषुवृत के दक्षिण अयन में, द्रेषाण में स्वगृह में, शनिवार को, अपनी दिशा मे, दिन के अंत में राशि के अंत भाग मे, युद्ध समय में, कृष्णपक्ष मे वक्री होने के समय किसी भी स्थान में शनि बलवान होता है। यह मंगल से दूषित होता है। शिशिर इसकी प्रिय ऋतु है। शनि मूल त्रिकोण कुंभ शनि का उच्च तुला के 20 अंश तक शनि का मेष में नीच का स्वगृह मकर और कुंभ है। वृषभ व तुला लग्नो में यह प्रधान ग्रह है।

पश्चिम दिशा मे इसका वास है। 12वे भाव में शनि हर्षबली और 7वे मे दिग्बली होता है।

रोगों का कारकतत्त्व—दात, दाहिना कान, चौथे दिन का बुखार, शीत ज्वर,

कोढ़ रक्तपित्त क्षय, दाद-फोड़े, कामला, अभ्रगवायु, कम्प, निरर्थक भय, पागलपन जलोदर, घुटनों के रोग, सन्धिवात, अतिरक्तस्राव, हड्डी टूटना, लकवा, स्नायु दौर्बल्य गुप्तेन्द्रिय रोग, व्यसन, गूंगापन, पसीने की दुर्गंध के रोग, हाथी पांव व्यसन होते हैं।

अन्य कारकतत्त्व—बैंक, ब्याज, धीरण धारण का धंधा, कारखानें, मशीनरी के कार्य, आध्यात्म चिंतन, भूगर्भ, मिल मालिक भागीदारी, प्रेस, कोयला, कंपनिया, कालेधन, खदानें, बीमा, लोहे की चीजे, तेल के व्यापारी, वैरागी, कृषि विद्यालय, पुरात्व, स्नायुशास्त्र, न्यायालय, नगरनिगम, विधानसभा, जमींदार, स्मगलर, छोटे भाई बहिन जेल विदेश, मंत्री इजैक्शन, नीच वर्ग, हड्डियो के डॉक्टर, झूठ बोलना, भ्रमण पतन तामसवृत्ति बुरे धंधे आदि।

शनि का स्वरूप—पंचांगों में शनि की दोनों राशियों के दो स्वरूप हैं। मकर में मगरमच्छ और कुंभ में घड़ा हाथ में लिये पुरुष बताया गया है। अतः मगरमच्छ दुःख का प्रतीक है तो पुरुष अमृत तथा धन पौरुष का प्रतीक है।

मकर लग्न में जन्में जातक का कद मध्यम लम्बा या नाटा होगा। शनि बलवान है तो लंबा कद होता है। रंग गेहुंआ या कालाश लिये हुए। नाक और मुंह कुछ बड़ा व चौड़ा। दांत चौड़े सुन्दर नेत्र आखों की भौंहों पर बड़े-बड़े बाल हो सीने पर भी बड़े-बड़े बाल हो। सिर बड़ा तथा सीना चौड़ा हो। बड़े होने पर कुछ झुक कर चलें। मकर से पैर तक भाग पतला होगा।

कुंभ में प्रायः लम्बा कद। रंग गेहुंआ होठ मोटे गाल फूले हुए, कूल्हों व नितम्ब का हिस्सा भारी हो मोटी गरदन, सिर में गंजापन भी जल्द आवें। घड़े के आकार का शरीर।

ये लोग भौतिक उन्नति में अधिक विश्वास करते हैं। गुप्त शक्ति हो। गैर समझ खड़ी कर देते है। छिपकर पाप करते हैं। धन के लोभी होते हैं। पर परिश्रमी अधिक होते है। प्रबल महत्त्वाकांक्षी होते है। उत्साही व जिम्मेदार होते है। मानसिक व आत्मिक शक्ति तीव्र होती है। मनोरंजन के शौकीन सुगंधित पदार्थों के शौकीन होते हैं। कठिनाइयों का सामना करना, श्रम व सेवा का ठोस भाव इनमें पाया जाता है। दूसरों को चोट पहुंचाने में दक्ष होते है। विचारशील होते हैं पर जब तक कोई छेडे नहीं शांत रहते है। धर्म भीरू होते हैं। नवीन आविष्कार देने वाले होते हैं।

वायु तत्व प्रधान होते हैं बाहरी आवरण से धार्मिक पर पुण्य कर्म व ईश्वर के प्रति निष्ठा भी होती है। घूमने के शौकीन भोजन के बाद शीघ्र आराम के इच्छुक उच्चाभिलाषी अपना पक्ष कमजोर देखें तो नम्र भी हो जावें। लज्जाहीन होते हैं। स्वभाव में ओछापन पाया जाता है। नीच वर्ग से प्रीतिवान होते हैं। स्मरण शक्ति प्रबल होती है। कोई इनका नुकसान करें तो बदला लेने में नहीं चूकते हैं। मन से डरपोक

बाहर से अभिमानी होते हैं। दूसरों को ठगने में रुचि होती है। अपना काम निकालने के लिए यह कुछ भी कर सकते हैं। खरी-खोटी कहने में हिचकते नहीं हैं। ऐसे जातक भावुक भी होते है। आवश्यकता हो तो ही काम करते है। जातक धन की व्यवस्था मे प्राय: असफल रहते हैं, पर बाहरी चमक-दमक में विश्वास नहीं रखते हैं। किसी भी काम को परिश्रम से पूरा करना इनकी विशेषता होती है पर विश्वास पात्र कम बनते हैं। इनकी आकस्मिक रूप से उन्नति और अवनति होती रहती है। प्राय: संतान पक्ष की इनको चिता सताती रहती है। स्त्रियों से व्यवहार भी मुसाफिरी जैसा रहता है। पर ऐसे जातक अधीनस्थ लोगों से काम कराने मे चतुर होते हैं। हर काम में सावधानी बरतते है। सभी इनकी प्रशंसा करें इसके ये इच्छुक होते हैं। प्रशासक से काम भी निकाल लेते हैं।

शनि के अचूक फल

1. शनि की दृष्टि अपने घर के सिवाय सर्वत्र हानि करती है।
2. छठें और आठवें तथा बारहवें भाव का कारक शनि इन भावों में हो तो लाभ प्रदान करेगा।
3. आठवें भाव में शनि नीच का हो तो धनपति बनता है। शनि नीच का होकर वक्री हो तो करोड़ो का स्वामी बनायेगा।
4. शनि, मीन, मकर, तुला व कुंभ राशि में लग्नस्थ हो तो व्यक्ति चिंतनशील, सुखी एवं ख्याति प्राप्त होता है। जातक का भाग्योदय मंद गति से होता है।
5. वृष लग्न मे शनि नवम या दशम भाव में हो तो राजयोग बनेगा। ऐसा शनि सूर्य व बुध षष्ठ सबंध में से कोई सबंध कर ले तो अति योगप्रद होगा। अगर संयोग की जन्म राशि भी मकर या कुभ हो तो उसको जब ढैया पनोती आयेगी वह लाभप्रद होगी। यदि अनिष्ट का कुछ प्रभाव गोचर से बनाता है। तो वह अंत में होगा, क्योंकि राजयोगकारी गृह प्रारभ का प्रभाव प्रबल होता है।
6. वर्ष प्रवेश के लग्न वृष या तुला हो तो शनि शुभ फल देगा। यदि पनोती चल रही हो तो भी नाम पात्र का कष्ट होगा।
7. शुक्र+शनि में अभिन्न मित्रता है। अत: वृष या तुलालग्न में शनि शुभ फल प्रदान करेगा।
8. वर्ष में वृषलग्न हो और जलराशि मकर हो तो धनु व मीन का शनि अनिष्टप्रद रहेगा। पर मकर व कुम्भ का शनि शुभप्रद रहेगा।
9. जन्म या वर्ष में वृषलग्न हो और शनि+गुरु योग बनता हो या शनि की गुरु से प्रतियुति हो तो भाग्यनाशक योग होगा।

10. वृष या तुलालग्न हो और विंशोतरी शनि की महादशा चल रही हो साथ में पनोती भी आ जाये तो भी वह अधिक अनष्टिप्रद नहीं होगी।
11. शनि में शुक्र की महादशा या शुक्र में शनि की दशा हमेशा अनिष्टप्रद होगी
12. नीचस्थ या वक्री गोचर का शनि जब जन्म राशिगत हो तो अनिष्टप्रद होगी।
13. शनि प्राय: राशि के अंत में फल देता है। सिंह लग्नस्थ शनि मंगल से दूषित हो तो अपघात, आकस्मिक मृत्यु, कारावास का भय होता है या रिश्वत के आरोप में पकड़ा जायें।
14. शनि+सूर्य का योग पितृस्थान में पिता से द्वेष व शत्रुता बढ़ाता है।
15. चद्र+शनि युति कर्क राशि में उत्साह हीनता व व्यसन देती है। चंद्र+शनि युति सिंह राशि मे बड़ों से विवाद कराती है। चंद्र+शनि युति मेष राशि में झगड़े करवाती है।
16. चंद्र+शनि युति अनिष्टप्रद होती है। इससे जीवन के उत्साह, ओज, कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है। यह यश रोकता है।
17. सूर्य से 5, 6, 8, 9वें भाव में राशि पर शनि हो तो अनिष्टकारी होगा।
18. जन्म में शनि स्थित राशि में या उससे छठे, आठवें स्थान या त्रिकोण में गोचर का गुरु आये तो अनिष्ट करेगा।
19. जन्मकालिक सूर्य से सप्तम स्थान पर गोचर का शनि आयें तो रोग ग्रस्त करेगा।
20. जन्मकालीन बुध तथा चंद्रमा को यदि गोचर का शनि अपनी दसवीं दृष्टि से देखे तो अनिष्ट अवश्य करेगा।
21. जन्म कालिक मंगल तथा शनि स्थिति राशियों पर अथवा उससे सप्तम स्थान की राशि पर ग्रहण आये तो जीवन मे संकट आतें हैं।
22. अष्टमेश स्थित राशि पर गोचर का शनि विशेष अनिष्ट करता है।
23. जन्म की विंशोतरी दशा से चौथी दशा शनि की हो तो अनिष्टप्रद होती है।
24. मीन, तुला और धनु राशि का शनि लग्न में हो तो जातक समृद्धशाली होता है।
25. लग्न का शनि राशि 1, 2, 5, 10 का हो या 4, 8, 12 राशि का हो तो भाषण शक्ति में बाधा प्रदान करेगा।
26. शनि चतुर्थेश होकर दशम भाव में बैठे तो मनुष्य छोटी स्थिति से उठकर महान् पदवी प्राप्त करेगा। शनि लग्नेश या अष्टमेश होकर बली हो तो दीर्घसुख देगा।
27. शनि की दृष्टि द्वितीय भाव, भावेश, पचम भाव भावेश अथवा बुध पर हो तो अल्प विद्या या विघ्न युक्त विद्या होगी।

28. एकादश भवन में स्थित शनि मनुष्य की मृत्यु सन्निपात व स्नायु रोगों से कराता है।
29. मकर अथवा कुंभ लग्न का स्वामी शनि यदि कुण्डली में पीडित हो तो जघाओ में कष्ट देगा।
30. सप्तमेश शनि हो और सप्तम भाव तथा शुक्र पर इसकी शुभ दृष्टि हो तो जातक का विवाह देरी से होता है।
31. पचमेश शनि बलवान हो तो लड़कियों की भरमार रहती है।
32. शनि यदि चंद्र पर अपनी दृष्टि का प्रभाव डाले तो जातक वैरागी होगा।
33. चतुर्थेश शनि बलवान हो तो जातक को जमीन जायदाद का सुख प्राप्त होगा।
34. नीच राशि में शनि प्रायः नौकरी करवाता है।
35. शनि+सूर्य युति पिता पुत्रो में मनोमालिन्य रखती है। अलग फल होते हैं, पर अष्टम भाव में दरिद्रता बनती है यदि युति पिता व पुत्रों में से एक को हानि देती है।
36. शनि+चंद्र युति का योग माता-पुत्र में मनोमालिन्य देता है पर अलग भावों में अलग फल है फिर भी अष्टम भाव में जलोदर योग बनता है।
37. शनि+मंगल की युति यह भी भयंकर अवरोध योग है। अलग अलग भावों में अलग पर इसके होने से सम्पत्ति नष्ट होती है।
38. शनि बुध युति योग इसमे व्यक्ति अन्वेषक होता है, पर जातक के निर्णय लेने में अस्थिरता रहती है। अष्टम स्थान में यह युति दीर्घायुज बनती है।
39. शनि गुरु युति योग इसके विचित्र परिणाम होते हैं। सुमश, सम्पत्ति व संतति में से एक का अभाव रहेगा वंशश्रम की ज्यादा संभावना है।
40. शनि तथा राहु युति योग होने से महाविचित्र परिणाम प्राप्त होते हैं। आयु के 42वें वर्ष मे जातक का भाग्योदय होता है। अकस्मात् धन प्राप्ति व हानि होती है।

उपचार

1. महामृत्युंजय जप या शिव का जाप करें।
2. अमोघ शिवकवच का पाठ करें।
3. शनि संबधी व्रत व कथा पढें।
4. नीलम रत्न तथा पन्ना भी धारण करे। ये रत्न 5 वर्ष धारण करने के बाद प्रभावहीन हो जाते हैं।

5. मछलियों को आटे की गोलियां चुगाए।
6. अपने खाने का अंतिम ग्रास बचाकर उसे कौवे को दें।
7. शनि संबंधी दान दें (उड़द, लोहा, तेल, चमड़ा, पत्थर, शराब, स्प्रिरिट)
8. नित्य कीडी नगरा सींचे।
9. हर शनि तथा मंगलवार को काले कुत्तों को मीठा दें।
10. काले कुत्ते को तेल में चुपड़ी रोटी पर मिष्टान रखकर हर शनिवार को खिलाए।
11. दशरथकृत शनि स्रोत का पाठ करें।
12. नित्य सूर्योदय के समय सूर्य दर्शन करते समय यह श्लोक 7 बार पढ़े।
सूर्यप्रुभो दीर्घदेहो विशलादा शिनप्रिरा: मंदचार: प्रसन्नात्मा पीड़ा दहतु में शनि
13. श्री वीर भगवान ताड़क का प्रयोग करें।
14. शनिवार को अपने हाथ के नाप का 19 हाथ काला धागा श्री माला बनाकर पहनें।
15. शनि पाताल क्रिया करें।
16. शनिवार को नक्षरों और काले कुत्तें को लड्डू खिलाएं।
17. प्रत्येक शनिवार को वट एवं पीपल के वृक्ष तले सूर्योदय से पूर्व कड़वे तेल का दीपक जलाकर शुद्ध दूध अर्पित करें।
18. व्रत का उद्यापन अवश्य करें, उसमें 33 ब्राह्मणों का भोजन कराना उत्तम होता है।
19. किसी शनिवार से आरम्भ करें 21 दिन में इस मंत्र को 23,000 बार जाप करें या कराएं।

ओ३म् प्रा प्रीं प्रौं स शनैश्चराय नमः।

अत में शनि की वस्तुओ को दान मे दें तथा हवन करे।

20. वीर विक्रमादित्य व शनि की कथा का रोज पाठ करें।

❑❑❑

शनि का खगोलीय स्वरूप

बृहस्पति के बाद बड़े ग्रहों में शनि का स्थान है। नील वर्ण का यह ग्रह सूर्य से 1,42,60,00,00 कि.मी. की दूरी पर है। शनैःचर अर्थात् मन्द गति से चलने वाला यह ग्रह 29 वर्षों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। शनि आकार में केवल बृहस्पति से ही छोटा है। इसका व्यास 1,20,500 कि.मी. है। इसका गुरुत्व पृथ्वी के गुरुत्व से 65 गुणा अधिक है। नौ चद्रमा शनि ग्रह की परिक्रमा करते हैं उनमें से छठा चंद्र मन्दी सबसे बडा होता है। शनि ग्रह अस्त होने के 3 दिन बाद उदय होता है। उदय के 135 दिन मार्गी होता है। मार्गी के 105 दिन बाद पश्चिम में पुनः अस्त हो जाता है। शनि को काण, अर्कपुत्र छायात्मक, असित, नील, मन्द, खेज आदि नाम दिये गये हैं।

शनि की गति—शनि ग्रह सूर्य की परिक्रमा 29 वर्ष 5 महीने 16 दिन, 23 घण्टा और 16 मिनट में करता है। यह अपनी धुरी पर 17 घण्टा 14 मिनट 24 सेकेंड में एक चक्कर लगाता है। स्थूल मान से यह एक राशि पर 30 महीना, एक नक्षत्र पर 400 दि और एक नक्षत्र पाद पर 100 दिन रहता है। यह प्रति वर्ष चार महीने वक्री और आठ महीने मार्गी रहता है। सूर्य से 15 डिग्री अंश की दूरी पर शनि ग्रह अस्त हो जाता है। अस्त होने के 38 दिन बाद यह उदय होता है। उदय के 135 दिन बाद मार्गी होता है और मार्गी के 105 दिन बाद पश्चिम दिशा में पुनः अस्त हो जाता है। यह प्रायः 140 दिन तक भी वक्री रह जाता है तथा वक्री होने के 5 दिन आगे या पीछे तक यह स्थिर रहता है

गणितागत स्पष्टीकरण से जब यह सूर्य से चौथी राशि को समाप्त करता है तो वक्री हो जाता है। जब वक्री से 120 डिग्री अंश चलता है तो मार्गी हो जाता है। जब इसकी गति 7/45 की होती है। तब यह अतिचारी हो जाता है। सूर्य से दूसरी और बारहवीं राशि पर शीघ्रगामी, तीसरी और ग्यारहवीं पर समाचारी, चौथी पर मन्दचारी, पांचवी और छठी पर वक्री, सातवीं और आठवीं पर अति वक्री तथा नवमी और दसवीं पर कुटिल गति वाला होता है।

❑❑❑

मकरलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

मकरलग्न का स्वरूप

मन्दाधिपस्तमी भौमी याम्येट् च निशि वीर्यवान्॥19॥
पृष्ठोदयी बृहद्गात्रः कर्बुरो वनभूचरः।
आदौ चतुष्पदोऽन्ते तु विपदो जलगो मतः॥20॥

—बृहत्पाराशरहोराशास्त्र अ. 4/श्लो. 20

तमोगुणी, भूमितत्व, दक्षिणवासी, रात्रिबली, पृष्ठोदय, दीर्घ शरीर, चित्रवर्ण, वन और भूमिचारी, पूर्वार्धचतुष्पद और उत्तरार्द्ध पदहीन और जलचर है, इसका स्वामी शनि है।।19-20।।

नित्यं लालयति स्वदारतनयान् धर्मध्वजोऽधः कृशः,
स्वक्षः क्षामकटिर्गृहीतवचनः सौभाग्ययुक्तोऽलसः।
शीतालुर्मनुजोऽटनश्च मकरे सत्वाधिकः काव्यविल्,
लुब्धोऽगम्यजरांगनासु निरतः संत्यक्त लज्जोऽघृणाः॥10॥

—बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 10

मकर राशि में चंद्रमा हो तो जातक अपने परिवार (स्त्री व पुत्र) का विशेषतया पालन करने वाला, मन से अधार्मिक होता हुआ भी प्रयोजन विशेष से धार्मिक क्रिया करने वाला तथा धार्मिक चिह्न धारण करने वाला, शरीर के निचले आधे हिस्से में अपेक्षाकृत पतलापन लिए हुए, सुन्दर आखों वाला, पतली कमर वाला, सदैव कहना मानने वाला अथवा कही हुई बात के रहस्य को अच्छी तरह समझ सकने वाला, सौभाग्यशाली, अलसाए तन, मन वाला अथवा कार्य में अकुशल, शीत सहन न करने वाला, भ्रमणशील, अधिक सत्व अर्थात् आत्मबल वाला, काव्यज्ञ, लोभ, नीची जाति की या अपने से बड़ी अवस्था वाली स्त्रियों के प्रति अनुरक्त, लज्जाहीन तथा दया रहित होता है।

मृगस्य लग्ने पुरुषोऽभिजातः स्यान्नीचकर्मा बहुभृत्यपुत्रः।

लुब्धोऽलसः स्वात्मपरः कृतघ्नः स्वकार्यनित्यो गुरुवत्सलश्च॥10॥

–वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.10/ पृ.289

यदि मकरलग्न के उदय काल मे जन्म हो तो मनुष्य अच्छे कुल में उत्पन्न होने वाला, नीच कार्य करने वाला, अनेक पुत्रों व नौकरों वाला, लोभी, आलसी स्वभाव वाला, अपनी प्रशंसा में रत रहने वाला, किए गए उपकार को भी न मानने वाला, सदैव स्वार्थ में रत रहने वाला, गुरुओं का प्रिय पात्र होता है।

ना कुम्भीरसमुद्भवश्च रमणीलोलः शठो दीनवाक्

–जातक पारिजात श्लो. 10/ पृ. 678

स्त्रियों से रमण करने के लिए चंचल चित्त, शठ दीनवाक् अर्थात् उसकी वाणी में दैन्य या मृदुता रहती है किन्तु चित्त शठता से भरा होता है।

व्यालम्बभुजः श्यामः प्रथितयशोरूपकान्तिशठः।

स्मितभाषी मकराद्ये स्त्रीषु जितो वल्गुचेष्टधनयुक्त॥

–सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में मकर राशि व मकर राशि का पहला द्रेष्काण हो तो जातक लम्बे हाथ वाला, कृष्ण वर्ण, विस्तृत यश वाला, सुन्दर रूपवान्, धूर्त, हंसमुख, स्त्रियों से पराजित, सुन्दर इच्छा वाला और धन से युक्त होता है।

मकरोदयसञ्जातो नीचकर्मा बहुप्रजः।

लुब्धोऽलसो विनष्टश्च स्वकार्येषु कृतोद्यमः॥

–मानसागरी अ. 1/ श्लो. 10

मकरलग्न में जन्म लेने वाले जातक लोभी, नीचकार्य में लीन, बहु उद्देश्य वाला तथा आलस्यमय, अपने कार्य में दक्ष, हठवादी, सहारक, स्वार्थ तत्व प्रधान रहे

भोजसंहिता

मकरलग्न का स्वामी शनि है। शनि पाप ग्रह है तथा उसका रंग काला होता है। इस राशि वाले व्यक्ति प्रायः काले, नाक चपटी, पैनी आखें, शरीर से ये पतले, फुर्तीले तथा कुछ लम्बे कद के होते हैं। यह चर संज्ञक व पृथ्वीतत्व प्रधान राशि है। इसका प्राकृतिक भाव उच्च पदाभिलाषी होता है। मकरलग्न वाले व्यक्तियों का स्वभाव उग्र होता है। इनके स्वभाव में उत्साह के साथ-साथ झगड़ालू प्रकृति भी होती है। क्रोध इनको धीरे धीरे आता है व शान्त भी देरी से होता है। जहा ये अपना पक्ष

कमजोर देखते हैं वहां पर ये नम्र भी हो जाते हैं। यदि आपका नाम 'भो' से प्रारंभ होता है तो आप उन व्यक्तियों में से एक हैं जो अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करते है। आप बहुत ही परिश्रमशील व उद्यमी व्यक्ति हैं। हिम्मत हारना व निराश होना आपने सीखा ही नहीं।

सामान्यतया मकरलग्न में उत्पन्न जातक शान्त तथा उदार प्रकृति के व्यक्ति होते हैं तथा अन्य जनों के प्रति उनके मन मे प्रेम तथा सहानुभूति का भाव विद्यमान रहता है। इसके मुख मण्डल पर विचारशीलता, शान्ति एवं गभीरता सदैव विद्यमान रहती है। ये अत्यन्त ही कर्मशील एवं परिश्रमी होते है फलतः सांसारिक महत्त्व के कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। इनमें कार्य करने की क्षमता प्रबल होती है तथा यही इनकी सफलता का रहस्य होता है। इनमें सेवा का भाव भी रहता है तथा समाज एव देश सेवा के प्रति ये उद्यत रहते हैं। ये साहसी एवं संघर्षशील होते हैं तथापि इनके मन में यदा-कदा उदासीनता के भाव की उत्पत्ति होती है जिससे सुख दुःख के समान भाव की अनुभूति करते हैं एवं त्यागमय जीवन व्यतीत करने के लिए य उत्सुक रहत हैं। इसक अतिरिक्त परिश्रमी एव अध्ययनशील होने के कारण ये अनुसधान, विज्ञान या शास्त्रीय विषयों का ज्ञान अर्जित करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक पहचान प्राप्त करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलशाली पुरुष होंगे आपमें आदर्शवादिता का भाव होगा तथा अपने आदर्शों पर चलने के लिए स्वतंत्र होंगे। आपके सभी कार्य बुद्धिमत्तापूर्वक सम्पन्न होंगे एवं उनमें आपको सफलता भी प्राप्त होगी। देश सेवा का भाव भी आपमें विद्यमान रहेगा तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्द्वियों से भी उदारता करेंगे फलतः वे भी आपसे प्रभावित होंगे। अतः आपके सद्‌गुणो से सभी लोग प्रभावित रहेंगे।

आप एक विद्वान पुरुष होगे तथा बुद्धिमत्तापूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करके धन वैभव एव सुख अर्जित करगे। सगीत के प्रति आपकी विशेष रुचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में परिश्रमपूर्वक कोई विशिष्ट उपलब्धि भी अर्जित कर सकते हैं। आप श्रेष्ठ कार्यों को करने मे रुचिशील होंगे तथा एक चतुर व्यक्ति के रूप मे जाने जाएगे। आपकी पुत्र संतति प्रसिद्ध रहेगी तथा उनसे आपको इच्छित सुख एव सहयोग मिलता रहेगा।

पिता के प्रति आपके मन मे पूर्ण सम्मान तथा आदर का भावना होगी तथा उनकी सेवा करने मे हमेशा तत्पर रहेगे। आपकी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एव लाभ अर्जित करके एक धनवान के रूप में सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे भौतिक तथा अन्य सुखों को भी आप अर्जित करेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक

इनका उपभोग करने में समर्थ होगे। आप युवावस्था में सघर्षशील रहेंगे परन्तु वृद्धावस्था में सुख एवं शांति प्राप्त करेंगे।

धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी। मित्र एवं बन्धु वर्ग के आप प्रिय होंगे तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। इस प्रकार आप विद्वान, उदार, शान्त एव पराक्रमी स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा स्व परिश्रम से धनैश्वर्य एवं वैभव अर्जित करके सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे।

यदि आपका जन्म अभिजित् नक्षत्र में है तथा आपका नाम ज व ख से प्रारम्भ होता है तो आपके अन्य भाई बहन भी हैं परन्तु उनसे सहायता की अपेक्षा हानि की सभावना अधिक है। जीवन में विनोदी स्वभाव बनाये रखना आपकी विशेषता है इसी विशेषता के कारण अपरिचित से अपरिचित व्यक्ति भी आपके मित्र बन जायेंगे। सार्वजनिक कार्यों में आप बढ़ चढ़कर हिस्सा लेंगे। आपका विवाहित जीवन पूर्णतः सुखी नहीं कहा जा सकता।

यदि आपका जन्म 14 जनवरी से 13 फरवरी के बीच में है तो आप व्यापारशील व्यक्ति होने के साथ-साथ रात्रि बली है। आपका मस्तिष्क सक्रिय है। शनि अन्य ग्रहों के बनिस्वत धीमी गति से चलता है तो आपका भाग्योदय शनै-शनैः होता है। आपका Rising Period 30 वर्ष की आयु के पश्चात् बनता है तथा 36 वर्ष के पश्चात् आपको भाग्य निर्माण तेजी से प्रारम्भ होना शुरू हो जाता है।

यदि आपका जन्म 26 अप्रैल से 25 मई के बीच (वैशाख महीने) मे है तो आप उन भाग्यशाली व्यक्तियों में से हैं जिनका नाम गौरव के साथ लिया जाता है आपकी गुप्तशक्तियों से बहुत कम लोग परिचित है आप विशिष्ट प्रभाव वाले होने से आपको राजकीय कार्यों मे शीघ्र सफलता मिल जायेगी।

आप जलचर राशि से सबंध रखने के कारण चचल व जल क्रीड़ाप्रिय व्यक्ति हैं। आप किसी भी बात पर निर्णय सोच-विचार कर धीरे-धीरे लेंगे। आप ऊची-ऊंची योजनाएं बनाने में सदा तत्पर रहते हैं, कमाते बहुत पर पास मे टिकता नहीं। हर समय द्रव्य का अभाव महसूस करते हैं। पत्नी व आपके विचारों में असमानताएं आपके विवाति सुख को कटुतर बनाने में सहायक हैं। आपके राशि चिह्न मगरमच्छ है। मगरमच्छ के आंसू वाली कहावत लोक प्रसिद्ध है। मगरमच्छ के आसू अन्दर से कुछ बाहर से कुछ। ऐसे व्यक्ति दीनस्वरूप व दयनीय स्थिति का बोध कराते हुए अन्तः [illegible] य बहुभोगी व विषयवासना से आसक्त रहने वाले व्यक्ति होते हैं। [illegible] शीघ्र आराम करने की इच्छा रहती है ये कहते कुछ हैं व करते कुछ। [illegible] अमिलनसार व भीड़ भाड़ से दूर रहना पसन्द करते है इनमें स्वार्थ

की प्रवृत्ति कुछ विशेष रहने के कारण इनको धार्मिक व राजनैतिक क्षेत्र में सफलताएं कम मिलती है। या तो ये अत्यधिक गोरे होंगे या काले। इसी प्रकार या तो ये कट्टर आस्तिक होंगे या फिर एकदम नास्तिक। यह विचार इनमें जन्माक्षर को देखकर बताया जा सकता है। शनि भय व भ्रांति को सूचक है। इसका रंग नीला व काला मिश्रित है। आपका जीवन रत्न नीलम है।

नक्षत्रानुसार फलादेश

भो जा जी	खा खी खू खे खो	गा गी
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा

चंद्रमा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में

वैश्वे विनीतो बहुमित्रधर्म,
युतः कृतज्ञः सुभगः शशांके।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा उत्तराषाढा नक्षत्र में स्थित हो तो जातक बहुत नम्र, बहुत मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ, भाग्यशाली होता है। उत्तराषाढ़ा सूर्य का नक्षत्र है जो कि चंद्रमा का मित्र है, इसलिए यह सब शुभ फल कहा है।

उत्तराषाढा के प्रथम पाद—उत्तराषाढा के प्रथम पाद मे यदि चंद्र जन्मकुण्डली में स्थित हो तो जातक राजा के समान होता है। यहां नक्षत्र पाद स्वामी गुरु है और नक्षत्र स्वामी सूर्य। चंद्रमा, सूर्य और गुरु तीनों राजकीय ग्रह हैं, अतः सूर्य और गुरु का चंद्र का प्रभाव राज्यसत्ता की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।

उत्तराषाढा के द्वितीय पाद—उत्तराषाढा के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा जन्मकुण्डली में स्थिति हो तो व्यक्ति मित्रों का विरोधी होता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी शनि बनता है जो कि चंद्र का शत्रु है और नक्षत्र स्वामी सूर्य का भी। अतः विरोध का भावना चंद्र में उत्पन्न हो सकती है।

उत्तराषाढा के तृतीय पाद—उत्तराषाढा के तृतीय पाद में यदि जन्मकुण्डली में स्थित हो तो व्यक्ति मान प्राप्त करता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी फिर शनि है। ग्रह कैसे मान दे सकता है। विचारणीय विषय है। केवल सूर्य तो मानप्रद है।

उत्तराषाढा के चतुर्थ पाद—उत्तराषाढा के चतुर्थ पाद में यदि जन्मकुण्डली में स्थित हो तो मनुष्य का धर्म में लगाव वाला होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी एक परम धार्मिक ग्रह गुरु है। जिसके प्रभाव द्वारा चंद्र का धार्मिक हो जाना सहज ही में समझा जा सकता है। नक्षत्र स्वामी भी धार्मिक अथवा सात्विक है, अतः यह भी इस दिशा में सहायक ही है, बाधक नहीं।

चंद्रमा श्रवण नक्षत्र में

उदारधीरः श्रुतवान्धनी च,
श्रीमान् प्रसिद्धः श्रवणे नरः स्याद्।

यदि जन्म सयम पर चंद्रमा श्रवण नक्षण में हो तो जातक उदार धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला धनी, ख्याति वाला होता है। श्रवण का स्वामी चंद्रमा होता है, अतः चद्रमा अपने ही नक्षत्र में स्थित होकर उपरोक्त शुभ करेगा लग्न होने से ख्याति और धन देगा, उदारता और धैर्य मानसिक गुणों से भी युक्त होगा, क्योंकि चद्रमा स्वय एक मानसिक ग्रह है। प्रकाशवान होने से जानकारी भी प्राप्त करवाएगा।

यदि आपका जन्म श्रवण नक्षत्र मे है तथा आपका नाम ग व गौ से प्रारम्भ होता है तो आपको पैतृक नुकसान व पिता से आपके किन्हीं कारणों से मनमुटाव रहेगा, आपको धन उद्यम से प्राप्त होगा। आप एकान्त प्रिय व्यक्ति होंगे आपके शत्रु बहुत होंगे तथा मित्रो की भी कमी आपको नहीं रहेगी। परन्तु शत्रु आपसे दबेंगे तथा अन्त में विजय आपकी रहेगी

श्रवण के प्रथम पाद—श्रवण के प्रथम पाद में यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य शुभ मान को प्राप्त होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी मगल होता है और नक्षत्र का स्वामी स्वयं चद्र अतः मंगल जो चंद्र का मित्र है उसके मान आदि की वृद्धि में सहायक होगा।

श्रवण के द्वितीय पाद—श्रवण के द्वितीय पाद मे यदि जन्म समय पर चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति शुभ गुणों से युक्त होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी शुक्र है। प्रबल चद्र शुक्र से उसकी शुभता को ग्रहण कर और भी अधिक गुणी तथा शुभ होने का परिचय देगा।

श्रवण के तृतीय पाद—श्रवण के तृतीय पाद में यदि जन्म समय पर चद्रमा स्थित हो तो जातक विद्वान् होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी बुध है जो विद्वान है और अपनी विद्वत्ता को चद्र के प्रति भी देगा

श्रवण के चतुर्थ पाद—श्रवण के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय पर चद्रमा स्थित हो तो जातक धार्मिक होता है। नक्षत्र का स्वामी भी चंद्र है नक्षत्र पाद का स्वामी भी चंद्र है और इनमें बैठने वाला ग्रह भी चंद्र है। स्पष्ट है कि ऐसी स्थिति में चंद्र अपने उत्कृष्ट गुणों का परिचय देगा जिनमें एक धार्मिक होना भी होगा।

चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में

दातार्थ शूरो धनवांस्त्वरोगी,
गीतप्रियो वासव भे प्रजातः

यदि जन्म समय पर चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और गीतप्रिय होता है।

धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी मंगल होता है। मगल चंद्रमा का मित्र है अतः मित्र के नक्षत्र में स्थित होकर चद्रमा धनी और दाता और भोगी होगा ही। मंगल अपनी शूरवीरता भी देगा और भोगों की प्रवृत्ति भी। गीतप्रिय चद्रमा के अपने स्वभाव के कारण होगा। सम्भवतया गायक न होगा।

धनिष्ठा के प्रथम पाद—धनिष्ठा के प्रथम पाद में यदि जन्म समय पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति लम्बी आयु वाला होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी सूर्य है जो चंद्र के बल पाकर आयु दे सकता है, नहीं तो सूर्य मगल का सम्मिलित प्रभाव से आयु को घटाने वाला है, बढाने वाला नहीं।

धनिष्ठा के द्वितीय पाद—धनिष्ठा के द्वितीय पाद में यदि जन्म पर चंद्र स्थित हो तो जातक पण्डित होता है नक्षत्र का स्वामी तर्कशील मंगल है और नक्षत्र पाद स्वामी बुद्धिमान बुध है। इसलिए इन विद्वत्तापूर्ण ग्रहों के प्रभाव के कारण लग्नरूप चद्रमा में पाण्डित्य का आना उपयुक्त ही है।

❑❑❑

नक्षत्र चरण, नक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु.	0/3/20/0	1	म.	ली.	0/16/40/0	1	सु	अ	0/30/0/0	1	गु.
चे.	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु	–	–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु	–	–	–	–
ला	0,13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं	-	–	–	–

वृष राशि											
3. कृत्तिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	मं	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1/6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	चू	1/23/20/0	4	च	–	–	–	–

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मगल)				6. आर्द्रा (राहु)				7. पुनर्वसु (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2/6/40/0	4	मं.	घ	2/13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ङ	2/16.40/0	3	श.	हा	2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.	–	–	–	–

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (गुरु)				8. पुष्य (शनि)				9. आश्लेषा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
	–	–	–	हे	3/10/0/0	2	बु.	डू	3/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
–	–	–	–	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	म.
मी	4/6/40/0	2	शु.
मू	4/10/0/0	3	बु.
मे	4/13/20/0	4	चं.

11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
मो	4/16/40/0	1	सू.
टा	4/20/0/0	2	बु.
टी	4/23/20/0	3	शु.
टू	4/26/40/0	4	म.

12 उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टे	4/30/0/0	1	गु.
–	–	–	–
–	–	–	–
-	–	–	–

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.
पा	5/6/40/0	3	श.
पी.	5/10/0/0	4	गु.
–	–	–	–

13. हस्त (चंद्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
पू	5/13/20/0	1	मं.
ष	5/16/40/0	2	शु.
ण	5/20/0/0	3	बु.
ठ	5/23/20/0	4	चं.

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
पे	5/26/40/0	1	सू.
पे	5/30/0/0	2	बु.
–	–	–	–
–	-	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.
री	6/6/40/0	4	मं.
–	–	–	–
–	–	–	–

15. स्वाति (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
रू	6/10/0/0	1	गु.
रे	6/13/20/0	2	श.
रो	6/16/40/0	3	श.
ता	6/20/0/0	4	गु.

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ती	6/23/20/0	1	म.
तू	6/26/40/0	2	शु.
ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.
–		–	–
–	–	–	–
–	–	–	–

17. अनुराधा (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
ना	7/6/40/0	1	सू.
नी	7/10/0/0	2	बु.
नू	7/13/20/0	3	शु.
ने	7/16/40/0	4	मं.

18. ज्येष्ठा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
नो	7/20/0/0	1	गु.
या	7/23/20/0	2	श.
यी	7/26/40/0	3	श.
यू	7/30/0/0	4	गु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.		–	–	–
यी	8/13/20/0	4	चं.	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रवण (चंद्र)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.
गे	10/6/40/0	4	मं.
—		—	·
	—	—	—

24. शतभिषा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
गो	10/10/0/0	1	गु.
सा	10/13/20/0	2	रा.
सी	10/16/40/0	3	रा.
सू	10/19/0/04	4	गु.

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
से	10/23/20/0	1	मं.
सो	10/26/40/0	2	शु.
दा	10/30/0/0	3	बु.
—	—	—	·

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.
—	—	—	—
—	—	—	—
—	—	·	—

27. उत्तराभाद्रपद (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
दु	11/6/40/4	1	सू.
थ	11/10/0/0	2	बु.
झ	11/13/20/0	3	शु.
ञ	11/16/40/0	4	गु.

28. रेवती (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
दे	11/20/0/0	1	गु.
दो	11/23/20/0	2	श.
चा	11/26/40/0	3	श.
ची	11/30/0/0	4	गु.

नक्षत्रों पर विशेष फलादेश

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युज्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चू,चे,चो ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्रिय	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3, हि. 1	केतु	7
2	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्रिय	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3	कृत्तिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रिय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड	सूर्य	6
3.	कृत्तिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु	सोना	गरुड़	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5	मृगशिरा	का की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6	आर्द्रा	कु,घ,ङ छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2, सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2, मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	ह,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि. 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10.	मघा	मा,मी मू,मा	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू 1 श्वा. 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14.	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हरिण	मंगल	7
15	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि. 3 सर्प 1	राहु	18
16	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	ये,यो,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1, हिरण 3	बुध	17
19	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि. 2, मूषक 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू., 1 स., 1 मू., 1 श्वान	शुक्र	20
21.	उ. षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ षा.	भो,जो,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू., 2 सि.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जा,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सि. 3, वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सु	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि., 3 मी	राहु	18
26	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी., 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्वा भा	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प, 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प, 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृत्तिका	अग्नि	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13.	हस्त	सूर्य	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व	मित्र
	16	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	स्व.
	20	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	स्व.	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21.	उ. षा.	विश्वेदेव	सूर्य	स्व.	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	स्व.	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	स्व.	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	स्व.	मित्र
कुंभ	25.	पू. भा.	अजकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	स्व.	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	स्व.	मित्र	मित्र
मीन	27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	स्व.	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

मकरलग्न पर अंशात्मक फलादेश

मकरलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराषाढ़ा
2. नक्षत्र पद—2
3. नक्षत्र अंश—9/3/20/0
4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—चतुष्पद
6. योनि—नकुल
7. गण—मनुष्य
8. नाड़ी—अन्त्य
9. नक्षत्र देवता—विश्वेदेवा
10. वर्णाक्षर—भो
11. वर्ग—मूषक
12. लग्न स्वामी—शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी—सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—'मित्रविरोधी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण में होने से आपको मित्रों का विरोध सहना पड़ेगा। उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश है तथा सूर्य का शत्रु है। शनि की दशा धनदायक व उन्नतिदायक होगी परन्तु सूर्य की दशा नेष्ट (प्रतिकूल) फल देगी।

यहा लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) मे है, कमज़ोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से उसका विकास रुका हुआ रहेगा। यहा लग्नेश शनि की दशा का अपेक्षित लाभ नहीं मिलेगा

मकरलग्न, अंश 1 से 2

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–नकुल
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**-विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**–भो
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'मित्रविरोधी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण में होने से आपको मित्रों का विरोध सहना पड़ेगा। उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश है तथा सूर्य का शत्रु है। शनि की दशा धनदायक व उन्नतिदायक होगी। परन्तु सूर्य की दशा नेष्ट (प्रतिकूल) फल देगी।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से **'उदित अंशों'** का है, बलवान है। जातक लग्न बली एव चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। शनि 20 अशों तक विशेष बलवान होता है।

मकरलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–नकुल
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**–भो
11. **वर्ग**–मूषक
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **प्रधान विशेषता**–'मित्रविरोधी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रो वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण मे होने से आपको मित्रों का विरोध सहना पड़ेगा। उत्तराषाढ़ा के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश है तथा सूर्य का शत्रु है। शनि की दशा धनदायक व उन्नतिदायक होगी। परन्तु सूर्य की दशा नेष्ट (प्रतिकूल) फल देगी।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान होता है।

मकरलग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराषाढ़ा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–9/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–नकुल
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विश्वेदेवा
10. **वर्णाक्षर**–जा
11. **वर्ग**–सिंह
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'मानी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के तृतीय चरण में होने से आप मान-सम्मान चाहने वाले 'यश पिपासु' व्यक्ति होंगे। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अतः शनि की दशा आपके लिए उन्नतिदायक व धनदायक साबित होगी पर सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से, लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहता है।

मकरलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–9/3/20/0 से 9/6/40/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–नकुल
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा
10. वर्णाक्षर–जा
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'मानी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा के तृतीय चरण में होने से आप मान-सम्मान चाहने वाले 'यशपिपासु' व्यक्ति होंगे। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अतः शनि की दशा आपके लिए उन्नतिदायक व धनदायक साबित होगी पर सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहता है।

मकरलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–9/3/20/0 से 9/6/40/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–नकुल
7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा
10. वर्णाक्षर–जा
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'मानी'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप मान-सम्मान चाहने वाले 'यशपिपासु' व्यक्ति होगे। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है। अत: शनि की दशा आपके लिए उन्नतिदायक व धनदायक साबित होगी पर सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी।

लग्न यहां पांच से छ: अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अशो तक विशेष बलवान रहता है

मकरलग्न, अंश 6 से 7

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–9/6/40/0 से 9/10/0/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–नकुल
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा
10. वर्णाक्षर–जी
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'धर्मरतो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एव नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपकी रुचि धर्म आध्यात्म के प्रति

विशेष होगी। उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है जो लग्नेश शनि का शत्रु है पर लग्न नक्षत्र स्वामी सूर्य का मित्र है। फलत यहां सूर्य और बृहस्पति की दशा इतना अनिष्ट फल नहीं देगी जितनी उनसे अपेक्षा है। शनि की दशा लाभप्रद रहेगी।

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहता है।

मकरलग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–9/6/40/0 से 9/10.0/0

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–नकुल **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–अन्त्य **9. नक्षत्र देवता**–विश्वेदेवा

10. वर्णाक्षर–जो **11. वर्ग**–सिंह

12. लग्न स्वामी–शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–सूर्य

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'धर्मरतो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एव नक्षत्र स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे होने से आपकी रुचि धर्म-आध्यात्म के प्रति विशेष होगी। उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है जो लग्नेश शनि का शत्रु है पर लग्न नक्षत्र स्वामी सूर्य का मित्र है। फलत: यहां सूर्य और बृहस्पति की दशा उतना अनिष्ट फल नहीं देगी जितनी उनसे अपेक्षा है। शनि की दशा लाभप्रद रहेगी।

यहा लग्न सात से आठ अशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि बीस अशों तक विशेष बलवान होता है।

मकरलग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–9/6/10/0 से 9/10/0/0

4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–नकुल
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा
10. वर्णाक्षर–जी
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'धर्मरतो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे होने से आपकी रुचि धर्म-आध्यात्म के प्रति विशेष होगी। उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण का स्वामी बृहस्पति है जो लग्नेश शनि का शत्रु है पर लग्न नक्षत्र स्वामी सूर्य का मित्र है। फलत यहा सूर्य और बृहस्पति की दशा इतना अनिष्ट फल नहीं देगी जितनी उससे अपेक्षा है। शनि की दशा लाभप्रद रहेगी।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों में **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराषाढ़ा
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–9/6/40/0 से 9/10/0/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–नकुल
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विश्वेदेवा
10. वर्णाक्षर–जी
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–सूर्य
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बृहस्पति
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'धर्मरतो'

उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का देवता विश्वेदेवा एवं स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक बहुत नम्र, अधिक मित्रों वाला, धार्मिक, कृतज्ञ एवं भाग्यशाली होता है। आपका जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपकी रुचि धर्म-आध्यात्म के प्रति विशेष होगी। उत्तराषाढ़ा के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है जो लग्नेश शनि का शत्रु है पर लग्न नक्षत्र स्वामी सूर्य का मित्र है। फलत यहां सूर्य एवं बृहस्पति की दशा इतनी अनिष्ट फल नहीं देगी जितनी उसे अपेक्षा है शनि की दशा लाभप्रद रहेगी।

यहां लग्न नौ से दस अंशों के भीतर **'उदित अंशों'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी क्योंकि शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र–श्रवण
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–9/13/2/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–कपि
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–विष्णु
10. वर्णाक्षर–खी
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी -शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–चंद्र
14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'शुभमानी'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का है। ऐसा जातक मान-सम्मान का इच्छुक एवं शुभ चिंतन करने वाला, आशावादी व्यक्ति होता है। श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। मंगल लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का मित्र है फलत: यहां चंद्र और मंगल की दशाएं शुभ फल देगी। लग्नेश शनि की दशा उन्नति दायक, धनदायक साबित होगी।

यहां लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि यहा बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 11 से 12

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–9/13/12/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु
10. **वर्णाक्षर**–खी
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'शुभमानी'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का है। ऐसा जातक मान-सम्मान का इच्छुक एवं शुभ चिंतन करने वाला, आशावादी व्यक्ति होता है। श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। मंगल लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का मित्र है। फलतः यहां चंद्र और मंगल की दशाएं शुभ फल देगी। लग्नेश शनि की दशा उन्नतिदायक, धनदायक साबित होगी

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। शनि की दशा अति उत्तम फल देगी क्योंकि शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान है।

मकरलग्न, अंश 12 से 13

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–9/13/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु
10. **वर्णाक्षर**–खी
11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'शुभमानी'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का है। ऐसा जातक मान सम्मान का इच्छुक एवं शुभ चिंतन करने वाला, आशावादी व्यक्ति होता है। श्रवण नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी मंगल है। मंगल लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का मित्र है। फलतः यहां चंद्र और मंगल की दशाएं शुभ फल देगी। लग्नेश शनि की दशा उन्नतिदायक, धनदायक साबित होगी।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान रहता है अतः शनि की दशा में जातक उन्नति की ओर विशेष रूप से आगे बढ़ेगा।

मकरलग्न, अंश 13 से 14

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–9/13/20/0 से 9/16/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु
10. **वर्णाक्षर**–खी
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'शुभगुणी'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के दूसरे चरण में होने के कारण आप शुभगुणों से युक्त सकारात्मक विचारों के व्यक्ति होंगे। श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश

शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का भी शत्रु है। फलतः शुक्र यहां इतना शुभ फल नहीं दे पायेगा। जितना देना चाहिए। शनि की दशा-अंतर्दशा में व्यक्ति उन्नति करेगा, धन कमायेगा एवं स्वस्थ रहेगा।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य है। **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। यहां शनि बीस अंशों तक विशेष बलवान है, अतः शुभफल ही देगा।

मकरलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र—श्रवण　　**2. नक्षत्र पद**—2

3. नक्षत्र अंश—9/13/12/0 से 9/16/40/0

4. वर्ण—वैश्य　　**5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—कपि　　**7. गण**—राक्षस

8. नाड़ी—अन्त्य　　**9. नक्षत्र देवता**—विष्णु

10. वर्णाक्षर—खू　　**11. वर्ग**—बिलाव

12. लग्न स्वामी—शनि　　**13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र　　**15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु　　**17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'शुभगुणी'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्मा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप शुभ गुणो से युक्त सकारात्मक विचारो के व्यक्ति होंगे श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का भी शत्रु है। फलतः शुक्र यहा इतना शुभ फल नहीं दे पायेगा जितना देना चाहिए। शनि की दशा अंतर्दशा में व्यक्ति उन्नति करेगा, धन कमायेगा एवं स्वस्थ रहेगा।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से **'आरोह अवस्था'** मे है पूर्ण बली है लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी। यहा शनि बीस अंशो तक विशेष बलवान रहेगा।

मकरलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र—श्रवण　　**2. नक्षत्र पद**—2

3. नक्षत्र अंश—9/13/12/0 से 9/16/40/0

4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—विष्णु
10. **वर्णाक्षर**—खू
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी** -शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'शुभगुणो'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप शुभगुणो से युक्त सकारात्मक विचारों के व्यक्ति होंगे। श्रवण नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्र का भी शत्रु है। फलतः शुक्र यहां इतना शुभ फल नहीं दे पायेगा जितना देना चाहिए। शनि की दशा-अंतर्दशा में व्यक्ति उन्नति करेगा, धन कमायेगा एवं स्वस्थ रहेगा।

यहां लग्न पन्द्रह से सोलह अंशो के भीतर होने से **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। शनि यहां बीस अशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 16 से 17

1. **लग्न नक्षत्र**—श्रवण
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—9/16/40/0 से 9/20/0/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—विष्णु
10. **वर्णाक्षर**—खे
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'विद्वान्'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपकी गणना समाज के विद्वान् व्यक्तियों में होगी। तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्रमा का भी शत्रु है। फलतः बुध की दशा इतनी शुभ फलदाई नहीं होगी जितनी बुध से यहां अपेक्षा की जा रही है। शनि की दशा-अंतर्दशा धन, यश व प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगी।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है, पूर्ण बली है। शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा

मकरलग्न, अंश 17 से 18

1. **लग्न नक्षत्र**—श्रवण
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—9/16/40/0 से 9/20/0/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—कपि
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—विष्णु
10. **वर्णाक्षर**—खे
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'विद्वान'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपकी गणना समाज के विद्वान् व्यक्तियों में होगी। तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्रमा का भी शत्रु है फलतः बुध की दशा इतनी शुभ फलदाई नहीं होगी जितनी बुध से यहां अपेक्षा की जा रही है शनि की दशा अंतर्दशा धन, यश व प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगी।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है पूर्ण बली है। शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 18 से 19

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–9/16/40/0 से 9/20/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु
10. **वर्णाक्षर**–खे
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'विद्वान्'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्य वाला, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपकी गणना समाज के विद्वान् व्यक्तियों में होगी। तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी चंद्रमा का भी शत्रु है। फलतः बुध की दशा इतनी शुभ फलदाई नहीं होगी जितनी बुध में यहा अपेक्षा की जा रही है। शनि की दशा-अंतर्दशा धन, यश व प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगी।

यहां लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था में है। शनि यहां बीस अंशों तक विशेष बलवान होगा।

मकरलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–9/20/0/0 से 9/23/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–चतुष्पद
6. **योनि**–कपि
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु
10. **वर्णाक्षर**–खो
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चंद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चद्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'धार्मिको'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चंद्रमा है। ऐसा जातक उदार, धैर्यशाली, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे होने के कारण आपकी धर्म एवं आध्यात्म में पूरी रुचि रहेगी। श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चद्रमा है तथा लग्न नक्षत्र का स्वामी भी चंद्रमा है। ऐसे मे चद्रमा की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। लग्नेश शनि की दशा–अतर्दशा में जातक धनवान, यशस्वी होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करेगा

यहां लग्न उन्नीस अंशों से बीस अंशों के भीतर होने से मध्य अवस्था मे है, शनि यहां बीस अंशो तक विशेष बलवान होगा। शनि मेष राशि के 20 अशों मे परम नीच का एव तुला राशि के 20 अंशो मे परम उच्च का होता है तथा कुम्भ राशि के 20 अशों तक मूल त्रिकोण का होगा। अत: यहां शुभाशुभ फल देने से शनि विशेष रूप से सक्षम है।

मकरलग्न, अंश 20 से 21

1. **लग्न नक्षत्र**–श्रवण

2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–9/20/0/0 से 9/23/20/0

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि** -कपि

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–विष्णु

10. **वर्णाक्षर**-खो

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–चद्र

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'धार्मिको'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एव स्वामी चद्रमा है ऐसा जातक उदार, धैर्यशाली बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एव ख्याति वाला होता है आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे होने के कारण आपकी धर्म एवं आध्यात्म मे पूरी रुचि रहेगी। श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चद्रमा है तथा लग्न नक्षत्र का

स्वामी भी चद्रमा है। ऐसे में चद्रमा की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। लग्नेश शनि की दशा अंतर्दशा में जातक धनवान, यशस्वी होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करेगा।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अंशों के भीतर होने से अवरोह अवस्था में है। शनि तुला राशि के 20 अंशों में परम उच्च का एवं मेष राशि के 20 अंशों में परम नीच का होता है। अतः यहां शनि अपनी शुभ-अशुभ स्थितियों का भरपूर फल देने में सक्षम होता है।

मकरलग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र—श्रवण **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—9/20/0.0 से 9/23/20/0

4. वर्ण—वैश्य **5. वश्य**—चतुष्पद

6. योनि—कपि **7. गण**—राक्षस

8. नाड़ी—अन्त्य **9. नक्षत्र देवता**—विष्णु

10. वर्णाक्षर—खो **11. वर्ग**—बिलाव

12. लग्न स्वामी—शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—चंद्र

14. नक्षत्र चरण स्वामी—चंद्र **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—स्व. **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—स्व.

18. प्रधान विशेषता—'धार्मिको'

श्रवण नक्षत्र का देवता विष्णु एवं स्वामी चद्रमा है। ऐसा जातक उदार धैर्यशाली, बहुत जानकारी रखने वाला, धनी एवं ख्याति वाला होता है। आपका जन्म श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे होने के कारण आपकी धर्म एवं आध्यात्म में पूरी रुचि रहेगी। श्रवण नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी चद्रमा है तथा लग्न नक्षत्र का स्वामी भी चंद्रमा है। ऐसे में चंद्रमा की दशा अनिष्ट फल नहीं देगी। लग्नेश शनि की दशा- अतर्दशा में जातक धनवान, यशस्वी होकर स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करेगा।

यहा लग्न इक्कीस से बाईस अशों के भीतर होने से '**अवरोह अवस्था**' में है। शनि की दशा अत्यन्त शुभ फल देगी।

मकरलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र—धनिष्ठा 2. नक्षत्र पद—1

3. नक्षत्र अंश—9/26/40/0

4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—सिंह
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—वसु
10. **वर्णाक्षर**—गा
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'दीर्घायु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक लम्बी आयु को प्राप्त करेगा। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का मित्र है। फलतः सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी। परन्तु मंगल की दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। शनि की दशा ठीक जायेगी।

यहां लग्न बाईस से तेईस अंशों में **'अवरोह अवस्था'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा में जातक को उत्तम स्वास्थ्य व धन की प्राप्ति होगी।

मकरलग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**—धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**—1
3. **नक्षत्र अंश**—9/26/40/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—सिंह
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—वसु
10. **वर्णाक्षर**—गा
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—मित्र
18. **प्रधान विशेषता**—'दीर्घायु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक लम्बी आयु को प्राप्त करेगा। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है। परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का मित्र है। फलतः सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी। परन्तु मंगल की दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। शनि की दशा ठीक जायेगी।

यहा लग्न तेईस से चौबीस अंशों में **'अवरोह अवस्था'** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा में जातक को उत्तम स्वास्थ्य व धन की प्राप्ति होगी।

मकरलग्न, अंश 24 से 25

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा **2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–9/26/40/0

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–चतुष्पद

6. योनि–सिंह **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–अन्त्य **9. नक्षत्र देवता**–वसु

10. वर्णाक्षर–गा **11. वर्ग**–बिलाव

12. लग्न स्वामी–शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल

14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'दीर्घायु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक लम्बी आयु को प्राप्त करेगा। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का मित्र है। फलतः सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी। परन्तु मंगल की दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। शनि की दशा ठीक जायेगी।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य **'अवरोह अवस्था'** में है, बलवान है। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

मकरलग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–9/26/40/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सिंह
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–वसु
10. वर्णाक्षर–गा
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'दीर्घायु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने के कारण जातक लम्बी आयु को प्राप्त करेगा। धनिष्ठा नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी सूर्य है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है। परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का मित्र है। फलतः सूर्य की दशा अनिष्ट फल देगी। मंगल की दशा में भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। शनि की दशा ठीक जायेगी।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

मकरलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–9/26/40/0 से 9/30/0/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–चतुष्पद
6. योनि–सिंह
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–वसु
10. वर्णाक्षर–गौ
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु   17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ है। ऐसे जातक को समाज के विद्वानों में अग्रगण्य माना जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का भी शत्रु है फलतः यहां बुध की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। शनि की दशा अच्छी जायेगी।

मकरलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा   2. **नक्षत्र पद**–2

3. **नक्षत्र अंश**–9/26/40/0 से 9/30/0/0

4. **वर्ण**–वैश्य   5. **वश्य**–चतुष्पद

6. **योनि**–सिंह   7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–अन्त्य   9. **नक्षत्र देवता**–वसु

10. **वर्णाक्षर**–गौ   11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–शनि   13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध   15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु   17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पण्डितो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एव स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में है। ऐसे जातक को समाज के विद्वानो में अग्रगण्य माना जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का भी शत्रु है फलतः यहा बुध की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

यहां लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। शनि की दशा अच्छी जायेगी।

मकरलग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**—धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—9/26/40/0 से 9/30/0/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—बिलाव
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—वसु
10. **वर्णाक्षर**—गौ
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी** –बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—?
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—?
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—?
18. **प्रधान विशेषता**—'पण्डितो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता धनी शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में है। ऐसे जातक को समाज के विद्वानों में अग्रगण्य माना जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का भी शत्रु है फलतः यहां बुध की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

यहा लग्न अट्ठाईस से उन्नतीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर **'हीनबली'** है। शनि की दशा मध्यम फल देगी।

मकरलग्न, अंश 29 से 30

1. **लग्न नक्षत्र**—धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**—2
3. **नक्षत्र अंश**—9/26/40/0 से 9/30/0/0
4. **वर्ण**—वैश्य
5. **वश्य**—चतुष्पद
6. **योनि**—सिंह
7. **गण**—राक्षस
8. **नाड़ी**—अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**—वसु
10. **वर्णाक्षर**—गौ
11. **वर्ग**—बिलाव
12. **लग्न स्वामी**—शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'पण्डितो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण में है। ऐसे जातक को समाज के विद्वानों में अग्रगण्य माना जाता है। धनिष्ठा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। बुध लग्नेश शनि का शत्रु है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी मंगल का भी शत्रु है फलतः यहां बुध की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। शनि की दशा उत्तम फल देगी।

यहां लग्न उन्तीस से तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था में है। निस्तेज है। शनि की दशा में वांछित लाभ नहीं मिल पायेगा

❑❑❑

मकरलग्न और आयुष्य योग

1. मकरलग्न वालों के लिये शनि लग्नेश होने से मारकेश का अशुभ फल नहीं देगा। मगल मारकेश का कार्य करेगा। चंद्रमा द्वितीय मारक एवं अशुभ है। गुरु परम पापी है। सूर्य मारक व अनिष्टकारक है। आयुष्य प्रदाता ग्रह शनि है।
2. मकरलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्ति की मृत्यु बिच्छु, सांप, अन्य विषैले जीवों के काटने से होती है। विषैले भोजन का भय इन्हें अधिक रहता है। पशु से, चोर से, घर एव घर के बाहर, वन, जंगल एवं प्रायः पौधों के बीच मृत्यु होती है।
3. मकरलग्न में जन्म लेने वाले जातक की आयु 73 वर्ष के आस-पास होती है। इनको 1, 3, 5, 7वां बहन एव जन्म के 1, 3, 6, 8, 18, 25, 28, 32, 37, 40, 43, 48, 51, 57 और 61वें वर्ष मे शारीरिक कष्ट एवं अल्पमृत्यु संभव है।
4. मकरलग्न हो, लग्न में मंगल, बुध, शुक्र, शनि और सूर्य हो, बृहस्पति तीसरे हो तथा जन्म दिन में समय का हो तो ऐसा व्यक्ति एक कल्प तक चिरंजीव रहता है।
5. मकरलग्न में बुध, गुरु एव शुक्र छठे हो, शनि सातवें या नीच का मंगल आठवें हो अन्य सभी ग्रह चंद्रमा के पीछे हो तो व्यक्ति कुबड़ा होता है।
6. मकरलग्न के 15 अंशों में हो, मंगल चौथे, चंद्रमा लग्न में एव कर्क का गुरु सातवें हो तो ऐसा व्यक्ति 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
7. मकरलग्न मे शनि, शुक्र या गुरु केन्द्र में हो, सभी पापग्रह तीसरे छठे या ग्यारहवें स्थान में हों तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
8. मकरलग्न में उच्च का शनि दशम भाव में जातक को दीर्घायु देता है।
9. मकरलग्न में दशमेश शुक्र पचम भाव में हो, अष्टमेश सूर्य केन्द्र में अन्य शुभ ग्रहों के साथ हो तो जातक सौ वर्ष से अधिक दीर्घायु को प्राप्त करता है।
10. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य लग्न में बैठा हो तथा सूर्य लग्न गुरु एवं शुक्र से दृष्ट हो तो ऐसा जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

11. मकरलग्न में चंद्रमा छठे मिथुन का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
12. मकरलग्न में मेष का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोणवर्ती हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है।
13. मकरलग्न में उच्च का गुरु केन्द्र मे हो, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शनि बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
14. मकरलग्न में लग्नेश शनि लग्न को देखता हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो जातक 73 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
15. मकरलग्न में मंगल पांचवें, सूर्य सातवें कर्क का एवं शनि मेष का हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।
16. शनि लग्न में, मेष का चंद्र चौथे, मगल सातवें एव सूर्य दसवें स्थान में अन्य किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य सातवे हो तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
18. मकरलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
19. मकरलग्न में लग्नेश शनि पापग्रहों के साथ आठवे हो तथा अष्टमेश सूर्य पापग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
20. मकरलग्न में शनि+मंगल लग्न में हो, पाप ग्रहों के साथ चंद्रमा आठवें, एवं गुरु छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।
21. मकरलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।
22. मकरलग्न में मंगल धनु राशि में एवं गुरु वृश्चिक राशि में परस्पर घर परिवर्तन करके बैठे तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के भीतर होती है।

23. मकरलग्न मे चतुर्थेश मगल द्वादश में हो, सप्तम भाव में कर्क का शनि हो, सप्तमेश चंद्रमा आठवें हो तो ऐसे व्यक्ति की मृत्यु आयु के 34वें वर्ष मे वायुयान दुर्घटना द्वारा होती है।

24. मकरलग्न में सूर्य+मंगल+शनि अष्टम स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष में हो जाती है।

25. मकरलग्न में शनि सिह राशि में एवं सूर्य मकर राशि का लग्न में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हों तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष के पूर्व हो जाती है।

26. मकरलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश स्थान में हो, गुरु अष्टम स्थान मे हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

27. मकरलग्न के प्रथम भाव में राहु+सूर्य+शनि+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, चंद्रमा निर्बल हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

28. मकरलग्न में दूसरे भाव में कुंभ का शनि हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी पाप ग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

29. मकरलग्न में सप्तमस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

30. मकरलग्न में चतुर्थ भाव स्थित शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

31. मकरलग्न में लग्नेश शनि एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान मे भी पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

32. मकरलग्न (चर) में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

33. मकरलग्न में षष्ठेश बुध सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

34. मकरलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित होता हुआ, अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मकरलग्न और रोग

1. मकरलग्न में षष्टेश बुध लग्न मे पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
2. मकरलग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो, चतुर्थेश मंगल पापग्रह के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. मकरलग्न में चतुर्थेश मंगल यदि अष्टमेश सूर्य के साथ अष्टम स्थान में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. मकरलग्न में चतुर्थेश मंगल कर्क राशि में हो, निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. मकरलग्न में चतुर्थ स्थान में शनि एवं षष्ठेश सूर्य पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. मकरलग्न के चौथे एवं पांचवें भाव में पापग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. मकरलग्न के चतुर्थ भाव में शनि एवं द्वितीय भाव में कुंभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. मकरलग्न के चतुर्थ भाव में राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो लग्नेश शनि निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. मकरलग्न मे वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. मकरलग्न में शनि+मंगल+सूर्य की युति एक साथ दु:स्थानों में हो तो वाहन दुर्घटना से मृत्यु होती है।
11. मकरलग्न में पापग्रह हो, लग्नेश शनि बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

12. मकरलग्न में क्षीण चंद्रमा बैठा हो, लग्न को पाप ग्रह देखता हो तो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है

13. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य लग्न में, लग्नेश शनि अष्टम में हो, लग्न को पाप ग्रह देखता हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी बना रहता है।

14. मकरलग्न में चंद्रमा छठे मिथुन का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हो तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

15. मकरलग्न में मेष का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र त्रिकोणवर्ती हो तो जातक 85 वर्ष की आयु को भोगता है.

16. मकरलग्न में उच्च का गुरु केन्द्र मे हो, बुध त्रिकोण में तथा लग्नेश शनि बलवान हो तो जातक 80 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

17. मकरलग्न में लग्नेश शनि लग्न को देखता हो, सभी शुभ ग्रह केन्द्र में हो तो जातक 73 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

18. मकरलग्न में मंगल पांचवें सूर्य सातवें कर्क का एवं शनि मेष का हो तो व्यक्ति 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है

19. शनि लग्न मे, मेष का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एव सूर्य दशम स्थान में अन्य किसी शुभग्रह के साथ हो तो जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है

20. मकरलग्न मे अष्टमेश सूर्य सातवें हो तथ चद्रमा पाप ग्रहो के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

21. मकरलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चद्रमा पापग्रहों के साथ आठवे या द्वादश भाव मे हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु मे गुजर जाता है

22. मकरलग्न मे लग्नेश शनि पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश सूर्य पाप ग्रहो के साथ छठे, अन्य शुभग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

23. मकरलग्न मे शनि-मगल लग्न मे हो पाप ग्रहो [illegible] चद्रमा [illegible] गुरु [illegible] हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की [illegible]

24. मकरलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

25. मकरलग्न में मंगल धनु राशि में एव बृहस्पति वृश्चिक में परस्पर घर परिवर्तन करके बैठे तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के भीतर होती है।

26. मकरलग्न में चतुर्थेश मंगल द्वादश स्थान में हो, सप्तम भाव में कर्क का शनि हो, सप्तमेश चंद्रमा आठवें हो तो ऐसे व्यक्ति की मृत्यु 34 वर्ष की आयु में वायुयान दुर्घटना द्वारा होती है।

27. मकरलग्न मे सूर्य+मंगल+शनि अष्टम स्थान में शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु एक वर्ष की आयु में हो जाती है।

28. मकरलग्न में शनि सिंह राशि मे एवं सूर्य मकर का लग्न में परस्पर स्थान परिवर्तन करके बैठे हो तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु 12 वर्ष की आयु के पूर्व हो जाती है।

29. मकरलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश मे हो, बृहस्पति अष्टम में हो तो ऐसा बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

30. मकरलग्न के प्रथम भाव में राहु+सूर्य+शनि+मंगल+गुरु इन पांच ग्रहों की युति हो, चंद्रमा निर्बल हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही **'शीघ्र-मृत्यु'** को प्राप्त होता है।

31. मकरलग्न के दूसरे भाव में कुम्भ का शनि हो तथा चतुर्थ, दशम भाव मे भी पापग्रह हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत कष्ट से जीता है।

32. मकरलग्न मे सप्तमस्थ मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

33. मकरलग्न में चतुर्थ भाव स्थित शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक **'मातृघातक'** होता है।

34. मकरलग्न में लग्नेश शनि एवं लग्न दोनों पाप ग्रहो के मध्य हो, सप्तम स्थान में भी पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है

35. मकरलग्न (चर) में चंद्रमा पापग्रह के साथ हो सप्तम स्थान में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

36. मकरलग्न मे षष्ठेश बुध सप्तम या दशम भाव में, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

37. मकरलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित होता हुआ, अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मकरलग्न और धन योग

मकरलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए धनप्रदाता ग्रह शनि है। धनेश शनि की शुभाशुभ स्थिति, धन स्थान से सम्बन्ध स्थापित करने वाले ग्रहों की स्थिति योगायोग, शनि तथा धन भाव पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त पंचमेश शुक्र, भाग्येश बुध, लाभेश मंगल की अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियां भी मकरलग्न में जन्मे जातकों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को घटाने-बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

वैसे मकरलग्न के लिये मंगल, गुरु, व्ययेश और चंद्र सप्तमेश होने से अशुभ हैं तथा शुक्र व बुध शुभ हैं। शुक्र अकेला राजयोगकारक है। शनि लग्नेश होने से मारकेश का अशुभ फल नहीं देगा। मंगल मारक का काम करेगा। गुरु परमपापी का फल देगा। सूर्य भी पाप फलदायक है। चंद्र सहायक मारकेश है।

राजयोगकारक– बुध, शुक्र

सफल योग– 1. शनि+शुक्र 2. बुध+शुक्र, 3. शुक्र+मंगल 4. मंगल+बुध 5. चंद्र+शुक्र

अशुभ योग– 1. शनि+मंगल, 2. शनि+गुरु, 3. शनि+चंद्र

लक्ष्मी योग–शनि द्वितीय में, शुक्र केन्द्र-त्रिकोण में, बुध भाग्य स्थान में।

विशेष योगायोग

1. मकरलग्न में बुध कन्या राशि में हो तो जातक अल्प प्रयत्न से ही धनपति हो जाता है।
2. मकरलग्न हो शुक्र पंचम स्थान में हो तथा लाभ स्थान मे मगल हो तो व्यक्ति बहुत सारी भू सम्पत्ति का स्वामी होता हुआ प्रतिष्ठित धनवान होता है।

3. मकरलग्न में शनि मकर, कुंभ या तुला राशि में हो तो लक्ष्मी ऐसे व्यक्ति का पीछा नहीं छोड़ती।

4. मकरलग्न में शनि कन्या राशि में तथा बुध मकर या कुंभ राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है। ऐसा व्यक्ति खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी अनुचरी होती है।

5. मकरलग्न में शनि मंगल के घर में एवं मंगल शनि के घर में परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठे हों अर्थात् शनि मेष या वृश्चिक राशि में हो तथा मगल मकर या कुंभ राशि में हो तो ऐसा जातक महाभाग्यशाली होता है। जातक जीवन में खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी दासी के समान सेवा करती है।

6. मकरलग्न में शुक्र यदि केन्द्र त्रिकोण में हो तथा शनि स्वगृही होकर कहीं भी बैठा हो तो व्यक्ति कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी धीरे-धीरे अपने पराक्रम व पुरुषार्थ से लक्षाधिपति, कोट्याधिपति बन जाता है।

7. मकरलग्न हो, शुक्र पंचम स्थान में हो तथा लाभ स्थान में मंगल हो तो जातक लक्ष्मीवान होता है।

8. मकरलग्न में शनि, मंगल और गुरु की युति हो तो "**महालक्ष्मी योग**" बनता है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी अति धनवान, ऐश्वर्यवान एवं महाप्रतापी होता है।

9. मकरलग्न में शनि वृश्चिक राशि में तथा लाभेश मंगल लग्न स्थान में हो तो जातक आयु के 33वें वर्ष मे पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

10. मकरलग्न हो, लग्नेश व धनेश शनि, भाग्येश बुध, लाभेश मंगल अपनी-अपनी उच्च व स्वराशि में हो तो जातक करोड़पति होता है।

11. मकरलग्न के नवम भाव में राहु, शुक्र, शनि और मगल की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

12. मकरलग्न में धनेश शनि यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान में हो तो "**धनहीन योग**" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार छिद्र वाले घड़े में पानी नहीं ठहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे जातक के पास रुपया नही ठहर पाता। जातक को सदैव धन की तंगी बनी रहती है। इस दुर्योग से बचने के लिये अभिमन्त्रित

"शनियंत्र" धारण करें। प्रबुद्ध पाठक यदि चाहे तो यह यंत्र हमारे कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है।

13. मकरलग्न में धनेश शनि आठवें स्थान में हो परन्तु सूर्य यदि लग्न स्थान को देखता हो तो जातक को पृथ्वी मे गढ़ा हुआ धन मिलता है या लॉटरी द्वारा धन मिलता है पर धन उसके पास में टिकता नहीं।

14. मकरलग्न में मंगल लग्न स्थान या चौथे स्थान में हो तो "रुचक योग" बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

15. मकरलग्न में सुखेश लाभेश मंगल नवम भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

16. मकरलग्न में गुरु+चद्र की युति कुंभ, मेष, वृष या कन्या राशि में हो तो इस प्रकार के '**गजकेसरी योग**' के कारण व्यक्ति को अचानक उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर बाजार या अन्य व्यापारिक स्रोत के कारण अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

17. मकरलग्न में धनेश शनि अष्टम स्थान में एवं अष्टमेश सूर्य धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिंग एव अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

18. मकरलग्न में तृतीयेश गुरु लाभ स्थान में एव लाभेश मंगल तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो ऐसे व्यक्ति को भाई, भागीदारी एव मित्रों के द्वारा धन लाभ होता है।

19. मकरलग्न में बलवान शनि के साथ यदि चतुर्थेश मंगल की युति हो तो व्यक्ति को माता, मातृपक्ष, नौकर एवं भूमि द्वारा धन लाभ होने की संभावना प्रबल रहती है।

20. 1, 4, 7, 9 स्थानों में यदि सूर्य, मंगल, राहु, शनि बैठे हों तो अन्न-धन का नाश होता है।

21 लग्न स्थान में सूर्य हो, दसवें सातवें क्रमशः शनि मंगल तथा सुख भाव में राहु हो तो वह व उसका परिवार भी पूर्ण दरिद्र होता है।

22 सूर्य केन्द्र स्थान मे हो और चन्द्रमा अपने मित्र के नवमांश मे हो तथा चद्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो जातक धनवान व गुणवान होता है।

23. द्वितीय त्रिकोण अर्थात् कन्या राशि में राहु शुक्र-मंगल शनि हो तो जातक कुबेर से भी अधिक धनवान होता है।

24. द्वादश भाव, चंद्रमा से द्वितीय भाव या चंद्र के साथ कोई ग्रह न हो और लग्न से केन्द्र में सूर्य को छोड़कर अन्य कोई ग्रह न हो तो वह जातक दरिद्र व निन्दित होता है।

25. गुरु व चंद्रमा की युति यदि 4, 5, 9, 11वें भाव में से कहीं भी हो तो जातक को यकायक अर्थ प्राप्ति होती है।

26. चंद्रमा व मंगल एक साथ 1, 4, 7, 10वें केन्द्र भावस्थ 5, 9वें त्रिकोण में अथवा 2, 11वें भाव में कहीं हो तो जातक धनाढ्य होता है।

27. धनेश तुला राशि में एवं लाभेश मंगल मकर राशिगत अर्थात् लग्न में हो तो जातक धनवान होता है।

28. बुध पंचम भावस्थ हो तथा चंद्र, मंगल की युति लाभ भाव में हो तो जातक को यकायक अर्थ लाभ होता है।

29. चतुर्थेश मंगल व सप्तमेश चंद्रमा सप्तम भाव में ही स्थित हो तो जातक को ससुराल पक्ष से अर्थ प्राप्ति होती है।

30. सप्तमेश चंद्रमा यदि धन भाव में हो तो खोई हुई सम्पत्ति पुनः प्राप्त होती है अथवा विवाहोपरान्त आर्थिक दशा और अधिक सुदृढ़ होती है।

31. अष्टमेश पाप ग्रह से युक्त होकर दशम भावस्थ हो तो जातक राज्य पुरस्कार की प्राप्ति करता है अथवा दत्तक जाता है और धनी होता है।

32. मकरलग्न में यदि बलवान शनि की पंचमेश शुक्र से युति तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

33. मकरलग्न में बलवान शनि की यदि षष्टेश बुध से युति हो, धन भाव मंगल से दृष्ट हो तो ऐसे जातक को शत्रुओं द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओं के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

34. मकरलग्न में बलवान शनि की सप्तमेश चंद्र से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

35. मकरलग्न में बलवान शनि की नवमेश बुध के साथ युति हो तो ऐसा जातक राजा से, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों एवं सरकारी ठेकों से काफी धन कमाता है।

36. मकरलग्न में बलवान शनि की दशमेश शुक्र से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति या पिता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

37. मकरलग्न में दशम भवन का स्वामी शुक्र यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान मे हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। ऐसा जातक जन्म स्थान में नहीं कमा पाता तथा उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

38. मकरलग्न में लग्नेश शनि यदि छठे आठवें या बारहवे स्थान में हो एवं सूर्य आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

39. मकरलग्न में धन भाव में पाप ग्रह हो तथा लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है।

40. मकरलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा यदि गुरु से छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव रहता है।

41. मकरलग्न मे धनेश शनि अस्त हो, नीच राशि (मेष) में हो, धन भाव एवं अष्टम भाव मे कोई पाप ग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता नहीं।

42. मकरलग्न में लाभेश मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत व पाप पीड़ित हो तो जातक महादरिद्र होता है।

43. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य निर्बल होकर कहीं भी बैठा हो तथा अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धनहानि का योग बनता है। ऐसे व्यक्ति की धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अतः सावधान रहें।

44. मकरलग्न में अष्टमेश सूर्य शत्रुक्षेत्री, नीच राशिगत एवं पाप पीड़ित हो तो जातक को अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

मकरलग्न और विवाह योग

1. मकरलग्न में द्वितीय भाव में स्व का शनि कुंभ राशिस्थ हो, राहु व मंगल की युति शनि के साथ हो। पत्नी भाव में शुक्र-गुरु हो और 8वें भाव में अर्थात् सिंह राशि में सूर्य चंद्रमा हो तो वह जातक निश्चय ही वेश्यागामी होता है।
2. कन्या जातक की जन्म कुण्डली हो तथा सप्तम भाव में अर्थात् कर्क राशि में सूर्य-मंगल हो तो जातिका को वैधव्य भोगना पड़ता है।
3. स्त्री जातक की जन्म कुण्डली हो तथा मकरलग्न हो और लग्न में सूर्य मंगल हो तो वह स्त्री विधवा होती है। राहु या केतु हो तो संतान का नाश, शनि हो तो जातक दरिद्र होती है।
4. मकरलग्न की स्त्री कुण्डली में सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातिका पति को त्याग देती है, यदि मंगल सप्तम भाव में हो तो जातक स्त्री अवश्य विधवा होती है, यदि शनि सप्तम भाव में हो तो बड़ी होने पर विवाह होता है, चंद्रमा अपूर्व सौंदर्य व बुध रहे तो अतुल सौभाग्य प्राप्त होता है गुरु सर्व-सुख प्रदान करता है तथा शुक्र भोग-लालसा में वृद्धि करता है।
5. सप्तमेश, नवमेश व शुक्र साथ हों तो ससुराल से अर्थ की प्राप्ति होती है।
6. चतुर्थेश मंगल व सप्तमेश चंद्रमा सप्तम भाव में ही स्थित हो तो जातक को ससुराल से अर्थ प्राप्ति होती है।
7. मकरलग्न में लग्नस्थ शनि चंद्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
8. मकरलग्न में शनि और चंद्रमा यदि एक दूसरे को परस्पर देख रहे हों तो विवाह विलम्ब से होता है।
9. मकरलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय में सूर्य हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

10. मकरलग्न में शनि छठे हो, सूर्य आठवें हो एवं सप्तमेश चंद्रमा बलहीन हो तो जातक का विवाह नही होता।

11. मकरलग्न में सूर्य, शनि व शुक्र एक साथ कहीं भी बैठे हों, चद्रमा निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

12. मकरलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि में हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान मे हो तो जातक का विवाह नहीं होता।

13. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हो तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्रायः अन्तर्जातीय विवाह करता है।

14. मकरलग्न में द्वितीयेश शनि वक्री हो अथवा द्वितीय भाव में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो जातक के विवाह में अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।

15. मकरलग्न में सप्तमेश चद्रमा अस्त हो, सप्तम भाव में कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आता है और विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

16. मकरलग्न में द्वितीयेश शनि, मंगल से परस्पर दृष्ट हो तो विवाह विलम्ब से होता है और ससुराल से खटपट रहती है।

17. मकरलग्न में गुरु तृतीय या सप्तम भाव में हो तो जातक एक पत्नीव्रत एवं भारतीय परम्परा में विश्वास रखता है। आयु के 34वें वर्ष में उसे विशिष्ट पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान की प्राप्ति होती है। ससुराल से प्रचुर धन व मान मिलता है।

18. मकर में सूर्य या मंगल यदि सप्तम भाव में हो तो ऐसी स्त्री परपुरुषों के साथ रमण करती है।

19. मकरलग्न हो, लग्न में चंद्रमा व शुक्र स्थित हो, उन्हें पापग्रह देखते हो तो ऐसी स्त्रीं परपुरुष-गामिनी होती है। उसके व्याभिचार में उसकी माता या मातातुल्य अन्य वृद्ध स्त्री का पूर्ण सहयोग होता है।

20. मकरलग्न में सातवें सूर्य शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो स्त्री पति द्वारा त्याग दी जाती है अर्थात् उसे तलाक होती है।

21. मकरलग्न हो, चंद्रमा चरराशि (मेष, कर्क, तुला, मकर) में हो, पाप ग्रह केन्द्र में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री विवाह के पूर्व अन्य पुरुषों से संसर्ग करती है।

22. मकरलग्न में सप्तमेश चंद्रमा यदि चरराशि में हो तो स्त्री का पति परदेश में रहेगा। ऐसे में बुध व शनि दोनों ही यदि सप्तम भाव में हो तो स्त्री का पति नपुंसक होगा।
23. मकरलग्न में सप्तम स्थान में मंगल एवं सूर्य स्थित हो तो ऐसी स्त्री कई पुरुषों के साथ रमण करती है।
24. मकरलग्न में सूर्य व चंद्रमा सप्तम स्थान में हो तो ऐसी स्त्री अपने पति की इच्छा से परपुरुष में आसक्त रहती है।
25. मकरलग्न में सूर्य एवं मंगल सप्तम भाव में हो तथा लग्न या चंद्रमा पापपीडित हो तो ऐसी स्त्री विवाह के सात या आठ वर्ष बाद ही विधवा हो जाती है।
26. मकरलग्न में षष्टेश बुध राहु एक साथ होकर लग्नेश शनि से किसी प्रकार का संबंध करे तो जातक नपुंसक होता है।
27. मकरलग्न में सप्तम भाव में कर्क या मंगल हो तो स्त्री स्वेच्छाचारिणी होती है तथा विषय-भोग में अधैर्यशाली होती है।
28. मकरलग्न में पाप ग्रह से दृष्ट चंद्रमा एवं शुक्र कहीं भी बैठे हो तो ऐसी स्त्री व्याभिचारिणी होती है।
29. मकरलग्न में सप्तम भाव में शनि एवं मंगल, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री उत्तम कुल में जन्म लेने पर भी पति को त्याग कर व्याभिचारिणी बन जाती है अथवा विधवा भी हो सकती है।
30. मकरलग्न में चंद्रमा यदि (2/4/6/8/10/12) राशि में हो तो ऐसी महिला अत्यन्त कोमल एवं मृदुस्वभाव वाली होती है।
31. मकरलग्न में गुरु, बुध, शुक्र एवं मंगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात विदुषी, सच्चरित्र वाली सभ्य महिला होती है।
32. मकरलग्न में सप्तमेश चंद्रमा यदि चरराशि (1/4/7/10) में हो तो ऐसी स्त्री का पति निरन्तर प्रवास में रहता है।
33. मकरलग्न में चंद्रमा व शुक्र लग्नस्थ पाप ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री माता सहित परपुरुष गामिनी होती है।
34. मकरलग्न में चंद्रमा और शुक्र लग्नस्थ हो तथा पंचम भाव पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो ऐसी नारी वन्ध्या होती है।
35. मकरलग्न में सूर्य अष्टम में सिंह राशि का स्वगृही हो तो ऐसी कन्या बांझ होती है।

36. मकरलग्न में लग्नस्थ शनि के साथ अष्टमेश सूर्य हो तो ''द्विभार्या योग'' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।
37. मकरलग्न में बुध, शुक्र और शनि ये तीनो ग्रह यदि दशम भाव में हो तो ऐसी पुरुष व्याभिचारी होता है।
38. मकरलग्न में सप्तमेश चंद्रमा यदि द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो पूर्ण 'व्याभिचारी योग' बनता है। ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।
39. मकरलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के नवमाशे में हो तो ऐसे पुरुष की पत्नी कर्कश व झगड़ालू होती है। जिससे जातक से स्वयं दुःखी हो जाता है।
40. मकरलग्न में यदि पचमेश शुक्र छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो ऐसे व्यक्ति का विवाह वृद्धावस्था में होता है।
41. मकरलग्न में सूर्य सातवें हो तो ऐसे पुरुष की पत्नी अल्पजीवी होती है।

❑❑❑

मकरलग्न एवं संतान योग

1. मकरलग्न में चंद्रमा वृष का पंचम भाव में हो तो जातक के एक पुत्र होता है।
2. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र आठवे हो तो जातक के अल्प संतति होती है।
3. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र अस्त हो, पापपीड़ित या पाप ग्रह होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
4. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र लग्न (मकर राशि) में हो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम पुत्र ही होता है।
5. मकरलग्न में मगल हो, पंचम स्थान में सूर्य एवं शनि आठवें हो तो जातक की जवानी बीत जाने के बाद बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है
6. मकरलग्न में शनि हो, गुरु आठवें एव मगल बारहवे हो तो जातक की जवानी बीत जाने के बाद बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
7. मकरलग्न में ग्यारहवें चद्रमा वृश्चिक राशि का हो तथा गुरु से पाचवें स्थान में पाप ग्रह हो लग्न मे भी पाप ग्रह तो जातक की जवानी बीत जाने के बाद बहुत प्रयत्न करने पर पुत्र होता है।
8. मकरलग्न में पंचमेश शुक्र लग्न में हो एवं लग्नेश शनि पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरो की संतान गोद में लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
9. मकरलग्न में पचम भाव में वृष राशि होने से, यदि अन्य कोई दुर्योग न हो तो विवाहोपरान्त जातक के शीघ्र सतति होती है।
10. मकरलग्न के पंचमभाव में शुक्र हो तो जातक के छः कन्याएं होती हैं।
11. मकरलग्न में सूर्य+चद्रमा हो तथा मगल राहु व शनि से युत हो तो ऐसे व्यक्ति को माता के शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।
12. मकरलग्न में सूर्य हो तथा सूर्य पापग्रस्त, पापपीड़ित या पाप ग्रह से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को कुल देवता के शाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती।

13. राहु, सूर्य एवं मंगल पचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
14. मकरलग्न मे पंचमेश शुक्र कमजोर हो तथा राहु ग्यारहवें हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान होती है।
15. पचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
16. मकरलग्न में लग्नेश शनि द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश शुक्र पापग्रस्त या पापपीड़ित हो तो ऐसे जातक के पुत्र सतान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाते हैं,
17. मकरलग्न में पचमेश शुक्र बारहवें शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे जातक के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक ससार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।
18. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम सतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
19. मकरलग्न में पचमेश शुक्र की सप्तमेश चद्र के साथ युति हो तो जातक को प्रथम संतान के रूप मे कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।
20. स्त्री को जन्म-कुण्डली हा तथा मकरलग्न हो और लग्न में सूर्य मंगल हो तो वह स्त्री विधवा होती है राहु या केतु हो तो संतान का नाश, शनि हो तो दरिद्र होती है।
21. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या संतति की बाहुल्यता देता है यदि चद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।
22. पंचमेश शुक्र निर्बल हो, लग्नेश शनि भी निर्बल हो, पंचम भाव में राहु हो तो सर्पदोष के कारण जातक के संतान नहीं होती।
23. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हो तो पद्मनामक "कालसर्प योग" के कारण जातक के पुत्र सतान नहीं होती। ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं मानसिक तनाव रहता है।
24. सूर्य अष्टम हो, पचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र संतान नहीं होती.
25. लग्न में मंगल, अष्टम में शनि, पंचम में सूर्य एवं बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़िया नहीं चलती।

26. मकरलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चंद्रमा जहा बैठा हो उससे आठवें स्थान मे पाप ग्रह हो तो "वंशविच्छेद योग" बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है, उसके आगे पीढ़िया नहीं चलती।

27. तीन केन्द्रों में पापग्रह हो तो व्यक्ति को "इलाख्य नामक" सर्प योग बनता है। इस दोष के कारण जातक के पुत्र संतान का सुख नही मिलता। दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

28. मकरलग्न में पचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो "अनपत्य योग" बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह सतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

29. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वां सतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

30. जिस स्त्री के जन्म कुण्डली मे सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो "अनगर्भा योग।" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहा होता।

31. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो "अनगर्भा योग" बनता है ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नही होती।

32. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो "कुलवर्द्धन योग" बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

33. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को "केवल कन्या योग" होता है। पुत्र संतान नहीं होता।

❑❑❑

मकरलग्न और राजयोग

1. यदि मकरलग्न अपने पूर्णांश पर हो और उच्चांश पर उच्च का मंगल बैठा हो, साथ ही उच्च का सूर्य चतुर्थ में, उच्च का बृहस्पति सप्तम में, उच्च का शनि दशम स्थान में बैठा हो तो या इन चारों में से कोई भी तीन ग्रह उच्च के बैठे हों तो राजयोग कारक होते हैं। तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
2. इसके अतिरिक्त यदि उच्च का मंगल लग्न में हो, उच्च का सूर्य चतुर्थ में और स्वगृही कर्क का चंद्रमा सप्तम में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
3. दो ग्रह उच्च के केन्द्र में हो और साथ ही स्वगृही चंद्रमा सप्तम में हो तो राजयोग होता है तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
4. उच्च का मंगल लग्न में हो और स्वगृही चंद्र से दृष्ट हो या मकर का स्वगृही शनि लग्न में हो, मेष का स्वगृही मंगल चतुर्थ मे हो, तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. कर्क का स्वगृही चद्रमा सप्तम में हो और तुला का स्वगृही शुक्र दशम में हो तो या इन चारों के साथ यदि मिथुन का स्वगृही बुध छठे स्थान में और सिंह का स्वगृही सूर्य अष्टम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
6. मकर का स्वगृही शनि बृहस्पति के साथ लग्न में हो, मीन का चंद्रमा तीसरे स्थान में हो उच्च का बुध नवम स्थान में हो तथा मंगल वृश्चिक का एकादश स्थान में या वृश्चिक का शुक्र एकादश में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. दो ग्रह उच्च के दो ग्रह स्वगृही केन्द्र या त्रिकोण में हो तो या तीन ग्रह उच्च के एक ग्रह स्वगृही केन्द्र त्रिकोण मे हो तो या तीन ग्रह स्वगृही के साथ एक

ग्रह उच्च का केन्द्र या त्रिकोण में बैठे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।

8. यदि लग्नगत मकर राशि में स्वगृही शनि हो, मीन का चद्रमा तीसरे भाव में हो, मिथुन का मगल छठे भाव में हो, उच्च या कन्या का बुध भाग्य स्थान में हो और धन का बृहस्पति द्वादश भाव में हो तो मनुष्य बड़ा की गुणवान तथा कीर्तिवान मनुष्य राजा के समान होता है।

9. यदि मकरलग्न हो और लग्नेश शनि उच्च या तुला का होकर राज्य स्थान में चद्रमा से युक्त बैठा हो तो मनुष्य 10 वर्ष की अवस्था में बड़ी पदवी प्राप्त करता है। राज्य कर्मचारी होते हुए भी धन-धन्यपूर्ण ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करता है।

10. यदि मकरलग्न में मगल शनि, दशम स्थान में तुला का शुक्र तथा धन का सूर्य और चंद्रमा द्वादश स्थान में हो, तो मनुष्य बड़ी सरकारी नौकरी में होता है।

11. यदि मकर का शनि लग्न मे, कर्क का सूर्य चद्रमा सप्तम में, वृश्चिक का मंगल एकादश स्थान में, सिंह का शुक्र अष्टम में और उच्च का बुध, गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य बहुत ही बड़ा आदमी होता है।

12. लग्न अथवा चद्र लग्न से गुरु यदि केन्द्र में हो उस पर मात्र शुभ ग्रहो की दृष्टि हो, गुरु अस्त, नीच शत्रु राशि में न हो तो जातक मुख्यमंत्री बनता है।

13. शनि दशम भाव में उच्च का हो, बुध, गुरु, शुक्र व सूर्य, चंद्रादि 1, 4 7, 10वें केन्द्रस्थ भावों मे हो व्यक्ति उच्च शासनाधिकारी होता है

14. लग्नेश पंचम में व पंचमेश लग्न में हो, आत्मकारक व पुत्रकारक दोनों लग्न या पंचम मे हो, अपने उच्च, राशि या नवांश में तथा शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक राज्यपाल या मुख्यमत्री अवश्य होता है।

15. पंचमेश लग्नेश, तृतीयेश, चतुर्थेश, षष्ठेश, सप्तमेश, नवमेश व द्वादशेश के साथ हो तो जातक व्यापारी भी और जमींदार भी होता है अर्थात् उच्च पदाधिकारी भी।

16. बुध स्व का उच्च का नवम भाव में हो, केतु व बुध की युति हो, गुरु की बुध-केतु पर पूर्ण दृष्टि हो तो जातक उच्च पदाधिकारी होता है।

17. चंद्रमा मेष राशि में स्थित हो और गुरु द्वारा दृष्ट हो तो वह व्यक्ति अनेक नौकरो-चाकरों से युक्त, धनाढ्य व मत्री या सेनापति होता है।

.8. अष्टम स्थान मे गुरु व शुक्र हो, सप्तम मे कर्क राशि मे बुध हो, सूर्य लग्न

से सप्तम, चंद्रमा लग्न से पंचम और शनि लग्न से 11वें स्थान में हो तो जातक गुण सम्पन्न एव उच्च पदाधिकारी होता है।

19. तृतीय स्थान में मीन का चंद्रमा हो, छठे मंगल, 9 भाव में बुध व द्वादश भाव में गुरु हो तो श्रेष्ठ राजयोग होता है।
20. लग्न में शनि हो, 4, 7, 8, 9, 10 के स्वामी उन-उन भावों में स्वगृही हो अर्थात मेष का मंगल, कर्क का चंद्रमा, सिंह का सूर्य, कन्या का बुध व तुला का शुक्र तो उत्तम राजयोग बनता है।
21. गुरु लग्न में हो व शुक्र तुला राशि में स्वगृही हो तथा लग्नेश शुक्र की युति हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करता है तथा धनाढ्य होता है।
22. मकरलग्न मे जन्मकाल में लग्न से दशम स्थान में शनि हो तो धनवान्, शूरवीर, मंत्री, दण्ड देने वाला (अर्थात् जज वगैरह) एक गांव या गावों के समूह का नेता होता है।
23. मकरलग्न में उच्च का बृहस्पति और मंगल तथा मेष लग्न में मंगल और गुरु हो, ता राजयोग होता है।
24. मकरलग्न में चंद्रमा लाभस्थान में शुक्र, गुरु के साथ और मगल उच्च का मकर राशि के शनि के साथ हो और लग्न में कन्या का बुध हो तो बहुत विद्वान् होकर राजयोग होता है।
25. मकरलग्न में स्वराशि में पूर्ण चंद्रमा लग्न मे, सप्तम में, बुध षष्ठ में, सूर्य चतुर्थ मे, शुक्र दशम में, गुरु और शनि मंगल तृतीय स्थान में हो तो वैभव सपन्न राजयोग होता है।
26. मकर का शनि लग्न में, मीन का चद्रमा मिथुन का मगल धन का गुरु हो तो कीर्तिमान राजयोग होता है।
27. मकरलग्न मे मंगल, सप्तम मे पूर्ण चंद्रमा हो तो शत्रुओं से विजय प्राप्त करने वाला और वेदशास्त्र को जानने वाला ऐसा राजयोग होता है।

❑❑❑

लग्नवाराही

आचार्य वराहमिहिर ने जन्मलग्न में ग्रहों की स्थिति पर कुछ फलादेश संकेत रूप में चिह्नित किये हैं। प्रबुद्ध पाठकों को इन बिन्दुओं पर भी ध्यान देना चाहिए। अतः मूल संस्कृत श्लोकों सहित 'लग्नवाराही' यहा प्रस्तुत की जा रही है।।

प्रथमभावफलम्–

लग्नस्थितोत दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडां
पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम्।
छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखरोगं
जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः॥1॥

यस्या बलेन भुवनं सृजते विधाता, यस्या बलेन भुवनम्परिपाति चक्री।
यस्या बलेन भुवनं हरते पिनाकी साऽऽद्या सद विशतु नो मनसेप्सितं यत्॥1॥

जन्मलग्न मे सूर्य हो तो शरीर में पीड़ा, मगल हो तो रक्त विकार तथा शनि हो तो अनेक प्रकार का दुःख और गुरु, चंद्रमा, शुक्र तथा बुध हों तो सुख-सौन्दर्य देते हैं।।1।।

द्वितीयभावफलम्–

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा
वित्तस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ।
चन्द्रो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थाः॥2॥

सूर्य, शनि और मगल यदि जन्मलग्न से दूसरे स्थान में हो तो अनेक प्रकार के दुखः तथा धन का नाश करते हैं तथा चंद्रमा, बुध, गुरु अथवा शुक्र दूसरे भाव में हों तो अनेक प्रकार से धन की वृद्धि करते हैं।।2।।

तृतीयभावफलम्–

भानुः करोति विरुजं रजनीपतिश्च
कीर्त्त्याश्रयं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम्।
सिद्धिर्बुधः सुधिषणं च सुनीतिप्रज्ञं
स्त्रीणा प्रियं गुरुकवी रविजस्तृतीये॥3॥

जन्मलग्न से तीसरे भाव में सूर्य हो तो सम्पूर्ण रोगों का नाश करता है, चंद्रमा हो तो जातक यशस्वी होता है और मंगल कोपाधिक्य तथा बुध सिद्धि देता है। बृहस्पति, शुक्र एव शनि यदि लग्न में तीसरे भाव में हो तो जातक अच्छी बुद्धि वाला तथा नीतिशास्त्र का ज्ञाता और स्त्रियों का प्रिय होता है।।3।।

चतुर्थभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्म विफलं निहिताश्चतुर्थे।
सोमो बुधः सुरगुरुर्भृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं नृपयशः कुरुते प्रवृद्धिम्॥4॥

जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में सूर्य, मंगल, शनि हो तो सुखरहित शरीर वाला तथा निष्फल जन्म वाला होता है और चद्रमा बुध, गुरु अथवा शुक्र हो तो जातक सुख से युक्त, राजा से कीर्तिलाभ प्राप्त करने वाला तथा जातक के धन की वृद्धि होती है।4।।

पंचमभावफलम्–

कोपान्वितं प्रकुरुते तपनश्च पुत्रं
निस्सन्ततिं च विधुजः कुसुतं कुजार्की।
शुक्रेन्दुदेवगुरवः सुतधामसंस्थाः
कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुधियं सुरूपम्॥5॥

जिसके लग्न से पचम स्थान मे सूर्य हो उसका पुत्र क्रोधी होता है और बुध हो तो पुत्ररहित होता है। मंगल और शनि हो तो दुष्ट स्वभाव वाला पुत्र होता है, शुक्र, चद्रमा और बृहस्पति हो तो सुदर एवं बुद्धिमान बहुत पुत्र होते हैं।।5।।

षष्ठभावफलम्–

मार्तण्डभूमितनयौ ह्यरिपक्षनाश
मन्दः करोति पुरुषं बहुराज्यमानम्।

शुक्रो बुधो हि कुमतिं सरुजं च जीव-
श्चन्द्रः करोति विकलं विफलप्रयत्नम्॥6॥

जन्मलग्न से षष्ट स्थान में सूर्य और मंगल हो तो शत्रुपक्ष का नाश होता है, शनि हो तो जातक राजमान्य होती है और षष्ठ भाव में शुक्र, बुध हों तो जातक दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा गुरु हो तो रोगी और चंद्रमा हो तो मनुष्य का प्रयत्न विफल होता है, अतएव जातक सदा ही विकल रहता है॥6॥

सप्तमभावफलम्--

तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था
जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्ततिं च।
जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां
रूपान्वितां जनमनोहरशीलरूपाम्॥7॥

यदि जन्मलग्न में सातवें स्थान में सूर्य, भौम और शनि हो तो उसकी स्त्री आचारभ्रष्टा तथा थोड़ी संतान वाली होती है और गुरु, चद्रमा, शुक्र, बुध सातवें भाव में हों तो जातक की स्त्री बहुत सतान वाली तथा अत्यंत सुन्दरी, सबको अपने गुणों से प्रसन्न करने वाली तथा सुशीला होती है॥7॥

अष्टमभावफलम्--

सर्वे ग्रहाः दिनकरप्रमुखा नितान्तं
मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम्।
शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभागं
बुद्ध्या विहीनमतिरोगगणैरुपेतम्॥8॥

सूर्यादि नव ग्रहों में से कोई भी जन्मलग्न के आठवें भाव में हो तो प्राणी दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा उसके किसी भी अंग में शस्त्राभिघात होता है और जातक बुद्धिहीन तथा अनेक रोगों से युक्त होता है॥8॥

नवमभावफलम्--

धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः
कुर्वन्ति धर्मनिधनं जनयन्ति पापम्।
चन्द्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमन्त्री
धर्मप्रधानधिषणं कुरुते मनुष्यम्॥9॥

रवि, शनि और मंगल जन्मलग्न मे नवम स्थान में हों तो धर्म का नाश तथा पाप की उत्पति करते हैं; चंद्रमा, बुध, शुक्र, गुरु यदि नवम स्थान में हो तो मनुष्य की बुद्धि प्रधान रूप से धर्मकार्य में रहती है॥9॥

दशमभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः
कुर्य्युर्नरं बहुकुकर्मकरं दरिद्रम्।
चंद्रश्च कीर्त्तिमुशना बहुपुत्रयुक्तं
कुर्यात् सुकर्मनिरतं विधुजो गुरुश्च॥10॥

सूर्य मंगल और शनि, यदि दशम भाव में हों तो मनुष्य कुत्सित कर्म करने वाला तथा दरिद्र होता है, चद्रमा हो तो कीर्तिवान्, शुक्र हो तो बहुत पुत्र वाला तथा बुध और गुरु हों तो अच्छे कार्यों में निरत रहता है ॥10॥

एकादशभावफलम्–

लाभस्थितो दिनपतिर्नृपलाभकारी
तारापतिर्बहुधनं क्षितिजश्च नारीः।
सौम्यो विवेकसहितं सुभगं च जीवः
शुक्रः करोति भवनं रविजः सुकान्तिम्॥11॥

एकादश भाव में सूर्य हो तो राजा से लाभ, चंद्र हो तो बहुत धन, मंगल हो तो स्त्री सुख, बुध हो तो उत्तम विवेक, बृहस्पति हो तो सौभाग्य, शुक्र हो तो धनयुक्त और शनि हो तो अच्छी कान्ति देते हैं॥11॥

द्वादशभावफलम्–

सूर्यः करोति पुरुषं व्ययगो विशालं
काणं शशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम्।
चन्द्रात्मजः प्रकुरुते निधनं धनानां
जीवः कृशं शनिकवी निजराज्यनाशम्॥12॥

यदि सूर्य जन्मलग्न से द्वादश भाव में हो तो वह पुरुष विशाल शरीर वाला होता है और चंद्रमा हो तो काना और मंगल हो तो बहुत पाप करने वाला, बुध हो तो धन का नाश करने वाला, गुरु हो तो कृश शरीर तथा शनि और शुक्र व्यय भाव में हों तो अपने राज्य का नाश करने वाला होता है॥12॥

स्त्री जातक की कुण्डली

प्रथमभावफलम्–

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च
राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम्।

शुक्रः शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-
मायुष्मतीं प्रकुरुते च विभावरीशः॥1॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न में सूर्य या मगल हो वह विधवा, राहु हो तो मृतवत्सा, शनि हो तो दरिद्रा और शुक्र, बुध, गुरु में से कोई हो तो अच्छी स्वभाव वाली पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो दीर्घायु होती है॥1॥

द्वितीयभावफलम्-

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमाः
दारिद्रयदुःखमतुलं निहिताः द्वितीये।
वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्या
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः॥2॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न से दूसरे स्थान में सूर्य, शनि, राहु और मंगल हो तो वह स्त्री दुःख दारिद्रय से युक्त और गुरु, शुक्र, बुध हो तो धनवती तथा भाग्यवती और चंद्रमा दूसरे भाव में हो तो बहुत पुत्रों से युक्त होती है॥2॥

तृतीयभावफलम्-

शुक्रेन्दुभौमगुरुसूर्यबुधास्तृतीये
कुर्युः सतीं बहुसुतां धनभोगिनीं च ।
कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां
पुष्टिं करोति नियतं खलु सैंहिकेयः॥3॥

जिस स्त्री की कुंडली के तृतीय भाव में शुक्र, चंद्रमा, भौम, गुरु, सूर्य, बुध इन ग्रहों में से कोई भी हो तो वह स्त्री पतिव्रता, बहुत पुत्रो से युक्त और धन का भोग करने वाली होती है और जिस कन्या के जन्मलग्न में तृतीय भाव में शनि हो तो वह अति धनवती और राहु हो तो पुष्ट शरीर वाली होती है॥3॥

चतुर्थभावफलम्-

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुतौ चतुर्थे
सौभाग्यशीलरहितां कुरुते शशाङ्कः।
राहुः सपत्निसहितां क्षितिवित्तलाभं
दद्याद् बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम्॥4॥

जिस स्त्री की कुंडली मे मंगल और शनि, चतुर्थ भाव में हो तो व अल्प दुग्ध देने वाली चंद्रमा हो तो सौभाग्य शील से रहित, राहु हो तो सपत्नी से युक्त, बुध हो तो धन-भूमि का लाभ करने वाली और बृहस्पति तथा शुक्र हो तो सौख्यवती होती है।

पंचमभावफलम्–

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ
चन्द्रात्मजो बहुसुतां गुरुभार्गवौ च।
राहुर्ददाति मरणं रविजश्च रोगं
कन्यानिधानमुदरं कुरुते शशाङ्क॥5॥

स्त्री के पंचम भाव में सूर्य अथवा मंगल हो तो उसकी संतति मर जाती है, यदि बुध, गुरु, शुक्र हो तो वह पुत्र-पुत्रियों से युक्त होती है एवं पंचम भाव में राहु से मरण, शनि से रोग तथा चंद्रमा से बहुत कन्याएं होती हैं॥5॥

षष्ठभावफलम्–

षष्ठे शनैश्चरबुधा रविराहुजीवाः
भौमः करोति सुभगां पतिसेविनीं च।
चंद्र करोति विधवामुशना दरिद्रां
वेश्यां शशाङ्कतनयः कलहप्रियां वा॥6॥

स्त्री के षष्ठ भाव में शनि, बुध, सूर्य, राहु, गुरु और मगल इन ग्रहों में से कोई हो तो वह सौभाग्यवती, पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो विधवा, शुक्र हो तो दरिद्रा तथा वेश्या और बुध हो तो कलह करने वाली होती है॥6॥

सप्तमभावफलम्–

सूर्यः क्षितीन्दुसुतजीवशनीन्दुशुक्राः
दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः।
वैधव्यबन्धनमृतिं किल वित्तनाशं
व्याधि विदेशगमनं च यथाक्रमेण॥7॥

स्त्री के जन्म लग्न से सप्तम भाव में सूर्य, मगल, बुध, गुरु, शनि, चद्रमा, शुक्र हो तो क्रम से मरण, वैधव्य, बन्धन, धननाश, रोग, विदेश गमन ये फल देते हैं॥7॥

अष्टमभावफलम्–

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ निहितौ वियोगं
मृत्युं शशाङ्कभृगुजौ च तथैव राहुः।
सूर्यः करोति विधवां सुभगां महीजः
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च॥8॥

स्त्री के जन्मलग्न में अष्टम स्थान में गुरु और बुध हों तो पति से वियोग, चंद्रमा, शुक्र और राहु हों तो मरण, सूर्य हो तो वैधव्य, मंगल हो तो सौभाग्य, शनि हो तो वह स्त्री बहुत सतानवाली तथा पति प्रिया होती है।।8।।

नवमभावफलम्–

चन्द्रात्मजो भृगुदिवाकरदेवपूज्या
धर्मस्थिता विदधते किल धर्मनिष्ठाम्।
भौमो रुजं च खलु सूर्यसुतश्च रण्डां
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः।।9।।

जिस स्त्री के नवम भाव में बुध, शुक्र, सूर्य, गुरु इनमें से कोई हो तो वह धर्म में निष्ठा रखने वाली, भौम के रहने से रोगी तथा शनि होने से विधवा और चंद्रमा होने से बहुत संतान वाली होती है।।9।।

दशमभावफलम्–

राहुः करोति विधवां यदि कर्मणि स्यात्
पापे रतिं दिनकरश्च शनैश्चरश्च।
मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुलटां च चन्द्रः
शेषाः ग्रहा धनवतीं सुभगां च कुर्युः।।10।।

जिस स्त्री के दशम भाव में राहु हो वह विधवा; सूर्य, शनि हो तो पापकर्म करने वाली तथा मगल हो तो अल्पायु, चंद्रमा हो तो धन रहित तथा कुलटा और शेष ग्रह (बुध, बृहस्पति, शुक्र) यदि जन्म लग्न से दशम भाव में दशम भाव में हों तो वह स्त्री धनवती तथा सौभाग्यवती होती है।.10।।

एकादशभावफलम्–

आये स्थितश्च तपनः कुरुते सुपुत्रां
पुत्रीमतीं च महिजोऽर्थवतीं हि चंद्रः।
आयुष्मतीं सुरगुरुश्च तथैव सौम्यो
राहुः करोति विधवां भृगुरर्थयुक्ताम्।।11।।

स्त्री के एकादश भाव में सूर्य हो तो अच्छे पुत्र वाली, मंगल हो तो कन्या वाली चंद्रमा हो तो धन वाली होती है। ग्यारहवें भाव में गुरु अथवा बुध हो तो दीर्घायु, राहु हो तो विधवा और शुक्र हो तो वह स्त्री धनवती होती है।।11।

द्वादशभावफलम्–

अन्ते गुरुर्हि विधवां दिनकृद् दरिद्रा
चन्द्रो धनव्ययकरां कुलटां च राहुः।
साध्वीं तथा भृगुबुधौ बहुपुत्रपौत्रां
प्राणेशसक्तहृदयां सुहृदां कुजश्च॥12॥

जिस स्त्री में जन्मलग्न से द्वादश स्थान में गुरु हो वह विधवा, सूर्य हो तो दरिद्रा, चंद्रमा हो तो धन का अधिक खर्च करने वाली, राहु हो तो व्यभिचारिणी, शुक्र तथा बुध हो तो सच्चरित्रा और मंगल हो तो बहुत पुत्र पौत्रों से युक्त, पति से प्रेम करने वाली तथा सुशीला होती है।।12।।

अन्ययोगाः

लग्ने शौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ।
कर्मस्थाने भवेद् भौमो राजयोगस्तदा भवेत्॥1॥

लग्न में शनि और चंद्रमा हो, त्रिकोण अर्थात् नवम-पंचम स्थान में बृहस्पति तथा सूर्य हों और दशम भाव में मंगल हो तो राजयोग देता है ।1।।

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदि।
तस्यः भ्राता न जीवेत एकाकी हि भवेच्च सः।।2॥

यदि अपनी राशि का होकर सूर्य नवम भाव मे हो तो जातक का भाई नहीं जीता है और वह एकाकी ही रहता है।।2 ।

कर्मस्थाने निजक्षेत्रे रविराहू यदा गतौ।
भौमशुक्रबुधैर्युक्तौ क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः।।3॥

यदि रवि और राहु अपने गृह के होकर कर्म भाव में हों और भौम, शुक्र, बुध से युक्त हों तो क्षण ही में जातक का धन वृद्धि तथा ह्रास को प्राप्त होता है।।3॥

लग्ने क्रूरे व्यये क्रूरे धने सौम्ये तथैव च।
सप्तमे भवने क्रूरे परिवारक्षयंकरः।।4॥

लग्न, द्वादश तथा सप्तम भवों में पाप ग्रह हों और दूसरे भावों में शुभ ग्रह हों तो परिवार का नाश करने वाला होता है।।4।।

षष्ठे च भवने सोमः सप्तमे राहुसम्भवः।
अष्टमे च यदा शौरिर्भार्या तस्य न जीवति।।5॥

जिसके षष्ठ भाव में चद्रमा, सप्तम में राहु, अष्टम में शनि हो तो जातक की स्त्री नहीं जीती है।।5।।

लग्नस्थाने यदा शौरी रिपुस्थाने च चंद्रमाः।
कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति॥6॥

यदि जन्मलग्न में शनि, षष्ठ भाव में चद्रमा, सप्तम भाव में मंगल हो तो जातक का पिता नहीं जीता है।।6।।

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रोऽथ वा शशी।
सर्वकार्याणि सिद्धयन्ति राजमान्यो भवेन्नरः॥7॥

जिसके दशम भाव में बृहस्पति बुध, शुक्र या चद्रमा हो जातक के सब कार्य सिद्ध होते हैं तथा वह राज्यमान्य होता है।।7।।

कुभे शौरिर्धने सूर्यो मेषे भवति चंद्रमाः।
मकरे च यदा शुक्रः स भुङ्क्ते पैतृकं धनम्॥8॥

कुभ राशि मे शनि, धन भाव मे सूर्य, मेष राशि म चद्रमा और मकर राशि में शुक्र हो तो जातक पिता के धन का भं करने वाला होता है।।8।।

शुक्रो नास्ति बुधो नास्ति नास्ति केन्द्रे बृहस्पतिः।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्यति॥9॥

जिसके केन्द्र स्थान में शुक्र, बुध, बृहस्पति न हों और दशम भाव मे मगल न हो तो वह मनुष्य कुछ नहीं कर सकता।।9।।

त्रिभिः स्वगृहगैर्मन्त्री त्रिभिरुश्चगतैर्नृपः।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासः त्रिभिरस्तैर्निरर्थकः॥10॥

जन्म समय मे 3 ग्रह स्वराशि के हों तो मत्री, 3 ग्रह उच्च के हों तो राजा,- 3 ग्रह नीच के हों तो दास और 3 ग्रह अस्त के हों तो निरर्थक होता है।।10।।

लग्ने शुक्रबुधौ यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।
दशमेऽङ्गारको यस्य स जातः कुलदीपकः॥11॥

जिसके लग्न में शुक्र-बुध और केन्द्र स्थान म बृहस्पति दशम भाव में मंगल हो वह पुरुष कुल को प्रकाशित करने वाला होता है।11।।

आदौ जीवः सितः प्रान्ते अन्ये मध्ये निरन्तरम्।
राजयोगं विजानीयात् स्वकुटुम्बविवर्धनः॥12॥

लग्न में गुरु, द्वादश मे शुक्र और शेष ग्रह मध्य में निरन्तर (लगातार) हों तो राजयोग होता है और वह मनुष्य अपने कुटुम्ब को बढ़ाने वाला होता है।

क्रूराश्चतुर्थके लग्नात् यदि क्रूरा धनेषु च।

दरिद्रयोगं जानीयात् पितृपक्षक्षयङ्करः।।13।।

लग्न से चतुर्थ और द्वितीय भाव में पाप ग्रह हों तो दरिद्र योग होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य पिता के कुल का नाश करने वाला होता है।।13।

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिर्यदा भवेत्।

राहुश्च सहजस्थाने तस्य माता न जीवति।।14।।

लग्न में गुरु, धनभाव मे शनि तथा तीसरे स्थान में राहु हों तो उसकी माता शीघ्र मर जाती है। 14।।

सप्तमे भवने चंद्रो रवी राहुश्च मङ्गलः।

सप्तमे दिवसे मृत्युः सप्तमासे न संशयः।।15।।

जन्मलग्न से सप्तम भाव में चंद्रमा, सूर्य, राहु और मंगल हो तो जातक सात ही दिन में अथवा सात मास में ही अवश्य ही मर जाता है।।15।।

उच्चस्थाने यदा भौमो रविराहुसमन्वितः।

तीव्रपीडा भवेत्तस्यं स्वस्थानेनैव तिष्ठति।।16।।

जन्मकाल में उच्च राशि का मगल सूर्य और राहु के साथ हो तो जातक के शरीर मे बडी पीडा होती है और वह अपने स्थान में नहीं रहता है।।16।।

क्रूरक्षेत्रे गते जीवे रविराहुधरासुते।

सप्तमे भवने शुक्रे देहे कष्टं भवेदिति।।17।।

यदि रवि, राहु, मंगल और बृहस्पति क्रूर ग्रह (6/8/12) में हो और सप्तम भाव में शुक्र हो तो शरीर में कष्ट होता है।।17।।

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधाशौरी तथैव च।

यस्य जातस्य दीर्घायुः सम्पदस्तु पदे पदे।।18।।

यदि गुरु, बुध, शनि, अपने गृह में हों तो जातक को दीर्घायु और पद-पद में धन सपत्ति देने वाला होता है।।18।।

❑❑❑

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में
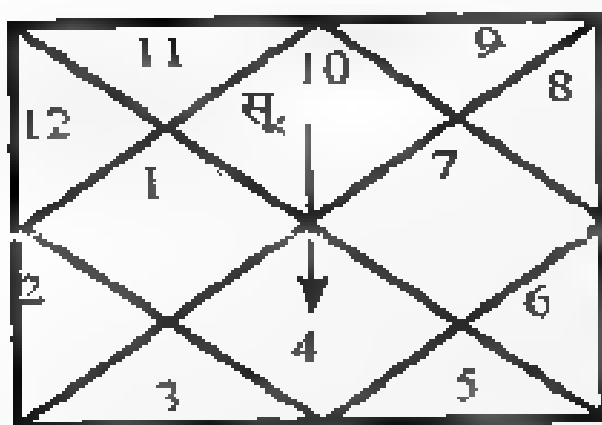
मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। प्रथम स्थान में मकर राशि का सूर्य शत्रुक्षेत्री होगा। फलतः स्वास्थ्य व सौन्दर्य में कुछ कमी रहेगी फिर भी जातक तेजस्वी, ओजस्वी, सत्यवक्ता एवं न्यायप्रिय होता है। जातक की अपने पिता से विचारधारा कम मिलेगी। जातक के जीवन में गुप्त शत्रुओं की बहुतायत रहेगी।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः स्त्री पक्ष से हल्का सा विरोधाभास होते हुए भी गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा।

निशानी–जातक की स्त्री रूपवती, सुन्दर एवं आकर्षक देहयष्टि वाली होगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में मान-सम्मान की वृद्धि होगी। यश मिलेगा पर दुर्घटना का भय बना रहेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के) मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक विकल अंगों वाला एवं विचलित मन-मस्तिष्क वाला होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से **'रुचक योग'** बनेगा। ऐसा जातक निश्चित रूप से राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न मे सूर्य अष्टमेश होगा। प्रथम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की भाग्येश+षष्टेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक बुद्धिमान एवं तेजस्वी होगा। अपने पराक्रम से रुपया कमायेगा। यहां पर यह युति ज्यादा खिलेगी नहीं फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा जातक अपने कुल का नाम रोशन करेगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु नीच का होगा। जातक को कर्णदोष एवं नेत्र पीड़ा होने की संभावना अधिक रहेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से जातक **'कुल का दीपक'** एवं राज सुख प्राप्त करने का अधिकारी होगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होगे। सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री तो शनि स्वगृही होकर **'शश योग'** बनायेगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति लग्न स्थान में विस्फोटक है। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। परन्तु व्यक्तित्व विकास हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक के व्यक्तित्व को बिगाड़ेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को परेशानियां देगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
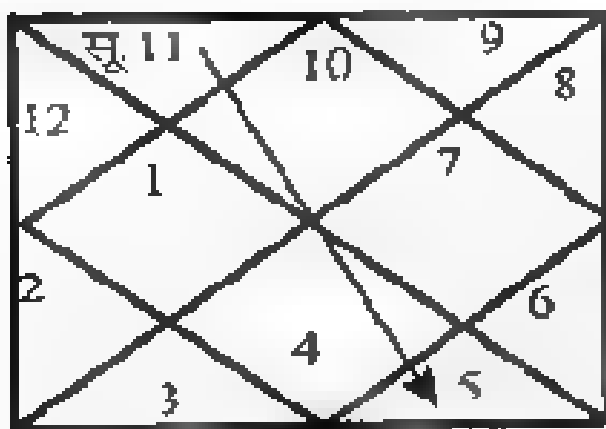
मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। द्वितीय स्थान में सूर्य कुंभ राशि में शत्रु क्षेत्री होगा। ऐसा जातक धन का संचय नहीं कर पाता। जातक को कुटुम्ब सुख में भी कठिनाइयां प्राप्त होंगी। ऐसा जातक दिखावे के लिए विलासिता पूर्ण जीवन जीयेगा। जातक की वाणी गंभीर, अप्रिय तथा अनिष्ट सूचक होगी।

दृष्टि–द्वितीय भावगत सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव अपने ही घर (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक की आयु लम्बी होगी।

निशानी–पराशर ऋषि के अनुसार **'नष्टं वित्त न लभ्यते'** ऐसे जातक के हाथ से जो वस्तु खो जायेगी, वो वापस नहीं मिलेगी उधार दिया हुआ धन डूब जायेगा।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा मिश्रित फलकारी साबित होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चद्र की युति द्वितीय स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 2 से 4 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति धन स्थान में धन हानि करायेगी। पत्नी की बीमारी मे जातक रुपया खर्च होगा। दाम्पत्य जीवन का सुख नष्ट होगा।
2. **सूर्य+मगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से जातक का धन भूमि संबंधी कार्यों में खर्च होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। द्वितीय स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनो ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे, जो सूर्य का ही घर है। जातक बुद्धिमान एव धनवान होगा। जातक की आमदनी के जरिए एक से अधिक प्रकार के रहेंगे। जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होगी। जातक दीर्घजीवी होगा जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु होने से जातक धर्मप्रधान व्यक्ति होगा तथा धार्मिक वाणी बोलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र होने से सरकारी क्षेत्र से धन की प्राप्ति होगी। पर धनसग्रह हेतु सघर्ष बना रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह कुभ राशि में होंगे सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि मे स्वगृही होगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति धन स्थान में विस्फोटक है। धन सग्रह मे बाधाएं आयेगी पिता की मृत्यु के बाद जातक धनवान होगा
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु धन संग्रह में भारी कष्ट का सकेतक है।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु आर्थिक विषमताए देगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रथों के अनुसार
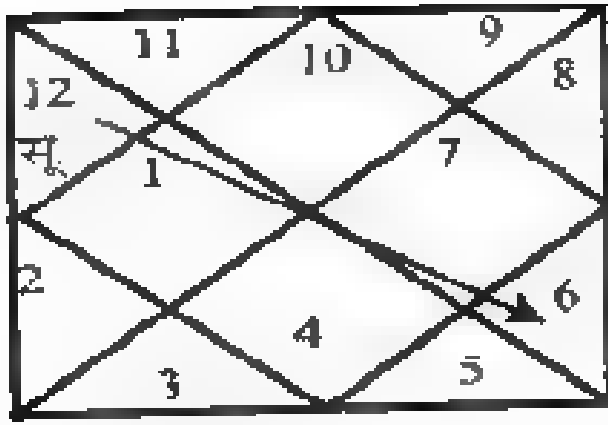
सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। तृतीय स्थान में सूर्य मीन (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक अत्यधिक पुरुषार्थी तथा पराक्रमी होता है। जातक शत्रुहन्ता एवं भाग्यशाली होता है। जातक के नौकर एवं मित्र अति विश्वास योग्य नहीं होते।

दृष्टि—तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा।

निशानी—ऐसे जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होता। पर मित्रों से लाभ होता है।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा। भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान में होने से जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या की रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति पराक्रम स्थान में होने से छोटे भाई का सुख नही प्राप्त होगा। भाई-बहनों में मनमुटाव रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से जातक के चार भाई होंगे
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। तृतीय स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच राशि का होगा यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध की उच्च राशि होगी। फलतः जातक बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होगा। जातक का पराक्रम तेज होगा। परिजन एवं इष्टमित्रों की मदद जीवन में मिलती रहेगी। जातक का भाग्योदय 26 वर्ष की आयु में होना शुरू होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु स्वगृही होगा। जातक को भाई बहनों का सुख मिलेगा। पर भाइयों से बनेगी नहीं।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र उच्च का होगा जातक को मित्रों रिश्तेदारों से लाभ होता रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहा दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि सम राशि मे है। अष्टमेश व द्वितीयेश यह युति पराक्रम स्थान में विस्फोटक है। परिवार में कलह विवाद बना रहेगा। मित्र अविश्वासनीय होंगे। छोटे-बड़े दोनों भाइयों का सुख नहीं होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु भाइयों में कोर्ट–केस करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु परिजनो में विवाद करायेगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
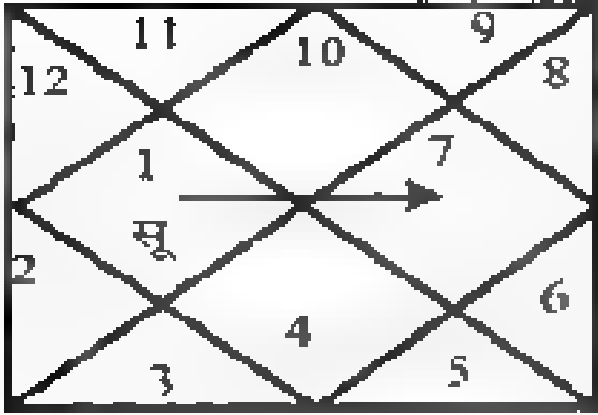
मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी–कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। यहां चतुर्थ स्थान में सूर्य उच्च का होगा। मेष के अशों में सूर्य परमोच्च का होता है। अपनी राशि से नवमें स्थान पर होने के कारण सूर्य यहां शुभ फलदायक है। '**रविकृत राजयोग**' के कारण जातक आध्यात्मिक शक्ति से युक्त, भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त, ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीता है। जातक पढ़ा–लिखा होगा। उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।

दृष्टि–चतुर्थ भाव स्थित सूर्य की दृष्टि दशम स्थान तुला राशि पर होगी। ऐसा जातक राजकीय प्रभुत्व सम्पन्न राजपुरुष होता है।

निशानी–ऐसे जातक के पास बड़ा मकान होता है। जिसके दरवाजे भी बड़े–बड़े होंगे।

दशा–सूर्य की दशा–अंतर्दशा में जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान मे होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 12 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति मेष राशि (उच्च के सूर्य) में होने से '**रविकृत राजयोग**' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मगल होने से '**किम्बहुना योग**' बनेगा। जातक निश्चित रुप से राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एव पराक्रमी होगा। उसके पास उत्तम वाहन व एकाधिक उत्तम भवन होंगे।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा, चतुर्थ स्थान में 'मेष राशिगत' यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध

के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। सूर्य के कारण **'रविकृत राजयोग'** तथा बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बनेगा। जातक बुद्धिमान होगा तथा कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। राज (सरकार) से लाभ उठायेगा तथा उत्तम वाहन एवं मकान सुख को प्राप्त करता हुआ समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति कहलायेगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य एवं बृहस्पति की युति जातक को मित्रों से लाभ दिलायेगी। जातक धनवान व दयावान होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र उत्तम वाहन एवं मकान का सुख देगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। सूर्य यहां उच्च का होकर **'रविकृत राजयोग'** तो शनि यहां नीच का होकर **'नीचभंग राजयोग'** बना रहा है। अष्टमेश व द्वितीयेश की चतुर्थ स्थान में यह युति जातक के माता-पिता के सुख को नष्ट करके राजयोग देगी। जातक महाधनी, बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा गांव का प्रमुख होगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु माता-पिता के सुख में कमी दिलायेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु मां को बीमार करायेगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
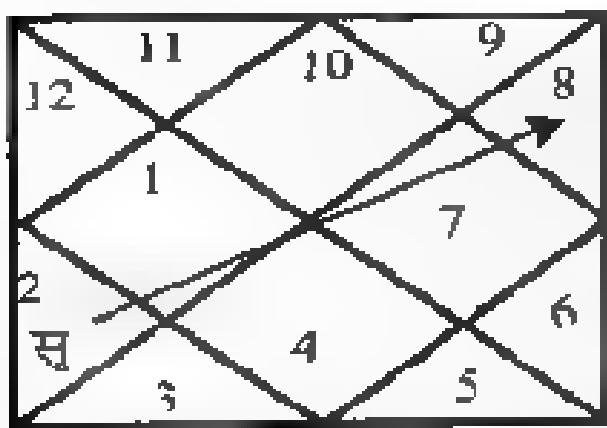
मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथो के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। पचम स्थान में सूर्य वृष (शत्रु) राशि मे होगा ऐसे जातक को विद्याध्ययन में प्रारंभिक रुकावटों के बाद सफलता मिलेगी। जातक धनी एवं क्रोधी स्वभाव का होगा पर लम्बी उम्र का स्वामी होगा। संतान पक्ष में थोड़ा कष्ट संभव है।

दृष्टि—पंचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक को लाभ प्राप्ति हेतु विशेष परिश्रम करना पड़ेगा।

निशानी—जातक के पुत्र थोड़े होते हैं संतान उत्पत्ति में विलम्ब, एकाध गर्भपात होगा। संभवतः प्रथम कन्या होगी।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में उन्नति होगी शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न मे सूर्य+चंद्र युति पंचम स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति संतान भाव में होने से ज्येष्ठ संतति का नाश करायेगी। जातक की कन्या सतति अधिक होगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल की युति पुत्र संतान की उत्पत्ति से जातक की किस्मत चमकायेगी।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। पंचम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी यहां पर बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: ऐसा जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली, शिक्षित व प्रजावान होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। एक-दो गर्भपात होंगे। जातक व्यापार प्रिय तथा समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक धर्मध्वज, गुप्त विद्याओं का जानकार होगा
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र स्वगृही होगा। जातक राज सरकार में उच्च पद को प्राप्त करेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों वृष राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मित्रक्षेत्री होगा। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति पंचम स्थान में विस्फोटक है। विद्या प्राप्ति मे बाधा, प्रथम सतति हाथ नहीं लगेगी। सतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु होने से सतान प्राप्ति में बाधा, विद्या में रुकावट आयेगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु की उपस्थिति विद्याध्यन में बाधक है।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में
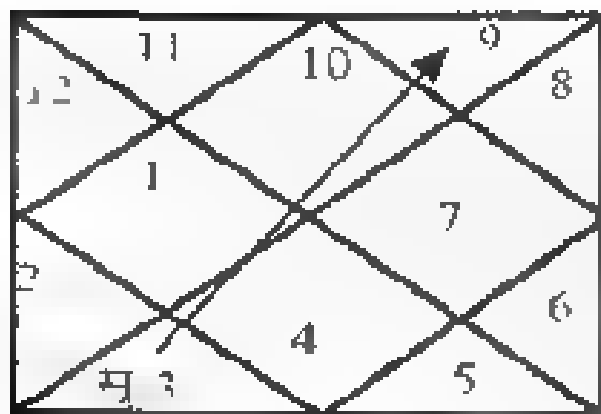
11 10 9 8 12 1 7 2 6 4 सू 3 5

मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी कभी मारक का काम भी करेगा सहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहा अष्टमेश का दोष नहीं लगता छठ स्थान मे सूर्य मिथुन (मित्र) राशि मे होगा। सूर्य की यह स्थिति सरल नामक 'विपरीत

राजयोग' की सृष्टि करेगी। फलतः जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा तथा ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम सामर्थ्यवान होगा। ऐसे जातक के शरीर मे कुछ-न-कुछ रोग होने की संभावना प्रबल रहेगी।

दृष्टि—षष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि द्वादश स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक का खर्च अधिक रहता है। नेत्र पीड़ा संभव है।

निशानी—ऐसा जातक आर्थिक, सामाजिक, पारावारिक एवं राजनैतिक दृष्टि से सुदृढ़ होता है। ऐसे जातक को बाल्यवस्था में सर्प और जल का भय रहेगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक आगे बढ़ेगा तथा ऊंच पद को प्राप्त करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 8 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति यहां पर होने से '**विवाहभंग योग**' एवं सरलनामक '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनी-मानी होगा परन्तु उसका विवाह विलम्ब से होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' व '**लाभभंग योग**' बनायेगा। व्यापार में नुकसान की संभावना प्रबल रहेगी।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकर लग्न मे सूर्य अष्टमेश होगा। छठे स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां स्वगृही होगा तथा खर्च स्थान को देखेगा। षष्टेश षष्टम भाव में हो तो '**हर्ष योग**' बनता है। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का जड़मूल से नाश करने में सक्षम होता है। अष्टमेश के छठे स्थान पर जाने से '**सरल योग**' की सृष्टि होती है। इससे जातक रोग से लड़ने में सक्षम होकर दीर्घजीवी होता है। फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली, धनवान, भाग्यशाली होता है। समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति '**पराक्रमभग योग**' एवं विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा जातक के मित्र दगाबाज होंगे।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र प्रारम्भिक विद्या प्राप्ति में बाधक है। जातक को संतान संबंधी चिंता।
6. **सूर्य+शनि**—यहा दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि में होने सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बना रहा है। जबकि शनि मित्रक्षेत्री होकर

'**लग्नभंग योग**', '**धनहीन योग**' बना रहा है। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति छठे भाव मे विस्फोटक है। जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा पर अचानक शत्रु प्रकोप से जातक का धनबल, शरीबल नष्ट हो जायेगा।

7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु दायें पाव की हड्डी तोड़ेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु दाये पाव में चोट पहुंचायेगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में
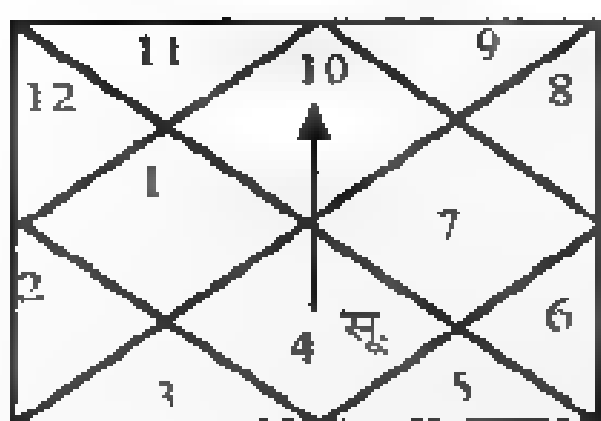
11 10 9 12 8 1 7 2 6 4 सू. 3 5

मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहा अष्टमेश का दोष नहीं लगता। फिर भी ऐसे जातक का दैनिक जीवन तनाव व संघर्षों से भरा होता है। गृहस्थ सुख में कुछ परेशानी रहती है जातक व्यक्तिगत जीवन में महत्वाकांक्षी होता है। ऐसा जातक अल्प प्रयत्न से, कई बार ऊंचाइयों की बुलन्दियों को छू लेता है। जातक सभ्य, सत्यवक्ता होगा तथा आध्यात्मिक व सिद्धान्तवादी जीवन जीयेगा।

दृष्टि सप्तम भावस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न भाव पर होगी। ऐसे जातक को कठोर परिश्रम का मीठा फल मिलता है।

निशानी—पाराशर ऋषि के अनुसार अष्टमेश सूर्य यदि सप्तम भाव में हो तो प्राय: जातक को दो पत्नियां होती हैं।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चद्र की युति सातवें स्थान (कर्क राशि) में होन के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को रात्रि 8 से 6 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां चद्रमा के कारण '**यामिनीनाथ योग**' बनेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा। पत्नी सुन्दर होगी पर ससुराल से मनमुटाव रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल नीच का होगा। जातक धनवान होगा। ऐसा जातक पुराने मकान मे रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। सातवें स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टमेश+भाग्येश

बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखगे। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। उसका विवाह शीघ्र होगा। जातक धनवान होगा। उसके प्रयत्न निष्फल नहीं जायेंगे। जातक समाज का अग्रगण्य, लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब-कुल का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति उच्च का होगा। जातक को उत्तम गृहस्थ सुख मिलेगा। पत्नी पतिव्रता होगी। मित्रो से लाभ है

5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र होने के कारण जातक की पत्नी सुन्दर व कामुक होगी। दोनों के परस्पर अहम् का टकराव होता रहेगा।

6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनो ग्रह कर्क राशि में होंगे। सूर्य यहा मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति सप्तम स्थान में विस्फोटक है। विलम्ब विवाह, पत्नी से वियोग एवं गृहस्थ सुख में अशांति कलह का वातावरण रहेगा। पत्नी विकल अंगों वाली हो सकती है।

7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु जातक को विधुर बनायेगा, जातक की पत्नी की मृत्यु जातक के सामने होगी।

8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक के जीवनसाथी को दीर्घकालिक बीमारी देगा।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में
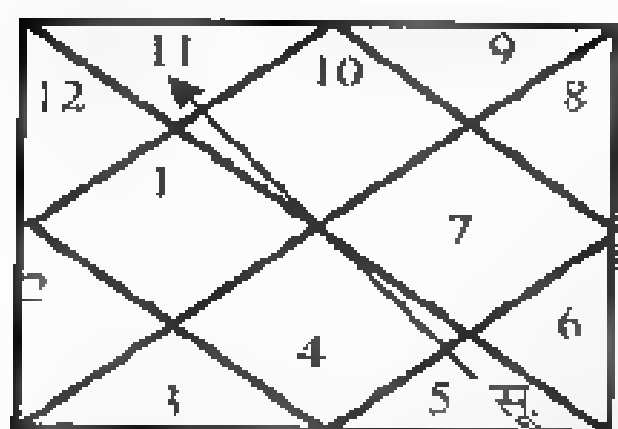
मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। अष्टम स्थान मे सूर्य स्वगृही होगा। सूर्य की यह स्थिति सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' की सृष्टि करेगी। ऐसा जातक धनी-मानी अभिमानी होगा। जातक साहसी, दृढ़ निश्चयी एवं पराक्रमी होगा। ऐसा व्यक्ति दीर्घजीवी होगा तथा ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि) पर होगी, ऐसे जातक को धन संचय एवं कुटुम्ब सुख को लेकर परेशानी उठानी पड़ेगी।

निशानी—जातक पर निन्दक होगा तथा दूसरों की आलोचना करने में अत्यधिक रुचि रखेगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या की सायं 6 से 4 के मध्य होता है। अष्टमेश एवं सप्तमेश की युति यहां पर **'विवाहभंग योग'** एवं सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगी। फलतः जातक धनी-मानी होगा पर उसके विवाह में विलम्ब होगा। गृहस्थ सुख में परेशानी रहेगी।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को माता-पिता का सुख कमजोर रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। अष्टम स्थान में सिंहराशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश के आठवें जाने से **'हर्ष योग'** बना। जिसके कारण व्यक्ति शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा। अष्टमेश के स्वगृही होकर अष्टम स्थान में बैठने से **'सरल योग'** बनता है। इस कारण जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होती है। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति **'पराक्रमभंग योग'** बनायेगा। जातक धनी होगा पर समाज में उसकी इज्जत नहीं होगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र **'संतानहीन योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक राजा से दण्डित होगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही होकर सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है जबकि शनि शत्रु क्षेत्री होकर **'लग्नभंग योग'**, **'धनहीन योग'** बना रहा है। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति अष्टम भाव में विस्फोटक है। जातक धनी मानी, अभिमानी होगा पर अचानक दुर्घटना में जातक का धनबल, शरीरबल नष्ट हो जायेगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु **द्विभार्या योग** बनायेगा अचानक दुर्घटना, अपघात का भय रहेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु बायें पैर के लिए घातक है पैरों मे चोट पहुंचेगी।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में
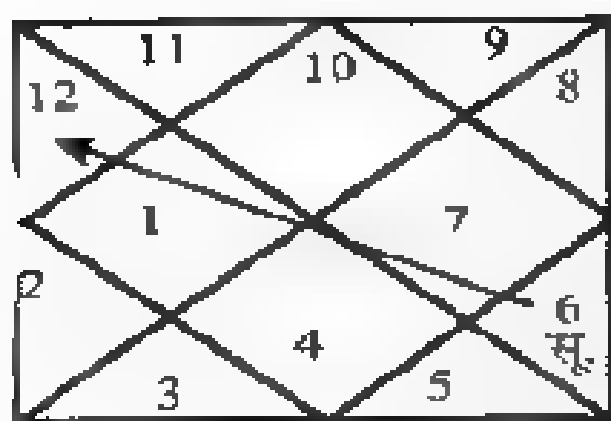
मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। यहां नवम स्थान में सूर्य कन्या (मित्र) राशि में होगा। पितृ सुख एवं भाग्य की उन्नति में कुछ रुकावट महसूस होगी। ऐसा जातक पराये धन का हरण करने में दक्ष होता है पर पिता की सम्पत्ति में विवाद होता है। जातक धर्म के मामले में संदेहास्पद विचारों वाला होगा।

दृष्टि—नवमस्थ सूर्य की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक को भाई-बहनों का सुख मिलेगा पर उनमें कुछ मनोमालिन्यता रहेगी।

निशानी—ऐसा जातक कुछ नास्तिक होगा। परम्परागत मान्यताओं तथा अंधविश्वासों पर आंख मूंद कर विश्वास नहीं करता।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति नवम स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को दोपहर 4 से 2 के मध्य होता है। अष्टमेश एवं सप्तमेश की युति यहां भाग्योदय मे बाधक है। विवाह के बाद जातक की उन्नति होगी।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। नवम् स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश, सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को देखेंगे। यहां पर बुध उच्च राशि का होगा। फलतः ऐसा जातक प्रबल भाग्यशाली होगा, राजा के समान महान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु भाइयों में लाभ, मित्रों से लाभ दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र जातक को राज-सरकार में ऊंचा पद दिलायेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि में तो शनि

मित्र राशि में है। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति भाग्य स्थान में विस्फोटक है। जातक के जीवन मे उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी एवं वास्तविक भाग्योदय हेतु निरन्तर संघर्ष बना रहेगा। भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक का भाग्योदय में बाधक है।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक का भाग्योदय में विलम्ब करायेगा

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
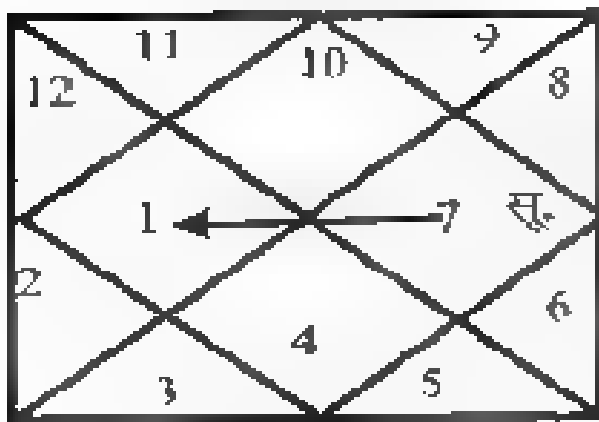
मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रथों के अनुसार सूर्य को यहा अष्टमेश का दोष नहीं लगता। सूर्य यहां दशम भाव में नीच का होगा। तुला राशि का सूर्य परम नीच का होता है। जातक के पिता को घोर कष्ट होगा। तुला का सूर्य एक हजार राजयोग नष्ट करता है। फलतः ऐसा जातक प्रायः व्यापार में धनार्जन करता है। सूर्य यहा 'दिग्बली' होगा फलतः जातक को परिश्रम व सघर्ष के बाद धन, यश प्रतिष्ठा व पद की प्राप्ति होती है

दृष्टि–दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

निशानी–ऐसा जातक चुगलखोर होता है तथा दूसरों की निन्दा करने में रुचि रखता है। जातक के पास वाहन सुख उपलब्ध रहेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा मे रोजी, रोजगार, व्यवसाय की प्राप्ति होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दसवें स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 12 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति मे यहां सूर्य नीच का होगा। जातक को सरकारी नौकरी में बाधा आयेगी पर उसकी पत्नी कमायेगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल के 'दिक्बली' होने से जातक ग्राम या शहर का मुखिया होगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। दशम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां नीच का होगा। '**कुलदीपक योग**' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक उत्तम वाहन का स्वामी होगा उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति भाइयों से धन लाभ, मित्रों से फायदा दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं विद्यावान होगा। विद्या एवं हुनर से जातक का नाम चमकेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य यहा नीच का तो शनि नीच का होने से 'नीचभंग योग' बना। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व धनी होगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की युति दशम भाव में विस्फोटक है। नौकरी में बाधा, राजदण्ड एव झूठी बदनामी का योग है।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु राज सरकार से अवमानना, असहयोग की स्थिति उत्पन्न करेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु राजदण्ड दिलायेगा। कोर्ट-केस में जातक की पराजय होगी।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में
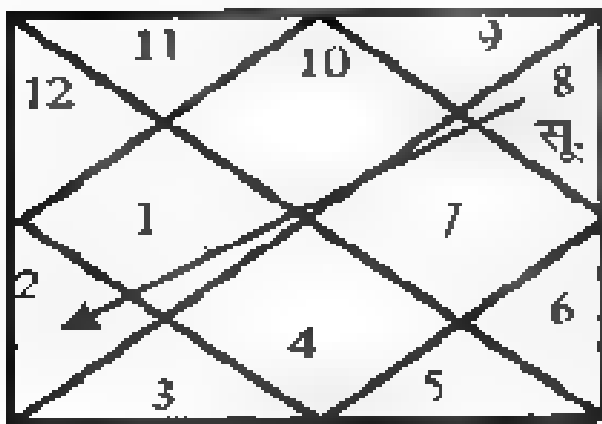
मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार सूर्य की यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। एकादश स्थान में सूर्य वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को अच्छी व्यवसाय, व्यापार से धन यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। जातक के स्वभाव में तेजी व उग्रता रहेगी। जातक को आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति के प्रति असंतोष रहता है।

दृष्टि–एकादश भाव स्थित सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। प्रारभिक विद्या प्राप्ति में रुकावट आयेगी।

निशानी–ऐसा जातक बाल्य अवस्था में दुःखी फिर सुखी होता है। जातक को प्रायः संतान का अभाव होता है। संतान (पुत्र) सुख ईश्वर कृपा, धार्मिक अनुष्ठान से मिलेगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा में जातक को धन लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या को दिन में 12 से 10 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां चंद्रमा नीच का होगा। लाभ में बाधा भागीदारों में वैमनस्य रहेगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। एकादश स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। व्यापारी वर्गीय होगा। व्यापार द्वारा प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेगा। जातक शिक्षित होगा। जातक की संतति भी शिक्षित होगी। जातक समाज का अग्रगण्य व लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को पराक्रमी तथा धर्म प्रिय बनायेगा। पुत्र लाभ देगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को उच्च शिक्षा, उच्च पद व प्रतिष्ठा दिलायेगा। जातक को स्त्री-पुरुष दोनों संतति का लाभ होगा
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि मे होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो, शनि यहां शत्रु राशि में होगा। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति एकादश स्थान में विस्फोटक है। व्यापार व्यवसाय में बाधा, लाभ में रुकावट, भागीदारी में नुकसान होगा। पिता की मृत्यु के बाद जातक बड़े उद्योग का स्वामी होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु व्यापारिक लाभ की बनिस्बत हानि करायेगा
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु धन प्राप्ति में बाधक है।

मकरलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होने से अशुभ है। सूर्य शनि का शत्रु होने से अशुभ ग्रहों के सान्निध्य से कभी-कभी मारक का काम भी करेगा। संहिता ग्रंथों के अनुसार
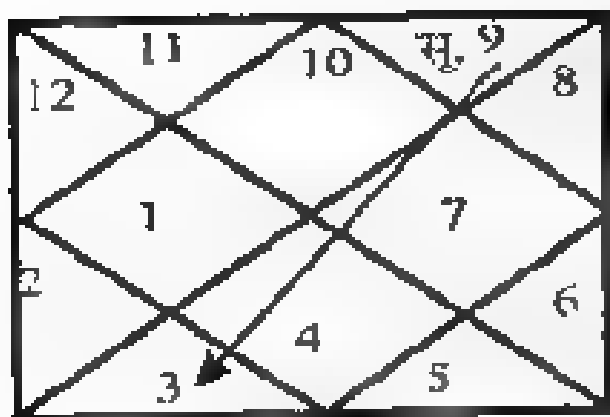
सूर्य को यहां अष्टमेश का दोष नहीं लगता। द्वादश स्थान में सूर्य धनु (मित्र) राशि में होगा। सूर्य की इस स्थिति से सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** की सृष्टि होगी। जातक धनी, मानी अभिमानी होगा। ऐसा जातक स्वभाव में घमण्डी दिखाई देगा। इसके कारण उसके शत्रु बहुत होंगे, जो उसे परेशान करते रहेंगे।

दृष्टि—द्वादशभावगत सूर्य की दृष्टि छठे भाव पर होगी। फलतः जातक अपने ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—ऐसे जातक का पैसा गलत कार्य में खर्च होता है। धन, यश व प्रतिष्ठा की हानि होती है। जातक को नेत्र पीड़ा रहेगी।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी। ऋण, रोग व शत्रु परेशान करेंगे।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (धनु राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रातः 10 से 8 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति यहां पर **'विवाहभग योग'** एवं सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगी। ऐसा जातक धनी मानी होगा। पर विवाह में विलम्ब होगा व नेत्र पीड़ा रहेगी।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल **'सुखहीन योग'**, **'लाभभंग योग'** के साथ विलम्ब विवाह करायेगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। द्वादश स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश बुध के बारहवें स्थान पर होने से **'हर्ष योग'** बनेगा। फलतः जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। अष्टमेश सूर्य के बारहवें जाने से **'सरल योग'** बनेगा जो कि जातक को रोग से लड़ने की शक्ति व सामर्थ्य देगा तथा जातक दीर्घजीवी होगा। जातक समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को धनवान बनायेगा पर जातक धार्मिक कार्य, समाज सेवा व परोपकार में रुपया खर्च करेगा।

5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र संतति प्राप्ति में बाधक है। राजा से दण्ड भी संभव है।
6. **सूर्य+शनि**—यहा दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे सूर्य यहां मित्र क्षेत्री होकर सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बना रहा है। तो शनि सम क्षेत्री होकर '**लग्नभंग योग**' व '**धनहीन योग**' की सृष्टि कर रहा है। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति द्वादश भाव में विस्फोटक है। जातक धनी मानी अभिमानी होगा पर उसे यात्रा से धन हानि, शरीर हानि एव नेत्र पीड़ा होगी।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु राजदण्ड, यात्रा मे हानि, दुर्घटना का संकेत देता है।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु दु:स्वप्न लायेगा।

❑❑❑

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में
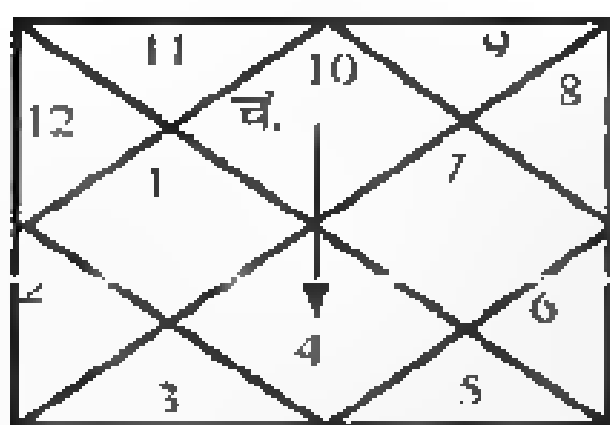
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। चंद्रमा यहां प्रथम स्थान में मकर (शत्रु) राशि में होगा। जातक सुन्दर, विनोदी, विनम्र, चंचल स्वभाव वाला होगा। जातक कल्पनाशील होगा तथा परम्परगत मान्यताओं में विश्वास नहीं रखेगा। जातक विद्यावान (Educational Degree Holder) होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ चंद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर है। फलतः जातक की पत्नी हृष्ट-पुष्ट, गदराये बदन वाली सुन्दर स्त्री होगी।

निशानी–जातक ज्यादा बोलने वाला होगा।

दशा–चद्रमा की दशा-अतर्दशा उन्नतिदायक साबित होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 के) मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति लग्न स्थान में होने के कारण जातक विकल अंगों वाला एव विचलित मन मस्तिष्क वाला होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर राशि में मंगल उच्च का होगा तथा यहां '**रुचक योग**' बनेगा। फलतः '**महालक्ष्मी योग**' बना। यहा बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव (मेष राशि), सप्तम भाव (कर्क

राशि) एवं अष्टम भाव (सिंह राशि) को देखेगे। फलत: जातक महाधनी होगा। जातक को शानदार भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। जातक का भाग्योदय सही अर्थों में विवाह के बाद होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसहिता' के अनुसार मकरलग्न के प्रथम भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मकर राशि' में होगी। यह युति वस्तुत सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहा नीच राशि में होगा। लग्नस्थ दोनों ग्रह क्रमश: **'कुलदीपक योग'**, **'यामिनीनाथ योग'** की सृष्टि करते हुए पचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक की गणना समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को रगीन मिजाज का व्यक्ति बनायेगा। जातक का जीवन साथी सुन्दर होगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक को ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु होने से जातक की पत्नी उम्र मे उससे बड़ी होगी।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु कीर्तिदायक है।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में

च 11, 10, 9, 8, 12, 1, 7, 2, 6, 4, 3, 5
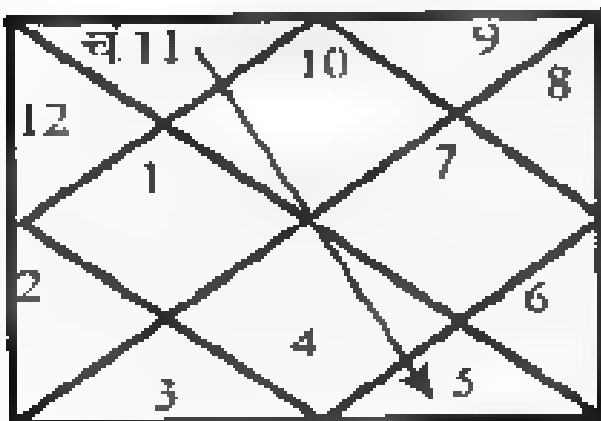
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। द्वितीय स्थान में चद्रमा कुंभ (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक धनी होगा। स्वयं की पत्नी एवं अन्य स्त्रियो द्वारा धन लाभ होता रहेगा। जातक मिष्टभाषी, सौम्य, शिष्ट और विनम्र होगा। जातक को कुटुम्ब का सुख, धन-प्रतिष्ठा, पद, लाभ बराबर मिलता रहेगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

निशानी–जातक दीर्घसूत्री एवं कामक्रीड़ा में स्त्री को परास्त करेगा। विवाह के बाद जातक धनी होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। इस दशा में जातक धन कमायेगा एवं गृहस्थ सुख को भोगेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 2 से 4 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति धन स्थान में, धन-हानि करायेगी। पत्नी की बीमारी में रुपया खर्च होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (वृष राशि), भाग्य भाव (सिंह राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान व सौभाग्यशाली होगा। उसका राजनीति (सरकार) में दबदबा होगा। जातक का आर्थिक विकास प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को धनवान बनायेगा। जातक की वाणी विनम्र एवं मीठी होगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के द्वितीय भाव में गुरु+चंद्र की युति 'कुंभ राशि' में होगी। यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक रोग व शत्रु का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होगा। उसे राज्यपक्ष (सरकार) कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी। यह योग जातक के लिए 60% शुभ फलदायक है।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के शुक्र विवाह के बाद जातक को ऊंची नौकरी दिलायेगा। जातक की संतति भाग्यशाली होगी।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ स्वगृही शनि होने से जातक **'महाधनी'** होगा. यहां **'कलत्रमूल धनयोग'** के कारण जातक को ससुराल से धन मिलेगा जातक की पत्नी भी धनी घराने से होगी।

7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु धन संग्रह मे बाधक है तथा पति-पत्नी के परस्पर प्रेम में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु आर्थिक विषमताएं उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में

11	10	9
12 च.	1	8
2	7	6
3	4	5
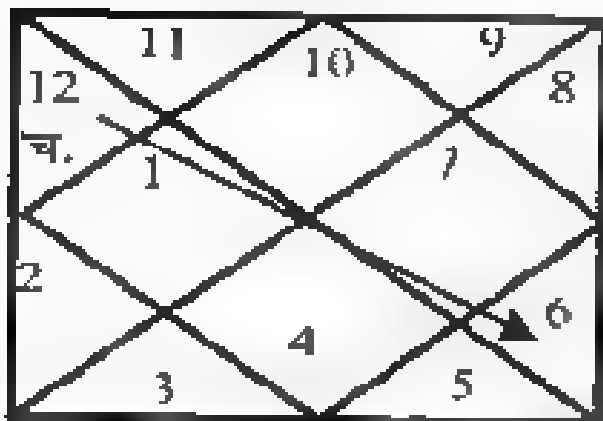
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहा अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहां तृतीय स्थान में चंद्रमा मीन राशि में होगा। चंद्रमा अपनी राशि से नवम स्थान पर होने से शुभ है। जातक भाग्यशाली होगा। उसे पिता, सहोदर एव पत्नी का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक साहसी व पराक्रमी होगा। जातक साहित्य प्रेमी होगा। उसकी व्यवसायिक उन्नति होगी.

दृष्टि—तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली, धर्मभीरु तथा विद्वान होगा एवं पिता की प्रिय होगा।

निशानी—जातक ठंडे दिमाग का होगा क्योंकि चंद्रमा जल तत्व प्रधान है, मीन राशि भी जल तत्व वाली है। अत: ऐसा जातक झगड़े टटे, कलह-विवाद में रुचि नहीं रखेगा

दशा—चंद्रमा की दशा अतर्दशा अति उत्तम फल देगी। जातक का पराक्रम बढ़ायेगी एवं उसका भाग्योदय भी करायेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भाजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न मे सूर्य+चद्र की युति तृतीय स्थान में होने से जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति पराक्रम स्थान में होने से जातक को छोटे भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा भाई-बहनों में मनमुटाव रहेगा
2. **चंद्र+मगल**—यहां तृतीय स्थान में दोनो ग्रह मीन राशि मे होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि षष्टम् स्थान (मिथुन राशि), भाग्य भवन (कन्या राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलत: जातक धनवान होगा। जातक ऋण रोग व शत्रुओ का नाश करने मे सक्षम होगा जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक का राजनीति (सरकार), कोर्ट कचहरी मे वर्चस्व रहेगा।

3. **चंद्र+बुध**—चद्रमा के साथ बुध जातक का शीघ्र विवाह करायेगा एवं विवाह के बाद जातक का भाग्योदय भी शीघ्र होगा।

4. **चंद्र+गुरु** आपका जन्म मकरलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के तृतीय भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मीन राशि' के अंतर्गत होगी। यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनो ग्रह सप्तम भाव, नवम भाव एव एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। यहां बृहस्पति स्वगृही होगा। फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा जातक के मित्र, परिजन जातक के सहायक होगे। जातक महान पराक्रमी होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—चद्रमा के साथ उच्च का शुक्र जातक को परम पराक्रमी बनायेगा। जातक की बहनें अधिक होगी तथा उसे स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक अपने परिश्रम से स्वयं को खूब धनी व प्रसिद्ध व्यक्ति बनायेगा।

7. **चंद्र+राहु**—चद्रमा के साथ राहु होने से जातक के परिजनों में विद्वेष जातक के ससुराल के कारण होगा।

8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु शत-प्रतिशत कीर्तिदायक साबित होगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में
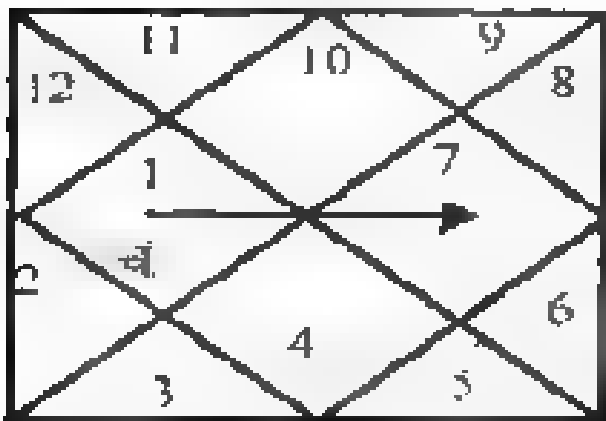
मकरलग्न में चद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहां चतुर्थ स्थान में चंद्रमा मेष (मित्र) राशि में होगा। यह चद्रमा अपनी राशि से दसवें स्थान पर होने से शुभ फलदाई है। ऐसे जातक को माता-पिता का सुख, जमीन जायदाद, वाहन का सुख पूर्ण मिलेगा। जातक को स्त्री संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक धनवान होगा एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा। जातक यशस्वी होगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को रोजी रोजगार की तकलीफ नहीं आयेगी, व्यापार अच्छा चलेगा।

निशानी—महर्षि पाराशर के अनुसार ऐस जातक की पत्नी जातक के वश (कहने) में नहीं रहती। चंद्रमा उच्चाभिलाषी होने से जातक महत्त्वाकांक्षी होगा।

दशा—चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को भौतिक सुखों-संसाधनों की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की चतुर्थ स्थान में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 12 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति मेष राशि (उच्च के सूर्य) में होने से **'रविकृत राजयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मेषराशि में होंगे। मंगल यहां स्वगृही होने से **'रुचक योग'** बनेगा एवं **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (कर्क राशि), दशम भाव (तुला राशि) एवं एकादश भाव (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा व व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा। विवाह के बाद जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा। जातक राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करेगा।
3. **चंद्र+बुध**—चद्रमा के साथ बुध जातक को माता की सम्पत्ति दिलायेगा, परन्तु उनमें थोड़ी सी मनोमालिन्यता रहेगी।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के चतुर्थ भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मेष राशि' में होगी। यहां यह युति वस्तुतः सप्तमेश चद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यह युति केन्द्रवर्ती होने के कारण **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दशम भाव एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक का धन शुभ कार्य, परोपकार के कार्यों में खर्च होगा। जातक का दुर्घटनाओं व संकट से बचाव होता रहेगा। जातक को कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र की युति माता के सुख में वृद्धि कारक है। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
6. **चंद्र+शनि**—चद्रमा के साथ शनि भले ही नीच का हो पर वाहन सुख देगा। जातक की माता बचपन में गुजर जायेगी।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु की युति माता की लम्बी आयु में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**—चद्रमा के साथ केतु माता के सुख में न्यूनता देगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में
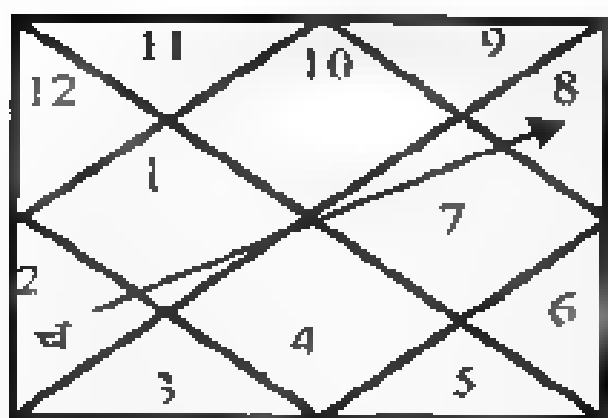
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहा पंचम स्थान में चंद्रमा उच्च का होगा। वृष राशि के अंशों में चंद्रमा परमोच्च का होगा। चंद्रमा अपने स्थान में एकादश स्थान पर स्थित है। ऐसा जातक बहुत ऊंची विद्या प्राप्त करेगा। जातक विनम्र, सौम्य एवं मृदु स्वभाव का होगा। उसे स्त्री-संतान, पद-प्रतिष्ठा, घोड़ा-गाड़ी का पूरा सुख मिलता है।

दृष्टि–पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक को व्यापार में लाभ होगा।

विशेष–**'भावार्थ रत्नाकर'** के अनुसार मकरलग्न में पंचम स्थान में चंद्रमा हो तथा बुध+शुक्र लग्न में हों तो व्यक्ति **'राजराजेश्वर'** होता है। बृहज्जातक में उसे **'महाराजा योग'** King of Kings कहा है।

निशानी–ऐसा व्यक्ति आशावादी विचारों वाला एवं सदा हर्षित रहता है। प्रथम संतति कन्या होगी। कन्याएं अधिक होगी।

दशा–चंद्रमा की दशा बहुत उत्तम फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र युति पंचम स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति संतान भाव में होने से ज्येष्ठ संतति का नाश करायेगी। जातक की कन्या संतति अधिक होगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां पंचम स्थान मे दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। वृष राशि में चंद्रमा उच्च का होगा फलतः यहां **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (सिंह राशि), लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) एवं व्यय भाव (धनु राशि) पर होगा। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय से धन कमायेगा। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक थोड़ा खर्चीले स्वभाव का होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध तीन कन्याएं देगा। यदि पुरुष ग्रह की युति या दृष्टि संबंध न हो तो अधिक कन्याएं भी देगा परंतु संतान सुन्दर होगी।

4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के पंचम भाव में गुरु+चंद्र की युति 'वृष राशि' में होगी। वृष राशि में यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश गुरु के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा उच्च का होगा यहां से दोनों शुभ ग्रह भाग्य भवन लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को देखेंगे। फलतः जातक का भाग्योदय प्रथम संतान के बाद होगा। जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा। जातक व्यापार से कमायेगा ऐसे जातक का सर्वांगीण विकास होगा। उसकी गणन समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित लोगों में होगी।
5. **चंद्र+शुक्र**–चद्रमा के साथ शुक्र **'किम्बहुना नामक'** राजयोग बनायेगा। जातक के पाच पुत्र होंगे। जातक के बहुपुत्र योग होता है।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु पुत्र संतान की प्राप्ति में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**–चद्रमा के साथ केतु गर्भस्राव करायेगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में

11 10 9 8 12 1 7 2 6 4 चं.3 5
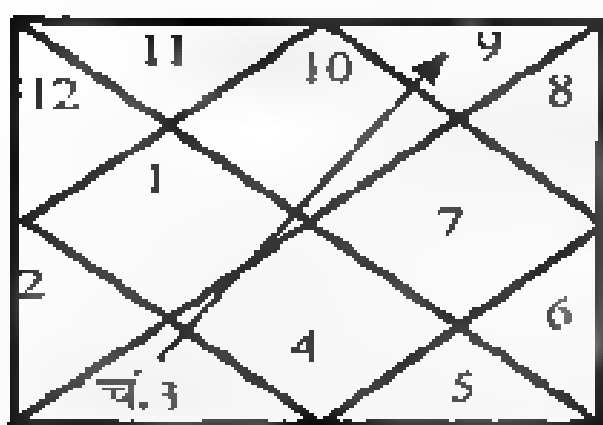
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहा अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। छठे स्थान में चद्रमा मिथुन राशि मे शत्रुक्षेत्री होगा। यह अपनी राशि (कर्क) से द्वादश स्थान में स्थित होकर शुभ फलों को तोड़ रहा है। चंद्रमा इस स्थिति में होने से **'विवाहभंग योग'** बनता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है तथा गृहस्थ जीवन के सुख नष्ट होते हैं जातक का जीवन संघर्षमय होता है।

दृष्टि–षष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि द्वादश भाव (धनु राशि) पर होगी, फलतः जातक कर्जदार होगा। उसे ऋण, रोग व शत्रु परेशान करते रहेंगे।

निशानी–**'बृहत्पाराशर होराशास्त्र'** के अनुसार–दारेशे रिपुभावस्थे आर्यातस्य रुजान्विता' सप्तमेश के छठे होने पर जातक की पत्नी सदा बीमार रहती है तथा जातक क्रोधी होता है एवं स्त्री से प्रेम नहीं करता।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी। चद्रमा की दशा जीवन के बुरे दिनों व दुर्भाग्य से जातक परिचय कराती है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या की रात्रि 10 से 8 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति यहां पर होने से '**विवाहभंग योग**' एवं सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनी-मानी होगा परन्तु उसका विवाह विलम्ब से होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां षष्टम् स्थान मे दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि), व्यय भाव (धनु राशि) एव लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। चंद्रमा के कारण '**विवाहभंग योग**' एवं मंगल के छठे जाने से '**सुखहीन योग**' व '**लाभभंग योग**' बनेगा। ऐसा जातक धनवान तो होगा परन्तु सुख-ऐश्वर्य में कमी एवं लाभ में कमी महसूस करेगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध हर्ष नामक '**विपरीत राजयोग**' करायेगा। ऐसा जातक धनी होगा पर पत्नी से कम बनेगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के छठे भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मिथुन राशि' में होगी यह युति वस्तुतः चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। यहां पर खड्ढे में गिरे गुरु के कारण '**पराक्रमभंग योग**' तथा चंद्रमा के कारण '**विवाहभग योग**' भी बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं धन भाव को देखेंगे। फलतः जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति होती रहेगी। मित्रों से धोखा मिलेगा। जीवन साथी से मनमुटाव होगा। जातक खर्चीली प्रवृति का होगा पर '**गजकेसरी योग**' के कारण जातक सभी सकटों से पार निकल जायेगा तथा एक सफल व्यक्ति कहलायेगा।
5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र यहां वैवाहिक सुख में बाधक है। जातक को सतति से संबंधित चिंता करायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि '**लग्नभंग योग**', '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु दायें अंगों में चोट पहुंचायेगा एवं पाव की हड्डी तोड़ेगा।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु गुप्त रोग देगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में
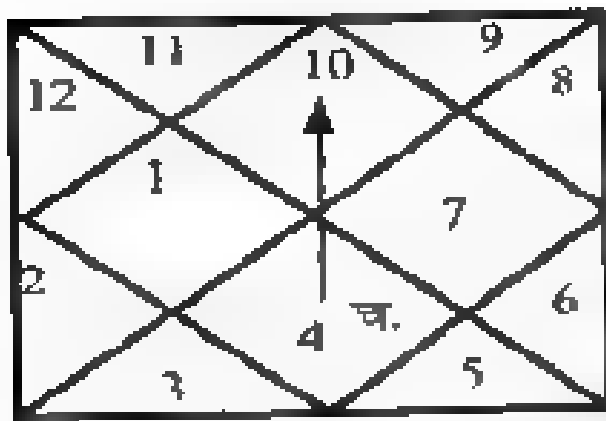
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। चंद्रमा यहां सप्तम स्थान में स्वगृही होगा। फलतः **'यामिनीनाथ योग'** की सृष्टि करेगा। यह एक प्रकार का राजयोग है। जातक की पत्नी साक्षात् रम्भा तुल्य सुन्दर होगी एवं रानी की तरह राज करेगी। जातक धनवान, बुद्धिमान व चतुर होगा। जातक का गृहस्थ सुख अति उत्तम रहेगा। पति-पत्नी में खूब बनेगी। संतान सुख भी उत्तम होगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक द्वारा किये गये परिश्रम का जातक को पूर्ण फल मिलेगा। पुरुषार्थ सफलीभूत होंगे।

निशानी—ऐसा जातक बहुत बोलने वाला (Over talkative) होगा।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। गृहस्थ सुख में बढ़ोत्तरी होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 से 6 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां चंद्रमा के कारण **'यामिनीनाथ योग'** बनेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा। पत्नी सुन्दर होगी पर ससुराल से मनमुटाव रहेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। मंगल यह नीच का एवं चंद्रमा स्वगृही होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (तुला राशि), लग्न भाव (मकर राशि) एवं धन भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलतः यहां **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। जातक महाधनी होगा। वह जो भी कार्य हाथ में लेगा उसमें बराबर सफलता मिलेगी। जातक का राज्य (सरकार) पक्ष में दबदबा होगा।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध विवाह के बाद भाग्योदय करायेगा। जातक की पत्नी सुंदर व बुद्धिमान होगी।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के सप्तम भाव में गुरु+चंद्र की युति कर्क राशि में हो रही है। कर्क

राशि मे यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां स्वगृही होगा तथा गुरु उच्च का होगा। '**गजकेसरी योग**' की यह स्थिति सर्वोत्तम स्थिति है इस स्थिति के कारण '**हंसयोग**', '**कुलदीपक योग**' एव '**यामिनीनाथ योग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एव पराक्रम स्थान को देखेंगे। फलतः जातक तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा जातक की पत्नी सुन्दर तथा धनवान घराने से होगी। जातक व्यापार से धन कमायेगा तथा महान पराक्रमी, यशस्वी होगा तथा राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

5. **चद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र राजयोग देगा। विवाह के बाद ऊंची नौकरी मिलेगी या ऊचा व्यापार मिलेगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि '**लग्नाधिपति योग**' बनायेगा। जातक का पुरुषार्थ सार्थक होगा। परिश्रम में सफलता मिलेगी।
7. **चंद्र+राहु**—चद्रमा के साथ राहु गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक की पत्नी बीमार रहेगी।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु जातक के जीवन साथी को स्थाई रोगी बनायेगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में

11	10	9
12		8
1		7
2		6
3	4	5 च
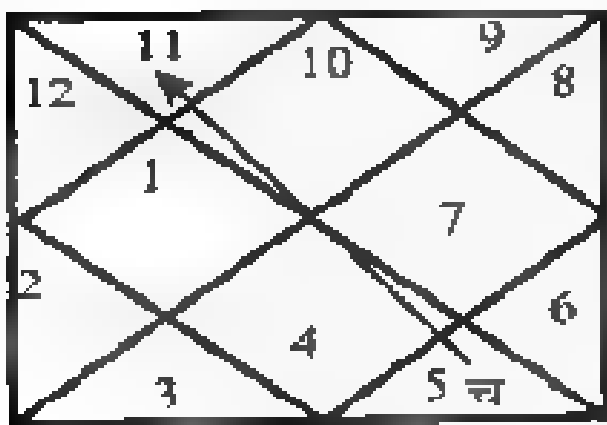
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। अष्टम स्थान में चंद्रमा सिंह (मित्र) राशि का होगा चंद्रमा अपनी राशि से दूसरे स्थान पर होगा. चद्रमा की इस स्थिति से '**विवाहभंग योग**' बनता है। प्रथमतः जातक का विवाह विलम्ब से होगा। विवाह हो तो गृहस्थ सुख ठीक नही। चद्रमा अग्निसंज्ञक राशि में होने से जातक क्रोधी, भड़कीले स्वभाव का होगा। जातक के जीवन में सघर्ष बहुत रहेगा

दृष्टि—अष्टमस्थ चद्रमा की दृष्टि धन भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः धन संग्रह नहीं हो पायेगा। जातक पर ऋण, रोग व शत्रु हावी रहेंगे।

निशानी—'**बृहत्पाराशर होराशास्त्र**' के अनुसार 'भार्याऽपि रोगयुक्ताऽस्य दुःशीलाऽपि न चानुगा' ऐसे जातक की पत्नी रोगिणी, दुःशीला होती है तथा पति का कहना नहीं मानती। पति के वश में नहीं रहती।

दशा—चद्रमा की दशा अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी एवं जीवन के दुर्दिनों मे परिचय करायेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य–**'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न मे सूर्य+चद्र की युति आठवे स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या की सायं 6 से 4 के मध्य होता है। अष्टमेश एवं सप्तमेश की युति यहा पर **'विवाहभंग योग'** एवं सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगी। फलतः जातक धनी मानी होगा पर उसके विवाह में विलम्ब होगा। जातक को गृहस्थ सुख में परेशानी रहेगी
2. **चंद्र+मंगल–**यहां अष्टम स्थान मे दोनों ग्रह सिह राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण यहां **'विवाहभंग योग'** बनेगा। मंगल अष्टम स्थान में होने से **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) धन भाव (कुंभ राशि) एवं पराक्रम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान तो होगा पर उसको सुख एव लाभ में कमी महसूस होती रहेगी।
3. **चंद्र+बुध–**चंद्रमा के साथ बुध हर्षनामक **'विपरीत राजयोग'** देगा। जातक धनी होगा परन्तु भाग्योदय हेतु किये गये प्रयत्नों मे उसे बराबर बाधाएं आती रहेंगी।
4. **चंद्र+गुरु–**आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के अष्टम भाव में गुरु+चंद्र की युति सिंह राशि मे होगी। सिंह राशि में यह युति वस्तुतः सप्तमेश चद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति के कारण **'पराक्रमभग योग'** तथा चंद्रमा के कारण **'विवाहभंग योग'** बनता है। यहां बैठकर दोनो शुभ ग्रह व्यय भाव धन भाव एवं सुख स्थान को देखेंगे। फलतः जातक का पत्नी से मनमुटाव रहेगा एवं मित्र उसे धोखा देंगे। जातक के धन का अपव्यय होगा। विपरीत परिस्थितियो में भी इस शुभ योग के कारण अंतिम सफलता मिलेगी।
5. **चंद्र+शुक्र–**चद्रमा के साथ शुक्र राजयोग में बाधक है। यह युति जातक को संतान संबंधी चिंता देगी
6. **चंद्र+शनि–**चद्रमा के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
7. **चंद्र+राहु–**चंद्रमा के साथ राहु जातक के बाये पाव में चोट पहुंचायेगा।
8. **चंद्र+केतु–**चद्रमा के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

मकरलग्न में चद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहा नवम स्थान में चंद्रमा कन्या
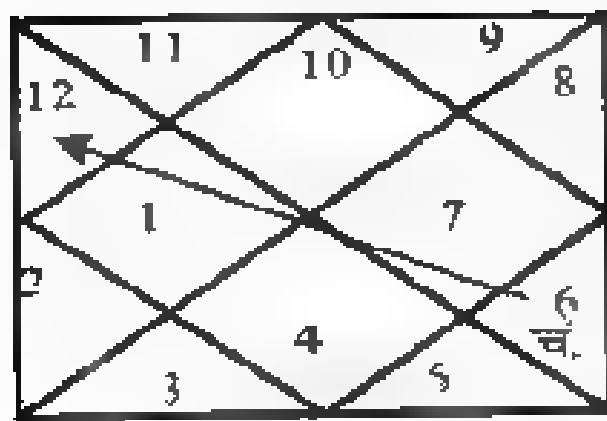
राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। यहां चंद्रमा अपनी (कर्क) राशि से तीसरे स्थान पर है। ऐसा जातक भाग्यशाली होगा सरकारी या गैर सरकारी नौकरी में उच्च पद व प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जातक धनी होगा। जातक को माता पिता, बहन-भाई, स्त्री संतान का सुख मिलेगा। जातक उच्च शिक्षा एव उच्च वाहन को प्राप्त करेगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा.

दृष्टि–नवम भावगत चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलतः जातक पराक्रमी होगा। उसके मित्र अच्छे व सच्चे होंगे।

निशानी–ऐसा जातक बहुत सारे धंधों को एक साथ करने मे रुचि रखेगा। Source of Income will be two & three side.

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा उत्तम फल देगी। जातक की किस्मत चमकेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चद्र की युति नवम स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को दोपहर 4 से 2 के मध्य होता है। अष्टमेश एवं सप्तमेश की युति यहां भाग्योदय में बाधक है पर विवाह के बाद जातक की उन्नति होगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां नवम स्थान मे दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (धनु राशि), पराक्रम भाव (मीन राशि) एवं चतुर्थ स्थान (मेष राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख सुविधाओं एव ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी। जातक महान पराक्रमी होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को परम भाग्यशाली बनायेगा। जातक धनवान होगा।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म मकरलग्न मे हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के नवम भाव में गुरु+चद्र की युति कन्या राशि में हुई। कन्या राशि में यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चद्रमा यहां शत्रु क्षेत्री है। इन दोनों शुभ ग्रहो की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एव पंचम भाव पर है। फलतः जातक के व्यक्तित्व विकास में यह युति सहायक होगी। जातक शिक्षित होगा उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक स्वयं का भाग्योदय प्रथम संतति के तत्काल बाद होगा। जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र भले ही नीच का हो जातक को उत्तम व्यापार उत्तम आमदनी देगा
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक का जीवनसाथी उन्नतिशील विचारों वाला होगा।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु भाग्योदय में बाधाएं उत्पन्न करेगा।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु जातक को उत्साही बनायेगा। जातक के निर्णय प्रायः त्रुटिपूर्ण होंगे।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में

11 10 9 12 8 1 7 च 2 6 4 3 5
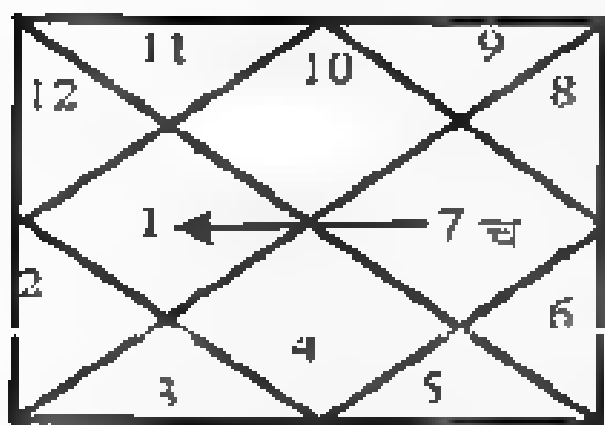
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। यहां दशम स्थान में चंद्रमा तुला (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा अपनी (कर्क) राशि से चौथे स्थान पर होकर केन्द्रवर्ती होगा। फलतः जातक को माता का सुख, उत्तम भवन का सुख वाहन का सुख, नौकरी-व्यवसाय का सुख मिलेगा। जातक महत्वाकांक्षी होगा तथा उसका मनोबल ऊंचा रहेगा।

दृष्टि—दशमस्थ चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थ भाव (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक को सभी प्रकार के भौतिक सुख-ससाधनों की प्राप्ति सहज में होगी।

निशानी—'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार **धनपुत्रादिसंयुतः** ऐसा जातक धन एवं पुत्र सुख से युक्त होता है जातक धर्मात्मा होता है परन्तु जातक की स्त्री जातक के वश में नहीं रहती तथा वह अपनी मनमानी करती है।

दशा—चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दसवें स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दोपहर 2 से 12 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति में यहां सूर्य नीच का होगा जातक को सरकारी नौकरी मे बाधा आयेगी पर उसकी पत्नी कमायेगी।

2. **चंद्र+मंगल**—यहा दशम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (मकर राशि), चतुर्थ भाव (मेष राशि) एवं पंचम भाव (वृष राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी तथा उसे ऐशो–आराम एव भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। मंगल यहां दिक्बली होकर '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध, जातक को उत्तम भवनों का स्वामी बनायेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के दशम भाव मे गुरु+चद्र की युति तुला राशि में है तुला राशि में यह युति वस्तुतः सप्तमेश चद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। केन्द्रवर्ती गुरु+चंद्र के कारण '**यामिनीनाथ योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' की सृष्टि हुई। ये दोनों ग्रह यहां धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान को देखेगे। फलतः ऐसे जातक को धन की यथेष्ट प्राप्ति होती रहेगी व उसको उत्तम वाहन भी मिलेगा। भौतिक सुख-ससाधनों की कमी नहीं रहेगी। जातक अपने शत्रुओं व रोगों का शमन करने में पूर्णतः सक्षम होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं प्रभावशाली होगा।
6. **चंद्र+शनि**—चद्रमा के साथ शनि '**शश योग**' के कारण जातक को राजा के समान प्रभावशाली पराक्रमी बनायेगा।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु '**राजयोग**' में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु जातक के सरकारी लाभ में बाधा डालेगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में

11 10 9 12 8 चं. 1 7 2 6 4 3 5
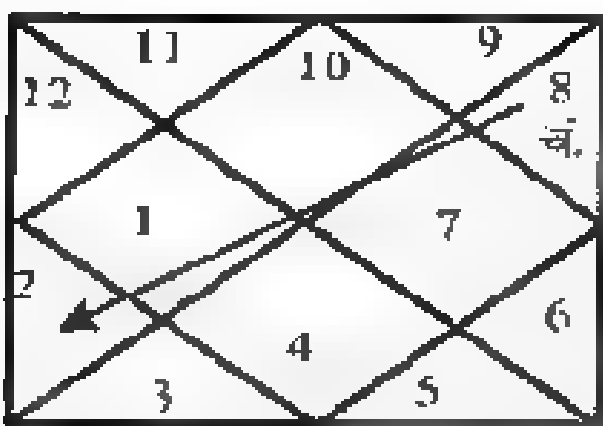
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है। मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। एकादश स्थान में चद्रमा नीच का होगा। वृश्चिक राशि के अंशों में चंद्रमा परम नीच का होता है। यहां चंद्रमा अपनी राशि से पांचवे स्थान पर होने के कारण शुभ फल देने वाला साबित होगा। ऐसा जातक विद्यावान् होगा। जातक थोड़ा ईर्ष्यालु स्वभाव का होगा। उसे स्त्री-संतान, उत्तम व्यापार व्यवसाय, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान सब कुछ मिलेगा।

दृष्टि—एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम स्थान (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी।

निशानी—जातक की प्रथम संतति कन्या होगी। कन्या संतति अधिक होगी। पाराशर ऋषि के अनुसार **'दारेशेलाभभावस्थे दारैरर्थ समागमः'** सप्तमेश के लाभ स्थान में होने पर जातक को स्त्री द्वारा धन मिलता है। उसकी पत्नी प्रायः कमाने वाली महिला होती है।

दशा—चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल एवं धन लाभ देगी। यह दशा गृहस्थ सुख में वृद्धि करेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष अमावस्या को दिन 12 से 10 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति मे यहा चंद्रमा नीच का होगा। लाभ मे बाधा भागीदारों में वैमनस्य रहेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—यहां एकादश स्थान मे दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे. चंद्रमा यहां नीच का तो मंगल स्वगृही होने से **'नीचभंग राजयोग'** बना फलत: **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि हुई। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कुंभ राशि), पंचम भाव (वृष राशि) एवं षष्टम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक महाधनी होगा। जातक ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा जातक का आर्थिक विकास प्रथम संतति के जन्म के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध उत्तम विद्या देगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में गुरु+चंद्र की युति एकादश स्थान में वृश्चिक राशि के अंतर्गत होगी। भोजसंहिता के अनुसार यह युति वस्तुत सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहा वृश्चिक राशि में नीच का होगा। इन दोनों ग्रह की दृष्टि पराक्रम भाव, पंचम भाव एवं सप्तम भाव पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के बाद तत्काल बाद होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा. जातक सुशिक्षित एवं संस्कारी होगा। जातक महान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ बुध उत्तम विद्या देगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि उत्तम धन देगा। जातक विवाह के बाद धनी व्यक्ति होगा।

7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु व्यापारिक लाभ में बाधक है।

8. **चंद्र+केतु**–चद्रमा के साथ केतु व्यापार में हानि देगा।

मकरलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में

11 10 च. 9 12 8 1 7 2 6 4 3 5
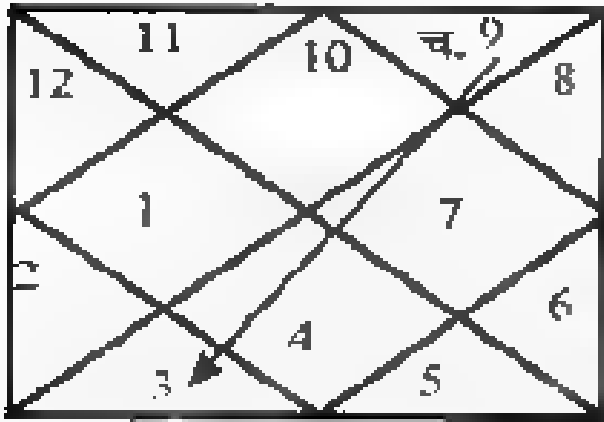
मकरलग्न में चंद्रमा सप्तमेश है मारक स्थान का स्वामी होने से उसे यहां अल्पदोष है, क्योंकि यह शनि से सम भाव रखता है। चंद्रमा यहा द्वादश स्थान मे धनु (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा यहां अपनी राशि में '**षडाष्टक योग**' बना रहा है। चद्रमा की यह स्थिति '**विवाहभंग योग**' की सृष्टि करती है। प्रथमत: ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है। विवाह होता भी है तो गृहस्थ सुख मे न्यूनता बनी रहती है। महर्षि पाराशर के अनुसार– '**दारेशे व्ययगे जातो दरिद्र: कृपणोऽपिच**' जातक दरिद्र होता है। उसकी पत्नी अत्यधिक खर्चीले स्वभाव की होती है। जातक को जहां धन खर्च करना चाहिए वहा नहीं करता इसलिए वह कंजूस व्यक्ति कहलाता है। जातक का जीवन सघर्षमय होता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ चद्रमा की दृष्टि छठे स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को गुप्त रोग व शत्रु परेशान करेंगे

निशानी–जातक वस्त्र-व्यवसाय एवं विदेशी व्यापार से कमायेगा।

दशा–चद्रमा की दशा-अतर्दशा अनिष्ट फल देगी एवं जीवन के कठिन क्षणों से जातक का परिचय करायेगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (धनु राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को प्रात: 10 से 8 के मध्य होता है। अष्टमेश व सप्तमेश की युति यहां पर '**विवाहभंग योग**' एवं सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगी। ऐसा जातक धनी मानी होगा पर विवाह में विलम्ब होगा। जातक को नेत्र पीड़ा रहेगी

2. **चंद्र+मगल**–यहा द्वादश भाव में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। जहां बैठकर दोनों ग्रह तृतीय भाव (मीन राशि), षष्टम् भाव (मिथुन राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) को देखेगे। चंद्रमा के कारण '**विवाहभंग योग**', मंगल के कारण '**सुखहीन योग**' एव '**लाभभंग योग**' भी बनेगा। ऐसा जातक धनवान तो होगा परन्तु सुख एवं लाभ मे कमी महसूस करता रहेगा।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध भाग्य में भारी रुकावटें उत्पन्न करेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। मकरलग्न में गुरु+चंद्र की युति द्वादश स्थान में 'धनु राशि' के अंतर्गत हो रही है 'भोजसंहिता' के अनुसार गुरु+चंद्र की युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा। **'कीर्तिभंग योग'** एवं **'विवाहभंग योग'** यहां इतनी प्रभावशाली नहीं रहेगा। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि सुख स्थान, षष्टम स्थान एवं अष्टम स्थान पर होगी। फलत: जातक का दुर्घटना व अपघातों से बचाव होता रहेगा। जातक को शत्रु भी ज्यादा परेशान नहीं कर पायेंगे। जातक ऋण रोग व शत्रुओं के कुप्रभाव से बचा रहेगा। जातक पराक्रमी, सुखी एवं सम्पन्न व्यक्ति होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र संतान संबंधी चिंता करायेगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु जातक को मानसिक पीड़ा पहुंचायेगा।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु व्यर्थ की यात्राएं करायेगा।

❑❑❑

मकरलग्न में मंगल की स्थिति

मकरलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में
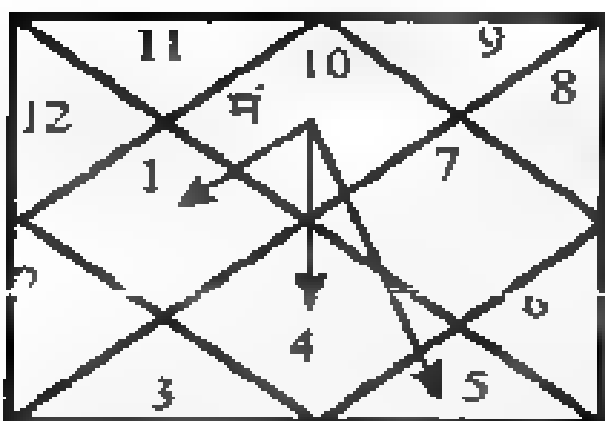
मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां लग्न स्थान में मंगल उच्च का होगा। मकर राशि के 28 अंशों में मंगल परमोच्च का होता है। यहा मंगल के कारण **'रुचक योग'** बना। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होता है। लग्नस्थ मंगल के कारण कुण्डली मांगलिक होगी फलतः विवाह में देरी होगी। जीवन साथी का चुनाव मुश्किल से होगा। जातक के पास बड़ी भू-सम्पत्ति होगी एवं उसे भाई-बहन का सुख प्राप्त होगा।

दृष्टि—मंगल की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मेष राशि), सप्तम भाव (कर्क राशि) एवं अष्टम भाव (सिंह राशि) पर होगी। ऐसा जातक प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्ण होता है। जातक के वैवाहिक जीवन में कटुता आती है। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का दमन करने में सक्षम होता है।

निशानी—जातक बहुत अच्छा वक्ता होगा तथा उसकी वाणी ओजस्वी होगी।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी, क्रोधयुक्त एवं रक्तवर्णीय बनाता है।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर राशि में मंगल उच्च का होगा जिसके कारण **'रुचक योग'** बनेगा। फलतः **'महालक्ष्मी योग'** बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव (मेष राशि), सप्तम भाव (कर्क राशि) एवं अष्टम भाव (सिंह राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी

होगा। जातक को शानदार भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक परम भाग्यशाली एवं बुद्धिशाली होगा। रचनात्मक बुद्धि का स्वामी होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति की युति होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा जिसके कारण जातक राजा के समान पराक्रमी, गम्भीर एवं धार्मिक होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को प्रबल राजयोग देगा। जातक राजसरकार में ऊंचा पद प्राप्त करेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनायेगा। जातक निश्चित रुप से राजा होगा। उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली व आकर्षक होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से जातक बड़ा हठी व दम्भी होगा। जातक दुश्मनों को दहलाने वाला होगा।
8. **मगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को शत्रुहन्ता बनायेगा। शत्रु उससे घबरायेंगे।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में

मं. 11, 10, 9, 8, 12, 7, 1, 2, 6, 4, 3, 5
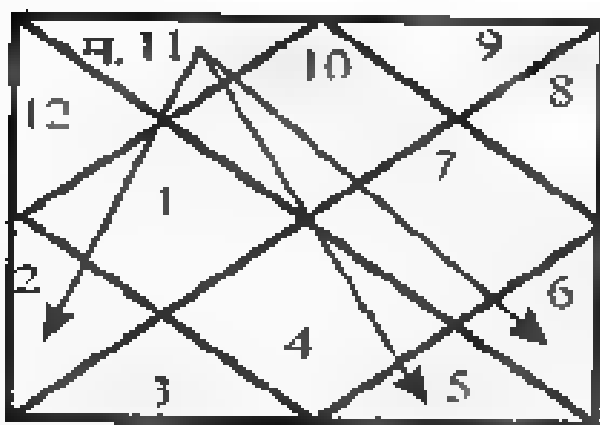
मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। द्वितीय स्थान मे मगल कुंभ राशि में होगा। मगल यहां मेष राशि से ग्यारहवें तथा वृश्चिक राशि से चौथे स्थान पर होगा। ऐसा जातक धनवान होता है तथा सब प्रकार के संसाधनों से युक्त होता है। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक 'धार्मिकश्च सुखी सदा' धर्मात्मा एव सुखी होता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मगल की दृष्टि पचम भाव (वृष राशि), अष्टम भाव (सिंह राशि) एवं नवम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक के सतान सुख में बाधा आयेगी। जातक अनैतिक कार्यों से धन कमायेगा। जातक का भाग्योदय सघर्ष के साथ होगा।

निशानी–जातक को प्रथम सतति हाथ नहीं लगेगी। एकाध गर्भस्राव अवश्यम्भावी है।

दशा–मंगल की दशा-अतर्दशा अच्छी जायेगी। मगल की दशा में धन, यश, पद व सम्मान मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य धन प्राप्ति मे 50% कटौती करेगा। जातक के पास चल सम्पत्ति के बनिस्पत स्थाई सम्पत्ति ज्यादा होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि मे होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम स्थान (वृष राशि), भाग्य भाव (सिंह राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान एवं सौभाग्यशाली होगा। जातक का राजनीति (सरकार) में दबदबा होगा जातक का आर्थिक विकास प्रथम संतति के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक भाग्यशाली होगा। जो भी वचन, बोलेगा, सोच-समझकर जिम्मेदारी के साथ बोलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति होने से मित्रों से फायदा देगा। जातक धार्मिक एवं सिद्धान्तवादी सोच वाला होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को राजयोग दिलायेगा। जातक धनी होगा व कुटम्बियों से प्रेम रखेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से जातक महाधनी होगा। ऐसे जातक का बैंक बैलेन्स सुदृढ़ होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से जातक के स्थाई सम्पत्ति में विवाद करायेगा।
8. **मगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक के धन संग्रह में बाधक है।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में
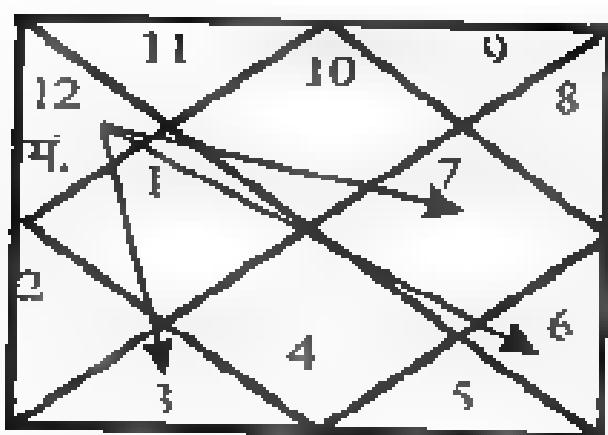
मकरलग्न मे मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहा मगल मारकेश का काम करेगा। यहा पर तृतीय स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। ऐसे व्यक्ति स्वाभिमानी होते है तथा बाहुबल में विश्वास रखते हैं। जातक का शौर्य, पराक्रम एवं जनसम्पर्क सघन होगा। जातक के भाई होंगे पर भाइयों से उसकी बनेगी नहीं। यदि लग्नेश शनि या शुक्र की स्थिति ठीक हो तो जातक बड़ा व्यवसायी एवं उद्योगपति होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे स्थान (मिथुन राशि), भाग्य स्थान (कन्या राशि) एवं दशम स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलतः ऋण व शत्रुओं का नाश होगा। भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के बाद होगा। जातक की आजीविका के साधन सुदृढ़ होंगे। जातक को खूब धन, यश व प्रतिष्ठा मिलेगी।

निशानी–ऐसे जातक को शूल रोग होगा। जातक युद्ध प्रिय होगा तथा वह शत्रुओं को परास्त करके कीर्ति अर्जित करेगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा पराक्रम बढ़ायेगी एवं शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को प्रबल पराक्रमी बनायेगा पर जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहा तृतीय स्थान मे दोनो ग्रह मीन राशि मे होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि षष्टम् स्थान (मिथुन राशि), भाग्य भवन (कन्या राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान होगा। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक का राजनीति (सरकार) कोर्ट-कचहरी में वर्चस्व रहेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध नीच का जातक को भाई बहनों एवं इष्ट मित्रों का सुख देगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ स्वगृही गुरु जातक को मित्रों से, परिजनों से लाभ दिलायेगा। जातक पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ उच्च का शुक्र जातक की कीर्ति को पराकाष्ठा पर ले जायेगा। जातक का राजनीति में सीधा हस्तक्षेप होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से जातक प्रबल पुरुषार्थी होगा एवं परिश्रम से अपना भाग्य चमकायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु भाइयों में विग्रह-विवाद पैदा करेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु परिजनों में विद्वेष पर अन्य समाज में कीर्ति देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में

11 10 9 12 8 1 7 मं. 2 6 4 3 5
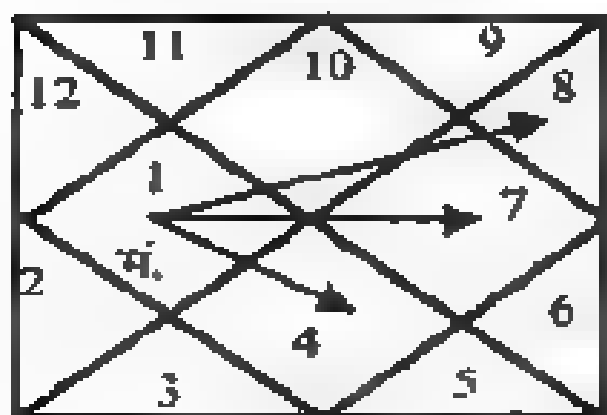
मकरलग्न में मगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां चतुर्थ स्थान में मेष राशि का मंगल स्वगृही होगा। मंगल इस स्थिति में कुण्डली 'मांगलिक' होगी तथा '**रुचक योग**' भी बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एव पराक्रमी होगा।

जातक उच्च श्रेणी का उद्योगपति होगा। बड़ी भू-सम्पत्ति व जमीन का स्वामी होगा। उच्च वाहन होंगे पर पत्नी के पूर्ण सुख का अभाव रहेगा

दृष्टि—चतुर्थ भावगत मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि), दशम भाव (तुला राशि) एवं एकादश भाव अपने स्वयं के घर वृश्चिक राशि पर होगी। विवाह में विलम्ब होगा वराज्य सरकार में वर्चस्व रहेगा एवं जातक व्यापार-व्यवसाय से खूब धन अर्जित करेगा।

निशानी—पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक मातृकुल व कृषि से धन पाता है, तीर्थयात्रा करता है तथा सुखी होता है।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक को भूमि लाभ होगा। कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ उच्च का सूर्य **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। **'रविकृत राजयोग'** के कारण जातक को माता-पिता की सम्पत्ति, बढ़िया भवन एवं चार पहियों का बढ़िया वाहन मिलेगा। जातक निश्चय ही राजा या राजातुल्य पराक्रमी पुरुष होगा।
2. **मगल+चद्र**—यहा चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मेष राशि मे होंगे। मंगल यहां स्वगृही होने से **'रुचक योग'** बनेगा एवं **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (कर्क राशि), दशम भाव (तुला राशि) एवं एकादश भाव (वृश्चिक राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा। व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। विवाह के बाद जातक आर्थिक रूप से सम्पन्न होगा एवं उसे जातक राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करेगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को उत्तम वाहन देगा। उसके पास एक से अधिक वाहन होंगे
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु मित्रों से लाभ देने के साथ-साथ जातक को धार्मिक बुद्धि भी देगा। जातक जिम्मेदार व्यक्ति होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र जातक को अनेक वाहन देगा एवं माता की सम्पत्ति दिलायेगा। भूमि से लाभ दिलायेगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु होने से माता की अकाल मृत्यु देगा।
8. **मंगल+केतु**—मगल के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
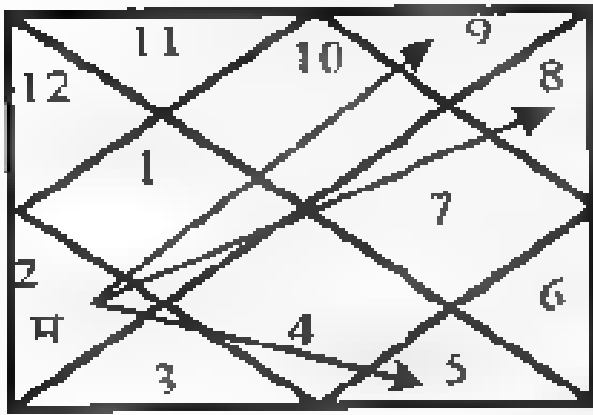
मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मगल मारकेश का काम करेगा। पंचम स्थान में मंगल वृष राशि में होता है। ऐसा जातक विद्यावान् होगा। अर्थकरी विद्या का ज्ञाता एवं व्यवहारिक ज्ञान से भरपूर होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक सर्वजनप्रिय, गुणी, मानी एव 'स्वभुजार्जित वित्तवान' अपने खुद के पुरुषार्थ से धन कमाकर महाधनी होगा।

दृष्टि—पंचम भावगत मंगल की दृष्टि अष्टम स्थान (सिंह राशि), लाभ स्थान, अपने ही घर वृश्चिक राशि एवं व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा तथा व्यापार व्यवसाय के द्वारा खूब धन कमायेगा। ऐसा जातक उदार मनोवृत्ति के कारण खर्च भी खूब करेगा। तीर्थ यात्रा, परोपकार पर रुपया खर्च करेगा।

निशानी—जातक पुत्रवान होगा। पुत्र सुखी होगा।

दशा—मगल की दशा-अतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य एकाध पुत्र की मृत्यु का कारण बनेगा।
2. **मंगल+चंद्र**—यहा पचम स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। वृष राशि में चंद्रमा उच्च का होगा फलतः यहां **'महालक्ष्मी योग'** बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि) लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) एवं व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत; ऐसा जातक महाधनी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय से धन कमायेगा। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक थोड़ा खर्चीले स्वभाव का होगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को कम्प्यूटर की तरह तेज बुद्धि देगा।
4. **मंगल+गुरु**—मगल के साथ गुरु पुत्र संतान एवं आध्यात्मिक ज्ञान देगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ स्वगृही शुक्र जातक को राजयोग देगा। जातक राजनीति में प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि परिश्रम का लाभ देगा। जातक धनी होगा एवं उसकी संतति भी धनवान होगी।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु संतान सुख में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु विद्या में रुकावट देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में
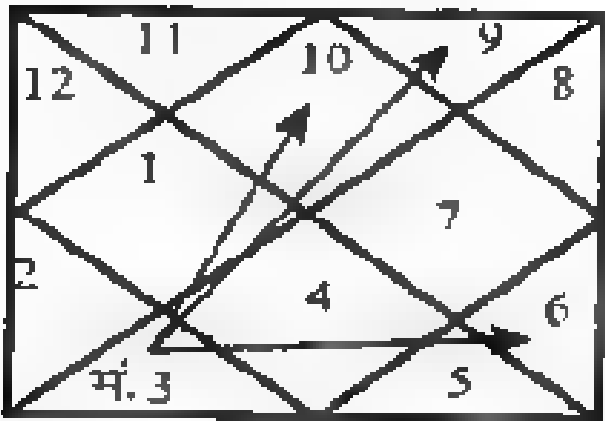
मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। छठे स्थान में मंगल मिथुन राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति में **'सुखहीन योग'** एव **'लाभभंग योग'** बनेगा। 'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार– **'लाभेशे रोग भावस्थे जातो रोग समन्वितः।'** 'क्रूर बुद्धिः प्रवासी च शत्रुभिः परिपीड़ितः' ऐसा जातक रोगी होता है। क्रूर, विनाशक बुद्धि से प्रेरित रहता है एवं शत्रुओ से पीड़ित रहता है। जीवन में संघर्ष की स्थिति बनी रहती है।

दृष्टि–षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि), व्यय स्थान (धनु राशि) एवं लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। धन व्यर्थ में खर्च होगा। जातक को पुरुषार्थ परिश्रम का फल बराबर नहीं मिलेगा।

निशानी–जातक माता के सुख से हीन होता है। जातक को ब्लड प्रेशर रहता है।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** देगा जातक धनी होगा। पर भूमि को लेकर मुकदमेबाजी होगी।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां षष्टम् स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि), व्यय भाव (धनु राशि) एवं लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। चंद्रमा के कारण **'विवाहभंग योग'** एवं मंगल के छठे जाने से **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनेगा। ऐसा जातक धनवान तो होगा परन्तु सुख-ऐश्वर्य में कमी एवं लाभ में कमी महसूस करेगा।
3. **मंगल+बुध**–मगल के साथ बुध होने से हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** बनेगा। जातक धनी होगा पर उसकी किस्मत सघर्ष के बाद चमकेगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु **'पराक्रम भंग योग'** के साथ विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा। पर उसे अपयश मिलता रहेगा।

5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक की प्रारंभिक विद्या में रुकावट आयेगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमता से जूझना पड़ेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु अंग पीड़ा देगा।
8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु पैरों में कष्ट होगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में
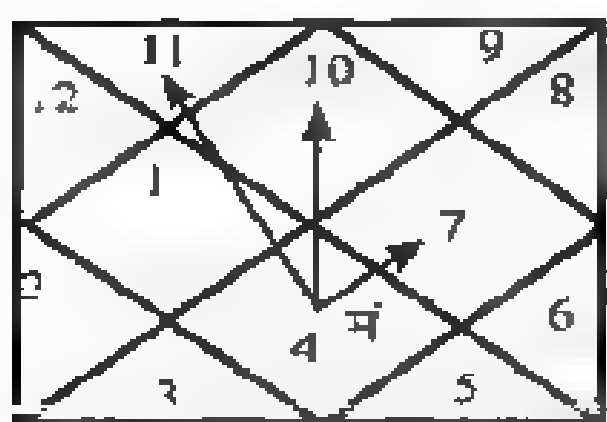
मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलत: यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां सप्तम स्थान में मंगल नीच का होगा। कर्क राशि के 28 अंशों में मगल परम नीच का होगा। मंगल की इस स्थिति से कुण्डली '**मांगलिक**' हो गई है। फलत: विवाह में विलम्ब होगा या गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी। विवाह होने के बाद जातक पत्नी से दबा रहेगा। पाराशर ऋषि कहते हैं–'**समायां मूकवद् भवेत**' जातक सभा में गूगे के समान तथा कामी होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (तुला राशि), लग्न स्थान (मकर राशि) एवं धन स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक का राज-सरकार में प्रभाव रहेगा। जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा। जातक धनी होगा। भूमि में धन, गुप्त समझौतों से लाभ मिलेगा।

निशानी–जातक की अपने जीवनसाथी के साथ सदैव कलह रहेगा। अहम् की टकराहट होती रहेगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य वैवाहिक सुख में बाधक है।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। मंगल यहां नीच का एवं चंद्रमा स्वगृही होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (तुला राशि), लग्न भाव (मकर राशि) एवं धन भाव (कुंभ राशि) को देखेंगे। फलत: यहां '**महालक्ष्मी योग**' बनेगा। जातक महाधनी

होगा। वह जो भी कार्य हाथ में लेगा उसमें उसे बराबर सफलता मिलेगी। जातक का राज्य (सरकार) पक्ष में दबदबा होगा।

3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक के भाग्योदय में वृद्धि करायेगा।
4. **मंगल+गुरु** –मंगल के साथ बृहस्पति '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र विद्या में बढ़ोतरी करायेगा। राजयोग में लाभ करायेगा। विवाह के बाद जातक की उन्नति होगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि '**लग्नाधिपति योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का पूरा-पूरा लाभ मिलेगा। जातक सफल व्यक्ति होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु पति-पत्नी में विवाद व कलह करायेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु विवाह सुख में न्यूनता उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में
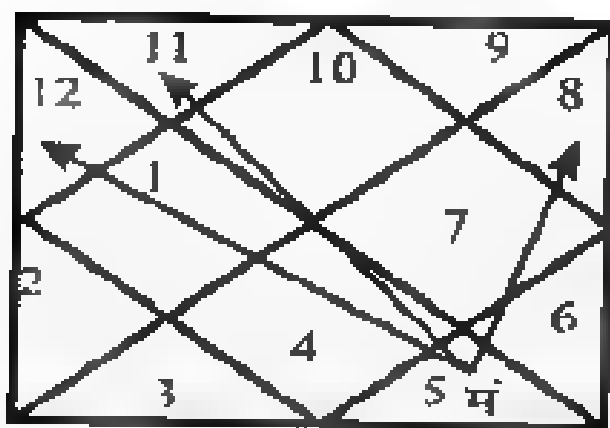
मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां अष्टम स्थान मे मंगल सिंह (मित्र) राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति में होने से कुण्डली 'मांगलिक' कहलायेगी। मंगल की इस स्थिति से '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनता है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षशील रहेगा। जातक जिस काम में हाथ डालेगा, नुकसान होगा। पाराशर ऋषि कहते हैं-'**जातः क्लीबसमो भवेत्**', ऐसे जातक को माता-पिता का अल्प सुख मिलता है। जातक मकान के सुख से हीन होता है तथा परिश्रम के फल न मिलने से जातक नपुसंक के समान हो जाता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (वृश्चिक राशि), धन भाव (कुंभ राशि) एवं पराक्रम भाव (मीन राशि) पर होगी। फलतः लाभ में रुकावट, धन की हानि एवं पराक्रम भंग होने का भय बना रहेगा

निशानी–ऐसा जातक विधुर होगा। उसकी पत्नी का मरण उसके सामने होगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा अशुभ फल देगी

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य स्वगृही होकर सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा पर वह भूमि विवाद में उलझ सकता है।

2. **मंगल+चंद्र**–यहा अष्टम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। चंद्रमा के कारण यहां **'विवाहभग योग'** बनेगा। मंगल अष्टम में होने से **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभग योग'** बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) धन भाव (कुंभ राशि) एवं पराक्रम भाव (मीन राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान तो होगा पर उसको सुख एवं लाभ में कमी महसूस होती रहेगी।

3. **मंगल+बुध**–मगल के साथ बुध हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी होगा। जातक के विवाह में विलम्ब संभव है।

4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति **'पराक्रम भग योग'** एवं विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा एवं उसे अपयश मिलेगा।

5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र **'राजभंग योग'** व **'संतानहीन योग'** बनायेगा जातक को संतान संबधी परेशानी रहेगी। पत्नी से मनमुटाव रहेगा।

6. **मगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का यथेष्ट लाभ नहीं मिलेगा।

7. **मंगल+राहु**–मगल के साथ राहु गुप्त बीमारी देगा व अचानक दुर्घटना करायेगा।

8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु मानसिक तनाव देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में

11 10 9 8 12 1 7 2 6 मं. 4 3 5
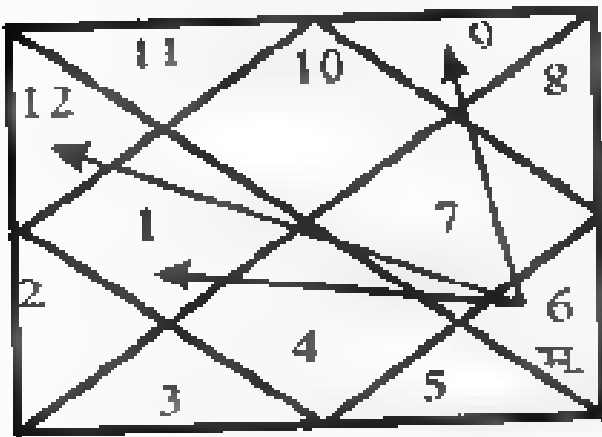
मकरलग्न में मगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः मगल यहां मारकेश का काम करेगा। नवम स्थान में मंगल कन्या राशि में होगा ऐसा जातक भाग्यशाली होता है। पाराशर ऋषि कहते हैं–'**चतुरः सत्यवादी च राजपूज्यो धनाधिपः,**' ऐसा जातक बहुत चतुर-चालाक एवं सिद्धान्तवादी होगा। जातक राजा के द्वारा सम्मानित होगा एवं धनवान होगा।

दृष्टि–नवमस्थ मंगल की दृष्टि व्यय भाव (धनु राशि), पराक्रम स्थान (मीन राशि) एवं चतुर्थ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का एवं पराक्रमी होगा। मित्र बहुत होगें। वाहन का सुख जातक को प्राप्त होगा। बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।

निशानी–जातक बाल्यवस्था में बीमार होगा तथा पिता की सम्पत्ति को तुच्छ समझेगा। सहोदर भ्राता एवं पिता से जातक के विचार नहीं मिलेंगे।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को अतुल तेज व पराक्रम देगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां नवम स्थान में दोनों कन्या राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (धनु राशि), पराक्रम भाव (मीन राशि) एवं चतुर्थ स्थान (मेष राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। उसे जीवन में सभी भौतिक सुख-सुविधाओं एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी, जातक महान पराक्रमी होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को सौभाग्यशाली बनायेगा। जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ता हुआ शत्रुओं को परास्त करेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जातक को मित्रों, परिजनों से लाभ वांछित सहयोग दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र भले ही नीच का हो जातक को राजयोग देगा तथा प्रभावशाली बनायेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को माता की सम्पत्ति एवं भूमि लाभ देगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से जातक पिता की सम्पत्ति ठुकरा देगा।
8. **मंगल+केतु**-मंगल के साथ केतु जातक को पुरुषार्थ से लाभ एवं तेजस्विता देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में
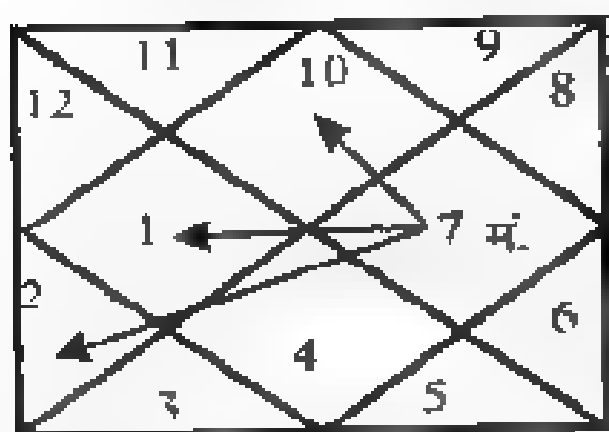
मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एव लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। यहां दशम स्थान में मंगल तुला राशि में होगा। मंगल यहां स्वगृहाभिलाषी एवं **'दिग्बली'** है। मंगल की यह स्थिति सर्वाधिक शक्तिशाली होकर **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि कर रही है। जातक अपने परिवार कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करता हुआ अनेक शुभ फलों को प्राप्त करेगा। जातक राजा द्वारा पूजित होगा तथा उसे सरकारी सम्मान मिलेगा।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि), चतुर्थ भाव (मेष राशि) एवं पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। जातक के पास उच्च वाहन एवं प्रचुर भूमि होगी। जातक को पुत्र सुख जरूर प्राप्त होगा।

निशानी–जातक अर्थकारी विद्या का जानकार एवं अनुभवी विद्वान होगा।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य नीच का होगा। जातक को राज दरबार में सम्मान मिलेगा।
2. **मंगल+चंद्र**–यहा दशम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान (मकर राशि), चतुर्थ भाव (मेष राशि) एवं पंचम भाव (वृष राशि) को देखेंगे फलत: जातक धनवान होगा। जातक को जीवन के प्रत्येक कार्य मे सफलता मिलेगी तथा ऐशो-आराम एव भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। मगल यहां दिक्बली होकर '**कुलदीपक योग**' बनायेगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम सतति के बाद होगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक को व्यापार में लाभ, भूमि-भवन में लाभ होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मगल के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से लाभ देगा। जातक धार्मिक एव पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।
6. **मंगल+शनि** मंगल के साथ शनि '**शश योग**' बनायेगा। ऐसा जातक स्वयं राजा व राजपुरुष से कम नहीं होगा।
7. **मंगल+राहु**–मगल के साथ राहु राजकाज में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु का होना सरकारी कार्य में विघ्न डालेगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में
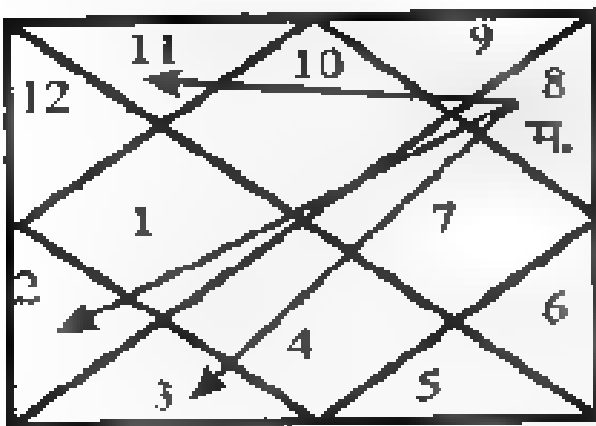
मकरलग्न में मगल चतुर्थेश एव लाभेश होने से अशुभ है, फलत: यहां मगल मारकेश का काम करेगा। एकादश स्थान में मंगल वृश्चिक राशि का स्वगृही होगा। अपनी राशि मे 'षडाष्टक योग' करने से यह मंगल शुभ फलदायक नहीं है। ऐसा जातक अनेक प्रकार के धधे करेगा सभी धंधो में उसे थोड़ा-थोड़ा लाभ मिलता रहेगा। जातक के पास बड़ा मकान होगा। जातक बडा व्यवसायी व उद्योगपति होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत मंगल की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि), पंचम भाव (वृष राशि) एवं छठे स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक धनी होगा।

जातक उत्तम संतति का स्वामी होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। रोग व ऋण पास नहीं आयेंगे।

निशानी—जातक के प्रथम पुत्र होगा। कन्या भी होगी। दोनों का सुख रहेगा।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य लाभ में रुकावट डालेगा। जातक की भागीदारों से नहीं निभेगी।
2. **मंगल+चंद्र**—यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। चंद्रमा यहा नीच का तो मंगल स्वगृही होने से **'नीचभंग राजयोग'** बना फलतः **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि हुई। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव (कुंभ राशि), पंचम भाव (वृष राशि) एवं षष्टम भाव (मिथुन राशि) को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक का आर्थिक विकास प्रथम संतति के जन्म के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध भाग्योदय कारक है। जातक उद्योगपति होगा।
4. **मगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति मित्रों से लाभ दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र विद्या योग तथा राजकीय लाभ देगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि जातक को उद्योग से धन देगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु व्यापार में नुकसान देगा।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु व्यापार में तनाव देगा।

मकरलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में
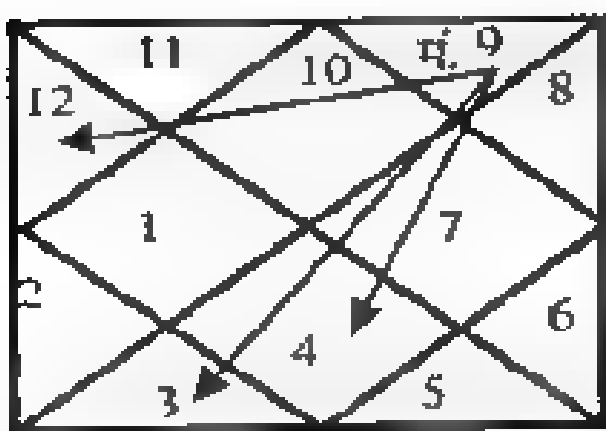
मकरलग्न में मंगल चतुर्थेश एवं लाभेश होने से अशुभ है, फलतः यहां मंगल मारकेश का काम करेगा। द्वादश स्थान में मगल धनु राशि में होगा। मगल की इस स्थिति से कुण्डली **'मांगलिक'** बनेगी। मगल की इस स्थिति से **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बना। जातक को जीवन में संघर्ष ज्यादा करना पड़ेगा। महर्षि पाराशर के अनुसार—**'जातो दुर्व्यसनी मूढः रुदाऽऽ लस्य समन्वितः'** जातक गृह सुख से हीन, दुर्व्यसनी व आलसी होता है। ऐसे जातक को यात्रा, विदेश प्रवास का योग अधिक होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि), छठे भाव (मिथुन राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। जातक के शत्रु बहुत होंगे। जातक के विवाह सुख में बाधा आयेगी।

निशानी–जातक की मित्रता म्लेच्छों (निम्न वर्ग के लोगो) से ज्यादा होगी

दशा–मंगल की दशा-अतर्दशा अशुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+सूर्य**–मगल के साथ सूर्य होने से जातक के गृहस्थ जीवन के उत्तम फल, सभी सुख नष्ट हो जायेंगे।
2. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वादश भाव में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। जहां बैठकर दोनों ग्रह तृतीय भाव (मीन राशि), षष्टम् भाव (मिथुन राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) को देखेंगे। चंद्रमा के कारण **'विवाहभंग योग'** मंगल के कारण **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** भी बनेगा। ऐसा जातक धनवान तो होगा परन्तु सूख एवं लाभ में कमी महसूस करता रहेगा।
3. **मगल+बुध**–मंगल के साथ बुध **'भाग्यहीन योग'** एव **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा पर परेशान रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति स्वगृही होकर विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी, मानी एव ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र **'राजभंग योग'** एवं **'संतानहीन योग'** बनायेगा। जातक को आर्थिक परेशानी एव सतान संबंधी चिंता रहेगी
6. **मगल+शनि**–मगल के साथ शनि **'लग्नभग योग'** एव **'धनहीन योग'** बनाता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु अचानक दुर्घटना, विस्फोट करा सकता है।
8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु शारीरिक कष्ट एवं मानसिक कष्ट का सूचक है।

□□□

मकरलग्न में बुध की स्थिति

मकरलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
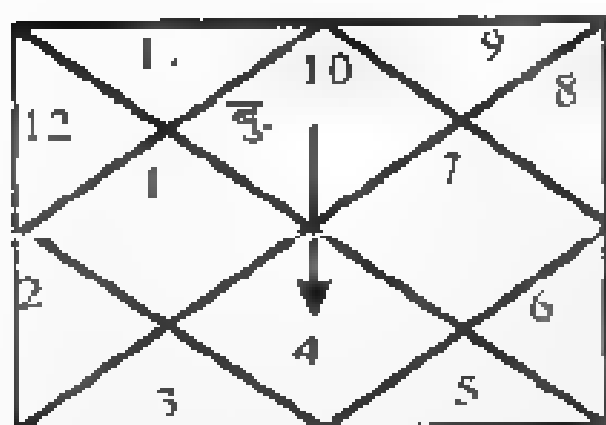
मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां प्रथम स्थान में मकर (सम) राशि में होकर **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि कर रहा है। ऐसा जातक सुन्दर, संस्कारी, बौद्धिक चातुर्य से युक्त, कर्त्तव्यनिष्ठ, जिम्मेदार व्यक्ति होता है। **'लोमेश संहिता'** के अनुसार ऐसा जातक बड़ा ही गुणवान् तथा यशस्वी, कीर्तिवान् होगा। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बुध मिथुन राशि से आठवें एवं कन्या राशि से पांचवें स्थान पर स्थित होकर सप्तम भाव (कर्क राशि) को देख रहा है। ऐसे जातक की कामेच्छा मद होगी।

निशानी–ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से शत्रुओं पर विजय पाता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा होने से जातक का जीवनसाथी अति सुन्दर होगा। पर जातक का चरित्र विवादास्पद होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। प्रथम स्थान में मकर राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की भाग्येश+षष्टेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह

सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। जातक बुद्धिमान व तेजस्वी होगा तथा अपने पराक्रम से रुपया कमायेगा। यहां पर यह युति ज्यादा नहीं खिलेगी फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा एवं अपने कुल का नाम रोशन करेगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल उच्च का '**रुचक योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। जातक गांव या शहर का प्रमुख व्यक्ति होगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति नीच का होकर '**केसरी योग**' बनायेगा। जातक पराक्रमी होगा तथा परोपकार, सामाजिक सेवा में रुपया खर्च करेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र होने से जातक राजक्षेत्र, सरकारी क्षेत्र में प्रभावशाली व्यक्ति होगा एवं उसके पास सुन्दर वाहन होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि होने से '**शश योग**' बनेगा। जातक बुद्धिशाली एवं धनवान होगा। जातक राजा के समान प्रभावशाली होगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु होने से जातक के दायें पैर में तकलीफ होगी।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु होने से जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे।

मकरलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
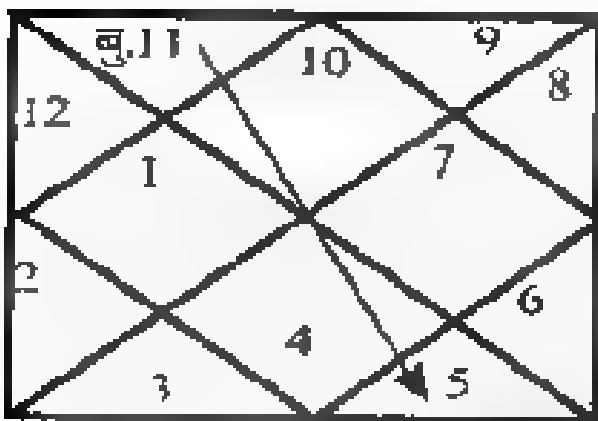
मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहा राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां द्वितीय स्थान में कुंभ (सम) राशि में है। ऐसा जातक धनवान, बौद्धिक चातुर्य से युक्त, कुशल वक्ता, विवेकी एवं धार्मिक होगा। लोमेश संहिता अ. 9/श्लोक 6 के अनुसार ऐसा जातक सदैव अपने भाग्योदय की चिंता करता रहता है। ऐसा जातक बड़ा ही धनवान, गुणवान्, कामी (विषयी), बड़ा विद्वान् एवं मनुष्यों को प्रिय लगने वाला व्यक्ति होता है।

दृष्टि—बुध मिथुन राशि से नवमें एवं कन्या राशि से छठे स्थान पर स्थित होकर अष्टम भाव (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक अपने ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा

निशानी—जातक की वाणी विनम्र होगी।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को वांछित धन की प्राप्ति होगी एवं जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चद्रमा होने से जातक का सही भाग्योदय के बाद होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। द्वितीय स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुत: अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा तथा दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे, जो सूर्य का ही घर है। जातक बुद्धिमान व धनवान होगा। आमदनी के जरिए एक से अधिक प्रकार के रहेंगे। जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होगी। जातक दीर्घजीवी तथा समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ सुखेश मंगल होने से जातक धनवान होगा। जातक विशाल भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ तृतीयेश गुरु होने से जातक को मित्रों से धन मिलेगा। जातक को यात्राओं से लाभ होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक महाधनी होगा। जातक की वाणी अत्यधिक विनम्र एवं सहयोगत्मक होगी। **भावार्थ रत्नाकर** के अनुसार यदि यहां पंचम भाव में चंद्रमा हो तो **'राजराजेश्वर योग'** बनेगा। जातक राजाओं का राजा होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि स्वगृही होने से जातक महाधनी होगा व भाग्यशाली होगा। जातक अपने पुरुषार्थ में खूब धन कमायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से जातक को धन प्राप्ति में बाधा आयेगी तथा उसकी वाणी में हकलाहट होगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को अस्पष्ट वाणी देगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में

11 10 9 12 बु. 8 1 7 2 4 6 3 5
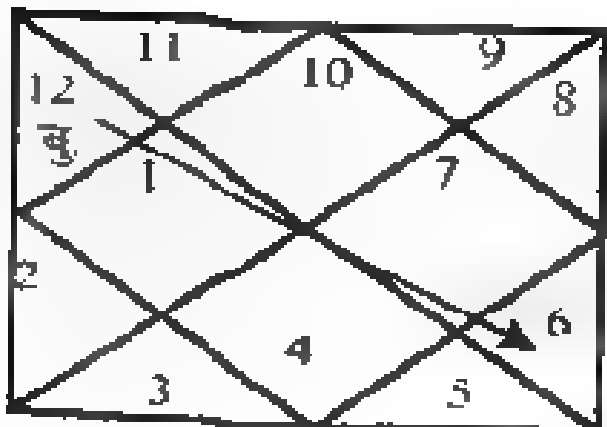
मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां तृतीय स्थान में नीच का है। मीन राशि के 15 अंशों में बुध परम नीच का होता है। ऐसा जातक धनी, यशस्वी, न्यायप्रिय, लोकप्रिय एवं भाग्यशाली होता

है। **लोमेश संहिता** के अनुसार ऐसा जातक सदैव भाग्योन्नति के विषय में चिन्तनशील रहेगा। जातक महाधनी, पराक्रमी, गुणवान्, विद्वान एवं कामी होगा।

दृष्टि—बुध मिथुन राशि से दसवें, कन्या राशि से सातवें स्थान पर होकर, भाग्य स्थान अपने ही घर को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः जातक का भाग्योदय, परिजनों एवं मित्रों की मदद से होगा एवं शीघ्र होगा।

निशानी—जातक कहलप्रिय नहीं होगा। युद्ध से दूर रहेगा।

दशा—बुध की दशा-अतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा तथा जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा जातक को अधिक बहनें देगा। ससुराल में सालियों, मामी, सासु से जातक की अच्छी पटेगी। स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। तृतीय स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे जो कि बुध की उच्च-राशि होगी। फलतः जातक बुद्धिमान व भाग्यशाली होगा। जातक का पराक्रम तेज होगा। परिजन एवं इष्टमित्रों की मदद जीवन में मिलती रहेगी। जातक का भाग्योदय 26 वर्ष की आयु में होना शुरू होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल जातक को महान पराक्रमी बनायेगा। जातक को कुटुम्ब तथा भाई-बहनों से लाभ प्राप्त होगा
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। बुद्धि धार्मिक होगी। जातक आशावादी होगी एवं ईश्वर में विश्वास रखेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक निश्चय ही राजातुल्य पराक्रमी एवं बड़े कुटुम्ब, मित्र-मंडली से घिरा रहगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि जातक को मित्रों द्वारा धन लाभ के संकेत देता है।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु होने से भाई-बहनों में विद्वेष रहेगा।

8. **बुध+केतु** -बुध के साथ केतु होने से कुटम्बियों में मनमुटाव रहेगा पर जातक कीर्तिवान् होगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में
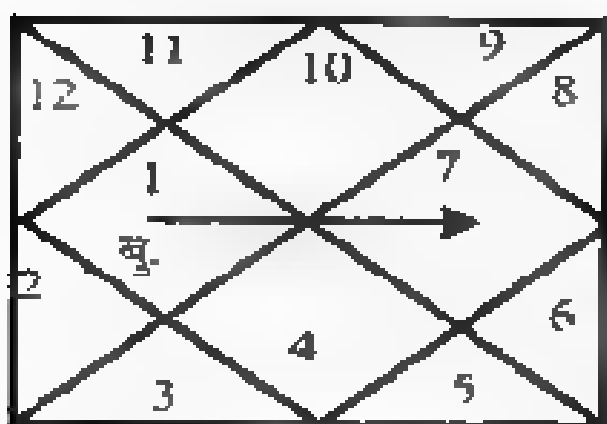
मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां चतुर्थ स्थान में मेष (सम) राशि का होकर '**कुलदीपक योग**' बना रहा है। ऐसे जातक को मकान-वाहन, माता पिता, जमीन-जायदाद का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। **लोमेश संहिता** के अनुसार ऐसा जातक राजमंत्री, सेना का अधिपति, राज (सरकार) में उच्च पद, सम्मान को प्राप्त करता है जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि—बुध यहां मिथुन राशि से एकादश कन्या राशि से आठवें स्थान पर होकर दशम भाव (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक को रोजी रोजगार, व्यापार में पूरा-पूरा फायदा होगा।

निशानी—जातक के स्वयं की तुलना में जातक के माता-पिता अधिक धनी, सुखी व यशस्वी होंगे।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुख, उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा जातक को माता का सुख तो देगा पर जातक की मां बीमार रहेगी अथवा जातक के अपनी माता से विचार कम मिलेंगे।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। चतुर्थ स्थान में 'मेष राशिगत' यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। सूर्य के कारण '**रविकृत राजयोग**' तथा बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बनेगा। बुद्धिमान होगा। कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक राज (सरकार) से लाभ उठायेगा। जातक उत्तम वाहन एवं मकान सुख को प्राप्त करता हुआ समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति कहलायेगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ यहां मंगल होने से '**रुचक योग**' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं उच्च वाहन का स्वामी होगा।

4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक को मकान का सुख देता है।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होना जातक को उत्तम वाहन सुख देता है।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि नीच का होते हुए भी जातक भौतिक ऐश्वर्य से सम्पन्न, उत्तम वाहन का स्वामी होगा पर वाहन खर्चा बहुत करायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु वाहन दुर्घटना का संकेत देता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु होने से जातक की माता लम्बी बीमारी से ग्रसित रहेगी।

मकरलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में
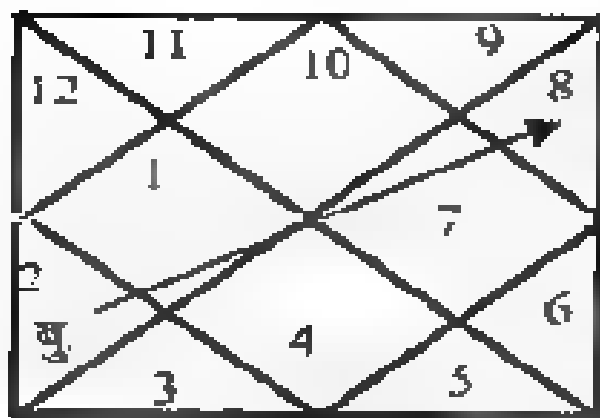
मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहा राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां पंचम स्थान में वृष (मित्र) राशि का है। ऐसा जातक विद्या-बुद्धि, संतान के सुख से सुखी होगा। उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक आध्यात्मिक गुणों से सम्पन्न होगा। जातक व्यवहारिक बुद्धि एवं ज्ञान से सम्पन्न अति सभ्य व्यक्ति होगा।

दृष्टि–बुध यहां मिथुन राशि से द्वादश होने से षष्टम् भाव के दोष को नष्ट करेगा। कन्या राशि में नवम स्थान पर स्थित होकर एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेगा। फलतः जातक को व्यापार से लाभ एवं बड़े भाई से लाभ देगा।

निशानी–जातक की कन्या संतति अधिक होगी।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को उत्तम विद्या की प्राप्ति होगी जातक का भाग्योदय होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चद्रमा यहा उच्च का होगा। ऐसे जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा प्रथम संतति के बाद पुनः भाग्योदय होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। पंचम स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुत अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी यहां पर बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः ऐसा जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली, शिक्षित तथा प्रज्ञावान

होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। एक दो गर्भपात होंगे। जातक व्यापार प्रिय होगा तथा समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल होने से जातक तकनीकी विद्या का जानकार एवं धनी होगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति होने से जातक धर्मभीरू होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र स्वगृही होगा जातक का राजयोग शक्तिशाली होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि होने से जातक का भाग्योदय विद्यार्जन के बाद होगा
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु की उपस्थिति विद्या में बाधक है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु रुकावट के साथ विद्याध्ययन करायेगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में
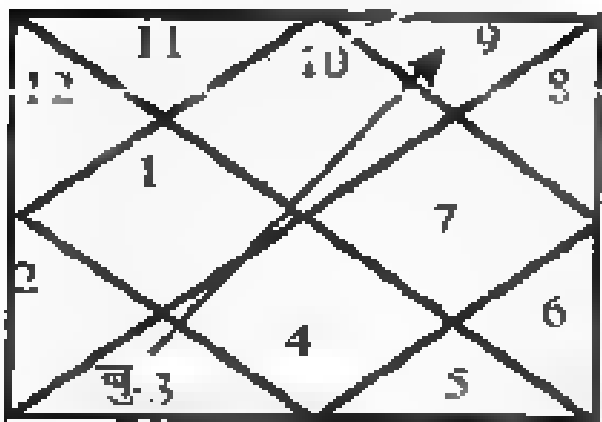
मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहा छठे स्थान में स्वगृही होकर हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** तथा **'भाग्यभंग योग'** बना रहा है। ऐसा जातक धनी, मानी-अभिमानी एवं संपन्न व्यक्ति होगा। ऐसे जातक के विरोधियों की संख्या बहुत होती है, शत्रु बहुत होगे परंतु प्रबल आत्मविश्वास के कारण जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक एक सफल व्यक्ति होगा पर सफलता संघर्ष के बाद ही मिलेगी।

दृष्टि—बुध षष्टमस्थ होकर व्यय भाव (धनु राशि) पर दृष्टि करेगा फलतः जातक खर्चीले स्वभाव का एव यात्रा प्रेमी होगा।

निशानी—लोमेश संहिता अ. 92 श्लोक 4 के अनुसार जातक को अपने मामा एवं बड़े भाई का सुख नहीं मिलता।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा **'विलम्ब विवाह योग'** बनाता है। जातक धनवान होगा पर चरित्र विवादास्पद होगा।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकर लग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। छठे स्थान मे मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध

के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां स्वगृही होगा तथा खर्च स्थान को देखेगा। षष्टेश षष्टम भाव में हो तो '**हर्ष योग**' बनता है। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का जड़मूल से नाश करने में सक्षम होता है। अष्टमेश के छठे स्थान पर जाने से '**सरल योग**' की सृष्टि होती है। इससे जातक रोग से लड़ने में सक्षम होकर दीर्घजीवी होता है। फलतः ऐसा जातक बुद्धिशाली, धनवान, भाग्यशाली तथा समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होता है।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल '**सुखभंग योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति '**पराक्रमभंग योग**' एव विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायगा। जातक को मित्रों से धोखा मिलेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र '**विलम्ब विद्या योग**', '**राजभंग योग**' बनाता है। जातक को राजयोग में बाधा आयेगी।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा. जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। आर्थिक विषमताएं बनी रहेंगी।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु दायें जातक के पैर में चोट पहुचायेगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु जातक के पांव में तकलीफ देगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में
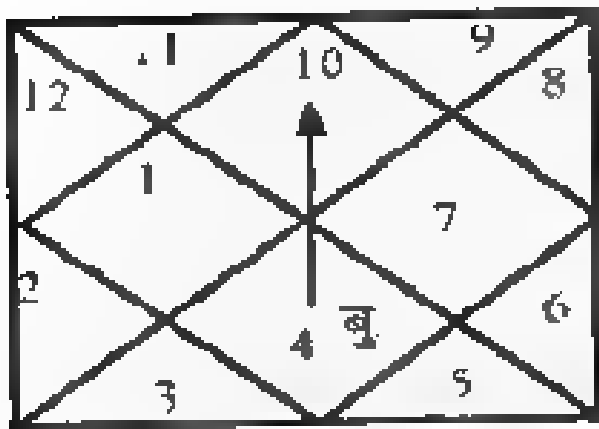
मकरलग्न में बुध षष्टेश एव भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां सातवें स्थान में कर्क (शत्रु) राशि का होकर '**कुलदीपक योग**' बना रहा है। जातक स्वयं विनम्र-सभ्य होगा तथा जातक का जीवन साथी भी सुंदर, विनम्र, सौम्य एवं सभ्य होगा। दोनों के संवेदनशील भावुक व कल्पनाशील होने के कारण विचारों में विषमता रहेगी। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि—मिथुन राशि से बुध द्वितीय, कन्या राशि से ग्यारहवें स्थान पर स्थित होकर लग्न भाव (मकर राशि) को देखेगा। फलतः परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयत्न से बराबर सफलता मिलेगी।

निशानी—'लोमेश संहिता अ. 9/श्लोक 5' के अनुसार ऐसा जातक बड़ा ही गुणवान्, यशस्वी एवं कीर्तिवान् होता है। जातक की सही उन्नति विवाह के बाद होगी।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में गृहस्थ सुख में बढ़ोतरी होगी। शत्रुओं का नाश होगा एवं भाग्योदय के नये अवसर प्राप्त होंगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा स्वगृही होगा। ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का स्वभाव विनम्र होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। सातवें स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टमेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी यहां बैठकर दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान होगा तथा उसका विवाह शीघ्र होगा। जातक धनवान होगा। उसके प्रयत्न निष्फल नहीं जायेंगे। जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा अपने कुटुम्ब-कुल का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल नीच का होगा। जातक को विवाह के बाद भूमि लाभ होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति उच्च का होगा, फलतः जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। जीवनसाथी सुशील व धार्मिक होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ यहां शुक्र होने से जातक का जीवनसाथी सुन्दर एवं सुडौल शरीर का स्वामी होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से जातक की पत्नी धनवान होगी। जातक के प्रयत्न सफल होंगे।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु **'द्विभार्या योग'** बनाता है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गृहस्थ सुख में बाधक है।

मकरलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में
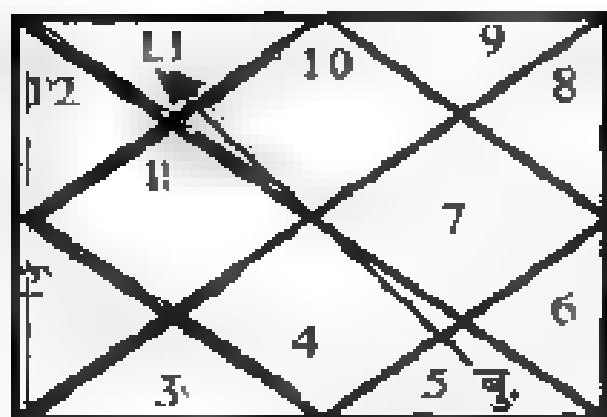
मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां आठवें स्थान में सिंह (मित्र) राशि में बैठकर हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** भी बना रहा है। ऐसा जातक धनी, मानी, अभिमानी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होता है। जातक के गुप्त शत्रु एवं

विरोधी बहुत होंगे। पर संघर्ष के बाद जातक को धन, यश एवं सफलता की प्राप्ति होगी।

दृष्टि—मिथुन राशि से तीसरे, कन्या राशि से बारहवें होकर बुध की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा पर बीमारी में उसका रुपया खर्च होगा।

निशानी—जातक को मामा का सुख कमजोर रहेगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा **'विलम्ब विवाह'** या अविवाह का योग बनाता है।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। अष्टम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश के आठवें जाने से **'हर्ष योग'** बना जिसके कारण व्यक्ति शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा। अष्टमेश के स्वगृही होकर अष्टम स्थान में बैठने से **'सरल योग'** बनता है। इस कारण जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होती है। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक के विवाह सुख में विलम्ब या गड़बड़ उत्पन्न होगी।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति **'पराक्रमभंग योग'** एवं विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनाता है। जातक धनी होगा पर विवादास्पद व्यक्ति होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र **'संतानहीन योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनाता है। जातक को संतति विषयक चिंता रहेगी। सरकार से दण्डित होने का भय रहेगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। आर्थिक विषमताएं बनी रहेगी।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु दो पत्नी योग बनाता है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु की युति विवाह सुख में बाधक है

मकरलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में

मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहा नवम स्थान में उच्च

11	10	9	
12			8
1		7	
2			6 बु.
3	4	5	
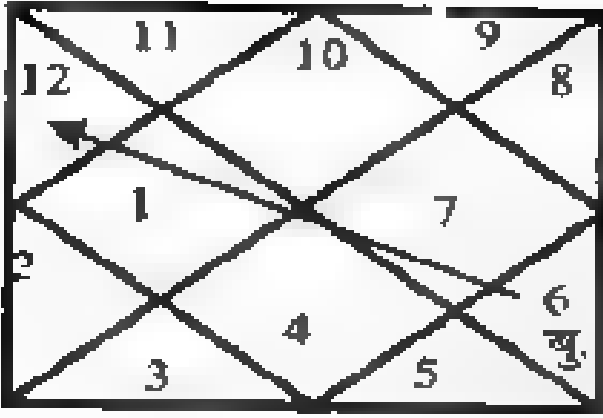
का है। कन्या राशि के 15 अंशो में बुध परमोच्च का होता है। जातक उच्च विद्या, उच्च राज्यपद एवं उच्च श्रेणी के व्यापार-व्यवसाय से सुखी व सम्पन्न होगा। जातक को माता-पिता का सुख एवं पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसे जातक को पत्नी व संतान का सुख भी उत्तम मिलता है।

दृष्टि—मिथुन राशि के चौथे स्थान पर स्थित होकर बुध की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी व पुरुषार्थी होगा एवं महत्वाकांक्षी होगा। उसकी महत्वाकांक्षाएं पूर्ण होती रहेगी।

निशानी—जातक को मित्रों से बड़ा लाभ होता रहेगा। लोमेश संहिता अ. 9/ श्लोक 1 के अनुसार ऐसा जातक देखने मे अत्यन्त सुन्दर होता है। उसके अनेक भाई-बहन होते हैं। जिनके सहित वह सुखी रहता है।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक के भाग्योदय का चरम विकास होगा। जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा जातक को भाग्यशाली जीवनसाथी देगा। विवाह के बाद जातक की किस्मत चमकेगी।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। नवम स्थान में कन्या राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश, सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पराक्रम स्थान को देखेंगे। यहां पर बुध उच्च राशि का होगा। फलतः ऐसा जातक प्रबल भाग्यशाली होगा। राजा के समान महान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा एव उसे पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल का होना जातक को माता पिता की संपत्ति व सुख दिलायेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति भाइयों व परिजनों से प्रेम बढ़ायेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।
6. **बुध+शनि**—यहां बुध के साथ शनि हो, तो 'भावार्थ रत्नाकर' के अनुसार जातक परम भाग्यवान् होता है क्योंकि लग्नेश, धनेश शनि की युति उच्च के भाग्येश के साथ भाग्य वृद्धि में सहायक होगी।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु भाग्य में अचानक उन्नति करायेगा। जातक को पैतृक सम्पत्ति से किनारा करना पड़ेगा।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु की युति जातक के भाग्योदय में सहायक है

मकरलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में
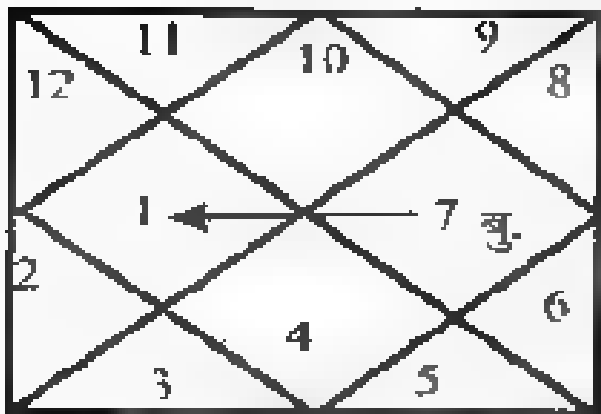
मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहां दशम स्थान में तुला (मित्र) राशि से होकर '**कुलदीपक योग**' बना रहा है ऐसा जातक बुद्धिमान वाक्पटु, मृदु एवं विनोदी स्वभाव का होकर व्यापार-प्रिय होता है। ऐसे जातक को रोजी-रोजगार की तकलीफ नहीं होगी। जातक को राज (सरकार) से मान-सम्मान की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–मिथुन राशि से पांचवें एवं कन्या राशि से दूसरे स्थान पर स्थित होकर बुध की दृष्टि चतुर्थ भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को उत्तम वाहन एवं उत्तम भवन का सुख मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अ. 9/श्लोक 2 के अनुसार–'**भाग्येशे दशमे तुर्ये, मंत्री सेनापतिः भवेत्**' ऐसा जातक राजमंत्री, सेनापति या सरकार में उच्च पद प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का रोजी-रोजगार, व्यापार बढ़ेगा। जातक की उन्नति होगी एवं उसे भाग्योदय के नये अवसर प्राप्त होंगे।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा राज सम्मान का सूचक है। जातक को विवाह के बाद रोजी रोजगार के नये अवसर प्राप्त होंगे।

2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। दशम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहा नीच का होगा। '**कुलदीपक योग**' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक उत्तम वाहन का स्वामी होगा। उसे माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल भौतिक सुखो में वृद्धि करेगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति मित्रों से लाभ दिलायेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली होगा। जातक के पास चार पहियां की गाड़ी होगी।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि होने से **'शश योग'** बनेगा जातक राजा के समान वैभवशाली व पुरुषार्थी होगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु राजयोग में बाधक है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु राज सरकार से सम्मान दिलायेगी।

मकरलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में

12	11	10 9	8 बु.
1			7
2	3	4 5	6
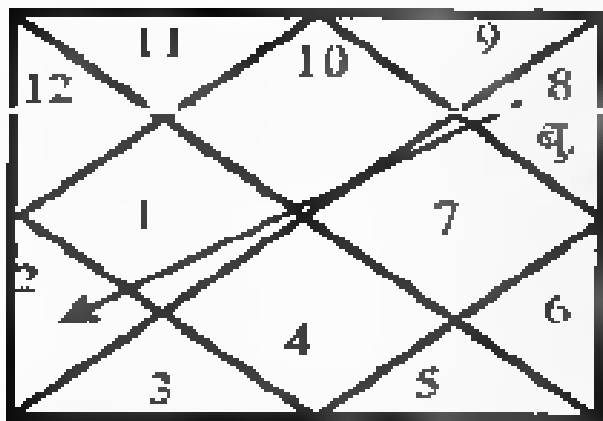
मकरलग्न में बुध षष्टेश एव भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहां राजयोग कारक एवं शुभ फल दने वाला ग्रह है। बुध यहां एकदश स्थान में वृश्चिक (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को उच्च विद्या का योग बनता है। जातक को व्यापार से लाभ होगा। **'लोमेश संहिता'** के अनुसार ऐसा मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली, जनप्रिय, गुरुभक्त, स्वाभिमानी, धैर्यवान् एवं अनेक सद्‌गुणों से युक्त होता है।

दृष्टि—यहां बुध मिथुन राशि से छठे कन्या राशि से तीसरे स्थान पर स्थित होकर पचम भाव (वृष राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।

निशानी—जातक का मस्तिष्क ऊर्जावान् होगा एवं बुद्धि रचनात्मक होगी।

दशा—बुध की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**—यहां बुध के साथ चंद्रमा नीच का होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक की पत्नी पढ़ी-लिखी होगी।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। एकादश स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश

बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। व्यापारी वर्गी होगा तथा व्यापार द्वारा प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेगा। जातक शिक्षित होगा एव जातक की सतति भी शिक्षित होगी जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल यहां स्वगृही होगा। फलतः जातक को उत्तम मकान एवं वाहन का सुख मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति जातक को बड़े भाई का सुख एव व्यापार में लाभ देगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र जातक को सरकारी नौकरी दिलायेगा या व्यापार से उत्तम लाभ दिलायेगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि जातक को धनवान बनायेगा तथा बड़ा व्यापार करायेगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु की युति लाभ में बाधक है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु मिश्रित फलदायक साबित होगा।

मकरलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में

11 10 बु. 9 8 12 1 7 2 6 4 3 5
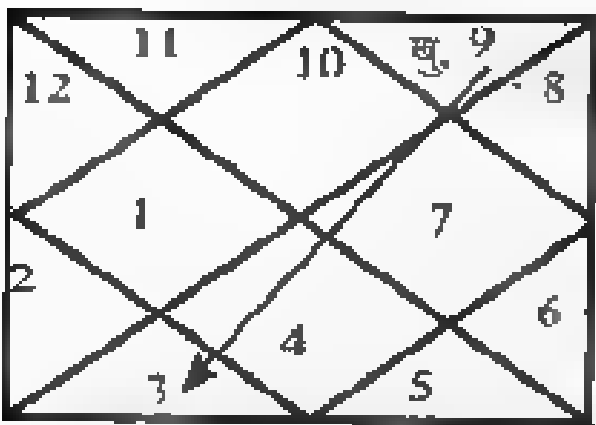
मकरलग्न में बुध षष्टेश एवं भाग्येश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से यहा राजयोग कारक एवं शुभ फल देने वाला ग्रह है। बुध यहा द्वादश स्थान मे धनु राशि में है। बुध की इस स्थिति के कारण हर्षनामक **'विपरीत राजयोग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी अभिमानी तथा ऐश्वर्य सम्पन्न होगा, पर भाग्योदय हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा। जातक के व्यापार-व्यवसाय में काफी उतार चढाव आयेगा।

दृष्टि—मिथुन राशि से सातवें व कन्या राशि से चौथे स्थान पर स्थित होकर बुध की दृष्टि अपने ही घर छठे भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।

निशानी—ऐसे जातक द्वारा निर्णय प्रायः उतावलेपन में लिये जायेंगे, जो गलत होगे।

दशा—बुध की दशा-अतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता तथा जातक को विवाह सुख से वंचित करता है।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में सूर्य अष्टमेश होगा। द्वादश स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः अष्टमेश सूर्य की षष्टेश+भाग्येश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश बुध बारहवें स्थान पर होने से '**हर्ष योग**' बनेगा। फलतः जातक अपने शत्रुओं का नाश करने मे सक्षम होगा। अष्टमेश सूर्य के बारहवें जाने से '**सरल योग**' बनेगा जो कि जातक को रोग से लड़ने की शक्ति व सामर्थ्य देगा तथा जातक दीर्घजीवी होगा। जातक समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल की युति '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' की सृष्टि करेगी। ऐसे जातक को मगल सबधी कार्यों में हानि एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु सघर्ष करना पड़ता है।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति जातक के धन को परोपकार में खर्च करेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र की युति होने से विद्या में बाधा, संतान सुख में कमी एवं '**राजबाधा योग**' बनता है।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु यात्रा में हानि करायेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक के भाग्योदय में विलम्ब करायेगा।

❑❑❑

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति प्रथम स्थान में
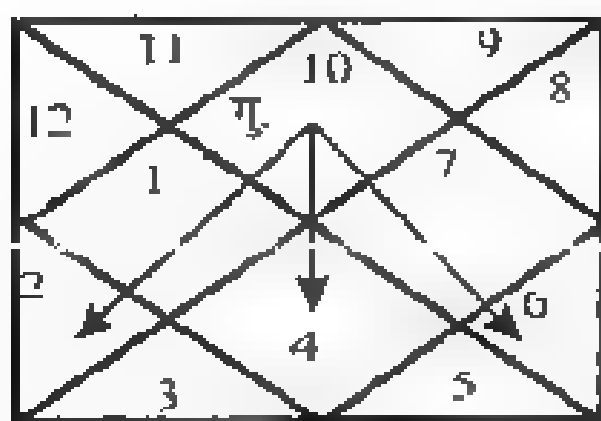
मकरलग्न मे बृहस्पति तृतीयेश एव व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एव परम पापी है। गुरु यहां लग्न मे नीच राशि का होगा। मकर राशि के अंशों में गुरु परम नीच का होगा। बृहस्पति की यह स्थिति **'कुलदीपक योग'** एवं **'केसरी योग'** बनाती है। ऐसे जातक कृशकाय होते हैं। जातक की पत्नी सुन्दर व धर्मभीरू होगी। जातक पढ़ा-लिखा व शिक्षित होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम स्थान (वृष राशि), सप्तम स्थान (कर्क राशि) एव भाग्य स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक पुत्रवान होगा। जातक का गृहस्थ सुख उत्तम होगा। जातक भाग्यशाली होगा परन्तु संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3 श्लोक 6 के अनुसार तृतीयेश यदि लग्न में हो तो जातक अपने पराक्रम में खूब धन कमाता है। ऐसा जातक सदैव रोगी, साहसी परन्तु दूसरो की सेवा करने वाला होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के प्रथम भाव में गुरु+चद्र की युति 'मकर राशि' में होगी। यह युति वस्तुत सप्तमेश चद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां नीच राशि में होगा। लग्नस्थ दोनों ग्रह क्रमशः **'कुलदीपक योग'** **'यामिनीनाथ योग'** की सृष्टि करते हुए पंचम भाव, सप्तम भाव एवं

भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक के विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होगा। दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक की गिनती समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में होगी

2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को आध्यात्मिक शक्ति से ओत-प्रोत करेगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल '**रुचक योग**' एवं '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान धनी व यशस्वी होगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध की युति जातक को भाग्यशाली बनायेगी।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र उत्तम राजयोग एवं उत्तम विद्या व सुंदर संतति देगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ यहां शनि होने पर '**नीचभंग राजयोग**' एवं '**शश योग**' बनाता है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होता है।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। बृहस्पति यहां नीच राशि में होकर भी '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बना रहा है, तो राहु के सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। ऐसा जातक स्थाई धंधे, रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटकता रहेगा। चित्त अशान्त रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक के चेहरे पर अप्रिय निशान बनायेगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वितीय स्थान में
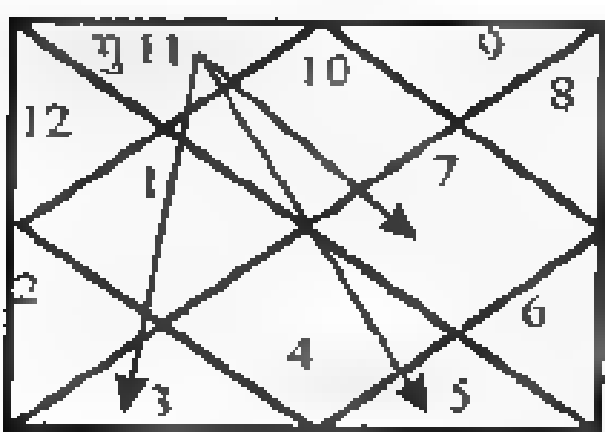
मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहा अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां द्वितीय स्थान में कुंभ (सम) राशि में है। ऐसे जातक को धनसंग्रह तथा कुटुम्ब सुख में दिक्कतें आती हैं तथा संतान सुख में भी दिक्कते आती है। जातक दूसरों का धन हड़पने में रुचि रखता है। खासकर स्त्री धन पर जातक की नीयत खराब रहती है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे स्थान (मिथुन राशि), अष्टम स्थान (सिंह राशि) एवं दशम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक रोगी तथा स्थूलकाय होगा। जातक अपने रोजगार से संतुष्ट नहीं होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3 श्लोक 7 के अनुसार ऐसे जातक को गुदाभंजन का शौक होता है। वे समलैंगिक होते हैं।

दशा—बृहस्पति की दशा अंतर्दशा संघर्षकारी साबित होगी। जातक का पराक्रम बढ़ेगा पर व्यर्थ का खर्च भी बहुत होगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बृहस्पति+चंद्र**—आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के द्वितीय भाव में गुरु+चंद्र की युति 'कुंभ राशि' में होगी। यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम, अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक रोग व शत्रु का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होगा। उसे राज्यपक्ष (सरकार) कोर्ट कचहरी में विजय मिलेगी। यह योग जातक के लिए 60% शुभ फलदायक है।
2. **बृहस्पति+सूर्य**—बृहस्पति के साथ सूर्य धन हानि में वृद्धि करेगा। ऐसा जातक अपनी आमदनी से संतुष्ट नहीं होगा
3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल जातक को धनी बनायेगा
4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र होने से जातक निश्चित रूप से धनी होगा। जातक की वाणी विनम्र होगी।
6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि जातक को महाधनी बनायेगा। ऐसा जातक बड़ी उम्र के लोगों के मार्गदर्शन मे आगे बढ़ेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**—यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। बृहस्पति यहां सम राशि में है, तो राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना जातक को धनाभाव बना रहेगा। आर्थिक विषमताएं जातक को परेशान करती रहेंगी। जातक की वाणी कठोर (कर्कश) होगी।
8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु आर्थिक संघर्ष की द्योतक है।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति तृतीय स्थान में
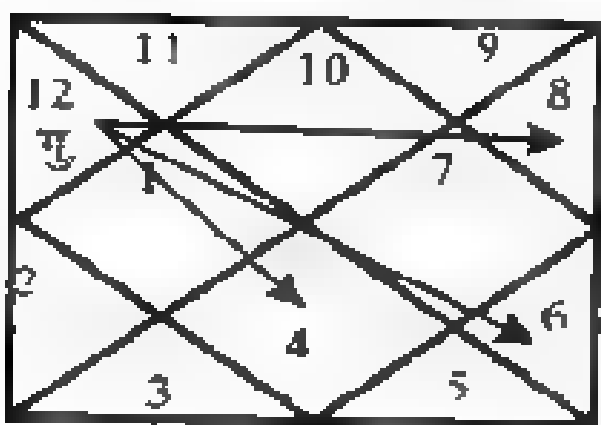
मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहा तृतीय स्थान में स्वगृही होगा। ऐसे जातक को पिता का सुख व सम्पत्ति मिलेगी। जातक को पत्नी, संतान, भाई बहनों का सुख मिलेगा। जातक धार्मिक होगा एवं आध्यात्म विद्या में पूर्ण रुचि रखेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि), भाग्य भवन (कन्या राशि) एवं लाभ भवन (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक की पत्नी पतिव्रता होगी। जातक भाग्यशाली होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** के अनुसार तृतीयेश यदि तृतीय स्थान में हो तो ऐसा मनुष्य बड़ा पराक्रमी, पुत्र सुख से युक्त, धनवान्, हृष्ट-पुष्ट बलवान् एवं अद्‌भुत सुख व ऐश्वर्य भोगने वाला होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार मकरलग्न के तृतीय भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मीन राशि' के अंतर्गत होगी। यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव, नवम भाव एवं एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां बृहस्पति स्वगृही होगा। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा तथा जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक के मित्र, परिजन जातक के सहायक होंगे। जातक महान पराक्रमी होगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को विशेष पराक्रमी बनायेगा, परन्तु भाइयों में नहीं बनेगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भाइयों से लाभ देगा। जातक महान् पराक्रमी होगा। जातक के चार या उससे अधिक भाई हो सकते हैं।
4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध की युति होने से जातक स्वयं भाग्यशाली होगा। जातक के मित्र भी भाग्यशाली होंगे।
5. **बृहस्पति+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक महान प्रतापी होगा। उसके बहुत से रिश्तेदार, मित्र व शुभचिंतक होंगे।
6. **बृहस्पति+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि मित्रों से धन लाभ करायेगा। जातक को जनसपर्क से लाभ होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**—यहा दोनों ग्रह मीन राशि में हैं। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा राहु के अपनी नीच राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना परिजनों में वैमनस्य रहेगा। मित्र बृहस्पति दगा देंगे फिर भी राहु के कारण जातक प्रबल पराक्रमी होगा।
8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु जातक को यशस्वी, लेखक व साहित्यकार बनायेगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति चतुर्थ स्थान में
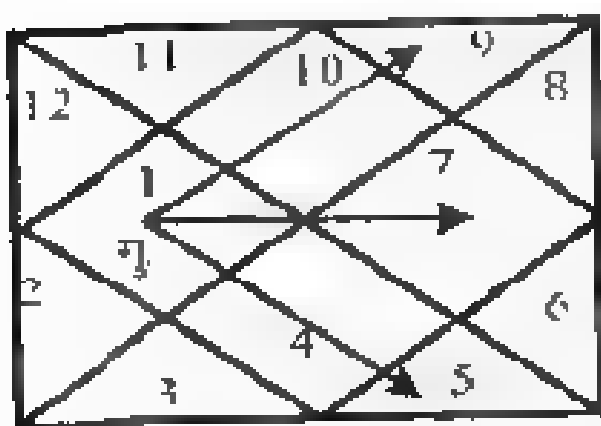
मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां चतुर्थ स्थान में मेष (मित्र) राशि का होकर, **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** बनायेगा. जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा. जातक सबका चहेता व प्यारा होगा. ऐसा जातक सदैव सुखमय जीवन व्यतीत करेगा परन्तु यश, धन, पद-प्रतिष्ठा का उतना लाभ नहीं मिलेगा जितना मिलना चाहिए।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि), दशम भाव (तुला राशि) एवं द्वादश भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक ऋण; रोग व शत्रु पर विजय प्राप्त करने में सक्षम होगा

निशानी–'जोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 2' के अनुसार ऐसे जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा सामान्य फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के चतुर्थ भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मेष राशि' में होगी। यहा यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यह युति केन्द्रवर्ती होने के कारण **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि होगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव, दशम भाव एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक का धन शुभ कार्य एवं परोपकार कार्य में खर्च होगा। जातक का दुर्घटनाओं व संकट से बचाव होता रहेगा। जातक को कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य हो तो **'राजयोग'** शक्तिशाली होगा क्योंकि मकर लग्न मे अकेला गुरु निर्बल होता है।
3. **बृहस्पति+मगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को पराक्रमी, बुद्धिजीवी एवं महातेजस्वी बनायेगा।

5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक का राजयोग बलवान बनाता है। जातक का राजा द्वारा सम्मान होगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को मित्र से लाभ देगा पर जातक की माता बीमार रहेगी।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहा दोनों ग्रह मेष राशि में है। बृहस्पति यहां मित्र राशि में, तो राहु सम राशि मे होने से **'चाण्डाल योग'** बना। **'केसरी योग'** एव **'कुलदीपक योग'** भी बृहस्पति बना रहा है। जातक बुद्धिमान व समझदार होगा पर उसकी माता बीमार रहेगी। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति पंचम स्थान में

11	10	9
12	1	8
2 गु.	7	6
3	4	5
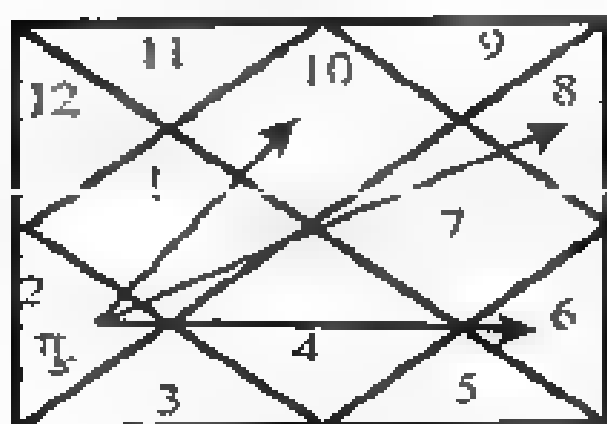
मकरलग्न मे बृहस्पति तृतीयेश एव व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां पचम भाव में वृष (शत्रु) राशि में होगा. ऐसे जातक को पिता एवं ज्येष्ठ सहोदर का पूरा सुख मिलेगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक को पुत्र संतान का सुख प्राप्त होगा। जातक को उच्च पद-प्रतिष्ठा मिलेगी।

दृष्टि–पचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्य भवन (कन्या राशि), लाभ भवन (वृश्चिक राशि) एवं लग्न भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा तथा उसे व्यापार से लाभ होगा। जातक स्व विवेक एवं बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/ श्लोक 2 के अनुसार यदि तृतीयेश पचम स्थान में हो तो जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। नई जानकारियां मिलेंगी। नवीन ज्ञान की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के पचम भाव में गुरु+चंद्र की युति 'वृष राशि' में होगी। वृष राशि में यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां चंद्रमा उच्च का होगा। यहां से दोनो शुभ ग्रह भाग्य भवन, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को देखेंगे। फलतः जातक का भाग्योदय प्रथम सतान

के बाद होगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। जातक व्यापार से कमायेगा। ऐसे जातक का सर्वांगीण विकास होगा। उनकी गणना समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित लोगों में होगी।

2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को प्रथम संतति हाथ नहीं लगने देगा। जातक की एकाध संतान की अपरिपक्व अवस्था में मृत्यु संभव है।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक का भाग्योदय प्रथम संतान के बाद होगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को आध्यात्मिक एवं भाग्यशाली बनायेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र स्वगृही होने से जातक का राजयोग शक्तिशाली होगा एवं उसकी विद्या उत्कृष्ट होगी।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि होने से जातक परिश्रमी, पुरुषार्थी एवं यशस्वी होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि में हैं। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु उच्च राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना जातक को विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी एवं पुत्र संतति को लेकर चिंता बनी रहेगी।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक को विद्या प्राप्ति में प्रारंभिक रुकावट देगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति षष्टम स्थान में

11 10 9 8 12 1 7 2 6 4 5 गु.3
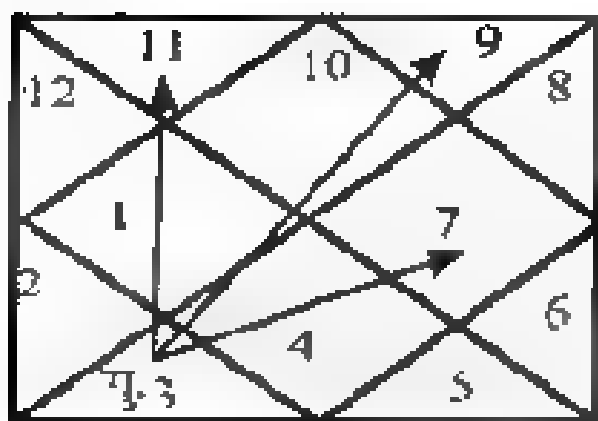
मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एव व्ययेश है। अतः गुरु यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। गुरु यहां छठे भाव में मिथुन (शत्रु) राशि में होकर विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी मानी होगा। जीवन के समस्त ऐश्वर्य, भौतिक सुखों की प्राप्ति जातक को सहज में हो जायेगी। यहां **'पराक्रमभंग योग'** होने के कारण जातक अपने इष्ट-मित्रों व संबंधियों द्वारा प्रताड़ित होगा। जातक को ऋण, रोग व शत्रु परेशान करते रहेंगे।

दृष्टि–षष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि दशम स्थान (तुला राशि), द्वादश स्थान (धनु राशि) एवं धन भाव (कुंभ राशि) पर होगी। जातक की राजनीति में रुचि रहेगी। यात्रा में नुकसान की संभावना रहेगी। धन प्राप्ति के प्रयासों में कठिनाई महसूस करेंगे।

निशानी–'**लोमेश संहिता**' अध्याय 3/श्लोक 3 के अनुसार जातक के भाई ही जातक का शत्रु होता है। जातक को मामा का सुख नहीं होता।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के छठे भाव में गुरु+चंद्र की युति 'मिथुन राशि' में होगी। यह युति वस्तुतः चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। यहां पर खड्ढे में गिरे बृहस्पति के कारण '**पराक्रमभंग योग**' तथा चंद्रमा के कारण '**विवाहभंग योग**' भी बना। यहा बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एव धन भाव को देखेंगे। फलतः जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति होती रहेगी। जातक को मित्रों से धोखा मिलेगा। जातक का अपने जीवन साथी से मनमुटाव होगा। जातक खर्चीली प्रवृत्ति का होगा पर '**गजकेसरी योग**' के कारण जातक सभी संकटों से पार निकल जायेगा तथा एक सफल व्यक्ति कहलायेगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा तथा उसे भौतिक सुख-सुविधाएं पूर्ण रूप से प्राप्त होगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' व '**लाभभग योग**' बना रहा है। जातक को भाग्योदय हेतु अति कठोर परिश्रम करना पड़ेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक महाधनी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' एव '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को सरकार से परेशानी होगी।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एव '**धनहीन योग**' बनायेगा जातक को आर्थिक मुसीबतो का सामना करना पड़ेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहा दोनो ग्रह मिथुन राशि में हैं। बृहस्पति यहा शत्रु राशि में है, तथा विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बना रहा है। राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। जातक धनवान एव अभिमानी होगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जीवन में परेशानिया बहुत आयेगी।
8. **बृहस्पति+केतु**–जातक को गुप्त रोग या बायं पैर में कष्ट सभव है।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति सप्तम स्थान में

मकरलग्न मे बृहस्पति तृतीयेश एव व्ययेश है। **अतः** बृहस्पति यहा अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहा उच्च का होगा। कर्क राशि के 5 अंशों
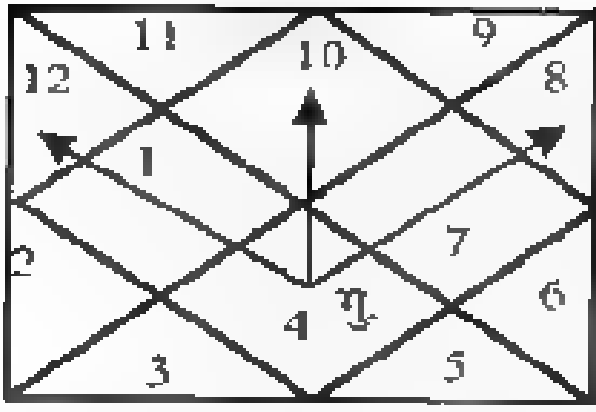
में बृहस्पति परमोच्च का होता है। बृहस्पति के कारण यहां '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' एवं '**हंस योग**' बना। यहां बृहस्पति भले ही सप्तम में उच्च का हो, पर जातक का सप्तम भाव पीड़ित रहता है। ऐसे जातक का गृहस्थ जीवन अशान्त रहता है। जातक के गुप्त शत्रु भी जातक को परेशान करते रहेंगे। यहा अकेला बृहस्पति कमजोर है। किसी भी अन्य ग्रह के साथ होने से बृहस्पति बलवान हो जायेगा। जातक परिवार का नाम रोशन करेगा।

दृष्टि -सप्तमस्थ बृहस्पति लाभ स्थान (मीन राशि), लग्न स्थान (मकर राशि) एवं तृतीय स्थान (वृश्चिक राशि) को देखेगा। जातक को व्यापार में लाभ होगा। जातक को प्रयास में सफलता मिलेगी एव जातक पराक्रमी होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार–'**तृतीयेशेऽष्टमे द्यूने राजद्वारे मृतिभवेत्**' तृतीयेश यदि सातवें हो तो ऐसे जातक की मृत्यु राजदंड पाकर होती है।

दशा–बृहस्पति की दशा–अन्तर्दशा मिले जुले परिणाम देगी। जातक का पराक्रम बढ़ेगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के सप्तम भाव में गुरु+चंद्र की युति कर्क राशि मे हो रही है कर्क राशि में यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहा स्वगृही होगा तथा गुरु उच्च का होगा। '**गजकेसरी योग**' की यह स्थिति सर्वोत्तम स्थिति है इस स्थिति के कारण '**हंसयोग**', '**कुलदीपक योग**' एव '**यामिनीनाथ योग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को देखेगे। फलत: जातक एक तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी होगा। जातक की पत्नी सुन्दर एव धनवान घराने से होगी। जातक व्यापार से धन कमायेगा तथा महान पराक्रमी, यशस्वी होगा तथा राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक का जीवनसाथी के साथ बिछोह (तलाक) करायेगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल नीच का होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा जातक का ससुराल पक्ष धनी होगा।

4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को सुन्दर पत्नी देगा। पर पत्नी वैचारिक मतभेद रहेंगे।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र होने के कारण जातक का जीवनसाथी सुडौल व सुन्दर होगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि होने के कारण जातक का जीवनसाथी जातक से बड़ी उम्र का दिखेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में हैं। बृहस्पति यहां उच्च का होकर '**हंसयोग**' बना रहा है, तो राहु शत्रु राशि में होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा। परन्तु जातक के गृहस्थ सुख में न्यूनता रहेगी। **द्विभार्यायोग** बनता है।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु गृहस्थ सुख में बाधक है।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति अष्टम स्थान में

11 10 9 12 8 1 7 2 6 4 3 5 गु.
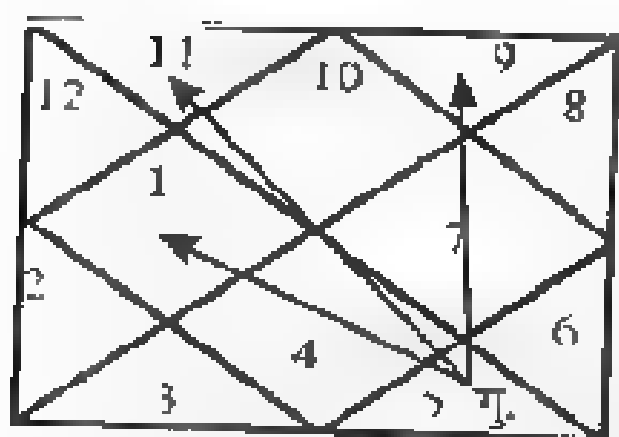
मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहा अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। गुरु यहां आठवें स्थान में सिंह (मित्र) राशि मे होगा। गुरु के कारण '**पराक्रमभंग योग**' एवं विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी, अभिमानी व शत्रुहन्ता होते हैं। ऐसे जातक पूर्णज्ञानी होता है पर एन वक्त पर जब खास जरूरत हो, जातक बृहस्पति द्वारा प्रदत्त विद्या भूल जायेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (धनु राशि), धन भाव (कुंभ राशि) एवं चतुर्थ भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा तथा उसे धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयत्नों में असफलता मिलेगी। जातक को माता व संतान का सुख कमजोर होगा।

निशानी–'**लोमेश संहिता**' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार यदि तृतीयेश आठवें स्थान हो तो ऐसे जातक की मृत्यु राजदण्ड पाकर होती है।

दशा–बृहस्पति की दशा अन्तर्दशा अशुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के अष्टम भाव में गुरु+चंद्र की युति सिंह राशि मे होगी। सिंह राशि

में यह युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति के कारण '**पराक्रमभंग योग**' तथा चंद्रमा के कारण '**विवाहभंग योग**' बनता है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह व्यय भाव धन भाव एवं सुख स्थान को देखेंगे। फलतः जातक का अपनी पत्नी से मनमुटाव रहेगा। जातक के मित्र उसे धोखा देंगे। धन का अपव्यय होगा। विपरीत परिस्थितियों में भी इस शुभ योग के कारण जातक को अंतिम सफलता मिलेगी।

2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक महाधनी होगा तथा उसे आधुनिक सभी सुख-सुविधाएं सहज ही प्राप्त होंगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' व '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्य की उन्नति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा एवं उसे सभी भौतिक सुख सुविधाएं प्राप्त होंगी।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनायेगा। ऐसे में जातक को संतान संबंधी चिंता बनी रहेगी।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनाता है। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता। जातक आर्थिक परेशानी में रहेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह सिंह राशि में हैं। बृहस्पति मित्र राशि में विमल नाम '**विपरीत राजयोग**' बना रहा है, तो राहु शत्रु राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा, पर अचानक दुर्घटना का भय बना रहेगा। जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक के पैरों में चोट पहुंचायेगा।

विशेष–यदि सूर्य यहां तृतीय स्थान या द्वादश भाव में हो तो जातक की आयु क्षीण होगी।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति नवम स्थान में
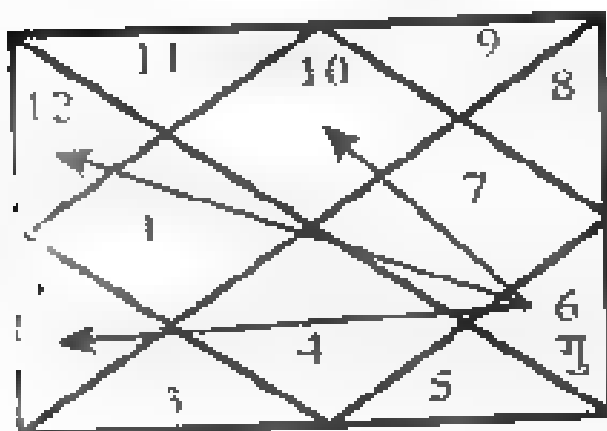
मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहा अशुभ फलदायक एव परम पापी है। बृहस्पति यहां नवम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को रिश्तेदार परिजनों व सहोदर एवं माता पिता का सुख मिलेगा

पर सभी से वैचारिक मतभेद रहेंगे। जातक को मान-सम्मान, पद, प्रतिष्ठा, समाज में उच्च पद मिलेगा। जातक धार्मिक एवं आध्यात्मिक बुद्धि से सम्पन्न व्यक्ति होगा।

दृष्टि–नवम भावगत बृहस्पति की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि), पराक्रम स्थान (मीन राशि) एव पचम स्थान (वृष राशि) पर होगी, जातक के परिश्रम सार्थक होंगे। जातक पराक्रमी होगा एवं जातक को पुत्र रत्न (उत्तम संतति) की प्राप्ति होगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 4 के अनुसार यदि तृतीयेश भाग्य स्थान में हो तो जातक का भाग्योदय स्त्री से होता है। ऐसे जातक का पिता चोर होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा जातक का पराक्रम बढ़ायेगी तथा भाग्योदय के नये अवसर प्रदान करेगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार मकरलग्न के नवम भाव मे गुरु+चंद्र की युति कन्या राशि में हुई है। कन्या राशि में यह युति वस्तुतः सप्तमेश चद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रु क्षेत्री है। इन दोनों शुभ ग्रहों की दृष्टि लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव पर है। फलतः जातक के व्यक्तित्व विकास में यह युति सहायक होगी। जातक शिक्षित होगा तथा उसकी संतान भी शिक्षित होगी। जातक का स्वय का भाग्योदय प्रथम संतति के तत्काल बाद होगा। जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी बनायेगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को बड़ी भू-सम्पति का स्वामी बनायेगा
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध उच्च का होगा। जातक वैभवशाली, गौरवशाली जीवन जीयेगा।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र नीच का होकर भी उत्तम विद्या, श्रेष्ठ पराक्रम एवं राजसी जीवन देगा
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि, जातक को परिश्रम का लाभ देगा। जातक धनी होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में है। बृहस्पति शत्रु राशि में है, तो राहु यहां स्वगृही होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी परेशानियों-दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। जातक का जनसम्पर्क विस्तृत होगा।

8. **बृहस्पति+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु जातक के भाग्य में तेजी लायेगा। जातक कीर्तिवान् होगा।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति दशम स्थान में
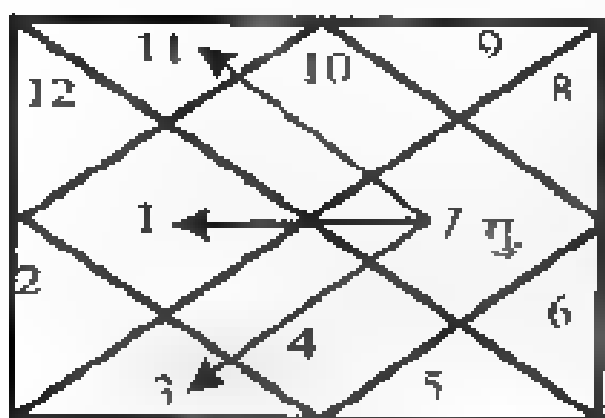
मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहा अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां सातवें स्थान में तुला (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को पिता, सहोदर भ्राता, पत्नी व सतान का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक पराक्रमी एव पुरुषार्थी होगा। पर धन धीमी गति से जायेगा। जातक को रोजी रोजगार, व्यापार व्यवसाय में उन्नति मिलेगी. जातक का राजनीति में भी प्रभाव रहेगा।

दृष्टि—दशम भावगत बृहस्पति की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि), चतुर्थ स्थान (मेष राशि) एवं षष्टम स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। जातक धनी होगा तथा उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी जातक का निजी भवन होगा। शत्रु परास्त होंगे।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 2 के अनुसार यदि तृतीयेश दशम स्थान में हो तो जातक की पत्नी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बृहस्पति+चंद्र**—आपका जन्म मकरलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न के दशम भाव में गुरु+चंद्र की युति तुला राशि में है। तुला राशि में यह युति वस्तुत: सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। केन्द्रवर्ती गुरु+चंद्र के कारण **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि हुई। ये दोनों ग्रह यहां धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान को देखेंगे। फलत: ऐसे जातक को यथेष्ट धन की प्राप्ति होती रहेगी। उसको उत्तम वाहन भी मिलेगा। भौतिक सुख ससाधनों की कमी नही रहेगी। जातक अपने शत्रुओं व रोगों का शमन करने में पूर्णत: सक्षम होगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**—बृहस्पति के साथ नीच का सूर्य जातक को राजकीय सम्प्रभुता देगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**—बृहस्पति के साथ **'दिक्बली'** मगल जातक को राजकीय शक्ति देगा। जातक बड़ी सम्पत्ति का स्वामी होगा।
4. **बृहस्पति+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध, जातक को आध्यात्मिक शक्ति से युक्त करेगा।

5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। ऐसा जातक राजा तुल्य पराक्रमी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनो ग्रह तुला राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में है, तो राहु मित्र राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। गुरु **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** बना रहा है। जातक पराक्रमी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा तथा अपने कुल का नाम रोशन करेगा जातक का राजनीति में भी हस्तक्षेप रहेगा।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु की युति राजसुख में बाधक है।

मकरलग्न में बृहस्पति की स्थिति एकादश स्थान में

11 10 9 12 8 4 1 7 2 6 4 3 5
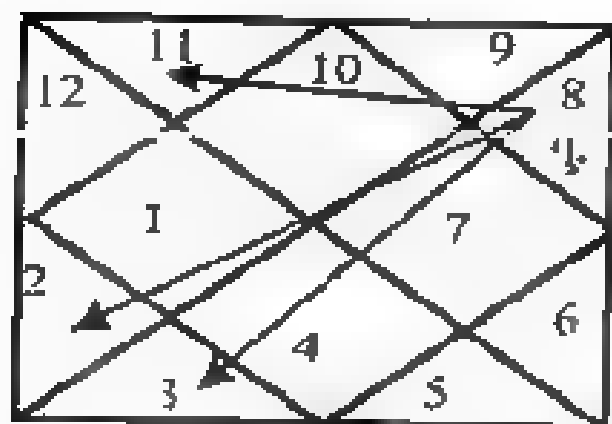
मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अत: बृहस्पति यहा अशुभ फलदायक एव परम पापी है। गुरु यहां एकादश स्थान में वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को विद्या-बुद्धि, स्त्री-संतान, जमीन जायदाद के उत्तम सुख मिलेगे। जातक को बड़े भाई का सुख, सामाजिक, पद-प्रतिष्ठा मान-सम्मान भी बराबर मिलता रहेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि), पंचम स्थान (वृष राशि) एव सप्तम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। संतान एवं विद्या सुख उत्तम, पत्नी का सुख भी उत्तम श्रेणी का होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 6 के अनुसार तृतीयेश यदि एकादश स्थान में हो तो जातक अपने उद्यम, पराक्रम से कमाकर धनवान होता है। जातक साहसी होता है, तथा दूसरों की सेवा करने में रुचि रखता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को धन लाभ होगा एवं उसका व्यापार बढ़ेगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है, 'भोजसंहिता' के अनुसार मकरलग्न में गुरु+चंद्र की युति एकादश स्थान में वृश्चिक राशि के अंतर्गत होगी। भोजसंहिता के अनुसार यह युति सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां वृश्चिक राशि में नीच का होगा। इन

दोनों ग्रहों की दृष्टि पराक्रम भाव, पंचम भाव एवं सप्तम भाव पर होगी। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के बाद तत्काल बाद होगा। जातक दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक सुशिक्षित एवं संस्कारी होगा। जातक महान् पराक्रमी एव यशस्वी होगा।

2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को पुत्र सतति का सुख देगा।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भौतिक सुख सुविधाएं एवं संतति सुख देगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनाता है।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र राजयोग देता है। जातक उच्च विद्या एवं उत्तम संतति प्राप्त करेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को प्रबल पुरुषार्थी बनायेगा। जातक उद्योगपति होगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में हैं। बृहस्पति यहां मित्र राशि में है, तो राहु नीच राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। व्यापार में हानि होगी तथा संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु की युति लाभ में बाधक है।

मकरलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में
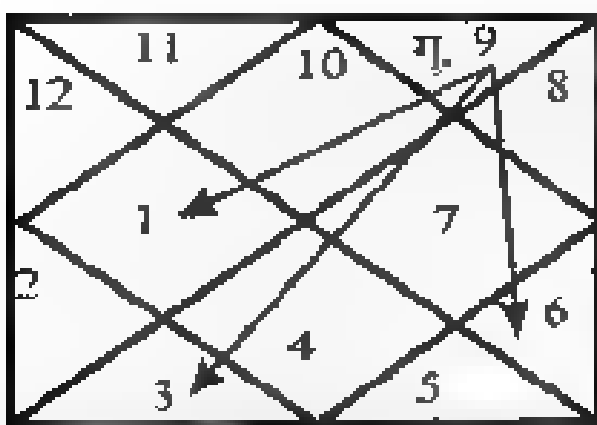
मकरलग्न में बृहस्पति तृतीयेश एवं व्ययेश है। अतः बृहस्पति यहां अशुभ फलदायक एवं परम पापी है। बृहस्पति यहां द्वादश स्थान मे धनु राशि में स्वगृही होगा। फलतः विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** मुखरित होगा। ऐसा जातक धनी, मानी व अभिमानी होगा। ऐसे जातक विनम्र होते हैं तथा अपने शत्रुओं या विरोधियों का मुंहतोड़ जबाव नहीं दे पाते। जातक क्षमाशील व भावुक होते हैं।

दृष्टि–द्वादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि चतुर्थ स्थान (तुला राशि), छठे स्थान (सिंह राशि) एवं नवम स्थान (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति आसानी से नहीं होगी। जातक के गुप्त शत्रु उसे परेशान करेंगे। जातक को भाग्योदय हेतु जी-तोड़ परिश्रम करना पड़ेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 4 के अनुसार तृतीयेश यदि बारहवें स्थान में हो तो जातक का भाग्योदय स्त्री द्वारा होता है एवं जातक का पिता चोर होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बृहस्पति+चंद्र**–आपका जन्म मकरलग्न में है। मकरलग्न में गुरु+चंद्र की युति द्वादश स्थान में 'धनु राशि' के अंतर्गत हो रही है। 'भोजसंहिता' के अनुसार गुरु+चंद्र की युति वस्तुतः सप्तमेश चंद्रमा की व्ययेश+तृतीयेश के साथ युति है। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा। '**कीर्तिभंग योग**' एवं '**विवाहभंग योग**' यहां इतना प्रभावशाली नहीं रहेगा। इन दोनों शुभग्रहों की दृष्टि सुख स्थान, षष्टम स्थान एवं अष्टम स्थान पर होगी। फलतः जातक का दुर्घटना व अपघातों से बचाव होता रहेगा। जातक को शत्रु भी ज्यादा परेशान नहीं कर पायेंगे। जातक ऋण-रोग व शत्रुओं के कुप्रभाव से बचा रहेगा। जातक पराक्रमी सुखी एवं सम्पन्न व्यक्ति होगा।
2. **बृहस्पति+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य '**विपरीत राजयोग**' बनाता है। जातक धनी तथा परोपकारी होगा। जातक को नेत्र पीड़ा रहेगी।
3. **बृहस्पति+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल विलम्ब विवाह करायेगा।
4. **बृहस्पति+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध '**भाग्यभंग योग**' बनाता है। जातक को भाग्योदय हेतु परेशानी उठानी पड़ेगी।
5. **बृहस्पति+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र '**संततिहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। जातक को संतान की चिंता एव राजदंड का भय रहेगा।
6. **बृहस्पति+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
7. **बृहस्पति+राहु**–यहा दोनों ग्रह धनु राशि में हैं। बृहस्पति यहा स्वगृही है, तो राहु नीच राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बन रहा है। जातक एक धनी एवं अभिमानी व्यक्ति होगा। जातक की फिजूलखर्ची की आदत तथा व्यर्थ की यात्राओं से घर वाले परेशान रहेंगे
8. **बृहस्पति+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु व्यर्थ की यात्राएं करायेगा। जातक समाजसेवी होगा।

❑❑❑

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में
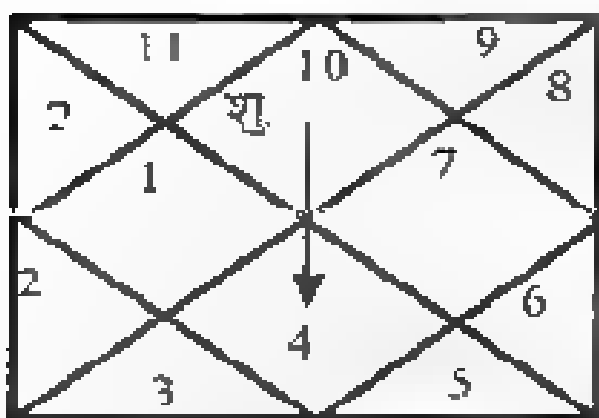
मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां प्रथम स्थान में मकर (मित्र) राशि में है शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** बना। ऐसा जातक विनम्र और खुशमिजाज होता है। जातक का जीवनसाथी स्वस्थ, सुडौल व सुंदर होगा। ऐसा व्यक्ति विद्या-बुद्धि, संतान, सुन्दर पत्नी एवं सुन्दर भवन का स्वामी होकर कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करता है।

दृष्टि—लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होता है।

निशानी—ऐसा जातक कंजूस होता है।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को व्यापार से लाभ होगा। जातक को विद्या, पद व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा। जातक की पत्नी पतिव्रता एवं रति में रम्भा होगी वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य जातक की मनोवृत्ति में गिरगिट की तरह बदलाव लाता रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल** शुक्र के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक राजा की तरह पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक भाग्यशाली एवं बुद्धिशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को धार्मिक एवं कुटुम्ब प्रिय व्यक्ति बनायेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को हठी एवं कामी बनायेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के चलते कार्य में रुकावट डालेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में

शु. 11 10 9 8 12 1 7 2 6 4 3 5
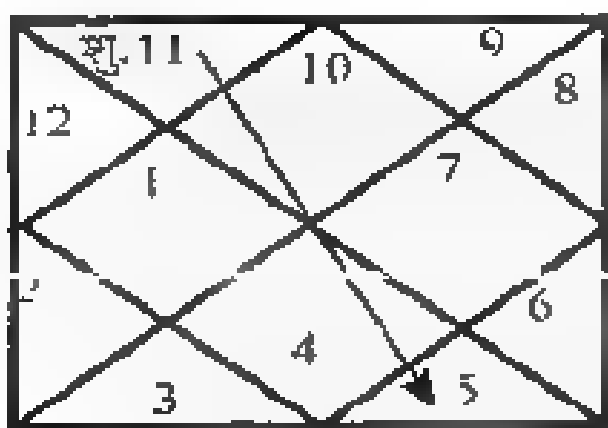
मकरलग्न में शुक्र पचमेश एव राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां द्वितीय स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में है। ऐसा जातक धनवान होता है उसे विद्या-बुद्धि, स्त्री संतान सुख, कुटुम्ब सुख पूर्ण होता है। जातक का आजीविका का साधन अच्छा होता है। जातक दीर्घजीवी होगा एवं जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा

दृष्टि–द्वितीयस्थ शुक्र की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–जातक की वाणी विनम्र एवं मिष्ट होती है। उसकी बहुत-सी लड़कियां होती हैं। लोमेश संहिता के अनुसार उसे खांसी श्वास की बीमारी होती है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा जातक को धन व मान प्रदान करेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चद्रमा जातक को राजयोग देगा। ऐसा जातक विवाह के बाद महाधनी होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य धन संग्रह में 40% बाधक का कार्य करेगा। जातक धनी एव प्रभावशाली व्यक्ति होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल की युति जातक को स्थाई सम्पत्ति एवं बड़ी भू-सम्पत्ति देगी।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**किम्बहुना नामक**' श्रेष्ठ राजयोग बनायेगा। जातक धनी-मानी एव ऐश्वर्य सम्पन्न जीवन जीयेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक को परिश्रम का पूरा पूरा लाभ मिलेगा
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को धनवान बनाने मे बाधक का कार्य करेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के आर्थिक जीवन में परेशानियां उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में

11 10 9 8 12 शु. 1 7 2 6 4 3 5
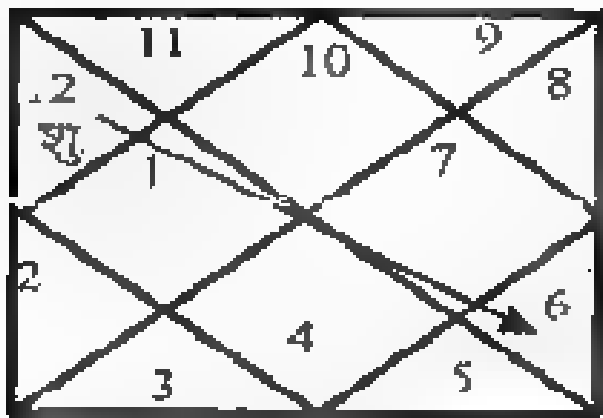
मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एव राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा. शुक्र यहां तीसरे स्थान में उच्च राशि में होगा। मीन राशि के 27 अंशों में शुक्र परमोच्च का होता है। ऐसे जातक प्रबल पराक्रमी, धैर्यवान् एवं कर्त्तव्यनिष्ठ होते हैं। जातक को माता पिता, स्त्री संतान, वाहन सुख प्राप्त होगा एव स्त्री-मित्रों से लाभ रहेगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ शुक्र की दृष्टि अपने ही घर कन्या राशि पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा तथा उसे पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक कला-संगीत अभिनय का प्रेमी होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' के अनुसार ऐसा जातक चुगलखोर व कंजूस होता है।

दशा–शुक्र की दशा-अतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को स्त्री मित्रों से लाभ देगा। जातक की बहनें अधिक होगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को भाई-बहनों का सुख देगा। जातक पराक्रमी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को पराक्रमी बनायेगा। इष्ट-मित्रों से लाभ होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक प्रबल पराक्रमी, यशस्वी राजा होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा जातक राजा या राजपुरुष से कम वैभवशाली नहीं होगा। जातक के परिजन व मित्र वफादार होंगे।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि की युति जातक को परम पुरुषार्थी एवं यशस्वी बनायेगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु का योग भाइयों में विद्वेष कलह करायेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु का योग समाज में जातक की कीर्ति बढ़ायेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में
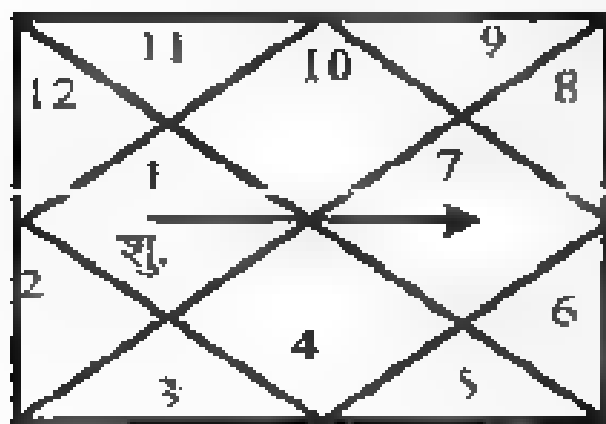
मकरलग्न में शुक्र पचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां चतुर्थ स्थान में मेष (सम) राशि का होगा। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** बनेगा। शुक्र यहां **'दिग्बली'** होगा। ऐसा जातक मध्यम परिवार में जन्म लेकर भी कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ जीवन की ऊंचाइयों को छूता है। जातक को धन, यश, पद–प्रतिष्ठा, मकान–वाहन, स्त्री–संतान, माता-पिता, नौकर–चाकर का सुख मिलता है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शुक्र की दृष्टि दशम स्थान (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक राजमत्री, राजगुरु अथवा राज्य में उच्च पद को प्राप्त करेगा। जातक राजनीति में सफल व्यक्ति होगा।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** के अनुसार **'सुतेशे मातृभवने चिरमातृ सुख भवेत्,** ऐसे जातक की माता की आयु लम्बी होती है तथा जातक का मातृ सुख बहुत समय तक मिलता है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक को मनोवांछित उपलब्धियां मिलेंगी। जातक सुख व ऐश्वर्य को प्राप्त करेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर एव कलात्मक रुचि वाला जीवनसाथी देगा।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक की माता को अल्पायु करेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक गांव-शहर का मुखिया एवं धनी व्यक्ति होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को एक से अधिक वाहन का स्वामी बनायेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को अनेक मित्रों वाला, जनप्रिय व्यक्ति बनायेगा
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ नीच का शनि जातक को पुरुषार्थ का लाभ देगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक की माता को मृत्यु देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक की माता को लम्बी बीमारी देगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में
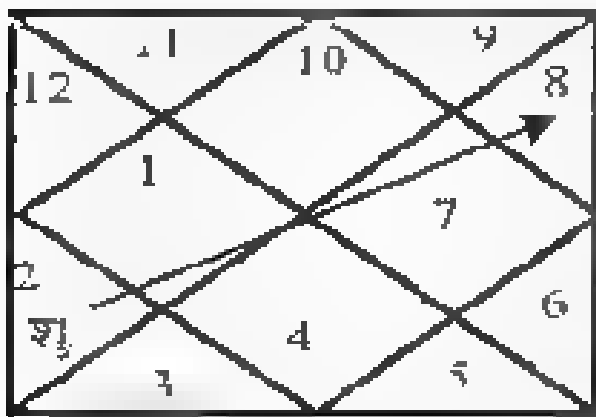
मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां पंचम स्थान में स्वगृही होगा। शुक्र की यह स्थिति राजयोग कारक एवं प्रतिष्ठावर्धक है। जातक को धन, पद-प्रतिष्ठा, यश, माता-पिता, स्त्री संतान एवं विद्या का सुख एवं प्रत्येक कार्य में यश नैसर्गिक रूप से प्राप्त होगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। जातक संगीत, साहित्य व कला प्रेमी होगी।

दृष्टि–पंचमस्थ शुक्र की दृष्टि लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक आत्मनिर्भर होगा तथा उसे बड़े भाई का सुख मिलेगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' के अनुसार, **'सुतेशः पंचमे यस्य तस्य पुत्र न जीवति'**, यदि पंचमेश पंचम भाव में स्थित हो तो उस जातक की प्रथम संतति यदि लड़का हो तो जीवित नहीं रहता।

दशा–'भावार्थ रत्नाकर' के अनुसार **'मकरे जायमानस्य पंचमस्थे भृगु शुभः'** मकर लग्न में पंचम में स्थित शुक्र अपनी दशा में जातक को खूब धन-ऐश्वर्य देगा

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक

उत्तम विद्या प्राप्त कर, विश्व में नाम रोशन करेगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। ऐसे जातक के '**बहुपुत्र योग**' होता है।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य विद्या में बाधा एवं संतति से चिंता करायेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को ठेकेदारी से लाभ, सरकारी काम से लाभ एवं उत्तम धन देगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक परम मेधावी होगा। जातक की कन्या संतति अधिक होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक को मित्रों से लाभ एव पुत्र संतति का लाभ भी होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को राज्य (सरकार) से लाभ देगा। ऐसे जातक को संतान द्वारा धन व यश की प्राप्ति होगी।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु विद्या प्राप्ति में बाधा डालेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गर्भपात करायेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में

11 10 9 8 12 1 7 2 6 4 शु.3 5
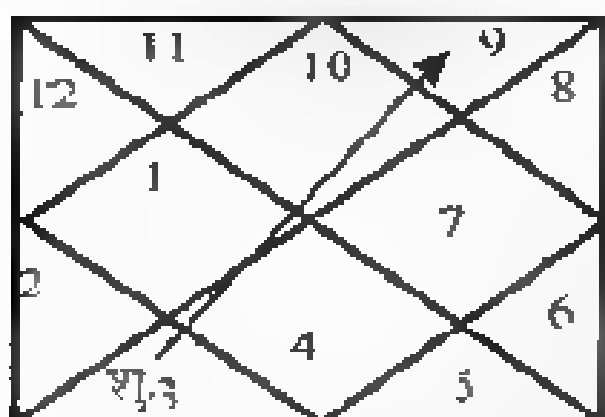
मकरलग्न में शुक्र पचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहा छठे स्थान मे मिथुन (मित्र) राशि मे होगा। शुक्र की इस स्थिति के कारण '**संतानहीन योग**' व '**राजभंग योग**' बनेगा। ऐसे जातक को पिता राज्य एवं संतान पक्ष में कठिनाइया पैदा होती रहेगी। ऋण, रोग एव शत्रु जातक परेशान करते रहेंगे। जातक की प्रारम्भिक विद्या में एक बार रुकावट आयेगी।

दृष्टि–षष्टम भावगत शुक्र की दृष्टि व्यय स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक कामी व खर्चीले स्वभाव का होगा जातक को जीवन में अचानक धन व यश की हानि होती रहेगी। स्त्री-मित्रों से नुकसान है।

निशानी–'लोमेश संहिता के अनुसार– '**सुतेशे पष्ठरिफस्थे पुत्र शत्रुत्वयाज्नुयात्**' जातक का पुत्र पिता से शत्रुवत् व्यवहार करता है। ऐसा जातक किसी दूसरे लड़के को धन के बल पर गोद लेता है।

दशा–शुक्र की दशा अतर्दशा अनिष्ट फलदायक साबित होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध :-

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' कराता है। जातक को जीवन में विवाह सुख विलम्ब से मिलेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक को धनवान बनायेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को भूमि पक्ष में नुकसान देगा तथा माता के सुख में कमी लायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को '**विपरीत राजयोग**' के कारण धनवान तो बनायेगा पर जातक के सही भाग्योदय में कसर रहेगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति '**पराक्रमभंग योग**' एवं '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक को मित्र दगा देंगे। जातक धनी तो होगा पर यशस्वी नहीं होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक की कुण्डली मे '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगे। जातक का व्यक्तित्व काफी संघर्ष के बाद बनेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु का योग गुप्त बीमारी देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्तेन्द्री की शल्य चिकित्सा करायेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
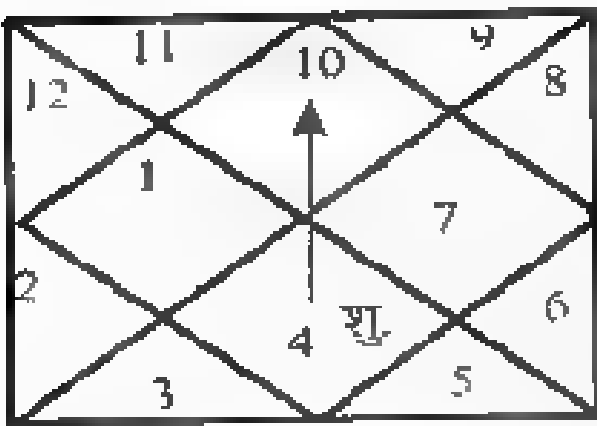
मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां सप्तम स्थान में कर्क (शत्रु) में होगा। शत्रु के कारण '**कुलदीपक योग**' एवं '**पद्मसिंहासन योग**' बनेगा। ऐसा जातक रसिक मिजाज एव सौंदर्य प्रिय होता है। जातक शृंगार प्रिय, संभोग प्रिय एवं अन्य स्त्रियो के प्रति लालायित रहता है। ऐसा जातक दूसरों से मान-सम्मान बहुत चाहता है। जातक कुटुम्ब प्रेमी होता है तथा अपने कुल-कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ मिलता है। जातक को धन, पद-प्रतिष्ठा एव यौवन का भरपूर सुख मिलता है।

निशानी–ऐसा जातक सभी धर्मों में समान आस्था रखता है एवं सामाजिक कार्य में रुचि रखता है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को अत्यत सुंदर कामी व रतिक्रिया में रम्भा के समान कमनीय पत्नी का पति बनायेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य गुप्तांग में बीमारी देगा। जातकी की पत्नी तर्कीली होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को अत्यधिक कामी बनायेगा। जातक क्रूरता के साथ पशुतुल्य मैथुन करेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध विवाह के तत्काल बाद जातक का भाग्योदय करायेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को पतिव्रता स्त्री का पति बनायेगा। जातक का ससुराल पक्ष पराक्रमी होगा
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा. जातक पुरुषार्थ के द्वारा भारी धन कमायेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को लाईलाज गुप्त रोग देगा।
8. शुक्र+केतु–शुक्र के साथ केतु होने से से जातक को नपुसंकता की प्राप्ति होगी।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में
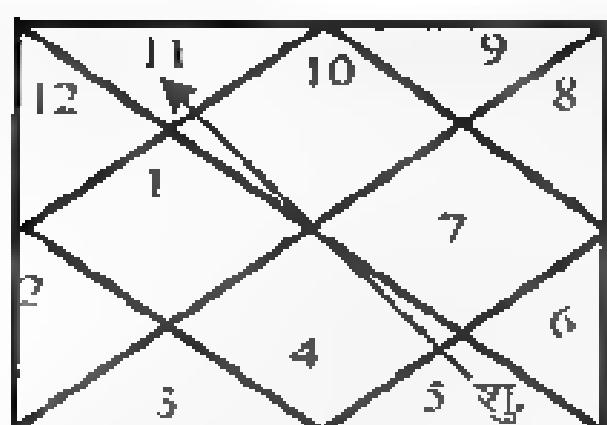
मकरलग्न में शुक्र पचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहा अष्टम स्थान मे सिंह (शत्रु) राशि में होगा। फलत: **'संतानहीन योग'** एव **'राजभग योग'** की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को स्त्री-संतान, नौकरी व्यापार में बाधाएं आयेंगी। जातक प्रेम प्रसंग में बदनाम होगा। जातक की स्त्री मित्र घातक होंगी। जातक ऋण, रोग व शत्रु से दु:खी होगा.

दृष्टि–अष्टमस्थ शुक्र की दृष्टि धन स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक का धन रोग व शत्रुओं से बीच बचाव में खर्च होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** के अनुसार 'बहुपुत्र्यो न संशयः' ऐसे जातक के बहुत सी लड़कियां होंगी। जातक खांसी व श्वास का रोगी होगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा **'विवाहभंग योग'** करायेगा। जातक की दो पत्नियां होंगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य स्वगृही सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा पर प्रतिष्ठा नहीं होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** करायेगा। जातक को अनेक व्यापार-धंधे बदलने के बाद भी संतोष नहीं मिलेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'भाग्यभंग योग'** एवं हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी तो होगा पर उसके भाग्य में रुकावट रहेगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'पराक्रमभंग योग'** एवं विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक को मित्रों से अपकीर्ति मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गुप्तेन्द्री में रोग देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक के शरीर में पेट के नीचे के हिस्से में शल्य चिकित्सा करायेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में
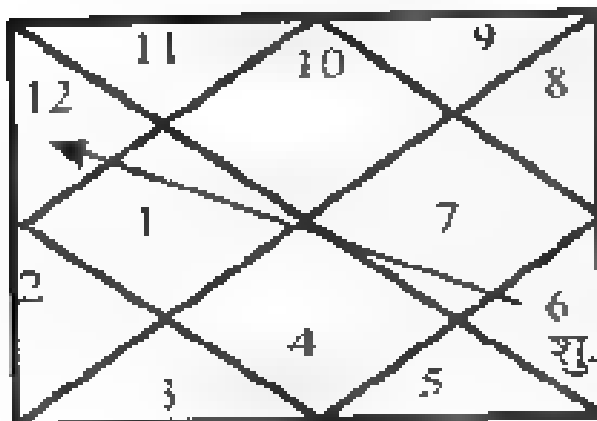
मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां नवम स्थान में नीच का होगा। कन्या राशि के 27 अंशों में शुक्र परम नीच का होगा। शुक्र भाई बहन, माता पिता, स्त्री-संतान सबका सुख देगा। जातक को नौकरी-रोजगार, व्यापार व्यवसाय को लेकर परेशानी नहीं रहेगी। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। राजनीति में जातक का वर्चस्व व दबदबा रहेगा।

दृष्टि–नवम भावगत स्वगृही शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा एवं उसका जनसम्पर्क विस्तृत होगा।

निशानी–ऐसे जातक का पुत्र भी राजा के समान ऐश्वर्यवान् होगा। **'लोमेश संहिता'** के अनुसार जातक स्वयं ग्रंथकर्त्ता, लेखक या पत्रकार होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चद्रमा स्त्री मित्र के सहयोग से भाग्य में अकल्पनीय उछाल देगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य संघर्ष के साथ भाग्योदय करायेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी या उद्योगपति बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से लाभ देगा। जातक कुटुम्बियों से प्रेमवत संबंध बनाये रखेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को विद्या से लाभ दिलायेगा। जातक को राज सरकार से मान-सम्मान मिलेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को भाग्योदय में संघर्ष देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक का भाग्योदय 32 वर्ष की आयु के बाद होगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में

11 10 9 8 12 1 7 शु. 2 4 6 3 5
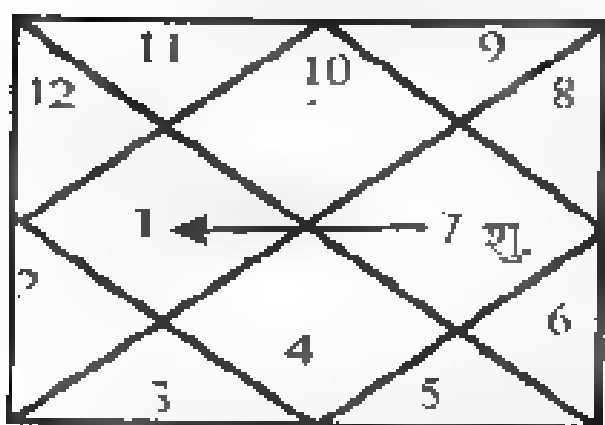
मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा। शुक्र यहा दशम स्थान मे तुला राशि मे स्वगृही होगा। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** एवं **'मालव्य योग'** बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होता है। जातक व्यवहारकुशल, उदार हृदय वाला होता है तथा उसे उत्तम वाहन, उत्तम नौकर एवं उत्तम भव का सुख मिलता है। जातक प्रजावान होगा, उसे उत्तम संतति का सुख भी मिलेगा।

दृष्टि—दशमस्थ शुक्र चतुर्थ भाव (मेष राशि) को देख रहा है। ऐसे जातक को माता की सम्पत्ति, कुटुम्ब का सुख मिलेगा।

निशानी—जातक ग्रंथकार या लेखक होगा एवं उसका एक पुत्र भी होगा जो कि राजा के समान ही ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को वांछित सम्पत्ति व सफलता की प्राप्ति होगी। जातक परिवार के साथ धार्मिक यात्राएं करेगा

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को अत्यधिक सुंदर पत्नी देगा एवं जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक निश्चय ही राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्य वाली होगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल जातक को माता से सम्पत्ति एवं उत्तम भवन दिलायेगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध जातक को अनेक वाहन दिलायेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को महान पराक्रमी बनायेगा। जातक धनी होगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि यहां '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु की युति राजयोग में बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु व्यापार में बदलाव (परिवर्तन) कराता रहेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में
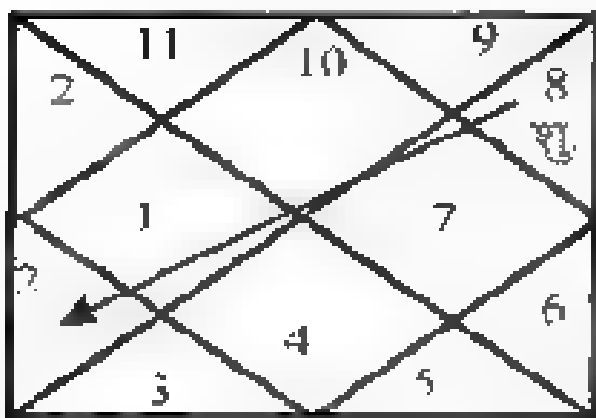
मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अत: शुभ फल ही देगा। शुक्र यहां एकादश स्थान में वृश्चिक (सम) राशि में होगा। ऐसे जातक को धन यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है जातक को स्त्री-संतान, कुटुम्ब एवं विद्या का सुख मिलता है। '**लोमेश संहिता**' के अनुसार—'**सुतेश लाभभवने पंडितो जनवल्लभ:। ग्रंथकर्त्ता महादक्षो बहुपुत्र धनान्वित:**' ऐसा जातक बड़ा विद्वान्, ग्रंथकार, पत्रकार बहुत होशियार, धन-धान्य से युक्त एवं जनप्रिय व्यक्ति होता है।

दृष्टि–एकादश भावगत शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक उत्तम संतति से युक्त, उत्तम आध्यात्म विद्या का जानकार होगा। तंत्र-मंत्र, ज्योतिष का जानकार होगा।

निशानी–जातक की प्रथम संतति कन्या होगी।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी। जातक को विद्या, संतान सुख एवं पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा नीच का होकर जातक को सुंदर पत्नी दिलायेगा। जातक की पत्नी भाग्यशाली होगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य होने से व्यापार-व्यवसाय के शुद्ध मुनाफे में 40% घाटा रहेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक उद्योगपति तथा बड़ी जमीन जायदाद का स्वामी होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। ऐसा जातक अवसरों का पूरा लाभ उठाता है।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक को मित्रों से सहयोग मिलता रहेगा। भागीदारी के धंधे में लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को उत्तम सम्पत्ति से मालामाल कर देगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु लाभ में भारी बाधक तत्त्व का काम करेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु व्यापार में परिवर्तन कराता रहेगा।

मकरलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में
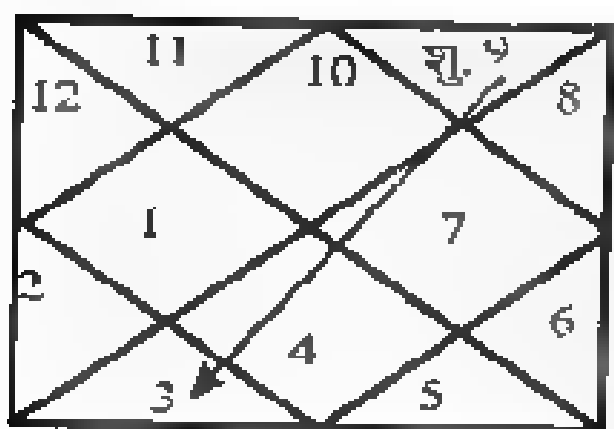
मकरलग्न में शुक्र पंचमेश एवं राज्येश होने से राजयोग कारक है। शुक्र लग्नेश शनि का मित्र है अतः शुभ फल ही देगा शुक्र यहां द्वादश स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। शुक्र की इस स्थिति से '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' की सृष्टि होगी। ऐसे जातक को हानि-लाभ, मान-अपमान, उतार-चढ़ाव का अनुभव जीवन में होता रहेगा। जातक व्यर्थ की यात्राएं करेगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत शुक्र की दृष्टि षष्ट भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को ऋण रोग व शत्रु परेशान करते रहेंगे।

निशानी–ऐसे जातक का पुत्र पिता से शत्रुवत् व्यवहार करेगा। जातक संतान को लेकर परेशान रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक को अनिष्ट फल मिलेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता है। जातक के दो विवाह संभव हैं। पत्नी से नहीं बनेगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनाता है। जातक धनवान होगा पर उसका स्वभाव खर्चीला होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनाता है। जातक की उन्नति बड़ी कठिनाई से होगी
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को विरोध सहन करना पड़ेगा। भाग्योदय कठिनाई से होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु '**पराक्रमभंग योग**' एव विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनाता है। जातक धनवान तो होगा पर यशस्वी नहीं होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि '**लग्नभंग योग** व '**धनहीन योग**' बनाता है। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु दुर्घटना या सेक्स स्कैण्डल मे फंसा सकता है। सावधानी अनिवार्य है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु सेक्स के मामले में बदनामी देगा।

❑❑❑

मकरलग्न में शनि की स्थिति

मकरलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
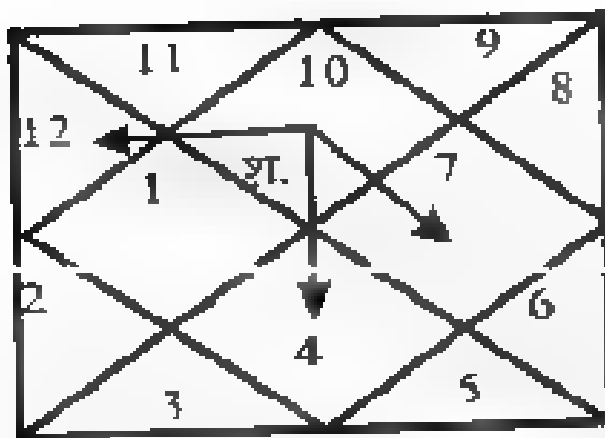
मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी तथा मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां प्रथम स्थान में स्वगृही होगा, शनि की इस स्थिति से '**शश योग**' बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य, ऐश्वर्यशाली, पराक्रमी व धनी होगा। जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, पराक्रमी यशस्वी, विद्यावान व बुद्धिमान होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसे जातक को '**द्विभार्या परगोऽपि वा**' दो पत्नी अथवा अन्य स्त्रियों से पत्नी तुल्य संबंध रहता है।

दृष्टि–स्वगृही शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि), सप्तम भाव (कर्क राशि) एवं दशम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा, अपने कुटुम्ब का पालन करेगा। जातक का पत्नी से मनमुटाव होगा। जातक का व्यापार उत्तम होगा।

निशानी–जातक जिद्दी होगा और अपनी प्रत्येक जिद्द धन बल पर प्राप्त करने में सफल होगा। जातक चंचल चित्त वाला एवं घुमक्कड़ होगा।

दशा–शनि की दशा–अंतर्दशा में जातक को धन, यश, मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। नौकरी-व्यापार में लाभ होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा '**कलत्रमूलधन योग**' बनायेगा। ऐसे जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होगें। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि स्वगृही होकर '**शश योग**' बनायेगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति लग्न

स्थान में विस्फोटक है। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा, परन्तु जातक को व्यक्तित्व विकास हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा।

3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल की युति होने से '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनेगा। जातक निश्चय ही राजा किंवा राजमंत्री होगा। जातक I.S., IPS, RJS वगैरा उच्च अनुशासन प्रिय कार्यों में, न्याय के कार्यों में लगा रहेगा। जातक सैद्धान्तिक जीवन जीयेगा। अपने सिद्धान्त व स्थापित मूल्यों की रक्षा के लिए कुछ भी करने में नहीं हिचकिचायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। जातक प्रखर बुद्धिशाली होगा। '**शत्रुमूल धनयोग**' के कारण जातक शत्रु से पैसा कमायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने पर '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। जातक राजा, राजमंत्री या राजगुरु तुल्य प्रतिष्ठित पद को प्राप्त करेगा। जातक अपने राज्य व शहर की राजनीति में महत्त्वपूर्ण पद को प्राप्त करेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को परम सौभाग्यशाली बनायेगा। जातक की संतति तेजस्वी होगी। '**राजमूल धनयोग**' बनेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु की युति जातक को पराक्रमी व जिद्दी व्यक्तित्व का धनी बनायेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु होने से जातक उम्र से बड़ा दिखेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में
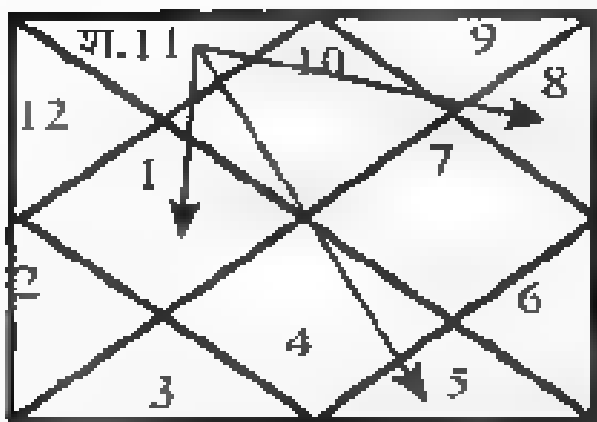
मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि मे होगा। जातक कुटुम्ब सुख वाला होगा। पाराशर ऋषि कहते हैं -'**धनेशे धनगे जातो धनवान् गर्वसंयुतः**' धनेश धन स्थान में हो तो जातक महाधनी एवं घमण्डी होगा। ऐसा जातक एकाधिक स्त्रियों वाला एवं पुत्र सुख से हीन होगा। जातक विद्वान् होगा एवं जबान का पक्का होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मेष राशि), अष्टम स्थान (सिंह राशि) एवं लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक के पास बड़ी भू सम्पत्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी तथा व्यापार प्रिय होगा। जातक व्यापार से धन कमायेगा।

निशानी–जातक की वाणी अहंकार प्रिय होगी।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा में जातक धनी होगा एवं उसे उत्तम स्वास्थ्य का लाभ मिलेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि यहां अपनी मूल त्रिकोण राशि में स्वगृही होगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति धन स्थान में विस्फोटक है। धन संग्रह में बाधाएं आयेगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनवान होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मगल **'मातृमूल धनयोग'** के कारण जातक को बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा। जातक की भाषा घमण्डी होगी जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। **'शत्रुमूल धनयोग'** के कारण जातक को शत्रुओं से पैसा मिलेगा।
5. **शनि+गुरु** -शनि के साथ गुरु जातक को मित्रो से धन दिलायेगा क्योंकि यहां **'मित्रमूल धनयोग'** बनेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'राजमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को राज सरकार से, संतति से धन लाभ होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु धन संग्रह में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक का धन व्यर्थ मे खर्च करायेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में

11 10 9 8 12 श. 1 7 2 6 4 3 5
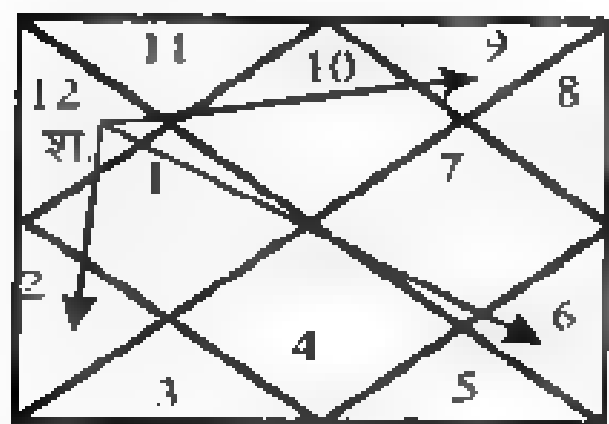
मकरलग्न मे शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी तथा मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां तृतीय स्थान में मीन (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक सिह के समान जबरदस्त पराक्रमी होगा। जातक अनेक मित्रों वाला, बुद्धिमान व सुखी होता है। जातक कुटम्बियों एवं मित्रों का शुभचिंतक होगा। जातक पत्नी–सतान एवं माता-पिता के सुखों से युक्त सद्गृहस्थ होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि), नवम भाव (कन्या राशि) एवं व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक प्रज्ञावान, विद्यावान तथा भाग्यशाली होगा। खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी—जातक को छोटे भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। कन्या संतति अधिक होंगी।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक स्व पराक्रम से धन अर्जित करेगा तथा उत्तम स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होगा।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि सम राशि में है। अष्टमेश व द्वितीयेश यह युति पराक्रम स्थान में विस्फोटक है। परिवार मे कलह-विवाद बना रहेगा। जातक के मित्र अविश्वासनीय होंगे। जातक को छोटे-बड़े दोनों भाइयों का सुख नहीं प्राप्त होगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल होने के कारण जातक के अनेक मित्र होंगे। जातक को मित्रों से धन लाभ होगा पर खटपट भी होती रहेगी।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ नीच का बुध जातक को भाग्यशाली बनायेगा। जातक को भागीदारी से लाभ होता है।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ स्वगृही गुरु होने से जातक के परिजन व मित्र धनवान होंगे। जातक का उठना बैठना ऊंची सोसाइटी में होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ उच्च का शुक्र जातक को राजपद एवं बड़ा सम्मान देगा। जातक को उच्च विद्या के कारण विदेश जाना पड़ेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु जातक को विवादास्पद व्यक्ति बनायेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु परिजनों से, मित्रों से मनमुटाव उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न मे शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में
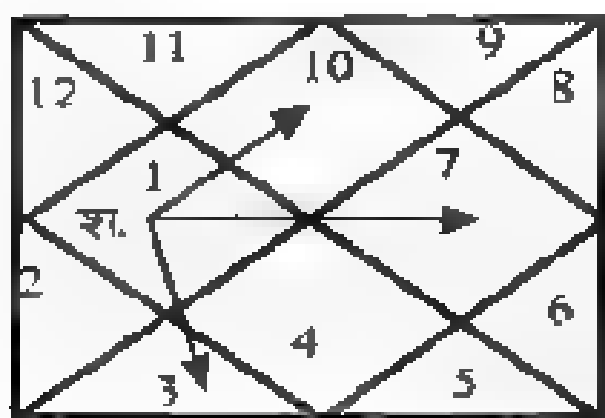
मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वय मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां चतुर्थ स्थान में नीच का होगा। मेष राशि के अंशों में शनि परमनीच का होगा। ऐसे जातक को माता,

भवन व भूमि का सुख कमजोर होगा। जीवन में भौतिक सुख-सुविधाएं संघर्ष के बाद प्राप्त होंगी।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि छठे भाव (मिथुन राशि), दशम भाव (तुला राशि) अपने ही घर लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु होंगे। जातक नौकरी करेगा। जातक को परिश्रम का लाभ तो मिलेगा पर प्रथम प्रयास में नहीं दूसरे-तीसरे प्रयास में सफलता मिलेगी।

निशानी–यदि अन्य शुभ योग न हो तो जातक चतुर्थ श्रेणी का कर्मचारी होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। उन्नति अवश्य देगी पर जातक को मीठे फलों की प्राप्ति यथेष्ट परिश्रम के बाद होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चद्रमा जातक को ससुराल पक्ष से धन दिलायेगा।
2. **शनि+सूर्य** -यहा दोनों ग्रह मेष राशि में होंगे। सूर्य यहां उच्च का होकर '**रविकृत राजयोग**' तो शनि यहां नीच का होकर '**नीचभंग राजयोग**' बना रहा है। अष्टमेश व द्वितीयेश की चतुर्थ स्थान में यह युति जातक के माता पिता के सुख को नष्ट करके राजयोग देगी। जातक महाधनी एवं बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी तथा गाव का प्रमुख होगा।
3. **शनि+मंगल**– शनि के साथ मंगल होने पर '**नीचभंग राजयोग**' एवं 'रुचक योग' की सृष्टि होगी। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। जातक के पास अनेक वाहन होंगे। आमदनी के जरिए भी बहुत होंगे। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक के गुप्त व प्रकट शत्रु होंगे। पर शत्रुओं में धन मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक को मित्रों से धन प्राप्त होता रहेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से जातक को राजकीय सम्मान, राजा से सम्मान मिलेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु होने से जातक की माता छोटी आयु में गुजरेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को माता के सुख से वंचित करेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में
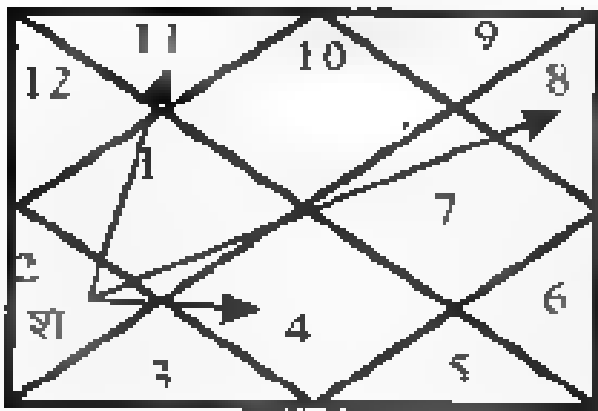
मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां पचम स्थान मे वृष (मित्र) राशि का होता है। जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। जातक विदेश व्यापार, धंधे से कमायेगा। जातक मंत्री का परम प्रिय व्यक्ति होगा जातक शत्रुओ पर विजय प्राप्त करने में सफल होगा।

दृष्टि—पचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि), लाभ स्थान (वृश्चिक राशि) एवं अपने ही घर कुम्भ राशि (धन स्थान) पर होगी। जातक अपनी पसद का या अंतर्जातीय विवाह करेगा। जातक विदेश व्यवसाय से कमायेगा। जातक धनवान तथा उसके पुत्र भी धनी होगे।

निशानी—ऐसे जातक प्रजावान् होता है। उसको कन्या सतति अधिक होगी। पाराशर ऋषि के अनुसार - '**प्रथमापत्यनाशः स्यान्मानी क्रोधी नृपप्रियः**' उसका ज्यष्ठ सतति का नाश होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा अत्यन्त शुभ फल देगी जातक को शनि की दशा में धन व प्रतिष्ठा, पुत्र-संतति सुख की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को विद्या से धनार्जन करायेगा। जातक को सरकारी नौकरी मिलेगी
2. **शनि+सूर्य**—यहा दोनों वृष राशि मे होंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री होगा। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति पंचम स्थान में विस्फोटक है। विद्या प्राप्ति में बाधा होगी । प्रथम संतति हाथ नहीं लगेगी। संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को माता से या भूमि से धन दिलायेगा
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध शत्रुओं से धन लाभ करायेगा
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से लाभ तथा उत्तम संतति देगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र स्वगृही होने से जातक को विद्या का लाभ देगा। जातक उच्च शिक्षा के माध्यम से विदेश जायेगा.

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक के संतान एवं विद्या प्राप्ति में बाधा डालेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु प्रारम्भिक विद्या प्राप्ति में बाधक है।

मकरलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में
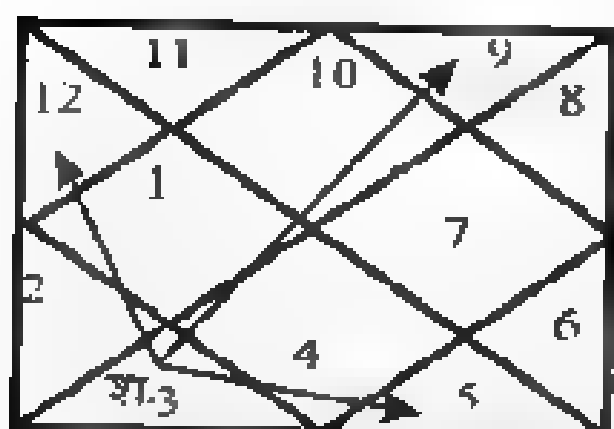
मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नही करेगा। शनि यहां छठे स्थान में मिथुन (मित्र) राशि में होगा शनि की इस स्थिति **'लग्नभंग योग'**, **'धनहीन योग'** बनेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक को धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों मे सफलता नहीं मिलेगी। ऐसे जातक के शत्रु बहुत होंगे। गुप्त रोगों की संभावना रहेगी। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक के शरीर में कुछ न कुछ बीमारी रहती है। जातक देहसुख से हीन होता है।

दृष्टि–छठे भाव में स्थित शनि की दृष्टि अष्टम भाव (सिंह राशि), व्यय भाव (धनु राशि) एव पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक शत्रु पर विजय प्राप्त करेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का तथा कर्जदार होगा। जातक के मित्र जातक को दगा देगे।

निशानी–जातक नकारात्मक या निराशावादी दृष्टिकोण से युक्त व्यक्ति होगा।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'विवाहभंग योग'** बनायेगा। जातक को गृहस्थ सुख में कमी अखरेगी।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। सूर्य यहां सम राशि मे होकर सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। जबकि शनि मित्र क्षेत्री होकर **'लग्नभंग योग'**, **'धनहीन योग'** बना रहा है। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति छठे भाव में विस्फोटक है। जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा पर अचानक शत्रु प्रकोप से जातक को धनबल व शरीबल नष्ट हो जायेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को उन्नति हेतु कठोर प्रयास करने पड़ेगे।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध की युति विपरीत राजयोग बनायेगी एव शत्रु से धन दिलायेगी।

5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। जातक धनी तो होगा पर बदनाम भी होगा।

6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र राजदण्ड दिला सकता है। '**संतानहीन योग**' के कारण पुत्र संतति की चिंता रहेगी।

7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु धन के मामले में धोखा देगा तथा जातक के शरीर को भी कष्ट पहुचायेगा।

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक के स्वास्थ्य के लिए घातक है।

मकरलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में
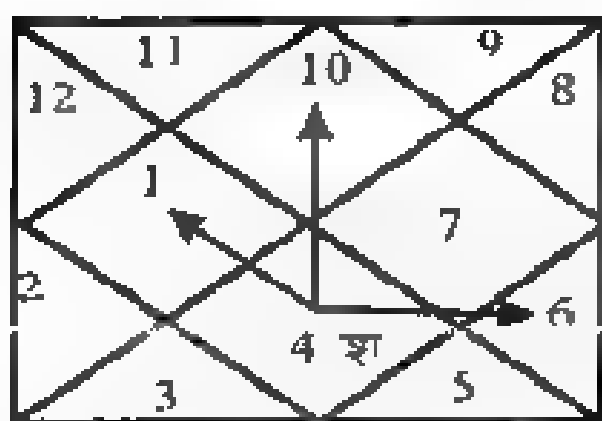
मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वय मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां सप्तम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। जातक को दैहिक स्वास्थ्य, सौंदर्य की प्राप्ति होगी। जातक को '**लग्नाधिपति योग**' के कारण परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक को गृहस्थ में कमी महसूस होगी। जातक का अपने जीवन साथी से वैमनस्य रहेगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि), अपने ही घर लग्न स्थान (मकर राशि) एवं चतुर्थ स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। पर उसे भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को भौतिक सुख, जमीन-जायदाद की प्राप्ति होगी

निशानी—जातक को पेट की तकलीफ (कब्ज) की बीमारी रहेगी।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को ससुराल से पत्नी से धन दिलायेगा। संभवत: जातक की पत्नी कमाऊं महिला होगी।

2. **शनि+सूर्य**—यहा दोनो ग्रह कर्क राशि मे होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति सप्तम स्थान में विस्फोटक है। विलम्ब विवाह, पत्नी से वियोग एवं गृहस्थ सुख में अशांति तथा कलह का वातावरण रहेगा। पत्नी विकल अंगो वाली हो सकती है।

3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल होने से जातक को भूमि से लाभ होगा। पत्नी से धन लाभ, माता से धन लाभ दिलवा सकता है पर जातक के परिवार में कलह की स्थिति रहेगी।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध रहने से शत्रु से धन लाभ होगा। शत्रु पर विजय से जातक की उन्नति होगी।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति होने मित्रों से धन लाभ, ससुराल को प्रतिष्ठा से जातक को लाभ होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र विद्या से लाभ, संतान से लाभ, राज (सरकार) से लाभ का संकेत देता है।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु विवाह विच्छेदक होता है।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु विवाह सुख में विलम्ब का द्योतक है।

मकरलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

11 10 9 12 8 1 7 2 4 6 3 5 श.
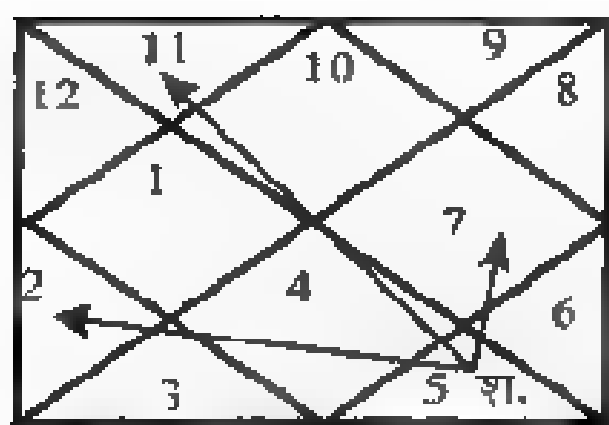
मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां अष्टम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शनि की इस स्थिति में '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलता। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे जातक को स्त्री सुख अल्प एवं बड़े भाई का सुख नहीं होता।

दृष्टि—अष्टमस्थ शनि की दृष्टि दशम भाव (तुला राशि), धन भाव (कुम्भ राशि) एवं पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक को रोजगार, धन एवं विद्या की प्राप्ति हेतु काफी संघर्ष करना पड़ेगा।

निशानी—जातक परस्त्रीगामी होता है। 'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार **'रोगी चौरो महाक्रोधी द्यूती च परदारगः'** जातक क्रोधी एवं जुआ खेलने का शौकीन होता है।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा अप्रिय फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' की सृष्टि करता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होगा।

2. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य यहां स्वगृही होकर सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है जबकि शनि शत्रु क्षेत्री होकर **'लग्नभंग योग'**, **'धनहीन योग'** बना रहा है। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति अष्टम भाव मे विस्फोटक है। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा पर अचानक दुर्घटना में जातक का धनबल, शरीरबल नष्ट हो जायेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनाता है। जातक को विवाह का पूर्ण सुख नहीं मिलेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध भाग्योदय में बाधक है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को धनी तो बनायेगा परन्तु मित्र दगा देंगे।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र विद्या मे बाधा एव 'सततिहीन योग' के कारण संतान से चिंता करायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को शत्रु से चोट पहुंचायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु शत्रु से सावधान रहने का संकेत देता है।

मकरलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में
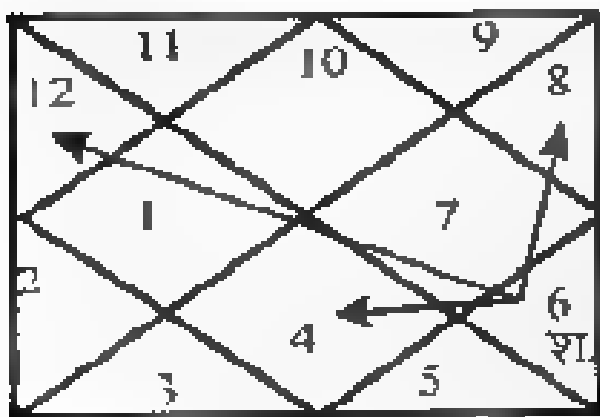
मकरलग्न मे शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एव मारकेश होते हुए भी स्वय मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहा नवम स्थान (कन्या) राशि मित्र के घर में होगा। ऐसा जातक धनवान एवं भाग्यवान होता है। पाराशर ऋषि के अनुसार **'लग्नेशे भाग्यगे जातो भाग्यवान् जनवल्लभः'** जातक भाग्यवान, लोगों का प्रिय, ईश्वर में विश्वास रखने वाला, चतुर वक्ता, स्त्री, पुत्र और धन सुख से युक्त होता है।

दृष्टि–नवम भावगत शनि की दृष्टि लाभ स्थान (वृश्चिक राशि), पराक्रम स्थान (मीन राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को व्यापार से लाभ होता है। जातक पराक्रमी होता है। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

निशानी जातक की बाल्यवस्था दुःखी एवं पीछे का जीवन सुखी होता है।

दशा–शनि की दशा-अतर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा। जातक तीर्थयात्रा करेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**-शनि के साथ चद्रमा पत्नी या ससुराल से धन दिलायेगा।

2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। सूर्य यहा सम राशि में तो शनि मित्र राशि में है। अष्टमेश द्वितीयेश की यह युति भाग्य स्थान में विस्फोटक है। जातक के जीवन में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी वास्तविक भाग्योदय हेतु निरन्तर संघर्ष बना रहेगा। भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल होने से जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक की माता उसके भाग्योदय में सहायक होगी।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक सौभाग्यशाली होगा। परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति जातक को परिजनों, रिश्तेदारों एवं मित्रों से लाभ दिलायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से जातक की विद्या से लाभ होगा, विद्या प्राप्ति के बाद जातक विदेश जायेगा। जातक का भाग्योदय परदेश में होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक के भाग्योदय में रुकावट डालेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु संघर्ष के बाद जातक का भाग्योदय करायेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में

11 10 9 8 12 1 7 श. 2 6 4 3 5
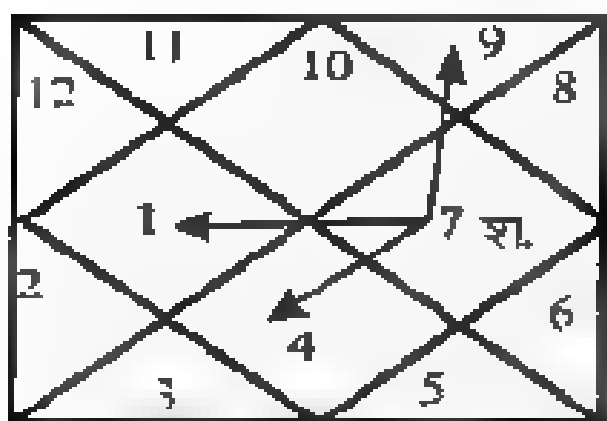
मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा शनि यहां दशम स्थान में तुला राशि में उच्च का होगा। तुला राशि के अंशों में शनि परमोच्च का होगा। शनि की इस स्थिति में **'शश योग'** बनेगा। जातक राजनीति में अग्रगण्य एवं चक्रवर्ती राजा के समान पराक्रमी होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। उसके पास अनेक वाहन एवं भवन होंगे।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि व्यय स्थान (धनु राशि) चतुर्थ स्थान (मेष राशि) एवं सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक भूमि से लाभ प्राप्त करने वाला होता है, जातक उत्तम संतति एवं विवाह सुख को प्राप्त करता है।

निशानी–'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार–**'लग्नेशे दशमे जातः पितृसौख्यसमन्वितः'** जातक पिता के सुख से युक्त, राजमान्य, लोगों में विख्यात, स्वपराक्रम से धन अर्जित करने वाला होता है।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में अति उत्तम फलों एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा होने से **'कलत्रमूल धनयोग'** बनेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति वारिस में मिलेगी।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य यहां नीच का तो शनि नीच का होने से **'नीचभंग योग'** बना। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व धनी होगा। अष्टमेश व द्वितीयेश की युति दशम भाव में विस्फोटक है। जातक की नौकरी में बाधा, राजदण्ड एवं झूठी बदनामी का योग है।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल की युति **'मातृमूल धनयोग'** बनायेगी। जातक को माता एवं भूमि से धन मिलेगा। जातक महाधनी होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध **'शत्रुमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को अपने शत्रुओं की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति **'मित्रमूल धनयोग'** बनाता है। जातक को परिजनों एवं मित्रों की सम्पत्ति मिलेगी।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र होने से **'राजमूल धनयोग'** बनेगा। जातक को विद्या से, राज (सरकार) से धन की प्राप्ति होगी। जातक की संतान उसकी आज्ञा में रहेगी व वह सपूत होगी। जातक की संतान जातक को कमा कर देगी।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु राजयोग में गड़बड़ करायेगा। सरकारी पूछताछ खुलेगी।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु सरकार से विवाद उत्पन्न करायेगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में

11 10 9 12 8 श 1 7 2 6 4 3 5
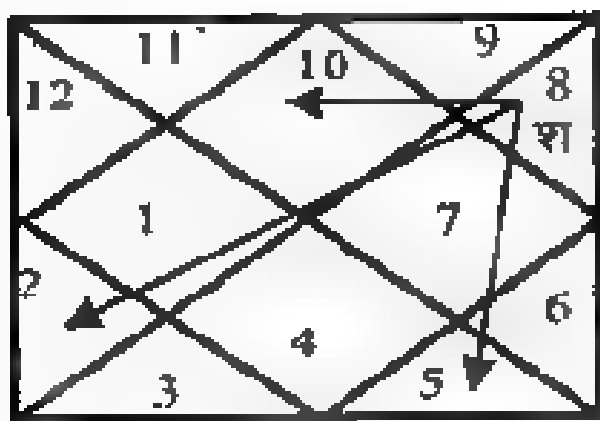
मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी एवं मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहां एकादश स्थान में वृश्चिक (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को उत्तम विद्या की प्राप्ति होती है। जातक को प्रचुर मात्रा में धन, यश-पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। पाराशर ऋषि के अनुसार, **'लग्नेशे लाभगे जातः सदा लाभ**

समन्वितः' जातक जिस कार्य में हाथ डालेगा उसमें उसे बराबर सफलता मिलेगी। जातक गुणी होगा। जातक गुणीजनों की कद्र करेगा एवं उदार मनोवृत्ति वाला होगा।

दृष्टि—एकादश स्थान में स्थित शनि की दृष्टि लग्न भाव (मकर राशि), पंचम भाव (वृष राशि), एव अष्टम भाव (सिंह राशि) पर होती है। जातक को **'लग्नाधिपति योग'** के कारण परिश्रम का पूरा लाभ मिलेगा। जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। जातक के शत्रु होगे पर शत्रुओं का नाश होगा।

निशानी—ऐसा जातक बहुत ही यशस्वी एवं मानी होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी एवं उसके शत्रुओं का नाश होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा ससुराल पक्ष से लाभ दिलायेगा।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में तो, शनि यहां शत्रु राशि में होगा। अष्टमेश, द्वितीयेश की यह युति एकादश स्थान में विस्फोटक है। जातक को व्यापार-व्यवसाय में बाधा, लाभ में रुकावट होगी। भागीदारी में नुकसान। पिता की मृत्यु के बाद जातक बड़े उद्योग का स्वामी होगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को माता की सम्पत्ति, भूमि-भवन से लाभ दिलायेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध भाग्योदय कारक होगा। जातक के शत्रु जातक से दबकर उसके अनुकूल हो जायेंगे।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से लाभ एवं परिजनों का प्रेम दिलायेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र होने से जातक को राज सरकार से लाभ होगा। विद्या से लाभ होगा, संतान से लाभ दिलायेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु की युति लाभ में बाधक है।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु संभावित लाभ को शून्य में बदल देगा।

मकरलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में

मकरलग्न में शनि लग्नेश एवं धनेश है। शनि यहां द्वितीय स्थान का स्वामी, मारकेश होते हुए भी स्वयं मारक का काम नहीं करेगा। शनि यहा द्वादश स्थान में
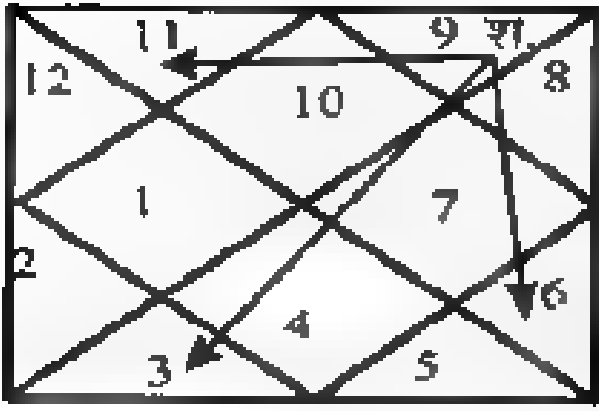
धनु (सम) राशि में होगा। शनि की इस स्थिति से '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलता तथा उसे आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। जातक के जीवन में सुख-दुःख का चक्र चलता रहता है। जातक व्यर्थ का खर्च बहुत करेगा। जातक परोपकारी होगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ शनि की दृष्टि धन भाव (कुंभ राशि), छठे भाव (मिथुन राशि) एवं नवम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक दूसरों का ऋणी, कर्जदार होगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे एवं भाग्योदय में रुकावटें आती रहेंगी।

निशानी–पाराशर ऋषि के अनुसार–'**परभाग्यरतः तस्य ज्येष्ठापत्य सुखं नहि**' ऐसे जातक दूसरों के आश्रय पर जीते हैं। उनकी ज्येष्ठ संतति जीवित नहीं रहती।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक को भारी कष्टों-अवरोधों का सामना करना पड़ेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा ससुराल से विवाद में धन का खर्च करायेगा। पत्नी खर्चीली होगी।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री होकर सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बना रहा है। तो शनि सम क्षेत्री होकर '**लग्नभंग योग**' व '**धनहीन योग**' की सृष्टि कर रहा है। अष्टमेश व द्वितीयेश की यह युति द्वादश भाव में विस्फोटक है। जातक धनी-मानी व अभिमानी होगा पर जातक को यात्रा से धनहानि व शरीर हानि होगी। नेत्र पीड़ा होगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल माता के ईलाज में, भूमि भवन के रखरखाव में जातक का धन खर्च करायेगा
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक के भाग्योदय में बाधक है, फिर भी जातक **विपरीत राजयोग** के कारण धनी होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से, रिश्तेदारों से वांछित सहयोग नहीं दिलायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को राज सरकार से वांछित सहयोग नहीं दिलायेगा।

7 **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु व्यर्थ की यात्रा, भटकाव एवं परेशानी पैदा करेगा। जातक पर कर्जा रहेगा।

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा। जातक को खराब स्वप्न आयेंगे। बुरे विचार आते रहेंगे।

❑❑❑

मकरलग्न में राहु की स्थिति

मकरलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में
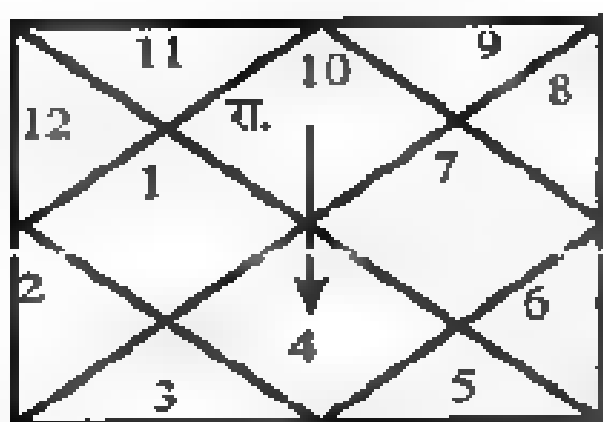
मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां प्रथम स्थान में मकर (सम) राशि में है। जातक का दैहिक सौन्दर्य स्वल्प होगा। जातक को दैहिक व मानसिक परेशानी रहेगी। जातक के चेहरे पर चोट भी लग सकती है। ऐसा जातक बड़ा सावधान, चतुर व हिम्मत वाला होता है तथा सदैव उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है। जातक अनेक प्रकार के धंधे करेगा।

दृष्टि—लग्नस्थ राहु की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को गृहस्थ सुख कमजोर होगा। जातक के पत्नी से नित-नूतन विवाद होते रहेंगे। जीवनसाथी दुर्बल देह वाली होगी।

निशानी—जातक कुतर्की, जिद्दी व हठी होगा।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चद्रमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा। परन्तु जातक अपनी उम्र से बड़ा दिखेगा तथा वह धंधा बदलता रहेगा।
2. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य की युति होने से जातक को स्वास्थ्य में हानि एवं दीर्घ रोग की संभावना रहेगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल होने से **'रुचक योग'** बनेगा। जातक महाधनी एवं पराक्रमी, खतरनाक लड़ाकू (योद्धा) होगा

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध **'कुलदीपक योग'** बनायेगा। जातक भाग्योदय में रुकावट महसूस करेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह मकर राशि में है। बृहस्पति यहां नीच राशि में होकर भी **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** बना रहा है, तो राहु सम राशि में होने से **'चाण्डाल योग'** बना ऐसा जातक स्थाई धधे, रोजगार की तलाश में इधर-उधर भटकता रहेगा। जातक का चित्त अशान्त रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र जातक को कामी व जिद्दी बनायेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि **'शश योग'** के कारण जातक को राजातुल्य पराक्रमी व हठी बनायेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में

रा. 11 10 9 8 12 1 7 2 6 4 3 5
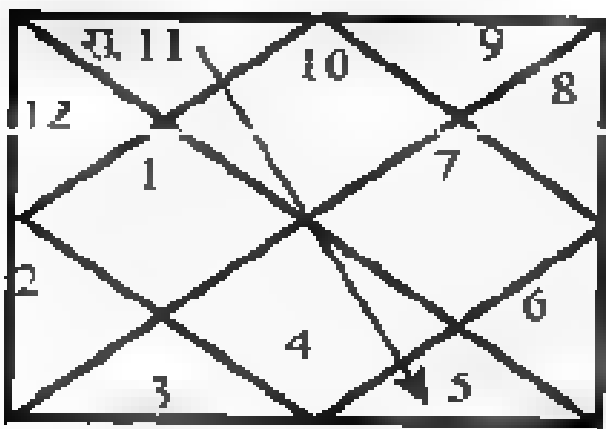
मकरलग्न वालो के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहा द्वितीय स्थान में अपनी मूलत्रिकोण कुभ राशि मे हर्षित है। धन के घड़े में छेद होने के कारण जातक आर्थिक परेशानियां जरूर उठायेगा। परन्तु जातक का कोई काम रुका नहीं रहेगा जातक की वाणी रूखी होगी जिसके कारण कुटुम्ब सुख में कमी रहेगी। अपनी गुप्त युक्तियों के कारण जातक अन्त में अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर लेता है।

दृष्टि—द्वितीयस्थ राहु की दृष्टि अष्टम स्थान (सिंह राशि) पर होगी। जिसके कारण जातक के शत्रु बहुत होगे जो कि पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति में रुकावट डालेगे।

निशानी—जातक जीवन में कर्जदार जरूर होगा। जातक प्रकट रूप से धनी व प्रतिष्ठित दिखेगा पर यथार्थ में ऐसा होगा नहीं।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा में धन हानि होगी। कुटुम्बियों से विरोध होगा एवं शत्रु बढ़ेंगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्रमा जातक के धन का अपव्यय करायेगा। पत्नी को लेकर रुपया खर्च होगा।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य होने से आयु, धन व यश की हानि होगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल होने से जातक बात-बात पर अपशब्द व लड़ाकू भाषा बोलेगा। जिससे धन व यश दोनो ही नष्ट होंगे।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध धन प्राप्ति के अवसर भी देगा एवं उसके एकत्रित धन को नष्ट भी करेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में है। बृहस्पति यहां सम राशि में है, तो राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना जातक को धनाभाव बना रहेगा एवं आर्थिक विषमताएं परेशान करती रहेंगी। जातक की वाणी कठोर (कर्कश) होगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र विद्या द्वारा धन प्राप्ति के संकेत देता है। सरकार द्वारा भी लाभ होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को महाधनी बनायेगा, परन्तु जातक के अर्जित धन का 40% हिस्सा व्यर्थ में खर्च होता रहेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में
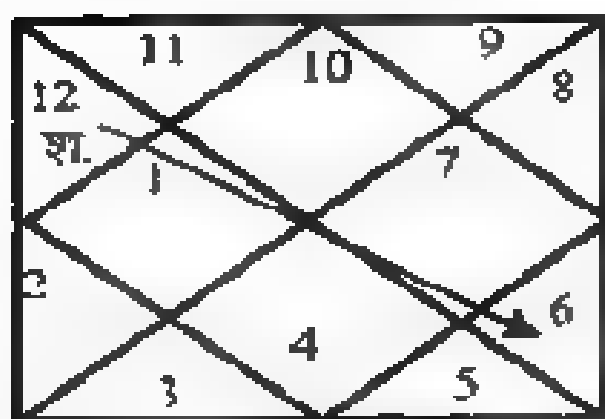
मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ अशुभ फल देगा। राहु यहां मीन (नीच) राशि में है। तृतीय स्थान में '**फलदीपिका**' के अनुसार तृतीय स्थान में राहु राजयोग कारक है। ऐसा जातक महान पराक्रमी होता है परन्तु उसे अपने भाई-बहन, कुटुम्बियों की ओर से चिंता व परेशानी रहती है। ऐसा जातक बाहर से हिम्मती दिखाई देता है पर अंदर ही अंदर कमजोर होता है पर अंतिम रूप में सफलतम व्यक्ति होते हैं। शत्रु पर विजय मिलती है।

दृष्टि–तृतीयस्थ राहु की दृष्टि भाग्य स्थान (कन्या राशि) पर होने से जातक को भाग्योदय हेतु निरन्तर बाधाओं का सामना करना पड़ेगा। जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत आयेंगे।

निशानी–जातक के कुटुम्बी ही जातक के विरोधी होंगे।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा में जातक को आंतरिक विरोध का अनुभव होगा पर अंत में सफलता मिलती है

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–जातक युद्ध प्रिय नहीं होगा। जातक का ससुराल पक्ष पराक्रमी होगा।
2. **राहु+सूर्य**–जातक कुटम्बियों के कारण मारा जायेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को युद्ध प्रिय एवं लड़ाकू बनायेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के कुटम्बी जन ही जातक के शत्रु होंगे।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में हैं, बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा राहु अपनी नीच राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। परिजनों में वैमनस्य रहेगा। जातक के मित्र से दगा देंगे फिर भी राहु के कारण जातक प्रबल पराक्रमी होगा।
6. **राहु+शुक्र**–जातक युद्ध प्रिय नहीं होगा। जातक विद्यावान होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को युद्ध प्रिय व झगड़ालू बनायेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
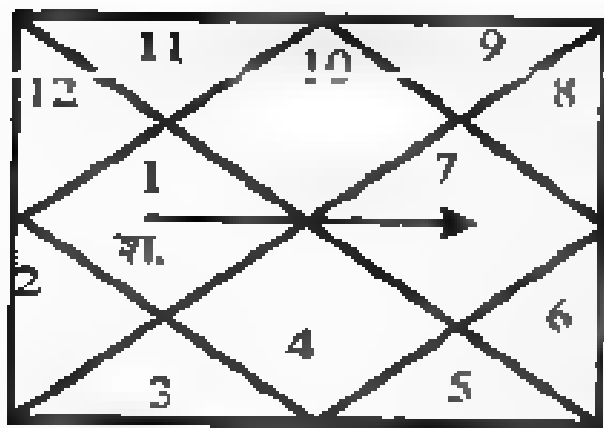
मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां चतुर्थ स्थान में मेष (सम) राशि में है। ऐसा जातक षड्यंत्रकारी, स्वार्थी एवं मिथ्यावादी होगा। माता, भूमि एवं मकान के मामले में विवाद रहेगा। जातक के घर में अशांति का वातावरण बना रहेगा। वाहन एवं नौकर खर्चीले होंगे। जातक का स्वयं का चरित्र संदेहास्पद होगा। ऐसा जातक अनेक युक्तियों एवं धैर्यबल से अपना काम निकालने में सफल होता है।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत राहु की दृष्टि दशम भाव (तुला राशि) पर होगी फलतः जातक राज्य (सरकार) पक्ष में पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। जातक राजनैतिक सम्पर्क (पहुंच) वाला होता है।

निशानी–यदि जातक सरकारी नौकरी में है तो अपने से उच्च अधिकारी से झगड़ा जरूर करेगा। प्राइवेट नौकरी में भी मालिक से झगड़ा करेगा।

दशा–राहु का दशा-अतर्दशा में जातक को घरेलू संघर्षों का सामना करना पड़ेगा। माता की बीमारी या मृत्यु भी कष्टदायक रहेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जातक की माता को कष्ट पहुंचायेगा जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य माता-पिता दोनो को कष्ट पहुंचायेगा। माता-पिता की छोटी उम्र में मृत्यु होगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा। परंतु भूमि पर मुकदमा जरूर चलेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक को वाहन दुर्घटना से भय करायेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मेष राशि में है। गुरु यहां मित्र राशि में, तो राहु सम राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। '**केसरी योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' भी गुरु बना रहा है। जातक बुद्धिमान व समझदार होगा पर उसकी माता बीमार रहेगी। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक की विद्या में रुकावट दिलायेगा। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि वाहन दुर्घटना करायेगा अथवा जातक का नौकर चोरी करके भाग जायेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में
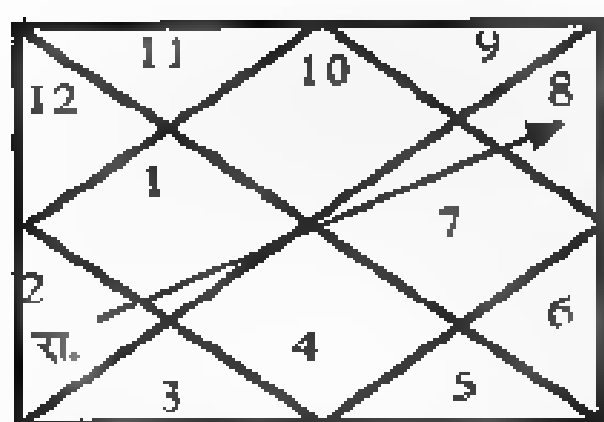
मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहा पंचम स्थान में वृषभ राशि में है। ऐसा जातक विद्यावान् होगा, परन्तु जातक को प्रारंभिक विद्या प्राप्ति में रुकावट आयेगी। जातक प्रज्ञावान होगा परन्तु पुत्र-सुख में विलम्ब या बाधा रहेगी। ऐसे जातक की बुद्धि तेज होती है। जातक को अंत में संतान एवं विद्या दोनों पक्ष में सफलता मिलती है।

दृष्टि–पंचम भावगत राहु की दृष्टि एकादश स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी, फलत: जातक को व्यापार में, लाभ में रुकावट महसूस होगी।

निशानी–ऐसा जातक यंत्र-मंत्र-तंत्र तथा गुप्त विद्याओं का जानकार होगा।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जातक को आध्यात्मिक विद्या का स्वामी बनायेगा।

2. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य प्रारंभिक विद्या प्राप्ति में बाधक है। जातक को संतान की चिंता रहेगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल व्यापार में लाभ करायेगा और उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध जातक के भाग्य में रुकावट डाल रहा है। संतान की चिंता रहेगी।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह वृष राशि में है। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में तो राहु उच्च राशि में होने से '**चाण्डाल योग**' बना। विद्या में बाधा आयेगी। पुत्र संतति को लेकर चिंता बनी रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र स्वगृही होने से जातक का राज (सरकार) में वर्चस्व रहेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ देगा पर जातक की विद्या अधूरी छूट जायेगी।

मकरलग्न में राहु की स्थिति षष्टम स्थान में

मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां छठे स्थान में अपनी मूल त्रिकोण मिथुन राशि में स्वगृही होकर राजयोग प्रदाता है। ऐसा जाताक शत्रु पक्ष पर विशेष प्रभाव रखता है। यह राहु लड़ाई-झगड़े, कोर्ट-कचहरी में विजय एवं सफलता प्रदान करता है। ऐसे जातक को यदि कोई शारीरिक व्याधि होती है तो उसका फौरन निदान हो जाता है।

दृष्टि—छठे स्थान में स्थित राहु की दृष्टि व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होता है।

निशानी—ऐसे जातक में हिम्मत व निर्भयता का विशेष समावेश होता है। ऐसा जातक कूटनीतिज्ञ एवं कुशल राजनीतिज्ञ होता है।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को शत्रुओं पर विजय एवं बाधाओं से मुक्ति मिलेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'विवाह बाधा योग'** बनाता है। जातक को विवाह का सुख प्राप्त नहीं रहेगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा। पर गुप्त शत्रु बहुत होंगे।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'सुखहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को व्यापार में नुकसान होगा और माता की आयु छोटी होगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध हर्ष नामक **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी तो होगा पर भाग्य उसका साथ नहीं देगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में हैं। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में है, विमल नामक **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। राहु मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा। जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जीवन में परेशानियां बहुत आयेंगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र **'संतानहीन योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक को नौकरी, रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु परेशान होना पड़ेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक की कुण्डली में **'लग्नभंग योग'** एवं **'धनहीन योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में
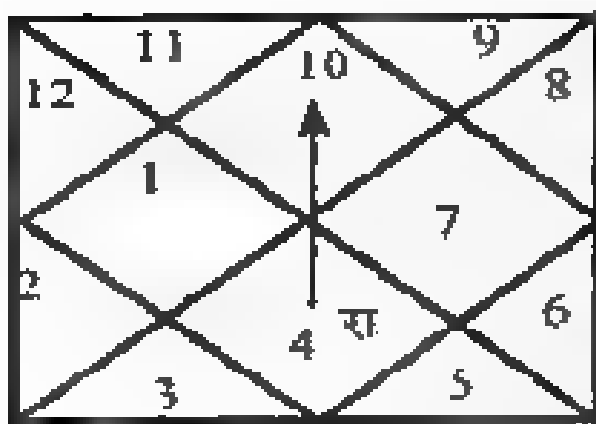
मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां सप्तम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक को स्त्री पक्ष से महान कष्ट मिलता है। जननेन्द्रिय में रोग होता है अथवा जातक अविवाहित होता है। जातक को कुछ-न-कुछ मानसिक परेशानी सदैव लगी रहेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ राहु की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि) पर होगी फलतः जातक अस्थिर चित्त वृत्ति वाला होता है। अपनी कूटनीति, मनोबल एवं गुप्त युक्तियों द्वारा कठिन परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

निशानी–जातक को पेट की तकलीफ रहेगी तथा शल्य चिकित्सा भी होगी।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। जातक को गुप्त शक्तियों की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चद्रंमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा परन्तु पत्नी से मनमुटाव की स्थिति रहेगी।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य विवाह-विच्छेद का योग बनाता है।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ नीच का मंगल पत्नी व दीर्घकालीन गृहस्थ सुख में बाधक है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध विवाह में देरी, विलम्ब कराता है।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि में हैं। बृहस्पति यहां उच्च का होकर **'हंस योग'** बना रहा है, तो राहु शत्रु राशि में होकर **'चाण्डाल योग'** बना रहा है। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा। परन्तु जातक के गृहस्थ सुख में न्यूनता रहेगी। **द्विभार्या योग** बनता है।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक के गुप्तांग में बीमारी देगा। पर उसे शल्य चिकित्सा से लाभ होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनाता है। जातक को थोड़े से संघर्ष के बाद कार्य में सफलता मिलेगी।

मकरलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
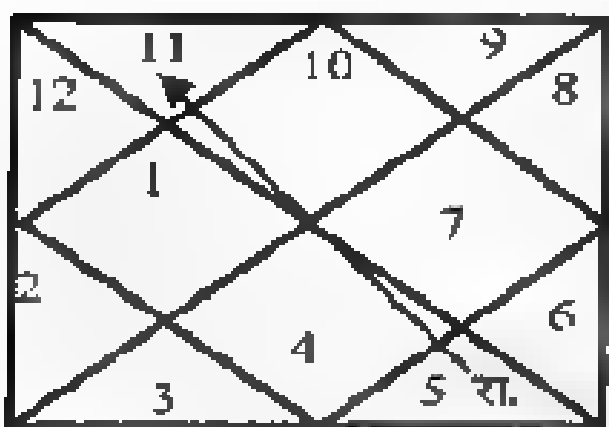
मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां अष्टम स्थान में सिह (शत्रु) राशि मे होगे। जातक को स्वास्थ्य संबंधी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। जातक को उदर व गुदा संबंधी रोग भी हो सकते हैं तथा कई बार तो मृत्यु–तुल्य कष्टों का सामना भी करना पड़ेगा। गुप्त रोग, हृदय रोग का प्रकोप भी संभव है। धन व यश की हानि होगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ राहु की दृष्टि धन भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः जातक के धन का अपव्यय होगा। धन संकलन में बाधाएं आयेगी।

निशानी–जातक की वाणी अप्रिय व कुटिल होगी।

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा जातक की आयु के लिए कष्टप्रद होगी। मारक या पाप ग्रह का अंतर घातक हो सकता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जीवनसाथी की आयु छोटी करेगा। जातक विधुर होगा तथा वह दूसरा विवाह करेगा, फिर भी उसका गृहस्थ सुख ठीक नहीं होगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा एवं दीर्घ आयु को प्राप्त करेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' व **लाभभंग योग**' तो कराता ही है साथ में विलम्ब विवाह के योग एवं अविवाह की स्थिति भी बनाता है।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध '**भाग्यभंग योग**' एवं सरल नामक '**विपरीत राजयोग**' बनाता है। जातक के भाग्योदय में काफी परेशानी आयेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मित्र राशि में है। गुरु मित्र राशि में विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बना रहा है तो राहु शत्रु राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा, पर अचानक दुर्घटना का भय बना रहेगा। जातक समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। जातक को संतान से चिंता एव राजदण्ड का भय रहेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनाता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में
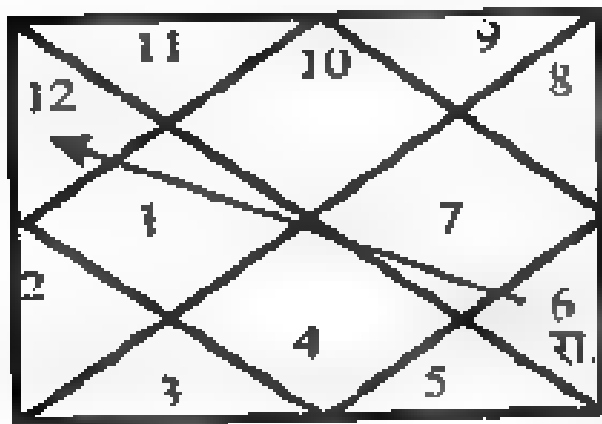
मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहां नवम स्थान में कन्या राशि में स्वगृही होगा। ऐसे जातक को प्रारंभिक जीवन में कुछ कठिनाइयों के बाद जबरदस्त सफलता मिलेगी जातक गुप्त शक्तियों एव आत्म बल के माध्यम से किसी भी समस्या का निराकरण करने में सफल हो जाता है। ऐसा जातक अर्ध-नास्तिक होता है। जातक कभी ईश्वर को मानता है, कभी नहीं मानता।

दृष्टि—नवमस्थ राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। भाइयों-कुटम्बियों में परस्पर प्रेम का अभाव रहेगा।

निशानी—ऐसा जातक जीवन में सब कुछ होते हुए भी किसी न किसी चीज का निरन्तर अभाव महसूस करता रहेगा।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा मे जातक का भाग्योदय होगा पर मिश्रित फल दृष्टि गोचर होगे।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चद्रमा जातक के भाग्योदय में बाधा डालेगा। विवाह के बाद उज्ज्वल भविष्य संभव है।
2. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य जातक के पिता को कष्ट देगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल जातक की माता को कष्ट देगा। जातक को माता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध होने से जातक राजा के समान प्रभावशाली, बुद्धिमान एवं भाग्यशाली होगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में हैं। गुरु शत्रु राशि में है, तो राहु यहां स्वगृही होकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। जातक को भाग्योदय हेतु काफी परेशानियों-दिक्कतो का सामना करना पड़ेगा। जातक का जनसम्पर्क विस्तृत होगा।
6. **राहु+शुक्र**—जातक का भाग्योदय संघर्ष के बाद होगा पर शानदार होगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ देगा। यह युति अपव्यय भी करायेगी व सफलता भी देगी।

मकरलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में

11 10 9 12 8 1 7 रा. 2 6 4 3 5
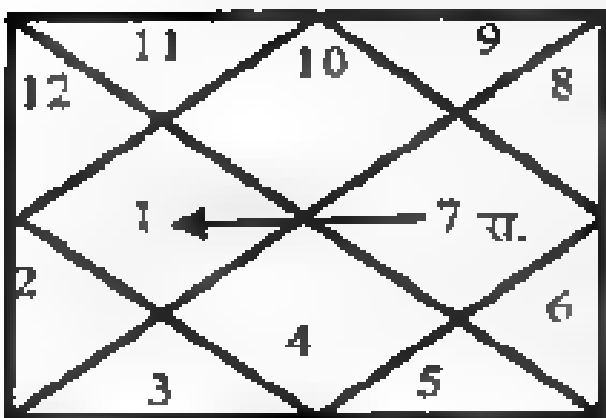
मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ अशुभ फल देगा। राहु यहां दशम स्थान में तुला (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक सरकार द्वारा कोर्ट-कचहरी द्वारा उत्पन्न परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जातक को व्यवसाय के क्षेत्र में भी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जातक को

पिता की सुख भी अल्प होता है। अपनी गुप्त युक्तियों व चातुर्य के कारण जातक सभी समस्याओं का निराकरण करने में सफल होता है।

दृष्टि–दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थ भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक को माता का सुख कमजोर होगा एवं जमीन-जायदाद को लेकर विवाद होगा।

निशानी–ऐसे जातक की आजीविका का साधन जन्म स्थान से दूरस्थ प्रदेशों में होगा।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा जातक को विवाह के बाद तरक्की देगा। राहु सरकारी नौकरी में बाधक रहेगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य जातक को पिता की सम्पत्ति व सुख से वंचित कर देगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक का माता एवं भाइयों का सुख तोड़ेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध व्यापार में नित-नूतन बदलाव कराता रहेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह तुला राशि मे हैं। बृहस्पति यहां शत्रु राशि में है, तो राहु मित्र राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। गुरु '**कुलदीपक योग**', '**केसरी योग**' बना रहा है। जातक पराक्रमी एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक अपने कुल का नाम रोशन करेगा तथा राजनीति में भी उसका हस्तक्षेप रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा तुल्य वैभवशाली एवं समर्थ्यवान् होगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ '**शश योग**' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के तुल्य पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा

मकरलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में
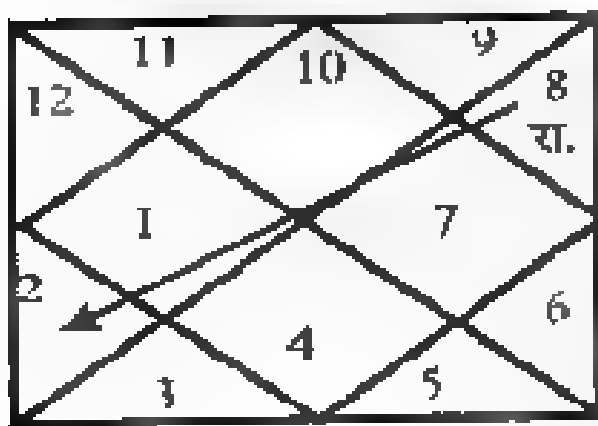
मकरलग्न वालों के लिए राहु समराशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहा एकादश स्थान में वृश्चिक (नीच) राशि में होगा। फिर भी राहु यहां राजयोग कारक है। ऐसा जातक अपने जीवन में विशेष परिश्रम, साहस एवं बुद्धिबल से उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है। व्यापार या

किसी भी नये कार्य के प्रारंभ में जातक को थोड़ी हानि उठानी पड़ती है पर संघर्ष के बाद सफलता सुनिश्चित है।

दृष्टि—एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक को विद्या में रुकावट के साथ सफलता एवं पुत्र प्राप्ति में भी विलम्ब के बाद सफलता मिलेगी

निशानी—प्रारम्भिक परेशानियों का अंत में सुखद फल मिलता है।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा प्रारंभ में बीस प्रतिशत संघर्ष पर अंत मे अस्सी प्रतिशत सफलता देगी अर्थात् इस दशा में दुःख-सुख का सम्मिश्रण 20% व 80% रहता है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ नीच का चंद्रमा वैवाहिक जीवन में मनोमालिन्यता उत्पन्न करेगा।
2. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य जातक के पैतृक सुख के लिए घातक है।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल जातक को धनी तो बनायेगा, पर भाइयों-रिश्तेदारों से नहीं निभेगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध भाग्योदय मे पग पग पर बाधा उत्पन्न करेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में हैं। बृहस्पति यहां मित्र राशि मे है, तो राहु नीच राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। जातक समाज का अग्रगण्य तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। व्यापार में हानि होगी। जातक को संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र विद्या प्राप्ति मे बाधा डालेगा, एव सतान के विषय में चिंता देगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि धन प्राप्ति के प्रयासों में रोड़े उत्पन्न करेगा।

मकरलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में

11 10 रा. 9 12 8 1 7 2 6 4 3 5
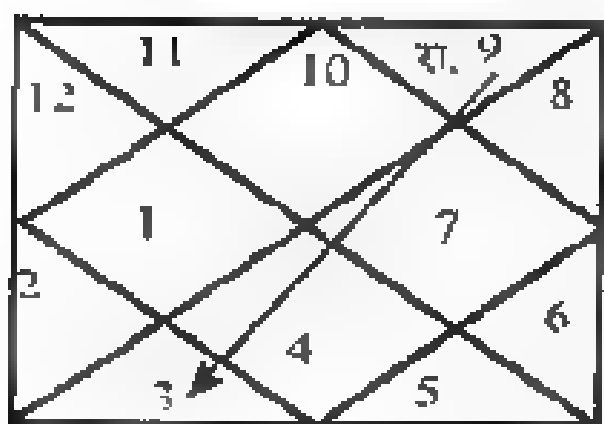
मकरलग्न वालों के लिए राहु सम राशि में होने से यह लग्नेश शनि से सम भाव रखता है। राहु शुभ-अशुभ ग्रहों के साहचर्य और स्थिति से शुभ-अशुभ फल देगा। राहु यहा द्वादश स्थान में धनु (नीच) राशि का होगा। ऐसे जातक को अपने दैनिक खर्चों

के लिए दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक को बाहरी यात्रा से नुकसान होगा। जातक को विदेश यात्रा में धोखा होगा।

दृष्टि–द्वादश भावगत राहु की दृष्टि छठे स्थान (मिथुन राशि) पर होगी फलतः जातक के जीवन में गुप्त शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।

निशानी–जातक को दुःस्वप्न आयेंगे। यदि लग्नेश शनि की स्थिति खराब हो तो दुर्घटना, अकाल मृत्यु का भय बना रहेगा।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा अशुभ फल देगी। शत्रुओं का प्रकोप बढ़ेगा। व्यर्थ की यात्राएं होंगी। विश्वासघात अधिक होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा या दो विवाह होंगे।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य विपरीत राजयोग के कारण जातक को धनी तो बनायेगा पर जातक को पिता का सुख प्राप्त नहीं होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक को भूमि, भवन व माता का सुख कमजोर रहेगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध भाग्य में बाधाएं उत्पन्न करेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में है। बृहस्पति यहां स्वगृही है, तो राहु नीच राशि में बैठकर '**चाण्डाल योग**' बना रहा है। बृहस्पति के कारण विमल नामक '**विपरीत राजयोग**' बन रहा है। जातक एक धनी एवं अभिमानी व्यक्ति होगा। जातक की फिजूल खर्ची की आदत एवं व्यर्थ की यात्राओं से घर वाले परेशान रहेंगे।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। जातक की पत्नी जातक से असंतुष्ट रहेगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

❑❑❑

मकरलग्न में केतु की स्थिति

मकरलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
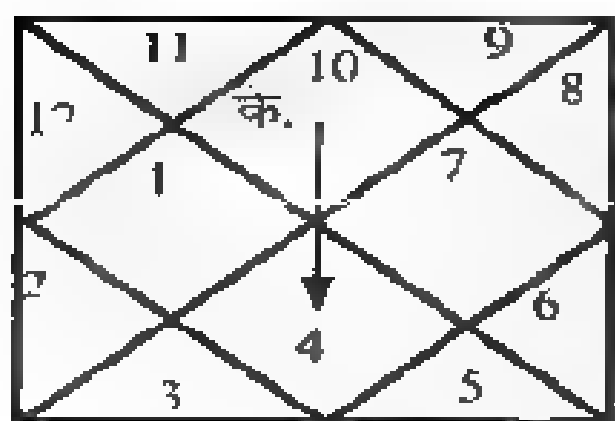
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां मकर मूल त्रिकोण राशि में है। ऐसा जातक बड़े उग्र व जिद्दी स्वभाव का होता है। जातक के शरीर में चोट लगने की संभावना रहती है। जातक के स्वास्थ्य मे किसी-न-किसी प्रकार की कमी बनी रहेगी। जातक महत्वाकांक्षी होगा और उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ता रहेगा।

दृष्टि—लग्नस्थ केतु की दृष्टि सप्तम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन कष्टदायक रहेगा।

निशानी—जातक क्रोधी स्वभाव का होगा।

दशा—केतु की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा। जातक कीर्तिवान होगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को गुस्सैल बनायेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को **'रुचक योग'** के कारण राजा के समान पराक्रमी बनायेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को सौभाग्यशाली बनायेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को आध्यात्मिक व्यक्ति बनायेगा।

6. केतु+शुक्र–केतु के साथ शुक्र ...
की पत्नी सुन्दर होगी।
7. केतु+शनि–केतु के साथ '**शश योग**' करायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं प्रभावशाली होगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में
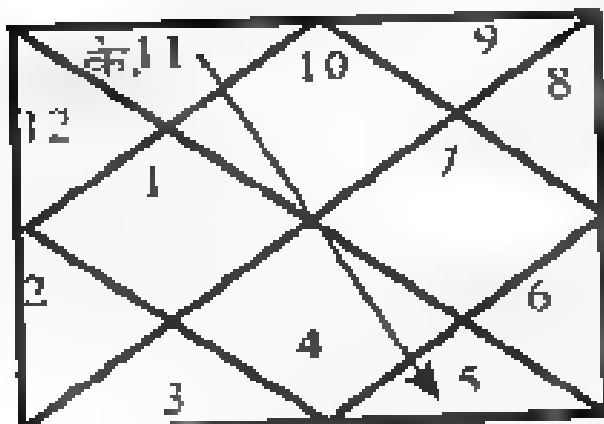
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां द्वितीय स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को धन संग्रह करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है, कुटुम्ब के कारण भी कष्ट रहता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति हिम्मत, साहस व बुद्धि चातुर्य के कारण विपरीत परिस्थितियों को काबू में करने में सफल हो जाता है।

दृष्टि–द्वितीयस्थ केतु की दृष्टि अष्टम स्थान (सिंह राशि) पर होगी, फलतः गुप्त रोग अचानक दुर्घटना के कारण जातक की आयु को हानि पहुंचाती है।

निशानी–ऐसा जातक साहसी होता है, संकट के समय नहीं घबराता।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा अप्रिय रहेगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा धन के घड़े में छेद का काम करेगा। जातक आर्थिक तंगी में रहेगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को पिता के सुख से वंचित करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक की वाणी में कड़वाहट देगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध धन प्राप्ति में रुकावट डालेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति मित्रों से, रिश्तेदारों से असहयोग करायेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक की वाणी विनम्र करायेगा पर जातक की भाषा उतावलपन लिए हुए होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ होने से जातक धनी होगा पर केतु के कारण जातक के 50% धन का अपव्यय व्यर्थ के कार्यों में होगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में
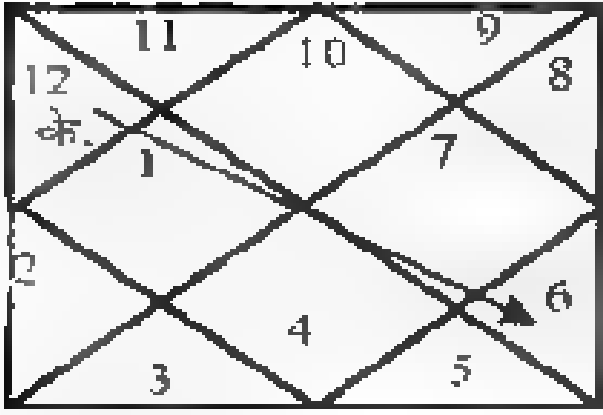
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहा केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहा तृतीय स्थान में मीन राशि मे स्वगृही है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी एवं कीर्तिवान् होता है, परन्तु जातक को भाई बहनों के पक्ष में परेशानी तथा संकट का सामना करना पड़ता है। जातक को मित्र बहुत होते हैं। जनसम्पर्क तेज रहता है।

दृष्टि—तृतीयस्थ केतु की दृष्टि भाग्य भवन (कन्या राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होता है तथा निरन्तर प्रयत्न से उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता है।

निशानी—भाइयों में परस्पर गुप्त ईर्ष्या की भावना रहेगी। सभी को एक दूसरे की उन्नति-कीर्ति से जलन रहेगी।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा अनुकूल फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को कुटुम्ब सुख देगा। जातक पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को पराक्रमी तो बनायेगा पर उसे बड़े भाई का सुख नही होगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को पराक्रमी बनायेगा। परन्तु माता का एवं भाइयों का सुख कमजोर होगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध भाई-बहनों मे मनोमालिन्यता उत्पन्न करेगा पर दूसरे समाज मे कीर्ति होगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति कुटुम्ब सुख देगा जातक को मित्रो से लाभ होगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ उच्च का शुक्र शुभ फल देगा जातक पराक्रमी व यशस्वी होगा।
7. **केतु+शनि**—कतु के साथ शनि धन प्राप्ति के प्रयासो में थोड़ी रुकावटें डालेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में

मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां चतुर्थ
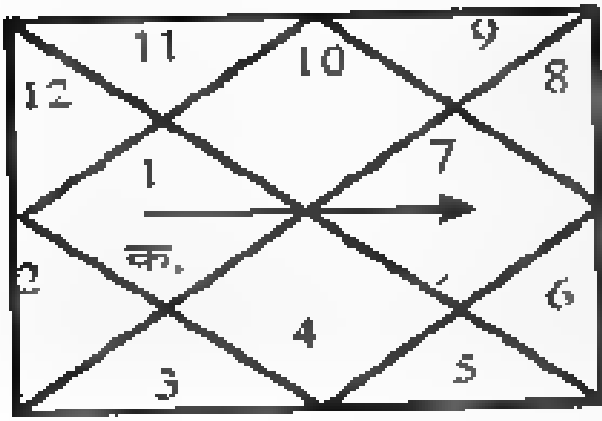
स्थान, मेष (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को जीवन में माता के सुख की कमी रहती है। जातक की माता कष्ट पाती है, घरेलू परेशानियों से जातक का जीवन कष्टपूर्ण रहता है। ऐसा जातक कठिन परिश्रम, साहस व हिम्मत के माध्यम से घर का निजी मकान बनाने में सफल होता है।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत केतु की दृष्टि दशम स्थान (तुला राशि) पर रहेगी जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।

निशानी—जातक को मातृ (जन्म) भूमि का त्याग करना पड़ता है। जातक परदेश जाकर कमाता है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक की माता को बीमारी देगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को माता पिता दोनों के सुख में कमी दिलायेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक बड़ी भूमि सम्पत्ति का स्वामी होगा
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध भाग्य में बाधा उत्पन्न करेगा।
5. **केतु+गुरु**-केतु के साथ गुरु **'कुलदीपक योग'** व **'केसरी योग'** बनायेगा। जातक पराक्रमी व यशस्वी होगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र **'कुलदीपक योग'** बनायेगा। जातक को राजकीय मान सम्मान भी मिल सकता है।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ नीच का शनि जातक की माता को बीमारी देगा या अल्प आयु में मृत्यु देगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में
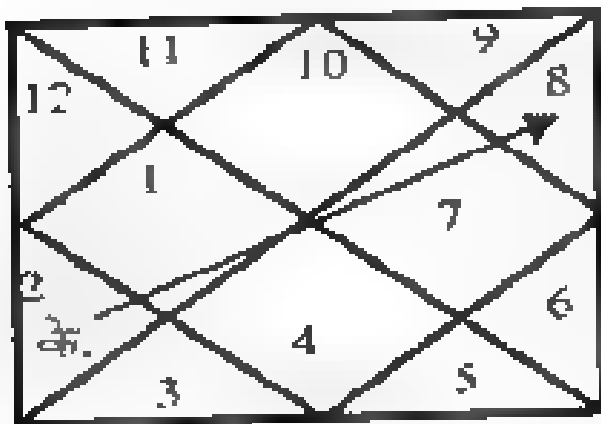
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहा केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहा पचम स्थान वृष (नीच) में है। ऐसे जातक को विद्याध्ययन के क्षेत्र में प्रारंभिक कठिनाई

आती है। जातक तीव्र बुद्धि का स्वामी होता है पर उसे शैक्षणिक उपाधि संघर्ष के साथ मिलती है पुत्र संतान की प्राप्ति भी चिन्ता का विषय बनेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ केतु की दृष्टि एकादश भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: लाभ मे रुकावट रहेगी। व्यापार मे सघर्ष की स्थिति रहेगी।

निशानी–जातक की प्रथम कन्या संतति होगी। पुत्र संतान विलम्ब से या धार्मिक अनुष्ठान करने से होगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। शुभ ग्रहो के साहचर्य या दृष्टि से शुभ फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को उच्च आध्यात्मिक शिक्षा देगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य विद्या में बाधा, संतान सुख में बाधा उत्पन्न करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मगल जातक को पुत्र संतति देगा। जातक तकनीकी शिक्षा में श्रेष्ठता प्राप्त करेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध प्रारंभिक विद्या प्राप्ति में बाधक है। जातक की पढ़ाई अधूरी छूट जायेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु का योग पुत्र संतति देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से जातक अत्यधिक विद्यावान् एवं तेजस्वी होगा। जातक को संतान व गृहस्थ का सुख उत्तम मिलेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि धन की हानि करायेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में
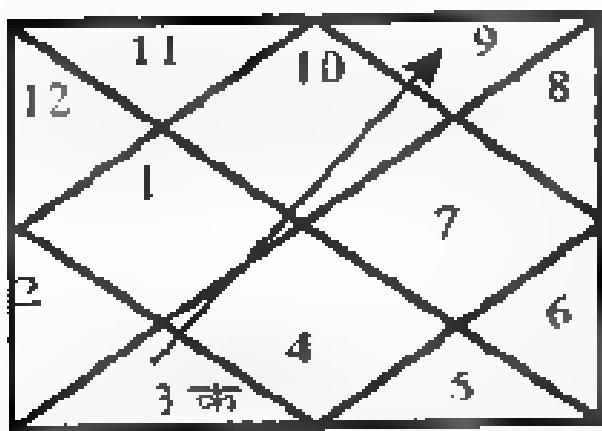
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां छठे स्थान में मिथुन (नीच) राशि में है ऐसे जातक को शत्रु पक्ष से हानि पहुंचती है। गुप्त एवं प्रकट शत्रुओं के कारण जातक कठिनाई में फंस जाता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल, वाक्चातुर्य एव हिम्मत से शत्रुओं को परास्त कर देता है। जातक को रोग या शल्य चिकित्सा की संभावना रहती है। जिससे रोग का शमन हो जाता है। शल्य चिकित्सा सफल रहती है।

दृष्टि–छठे भाव में स्थित केतु की दृष्टि व्यय भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का तथा परोपकारी होता है.

निशानी–ऐसे जातक की अपने ननिहाल पक्ष से नहीं बनती।

दशा–केतु की दशा-अतर्दशा में जातक को कष्टानुभूति होगी।

केतु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता है। ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा पर पिता का सुख कमजोर होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु काफी परेशानी उठानी पड़ेगी।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से हर्षनामक '**विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनी होगा एवं शत्रुओ का नाश करने मे पूर्ण सक्षम होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु '**पराक्रमभंग योग**' बनाता है। विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी तो होगा पर यशस्वी नही होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**संतानहीन**' व '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को गुप्त शत्रु परेशान करेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**लग्नभग योग**' एव '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का यथेष्ट लाभ नही मिलेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में
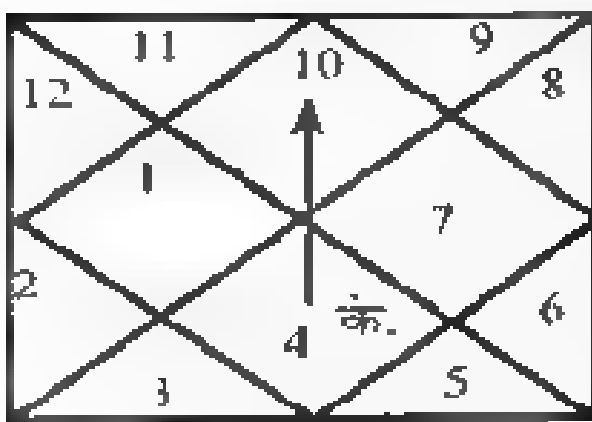
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहा केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां सप्तम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि मे है। ऐसे जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट, संकट, कलह, विवाद की संभावना रहती है। गृहस्थ जीवन में परेशनियां आती रहती हैं। व्यापार व्यवसाय एव भागीदारी के कार्यों मे भी रुकावटें आयेगी। जातक अपने बुद्धि बल, आत्मविश्वास एवं हिम्मत से सभी परेशानियों को समाप्त कर, सफलता प्राप्त करेगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ केतु की दृष्टि लग्न स्थान (मकर राशि) पर रहेगी। फलतः जातक एक साथ अनेक कार्यों को करने में रुचि रखेगा।

निशानी—ऐसे जातक के व्यापार व्यवसाय में निरन्तर बदलाव आते रहते है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर पत्नी देगा पर पति पत्नी मे खटपट होती रहेगी।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य विवाह विच्छेद (तलाक) करायेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ नीच का मंगल विवाह सुख में बाधक होता है।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध '**द्विभार्या योग**' कराता है।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ उच्च का गुरु पतिव्रता भार्या देगा
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को कामी बनायेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ '**लग्नाधिपति योग** बनायेगा। जातक के परिश्रम सार्थक होंगे.

मकरलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में
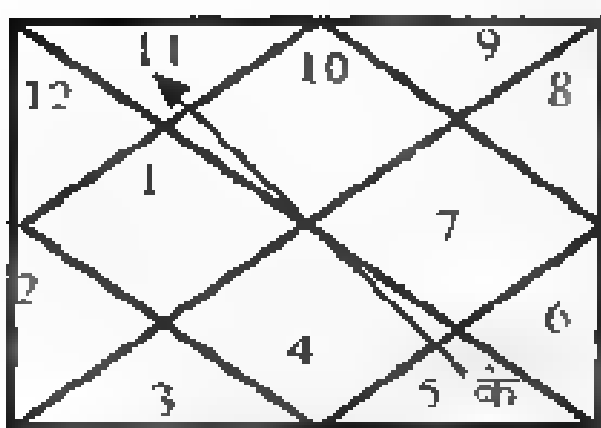
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहा केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां अष्टम स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में है। ऐसे जातक को अपनी आयु के संबध में मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ेगा। जातक के पेट में विकार रहता है। गुप्त रोग की भी सभावना बनी रहती है। आजीविका चलाने हेतु जातक को कठिन परिश्रम का सामना करना पड़ेगा

दृष्टि—अष्टम भावगत केतु की दृष्टि धन स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। फलतः धन को लेकर परेशानियां आयेंगी जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा।

निशानी—जातक की वाणी कर्कश व कठोर होगी।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा कष्टदायक रहेगी

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा '**विवाहभंग योग**' बनाता है। जातक के विवाह मे विलम्ब होगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी तो होगा पर पिता का सुख कमजोर होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल '**सुखहीन योग**' एव '**लाभभंग योग**' बनाता है। जातक को माता का सुख कमजोर होगा। भूमि व भवन को लेकर विवाद होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध '**भाग्य बाधा योग**' बनाता है। जातक के भाग्योदय में दिक्कतें आयेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को मित्रों से हानि करायेगा। '**पराक्रम भंगयोग**' के कारण जातक को अपयश मिलेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' एवं '**राजभंग योग**' बनाता है। जातक को गुप्त बीमारी होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ '**लग्नभंग योग**' एवं '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में

11 10 9 8 12 1 7 2 6 के 4 3 5
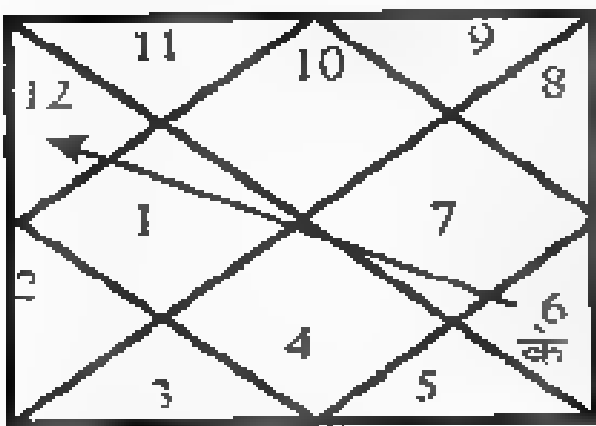
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहा केतु प्रमुदित रहता है, केतु यहा नवम स्थान मे कन्या (नीच) राशि में है, ऐसे जातक को भाग्योदय में कठिनाइयां महसूस होगी। जातक को उन्नति मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए सकटों का सामना करना पड़ेगा। ऐसा जातक अर्ध नास्तिक होगा। फिर भी जातक यशस्वी होगा।

दृष्टि–नवमस्थ केतु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहनों से कम पटेगी।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा में भाग्योदय होगा। उत्साहवर्धक कार्य होगे। शुभ ग्रहों के साथ होने से केतु शुभ फल देगा। पाप ग्रहों के सग होने से अशुभ फल देगा

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को पिता की सम्पत्ति से वंचित करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मगल जातक को धनवान एवं गांव का मुखिया बनायेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को राजा के समान पराक्रमी बनायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को परिजनों व भाइयों का सुख देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को विभिन्न ऐश्वर्य व राजसुख देगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को धनी बनायेगा, पर धन बड़े संघर्ष के बाद मिलेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में
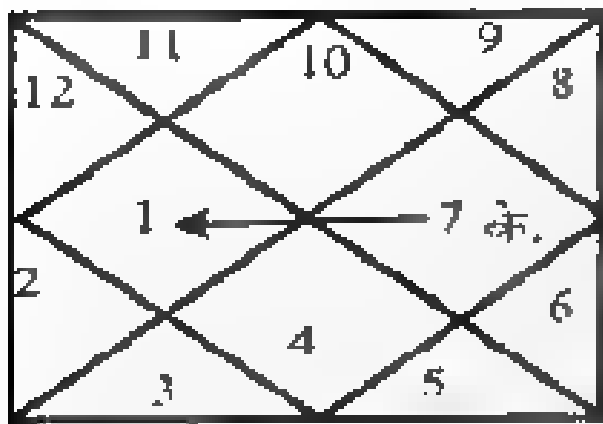
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है केतु यहा दशम स्थान में तुला (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक को पिता पक्ष, राजपक्ष से थोड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। कभी-कभी अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए बदनामी का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि–दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थ भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को माता का सुख नहीं होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

निशानी–जीवन में व्यवसाय मे बराबर परिवर्तन आते रहेगे।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा में सघर्ष की स्थिति रहेगी। राजपक्ष से भी कष्ट का सामना करना पड़ेगा.

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक के वैवाहिक सुख में बाधक है।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य नीच का होगा। जातक को पिता का सुख कमजोर होगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मगल जातक को भूमि लाभ देगा पर भूमि विवादित होगी।

4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध भाग्योदय में रुकावट एव व्यापार में बदलाव लाता रहेगा
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति '**कुलदीपक**' व '**केसरी योग**' बनाता है। जातक पराक्रमी होगा। उसकी प्रतिष्ठा होगी।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र 'मालव्य योग' व **पद्मसिंहासन योग**' बनायेगा जातक राजा के समान पराक्रमी व वैभवशाली होगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि '**शश योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व शक्तिशाली होगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में
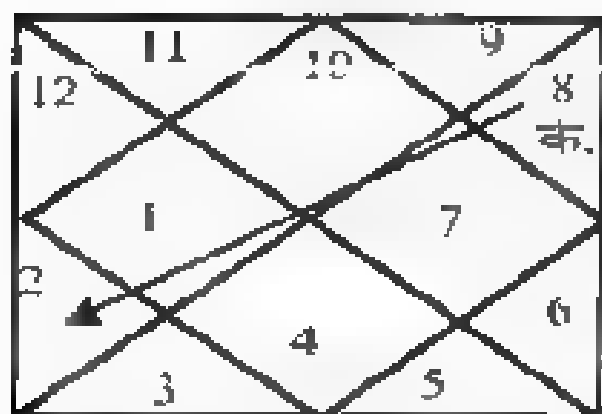
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहा एकादश स्थान में वृश्चिक राशि में उच्च का है। ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय में सघर्ष के बाद लाभ मिलता है। बड़े भाई का सुख होगा। जातक के आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होगी। जातक यशस्वी होगा।

दृष्टि—एकादश भावगत केतु की दृष्टि पंचम भाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: विद्या में प्रारंभिक बाधा के बाद उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।

निशानी—ऐसा जातक विपरीत परिस्थितियों से नहीं घबराता। अत मे सर्वत्र सफलता मिलती है।

दशा—केतु की दशा अतर्दशा मिश्रित फलकारी साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा नीच का होगा। ऐसे जातक के विवाह सुख में बाधा आयेगी।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य पिता के लिए घातक है। विद्या मे बाधा (रुकावट) आयेगी
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल स्वगृही जातक को भूमि, भवन का लाभ देगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक के भाग्य में हल्की दिक्कते पैदा करेगा।

5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति बड़े भाई के सुख में बाधक है।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र विद्या में लाभ एवं जातक को व्यापार से लाभ दिलायेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ दिलायेगा।

मकरलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में
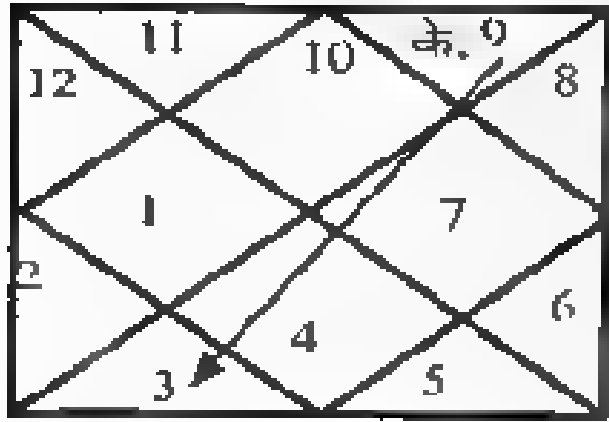
मकरलग्न वालों के लिए केतु शुभ ग्रह है, क्योंकि लग्नेश शनि की राशि मकर केतु की मूल त्रिकोण राशि मानी गई है। जहां केतु प्रमुदित रहता है। केतु यहां द्वादश स्थान में धनु उच्च राशि का है। जातक यात्राओं द्वारा धन अर्जित करेगा। जातक को विदेशी व्यापार (Export-Import) से लाभ होगा। ऐसा जातक जन्म भूमि से दूरस्थ प्रदेशों में जाकर बसता है।

दृष्टि—द्वादशस्थ केतु की दृष्टि षष्ठम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत जातक शत्रुओ का नाश करने में पूर्णत: सक्षम होगा।

निशानी—जातक व्यसनी होगा। नींद कम आयेगी।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चद्रमा '**विवाहभंग योग**' कराता है। जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य '**विपरीत राजयोग**' के कारण जातक को धनी तो बनायेगा। पर पिता का सुख प्राप्त नहीं होगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक **सुखहीन योग** एवं **लाभभंग योग** बनायेगा। जातक के गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध '**भाग्यभंग योग**' बनायेगा। जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति '**पराक्रमभंग योग**' बनायेगा। जातक '**विपरीत राजयोग**' के कारण धनी तो होगा पर यशस्वी नहीं होगा।

6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र '**संतानहीन योग**' व '**राजभंग योग**' बनायेगा। जातक को गुप्त रोग होंगे।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' व '**धनहीन योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

❑❑❑

शनि स्तोत्रम्

पदच्छेद-एवम्-सन्धिच्छेद सहित

नमः, कृष्णाय, नीलाय, शिति कण्ठ निभाय च।
नमः, कालाग्नि, रूपाय, कृत-अन्ताय च वै नमः।।
नमः, निर्मांस देहाय, दीर्घ, श्मश्रु, जटाय च।
नमः, विशाल नेत्राय, शुष्क, उदर भयाकृते।।
नमः पुष्कल गात्राय, स्थूल रोम्णे अथ वै नमः।।
नमः, दीर्घाय, शुष्काय, काल दंष्ट्र, नमः अस्तु ते।।
नमस्ते कोटराक्षाय, दुर्निरीक्ष्याय वै नमः।
नमः, घोराय, रौद्राय, भीषणाय कपालिने।।
नमस्ते सर्वभक्षाय वलीमुख नमः अस्तु ते।
सूर्य पुत्र, नमस्ते, अस्तु, भास्करे, अभयदाय च।।
अधो दृष्टे! नमस्ते अस्तु संवर्तक नमः अस्तु ते।
नमो मन्द गते तुभ्यम्, निः त्रिंशाय् नमः अस्तु ते।।
तपसा, दग्ध देहाय, नित्यं योग रताय च।
नमः नित्यं, क्षुधार्ताय, अतृप्ताय च वै नमः।।
ज्ञान चक्षुः नमस्ते अस्तु, कश्यप-आत्मज सूनवे।
तुष्टो ददासि वै राज्यं, रूष्टो हरसि तत् क्षणात्।।
देवासुर मनुष्याः च सिद्ध विद्याधरो-रगाः।
त्वया विलोकिताः सर्वे नाशम् यान्ति समूलतः।

प्रसाद कुरू मे देव, वराहो-अहम्-उपागत:।
एवम् स्तुत: तदा सौरि: ग्रहराज: महाबल:।।

—पद्म पुराण

नोट—पद्म पुराणानुसार यह महाराजा दशरथ कृत सिद्ध शनि स्तोत्र है। इसका नित्य 108 पाठ करने से शनि संबधी सभी पीड़ायें समाप्त हो जाती है तथा पाठ कर्ता धन-धान्य, समृद्धि वैभव से पूर्ण हो जाता है तथा उसके सारे बिगड़े कार्य स्वत: बनने लग जाते हैं।

अथ शनि मंत्र

शनि ग्रह से संबंधित पाठ, पूजा आदि के लिए स्तोत्र, मंत्र तथा गायत्री आदि पाठकों की सुविधा के लिए यहां दिये जा रहे हैं। जो काफी लाभकारी सिद्ध होंगे। इनका नित्य 108 पाठ करने से जातक को चमत्कारी लाभ प्राप्त होगा।

विनियोग—शन्नो देवीति मंत्रस्य सिंधुद्वीप ऋषि:, गायत्रीछन्द:, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोग:।

नीचे कोष्ठकों में लिखे गये अंगों को उंगलियों से छुएं।

अथ देहांगन्यास—शन्नो शिरसि (सिर)। **देवी:** ललाटे (माथा)। **अभिष्टय** मुखे (मुख)। आपो कण्ठे (कण्ठ)। **भवन्तु** हृदये (हृदय)। **पीतये** नाभौ (नाभि) शं कट्याम् (कमर)। **यो:** ऊर्वो (छाती)। **अभि** जान्वो: (घुटने)। **स्रवन्तु** गुल्फयो: (गुल्फ)। **न:** पादयो: (पैर)

अथ करन्यास—शन्नो देवी: अंगुष्ठाभ्यां नम: **अभिष्टये** तर्जनीभ्यां नम:। आपो भवन्तु मध्यमाभ्या नम:। **पीतये** अनामिकाभ्या नम: **शंय्योरभि** कनिष्ठिकाभ्यां नम: **स्रवन्तु** न: करतलकरपृष्ठाभ्या नम:।

अथ हृदयादिन्यास—शन्नो देवी: हृदयाय नम: **अभिष्टये** शिरसे स्वाहा। **आपो भवन्तु** शिखायै वषट्। **पीतये** कवचाय हूँ (दोनों कंधे) **शंय्योरभि** नेत्रत्रयाय वौषट्। **स्रवन्तु** न: अस्त्राय फट्।

ध्यानम्— **नीलाम्बर शूलधर: किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।**
चतुर्भुज: सूर्यसुत: प्रशान्त: सदाऽस्तु मह्य वरदोऽल्पगामी।

शनिगायत्री—ॐ कृष्णांगाय विद्महे रविपुत्राय धीमहि तन्न: सौरि: प्रचोदयात्।

वेदमंत्र—ॐ प्राँ प्रीं प्रौं स: भूर्भुव: स्व: ॐ **शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तु न:**। ॐ स्व: भुव: भू: प्रौ प्रीं प्राँ ॐ शनैश्चराय नम:।

जपमंत्र—ॐ प्राँ प्रीं प्रौं स: शनैश्चराय नम: नित्य जप 23000 प्रतिदिन।

शनि पीड़ा निवारणार्थ यंत्र

यदि किसी व्यक्ति की जन्मपत्री में शनि नीच का, अस्त का, नीचास्त का, मूल-त्रिकोण और केन्द्र में पीड़ा कारक पड़ा हो तो जातक को चाहिये कि शनि पीड़ा शमनार्थ 3 रत्ती या 10 रत्ती का निर्दोष नीलम नग, 10 माशे सोने, या स्टील या काले घोड़े के अगले पाव की दाहिनी नाल की अंगूठी में बनवाकर अपने दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में सदैव पहनें। निम्नांकित यत्र स्टैन्लैस स्टील मे अकित कराकर उस पर शनिदेव की लौह प्रतिमा स्थापित करें और शनिवार को शुभ नक्षत्र, शुभ मुहूर्त में गंगा जल और काली गाय के कच्चे दूध से उसको स्नान करायें। शनिवार का व्रत अवश्य रखें और रात्रि को इसका जाप प्रारम्भ करें। हवन के लिये शमी को समिधा होनी चाहिए जप के समय धूप, दीप नैवेद्य आदि का प्रबन्ध होना चाहिए। जाप शुक्ल पक्ष में ही आरम्भ करना चाहिए। नवरात्रों का किया गया अनुष्ठान अधिक शुभ फलदायक होता है। उस समय मनुष्य को पूर्ण ब्रह्मचर्य, भूमि शयन तथा उपवासादि का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

शनि यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

शनि कवचम्

नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटो गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्।
चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रसन्नः सदा मम स्याद् वरदः प्रशान्तः।।1।।
शृणुध्वमृषयः सर्वे शनिपीड़ाहरं महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्।।2।।
कवचं देवतावासं वज्रपञ्जरसंज्ञकम्।
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्।।3।।
ॐ श्रीं शनैश्चरः पातु भालं मे सूर्यनन्दनः।
नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः।4।
नासां वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्धकण्ठश्च मे कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः।।5।
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा।।6।।
नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा।
ऊरू ममान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा।।7।।

पादौ मन्दगतिः पातु सर्वांग पातु पिप्पलः।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन् मे सूर्यनन्दनः॥8॥
इत्येतत् कवचं दिव्य पठेत् सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवति सूर्यजः॥9॥
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वार.
कलत्रस्थो गतो वाऽपि, सुपीतस्तु सदा शनिः॥10॥
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठते नित्यं न पीड़ा जायते क्वचित्॥11॥
इत्येतत् कवचं दिव्यं सौरेर्यन्निर्मित पुरा।
द्वादशाष्टम-जन्मस्थ-दोषान्नाशयते सदा।
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभुः॥12॥

शनि स्तुति

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीड़ां दहतु मे शनिः॥

विनियोग

शन्नोदेवीइतिमत्रस्य, दध्यङ्गाथर्वण ऋषिः आपो देवता।

गायत्री छन्दः। शनिमंत्रजपे विनियोग

सजीव वैदिक मंत्र—ॐ खाँ खीं खौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ शन्नोदेवीर-भीष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः खौं, खीं खाँ शैनश्चराय नमः।

एकाक्षरी बीज मत्र—ॐ श, शनैश्चराय नमः

तांत्रिक शनि मंत्र -ॐ प्राँ, प्रीं प्रौं सः शनये नमः

जप सख्या—23000, तेइस सहस्र (तेइस हजार)

शनि अनिष्ट फल शमनार्थ दानपदार्थाः

शनि प्रति दान—नीलम, सोना, लोहा, उर्द, कुल्थ, तेल, सरसों, काला कपड़ा, काले फूल, कस्तूरी, काली सवत्सा गाय, काली भैंस, काले जूते, कृष्ण फल।

शनि दान के समय उपर्युक्त वस्तुओं का भार कम से कम सवा तीन रत्ती होना चाहिये और अधिक से अधिक के लिये साढ़े तीन, सात, दस रत्ती, तोला सेर आदि जितना भी सामर्थ्य हो दान वित्त समान कर देना चाहिये अपनी शक्ति सामर्थ्य से अधिक दिया हुआ दान किया हुआ काम दुखदायी ही रहता है. इसमें तुला दान का बहुत ही महात्मय लिखा है साथ ही तिलपात्र घृत छाया दान भी अवश्य करने चाहिये। यज्ञान्त में ब्राह्मण भोज शक्ति भर अवश्य करना चाहिये। एक लौह प्रतिमा शनि दान में अवश्य ही करनी चाहिये। शनि शक्ति का प्रतीक है। दीर्घसूत्री तथा उदासीन है इसलिये इसका प्रसन्न करने के लिए अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिए, जीव हिंसा निषेध है। बीछू जड़ी पास रखना लाभदायक होता है। बीछू पौधे की जड़ें (शिशणा) के पास रखकर उसकी पूजा करने से तथा धारण करने से शनि का दूषित फल शान्त रहता है।

शनि मंगल स्तोत्र

मन्दः कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रकः काश्यपः,
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुध–सितौ मित्रे समश्चाङ्गिराः।।
स्थान पश्चिमदिक् प्रजापति–यमौ दैवौ धनुष्यासनः,
षटत्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

❑❑❑

शनिवार व्रत कथा

शनिदेव साधना तथा पूजा अर्चना से सहज की प्रसन्न होते हैं तथा अपने भक्तों की सर्वमनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। शनिदेव जब किसी पर क्रोधित होते हैं तो उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है किन्तु यदि किसी पर शनिदेव की कृपा हो जाए तो वह भिखारी से राजा हो जाता है. शनिवार का व्रत शनिदेव को प्रसन्न करने व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

शनि का तांत्रिक मंत्र–ॐ शं शनैश्चराय नमः।

विधि विधान–शनिवार के पीपल के नीचे अथवा भैरव मंदिर में बैठकर पूजन करना चाहिए। पूजन के लिए शनिदेव की टिन की मूर्ति रखकर, काली वस्तुओं, सरसों का तेल, मिट्टी का दीपक तथा लोहे के पाशों का प्रयोग करें। तांत्रिक मंत्र द्वारा शनिदेव का पूजन करें, व्रत कथा पढ़े, तत्पश्चात् पीपल को अर्घ्य दें। भोजन एक ही समय करें तथा उड़द और तिल का प्रयोग अवश्य करें।

व्रत कथा–एक समय सूर्य चंद्रमा, बुध, बृहस्पति शुक्र शनि राहु एव केतु आदि ग्रहों में परस्पर विवाद हो गया कि हम सब में बड़ा कौन है। सभी ग्रह अपने आपको बड़ा कहते हैं।

जब काफी समय तक निर्णय न हो सका तो सब झगड़ते हुए इंद्रराज के पास गए और कहने लगे कि आप देवताओ के राजा हैं इसलिये न्याय करके ये बताइये कि हम नव ग्रहों में कौन बड़ा है। देवराज इन्द्र ग्रहों का यह प्रश्न सुनकर भयभीत हो गए तथा कहने लगे कि मुझमें इतना सामर्थ्य नहीं कि मैं किसी को छोटा बतला सकूं

इस समय पृथ्वी पर राजा विक्रमादित्य हैं। वे सबकी समस्याओं का समाधान अत्यंत बुद्धिमानी से करते हैं। अतः आप सभी उनके पास जाएं। राजा विक्रमादित्य आपके विवाद का समाधान करेंगे।

सभी ग्रह देवता भूलोक से चलकर विक्रमादित्य की सभा मे पंहुचे तथा उन्होंने अपना प्रश्न राजा के सामने रखा। राजा विक्रमादित्य ग्रहों की बात सुनकर चिंतित हो

गए तथा सोचने लगे कि मैं अपने मुख से किस ग्रह को छोटा अथवा बड़ा बताऊं। जिसे छोटा बताऊंगा वही क्रोध करेगा। उसका विवाद निपटाने के लिये उन्होंने एक उपाय सोचा। राजा ने सोना, चांदी, कांसा, पीतल, सीसा, रांगा, जस्ता, अभ्रक तथा लोहा आदि नौ धातुओं के नौ आसन बनवाए तथा सभी आसनों को उनके मूल्य के अनुसार बिछाया गया।

इसके पश्चात् राजा ने नवग्रहों से कहा आप सब अपना-अपना आसन ग्रहण करें। जिसका आसन सबसे आगे वह सबसे बड़ा तथा जिसका आसन सबसे पीछे उसे सबसे छोटा जानिये। क्योंकि लोहा सबसे पीछे तथा शनिदेव का आसन था इसलिये शनिदेव ने सोचा कि राजा ने मुझे सबसे छोटा बना दिया है।

राजा के इस निर्णय पर शनिदेव को बहुत क्रोध आया। उन्होंने कहा कि राजा तू मेरे पराक्रम को नहीं जानता सूर्य एक राशि पर एक महीना, चंद्रमा सवा दो दिन दो महीना, मंगल डेढ़ महीना। बुध और शुक्र एक महीना और बृहस्पति तेरह महीने विचरण करते हैं परन्तु मैं एक राशि पर ढाई वर्ष से लेकर साढ़े सात वर्ष तक रहता हूं। बड़े-बड़े देवताओं को भी मैंने भीषण दुःख दिया है। सुनो राजन, रामचन्द्र जी को साढ़े-साती आई तो उन्हे वनवास हो गया। रावण पर आई तो राम ने वानरों सहित उसकी लंका पर चढ़ाई कर उसके कुल का सर्वनाश कर दिया। हे राजन, तुमने मुझे अपमानित किया है। अतः अब तुम सावधान रहना।

राजा विक्रमादित्य ने कहा—जो कुछ भाग्य में होगा देखा जाएगा। ऐसा सुनकर सभी ग्रह प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने स्थान को चले गए किंतु शनिदेव जी अत्यंत क्रोध में वहां से सिधारे।

कुछ काल व्यतीत होने पर जब विक्रमादित्य पर साढ़े साती की दशा आई तो शनिदेव घोड़ों के सौदागर बनकर सुन्दर घोड़ों के साथ राजा विक्रमादित्य की राजधानी मे आए। जब राजा ने घोड़ों का सौदागर के आने की खबर सुनी तो उन्होंने अपने अश्वपाल को अच्छी अच्छी नस्ल के घोड़े खरीदने की सलाह दी।

अश्वपाल इतने अच्छे घोड़े देखकर तथा उनका मूल्य सुनकर चकित हो गया तथा तुरन्त ही राजा को सूचना दी। राजा विक्रमादित्य ने उन घोड़ों को देखा तथा उन घोड़ों में से एक अच्छी नस्ल के घोड़े को चुनकर सवारी के लिए उस पर चढ़े।

राजा के पीठ पर चढ़ते ही घोड़ा तेजी से भागा। घोड़ा बहुत दूर एक घने जंगल में जाकर राजा को छोड़कर अंतर्ध्यान हो गया। इसके पश्चात् राजा विक्रमादित्य अकेले जंगल में भटकते फिरते रहे। भूख प्यास से व्याकुल राजा ने एक ग्वाले को देखा। ग्वाले ने राजा को पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर अपनी अंगुली से एक अंगूठी निकालकर ग्वाले को दी तथा स्वयं शहर की ओर चल दिये। राजा शहर में

जाकर एक सेठ की दुकान पर जाकर बैठ गए तथा उन्होंने उसे अपना नाम वीका बताया।

सेठ ने उसे एक कुलीन व्यक्ति समझकर जलादि पिलाया। भाग्यवश उस दिन सेठ की दुकान पर बहुत बिक्री हुई। सेठ उसे भाग्यवान पुरुष समझकर अपने घर भोजन के लिए ले गया।

भोजन करते समय राजा ने एक आश्चर्यजनक घटना देखी, जिस खूंटी पर हार लटक रहा था वह खूंटी हार को निगल रही थी। भोजन के पश्चात् जब सेठ कमरे में आया तो उसे खूटी पर हार नहीं मिला। उसने सोचा कि वीका के अतिरिक्त कमरे में कोई नहीं आया अतः उसने ही हार चोरी किया है। परन्तु वीका ने हार की चोरी से मना कर दिया। तब कुछ व्यक्ति उसे पकड़ कर नगर फौजदार के पास ले गए।

फौजदार ने उसे राजा के सामने उपस्थित किया तथा कहा कि यह व्यक्ति भला प्रतीत होता है किंतु सेठ इस पर चोरी का आरोप लगा रहा है। राजा ने आज्ञा दी कि इसके हाथ-पैर कटवाकर चौरंगिया किया जाए

राजा की आज्ञा का तुरन्त पालन हुआ तथा वीका के हाथ पैर काट दिये गए। कुछ काल व्यतीत होने पर एक तेली ने राजा को देखा तथा दयावश वह उसे अपने घर ले गया। तेली ने उसे कोल्हू पर बैठा दिया।

वीका उस पर बैठा हुआ अपनी जबान से बैलों को हाकता रहता था। इस काल में राजा की शनि की दशा समाप्त हो गई। वर्षा ऋतु के समय चौरंगिया राजा विक्रमादित्य मल्हार राग गाने लगा। यह राग सुनकर शहर के राजा की प्रिय पुत्री मनभावनी उसकी वाणी पर मुग्ध हो गई।

राजकन्या ने अपनी दासी को मल्हार राग गाने वाले की खबर लाने के लिये भेज दिया। दासी सारे शहर में घूमती रही। जब वह तेली के घर के पास से निकली तो उसने देखा कि राजा चौरंगिया मल्हार राग गा रहा है।

दासी ने लौटकर राजकुमारी को सब वृतान्त कह सुनाया। उसी समय राजकुमारी मनभावनी ने अपने मन में यह प्रण कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, मैं इसी चौरंगिया के साथ विवाह करूंगी। प्रातःकाल होते ही दासी ने जब राजकुमारी मनभावनी को जगाया तो वह अनशन व्रत लेकर बिस्तर पर पड़ी रही। राजकुमारी की अनशन की बात दासी ने जाकर रानी को बताई। रानी ऐसा सुनकर राजकुमारी के पास आई और पुत्री से कारण पूछा। राजकुमारी बोली-माता मैंने यह प्रण लिया है कि तेली के घर जो चौरंगिया है मैं उससे विवाह करूंगी। माता ने सुनकर आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि क्या तू पागल हुई है? तेरा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। राजकुमारी

बोली–हे माता, ये मेरा अटल प्रण है जिसे मैं नहीं तोड़ूंगी। चिंतित हो राजा ने यह बात रानी को बताई। राजा ने पुत्री को समझाया–हे पुत्री, ये कैसी जिद है तुम्हारी? तुम्हारा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। तुम्हें ऐसी बात नहीं सोचनी चाहिए। परन्तु राजकुमारी भी अपने प्रण पर अडिग थी। उसने कहा–पिताजी प्राण दे सकती हूं पर अपना प्रण नहीं तोड़ सकती। यह सुनकर राजा ने कहा–यदि तेरे भाग्य में ऐसा लिखा है तो यही सही। राजा ने तेली को बुलाकर कहा कि तेरे घर जो चौरंगिया रहता है मैं अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ करूंगा।

तेली न आश्चर्य से कहा–महाराज आप ये क्या कह रहे हैं? कहां राजकुमारी और कहां एक चौरंगिया। राजा ने कहा-ये सब भाग्य का खेल है। तुम जाकर विवाह की तैयारिया करो। राजा ने शुभ मुहूर्त देखकर राजकुमारी का विवाह चौरंगिया के साथ कर दिया। रात को जब विक्रमादित्य महल मे सो रहे थे तो शनिदेव ने विक्रमादित्य को स्वप्न में दर्शन दिए और कहा हे राजा! मुझे छोटा बतलाकर तुमने कितने कष्ट उठाए है। राजा ने शनिदेव से कहा प्रभु मेरे अपराध के लिए मुझे क्षमा कर दो। शनिदेव राजा से प्रसन्न हो गए तथा उन्होंने राजा को क्षमा कर दिया और राजा को उसके हाथ-पैर वापिस कर दिये।

तब राजा ने हाथ जोड़कर शनिदेव से विनती की–हे शनिदेव! आपसे विनती है मेरी कि आपने जैसे कष्ट मुझे दिए ऐसे किसी को कभी न देना।

शनिदेव ने प्रसन्न होकर कहा–राजन तुम्हारी विनती मुझे स्वीकार है। जो व्यक्ति नित्य प्रति मेरा ध्यान करेगा, मेरी कथा सुनेगा, कहेगा उसे मेरी दशा में कभी कोई दु:ख नहीं होगा तथा जो भी मनुष्य प्रतिदिन मेरा ध्यान कर चीटियों को आटा डालेगा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। यह कहकर शनिदेव अन्तर्ध्यान हो गए।

सवेरे जब राजकुमारी मनभावानी की आख खुली तो उसने चौरंगिया को हाथ पैर सहित देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। उसने विक्रमादित्य को जगाया और उसके इसका कारण पूछा। तब राजा ने अपना सारा वृतांत राजकुमारी को कह सुनाया।

यह सुनकर राजकुमारी अति प्रसन्न हुई। प्रात: काल मनभावनी की सखियों ने पिछली रात्रि का हाल-चाल पूछा तो उसने रात्रि की घटना का तथा उसके हाथ-पैर सही हो जाने का सारा वृतांत कह सुनाया। जब उस सेठ को यह घटना पता चली तो वह विक्रमादित्य के पास आया और उसने राजा से क्षमा मांगी और कहा–हे महाराज! मैंने आप पर चोरी का झूठा आरोप लगाया। मुझे क्षमा कर दीजिये। राजा ने कहा–यह सब मेरे भाग्य के तथा शनिदेव जी के कोप के कारण हुआ, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं था।

तब सेठ ने कहा–हे महाराज! यदि आपने वास्तव में मुझे क्षमा कर दिया तो फिर मेरे घर चलकर भोजन ग्रहण करें, तभी मुझे शांति प्राप्त होगी। राजा ने कहा–जैसा आप उचित समझें करें।

घर जाकर सेठ ने नाना प्रकार के व्यंजन बनवाए और राजा विक्रमादित्य को आमंत्रित किया। जब राजा विक्रमादित्य तथा राजकुमारी भोजन कर रहे थे तो सबने एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना देखी। जो खूंटी पहले हार निगल चुकी थी वही खूंटी हार उगल रही थी। भोजन की समाप्ति पर सेठ ने हाथ जोड़कर राजा से कहा–महाराज मेरी श्रीकंवरी नाम की एक कन्या है। आप उसे पत्नी के रूप में वरण करें। राजा विक्रमादित्य ने सेठ की बात स्वीकार कर ली और सेठ ने अपनी कन्या का विवाह राजा से कर दिया और बहुत सी भेंट राजा को दी, इस प्रकार आनन्दपूर्वक कुछ समय तक सेठ के राज्य में रहने के पश्चात् राजा विक्रमादित्य अपने श्वसुर राजा से कहा कि अब मेरी उज्जैन जाने की इच्छा है।

कुछ दिन बाद विदा लेकर राजकुमारी मनभावनी, सेठ की कन्या श्रीकवरी तथा दोनों जगह से दहेज में प्राप्त अनेक दास-दासी, रथ और पालकियों सहित राजा विक्रमादित्य उज्जैन की तरफ चले। जब वे शहर के निकट पहुंचे और उज्जैनवासियों ने राजा के आने का समाचार सुना तो उज्जैन की समस्त प्रजा अगवानी के लिए आई। प्रसन्नता से राजा अपने महल में पधारे। सारे नगर में भारी उत्सव मनाया गया और रात्रि को दीपमाला की गई। दूसरे दिन राजा ने अपने पूरे राज्य में घोषणा करवाई कि शनि देवता सब ग्रहों में सर्वोपरि हैं। मैंने इनको छोटा बतलाया इसी से मुझको यह दुःख प्राप्त हुआ।

इस प्रकार सारे राज्य में सदा शनिदेव की पूजा और कथा होने लगी। राजा और प्रजा अनेक प्रकार के सुख भोगती रही। जो कोई शनिदेव की इस कथा को पढ़ता या सुनता है, शनिदेव की कृपा से उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं। व्रत के लिए शनिदेव की कथा को अवश्य पढ़ना चाहिए।

ओ३म् शान्तिः। ओ३म् शान्तिः!! ओ३म् शान्तिः!!!

शनिवार की आरती

जय-जय रविनन्द जय दुःख भंजन।

जय–जय शनि हरे ।।टेक।।

जय भुजचारी, धारणकारी, दुष्ट दलन।।1।।

तुम होत कुपित, नित करत दुखी, धनी को निर्धन। 2।।

तुम धर अनुप यम का स्वरूप हो, करत बंधन।।3।
तब नाम जो दस तोहित करता सो बस जो करे रटन।।4।
महिमा अपार जग में तुम्हारे, जपते देवतन।।5।
सब नैन कठिन नित बरे अग्नि, भैंसा वाहन।।6।।
प्रभु तेज तुम्हारा अतिहिं करारा, जानत सब जन।।7।।
प्रभु शनि दान से तुम महान, होते तो मगन।।8।।
प्रभु उदित नारायण शीश, नवायन धरे चरण।
जय-जय शनि हरे।

❑❑❑

मकरलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**—मकरलग्न में सूर्य अष्टम भाव का स्वामी होता है। इसके लग्नेश शनि और सूर्य मे परस्पर शत्रुता है। अतः इस लग्न के जातक को माणिक्य कभी धारण नहीं करना चाहिए।
2. **मोती**—मकरलग्न में चद्र सप्तम स्थान का स्वामी होने के कारण मारकेश होता है। वह लग्नेश शनि का शत्रु भी है अतः इस लग्न के जातक के लिए मोती हानिकारक प्रमाणित होगा।
3. **मूंगा**—मकरलग्न में मगल चतुर्थ और एकादश भावों का स्वामी है। मंगल की महादशा मे मूगा धारण करने से मातृ-सुख, गृह, वाहन सुख की प्राप्ति होती है तथा आर्थिक लाभ होता है।
4. **पन्ना**—मकरलग्न के लिए बुध षष्ठ और नवम भाव का स्वामी होगा। नवम त्रिकोण में उसकी मूल त्रिकोण राशि में पड़ती है। इस कारण बुध इस लग्न के लिए शुभ माना गया है। बुध लग्नेश शनि का मित्र भी है। इसलिए पन्ना सदा नीलम के साथ धारण करना ही उचित होगा। बुध की महादशा में पन्ना धारण करना ही फलदायी होगा।
5. **पुखराज**—मकरलग्न के लिए बृहस्पति तृतीय और द्वादश स्थान का स्वामी होने के कारण अत्यन्त शुभ ग्रह है अतः इस लग्न के जातक को पुखराज कभी नहीं पहनना चाहिए।
6. **हीरा**—मकरलग्न तथा कुंभलग्न के लिए क्रमशः पंचम तथा दशम और चतुर्थ और नवम का स्वामी होने के कारण शुक्र अत्यन्त शुभ और योगकारक ग्रह
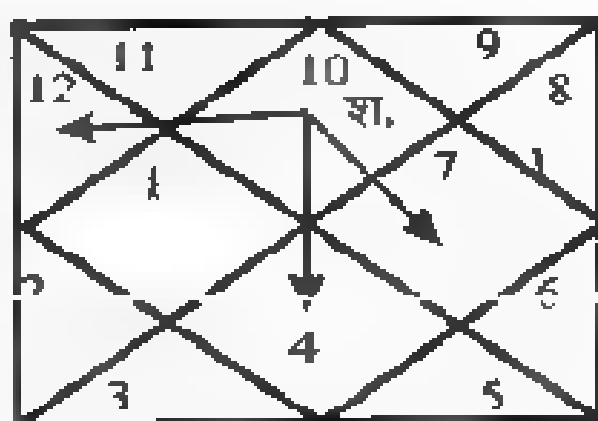
माना गया है। शुक्र की महादशा में हीरा अवश्य धारण करना चाहिए। हीरा यदि नीलम के साथ धारण किया जाये तो उत्तम फलदायक होगा।

7. **नीलम**—मकरलग्न के शनि लग्न और धन भाव का स्वामी है। इस लग्न के जातक को नीलम सदा सुख और सम्पन्नता प्राप्त करने के लिए धारण करना चाहिए।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**—हीरा सवा चार रत्ती नीलम सवा चार रत्ती पहनें।
2. **भाग्योदय हेतु**—पन्ना सवा छः रत्ती, नीलम सवा छः रत्ती त्रिलोह में पहनें।
3. **आरोग्य हेतु**—नीलम सवा दस रत्ती अकेला शनि यंत्र में पहनें।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**—नीलम सवा पांच रत्ती, पन्ना सवा छः रत्ती त्रिलोह में धारण करें।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव

फलादेश करते समय इन्हें कृपया ध्यान रखें

1. बिना फलादेश ज्योतिष शास्त्र निर्गन्ध पुष्प है, अतः फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें। फलादेश करते समय अपने खुद के साथ जोर-जबरदस्ती न करें। यथा आपका ध्यान अन्य कार्य में है। आपके पास समय का अभाव है, परन्तु सामने वाला पृच्छक आप पर दबाव डाल रहा है कि मेरी तो ट्रेन जा रही है बस जा रही है, प्लेन जा रहा है, अभी के अभी बताओ क्या होने वाला है? जो फलादेश आवेश व जल्दीबाजी में होगा वो फलादेश गलत हो जायेगा क्योंकि फलादेश करते समय चित्त शान्त होना चाहिए।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें। गम्भीरतापूर्वक करें आलतू फालतू लोगों को पास न बैठाएं जहां तक हो सकें दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

   रिक्त पाणि न पश्येत् राजानां दैवतां गुरुः।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके उसे प्रभुचरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्र वचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर लें और प्रत्युत्तर हमेशा हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेंगे।

7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज़्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर, स्व प्रशंसा न करें, ज्यादा फूले नहीं? क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित सत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होती है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हममें है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐसा विश्वास रखना चाहिए।

8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखें।

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
को वक्तां तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना॥

ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ ज्योतिषी शुभ-अशुभ फलों की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा? फिर भी ईश्वर के पश्चात् ज्योतिषी वह पहला व्यक्ति है, जो निश्चयपूर्वक आपके भूत भविष्य एवं वर्तमान बताने का सामर्थ्य रखता है।

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
ते योगाः किं करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

ग्रहो का अशुभत्व नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओ में ग्रहों के शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अंतर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष फल मिलता है।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदुः।**
केन्द्रत्रिकोणेप्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते॥

मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना चाहिए। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च स्थानों में मित्र ग्रहो से युक्त ग्रह हो तो शुभ फल जानना चाहिए।

12. **मित्रराशिगते वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।**
मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः॥

मित्र ग्रहों के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और दिग्बली एवं अंशो में बलवान ऐसा ग्रह यदि गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उस दशा में बहुत दुःख, कष्ट एव परेशानी होती है।

15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा में मिलती है, जिस दिशा का वह ग्रह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह (शनि, राहु, केतु या दुःस्थान के स्वामी) की महादशा हो और उसमें शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो, तो आरंभ से कष्ट होता है और अत में सुख प्राप्त होता है

17. जब शुभ ग्रह की (चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र) महादशा हो और उसमें पाप ग्रह की अतर्दशा हो तो आरभ में सुख होता है और अत में भय होता है।

18. जब क्रूर (सूर्य या मंगल) ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अतर्दशा, यदि वे दोनों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हों तो उनकी अंतर्दशा में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल (मारकेश) की महादशा में शनि (अन्य मारकेश) की अतर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह, क्रूर या शत्रु राशि मे स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हो, तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अंतर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।

23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6 8, 12 स्थानो मे स्थित ग्रह की अंतर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानों मे स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पाप ग्रह की अंतर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब दशम लग्न, लाभ, पराक्रम सुख तथा त्रिकोण (पंचम, नवम) स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हों तो उस ग्रह की दशा शुभ होती है परन्तु जो ग्रह 8-12, 6-7-2 स्थानो में अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर के हों पाप ग्रह हों अथवा नीच के हों अथवा अस्तगत हों उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में, मित्र ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अंतर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल होता है।

26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर अवश्य पड़ता है। इस तथ्य को घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

27. पृच्छक जब आपके पास आता है। उस समय शकुन क्या कहते हैं? प्रकृति के रहस्यमय घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन भी मन-मस्तिष्क में रखना चाहिए, वे तत्काल फल चमत्कारी रूप में देते हैं। मान लीजिए कोई आपसे प्रश्न पूछने आया और बिजली चली गई। कोई बर्तन अचानक गिर कर टूट गया? पास में रोने की, झगड़े का कलह की आवाजें आ गई तो जातक का कार्य हर्गिज नहीं होगा। जिज्ञासु सज्जन के आते ही कहीं से कोई फल मिठाई पुष्प लेकर आ गया। अचानक रोशनी आ गई। टेलीफोन में अचानक शुभ समाचार मिल गये। बेन्ड-बाजे, नगाड़े की आवाज आ गई तो निश्चित ही आगन्तुक सज्जन का कार्य होगा। ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् को शुभाशुभ शकुन शास्त्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

A. अवतार, संत-महात्मा एवं विद्वान्

भगवान् महावीर (जैन धर्म प्रवर्तक)
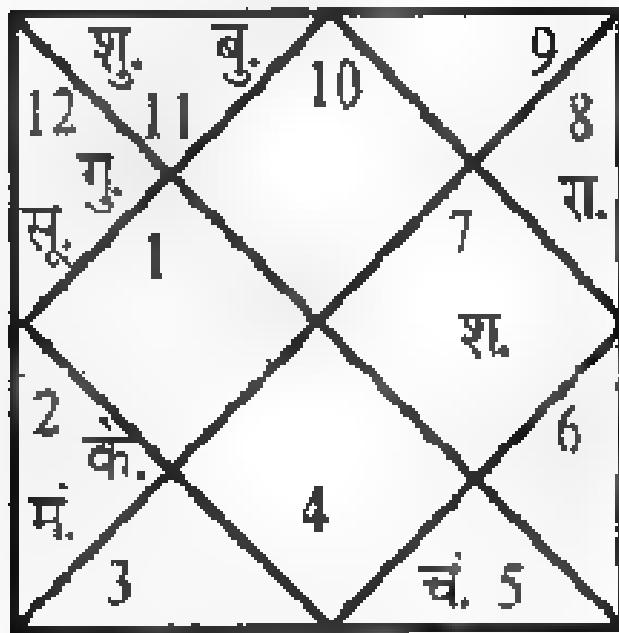
जन्म तिथि-27.3.599, जन्म समय 1.30 बजे रात्रि, जन्म स्थान-वैशाली (बिहार)। भगवान महावीर का जन्म विक्रम सम्वत् 656 चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को बिहार के कुन्दाग्राम जिला वैशाली में हुआ। भगवान महावीर का जन्म मध्यरात्रि पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के द्वितीय चरण, 'सिंह राशि' एवं 'मकरलग्न' के अंतर्गत हुआ। उच्च के शनि ने '**शश योग**' में जन्म देकर उन्हें चक्रवर्ती सम्राट बनाया। सप्तमेश चद्र ने आठवें जाकर '**अविवाह योग**' कराया। त्रिशला क्षत्रियाणी की कोख से उत्पन्न महावीर को एक शालवृक्ष के नीचे ब्रह्मज्ञान हुआ।

गुरु गोलवकर (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ)
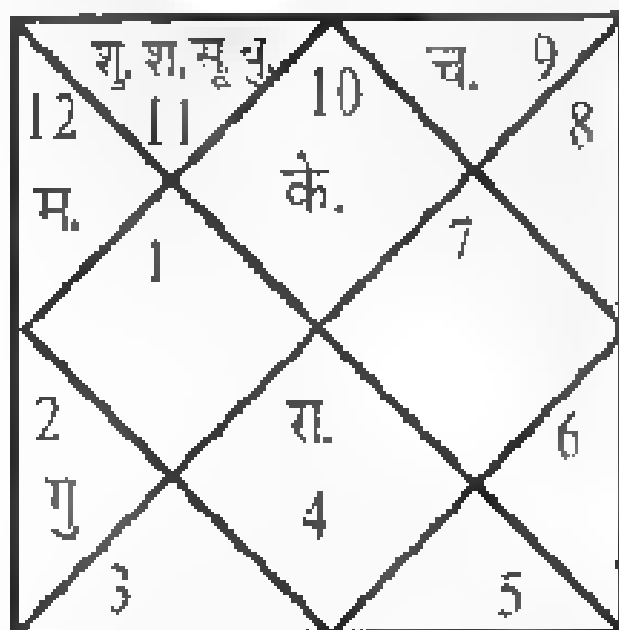
जन्म तिथि 14.2.1906, जन्म समय-4.30 मूल नक्षत्र। माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रमुख रहे। सप्तम भाव में राहु होने से वे आजीवन अविवाहित रहे। आंशिक कालसर्प योग के कारण उनका विवाह नहीं हो पाया। सप्तमेश चंद्र बारहवें **'अविवाह योग'** कराता है। चतुग्रह युति धन स्थान में होने के कारण धन चारों ओर से उनके नाम से बरसता था।

स्वामी सत्यमित्रानन्द गिरि
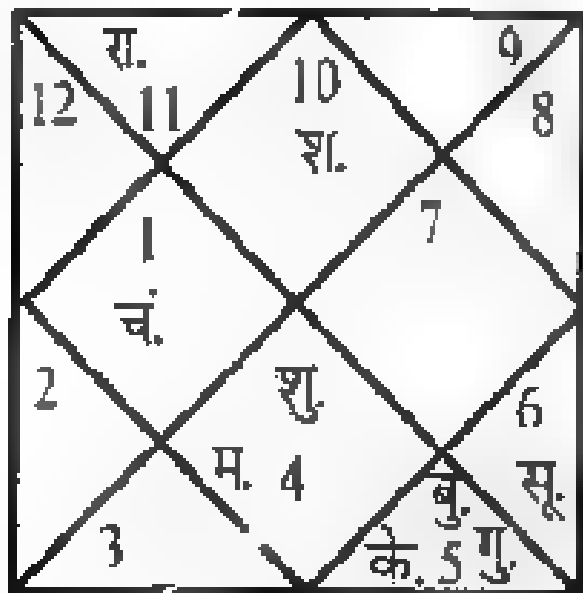
जन्मतिथि-19.9.1932, जन्म स्थान आगरा, जन्म समय 14.30। भारत माता मंदिर के संस्थापक महामण्डलेश्वर स्वामी सत्यमित्रानन्द जी की कुण्डली में **'शश योग'** बुध आठवें होने से हर्षनामक **'विपरीत राजयोग'** सूर्य एवं बुध में परस्पर राशि परिवर्तन हुआ है। चंद्रमा और मंगल में परस्पर राशि परिवर्तन से **संन्यास योग** मुखरित हुआ है।

मदर टेरेसा
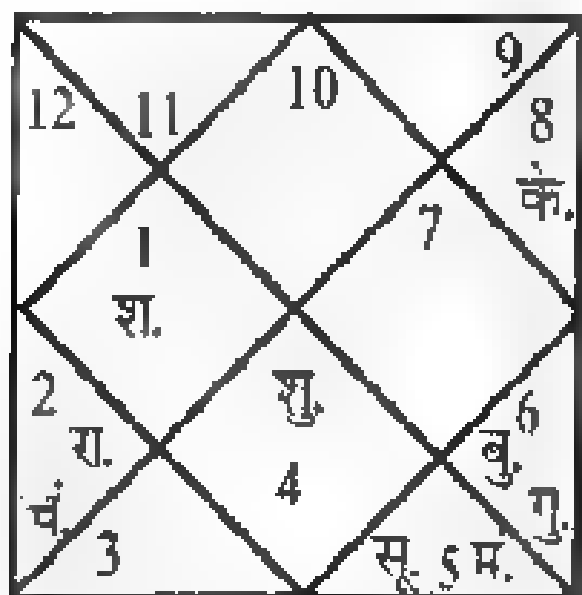
जन्मतिथि-27.8.1910, जन्म स्थान-अल्बानिया, जन्म समय-5.00 सायं। मदर टेरेसा को मरणोपरान्त 'सन्त' की उपाधि मिली। उन्होंने अपना मातृत्व प्राणी मात्र की सेवा में समर्पित कर रखा था। सप्तमेश पाप पीडित एवं आंशिक कालसर्प योग के

कारण ये आजीवन अविवाहित रहीं। अष्टमेश अष्टम में होने से सरल नामक **'विपरीत राजयोग'**, पराक्रमेश गुरु भाग्य स्थान में उच्च के बुध के साथ होने से इनकी कीर्ति सम्पूर्ण विश्व में फैली। सप्तमेश व पंचमेश ने परस्पर राशि परिवर्तन करके इस जातक को संतान एवं विवाह सुख से वंचित कर दिया। मदर टेरेसा को अपना उत्तराधिकारी नहीं मिला।

डॉ. प्रेमदत्त पाण्डे (सम्पादक-निरोगधाम)
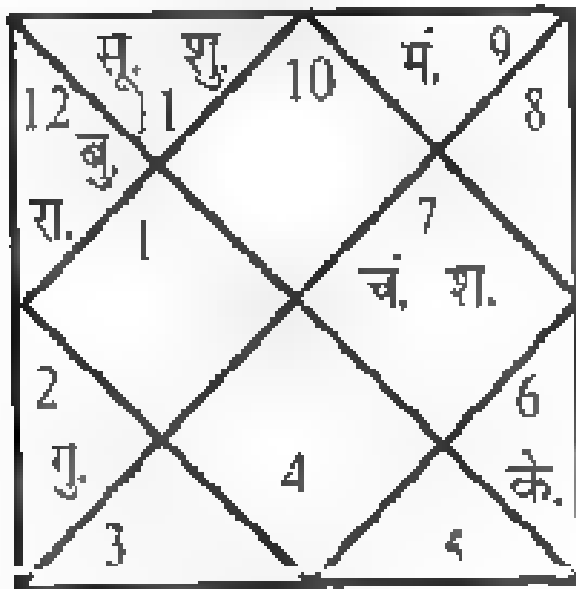
जन्मतिथि-28.7.1933, जन्म स्थान-सिहोर (मध्य प्रदेश), जन्म समय-19.00। इन्दौर से प्रकाशित 'निरोगधाम' पत्रिका के संपादक डॉ. प्रेमदत्त पाण्डे आयुर्वेद शास्त्र के प्रखर ज्ञाता हैं। लग्न में शनि **'शश योग'** बना रहा है। यहां बुध व चंद्रमा ने परस्पर राशि परिवर्तन किया है। फलत: जातक का भाग्य एवं पत्नी पक्ष दोनों बलवान हो गए।

मेहर बाबा
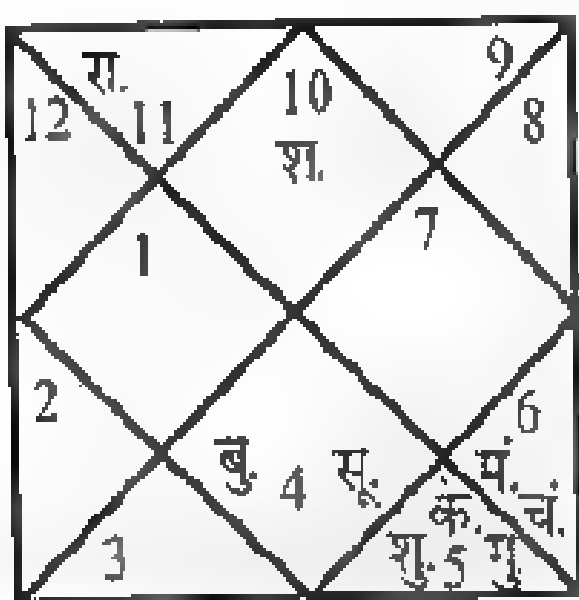
जन्मतिथि-25.2.1894, जन्म समय-4.30। **मेहरबाबा की कुण्डली में उच्च के शनि ने 'शश योग' बनाया। शनि एवं शुक्र ने परस्पर राशि परिवर्तन किया है।**

प्रो. कल्याण भारती
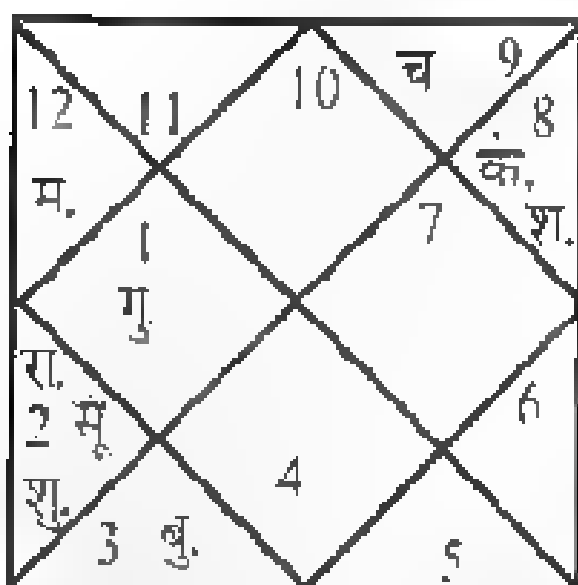
जन्मतिथि-6.6.1928, जन्म स्थान-माधोपुर, जन्म समय-23.30। केन्द्र में गुरु विद्या, बुद्धिबल, '**कुलदीपक योग**' व '**केसरी योग**' बना रहा है। सप्तमेश बारहवें, होने से विवाह सुख सामान्य होगा। पंचम भाव में स्वगृही शुक्र कन्या संतति की अधिकता देगा परन्तु सूर्य एक पुत्र देता है। सूर्य राहु से ग्रसित होने के कारण पुत्र सुख एवं वंश वृद्धि को लेकर चिन्ता बनी रहेगी।

B. राजा, राजपुरुष, राजनेता

बादशाह तैमूरलंग
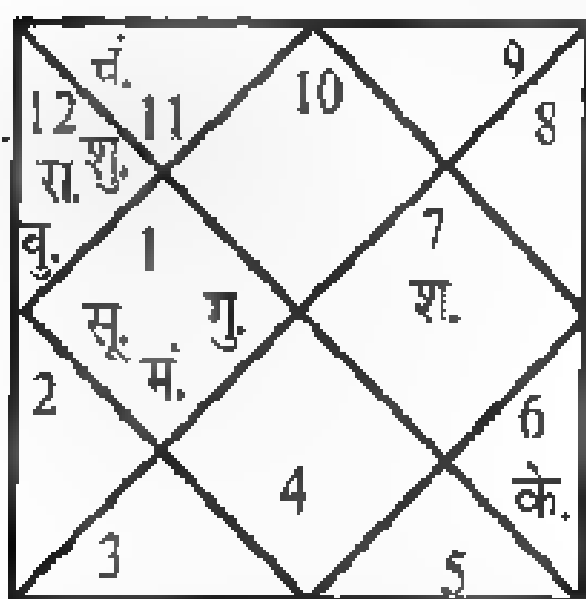
जन्मतिथि-9.4.6.1336, जन्म स्थान-समरकन्द, जन्म समय-14.26। 'चंगेज खां' के वंशज तैमूरलंग में धूर्तता और मक्कारी कूट-कूट कर भरी हुई थी। मंगल+सूर्य की युति '**किम्बहुना नामक राजयोग**' की सृष्टि कर रही है। तैमूरलंग 60 वर्ष की आयु में ऐसा युद्ध करता था जैसे 25 वर्ष का युवा करता हो। तैमूर की मृत्यु ईस्वी सन् 1405 में हुई। शनि द्वारा रचित '**शश योग**' ने उन्हें हिन्दुस्तान का बादशाह बनाया। एक खूंखार लूटेरा होते हुए भी तैमूरलंग ज्योतिष प्रेमी था। वह जहां भी हमला, लूटमार, मारकाट करता, वहां के विद्वानों को, ज्योतिषियों को अपने साथ ले जाता और अपने देश में उन लोगों से ज्योतिष की शिक्षा दिलवाता था। तैमूरलंग ने

अपने शासनकाल मे अनेक भारतीय ज्योतिष के ग्रन्थों का अपनी भाषा में अनुवाद करवाया। उसी के वंश में उलूक बेग ज्योतिषी हुआ। जिसने समरकन्द में ज्योतिष वेधशाला का निर्माण कर, ज्योतिष के वेधयत्रों की संशोधित सारणिया बनाई।

श्री माणकचन्द जैन

सम्पादक -'फेट एण्ड डेस्टिनी'। ज्योतिष की अनेक पुस्तकों के यशस्वी लेखक अंग्रेजी पत्रिका Fate & Destiny मासिक के सम्पादक स्व. माणिकचन्द जैन अंग्रेजी ज्योतिष ससार के अनमोल हस्ताक्षर हैं।

महाराणा प्रताप

जन्म तिथि-19.5.1540, जन्म समय-12.30 रात्रि, जन्म स्थान-कुम्भलगढ (राजस्थान)। सम्वत् 1597 ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया को जन्में महाराणा प्रताप ने भारत पर मुगलों के शासन को चुनौती दी। ईस्वी सन् 1576 में हल्दी घाटी में भयकर युद्ध हुआ। जिसमें महाराणा को पराजय का सामना करना पड़ा। उन्होंने अपनी राजधानी उदयपुर में स्थापित की। सन् 1597 मे उन्होंने नश्वर शरीर का त्याग किया।

बाला साहब ठाकरे
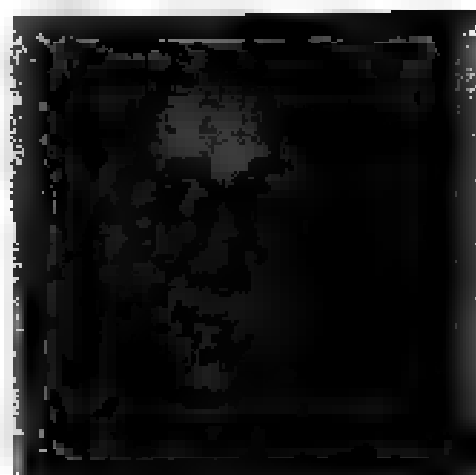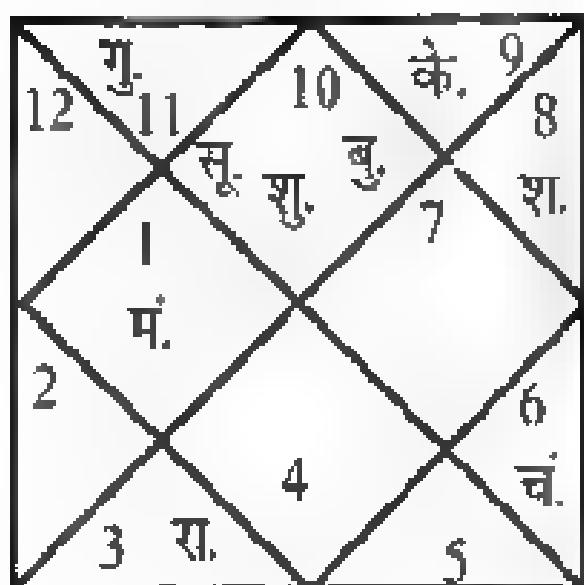
जन्म तिथि-23.1.1927, जन्म समय-7.00 प्रातः, जन्म स्थान-पुणे। बाला साहब ठाकरे हिन्दू सूर्य कहलाते है क्योंकि उनके लग्न में सूर्य है। सूर्य **'बुधादित्य योग'** एवं सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** करके लग्न में बैठा है. मंगल केन्द्र में स्वगृही होने से **'रुचक योग'** बना है जिसके कारण पद पर न होते हुए भी वे राजा ही हैं तथा अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम हैं, क्योंकि राहु छठे स्थान बैठा है।

श्री राम जेठमलानी
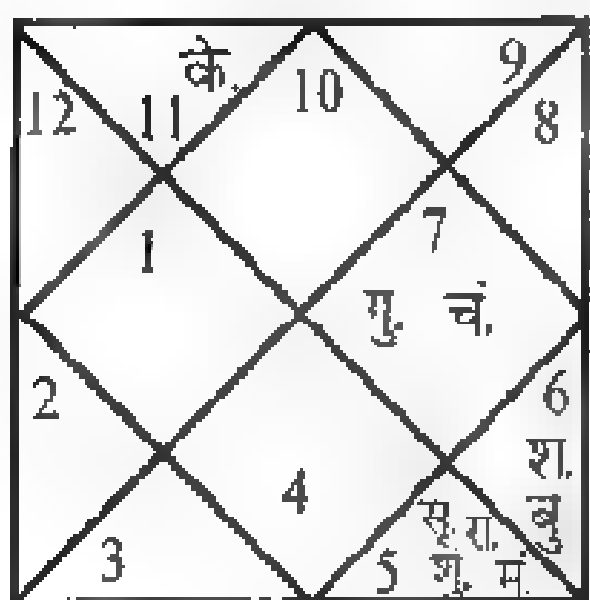
जन्म तिथि-14.9.1923, जन्म समय-2.30, जन्म स्थान-हैदराबाद (पाकिस्तान)। केन्द्रीय कानून मंत्री रह चुके श्री राम जेठमलानी एक तेज तर्रार वकील एवं राजनेता हैं। इनकी कुण्डली में **'कालसर्प योग'** अवरोह अवस्था का है। चार ग्रह आठवें स्थान में हैं। **'गजकेसरी योग'** केन्द्र में है. धन, वैभव सब कुछ होते हुए भी कालसर्प योग के कारण उन्हे वांछित कीर्ति नहीं मिल पाई।

माओत्से तुंग (प्रधानमंत्री चीन)
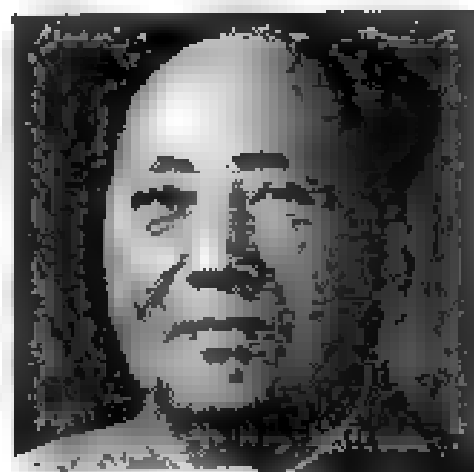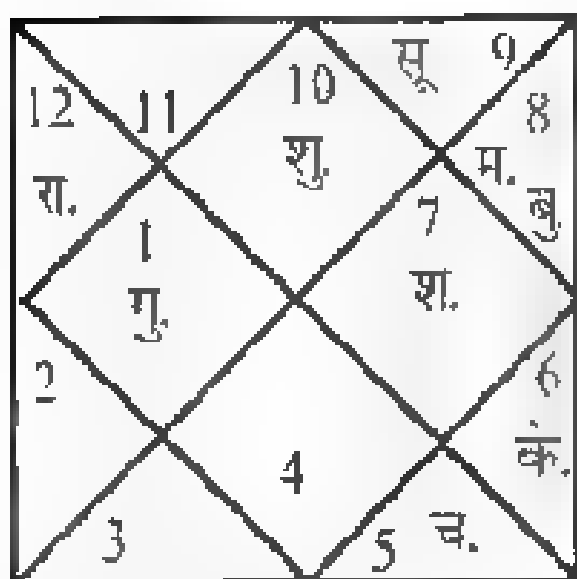
जन्म तिथि 27.12.1893, जन्मसमय 9.00, जन्म स्थान शावयांग (चीन)।

प्रस्तुत कुडली चीन के राष्ट्रपति श्री मावोत्सेतुग की है। मानसागरी के श्लोक 2, पृ. 220 के अनुसार--

अकेला शुक्र केन्द्र या त्रिकोण मे तथा तीसरे घर मे होवे तो श्रेष्ठ राजयोग होता है। इस कुडली मे राजयोग कारक पचमेश शुक्र लग्न में है तथा लग्नेश शनि केंद्र में उच्च का होने से उत्तरोत्तम उत्तम राजयोग बना है। माओत्संतुग विश्व की सबसे बड़ी आबादी वाले राष्ट्र चीन के राष्ट्रपति बने। चतुर्थेश मंगल स्वगृही होकर लाभ में है। **'पद्मसिंहासन योग'** के साथ शनि के कारण **'शश योग'** नानक अति सुदर राजयोग की सृष्टि हुई है जो पंचमहापुरुष योगों में एक योग माना जाता है।

किंग एडवर्ड
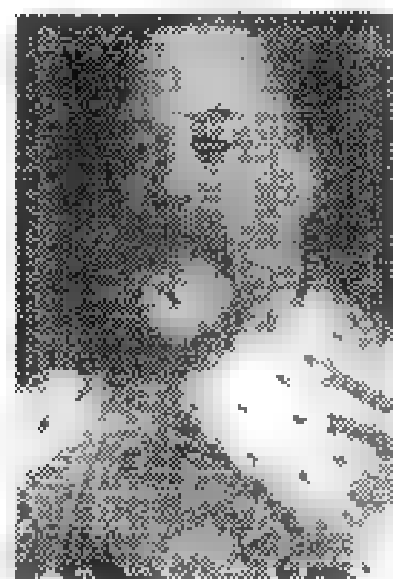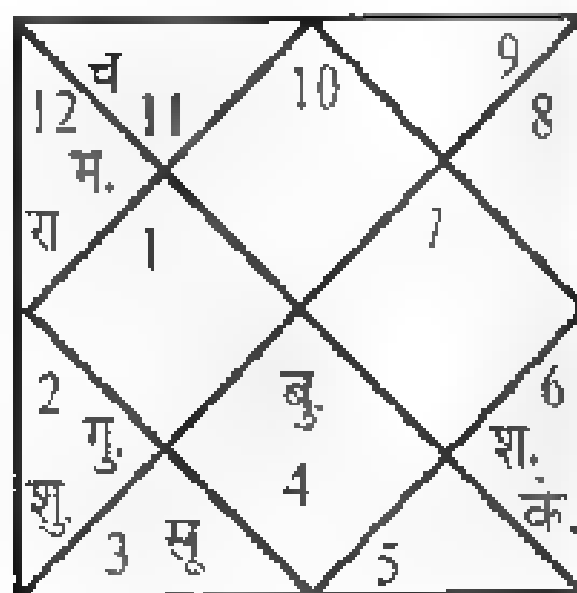
जन्म तिथि-23.6.1894, जन्मसमय- 10.00 L M T। किंग एडवर्ड की कुण्डली में लग्नेश व धनेश शनि भाग्य में है। राजयोगकारक शुक्र पचम स्थान में स्वगृही है। अष्टमेश सूर्य छठे स्थान में जाने से सरल नामक **'विपरीत राजयोग'** ने उन्हें राजा बनाया पर व्यक्तिगत जीवन, केन्द्र खाली होने से उपलब्धियों से शून्य रहा।

श्री वी.सी. शुक्ला
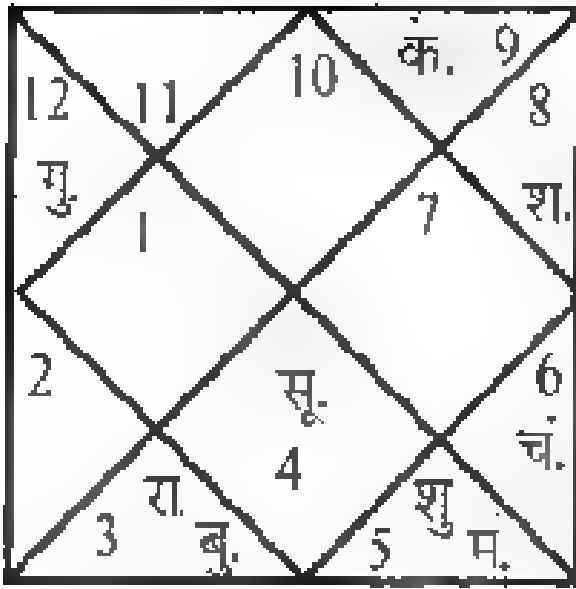
जन्म तिथि-2.8.1927, जन्म समय 19.15, जन्म स्थान-रायपुर। प्रखर राजनेता एवं पूर्व मंत्री रहे श्री वी.पी शुक्ला भारतीय राजनीति के अनमोल हस्ताक्षर हैं।

क्वीन एलिजाबेथ
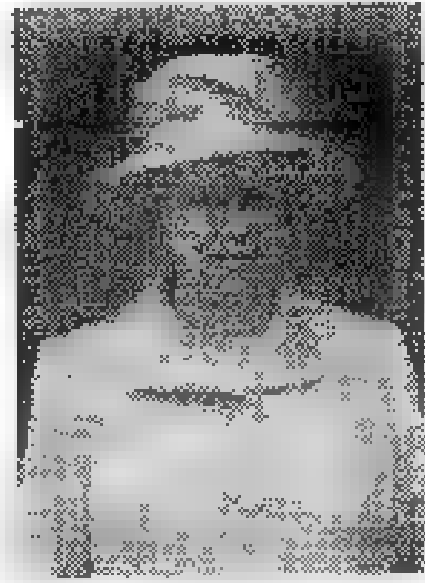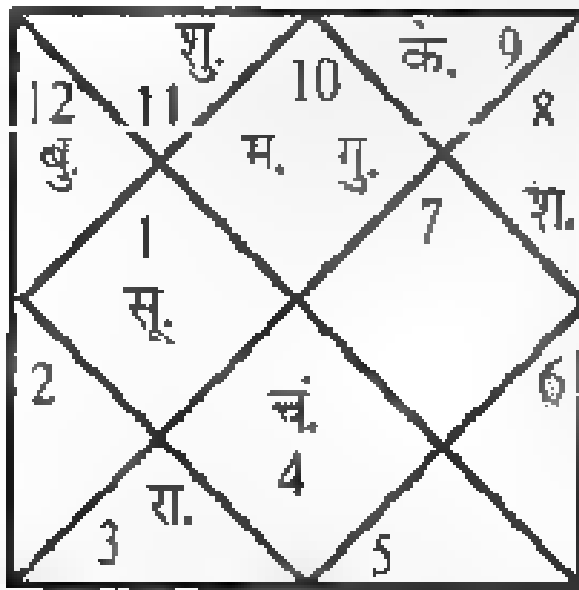
जन्म तिथि-21.4.1926, जन्म समय-2.00, जन्म स्थान-लंदन। लग्न में उच्च का मंगल **'रुचक योग'** बना रहा है। गुरु साथ होने से **'नीचभंग राजयोग'** बना। सूर्य केन्द्र में उच्च का **'रविकृत राजयोग'** तथा चंद्रमा स्वगृही केन्द्र में होने से शक्तिशाली **'यामिनीनाथ योग'** बना। फलतः क्वीन एलिजाबेथ चक्रवर्ती साम्राज्ञी थीं।

सरदार वल्लभ भाई पटेल
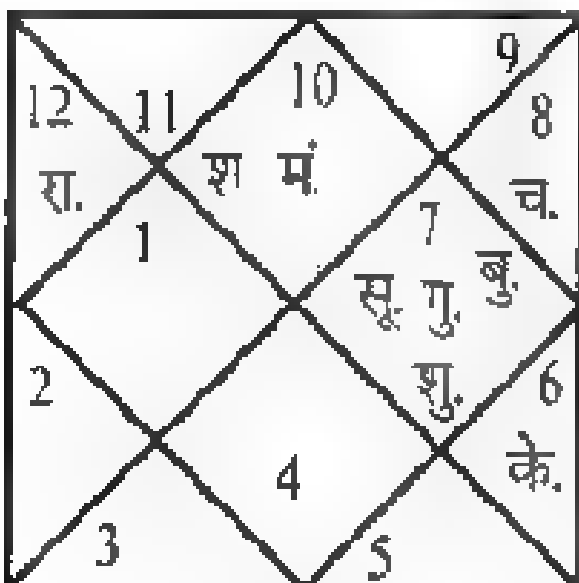
जन्म तिथि-11.10.1875, जन्म समय 13.00, जन्म स्थान-नडियाद (गुजरात)। लौहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल के लग्न में मंगल+शनि की युति होने से **'किम्बहुना नामक राजयोग'**, **'शश योग'**, **'रुचक योग'** उनको लौह पुरुष होने का प्रमाण देते हैं। केन्द्र में 'मालव्य योग' होने से वे स्वतंत्र भारत के पहले गृहमंत्री थे जो रौबीले थे तथा अपने सामने दूसरों को कुछ भी नहीं समझते थे।

स्व. संजय गांधी
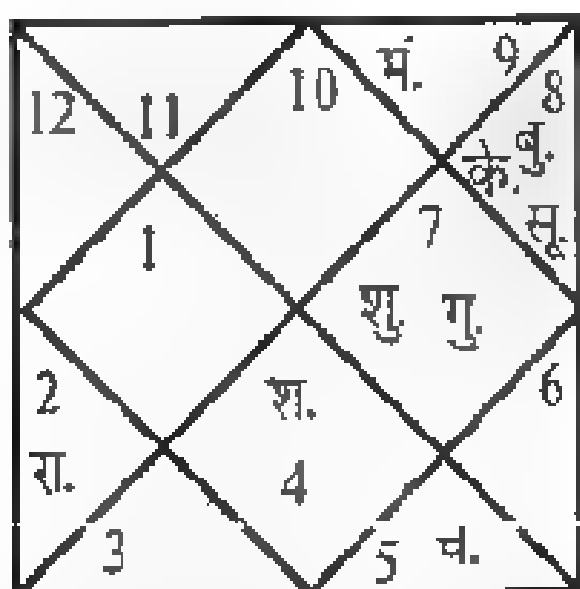
जन्म तिथि-14.12.1946, जन्म समय-9.27, जन्म स्थान-दिल्ली। भारत की प्रधानमंत्री स्व इंदिरा गांधी के कनिष्ट पुत्र श्री संजय गांधी युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष थे। उनकी मृत्यु 34 वर्ष की अल्पायु में 22.6.1980 को वायु यान दुर्घटना में हो गई। उनकी पत्नी श्रीमति मेनका गांधी भारतीय राजनीति में सक्रिय हैं।

डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी (राज्य सभा सदस्य)
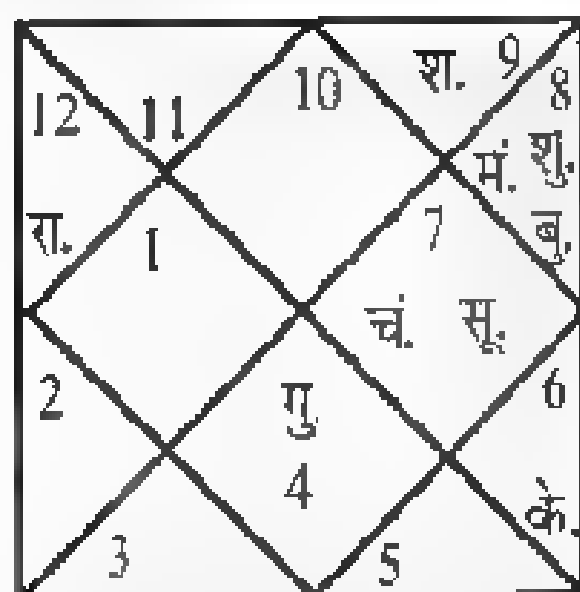
डॉक्टर लक्ष्मीमल सिंघवी ब्रिटिश उच्चायुक्त रह चुके हैं तथा कई वर्षों से राज्य सभा के सदस्य, प्रतिष्ठित सांसदों में सर्वोपरि स्थान को प्राप्त हैं उच्च के गुरु ने **'हंस योग'** के द्वारा उन्हें राज में ऊंचा पद दिया। उनके आगे बढ़ने में उनकी धर्मपत्नी का सहयोग विशेष रहा।

मेघा पाटकर

12 म. 11
10 चं.
रा. 9
8 बु. सू.
1
7 शु. श.
2
6
4 गु.
3 के.
5
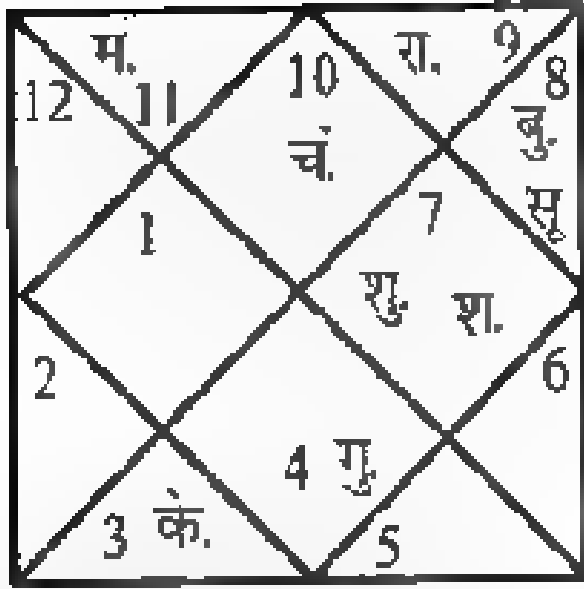
जन्म तिथि 1.12.1954, जन्म समय-11.00, जन्म स्थान मुम्बई। नर्मदा बचाओ आंदोलन की प्रमुख सेविका मेघा पाटकर राजनीति से दूर होती हुई भी राजनेताओं व भारत की राजनीति में चर्चित व्यक्तित्व हैं।

सेठ विद्याभूषण

मं. शु. च. 11
12
10 श.
गु. सू. 9 बु.
8 के.
1
7
2 रा.
6
4
3
5
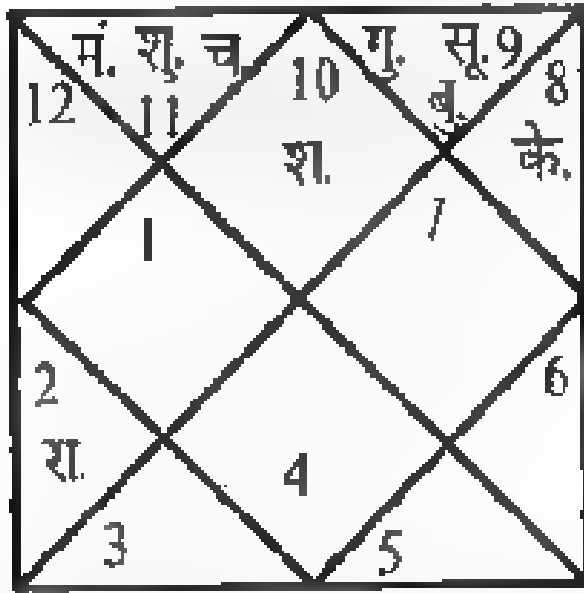
पूर्व पर्यटन मंत्री, जन्म स्थान-सहारनपुर। सेठ विद्या भूषण ज्योतिष प्रेमी, समाजसेवी व परोपकारी व्यक्तित्व के धनी थे। लग्नस्थ शनि ने **'शश योग'** बनाकर उन्हें पर्यटन मंत्री जैसा महत्त्वपूर्ण पद दिया।

फारुख अब्दुल्ला

12 श.
11
10
मं. गु. 9
8 रा.
1 चं.
7 सू.
2 के.
6 बु. शु.
4
3
5
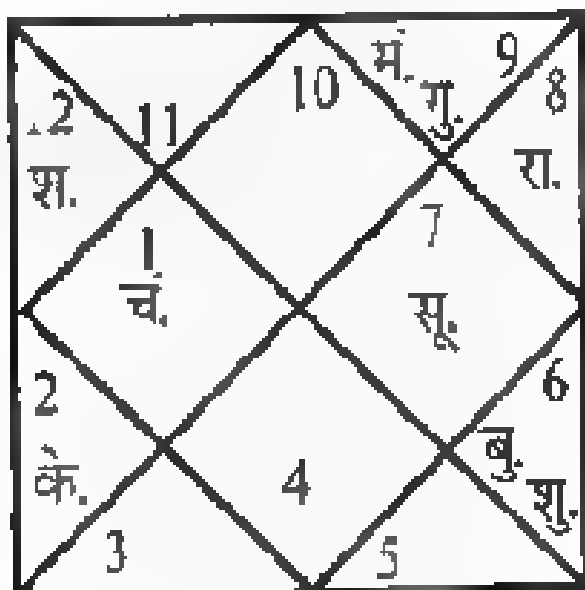
C. अभिनेता
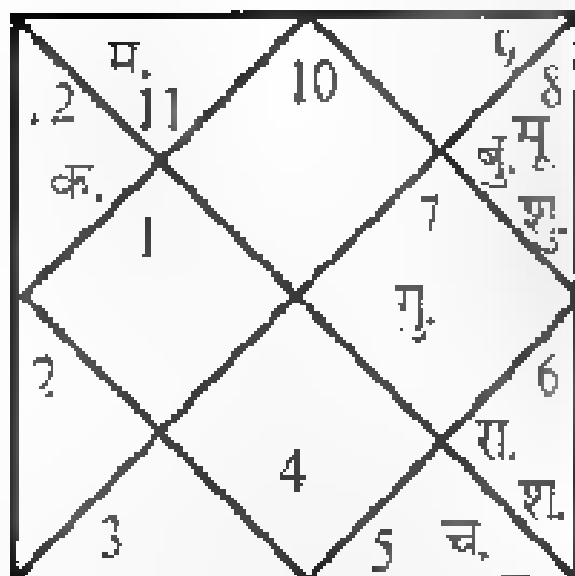
दिलीप कुमार

जन्म तिथि 11.12.1922, जन्म समय 11.15 जन्म स्थान–पेशावर (पाकिस्तान)। **'कालसर्प योग'** के कारण फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार के दो तीन विवाह होते हुए भी संतान नहीं हो पाई। वंश वृद्धि की चिन्ता उनकी कुण्डली में स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही है।

डॉ. श्री राम लागू
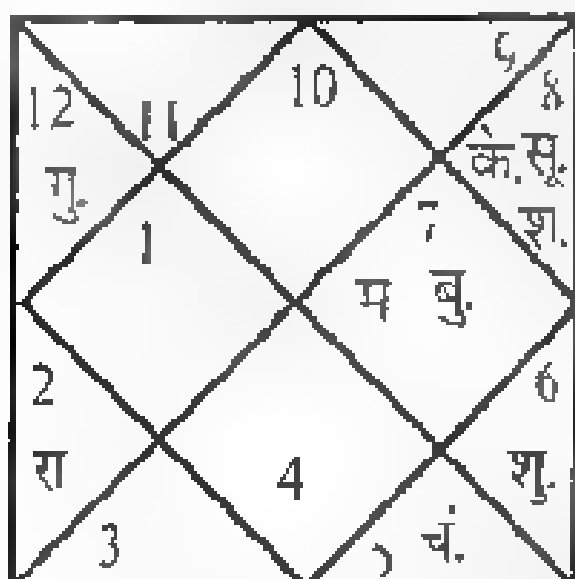
जन्म तिथि 16.11.1927, जन्म समय-12.10, जन्म स्थान-सतारा।

विश्व सुन्दरी ऐश्वर्या राय
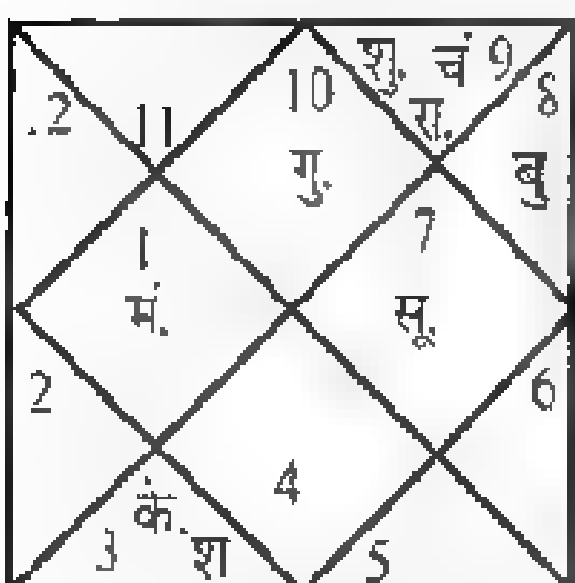
जन्म तिथि 1.11..973, जन्म समय 12.00, जन्म स्थान दिल्ली।

जन्म तिथि 21.10.1937, जन्म समय -12.30, जन्म स्थान श्रीनगर

एडवर्ग ड्यूक ऑफ वाइन्डसर
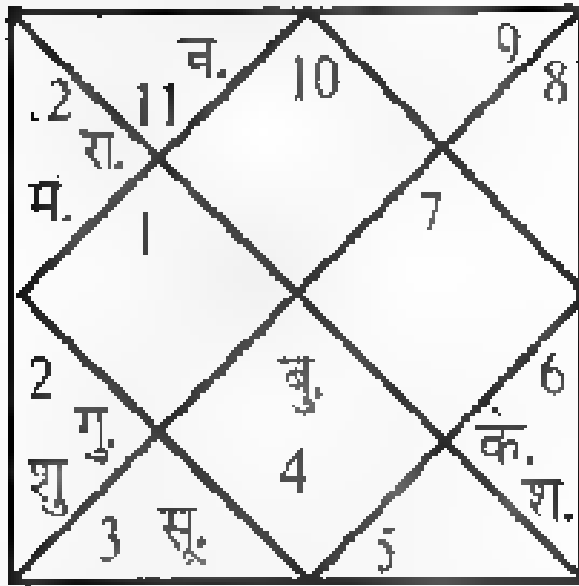
जन्म तिथि-23.6.1894, जन्म समय 22.00 धनेश उच्चाभिलाषी होकर भाग्य स्थान में है जातक अरबपति था। योगकारक शुक्र गुरु के साथ है।

श्री दीपचंद छंगाणी
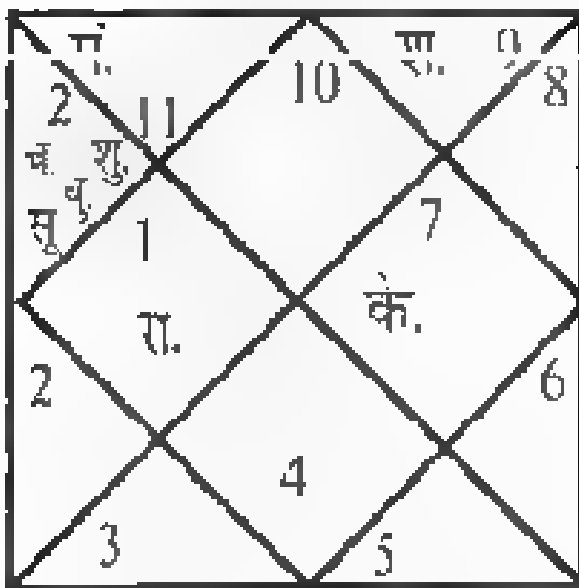
जन्म स्थान-फलौदी (राजस्थान)। स्थानीय राजनेता, पूर्वमंत्री श्री मोहन छंगाणी के पुत्र। **'कालसर्प योग'** के कारण अकाल मृत्यु हुई।

श्री राम विलास पासवान (पूर्व मंत्री)
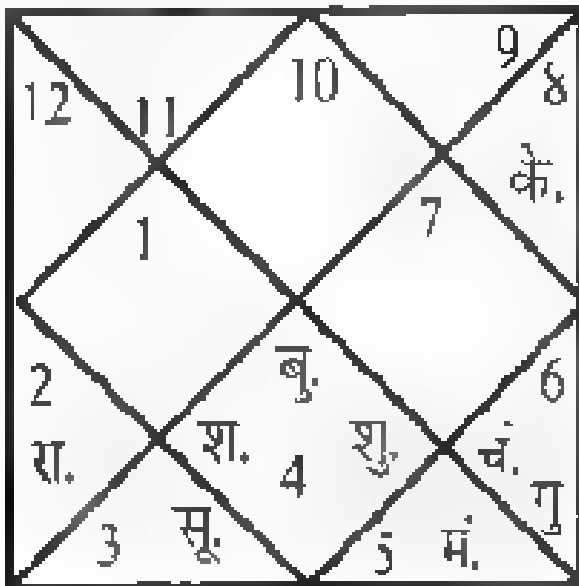
जन्म तिथि-5.7.1946, जन्म समय-19.50, जन्म स्थान -खगड़िया (बिहार)।

जुही चावला
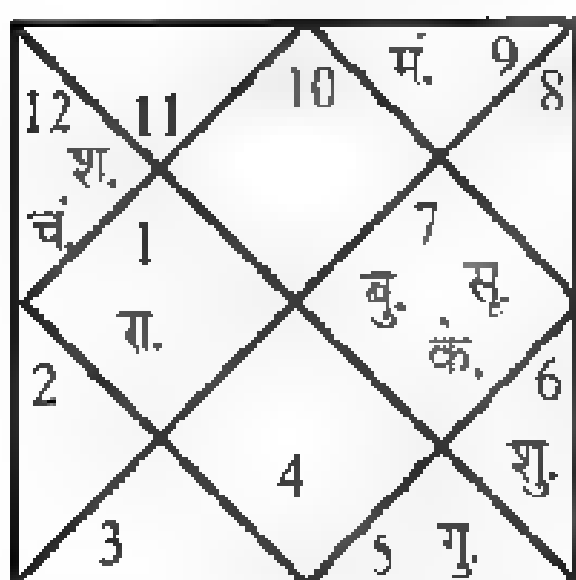
जन्म तिथि-13.11.1967, जन्म समय-12.00 जन्म स्थान-लुधियाना। 13 नवम्बर 1967 को लुधियाना शहर में जन्मी जूही चावला के सितारे उत्कर्ष की ओर है। अम्बाला शहर में पली-बढ़ी जूही प्रारम्भ में मॉडलिग करती थी। 1984 में इन्हें जबरदस्त सफलता मिली जब इन्हे मिस इण्डिया का खिताब दिया गया। इस समय इन्हें बुध की महादशा चल रही थी। मकर लग्न व मीन राशि वाली जूही चावला की कुण्डली में बुध भाग्येश होकर दशम भाव में मित्र क्षेत्री है। भाग्येश का दशम भाव में होना राजयोग है फलत: ऐसा जातक उत्तम सुख सुविधा प्राप्त करता है, तथा राजा के तुल्य ऐश्वर्य भोगता है, भाग्येश की दशा इनके लिए लाभकारी रही। इनकी कुण्डली में शुक्र का अपनी नीच राशि में होना इनकी प्रगति में बार बार रुकावटें पैदा करेगा। वहीं शुक्र बुध का परिवर्तन योग भाग्य स्थान में होना इनकी अभिनय क्षमता में वृद्धि करता है, तथा इनके फिल्मी जीवन के लिए उत्तम है। जूही चावला ने अपना फिल्मी सफर शशि कपूर के लड़के करण कपूर के साथ 'सल्तनत' फिल्म से शुरू किया। बड़े-बडे अभिनेताओं व अभिनेत्रियों की इस फिल्म में जूही खोकर रह गई हालांकि इस फिल्म में जूही चावला को कोई फायदा या नुकसान नहीं हुआ, वहीं 1988 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'कयामत से कयामत तक' ने इनकी जिंदगी ही बदल कर रखी दी। केतु दशम भाव में सूर्य-बुध के साथ है। अत: केतु की दशा में इनके कैरियर को जबरदस्त बढ़ावा मिला। मसूर खान की फिल्म कयामत से कयामत तक मे जूही चावला बेहतरीन अदाकारा के रूप में सामने आई। जूही चावला को साईन करने के लिए निर्माता बेताब हो उठे, केतु में केतु तथा केतु शुक्र जूही चावला के लिए भाग्यवर्द्धक साबित हुए, वही नीच का सूर्य जूही के भाग्योदय में रोड़ा बन गया तथा 1990 में सूर्य का अन्तर आने पर फिल्मों के गलत चयन ने जूही को संघर्षों से उभरने नहीं दिया।

चंद्रमा के प्रभाव से जूही की इमेज हमेशा मासूम, प्यारी और भोली-भाली बच्ची जैसी रही है। चंद्रमा के कारण ही जूही हमेशा विवादों से दूर रही है। सूर्य

के प्रभाव से जूही को अपने कैरियर को बनाने में संघर्ष करना पड़ा। चद्र शनि की युति के कारण इसके तृतीय स्थान में **विषयोग** भी बन रहा है, अतः जीवन में सफलता के साथ साथ संघर्ष का भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहेगा। 1995 को इनको केतु की दशा समाप्त हुई तथा शुक्र की दशा लगी। केतु की दशा में श्रीदेवी और माधुरी दीक्षित की प्रतिद्वंद्विता का लाभ जूही चावला को मिला। हालांकि वह नम्बर वन तो न बन सकी पर कुण्डली में बुध व शुक्र के परिवर्तन योग के कारण उनकी अभिनय क्षमता को देखकर इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि आज भी उनका अपना एक अलग ही अंदाज और आकर्षण है। नवमांश में उच्च के गुरु के प्रभाव से इनका विवाह अप्रवासी भारतीय जय मेहता से हुआ। पिछले तीन वर्षों से रूपहले पर्दे से गायब जूही को पचमेश के भाग्य स्थान में होने से उन्हें प्रथम कन्या की प्राप्ति हुई वर्तमान में इन्हें शुक्र की महादशा निश्चित रूप से इनके लिए उन्नतिकारक है। इस समय फिल्म लाइन में इनकी धमाकेदार वापसी का योग बन रहे हैं।

सलमान खान
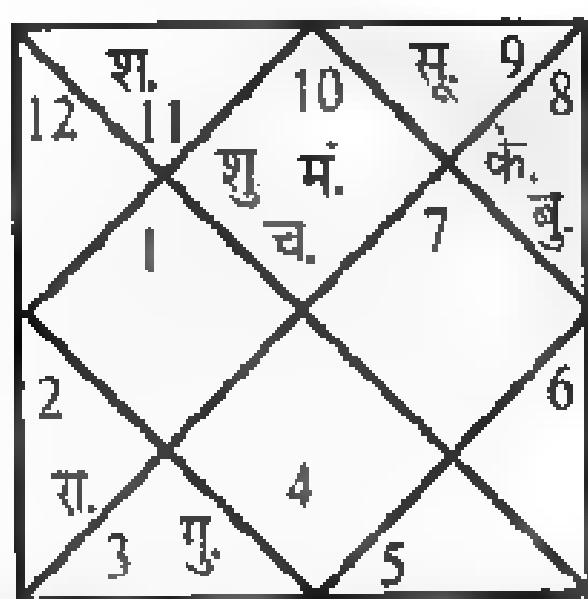
जन्म तिथि-27.12.1965, जन्म समय-9.30, जन्म स्थान मुम्बई। सलमान खान एक उच्चस्तरीय युवा दिलों को धड़काने वाले अभिनेता है। धन स्थान में स्वगृही शनि उनको खूब धन दिलाता है। शायद यही वजह है कि उसका दिमाग फिरा हुआ है। वो अब तक योग्य पिता का नालायक लड़का ही साबित हो पाया है। मुम्बई बम विस्फोट काण्ड में एक बार सलमान का नाम आया था पर उसे गम्भीरता से नहीं लिया गया।

सलमान का जोधपुर हिरण शिकार काण्ड 1998 में सुर्खियों में आया जब इसे गुरु की महादशा में शुक्र का अन्तर चल रहा था। गुरु खड्डे (6th house) मे है तथा पराक्रमेश होकर खड्डे में गिरा फलतः पराक्रम भंग हुआ। सलमान के लग्न में उच्च का मंगल चंद्रमा के साथ है जो इसकी क्रूर मानसिकता को बताता है। मंगल

ग्रहों का सेनापति है, क्रूर है। हिरण का शिकार करके उस पर छुरी चलाना क्रूरता की पराकाष्ठा है। हिरण काण्ड में शायद मुख्य गवाह मुकर भी जाये स्टार की लोकप्रियता अथवा पैसों का लेन-देन केस को कमजोर कर दे। पर ग्रह नहीं बदलते। भाग्य नहीं बदलता ऐश्वार्य राय से गलत छेड़ खानी से पूरा मीडिया सलमान खान से नाराज था उनके प्रतिकूल समय की निशानी का सकेत मीडिया की खबरें बराबर देती रहीं। अचानक अक्तूबर 2002 के प्रथम सप्ताह में सलमान खान ने शराब पिये हुए अपनी टोयोटा लैंडक्रूजर से बान्द्रा के फुटपाथ पर एक व्यक्ति को कुचलकर मार डाला और चार को घायल कर दिया। प्रत्यक्षदर्शी बताते हैं कि इतनी दुःखद घटना घटित हो जाने के बाद भी सलमान ने मरे हुए व्यक्ति एवं घायलों के प्रति कोई हमदर्दी नहीं जताई, उनके बचाव का कोई उपचार नहीं किया यह मनोवृत्ति खड्ढे (छठे) में गिरे गुरु व्यक्ति को धार्मिक कार्य, परोपकार, सेवा कार्य से दूर कर देता है। इसी प्रकार बारहवा सूर्य एक हजार राजयोग को नष्ट करता है सूर्य राजकारक ग्रह है। सूर्य बारहवें अग्नि राशि में है, उद्दण्ड है। यह व्यक्ति को राजदण्ड अवश्य देगा। वैसे तो सलमान अभी जेल से जमानत पर छूट गये हैं पर यह स्थाई समाधान नहीं है।

अभी गुरु की महादशा चल रही है तथा 22.1.2003 तक चलेगी। यह दशा इनके सारे कैरियर को चौपट कर देगी। खतरे अभी और भी बाकी है। सलमान को सावधान रहना होगा।

उसे धैर्य में रहकर गुरु की अनिष्ट दशा से बचाव का उपाय करना होगा। विनम्र बनना होगा, सत्य बोलना सीखना पड़ेगा, व्यवहार में जिम्मेदारी, संजीदापन लाना होगा तभी देवगुरु बृहस्पति प्रसन्न होकर उन्हें क्षमा करेंगे।

D. चर्चित व्यक्तित्व

सुनील गावस्कर

12 रा. 11 10 गु. च. 9 8 1 7 2 म. 3 सू. बु. शु. 4 5 श. 6 के.

जन्म तिथि-10.7.1949, जन्म समय-8.50 सायं, जन्म स्थान-मुम्बई।

श्री जगजीत सिंह

जन्म समय–8.2.1941, जन्म समय -8.00 प्रातः।

श्री अनिल अम्बानी
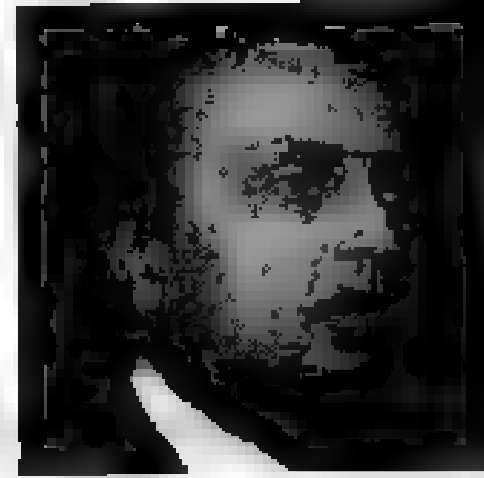
जन्म तिथि-4.6.1959, जन्म समय-22.30, जन्म स्थान–मुम्बई।

जॉन मेयर

जन्म तिथि-29.3.1943, जन्म समय-03.15 सुबह, जन्म स्थान- लदन।

श्री एच. जी वेल्स

12 के. 11 10 चं. गु. 9 8
1 7 शु. श.
2 6 सू. रा.
3 मं. 4 5 बु.
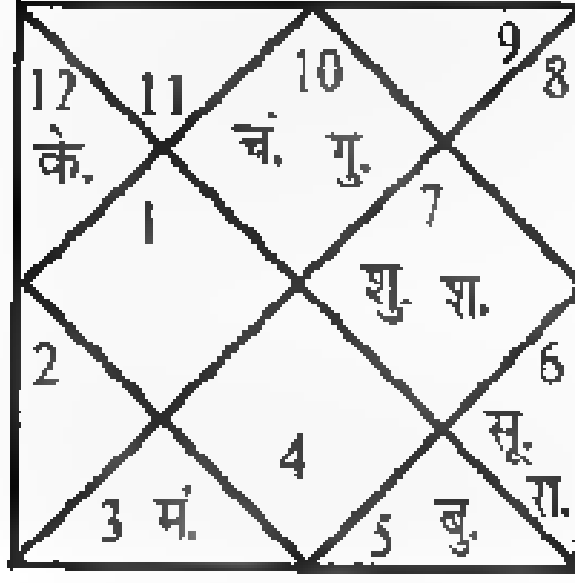
जन्म तिथि-21.9.1866, जन्म समय-15.33, जन्म स्थान-ब्रोमले (U.K.)

❑❑❑

कुम्भ लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को बीज कहा है, इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या तो कम्प्यूटर ने समाप्त कर दी परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बार विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते हैं, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक एक ग्रह को भिन्न-भिन्न भावों में घुमाया गया है। लग्न बारह हैं, ग्रह नौ हैं, फलतः 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह स्थितियां बनीं। प्रत्येक ग्रहों की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश, इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहद् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज तक नहीं हुआ वह है—'**संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।**' वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुर्ग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन-सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां? किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा का-कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख यह विशेषता है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह को अन्य दूसरे ग्रह से युति होने पर, उसका भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुनः नौ ग्रहों की भिन्न-भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 प्रकार की **द्वि-ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्न में कुल 972 × 12 = 11664 प्रकार की द्वि-ग्रह युतियां बनेंगी। ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्वि-ग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनिया में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है, इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।**

एक छोटा सा उदाहरण हम **'गजकेसरी योग'**, **'बुधादित्य योग'** अथवा **'चंद्रमंगल लक्ष्मी योग'** का ले सकते है। क्या बृहस्पति+चद्र की युति से बना **गजकेसरी योग** सदैव एक सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी!!! **गजकेसरी योग** का फल किसी भी हालत मे सदैव एक सा नहीं होगा? **गजकेसरी योग** की बारह लग्नों में बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेगी अकेला **गजकेसरी योग** 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होगे। **गजकेसरी योग** की सर्वोत्तम स्थिति **'मीनलग्न'** या **'कर्कलग्न'** के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति **'तुलालग्न'**, **'मकरलग्न'** या **'कुंभलग्न'** मे देखी जा सकती है। यदि **'कुंभलग्न'** मे **गजकेसरी योग** छठे स्थान या आठवें स्थान में हो तो जातक की पत्नी दूसरों के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर बृहस्पति छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चद्रमा छठे-आठवें होने से गृहस्थ सुख भग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैंने पाराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष सॉफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया मे नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न', **'कर्कलग्न'**, **'वृषलग्न'**, **'तुलालग्न'**, **'कन्यालग्न'**, **'मकरलग्न'**, **'वृश्चिकलग्न'**, **'मिथुनलग्न'**, **'धनुलग्न'**, **'सिंहलग्न'**, **'मीनलग्न'** प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हो रहा है। अब **'कुंभलग्न'** की पुस्तक को पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। कुभलग्न में पैगम्बर मोहम्मद, श्री रामकृष्ण परमहस, लकापति रावण, प्रधानमत्री भण्डारनायके, मोहम्मद अली जिन्ना, अब्राहिम लिकन, मानव संसाधन मत्री श्री मुरली मनोहर जोशी, पूर्व मुख्यमत्री नारायणदत्त तिवारी, डॉ बी.वी. रमण (ज्योतिषी), अभिनेता अमिताभ बच्चन, शिवाजी गणेशन, प्रिंस वेल्स (इंग्लैण्ड) जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। कुभलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती सस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। कुंभलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अशात्मक फलादेश है। लग्न की जीरो डिग्री से लेकर तीस (30) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व मे पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामों मे प्रस्तुत किया गया है। जरूरी नहीं है कि यह फलादेश सत्य हो फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसधान की आवश्यकता है।

एक और बड़ा फायदा इन पुस्तकों के माध्यम से ज्योतिष प्रेमियों को यह है कि संधिगत लग्न में प्राय: दो जन्मकुण्डलियों के बीच व्यक्ति दिग्भ्रमित हो जाता है। कई बार एक जातक को दो तीन प्रकार की कुण्डलियो में भी व्यक्ति भ्रमित हो जाता है? किसे सही माने? ऐसा व्यक्ति प्राय: भिन्न-भिन्न ज्योतिषयों के पास जाता है और भिन्न-भिन्न बातों से फलादेश से व्यक्ति पूर्णत: भ्रमित हो जाता है। ऐसे में यह पुस्तक एक दीप शिखा का कार्य करेगी। आप प्रत्येक कुण्डली को लग्न के हिसाब से अलग अलग भावों की ग्रह स्थिति जन्म कसौटी पर कस कर देखें। आपको स्वत: ही सही रास्ता मिल जायेगा। आपको पता चल जायेगा कि आपकी सही जन्मकुण्डली, सही लग्न कौन सा है? यदि आपको इस प्रकार के संकट से मुक्ति मिलती है तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सार्थक हो गया।

इस प्रकार के प्रयास से आम आदमी अपनी जन्मपत्री स्वयं पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रों की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन रात मे आकाश में बारह लग्नो का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घंटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम 'सृष्टि' के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह एवं अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ, जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक डॉ. भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा, अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 258 से अधिक पुस्तकें देश-विदेश की अनेक भाषाओं में पढ़ी जाती हैं। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ-साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को **"कर्कलग्न"** के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधियां विभिन्न नागरिक अभिनंदनों एवं राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अंतर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश-विदेशों में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाए जा रहे हैं। जिनकी शाखाएं देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओं के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे हैं, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य हैं तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि **'युग पुरुष'** के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

1. हस्तरेखा विभाग—सन् 1981 में डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा **'अंगुष्ठ से भविष्य ज्ञान'** एवं **'पांव तले भविष्य'** नामक दो पुस्तकें प्रकाशित हुईं। सामुद्रिक शास्त्र की दुनिया में इस नये विषय को लेकर हंगामा मच गया। पाठकों ने इन पुस्तकों को सराहा तथा इनके अनेक संस्करण छपे। सन् 1992 में **'ज्योतिष और आकृति'** तथा सन् 1996 में **'हस्तरेखाओं का गहन अध्ययन'** दो भागों में प्रकाशित हुए। अपने 40 वर्षों के सघन अनुसंधान में दो लाख से अधिक हस्तप्रिन्ट के परीक्षण व अध्ययन से अनुभूत प्रस्तुत पुस्तक पर इस विषय पर छठे पुष्प के रूप में पाठकों को समर्पित

की है। '**हस्तरेखाओं का रहस्यमय संसार**' नामक यह कृति किसी भारतीय विद्वान् द्वारा लिखी गई संसार की श्रेष्ठ एवं बेजोड़ पुस्तकों में सर्वोपरि है। इस पुस्तक की कीर्ति ने जरमिन, कीरो एवं बेन्हाम जैसे विदेशी विद्वानों को मीलों पीछे छोड़ दिया। डॉ. द्विवेदी भारत के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने हस्तरेखाओं को कम्प्यूटर पर लाने का अद्भुत प्रयास किया है। अभी यह कार्यक्रम 'अंग्रेजी' में है। शीघ्र ही हिन्दी, गुजराती, मराठी व अन्य भाषाओं में इसका अनुवाद व संशोधन हो रहा है। हस्तरेखा विभाग में अनुभवी विद्वान् दिन-रात काम कर रहे हैं। आप अपना हैण्ड प्रिन्ट भेजकर, उनका फलादेश डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। प्रिन्ट पर प्रश्न भी पूछ सकते हैं यह विभाग भारत ही नहीं अपितु विदेशों में अपने ढंग का अनोखा एवं सर्वोच्च कीर्ति प्राप्त करने वाला विभाग होगा। जहां से इस विषय में लोगों को नया प्रकाश व प्रेरणा बराबर मिलती रहेगी।

2. **ज्योतिष विभाग**—इस विभाग के अंतर्गत विभिन्न कम्प्यूटर लगे हैं जो गणित एवं फलित दोनों प्रकार की जन्मपत्रियों का निर्माण करते हैं. व्यक्ति की जन्म तारीख, जन्म समय एवं जन्म स्थान के माध्यम से जन्मपत्रिका, वर्षफल, विवाह पत्रिका, प्रश्न पत्रिका आदि का निर्माण सूक्ष्मातिसूक्ष्म गणित सूत्रों द्वारा होता है। सही जन्मपत्रिका यदि बनी हुई है तो उस पर विभिन्न प्रकार के फलादेश करवाने की व्यवस्था भी उपलब्ध है। हमारे यहां 'हैण्ड-प्रिण्ट' देखने की सुविधा एवं चेहरा देखकर भविष्य बताने की विद्या का चमत्कार केवल उन्हीं सज्जनों को प्राप्त है, जो हमारी संस्था '**अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज**' के संस्थापक, संरक्षक या आजीवन सदस्य हैं। '**अज्ञातदर्शन सुपर कम्प्यूटर सर्विसेज**' के सदस्यों, व्यापारियों व उद्योगपतियों को वरीयता के साथ हम नियमित ज्योतिष सेवाएं घर बैठे भेजते हैं। इसके लिये निःशुल्क प्रपत्र अलग से प्राप्त करें। डॉ. द्विवेदी द्वारा हजारों-लाखों भविष्यवाणियां लोगों के व्यक्तिगत जीवन हेतु की गई जो चमत्कारिक रूप से सत्य हुई हैं। इसके साथ ही अब तक 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणियां जो समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुईं, समय-चक्र के साथ साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं। यह एक ऐसा अपूर्व रिकार्ड है, जो ज्योतिष के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा है। यह एक ऐसा गौरवपूर्ण रिकार्ड है, जिसकी सीमा का लंघन कोई भी दैवज्ञ अब तक नहीं कर पाया है। डॉ. द्विवेदी वैदिक ज्योतिष पर एक अपूर्व सॉफ्टवेयर 'सृष्टि' का निर्माण कर रहे हैं.

3. **वास्तु विभाग**—हमने 'इंटरनेशनल वास्तु एसोशिएसन' की स्थापना कर रखी है। हमारे केन्द्र के वास्तुशास्त्रियों द्वारा वास्तु संबंधी विभिन्न त्रुटियों व दोषों का परिहार पूर्ण विधि-विधान से किया जाता है यदि व्यक्ति नक्शा भेजता है तो उस पर भी विचार विमर्श करके सही स्थानों को चिह्नित व संशोधित करके नक्शा वापस भेज दिया जाता है। जो सज्जन 'वास्तु विजिट' कराना चाहते हैं उन्हें एडवांस ड्राफ्ट भेजकर

समय निश्चित कराना चाहिए। वास्तु संबंधी दोषों का परिहार जहां तक हो सके बिना तोड़-फोड़ करके कर दिया जाता है। इस विषय में परम पूज्य गुरुदेव डॉ. भोजराज द्विवेदी द्वारा लिखित पुस्तकें मार्गदर्शन हेतु काम में ली जा सकती हैं।

4. यंत्र विभाग—विद्वान् ब्राह्मणों की देखरेख में विभिन्न प्रकार के यंत्रों का निर्माण शुभ नक्षत्र, दिन व मुहूर्त में किया जाता है यंत्र बनने के पश्चात् उसमें विधिवत् प्राण प्रतिष्ठा करके ही भेजे जाते है। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि सभी यंत्र यजमान द्वारा निर्दिष्ट धातु में सर्वशुद्ध तरीके से बनाए जाते हैं। सभी यंत्र लॉकेट में उभरे हुए होते हैं तथा बनने के पश्चात् निर्दिष्ट गंतव्य पर रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दिए जाते हैं वी.पी. नहीं की जाती वी.पी. के लिए आधा एडवांस प्राप्त होना अनिवार्य है। कार्यालय द्वारा अभिमंत्रित व सिद्ध यंत्रों का सम्पूर्ण सूची-पत्र अलग से प्रार्थना कर, प्राप्त किया जा सकता है।

5. रत्न विभाग—अनेक जिज्ञासु सज्जनों के विशेष आग्रह पर हमारे यहां विभिन्न रत्नों एवं राशि रत्नों के विक्रय की व्यवस्था की गई है. भाग्यवर्द्धक अंगूठियां एवं लॉकेट भी पूर्ण विधि विधान के साथ बनाए जाते हैं। एक मुखी रुद्राक्ष, स्फटिक मालाएं, पारद शिवलिंग, हत्था जोड़ी, सभी प्रकार के तंत्र की सामग्री असली होने की गारंटी के साथ दी जाती है. इस हेतु सम्पूर्ण जानकारी हेतु सूची-पत्र अलग से प्राप्त करें।

6. विविध धार्मिक अनुष्ठान—संस्थान द्वारा 108 कुण्डीय पवित्र यज्ञ-कुण्डों, दस महाविद्याओं की जागृत 'श्रीपीठ' की स्थापना हो चुकी है। यहां पर विभिन्न प्रकार के दुर्योगों की शांति हेतु, व्यापार-व्यवसाय में रुकावट दूर करने हेतु, दुःख, क्लेश, भय, रोग से निवारण हेतु प्रेत बाधा एवं शत्रु को नष्ट करने हेतु, राजयोग, पद, प्रतिष्ठा की प्राप्ति हेतु धार्मिक अनुष्ठान, यज्ञ, पूजा पाठ एवं शांति कराने की सभी सुविधाएं भी उपलब्ध हैं।

7. प्रकाशन विभाग—जो कुछ भी शोध कार्य कार्यालय के विद्वानों द्वारा होता है उसको निरन्तर प्रकाशित किया जाता है। ज्योतिष, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा एवं प्राचीन भारतीय गूढ़ विद्या संबंधी पुस्तकों का प्रकाशन भी विभाग द्वारा किया जाता है। अब तक डॉ. द्विवेदी द्वारा 300 पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। जिसमें से 250 के लगभग प्रकाशित हो चुकी हैं। इसके अतिरिक्त हमारे कार्यालय से दो नियतकालीन प्रकाशन अनवरत रूप से चल रहे हैं

1 अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) 1977 से प्रकाशित, 2. चण्डमार्तण्ड पंचांग एवं कैलेण्डर (वार्षिक) 1987 से नियमित प्रकाशित होते रहते हैं

हमारे कार्यालय की दिन-प्रतिदिन बढ़ती लोकप्रियता के कारण नित्यप्रति डाक से अनेकों पत्र आते है। बहुत से पत्रों में लम्बी-चौड़ी कहानियां एवं व्यक्तिगत पारिवारिक जीवन के बारे में बहुत अधिक लिखा होता है, जिनको पढ़ने मात्र में

बहुत-सा कीमती समय नष्ट हो जाता है। अपने बहुमूल्य समय का आदर करना सीखें और दूसरों को भी ऐसा करने दें। कृपा कर स्नेहिल पाठकों से निवेदन है कि कृपया अत्यन्त संक्षिप्त में सार की बात ही लिखा करें। कार्यालय द्वारा केवल उन्हीं पत्रों का जवाब दिया जाता है, जिसके साथ स्पष्ट पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा संलग्न हो। परमपूज्य गुरुदेव से व्यक्तिगत सम्पर्क व शंका समाधान के लिए 'अज्ञातदर्शन' अथवा 'श्रीविद्या साधक परिवार' के आजीवन सदस्य का उल्लेख अवश्य होना चाहिए। कई बार ऐसे मनीऑर्डर भी प्राप्त होते हैं जिनपर पूर्ण संदेश एवं पता लिखा नहीं होता। पाठक लोग प्राय: ऐसा समझते हैं कि हमारा पत्र महत्वपूर्ण एवं कार्यालय में हमारा पत्र जन्मपत्रिकाएं एवं नक्शे सुरक्षित पड़े होंगे एवं पुराने पत्र से हमारा पता देख लेंगे, पर ऐसा संभव नहीं है। क्योंकि हमारे पास इतनी डाक आती है कि हर तीसरे-चौथे दिन डाक नष्ट करनी पड़ती है। अन्यथा ऑफिस में बैठने की जगह नहीं बच पाती। प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि जितनी बार पत्र-व्यवहार करें, अपना पूरा पता लिखा हुआ, टिकट लगा लिफाफा साथ भेजें।

8. श्रीविद्या साधक परिवार–प्राय: सम्मोहन यंत्र-मंत्र-तंत्र विद्या में रुचि रखने वाले अनेक जिज्ञासु सज्जनों, छात्र-छात्राओं के अनेक फोन व पत्र पूज्य गुरुदेव से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु उनसे दीक्षा प्राप्त करने हेतु, मंत्र शिविरों में भाग लेने हेतु आते हैं। ऐसे जिज्ञासु साधकों को सर्वप्रथम 'श्रीविद्या साधक परिवार' का सदस्य बनना होता है। श्रीविद्या साधक परिवार से जुड़ने के बाद ही ऐसे जिज्ञासु सज्जनों को परमपूज्य गुरुदेव का पत्र या स्नेहिल सान्निध्य प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त सर्वधर्म सद्भाव सेवा ट्रस्ट, अन्तर्राष्ट्रीय वास्तु एसोसिएसन, लायंस क्लब इंटरनेशनल इत्यादि अनेक संस्थाओं के प्रमुख पद पर प्रतिष्ठापित होकर डॉ. भोजराज द्विवेदी का बहुआयामी व्यस्त व्यक्तित्व, मानव सेवा के अनेक संगठनों व रचनात्मक कार्यों से जुड़ा हुआ है। अत: बिना पूर्व सूचना व स्वीकृति के मिलने की चेष्टा न करें।

विनम्र निवेदन–बाहर से पधारने वाले जिज्ञासु सज्जनों से विनम्र निवेदन है कि बिना कोई अत्यधिक ठोस कारण के परमपूज्य गुरुदेव से मिलने का दुराग्रह न रखें। सर्वश्री डॉ. भोजराज द्विवेदी से मिलने के लिए टेलीफोन नंबर-2431883, फैक्स 2637359, मोबाइल 098280 25883 पर पूर्व समय निश्चित करके ही मिला करें। यह आपकी और कार्यालय दोनों की सुविधा के लिए अत्यन्त जरूरी है।

इंटरनेशनल वास्तु एसोसिएशन (रजि.)–डॉ. भोजराज द्विवेदी उनके मित्रगण, अनुयायी व भक्तगणों से मिलकर 19 फरवरी, 1993 को एक ऐसे संगठन का गठन किया जिससे ज्योतिष, मंत्र-तंत्र, वास्तु विज्ञान का प्रचार प्रसार, जात-पात से रहित मानवमात्र में सर्वधर्म सद्भाव, भाईचारा एवं मैत्रीभाव परस्पर विश्व बंधुत्व स्थापित हो सके, इस उद्देश्य से संस्था का एक भवन बन रहा है।

–आचार्य सोमतीर्थ

ज्योतिषशास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व

नारदीयम् मे सिद्धात, संहिता व होरा इन तीन भागों मे विभाजित ज्योतिषशास्त्र को वेदभगवान् का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा गया है। पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छ: अंगो में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिषशास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छ: वेदागों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ, त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दों का प्रयोग ज्योतिषी के लिए किया गया है।[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का संशोधन है।[6] उदाहरणार्थ ''कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करें।[7] कृतिका नक्षत्र मे अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना संभव नहीं है। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होवे, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[8] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

---

1. सिद्धाव संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मल चक्षुर्ज्योति: शास्त्रमकल्मषम्॥ इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छंद: पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पोऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयन चक्षुर्निरुक्त श्रोत्रमुच्यते। पाणिनी शिक्षा, श्लोक/41
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्रं, यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञम् फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागाना मणयो यथा तद्वद्वेदागशास्त्राणां ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम् –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक ''ज्योतिषविवेक (पृ. 4) बृहस्पतिकुल सिहपुरा, रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वग्निमाधीत–तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1
8. एकाष्टकाया दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षरन्– तैत्तरीय संहिता 6/4/8 ।

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुति वाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अत: वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतो मे बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसा जाएगा? फसलें कैसी होंगी। वगैरह वगैरह। हिन्दू षोडश-संस्कार एवं यज्ञ-हवन, निश्चित काल, मुहूर्त में ही किए जाते हैं श्रुति कहती है

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।

;Fp fc@r-o@2 lrko@leok;o@2A1 ZA

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देव रहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ में अच् (अ) प्रत्यय लगकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ है। अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)

ज्युत + इस् = ज्योत् + इस्

ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुसक लिंग में 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिंग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।[2]

'ज्योतिस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा कर ज्योतिषी और ज्योतिषिक: तीन शब्द व्युत्पन्न होते है। जो ज्योतिषशास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करे अथवा ज्योतिषशास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहों की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है। अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[4]

---

1. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
2. ज्योतिषग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसंक -दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयो: इति मेदिनीकोष-1929, पृ. सं. 136
3. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. सं. 321)
4. शब्द कल्पद्रुम खण्ड-2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[1]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहों की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है।[2]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिषशास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नहीं है तथापि ज्योतिष सम्बन्धी अनेक गूढ तथ्यों व गणनाओं के बारे में विद्वानों में मत ऐक्यता का नितान्त अभाव है।

तारों का उदय-अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक संकेत व सूचनाएं मिलती हैं। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[3] वहीं पं. रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा में हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[4]

भारतीय ज्योतिर्गणित एवं वेध सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रमाणिक परिचय हमें **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ में मिलता है।[5] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसा पूर्व 1200 का है। तब से लेकर अब तक ज्योतिषशास्त्र की अक्षुण्णता कायम है।[6]

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते। इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक)

---

1 हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. सं. 703

2 वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162

3 भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तरप्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10

4. वैदिक सम्पत्ति पं. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, मुम्बई पृ. 90

5. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोथ पठ्यते, ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्, तस्मात्सांगमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते॥–पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41–42

7 Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY. page-3

कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है **यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[1]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम्।
ऊषरे वापित बीजं, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[2]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म, गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुआ, बगीचा, देवालय-मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत-अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश, प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नहीं हो सकते। अतः सभी वैदिक एव लौकिक व्यवहारों की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है।

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चंद्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥3॥[3]

ससार में जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय हैं, अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चंद्रमा घूम-घूम कर दे रहे हैं। सूर्य, चद्र-ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चद्रोदय, चद्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वेध, गति, उदय-अस्त इस शास्त्र की सत्यता एव सार्थकता के प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम् ॥4॥[4]

ज्योतिष चक्र ने ससार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए हैं। जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है व जन्म मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। ससार में ज्ञान-विज्ञान की जितनी भी विद्याए हैं वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़ती, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देती, पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

---

1. ज्योतिर्निबन्ध श्री शिवराज, (पृ. 1919), आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना, पृष्ठ1
2. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृ. 2
3. जातकसार दीप-चद्रशेखरन् (पृ. 5) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज मद्रास
4. शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृ. 550

अर्थार्जने सहायः पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।
यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र नहीं है क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल में सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जन सम्पर्क बनाता है। स्वयं वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु अयन आदि सब विषय उलट-पलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि **दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान व श्रेष्ठ ज्योतिषी का अपने पास रखना चाहिए।[5]**

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज में एवं अनवरत अनुसंधान परीक्षणों में संलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल-तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो

---

1. सुगम ज्योतिष-पं. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृ. 17
2. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/25
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः।
   तथाऽसांवत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता अ.1/24
5. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/26

सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र में नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे. यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते मे आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक वर्षा के कारण तकलीफ मे आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग मे ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे मे प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेंगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ-साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते है।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों में ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत-तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणों में, विपत्ति की घड़ियों मे या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर-मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण में जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर मस्जिद और गिरजाघरो में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नहीं, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे मे इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत में विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता, जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिषशास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है -

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो, शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन हो क्यों न हो इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

आता है। इस दिव्य-ज्ञान के गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है। फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चित रुप से ही होती है

इस श्लोक मे 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है सम्यक् ज्ञान बृहस्पति कृपा से ही आता है। पुस्तक के माध्यम से आप बृहस्पति के विचारो के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय में बृहस्पति का बड़ा महत्त्व है। अत: ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या बृहस्पतिमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते हैं परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) मे सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।

मेरे निजी शब्दों में '**ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला को सिखलाता है। प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्‌घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को सवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।**'

अत: इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिषशास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निष्प्राण कहलाता है।[2]

❑❑❑

---

1. वक्री ग्रह- (प्रकाशन-1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली पृ 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदावधीतोऽपिज्योतिशास्त्रं बिना द्विजाः।। वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्नं देवः प्रभुः स्वामी, लग्नं ज्योतिः परं मतम्।

लग्नं दीपा महान् लोके, लग्नं तत्वं दिशन् बृहस्पतिः॥

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक ससार में कोई नहीं है, क्योंकि बृहस्पति रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नमेव प्रशंसन्ति, गर्गनारदकश्यपाः॥5॥

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि-नक्षत्र व चंद्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशंसा की है॥5॥

इन्दुः सर्वत्र बीजाभ्भो, लग्नं च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशों अंशश्च भावाः स्वादुफलं स्मृतम्॥7॥

भुवन दीपक नामक ग्रंथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चंद्रमा बीज सदृश है। लग्न पुष्प के समान, नवमांश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर लावणी में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. भगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र सार रूप में संकलित है। जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है प्रबुद्ध पाठको के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो ***मेषलग्न*** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करें पालना, लाल नेत्र रहते हर दम।
करे बृहस्पति की सेवा सदा नर, जिसका होता ***वृषभलग्न***।
तरह-तरह के शाल दुशाला, पहने कण्ठ में आभूषण।
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करें नाग की असवारी
कन्यालग्न के होत नपुन्सक, रोवे मात और महतारी
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआ और अपनी नारी
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ आप अकेले खाते हैं

ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता **धनुलग्न।**
कुंभलग्न मन्द बुद्धि के, अपनी धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिषशास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेडेन्ट (Ascendent) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आय, जन्म, विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख है। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष की परिमापन का नाप है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुत: 'लग्न' कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं क्योंकि "लग्न" का गणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं। बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है। वस्तुत: आकाश में दीखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्मकुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है। दिन और रात में 60 घटी होती है। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं। 60 में बारह का

भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगोलस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहा से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं। चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घ. मि.	दिशा
1.	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5.	सिंह	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7.	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
1.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
.2.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। **1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।**

विभिन्न पचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ साथ, भिन्न भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने ''लग्न देहो वर्ग षट्कोऽगांनि'' लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्न सिद्धिम्॥

जैसे वृक्ष के बिना फल-पुष्प-पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में ''बीजरूप लग्न'' ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–''**लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्**''।

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है।

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक ''**ज्योतिष और आकृति विज्ञान**'' पढ़िए। लग्न पर जिन-जिन ग्रहों का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन-उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एव पाप

द्वितीय भाव		द्वादश भाव
तृतीय भाव	प्रथम भाव	एकादश भाव
चतुर्थ भाव		दशम भाव
पंचम भाव	सप्तम भाव	नवम भाव
षष्ठ भाव		अष्टम भाव

पीड़ित होगा, सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है, अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते हैं। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है–

द्रव्य		व्यय
पराक्रम	देह	लाभ
सुख		राज्य
सुतौ	कलत्रं	भाग्यं
शत्रु		वृत्तिं

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुखं, सुतो शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ–व्ययै लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव में देह-शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे मे पराक्रम, जन-सम्पर्क, भाई–बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पांचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें में पत्नी, आठवें में आयु, नौवें स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एव बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरेव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या।।

विना विलग्न परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है।

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

'ज्योतिर्विदाभरण' में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।।

आचार्य रेणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए।।9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।

अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽयं विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में संपूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

लग्नवाराही

प्रथमभावफलम्–

लग्नस्थितो दिनकरः कुरुतेऽङ्गपीडा
पृथ्वीसुतो वितनुते रुधिरप्रकोपम्।
छायासुतः प्रकुरुते बहुदुःखरोगं
जीवेन्दुभार्गवबुधाः सुखकान्तिदाः स्युः॥1॥

यस्या बलेन भुवनं सृजते विधाता, यस्या बलेन भुवनम्परिपाति चक्री।
यस्या बलेन भुवनं हरते पिनाकी साऽऽद्या सदा विशतु नो मनसेप्सित यत्॥1॥

जन्मलग्न में सूर्य हो तो शरीर में पीड़ा, मगल हो तो रक्त विकार तथा शनि हो तो अनेक प्रकार का दुःख और बृहस्पति, चद्रमा, शुक्र तथा बुध हों तो सुख-सौन्दर्य देते हैं।1।।

द्वितीयभावफलम्–

दुःखावहा धनविनाशकराः प्रदिष्टा
वित्तस्थितारविशनैश्चरभूमिपुत्राः ।
चंद्रो बुधः सुरबृहस्पतिर्भृगुनन्दनो वा
नानाविधं धनचयं कुरुते धनस्थाः॥2॥

सूर्य, शनि और मगल यदि जन्मलग्न से दूसरे स्थान में हों तो अनेक प्रकार के दुखः तथा धन का नाश करते हैं तथा चंद्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र दूसरे भाव में हो तो अनेक प्रकार से धन की वृद्धि करते हैं।2।

तृतीयभावफलम्–

भानुः करोति विरुजं रजनीपतिश्च
कीर्त्याश्रयं क्षितिसुतः प्रचुरप्रकोपम्।

सिद्धिर्बुधः सुधिषणं च सुनीतिप्रज्ञं
स्त्रीणां प्रियं बृहस्पतिकवी रविजस्तृतीये॥3॥

जन्मलग्न से तीसरे भाव में सूर्य हो तो सम्पूर्ण रोगों का नाश करता है, चंद्रमा हो तो यशस्वी होता है और मगल कोपाधिक्य तथा बुध सिद्धि देता है। बृहस्पति, शुक्र एव शनि यदि लग्न में तीसरे भाव मे हों तो अच्छी बुद्धि वाला तथा नीतिशास्त्र का ज्ञाता और स्त्रियो का प्रिय होता है॥3॥

चतुर्थभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः सुखवर्जिताङ्गं
कुर्वन्ति जन्म विफलं निहिताश्चतुर्थे।
सोमो बुधः सुरबृहस्पतिर्भृगुनन्दनो वा
सौख्यान्वितं नृपयशः कुरुते प्रवृद्धिम्॥4॥

जन्मलग्न से चतुर्थ भाव में सूर्य, मंगल, शनि हों तो सुखरहित शरीर वाला तथा निष्फल जन्म वाला होता है और चंद्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र हों तो सुख से युक्त, राजा से कीर्तिलाभ तथा धन की वृद्धि होती है॥4॥

पञ्चमभावफलम्–

कोपान्वितं प्रकुरुते तपनश्च पुत्रं
निस्सन्ततिं च विधुजः कुसुतं कुजार्की।
शुक्रेन्दुदेवबृहस्पतिवः सुतधामसंस्थाः
कुर्वन्ति पुत्रबहुलं सुधियं सुरूपम्॥5॥

जिसके लग्न से पंचम स्थान में सूर्य हो उसका पुत्र क्रोधी होता है और बुध हो तो पुत्ररहित होता है। मगल और शनि हो तो दुष्ट स्वभाव वाला पुत्र होता है, शुक्र, चद्रमा और बृहस्पति हो तो सुदर एव बुद्धिमान् बहुत पुत्र होते हैं॥5॥

षष्ठभावफलम्–

मार्तण्डभूमितनयौ ह्यरिपक्षनाशं
मन्दः करोति पुरुषं बहुराज्यमानम्।
शुक्रोबुधो हि कुमतिं सरुजं च जीव-
श्चन्द्रः करोति विकलं विफलप्रयत्नम्॥6॥

जन्मलग्न से षष्ट स्थान में सूर्य और मंगल हों तो शत्रुपक्ष का नाश, शनि हो तो राजमान्य और षष्ठ भाव मे शुक्र, बुध हों तो दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा

बृहस्पति हो तो रोगी और चद्रमा हो तो मनुष्य का प्रयत्न विफल होता है, अतएव वह सदा ही विकल रहता है।।6।।

सप्तमभावफलम्–

तिग्मांशुभौमरविजाः किल सप्तमस्था
जायां कुकर्मनिरतां तनुसन्तति च।
जीवेन्दुभार्गवबुधा बहुपुत्रयुक्तां
रूपान्वितां जनमनोहरशीलरूपाम्॥7॥

यदि जन्मलग्न से सातवें स्थान में सूर्य, भौम और शनि हों तो उसकी स्त्री आचारभ्रष्टा तथा थोड़ी संतान वाली होती है और बृहस्पति, चंद्रमा, शुक्र, बुध सातवें भाव में हों तो उसकी स्त्री बहुत संतान वाली तथा अत्यत सुन्दरी, सबको अपने गुणों से प्रसन्न करने वाली तथा सुशीला होती है।।7।।

अष्टमभावफलम्–

सर्वे ग्रहाः दिनकरप्रमुखा नितान्तं
मृत्युस्थिता विदधते किल दुष्टबुद्धिम्।
शस्त्राभिघातपरिपीडितगात्रभायं
बुद्ध्या विहीनमतिरोगगणैरुपेतम्॥8॥

सूर्यादि नव ग्रहों में से कोई भी जन्मलग्न के आठवें भाव में हो तो प्राणी दुष्ट बुद्धि वाला होता है तथा उसके किसी भी अंग पर शस्त्राभिघात होता है और बुद्धिहीन तथा अनेक रोगों से युक्त होता है।।8।।

नवमभावफलम्–

धर्मस्थिता रविशनैश्चरभूमिपुत्राः
कुर्वन्ति धर्मनिधनं जनयन्ति पापम्।
चन्द्रो बुधो भृगुसुतश्च सुरेन्द्रमन्त्री
धर्मप्रधानधिषणं कुरुते मनुष्यम्॥9॥

रवि, शनि और मंगल जन्म लग्न में नवम स्थान में हों तो धर्म का नाश तथा पाप की उत्पत्ति करते हैं; चंद्रमा, बुध, शुक्र, बृहस्पति यदि नवम स्थान में हो तो मनुष्य की बुद्धि प्रधान रूप में धर्मकार्य मे रहती है।9।।

दशमभावफलम्–

आदित्यभौमशनयः किल कर्मसंस्थाः
कुर्य्युर्नरं बहुकुकर्मकरं दरिद्रम्।

चंद्रश्च कीर्त्तिमुशना बहुपुत्रयुक्तं
कुर्यात् सुकर्मनिरतं विधुजो गुरुश्च॥10॥

सूर्य, मंगल और शनि, यदि दशम भाव में हो तो मनुष्य कुत्सित कर्म करने वाला तथा दरिद्र होता है चंद्रमा हो तो कीर्तिशाली, शुक्र हो तो बहुत पुत्रवाला तथा बुध और बृहस्पति हों तो अच्छे कार्यों मे निरत रहता है॥10॥

एकादशभावफलम्–

लाभस्थितो दिनपतिर्नृपलाभकारी
तारापतिर्बहुधन क्षितिजश्च नारी:।
सौम्यो विवेकसहित सुभगं च जीव:
शुक्र: करोति सधनं रविज: सुकान्तिम्॥11॥

एकादश भाव में सूर्य हो तो राजा से लाभ, चंद्र हो तो बहुत धन, मगल हो तो स्त्रीसुख, बुध हो तो उत्तम विवेक, बृहस्पति हो तो सौभाग्य, शुक्र हो तो धनयुक्त और शनि हो तो अच्छी कान्ति देते है॥11॥

द्वादशभावफलम्–

सूर्य: करोति पुरुषं व्ययगो विशालं
कारणं शशी क्षितिसुतो बहुपापभाजम्।
चन्द्रात्मज: प्रकुरुते निधनं धनानां
जीव: कृशं शनिकवी निजराज्यनाशम्॥12॥

यदि सूर्य जन्मलग्न से द्वादश भाव में हो तो वह पुरुष विशाल शरीर वाला होता है और चंद्रमा हो तो काना और मंगल हो तो बहुत पाप करने वाला, बुध हो तो धन का नाश करने वाला, बृहस्पति हो तो कृश शरीर तथा शनि और शुक्र व्यय भाव में हों तो अपने राज्य का नाश करने वाला होता है। 12॥

स्त्री जातक की कुण्डली

प्रथमभावफलम्–

मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च
राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम्।
शुक्र: शशाङ्कतनयश्च गुरुश्च साध्वी-
मायुष्मतीं प्रकुरुते च विभावरीश:॥1॥

जिस स्त्री के जन्मलग्न मे सूर्य या मगल हो वह विधवा, राहु हो तो मृतवत्सा,

शनि हो तो दरिद्रा और शुक्र, बुध बृहस्पति में से कोई हो तो अच्छी स्वभाव वाली पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो दीर्घायु होती है ।।1।।

द्वितीयभावफलम्–

कुर्वन्ति भास्करशनैश्चरराहुभौमाः
दारिद्र्यदुःखमतुलं निहिताः द्वितीये।
वित्तेश्वरीमविधवां बृहस्पतिशुक्रसौम्या
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः।।2।।

जिस स्त्री के जन्मलग्न से दूसरे स्थान में सूर्य, शनि, राहु और मंगल हो तो वह स्त्री दुःख दारिद्र्य से युक्त और बृहस्पति, शुक्र, बुध हो तो धनवती तथा भाग्यवती और चंद्रमा दूसरे भाव में हो तो बहुत पुत्रों से युक्त होती है।।2।

तृतीयभावफलम्–

शुक्रेन्दु भौमबृहस्पति सूर्यबुधास्तृतीये
कुर्युः सतीं बहुसुतां धनभोगिनीं च ।
कन्यां करोति रविजो बहुवित्तयुक्तां
पुष्टिं करोति नियतं खलु सैंहिकेयः।।3।।

जिस स्त्री के तृतीय भाव में शुक्र, चंद्रमा, भौम सूर्य, बुध इन ग्रहों में से कोई भी हो तो वह स्त्री पतिव्रता, बहुत पुत्रों से युक्त और धन का भोग करने वाली होती है और जिस कन्या के जन्मलग्न में तृतीय भाव में शनि हो तो वह अति धनवती और राहु हो तो पुष्ट शरीर वाली होती है। 3।।

चतुर्थभावफलम्–

स्वल्पं पयः क्षितिजसूर्यसुतौ चतुर्थे
सौभाग्यशीलरहिता कुरुते शशाङ्कः।
राहुः सपत्निसहितां क्षितिवित्तलाभं
दद्याद् बुधः सुरगुरुर्भृगुजश्च सौख्यम्।।4।।

जिस स्त्री के मंगल और शनि, चतुर्थ भाव में हों तो व अल्प दुग्ध देने वाली, चंद्रमा हो तो सौभाग्य शील से रहित, राहु हो तो सपत्नी से युक्त, बुध हो तो धन भूमि का लाभ करने वाली और बृहस्पति तथा शुक्र हो तो सौख्यवती होती है।

पंचमभावफलम्–

नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पञ्चमस्थौ
चन्द्रात्मजो बहुसुता बृहस्पतिभार्गवौ च।

राहुर्ददाति मरणं रविजश्च रोग
कन्यानिधानमुदर कुरुते शशाङ्क:।।5।।

स्त्री के पचम भाव में सूर्य अथवा मंगल हो तो उसकी संतति मर जाती है, यदि बुध, बृहस्पति, शुक्र हों तो पुत्र-पुत्रियों से युक्त होती है एवं पंचम भाव में राहु से मरण, शनि से रोग तथा चद्रमा से बहुत कन्याए होती है।।5।।

षष्ठभावफलम्–

षष्ठे शनैश्चरबुधा रविराहुजीवा:
भौम: करोति सुभगां पतिसेविनीं च।
चंद्र: करोति विधवामुशना दरिद्रां
वेश्यां शशाङ्कतनय: कलहप्रियां वा।।6।।

स्त्री के षष्ठ भाव में शनि, बुध, सूर्य, राहु, बृहस्पति और मंगल इन ग्रहो में से कोई हो तो सौभाग्यवती, पतिव्रता तथा चंद्रमा हो तो विधवा, शुक्र हो तो दरिद्रा तथा वेश्या और बुध हो तो कलह करने वाली होती है।।6।।

सप्तमभावफलम्–

सूर्य: क्षितीन्दुसुतजीवशनीन्दुशुक्रा:
दद्यु: प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्था:।
वैधव्यबन्धनमृतिं किल वित्तनाशं
व्याधि विदेशगमनं च यथाक्रमेण।।7।।

स्त्री के जन्मलग्न से सप्तम भाव में सूर्य, मंगल बुध, बृहस्पति शनि, चंद्रमा शुक्र हो तो क्रम से मरण, वैधव्य, बन्धन, धन नाश, रोग, विदेश गमन ये फल देते हैं।7।

अष्टमभावफलम्–

स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ निहितौ वियोगं
मृत्युं शशाङ्कभृगुजौ च तथैव राहु:।
सूर्य: करोति विधवां सुभगां महीज:
सूर्यात्मजो बहुसुतां पतिवल्लभां च।।8।।

स्त्री के जन्मलग्न में अष्टम स्थान मे बृहस्पति और बुध हो तो पति से वियोग, चद्रमा, शुक्र और राहु हों तो मरण, सूर्य हो तो वैधव्य, मगल हो तो सौभाग्य, शनि हो तो बहुत संतान वाली तथा पति प्रिया होती है।।8।

नवमभावफलम्–

चन्द्रात्मजो भृगुदिवाकरदेवपूज्या
धर्मस्थिता विदधते किल धर्मनिष्ठाम्।
भौमो रुजं च खलु सूर्यसुतश्च रण्डां
नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशाङ्कः॥9॥

जिस स्त्री के नवम भाव में बुध, शुक्र, सूर्य, बृहस्पति इनमें से कोई हो तो वह धर्म मे निष्ठा रखने वाली, भौम के रहने से रोग तथा शनि से विधवा और चंद्रमा से बहुत संतान वाली होती है॥9॥

दशमभावफलम्–

राहुः करोति विधवां यदि कर्मणि स्यात्
पापे रतिं दिनकरश्च शनैश्चरश्च।
मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुलटां च चन्द्रः
शेषाः ग्रहा धनवतीं सुभगां च कुर्युः॥10॥

जिस स्त्री के दशम भाव में राहु हो वह विधवा; सूर्य, शनि हो तो पापकर्म करने वाली तथा मगल हो तो अल्पायु, चंद्रमा हो तो धन रहित तथा कुलटा और शेष ग्रह (बुध, बृहस्पति, शुक्र) यदि जन्मलग्न से दशम भाव में हो तो धनवती तथा सौभाग्यवती होती है॥10॥

एकादशभावफलम्–

आये स्थितश्च तपनः कुरुते सुपुत्रा
पुत्रीमतीं च महितोऽर्थवतीं हि चंद्रः
आयुष्मतीं सुरबृहस्पतिश्च तथैव सौम्यो
राहुः करोति विधवां भृगुरर्थयुक्ताम्॥11॥

स्त्री के एकादश भाव में सूर्य हो तो अच्छे पुत्र वाली, मंगल हो तो कन्या वाली चद्रमा हो तो धन वाली होती है। ग्यारहवें भाव में बृहस्पति अथवा बुध हो तो दीर्घायु, राहु हो तो विधवा और शुक्र हो तो धनवती होती है॥11॥

द्वादशभावफलम्–

अन्ते गुरुर्हि विधवां दिनकृद् दरिद्रा
चन्द्रो धनव्ययकरां कुलटां च राहुः
साध्वीं तथा भृगुबुधौ बहुपुत्रपौत्रां
प्राणेशसक्तहृदया मुहृदां कुजश्च॥12॥

जिस स्त्री के जन्म लग्न से द्वादश स्थान में बृहस्पति हो वह विधवा, सूर्य हो तो दरिद्र, चंद्रमा हो तो धन का अधिक खर्च करने वाली, राहु हो तो व्यभिचारिणी, शुक्र तथा बुध हो तो सच्चरित्रा और मंगल हो तो बहुत पुत्र-पौत्रों से युक्त पति में प्रेम करने वाली तथा सुशीला होती है।।12।।

अन्ययोगाः

लग्ने शौरिस्तथा चन्द्रस्त्रिकोणे जीवभास्करौ।

कर्मस्थाने भवेद् भौमो राजयोगस्तदा भवेत्॥1॥

लग्न में शनि और चंद्रमा हों, त्रिकोण अर्थात् नवम-पंचम में बृहस्पति तथा सूर्य हों और दशम भाव में मंगल हो तो राजयोग देता है।।1।।

नवमे च यदा सूर्यः स्वगृहस्थो भवेद्यदि।

तस्यः भ्राता न जीवेत एकाकी हि भवेच्च सः॥2॥

यदि अपनी राशि का होकर सूर्य नवम भाव में हो तो उसका भाई नहीं जीता है और वह एकाकी ही रहता है।।2।।

कर्मस्थाने निजक्षेत्रे रविराहू यदा गतौ।

भौमशुक्रबुधैर्युक्तौ क्षणे वृद्धिः क्षणे क्षयः॥3॥

यदि रवि और राहु अपने गृह के होकर कर्म भाव में हों और भौम, शुक्र, बुध से युक्त हों तो क्षण ही में उसका धन वृद्धि तथा ह्रास को प्राप्त होता है।।3।।

लग्ने क्रूरे व्यये क्रूरे धने सौम्ये तथैव च।

सप्तमे भवने क्रूरे परिवारक्षयंकरः॥4॥

लग्न, द्वादश तथा सप्तम भवों मे पाप ग्रह हो और दूसरे भावों मे शुभ ग्रह हों तो परिवार का नाश करने वाला होता है।।4।।

षष्ठे च भवने सोमः सप्तमे राहुसम्भवः।

अष्टमे च यदा शौरिर्भार्या तस्य न जीवति॥5॥

जिसके षष्ठ भाव में चंद्रमा, सप्तम में राहु अष्टम में शनि हो तो उसकी स्त्री नहीं जीती है।।5।।

लग्नस्थाने यदा शौरी रिपुस्थाने च चंद्रमाः।

कुजश्च सप्तमे स्थाने पिता तस्य न जीवति॥6॥

यदि जन्मलग्न में शनि, षष्ठ भाव में चंद्रमा, सप्तम भाव में मंगल हो तो उसका पिता नहीं जीता है।।6।।

कर्मस्थाने यदा जीवो बुधः शुक्रोऽथ वा शशी।
सर्वकार्याणि सिद्ध्यन्ति राजमान्यो भवेन्नरः॥7॥

जिसके दशम भाव में बृहस्पति, बुध, शुक्र या चंद्रमा हो उसके सब कार्य सिद्ध होते है तथा वह राज्यमान्य होता है॥7॥

कुभे शौरिधने सूर्यो मेषे भवति चंद्रमाः।
मकरे च यदा शुक्रः स भुङ्क्ते पैतृकं धनम्॥8॥

कुभ में शनि धन भाव में सूर्य, मेष मे चद्रमा और मकर में शुक्र हो तो पिता के धन का भोग करने वाला होता है॥8॥

शुक्रो नास्ति बुधो नास्ति नास्ति केन्द्र बृहस्पतिः।
दशमेऽङ्गारको नास्ति स जातः किं करिष्याति॥9॥

जिसके केन्द्र स्थान में शुक्र, बुध, बृहस्पति न हों और दशम भाव में मगल न हो तो वह मनुष्य कुछ नही कर सकता॥9॥

त्रिभिः स्वगृहगैर्मन्त्री त्रिभिरुश्चगतैर्नृपः।
त्रिभिर्नीचैर्भवेद्दासः त्रिभिरस्तैर्निरर्थकः॥10॥

जन्म समय मे 3 ग्रह स्वराशि के हों तो मत्री, 3 ग्रह उच्च के हों तो राजा, 3 ग्रह नीच के हों तो दास और 3 ग्रह अस्त के हों तो निरर्थक होता है॥10॥

लग्ने शुक्रबुधौ यस्य यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः।
दशमेऽङ्गारको यस्य स जातः कुलदीपक॥11॥

जिसके लग्न मे शुक्र बुध और केन्द्र स्थान में बृहस्पति, दशम भाव में मगल हो वह पुरुष कुल को प्रकाशित करने वाला होता है॥11॥

आदौ जीवः सितः प्रान्ते अन्ये मध्ये निरन्तरम्।
राजयोगं विजानीयात् स्वकुटुम्बविवर्धन.॥12॥

लग्न में बृहस्पति, द्वादश में शुक्र और शेष ग्रह मध्य में निरन्तर (लगातार) हों तो राजयोग होता है और वह मनुष्य अपने कुटुम्ब को बढाने वाला होता है।

क्रुराश्चतुर्थके लग्नात् यदि क्रूरा धनेषु च।
दरिद्रयोगं जानीयात् पितृपक्षक्षयङ्करः॥13॥

लग्न से चतुर्थ और द्वितीय भाव में पाप ग्रह हों तो दरिद्र योग होता है। इस योग में उत्पन्न मनुष्य पिता के कुल का नाश करने वाला होता है॥13॥

लग्ने चैव यदा जीवो धने सौरिर्यदा भवेत्।

राहुश्च सहजस्थाने तस्य माता न जीवति॥114॥

लग्न में बृहस्पति, धन भाव में शनि तथा तीसरे स्थान मे राहु हों तो उसकी माता शीघ्र मर जाती है। 14।

सप्तमे भवने चद्रो रवी राहुश्च मङ्गलः।

सप्तमे दिवसे मृत्युः सप्तमासे न संशयः॥15॥

जन्मलग्न से सप्तम भाव मे चद्रमा, सूर्य, राहु और मगल हो तो जातक सात ही दिन में अथवा सात मास में ही अवश्य ही मर जाता है ॥15॥

उच्चस्थाने यदा भौमो रविराहुसमन्वितः।

तीव्रपीडा भवेत्तस्य स्वस्थानेनैव तिष्ठति॥16॥

जन्मकाल मे उच्च राशि का मगल सूर्य और राहु के साथ हो तो शरीर मे बड़ी पीड़ा होती है और वह अपने स्थान में नहीं रहता है॥16॥

क्रूरक्षेत्रे गते जीवे रविराहुधरासुते।

सप्तमे भवने शुक्रे देहे कष्टं भवेदिति॥17॥

यदि रवि, राहु, मगल और बृहस्पति क्रूर ग्रह (6.8.12) मे हो और सप्तम भाव में शुक्र हो तो शरीर में कष्ट होता है।॥17।

स्वक्षेत्रस्थो यदा जीवो बुधाशौरी तथैव च।

यस्य जातस्य दीर्घायुः सम्पदस्तु पदे पदे। 18॥

यदि बृहस्पति, बुध, शनि, अपने गृह मे हों तो जातक को दीर्घायु और पद-पद में धन संपत्ति देने वाला होता है। 18।

❑❑❑

कुंभलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, खर्चेश	–	शनि
2.	धनेश, लाभेश	–	बृहस्पति
3.	पराक्रमेश, राज्येश	–	मंगल
4.	सुखेश, भाग्येश	–	शुक्र
5.	पंचमेश, अष्टमेश	–	बुध
6.	षष्ठेश	–	चंद्र
7.	सप्तमेश	–	सूर्य
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5 बुध, 9 शुक्र
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6-चंद्र, 8 बुध, 12-शनि
10.	केन्द्राधिपति	–	1 शनि, 4 शुक्र, 7-सूर्य, 10 मंगल
11.	पणकर के स्वामी	–	2-बृहस्पति, 5, 8-बुध, 11-बृहस्पति
12.	आपोक्लिम	–	3-मंगल, 6-चंद्रमा, 9-शुक्र, 12-शनि
13.	त्रिकेश	–	6-चंद्रमा, 8-बुध, 12-शनि
14.	उपचय के स्वामी	–	3-मंगल, 6-चंद्र, 10-मंगल, 11-बृहस्पति
15.	शुभ योग	–	1. शुक्र, 2. मंगल, 3. शुक्र+मंगल 4. बुध मध्यम फल
16.	अशुभ योग	–	1. बृहस्पति, 2. चंद्र, 3. मंगल, 4. सूर्य
17.	निष्फल योग	–	1. सूर्य+बुध
18.	सफल योग	–	1. शुक्र अकेला, 2. शुक्र+शनि सदोष 3. बुध+शुक्र सदोष, 4. सूर्य+शुक्र 5. बुध+शनि, 6. मंगल+शुक्र सदोष

19. राजयोगकारक – शुक्र, योगकारक- बुध

20. मारकेश – बृहस्पति, सूर्य, मगल

21. पापफलद – बृहस्पति, मगल, परम पापी-चद्र

विशेष–कुंभलग्न वालो के लिये मुख्य मारकेश बृहस्पति है, द्वितीय मारकेश सूर्य और पाप ग्रह मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है.

❑❑❑

लघु पाराशरी सिद्धान्त के अनुसार कुंभलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

पहला पाठ

जीवचन्द्रकुजाः पापा एको दैत्यबृहस्पतिः शुभः।
राजयोगकरो भौमः कविश्चैव बृहस्पतिः॥57॥
निहन्ता ध्नन्ति भौमाद्या मारकत्वेन लक्षिताः।
एवमेव फलान्युह्मान्येतानि घटजन्मनः॥58॥

दूसरा पाठ

कुजजीवेन्द्रवः पापा एको दैत्यबृहस्पतिः शुभ।
राजयोगकरौ भौमकवी एको बृहस्पतिः॥59॥
निहन्ता ध्नन्ति भौमाद्या मारकत्वेन निश्चिताः।
ज्ञातव्यानि बुधैरेव फलानि घटजन्मनः॥60॥

स्पष्टीकरण

बृहस्पति चंद्र, मंगल पाप फल उत्पन्न करने वाले होते हैं। कारण बृहस्पति मारकेश और एकादशेश है। चंद्रमा षष्ठेश है और मंगल तृतीयेश है। शुक्र शुभ फल उत्पन्न करने वाला है कारण शुक्र (त्रिकोण) और केन्द्र का स्वामी नवमेश और चतुर्थेश है। मंगल और शुक्र इनका योग हो तो राजयोग होता है। बृहस्पति मारकेश और एकादशेश होने से वह अपनी दशान्तर्दशा में मृत्युप्रद हो सकता है। इस प्रकार चंद्रमा और मंगल भी अपनी दशान्तर्दशा में मृत्युप्रद होते हैं।

दूसरे पाठ के अनुसार मंगल, बृहस्पति और चंद्रमा अशुभ फल देते हैं। शुक्र अकेला शुभ फल देता है। मंगल शुक्र योग राजयोग कारक होते हैं। बृहस्पति स्वयं मारक नहीं बनता मंगल आदि करके अशुभ ग्रह मारक लक्षणा से युक्त हों तो वे मारक होते हैं। कुंभलग्न में जन्म हो तो इस प्रकार शुभाशुभ फल समझना चाहिए।

मकर और कुंभलग्नों में सब ग्रह योग शुभाशुभत्व की दृष्टि से समान हैं सिर्फ इन दोनों लग्नों के मारक ग्रहों में जो अन्तर है वह मकरलग्न के लिए मंगल होता है तो कुंभलग्न को बृहस्पति होता है। कुंभलग्न में शुक्र अकेला शुभ फल देता है। इसका कारण ग्रह चतुर्थ (केन्द्र) और नवम (त्रिकोण, स्थानों का स्वामी होता है। मंगल शुक्र योग राजयोग होता है ऐसा कहने का हेतु मंगल तृतीयेश और दशमेश और शुक्र चतुर्थेश और नवमेश होता है। यही है। इस लग्न में रवि का विचार किया हुआ नहीं दिखाई देता परन्तु रवि बलवान् मारक सप्तम स्थान का स्वामी होता है। इसलिए अशुभ फल देगा। परन्तु मारक नहीं होगा। बृहस्पति, चंद्र आदि करके मारक बनते हैं। यहा पर बुध शुक्र का योग केन्द्र त्रिकोण अर्थात् चतुर्थेश और पंचमेश इनका होने से शुभ फल तो मिलेगा परन्तु यह योग सदोष है। उसी प्रकार बुध के संबंध में भी इस लग्न में कुछ भी उल्लेख नहीं है बुध त्रिकोण का स्वामी होकर वह अष्टमेश भी है।

कुंभलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग**–शुक्र स्वयं शुभ ग्रह है, श्लोक 11 के अनुसार केन्द्राधिपतय दोष से यद्यपि दूषित है फिर भी वह नवम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ है और शुभ फल देने वाला है।
2. **शुभ योग**–मंगल नैसर्गिक पाप ग्रह है परन्तु श्लोक 7 के अनुसार दशम केन्द्र का स्वामी होने से शुभ है और शुभ फलदायक होता है।
3. **शुभ योग**–नवम तथा दशम पति शुक्र और मंगल के साहचर्य योग के कारण से राजयोग हो सकता है और शुभ फल देने वाला होता है
4. **शुभ योग**–बुध स्वयं शुभ ग्रह है और यहां पर पंचम (त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभ है और अष्टम स्थान का स्वामी होने से अशुभ है, यहा पर इसके शुभ फल मिलेंगे।

कुंभलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**–बृहस्पति नैसर्गिक शुभ ग्रह है परन्तु इस द्वितीय मारक स्थान का अधिपति होने से और एकादशेश होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फल देने वाला होता है।

2. **अशुभ योग**–चद्रमा शुभ ग्रह है परन्तु षष्ठ स्थान का स्वामी होने से यहा पर अशुभ है और अशुभ फल देने वाला होता है।

3. **अशुभ योग**–मंगल नैसर्गिक पाप ग्रह है और तृतीय स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार अशुभ फल देने वाला होता है। यह दशम केन्द्र का स्वामी होने से शुभ माना गया है

4. **अशुभ योग**–सूर्य स्वयं पाप ग्रह है और वह सप्तम (मारक) स्थान का स्वामी होने से अशुभ माना गया है। अशुभ फल देने वाला होता है।

कुंभलग्न के लिए निष्फल योग

1. सूर्य बुध, दोनों ग्रह दूषित होते हैं।

कुंभलग्न के लिए सफल योग

1. शुक्र अकेला शुभ फलदायक है, 2. शुक्र-शनि (सदोष), 3. बुध-शुक्र (सदोष), 4. मंगल शुक्र (सदोष), 5. सूर्य शुक्र, 6. बुध शनि।

❑❑❑

कुंभलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	–	कुंभ
2.	लग्न चिह्न	–	घड़ा लिए हुए मनुष्य
3.	लग्न स्वामी	–	शनि
4.	लग्न तत्त्व	–	वायु तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	–	स्थिर
6.	लग्न दिशा	–	पश्चिम
7.	लग्न लिंग व गुण	–	पुरुष, तमोगुणी
8.	लग्न जाति	–	शूद्र
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	–	क्रूर स्वभाव, त्रिधातु प्रकृति
10.	लग्न का अंग	–	पैर
11.	जीवन रत्न	–	नीलम
12.	अनुकूल रंग	–	नीला, आसमानी, काला
13.	शुभ दिवस	–	शनिवार, शुक्रवार
14.	अनुकूल देवता	–	शनिदेव
15.	व्रत, उपवास	–	शनिवार
16.	अनुकूल अंक	–	आठ
17.	अनुकूल तारीखें	–	8/17/26
18.	मित्र लग्न	–	मीन, वृष व मकर
19.	शत्रु लग्न	–	मिथुन व कन्या
20.	व्यक्तित्व	–	अवधूत योगी, साधक, तपस्वी, सत्यखोजी, अन्वेषक यशस्वी।

21.	सकारात्मक तथ्य	–	संवेदनशील, समाज प्रिय, कुटुम्ब प्रेमी।
22.	नकारात्मक तथ्य	–	निरन्तर विचार बदलने की प्रवृत्ति।

❑❑❑

कुंभलग्न के स्वामी शनि का वैदिक स्वरूप

नवग्रहों के वैदिक मंत्रों एवं कर्मकाण्ड में शनि सबंधित जो मत्र प्रयुक्त होता है। वह निम्न है -

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये

शंय्योरभि स्रवन्तु नः।

—ऋग्वेद10/9/4, यजुर्वेद 36/12

अर्थात् देदीप्यमान जल (जल रूप शनि देव) हमारे पान के लिए सुखरूप हों तथा रोगो का नाश करें। यहा शनि को जल स्वरूप कहा गया है। जल सूर्य से हो उत्पन्न हुआ अतः वह सूर्य पुत्र है। इसीलिए शनि को सम्भवतः सूर्य पुत्र कहा गया है। पञ्चविंशति ब्राह्मण 24/8.6 से शनिस्तु सौरः कहा गया है

शम् का अर्थ पाप नाशक देवता के रूप में भी किया जाता है। 'श' मतलब होता है कल्याणकारी, शान्ति प्रदान करने वाला ग्रह। 'शनि शमयते पापम्' शनि ग्रह हमारे पापो का शमन करता है। पापों का नाश करता है। इसलिए इसे शनि कहा गया है।

अर्थर्ववेद 19/9/7 मे शनि ग्रह की प्रार्थना इस प्रकार है—

श नो मित्र शं वरुणः शं विवस्वान् शमन्तकः।

उत्पाताः पार्थिवान्तरिक्षाः शन्नो दिविचरा ग्रहाः॥

अर्थात् मित्र, वरुण, सूर्य, अन्तक (शनि), पृथिवी और अन्तरिक्ष में होने वाल उत्पात और आकाश में विचरण करने वाले ग्रह हमारे लिए शान्तिप्रद हों।

अथर्ववेद क इसी काण्ड के एक मत्र में नव ग्रहो का उल्लेख इस प्रकार से गूढ़ात्मक भाषा में मिलता है। मंत्र है—

शं नो ग्रहाश्चान्द्रमसाः शमादित्यश्च राहुणा।
शं नो मृत्युर्धूमकेतुः शं रुद्रास्तिग्मतेजसः॥

–(अथर्ववेद 19/9/10)

इसमें (चान्द्रमसाः) चंद्रमा बुध, आदित्य, अर्थात् सूर्य राहु, मृत्यु अर्थात् शनि केतु, रुद्र से मंगल तथा तिग्मतेजसः से बृहस्पति ग्रह का अर्थ निकलता है

शनि के अनेक नामों में से 'मृत्यु' यमाग्रज, शनैश्वर मन्द, सौरि, छायासुत, तरणितनय, महिषा वाहन, खंज सूर्य सुमन, असित, पंगु, दास, कृष्ण अश्ववाही, नीलकाय क्रुर, कृशांग, कपिलाक्ष, कोण, रविपुत्र, नीलांजन, गिद्धवाहन, वगैरह है अंग्रेजी में सैटर्न तथा उर्दू फारसी में ज़ुहल या कोद्वान संस्कृत में असित, श्यामलांग, कालदृष्टि, शितिकण्ठ, शमीपुष्पप्रियः नीलश्छाया, रविनन्दनः कहा गया है।

❑❑❑

कुंभलग्न के स्वामी शनि का पौराणिक स्वरूप

शनैश्चर की शारीरिक-कान्ति इन्द्रनीलमणि के समान है। इनके सिर पर स्वर्ण मुकुट गले में माला और शरीर पर नीले रंग के वस्त्र सुशोभित हैं। ये गीध पर सवार रहते है तथा हाथों में क्रमशः धनुष, बाण, त्रिशूल और वरमुद्रा धारण करते हैं।

शनि भगवान् सूर्य तथा छाया (सुवर्णा) के पुत्र हैं। ये क्रूर ग्रह माने जाते है। इनकी दृष्टि में जो क्रूरता है, वह इनकी पत्नी के शाप के कारण है। ब्रह्म पुराण में इनकी कथा इस प्रकार आयी है -बचपन से शनि देवता भगवान श्री कृष्ण के परम भक्त थे। वे श्रीकृष्ण के अनुराग में निमग्न रहा करते थे। वयस्क होने पर इनके पिता ने चित्ररथ की कन्या स इनका विवाह कर दिया। इनकी पत्नी सती-साध्वी और परम तेजस्विनी थी। एक रात वह ऋतु-स्नान करके पुत्र प्राप्ति की इच्छा से इनके पास पहुंची पर यह श्रीकृष्ण के ध्यान में निमग्न थे। इन्हें बाह्य ससार की सुधि ही नही थी। पत्नी प्रतीक्षा करके थक गयी उसका ऋतुकाल निष्फल हो गया। इसीलिए उसने क्रुद्ध होकर शनिदेव को शाप दे दिया कि आज से जिसे तुम देख लोगे, वह नष्ट हो जायेगा ध्यान टूटने पर शनि ने अपनी पत्नी को मनाया. पत्नी को भी अपनी भूल पर पश्चाताप हुआ किन्तु शाप के प्रतीकार की शक्ति उसम न थी. तभी से शनि देवता अपना सिर नीचा करके रहने लगे क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि उनके द्वारा किसी को अनिष्ट हो।

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार शनि ग्रह यदि कहीं रोहिणी-शकट भेदन कर दे तो पृथ्वी को बारह वर्ष घोर दुर्भिक्ष पड़ता है और प्राणियों का बचना ही कठिन हो जाता है। शनि ग्रह जब रोहिणी का भेदन कर बढ़ जाता है, तब यह योग आता है। यह योग महाराज दशरथ के समय में आने वाला था। जब ज्योतिषियो ने महाराज दशरथ को बताया कि यदि शनि का योग आ जायेगा तो प्रजा अन्न-जल के बिना तड़प-तड़प कर मर जायेगी। प्रजा को इस कष्ट से बचाने के लिए महाराज दशरथ अपन रथ पर

सवार होकर नक्षत्रमण्डल में पहुंचे पहले तो महाराज दशरथ ने शनि देवता को नित्य की भांति प्रणाम किया और बाद में क्षत्रिय धर्म के अनुसार उनसे युद्ध करते हुए उन पर संहारस्त्र का संधान किया। शनि देवता महाराज की कर्तव्यनिष्ठा से परम प्रसन्न हुए और उनसे वर मांगने के लिए कहा। शनि देव की कृपा देखकर महाराज को रोमान्च आ गया। उन्होंने रथ में धनुष डाल दिया और उनकी पूजा की। उसके बाद सरस्वती तथा गणेश का ध्यान कर स्रोत की रचना की इस स्तुति से शनि देवता संतुष्ट हो गये तथा बाद में महाराज दशरथ ने वर मांगा कि जब तक सूर्य, नक्षत्र आदि विद्यमान हैं, तब तक आप शकट भेदन न करें। व भगवन् देवता मानव, पशु पक्षी, किसी को आप कष्ट न दें। शनि देवता ने एक शर्त के साथ यह वरदान भी दे दिया शर्त यह थी कि यदि किसी की कुण्डली या गोचर में मृत्यु स्थान, जन्म स्थान अथवा चतुर्थ स्थान में मैं रहूं, तब मैं उसे मृत्यु का कष्ट दे सकता हू किंतु यदि वह मेरी प्रतिमा की पूजा करेगा या तुम्हारे द्वारा किये गये स्त्रोत पाठ का पाठन करेगा तो उसे मैं कभी पीड़ा नहीं दूंगा

शनि के अधिदेवता प्रजापति ब्रह्मा और प्रत्यधिदेवता यम हैं। इनका वर्ण कृष्ण, वाहन गिद्ध तथा रथ लोहे का बना हुआ है। यह एक-एक राशि में तीस-तीस महीने रहते हैं। यह मकर और कुंभ राशि का स्वामी हैं तथा इनकी महादशा 19 वर्ष की है। इनकी शांति के लिए मृत्युजंय जप, नीलम-धारण तथा ब्राह्मण को तिल, उड़द भैंस लोहा, तेल, काला वस्त्र नीलम, काली गौ जूता कस्तूरी और स्वर्ण का दान देना चाहिए।

इसके जप के लिए वैदिक मंत्र–

ओ३म् शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।

शय्योरभि स्रवन्तु नः॥

पौराणिक मंत्र–

नीलाअन्चनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।

छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामी शनैश्चरम्॥

बीज मंत्र–

'ओ३ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः॥'

सामान्य मंत्र–

'ओ३म् शं शनैश्चराय नमः॥'

इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य एक निश्चित संख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्याकाल तथा कुल संख्या 23000 होनी चाहिए।

उत्पत्ति–सभी पुराणों में शनि की उत्पत्ति छाया के गर्भ से व सूर्य के पुत्र के रूप में प्रदर्शित की गई है। आदि देव त्रयी (ब्रह्मा विष्णु महेश) में भगवान शंकर ने सृष्टि के नियमन व उसे अनुशासित करने हेतु गणों का जब प्रादुर्भाव किया तब भगवान भास्कर की एक पत्नी छाया के गर्भ से 9 पुत्रों ने जन्म लिया। उसमें शनि व यम ये भयोत्पादक दैवी शक्तियों के रूप में प्रकट हुये। शनि बड़े पुत्र हैं यम इनके अनुज हैं। सृष्टि को दण्डित करने का काम शनि और संहार का काम यम ने लिया दोनों ही शिव की सेवा में दत्तचित्त होने से शिवोपासना से नियंत्रित रहते हैं। ये दोनो कार्य शिवशक्ति से ही इन्हे प्राप्त है।

गाथाएं–शनि के बारे में अनेक गाथाएं व किवदन्तिया प्रचलित हैं। 1. शनि एवं हरिशचन्द्र 2. शनि एवं दशरथ, 3. शनि एवं विक्रमादित्य, 4. शनि एवं नल, 5. शनि एवं पिप्लाद मुनि, 6. शनि एवं श्री हनुमान 7. शनि एवं पाण्डेय, 8. शनि व शंकर का युद्ध। अलग-अलग पुराणों में भी अन्य भिन्न भिन्न गाथाएं दृष्टिगोचर होती हैं।

पुराणों की कथाओं से मन्तव्य–प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में शारीरिक कष्ट अर्थहीनता, मानहानि, काम में रुकावटें, पलायन, निष्कासन, कभी कारावास, दरिद्रता, विनम्र शत्रुभय रोग आदि दुःखद स्थितिया आती हैं, यह ध्रुव सत्य है। इनका निवारणकर्ता भी है और इसके कारण में शनि का हाथ किसी न किसी रूप में रहता है। इसकी प्रसन्नता व शुभ ग्रह संबंध से वैभव, ऐश्वर्य और धन धान्य से भी समृद्धि आती है। अतः इन कथाओं का ज्यादातर मन्तव्य है जगत् में अचानक आई आपत्तियों का निराकरण और जीवन को सुव्यवस्थित करना है।

जगत् में मानव के जीवन में सच्चे और झूठे का भेद समझाने की शक्ति यह शनि का विशेष गुण है क्योंकि विपत्ति कष्ट और निर्धनता ये सबसे बड़े गुरु व शिक्षक हैं। जब तक शनि की सीमा से प्राणी बाहर नहीं होता संसार में उन्नति संभव नहीं है

शनि दृष्टि–पुराणों में इसकी दृष्टि भयावह है ऐसे वर्णन मिलते हैं। इसकी दृष्टि अपने घर से तीसरे, सातवें और दसवें स्थान पर पूर्ण मानी गई है। वैसे एकपाद, द्विपाद, त्रिपाद, दृष्टिया भी पूर्णतया काम करती है। शनि जी की गाथाओं में आता है, "मेरी दृष्टि बुरी है, राजा को पूजा का करूं अकाज।"

आचार्य वरा मिहिर ने तो शनैश्चराध्याय लिखा है। उसमें शनि की विषमयी दृष्टि का वर्णन है। 1. पिता सूर्य पर दृष्टि पर पड़ी तो कुष्ठ रोग हो गया। 2. माता पार्वती के पुत्र पर पड़ी तो पुत्र का मस्तक कट गया जिससे गज मुख का जन्म हुआ। 3. सूर्य के सारथी पर पड़ी तो वह पगु हो गया तथा उसके घोडे अंधे हो गये ऐसी अनेक कथाएं दृष्टि के संबंध में विख्यात हैं। इसका कारण "ब्रह्म वैवर्तपुराण" में

इनकी पत्नी का श्राप है। तब से शनि प्राय: अधोदृष्टि से व्यवहार करते हैं। शनि को पुराणों में विष्णु भक्त बताया गया है अत: इनकी शक्ति से कृपा दृष्टि लोगों को मालामाल कर देती है शनि को धनप्रदाता माना गया है। यह आनंद व सुख सर्जक दृष्टि भी शुभ संबंध से देते हैं

शनि में त्यागमयी प्रवृत्ति होने से त्यागी, वैरागी व आध्यात्मिक लोग शनि प्रभाव से पूर्ण पाये जाते हैं। अत: यह केवल दु:ख ही नहीं सुख का सर्जक भी है। शनि जहां बैठता है वहां सुख करता है और जहां देखता है बिगाड करता है। यह एकान्त प्रिय है तथा सदा उदासीन रहता है।

शनि पनौती–राशि चक्र में यह सबसे दूर का ग्रह है। इसकी 1 राशि में परिक्रमा 29 वर्ष 5 मास 27 दिन 5 घटी में पूर्ण होती है। इसकी मध्यम गति 2 कला, 1 विकला, दैनिक गति 3 से 6 कला तक होती है दक्षिण ओर 2 अंश 49 कला रहता है। यह 140 दिन वक्री रहता है तथा वक्री होते समय और मार्गी होते समय 5 दिन सम्मित रहता है। यह बहुत चमकीला तथा प्रकाशमान नहीं है। इसकी गति मंद है। ढाई वर्ष की इसकी पनोती है। यह 30 मास में एक राशि बदलता है।

शनि का रंग–मत्स्य पुराण में कृष्णवर्णी शनि को नीलांजनसम का वर्णन किया गया है। मनोविज्ञान के आधार पर नीला रंग बल, पौरुष और वीर भाव का प्रतीक है। हमारे सिर पर विस्तृत आकाश नील वर्ण है। अत: शनि नीले रंग का होता है नीला रंग सहिष्णुता का प्रतीक है। यह सर्वव्यापक रंग होने से नीले रंग वाले पौरुष के प्रतीक होते हैं। यह नाटा भी है और कहीं इसका लम्बा कद भी मिलता है अत: नीलकण्ठ शिव शनि के आराध्य देव हैं। शिव भक्ति से शनि प्रसन्न होते हैं।

शनि का बलवत्ता–इसके मित्र ग्रह बुध, राहु, शुक्र हैं समग्रह बृहस्पति है। शत्रु सूर्य, चंद्र, मंगल हैं। दशम में शनि कारक है। षष्ठ व आठवें द्वादश का कारक है तुला, मकर व कुंभ राशि में स्त्रियों के स्थान में, विषुवत् के दक्षिण अयन में द्रेषाण में स्वगृह में, शनिवार को, अपनी दिशा में, दिन के अंत में राशि के अंत भाग में युद्ध समय में कृष्णपक्ष में वक्री होने के समय किसी भी स्थान में शनि बलवान होता है। यह मंगल से दूषित होता है शिशिर ऋतु इसको प्रिय है। शनि मूल त्रिकोण में कुंभ राशि का तुला के 20 अंश तक उच्च होता है शनि का मेष में नीच का स्वगृह मकर और कुंभ है वृषभ एवं तुला लग्नों में यह प्रधान ग्रह है।

इसका वास पश्चिम दिशा में है। 12वें भाव में शनि हर्षबली और 7वें में दिग्बली होता है।

रोगों का कारक तत्त्व–दांत दाहिना कान चौथे दिन का बुखार शनि ज्वर कोढ़ रक्तपित्त क्षय दाद फोड़े कामला अध्रगवायु कम्प निरर्थक भय पागलपन

जलोद, घुटनो के रोग, सन्धिवात अतिरक्तस्राव, हड्डी टूटना, लकवा, स्नायु दौर्बल्य गुप्तेन्द्रिय रोग, व्यसन गूंगापन पसीने की दुर्गंध के रोग, हाथी पाव इत्यादि होते हैं।

अन्य कारक तत्व—बैंक, ब्याज, धीरण धारण का धधा, मला, कारखाने मशीनरी के कार्य, आध्यात्म चिंतन, भूगर्भ, मिल मालिक, भागीदारी, प्रेस, कोयला, कंपनियां, कालेधन, खदानें, बीमा, लोहे की चीजें, तेल के व्यापारी, वैरागी, कृषि, विद्यालय, पुरात्व, स्नायुशास्त्र, न्यायालय, नगरनिगम, विधानसभा, जमींदार, स्मगलर, छोटे भाई बहिन, जेल, विदेश, मंत्री, इजैक्शन, नीच वर्ग, हड्डियों के डॉक्टर, झूठ बोलना, भ्रमण, पतन, तामसवृति, बुरे धंधे आदि।

शनि का स्वरूप—पंचागों में शनि की दोनों राशियों के दो स्वरूप हैं। मकर में मगरमच्छ और कुंभ में घड़ा हाथ में लिये पुरुष बताया गया है। अतः मगरमच्छ दुःख का प्रतीक है तो पुरुष अमृत तथा धन पौरुष का प्रतीक है।

मकर मे कद मध्यम, लम्बा या नाटा होगा। शनि बलवान हो तो लम्बा कद होता है। रग गेहुंआ या कालाश लिये हुए। नाक और मुंह कुछ बड़े व चौड़े। दांत चौडे, सुन्दर नेत्र, आंखो की भौंहों पर बड़े-बड़े बाल, सीने पर भी बड़े बड़े बाल, सिर बड़ा तथा सीना चौड़ा होता है। बड़े होने पर कुछ झुक कर चलें। कमर से पैर तक का भाग पतला होगा।

कुंभ में प्रायः लम्बा कद, रग गेहुआ, होंठ मोटे, गाल फूले हुए, कूल्हों व नितम्ब का हिस्सा भारी होता है। मोटी गरदन, सिर में गंजापन भी जल्द आता है। घड़े के आकार का शरीर होता है।

ये लोग भौतिक उन्नति मे विश्वास अधिक करते हैं तथा इनके पास गुप्त शक्ति होती है। गैर समझ खड़ी कर देते हैं। छिपकर पाप करते हैं। धन के लोभी होते हैं पर परिश्रमी अधिक होते हैं। प्रबल महत्वाकाक्षी होते हैं। उत्साही व जिम्मेदार होते हैं। इनकी मानसिक व आत्मिक शक्ति तीव्र होती है। मनोरजन तथा सुगंधित पदार्थों के शौकीन होते हैं। कठिनाइयों का सामना करने, श्रम व सेवा का ठोस भाव इनमें पाया जाता है। दूसरों को चोट पहुचाने में यह दक्ष होते हैं। विचारशील होते हैं पर जब तक कोई छेडे नहीं शांत रहते हैं। धर्म भीरू होते हैं। नवीन आविष्कार करने वाले होते हैं।

वायु तत्त्व प्रधान होते हैं बाहरी आवरण से धार्मिक पर पुण्य कर्म व ईश्वर के प्रति निष्ठा भी होती है। घूमने के शौकीन, भोजन के बाद शीघ्र आराम के इच्छुक, उच्चाभिलाषी होते हैं अपना पक्ष कमजोर देखें तो नम्र भी हो जाते हैं। लज्जाहीन होते हैं। इनके स्वभाव में ओछापन पाया जाता है। नीच वर्ग से प्रीतिवान होते हैं। इनको

स्मरण शक्ति प्रबल होती है। कोई इनका नुकसान कर तो बदला लेने में नहीं चूकते है। मन से डरपोक बाहर से अभिमानी होते है दूसरो को ठगने में इनकी रुचि होती है। यह अपना काम निकालने के लिए कुछ भी कर सकते है खरी-खोटी कहने में हिचकते नही हैं। भावुक भी होते हैं। आवश्यकता हो तो ही काम करते है। धन की व्यवस्था में प्रायः असफल रहते हैं, पर बाहरी चमक दमक म विश्वास नही रखते हैं। किसी भी काम को परिश्रम से पूरा करना इनकी विशेषता होती है पर विश्वास पात्र कम बनते है। इनकी आकस्मिक रूप से उन्नति और अवनति होती रहती है। प्रायः इनको संतान पक्ष की चिंता सताती रहती है। स्त्रियों से व्यवहार भी मुसाफिरी जैसा रहता है पर अधीनस्थ लोगों से काम कराने में चतुर होते हैं। यह हर काम मे सावधानी बरतते हैं। सभी इनकी प्रशंसा करें इसके ये इच्छुक होते हैं। प्रशंसक से काम भी निकाल लेते हैं।

शनि के अचूक फल

1. शनि की दृष्टि अपने घर के सिवाय सर्वत्र हानि करती है।
2. छठे और आठवे तथा बारहवें भाव का कारक शनि इन भावों में हो तो लाभ करेगा।
3. आठवें भाव मे शनि नीच का हो तो धनपति बनायेगा। शनि नीच का होकर वक्री हो तो करोड़ों का स्वामी बनायेगा।
4. शनि, मीन, मकर, तुला व कुंभ राशि में लग्नस्थ हो तो व्यक्ति चिंतनशील, सुखी एवं ख्याति प्राप्त होता है। पर भाग्योदय मंद गति से होता है।
5. वृषलग्न में शनि नवम या दशम भाव में हो तो राजयोग बनेगा। ऐसा शनि सूर्य व बुध षष्ठ संबंध में से कोई संबध कर ले तो अति योगप्रद होगा। अगर संयोग की जन्म राशि भी मकर या कुंभ हो तो उसको जब ढैया पनौती आयेगी तो वह लाभप्रद होगी। यदि अनिष्ट का कुछ प्रभाव गोचर से बनता है तो वह अंत में होगा, क्योंकि राजयोग कारी गृह प्रारंभ प्रभाव प्रबल होता है।
6. वर्ष प्रवेश के लग्न वृष या तुला हो तो शनि शुभ फल देगा। यदि पनौती उसे चल रही हो तो भी नाम पात्र का कष्ट होगा।
7. शुक्र+शनि मे अभिन्न मित्रता है। अतः वृष या तुलालग्न में शनि शुभ फल प्रदान करेगा
8. वर्ष में वृषलग्न हो और जलराशि मकर हो तो धनु व मीन का शनि अनिष्टप्रद रहेगा। मकर व कुम्भ का शनि शुभप्रद रहेगा

9. जन्म या वर्ष में वृषलग्न हो और शनि+गुरु योग बनता हो या शनि की बृहस्पति से प्रतियुति हो तो भाग्यनाशक योग होगा।
10. वृष या तुलालग्न हो और विंशोतरी शनि की महादशा चल रही हो साथ में पनौती भी आ जायें तो भी वह अधिक अनष्टिप्रद नहीं होगी।
11. शनि में शुक्र की महादशा या शुक्र में शनि की दशा हमेशा अनिष्टप्रद होगी
12. नीचस्थ या वक्री गोचर का शनि जब जन्म राशिगत हो तो अनिष्टप्रद होगा
13. शनि प्रायः राशि के अंत में फल देता है। सिंह लग्नस्थ शनि मंगल से दूषित हो तो जातक अपघात, आकस्मिक मृत्यु, कारावास या रिश्वत के आरोप में पकड़ा जाता है
14. शनि+सूर्य का योग पितृ स्थान मे होने से पिता से द्वेष व शत्रुता बढ़ता है।
15. चंद्र+शनि युति कर्क राशि में उत्साहहीनता व व्यसन देती है। चंद्र+शनि युति सिंह राशि में बड़ों से विवाद कराती है। चंद्र+शनि युति मेष राशि में होने से झगड़े करवाती है।
16. चंद्र+शनि युति अनिष्टप्रद है। इससे जीवन का उत्साह ओज, कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है। यह यश रोकता है।
17. सूर्य से 5, 6, 8, 9 भाव में राशि पर शनि आएं तो अनिष्टकारी होगा।
18. जन्म मे शनि स्थित राशि में या उससे छठवे आठवें स्थान या त्रिकोण में गोचर का बृहस्पति आए तो अनिष्ट करेगा
19. जन्मकालिक सूर्य से सप्तम स्थान पर गोचर का शनि आए तो रोगग्रस्त करेगा
20. जन्मकालीन बुध तथा चंद्रमा यदि गोचर का शनि अपनी दसवीं दृष्टि से देखे तो अनिष्ट अवश्य करेगा।
21. जन्म कालिक मंगल तथा शनि स्थित राशियों पर अथवा उससे सप्तम स्थान की राशि पर ग्रहण आए तो जीवन में संकट आते हैं।
22. अष्टमेश स्थित राशि पर गोचर का शनि विशेष अनिष्ट करता है।
23. जन्म की विंशोतरी दशा से चौथी दशा शनि की हो तो अनिष्टप्रद होती है।
24. मीन, तुला और धनु राशि का शनि लग्न में हो तो जातक समृद्धशाली होता है।
25. लग्न का शनि राशि 1, 2, 5, 10 का हो या 4, 8 12 राशि का हो तो भाषण शक्ति में बाधा करेगा।
26. शनि चतुर्थेश होकर दशम भाव में बैठे तो मनुष्य छोटी स्थिति से उठकर महान् पदवी प्राप्त करेगा।
27. शनि लग्नेश या अष्टमेश होकर बली हो तो दीर्घासुख देगा।

28. शनि की दृष्टि द्वितीय भाव, भावेश, पंचम भाव भावेश अथवा बुध पर हो तो अल्प विद्या या विघ्न युक्त विद्या प्राप्ति होगी।
29. एकादश भवन में स्थित शनि मनुष्य की मृत्यु सन्निपात व स्नायु रोगों से कराता है।
30. मकर अथवा कुंभलग्न का स्वामी शनि यदि कुण्डली में पीड़ित हो तो जंघाओं में कष्ट देगा।
31. सप्तमेश शनि हो और सप्तम भाव तथा शुक्र पर उसकी शुभ दृष्टि हो तो विवाह देरी से होता है।
32. पंचमेश शनि बलवान हो तो लड़कियों की भरमार रहती है,
33. शनि चंद्र पर अपनी दृष्टि का प्रभाव डाले तो जातक वैरागी होगा।
34. चतुर्थेश शनि बलवान हो तो जमीन जायदाद का सुख प्राप्त होगा।
35. नीच राशि में शनि प्रायः नौकरी करवाता है।
36. शनि+सूर्य युति पिता पुत्रों में मनोमालिन्य रखती है। अलग फल होते है, पर अष्टम भाव में दरिद्रता बनती है। यह युति पिता व पुत्रों में से एक को हानि देती है।
37. शनि+चंद्र युति योग माता पुत्र में मनोमालिन्य देता है पर अलग अलग भावों में अलग अलग फल प्राप्त होता है फिर भी अष्टम भाव में जलोदर योग बनता है।
38. शनि+मंगल की युति भयंकर अवरोध योग है। अलग-अलग भावों में अलग पर पावें तो सम्पत्ति नष्ट होती है।
39. शनि+बुध युति योग इसमें व्यक्ति अन्वेषक होता है, पर निर्णय लेने में अस्थिरता रहती है। अष्टम स्थान दीर्घायुज बनती है।
40. शनि+गुरु युति योग इसके विचित्र परिणाम प्राप्त होते है सुयश, सम्पत्ति व संतति में से एक का अभाव रहेगा। वंशभ्रम की ज्यादा संभावना।
41. शनि+राहु युति योग महाविचित्र परिणाम आते हैं। आयु के 42वें वर्ष में भाग्योदय होता है। अकस्मात धन प्राप्ति व हानि होती है।

उपचार

1. महामृत्युंजय जप या शिव का जाप करें।
2. अमोघ शिवकवच का पाठ करें

3. शनि सबंधी व्रत व कथा पढ़े
4. नीलम रत्न के साथ में पन्ना भी धारण करें, ये रत्न 5 वर्ष धारण करने के बाद प्रभावहीन हो जाते हैं।
5. मछलियों को आटे की गोलियां चुगाएं।
6. अपने खाने का अंतिम ग्रास बचाकर उसे कौवे को दे
7. शनि संबंधी दान दें। यथा (उड़द, लोहा, तेल, चमड़ा, पत्थर शराब, स्प्रिट)
8. नित्य कीडी नगरा सींचे
9. हर शनि एवं मगल को काले कुत्तो को मीठा दें।
10. काले कुत्ते को तेल में चुपड़ी रोटी मिष्टान रखकर हर शनिवार को खिलाएं।
11. दशरथकृत शनि स्रोत का पाठ करें।
12. नित्य सूर्योदय के समय सूर्य दर्शन करते समय यह श्लोक 7 बार पढ़ें।
सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशलाक्षा शिनप्रिरा: मंदचार: प्रसन्नात्मा पीडा दहतु में शनि।
13. श्री वीर भगवान ताड़क का प्रयोग करें।
14. शनिवार को अपने हाथ के नाप का 19 हाथ काला धागा श्री माला बनाकर पहनें।
15. शनि पाताल क्रिया करें
16. शनि को नक्षरों और काले कुत्ते को लड्डू खिलाएं।
17. प्रत्येक शनिवार को वट एवं पीपल के वृक्ष तले सूर्योदय से पूर्व कड़वे तेल का दीपक जलाकर शुद्ध दूध अर्पित करें।
18. व्रत का उद्यापन अवश्य करें, उसमें 33 ब्राह्मणो को भोजन कराना उत्तम होता है।
19. किसी शनिवार से आरम्भ करें 21 दिन में इस मंत्र का 23000 बार जाप करें या कराएं।
ओइम् प्रां प्रीं प्रौं स शनैश्चराय नमः।
अंत मे शनि की वस्तुओ को दान में दें। हवन करें।
20. वीर विक्रमादित्य व शनि की कथा का रोज पाठ करें।

❑❑❑

शनि का खगोलीय स्वरूप

बृहस्पति के बाद बड़े ग्रहों मे शनि का स्थान है. नील वर्ण का यह ग्रह सूर्य से 1,42,60,00,00 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। शनैःचर अर्थात् मन्द गति से चलने वाला यह ग्रह 29 वर्षो मे सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है. शनि आकार मे केवल बृहस्पति से ही छोटा है। इसका व्यास 1,20,500 कि.मी. है। इसका बृहस्पतित्व पृथ्वी के बृहस्पतित्व से 65 गुणा अधिक है। नौ चद्रमा शनि ग्रह की परिक्रमा करते है, उनमें से छठा चद्र मन्दी सबसे बड़ा होता है। शनि ग्रह अस्त होने के 3 दिन बाद उदय होता है। उदय के १३५ दिन बाद यह मार्गी होता है। मार्गी के 105 दिन बाद यह पश्चिम में पुनः अस्त हो जाता है। शनि को कोण, अर्कपुत्र, छायात्मज, असित, नील, मन्द, खंज आदि नाम दिये गये हैं।

शनि की गति–शनि ग्रह सूर्य का परिक्रमा 29 वर्ष 5 महीने 16 दिन, 23 घण्टा और 16 मिनट में करता है। यह अपनी धुरी पर 17 घण्टा 14 मिनट 24 सैकड मे एक चक्कर लगाता है। स्थूल मान से यह एक राशि पर 30 महीना, एक नक्षत्र पर 400 दिन और एक नक्षत्र पाद पर 100 दिन रहता है। यह प्रति वर्ष चार महीने वक्री और आठ महीने मार्गी रहता है। सूर्य से 15 डिग्री अश की दूरी पर शनि ग्रह अस्त हो जाता है अस्त होने के 38 दिन बाद उदय होता है। उदय के १३५ दिन बाद मार्गी होता है और मार्गी के 105 दिन बाद पश्चिम दिशा में पुनः अस्त हो जाता है। यह प्रायः 140 दिन तक भी वक्री रह जाता है तथा वक्री होने के 5 दिन आगे या पीछे तक यह स्थिर रहता है।

गणितागत स्पष्टीकरण से जब यह सूर्य से चौथी राशि को समाप्त करता है तो वक्री हो जाता है। जब वक्री से 120 डिग्री अश चलता है तो मार्गी हो जाता है। जब इसकी गति 7/45 की होती है तब यह अतिचारी हो जाता है। सूर्य से दूसरी और बारहवी राशि पर शीघ्रगामी, तीसरी और ग्यारहवीं पर समाचारी, चौथी पर मन्दचारी, पाचवी और छठी पर वक्री, सातवीं और आठवीं पर अति वक्री तथा नवमी और दसवी पर कुटिल गति वाला होता है।

❑❑❑

कुंभलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

कुंभलग्न का स्वरूप

कुंभः कुंभी नरो बभ्रुवर्णो मध्यतनुर्द्विपात्।
द्युवीर्यो जलमध्यस्थो वातशीर्षोदयी तम.॥21॥
शूद्र पश्चिमदेशस्य: स्वामी दैवाकरिः स्मृतः।

–बृहत्पाराशरा होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 21

घड़ा लिये हुए पुरुष, भूरे वर्ण मध्य देह द्विपद, दिनबली, जलचारी, वायु तत्त्व, शीर्षोदय, तमोगुणी, शूद्र जाति, पश्चिमदिक् स्वामी है, इसका स्वामी शनि है।॥21॥

करभगलः सिरालखररोमशदीर्घतनुः,
पृथुचरणोरुपृष्ठजघनास्य कटिर्जरठः।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः,
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृद् घटजोऽध्वसहः॥11॥

–बृहज्जातकम् अ. 16/श्लो. 11

कुंभ में चंद्रमा रहने पर जातक लम्बी गर्दन वाला, दिखती नसों वाला, मोटे या कठोर रोमों वाला, लम्बे चौड़े शरीर वाला बड़े पैर, बड़ी जांघों, चौड़ी कमर, बड़ा मुह व मोटी कटि (बेल्ट बांधने की जगह) वाला, कठोर, दूसरे की स्त्री, दूसरे के धन का चाहने वाला पाप कार्यों में लगा रहने वाला घटती बढ़ती अर्थात् अस्थिर या अनियमित आर्थिक स्थिति वाला, सजने-संवरने का शौकीन, मित्रों को प्यार करने वाला तथा रास्ते की थकावट को सहन कर लेने वाला अर्थात् पैदल यात्राएं करने में सक्षम होता है।

कुंभस्य लग्ने पुरुषोऽभिजातश्चलस्वभावः स्थिरसौहृदश्च:
प्रभूतधान्यार्थयुतः प्रचण्डो लुब्धोऽन्यनारीरतिलालश्च॥11॥

–वृद्धयवन जातक अ. 24/श्लो.11/ पृ.289

यदि जन्म समय में कुंभलग्न का उदय हो रहा हो तो मनुष्य कुलीन, चंचल स्वभाव वाला, पक्की मित्रता करने वाला, खूब धन धान्य से परिपूर्ण, प्रचण्ड स्वभाव वाला, लोभी स्वभाव युक्त, अन्य स्त्री से रतिक्रिया की लालसा रखने वाला होता है।

अन्तःशठः परवधूरतिकेलिलोलः

कार्पण्यशीलधनवान् घटलग्नजातः।

—जातक पारिजात श्लो. 11/ पृ. 678

जिसके हृदय में शठता हो, दूसरों की स्त्रियों से रमण करने के लिये जिसका चित्त सदैव चंचल रहे, कृपण, धनी।

स्त्रीमानयशोभूतिः स्फीतप्रभवो घटस्याद्ये।

प्राशुः कर्मसु निष्ठो धनवान्नृपसेवको जातः॥

—सारावली श्लो. 10/ पृ. 466

यदि जन्म लग्न में कुंभ राशि व कुंभ राशि का प्रथम द्रेष्काण हो तो जातक स्त्री, सम्मान, यश, ऐश्वर्य पराक्रम से युक्त, उन्नत, कर्मठ, धनी और राजसेवक होता है।

कुंभलग्ने नरे जातोऽचलचित्तोऽति सौहृदः।

परदाररतो नित्यं मृदुकार्ये महासुखी॥

—मानसागरी अ. 1/ श्लो. 12

कुंभलग्न वाला जीव धरी गंभीर, स्थिर गतिशील, स्पष्टवादी, कामवासना से पूर्ण परिपूर्ण मनोवृत्ति वाला, भौतिकतावादी, सुखभोक्ता, मित्रप्रेमी, आडम्बरशील होता है।

भोजसंहिता

कुंभराशि का अधिपति शनि है। शनि पाप ग्रह है तथा उसका रंग काला होता है। कुंभ राशि वाला व्यक्ति प्रायः मध्यम कद का, गेहुएं वर्ण, गोल सिर, फूले हुए नथुने व गाल वाला, दीर्घकाय तोंद युक्त, गंभीर वाणी बोलने वाला व्यक्ति होता है यह राशि पुरुष जाति, स्थिर संज्ञक व वायुतत्त्व प्रधान होती है। सो इस राशि वाले पुरुष का प्राकृतिक स्वभाव विचारशील, शान्त चित्त, धर्मभीरू तथा नवीन आविष्कारों का प्रजनन है।

कुंभ राशि का चिह्न जल से परिपूर्ण घट है। अतः इस राशि वाले पुरुष की आकृति घड़े के समान गोल व वाणी घट के समान गभीर व गहरी होती है। ऐसे

व्यक्ति प्रायः बाहरी दिखावे मे ज्यादा विश्वास रखते हैं ये भीतर से खोखले व बाहरी दिखावे में सुंदर दिखलाई पड़ते हैं।

यदि आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र में है तो आप भीतर ही भीतर कष्ट सहते हैं परन्तु बाहर उसकी आह तक नही निकालते। ये पूर्णतः रहस्यवादी व्यक्ति होते हैं। व्यापारी क्षेत्र मे अपनी पूंजी का फैलाव सही पूंजी से कई गुना अधिक करते है। इनकी वास्तविकता को पहचान पाना बड़ा कठिन हो जाता है। ये बड़ा से बड़ा जोखिम लेने में नही हिचकिचाते।

सामान्यतया कुंभलग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ, बलवान एवं चंचल होते हैं परन्तु इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है जिससे अन्य जन इनसे प्रभावित रहते हैं ये स्वभाव से ही प्रगतिशील एवं क्रांतिकारी विचारधारा से युक्त होते है तथा पुराने रीति रिवाजों को कम ही स्वीकार करते हैं। अन्य जनों के प्रति इनके मन में स्नेह एवं सहानुभूति का भाव विद्यमान रहता है तथा धार्मिकता की भावना में अल्पता रहती है एवं यह आधुनिकता से परिपुष्ट विचारो के होते हैं। साहित्य एवं कला में रुचि के साथ-साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं।

इनका सांसारिक दृष्टिकोण विशाल होता है तथा इनके हृदय में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं रहता है। अध्ययन के प्रति इनकी रुचि रहती है तथा परिश्रम पूर्वक विभिन्न शास्त्रों का ज्ञान अर्जित करके एक विद्वान के रूप में सामाजिक मान-प्रतिष्ठा एवं सम्मान अर्जित करते हैं। अवसरानुकूल इनको नेतृत्व का भी अवसर प्राप्त हो जाता है। ये भावुकता से कोई भी काम नहीं करते तथा बुद्धिमत्तापूर्वक सोच समझकर अपने कार्यों को सम्पन्न करते हैं अतः धनैश्वर्य वैभव एव भौतिक सुख ससाधनो को अर्जित करके आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ्य एव बलवान होंगे परन्तु मन में अस्थिरता का भाव होगा आप अपनी विद्वता एव बुद्धिमत्ता से शुभ एव महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमे सफलता अर्जित करेंगे फलतः आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त रहेंगे। आपकी दृष्टि भी सूक्ष्म रहेगी तथा अन्य जनों को प्रभावित करके उनके विषय मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। आप मे पराक्रम में तेजस्विता का भाव भी रहेगा। फलतः अपने सांसारिक महत्त्व के कार्य कलापों को आप परिश्रम से सम्पन्न करेंगे तथा उनमें सफलता प्राप्त करेंगे जिससे भौतिक सुख ससाधनों तथा अन्य ऐश्वर्य से आप युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। लेकिन यदा कदा उग्रता के प्रदर्शन से आपको अनावश्यक समस्याओ तथा परेशानियां का सामना करना पड़ सकता है

आर्थिक रुप से आपकी स्थिति सामान्यतया अच्छी रहेगी तथा आप आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप भ्रमण या यात्रा के भी प्रिय होंगे तथा अवसरानुकूल भ्रमण तथा यात्रा आदि पर अपना काफी समय व्यतीत करेंगे। साथ ही व्यय भी आप मुक्त भाव से करेंगे लेकिन उत्तम आय होने के कारण इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा.

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी परन्तु धार्मिक कार्य-कलापों एवं अनुष्ठानों को आप अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। लेकिन यदा कदा तीर्थ यात्रा को आप सम्पन्न कर सकते हैं इस प्रकार आप पराक्रमी बुद्धिमान एवं परिश्रमी पुरुष होंगे तथा भौतिक सुखों का उपभोग करते हुए आनन्दपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे

कुंभ राशि शीर्षोदय व तमोगुणी राशि है। इस राशि वाले गुस्सा कम करते हैं, और करते हैं तो फिर गांठ बांध लेते हैं। आप एकान्त प्रिय व्यक्ति हैं तथा कुछ स्वार्थी भावनाओं से परिपूर्ण हैं, अगर आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र में हुआ है तो आप सर्वदा सरल स्वभाव वाले, उदार हृदय व स्नेहयुक्त व्यवहार से कीर्ति पाने वाले व्यक्ति हैं अगर आप व्यापार वर्गीय व्यक्ति हैं तो आपके हेतु निश्चित वाहन योग 36 वर्ष की अवस्था में बनता है

कुंभलग्न दिवाबली व पश्चिम दिशा का स्वामी है। इस राशि से पेट के भीतरी भागों पर विचार किया जाता है आपका स्वभाव मृदु व सरल एवं सद्गुणों से पूर्ण है परन्तु संकोचशीलता आपकी कमी है। आपको प्रतिपल एक वहम सा रहता है। आप ऐसा सोचते हैं कि अन्य व्यक्ति आपसे ईर्ष्या कर रहे हैं और आप अकारण अजनबी से उलझ पड़ते हैं। यदि आपमें यह आदत विद्यमान है तो यह कभी भी खतरनाक साबित हो सकती है। यदि आपको किसी प्रकार के गन्दे ख्वाब आते हैं तथा अकारण खिन्नता महसूस होती हो एवं बनते कार्यों में दिक्कतें व रुकावट आती हो तो फौरन शनि मुद्रिका धारण करें। शनि मुद्रिका घोड़े के पैर की घुड़नाल से बनाई जाती है। यह लोहे की होती है, शनि का रत्न नीलम भी आपके लिए अत्यधिक अनुकूल व लाभप्रद रहेगा।

नक्षत्रानुसार फलादेश

गू गे	गो सा सी सु	से सो द
धनिष्ठा 2	शतभिषा 4	पूर्वाभाद्रपद-3

चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में

दातार्थ शूरो धनवांस्त्वरोगी,
गीतप्रियो वासव भे प्रजातः।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा धनिष्ठा नक्षत्र में स्थित हो तो व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और गीतप्रिय होता है।

धनिष्ठा नक्षत्र का स्वामी मंगल होता है। मंगल चंद्रमा का मित्र है अत: मित्र के नक्षत्र मे स्थित होकर चंद्रमा धनी और दाता और भोगी होगा ही। मंगल अपनी शूरवीरता भी देगा और भोगों की प्रवृत्ति भी। गीतप्रिय चंद्रमा के अपने स्वभाव के कारण होगा। सम्भवतया गायक न होगा।

धनिष्ठा का तृतीय पाद–धनिष्ठा के तृतीय पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो व्यक्ति भीरु होता है। नक्षत्र पाद का स्वामी शुक्र होता है और नक्षत्र स्वामी मंगल। दोनों शक्तिशाली ग्रह है। अत: उनका प्रभाव भीरु नहीं बना सकता। ऐसा प्रतीत होता है कि भीरु शब्द के पहले का 'अ' छूट गया है और तात्पर्य अभीरु से है।

धनिष्ठा का चतुर्थ पाद–धनिष्ठा के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा हो तो जातक महानारीवरो अर्थात् महान स्त्री का पति होता है। नक्षत्र स्वामी भी यहां मंगल है और नक्षत्र पाद स्वामी भी। अत: चंद्र जो स्त्री रुप है, मंगल के गुणों को प्रभूत मात्रा में लेकर व्यक्त होगा जो नारी को महा बनायेंगे। महाशक्ति और प्रभाव ही के अर्थ में हो सकता है क्योंकि मंगल के अनुरुप ही महानता भी होती है।

चंद्रमा शतभिषा नक्षत्र में

स्यात्स्पष्टवाक् साहसिकोऽबुपर्क्षे,

दुर्ग्राह्य इन्दौ व्यसनी जितारि:।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा शतभिषा नक्षत्र में हो तो जातक स्पष्ट वाणी वाला साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला, व्यसनो में लगा हुआ और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। जातक पारिजात ने भी इसी संदर्भ में मनुष्य का साहसी होना कहा है। व्यसनी आदि होना तो राहु के दानवी स्वभाव के कारण है, क्योंकि राहु इस नक्षत्र का स्वामी है। स्पष्टवाक् क्यों कहा, यह विचारणीय है। हमारे विचार में तो राहु के नक्षत्र में आकर चंद्रमा को इस वाणी संबंधित गुण में कमी प्राप्त करनी चाहिए थी, न कि वृद्धि

यदि आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र मे हुआ है तो आपकी ललित कलाओं मे विशेष रुचि होगी। आपमें वक्तृत्व व श्रेष्ठ लेखन शक्ति भी विद्यमान होगी। पिता की आकस्मिक मृत्यु से धन प्राप्ति के आसार बनते है। आप भय रहित व निर्मल आत्मा वाले व्यक्ति हैं। हां! आप खाने के शौकीन हैं व प्राय: आपकी खुराक आम व्यक्ति से जरा ज्यादा होनी चाहिए। आपको वैवाहिक सुख जरा देरी से मिलते है।

शतभिषा का प्रथम पाद—शतभिषा के प्रथम पाद में यदि जन्म समय में चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति अच्छा बोलने वाला (Orator) होता है। इस पाद का स्वामी बृहस्पति है जो कि वागीश नाम से प्रसिद्ध है और अच्छा वक्ता है चंद्रमा पर बृहस्पति के प्रभाव के कारण इसे 'वाग्मी' कहा गया है।

शतभिषा का द्वितीय पाद—शतभिषा के द्वितीय पाद में यदि जन्म समय में चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति धनी होता है। यहा नक्षत्र राहु का है और नक्षत्र पाद का स्वामी शनि है. दोनो पापी भी हैं और चंद्रमा के शत्रु भी। ऐसी स्थिति में वे धनदायक कैसे हो सकते है? यह विचारणीय है।

शतभिषा का तृतीय पाद—शतभिषा के तृतीय पाद में यदि जन्म समय पर में चंद्र स्थित हो तो मनुष्य सुखी होता है। नक्षत्र स्वामी राहु है और नक्षत्र पाद का स्वामी शनि। दोनों दु:खदायी हैं। अत: यह कैसे कहा जा सकता है कि व्यक्ति सुखी होगा। यह विषय विचारणीय है।

शतभिषा का चतुर्थ पाद—शतभिषा के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय पर में चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति पुत्रयुक्त होता है। यहा नक्षत्र पाद स्वामी बृहस्पति बनता है, इसलिए पुत्र प्राप्ति की बात उपयुक्त है।

चंद्रमा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में

उद्विग्नचित्तो धनवांस्त्वरोगी,
अजाधिके स्त्रीवजितो अदाता।

यदि जन्म समय पर चंद्रमा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में स्थित हो तो मनुष्य क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला और कंजूस होता है।

पूर्वा भाद्रपद बृहस्पति का नक्षत्र है। इसमें स्थित होकर चंद्रमा प्राय: शुभ प्रभाव के कारण है, स्त्री विजिता सम्भवतया इसलिए कि स्त्री ग्रह चंद्रमा शुभता को प्राप्त होकर स्त्री के गुणों का संचार करेगा जिसके फलस्वरूप स्त्री व्यक्ति का मन मोह लेगी उद्विग्न चित्तो क्यों कहा यह विचारणीय है क्योंकि बृहस्पति का प्रभाव मन रूपी चंद्रमा पर पड़कर मन में शान्ति उत्पन्न करेगा न कि उद्वेग।

अगर आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नामक नक्षत्र में हुआ है तो आपको हृदय रोग व रक्तचाप इत्यादि बीमारियों का भय रहेगा परन्तु यदि आपका जन्म 14 फरवरी से 13 मार्च के बीच में हुआ है तो आपको उपरोक्त बीमारियों से भय कम रहेगा परन्तु शायद आप सन्तान पक्ष से चिंतित विशेष रहते दिखलाई पड़ेंगे

पूर्वाभाद्रपद का प्रथम पाद–पूर्वाभाद्रपद के प्रथम पाद में यदि जन्म समय पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति शूरवीर और चोर होता है। यह नक्षत्र पाद मंगल के आधिपत्य में आता है जो चोर भी और वीर भी।

पूर्वाभाद्रपद का द्वितीय पाद–पूर्वाभाद्रपद के द्वितीय पाद में यदि जन्म पर चंद्र स्थित हो तो मनुष्य बुद्धि वाला होता है। यह नक्षत्र पाद शुक्र के आधिपत्य में है और नक्षत्र स्वामी बृहस्पति है, शुक्र और बृहस्पति दोनों बुद्धि में तीव्र हैं, दोनों आचार्य हैं। अतः महान बुद्धि का प्रभाव डालकर ये चंद्रमा को अपने अनुरूप बनाएंगे।

पूर्वाभाद्रपद का तृतीय पाद–पूर्वाभाद्रपद के तृतीय पाद में यदि जन्म पर चंद्र स्थित हो तो व्यक्ति पुर में रहने वाला होता है, ग्रामीण नहीं होता कारण यही है कि नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति भी पौर ग्रह है और नक्षत्र का स्वामी बुध भी।

❑❑❑

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
.. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/16/40/0	1	सू.	अ	0/30/0/0	1	गु.
चे	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.		–	–	–
चो	0/10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
ला	0/13/20/4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	म.	–	–	–	–
वृष राशि											
3. कृत्तिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चद्र)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	श.	ओ	1/13/20/0	1	म.	वे	0/26/40/1	1	सू.
उ	/6/40/0	3	श	वा	1/16.40/0	2	शु.	वो	0/30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.				
ए	./10/0/0	4	मं.	वू	1/23/20/0	4	च.	–	–		

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.
की	2/6/40/0	4	मं.

6. आर्द्रा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
कु	2/10/0/0	1	गु.
घ	2/13/20/0	2	श.
ड़	2/16/40/0	3	श.
छ	2/20/0/0	4	गु.

7. पुनर्वसु (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
के	2/23/20/0	1	म.
को	2/26/40/0	2	शु.
हा	2/30/0/0	3	बु.
—	—	—	—

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.
—	—	—	
	—	.	—
	-	—	—

8. पुष्य (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
हू	3/6/40/0	1	सू.
हे	3/10/0/0	2	बु.
हो	3/13/20/0	3	शु
डा	3/16/40/0	4	मं.

9. आश्लेषा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
डी	3/20/0/0	1	गु.
डू	3/23/20/0	2	श.
डे	3/26/40/0	3	श.
डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि											
10. **मघा** (केतु)				11. **पूर्वाफाल्गुनी** (शुक्र)				12. **उत्तरफाल्गुनी** (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	मं.	मो	4/16/40/0	1	सू.	टे	4/30/0/0	1	गु
मी	4/6.40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.				
मू	4/10/0/0	3	बु	टी	4/23/20/0	3	शु				
मे	4/13/20/0	4	च	टू	4/26/40/0	4	मं	–		.	–

कन्या राशि											
12. **उत्तराफाल्गुनी** (सूर्य)				13. **हस्त** (चंद्र)				14 **चित्रा** (मगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	म.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6/40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30/0/0	2	बु.
पी	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
	.	–	-	ठ	5/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

तुला राशि

14. चित्रा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.
री	6/6/40/0	4	मं.
–	–	–	–
–	–	–	

15. स्वाति (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
रू	6/10/0/0	1	गु.
रे	6/13/20/0	2	श
रो	6/16/40/0	3	श.
ता	6/20/0/0	4	गु.

16. विशाखा (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
ती	6/23/20/0	1	मं.
तू	6/26/40/0	2	शु.
ते	6/30/0/0	3	बु.
		-	

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	च.
		–	
–	–	–	–
–	–	–	

17. अनुराधा (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
ना	7/6/40/0	1	सू.
नी	7/10/0/0	2	बु.
नू	7/13/20/0	3	शु.
ने	7/16/40/0	4	मं.

18. ज्येष्ठा (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
नो	7/20/0/0	1	गु.
या	7/23/20/0	2	श.
यी	7/26/40/0	3	श.
यू	7/30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)

अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	म.
यो	8/6/40/0	2	शु.
या	8/10/0/0	3	बु.
यी	8/13/20/0	4	च.

18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
भू	8/16/40/0	1	सू.
धा	8/20/0/0	2	बु.
फा	8/23/20/0	3	शु.
ढा	8/26/40/0	4	मं.

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भे	8/30/0/0	1	गु.
-			
—	—		—
—	—	—	—

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)

अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.
जा	9/6/40/0	3	श.
जी	9/10/0/0	4	गु.
–		—	–

22. श्रावण (चंद्र)

अक्षर		चरण	स्वामी
खी	9/13/20/0	1	मं.
खू	9/16/40/0	2	शु.
खे	9/20/0/0	3	बु.
खो	9/23/20/0	4	चं.

23. धनिष्ठा (मगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गा	9/26/40/0	1	सू.
गी	9/30/0/0	2	बु.
—	—	—	—
—	—	—	—

कुंभ राशि

23. धनिष्ठा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गू	.0/3/20/0	3	शु.
गे	10/6/40/0	4	मं.
	–	–	–
–	–	–	–

24. शतभिषा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
गो	10/10/0/0	1	गु.
सा	10/13/20/0	2	श.
सी	10/16/40/0	3	श.
सू	10/19/0/04	4	गु.

26. पूर्वाभाद्रपद (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
से	10/23/20/0	1	मं.
सो	10/26/40/0	2	श.
दा	10/30/0/0	3	बु
–	–	–	–

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (बृहस्पति)

अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	च.
–	–	–	–
–		–	
–			

27. उत्तराभाद्रपद (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
दू	11/6/40/4	1	सू.
थ	11/10/0/0	2	बु.
झ	11/13/20/0	3	शु.
ञ्	11/16/40/0	4	गु.

28. रेवती (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
दे	11/20/0/0	1	गु.
दो	11/23/20/0	2	श.
चा	11/26.40/0	3	श.
ची	11/30/0/0	4	गु.

नक्षत्रों पर विशेष फलादेश

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
1	अश्विनी	चु,च,चो,ला	मेष	मगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु	सोना	सिंह 3 हि 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लू,ले,लो	मेष	मगल	गज	मनु	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वु.	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु	सोना	ग 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विप	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ङ,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु.	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विप	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरु	16
7	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मीढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विप	चांदी	मि 3 श्वा 1	शनि	19
9	आश्लेषा	डी,डू,डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विप	चांदी	श्वान	बुध	17
10	मघा	मा,मी,मू,मे	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा.	मो,टा,टी,टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	मध्य	चतु.	चांदी	मू. 3 श्वा 3	शुक्र	20
12	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रीय	मध्य	वायु	आद्य	चतु.	चांदी	श्वान	सूर्य	6
12.	उ. फा.	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13.	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चांदी	मू. 1 मी 1 श्वा 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
14	चित्रा	रा,री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	हरिण	मंगल	7
15.	स्वाति	रू,रे,रो,ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चांदी	हि 1 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मंगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युञ्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
17.	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मंगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प	शनि	19
18	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मंगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि 2 मूषक 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढ़ा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू 1 श्वान	शुक्र	20
21	उ षा	भ	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रीय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21	उ षा	भो जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22.	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	सि. 3 वि. 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड़	मंगल	7
25.	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा	से सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 1 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	युन्जा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26.	पूर्व भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दू,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

विभिन्न नक्षत्रों का ग्रहों के साथ सम्बन्ध

	क.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्विनी कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
	2	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5	मृगशिरा	चन्द्र	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	अदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	0.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	11.	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
	2	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13	हस्त	सूर्य	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
धनु	19	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	2 .	उ. षा.	विश्वदेवा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22.	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23.	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	24	शताभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
कुंभ	25.	पू. भा.	अजकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
मीन	27	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

कुंभलग्न पर अंशात्मक फलादेश

कुंभलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–13/3/20/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सिंह
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–वसु
10. वर्णाक्षर–गू
11. वर्ग–बिलाव
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–मंगल
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'भीरु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप थोड़ी डरपोक प्रवृत्ति के होंगे। धनिष्ठा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु और लग्न नक्षत्र मंगल का भी शत्रु है। फलत: यहां शुक्र की दशा में अपेक्षित लाभ नहीं मिल पायेगा। शनि की दशा मिश्रित फल देगी।

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अंश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है, कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से उसका विकास रुका हुआ रहेगा।

कुंभलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा
2. नक्षत्र पद–3
3. नक्षत्र अंश–13/3/20/0

4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गू
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भीरु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में होने से आप थोड़ी डरपोक प्रवृत्ति के होंगे। धनिष्ठा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु और लग्न नक्षत्र मंगल का भी शत्रु है। फलतः यहां शुक्र की दशा में अपेक्षित लाभ नहीं मिल पायेगा। शनि की दशा मिश्रित फल देगी।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से **'उदित अंशों'** का है, बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। कुंभ राशि शनि 20 अंशों तक मूलत्रिकोणी होता है। अतः शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 2 से 3

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–10/3/20/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गू
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'भीरु'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के तृतीय चरण में

होने से आप थोड़ी डरपोक प्रवृत्ति के होंगे। धनिष्ठा के तृतीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु और लग्न नक्षत्र मंगल का भी शत्रु है फलतः यहां शुक्र की दशा में अपेक्षित लाभ नहीं मिल पायेगा शनि की दशा मिश्रित फल देगी।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है यहां लग्न 20 अंशों से कम होने पर लग्न बलवान होने से, लग्नेश शनि की दशा में जातक की उन्नति होगी।

कुंभलग्न, अंश 3 से 4

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–10/3/20/0 से 10/6/40/0

4. वर्ण–वैश्य **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–सिंह **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–अन्त्य **9. नक्षत्र देवता**–वसु

10. वर्णाक्षर–गे **11. वर्ग**–बिलाव

12. लग्न स्वामी–शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–स्व **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व

18. प्रधान विशेषता–'महानारीवरो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता धनी, शूरवीर भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से शास्त्रों के अनुसार आप महान् नारी के पति होंगे। धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी भी मंगल है। फलतः मंगल की दशा राजयोग प्रदाता होगी तथा जातक का पराक्रम बढ़ायेगी। शनि की दशा में उन्नति होगी।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से उदित अंशों में बलवान है लग्न उदित अंशों में होने से, लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी होता है। अतः शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–धनिष्ठा **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–10/3/20/0 से 10/6/40/0

4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गे
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व
18. **प्रधान विशेषता** -'महानारीवरः'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है। ऐसा व्यक्ति दाता, धनी, शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से शास्त्रों के अनुसार आप महान् नारी के पति होंगे। धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी भी मंगल है, फलत मंगल की दशा राजयोग प्रदाता होगी। जातक का पराक्रम बढ़ायेगी। शनि की दशा में उन्नति होगी।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से में बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 5 से 6

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/3/20/0 से 10/6/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–गे
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.
18. **प्रधान विशेषता**–'महानारीवरः'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है. ऐसा व्यक्ति दाता, धन
शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण
होने से शास्त्रों के अनुसार आप महान् नारी के पति होंगे। धनिष्ठा नक्षत्र के चतु
चरण का स्वामी मंगल है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी भी मंगल है। फलतः मंगल की द
राजयोग प्रदाता होगी जातक का पराक्रम बढ़ायेगी। शनि की दशा में उन्नति होग

लग्न यहां पांच से छः अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अ
में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक श
मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फल
लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–धनिष्ठा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/3/20/0 से 10/6/40/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–वसु
10. **वर्णाक्षर**–ग
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–मंगल
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स
18. **प्रधान विशेषता**–'महानारीवरो'

धनिष्ठा नक्षत्र का देवता वसु एवं स्वामी मंगल है. ऐसा व्यक्ति दाता, धन
शूरवीर, भोगी और संगीतप्रिय होता है। आपका जन्म धनिष्ठा नक्षत्र के चतुर्थ चरण
होने से शास्त्रों के अनुसार आप महान् नारी के पति होंगे। धनिष्ठा नक्षत्र के चतु
चरण का स्वामी मंगल है तथा लग्न नक्षत्र स्वामी भी मंगल है। फलतः मंगल की द
राजयोग प्रदाता होगी तथा जातक का पराक्रम बढ़ायेगी। शनि की दशा में उन्नति होगी

यहां लग्न छह से सात अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अं
में होने से लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों त
शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है. यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है
फलतः लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी

कुंभलग्न, अंश 7 से 8

1. **लग्न नक्षत्र**–शतभिषा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–10/6/40/0 से 10/10/0/0
4. **वर्ण** -वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–वरुण
10. **वर्णाक्षर**–गो
11. **वर्ग**–बिलाव
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'वाग्मी

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवाणी वाला, साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला, व्यसनों में लगा हुआ और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से ऐसा जातक 'वाग्मी' कुशल वक्ता होता है। शतभिषा के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति होता है। बृहस्पति लग्नेश शनि का शत्रु है। बृहस्पति लग्न नक्षत्र स्वामी राहु का भी शत्रु है। फलतः बृहस्पति की दशा यहां अपेक्षित लाभ नहीं दे पायेगी बृहस्पति में राहु व शनि का अन्तर कष्टदाई होगा परन्तु राहु की स्वतंत्र दशा उत्तम फल देगी

यहा लग्न सात से आठ अंशों के भीतर होने से **उदित अंशों** में है, बलवान है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहा शनि की दशा शुभ फल देगी, जातक की उन्नति करायेगी।

कुंभलग्न, अंश 8 से 9

1. **लग्न नक्षत्र**–शतभिषा
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–10/6/40/0 से 10/10/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–वरुण

10. **वर्णाक्षर**–गो

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'वाग्मी'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवाणी वाला, साहसी, मुश्किल मे काबू मे आने वाला, व्यसनों में लगा हुआ और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है, शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से ऐसा जातक 'वाग्मी' कुशल वक्ता होता है। शतभिषा के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति होता है, बृहस्पति लग्नेश शनि का शत्रु है बृहस्पति लग्न नक्षत्र स्वामी राहु का भी शत्रु है। फलतः बृहस्पति की दशा यहा अपेक्षित लाभ नहीं दे पायेगी। बृहस्पति मे राहु व शनि का अन्तर कष्टदाई होगा परन्तु राहु की स्वतत्र दशा उत्तम फल देगी।

लग्न यहा आठ से नौ अशो के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अशो म होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुभ राशि के 20 अशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहा लग्न 20 अंशो के भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश शनि की दशा अतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 9 से 10

1. **लग्न नक्षत्र**–शतभिषा

2. **नक्षत्र पद**–1

3. **नक्षत्र अंश**–10/6/40/0 से 10/10/0/0

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–अश्व

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–वरुण

10. **वर्णाक्षर**–गो

11. **वर्ग**–बिलाव

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'वाग्मी'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है ऐसा जातक स्पष्टवाणी वाला, साहसी मुश्किल से काबू मे आने वाला व्यसनों म लगा हुआ और शत्रुओं

पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। शतभिषा नक्षत्र के प्रथम चरण में जन्म होने से ऐसा जातक 'वाग्मी' कुशल वक्ता होता है शतभिषा के प्रथम चरण का स्वामी बृहस्पति होता है। बृहस्पति लग्नेश शनि का शत्रु है। बृहस्पति लग्न नक्षत्र स्वामी राहु का भी शत्रु है। फलत: बृहस्पति की दशा यहा अपेक्षित लाभ नहीं दे पायेगी। बृहस्पति में राहु व शनि का अन्तर कष्टदाई होगा परन्तु राहु की स्वतत्र दशा उत्तम फल देगी।

लग्न यहां नौ से दस अशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहा लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 10 से 11

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–10/10/0/0 से 10/13/20/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–अश्व
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–वरुण
10. वर्णाक्षर–ता
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'श्रीमान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवाणी वाला, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म होने से आप अपने समाज के अग्रगण्य धनवानों में गिने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अत: शनि की दशा शुभ फल देगी। यहां राहु की स्वतत्र दशा भी अत्यन्त शुभफल देगी परन्तु राहु में शनि या शनि मे राहु की अंतर्दशा शत्रु तुल्य कष्ट देगी।

यहा लग्न दस से ग्यारह अशों के भीतर '**आरोह अवस्था**' में है। पूर्ण बली है। लग्नेश शनि की दशा अति उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि

मूलत्रिकोणी कहलाता है। अत: शनि की दशा में जातक की उन्नति होगी। उसका सम्पूर्ण विकास होगा।

कुंभलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–10/10/0/0 से 10/13/20/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–अश्व
7. गण–राक्षस
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–वरुण
10. वर्णाक्षर–ता
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'श्रीमान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने से आप अपने समाज के अग्रगण्य धनवानों में गिने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अत: शनि की दशा शुभ फल देगी। यहां राहु की स्वतंत्र दशा भी अत्यन्त शुभ फल देगी परन्तु राहु में शनि या शनि में राहु की अंतर्दशा शत्रु तुल्य कष्ट देगी।

यहां लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–10/10/0/0 से 10/13/20/0
4. वर्ण–वैश्य
5. वश्य–द्विपद

6. योनि—अश्व	7. गण—राक्षस

8. नाड़ी—आद्य	9. नक्षत्र देवता—वरुण

10. वर्णाक्षर—ता	11. वर्ग—सर्प

12. लग्न स्वामी—शनि	13. लग्न नक्षत्र स्वामी—राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि	15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु	17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'श्रीमान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एव स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने से आप अपने समाज के अग्रगण्य धनवानों में गिने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि लग्नेश भी है अतः शनि की दशा शुभ फल देगी। यहां राहु की स्वतंत्र दशा भी अत्यन्त शुभ फल देगी परन्तु राहु में शनि या शनि मे राहु की अंतर्दशा शत्रु तुल्य कष्ट देगी।

यहां लग्न बारह से तेरह अंशों के भीतर होने से बलवान है. लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अशो तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अशो भीतर होने से बलवान है। फलतः लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र—शतभिषा	2. नक्षत्र पद—3

3. नक्षत्र अंश—10/13/20/0 से 10/16/40/0

4. वर्ण—वैश्य	5. वश्य—द्विपद

6. योनि—अश्व	7. गण—राक्षस

8. नाड़ी—आद्य	9. नक्षत्र देवता—वरुण

10. वर्णाक्षर—ती	11. वर्ग—सर्प

12. लग्न स्वामी—शनि	13. लग्न नक्षत्र स्वामी—राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि	15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु	17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'सुखी'

शतभिषा नक्षत्र के देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल में काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आप अपने समाज के सुखी व सम्पन्न व्यक्ति माने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है तथा लग्नेश भी शनि है फलतः शनि की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक रहेगी राहु की स्वतंत्र दशा शुभ पर राहु में शनि अथवा शनि में राहु की अंतर्दशा अशुभ फल सूचक रहेगी।

यहां लग्न तेरह से चौदह अंशों के मध्य है। **'आरोह अवस्था'** में है, पूर्ण बली है। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी होता है फलतः शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

कुंभलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–शतभिषा | **2. नक्षत्र पद**–3

3. नक्षत्र अंश–10/13/20/0 से 10/16/40/0

4. वर्ण–वैश्य | **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–अश्व | **7. गण**–राक्षस

8. नाड़ी–आद्य | **9. नक्षत्र देवता**–वरुण

10. वर्णाक्षर–ती | **11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–शनि | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'सुखी'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। ऐसा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आप अपने समाज के सुखी व सम्पन्न व्यक्ति माने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है तथा लग्नेश भी शनि है फलतः शनि की दशा-अंतर्दशा उन्नतिदायक रहेगी। राहु की स्वतंत्र दशा शुभ पर राहु में शनि अथवा शनि में राहु की अंतर्दशा अशुभ फल सूचक रहेगी।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि

मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहा लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है फलत: लग्नेश शनि की दशा-अतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र—शतभिषा **2. नक्षत्र पद**—3

3. नक्षत्र अंश—10/13/20/0 से 10/16/14/0

4. वर्ण—वैश्य **5. वश्य**—द्विपद

6. योनि—अश्व **7. गण**—राक्षस

8. नाड़ी—आद्य **9. नक्षत्र देवता**—वरुण

10. वर्णाक्षर—सी **11. वर्ग**—सर्प

12. लग्न स्वामी—शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—राहु

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शनि **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'सुखी'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण मे होने के कारण आप अपने समाज के सुखी व सम्पन्न व्यक्ति माने जायेंगे। शतभिषा नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है तथा लग्नेश भी शनि है फलत: शनि की दशा-अतर्दशा उन्नतिदायक रहेगी। राहु की स्वतत्र दशा शुभ पर राहु में शनि अथवा शनि में राहु की अंतर्दशा अशुभ फल सूचक रहेगी

लग्न यहा पन्द्रह से सोलह अंशो के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशो तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र—शतभिषा **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—10 16/14 0 से 10/20/0/0

4. वर्ण—वैश्य **5. वश्य**—द्विपद

6. **योनि**–अश्व

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–वरुण

10. **वर्णाक्षर**–तू

11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे होने से आपका पुत्र योग शक्तिशाली है। शतभिषा नक्षत्र के चौथे चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की लग्नेश शनि से शत्रुता है। बृहस्पति की लग्न नक्षत्र स्वामी से भी शत्रुता है। फलतः बृहस्पति की दशा इतनी अनुकूल नहीं होगी, जितनी अपेक्षा है।

यहा लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर मध्य अवस्था में है। पूर्ण बली है। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी होता है। शनि की दशा जातक को उन्नति देगी, आगे बढ़ायेगी।

कुंभलग्न, अंश 17 से 18

1. **लग्न नक्षत्र**–शतभिषा

2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–10/16/14/0 से 10/20/0/0

4. **वर्ण**–वैश्य

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–अश्व

7. **गण**–राक्षस

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–वरुण

10. **वर्णाक्षर**–तू

11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र मे जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू मे आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपका पुत्र योग शक्तिशाली है। शतभिषा नक्षत्र के चौथे चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की लग्नेश शनि से शत्रुता है। बृहस्पति की लग्न नक्षत्र स्वामी से भी शत्रुता है। फलत: बृहस्पति की दशा इतनी अनुकूल नहीं होगी, जितनी अपेक्षा है।

लग्न यहां सत्रह से अठारह अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशो में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशो तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहां लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा-अतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र—शतभिषा
2. नक्षत्र पद—4
3. नक्षत्र अंश—10/16/40/0 से 10/20/0/0
4. वर्ण—वैश्य
5. वश्य—द्विपद
6. योनि—अश्व
7. गण—राक्षस
8. नाड़ी—आद्य
9. नक्षत्र देवता—वरुण
10. वर्णाक्षर—तू
11. वर्ग—सर्प
12. लग्न स्वामी—शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी -राहु
14. नक्षत्र चरण स्वामी—बृहस्पति
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु
18. प्रधान विशेषता—'पुत्रवान्'

शतभिया नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है। इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपका पुत्र योग शक्तिशाली है। शतभिषा नक्षत्र के चौथे चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की लग्नेश शनि से शत्रुता है। बृहस्पति की लग्न नक्षत्र स्वामी से भी शत्रुता है। फलत: बृहस्पति की दशा इतनी अनुकूल नहीं होगी, जितनी अपेक्षा है।

लग्न यहा अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों

तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहा लग्न 20 अंशों के भीतर होने से बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी

कुंभलग्न, अंश 19 से 20

1. **लग्न नक्षत्र**–शतभिषा
2. **नक्षत्र पद**–4
3. **नक्षत्र अंश**–10/16/40/0 से 10/20/0/0
4. **वर्ण**–वैश्य
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–अश्व
7. **गण**–राक्षस
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–वरुण
10. **वर्णाक्षर**–तू
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–राहु
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बृहस्पति
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

शतभिषा नक्षत्र का देवता वरुण एवं स्वामी राहु है इस नक्षत्र में जन्मा जातक स्पष्टवक्ता, साहसी, व्यसनी, मुश्किल से काबू में आने वाला तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म शतभिषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में होने से आपका पुत्र योग शक्तिशाली है। शतभिषा नक्षत्र के चौथे चरण का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की लग्नेश शनि से शत्रुता है। बृहस्पति की लग्न नक्षत्र स्वामी से भी शत्रुता है। फलत: बृहस्पति की दशा इतनी अनुकूल नहीं होगी, जितनी अपेक्षा है।

लग्न यहां उन्नीस से बीस अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश शनि की दशा उत्तम फल देगी। कुंभ राशि के 20 अंशों तक शनि मूलत्रिकोणी कहलाता है। यहा लग्न 20 अंशों के भीतर होने बलवान है। फलत: लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा जातक को उत्तम स्वास्थ्य व उन्नति देगी।

कुंभलग्न, अंश 20 से 21

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–10/20/0/0 से 10/23/20/0
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. **वर्णाक्षर**–से

11. **वर्ग**–मींढा

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी** मंगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'शूरश्चोरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण मे होने के कारण आप शूरवीर होंगे तथा जो वस्तु विनम्रता, प्रार्थना व खरीद से प्राप्त नहीं हो पाती, उसे हरण करने मे रुचि रखेंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की शनि से शत्रुता पर मंगल से मित्रता है। अतः मंगल की दशा शुभ फल एवं भौतिक सम्पन्नता देगी परन्तु बृहस्पति की दशा मे अपेक्षित शुभ फल नहीं मिल पायेगे।

यहा लग्न बीस से इक्कीस अंशो के भीतर होने से **अवरोह अवस्था** में है। शनि की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी

कुंभलग्न, अंश 21 से 22

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद

2. **नक्षत्र पद**–.

3. **नक्षत्र अंश**–10/20/0/0 से 10/23/20/0

4. **वर्ण**–शूद्र

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–सिंह

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. **वर्णाक्षर**–से

11. **वर्ग**–मींढा

12. **लग्न स्वामी**–शनि

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–मंगल

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**-मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'शूरश्चोरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण मे होने के कारण आप शूरवीर होंगे तथा

जो वस्तु विनम्रता-प्रार्थना व खरीद से प्राप्त नहीं हो पाती, उसे हरण करने में रुचि रखेंगे. पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति है। बृहस्पति की शनि से शत्रुता पर मगल से मित्रता है अत: मगल की दशा शुभ फल एव भौतिक सम्पन्नता देगी परन्तु बृहस्पति की दशा मे अपेक्षित शुभ फल नही मिल पायेंगे।

यहा लग्न इक्कीस से बाईस अशों के भीतर होने से **अवरोह अवस्था** में है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी

कुंभलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद **2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–10/20/0/0 से ../20/0

4. वर्ण–शूद्र **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि–सिंह **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य **9. नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. वर्णाक्षर–से **11. वर्ग**–मीढा

12. लग्न स्वामी–शनि **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता– शूरश्चोरा'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी स्त्री के वश में रहने वाला तथा कजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण मे होने के कारण आप शूरवीर होंगे तथा जो वस्तु विनम्रता, प्रार्थना व खरीद से प्राप्त नहीं हो पाती, उसे हरण करने में रुचि रखेंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति है बृहस्पति की शनि से शत्रुता पर मगल से मित्रता है। अतः मंगल की दशा शुभ फल एव भौतिक सम्पन्नता देगी परन्तु बृहस्पति की दशा में अपेक्षित शुभ फल नही मिल पायेंगे।

यहा लग्न बाईस से तेईस अशो में **अवरोह अवस्था** में है। बलवान है। लग्नेश शनि की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 23 से 24

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद **2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–10/20/0/0 से 10/23/20/0

4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–सो
11. **वर्ग**–मीढा
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'महाबुद्धि'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप अतितीव्र बुद्धिशाली जातक होंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है। शुक्र की लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति से भी शत्रुता है। फलतः शुक्र की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा में पराक्रम बढ़ेगा। शनि की दशा उन्नति देगी

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशो में **अवरोह अवस्था** में है। बलवान है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी

कुंभलग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–10/23/20/0 से 10/26/40/0
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–सो
11. **वर्ग**–मीढा
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'महाबुद्धि'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला धनी, निरोगी, स्त्री के वश मे रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने के कारण आप अतितीव्र बुद्धिशाली जातक होंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है। शुक्र की लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति से भी शत्रुता है फलत शुक्र की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायेगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा मे पराक्रम बढ़ेगा। शनि की दशा उन्नति देगी।

यहा लग्न चौबीस से पच्चीस अंशो के मध्य **अवरोह अवस्था** मे है बलवान है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 25 से 26

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद   **2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–10/23/20/0 से 16/26/40/0

4. वर्ण–शूद्र   **5. वश्य**–द्विपद

6. योनि सिंह   **7. गण** मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य   **9. नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. वर्णाक्षर–सो   **11. वर्ग**–मीढा

12. लग्न स्वामी–शनि   **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र   **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16 लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु   **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'महाबुद्धि'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद स्वामी एवं बृहस्पति है ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला धनी निरोगी, स्त्री के वश मे रहने वाला तथा कंजूस होता है आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में होने से आप अतितीव्र बुद्धिशाली जातक होंगे। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण का स्वामी शुक्र है। शुक्र लग्नेश शनि का शत्रु है। शुक्र की लग्न नक्षत्र स्वामी बृहस्पति से भी शत्रुता है फलतः शुक्र की दशा अपेक्षित शुभ फल नहीं दे पायगी बृहस्पति की स्वतंत्र दशा में पराक्रम बढ़ेगा। शनि की दशा उन्नति देगी।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य हीन बली है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 26 से 27

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–10/26/40/0 से 10/30/0/0
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**–द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–द
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'पौरे'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आप पौर (बड़े शहर) निवासी होंगे। गांव में आपकी उन्नति संभव नहीं। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध की लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता है परन्तु लग्नेश शनि से मित्रता है, फलत: बुध की दशा शुभ फलदाई होगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा जातक को धन देगी। शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 27 से 28

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–10/26/40/0 से 10/30/0/0
4. **वर्ण**–शूद्र
5. **वश्य**-द्विपद
6. **योनि**–सिंह
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–आद्य
9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद
10. **वर्णाक्षर**–दा
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–शनि
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'पौरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद स्वामी एवं बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण मे होने के कारण आप पौर (बड़े शहर) निवासी होगे। गांव में आपकी उन्नति संभव नहीं। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध की लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता है परन्तु लग्नेश शनि से मित्रता है, फलत: बुध की दशा शुभ फलदाई होगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा जातक को धन देगी। शनि की दशा अंतर्दशा में जातक को उन्नति होगी।

यहां लग्न सत्ताईस से अठ्ठाईस अशों के भीतर होने से हीनबली है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 28 से 29

1. **लग्न नक्षत्र**—पूर्वाभाद्रपद
2. **नक्षत्र पद**—3
3. **नक्षत्र अंश**—10/26/40.0 से 10/30/0/0
4. **वर्ण**—शूद्र
5. **वश्य**—द्विपद
6. **योनि**—सिंह
7. **गण**—मनुष्य
8. **नाड़ी**—आद्य
9. **नक्षत्र देवता**—अजपाद
10. **वर्णाक्षर**—दा
11. **वर्ग**—सर्प
12. **लग्न स्वामी** शनि
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**—बृहस्पति
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**—बुध
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**—शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**—'पौरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एव स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश मे रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आप पौर (बड़े शहर) निवासी होगे। गांव में आपकी उन्नति सभव नहीं। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है। बुध की लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता है परन्तु लग्नेश शनि से मित्रता है, फलत: बुध की दशा शुभ फलदाई होगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा जातक को धन देगी। शनि की दशा अंतर्दशा मे जातक की उन्नति होगी।

यहा लग्न अट्ठाईस से उन्तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में होकर **'हीनबली'** है। सारा तेज समाप्ति की ओर है। लग्नेश शनि की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

कुंभलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद

2. नक्षत्र पद–3

3. नक्षत्र अंश–10/26/40/0 से 10/30/0/0

4. वर्ण–शूद्र

5. वश्य–द्विपद

6. योनि–सिंह

7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–आद्य

9. नक्षत्र देवता–अजपाद

10. वर्णाक्षर–दा

11. वर्ग–सर्प

12. लग्न स्वामी–शनि

13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बृहस्पति

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध

15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु

17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'पौरो'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का देवता अजपाद एवं स्वामी बृहस्पति है। ऐसा जातक क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आप पौर (बड़े शहर) निवासी होंगे। गांव में आपकी उन्नति संभव नहीं। पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी बुध है बुध की लग्न नक्षत्र स्वामी से शत्रुता है परन्तु लग्नेश शनि से मित्रता है, फलतः बुध की दशा शुभ फलदाई होगी। बृहस्पति की स्वतंत्र दशा जातक को धन देगी। शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी।

यहां लग्न उन्तीस से तीस अंशों वाला अवरोही अवस्था में जाकर मृतावस्था में है। निस्तेज है। लग्नेश शनि की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

❑❑❑

कुंभलग्न और आयुष्य योग

1. कुंभलग्न वालो के लिये बृहस्पति लाभेश होने से मारकेश का कार्य नहीं करेगा। मगल मारकेश का भूमिका करेगा। सूर्य सप्तमेश होने से सहायक मारकेश है क्योंकि यह लग्नेश का शत्रु ग्रह है। षष्टेश चद्रमा इस लग्न के लिए पाप फलदायक है। आयुष्य प्रदाता ग्रह शनि है।
2. कुभलग्न में जन्म लेने वाले की मृत्यु किसी स्त्री से, विलासिता के कारण, अपनी सम्पत्ति के कारण, हृदय, गठिया के वायु विकार के कारण, अपने पर ही आश्रित व्यक्ति व नौकर के कारण होती है
3. कुंभलग्न में जन्म लेने वाले की औसत आयु 61 वर्ष मानी गई है तथा इन्हें आयु के 1, 6 18, 26, 32, 39, 44, 49, 52, 55 और 61वें वर्ष में शारीरिक कष्ट या मृत्यु होती है।
4. कुंभलग्न में बुध गोपुरांश में होकर पंचम स्थान में बैठा हो तो जातक ब्रह्मा के समान यशस्वी एवं चिरजीवी होता है।
5. कुंभलग्न में शनि केन्द्र स्थानों (1/4/7/10) में हो, शुक्र एव चंद्रमा चौथे या नवम स्थान में हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
6. कुभलग्न में शनि हो, शुक्र या बृहस्पति केन्द्र में हो सभी पाप ग्रह तीसरे, छठे, या ग्यारहवें स्थान में हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है
7. कुभलग्न में बृहस्पति मीन का, शुक्र मकर का बारहवें तथा सूर्य कुंभ का लग्न स्थान में हो तो ऐसा जातक जड़ी बूटी, औषधि व योग के सहारे 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
8. कुभलग्न मे अष्टमेश बुध लग्न में बैठा हुआ बृहस्पति एव शुक्र से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
9. कुभलग्न में चद्रमा मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु या कुभ राशि में हो अन्य सभी ग्रह भी इन्हीं राशियों मे हों तो जातक नब्बे वर्ष की उत्तम आयु को प्राप्त करता है

10. कुंभलग्न में चंद्रमा छठे कर्क का हो, अष्टम स्थान में कोई पाप ग्रह न हो तथा सभी शुभ ग्रह केन्द्रवर्ती हों तो जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।

11. कुंभलग्न मे मेष का मंगल दशम भाव को देखता हो तथा बुध एवं शुक्र की युति केन्द्र-त्रिकोण में हो तो जातक 85 वर्ष की आयु भोगता है।

12. कुंभलग्न में मंगल पाचवे मिथुन का, शनि मेष का एवं सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

13. कुंभलग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा पंचम या द्वादश भाव में हो, बृहस्पति बलहीन हो तो जातक की आयु 70 वर्ष होती है।

14. कुंभलग्न में बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ लग्न में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

15. शनि लग्न मे, वृष का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एवं दशम भाव में सूर्य अन्य किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

16. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध सातवे एवं चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ छठे या आठवें में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

17. कुंभलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो तथा चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. कुंभलग्न में लग्नेश शनि पाप ग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश बुध पाप ग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

19. कुंभलग्न शनि+मंगल लग्न में हो, चंद्रमा आठवें एवं बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

20. कुंभलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

21. कुंभलग्न में सूर्य+चंद्रमा कन्या राशि में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु नौ वर्ष की आयु तक हो जाती है।

22. कुंभलग्न में राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, बृहस्पति अष्टम में हो तो ऐसे बालक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं।

23. कुंभलग्न में चंद्रमा आठवें एवं सूर्य बारहवें भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक की तत्काल मृत्यु होती है।

24. कुंभलग्न के प्रथम या द्वादश भाव में सूर्य+शनि+मंगल+राहु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

25. कुंभलग्न में छठे भाव में स्थित मंगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

26. कुंभलग्न में तृतीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

27. कुंभलग्न मे लग्नेश शनि एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हों, सप्तम में भी पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर आत्महत्या करता है।

28. कुंभलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

29. कुंभलग्न में षष्ठेश चंद्रमा सप्तम या दशम भाव मे हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

30. कुंभलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान मे शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित होता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

कुंभलग्न और रोग

1. कुंभलग्न में षष्टेश चंद्रमा लग्न मे पाप ग्रहो से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अधा होता है।
2. कुंभलग्न के चौथे भाव में पाप ग्रह हो, चतुर्थेश शुक्र पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
3. कुंभलग्न मे चतुर्थेश शुक्र यदि अष्टमेश बुध के साथ अष्टम स्थान में हो तो जात... हृदय रोग होता है।
4. कुंभलग्न मे चतुर्थेश शुक्र कन्या राशि में निर्बल या अस्तगत हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. कुंभलग्न में चतुर्थ स्थान में शनि, षष्टेश बुध एव सूर्य पाप ग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. जातक पारिजात के अनुसार कुंभलग्न के चौथे एवं पांचवें भावों में पाप ग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. कुभलग्न के चतुर्थ स्थान में वृष का शनि एव लग्न में कुभ का सूर्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. कुंभलग्न के चतुर्थ भाव मे राहु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को तीव्र हृदय शूल (हार्ट-अटैक) होता है।
9. कुंभलग्न में वृश्चिक का सूर्य दो पाप ग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट-अटैक) होता है।
10. कुंभलग्न में शनि+शुक्र+बुध की युति एक साथ, दुःस्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना में मृत्यु होती है।
11. कुंभलग्न में पाप ग्रह हो, लग्नेश शनि बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

2. कुंभलग्न में क्षीण लग्नस्थ हो, लग्न पर पाप ग्रह की दृष्टि हो व्यक्ति रोगग्रस्त रहता है।

13. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध लग्न में एव लग्नेश शनि अष्टम में हो, लग्न पाप ग्रह से दृष्ट हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।

14. कुंभलग्न में मंगल पांचवे मिथुन का, शनि मेष का एव सूर्य सातवें हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को प्राप्त करता है।

15. कुंभलग्न में सूर्य+मंगल+शनि हो, चंद्रमा पचम या द्वादश भाव में हो, बृहस्पति बलहीन हो तो जातक की आयु 70 वर्ष होती है।

16. कुंभलग्न में बृहस्पति पाप ग्रहों के साथ लग्न में हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त विद्वान होता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

17. शनि लग्न में, वृष का चंद्र चौथे, मंगल सातवें एव दशम भाव में सूर्य अन्य किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

18. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध सातवें एवं चंद्रमा पाप ग्रहो के साथ छठे या आठवें हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

19. कुंभलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चद्रमा पाप ग्रहो के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक चरित्रवान एव विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।

20. कुंभलग्न में लग्नेश शनि पाप ग्रहो के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश बुध पाप ग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।

21. कुंभलग्न शनि+मंगल लग्न में हो, चद्रमा आठवें एवं बृहस्पति पाप ग्रहो के साथ छठे हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

22. कुंभलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पाप ग्रह हो, लग्नेश शनि निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को भोगता है।

23. कुंभलग्न में सूर्य+चंद्रमा कन्या राशि मे शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो **'बालारिष्ट योग'** बनता है। ऐसे बालक की मृत्यु नौ वर्ष की आयु तक हो जाती है।

24. कुंभलग्न मे राहु+शनि+बुध द्वादश में हो, बृहस्पति अष्टम मे हो तो ऐसे बालक जन्म लेते ही **शीघ्र मृत्यु** को प्राप्त हो जाते हैं।

25 कुंभलग्न में चंद्रमा आठवें एवं सूर्य बारहवें भाव में, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो जातक की '**तत्काल मृत्यु**' होती है।

26. कुंभलग्न के प्रथम या द्वादश भाव मे सूर्य+शनि+मगल+राहु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है, उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

27. कुंभलग्न में छठे भाव में स्थित मगल के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक '**मातृघातक**' होता है।

28. कुंभलग्न में द्वितीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक '**मातृघातक**' होता है।

29. कुंभलग्न में शनि एवं लग्न दोनों पाप ग्रहों के मध्य हो, सप्तम में भी पाप ग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन से निराश होकर '**आत्महत्या**' करता है।

30. कुंभलग्न में चंद्रमा पाप ग्रहों के साथ हो, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

31. कुंभलग्न में षष्ठेश बुध सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो व्यक्ति शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

32. कुंभलग्न में निर्बल चंद्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेत बाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित होता हुआ, अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

◻◻◻

कुंभलग्न और धन योग

कुंभलग्न मे जन्म लेने वाले व्यक्तियो के लिए धनप्रदाता ग्रह बृहस्पति है धनेश बृहस्पति की शुभाशुभ स्थिति, धन स्थान से सम्बन्ध स्थापित करने वाले ग्रहों की स्थिति, योगायोग, बृहस्पति तथा धन भाव पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त पचमेश बुध, भाग्येश शुक्र, लग्नेश शनि की अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितिया भी कुभलग्न मे जन्मे जातको के धन, ऐश्वर्य एव वैभव को घटाने-बढ़ाने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वैसे कुभलग्न के लिए बृहस्पति, चद्र, मंगल अशुभ हैं। शुक्र शुभ फलदायक है, बृहस्पति मारकेश होकर भी मारक नहीं है। घातक ग्रह का कार्य मगल करेगा। सूर्य सप्तमेश एवं लग्नेश का शुभ होने से सह मारकेश का काम करेगा। षष्टेश चंद्रमा इस लग्न के लिये परम पापी है। अकेला शुक्र योगकारक है।

राजयोग कारक– मंगल+शुक्र,

शुभ व सफल योग– 1. शुक्र+शनि 2. बुध+शुक्र, 3. मगल+शुक्र 4. सूर्य+शुक्र 5. बुध+शनि

निष्फल योग– 1. सूर्य+बुध

अशुभ योग– 1. शनि+गुरु 2. शनि+चद्र, 3. शनि+मगल, 4. शनि+सूर्य

लक्ष्मी योग–बृहस्पति द्वितीय या एकादश मे शुक्र केन्द्र-त्रिकोण में मंगल दशम भाव में।

विशेष योगायोग

1 कुभलग्न मे शुक्र, वृष, तुला या मीन का हो तो जातक को अल्प प्रयत्न से अधिक धन की प्राप्ति होती है ऐसा जातक धन के मामले में पूर्ण भाग्यशाली होता है।

2. कुंभलग्न मे बृहस्पति धनु, मीन या कर्क राशि में हो तो जातक भारी धनपति होता है तथा लक्ष्मी ऐसे जातक का पीछा नहीं छोड़ती।
3. कुंभलग्न में बृहस्पति शुक्र के घर में तथा शुक्र बृहस्पति के घर मे परस्पर परिवर्तन योग बनाकर बैठे हो अर्थात् बृहस्पति वृष या तुला राशि मे हो तथा शुक्र, धनु या मीन राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है ऐसा व्यक्ति खूब धन कमाता तथा लक्ष्मी दासी के समान उसकी सेवा करती है।
4. कुंभलग्न में बृहस्पति यदि मंगल के घर में एवं मंगल बृहस्पति के घर में परस्पर परिवर्तन योग करके बैठा हो अर्थात् बृहस्पति मेष या वृश्चिक राशि मे हो तथा मगल धनु या मीन राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है। ऐसा व्यक्ति खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी अनुचरी होती है।
5. कुंभलग्न हो पंचम भाव मे बुध हो बृहस्पति धनु राशि का लाभ स्थान में चंद्रमा या मंगल के साथ हो तो "**लक्ष्मी योग**" बनता है। ऐसे जातक के पास अटूट लक्ष्मी होती है। अपने भुजबल से शत्रुओं को परास्त करता हुआ ऐसा व्यक्ति अखण्ड राज्यलक्ष्मी को भोगता है।
6. कुंभलग्न में मगल यदि केन्द्र त्रिकोण में हो तथा बृहस्पति स्वगृही हो तो जातक कीचड़ से कमल की तरह खिलता है अर्थात् धीरे धीरे अपने पुरुषार्थ व पराक्रम से लक्षाधिपति व कोट्याधिपति हो जाता है। ऐसे जातक का भाग्योदय प्राय: 28 व 32 की आयु के मध्य होता है।
7. कुंभलग्न हो, पचम भाव में बुध हो तथा लाभस्थान मे अर्थात् धनु राशि में चद्र, मगल हो तो जातक महाधनी होता है।
8. कुंभलग्न हो, लग्न मे शनि मगल एवं बृहस्पति की युति हो तो "**महालक्ष्मी योग**" बनता है ऐसे जातक प्रबल पराक्रमी, अतिधनवान, ऐश्वर्यमान एवं महाप्रतापी होता है।
9. कुंभलग्न में शनि धनु राशि में तथा लाभेश बृहस्पति लग्न में हो तो जातक आयु के 33वें वर्ष मे पाच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओ का नाश करते हुए स्वअर्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसे व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।
10. कुंभलग्न हो, लग्नेश शनि धनेश व लाभेश बृहस्पति, भाग्येश शुक्र अपनी अपनी उच्च राशि या स्व राशि में हो तो जातक करोड़पति होता है।
11. कुंभलग्न में धनेश बृहस्पति यदि छठे, आठवें बारहवे स्थान मे हो तो "**धनहीन योग**" की सृष्टि होती है। जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं टहर पाता, ठीक उसी प्रकार से ऐसे जातक के पास रुपया

नहीं ठहर पाता। उसे सदैव धन की तंगी बनी रहती है। इस दुर्योग की निवृत्ति हेतु जातक अभिमंत्रित "बृहस्पति यन्त्र" धारण करना चाहिए। पाठक चाहे तो 'बृहस्पति यंत्र' हमारे कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

12. कुंभलग्न में धनेश बृहस्पति आठवें हो तथा सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो जातक को पृथ्वी में गढ़ा हुआ धन मिलता है या लॉटरी से रुपया मिलता है पर रुपया उसके पास टिकता नहीं।

13. कुंभलग्न में मंगल यदि दशम भाव मे वृश्चिक का हो तो "**रुचक योग**" बनता है। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

14. कुंभलग्न में सुखेश शुक्र, लाभेश बृहस्पति की युति नवम भाव मे मंगल से दृष्ट हो तो व्यक्ति अचानक धन की प्राप्ति होती है।

15. कुंभलग्न मे बृहस्पति+चंद्र की युति मीन, वृष, मिथुन या तुला राशि में हो तो इस प्रकार के '**गजकेसरी योग**' के कारण व्यक्ति को अनायास उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर मार्केट या अन्य व्यापारिक स्रोत के कारण अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है।

16. कुंभलग्न में धनेश बृहस्पति अष्टम में एवं अष्टमेश बुध धन स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुडरेस, स्मगलिंग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

17. कुंभलग्न मे तृतीयेश मंगल लाभ स्थान में एवं लाभेश बृहस्पति तृतीय स्थान मे परस्पर परिवर्तन करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, भागीदारों, कुटम्बीजनों एव मित्रों के द्वारा धन लाभ होता है।

18. कुंभलग्न मे बलवान बृहस्पति यदि चतुर्थेश शुक्र से युति करके बैठा हो तो ऐसे व्यक्ति की माता, मातृपक्ष, वाहन व नौकरी द्वारा धन की प्राप्ति होती है.

19. केन्द्र में बुध, सूर्य, राहु, शनि आदि हों तथा 2 ग्रह त्रिकोण स्थान मे हों तो जातक परम भाग्यशाली, प्रभावी, धनवान, शक्ति सम्पन्न होता है।

20. दशम भाव में अर्थात् वृश्चिक राशि में चंद्र-शनि का योग हो तो वह जातक कुबेर तुल्य ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

21. कुंभलग्न हो, शनि लग्न में स्व का स्थित हो मगल की 8वीं दृष्टि शनि पर हो तो **राजराजेश्वर योग** होने से जातक पूर्णरूपेण सम्पन्न, सुखी, धनवान, दीर्घायु होता है।

22. द्वितीय भाव में बृहस्पति तथा 11वें भाव मे शुक्र हो तो जातक कंगाल के घर में जन्म लेकर भी लक्ष्याधिपति बनता है।
23. बृहस्पति नवम भाव में तथा शुक्र दशम भावस्थ हो, ऐसे शुक्र पर शनि की दृष्टि हो तो जातक लखपति बनता है।
24. यदि सूर्य और मंगल अष्टम भाव में अर्थात् कन्या राशि मे हो तो दोनो ही दशाएं घोर कष्ट देती हैं। लक्ष्याधिपति व्यक्ति भी दरिद्र जीवन व्यतीत करता है।
25. दशम भाव में शनि अकेला हो तो व्यक्ति निश्चित रुप से करोडपति होता है।
26. बृहस्पति धन भाव अथवा धनेश केन्द्र, त्रिकोण या 11वें भाव में हो तो [illegible] क धनवान होता है।
27. बृहस्पति धनेश होकर कहीं भी मगल के साथ हो तो यह जातक धनवान होता है।
28. दशमेश व धनेश केन्द्र भाव अथवा त्रिकोण 5, 9वें भाव में हो तो जातक को अनायास अर्थ लाभ होता है।
29. लग्नेश बृहस्पति अष्टम भाव मे और अष्टमेश बुध लाभ स्थान में हो तो भूमि द्वारा धन लाभ होता है।
30. शुक्र, सप्तमेश सूर्य तथा भाग्येश एक साथ हो तो जातक का ससुराल से धन की प्राप्ति होती है।
31. शनि, राहु अथवा केतु धन भावस्थ हो तो कभी धन की प्राप्ति हो जाती है कभी नहीं। धन को लेकर संघर्ष बना रहता है।
32. यदि तृतीयेश पंचमस्थ पचमेश से युक्त हो तो जातक का भाई उच्च पद पर होता है अथवा स्वयं सत्ता प्राप्त व्यक्ति होता है अथवा ईश्वर कृपा से सम्पत्तिवान् होता है।
33. जन्म अथवा चंद्र से दशम भावस्थ बृहस्पति धनवान भ्राता से आर्थिक लाभ का द्योतक है।
34. कुंभलग्न में व्यय स्थान का स्वामी शनि बारहवें (व्ययस्थान में) ही हो तो व्यक्ति का धन पाप कार्य में खर्च होता है।
35. कुंभलग्न बृहस्पति बारहवें हो, लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो अकस्मात् धन हानि होती है।
36. कुंभलग्न में यदि बलवान बृहस्पति की पंचमेश बुध से युति हो, द्वितीय भाव शुभ ग्रहो से दृष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है। किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

37. कुंभलग्न में बलवान बृहस्पति की षष्ठेश चंद्रमा से युति हो, धनभाव मंगल या शनि से दृष्ट हो तो जातक को शत्रुओं के द्वारा धन की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक कोर्ट-कचहरी में शत्रुओं को हराता है तथा शत्रुओ के कारण ही उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

38. कुंभलग्न में बलवान बृहस्पति की यदि सप्तमेश सूर्य से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष से धन की प्राप्ति होती है।

39 कुंभलग्न में बलवान बृहस्पति की यदि नवमेश शुक्र से युति हो तो जातक राजा से, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियों, सरकारी ठेकों से काफी धन कमाता है।

40. कुंभलग्न में बलवान बृहस्पति की दशमेश मंगल से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

41. कुंभलग्न में दशम भाव का स्वामी मंगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता, जन्म स्थान में जातक नहीं कमा पाता तथा उसे सदैव धन की कमी बनी रहती है।

42. कुंभलग्न में लग्नेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एवं सूर्य छठे या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा धन के मामले में कमजोर होता है।

43. कुंभलग्न के धन स्थान में पाप ग्रह हो तथा लाभेश बृहस्पति यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है।

44. कुंभलग्न में केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा बृहस्पति से यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव बना रहता है।

45. कुंभलग्न में धनेश बृहस्पति यदि अस्त हो, नीच राशि (मकर) में हो तथा धन स्थान में अष्टम भाव में कोई पाप ग्रह हो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता ही नही।

46. कुंभलग्न में लाभेश बृहस्पति यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत तथा पापपीड़ित हो तो जातक महादरिद्री होता है।

47. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध वक्री होकर कहीं बैठा हो तथा अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात् धनहानि का योग बनता है अर्थात्

ऐसे व्यक्ति को धन के मामले में परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, अत: सावधान रहें।

48. कुंभलग्न में अष्टमेश बुध शत्रुक्षेत्री, नीच का या अस्तगत हो तो व्यक्ति को अचानक धन की प्राप्ति होती है।

49. कुंभलग्न हो, धनेश बृहस्पति केन्द्रवर्ती होकर धन भाव को देखता हो तथा लग्न स्थान में शनि+मंगल+चंद्र+सूर्य की युति हो तो जातक अरबपति होता है तथा विवाह के बाद इतना धन कमाता है, जिसकी वह स्वयं कल्पना नहीं कर सकता।

कुंभलग्न और विवाह योग

1. सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक की स्त्री साहसी, लड़ाकू एवं दृढ़ विचारों वाली होती है।
2. कुंभलग्न की कुण्डली मे सप्तमेश सूर्य यदि पंचम भाव में अर्थात् मिथुन राशि में हो तो जातक पुत्र-रहित या स्त्री-रहित होता है।
3. शुक्र, सप्तमेश सूर्य और भाग्येश एक साथ हो तो जातक को ससुराल से धन प्राप्त होता है।
4. कुंभलग्न मे शनि, चद्रमा के साथ लग्न में हो, सप्तम में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भयंकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है पर अविवाह की स्थिति भी बन सकती है।
5. कुंभलग्न में शनि द्वादशस्थ हो, द्वितीय में सूर्य हो और पापग्रस्त हो तो जातक का विवाह नही होता।
6. कुंभलग्न में शनि छठे, सूर्य अष्टम में पाप पीड़ित हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता।
7. कुभलग्न में सूर्य, शनि और शुक्र एक साथ कहीं भी बैठे हों तो जातक को दाम्पत्य सुख नहीं मिलता।
8. कुंभलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि का हो तथा सूर्य या चद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
9. कुंभलग्न मे द्वितीयेश बृहस्पति वक्री हो अथवा द्वितीय स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो विवाह मे अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।
10. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव मे क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हो तो निश्चित रुप से जातक का विवाह विलम्ब से होता है ऐसा जातक प्रायः अन्तर्जातीय विवाह करता है।

11. कुंभलग्न में सूर्य निर्बल हो, सप्तम भाव मे कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी भी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो विवाह में अवरोध आता है और विवाह समय पर सम्पन्न नहीं होता।

12. कुंभलग्न हो, लग्न में चंद्रमा व शुक्र स्थित हो, पाप ग्रह उन्हें देखते हो तो ऐसी स्त्री परपुरुष गामिनी होती है। उसके इस व्यभिचार कर्म में उसकी माता या मातृतुल्य अन्य वृद्धा स्त्री का पूर्ण सहयोग होता है।

13. कुंभलग्न में चंद्रमा स्थिर राशि (वृष, सिंह वृश्चिक कुंभ) मे हो तो ऐसी स्त्री अक्षतयोनि होती है।

14. कुंभलग्न के सप्तम भाव मे मंगल हो, सप्तमेश सूर्य बुध व राहु के साथ पांचवें हो तो जातक के सर्वसमर्थ सुन्दर व भाग्यशाली होते हुए भी जातक का विवाह सही समय पर नही होता।

15. कुंभलग्न में शनि सातवें हो, सप्तमेश सूर्य आठवें हो तो जातक एक पत्नी के होते हुए दूसरा विवाह करता है। भले ही शुभ ग्रह सप्तम भाव को देखते हों तो भी जातक को पहली पत्नी से धोखा मिलता है या तलाक होता है।

16. कुंभलग्न में शनि व मंगल लग्नस्थ हो, सप्तमेश सूर्य बारहवें हो, चतुर्थ या दशम मे पाप ग्रह हो तो ऐसी स्त्री एक पति को त्याग कर दूसरा वरण करती है एवं स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है। वैवाहिक जीवन में उसे निराशा हाथ लगती है। ऐसी महिला पति पर हुक्म चलाती है तथा पति को हीन दृष्टि से देखती है

17. कुंभलग्न में पाप ग्रहों मे दृष्ट शुक्र एवं चंद्रमा कहीं भी बैठे हो तो ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

18. कुंभलग्न मे शनि एवं मंगल सप्तम भाव में शुभ ग्रहो से दृष्ट न हों तो ऐसी स्त्री उत्तम कुल में जन्म लेने पर भी पति को त्याग कर व्यभिचारिणी हो जाती है अथवा विधवा भी हो सकती है।

19. कुंभलग्न मे चंद्रमा यदि (1/3/5/7 8/11) राशि में हो तो ऐसी स्त्री पुरुष के समान कठोर स्वभाव वाली, साहसिक प्रकृति की महिला होती है.

20. कुंभलग्न में यदि सूर्य, मंगल, बृहस्पति, चंद्र, बुध, शुक्र एवं शनि बलवान हो तो ऐसी स्त्री गलत सोहबत या परिस्थितिवश परपुरुष की अंकशायिनी बन सकती है।

21. कुंभलग्न लग्न में लग्नस्थ चंद्रमा व शुक्र पाप ग्रहो से दृष्ट हो तो ऐसी स्त्री माता सहित परपुरुष गामिनी होती है।

22. कुंभलग्न में चंद्रमा और शुक्र लग्नस्थ हो तथा पंचम भाव पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो ऐसी नारी वन्ध्या होती है।

23. कुंभलग्न में चंद्रमा आठवें उच्च के बुध के साथ हो तो ऐसी स्त्री काकवन्ध्या होती है अर्थात् एक बार ही प्रसूता होती है।

24. कुंभलग्न मे सप्तमेश सूर्य स्थिर राशि (वृष, सिंह, वृश्चिक या कुंभ) में हो तथा चंद्रमा चर राशि (मेष, कर्क, तुला या मकर) में हो तो ऐसे जातक का विवाह विलम्ब से होता है

25 कुंभलग्न में लग्नस्थ शनि के साथ अष्टमेश बुध हो तो "**द्विभार्या योग**" बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

26. कुंभलग्न में सप्तमेश सूर्य यदि द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो पूर्ण "**व्यभिचारी योग**" बनता है ऐसा पुरुष जीवन में अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

27. कुंभलग्न में सूर्य यदि पाप ग्रह की राशि मे हो, पाप ग्रस्त या पाप दृष्ट हो तो ऐसे पुरुष की पत्नी कलहप्रिया एवं झगड़ालू होती है। जिससे जातक स्वयं दुःखी हो जाता है।

❑❑❑

कुंभलग्न और संतान योग

1. कुंभलग्न में चंद्रमा तुला का नवम भाव में हो तो जातक के एक पुत्र होता।
2. कुंभलग्न में पंचमेश बुध यदि आठवें हो तो जातक के अल्प संतति होती है।
3. कुंभलग्न में पंचमेश बुध अस्त हो या पापग्रस्त पाप पीड़ित होकर छठे, आठवें या बारहवें हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
4. कुंभलग्न में पंचमेश बुध लग्न (कुंभ राशि) में हो तथा बृहस्पति से युत किंवा दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम पुत्र ही होता है।
5. कुंभलग्न में पंचमेश बुध लग्न में हो एवं लग्नेश शनि पंचम में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हों तो जातक दूसरो की संतान गोद में लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
6. कुंभलग्न में बुध यदि पंचम भाव में हो तो जातक की तीन कन्याएं होती हैं यदि साथ में सूर्य हो तो चार कन्याएं होती है।
7. कुंभलग्न में सूर्य हो, सूर्य पाप ग्रह से युत किंवा दृष्ट पाप पीड़ित हो तो ऐसे व्यक्ति को कुलदेवता के शाप के कारण संतान नहीं होती।
8. राहु, सूर्य एवं मंगल पंचम भाव में हो तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र संतान की प्राप्ति होती है। आज की भाषा में ऐसे बालक को "सिजेरियन चाइल्ड" कहते हैं।
9. कुंभलग्न में पंचमेश बुध कमजोर हो तथा राहु ग्यारहवें स्थान में हो तो जातक को वृद्धावस्था में संतान होती है।
10. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पाप ग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।
11. कुंभलग्न में लग्नेश शनि द्वितीय स्थान में हो तथा पंचमेश बुध पापग्रस्त या पाप पीड़ित हो तो ऐसे जातक की पुत्र संतान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती है।

12. कुंभलग्न में पचमेश शुक्र बारहवें स्थान में शुभ ग्रहों से युत या दृष्ट हो तो ऐसे जातक के पुत्र की वृद्धावस्था में अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक ससार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख होता है।

13. पचमेश यदि वृष, कर्क कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम सतति के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

14. कुंभलग्न में पचमेश बुध की सप्तमेश सूर्य के साथ युति हो तो जातक को प्रथम सतान के रूप में कन्या रत्न की प्राप्ति होती है।

15. लग्नेश शनि यदि 1/2/5/7/9 11 वें भाव में हो तो प्रथम पुत्र एव 4/6/8 10/12वें भाव मे हो तो प्रथम सतान कन्या होती है।

16. पति पत्नी दोनों की कुण्डली में तुला राशिस्थ शनि हो तो सतान सुख नहीं होता।

17. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सतति की बाहुल्यता देता है। यदि चद्रमा और शुक्र का भी पचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है।

18. पंचमेश बुध निर्बल हो, लग्नेश शनि भी निर्बल हो, पंचम भाव में राहु हो तो सर्पदोष के कारण पुत्र सतान नहीं होती।

19. पचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हो तो पद्मनामक "**कालसर्प योग**" के कारण जातक के पुत्र सतान नहीं होती। ऐसे जातक को वश वृद्धि की चिंता एव मानसिक तनाव रहता है।

20. सूर्य अष्टम हो, पचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र सतान नहीं होती।

21. लग्न में मगल अष्टम में शनि, पचम में सूर्य एव बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो "**वशविच्छेद योग**" बनता है। ऐसे जातक का स्वय का वश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़ियां नहीं चलती।

22. कुंभलग्न के चतुर्थ भाव में पाप ग्रह हो तथा चद्रमा जहां बैठा हो उससे आठवें स्थान में पाप ग्रह हो तो "**वशविच्छेद योग**" बनता है। ऐसे जातक का स्वयं का वंश समाप्त हो जाता है उसके आगे पीढ़िया नहीं चलती।

23. तीन केन्द्रों में पाप ग्रह हो तो व्यक्ति का "**इलाख्य नामक**" सर्प योग बनता है। इस दोष के कारण जातक को पुत्र सतान का सुख नहीं मिलता दोष निवृत्ति पर शांति हो जाती।

24. कुंभलग्न में पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव में हो तथा पंचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो "**अनपत्य योग**" बनता है। ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नहीं होती पर उपाय से दोष शांत हो जाता है।

25. पंचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वां संतान होती है। पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

26. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न में और शनि यदि सातवें हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवें हो, तथा दशम भाव पर बृहस्पति की दृष्टि हो तो "**अनगर्भा योग**" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

27. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान में हो तो "**अनगर्भा योग**" बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

28. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो "**कुलवर्द्धन योग**" बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली संतानों को उत्पन्न करती है।

29. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि में हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को "केवल कन्या योग" होता है। पुत्र संतान नहीं होती।

❑❑❑

कुंभलग्न और राजयोग

1. यदि कुंभलग्न अपने पूर्णांश पर हो और शनि उसमे उच्चांश पर बैठा हो बृहस्पति मीन का स्वगृही धन स्थान में बली हो मंगल मेष का पराक्रम स्थान में हो और शुक्र वृष का स्वगृही चतुर्थ स्थान मे हो तो राजयोग होता है तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
2. इसके अतिरिक्त यदि उच्च का शुक्र धन भाव में, उच्च का सूर्य पराक्रम स्थान में और उच्च का शनि भाग्य स्थान मे तथा उच्च का शुक्र स्वगृही बृहस्पति के साथ धन स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
3. उच्च का सूर्य स्वगृही मंगल के साथ पराक्रम स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
4. उच्च का चंद्रमा स्वगृही शुक्र के साथ चतुर्थ स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
5. उच्च का शनि स्वगृही शुक्र के साथ भाग्य स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
6. स्वगृही मिथुन का बुध पंचम स्थान में, स्वगृही सिंह का सूर्य सप्तम स्थान में स्वगृही मंगल वृश्चिक का राज्य स्थान में और स्वगृही बृहस्पति धनु राशि का लाभ स्थान मे हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है
7. चार, पांच, छः स्वगृही ग्रह या उच्च के ग्रह केन्द्र या त्रिकोण में अथवा केन्द्र और त्रिकोण दोनों में बलवान हों, अस्त न हों तो राजयोग कारक होते हैं
8. कुंभलग्न हो शनि लग्न में स्व का स्थित हो, मगल की 8वी दृष्टि शनि पर हो तो '**राजराजेश्वर योग**' होने से जातक पूर्णरूपेण सम्पन्न, सुखी, धनवान दीर्घायु होता है।
9. शुक्र स्व राशिस्थ चतुर्थ भाव मे बैठा हो तो वह जातक तीव्र मस्तिष्क वाला तथा उच्च पद को प्राप्त करने में सफल होता है।

10. यदि तृतीयेश पचमस्थ पचमेश से युक्त हो तो जातक का भाई उच्च पद पर होता है अथवा स्वय सत्ता प्राप्त व्यक्ति होता है अथवा ईश्वर कृपा से सम्पत्तिवान् होता है

11. सिह में बृहस्पति, कन्या में शुक्र, मिथुन में शनि, अपने घर का मगल चौथे स्थान में हो तो जातक राजा होता है।

12. कुंभलग्न के दशम स्थान में बृहस्पति, बुध, शुक्र, चद्रमा हो तो जातक का सब कार्य सिद्ध होता है और वह राजमान्य होता है।

13. कुंभलग्न में शनि, चद्रमा हो और आठवे स्थान मे शुक्र हो तो इस योग मे उत्पन्न मनुष्य मानी और सबका प्रिय राजा होता है।

14. कुंभलग्न में द्वितीय स्थान में शुक्र दशम स्थान में बृहस्पति और छठे में राहु हो तो राजा पराक्रमी होता है

15. कुंभलग्न मे सूर्य तीसरे स्थान मे, चौथे स्थान मे शुक्र, बुध पाचवे स्थान या द्वितीय स्थान में हो और कोई ग्रह नीच में नही हो तथा दसवें, बारहवे घर में कोई ग्रह न हो जातक तीन समुद्र का राजा होता है।

16. कुंभलग्न में लग्न हो चतुर्थ स्थान में शुक्र और दशम स्थान में मंगल सूर्य शनैश्चर के साथ हों तो वह निश्चित राजा होता है।

17. कुंभलग्न मे पंचम नवम तृतीय घर मे बृहस्पति चद्रमा और सूर्य हो तो वह मनुष्य धन में कुबेर के समान होता है।

18. कुंभलग्न में त्रिकोण में बुध, बृहस्पति शुक्र हों और बुध शनि क्रम से तीसरे, छठे हो और सप्तम में पूर्ण बली चद्रमा हो तो इस योग में जन्म लेने वाला राजा के समान होता है

19. कुंभलग्न में बृहस्पति शुक्र और चंद्रमा ये तीनों मीन राशि के हों तो इस योग जन्म मे लेने वाले को राज्य प्राप्ति होती है और उसकी पत्नी अनेक पुत्र वाली होती है।

20. कुंभलग्न में राश्याधिपति नवम स्थान में हो और चंद्रमा लग्न में हो तो राजयोग होता है।

21. कुभ का शुक्र, मेष का मगल कर्क का बृहस्पति हो तो कीर्तिमान राजयोग होता है।

22. कुंभलग्न में जलचर राशि में छठा चंद्रमा हो, लग्न मे उदित शुभ ग्रह और केन्द्र में पाप ग्रह न हो तो राजयोग होता है।

❑❑

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में
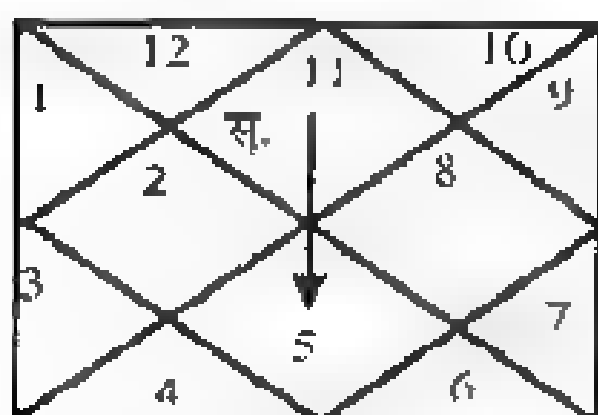
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां प्रथम स्थान में कुंभ (शत्रु) राशि में होगा सूर्य पितृ कारक होकर पितृ स्थान से कोण में एवं अपने घर (सिंह राशि) से सातवें होने से सातवें व नवम भाव का फल ठीक देगा। ऐसा जातक तुनकमिजाजी होगा, पर उसे पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसा जातक परदेश जायेगा तो उसे अच्छा मान सम्मान मिलेगा व वह धन कमायेगा। भागीदारी के कार्यों में भी सफलता मिलेगी। पर संघर्ष के बिना कोई सफलता नहीं मिलेगी.

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव अपने ही घर (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

निशानी–जातक मध्यम कद, गोलाकार मुख एवं आकर्षक चेहरे वाला होगा। जातक की संतानें जातक से अलग व दूर रहेंगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति लग्न में होने से जातक का जीवनसाथी अत्यधिक सुन्दर, आकर्षक व्यक्तित्व का धनी एवं वफादार होगा।

2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से जातक पराक्रमी होगा, क्रोधी होगा एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। प्रथम स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। ऐसा जातक बुद्धिशाली एवं धनवान होगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा। जातक अपने कुल-कुटुम्ब का नाम रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति होने से ससुराल से धन मिलेगा, जातक की पत्नी धार्मिक व पतिव्रता होगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र होने से राज-सरकार से लाभ होगा। जातक बड़ा पद व प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे, सूर्य शत्रुक्षेत्री तो शनि यहां स्वगृही होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति लग्न में होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी परन्तु दुर्घटना से अंग-भंग होने का खतरा बना रहेगा। जातक की सही उन्नति पिता की मृत्यु के बाद होगी।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु जातक को स्थापित होने में दिक्कतें डालेगा। जातक नास्तिक होगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु कीर्तिदायक है। जातक विदेशी लोगों से मित्रता बढ़ायेगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
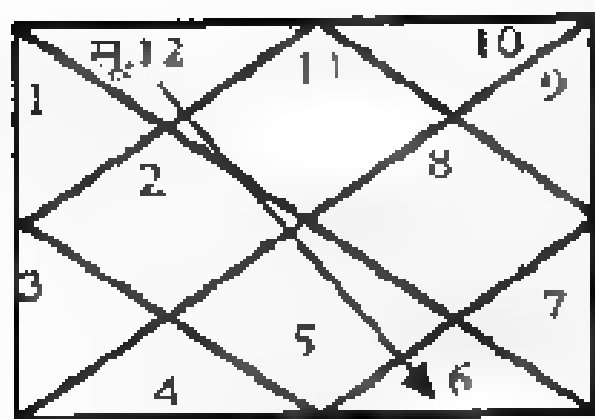
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां द्वितीय स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। सूर्य अपने घर से आठवें एवं पितृ कारक स्थान नवम भाव से छठे होने से जातक को पिता का सुख एवं पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। जातक की भाषा कठोर होगी। उसकी दाईं आंख कमजोर होगी। जातक को दंत रोग संभव है।

दृष्टि—द्वितीयस्थ सूर्य की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में पूर्णतः सक्षम होता है।

निशानी—'लोमेश संहिता' के अनुसार ऐसा व्यक्ति आलसी व कामी होता है। उसके हृदय में सदैव महिलाओं का ही ध्यान रहता है तथा वह प्रत्येक कार्य सुस्ती से प्रारम्भ करता है।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा कष्टदायक होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य-चंद्र की युति द्वितीय स्थान (मीन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति द्वितीय स्थान में होने से जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल जातक को भूमि व भाइयों से धन दिलायेगा। जातक को ससुराल से भी धन मिलता रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा द्वितीय स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुतः सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां नीच राशि का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान को देखेंगे फलतः जातक बुद्धिशाली व धनवान होगा। उसकी आमदनी के जरिए दो-तीन प्रकार के रहेंगे। विवाह के बाद जातक धनवान होगा। जातक की आयु लम्बी होगी, जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—स्वगृही बृहस्पति के साथ सूर्य '**कलत्रमूल धन योग**' बनायेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी.
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ उच्च का शुक्र जातक को माता व पत्नी का पूर्ण सुख देगा। माता व पत्नी दोनों धनवान होगी
6. **सूर्य+शनि**—यहा दोनों ग्रह 'मीन राशि' में होंगे। सूर्य यहा मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि एव सप्तमेश सूर्य की यह युति धन भाव में होने से जातक को पत्नी द्वारा धन मिलेगा धन संग्रह में कठिनाइया आयेगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनी होगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु धन प्राप्ति मे बाधक है।
8. **सूर्य+केतु** -सूर्य के साथ केतु धन सग्रह में बाधक है।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहा तृतीय स्थान मे उच्च का
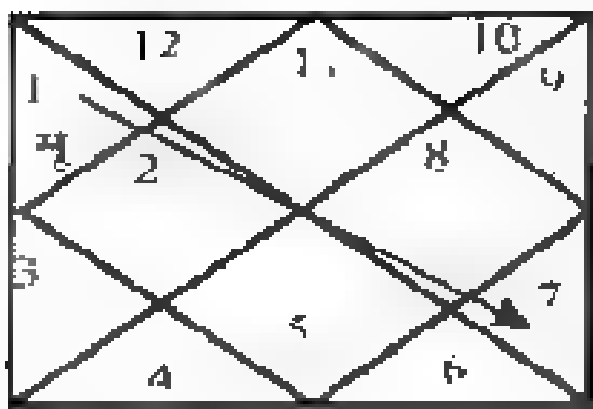
होगा। मेष राशि के दस अंशों तक सूर्य परमोच्च का कहलाता है। जातक स्वयं धनी व पराक्रमी होगा। जातक का जीवनसाथी भी धनी व पराक्रमी होगा। फलतः पति पत्नी दोनों में अहम् का टकराव होता रहेगा। गृहस्थ जीवन में नोंक झोंक बनी रहेगी। जातक अपने प्रयत्न से खूब यश-कीर्ति अर्जित करेगा।

दृष्टि–सूर्य अपने स्थान से नवमें होकर नवम भाव (तुला राशि) को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। ऐसे जातक को पिता का सुख एवं पिता की सम्पत्ति मिलेगी।

निशानी–जातक का ससुराल धनवान होगा। ऐसे जातक को पड़ौसी व मित्र अच्छे मिलेंगे।

दशा–सूर्य की दशा अंतर्दशा मे पराक्रम बढ़ेगा जनसम्पर्क से लाभ होगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चद्र की युति तृतीय स्थान (मेष राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है षष्टेश व सप्तमेश की युति तृतीय स्थान मे होने से जातक महान् पराक्रमी होगा पर बड़े भाई का सुख नहीं होगा
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक को परिजनों व मित्रों से लाभ होगा जातक महान् पराक्रमी होगा
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। तृतीय स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। जहां बैठ कर दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक महान् पराक्रमी होगा। जातक भाई-बहनों, मित्र परिजनों का सहयोग जीवन में मिलता रहेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक धनवान होगा तथा समाज में अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति ससुराल से धन लाभ करायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र भाई-बहनों का सुख एवं पराक्रम में वृद्धि करेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'मेष राशि' में होंगे। सूर्य यहां उच्च का, शनि नीच का होकर **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक पराक्रमी होगा। उसे छोटे बड़े

दोनों भाइयों का सुख नहीं रहेगा। जाति के अलावा अन्य लोगों में बड़ी कीर्ति होगी

7 **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु भाइयों में मनमुटाव एवं छोटे भाई के सुख को नष्ट करेगा।

8 **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु समाज में बेहद कीर्ति देगा।

कुंभलग्न मे सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में

12	11	10	9
1	2 सू.	8	7
3	4	5	6
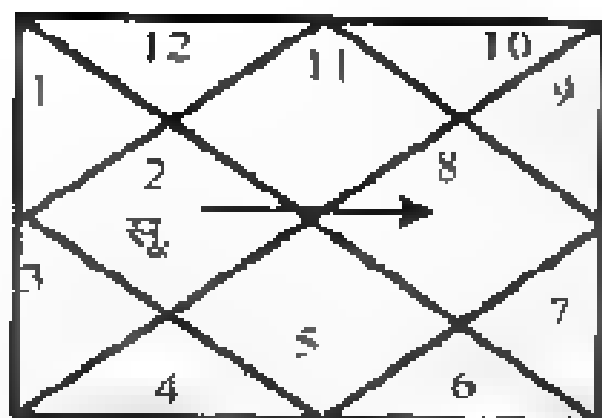
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां चतुर्थ स्थान मे वृष (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य पितृ स्थान नवम भाव से आठवें स्थान पर होने से पिता के साथ मतभेद-मनमुटाव करायेगा। ऐसे जातक का जीवनसाथी अच्छा मिलेगा। जातक को मकान का सुख भी उत्तम मिलेगा।

दृष्टि—सूर्य अपने स्थान से दसवें बैठकर दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर दृष्टि करेगा, फलतः सरकारी नौकरी या सरकारी द्वारा आर्थिक लाभ मिलेगा

निशानी—ऐसे जातक के दांतों में कोई-न-कोई रोग अवश्य होगा।

दशा—सूर्य की दशा-महादशा अच्छी जायेगी पर सूर्य की दशा में हृदय रोग की संभावना प्रबल रहेगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र** 'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को मध्यरात्रि 12 से 2 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश को युति चतुर्थ भाव मे होने से '**यामिनीनाथ योग**' बनेगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा।

2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल जातक को माता की सम्पत्ति दिलायेगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।

3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। चतुर्थ स्थान मे वृष राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध चतुर्थ होने से '**कुलदीपक योग**' बनेगा। यहां से दोनों ग्रह दशम भाव को देखेंगे। फलतः जातक पढ़ा लिखा एवं पराक्रमी

होगा तथा उसकी बुद्धि तेज रहेगी। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। भवन का सुख भी उत्तम होगा। जातक अपने कुल का नाम उत्तम कार्यों के कारण रोशन करेगा एवं समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। जातक के पास एक से अधिक मकान होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ स्वगृही शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा। माता-पिता का सुख पूर्ण रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'वृष राशि' में हैं। सूर्य शत्रु क्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की युति चतुर्थ भाव में होने से जातक को माता-पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। माता की मृत्यु छोटी आयु में होगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक की माता व सासु को बीमार करेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक की माता व पत्नी को बीमारी देगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
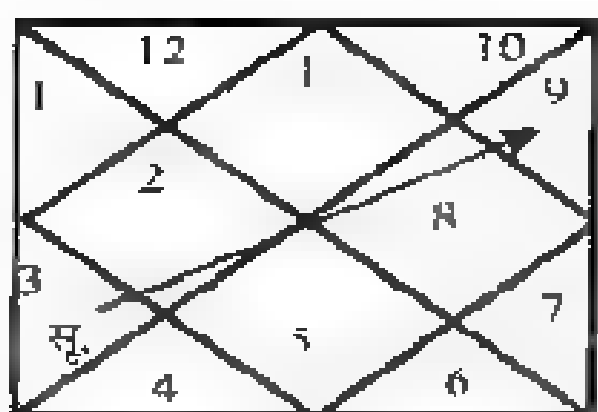
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां पंचम स्थान में मिथुन (सम) राशि में होगा। पितृ कारक तरीके नवम भाव से नवम स्थान पर होने से पिता के साथ अच्छे संबंध होंगे जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसे जातक को जीवनसाथी बहुत अच्छा मिलेगा। जिसके साथ खूब निभेगी जातक के मित्र भी अच्छे होंगे।

दृष्टि–सूर्य अपने स्थान से ग्यारहवें होकर ग्यारहवें स्थान (धनु राशि) पर दृष्टि करेगा। जातक को व्यापार से लाभ होगा यदि कुण्डली में बृहस्पति की स्थिति अच्छी है तो जातक शेयर बाजार, लॉटरी, सट्टा से रुपया कमायेगा।

निशानी–जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

दशा–सूर्य की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. सूर्य+चंद्र–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति पंचम स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या

की रात्रि 10 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्ठेश व सप्तमेश की युति पंचम भाव में होने से प्रथम संतति कन्या होगी अथवा प्रथम संतति का नाश होगा।

2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल संतान सुख में वृद्धि करेगा। जातक के चार पुत्र होंगे।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा, पंचम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। पंचम स्थान में बुध स्वगृही होकर लाभ भवन को देखेगा। फलत: जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। जातक प्रज्ञावान होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी। जातक की संतति भी शिक्षित रहेगी। जातक समाज का गणमान्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति जातक को विद्या से लाभ देगा। जातक के पांच पुत्र दो कन्या होंगे।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक की संतान तेजस्वी होगी।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह 'मिथुन राशि' में हैं सूर्य सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की युति पंचम भाव में होने से जातक की प्रथम संतति की अकाल मृत्यु संभव है। एकाध गर्भपात संभव है।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु पुत्र संतान में बाधक ग्रह का काम करेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु गर्भपात करायेगा। प्रथम संतति शल्य चिकित्सा से होगी।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में
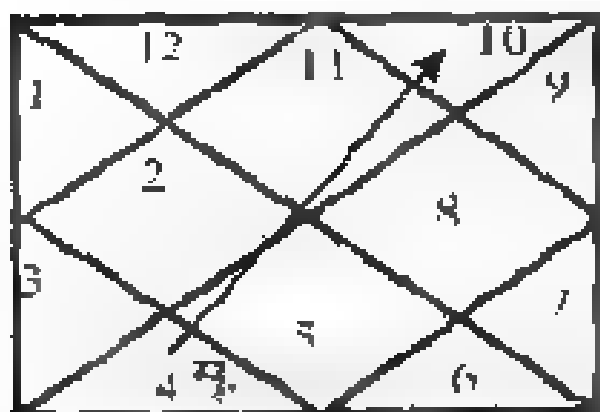
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां छठे स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य यहां अपने घर से बारहवें है अत: वैवाहिक सुख में बाधक है। सूर्य यहां '**विलम्बविवाह योग**' बना रहा है। प्रथमत: जातक का विवाह देरी से होगा अथवा विवाह होने पर भी वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण होगा। पितृ कारक सूर्य नवम भाव से दसवें स्थान पर स्थित होने से पिता का सुख एवं सम्पत्ति जातक को मिलेगी पर जातक उसका उपयोग नहीं कर पायेगा।

दृष्टि–षष्टपस्थ सूर्य की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसा जातक मुसाफिरी खूब करेगा व परदेश में कमायेगा।

निशानी–दाईं आंख कमजोर होगी 'लोमेश संहिता' के अनुसार ऐसे जातक की स्त्री सदैव बीमार रहेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति छठे स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति छठे स्थान मे होने से चंद्रमा स्वगृही होकर **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक का विवाह विलम्ब से होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। छठे स्थान में कर्क राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। छठे स्थान में बुध की शत्रु राशि है। जहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देखेंगे। अष्टमेश बुध के छठे जाने से **'हर्षयोग'** बना। फलतः जातक अपने शत्रु-समूह को नष्ट करने में सक्षम होगा। जातक बुद्धिमान होगा। सप्तमेश सूर्य के छठे जाने से **'विलम्ब विवाह योग'** बनता है। जातक समाज का अग्रगण्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को धन प्राप्ति हेतु भारी संघर्ष करना पड़ेगा
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'कर्क राशि' में हैं। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति में **'लग्नभंग योग'**, **'विवाहभंग योग'** भी बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा। विवाह विलम्ब से होगा अथवा जातक का दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहेगा। विवाह विच्छेद की संभावना है।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु गुप्तेन्द्रिय में बीमारी देगा।

8 **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु मूत्र संबंधी रोग या गुर्दे में रोग देगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में

1	12	11
10	9	2
8	3	7
5 सू.	4	6
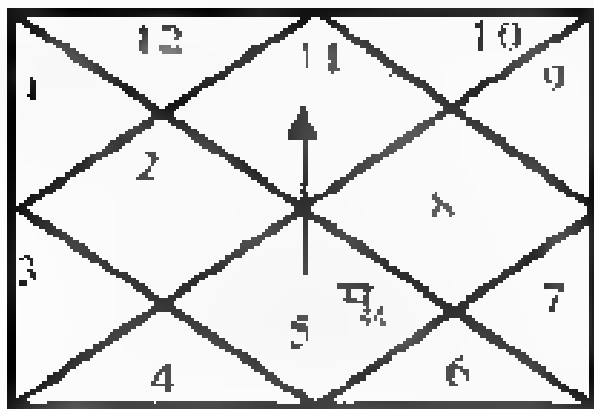
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां सप्तम स्थान में सिंह राशि का होकर स्वगृही है। ऐसे जातक का विवाह शीघ्र होता है। उसके संतान भी शीघ्र होती है, जातक का ससुराल व पत्नी तेजस्वी होंगे फलतः अहंकार का टकराव होता रहेगा। पत्नी तर्कीली स्वभाव की होगी। पितृ कारक सूर्य नवम भाव से ग्यारहवें स्थान पर होने के कारण पिता से बनेगी जातक का पिता की सम्पत्ति एवं राज (सरकार) की मदद भी मिलेगी

दृष्टि—सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्न स्थान पर होने से जातक उग्र (तेज) स्वभाव का होगा पर कार्य में सफलता मिलेगी।

निशानी—'लोमेश संहिता' के अनुसार जातक वाचाल होगा एवं हृदयरोगी होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1 **सूर्य+चंद्र—'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति सातवें स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या को सायं 6 से 8 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति सातवें स्थान में होने से सूर्य स्वगृही होगा जातक की पत्नी धनी होगी। जातक को ससुराल से लाभ होता रहेगा

2 **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल विवाह में विलम्ब करायेगा। पति-पत्नी के मध्य अहम् का टकराव होता रहेगा।

3 **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा सप्तम स्थान में सिंह राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा बलवान सप्तमेश की पंचमेश से युति होने के कारण जातक की संतति उत्तम होगी। पत्नी धनवान होगी जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक बुद्धिमान होगा तथा बुद्धिबल से अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का अग्रगण्य एवं लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा। जातक को ससुराल की सम्पत्ति मिलेगी।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र जातक को सुन्दर पत्नी देगा। विवाह के बाद जातक की नौकरी लगेगी या भाग्योदय होगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह 'सिंह राशि' में है। सूर्य यहां स्वगृही तो शनि शत्रु क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि व सप्तमेश सूर्य की इस युति से पति-पत्नी के बीच अहम् का टकराव होगा। जातक की पत्नी कमाऊ एव प्रभावशाली महिला होगी।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु विवाह विच्छेद या जीवन में बिछोह करा सकता है।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु गृहस्थ सुख में विलम्ब उत्पन्न करेगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में
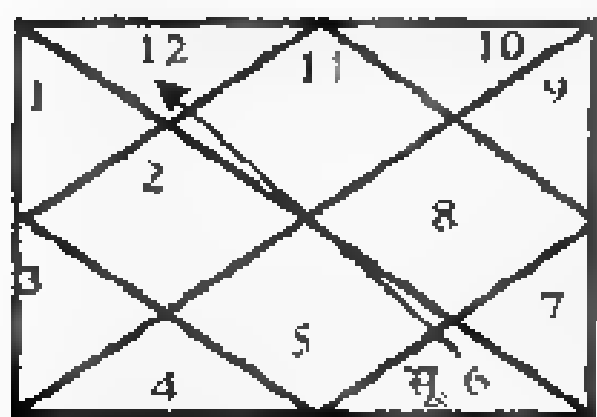
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहा अष्टम स्थान मे कन्या (सम) राशि मे होगा। सूर्य अपनी राशि से दूसरे एव नवम भाव से बारहवें स्थान पर होगा। ऐसा जातक अनीति मार्ग (गलत कार्यो) से द्रव्योपार्जन करेगा। जातक के पिता की मृत्यु छोटी आयु में हो सकती है। जातक को पिता की सम्पत्ति, पिता का सुख नहीं मिल पायेगा। राजपक्ष मे भी अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पायेगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि द्वितीय भाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसा जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी—'लामेश संहिता' के अनुसार जातक की स्त्री सदैव बीमार रहेगी। जातक की बाईं आंख कमजोर रहेगी।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को साय 4 से 6 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति आठवें होने पर अंग भंग का योग बनता है अचानक दुर्घटना संभव है।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल विलम्ब विवाह करायेगा। **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राज्यभंग योग'** के कारण जातक परेशान रहेगा।
3. **सूर्य+बुध**– **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। अष्टम भाव में कन्या राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां उच्च का होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह धनभाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक बुद्धिमान एवं धनवान होगा। अष्टम स्थान स्वामी बुध के अष्टम में स्वगृही होने से **'सरल योग'** बनेगा। ऐसा जातक दीर्घजीवी होगा। रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। सप्तमेश सूर्य के छठे जाने से **'विलम्ब विवाह योग'** बनेगा। जातक के शीघ्र विवाह व भाग्योदय में कुछ रुकावटें आ सकती हैं। पर फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** करायेगा। जातक आर्थिक विषमताओं में घिरा रहेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यहीन योग'** बनायेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'कन्या राशि' में है। सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति में **'लग्नभंग योग'** एवं **'विवाहभंग योग'** बनेगा। जातक को मेहनत का फल नहीं मिलेगा। विवाह विलम्ब से होगा अथवा दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहेगा। पति-पत्नी में दूरियां रहेंगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक को विधुर बनायेगा। जातक की पत्नी की मृत्यु जातक के आंखों के सामने होगी।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक के गृहस्थ सुख में बाधक है।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में

12	11	10	9	1	2	8	3	5	7 सू	4	6
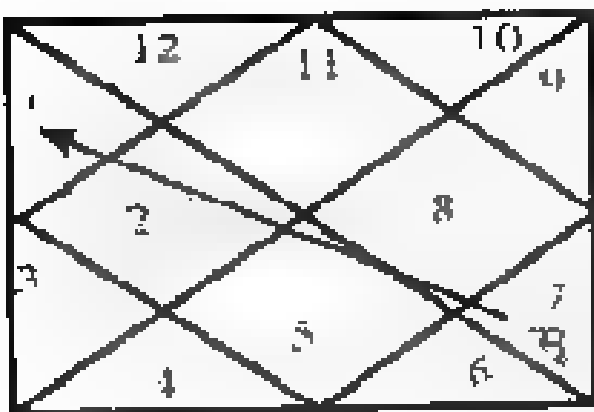
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलत: द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां नवम स्थान में नीच का होगा। तुला राशि के दस अंशों में सूर्य परम नीच का होगा। ऐसे जातक का जीवन साथी उससे कम (कक्षा) स्तर का होगा। पिता के

लिए यह सूर्य शुभ नहीं है। पिता की आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। जातक पिता से अलग रहेगा।

दृष्टि—नवमस्थ सूर्य की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। जातक के मित्र सब प्रकार से सक्षम व समर्थ होंगे।

निशानी—जातक का सही भाग्योदय विवाह के बाद होगा। पर जातक की पत्नी थोडी-थोड़ी बीमार रहेगी।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र—'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति नवम स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या की दोपहर 2 से 4 बजे के मध्य होता है। षष्ठेश व सप्तमेश की युति नवम स्थान पर होने से सूर्य नीच का होगा पर जातक भाग्यशाली एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल जातक को परम पराक्रमी बनायेगा। जातक धनवान होगा।
3. **सूर्य+बुध—'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। नवम स्थान में तुला राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्ठेश बुध के साथ युति होगी। दोनों ग्रह यहां बैठकर पराक्रम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक बुद्धिमान तथा भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 26 वर्ष की आयु में होगा। जातक पराक्रमी होगा, उसे परिजनों-मित्रों का सहयोग बराबर मिलता रहेगा। जातक धनी होगा एवं समाज के अग्रगण्य व्यक्तियों में गिना जायेगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति ससुराल से धन दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र स्वगृही होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एव धनी होगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह 'तुला राशि' में है। सूर्य यहा नीच का तो शनि उच्च का होने से **'नीचभग राजयोग'** बना। लग्नेश व सप्तमेश की नवम भाव में यह युति जातक को राजातुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी बनायेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा पर पिता की मृत्यु के बाद जातक की किस्मत विशेष रुप से चमकेगी।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु जातक का सरकारी नौकरी से वंचित करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु जातक को व्यापर में ले जायेगा

विशेष–यहां शुक्र यदि केन्द्रस्थ हो तो जातक प्रेमविवाह करेगा।

कुंभलग्न मे सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
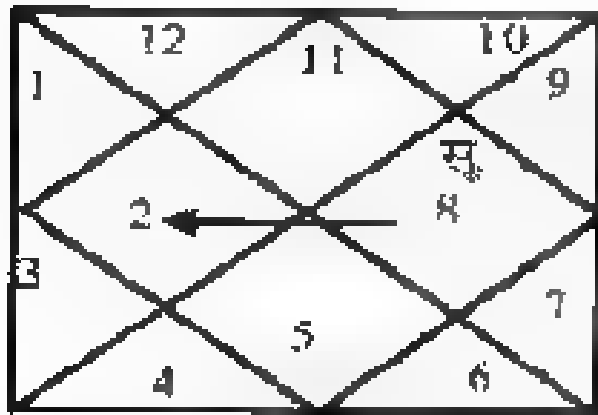
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां दशम स्थान मे वृश्चिक (मित्र) राशि का होगा। सूर्य अपने स्थान से चौथे व पितृ भाव से दूसरे स्थान पर स्थित होकर जातक को सभी प्रकार की भौतिक सुख-सुविधाएं एवं संपन्नता देगा। जातक को जीवनसाथी अच्छा मिलेगा। जातक को भागीदारी से लाभ होगा। जातक का अच्छी नौकरी, सरकार में ऊंचा पद मिलेगा।

दृष्टि–दशमस्थ सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक को अच्छा मकान मिलेगा, अच्छे सहयोगी (नौकर) मिलेंगे।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** के अनुसार ऐसे जातक को दंत रोग अवश्य होगा।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। सूर्य जातक को राजी रोजगार के नये अवसर प्रदान करेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति दशम स्थान (वृश्चिक राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 से 2 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति दशम स्थान में होगी जहा चद्रमा नीच का होगा। फिर भी ऐसा जातक पराक्रमी व प्रभावशाली होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल यहा **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यवान होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा, दशम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी, जहा बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। **'कुलदीपक योग'** के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम

दीपक के समान रोशन करेगा। जातक धनी, बुद्धिमान होगा एवं समाज के अग्रण्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ बृहस्पति ससुराल से धन दिलायेगा। जातक स्वयं भी धनवान होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र जातक को परम भाग्यशाली बनायेगा। व्यक्ति सरकार से मान-सम्मान अर्जित करेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह 'वृश्चिक राशि' में हैं। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि और सप्तमेश सूर्य की यह युति दशम भाव में होने से जातक को करोड़पति बनायेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा परन्तु सही अर्थों में भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु राज-सरकार से दण्ड दिला सकता है।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु सरकारी कार्य में बाधा डालेगा।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में

12 11 10 1 9 सू. 2 8 3 7 5 4 6
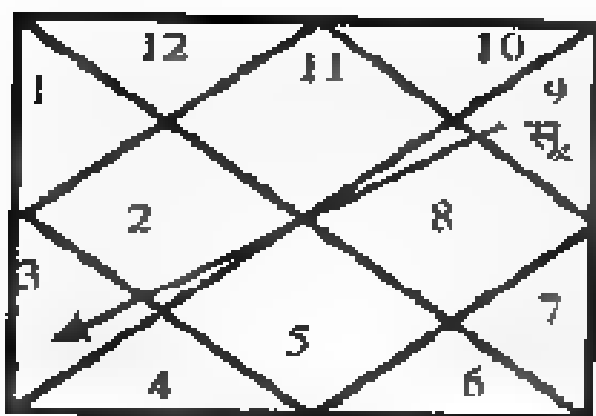
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहा एकादश स्थान में धनु (मित्र) राशि मे है। सूर्य यहां अपने स्थान से पांचवे एवं पितृ भाव से तीसरे स्थान पर है। जातक बुद्धिजीवी होगा तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी एवं भागीदारी के धंधे में लाभ होगा।

दृष्टि -एकादश भावगत सूर्य की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) मिलेगी।

निशानी—जातक को एक पुत्र जरूर होगा। **'लोमेश संहिता'** अ. 7/श्लोक 5 के अनुसार ऐसे जातक का पुत्र जीवित नहीं रहेगा। पुत्र यदि कन्या संतति के बाद में हो तो ही जीवित रहेगा।

दशा—जातक को सूर्य की दशा-अंतर्दशा में शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्र**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या

को दिन के 10 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति एकादश स्थान में होने से जातक का व्यवसाय में लाभ होगा।

2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल जातक को उद्योगपति एवं बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा।

3. **सूर्य+बुध**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। एकादश स्थान में धनु राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली तथा व्यापार-वर्गीय होगा। जातक शिक्षित होगा एवं उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के ऐश्वर्य-संसाधनों की प्राप्ति होगी. जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ बृहस्पति यहां **'कलत्रमूल धनयोग'** बनायेगा. जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।

5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र जातक को व्यापार में जबरदस्त लाभ देगा। जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह 'धनु राशि' में है। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति एकादश स्थान में होने से जातक को उद्योगपति बनायेगी। जातक के व्यापार-व्यवसाय में उन्नति विवाह के बाद होगी पर जातक सही अर्थों में धनपति पिता की मृत्यु के बाद होगा।

7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु उद्योग या चलते व्यापार में रुकावट डालेगा। एक बार व्यापार बन्द करायेगा।

8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु की युति विद्या एवं व्यापार में बाधक है।

कुंभलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

12 11 सू. 10 9 1 2 8 3 7 5 4 6
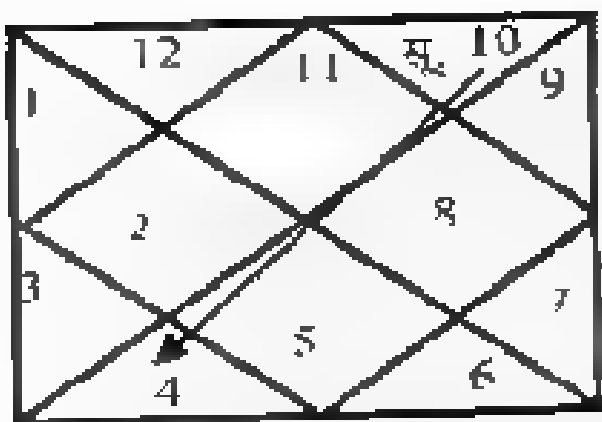
कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होने से अशुभ फलदाता है। सूर्य लग्नेश शनि का शत्रु है, फलतः द्वितीय मारकेश का काम करेगा। सूर्य यहां द्वादश स्थान में मकर (शत्रु) राशि में होगा। सूर्य के कारण यहां **'विलम्ब विवाह योग'** बनेगा। प्रथमतः ऐसे जातक का विवाह देरी से होगा। सूर्य अपने स्थान से छठे होने के कारण विवाह होने पर भी गृहस्थ सुख में विवाद (कलह) रहेगा। जातक को पिता का सुख नहीं मिलेगा। पिता छोटी उम्र में ही गुजर जायेगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ सूर्य की दृष्टि छठे भाव (कर्क राशि) पर होगी। ऐसा जातक अच्छी कमाई न कर सकेगा फलत· सदैव ऋणग्रस्त रहेगा।

निशानी–'**लोमेश संहिता**' के अनुसार ऐसे जातक की स्त्री सदैव बीमार रहेगी। उसकी बाईं आख कमजोर रहेगी।

दशा–सूर्य की दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्र**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुभलग्न मे सूर्य+चद्र की युति द्वादश स्थान (मकर राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म माघ कृष्ण अमावस्या को प्रात: 8 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति द्वादश स्थान मे नेत्र पीड़ा एव व्यर्थ की यात्राए देगी।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ उच्च का मगल '**पराक्रमभंग योग**' एव '**राजभग योग**' बनायेगा। जातक को विवाह सुख मे भयकर दिक्कत आयेगी।
3. **सूर्य+बुध**– भोजसहिता' के अनुसार कुभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। द्वादश भाव में मकर राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनो ग्रह छठे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली एव यात्रा-प्रिय होगा। जातक को जीवन मे सभी सुख-सुविधाएं मिलेगी। अष्टमेश बुध बारहवें होने से '**सरल योग**' बना। ऐसे जातक में रोग से लडने की शक्ति होती है तथा वह दीर्घजीवी होता है। सूर्य बारहवें होने से जातक का विवाह विलम्ब से होगा। फिर भी जातक समाज का अग्रगण्य एवं लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु** सूर्य के साथ नीच का बृहस्पति '**धनहीन योग**' एव '**लाभभंग योग**' बनायेगा। जातक आर्थिक विषमताएं भोगेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र '**सुखहीन योग**' एव '**भाग्यभग योग**' की सृष्टि करेगा। जातक भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु परेशान रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहा दोनों ग्रह 'मकर राशि' में हैं। सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री तो शनि स्वगृही होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति से '**लग्नभंग योग**' एव '**विवाहभंग योग**' बनेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। जातक का विवाह विलम्ब से होगा अथवा दाम्पत्य जीवन में बिछोह व तनाव की स्थिति रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु यात्रा में चोरी, पत्नी की मृत्यु या पत्नी से तलाक करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु विवाह में विवाद या विच्छेद करायेगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति प्रथम स्थान में
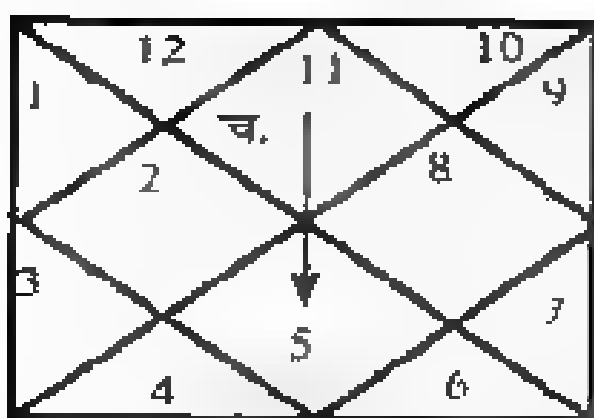
कुंभलग्न में चद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहा प्रथम स्थान में कुंभ (सम) राशि में होगा चंद्रमा यहां अपने स्थान (कर्क राशि) मे **'षडाष्टक योग'** करके बैठा है। ऐसा जातक नाजुक शरीर तथा स्वतंत्र विचारों वाला होता है। ऐसा जातक ऋण व रोग से त्रस्त रहेगा। जातक में व्यवहार कुशलता एवं उच्च सामाजिक स्तर का अभाव होता है। जिसके कारण उसके विरोधी उत्पन्न होते रहते हैं।

दृष्टि—लग्नस्थ चद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर है। जातक के गृहस्थ जीवन में खटपट रहेगी। जातक को माता का सुख कमजोर मिलेगा। जातक परदेश जाकर बसेगा।

निशानी—जातक की पत्नी सुदर होगी पर पति पत्नी दोनों मे वैचारिक मतभेद रहेंगे।

दशा—चद्रमा की दशा अन्तर्दशा शुभ फल नहीं देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1 **चद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुन कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के समय (6 से 8 बजे के मध्य) होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति लग्न में होने से जातक का जीवनसाथी अत्यधिक सुन्दर, आकर्षिक व्यक्तित्व का धनी एवं वफादार होगा।

2. **चंद्र+मंगल**—चंद्रमा के साथ मंगल **'लक्ष्मी योग'** बनायेगा जातक धनी होगा। यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे. यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ स्थान (वृष राशि), सप्तम भाव (सिंह राशि) एवं अष्टम भाव (कन्या राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। उसको भौतिक उपलब्धियों सुख-साधनों की प्राप्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा परन्तु उसकी आर्थिक उन्नति विवाह के बाद ही होगी

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को प्रखर कल्पना शक्ति के साथ तेज बुद्धि देगा।

4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में शुभ है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के प्रथम स्थान में यह युति कुंभ राशि में ही होगी। बृहस्पति+चंद्र की युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि हो रही है। फलतः ऐसे जातक का पहला भाग्योदय विवाह के बाद होता है। दूसरा भाग्योदय संतति के बाद होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा तथा उसकी गिनती समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित लोगों में होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को माता का सुख देगा। ऐसा जातक ऐश्वर्य पूर्ण जीवन जीयेगा।

6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा

7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु जातक को पूर्वाग्रही बनायेगा एवं रोग एवं शत्रु से जातक परेशान रहेगा।

8. **चंद्र+केतु**—ऐसा जातक स्थाई रूप से रोगी रहेगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वितीय स्थान में
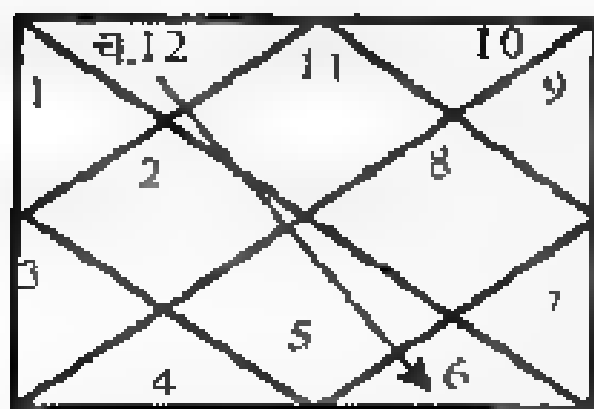
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां द्वितीय स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा यहां अपने घर से नवम स्थान पर होने से शुभ फलदाई है। जातक की वाणी विनम्र होगी। माता के साथ अच्छे संबध होंगे। मामापक्ष या ननिहाल से जातक को आर्थिक सहायता मिलेगी. जातक साहित्य का शौकीन व अनेक भाषाओं का जानकार होगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसे जातक को जलभय रहेगा, जल से दूर रहना ही हितकर है।

निशानी—ऐसा जातक युद्ध, कलह एवं विवाद से दूर रहना पसंद करेगा

दशा—चंद्रमा की दशा सामान्य जायेगी। पाप ग्रहों के सान्निध्य व प्रभाव से चंद्रमा मारक बन सकता है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वितीय स्थान (मीन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को प्रातः सूर्योदय के पूर्व 4 से 6 के मध्य होता है। षष्ठेश व सप्तमेश की युति द्वितीय स्थान में होने से जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
2. **चंद्र+मंगल**—चंद्रमा के साथ मंगल **'लक्ष्मीयोग'** बनायेगा। जातक धनवान होगा। यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह की दृष्टि पंचम स्थान (मिथुन राशि), अष्टम स्थान (कन्या राशि) एवं भाग्य स्थान (तुला राशि) पर होगी फलतः जातक धनवान होगा। सौभाग्यशाली भी होगा एवं लम्बी उम्र का मालिक होगा। परन्तु जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम संतति के बाद ही होगी।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध होने से जातक धनी तथा विद्यावान होगा एवं विनम्र वाणी का स्वामी होगा
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के द्वितीय स्थान में यह युति 'मीन राशि' के अंतर्गत होगी। बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः षष्ठेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ है। ये दोनों शुभ ग्रह षष्टम् स्थान, अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक को ऋण, रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक इस योग के कारण दुर्घटना व अपघात से बचा रहेगा शत्रुओं का नाश करेगा जातक को राज्य सरकार में मान-सम्मान मिलेगा। कोर्ट कचहरी में विजय श्री का वरण होगा
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ उच्च का शुक्र व्यक्ति को धनी एवं परम सौभाग्यशाली बनायेगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक अपने पुरुषार्थ पराक्रम से काफी धन कमायेगा
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु धन की बरकत नहीं होने देगा जातक आर्थिक परेशानियों में रहेगा।

8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु आर्थिक विषमताओं का द्योतक है।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति तृतीय स्थान में
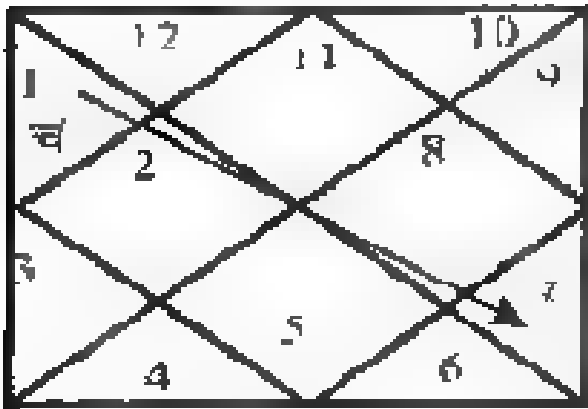
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां तृतीय स्थान में मेष (सम) राशि में होगा। चंद्रमा अपने घर से दशम स्थान पर होगा अत: ऊर्जावान होगा। यहां चंद्रमा को षष्टेश होने का दोष नहीं रहता। जातक क्रान्तिकारी विचारों वाला एवं पराक्रमी होता है। चंद्रमा मातृ कारक, तरीके चौथे भाव से बारहवें स्थान पर होने के कारण, माता का सुख कमजोर होगा। माता की मृत्यु छोटी उम्र में ही सम्भव है।

दृष्टि–तृतीयस्थ चंद्रमा की दृष्टि नवम भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसे जातक का भाग्योदय तीव्र गति से होता है, जातक विरोध एवं विरोधियों से नहीं घबराता।

निशानी–ऐसे जातक का पिता धनवान तथा यशस्वी होगा। जातक की बहनें अधिक होंगी।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति तृतीय स्थान (मेष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्णा अमावस्या को रात्रि 2 से 4 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति तृतीय स्थान में होने से जातक महान् पराक्रमी होगा। जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा
2. **चंद्र+मंगल**–यहां दोनों ग्रह तृतीय स्थान में मेष राशि के होंगे। मेष राशि में मंगल स्वगृही होगा। फलत: '**महालक्ष्मी योग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम भाव (कर्क राशि), भाग्य भाव (तुला राशि) एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक यहा धनवान होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक परम सौभाग्यशाली होगा तथा कोर्ट-कचहरी में सदैव विजय प्राप्त करने वाला भाई-बहनों से युक्त होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध होने से भाई-बहनों का पूर्ण सुख होगा। जातक के मित्र बहुत होंगे
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है। भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के तृतीय स्थान में यह युति 'मेष राशि' के अंतर्गत हो रही है। बृहस्पति+चंद्र

की यह युति षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, भाग्यभवन एवं लाभस्थान को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय 24वें वर्ष में अथवा विवाह के तत्काल बाद होता है। व्यापार-व्यवसाय द्वारा धन की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक सौभाग्यशाली होता है। उसकी गिनती समाज के गिने-चुने भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को उत्तम पराक्रम के साथ परम सौभाग्यशाली भी बनायेगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि की युति जीर्ण रोग उत्पन्न करेगी। वायु विकार रहेगा।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु की युति से जातक को क्षय रोग होगा। फेफड़ों में बीमारी रहेगी।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु की युति छाती में दर्द देगी।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति चतुर्थ स्थान में
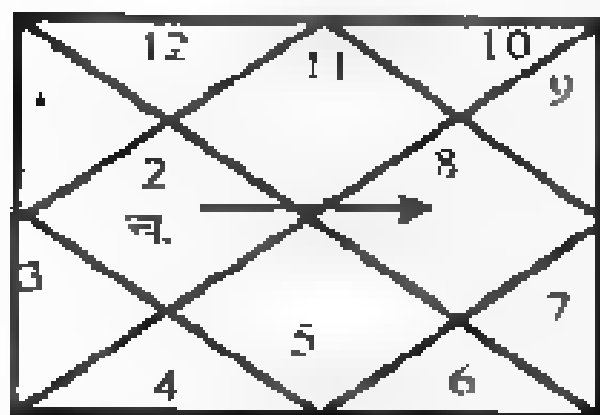
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां चौथे स्थान में उच्च का है। वृष राशि के तीन अंशों में चंद्रमा परमोच्च का कहलाता है। ऐसे जातक की कुण्डली में **'यामिनीनाथ योग'** की सृष्टि होती है। जातक को मकान, वाहन का सुख श्रेष्ठ होता है पर मातृ कारक तरीके कारक में होने से माता का सुख कमजोर मिलेगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होने से जातक को चंद्रमा से संबंधित धंधों में लाभ होगा। यथा मेडिकल, दवा, केमिकल, जल से उत्पन्न वस्तु, रत्न ज्वेलरी, होटल के कार्य, खाद्य सामग्री के धंधों में लाभ होगा।

निशानी—ऐसा जातक अपने शत्रु को भी क्षमा कर, उससे प्रेम करता है। जातक क्षमाशील होता है।

दशा—चंद्रमा की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति चतुर्थ स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या

को मध्यरात्रि 12 से 2 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति चतुर्थ भाव में होने से **'यामिनीनाथ योग'** बनेगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। वृष राशि में चंद्रमा उच्च का होकर **'यामिनीनाथ योग'** बनायेगा। मंगल यहा दिक्बली होने से **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव (सिंह राशि), दशम भाव (वृश्चिक राशि) एवं एकादश भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक महाधनी होगा। जातक व्यापार-व्यवसाय व उद्योग में प्रतिष्ठित होगा तथा राज्य (सरकार) या राजनीति मे पद प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को माता, भवन एव वाहन का पूर्ण सुख देगा। ऐसा जातक बहुत अच्छा 'प्लानिंग मास्टर' होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न मे है। 'भोजसंहिता' के अनुसार बृहस्पति+चंद्र की युति यहां चतुर्थ भाव में वृष राशि के अतर्गत हो रही है। यह युति वस्तुत षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहा चंद्रमा उच्च का होगा तथा केन्द्र स्थान में इन तीनों ग्रहो की उपस्थिति के कारण **'यामिनीनाथ योग'** एव **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि होगी। ये दोनों ग्रह यहा अष्टम स्थान, दशम भाव एव व्यय भाव का पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक का दुर्घटना एवं आघात से बचाव होता रहेगा। जातक समाज के शुभकार्य, परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में रुपया खर्च करता रहेगा। जातक का राज्यपक्ष (सरकार) कोर्ट कचहरी में दबदबा बना रहेगा
5. **चंद्र+शुक्र**—चद्रमा के साथ शुक्र **'किम्बहुना नामक'** उत्तम कोटि का राजयोग बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली, सौभाग्यशाली होगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि जातक को भौतिक सुख-सुविधाओं से युक्त करेगा। जातक परिश्रमी होगा ऐसा जातक कहीं भी हो मरते वक्त स्वदेश जरुर लौटेगा।
7. **चंद्र+राहु**—चद्रमा के साथ राहु जातक की माता को अकाल मृत्यु देगा।
8. **चंद्र+केतु**—चद्रमा के साथ केतु वाहन दुर्घटना दे सकता है।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति पंचम स्थान में

कुंभलग्न में चद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एव अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां पंचम स्थान मे मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। चद्रमा अपने घर (कर्क राशि)
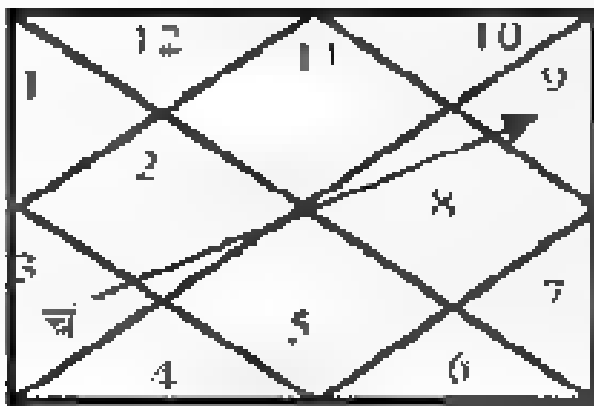
से बारहवें स्थान पर होंगे ऐसे जातक प्राय: चंचल व चपल होते है तथा अपनी बात को बदलने मे देरी नहीं लगती। पुरुषार्थ की कमी रहती हैं। जातक की प्रारम्भिक शिक्षा में बाधा आयेगी। जातक मंत्र तंत्र का जानकार होगा।

दृष्टि—पंचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश स्थान (धनु राशि) पर होगी ऐसे जातक को व्यापार से लाभ होगा। जातक का मित्र वर्तुल विस्तृत होगा। सड़क चलते लोग जातक के अनायास मित्र बन जाते हैं।

निशानी—ऐसे जातक के कन्या संतति अधिक होगी एवं पुत्र संतान का प्राय: जब तक कोई शुभ योग न हो अभाव बना रहेगा।

दशा—चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति पंचम स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़ कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति पंचम भाव मे होने से प्रथम संतति कन्या होगी अथवा प्रथम संतति का नाश होगा
2. **चंद्र+मंगल**—यहा पंचम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। चंद्रमा यहा शत्रुक्षेत्री होगा। यहा बैठकर दोनो ग्रह अष्टम भाव (कन्या राशि), लाभ स्थान (धनु राशि) एवं व्यय भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा प्रज्ञावान होगा, लम्बी उम्र का स्वामी होगा। अच्छे व्यापार व्यवसाय का स्वामी होगा। परन्तु जीवन में खर्च की बाहुल्यता रहेगी
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा। जातक को कन्या संतति अधिक होगी।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न मे हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न के पांचवें स्थान मे यह युति 'मिथुन राशि' में होगी। यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहा बैठकर ये दोनो शुभ ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं धन स्थान को देखेंगे। फलत: जातक परिश्रमी होगा तथा उसे धन की यथेष्ट प्राप्ति होती रहेगी परन्तु धन का खर्च शुभ कार्यो मे, परोपकार के कार्यों में होता रहेगा। जातक को राज्यपक्ष सरकार से सम्मान मिलता रहेगा। कोर्ट कचहरी में विजय मिलेगी

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को विद्या, संगीत, अभिनय व लेखन कार्य में सफलता दिलायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को उत्तम संतति का सुख देगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु की युति संतान प्राप्ति में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु गर्भपात करायेगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति षष्टम स्थान में
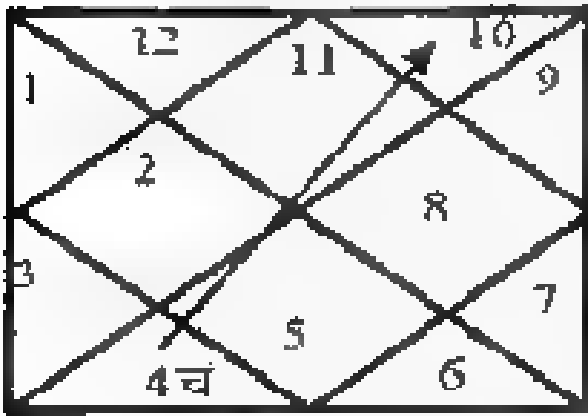
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां छठे स्थान में स्वगृही होगा। षष्टेश के षष्टम में स्वगृही होने से '**हर्षनामक विपरीत राजयोग**' बनेगा। जातक धनवान व भौतिक सुख सुविधाएं से युक्त होगा। जातक की माता छोटी उम्र में गुजर जायेगी। जातक को माता का सुख नहीं मिल पायेगा। चंद्रमा यहां जलतत्त्व में होने से जातक नशेबाज (शराबी) होगा।

दृष्टि–षष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। गुप्त शत्रु जातक को परेशान करेंगे। जातक को मामा व मौसी का सुख प्राप्त होता है।

निशानी–'लोमेश संहिता' अ. 6/श्लोक 1 के अनुसार ऐसा मनुष्य अपनी जाति, स्वजन, इष्टमित्र, संबंधियों के साथ शत्रु (दुश्मन) जैसा व्यवहार करता है।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य-चंद्र की युति छठे स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की रात्रि 8 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति छठे स्थान में होने से चंद्रमा स्वगृही होकर '**विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी मानी, अभिमानी होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। कर्क राशि में चंद्रमा स्वगृही एवं मंगल नीच का होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा। षष्टेश के छठे स्थान में स्वगृही होने से '**हर्षनामक विपरीत राजयोग**' भी बनेगा। फलतः जातक धनवान होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि भाग्य स्थान

(तुला राशि), व्यय भाव (मकर राशि) एवं लग्न भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: जातक भाग्यशाली तथा लगातार उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ने वाला होगा। परन्तु अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का जातक होगा।

3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध **'संतानहीन योग'** एवं **सरल नामक विपरीत राजयोग** बनायेगा। ऐसा जातक धनी होगा। पर प्रारंभिक विद्या प्राप्ति में बाधा आयेगी,

4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के छठे स्थान में यह युति कर्क राशि में हो रही है। यह युति वस्तुत षष्ठेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है यहां चंद्रमा स्वगृही एवं बृहस्पति उच्च का होगा। दु:स्थान में दु:स्थान के स्वामी का जाना शुभ माना गया है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एवं धनभाव को देखेंगे। फलत: जातक धन तो कमायेगा पर धन शुभ कार्यों में खर्च होता रहेगा। बचत कम होगी। राज्यपक्ष सरकार से, सरकारी अधिकारियों से लाभ होगा। इस शुभ योग के कारण जीवन में संघर्ष के बाद सफलता अवश्य मिलेगी

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा ऐसे जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु काफी परेशानी उठानी पड़ेगी।

6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक की आयु को घटायेगा।

7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु होने से जातक के प्रकट शत्रु बहुत होंगे

8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु गुप्त शत्रुओं की संख्या में वृद्धि करेगा।

विशेष–चंद्रमा छठे और शनि आठवें हों तो जातक की उम्र कम होगी।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति सप्तम स्थान में

12 11 10 1 9 2 8 3 7 च. 6 4 5
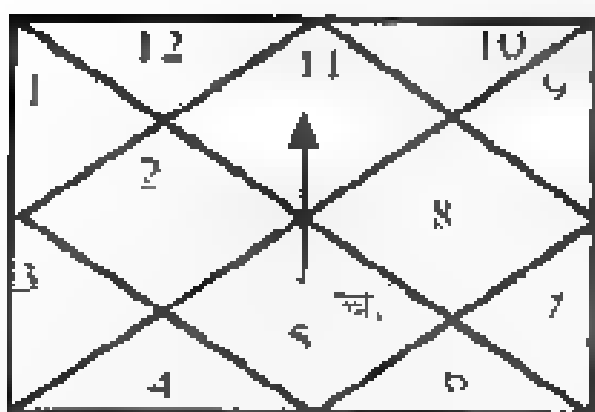
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां सातवें स्थान में सिंह (मित्र) राशि में है। यहां चंद्रमा अपने घर (कर्क राशि) से दूसरे स्थान पर है जातक को माता का सुख मिलेगा जातक को जीवनसाथी सुन्दर मिलेगा। वैवाहिक सुख उत्तम होगा। जातक परदेश जाकर अच्छा धन कमायेगा। भागीदारी के धंधे में लाभ होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक की उन्नति विवाह के बाद होगी।

निशानी—ऐसा जातक प्रेम विवाह करेगा। **'लोमेश संहिता'** अ. 6/श्लोक 2 के अनुसार ऐसा जातक धनवान एवं कीर्तिवान् होता है।

दशा—चंद्रमा केन्द्रस्थ होने से उसकी दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चद्र+सूर्य**—**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न मे सूर्य+चंद्र की युति सातवे स्थान (सिह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्रकृष्ण अमावस्या की साय 6 से 8 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति सातवे होने से सूर्य स्वगृही होगा। जातक की पत्नी धनी होगी। जातक को ससुराल· से लाभ होता रहेगा.
2. **चद्र+मंगल**—यहा सप्तम स्थान में दोनों ग्रह सिह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनो ग्रह दशम भाव (वृश्चिक राशि), लग्न स्थान (कुभ राशि) एवं धन स्थान (मीन राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनी होगा जातक उद्यम करके धन कमायेगा तथा निरन्तर उन्नति मार्ग की ओर बढता रहेगा। जातक की आर्थिक स्थिति में सुधार विवाह के बाद होगा। जातक का राजनीति मे भी वर्चस्व रहेगा।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को सुन्दर एवं पढ़ी लिखी पत्नी देगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है। भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के सप्तम स्थान में यह युति सिंह राशि के अतर्गत होगी। सिह राशि में यह युति वस्तुत: षष्टेश चद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को धन लाभ होगा तथा उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय मे बराबर लाभ होता रहेगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र होने से जातक का जीवनसाथी सौभाग्यशाली एवं सुंदर शरीर वाला होगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
7. **चद्र+राहु**—चद्रमा के साथ राहु दाम्पत्य सुख में कटुता लायेगा। बिछोह की स्थिति भी आ सकती है।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु दाम्पत्य सुख में विषमता उत्पन्न करेगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति अष्टम स्थान में
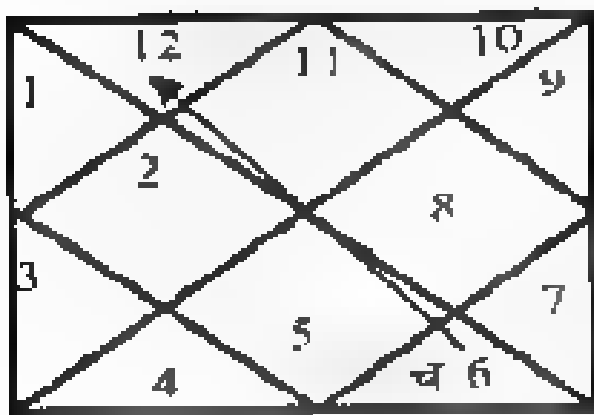
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां छठे स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में है। चंद्रमा की इस स्थिति में **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बना। जातक धनवान एवं भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त सम्पन्न व्यक्ति होगा। ऐसा जातक परदेश जाकर अच्छा कमाता है। जातक को माता का सुख नहीं के बराबर होगा। 'लोमेश संहिता' अ. 6/श्लोक 3 के अनुसार ऐसा जातक सदैव बीमार रहता है।

दृष्टि–अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धन भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक की भाषा मीठी व विनम्र होगी।

निशानी–जातक को पेट, प्रोस्टेट, मूत्राशय की बीमारी होगी।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य 'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति आठवें स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आश्विन कृष्ण अमावस्या को सायं 6 से 4 बजे के मध्य होता है. षष्टेश व सप्तमेश की युति आठवें होने पर अंग-भंग का योग बनता है। अचानक दुर्घटना संभव है।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। कन्या राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा पर षष्टेश होकर चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनेगा। मंगल के कारण **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राज्यभंग योग'** भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (धनु राशि), धन स्थान (मीन राशि) एवं पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। निसन्देह मंगल की यह स्थिति ज्यादा सुखद नहीं है। जातक धनवान तो होगा पर भाई कुटम्बियों से त्रस्त रहेगा, कोर्ट-कचहरी में शत्रु परेशान करते रहेंगे।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध **'संतानहीन योग'** एवं **'सरल नामक विपरीत राजयोग'** उत्पन्न करता है। जातक को संतान संबंधी चिंता व परेशानी रहेगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में हुआ है। 'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न के आठवें स्थान में यह युति कन्या राशि के अंतर्गत हो रही है। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति+चंद्रमा के अष्टम स्थान में आने से **'धनभंग**

योग' एवं 'लाभभंग योग' बना। चंद्रमा शत्रु क्षेत्री है। परन्तु षष्टेश चद्र का आठवें जाना शुभ संकेत है। ये दोनों ग्रह व्यय भाव, धन भाव एवं सुख स्थान पर हैं। फलतः ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक दीर्घायु होगा। उसमें रोग से संघर्ष करने की पूर्ण शक्ति होती है। जातक का भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति सहज में होगी। जातक को उत्तम वाहन सुख मिलेगा।

5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि करेगा। जातक को भौतिक सुख की प्राप्ति कठिनता से होगी।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि **'लाभभंग योग'** एवं **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक निश्चय ही धनी एवं साधन सम्पन्न होगा।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु गुप्त एवं प्रकट शत्रुओं की वृद्धि करेगा।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु जातक को गुप्त रोग या गुप्त बीमारी देगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति नवम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 7 च. 5 4 6
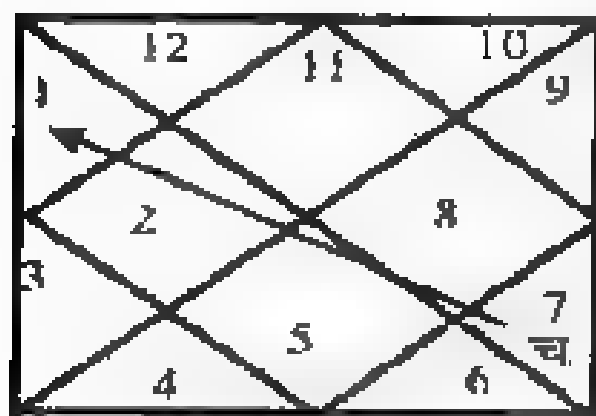
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहा नवम स्थान में तुला (सम) राशि में है। यहां चंद्रमा अपनी राशि में चौथे स्थान पर है। फलतः माता के साथ संबंध ठीक होंगे। 'लोमेश संहिता अ. 6/श्लोक 4 के अनुसार ऐसे जातक को कभी व्यापार में हानि नहीं होती। जीवन में उतार चढ़ाव आते रहेंगे।

दृष्टि—नवमस्थ चंद्रमा की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा तथा उसे धन, यश, पद-प्रतिष्ठा माता-पिता का पूरा-पूरा सुख मिलेगा।

निशानी—जातक को मामा के यहां से लाभ, अपने से नीचे काम करने वाले से लाभ प्राप्त होगा।

दशा—चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति नवम स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को दोपहर 4 से 2 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति नवमे स्थान

पर होने से सूर्य नीच का होगा पर जातक भाग्यशाली एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।

2. **चंद्र+मंगल**—यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह तुलाराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (खर्च स्थान), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एवं चतुर्थ स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनवान होगा। पराक्रमी होगा। खर्चीले स्वभाव का होगा। जीवन में सभी प्रकार के भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज में ही हो जायेगी।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक का भाग्योदय अर्जित विद्या द्वारा होगा जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में है। भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के नवमें स्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति तुलाराशि में होगी। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लग्नस्थान, पराक्रमस्थान एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक खुद पढ़ा-लिखा होगा। उसको पिता की सम्पत्ति मिलेगी तथा उसकी संतानें भी पढ़ी लिखी होंगी जातक का सर्वांगीण विकास चहु ओर से होगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ स्वगृही शुक्र जातक को माता पिता का सुख व सम्पत्ति दिलायेगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि उच्च का होगा। जातक परम सौभाग्यशाली होगा। उसके पास उत्तम वाहन होंगे।
7. **चंद्र+राहु** चंद्रमा के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधक है।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगा। जातक की महत्वाकांक्षाएं सार्थक होंगी।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति दशम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 चं 3 7 5 4 6
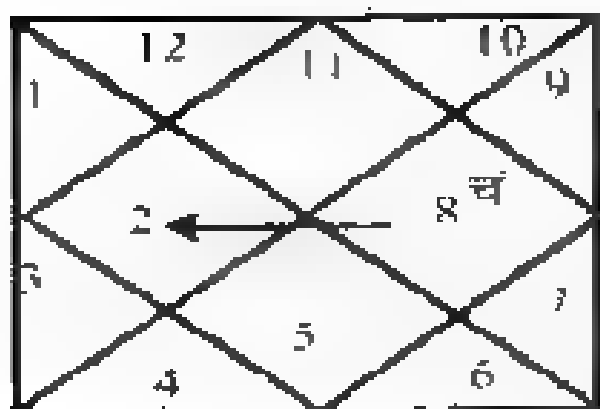
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है चंद्रमा यहां दशम स्थान में नीच का होगा, वृश्चिक के तीन अंशों पर चंद्रमा परम नीचक का होता है। चंद्रमा यहां 'दिग्बल' से शून्य होता है। फलतः सांसारिक सुख एवं संतान सुख में न्यूनता देता है। जातक को विद्या का सुख उत्तम। जातक को विषभोजन का भय रहता है।

दृष्टि—दशमस्थ चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थभाव (वृष राशि) पर होगी। फलत: जातक को निजी भवन एवं वाहन का सुख मिलेगा। जातक चंद्रमा संबंधी कार्यों से धन लाभ प्राप्त करेगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अ. 6/श्लोक 5 के अनुसार ऐसे जातक को परदेश में अच्छा लाभ मिलेगा। जातक प्रखर वक्ता होगा।

दशा—यहां केन्द्रवर्ती होने से चंद्रमा की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्र+सूर्य**—**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चद्र की युति दशवें स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या की दोपहर 2 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति दशमें स्थान में होगी। जहां चंद्रमा नीच का होगा। फिर भी ऐसा जातक पराक्रमी व प्रभावशाली होगा।
2. **चद्र+मंगल**—यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि मे होंगे। मंगल यहां स्वगृही एव चंद्रमा नीच का होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। मंगल दिक्बली होकर **'कुलदीपक योग'** भी बनायेगा। 'पद्मसिंहासन योग' होने से यहां **महालक्ष्मी योग** की सृष्टि हुई। फलत: ऐसा जातक महाधनी होगा। दोनों ग्रह की दृष्टि लग्न स्थान (कुभ राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलत: जातक निरन्तर उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ता हुआ उत्तम वाहन व भौतिक सुखो को प्राप्त करेगा। जातक की संतान भी प्रतिष्ठित होगी।
3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को उत्तम वाहन, भवन एवं नौकर का सुख मिलेगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुभलग्न के दसवें स्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति वृश्चिक राशि में हो रही है। कुभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की यह युति, वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा नीच राशि में होगा। ये दोनों ग्रह केन्द्रस्थ होकर **'कुलदीपक योग'**, **'यामिनीनाथ योग'** बनाते हुए धनस्थान, सुखस्थान एवं षष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक को राज्यपक्ष से लाभ होगा। धनप्राप्ति होती रहेगी। जातक सांसारिक सभी सुख ससाधन सहज मे प्राप्त होंगे। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक शत्रु का

सम्पूर्ण नाश करने में सक्षम होगा। जातक की गिनती समाज के अग्रगण्य व्यक्ति मे होगी।

5. **चंद्र+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को एक से अधिक वाहन एवं मकान दिलायेगा।
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को करोड़पति बनायेगा।
7. **चंद्र+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु राजसुख में बाधक है। जातक को सरकारी कर्मचारी परेशान करेंगे।
8. **चंद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को उच्च महत्वाकांक्षी बनायेगा। जातक कीर्तिवान् होगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति एकादश स्थान में
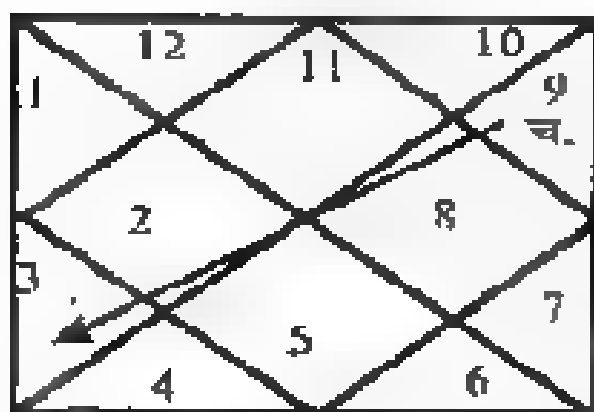
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्टेश होने से परम पापी एव अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां एकादश स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। चंद्रमा अपने घर से छठे स्थान पर होकर 'षडाष्टक योग' बनायेगा। जातक विद्यावान होगा तथा मंत्र-यंत्र-तंत्र विद्या का जानकार होगा।

दृष्टि–एकादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी।

निशानी–लोमेश संहिता अ. 6/श्लोक 2 के अनुसार ऐसे जातक के पास बहुत धन होगा। जातक कीर्तिवान् होगा, गुणवान व साहसी होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा मिश्रित फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति एकादश स्थान (धनु राशि) में होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को दिन के 12 से 10 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति एकादश स्थान में होने से जातक का व्यवसाय मे लाभ होगा।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह धनुराशि मे होगें। यहा बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टिया धन स्थान (मीन राशि) पंचम स्थान (मिथुन राशि) एव षष्टम् स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान होगा। ऋण रोग

व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक सम्पन्नता पुत्र जन्म के बाद बढ़ेगी, ऐसे जातक की संतति भी धनवान होगी।

3. **चंद्र+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक को बड़े भाई का सुख देगा। जातक उत्तम संतति का पिता होगा।
4. **चंद्र+गुरु**—आपका जन्म कुंभलग्न में है। **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के के चंद्र+बृहस्पति की युति एकादश स्थान में धनु राशि के अंतर्गत होगी। यह युति वस्तुतः षष्ठेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा उसकी दृष्टि पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव पर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा तथा प्रथम संतति के बाद जातक का दूसरा भाग्योदय होगा। जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा। जातक के परिजन व मित्र जातक के सहायक रहेंगे। जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
5. **चंद्र+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को बड़ा उद्योगपति बनायेगा।
6. **चंद्र+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि जातक को व्यापार एवं परिश्रम का लाभ दिलायेगा।
7. **चंद्र+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु व्यापार में नुकसान एवं बड़े भाई की हानि करायेगा।
8. **चंद्र+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु व्यापार में उतार-चढ़ाव लाता रहेगा।

कुंभलग्न में चंद्रमा की स्थिति द्वादश स्थान में
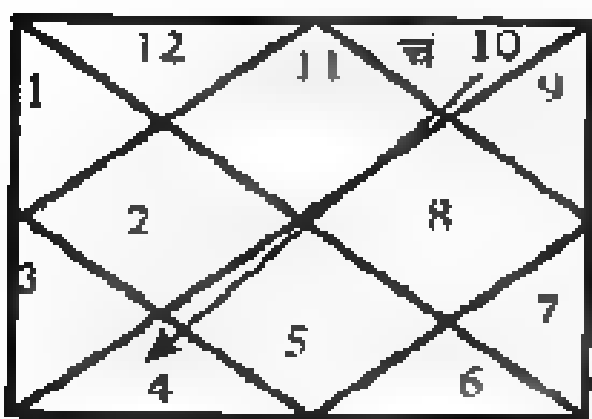
कुंभलग्न में चंद्रमा षष्ठेश होने से परम पापी एवं अशुभ फल प्रदाता है। चंद्रमा यहां द्वादश स्थान में मकर (सम) राशि में है। चंद्रमा की इस स्थिति से **'हर्ष नामक विपरीत राजयोग'** बन रहा है। ऐसा जातक धनवान, भौतिक सुख सुविधाओं से युक्त सम्पन्न व्यक्ति होता है। **'लोमेश संहिता'** अध्याय 6/श्लोक 3 के अनुसार ऐसा जातक सदैव बीमार रहता है तथा मनीषियों से द्वेष रखता है। जातक को माता का सुख नहीं मिलेगा। जातक को देश-परदेश की यात्रा से लाभ होगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत चंद्रमा की दृष्टि अपने ही घर छठे स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक गुप्त शत्रुओं से परेशान रहेगा।

निशानी—जातक को डाईबीटिज की बीमारी, गुप्त रोग होंगे

6. **दशा**–चंद्रमा की दशा अन्तर्दशा अनिष्ट फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्र+सूर्य–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य+चंद्र की युति द्वादश स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कृष्ण अमावस्या को प्रातः 10 से 8 बजे के मध्य होता है। षष्टेश व सप्तमेश की युति द्वादश स्थान में नेत्रपीड़ा एवं व्यर्थ की यात्राएं देगी।
2. **चंद्र+मंगल**–यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। मकर में मंगल उच्च का होगा। यहां चंद्रमा षष्टेश होकर द्वादश में होने से **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम् स्थान (कर्क राशि) एवं सप्तम स्थान (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः ऐसा जातक धनी होगा। ऋण-रोग एवं शत्रुओं का सम्पूर्ण नाश करने में सक्षम होगा पर जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
3. **चंद्र+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध **'संतानहीन योग'** एवं **'सरल नामक विपरीत राजयोग'** करायेगा। ऐसा जातक धनी होगा। ऐश्वर्य सम्पन्न होगा। पर उसे संतान की चिंता रहेगी।
4. **चंद्र+गुरु**–आपका जन्म कुंभलग्न में है। 'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में चंद्र+बृहस्पति की यह युति द्वादश भाव मकर राशि के अंतर्गत है। बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति यहां द्वादश भाव में नीच का होगा। जहां से बृहस्पति सुखस्थान षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः धन में कमी लाभ में कमी महसूस करेंगे। फिर भी जातक को ऋण, रोग व शत्रु को भय नहीं रहेगा। जातक दीर्घायु होगा। उसे प्राकृतिक, आकस्मिक आपदाओं से बचाव होगा। जातक को वाहन सुख मिलेगा एवं भौतिक संसाधनों की प्राप्ति सहज में होती रहेगी। जातक को कोई भी वस्तु जीवन में आसानी से नहीं मिलेगी. सफलता निश्चित है पर संघर्ष के बाद
5. **चंद्र+शुक्र** चंद्रमा के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक जीवन में काफी कष्ट उठायेगा
6. **चंद्र+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी, मानी होगा पर परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
7. **चंद्र+राहु** चंद्रमा के साथ राहु भारी आर्थिक परेशानियां एवं दिक्कतें पैदा करेगा।

8. **चद्र+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को धार्मिक एवं परोपकारी जीवन जीयेगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में
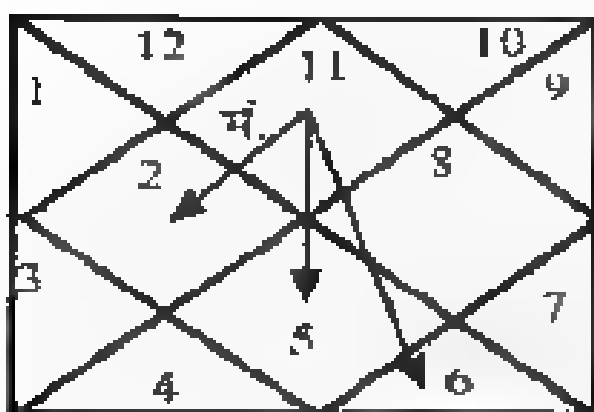
कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां प्रथम स्थान में कुंभ (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक उग्र स्वभाव का स्वतंत्र प्रेमी, महत्वाकांक्षी व साहसी होता है। मंगल की इस स्थिति में कुण्डली **मांगलिक** बनती है। मंगल की यह स्थिति वैवाहिक सुख के लिए ठीक नहीं मानी गई है। जातक को मकान का सुख उत्तम मिलेगा। जातक शत्रु का पराक्रम नष्ट करने में सक्षम होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ मंगल की दृष्टि चतुर्थ स्थान (वृष राशि), सप्तम स्थान (सिंह राशि) एवं अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक की माता छोटी उम्र में गुजर जावें या बीमार रहे। विवाह में अनपेक्षित विलम्ब सम्भव है। जातक को अकस्मात् दुर्घटना का भय रहेगा।

निशानी–ऐसे जातक के शरीर या चेहरे पर गिरने से, शस्त्र से स्थाई चोट का निशान बना हुआ मिलेगा। **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक निम्न परिवार में जन्म लेकर भी उच्च पद को प्राप्त करेगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह चतुर्थ स्थान (वृष राशि), सप्तम भाव (सिंह राशि) एवं अष्टम भाव (कन्या राशि) को देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। उसको भौतिक

उपलब्धियों सुख साधनों की प्राप्ति होगी। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा परन्तु आर्थिक उन्नति विवाह के बाद ही होगी।

2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य होने से जातक की पत्नी सुंदर, आकर्षक व धनवान होगी। जातक का दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को प्रखर बुद्धिशाली एवं व्यापार प्रिय बनायेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति जातक को भाई-कुटम्बी एवं मित्रजनों से लाभ दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र होने से जातक को उत्तम वाहन एवं भवन का सुख मिलेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि स्वगृही होने से '**शश योग**' बनेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व का धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जातक को उच्छृंखल बनायेगा। ऐसा जातक किसी के नियंत्रण में नहीं रहता।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को प्रभावशाली व्यक्तित्व देगा। जातक लड़ाकू होगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में
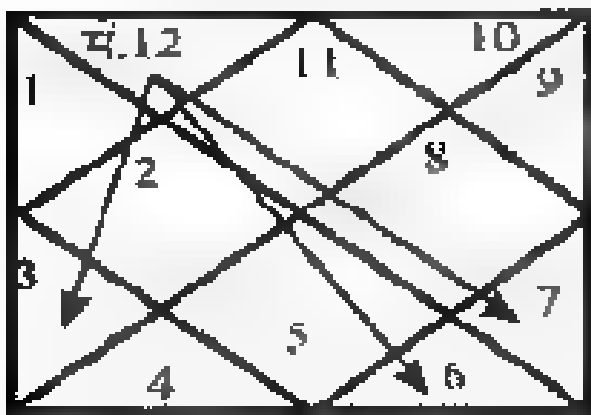
मं.12, 11, 10, 1, 9, 2, 8, 3, 7, 5, 4, 6

कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां द्वितीय स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक की वाणी कठोर होगी तथा जातक धन भी कठिनता से कमायेगा। जातक की आखें कमजोर होंगी जातक की अपने भाई बहनों के साथ कम पटेगी, कुटुम्ब में अशान्ति रहेगी। जातक को यश, धन, पद-प्रतिष्ठा इत्यादि का सामान्य लाभ होगा।

दृष्टि–द्वितीयस्थ मंगल की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि), अष्टम भाव (कन्या राशि) एवं भाग्य स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक की प्रथम संतति शल्य चिकित्सा से होगी। संतान संबधी चिंता रहेगी अकस्मात् दुर्घटना का भय रहेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिल पायेगी।

निशानी–ऐसे ज्योतिषी (जातक) द्वारा दी गई अशुभ भविष्यवाणिया सचोट सच साबित होगी। वकीलों व डॉक्टरों के लिए मंगल की यह स्थिति शुभ है। उनकी अतर्प्रेरणा व सोच सही होगी।

दशा–मंगल की दशा मारक का काम करेगी। मंगल में सूर्य एव बृहस्पति के अन्तर विशेष मारक होंगे।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रह की दृष्टि पचम स्थान (मिथुन राशि), अष्टम स्थान (कन्या राशि) एवं भाग्य स्थान (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान तथा सौभाग्यशाली भी होगा एवं लम्बी उम्र का मालिक होगा। जातक की आर्थिक उन्नति प्रथम सतति के बाद ही होगी।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को धनी ससुराल देगा। जातक की भाषा कड़क होगी
3. **मंगल+बुध**–मगल के साथ बुध जातक को प्रखर वक्ता बनायेगा जातक की सोच नकारात्मक होगी।
4. **मंगल+गुरु**–मगल के साथ बृहस्पति '**भ्रातृमूल धनयोग**' एवं '**राजमूल धनयोग**' बनायेगा। ऐसे जातक को भाइयों से एव सरकार से धन की प्राप्ति होगी।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र उच्च का होकर जातक को महाधनी एवं सौभाग्यशाली बनायेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को धनी, घमण्डी एव षड्यन्त्रकारी बनायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मगल के साथ राहु, धन के घड़े में छेद एव आर्थिक दिक्कतें देगा।
8. **मगल+केतु**–मगल के साथ केतु धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करायेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में
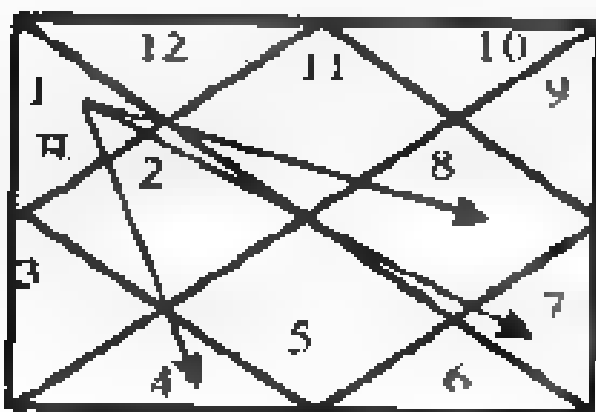
कुभलग्न मे मंगल तृतीयेश एव राज्येश है। कुभलग्न में मगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां स्वगृही होगा। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी होगा, जातक युद्ध प्रिय एव

दृढ़ निश्चयी होता है। जातक को भूमि-भवन, ठेकेदारी के कार्यों में फायदा होगा। जातक के संभवतः तीन भाई होंगे जातक के मित्र जातक के लिए मददगार साबित होंगे।

दृष्टि—तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे भाव (कर्क राशि), भाग्य भवन (तुला राशि) एवं दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसे जातक के नौकर ठीक नहीं होंगे। मामा के घर से संबध ठीक नही होंगे। जातक का भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के बाद होगा। दशम भाव पर दृष्टि होने से जातक को मंगल सबधी कार्यों से लाभ होगा।

निशानी—ऐसा जातक स्व प्रयत्न से आगे बढ़ता है तथा जन्म स्थान से दूर जाकर अपनी किस्मत चमकाता है।

दशा—मगल की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मगल+चंद्र**—यहां दोनों ग्रह तृतीय स्थान में मेष राशि के होंगे। मेष राशि मे मगल स्वगृही होगा। फलतः '**महालक्ष्मी योग**' की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनो ग्रह षष्टम भाव (कर्क राशि), भाग्य भाव (तुला राशि) एव दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक यहां धनवान होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक परम सौभाग्यशाली होगा तथा कोर्ट-कचहरी में सदैव विजय प्राप्त करने वाला एवं भाई-बहनों से युक्त होगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य '**किम्बहुना नामक राजयोग**' बनायेगा। जातक महान पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल पराक्रमी एव धनवान होगा।
3. **मगल+बुध**—मगल के साथ बुध जातक को भाई-बहन का सुख देगा। जातक स्वय एवं उसके रिश्तेदार सुसभ्य एवं शिक्षित होगे।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति '**राजमूल धनयोग**' बनायेगा। ऐसे जातक को राज सरकार से वित्तीय सहायता व सम्मान मिलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ देगा।
6. **मगल+शनि**—मगल के साथ शनि '**नीचभग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एव यशस्वी होगा।
7. **मगल+राहु**—मंगल के साथ राहु भाइयो में विग्रह-विद्वेष उत्पन्न करेगा।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु जातक को जनता से यश एव कीर्ति दिलायेगा।

विशेष—मगल तीसरे एव शुक्र चौथे स्थान मे हो तो जीवन में राजयोग शक्तिशाली बना रहेगा

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में

12	11	10	9
1	2 म.	8	
3	5	7	
4		6	
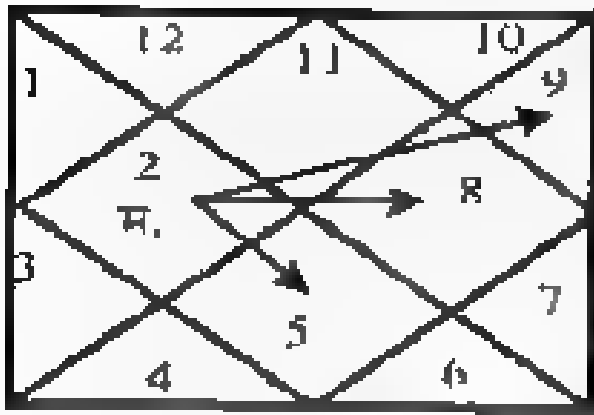
कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां चतुर्थ स्थान में वृष (सम राशि) में होगा। मंगल यहां **'मांगलिक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक आप अकेला न होगा उसके छोटे भाई बहन जरूर होंगे पर उनसे बनेगी नहीं। जातक के विलम्ब विवाह का योग बनता है। जातक को मकान सुख उत्तम मिलेगा। यहां **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक निम्न परिवार में जन्म लेकर भी कीचड़ में कमल की तरह उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि), दशम भाव (वृश्चिक राशि) एवं एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को जीवन साथी उत्तम (अच्छा) मिलेगा, परन्तु उनमें परस्पर मतभेद रहेगा। जातक को मंगल के धंधों से लाभ होगा। एकादश स्थान पर दृष्टि होने के कारण जातक को अच्छे मित्र मिलेंगे

निशानी—ऐसे जातक स्वार्थी होगा। **'लोमेश संहिता'** के अनुसार ऐसा जातक असत्यवक्ता होता है तथा अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी कर सकता है।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चंद्र**—यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। वृष राशि में चंद्रमा उच्च का होकर **'यामिनीनाथ योग'** बनायेगा। मंगल यहां दिक्बली होने से **'महालक्ष्मी योग'** की सृष्टि होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम (सिंह राशि), दशम भाव (वृश्चिक राशि) एवं एकादश भाव (धनु राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक महाधनी तथा व्यापार-व्यवसाय व उद्योग में प्रतिष्ठित होगा। राज्य (सरकार) या राजनीति में पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को पत्नी से स्थाई सम्पत्ति का लाभ दिलायेगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को उच्च शिक्षा दिलायेगा। जातक के पास निजी भवन होगा

4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति माता से धन दिलायेगा। जातक को भूमि से लाभ होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ स्वगृही शुक्र '**मालव्य योग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। उसके पास अनेक वाहन होंगे।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ एवं सांसारिक सुखो को दिलायेगा।
7. **मंगल+राहु** मंगल के साथ राहु की युति माता के लिए घातक है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु मातृभूमि छुड़ायेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
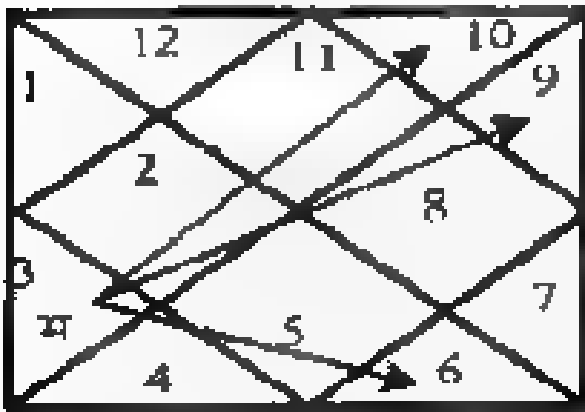
12 11 10 9 1 2 8 3 मं 7 5 4 6

कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुभलग्न में मगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुभलग्न मे मगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां पंचम स्थान में मिथुन (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक प्राय: डॉक्टर, इंजीनियर, वकील अथवा तर्कशास्त्री होगा। जातक के मित्र अच्छे होंगे। छोटे भाई के लिए यह मगल शुभ फलदायक है। यहां **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि–पचमस्थ मंगल की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि), एकादश भाव (धनु राशि) एव द्वादश भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को अकस्मात दुर्घटना का भय रहेगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा जातक व्यर्थ के कार्य में फालूत खर्च बहुत करेगा

निशानी जातक के तीन पुत्र होंगे परन्तु ज्येष्ठ संतति की मृत्यु होगी। 'लोमेश संहिता' के अनुसार ऐसे जातक के पुत्र जरूर होंगे। जातक स्वयं धनवान होगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा पराक्रम बढ़ायेगी तथा उन्नति दायक होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहा पंचम स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव (कन्या राशि), लाभ स्थान (धनु राशि) एवं व्यय भाव (मकर राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनी,

प्रज्ञावान, लम्बी उम्र का स्वामी होगा जातक अच्छे व्यापार व्यवसाय का स्वामी होगा। परन्तु जीवन में खर्च की बाहुल्यता रहेगी।

2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को पुत्र संतति अवश्य देगा जातक विद्यावान होगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को दो कन्या तीन पुत्र देगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति जातक को उच्च शिक्षा देगा तथा राजकीय पद-प्रतिष्ठा दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र भौतिक सुखों में वृद्धि करेगा। जातक को भूमि लाभ होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ दिलायेगा। जातक तकनीकि व्यक्तित्व एव विद्या का धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ की युति राहु पुत्र संतति में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु संतति सुख देगा पर धार्मिक अनुष्ठान अनिवार्य है।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति षष्टम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 5 7 4 मं 6
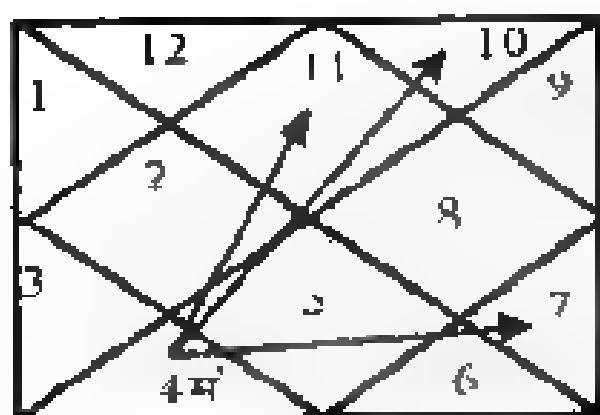
कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुभलग्न में मगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मगल यहा छठे स्थान में नीच राशि का होगा। कर्क राशि के 20 अंशो में मगल परम नीच का होता है। मगल के कारण यहा **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'राजभंग योग'** बनेगा ऐसे जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलती जातक के जन्म के बाद पिता को थोड़ा कष्ट होगा। जातक की बाईं आख कुछ कमजोर होगी।

दृष्टि—षष्टम भावगत मगल की दृष्टि भाग्य स्थान (तुला राशि), व्यय भाव (मकर राशि) एव लग्न भाव (कुभ राशि) पर होगी। जातक का भाग्य कमजोर होगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। परिश्रम निष्फल होंगे।

निशानी—'लोमेश संहिता' के अनुसार जातक का भाई जातक से शत्रुता रखता है। उसे मामा का सुख प्राप्त नहीं होगा।

दशा—मगल की दशा अतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहा षष्टम स्थान में दोनों ग्रह कर्क राशि में होगें। कर्क राशि मे चद्रमा स्वगृही एवं मगल नीच का होने से '**नीचभंग राजयोग**' बनेगा षष्टेश के छठे स्थान में स्वगृही होने से '**हर्षनामक विपरीत राजयोग**' भी बनेगा, फलत: जातक धनवान होगा। यहां बैठकर दोनो ग्रहो की दृष्टि भाग्य स्थान (तुला राशि), व्यय भाव (मकर राशि) एवं लग्न भाव (कुंभ राशि) पर होगी। फलत: जातक भाग्यशाली एव लगातार उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ने वाला होगा। परन्तु जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का जातक होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य '**विवाहबाधा योग**' बनाता है। प्रथमत: जातक का विवाह विलम्ब से होगा। विवाह होने पर भी वैवाहिक सुख में कुछ न कुछ कमी बनी रहेगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध '**सततिहीन योग**' एवं '**सरलनामक विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी मानी एव समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **मंगल+गुरु**–मगल के साथ बृहस्पति '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। जातक को आर्थिक सकटों का सामना करना पडेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मगल के साथ शुक्र '**सुखभंग योग**' एव '**भाग्यभग योग**' बनायेगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु पग-पग पर बाधाएं आयेंगी।
6. **मंगल+शनि**–मग्ल के साथ शनि '**लग्नभंग योग**' एवं '**विमल नामक विपरीत राजयोग**' बनायेगा। जातक धनी होगा, परन्तु उसे परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
7. **मंगल+राहु**–मगल के साथ राहु होने से जातक के गुप्त व प्रकट शत्रु बढ़ेगें।
8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु जातक को गुप्त रोग देगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में
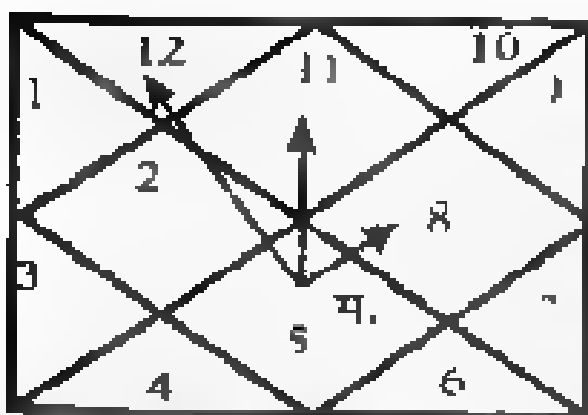
कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न मे मंगल शुभ और अशुभ दानों फल देता है, कुंभलग्न में मगल तृतीय मारकेश के रूप मे काम करता है। मंगल यहां सप्तम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा। मगल की इस स्थिति से कुण्डली '**मांगलिक**' होगी ऐसे जातक को दो विवाह हो सकते है जातक को नौकर-चाकर अच्छे मिलेंगे। छोटे भाई-बहनों के लिए मंगल ठीक है। भागीदारी व्यवसाय के लिए भी यह मंगल ठीक है। यहां

'पद्मसिंहासन योग' के कारण जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि), लग्न भाव (कुंभ राशि) एवं धन भाव (मीनराशि) पर होगी. फलतः जातक का राज (सरकार) में प्रभाव होगा। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा। जातक धनी होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार तृतीयेश सातवें स्थान में हो तो जातक की मृत्यु राजदण्ड से होगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव (वृश्चिक राशि), लग्न स्थान (कुंभ राशि) एवं धन स्थान (मीन राशि) को देखेंगे। फलतः जातक धनी होगा। जातक उद्यम करके धन कमायेगा तथा निरन्तर उन्नति मार्ग की ओर बढ़ता रहेगा। जातक की आर्थिक स्थिति में सुधार विवाह के बाद होगा. जातक का राजनीति में भी वर्चस्व रहेगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य स्वगृही होगा। जातक का जीवनसाथी प्रभावशाली एवं कमाऊ होगा। जातक को ससुराल से लाभ मिलेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक को पत्नी व संतान के उत्तम सुख की प्राप्ति होगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति उत्तम दाम्पत्य सुख के साथ धन की प्राप्ति करायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र जातक को रंगीन मिजाज का जीवन साथी देगा। जातक कामी होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक के बिगड़े कार्य सुधरेंगे तथा परिश्रम निरर्थक नहीं जायेगा.
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु विलम्ब विवाह अथवा विवाह के बाद दाम्पत्य सुख में परेशानी खड़ी करेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु विवाह में विषाद उत्पन्न करेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में

कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है. कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल
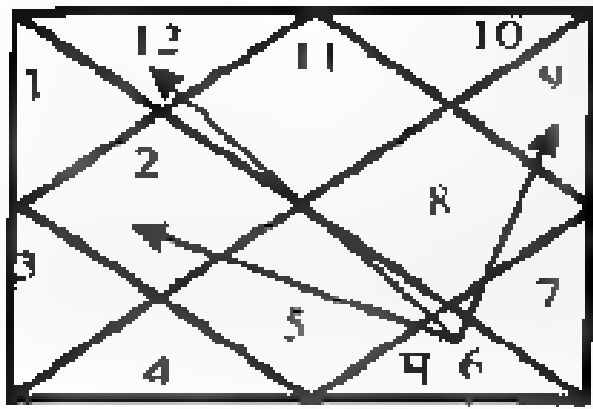
यहां अष्टम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में होगा। यहां कुण्डली **'मांगलिक'** होगी। मंगल की इस स्थिति के कारण **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'राजभंग योग'** बनेगा। जातक का वैवाहिक जीवन दुःखी होगा तथा छोटे भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा। जातक को व्यापार में नुकसान होगा। कुटुम्ब सुख कमजोर रहेगा.

दृष्टि—अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (धनु राशि), धन भाव (मीन राशि) एवं पराक्रम भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक को रोजी-रोजगार की प्राप्ति हेतु दिक्कतें आयेंगी। जातक की भाषा कड़वी होगी। जातक को भाइयों से लाभ नहीं होगा।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 5 के अनुसार तृतीयेश यदि आठवें हो तो जातक की मृत्यु राजदण्ड से होगी।

दशा—मंगल की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चंद्र**—यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। कन्या राशि में चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा पर षष्टेश होकर चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनेगा। मंगल के कारण **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राज्यभंग योग'** भी बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि लाभ स्थान (धनु राशि), धन स्थान (मीन राशि) एवं पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। निसन्देह मंगल की यह स्थिति ज्यादा सुखद नहीं है जातक धनवान तो होगा पर भाई कुटम्बियों से त्रस्त रहेगा। कोर्ट-कचहरी में शत्रु परेशान करते रहेंगे।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य **'विवाहभंग योग'** बनाता है। जातक के जीवन में अविवाह की स्थिति बनेगी अथवा विवाह होने पर भी गृहस्थ सुख की ओर से जातक उदासीन रहेगा।
3. **मंगल+बुध**-मंगल के साथ बुध जातक को विवाह सुख एवं संतान सुख दोनों के लिए बाधा खड़ी करेगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयत्नों में बाधा महसूस करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र होने से **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** की सृष्टि होगी। ऐसा जातक भाग्योदय व उन्नति न होने के कारणों को लेकर परेशान रहेगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** एवं **'विमलनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा ऐसा जातक धनवान तो होगा पर परिश्रम सार्थक नहीं होगा।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु होने से जातक के जीवन में **'द्विभार्या योग'** बनता है।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु **'दुर्घटना योग'** बनाता है।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में
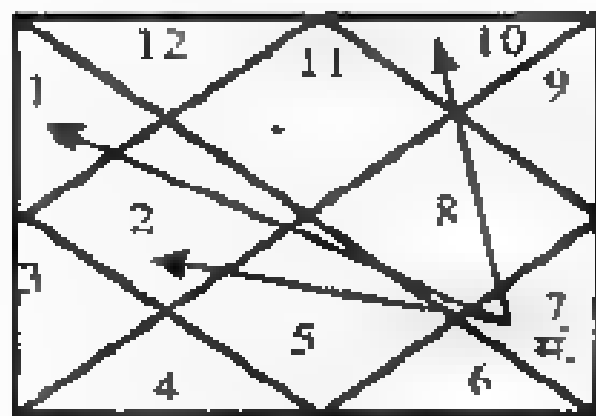
कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां नवम स्थान में तुला (सम) राशि में है यह मंगल छोटे भाई के लिए ठीक नहीं होगा। माता का सुख भी कमजोर होगा, माता बीमार रहेगी। जातक को पिता का सुख फिर भी ठीक मिलेगा, पर पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। जातक पराक्रमी होगा। उसे धन, यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति बराबर होगी। यहां **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि–नवमस्थ मंगल की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एवं सुख स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का तथा पराक्रमी होगी। जातक को मकान-वाहन का सुख प्राप्त होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 9 के अनुसार जातक का भाग्योदय स्त्री के द्वारा होगा।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव (खर्च स्थान), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एवं चतुर्थ स्थान (वृष राशि) को देखेंगे। फलत: जातक धनवान, पराक्रमी तथा खर्चीले स्वभाव का होगा। जातक को जीवन में सभी प्रकार के भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज में ही हो जायेगी।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को विवाह के बाद भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से जातक विद्या व ज्ञान के बल से भाग्योदय की ओर आगे बढ़ेगा। प्रथम संतति के बाद जातक का विशेष भाग्योदय होगा।

4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति होने से भूमि से पैसा मिलेगा। जातक को मित्रों से लाभ रहेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ स्वगृही शुक्र जातक को माता एवं वाहन का सुख उत्तम तरीके से दिलायेगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि उच्च का होने से जातक धनी-मानी व्यक्ति होगा तथा अपने कठोर परिश्रम से अपनी किस्मत चमकायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जातक के भाग्य में रुकावट डालेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु की युति कीर्तिदायक है।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति दशम स्थान में
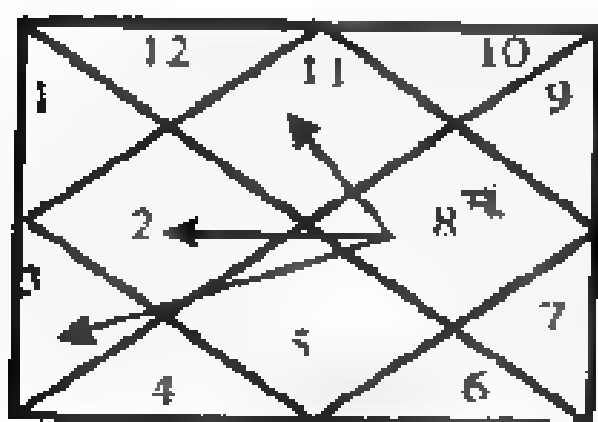
कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां दशम स्थान में स्वगृही एवं दिक्बली होगा। जिसके कारण **'कुलदीपक योग'** एवं **'रुचक योग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। जातक शत्रुहन्ता होगा एवं पिता का सम्मान करेगा। जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा। यहां **'पद्मसिंहासन योग'** के कारण जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता हुआ उच्च पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।

दृष्टि–दशमस्थ मंगल की दृष्टि लग्न स्थान (कुंभ राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को परिश्रम का लाभ तथा माता-पिता का सुख मिलेगा। जातक को पुत्र संतति भी होगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 2 अनुसार जातक की पत्नी बड़ी क्रूर व क्रोधी स्वभाव की होगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा अत्यंत शुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। मंगल यहां स्वगृही एवं चंद्रमा नीच का होने से **'नीचभंग राजयोग'** बनेगा। मंगल दिक्बली होकर **'कुलदीपक योग'** भी बनायेगा। **'पद्मसिंहासन योग'** होने से यहां **महालक्ष्मी योग** की सृष्टि हुई। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा। दोनों ग्रह की दृष्टि लग्नस्थान (कुंभ राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं पंचम भाव

(मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक निरन्तर उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ता हुआ उत्तम वाहन व भौतिक सुखों को प्राप्त करेगा। जातक की संतान भी प्रतिष्ठित होगी।

2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी व्यक्तित्व देगा। जातक की विशेष उन्नति विवाह के बाद होगी।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध जातक को दो से अधिक भवनों का स्वामी बनायेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति भाइयों से भूमि से धन प्राप्ति के अवसर दिलायेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र माता की सम्पत्ति दिलायेगा। जातक के पास दो से अधिक वाहन होंगे।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि धन प्राप्ति हेतु किये गये प्रयासों में सफलता देगा। जातक करोड़पति होगा। आवक के जरिए दो तीन प्रकार के रहेंगे।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु वाहन दुर्घटना के गंभीर योग करायेगा। तेज गति के वाहन से बचें।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु दुर्घटना के हल्के योग करायेगा।

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में
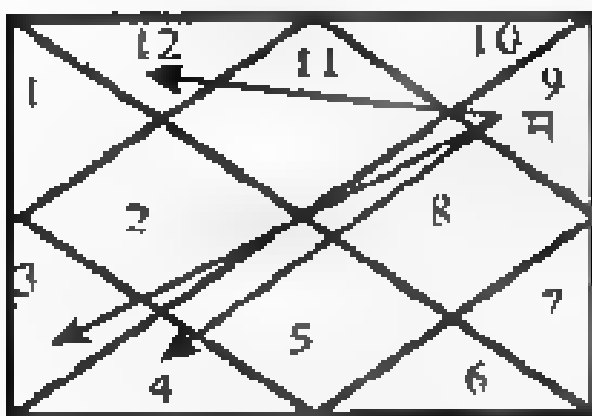
कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मंगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मंगल यहां एकादश स्थान में धनु (मित्र) राशि में होगा। जातक को भाई-बहनों व मित्रों का पूर्ण सुख मिलेगा। जातक की भाषा कठोर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक उद्योगपति होगा.

दृष्टि–एकादश स्थान में स्थित मंगल की दृष्टि धन भाव (मीन राशि), पंचम भाव (मिथुन राशि) एवं अष्टम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को धन तथा संतान की प्राप्ति होगी। जातक शत्रुहन्ता होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 11 के अनुसार ऐसा जातक धनवान, उद्यमी, चतुर व सुखी होता है

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा जातक को मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे यहा बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां धन स्थान (मीन राशि), पंचम स्थान (मिथुन राशि) एवं षष्टम् स्थान (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक धनवान होगा तथा ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक की आर्थिक सम्पन्नता पुत्र जन्म के बाद बढ़ेगी। ऐसे जातक की संतति भी धनवान होगी।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य विवाह के उपरान्त जातक के धंधे व्यापार को बढ़ायेगा।
3. **मंगल+बुध** मगल के साथ बुध विद्या एवं सतान का भरपूर सुख देगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति धन प्राप्ति के सरकारी स्रोत खोलेगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मगल के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय नवीन वाहन खरीदने के बाद करायेगा
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि जातक को उद्योगपति बनायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु लाभ प्राप्ति में बाधक का कार्य करेगा। जातक को बड़े भाई का सुख प्राप्त नहीं होगा।
8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु व्यापार मे उतार चढ़ाव लाता रहेगा

कुंभलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में
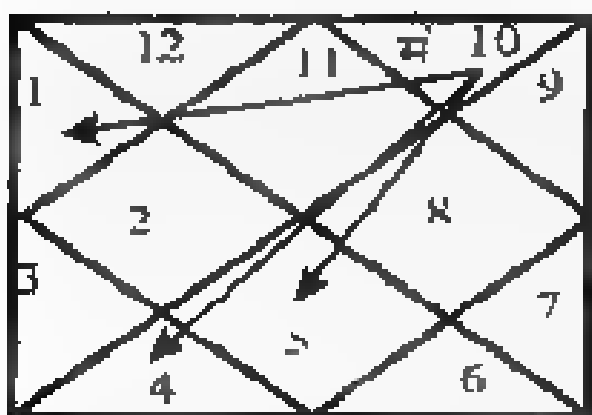
कुंभलग्न में मंगल तृतीयेश एवं राज्येश है। कुंभलग्न में मंगल शुभ और अशुभ दोनों फल देता है। कुंभलग्न में मगल तृतीय मारकेश के रूप में काम करता है। मगल यहां द्वादश स्थान में उच्च का होगा। मकर राशि के 28 अंशो मे मगल परमोच्च का होता है। मगल के कारण यहां कुण्डली 'मांगलिक' बनी है। मंगल की इस स्थिति के कारण **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनेगा जातक का वैवाहिक जीवन कष्टमय होगा। जातक व्यसनी होगा। जातक की दाईं आख कमजोर होगी। जातक को विदेश यात्रा से लाभ होगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि), छठे भाव (कर्क राशि) एव सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक के मित्र उसे दगा देंगे। जातक के शत्रु नष्ट होंगे। जातक का अपने जीवनसाथी के साथ मनमुटाव होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 3/श्लोक 8 के अनुसार तृतीयेश यदि बारहवें हो तो जातक का ज्येष्ठ पुत्र जीवित नही रहता।

दशा–मंगल की दशा अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्र**–यहा द्वादश स्थान मे दोनों ग्रह मकर राशि मे होंगे। मकर में मंगल उच्च का होगा। यहा चंद्रमा षष्टेश होकर द्वादश में होने से **'हर्ष नामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। यहा बैठकर दोनो ग्रह षष्टम् स्थान (कर्क राशि) एवं सप्तम स्थान (सिंह राशि) को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: ऐसा जातक धनी होगा ऋण रोग एवं शत्रुओं का सम्पूर्ण नाश करने में सक्षम होगा पर जातक का आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य **'विवाहभंग योग'** बनाता है। जातक का विवाह देरी से होगा अथवा विवाह का सुख नहीं होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध **'संतानहीन योग'** बनाता है। जातक को विद्या का लाभ नहीं मिलेगा। संतान विषयक चिंता बनी रहेगी,
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक खर्च को लेकर परेशान रहेगा यद्यपि **'नीचभंग राजयोग'** उत्तम होगा
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक **'सेक्स स्कैण्डल'** में फसेगा तथा वह कामी होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक खर्चीले स्वभाव के कारण ऋणी होगा तथा परेशान रहेगा पर विदेश में कमायेगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु जातक को उद्दण्ड व गलत कार्यों को करने का दुस्साहस उत्पन्न करेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु जातक को दुस्साहसी बनायेगा परन्तु जातक धर्मप्रिय, सिद्धान्तप्रिय होगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में बुध की स्थिति

कुंभलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में

12	11 बु.	10 9
1 2		8
3	5	7
4		6
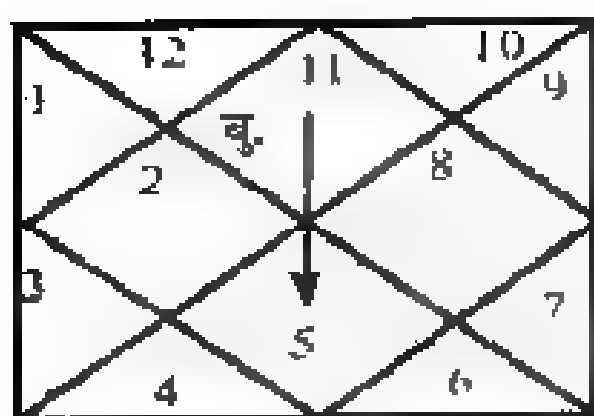
कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है बुध यहां प्रथम स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में है। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। ऐसा जातक प्रखर बुद्धिशाली होगा। जातक सुगठित देह व सुन्दर शरीर वाला होगा। ऐसा जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। बुध 'दिग्बली' होने से जातक दार्शनिक होगा.

दृष्टि–लग्नस्थ बुध की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर है। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।

निशानी–**'लोमेश सहिता'** अध्याय 8/श्लोक 6 के अनुसार अष्टमेश यदि लग्न में हो तो जातक के दो विवाह होते है।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को सुन्दर जीवनसाथी देगा। जातक की बुद्धि कल्पना मिश्रित होने से जातक **'प्लानिंग मास्टर'** होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। प्रथम स्थान में कुंभ राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव को देखेंगे जो कि सूर्य का स्वयं का घर है। ऐसा जातक बुद्धिशाली तथा धनवान होगा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय होगा, जातक अपने कुल-कुटुम्ब का नाम रोशन करेगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मगल जातक को व्यवहारिक बनायेगा। जातक परिवार कुटुम्ब को साथ लेकर चलेगा जातक की नौकरी अच्छी होगी।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति विद्या से लाभ दिलायेगा। जातक धनी होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र माता का सुख देगा। जातक को वाहन एव मकान का सुख प्राप्त होगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि यहा सतान सुख में बाधक है।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक की बुद्धि कुण्ठित करेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को यशस्वी बनायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
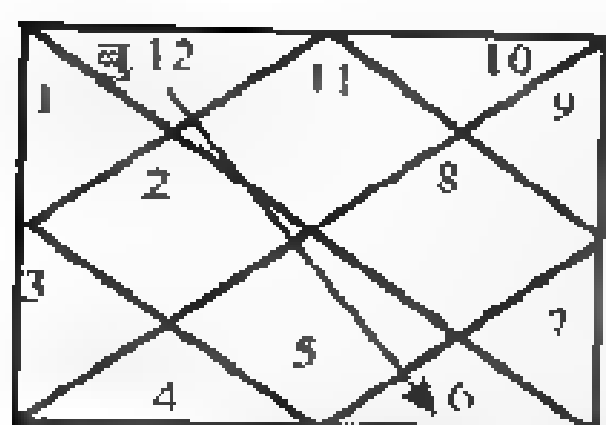
कुंभलग्न में बुध पचमेश एवं अष्टमेश है बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है। बुध यहां द्वितीय स्थान में नीच का होगा। मीन राशि के 15 अशों में बुध परम नीच का होगा। ऐसा जातक धनी होगा। जातक की भाषा नरम होगी। जातक को कौटुम्बिक सुख प्राप्त होगा। जातक को उत्तम विद्या सुख मिलेगा। जातक को उच्च पद प्रतिष्ठा मिलेगी।

दृष्टि–द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक की आयु लम्बी होगी। जातक वाक्पटु होगा।

निशानी– '**लोमेश संहिता**' अध्याय 8/श्लोक 7 के अनुसार ऐसे जातक को खोया हुआ धन वापस नहीं मिलता।

दशा–बुध की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चद्रमा जातक की वाणी में हकलाहट देगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। द्वितीय स्थान में मीन राशिगत यह युति वस्तुत: सूर्य की पचमेश+अष्टमेश सूर्य के साथ युति कहलायेगी। बुध यहा नीच राशि का होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान को देखेंगे। फलत; जातक बुद्धिशाली एवं धनवान होगा। जातक की आमदनी के जरिए दो तीन प्रकार के रहेंगे। विवाह के बाद जातक धनवान होगा। जातक की आयु लम्बी होगी। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल जातक को ओजस्वी वक्ता बनायेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति '**नीचभंग राजयोग**' बनायेगा। जातक महाधनी होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र '**नीचभग राजयोग**' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। जातक महाधनी होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि पुरुषार्थ द्वारा धन की प्राप्ति करायेगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु धन के घड़े में छेद का काम करेगा। रुपया एकत्रित नहीं होगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु आर्थिक विषमताए देगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में
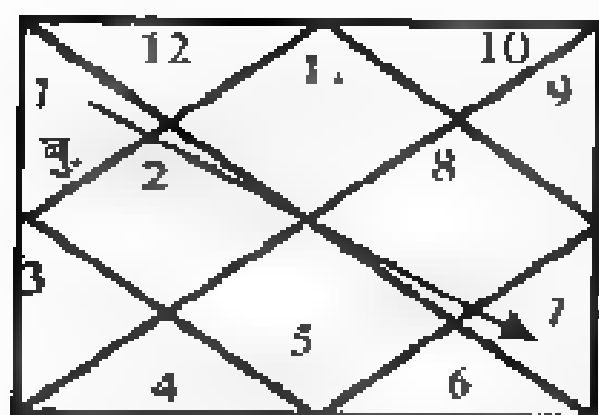
कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है। बुध यहा तृतीय स्थान में मेष (सम) राशि में है। ऐसा जातक पराक्रमी होता है। जातक का चरित्र संदेहास्पद होता है। जातक को भाई-बहनों से वांछित सम्मान नहीं मिलता। जातक विद्या-बुद्धि, दाम्पत्य सुख, यश व धन का अभाव महसूस करेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ बुध की दृष्टि भाग्य भवन (तुला राशि) पर होगी। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी पर जातक उसका सुख भोग न सकेगा।

निशानी—'**लोमेश संहिता**' अध्याय 8/श्लोक 3 के अनुसार अष्टमेश तृतीय में हो तो जातक चुगलखोर होगा एवं भाई रहित होता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा भाई बहनो में मनमुटाव करायेगा।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। तृतीय स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहा उच्च का होगा, जहा बैठ कर दोनों ग्रह भाग्य भवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक महान् पराक्रमी होगा तथा उसे भाई-बहनों, मित्र-परिजनों का सहयोग जीवन में मिलता रहेगा, जातक को

पिता की सम्पत्ति मिलेगी जातक धनवान होगा तथा समाज में अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मगल जातक को प्रबल पराक्रमी बनायेगा। जातक जनसम्पर्क से लाभ होगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति जातक को बुद्धिबल से धनवान बनायेगा। जातक को भाई-बहनों व परिजनों से सहयोग मिलता रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र जातक भाग्यशाली बनायेगा। जातक को स्त्री मित्रों से लाभ होगा
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि नीच का होकर जातक को उच्च महत्वाकांक्षी बनायेगा तथा उसे कठोर परिश्रम का अल्प फल मिलेगा
7. **बुध+राहु** बुध के साथ राहु जातक का भाइयों से विग्रह करायेगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु जातक को महान् पराक्रमी एव यशस्वी बनायेगा

कुंभलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में
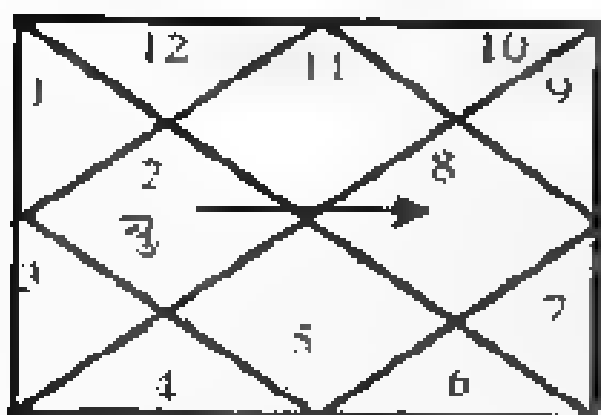
कुंभलग्न में बुध पचमेश एव अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है। बुध यहा चतुर्थ स्थान में वृष (मित्र) राशि मे है। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। पचमेश केन्द्र मे होने से जातक को उच्च विद्या Educational Degree मिलगी। जातक साहित्य सगीत, अभिनय के क्षेत्र में आगे बढ़ेगा। कम्प्यूटर व मेडिकल लाईन में सफलता मिलेगी। जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी होगा तथा उसे सतान सुख उत्तम मिलेगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत बुध की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसा जातक व्यापार प्रिय एव साहित्कार होगा ऐसा जातक प्रोफेसर, मैनेजर, कम्प्यूटर जैसे बुद्धियुक्त धधो से कमाता है।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 3 के अनुसार अष्टमेश चौथे हो तो जातक चुगलखोर होगा तथा माता-पिता से खुन्दक रखेगा।

दशा—बुध की दशा अतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **बुध+चद्र**—यहा बुध के साथ चद्रमा उच्च का होगा तथा **'यामिनीनाथ योग'** बनायेगा जातक की रचनात्मक शक्ति (Creative Energy) बढ़ जायेगी।

2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा चतुर्थ स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध चतुर्थ स्थान में होने से **'कुलदीपक योग'** बनेगा यहां से दोनों ग्रह दशम भाव को देखेंगे फलत. जातक पढ़ा-लिखा एवं पराक्रमी होगा तथा बुद्धि तेज रहेगी। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। भवन का सुख भी उत्तम होगा। जातक अपने कुल का नाम उसे उत्तम कार्यों के कारण रोशन करेगा एवं वह समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल माता-पिता का सुख देगा। जातक का निजी मकान उत्तम श्रेणी का होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति माता से धन दिलायेगा। जातक के पास उत्तम वाहन होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र स्वगृही होने से **'मालव्य योग'** बनेगा। जातक राज्य तुल्य पराक्रमी होगा। उसकी रचनात्मक शक्ति बहुत बढ़ी-चढ़ी होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि परिश्रम का लाभ देगा। जातक शिक्षित होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु माता की मृत्यु अल्प आयु में देगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु भौतिक सुखों में बाधक है।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 बु. 5 7 4 6
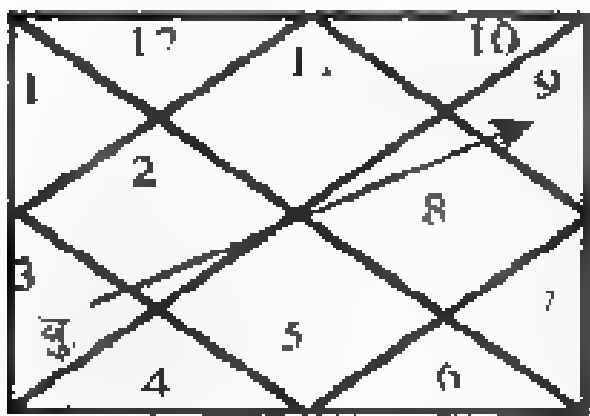
कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक तथा शुभ फलदायक है। बुध यहां पंचम स्थान में स्वगृही होगा। बुध यहां 21 से 30 अंशों के मध्य विशेष बलवान होता है बुध की इस स्थिति से जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा। जातक की संतति उत्तम तथा शिक्षित होगी। जातक का मित्र 'सर्किल' उत्तम श्रेणी का होगा। जातक यंत्र मंत्र, तंत्र, आयुर्वेद इत्यादि गूढ़ विद्याओं का जानकार होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ बुध की दृष्टि एकादश स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसे जातक को धंधे व्यापार में खूब लाभ होगा। जातक को शेयर बाजार, रेस, अंक, केसिनो के प्रति आकर्षण रहेगा।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 5 के अनुसार अष्टमेश यदि पांचवें स्थान पर हो तो ऐसे जातक को सदैव धन की कमी सतायेगी।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा विद्या के संघर्ष के बाद उत्तम सफलता देगा।
2. **बुध+सूर्य—'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। पंचम स्थान में मिथुन राशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। पंचम स्थान में बुध स्वगृही होकर लाभ भवन को देखेगा। फलतः जातक बुद्धिमान एवं शिक्षित होगा। जातक प्रज्ञावान होगा। कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी जातक की संतति भी शिक्षित रहेगी। जातक समाज का गणमान्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल होने से जातक तकनीकी एवं मैकेनिकल कार्यों में रुचि रखेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति विद्या में धन लाभ, स्कालरशिप दिलायेगा। जातक की उन्नति सपूत होगी।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र जातक को कला, साहित्य, संगीत व अभिनय में अग्रणी स्थान दिलायेगा.
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि संतान सुख में वृद्धि करेगा। जातक पुरुषार्थी होगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु संतान एवं विद्या दोनों की श्रेष्ठता में बाधक है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु गर्भपात करायेगा

कुंभलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में
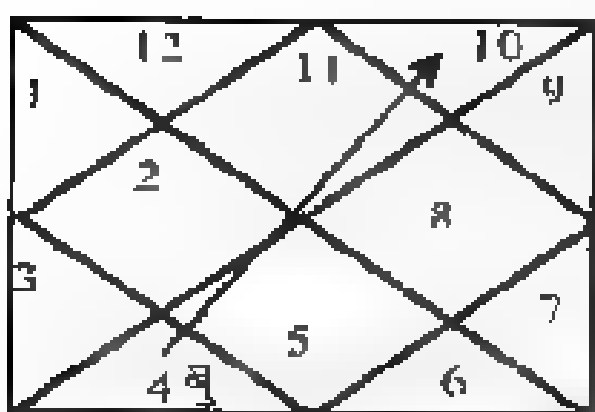
कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां छठे स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। बुध के कारण **'संतानहीन योग'** बना। अष्टमेश होकर बुध छठे होने से **'सरल नामक विपरीत राजयोग'** बना। पंचमेश छठे जाने से विद्या में बाधा आयेगी। अष्टमेश छठे जाने से आयु लम्बी होगी। जातक धनवान होगा। प्रथम संतति कन्या होगी।

दृष्टि–षष्टमस्थ बुध की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक को परदेश जाने में रुचि होगी। भाग्य विदेश में चमकेगा। जातक को चर्मरोग की संभावना रहेगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 6 के अनुसार ऐसे जातक को सांप बिच्छु का जहर, जलघात का भय रहता है। जातक सदैव बीमार रहता है।

दशा–बुध की दशा अंतर्दशा श्रेष्ठ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चन्द्र** बुध के साथ चंद्रमा **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। फलतः जातक महाधनी होगा। पर जातक का दिमाग, निर्णयशक्ति अस्थिर व चचल रहेगी।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न मे सूर्य सप्तमेश होगा छठे स्थान में कर्कराशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। छठे स्थान में बुध की शत्रुराशि है। जहां बैठकर दोनों ग्रह व्ययभाव को देखेंगे। अष्टमेश बुध के छठे जाने से **'हर्षयोग'** बना। फलतः जातक अपने शत्रु-समूह को नष्ट करने में सक्षम होगा। जातक बुद्धिमान होगा। सप्तमेश सूर्य की छठे जाने से **'विलम्ब विवाह योग'** बनता है। जातक समाज का अग्रगण्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मगल**–बुध के साथ मगल नीच का होकर **'पराक्रम भंगयोग'** एव **'राजभंग योग'** करायेगा. जातक को बदनामी मिलेगी। सरकार से दण्ड मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति उच्च का **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। व्यापार में नुकसान होगा।
5. **बुध+शुक्र** बुध के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एव **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक परेशानियों से त्रस्त रहेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का फलक नहीं मिलेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु गुप्तेन्द्रि का रोग देगा
8. **बुध+केतु**–बुध के-साथ केतु शल्य चिकित्सा करायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में

कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां सप्तम स्थान में सिंह (मित्र) राशि में

12 11 10
1 9
2 8
3
बु.
5
4 6
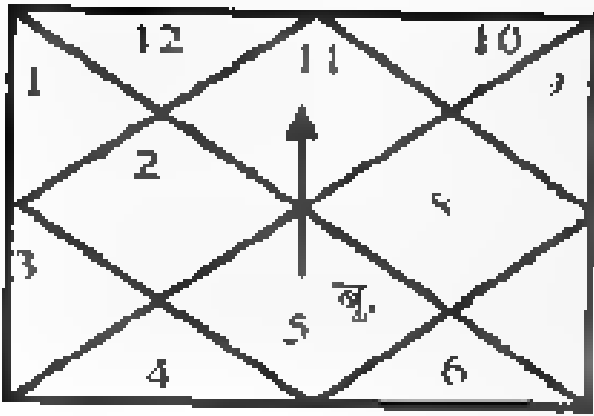
है। बुध के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। विवाह सुख उत्तम रहेगा विद्या उत्तम। भागीदारी में लाभ रहेगा। अष्टमेश सातवें होने से आयु लम्बी होगी। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक यशस्वी होगा।

दृष्टि—सप्तम भावगत बुध की दृष्टि लग्न स्थान पर होगी। ऐसे जातक को परिश्रम पूर्वक किये गये पुरुषार्थ का फल मिलेगा। जातक नाजुक व कोमल स्वभाव का होगा। कामेच्छा कम रहेगी।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 6 अनुसार अष्टमेश यदि सप्तम में हो तो जातक दो विवाह करता है अथवा एक समय में दो स्त्रियों से सम्पर्क रखता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा विवाह सुख में कटाकट करायेगा। पति पत्नी में तकरार होती रहेगी।
2. **बुध+सूर्य**—**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। सप्तम स्थान में सिंहराशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां स्वगृही होगा। बलवान सप्तमेश की पंचमेश में युति होने के कारण जातक की संतति उत्तम होगी। पत्नी धनवान होगी। जातक का भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। जातक बुद्धिमान होगा तथा बुद्धिबल से अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक समाज का अग्रगण्य एवं लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल जातक को कामी बनायेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र होने से जातक का जीवन साथी सुन्दर एवं भाग्यशाली होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ मिलेगा।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु वैवाहिक समरसता में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गुप्तांग में रोग करायेगा। पेट की शल्य चिकित्सा संभव है।

कुंभलग्न मे बुध की स्थिति अष्टम स्थान में
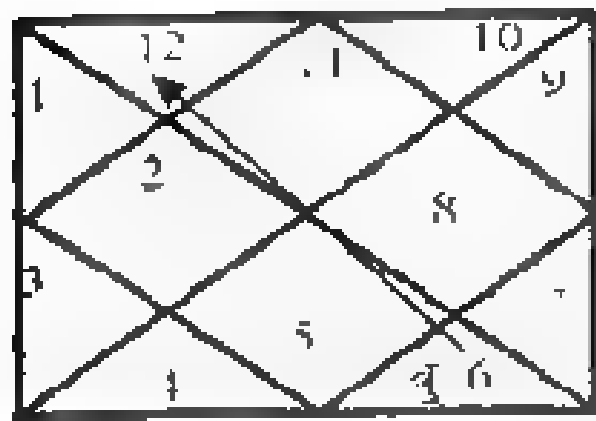
कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है बुध यहा आठवें स्थान में उच्च का है। कन्याराशि के 15 अशों मे बुध परमोच्च का होगा बुध के कारण **'संतानहीन योग'** बना। अष्टमेश अष्टम में स्वगृही होने से **'सरलनामक विपरीत राजयोग'** बना। जातक धनवान होगा पर विद्या अधूरी छूट जायेगी। संतान संबधी चिंता रहेगी। अष्टमेश आठवे होने से जातक की आयु लम्बी होगी। जातक की भाषा नरम एवं मीठी होगी।

दृष्टि–अष्टमस्थ बुध की दृष्टि धनभाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को अचानक धन लाभ होते रहेगें। जातक गूढ व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक . के अनुसार अष्टमेश यदि अष्टम भाव में हो तो जातक जुआ खेलने, तस्करी, व्यर्थ के वाद विवाह एवं परस्त्री गमन में रुचि रखने वाला होता है

दशा–बुध की दशा-अतर्दशा मे अनिष्ट फलों की प्राप्ति होगी। यदि बुध की दशा में परदेश जाता है तो धन कमायेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चद्रमा यहा शत्रुक्षेत्री होकर शत्रु के घर में होगा परन्तु चद्रमा **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। फलतः जातक महाधनी होगा पर निर्णय सदैव गलत रहगे।
2. **बुध+सूर्य**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। अष्टम भाव में कन्याराशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पचमेश+षष्ठेश बुध के साथ युति होगी, बुध यहां उच्च का होगा, जहा बैठकर दोनों ग्रह धनभाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक बुद्धिमान एव धनवान होगा, अष्टम स्थान का स्वामी [illegible] अष्टम में स्वगृही होने से **'सरल योग'** बनेगा। ऐसा जातक [illegible] शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा सप्तमेश

सूर्य छठे जाने से 'विलम्ब विवाह योग' बनेगा। जातक के शीघ्र विवाह व भाग्योदय में कुछ रुकावटें आ सकती है। पर फिर भी जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनायेगा। जातक को समाज में अपयश मिलेगा।

4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को व्यापार द्वारा धनप्राप्ति में दिक्कतें आयेगी।

5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को गुप्त रोग होंगे जिससे भौतिक सुखों मे बाधा पहुंचेगी।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। यद्यपि विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगी।

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु चमड़ी के रोग देगा। श्वेत काले दोग हो सकते हैं।

8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु शरीर मे पेट के नीचे वाले हिस्से में ऑपरेशन करायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 7 बु. 5 4 6
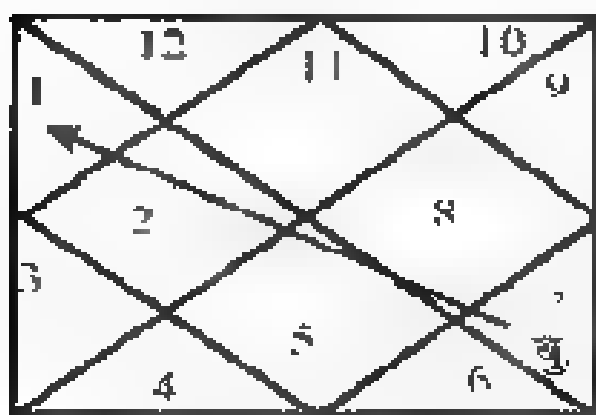
कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है शुभ फलदायक है। बुध यहां नवम स्थान में तुला (मित्र) राशि में है। पंचमेश अपने स्थान (मिथुन राशि) से पांचवें होने से विद्या उत्तम, संतान उत्तम होकर जातक भाग्यशाली होगा अष्टमेश भाग्य में जाने से पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक स्वयं अच्छा कमायेगा।

दृष्टि–नवमस्थ बुध की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलतः जातक का भाई-बहनों से संबंध ठीक रहेगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 2 के अनुसार अष्टमेश यदि नवमें स्थान में हो तो जातक नास्तिक होता है। स्त्री वन्ध्या होती है। पुत्र का अभाव रहता है।

दशा–बुध की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक का भाग्योदय होगा

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–बुध के साथ चद्रमा जातक को बुद्धिबल, कल्पनाशक्ति एवं प्लानिंग के साथ आगे बढ़ायेगा.
2. **बुध+सूर्य**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। नवम स्थान में तुलाराशिगत यह युति वस्तुतः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। दोनों ग्रह यहां बैठकर पराक्रम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिमान होगा। भाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 26 वर्ष की आयु में होगा। जातक पराक्रमी होगा। उसे परिजनों मित्रों का सहयोग बराबर मिलता रहेगा। जातक धनी होगा एव समाज के अग्रगण्य व्यक्तियों में गिना जायेगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मगल भूमि लाभ देगा मित्रों से लाभ होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति व्यापार-व्यवसाय से उत्तम धन की प्राप्ति करायेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ स्वगृही शुक्र जातक को उत्तम वाहन एवं मकान का सुख देगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ उच्च का शनि जातक को परिश्रम का लाभ एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु भाग्योदय में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगी।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 बु 3 7 5 4 6
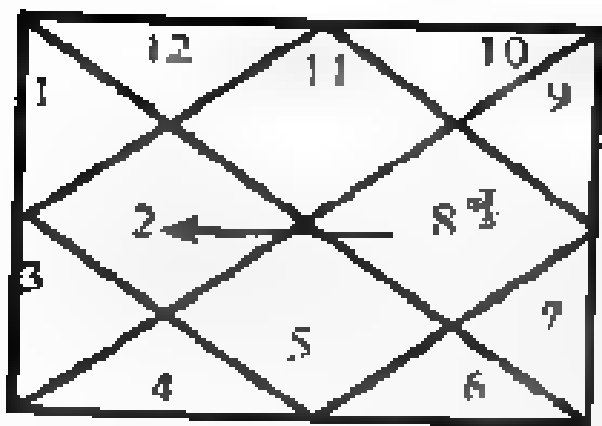
कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां दशम स्थान मे वृश्चिक (सम) राशि में है। बुध के कारण '**कुलदीपक योग**' बना। पचमेश केन्द्र में होने से जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि (Degree) मिलेगी। राज (सरकार) से सम्मान मिलेगा। जातक के पास वाहन होगा। जातक साहित्यकारी, लेखक, पत्रकार, प्रोफेसर एवं कम्प्यूटर मास्टर होगा।

दृष्टि–दशम भावगत बुद्धि की दृष्टि चतुर्थ स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक का माता के साथ सबंध उत्तम होगा। घर का मकान होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 8/श्लोक 3 के अनुसार अष्टमेश यदि दशम भाव में हो तो जातक चुगलखोर एवं भाई से रहित होता तथा माता पिता से खुन्दक रखता है।

दशा–बुध की दशा अन्तर्दशा शुभ फल देगी

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्र**–यहां बुध के साथ नीच का चंद्रमा जातक को ईर्ष्यालु एवं निराशावादी बनायेगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा, दशम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+अष्टमेश बुध के साथ युति होगी। जहां बैठकर दोनों ग्रह सुख भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे, '**कुलदीपक योग**' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक धनी होगा, बुद्धिमान होगा एवं समाज के अग्रण्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से एक होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल '**रुचक योग**' बनायेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति अच्छी नौकरी देगा। व्यवसाय से भी अच्छी आय होगी।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन सुख देगा। माता की सम्पत्ति दिलायेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को '**करोड़पति**' बनायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु राज्यसुख में बाधक है।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगवायेगा।

कुंभलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में
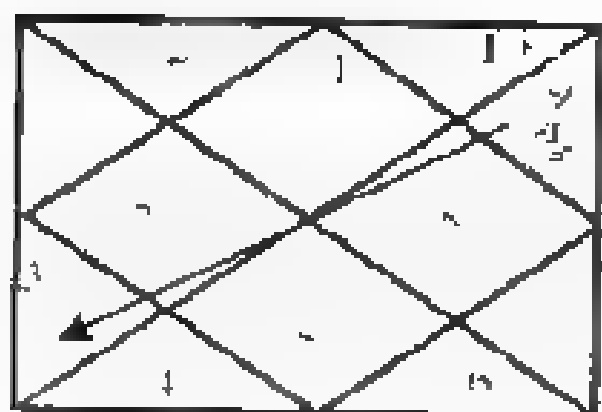
कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है, शुभ फलदायक है। बुध यहां एकादश स्थान में धनु (सम) राशि का है। ऐसे जातक को श्रेष्ठ व्यापार में लाभ मिलेगा। जातक लम्बी उम्र वाला होगा परदेश में अधिक कीर्ति मिलेगी। जातक को स्त्री, सन्तान पद-प्रतिष्ठा का पूरा सुख मिलेगा

दृष्टि—एकादश भावगत बुध की दृष्टि पंचम स्थान अपने ही घर मिथुन राशि पर होगी। फलतः जातक को उत्तम विद्या मिलेगी। संतान सुख उत्तम। जातक के जुड़वा बच्चे हो सकते हैं। दो अलग-अलग विषयों पर डिग्री मिल सकती है।

निशानी— **'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 4 के अनुसार अष्टमेश यदि एकादश स्थान में हो तो ऐसे जातक को सदैव धन की कमी सताती रहेगी।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में शुभफलों की प्राप्ति होगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद**—बुध के साथ चंद्रमा जातक को व्यापार में लाभ एवं उच्च शिक्षा दिलायेगा।
2. **बुध+सूर्य**— **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। एकादश स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुः सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी यहां बैठकर दोनों ग्रह पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। व्यापार-वर्गीय होगा। जातक शिक्षित होगा, उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक को जीवन में सभी प्रकार के ऐश्वर्य-संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल पराक्रम में वृद्धि करेगा। जातक बड़ी भूमि का स्वामी होगा।
4. **बुध+गुरु** बुध के साथ बृहस्पति जातक को बड़ा व्यापारी व उद्योगपति बनायेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र जातक को कला के क्षेत्र में सफलता दिलायेगा। जातक व्यापारी होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि परिश्रम का लाभ देगा। जातक परदेश में कमायेगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु व्यापार में रुकावट है।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु कीर्तिदायक है,

कुंभलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में

कुंभलग्न में बुध पंचमेश एवं अष्टमेश है। बुध लग्नेश शनि का मित्र होने से योगकारक है। शुभ फलदायक है। बुध यहां द्वादश स्थान में मकर (मित्र) राशि का
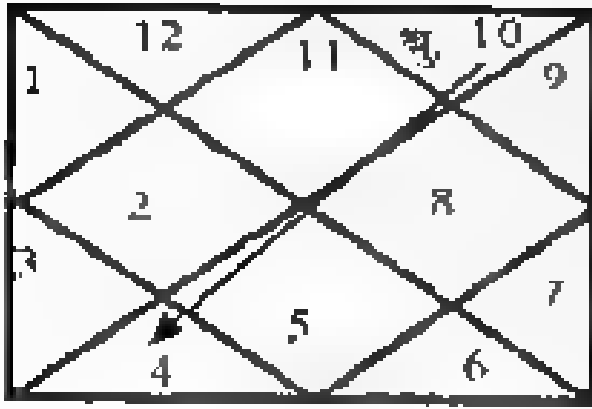
है बुध के कारण यहा **'संतानहीन योग'** बना बुध अष्टमेश होकर द्वादश स्थान मे होने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बना। जातक धनी मानी, अभिमानी होगा। पर विद्या अधूरी छूट जायेगी। संतान विषयक चिंता रहेगी। अष्टमेश बारहवें होने से जातक लम्बी उम्र वाला होगा पर बीमारी रहेगा।

दृष्टि—द्वादशभावगत बुध की दृष्टि छठे स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक व्यसनी होगा। गुप्त शत्रु जीवन में रहेंगे। परदेश मे लाभ है। जातक अध्यात्म क्षेत्र में उन्नति करेगा।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 8/श्लोक 6 के अनुसार ऐसे जातक को सांप-बिच्छु के जहर एवं जलघात का भय रहता है। जातक सदैव बीमार रहता है।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्र**—बुध के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** के कारण परदेश में धन दिलायेगा।
2. **बुध+सूर्य**—**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में सूर्य सप्तमेश होगा। द्वादश भाव मे मकरराशिगत यह युति वस्तुत: सप्तमेश सूर्य की पंचमेश+षष्टेश बुध के साथ युति होगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह छठे स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। यात्रा प्रिय होगा। जातक को जीवन मे सभी सुख सुविधाएं मिलेगी। अष्टमेश बुध बारहवें होने से **'सरल योग'** बना। ऐसे जातक में रोग से लड़ने की शक्ति होती है तथा दीर्घजीवी होता है। सूर्य बारहवें होने से विवाह विलम्ब से होगा। फिर भी जातक समाज का अग्रगण्य एवं लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल उच्च का जातक को स्थाई सम्पत्ति देगा पर जातक का भाग्य परदेश में खुलेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक खर्च अधिक करेगा। ऋणग्रस्त रहेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र वैवाहिक सुख में कमी, पत्नी से मनमुटाव, दूसरी स्त्री से शारीरिक सम्पर्क करायेगा।

6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** के कारण परिश्रम का पूरा लाभ नहीं होने देगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को यात्रा से लाभ दिलायेगा। धन का खर्च भी करायेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु व्यर्थ की यात्रा किन्तु परदेश में धनार्जन करायेगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति प्रथम स्थान में
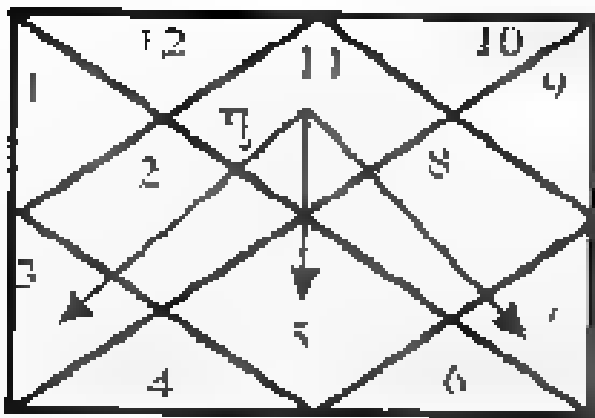
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश हैं दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां प्रथम स्थान में कुंभ (सम) राशि में है। बृहस्पति के कारण 'कुलदीपक योग' व 'केसरी योग' बना। ऐसे जातक स्वस्थ शरीर का स्वामी होगा, धार्मिक होगा। उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी। ऐसा जातक वकील, डॉक्टर व ज्योतिषी के रुप में विशेष ख्याति प्राप्त करके अपने परिवार, कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि—लग्नस्थ बृहस्पति की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि), सप्तम भाव (सिंह राशि) एवं भाग्य भाव (तुला राशि) पर होगी। ऐसे जातक को उत्तम संतति की प्राप्ति होगी। गृहस्थ सुख उत्तम रहेगा। जातक परम भाग्यशाली होगा। उसे श्वसुर पक्ष से लाभ मिलेगा।

निशानी—'**लोमेश संहिता**' अध्याय 2 श्लोक 9 के अनुसार द्वितीयेश यदि लग्न में हो तो जातक अपने सगे संबंधियों से वैर रखने वाला, निष्ठुर व धनवान होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा अंतर्दशा शुभफल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चंद्र**—भोजसंहिता के अनुसार कुंभलग्न के प्रथम स्थान में यह युति कुंभराशि में ही होगी। बृहस्पति+चंद्र की युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति होगी। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहां '**यामिनीनाथ योग**' एवं '**कुलदीपक योग**' की सृष्टि हो रही है। फलतः ऐसे

जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है। दूसरा भाग्योदय संतति के बाद होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा तथा उसकी गिनती समाज के अग्रगण्य प्रतिष्ठित लोगों में होगी।

2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को पराक्रमी एवं तेजस्वी व्यक्तित्व देगा गृहस्थ सुख भरपूर देगा। पत्नी पतिव्रता होगी कमाऊ महिला होगी।
3. **गुरु+मंगल**-बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भूमि से धन दिलायेगा।
4. **गुरु+बुध**-बृहस्पति के साथ बुध जातक को विद्यावान् बनायेगा। उच्च शैक्षणिक उपाधि देगा।
5. **गुरु+शुक्र** बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को उत्तम वाहन देगा।
6. **गुरु+शनि**-बृहस्पति के साथ शनि **'शश योग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **गुरु+राहु**-यहा प्रथम स्थान मे दोनो ग्रह 'कुभ राशि' में होगे। लग्नस्थ बृहस्पति यहा दु:खी होकर समराशि मे होगा जबकि राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में हर्षित होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक जिद्दी, हठी एव धार्मिक होते हुए भी नास्तिक विचारो वाला, तर्क-वितर्क में विश्वास रखने वाला जातक होगा।
8. **गुरु+केतु**-बृहस्पति के साथ केतु जातक को कीर्ति देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वितीय स्थान मे
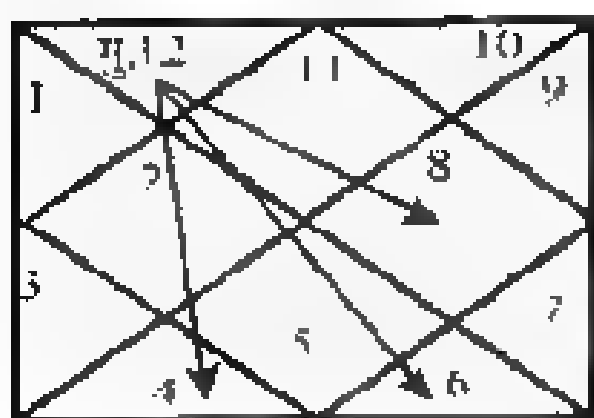
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावो का स्वामी होने से बृहस्पति यहा मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहा द्वितीय स्थान मे मीन राशि मे स्वगृही है। ऐसा जातक धनी होगा पर कुटुम्ब परिवार की जबाबदारी भी उस पर होगी। जातक की वाणी मधुर होगी। ऐसा जातक स्वादिष्ट भोजन का शौकिन होगा। जातक के संतान सुख उत्तम, बड़े भाई-बहनों का सुख एव मित्रो का सुख श्रेष्ठ होगा। आवक के जरिए तीन-चार प्रकार के होंगे।

दृष्टि-द्वितीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि छठे भाव (कर्क राशि), अष्टम भाव (कन्या राशि, एव दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी, ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रुओं का नाश करने मे सक्षम होता है। जातक का धंधा ठीक होगा जातक की रुचि राजनीति में भी होगी।

निशानी–'**लोमेश संहिता**' के अनुसार ऐसा जातक बड़ा धनी एवं घमंडी होगा। ऐसा जातक के चार–पांच स्त्रियों से शारीरिक सम्पर्क होते हुए भी वह पुत्रसुख से हीन होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र–भोजसंहिता** के अनुसार कुंभलग्न के द्वितीय स्थान में यह युति 'मीन राशि' के अंतर्गत होगा। बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः षष्ठेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ है। ये दोनों शुभ ग्रह षष्टम् स्थान, अष्टम स्थान एवं दशम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे, फलतः जातक को ऋण–रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक इस योग के कारण दुर्घटना व अपघात से बचा रहेगा शत्रुओं का नाश करेगा। जातक को राज्य सरकार में मान सम्मान मिलेगा। कोर्ट कचहरी में विजय श्री का वरण होगा।
2. **गुरु+सूर्य** बृहस्पति के साथ सूर्य '**कलत्रमूल धनयोग**' बनायेगा, जातक को ससुराल की सम्पत्ति विरासत में मिलेगी।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को '**भ्रातृमूल धनयोग**' बनायेगा जातक को भाइयों का परिजनों का धन विरासत में मिलेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध होने से जातक को अपने शत्रुओं से पैसा मिलेगा। संतान कमा कर देगें।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र हो तो '**किम्बहुना योग**' बनेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली व करोड़पति होगा
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि होने से जातक अपने परिश्रम से खूब धन कमायेगा। जातक कामयाबी की एक निश्चित मंजिल पर पहुंचेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां द्वितीय भाव में दोनों ग्रह 'मीन' राशि में होंगे। बृहस्पति यहां स्वगृही जबकि राहु नीच का होकर '**चाण्डाल योग**' बनायेगा। फलतः धन के घड़े में छेद होगा, जातक जितना भी कमायेगा उसकी बरकत नहीं होगी, जिम्मेदारी बहुत ज्यादा रहेगी।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु आर्थिक संग्रह में 40% कटौती करेगा.

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति तृतीय स्थान में

कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है बृहस्पति यहां तृतीय स्थान में मेष (मित्र) राशि
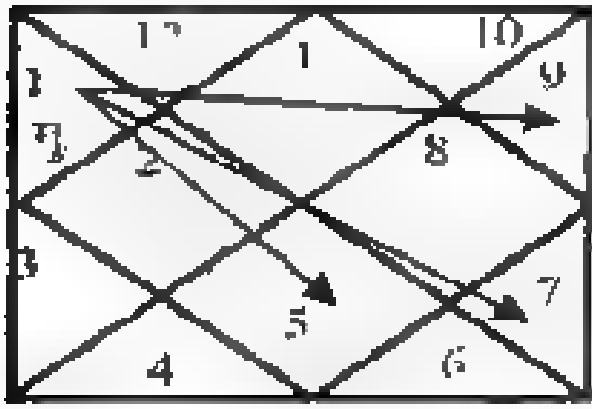
में है। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। जातक को भाई-बहनों से लाभ एवं पिता की सम्पत्ति मिलेगी। ऐसे जातक को भागीदारी से लाभ होगा। बृहस्पति यहां पुत्र स्थान में ग्यारहवें होने के कारण जातक को पुत्र लाभ होगा एवं संतति बुद्धिशाली होगी।

दृष्टि–तृतीयस्थ बृहस्पति की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि), नवम भाव (तुला राशि) एवं एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगी। जातक भाग्यशाली होगा। जातक को बड़े भाई से लाभ मिलेगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 2 के अनुसार ऐसा जातक पराक्रमी किन्तु देव निन्दक व परस्त्रीगामी होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र**–'भोजसंहिता' के अनुसार कुंभलग्न के तृतीय स्थान में यह युति 'मेष राशि' के अंतर्गत हो रही है। बृहस्पति+चंद की यह युति फलतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ है। यहा बैठकर दोनों शुभ ग्रह सप्तम भाव, भाग्यभवन एवं लाभस्थान को देखेंगे। फलतः ऐसे जातक का भाग्योदय 24वें वर्ष मे अथवा विवाह के तत्काल बाद भाग्योदय होता है। व्यापार-व्यवसाय द्वारा धन की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक सौभाग्यशाली होता है। उसकी गिनती समाज के गिने-चुने भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी।
2. **गुरु+सूर्य** बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को अतुल पराक्रम देगा। मित्र परिजनों की सहायता से जातक आगे बढ़ेगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मगल जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक के पाच भाई, बड़ा कुटुम्ब होगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध भाई-बहनों का बराबर सुख देगा। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक स्त्री की मदद से आगे बढ़ेगा। जातक को इष्ट-मित्रों से लाभ रहेगा।
5. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि नीच का जातक को पराक्रमी तो बनायेगा पर पीठ पीछे जातक की निन्दा होगी।

7. **गुरु+राहु**–यहां तृतीय भाव में दोनों ग्रह 'मेष राशि' में होंगे बृहस्पति मित्र राशि में तो राहु सम राशि का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। एसे जातक का पराक्रम कुण्ठित होगा भाइयों में नहीं बनेगी। मित्र दगा देंगे

8. **गुरु+केतु** बृहस्पति के साथ केतु जातक को कीर्तिवान् बनायेगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति चतुर्थ स्थान में
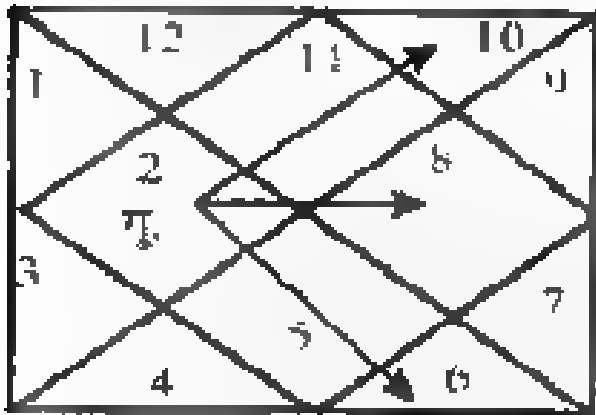
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है बृहस्पति यहां चतुर्थ स्थान में वृष (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'कुलदीपक योग'** एवं **'केसरी योग'** बनता है। ऐसे जातक को मकान, वाहन का सुख उत्तम धंधा रोजी रोजगार उत्तम होगा। बृहस्पति यहां पर सम्पत्ति या संतान दोनों में से एक सुख विशेष रूप से ज्यादा ताकतवर देगा। जातक पढ़ा लिखा, विद्यावान् होगा।

दृष्टि–चतुर्थभावगत बृहस्पति की दृष्टि अष्टम स्थान (कन्या राशि), दशम स्थान (वृश्चिक राशि) एवं व्यय भाव (मकर राशि) पर होगी। जातक को गुप्त धन मिलेगा। धंधा श्रेष्ठ जातक धार्मिक व परोपकारी होगा। जातक का धन शुभ कार्य में खर्च होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 2 के अनुसार यदि धनेश चतुर्थ स्थान में हो तो जातक देवनिन्दक व परस्त्रीगामी होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी बृहस्पति की दशा में जातक परदेश जा सकता है।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार बृहस्पति+चंद्र की युति यहां चतुर्थ भाव में वृष राशि के अंतर्गत हो रही है। यह युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा उच्च का होगा तथा केन्द्र स्थान में इन दोनों ग्रहों की उपस्थिति के कारण **'यामिनीनाथ योग'** एवं **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि होगी। ये दोनों ग्रह यहां अष्टम स्थान दशम भाव एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक की दुर्घटना एवं आघात से बचाव होता रहेगा। जातक समाज के शुभकार्य परोपकार एवं धार्मिक कार्यों में रुपया खर्च

करता रहेगा जातक की राज्यपक्ष (सरकार) कोर्ट कचहरी में दबदबा बना रहेगा।

2. **गुरु+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य समुशल में धन दिलायेगा। गृहस्थ सुख श्रेष्ठ।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को राज्यसुख देगा। उत्तम नौकरी देगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को उच्च शिक्षा देगा। प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में सफलता देगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र स्वगृही '**मालव्य योग**' देगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को प्रबल पुरुषार्थी बनायेगा। जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां चतुर्थ भाव में दोनों ग्रह '**वृष राशि**' में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो राहु अपनी उच्च राशि में होकर '**चाण्डाल योग**' बनायेगा। जातक की माता अल्प आयु में गुजर जाएगी। धन की कमी सदैव बनी रहेगी।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु माता को रोगी बनायेगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति पंचम स्थान में

12	11	10	9
1	2	8	3
गु.	4	5	6
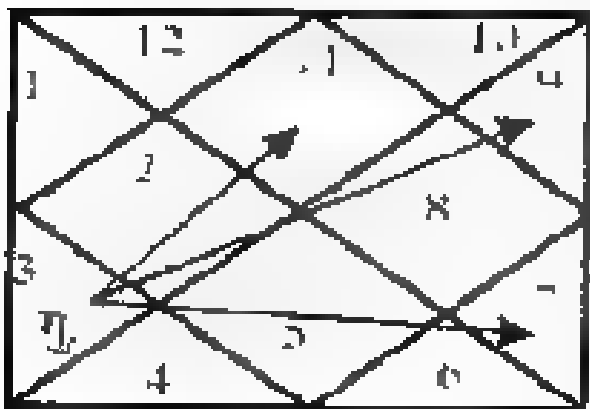
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां पंचम स्थान में मिथुन (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक पूर्व जन्म में शुभ पुण्य फलों को साथ लेकर जन्म लेता है जातक का स्वास्थ्य उत्तम होगा। जातक का पिता प्रतिष्ठित होगा पर जातक स्वयं उससे भी ज्यादा प्रतिष्ठित होगा जातक आस्तिक बुद्धि, आशावादी एवं धार्मिक विचारों वाला होगा।

दृष्टि–पंचमस्थ बृहस्पति की दृष्टि भाग्यस्थान (तुला राशि) लाभ स्थान (धनु राशि) एवं लग्न स्थान (कुंभ राशि) पर होगी। जातक परम सौभाग्यशाली होगा। धंधे व्यापार में उत्तम लाभ (मुनाफा) मिलेगा परिश्रम पूर्वक किये गये प्रयत्न सार्थक होंगे।

निशानी–जातक के पुत्र संतति विलम्ब से होगी। मकरलग्न में बृहस्पति शत्रु या स्त्री राशि में हो पुत्र अभाव को भी प्रकट करता है जातक को शेयर बाजार सट्टा, लॉटरी एवं भाग्यवर्धक प्रतियोगिताओं से लाभ होता रहेगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र–'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के पांचवे स्थान में यह युति 'मिथुन राशि' में होगी। यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा यहा बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एव धन स्थान को देखेंगे। फलत: जातक परिश्रमी होगा धन की यथेष्ट प्राप्ति होती रहेगी परन्तु धन का खर्च शुभ कार्यों में, परोपकार के कार्यों में होता रहेगा। जातक को राज्यपक्ष सरकार से सम्मान मिलता रहेगा। कोर्ट-कचहरी में विजय मिलेगी।
2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य ससुराल से, पत्नी से धन लाभ करायेगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल मित्रों से धन लाभ करायेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध विद्या एवं संतान से धन लाभ करायेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र माता का धन दिलायेगा। मामा मेहरबान होगा।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि परिश्रम का उचित पारिश्रमिक दिलायेगा
7. **गुरु+राहु**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह 'मिथुन राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रुक्षेत्री तो राहु यहा मूलत्रिकोणी होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक विद्या में रुकावट प्राप्त करेगा। संतान को लेकर भी चिंता बनी रहेगी
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु शल्य चिकित्सा से संतान देगा

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति षष्टम स्थान में
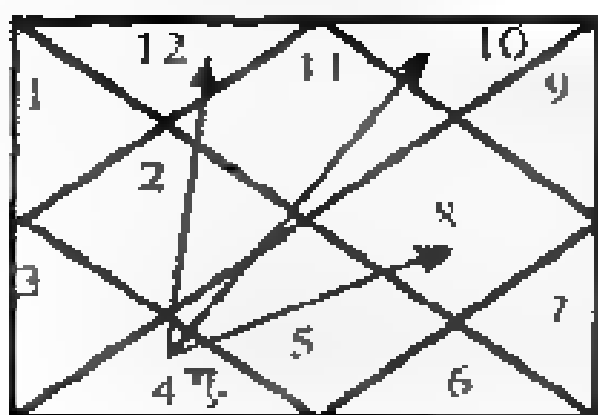
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहा मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहा छठे स्थान में उच्च का है। कर्क राशि के पांच अंशों में बृहस्पति परमोच्च का होगा। बृहस्पति की इस स्थिति में **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** की सृष्टि हुई ऐसे जातक पर कुटुम्ब की जिम्मेदारी अधिक होने से कमाई ठीक होते हुए भी खर्च बढ़ा-चढ़ा होगा। जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होगा।

दृष्टि–छठे स्थान में स्थित बृहस्पति की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि) व्यय भाव (मकर राशि) एवं धन भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का

व्यवसाय-व्यापार लाभकारी रहेगा। धन की भावक ठीक रहेगी पर धन एकत्रित नहीं हो पायेगा। जातक के धन का खर्च शुभ कार्यों में होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 3 के अनुसार ऐसे जातक को शत्रु का धन प्राप्त होगा। उसके गुप्तांगों या जांघों में कोई न कोई रोग अवश्य होगा।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी.

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र**–**'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के छठे स्थान में यह युति कर्क राशि में हो रही है। यह युति वस्तुतः षष्टेश चद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां चंद्रमा स्वगृही एवं बृहस्पति उच्च का होगा। दु:स्थान मे दु:स्थान के स्वामी का जाना शुभ माना गया है। यहा बैठकर ये दोनो शुभ ग्रह दशम भाव, व्यय भाव एव धनभाव को देखगे। फलतः जातक धन तो कमायेगा पर धन शुभ कार्यों मे खर्च होता रहेगा। बचत कम होगी। राज्यपक्ष सरकार से सरकारी अधिकारियों से लाभ होगा। इस योग के कारण जीवन में संघर्ष के बाद सफलता अवश्य मिलगी।
2. **गुरु+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य विवाह मे विलम्ब करायेगा। जातक का ससुराल सामान्य होगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल नीच का भाइयो से नुकसान करायेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध विद्या मे बाधा, पुत्र संतति की चिंता करायेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र माता का सुख तोड़ेगा। भाग्योदय में बाधा महसूस होगी.
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह **'कर्क राशि'** में होंगे। बृहस्पति यहां उच्च का तो राहु शत्रुक्षेत्री होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक गुप्त रोग व गुप्त शत्रुओ से सदैव परेशान रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति सप्तम स्थान में

कुंभलग्न मे बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहा सप्तम स्थान में सिह (मित्र) राशि
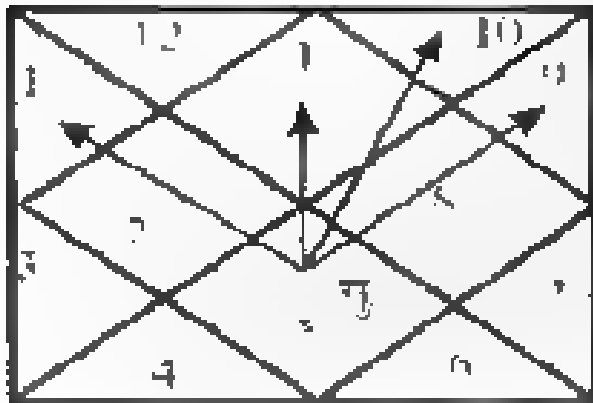
में है, बृहस्पति के कारण **'कुलदीपक योग'** एवं **'केसरी योग'** बना। जातक का धन एवं कुटुम्ब का सुख उत्तम होगा। बड़े भाई बहनों का सुख उत्तम। विवाह थोड़ी देरी से हो पर जीवनसाथी अच्छा मिलेगा। पत्नी एवं मित्र पद पद पर सहयोग बने रहेंगे। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लाभभाव (धनु राशि), लग्न भाव (कुंभ राशि), एवं पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक को धंधे में उत्तम लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा एवं परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयत्न सार्थक होंगे।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2,श्लोक 4 के अनुसार ऐसा जातक वैद्यक, हकीमी, डॉक्टरी व रहस्यमय विद्याओं का जानकार होता है वह स्वयं व्यभिचारी होता है तथा उसकी स्त्री व माता का चरित्र संदेहास्पद होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चंद्र—भोजसंहिता** के अनुसार कुंभलग्न के सप्तम स्थान में यह युति सिंह राशि के अंतर्गत होगी। सिंहराशि में यह युति वस्तुत, षष्ठेश चंद्रमा की धनेश-लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर ये दोनों शुभ ग्रह लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं धन स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक को धन लाभ होगा। उसके व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास होगा। उसे व्यापार व्यवसाय में बराबर लाभ होता रहेगा। जातक जीवन में सफल व्यक्ति होगा।
2. **गुरु+सूर्य**—बृहस्पति के साथ स्वगृही सूर्य जातक को ससुराल की सम्पत्ति दिलायेगा। ससुराल प्रभावशाली होगा।
3. **गुरु+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भाइयों व कुटुम्बियों का प्रेम दिलायेगा।
4. **गुरु+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध जातक की पत्नी पतिव्रता, धार्मिक एवं बुद्धिशाली होगी।
5. **गुरु+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र जातक का जीवन सर्वथा सौभाग्यशाली दिलायेगा। जातक की पत्नी साहित्य संगीत की प्रेमी होगी।
6. **गुरु+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि **'लग्नाधिपति योग'** बनायेगा। जातक व्यावहारिक ज्ञान सम्पन्न होगा, वो परिश्रम करने में विश्वास रखेगा।

7. **गुरु+राहु**—यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह 'सिंह राशि' में होंगे। बृहस्पति अपनी मित्र राशि में तो राहु अपनी शत्रु राशि में स्थित होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को गृहस्थ सुख में कमी रहेगा। परिवार में भारी तकलीफे उठानी पड़ेगी।
8. **गुरु+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु गृहस्थ सुख में कभी-कभी विघ्न डालेगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति अष्टम स्थान में
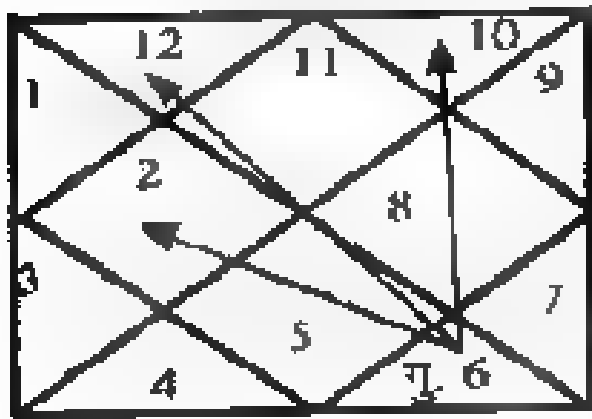
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां अष्टम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बना। जातक को धन उत्तम मिलेगा, पर फालतू कार्यों में धन खर्च हो जायेगा। जातक को मकान का सुख ठीक मिलेगा। मित्र ज्यादा सहकार नहीं देंगे। उधार दिया हुआ रुपया डूब जायेगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ बृहस्पति की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि), धन भाव (मीन राशि) एवं चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। जातक अधिक खर्च के कारण कर्जदार हो सकता है। जातक की स्थाई सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु धन खर्च करेगा।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 5 के अनुसार धनेश आठवें हो तो जातक को भूमि में गढ़ा हुआ धन मिलता है पर जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होता।

दशा—बृहस्पति की दशा अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चंद्र**—'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुंभलग्न के आठवें स्थान में युति कन्याराशि के अंतर्गत हो रही है कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः षष्टेश चद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति+चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से **'धनभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बना। चद्रमा शत्रु क्षेत्री है। परन्तु षष्टेश चंद्र का आठवे जाना शुभ संकेत है। ये दोनों ग्रह व्ययभाव, धनभाव एवं सुख स्थान पर है। फलतः ऐसे जातक को धन प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक दीर्घायु होगा। उसमें रोग से संघर्ष करने की पूर्ण शक्ति होती है। जातक को भौतिक सुख संसाधनों की प्राप्ति सहज में होगी। जातक का उत्तम वाहन सुख मिलेगा।

2. **गुरु+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य विवाह सुख में विलम्ब का द्योतक है।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल **'पराक्रम भंगयोग'** एवं **'राजभंग योग'** करायेगा। जातक को समाज में अपयश मिलेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को संतान से चिंता करायेगा। विद्या में बाधा पहुचेगी
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को भाग्योदय एवं अर्थ प्राप्ति हेतु बहुत संघर्ष करना पड़ेगा
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** करायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां अष्टम स्थान में दोनो ग्रह 'कन्या राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि मे तो, राहु स्वगृही होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। ऐसा जातक गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोग से सदैव परेशान रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु जातक को गुप्त बीमारी देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति नवम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 7 गु. 4 5 6
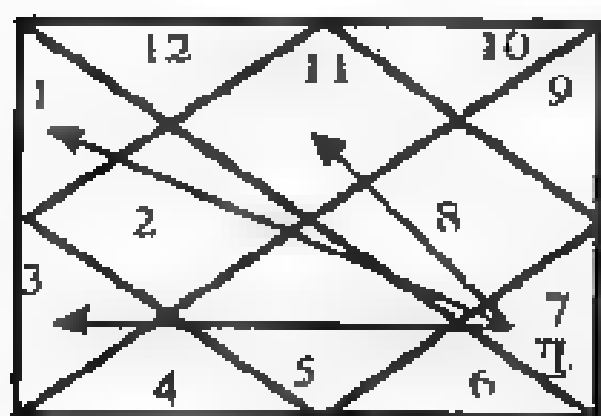
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावो का स्वामी होने से बृहस्पति यहा मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहा नवम स्थान में तुला (शत्रु) राशि में होगा ऐसा जातक का पिता भाग्यशाली होगा तथा जातक स्वयं भी भाग्यशाली एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक के पास धन अच्छा होगा। ऐसा जातक सिद्धान्तवादी एवं न्यायप्रिय होगा। स्त्री-संतान, विद्या-बुद्धि पद-प्रतिष्ठा सभी सुख सहज में मिलेगे।

दृष्टि–नवमस्थ बृहस्पति की दृष्टि लग्न भाव (कुंभ राशि), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एवं पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक अपने पुरुषार्थ से उत्तम धन कमायेगा। जातक पराक्रमी होगा। जातक के भाई-बहन सम्पन्न व सुखी होगे। जातक के संतान उत्तम एवं सौभाग्यशाली होंगे।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 6 के अनुसार धनेश यदि नवम स्थान में हो तो जातक बचपन में बीमार रहता है पर व्यक्ति धनवान, उद्यमी व चतुर होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। पराक्रम बढ़ेगा, भाग्योदय होगा।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र–भोजसंहिता** के अनुसार कुंभलग्न के नवमें स्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति तुलराशि में होगी। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की युति वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहां बैठकर दोनों शुभ ग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक खुद पढ़ा-लिखा होगा। उसको पिता की सम्पत्ति मिलेगी तथा उसकी संतानें भी पढ़ी-लिखी होंगी। जातक का सर्वांगीण विकास चहुं ओर से होगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
2. **गुरु+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य नीच का जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मंगल जातक को भूमि से धनलाभ देगा। भाई सहायक होंगे।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध विद्या से लाभ। जातक का सही भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ स्वगृही शुक्र, जातक को उत्तम वाहन सुख देगा जातक को माता का सुख-सम्पत्ति मिलेगी।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक का जबरदस्त भाग्योदय स्वपराक्रम से करायेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह **'तुला राशि'** में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो राहु मित्र राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु कीर्ति दिलायेगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति दशम स्थान में
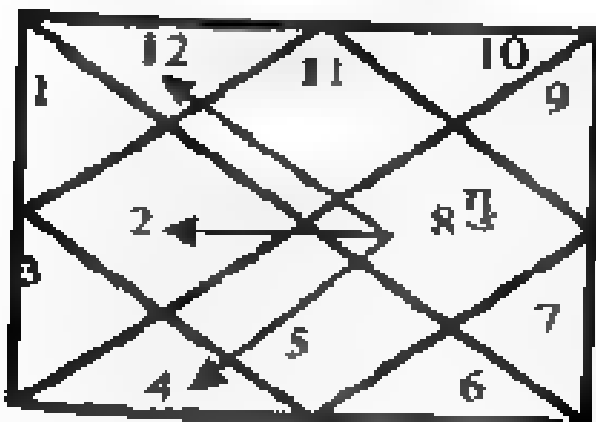
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां दशम स्थान में वृश्चिक (मित्र) राशि में है। बृहस्पति के कारण **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** बना। जातक के आवक उत्तम होगी। जातक समाज का प्रतिष्ठित, धनी व यशस्वी व्यक्ति होगा। विद्या उत्तम होगी। जातक के पास शैक्षणिक उपाधि

होगी। फिर भी आध्यात्मक का ज्ञान भरपूर होगा। जातक महत्त्वकांक्षी होगा। उसके पास उत्तम वाहन एवं भवन होगा।

दृष्टि—दशमभावगत बृहस्पति की दृष्टि धन स्थान (मीन राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं षष्टम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक धनवान होगा। जातक को माता का सुख सम्पत्ति मिलेगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी—'लोमेश संहिता' अध्याय 2/श्लोक 7 के अनुसार धनेश यदि दशम स्थान में हो तो मनुष्य कामी एवं पुत्रहीन होता है।

दशा—बृहस्पति की दशा-अतर्दशा अति उत्तम फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चंद्र—'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न के दसवें स्थान में बृहस्पति+चंद्र की युति वृश्चिक राशि में हो रही है। कुंभलग्न में बृहस्पति+चंद्र की यह युति, वस्तुतः षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। यहा चंद्रमा नीच राशि में होगा। ये दोनों ग्रह केन्द्रस्थ होकर **'कुलदीपक योग'**, **'यामिनीनाथ योग'** बनाते हुए धन स्थान, सुख स्थान एवं षष्टम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेगे। फलतः जातक को राज्यपक्ष से लाभ होगा। धनप्राप्ति होती रहेगी। जातक सांसारिक सभी सुख संसाधन सहज में प्राप्त होंगे। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। जातक शत्रु का सम्पूर्ण नाश करने में सक्षम होगा। जातक की गिनती समाज के अग्रगण्य व्यक्ति में होगी।
2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को पत्नी या ससुराल से धन दिलायेगा।
3. **गुरु+मंगल**—बृहस्पति के साथ मंगल **'रुचक योग'** के कारण जातक को राजातुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली बनायेगा।
4. **गुरु+बुध**—बृहस्पति के साथ बुध जातक को उत्तम संतति एवं विद्या का लाभ देगा।
5. **गुरु+शुक्र**—बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को एक से अधिक वाहनों का सुख देगा।
6. **गुरु+शनि**—बृहस्पति के साथ शनि के कारण जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**—यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह 'वृश्चिक राशि' में होंगे। बृहस्पति मित्र क्षेत्री है तो राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को रोजी रोजगार एवं आजीविका के साधन व्यस्थित करने हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
8. **गुरु+केतु**—बृहस्पति के साथ केतु जातक को राज्यपक्ष में कीर्ति देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति एकादश स्थान में
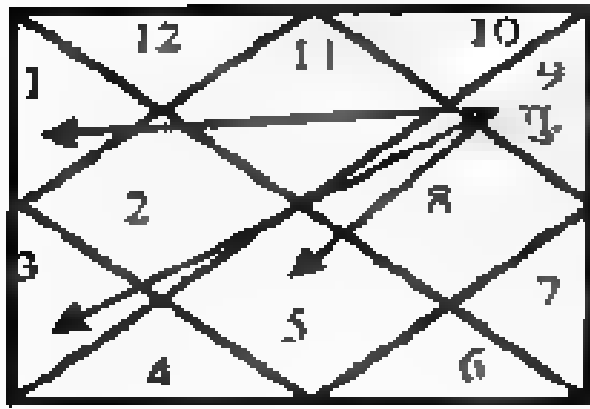
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावो का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां एकादश स्थान में धनुराशि में स्वगृही होगा। ऐसा जातक धन कमाने में विलक्षण प्रतिभावाला होगा। जातक की वाणी उत्तम होगी। कुटुम्ब, संतान सुख, भागीदारी, मित्रों का सुख उत्तम होगा। जातक को मकान-वाहन, पद-प्रतिष्ठा, नौकरी-व्यवसाय, राज्य-राजनीति में बराबर लाभ मिलेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि), पचम भाव (मिथुन राशि) एव सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। भाई-बहनों का सुख श्रेष्ठ, जातक को सतति सुख श्रेष्ठ, तीन पुत्र संभव है। जातक का जीवन साथी सभ्य एवं पढ़ा-लिखा होगा। जातक की शेयर बाजार, शट्टा उद्योग में रुचि होगी।

निशानी–'**लोमेश संहिता**' अध्याय 2/श्लोक 6 के अनुसार धनेश यदि एकादश में हो तो जातक बचपन में बीमार रहता है। ऐसा जातक धनवान, उद्यमी व चतुर होता है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अतर्दशा अत्यत शुभफल देगी। बृहस्पति की दशा में जातक को भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों सुखों की प्राप्ति होगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र**–'**भोजसंहिता**' के अनुसार कुंभलग्न के बृहस्पति+चद्र की युति एकादश स्थान में धनु राशि के अतर्गत होगी। यह युति वस्तुत: षष्टेश चंद्रमा की धनेश+लाभेश बृहस्पति के साथ युति होगी। बृहस्पति यहां स्वगृही होगा तथा उसकी दृष्टि पराक्रम स्थान, पचम भाव एवं सप्तम भाव पर होगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा तथा प्रथम सतति के बाद जातक का दूसरा भाग्योदय होगा। जातक को व्यापार व्यवसाय से लाभ होगा। जातक के परिजन व मित्र जातक के सहायक रहेंगे। जातक महान पराक्रमी व यशस्वी होगा।
2. **गुरु+सूर्य**-बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को ससुराल से धन दिलायेगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मगल जातक को उद्योगपति बनायेगा।

4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध संतान सुख दिलायेगा। जातक को विद्या में लाभ होगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को भाग्यशाली एवं भौतिक सुख-संसाधनों से परिपूर्ण जीवन देगा।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि जातक को पुरुषार्थ एवं परिश्रम का लाभ देगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह 'धनु राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां स्वगृही तो राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को बड़े भाई का सुख नहीं होगा। राहु की दशा में जातक का चलता उद्योग बन्द हो जायेगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु व्यापार में हानि देगा।

कुंभलग्न में बृहस्पति की स्थिति द्वादश स्थान में
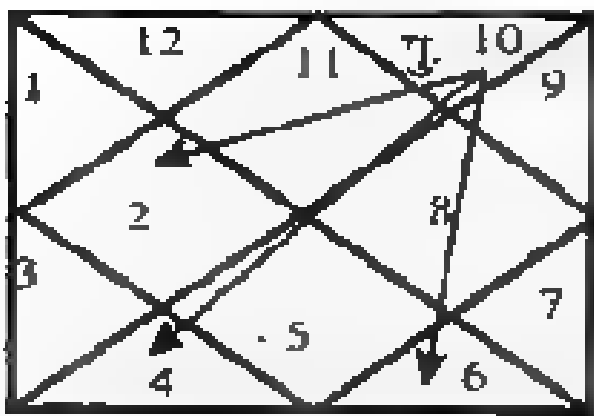
कुंभलग्न में बृहस्पति द्वितीयेश व लाभेश है। दो अशुभ भावों का स्वामी होने से बृहस्पति यहां मुख्य मारकेश है। बृहस्पति यहां द्वादश भाव में नीच का है। मकर राशि में पांच अंशों में बृहस्पति परमनीच का होता है। बृहस्पति के कारण यहां **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बना। जातक को यश नहीं मिलेगा। धन का नुकसान होगा। कुटुम्ब लोग दूर होते चले जायेंगे। विद्यायोग उत्तम, मकान सुख उत्तम परन्तु स्त्री व संतान सुख में न्यूनता रहेगी।

दृष्टि–द्वादश भावगत बृहस्पति की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि), षष्टम भाव (कर्क राशि) एवं अष्टम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को माता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। गुप्त शत्रु एवं रोग जातक को परेशान करते रहेंगे।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 2/श्लोक 8 के अनुसार धनेश यदि द्वादश में हो तो जातक सरकार में उच्च पद, नौकरी को पाता है पर उसके ज्येष्ट पुत्र की मृत्यु उसके सामने हो जाती है।

दशा–बृहस्पति की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

बृहस्पति का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्र** **'भोजसंहिता'** के अनुसार कुंभलग्न में चंद्र+बृहस्पति की यह युति द्वादश भाव मकर राशि के अंतर्गत है। बृहस्पति+चंद्र की यह युति वस्तुतः

षष्टेश चद्रमा की धनेश-लाभेश बृहस्पति के साथ युति है। बृहस्पति यहां द्वादश भाव मे नीच का होगा। जहां से बृहस्पति सुखस्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेगा। फलतः धन में कमी, लाभ मे कमी महसूस करेंगे। फिर भी जातक को ऋण, रोग व शत्रु को भय नहीं रहेगा। जातक दीर्घायु होगा। उसे प्राकृतिक, आकस्मिक आपदाओं से बचाव होगा। जातक को वाहन सुख मिलेगा एवं भौतिक ससाधनों की प्राप्ति सहज में होती रहेगी। जातक को कोई भी वस्तु जीवन में आसानी से नहीं मिलेगी, सफलता निश्चित है पर संघर्ष के बाद।

2. **गुरु+सूर्य**–बृहस्पति के साथ सूर्य जातक को विलम्ब विवाह करायेगा।
3. **गुरु+मंगल**–बृहस्पति के साथ मगल उच्च का होगा। जातक को राज (सरकार) से परेशानी आ सकती है। **'नीचभंग राजयोग'** के कारण जातक परदेश में कमायेगा।
4. **गुरु+बुध**–बृहस्पति के साथ बुध जातक को सतान से चिता एव विद्या मे बाधा करायेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–बृहस्पति के साथ शुक्र जातक को परेशानी में डालेगा। पत्नी से विवाह सुख में तकरार रहेगी।
6. **गुरु+शनि**–बृहस्पति के साथ शनि **'नीचभंग राजयोग'** करायेगा। जातक धनवान होगा पर परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहा द्वादश स्थान में दोनों ग्रह 'मकर राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां नीच का होगा तो राहु मित्र राशि का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक अधिक खर्च के कारण कर्जदार होगा तथा व्यर्थ की यात्राए करता फिरेगा।
8. **गुरु+केतु**–बृहस्पति के साथ केतु व्यर्थ की यात्राएं करायेगा। जातक को बुरे स्वप्न आयेंगे।

□□□

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में
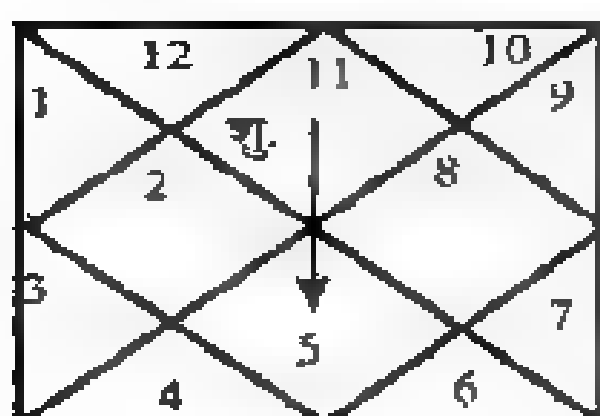
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां प्रथम स्थान में कुंभ (मित्र) राशि में है। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'** बना। ऐसा जातक सुन्दर व आकर्षक स्वस्थ व हसमुख होगा। जातक की पत्नी भी सुन्दर होगी। जातक का मकान एवं वाहन सुख उत्तम होगा। ऐसा जातक गीत संगीत, फल फूल, सुगन्ध, अभिनय एवं सुदर वस्त्रों का शौकीन होगा। जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक का वैवाहिक जीवन सुखमय होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** के अनुसार भाग्येश लग्न में हो तो जातक बड़ा ही भाग्यशाली, यशस्वी एवं कीर्तिवान् होता है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा खूब उत्तम फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा होने से जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा। रंगीन मिजाज का होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक का जीवनसाथी प्रभावशाली होगा एवं धन के मामले में आत्मनिर्भर होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को भूमि लाभ देगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को विद्या का लाभ देगा। जातक की उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को माता की सम्पत्ति दिलायेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि यहां 'शश योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु 'लम्पट योग' बनाता है। जातक कामी होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को धंधे में कीर्ति देगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में
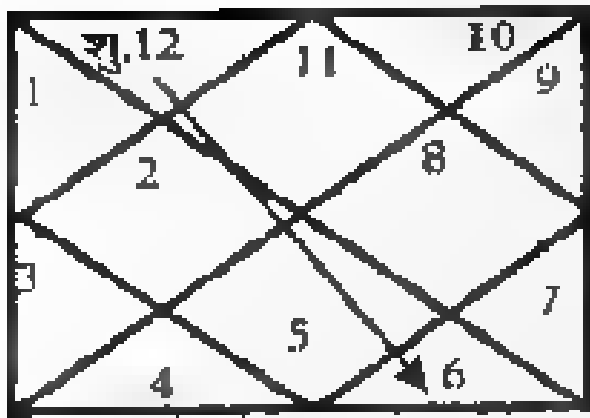
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां द्वितीय स्थान में उच्च का है। मीन राशि में 27 अंशों में शुक्र परमोच्च का होता है। जातक मिष्टभाषी, विनम्र एवं धनवान होगा। कुटुम्ब सुख उत्तम, मां का सुख उत्तम, जातक का पिता धनवान व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

दृष्टि–द्वितीय भावगत शुक्र की दृष्टि अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा।

निशानी–'लोमेश संहिता' अध्याय 4/श्लोक 8 के अनुसार सुखेश यदि द्वितीय स्थान में हो तो ऐसा जातक सभ्य समाज में आदरणीय, साहसी, पराक्रमी, मिष्टभाषी कुटुम्ब से युक्त भोग विलास मे रहकर धन का उपयोग करता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी जातक उत्तम धन कमायेगा। जातक का भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को धनी बनायेगा माता का सुख मिलेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को धनी ससुराल दिलायेगा। जीवनसाथी सुशील होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को सुन्दर भवन व भूमि का स्वामी बनायेगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'नीचभंग राजयोग'** करायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व धनी होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक उद्योगपति एवं महाधनी होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक कठोर परिश्रमी होगा। कठोर परिश्रम से जातक बहुत धन सम्पत्ति अर्जित करेगा पर व्यक्ति परम स्वार्थी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु होने से जातक के धनागमन में रुकावट आयेगी।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु होने से जातक को आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में
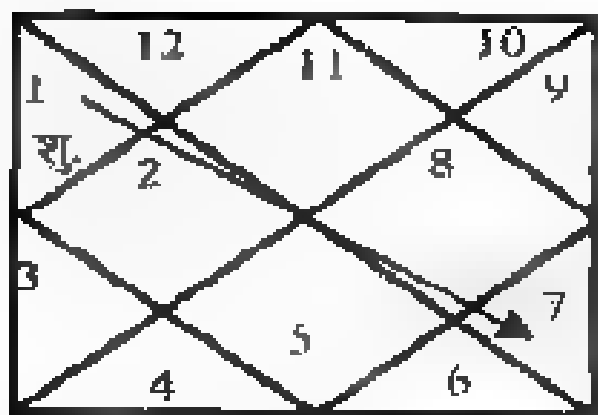
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां तृतीय स्थान में मेष (सम) राशि का है। ऐसा जातक पराक्रमी होगा। जातक के बहनें अधिक होगी। जातक को माता का प्रेम नहीं मिलेगा जातक यात्रा बहुत करेगा परन्तु पिता से अधिक धन कमायेगा। जातक स्वार्थी एव भोगविलास प्रिय होगा।

दृष्टि–तृतीयभावगत शुक्र की दृष्टि भाग्यभवन अपने ही घर तुला राशि पर होगी। ऐसा जातक को धन, पद-प्रतिष्ठा एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे।

निशानी **'लोमेश संहिता'** अध्याय 4/श्लोक 7 के अनुसार सुखेश यदि तृतीय स्थान में हो तो मनुष्य सदैव बीमार रहता है, भले ही वह पराक्रमी हो।

दशा–शुक्र की दशा अतर्दशा शुभफल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को स्त्री मित्रों से लाभ दिलायेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ उच्च का सूर्य जातक को महान् पराक्रमी बनायेगा। जातक को ससुराल से लाभ होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मगल **'किम्बहुनानामक'** राजयोग बनायेगा। जातक का जनसम्पर्क लाजबाब होगा

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक के बहने अधिक होगी। जातक को स्त्री-मित्रो से लाभ होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति परिजनों व मित्रों से लाभ देगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि नीच का मित्र से अच्छे संबंध बनायेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु भाइयों में विवाद करायेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु मित्रों में विवाद करायेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में

12 11 10 9 1 2 शु. 8 3 7 5 4 6
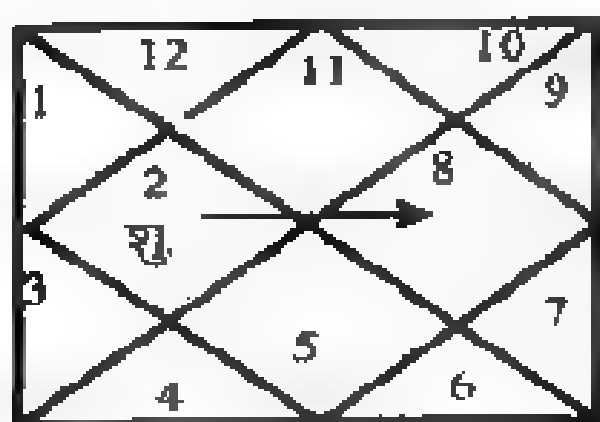
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां वृष राशि में स्वगृही होगा। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'** एवं **'मालव्य योग'** बनेगा। ऐसा जातक निश्चय ही राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। ऐसा व्यक्ति माता-पिता, स्त्री-संतान, विद्या बुद्धि, मित्र-बंधु, धन, यश, पद-प्रतिष्ठा का पूरा सुख भोगेगा वैवाहिक जीवन सुखी होगा। जातक लम्बी आयु, कीर्ति-यश अर्जित करेगा।

दृष्टि–चतुर्थभावगत शुक्र की दृष्टि दशम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक उत्तम व्यवसाय-व्यापार करेगा। जातक सौन्दर्य प्रसाधन से कमायेगा। जातक के पास उत्तम वाहन होगा। जातक का सामाजिक एवं राजनैतिक वर्चस्व रहेगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 4/श्लोक 1 के अनुसार ऐसा जातक मंत्री होगा। धनवान एवं भौतिक सुखों से परिपूर्ण होगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा अत्यंत शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनायेगा। जातक को माता का सुख एवं संपत्ति मिलेगी। जातक के पास चार पहियों की गाड़ी होगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक को सुन्दर पत्नी देगा। पत्नी धनवान एवं भाग्यशाली होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने से जातक के पास उत्तम भूमि व भवन होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक विद्यवान होगा। जातक की सही उन्नति प्रथम संतति के बाद होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति होने से जातक को माता पिता का सुख मिलेगा। माता-पिता की सम्पति मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को उत्तम वाहन् सुख देगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु माता का सुख तोड़ेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक की माता को बीमार करायेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 शु. 5 7 4 6
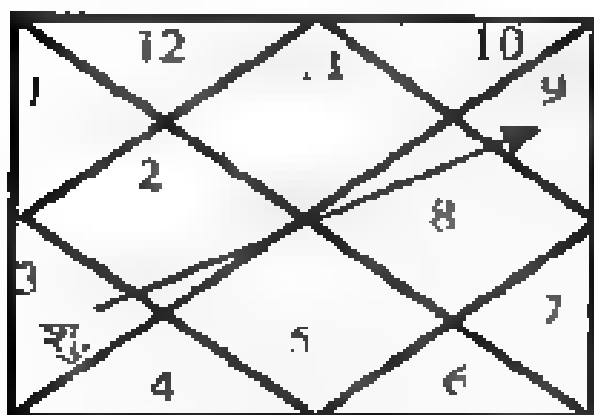
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहा पंचम स्थान में मिथुन (मित्र) राशि मे है जातक को विद्या सुख उत्तम मिलेगा। जातक संगीत-साहित्य, अभिनय कला का प्रेमी होगा। जातक को कन्या संतति अधिक होगी।

दृष्टि–पचमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (धनु राशि) पर होगी। जातक को व्यापार से लाभ होगा। जातक को सामाजिक व राजनैतिक सफलता मिलेगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 9/श्लोक 3 के अनुसार मनुष्य बड़ा ही भाग्यशाली होगा। जातक स्वाभिमानी एवं बृहस्पतिभक्त होगा.

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में शुभफल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा 'बहुपुत्र योग' कराता है। जातक की प्रथम संतति 'शल्य चिकित्सा' से होगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य जातक की पत्नी भाग्यशाली होगी. जातक को विद्या में सफलता मिलेगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को पुत्र संतति भी देगा। जातक को व्यापार मे लाभ होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध शैक्षणिक उपाधि देगा

5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को संतान द्वारा धन की प्राप्ति करायेगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि जातक को विदेश विद्या, विदेशी भाषा से लाभ दिलायेगा।
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु पुत्र संतान सुख में बाधा डालेगा।
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु संतान से चिंता करायेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 7 5 4 शु. 6
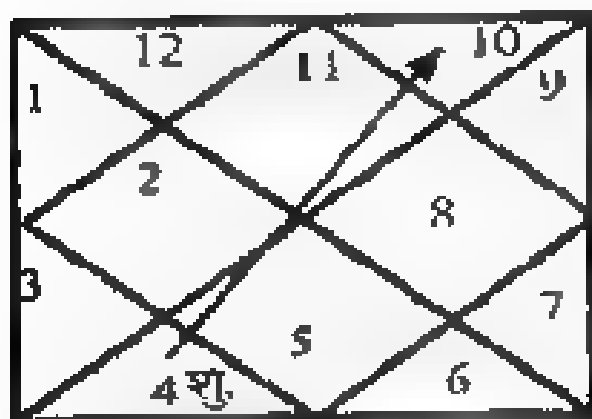
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां छठे स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में है। शुक्र की इस स्थिति से **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बना। जातक का विवाह विलम्ब से हो। विवाह सुख में बाधा बनी रहेगी। जातक के शत्रु अधिक होंगे। मूत्राशय मे बीमारी सभव है।

दृष्टि—छठे भावगत शुक्र की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। आवक से अधिक खर्च होगा।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 9/श्लोक 4 के अनुसार नवमेश यदि छठे हो तो जातक को अपने बड़े भाई एवं मामा का सुख नहीं मिलता। जातक के जन्म के बाद पिता को आर्थिक नुकसान होगा।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्र**—शुक्र के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। जातक धनी होगा पर गुप्त बीमारी से ग्रसित रहेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य **'विवाहभंग योग'** कराता है। जातक का विवाह विलम्ब से होता है अथवा पत्नी के होते हुए भी वैवाहिक सुख का नितांत अभाव रहता है।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मगल **'पराक्रमभग योग'** एवं **'राजभंग योग'** की सृष्टि करता है। जातक पूर्ण परेशान रहता है। उसे अपयश मिलता है।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध **'संतानहीन योग'** बनाता है। जातक को विवाह व संतान सुख की न्यूनता रहेगी।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ता है।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक का परिश्रम का फल नहीं मिल पायेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गुप्त रोग देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को सैक्स रोग देगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
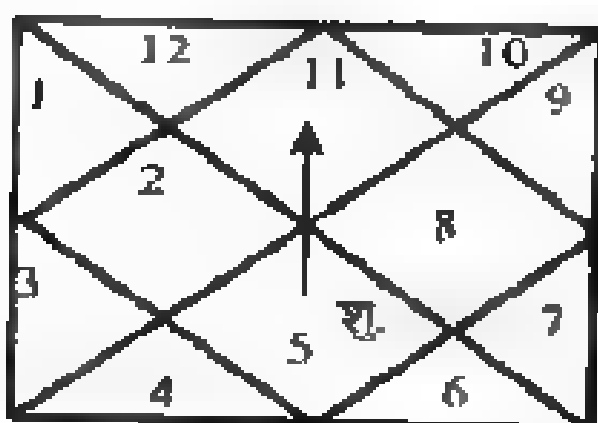
कुंभलग्न मे शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां सप्तम स्थान में सिंह राशि (शत्रु राशि) में है। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'** बनेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होगा। माता का सुख उत्तम, जातक को धन, यश, कीर्ति मिलेगी। जातक को श्रृंगार में रस एवं परयुवती में रुचि रहेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्नस्थान (कुंभराशि) पर होगी। जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयत्न का पूरा पूरा लाभ मिलेगा।

निशानी– **'लोमेश संहिता'** अध्याय 9/श्लोक 5 के अनुसार नवमेश यदि सातवें हो तो जातक भाग्यवान गुणवान, यशस्वी एवं कीर्तिमान् होता है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक को उत्तम गृहस्थ सुख मिलेगा। भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को अत्यंत सुन्दर व सुडौल जीवन साथी देगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य पत्नी व ससुराल प्रभावशाली देगा। जातक की पत्नी आत्मनिर्भर होगी।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल होने पर जातक कामी होगा एवं अन्य स्त्रियों के पीछे भटकता फिरेगा। स्त्री मित्रों से लाभ है।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध विवाह के बाद भाग्योदय देगा एवं दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद देगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति से धन लाभ दिलायेगा। पत्नी वफादार होगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'लग्नाधिपति योग' बनाता है। जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये पुरुषार्थ का मीठा फल मिलेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु 'लम्पट योग' बनाता है। जातक कामी व दुश्चरित्र होता है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक की काम शक्ति बढ़ायेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 7 5 4 शु. 6
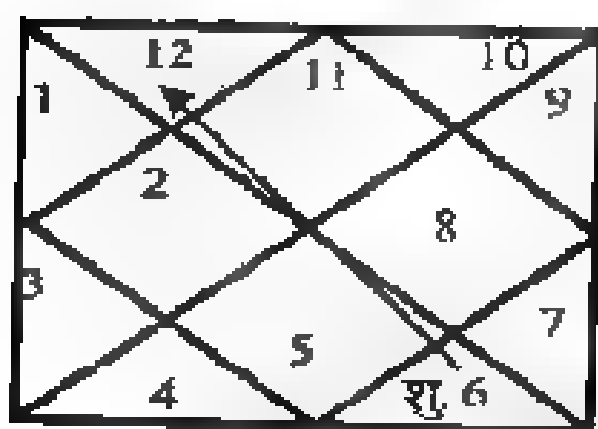
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां अष्टम स्थान में नीच राशि में है। कन्या राशि के 27 अशों में शुक्र परमनीच का होगा। शुक्र की इस स्थिति से **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बना। जातक को माता का सुख कमजोर होगा। शुक्र नवम भाव से बारहवें होने के कारण पिता से भी संबध कमजोर रहेंगे। मकान का सुख भी ठीक नहीं।

दृष्टि–अष्टमस्थ शुक्र की दृष्टि धनभाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का धन व्यर्थ के कार्यों में खर्च होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी व ऐश्वर्यशाली होता है।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य **'विवाहभंग योग'** बनाता है। प्रथमत: विवाह देरी से हो फिर बनी बनाई शादी टूट जावे।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'राजभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक को अच्छे काम करते रहने पर भी अपयश मिलता है।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध **'संतानहीन योग'** बनाता है. विद्या में रुकावट के साथ संतान बाधा भी रहेगी।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक को आर्थिक विषमताओं व दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** बनाता है। ऐसे जातक का परिश्रम का फल नही मिलता जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनाता है। ऐसे जातक व्यभिचारी होते हैं। गुप्त रोग सभव है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्त बीमारी देगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 7 शु. 5 4 6
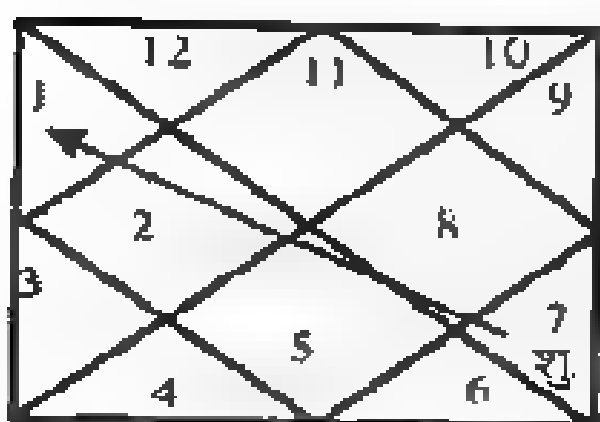
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां नवम स्थान में स्वगृही होगा। जातक का भाग्य बलवान होगा। जातक का पिता, धनवान, दीर्घायु होता है। जातक को मकान व वाहन का सुख उत्तम होगा।

दृष्टि–नवम भावगत शुक्र की दृष्टि तृतीय स्थान (मेष राशि) पर होगी। ऐसे जातक के बहनें अधिक होगी। बहनें सभी धनवान व सम्पन्न होगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 4/श्लोक 8 के अनुसार भाग्येश भाग्य स्थान में हो तो जातक धन-धान्य से परिपूर्ण, अन्न-धन, सम्पत्ति वैभव से युक्त जीवन जीता है। उसके अनेक भाई बहन होते हैं, सभी सुखी होते हैं

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा में जातक का जबरदस्त भाग्योदय होगा। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चद्रमा भाग्योदय मे सहायक है। जातक को माता-पिता की सम्पत्ति मिलेगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा। भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल भूमि लाभ दिलायेगे जातक को भाई बहनो का सुख मिलेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध उत्तम विद्या योग दिलायेगा। जातक मैनेजमेन्ट कोर्स में आगे बढ़ेगा।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति धन प्राप्ति के उत्तम अवसर प्रदान करता रहेगा। जातक धार्मिक एवं आध्यात्मिक विचारों वाला होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि उच्च का होने से **'किम्बहुना नामक राजयोग'** बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक के भाग्योदय में विशेष बाधाएं आयेगी।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगा। महत्वाकांक्षाएं पूरी होगी।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान में
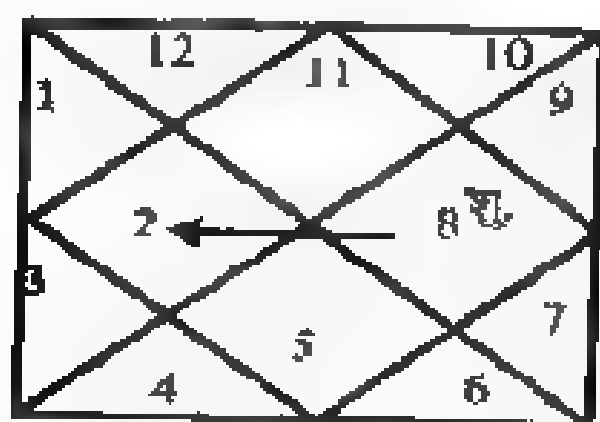
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां दशम स्थान में वृश्चिक (सम) राशि में है। शुक्र के कारण **'कुलदीपक योग'** बनेगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) मिलेगी। जातक का पिता धनवान एवं दीर्घजीवी होगा। वैवाहिक जीवन आदर्शमय होगा। जातक को स्त्री-संतान, पद-प्रतिष्ठा का सुख उत्तम श्रेणी का होगा।

दृष्टि–दशमस्थ शुक्र की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक को माता का सुख उत्तम। मकान-वाहन का सुख अति उत्तम होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 9/श्लोक 2 के अनुसार भाग्येश यदि दशम स्थान में हो तो व्यक्ति राजमंत्री, सेनापति I.S. अधिकारी जैसे उच्च पद को प्राप्त करता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में अति उत्तम फलदायक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा नीच का होते हुए भी जातक को उत्तम वाहन सुख देगा। जातक चंचल स्वभाव का होगा।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य विवाह के बाद जातक को रोजी-रोजगार के उन्नत अवसर प्राप्त होंगे।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल हो तो **'रुचक योग'** बनेगा. जातक राजा तुल्य पराक्रमी होगा पर उसके अनेक पत्नियां होंगी (चन्द्रकला नाड़ी)।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध जातक को विद्याध्ययन के कारण आगे बढ़ायेगा। जातक व्यापारी होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति माता का धन दिलायेगा। माता का जातक पर विशेष कृपा होगी। जातक को उत्तम भवन भी होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक परिश्रमी होगा तथा अपने परिश्रम से मकान बनायेगा।
7. **शुक्र+राहु** शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक कामी स्वभाव का होगा तथा राजसुख में उसका यह स्वभाव बाधक होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को व्यापार करने में प्रेरित करेगा.

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में
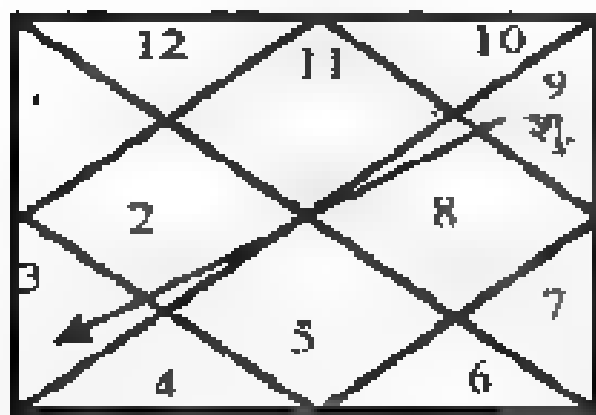
कुंभलग्न मे शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है। शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां एकादश स्थान में धनु (सम) राशि में है। चौथे भाव का अधिपति होकर चौथे भाव से आठवें स्थान पर होने के कारण माता का सुख ठीक नहीं। जातक की विद्या भी अधूरी छूट जायेगी। जातक धनवान होगा। मित्र बहुत होंगे आवक के जरिए शक्तिशाली होंगे।

दृष्टि–एकादश भावगत शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि) पर है। ऐसे जातक को कन्या संतति अधिक होगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 4/श्लोक 8 के अनुसार सुखेश यदि एकादश में हो तो जातक बहुत पराक्रमी होगा परन्तु सदैव बीमार रहेगा।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा सामान्य (मिश्रित) फलदायक होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को उद्योगपति बनायेगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य विवाह के बाद उन्नति करायेगा। जातक सैक्सी होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल भूमि लाभ के साथ जातक व्यापार की ओर प्रवृत होगा। व्यापार में लाभ होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध व्यापार में लाभ, सन्तानसुख श्रेष्ठ एवं विद्या सुख भी श्रेष्ठ होने का संकेत देता है।

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ बृहस्पति जातक को बड़े भाई से लाभ एवं धनी बनायेगा। जातक उद्योगपति होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को व्यवहारिक ज्ञान में परिपूर्ण व्यापारी बनायेगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु **'लम्पट योग'** बनाता है, जातक कामी होगा। व्यापार में बाधा आयेगी। उद्योग फैल होगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु व्यापार में उतार-चढ़ाव लाता रहेगा।

कुंभलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में

12	11	शु 10	9
1	२	८	7
3	4	5	6
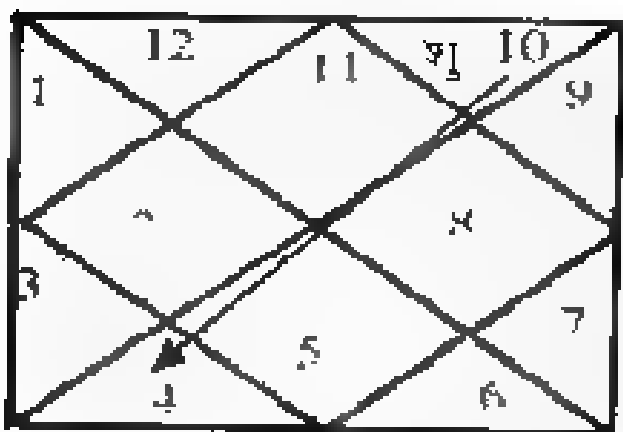
कुंभलग्न में शुक्र चतुर्थेश एवं भाग्येश है शुक्र शनि का मित्र होने से कुंभलग्न वालों के लिए शुक्र परमराजयोग कारक ग्रह है। शुक्र यहां द्वादश स्थान में मकर (मित्र) राशि में है। शुक्र यहां **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बना। चौथे भाव का अधिपति होकर बारहवें जाने से जातक की माता छोटी उम्र में गुजर जावे अथवा बीमार रहे। मकान-वाहन का सुख ठीक नहीं। जातक को भाग्योदय हेतु बहुत कठोर परिश्रम करना पड़ेगा, जीवन में व्यक्तिगत समस्याएं बहुत होगी।

दृष्टि–द्वादश भावगत शुक्र की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। जातक गलत कार्यों में रुपया खर्च करेगा, उसके शत्रु बहुत होंगे, परदेश में रहने से लाभ है।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 9/श्लोक 4 के अनुसार नवमेश यदि बारहवें हो तो जातक को बड़े भाई एवं मामा का सुख नहीं मिलता।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्र**–शुक्र के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनवान होगा। ऐश्वर्यी होगा।

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य **'विवाहभंग योग'** बनाता है, जातक की कामुक प्रवृत्ति विवाह सुख में बाधक है।

3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल उच्च का जातक कामी होगा। स्त्रियों के पीछे भागेगा एवं गलत कार्यों मे धन का अपव्यय करेगा।

4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध विद्या में रुकावट एवं संतान संबंधी चिंता बनी रहेगी।

5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ बृहस्पति '**धनहीन योग**' एवं '**लाभभंग योग**' बनाता है जातक को आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा

6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि स्वगृही होकर '**लग्नभंग योग**' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। जातक गलत कार्यों में रुपया खर्च करेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।

7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु '**लम्पट योग**' बनायेगा. जातक व्याभिचारी होगा। तथा भाग्योदय संबंधी कष्ट भोगेगा।

8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु जातक को स्त्री से विरक्ति दिलायेगा। जातक यात्राएं बहुत करेगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में शनि की स्थिति

कुंभलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में
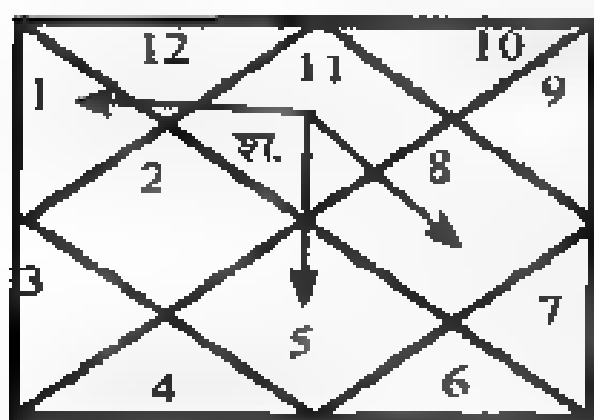
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां प्रथम स्थान में कुंभ राशि का होकर स्वगृही है। कुंभराशि के अशों तक शनि मूल त्रिकोणी कहलाता है। शनि की स्थिति के कारण **'शश योग'** बना। ऐसा जातक पुष्ट शरीर, पुष्ट वीर्य, काले बाल एवं आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यशाली होगा। ऐसे जातक के शत्रुओं का नाश दैवी-विपत्तियों से स्वतः ही हो जाता है।

दृष्टि—लग्नस्थ शनि की दृष्टि तृतीय स्थान (मेष राशि), सप्तम भाव (सिंह राशि) एवं दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः छोटे भाइयों से कम बनेगी पर समाज के अन्य लोगों से अच्छे संबध होंगे। पत्नी के साथ कम बनेगी। जातक राजनीति में रुचि लेगा। सरकार में प्रभाव रहेगा।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 12/श्लोक 2 के अनुसार—व्ययेश मदने लग्ने जायासौख्य भवेन्नहि' व्ययेश यदि लग्न में हो तो जातक को पत्नी का सुख नहीं होगा। विद्या अधूरी छूट जायेगी। विवाह विलम्ब से होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा में जातक की उन्नति होगी। उसका भाग्योदय होगा, पराक्रम बढ़ेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. शनि+चंद्र—शनि के साथ चंद्रमा जातक को दुष्टमति एवं चितमर्म स्वभाव का बनायेगा।

2. **शनि+सूर्य**—यहा दोनो ग्रह कुभ राशि में होंगे। सूर्य शत्रुक्षेत्री तो शनि यहा स्वगृही होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की यह युति लग्न मे होने से जातक आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। पत्नी सुन्दर होगी परन्तु दुर्घटना मे अग भंग होने का खतरा बना रहेगा। जातक का सही उन्नति पिता की मृत्यु के बाद होगी।

3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल होने से जातक का दाम्पत्य जीवन नीरस होगा।

4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध हो तो जातक को सनति सुख श्रेष्ठ मिलेगा।

5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति हो या बृहस्पति की दृष्टि हो तो जातक तत्वज्ञानी होगा।

6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र हो तो जातक करोड़पति होगा।

7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु यहा जातक को भौतिक, सामाजिक एव राजनैतिक उन्नति देगा।

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक को कीर्तिवन्त बनायेगा।

विशेष—शनि लग्न में हो तथा सूर्य, चंद्र, मंगल या राहु में से कोई भी ग्रह चौथे स्थान में हो तो व्यक्ति की पैतृक सम्पत्ति, धन इत्यादि सब कुछ बरबाद हो जाता है

कुंभलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में
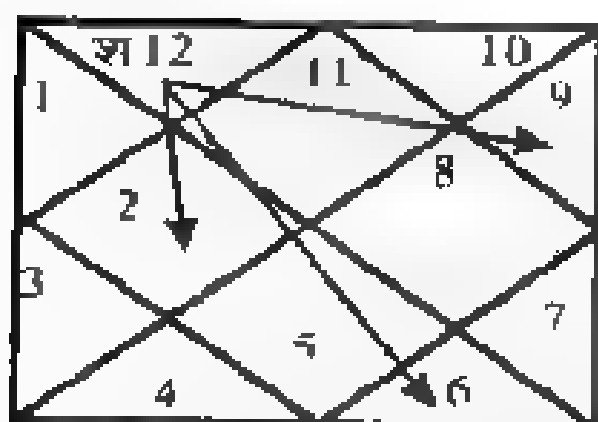
कुभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहा द्वितीय स्थान में मीन (शत्रु) राशि में है शनि यहा द्वादश भाव में तीसरे स्थान पर होने से द्वादश के दोष को नष्ट करने से शुभ फलदायक हो गया है। ऐसा जातक धनवान होगा। उसे उत्तम विद्या, धन, यश, कुटुम्ब सुख की प्राप्ति होगी।

दृष्टि—द्वितीयस्थ शनि की दृष्टि मातृभाव (वृष राशि), अष्टम भाव (कन्या राशि) एव एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। जातक को माता के साथ खटपट रहेगी। जातक की आयु लम्बी होगी। पर धधा में वांछित लाभ नहीं मिलेगा।

निशानी—ऐसा जातक पुराने मकान में मरम्मत करके रहेगा। वाहन मे भी मरम्मत होती रहेगी। जातक भाषा से कुटुम्ब में कड़वाहट होगी।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को धन की आवक तो देगा पर जातक धनसंग्रह नहीं कर पायेगा। सारे रुपये खर्च होते चले जायेगें।
2. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह 'मीन राशि' मे होंगे। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि एव सप्तमेश सूर्य की यह युति धन भाव में होने से जातक को पत्नी द्वारा धन मिलेगा। धन सग्रह मे कठिनाइयां आयेंगी। पिता की मृत्यु के बाद जातक धनी होगा।
3. **शनि+मगल**–शनि के साथ मगल जातक की वाणी मे कड़वाहट एव षड्यंत्र की बू देगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध नीच का होने से जातक वाक्पटु होगा परन्तु वाणी में हकलाहट रहेगी
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक कठोर पुरुषार्थी होगा एवं पुरुषार्थ के द्वारा धन अर्जित करेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र उच्च का जातक को परमसौभाग्यशाली एव महाधनी बनायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को धनहानि करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु धन प्राप्ति में विलम्ब करायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में

12 10 9 1 11 श 2 8 3 7 5 4 6
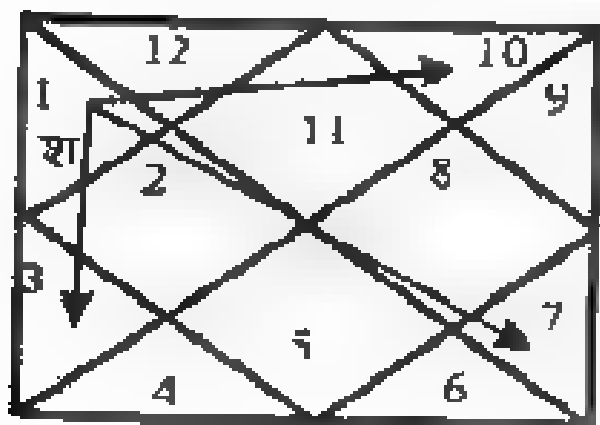
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एव व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नही देता, शनि यहा तृतीय स्थान में नीच का होगा, मेष राशि के अंशों पर शनि परम नीच का होता है। जातक अपने भाई बहनों से संबंध ठीक नहीं होगें। जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। ऐसा जातक दूरदर्शी नहीं होता। तत्काल व तुरन्त लाभ के चक्कर में आगे का काम बिगाड़ देता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पचम भाव (मिथुन राशि), भाग्यभवन (तुला राशि) एवं व्यय भाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक की विद्या अधूरी छूट जाये,

भाग्य तो उत्तम होगा पर पिता की सम्पत्ति को जातक ठुकरा देगा। जातक बड़े-बड़े खर्चे करेगा। जिससे ऋणग्रस्त हो जायेगा।

निशानी—जातक अपनी नारी व दीक्षित बृहस्पति से भी द्वेष रखने वाला होता है

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा ज्यादा शुभ फल नहीं दे पायेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चद्रमा जातक को परिजनों से लाभ देगा। परतु जातक को छोटे भाई का सुख नही होगा।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह 'मेष राशि' में होंगे। सूर्य यहां उच्च का, शनि नीच का होकर **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। जातक पराक्रमी होगा। उसे छोटे-बड़े दोनों भाइयो का सुख नहीं रहेगा। जाति के अलावा अन्य लोगों में बड़ी कीर्ति होगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल **'नीचभंग राजयोग'** करायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। प्रभावशाली होगा
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक को भाई-बहन दोनों का सुख देगा जातक बुद्धिजीवी होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक कठोर परिश्रमी व पुरुषार्थी होगा। जातक को पुरुषार्थ का फल मिलेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र जातक को भाई-बहनों का सुख देगा। जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु पराक्रम भंग करेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक का मित्रों से परेशानी दिलायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में

12 11 10 1 9 2 श. 8 3 7 5 4 6
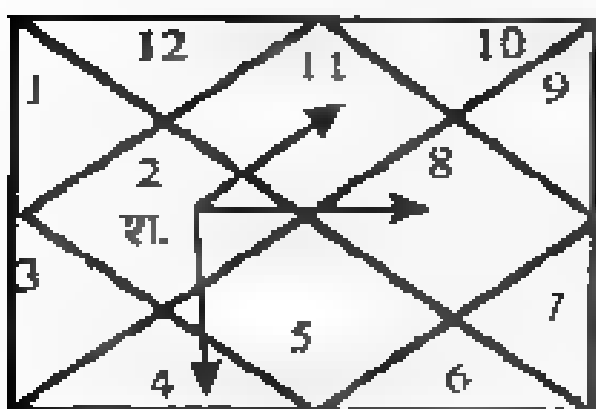
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां चतुर्थ स्थान में वृष (मित्र) राशि में है। ऐसे जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा एवं जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा। जातक की माता बीमार रहेगी। जातक पुराने मकान मे रहेगा। जातक के वाहन भी होगा पर रिपेरिंग खर्चा बहुत खायेगा। शनि चतुर्थ में **'बंधन योग'** भी कराता है।

दृष्टि—चतुर्थभावगत शनि की दृष्टि छठे भाव (कर्क राशि), दशम भाव (वृश्चिक राशि) एवं लग्न भाव, अपने ही घर कुंभ राशि पर होगी। यह शनि रोग, ऋण व शत्रुओं का नाश करेगा। जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयत्न में सफलता मिलेगी। जातक को व्यापार व्यवसाय उत्तम होगा।

निशानी—जातक उद्योगपति होगा या बड़ा राजनेता होगा। **'लोमेश संहिता'** अध्याय 11/श्लोक 1 के अनुसार जातक क्रोधी होगा तथा संतान की ओर से दुःखी रहेगा।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा उच्च का होगा। जातक की माता उच्च घराने से होगी। पर बीमारी रहेगी। ऐसा जातक कहीं भी हो मरते वक्त स्वदेश जरूर लौटेगा।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह 'वृष राशि' मे है। सूर्य शत्रु क्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की युति चतुर्थ भाव में होने से जातक को माता-पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी। माता की मृत्यु छोटी आयु मे होगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को सरकारी नौकरी अथवा सरकारी ठेकों से लाभ दिलायेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध उत्तम भवन सुख देगा
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति जातक को स्वभर्जित पराक्रम से धनी बनायेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा, जातक राजा के समान पराक्रमी व ऐश्वर्यवान होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु माता को अल्पायु देगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु माता को लम्बी बीमारी देगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में
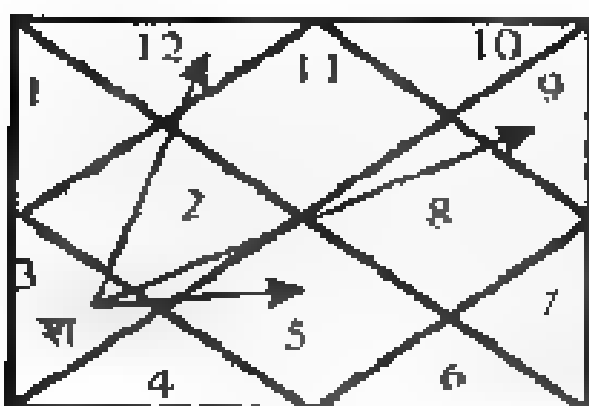
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां पंचम भाव में मिथुन (मित्र) राशि में है। जातक का विवाह देरी से होगा। पत्नी उम्र में खुद से बड़ी होगी, जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। संतान देरी से

होंगे, कम होगा। फिर भी जातक को स्त्री सुख, जमीन-जायदाद, माता-पिता व संतान का सुख मिलेगा।

दृष्टि–पचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि), लाभ भाव (धनु राशि) एवं धन भाव (मीन राशि) पर होगी। जातक के दाम्पत्य सुख मे कुछ न कुछ कमी रहेगी। रोजी-रोजगार की प्राप्ति कठिनता से होगी। धन प्राप्ति हेतु कठोर परिश्रम के बाद सफलता मिलेगी।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 1/श्लोक 5 के अनुसार लग्नेश पाचवे होने पर जातक को बड़ी सतति की मृत्यु उसके आखों के सामने होती है। जातक को सतान सुख देरी से मिलेगा।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चद्र**–शनि के साथ चद्रमा जातक को प्रथम कन्या सतति देगा। प्रारंभिक विद्या में रुकावट आने के बाद जातक उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह 'मिथुन राशि' में है सूर्य सम राशि मे तो शनि मित्र राशि में होगा लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की युति पचम भाव मे होने से जातक की प्रथम सतति की अकाल मृत्यु सभव है। एकाध गर्भपात सभव भी है।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मगल जातक को भूमि, भवन का लाभ देगा
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को धनी बनायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु सतान सुख में बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु प्रथम सतति शल्य चिकित्सा से करायेगा

कुंभलग्न में शनि की स्थिति षष्टम स्थान में

12 11 10 9 2 8 3 7 1 श 5 6
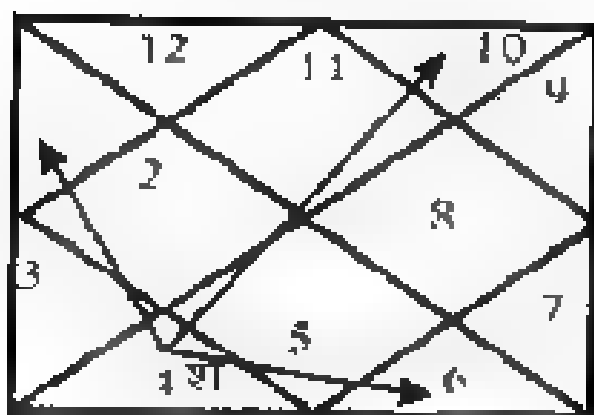
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहा छठे स्थान में कर्क (शत्रु) राशि में है। शनि की इस स्थिति से **'लग्नभग योग'** बना। व्ययेश होकर छठे होने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** भी बना।

ऐसा जातक धनी होगा, जीवन में सभी प्रकार के सुख ऐश्वर्य ससाधनों की प्राप्ति होगी। पर जीवन मे संघर्ष बहुत करना पड़ेगा। अचानक खर्चे आयेगे छठ शनि जातक को रोग मुक्त नही होने देता है

दृष्टि–छठे भावगत शनि की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि), व्यय भाव (मकर राशि) एवं तृतीय भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक के शत्रु बहुत होंगे। जातक पर खर्च व कर्ज की जबाबदारी रहेगी। जातक के मित्र विश्वासयोग्य नहीं होंगे।

निशानी–प्रथम प्रयत्न में किसी भी प्रकार के कार्य में सफलता नहीं मिलेगी जातक के व्यसनी होने की सभावना अधिक रहेगी।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी होगा। पर मानसिक परेशानी मे रहेगा। जातक को तेज सिर दर्द की बीमारी रहेगी।
2. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह 'कर्क राशि' में है। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है. लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति में **'लग्नभंग योग'**, **'विवाहभंग योग'** भी बनेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिल पायेगा। विवाह विलम्ब से हो अथवा दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहेगा। विवाह विच्छेद की संभावना है।
3. **शनि+मगल**–शनि के साथ मगल **'पराक्रमभंग योग'** एवं **'लाभभंग योग'** बनायेगा। ऐसा जातक व्यापार में हानि उठायेगा। समाज में अपयश मिलेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध **'संततिहीन योग'** बनायेगा। जातक को सतान सबधी चिंता रहेगी।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एव **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक को आर्थिक विषमता का सामना करना पड़ेगा.
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र **'सुखभंग योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को भौतिक सुखो की प्राप्ति हेतु काफी परेशानियो का सामना करना पड़ेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु गुप्त रोग देगा। जातक रोग मुक्त नहीं हो पायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु है तो जातक जन्म से धनवान होगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में
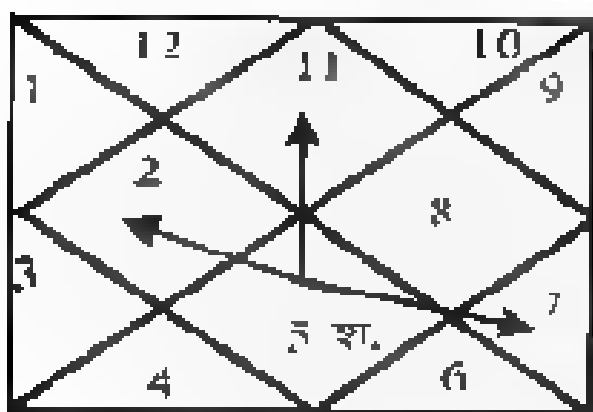
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां शनि सातवें स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में है। यहां लग्नेश की लग्न पर दृष्टि होने से जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जातक को माता-पिता का सुख तो मिलेगा पर संपत्ति नहीं मिलेगी। जातक अपनी धर्मपत्नी के साथ खटपट करता रहेगा तकरार होती रहेगी। जातक का चरित्र संदेहास्पद होगा। जातक को पेट की तकलीफ रहेगी।

दृष्टि—सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य स्थान (तुला राशि), लग्न स्थान (कुंभ राशि) एवं चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी ये सभी शनि की उच्च, स्व एवं मित्र राशियां है। जातक भाग्यशाली होगा, परिश्रम का फल मिलेगा। जातक के पास निजी भवन एवं वाहन होगा।

निशानी—जातक पुराना मकान अथवा पुराना वाहन खरीदेगा

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक की उन्नति व भाग्योदय करायेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को उत्तम विवाह सुख देगा
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह 'सिंह राशि' में है। सूर्य यहां स्वगृही तो शनि शत्रु क्षेत्री होगा। लग्नेश शनि व सप्तमेश सूर्य की इस युति से पति-पत्नी के बीच अहम् का टकराव होगा। जातक की पत्नी कमाऊं एवं प्रभावशाली महिला होगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को भूमि भवन का लाभ देगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक को उत्तम संतान सुख देगा। विद्या सुख देगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति होने से जातक को पुरुषार्थ के द्वारा धन की प्राप्ति होगी।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र होने से जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक भौतिक सुखों से सम्पन्न होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु दाम्पत्य जीवन में विष घोलेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु दाम्पत्य जीवन में कलह करायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में
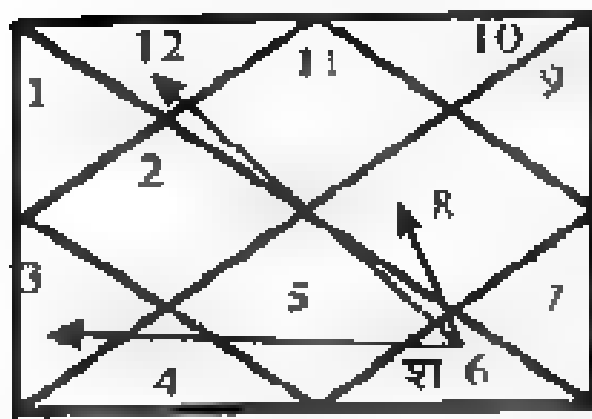
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां अष्टम स्थान में कन्या (मित्र) राशि में है. शनि की इस स्थिति से **'लग्नभंग योग'** बना। व्ययेश शनि अष्टम में होने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी एवं प्रतिष्ठित होगा, परन्तु जातक अपनी उन्नति हेतु कठोर परिश्रम करना पड़ेगा। जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। अकस्मात रोग व शत्रुओं का प्रकोप होगा। शनि अष्टम में बिना कारण व्यक्ति को झगड़े झंझट में फंसा देता है।

12 11 10 9 1 2 8 3 5 7 4 श 6

दृष्टि—अष्टमस्थ शनि की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि), धन भाव (मीन राशि) एवं पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को राजकाज में बाधा उत्पन्न होगी। धन प्राप्ति हेतु भारी परिश्रम करना पड़ेगा। जातक को संतान संबंधी चिंता रहेगी। संतान के साथ संबंध अच्छे नहीं होंगे।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 1/श्लोक 7 के अनुसार ऐसा जातक तंत्र विद्या का जानकार, बड़ा तांत्रिक, ज्योतिषी व भविष्यवक्ता होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** कराता है। जातक धनी होगा पर उसकी पत्नी बीमार रहेगी। जातक को तेज सिरदर्द की बीमारी रहेगी।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह 'कन्या राशि' में है। सूर्य यहां शत्रु क्षेत्री तो शनि मित्र क्षेत्री है। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति में **'लग्नभंग योग'** एवं **'विवाहभंग योग'** बनेगा। जातक को मेहनत का फल नहीं मिलेगा। विवाह विलम्ब से हो अथवा दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण रहेगा पति पत्नी में दूरियां रहेगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल द्विभार्या योग कराता है। पति-पत्नी में कलह रहेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध संतान सुख में बाधक है.
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** व **'लाभभंग योग'** बनाता है जातक को आर्थिक विषमताओं से झूंझना पड़ेगा।

6. **शनि+शुक्र** शनि के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एव **'भाग्यभंग योग'** बनाता है। जातक का भौतिक सुखो की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।

7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को शारीरिक कष्ट देगा। अंग-भंग करायेगा।

8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को शारीरिक पीड़ा देगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में

कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां नवम स्थान में शनि उच्च का होगा। तुला राशि में अंशों में शनि परमोच्च का होता है। ऐसे जातक का पिता प्रतिष्ठित एवं समाज का अग्रणी व्यक्ति होगा। जातक स्वय धनी होगा। धर्मात्मा होगा। दानी होगा। जातक को अपने कुटम्बियों, भाई-बहनों से लगाव रहेगा। जातक अहंकारी होगा जिससे पति-पत्नी में तकरार होता रहेगा।

दृष्टि–नवमभावगत शनि की दृष्टि एकादश स्थान (धनु राशि), पराक्रम स्थान (मेष राशि) एव सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक को व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा। जातक का ससुराल धनाढ्य होगा।

निशानी–**'लोमेश संहिता'** अध्याय 9/श्लोक 4 के अनुसार यदि व्ययेश नवम स्थान में हो तो जातक अपनी स्त्री व दीक्षित बृहस्पति से द्वेष करने वाला होता है।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा में जातक को धन, यश, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। जातक का भाग्योदय होगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को भाग्यशाली बनायेगा। जातक धनी होगा।

2. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह 'तुला राशि' में है। सूर्य यहां नीच का तो शनि उच्च का होने से **'नीचभंग राजयोग'** बना। लग्नेश व सप्तमेश की नवमभाव में यह युति जातक को राजातुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी बनायेगा। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा पर पिता की मृत्यु के बाद जातक की किस्मत विशेष रुप से चमकेगी।

3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल जातक को बड़ी भूमि का स्वामी बनायेगा। भाइयों से लाभ देगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक को बुद्धिशाली बनायेगा। प्रथम संतति के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति होने से परिश्रम का लाभ मिलेगा। ऐसा जातक अपनी किस्मत खुद चमकायेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र **'किम्बहुना योग'** करायेगा। ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली एवं राजातुल्य पराक्रमी होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधक है।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक के भाग्य में चमक लायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 श. 3 7 5 4 6
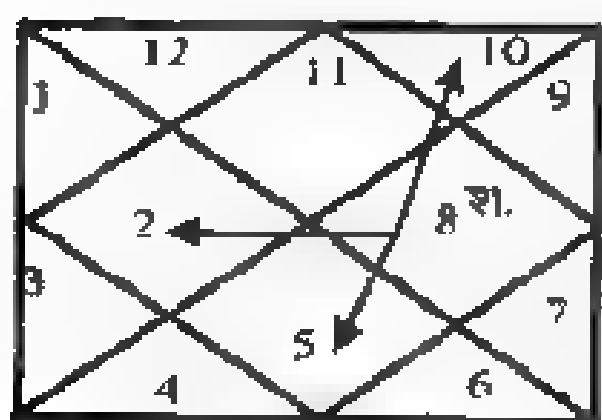
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नही देता। शनि यहां दशम स्थान में शनि वृश्चिक (शत्रु) राशि मे है। ऐसे जातक को उत्तम नौकरी, व्यवसाय, व्यापार का सुख मिलेगा। जातक का स्वास्थ्य उत्तम होगा। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक व प्रभावशाली होगा। ऐसा जातक किसी बड़ा संस्था का प्रमुख या सरकार मे उच्च पद को प्राप्त करेगा।

दृष्टि—दशमभावगत शनि की दृष्टि व्यय भाव (मकर राशि), चतुर्थ भाव (वृष राशि) एवं सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। पैसा हाथ मे नहीं रुकेगा। माता का स्वास्थ्य खराब रहेगा। भौतिक एवं शयन सुख कमजोर। जातक के पत्नी के साथ तर्क वितर्क होता रहेगा।

निशानी—जातक करोड़पति होगा। परन्तु **'लोमेश संहिता'** के अनुसार जातक का पुत्र जातक की आज्ञा में नहीं रहेगा। पिता से विपरीत चलेगा।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। शनि की दशा में जातक को अकल्पित धन मिलेगा

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चद्रमा, सरकारी नौकरी मे बाधक है। जातक की माता बीमार रहेगी

2. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह 'वृश्चिक राशि' में है। सूर्य यहा मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है लग्नेश शनि और सप्तमेश सूर्य की यह युति दशम भाव में जातक को करोड़पति बनायेगी। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा परन्तु सही अर्थों मे भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा.
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मगल **'रुचक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक करोड़पति होगा। राजा के समान पराक्रमी एव प्रभावशाली होगा
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को बुद्धिबल से धन दिलायेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ बृहस्पति परिश्रम का लाभ देगा। ऐसा जातक अपनी मेहनत से अपनी किस्मत चमकायेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को भाग्यशाली बनायेगा जातक के पास एक से अधिक वाहन होगा
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु जातक को सरकारी दण्ड दिलायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु जातक को सरकारी ठेके में बाधा पैदा करेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में
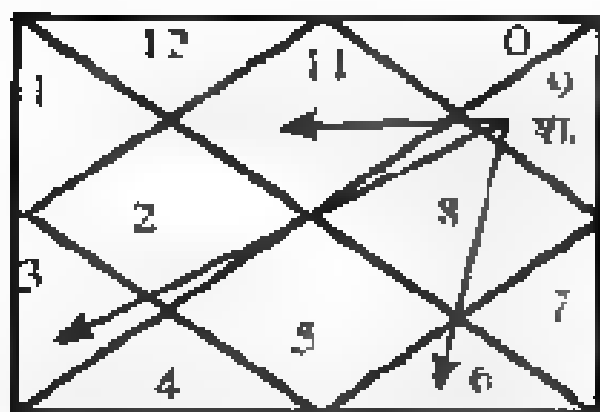
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एव व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नहीं देता। शनि यहां एकादश स्थान में धनु (सम) राशि मे है। लग्नेश लग्न को देखने से जातक का स्वास्थ्य उत्तम होगा। जातक को माता पिता, स्त्री सतति, पद-प्रतिष्ठा, धन प्राप्ति का सुख रहेगा जातक रहस्यमय विद्याओं एवं भविष्य बताने वाली विद्याओं का जानकार होगा। जातक की संतति अपने पिता के धंधे व्यवसाय में रुचि रखेगा। शनि बारहवें भाव से बारहवें स्थान पर होने के कारण ज्यादा अशुभफल नहीं देगा। उसे व्ययेश होने का दोष समाप्त हो जायेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत शनि की दृष्टि लग्न स्थान (कुंभ राशि), पचम स्थान (मिथुन राशि) एव अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक तदुरुस्त होगा। जातक को संतान संबधी चिंता रहेगी। जातक दीर्घायु को प्राप्त करेगा

निशानी– **'लोमेश संहिता'** अध्याय 12/श्लोक 5 के अनुसार जातक का पुत्र जातक के कहने में नहीं रहेगा अथवा पुत्र होकर गुजर जावे। अर्थात् पुत्र संतान का सुख कमजोर होगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। जातक की शनि धन लाभ करायेगा। बीमारी ठीक होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+चंद्र**–शनि के साथ चद्रमा को व्यापार से लाभ होगा।
2. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह 'धनु राशि' में है। सूर्य यहां मित्र क्षेत्री तो शनि शत्रु क्षेत्री है। लग्नेश शनि एव सप्तमेश सूर्य की यह युति एकादश स्थान में जातक को उद्योगपति बनायेगी। जातक के व्यापार व्यवसाय में उन्नति विवाह के बाद होगी पर जातक सही अर्थो में धनपति पिता की मृत्यु के बाद होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल भूमि से लाभ दिलायेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को विद्या से लाभ देगा। प्रथम संतति के बाद भाग्योदय होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ स्वगृही बृहस्पति जातक को धनी एवं उद्योगपति के रुप में स्थापित करेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को बड़े उद्योग का स्वामी बनायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु व्यापार में घाटा करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यापार में उतार चढ़ाव करायेगा।

कुंभलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में
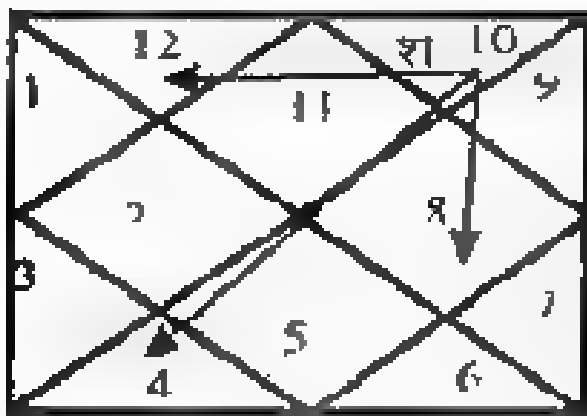
कुंभलग्न में शनि लग्नेश एवं व्ययेश है। शनि लग्नेश होने से अशुभ फल नही देता। शनि यहां द्वादश स्थान में स्वगृही होगा। शनि की इस स्थिति में **'लग्नभंग योग'** एवं **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी एव विविध ऐश्वर्य से सम्पन्न व्यक्ति होगा परन्तु जीवन में पुरुषार्थ बहुत करना पड़ेगा। जातक के व्यर्थ खर्च अधिक होगे। जातक विदेश जायेगा। विदेशी भाषा पढ़ेगा। जन्म स्थान से दूर परदेश जाकर उत्तम धन कमायेगा।

दृष्टि–द्वादशभावगत शनि की दृष्टि धनभाव (मीन राशि), छठे भाव (कर्क राशि) एवं दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक के धनसग्रह में बाधा आयेगी। ऐसे जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। जातक के राजकाज में बाधाएं बहुत आयेगी।

निशानी—**'लोमेश संहिता'** अध्याय 1/श्लोक 7 के अनुसार जातक बड़ा तांत्रिक होगा। गूढ़ एवं रहस्यमय विद्याओं का जानकार होगा।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा अशुभ फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+चंद्र**—शनि के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक को धनी बनायेगा। जातक को तेज सिरदर्द की बीमारी रहेगी।
2. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह 'मकर राशि' में है सूर्य यहा शत्रु क्षेत्री तो शनि स्वगृही होगा। लग्नेश शनि एवं सप्तमेश सूर्य की इस युति से **'लग्नभंग योग'** एवं **'विवाहभंग योग'** बनेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। विवाह विलम्ब से होगा अथवा दाम्पत्य जीवन में बिछोह व तनाव की स्थिति रहेगी।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल **'किम्बहुनानामक राजयोग'** करायेगा ऐसे जातक को विदेश मे लाभ होगा। जातक बहुत धनी होगा। पर खर्चीले स्वभाव का होगा ग्रहों की मंद स्थिति जातक को आसमान से जमीन पर अवश्य पटकता है।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध **'संतानहीन योग'** बनाता है जातक के विद्या में बाधा आयेगी। संतति को लेकर चिंता रहेगी।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ बृहस्पति **'नीचभंग राजयोग'** बनायेगा। ऐसा जातक धनी होगा एवं खर्चीले स्वभाव का होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एवं **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को भौतिक सुखों व उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा। जातक को पक्षाघात का भय रहेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु जातक को धनहानि करायेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु बाहरी यात्राएं करायेगा। जिनका अनुभव दुःखद होगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में राहु की स्थिति

कुंभलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में
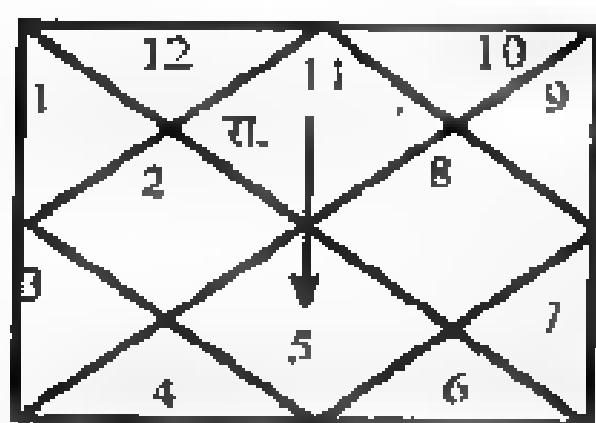
कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां प्रथम स्थान अपनी मूल त्रिकोण राशि में होगा। जातक के मुंह का दिखाव बेडौल, दांत बाहर निकले हुए होंगे। जातक ईर्ष्यालु स्वभाव का होगा। ऐसा जातक परिश्रमी, पुरुषार्थी होता है तथा परिश्रम के उपरान्त धन, ऐश्वर्य, नौकरी व्यापार के सुख की प्राप्ति होती है।

दृष्टि–राहु की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होने से जातक के दाम्पत्य सुख में बिगाड़ उत्पन्न होगा। वैवाहिक जीवन दु:खी होगा।

निशानी–जातक प्रेम विवाह करेगा। ऐसा जातक गुप्त चिंताओं से ग्रस्त रहता है।

दशा–राहु का दशा शुभ फल देगी। परिश्रम से भाग्योदय करायेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक अस्थिर मनोवृत्ति वाला, क्षीण मनोबल वाला व्यक्ति होगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक गर्म मिजाजी, लड़ाकू एवं कमजोर आत्मबल वाला होगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक उग्र स्वभाव का होगा। भूमि व भाइयो को लेकर विवाद होगा

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जडत्व योग'** बनायेगा। जातक को व्यापार व विद्या मे नुकसान होगा।

5. **राहु+गुरु**–यहां प्रथम स्थान में दोनों ग्रह 'कुभ राशि' में होंगे। लग्नस्थ बृहस्पति यहा दु:खी होकर समराशि मे होगा जबकि राहु अपनी मूलत्रिकोण राशि में हर्षित होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक जिद्दी, हठी एवं धार्मिक होते हुए भी नास्तिक विचारों वाला, तर्क विकर्त मे विश्वास रखने वाला जातक होगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्याभिचारी होगा। माता का सुख, भाग्य का सुख कुण्ठित होगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'शश योग'** के कारण राजातुल्य पराक्रमी होगा पर निर्णय गलत होगे। जातक हठी होगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में
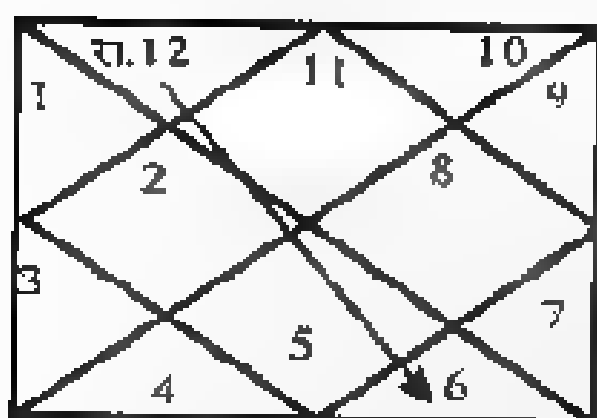
कुंभलग्न वालो के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहा स्थान में मीन राशि मे होकर नीच का होगा। जातक की भाषा कठोर होगी। कुटुम्ब मे यश नहीं। आख की दृष्टि कमजोर। राहु की यह स्थिति धन सग्रह मे बाधक है। कभी कभी जातक को घोर आर्थिक सकटों का शिकार होना पड़ेगा।

दृष्टि–द्वितीय भावगत राहु की दृष्टि अष्टम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक अपने शत्रुओ से परेशान रहेगा। पर ऐसा जातक बडा हिम्मत वाला होता है।

निशानी–घर परिवार मे दैनिक जरुरतों की पूर्ति हेतु मानसिक चिंता और तनाव उत्पन्न होते है।

दशा–राहु का दशा अतर्दशा धन नाश करायेगी। परेशानी उत्पन्न करेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चद्र**–राहु के साथ चद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक के धन प्राप्ति मे रुकावट आयेगी।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को कुटुम्ब सुख में बाधा आयेगी वाणी कड़वी होगी

3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मगल **'अकारक योग'** बनायेगा। जातक को भाई व भूमि सुख में बाधा आयेगी वाणी कड़की होगी, लड़ाकू होगा।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। विद्या में बाधा आयेगी।

5. **राहु+गुरु**—यहा द्वितीय भाव में दोनो ग्रह 'मीन राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां स्वगृही जबकि राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। फलतः धन के घड़े में छेद होगा। जातक जितना भी कमायेगा उसकी बरकत नहीं होगी। जिम्मेदारी बहुत ज्यादा रहेगी।

6. **राहु+शुक्र**—राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक कामी होगा, धनी होगा पर रुपया गलत कार्यों में खर्च करेगा।

7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। परिश्रम का फल नहीं मिलेगा ऐसा व्यक्ति परम स्वार्थी होता है

कुंभलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में

12 11 10 9 1 रा. 2 8 3 7 5 4 6
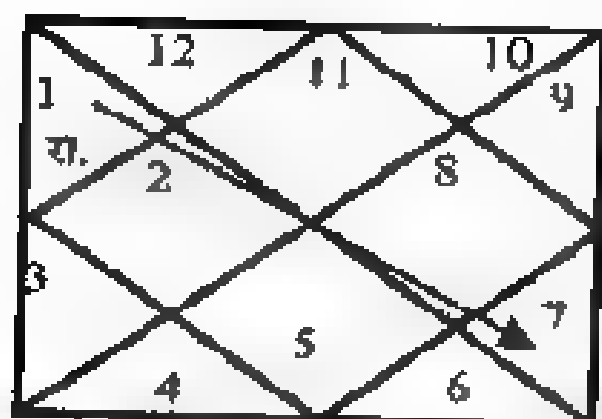
कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालो के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां तृतीय स्थान मे मेष सम राशि का है। जातक डरपोक एव अधार्मिक होगा। पिता एवं छोटे भाई-बहनो के साथ संबंध अच्छे नहीं होंगे। यहां राहु राजयोगकारक होने से जातक पराक्रमी होगा। बहुत मित्रों वाला होगा।

दृष्टि—तृतीय भावगत राहु की दृष्टि भाग्यभवन (तुला राशि) पर होगी। ऐसा जातक भाग्यशाली होगा। अपनी गुप्त शक्ति एव बुद्धि चातुर्य के द्वारा कार्य में सफलता प्राप्त करके ही दम लेगा।

निशानी—दैहिक, मानसिक कष्ट एवं संघर्ष रहेगा। अपनी गुप्त कमजोरियों व चिंताओं को छिपाता है प्रकट रुप से विजयी बना रहता है।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी। संघर्ष के बाद सफलता निश्चित है।

राहु का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का पराक्रम भंग होगा। मित्रों में अपयश मिलेगा।

2. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का पराक्रम दूषित होगा। जातक तेजस्वी स्वभाव का होगा।

3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक उग्र स्वभाव होगा। भाइयों का सुख होगा। पर भाइयों से बनेगी नहीं।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध **'जडत्व योग'** देगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। मित्रो से लाभ नहीं ले पायेगा।

5. **राहु+गुरु**—यहां तृतीय भाव में दोनो ग्रह 'मेष राशि' में होंगे। बृहस्पति मित्र राशि में तो राहु सम राशि का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक का पराक्रम कुण्ठित होगा। भाईयों से नहीं बनेगी। मित्र दगा देंगे।

6. **राहु+शुक्र**—राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक स्त्री के कारण बदनाम होगा।

7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व जिद्दी होगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
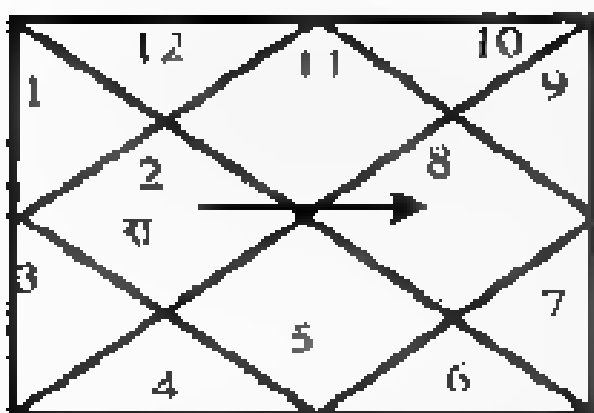
कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालो के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां चतुर्थ स्थान में वृष उच्च राशि का है। जातक को मकान-वाहन का सुख उत्तम। पर माता का सुख बराबर नहीं। जातक का घरेलू जीवन अशान्त एव संकटपूर्ण रहेगा। भूमि एव मकान को लेकर विवाद रहेगा।

दृष्टि—चतुर्थ भावगत राहु की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। ऐसे जातक का प्रारंभिक जीवन दु:खी व कष्टपूर्ण होगा।

निशानी—जातक विद्याध्ययन रुक-रुक कर करेगा पर करेगा जरुर।

दशा—राहु का दशा अंतर्दशा में संघर्ष की स्थिति बनी रहेगी। संघर्षो से टकराने के बाद जीवन मे मीठा फल मिलेगा। भौतिक सुखो की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मन विचलित रहेगा। माता का सुख कमजोर होगा।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। पिता का सुख नष्ट होगा

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक उग्र स्वभाव का होगा। भाइयों का सुख कमजोर वाहन से दुर्घटना संभव है।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जडत्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। विद्या में बाधा आयेगी।

5. **राहु+गुरु**–यहां चतुर्थ भाव में दोनों ग्रह 'वृष राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो राहु अपनी उच्च राशि में होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। जातक की माता अल्प आयु में गुजर जाएगी धन की कमी सदैव बनी रहेगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्याभिचारी होगा। **'मालव्य योग'** के कारण धनी-अभिमानी होगा। वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में
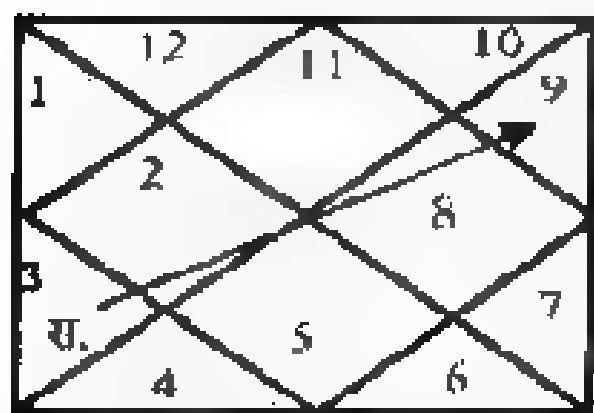
कुभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहा पंचम स्थान में मिथुन राशि का मूल त्रिकोणी होकर स्वगृही है। जातक को संतान सबधी चिता रहेगी। प्रारंभिक विद्या मे बाधा आयेगी। परन्तु बाद में विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में विशेष दक्षता प्राप्त करेगा।

दृष्टि–पचमस्थ राहु की दृष्टि एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। फलत. धंधे में रुकावट महसूस होगी। बड़े भाई से सबध ठीक नही होंगे।

निशानी–ऐसा जातक अच्छा बोलने वाला, चतुर वक्ता एव तीव्र ग्राही बुद्धि से सम्पन्न व्यक्ति होगा।

दशा–राहु का दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी पर विशेष दक्षता से काम लेना पड़ेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मन चचल होगा। संतान सुख मे बाधा रहेगी। विद्या में बाधा आयेगी।

2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। संतान सुख मे बाधा आयेगी।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक उग्र स्वभाव का होगा। भाइयों से नुकसान व संतति का नुकसान संभव है।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। विद्या में बाधा संभव है। पुत्र संतति मे बाधा।

5. **राहु+गुरु**–यहां पंचम स्थान मे दोनों ग्रह 'मिथुन राशि' मे होंगे। बृहस्पति शत्रुक्षेत्री तो राहु यहां मूलत्रिकोणी होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक विद्या मे रुकावट प्राप्त करेगा। संतान को लेकर भी चिंता बनी रहेगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्यभिचारी होगा। पुत्र संतति में बाधा आयेगी।

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। पूर्व जन्म के पुण्य मलिन होंगे।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति षष्टम स्थान में

12 11 10 9 1 2 8 3 7 5 4 रा. 6
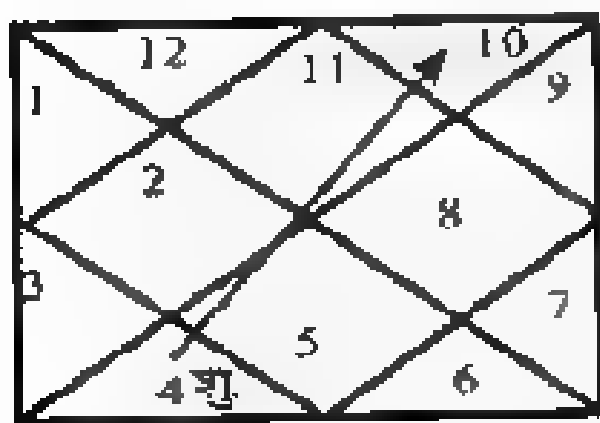
कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां छठे स्थान मे कर्क राशि मे होकर शत्रुक्षेत्री होते हुए भी राजयोग प्रदाता है। ऐसा जातक रोगी होगा। शत्रु बहुत होंगे। जातक कोर्ट-कचहरी के चक्कर लगायेगा। पर अंतिम विजय होगी। मामा का सुख कमजोर।

दृष्टि–षष्टमस्थ राहु की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। जातक के रोग, ऋण व शत्रुओं का नाश होता है। ऐसा जातक शारीरिक नहीं अपितु बुद्धिबल से कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करेगा।

निशानी–ऐसा जातक यदि धैर्य एवं साहस नहीं रखता तो निश्चय ही जीवन में सफल होगा।

दशा–राहु का दशा शत्रु उत्पन्न करेगी व शत्रुओं का नाश भी करेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनाता है. जातक का मनोबल कमजोर होगा। जातक को मानसिक रोग रहेगा। माता भी रोगीली रहेगी। जातक को जलभय रहेगा।

2. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक को आत्मबल कमजोर होगा। पिता का सुख कमजोर। जातक पितृदोष या प्रेत बाधा से ग्रसित होगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनाता है। ऐसा जातक क्रूर होगा भाइयों का सुख कमजोर। जातक के परिजन ही जातक के शत्रु होंगे।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनाता है। ऐसा जातक मन्दबुद्धि वाला होगा। विद्या में निरन्तर बाधाएं आयेंगी।
5. **राहु+गुरु**—यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह **'कर्क राशि'** में होंगे। बृहस्पति यहां उच्च का तो राहु शत्रुक्षेत्री होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक गुप्त रोग व गुप्त शत्रुओं से सदैव परेशान रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है। ऐसा जातक व्यभिचारी होगा। एवं गुप्तेन्द्रि में बीमारी होगी।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनाता है। जातक हठी व दुराचारी होगा। उसे परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। विपरीत राजयोग के कारण जातक धनी होगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में
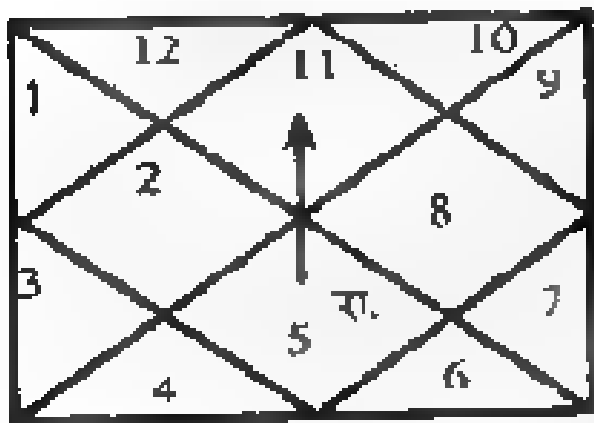
कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां सप्तम स्थान में सिंह राशि का होकर शत्रुक्षेत्री होगा। जातक की पत्नी बीमार रहेगी। ऐसे जातक को गृहस्थ संचालन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ राहु की दृष्टि लग्नस्थान कुंभ राशि) पर होगी। भागीदारी के धंधे में सफलता नहीं मिलेगी। व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।

निशानी—विवाह एक से अधिक हो सकते हैं। ऐसा जातक दैहिक बल, मनोबल और स्वाभिमान से युक्त होते हैं। हिम्मत नहीं हारने पर, घरेलु सुख शान्ति मिलेगी।

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनाता है जातक का मनोबल कमजोर होगा। उसे वैवाहिक सुख में बाधा महसूस होगी।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनाता है जातक का आत्मबल कमजोर होगा। पति-पत्नी में अहम् को लेकर टकराव होता रहेगा तलाक तक की नौबत आ सकती है
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनाता है। जातक क्रूर स्वभाव होगा। अमानवीय अचारण के कारण पति पत्नी में नहीं बनगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनाता है जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। पति पत्नी के बीच आपसी समझ कम होगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां सप्तम स्थान मे दोनों ग्रह 'सिंह राशि' मे होंगे। बृहस्पति अपनी मित्र राशि में तो राहु अपनी शत्रु राशि में स्थित होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को गृहस्थ सुख में कमी रहेगा, परिवार मे भारी तकलीफें उठानी पड़ेगी।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है जातक व्यभिचारी होगा। इसलिए पति-पत्नी में नहीं बनेगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनाता है। जातक हठी व दुराचारी होगा। इसलिए पति-पत्नी में नहीं निभेगी,

कुंभलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
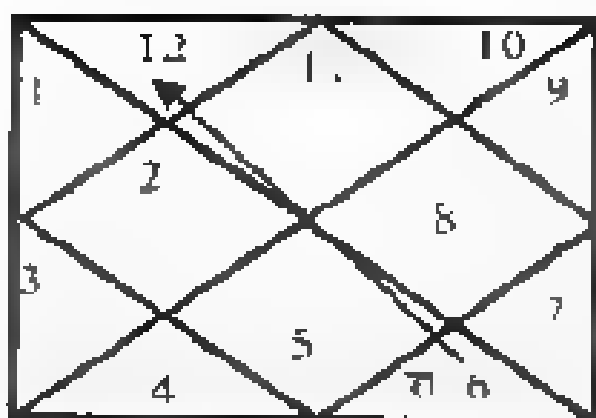
कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां अष्टम स्थान में कन्याराशि का होकर स्वगृही होगा। ऐसा जातक विभिन्न रोगों से पीड़ित होगा। जातक को पेट के नीचे भाग मे विकार रहेगा। जातक लम्बी आयु पाता है पर अनेक बार प्राणों पर संकट आयेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ राहु की दृष्टि धनभाव (मीन राशि) पर होगी। जातक का धन शरीर रक्षा पर खर्च होगा। आर्थिक विषमताऐं जीवन में बनी रहेगी।

निशानी–जातक की मृत्यु शान्तिपूर्वक नहीं होगी। ऐसे जातक दैहिक मनोबल एवं स्वाभिमान से युक्त होते हैं।

दशा–राहु का दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा। जातक को मानसिक रोग, पितृदोष रहेगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य होने पर आजीविका के साधन खराब होंगे। राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक पितृदोष से ग्रसित रहेगा। आत्मबल कमजोर रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मगल होने से आजीविका के साधन निम्नतर होंगे। राहु के साथ मगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक क्रूर स्वभाव का होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक मन्द बुद्धि का होगा। विद्या व संतान में बाधा रहेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह 'कन्या राशि' मे होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि मे तो, राहु स्वगृही होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक गुप्त शत्रु एव गुप्त रोग से सदैव परेशान रहेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। ऐसा जातक व्याभिचारी होगा। उसे सैक्स की बीमारी होगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्द्री योग'** बनायेगा। ऐसा जातक हठी व दुराचारी होगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति नवम स्थान में
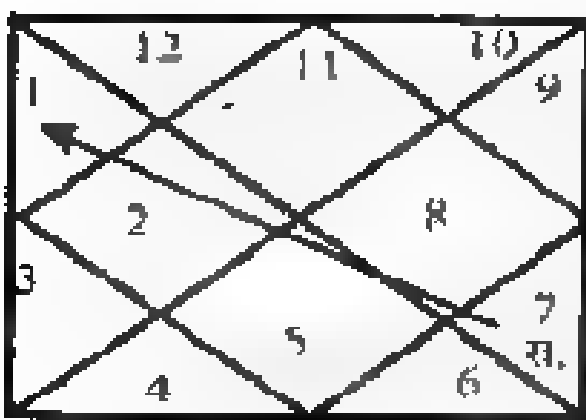
कुभलग्न वालो के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहा नवम स्थान में तुला राशि का होकर मित्रक्षेत्री है। जातक नास्तिक होगा। पिता से सबध ठीक नहीं होंगे। पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी जातक के भाग्योन्नति में बाधाएं आयेगी। जातक अपने धर्म व कर्त्तव्य का पालन ठीक ढग से नहीं कर पायेगा।

दृष्टि–नवम भावगत राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। ऐसे जातक के बल, साहस व पराक्रम की निरन्तर वृद्धि होती रहती है

निशानी–जातक परदेश जाकर बसेगा तो सुखी होगा. ऐसा जातक गुप्त युक्तियों, परिश्रम एव बुद्धि चातुर्य के द्वारा उन्नति मार्ग की ओर बढ़ेगा.

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा जिसके कारण भाग्योदय में बाधाएं आती रहेगी।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। जिसके कारण भाग्योदय मे रुकावट आयेगी।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक क्रूर स्वभाव का होगा। जिसके कारण जातक के भाग्योदय मे बाधा आयेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। जिसके कारण भाग्योदय में बाधा आयेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहा नवम स्थान में दोनों ग्रह 'तुला राशि' में होंगे। बृहस्पति शत्रु राशि में तो राहु मित्र राशि में बैठकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को भाग्योदय हेतु काफी दिक्कतें-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनाता है। जातक व्याभिचारी व सैक्सी होगा। जिसके कारण भाग्योदय मे बाधा आयेगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। जिसके कारण भाग्योदय में बाधाएं आयेगी।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में
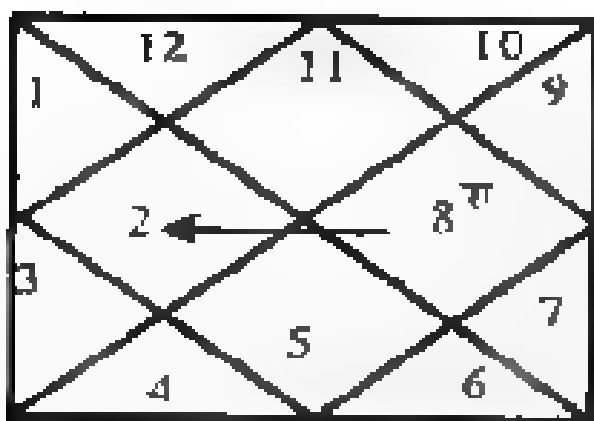
कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां दशम स्थान में वृश्चिक राशि में होकर नीच का होगा। जातक को रोजी-रोजगार, धंधे की प्राप्ति हेतु काफी परिश्रम करना पड़ेगा। ऐसे जातक को पिता पक्ष से कष्ट एवं राज्यपक्ष में परेशानियां विरासत मे मिलेगी.

दृष्टि–दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। ऐसे जातक की माता छोटी उम्र मे गुजर जावें अथवा माता के साथ संबंध ठीक नहीं होंगे। जातक के धंधे मे लगातार परिवर्तन आता रहेगा।

निशानी–जीवन में चिंता, तनाव और संघर्ष की स्थिति निरन्तर बनी रहेगी। व्यापार व्यवसाय में उन्नति हेतु कठोर परिश्रम का सहारा लेना पड़ेगा।

दशा–राहु का दशा कष्टों की अनुभूति करायेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा। जातक का राजकीय बाधा का सामना करना पड़ेगा।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। जिसके कारण राजकीय बाधा का सामना करना पड़ेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा, ऐसे जातक क्रूर स्वभाव का लड़ाकू होगा। जिसके कारण राजकीय बाधा आयेगी।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। जिसके कारण राजकीय बाधा आयेगी।
5. **राहु+गुरु**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह 'वृश्चिक राशि' में होंगे। बृहस्पति मित्र क्षेत्री है तो राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को रोजी-रोजगार एव आजीविका के साधन व्यस्थित करने हेतु काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जिसके कारण जातक व्याभिचारी होगा एव राजकीय बाधा का सामना करना पड़ेगा
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। जिसके कारण भाग्योदय में रुकावट आयेगी।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में

12 11 10 9 रा 1 2 8 3 7 5 4 6
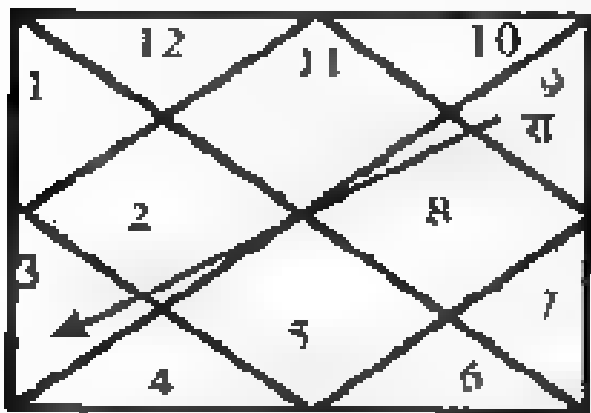
कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां एकादश स्थान में धनु राशि का होकर नीच का है फिर भी राजयोग कारक है। धंधा व्यापार में लाभ मिलेगा। पर आमदनी के मार्ग में लगातार कठिनाइया आती रहेंगी। ऐसा जातक गुप्त युक्तियां, बुद्धि चातुर्य एवं साहस के माध्यम से व्यापार-व्यवसाय में सफलता प्राप्त करेगा

दृष्टि–एकादश भावगत राहु की दृष्टि पंचम भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को उच्च शिक्षा मिलेगी.

निशानी–जातक के पड़ौसी एवं मित्रों से संबंध ठीक होंगे। भाग्योदय जन्म स्थान छोड़ने पर ही होगा

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगा। परिश्रम का लाभ मिलेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+चंद्र**–राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा, जिसके कारण व्यापार में रुकावट आयेगी।
2. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। जिसके कारण लाभ में रुकावट आयेगी,
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। जातक लड़ाकू व क्रूर स्वभाव का होगा। जिसके कारण व्यापार में रुकावट आयेगी
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। जिसके कारण व्यापार के लाभ में बाधा आयेगी
5. **राहु+गुरु**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह 'धनु राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां स्वगृही तो राहु नीच का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसे जातक को बडे भाई का सुख नही होगा। राहु की दशा में जातक का चलता उद्योग बन्द हो जायेगा।
6. **राहु+शुक्र**–राहु के शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा। जातक व्यभिचारी होगा। जिसके कारण व्यापारिक हानि होगी।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। जिसके कारण व्यापार में घाटा होगा।

कुंभलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में
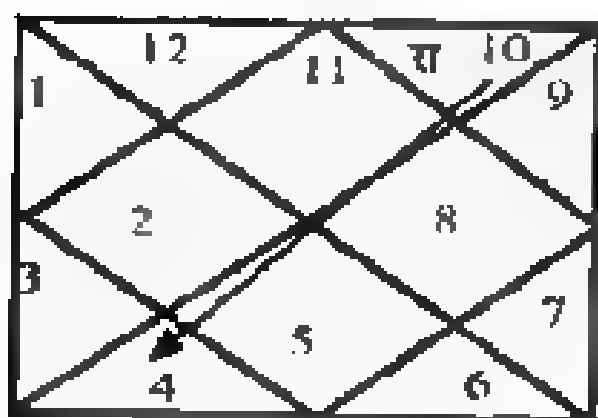
कुंभलग्न वालों के लिए राहु स्वगृही होता है। यह लग्नेश शनि से सम भाव रखते हुए भी कुंभलग्न वालों के लिए शुभ फल ही देगा। राहु यहां द्वादश स्थान में मकर (सम) राशि का है। जातक का शयन सुख कमजोर, नींद कम आयेगी। अचानक बेकार के खर्च होंगे। ऐसे जातक को अपने दैनिक व घरेलू खर्च के संबंध में कठिनाइयां उठानी पड़ेगी। मानसिक चिंता अधिक रहेगी।

दृष्टि—द्वादश भावगत राहु की दृष्टि छठं भाव (कर्क राशि) पर होगी जातक के रुपये कोर्ट-कचहरी, दवाखाना मे खर्च होंगे.

निशानी—ऐसे जातक कलहकारी एवं षड्यत्रकारी होगा। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों एवं बाहरी सबधों का सहारा लेकर, मुसीबत से बाहर निकलने में सफल होगा

दशा—राहु का दशा-अंतर्दशा प्रतिकूल रहेगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+चंद्र**—राहु के साथ चंद्रमा **'ग्रहण योग'** बनेगा। जातक का मनोबल कमजोर होगा। जातक मानसिक बीमारी से ग्रसित होगा।
2. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य **'ग्रहण योग'** बनायेगा। जातक का आत्मबल कमजोर होगा। जातक पितृदोष से ग्रसित होगा। आखें कमजोर होगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मगल **'अंगारक योग'** बनायेगा। ऐसा जातक क्रूर व लड़ाकू स्वभाव का होगा। जातक को परिजनों के विरोध का सामना करना पड़ेगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध **'जड़त्व योग'** बनायेगा। जातक की बुद्धि कुण्ठित होगी। जातक को सतान बाधा होगी।
5. **राहु+गुरु**—यहां द्वादश स्थान में दोनों ग्रह 'मकर राशि' में होंगे। बृहस्पति यहां नीच का होगा तो राहु मित्र राशि का होकर **'चाण्डाल योग'** बनायेगा। ऐसा जातक अधिक खर्च के कारण कर्जदार होगा तथा व्यर्थ की यात्राएं करता फिरेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र **'लम्पट योग'** बनायेगा. जातक व्यभिचारी होगा। जातक गलत कार्यों मे रुपया खर्च करेगा। जातक व्यसनी होगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि **'मान्दी योग'** बनायेगा। जातक हठी व दुराचारी होगा। जातक को परिश्रम का लाभ नही मिलेगा जातक ऋणी होगा। दुर्घटना योग बनेगा।

❑❑❑

कुंभलग्न में केतु की स्थिति

कुंभलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
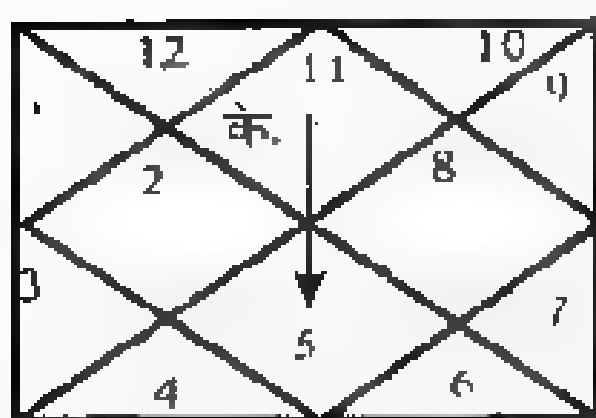
कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां प्रथम स्थान में कुंभ राशि का होकर मित्रक्षेत्री होगा। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती गुप्त शक्ति सम्पन्न, धैर्यवान तथा परिश्रमी होता है। ऐसा जातक अपने आपको स्थापित करने के लिए, अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के लिए कठोर प्रयत्न करता है और उसमें सफल होता है। ऐसा जातक समाज में उचित मान-सम्मान व प्रतिष्ठा को प्राप्त करता है।

दृष्टि—लग्नस्थ केतु की दृष्टि सप्तम भाव (सिंह राशि) पर होगी फलत: गृहस्थ जीवन में थोड़ा कलह (विवाद) रहेगा।

निशानी—ऐसे जातक के शरीर व चेहरे पर किसी चोट या घाव का चिह्न होगा। जिससे शारीरिक सौन्दर्य में कमी आयेगी

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी जातक की उन्नति होगी। परिश्रम के माध्यम से जातक आगे बढ़ेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक का मनोबल क्षीण करेगा। जातक किसी निर्णय तक नहीं पहुंच पायेगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक का आत्मबल कमजोर करेगा। जातक को पैतृक दोष रहेगा।

3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को भाइयों एवं भूमि में विवाद से उलझायेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक की बुद्धि भ्रमित करेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को नास्तिक बनायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को धूर्त व लम्पट बनायेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को हठी व जिद्दी बनायेगा

कुंभलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में
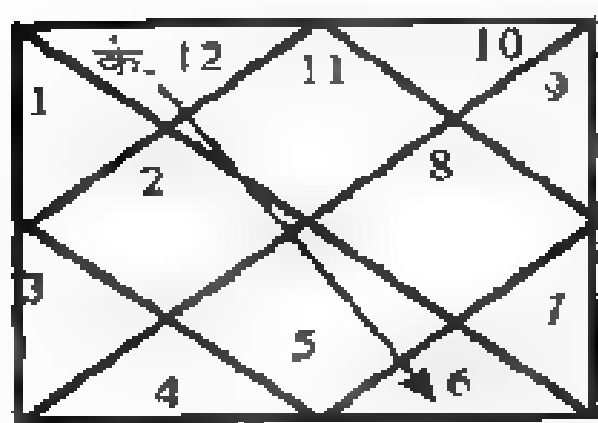
कुंभलग्न वालों में केतु को भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अतः कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां द्वितीय स्थान में मीन राशि होकर स्वगृही होगा। ऐसे जातक को धन की कमी का सामना करना पड़ेगा। कुटुम्ब में भी क्लेश व उपद्रव रहता है पर जातक अपने कठोर परिश्रम व न्याय के मार्ग पर चलकर धन प्राप्ति के प्रयत्नों में सफलता प्राप्त करता है। जातक अपनी किस्मत खुद चमकता है।

दृष्टि—द्वितीय भावगत केतु की दृष्टि अष्टम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओं को समाप्त करने में सफल होता है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा थोड़ी आर्थिक कठिनाइयों के साथ जातक को आगे बढ़ायेगी

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा निर्णय शक्ति मनोबल कमजोर करेगा। धन का अकारण खर्च व्यर्थ के काम में होगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य आत्मबल कमजोर करेगा। जातक की वाणी अप्रिय होगी।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को लड़ाकू स्वभाव देगा। जिससे शत्रु पैदा होंगे।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक के विद्याध्ययन में बाधक होगा। वाणी में लड़खड़ाहट होगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को धनी बनायेगा। पर खर्च अधिक होता रहेगा।

6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र होने से जातक महाधनी होगा पर रुपयों के खर्च पर नियंत्रण नहीं होगा।

7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि व्यर्थ के खर्च देगा तथा परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा। ऐसा व्यक्ति परम स्वार्थी होता है।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में
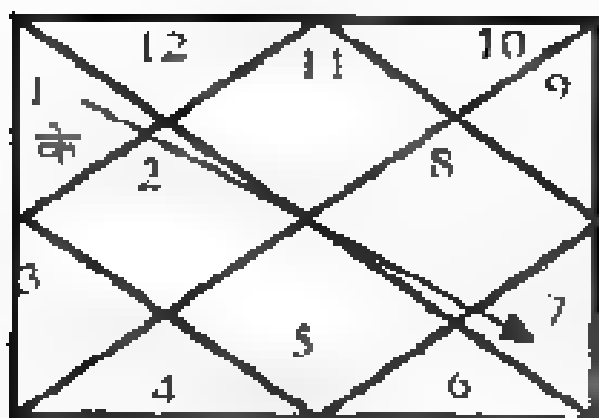
कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां तृतीय स्थान में मेषराशिगत होकर मित्रक्षेत्री होगा। जातक को पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होगी जातक बड़ा पुरुषार्थी, हिम्मतवाला, धैर्यवान् तथा साहसी होगा। पर भाई-बहनों में थोड़ी मनोमालिन्यता रहेगी। ऐसा जातक अनेक युक्तियों से समाज में अपना विशिष्ट स्थान बनाकर, पद प्रतिष्ठा, मान-सम्मान प्राप्त कर यशस्वी होता है।

दृष्टि—तृतीयस्थ केतु की दृष्टि नवमभाव (तुला राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा। गुप्त शक्तियों से सम्पन्न होगा।

निशानी—केतु यहां शुभ फल देगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक का पराक्रम बढ़ेगा। जातक को यश-सम्मान, धन की प्राप्ति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को पराक्रमी बनायेगा, यशस्वी बनायेगा।

2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य उच्च का जातक को परम पराक्रमी बनायेगा पर बड़े भाई का सुख नहीं होगा।

3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल स्वगृही होने से जातक के तीन भाई होंगे जातक कीर्तिवान् होगा।

4. **केतु+बुध** केतु के साथ बुध जातक को मित्रों से लाभ एवं जनसम्पर्क से यश दिलायेगा।

5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति होने से मित्रों व परिजनों से सहयोग मिलता रहेगा।

6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र होने से जातक को स्त्री मित्रों से लाभ रहेगा।

7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि नीच का होने से मित्रो में मनमुटाव एवं दोस्ती स्थाई नहीं होगी.

कुंभलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
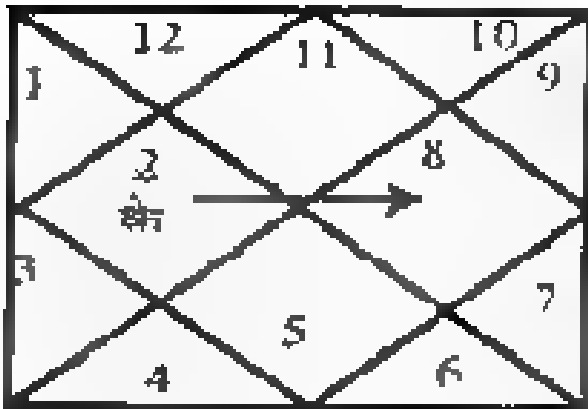
कुंभलग्न वालो में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि मे केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अतः कुभलग्न मे केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां चतुर्थ स्थान में वृष राशि का होकर नीच का होगा। ऐसे जातक को माता के पक्ष मे हानि उठानी पडती है। मातृ (जन्म) भूमि से वियोग भी होता है। भूमि, मकान, वाहन आदि के सुख में कमी महसूस होती है, परन्तु जातक अपनी गुप्त शक्तियों व युक्तियों से मकान-वाहन, भूमि का सुख प्राप्त करने में सफल होता है।

दृष्टि—चतुर्थभावगत केतु की दृष्टि दशम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः रोजी-रोजगार सबंधी कार्यों में प्रारंभिक परेशानिया आयेगी।

दशा—केतु की दशा अतर्दशा में भौतिक उपलब्धियों व सुखो की प्राप्ति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ उच्च का चंद्रमा जातक को भौतिक सुख-सुविधाएं देगा। पर माता को टी.बी. होगी।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य पत्नी से मनोमालिन्यता देगा। पिता से विचार नहीं मिलेंगे।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल वाहन दुर्घटना दे सकता है।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध रुकावट के साथ विद्या डिग्री मिलेगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति धन हानि या धन खर्च भौतिक सुख सुविधाओं के लिए करायेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र **'मालव्य योग'** बनायेगा। जातक धनी होगा तथा ऐशो आराम, मौज-शौक हेतु रुपया खर्च करेगा
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि परिश्रम में रुकावट डालेगा

कुंभलग्न में केतु की स्थिति पंचम स्थान में
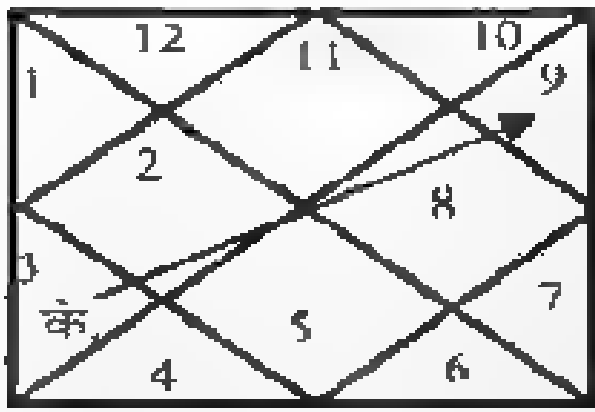
कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अतः कुंभलग्न में केतु जहा स्थित होगा वहां शुभफल देगा। केतु यहा पचम स्थान में मिथुन राशिगत होकर नीच का होगा। ऐसे जातक का विद्याध्ययन के क्षेत्र मे प्रारंभिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। जातक को संतानसुख की प्राप्ति हेतु आयुर्वेद व ईश्वर की कृपा का सहारा लेना पड़ेगा। जातक अपनी विशेष बुद्धि, पुरुषार्थ व धैर्य से पचम भाव के शुभ फलों का प्राप्त करेगा।

दृष्टि—पंचमस्थ केतु की दृष्टि एकादश भाव (धनु राशि) पर होगी। फलतः बड़े भाई का सुख कमजोर होगा।

निशानी—जातक की प्रथम संतति शल्यचिकित्सा (Scissorian) होगी। एकाध गर्भपात सभव है।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। नई जानकारिया मिलेगी। जातक नये अनुसंधान का लाभ उठायेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा विद्या एवं सतान सुख में बाधक है जातक के अधूरा बच्चा होगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य पत्नी एवं संतान सुख में न्यूनता लायेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मगल गर्भपात करायेगा। बडे भाई का सुख नहीं होगा
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को प्रज्ञावान बनायेगा, परन्तु पुत्र सतति को लेकर चिंता रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति जातक को विद्या सुख देगा पर सघर्ष के साथ पुत्र रत्न भी देगा पर उपाय के बाद।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को रसिक मिजाज का बनायेगा। जातक का वीर्य दूषित होगा। पुत्र को लेकर चिंता रहेगी
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति षष्टम स्थान में

12	11	10	9
1	2	8	7
3	4 के	5	6
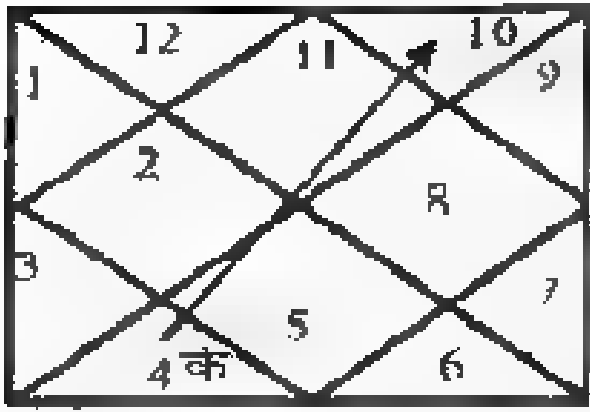
कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि मे केतु हर्षित-प्रमुदित रहता है। अतः कुंभलग्न मे केतु जहां स्थित होगा। वहा शुभफल देगा। केतु यहा छठे स्थान मे कर्क राशिगत होकर शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक को शत्रुपक्ष में अशान्ति रहेगी परन्तु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने में एवं विजय प्राप्त करने में विशेष सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति मनोबल एवं युक्ति बल से शत्रुओं को मात देता है। गुप्त रोग की संभावना रहेगी पर शल्य चिकित्सा द्वारा लाभ होगा।

दृष्टि–षष्टम भावगत केतु की दृष्टि व्ययभाव (मकर राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा एवं व्यर्थ यात्राएं बहुत करेगा।

निशानी–केतु यहां शुभ फल देगा

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा में शत्रुओं का नाश होगा। रोग का भी नाश होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक को धनी तो बनायेगा पर जलभय का खतरा, मानसिक परेशानी सदैव बनी रहेगी।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य पितृदोष देगा। पत्नी से विचार कम मिलेंगे।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल **'पराक्रम भंग'** करेगा। जातक को अच्छा कार्य करते हुए भी रुपया मिलेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध संतान में बाधा। विद्या में रुकावट का संकेत दे रहा है।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति उच्च का जातक को धीमी गति से धन प्राप्ति करायेगा। जातक के निन्दक बहुत होंगे।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र गुप्तेन्द्रि में रोग देगा। वीर्य दूषित होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि **'लग्नभंग योग'** के कारण परिश्रम के लाभ देने में बाधक ग्रह का काम करेगा। यद्यपि **'विपरीत राजयोग'** के कारण जातक धनी होगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में
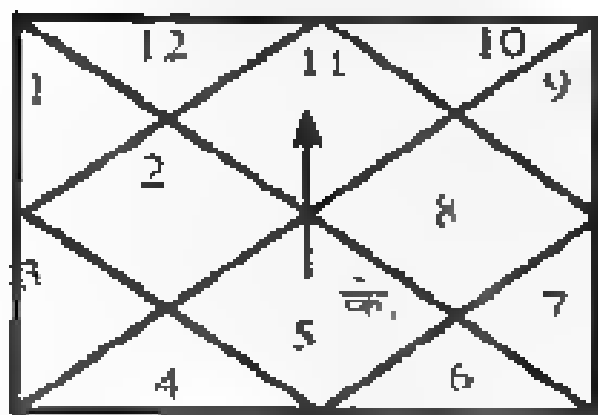
कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित प्रमुदित रहता है। अतः कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा, केतु यहां सप्तम स्थान में सिंह राशि का होकर मूल त्रिकोणी कहलायेगा ऐसे जातक को स्त्री-पक्ष व गृहस्थ सुख की प्राप्ति हेतु थोड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। उसे घर की जिम्मेदारी वहन करने में भी कठिनाइयों का मुकाबला करना पड़ेगा। साथ ही जननेंद्रियों में विकार भी संभव है। परन्तु कोई बड़ी मुसीबत नहीं होगी. जातक सफल गृहस्थी होगा.

दृष्टि—सप्तम भावगत केतु की दृष्टि लग्न स्थान (कुंभ राशि) पर होगी जातक को व्यापार-व्यवसाय को जमाने में बार-बार परिवर्तन करते हुए अन्त में सफलता प्राप्त करेगा।

निशानी—जातक का अन्य स्त्रियों से सम्पर्क रहेगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा वैवाहिक सुख में मनोमालिन्यता उत्पन्न करेगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक की पत्नी को धनवान अथवा आत्मनिर्भर बनायेगा। जिससे अहंकार का परस्पर टकराव होता रहेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल होने से जातक क्रूर स्वभाव का एवं अत्यधिक कामी होगा। जिससे पति पत्नी के मध्य घर्षण होता रहेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध होने से पति-पत्नी के मध्य हल्का सा बौद्धिक तनाव रहेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति ससुराल से लाभ का संकेत देता है। पत्नी धार्मिक होगी।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र होने से जातक उच्छृंखल मनोवृत्ति वाला होगा। फिर भी गृहस्थी निभ जायेगी।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि होने के कारण जातक को परिश्रम का फल तो मिलेगा परन्तु पति-पत्नी में शत्रुतापूर्ण मानसिकता रहेगी

कुंभलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान मे
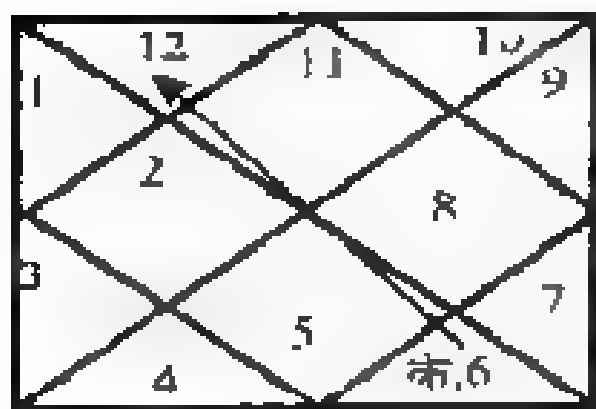
कुभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित प्रमुदित रहता है अत: कुंभलग्न मे केतु जहां स्थित होगा। वहा शुभफल देगा। केतु यहां अष्टम स्थान में कन्या राशिगत होकर नीच का होगा ऐसे जातक की आयु में वृद्धि होती है पर जीवन मे अनेके बार मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियो के सहारे विषम परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर लेता है

दृष्टि—अष्टम भावगत केतु की दृष्टि धनभाव (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक को धन संग्रह करने में भारी सघर्ष करना पड़ता है। धन की बरकत नही होती।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को मानसिक विषमता एवं मातृदोष देगा। जातक की निर्णय शक्ति कमजोर होगी।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक को पितृदोष से ग्रसित करेगा आत्मबल कमजोर होगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को गुस्सैल बनायेगा. जातक को भाइयों से कम बनेगी।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को प्रजावान तो बनायेगा. पर पुत्र सतति की चिता रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति **'धनहीन योग'** एव **'लाभभंग योग'** बना रहा है। जातक आर्थिक रुप से परेशान रहेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को सैक्स सबधी रोग देगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि परिश्रम का लाभ नहीं होने देगा। जातक को जन्म स्थान मे भी लाभ नहीं होगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में

कुभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित प्रमुदित रहता है। अत: कुभलग्न मे केतु जहा स्थित होगा। वहां
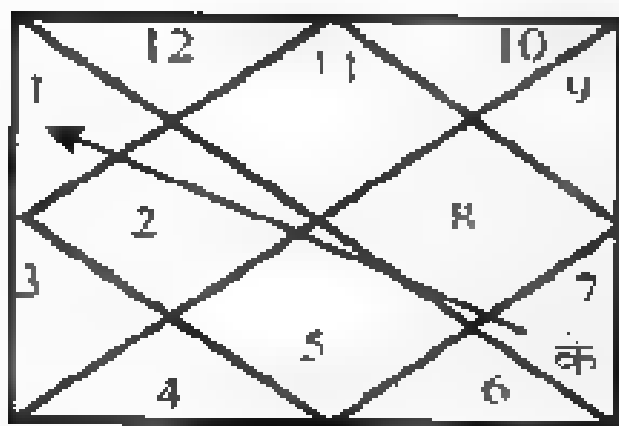
शुभफल देगा। केतु यहा नवम स्थान में केतु तुला राशि मे होकर मित्रक्षेत्री होगा। ऐसे जातक के भाग्योदय मे सामान्य बाधाए आती है। परन्तु जातक गुप्त युक्तियो के बल पर उनको काबू कर सफलता प्राप्त करता है। जातक अपने कठिन परिश्रम, बुद्धि चातुर्य एव धैर्य के द्वारा अपना भाग्योदय खुद करता है।

दृष्टि–नवमभावगत केतु की दृष्टि पराक्रम स्थान (मेष राशि) पर होगी। फलत: सगे भाइयों से मनमुटाव रहेगा।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी। जातक उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ता हुआ सफलता प्राप्त करेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा जातक के भाग्योदय में बाधक है। मनोबल क्षीण होगा।
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य नीच का सरकारी नौकरी के योग तोड़ेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मगल सरकारी ठेके क लाभ को तोड़ेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक के निर्णय गलत करायेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को धन लाभ देगा परन्तु धीमी गति से।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र स्वगृही जातक का भाग्योदय स्त्री की सहायता से करायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ उच्च का शनि जातक का भाग्योदय आकस्मिक घटना से करायेगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में
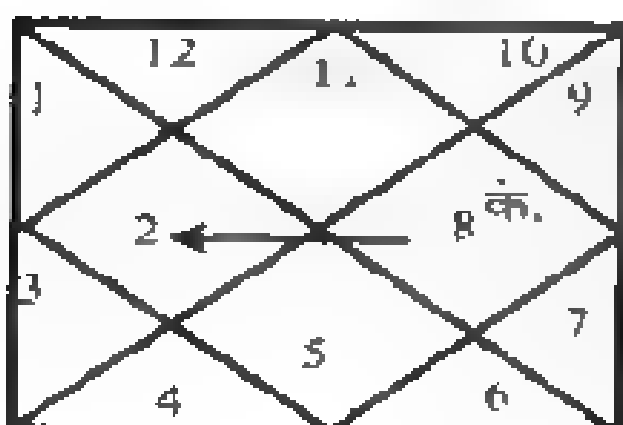
कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित प्रमुदित रहता है। अत: कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा केतु यहां दशम स्थान में वृश्चिक राशिगत होकर उच्च का होगा। ऐसे जातक

को पितापक्ष से कष्ट की प्राप्ति होगी। जातक को राज्य क्षेत्र में परेशानियों तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा परन्तु धैर्य, साहस व बुद्धिबल से जातक सब पर काबू कर विजय प्राप्त करता है। व्यापार में उन्नति प्राप्त करने में सफल होता है।

दृष्टि—दशमभावगत केतु की दृष्टि चतुर्थ भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक को माता का सुख नगण्य होगा।

निशानी—केतु यहां शुभ फल देगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा में जातक को व्यवसायिक सफलता मिलेगी। जातक धन कमायेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा नीच का जातक को कमज़ोर मनोबल एवं विकृत सोच देगा। सरकारी नौकरी में बाधा देगा।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य आत्मबल कमजोर करेगा। सरकारी नौकरी के योग को भंग करेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल **'रुचक योग'** बनायेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। पर सरकारी ठेकेदारी से कमायेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध सरकारी नौकरी के योग को भंग करेगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ बृहस्पति राजयोग देता पर नौकरी कमजोर होगी।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक के वाहन से दुर्घटना देगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक को धनपति बनायेगा पर धन खर्च होता चला जायेगा।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में

12 11 10 1 9 के 2 8 3 7 5 4 6
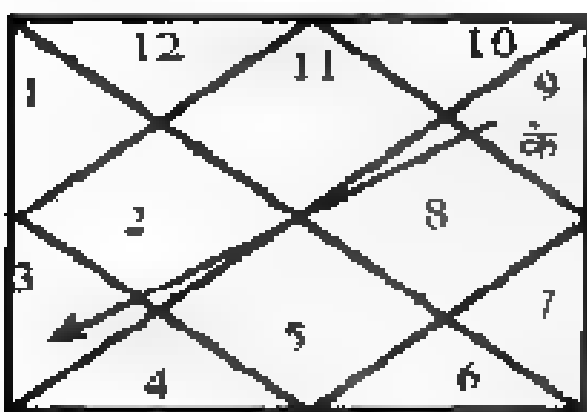
कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित प्रमुदित रहता है। अतः कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां एकादश स्थान में धनुराशिगत होकर उच्च का होगा। ऐसे जातक की आमदनी में अत्यधिक वृद्धि होगी। जातक को आकस्मिक धन लाभ भी होगा। जातक कठोर परिश्रम एवं निरन्तर उन्नति हेतु प्रयत्नशील रहने के कारण सुखी जीवन जीयेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत केतु की दृष्टि पंचम स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को संतान संबंधी रुकावट होगी। विद्या में भी रुकावट संभव है। पर उपाय करने पर दोनों अवरोधों से मुक्ति मिलेगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा शुभफलदायक है। व्यापार में लाभ एवं वृद्धि करायेगी। जातक का परिश्रम सार्थक होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **केतु+चंद्र**–केतु के साथ चंद्रमा व्यापार में रुकावट का संकेत देता है। जातक की निर्णय शक्ति कमजोर होगी.
2. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक का आत्मबल कमजोर करेगा। जातक को व्यापार में राजकीय दिक्कतें आयेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा पर एक बार चलता उद्योग बन्द होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध जातक को पुत्रवान बनायेगा। परन्तु पुत्र संतान की चिंता रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ बृहस्पति जातक को बड़े भाई का सुख एवं व्यापार में लाभ देगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र व्यापार द्वारा भाग्योदय करायेगा। थोड़े संघर्ष के बाद व्यापार में सफलता मिलेगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को कठोर परिश्रमी बनायेगा। परिश्रम के बाद व्यापार में सफलता है।

कुंभलग्न में केतु की स्थिति द्वादश भाव में
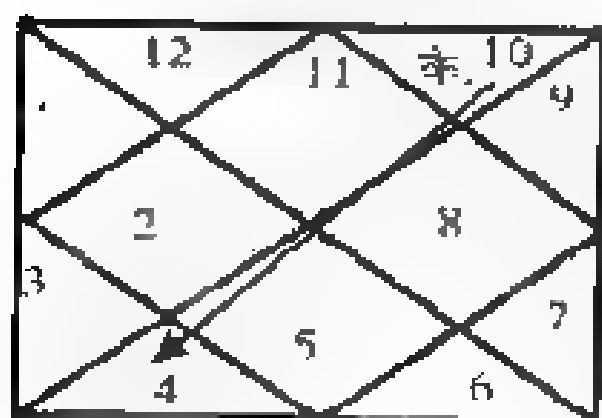
कुंभलग्न वालों में केतु की भिन्न राशि मानी गई है। लग्नेश शनि की राशि में केतु हर्षित प्रमुदित रहता है। अतः कुंभलग्न में केतु जहां स्थित होगा। वहां शुभफल देगा। केतु यहां द्वादश स्थान में मकर राशिगत होकर मूलत्रिकोणी होगा, स्वगृही होगा। ऐसे जातक को अधिक खर्च के कारण मानसिक परेशानी रहेगी। परन्तु अपनी गुप्त युक्तियों एवं परिश्रम के बल पर खर्च

चलाने की शक्ति प्राप्त करना है जातक आध्यात्मिक एव मोक्षमार्ग का जिज्ञासु होता है। जातक जीवन में निराश नहीं होगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत केतु की दृष्टि छठे स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु होंगे पर स्वतः ही नष्ट हो जायेंगे।

निशानी—ऐसा जातक आध्यात्मिक मार्ग का पथिक होगा। जातक को प्रातःकाल के समय जो स्वप्न आयेंगे। सच हो जायेंगें।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

केतु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **केतु+चंद्र**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को **'विपरीत राजयोग'** के कारण धनी बनायेगा पर मनोबल कमजोर रहेगा। जातक को बुरे सपने आयेंगे।
2. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक का आत्मबल कमजोर करके उसे नेत्र विकार देगा। जातक को पितृदोष रहेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को गुस्सैल बनायेगा। अक्सर उतावलापन के कारण जातक के काम बिगड जायेगें।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक को सतान एव विद्या मे रुकावट के बाद सफलता देगा
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ नीच का बृहस्पति **'धनहीन योग'** एव **'लाभभंग योग'** बनायेगा। जातक आर्थिक विषमताओं से त्रस्त रहेगा। नास्तिक होगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र **'सुखहीन योग'** एव **'भाग्यभंग योग'** बनायेगा। जातक को स्त्री के कारण बदनामी मिलेगी। जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ स्वगृही शनि **'लग्नभंग योग'** बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा। अधिक खर्च के कारण जातक कर्जदार भी होगा

❑❑❑

शनि पीड़ा निवारणार्थ यंत्र

यदि किसी व्यक्ति के जन्मपत्र मे शनि नीच का, अस्त का, नीचास्त का, मूल त्रिकोण और केन्द्र मे पीड़ा कारक पडा हो तो जातक को चाहिये कि शनि पीड़ा शमनार्थ 3 रत्ती या 10 रत्ती का निर्दोष नीलम नग, 10 माशे सोने, या स्टील या काले घोड़े के अगले पांव की दाहिनी नाल की अंगूठी बनवाकर अपने दाहिने हाथ की मध्यमा उगली में सदैव पहने। निम्नांकित यंत्र स्टैन्लैसस्टील में अंकित कराकर उस पर शनिदेव की लोह प्रतिमा स्थापित करें और शनिवार को शुभ नक्षत्र, शुभ मुहूर्त में गगा जल और काली गाय के कच्चे दूध से उसको स्नान कराये शनिवार का व्रत अवश्य रखे और रात्रि को इसका जाप प्रारम्भ करें, हवन के लिये शमी की समिधा होनी चाहिए जप के समय धूप, दीप नैवेद्य आदि का प्रबन्ध होना चाहिए जाप शुक्ल पक्ष मे ही आरम्भ करना चाहिए। नवरात्रो का किया गया अनुष्ठान अधिक शुभ फलदायक होता है। उस समय मनुष्य को पूर्ण ब्रह्मचर्य, भूमि शयन तथा उपवासादि का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए।

शनि यंत्र

12	7	14
13	11	9
8	15	10

शनि कवचम्

नीलाम्बरो नीलवपु: किरीटे गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्
चतुर्भुज: सूर्यसुत: प्रसन्न: सदा मम स्याद् वरद: प्रशान्त:। 1।।
शृणुध्वमृषय: सर्वे शनिपीड़ाहर महत्।
कवचं शनिराजस्य सौरेरिदमनुत्तमम्।।2।।
कवच देवतावासं वज्रपन्जरसंज्ञकम्
शनैश्चरप्रीतिकरं सर्वसौभाग्यदायकम्। 3।।
ॐ श्रीं शनैश्चर: पातु भालं मे सूर्यनन्दन:।

नेत्रे छायात्मजः पातु पातु कर्णौ यमानुजः ।4।
नासा वैवस्वतः पातु मुखं मे भास्करः सदा।
स्निग्धकण्ठश्च में कण्ठं भुजौ पातु महाभुजः ।5।।
स्कन्धौ पातु शनिश्चैव करौ पातु शुभप्रदः।
वक्षः पातु यमभ्राता कुक्षिं पात्वसितस्तथा।।6।।
नाभिं ग्रहपतिः पातु मन्दः पातु कटिं तथा।
ऊरू ममान्तकः पातु यमो जानुयुगं तथा।।7।।
पादौ मन्दगतिः पातु सर्वांगं पातु पिप्पलः।
अङ्गोपाङ्गानि सर्वाणि रक्षेन् मे सूर्यनन्दनः।।8।।
इत्येतत् कवचं दिव्यं पठेत् सूर्यसुतस्य यः।
न तस्य जायते पीड़ा प्रीतो भवति सूर्यजः।।9।।
व्ययजन्मद्वितीयस्थो मृत्युस्थानगतोऽपि वा।
कलत्रस्थो गतो वाऽपि, सुप्रीतस्तु सदा शनिः।।10।।
अष्टमस्थे सूर्यसुते व्यये जन्मद्वितीयगे।
कवचं पठते नित्यं न पीड़ा जायते क्वचित्।।11।।
इत्येतत् कवचं दिव्यं सौर्रेयन्निर्मितं पुरा।
द्वादशाष्टम-जन्मस्थ-दोषान्नाशयते सदा।
जन्मलग्नस्थितान् दोषान् सर्वान्नाशयते प्रभुः। 12।।

शनि स्तुति

सूर्यपुत्रो दीर्घदेहो विशालाक्षः शिवप्रियः।
मन्दचारः प्रसन्नात्मा पीड़ां दहतु मे शनिः।।

विनियोग

शन्नोदेवोइतिमंत्रस्य, दध्यङ्गाथर्वण ऋषिः आपो देवता गायत्री छन्दः। शनिमंत्रजपे विनियोग

सजीव वैदिक मंत्र—ॐ खाँ खीं खौं सः ॐ भूर्भुवः स्वः **ॐ शन्नोदेवीर भीष्टऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु** नः। ॐ स्वः भुवः भूः ॐ सः खौं, खीं खाँ शैनश्चराय नमः।

12	7	14
13	11	9
8	15	10

ॐ शन्नोदवीरभिष्टयऽआपो भवन्तुपीतये, शय्योरभिस्रवन्तुन: 136/12॥

तांत्रिक मंत्र–ॐ खाँ खीं खौं स: शनैश्चराय नम:

नमस्कार–नीलाञ्जनसमाभास रविपुत्रे यमाग्रजम।

छायामार्तण्डसम्भूत तन्नमामि शनैश्चरम्॥

एकाक्षरी बीज मंत्र–ॐ शं, शनैश्चराय नम·

तांत्रिक शनि मंत्र ॐ प्राँ, प्रीं प्रौं स: शनये नम:।

जप सख्या–23000 तेबीस सहस्र (तेबीस हजार)

आह्वान–महातेज नामाग्नि समिधा (खजेड़ो) शमी फल-नारियल

हिमकुंदमृणालाभं दैत्यानां परमं बृहस्पतिम्।
सर्वशास्त्र- प्रवक्त्कार भार्गवं प्राणमाम्यहम्॥
कृष्णाङ्गोकृष्णवर्णश्च कृष्णाजिनधरस्तथा।
शौरोमंदगतिश्चैव शनिमावह याम्यहम्॥1॥
अहो सौराष्ट्रसंजात छायापुत्रश्चतुर्भुज:।
कृष्णवर्णार्क गोत्रेय बाणहस्ते धनुर्धर:॥2॥
त्रिशूली च समागच्छ वरदो मे ग्रथवाहन:
प्रजापत्येति सपूज्यो समवत् पश्चिमे दले॥3॥

ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परिताबभूव यत् कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तत्व समुष्य-पितसावस्य-पिता वय ठं. स्यामपतयो रयिणा ठं. स्वाहा॥10/20॥

शनि अनिष्ट फल शमनार्थ दानपदार्था:

शनि प्रति दान–नीलम, सोना, लोहा, उर्द कुल्थ, तेल सरसों, काला कपड़ा, काले फूल, कस्तूरी, काली संवत्सा गाय, काली भैंस, काले जूते, कृष्ण फल।

शनि दान के समय उपर्युक्त वस्तुओं के लिए भार कम से कम सवा तीन रत्ती 3¼ होना चाहिये और अधिक से अधिक के लिये साढे तीन, सात दस रत्ती, तोला, सेर आदि जितनी भी सामर्थ हो दान वित्त समान कर देना चाहिये अपनी शक्ति सामर्थ से अधिक दिया हुआ दान किया हुआ काम दुखदायी ही रहता है, इसमें तुला दान का बहुत ही महात्यय लिखा है साथ ही तिलपात्र घृत छाया दान भी अवश्य करने चाहिये। यज्ञान्त में ब्राह्मण भोज शक्ति भर अवश्य करना चाहिये एक लोह प्रतिमा शनि दान में अवश्य ही करनी चाहिये। शनि शक्ति का प्रतीक है। दीर्घसूत्री तथा उदासीन है इसलिये इसका प्रसन्न करने के लिए अवश्य ही प्रयत्न करना चाहिए जीव हिंसा निषेध है। बीछू जड़ी पास रखना लाभदायक है, बीछू पौदे की जड़े (शिशणा) के पास रखकर उसकी पूजा करने से तथा धारण करने से शनि का दूषित फल शान्त रहता है।

शनि मंगल स्तोत्र

मन्द: कृष्णनिभस्तु पश्चिममुखः सौराष्ट्रक: काश्यप:,
स्वामी नक्रभकुम्भयोर्बुध-सितौ मित्रे समश्चाङ्गिरा:॥
स्थान पश्चिमदिक् प्रजापति-यमौ दैवौ धनुष्यासन:,
षटत्रिस्थः शुभकृच्छनी रविसुतः कुर्यात् सदा मगलम्॥

❑❑❑

शनि चालीसा

बंशीधर को नमन कर, कर गणेश का ध्यान।
शनि चालीसा जो पढ़े, उसका हो कल्याण।

चौपाई

जय श्री शनिदेव महाराजा। जय कृष्ण सौरी सिरताजा।।
सूरत सुत छाया के नन्दन। महाबली तुम असुर निकन्दन।
पिंगलम्द, रौद्र शनि नामा। करहुनाथ मम पूरण कामा।।
श्याम बरण है अंग तुम्हारा। क्रूर दृष्टि तन क्रोध अपारा।।
क्रीट मुकुट कुण्डल छवि साजे। गल मुक्तन की माल विराजे।
चक्र त्रिशूल चतुर्भुज धारें। हाथ कटार दुष्ट को मारें।
पर्वत को कर देते राई। निर्धन के सर छत्र धराई।।
जो जन तेरा ध्यान लगावें। मन वांछित फल जल्दी पावें।।
जापर कृपा आपकी होई। जो चाहे फल मिलता सोई।।
जिन पर कोप कठिन तुम ताना उन का जग में नही ठिकाना।।
साचे देव, शनि तुम स्वामी घट घट वासी अन्तर्यामी।।
जब राजा दशरथ पर आये बनवासी श्री राम कहाये।।
रावण हाथ सिया हरवाई। लक्ष्मण जी पर शक्ति चलाई।
बहुत बड़ा दुःख राम को दीना। नाश लंकापति कुल का कीना।।
चेटक तुमने सबहि दिखाये। बली भूप तक चोर बनाये।
जिसने छोटा तुम्हें बताया। राजपाट सब धूल मिलाया।
हाथ पांव तुम दिये कटाई। कोहलू तेली को हंकवाई।।
फिर सुमिरण जब आपकी कीना। हाथ पैर राजी कर दीना।
ब्याह युगल उसके करवाये। मंगल गान नगर सब गाये।।
जो जन तुमको बुरा बतावें। वह जन सुख अपने नहि पावें।

दशा आपकी सब पर आवे। फल शुभ अशुभ शीघ्र दिखालावे।।
तीन लोक तुम्हं सर नावें। ब्रह्मा हरिहर तुम्हे मनावें।।
लीला अद्भुत नाथ तुम्हारी। निशिदिन ध्यान धरती नर-नारी।।
कहां तक तेरी करू बढ़ाई। लंका छिन में भस्म कराई।
जिन सुमरं तिन फल शुभ पाया। सब पर रहे तुम्हारी दाया।
द्रवित होत ही करहु निहाला। टेहड़ी दृष्टि कठिन कराला।
नौ वाहन है नाथ तुम्हारे। गधा अश्व और हाथी प्यारे।
मेघ सिह जुम्बक मन माना। कागा हिरण मोर पहिचाना।।
गधा सवारी कर जब आवो। मान भग उसका करवावो।।
चढ़ घोड़े पर जब तुम आवो। उस जन को धन लाभ करावो।।
हाथी पर जब करो सवारी। पावे सिद्धि नर और नारी।।
मेढे की जब करो सवारी। प्राणी के तन लगे बिमारी।
अब जम्बुक पर करो सवारी। झगड़े बाज बने संसारी।।
सिह सवारी कर तुम आवो। सारे दुश्मन मार मिटावो।।
काग सवारी जिस घर डेरा। उसका प्राण काल ने घेरा।।
हिरण सवारी जब मन भावे। उस प्राणी को खूब घुमावे।।
मोर सवारी कर तुम आवो। धन वभैव सम्मान बढ़ावो।।
जय जय जय शनिदेव दयालु। करो कृपा शनिदेव कृपालु।।
यह दस बार पढ़े जो कोई। कष्ट कटें सुख निशदिन होई।।
शनि चालीसा पढ़ें हमेशा। तन में तनिक न रहे क्लेश।।
जय जय जय रविपूत की। हरो सकल भव-शूल।।
सेव को सुख दीजिए। रहो नाथ अनुकूल।।
हर हर मन्दिर में रहो, रहे जहां हनुमान।
परमानन्द की प्रार्थना, हो सब का कल्याण।

शनि चालीस नं. 2

शनि चालीसा

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल करण कृपाल
दीनन के दुख दूर करि, कीजै नाथ निहाल।।
जय हय श्री शनिदेव प्रभु, सुनहु विनयम महाराज।
करहु कृपा हे रवि तनय, राखहु जन की लाज।
जयति जयति शनिदेव दयाला।
करत सदा भक्तन प्रतिपाला।।

चारि भुजा, तनु श्याम विराजै।
माथे रतन मुकुट छवि छाजै।।

परम विशाल मनोहर भाला।
टेढ़ी दृष्टि भृकुटि विकराला।

कुण्डल श्रवण चमाचम चमके।
हिये माल मुक्तन मणि दमकै।।

कर में गदा त्रिशूल कुठारा।
पल बिच करैं अरिहि संहारा।

पिंगल, कृष्णो, छाया, नन्दन।
यम, कोणस्थ, रौद्र, दुख, भंजन।।

सौरी, मन्द शनि, दश नामा।
भानु पुत्र पूजहि सब कामा।

जापर प्रभु प्रसन्न ह्वैं जाही।
रंकहुं राव करैं क्षण माही।

पर्वतहू तृण होई निहारत।
तृणहू को पर्वत करि डारत।

राज मिलत बन रामहिं दिन्हयो।
कैकेइहू की मति हर लीन्हयो।।

बनहू में मृग कपट दिखाई।
मातु जानकी गई चुराई।

लषणहि शक्ति विकल करिडारा।
मचिगा दल में हाहाकारा।।

रावण की गति-मति बौराई।
राम चन्द्र सों बैर बढ़ाई।।

दियो कीट करि कंचन लंका।
बजि बजरंगी बीर की डंका।

नृप विक्रम पर तुहि पगु धारा।
चित्र मयूर निगलि गै हारा।

हार नौलख लागे चोरी।
हाथ पैर डरवायो तोरी।

भारी दशा निकृष्ट दिखायो,
तेलहि घर कोल्हू चलवायो।।

विनय राग दीपक मह कीन्हयों।
तब प्रसन्न प्रभु ह्वै सुख दीन्हयो।

हरिश्चन्द्रहूँ नृप नारि बिकानी।
आपहुं भरे डोम घर पानी।

जैसे नल पर दशा सिरानी।
भूंजी-मीन कूद गई पानी।

श्री शकरहि गह्यो जब जाई।
पारवती को सती कराई।

तनिक विलोकत ही करि रीसा।
नभ उड़ि गयो गौरिसुत सीसा।

पाण्डव पर भै दशा तुम्हारी।
बची द्रौपदी होति उघारी।

कौरव के भी गति मति मारयो।
युद्ध महाभारत करि डारयो।।

रवि कहं मुख में धरि तत्काला।
लेकर कूदि परयो पाताला।।

शेष देव-लखि विनती लाई।
रवि को मुख ते दियो छुड़ाई।।

वाहन प्रभु के सात सुजाना।
जग दिग्गज गर्दन मृग स्वाना।।

जम्बुक सिंह आदि नख धारी।
सो फल ज्योतिष कहत पुकारी।

गज वाहन लक्ष्मी गृह आवैं।
हय ते सुख सम्पत्ति उपजावैं।।

गर्दभ हानि करै बहु काजा।
सिंह सिद्धकर राज समाजा।।

जम्बुक बुद्धि नष्ट कर डारै।
मृग दे कष्ट प्राण संहारै।।

जब आवहि प्रभु स्वान सवारी।
चोरी आदि होय डर भारी।

तैसहि चारि चरण यह नामा।
स्वर्ण लौह चांदी अरु तामा।

लौह चरण पर प्रभु जब आवैं।।
जन धन सम्पत्ति नष्ट करावैं।

समता ताम्र रजत शुभकारी।
स्वर्ण सर्व सुख मंगल भारी।

जो यह शनि चरित्र नित गावै।
कबहुं न दशा निकृष्ट सतावै।

अद्‌भुत नाथ दिखावैं लीला,
करैं शत्रु के नशि बलि ढीला।।

जो पण्डित सुयोग्य बुलवाई।
विधिवत शनि ग्रह शांति कराई।।

पीपल जल शनि दिवस चढ़ावत।
दीप दान दै बहु सुख पावत।।

कहत राम सुन्दर प्रभु दासा।
शनि सुमिरत सुख होत प्रकाशा।

दोहा

पाठशनैश्चर देव को, कीन्हों विमल तैयार।
करत पाठ चालीस दिन, हो भव सागर के पार।

❑❑❑

शनिवार व्रत कथा

शनिदेव साधना तथा पूजा अर्चना से सहज की प्रसन्न होते हैं तथा अपने भक्तों की सर्वमनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। शनिदेव जब किसी पर क्रोधित होते हैं तो उसका सब कुछ नष्ट हो जाता है किन्तु यदि किसी पर शनिदेव की कृपा हो जाए तो वह भिखारी से राजा हो जाता है। शनिवार का व्रत शनिदेव को प्रसन्न करने व मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए किया जाता है।

शनि का तांत्रिक मंत्र–ॐ शं शैनश्चराय नमः।

विधि विधान–शनिवार के पीपल के नीचे अथवा भैरव मंदिर में बैठकर पूजन करना चाहिए। पूजन के लिए शनिदेव की टिन की मूर्ति रखकर, काली वस्तुओं, सरसों का तेल मिट्टी का दीपक तथा लोहे के पात्रों का प्रयोग करें। तांत्रिक मंत्र द्वारा शनिदेव का पूजन करें, व्रत कथा पढ़ें, तत्पश्चात पीपल को अर्घ्य दें। भोजन एक ही समय करें तथा उड़द और तिल का प्रयोग अवश्य करें।

व्रत कथा–एक समय सूर्य चंद्रमा, बुध, बृहस्पति शुक्र, शनि, राहु एवं केतु आदि ग्रहों में परस्पर विवाद हो गया कि हम सब में बडा कौन है। सभी ग्रह अपने आपको बड़ा कहते हैं।

जब काफी समय तक निर्णय न हो सका तो सब झगड़ते हुए इंद्रराज के पास गए और कहने लगे कि आप देवताओं के राजा हैं इसलिये ये न्याय करके बताइये कि हम नव ग्रहों में कौन बड़ा है। देवराज इन्द्र ग्रहों का यह प्रश्न सुनकर भयभीत हो गए तथा कहने लगे कि मुझमें इतनी सामर्थ्य नहीं कि मैं किसी को छोटा बतला सकूं।

इस समय पृथ्वी पर राजा विक्रमादित्य हैं। वे सबकी समस्याओं का समाधान अत्यंत बुद्धिमानी से करते हैं। अतः आप सभी उनके पास जाए। राजा विक्रमादित्य आपके विवाद का समाधान करेंगे।

सभी ग्रह देवता भू लोक से चलकर विक्रमादित्य की सभा में पहुचे तथा अपना प्रश्न राजा के सामने रखा। राजा विक्रमादित्य ग्रहो की सुनकर चिंतित हो गए तथा

सोचने लगे कि मैं अपने मुख से किस ग्रह को छोटा अथवा बड़ा बताऊ जिसे छोटा बताऊंगा वही क्रोध करेगा। उसका विवाद निपटाने के लिये उन्होंने एक उपाय सोचा। राजा ने सोना, चांदी, कांसा, पीतल, सीसा, रांगा, जस्ता अभ्रक तथा लोहा आदि नौ धातुओं के नौ आसन बनवाए तथा सभी आसनों को उनके मूल्य के अनुसार बिछाया गया।

इसके पश्चात् राजा ने नवग्रहों से कहा आप सब अपना-अपना आसन ग्रहण करें। जिसका आसन सबसे आगे वह सबसे बड़ा तथा जिसका आसन सबसे पीछे वह सबसे छोटा जानिये। क्योंकि लोहा सबसे पीछे तथा शनिदेव का आसन था इसलिये शनिदेव ने सोचा कि राजा ने मुझे सबसे छोटा बना दिया है

राजा के इस निर्णय पर शनिदेव को बहुत क्रोध आया। उन्होंने कहा कि राजा तू मेरे पराक्रम को नहीं जानता। सूर्य एक राशि पर एक महीना, चद्रमा सवा दो दिन दो महीना, मगल डेढ़ महीना। बुध और शुक्र एक महीना और बृहस्पति तेरह महीने विचरण करते हैं परन्तु मैं एक राशि पर ढाई वर्ष से लेकर साढ़े सात वर्ष तक रहता हूं। बड़े बड़े देवताओं को भी मैंने भीषण दुःख दिया है। सुनो राजन रामचद्र जी को साढ़े साती आई तो उन्हें बनवास हो गया। रावण पर आई तो राम ने वानरों सहित उसकी लंका पर चढ़ाई कर उसके कुल का सर्वनाश कर दिया। हे राजन! तुमने मुझे अपमानित किया है। अत: अब तुम सावधान रहना

राजा विक्रमादित्य ने कहा जो कुछ भाग्य मे होगा देखा जाएगा ऐसा सुनकर सभी ग्रह प्रसन्नतापूर्वक अपने-अपने स्थान को चले गए किंतु शनिदेव जी अत्यंत क्रोध में वहां से सिधारे।

कुछ काल व्यतीत होने पर जब विक्रमादित्य पर साढ़े साती की दशा आई तो शनिदेव घोड़ों का सौदागर बनकर सुन्दर घोड़ों के साथ राजा विक्रमादित्य की राजधानी में आए जब राजा ने घोड़ों का सौदागर के आने की खबर सुनी तो उन्होंने अपने अश्वपाल को अच्छी-अच्छी नस्ल के घोड़े खरीदने की सलाह दी।

अश्वपाल इतने अच्छे घोड़े देखकर तथा उनका मूल्य सुनकर चकित हो गया तथा तुरन्त ही राजा को सूचना दी। राजा विक्रमादित्य ने उन घोड़ों को देखा तथा उन घोड़ो में से एक अच्छे नस्ल के घोड़े को चुनकर सवारी के लिए उस पर चढ़े।

राजा के पीठ पर चढ़ते ही घोड़ा तेजी से भागा। घोड़ा बहुत दूर एक घने जंगल में जाकर राजा को छोड़कर अतर्ध्यान हो गया। इसके पश्चात राजा विक्रमादित्य अकेले जगल में भटकते फिरते रहे। भूख प्यास से व्याकुल राजा ने एक ग्वाले को देखा। ग्वाले ने राजा को पानी पिलाया। राजा ने प्रसन्न होकर अपनी अंगुली से एक अगूठी निकालकर ग्वाले को दी तथा स्वय शहर की ओर चल दिये। राजा शहर में

जाकर एक सेठ की दुकान पर जाकर बैठ गए तथा उन्होंने उसे अपना नाम वीका बताया।

सेठ ने उसे एक कुलीन व्यक्ति समझकर जलादि पिलाया भाग्यवश उस दिन सेठ की दुकान पर बहुत बिक्री हुई। सेठ उसे भाग्यवान पुरुष समझकर अपने घर भोजन के लिए ले गया।

भोजन करते समय राजा ने एक आश्चर्यजनक घटना देखी, जिस खूटी पर हार लटक रहा था वह खूंटी हार को निगल रही थी। भोजन के पश्चात जब सेठ कमरे में आया तो उसे खूटी पर हार नहीं मिला। उसने सोचा कि वीका के अतिरिक्त कमरे में कोई नहीं आया अत: उसने ही हार चोरी किया है। परन्तु वीका ने हार की चोरी से मना कर दिया, तब कुछ व्यक्ति उसे पकड़ कर नगर फौजदार के पास ले गए

फौजदार ने उसे राजा के सामने उपस्थित किया तथा कहा कि यह व्यक्ति भला प्रतीत होता है किंतु सेठ इस पर चोरी का आरोप लगा रहा है। राजा ने आज्ञा दी कि इसके हाथ-पैर कटवाकर चौरंगिया किया जाए

राजा की आज्ञा का तुरन्त पालन हुआ तथा वीका के हाथ पैर काट दिये गए। कुछ काल व्यतीत होने पर एक तेली ने राजा को देखा तथा दयावश वह उसे अपने घर ले गया। तैली ने उसे कोल्हू पर बैठा दिया।

वीका उस पर बैठा हुआ अपनी जबान से बैलों को हांकता रहता था। इस काल में राजा की शनि की दशा समाप्त हो गई। वर्षा ऋतु के समय चौरंगिया राजा विक्रमादित्य मल्हार राग गाने लगा। यह राग सुनकर शहर के राजा की प्रिय पुत्री मन भावनी उसकी वाणी पर मुग्ध हो गई।

राज कन्या ने अपनी दासी से मल्हार राग गाने वाले की खबर लाने के लिये भेज दिया। दासी सारे शहर में घूमती रही। जब वह तेली के घर के पास से निकली तो उसने देखा कि राजा चौरंगिया मल्हार राग गा रहा है।

दासी ने लौटकर राजकुमारी को सब वृतान्त कह सुनाया। उसी समय राजकुमारी मनभावनी ने अपने मन में यह प्रण कर लिया कि चाहे कुछ भी हो, मैं इसी चौरंगिया के साथ विवाह करूंगी। प्रात:काल होते ही दासी ने जब राजकुमारी मनभावनी को जगाया तो वह अनशन व्रत लेकर बिस्तर पर पड़ी रही। राजकुमारी की अनशन की बात दासी ने जाकर रानी को बताई रानी ऐसा सुनकर राजकुमारी के पास आई और पुत्री से कारण पूछा। राजकुमारी बोली--माता मैंने यह प्रण लिया है कि तेल के घर जो चौरंगिया है मैं उससे विवाह करूंगी, माता ने सुनकर आश्चर्य व्यक्त किया और कहा कि क्या तू पागल हुई है? तेरा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। राजकुमारी

बोली—हे माता, ये मेरा अटल प्रण है जिसे मैं नही तोड़ूंगी। चिंतित हो राजा ने यह बात रानी को बताई। राजा ने पुत्री को समझाया—हे पुत्री, ये कैसी जिद है तुम्हारी? तुम्हारा विवाह तो किसी बड़े राजा से होगा। तुम्हें ऐसी बात नही सोचनी चाहिए, परन्तु राजकुमारी भी अपने प्रण पर अडिग थी। उसने कहा—पिताजी प्राण दे सकती हू पर अपना प्रण नही तोड़ सकती। यह सुनकर राजा ने कहा—यदि तेरे भाग्य में ऐसा लिखा है तो यही सही। राजा ने तेली को बुलाकर कहा कि तेरे घर जो चौरंगिया रहता है मैं अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ करूंगा।

तेली ने आश्चर्य से कहा- महाराज आप ये क्या कह रहे हैं? कहा राजकुमारी और कहां एक चौरंगिया। राजा ने कहा -ये सब भाग्य का खेल है तुम जाकर विवाह की तैयारिया करो। राजा ने शुभ मुहूर्त देखकर राजकुमारी का विवाह चौरंगिया के साथ कर दिया। रात को जब विक्रमादित्य महल में सो रहे थे तो शनिदेव ने विक्रमादित्य को स्वप्न मे दर्शन दिए और कहा—हे राजा! मुझे छोटा बतलाकर तुमने कितने कष्ट उठाए। राजा ने शनिदेव से कहा—प्रभु मेरे अपराध के लिए मुझे क्षमा कर दो। शनिदेव राजा से प्रसन्न हो गए तथा उन्होंने राजा को क्षमा कर दिया और राजा को उसके हाथ पैर वापिस कर दिया।

तब राजा ने हाथ जोड़कर शनिदेव से विनय की—हे शनिदेव! मेरी आपसे विनती है कि आपने जैसे कष्ट मुझे दिए ऐसे किसी को कभी नहीं देना।

शनिदेव ने प्रसन्न होकर कहा - राजन तुम्हारी विनती मुझे स्वीकार है। जो व्यक्ति नित्य प्रति मेरा ध्यान करेगा, मेरी कथा सुनेगा, कहेगा उसे मेरी दशा मे कभी कोई दुख नहीं होगा तथा जो भी मनुष्य प्रतिदिन मेरा ध्यान कर चीटियो को आटा डालेगा उसके सभी मनोरथ पूर्ण होंगे। यह कहकर शनिदेव अन्तर्ध्यान हो गए।

सवेरे जब राजकुमारी मनभावानी की आख खुली तो उसने चौरंगिया को हाथ-पैर सहित देखा तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। उसने विक्रमादित्य को जगाया और उसके इसका कारण पूछा। तब राजा ने अपना सारा वृतात राजकुमारी को कह सुनाया।

यह सुनकर राजकुमारी अति प्रसन्न हुई। प्रातः काल मनभावनी की सखियों ने पिछली रात्रि का हाल-चाल पूछा तो उसने रात्रि की घटना का तथा उसके हाथ-पैर सही हो जाने का सारा वृतात कह सुनाया। जब उस सेठ को यह घटना पता चली तो वह विक्रमादित्य के पास आया और उसने राजा से क्षमा मागी और कहा—हे महाराज! मैंने आप पर चोरी का झूठा आरोप लगाया। मुझे क्षमा कर दीजिये। राजा ने कहा—यह सब मेरे भाग्य के तथा शनिदेव जी के कोप के कारण हुआ, इसमें तुम्हारा कोई दोष नही था।

तब सेठ ने कहा–हे महाराज! यदि आपने वास्तव में मुझे क्षमा कर दिया तो फिर मेरे घर चलकर भोजन ग्रहण करें, तभी मुझे शांति प्राप्त होगी राजा ने कहा जैसा आप उचित समझा करें।

घर जाकर सेठ ने नाना प्रकार के व्यंजन बनवाए और राजा विक्रमादित्य को आमंत्रित किया। जब राजा विक्रमादित्य तथा राजकुमारी भोजन कर रहे थे तो सबने एक बड़ी आश्चर्यजनक घटना देखी। जो खूटी पहले हार निगल चुकी थी वही खूंटी हार उगल रही थी। भोजन की समाप्ति पर सेठ ने हाथ जोड़कर राजा से कहा महाराज मेरी श्रीकंवरी नाम की एक कन्या है। आप उसे पत्नी के रूप में वरण करें। राजा विक्रमादित्य ने सेठ की बात स्वीकार कर ली और सेठ ने अपनी कन्या का विवाह राजा से कर दिया और बहुत-सी भेंट राजा को दी, इस प्रकार आनन्दपूर्वक कुछ समय तक सेठ के राज्य में रहने के पश्चात् राजा विक्रमादित्य अपने श्वसुर राजा से कहा कि अब मेरी उज्जैन जाने की इच्छा है।

कुछ दिन बाद विदा लेकर राजकुमारी मनभावनी, सेठ की कन्या श्रीकंवरी तथा दोनों जगह से दहेज में प्राप्त अनेक दास-दासी, रथ और पालकियों सहित राजा विक्रमादित्य उज्जैन की तरफ चले। जब वे शहर के निकट पहुंचे और उज्जैनवासियों ने राजा के आने का समाचार सुना तो उज्जैन की समस्त प्रजा अगवानी के लिए आई। प्रसन्नता से राजा अपने महल में पधारे। सारे नगर मे भारी उत्सव मनाया गया और रात्रि को दीपमाला की गई। दूसरे दिन राजा ने अपने पूरे राज्य मे घोषणा करवाई कि शनि देवता सब ग्रहों में सर्वोपरि हैं। मैंने इनको छोटा बतलाया इसी से मुझको यह दुःख प्राप्त हुआ।

इस प्रकार सारे राज्य में सदा शनिदेव की पूजा और कथा होने लगी। राजा और प्रजा अनेक प्रकार के सुख भोगती रही। जो कोई शनिदेव की इस कथा को पढ़ता या सुनता है, शनिदेव की कृपा से उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं। व्रत के लिए शनिदेव की कथा को अवश्य पढ़ना चाहिए।

ओ३म् शान्तिः। ओ३म् शान्तिः!! ओ३म् शान्तिः!!!

शनिवार की आरती

जय-जय रविनन्द जय दुःख भजन।

जय-जय शनि हरे ।।टेक।।

जय भुजचारी, धारणकारी, दुष्ट दलन।।1।।

तुम होत कुपित, नित करत दुखी, धनी को निर्धन।।2।।

तुम धर अनुप यम का स्वरूप हो, करत बंधन। 3॥
तब नाम जो दस तोहित करता सो बस, जा करे रटन।।4॥
महिमा अपार जग में तुम्हारे, जपते देवतन।।5॥
सब नैन कठिन नित बर अग्नि, भैंसा वाहन।।6॥
प्रभु तेज तुम्हारा अतिहिं करारा, जानत सब जन ।7॥
प्रभु शनि दान से तुम महान, होते हो मगन।।8
प्रभु उदित नारायण शीश, नवायन धरे चरण

जय-जय शनि हरे

❑❑❑

कुंभलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**—कुंभलग्न के सूर्य इस भाव का स्वामी होता है। जो भाव विशेष रूप से मारक स्थान है और क्योंकि सूर्य मारकेश और लग्नेश का शत्रु है। अतः कुंभलग्न के जातकों को माणिक्य से दूर रहना लाभप्रद रहेगा।

12	11 श.	10
1	2	9
3	8	7
4	5	6

2. **मोती**—कुंभलग्न में चंद्र षष्ठ भाव का स्वामी होता है। चंद्र लग्नेश शनि का शत्रु भी है अतः इस लग्न के जातक को मोती धारण नहीं करना चाहिए।
3. **मूंगा**—कुंभलग्न में मंगल तृतीय तथा दशम स्वराशि में हो तो मंगल की महादशा में इसके धारण करने से राज्य-कृपा व्यवसाय उन्नति होती है। इसके जातक को मूंगा धारण नहीं करना चाहिए।
4. **पन्ना**—कुंभलग्न के लिए बुध पंचम त्रिकोण और अष्टम भाव का स्वामी है। त्रिकोण का स्वामी होने के कारण यह इसके लिए शुभ माना गया है। यदि पन्ने को हीरे के साथ धारण किया जाये तो वह अत्यन्त शुभ लाभदायक बन जायेगा क्योंकि शुक्र इस लग्न के लिए चतुर्थ और नवम का स्वामी होने के कारण योग कारक ग्रह है. पन्ना लग्नेश शनि के रत्न व नीलम के साथ धारण करने से शुभ फल देगा।
5. **पुखराज**—कुंभलग्न के लिए बृहस्पति द्वितीय (धनाभाव) और एकादश (लाभ) भावों का स्वामी होता है। लग्नेश शनि बृहस्पति का शत्रु है तब भी बृहस्पति की दशा में पुखराज धारण करने से धन की प्राप्ति, समृद्धि से वृद्धि संतान सुख, विद्या में उन्नति नया बुद्धि बल प्राप्त होता है। परंतु बृहस्पति द्वितीय का स्वामी होने के कारण मारकेश भी है
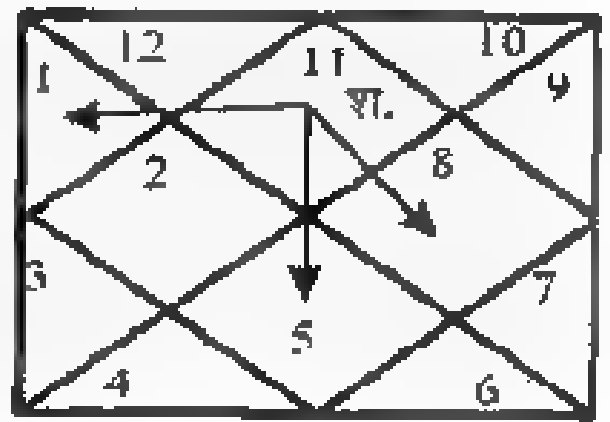
6. **हीरा**–कुंभलग्न के लिए चतुर्थ एवं नवम का स्वामी होने के कारण शुक्र अत्यन्त शुभ और योगकारक ग्रह माना गया है। शुक्र की महादशा में हीरा अवश्य धारण करना चाहिए। हीरा यदि नीलम के साथ धारण किया जाये तो उत्तम फलदायक होगा।
7. **नीलम**–कुंभलग्न के शनि द्वादश का स्वामी होते हुए भी लग्नेश है। उसकी मूल त्रिकोण राशि लग्न में पड़ती है। अतः कुंभ लग्न के जातक को नीलम शुभ फल देता है। यह आपका जीवन रत्न है।

विशिष्ट उद्देश्यपूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**–पन्ना सवा चार रत्ती, नीलम सवा चार रत्ती त्रिलोह में।
2. **भाग्योदय हेतु**–हीरा सवा चार रत्ती, मूगा सवा चार रत्ती चांदी में।
3. **आरोग्य हेतु**–नीलम अकेला सवा छः रत्ती त्रिलोह में
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**–पुखराज-नीलम-मूगा सवा चार चार रत्ती स्वर्ण में।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें। फलादेश करते समय अपने खुद के साथ जोर-जबरदस्ती न करे। यथा आपका ध्यान अन्य कार्य में है। आपके पास समय का अभाव है, परन्तु सामने वाला पृच्छक आप पर दबाव डाल रहा है कि मेरी तो ट्रेन जा रही है बस जा रही है प्लेन जा रहा है, अभी के अभी बताओ क्या होने वाला है? जो फलादेश आवेश व जल्दीबाजी मे होगा वो फलादेश गलत हो जायेगा क्योंकि फलादेश करते समय चित्त शान्त होना चाहिए।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें। गम्भीरतापूर्वक करें। आलतू फालतू लोगों को पास न बैठायें। जहा तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।

   रिक्त पाणि न पश्येत् राजानां दैवतां गुरुः।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल-पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके, उसे प्रभु चरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्र वचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार मे खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर लें और प्रत्युत्तर हमेशा हस्ताक्षर तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखे, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेंगे।

7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य होने पर, स्व प्रशंसा न करें ज्यादा फूले नहीं? क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित असत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होती है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हममें है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐसा विश्वास रखना चाहिए।
8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखें।

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिणः।**
   को वक्ता तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना॥

   ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ ज्योतिषी शुभ-अशुभ फलों की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा? फिर भी ईश्वर के पश्चात् ज्योतिषी वह पहला व्यक्ति है, जो निश्चयपूर्वक आपके भूत, भविष्य एवं वर्तमान बताने का सामर्थ्य रखता है।
10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
    ते योगाः किं करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

    ग्रहों का अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहां से प्राप्त होंगे? और क्यों मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहों के शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अंतर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष फल मिलता है।
11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदुः।**
    केन्द्रत्रिकोणेष्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते॥

    मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना चाहिए। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानों में मित्र ग्रहों से युक्त ग्रह हों तो शुभ फल जानना चाहिये।
12. **मित्रराशिगते वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।**
    मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः॥

    मित्र ग्रहों के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और दिग्बली एवं अंशों में बलवान ऐसा ग्रह यदि बृहस्पति से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।
14. जब लग्नेश अष्टम स्थान में हो तो उस दशा मे बहुत दुःख, कष्ट एव परेशानी होती है।
15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा (Direction) मे मिलती है जिस दिशा का वह ग्रह स्वामी हो।
16. जब पाप ग्रह (शनि, राहु केतु या दुःस्थान के स्वामी) की महादशा हो, और उसमें शुभ ग्रह की अतर्दशा हो तो आरभ में कष्ट होता है और अंत में सुख होता है।
17. जब शुभ ग्रह की (चंद्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र) महादशा हो, और उसमें पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो आरंभ में सुख होता है और अंत में भय होता है।
18. जब क्रूर (सूर्य या मगल) ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह की अंतर्दशा, यदि वे दोनों आपस में शत्रु हों तो मृत्यु होती है, परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में संदेह होता है।
19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान में स्थित हों तो उनकी अंतर्दशा में बड़ा भय होता है
20. जब मंगल (मारकेश) की महादशा में शनि (अन्य मारकेश) की अंतर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।
21. जब पाप ग्रह, क्रूर या शत्रु राशि मे स्थित छठे अथवा आठवें स्थान में हो, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हो, तो अपनी दशा में मृत्यु करता है।
22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अंतर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं।
23. जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8, 12 स्थानो में स्थित ग्रह की अतर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानो मे स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पाप ग्रह की अतर्दशा कष्ट देने वाली होती है।
24. जब दशम लग्न, लाभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण (पचम, नवम) स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो, अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवांश का हो तो उस ग्रह की दशा शुभ होती है। परन्तु जो ग्रह 8-12, 6-7-2 स्थानों मे अथवा अष्टमेश में हो अथवा शत्रु के घर का हो पाप ग्रह हो, अथवा नीच का हो अथवा अस्तगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25. जब मित्र ग्रह की महादशा में मित्र ग्रह की अंतर्दशा हो अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अंतर्दशा हो तो वह शुभ होती है। परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अंतर्दशा हो, अथवा पाप ग्रह की महादशा में, पाप ग्रह की अंतर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अंतर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल प्राप्त होता है।

26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहों का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर अवश्य पड़ता है। इस तथ्य को घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुंचना चाहिए।

27. पृच्छक जब आपके पास आता है। उस समय शकुन क्या कहते हैं? प्रकृति की रहस्यमय घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन भी मन मस्तिष्क में रखना चाहिए। वे तत्काल फल चमत्कारी रूप में देते हैं। मान लीजिए कोई आपसे प्रश्न पूछने आया और बिजली चली गई। कोई बर्तन अचानक गिर कर टूट गया? पास में रोने की, झगड़े का कलह की आवाजे आ गई तो जातक का कार्य हर्गिज नहीं होगा। जिज्ञासु सज्जन के आते ही कहीं से कोई फल-मिठाई पुष्प लेकर आ गया। अचानक रोशनी आ गई। टेलीफोन से अचानक शुभ समाचार मिल गये, बैन्ड बाजे, नगाड़े की आवाज आ गई तो निश्चित ही आगन्तुक सज्जन का कार्य होगा। ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् को शुभाशुभ शकुन शास्त्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

A. अवतार, संत-महात्मा एवं विद्वान्

श्री रामकृष्ण परमहंस

जन्म तिथि-18.2.1836, जन्म समय-6.23 बजे, जन्म स्थान-हुंगली (पं० बंगाल)। पंचम में स्थित बृहस्पति की स्थिति श्री रामकृष्ण परमहंस की कुण्डली के पूर्व जन्म के संचित पुण्य कर्मों को बताता है। बृहस्पति उच्चाभिलाषी है। वहीं शुक्र उच्च का है। शनि उच्च का है। मंगल उच्च का है तथा सूर्य लग्नस्थान में ''**बुधादित्य योग**' करके बैठा है। निश्चय ही यह एक देवपुरुष की कुण्डली है जिसके चमत्कार सारे संसार को मालूम है।

पैगम्बर मोहम्मद
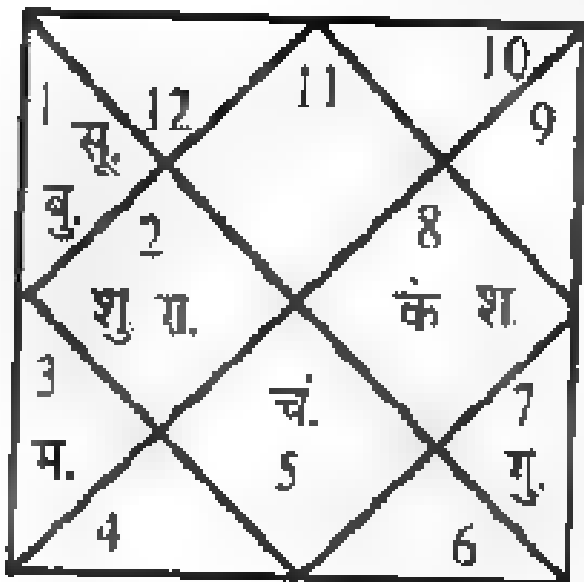
जन्म तिथि-22.4.0571, जन्म समय-1.40 बजे रात्रि जन्म स्थान-मक्का। मुस्लिम धर्म के संस्थापक पैगम्बर मोहम्मद का जन्म मक्का में मुसलमानी 12 तारीख को हुआ। इनको मक्का से मदीना ईस्वी सन् 622 में ले जाया गया, क्योंकि मक्का मे लोगों ने इनको शिक्षा को स्वीकार नही किया। इनकी 11 औरतें थी। इनकी बड़ी लड़की का नाम फातमा था। इनके दो लड़के थे जो 8 वर्ष की उम्र मे मारे गये। ईस्वी सन् 630 में इन्होंने मक्का जीता तथा हिजरी सन् (मुस्लिम सन्) का शुभारम्भ किया.

आचार्य चतुरसेन शास्त्री

1 12 च. 11 गु. 10 9
2 रा. 8 के.
3 सू. बु. शु. 5 श. मं. 7
4 6
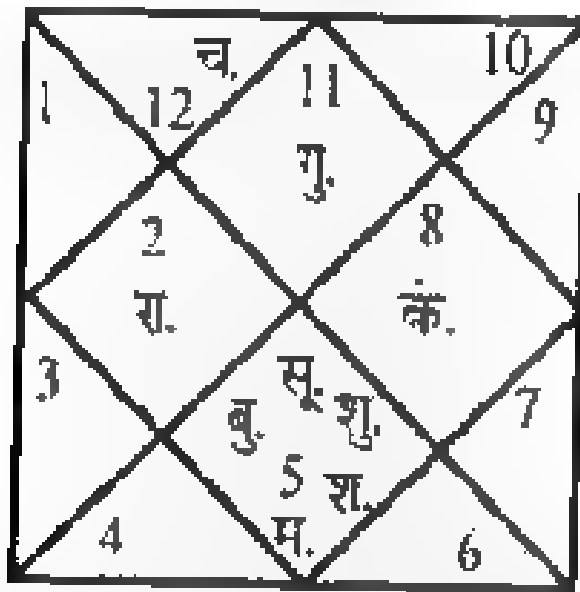
जन्म समय 19.30, जन्मतिथि 22.8.1891 द्वितीय भाव (लेखनी एवं वाणी) का स्वामी बृहस्पति लग्न में होने से, चारों केन्द्र भरे हुए होने से **'आसमुद्रात् नामक राजयोग'** बना। आचार्य चतुरसेन यशस्वी लेखनी की कीर्ति चारों दिशाओं में फैली। **'बुधादित्य योग'** एवं **'पचग्रह युति'** के कारण आचार्य चतुरसेन शास्त्री भारतीय संस्कृति के अनमोल हस्ताक्षर है।

डॉ. बी.वी. रमन

1 रा. 12 11 10 9
2 च. श 8 गु.
3 बु. 5 शु. मं. 7
4 सू. के 6
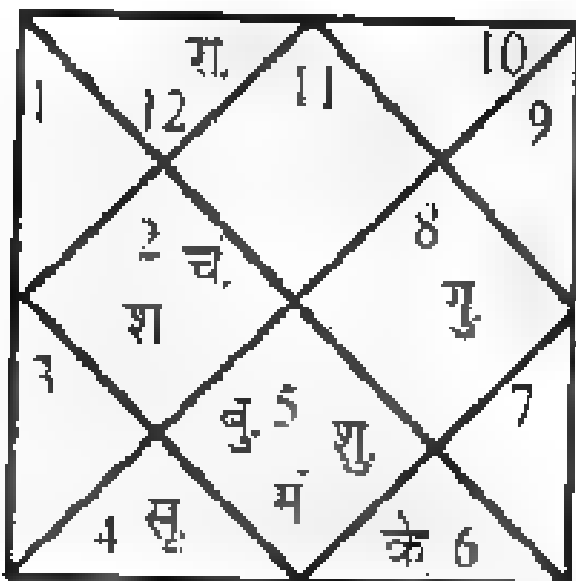
सम्पादक-ऐस्ट्रोलॉजिकल मैगजीन। जन्म स्थान-बैंगलोर, जन्म समय-19.40, जन्मतिथि 8.8.1912। डॉ. बी.वी. रमन को ज्योतिष की दुनियां मे सोने का सिक्का

माना गया है। इनका मुख्य कारण वे राजनेताओं व राजनीति में अनर्गल भविष्यवाणियों से बचते रहे। केन्द्र में उच्चस्थ चद्रमा ने उनका मानसिक स्तर, सोच उच्च को बनाये रखा। **'यामिननाथ योग'**, **'केसरी योग'**, **'कुलदीपक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'** ने उनकी कुण्डली को निखार दिया।

B. राजा, राजपुरुष व राजनेता

लंकेश्वर रावण
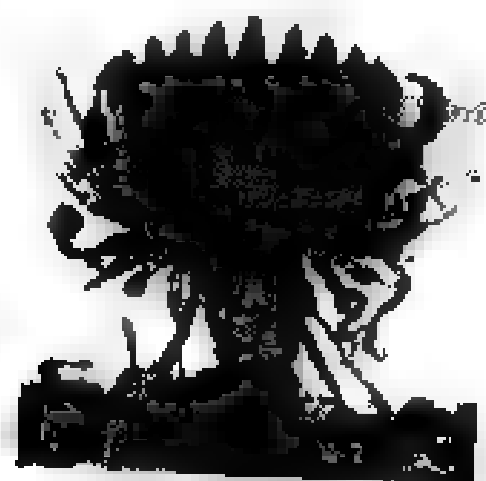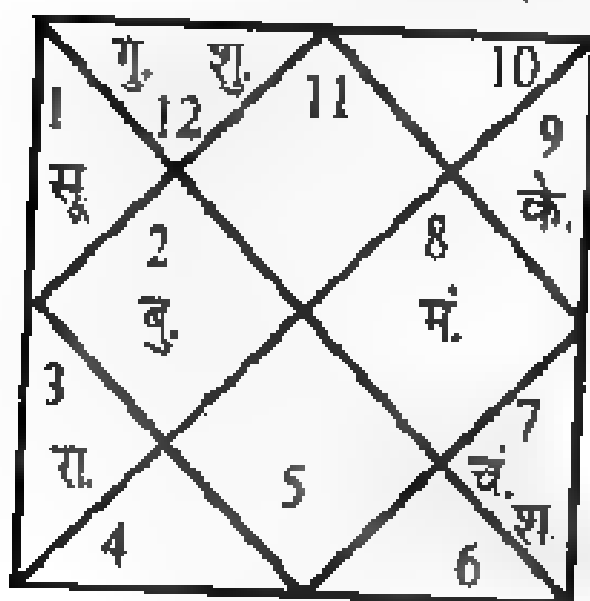
यह प्रचलित कुण्डली लंकेश्वर रावण की ही है। इनका कोई पक्का प्रमाण हमारे पास नहीं है क्योंकि जब तक जन्म तारीख हमारे पास सही नहीं हो। कुण्डली में स्थिति ग्रहो को सत्यता की कसौटी पर नही कसा जा सकता। फिर भी प्रबुद्ध पाठकों के सग्रह व ज्ञान को बढ़ाने की दृष्टि से यह कुण्डली यहां दी जा रही है।

बादशाह औरंगजेब
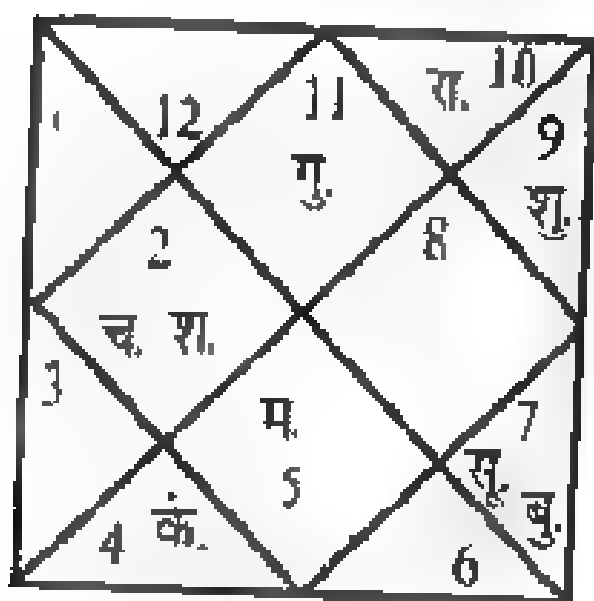
जन्म समय-14.05, जन्मतिथि-3.11.1618, जन्म स्थान-दोहद (गुजरात)। मुगल बादशाहों कट्टरपंथी औरंगजेब में (1659 1707) के मध्य हिन्दुस्तान पर शासन खून की नदियां बहाकर किया। वह शक्की दिमाग का एक ऐसा बदनसीब व्यक्ति था। जिसने अपने पुत्र, पिता एव पत्नी तक की हत्या कर दी। औरंगजेब के

कारण मुगल सल्तनत हिन्दुस्तान से उठ गई क्योंकि इसने हिन्दू और गैर मुस्लिम लोगों पर बहुत जुल्म ढाए।

बादशाह शाहजहां (औरंगजेब का पिता)
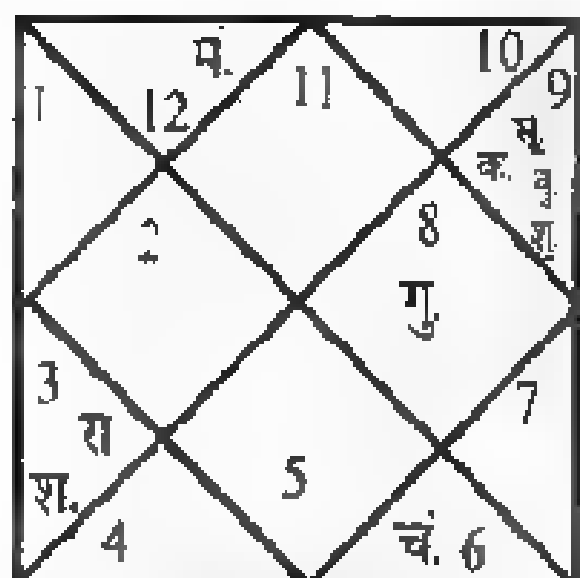
जन्म स्थान-लाहौर (पाकिस्तान), जन्म समय-14.38, जन्मतिथि-5.1.1592। शाहजहां एक बदनसीब बादशाह था। आंशिक कालसर्पयोग ने उन्हें संतान सुख नहीं दिया। पंचम भाव में शनि व राहु ने क्रूर व कपूत संतान को पिता बनाया। इससे बढ़िया फलित ज्योतिष की सत्यता का और प्रमाण क्या हो सकता है।

शाहजहां को जहां एक ओर शनि की दशा में ही तमाम शुभ फल मिलें वहीं दूसरी ओर शनि की ही दिशा में उसके पुत्र औरंगजेब ने उसे बंदी बनाकर कालकोठरी में डलवा दिया। इतना ही नहीं शनि की ही दशा में उसकी मृत्यु भी हुई...

शाहजहां के पिता जहांगीर के समय मे कुछ कट्टरवादी नीतियों का सूत्रपात हुआ था। शाहजहां नामा में ज्योतिष से संबंधित जो बातें लिखी गई हैं, उसमें यह भी आता है कि 22 फरवरी 1633 की रात को राजकुमार शाहशूजा (शाहजहा) का विवाह ज्योतिषीय मुहूर्त देखकर ही किया गया था और जिस ज्योतिषी ने यह मुहूर्त निकाला था उसका नाम मकरात खां था इतना ही नही शाहजहा जब 60 साल का हो गया, तो उसकी 'षष्टि पूर्ति' भी हिंदू परपराओं के अनुसार ही मनाई गई थी। शाहजहां की उपलब्ध कुंडली में पंचम का शनि, राहु से युत है और मंगल वक्री शुक्र, बुध और सूर्य से दृष्ट है, जो राज्याभिषेक के समय को तो दर्शाता ही है, साथ ही उसके जीवन के अंतिम दुखद वर्षों की कहानी भी कहता है। शाहजहा की कुंडली में नवमेश (पिता), तृतीयेश (भाई) और पंचमेश (संतान) उसके जीवन को ऊंचाइयों और दुखो मे अंतर्निहित कहानियां बयान करते है इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण शायद यह भी है कि मुगलों में उत्तराधिकार का नियम अनिश्चित था। इस मामले में अगर यह तय होता कि ज्येष्ठ पुत्र ही सम्राट का उत्तराधिकारी होगा, तो शाहजहां

को ही गद्दी मिलती। ऐसा नहीं होने के वजह से उसके भाइयों ने उसके खिलाफ षड्यंत्र किया और नूरजहा ने भी इसी त्रुटि का लाभ उठाते हुए अपने दामाद शहरयार को जहांगीर का उत्तराधिकारी बनाने का असफल प्रयास किया।

इसके खिलाफ जब शाहजहा ने अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया उस समय (1620-1628) वह राहु में अष्टमस्थ चंद्र और तृतीयेश मंगल की अतर्दशा में चल रहा था। भाग्यस्थ तथा दशमस्थ बृहस्पति की दशा आते ही शाहजहां को जहांगीर का उत्तराधिकार मिल गया। इसके लिए उसे अपने भाइयों की हत्या भी करवानी पड़ी। शाहजहां को अच्छी दशाओं और अच्छे ज्योतिषीय योगों का फल शनि की दशा में मंगल की अंतर्दशा तक ही मिला, लेकिन शनि-राहु के पंचम होते ही स्थिति पलट गई और इस दशा में उसके पुत्र औरंगजेब ने न सिर्फ अपने भाइयों द्वारा, शूजा और मुराद की धोखे से हत्या करवा दी, बल्कि अपने पिता को बंदी भी बना लिया। इतना ही नहीं उसने खुद को सम्राट भी घोषित कर दिया। चाहे जो भी हो, मगर सपूर्ण विश्व शाहजहां को ताजमहल के लिए आज भी याद करता है, जिसे उसने अपनी पत्नी मुमताज महल की याद में बनवाया था। शाहजहां की मृत्यु 1658 में शनि की महादशा और द्वितीयेश बृहस्पति की अंतर्दशा में हुई, जबकि शनि की महादशा और राहु की अंतर्दशा में उसे गिरफ्तार कर कारावास में डाला गया था। यह काम किसी और ने नहीं, बल्कि उसके पुत्र ने ही किया था।

मोहम्मद अली जिन्ना, कायदे आजम पाकिस्तान
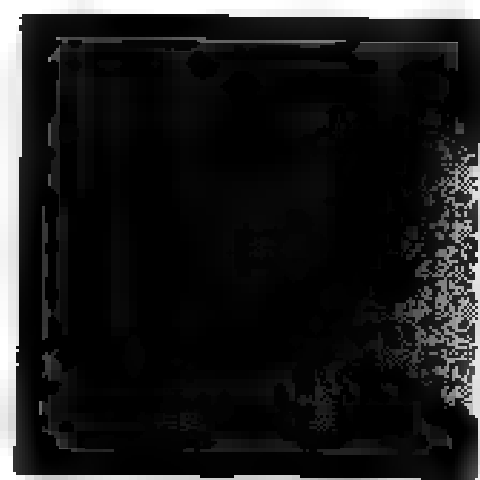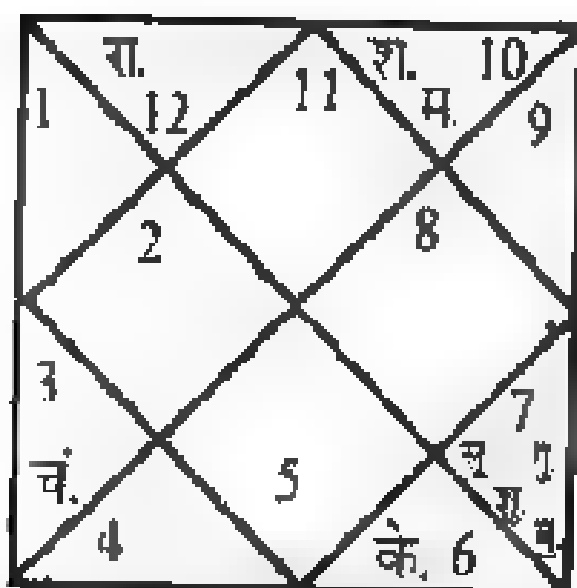
जन्म स्थान-करांची (पाकिस्तान), जन्म समय-14.30, जन्मतिथि-20.10.1875। केन्द्र खाली, चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होने से सोच नकारात्मक थी यही एक व्यक्ति था। जिसने हिन्दुस्तान पाकिस्तान के टुकडे द्वेष भावना से कराये। सूर्य+शुक्र की युति **'नीचभंग राजयोग'** भाग्यस्थान में एवं शनि+मंगल की युति **'किम्बहुना योग'** ने इन्हें पाकिस्तान का कायदे आजम बना दिया।

अब्राहम लिंकन (अमेरिकी राष्ट्रपति)
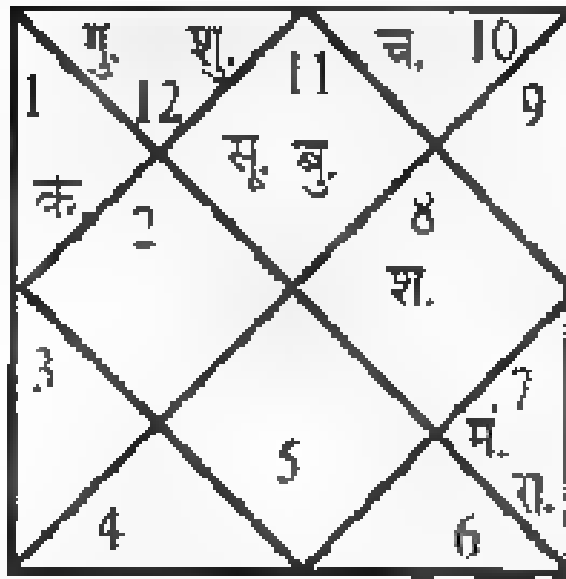
जन्म समय 7 45 बजे सुबह, जन्म तिथि-12 2.1809, जन्म स्थान केंदुकी (अमेरीका)। अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन की एक अलग (1809 65) पहचान है। उन्होंने अमेरीका को गुलामी से मुक्त कराया। वे सन् 1864 में पुन: राष्ट्रपति पद पर चुन लिये गये। सन् 1865 में उनकी गोली मार कर हत्या कर दी गई। जन्मकुण्डली में प्रदर्शित 'पूर्णकालसर्प योग' षष्टेश चंद्रमा के द्वादश में आना ही इनके अकाल मृत्यु का कारण बना।

श्री नारायण दत्त तिवारी (मुख्यमंत्री उत्तरांचल)
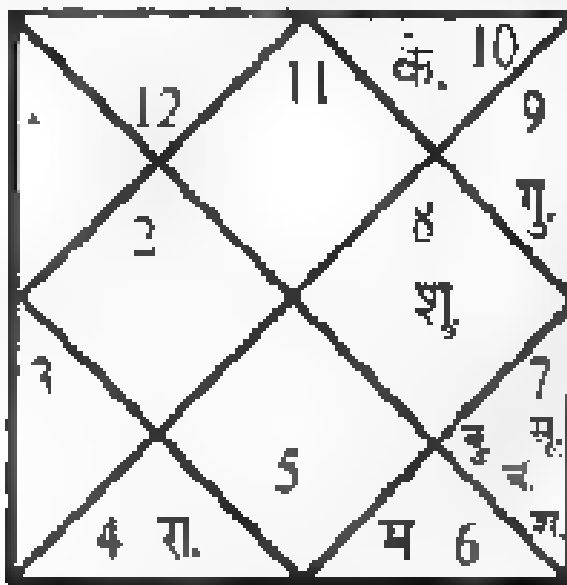
जन्म तिथि-18.10.1952 जन्मसमय-16.00, जन्म स्थान-नैनीताल। श्री नारायणदत्त तिवारी एक मृदुभाषी गंभीर स्वभाव के राजनेता रहे क्योंकि वाणी का अधिपति बृहस्पति इनकी कुण्डली में स्वगृही का अधिपति बृहस्पति इनकी कुण्डली में स्वगृही है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री एवं पुन: उत्तरांचल के मुख्यमंत्री पद पर इनको सूर्य+शनि की युति ने पहुंचाया। **'नीचभंग राजयोग'** एवं चतुग्रह युति ने इनके किस्मत को चारों ओर से चमकाया। केन्द्रस्थ शुक्र ने **'कुलदीपक योग'** बनाकर इन्हें आगे बढ़ाया। परन्तु **'महापद्मनामक कालसर्प योग'** के कारण से अपने गुप्त शत्रुओं से सदा परेशान रहेंगे।

अमेरिका के पूर्व प्रधानमंत्री जी. हार्डिंग
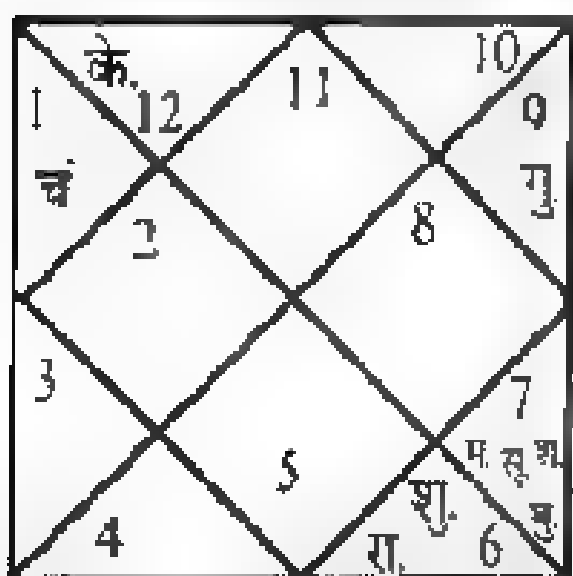
जन्म तिथि-2.11.1865, जन्मसमय 14.30। अमेरीका के प्रमुख जी. हार्डिंग की कुण्डली में भाग्यस्थान में सूर्य-शुक्र की युति से बना। **'नीचभंग राजयोग'** ने इनकी किस्मत बदल दी। 'चतुर्ग्रह युति' ने चारों ओर से आगे बढ़ने में मदद की। धनेश बृहस्पति स्वगृही से वे करोड़पति बने रहे। शनि व राहु ने अष्टम में जाकर **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बनाया।

सम्राट एडवर्ड अष्टम
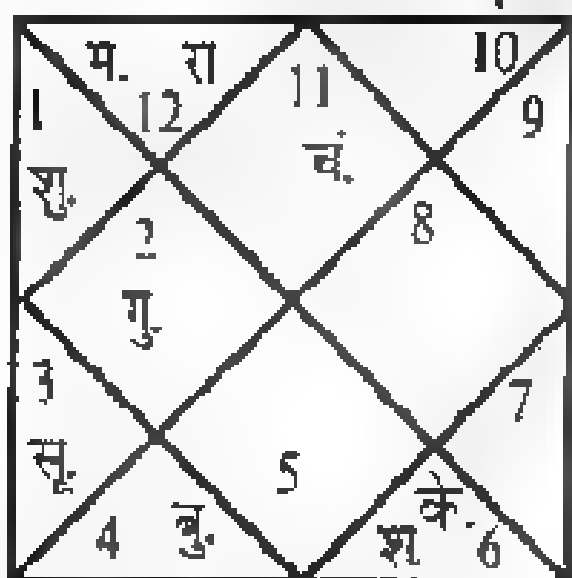
धनेश बृहस्पति केन्द्र में तथा शनि अष्टम में जाने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** बना। सम्राट एडवर्ड अष्टम का जन्म ही उच्च घराने में हुआ। जैसे शेर का बच्चा जन्म से ही शेर कहलाता है। वैसे ही वे सम्राट कहलाये।

श्री वाई. वी. चव्हाण (पूर्व गृहमंत्री, भारत सरकार)
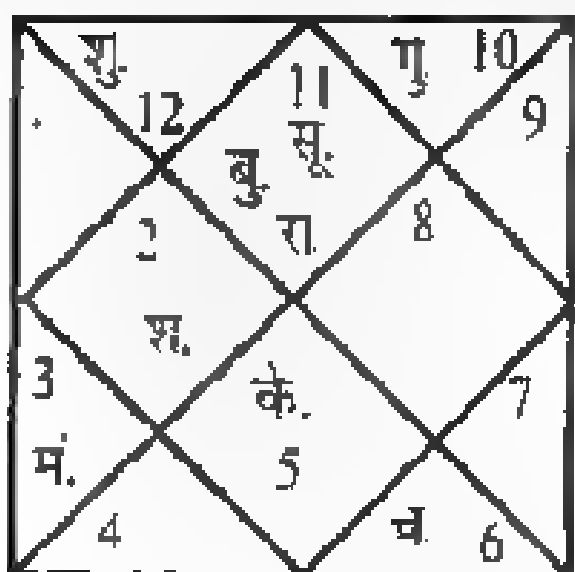
श्री वाई.बी. चव्हाण जमीन से जुड़े हुए कठोर परिश्रम से आगे बढ़ने वाले राजनेताओं की श्रेणी में अग्रगण्य है। लग्न में **'बुधादित्य योग'** ने इन्हे राजगद्दी दी। **'हर्षनामक विपरीत राजयोग'** ने इन्हें सत्ता सौंपी। उच्च के शुक्र ने इनका भाग्य चमकाया परन्तु **'कालसर्प योग'** की छाया ने इन्हें 'वंश वृद्धि' नहीं की।

डॉ. मुरलीमनोहर जोशी
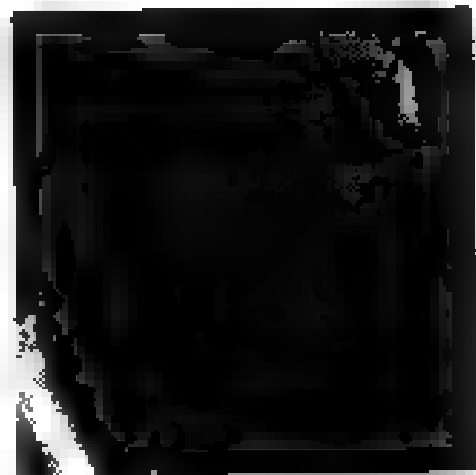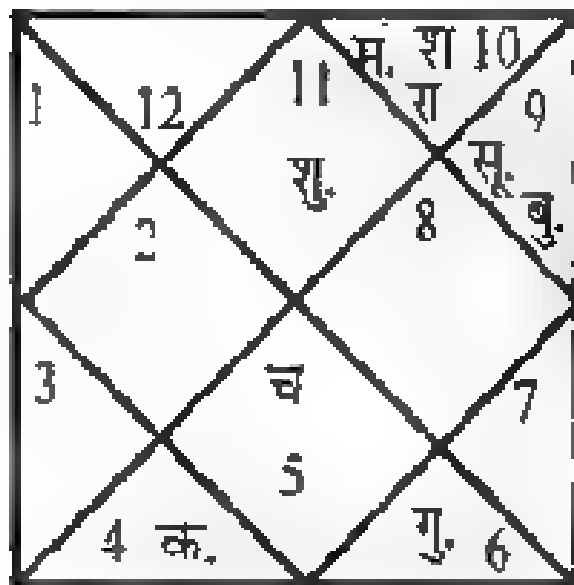
जन्म तिथि-5.1.1934, जन्मसमय 10.20 बजे सुबह, जन्म स्थान दिल्ली। भारतीय राजनीति के अनमोल हस्ताक्षर डॉ. मुरली मनोहर जोशी की कुण्डली में **'किम्बहुनानामक राजयोग'** बना। **'बुधादित्य योग'** ने इन्हें राजनीति में उच्च पद दिया। लग्नस्थ शुक्र ने भाग्य को चमकाया। परमराजयोग कारक शुक्र ने परम राजयोग दिया।

श्रीमती भंडारनायक, (प्रधानमंत्री लंका)
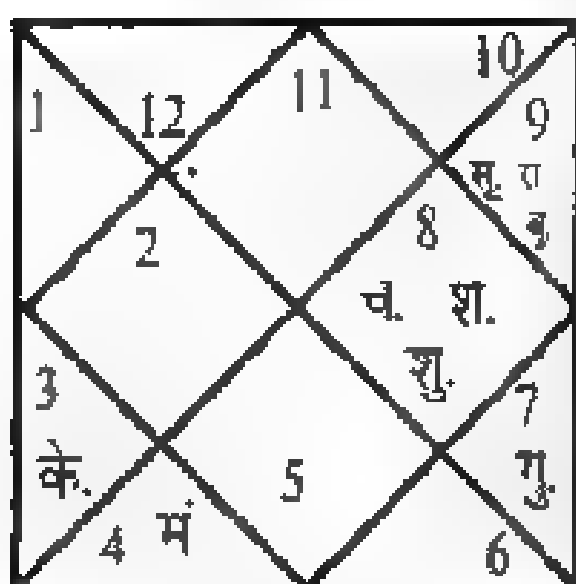
जन्म तिथि-8.1.1899, जन्मसमय-10.00, जन्म स्थान-श्रीलंका। श्रीमति भण्डार नायके के कुण्डली में केन्द्रस्थ शुक्र व शनि ने उन्हे प्रधानमंत्री की कुर्सी पर पहुंचाया। **'बुधादित्य योग'** ने राजपद दिया। चंद्र एवं मंगल ने परस्पर **'राशि परिवर्तन'** करके, इनके राजनैतिक शत्रुओं का नाश किया।

अजीत जोगी (पूर्व मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़)

च बु. 12 | 11 | 10 9
1 सू. | 2 शु. रा. | 8 कं.
3 श. | 5 | 7
4 मं | गु 6
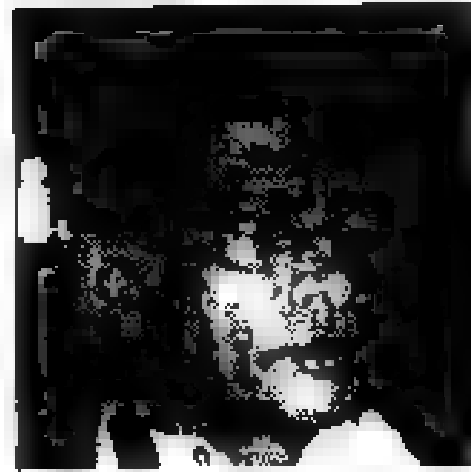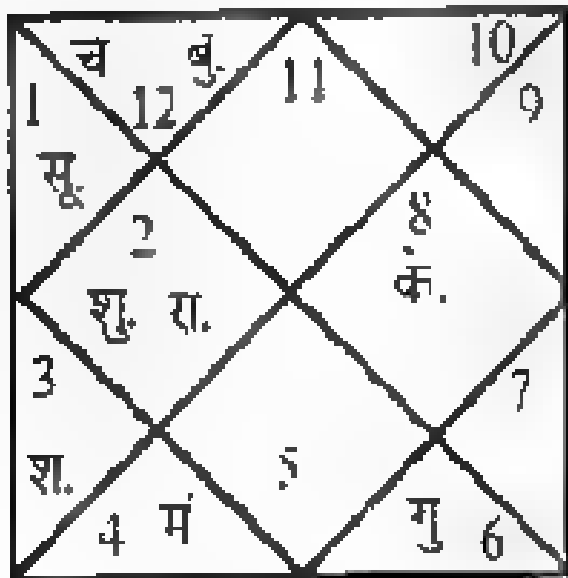
जन्म तिथि-29.4.1940, जन्म समय-2.30, जन्म स्थान-पेंढ्रा (म. प्रदेश)। श्री अजीत जोगी की कुण्डली में पड़ा **'मालव्य योग'** ने इन्हें एक जिलाधीश, प्रशासक एवं मुख्यमंत्री के उच्च पद तक पहुंचाया।,परन्तु नीच का बुध षष्टेश चंद्रमा के साथ होने से ये षड्यंत्रकारी योजनाओ के पुरोधा भी रहे हैं। हमने इनके पराभाव की घोषणा इस योग के चलते बहुत पहले कर दी थी।

श्री भजनलाल

च 12 | 11 | 10 9 श.
1 रा. | 2 | 8 शु.
3 मं. गु. | 5 | 7 कं.
4 | बु. सू. 6
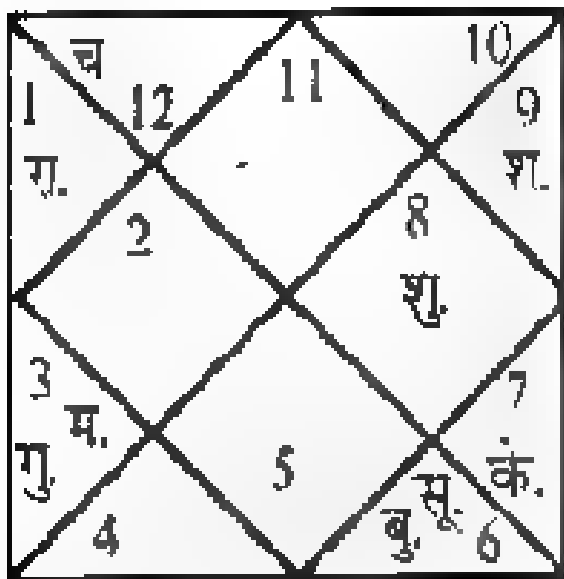
जन्म तिथि-6.10.1936, जन्म समय-17.15 जन्म स्थान-भावलपुर (पाकिस्तान)। 'आयाराम गयारामा' राजनीति के प्रणेता श्री भजन लाल केन्द्रीय स्तर के राष्ट्रीय राजनेताओं में प्रमुख व अग्रगण्य है। भाग्येश शुक्र केन्द्र में होने से **'कुलदीपक योग'** के कारण वे भाग्यशाली रहे मंगल के कारण **'पद्मसिंहासन योग'** ने उन्हें मुख्यमत्री पद दिलाया। बुधादित्य योग ने उन्हे राजा बनाया। लग्नेश शनि ने भाग्य स्थान में जाकर उन्हें कूटनीतिज्ञ (डिप्लोमेट) राजनेता बनाया।

काल मार्क्स
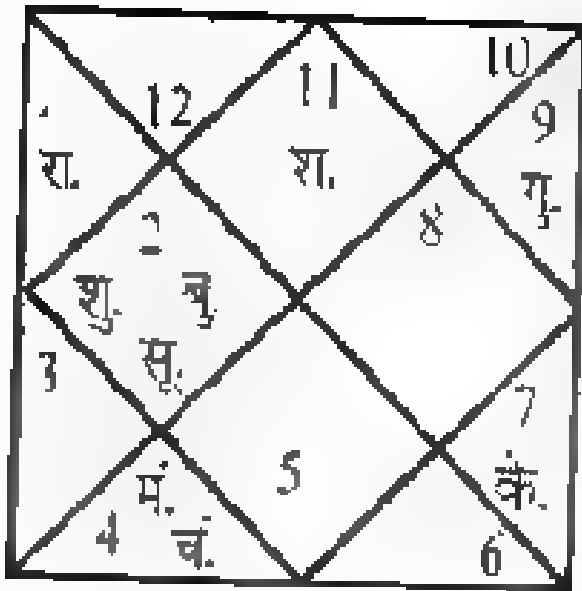
जन्म तिथि-5.5.1818 जन्म समय 02.30, जन्म स्थान-त्रिरोर (पश्चिमी जर्मनी)। काल मार्क्स की कुण्डली में भी अजीत जोगी की तरह **'मालव्य योग'** है पर शनि के कारण **'शश योग'** एवं केन्द्र में **'बुधादित्य योग'** ने इनकी कुण्डली को विशेष चमक दी। धनेश बृहस्पति स्वगृही, चंद्र+मंगल **'लक्ष्मी योग'** ने इन्हे आजीवन धन की कमी नहीं होने दी।

एम. जी. रामचंद्रन
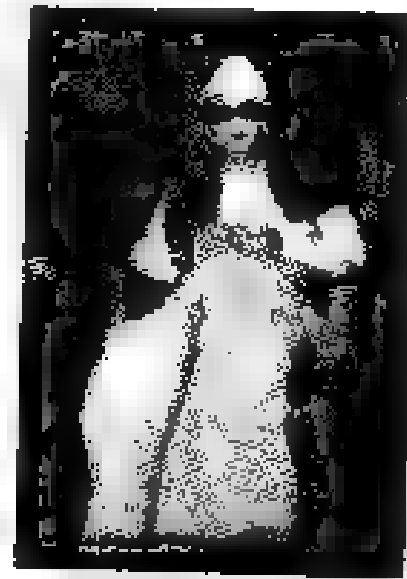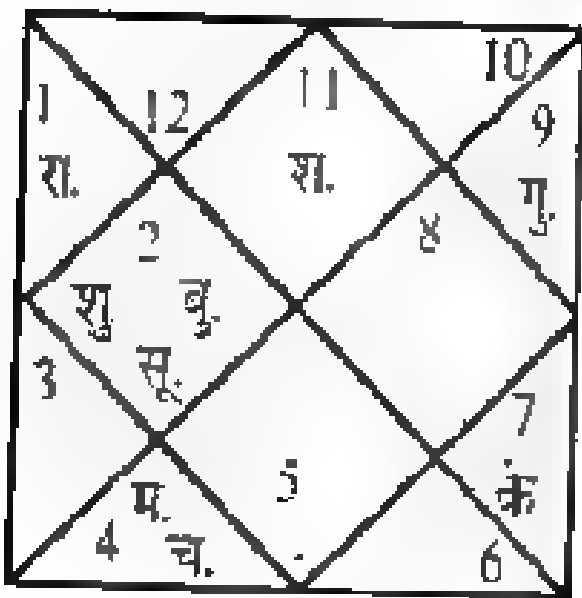
जन्म तिथि-17.1.1917 जन्म समय-9.15 जन्म स्थान-कोलम्बो। इस कुण्डली में मंगल उच्च का **'रुचक योग'** बना रहा है। साथ ही **'बुधादित्य योग'** भी है। केन्द्र चारों खाली है। राजनीति में कोई उल्लेखनीय सफलता मिले। ऐसा योग कम दिखलाई देता है

श्री अमरसिंह राठौड़
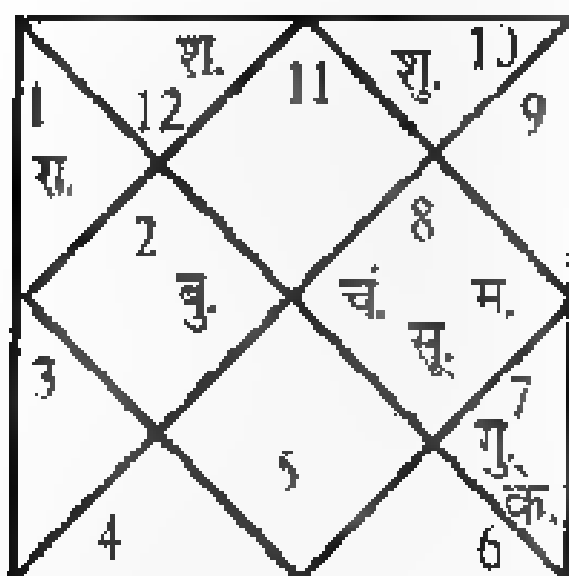
जन्म समय-12.12.1613, जन्म समय-12.00, जन्म स्थान-नागौर (राजस्थान)। श्री गजसिंह प्रथम के पुत्र। मारवाड रिसायत के राजा, औरंगजेब के जमाने मे औरगजेब के नाक में दम करने वाले जोधपुर महाराजा की रियासत नागौर के एक छोटे से सेवक ने भारत के इतिहास मे अपना नाम अमर कर दिया। इसका श्रेय केन्द्रस्थ मंगल **'रुचक योग'**, **'पद्मसिंहासन योग'**, **'कुलदीपक योग'**, **'लक्ष्मी योग'** को जाता है।

सुश्री उमाभारती (मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश)
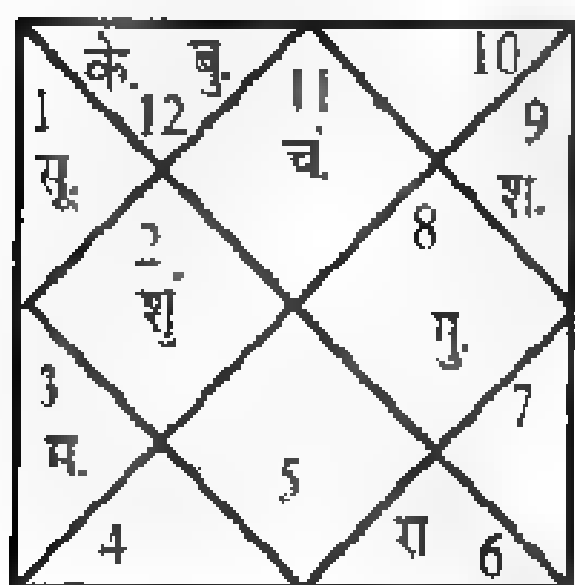
जन्म समय-3.6.1959, जन्म समय-03.00 जन्म स्थान-टीकमगढ़। इस कुण्डली में केन्द्रस्थ शुक्र ने **'मालव्य योग'** बनाया है। मालव्य योग ने ही सुश्री उमाभारती को मध्य प्रदेश का मुख्यमन्त्री बनाया। केन्द्रस्थ बृहस्पति **'कुलदीपक योग'** एवं **'केसरी योग'** बना रहा है। पराक्रम स्थान में उच्च का सूर्य पराक्रम में अद्वितीय वृद्धि कर रहा है।

बोरिस येल्तसिन (रुस)
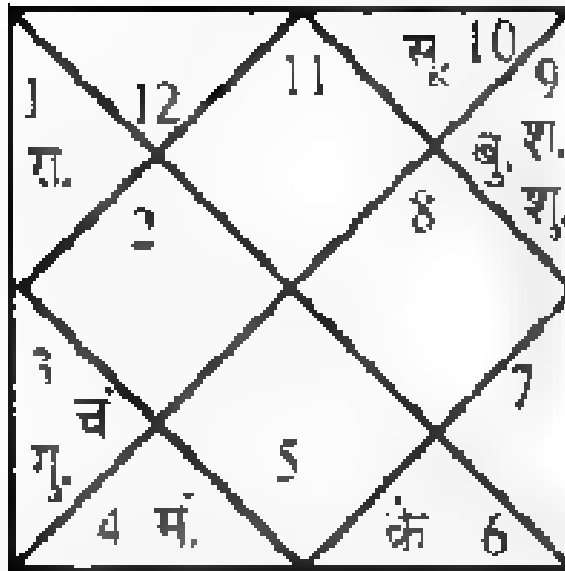
जन्म समय 1.2 1931, जन्म समय 7.50, जन्म स्थान-स्वरदलोस्क (रुस)। यहां भी केन्द्र के 1, 4, 7 व 10 सभी स्थान खाली है। पचम भाव में बृहस्पति के साथ चंद्रमा **'गजकेसरी योग'** बना रहा है.

स्तालिन
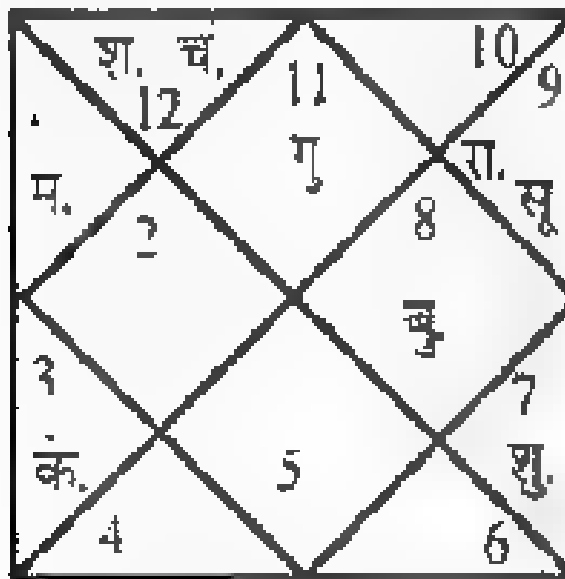
जन्म समय-21.12.1879, जन्म समय 10.45, जन्म स्थान-गारया। रुस के राष्ट्रपति स्तालिन की कुण्डली में लग्नस्थ बृहस्पति राजयोग दे रहा है। बुध केन्द्र में **'कुलदीपक योग'** एव शुक्र स्वगृही भाग्य स्थान में जातक के मध्य मे अद्वितीय वृद्धि कर रहा है। पराक्रम स्थान में मंगल को जबरदस्त पराक्रमी बनाया।

श्री मथुरादास माथुर (पूर्व मंत्री)
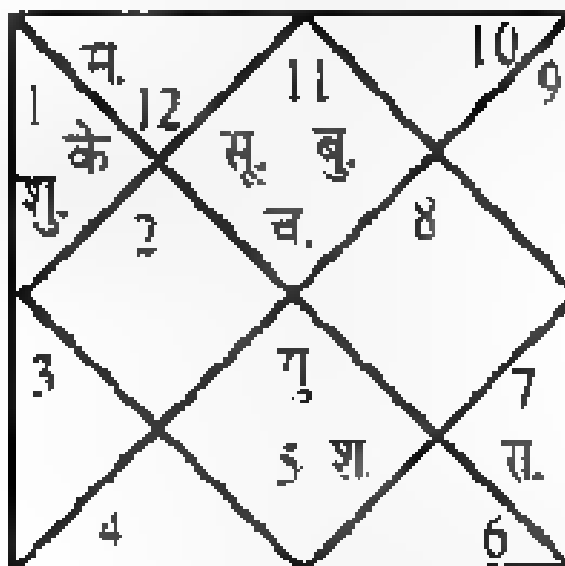
जोधपुर शहर के प्रमुख राजनेता मथुरादास माथुर लग्नस्थ सूर्य, बुध की युति **'बुधादित्य योग'** के कारण जनप्रिय राजनेता रहे। केतु पराक्रम स्थान मे होने से इनका पराक्रम तेज रहा है।

श्री लालकृष्ण आडवाणी (उपप्रधानमंत्री)
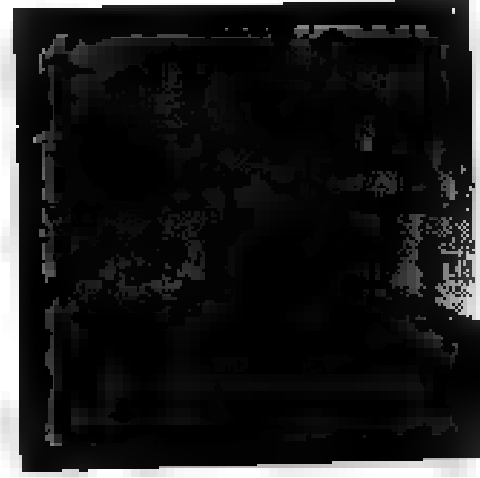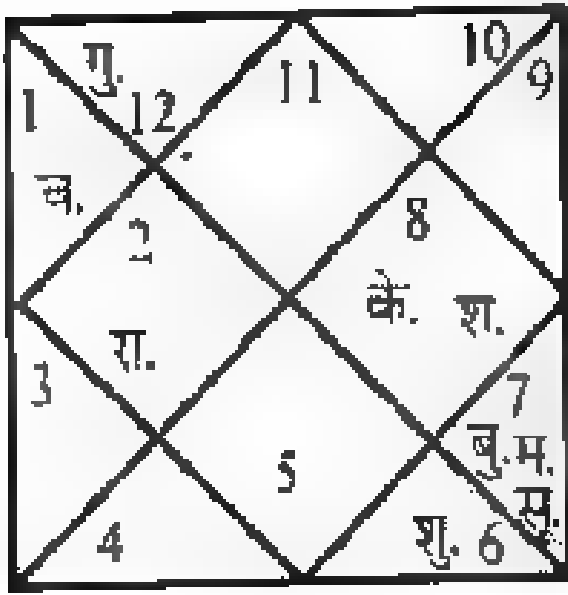
जन्म समय -8.11.1927, जन्म समय-14.30, जन्म स्थान-हैदराबाद (पाकिस्तान)। यहां दशमस्थ शनि ने श्री आडवाणी को जबरदस्त राजयोग दिया सूर्य बुध की युति भाग्यभवन में बना **'बुधादित्य योग'** ने इन्हे उपप्रधानमत्री का उच्च पद दिया। बृहस्पति स्वगृही होने से इनकी वाणी सयमित व सारगर्भित है।

जूनागढ़ महाराज
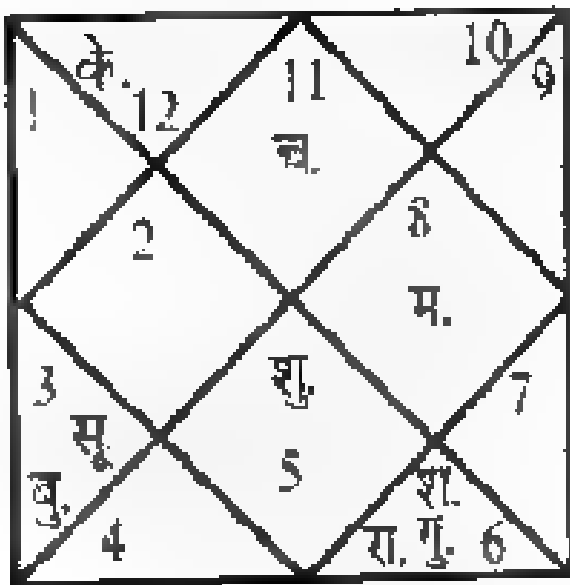
जन्म स्थान-भोपाल, जन्म तिथि-13.7.1922, जन्म समय-21.00। दशम स्थान में मंगल ने **'रुचक योग'** बनाकर इन्हें राज दिया। पंचम स्थान में स्वगृही बुध व सूर्य से **'बुधादित्य योग'** ने अथाह सम्पत्ति दी। केन्द्रस्थ शुक्र **'कुलदीपक योग'** की सृष्टि कर रहा है, शनि अष्टम में **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है।

श्रीमती विजयराजे सिंधिया (ग्वालियर राजमाता)
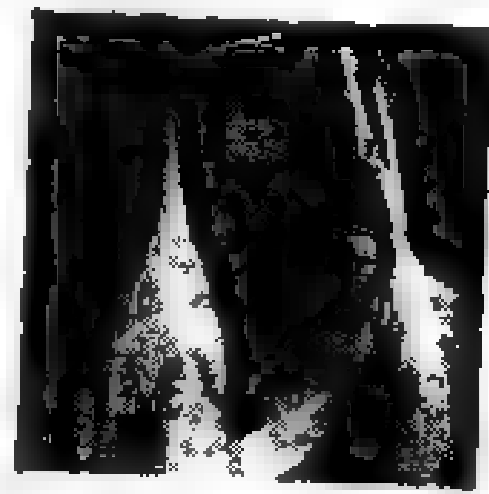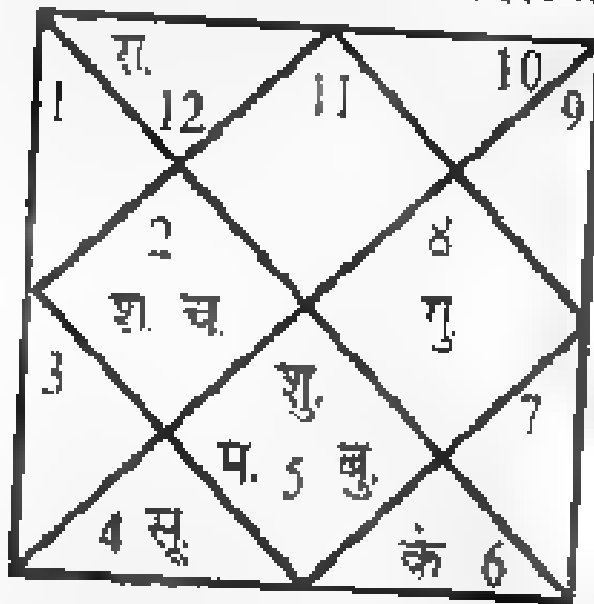
जन्म समय-8.8.1912, जन्म समय-19.15, जन्म स्थान-बैंगलोर। श्रीमति विजयराजे सिंधिया का जन्म ही उच्च शाही परिवार में हुआ। केन्द्रस्थ बृहस्पति ने उन्हें भाजपा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद दिया। केन्द्रस्थ शुक्र एवं बुध के कारण वे सांसद भी निर्वाचित हुई।

C. अभिनेता

दिलीप कुमार
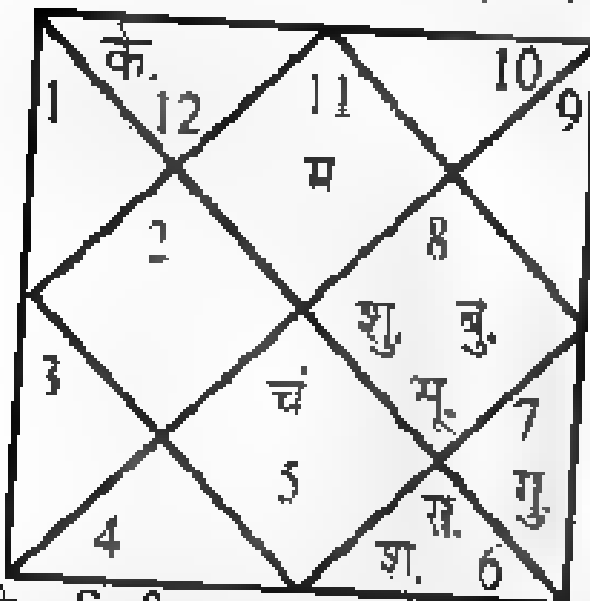
अभिनेता दिलीप कुमार की कुण्डली में केन्द्रस्थ शुक्र ने उन्हें श्रेष्ठ अभिनेता बनाया। सूर्य, बुध की युति से बना **'बुधादित्य योग'** ऊंची कीर्ति व प्रतिष्ठा दी। परन्तु 'आंशिक कालसर्प योग' ने वंश वृद्धि में रुकावट दी।

अमिताभ बच्चन
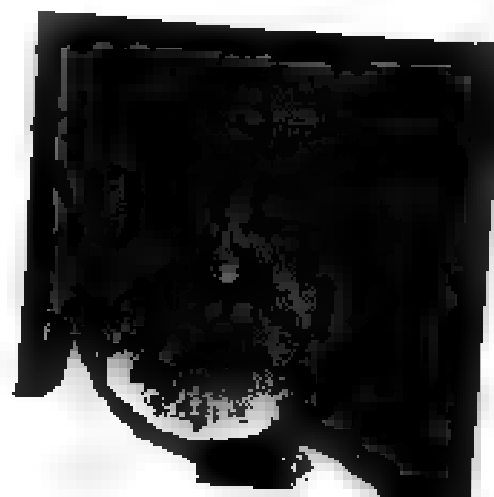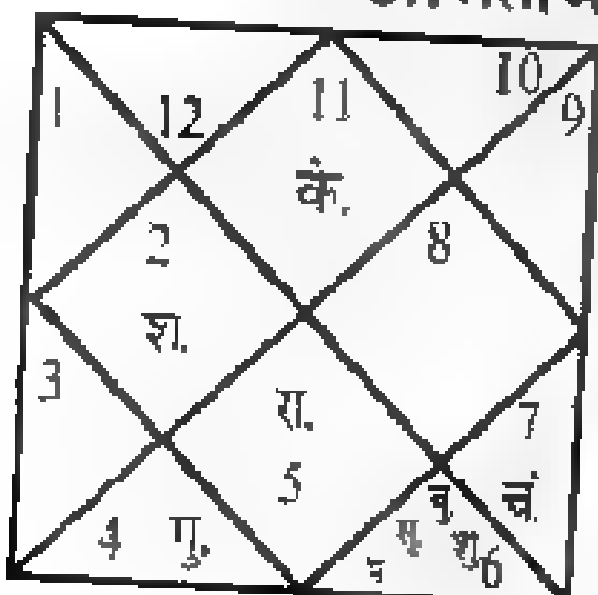
अभिताभ बच्चन मनोरंजन की दुनिया का बादशाह है। सितारों में धुमकेतू की तरह फिल्मी आकाश मे जगमगाने वाले अभिताभ बच्चों, युवा और बड़ों सभी के दिलों पर राज करते है। पिछले साल अक्तूबर माह मे ही उन्होंने जीवन क साठ वसंत पूरे किए।

अभिताभ बच्चन का जन्म कवि हरिवंशराय बच्चन के यहा 11 अक्तूबर 1942 को इलाहाबाद में कुंभ लग्न के तुला नवामाश मे हुआ। लग्नेश शनि उनकी कुण्डली का सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रह है, जो कि लाभ स्थान और अग्नि राशि मे है। उन्होने अपनी फिल्मी दुनिया की शुरुआत 'सात हिन्दुस्तानी' फिल्म से प्रारभ की जो बॉक्स ऑफिस पर पिट गई। 'जंजीर' फिल्म से वे 'एग्री यंग मैन' के रूप में उभरे। राहु की महादशा में शनि के अन्तर से उन्हे पहला फिल्मफेयर पुरस्कार (श्रेष्ठ अभिनेता) 1977 में 'अमर अकबर एन्थनी' पर मिला। इसके बाद 'डॉन' (1978) तथा 'नमकहराम' के लिए भी (1973) में सम्मान मिले। श्रेष्ठ अभिनेता के रूप में उन्हें 1990 में 'अग्निपथ' पर राष्ट्रीय पुरस्कार मिला, जब इन्हे बृहस्पति में शनि का अन्तर चल रहा था।

बृहस्पति छठे भाव में उच्च राशि का है तथा शुक्र अष्टम भाव में नीच का है। फिल्मी कैरियर मे दोनों ग्रहों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शनि भी उत्तम स्थिति मे है। वे धनी और दीर्घायु होंगे क्योंकि उनका 'बुधादित्य योग' ठीक दादा मुनि अशोक कुमार की ही तरह अष्टम स्थान मे मुखरित है। अष्टमेश का अष्टम स्थान में स्वगृही होने से '**सरल योग**' शुभकारी है। अभिताभ के सुपर स्टार के योग शनि की महादशा में बने। यह महादशा अक्तूबर 1971 से 1990 तक रही। वृषभ में गोचरीय शनि ने उन्हें टी.वी. पर भी लोकप्रियता दिलाई। 'कौन बनेगा करोड़पति' की अपार लोकप्रियता वृषभ में गोचरीय शनि में ही हुई।

अभिनय का सबंध पंचम भाव से होता है। अभिताभ की कुण्डली में बुध पचम का स्वामी है, अपनी उच्च राशि में स्थित है। बुध की महादशा 10 नवम्बर 2007 तक है, समय श्रेष्ठ है। केतु, रवि तथा चद्र की अतर्दशा ने उन्हें असफलता भी दी। आर्थिक हितों को भी आघात लगा। लेकिन अप्रैल, 1999 के बाद मगल की अतर्दशा ने उबार लिया। टी.वी. गेम शो से पुनः वे सुपर स्टार बन गए।

शनि, राहु तथा बृहस्पति उत्तम गोचरीय स्थिति में है। महादशा भी 2007 तक उत्तम है। मिथुन में शनि 2003 और 2004 में उन्हे सम्मान दिलाएगा। वे लेखन के क्षेत्र में प्रवेश करेंगे और प्रसिद्धि पाएंगे। अभी उन्हें बुध की महादशा चल रही है। बुध जो योग कारक होकर खड्डे मे पड़ा है, उच्च का है। **नीचभंग राजयोग** करके बैठा है। यह जीवन की सर्वश्रेष्ठ दशा है। इस दशा का प्रभाव वैसे तो 10.11.2007

तक रहेगा। परन्तु बुध में बृहस्पति का अन्तर जो कि 25.11.2002 को लगा है तथा 2 मार्च 2005 तक चलेगा, अत्यन्त समृद्धिदायक, धनदायक और सफलतादायक रहेगा। बृहस्पति जन्म कुण्डली मे उच्च का है। इस अतर्दशा के लगते ही अमिताभ के सितारे शिखर छूने लगे।

अभिनेता शिवाजी गणेशन
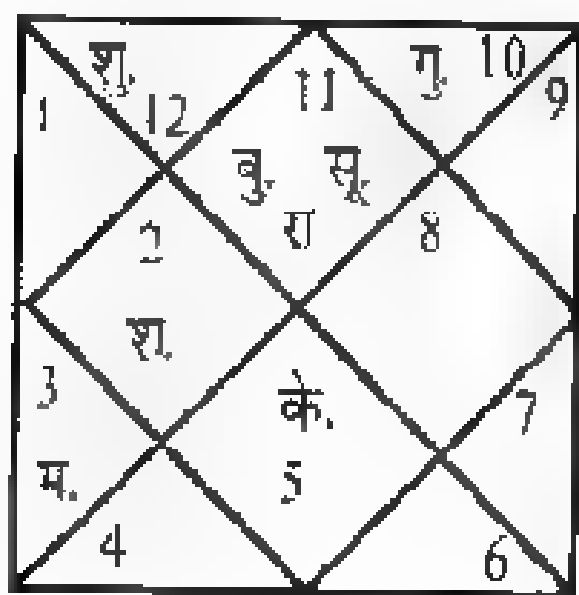
उच्च का शुक्र एव केन्द्रस्थ बुध ने इन्हें सुन्दर चेहरा मोहरा दिया। **'बुधादित्य योग'** के कारण इन्हें अपार कीर्ति मिली।

अनिल कपूर
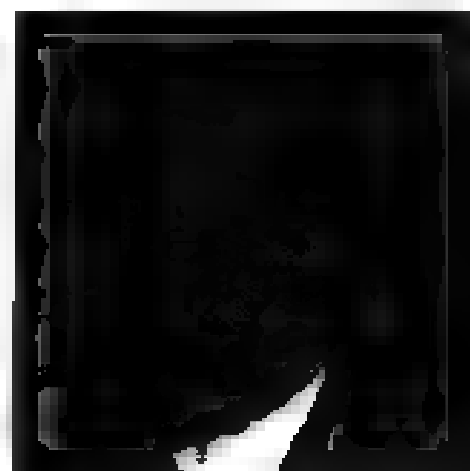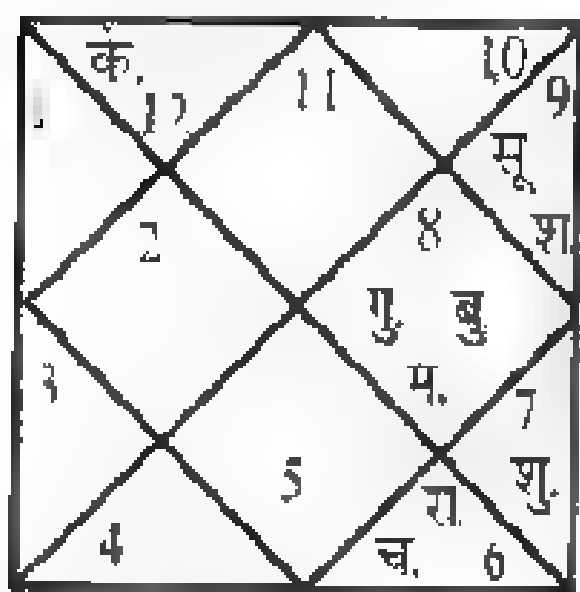
जन्म समय–24.12 1959, जन्म समय 12.00 दोपहर, जन्म स्थान चेम्बूर। अनिल कपूर की कुण्डली में भाग्य स्थान मे स्वगृही शुक्र उन्हें भाग्यशाली बनाया। अभिनय मे सफलता दी स्वगृही मगल केन्द्र में होने से **'रुचक योग'** बना, जिससे इनको राजातुल्य ऐश्वर्य एव पराक्रम की प्राप्ति हुई चद्रमा जहा **'विपरीत राजयोग'** बना रहा है। वहां **'कालसर्प योग'** के कारण इनके जीवन में गुप्त शत्रुओं का खतरा है।

कुन्दनलाल सहगल
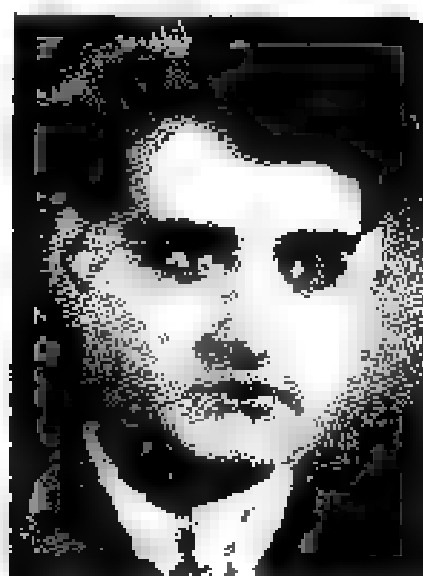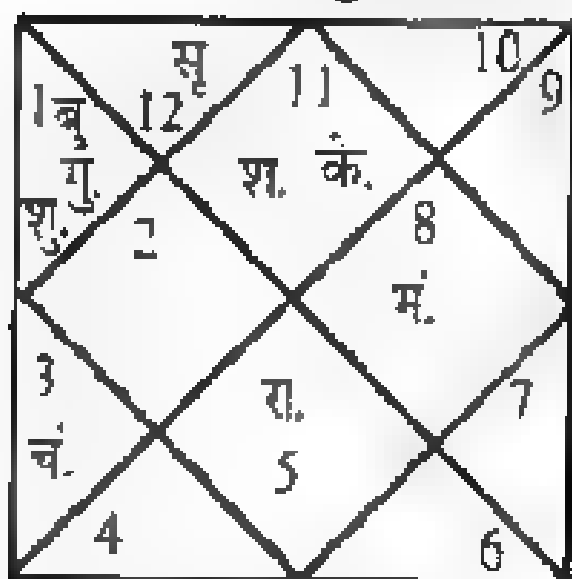
जन्म तिथि–11.4.1905, जन्म समय 05.21, जन्म स्थान–जालन्धर। श्री कुन्दन लाल सहगल के कुण्डली में लग्नस्थ शनि के कारण '**शश योग**' बना। मंगल के कारण '**रुचक योग**' बना ऐसा जातक परम पराक्रमी एवं भाग्यशाली होता है।

अभिनेता अशोक कुमार (दादा मुनि)
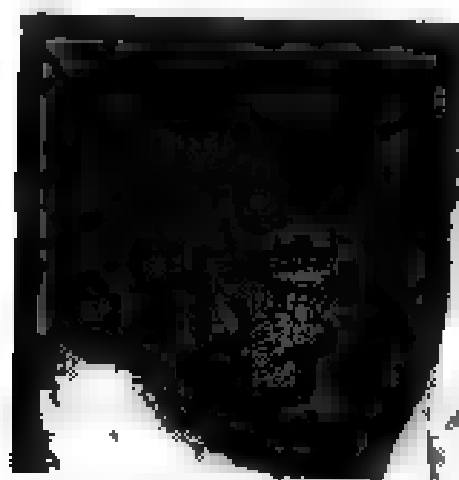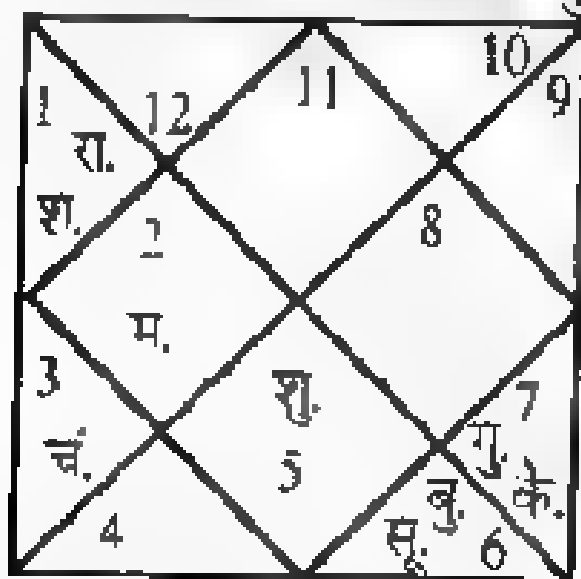
जन्म तिथि–13.11.1911, जन्म समय 14.55 सुबह जन्म स्थान–भागलपुर (बिहार)। अशोक कुमार फिल्मी दुनियां में दादमुनि के नाम से विख्यात हुए ये फिल्मी दुनियां में सबसे धनी व्यक्ति माने जाते थे और शायद सबसे लम्बी उम्र के व्यक्ति भी थे। इसका कारण धनेश बृहस्पति का भाग्य में होना। केन्द्रस्थ मंगल का होना भी है।

अभिनेत्री मधुबाला
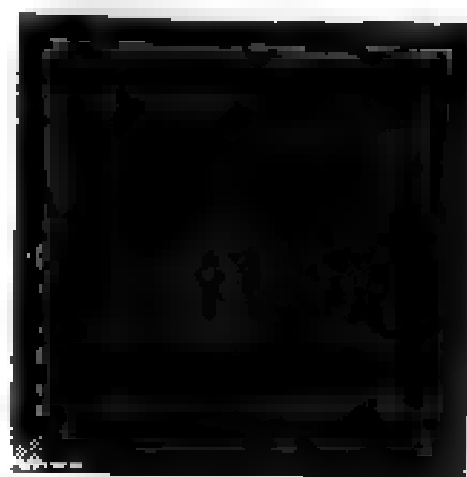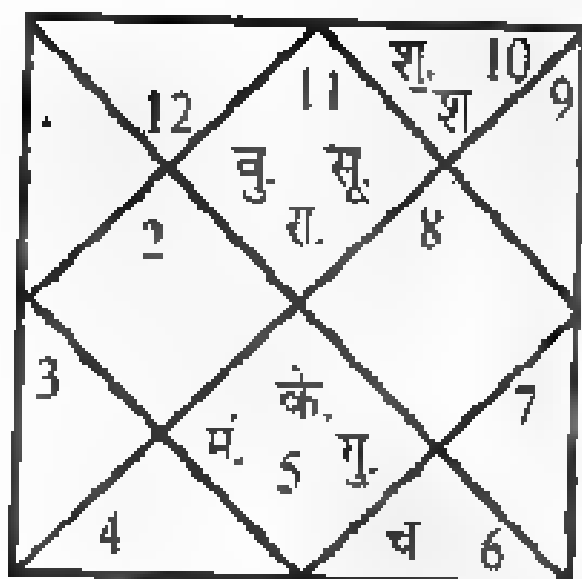
जन्म तिथि-14.2.1933 जन्म समय-5.30, जन्म स्थान दिल्ली। मधुबाला अपने जमाने की मशहूर हिरोइन रही। बृहस्पति केन्द्र में मंगल केन्द्र में **'कुलदीपक योग'**, **'केसरी योग'** बना रहा है। सूर्य, बुध युति के कारण **'बुधादित्य योग'** बना। शनि स्वगृही द्वादश में होने से **'विमल नामक विपरीत राजयोग'** भी बना।

फिल्म अभिनेत्री काजोल
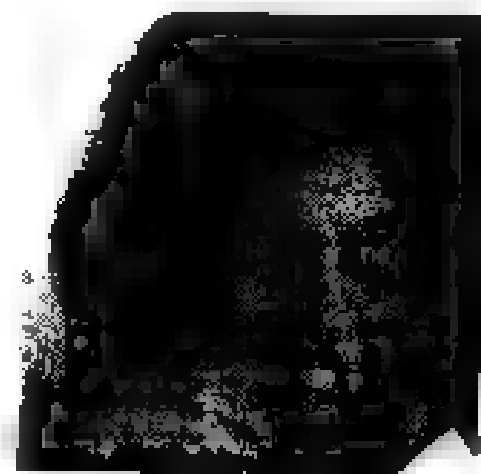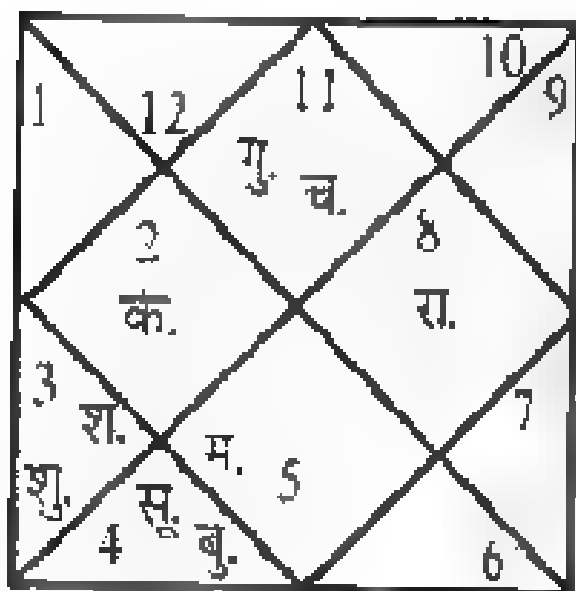
जन्म तिथि-5.8.1974, जन्म स्थान-मुम्बई। लग्न में **'गजकेसरी योग'** के कारण भाग्योदय हुआ। किस्मत चमकी। पंचमस्थ शुक्र ने काजोल को अभिनय के क्षेत्र में सफलता दी।

अभिनेत्री रवीना टण्डन
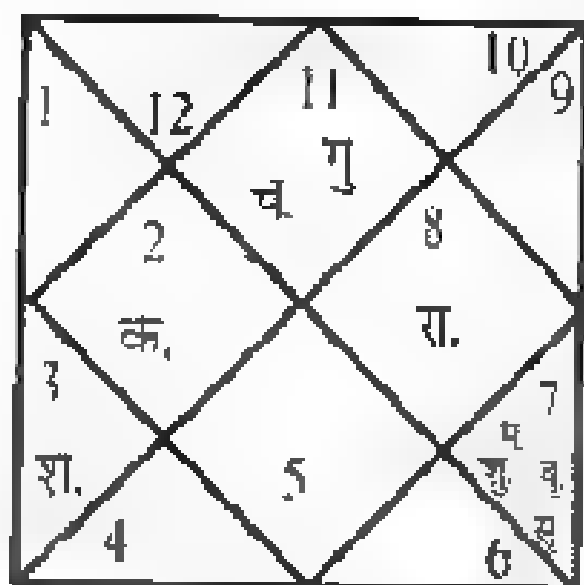
जन्म तिथि-27.10.1974, जन्म स्थान-मुम्बई। लग्न में **'गजकेसरी योग'** काजोल एवं रवीना टण्डन का एक समान है। जिसके कारण रवीना फिल्म लाईन में चमकी भाग्य में **'नीचभंग राजयोग'** एवं **'चतुर्ग्रह युति'** ने रवीना के किस्मत का पलड़ा बहुत भारी है।

D. चर्चित व्यक्तित्व

विश्वनाथ आनन्द
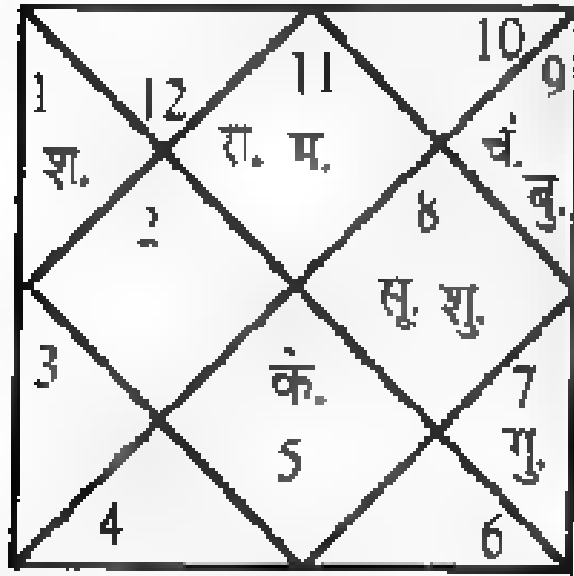
जन्म तिथि-11.12.1969, जन्म समय-12.00, जन्म स्थान-चेन्नई। लग्न में मंगल के कारण इनकी प्रतिभा चमकी। धनेश भाग्य स्थान में लग्नेश शनि पराक्रम स्थान में शनि एवं बृहस्पति का परस्पर दृष्टि संबंध ने इन्हें उच्च पद पर पहुंचाया।

स्टेफी ग्राफ (टेनिस की रानी)
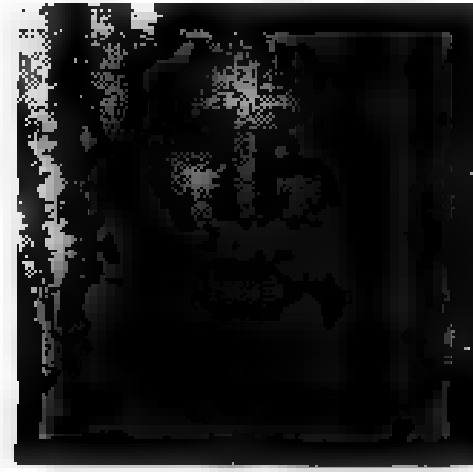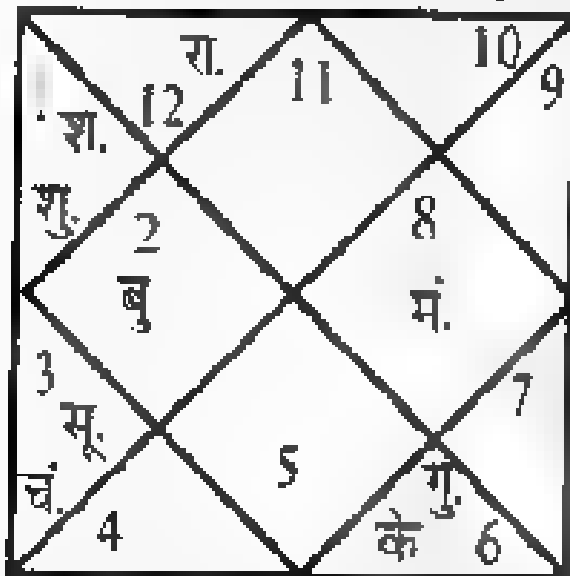
जन्म तिथि 14.6.1969 जन्म समय-22.50, जन्म स्थान बर्लिन (प. जर्मनी)। यहां मंगल के कारण **'रुचक योग'** बना। **'कुलदीपक योग'** बना। जिससे ये खेल की दुनिया में चमकी। राजयोग कारक शुक्र ने पराक्रम स्थान में जाकर स्टेफी ग्राफ का पराक्रम बढ़ाया। जनसम्पर्क बढ़ाया।

पी.टी. ऊषा (उडन परी) प्रसिद्ध धावक
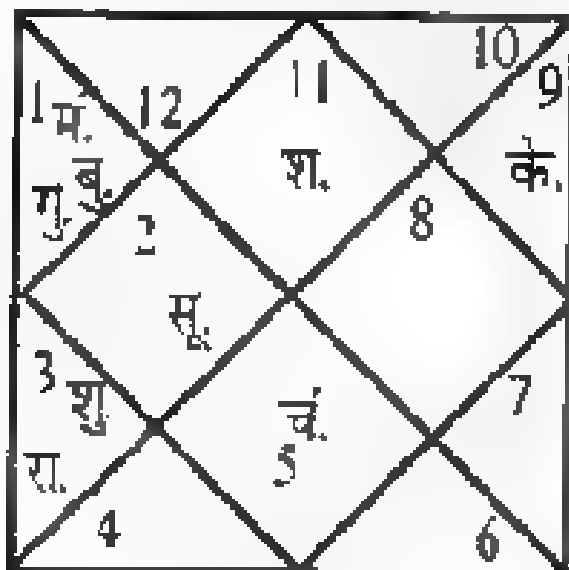
जन्म तिथि 20.5.1964, जन्म समय 01.00, जन्म स्थान-कालीकट। दशमेश मंगल पराक्रम स्थान में स्वगृही होने से पराक्रम बढ़ा। जनसम्पर्क बढ़ा। लग्न में स्थित स्वगृही शनि ने 'शश योग' बनाकर इन्हें ओलम्पिक व एशिया खेलो में स्वर्ण पदक दिलाया।

श्री के. एन. अग्रवाल (उद्योगपति, इजिप्ट)
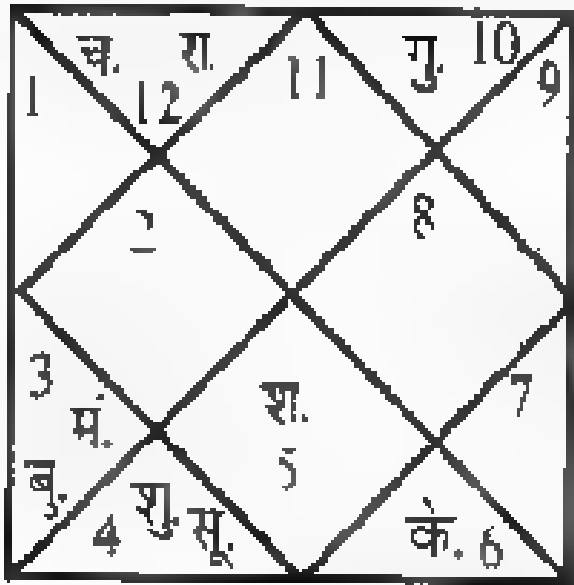
जन्म तिथि 17.7.1945, जन्म समय 22 11, जन्म स्थान-जयपुर। शनि केन्द्रस्थ होकर लग्न को देखने से **'लग्नाधिपति योग'** बना पंचम भाव में मंगल, बुध उत्तम संतति योग बना रहा है। बृहस्पति द्वादश स्थान में विदेश से धन अर्जित के योग बना रहा है।

धेवरचन्द्र कानूगा (उद्योगपति)
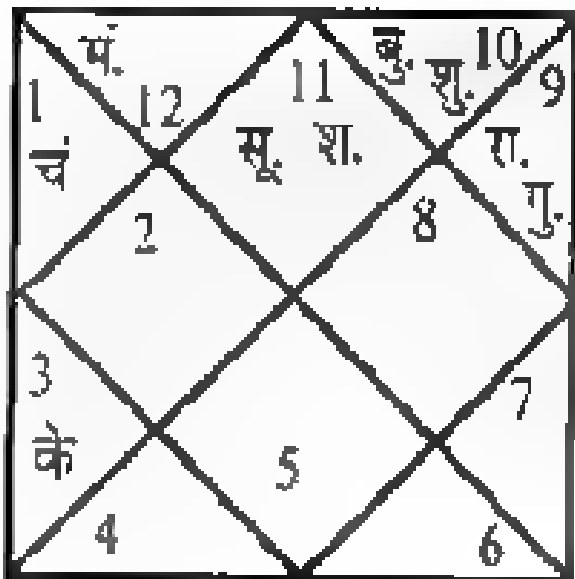
शनिलग्न में होने से **'शश योग'** बना रहा है। धनेश बृहस्पति स्वगृही होने से उद्योग में जबरदस्त लाभ देगा। जातक अरबपति है।

डॉ. मोहनलाल आसदेव
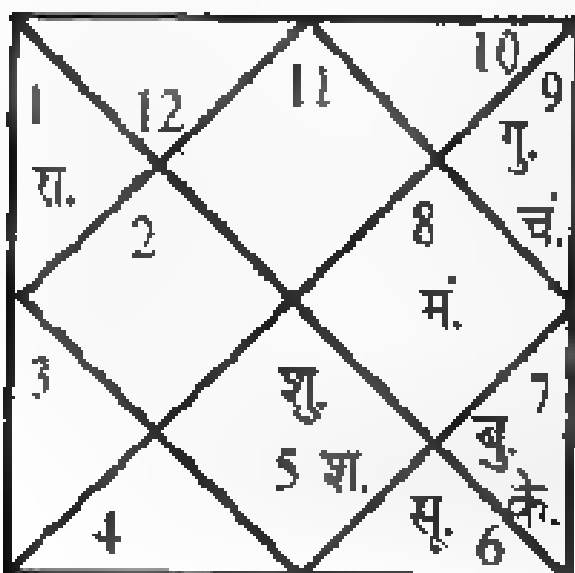
जन्म तिथि-8.10.1948, जन्म समय-16.00, जन्म स्थान फलौदी। यहां सप्तमेश सूर्य आठवे होने से जातक को विवाह सुख नहीं मिला। सप्तम भाव में शनि व शुक्र ने दो विवाह के योग बनाता है। पर किसी से सुख नहीं। मंगल दशम स्थान में **'रुचक नामक राजयोग'** दे रहा है। जातक उच्च सरकारी पद पर कार्यरत है। **'गजकेसरी योग'** भी लाभस्था में सुखद है।

श्रीमती सुलोचना भारती
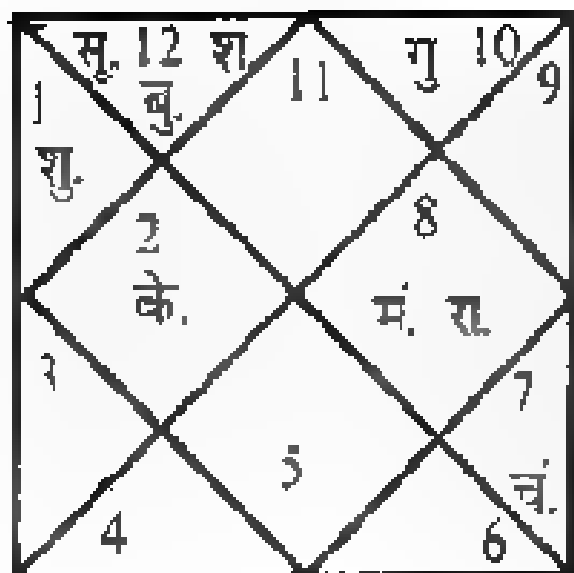
जन्म तिथि-29.3.1937, जन्म समय-5.10, जन्म स्थान जोधपुर। धन स्थान में **'बुधादित्य योग'** होने से पिता का घर शक्तिशाली एवं प्रभावशाली धनेश बृहस्पति बारहवें होने से व्यक्तिगत जीवन में धन हेतु संघर्ष रहेगा। मंगल केन्द्र में **'रुचक योग'** बना रहा है। फलतः बड़ी भू सम्पत्ति का योग बनाता है। मंगल साथ राहु होने से भू सम्पत्ति के उपयोग में विवाद रहेगा।

पुष्पेन्द्र व्यास (मजिस्ट्रेट)
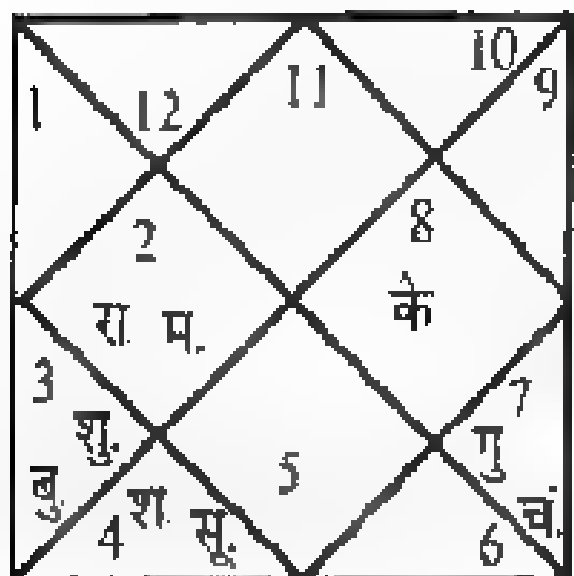
जन्म तिथि-24 7.1947, जन्म समय-20.45, जन्म स्थान सोजत बृहस्पति, चंद्र की युति में **'गजकेसरी योग'** बना। सूर्य+शनि की युति से पिता की मृत्यु के बाद जातक का भाग्योदय हुआ।

पुरुषोत्तम मिर्धा (सेशन जज)
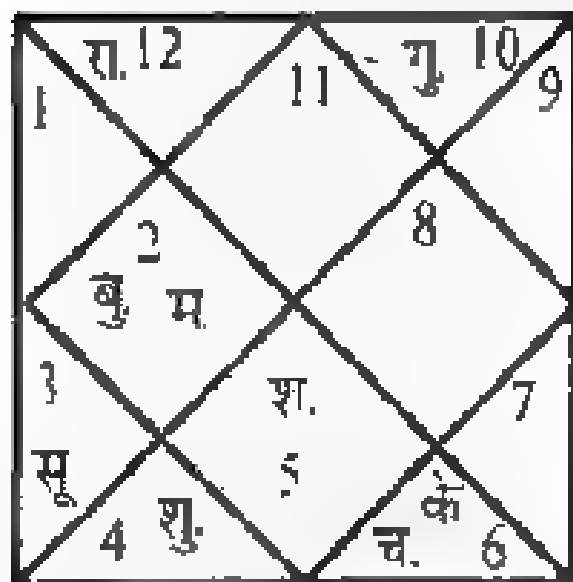
जन्म तिथि-3.7.1949, जन्म समय-22.0, जन्म स्थान-जोधपुर। केन्द्रस्थ मंगल ने राजयोग दिया। धनेश बृहस्पति बारहवें होने से धन प्राप्ति हेतु संघर्ष रहा, चंद्रमा ने **'हर्ष नामक विपरीत राजयोग'** बनाकर जातक को सेशन जज का पद व प्रतिष्ठा दी।

सर्वेश्वर भारती
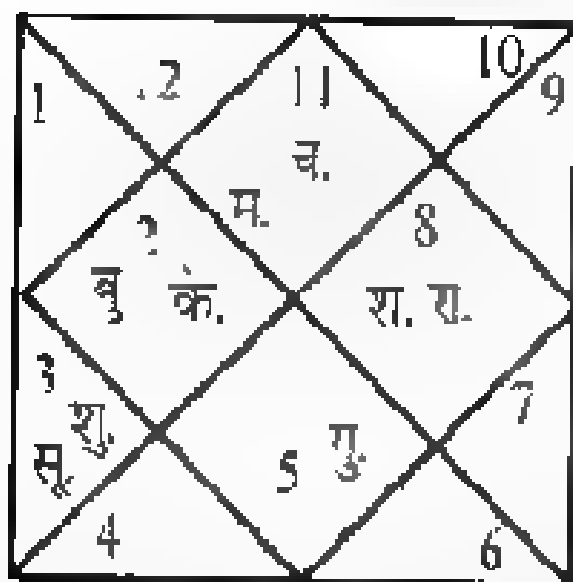
जन्म तिथि-29.6.1956, जन्म समय 23.28, जन्म स्थान-जोधपुर। सप्तमेश सूर्य शत्रुग्रह शुक्र के साथ होने से जातक को वैवाहिक सुख नहीं है। पंचम भाव में परस्पर शत्रुग्रहों की युति विद्या में बाधक रही। चंद्रमा केन्द्र में बृहस्पति केन्द्र में माता-पिता का पूर्ण सुख दे रहा है।

कैलाशचन्द्र श्रीमाली (सहायक कमिश्नर आयकर)
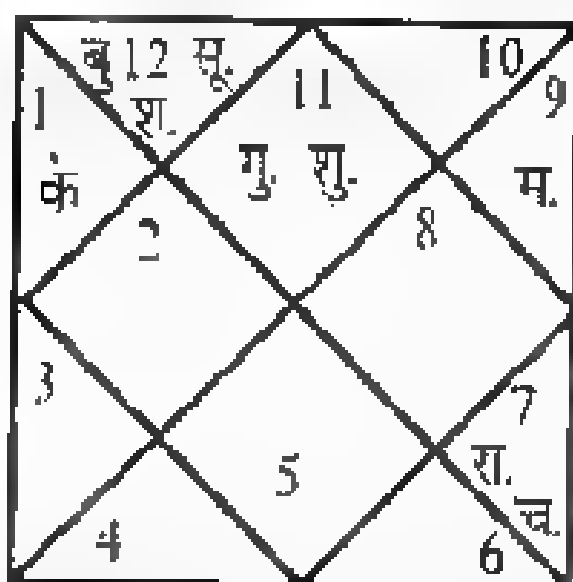
जन्म तिथि-7.4.1939, जन्म समय 04.00, जन्म स्थान उदयपुर। लग्नस्थ शुक्र व बृहस्पति ने इस कुण्डली को शानदार राजयोग दिया। धनस्थान में सूर्य-बुध की युति ने 'बुधादित्य योग' बनाया जातक को विपुल धन दिया, प्रतिष्ठा दी।

श्री माधवकान्त मिश्र (पत्रकार, साधना चैनल)
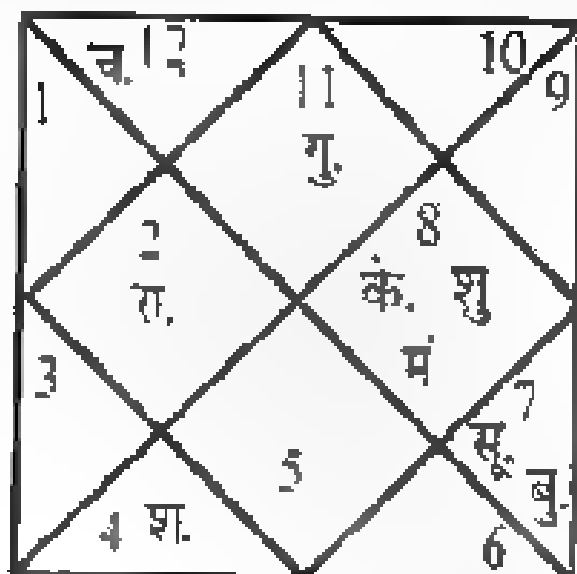
केन्द्र में मंगल 'रुचक योग' बना रहा है। जिसके जातक सदैव प्रभावशाली पद पर रहा। लग्न में बृहस्पति बुद्धि धार्मिक बना रहा है। द्वितीय स्थान में चंद्रमा जातक को मीठी व मधुर वाणी दे रहा है। लग्नेश शनि छठे होने से आर्थिक विषमताओं से संघर्ष दे रहा है।

श्री मनोहरश्याम जोशी (पत्रकार स. साप्ताहिक हिन्दुस्तान)
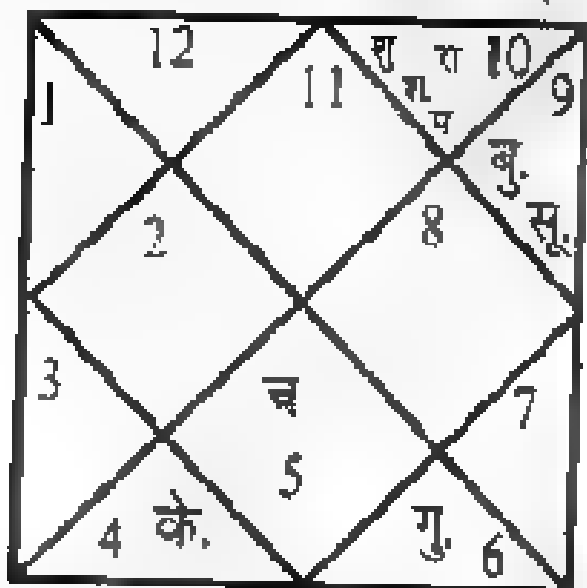
जन्म तिथि–5.1.1934, जन्म समय–10.30, जन्म स्थान–दिल्ली। द्वादश स्थान में मंगल व शनि के कारण **'नीचभंग राजयोग'** बना। **'बुधादित्य योग'** लाभ स्थान में होने के कारण पत्रकार जगत में कीर्ति मिलेगी।

वीर जुगराज बोहरा
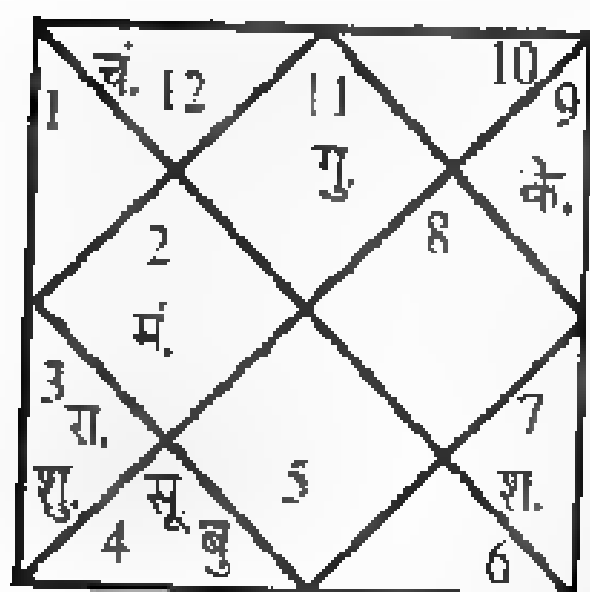
जन्म तिथि–30.7.1926, जन्म समय–21.00, जन्म स्थान–जोधपुर। लग्न में 'बृहस्पति' ने सुन्दर शरीर दिया। लग्नेश शनि भाग्यभवन में उच्च का होने से पुष्ट, गठीला व निरोगी शरीर दिया। सप्तमेश सूर्य छठे होने से जातक आजीवक कुंवारा रहा सूर्य+बुध की युति से बुधादित्य योग के कारण जातक पार्षद पद पर चुना गया।

श्रीमती इन्दिरा विश्नोई
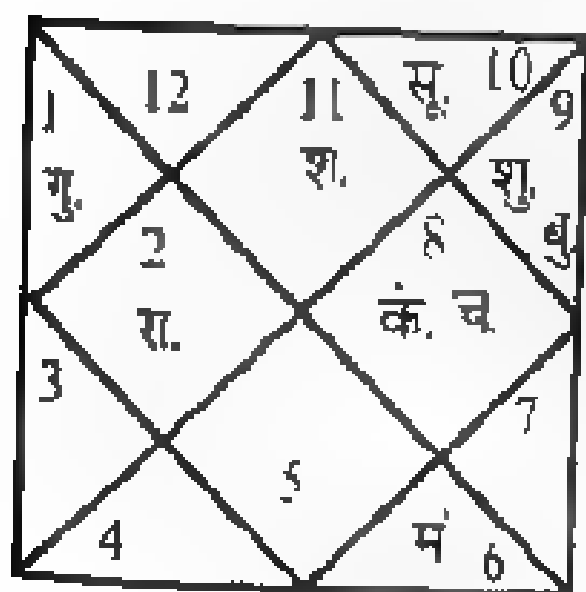
जन्म तिथि–26.1.1965, जन्म समय–9.15, जन्म स्थान–जोधपुर। लग्न में शनि स्वगृही होने से 'शशयोग' बना। सप्तमेश सूर्य बारहवे होने से विवाहसुख मध्यम। पंचमेश बुध की दृष्टि पंचम भाव पर होने से पुत्र व कन्या संतति का पूर्ण सुख है।

श्री जबरदत्त बोहरा (पार्षद)

जन्म तिथि-12.11.1930, जन्म समय-13.45, जन्म स्थान-जोधपुर केन्द्रस्थ शुक्र ने '**कुलदीपक योग**' बनाकर इन्हें पार्षद पद पर विजयी बनाया। सूर्य, बुध की युति से '**बुधादित्य योग**' बना। मंगल+चंद्र ने '**लक्ष्मीयोग**' पूर्ण बनाया।

अनिल कुमार सक्सेना (सेशन जज)

जन्म तिथि 4.3.1950, जन्म समय 5.30, जन्म स्थान--नसीराबाद (अजमेर)। सूर्य-बुध की युति से बने '**बुधादित्य योग**' ने इन्हें राजयोग दिया व सेसन जज बनाया।

श्री एम.सी. भण्डारी (अध्यक्ष भारत निर्माण)

जन्म तिथि 19.11.1935, जन्म समय-12.54, जन्म स्थान-खाटू (जोधपुर)। बृहस्पति केन्द्र में होने से '**कुलदीपक योग**' बना। '**केसरी योग**' बना। शनि लग्नस्थ होने के कारण '**शश योग**' बना। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होता है। श्री एम.सी. भण्डारी ऐसे ही पराक्रमी व्यक्ति थे उन्होंने ज्योतिष के क्षेत्र में 'भारत निर्माण' संस्था के मध्यम से बहुत कार्य किया।

❑❑❑

मीन लग्नफल

अनुक्रमणिका

पुस्तक परिचय

गणित एवं फलित ज्योतिषशास्त्र के दोनों ही पक्षों में 'लग्न' का बड़ा महत्त्व है। ज्योतिष में लग्न को **'बीज'** कहा है। इसी पर फलित ज्योतिष का सारा भवन, विशाल वटवृक्ष खड़ा है। ज्योतिष में गणित की समस्या को कम्प्यूटर ने समाप्त कर दिया परन्तु फलादेश की विकटता ज्यों की त्यों मौजूद है। बिना सही फलादेश के ज्योतिष की स्थिति निर्गन्ध पुष्प के समान है। कई बार विद्वान् व्यक्ति भी, व्यावसायिक पण्डित भी, जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश करने से घबराते हैं, कतराते हैं। अतः इस कमी को दूर करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का लेखन प्रत्येक लग्न के हिसाब से अलग-अलग पुस्तकें लिख कर किया जा रहा है। ताकि फलित ज्योतिष क्षेत्र में एक नया मार्ग प्रशस्त हो सकें।

इस पुस्तक को लिखने का प्रयोजन फलादेश की दुनिया में एक बृहद् शोध कार्य है। प्रत्येक लग्न में एक एक ग्रह को भिन्न भिन्न भावों में घुमाया गया है। लग्न बारह हैं, ग्रह नौ हैं, फलतः 12 × 9 = 108 प्रकार की ग्रह स्थितियां एक लग्न में बनीं। बारह लग्नों में 108 × 12 = 1296 प्रकार की ग्रह-स्थितियां बनी। प्रत्येक ग्रह की दृष्टियों को तीर द्वारा चित्रित कर, उनके फलादेशों पर भी व्यापक प्रकाश, इन पुस्तकों में डाला गया है। निश्चय ही यह बृहत् स्तरीय शोधकार्य है। जिसका ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

एक और बड़ा कार्य जो ज्योतिष की दुनिया में आज तक नहीं हुआ वह है– **'संयुक्त दो ग्रहों की युति पर फलादेश।'** वैसे तो साधारण वाक्य दो ग्रह, तीन ग्रह, चतुग्रह, पंचग्रह युति पर मिलते हैं पर ये युतियां कौन-सी राशि में हैं? किस लग्न में हैं? और कहां किस भाव (घर) में हैं? इस पर कोई विचार कहीं भी नहीं किया गया!!! फलतः ज्योतिष का फलादेश कच्चा का कच्चा ही रह गया। इस पुस्तक की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि प्रत्येक लग्न में चलायमान ग्रह की अन्य दूसरे ग्रह की युति होने पर, उस पर भी विचार किया गया है। इस प्रकार से 108 ग्रह स्थितियों को पुनः नौ ग्रहों की भिन्न भिन्न युति से जोड़ा जाये तो एक लग्न में 972 प्रकार की **द्वि–ग्रह स्थितियां बनेंगी तथा बारह लग्न में 972 × 12 = 11664**

प्रकार की द्वि ग्रह युतियां बनेंगी। ग्यारह हजार छः सौ चौसठ प्रकार की द्विग्रह युतियों पर फलादेश, ज्योतिष की दुनिया में पहली बार लिखा गया है। इसलिए फलादेश की दुनियां में ये पुस्तकें मील का पत्थर साबित होंगी। यही कारण है इन किताबों का जोरदार स्वागत सर्वत्र हो रहा है।

एक छोटा-सा उदाहरण हम 'गजकेसरी योग', 'बुधादित्य योग' अथवा 'चंद्रमंगललक्ष्मी योग' का ले सकते हैं। क्या गुरु-चन्द्र की युति से बना गजकेसरी योग सदैव एक-सा ही फल देगा? ज्योतिष की संख्यात्मक गणित एवं फलित से जुड़ी दोनों ही विधियां इसका नकारात्मक उत्तर देंगी!!! गजकेसरी योग का फल किसी भी हालत में सदैव एक सा नहीं होगा? गजकेसरी योग की बारह लग्नों मे बारह प्रकार की स्थितियां, अर्थात् कुल 144 प्रकार की स्थितियां बनेगी। अकेला गजकेसरी योग 144 प्रकार का होगा और सबके फलादेश भी अलग-अलग प्रकार के होंगे। गजकेसरी योग की सर्वोत्तम स्थिति 'मीनलग्न' या 'कर्कलग्न' के प्रथम स्थान में होती है। इसकी निकृष्टतम स्थिति 'तुलालग्न', 'मकरलग्न' या 'कुम्भलग्न' में देखी जा सकती है। यदि मकरलग्न में गजकेसरी योग छठे स्थान या आठवें स्थान में है तो जातक की पत्नी दूसरो के साथ भाग जायेगी। जातक का पराक्रम भंग होगा क्योंकि पराक्रमेश व खर्चेश होकर गुरु छठे, आठवें एवं सप्तमेश होकर चन्द्रमा छठे-आठवे होने से गृहस्थ सुख भंग हो जायेगा। अतः यदि प्रबुद्ध पाठक ने फलादेश के इस सूक्ष्म भेद को नहीं जाना तो मुझे खेद है कि उन्होंने फलादेश की सत्यता, सार्थकता व उपादेयता को नहीं पहचाना। मैने पाराशर लाईट प्रोग्राम (ज्योतिष सॉफ्टवेयर) में इसी प्रकार के सभी योगों का समावेश किया है। जिसका अब तक ज्योतिष की दुनिया में नितान्त अभाव था।

'मेषलग्न' एवं 'कर्कलग्न' की पुस्तकें अक्टूबर में तथा 'वृषलग्न' एवं 'तुलालग्न' नवम्बर 2003 में प्रकाशित होकर सर्वत्र वितरित हो चुकी हैं। जिसका ज्योतिष की दुनिया में जोरदार स्वागत हुआ। अब यह 'मीनलग्न' की पुस्तक पाठकों के हाथों में सौंपते हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है। मीनलग्न में मां आनन्दमयी, सन्त तुकाराम, स्वामीरामतीर्थ परमहंस, विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर, पूर्वगृहमंत्री बूटासिंह, मुख्यमंत्री भजनलाल, राजकुमारी मार्गरेट, राजनेता बाबू जगजीवनराम, रोबर्ट कैनेडी, किंग जार्ज पंचम, सुधाकर राव नायक, आइजन हावर जैसे व्यक्तित्व इस लग्न में हुए। मीनलग्न की इस हिन्दी पुस्तक का अंग्रेजी व गुजराती संस्करण भी शीघ्र प्रकाशित होगा। मीनलग्न की स्त्री जातक पर हम अलग से पुस्तक लिखकर अलग प्रकार के फलादेश देने का प्रयास कर रहे हैं।

इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता अंशात्मक फलादेश है। लग्न की Zero Degree से लेकर तीस (30°) अंशों तक के भिन्न-भिन्न फलादेश की नई तकनीक का प्रयोग विश्व में पहली बार हुआ है। यह प्रयोग 18 विभिन्न आयामो में प्रस्तुत

किया गया है। जरूरी नही है कि यह फलादेश सत्य हो, फिर भी हमने शास्त्रीय धरातल के आधार पर कुछ नया करने का एक विनम्र प्रयास किया है। जिस पर अविरल अनुसधान की आवश्यकता है।

एक और बड़ा फायदा इन पुस्तकों के माध्यम से ज्योतिष प्रेमियो को यह है कि संधिगत लग्न में प्राय: दो जन्मकुण्डलियों के बीच व्यक्ति दिग्भ्रमित हो जाता है? कई बार एक जातक की दो तीन प्रकार की कुण्डलियों मे भी व्यक्ति भ्रमित हो जाता है? किसे सही माने? ऐसा व्यक्ति प्राय: भिन्न भिन्न ज्योतिषियों के पास जाता है और भिन्न भिन्न बातों से, फलादेश से व्यक्ति पूर्णत: Confused हो जाता है। ऐसे मे यह पुस्तक एक दीप शिखा का कार्य करेगी। आप प्रत्येक कुण्डली को लग्न के हिसाब से अलग अलग भावो की ग्रहस्थिति जन्य कसौटी पर कस कर देखे। आपको स्वत: ही सही रास्ता मिल जायेगा। आपको पता चल जायेगा कि आपकी सही जन्मकुण्डली, सही लग्न कौन सा है? यदि आपको इस प्रकार के सकट से मुक्ति मिलती है तो हम समझेंगे कि हमारा परिश्रम सार्थक हो गया।

इस प्रकार के प्रयासो से आम, आदमी अपनी जन्मपत्री स्वय पढ़कर एवं अपने इष्ट मित्रो की जन्मकुण्डली पर शास्त्रीय फलादेश कर सकता है। प्रत्येक दिन रात में आकाश में बारह लग्नो का उदय होता है। एक लग्न लगभग दो घटे का होता है। जन्म लग्न (जन्म समय) को लेकर जन्मपत्रिका के शास्त्रीय फलादेश को जानने व समझने की दिशा में उठाया गया, यह पहला कदम है। आशा है, ज्योतिष की दुनिया में इसका जोरदार स्वागत होगा। प्रबुद्ध पाठकों के लगातार आग्रह पर गणित व फलित ज्योतिष पर एक सारगर्भित सॉफ्टवेयर का प्रोग्राम 'सृष्टि' के नाम से भी बना रहे हैं जो अब तक के प्रचारित सभी सॉफ्टवेयर में अनुपम व अद्वितीय होगा। यदि प्रबुद्ध पाठकों का स्नेह अविरल सम्बल इसी प्रकार मिलता रहा, तो शीघ्र ही फलित ज्योतिष में नई क्रान्ति इस सॉफ्टवेयर के माध्यम से सम्पूर्ण संसार में आयेगी। पुस्तक के अन्त में दी गई 'दृष्टान्त लग्न कुण्डलियों' से इस पुस्तक का व्यावहारिक महत्त्व कई गुना बढ़ गया है। यह एक अकाट्य सत्य है कि अपने जन्म लग्न पर फलादेश करने में प्रत्येक ज्योतिष प्रेमी 'मास्टर' होता है। आपने इस पुस्तक के माध्यम से क्या पाया और आपके अनुभव के खजाने में और क्या अवशेष ज्ञान बचा है? इसको पुस्तक के अन्तिम दो खाली पृष्ठों में लिखें। अनुभवों को लिपिबद्ध करें और हमें भी अपने अनुभवों से परिचित कराएं। हमें आपके पत्रों की प्रतीक्षा रहेगी परन्तु टिकट लगा, पता टाइप किया हुआ जवाबी लिफाफा, पत्रोत्तर पाने की दिशा में आपका पहला सार्थक कदम होगा।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

लेखक परिचय

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वास्तुशास्त्री एवं ज्योतिषाचार्य डॉ. भोजराज द्विवेदी कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं। इन्टरनेशनल वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष डॉ भोजराज द्विवेदी की यशस्वी लेखनी से रचित ज्योतिष, वास्तुशास्त्र, हस्तरेखा अंकविद्या, आकृति विज्ञान, यंत्र-तंत्र-मंत्र विज्ञान, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य पर लगभग 250 से अधिक पुस्तकें देश विदेश की अनेक भाषाओं मे पढ़ी जाती है। फलित ज्योतिष के क्षेत्र में अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) के माध्यम से इनकी 3000 से अधिक राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की भविष्यवाणिया पूर्व प्रकाशित होकर समय चक्र के साथ साथ चलकर सत्य प्रमाणित हो चुकी हैं।

4 सितम्बर 1949 को "कर्कलग्न" के अन्तर्गत जन्मे डॉ. भोजराज द्विवेदी सन् 1977 से अज्ञातदर्शन (पाक्षिक) एवं श्रीचण्डमार्तण्ड (वार्षिक) का नियमित प्रकाशन व सम्पादन 26 वर्षों से करते चले आ रहे हैं। डॉ. द्विवेदी को अनेक स्वर्णपदक व सैकड़ों मानद उपाधिया अनेक सम्मेलनो के माध्यम से प्राप्त हो चुकी हैं। इनकी संस्था के अन्तर्गत भारतीय प्राच्य विद्याओं पर अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय सम्मेलन देश विदेशो में हो चुके हैं तथा इनके द्वारा ज्योतिषशास्त्र, वास्तुशास्त्र, तंत्र-मंत्र, पौरोहित्य पर अनेक पाठ्यक्रम भी पत्राचार द्वारा चलाये जा रहे हैं। जिनकी शाखाए देश-विदेश में फैल चुकी हैं तथा इनके द्वारा दीक्षित व शिक्षित हजारों शिष्य इन दिव्य विद्याओं का प्रचार प्रसार कर रहे हैं। भारतीय प्राच्य विद्याओ के उत्थान में समर्पित भाव से जो काम डॉ. द्विवेदी कर रहे है, वह एक साधारण व्यक्ति द्वारा सम्भव नहीं है वे इक्कीसवीं शताब्दी के तंत्र-मंत्र, वास्तुशास्त्र व ज्योतिष जगत् के तेजस्वी सूर्य है तथा कालजयी समय के अनमोल हस्ताक्षर हैं, जो कि युग पुरुष के रूप में याद किए जाएंगे। इनसे जुड़ना इनकी संस्था का सदस्य बनना आम लोगों के लिए बहुत बड़े गौरव व सम्मान की बात है।

ज्योतिष शास्त्र की उपयोगिता एवं महत्त्व

नारदीयम् में सिद्धांत, संहिता व होरा इन तीन भागों मे विभाजित ज्योतिष शास्त्र को वेदभगवान का निर्मल (पवित्र) नेत्र कहा है।[1] पाणिनि काल से ही ज्योतिष की गणना वेद के प्रमुख छः अंगों में की जाने लगी थी।[2]

'वेदांग ज्योतिष' नामक बहुचर्चित व प्राचीन ग्रंथ हमें प्राप्त होता है जिसके रचनाकार ने ज्योतिष को काल विधायक शास्त्र बतलाया है, साथ में कहा है कि जो ज्योतिष शास्त्र को जानता है वह यज्ञ को भी जानता है।[3] छः वेदांगों में से ज्योतिष मयूर की शिखा व नाग की मणि के समान महत्त्व को धारण किए हुए वेदांगों में मूर्धन्य स्थान को प्राप्त है।[4]

कालज्ञान की महत्ता को स्वीकार करते हुए कालज्ञ, त्रिकालज्ञ त्रिकालविद्, त्रिकालदर्शी व सर्वज्ञ शब्दो का प्रयोग ज्योतिष के लिए किया गया है[5] स्वयं सायणाचार्य ने '**ऋग्वेदभाष्यभूमिका**' में लिखा है कि ज्योतिष का मुख्य प्रयोजन अनुष्ठेय यज्ञ के उचित काल का सशोधन है।[6] उदाहरणार्थ 'कृतिका नक्षत्र' में अग्नि का आधान करे।[7] कृतिका नक्षत्र मे अग्नि का आधान ज्योतिष संबंधी ज्ञान के बिना

---

1. सिद्धांत संहिता होरा रूप स्कन्ध त्रयात्मकम्।
   वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।। इति नारदीयम् (शब्दकल्पद्रुम) पृ. 550
2. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तो कल्पाऽथ पठ्यते।
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।। पाणिनी शिक्षा श्लोक/4।
   मुहूर्त चिन्तामणि मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी सन् 1972 (पृ. 7)
3. तस्मादिदं कालविधान शास्त्र, यो ज्योतिष वेद स वेद यज्ञम् फ. ज्यो. वि. बृ. समीक्षा, पृ. 4
4. यथा शिखा मयूराणा नागाना मणयो यथा तद्वद्वेदांगशास्त्राणा ज्योतिषं मूर्धनि संस्थितम्
   –इति वेदांग ज्योतिषम् 'शब्दकल्पद्रुम' (पृ. 550)
5. शब्द कल्पद्रुम, पृ. 655
6. वेद व्रतमीमांसक "ज्योतिर्षविवेक (पृ. 4) गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक सन् 1976
7. कृतिकास्वाग्निमाधीत- तैत्तरीय ब्राह्मण 1/1/2/1

सभव नही। इसी प्रकार से एकाष्टका में दीक्षा को प्राप्त होए, फाल्गुण पौर्णमास में दीक्षित होवे[1] इत्यादि अनेक श्रुति वचन मिलते हैं।

ज्योतिष के सम्यक् ज्ञान के बिना इन श्रुतिवाक्यों का समुचित पालन नहीं किया जा सकता अतः वेद के अध्ययन के साथ-साथ ज्योतिष को वेदांग बतलाकर ऋषियों ने ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन पर पर्याप्त बल दिया।

ज्योतिष के ज्ञान की सबसे अधिक आवश्यकता कृषकों को पड़ती है क्योंकि वह जानना चाहता है कि पानी कब बरसेगा, खेतो में बीज कब बोना चाहिए? जमाना कैसे जाएगा? फसले कैसी होंगी। वगैरा वगैरा। हिन्दू षोडश संस्कार एवं यज्ञ- हवन, निश्चित काल, मुहूर्त मे ही किए जाते हैं श्रुति कहती है।

ते असुरा अयज्ञा अदक्षिणा अनक्षत्राः।
यच्च्य किंचत् कुर्वंत सतां कृत्यामेवा कुर्वत॥1॥[2]

अर्थात् वे यज्ञ जो करणीय हैं, वे कालानुसार (निश्चित मुहूर्त पर) न करने से देवरहित, दक्षिणा रहित, नक्षत्र रहित हो जाते हैं।

ज्योतिष से अत्यन्त स्वार्थिक अर्थ मे अच् (अ) प्रत्यय-लगाकर ज्योतिष शब्द निष्पन्न हुआ, अच् प्रत्यय लगने से यह ज्योतिष शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है।

द्युत् + इस् (इसिन्)
ज्युत + इस् =ज्योत् + इस्
ज्योतिस्

मेदिनी कोष के अनुसार "ज्योतिष" सकारान्त नपुंसक लिंग मे 'नक्षत्र' अर्थ में तथा पुल्लिग में अग्नि और प्रकाश अर्थ में प्रयुक्त होता है।

'ज्योतस्' में 'इनि' और 'ठक्' प्रत्यय लगा करके ज्योतिषी और ज्योतिषिकः तीनों शब्द व्युत्पन्न होते है। जो ज्योतिष शास्त्र का नियमित रूप से अध्ययन करें अथवा ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता हो वह ज्योतिषी, ज्योतिषिक, ज्यौतिषक, ज्योतिष शास्त्रज्ञ तथा दैवज्ञ कहलाता है।[3]

---

1. एकाष्टकामा दीक्षेरन् फाल्गुनीपूर्णमासे दीक्षेरन्-तैत्तरीय सहिता 6/4/8/1
2. फलित ज्योतिष विवेचनात्मक बृहत्पाराशर समीक्षा पृ. 4
3. ज्योतिषमग्नौ दिवाकरे 'पुमान्नपुसक दृष्टौ स्यान्नक्षत्र प्रकाशयोः इति मेदिनीकोष 1929, पृ स. 536
4. हलायुध कोश हिन्दी समिति लखनऊ सन् 1967 (पृ. स. 321)

शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'ज्योतिष' ज्योतिर्मय सूर्यादि ग्रहो की गति इत्यादि को लेकर लिखा गया वेदांग शास्त्र विशेष है अमरकोष की टीका में व्याकरणाचार्य भरत ने ग्रहों की गणना, ग्रहण इत्यादि प्रतिपाद्य विषयों वाले शास्त्र को ज्योतिष कहा है।[1]

हलायुधकोष में ज्योतिष के लिए सांवत्सर, गणक, दैवज्ञ, ज्योतिषिक, ज्यौतिषिक ज्योतिषी, ज्यौतिषी, मौहूर्तिक सांवत्सरिक शब्दों का प्रयोग हुआ है।[2]

वाचस्पत्यम् के अनुसार सूर्यादि ग्रहो की गति को जानने वाले तथा ज्योतिषशास्त्र का विधिपूर्वक अध्ययन करने वाले व्यक्ति को 'ज्योतिर्विद्' कहा गया है[3]

ज्योतिष की प्राचीनता

ज्योतिषशास्त्र कितना प्राचीन है, इसकी कोई निश्चित तिथि या सीमा स्थापित नहीं की जा सकती। यह बात निश्चित है कि जितना प्राचीन वेद है उतना ही प्राचीन ज्योतिषशास्त्र है। यद्यपि वेद कोई ज्योतिष की पुस्तक नही है तथापि ज्योतिष-सम्बन्धी अनेक गूढ़ तथ्यों व गणनाओ के बारे में विद्वानो में मत एक्यता का नितान्त अभाव है।

तारो का उदय अस्त प्राचीन (वैदिक) काल में भी देखा जाता था। तैत्तिरीय ब्राह्मण एवं शतपथ ब्राह्मण में ऐसे अनेक सकेत व सूचनाएं मिलती है। लोकमान्य तिलक ने अपनी पुस्तक **'ओरायन'** के पृष्ठ 18 पर ऋग्वेद का काल ईसा पूर्व 4500 हजार वर्ष बताया है।[4] वहीं प रघुनन्दन शर्मा ने अपनी पुस्तक **'वैदिक-सम्पत्ति'** में मृगशिरा मे हुए इसी वसन्तसम्पात को लेकर, तिलक महोदय की त्रुटियों का आकलन करते हुए अकाट्य तर्क के साथ प्रमाणपूर्वक कहा है कि ऋग्वेद काल ईसा से कम से कम 22,000 वर्ष प्राचीन है।[5]

भारतीय ज्योतिर्गणित एव वेध-सिद्धांतों का क्रमबद्ध सबसे प्राचीन एवं प्रामाणिक परिचय हमें **'वेदांग ज्योतिष'** नामक ग्रन्थ मे मिलता है[6] यह ग्रन्थ सम्भवतः ईसापूर्व 1200 का है।

---

1. शब्द कल्पद्रुम खण्ड 2 मोतीलाल बनारसीदास सन् 1961 पृ. स. 550
2. हलायुध कोश, हिन्दी समिति लखनऊ 1966 पृ. स. 703
3. वाचस्पत्यम् भाग 4, चौखम्बा सीरिज वाराणसी सन् 1962 पृ. 3162
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास, डॉ. गोरखप्रसाद (प्रकाशन 1974) उत्तर प्रदेश शासन लखनऊ, पृ. 10
5. वैदिक सम्पति प. रघुनन्दन शर्मा (प्रकाशन 1930) सेठ शूरजी वल्लभ प्रकाशन, कच्छ केसल, बम्बई, पृ. 90
6. छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते,
   ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते।
   शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम्,
   तस्मात्सागमधीत्यैव, ब्रह्म लोके महीयते -पाणिनीय शिक्षा, श्लोक 41-42

वस्तुतः फिर वे यज्ञ ही नहीं कहलाते ' इसलिए जो कुछ भी यज्ञादि (धार्मिक) कृत्य करना हो, उसे निर्दिष्ट कालानुसार ही करना चाहिए। कहा भी है–**यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान्**[2]

अतीतानागते काले, दानहोमजपादिकम् ।
ऊषरे वापित बीज, तद्वद्भवति निष्फलम् ॥2॥[3]

इस प्रकार से यह सिद्ध है कि ज्योतिष के बिना कालज्ञान का अभाव रहता है। कालज्ञान के बिना समस्त श्रौत्, स्मार्त कर्म गर्भाधान, जातकर्म, यज्ञोपवीत, विवाह इत्यादि संस्कार ऊसर जमीन में बोए गए बीज की भांति निष्फल हो जाते हैं। तिथि वार नक्षत्र, योग करण के ज्ञान के बिना तालाब, कुंआ, बगीचा, देवालय मन्दिर, श्राद्ध, पितृकर्म, व्रत अनुष्ठान, व्यापार, गृहप्रवेश प्रतिष्ठा इत्यादि कार्य नही हो सकते। अतः सभी वैदिक एवं लौकिक व्यवहारो की सार्थकता, सफलता के लिए ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य है.

अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि, विवादस्तेषु केवलम्।
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं, चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ॥3॥[4]

संसार मे जितने भी शास्त्र हैं वे केवल विवाद (शास्त्रार्थ) के विषय है अप्रत्यक्ष हैं, परन्तु ज्योतिष विज्ञान ही प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसकी साक्षी सूर्य और चन्द्रमा घूम घूम कर दे रहे है। सूर्य, चन्द्र ग्रहण, प्रत्येक दिन का सूर्योदय, सूर्यास्त चन्द्रोदय, चन्द्रास्त, ग्रहों की शृंगोन्नति, वध, गति, उदय अस्त इस शास्त्र की सत्यता एवं सार्थकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

ज्योतिश्चक्रे तु लोकस्य, सर्वस्योक्तं शुभाशुभम्।
ज्योतिर्ज्ञानं तु यो वेद, स याति परमां गतिम्॥4॥[5]

ज्योतिष चक्र ने संसार के लिए शुभ व अशुभ सारे काल बतलाए है, जो ज्योतिष के दिव्य ज्ञान को जानता है वह जन्म मरण से मुक्त होकर परमगति (स्वर्गलोक) को प्राप्त करता है। संसार में ज्ञान विज्ञान की जितनी भी विद्याए हैं, वह मनुष्य को ईश्वर की ओर नहीं मोड़तीं, उसे परमगति का आश्वासन नहीं देतीं,

---

1 Vedic Chronology and Vedanga Jyotisa &(Pub. 1925) Messrs Tilak Bross, Gaikwar Wada, POONA CITY, page 3
2. ज्योतिर्निबन्ध श्री शिवराज, (पृ 1919) आनन्दाश्रम मुद्रणालय पूना पृ 1
3. ज्योतिर्निबन्ध श्लोक (2) पृ. 2
4 जातकसार दीप चन्द्रशेखरन् (पृ. 9) मद्रास गवर्मेंट ओरियण्टल सीरिज मद्रास
5 शब्दकल्पद्रुम, द्वितीय खण्ड, पृ. 550

पर ज्योतिष अपने अध्येता को परमगति (मोक्ष) प्राप्ति की गारन्टी देता है। यह क्या कम महत्त्व की बात है।

अर्थार्जने सहायं पुरुषाणामापदर्णवे पोतः।

यात्रा समये मन्त्री जातकमपहाय नास्त्यपरः॥5॥[1]

ज्योतिष एक ऐसा दिलचस्प विज्ञान है जो कि जीवन की अनजान राहों में मित्र व शुभचिन्तकों की लम्बी शृंखला खड़ी कर देता है। इसके अध्येता को समाज व राष्ट्र में भारी धन, यश व प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जातक का ज्योतिषशास्त्र को छोड़कर कोई सच्चा मित्र मनुष्य का नहीं है। क्योंकि द्रव्योपार्जन में यह सहायता देता है, आपत्ति रूपी समुद्र में नौका का कार्य करता है तथा यात्रा काल मे सुहृदय मित्र की तरह सही सम्मति देता है। जनसम्पर्क बनाता है. स्वय वराहमिहिर कहते हैं कि देशकाल परिस्थिति को जानने वाला दैवज्ञ जो काम करता है, वह हजार हाथी और चार हजार घोड़े भी नहीं कर सकते।[2] यदि ज्योतिष न हो तो मुहूर्त, तिथि, नक्षत्र, ऋतु, अयन आदि सब विषय उलटपुलट हो जाए।[3] बृहत्संहिता की भूमिका में ही वराहमिहिर कहते हैं कि दीपहीन रात्रि और सूर्य हीन आकाश की तरह ज्योतिषी से हीन राजा शोभित नहीं होता, वह जीवन के दुर्गम मार्ग में अंधे की तरह भटकता रहता है।[4] अतः जय, यश, श्री, भोग और मंगल की इच्छा रखने वाले राजपुरुष को सदैव विद्वान् व श्रेष्ठ ज्योतिषी को अपने पास रखना चाहिए।[5]

ज्योतिषशास्त्र के साथ एक विडम्बना यह है कि यह शास्त्र जितना अधिक प्रचलित व प्रसिद्ध होता चला गया, अनधिकारी लोगों की संगत से यह शास्त्र उतना ही अधिक विवादास्पद होता चला गया। अनेक नास्तिकों, अनीश्वरवादी सज्जनों एवं कुतर्की विद्वानों ने अपने-अपने ढग से ज्योतिष विद्या पर क्रूरतम कठोर प्रहार किए। सत्य की निरन्तर खोज मे एव अनवरत अनुसधान परीक्षणो मे सलग्न भारतीय ऋषियों ने अपने आपको तिल तिल जलाकर, अपने प्राणों की आहुति देकर श्रुति परम्परा से इस दिव्य विद्या को जीवित रखा।

---

1. सुगम ज्योतिष-प. देवीदत्त जोशी (प्रकाशन-1992) मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, पृ. 17
2. बृहत्संहिता सावत्सर सूत्राध्याय 1/37
3. बृहत्संहिता सावत्सर सूत्राध्याय 1/24
4. अप्रदीपा यथा रात्रिरनादित्यं यथा नभः।
   तथा सावत्सरो राजा, भ्रमत्यन्ध इवाध्वनि॥-बृहत्संहिता, अ.1/24
5. बृहत्संहिता सावत्सर सूत्राध्याय 1/26

ज्योतिष वस्तुतः सूचनाओं और सम्भावनाओं का शास्त्र है। इसके उपयोग व महत्त्व को सही ढंग से समझने पर मानव जीवन और अधिक सफल व सार्थक हो सकता है। मान लीजिए ज्योतिष गणना के अनुसार अष्टमी की शाम को आठ बजे समुद्र में ज्वारभाटा आएगा। आपको पता चला तो आप अपना जहाज समुद्र मे नहीं उतारेंगे और करोड़ों रुपयों के जान व माल के नुकसान से बच जाएंगे यदि आपको पता नहीं है, तो बीच रास्ते में आप मारे जाएंगे। ज्योतिषी कहता है कि आज अमुक योग के कारण वर्षा होगी तो वर्षा तो होगी पर आपको पता है तो आप छाता तान कर चलेंगे, दुनिया अचानक बरसात के कारण तकलीफ में आ सकती है पर आपकी सावधानी से आप भीगेंगे नहीं।

ज्योतिष का उपयोग मनुष्य के दैनिक जीवन व दिनचर्या से जुड़ा हुआ है। मारक योग मे ऑपरेशन या तेज गति का वाहन न चलाकर व्यक्ति दुर्घटना से बच सकता है। ज्योतिष अंधेरे में प्रकाश की तरह मनुष्य की सहायता करता है। ज्योतिष संकेत देता है कि समय खराब है सोने में हाथ डालेगे, मिट्टी हो जाएगा, समय शुभ है तो मिट्टी में हाथ डालोगे, सोना हो जाएगी। मौसम विज्ञान की चेतावनी की तरह ज्योतिष का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि घड़ी की सुई के साथ साथ चल रहा मानव जीवन का प्रत्येक पल ज्योतिष से जुड़ा हुआ है। यह तो मानव मस्तिष्क एवं बुद्धि की विलक्षणता है कि आप किस विज्ञान से क्या व कितना ग्रहण कर पाते हैं।

सच तो यह है कठिनाई के क्षणों मे ज्योतिष विद्या मानवीय सभ्यता के लिए अमृत तुल्य उपादेय है। घोर कठिनाई के क्षणो मे, विपत्ति की घड़ियों में, या ऐसे समय में जब व्यक्ति के पुरुषार्थ एवं भौतिक संसाधनों का जोर नहीं चलता, तब व्यक्ति सीधा मन्दिर मस्जिद या गिरजाघरों में, या फिर सीधा किसी ज्योतिषी की शरण मे जाकर अपने दुःख दर्द की फरियाद करता है, प्रार्थनाएं करता है। मन्दिर मस्जिद और गिरजाघरों में पड़े निर्जीव पत्थर तो बोलते नही, पर ईश्वर की वाणी ज्योतिषी के मुखारविन्द से प्रस्फुटित होती है। ऐसे में इष्ट सिद्ध ज्योतिषी की जिम्मेदारी और अधिक बढ़ जाती है। भारत मे विद्वान ज्योतिषी हो और ब्राह्मण हो तो लोग उसे ईश्वर तुल्य सम्मान देते हैं। भविष्यवक्ता होना अलग बात है तथा ज्योतिषी होना दूसरी बात है। भारत में भविष्यवक्ता को उतना सम्मान नहीं मिलता जितना शास्त्र ज्ञाता ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को। स्वयं वराहमिहिर ने कहा है

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु, सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्।
ऋषिवत्तेऽपि पूज्यन्ते, किं पुनर्दैवविद् द्विजः॥1॥[1]

---

1. बृहत्संहिता सांवत्सर सूत्राध्याय 1/30

अर्थात् व्यक्ति कितना भी पतित हो शूद्र-म्लेच्छ चाहे यवन ही क्यों न हो। इस ज्योतिषशास्त्र के सम्यक् (भली-भांति) अध्ययन से वह ऋषि के समान पूजनीय हो जाता है। इस दिव्य-ज्ञान की गंगा स्नान से व्यक्ति पवित्र व पूजनीय हो जाता है फिर उस ब्राह्मण की क्या बात? जो ब्राह्मण भी हो, दैवज्ञ भी हो, इस दिव्य विद्या को भी जानता हो, उसकी तो अग्रपूजा निश्चय ही होती है।

इस श्लोक में 'सम्यक्' शब्द पर विशेष जोर दिया गया है सम्यक् ज्ञान गुरु कृपा से ही आता है पुस्तक के माध्यम से आप गुरु के विचारों के समीप तो जरूर पहुंचते हैं पर अन्ततोगत्वा वह किताबी ज्ञान ही कहलाता है। भारतीय वाङ्मय मे गुरु का बड़ा महत्त्व है। अतः ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या गुरुमुख से ही ग्रहण करनी चाहिए तभी उसमें सिद्धहस्तता प्राप्त होती है।

कई लोग ज्योतिष को भाग्यवाद या जड़वाद से जोड़ने की कुचेष्टा भी करते है परन्तु अब सिद्ध हो चुका है कि ज्योतिष पुरुषार्थवाद की युक्ति संगत व्याख्या है। पुरुषार्थवाद की सीमाओं को ठीक से समझना ही ज्योतिर्विज्ञान की उपादेयता है। ज्योतिर्विज्ञान पुरुषार्थ का शत्रु नहीं, यह व्यक्ति को पुरुषार्थ करने से रोकता भी नहीं, अपितु सही समय (काल) में सही पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देता है।[1]

मेरे निजी शब्दों में '**ज्योतिष विद्या वह दिव्य विज्ञान है जो भूत, भविष्य तथा वर्तमान तीनों कालों को जानने समझने की कला सिखलाता है, प्रकृति के गूढ़ रहस्यों को उद्घाटित करता है तथा इस देवविद्या के माध्यम से हम मानवीय प्राणी के शुभाशुभ भविष्य को संवारने की क्षमता भी प्राप्त कर सकते हैं।**'

अतः इस शास्त्र की उपादेयता एवं महत्त्व गूंगे के गुड़ की तरह से मिठास परिपूर्ण परन्तु शब्दों से अनिर्वचनीय है। वेदव्यास अपनी वाणी से ज्योतिष शास्त्र का महत्त्व प्रकट करते हुए कहते हैं कि काष्ठ (लकड़ी) का बना सिंह एवं कागज पर सम्राट का चित्र आकर्षक होते हुए भी निर्जीव होता है। ठीक उसी प्रकार से वेदों का अध्ययन कर लेने पर भी ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन किए बिना ब्राह्मण निर्वीर्य (निष्प्राण) कहलाता है।[2]

❑❑❑

---

1. वक्री ग्रह (प्रकाशन 1991) डायमंड प्रकाशन, दिल्ली पृ 140
2. यथा काष्ठमयः सिंहो यथा चित्रमयो नृपः।
   तथा वेदानधीतोऽपि ज्योतिषशास्त्रं विना द्विजाः॥

वेद व्यास, ज्योतिर्निबन्ध 20/ पृ.2

लग्न प्रशंसा

लग्न देव: प्रभु: स्वामी लग्नं ज्योति: परं मतम्।

लग्नं दीपो महान लोके, लग्नं तत्वं दिशन् गुरु:।।

त्रैलोक्यप्रकाश में बताया है कि लग्न ही देवता है। लग्न ही समर्थ स्वामी, परमज्योति है। लग्न से बड़ा दीपक ससार में कोई नहीं है, क्योंकि गुरु रूप ज्योतिष के ऋषियों का यही आदेश है।

न तिथिर्न च नक्षत्रं, न योगो नैन्दवं बलम्।

लग्नेमेव प्रशंसन्ति गर्गनारदकश्यपा:।।5।।

आचार्य लल्ल ने बताया है कि गर्ग, नारद, कश्यप ऋषियों ने तिथि नक्षत्र व चन्द्र बल को श्रेष्ठ न मानकर, केवल लग्न बल की ही प्रशसा की है।।5।।

इन्दु: सर्वत्र बीजाअम्भो, लग्न च कुसुमप्रभम्।

फलेन सदृशो अंशश्च भावा. स्वादुफलं स्मृतम्।।7।।

भुवन दीपक नामक ग्रथ में बताया है कि समस्त कार्यों में चन्द्रमा बीज सदृश है लग्न पुष्प के समान, नवमाश फल के तुल्य और द्वादश भाव स्वाद के समान होता है।

❑❑❑

जनश्रुतियों में प्रचलित प्रत्येक लग्न की चारित्रिक विशेषताएं

राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में जनश्रुतियों के आधार पर **लावणी** में प्रस्तुत यह गीत जब मैंने पहली बार समदंडी ग्राम के राजज्योतिषी पं. मगदत्त जी व्यास के मुख से राग व लय के साथ सुना तो मन्त्र मुग्ध रह गया। इस गीत में द्वादश लग्नों में जन्मे मनुष्य का जन्मगत स्वभाव, चरित्र, सार रूप में संकलित है जो कि निरन्तर अनुसंधान, अनुभव एवं अकाट्य सत्य के काफी नजदीक है। प्रबुद्ध पाठकों के ज्ञानार्जन एवं संग्रह हेतु इसे ज्यों का त्यों यहां दिया जा रहा है।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
जिसका जन्म हो **मेषलग्न** में, क्रोध युक्त और महाविकट।
सभी कुटुम्ब की करे पालना लाल नेत्र रहते हर दम।
करें गुरु की सेवा सदा नर, जिसका होता **वृषभलग्न**।
तरह-तरह के शाल-दुशाला पहने कण्ठ में आभूषण
मिथुनलग्न के चतुर सदा नर, नहीं किसी से डरता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है॥ टेर ॥
कर्कलग्न के देखे सदा नर, उनके रहती बीमारी।
सिंहलग्न के महापराक्रमी, करे नाग की असवारी।
कन्यालग्न के होत नपुन्सक रोवे मात और महतारी।
तुलालग्न के तस्कर बालक, खेले जुआ और अपनी नारी।
वृश्चिकलग्न के दुष्ट पदार्थ, आप अकेले खाते हैं।

ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत् वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।
बुद्धिमान और गुणी सुखी नर, जिसका होता धनुलग्न
मकरलग्न मन्द बुद्धि के, अपने धुन में वो भी मगन।
कुम्भलग्न के पूत बड़े अवधूत, रात-दिन करते रहते भजन।
मीनलग्न के सुत का जीना, मृत्यु लोक में बड़ा कठिन।
नहीं किसी का दोष, कर्मफल अपने आप बतलाता है।
ज्योतिष शास्त्र सब शास्त्र शिरोमणि, बिना भाग्य नहीं पाता है।
भूत, भविष्यत्, वर्तमान यह तीनों काल बतलाता है।। टेर ।।

❑❑❑

लग्न किसे कहते हैं? लग्न क्या है? और लग्न का क्या महत्त्व है?

हिन्दी में 'लग्न' अंग्रेजी में जिसे ऐसेंडेन्ट (Ascendant) कहते हैं। इसके पर्यायवाची शब्दों में देह, तनु, कल्प, उदय, आद्य, जन्म विलग्न, होरा, अंग, प्रथम, वपु इत्यादि प्रमुख हैं। ज्योतिष की भाषा में एक "समय" विशेष के परिमापन का नाम है जो लगभग दो घंटे का होता है। ज्योतिष की भाषा में जिसे जन्मकुण्डली कहते हैं वह वस्तुतः 'लग्न कुण्डली ही होती है। लग्न कुण्डली को जन्मांग भी कहते हैं क्योंकि "लग्न" का गणितागणित स्पष्टीकरण जन्म समय के आधार पर ही किया जाता है।

लग्न कुण्डली अभीष्ट समय में आकाश का मानचित्र है। इसकी स्पष्ट धारणा आप अंग्रेजी कुण्डली को सामने रखकर बनाएं तो साफ हो जाएगी क्योंकि अंग्रेजी में इसे हम Map of Heaven कहते हैं बीच में पृथ्वी एवं उसके ऊपर वृत्ताकार घूमती हुई राशिमाला को विदेशों में Birth-Horoscope कहते हैं। इसलिए पारम्परिक ज्योतिष वृत्ताकार कुण्डली को ही प्राथमिकता देते हैं। परन्तु भारत में इसका प्रचलन नगण्य है वस्तुतः आकाश में दिखने वाली बारह राशियां ही बारह लग्न हैं। जन्म कुण्डली के प्रथम भाव (पहले) घर को ही लग्न भाव, लग्न स्थान कहा जाता है और दिन और रात में 60 घटी होती हैं। 60 घटी में बारह लग्न होते हैं 60 में बारह का

3.30 से 5.30 A.M.	5.30 से 7.30 A.M. सूर्योदय	7.30 से 9.30	9.30 से 11.30
3.30 से 1.30	11.30 से अर्धरात्रि 1.30	दोपहर 1.30 से 11.30	
1.30 से 3.30	सूर्यास्त 5.30 से 7.30 P.M.	1.30 से 3.30	
5.30 से 3.30		5.30 से 3.30 A.M.	

भाग देने पर 2½ घटी का एक लग्न कहलाता है। यह लग्न कुण्डली ही जन्मपत्रिका का मुख्य आधार है जो खगालस्थ ग्रहों के द्वारा निर्मित होती है। यही ग्रह केन्द्र बिन्दु है जहा से गणित व फलित ज्योतिष सूत्रों की स्थापना प्रारम्भ होती है। उपर्युक्त खाली जन्मकुण्डली है। इसके 12 विभाजन ही "द्वादश घर" या "बारह भाव" कहलाते हैं। इसका ऊपरी मध्य घर जहां सूर्य दिखलाई देता है पहला घर माना जाता है। यह घर जन्मकुण्डली का सीधा पूर्व है। चूंकि सूर्य पूर्व दिशा मे उदय होता है। इसलिए सूर्योदय के समय जन्म लेने वाले व्यक्ति की जन्मकुण्डली में सूर्य उसी घर में होगा जिसे "लग्न" कहते हैं. चूंकि पृथ्वी अपनी धुरी पर एक चक्र 24 घंटों में पूर्ण कर लेती है, इसलिए सूर्य प्रत्येक दो घंटों में एक घर से दूसरे घर में जाता हुआ दिखलाई देगा। दूसरे अर्थों में पाठक जन्मकुण्डली को देखकर बता सकता है कि अमुक जन्मकुण्डली वाले व्यक्ति का जन्म सूर्य के किन दो घंटों के समय में हुआ था।

9	प्रथम स्थान 8 लग्न	7 रा.	6
10	11	5 श.	
12	चं. 2 शु.	4 गु.	
1 के		3 सू. बु.	

बुध मिथुन सू. शु. सु. मं.	प्रथम स्थान मेष केतु	मीन कुम्भ
कर्क, गुरु	बंगाल	मकर
सिंह शनि कन्या म	तुला राहु	धनु वृश्चिक लग्न

मीन	मेष के.	वृष सू. शु.	मिथुन सु. बु.
कुम्भ	चेन्नई		कर्क गु.
मकर			सिंह श
धनु	वृश्चिक लग्न	तुला रा.	कन्या चं.

चन्द्र 3 सूर्य 5 शुक्र 5 बुध 6	प्रथम स्थान के. 2	
गुरु 9	बंगाल	
श. 11 मं. 14	रा. 16	लग्न 17

क्रमांक	लग्न	दीर्घादि	घटी पल	अवधि घं. मि.	दिशा
1	मेष	ह्रस्व	4.00	1.36	पूर्व
2.	वृषभ	ह्रस्व	4.30	1.48	दक्षिण
3.	मिथुन	सम	5.00	2.00	पश्चिम
4.	कर्क	सम	5.30	2.12	उत्तर
5	सिंह	दीर्घ	5 30	2.12	पूर्व
6.	कन्या	दीर्घ	5.30	2.11	दक्षिण
7	तुला	दीर्घ	5.30	2.12	पश्चिम
8.	वृश्चिक	दीर्घ	5.30	2.12	उत्तर
9.	धनु	दीर्घ	5.30	2.12	पूर्व
10.	मकर	सम	5.00	2.00	दक्षिण
11.	कुम्भ	लघु	4.30	1.48	पश्चिम
12.	मीन	लघु	4.00	1.36	उत्तर

सही व शुद्ध लग्न साधन के लिए तीन वस्तुओं की जानकारी आवश्यक है। 1. जन्म तारीख, 2. जन्म समय 3. जन्म स्थान।

विभिन्न पंचांगों में आजकल दैनिक ग्रह स्पष्ट के साथ साथ, भिन्न-भिन्न देशों की दैनिक लग्न सारणियां, अंग्रेजी तारीख एवं भारतीय मानक समय में दी हुई होती हैं। जिन्हें देखकर आसानी से अभीष्ट तारीख के दैनिक लग्न की स्थापना की जा सकती है।

लग्न का विशेष महत्त्व

लग्न वह प्रारम्भ बिन्दु है जहां से जन्मपत्रिका, निर्माण की रचना प्रारम्भ होती है। इसलिए शास्त्रकारों ने "लग्नं देहो वर्ग षट्कोमानि" लग्न कुण्डली को जातक का शरीर माना है तथा जन्मपत्रिका के अन्य षोडश वर्ग उसके सोलह अंग कहे गए हैं।

जातक ग्रन्थों के अनुसार–

यथा तनुत्वादनमन्तरैव

परागसम्पादनम् अत्र मिथ्या।

बिना विलग्नं परभाव सिद्धिः

ततः प्रवत्ये हि विलग्न सिद्धिम्।।

जैसे वृक्ष के बिना फल पुष्प पत्र एवं पराग प्रक्रियाओं की कल्पना व्यर्थ है। उसी प्रकार लग्न साधन के बिना अन्य भावों की कल्पना एवं फल कथन प्रक्रिया भी व्यर्थ है। अतः जन्मपत्रिका निर्माण में "बीजरूप लग्न" ही प्रधान है तभी कहा गया है कि–**"लग्न बलं सर्वबलेषु प्रधानम्"**

लग्न ही व्यक्ति का चेहरा

फलित ज्योतिष में कालपुरुष के शरीर के विभिन्न अंगों पर राशियों की कल्पना की गई है। लग्न कुण्डली में भी कालपुरुष के इन अंगों को विभिन्न भागों में विभाजित किया गया है

बायां नेत्र,
2
दाहिनी भुजा कंधा दोनों
सिर चेहरा
1
4
वक्षस्थल छाती हृदय
बायां नेत्र
12
11
पिण्डली
हृदय वक्षस्थल सीना
10
5
दायां पैर
6 कमर
7
गुप्तेन्द्री गुदा, लिंग
पैर 8 बायां
9
जांघ

जिसमें लग्न ही व्यक्ति का चेहरा है। जैसा लग्न होगा वैसा ही व्यक्ति का चेहरा होगा। इस पर हमारी पुस्तक **"ज्योतिष और आकृति विज्ञान"** पढ़िए। लग्न पर जिन जिन ग्रहो का प्रभाव होगा व्यक्ति का चेहरा व स्वभाव भी उन–उन ग्रहों के स्वभाव व चरित्र से मिलता–जुलता होगा। लग्न कुण्डली में कालपुरुष का जो भाव विकृत एवं पाप पीड़ित होगा सम्बन्धित मनुष्य का वही अंग विशेष रूप से विकृत होगा, यह निश्चित है।

द्वितीय भाव
द्वादश भाव
तृतीय भाव
प्रथम भाव
एकादश भाव
चतुर्थ भाव
दशम भाव
पंचम भाव
सप्तम भाव
नवम भाव
षष्ठ भाव
अष्टम भाव

अतः अकेले लग्न कुण्डली पर यदि व्यक्ति ध्यान केन्द्रित कर फलादेश करना शुरू कर दे तो वह फलित ज्योतिष का सिद्धहस्त चैम्पियन बन जाएगा।

जन्मकुण्डली का प्रथम भाव ही लग्न कहलाता है। इसे पहला घर भी कह सकते हैं। इसी प्रकार दाएं से चलते हुए कुण्डली के 12 कोष्ठक, बारह भाव या बारह घर कहलाते है। चाहे इस भाव में कोई भी अंक या राशि नम्बर क्यों न हो, उसमे कोई अन्तर नहीं पड़ता। अब किस भाव पर घर में क्या देखा जाता है इस पर जातक ग्रन्थों में काफी चिन्तन किया गया है। एक प्रसिद्ध श्लोक इस प्रकार है।

द्रव्य
व्यय
देह
लाभ
पराक्रम
सुख
राज्य
सुतौ
कलत्र
भाग्य
शत्रु
वृत्ति

देहं द्रव्यं पराक्रमः सुख, सुतौ शत्रुकलत्रं वृत्तिः।
भाग्यं राज्यं पदे क्रमेण, गदिता लाभ व्ययौ लग्नतः॥

अर्थात् पहले भाव मे देह शरीर सुख, दूसरे में धन, तीसरे में पराक्रम, जन-सम्पर्क भाई–बहन, चौथे में सुख, नौकर, माता, पाचवें में सन्तान एवं विद्या, छठे में शत्रु व रोग, सातवें मे पत्नी, आठवें में आयु, नवमे स्थान में भाग्य, दसवें में राज्य, ग्यारहवें में लाभ एवं बारहवें स्थान में खर्च का चिन्तन करना चाहिए।

❑❑❑

लग्न का महत्त्व

यथा तनुत्पादनमन्तरैव पराङ्ग सम्पादनपत्र मिथ्या।।

विना विलग्न परभावसिद्धिस्ततः प्रवक्ष्ये हि विलग्नसिद्धिम्।।

जिस प्रकार स्वयं के शरीर की उपेक्षा करके अन्य पराए अंगों (दूसरे लोगों पर) पर ध्यान देना दोषपूर्ण है (उचित नहीं है) ठीक उसी प्रकार से लग्न भाव की प्रधानता व महत्त्व को ठीक से समझे बिना अन्य भावों (षोडश वर्ग) को महत्त्व देना व्यर्थ है

लग्नवीर्यं विना यत्र, यत्कर्म क्रियते बुधैः।

तत्फलं विलयं याति, ग्रीष्मे कुसरितो यथा।।8।।

ज्योतिविवरण में कहा है कि जिस कार्य का आरम्भ निर्बल लग्न में किया जाता है वह कार्य नष्ट होता है, जैसे गरमी के समय में बरसाती नदियां विलीन हो जाती हैं।।8।

आचार्य रैणुक ने बताया है कि जिस प्रकार जन्म लग्न से शुभ व अशुभ फल की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार समस्त कार्यों में लग्न के बली होने पर कार्य की सिद्धि होती है। अतः समस्त कामों में बली लग्न का ही विचार करके आदेश देना चाहिए। 9।।

आदौ हि सम्पूर्णफलप्रदं स्यान्मध्ये पुनर्मध्यफलं विचिंत्यम्।

अतीव तुच्छं फलमस्य चान्ते विनिश्चयोऽय विदुषामभीष्टः।।10।।

आचार्य श्रीपति जी ने बताया है कि लग्न के प्रारम्भ में सम्पूर्ण फल की, मध्यकाल में मध्यम फल की और लग्नान्त में अल्प फल होता है, यह विद्वानों का निर्णय है।।10।।

❑❑❑

मीनलग्न एक परिचय

1.	लग्नेश, राज्येश	–	गुरु
2.	धनेश, भाग्येश	–	मंगल
3.	पराक्रमेश, अष्टमेश	–	शुक्र
4.	पंचमेश	–	चंद्र
5.	षष्ठेश	–	सूर्य
6.	सप्तमेश, सुखेश	–	बुध
7.	लाभेश, खर्चेश	–	शनि
8.	त्रिकोणाधिपति	–	5-चंद्र, 9-मंगल
9.	दु:स्थान के स्वामी	–	6-सूर्य, 8-शुक्र, 12-शनि
10.	केन्द्राधिपति	–	1-गुरु, 4, 7-बुध, 10-गुरु
11.	पणफर के स्वामी	–	2-मंगल, 5-चंद्र, 8-शुक्र, 11-शनि
12.	आपोक्लिम	–	3-शुक्र, 6-सूर्य, 9-मंगल, 12-शनि
13.	त्रिकेश	–	6-सूर्य, 8-शुक्र, 12-शनि
14.	उपचय के स्वामी	–	3-शुक्र, 6-सूर्य, 10-गुरु, 11-शनि
15.	शुभ योग	–	1. चंद्र, 2. मंगल 3. मंगल+गुरु
16.	अशुभ योग	–	1. शुक्र, 2. सूर्य, 3. बुध
17.	निष्फल योग	–	1. मंगल+बुध
18.	सफल योग	–	1. चंद्र+गुरु, 2. मंगल+गुरु
19.	राजयोगकारक	–	गुरु, योगकारक-चंद्र एवं मंगल

20.	**मारकेश**	–	शनि और बुध मारकेश
21.	**पापफलद**	–	सूर्य और बुध परमपापी-शनि

विशेष-मीनलग्न वालों के लिये मंगल मारकेश होकर भी स्वयं मारक का कार्य नहीं करता। मुख्य मारकेश शनि होगा तथा सहायक मारकेश बुध होगा।

❑❑❑

लघुपाराशरी सिद्धान्त के अनुसार मीनलग्न का ज्योतिषीय विश्लेषण

मंद शुक्राशुभत्सौम्याः पापा भौमविधू शुभौ।
महिसुतगुर्वोर्योगे मारकश्चैव भूसुतः।।61।।
मारकान्कारकान्वीक्ष्य मंदाद्याः सन्ति पापिनः,
इत्यूह्यानि फलान्येवं बुधैस्तु झषजन्मनः।।62।।

"मारकश्चैव" इन शब्दों की जगह "कारणैनैव" और "मारकान्कारकान्वीक्ष्य" इन पद की जगह "कारकाः कारकान्वीक्ष्य" और "मारको मारकाभिख्या" इस प्रकार पाठ भेद हैं।

स्पष्टीकरण–मीनलग्न हो तो शनि, शुक्र, रवि बुध अशुभफल देते हैं। मगल और शुक्र शुभफल देते हैं। मगल गुरु का योग राजयोग होता है मगल स्वय मारक नहीं बनता। शनि आदि करके अशुभग्रह मारक लक्षणों से युक्त हो तो वे मारक होते हैं मीनलग्न में जन्म हो तो ज्ञात्याओं ने इस प्रकार शुभाशुभ फल समझना चाहिये।

मीनलग्न हो तो मगल चद्रमा शुभफल देते हैं। ऐसा कहने का कारण मगल धनेश और नवमेश होता है और चद्रमा पचमेश होता है। यही है मगल गुरु योग राजयोग कारक होता है यह कहने का हेतु गुरु लग्नेश और दशमेश है और मगल धनेश है और नवमेश है–यही है वस्तुतः मीनलग्न में गुरु के तरफ महत्त्व के दो अधिकार आते हैं, एक लग्नाधिपति और दशमाधिपति का, ये दोनो स्थान अर्थात् कुंडली में अति महत्त्व के हैं और इस प्रकार मीनलग्न के लिए अकेले गुरु को श्रेष्ठता मिलनी चाहिए परन्तु "केन्द्राधिपत्यदोषस्तु बलवान् गुरुशुक्रयोः" इस वचन के अनुसार उसे शुभत्त्व प्राप्त नहीं होता। मात्र यह भाग्याधिपति मगल से युक्त होने पर राजयोग करता है। मीनलग्न को शनि एकादशेश और द्वादशेश होता है, शुक्र तृतीयेश और अष्टमेश होता है। रवि षष्ठेश होता है, बुध चतुर्थेश और सप्तमेश होता है,

इसलिए ये सब ग्रह अशुभफल देने वाले होते हैं मीनलग्न की वास्तविकता से चंद्रमा को छोड़कर अन्य एक भी ग्रह शुभ नहीं होता इसका कारण क्रमशः इस प्रकार है

रवि षष्ठेश होता है। मगल धनेश मारक स्थान का स्वामी होता है, बुध केन्द्रेश (चतुर्थ सप्तम स्थानों का स्वामी, होता है, (बुधस्तदनु चन्द्रोऽपि) गुरु लग्नेश और दशमेश होता है। शुक्र तृतीयेश अष्टमेश होता है, शनि एकादशेश और व्ययेश होता है। इस प्रकार किसी न किसी कारण वश हर एक ग्रह दूषित है। शेष बचा चंद्रमा वह शुभ है। श्लोक 8 के अनुसार धनेश यदि अन्य शुभ स्थान का स्वामी हो तो शुभफल देता है इस प्रकार मंगल शुभफल दे सकेगा। केन्द्राधिपत्य दोष सिर्फ सप्तम स्थान पर ही लागू होती है। इसलिए गुरु मगल इनका योग उत्तम राजयोग हो सकता है, यहा पर मंगल स्वयं मारक नहीं बनता। ऐसा स्पष्ट रीति से कहने का कारण इतना ही है कि मगल द्वितीयेश होने पर भी शुभ स्थान का स्वामी भी होता है इसलिए शुभफल देने वाला होता है।

मीनलग्न के लिए शुभाशुभ योग

1. **शुभ योग** मगल नैसर्गिक पापग्रह है परन्तु वह नवम (प्रबल त्रिकोण) स्थान का स्वामी होने से श्लोक 6 के अनुसार शुभफल देने वाला होता है। यद्यपि वह मारक स्थान का स्वामी है फिर भी श्लोक 8 के अनुसार शुभफल देने वाला होता है।
2. **शुभ योग**--चद्रमा नैसर्गिक शुभग्रह है और यहां पर पचमेश (त्रिकोण का स्वामी) होने से शुभफल देने वाला होता है।
3. **शुभ योग**--नवमेश मंगल का दशमेश गुरु से योग हो तो (श्लोक 11 के अनुसार वह अशुभ है) शुभफल देने वाला होता है।

मीनलग्न के लिए अशुभ योग

1. **अशुभ योग**--शनि नैसर्गिक पापग्रह है और वह एकादेश होने के नाते श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है। इसके सिवाय वह द्वादशेश भी है। शनि अशुभ होकर अशुभ फलदायक है।
2. **अशुभ योग**--शुक्र नैसर्गिक शुभग्रह है परन्तु वह तृतीय स्थान का स्वामी है और श्लोक 6 के अनुसार अशुभ है। शुक्र अष्टम स्थान का भी स्वामी है। वह अशुभफल देने वाला होता है।
3. **अशुभ योग**--सूर्य नैसर्गिक पापग्रह है वह षष्ठेश होने के नाते श्लोक 7 के अनुसार अशुभ है और अशुभफल देने वाला है।

4. **अशुभ योग**–बुध नैसर्गिक शुभग्रह है। वह सप्तम (मारक) केन्द्र का स्वामी है और चतुर्थ-सप्तम केन्द्रों का स्वामी होने से शुभ है और अशुभफल देने वाला होता है।

निष्फल योग–1. मंगल-बुध;

सफल योग–1. चंद्रमा-गुरु, 2. मंगल-गुरु

❑❑❑

मीनलग्न की प्रमुख विशेषताएं एक नजर में

1.	लग्न	—	मीन
2.	लग्न चिह्न	—	पूछ और मुख मिली हुई दो मछलिया
3.	लग्न स्वामी	—	गुरु
4.	लग्न तत्त्व	—	जल तत्त्व
5.	लग्न स्वरूप	—	द्विस्वभाव
6.	लग्न दिशा	—	उत्तर
7.	लग्न लिंग व गुण	—	स्त्री, सतोगुणी
8.	लग्न जाति	—	ब्राह्मण
9.	लग्न प्रकृति व स्वभाव	—	सौम्य स्वभाव, कफ प्रकृति
10.	लग्न का अंग	—	चरण युगल
11.	जीवन रत्न	—	पुखराज
12.	अनुकूल रंग	—	पीला
13.	शुभ दिवस	—	गुरुवार/वीरवार
14.	अनुकूल देवता	—	विष्णु
15.	व्रत, उपवास	—	गुरुवार/वीरवार
16.	अनुकूल अंक	—	तीन
17.	अनुकूल तारीखें	—	3/12/21/30
18.	मित्र लग्न	—	कर्क, वृश्चिक
19.	शत्रु लग्न	-	मेष, सिंह, धनु

20. व्यक्तित्व – अध्यात्म प्रेमी, भावुक अध्ययनशील मैत्रीवृत्ति

21. सकारात्मक तथ्य – विनम्रता सज्जन शीलता, कल्पनाप्रिय

22. नकारात्मक तथ्य – अधैर्यशीलता, लापरवाही, अनिश्चितता

❑❑❑

मीनलग्न के स्वामी बुध का वैदिक स्वरूप

वैदिक साहित्य में गुरु का नाम अनेक मंत्रों में आया है। थिबो का कहना है कि यह गुरु ग्रह का नाम है, चिन्त्य है।[2] 'तैत्तिरीय ब्राह्मण' में गुरु के जन्म का उल्लेख मिलता है।

गुरुः प्रथमं जायमानस्तिष्यं नक्षत्रमभिसम्बभूव।
श्रेष्ठो देवानां पृतनासु जिष्णुः दिशो नु सर्वा अभ्यं नो अस्तु॥

(तैत्तिरीय ब्राह्मण 3/1/1/5)

अर्थात् जब गुरु पहले प्रकट हुआ वह तिष्य (पुष्य) नक्षत्र के पास था। शंकर बालकृष्ण दीक्षित के अनुसार कभी पुष्य तारा गुरु ग्रह की ओट में हो गया होगा। ज्योतिष की दृष्टि से यह संभव है। अपनी गति के कारण जब दो चार घंटे में गुरु पुष्य से पृथक् हुआ होगा तो लोगों ने समझा होगा कि गुरु का जन्म हुआ उस समय गुरु पुष्य के निकट रहा होगा।[4]

तिष्य शब्द का अर्थ पुष्य नक्षत्र है और पुष्य के देवता गुरु कहे गये हैं। ज्योतिष ग्रंथों में गुरु पुष्य योग अत्यधिक सुखद माना गया है। चंद्रमा, तारा एवं गुरु के संदर्भ में जो पौराणिक आख्यान है उस विषय में ऋग्वेद में वर्णन आता है कि गुरु ने अपनी पत्नी जुहू छोड़ी, सोम राजा ने उसे पुनः भेजा, मित्रावरुण ने समर्थन किया और अग्नि ने हाथ पकड़कर स्वयं पहुंचाया। तब सोम द्वारा लायी जाया को गुरु ने पुनः स्वीकार कर लिया।

तैत्तिरीय संहिता में शुक्र व चन्द्रादि ग्रहों के साथ गुरु ग्रह का नाम भी आया है।

---

1. गुरु अतिअदर्यो अर्हाद् ऋग्वेद अ. 2 मण्डल 23/15
2. एस्ट्रोनोमी ऐस्ट्रालजी एण्ड मैथमेटिक-पृ सं. 6
3. भारतीय ज्योतिष का इतिहास डॉ. गोरख प्रसाद, पृ. 31
4. भारतीय ज्योतिष का इतिहास-डॉ. गोरख प्रसाद, पृ. 32

'वस्व्यसि रुद्रास्यदितिरस्यादित्यासि शुक्रासि चंद्रासि बृहस्पतित्वा सुम्ने कृणवतु'

अर्थात् हे सोम को खरीदने वाले तू वस्वी है, अर्थात् वसु आदि देवों का रूप है। रुद्र है, अदिति है, आदित्य है, शुक्र है, चन्द्र है, गुरु है। तू सुख से रहे

ऋग्वेद में गुरु के महत्व को स्पष्ट करते हुए यह कहा गया कि "गुरु प्रथम महान् प्रकाश के अत्यन्त उच्च स्वर्ग (कक्ष) में उत्पन्न हुआ।[2]

गुरु ग्रह को देवगुरु, आंगिरस, गुरु तथा जीव आदि नामों से कहा गया है। यह सम्पूर्ण नक्षत्रमंडल का लगभग 12 वर्षों में भ्रमण पूरा करता है। ग्रहलाघव के अनुसार यह अस्त होने के बाद , महीने के पश्चात् उदित होता है। उसके बाद लगभग 4 महीने पश्चात् वक्री होता है तथा चार मास वक्री होने के पश्चात् मार्गी होता है तथा पुन. 4 महीने बाद अस्त हो जाता है। यह इसका मध्यम मान है। यह सूर्य से अधिक दूर है तथा सूर्य के ही प्रकाश से प्रकाशित है इसे शुभग्रह माना गया है।

ऋग्वेद के इस आख्यानक के अनुसार इसका अर्थ यह है कि राजा सोम अर्थात् चंद्रमा का प्रत्येक 27वें दिन पुष्य नक्षत्र से संयोग होता है किन्तु गुरु उसे एक बार छोड़ने के पश्चात् लगभग 12 वर्ष पश्चात् पुनः उस नक्षत्र (पुष्य) में आता है। इस बीच में मित्र, वरुण और अग्निदेव उससे कई बार मिल लेते हैं। ये देव सम्भवतः सूर्य, बुध, शुक्र हैं जो प्रत्येक वर्ष में एक बार पुष्य नक्षत्र से संयुक्त होते हैं अर्थात् पुष्य नक्षत्र के सीध में आ जाते हैं। वेदों में गुरु को ब्रह्म अथवा ज्ञान का प्रतीक भी कहा गया है। पुष्य नक्षत्र बुद्धि का प्रतीक है तथा गुरु ज्ञान का अतः बुद्धि में ज्ञान यदा कदा उदित होता है जबकि मन, काम, अर्थ आदि प्रायः आते रहते हैं। यही गुरु तारा और चंद्रमा की कथा है

गुरु के पूजन, हवन तथा शांतिकर्म में प्रयुक्त होने वाला वैदिक मंत्र इस प्रकार है

ॐ गुरु अति यदर्यो अर्हा द्युमद् विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यदीदयच्छवस् ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविण धेहि चित्रम्॥

❑❑❑

---

1. तैत्तिरीय संहिता 1/2/5
2. गुरुः प्रथमज्जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्

—ऋग्वेद 4/50/4

अथर्ववेद 20/88/4

--तैत्तरीय ब्राह्मण 2/8/2

मीनलग्न के स्वामी गुरु का पौराणिक स्वरूप

देवगुरु गुरु पीत वर्ण के हैं। उनके सिर पर स्वर्णमुकुट तथा गले में सुन्दर माला है वे पीत वस्त्र धारण करते हैं तथा कमल के आसन पर विराजमान हैं उनके चारो हाथों में क्रमशः दण्ड रुद्राक्ष की माला, पात्र और वरदामुद्रा सुशोभित है।

महाभारत आदिपर्व और तै. स. के अनुसार गुरु महर्षि अंगिरा के पुत्र तथा देवताओं पुरोहित हैं। ये अपने प्रकृष्ट ज्ञान से देवताओं को उनका यज्ञ-भाग प्राप्त करा देते हैं असुर यज्ञ में विघ्न डालकर देवताओं को भूखा मार देना चाहते है। ऐसी परिस्थितियों में देवगुरु गुरु रक्षोघ्न मंत्रो का प्रयोग कर देवताओं की रक्षा करते हैं तथा दैत्यों को दूर भगा देते हैं।

इन्हें देवताओं का आचार्यत्व और ग्रहत्व कैसे प्राप्त हुआ, इसका विस्तृत वर्ण स्कन्द पुराण मे प्राप्त होता है। गुरु प्रभास तीर्थ में जाकर भगवान् शंकर की कठोर तपस्या की थी। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान् शंकर ने उन्हे देवगुरु का पद तथा ग्रहत्व प्राप्त करने का वर दिया। (श्रीमद 5/22/.5)

गुरु एक एक राशि पर एक-एक वर्ष रहते हैं। वक्रगति होने पर इसमें अंतर आ जाता है।

ऋग्वेद के अनुसार गुरु अत्यन्त सुन्दर हैं। इनका आवास स्वर्णनिर्मित है। ये विश्व के लिए वरणीय हैं। ये अपने भक्तों पर प्रसन्न होकर उन्हें सम्पत्ति तथा बुद्धि से सम्पन्न कर देते है उन्हें सन्मार्ग पर चलाते हैं और विपत्ति में उनकी रक्षा भी करते हैं, शरणागतवत्सलता का गुण इनमें कूट कूटकर भरा हुआ है देवगुरु गुरु का वर्ण पीत हैं। इनका वाहन रथ है, जो सोने का बना है तथा अत्यन्त सुखकर और सूर्य के समान भास्वर है इसमें वायु के समान वेग वाले पीले रंग के आठ घोड़े जुते रहते हैं। ऋग्वेद के अनुसार इनका आयुध सुवर्णनिर्मित दण्ड है

देवगुरु गुरु की एक पत्नी का नाम शुभा और दूसरी का तारा है। शुभा से सात कन्याएं उत्पन्न हुई भानुमती, राका, अर्चिष्मति महामती, महिष्मती, सिनीवाली और हविष्मती। तारा से सात पुत्र व एक कन्या उत्पन्न हुई। उनकी तीसरी पत्नी ममता से भरद्वाज और कच नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। गुरु के अधिदेवता इंद्र और प्रत्यधिदेवता ब्रह्मा है।

गुरु, धनु और मीन राशि का स्वामी है। इनकी महादशा सोलह वर्ष की होती है। इनकी शान्ति के लिये प्रत्येक अमावस्या को गुरु का व्रत करना चाहिए और पीला पुखराज धारण करना चाहिए ब्राह्मणों को दान में पीला वस्त्र, सोना, हल्दी, घृत, पीला अन्न पुखराज, अश्व, पुस्तक, मधु लवण, शर्करा, भूमि और छत्र देना चाहिए। इनकी शान्ति के लिए वैदिक मंत्र 'ओइम् बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविण धेहि चित्रम्।।'' पौराणिक मंत्र ''**देवानां च ऋषीणां च गुरुं कान्चसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।**'' बीज मंत्र '**ओइम् ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।**' तथा सामान्य मंत्र-'**ओइम् बृं बृहस्पतये नमः**' है। इनमें से किसी एक का श्रद्धानुसार नित्य निश्चित सख्या में जप करना चाहिए। जप का समय संध्या काल तथा जप संख्या 19000 है।

❑❑❑

गुरु का खगोलीय स्वरूप

गुरु एक पीत वर्ण का ग्रह है। इसका सौर मडल मे पांचवां स्थान है। यह सूर्य से लगभग 77,80,00000 किमी. की दूरी पर है और लगभग 11 वर्षों मे सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। पृथ्वी से बहुत दूर होते हुए भी गुरु अत्यधिक दैदीप्यमान् दिखाई देता है, यह सौर मण्डल का सम्राट ग्रह है। अत: शास्त्रों मे इसके लिए ''गुरु'' तथा ''गुरु'' नामों का प्रयाग किया गया है। इसका व्यास 1,43,640 किमी. है। गुरु यदि भीतर से खोखला हो तो पृथ्वी जैसे 1600 पिण्ड उसमें समा सकते है। इसका गुरुत्व भी पृथ्वी से 317 गुणा है। यदि कोई व्यक्ति पृथ्वी पर 77 कि ग्रा भार का हो तो ''गुरु' पर जाकर उसका भार 22 टन हो जायेगा। गुरु के चन्द्रमाओं की सख्या तेरह है। गुरु ग्रह अस्त होने के 30 दिन बाद वक्री होता है। उदय के 129 दिन बाद वक्री होता है। वक्र के 128 दिन बाद मार्गी होता है तथा मार्गी के .29 दिन बाद पुन: अस्त होता है।

गुरु के अतिरिक्त गुरु, देवगुरु, वागीश, अंगिरा, जीव आदि नाम भी इसके पर्याय माने गये है।

गुरु की गति–गुरु अपनी कीली पर 9 घटा 55 मिनट मे एक चक्कर देता है। यह एक सैकड में 8 मील चलता है तथा सूर्य की परिक्रमा 4332 दिन 35 घटी 5 पल में पूरी करता है स्थूल तौर पर यह 12 या 13 महीनों में एक राशि, 160 दिन में एक नक्षत्र, 43 दिन एक चरण पर रहता है

गुरु ग्रह अस्त होने के 30 दिन बाद उदय होता है। उदय के 128 दिन बाद वक्री होता है। वक्र के 120 दिन बाद मार्गी होता है तथा मार्गी के 128 दिन बाद पुनः अस्त हो जाता है.

गणितागत स्पष्टीकरण से चार राशि या 120 डिग्री अंश के पीछे रहने पर गुरु वक्री हो जाता है। सूर्य से चार राशि 120 डिग्री अश के आगे रहने पर यह मार्गी होता है। वक्री अवस्था में 12 डिग्री अंश तक पीछे हटता है तथा चार मास तक वक्री रहता है तथा पुन: 8 मास तक मार्गी रहता है। जब इसकी गति 14/4 की होती है,

तब यह शीघ्रगामी (अतिचारी) हो जाता है। गुरु 45 दिन तक अतिचारी रहता है। यह सूर्य से दूसरी राशि पर शीघ्रगामी, तीसरी पर समचारी, चौथी पर मन्दचारी, पांचवीं और छठी पर वक्री, सातवीं और आठवी पर अतिवक्री, नवमी और दशमी पर कुटिल और ग्यारहवीं तथा बारहवीं राशि पर पुनः शीघ्रगामी हो जाता है। वक्री होने के पाच दिन आगे या पीछे यह स्थिर रहता है।

❑❑❑

मीनलग्न की चारित्रिक विशेषताएं

मीनलग्न का स्वरूप

मीनौ पुच्छास्यसंलग्नौ मी नराशिद्रिवाबली॥22॥
जली सत्वगुणढ्यश्र स्वस्थो जलचरो द्विजः।
अपदो मध्यदेही च सौम्यस्था ह्युभयोदयी॥23॥
सुराचार्याधिपश्चेति राशीना गदिता गुणाः।
त्रिंशदागात्मकानां च स्थूलसूक्ष्मफलाय च॥24॥

—बृहत्पाराशर होराशास्त्र अ. 4/श्लो. 24

मुख पुच्छ मिलित दो मछली, दिनबली, जलतत्व, सत्वगुणी, स्वस्थ जलचारी, विप्रजाति पदहीन, मध्यदेह, उत्तरदिक् स्वामी, उभयोदय है और इसका स्वामी गुरु है। इस प्रकार 30 अंश से युक्त इन 12 राशियों के स्वरूप आदि मैंने स्थूल और सूक्ष्मफल विचार के लिए कहा है।।24-24॥

जलचरधनभोक्ता दारवासोऽनुरक्तः,
समरुचिरशरीरस्तुंगनासो बृहत्कः।
अभिभवति सपत्नां स्त्रीजितश्चारुदृष्टि
र्द्युतिनिधि धनभोगी पण्डितश्चान्त्यराशौ॥12॥

—बृहज्जातकम् अ. 16/ श्लो. 12

यदि मीन राशि मे चंद्रमा हो तो मनुष्य पानी से उत्पन्न होने वाली वस्तुओं के व्यापारादि से धन का भोग करने वाला, अपनी स्त्री व अपने पारिवारिक उपयोगार्थ प्रयोज्य वस्त्राभूषणादि के प्रति विशेष ध्यान देने वाला, समान व रुचिर शरीर वाला ऊंची नाक वाला, बड़े सिर वाला, शत्रुओं का नाशक, स्त्री से वश में होने वाला, सुन्दर आंखों वाला, तेजस्वी, गड़े धन का भागी एवं पण्डित अर्थात् विद्वान होता है

मीने विलग्नोपगतेऽभिजातः प्रभूतवित्तद्रविणोऽल्पकेशः।
त्यागात्मवान् शास्त्रविशारदश्च च दीर्घसूत्रो न च मन्दबुद्धिः॥12॥

वृद्धयवनजातक अ.24/श्लो.12/ पृ 289

यदि मीनलग्न मे जन्म हो तो मनुष्य कुलीन, खूब धन व विद्या से परिपूर्ण कम बालों वाला, त्यागी स्वभाव वाला, आत्माभिमानी, शास्त्रों का विशारद, कम सोने वाला, मन्दबुद्धि के अभाव वाला होता है।

मीनोदयेऽल्परतिरिष्टजनानुकूल
तेजोबलप्रचुरधान्यधनश्च विद्वान्

– जातक पारिजात श्लो.11/पृ.678

मीनः स्त्री सहवास की कम इच्छा, अपने प्रिय जनो के अनुकूल, तेज और बल से युक्त, प्रचुर धान्य (अधिक मात्रा में अन्न का स्वामी) और धन से युक्त, विद्वान व्यक्ति होता है।

मधुपिङ्गाक्षो गौरो मेधावी सत्क्रियारतिज्ञश्च।
सुखभागी मीनाद्ये जलचरयुगले विनीतश्च॥

–सारावली पृ. 466/श्लो. 10

यदि जन्म लग्न में मीन राशि व मीन राशि का पहिला द्रेष्काण हो तो जातक शहद के समान पिङ्गल नेत्र वाला, गौरवर्ण, मेधावी, शुभ कार्य कर्ता, रति (काम) ज्ञाता, सुखी और नम्र होता है।

मीनलग्नोदये जातो रत्नकाञ्चनपूरितः।
अल्पकामः कृशाङश्च दीर्घकालविचिन्तक॥

–मानसागरी अ. 1/श्लो. 12

मीनलग्न वाला जीव धन सम्पदायुक्त, अल्पकामी, चिन्तनशील-विचारक, स्वार्थ साधक, चतुर, शरीरन प्रारूप सहित तथा अनेक कलाओं से जन जीवन युक्त एवं जीवनीय स्तर मानद वर्ग का बने।

भोजसंहिता

मीनलग्न का स्वामी गुरु है। गुरु देवगुरु माने जाते है। ऐसे व्यक्ति, गौरवर्ण, काचन, देह, मछली के समान आकर्षक व सुन्दर नेत्र वाले, ललाट चौड़ी चेहरा, लम्बे कद् के मालिक होते हैं

यह लग्न दिवाबली, जलतत्व प्रधान, सत्वगुणी है। पूर्वाभाद्रपद के अंतिम चरण में जन्म व्यक्ति धार्मिक बुद्धि से ओतप्रोत, मेहमान प्रिय, सामाजिक अच्छाइयों व नियमों का पालन करने वाले बातचीत में प्रवीण होते हैं. मीन राशि वाले व्यक्ति कूटनीति, रणनीति व षड्यत्रकारी मामलों में एक प्रतिशत भी रुचि नहीं लेते। इनका प्राकृतिक स्वभाव उत्तम दायलु व दानशीलता है।

सामान्यता मीनलग्न मे उत्पन्न जातक स्वस्थ एव दर्शनीय होते हैं तथा सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है ये विद्वान एव बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारो का सृजन करने मे समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख ससाधनो का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हे प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एव विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करके आर्थिक रूप से सुदृढ रहते हैं साथ ही चिन्तन एव मननशीलता का भाव भी इसमें रहता है।

प्राकृतिक दृश्यो का अवलोकन करके इनको शान्ति एव सतुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र म ये सरल और भावुक रहते है परन्तु व्यवहार कुशल होते है। अत. सासारिक कार्यों मे उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने मे सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि मे इनकी रुचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अत: इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एव बलवान रहेंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीक्ष्ण रहेगी अत: विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में समाज मे अपनी प्रतिष्ठा एव आदर बढ़ाने में समर्थ होंगे। यद्यपि ब्रह्मादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगे परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

आपका स्वरूप दर्शनीय एव व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलत: अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे लेखन के प्रति आपकी रुचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकते हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगे। आप सरकार या समाज में सम्मान अप्राप्त करने में सफल होंगे। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य एव कला के प्रति भी आपकी अभिरुचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। बाल्यावस्था में आपको सघर्ष करना पड़ेगा परतु युवावस्था के बाद

सुखेश्वर्य एवं धन वैभव एवं शांतिपूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन मे श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्मान करेंगे। इससे आपको आत्मिक शान्ति की प्राप्ति होगी। साथ ही बन्धु एवं मित्र वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्चर्य से युक्त होकर प्रसन्नतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने मे सफल होंगे।

मीनलग्न पुरुष की एक विशेषता है कि इनको केवल न्याय ही की बात पर क्रोध आता है ये पर दुःखकातर हैं। दूसरे को भलाई व कार्यसिद्धि हेतु स्वयं को खतरे में डाल देते हैं. यह आपके लिए उचित नहीं।

यदि आपका जन्म 14 मार्च और 12 अप्रैल के बीच में हुआ है तो 16 वर्ष से ही भाग्योदय आरम्भ हो जाता है। 32 वर्ष में पूर्ण भाग्योदय होता है। आप कला, विज्ञान व साहित्य में रुचि लेंगे। आप रसिक हृदय व विलास प्रिय होने पर भी स्वाभिमान के कारण नीचे गिरने की प्रवृत्ति को रोकते हैं आपमें अधिकारी होने की भावना विशेष रहेगी हल्का काम आपको पसंद नहीं है आप मिलनसार व यार बाश मित्रों की गिनती में है। आप दूसरों का बहुत आतिथ्य करते हैं। स्वयं अच्छा भोजन करने के शौकीन होते हैं तथा दूसरो को भी दावत देने का शौक होता है।

असली मित्र आपके बहुत थोड़े हैं एक मित्र जो किसी कारणवश आपका शत्रु हो जाए उसके द्वारा भारी आघात पहुचने का खतरा है? सतर्क रहे। यदि आपके हाथ में मच्छरेखा है तो ऐसा संभव नहीं

मीन राशि का चिह्न "मुख-पुच्छ मिलित दो मछली" है। आपको जल से निकली हुई वस्तु नमक, हीरे, जवाहरात, समुद्र पार देशों से माल मगाने या भेजने (Export-Import) से विशेष धनालाभ हो सकता है। स्त्रियो के सम्पर्क से भी आपका भाग्योदय सभव है। 32 वर्ष के बाद आपके पुत्र व नौकरो का योग बनता है शत्रु आप से हार जायेंगे।

सही भाग्योदय हेतु गुरु रत्न पुखराज को स्वर्ण मुद्रिका में धारण करें।

नक्षत्रानुसार फलादेश

दी	दू थ झ ञ	दे दो च ची
पूर्वाभाद्रपद-1	उत्तराभाद्रपद-5	रेवती-5

चन्द्रमा पूर्वाभाद्रपद में

उद्विग्नचित्तो धनवांस्त्वरोगी,
अजाधिके स्त्रीविजितो अदाता।

यदि जन्म समय पर चद्रमा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में स्थित हो तो मनुष्य क्षुब्ध मन वाला, धनी, निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला तथा कंजूस होता है

पूर्वा भाद्रपद गुरु का नक्षत्र है। इसमें स्थित होकर चद्रमा प्रायः शुभ प्रभाव के कारण है। स्त्री विजितो सभवतया इसलिए कि स्त्री ग्रह चद्रमा शुभता को प्राप्त होकर स्त्री के शुभ गुणों का सचार करेगा जिसके फलस्वरूप स्त्री व्यक्ति का मन मोह लेगी उद्विग्न चित्तो क्यो कहा, यह विचारणीय है, क्योंकि गुरु का प्रभाव मन रूपी चंद्रमा पर पड़कर मन में शान्ति उत्पन्न करेगा, न कि उद्वेग।

पूर्वाभाद्रपद के चतुर्थ पाद–पूर्वा भाद्रपद के चतुर्थ पाद में यदि जन्मकुण्डली मे चंद्रमा स्थित हो तो जातक भोगी होता है नक्षत्र पाद का स्वामी स्वय चंद्रमा बनता है जिसका खाने पीने से विशेष सबध है। इसलिए भोगी कहा। नक्षत्र स्वामी गुरु को खूब खाता है। तभी तो इसका पेट बढ़ा हुआ है। अतः भोगी कहना उपयुक्त है

चन्द्रमा उत्तराभाद्रपद में

वक्ता प्रजावान् सुमुखो मृगांकेऽहिर्बुध्न्यभे धर्मरतोजितारिः।

यदि चंद्रमा जन्म समय उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मे स्थित हो तो जातक बोलने में चतुर सतानवान, सुदर धार्मिक तथा शत्रुओ पर विजय प्राप्त करने वाला होता है।

उत्तराभाद्रपद शनि का नक्षत्र है। शनि एक स्त्री ग्रह है और चंद्रमा भी, इस कारण स्त्री सतान के अधिक होने की संभावना रहेगी। शनि के नक्षत्र म होने से मन (चद्रमा) मे वैराग्य का होना अनिवार्य है, इसलिए जातक त्यागी हो सकता है और इन्हीं अर्थो में धार्मिक भी। वक्ता होने आदि के लिए कोई हेतु प्रतीत नहीं होता।

यदि आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र मे है तो आप धार्मिक नेता व प्रसिद्ध शास्त्र व मानव प्रेमी के स्वरूप मे प्रख्यात पुरुष है। आप प्राणी मात्र के प्रति सद्भावना रखते है। यदि कोई आपके साथ दुर्व्यवहार भी कर बैठता है तो भी आप उसे क्षमा कर देते हैं। मन में किसी प्रकार की गांठ नहीं रखते। आप महत्वाकांक्षी व Ambicions व्यक्ति है। आपकी इच्छाए बढ़ी–चढ़ी होती है व मन ही मन आप उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर चढ़ जाते है ईमानदारी व देशभक्ति आपके चरित्र के

प्रमुख गुण हैं। आप उन गिने चुने व्यक्तियों में से हैं जिन्हें जनता आदर की दृष्टि से देखती है

उत्तराभाद्रपद के प्रथम पाद—उत्तराभाद्रपद के प्रथम पाद में यदि चंद्रमा स्थित हो तो जातक राजा है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी सूर्य है जिसके चंद्रमा पर प्रभाव के कारण चंद्रमा में सूर्य के राज्यसत्तापरक गुण आ जायगे।

उत्तराभाद्रपद के द्वितीय पाद—उत्तराभाद्रपद के द्वितीय पाद में यदि चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य चोर होता है। इस नक्षत्र पाद का स्वामी बुध बनता है और नक्षत्र स्वामी शनि। सम्भवतया यह चोरी का फलशनि और बुध के सम्मिलित प्रभाव का है जो चंद्रमा पड़ता है

उत्तराभाद्रपद के तृतीय पाद—उत्तराभाद्रपद के तृतीय पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति पुत्र वाला होता है यह फल मुख्यतया चंद्रमा पर नक्षत्र पाद स्वामी शुक्र के प्रभाव के कारण है। जैसा कि हम पूर्व मे लिख चुके है शुक्र स्त्री प्रजा के साथ साथ पुत्र प्रजा भी देता है.

उत्तराभाद्रपद के चतुर्थ पाद—उत्तराभाद्रपद के चतुर्थ पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य सुखी होता है यहा नक्षत्र पाद स्वामी मगल होता है। मंगल के चंद्रमा पर प्रभाव स धनादि म वृद्धि होती है। इसलिए सुख कहा।

चंद्रमा रेवती नक्षत्र में

संपूर्णदेहः सुभगोऽतिशूरः शुचिर्धनी पौष्णगते शशाके।
विज्ञेयमेतन्निरुपद्रवेभे फलं बलिष्ठे रजनीपतौ च।

यदि जन्म समय चंद्रमा रेवती नक्षत्र में स्थित हो तो जातक सपूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला, धनवान होता है। उपरोक्त नक्षत्रो में चंद्रमा की स्थिति का जो फल कहा है वह तभी पूर्ण होता है जबकि नक्षत्र पर कोई विरुद्ध प्रभाव न हो और चंद्रमा भी बलवान हो।

रेवती नक्षत्र का स्वामी बुध है जो नैसर्गिक रूप से एक शुभ ग्रह है और साथ ही साथ अपना कोई स्वतंत्र फल नहीं रखता। इसलिए इसके नक्षत्र म चद्रमा अपने ही गुणों की उत्कृष्टता को प्राप्त होगा। चद्रमा देह है, वह पुष्ट और परिपूर्ण होगी। चंद्रमा धन से विशेष संबध रखता है, अतः व्यक्ति धनवान होगा। चद्रमा जहा तक बुध के नक्षत्र में शुभ गुणो को ग्रहण करेगा उसका फल धार्मिक शुद्धि और परोपकार की वृत्ति प्राप्त होगी, क्योंकि बुध वैष्णव ग्रह है। शूरवीर क्यो कहा? यह विचारणीय है।

यदि आपका जन्म रेवती नक्षत्र के दो चरण तथा से सबंध रखता है तो आपमे मौलिक गुणों में बहुत परिवर्तन हो जाता है। फिर तो आप दबंग व पौरुषशाली की गिनती मे आते है। छल तथा कपट आपके जीवन में नहीं। धोखा देने मे आप स्वयं डरते हैं आप हृदय के व्यक्ति है ऐसे जातक को क्रोध शीघ्र आता है। कोई जरा भी विपरीत बात कह तो इनसे सहन नही होती ऐसी हालत में ये मध्यम कद के होते है दूसरों की हकूमत उन्हें बिल्कुल पसंद नहीं ये क्रोधावस्था में आत्मनियंत्रण खो बैठते है परन्तु क्रोध जितनी शीघ्रता से आता है उतनी शीघ्रता से चला जाता है। साहसिक कार्य व पुरुषार्थ प्रदर्शन की इनको एक ललक सी रहती है।

रेवती के प्रथम पाद—रेवती के प्रथम पाद मे यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य ज्ञानी होता है यहा नक्षत्र पाद स्वामी बुध होता है। इसके चंद्रमा पर प्रभाव के कारण ज्ञानी कहा ज्ञानी इसलिए भी कि रेवती नक्षत्र का स्वामी का ज्ञानी बुध ही है जिसका प्रभाव भी चंद्रमा पर पड़ेगा।

रेवती के द्वितीय पाद—रेवती के द्वितीय पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो व्यक्ति चोर होता है। यहां नक्षत्र पाद का स्वामी शनि बनता है जो चंद्रमा पर अपने प्रभाव से ऐसा फल दे सकता है।

रेवती का तृतीय पाद—रेवती का तृतीय पाद में यदि जन्म समय चंद्रमा स्थित हो तो मनुष्य युद्ध में जयी होता है। शनि नक्षत्र पाद का स्वामी बनता है और बुध नक्षत्र का स्वामी है। दोनों नपुंसक है। अतः चंद्रमा की दोनों पर विजय है। इसलिए युद्ध में विजयी कहा।

रेवती के चतुर्थ पाद—रेवती के चतुर्थ पाद में यदि चंद्रमा जन्म समय में स्थित हो तो व्यक्ति क्लेश भोगने वाला होता है। यद्यपि यह पाद ऐसा है कि जिसका स्वामी गुरु है जो कि चंद्रमा का मित्र है तो भी क्लेश कहा। यहा कारण यही है कि रेवती का अन्तिम भाग गण्डान्त है जिसमें ग्रह की स्थिति स्वास्थ्य तथा जीवन के लिए शुभ नहीं होती।

□□□

जन्माक्षर (जन्मपत्रिका) भरने के लिये विशेष चार्ट

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
1	अश्विनी	चू,चे,चो,ला	मेष	मंगल	अश्व	देव	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	आद्य	चतु.	सोना	सिंह 3 हि 1	केतु	7
2.	भरणी	ली,लु,ले,लो	मेष	मंगल	गज	मनु.	क्षत्री	पूर्व	अग्नि	मध्य	चतु	सोना	हिरण	शुक्र	20
3.	कृतिका	अ	मेष	मंगल	मीढ़ा	राक्षस	क्षत्रीय	पूर्व	अग्नि	अन्त्य	चतु.	सोना	गरुड़	सूर्य	6
3.	कृतिका	ई,उ,ए	वृष	शुक्र	मीढ़ा	राक्षस	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु	सोना	गरुड	सूर्य	6
4.	रोहिणी	ओ,वा,वी,वू	वृष	शुक्र	सर्प	मनु.	वैश्य	पूर्व	भूमि	अन्त्य	चतु.	सोना	ग. 1 हि. 3	चन्द्र	10
5.	मृगशिरा	वे,वो	वृष	शुक्र	सर्प	देव	वैश्य	पूर्व	भूमि	मध्य	चतु.	सोना	हिरण	मंगल	7
5.	मृगशिरा	का,की	मिथुन	बुध	सर्प	देव	शूद्र	पूर्व	वायु	मध्य	द्विपद	सोना	बिलाड़	मंगल	7
6.	आर्द्रा	कु,घ,ड,छ	मिथुन	बुध	श्वान	मनु	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विपद	चांदी	बि. 2 सि.1	राहु	18
7.	पुनर्वसु	के,को,ह	मिथुन	बुध	मार्जार	देव	शूद्र	मध्य	वायु	आद्य	द्विपद	चांदी	बि.2 मी. 1	गुरु	16
7.	पुनर्वसु	ही	कर्क	चन्द्र	मार्जार	देव	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विपद	चांदी	मीढ़ा	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनी	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
8.	पुष्य	हु,हे,हो,डा	कर्क	चन्द्र	मींढ़ा	देव	विप्र	मध्य	जल	मध्य	द्विपद	चादी	मि 3 श्वा. 1	शनि	19
9.	आश्लेषा	डी डू डे,डो	कर्क	चन्द्र	मार्जार	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	आद्य	द्विपद	चादी	श्वान	बुध	.7
10.	मघा	मा मी मू मे	सिंह	सूर्य	मूषक	राक्षस	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु	चादी	मूषक	केतु	7
11.	पूर्व फा	मो टा टी टू	सिंह	सूर्य	मूषक	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	मध्य	चतु	चादी	मि 3 श्वा. 3	शुक्र	20
2	उ. फा.	टे	सिंह	सूर्य	गौ	मनुष्य	क्षत्रिय	मध्य	वायु	आद्य	चतु	चादी	श्वान	सूर्य	6
12	उ. फा	टो,पा,पी	कन्या	बुध	गौ	मनुष्य	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चादी	श्वा. 1 मू. 2	सूर्य	6
13	हस्त	पू,ष,ण,ठ	कन्या	बुध	भैंस	देव	वैश्य	मध्य	भूमि	आद्य	द्विपद	चादी	मी 1 मी. 1 श्वा. 2	चन्द्र	10
14.	चित्रा	पे,पो	कन्या	बुध	व्याघ्र	राक्षस	वैश्य	मध्य	भूमि	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मगल	7
14.	चित्रा	रा री	तुला	शुक्र	व्याघ्र	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	मध्य	द्विपद	चांदी	मूषक	मंगल	7
15.	स्वाति	रू रे,रो ता	तुला	शुक्र	भैंस	देव	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	चादी	हि 3 सर्प 1	राहु	18
16.	विशाखा	ती,तू,ते	तुला	शुक्र	मध्य	राक्षस	शूद्र	मध्य	वायु	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	सर्प	गुरु	16
16.	विशाखा	तो	वृश्चिक	मगल	मध्य	राक्षस	विप्र	मध्य	जल	अन्त्य	कीट	ताम्बा	सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा धर्म
17	अनुराधा	ना,नी,नू,ने	वृश्चिक	मगल	मृग	देव	विप्र	मध्य	जल	व्याघ्र	कीट	ताम्बा	सर्प.	शनि	19
18.	ज्येष्ठा	नो,या,यी,यू	वृश्चिक	मगल	मृग	राक्षस	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	कीट	ताम्बा	सर्प 1 हिरण 3	बुध	17
19.	मूल	भे,भो,भा,भी	धनु	गुरु	श्वान	राक्षस	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	आद्य	द्विपद	ताम्बा	हि 2 मूषा 2	केतु	7
20.	पूर्वाषाढा	भू,धा,फा,ढा	धनु	गुरु	कपि	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	मध्य	द्विपद	ताम्बा	1 मू 1 स 1 मू2 कु	शुक्र	20
21.	उ षा.	भे	धनु	गुरु	नकुल	मनुष्य	क्षत्रिय	अन्त्य	अग्नि	अन्त्य	द्विपद	ताम्बा	मूषक	सूर्य	6
21.	उ. षा.	भो,जा,जी	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु	ताम्बा	1 मू. 2 सिं.	सूर्य	6
22	अभिजित्	जू,जे,जो,खा	मकर	शनि	नकुल	मनुष्य	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु	ताम्बा	सिं 3 बि 1	×	×
23.	श्रवण	खी,खू,खे,खो	मकर	शनि	कपि	देव	वैश्य	अन्त्य	भूमि	अन्त्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड़	चन्द्र	10
24.	धनिष्ठा	गा,गी	मकर	शनि	सिंह	राक्षस	वैश्य	अन्त्य	भूमि	मध्य	चतु.	ताम्बा	बिलाड	मगल	7
24.	धनिष्ठा	गू, गे	कुम्भ	शनि	सिंह	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	मध्य	द्विपद	ताम्बा	बिलाड	मंगल	7
25	शतभिषा	गो,सा,सी,सू	कुम्भ	शनि	अश्व	राक्षस	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	1 बि. 3 मी	राहु	18
26.	पूर्वा भा.	से,सो,द	कुम्भ	शनि	सिंह	मनुष्य	शूद्र	अन्त्य	वायु	आद्य	द्विपद	लोहा	2 मी. 2 सर्प	गुरु	16

क्र.	नक्षत्र	नक्षत्र अक्षर	राशि	स्वामी	योनि	गण	वर्ण	भुजा	हंस	नाड़ी	वश्य	पाया	वर्ग	जन्म दशा	दशा वर्ष
26	पूर्वा भा.	दी	मीन	गुरु	सिंह	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	आद्य	जल	लोहा	सर्प	गुरु	16
27.	उ. भा.	दु,थ,झ,ञ	मीन	गुरु	गौ	मनुष्य	विप्र	अन्त्य	जल	मध्य	जल	लोहा	2 सर्प 2 सिंह	शनि	19
28.	रेवती	दे,दो,चा,ची	मीन	गुरु	गज	देव	विप्र	पूर्व	जल	अन्त्य	जल	सोना	2 सर्प 2 सिंह	बुध	17

नक्षत्रो के अनुसार ग्रहों की शत्रुता-मित्रता पहचानने की टेबुल

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मेष	1	अश्विनी	अश्वि कुमार	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	सम
	2.	भरणी	यम	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
	3.	कृतिका	अग्नि	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
वृष	4.	रोहिणी	ब्रह्मा	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	5.	मृगशिरा	चन्द्र	मगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मिथुन	6.	आर्द्रा	रुद्र	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	7.	पुनर्वसु	आदिति	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कर्क	8.	पुष्य	गुरु	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	9.	आश्लेषा	सूर्य	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
सिंह	10.	मघा	पितर	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	11	पू. फा.	भग	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
	12	उ. फा.	अर्यमा	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कन्या	13	हस्त	सूर्य	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	14.	चित्रा	विश्वकर्मा	मगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु

	क्र.	नक्षत्र नाम	नक्षत्र देवता	नक्षत्र स्वामी	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
तुला	15.	स्वाति	वायु	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	16.	विशाखा	इन्द्राग्नि	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शनि	17.	अनुराधा	मित्र	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	18.	ज्येष्ठा	इन्द्र	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र
धनु	19.	मूला	नैऋति	केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	सम
	20.	पू. षा.	उदक	शुक्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र
मकर	21	उ. षा	विश्वदेव	सूर्य	सम	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	22	श्रवण	विष्णु	चन्द्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
	23	धनिष्ठा	वसु	मंगल	मित्र	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
कुंभ	24.	शतभिषा	वरुण	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	सम	मित्र
	25.	पू. भा.	अजकचरण	गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मीन	26.	उ. भा.	अहिर्बुध्न्य	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	मित्र
	27.	रेवती	पूषा	बुध	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र

नक्षत्र चरण, नक्षत्रस्वामी एवं नक्षत्र चरणस्वामी

मेष राशि											
1. अश्विनी (केतु)				2. भरणी (शुक्र)				3. कृतिका (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
चु	0/3/20/0	1	मं.	ली.	0/.6/40/0	1	सू.	आ	0/30/0/0	1	गु.
चे	0/6/40/0	2	शु.	लू	0/20/0/0	2	बु.			-	
चो	0.10/0/0	3	बु.	ले.	0/23/20/0	3	शु.				
ला	0/13/20 4/	4	चं.	लो	0/26/40/0	4	मं.	–	–	–	–
वृष राशि											
3. कृतिका (सूर्य)				4. रोहिणी (चंद्रमा)				5. मृगशिरा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ई	1/30/20/0	2	शु:	ओ	1/13/20/0	1	मं.	वे	0/20/40/1	1	सू.
उ	1.6/40/0	3	श	वा	1/16/40/0	2	शु.	वो	0.30/0/0	2	बु.
				वी	1/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
ए	1/10/0/0	4	मं.	चू	1/23/20/0	4	चं.	-	–	–	

मिथुन राशि

5. मृगशिरा (मंगल)				6. आर्द्रा (राहु)				7. पुनर्वसु (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
का	2/3/20/0	3	शु.	कु	2/10/0/0	1	गु.	के	2/23/20/0	1	मं.
की	2/6/40/0	4	मं.	घ	2 13/20/0	2	श.	को	2/26/40/0	2	शु.
				ङ	2/16/40/0	3	श.	हा	-2/30/0/0	3	बु.
				छ	2/20/0/0	4	गु.	—	—	—	—

कर्क राशि

7. पुनर्वसु (गुरु)				8 पुष्य (शनि)				9. आश्लेषा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ही	3/30/20/0	4	चं.	हू	3/6/40/0	1	सू.	डी	3/20/0/0	1	गु.
—				हे	3/10/0/0	2	बु	डू	3/23/20/0	2	श.
				हो	3/13/20/0	3	शु.	डे	3/26/40/0	3	श.
	—	—	—	डा	3/16/40/0	4	मं.	डो	3/30/0/0	4	गु.

सिंह राशि

10. मघा (केतु)				11. पूर्वाफाल्गुनी (शुक्र)				12. उत्तरफाल्गुनी (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
मा	4/3/20/0	1	म.	मो	4 16.40/0	1	सू.	टे	4/30 0/0	1	गु.
मी	4/6.40/0	2	शु.	टा	4/20/0/0	2	बु.		–		
मू	4/10 0/0	3	बु.	टी	4/23/20/0	3	शु.				–
मे	4/13/20/0	4	च.	टू	4/26/40/0	4	मं.	–	–	–	

कन्या राशि

12. उत्तराफाल्गुनी (सूर्य)				13. हस्त (चंद्रमा)				14. चित्रा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
टो	5/3/20/0	2	श.	पू	5/13/20/0	1	मं.	पे	5/26/40/0	1	सू.
पा	5/6.40/0	3	श.	ष	5/16/40/0	2	शु.	पे	5/30.0/0	2	बु.
पी.	5/10/0/0	4	गु.	ण	5/20/0/0	3	बु.		-		-
	–	–	–	ठ	5/23/20/0	4	चं.	–	–	–	

तुला राशि

14. चित्रा (मगल)				15 स्वाति (राहु)				16 विशाखा (गुरु)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
रा	6/3/20/0	3	शु.	रू	6/10/0/0	1	गु.	ती	6/23/20/0	1	मं.
री	6/6/40/0	4	मं.	रे	6/13/20/0	2	श.	तू	6/26/40/0	2	शु.
			–	रो	6/16/40/0	3	श.	ते	6/30/0/0	3	बु.
–	–	–	–	ता	6/20/0/0	4	गु.	–	–	–	

वृश्चिक राशि

16. विशाखा (गुरु)				17. अनुराधा (शनि)				18. ज्येष्ठा (बुध)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
तो	7/3/20/0	4	चं.	ना	7/6/40/0	1	सू.	नो	7/20/0/0	1	गु.
–	–	–	–	नी	7/10/0/0	2	बु.	या	7/23/20/0	2	श.
–	–	–	–	नू	7/13/20/0	3	शु.	यी	7/26/40/0	3	श.
–		–	–	ने	7/16/40/0	4	म.	यू	7 30/0/0	4	शु.

धनु राशि

17. मूल (केतु)				18. पूर्वाषाढ़ा (शुक्र)				21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
ये	8/3/20/0	1	मं.	भू	8/16/40/0	1	सू.	भे	8/30/0/0	1	गु.
यो	8/6/40/0	2	शु.	धा	8/20/0/0	2	बु.	–	–	–	–
या	8/10/0/0	3	बु.	फा	8/23/20/0	3	शु.	–	–	–	–
यी	8/13/20/0	4	च	ढा	8/26/40/0	4	मं.	–	–		–

मकर राशि

21. उत्तराषाढ़ा (सूर्य)				22. श्रावण (चंद्रमा)				23. धनिष्ठा (मंगल)			
अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी	अक्षर		चरण	स्वामी
भो	9/3/20/0	2	श.	खी	9/13/20/0	1	मं.	गा	9/26/40/0	1	सू.
जा	9/6/40/0	3	श.	खू	9/16/40/0	2	शु.	गी	9/30/0/0	2	बु.
जी	9/10/0/0	4	गु.	खे	9/20/0/0	3	बु.	–	–	–	–
–	–	–	–	खो	9/23/20/0	4	चं.	–	–	–	–

कुंभ राशि

23 धनिष्ठा (मंगल)

अक्षर		चरण	स्वामी
गू	10/3/20/0	3	शु.
गे	10/6.40/0	4	मं.
—	—		—
—	—	—	—

24. शतभिषा (राहु)

अक्षर		चरण	स्वामी
गो	10/10/0/0	1	गु.
सा	10.13/20/0	2	श.
सी	10.16/40/0	3	श.
सू	10/19/0/04	4	गु.

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
से	10/23/20.0	1	म.
सो	10/26/40.0	2	श.
दा	10/30/0/0	3	बु.
—		—	—

मीन राशि

26. पूर्वाभाद्रपद (गुरु)

अक्षर		चरण	स्वामी
दी	10/3/20/0	4	चं.
	—		—
—	—	—	—
—	—	—	—

27. उत्तराभाद्रपद (शनि)

अक्षर		चरण	स्वामी
दू	11/6.40/4	1	सू.
थ	11/10/0/0	2	बु.
झ	11/13/20/0	3	शु.
ञ	11/16/40/0	4	गु.

28. रेवती (बुध)

अक्षर		चरण	स्वामी
दे	11/20.0/0	1	गु.
दो	11/23/20/0	2	श.
चा	11/26/40/0	3	श.
ची	11/30/0/0	4	गु.

मीनलग्न पर अंशात्मक फलादेश

मीनलग्न, अंश 0 से 1

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–11/30/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सिंह
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अजपाद
10. वर्णाक्षर–दी
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–गुरु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चंद्रमा
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'भोगी'.

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु और देवता अजपाद है ऐसा व्यक्ति क्षुब्ध मन वाला, धनी निरोगी, स्त्री के वश मे रहने वाला एव कजूस स्वभाव का होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। जिसका स्वामी चंद्रमा है। फलतः व्यक्ति भोगी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी एव नक्षत्र चरण स्वामी मे परस्पर मित्रता है। फलतः लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में जातक को राजपाद, रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होगे। इसी प्रकार पचमेश चद्रमा की दशा धार्मिक यात्राएं एव भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगी

यहां लग्न जीरो (Zero) से एक अश के भीतर होने से मृतावस्था (Combust) में है एवं कमजोर है। जातक का लग्न बली नहीं होने से विकास रुका हुआ रहेगा। लग्नेश की दशा वांछित शुभ फल नहीं दे पायेगी

मीनलग्न, अंश 1 से 2

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–11/30/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सिंह
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अजपाद
10. वर्णाक्षर–दी
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–गुरु
14. नक्षत्र चरण स्वामी–चंद्र
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'योगी

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु और देवता अजपाद है ऐसा व्यक्ति क्षुब्ध मन वाला, धनी निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला एवं कंजूस स्वभाव का होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ है। जिसका स्वामी चंद्रमा है। फलत: व्यक्ति योगी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी में परस्पर मित्रता है। फलत: लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा में जातक को राजपाट, रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। इसी प्रकार पंचमेश चंद्रमा की दशा धार्मिक यात्राएं एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगी।

लग्न एक से दो अंश के भीतर होने से **'उदित अंशों'** का है तथा बलवान है। जातक लग्न बली एवं चेष्टावान होगा। लग्नेश की दशा शुभ फल देगी। गुरु की दशा में उन्नति होगी।

मीनलग्न, अंश 2 से 3

1. लग्न नक्षत्र–पूर्वाभाद्रपद
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–11/30/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–द्विपद
6. योनि–सिंह
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–आद्य
9. नक्षत्र देवता–अजपाद
10. वर्णाक्षर–दी
11. वर्ग–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु और देवता अजपाद है ऐसा व्यक्ति क्षुब्ध मन वाला, धनी निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला एवं कंजूस स्वभाव का होता है। आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे हुआ है। जिसका स्वामी चंद्रमा है। फलतः व्यक्ति योगी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी एव नक्षत्र चरण स्वामी मे परस्पर मित्रता है। फलतः लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा मे जातक को राजपाद, रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। इसी प्रकार पंचमेश चद्रमा की दशा धार्मिक यात्राएं एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगी।

लग्न यहां दो से तीन अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न **'उदित अंशों'** में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी चंद्रमा की दशा एवं मगल की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 3 से 4

1. **लग्न नक्षत्र**–पूर्वाभाद्रपद

2. **नक्षत्र पद**–4

3. **नक्षत्र अंश**–11/30/20/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–द्विपद

6. **योनि**–सिंह

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–आद्य

9. **नक्षत्र देवता**–अजपाद

10. **वर्णाक्षर**–दी

11. **वर्ग**–सर्प

12. **लग्न स्वामी**–गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–गुरु

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–चंद्रमा

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–स्व.

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

18. **प्रधान विशेषता**–'भोगी'

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र का स्वामी गुरु और देवता अजपाद है ऐसा व्यक्ति क्षुब्ध मन वाला, धनी निरोगी, स्त्री के वश में रहने वाला एवं कजूस स्वभाव का होता है आपका जन्म पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे हुआ है जिसका स्वामी चंद्रमा है। फलतः व्यक्ति योगी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी एवं नक्षत्र चरण स्वामी में परस्पर मित्रता है। फलतः लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी गुरु की दशा में जातक

को राजपाद, रोजगार के उत्तम अवसर प्राप्त होंगे। इसी प्रकार पंचमेश चंद्रमा की दशा धार्मिक यात्राएं एवं भाग्योदय के उत्तम अवसर प्रदान करेगी।

लग्न यहां तीन से चार अंशों के भीतर होने से 'उदित अंशों' में बलवान है लग्न उदित अंशों में होने से लग्नेश गुरु की दशा अच्छा फल देगी। चंद्रमा और मंगल की दशा में धन की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 4 से 5

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद 2. **नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–11/3/20/0 से 11/6/40/0

4. वर्ण–विप्र 5. **वश्य**–जलचर

6. योनि–गौ 7. **गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य 9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर–दू 11. **वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–गुरु 13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी–सूर्य 15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु 17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'राजश्च'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है. ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ है। जिसका स्वामी सूर्य है ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी शनि व चरण स्वामी सूर्य मे परस्पर शत्रुता है फलतः सूर्य की दशा निकृष्ट फल देगी। आपके लिए शनि की दशा भी प्रतिकूल फल देगी। सूर्य में शनि या शनि में सूर्य की अंतर्दशा मारक दशा का फल देगी।

लग्न यहां चार से पांच अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न 'उदित अंशों' मे होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी गुरु की दशा स्वास्थ्यप्रद रहेगी। राजयोग देगी क्योंकि गुरु कर्क के पांच अंशों में उच्च का होता है

मीनलग्न, अंश 5 से 6

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद 2. **नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–11/3/20/0 से 11/6/40/0

4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–जलचर
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य
10. **वर्णाक्षर**–दु
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता** -'राजश्च'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ जिसका स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी शनि व चरण स्वामी सूर्य में परस्पर शत्रुता है। फलतः सूर्य की दशा निकृष्ट फल देगी। आपके लिए शनि की दशा भी प्रतिकूल फल देगी. सूर्य में शनि या शनि में सूर्य की अतर्दशा मारक दशा का फल देगी।

लग्न यहां पांच से छः अंशों के भीतर होने से बलवान है। लग्न 'उदित अशों' में होने से लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। गुरु की दशा स्वास्थ्य प्रद रहेगी। राजयोग देगी।

मीनलग्न, अंश 6 से 7

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराभाद्रपाद
2. **नक्षत्र पद**–1
3. **नक्षत्र अंश**–11/3/20/0 से 11/6.40/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–जलचर
6. **योनि**–गौ
7. **गण**–मनुष्य
8. **नाड़ी**–मध्य
9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य
10. **वर्णाक्षर**–दु
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–सूर्य
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–शत्रु
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
18. **प्रधान विशेषता**–'राजश्च'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एव स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में हुआ। जिसका स्वामी सूर्य है। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। लग्ननक्षत्र स्वामी शनि व चरण स्वामी सूर्य में परस्पर शत्रुता है। फलतः सूर्य की दशा निकृष्ट फल देगी आपके लिए शनि की दशा भी प्रतिकूल फल देगी। सूर्य में शनि या शनि मे सूर्य की अंतर्दशा मारक दशा का फल देगी।

यहा लग्न छः से सात अशों के भीतर होने से **'उदित अंशों'** में है बलवान है. लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी. गुरु की दशा पद प्रतिष्ठा बढ़ायेगी

मीनलग्न, अंश 7 से 8

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपद **2. नक्षत्र पद**–2

3. नक्षत्र अंश–11/6/40/0 से 11/10/0/0

4. वर्ण–विप्र **5. वश्य**–जलचर

6. योनि–गौ **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर–थ **11. वर्ग**–सर्प

12. लग्न स्वामी–गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'तस्करश्चैव'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एव स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के दूसरे चरण में है। ऐसा जातक तस्करी मे रुचि रखता है उत्तराभाद्रपद के दूसरे चरण का स्वामी बुध है लग्न नक्षत्र स्वामी शनि बुध का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम, परन्तु बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी

यहा लग्न सात से आठ अशों के भीतर होने से **'उदित अशों'** में है एव बलवान है लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा पद प्रतिष्ठा देगी।

मीनलग्न, अंश 8 से 9

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–11/6/40/0 से 11/10/0/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गौ
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–अहिर्बुध्न्य
10. वर्णाक्षर–थ
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि
14. नक्षत्र चरण स्वामी–बुध
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'तस्करश्चैव'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के दूसरे चरण में है। ऐसा जातक तस्करी मे रुचि रखता है। उत्तराभाद्रपद के दूसरे चरण का स्वामी बुध है। लग्ननक्षत्र स्वामी शनि बुध का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम, परन्तु बुध की दशा अति उत्तम फल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न आठ से नौ अंशों मे है। उदित अशों में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी। गुरु की दशा राजयोग देगी क्योंकि दस अंशों मे गुरु मूलत्रिकोण का होता है।

मीनलग्न, अंश 9 से 10

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–11/6/40/0 से 11/10/0/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गौ
7. गण–मनुष्य
8. नाड़ी–मध्य
9. नक्षत्र देवता–अहिर्बुध्न्य
10. वर्णाक्षर–थ
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–बुध

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'तस्करश्चैव'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के दूसरे चरण में है। ऐसा जातक तस्करी मे रुचि रखता है। उत्तराभाद्रपद के दूसरे चरण का स्वामी बुध है। लग्न नक्षत्र स्वामी शनि बुध का मित्र है। फलत: शनि की दशा मध्यम, परन्तु बुध की दशा अति उत्तम फल देगी बुध की दशा में गृहस्थ सुख एवं भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी

यहा लग्न नौ से दस अंशों के भीतर '**उदित अंशों**' में है, बलवान है। लग्नेश गुरु की दशा उत्तम फल देगी। गुरु की दशा राजयोग देगी।

मीनलग्न, अंश 10 से 11

1. **लग्न नक्षत्र**–उत्तराभाद्रपाद

2. **नक्षत्र पद**–3

3. **नक्षत्र अंश**–11/10/0/0 से 11/13/20/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–जलचर

6. **योनि**–गौ

7. **गण**–मनुष्य

8. **नाड़ी**–मध्य

9. **नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य

10. **वर्णाक्षर**–झ

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी**–गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शुक्र

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'पुत्रवान्'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तीसरे चरण में है ऐसा जातक पुत्रवान होता है। तीसरे चरण का स्वामी शुक्र है जो लग्न नक्षत्र स्वामी का मित्र है। फलत: शनि की दशा मध्यम परन्तु शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

यहा लग्न दस से ग्यारह अंशों के भीतर '**आरोह अवस्था**' में है व पूर्ण बली है। लग्नेश गुरु की दशा अति उत्तमफल देगी।

मीनलग्न, अंश 11 से 12

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराभाद्रपाद 2. नक्षत्र पद—3

3. नक्षत्र अंश—11/10/0/0 से 11/13/20/0

4. वर्ण—विप्र 5. वश्य—जलचर

6. योनि—गौ 7. गण—मनुष्य

8. नाड़ी—मध्य 9. नक्षत्र देवता—अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर—झ 11. वर्ग—सिंह

12. लग्न स्वामी—गुरु 13. लग्न नक्षत्र स्वामी—शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—मित्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध—मित्र

18. प्रधान विशेषता—'पुत्रवान्'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तीसरे चरण में है। ऐसा जातक पुत्रवान होता है। तीसरे चरण का स्वामी शुक्र है जो लग्न नक्षत्र स्वामी का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम परन्तु शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

यहा लग्न ग्यारह से बारह अंशों के भीतर **'आरोह अवस्था'** में है व पूर्णबली है। गुरु की दशा अति उत्तम फल देगी

मीनलग्न, अंश 12 से 13

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराभाद्रपाद 2. नक्षत्र पद—3

3. नक्षत्र अंश—11/10/0/0 से 11/13/20/0

4. वर्ण—विप्र 5. वश्य—जलचर

6. योनि—गौ 7. गण—मनुष्य

8. नाड़ी—मध्य 9. नक्षत्र देवता—अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर—झ 11. वर्ग—सिंह

12. लग्न स्वामी—गुरु 13. लग्न नक्षत्र स्वामी—शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी—शुक्र 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान्'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तीसरे चरण में है। ऐसा जातक पुत्रवान होता है। तीसरे चरण का स्वामी शुक्र है जो लग्न नक्षत्र स्वामी का मित्र है फलतः शनि की दशा मध्यम परन्तु शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

यहा लग्न बारह से तेरह अंशों के मध्य होने से **'आरोह अवस्था'** में है एवं पूर्णबली है। गुरु की दशा राजयोग प्रदायक है।

मीनलग्न, अंश 13 से 14

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद **2. नक्षत्र पद**–3

3. नक्षत्र अंश–11/10/0/0 से 11/13/20/0

4. वर्ण–विप्र **5. वश्य**–जलचर

6. योनि–गौ **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर–झ **11. वर्ग**–सिंह

12. लग्न स्वामी–गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शुक्र **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'पुत्रवान्'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के तीसरे चरण मे है। ऐसा जातक पुत्रवान होता है तीसरे चरण का स्वामी शुक्र है जो लग्न नक्षत्र स्वामी का मित्र है। फलतः शनि की दशा मध्यम परन्तु शुक्र की दशा शुभफल देगी। शुक्र की दशा में पराक्रम बढ़ेगा।

यहा लग्न तेरह से चौदह अशो के मध्य है। **'आरोह अवस्था'** में है एव पूर्ण बली है गुरु की दशा राजयोग प्रदायक है।

मीनलग्न, अंश 14 से 15

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद 2. नक्षत्र पद–4

3. नक्षत्र अंश–11/13/20/0 से 11/16/40/0

4. वर्ण–विप्र 5. वश्य–जलचर

6. योनि–गौ 7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर–ञ् 11. वर्ग–सिंह

12. लग्न स्वामी–गुरु 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'सुखी'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान्, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है ऐसा जातक सम्पूर्ण सुखी व्यक्ति होता है। उत्तराफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की शनि से शत्रुता है तथा लग्न नक्षत्रस्वामी शनि की नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में शत्रुता है। फलतः शनि की दशा नेष्ट एवं मंगल की दशा मध्यम फल देगी जो लाभ मंगल की दशा से अपेक्षित है। वह लाभ जातक को नहीं मिल पायेगा।

यहां लग्न चौदह से पन्द्रह अंशों के भीतर होने से **'आरोह अवस्था'** में है एवं पूर्ण बली है। गुरु की दशा राजयोग प्रदायक है।

मीनलग्न, अंश 15 से 16

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद 2. नक्षत्र पद–4

3. नक्षत्र अंश–11/13/20/0 से 11/16/40/0

4. वर्ण–विप्र 5. वश्य–जलचर

6. योनि–गौ 7. गण–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य 9. नक्षत्र देवता–अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर–ञ् 11. वर्ग–सिंह

12. लग्न स्वामी–गुरु 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी—मगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'सुखी'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने मे चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओ पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे है। ऐसा जातक सम्पूर्ण सुखी व्यक्ति होता है। उत्तराफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मगल है। लग्नेश गुरु की शनि से शत्रुता है तथा लग्न नक्षत्रस्वामी शनि की नक्षत्र चरण स्वामी मगल में शत्रुता है। फलत: शनि की दशा नेष्ट एवं मगल की दशा मध्यम फल देगी। जो लाभ मगल की दशा से अपेक्षित है वह लाभ जातक को नही मिल पायेगा।

यहा लग्न पन्द्रह से सोलह अंशों के भीतर होने से '**आरोह अवस्था**' में है तथा पूर्ण बली है। गुरु की दशा राजयोग प्रदायक है।

मीनलग्न, अंश 16 से 17

1. लग्न नक्षत्र—उत्तराभाद्रपाद **2. नक्षत्र पद**—4

3. नक्षत्र अंश—11/13/20/0 से 11/16/40/0

4. वर्ण—विप्र **5. वश्य**—जलचर

6 योनि—गौ **7. गण**—मनुष्य

8. नाड़ी—मध्य **9. नक्षत्र देवता**—अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर—ञ् **11. वर्ग**—सिंह

12. लग्न स्वामी—गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**—शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी—मगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध—शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**—शत्रु

18. प्रधान विशेषता—'सुखी'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है। ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे है ऐसा जातक सम्पूर्ण सुखी व्यक्ति होता है। उत्तराफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मगल है, लग्नेश गुरु की शनि से शत्रुता है तथा लग्न नक्षत्रस्वामी शनि की नक्षत्र चरण स्वामी मंगल में शत्रुता है। फलत: शनि की दशा नेष्ट एव मगल की दशा मध्यम फल देगी। जो लाभ मगल की दशा से अपेक्षित है, वह लाभ जातक को नहीं मिल पायेगा।

यहां लग्न सोलह से सत्रह अंशों के भीतर **'मध्य अवस्था'** में है एवं पूर्ण बली है। गुरु व मंगल की दशाओं में धन की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 17 से 18

1. लग्न नक्षत्र–उत्तराभाद्रपाद **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–11/13/20/0 से 11/16/40/0

4. वर्ण–विप्र **5. वश्य**–जलचर

6. योनि–गौ **7. गण**–मनुष्य

8. नाड़ी–मध्य **9. नक्षत्र देवता**–अहिर्बुध्न्य

10. वर्णाक्षर–ञ् **11. वर्ग**–सिंह

12. लग्न स्वामी–गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–शनि

14. नक्षत्र चरण स्वामी–मंगल **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता -'सुखी'

उत्तराभाद्रपद नक्षत्र का देवता, अहिर्बुध्न्य एवं स्वामी शनि है ऐसा जातक बोलने में चतुर, सन्तानवान, सुन्दर, धार्मिक तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला होता है। आपका जन्म उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है। ऐसा जातक सम्पूर्ण सुखी व्यक्ति होता है। उत्तराफाल्गुनी के चतुर्थ चरण का स्वामी मंगल है। लग्नेश गुरु की शनि से शत्रुता है तथा लग्न नक्षत्रस्वामी शनि की नक्षत्र चरण स्वामी मंगल से शत्रुता है। फलतः शनि की दशा नेष्ट एवं मंगल की दशा मध्यम फल देगी। जो लाभ मंगल की दशा से अपेक्षित है। वह लाभ जातक को नहीं मिल पायेगा।

यहां लग्न सत्रह से अठारह अंशों के भीतर **'मध्य अवस्था'** में है एवं पूर्ण बली है। गुरु व मंगल की दशाओं में धन की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 18 से 19

1. लग्न नक्षत्र–रेवती **2. नक्षत्र पद**–1

3. नक्षत्र अंश–11/16/40/0 से 11/20/0/0

4. वर्ण–विप्र **5. वश्य**–जलचर

6. योनि–गज **7. गण**–देव

8. नाड़ी–अन्त्य **9. नक्षत्र देवता**–पूषा

10. वर्णाक्षर–द | 11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु | 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु | 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु | 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'ज्ञानी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एव स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी गुरु है। प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति ज्ञानी होता है। लग्न नक्षत्र स्वामी बुध, नक्षत्र चरण स्वामी गुरु से शत्रुता है। फलतः गुरु की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। जबकि बुध की दशा मध्यम रहेगी।

यहा लग्न अठारह से उन्नीस अंशों के भीतर होने से **'मध्य अवस्था'** मे है। गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक हैं। पद प्रतिष्ठा दिलायेगी।

मीनलग्न, अंश 19 से 20

1. लग्न नक्षत्र–रेवती | 2. नक्षत्र पद 1
3. नक्षत्र अंश–11/16/40/0 से 11/20/0/0
4. वर्ण–विप्र | 5. वश्य–जलचर
6. योनि–गज | 7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य | 9. नक्षत्र देवता–पूषा
10. वर्णाक्षर–द | 11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु | 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु | 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु | 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'ज्ञानी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी गुरु है। प्रथम चरण में जन्म लेने वाला व्यक्ति ज्ञानी होता है। लग्न नक्षत्र स्वामी बुध, नक्षत्र चरण स्वामी गुरु से शत्रुता है। फलतः गुरु की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। जबकि बुध की दशा मध्यम रहेगी।

यहा लग्न उन्नीस अशो से बीस अशों के भीतर होने से **'मध्य अवस्था'** में है। गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक है। पद-प्रतिष्ठा दिलायेगी.

मीनलग्न, अंश 20 से 21

1. लग्न नक्षत्र–रेवती
2. नक्षत्र पद–1
3. नक्षत्र अंश–11/16/40/0 से 11/20/0/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गज
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–पूषा
10. वर्णाक्षर–द
11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व.
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'ज्ञानी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एव स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के प्रथम चरण का स्वामी गुरु है. प्रथम चरण मे जन्म लेने वाला व्यक्ति ज्ञानी होता है। लग्न नक्षत्र स्वामी बुध, नक्षत्र चरण स्वामी गुरु से शत्रुता है। फलतः गुरु की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। जबकि बुध की दशा मध्यम रहेगी।

यहां लग्न बीस से इक्कीस अशो के भीतर होने से **'अवरोह अवस्था'** में है। गुरु की दशा स्वास्थ्यप्रदायक है। पद प्रतिष्ठा देगी।

मीनलग्न, अंश 21 से 22

1. लग्न नक्षत्र रेवती
2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–11/20/0/0 से 11/23/20/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गज
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–पूषा
10. वर्णाक्षर–दो
11. वर्ग–सर्प

12. लग्न स्वामी–गुरु | 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि | 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'तस्करी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एव स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एव धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण मे जन्म लेने वाले व्यक्ति में तस्करी की भावना रहती है। द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि की लग्नेश गुरु से शत्रुता है तथा नक्षत्र स्वामी बुध की भी गुरु से शत्रुता है फलत: गुरु की दशा मध्यम फल देगी शनि की दशा भी मध्यम परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख व भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहा लग्न इक्कीस से बाईस अंशो के भीतर होने से **'अवरोह अवस्था'** में है एव बलवान है। गुरु की दशा स्वस्थ्यवर्धक साबित होगी।

मीनलग्न, अंश 22 से 23

1. लग्न नक्षत्र–रेवती | 2. नक्षत्र पद–2
3. नक्षत्र अंश–11/20/0/0 से 11/23/20/0
4. वर्ण–विप्र | 5. वश्य–जलचर
6. योनि–गज | 7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य | 9. नक्षत्र देवता–पूषा
10. वर्णाक्षर दो | 11. वर्ग–सर्प
12. लग्न स्वामी–गुरु | 13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि | 15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–शत्रु
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | 17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध–मित्र
18. प्रधान विशेषता–'तस्करी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एव स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एव धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण में जन्म लेने वाले व्यक्ति में तस्करी की भावना रहती है। द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि की लग्नेश गुरु से शत्रुता है तथा नक्षत्र स्वामी बुध की भी गुरु से शत्रुता है। फलत: गुरु की दशा मध्यम फल देगी शनि की दशा भी मध्यम परन्तु बुध की

दशा अत्यन्त शुभफल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख व भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न बाईस से तेईस अंशों मे 'अवरोह अवस्था' में है एवं बलवान है। गुरु की दशा स्वस्थ्यवर्धक है।

मीनलग्न, अंश 23 से 24

1. **लग्न नक्षत्र**–रेवती
2. **नक्षत्र पद**–2
3. **नक्षत्र अंश**–11/20/0/0 से 11/23/20/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–जलचर
6. **योनि**–गज
7. **गण**–देव
8. **नाड़ी**–अन्त्य
9. **नक्षत्र देवता**–पूषा
10. **वर्णाक्षर**–दो
11. **वर्ग**–सर्प
12. **लग्न स्वामी**–गुरु
13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध
14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि
15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु
16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र
17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र
18. **प्रधान विशेषता**–'तस्करी'

रेवती नक्षत्र का देवता **पूषा** एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एव धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के द्वितीय चरण मे जन्म लेने वाले व्यक्ति में तस्करी की भावना रहती है। द्वितीय चरण का स्वामी शनि है। शनि की लग्नश गुरु से शत्रुता है तथा नक्षत्र स्वामी बुध की भी गुरु से शत्रुता है। फलत: गुरु की दशा मध्यम फल देगी। शनि की दशा भी मध्यम परन्तु बुध की दशा अत्यन्त शुभफल देगी। बुध की दशा में गृहस्थ सुख व भौतिक उपलब्धियो की प्राप्ति होगी.

यहां लग्न तेईस से चौबीस अंशों में **'अवरोह अवस्था'** में है तथा बलवान है। गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक है।

मीनलग्न, अंश 24 से 25

1. **लग्न नक्षत्र**–रेवती
2. **नक्षत्र पद**–3
3. **नक्षत्र अंश**–11/23/0/0 से 11/26 40/0
4. **वर्ण**–विप्र
5. **वश्य**–जलचर

6. **योनि**–गज

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–पूषा

10. **वर्णाक्षर**–चा

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी**–गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'युद्धेजयी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। आपका जन्म रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपको कोर्ट केस, झगड़े विवाद में सदैव विजय प्राप्ति होगी। रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। जो लग्नेश गुरु का शत्रु है। परन्तु लग्ननक्षत्र स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। फलतः गुरु की दशा मध्यम पर शनि की दशा उत्तम फल देगी। बुध की दशा में जातक को समस्त भौतिक उपलब्धियों व सुखों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न चौबीस से पच्चीस अंशों के मध्य **'अवरोह अवस्था'** में है एवं बलवान है। गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक है।

मीनलग्न, अंश 25 से 26

1. **लग्न नक्षत्र**–रेवती

2. **नक्षत्र पद**–3

3. **नक्षत्र अंश**–11/23/0/0 से 11/26/40/0

4. **वर्ण**–विप्र

5. **वश्य**–जलचर

6. **योनि**–गज

7. **गण**–देव

8. **नाड़ी**–अन्त्य

9. **नक्षत्र देवता**–पूषा

10. **वर्णाक्षर**–चा

11. **वर्ग**–सिंह

12. **लग्न स्वामी** गुरु

13. **लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. **नक्षत्र चरण स्वामी**–शनि

15. **लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. **लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध**–मित्र

17. **नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. **प्रधान विशेषता**–'युद्धेजयी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपको कोर्ट-केस, झगड़े-विवाद में सदैव विजय प्राप्त होगी।

रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। जो लग्नेश गुरु का शत्रु है। परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। फलत: गुरु की दशा मध्यम पर शनि की दशा उत्तम फल देगी। बुध की दशा में जातक को समस्त भौतिक उपलब्धियों व सुखों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न पच्चीस से छब्बीस अंशों के मध्य **'हीनबली'** है गुरु की दशा स्वास्थ्यवर्धक है

मीनलग्न, अंश 26 से 27

1. लग्न नक्षत्र–रेवती | **2. नक्षत्र पद**–3

3. नक्षत्र अंश–11/26/40/0 से 11/30/0/0

4. वर्ण–विप्र | **5. वश्य**–जलचर

6. योनि–गज | **7. गण** देव

8. नाड़ी–अन्त्य | **9. नक्षत्र देवता**–पूषा

10. वर्णाक्षर–चा | **11. वर्ग**–सिंह

12. लग्न स्वामी–गुरु | **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. नक्षत्र चरण स्वामी–शनि | **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–मित्र | **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–मित्र

18. प्रधान विशेषता–'युद्धेजयी'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण में होने के कारण आपको कोर्ट-केस, झगड़े विवाद में सदैव विजय प्राप्ति होगी। रेवती नक्षत्र के तृतीय चरण का स्वामी शनि है। जो लग्नेश गुरु का शत्रु है। परन्तु लग्न नक्षत्र स्वामी बुध से शनि की मित्रता है। फलत: गुरु की दशा मध्यम पर शनि की दशा उत्तम फल देगी। बुध की दशा में जातक को समस्त भौतिक उपलब्धियों व सुखों की प्राप्ति होगी।

यहां लग्न छब्बीस से सत्ताईस अंशों के भीतर होने से **'हीनबली'** है, गुरु की दशा में राजपद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 27 से 28

1. लग्न नक्षत्र–रेवती | **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–11/26/40/0 से 11/30/0/0

4. वर्ण–विप्र **5. वश्य**–जलचर

6. योनि–गज **7. गण**–देव

8. नाड़ी–अन्त्य **9. नक्षत्र देवता**–पूषा

10. वर्णाक्षर–ची **11. वर्ग**–सिंह

12. लग्न स्वामी–गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व.

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध**–शत्रु

18. प्रधान विशेषता -'क्लेशभाग्यवेत्'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में है फलत: घर मे क्लेश रहेगा। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है एवं लग्नेश भी गुरु होने से गुरु की दशा मे अति उत्तम फलों की प्राप्ति होगी। नक्षत्र चरण स्वामी गुरु एवं नक्षत्र स्वामी बुध मे परस्पर शत्रुभाव है अत: बुध की दशा यहां मध्यम फल देगी

यहां लग्न सत्ताईस से अट्ठाईस अशों के भीतर होने से **'हीनबली'** है। गुरु की दशा में राज पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

मीनलग्न, अंश 28 से 29

1. लग्न नक्षत्र–रेवती **2. नक्षत्र पद**–4

3. नक्षत्र अंश–11/26/40/0 से 11/30/0/0

4. वर्ण–विप्र **5. वश्य**–जलचर

6. योनि–गज **7. गण**–देव

8. नाड़ी–अन्त्य **9. नक्षत्र देवता**–पूषा

10. वर्णाक्षर–ची **11. वर्ग**–सिंह

12. लग्न स्वामी–गुरु **13. लग्न नक्षत्र स्वामी**–बुध

14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु **15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध**–स्व

16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु **17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध** शत्रु

18. प्रधान विशेषता–'क्लेशभाग्यवेत्'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है। ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर शुद्ध मन वाला एवं धनवान होता है आपका जन्म रेवती नक्षत्र

के चतुर्थ चरण मे है। फलत: घर मे क्लेश रहेगा। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है एव लग्नेश भी गुरु होने से गुरु की दशा मे अति उत्तम फलों की प्राप्ति होगी। नक्षत्र चरण स्वामी गुरु एव नक्षत्र स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। अत: बुध की दशा यहां मध्यम फल देगी।

यहां लग्न अठाइस से उन्तीस अंशो वाला अवरोही अवस्था में **'हीनबली'** है सारा तेज समाप्ति की ओर है। फिर भी गुरु की दशा राज, पद प्रतिष्ठा देगी।

मीनलग्न, अंश 29 से 30

1. लग्न नक्षत्र–रेवती
2. नक्षत्र पद–4
3. नक्षत्र अंश–11/26 40/0 से 11/30/0/0
4. वर्ण–विप्र
5. वश्य–जलचर
6. योनि–गज
7. गण–देव
8. नाड़ी–अन्त्य
9. नक्षत्र देवता–पूषा
10. वर्णाक्षर–ची
11. वर्ग–सिंह
12. लग्न स्वामी–गुरु
13. लग्न नक्षत्र स्वामी–बुध
14. नक्षत्र चरण स्वामी–गुरु
15. लग्न स्वामी से सम्बन्ध–स्व
16. लग्न नक्षत्र से सम्बन्ध–शत्रु
17. नक्षत्र चरण स्वामी से सम्बन्ध शत्रु
18. प्रधान विशेषता–'क्लेशभाग्यवेत्'

रेवती नक्षत्र का देवता पूषा एवं स्वामी बुध है ऐसा जातक सम्पूर्ण देह वाला, भाग्यशाली, शूरवीर, शुद्ध मन वाला एव धनवान होता है। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण मे है। फलत: घर में क्लेश रहेगा। रेवती नक्षत्र के चतुर्थ चरण का स्वामी गुरु है एवं लग्नेश भी गुरु होने से गुरु की दशा में अति उत्तम फलों की प्राप्ति होगी। नक्षत्र चरण स्वामी गुरु एवं नक्षत्र स्वामी बुध में परस्पर शत्रुभाव है। अत: बुध की दशा यहां मध्यम फल देगी।

यहा लग्न उन्नतीस से तीस अशों वाला **'अवरोही अवस्था'** में जातक मृतावस्था में है एव निस्तेज है। गुरु की दशा राज पद प्रतिष्ठा देगी।

❑❑❑

मीनलग्न और आयुष्य योग

1. मीनलग्न वालों के लिये मगल भाग्येश होने से मारकेश का कार्य नहीं करेगा। सूर्य परमपापी है। शनि व्ययेश होने से मुख्य मारकेश का काम करेगा। शुक्र अनिष्ट फलदायक है। बुध सप्तमेश होने से सहायक मारकेश का काम करेगा। आयुष्य प्रदाता ग्रह गुरु है।
2. मीनलग्न में जन्म लेने वाले की मृत्यु विष से, औषधि सेवन से अधिक व्रत व उपवास रखने से, अधिक प्रताप करने से विषैले पदार्थों के सेवन से पशु एव विष जन्तु से दश से रात्रिकाल में तथा अपने ही घर में होता है।
3. मीनलग्न में जन्म लेने वाले की आयु 61 वर्ष के आसपास होती है तथा जन्मे 1, 3 12, 15, 27, 39, 42 45, 49, 52, 55, 60 और 61 वें वर्ष शारीरिक कष्ट एव अल्पमृत्यु की सभावना रहती है।
4. मीनलग्न में गुरु हो, शनि एकादश में, सूर्य द्वितीय भाव में, मान्दी सातवें एवं मंगल नवमें भाव मे हो जातक मत्रबल से दीर्घजीवी एव यशस्वी होता है
5. मीनलग्न हो तथा गुरु कर्क वृश्चिक या मीन राशि मे हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला होता है।
6. मीनलग्न में मीन का नवमांश हो, चद्रमा वृष का हो, नवमांश वगैरा पाच वर्गों में चद्रमा की स्थिति अच्छी हो, चार-पाच ग्रह, उच्च या स्वगृही हो तो जातक 120 वर्ष की परमायु को भोगता है।
7. मीनलग्न मे मीन का नवमाश हो तथा चार ग्रह केन्द्र मे हो तो व्यक्ति सौ वर्ष की स्वस्थ शतायु को भोगता है।
8. मीनलग्न मे चंद्रमा स्व. के नवमाश में लग्नगत हो, चार सौम्य ग्रह केन्द्र में हो, चद्रमा के साथ अन्य कोई ग्रह हो तो व्यक्ति सौ वर्ष की स्वस्थ शतायु को भोगता है।
9. मीनलग्न मे पचम में चद्रमा कर्क का त्रिकोण मे गुरु एवं मंगल दशम भाव में हो तो व्यक्ति दीर्घायु होता है।

10. मीनलग्न मे दशमेश गुरु पचम भाव में उच्च का हो, अष्टमेश शुक्र लग्न या केन्द्र में हो तो जातक सौ वर्ष से ऊपर स्वस्थ दीर्घायु को भोगता है।
11. मीनलग्न मे अष्टमेश शुक्र लग्न में बैठा हो तथा लग्न गुरु एव अन्य शुभग्रहों से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
12. मीनलग्न में चंद्रमा छठे सिंह का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केन्द्रवर्ती हो तो ऐसा जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है
13. मीनलग्न में मगल पांचवें कर्क का हो, सूर्य सातवें एव शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।
14. शनि लग्न में, मिथुन का चन्द्र चौथे, मगल सातवें एव सूर्य दशम भाव में अन्य किसी शुभ ग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
15. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र सातवें एव चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान मे हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु मे गुजर जाता है।
16. मीनलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहों के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक सैद्धान्तिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
17. मीनलग्न में लग्नेश गुरु पापग्रहो के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शुक्र पापग्रहों के साथ छठे अन्य शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
18. मीनलग्न में शनि+मगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें एव गुरु छठे हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
19. मीनलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पापग्रह हो लग्नेश गुरु निर्बल हो तथा लग्न द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
20. मीनलग्न मे शनि मंगल दूसरे स्थान में एव राहु तीसरे स्थान में बैठा हो तथा शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक एक वर्ष के भीतर मर जाता है
21. मीनलग्न मे शनि सप्तम भाव में हो तथा गुरु+शुक्र+राहु द्वादश भाव मे हो तथा अन्य कोई शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त करता है।

22. मीनलग्न के दूसरे घर मे (मेष राशि में) राहु+शुक्र+शनि+सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो, लग्नेश निर्बल हो तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा स्वयं भी कुछ समय बाद गुजर जाता है।

23. मीनलग्न के सप्तम भाव मे शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा की युति शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

24. मीनलग्न के दूसरे भाव में मेष का मंगल का हो तथा चतुर्थ, दशम भाव में भी पापग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।

25. मीनलग्न के द्वादश भाव मे गुरु+सूर्य+राहु+मंगल हो सातवे शुक्र हो तो जातक बहुत कष्टमय जीवन जीता है। उसे शारीरिक रुग्णता रहती है।

26. मीनलग्न के द्वितीय, एकादश या द्वादश भाव में शनि+मंगल+राहु+गुरु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

27. मीनलग्न में अष्टमस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

28. मीनलग्न में द्वितीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

29. मीनलग्न मे लग्नेश गुरु व लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान में भी पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर आत्महत्या करता है।

30. मीनलग्न मे चंद्रमा पापग्रहों के साथ, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ि;त रहता है।

31. मीनलग्न में षष्ठेश सूर्य सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

32. मीनलग्न में निर्बल चन्द्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेतबाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मीनलग्न और रोग

1. मीनलग्न में षष्टेश सूर्य लग्न में पापग्रहों से दृष्ट हो तो व्यक्ति जलस्राव से अंधा होता है।
2. मीनलग्न में षष्टेश सूर्य पापक्रांत हो तथा शुभग्रह छठे या व्यय स्थान में हो तो जातक को असह्य हृदयशूल (हार्ट- अटैक) होता है।
3. मीनलग्न के चौथे भाव में पापग्रह हो, चतुर्थेश बुध पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
4. मीनलग्न में चतुर्थेश बुध कर्क राशि में, निर्बल या अस्तगत हो अथवा आठवें हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
5. मीनलग्न के चतुर्थ शनि में शनि हो षष्टेश शुक्र एवं सूर्य पापग्रहों के साथ हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
6. मीनलग्न में चतुर्थेश बुध यदि अष्टमेश शुक्र के साथ अष्टमा में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
7. जातक पारिजात के अनुसार मीनलग्न के चौथे एवं पांचवें भावों में पापग्रह हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
8. मीनलग्न के चतुर्थ स्थान में मिथुन का शनि एवं कुंभ का सूर्य द्वादश में हो तो जातक को हृदय रोग होता है।
9. मीनलग्न के चतुर्थ स्थान में राहु अन्य पापग्रहों से दृष्ट हो, लग्नेश, गुरु निर्बल हो तो जातक को असह्य हृदय (हार्ट-अटैक) होता है।
10. मीनलग्न मे वृश्चिक का सूर्य दो पापग्रहों के मध्य हो तो जातक को तीव्र हृदयशूल (हार्ट अटैक) होता है।
11. मीनलग्न में गुरु+बुध+शुक्र की युति एक साथ, दुःस्थानों में हो तो जातक की वाहन दुर्घटना में मृत्यु होती है।
12. मीनलग्न मे पापग्रह हो, लग्नेश गुरु बलहीन हो तो व्यक्ति रोगी रहता है।

13. मीनलग्न में क्षीण चंद्रमा लग्नस्थ हो, लग्न को पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति रोग्रस्त रहता है।
14. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र लग्न में हो, लग्नेश गुरु अष्टम में हो, लग्न को पापग्रह देखता हो तो व्यक्ति दवाई लेने पर भी ठीक नहीं होता, सदैव रोगी रहता है।
15. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र लग्न में बैठा हो तथा लग्न गुरु एवं अन्य शुभग्रहों से दृष्ट हो तो जातक सौ वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
16. मीनलग्न में चंद्रमा छठे सिंह का हो, अष्टम स्थान में कोई पापग्रह न हो तथा सभी शुभग्रह केंद्रवर्ती हो तो ऐसा जातक 86 वर्ष की स्वस्थ आयु को प्राप्त करता है।
17. मीनलग्न में मंगल पांचवें कर्क का हो, सूर्य सातवें एवं शनि मेष का हो तो जातक 70 वर्ष की निरोग आयु को भोगता है।
18. शनि लग्न में, मिथुन का चंद्रमा, चौथे, मंगल सातवें एवं सूर्य दशम भाव में अन्य किसी शुभग्रह के साथ हो तो जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ 60 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
19. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र सातवें तथा चंद्रमा पापग्रहों के साथ छठे या आठवें स्थान में हो तो व्यक्ति 58 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
20. मीनलग्न में शनि किसी भी अन्य ग्रह के साथ लग्नस्थ हो, चंद्रमा पापग्रहो के साथ आठवें या द्वादश भाव में हो तो ऐसा जातक सैद्धातिक, चरित्रवान एवं विद्वान होते हुए 52 वर्ष की आयु में गुजर जाता है।
21. मीनलग्न में लग्नेश गुरु पापग्रहों के साथ आठवें हो तथा अष्टमेश शुक्र पापग्रहों के साथ छठे, अन्य शुभग्रहो से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 45 वर्ष तक ही जी पाता है।
22. मीनलग्न में शनि+मंगल लग्नस्थ हो, चंद्रमा आठवें एव गुरु छठे हो तो जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
23. मीनलग्न के द्वितीय और द्वादश भाव में पापग्रह हो, लग्नेश गुरु निर्बल हो तथा लग्न, द्वितीय या द्वादश भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक मात्र 32 वर्ष की अल्पायु को प्राप्त करता है।
24. मीनलग्न में शनि मंगल दूसरे स्थान में एवं राहु तीसरे स्थान में बैठा हो तथा शुभग्रहों की दृष्टि न हो तो बालारिष्ट योग बनता है। ऐसा जातक एक वर्ष के भीतर मर जाता है।

25. मीनलग्न में शनि सप्तम भाव में हो तथा गुरु+शुक्र+राहु द्वादश भाव में हो तथा अन्य कोई शुभ योग न हो तो ऐसा बालक एक वर्ष के भीतर मृत्यु को प्राप्त करता है।

26. मीनलग्न के दूसरे घर में (मेष राशि) में राहु+शुक्र+शनि+सूर्य शुभग्रहों से दृष्ट न हो, लग्नेश निर्बल हो तो ऐसा जातक जन्म लेने पर पिता को मारता है तथा स्वयं भी कुछ समय बाद गुजर जाता है।

27. मीनलग्न के सप्तम भाव में शनि+राहु+मंगल+चंद्रमा की युति, शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक जन्म लेते ही शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

28. मीनलग्न के दूसरे भाव में मेष का मगल का हो तथा चतुर्थ, दशम भाव मे भी पापग्रह हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है।

29. मीनलग्न के द्वादश भाव में गुरु+सूर्य+राहु+मंगल हो सातवें शुक्र हो तो जातक बहुत कष्टमय जीवन जीता है। उसे शारीरिक रुग्णता रहती है।

30. मीनलग्न के द्वितीय, एकादश या द्वादश भाव में शनि+मंगल+राहु+गुरु की युति हो तो ऐसा जातक बहुत कष्ट से जीता है। उसे कोई न कोई शारीरिक बीमारी लगी रहती है।

31. मीनलग्न में अष्टमस्थ सूर्य के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

32. मीनलग्न में द्वितीयस्थ शनि के साथ राहु या केतु हो तो ऐसा बालक मातृघातक होता है।

33. मीनलग्न में लग्नेश गुरु व लग्न दोनों पापग्रहों के मध्य हो, सप्तम स्थान में भी पापग्रह हो तथा आत्मकारक सूर्य निर्बल हो तो ऐसा जातक जीवन में निराश होकर आत्महत्या करता है।

34. मीनलग्न में चंद्रमा पापग्रहों के साथ, सप्तम में शनि हो तो जातक देवता के शाप या शत्रुकृत अभिचार से पीड़ित रहता है।

35. मीनलग्न में षष्ठेश सूर्य सप्तम या दशम भाव में हो, लग्न पर मंगल की दृष्टि हो तो जातक शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता है।

36. मीनलग्न में निर्बल चन्द्रमा अष्टम स्थान में शनि के साथ हो तो जातक प्रेतबाधा एवं शत्रुकृत अभिचार रोग से पीड़ित रहता हुआ अकाल मृत्यु को प्राप्त करता है।

❑❑❑

मीनलग्न और धन योग

मीनलग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिये धनप्रदाता ग्रह मंगल है। धनेश मंगल की शुभाशुभ स्थित, धनस्थान से संबंध स्थापित करने वाले ग्रहों की स्थिति, योगायोग, गुरु तथा धनभाव पर पड़ने वाले ग्रहों की दृष्टि से जातक की आर्थिक स्थिति, आय के स्रोतों तथा चल-अचल सम्पत्ति का पता चलता है। इसके अतिरिक्त पंचमेश चंद्रमा, लग्नेश गुरु, तथा लाभेश शनि की अनुकूल प्रतिकूल व परिस्थितियां भी मीनलग्न में जातकों के धन, ऐश्वर्य एवं वैभव को घटाने-बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वैसे मीनलग्न के लिये शनि, शुक्र, सूर्य व बुध अशुभ होते हैं। मंगल और चंद्रमा शुभ फलदायक होते हैं। मंगल मारकेश होते हुए भी मारक का काम नहीं करेगा। शनि व्ययेश होने से सहायक मारकेश का काम करेगा। सूर्य, शुक्र व शनि परमपापी ग्रह है। अकेला गुरु राजयोगकारक है। बुध सप्तमेश होने से मारक ग्रह है।

सफल व शुभ योग—1. मंगल + गुरु, 2. गुरु + चंद्रमा

राजयोगकारक—चंद्र, गुरु

निष्फल योग—मंगल + बुध

अशुभ योग— 1. गुरु + शुक्र, 2. गुरु + सूर्य, 3. गुरु + बुध

लक्ष्मी योग—मंगल नवम में, गुरु केन्द्र-त्रिकोण में, शनि एकादश में।

विशेष योगा योग

1. मीनलग्न में लग्नस्थान गुरु बुध एवं मंगल से युत हो अथवा लग्न स्थित बुध गुरु मंगल से दृष्ट हो तो जातक महाधनशाली होता है।
2. मीनलग्न में मंगल मेष, वृश्चिक या मकर राशि का होता ऐसा जातक अल्प प्रयास से भारी धन कमाता है। ऐसा जातक को धन के मामले को लेकर

भाग्यशाली कहा जा सकता है। लक्ष्मी ऐसा जातक का पीछा नहीं छोड़ती है।

3. मीनलग्न हो, गुरु लग्न में हो तथा बुध एवं शनि अपनी-अपनी स्वराशि में हो तो ऐसा व्यक्ति धनवानों में अग्रगण्य होता है तथा पद-पद पर लक्ष्मी उसके साथ चलती है।

4. मीनलग्न में मंगल यदि शनि के घर में एवं शनि मंगल के घर में परस्पर राशि परिवर्तन करके बैठा हो अर्थात् मकर या कुम्भ राशि में हो तथा शनि मेष या वृश्चिक राशि में हो तो व्यक्ति महाभाग्यशाली होता है। जीवन में खूब धन कमाता है तथा लक्ष्मी उसकी दासी के समान सेवा करती है।

5. मीनलग्न में गुरु यदि केन्द्र-त्रिकोण में कहीं भी हो तथा मंगल स्वगृही हो तो ऐसा जातक कीचड़ में कमल की तरह खिलता है अर्थात् सामान्य परिवार में जन्म लेकर भी धीरे-धीरे अपने पराक्रम व पुरुषार्थ से लक्षाधिपति, कोट्याधिपति हो जाता है। ऐसा जातक का भाग्योदय प्रायः 28 वर्ष की आयु के बाद होता है।

6. मीनलग्न हो, पंचम में चंद्रमा स्वगृही हो तथा शनि मकर राशि का लाभ स्थान में हो तो जातक लक्षाधिपति होता है।

7. मीनलग्न में कर्क का बुध पांचवें तथा मकर का शनि लाभ में हो तो जातक धनी होता है।

8. मीनलग्न में चंद्रमा पांचवें, गुरु स्वगृही धनु या मीन का कहीं भी बैठा हो तो जातक महाधनी होता है।

9. मीनलग्न में गुरु+चंद्रमा+मंगल की युति हो तो 'महालक्ष्मी योग' बनता है। ऐसा जातक प्रबल पराक्रमी, अतिधनवान, ऐश्वर्यमान एवं महाप्रतापी होता है।

10. मीनलग्न में गुरु+बुध एवं मंगल से युत हो तो 'महालक्ष्मीयोग' बनता है। ऐसा जातक अपने बुद्धिबल से शत्रुओं को परास्त करता हुआ, महाधनी एवं अतिप्रतापी होता है।

11. मीनलग्न में गुरु मकर राशि में हो तथा शनि मीन राशि में हो तो जातक 33वें वर्ष में पांच लाख रुपये कमा लेता है तथा शत्रुओं का नाश करते हुए स्वार्जित धनलक्ष्मी को भोगता है। ऐसा व्यक्ति को जीवन में अचानक रुपया मिलता है।

12. मीनलग्न हो, लग्नेश गुरु, धनेश व भाग्येश मंगल तथा लाभेश शनि यदि अपनी अपनी उच्च व स्वराशि में हो तो जातक करोड़पति होता है।

13. मीनलग्न के सप्तम भाव में राहु, शुक्र, मगल और शनि की युति हो तो जातक अरबपति होता है।

14. मीनलग्न में धनेश मगल यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान मे हो 'धनहीन योग' की सृष्टि होती है, जिस प्रकार घड़े में छिद्र होने के कारण उसमें पानी नहीं ठहर सकता। ठीक उसी प्रकार से ऐसे व्यक्ति के पास धन नहीं ठहर पाता है। सदैव रुपयो की कमी बनी रहती है। इस योग की निवृत्ति हेतु गले में अभियंत्रित 'मगल यत्र' धारण करना चाहिये। पाठक चाहे तो 'मंगल यत्र' हमारे कार्यालय से प्राप्ति कर सकते है।

15. मीनलग्न मे धनेश मगल यदि आठवें हो परन्तु सूर्य यदि लग्न को देखता हो तो ऐसे व्यक्ति को भूमि में गढ़े हुये धन की प्राप्ति होती है या लॉटरी से रुपया मिल सकता है पर रुपया पास मे टिकेगा नहीं।

16. मीनलग्न में मंगल यदि नवम भाव मे वृश्चिक राशि का हो तो रुचक योग बनता है। ऐसा जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता हुआ, अथाह भूमि, सम्पत्ति व धन का स्वामी होता है।

17. मीनलग्न में सुखेश बुध, लाभेश शनि यदि नवम भाव में मगल से दृष्ट हो तो जातक को अनायास धन की प्राप्ति होती है।

18. मीनलग्न में चद्रमा+गुरु की युति यदि मेष राशि, मिथुन राशि, कर्क राशि या वृश्चिक राशि में हो तो इस प्रकार से गजकेसरी योग के कारण व्यक्ति को अचानक उत्तम धन की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को लॉटरी, शेयर मार्केट या अन्य व्यापारिक स्रोत के द्वारा अकल्पनीय धन की प्राप्ति होती है

19. मीनलग्न में धनेश मंगल अष्टम में एव अष्टमेश शुक्र धनस्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसा जातक गलत तरीके से धन कमाता है। ऐसा व्यक्ति ताश, जुआ, मटका, घुड़रेस, स्मगलिग एवं अनैतिक कार्यों से धन अर्जित करता है।

20. मीनलग्न हो, तृतीयेश शुक्र, लाभ में एव लाभेश शनि तृतीय स्थान में परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो ऐसे व्यक्ति को भाई, मित्र एव भागीदारों के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

21. मीनलग्न में बलवान मंगल के साथ यदि चतुर्थेश बुध की युति हो तो व्यक्ति के माता के द्वारा, भूमि के द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

22. लग्नेश गुरु धन भवन में हो, मंगल का लग्नेश से संबंध हो तो जातक उच्च कोटि का व्यापारी होता है।
23. मीनलग्न हो तथा शुक्र द्वादश स्थान में हो तो वह शुभ नहीं रहता, ऐसा जातक निश्चय ही ऋणग्रस्त रहता है
24. यदि द्वादश स्थान में कुंभ राशिस्थ चंद्रमा हो तो जातक निश्चय ही लखपति के घर जन्म लेकर भी साधारण जीवन व्यतीत करता है।
25. मंगल यदि उच्च का एकादश स्थान में हो जातक निश्चय ही करोड़पति होता है। चाहे जातक का कोई भी सहायक न हो ऐसा मंगल आकस्मिक धन दिलाने में भी सहायक होता है।
26. कर्क राशि में पंचम भाव मे मंगल हो तो जातक का धन स्त्री एवं स्त्री के भाई द्वारा नष्ट होता है।
27. यदि दूसरे भाव में चंद्रमा एवं पांचवें भाव में मंगल हो तो मंगल की दशा में श्रेष्ठ धन लाभ होता है।
28. गुरु छठे भावे में हो, शुक्र आठवें, शनि बारहवें तथा चंद्रमा मंगल ग्यारहवें भावस्थ हो तो उच्चातिउच्च धनदायक योग बनता है।
29. चंद्रमा व मंगल का योग हो, लाभेश व धनेश चतुर्थ भावस्थ हो तथा चतुर्थेश शुभ स्थान में शुभ युत एवं दृष्ट हो तो जातक को अचानक धन की प्राप्ति होती है।
30. द्वितीयेश पंचमेश अथवा द्वितीयेश एकादशेश परस्पर स्थानान्तरित होते हों या नवमेश व पंचमेश नवम, पंचम भाव में ही हो तो उत्तम धन योग होता है।
31. द्वितीयेश, एकादशेश, पंचमेश, नवमेश से संबंध करे तो उत्तम अर्थ योग होता है।
32. द्वितीयेश-एकादशेश साथ-साथ हों और मीनलग्न हो तो धन का नाश होता है।
33. लग्नेश गुरु, चतुर्थेश बुध, नवमेश मंगल मिलकर यदि अष्टम भाव में हो तो जातक दरिद्र होता है
34. द्वादशेश व द्वितीयेश स्थान परिवर्तन किए हुए हों तो भी धन का नाश होता है।
35. यदि बुध, गुरु, शुक्र एवं शुक्ल पक्ष में चंद्रमा का पाप ग्रह देखते हो तो जातक भाग्यशाली तो नहीं परन्तु धनवान अवश्य होता है।
36. मीनलग्न में व्ययेश शनि यदि व्यय भाव में ही हो तो ऐसा व्यक्ति का धन पाप कर्मों में या फिजूल खर्चों में समाप्त हो जाता है।

37. मीनलग्न में सूर्य और चंद्रमा दोनों ही कुम्भ राशि में हो तथा तीन-चार ग्रह नीच के हो तो व्यक्ति करोड़पति के घर में जन्म लेकर भी दरिद्र होता है।

38. मीनलग्न में यदि बलवान मंगल की पचमेश चंद्रमा से युति हो तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र द्वारा धन की प्राप्ति होती है किंवा पुत्र जन्म के बाद ही जातक का भाग्योदय होता है।

39. मीनलग्न में बलवान मगल यदि षष्टेश सूर्य के साथ युति हो, धनभाव पर शनि की दृष्टि हो तो जातक को शत्रुओं के द्वारा उसे धन व यश की प्राप्ति होती है।

40. मीनलग्न मे बलवान मगल की सप्तमेश बुध से युति हो तो जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होता है तथा उसे पत्नी, ससुराल पक्ष में धन की प्राप्ति होती है।

41 मीनलग्न में बलवान मगल यदि नवम भाव मे, लग्नेश गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति राजा, राज्य सरकार से, सरकारी अधिकारियो, सरकारी अनुबधन (ठेको) से काफी धन कमाता है।

42. मीनलग्न में बलवान मगल की दशमेश गुरु से युति हो तो जातक को पैतृक सम्पत्ति, पिता द्वारा रक्षित धन की प्राप्ति होती है अथवा पिता का व्यवसाय जातक के भाग्योदय में सहायक होता है।

43. मीनलग्न मे दशम भाव का स्वामी गुरु यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो जातक को परिश्रम का पूरा लाभ नहीं मिलता। ऐसा व्यक्ति जन्म स्थान में नहीं कमाता, उसे सदा धन की कमी बनी रहती है।

44. मीनलग्न में लग्नेश गुरु यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो एव सूर्य तुला का आठवें हो तो व्यक्ति कर्जदार होता है तथा उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती है।

45. मीनलग्न में धनभाव मे पापग्रह हो तथा लाभेश शनि यदि छठे, आठवें, बारहवें स्थान मे हो तो व्यक्ति दरिद्र होता है।

46. मीनलग्न के केन्द्र स्थानों को छोड़कर चंद्रमा गुरु से यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो शकट योग बनता है। जिसके कारण व्यक्ति को सदैव धन का अभाव रहता है।

47. मीनलग्न मे धनेश मंगल अस्त हो, नीच राशि (कर्क) में हो तथा धनस्थान एवं अष्टम भाव में कोई भी पापग्रह हो तो व्यक्ति सदैव ऋणग्रस्त रहता है, कर्ज उसके सिर से उतरता नहीं।

48. मीनलग्न में लाभेश शनि यदि छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तथा लाभेश अस्तगत, पापपीड़ित हो जातक महादरिद्र होता है।

49. मीनलग्न में अष्टमेश शुक्र वक्री होकर कही बैठा हो तथा अष्टम स्थान में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो तो अकस्मात धन हानि का योग बनता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति को धन के मामले मे परिस्थितिवश अचानक भारी नुकसान हो सकता है, फलतः सावधान रहे।

50. मीनलग्न में अष्टमेश, शुक्र शत्रुक्षेत्री, नीचराशिगत या अस्त हो तो अचानक धन की हानि होती है।

❑❑❑

मीनलग्न और विवाह योग

1. मीनजातक की कुण्डली में अष्टमेश की दृष्टि सप्तम भाव पर हो तो जातक स्त्री दुराचारिणी होती है।
2. मीनलग्न हो तथा जातक स्त्री का बुध उच्च का हो तो वह नारी-कवि हृदय, सौभाग्यशालिनी और सुन्दर गुणों से मंडित होती है। ऐसी नारी जीवन के समस्त ऐश्वर्य भोगती है
3. सप्तम स्थान में सूर्य या उसका नवमांश हो तो उस स्त्री का पति लेखक, विचारक अथवा अफसर होता है, परन्तु रतिचर्या में स्त्री पति से प्रसन्न नहीं रहती
4. लग्न मे सूर्य, शनि तथा सप्तम भाव मे बुध हो तो जातक का गृहस्थ जीवन कलहपूर्ण रहता है।
5. मंगल यदि छठे भावस्थ हो, सप्तम भाव मे राहु, अष्टम भाव में शनि हो तो जातक की स्त्री जीवित नहीं रहती।
6. लग्न में मीन का सूर्य हो, द्वितीय स्थान में मेष का सूर्य, सप्तम में कन्या में पाप ग्रह के साथ चंद्रमा हो तो स्त्री हेतुक मरण घर में हो।
7. सप्तमेश पापग्रह से युति करे या दूसरे अथवा सप्तम भाव में मंगल, राहु, सूर्य, शनि में से कोई हो या शुक्र लाभ स्थान में या नीच की राशि में हो अथवा सूर्य अपने ही घर में या द्वादश स्थान मे हो तो जातक दूसरा विवाह अवश्य करता है।
8. शनि द्वितीय स्थान में हो और राहु सप्तम भवन मे हो तो जातक दो विवाह करता है.
9. यदि द्वितीयेश व सप्तमेश या शुक्र सातवे घर में हो और दूसरे व सातवें घरों पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो जितने ही शुभ ग्रहों की दृष्टि हो उतनी ही

पत्नियां हो या उतनी ही स्त्रियों से सुख हो पर यदि क्रूर ग्रह से युक्त ये स्थान या शुक्र हो तो यह योग नहीं होता।

10. नवमेश, सप्तमेश परस्पर स्थान परिवर्तन करते हो तो जातक का, भाग्योदय अपनी अपनी पत्नी के कारण होता है।
11. मीनलग्न में शनि लग्नस्थ चन्द्रमा के साथ हो तथा सप्तम भाव में सूर्य हो तो ऐसे जातक के विवाह में भंयकर बाधा आती है। विलम्ब विवाह तो निश्चित है। अविवाह की स्थिति भी बन सकती है
12. मीनलग्न मे शनि द्वादशस्थ हो द्वितीय भाव मे सूर्य हो, लग्नेश गुरु निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
13. मीनलग्न मे शनि छठे, सूर्य आठवें हो एवं सप्तमेश बुध निर्बल हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
14. मीनलग्न मे सूर्य, शनि और शुक्र की युति कहीं भी हो, सप्तमेश बुध हीनबली हो तो जातक का विवाह नहीं होता।
15. मीनलग्न में शुक्र कर्क या सिंह राशि का हो तथा सूर्य या चंद्रमा शुक्र से द्वितीय या द्वादश स्थान में हो तो जातक का विवाह नही होता
16. मीनलग्न द्वितीयेश मगल वक्री हो अथवा द्वितीय भाव में कोई भी ग्रह वक्री होकर बैठा हो जातक के विवाह मे अत्यधिक अवरोध उत्पन्न होता है।
17. राहु या केतु सप्तम भाव या नवम भाव में क्रूर ग्रहों से युक्त होकर बैठे हो तो निश्चय ही जातक का विवाह विलम्ब से होता है। ऐसा जातक प्रायः अन्तर्जातीय विवाह करता है।
18. मीनलग्न में सप्तमेश बुध अस्त हो, सप्तम भाव मे कोई ग्रह वक्री हो अथवा किसी वक्री ग्रह की सप्तम भाव पर दृष्टि हो तो जातक के विवाह में अवरोध आते हैं और विवाह समय पर सम्पन्न नही होता।
19. मीनलग्न में द्वितीयेश मगल, परस्पर शनि से दृष्ट हो तो विवाह विलम्ब से होता है ससुराल से खटपट रहती है।
20. मीनलग्न मे सातवें सूर्य शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो स्त्री पति द्वारा त्याग दी जाती है अर्थात् उसे तलाक मिलता है।
21. मीनलग्न में सप्तमेश बुध आठवें स्थान में पापग्रहो से युत हो या पापग्रहो के मध्य हो तो ऐसा जातक अपने जीवनसाथी की हत्या करता है एवं कुल को कलंकित करता है।

22. मीनलग्न में सूर्य आठवें शुभग्रहों से दृष्ट न हो तो ऐसी स्त्री नितनूतन वस्त्र अलकार पहनकर पर पुरुषों का संग करती है एवं कुल की मार्यादा को नष्ट कर देती है।

23. मीनलग्न में मगल आठवें हो तो ऐसी स्त्री मृगनयनी एवं कुटिल स्वभाव की होती है। ऐसी स्त्री प्राय: प्रेमविवाह करती हुई, स्वच्छन्द यौनाचार में विश्वास रखती है

24. मीनलग्न में चद्रमा यदि (2/4/6/8/10/12) राशि मे हो तो ऐसी स्त्री अत्यन्त कोमल एवं मृदु स्वभाव वाली जातक होती है।

25. मीनलग्न में, गुरु, बुध, शुक्र एवं मगल बलवान हो तो ऐसी स्त्री विख्यात विदुषी, सच्चरित्र वाली एवं सभ्य महिला होती है

26. जातक पारिजात के अनुसार मीनलग्न मे उत्पन्न कन्याए कामक्रीडा व अन्य कलाओं में निपुण होता है। यदि चंद्रमा लग्न में हो तो ऐसी स्त्री पति की प्रिया एव प्राणवल्लभा होती है।

27. मीनलग्न में लग्नस्थ गुरु के साथ अष्टमेश शुक्र हो तो 'द्विभार्या योग' बनता है। ऐसा जातक दो नारियों के साथ रमण करता है।

28. मीनलग्न में बुध सप्तम भाव में शुभ ग्रहो से दृष्ट न हो तो ऐसा जातक एक साथ मे दो स्त्रियों से प्रेम रखता है अर्थात् विवाहित पत्नी के अतिरिक्त उसके उपपत्नी भी होती है।

29. मीनलग्न में सप्तमेश बुध यदि द्वितीय या द्वादश स्थान मे हो तो पूर्ण 'व्यभिचारी योग' बनता है ,ऐसा पुरुष जीवन मे अनेक स्त्रियों के साथ सम्भोग करता है।

❑❑❑

मीनलग्न और संतान योग

1. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा यदि आठवें हो तो जातक को अल्प संतति होती है.
2. मीनलग्न में पचमेश चंद्रमा क्षीण हो, पापग्रस्त या पापपीड़ित होकर छठे, आठवे या बारहवें स्थान मे हो तो व्यक्ति के पुत्र नहीं होता।
3. मीनलग्न में गुरु कर्क वृश्चिक या मीन राशि में हो तो जातक के पहली संतान कन्या होती है
4. मीनलग्न में पचमेश चद्रमा विषम राशि में हो तो तथा गुरु से युत या दृष्ट हो तो व्यक्ति के प्रथम सतान पुत्र ही होगा।
5. मीनलग्न में सूर्य अकेला कर्क राशि में हो जातक दूसरा विवाह करने पर पुत्र की प्राप्ति होती है।
6. मीनलग्न में मंगल अकेला कर्क राशिगत पचमस्थ हो तो जातक को दूसरे विवाह से पुत्र की प्राप्ति होती है
7. मीनलग्न मे शुक्र अकेला कर्क राशिगत पचमस्थ हो तो व्यक्ति को दूसरे विवाह के बाद पुत्र की प्राप्ति होती है।
8. मीनलग्न मे बुध अकेला कर्क राशिगत हो तो जातक क थोड़े पुत्र होते हैं।
9. मीनलग्न में शनि अकेला कर्क राशिगत हो तो जातक के बहुत पुत्र होते हैं।
10. मीनलग्न में चंद्रमा स्वराशिगत पंचमस्थ हो तो थोड़े पुत्र होते हैं।
11. मीनलग्न में अकेला गुरु पंचमस्थ कर्क राशि में हो तो जातक के बहुत-सी कन्याएं होती हैं.
12. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा लग्न मे हो एवं लग्नेश गुरु पचम भाव मे परस्पर परिवर्तन करके बैठे हो तो जातक दूसरों की संतान गोद में लेकर अपने पुत्र की तरह पालता है।
13. मीनलग्न के पचम भाव में कर्क राशि होने से, यदि अन्य कोई दुर्योग न हो तो विवाहोपरान्त जातक के शीघ्र संतति होती है।

14. मीनलग्न में गुरु कमजोर हो, साथ में पचमेश चंद्रमा, सप्तमेश बुध ही बलहीन हो तो 'अनपत्य योग' बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह, पुत्र संतान की प्राप्ति नही होती पर उपाय करने से दोष की निवृत्ति हो जाती है।

15. राहु, सूर्य एव मगल पचम भाव मे हो तो ऐसे जातक को शल्यचिकित्सा द्वारा कष्ट से पुत्र सतान की प्राप्ति होती है आज की भाषा मे ऐसे बालक को 'सिजेरियन चाइल्ड' कहते हैं।

16 मीनलग्न हो पचमेश चद्रमा कमजोर हो तथा राहु एकादश भाव में हो तो जातक के वृद्धावस्था में संतान होती है।

17. पंचम स्थान में राहु, केतु या शनि इत्यादि पापग्रह हो तो गर्भपात अवश्य होता है।

18. मीनलग्न में लग्नेश गुरु द्वितीय स्थान मे हो एव पचमेश व चद्रमा पापग्रह या पापपीड़ित हो तो ऐसे जातक के पुत्र सतान उत्पन्न होकर नष्ट हो जाते हैं

19. मीनलग्न मे पचमेश चद्रमा बारहवें, शुभग्रहो से युत या दृष्ट हो तो ऐसे जातक के पुत्र की वृद्धावस्था मे अकाल मृत्यु हो जाती है। जिससे जातक ससार से विरक्त होकर वैराग्य की ओर उन्मुख हो जाता है।

20. पंचमेश यदि वृष, कर्क, कन्या या तुला राशि में हो तो जातक को प्रथम संतति के रूप में कन्यारत्न की प्राप्ति होती है

21. मीनलग्न मे पचमेश चद्रमा की सप्तमेश बुध के साथ युति हो तो जातक को प्रथम सतान के रूप में कन्यारत्न की प्राप्ति होती है।

22. सप्तम भाव मे अर्थात् कन्या राशिस्थ मगल हो तो एव उस पर शनि की दृष्टि हो अर्थात् लग्न मे मीन का शनि हो तो जातक स्त्री के संतान नहीं होती।

23. लग्नेश-पचमेश की युति कहीं भी हो तो जातक का सतान पक्ष प्रबल होता है।

24. गुरु चद्रमा क्रमशः अपनी उच्च राशि कर्क वृष में पुनः क्रमशः पचम व तृतीय भाव में हो तो जातक की सतान अत्यधिक भाग्यशाली होती है

25. समराशि (2, 4, 6, 8, 10, 12) में गया हुआ बुध कन्या सतति की बाहुल्यता देता है। यदि चंद्रमा और शुक्र का भी पंचम भाव पर प्रभाव हो तो यह योग अधिक पुष्ट हो जाता है

26. पचमेश चद्रमा निर्बल हो, लग्नेश गुरु भी निर्बल हो, पचम भाव में राहु हो तो जातक को सर्पदोष के कारण पुत्र संतान नहीं होती.

27. पंचम भाव में राहु हो और एकादश स्थान में स्थित केतु के मध्य सारे ग्रह हो तो पद्मनामक 'कालसर्प योग' के कारण ---क के पुत्र सतान नहीं होती ऐसे जातक को वंश वृद्धि की चिंता एवं म- -सक तनाव रहता है।

28. सूर्य अष्टम हो, पंचम भाव में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तो जातक को पितृदोष होता है तथा पितृशाप के कारण पुत्र सतान नहीं होती।

29. लग्न में मगल, अष्टम में शनि, पचम से सूर्य एव बारहवें स्थान में राहु या केतु हो तो 'वंशविच्छेद योग' बनता है। ऐसे जातक के स्वयं का वश समाप्त हो जाता है आगे पीढ़िया नहीं चलती

30. मीनलग्न के चतुर्थभाव में पापग्रह हो तथा चद्रमा जहां बैठा हो उसके आठवें स्थान में पापग्रह हो तो वंशविच्छेद योग बनता है, ऐसे जातक के स्वयं का वश समाप्त हो जाता, उसके आगे पीढ़ियां नही चलती।

31. तीन केन्द्रो में पापग्रह हो तो व्यक्ति को 'इलाख्या नामक' सर्पयोग बनता है इस दोष के कारण जातक को पुत्र संतान का सुख नहीं मिलता। दोष निवृत्ति पर शन्ति हो जाती।

32. मीनलग्न मे पंचमेश पंचम, षष्ठ या द्वादश भाव मे हो तथा पचम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट न हो तो 'अनपत्य योग' बनता है ऐसे जातक को निर्बीज पृथ्वी की तरह संतान उत्पन्न नही होती पर उपाय से दोष शात हो जाता है।

33. पचम भाव मंगल बुध की युति हो तो जातक के जुड़वा सतान होती है पुत्र या पुत्री की कोई शर्त नहीं।

34. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली मे सूर्यलग्न में और शनि यदि सातवे हो, अथवा सूर्य+शनि की युति सातवे हो, तथा दशम भाव पर गुरु की दृष्टि हो तो 'अनगर्भा योग' बनता है ऐसी स्त्री गर्भधारण योग्य नहीं होती है।

35. जिस स्त्री की जन्म कुण्डली में शनि+मंगल छठे या चौथे स्थान मे हो तो 'अनगर्भा योग' बनता है। ऐसे स्त्री गर्भधारण करने योग्य नहीं होती।

36. शुभ ग्रहों के साथ सूर्य+चंद्रमा यदि पंचम स्थान में हो तो 'कुलवर्द्धन योग' बनता है। ऐसी स्त्री दीर्घजीवी, धनी एवं ऐश्वर्यशाली सताना को उत्पन्न करती है

37. पंचमेश मिथुन या कन्या राशि मे हो, बुध से युत हो, पंचमेश और पंचम भाव पर पुरुष ग्रहों की दृष्टि न हो तो जातक को केवल 'कन्या योग' होता है। पुत्र सतान नहीं होता।

38. मीनलग्न में पंचमेश चंद्रमा धनस्थान में मेषराशि का हो मंगल वृष में तथा तुला का गुरु चंद्रमा को देख रहा हो तो ऐसे जातक को कोई कन्या न होकर दो पुत्र ही होते हैं।

उदाहरण—लक्ष्मीचन्द्र राठी, 29.9.1958 समय 18.40 नोखा (राज.)

❑❑❑

मीनलग्न और राजयोग

1. यदि मीनलग्न अपने पूर्णांश पर हो, उसमें उच्च का शुक्र हो, उच्च का सूर्य धन स्थान मे हो, उच्च का बुध सप्तम मे हो और उच्च का मंगल लाभ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
2. बुध को छोड़कर उपर्युक्त तीनो ग्रह उच्च के हों तो राजयोग होता है। मीन का चंद्रमा लग्न मे, सिंह का स्वगृही सूर्य शत्रु भाव में कुम्भ का स्वगृही शनि द्वादश में तथा मकर में उच्च का मंगल लाभ स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
3. उच्च का सूर्य स्वगृही मगल के साथ धन स्थान में, उच्च का चंद्रमा स्वगृही शुक्र के साथ पराक्रम स्थान मे, स्वगृही बुध चतुर्थ मे और स्वगृही वृश्चिक का मंगल भाग्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।
4. कर्क का चद्रमा पंचम स्थान में उच्च का बुध सप्तम स्थान मे, धन का स्वगृही गुरु राज्य स्थान मे और मकर का मगल स्वगृही शनि के साथ एकादश भाव में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
5. चार, पाच, छः, तीन उच्च के ग्रह यदि अपने उच्चांश या मित्रांश पर केन्द्र त्रिकोण में बलवान् हो या चार पाच, छः स्वगृही ग्रह पूर्णबली होकर केन्द्र त्रिकोण में मित्रराशि के होकर बैठे हों तो राजयाग करते हैं। तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है
6. शुक्र, बुध मीन के लग्न मे हो, गुरु, चद्रमा धन के दशम में हो उच्च का मगल एकादश लाभ में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एवं वैभव को भोगता है।
7. मीन का चंद्रमा लग्न में हो, मिथुन का शनि चतुर्थ स्थान मे हो बुध, शुक्र, सूर्य कन्या के सप्तम में हो वृश्चिक का गुरु नवम भाव मे और धन का मगल

राज्य स्थान में हो तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

8. मीन का शुक्र लग्न में और कर्क का गुरु पचम मे हो तो भी राजयोग होता है तो जातक राजा के समान ऐश्वर्य एव वैभव को भोगता है।

9. मीनलग्न मे पूर्ण चद्रमा, मित्र, शुभ समस्त ग्रहों से दृष्ट हो तो मनुष्य को बडा आदमी बनाता है।

10. यदि मीन का गुरु स्वगृही लग्न में हो तो स्वगृही चद्रमा कर्क का लग्न मे हो तो ऐसे योग वाला व्यक्ति बडा धनी होता है।

1 . यदि मीनलग्न का स्वामी गुरु स्वगृही होकर दशम स्थान में हो, चद्रमा उच्च का पराक्रम या तीसरे भाव मे बैठा हो और सप्तमेश बुध स्वगृही मिथुन का चतुर्थ स्थान में हो और लग्न में उच्च का शुक्र निष्पाप बैठा हो तो मनुष्य बडा ही पराक्रमी, बड़ा सरकारी कर्मचारी, ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

12. यदि मीनलग्न में चंद्रमा हो, सिंह का सूर्य छठे स्थान मे हो, मकर का मगल एकादश स्थान में हो और कुम्भ का शनि द्वादश स्थान मे हो तो मनुष्य बडा पराक्रमी एव ऐश्वर्यवान होता है।

13. यदि मीनलग्न में शुक्र, धन स्थान में सूर्य या मंगल, पचम स्थान में गुरु या चद्रमा हो तो मनुष्य बड़ा राज्य कर्मचारी होता है.

14. दशमेश लग्न में हो, लग्नेश दशम में या उस पर शुभ दृष्टि हो तो जातक ज्ञानी व उच्च पदस्थ होता है।

15. मीनलग्न हो लाभेश व भाग्येश शनि मगल एकादश स्थान मे चंद्रमा के साथ हो और गुरु लग्नेश होकर कर्क मे बैठ कर उन्हे पूर्ण दृष्टि से देखे तो सुन्दर राजयोग होता है।

16. मीनलग्न हो, लग्न में उच्च का शुक्र हो, गुरु व चंद्रमा धनुराशि में हो तथा मकर में उच्च का मगल हो तो उत्तम राजयोग होता है.

17. मीनलग्न में चद्रमा हो, कुभ मे शनि तथा मकर व सिह मे क्रमशः मगल सूर्य हो तो उत्तम राजयोग होता है।

18. मीनलग्न जन्म काल में तुला, धनु, मीन व लग्न में शनि बैठा हो तो राजकुल में जन्म और राजा होता है।

19. मीन का शुक्र यदि केन्द्र (1 4/7/10) मे बैठा हो तो विद्या, कला, बहुगुणों से शोभित कामधेनु के बराबर भाग से पूर्ण, सुन्दर स्त्रियों के साथ विलास करने वाला देश नगर, देखने मे व्यस्त राजा होता है

20. मीन में शुक्र, बारहवें भाव में बुध, धन भाव में राहु, लग्न मे रवि, तीसरे भाव में मंगल हो तो राजयोग होता है।

21 मीनलग्न में गुरु शुक्र, मेष मे सूर्य, मकर म मगल हो तो दास कुल में उत्पन्न होने पर भी छत्रधारी राजा होता है

22 गुरु शुक्र और चंद्रमा ये तीनो मीनराशि के हों तो इस योग मे जन्म लेने वाले को राज्यप्राप्ति होती है और उसकी पत्नी अनके पुत्र वाली होती है।

23. मीनलग्न में मीन का चंद्रमा, मकर का मगल, सिंह का सूर्य, कुंभ का शनि हो तो राजयोग होता है।

24. मीनलग्न में धन का गुरु चंद्रमा से युक्त, मकर का मंगल और लग्न में उच्च का शुक्र अथवा बुध हो, तो राजयोग होता है।

❑❑❑

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति प्रथम स्थान में
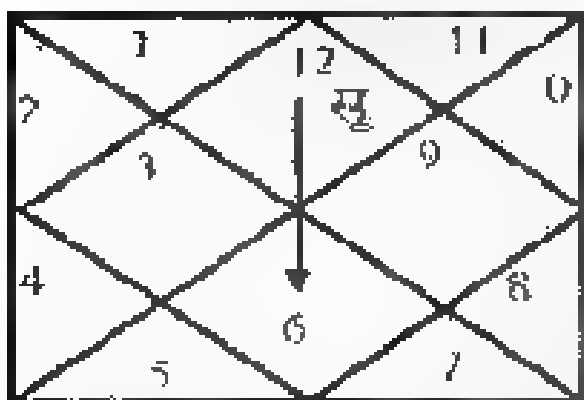
सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है. सूर्य यहां प्रथम स्थान में मीन (मित्र) राशि में होगा। छठे भाव का स्वामी, छठे भाव से आठवें होकर लग्न मे बैठा है फलत: जातक को पिता का सुख उत्तम, जातक का पिता समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक के शत्रु बहुत होंगे पर सूर्य के लग्न मे होने से शत्रुओं पर विजय मिलेगी। जातक परिश्रमी होगा तथा सुगठित देह का स्वामी होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ सूर्य की दृष्टि सप्तम भाव (कन्या राशि) पर होगी। वैवाहिक जीवन सुखी। जातक के उग्र स्वभाव के कारण पति पत्नी में टकराहट होगी।

निशानी–जातक को सिरदर्द की बीमारी होगी, हाई ब्लड प्रेशर, मस्तिष्क की गर्मी रहेगी।

दशा–सूर्य की दशा अंतर्दशा मध्यम फलकारी होगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति प्रथम स्थान में होने के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय में 6 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति लग्न में जातक को आकर्षक व्यक्तित्व का धनी बनायेगा। जातक महान् शिक्षाविद् होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से जातक प्रबल भाग्यशाली होगा। धनी होगा।

3. **सूर्य+बुध**–भोजसंहिता के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। प्रथम स्थान में मीनराशिगत यह युति वस्तु षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों शुभग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। जातक धनवान होगा। ज्योतिष-तंत्र-मंत्र एवं आध्यात्म विद्याओं का जानकार होगा। 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। दीर्घजीवी भी होगा।

5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ उच्च का शुक्र मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा के समान धनी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि में होंगे। सूर्य अपनी मित्र राशि में हो तो शनि अपनी शत्रुराशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति विस्फोटक है। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा जातक की वाणी स्खलित होती रहेगी। चरित्र विरोधाभासी होगा।

7. **सूर्य+राहु**–राहु सूर्य के साथ होने से जातक गर्म मिजाज का होगा। उसके निर्णय व सोच गलत होगी।

8. **सूर्य+केतु** सूर्य के साथ केतु होने से जातक उग्र स्वभाव का होगा। अति उत्साही होगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वितीय स्थान में
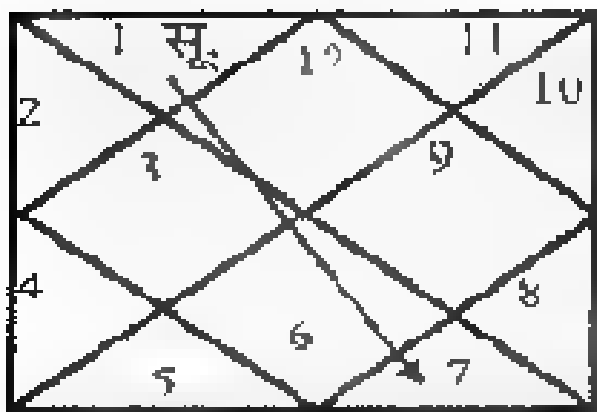
सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां द्वितीय स्थान में उच्च का होगा। मेषराशि के दस अंशों तक सूर्य परमोच्च का होगा। जातक का पिता, जातक से अधिक धनवान होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक को धन यश की प्राप्ति होगी। जातक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी होगा शत्रुओं पर विजय निश्चित रूप से होगी

दृष्टि–द्वितीयभाव गत सूर्य की दृष्टि अष्टम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को ननिहाल का सुख श्रेष्ठ, नौकर-चाकर का सुख श्रेष्ठ मिलेगा।

निशानी जातक के शत्रु नहीं होगे। जातक की भाषा आदेशात्मक होगी

दशा -सूर्य की दशा-अतर्दशा में श्रेष्ठ फल मिलेगा। जातक को धन मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध -

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चद्रमा की युति द्वितीय स्थान मे (मेषराशि) मे होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या को सूर्योदय से पूर्व प्रात: 4 से 6 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति जातक को महाधनी बनायेगी क्योंकि यहा सूर्य उच्च का योगकारक चन्द्रमा के साथ होगा
2. **सूर्य+मंगल** सूर्य के साथ योगकारक मंगल स्वगृही होने से जातक महाधनी होगा 'किम्बहुना योग' के कारण जातक बड़ी भूमि का स्वामी या ग्राम का मुखिया होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीन में सूर्य षष्टेश होगा। द्वितीय स्थान मे मेष राशिगत यह युति वस्तुत. षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहा उच्च का होगा। जहा बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेगे। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। जातक प्रख्यात धनवान होगा। आमदनी के जरिए दो तीन प्रकार के रहेग। जीवन सभी प्रकार की सुख सुविधाओं व ऐश्वर्य से परिपूर्ण होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु होने से जातक को परिश्रम का मीठा फल मिलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र होने से जातक पराक्रमी होगा। जातक के शत्रु बहुत होगे।
6. **सूर्य+शनि** यहां दोनों ग्रह मेषराशि में होगा। सूर्य अपनी उच्च राशि में तो शनि अपनी नीच राशि में होकर 'नीचभगराज योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं धनी होगा। पर सही व सच्चा भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु होने से धन के घडे में छेद होगा। रुपया एकत्रित नहीं हो पायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु होने से धन आयेगा व खर्च होता चला जायेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति तृतीय स्थान में

1	12	11
2		10
सू. 3	9	
4		8
5	6	7
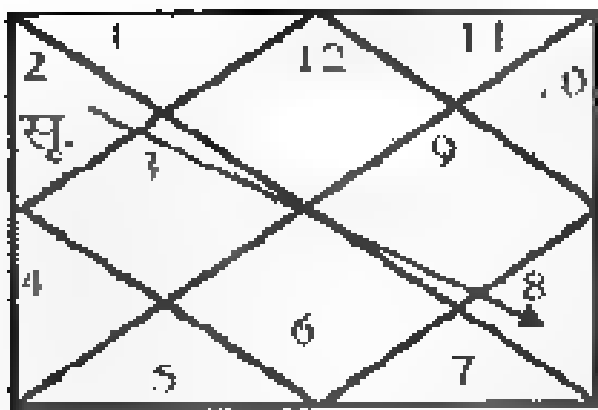
सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां तृतीय स्थान में वृष (शत्रु) राशि मे होगे। जातक का शौर्य, पराक्रम, साहस, विलक्षण होगा। जातक के भाई बहन होंगे पर उनसे मनमुटाव रहेगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी पर पिता से विचार नहीं मिलेंगे। जातक को मित्रों से लाभ होगा। मित्रों द्वारा भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे।

दृष्टि—तृतीयस्थ सूर्य की दृष्टि नवम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी फलतः जातक भाग्यशाली होगा। उसे धन, यश, पद और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। ऐसा जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है।

निशानी—ऐसा जातक भाई का शत्रु होता है। उसके नौकर क्रूर स्वभाव वाले होते हैं।

दशा—सूर्य की दशा अंतर्दशा श्रेष्ठ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न मे सूर्य+चंद्रमा की युति तृतीय स्थान में (वृषराशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को रात्रि 2 से 4 के मध्य होता है। षष्टेश+पंचमेश की युति में यहां चंद्रमा उच्च का होगा। जातक महान् पराक्रमी होगा कुटुम्ब का सुख मिलेगा। जातक को स्त्री-मित्रों से विशेष लाभ होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल होने से जातक महान् पराक्रमी होगा। मित्रों और भाइयों से लाभ होगा पर छोटे भाई का सुख कमजोर है।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। तृतीय स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह भाग्यभवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली, धनी एवं महान् पराक्रमी व्यक्ति होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। उसे मित्रों परिजनों की मदद भी मिलती रहेगी। भाग्योदय 26 वर्ष में होने के संकेत मिलता है। दूसरा भाग्योदय 32 वर्ष में होगा। जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु जातक को मित्रों से लाभ दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र भाइयों में परस्पर मुकदमेबाजी होगी।
6. **सूर्य+शनि**—यहा दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। सूर्य अपनी शत्रु राशि में हो तो शनि मित्रराशि में होगा षष्टेश एवं व्ययेश की यह युति पराक्रम को भग करेगी जातक को छोटे व बडे दोनों भाइयों का सुख नही होगा। मित्र अच्छे व सच्चे न होकर दगाबाज होगे
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु भाइयों कुटम्बियों से झगडा करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु भाइयों व मित्रों में विद्वेष फैलायेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति चतुर्थ स्थान में
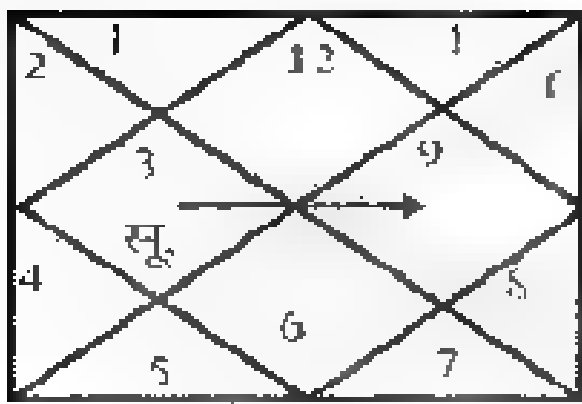
सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहा चतुर्थ स्थान में मिथुन (मित्र) राशि मे होगा। सूर्य यहां छठे भाव मे ग्यारहवें स्थान पर होने से ननिहाल, मामा का सुख, नौकरी का लाभ होता है। जातक की माता बीमार रहती है। 50 वर्ष की आयु में जातक का साथ छोड़ देती है वाहन होगा पर दुर्घटना का भय रहेगा।

दृष्टि चतुर्थभावगत सूर्य की दृष्टि दशम स्थान (धनुराशि) पर होगी। जातक को सरकारी नौकरी से लाभ होगा। पर नौकरी एक बार छूटेगी। राज्य से सम्मान मिलेगा

निशानी—ऐसा जातक अपना घर छोड़कर दूर स्थान में आजीविका कमाने हेतु जायेगा।

दशा—सूर्य की दशा-अतर्दशा लाभ देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न मे सूर्य+चद्रमा की युति चतुर्थ स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढ़कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 12 से 2 के मध्य होता है षष्टेश व पचमेश की युति केंद्र से, हृदय रोग की संभावना को बढ़ायेगी। जातक की माता बीमार रहेगी।
2. **सूर्य+मगल**—सूर्य के साथ मगल जातक को माता का सुख देगा भौतिक सुख देगी। वाहन का सुख होगा

3. **सूर्य+बुध**–'भाजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न मे सूर्य षष्टेश होगा। चतुर्थ स्थान में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुत: षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी, बुध यहां स्वगृही होगा। बुध के कारण 'भग योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक माता-पिता, कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा। वाहनसुख एवं मकान भाव परिपूर्ण होगा। जातक जाति समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य+गुरु की युति में जातक को महत्वाकांक्षी बनायेगी। जातक सफल व्यक्ति होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**-जातक को वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
6. **सूर्य+शनि** यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होगे। सूर्य सम राशि में तो शनि मित्र राशि मे होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति से जातक की माता की मृत्यु अल्पायु में होगी अथवा दीर्घकालीक बीमारी से ग्रसित होगी। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा। माता की मृत्यु के बाद जातक की उन्नति होगी।
7. **सूर्य+राहु**-माता की मृत्यु अल्प आयु में संभव है।
8. **सूर्य+केतु**–माता का स्वास्थ्य चिंता का विषय रहेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति पंचम स्थान में
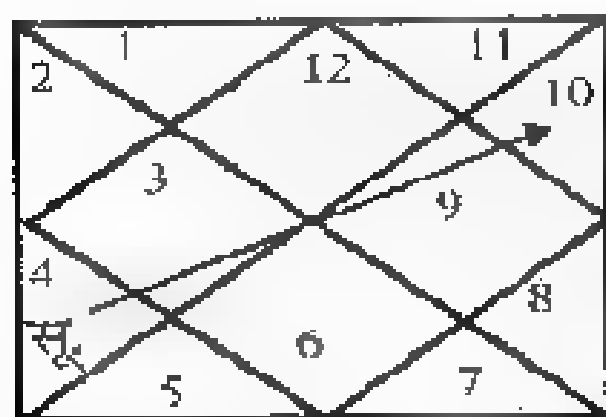
सूर्य मीनलग्न वालो के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहा पंचम स्थान में कर्क (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक विद्यावान होगा एव उच्च शैक्षणिक उपाधि प्राप्त करेगा। जातक को सतान संबधी कष्ट होगा। पितृ स्थान में नवमें स्थान पर सूर्य होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। जातक पिता माता का भक्त होगा।

दृष्टि–पचमस्थ सूर्य की दृष्टि एकादश भाव (मकर राशि) पर होगी। फलत: जातक को बुद्धि:बल में अचानक धन की प्राप्ति होगी।

निशानी–ऐसे जातक के पास धन स्थिर नहीं रहता। जातक को अपने ही सतान के साथ वैर भाव रहता है। ऐसे जातक स्वार्थी व अदूरदर्शी होते है तथा मानसिक तनाव में रहते हैं।

दशा–सूर्य की दशा अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चद्रमा–**'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न मे सूर्य चद्रमा की युति पंचम स्थान (कर्क राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या को रात्रि 12 से 10 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां जातक को सुन्दर संतति व उत्तम शिक्षा देगी।
2. **सूर्य+मंगल–**जातक के तीन पुत्र होंगे। पुत्र अधिक होंगे। एक कन्या सम्भव।
3. **सूर्य+बुध–**भोजसंहिता के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। पचम स्थान में कर्कराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनो ग्रह, लाभस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा, धनवान होगा, शिक्षित होगा तथा जातक की सतति भी शिक्षित होगी जातक को जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं मिलेगी। व्यापार में लाभ होगा। जातक अपनी जाति व समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु** -गुरु यहां उच्च का होगा ऐसा जातक तंत्र मंत्र विद्या का जानकार होगा। आध्यात्मिक शक्ति का स्वामी होगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य, शुक्र की युति से प्रथम सतति हाथ नही लगेगी।
6. **सूर्य+शनि** यहा दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। सूर्य मित्र राशि मे तो शनि शत्रु राशि मे होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति से एकाध संतान की मृत्यु विद्या में बाधा एवं संतान को लेकर परेशानी बनी रहेगी।
7. **सूर्य+राहु–**संतति योग में बाधक है। दुर्भाग्य मरी हुई संतान हाथ पैदा होगी।
8. **सूर्य+केतु–**एक दो सतति का गर्भस्राव होगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति षष्टम स्थान में
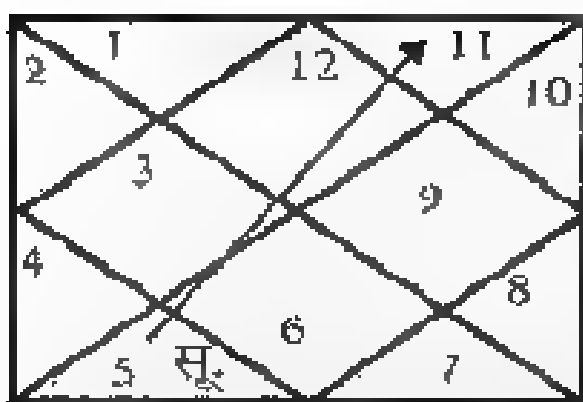
सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहा छठे स्थान में सिंह राशि मे स्वगृही होगा। सूर्य की इस स्थिति में 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' बनेगा जातक धनी, मानी, अभिमानी एव समाज का अग्रगण्य प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा। ऐसा जातक साहसी, परिश्रमी, उत्साही, शत्रुहन्ता व अनुशासन प्रिय होता है पर जातक को पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

दृष्टि–छठे भावगत सूर्य की दृष्टि व्यय स्थान (कुंभराशि) पर होगी। ऐसे जातक को खर्च के कारण परेशानी होगी। खर्च की अधिकता के कारण जातक ऋणग्रस्त हो सकता है

निशानी–जहां सभ्यता, विनम्रता इत्यादि अन्य प्रयास असफल हो जाते हैं वहां ऐसे जातक डाटी-डपट, झगडे-टंटे से अपना काम निकालने मे पूर्ण सफलता प्राप्त करते हैं।

दशा सूर्य की दशा अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न मे सूर्य+चंद्रमा की युति छठे स्थान (सिंह राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 8 के मध्य होता है। षष्ठेश व पंचमेश की युति यहां 'संतानहीन योग' के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी. जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल होने से 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' दोनो बनेंगे। फलतः जातक का जीवन संघर्षमय होगा। जातक डरपोक मनोवृत्ति वाला होगा।
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्ठेश होगा। छठे स्थान में सिंहराशिगत यह युति वस्तुतः षष्ठेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी सूर्य यहां स्वगृही होगा. यह बैठकर दोनो ग्रह व्यय भाव को देखेंगे। षष्ठेश षष्टम स्थान में स्वगृही होने से 'हर्ष योग' बनेगा। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। बुध छठे जाने से 'सुखभंग योग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बनता है। जातक को माता या बहन का सुख कम मिलेगा। जातक को जीवन में सभी प्रकार की सुख सुविधाए सहज मे प्राप्त होगी। जातक समाज का अग्रगण्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा
4. **सूर्य**+गुरु–सूर्य के साथ गुरु होने से 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र 'पराक्रमभंग योग' बनायेगा पर सरल नामक 'विपरीतराज योग' भी बनायेगा। जातक धनी होगा पर किसी स्त्री की मित्रता के कारण बदनाम होगा।
6. **सूर्य+शनि** यहा दोनो ग्रह सिंह राशि मे होंगे। सूर्य स्वगृही तो शनि शत्रु क्षेत्री होगी। सूर्य के कारण 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' बनेगा षष्ठेश एवं व्ययेश

की युति शत्रुओं का नाश करेगी। जातक महाधनी एवं पराक्रमी होगा। शनि भी यहां राजयोगप्रदाता है।

7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु जातक के आत्मबल को तोड़ेगा एवं शत्रु से भयभीत करेगा। पर जातक दुस्साहसी होगा

8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु जातक की आध्यात्मिक शक्ति को नष्ट करेगा

मीनलग्न मे सूर्य की स्थिति सप्तम स्थान में
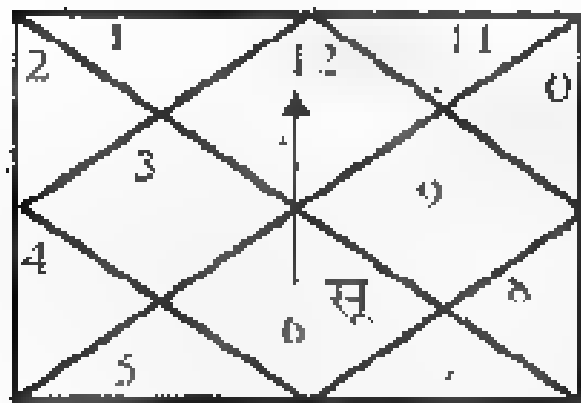
सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां सप्तम स्थान मे कन्या (मित्र) राशि मे होगा। धन, यश, पद-प्रतिष्ठा, नौकरी-व्यवसाय के लिए सूर्य की स्थिति ठीक रहेगी। सूर्य यह स्थिति पति पत्नी के मध्य वैमनस्य बढायेगी सूर्य पितृस्थान में ग्यारहवें स्थान पर होने के कारण पिता के साथ जातक के सबंध ठीक रहेंगे.

दृष्टि—सप्तमस्थ सूर्य की दृष्टि लग्नस्थान (मीनराशि) पर होने के कारण जातक को प्रयत्न में सफलता मिलेगी। सम्मान में वृद्धि होगी.

निशानी—जातक विशेष रूप से साहसी व धनी होगा।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति सातवें स्थान कन्या राशि, में होने के कारण जातक का जन्म अश्विन कृष्ण अमावस्या को साय 6 से 8 के मध्य होता है षष्टेश व पचमेश की युति यहा संतान एवं विवाहसुख में बाधक है. सतान एव पत्नी के विकलांग होने का भय बना रहेगा।

2. **सूर्य+मगल**—सूर्य के साथ मगल कुण्डली को मांगलिक बनायेगा एवं विवाह सुख मे विलम्ब या विच्छेद करायेगा।

3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा सातवें स्थान में 'कन्याराशिगत' यह युति वस्तुत: षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी. बुध यहा केन्द्रगत होकर उच्च का होगा तथा दोनों ग्रह लग्न

स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'लग्नभग योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली, धनी एवं सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक एक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा तथा समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु राजयोग को प्रबल पुष्ट करेगा। जातक के परिश्रम सार्थक होंगे
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र नीच का होने से पेट के रोग में वृद्धि होगी षष्टेश व अष्टमेश की युति से गृहस्थ सुख में कलह की वृद्धि होकर जीवनसाथी से तलाक (विछोह) हो सकता है।
6. **सूर्य+शनि**—यहा दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। सूर्य सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा षष्टेश एवं व्ययेश की युति वैवाहिक सुख में बाधक है। विलम्ब विवाह सम्भव है। पत्नी खर्चीली स्वभाव की होगी अथवा पत्नी की बीमारी को लेकर रुपया खर्च होगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु एक पत्नी की मृत्यु के बाद जातक का दूसरा विवाह कराता है
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु गृहस्थ सुख विनाशक है।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति अष्टम स्थान में
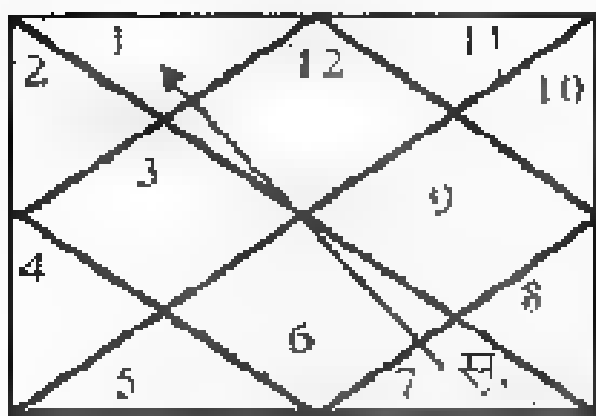
सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां अष्टम स्थान में तुलाराशि में नीच का होगा। तुला राशि के 10 अंशों में सूर्य परमनीच का होगा। सूर्य की इस स्थिति में हर्षनामक 'विपरीतराज योग' बनेगा ऐसा जातक धनी, मानी व यशस्वी होगा। परन्तु पिता का सुख बचपन में नष्ट हो जायेगा। पिता की सम्पत्ति नहीं मिल पायेगी। लग्नेश गुरु यदि कमजोर हो, तो जातक की आयुष्य कमजोर होगी

दृष्टि अष्टमस्थ सूर्य की दृष्टि धनस्थान (मेषराशि) पर होगी। फलतः जातक की भाषा कठोर होगी। दाईं आंख में रोग होगा।

निशानी—ऐसा जातक शहर के प्रतिष्ठित पंडितो, विद्वानों का शत्रु होता है

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **सूर्य+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति आठवें स्थान (तुला राशि) मे होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को सांय 4 से 6 बजे के मध्य होता है षष्टेश व पंचमेश की युति यहां 'संतानहीन योग' के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **सूर्य+मंगल**–सूर्य के साथ मंगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' की सृष्टि करता है। जातक डरपोक होगा एव उसमें संघर्ष शक्ति की न्यूनता रहेगी
3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीन मे सूर्य षष्टेश होगा। अष्टम स्थान मे तुलाराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहा नीच का होगा पर अपनी उच्च राशि को देखेगा। षष्टेश सूर्य के अष्टमेश जाने से 'हर्ष योग' बनेगा। जातक शत्रुओ का नाश करने मे सक्षम होगा एवं दीर्घजीवी होगा। जातक को जीवन में सभी सुख सुविधाएं मिलेगी। जातक जीवन मे लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु अचानक प्राणभय उत्पन्न करता है।
5. **सूर्य+शुक्र** सूर्य के साथ शुक्र होने से 'नीचभंगराज योग' बनेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा षष्टेश, अष्टमेश की युति से रोग व शत्रुओं का प्रकोप रहेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहा दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। सूर्य नीच का होगा तो शनि उच्च का होने से 'नीचभंगराज योग' बनेगा। सूर्य के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' तथा शनि के कारण विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी, वैभवशाली एवं धनी होगा
7. **सूर्य+राहु**-सूर्य के साथ राहु अचानक प्राणभय उत्पन्न करता है
8. **सूर्य+केतु**-सूर्य के साथ केतु जातक को आत्मबल को नष्ट करता है

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति नवम स्थान में
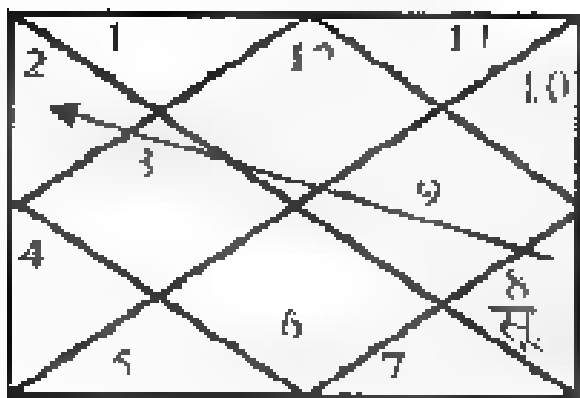
सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है सूर्य यहा नवम स्थान में वृश्चिक (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक भाग्यशाली व धनी होगा परदेश जाकर कमायेगा। जातक का धन शुभकार्य में खर्च होगा

ऐसा जातक रत्न, पत्थर, लकड़ी, हैण्डीक्राफ्ट के कार्यों में लाभ पाने वाला होता है।

दृष्टि—नवम भावगत सूर्य की दृष्टि तृतीय स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा पर भाई-बहनों से कुछ विरोध

निशानी—पिता की सम्पत्ति को लेकर क केस होगा। पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी।

दशा—सूर्य की दशा-अंतर्दशा में भाग्योदय के अवसर प्राप्त होंगे सूर्य की दशा मिश्रित फल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति नवमें स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को साय 2 से 4 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति यहां भाग्योदय में सहायक है। चंद्रमा यहां नीच का होते हुए भी जातक महान् पराक्रमी होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—ऐसा जातक महाधनी होगा क्योंकि स्वगृही मंगल धनेश होकर जब भाग्यस्थान में सूर्य के साथ होगा तो जातक बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होगा।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। नवम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां बैठकर दोनो ग्रह तृतीय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे ऐसा जातक तीव्र बुद्धिशाली, धनवान एवं सौभाग्यशाली होगा। जातक का भाग्योदय 26 एवं 32 वर्ष दो चरणों में होगा। जातक पराक्रमी होगा, उसे मित्रों व परिजनों का सहयोग मिलता रहेगा। जातक समाज का अग्रगण्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु जातक की उन्नति धीमी गति से करायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र भाग्योदय में लगातार दिक्कतें उत्पन्न करेगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि मे होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि तो शनि शत्रु राशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति पिता के सुख मे बाधक है। पिता से दूरी रहेगी या पिता से नहीं निभेगी। पिता की मृत्यु के बाद ही जातक का भाग्योदय होगा।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु जातक का भाग्योदय मध्यम आयु के बाद करायगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु भाग्योदय में लगातार दिक्कतें उत्पन्न करेगा।

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति दशम स्थान में
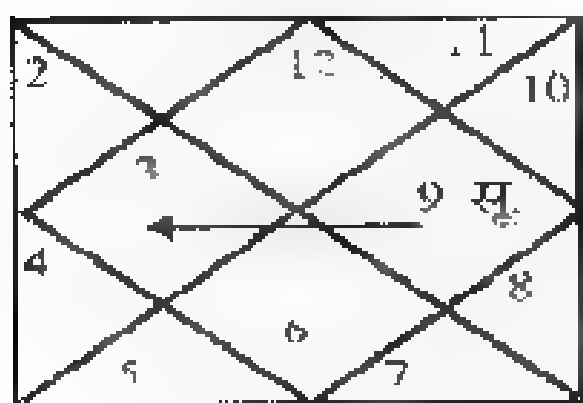
सूर्य मीनलग्न वालों के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां दशम स्थान म धनु (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक का सरकारी नौकरी से लाभ मिलता है। जातक को राज-सरकार से सम्मान मिलता है। जातक को ननिहाल, मामा का सुख ठीक मिलेगा, पर माता पिता का सुख कमजोर होगा। जातक शत्रुओ पर विजय प्राप्त करने में सफल रहेगा कोर्ट-कचहरी में मुकदमों के फैसले जातक के अनुकूल रहेंगे।

दृष्टि—दशम भावगत सूर्य की दृष्टि चतुर्थ भाव (मिथुनराशि) पर होगी। जातक को भूमि, मकान वाहन का सुख मिलेगा पर इन सब सुखो में उसको सतुष्टि नहीं होगी।

निशानी—ऐसा जातक पिता से अधिक धन, दौलत, यश कमाता है।

दशा—सूर्य की दशा अतर्दशा में जातक को रोजी रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे जातक को शत्रुओं का मान-मर्दन करने का अवसर मिलेगा।

सूर्य का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति दसवें स्थान (धनुराशि) म होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 से 2 के मध्य होता है। षष्टेश व पचमेश की युति यहा जातक को नौकरी में ऊंचा पद दिलायेगी। जातक राजनीति में कुशल एव धनवान होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मगल जातक को धनी एव राजनीति मे सक्रिय व्यक्तित्व के रूप में चमकायेगा।
3. **सूर्य+बुध** 'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा दशम स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी यहा पर केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बना जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक के पास एक से अधिक मकान एवं एक से अधिक वाहन होंगे जातक को जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाए एवं ऐश्वर्य ससाधनो की प्राप्ति होगी। जातक समाज का अग्रगण्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु 'हंस योग' के कारण राजातुल्य ऐश्वर्य देगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र राजदण्ड दिला सकता है
6. **सूर्य+शनि**—यहा दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। सूर्य यहां मित्र राशि में हो तो शनि सम राशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति यहा सरकारी नौकरी में बाधक है। राजदण्ड या अवन्नति के कारण परेशानी रहेगी फिर भी जातक बड़ा भारी महत्वाकांक्षी होगा एव सफल व्यक्ति कहलायेगा
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु 'राजयोग' में बाधक है।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु नौकरी में अवनति-रुकावट या दिक्कते पैदा करेगा

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति एकादश स्थान में

सूर्य मीनलग्न वालो के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां एकादश स्थान में मकरराशि व शत्रुक्षेत्री होगा। ऐसे जातक के विरोध बहुत होंगे। विरोधी लोग शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा पहुचायेगें व्यापार व आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाई का अनुभव होगा पर बुद्धिबल (इष्ट बल) से जातक सभी प्रकार की कठिनाइयो एव विरोधियो पर विजय प्राप्त करने में सफल होगा

दृष्टि—एकादश भाव स्थित सूर्य की सातवीं मित्र दृष्टि पंचम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलत: जातक विद्यावान् होगा। प्रजावान् होगा। शिक्षा के क्षेत्र में पूर्ण सफलता मिलेगी

निशानी—जातक ईमानदार एवं सिद्धान्तवादी होगा जिससे उन्नति में काफी दिक्कते आयेगी।

दशा—सूर्य की दशा-अतर्दशा शुभफल देगी।

सूर्य का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चद्रमा की युति एकादश स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या को दिन में 10 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्टेश एव पंचमेश की युति यहां व्यापार में लाभ देगी। अति उत्तम संतति एव उच्च शैक्षणिक उपाधि प्रदान करेगी।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मंगल जातक को महान् उद्योगपति बनायेगा।

3. **सूर्य+बुध**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। एकादश स्थान मे मकरराशिगत यह युति वस्तुत: षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री होगा यहा बैठकर दोनों ग्रह पचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखगे। फलत: जातक बुद्धिशाली, धनवान एवं भाग्यवान होगा। जातक शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक उद्योगपति होगा जातक जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण व्यक्तित्व का धनी होगा जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**–सूर्य के साथ गुरु व्यापार से लाभ, बड़े भाई से लाभ दिलायेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**–सूर्य के साथ शुक्र व्यापार मे अचानक नुकसान, भागीदारी के धधे में नुकसान दिलायेगा।
6. **सूर्य+शनि**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। शनि यहां स्वगृही तो सूर्य शत्रुक्षेत्री होगी। षष्टेश एवं व्ययेश की युति यहा होन से व्यापार में बाधा रहेगी। भागीदारी में नुकसान। बड़े भाई की मृत्यु एव सतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**–सूर्य के साथ राहु चलते व्यापार को बंद करायेगा।
8. **सूर्य+केतु**–सूर्य के साथ केतु गुप्त नुकसान कराता रहेगा

मीनलग्न में सूर्य की स्थिति द्वादश स्थान में

सूर्य मीनलग्न वालो के लिए षष्टेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। सूर्य यहां द्वादश स्थान में कुम्भराशि में शत्रुक्षेत्री होगा सूर्य की इस स्थिति मे 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक धनी, मानी अभिमानी हागा। जातक को ननिहाल व मामा का सुख उत्तम होगा। पिता के साथ बनेगी नहीं पिता की सम्पत्ति मिलेगी नहीं। जातक के धन का अपव्यय होगा

दृष्टि–द्वादश भावगत सूर्य की दृष्टि छठ स्थान (सिंहराशि) पर होगी, जातक के शत्रुओं का नाश होगा।

निशानी–जातक परदेश (विदेश) जायेगा। परदेश म अच्छा कमायेगा. Export Import से लाभ होगा।

दशा–सूर्य की दशा अतर्दशा प्रारम्भ में शुभ फल देगी पर अत में अशुभफल देगी

सूर्य का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **सूर्य+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चद्रमा की युति द्वादश स्थान (कुम्भ राशि) में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को प्रातः 8 से 10 बजे के मध्य होता है षष्टेश एवं पचमेश की युति यहा 'सतानहीन योग' के साथ-साथ हर्षनामक योग 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एव वैभवशाली होगा।
2. **सूर्य+मंगल**—सूर्य के साथ मगल धनहीन योग, भाग्यहीन योग एवं कुण्डली को मागलिक बनाकर जातक के जीवन को संघर्षमय बनायेगा। गृहस्थ सुख में बाधा बढ़ेगी।
3. **सूर्य+बुध**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न मे सूर्य षष्टेश होगा द्वादश स्थान में 'कुम्भराशिगत' यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी सूर्य यहा शत्रुक्षेत्री होगा। जहा बैठकर दोनों ग्रह छठे भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। षष्टेश सूर्य का व्ययभाव मे आने से 'हर्ष योग' बना। ऐसा जातक ऋण रोग व शत्रु समूह का नाश करने मे सक्षम होता है। जातक तीव्र बुद्धिशाली, तीर्थाटन करने वाला परोपकारी एवं खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति होगा। उसे जीवन के सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं एवं भौतिक संसाधनो की प्राप्ति सहज ही होगी। बुध के बारहवे स्थान पर जाने से 'सुखभंग योग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बना। फिर भी ऐसा जातक समाज का अग्रगण्य, लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
4. **सूर्य+गुरु**—सूर्य के साथ गुरु 'लग्नभंग योग', 'राजभग योग' बनायेगा जातक का परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **सूर्य+शुक्र**—सूर्य के साथ शुक्र 'पराक्रमभग योग' की सृष्टि करेगा। नेत्रपीड़ा में जातक को कष्ट देगा।
6. **सूर्य+शनि**—यहा दोनो ग्रह कुम्भ राशि में होंगे। सूर्य शत्रु क्षेत्री एव शनि अपनी मूलत्रिकोण राशि मे स्वगृही होगा। सूर्य के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' तथा शनि के कारण विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक महाधनी, पराक्रमी एव वैभवशाली होगा, परन्तु खर्चीले स्वभाव से धन एकत्रित नहीं हो पायेगा। जातक को नेत्रपीड़ा रहेगी।
7. **सूर्य+राहु**—सूर्य के साथ राहु जातक को व्यर्थ में भटकायेगा। जीवन के मार्ग कंटकाकीर्ण करेगा।
8. **सूर्य+केतु**—सूर्य के साथ केतु अनिष्टि सूचक है।

❑❑❑

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति प्रथम स्थान में
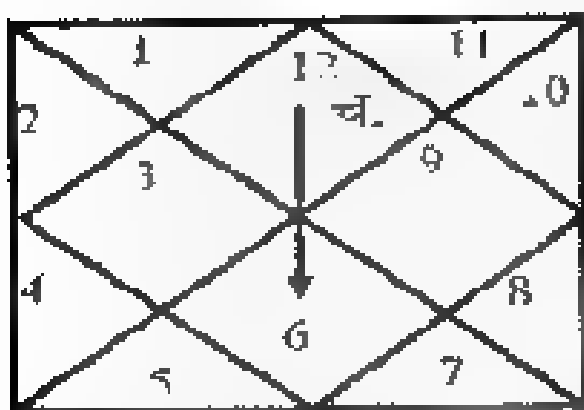
चंद्रमा मीनलग्न मे पचमेश होने से शुभफल एव योग कारक है। चद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां प्रथम स्थान मे मीन (मित्र) राशि का है। ऐसे जातक का जन्म पूर्वजन्म के शुभ पुण्यफल के रूप मे होता है। जातक का शरीर व चेहरा सुन्दर होगा जातक का जीवनसाथी सुन्दर होगा। माता का सुख उत्तम होगा।

दृष्टि–लग्नस्थ चद्रमा की दृष्टि सप्तम भाव (कन्या राशि) पर होने से गृहस्थ सुख श्रेष्ठ, विद्यावान् होगा। बातचीत मे कुशल होगा।

निशानी–कन्या सतति अधिक होगी। प्रथम कन्या होगी पराशर ऋषि के अनुसार ऐसे जातक को एक पुत्र का सुख जरूर मिलेगा।

दशा चद्रमा की दशा-अतर्दशा अति उत्तम फल देगी इसकी दशा में जातक तीर्थाटन करेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य** 'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चद्रमा की युति प्रथम स्थान में होन के कारण जातक का जन्म चैत्र कृष्ण अमावस्या को प्रात: सूर्योदय में 6 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पचमेश की युति लग्न में जातक को आकर्षक व्यक्तित्व का धनी बनायेगा। जातक महान् शिक्षाविद् होगा।
2. **चद्रमा+मंगल**–यहा प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मीनराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों चतुर्थ स्थान मिथुन राशि, सप्तम भाव कन्या राशि एवं अष्टम स्थान तुलाराशि को देखेंगे। फलत: जातक धनवान होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

जीवन मे सभी भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज से होगी। परन्तु जातक का सही आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।

3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को सुन्दर पत्नी एव अनुकूल ससुराल देगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार गुरु+चद्रमा की यह युति वस्तुत पचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। गुरु यहा स्वगृही होकर बलवान होगा। यहां से ये दोनों ग्रह पंचम भाव, सप्तम भाव एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। गजकेसरी योग की यह सर्वोत्तम स्थित है। यहा 'हंस योग' 'कुलदीपक योग' व 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हो रही है। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक का दूसरा भाग्योदय प्रथम संतति के बाद होगा। 'पद्मसिंहासन योग' के कारण जातक की गिनती समाज के चुनिन्दा प्रतिष्ठित व भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ उच्च का शुक्र 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी, ऐश्वर्यशाली एव कामदेव के समान कमनीय होगा
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि जातक को खर्चीले स्वभाव का बनायेगा
7. **चंद्रमा+राहु** चंद्रमा के साथ राहु जातक को अनेक कार्यों में उलझाये रखेगा।
8. **चंद्रमा+केतु**–चद्रमा के साथ केतु जातक को कीर्तिवन्त बनायेगा।

मीनलग्न में चन्द्र की स्थिति द्वितीय स्थान में

चं. 1 12 11 10 2 3 9 4 8 6 5 7

चंद्रमा मीनलग्न मे पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चद्रमा यहां द्वितीय स्थान में मेष (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को कुटुम्ब सुख उत्तम होगा। धन श्रेष्ठ। आंख, दांत, गला का रोग नहीं होगा जातक का वाणी मधुर, माता का सुख भी उत्तम होगा।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि अष्टम स्थान (तुला राशि) पर होने से जातक का जलभय रहेगा। कफ प्रकृति के रोग होंगे।

निशानी–'पाराशरहोराशास्त्र' के अनुसार ऐसे जातक के अनेक पुत्र होते है जातक अति धनवान एवं यशस्वी होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति द्वितीय स्थान में (मेषराशि) में होने के कारण जातक का जन्म वैशाख कृष्ण अमावस्या का सूर्योदय से पूर्व प्रात: 4 से 6 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति जातक को महाधनी बनायेगी क्योंकि यहा सूर्य उच्च का योगकारक चन्द्रमा के साथ होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहा द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह मेषराशि मे होंगे। मेषराशि में मंगल स्वगृही होगा। फलत: यहा 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहा बैठकर दोनों ग्रहो की दृष्टिया, पंचमभाव कर्क राशि, अष्टम भाव तुलाराशि एवं भाग्यभवन वृश्चिक राशि पर होगी। फलत: जातक महाधनी होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक बुद्धिमान, विद्यावान् होगा। जातक की संतति भी धनवान एवं बुद्धिशाली होगी।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध जातक को भौतिक उपलब्धि एवं सांसारिक सुख देगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न के द्वितीय स्थान में गुरु चंद्रमा की यह युति वस्तुत: पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति होगी। जहां बैठकर ये दोनो शुभग्रह षष्टम् स्थान, अष्टम स्थान एवं दशम भाव पर होगी फलत: जातक को ऋण रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक की आकस्मिक आपदाओं व दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। जातक को राज्य सरकार से मान-सम्मान मिलेगा। अधिकारियों से सहयोग व लाभ मिलता रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को मीठी एवं विनम्र वाणी देगा।
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि व्यर्थ के खर्च के प्रति जातक का आकर्षण बढ़ायेगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु उपार्जित धन को नष्ट करेगा।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु धनसंग्रह में बाधक है।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति तृतीय स्थान में

चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है, चंद्रमा यहां तृतीय स्थान मे वृषराशि मे उच्च का होगा। वृषराशि के तीन अंशों में चंद्रमा परमोच्च का होगा। जातक सहोदरों का प्रिय होगा व
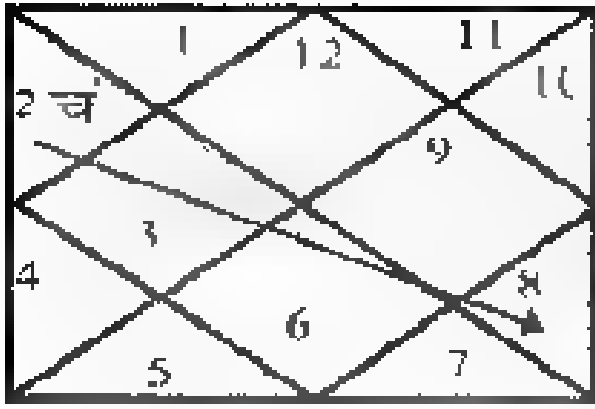
मिलनसार होगा। जातक को माता पिता, स्त्री संतान, धन यश, पद प्रतिष्ठा का पूरा सुख मिलेगा। जातक लेखक, काव्य-प्रिय व साहित्य प्रेमी होता है। उसके प्रशंसक बहुत होते हैं।

दृष्टि—तृतीयस्थ चंद्रमा की नीच दृष्टि भाग्यस्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलत: जातक का भाग्योदय छोटी उम्र में ही होगा।

निशानी—जातक के बहनें व कन्याएं अधिक होगी। ऐसा जातक असहिष्णु एव चचल स्वभाव का होगा।

दशा चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक तीर्थयात्राए, देशाटन करेगा संतति लाभ होगा। विद्या में कीर्ति मिलेगी।

चद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्रमा+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चद्रमा की युति तृतीय स्थान (वृष राशि) में होने के कारण जातक का जन्म ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 2 से 4 के मध्य होता है। षष्ठेश+पंचमेश की युति में यहा चद्रमा उच्च का होगा। जातक महान पराक्रमी होगा। कुटुम्ब का सुख मिलेगा जातक की स्त्री मित्रो से विशेष लाभ होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**—यहा तृतीय स्थान मे दोनो ग्रह वृषराशि में होगे। वृषराशि मे चद्रमा उच्च का होने से 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह षष्टम स्थान सिह राशि, भाग्यस्थान वृश्चिकराशि एव दशमभाव धनुराशि को देखेंगे फलत: जातक महाधनी होगा जातक ऋण-रोग व शत्रु का नाश करने म सक्षम होगा जातक सौभाग्यशाली होगा तथा कोर्ट-केस, मुकदमेबाजी में सदैव विजयश्री का वरण करेगा।
3. **चद्रमा+बुध**—चद्रमा के साथ बुध कुटुम्ब सुख में वृद्धि, माता के सुख में वृद्धि का द्योतक है।
4. **चंद्रमा+गुरु**—'भोजसंहिता' के अनुसार वृषराशि में यह युति वस्तुत: पचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है यहा चद्रमा उच्च का होकर बलवान होगा तथा दोनों ग्रह सप्तम स्थान, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक व्यापार व्यवसाय में बड़ा सम्मान नाम व धन कमायेगा जातक का नाम समाज में भाग्यशाली, प्रतिष्ठित व सफल लोगो में होगा।

5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र 'किम्बहुनानामकराज योग' बनायेगा। जातक को कुटम्बीजनों से लाभ होगा। बहनें अधिक होंगी।

6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि मित्रों से लाभ। जन सम्पर्क से लाभ देगा परन्तु छोटे भाई का सुख कमजोर करेगा।

7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु भाइयों व कुटुम्बियों में विवाद उत्पन्न करेगा।

8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को कीर्तिवान् बनायेगा।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में
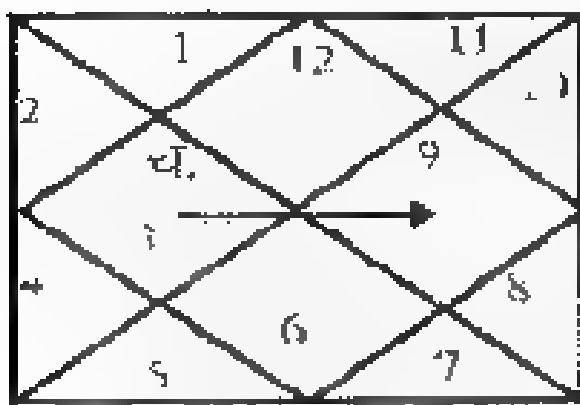
चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां चतुर्थ स्थान में मिथुनराशि का शत्रुक्षेत्री होगा। चंद्रमा यहां 'दिग्बली' होगा। ऐसा जातक को जमीन-जायदाद, स्त्री संतान, मित्र रिश्तेदार, धन-यश, पद प्रतिष्ठा एवं वाहन का सुख मिलेगा। जातक को माता-पिता का सुख मिलता है।

दृष्टि–चतुर्थभावगत चंद्रमा की दृष्टि दशम स्थान (धनुराशि) पर होगी। फलतः जातक को राजकीय सम्मान मिलेगा। जातक राजमंत्री, राजगुरु के पद को प्राप्त करेगा।

निशानी–जातक को माता का सुख तो मिलता है पर माता से विचार नहीं मिलेगा। जातक मानसिक तनाव में रहता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अत्यन्त शुभ फल देगी। चंद्रमा की दशा में रोजी रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भाजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति चतुर्थ स्थान (मिथुन राशि) में होने के कारण जातक का जन्म आषाढकृष्ण अमावस्या को मध्य रात्रि 2 से 2 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति केंद्र से, हृदय रोग की सम्भावना को बढ़ायेगी। जातक की माता बीमार रहेगी।

2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मिथुनराशि में होंगे। मंगल का यहां दिक्बली होगा। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव कन्याराशि, दशम भाव धनुराशि, एवं एकादश भाव मकरराशि को देखेंगे। ऐसा

जातक धनी होगा। जातक की आर्थिक उन्नति विवाह के बाद होगी। जातक व्यापार व्यवसाय मे धन कमायेगा एसे जातक की राजनीति मे भी दबदबा प्रभाव रहेगा।

3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रम व ऐश्वर्यशाली होगा। विद्या एव बुद्धि मे तेजस्वी व्यक्ति होगा।

4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनराशि में यह युति, वस्तुतः पचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान, दशम स्थान एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। यहा क्रमशः 'पद्मसिहासन योग'', 'कुलदीपक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' बना। फलतः जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा। धन खूब कमायेगा। यात्राएं बहुत कमायेगा। जातक का धन परोपकार के कार्यों मे, शुभकार्यों में खर्च होगा। जातक का राजनैतिक वर्चस्व भी उत्तम रहेगा।

5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र माता के सुख में न्यूनता उत्पन्न करेगा।

6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि, भौतिक उपलब्धियो के भण्डार को भरेगा।

7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु माता की मृत्यु छोटी उम्र में करायेगा.

8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु जातक को लम्बी बीमारी देगा

मीनलग्न में चन्द्र की स्थिति पंचम स्थान में
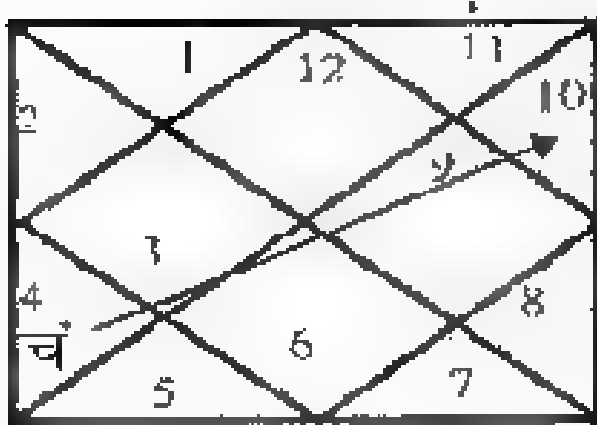
चंद्रमा मीनलग्न मे पचमेश होने से शुभफल एव योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है चंद्रमा यहां पचम स्थान में स्वगृही होगा। जातक वाक्पटु होगा। वाणी विनम्र होगी। कल्पना शक्ति प्रखर होगी। जातक उच्च शैक्षणिक डिग्री प्राप्त करेगा। जातक हसमुख होगा। उसका सोच सकारात्मक होगा जातक स्वय यशस्वी होगा एवं उसकी सतान भी यशस्वी होगी। जातक को माता का सुख उत्तम होगा।

दृष्टि–पचमस्थ चंद्रमा की दृष्टि एकादश स्थान (मकरराशि) पर होगी फलतः जातक व्यापार द्वारा उत्तम धनार्जन करेगा बैंक बैलेन्स तगड़ा रहेगा

निशानी–जातक पुत्रवान होगा पर कन्या सतति अधिक होगी। दो कन्या एक पुत्र का योग बनता है।

दशा चंद्रमा की दशा–अंतर्दशा में उन्नति प्राप्त होगी। तीर्थयात्रा देशाटन होगा धर्नाजन भी होगा एवं यश मिलेगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति पंचम स्थान (कर्क राशि) में होने के कारण जातक का जन्म श्रावण कृष्ण अमावस्या की रात्रि 12 से 10 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां जातक को सुन्दर संतति व उत्तम शिक्षा देगी।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह कर्कराशि में होंगे। चंद्रमा जहां स्वगृही होगा वहीं मंगल नीचराशि में होने से 'नीचभंगराज योग' बनने से 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि हुई। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव तुलाराशि, लाभ स्थान मकरराशि एवं व्ययभाव कुंभराशि को देखेंगे फलत: जातक महाधनी होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। व्यापार व्यवसाय में धन कमायेगा। पर ऐसे जातक के खर्चे भी बढ़े-चढ़े होंगे
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध होने से जातक को कन्या संतति की बाहुल्यता रहेगी
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार कर्क राशि में यह युति वस्तुत: पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां स्वगृही एवं गुरु उच्च का अत्यधिक शक्तिशाली स्थिति में है। यहां बैठकर दोनों शुभग्रह भाग्य स्थान, लाभ स्थान एवं लग्न स्थान को देखेंगे। फलत: जातक बहुमुखी विकास 24 वर्ष की आयु में होना शुरू हो जायगा जातक को व्यापार व्यवसाय में उच्च स्थान की प्राप्ति होगी। जातक भाग्यशाली होगा। शिक्षित होगा तथा उसकी संतति भी शिक्षित होगी।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र विद्या में बाधा के साथ जातक कला व अभिनय के क्षेत्र में उभरेगा।
6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि प्रारम्भिक विद्या में रुकावट परन्तु जातक बड़ा उद्योगपति होगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु विद्या व संतान सुख में बाधक है।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु होने से जातक तेजस्वी विद्यार्थी होगा उसकी संतति भी तेजस्वी होगी।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति षष्टम स्थान में

चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां छठे स्थान में सिंह (मित्र) राशि में है। चंद्रमा की
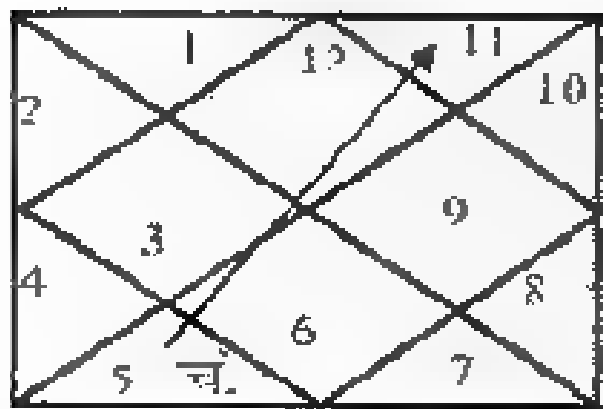
इस स्थिति से 'पुत्रहीन योग' बनता है। महर्षि पाराशर कहते हैं 'पुत्रः शत्रु समो भवेत्' प्रथमतः जातक के पुत्र होवे नहीं। पुत्र होवे तो शत्रु के समान व्यवहार करेगा संतान के मामले में जातक कष्ट पायेगा। जातक के दत्तक पुत्र होगा। विद्या में भी रुकावट आयगी।

दृष्टि–षष्टमस्थ चद्रमा की दृष्टि द्वादश भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः जातक के शत्रु ज्यादा होंगे। जातक परदेश जाकर बसेगा।

निशानी–जातक के पेट के रोग मूत्ररोग, डाईबीटिज या चर्मरोग की संभावना रहती है। जातक को उधार मांगने की आदत होगी। जातक कर्जदार रहेगा।

दशा–चद्रमा की दशा–अंतर्दशा अशुभफल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसहिता' के अनुसार मीनलग्न मे सूर्य+चंद्रमा की युति छठे स्थान (सिंह राशि) में होने के कारण जातक का जन्म भाद्र कृष्ण अमावस्या को रात्रि 10 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहा 'संतानहीन योग' के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहा षष्टम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि मे होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टमस्थान तुलाराशि, व्ययस्थान कुंभराशि एव लग्नस्थान मीनराशि पर होगी। चद्रमा छठे जाने स 'सततिहीन योग' एवं मगल छठे जाने से 'धनहीन योग' 'भाग्यभग योग' भी बनेगा। निसदेह यह स्थिति शुभद नहीं है। जातक बाहर से धनवान दिखेगा पर अदर से खोखला होगा।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध 'सुखभंग योग' 'विवाहभंग योग' बनायेगा। जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा
4. **चद्रमा+गुरु**–'भोजसहिता' के अनुसार सिंह राशि मे युति वस्तुत पचमेश चद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। गुरु के छठे जाने से लग्नभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' बना। चद्रमा के छठे जाने से 'सतानहीन योग' बना। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशमस्थान, व्ययस्थान एवं धन स्थान पर दृष्टिपात करेंगे। फलतः जातक को विद्या मे बाधा आयेगी राज्यपक्ष से सरकारी अधिकारी धोखा देंगे। धन की प्राप्ति तो होगी, निरन्तर होती रहेगी पर धन खर्च होता

चला जायेगा। रुपयों की बरकत नहीं होगी। फिर भी इस योग के कारण जातक का जीवन सार्थक व सफल होगा।

6. **चंद्रमा+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि 'लाभभंग योग' के साथ विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी-मानी अभिमानी होगा।
7. **चंद्रमा+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु गुप्त शत्रुओं के प्रकोप को बढ़ायेगा।
8. **चंद्रमा+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु गुप्त रोगों को उत्पन्न करेगा

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति सप्तम स्थान में
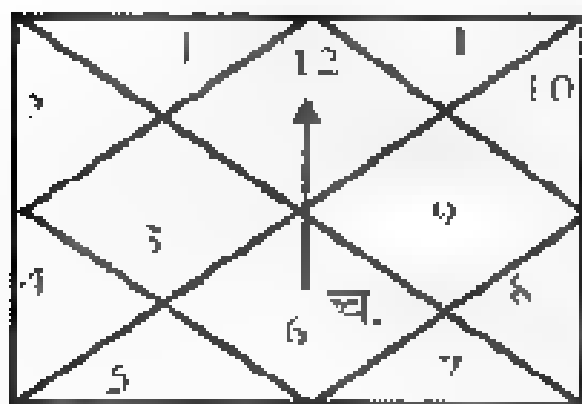
चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है चंद्रमा यहां सप्तम स्थान में कन्या में शत्रुराशि में होगा ऐसे जातक की पत्नी सुन्दर होगी। वैवाहित जीवन अत्यन्त सुखी होगा। माता का सुख उत्तम। संतान का सुख उत्तम। भागीदारी में लाभ। ऐसा जातक परोपकारी एवं धार्मिक होगा। उसे सामाजिक कार्यों में यश मिलेगा। जातक को उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।

दृष्टि—सप्तमस्थ चंद्रमा की दृष्टि लग्न स्थान (मीनराशि) पर होगी। जातक दीखने में सुन्दर कोमल शरीर वाला होगा।

निशानी—जातक प्रेम विवाह करेगा। कन्या संतति अधिक होगी क्योंकि पंचमेश चंद्रमा भी कन्या राशि में है

दशा—चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में विवाह होगा उन्नति होगी। संतान की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्रमा+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति सातवें स्थान (कन्या राशि) में होने के कारण जातक का जन्म अश्विन कृष्ण अमावस्या को सायं 6 से 8 के मध्य होता है। षष्टेश व पंचमेश की युति यहां संतान एवं विवाहसुख में बाधक है। संतान एवं पत्नी के विकलांग होने का भय बना रहेगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**—यहां सप्तम स्थान में दोनों ग्रह कन्याराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रह दशमभाव धनुराशि लग्न स्थान मीनराशि एवं धनभाव मेषराशि को

देखेंगे। ऐसा जातक धनवान होगा। जातक अपने परिश्रम से निरन्तर उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता चला जायेगा जातक का राज्य सरकार कोर्ट, कचहरी में दबदबा प्रभाव अक्षुण्ण बना रहेगा।

3. **चंद्रमा+बुध**–जातक की पत्नी अति उच्च घराने की होगी। ससुराल धनवान होगा। यहां बुध के कारण भद्र योग' बना। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा।

4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुत: पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहा शत्रुक्षेत्री है। दोनों शुभग्रह यहां बैठकर लाभ स्थान, लग्न स्थान एव पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। गुरु यहां 'कुलदीपक योग', 'पद्मसिंहासन योग' बना रहा है चंद्रमा यहां नीचराशि गत होता हुआ भी 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। फलत: जातक की पत्नी सुन्दर व संस्कारित होगी। जातक के व्यक्तित्व का चहुमुखी विकास होगा। उसे व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। जातक बहुत पराक्रमी एव यशस्वी होगा.

5. **चंद्रमा+शुक्र**–चद्रमा के साथ शुक्र होने से जातक की पत्नी सुन्दर होगी पर उसे गुप्त बीमारी रहेगी

6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि होने से जातक का जीवनसाथी व्यापार प्रिय होगा।

7. **चंद्रमा+राहु**–चद्रमा के साथ राहु होने से गृहस्थ सुख में बाधा जीवन साथी की मृत्यु तक सभव है।

8. **चंद्रमा+केतु**–चद्रमा के साथ केतु होने से जीवनसाथी को दीर्घकालिक बीमारी संभव है।

मीनलग्न में चन्द्र की स्थिति अष्टम स्थान में

1 12 11 10 2 9 3 4 8 6 5 च. 7
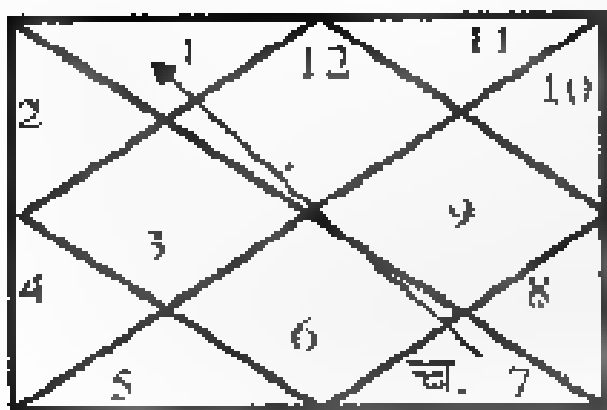
चंद्रमा मीनलग्न मे पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है चद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है चंद्रमा यहा अष्टम स्थान मे तुला (सम) राशि में है। चद्रमा की यह स्थिति 'पुत्रहीन योग' की सृष्टि करती है। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक थोड़े पुत्र वाला होता है। जातक को सतान से

वियोग व कष्ट होगा जातक बाल्यावस्था में बीमार रहेगा। यदि अन्य अशुभ ग्रह साथ हो तो यहां 'बालारिष्ट योग' बनेगा।

दृष्टि -अष्टमस्थ चंद्रमा की दृष्टि धनभाव (मेषराशि) पर होगी। जातक अनेक संसाधनों से धन कमायेगा। वाणी विनम्र होगी।

निशानी–जातक क्रोधी होता है तथा श्वास व दमा की बीमारी से ग्रसित होता है।

दशा-चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति आठवें स्थान (तुला राशि) में होने के कारण जातक का जन्म कार्तिक कृष्ण अमावस्या को सायं 4 से 6 बजे के मध्य होता है. षष्टेश व पंचमेश की युति यहां 'संतानहीन योग' के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा.
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां लाभ स्थान, मकर राशि, धन भाव मेष राशि एवं पराक्रमभाव वृषराशि पर होगी। चंद्रमा आठवें आने से 'संतानहीन योग' तथा मंगल आठवें जाने से 'धनहीन योग' तथा 'भाग्यभंग योग' बनेगा। निश्चय ही यह स्थिति शुभद नहीं है ऐसा जातक बाहर से धनवान दिखाई देगा परन्तु भीतर से खोखला होगा।
3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध 'सुखहीन योग' विलम्ब विवाह योग बनाता है। ऐसे जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ता है।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। गुरु एवं चंद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से क्रमशः 'लग्नभंग योग', 'विद्याभंग योग' 'संतानहीन योग' एवं राज्यभंग योग की सृष्टि हो रही है। अष्टम स्थान में बैठकर गुरु व्यय भाव, धन भाव एवं सुख भाव को देखेंगे फलतः जातक धनवान होगा। परन्तु धन की बरकत नहीं होगी। रुपया परोपकार के कार्य में यात्राओं में खर्च होता चला जायेगा। विद्या में रुकावट आयेगी। संतान संबंधी चिंता रहेगी। राज्य सरकार कोर्ट-कचहरी से परेशानी आ सकती है। सावधानी अनिवार्य है। फिर भी इस शुभ योग के कारण जीवन कांटोभरी सेज नहीं रहेगी संघर्ष के बाद सभी ओर से सफलता निश्चित है।

5. **चंद्रमा+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र सरल नामक 'विपरीतराज योग' एवं 'पराक्रम भंग योग' बनायेगा जातक धनी होगा, मानी होगा। जीवन मे संघर्ष रहेगा।
6. **चंद्रमा+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि 'लाभभंग योग' एवं 'विमल नामक विपरीतराज योग बनायेगा। जीवन में संघर्ष रहेगा। जातक धनी मानी अभिमानी होगा।
7. **चंद्रमा+राहु**—चंद्रमा के साथ राहु आयु के लिए घातक है।
8. **चंद्रमा+केतु**—चंद्रमा के साथ केतु अनिष्टसूचक है।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति नवम स्थान में
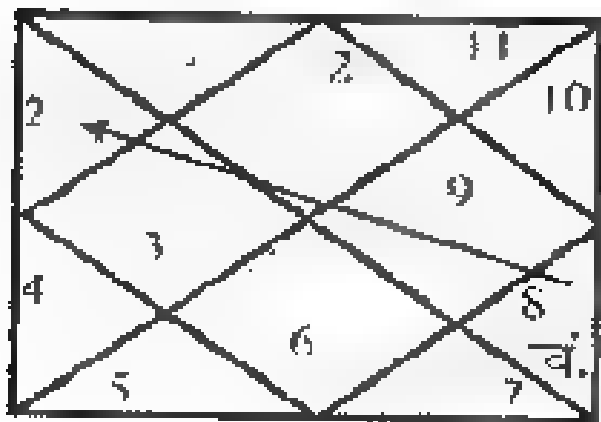
चंद्रमा मीनलग्न मे पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है चंद्रमा यहा नवम स्थान मे वृश्चिक नीच राशि का होगा। वृश्चिक राशि के 3 अंशों में चंद्रमा परमनीच का होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार -

सुतेशे भाग्यगे पुत्रो भूपो वा तत्समो भवेत्।
स्वयं व ग्रन्थकर्ता च विख्यातः कुलदीपकः।

ऐसे जातक का पुत्र राजातुल्य पराक्रमी विख्यात ग्रंथकार एवं कुल में श्रेष्ठ होता है।

दृष्टि—नवम भाव में स्थित सूर्य की दृष्टि तृतीय भाव (वृष राशि) पर होगी। फलतः जातक को भाई बहन, इष्ट मित्रों का पूर्ण सुख मिलेगा

निशानी—जातक के बहनें ज्यादा होंगी। जातक को पिता सुख श्रेष्ठ होगा।

दशा-चंद्रमा की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **चंद्रमा+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य-चंद्रमा की युति नवमं स्थान (वृश्चिक राशि) में होने के कारण जातक का जन्म मार्गशीर्ष कृष्ण अमावस्या को सायं 2 से 4 के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति यहां भाग्योदय में सहायक है। चंद्रमा यहा नीच का होते हुए भी जातक महान् पराक्रमी होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**—यहां नवम स्थान में दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। वृश्चिक राशि मे जहा चंद्रमा नीच का होगा वहीं मंगल स्वगृही होने से 'महालक्ष्मी योग' बनेगा तथा 'नीचभंगराज योग' बनेगा। यहा बैठकर दोनों ग्रह, व्यय भाव कुंभराशि, पराक्रम भाव वृष राशि एवं चतुर्थ भाव मिथुन राशि को देखेंगे .

फलतः जातक महाधनी होगा। महान पराक्रमी होगा ऐसे जातक को जीवन में उत्तम वाहन, उत्तम भवन एवं समस्त भौतिक सुख मिलेंगे परन्तु ऐसे जातक खर्चीले स्वभाव, उदार मनोवृत्ति वाला परोपकारी व दानी होगा

3. **चंद्रमा+बुध**—चंद्रमा के साथ बुध जातक के भाग्योदय में प्रबल सहायक है। जातक महान पराक्रमी होगा।
4. **चंद्रमा+गुरु**—'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+राज्येश गुरु के साथ युति है चंद्रमा यहां नीच का होगा। गुरु के कारण 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा। जहां बैठकर ये दोनों शुभग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक शिक्षित होगा तथा उसकी संतानें भी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगी। जातक अपनी संतान के कारण समाज में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जातक का जीवन में चहुमुखी विकास होगा। राजनीति में दबदबा रहेगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**—चंद्रमा के साथ शुक्र जातक को प्रबल पराक्रमी बनायेगा परन्तु पीठ पीछे निन्दा होगी।
6. **चंद्रमा+शनि**—चंद्रमा के साथ शनि जातक के भाग्योदय में दिक्कतें पैदा करेगा। जातक कठोर परिश्रमी होगा
7. **चंद्रमा+राहु**—चंद्रमा के साथ नीच का राहु भाग्योदय में बाधाएं उत्पन्न करेगा।
8. **चंद्रमा+केतु**—चंद्रमा के साथ उच्च का केतु जातक को तीव्र गति से आगे बढ़ायेगा।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति दशम स्थान में
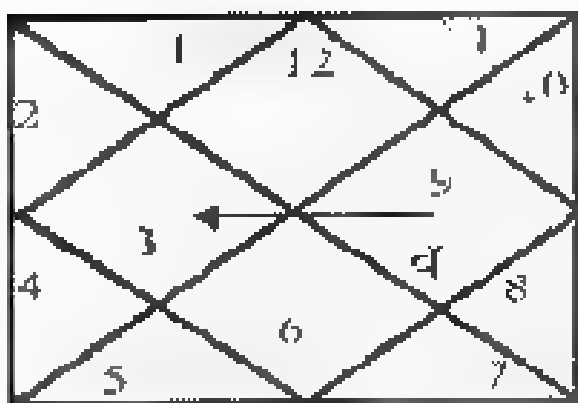
चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है चंद्रमा यहां दशम भाव में धनु (मित्र) राशि में होगा। चंद्रमा यहां अपने स्थान से 'षडाष्टक योग' बना रहा है ऐसा जातक संतान अथवा विद्या को लेकर मानसिक तनाव में रहेगा। फिर भी जातक धनी होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार पंचमेश दशमेश दशम में होने से एक प्रकार का 'राजयोग' बनता है। "अनेक सुखभोगी च ख्यात कीर्ति हारो भवेत्।" जातक सभी प्रकार के भौतिक सुखों को प्राप्त करता हुआ कीर्तिवान होता है।

दृष्टि–दशम भावगत चंद्रमा की दृष्टि चतुर्थभाव (मिथुनराशि) पर होगी। फलतः माता का सुख श्रेष्ठ विद्या सुख श्रेष्ठ मिलेगा।

निशानी–जातक अपने कुटुम्ब में श्रेष्ठ व्यक्ति होता है। जातक विद्वान् होता है तथा राज सरकार द्वारा सम्मानित होता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में जातक को अकल्पनीय शुभफलों की प्राप्ति होती है। जातक सपरिवार धार्मिक यात्राओं व देशाटन पर जाता है।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चद्रमा की युति दसवें स्थान (धनुराशि) मे होने के कारण जातक का जन्म पौष कृष्ण अमावस्या को दोपहर 12 से 2 के मध्य होता है। षष्टेश व पचमेश की युति यहां जातक को नौकरी में ऊचा पद दिलायेगी। जातक राजनीति में कुशल एव धनवान होगा।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां दशम स्थान में दोनों ग्रह धनुराशि में होंगे। मंगल यहां दिक्बली होकर 'कुलदीपक योग' बनायेगा। चंद्रमा की 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। दोनों ग्रहों की दृष्टिया, लाभस्थान मीन राशि, चतुर्थ स्थान मिथुन राशि एव पचम भाव कर्क राशि पर होगी। फलतः जातक समाज का प्रतिष्ठित व धनी व्यक्ति होगा। निरन्तर उन्नति पथ पर आगे बढ़ता चला जायेगा। जातक उत्तम वाहन, उत्तम भवन का स्वामी होगा। जातक स्वय तो धनी होगा ही पर इसकी सतति भी उसी की तरह धनवान होगी।
3. **चंद्रमा+बुध**–चद्रमा के साथ बुध माता का सुख विवाह का सुख देगा। जातक कुल का नाम रोशन करेगा।
4. **चंद्रमा+गुरु** 'भोजसंहिता' के अनुसार धनु राशि मे यह युति वस्तुतः पचमेश चंद्रमा की लग्नेश+राज्येश गुरु के साथ युति है। ये दोनों शुभग्रह केन्द्र में बैठकर धन स्थान सुख भाव एव षष्टम् स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। गुरु यहां स्वगृही होने से बलवान होगा तथा क्रमशः 'हस योग', 'कुलदीपक योग', 'यामिनीनाथ योग', 'पद्मसिहासन योग' की सृष्टि कर रहा है। फलतः जातक का राजनीति मे व्यापार में भारी प्रतिष्ठा होगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक के पास उत्तम वाहन एव भौतिक ससाधनो की उपलब्धि रहेगी जातक अपने शत्रुओं का नाश करने मे पूर्णतः समर्थ होगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चद्रमा के साथ शुक्र जातक का पराक्रम राजा की भांति बढ़ायेगा।
6. **चंद्रमा+शनि** चंद्रमा के साथ शनि जातक को व्यापार में लाभ, पद-प्रतिष्ठा दिलायेगा।

7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु रोजी रोजगार में बाधक है।
8. **चद्रमा+केतु**–चद्रमा के साथ केतु सघर्ष का द्योतक है।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति एकादश स्थान में
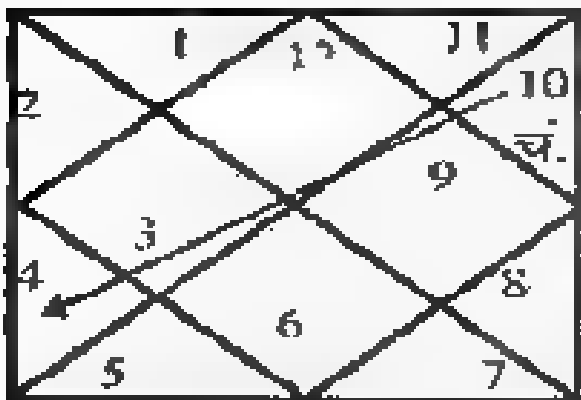
चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चंद्रमा यहां एकादश स्थान में मकर (सम) राशि का होगा। जातक को सभी प्रकार की सुख-सुविधा, समृद्धि एवं उत्तम विद्याओं को प्राप्ति होगी। 'बृहत्पाराशर होराशास्त्र' के अनुसार ऐसा जातक विख्यात ग्रंथकार, लोकप्रिय, धन, पुत्र एव वैभव से युक्त उत्तम व्यक्तित्व का स्वामी होता है।

दृष्टि–चंद्रमा की दृष्टि पंचम भाव अपने ही घर कर्क राशि पर होने के कारण कन्या संतति अधिक होगी।

निशानी–ऐसे जातक उच्च महत्वाकांक्षी होता है। अपनी उन्नति के प्रति सावधान रहता है।

दशा–चंद्रमा की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **चंद्रमा+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति एकादश स्थान (मकर राशि) में होने के कारण जातक का जन्म माघकृष्ण अमावस्या को दिन में 10 से 12 बजे के मध्य होता है। षष्टेश एवं पंचमेश की युति यहां व्यापार में लाभ देगी। अति उत्तम संतति एवं उच्च शैक्षणिक उपाधि प्रदान करेगी।
2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां एकादश स्थान में दोनों ग्रह मकर राशि मे होंगे। मकर राशि में मगल उच्च का होने से 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि होगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह धनस्थान मेष राशि, पचम स्थान कर्क राशि एव षष्टम् स्थान सिंह राशि को देखेंगे। फलतः ऐसा जातक महाधनी होगा। ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा। जातक निरन्तर उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता चला जायेगा। ऐसा जातक स्वयं तो धनी होगा पर उसकी संतति भी उसकी तरह धनवान होगी। जातक की विशेष आर्थिक उन्नति प्रथम पुत्र प्रजनन के बाद होगी।

3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध होने से जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति, गृहस्थ सुखों की प्राप्ति होगी।
4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकर राशि में यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति होगी। गुरु यहां नीच का होगा। जहां बैठकर ये दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पंचम भाव एवं सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक की संतति शिक्षित होगी। उसे व्यापार-व्यवसाय में उच्च पद प्राप्त होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
5. **चंद्रमा+शुक्र**–चद्रमा के साथ शुक्र होने से जातक पराक्रमी होगा। उद्योगपति होगा। बड़े व्यापार से लाभ होगा।
6. **चंद्रमा+शनि**–चद्रमा के साथ शनि होने से जातक उद्योगपति एवं बड़ा व्यापारी होगा। बैंक-बैलेन्स अच्छा रहेगा।
7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु व्यापार में अचानक घाटा देगा।
8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु व्यापार में रुकावट का द्योतक है।

मीनलग्न में चंद्र की स्थिति द्वादश स्थान में
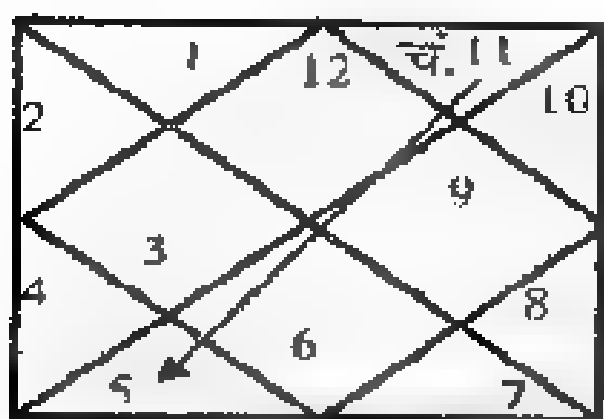
चंद्रमा मीनलग्न में पंचमेश होने से शुभफल एवं योग कारक है। चंद्रमा लग्नेश गुरु का मित्र भी है। चद्रमा यहां द्वादश स्थान कुम्भ राशि में है। चंद्रमा अपनी राशि में आठवें एवं लग्न में बारहवें होने के कारण पचम भाव के शुभफलों को तोड़ता है तथा 'पुत्रहीन योग' की सृष्टि करता है। पाराशर ऋषि के अनुसार 'दत्तपुत्रयुतो काऽसौ क्रीतपुत्रान्वितोऽथवा' जातक दत्तक पुत्र अथवा क्रीतपुत्र द्वारा सेवित होता है। जातक मानसिक तनाव में रहेगा तथा उसे नेत्र पीड़ा खासकर बाईं आंख में पीड़ा होगी।

दृष्टि–द्वादश स्थानगत चद्रमा की दृष्टि छठे भाव (सिंह राशि) पर होगी। जातक की माता की मृत्यु छोटी उम्र में होगी। जातक को मामा का सुख उत्तम मिलेगा।

निशानी–जातक के प्रारम्भिक विद्याध्ययन में रुकावटें आयेगी एवं प्रतियोगी परीक्षाओं मे असफल होगा।

दशा–चंद्रमा की दशा-अंतर्दशा में अशुभफलों की प्राप्ति होगी।

चंद्रमा का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **चंद्रमा+सूर्य**–भोजसंहिता के अनुसार मीनलग्न में सूर्य+चंद्रमा की युति द्वादश स्थान (कुम्भ राशि) में होने के कारण जातक का जन्म फाल्गुण कृष्ण अमावस्या को प्रातः 8 से 10 बजे के मध्य होता है षष्टेश एवं पंचमेश की युति यहा 'संतानहीन योग' के साथ साथ हर्षनामक योग 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगी। जातक महाधनी एवं वैभवशाली होगा

2. **चंद्रमा+मंगल**–यहां द्वादश स्थान मे दोनों ग्रह कुंभराशि में होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां पराक्रम स्थान वृष राशि षष्टम भाव सिंह राशि एव सप्तम भाव कन्या राशि पर होगी। चंद्रमा बारहवें जाने से 'संतानहीन योग' तथा मंगल बारहवें जाने से क्रमशः 'धनहीन योग' व 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि होगी। निश्चय ही यह स्थिति शुभद नहीं है। ऐसा जातक बाहर से धनवान दिखाई देगा पर भीतर से खोखला होगा।

3. **चंद्रमा+बुध**–चंद्रमा के साथ बुध 'सुखहीन योग' विलम्ब विवाह योग की सृष्टि करेगा जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। संघर्षमय जीवन जीयेगा।

4. **चंद्रमा+गुरु**–'भोजसंहिता' के अनुसार यहा यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+राज्येश गुरु के साथ युति है। यहां बैठकर ये दोनों शुभग्रह सुख स्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। द्वादश स्थान में इन दोनों ग्रहो के जाने से क्रमशः 'लग्नभंग योग', 'राज्यभग योग' एवं 'संतानहीनयोग' की सृष्टि हो रही है। वस्तुतः ऐसे जातक को ऋण रोग व शत्रु का भय नहीं होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में अकेला सक्षम होगा। जातक को प्राकृतिक अपघातों व दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। जातक को सभी प्रकार के भौतिक संसाधनों की प्राप्ति सहज में होती रहेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

5. **चंद्रमा+शुक्र**–चंद्रमा के साथ शुक्र सरलनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगा। जातक का पराक्रम भंग होगा।

6. **चंद्रमा+शनि**–चंद्रमा के साथ शनि भारी खर्च करायेगा। 'विपरीतराज योग' के कारण जातक धनी मानी, अभिमानी होगा।

7. **चंद्रमा+राहु**–चंद्रमा के साथ राहु संतान सुख में बाधक है।

8. **चंद्रमा+केतु**–चंद्रमा के साथ केतु विलम्ब संतति करायेगा।

❑❑❑

मीनलग्न में मंगल की स्थिति

मीनलग्न में मंगल की स्थिति प्रथम स्थान में
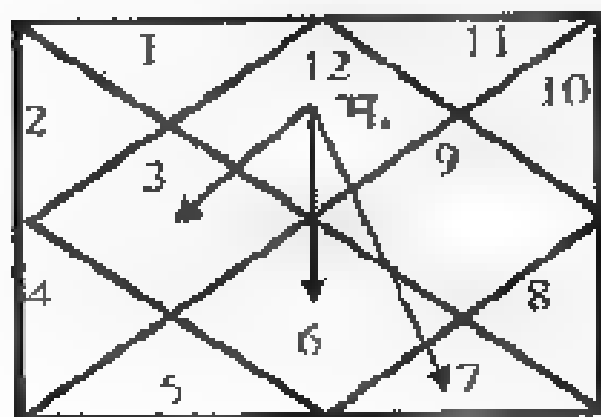
मीनलग्न मे मंगल धनेश व भाग्येश है। मगल यह मारकेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। मगल हर हालत में शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है। मंगल यहां प्रथम स्थान में मीन (मित्र) राशि मे है। फलतः दूसरे व नवमं भाव का शुभ फल देगा। जातक को कुटुम्ब सुख, धनसुख उत्तम मिलेगा। वाणी प्रिय व हितकर होगी मगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है। जातक का विलम्ब विवाह हो या पत्नी बीमार रहे। शुभ ग्रहो की दृष्टि या संबंध से मगल का शुभत्व और बढ़ेगा। अशुभ ग्रहों की दृष्टि व सबध से मंगल का पापत्व बढ़ जायेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ मगल की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मिथुन राशि), सप्तम भाव (कन्या राशि) एव अष्टम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक को माता का सुख मिलेगा। गृहस्थ सुख भी उत्तम होगा जातक दीर्घजीवी होगा एवं स्वस्थ्य शरीर का स्वामी होगा।

निशानी–जातक के पिता के साथ अच्छे संबध होगे। जातक को पिता की सम्पति मिलेगी जातक के दाई आंख की रोशनी तेज होगी।

दशा–मगल की दशा-अंतर्दशा उत्तम फल देगी। जातक को भौतिक उपलब्धियां देगी। वैवाहिक सुख देगी। स्वास्थ्य निर्मल रखेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्रमा**–यहा प्रथम स्थान में दोनों ग्रह मीनराशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों चतुर्थ स्थान मिथुन राशि, सप्तम भाव कन्या राशि एवं अष्टम स्थान

तुलाराशि को देखेंगे फलतः जातक धनवान होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जीवन में सभी भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति सहज से होगी। परन्तु जातक का सही आर्थिक विकास विवाह के बाद होगा।

2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य जातक को उग्र स्वभाव का व्यक्ति बनायेगी
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को भौतिक सुख-सुविधाएं दिलायेगा। धनेश सप्तमेश की युति से 'कलत्रमूलधन योग' बनेगा। जातक को ससुराल से धन मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु 'हंस योग' की सृष्टि करेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली पराक्रमी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि जातक को खर्चीले स्वभाव का बनायेगा जातक लड़ाकू होगा
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु जातक को विचलित मन-मस्तिष्क वाला बनायेगा
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु जातक को यशस्वी बनायेगा।

मीनलग्न में मंगल की स्थिति द्वितीय स्थान में
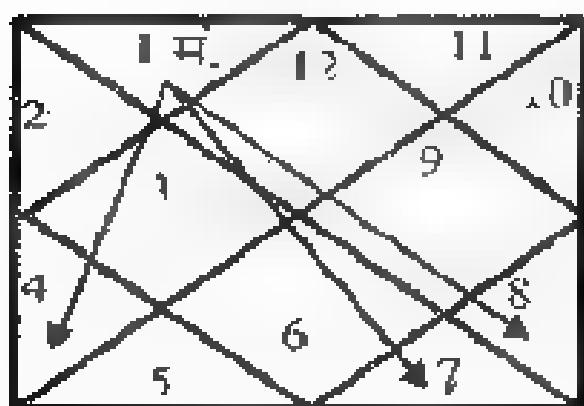
मीनलग्न में मंगल धनेश व भाग्येश है मंगल यह मारकेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। मंगल हर हालत में शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है। मंगल यहां द्वितीय स्थान में मेषराशि का स्वगृही होगा। ऐसा जातक महाधनी होगा। विद्या में थोड़ी-सी रुकावट के बाद आगे बढ़ेगा। ऐसा जातक बोलचाल की भाषा में कटु शब्दों का प्रयोग करता है। पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक भाग्यवान्, राजमान्य, सुशील, सुन्दर, विद्वान व लोकपूज्य होता है।

दृष्टि—धनभाव में स्थित स्वगृही मंगल की दृष्टि पंचम भाव (कर्क राशि), अष्टमभाव (तुला राशि) एवं भाग्य स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। फलतः गर्भपात की संभावना रहेगी। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा। जातक प्रबल भाग्यशाली होगा। भाग्योदय 28 वर्ष की आयु में होगा।

निशानी–जातक का कुटुम्ब सुख कमजोर होगा भाइयों से बनेगी नहीं। जातक का पिता समाज का धनी व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा पर पिता से बनेगी नहीं।

दशा मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्रमा**–यहां द्वितीय स्थान में दोनों ग्रह मेषराशि मे होगा मेषराशि में मंगल स्वगृही होगा। फलतः यहां 'महालक्ष्मी योग' बनेगा। यहा बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां, पंचम भाव कर्क राशि, अष्टम भाव तुला राशि एव भाग्यभवन वृश्चिक राशि पर होगी फलतः जातक महाधनी होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा। जातक बुद्धिमान, विद्यावान् होगा, जातक की संतति भी धनवान एव बुद्धिशाली होगी।
2. **मंगल+सूर्य**--सूर्य के साथ मंगल होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक बड़ी भू सम्पत्ति का स्वामी एव महाधनी होगा
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से पत्नी सुंदर एवं ससुराल धनवान मिलेगा। बलवान धनेश के साथ सप्तमेश होने से 'कलत्रमूलधन योग' एवं 'मातृमूलधन योग' बनेगा। जातक को पत्नी एव माता दोनों से धन मिलेगा।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु जातक को ऊंची नौकरी, उत्तम व्यवसाय देगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र होने से जातक यार-दोस्तो एवं कुटम्बियों पर खूब पैसा लुटायेगा।
6. **मंगल+शनि** मंगल के साथ शनि 'नीचभंगराज योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी एवं धनी होगा।
7. **मंगल+राहु**–मगल के साथ राहु धन संग्रह मे रुकावट पैदा करेगा।
8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु जातक को कुशल (प्रखर) वक्ता बनायेगा।

मीनलग्न में मंगल की स्थिति तृतीय स्थान में
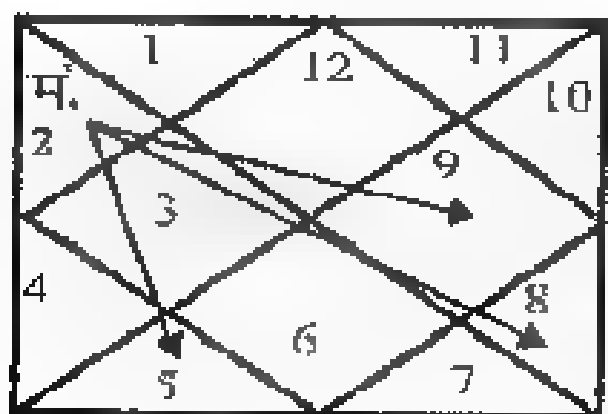
1 12 11 10 मं. 2 9 3 4 8 6 5 7

मीनलग्न में मगल धनेश व भाग्येश है। मंगल यह मारकेश होकर भी माकर का कार्य नहीं करेगा। मंगल हर हालत में शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है मंगल यहां तृतीय स्थान में वृष (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक साहसी होगा, स्वपुरुषार्थ से आगे बढ़ेगा। जातक

को पिता की सम्पत्ति नही मिलेगी। पिता से अलग रहकर धन कमायेगा। पाराशर ऋषि के अनुसार जातक भाई के सुख से युत, धनी, गुणी एवं मित्रों का सच्चा मददगार होगा जातक को जमीन से जुड़े धंधों मे लाभ होगा, विद्युत एवं मशीनरी कार्यों से लाभ होगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ मंगल की दृष्टि छठे भाव (सिंह राशि), भाग्य भाव (वृश्चिक राशि) एवं दशम भाव (धनुराशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु होंगे पर जातक को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। जातक भाग्यशाली होगा। भाग्योदय 28 वर्ष की आयु में होगा। जातक का सरकारी क्षेत्र, राजनीति में वर्चस्व होगा।

निशानी—जातक का विलम्ब विवाह होगा या दो विवाह होगा। जातक के छोटा भाई नहीं होगा।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चंद्रमा**—यहा तृतीय स्थान में दोनो ग्रह वृषराशि मे होंगे। वृषराशि मे चंद्रमा उच्च का होने से 'महालक्ष्मी योग' बनेगा यहां बैठकर दोनों ग्रह षष्टम स्थान सिंह राशि, भाग्य स्थान वृश्चिक राशि एव दशम भाव धनु राशि को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा। जातक ऋण-रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा। जातक सौभाग्यशाली होगा तथा कोर्ट केस, मुकदमेबाजी में सदैव विजयश्री का वरण करेगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य भातृ सुख में रुकावट डालता है। खासकर बड़े भाई का सुख कमजोर होता है।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध होने से जातक का ननिहाल एवं ससुराल दोनों ही पराक्रमी (Powerful) होंगे।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु होने से जातक का बड़े-बड़े राजनेताओं से सम्पर्क होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र जातक के मित्रो से लाभ, खासकर स्त्री मित्रों से अधिक लाभ दिलाता है
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि कुटम्बियों में विद्वेष वैमनस्य फैलता है।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु परिजनों में कलह करायेगा।
8. **मंगल+केतु** मंगल के साथ केतु जातक को खूब यशस्वी बनायेगा।

मीनलग्न में मंगल की स्थिति चतुर्थ स्थान में
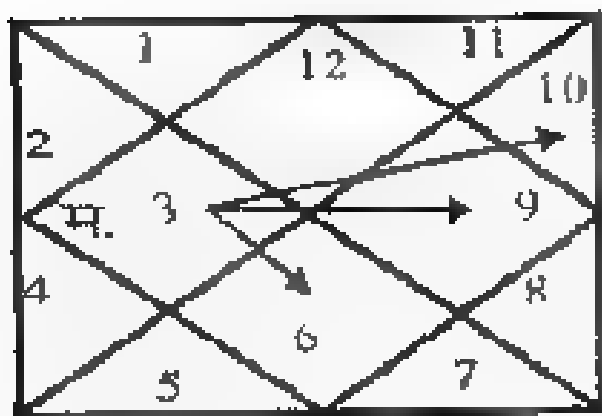
मीनलग्न में मंगल धनेश व भाग्येश है। मंगल यह मारकेश होकर भी माकर का कार्य नहीं करेगा। मंगल हर हालत में शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है। मंगल यहां मिथुन राशि में शत्रुक्षेत्री होगा। यह कुण्डली 'मांगलिक' कहलायेगी। जातक को जमीन-जायदाद, नौकरी-व्यवसाय, भवन, माता, वाहन एवं पद-प्रतिष्ठा का उत्तम सुख मिलेगा। ऐसे जातक का विलम्ब विवाह संभव है।

दृष्टि—चतुर्थभावस्थ मंगल की दृष्टि सप्तम भाव (कन्याराशि), दशम भाव (धनुराशि) एवं एकादश भाव (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक की स्त्री भाग्यवान् होती है। जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक को पिता एवं राज्यपक्ष से सम्मान मिलेगा। एकादश भाव पर उच्च दृष्टि से जातक को घर बैठे अचानक उत्तम लाभ होगा।

निशानी—ऐसा जातक अनावश्यक चिंता व तनाव से घिरा रहता है।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में धन लाभ होगा। सरकारी क्षेत्र में विजय मिलेगी। अचानक लाभ होगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चंद्रमा** यहां चतुर्थ स्थान में दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। मंगल का यहां दिक्बली होगा। चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह सप्तम भाव कन्या राशि, दशम भाव धनु राशि, एवं एकादश भाव मकर राशि को देखेंगे। ऐसा जातक धनी होगा। जातक की आर्थिक उन्नति विवाह के बाद होगी। जातक व्यापार-व्यवसाय में धन कमायेगा। ऐसे जातक की राजनीति में भी दबदबा प्रभाव रहेगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य माता के सुख में न्यूनता एवं वाहन को लेकर धन खर्च के संकेत देता है। भूमि-भवन को लेकर भी विवाद उत्पन्न करता है।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी व यशस्वी होगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु जातक को माता पिता से लाभ दिलायेगा। कुटुम्ब सुख देगा।

5. **मंगल+शुक्र**–मगल के साथ शुक्र उत्तम वाहन सुख देगा। जातक के पास एक से अधिक मकान होगे।

6. **मंगल+शनि**–मगल के साथ शनि भूमि विवाद उत्पन्न करेगा। वाहन दुर्घटना भी संभव है।

7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु माता को बीमार करायेगा। विद्या में रुकावट देगी।

8. **मंगल+केतु**–मगल के साथ केतु माता क स्वास्थ्य हेतु प्रतिकूल है।

मीनलग्न में मंगल की स्थिति पंचम स्थान में
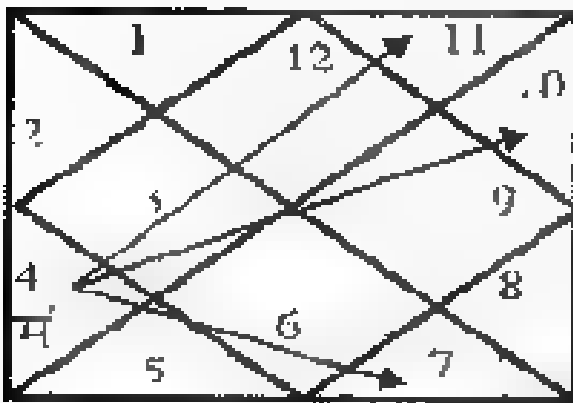
मीनलग्न मे मगल धनेश व भाग्येश है मगल यह मारकेश होकर भी माकर का कार्य नहीं करेगा। मगल हर हालत मे शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है। मंगल यहा पंचम स्थान में नीच का होगा। कर्क राशि के अशों मे चंद्रमा परमनीच का होगा। परन्तु मगल यहा अपनी मेषराशि में चौथे एवं नवमें स्थान में होने के कारण शुभफलदाई है। जातक पुत्र सुख से युक्त गुरु भक्त, धर्मात्मा एव पण्डित होता है जातक धन-यश, पद प्रतिष्ठा एव भौतिक उपलब्धियो को प्राप्त करता है।

दृष्टि–पंचमस्थ मगल की दृष्टि अष्टम स्थान (तुला राशि), एकादश स्थान (मकर राशि) एव द्वादश भाव (कुम्भ राशि) पर होगी फलतः जातक अपने शत्रुओं का नाश करेगा। जातक के बड़े भाई एव पिता से कम बनेगी। जातक फालतू खर्चा बहुत करेगा। कदाचित जातक व्यसनी होगा।

निशानी–जातक की विद्या अधूरी छूट जायेगी। कन्या संतति अधिक होगी। एकाध सतान की मृत्यु (अनायास) होगी

दशा–मंगल की दशा अतर्दशा मे जातक को मिश्रित फल मिलेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्रमा**–यहां पंचम स्थान में दोनों ग्रह कर्कराशि में होंगे। चद्रमा जहा स्वगृही होगा वहीं मंगल नीचराशि में होने से 'नीचभंगराज योग' बनने से 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि हुई। यहा बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव तुला राशि, लाभ स्थान मकर राशि एवं व्यय भाव कुंभ राशि को देखेंगे। फलतः जातक

महाधनी होगा। लम्बी उम्र का स्वामी होगा। व्यापार व्यवसाय में धन कमायेगा। पर ऐसे जातक के खर्चे भी बढ़े-चढ़े होंगे

2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य एकाध गर्भपात करायेगा। प्रारंभिक विद्या में रुकावट के बाद जातक तेजी से आगे बढ़ेगा
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध जातक को उच्च शैक्षणिक डिग्री (उपाधि) प्रदान करेगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु 'नीचभंगराज योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। संतान पक्ष से सुखी होगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र कन्या संतति की बाहुल्यता देगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि जातक को विदेश यात्रा से लाभ दिलायेगा। विदेशी व्यापार से भी लाभ है।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु संतान सुख में बाधक है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु एकाध गर्भपात करायेगा।

मीनलग्न में मंगल की स्थिति षष्ठम स्थान में

मीनलग्न में मंगल धनेश व भाग्येश है। मंगल यह मारकेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। मंगल हर हालत में शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है। मंगल यहां छठे स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति के कारण 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यभंग योग' बनेगा ऐसा जातक परम पराक्रमी, साहसी एवं दृढ़ निश्चयी होता है। परन्तु धन और भाग्य बराबर साथ नहीं देता है। धन एकत्रित करने के प्रयासों में सफलता नहीं मिलेगी। जातक का भाग्योदय विलम्ब से होगा।

दृष्टि—षष्टमस्थ मंगल की दृष्टि भाग्यस्थान (वृश्चिक राशि) द्वादश स्थान (कुंभराशि) एवं लग्नस्थान (मीन राशि) पर होगी। जातक के भाग्योदय में काफी दिक्कतें आयेगी। जातक खर्च करने में लापरवाह होगा। ऋणग्रस्त होने का भय बना रहेगा। जातक को कठोर पुरुषार्थ के बाद सफलता मिलेगी।

निशानी—ऐसा जातक शत्रुओं के लिए खतरनाक शत्रु होता है तथा शत्रुओं को भयाक्रान्त करके नष्ट कर देता है।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा मिश्रित फलदायक साबित होगी। मंगल की

दशा को शत्रुता बढ़ेगी धन की हानि होगी। शत्रुओं पर विजय तो मिलेगी पर कीमत भारी चुकानी पड़ेगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्रमा**–यहां षष्टम स्थान में दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टि अष्टम स्थान तुला राशि, व्यय स्थान कुंभ राशि एवं लग्न स्थान मीन राशि पर होगी। चंद्रमा छठे जाने से 'संततिहीन योग' एवं मंगल छठे जाने से 'धनहीन योग' 'भाग्यभंग योग' भी बनेगा। निसंदेह यह स्थिति शुभद नहीं है। जातक बाहर से धनवान दिखेगा पर अंदर से खोखला होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगा। जातक धनी मानी होगा। वाहन सुख मिलेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध 'सुखभंग योग' एवं विलम्ब विवाह योग बनायेगा। जीवन साथी के चयन में रुकावट आयेगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनायेगा। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा नौकरी में परेशानी आयेगी।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र 'पराक्रमभंग योग' बनायेगा। जातक को झूठी बदनामी मिलेगी।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी मानी होगा। उसके पास उत्तम वाहन होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु 'राजयोग' देगा पर जातक के शत्रु बहुत होंगे।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु गुप्त बीमारी या गुप्त शत्रु से भय देगा।

मीनलग्न में मंगल की स्थिति सप्तम स्थान में
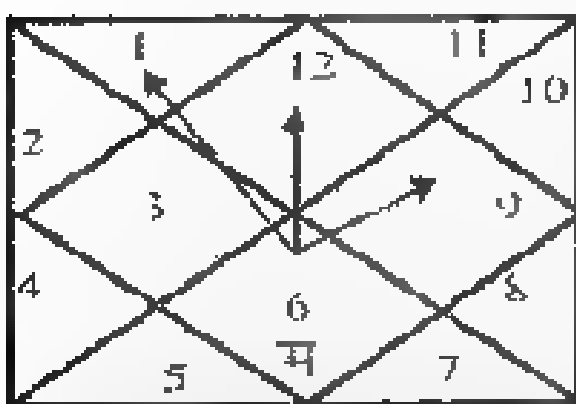
मीनलग्न में मंगल धनेश व भाग्येश है। मंगल यह मारकेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। मंगल हर हालत में शुभ फलदायक है। क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है। मंगल यहां सप्तम स्थान में कन्या (शत्रु) राशि में होगा मंगल की इस स्थिति के कारण कुण्डली 'मांगलिक' कहलाती है। जातक प्रबल पुरुषार्थी एवं परिश्रमी होगा। ऐसा जातक जीवन के हर

क्षेत्र मे सफल होगा। जातक को उत्तम पद-प्रतिष्ठा, धन व यश की प्राप्ति होगी। जातक का ससुराल धनी एवं समृद्ध होगा। जातक का वास्तविक भाग्योदय विवाह के बाद होगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ मंगल की दृष्टि दशम भाव (धनु राशि), लग्न भाव (मीन राशि) एवं धन भाव (मेष राशि) अपने ही घर पर होगी। फलत: जातक को राजनीति में सफलता मिलेगी। परिश्रम का लाभ मिलेगा एव जातक अनेक विधियो (Different source of ncome) से धन प्राप्त करने मे सफल होगा।

निशानी जातक कामी होगा एव कामक्रीड़ा मे स्त्री को परास्त करेगा। पत्नी पर हावी रहेगा।

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा में जातक का सम्पूर्ण भाग्योदय होगा

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्रमा**—यहां सप्तम स्थान में दोनो ग्रह कन्याराशि मे होंगे यहा बैठकर दोनों ग्रह दशम भाव धनु राशि, लग्न स्थान मीन राशि एवं धन भाव मेष राशि को देखेंगे ऐसा जातक धनवान होगा। जातक अपने परिश्रम से निरन्तर उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता चला जायेगा। जातक का राज्य सरकार कोर्ट, कचहरी में दबदबा प्रभाव अक्षुण्ण बना रहेगा।
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य होने से रोग निवृत्ति एव शत्रु नाश मे जातक का धन खर्च होगा।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली पराक्रमी होगा। जातक को माता से एवं पत्नी से बराबर धन लाभ होता रहेगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु 'राज योग' बढ़ायेगा। जातक अपने पुरुषार्थ से बड़ी सम्पत्ति-साम्राज्य की स्थापना करेगा।
5. **मंगल+शुक्र**—मंगल के साथ शुक्र होने से जातक कामी होगा। अन्य स्त्रियो से सम्पर्क बना रहेगा। स्त्री मित्रों से लाभ है।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि होने से गृहस्थ सुख मे बाधा, कलह रहेगा। पति-पत्नी के मध्य मनमुटाव सभव है।
7. **मंगल+राहु**—मंगल के साथ राहु एक पत्नी की मृत्यु के बाद 'द्विभार्या योग' कराता है।
8. **मंगल+केतु**—मंगल के साथ केतु दो स्त्रियों से सम्पर्क कराता है।

मीनलग्न में मंगल की स्थिति अष्टम स्थान में
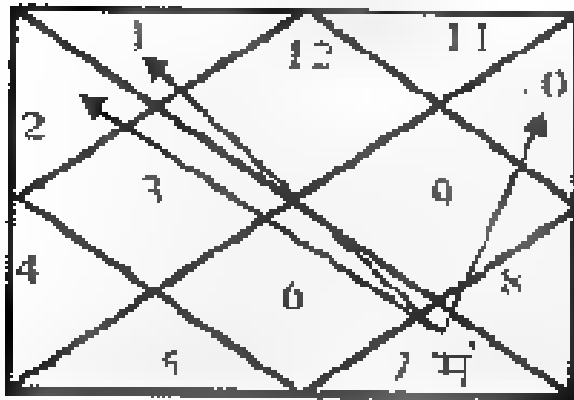
मीनलग्न में मंगल धनेश व भाग्येश है मंगल यह मारकेश होकर भी माकर का कार्य नहीं करेगा। मंगल हर हालत मे शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है। मंगल यहां अष्टम स्थान में तुला (मित्र) राशि में होगा। मंगल की इस स्थिति के कारण कुण्डली 'मांगलिक' होगी। यहां 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यभंग योग' भी समान रूप से बनेगा। प्राय: जातक के विवाह मे विलम्ब होता है बचपन के दस वर्ष कष्टपूर्ण रहते है। बहुत प्रयत्न करने पर भी जीवन में धनसंग्रह नहीं होता। भाग्य साथ नहीं देता। आगे बढ़ने के लिए संघर्ष बहुत करना पड़ता है। पाराशर कहते हैं–'भाग्येशे मृत्युभावस्थे भाग्यहीनो नरो भवेत्'।

दृष्टि–अष्टमस्थ मंगल की दृष्टि लाभ स्थान (मकर राशि), धन स्थान (मेष राशि) एवं पराक्रम स्थान (वृष राशि) पर होगी आमदनी अच्छी रहेगी। भाई बहनों से असंतोष रहेगा। जातक पराक्रमी होगा, अकस्मात् धन मिलेगा।

निशानी–इस जातक की भाषा ओछी व तेज होगी, जिससे समाज में लोकप्रियता नहीं मिलेगी।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा में कष्टानुभूति होगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्रमा**–यहां अष्टम स्थान में दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। यहां बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टियां लाभ स्थान, मकर राशि, धन भाव मेष राशि एवं पराक्रम भाव वृष राशि पर होगी। चंद्रमा आठवें आने से 'संतानहीन योग' तथा मंगल आठवें जाने से 'धनहीन योग' तथा भाग्यभंग योग बनेगा। निश्चय ही यह स्थिति शुभद नहीं है। ऐसा जातक बाहर से धनवान दिखाई देगा परन्तु भीतर से खोखला होगा।
2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करता है, जातक धनी-मानी, अभिमानी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध 'सुखहीन योग' 'विलम्बविवाह योग' कराता है। जातक के दो पत्नियां होगी।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनाता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा

5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र सरल नामक 'विपरीतराज योग' बनाता है जातक धनी-मानी अभिमानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनाता है। जातक धनी मानी अभिमानी एवं वैभवशाली होगा।
7. **मंगल+राहु**–जननेन्द्रि म रोग, बवासीर, भगन्दर, कैंसर जैसी बीमारी देगा गुर्दे की बीमारी संभव।
8. **मंगल+केतु**–अकाल मृत्यु की सभावना। गंभीर ऑपरेशन सभव.

मीनलग्न में मंगल की स्थिति नवम स्थान में
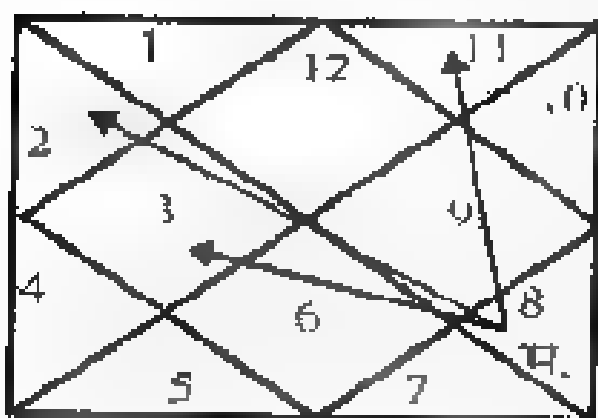
मीनलग्न में मगल धनेश व भाग्येश है। मंगल यह मारकेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। मंगल हर हालत में शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है मंगल यहां नवम स्थान मे स्वगृही होगा। ऐसा जातक महान् भाग्यशाली एवं बड़ी भू-सम्पत्ति का स्वामी होता है। बृहत्पाराशर होराशास्त्र के अनुसार–

''भागेशे भाग्यभावस्थे, बहुभाग्यसमन्वितः
गुण सौन्दर्य सम्पन्नो, सहजेभ्यः सुख बहु।''

जातक भाग्यशाली होता है अल्पप्रयत्न के बहुसुख मिलता है। ऐसे जातक को भाइयों एवं अच्छे मित्रों के साथ मिलता है। मकान, वाहन का सुख श्रेष्ठ होगा।

दृष्टि–नवमस्थ मगल की दृष्टि व्यय भाव (कुम्भ राशि), पराक्रम स्थान (वृष राशि) एवं चतुर्थ स्थान (मिथुन राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। महान् पराक्रमी होगा जीवन मे सभी प्रकार के भौतिक सुख सुविधाओं की प्राप्ति सहज में होगी।

निशानी–जातक की माता बीमार रहेगी। विद्याभ्यास में रुकावटें आयेगी।

दशा–मगल की दशा-अतर्दशा अत्यन्त श्रेष्ठ फल देगी.

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्रमा**–यहा नवम स्थान मे दोनों ग्रह वृश्चिक राशि मे होंगे. वृश्चिक राशि में जहां चंद्रमा नीच का होगा वहीं मंगल स्वगृही होने से 'महालक्ष्मी योग' बनेगा तथा 'नीचभंगराज योग' बनेगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह, व्यय भाव

कुंभराशि, पराक्रम भाव वृषराशि एवं चतुर्थभाव मिथुन राशि को देखेंगे। फलतः जातक महाधनी होगा महान् पराक्रमी होगा ऐसे जातक को जीवन मे उत्तम वाहन, उत्तम भवन एवं समस्त भौतिक सुख मिलेंगे। परन्तु ऐसे जातक खर्चीले स्वभाव, उदार मनोवृत्ति वाला परोपकारी व दानी होगा

2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य होने से भाग्योदय में हल्की रुकावट के बाद व्यक्ति आगे बढ़ेगा। भाग्योदय 28 वर्ष की आयु के बाद होगा।
3. **मंगल+बुध**—मगल के साथ बुध होने से बलवान धनेश की सप्तमेश, सुखेश से युति होने के कारण 'कलत्रमूलधन योग' एवं 'मातृमूलधन योग' बनेगा। जातक को माता एवं अपनी पत्नी से बराबर धन की प्राप्ति होती रहेगी।
4. **मगल+गुरु**—मगल के साथ गुरु होने से जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी और स्वयं भी खूब धन कमाकर, नई सम्पत्तियो की स्थापना करेगा।
5. **मंगल+शुक्र** मंगल के साथ शुक्र होने से जातक रंगीन मिजाज का होगा। शौकिन तबियत के कारण भाग्योदय मध्यम गति से होगा।
6. **मंगल+शनि**—मंगल के साथ शनि जातक को उद्योगपति बनायेगा व्यापार व्यवसाय में भाग्योदय 32 वर्ष की आयु में होगा।
7. **मंगल+राहु**—मगल के साथ राहु भाग्योदय में दिक्कतें खड़ी करेगा।
8. **मगल+केतु**—मंगल के साथ केतु उन्नति के मार्ग में रुकावटें खड़ी करेगा

मीनलग्न में मगल की स्थिति दशम स्थान में
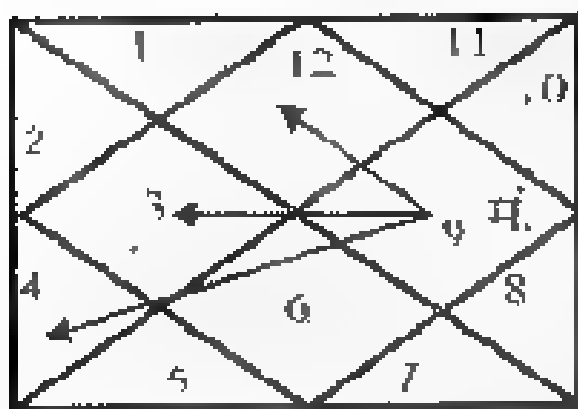
1 12 11 10 2 3 9 मं. 4 6 8 5 7

मीनलग्न में मंगल धनेश व भाग्येश है। मंगल यह मारकेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा। मगल हर हालत में शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है। मगल यहां दशम स्थान मे धनु (मित्र) राशि में 'दिग्बली' होकर 'कुलदीपक योग' बनायेगा। ऐसा जातक स्वभाव से उग्र तथा अभिमानी होगा। ऐसा जातक राजा के समान प्रभावशाली व ऐश्वर्यवान होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार "भाग्येशे कर्मभावस्थे जातो राजा इश तत्सम:। मत्री सेनापतिर्वाऽपि गुणवान् जनपूजित:" ऐसा जातक जनप्रिय होता है तथा राजनीति में ऊंचे पद को प्राप्त करता है।

दृष्टि—दशमशस्थ मगल की दृष्टि लग्न स्थान (मीन राशि), चतुर्थ भाव (मिथुन राशि) एव पचम भाव (कर्क राशि, पर होगी। जातक को परिश्रम का पूरा

लाभ मिलेगा। जातक के पास उत्तम वाहन होगा विरासत में मकान मिलेगा। जिसकी मरम्मत कराकर जातक रहेगा। विद्या रुकावट के साथ मिलेगी।

निशानी—ऐसे जातक को संतति विलम्ब से होगी। एकाध संतति का वियोग भी होगा। जातक अर्थकारी विद्याओं का जानकार होगा

दशा—मंगल की दशा अंतर्दशा मे रोजी, रोजगार की प्राप्ति होगी। जमीन से जुड़े हुए धंधे में जातक उन्नति करेगा।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध

1. **मंगल+चंद्रमा** यहा दशम स्थान म दोनों ग्रह धनुराशि मे होंगे मंगल यहां दिक्बली होकर 'कुलदीपक योग' बनायेगा। चद्रमा की 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। दोनों ग्रहों की दृष्टियां, लाभ स्थान मीन राशि चतुर्थ स्थान मिथुन राशि एवं पञ्चम भाव कर्क राशि पर होगी फलतः जातक समाज का प्रतिष्ठित व धनी व्यक्ति होगा। निरन्तर उन्नति पथ पर आगे बढ़ता चला जायेगा जातक, उत्तम वाहन, उत्तम भवन का स्वामी होगा जातक स्वय तो धनी होगा ही पर उसकी संतति भी उसी की तरह धनवान होगी
2. **मंगल+सूर्य**—मंगल के साथ सूर्य उत्तम मकान एवं वाहन का सुख देगा। सरकारी वाहन का योग परन्तु अष्टमेश की युति से कुछ रुकावट आयेगी।
3. **मंगल+बुध**—मंगल के साथ बुध ससुराल एवं मातृपक्ष से धन लाभ का संकेत देता है जातक प्रखर बुद्धिशाली होगा एव बुद्धि वैभव से धन कमायेगा।
4. **मंगल+गुरु**—मंगल के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा
5. **मंगल+शुक्र**—मगल के साथ शुक्र जातक को एक से अधिक सुन्दर वाहनों का सुख देगा। ऐश्वर्य बढ़ायेगा।
6. **मगल+शनि**—मगल के साथ शनि सरकारी विवाद मे उलझायेगा
7. **मगल+राहु**—मंगल के साथ राहु अनिष्ट सूचक है। पिता की सम्पत्ति जातक को नहीं मिलेगी।
8. **मगल+केतु**—मंगल के साथ केतु परम्परागत सम्पत्ति की प्राप्ति में बाधक है

मीनलग्न में मंगल की स्थिति एकादश स्थान में

मीनलग्न में मगल धनेश व भाग्येश है। मंगल यह मरकेश होकर भी मारक का कार्य नहीं करेगा मगल हर हालत में शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु

1 12 11 10 म. 2 3 9 4 6 8 5 7
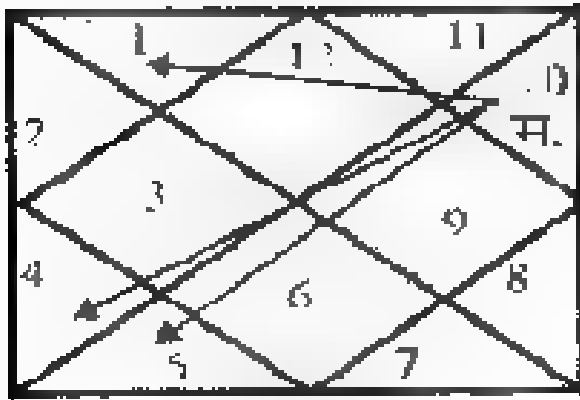
का मित्र भी है। मगल यहां एकादश स्थान में उच्च का होगा। मकर राशि के अशों में मंगल परमोच्च का होगा। जातक करोड़पति होगा। बड़ा उद्योगपति होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार

भाग्येशे लाभयावस्थे, धन लाभो दिने दिने।
भक्तो गुरुजनानां च, गुणवान् पुण्यवानपि।

ऐसा जातक दिन-प्रतिदिन व्यापार से लाभ कमाता है। गुरुजनों का भक्त, धर्मात्मा एवं पुण्यात्मा होता है।

दृष्टि—एकादश भावस्थित उच्च के मगल की दृष्टि धन स्थान (मेष राशि), पंचम भाव (कर्कराशि) एवं छठे स्थान (सिंह राशि) पर होगी। जातक की वाणी घमण्डी होगी। जातक को उच्च शिक्षा मिलेगी जातक समूल अपने शत्रुओं को नष्ट कर देगा।

निशानी—कुटुम्ब सुख ठीक नहीं। जातक की भाषा कठोर एव ओछी होने से परिजनों में नहीं बनेगी।

दशा—मगल की दशा अतर्दशा में व्यापार बढ़ेगा। धन लाभ होगा। सकुटुम्ब तीर्थयात्राए, देशाटन होगा। अचानक लाभ होकर, धन की प्राप्ति होगी

मगल का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **मंगल+चद्रमा**—यहा एकादश स्थान में दोनो ग्रह मकरराशि में होंगे। मकर राशि में मगल उच्च का होने से 'महालक्ष्मी योग' की सृष्टि होगी। यहा बैठकर दोनों ग्रह धन स्थान मेष राशि, पंचम स्थान कर्क राशि एवं षष्टम् स्थान सिह राशि को देखेंगे। फलत: एसा जातक महाधनी होगा। ऋण रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा. जातक निरन्तर उन्नति पथ की ओर आगे बढ़ता चला जायेगा। ऐसा जातक स्वय तो धनी होगा पर उसकी सतति भी उसकी तरह धनवान होगी। जातक की विशेष आर्थिक उन्नति प्रथम पुत्र प्रजनन के बाद होगी।
2. **मंगल+सूर्य**—मगल के साथ सूर्य लाभ में बाधा पहुचायेगा परन्तु जातक का पराक्रम तेजस्वी होगा। जातक का समाज में बड़ा नाम होगा।
3. **मंगल+बुध**—बलवान् मगल के साथ बुध यहा 'कलत्रमूलधन योग' एव 'मातृमूलधन योग' की सृष्टि कर रहा है। जातक का माता से पत्नी से एव वाहन से बराबर पैसा मिलेगा।

4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु नीच का होने से 'नीचभंगराज योग' बना। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा।
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र होने से जातक रंगीन मिजाज का होगा परन्तु शुक्र मंगल तथा शनि के धधे से धन कमायेगा। Source of income will be three sided.
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि होने से 'किम्बहुना योग' बनेगा। जातक राजा के समान परम प्रतापी होगा। बडे उद्योग या व्यापार का स्वामी होगा।
7. **मंगल+राहु**–मंगल के साथ राहु लाभ में बाधा पहुचेगा व्यापार में परिवर्तन करायेगा।
8. **मंगल+केतु**–मंगल के साथ केतु स्थाई लाभ मे बाधक है।

मीनलग्न में मंगल की स्थिति द्वादश स्थान में
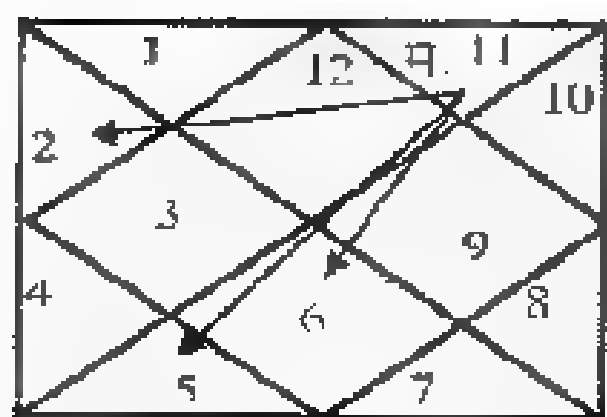
मीनलग्न में मंगल धनेश व भाग्येश है। मंगल यह मारकेश होकर भी मारकर का कार्य नहीं करेगा. मंगल हर हालत में शुभ फलदायक है क्योंकि यह लग्नेश गुरु का मित्र भी है। मंगल यहां द्वादश स्थान में कुम्भ राशि में होगा। मंगल की यह स्थिति कुण्डली को 'मांगलिक' बनाती है तथा 'धनहीन योग', 'भाग्यभग योग' की सृष्टि करती है। ऐसे जातक का विवाह देरी से होता है। धन सग्रह हेतु बहुत प्रयत्न करने पर भी धन एकत्रित नही हो पायेगा। भाग्योदय हेतु बहुत प्रयत्न करना पड़ेगा। फिर भी सफलता मुश्किल से मिलेगी। पाराशर ऋषि कहते हैं शुभकार्ये व्ययो नित्यं, मिर्धनो अतिथि सगमात्." ऐसा जातक शुभ कार्य, अतिथि सत्कार एव मित्रों को खुश करने में धन खर्च करेगा.

दृष्टि–द्वादश भाव स्थित मंगल की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृष राशि), छठे स्थान (सिह राशि) एव सातवें भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा पर उडाऊ स्वभाव का होगा शत्रु बहुत होंगे। गृहस्थ सुख मे कमी रहेगी।

निशानी–जातक के दो विवाह होंगे। भाइयों और पिता के साथ बनेगी नहीं।

दशा–मंगल की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

मंगल का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **मंगल+चंद्रमा**–यहां द्वादश स्थान म दोनो ग्रह कुंभ राशि में होंगे। यहा बैठकर दोनों ग्रहों की दृष्टिया पराक्रम स्थान वृष राशि, षष्टम भाव सिंह राशि एव

सप्तम भाव कन्या राशि पर होगी। चंद्रमा बारहवें जाने से 'संतानहीन योग' तथा मंगल बारहवें जाने से क्रमश: 'धनहीन योग' व 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि होगी। निश्चय ही यह स्थिति शुभद नहीं है। ऐसा जातक बाहर से धनवान दिखाई देगा पर भीतर से खोखला होगा।

2. **मंगल+सूर्य**–मंगल के साथ सूर्य होने से दुर्घटना का भय रहेगा।
3. **मंगल+बुध**–मंगल के साथ बुध होने से पत्नी की मृत्यु निश्चित है।
4. **मंगल+गुरु**–मंगल के साथ गुरु सरकारी नौकरी में बाधक है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा
5. **मंगल+शुक्र**–मंगल के साथ शुक्र आकस्मिक मृत्यु वाहन दुर्घटना का संकेत देता है।
6. **मंगल+शनि**–मंगल के साथ शनि स्वगृही होगा. जातक बहुत बड़ा कर्जा लेगा। जिससे परेशानी मे फंस जायेगा।
7. **मंगल+राहु**–पत्नी के साथ संबधविच्छेद होगा। जातक एक समय में दो पत्नियां रखेगा। पर दोनों से दु:खी होगा।
8. **मंगल+केतु**–गृहस्थ सुख में न्यूनता रहेगी। पत्नी की मृत्यु संभव है।

❑❑❑

मीनलग्न में बुध की स्थिति

मीनलग्न में बुध की स्थिति प्रथम स्थान में
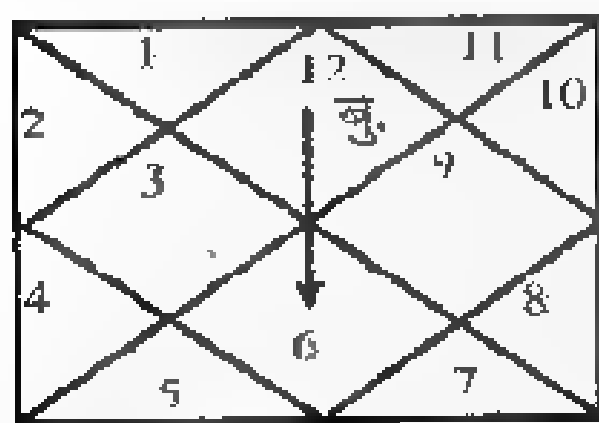
मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से महायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। बुध यहां प्रथम स्थान में मीन (नीच) राशि मे है। मीनराशि के 15 अंशों में यह परमनीच का हो जायेगा। बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक का वाक्चातुर्थ तीव्र होगा। बुद्धि तेज, वाणी तेज पर शरीर नाजुक होगा। गृहस्थ सुख उत्तम। भागीदारी के धंधे में लाभ होगा। जातक को धन, यश, पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

दृष्टि–बुध की दृष्टि सप्तम भाव (कन्या राशि) पर होगी। फलतः जातक की पत्नी सुन्दर व महत्वाकांक्षी होगी।

निशानी -जातक की कामेच्छा कमती होगी।

.**दशा**–बुध की दशा-अतर्दशा शुभ फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. .**बुध+चंद्रमा**–बुध के साथ चंद्रमा होने से जातक भाग्यशाली होगी। बड़ा अधिकारी एवं उच्च श्रेणी का विद्वान् होगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। प्रथम स्थान में मीनराशिगत यह युति वस्तु षटेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी। बुध यहां नीच का होगा। यहां बैठकर दोनों शुभग्रह सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। जातक धनवान होगा, ज्योतिष-तंत्र मत्र एव आध्यात्म विद्याओं का जानकार होगा 'कुलदीपक योग' के कारण जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन

करेगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा जातक समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मगल होने से जातक को पत्नी पक्ष ससुराल से धन लाभ होगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु 'हंस योग' एवं 'नीचभंगराज योग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **बुध+शुक्र** बुध के साथ शुक्र होने से 'मालव्य योग' एवं 'नीचभंगराज योग' बनेगा। जातक राजा के समान प्रतापी, ऐश्वर्यसम्पन्न एवं वैभवशाली होगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि होने से जातक के जीवन में संघर्ष अधिक रहेगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु जातक के विचार निम्नगामी बनायेगा। जातक तुनक मिजाजी होगा।
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु जातक को यशस्वी जीवन देगा।

मीनलग्न में बुध की स्थिति द्वितीय स्थान में
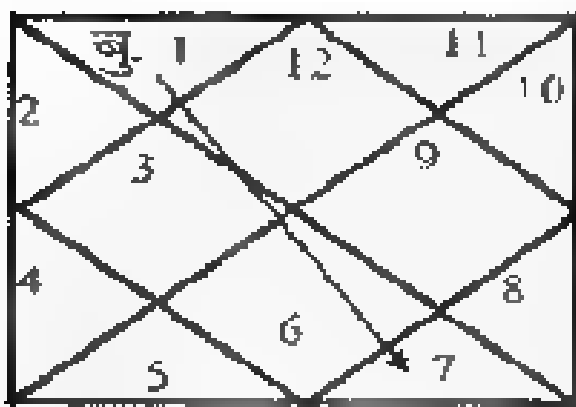
मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। बुध यहां द्वितीय स्थान में मेष (शत्रु) राशि में होगा। बुध यहां चौथे भाव से ग्यारहवें एवं सातवें भाव से आठवें स्थान पर है। ऐसे जातक की बुद्धि श्रेष्ठ, धनसुख श्रेष्ठ, कुटुम्ब सुख श्रेष्ठ होगा। माता का सुख, मकान, वाहन का सुख श्रेष्ठ मिलेगा। जातक अधिक कुटुम्ब परिवार वाला, भोगी, साहसी एवं सामाजिक व्यक्ति होगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ बुध की दृष्टि अष्टम भाव (तुला राशि) पर होगी ऐसा जातक बुद्धिबल से शत्रुओं का नाश करने में समर्थ होगा।

निशानी—जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा जातक का पिता लम्बी बीमारी से ग्रसित होगा।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहो से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्रमा**—बुध के साथ चंद्रमा धन की वृद्धि करायेगा। पत्नी का सुख मिलेगा।

2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीन में सूर्य षष्टेश होगा। द्वितीय स्थान में मेष राशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी। सूर्य यहां उच्च का होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम भाव को देखेंगे। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा। जातक प्रख्यात धनवान होगा। आमदनी के जरिए दो–तीन प्रकार के रहेंगे। जीवन सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं व ऐश्वर्य से परिपूर्ण होगा। जातक समाज का लब्ध–प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ मंगल 'कलत्रमूलधन योग' एवं 'मातृमूलधन योग' बनेगा। जातक को पत्नी एवं माता से बराबर धनलाभ होता रहेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से जातक को परिश्रम का फल मिलेगा। राज (सरकार) से लाभ मिलेगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक को मित्रों से लाभ रहेगा। जातक की वाणी विनम्र होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि धनहानि करायेगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु धन संग्रह में रुकावट का काम करेगा। जातक की माता को कष्ट रहेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु धनसंग्रह में बाधक है।

मीनलग्न में बुध की स्थिति तृतीय स्थान में
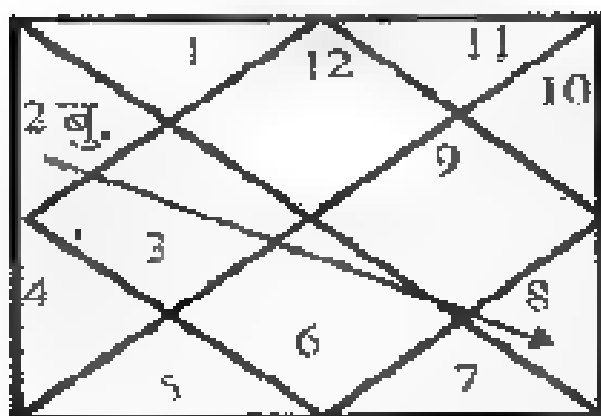
मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। बुध यहां तीसरे स्थान में वृष (मित्र) राशि में होगा। यहां बुध चौथे स्थान से बारहवें एवं दशम भाव से नवमें स्थान पर होने से शुभ है। जातक पराक्रमी होगा। उसे छोटे भाई–बहनों का सुख मिलेगा। मित्रों का सुख मिलेगा। वैवाहिक जीवन सुखी होगा तथा विवाह के बाद जातक का तत्काल भाग्योदय होगा। जातक 'वाक्शूर' होगा, अपने बुद्धिबल से सबको परास्त करने वाला होगा।

दृष्टि–तृतीयस्थ बुध की दृष्टि नवम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा तथा भागीदारी के धंधे में लाभ कमायेगा. जातक अपने धर्म व कर्त्तव्य का पालन करने वाला होगा।

निशानी–जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। पाराशर ऋषि के अनुसार 'स्वभुजार्जितवित्तवान्' जातक अपने पुरुषार्थ व परिश्रम में खूब धन एवं यश कमायेगा।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक को राजा के यहां मान प्रतिष्ठा मिलेगी। जातक का जनसम्पर्क एवं पराक्रम बढ़ेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्रमा**—बुध के साथ चंद्रमा जातक को कुटुम्ब परिवार का पूरा सुख देगा। बहन की संख्या अधिक होगी।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। तृतीय स्थान में वृष राशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी यहां बैठकर दोनों ग्रह भाग्यभवन को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली, धनी एवं महान् पराक्रमी व्यक्ति होगा। जातक को पिता की सम्पत्ति मिलेगी। उसे मित्रों परिजनों की मदद भी मिलती रहेगी। भाग्योदय 26 वर्ष में होने के संकेत मिलता है। दूसरा भाग्योदय 32 वर्ष में होगा। जातक समाज का लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल जातक को सुसराल से धन दिलायेगा।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु जातक को राज सरकार में ऊंचा पद दिलायेगा।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र जातक को कुटुम्ब सुख देगा। जातक को भाई बहनों से लाभ होगा। बहनों की संख्या अधिक होगी.
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि भाइयों में विग्रह करायेगा।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु कुटुम्ब में विवाद करायेगा
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु कीर्ति देगा।

मीनलग्न में बुध की स्थिति चतुर्थ स्थान में
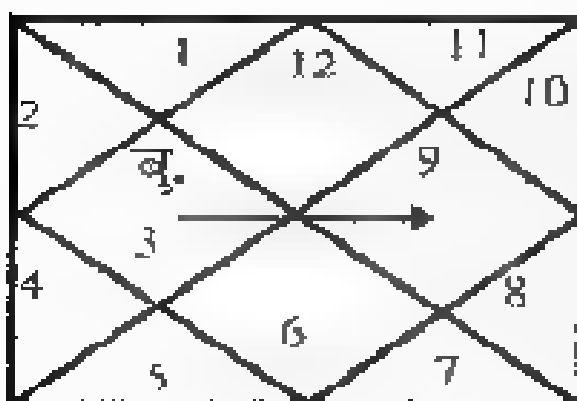
मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। बुध यहां चतुर्थ स्थान में बुध मिथुन राशि में स्वगृही होकर 'कुलदीपक योग' एवं 'भद्रयोग' बनायेगा बुध यहां सातवें भाव से दसवें स्थान पर होगा। ऐसा जातक राजातुल्य पराक्रमी तथा ऐश्वर्यवान् होता है। जातक विद्वान् होता है। उसे जमीन जायदाद, नौकर-चाकर, वाहन का सुख मिलता है। माता-पिता का सुख मिलता है।

दृष्टि—चतुर्थभावस्थ बुध की दृष्टि दशम स्थान (धनुराशि) पर होगी। ऐसा जातक राजा का मंत्री होता है। पाराशर ऋषि कहते हैं 'मंत्री सर्वधनान्वितः'। ऐसा जातक मिनिस्टर का P.S. या I.S. या R.J.S. होता है तथा राज्य सरकार के शासन में हस्तक्षेप करता है।

निशानी—जातक का ससुराल जातक से अधिक पराक्रमी होता है।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा में जातक की उन्नति होती है। उसे ऊंची पद-प्रतिष्ठा मिलती है।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्रमा**—बुध के साथ चंद्रमा जातक को माता की सम्पत्ति दिलायेगा। ननिहाल पक्ष से लाभ होगा, जातक शिक्षित होगा।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। चतुर्थ स्थान में मिथुनराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। बुध यहां स्वगृही होगा। बुध के कारण 'भद्र योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। जातक माता-पिता, कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा। वाहनसुख एव मकान भाव परिपूर्ण होगा। जातक जाति समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मगल जातक को माता से धन दिलाता है। पत्नी व ससुराल से धन मिलता है।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु जातक को दीर्घायु देगा। राजनीति में लाभ एवं चुनाव में विजय देगा
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र जातक को एक से अधिक वाहन सुख देगा।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि जातक को वाहन से दुर्घटना का भय देता है।
7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु माता को अल्पायु प्रदान करता है पर जातक का राजयोग शक्तिशाली बनाता है
8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु की स्थिति कष्टदायक है। भौतिक सुखों का मार्ग कटंकाकीर्ण होगा।

मीनलग्न में बुध की स्थिति पंचम स्थान में

मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। बुध यहा पचम स्थान में कर्क (शत्रु) राशि

1	12	11	10
2		9	
3			8
4 बु.	6		
5		7	
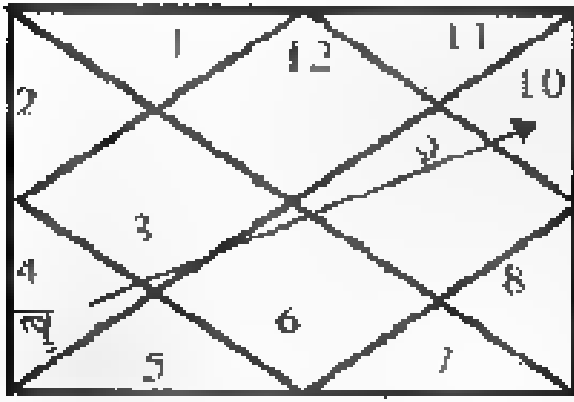
में होगा। बुध यहां चौथे (अपने) स्थान से दूसरे तथा सातवें स्थान से ग्यारहवें स्थान पर स्थित है। ऐसा जातक विद्यावान होगा। मंत्र तंत्र इत्यादि गूढ विद्याओ का जानकार होगा। उसे उच्च शैक्षणिक उपाधि (Higher Educational Degree) मिलेगी माता का सुख उत्तम। गृहस्थ सुख अति उत्तम तथा संतान सुख श्रेष्ठ होगा। ऐसा जातक प्रतियोगी परीक्षाओं में निश्चय ही उत्तीर्ण होगा। जातक अच्छा लेखक पत्रकार, डॉक्टर, सी.ए. एवं कम्प्यूटर विशेषज्ञ होगा

दृष्टि—पंचमस्थ बुध की एकादश स्थान (मकरराशि) पर दृष्टि होगी। फलतः भागीदारी के कार्यों मे लाभ मिलेगा जातक के मित्र अच्छे होंगे।

निशानी—कन्या संतति अधिक होगी। जातक शल्य चिकित्सा का जानकार होगा। जातक 'प्रति उत्पन्न मति' वाला होगा

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्रमा**—बुध के साथ चंद्रमा प्रथम संतति कन्या देगा। कन्या संतति तेजस्वी होगी जग में नाम रोशन करेगी।
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न मे सूर्य षष्ठेश होगा। पंचम स्थान में कर्कराशिगत यह युति वस्तुतः षष्ठेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी, बुध यहां शत्रुक्षेत्री होगा यहां बैठकर दोनों ग्रह, लाभस्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली होगा, धनवान होगा शिक्षित होगा तथा जातक की संतति भी शिक्षित होगी। जातक को जीवन मे सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं मिलेगी। व्यापार मे लाभ होगा। जातक अपनी जाति व समाज का लब्ध-प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल धन को लेकर ससुराल में विवाद करायेगा। जिसका लाभ जातक को मिलेगा
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु जातक को राजनीति में लाभ देगा। जातक खुद तेजस्वी होगा। संतान भी तेजस्वी होंगे।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र कन्या संतति में वृद्धि करेगा। एक कन्या की अकाल मृत्यु होगी।
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ शनि व्यापार मे भरपूर लाभ देगा। पर जातक की एक संतति लापता (गुम) हो जायेगी।

7. **बुध+राहु**—बुध के साथ राहु होने से संतान की प्राप्ति शल्य चिकित्सा से होगी संतान संबंधी चिंता रहेगी।

8. **बुध+केतु**—बुध के साथ केतु एकाध गर्भस्राव गर्भपात कराता है

मीनलग्न में बुध की स्थिति षष्टम स्थान में
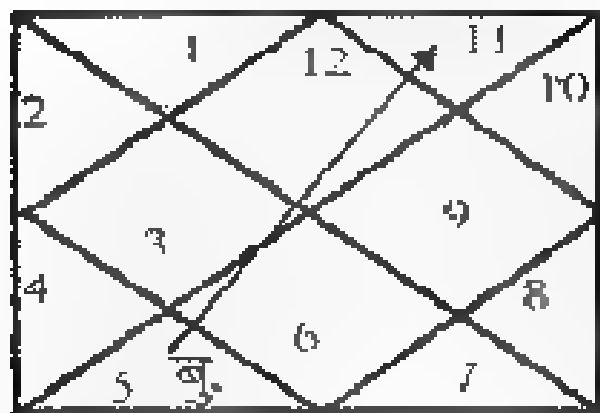
मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है बुध यहां छठे स्थान में सिंह (मित्र) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति से 'विलम्बविवाह योग' एवं 'सुखभंग योग' बनता है। बुध अपने घर से तीसरे एवं सातवें घर (कन्या राशि) में बारहवें स्थान पर होने से अशुभ है। जातक को मातृसुख कमजोर होगा। मकान सुख कमजोर। जातक का नौकर चाकर धोखा देंगे। वाहन भी समय पर धोखा देगा जातक का विवाह विलम्ब से होगा। पत्नी से विचार कम मिलेंगे। भौतिक सुखों की प्राप्ति में न्यूनता बनी रहेगी।

दृष्टि—षष्टमस्थ बुध अपनी मित्र दृष्टि से द्वादश भाव (कुम्भ राशि) को देखेगा। जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होगा। ऐसे जातक शत्रु से ज्यादा बदला लेने में विश्वास नहीं रखते। संघर्ष से कतराते हैं।

निशानी—जातक को मानसिक शान्ति नहीं होगी। शत्रु बहुत होंगे। विद्या में बारम्बार रुकावट आयेगी। जातक ननिहाल (मामा के यहां) सुखी रहेगा। जातक स्वेच्छाचारी होगा।

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा नेष्ट फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1 **बुध+चंद्रमा**—बुध के साथ चंद्रमा 'संततिहीन योग' की सृष्टि करता है। जातक को विद्या एवं संतति से चिन्ता रहेगी।

1. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा छठे स्थान में सिंहराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी सूर्य यहां स्वगृही होगा। यह बैठकर दोनों ग्रह व्यय भाव को देखेंगे षष्टेश षष्टम स्थान में स्वगृही होने से 'हर्षयोग बनेगा। फलतः जातक ऋण, रोग व शत्रु का नाश करने में सक्षम होगा बुध छठे जाने से 'सुख भंगयोग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बनता है जातक को माता या बहन का सुख कम

मिलेगा। जातक को जीवन में सभी प्रकार की सुख सुविधाएं सहज रूप से प्राप्त होगी। जातक समाज का अग्रगण्य व प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मगल 'धनहीन योग' एव 'विलम्बविवाह योग' की सृष्टि करेगा। जातक को विवाह सबधी परेशानी रहेगी।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु 'लग्नभग योग' एवं 'राजभंग योग' बनाता है जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
5. **बुध+शुक्र**—अष्टमेश शुक्र की युति से दुर्घटना होगी। राजा से दण्ड भी मिल सकता है।
6. **बुध+शनि**—शनि की युति से व्यापार में नुकसान होगा। गृहस्थ सुख भग होगा।
7. **बुध+राहु**—राजा से दण्ड मिलेगा कोर्ट-कचहरी मे मुकदमा हारेंगे
8. **बुध+केतु**—जिस पर अधिक विश्वास करेंगे, वो ही धोखा देगा।

मीनलग्न में बुध की स्थिति सप्तम स्थान में
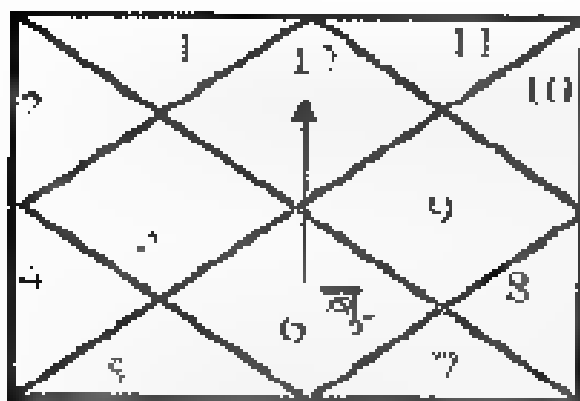
मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है अशुभ फलदायक है। बुध यहा सप्तम स्थान मे अपनी उच्च कन्याराशि में होगा। कन्या राशि के अशो मे बुध परमोच्च का होता है बुध की इस स्थिति के कारण 'कुलदीपक योग', 'भद्र योग' की सृष्टि होगी। यहा बुध चौथे भाव में अपने घर मिथुन राशि से चौथे होने के कारण जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति में चार चांद लगा देगा। जातक के एकाधिक मकान, वाहन होगे जातक राजा तुल्य एश्वर्यशाली एवं पराक्रमी होगा। जातक को माता का सुख उत्तम, भागीदारी में लाभ मिलेगा

दृष्टि—बुध यहा सातवीं नीच दृष्टि से लग्नस्थान (मित्रराशि) को देखेगा जातक को पुरुषार्थ का फल मिलेगा पाराशर ऋषि के अनुसार 'पित्रार्जितधन त्यागी' ऐसा व्यक्ति स्वय खूब कमायेगा तथा पिता के द्वारा अर्जित धन का त्याग कर देगा।

निशानी-जातक स्वय सुन्दर होगा, उसकी पत्नी अप्रतिम सौन्दर्य की मालिका होगी। जातक विद्यावान्, विद्वान् होगा पर सभा में नहीं बोल पायेगा। जो बात जिस समय कहनी हो नहीं कह पायेगा।

दशा—बुध की दशा अंतर्दशा मे जातक धनी होगा, पद प्रतिष्ठा एव ऐश्वर्य को प्राप्त करेगा

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्रमा**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को विद्या सुख में, बुद्धिबल से आगे बढ़ने के नये मार्ग प्रशस्त करेगा जातक को अपनी संतान से लाभ होगा। जातक की विशेष उन्नति कन्या संतति के बाद होगी।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा सातवें स्थान में 'कन्याराशिगत' यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति होगी बुध यहां केन्द्रगत होकर उच्च का होगा तथा दोनों ग्रह लग्न स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। बुध के कारण 'भद्र योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनेगा। फलतः जातक तीव्र बुद्धिशाली, धनी एव सौभाग्यशाली व्यक्ति होगा। अपने कुटुम्ब परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा जातक एक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली जीवन जीयेगा तथा समाज का अग्रगण्य व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मगल**–बुध के साथ मगल होने से 'कलत्रमूलधन योग' बनेगा विवाह होते ही जातक की किस्मत चमकेगी ससुराल से धन मिलेगा।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ बृहस्पति होने से 'लग्नाधिपति योग' बनेगा। जातक को हाथ में लिये गये प्रत्येक कार्य मे सफलता मिलेगी।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र नीच का होने से 'नीचभगराज योग' बनेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली एवं धनवान होगा। जातक कामी होगा। जातक की स्त्री सुन्दर होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि होने से जातक व्यापार प्रिय होगा पर गृहस्थ सुख में खटपट रहेगी
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु होने से पत्नी से मनमुटाव की स्थिति रहेगी। अथवा पत्नी की आयु कम होगी
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु होने से पति पत्नी में हल्की नोंक झोंक होती रहेगी

मीनलग्न में बुध की स्थिति अष्टम स्थान में

1 12 11 10 2 9 3 4 8 6 5 बु. 7
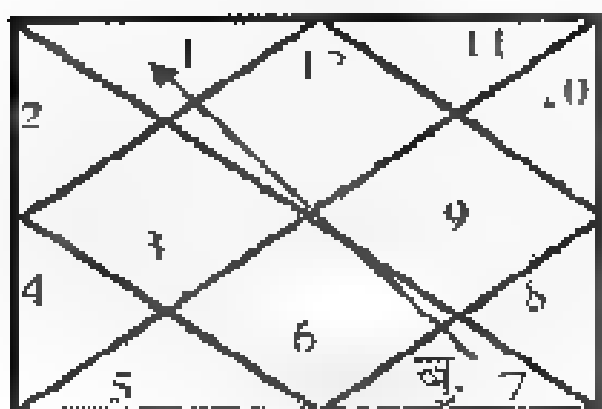
मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। बुध यहां अष्टम स्थान में तुला (मित्र) राशि मे होगा। बुध की इस स्थिति में 'विलम्बविवाह योग' एव 'सुखभग योग' बनता है।

यहां बुध चौथे भाव (मिथुन राशि) से पांचवें एवं सप्तम भाव (कन्या राशि) से दूसरे स्थान पर है। जातक का विवाह विलम्ब से होगा तथा भौतिक सुखों की प्राप्ति में कुछ-न कुछ न्यूनता बनी रहेगी। विद्या में विघ्न आयेंगे तथा जातक की माता की मृत्यु शीघ्र हो सकती है। जातक किराये के मकान में रहेगा पिता का सुख कमजोर होगा।

दृष्टि—अष्टमस्थ बुध मित्र दृष्टि से धन स्थान (मेषराशि) को देखेगा। जातक की वाणी विनम्र होगी। जातक शारीरिक परिश्रम के बनिस्पत बुद्धिबल से धन कमाऐगा।

निशानी—जातक नपुंसक होगा। यदि गुरु व मंगल बलवान न हो तो पाराशर ऋषि के अनुसार—''क्लीबसया भवेत्'' जातक डरपोक, कायर व क्लीब होगा.

दशा—बुध की दशा-अंतर्दशा अनिष्ट फल देगी

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **बुध+चंद्रमा**—बुध के साथ चंद्रमा 'संतानहीन योग' की सृष्टि करेगा। जातक की पुत्र संतति विलम्ब से होगी.
2. **बुध+सूर्य**—'भोजसंहिता' के अनुसार मीन में सूर्य षष्टेश होगा। अष्टम स्थान में तुलाराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी यहां बैठकर दोनों ग्रह धन भाव का पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। सूर्य यहां नीच का होगा पर अपनी उच्च राशि को देखेगा। षष्टेश सूर्य के अष्टमेश जाने से 'हर्ष योग' बनेगा। जातक शत्रुओं का नाश करने में सक्षम होगा एवं दीर्घजीवी होगा। जातक को जीवन में सभी सुख-सुविधाएं मिलेगी जातक जीवन में लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**—बुध के साथ मंगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यभंग योग' की सृष्टि करेगा। जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा। एक पत्नी की मृत्यु भी संभव है।
4. **बुध+गुरु**—बुध के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। रोजगार में दिक्कतें रहेगी।
5. **बुध+शुक्र**—बुध के साथ शुक्र सरलनामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी, मानी अभिमानी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होगा
6. **बुध+शनि**—बुध के साथ उच्च का शनि विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी एवं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीयेगा

7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु 'द्विभार्या योग' बनाता है। जातक की पत्नी बीमार होकर गुजर जायेगी।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु गृहस्थ सुख बाधक है। जातक का जीवन साथी लाइलाज बीमारी से ग्रसित होगा।

मीनलग्न में बुध की स्थिति नवम स्थान में
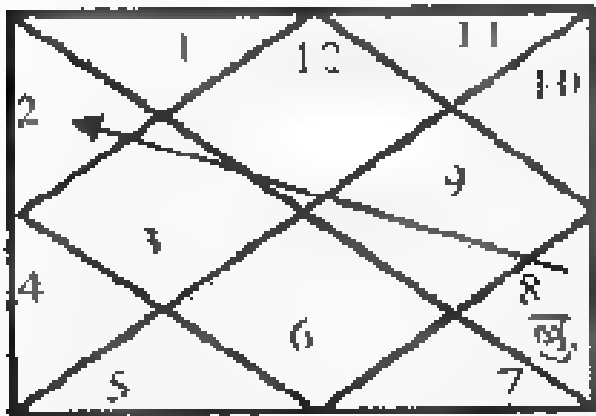
मीनलग्न मे बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। बुध यहां नवम स्थान में वृश्चिक (सम) राशि में होगा। ऐसा जातक भाग्यशाली होगा। धार्मिक होगा। बुध यहा चौथे स्थान (अपने घर) से छठे एवं सातवे भाव (कन्या राशि) से तीसरे स्थान पर होगा जातक को माता पिता का सुख उत्तम होगा। ऐसे जातक को जनसम्पर्क एवं मित्रों से लाभ होगा। पाराशर ऋषि के अनुसार–"जात:सर्वजनप्रिय" ऐसा जातक देवताओं का भक्त, आस्तिक बुद्धिवाला एवं सर्वजनप्रिय होता है विवाह के बाद जातक का भाग्योदय विशेषरूप से होगा।

दृष्टि–नवमस्थ बुध सातवी मित्र दृष्टि से पराक्रम स्थान (वृषराशि) को देखेगा। जातक महान् पराक्रमी होगा। छोटे भाई बहन व पिता से संबंध अच्छे रहेंगे। भागीदारी से लाभ है।

निशानी–ऐसे जातक को सामाजिक एवं राजनैतिक पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसे रोजी रोजगार के अवसर प्राप्त होगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्रमा**–बुध के साथ चद्रमा नीच का होकर भी शीघ्र भाग्योदय में सहायक है। जातक जलीय व्यापार मे, विदेश व्यापार एवं रत्न ज्वैलरी में कमायेगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। नवम स्थान में वृश्चिक राशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहा बैठकर दोनो ग्रह तृतीय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे ऐसा जातक तीव्र बुद्धिशाली, धनवान एव सौभाग्यशाली होगा।

जातक का भाग्योदय 26 एवं 32 वर्ष दो चरणो मे होगा। जातक पराक्रमी होगा उसे मित्रों व परिजनों का सहयोग मिलता रहेगा जातक समाज का अग्रगण्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मगल**–बुध के साथ बलवान धनेश होने से 'कलत्रमूलधन योग' होगा एव 'मातृमूलधन योग' बनेगा। जातक को माता से एव पत्नी से बराबर धन की प्राप्ति हाती रहगी।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु होने से राजनीति में सफलता मिलेगी जातक गांव या शहर का मुखिया होगा
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र होने से जातक पराक्रमी होगा उसे कुटुम्ब सुख मिलेगा। जातक की पत्नी सुन्दर होगी।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक के भाग्योदय में बाधा निरन्तर दिक्कतें उत्पन्न करेगा 32 से 36 वर्ष के भीतर जातक की किस्मत चमकेगी
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को एक बार ऊपर चढ़ाकर नीचे गिरायेगा
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु कीर्तिदायक है। जातक महत्वाकाक्षी होगा उसकी महत्वकाक्षाए पूर्ण भी होगी।

मीनलग्न में बुध की स्थिति दशम स्थान में
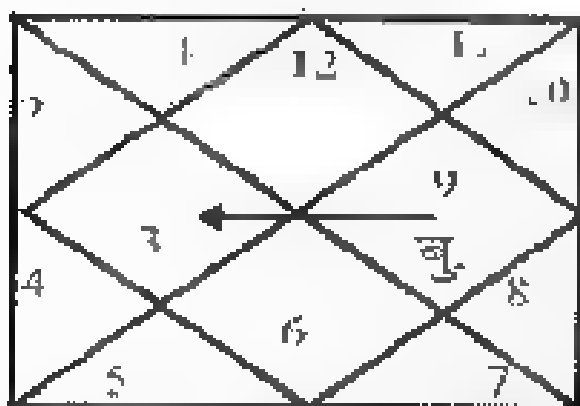
मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है अशुभ फलदायक है। बुध यहां दशम स्थान में धनु (सम) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति से 'कुलदीपक योग' की सृष्टि होगी। बुध यहां चौथे भाव से सातवे तथा सातवें भाव से चौथे स्थान पर है। यह बुध विद्यासुख अतिश्रेष्ठ देगा। जातक को उच्च स्तरीय शैक्षणिक डिग्री (Higher Educational Degree) मिलेगी। जातक को माता, भवन एव वाहन का सुख श्रेष्ठ मिलेगा पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक राजदरबार या राजनीति में महत्त्वपूर्ण पद प्राप्त करता है– 'राजमान्यो नरो भवेत्'' जातक अपने कुटुम्ब का नाम दीपक के समान रोशन करेगा।

दृष्टि–दशमस्थ बुध सातवी दृष्टि से चतुर्थभाव अपने घर (मिथुराशि) को देखेगा जातक को माता की सम्पत्ति मिलेगी उत्तम वाहन से लाभ होगा

निशानी–जातक, चार्टर एकाउन्टेट, वकील या कम्प्यूटर के काम से नाम कमायेगा। इजीनियर दवाई के कार्य मे ऐजेंसी व बुद्धिबल से जातक धन कमायेगा।

दशा–बुध की दशा-अंतर्दशा में जातक को गृहस्थ सुख, भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी। जातक को रोजी-रोजगार मिलेगा।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्रमा**–बुध के साथ चंद्रमा जातक को व्यापार में लाभ देगा। खास कर Export-Import विदेशी व्यापार में लाभ देगा। राजनीति में लाभ देगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। दशम स्थान में धनुराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश- सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। यहां पर केन्द्रवर्ती होकर दोनों ग्रह चतुर्थ भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे बुध के कारण 'कुलदीपक योग' बना। जातक अपने कुटुम्ब-परिवार का नाम दीपक के समान रोशन करेगा, जातक के पास एक से अधिक मकान एवं एक से अधिक वाहन होंगे। जातक को जीवन में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएं एवं ऐश्वर्य संसाधनों की प्राप्ति होगी। जातक समाज का अग्रगण्य एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मंगल**–बुध के साथ 'दिग्बली' मंगल ससुराल से धन लाभ दिलाता रहेगा। अथवा जातक की पत्नी (Earning-Lady) कमाऊ महिला होगी एवं वेतन पति को देगी।
4. **बुध+गुरु**–यहां बुध के साथ गुरु की युति 'हंस योग' बनायेगी। सप्तमेश, दशमेश की युति से जातक निश्चय ही राजा किंवा राजपुरुष होगा। उसका बड़ा नाम होगा।
5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को एक से अधिक वाहन एवं मकान का सुख देगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ शनि जातक को व्यापार से लाभ देगा। जातक महत्वाकांक्षी व्यापारी होगा एवं उसकी इच्छाएं पूर्ण होंगी।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु व्यापार में रुकावट का संकेत देता है। राज (सरकार) से भय उत्पन्न करेगा कोर्ट कचहरी में मुकदमा हारेगा
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ, केतु व्यापार में कीर्ति देगा। जातक का अपने व्यापार में बड़ा नाम होगा।

मीनलग्न में बुध की स्थिति एकादश स्थान में

मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है। बुध यहां एकादश स्थान में मकर (सम) राशि
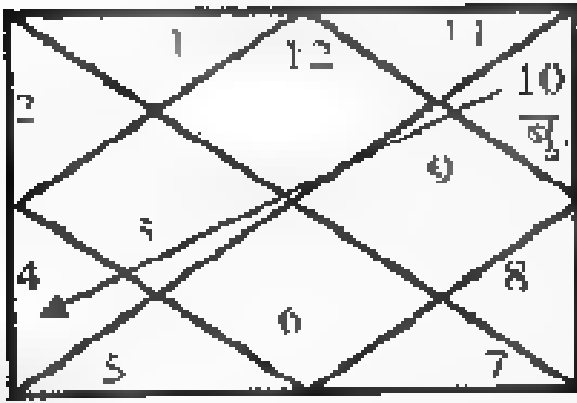
मे होगा। बुध यहा चतुर्थ भाव और अपनी राशि में आठवे एव सप्तम भाव (कन्याराशि) से पाचवे, स्थान पर है यह बुध चौथे भाव का अशुभफल एवं सातवें भाव का शुभ फल देगा। जातक की माता के साथ बनगी नहीं। मा का सुख कमजोर होगा। जातक मकान एवं वाहन के सुख में भी न्यूनता महसूस करेगा। प्रारम्भिक विद्याध्ययन में भी रुकावटे आयेगी परन्तु वैवाहित जीवन सुखमय होगा, विवाह के तत्काल बाद जातक उन्नतिमार्ग की ओर आगे बढ़ेगा।

दृष्टि–एकादश भावगत बुध यहा पंचम भाव (कर्क राशि) को देखेगा। जातक को भागीदारी के धधे में लाभ होगा। जातक उदार हृदय का होगा। परोपकारी होगा समाजसेवा मे विश्वास रखेगा Educational Degree अधूरी रह जायेगी।

निशानी–ऐसा जातक गुप्त रोगों से आक्रान्त रहेगा। पाराशर ऋषि कहते हैं 'सुखेशे लाभगे जातो, गुप्तरोग भयान्वितः'।

दशा–बुध की दशा-अतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध -

1. **बुध+चंद्रमा** यहा बुध+चद्रमा की युति से कन्या सतति अधिक होगी। जातक को Educational Degree व उच्च शैक्षणिक उपाधि मिलेगी।
2. **बुध+सूर्य**–'भाजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न मे सूर्य षष्टेश होगा। एकादश स्थान मे मकरराशिगत यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनो ग्रह पचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलतः जातक बुद्धिशाली, धनवान एवं भाग्यवान होगा। जातक शिक्षित होगा। उसकी संतति भी शिक्षित होगी। जातक उद्योगपति होगा। जातक जीवन मे सभी प्रकार की सुख-सुविधाओं से परिपूर्ण व्यक्तित्व का धनी होगा। जातक समाज का अग्रगण्य लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
3. **बुध+मगल**–बुध के साथ बलवान (उच्च) का मगल 'कलत्रमूलधन योग' एव 'मातृमूलधन योग' बनाता है। जातक को माता से एवं पत्नी से धनी की प्राप्ति बराबर होती रहगी।
4. **बुध+गुरु**–बुध के साथ गुरु नीच का जातक को अध्ययन अध्यापन लेखन क्षेत्र में लाभ देगा।

5. **बुध+शुक्र**–बुध के साथ शुक्र जातक को व्यापार में हानि देगा। यदि जातक उद्योगपति है तो एक बार उद्योग बन्द करायेगा।
6. **बुध+शनि**–बुध के साथ स्वगृही शनि, जातक को बड़ा उद्योगपति अथवा व्यापारी बनायेगा।
7. **बुध+राहु**–बुध के साथ राहु जातक को बड़े भाई या बड़ी बहन के सुख से वंचित करेगा।
8. **बुध+केतु**–बुध के साथ केतु व्यापार व्यवसाय में दिक्कतें पैदा करेगा।

मीनलग्न में बुध की स्थिति द्वादश स्थान में
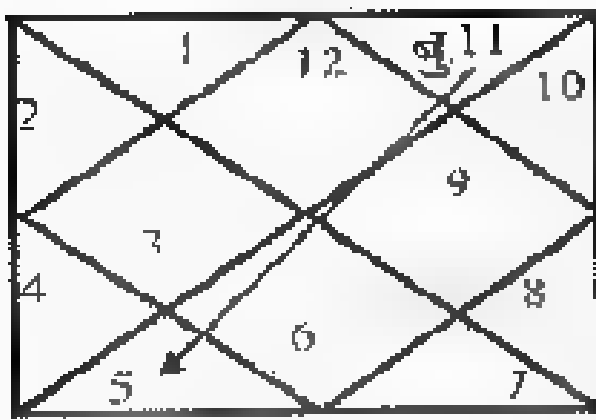
मीनलग्न में बुध सप्तमेश व सुखेश है। बुध एक प्रकार से सहायक मारकेश होने से पापी है, अशुभ फलदायक है बुध यहां द्वादश स्थान में कुम्भ (सम) राशि में होगा। बुध की इस स्थिति में 'विलम्बविवाह योग' एवं सुखभंग योग बनता है। यह बुध चौथे (मिथुन राशि) से पांचवां एवं सातवें भाव (कन्या राशि) से षडाष्टक योग बना रहा है। माता का सुख पूर्ण नहीं माता की मृत्यु छोटी आयु में हो सकती है। मकान का सुख पूर्ण नहीं। विवाह सुख में कमी या विवाह होकर छूट जाय। जातक विदेश जाकर ज्यादा सुखी होता है।

दृष्टि–द्वादशस्थ बुध सातवी मित्र दृष्टि से छठे स्थान (सिंह राशि) को देखेगा। जातक को वृद्धावस्था में संसार से विरक्ति हो जायेगी। गुप्त रोग, चमड़ी की बीमारी, डाईबीटिज वगैरा संभव है।

निशानी–जातक का स्वजाति एवं समाज में विरोध होगा। जातक आलसी होगा। पुरुषार्थ में विश्वास कम रखेगा। ख्याली पुलाव पकायेगा।

दशा–बुध की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

बुध का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **बुध+चंद्रमा**–बुध के साथ चंद्रमा विद्या में रुकावट एवं बाईं आंख में पीड़ा देगा। यह 'संततिहीन योग' भी बनायेगा।
2. **बुध+सूर्य**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न में सूर्य षष्टेश होगा। द्वादश स्थान में 'कुम्भराशिगत' यह युति वस्तुतः षष्टेश सूर्य की चतुर्थेश+सप्तमेश बुध के साथ युति कहलायेगी। सूर्य यहां शत्रुक्षेत्री होगा। जहां बैठकर दोनों ग्रह छठे

भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे षष्टेश सूर्य का व्ययभाव म जाने से 'हर्ष योग' बना। ऐसा जातक ऋण, रोग व शत्रु समूह का नाश करने में सक्षम होता है। जातक तीव्र बुद्धिशाली, तीर्थाटन करने वाला परोपकारी एव खर्चीले स्वभाव का व्यक्ति होगा। उसे जीवन के सभी प्रकार की सुख- सुविधाओं एव भौतिक ससाधनों की प्राप्ति सहज रूप होगी। बुध के बारहवे स्थान पर जाने से 'सुख भग योग' एव 'विलम्बविवाह योग' बना। फिर भी ऐसा जातक समाज का अग्रगण्य, लब्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।

3. **बुध+मंगल**--बुध के साथ मंगल धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' बनाता है। जातक को जीवन मे धर्नाजन हेतु बहुत सघर्ष करना पड़ेगा
4. **बुध+गुरु**--बुध के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनायेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
5. **बुध+शुक्र**--बुध के साथ शुक्र सरल नामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा जातक धनी मानी, अभिमानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **बुध+शनि**--बुध के साथ शनि मूलत्रिकोण राशि मे स्वगृही होकर 'लाभभग योग' बनायेगा। जातक को अत्यधिक खर्च के कारण कर्ज लेना पडेगा।
7. **बुध+राहु**--बुध के साथ राहु जातक के भाग्योदय में बाधक है। यात्रा में चोरी होगी या धन हानि संभव है,
8. **बुध+केतु**--बुध के साथ केतु व्यर्थ की यात्रा करायेगा जातक की मृत्यु घर से बाहर होगी।

❑❑❑

मीनलग्न में गुरु की स्थिति

कन्यालग्न में गुरु की स्थिति प्रथम स्थान में
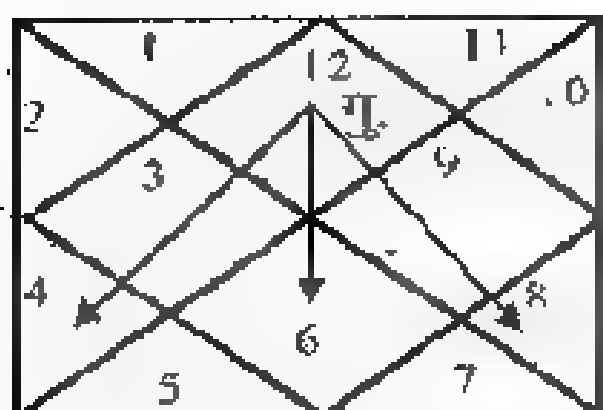
गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है। गुरु जीवनदाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एव राजयोगकारक है। अतः हर हालत मे यह शुभफल ही देगा। गुरु यहा मीन राशि में स्वगही होगा। जिसके कारण 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' 'हंस योग' एवं पद्मसिंहासन योग' बनेगा। ऐसा जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य-वैभव को भोगेगा। जातक धर्म-शास्त्रो का ज्ञाता होगा। उत्तम विद्या सुख Higher Educational Degree प्राप्त करेगा। जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर का स्वामी होगा। अति पराक्रमी व यशस्वी होगा। अपनी पत्नी के अलावा अन्य स्त्री से भी शारीरिक संबंध रखेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ गुरु की दृष्टि पंचम भाव (कर्क राशि), सप्तम भाव (कन्या राशि) एव नवम भाव (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक को संतान सुख उत्तम होगा। पत्नी सुन्दर, पतिव्रता होगी जातक पूर्ण भाग्यशाली होगा।

निशानी–ऐसा जातक अपने पिता से अधिक धन, यश, नाम, पद-प्रतिष्ठा अर्जित करता है। जातक स्वय पुत्रवान होता है।

दशा गुरु की दशा अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा। उसका चहुमुखी विकास होगा। जातक का शरीर स्वस्थ रहेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार गुरु+चंद्रमा की यह युति वस्तुत पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। गुरु यहा स्वगृही होकर

बलवान होगा। यहा से ये दोनों ग्रह पचम भाव सप्तम भाव एवं भाग्य स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। 'गजकेसरी योग' की यह सर्वोत्तम स्थित है। यहा 'हंस योग', 'कुलदीपक योग' व 'यामिनीनाथ योग' की सृष्टि हो रही है। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा जातक का दूसरा भाग्योदय प्रथम सतति के बाद होगा। 'पद्मसिंहासन योग' के कारण जातक की गिनती समाज के चुनिन्दा प्रतिष्ठित व भाग्यशाली व्यक्तियों में होगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा।

2. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य परिश्रम के पूर्ण लाभ से रुकावट का कार्य करेगा। जातक तेजस्वी होगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मगल जातक को महाधनी एव गांव शहर का प्रमुख बनायेगा जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध 'नीचभंगराज योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र 'किम्बहुनानामक राजयोग' बनायेगा। जातक बड़ा राज्याधिकार I S., I A.S. जिलाधीश, मंत्री का सचिव या स्वय मंत्री होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के शनि होनें से राजसुख मे कुछ न्यूनता रहेगी। जातक व्यापार प्रिय होगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां दोनों ग्रह मीन राशि मे होगे. लग्नस्थ गुरु स्वगृही होने के कारण 'हंस योग' बनायेगा. पर राहु यहां नीच का होकर गुरु के साथ युति करने से चाण्डालयोग बना ऐसा जातक अपने धन व शक्ति का दुरुपयोग निन्दनीय कार्यों के लिए करेगा। जातक दूसरों को मूर्ख अपने महाबुद्धिमान् समझेगा
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु जातक को महान् कीर्ति देगा।

मीनलग्न में गुरु की स्थिति द्वितीय स्थान में
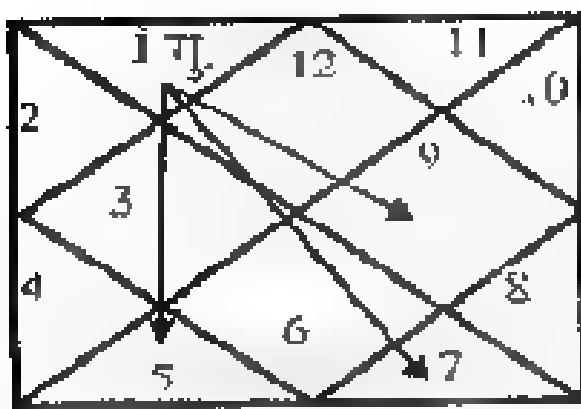
गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है। गुरु जीवन दाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एवं राजयोगकारक है। अत: हर हालत में यह शुभफल ही देगा। गुरु यहा द्वितीय स्थान में मेष (मित्र) राशि मे होगा। ऐसा जातक बड़े कुटुम्ब वाला होगा तथा कुटुम्ब के प्रति अपनी जिम्मेदारी महसूस करता रहेगा। जातक की वाणी गम्भीर एव हितकारी होगी। जातक शास्त्रों का ज्ञाता एव विद्वान होगा। ऐसे जातक युद्धप्रिय नहीं होते अत: शत्रुओं को वाणी एवं बुद्धिमत्ता पूर्ण कार्यों से वशीभूत करके

नष्ट कर देते हैं। ऐसे जातक शत्रु को मित्र बनाने एवं समझौतावादी सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं।

दृष्टि -द्वितीय भाव स्थित गुरु की दृष्टि छठे स्थान (सिंह राशि), आठवें स्थान (तुलाराशि) एवं दसवें स्थान (धनुराशि) पर होगी। जातक के पेट के रोग होंगे जातक भोजन का शौकिन होगा। इस कारण डाइबीटिज, मंदबुद्धि, चर्बी के रोग होंगे जातक को पिता एवं राजकृपा के अनुकूल परिणाम मिलेंगे।

निशानी–जातक धंधे में अच्छा कमायेगा पर धीमी गति से कमायेगा, जिससे संतुष्टि नहीं होगी जातक का अपनी पत्नी के अलावा अन्य स्त्रियों से शारीरिक संबंध होगा।

दशा–गुरु की दशा अंतर्दशा अच्छाफल देगी। गुरु में शुक्र का अंतर खराब फल देगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मीनलग्न के द्वितीय स्थान में गुरु+चंद्रमा की यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति होगी जहां बैठकर ये दोनों शुभग्रह षष्टम् स्थान, अष्टम स्थान एवं दशम भाव पर होगी। फलतः जातक को ऋण रोग व शत्रु का भय नहीं रहेगा। जातक की आकस्मिक आपदाओं व दुर्घटनाओं से बचाव होता रहेगा। जातक को राज्य सरकार से मान सम्मान मिलेगा, अधिकारियों से सहयोग व लाभ मिलता रहेगा। जातक समाज का प्रतिष्ठित व्यक्ति होगा।
2. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य उच्च का होने से जातक महाधनी होगा जातक ऋण-रोग व शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल की युति होने से जातक का राजकीय क्षेत्र में प्रभाव रहेगा। राजनीति से धन की प्राप्ति होगी।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध होने से जातक को माता एवं पत्नी का पूर्ण सुख मिलेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र होने से जातक पराक्रमी होगा एवं परिजनों में दबदबा रहेगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि धन हानि करायेगा। जातक व्यापार प्रिय होगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां दोनों ग्रह मेषराशि में होंगे, द्वितीयस्थ गुरु मित्र राशि में, तो

राहु विष (शत्रु) राशि में होने से यहा 'चाण्डाल योग' बना। जातक जितना भी धन कमायेगा। उसकी बरकत नहीं होगी। परिश्रम का उचित फल नहीं मिलेगा।

8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु धन संग्रह में बाधक है।

मीनलग्न में गुरु की स्थिति तृतीय स्थान में
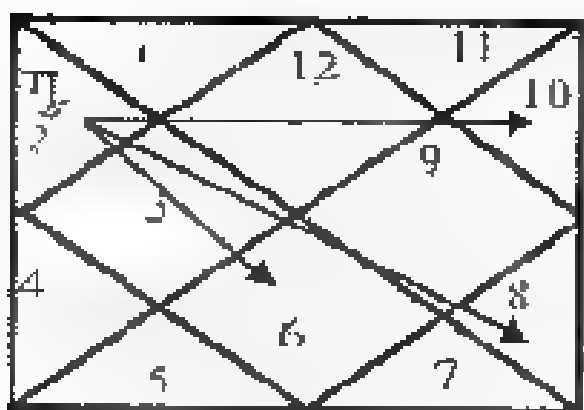
गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है। गुरु जीवन दाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एव राजयोगकारक है। अतः हर हालत में यह शुभफल ही देगा। गुरु यहां तृतीय स्थान मे वृष (शत्रु) राशि मे होगा। गुरु दशम भाव मे छठे जाने पर कुछ अशुभफल भी देगा। पाराशर ऋषि के अनुसार 'लग्नेश सहजे जात: सिंह तुल्य पराक्रमी' लग्नेश यदि तृतीय स्थान मे हो तो जातक सिंह के समान पराक्रमी, सब प्रकार की सम्पत्तियां से युक्त, बुद्धिमान व सुखी होता है संतान भवन से ग्यारहवे स्थान पर गुरु की स्थिति होने से संतान सुख उत्तम। संतान जातक की आज्ञा में रहेंगे एवं संतान से लाभ है।

दृष्टि–तृतीयस्थ गुरु की दृष्टि सप्तम भाव (कन्या राशि), भाग्य भाव (वृश्चिक राशि) एवं एकादश स्थान (मकर राशि) पर होगी जातक का वैवाहिक जीवन सुखी होता है। जातक भाग्यशाली होगा। पिता से संबध अच्छे होंगे पर पिता की सम्पति मिलेगी नहीं। मित्रो, कुटुम्बियो व बड़े भाई से संबंध मधुर रहेंगे।

निशानी–ऐसा जातक एक समय मे दो स्त्रियो के साथ रमण करता है।

दशा–गुरु की दशा-अतर्दशा मे लेखन शक्ति बढ़ेगी। जनसम्पर्क बढ़ेगा। जातक को राजनैतिक लाभ की प्राप्ति होगी। गृहस्थ सुख बढ़ेगा एवं जातक का भाग्योदय होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्रमा**– भोजसंहिता' के अनुसार वृषराशि में यह युति वस्तुत: पचमेश चद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। यहा चद्रमा उच्च का होकर बलवान होगा तथा दोनों ग्रह सप्तम स्थान, भाग्य स्थान एवं लाभ स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलत: जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा। जातक व्यापार व्यवसाय में बड़ा सम्मान, नाम व धन कमायेगा। जातक का नाम समाज में भाग्यशाली, प्रतिष्ठित व सफल लोगों में होगा।

2. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य परिजनो से वैमनस्य करायेगा।

3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से जातक स्वपराक्रम से धनोपार्जन करेगा। सरकारी क्षेत्र में जातक का प्रभाव रहेगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध होने से जातक का ससुराल पराक्रमी होगा। पत्नी घर की प्रमुख महिला होगी।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र जातक को महिला साथी से लाभ देगा.
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि होने से जातक व्यापार द्वारा धनार्जन करेगा।
7. **गुरु+राहु**–यहा दोनों ग्रह वृष राशि में होगे। तृतीयस्थ गुरु शत्रु राशि में, तो राहु यहा अपनी उच्च राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। राहु यहां राजयोग देगा। जातक महान पराक्रमी होगा परन्तु भाई व कुटम्बी जनों में विद्वेष होगा
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु जातक को कीर्ति देगा, परन्तु कीर्ति समाज के बाहरी लोगा में ज्यादा होगी।

मीनलग्न में गुरु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
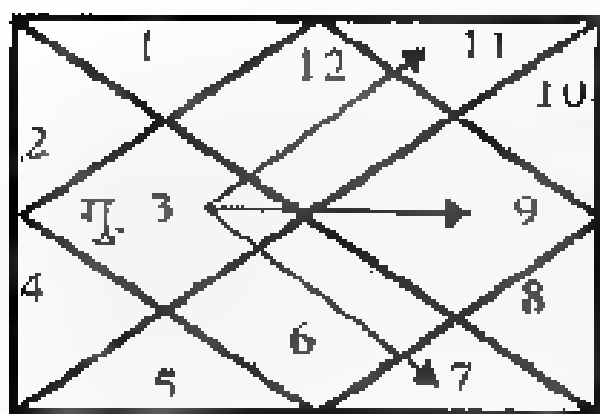
गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है। गुरु जीवन दाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एवं राजयोगकारक है। अत: हर हालत में यह शुभफल ही देगा गुरु यहा चतुर्थ स्थान मे मिथुन में होगा गुरु की इस स्थिति से 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग एव 'पद्मसिंहासन योग' बनेगा। ऐसा जातक मध्यम परिवार में जन्म लेकर भी बहुत ऊंचा उठता है। माता का सुख उत्तम, विद्या का सुख श्रेष्ठ। मकान एवं वाहन सुख श्रेष्ठ। ऐसा जातक धंधे-व्यापार मे खूब नाम व दाम कमायेगा जातक का धन शुभ कार्य में खर्च होगा। जातक पैतृक सम्पत्ति का वारिस होगा।

दृष्टि–चतुर्थ भावगत गुरु की दृष्टि अष्टम स्थान (तुला राशि), दशम भाव अपने ही घर धनुराशि एव द्वादश भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। ऐसा जातक अपने शत्रुओ का नाश करने में समर्थ होता है राजदरबार में अपना प्रभाव रखता है। धार्मिक कार्य व परोपकार में सद्व्यय करता है।

निशानी–ऐसा जातक धर्मशास्त्र, वेदविद्या का ज्ञाता, मंत्र-तंत्र एव ज्योतिषशास्त्र का प्रखर ज्ञाता होता है। जातक के पुत्र सतान कम होगे।

दशा–गुरु की दशा अंतर्दशा में जातक का सर्वांगीण विकास होगा। परोपकार मे रुपया खर्च होगा जातक को समाज मे या राजनीति में पद मिलेगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मिथुनराशि में यह युति, वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री होगा। यहां बैठकर दोनों ग्रह अष्टम स्थान, दशम स्थान एवं व्यय भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे यहां क्रमशः 'पद्मसिंहासन योग', 'कुलदीपक योग' एवं 'यामिनीनाथ योग' बना। फलतः जातक दीर्घायु प्राप्त करेगा धन खूब कमायेगा। यात्राएं बहुत करेगा। जातक का धन परोपकार के कार्यों में, शुभकार्यों में खर्च होगा जातक का राजनैतिक वर्चस्व भी उत्तम रहेगा
2. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ यहां सूर्य हो तो जातक का व्यक्तित्व निर्मल होगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ मंगल होने से जातक स्वपराक्रम से धनार्जन करेगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध भद्र योग' बनायेगा जातक निश्चय ही राजा के समान पराक्रमी होकर समाज का नाम रोशन करेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र जातक को वाहन सुख दिलायेगा। जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि जातक को व्यापार प्रिय बनायेगा। वाहन पर धन खर्च होगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे। गुरु यहां शत्रु राशि में होगा जबकि राहु केन्द्रस्थ होकर अपनी मूलत्रिकोण राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक अत्यधिक महत्वाकांक्षी होगा। जातक भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु अनर्गल व्यय करेगा मकान व वाहन के रखरखाव में रुपया खर्च होगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु जातक को अनावश्यक चिन्ता से ग्रसित करेगा।

मीनलग्न में गुरु की स्थिति पंचम स्थान में
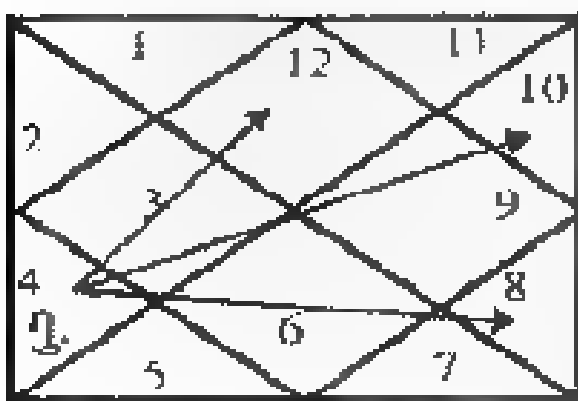
गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है। गुरु जीवनदाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एवं राजयोगकारक है। अतः हर हालत में यह शुभफल ही देगा। गुरु यहां पंचम स्थान में उच्च का होगा। कर्कराशि के अंशो में गुरु परमोच्च का होगा ऐसे जातक के पूर्वजन्म का प्रताप तेज होगा। विद्याबल तेज पर संतान सुख

हेतु यह गुरु ठीक नहीं। कन्या संतति अधिक हो। पुत्र संतान विलम्ब से हो। जातक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला, लम्बी आयु का स्वामी होता है। ऐसे जातक पर राजा (राज्यसरकार) की कृपा बनी रहती है। जातक के मित्र अच्छे होंगे। धंधा भी प्रभावशाली होगा।

दृष्टि—पंचमस्थ गुरु की दृष्टि भाग्य स्थान (वृश्चिक राशि) लाभ स्थान (मकर राशि) एवं लग्न स्थान अपने ही घर (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक के खुद का भाग्य अच्छा, पिता का भाग्य भी उससे अच्छा. जातक धार्मिक यात्राएं करेगा व शुभ कार्य में रुपया खर्च करेगा। जातक को परिश्रमपूर्वक किये गये पुरुषार्थ का पूरा फल मिलेगा।

निशानी—जातक का ज्येष्ठ संतान का नाश होता है। ऐसा पाराशर ऋषि का मत है। पंचम गुरु अल्प संतति देता है।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा में जातक की किस्मत चमकेगी। स्वास्थ्य लाभ होगा। राजा से सम्मान मिलेगा.

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार कर्क राशि में यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां स्वगृही एवं गुरु उच्च का अत्यधिक शक्तिशाली स्थिति में है। यहां बैठकर दोनों शुभग्रह भाग्यस्थान, लाभस्थान एवं लग्न स्थान को देखेंगे फलतः जातक बहुमुखी विकास 24 वर्ष की आयु में होना शुरू हो जायेगा। जातक को व्यापार-व्यवसाय में उच्च स्थान की प्राप्ति होगी। जातक भाग्यशाली होगा। शिक्षित होगा तथा उसकी संतति भी शिक्षित होगी।
2. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य विद्या में बाधक है। जातक प्रारम्भिक बाधा के बाद उच्च विद्या प्राप्त करने में सफल होगा।
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ नीच का मंगल होने से 'नीचभंगराज योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध जातक को तीव्र बुद्धि सम्पन्न दैवज्ञ बनाता है। जातक तंत्र मंत्र ज्योतिष का जानकार होता है।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र होने से जातक कलाप्रेमी, अभिनय संगीत एवं उच्च साहित्यिक गतिविधियों में रुचि रखता है।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि जातक को व्यावहारिक क्षेत्र में Practical Life में सफलता देगा।

हो तथा बड़े भाई के साथ अच्छी निभेगी। जातक को पुरुषार्थ का लाभ मिलेगा। जातक पराक्रमी होगा। मित्र बहुत होंगे।

निशानी—जातक द्वारा संकलित धन का अपव्यय नहीं होगा।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। चंद्रमा यहां शत्रुक्षेत्री है। दोनों शुभग्रह यहां बैठकर लाभ स्थान, लग्न स्थान एवं पराक्रम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। गुरु यहां 'कुलदीपक योग', 'पद्मसिंहासन योग' बना रहा है। चंद्रमा यहां नीचराशि गत होता हुआ भी 'यामिनीनाथ योग' बनायेगा। फलतः जातक की पत्नी सुन्दर व संस्कारित होगी। जातक के व्यक्तित्व का चहुमुखी विकास होगा। उसे व्यापार व्यवसाय में लाभ होगा। जातक बहुत पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
2. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य होने से जातक को पेट संबंधी बीमारी रहेगी। जातक एक सफल प्रशासक होगा। अनुशासन प्रिय व्यक्ति होगा।
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल होने से जातक भाग्यशाली एवं धनी व्यक्ति होगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं बुद्धिमान व्यक्ति होगा।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ नीच का शुक्र जातक को सुन्दर पत्नी का पति बनायेगा पर जीवनसाथी के साथ विचारों में विषमता रहेगी।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि गृहस्थ सुख में विषमता उत्पन्न करेगा।
7. **गुरु+राहु**—यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे। गुरु यहां शत्रु राशि में, तो राहु अपनी मित्र राशि में स्वगृही होने से 'चाण्डाल योग' बना। पत्नी व ससुराल से वैमनस्य रहेगा। परिश्रम सार्थक होगा पर रोजी रोजगार के साधन धीमी गति के रहेंगे।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु गृहस्थ सुख में बाधक है।

मीनलग्न में गुरु की स्थिति अष्टम स्थान में

गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है। गुरु जीवनदाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एवं राजयोगकारक है। अतः हर हालत में यह शुभफल ही देगा। गुरु यहां अष्टम स्थान
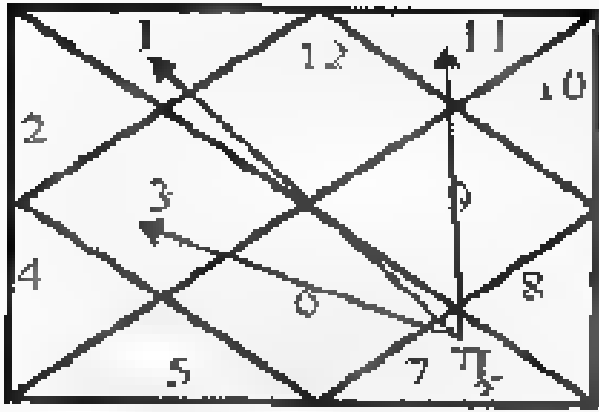
में तुला राशि (शत्रु) मे होगा। गुरु की इस स्थिति से 'लग्नभग योग' एव 'राजभग योग' बनेगा। ऐसे जातक की तन्दुरस्ती कमजोर और स्वास्थ्य में सदैव नरमा गरमी की शिकायत बनी रहेगी पुरुषार्थ का लाभ नहीं मिलेगा नौकरी धंधे व व्यापार में भी जातक को यथेष्ट लाभ की प्राप्ति नहीं होगी। राजनैतिक उन्नति हेतु यह गुरु अच्छा नही माना गया है जातक की विद्या अधूरी छूट जाये और वैवाहिक जीवन मे भी संताप रहेगा।

दृष्टि—अष्टमभावगत गुरु की दृष्टि व्यय भाव (कुभ राशि), धन भाव (मेष राशि) एवं चतुर्थ भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा, धन बीमारी में खर्च होगा। भौतिक सुख-सुविधाओ की प्राप्ति दिक्कतों से होगी।

निशानी—ऐसा जातक परस्त्रीगामी होता है तथा अवसर पड़ने पर चोरी, व्यसन एव कैसा भी कुत्सित काम करने से नहीं चूकता।

दशा—गुरु की दशा अंतर्दशा शुभ फल नही देगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चद्रमा**—'भोजसहिता' के अनुसार यह युति वस्तुत पंचमेश चद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति है। गुरु एव चद्रमा के अष्टम स्थान में जाने से क्रमश: 'लग्नभग योग', 'विद्याभग योग', 'सतानहीन योग' एवं 'राज्यभंग योग' की सृष्टि हो रहा है। अष्टमस्थान मे बैठकर गुरु व्यय भाव, धन भाव एव सुख भाव को देखेंगे फलत: जातक धनवान होगा परन्तु धन की बरकत नहीं होगी। रुपया परोपकार के कार्य में यात्राओ में खर्च होता चला जायेगा। विद्या मे रुकावट आयेगी संतान सबधी चिंता रहेगी। राज्य सरकार कोर्ट कचहरी से परेशानी आ सकती है। सावधानी अनिवार्य है। फिर भी इस शुभयोग के कारण जीवन कांटो भर सेज नहीं रहेगी। संघर्ष के बाद सभी ओर से सफलता निश्चित है।
2. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य हर्षनामक 'विपरीतराज योग' बनायगा। जातक धनी, मानी अभिमानी एवं साधन सम्पन्न व्यक्ति होगा
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मंगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' बनायेगा। ऐसा जातक जीविकोपार्जन के लिए परेशान रहेगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध 'सुखहीन योग' एव 'विलम्बविवाह योग' बनाता है। ऐसा जातक पत्नी के वियोग से कष्ट पाता है,

5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र सरल नामक 'विपरीतराज योग' बनाता है। ऐसा जातक धनी, मानी-अभिमानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि अष्टम भाव में होने से विमल नाम 'विपरीतराज योग' बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी -अभिमानी एव ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **गुरु+राहु**–यहा दोनों ग्रह तुला राशि में होंगे। गुरु यहां शत्रु राशि में, तो राहु अपनी मित्र राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। गुरु के कारण यहां 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभग योग' बना जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। राजदण्ड सभव है। बदनामी पीछा नहीं छोड़ेगी।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु राजा के भय उत्पन्न कराता है।

मीनलग्न में गुरु की स्थिति नवम स्थान में

1
12
11
10
2
3
9
4
6
8
गु
5
7
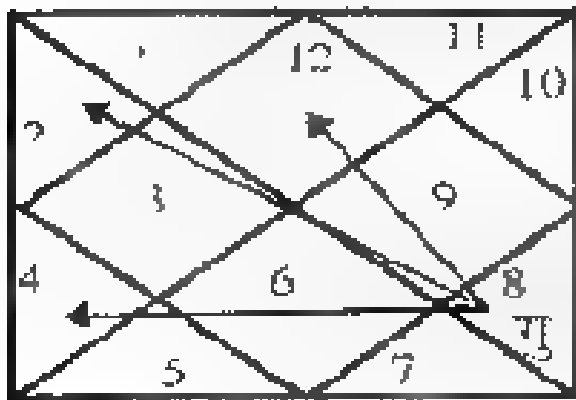
गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है। गुरु जीवनदाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एवं राजयोगकारक है। अतः हर हालत में यह शुभफल ही देगा। गुरु यहा नवम स्थान में वृश्चिक (राशि) मित्रक्षेत्री होगा। इसके कारण 'पद्मसिंहासन योग' बना। ऐसा जातक निम्न परिवार में जन्म लेकर भी कीचड़ में कमल की तरह खिलता है। जातक भाग्यशूर होता है। उसे प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलती है वह उच्च विद्या अर्जित करता है। जातक महान पराक्रमी होता है। गृहस्थ सुख अत्यन्त श्रेष्ठ, ऐसा जातक जनप्रिय व्यक्तियों मे अग्रगण्य होगा।

दृष्टि–नवमस्थ गुरु की दृष्टि लग्नस्थान अपने ही घर मीन राशि पर पराक्रम स्थान वृष राशि एव पचम स्थान (कर्क राशि) पर होगी, जातक हृष्ट पुष्ट शरीर का स्वामी होगा पुरुषार्थी होगा। पराक्रमी होगा तथा कुटुम्ब का रक्षक होगा। जातक पुत्रवान् होगा। पुत्र जन्म के बाद जातक का भाग्योदय पराकाष्ठा पर होगा।

निशानी–जातक स्वयं धार्मिक होगा, पत्नी व पुत्र भी धार्मिक होंगे।

दशा–गुरु की दशा अतर्दशा मे भाग्योदय होगा। अति उत्तम फलों की प्राप्ति होगी

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्रमा** 'भोजसंहिता' के अनुसार यह युति वस्तुतः पचमेश चद्रमा की लग्नेश+राज्येश गुरु के साथ युति है। चद्रमा यहां नीच का होगा। गुरु के

कारण 'पदम्सिंहासन योग' बनेगा। यहां बैठकर ये दोनो शुभग्रह लग्न स्थान, पराक्रम स्थान एवं पंचम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। फलत: जातक शिक्षित होगा तथा उसकी संतानें भी उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगी। जातक अपनी संतान के कारण समाज में विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जातक का जीवन में चहुमुखी विकास होगा। राजनीति में दबदबा रहेगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।

2. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य जातक को तेजस्वी व्यक्तित्व का धनी बनायेगा। पर जातक भाग्योदय में कुछ न्यूनता महसूस करता रहेगा।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ स्वगृही मंगल राजसरकार से उच्च पद, प्रतिष्ठा दिलायेगा।
4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिबल से खूब धन कमायेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र होने से जातक पराक्रमी होगा। जनसम्पर्क से लाभ होगा। राजनीति में सफलता मिलेगी
6. **गुरु+शनि** गुरु के साथ शनि व्यापार में व्यवधान उत्पन्न करेगा
7. **गुरु+राहु**–यहां दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। गुरु यहां मित्र राशि में है, तो राहु यहां नीच राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक को भाग्योदय हेतु काफी परेशानी-दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। परिश्रम सार्थक होंगे परन्तु सतत संघर्ष से मुक्त नहीं है
8. **गुरु+केतु**– जातक के धन और मान की हानि होगी।

मीनलग्न में गुरु की स्थिति दशम स्थान में
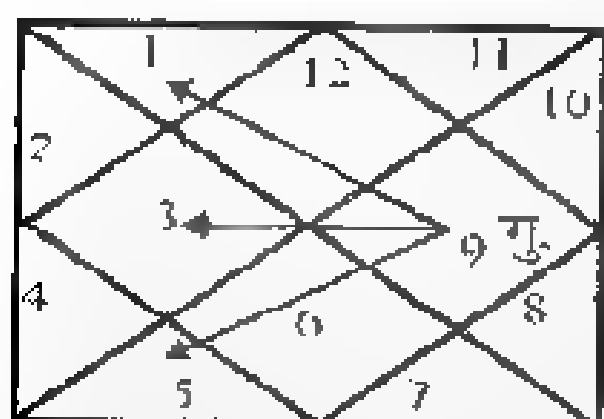
गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है। गुरु जीवनदाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एवं राजयोगकारक है। अत: हर हालत में यह शुभफल ही देगा। गुरु यहां दशम स्थान में स्वगृही होगा गुरु के कारण यहां 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग', 'पदमसिंहासन योग' एवं हंस योग बनेगा। ऐसा जातक अच्छे कुल में जन्म लेता है तथा चक्रवर्ती राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होता है। जातक बड़े कुटुम्ब परिवार का स्वामी होगा। जातक के पास एकाधिक भवन, एवं एकाधिक वाहन होंगे। विद्या पूरी होगी। अनुभव भी पूरा होगा सतान उत्तम होंगे जाति व समाज में इज्जत होगी।

दृष्टि—दशमस्थ गुरु की दृष्टि धन स्थान (मेष राशि), चतुर्थ भाव (मिथुन राशि) एवं छठे स्थान (सिंह राशि) पर होगी। जातक महाधनी होगी। महासुखी होगा एवं शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण सक्षम होगा।

निशानी—ऐसे जातक की वाणी हंस के समान मीठी एव नीर-क्षीर विवेकी होगी।

दशा—गुरु की दशा-अंतर्दशा अति उत्तम फल देगी, धन, पद-प्रतिष्ठा एवं राजकीय सम्मान प्राप्त होगा।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चंद्रमा**– 'भोजसंहिता' के अनुसार धनु राशि मे यह युति वस्तुतः पंचमेश चंद्रमा की लग्नेश-राज्येश गुरु के साथ युति है। ये दोनो शुभग्रह केन्द्र मे बैठकर धन स्थान, सुखभाव एवं षष्टम् स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। गुरु यहा स्वगृही होने से बलवान होगा तथा क्रमशः 'हंस योग', 'कुलदीपक योग 'यामिनीनाथ योग', 'पद्मसिंहासन योग' की सृष्टि कर रहा है। फलतः जातक का राजनीति मे व्यापार मे भारी प्रतिष्ठा होगी। जातक राजा तुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक के पास उत्तम वाहन एव भौतिक संसाधनों की उपलब्धि रहेगी। जातक अपने शत्रुओ का नाश करने मे पूर्णतः समर्थ होगा।
2. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य जातक को राजपक्ष से लाभ देगा। राजनीति में लाभ देगा।
3. **गुरु+मंगल**—गुरु के साथ मगल यहा 'दिक्बली' एवं उच्चाभिलाषी होगा। ऐसा जातक धनी, पुरुषार्थी एव भाग्यशाली होगा। राजनीति में उच्च पद को प्राप्त करेगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध हो तो जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र जातक को पराक्रमी बनायेगा। कुटुम्बियों से सम्पर्क जुड़ा रहेगा।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि जातक को बड़ा व्यापारी उद्योगपति बनायेगा।
7. **गुरु+राहु**—यहा दोनों ग्रह धनु राशि मे होंगे। गुरु यहां स्वगृही होने से 'हंस योग' बनायेगा। जबकि नीच का होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी एव प्रभुत्व सम्पन्न होगा परन्तु शक्ति व अधिकारों का दुरुपयोग करेगा। पिता से नहीं निभेगी
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु राजयोग में कीर्तिप्रदायक है।

मीनलग्न में गुरु की स्थिति एकादश स्थान में
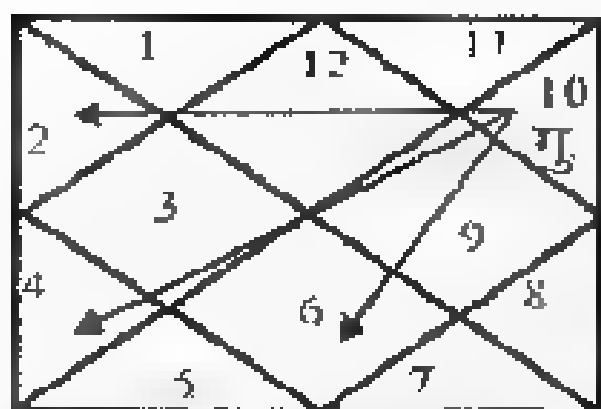
गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है, गुरु जीवनदाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एवं राजयोगकारक है। अतः हर हालत मे यह शुभफल ही देगा। गुरु यहा एकादश स्थान में नीच का होगा। मकर राशि के अंशों में गुरु परमनीच का होता है जातक के मित्र अच्छे होंगे। जातक को धंधे में उत्तम लाभ की प्राप्ति होगी। पाराशर ऋषि के अनुसार–"लग्नेशे लाभगे जातः सदा लाभसमन्वितः" जातक बहुधंधी होगा तथा हरेक प्रकार के धंधे में लाभ होगा। भागीदारी के धंधे से भी लाभ होगा। विद्या अच्छी होगी। जातक स्वय पढ़ा-लिखा होगा तथा संतान भी पढ़ी-लिखी व Degree holder होगी।

दृष्टि–एकादश भावगत गुरु की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृष राशि), पंचम स्थान (कर्क राशि) एव सप्तम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। जातक पराक्रमी होगा। मित्रों-कुटुम्बियो का शुभचिन्तक होगा। जातक के संतति उत्तम होगी। पत्नी धार्मिक एव अनुकूल होगी। गृहस्थ सुख श्रेष्ठ मिलेगा।

निशानी–गुरु की यह स्थिति ज्येष्ठ सहोदर भ्राता के लिए हानिकारक है। साथ ही पुत्रवधू के लिए भी यह गुरु ठीक नहीं।

दशा–गुरु की दशा-अतर्दशा शुभ एव अनुकूल परिणामों को देने वाली साबित होगी।

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **गुरु+चंद्रमा**–'भोजसंहिता' के अनुसार मकर राशि में यह युति वस्तुतः पंचमेश चद्रमा की लग्नेश+दशमेश गुरु के साथ युति होगी। गुरु यहां नीच का होगा। जहां बैठकर ये दोनों ग्रह पराक्रम स्थान, पचम भाव एव सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे फलतः जातक की संतति शिक्षित होगी। उसे व्यापार-व्यवसाय में उच्च पद प्राप्त होगा। जातक का भाग्योदय विवाह के तत्काल बाद होगा। जातक महान् पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
2. **गुरु+सूर्य**–गुरु के साथ सूर्य गुप्त शत्रुओं में वृद्धि करायेगा। चर्मरोग संभव है।
3. **गुरु+मंगल**–गुरु के साथ उच्च का मंगल 'नीचभंगराज योग' करायेगा। जातक बड़ा उद्योगपति होगा। राजा के समान पराक्रमी होगा

4. **गुरु+बुध**–गुरु के साथ बुध भौतिक ऐश्वर्य एवं गृहस्थ सुख में वृद्धि करेगा।
5. **गुरु+शुक्र**–गुरु के साथ शुक्र जातक को पराक्रमी बनायेगा कुटुम्बियों से व बड़े भाई से लाभ होगा।
6. **गुरु+शनि**–गुरु के साथ शनि होने से 'नीचभंगराज योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी व धनवान होगा।
7. **गुरु+राहु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। गुरु यहां नीच का होकर दु:खी होगा तो राहु सम (मित्र) राशि का होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। पर यहां राजयोग देगा। व्यापार व्यवसाय में नुकसान होगा। जातक को रोजी रोजगार हेतु दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा फिर भी जातक राजसी ठाट-बाट से रहेगा।
8. **गुरु+केतु**–गुरु के साथ केतु व्यापार में लाभदायक है। प्रारंभिक रुकावट के बाद व्यापार चमकेगा।

मीनलग्न में गुरु की स्थिति द्वादश स्थान में
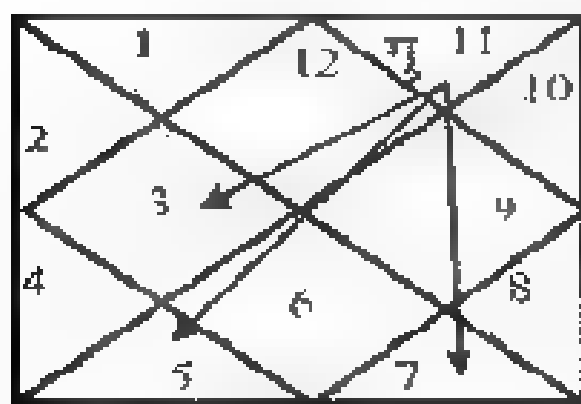
गुरु यहां लग्नेश व राज्येश है। गुरु जीवनदाता (आयुप्रदाता) ग्रह है एवं राजयोगकारक है। अत: हर हालत में यह शुभफल ही देगा। गुरु यहां द्वादश स्थान में कुंभ (सम) राशि का होगा। गुरु की इस स्थिति के कारण 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनेगा जातक की आयु छोटी एवं शरीर में रोगों की संभावना रहेगी। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा जातक बुद्धिमान, विद्वान होते हुए भी उसकी योग्यता व सलाह का कद्र नहीं होगी। जातक के श्रम, शक्ति एवं धन का अपव्यय होता है। जिसके फलस्वरूप जातक अधैर्यशाली व क्रोधी होता है.

दृष्टि–द्वादशभावगत गुरु की दृष्टि चतुर्थ भाव (मिथुन राशि), छठे स्थान (सिंह राशि) एवं आठवें स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति हेतु दिक्कते आयेगी जातक को रोग एवं शत्रु परेशान करते रहेंगे।

निशानी–गुरु यदि अन्य शुभग्रहो से दृष्ट या युत हो तो जातक देवत्व को प्राप्त होता है। उसके द्वारा किये गये कार्य अमर हो जाते है।

दशा—गुरु की दशा-अतर्दशा अनिष्ट फल देगी

गुरु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **गुरु+चंद्रमा**—'भोजसंहिता' के अनुसार यहा यह युति वस्तुत: पचमेश चद्रमा की लग्नेश+राज्येश गुरु के साथ युति है। यहा बैठकर ये दोनों शुभग्रह सुख स्थान, षष्टम भाव एवं अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखेंगे। द्वादश स्थान में इन दोना ग्रहों के जाने से क्रमश: 'लग्नभंग योग', 'राज्यभंग योग' एव 'संतानहीन योग'' की सृष्टि हो रही है। वस्तुत: ऐसे जातक को ऋण-रोग व शत्रु का भय नहीं होगा। जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में अकेला सक्षम होगा जातक को प्राकृतिक अपघातों व दुर्घटनाओ से बचाव होता रहेगा जातक को सभी प्रकार के भौतिक ससाधनों की प्राप्ति सहज मे होती रहेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।
2. **गुरु+सूर्य**—गुरु के साथ सूर्य हर्षनामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगा जातक धनी, मानी-अभिमानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा
3. **गुरु+मगल** -गुरु के साथ मंगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' बनायेगा। जातक को धन, विवाह एवं गृहस्थ सुख की प्राप्ति हेतु परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
4. **गुरु+बुध**—गुरु के साथ बुध हाने से 'सुखहीन योग एव 'विलम्बविवाह योग' बनेगा। जातक को भौतिक उपलब्धियां एव गृहस्थ सुख की प्राप्ति मे परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
5. **गुरु+शुक्र**—गुरु के साथ शुक्र होने से 'पराक्रमभंग योग' बनेगा जातक बिना कारण ही बदनाम होगा।
6. **गुरु+शनि**—गुरु के साथ शनि लाभभंग योग एव विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी-मानी-अभिमानी होगा। जीवन में परेशान रहेगा।
7. **गुरु+राहु**—यहा दानों ग्रह कुम्भ राशि मे होगे। गुरु यहा दु:खी होकर सम राशि में होगा तो राहु अपनी मूल त्रिकाण राशि में हर्षित होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। गुरु के कारण यहा 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनेगा। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा राजदण्ड मिलेगा। बदनाम पीछा नहीं छोड़ेगी। यात्राएं नुकसानदायक रहेगी। अकाल मृत्यु संभव है।
8. **गुरु+केतु**—गुरु के साथ केतु खराब स्वस्थ एव व्यर्थ की चिताए बढ़ायेगा।

❑❑❑

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति प्रथम स्थान में
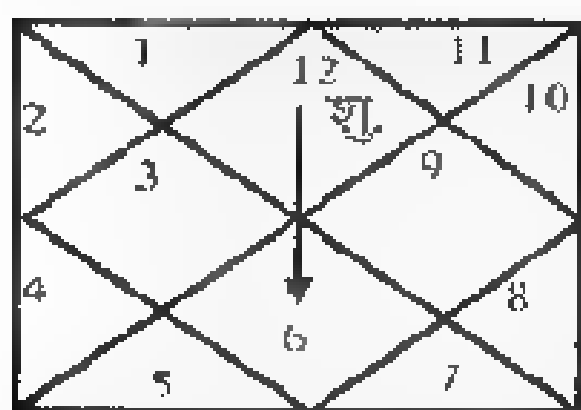
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है। अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा। शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहां प्रथम स्थान में मीनराशि में उच्च का होगा। मीन राशि के 27 अंशों में शुक्र परमोच्च का होता है। शुक्र की यह स्थिति 'कुलदीपक योग' एवं 'मालव्य योग' बनाती है। जातक सुन्दर देहयष्टि वाला, सौन्दर्यप्रिय एवं आकर्षक व्यक्तित्व का धनी होगा, जातक राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगेगा। जातक संवेदनशील, भावुक, सभ्य एवं विनम्र स्वभाव का होगा। जातक की छोटे भाई बहनों के साथ ठीक बनेगी।

दृष्टि—लग्नस्थ शुक्र की दृष्टि सप्तम भाव (कन्या राशि) पर होगी जातक को पत्नी सुन्दर होगी।

निशानी—अष्टमेश लग्न में होने से जातक देहसुख से हीन, शरीर में कुछ न्यूनता पाने वाला एवं ब्राह्मणों का निन्दक होता है अथवा नास्तिक होता है।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी। अष्टमेश होने से कुछ दशा प्रतिकूल भी होगी

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्रमा**—शुक्र के साथ चंद्रमा हो तो जातक की पत्नी अत्यन्त सुन्दर होगी। जातक स्वयं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य जातक की निर्णय शक्ति को कमजोर करेगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल जातक को निश्चय ही मंत्री या मंत्री के समकक्ष राजकीय वैभव देगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध 'नीचभंगराज योग' बनायेगा। जातक की पत्नी सुन्दर एवं धनाढ्य होगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु 'किम्बहुनानामकराज योग' बनायेगा। जातक राजा किंवा उसके समकक्ष वैभव सम्पन्न एवं पराक्रमी व्यक्ति होगा.
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि जातक को व्यापार में दिक्कतें देगा
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु व्यक्तित्व विकास में बाधक है। जातक गलत कार्यों की ओर प्रवृत्त होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को यशस्वी बनायेगा।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति द्वितीय स्थान में

2	शु. 1	12	11	10
3			9	
4	5	6	7	8
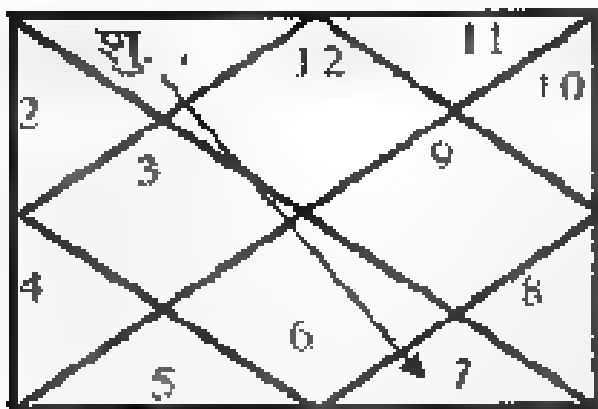
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है। अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहां द्वितीय स्थान में मेष राशि में होगा ऐसे जातक की इच्छाएं बढ़ी-चढ़ी होती है तथा शीघ्र धनवान होने के लिए लॉटरी, सट्टा, जुए इत्यादि गलत कार्यों का सहारा लेने में जरा भी संकोच नहीं करते। जातक की भाषा विनम्र होगी। कुटुम्ब में सुख उत्तम होगा। जातक कलाप्रेमी होगा, स्वयं कलाकार होगा। जातक की प्रवृत्ति खर्चीली होगी। जिससे धन संग्रह की असुविधा रहेगी.

दृष्टि–द्वितीयस्थ शुक्र की दृष्टि अपने ही घर अष्टम भाव (तुला राशि) पर होगी। फलतः जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा।

निशानी–जातक के छोटे भाई-बहन न ही होंगे, यदि होंगे भी तो उनसे बनेगी नहीं।

दशा–शुक्र की दशा शुभफल देगी परन्तु शुक्र में मंगल का अंतर मारक होगा। शुक्र की दशा अपेक्षित शुभफल नहीं दे पायेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्रमा**–शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को धनवान बनायेगा। प्रथम संतति के बाद जातक का भाग्योदय होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ उच्च का सूर्य आर्थिक विषमता देते हुए भी जातक को धनी बनायेगा।

3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल जातक को भाइयों कुटुंबियों एवं मित्रों से लाभ देगी।

4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध होने से जातक का ससुराल धनी व पराक्रमी होगा।

5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु होने से जातक की वाणी गम्भीर एवं हितकारी होगी।

6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि धन संग्रह में बाधक है।

7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु आर्थिक विषमताओं के अंबार लगा देगा।

8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु धन हानि करायेगा धन को लेकर परेशानी रहेगी।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति तृतीय स्थान में
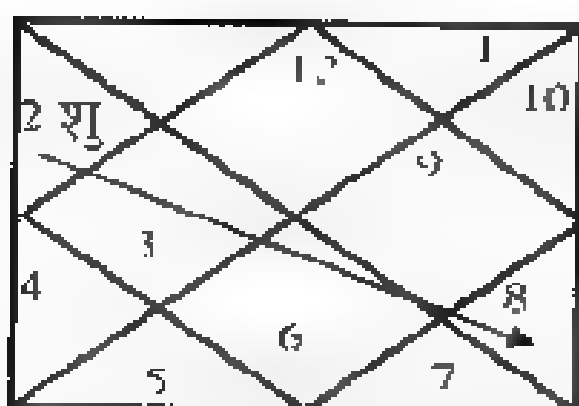
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है। अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा। शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहां तृतीय स्थान में स्वगृही होगा। शुक्र यहां आठवें भाव से आठवें स्थान पर है। जातक का कण्ठ अच्छा होगा। जातक स्वयं कलाकार या संगीत मर्मज्ञ होगा। जातक यात्राएं अधिक करेगा एवं जनसम्पर्क सघन रखेगा। जातक भाग्यशाली होगा तथा स्त्री मित्र उसे भाग्योदय में सहायक होगी।

दृष्टि—तृतीयस्थ स्वगृही शुक्र की दृष्टि 'भाग्य स्थान' पर है। जातक धार्मिक होगा एवं पिता के साथ उसकी ठीक बनेगी।

निशानी—बहनें अधिक होगी। जातक के पास वाहन एवं अन्य सुख-सुविधाएं उपलब्ध होते हुए भी उनका उपयोग कम करेगा। इसके पीछे मुख्य कारण आलसी एवं कंजूस मनोवृत्ति होगी।

दशा—शुक्र की दशा अंतर्दशा शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्रमा**—शुक्र के साथ चंद्रमा 'किम्बहुना योग' की सृष्टि करेगा। जातक को कुटुम्ब-परिवार का पूर्ण सुख मिलेगा बहनें अधिक होगी।

2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य परिजनों में विवाद उत्पन्न कराएगा। बड़े भाई का सुख कमजोर रहेगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल भाई बहनों का भरपूर सुख देगा। मित्रों से लाभ रहेगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से जातक की पत्नी एवं माता दोनों पराक्रमी होगी

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु जातक को महान पराक्रमी बनायेगा। जनसम्पर्क तेज होगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि परिजनो में विद्वेष मनमुटाव उत्पन्न करेगा।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु भाइयों मे कलह चरम सीमा पर रहेगा।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को पराक्रमी एव यशस्वी बनायेगा

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति चतुर्थ स्थान में
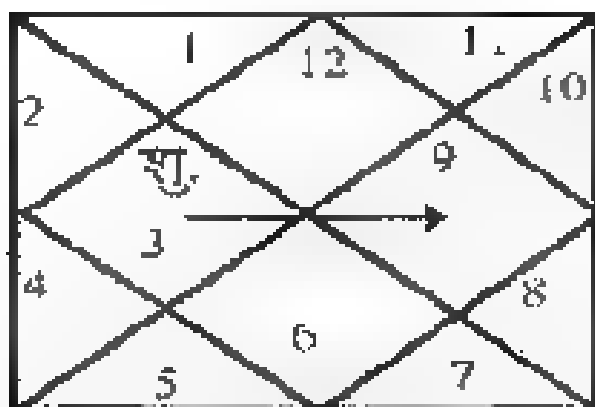
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एव अष्टमेश है। अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा। शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहा चतुर्थ स्थान में मिथुन (मित्र) राशि में होगा। शुक्र के कारण कुलदीपक योग बनेगा। मानसागरी के अनुसार शुक्र केन्द्रवर्ती होने से राजयोग देता है यह शुक्र तीसरे भाव से दूसरे स्थान पर, तथा आठवें भाव से नवमें स्थान पर है। यह शुक्र उत्तम भवन, उत्तम वाहन, घर-गृहस्थ, आजीविका के उन्नत सुख देगा। माता का सुख उत्तम, विद्या का योग भी उत्तम देता है।

दृष्टि–चतुर्थभावगत शुक्र की दृष्टि दशम भाव (धनुराशि) पर होगी। फलतः नौकरी व्यापार श्रेष्ठ।

निशानी–पति-पत्नी के मध्य यौन-सबध उत्तम होगा। जातक यदि स्वेच्छाचारी विचारों का नियन्त्रण रखेगा तो शुक्र अष्टमेश का अशुभ फल नहीं देगा।

दशा–शुक्र की दशा अतर्दशा श्रेष्ठफल देगी। शुक्र की दशा में मगल व बुध की अतर दशा कष्टदायक हो सकती है।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्रमा**–शुक्र के साथ चद्रमा होने से जातक शिक्षित होगा एवं कला प्रेमी होगी

2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य माता को बीमार करायेगा। जातक की माता से कम बनेगी।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल मित्रों से धन लाभ देगा जातक भाग्यशाली होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध 'भद्र योग' करायेगा जातक राजातुल्य ऐश्वर्यशाली होगा। उसके पास अनेक वाहन होंगे।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु 'केसरी योग' बनायेगा। जातक के पास एक से अधिक मकान होंगे
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि वाहन दुर्घटना का भय कराता है।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु माता को कष्ट देगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु भौतिक सुख में बाधक है।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति पंचम स्थान में
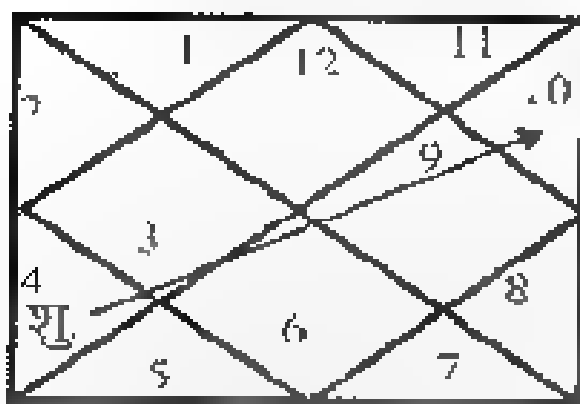
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहां पंचम स्थान में कर्क राशि में है शुक्र यहां तीसरे भाव (वृष राशि) से तीसरे एवं आठवें भाव से दशम स्थान पर है जातक की शिक्षा उत्तम होगी। Educationa Degree मिलेगी कला क्षेत्र में जातक ज्यादा नाम कमायेगा। जातक तंत्र-मंत्र ज्योतिष एवं गूढ़ विद्याओं का जानकार होगा। जातक को गुप्त धन या किसी मृतक का धन मिलता है।

दृष्टि–पंचमस्थ शुक्र की दृष्टि एकादश स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक को मित्रों एवं पड़ोसियों से सबंध ठीक होगा। पति-पत्नी में प्रेम अच्छा रहेगा।

निशानी–जातक के प्रथम कन्या होगी। कन्या संतति अधिक होगी। जातक को जुआ, सट्टा, लॉटरी, शेयर बाजार की लत लगी रहती है। इससे उसे धन भी मिलता है।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। वैसे ठीक जायेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्रमा**–शुक्र के साथ चंद्रमा स्वगृही होने से जातक वेद-विद्या एवं उच्च साहित्य संगीत का जानकार होगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य प्रारम्भिक विद्या में बाधक है। पुत्र संतान में विलम्ब या कष्ट देगा।

3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मगल जातक को धन लाभ देगा। प्रथम संतति के बाद भाग्योदय होगा।

4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध प्रथम सतति शल्य चिकित्सा से देगा। जातक को प्रथम संतति कष्ट से होगी

5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु उच्च का उत्तम पुत्र लाभ देगा। जातक को राजा (सरकार) से सम्मान मिलेगा।

6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि विद्या मे बाधक है उच्च शैक्षणिक डिग्री नहीं मिल पायेगी।

7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु विद्या व सतान सुख में बाधक है।

8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु विद्या में रुकावट लायेगा।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति षष्टम स्थान में
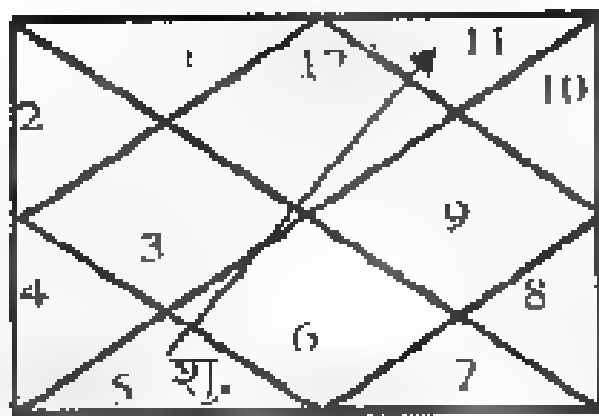
मीनलग्न मे शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है। अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा। शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहा छठे स्थान में सिंह (शत्रु) राशि में होगा। शुक्र यहा अष्टमेश होकर छठे जाने से 'सरल नामक' 'विपरीतराज योग' बनायेगा। पराक्रमेश छठे जाने से 'पराक्रमभंग योग' भी बनेगा। ऐसा जातक धनी, मानी–अभिमानी एवं साधन सम्पन्न होता है। जातक को मामा का सुख श्रेष्ठ, नौकर–चाकर का सुख श्रेष्ठ पर वैवाहिक जीवन मे कटुता आयगी। कई बार पराक्रम भग, मानभंग होने के अवसर भी आयेगे पाराशर ऋषि के अनुसार ऐसा जातक शत्रुओं पर विजय जरूर प्राप्त करता है।

दृष्टि–छठे भावगत शुक्र की दृष्टि द्वादश भाव (कुभ राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। देश-आराम पर रुपया खर्च करेगा। विदेश गमन से लाभ है।

निशानी–ऐसे जातक को बाल्यावस्था में सर्प और जल का भय रहता है। जातक के दो विवाह योग बनते हैं।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा मे धन संग्रह होगा। भौतिक उपलब्धियों की प्राप्ति होगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्रमा** शुक्र के साथ चंद्रमा 'संतानहीन योग' देता है। जातक को विद्या एव सतान में बाधा आयेगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य होने से हर्षनामक 'विपरीतराज योग' बना। जातक धनवान होगा ऐश्वर्यवान होगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल 'धनहीन योग' एव 'भाग्यहीन योग' बनायेगा। जातक का जीवन सघर्षमय रहेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध 'सुखहीन योग' एव 'विवाहभग योग' करायेगा। विवाह सुख में बाधा आयेगी।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एव 'राजभग योग' बनाता है। जातक को परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि 'लाभभग योग' एव विमलनामक 'विपरीतराज योग' बनाता है। जातक धनी, मानी अभिमानी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु जातक को राजयोग बनायेगा। शत्रुओं का नाश होगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु गुप्त शत्रु देगा। गुप्त बीमारी देगा।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति सप्तम स्थान में
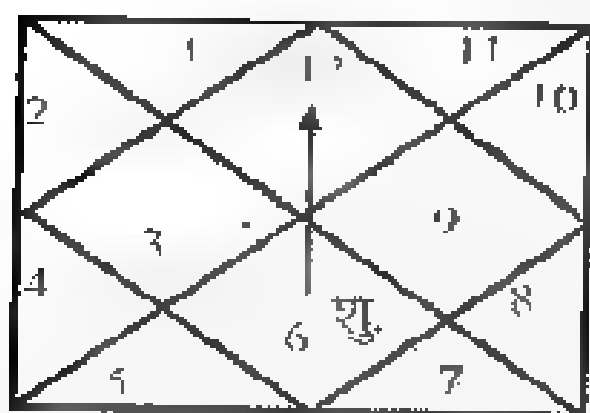
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है शुक्र यहा सप्तम स्थान में नीच का होगा। कन्या राशि के अंशों में शुक्र परमनीच का होता है। शुक्र यहां 'कुलदीपक योग' बना रहा है मानसागरी के अनुसार केन्द्रवर्ती शुक्र राजयोग भी बनाता है। ऐसा जातक सुन्दर दिखने का शौकीन व कामी होता है जातक के अपने भाई-बहन, मित्रों से खूब बनेगी। भागीदारी के व्यापार में लाभ होगा।

दृष्टि–सप्तमस्थ शुक्र की दृष्टि लग्न स्थान (मीन राशि) पर होगी। ऐसे जातक का चेहरा व व्यक्तित्व आकर्षक होगा जातक द्वारा परिश्रमपूर्वक किये गये पुरुषार्थ का फल मिलेगा

निशानी–जातक के दो पत्नी होती है। पाराशर होराशास्त्र के अनुसार "रन्ध्रेशे दारभावस्थे तस्य भार्या द्वयं भवेत्" अशुभ ग्रहो की युति व दृष्टि से यह योग सार्थक हो सकता है।

दशा–शुक्र की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। मगल की अतर्दशा मारक का काम करेगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्रमा**–शुक्र के साथ चद्रमा होने से जातक की पत्नी अत्यधिक सुन्दर होगी। जातक कामी होगा
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य वैवाहिक सुख में बाधक होगा
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मगल जातक को धनवान एव भाग्यशाली बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से 'नीचभंगराज योग' की सृष्टि होगी। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु होने से 'लग्नाधिपति योग' बनेगा। जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से पत्नी से विचारधारा नही मिलेगी
7. **शुक्र+राहु** शुक्र के साथ राहु गृहस्थ सुख मे बाधक है। जातक के दो विवाह होंगे,
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु पत्नी से मनमुटाव करायगा।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति अष्टम स्थान में
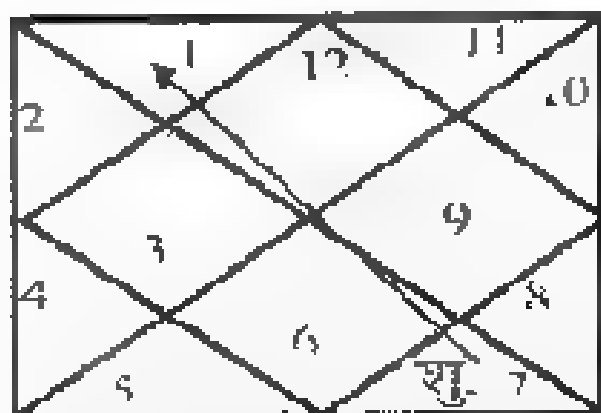
मीनलग्न मे शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है, अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा। शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहा अष्टम स्थान में स्वगृही होगा। अष्टमेश अष्टम में जाने से 'सरलनामक' 'विपरीतराज योग' एवं पराक्रमभग योग' बनता है। तीसरे भाव के छठे स्थित होने के कारण यह शुक्र वैवाहिक जीवन के आनंद को बिगाड़ेगा। जातक के दो विवाह हो सकते हैं 'विपरीतराज योग' के कारण जातक धनी, मानी व अभिमानी होगा। भौतिक सुख-ससाधनो की जीवन मे कमी नही होगी। जातक गीत सगीत, कला व अभिनय का शौकिन होगा। जातक लम्बी उम्र का स्वामी होगा

दृष्टि–अष्टम भावगत शुक्र की दृष्टि धन स्थान (मेष राशि) पर होगी। जातक धनी होगा व अनेक साधनों से धन कमायेगा।

निशानी–जातक की वाणी मीठी होगी तथा दाई आंख की रोशनी तेज होगी। परन्तु जातक में परनिन्दा का दुर्गुण होगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक धनवान होगा एवं भौतिक उपलब्धियों को प्राप्त करेगा। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्रमा**–शुक्र के साथ चंद्रमा 'संतानहीन योग' बनाता है। जातक के गृहस्थ सुख में बाधा रहेगी।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य 'नीचभंगराज योग' बनाता है। हर्षनामक 'विपरीतराज योग' बना। जातक धनी-मानी एवं सम्पूर्ण ऐश्वर्य संसाधनों से परिपूर्ण जीवन जीयेगा।
3. **शुक्र+मंगल**–शुक्र के साथ मंगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' बनायेगा। फलतः जातक का जीवन संघर्षमय होगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध होने से 'सुखहीन योग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बनायेगा। फलतः जातक का वैवाहिक जीवन प्रश्नवाचक होगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु होने से 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बना। ऐसे जातक को राजदण्ड मिल सकता है।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक धनी होगा यहां पर 'किम्बहुना योग' भी बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु गुप्त बीमारी एवं विवाह सुख में बाधा उत्पन्न करेगा।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु जातक को वैवाहिक कष्ट देगा।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति नवम स्थान में

1 12 11 10 2 9 3 8 शु 4 6 5 7
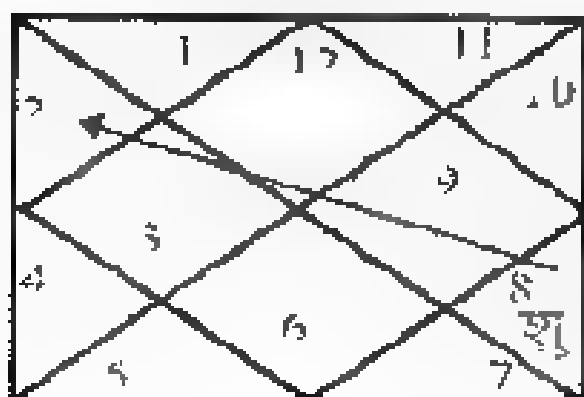
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा। शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहां नवम स्थान में वृश्चिक राशि में होगा। शुक्र यहां तीसरे स्थान से सातवें एवं आठवें से दूसरे स्थान पर

स्थित है। जातक को पिता एवं भाग्य का सुख उत्तम। जातक को सहोदर का सुख मिलता है। जातक का भाग्योदय कला के क्षेत्र में होता है। धन सुरक्षा एवं अमानत के मामले में जातक का ज्यादा विश्वास नहीं किया जा सकता। जातक रंगीन मिजाज का गैर जिम्मेदार व्यक्ति होगा

दृष्टि—नवम भावगत शुक्र की दृष्टि पराक्रम स्थान अपने ही घर वृषराशि पर होगी। फलत: जातक अपने कुटुम्ब का रक्षक होगा। मित्र बहुत होंगे पर स्त्री मित्रों से लाभ अधिक है।

निशानी—जातक के बहनें अधिक होंगी पत्नी दुष्ट स्वभाव की होगी।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा में जातक का भाग्योदय होगा।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्रमा**—शुक्र के साथ नीच का चंद्रमा जातक को उच्च श्रेणी का कलाकार, संगीतप्रेमी एव साहित्यकार बनायेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य भाग्योदय में अवरोध उत्पन्न करेगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ बलवान धनेश की युति 'भतृमूलधन योग' बनायेगी जातक को भाइयों, कुटम्बियों एवं मित्रों से धनलाभ होगा
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध जातक को माता-पिता से लाभ दिलायेगा जातक बुद्धिबल से आगे बढ़ेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु होने से जातक को स्त्री-मित्रों से विशेष लाभ होगा।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि, व्यापार से लाभ दिलवायेगा।
7. **शुक्र+राहु**-शुक्र के साथ राहु भाग्योदय में बाधक है.
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु होने से अन्य स्त्रियों के कारण बदनामी मिलेगी।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति दशम स्थान मे
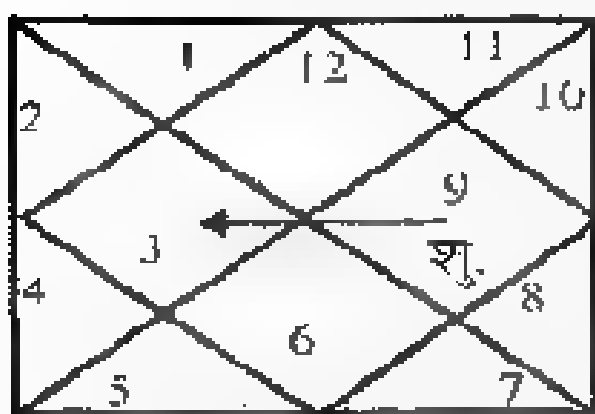
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एव अष्टमेश है अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा। शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहां दशम स्थान में धनु राशि का होगा। शुक्र कुलदीपक योग बनायेगा। 'मानसागरी' के अनुसार केन्द्रवर्ती शुक्र 'राजयोग' देता है। शुक्र यहां अपनी वृषराशि से आठवें एव तुला राशि से तीसरे

स्थान पर स्थित है। ऐसे जातक को मकान भू सम्पत्ति, नौकरी व्यवसाय एव धन सम्पत्ति का बराबर लाभ होगा। पाराशर ऋषि कहते है कि अष्टमेश दशम स्थान पर होने से 'पितृसौख्यविवर्जित!' जातक को पिता का सुख नही होगा। नौकरी प्राप्ति हेतु भी काफी दिक्कतो का सामना करना पड़ेगा।

दृष्टि–दशम भावगत शुक्र की दृष्टि चतुर्थ भाव (मिथुन राशि) पर होगी, माता पिता का सुख सामान्य विद्या सुख श्रेष्ठ जातक शुक्र के धधे से कमायेगा। वकील, डाक्टर बने तो यश प्रतिष्ठा अच्छी मिलेगी।

निशानी–जातक चुगलखोर होगा। दूसरों की बात अपने पेट में नहीं पचा पायेगा।

दशा–शुक्र की दशा-अंतर्दशा मध्यम फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शुक्र+चंद्रमा**–शुक्र के साथ चद्रमा जातक को राज (सरकार) से धन दिलायेगा। राजनीति से लाभ मिलेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**–शुक्र के साथ सूर्य राजा से कष्ट दिला सकता है कोर्ट कचहरी से परेशानी होगी.
3. **शुक्र+मगल**–शुक्र के साथ मगल 'दिक्बली' एव 'उच्चाभिलाषी' होगा। ऐसा व्यक्ति राजा से उच्च पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा।
4. **शुक्र+बुध**–शुक्र के साथ बुध माता का सुख, वाहन का सुख एव नौकर-चाकर का सुख मिलेगा।
5. **शुक्र+गुरु**–शुक्र के साथ गुरु 'हस योग' बनायेगा जातक राजा के समान पराक्रमी एव ऐश्वर्यशाली होगा।
6. **शुक्र+शनि**–शुक्र के साथ शनि होने से जातक व्यापार प्रिय होगा। उद्योगपति होगा।
7. **शुक्र+राहु**–शुक्र के साथ राहु व्यापार मे बाधक है।
8. **शुक्र+केतु**–शुक्र के साथ केतु कोर्ट कचहरी के चक्कर लगवायेगा।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति एकादश स्थान में

1	12	11
2	10 शु.	9
3	4	8
5	6	7
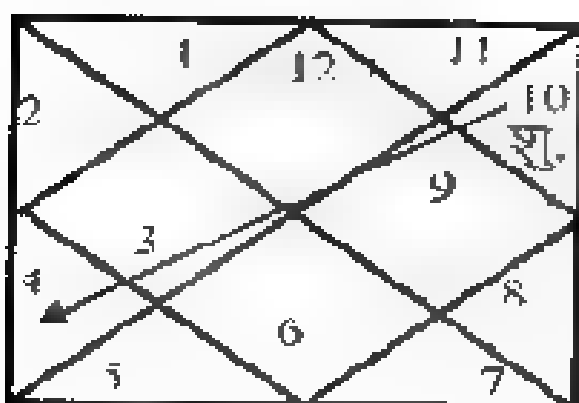
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है। अष्टमेश होने से यह अशुभफलक ही देगा। शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहा एकादश स्थान में मकर (मित्र) राशि में है। शुक्र की यह स्थिति राजनैतिक एव सामाजिक सुख में

बाधक है। ऐसे जातक की माता-पिता के साथ नहीं बनेगी। मित्र भी ज्यादा अच्छे नही होंगे। मकान एवं वाहन सुख तो होगा पर हाथ हमेशा तंग रहेगा। ऐसे जातक की बाल्यावस्था कष्टपूर्ण, युवावस्था अति उत्तम परन्तु वृद्धावस्था में संतान की चिन्ता रहेगी।

दृष्टि—एकादश स्थान में स्थित शुक्र की दृष्टि पंचम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः प्रथम कन्या होगी। संतान के रूप मे कन्या संतति अधिक होगी। जातक की प्रारम्भिक विद्या में बाधा होगी।

निशानी—गृहस्थ सुख मध्यम। दिखलाई देने में पति-पत्नी में प्रेम होगा पर दोनों एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करेंगे।

दशा—शुक्र की दशा-अंतर्दशा शुभ फल नहीं देगी। जातक की पत्नी किंवा संतति बीमार रहे।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्रमा**—शुक्र के साथ चंद्रमा जातक को उच्च शिक्षा दिलायेगा। जातक साहित्य संगीत में रुचि रखेगा।
2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य उद्योग मे गड़बड़ उत्पन्न करेगा।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ उच्च का मंगल जातक को करोड़पति बनायेगा।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध जातक को उत्तम जीवनसाथी देगा
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु जातक को प्रयत्न करने से सफलता मिलेगी।
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि जातक को धनवान एवं विपुल सम्पत्ति का स्वामी बनायेगा
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु व्यापार सुख में बाधक है
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु व्यापार में रुकावटें उत्पन्न करेगा।

मीनलग्न में शुक्र की स्थिति द्वादश स्थान में

1	12	शु. 11
2		10
3		9
4		8
5	6	7
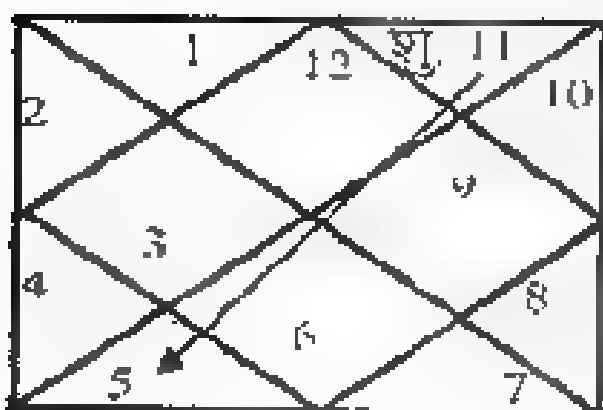
मीनलग्न में शुक्र पराक्रमेश एवं अष्टमेश है। अष्टमेश होने से यह अशुभफल ही देगा। शुक्र लग्नेश गुरु से शत्रु भाव भी रखता है। शुक्र यहां द्वादश स्थान में कुम्भ (मित्र) राशि का होगा। अष्टमेश का द्वादश में जाने से सरल नामक 'विपरीतराज योग' बनेगा। तृतीयेश का बारहवें जाने से पराक्रमभंग

योग भी बनेगा यह शुक्र धन यश, पद प्रतिष्ठा का लाभ देगा। भौतिक सुख सम्पत्ति बनी रहेगी। जातक का वैवाहिक जीवन सुखी स्त्री संतान सुख श्रेष्ठ रहेगा। जातक विलासी जीवन जीयेगा जातक ज्यादातर सरकारी या पराये पैसे पर मौज करेगा।

दृष्टि—द्वादश भावगत शुक्र की दृष्टि छठे स्थान (सिंह राशि) पर होगी जातक के गुप्त शत्रु होंगे, गुप्त रोगों की भी संभावना बनी रहेगी।

निशानी—जातक का पैसा कुकार्य, व्यसन, जुआं, मौज शौक मे खर्च होगा जातक पर कर्जा होगा। पर जातक उसकी चिंता नहीं करेगा।

दशा—शुक्र की दशा-अन्तर्दशा शुभ फल देगी।

शुक्र का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शुक्र+चंद्रमा**—शुक्र के साथ चंद्रमा 'संतानहीन योग' बनाता है जातक को गृहस्थ सुख मे न्यूनता महसूस होती रहेगी
2. **शुक्र+सूर्य**—शुक्र के साथ सूर्य हर्षनामक 'विपरीतराज योग' बनाता है। जातक धनवान एवं अभिमानी होगा पर नेत्रपीड़ा रहेगी।
3. **शुक्र+मंगल**—शुक्र के साथ मंगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' बनाता है। जातक के दो पत्नियां होंगी।
4. **शुक्र+बुध**—शुक्र के साथ बुध 'सुखहीन योग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बनाता है। जातक को भौतिक सुखों मे न्यूनता का आभास होता रहेगा।
5. **शुक्र+गुरु**—शुक्र के साथ गुरु होने से जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। 'लग्नभंगयोग' एवं 'राजभंग योग' के कारण समाज में उचित सम्मान नही मिलेगा,
6. **शुक्र+शनि**—शुक्र के साथ शनि 'लाभभंग योग' एवं विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनाता है। जातक धनी मानी एवं अभिमानी होगा
7. **शुक्र+राहु**—शुक्र के साथ राहु वैवाहिक सुख में बाधक है
8. **शुक्र+केतु**—शुक्र के साथ केतु व्यर्थ के खर्च एवं गुप्त रोगों की संभावना बनायेगा।

❑❑❑

मीनलग्न में शनि की स्थिति

मीनलग्न में शनि की स्थिति प्रथम स्थान में

1 12 श. 11 10 2 3 9 4 8 6 5 7
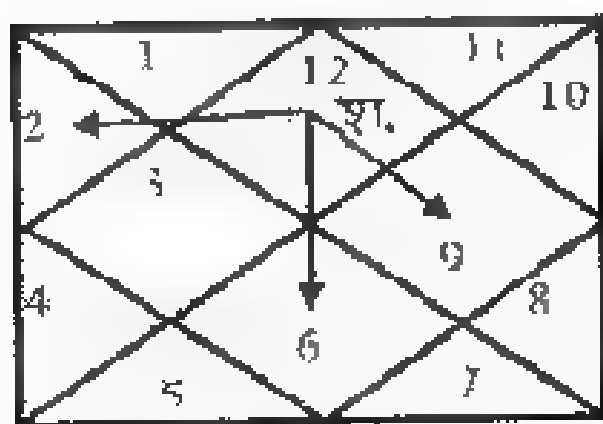
मीनलग्न मे शनि लाभेश एव खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। यहां प्रथम स्थान में शनि मीन (सम) राशि में है। ऐसा जातक जिद्दी व हठी स्वभाव का होता है। ऐसे जातक को व्यापार व्यवसाय धंधे में लाभ होता है परन्तु जातक कमाई का बहुत अधिक हिस्सा फालतू कार्यों में खर्च कर देता है, गृहस्थ सुख भी संदेहास्पद रहेगा।

दृष्टि–लग्नस्थ शनि की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृष राशि), सप्तम भाव (कन्या राशि) एवं दशम स्थान (धनु राशि) पर होगी। ऐसा जातक पराक्रमी होगा पर कुख्यात होगा पत्नी से कम बनेगी। सरकारी नौकरी से लाभ कमजोर रहेगा।

निशानी–ऐसा जातक अपनी उम्र (वय) से अधिक दिखता है, पत्नी व जातक के मध्य उम्र का अन्तराल अधिक होगा।

दशा–शनि की दशा–अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहा दोनों ग्रह मीन राशि मे होंगे। सूर्य अपनी मित्र राशि में हो तो शनि अपनी शत्रुराशि में होगा। षष्टेश एव व्ययेश की युति विस्फोटक है। जातक को आर्थिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। जातक की वाणी स्खलित होती रहेगी। चरित्र विरोधाभासी होगा
2. **शनि+चंद्रमा**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को अंग्रेजी शिक्षा एव विदेशी भाषा में दक्ष बनायेगा।

3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मगल जातक को धनी व भाग्यशाली तो बनायेगा पर जातक लड़ाकू होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध होने से जातक का गृहस्थ जीवन सुखी होगा। जातक विद्यावान होगा
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु 'हस योग' बनायेगा। ऐसा जातक राजा के समान पराक्रमी एवं जनसम्पर्क वाला होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र 'मालव्य योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु जातक को क्रोधी हठी, दभी एवं खुराफाती दिमाग वाला बनायेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु जातक को विचलित मन मस्तिष्क वाला व्यक्ति बनायेगा।

मीनलग्न में शनि की स्थिति द्वितीय स्थान में

1 श.	12	11	10	9	2	3	4	5	6	7	8
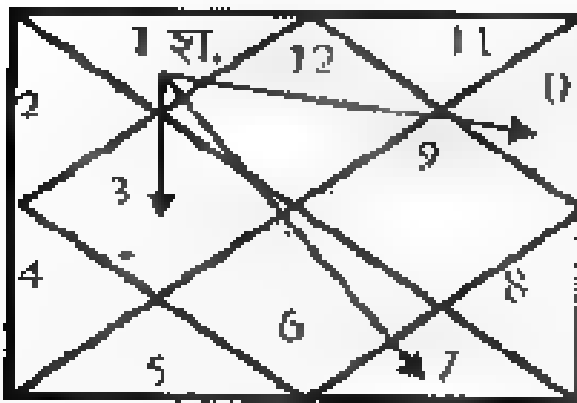
मीनलग्न में शनि लाभेश एव खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है शनि द्वितीय स्थान में नीच राशि का होगा। मेष राशि के 20 अंशों में शनि परमनीच का होता है जातक का कुटुम्ब सुख कमजोर, वाणी अपवित्र व खराब होगी। जातक कमाते हुए भी खर्च नहीं करेगा कजूस होगा। कफ की बीमारी होगी शरीर कमजोर होगा तथा फालतू कार्यों में रुपया खर्च होगा।

दृष्टि—धनभावस्थ शनि की दृष्टि चतुर्थ स्थान (मिथुन राशि), अष्टम स्थान (तुला राशि) एव एकादश स्थान अपने ही घर मकर राशि पर होगी। जातक की कुटम्बी जातक का साथ नहीं देंगे। जातक के शत्रु बहुत होंगे।

निशानी—विद्या में विलम्ब तथा निष्फलता। जातक पुराने मकान में मरम्मत करा कर रहेगा। माता से नहीं बनेगी

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा खराब फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह मेषराशि में होंगे सूर्य अपनी उच्च राशि में तो शनि अपनी नीच राशि में होकर 'नीचभंगराज योग' बनायेगा। जातक राजा के समान

पराक्रमी एव धनी होगा। पर सही व सच्चा भाग्योदय पिता की मृत्यु के बाद होगा।

2. **शनि+चंद्रमा**—शनि के साथ चद्रमा जातक को धनवान बनायेगा जातक बुद्धिमान होगा

3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मगल 'नीचभंगराज योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं सम्पत्ति वाला होगा।

4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध यहां दाम्पत्य जीवन के सुखो को नष्ट करेगा।

5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु जातक को रोजी रोजगार विलम्ब से देगा। जातक की उन्नति धीमी गति से होगी।

6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र जातक को पराक्रमी बनायेगा पर धन संग्रह में बाधा आयेगी। जातक मित्रों पर धन लुटायेगा।

7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु धन के घड़े मे छेद है, कितना भी रुपया कमाओं, बरकत नहीं होगी

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु आर्थिक सकट उत्पन्न करेगा

मीनलग्न में शनि की स्थिति तृतीय स्थान में
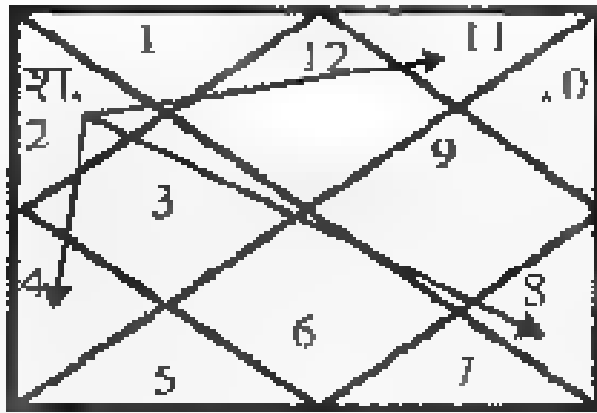
मीनलग्न मे शनि लाभेश एव खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। शनि यहां तृतीय स्थान में वृष (मित्र) राशि में होगा। जातक की भाई-बहनो व कुटम्बियों से बनेगी नहीं। पाराशर ने इस शनि को 'भ्रातृसौख्यविवर्जित' कहा है। जातक को पिता का सुख कमजोर, पिता की सम्पत्ति मिलेगी नही भाग्योदय हेतु संघर्ष रहेगा। जातक परदेश (विदेश) जाकर कमा सकता है। विदेशी भाषा पढ़ने से पराक्रम बढ़ेगा।

दृष्टि—तृतीयस्थ शनि की दृष्टि पंचम स्थान (कर्क राशि), भाग्य स्थान (वृश्चिक राशि) एव द्वादश स्थान (कुम्भ राशि) पर होगी। फलतः विद्या में बाधा, संतति विलम्ब से हो

निशानी—जातक दूसरों की तरक्की सम्पन्नता देखकर चिढ़ेगा। पर छिन्द्रान्वेषक व द्वेषी होगा। जातक डरपोक होगा।

दशा—शनि की दशा-अंतर्दशा अशुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह वृष राशि मे होंगे। सूर्य अपनी शत्रु राशि म हो तो शनि मित्रराशि मे होगा। षष्ठेश एव व्ययेश की यह युति पराक्रम का भंग करेगी। जातक को छोटे व बड़े दोनों भाइयों का सुख नहीं होगा मित्र अच्छे व सच्चे न हाकर दगाबाज होगे।
2. **शनि+चंद्रमा**–शनि के साथ चंद्रमा उच्च का होने से जातक पराक्रमी होगा। कुटुम्ब व परिवार का सुख होगा पर छोटे भाई का सुख नहीं होगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल भाइयों का सुख देगा। मित्र भाग्यशाली होगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से भाई बहन दोनों का सुख होगा। भाई-बहन पढ़े-लिखे होगे।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु जातक को राजसुख देगा। जातक पराक्रमी होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को भाई बहनों का सुख देगा। स्त्री मित्रो से लाभ है।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु भाइयों में विवाद विग्रह करायगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु भाइयो में मनमुटाव की स्थिति पैदा करगा।

मीनलग्न में शनि की स्थिति चतुर्थ स्थान में
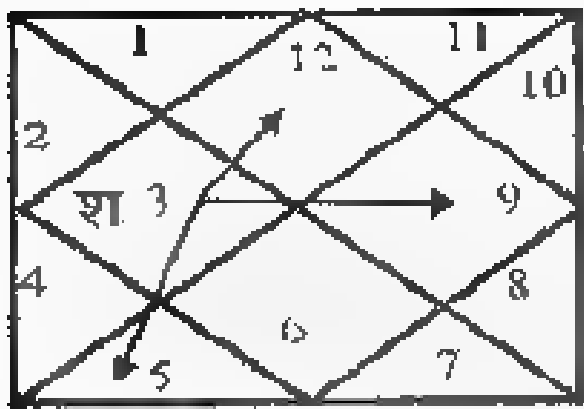
मीनलग्न मे शनि लाभेश एव खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। चतुर्थ स्थान में शनि मिथुन (मित्र) राशि में है। जातक का विद्या सुख उत्तम जातक विदेशी भाषा पढ़ेगा। जातक पुराने मकान मे रहेगा। मां होगी पर माता बीमार रहेगी। वाहन सुख मिलेगा पर वाहन पुराना होगा। खर्चा खायेगा। जातक निराशावादी होगा

दृष्टि–चतुर्थ भावगत शनि की दृष्टि छठे स्थान (सिंह राशि), दसवें स्थान (धनु राशि) एव लग्न भाव (मीन राशि) पर होगी जातक के शत्रु होंगे। रोजी-रोजगार की प्राप्ति में दिक्कतें आयेगी। जातक नकारात्मक विचारों वाला होगा।

निशानी–जातक कोर्ट कचहरी के चक्कर काटता रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा खराब फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनो ग्रह मिथुन राशि मे होगे। सूर्य सम राशि में तो शनि मित्र राशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति से जातक की माता की मृत्यु अल्पायु मे होगी अथवा दीर्घकालीक बीमारी से ग्रसित होगी। वाहन दुर्घटना का भय बना रहेगा। माता की मृत्यु के बाद जातक की उन्नति होगी।
2. **शनि+चंद्रमा**–शनि के साथ चंद्रमा जातक को पढ़ा लिखा एवं सभ्य व्यक्ति बनायेगा।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल जातक को धनवान एवं भाग्यशाली बनायेगा। जातक के पास अनेक वाहन होगे।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध जातक को राजा तुल्य पराक्रमी बनायेगा, 'भद्र योग' के कारण जातक के पास अनेक मकान होंगे।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु 'केसरी योग' एवं 'कुलदीपक योग' बनायेगा। जातक कुटुम्ब परिवार का नाम रोशन करेगा। यशस्वी होगा
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को अनेक वाहनो का स्वामी बनायेगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु माता का मृत्यु अल्प आयु मे करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु से माता को दीर्घकालीक बीमारी होगी.

मीनलग्न में शनि की स्थिति पंचम स्थान में
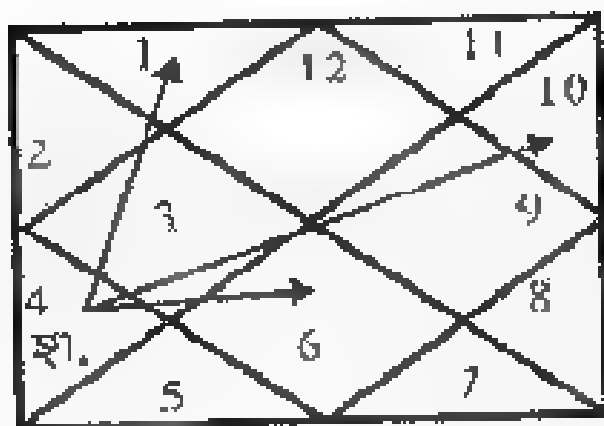
मीनलग्न मे शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है, यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। पंचम स्थान में शनि कर्क (शत्रु) राशि में है। जातक के प्रारम्भिक विद्याध्ययन में रुकावटें आयेगी। पाराशर ऋषि ने इस शनि को 'सुतविद्याविवर्जित:' कहा है, फलत: यह शनि उत्तम विद्या एवं पुत्र संतति में बाधक है। जातक तंत्र-मंत्र, विद्या व टोटकों में रुचि रखेगा एवं विदेशी भाषा का जानकार होगा जातक की भाषा ओछी होगी। दन्तरोग एवं नेत्रविकार की शिकायत रहेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ शनि की दृष्टि सप्तम भाव (कन्या राशि), एकादश स्थान अपने ही घर मकर राशि एवं धन भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक के वैवाहिक

सुख में बाधा आयेगी। विवाह विलम्ब से होगा। बड़े भाई का सुख होगा। व्यापार से लाभ पर धन संग्रह में निरन्तर बाधा बनी रहेगी

निशानी—जातक अंधश्रद्धालु होगा। प्राचीन मान्यताओं में विश्वास रखेगा।

दशा—शनि की दशा-अतर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**—यहा दोनों ग्रह कर्क राशि में होंगे। सूर्य मित्र राशि में तो शनि शत्रु राशि में होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति से एकाध सतान की मृत्यु विद्या मे बाधा एव संतान को लेकर परेशानी बनी रहेगी
2. **शनि+चंद्रमा**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को प्रारम्भिक रुकावट के साथ उच्च शिक्षा देगा
3. **शनि+मंगल** शनि के साथ मंगल प्रथम संतति को हाथ नहीं लगने देगा। एकाध गर्भपात संभव है।
4. **शनि+बुध** -शनि के साथ बुध जातक को सघर्ष के साथ विद्याध्ययन करायेगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ उच्च का गुरु राजसुख देगा। उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र संतति हानि करायेगा। कन्या सतति अधिक देगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु जातक को संतति सुख में बाधा डालेगा। संतान प्रथमतः होगी नहीं यदि होगी तो कपूत होगी
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु प्रारम्भिक विद्या एव सतान मे बाधक है।

मीनलग्न में की स्थिति शनि षष्टम स्थान में
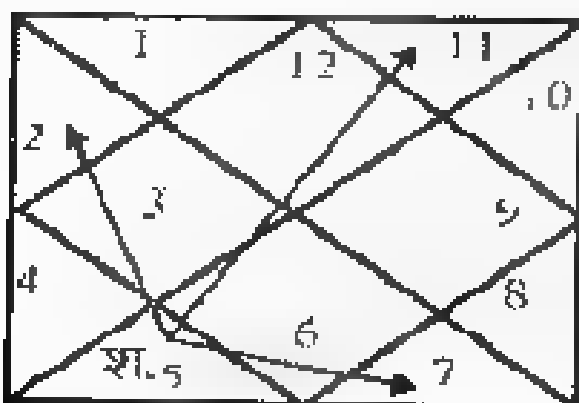
मीनलग्न में शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। शनि यहा छठे स्थान में सिंह राशि का शत्रुक्षेत्री होगा। शनि के कारण विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनेगा लाभेश छठे होने से 'लाभभग योग' भी बनायेगा। 'विपरीतराज योग' के कारण जातक धनी होगा। परिश्रमी व पुरुषार्थी होगा, भौतिक ससाधन, वाहन-मकान सुख होगा परन्तु विरोधियों से सामना करना पड़ेगा। व्यापार व्यवसाय जमाने मे दिक्कते आयेगी भाई बहनों में मनोमालिन्यता रहेगी।

दृष्टि-छठे भावगत शनि की दृष्टि अष्टम भाव (तुला राशि), द्वादश भाव (कुम्भ राशि) एवं पराक्रम स्थान (वृष राशि) पर होगी। जातक के शत्रु बहते होंगे। जातक का रुपया व्यर्थ में खर्च होंगे। नौकर-चाकर एवं मित्र दगा देंगे। अति मित्रता घातक होगी।

निशानी-जातक परस्त्रीगामी होगा। जातक परदेश (विदेश) जाकर धन कमायेगा।

दशा-शनि की दशा अंतर्दशा प्रतिकूल फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **शनि+सूर्य**-यहा दोनों ग्रह सिंह राशि में होंगे। सूर्य स्वगृही तो शनि शत्रु क्षेत्री होगी, सूर्य के कारण 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' बनेगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति शत्रुओं का नाश करेगी। जातक महाधनी एवं पराक्रमी होगा। शनि भी यहा राजयोगप्रदाता है।
2. **शनि+चंद्रमा**-शनि के साथ चंद्रमा 'संतति हीन योग' बनाता है। जातक को गुप्त शत्रु एवं गुप्त रोगों से सावधान रहना चाहिए।
3. **शनि+मंगल**-शनि के साथ मंगल होने से 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' बनता है जातक का जीवन संघर्षमय रहेगा
4. **शनि+बुध**-शनि के साथ बुध 'सुखहीन योग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बनाता है। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु संघर्ष करना पड़ेगा।
5. **शनि+गुरु**-शनि के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनाता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। राजदण्ड मिल सकता है।
6. **शनि+शुक्र**-शनि के साथ शुक्र 'सरल नामक' 'विपरीतराज योग' बनाता है। जातक धनी मानी एवं ऐश्वर्य सम्पन्न होगा
7. **शनि+राहु**-शनि के साथ राहु शत्रुओं का नाश करता है।
8. **शनि+केतु**-शनि के साथ केतु गुप्त शत्रुओं को उत्पन्न करता है।

मीनलग्न में शनि की स्थिति सप्तम स्थान में
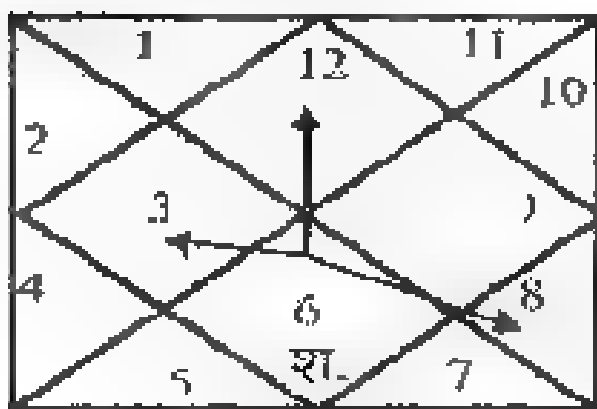
मीनलग्न में शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। यहां सप्तम स्थान में शनि कन्या राशि में मित्र क्षेत्री है। यह शनि भौतिक सुख समृद्धि देगा। जातक को

विवाह सुख देगा पर पत्नी के लिए यह शनि ठीक नहीं प्रथमतः जातक का विवाह विलम्ब से हो, तत्पश्चात् बीमारी से पत्नी की मृत्यु सभव है। पाराशर ऋषि कहते हैं कि व्ययेश यदि सातवे हो तो 'तस्यभार्या सुख नैव' उस जातक की पत्नी का सुख नहीं रहता है। पत्नी की बीमारी में बहुत रुपया खर्च होता रहेगा।

दृष्टि—सप्तमस्थ शनि की दृष्टि भाग्य स्थान (वृश्चिक राशि), लग्न स्थान (मीन राशि) एव चतुर्थ स्थान (मिथुनराशि) पर होगी। जातक को भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा, जातक निराशावादी एव एकान्तप्रिय होगा। माता का सुख कमजोर।

निशानी—ऐसे जातक को पिता का सुख एवं पिता की सम्पत्ति नहीं मिलेगी जातक दिखने में गंदा एवं बडी उम्र वाला दिखाई देगा।

दशा—शनि की दशा अतर्दशा अशुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1 **शनि+सूर्य**—यहां दोनों ग्रह कन्या राशि मे होगे। सूर्य सम राशि में तो शनि मित्र राशि मे होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति वैवाहिक सुख में बाधक है विलम्ब विवाह सभव है। पत्नी खर्चीली स्वभाव की होगी अथवा पत्नी की बीमारी को लेकर रुपया खर्च होगा।

2. **शनि+चद्रमा**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को स्त्री सुख देगा।

3. **शनि+मगल**—शनि के साथ मगल कुण्डली को 'डबल मांगलीक' बनायेगा। जातक के विवाह सुख में न्यूनता रहेगी.

4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली व पराक्रमी होगा।

5. **शनि+गुरु** शनि के साथ गुरु 'कुलदीपक योग ,'केसरी योग' बनायेगा। जातक को उत्तम गृहस्थ सुख की प्राप्ति होगी।

6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र गृहस्थ सुख में बाधक है। जातक को गुप्तेन्द्रि संबंधी रोग होगे।

7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु पत्नी की अकालमृत्यु का कारण बनता है।

8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु पत्नी से मनमुटाव कराता है।

मीनलग्न में शनि की स्थिति अष्टम स्थान में

मीनलग्न में शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। शनि यहा अष्टम स्थान
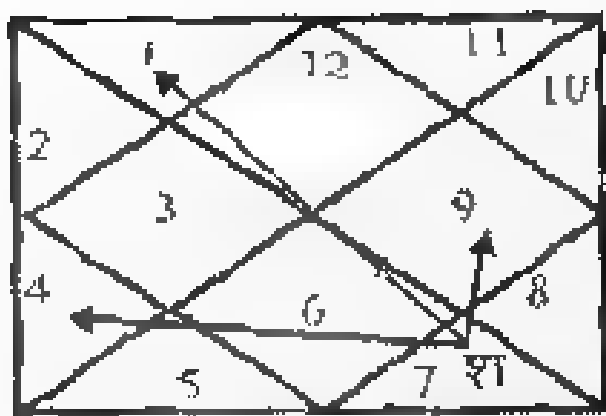
में उच्च का होगा। तुलाराशि के 20 अंश में शनि परमोच्च का होता है. शनि की इस स्थिति मे 'विमलनामक' 'विपरीतराज योग' बना साथ ही लाभेश अष्टम में जाने से 'लाभभंग योग' भी बना। 'विपरीतराज योग' के कारण जातक धनी होगा। जातक के मित्र भी धनी होंगे, जातक के पास मकान-सुख का सुख होगा। परन्तु नौकरी व्यापार मे असफलता ज्यादा मिलेगी। परिश्रम का लाभ नहीं मिलेगा।

दृष्टि- अष्टम स्थान में स्थित शनि की दृष्टि दशम भाव (धनु राशि), धन भाव (मेषराशि) एवं पंचम भाव (कर्क राशि) पर होगी। जातक को व्यापार में दिक्कते आयेंगी। जातक की वाणी कटु होगी। दन्त रोग होगा। जातक को कन्या संतति अधिक होगी।

निशानी-जातक के जीवन में लगातार उतार चढ़ाव (Up & Down) आते रहेंगे।

दशा-शनि की दशा मिश्रित फल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध-

1. **शनि+सूर्य**-यहां दोनों ग्रह तुला राशि मे होंगे, सूर्य नीच का होगा तो शनि उच्च का होने से 'नीचभंगराज योग' बनेगा। सूर्य के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' तथा शनि के कारण विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक राजा के सामन पराक्रमी, वैभवशाली एवं धनी होगा।
2. **शनि+चंद्रमा**-शनि के साथ चंद्रमा 'संतानहीन योग' बनाता है। जातक को विद्या एवं संतति सुख में बाधा महसूस होगी
3. **शनि+मंगल**-शनि के साथ मंगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' बनाता है। जातक को भाग्य व उन्नति के मामले में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।
4. **शनि+बुध**-शनि के साथ बुध 'सुखहीन योग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बनाता है। जातक को गृहस्थ सुख हेतु परेशानी उठानी पड़ेगी।
5. **शनि+गुरु**-शनि के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनाता है, फलत. जातक को राजदण्ड के प्रति सावधान रहना चाहिए।
6. **शनि+शुक्र**-शनि के साथ शुक्र 'किम्बहुना योग' बनाता है। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा। ऐश्वर्य सम्पन्न होगा।

7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु व्यापार में भारी नुकसान करायेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु व्यापार की सफलता मे तकलीफ देगा।

मीनलग्न में शनि की स्थिति नवम स्थान में
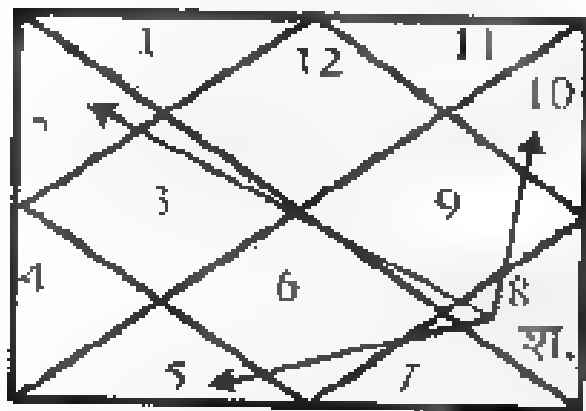
मीनलग्न में शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। यहां नवम स्थान में शनि वृश्चिक राशि में शत्रुक्षेत्री होगा ऐसे जातक को भौतिक एवं आध्यात्मिक सुख मिलते हैं। जातक भाग्यशाली होगा। बहुधंधी होगा। बहुत प्रकार के धधे से अर्जित करेगा। ऐसा जातक समाज सेवा व शुभ कार्य मे भी रुपया खर्च करेगा। परन्तु पिता से विचारधारा बिलकुल नहीं मिलेगी। जातक के गुप्त व प्रकट शत्रु बहुत होंगे। शत्रुओं पर विजय मिलेगी।

दृष्टि—नवमस्थ शनि की दृष्टि एकादश स्थान अपने ही घर मकर राशि पर होगी, पराक्रम स्थान (वृष राशि) एव छठे स्थान (सिंह राशि) पर होगी। जातक को व्यापार मे लाभ होगा। जातक पराक्रमी होगा। मित्र बहुत होंगे।

निशानी—जातक अत्यधिक स्वार्थी होगा। जातक गुरुद्वेषी होगा। अपने मित्रों से वैरभाव रखेगा

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा शुभफल देगी। भाग्योदय करायेगी

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **शनि+सूर्य**—यहा दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे सूर्य यहा मित्र राशि तो शनि शत्रु राशि मे होगा। षष्टेश एवं व्ययेश की युति पिता के सुख मे बाधक है पिता से दूरी रहेगी या पिता से नही निभेगी। पिता की मृत्यु के बाद ही जातक का भाग्योदय होगा।
2. **शनि+चंद्रमा**—शनि के चंद्रमा नीच का विषभोजन का भय कराता है। जातक शिक्षित होगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ बलवान मगल प्रारंभिक सघर्ष के पश्चात् व्यापार में भारी धनलाभ करायेगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु जातक को व्यापार में सफलता धीमीगति से देगा।

6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक का मित्र-क्षेत्र विस्तृत होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु भाग्योदय मे पूर्ण बाधक है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु भाग्य उन्नति में थोड़ी दिक्कतें उत्पन्न करेगा।

मीनलग्न में शनि की स्थिति दशम स्थान में
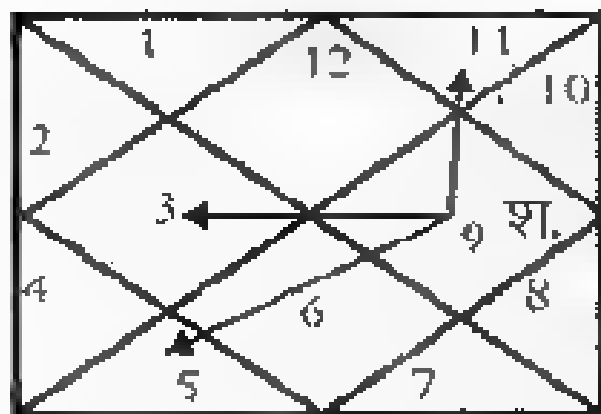
मीनलग्न में शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। शनि दशम स्थान में धनु (शत्रु) राशि में है। ऐसा जातक शनि के धंधे से कमायेगा भागीदारी के धधे से लाभ होगा। पिता सुख, नौकरी व्यवसाय का सुख थोड़ी देरी से मिलेगा। ऐसे जातक का विवाह देर से होता है। पति-पत्नी के बीच कटाकट रहेगी। जातक को मकान का सुख, वाहन का सुख मिलेगा। नौकरी व्यापार में उच्च पद प्रतिष्ठा को प्राप्त करेगा, परन्तु इन सभी का अन्त दुःखद होगा। मकान मे झगड़ा, वाहन में खर्चा एव व्यापार मे उधारी से घाटा लगेगा।

दृष्टि–दशमस्थ शनि की दृष्टि व्यय भाव (कुम्भ राशि), चतुर्थभाव (मिथुन राशि) एव छठे स्थान (सिंह राशि) पर रहेगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। माता बीमार रहेगी। भौतिक सुख मध्यायु मे मिलेंगे, जातक के शत्रु बहुत होंगे।

निशानी–जातक की विद्या अधूरी रहेगी।

दशा–शनि की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी। जातक को ऊपर ले जाकर, नीचे गिरायेगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह धनु राशि में होंगे। सूर्य यहा मित्र राशि में हो तो शनि सम राशि मे होगा। षष्टेश एव व्ययेश की युति यहा सरकारी नौकरी मे बाधक है। राजदण्ड या अवन्नति के कारण परेशानी रहेगी। फिर भी जातक बड़ा भारी महत्वाकाक्षी होगा एव सफल व्यक्ति कहलायेगा।
2. **शनि+चद्रमा**–शनि के साथ चद्रमा जातक को राजयोग देगा। जातक को राजनीति में सफलता मिलेगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मगल 'दिक्बली' एव उच्चाभिलाषी होगा। जातक राजा जैसे पद-प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिए प्रबल महत्वाकाक्षी होगा।

4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध होने से जातक व्यवहारिक ज्ञान से परिपूर्ण होगा। बुद्धिशाली होगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु 'केसरी योग', 'कुलदीपक योग' एवं 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र की युति जातक को पराक्रमी बनायेगी। उसका मित्र क्षेत्र विस्तृत होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु कोर्ट-कचहरी में नुकसान करायेगा।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु राजपक्ष से भय उत्पन्न करेगा।

मीनलग्न में शनि की स्थिति एकादश स्थान में
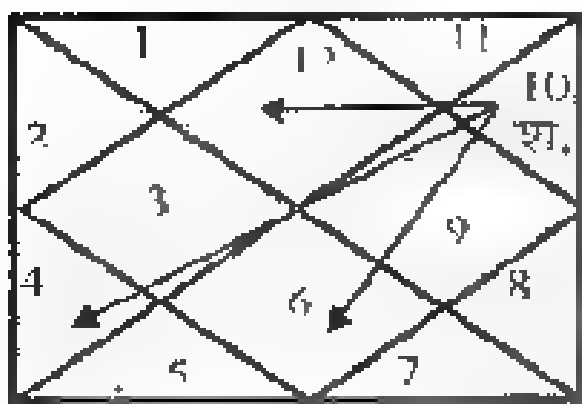
मीनलग्न में शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। शनि यहां एकादश स्थान में स्वगृही होगा। ऐसा जातक उद्योगपति होगा। स्वगृही शनि ज्येष्ठ सहोदर, यश, धन, सम्पत्ति एवं वाहन के लिए समृद्धिकारक है। ऐसा जातक बहुत प्रकार के धंधे करेगा। सभी में बराबर सफलता मिलेगी। "Source of income will be from many sided and all will be sucessful" माता पिता मददगार रहेंगे। जातक अच्छी विद्या प्राप्त करेगा एवं अपने धंधे में दक्ष Master-hand होगा।

दृष्टि–एकादश भाव स्थित स्वगृही शनि की दृष्टि लग्न स्थान (मीन राशि), पंचमस्थान (कर्क राशि) एवं सप्तम भाव (कन्या राशि) पर होगी। जातक को परिश्रमपूर्वक किये हुए प्रयासों में सफलता मिलेगी। संतति सुख उत्तम एवं गृहस्थ सुख भी उत्तम श्रेणी का होगा।

निशानी–ऐसे जातक को दूसरों की कमाई हुई धन सम्पत्ति मिलती है। जातक नित-नई योजनाएं बनाते रहेगा।

दशा–शनि की दशा-अंतर्दशा शुभफल देगी।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। शनि यहां स्वगृही तो सूर्य शत्रुक्षेत्री होगी। षष्टेश एवं व्ययेश की युति यहा होने से व्यापार में बाधा

रहेगी। भागीदारी में नुकसान बड़े भाई की मृत्यु एवं संतान को लेकर चिंता बनी रहेगी।

2. **शनि+चंद्रमा**—शनि के साथ चंद्रमा जातक को प्रबल बुद्धिशाली एवं धनवान बनायेगा।
3. **शनि+मंगल**—शनि के साथ मंगल 'किम्बहुना' नामक 'राज योग' बनायेगा। जातक राजा के समकक्ष पराक्रमी होगा। जातक करोड़पति होगा।
4. **शनि+बुध**—शनि के साथ बुध जातक को महाधनी बनायेगा। जातक उद्योगपति होगा।
5. **शनि+गुरु**—शनि के साथ गुरु 'नीचभंगराज योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा।
6. **शनि+शुक्र**—शनि के साथ शुक्र जातक को स्त्री-मित्रों से लाभ दिलायेगा।
7. **शनि+राहु**—शनि के साथ राहु व्यापार में सरकारी अड़चनों को उत्पन्न करेगा।
8. **शनि+केतु**—शनि के साथ केतु व्यापार में रुकावटें उत्पन्न करेगा।

मीनलग्न में शनि की स्थिति द्वादश स्थान में

1 12 श. 11 10 2 3 9 4 6 8 5 7
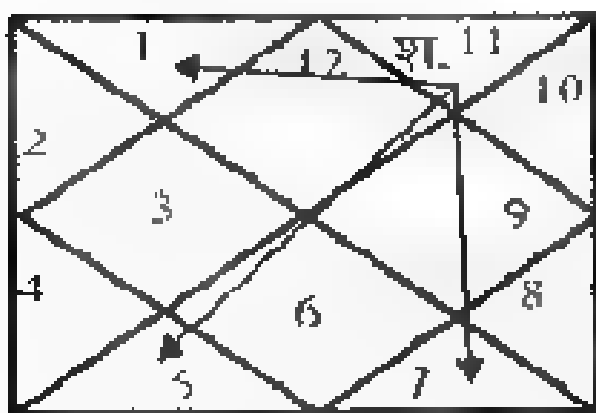
मीनलग्न में शनि लाभेश एवं खर्चेश होने से अशुभ फलदायक है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है तथा मुख्य मारकेश होने से परमपापी ग्रह है। शनि यहां द्वादश स्थान में अपनी मूलत्रिकोण राशि में होगा। शनि की इस स्थिति में 'विलम नामक' 'विपरीतराज योग' बनेगा। परन्तु लाभेश बारहवें होने से 'लाभभंग योग' भी बनेगा। ऐसा जातक धनी होगा मकान वाहन, नौकर-चाकर सुख होगा। परन्तु खर्च के प्रति लापरवाह होने के कारण कर्जदार होगा। लाभेश बारहवें जाने के कारण धंधे में सफलता नहीं मिलेगी।

दृष्टि—द्वादश भावगत शनि की दृष्टि धन स्थान (मेष राशि), छठे भाव (सिंह राशि) एवं अष्टम भाव (तुला राशि) पर होगी। कुटुम्ब सुख न मिले, जातक को आंख, दांत के रोग होंगे। शत्रु बहुत होंगे। अचानक दुर्घटना का भय रहेगा।

निशानी—जातक घमण्डी होगा तथा 'सुपिरियर काम्प्लेक्स' से ग्रसित होकर सभी से द्वेषभाव रखेगा। जातक का जाति में अपमान होगा। जाति भाइयों से दूर रहने में ही लाभ है।

दशा—शनि की दशा अंतर्दशा खराब फलदेगी। व्यर्थ की यात्राएं करायेगी। व्यर्थ का धन खर्च होगा। जातक परदेश जाकर कमायेगा।

शनि का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **शनि+सूर्य**–यहा दोनो ग्रह कुम्भ राशि में होगे सूर्य शत्रु क्षेत्री एवं शनि अपनी मूलत्रिकोण राशि में स्वगृही होगा। सूर्य के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' तथा शनि के कारण विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनेगा। जातक महाधनी, पराक्रमी एवं वैभवशाली होगा परन्तु खर्चीले स्वभाव से धन एकत्रित नहीं हो पायेगा जातक को नेत्रपीड़ा रहेगी।
2. **शनि+चंद्रमा**–शनि के साथ चद्रमा 'संतानहीन योग' की सृष्टि करेगा। जातक को विद्या एव संतानसुख मे बाधा महसूस होगी।
3. **शनि+मंगल**–शनि के साथ मंगल 'धनहीन योग' व 'भाग्यहीन योग' बनाता है जातक को भाग्योदय हेतु काफी सघर्ष करना पड़ेगा।
4. **शनि+बुध**–शनि के साथ बुध 'सुखहीन योग' व 'विलम्बविवाह योग' बनाता है। जातक को भौतिक सुखो की प्राप्ति हेतु सघर्ष करना पडेगा।
5. **शनि+गुरु**–शनि के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनाता है। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा।
6. **शनि+शुक्र**–शनि के साथ शुक्र 'सरल नामक' 'विपरीतराज योग' बनाता है। जातक धनी मानी अभिमानी व ऐश्वर्यसम्पन्न होगा।
7. **शनि+राहु**–शनि के साथ राहु, व्यर्थ के खर्च, चिंता एवं 'जलयोग' कराता है।
8. **शनि+केतु**–शनि के साथ केतु व्यर्थ की यात्रा एवं खर्च करायेगा।

❑❑❑

मीनलग्न में राहु की स्थिति

मीनलग्न में राहु की स्थिति प्रथम स्थान में
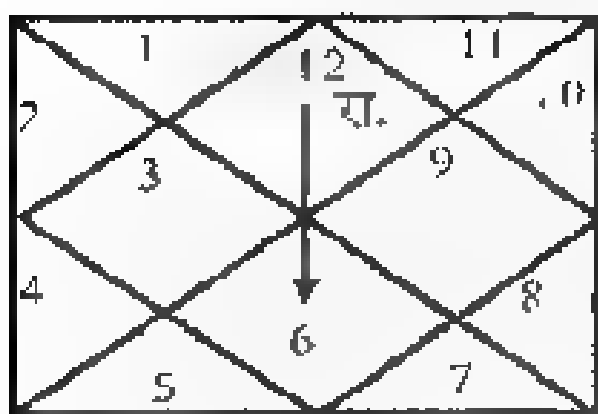
मीनलग्न वालो के लिए राहु शुभ नहीं हैं क्योंकि मीन राशि मे राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अतः राहु मीन मे शत्रुवत् अशुभ फल देगा। जातक शत्रु पर विजय प्राप्त करेगा। जातक के शारीरिक सौन्दर्य व स्वास्थ्य में कमी रहेगी। जातक उम्र मे अधिक वय का दिखाई देगा।

दृष्टि—लग्नस्थ राहु की दृष्टि सप्तम भाव (कन्या राशि) पर होगी। पत्नी एव बालक बीमार रहेंगे। ससार से विरक्ती रहेगी।

निशानी—विवाह प्रायः बड़ी उम्र की स्त्री से होता है, कठोर परिश्रम करने पर भी जातक को ऋण, रोग व शत्रु परेशान करते रहेगे।

दशा—राहु की दशा-अतर्दशा में अशुभ फलों की प्राप्ति होगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य जातक को गुप्त शत्रुओं द्वारा मानसिक चिन्ता दिलायेगा।
2. **राहु+चंद्रमा**—राहु के साथ चद्रमा परिश्रम का लाभ दिलायेगा। जातक ख्याली पुलाव ज्यादा पकायेगा
3. **राहु+मंगल**—जातक के दाम्पत्य जीवन में कटुता आयेगी।
4. राहु+**बुध**—राहु के साथ नीच का बुध जातक की सोच को विध्वंसक विस्फोटक बनायेगा।

5. **राहु+गुरु**—यहा दोनों ग्रह मीन राशि में होगे। लग्नस्थ गुरु स्वगृही होने के कारण 'हस योग' बनायेगा। पर राहु यहा नीच का होकर गुरु के साथ युति करने से 'चाण्डाल योग' बना। ऐसा जातक अपने धन व शक्ति का दुरुपयोग निन्दनीय कार्यों के लिए करेगा। जातक दूसरों का मूर्ख अपने महाबुद्धिमान् समझेगा।
6. **राहु+शुक्र**-राहु के साथ उच्च का शुक्र जातक को राजातुल्य पराक्रमी एव वैभवशाली बनायेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि जातक को नकारात्मक चिन्तन देगा।

मीनलग्न में राहु की स्थिति द्वितीय स्थान में
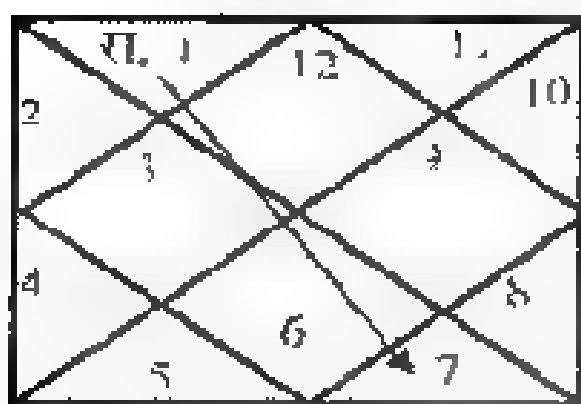
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नही है क्योंकि मीन राशि में राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है अत: राहु मीन मे शत्रुवत् अशुभ फल देगा। यहा द्वितीय स्थान में राहु मेष (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक द्विअर्थी भाषा बोलेगा। जातक को मुख रोग की संभावना रहेगी धन के धड़े में छेद होने से पैसा पास में रुकेगा नहीं

दृष्टि यहा द्वितीयस्थ राहु की दृष्टि अष्टम भाव (तुला राशि) पर होगी। जातक के गुप्त शत्रु जातक को कष्ट देंगे। जातक रोगी होगा

निशानी—जातक का स्वभाव उतावला होगा। भाषा कटु एवं लड़ाकू (झगड़ालू) होगी।

दशा—राहु की दशा अतर्दशा मे आर्थिक तकलीफ देखनी पड़ेगी। लोगों से अकारण झगड़ा होगा। जातक परेशान रहेगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य, धन की वजह से किसी काम को रुकने नहीं देगा। फिर भी अर्थाभाव बना रहेगा।
2. **राहु+चंद्रमा**—राहु के साथ चंद्रमा धन संग्रह करायेगा पर 80% धन फालतू कार्यों मे खर्च होगा।
3. **राहु+मंगल**-राहु के साथ धनेश मंगल स्वगृही होने से जातक महाधनी होगा जातक मुक्तहस्त से धन खर्च करेगा।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिबल से रुपया कमायेगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह मेषराशि में होंगे। द्वितीयस्थ गुरु मित्र राशि में, तो राहु विष (शत्रु) राशि में होने से यहा 'चाण्डाल योग' बना। जातक जितना भी धन कमायेगा। उसकी बरकत नही होगी। परिश्रम का उचित फल नहीं मिलेगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र धन संग्रह मे बाधक है। जातक अपने यार दोस्तों पर रुपया लुटायेगा
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि धनसग्रह में बाधक है। जातक कर्जदार होगा।

मीनलग्न में राहु की स्थिति तृतीय स्थान में
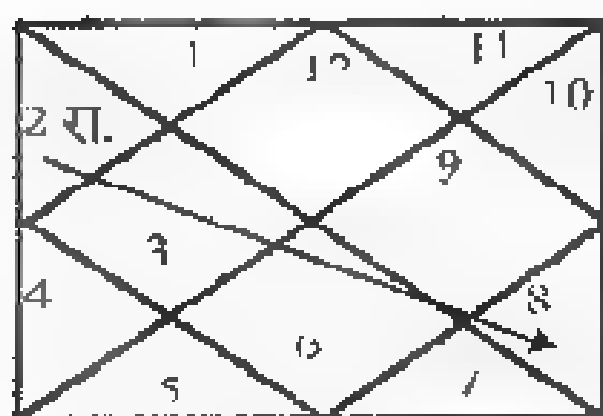
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं हैं, क्योंकि मीन राशि मे राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अत: राहु मीन मे शत्रुवत् अशुभ फल देगा। यहा तृतीय स्थान में राहु वृष राशि मे उच्च का होगा। 'त्रिषट् एकादशे राहु' के अनुसार यहा राहु 'राजयोग कारक' है। जातक धनवान एव पराक्रमी होगा। जातक साहसी होगा एवं प्रबल पुरुषार्थ व हिम्मत से आगे बढ़ेगा। मित्र मददगार साबित होंगे।

दृष्टि—तृतीयस्थ राहु की दृष्टि नवम स्थान (वृश्चिक राशि) पर होगी। जातक भाग्यशाली होगा।

निशानी—विषम परिस्थितियों में भी जातक आगे बढ़ेगा। जीवन का स्तर उच्च का होगा

दशा—राहु की दशा-अतर्दशा में शुभ फल मिलेंगे। जातक का पराक्रम बढ़ेगा। मित्र भाग्योदय में मददगार साबित होंगे

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य भाइयों में विवाद-विद्वेष उत्पन्न करेगा।
2. **राहु+चंद्रमा**—राहु के साथ चद्रमा उच्च का होने से जातक का पराक्रम तेज होगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मगल होने से जातक के पास बैंक-बैलेंस होगा एव भाइयों मे भी संबंध बना रहेगा।

4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध जातक को भाई-बहन दोनो का सुख देगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह वृष राशि में होंगे। तृतीयस्थ गुरु शत्रु राशि में, तो राहु यहां अपनी उच्च राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। राहु यहां राजयोग देगा। जातक महान पराक्रमी होगा परन्तु भाई व कुटम्बियों मे विद्वेष होगा।
6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र भाइयों में विवाद करायेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि भाई कुटम्बियों मे मनमुटाव पैदा करेगा।

मीनलग्न में राहु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
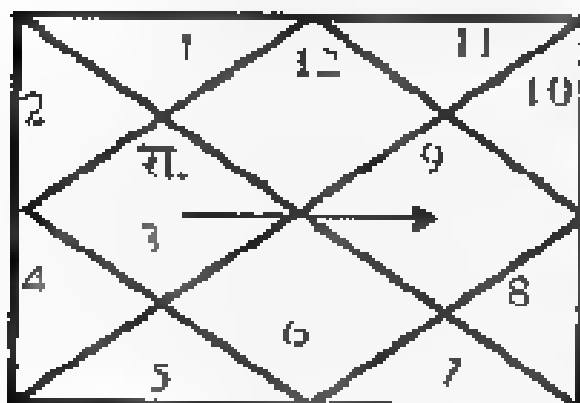
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि मीन राशि में राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अतः राहु मीन मे शत्रुवत् अशुभ फल देगा यहा चतुर्थ स्थान में राहु मिथुन में उच्च का माना गया है। ऐसा जातक धनवान होगा पर सुखी नहीं होगा। जीवन में भौतिक उपलब्धिया मिलती रहेगी। पर परेशानियां भी बढती रहेगी पिता स विचार नहीं मिलेंगे। परन्तु भूमि भवन एव वाहन का सुख मिलेगा

दृष्टि—चतुर्थस्थ राहु की दृष्टि दशम स्थान (धनु राशि) पर होगा फलतः जातक का राज सरकार, राजनीति में विशिष्ट प्रभाव होगा।

निशानी—जातक के दो माता या दो पत्नी सभव है।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य होने से जातक को माता-पिता का सुख एकदम न्यून रहेगा।
2. **राहु+चंद्रमा**—राहु के साथ चंद्रमा माता को बीमार करेगा या अल्पायु देगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल भौतिक सुखों में व्यवधान उत्पन्न करेगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजातुल्य पराक्रमी होगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह मिथुन राशि में होंगे गुरु यहा शत्रु राशि में होगा जबकि राहु केन्द्रस्थ होकर अपनी मूलत्रिकोण राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी होगा। जातक भौतिक सुखों की प्राप्ति हेतु अनर्गल व्यय करेगा। मकान व वाहन के रखरखाव में रुपया खर्च होगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र वाहन दुर्घटना करायेगा

7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से नौकर चोरी करके भाग जायेगा। नौकर दगाबाज होगे।

मीनलग्न में राहु की स्थिति पंचम स्थान में
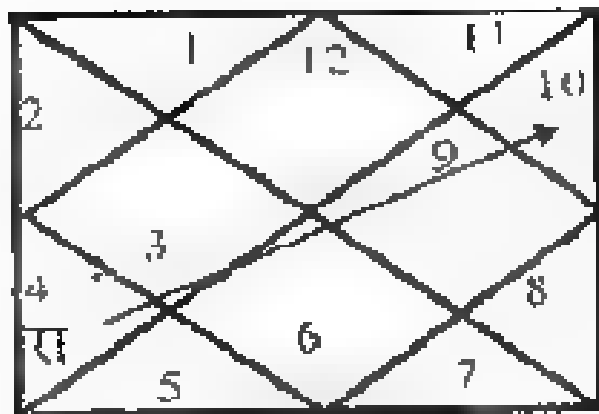
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि मीन राशि मे राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है।.अतः राहु मीन में शत्रुवत् अशुभ फल देगा। राहु यहा पंचमस्थान में कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को प्रारम्भिक विद्याध्ययन में रुकावट आयेगी। संतान पक्ष में भी दिक्कतें आयेगी। प्रथमतः सतान होगी नहीं। यदि हई तो नष्ट होने के अवसर ज्यादा है। पूजा पाठ एवं दृष्ट बल से सतान सुख मिलेगा

दृष्टि–पंचमस्थ राहु की दृष्टि एकादश स्थान (मकर राशि) पर होगी। ऐसे जातक को व्यापार-व्यवसाय मे नुकसान होगा। यदि व्यापार शनि से सबंधित है तो निश्चित ही बड़ा नुकसान होगा।

निशानी–जातक के प्रथम कन्या होगी तथा संतान से अपेक्षित सहयोग प्रेम व स्नेह नहीं मिलेगा।

दशा–राहु की दशा-अतर्दशा अशुभफल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य होने से ज्येष्ठ संतति हाथ नहीं लगेगी।

2. **राहु+चंद्रमा**–राहु के साथ स्वगृही चंद्रमा, जातक को प्रारंभिक संघर्ष के बाद उच्च विद्या दगा।

3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ नीच का मंगल पुत्र संतति में बाधक है। एक दो गर्भपात संभव है।

4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध प्रारम्भिक शिक्षा मे बाधक है

5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह कर्क राशि मे होंगे। गुरु यहां अपनी उच्च राशि में होगी, तो राहु अपनी परम शत्रु राशि में स्थित होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। जातक के विद्याध्ययन मे प्रारम्भिक रुकावटें आयेगी। पुत्र सतति की प्राप्ति हेतु चिंता रहेगी। सतान की चिता जीवनपर्यन्त बनी रहेगी।

6. राहु+शुक्र–राहु के साथ शुक्र पुत्र संतान की हानि करायेगा।
7. राहु+शनि–राहु के साथ शनि व्यापार में बाधक है।

मीनलग्न में राहु की स्थिति षष्टम् स्थान में
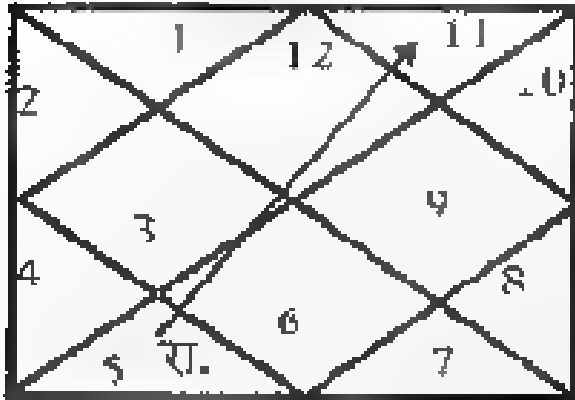
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं हैं क्योंकि मीन राशि मे राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अतः राहु मीन मे शत्रुवत् अशुभ फल देगा यहां छठे स्थान में राहु सिंह (शत्रु) राशि में स्वगृही होगा। 'त्रिषट एकादश राहु' सूत्र के अनुसार यहां विपरीतराज योग बनता है। जातक सुखी, धनवान, कीर्तिवान् होता है ऐसा जातक शत्रुहन्ता होता है। ऐसा जातक प्रतिकूल परिस्थितियो का सामना करता हुआ आगे बढ़ता है। शत्रु का समूल नाश करता है फिर भी शत्रुओं में दैहिक व मानसिक कष्ट पाता है।

दृष्टि–छठे भाव मे स्थिति राहु की दृष्टि व्यय भाव (कुम्भ राशि) पर होगी। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा।

निशानी–ऐसा जातक आक्रामक नीति में विश्वास रखता है। तामसिक मनोवृत्ति वाला होता है। शत्रु को छोड़ता नही। जिद्द का पक्का होता है।

दशा–राहु की दशा-अतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध -

1. **राहु+सूर्य**–यहा सूर्य साथ में होने से जातक को 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' का फायदा मिलेगा। जातक धनी होगा। सभी भौतिक सुविधाएं होगी पर नेत्र रोग व गुदा के रोग अवश्य होंगे।
2. **राहु+चंद्रमा**–चंद्रमा साथ होने से जातक का चरित्र खराब होगा। पुत्र कपूत होंगे।
3. **राहु+मंगल**–राहु के सथ मंगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' को उत्पन्न करता है। जातक का भाग्योदय हेतु संघर्ष करना पड़ेगा
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध 'विवाहभंग योग' एवं 'सुखहीन योग' बनाता है। जातक के विवाह मे बाधा आयेगी। सुख प्राप्ति हेतु जातक तरसेगा।
5. **राहु+गुरु**–यहा दोनों ग्रह सिंह राशि में होगे। गुरु यहा अपनी मित्र राशि में, तो राहु अपनी परम शत्रु राशि में स्थित होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। गुरु के कारण यहां 'लग्नभंग योग' एवं 'राज्यभंग योग' बनेगा। परन्तु यहा

'राजयोग' देगा। जातक के परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। बदनामी पीछा नहीं छोड़ेगी। राजदंड संभव है।

6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र सरल नामक 'विपरीतराज योग' बनाता है जातक धनी मानी एवं साधन सम्पन्न होगा।

7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनाता है। जातक धनी मानी एवं वैभव सम्पन्न होगा।

मीनलग्न में राहु की स्थिति सप्तम स्थान में
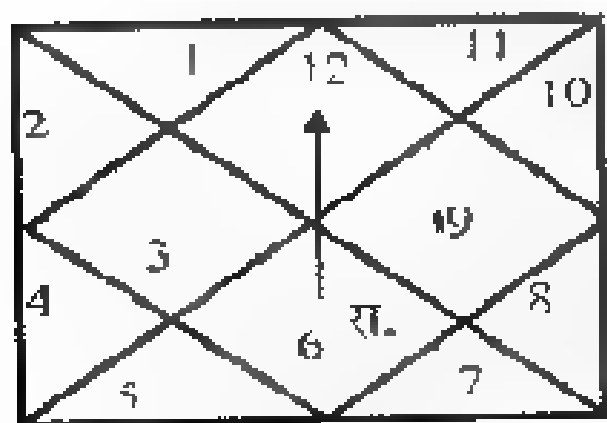
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि मीन राशि में राहु नीच का माना गया है, यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अतः राहु मीन में शत्रुवत् अशुभ फल देगा सप्तम स्थानगत राहु यहा कन्या राशि मे स्वगृही होगा। ऐसा जातक स्वतंत्र विचार वाला होगा। अपनी मनपसंद शादी करता है। वासना तीव्र होती है तथा पर युवती में रत रहने की मनोवृत्ति तीव्र होती है, जिससे दाम्पत्य जीवन बिखरता है।

दृष्टि—सप्तमस्थ राहु की दृष्टि लग्न स्थान (मीन राशि) पर होगी फलतः परिश्रमपूर्वक किये गये प्रयासों में जातक को बराबर सफलता मिलेगी।

निशानी—यदि शुभ ग्रहों की युति या दृष्टि संबंध न हो तो जातक के दो विवाह होंगे।

दशा—राहु की दशा-अंतर्दशा मिश्रित फल देगी।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य विवाह विच्छेद करायेगा।
2. **राहु+चंद्रमा**—राहु के साथ चंद्रमा पत्नी सुख देगा, संतान सुख भी देगा। पर पत्नी बीमार रहेगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल जातक का विलम्ब विवाह करायेगा। पति पत्नी में नोक झोंक होती रहेगी।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह कन्या राशि में होंगे, गुरु यहां शत्रु राशि मे तो राहु अपनी मित्र राशि में स्वगृही होने से 'चाण्डाल योग' बना। पत्नी व ससुराल

से वैमनस्य रहेगा। परिश्रम सार्थक होगा पर रोजी-रोजगार के साधन धीमी गति के रहेंगे.

6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र जातक को गलत औरतों मे संबंध करायेगा।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि पत्नी की मृत्यु करायेगा।

मीनलग्न में राहु की स्थिति अष्टम स्थान में
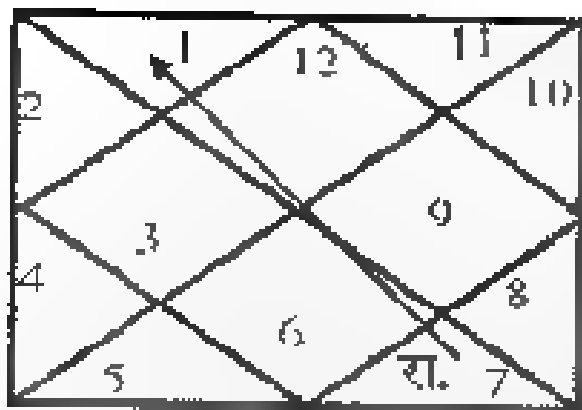
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि मीन राशि में राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अतः राहु मीन मे शत्रुवत् अशुभ फल देगा। यहा अष्टम भाव म राहु तुला (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक वात रोगी होगा। बीमार रहेगा। जातक के पिता की सम्पत्ति नष्ट होगा। भयानक शत्रु द्वारा हमला वाहन दुर्घटना से प्राणों का भय रहेगा। जातक को शत्रु परेशान करेंगे। धन के अत्यधिक खर्च के कारण जातक को परेशानी रहेगी।

दृष्टि—अष्टमस्थ राहु की दृष्टि धन भाव (मेष राशि) पर होगी जातक कर्जदार होगा

निशानी—जातक को कुटम्बियो का सुख नहीं मिलेगा।

दशा—राहु की दशा-अतर्दशा मे अनिष्टफलों की प्राप्ति होगी।

राहु का 'अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—हर्षनामक 'विपरीतराज योग' के कारण जातक साधन सम्पन्न एवं धनी होगा पर राजदण्ड जरूर मिलेगा। दाये टांग की हड्डी टूटेगी दुर्घटना का योग प्रबल है। नेत्र पीड़ा होगी।
2. **राहु+चंद्रमा**—राहु के साथ चद्रमा 'संतति हीन योग' बनाता है। जातक के जीवन मे विद्या व सतान को लेकर चिंता रहेगी।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मगल 'द्विभार्या योग' कराता है। जीवन में दूसरी स्त्री से संबंध रहेगा।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध गृहस्थ सुख मे बाधक है। जीवनसाथी की मृत्यु सभव।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनों ग्रह तुला राशि मे होंगे। गुरु यहा शत्रु राशि मे, तो राहु अपनी मित्र राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। गुरु के कारण यहां

'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बना। जातक को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। राजदण्ड सम्भव है। बदनामी पीछा नहीं छोड़ेगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र 'सरलनामक' 'विपरीतराज योग' करायेगा। जातक धनी, मानी अभिमानी होगा पर गलत स्त्रियों के चक्कर में रहेगा।
7. **राहु+शनि**–शनि यहां उच्च का होकर विमल नामक 'विपरीतराज योग' की सृष्टि करेगा। पर जातक की दुर्घटना व अकालमृत्यु का भय बना रहेगा।

मीनलग्न में राहु की स्थिति नवम् स्थान में
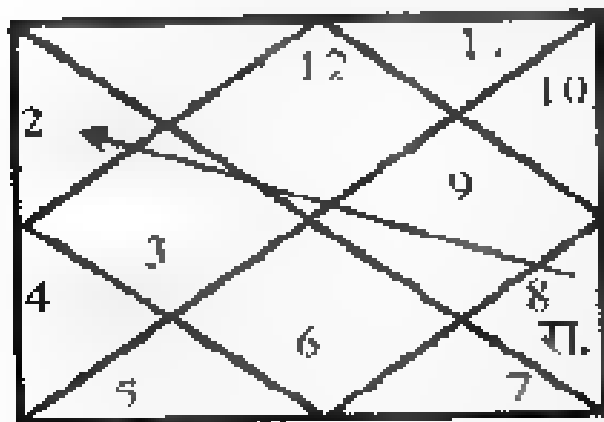
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि मीन राशि में राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अतः राहु मीन मे शत्रुवत् अशुभ फल देगा। राहु यहां नवम स्थान मे वृश्चिक (शत्रु) राशि में होगा। ऐसा जातक साहसी, पराक्रमी, परिश्रमी, दूरदर्शी, समाज व जाति का नेता होगा, जातक अपने शत्रुओं का नाश करने में सक्षम-समर्थ होगा।

दृष्टि–नवमस्थ राहु की दृष्टि पराक्रम स्थान (वृषराशि) पर होगी।

निशानी–जातक नास्तिक विचारा वाला होगा। जातक रण क्षेत्र में शौर्यवान् होगा। छोटे भाई से कम बनेगी।

दशा–राहु की दशा अंतर्दशा में शुभ फल मिलेंगे.

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य भाग्योदय में बाधक है।
2. **राहु+चंद्रमा**–राहु के साथ चंद्रमा नीच का होते हुए भी जातक का भाग्योदय शीघ्र होगा, विदेश में कमायेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक ऐश्वर्यशाली व वैभवशाली जीवन जीयेगा पर लड़ाकू होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक का भाग्योदय विवाह के बाद करायेगा जातक पराक्रमी होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहा दोनों ग्रह वृश्चिक राशि में होंगे। गुरु यहां मित्र राशि में है, तो राहु यहा नीच राशि में होने से 'चाण्डाल योग' बना। जातक को भाग्योदय हेतु काफी परेशानी-दिक्कतो का सामना करना पड़ेगा। परिश्रम सार्थक होंगे परन्तु सतत संघर्ष से मुक्त नहीं है।

6. **राहु+शुक्र** -राहु के साथ शुक्र जातक का भाग्योदय शीघ्र करायेगा पर स्त्री-मित्र से धोखा है।
7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि जातक को उन्नति मार्ग की ओर आगे बढ़ायेगा पर रुकावट के साथ।

मीनलग्न में राहु की स्थिति दशम स्थान में
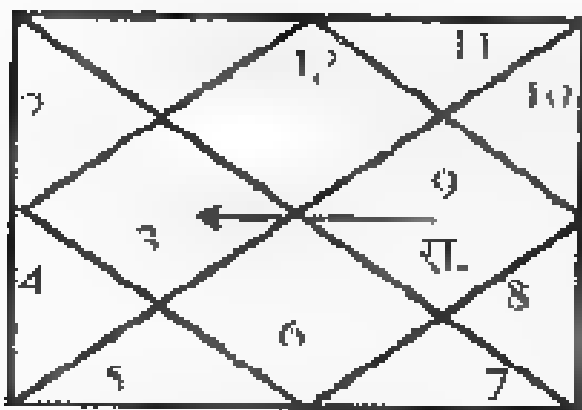
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि मीन राशि मे राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अतः राहु मीन में शत्रुवत् अशुभ फल देगा। यहां दशम स्थान में राहु धनु (शत्रु) राशि मे होगा। राहु यहां नीच का होने से जातक का आत्मविश्वास, मनोबल कमजोर रहेगा। जातक शास्त्रज्ञाता एवं विद्वान होगा। यशस्वी होगा। जातक की उन्नति, भाग्योदय जन्म भूमि में दूरस्थ देशों में होगी

दृष्टि—दशमस्थ राहु की दृष्टि चतुर्थ भाव (मिथुन राशि) पर होगी। जातक को भौतिक सुखों की प्राप्ति में बाधा आयेगी।

निशानी—जातक परम स्वार्थी एवं षड्यन्त्रकारी होंगे। संतान कमाती होगी।

दशा—राहु की दशा अंतर्दशा में मानभंग होगा।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध—

1. **राहु+सूर्य**—राहु के साथ सूर्य राजकाज में बाधक तत्व का काम करेगा। कोर्ट से सजा संभव।
2. **राहु+चंद्रमा**—राहु के साथ चंद्रमा जातक उन्नति के साथ आगे बढ़ेगा पर सदैव चिंताग्रस्त रहेगा।
3. **राहु+मंगल**—राहु के साथ मंगल, जातक महान् पराक्रमी एवं महत्वाकांक्षी होगा। मंगल का दिक्बली होकर उच्चाभिलाषी है। जातक के सभी शत्रु परास्त होंगे।
4. **राहु+बुध**—राहु के साथ बुध जातक को अनेक वाहन देगा। मकान देगा।
5. **राहु+गुरु**—यहां दोनो ग्रह धनु राशि मे होंगे। गुरु यहां स्वगृही होने से 'हंस योग' बनायेगा। जबकि नीच का होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। जातक राजा तुल्य पराक्रमी एवं प्रभुत्व सम्पन्न होगा, परन्तु शक्ति व अधिकारों का दुरुपयोग करेगा। पिता से नहीं निभेगी।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र होने से जातक के पास अनेक वाहन होंगे पर दुर्घटना का भय रहेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि जातक को व्यापार में हानि करायेगा।

मीनलग्न में राहु की स्थिति एकादश स्थान में
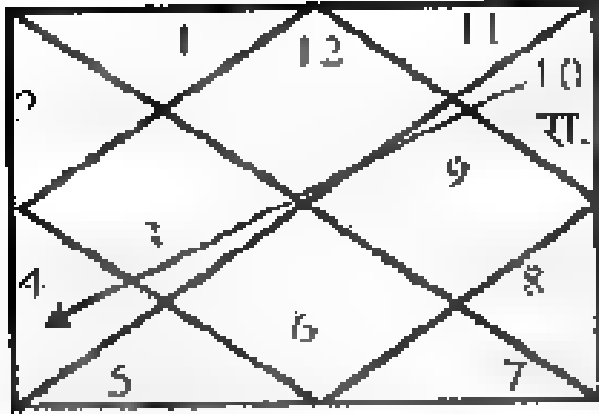
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं है क्योंकि मीन राशि मे राहु नीच का माना गया है यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अतः राहु मीन मे शत्रुवत् अशुभ फल देगा। यहां एकादश स्थान मे राहु मकर (मित्र) राशि में होगा। जातक धनवान होगा। संतान उत्तम होगी यह राहु 'त्रिषट् एकादशे राहु' 'राजयोग कारक' है। जातक को अचानक धन मिलेगा। जातक हिम्मत नहीं हारेगा। युक्ति बल से अपना कार्य निकालने मे सफल होगा।

दृष्टि–एकादश भाव स्थित राहु की दृष्टि पंचम स्थान (कर्क राशि) पर होगी। जातक रहस्यमय एवं गढ़ विद्याओं का जानकार होगा।

निशानी–जातक म्लेच्छों निम्न जाति के लोगों से धन कमायेगा.

दशा–राहु की दशा-अंतर्दशा में शुभ फल मिलेंगे

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य व्यापार में हानि करायेगा, बड़े भाई से नुकसान है
2. **राहु+चंद्रमा**–राहु के साथ चंद्रमा जातक उच्च शिक्षा प्राप्त करेगा पर चिन्ताग्रस्त रहेगा।
3. **राहु+मंगल**–राहु के साथ मंगल जातक उद्योगपति व करोड़पति होगा।
4. **राहु+बुध**–राहु के साथ बुध जातक पढ़ा-लिखा होगा बुद्धिजीवी एवं कूटनीतिज्ञ होगा।
5. **राहु+गुरु**–यहां दोनों ग्रह मकर राशि में होंगे। गुरु यहां नीच का होकर दुःखी होगा तो राहु सम (मित्र) राशि का होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। पर यहां 'राजयोग' देगा। व्यापार व्यवसाय में नुकसान होगा जातक को रोजी-रोजगार हेतु दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा फिर भी जातक राजसी ठाट-बाट से रहेगा।

6. **राहु+शुक्र**–राहु के साथ शुक्र जातक व्यापारी होगा पर व्यापर में कष्ट करेगा।
7. **राहु+शनि**–राहु के साथ शनि होने से जातक के व्यापार में उतार-चढ़ाव आते रहेगे

मीनलग्न में राहु की स्थिति द्वादश स्थान में
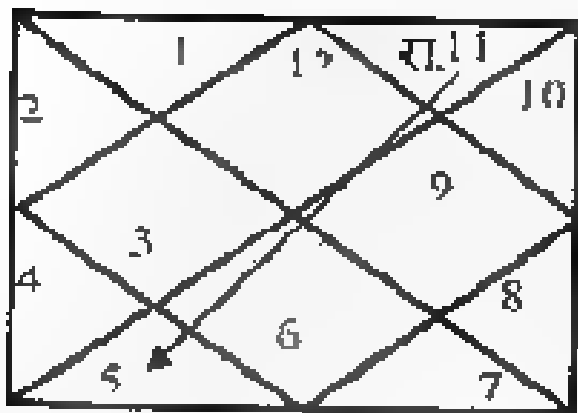
मीनलग्न वालों के लिए राहु शुभ नहीं हैं क्योंकि मीन राशि में राहु नीच का माना गया है। यह लग्नेश गुरु का शत्रु है। अतः राहु मीन में शत्रुवत् अशुभ फल देगा। यहां द्वादश स्थान में राहु कुम्भ, मूलत्रिकोण राशि में होगा। जातक की नेत्र रोग होगा जातक पापकर्म में रुचि लेगा। मृत्युकाल बिगड़ेगा। मृत्यु के बाद गति अशुभ। कुंभ राशि में राहु अशुभफल नहीं देगा। अतः शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा परोपकार धार्मिक कार्य में रुपया खर्च करेगा।

दृष्टि–द्वादशस्थ राहु की दृष्टि छठे स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः खराब लोगो की सौबत होगी।

निशानी–जातक परदेश भूमि मे धर्नाजक करेगा। विदेश यात्रा करेगा।

दशा–राहु की दशा-अतर्दशा में खर्च की चिता एवं मानसिक परेशानी है।

राहु का अन्य ग्रहों से सम्बन्ध–

1. **राहु+सूर्य**–राहु के साथ सूर्य नेत्रपीड़ा देगा. जातक को दिवा स्वप्न आयेंगे। बुरे विचार आयेंगे। हर्षनामक 'विपरीतराज योग' के कारण।
2. **राहु+चंद्रमा**–राहु के साथ चंद्रमा 'सतानहीन' योग बनायेगा। जातक विद्या एवं संतान सबंधी न्यूनता अनुभव करेगा.
3. **राहु+बुध**–राहु के साथ मगल 'धनहीन योग', 'भाग्यहीन योग' एवं मागलिक योग बनायेगा। जातक के गृहस्थ जीवन में भारी संघर्ष रहेगा।
4. **राहु+मंगल**–राहु के साथ बुध 'सुखहीन योग', 'विलम्बविवाह योग' बनाता है जातक को यात्रा से कष्ट हागा। नींद कम आयेगी।
5. **राहु+गुरु** यहां दोनों ग्रह कुम्भ राशि में होंगे। गुरु यहां दुःखी होकर सम राशि मे होगा तो राहु अपनी मूल त्रिकोण राशि में हर्षित होकर 'चाण्डाल योग' बनायेगा। गुरु के कारण यहा 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभंग योग' बनेगा। जातक

को परिश्रम का फल नहीं मिलेगा। राजदण्ड मिलेगा। बदनाम पीछा नही छोड़ेगी। यात्राए नुकसानदायक रहेगी। अकाल मृत्यु सभव है।

6. **राहु+शुक्र**—राहु के साथ शुक्र सरल नामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी-मानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा।

7. **राहु+शनि**—राहु के साथ शनि जातक को कर्जदार बनायेगा। शनि के कारण विमल नामक 'विपरीतराज योग' बना फलस्वरूप जातक धनी मानी एवं वैभवशाली जीवन जीयेगा।

❑❑❑

मीनलग्न में केतु की स्थिति

मीनलग्न में केतु की स्थिति प्रथम स्थान में
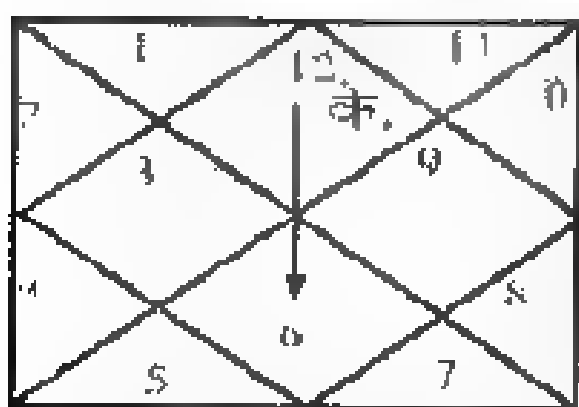
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि मीन राशि में केतु मूलत्रिकोण माना गया है, जो उच्च के ग्रह जैसा शुभफल देगा। ऐसा जातक महत्वाकांक्षी होता है। जातक का व्यक्तित्व आकर्षक होगा जातक की पत्नी बीमार रहे जातक लड़ाईखोर व दम्भी होगा। जातक बड़ी हिम्मत के साथ अपने संघर्षपूर्ण जीवन को बीताता है।

दृष्टि—लग्नस्थ केतु का प्रभाव सप्तम स्थान (कन्या राशि) पर होगी। फलतः गृहस्थ सुख में बाधा बनी रहेगी

निशानी—ऐसा जातक दूसरों को दुःखी करके आनन्दित होता है।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा शुभफल देगी.

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य होने से जातक के गुप्त शत्रु, जातक की छवि बिगाड़ने की कोशिश करेंगे।
2. **केतु+चंद्रमा**—केतु के साथ चंद्रमा जातक को गुप्त विद्याओं का जानकार बनायेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल होने से जातक पराक्रमी होगा लड़ाकू होगा
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध नीच का होने से जातक की बुद्धि निम्नगामी होगी सोच का स्तर हल्का होगा। बदले की भावना ज्यादा रहेगी।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु होने से 'हंस योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं ऐश्वर्यसम्पन्न होगा।

6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र होने से 'मालव्य योग' बनेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं विलासी जीवन जीयेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि होने से जातक को आर्थिक विषमता एवं शारीरिक विषमता से सामना करना पड़ेगा।

मीनलग्न में केतु की स्थिति द्वितीय स्थान में
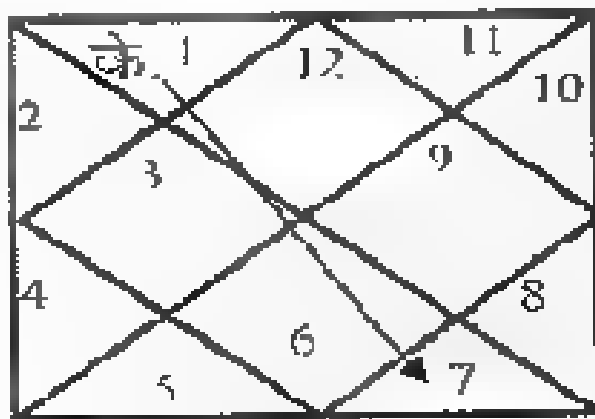
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि लग्नेश गुरु का मित्र है। यहा द्वितीय स्थान में केतु मेष (मित्र) राशि में होगा। ऐसा जातक धन संग्रह करने मे कठिनाई का अनुभव करेगा। जातक कठिन परिश्रम करेगा। जातक की भाषा कड़वी होगा। कभी कभी आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति होगी। अपनी तीव्र ग्राही बुद्धि के कारण जातक परेशानियों पर विजय प्राप्त करने में सफल होगा।

दृष्टि—द्वितीयस्थ केतु की दृष्टि अष्टम स्थान (तुला राशि) पर होगी। जातक को धंधे में अपयश मिलेगा।

निशानी—जातक को नेत्र रोग।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा शुभ फल देने वाली साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य उच्च का होने से जातक धनी तो होगा पर आर्थिक उतार-चढ़ाव आता रहेगा।
2. **केतु+चंद्रमा**—केतु के साथ चद्रमा होने से जातक धनवान होगा एवं विद्यावान भी होगा पर चिंताग्रस्त रहेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मगल जातक को महाधनी बनायेगा जातक के पास धन आयेगा व खर्च होता चला जायेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध होने से जातक बुद्धि बल से धनार्जन करेगा।
5. **केतु+गुरु** केतु के साथ गुरु होने से जातक स्व. पुरुषार्थ से उत्तम धनार्जन करेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र होने से जातक धन का संग्रह ढंग से नहीं कर पायेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि होने से जातक के धन संग्रह में रुकावट रहेगी।

मीनलग्न में केतु की स्थिति तृतीय स्थान में
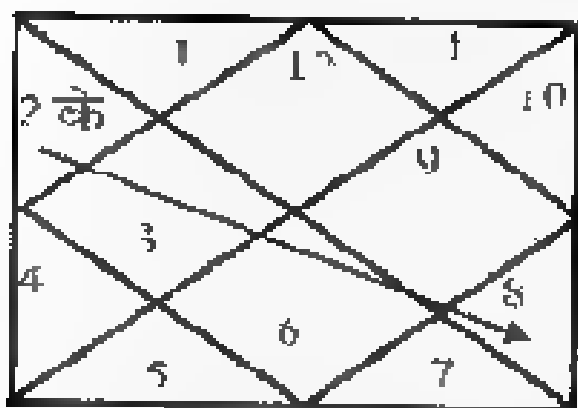
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि लग्नेश गुरु का मित्र है. यहा तृतीय स्थान में केतु वृष (नीच) राशि का है। ऐसा जातक अत्यधिक पराक्रमी, हिम्मत वाला होता है जातक कीर्तिवान् होता है। अपने सतत पुरुषार्थ के द्वारा जीवन की सभी समस्याओं पर सफलता प्राप्त करने में कामयाब होता है।

दृष्टि–तृतीयस्थ केतु की दृष्टि भाग्यभवन (वृश्चिक राशि) पर होगी, फलतः मित्रों की मदद से जातक का भाग्योदय होगा

निशानी–जातक उदार मनोवृत्ति वाला समाजसेवी होगा।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा में भाग्योदय के अवसर मिलेंगे मित्रों की मदद से कार्य बनेगा।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य जातक को कुटम्बियों से विवाद करायेगा
2. **केतु+चंद्रमा**–केतु के साथ चद्रमा होने से जातक को परिजनों मित्रों से लाभ होगा। समाज में कीर्ति बनी रहेगी
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मगल होने से भाइयों में सबंध ठीक रहेंगे। पिता से धन लाभ होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक को भाई-बहनो का सुख रहेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु होने से परिश्रम का लाभ मिलेगा
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से मित्रों से लाभ रहेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से परिजनों मे विवाद रहेगा।

मीनलग्न में केतु की स्थिति चतुर्थ स्थान में
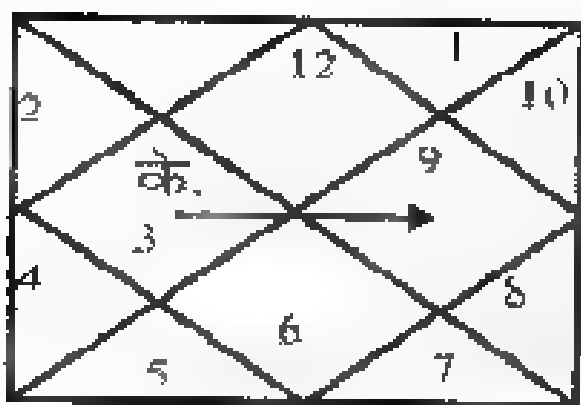
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है, क्योंकि लग्नेश गुरु का मित्र है यहा तृतीय स्थान में केतु मिथुन राशि में नीच का होगा जातक माता के पक्ष में कष्ट प्राप्त करेगा। भूमि, भवन मकान व घरेलू सुख में कमी रहेगी। ऐसा जातक घोर संकट मे भी

विचलित नहीं होता हिम्मत के साथ प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल करने की विशेष योग्यता इस जातक में होगी।

दृष्टि -चतुर्थभावगत केतु की दृष्टि दशम स्थान (धनु राशि) पर होगी। फलतः जातक मे अन्तप्रेरणा की विशेष शक्ति होगी।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मध्यम फल देगी।

केतु का अन्य ग्रहो से संबंध–

1. **केतु+सूर्य** केतु के साथ सूर्य माता को बीमारी देगा। नौकरों से कष्ट देगा। वाहन से दुर्घटना संभव है।
2. **केतु+चंद्रमा**–केतु के साथ चद्रमा भौतिक सुखों मे वृद्धि करेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मगल भूमि लाभ देगा। जातक धनी एवं भाग्यशाली होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' बनायेगा। जातक पराक्रमी होगा तथा राजनीति में उसका दबदबा रहेगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र होने से घर-परिवार में किसी स्त्री को लेकर विवाद रहेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि होने से घर के नौकर दगाबाज होकर, चोरी करके भाग जायेगा।

मीनलग्न में केतु की स्थिति पचम स्थान में
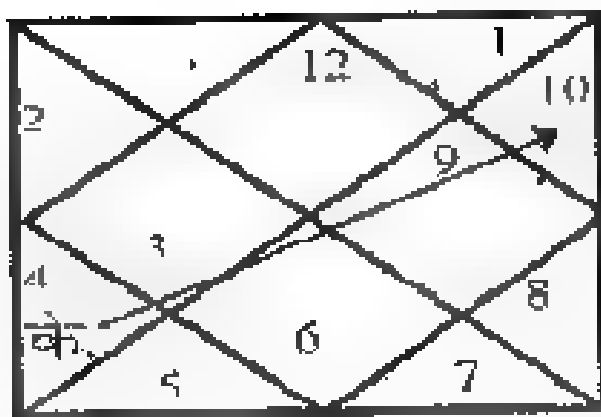
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि लग्नेश गुरु का मित्र है। यहां पंचमस्थ केतु कर्क (शत्रु) राशि में होगा। ऐसे जातक को सतान पक्ष मे कष्ट व कमी महसूस होगी. विद्याध्ययन के क्षेत्र में प्रारम्भिक रुकावटें आयेगी. धन नाश एवं संतान नाश की प्रबल संभावना बनी रहेगी।

दृष्टि–पंचमस्थ केतु की दृष्टि एकादश स्थान (मकर राशि) पर होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य, पंचम स्थान मे प्रथम संतति का नाश करेगा।
2. **केतु+चंद्रमा**–केतु के साथ चंद्रमा जातक को प्रारम्भिक रुकावट के बाद उच्च शैक्षणिक उपाधि दिलायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल नीच का होने से जातक लड़ाकू होगा। उसकी संतति भी लड़ाकू होगी। पर जातक धनवान होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक बुद्धिमान विद्यावान् होगा, परन्तु संतानें शल्यचिकित्सा द्वारा प्राप्त होगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु उच्च का शैक्षणिक उपाधि प्रदान करेगा,
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र एकाध संतति की अकाल मृत्यु करायेगा। जातक को कन्या संतति अधिक होगी।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि एकाध संतति की रोग द्वारा मृत्यु करायेगा,

मीनलग्न में केतु की स्थिति षष्टम् स्थान में
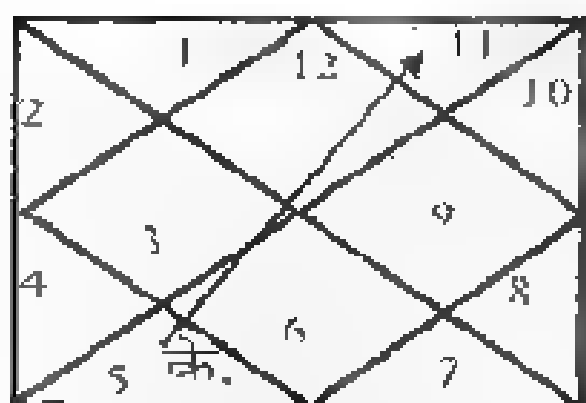
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। यहा छठे स्थान में केतु सिंह मूलत्रिकोण राशि मे होगा। ऐसा जातक शत्रुपक्ष का निरन्तर विजय प्राप्त करता है। जहां प्रेम से काम नहीं सुलझता वहा ऐसा जातक लड़ाई-झगड़े में सफलता प्राप्त कर लेगा। जातक हिम्मत व बहादुरी से उन्नति पथ पर आगे बढ़ना हो ऐसा जातक विपरीत लिंगियों को अपनी ओर आकर्षित करने मे पूर्ण सफल होगा।

दृष्टि–छठे स्थान में स्थित केतु की दृष्टि व्यय भाव (कुंभ राशि) पर होगी, फलत: जातक खर्चीले स्वभाव का होगा

निशानी–जातक का कोई गंभीर रोग होगा

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा मे कर्जा उतरेगा। जातक स्थाई संपत्ति खरीदेगा।

केतु का अन्य ग्रहो से संबंध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' कराता है। जातक धनी-मानी, अभिमानी एवं ऐश्वर्यसम्पन्न होगा।

2. **केतु+चंद्रमा**–केतु के साथ चद्रमा 'संततिहीन योग' कराता है। जातक को विद्या एवं सतान की तकलीफ रहेगी।
3. **केतु+मंगल** केतु के साथ मगल 'धनहीन योग' एवं 'भाग्यहीन योग' बनाता है। जातक को धनप्राप्ति हेतु काफी परेशानियो का सामना करना पड़ेगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध 'सुखहीन योग' 'विलम्बविवाह योग' बनाता है जातक के गृहस्थ सुख में कमी रहेगी।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु 'लग्नभंग योग एवं 'राजभग योग' बनता है।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र सरलनामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी, मानी अभिमानी एवं ऐश्वर्यशाली होगा
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि विमलनामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा, ऐसा जातक धनी, मानी अभिमानी होकर एवं वैभवशाली जीवन जायेगा।

मीनलग्न में केतु की स्थिति सप्तम स्थान में
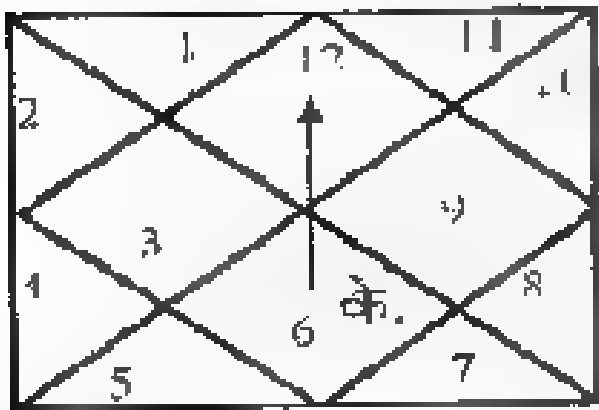
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। यहां केतु सप्तम स्थान में केतु कन्या राशि में होगा। ऐसा जातक स्त्री एव व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ अशांति एवं कठिनाई अनुभव करेगा। नौकरी म तकलीफ होगी। केतु के साथ अन्य पापग्रह की युति या दृष्टि हो तो जातक पत्नी का अकाल मृत्यु होगी अथवा विवाह विच्छेद की नौबत आयेगी।

दृष्टि–सप्तमस्थ केतु की दृष्टि लग्न स्थान (मीन राशि) पर होगी। फलत: ऐसा जातक अनेक प्रकार के धधे बदलते रहेगा।

निशानी–जातक को मूत्राशय के रोग होंगे।

दशा–केतु की दशा अंतर्दशा

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य वैवाहिक सुख में बाधक है।
2. **केतु+चंद्रमा**–केतु के साथ चद्रमा पत्नी सुख देगा। संतान सुख भी देगा पर पत्नी से कुछ चिंता बनी रहेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक के वैवाहिक सुख में विलम्ब का द्योतक है।

4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध 'भद्र योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी एवं यशस्वी होगा.
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु परिश्रम का लाभ देगा। जातक को राज (सरकार) से मान्यता मिलेगी।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को कामी बनायेगा। जातक सैक्सी होगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि पत्नी की मृत्यु, पति के रहते करायेगा।

मीनलग्न में केतु की स्थिति अष्टम स्थान में

12 11 10 2 3 9 4 8 6 5 के 7
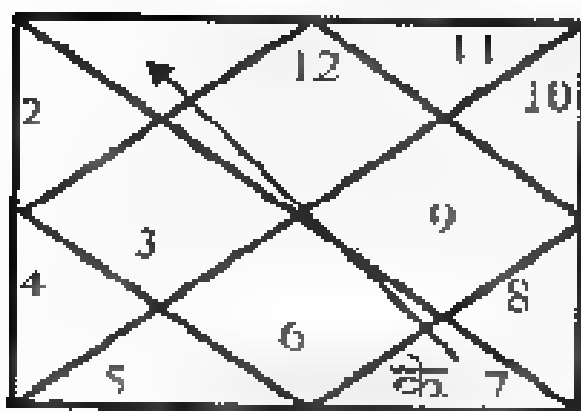
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि केतु लग्नेश गुरु का मित्र है। यहां अष्टम स्थान में केतु तुला (मित्र) राशि में होगा। ऐसे जातक को अनेक बार मृत्यु तुल्य संकटों का सामना करना पड़ेगा पर बचाव होता रहेगा। जीवन में अनेक तकलीफें, कष्ट व दिक्कतें आयगीं पर चिंता, संघर्ष का धैर्यपूर्वक मुकाबला करता हुआ जातक उन्नति पथ पर आगे बढ़ेगा।

दृष्टि–अष्टमस्थ केतु की दृष्टि धन भाव (मेष राशि) पर होगी। जातक का धनरोग एवं शत्रुनाश पर खर्च होगा।

निशानी–अचानक दुर्घटना की संभावना है।

दशा–केतु की दशा-अंतर्दशा कष्टदायक साबित होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य निश्चय ही दुर्घटना देगा।
2. **केतु+चंद्रमा**–केतु के साथ चंद्रमा 'संतानहीन योग' बनायेगा। जातक को संतति सुख में अवरोध महसूस होगा। विद्या में भी बाधा आयेगी।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल जातक का विजातीय स्त्री से प्रेम संबंध करायेगा
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध गृहस्थ सुख में वैमनस्यता उत्पन्न करेगा। बुध के कारण 'सुखहीन योग' एवं 'विलम्बविवाह योग' बनेगा।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' 'राजभंग योग' बनेगा। जातक को सरकारी दण्ड मिल सकता है।

6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र सरलनामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी-मानी अभिमानी एवं ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जायेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक को दुर्घटना का भय रहेगा।

मीनलग्न में केतु की स्थिति नवम स्थान में
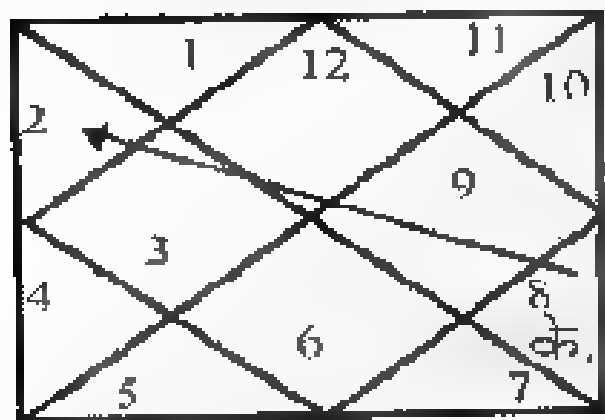
मीनलग्न वालो के लिए केतु शुभ है क्योंकि केतु लग्नेश गुरु का मित्र है यहां नवम स्थान मे केतु वृश्चिक (मित्र) राशि मे होगा। ऐसा जातक भाग्यपक्ष में कठिनाइयों का अनुभव करते हुए भी विचलित नही होता। पिता की सम्पत्ति का वांछित हिस्सा नहीं मिलता। फिर भी जातक निराश नहीं होता। धार्मिक कार्यक्रम व अनुष्ठानों के संचालन मे रुकावटें आती है। कुटुम्ब व समाज के लिए काम करते हुए भी पूरा यश नहीं मिल पाता।

दृष्टि—नवमस्थ केतु की दृष्टि तृतीय भाव (वृष राशि) पर होने से भाई-बहनों व कुटुम्ब में कम बनेगी।

निशानी—जातक किसी मुसीबत में फसकर, बाहर निकलेगा।

दशा—केतु की दशा अंतर्दशा रुकावट के साथ उन्नति देगी। केतु की दशा में पिता की मृत्यु संभव।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य जातक का भाग्योदय शीघ्र करायेगा।
2. **केतु+चंद्रमा**—केतु के साथ चंद्रमा 'विषभोजन' का भय देगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मगल जातक को वैभवशाली जीवन, एवं रौबीला व्यक्तित्व देगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध जातक का भाग्योदय विवाह के बाद होगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु जातक को पराक्रमी बनायेगा। जातक का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र स्त्री मित्र से लाभ देगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक का भाग्योदय व्यापार से करायेगा।

मीनलग्न में केतु की स्थिति दशम स्थान में
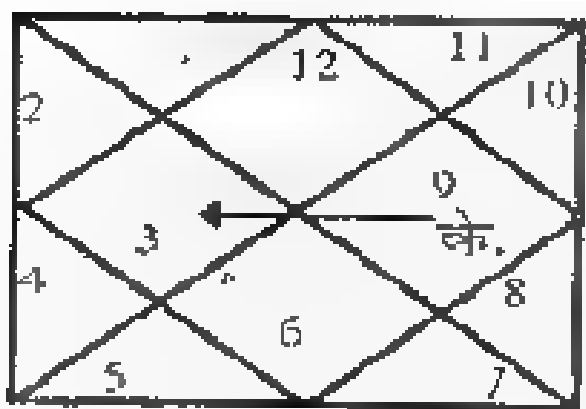
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि केतु लग्नेश गुरु का मित्र है, यहा दशम स्थान में केतु धनु मूलत्रिकोण राशि मे है ऐसे जातक को पिता का सुख, राज्य में सम्मान एवं व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति अपनी उन्नति के लिए गुप्त युक्तियों का सहारा लेता है जातक कई बार शंकास्पद व्यक्तियों द्वारा आकस्मिक धन लाभ होगा।

दृष्टि–दशमस्थ केतु की दृष्टि चतुर्थ भाव (मिथुन राशि) पर होगी। फलतः जातक को माता का सुख कम मिलेगा।

निशानी–जातक लम्बी मुसाफरी में धन अर्जित करेगा।

दशा केतु की दशा अंतर्दशा में शुभ फलों की प्राप्ति होगी।

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध–

1. **केतु+सूर्य**–केतु के साथ सूर्य राज (सरकार) से बाधा उत्पन्न करेगा।
2. **केतु+चंद्रमा**–केतु के साथ चंद्रमा वाला जातक जलीय व्यापार से कमायेगा। जन्म भूमि (स्थान) से ज्यादा कमायेगा।
3. **केतु+मंगल**–केतु के साथ मंगल वाला जातक महान् तेजस्वी होगा। मंगल यहां 'दिक्बली' एवं उच्चाभिलाषी है। जातक अपने शत्रुओं को समूल नष्ट करने में सक्षम होगा।
4. **केतु+बुध**–केतु के साथ बुध होने से जातक के पास एक से अधिक वाहन होंगे। धंधे भी एक से अधिक प्रकार के होंगे।
5. **केतु+गुरु**–केतु के साथ गुरु 'हंस योग' बनायेगा। जातक राजा के समान पराक्रमी होगा। यशस्वी होगा।
6. **केतु+शुक्र**–केतु के साथ शुक्र जातक को तेज वाहन से भय दिलायेगा।
7. **केतु+शनि**–केतु के साथ शनि जातक को नौकरो से नुकसान दिलायेगा। वफादार नौकर मिलना मुश्किल होगा।

मीनलग्न में केतु की स्थिति एकादश स्थान में

मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि केतु लग्नेश गुरु की मित्र है। यहां एकादश स्थान में मकर मूलत्रिकोण राशि का है, एसे जातक की व्यापार
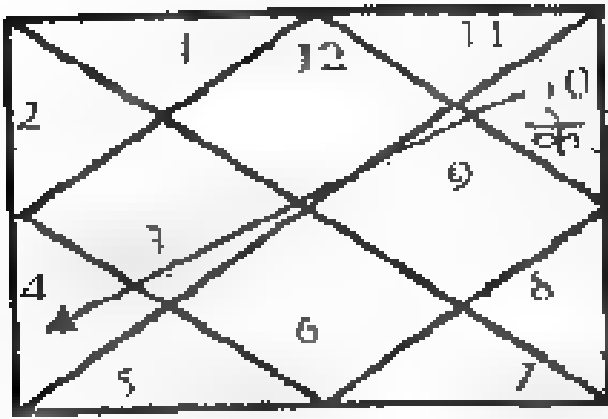
व्यवसाय में अच्छी आमदनी होती है। जातक उद्योगपति होगा। अपने कारोबार को आगे बढ़ाने के लिए बहुत परिश्रम करता है पर परिश्रम का बराबर लाभ नहीं मिल पाता, फिर भी जातक को स्थाई सम्पत्ति खरीदेगा। जातक के पास कवित्व शक्ति होगी।

दृष्टि—एकादश भावस्थित केतु की दृष्टि पचम भाव (कर्क राशि) पर होगी। फलतः जातक को प्रारम्भिक विद्या एवं पुत्र संतान की प्राप्ति में कुछ रुकावटें महसूस होंगी।

निशानी—जातक महान हिम्मती व धैर्यवान् एवं बहादुर होगा। जातक को अपने क्षेत्र का सर्वोच्च पद कभी प्राप्त नहीं होगा।

दशा—केतु की दशा-अंतर्दशा शुभ फल देगी.

केतु का अन्य ग्रहों से संबंध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य व्यापार के लिए संघर्षदायक स्थिति बनायेगा।
2. **केतु+चंद्रमा**-केतु के साथ चंद्रमा जातक उच्च शिक्षा दिलायेगा। विदेश व्यापार करायेगा।
3. **केतु+मंगल**—केतु के साथ मंगल जातक को उद्योगपति बनायेगा.
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध के कारण जातक तीव्र (प्रतिउत्पन्न) बुद्धिवाला होगा। कूटनीतिज्ञ होगा।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु होने से जातक विद्यावन्त व यशस्वी होगा। उसकी सलाह सभी मानेंगे।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र जातक को उच्च श्रेणी का व्यापारी बनायेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि जातक के व्यापारिक जीवन में उतार-चढ़ाव देता रहेगा।

मीनलग्न में केतु की स्थिति द्वादश स्थान में
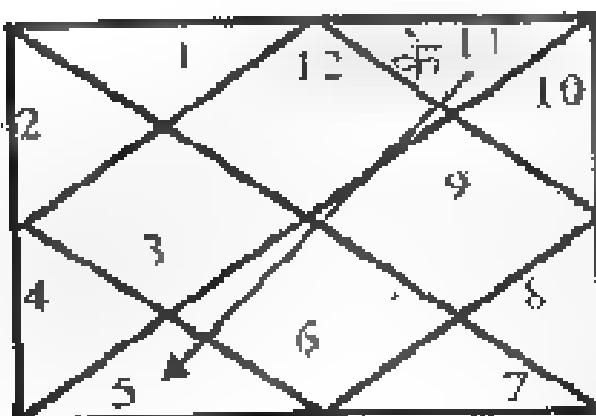
मीनलग्न वालों के लिए केतु शुभ है क्योंकि लग्नेश गुरु का मित्र है यहां द्वादश स्थान में केतु कुंभ (मित्र) राशि में है. ऐसा जातक गूढ विज्ञान, रहस्यमय विद्याओं में रुचि रखेगा। जातक खर्चीले स्वभाव का होगा। यात्राएं बहुत करेगा। जातक धर्म

एव परोपकार के कार्य पर रुपया खर्च करेगा। जातक को अपने से निम्न वर्ग के लोगों से लाभ की सभावना अधिक रहेगी जातक की वृद्धावस्था सुखमय होगी।

दृष्टि—द्वादशभावगत केतु की दृष्टि छठे स्थान (सिंह राशि) पर होगी। फलतः जातक के गुप्त शत्रु बहुत होंगे। गुप्त रोगों की संभावना रहेगी।

निशानी—ऐसे जातक का सपने आयेंगे वे सच होंगे। नेत्र रोग की सभावना रहेगी। बाईं आख का ऑपरेशन होगा जो सफल होगा

दशा—केतु की दशा-अतर्दशा में स्थान परिवर्तन होगा। कई प्रकार के धधों में बदलाव होगा।

केतु का अन्य ग्रहों से संबध—

1. **केतु+सूर्य**—केतु के साथ सूर्य हर्ष नामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी, मानी-अभिमानी होगा। निरन्तर यात्रा में रुचि रखेगा।
2. **केतु+चंद्रमा**—केतु के साथ चद्रमा 'संतानहीन योग' बनायेगा। जातक सतान एव विद्या में अवरोध महसूस करेगा।
3. **केतु+मगल**—केतु के साथ मंगल 'धनहीन योग' व 'भाग्यभग योग' बनाता है। जातक को काफी सघर्षों का सामना करना पड़ेगा।
4. **केतु+बुध**—केतु के साथ बुध 'सुखहीन योग' एव 'विलम्बविवाह योग' बनाता है। जातक का गृहस्थ जीवन कष्टमय रहता है।
5. **केतु+गुरु**—केतु के साथ गुरु 'लग्नभंग योग' एवं 'राजभग योग' बनाता है।
6. **केतु+शुक्र**—केतु के साथ शुक्र हर्षनामक 'विपरीतराज योग' बनायेगा। जातक धनी-मानी, अभिमानी होकर एव ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीयेगा पर वाहन दुर्घटना का भय रहेगा।
7. **केतु+शनि**—केतु के साथ शनि 'विमल नामक' 'विपरीतराज योग' बनायेगा। ऐसा जातक धनी-मानी, अभिमानी होकर वैभवशाली जीवन जीयेगा। अधिक खर्च के कारण स्थाई कर्ज होने का भय बना रहेगा।

❑❑❑

गुरुवार व्रत कथा

बृहस्पतिदेव देवताओं के गुरु हैं। देवगुरु गुरु देव जी विद्या, बुद्धि, धन, वैभव, मान, सम्मान, यश-पद तथा संतान प्रदान करने वाले कृपालु व दया के सागर है। नवग्रहों में गुरु, गुरु सबसे बड़े व शक्तिशाली है तथा विद्वान हैं। गुरुवार के उपवास एवं श्रद्धापूर्वक पूजन से गुरु गुरु सहित सभी ग्रह प्रसन्न रहते हैं।

बुध का तान्त्रिक मंत्र—ॐ बृं बृहस्पते नमः।।

विधि विधान—गुरुवार को नित्यकर्मों से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर किसी पवित्र स्थान पर श्री नारायण भगवान की प्रतिमा स्थापित करें। जल के लोटे में गुड़ व चने की दाल डालकर रखें, प्रसाद के रूप मे चने व मुनक्का का प्रयोग करें। गुरु के तांत्रिक मंत्र का जाप इक्कीस अथवा ग्यारह बार करें तत्पश्चात् व्रत कथा पढ़ें और अंत में केले के पेड़ को जल लें। गुड़ व चने का भोग प्रभु को लगा स्वयं भी प्रेम से प्रसाद खाए तथा दिन मे एक समय भोजन करें। भोजन में पीली वस्तुओं का प्रयोग करना चाहिए।

व्रत कथा—किसी नगर में एक व्यापारी रहता था। वह दूर-दूर देशों की यात्रा करता और व्यापार किया करता था। उसका व्यापार बहुत अच्छा चल रहा था। उसे धन-सम्पत्ति की कोई कमी न थी वह निर्धनों को दान किया करता था। उसके द्वार से कोई याचक खाली नहीं लौटता था। व्यापारी की पत्नी उसके सर्वथा विपरीत थी। उसे पति के दान कर्म से बहुत चिढ़ होती। वह किसी को एक पैसा भी नहीं देना चाहती थी।

एक बार व्यापारी दूसरे देश की यात्रा को गया था। उसके पीछे बृहस्पतिदेव एक भिक्षुक का वेष धरकर व्यापारी की कंजूस पत्नी के पास पहुंचे और उससे भिक्षा की याचना करने लगे। व्यापारी की पत्नी ने कहा-''हे साधु महाराज, मैं अपने पति के दान पुण्य से तंग आ गई हूं। वह अपने धन को दूसरों को बांटकर व्यर्थ ही नष्ट करता है। आप कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे मेरा सारा धन नष्ट हो जाए, न धन होगा और न ही मुझे उसे व्यर्थ ही नष्ट होते देख दुख होगा।'' बृहस्पतिदेव

जी ने कहा "पुत्री तुम भी विचित्र स्त्री हो. प्रत्येक स्त्री की कामना होता है कि उसका घर धन-धान्य से पूर्ण हो और तुम चाहती हो कि तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जाए। यदि तुम्हारे पास अधिक धन है तो तुम उस धन को पुण्य के कामों में खर्च करो. धर्मशालाए बनवाओ, प्यासों के लिए प्याऊ खुलवाओ। इसमे तुम्हे प्रसिद्धि भी मिलेगी और तुम मोक्ष की भी भागी बनोगी।"

व्यापारी की पत्नी भी बडी जिद्दी थी उस पर महात्मा जी की बात का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उसने कहा- "मुझे-आपकी सलाह नही चाहिए यदि आप मुझे सलाह ही देना चाहते है तो कृप्या मुझे धन को नष्ट करने का कोई उपाय बताइये।"

साधु के रूप धर हुए बृहस्पतिदेव जी ने कहा–"ठीक है, यदि तेरी ऐसी ही इच्छा है तो यही सही। सात गुरुवार तक घर को लीपना, पीली मिट्टी से बालों को धोना भट्टी चढ़ाकर कपड़े धोना, मास-मदिरा का सेवन करना ऐसा करने से तुम्हारा सारा धन नष्ट हो जाएगा।"

उस स्त्री ने गुरु देवता के कहे अनुसार कार्य किए केवल छः गुरुवार ही व्यतीत हुए और उसका सम्पूर्ण धन ही नष्ट हो गया, यहा तक कि उसे दोनों वक्त के खाने के भी लाले पड़ गए उधर उस स्त्री का पति जहाज से वापस लौट रहा था कि उसका माल से भरा जहाज समुद्र में डूब गया। वह किसी प्रकार अपने प्राण बचाकर अपने देश लौटा। घर आकर उसने देखा कि उसका सब कुछ नष्ट हो गया। उसकी लड़की ने रोते हुए बताया कि उसकी पत्नी भी परलोक सिधार गई। व्यापारी ने अपनी पुत्री से इसका कारण पूछा तो लड़की ने सारा वृतात कह सुनाया।

अब व्यापारी जगल से लकड़िया ले आता और उन्हें नगर में ले जाकर बेच देता और उससे जो भी कुछ प्राप्त होता उसका अपना और अपनी पुत्री का पेट भरता था किंतु उनका निर्वाह बड़ी मुश्किल से हो पाता था

एक दिन उसकी पुत्री ने दही खाने की इच्छा प्रकट की किन्तु व्यापारी के पास एक भी पैसा नहीं था किंतु पुत्री से किस प्रकार कहता कि कल का सेठ आज अपनी एकमात्र पुत्री को दही भी नहीं खिला सकता। वह पुत्री से दही लाने के लिए कहकर जगल मे लकड़ियां काटने चल दिया। चलते हुए वह सोचने लगा कि पहले मैं क्या था। चलते-चलते थककर व्यापारी पेड़ के नीचे बैठ गया और बहुत व्याकुल हुआ। उस दिन गुरुवार था। उसकी ऐसी दशा देखकर गुरु देव साधु का वेश बनाकर उसके पास आए और उसने बोले–"इस सुनसान जगल मे अकेले बैठकर क्या सोच रहे हो?" व्यापारी ने दु:खी मन से सारा वृतांत साधु को कह सुनाया। गुरु देव जी ने कहा तुम्हारा इसमे कोई दोष नहीं। तुम्हारी पत्नी ने बृहस्पति भगवान का अपमान किया

था जिस कारण तुम्हे इतना कष्ट पहुंचा। किंतु अब तुम्हारे दिन फिर जाएंगे। तुम नियमानुसार बृहस्पतिदेव जी का पूजन व उपवास गुरुवार के दिन किया करो।

दो पैसे के चने व मुनक्का मंगाकर जल के लोटे में थोड़ी सी शक्कर डालकर इस अमृत और प्रसाद को सारे परिवार वालों तथा कथा सुनने वालों में बांटा करो तथा स्वयं भी प्रेमपूर्वक प्रसाद को खाया करो। बृहस्पतिदेव तुम्हारे कष्टों को अवश्य और शीघ्र ही दूर करेंगे।''

साधु के ऐसे वचनों को सुनकर व्यापारी ने कहा–''हे महाराज! मुझे लकड़िया बेचकर इतना भी धन नही मिलता कि मैं अपनी एकमात्र पुत्री को दही भी खिला पाऊं। अपनी पुत्री को रोज यह आश्वसान देकर आता हू कि आज उसे दही अवश्य ही खिलाऊंगा, आज भी इसी सोच में यहा बैठा हू।''

बृहस्पतिदेव जी ने कहा–''हे वत्स! तुम चिंतित न हो। गुरुवार के दिन तुम लकड़िया बेचने शहर जाना। उस दिन तुम्हे लकडियों के विक्रय में चार पैसे अधिक प्राप्त होगे। उन पैसो मे से दो पैसे की दही लाकर तुम अपनी पुत्री को खिलाना तथा दो पैसे के चना और मुनक्का लाकर बृहस्पतिदेव जी की कथा करना. जल मे थोड़ी-सी शक्कर डालकर अमृत बनाना तथा कथा का प्रसाद सब मे बाटना और खुद भी खाना तो तुम्हारे सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण हो जाएगे।'' इतना कहकर बृहस्पतिदेव जी अन्तर्ध्यान हो गए।

गुरुवार के दिन उस व्यापार ने जंगल मे से लकड़ियां एकत्र कीं और शहर में बेचने के लिए गया। उस दिन उसे पहले से चार पैसे अधिक मिले उस धन से उसने दो पैसे की दही लाकर अपनी कन्या को दी तथा दो पैसे के चने और मुनक्का मगाकर अमृत बनाकर प्रसाद बांटा तथा प्रेम से खाया

उसी दिन से उसकी सभी कठिनाइया दूर हो गई। वह सुखपूर्वक रहने लगा, किंतु अगले गुरुवार को वह व्यापारी भगवान बृहस्पतिदेव की कथा करना तथा व्रत रखना भूल गया।

इसने भगवान बृहस्पतिदेव उससे रुष्ट हो गए। शुक्रवार को उस नगर के राजा ने अपने महल मे बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया और अपने नगर में घोषणा करवाई कि आज कोई भी व्यक्ति अपने घर में अग्नि न प्रज्वलित करें तथा समस्त जनता मेरे महल मे आकर भोजन ग्रहण करें। जो इस आज्ञा का अवहेलना करेगा। उसे सूली पर लटकाया जाएगा।

राजा की आज्ञानुसार सभी नगरवासी राजा के महल में भोजन करने के लिये गए किंतु वह व्यापारी और उसकी लड़की तनिक विलंब से पहुचे. अतः राजा ने उन दोनो को अपने महल के भीतर ले जाकर भोजन कराया।

जब वह पिता पुत्री दोनों भोजन करने चले गए तो महारानी की दृष्टि उस खूंटी पर पड़ी जिस पर उसका नौलखा हार टगा हुआ था। उस खूंटी पर अब हार नहीं था महारानी को विश्वास हो गया कि हारा लकडहारा और उसकी लड़की ही ले गए हैं।

तत्काल सिपाहियों को बुलाकर दोनों बाप-बेटी को कैद करके जेल में डलवा दिया। जेल में कैद होकर बाप बेटी दोनों अत्यत दुखी हो गए। वहां उन्होंने भगवान बृहस्पतिदेव का स्मरण किया। उसकी पुकार सुनकर भगवान बृहस्पति जी जेल में प्रकट हुए तथा कहने लगे कि हे भक्त राज! तुम पिछले सप्ताह गुरु देवता की कथा करना भूल गए थे जिसके कारण तुम्हारा यह हाल हुआ है।

परन्तु अब भी तुम किसी प्रकार की चिंता मत करो। अगले गुरुवार के दिन तुम्हें कैदखाने के द्वार पर दो पैसे पड़े मिलेंगे. तुम वह पैसें उठाकर चने तथा मुनक्का मंगला लेना तथा विधिपूर्वक बृहस्पति देवता का पूजन तथा कथा करना तो तुम्हारे सब दुःख दूर हो जाएंगे

गुरुवार के दिन उस व्यापारी को जेल के मुख्य द्वार पर दो पैसे पड़े हुए मिले बाहर सड़क पर एक स्त्री जा रही थी। व्यापारी ने उस स्त्री को बुलाकर कहा कि बहन तुम मुझे बाजार से दो पैसे के चने और मुनक्का ला दो ताकि मैं भगवान बृहस्पति देव की कथा कर सकूं।

उस स्त्री ने कहा कि मैं अपने बेटे के विवाह के लिये कपडे सिलवाने जा रही हू। अत. मैं तुम्हारे बृहस्पति भगवान को क्या जानू इतना कहकर वह स्त्री वहां से चली गई। व्यापारी दुखी हो गया

थोड़ी देर के बाद वहा से एक और स्त्री निकली। व्यापारी ने उस स्त्री को बुलाकर कहा कि बहन मुझे बाजार से दो पैसे के चने और मुनक्का ला दो मुझे गुरु देवी की कथा करनी है।

वह स्त्री भगवान गुरु के नाम सुनकर गद्‌गद होकर बोली "बलिहारी जाऊ, भगवान के नाम पर मैं तुम्हें अभी चने और मुनक्का लाकर देती हू मेरा इकलौता बेटा मर गया है। मैं तो उसके लिये कफन लेने आ रही थी मगर अब पहले तुम्हारा काम करूंगी उसके बाद बेटे के लिये कफन लाऊगी "

इतना कहकर उस स्त्री ने व्यापारी से पैसें लिये और बाजार से चने मुनक्का ले आई और स्वयं भी बृहस्पति देवना की कथा सुनकर प्रसाद लेकर अपने घर की ओर रवाना हुई।

स्त्री ने देखा कि लोग उसके बेटे की लाश को 'राम-नाम सत्य है', कहते हुए शमशान की ओर लेकर जा रहे हैं। उस स्त्री ने कहा कि भाई मुझे अपने लाड़ले

का मुख तो देख लेने दो लोगो ने अर्थी को जमीन पर रखा। तब उसी स्त्री ने प्रसाद और अमृत अपने मृत पुत्र के मुख मे डाला। प्रसाद और अमृत के मुख मे पड़ते ही उसका मृत पुत्र उठ खड़ा हुआ और अपनी माता से प्रेमपूर्वक मिला।

दूसरी ओर जिस स्त्री ने भगवान बृहस्पति का निरादर किया था। वह जब अपने पुत्र के विवाह के लिये कपड़े लेकर लौटी तो घोडी ने एक ऐसी छलाग मारी कि उसका पुत्र घोडी से जमीन पर आ गिरा और घायल हो गया एव कुछ क्षण पश्चात ही मर गया।

तब वह स्त्री रोकर गुरु भगवान से कहने लगी कि हे देव मेरा अपराध क्षमा करो, मेरा अपराध क्षमा करो। उसकी पुकार सुनकर भगवान बृहस्पति देवता साधु का रूप धरकर वहा आए और कहने लगे, "देवी, अधिक शोर मचाने की कोई आवश्यकता नहीं। तुमने गुरुवार देवता का निरादर किया था जिसका यह फल तुम्हें मिला है। तुम जेल खाने जाकर उस भक्त से क्षमा याचना करो तो सब ठीक हो जाएगा। ऐसा सुनकर वह स्त्री शीघ्रतापूर्वक जेलखाने पहुची तथा उस व्यापारी से हाथ जोड़कर कहने लगी "हे भक्तराज, मैंने तुम्हारा कहना नहीं माना तथा तुम्हें चने और मुनक्का लाकर नहीं दिया। इस कारण गुरु देवता मुझसे रुष्ट हो गए तथा मेरा इकलौता बेटा घोडी से गिरकर मर गया।"

व्यापारी ने कहा "हे माता तू चिंता मत कर गुरु देवता सबका कल्याण करेंगे, तुम अगले गुरुवार को आकर गुरु देव की कथा सुनना, तब तक अपने पुत्र के शव को फुल, इत्र, घी आदि सुगंधित वस्तुओं में डालकर रख दो।" उस स्त्री ने ऐसा ही किया। गुरुवार का दिन भी आ गया। वह स्त्री दो पैसे के चने और मुनक्का लेकर तथा पवित्र जल का लोटा भरकर जेलखाने पहुंची तथा श्रद्धा के साथ भगवान गुरु की कथा सुनी जब कथा समाप्त हुई तो अमृत और प्रसाद लाकर अपने मृत पुत्र के मुख में डाला प्रसाद के मुख में पडते ही उसके पुत्र को सांस आने लगी तथा वह उठकर खड़ा हो गया। तब वह स्त्री प्रेमपूर्वक भगवान का गुणगान करती हुई अपने पुत्र के साथ घर को रवाना हुई।

उसी रात्रि स्वप्न में राजा को बृहस्पति देवता ने दर्शन दिये तथा कहा "हे राजा, तुने जिस व्यापारी और उसकी पुत्री को जेल में बंद कर रखा है वह दोनों निर्दोष हैं। अब तू दिन निकलते ही दोनों को मुक्त कर दे तेरा नौलखाहार उसी खूटी पर लटका है।" दिन निकला तो रानी ने अपना हार खूटी पर लटका देखा। राजा ने उस व्यापारी को जेल से मुक्त कर अपने-अपने अपराध के लिये क्षमा मांगी तथा उसको अपना आधा राज्य देकर तथा उसकी लड़की का उच्च कुल में विवाह कर दहेज में अनमोल हीरे-जवाहरात दिये। इस प्रकार वह दोनो पिता पुत्री सुखपूर्वक जीवन यापन करने लगे।

गुरुवार व्रत का दूसरी कथा

एक दिन इन्द्र अहकारपूर्वक सिहासन पर बैठे थे और बहुत से देवता ऋषि, गन्धर्व, किन्नर आदि सभी सभा में उपस्थित थे। जिस समय गुरु जी सभा में आए तो सभी देवतागण उसके सम्मान मे खडे हो गए किंतु इद्रराज गर्व के कारण अपने सिहासन से न उठे। यद्यपि वह सदैव उनके आदर के लिये उठते थे। गुरु जी इसे अपना अनादर समझकर वहां से उठकर चले गए।

तब इन्द्र को बड़ा दुख हुआ कि मैने गुरुदेव का अनादर किया, मुझसे बहुत भारी भूल हो गई। उनकी कृपा से ही तो मुझे यह वैभव प्राप्त हुआ है उनके क्रोध से यह सब वैभव नष्ट हो जाएगा अत: मुझे उनके पास जाकर क्षमा माग लेना चाहिए। जिससे उनका क्रोध शात हो तथा मेरा कल्याण हो ऐसा विचार कर इद्र बृहस्पति जी से क्षमा मागने चल दिए

गुरु बृहस्पति जी ने अपने योगबल के द्वारा यह जान लिया था कि इन्द्र अपने अपराध के लिये क्षमा मागने आ रहे है, किंतु क्रोधवश उनसे भेट करना उचित ना समझकर बृहस्पति देव अन्तर्ध्यान हो गए जब इंद्र ने गुरु जी को आश्रम में न देखा तो वे निराश होकर लौट गए जब दैत्यो के राजा वृष वर्मा ने यह समाचार सुना तो उसने अपने गुरु शुक्राचार्य के आज्ञा से इंद्रपुरी को चारों ओर से घेर लिया। गुरु की कृपा न प्राप्त होने के कारण देवता हारने लगे।

तब देवताओं ने जाकर ब्रह्माजी से सारा वृतान्त कह सुनाया तथा उनसे रक्षा के लिये निवेदन किया। ब्रह्माजी ने कहा कि तुमने बृहस्पति देवता को क्रोधित कर घोर अपराध किया है। त्वष्टा ऋषि के पुत्र विश्वरूपा बड़े तपस्वी और ज्ञानी है। तुम उन्हे अपना पुरोहित बनाओ, तभी कल्याण हो सकता है यह सुनकर इन्द त्वष्टा ऋषि के पास गये। तथा विनयपूर्वक कहने लगे कि आप हमारे पुरोहित बन जाए ताकि हमारा कल्याण हो त्वष्टा ऋषि ने उत्तर दिया कि पुरोहित बनने से तपोबल घट जाता है किंतु तुम्हारे कहने से मेरा पुत्र विश्वरूपा पुरोहित बनकर तुम्हारी रक्षा करेगा।

विश्वरूपा ने पुरोहित बनकर देवताओं की सहायता की तथा हरी इच्छा से इन्द्र वृष वर्मा से युद्ध मे जीतकर इद्रासन पर स्थित हुए। विश्वरूपा के तीन मुख थे एक मुख से वह सोम पल्ली लता का रस निकालकर पीते थे। दूसरे मुख से मदिरा पीते थे तथा तीसरे मुख से अन्नादि भोजन करते थे, इद्र ने कुछ समयोपरान्त कहा कि हे देव मैं आपकी कृपा से यज्ञ करना चाहता हू। विश्वरूपा की आज्ञानुसार यज्ञ प्रारम्भ हो गया एक दैत्य ने आकर विश्वरूपा से कहा कि तुम्हारी माता दैत्य की कन्या है इस कारण दैत्यो के कल्याण के लिये एक आहुति दैत्यों के नाम पर भी दे दिया करो

विश्वरूपा उस दैत्य का कहा मानकर आहुति देते समय दैत्यों का नाम भी धीरे से लेने लगे। इसी कारण यज्ञ के द्वारा देवताओं के तेज में वृद्धि नहीं हुई। इद्र ने यह वृतान्त जानते ही क्रोधित होकर विश्वरूपा के तीनो सिर काट डाले। मद्यपान करने वाले मुख से भंवरा, सोमपल्ली का रस पीने वाले मुख से कबूतर तथा अन्न खाने वाले मुख से तीतर उत्पन्न हुआ।

विश्वरूपा के मरते ही इद्र का स्वरूप ब्रह्महत्या के प्रभाव में बदल गया। देवताओं द्वारा एक वर्ष तक पश्चात्ताप करने पर भी ब्रह्महत्या का वह पाप कम न हुआ तो सब देवताओं की विनती पर ब्रह्माजी गुरु बृहस्पतिजी के साथ लेकर इद्रपुरी पहुचे। उस ब्रह्महत्या के चार भाग किये। उसमें से एक भाग पृथ्वी को दिया। इस कारण पृथ्वी असमतल तथा कहीं-कहीं बीज बोने योग्य भी नहीं होती। साथी ही ब्रह्मा जी ने यह वरदान भी दिया कि पृथ्वी में गड्ढा होगा जो समय पाकर स्वयं भर जाएगा।

दूसरा भाग वृक्षों को दिया जिसमें से गोंद बहता है। इसी के कारण गूगल के अतिरिक्त सभी प्रकार के वृक्षों के गोंद अशुद्ध समझा जाता है। वृक्षों को यह वरदान भी दिया कि ऊपर से सूख जाने पर जड़ पुनः फुट जाएगी.

तीसरा भाग स्त्रियों को दिया. इसी कारण स्त्रियां हर महीने रजस्वला होकर पहले दिन चाडालिनी, दूसरे दिन ब्रह्मघातिनी और तीसरे दिन धोबिन के समान रहकर चौथे दिन शुद्ध होती है। साथ ही उनको संतान प्राप्ति का वरदान दिया।

चौथा भाग समुद्र को दिया जिससे फेन तथा सिवाल आदि जल के ऊपर आ जाते हैं। जल का यह वरदान दिया कि वह जिस वस्तु मे डाला जाएगा वह बोझ से बढ़ जाएगी। इस प्रकार से ब्रह्मा जी ने सभी देवताओ को ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त किया।

गुरु देवता अत्यत दयालु हैं जैसी जिसकी कामना होती है वह पूर्ण करते हैं। इस व्रत को करने से व्यक्ति अनेक प्रकार के कष्टो से मुक्ति पाता है जो व्यक्ति प्रेमपूर्वक यह कथा पढ़ेगा उसकी सभी इच्छाए पूर्ण होगे

बृहस्पति देव की आरती

ॐ जय गुरु देवा ॐ जय बृहस्पति देवा।
छिन-छिन भोग लगाऊं कदली फल मेवा।।ॐ
तुम पूरण परमात्मा तुम अन्र्तयामा
जगत पिता जगदीश्वर तुम सबके स्वामी।ॐ
चरणामृत निज निर्मल सब पातक हर्ता।

सकल मनोरथ दायक कृपा करो भर्ता।।ॐ
तन मन धन अर्पणकर जो जन शरण पड़े।
प्रभु सकट तब होकर आकर द्वार खड़े।।ॐ
दीन दयाल, दया निधि भक्तन हितकारी।
पाप दोष सब हर्ता भव बंधन हारी।।ॐ
सकल मनोरथ दायक सब संशय तारी।
विषय विकार मिटाओ सतन सुखकारी।।ॐ
जो कोई आरती प्रेम सहित गावे।
ज्येष्ठानन्द आनंदकर सो निश्चय पावे।।ॐ

❑❑❑

गुरु स्तोत्रम्

पदच्छेद-एवम् सन्धिच्छेद सहित

विनियोग–

अस्य श्री बृहस्पतिस्तोत्रस्य गृत्समद-ऋषिः, अनुष्टुप छनः,
बृहस्पतिर्देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोग।

स्त्रोतम्–

गुरुः, बृहस्पतिः, जीवः, सुराचार्यः, विदाम्बरः।
वागीशः, धिषणः, दीर्घ, श्मश्रुः, पीताम्बरः, युवा।।
सुधाद्रष्टिः, ग्रहाधीशः, ग्रहपीड़ा, अपहारकः।
दयाकर, सौम्य मूर्तिः, सुरार्च्यः, कुड्मल द्युतिः।।
लोक पूज्यः, लोक गुरु नीतिज्ञः नीति कारकः।
तारापति, च, आङ्गिरसः, वेद विद्या पिता महः।।
भक्त्या, बृहस्पतिम्, स्मृत्वा, नामानि, एतानि, य, पठेत्।
अरोगी, बलवान्, श्रीमान, पुत्रवान्, सः, भवेत्, नरः।।
जीवेत्, वर्षशतम्, मर्त्यः, पापम्, नश्यति, नश्यति।
यः पूजयेत् गुरुदिने पीतगन्धा क्षतात्मजैः।
पुष्प दीप उपहारश्चः च पूजयित्वा बृहस्पतिम्
ब्राह्मणान् भोजयित्वा च पीड़ा शांतिः भवेत् सुरोः।।

गुरु मंगल स्त्रोतम्

जीव च आङ्गिर गोत्रज उत्तर मुखः दीर्घ–उतरा संस्थित,
पीत, अश्चत्थ, समुद्धि–सिन्धु जनित च आपः, अथ, मीनाधिपः।

सूर्येन्दु, क्षितिज प्रियः बुध सितौ शत्रु समा न अपरे,
सप्ताङ्कात् विभवः शुभ, सुरगुरुः कुर्यात् सदा मंगलम्।।

नोट–भगवान गुरु बुद्धि प्रदाता देव है, इसलिए यह देव गुरु हैं। बुद्धि विहीन जातक पशुतुल्य होता है हर क्षेत्र में बुद्धि बल की आवश्यकता पड़ती है। अतः उपरोक्त स्तोत्र का नित्य 108 पाठ करने से बुद्धि बल समान रूप से जीवनपर्यन्त बना रहता है

अथ गुरु मंत्र

विनियोग–बृहस्पति मंत्रस्य गृत्समद ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, ब्रह्म देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

(नीचे लिखे कोष्ठक के अंगो को छूते रहें)

अथ देहांगन्यास–बृहस्पते शिरसि (सिर) अतियदर्यो ललाटे (माथा), अर्हाद्युमत् मुखे (मुख) विभाति क्रतुमत् हृदये (हृदय) जनेषु नाभौ (नाभि) यद्दीदयत् कट्याम (कमर) शवसऋतप्रजात ऊर्वो (छाती) तदस्मासु द्रविण जान्वोः (घुटने) धेहि गुल्फायोः (गुल्फ) चित्र पादयोः (पैर)।

अथ करन्यास–बृहस्पतेऽअतियदर्यो अंगुष्ठाभ्यां नमः। अर्हाद्युमत् तर्जनीभ्यां नमः, विभाति क्रतुमत् मध्यमाभ्यां नमः। जनेषु अनामिकाभ्यां नमः यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नमः द्रविणंधेहित चित्रम् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादिन्यास–बृहस्पतेऽअतिदर्यो हृदय नमः (हृदय) अर्हाद्युमत् शिरसे स्वाहा, विभाति क्रतुमत् शिखायै वषट् (शिखा)। जनेषु कवचाय हु (दोनो कन्धे) यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट् (दोनों नेत्र)। द्रविणं धेहित चित्रम् अस्त्राय फट्। (दाया हाथ सिर से घुमा कर बायें हाथ पर दो अंगुलियो से ताली बजाए।)

अथ ध्यानम्–पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजः देव गुरुः प्रशान्तः।
तथा अक्ष सूत्रम् कमण्डलुम् च दण्डम् च विभ्रद् वरदः अस्तु मह्यम्।।

बृहस्पति का आह्वान–

बुध्यायस्यसमोनास्ति देवताना च पुरोहितः।
त्राता च सर्वदेवानां गुरुमावह्याम्यहम् ।।।
अहो वाचस्पतोपीत सजातः सिधुमण्डले।

एह्या गिरसगोत्रेय हयारूढचतुर्भुजः॥2॥

दंडाक्षसूत्रवरदः कमण्डलुधरप्रभो।

महाइन्द्रेति संपूज्यो विधवात्युत्तरेदले॥3॥

ॐ महाइन्द्रोवज्रहस्तः षोडशीषर्म्यच्छतु

हंतुपापमानं योग्सयान्द्वेष्टिय च वयं दिष्मः॥26/10॥

उत्तरे गुरु स्थापयामि–

गुरुगायत्री–ॐ अंगिरोजाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्।

बीज मंत्र–ॐ ग्राँ ग्रीं ग्रौं सः भूर्भुव स्वः ॐ बृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हाद्युमद्विभाति। क्रुतमज्जनेषु यद्दीदयच्छवसऽऋत प्रजात तदस्मास द्रविणन्धेहि चित्रम्। ॐ स्व भुवः भु सः ग्रौं ग्रीं ॐ सः गुरुवे नमः।

जपमंत्र–ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौ सः गुरुवे नमः एकोनविंशतिसहस्त्राणि। 9000 प्रतिदिन।

❑❑❑

मीनलग्न में रत्न धारण का वैज्ञानिक विवेचन

1. **माणिक्य**–मीनलग्न के जातकों को माणिक्य धारण करना लाभदायक न होगा। क्योंकि इस लग्न में सूर्य षष्ठ भाव का स्वामी होता है। इस लग्न में एक अपवाद हो सकता है क्योंकि सूर्य लग्नेश गुरु का मित्र है, अतः यदि वह षष्ठ का स्वामी होकर षष्ठ भाव में ही स्थिति हो तो सूर्य की महादशा में भी माणिक्य धारण नहीं किया जा सकता।
2. **मोती**–मीनलग्न मे चंद्र पंचम त्रिकोण (सुख भाव) का स्वामी होता है। मोती धारण करने से जातक को संतान सुख, विद्या–लाभ तथा यश, मान प्राप्त होता है। अतः मोती धारण करने से भाग्योन्नति भी होती है। चंद्र की महादशा मे मोती धारण करना विशेष फलदायी होगा।
3. **मूंगा**–मीनलग्न के लिए मंगल द्वितीय भाव और नवम त्रिकोण का स्वामी होनें के कारण अत्यन्त शुभ ग्रह माना गया है। अतः इस लग्न के जातक को मूंगा धारण करना विशेष रूप से लाभप्रद होगा। यदि इस लग्न के जातक मूंगा या मोती या पीले पुखराज के साथ धारण करें तो उन्हे सब प्रकार का सुख प्राप्त होगा।
4. **पन्ना**–मीनलग्न के लिए बुध चतुर्थ और सप्तम का स्वामी होने के कारण केन्द्राधिपति दोष से दूषित है। तब यदि बुध लग्न द्वितीय, पंचम, दशम या एकादश में स्थित हो या स्वराशि मे सप्तम में भी हो तो आर्थिक दृष्टि से बुध की महादशा में शुभ फलदायक होगा। जिसकी आयु का अन्त निकट हो उन्हें पन्ना धारण नहीं करना चाहिए।
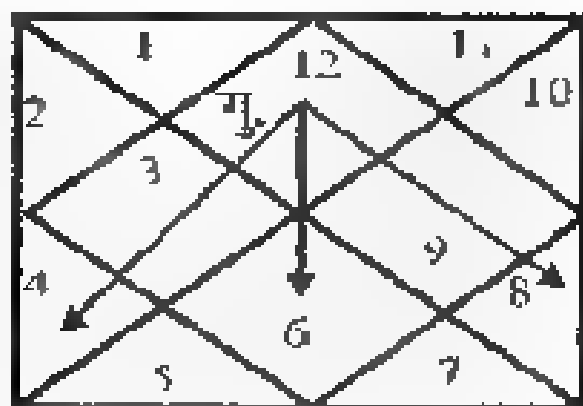
5. **पुखराज** मीनलग्न के लिए गुरुलग्न तथा दशम का स्वामी होने से शुभ ग्रह है। इस लग्न के जातक पीला पुखराज धारण करके अपनी मनोकामनाएं पूर्ण कर सकते हैं। गुरु की महादशा में इसका धारण विशेष रूप से हितकारी होगा। यदि पुखराज नवम के स्वामी मंगल के रत्न मूंगे के साथ धारण किया जाए तो और भी उत्तम फल होगा। पुखराज आपका जीवन रत्न है।
6. **हीरा**—मीनलग्न के लिए शुक्र तृतीय और अष्टम का स्वामी होने के कारण अत्यन्त अशुभ ग्रह माना गया है. इस लग्न के जातक को हीरा कभी भी धारण नहीं करना चाहिए।
7. **नीलम**—मीनलग्न में शनि एकादश और द्वादश का स्वामी होने के लिए अशुभ ग्रह माना गया है। इसके अतिरिक्त शनि लग्नेश का शत्रु भी है तब भी एकादश का स्वामी होकर शनि यदि द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, नवम या लग्न में स्थित हो तो शनि की महादशा मे नीलम धारण करने से आर्थिक लाभ हो सकता है। परंतु इसके जातक के लिए नीलम नहीं पहनना ही उचित होगा।

विशिष्ट उद्देश्य पूरक संयुक्त रत्न

1. **संतान हेतु**—मोती सवा पांच रत्ती, पुखराज सवा पांच रत्ती सुवर्ण में। गजकेसरी योग बनाते है।
2. **भाग्योदय हेतु**—मूंगा सवा पांच रत्ती, पुखराज सवा पांच रत्ती सुवर्ण मे।
3. **आरोग्य हेतु**—पुखराज-मोती, सवा चार-पांच रत्ती चांदी मे।
4. **स्थाई लक्ष्मी हेतु**—मूंगा सवा चार मोती सवा चार-पुखराज सवा चार सुवर्ण में। गजकेसरी योग, महालक्ष्मी योग एवं किम्बहुना परम योग बनता है। ऐसा मंत्रपूत लॉकेट पहनकर व्यक्ति तीनों लोकों में सभी प्रकार के कार्य करने में समर्थ हो जाता है।

❑❑❑

गुरु की शांति के विविध उपाय

1. गुरु के कारण उत्पन्न समस्त अरिष्टों के शमन के लिए रुद्राष्टाध्यायी एवं शिवसहस्त्र नाम का पाठ अथवा नित्य रुद्राभिषेक करना अमोघ है।
2. वैदिक या तांत्रिक गुरु मंत्र का जप तथा कवच एवं स्तोत्र पाठ अथवा भगवान दत्तात्रेय के तांत्रिक मंत्र का अनुष्ठान भी लाभप्रद है।
3. सौभाग्यवश जो लोग किसी समर्थ गुरुदेव की चरण-शरण में हैं, वे नित्य गुरु पूजन एवं गुरुध्यान करने से समस्त भौतिक एवं अभौतिक तापों से निवृत्त हो जाते हैं।
4. प्रश्नमार्ग के अनुसार गुरु महाविष्णु का प्रतिनिधित्व करता है अतः कम से कम पुरुष सूक्त का जप और हवन अथवा सुदर्शन होम भी कल्याणकारी है।
5. अधिक न कर सकें, तो मासिक सत्य नारायण व्रत कथा एवं गुरुवार तथा एकादशी का व्रत ही कर लें।
6. राहु मंगल आदि क्रूर एवं पाप ग्रहों से दूषित गुरु कृत संतान बाधा योग में शतचंडी अथवा हरिवंश पुराण एवं संतान गोपाल मंत्र का अनुष्ठान करें।
7. ब्राह्मण एवं देवता के सम्मान, सदाचरण, फलदार वृक्ष लगवाने एवं फलों के दान (विशेषकर केला, नारंगी आदि पीले फल) से गुरु देव प्रसन्न होते हैं।
8. पंचम भाव स्थिति शनि गुरु के अरिष्ट शमनार्थ 40 दिन तक वट वृक्ष की 108 प्रदक्षिणा करना बहुत हितकारी होती है।
9. जिस स्त्रियों के विवाह में गुरु कृत बाधा से विलंब सूचित हो, उन्हें उत्तम पुखराज धारण करना चाहिए तथा केला या पीपल वृक्ष का पूजन करना चाहिए।
10. गुरु को बलवान करने एवं धनप्राप्ति हेतु पुखराज युक्त "गुरुयंत्र" धारण करें।
11. चमेली के पुष्प (9 अथवा 12) लेकर उन्हें जल में प्रवाहित करें।
12. पीले कनेर के पुष्प गुरु प्रतिमा पर चढ़ाएं।

13. 13 अथवा 21 गुरुवार व्रत रखें।
14 गुरु लीलामृत का पाठन अथवा श्रवण करें।
15 दत्त भगवान का विधिवत् पूजन करें.
16. कुछ स्वर्ण का दान करें–सिर्फ गुरुवार के दिन ही।
17. स्वर्ण जल का पान करें। ''स्वर्ण जल'' से तात्पर्य ऐसे जल से है जिसमें स्वर्ण को डुबोया गया हो।
18. पीत वस्त्रों का दान किसी सौभाग्यवती को दें।
19. ''स्वर्ण-जल'' से स्नान करें।
20. गुरु के होरा में निर्जल रहे।
21. मिथुन या कन्या लग्न में गुरु छठे, आठवें या बारहवें स्थान में हो तो गुरु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए शुद्ध सोने के दो टुकड़े या पुखराज रत्न बराबर वजन के ले। विवाह समय एक टुकड़ा संकल्पपूर्वक नदी में बहा दे तथा दूसरा अपने पास रखें। जब तक दूसरा टुकड़ा जातक के पास रहेगा, उसको गुरु का कुप्रभाव स्पर्श नहीं कर पाएगा तथा उसका वैवाहिक जीवन सुखमय रहेगा
22 गुरुवार का व्रत 5 या 11 या 43 बार रखना।
23. हरि पूजन करना या पीपल का पालन करना।
24. श्रीविष्णु भगवान् का नमस्कार करना।
25. पुखराज पहनना, पुखराज के अभाव में हल्दी की गट्टी पीले रंग के धागे में बांध कर दायीं भुजा पर बांधना।
26. चांदी की कटोरी में केसर/हल्दी का तिलक करना।
27. शुद्ध सोना धारण करना (गुरु षष्ठ भाव को छोड़कर)।
28. नाभि (धुनी) पर केसर लगाना या केसर खाना।
29. ब्राह्मण कुल पुरोहित या साधु की सेवा करना।
30. गरुड़ पूजा (गरुड़ पुराण) का पाठ करना।
31. घर की दीवारों पर पीला रंग करना।
32. पीले फूल (गेंदा या सूरजमुखी) लगाना।
33. गुरु उच्च का हो तो बृहस्पति की चीजो का दान न देना
34. गुरु नीच का हो तो गुरु की चीजो का दान न लेना।

उपरोक्त उपाय 5 या 11 या 43, दिन या सप्ताह या मास लगातार करने चाहिए।

35. गुरु पीडा की विशेष शांति हेतु सफेद सरसों, दयमती के पुत्र, मुलैठी और मालती के पुष्प मिलाकर 9 गुरुवार तक नियमित स्नान करें।

36. गुरु पीड़ा का विशेष शांति हेतु कोई तीन जाति के श्वेत पुष्प श्री गुरुदेव एवं इष्ट का ध्यान करते हुए 9 गुरुवार तक नियमित स्नान करें।

37. यदि गुरु बिगड़ा हुआ है तो ऐसे व्यक्ति ने इस जन्म या पूर्व जन्म में फलदार वृक्षों को कटाया है। कुलगुरु, कुल देवता या किसी आदरणीय व्यक्ति का अपमान किया है जिसके कारण जातक को संतानसुख नहीं होता। ऐसे में जातक को गुरु के वैदिक मंत्रों का 19,000 बार जप करने चाहिए गुरु संबंधी वस्तुओं का दान करते हुए, वृद्ध लोगों का आदर करते हुए गुरु की सेवा करें एवं गुरुवार को नियमित व्रत करें।

38. हरिवंश पुराण के अनुसार पितरों की तिथि, श्राद्ध यज्ञ करना चाहिए।

39. प्रति गुरुवार पीपल की सात परिक्रमा करें।

40. प्रति गुरुवार विष्णु के मंदिर में सात पीले पुष्प चढावें। 27 गुरुवार तक तो एक इच्छा जरूर पूर्ण होगी।

❑❑❑

प्रबुद्ध पाठकों के लिए अनमोल सुझाव फलादेश करते समय कृपया ध्यान रखें

1. बिना फलादेश ज्योतिष शास्त्र निर्गन्ध पुष्प है अत: फलादेश करते समय कृपया जल्दबाजी न करें। फलादेश करते समय अपने खुद के साथ जोर जबरदस्ती न करें। यथा आपका ध्यान कन्य कार्य में है। आपके पास समय का अभाव है, परन्तु सामने वाला पृच्छक आप पर दबाव डाल रहा है कि मेरी तो ट्रेन जा रही है, बस जा रही है, प्लेन जा रहा है, अभी का अभी बताओ क्या होने वाला है? जो फलादेश आवेश व जल्दीबाजी मे होगा वो फलादेश गलत हो जायेगा। क्योंकि फलादेश करते समय चित्त शान्त होना चाहिए।
2. जन्म कुण्डली का अध्ययन एकान्त में करें। गम्भीरतापूर्वक करें। आलतू फालतू लोगों को पास न बैठावे। जहां तक हो सके दैवज्ञ विद्वान् के पास अकेला पृच्छक (जिज्ञासु) ही होना चाहिए।
3. दैवज्ञ को फलादेश करने के पूर्व सरस्वती अथवा अपने इष्ट देव का स्मरण करना चाहिए।
4. फलादेश प्रारम्भ करने के पूर्व जिज्ञासु सज्जन से फल पुष्प दक्षिणा भेंट इत्यादि स्वीकार करके, उसे प्रभुचरणों में समर्पित करके ही आगे प्रवृत होना चाहिए।
5. यह शास्त्रवचन है कि जो दैवज्ञ ज्योतिषी के समीप और ईश्वर के दरबार में खाली हाथ जाता है, वह खाली हाथ ही वापस लौटता है।
6. आगन्तुक पृच्छक से हमेशा प्रश्न लिखित में लिखकर ले और प्रत्युत्तर हमेशा मय हस्ताक्षर, तारीख और समय के साथ लिखित में लिखकर देने का साहस रखें, तभी आत्मविश्वास एवं साधना दोनों बढ़ेगी।
7. घटना घटित होने के बाद उसकी सफलता एवं असफलता के कारणों की पुष्टि ज्योतिषीय सिद्धान्तों के आधार पर निरन्तर करते रहना चाहिए। फलित सत्य

होने पर ज्यादा फूले नहीं? क्योंकि यह सत्यखोजी ऋषियों की कृपा से हुआ है तथा फलित सत्य होने पर निराश या हताश नहीं होना चाहिए क्योंकि गलती हमेशा व्यक्तिगत ही होता है। **'मनुष्य मात्र भूल का पात्र'** गलती हममें है, ऋषियों की वाणी में नहीं, ऐसा विश्वास रखना चाहिए।

8. जन्मपत्रिका को लग्न के अनुसार देखना सीखे।

शास्त्र कहते हैं–

9. **फलानि ग्रहचारेण सूचयन्ति मनीषिण।**
को वक्ता तारतम्यस्य तमेकं वेधसं विना।।

ग्रहों की स्थिति पर से जानकार दैवज्ञ शुभ अशुभ फलों की सूचना करते हैं, परन्तु (फलों के) कम अथवा अधिक प्रमाण तो एक मात्र जगत्सृष्टा ब्रह्मा के सिवाय कौन कह सकेगा? फिर भी ईश्वर के पश्चात् ज्योतिषी वह पहला व्यक्ति है, जो निश्चयपूर्वक आपके भूत, भविष्य एवं वर्तमान बताने की सामर्थ्य रखता है।

10. **पापत्वे सति नीचत्वे ऊच्चत्वे वापि किं फलम्।**
ते योगाः किं करिष्यन्ति स्वदशानामनागमे।

ग्रहों की अशुभत्व, नीचत्व अथवा उच्चत्व इनका योग होने पर भी यदि उनकी दशा नहीं आती हो तो उनके फल कहा से प्राप्त होंगे? और क्यो मिलना चाहिये? दशाओं में ग्रहो के शुभ-अशुभ फल प्राप्त होते हैं। इस जगह **'दशा'** शब्द से **'महादशा'** और **'अंतर्दशा'** इन दोनों का बोध होता है। दशा में विशेष फल मिलता है।

11. **मित्रशत्रुसमायोगे फलं मिश्रं शुभं विदुः।**
केन्द्रत्रिकोणेष्युच्चत्वे मित्रग्रहसमन्विते।।

मित्र और शत्रु ग्रहों का योग हो तो मिश्रफल जानना। केन्द्र त्रिकोण अथवा उच्च, स्थानों में मित्र ग्रहो से युक्त ग्रह हों तो शुभफल जानना चाहिए।

12. **मित्रराशिगत वापि मन्त्रिणा यदि वीक्षिते।**
मित्रयुक्ते बलवपि राजतुल्यो भवेन्नरः।।

मित्र ग्रहो के स्थान में स्थित, मित्रग्रह से युक्त और बलवान ऐसा ग्रह यदि गुरु से दृष्ट हो तो मनुष्य उस समय राजातुल्य ऐश्वर्य को भोगता है।

13. कोई ग्रह यदि राहु के साथ बैठा है। जब ऐसे ग्रह की दशा हो तो उस दशा में अरिष्ट होता है।

14. जब लग्नेश अष्टम स्थान मे हो तो उसकी दशा मे बहुत दुःख होता है।

15. जब ग्रह '**दिग्बल**' से युक्त हो तो उसकी दशा में बड़ी प्रतिष्ठा उसी दिशा में मिलती है, जिसका वह स्वामी हो।

16. जब पाप ग्रह (शनि, राहु, केतु या दुःस्थान के स्वामी) की महादशा मे, शुभ ग्रह की अतर्दशा हो तो आरंभ से कष्ट होता है और अंत मे सुख होता है।

17. जब शुभ ग्रह की महादशा हो, तो पाप ग्रह की अतर्दशा हो तो आरभ में सुख होता है और अत में भय होता है।

18. जब क्रूर ग्रह की महादशा हो, उसमें क्रूर ग्रह को अतर्दशा, यदि वे दोनों आपस मे शत्रु हों तो मृत्यु होती है परन्तु जब वे आपस में मित्र हों तो जीवन में सदेह होता है.

19. जब दो ग्रह एक दूसरे से छठे अथवा आठवें स्थान से स्थित हो तो उनके दशातर में बड़ा भय होता है।

20. जब मंगल (मारकेश) की महादशा में शनि (अन्य मारकेश) की अंतर्दशा हो तो मनुष्य की मृत्यु संभव है।

21. जब पाप ग्रह क्रूर राशि में स्थित छठे अथवा आठवे स्थान में हों, शुक्र अथवा सूर्य की उस पर दृष्टि हों तो अपनी दशा मे मृत्यु करता है।

22. जब लग्नेश की दशा में, लग्नेश के शत्रु की अतर्दशा हो तो अकस्मात् मृत्यु हो जाती है। ऐसा सत्याचार्य कहते हैं

23 जिस ग्रह की महादशा हो उससे 6, 8 12 स्थानों में स्थित ग्रह की अंतर्दशा शुभ नहीं होती है। शेष स्थानों में स्थित शुभ ग्रह की महादशा तथा पापग्रह की अतर्दशा कष्ट देने वाली होती है।

24. जब कर्म लग्न लाभ, पराक्रम, सुख तथा त्रिकोण (पचम, नवम) स्थित शुभ ग्रह हो और वह स्वगृही हो अथवा उच्च का हो अथवा मित्र घर का हो, अथवा मित्र नवाश का हों तो उस ग्रह की दशा शुभ होती हैं. परन्तु जो ग्रह 8-12, 6-7-2 स्थानों में अथवा अष्टमेश मे हो अथवा शत्रु के घर का हों पाप ग्रह हों, अथवा नीच का हो अथवा अस्तंगत हो उसकी दशा शुभ नहीं होती है।

25 जब मित्र ग्रह की महादशा मे, मित्र ग्रह की अतर्दशा हो, अथवा शुभ ग्रह की महादशा में शुभ ग्रह की अतर्दशा हो तो वह शुभ होती है परन्तु जब शत्रु ग्रह की महादशा में शत्रु ग्रह की अतर्दशा हों अथवा पाप ग्रह की महादशा में पाप ग्रह को अतर्दशा हो तो शुभ नहीं होती है। यदि शुभ तथा पाप ग्रह अथवा शत्रु तथा मित्र ग्रहों की दशा और अंतर्दशा मिश्रित हो तो मिश्रित फल होता है।

26. उक्त दशाओं के साथ-साथ गोचर में चलायमान ग्रहो का शुभाशुभ प्रभाव जन्मकुण्डली पर घटित करके देखना चाहिए तथा बाद में अन्तिम निर्णय पर पहुचना चाहिए।

27. पृच्छक जब आपके पास आता है। उस समय शकुन क्या कहते हैं? प्रकृति के रहस्यमय घटनाओ का सूक्ष्म अध्ययन भी मन मस्तिष्क में रखना चाहिए। वे तत्काल फल चमत्कारी रूप में देते हैं। मान लीजिए कोई आपसे प्रश्न पूछने आया और बिजली चली गई। कोई बर्तन अचानक गिर कर टूट गया? पास में रोने की, झगड़े का कलह की आवाजें आ गई तो जातक का कार्य हर्गिज नहीं होगा. जिज्ञासु सज्जन के आते ही कहीं से कोई फल-मिठाई पुष्प लेकर आ गया। अचानक रोशनी आ गई टेलीफोन में अचानक शुभ समाचार मिल गये। बैंड-बाजे नगाड़े की आवाज आ गई तो निश्चित ही आगन्तुक सज्जन का कार्य होगा। ज्योतिषशास्त्र के विद्वान् को शुभाशुभ शकुन शास्त्र का भी पूरा-पूरा ज्ञान होना चाहिए।

❑❑❑

दृष्टांत कुण्डलियां

स्वामी रामतीर्थ
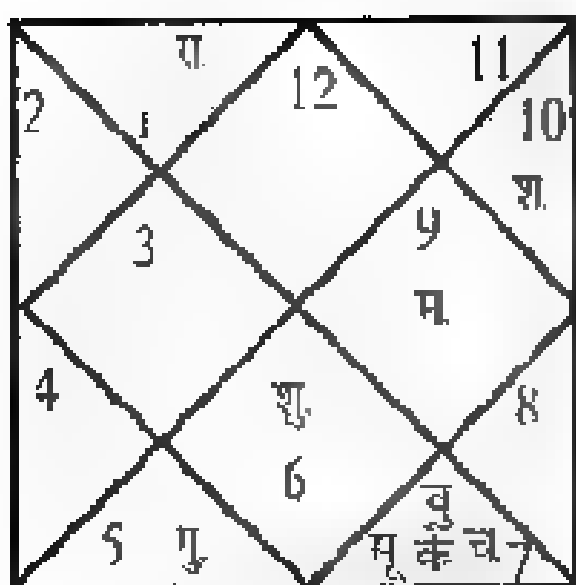
जन्म तिथि–22.10.1873, जन्म समय–16.40 बजे, जन्म स्थान–गुजरांवाला (पाकिस्तान)। गोस्वामी तुलसीदास के वंशज रामतीर्थ की सगाई दो वर्ष एवं विवाह दस वर्ष की आयु में हो गया। 14 वर्ष की आयु में मैट्रिक तथा 21 वर्ष की आयु में एम.ए. प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया। 24 वर्ष की आयु 25.10.1897 मे उन्होंने संन्यास ले लिया। सन् 1898 में उन्हें आत्म साक्षात्कार हुआ। वे अमेरिका गए। विदेश मे भारत की दिव्य विद्याओं का प्रचार किया। लग्नेश गुरु छठे, चंद्रमा आठवें होने से वे कुल 33 वर्ष तक ही जीवित रहे तथा गंगाजी के भंवर में फस कर जल समाधि ली।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर

जन्म तिथि–7.5.1861, जन्म समय 2.51 बजे प्रात, जन्म स्थान बंगाल विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के द्वितीय भाव में उच्च का सूर्य के साथ 'बुधादित्य योग' के कारण उनकी वाणी एवं कविताएं तेजस्वी थी। मंगल एवं शुक्र ने परस्पर पर राशि परिवर्तन करके उन्हें अतुल कीर्ति प्रदान की। चद्र एव गुरु ने परस्पर राशि परिवर्तन
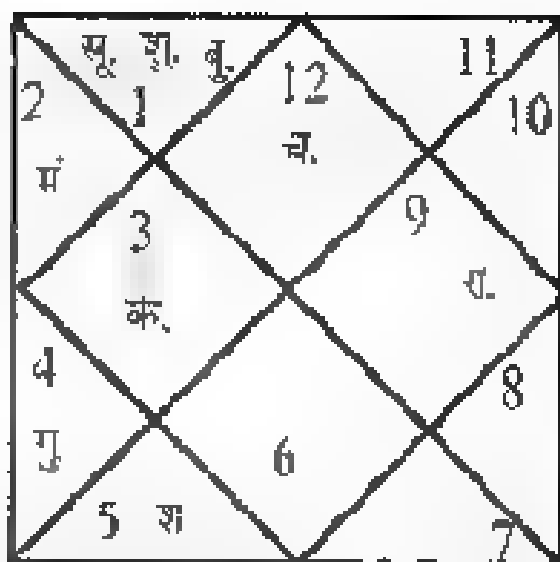
करके लग्न एवं पचम (अध्यात्म स्थान) दोनो को शक्तिशाली बनाया। द्वादेश शनि अष्टम में होने से 'विमल नामक' 'विपरीतराज योग' से उन्हें नोबल पुरस्कार मिला। विश्वव्यापी कीर्ति मिली।

मां आनन्दमयी
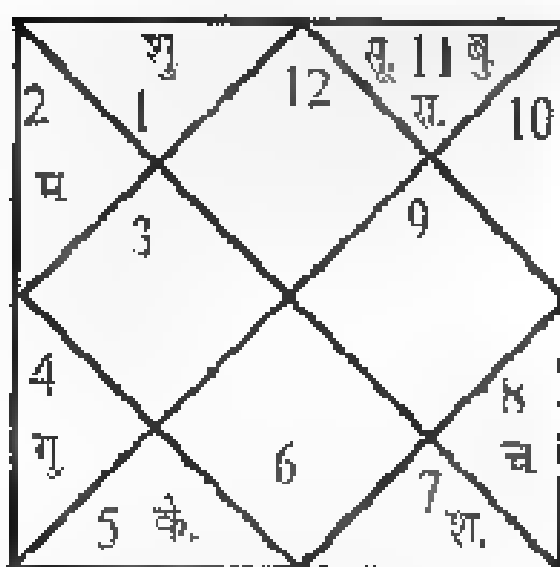
जन्म तिथि 30.4.1896। मा आनन्दमयी की कुण्डली में चारों केन्द्र खाली है। उच्चपदस्थ गुरु ने उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान किया। द्वादश में 'बुधादित्य योग' एव राहु ने उन्हें सन्यासी बनाया। अष्टम भाव में शनि मं विमल नाम 'विपरीतराज योग' बनाया। फलत उन्हें जबरदस्त राजकीय मान्यता मिली भारत की प्रधानमंत्री इदिरागांधी उनकी अनन्य भक्त थी। शुक्र एवं मगल ने परस्पर राशि परिवर्तन करके उन्हें विश्व व्यापी कीर्ति प्रदान की।

शंकराचार्य गोवर्धन मठ, श्री भारतीय कृष्णतीर्थ

जन्म तिथि–19.3.1868, जन्म समय–6.33 बजे। श्री भारतीय कृष्ण तीर्थ सन् 1946 से 1960 तक गोवर्धन पीठ के शकराचार्य पद पर आरूढ़ रहे। वे इस पीठ की परम्परा में 143वं शकराचार्य रहे और बड़ी भारी कीर्ति अर्जित की। इसका कारण
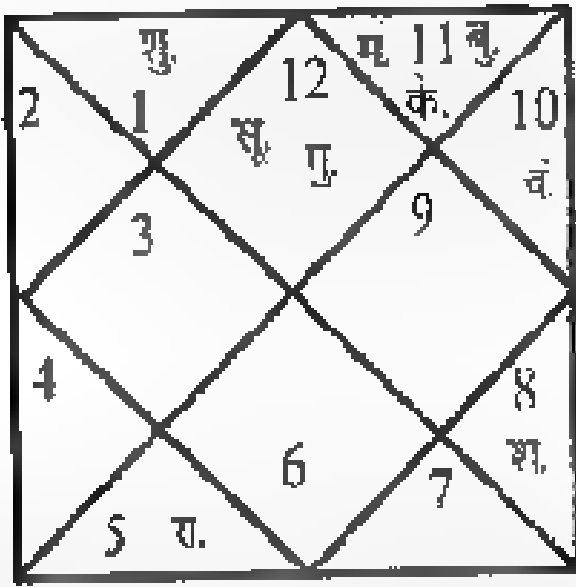
लग्नस्थ गुरु द्वारा प्रदत्त 'हंसयोग' है, मंगल, शनि का परस्पर स्थान परिवर्तन एवं बारहवें केतु ने उन्हें संन्यासी बनाया।

श्री उपेन्द्रनाथ अश्क
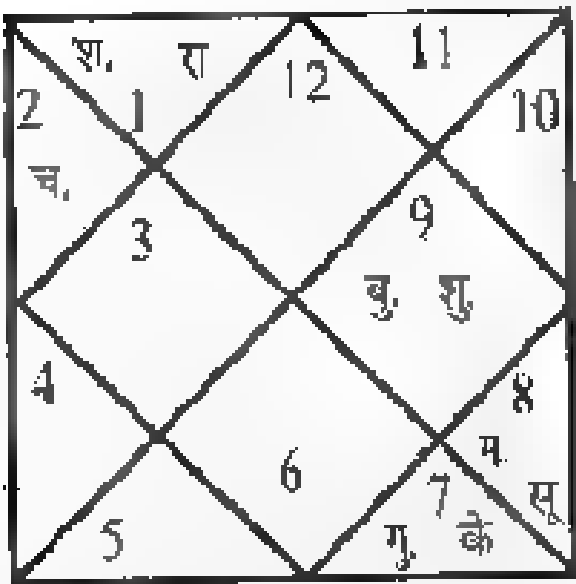
जन्म तिथि -14.12.1910, जन्म समय 13.10 बजे, जन्म स्थान-जालंधर, भारत प्रसिद्ध साहित्यकार, लेखक एवं कवि के रूप में उपेन्द्रनाथ अश्क ने विशेष ख्याति प्राप्त की है। अष्टम भावगत गुरु एव केतु, द्वितीय भागवत् शनि और राहु के कारण वे सैदव आर्थिक विषमता से लड़ते रहे। उन्हें भौतिक सुख सुविधा की प्राप्ति का नितान्त अभाव रहा।

श्रीमति ऐनी बेसेन्ट
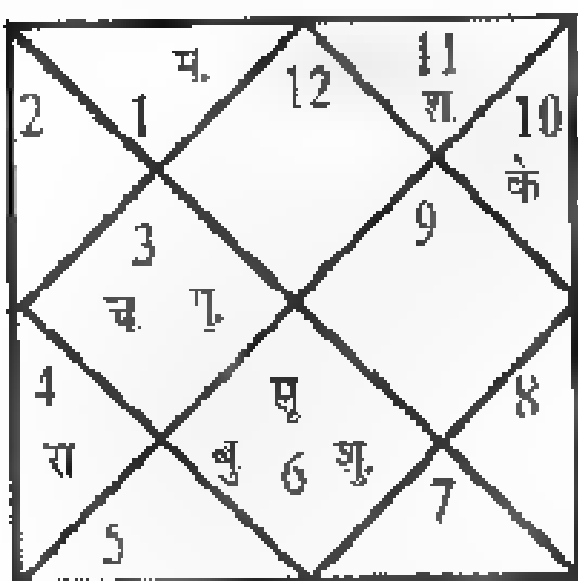
सुप्रसिद्ध समाज सेविका एवं प्रथम अध्यक्ष कांग्रेस पार्टी, श्रीमति ऐनी बेसेन्ट एक दयालु व परोपकारी विदेशी महिला थी। जिन्होंने अपन प्रखर व्यक्तित्व के कारण भारत की आजादी के आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

संत तुकाराम (महाराष्ट्र)
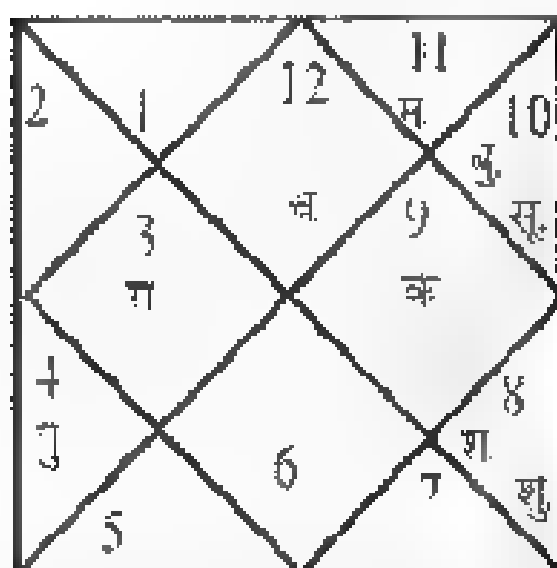
महान संत तुकाराम जी की कुण्डली में पंचमस्थ उच्च का गुरु आध्यात्मिक ज्ञान, पूर्वजन्म के पुण्यफल के रूप मे उदित हुआ है।

भारत सम्राट श्री भरत
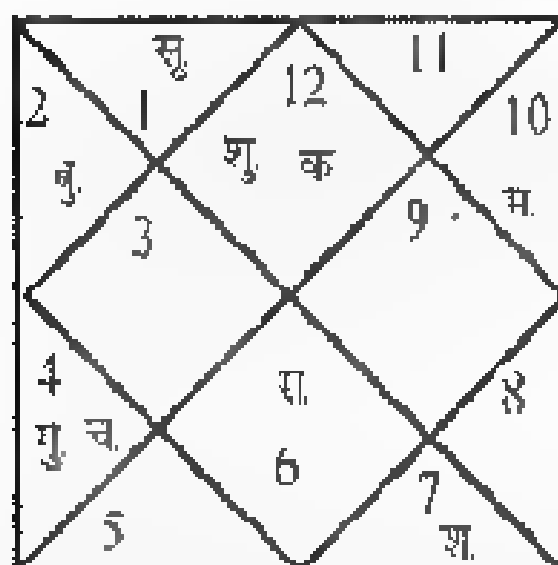
जन्म चैत्र शुक्ल नवमी। भगवान् श्रीराम की लघु भ्राता, भक्त शिरोमणि भरत की यह कुण्डली वाल्मीकी रामायण के आधार पर बनी है

बाबू जगजीवन राम (पूर्व रक्षामंत्री, भारत सरकार)

जन्मतिथि–5.4.1908, जन्म समय-6.00 बजे प्रात, जन्म स्थान–भोजपुर (बिहार)। चंद्र+शुक्र की युति ने यहां 'किम्बहुनानामक राजयोग' बनाया जिससे जातक का पराक्रम अद्वितीय रहा। आंशिक 'कालसर्प योग' के कारण जातक को कोई पुत्र नही हुआ एक पुत्री हुई जिसका नाम मीरा था।
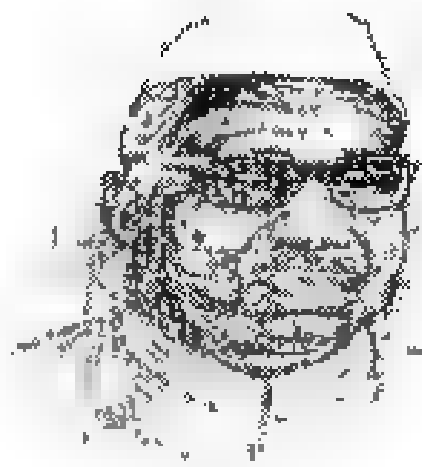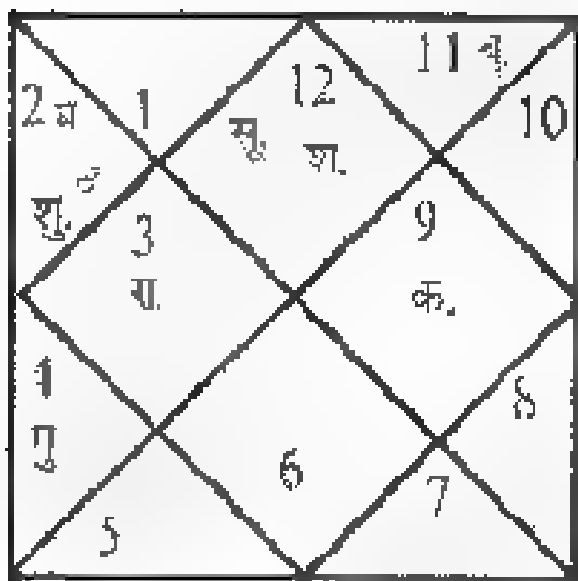
सम्राट जार्ज पंचम
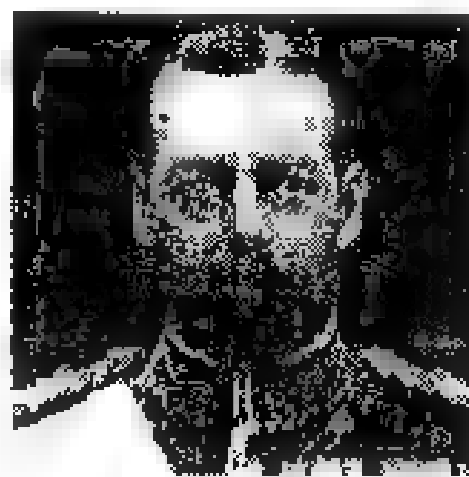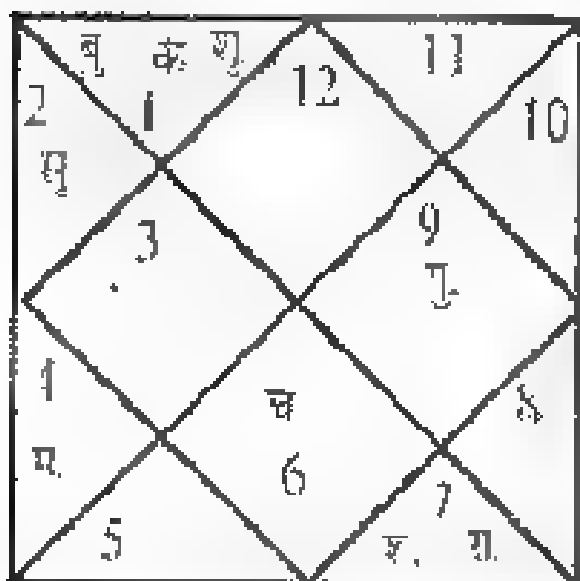
जन्मतिथि 3.6.1865, जन्म समय 13.30, जन्म स्थान इंग्लैंड। इस कुण्डली में गुरु के कारण 'हंस योग' बना जो कि पंचमहापुरुष योगों में से उत्तम योग है। अष्टम स्थान में उच्च का शनि विमल नामक 'विपरीतराज योग' बनाता है जिसके कारण ये सम्राट बने।

श्री भजनलाल पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा
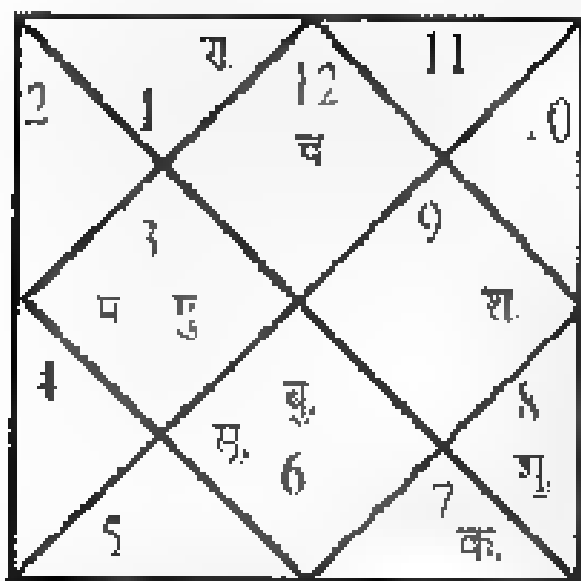
जन्मतिथि-6.10.1930, जन्म समय-17.40 जन्म स्थान-हिसार भारत के प्रखर बुद्धिजीवी, चालाक राजनीतिज्ञ प्रखर कूटनीतिज्ञ एवं 'आयाराम-गयाराम'' की राजनीति के प्रणेता श्री भजनलाल में 'बुधादित्य योग' चारों केन्द्र भरे होने से

'आसमुद्रात् नामक राजयोग'। 'कुलदीपक योग', 'पद्मसिंहासन योग' एवं पंचमहापुरुषों में से एक 'भद्रयोग' पूर्ण रूप से मुखरित है।

सुधाकर राव, पूर्व मुख्यमंत्री (महाराष्ट्र)
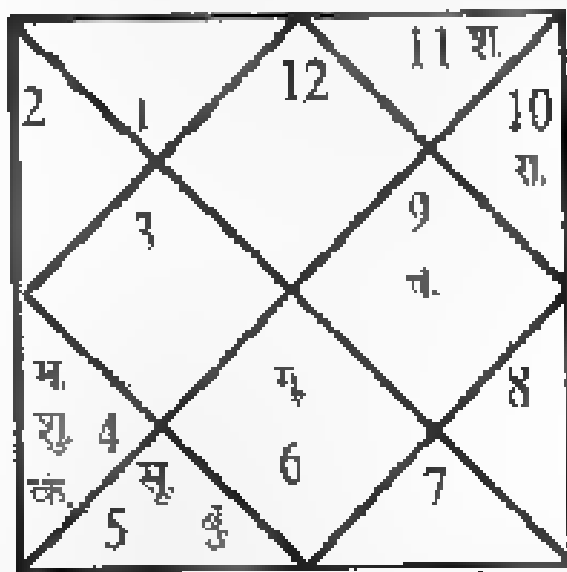
जन्मतिथि-21.8.1934, जन्म समय-20.30। महाराष्ट्र की राजनीति में सुधाकर राव नामक का नाम आदर से लिया जाता है। 'बुधादित्य योग', कुलदीपक योग', 'केसरी योग' 'पद्मसिंहासन योग' तथा निमल नामक 'विपरीतराज योग', हर्षनामक 'विपरीतराज योग', आंशिक 'कालसर्प योग' इनकी कुण्डली में प्रमुखता के साथ उभरे है।

श्री गोर्बोचोव, राष्ट्रपति रूस
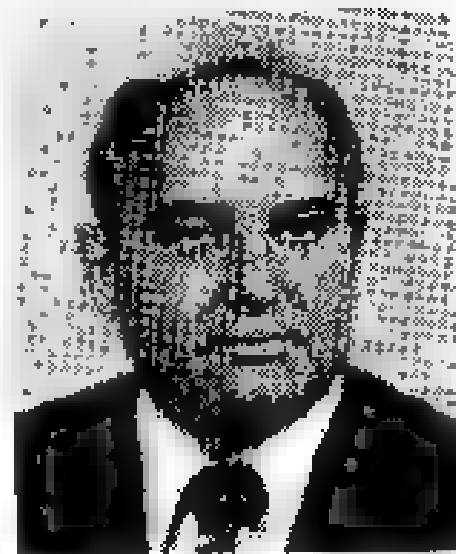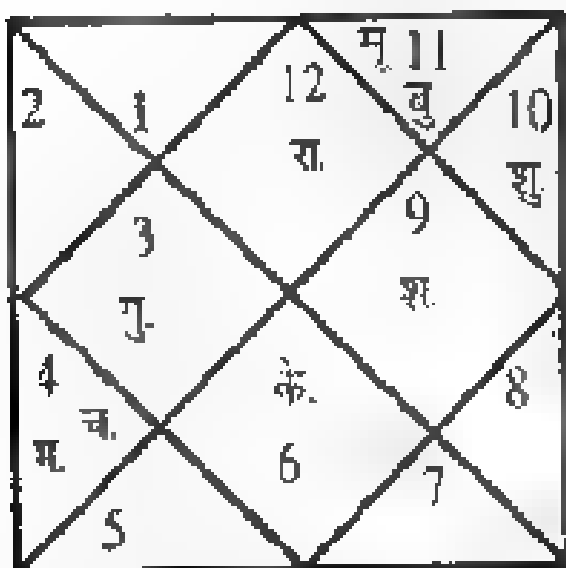
जन्मतिथि-2.3.1931, जन्मसमय 8.10 बजे प्रातः, जन्म स्थान मास्को। इस कुण्डली में चन्द्र+मंगल युति ने 'नीचभंग राजयोग' बनाया। बुधादित्य योग, केन्द्रवर्ती गुरु से 'कुलदीपक योग', 'केसरी योग' एवं 'पद्मसिंहासन योग' बनाया।

आईजन हॉवर

जन्मतिथि-14.10.1890 जन्म समय 5.15 बजे प्रातः, जन्म स्थान-डेनिसन, अमेरिका। बुध के कारण 'भद्र योग' बना जो कि पंच महापुरुष योगों में से उत्तम

योग है व्ययेश शनि छठे भाव में जाने से 'विमलनामक' 'विपरीतराज योग' बना। जिससे आईजन हॉवन को राजकीय सम्मान, पद-प्रतिष्ठा वर्चस्व की प्राप्ति हुई।

श्री ओमप्रकाश चौटाला, मुख्यमंत्री-हरियाणा

जन्मतिथि-29/30 अप्रैल 1935, जन्म समय- 4.15 बजे प्रातः, जन्म स्थान फिरोजपुर। श्री ओमप्रकाश चौटाल की कुण्डली में उच्च के सूर्य के साथ 'बुधादित्य योग' बना। व्ययेश व्ययस्थान में स्वगृही होने से विमलनामक 'विपरीतराज योग' बना। जिससे श्री चौटाल को मुख्यमंत्री पद की प्राप्ति हुई।

श्रीमति मारग्रेट अल्वा

जन्म तिथि 4.4.1942, जन्म समय- 6.00 बजे प्रातः, जन्म स्थान मैंगलार। भारतीय राष्ट्रीय राजनीति में मारगेट अल्वा एक जानी-पहचानी हस्ती है। जो कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमति सोनिया गांधी के अत्यधिक करीबी व्यक्तियों में से एक है। लग्नस्थ बुध चंद्र की युति एवं तृतीय स्थान में तीन ग्रहो की युति ने इनका पराक्रम बढ़ाया। इस कुण्डली मे द्वादशस्थ शुक्र ने सरल नामक 'विपरीतराज योग' बनाया है जो कि दृष्टव्य है क्योंकि शनि शुक्र के परस्पर राशि परिवर्तन किया है

हितेश्वर सेकिया
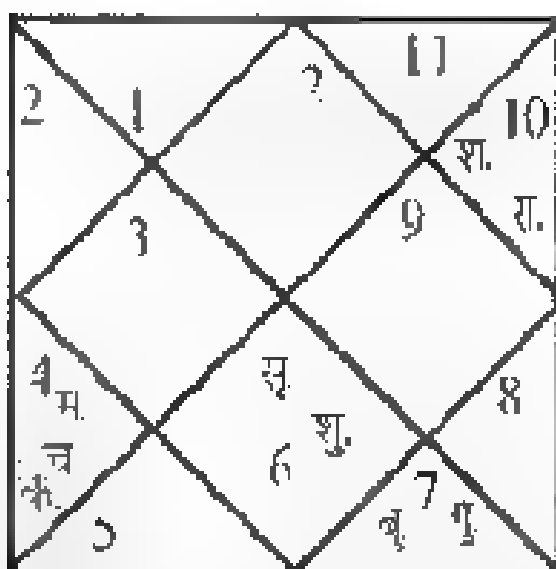
जन्मतिथि 3.10.1934, जन्म समय 16.30 बजे सायं, जन्म स्थान शिवसागर (आसाम)। हितेश्वर सेकिया की कुण्डली में चंद्र-मंगल युति 'नीचभंगराज योग' बना रही है। शनि स्वगृही है। शुक्र एवं बुध ने परस्पर राशि परिवर्तन किया है जो विशेष रूप से दृष्टव्य है। कुण्डली में पूर्ण 'कालसर्प योग' होने के कारण परिश्रम का उतना फल नहीं मिला, जितना मिलना चाहिए।

श्री सुशील कुमारक शिन्दे, मुख्यमंत्री (महाराष्ट्र)
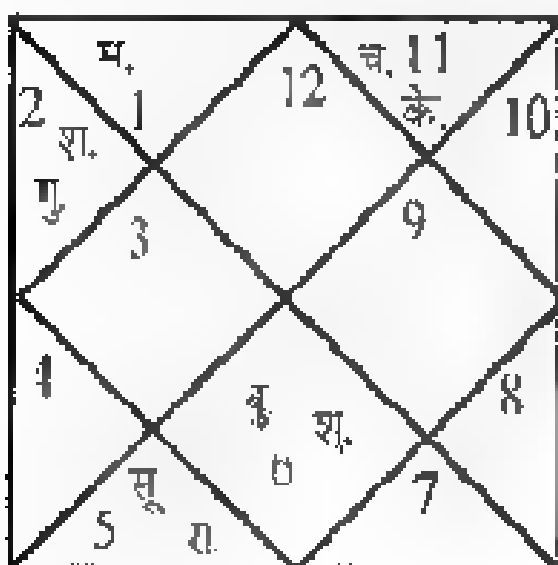
जन्मतिथि 4.9.1941, जन्म समय- 19.30 बजे सायं जन्म स्थान शोलापुर। देशमुख के स्थान पर मुख्यमंत्री बनने वाले श्री सुशीलकुमार शिन्दे का महाराष्ट्र की

राजनीति मे महत्त्वपूर्ण स्थान है। सप्तम भाव में उच्च के बुध से 'भद्रयोग', 'नीचभंगराज योग', सूर्य के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' ने उन्हें महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद पर बैठाया। अत्यन्त गरीब एवं निम्न परिवार में जन्में आयकर विभाग के चतुर्थ श्रेणी के पद पर काम कर रहे श्री शिन्दे का महाराष्ट्र के सर्वोच्च पद पर आसीन होना ग्रहो की शक्ति का ही विलक्षण चमत्कार है।

एरियल शेरॉन, प्रधानमंत्री इजरायल
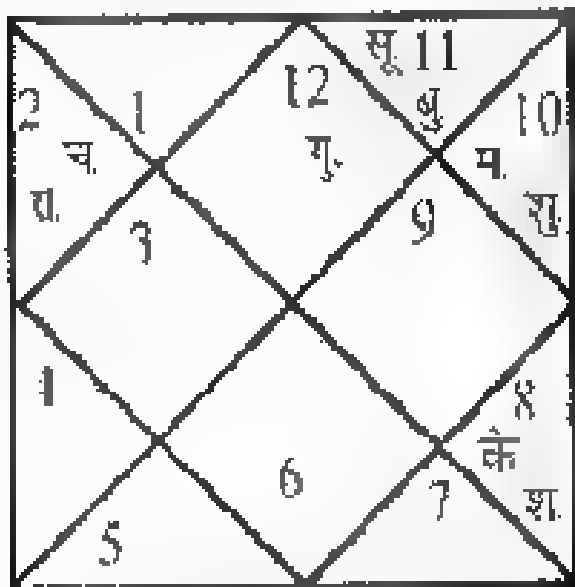
जन्मतिथि-26-2.1928, जन्म समय-7 49 बजे प्रातः, जन्म स्थान-कुफ्रमलाल। लग्नस्थ गुरु के कारण 'हंस योग', द्वादशस्थ सूर्य के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग', 'बुधादित्य योग' पंचमेश चद्रमा उच्च का होकर पराक्रम स्थान में, मगल उच्च का होने से श्री एरियल शेरॉन इजरायल के प्रधानमंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पद पर पहुंचे। परन्तु 'कालसर्प योग' के कारण सारी कीर्ति नष्ट हो गई। इन्हें हिटलर का अंशावतार कहा गया है।

अडोल्फ हिटलर (विश्व प्रसिद्ध तानाशाह)
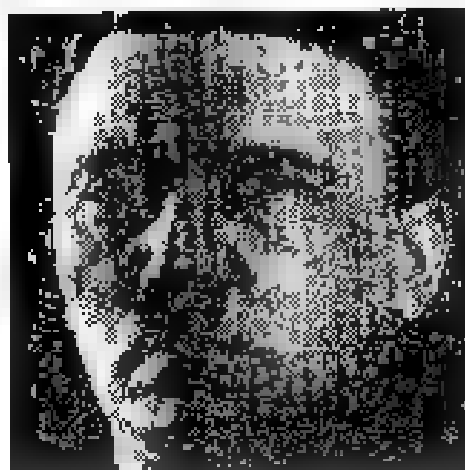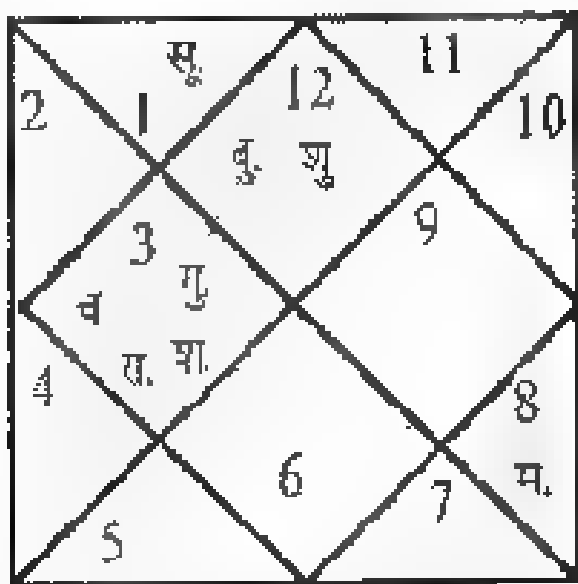
जन्म स्थान-जर्मनी। जनश्रुतियों के अनुसार यह उपलब्ध कुण्डली हिटलर की है। लग्न म 'मालव्य' नामक राज योग शुक्र के कारण बना। सूर्य उच्च का चतुर्थ

भाव में 'चतुर्ग्रह युति' ने उन्हें विश्वस्तरीय बड़ा नाम दिया परन्तु चंद्रमा शत्रुक्षेत्री तथा चंद्र राहु, शनि के प्रभाव में होने से उनकी मानसिकता व सोच विकृत रहा।

नीरो (रोम का शासक)

12	11 बु सू.	10 गु.
1 म. शु. रा	9 श.	8
2, 3, 4	के 6	7 च, 5
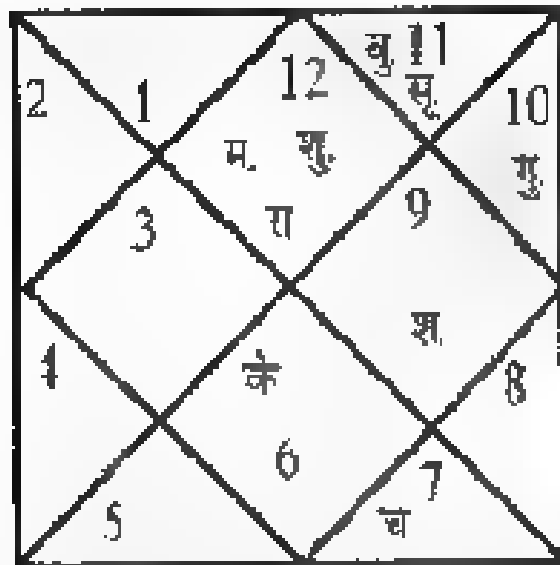
कहावत प्रसिद्ध है रोम जल रहा था तथा रोम का सम्राट नीरो महल छत पर खड़ा चैन की बंशी बजा रहा था। लग्नस्थ शुक्र द्वारा रचित 'मालव्य योग' ने उसे सम्राट बनाया पर लग्नस्थ मंगल+राहु युति ने उसे क्रूर बनाया। चंद्रमा अष्टम में विकृत मानसिकता का परिचायक है शनि गुरु का परस्पर राशि परिवर्तन यहां विशेष दृष्टव्य है।

राजकुमारी मार्गेट

12	11	10
1 रा.	9 श.	8
2, 3 मं गु., 4 चं.	6 बु शु.	7 के, 5 सू.
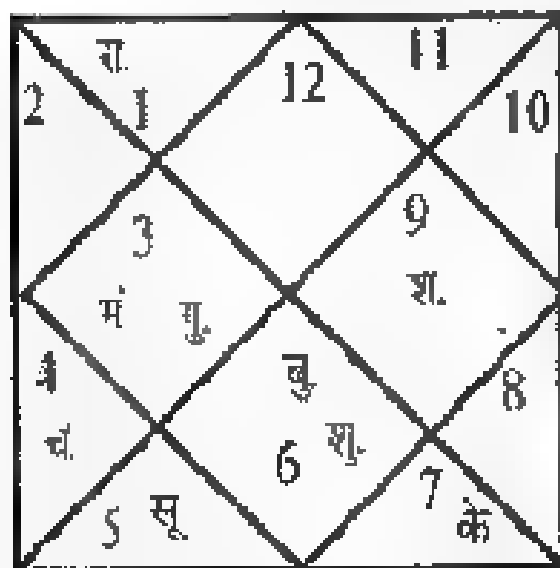
राजकुमारी मार्गेट की कुण्डली में सप्तमस्थ बुध ने 'भद्रयोग' शुक्र ने 'नीचभंगराज योग' के कारण बड़ा पद नाम दिया। सूर्य के कारण हर्षनामक 'विपरीतराज योग' बना। केन्द्रस्थ गुरु+मंगल की युति ने उसे ब्रिटिश सिंहासन की मालिका बनाया।

रोबर्ट कैनेडी (राष्ट्रपति अमेरिका)

राबर्ट कैनेडी विश्वप्रसिद्ध हस्ती है। उच्चस्थ शनि की स्थिति ने विमल नामक 'विपरीतराज योग' उनकी कुण्डली मे बनाया। सूर्य की युति से 'नीचभंगराज योग' भी
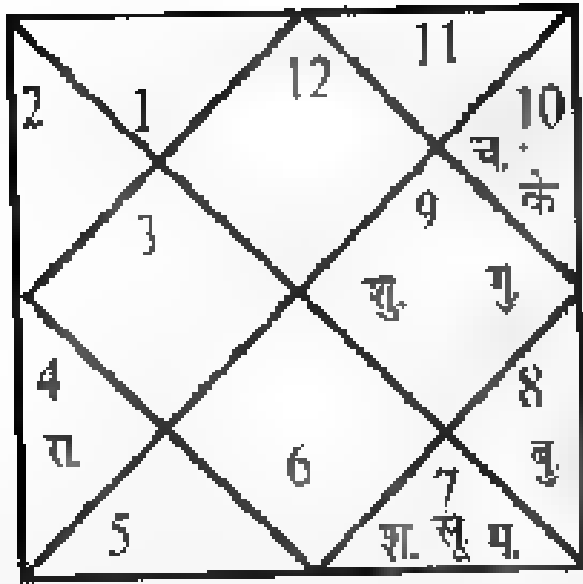
बना। केन्द्रस्थ स्वगृही गुरु ने 'हंस योग' की सृष्टि करके उन्हें अमेरिका का सर्वोच्च पद प्रदान किया। 'पूर्णकालसर्प योग' तथा अष्टम स्थान में शनि+सूर्य+मंगल की युति ने उनकी अकाल मृत्यु का संकेत भी दिया।

श्री चन्द्रबाबू नायडू (मुख्यमंत्री आंध्रप्रदेश)
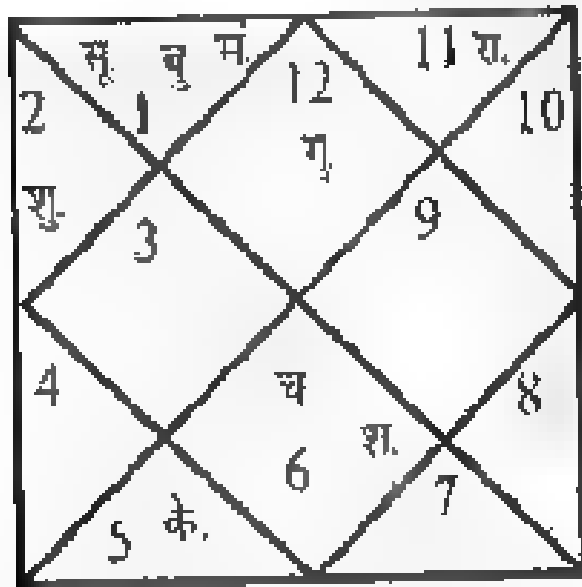
जन्म तिथि-2.4.1951, जन्म समय-5.00 बजे प्रातः। श्री चंद्रबाबू नायडू ने लग्नस्थ गुरु के कारण 'हंस योग' के कारण (आंध्र प्रदेश) के सर्वोच्च पद को प्राप्त किया। सूर्य+मंगल+बुध की युति ने 'किम्बहुना नामक राजयोग', 'बुधादित्य योग' की सृष्टि करके उनको राष्ट्रीय राजनीति में महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है वे भारत के प्रधानमंत्री बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

नेताजी सुभाषचंद्र बोस
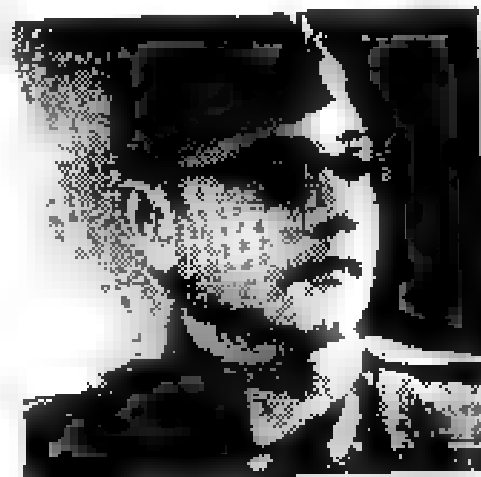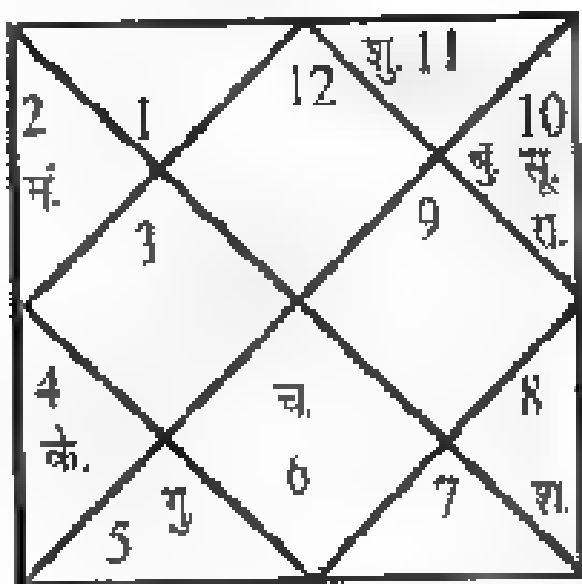
जन्म तिथि 23.1.1897, जन्म समय 9.50 बजे प्रातः। नेताजी सुभाषचंद्र बोस का नाम भारत की राजनीति में सर्वोच्च स्थान को प्राप्त है। परन्तु केन्द्र खाली होने से उन्हें सिंहासन नहीं मिला। लग्नेश गुरु खड्डे में गिरने से उनकी मृत्यु आज भी रहस्मय बनी हुई है। द्वादश शुक्र की स्थिति से सरल नामक 'विपरीतराज योग' तो बनाया। 'बुधादित्य योग' के कारण वे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रहे पर चंद्रमा शत्रुक्षेत्री होने के कारण उनकी किसी से बनी नहीं।

श्री टी.एन. शेषन
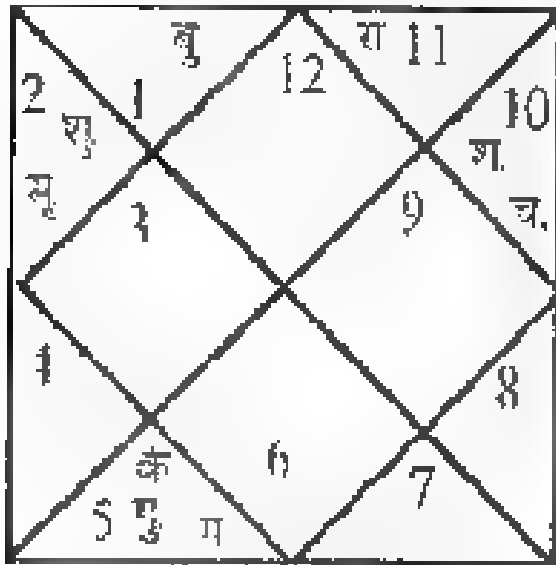
जन्म तिथि- 15.5.1933, जन्म समय-3.30 बजे प्रातः, जन्म स्थान-पालघाट पूर्व चुनाव आयुक्त टी.एन. शेषन अपने कार्यकाल में सर्वाधिक चर्चित व्यक्ति रहे। वे राष्ट्रपति पद के दावेदार भी रहे परन्तु केन्द्र खाली होने से वे राजनीति में कोई पद प्राप्त नहीं कर पाये सूर्य-शुक्र की युति ने उन्हें शोहरत तो दी परन्तु द्वादशस्थ राहु के कारण वे सदैव विवादास्पद व्यक्ति रहे

श्री गुलजारीलाल नन्दा
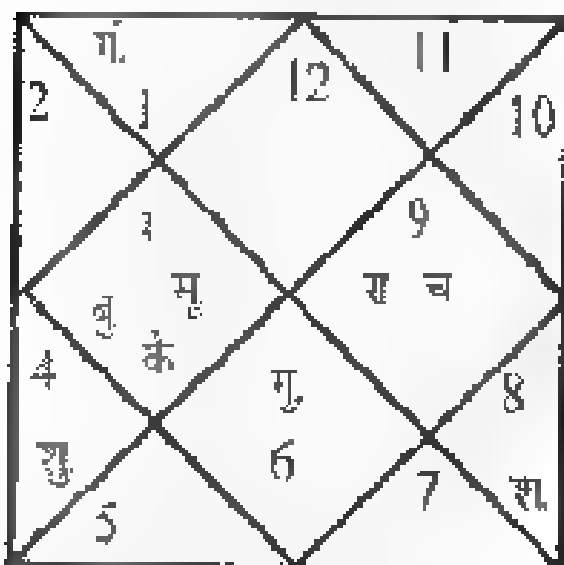
जन्म तिथि- 4.7.1898, जन्म समय 0.30 बजे, स्थान सियालकोट (पाकिस्तान)। श्री गुलजारीलाल नन्दा एक सात्विक एवं दीर्घजीवी व्यक्तित्व के धनी थे चतुर्थ भाव

में स्थित बुध ने भद्रयोग एवं बुधादित्ययोग की सृष्टि करके उन्हें राजनीति में ऊंचा पद-प्रतिष्ठा दिलवाई। लग्नेश गुरु द्वारा लग्न को देखे जाने से ये दीर्घजीवी रहे।

फिल्म स्टार आमिर खान
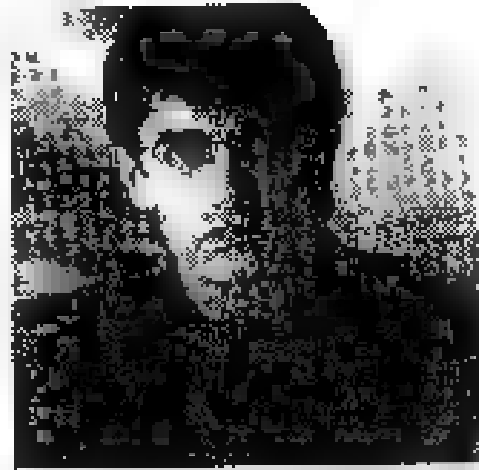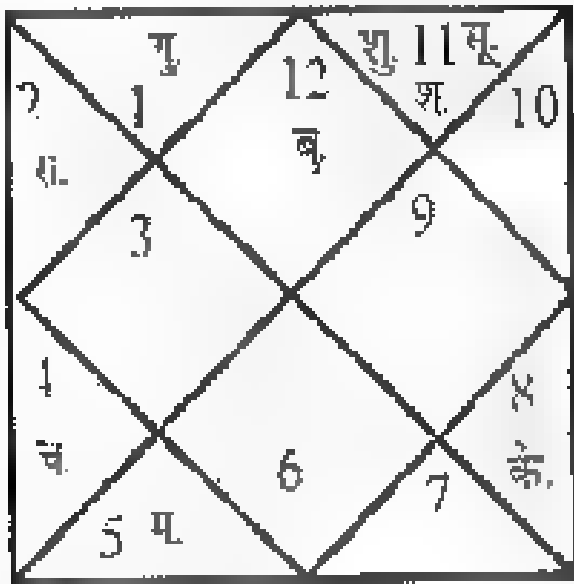
फिल्म स्टार आमिर खान अपनी पत्नी रीना से तलाक को लेकर चर्चा में हैं। फिल्मी दुनिया में आमिर का प्रवेश 24 वर्ष की आयु में हो गया था। मीनलग्न की कुंडली में शुक्र की दशा 31.1.1993 से लगी और एक के बाद एक फिल्म हिट होती चली गई. शुक्र इनकी कुंडली में उच्चाभिलाषी होकर स्वगृही शनि के साथ है शुक्र की महादशा में शुक्र का अंतर 1.6.1996 तक रहा और 1993 में राजा हिन्दुस्तानी पर श्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला

चंद्रमा इनकी कुंडली में स्वगृही है। पंचम भाव में है, बहुत बलवान है चंद्रमा के कारण आमिर पूर्ण भावुक हैं, इनकी कल्पना शक्ति प्रखर है। चंद्र इनके जीवन में कीर्तिदायक है। चंद्रमा का अंतर 1999 में लगा और इसी वर्ष फिल्म 'सरफरोस' में इन्हें पुनः श्रेष्ठ अभिनेता का पुरस्कार मिला। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर हिट हुई। आमिर खान के भाव बढ़ गए। फिर मंगल का अंतर आया। 2000 में इनकी पत्नी रीना के साथ विवाद बढ़े। थोड़ी पारिवारिक परेशानियां शुरू हुई, पर आमिर ने अपना सारा ध्यान कैरियर बनाने में लगाया। 2002 में उनकी बहुचर्चित फिल्म 'लगान' का प्रदर्शन हुआ। 'लगान' बॉक्स ऑफिस पर हिट हुई, आमिर ने नया कीर्तिमान स्थापित किया। इतना ही नहीं, 'लगान' को ऑस्कर अवार्ड के लिए भेजा गया।

इसी बीच उन्हें राहु की दशा लग गई राहु ने पत्नी रीना से तलाक दिलाया। चंद्रकुंडली में सप्तमेश शनि (आठवें भाव में) खड्डे में है। शत्रुग्रह सूर्य के साथ है। शनि+सूर्य और सूर्य+शुक्र परस्पर शत्रुग्रहों की युति ने कई मित्रों से मनमुटाव पैदा किया। 'सरफरोश' के निर्देश जॉन मैथ्यू से भी कुछ तनाव हुआ

इन दिनों उनके प्रेम-प्रसंगों को फिर हवा मिल रही है। इनमें फिल्म समीक्षक और तलाकशुदा जेसिका हाइन्स का नाम जोरों पर है। रीना से तलाक के बाद

दोनों का साथ साथ घूमना जारी है। ज्योतिष शास्त्र के हिसाब से अभी राहु की दशा 2.4.2003 तक है। इसके बाद आमिर पुन: शादी कर सकते हैं। लड़की शादीशुदा होगी और विदेशी होगी। ऐसा योग जन्म कुंडली के बारहवें भाव पर बैठे तीन ग्रहों की युति के कारण बन रहा है।

ऋतिक रोशन
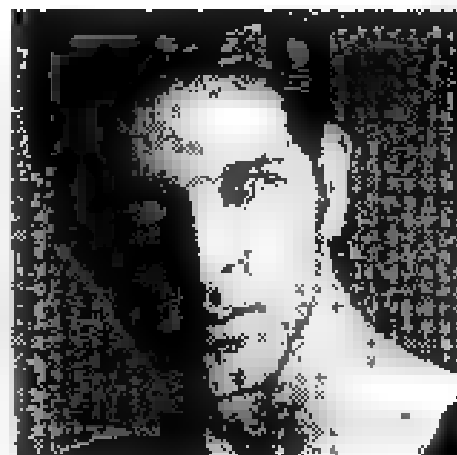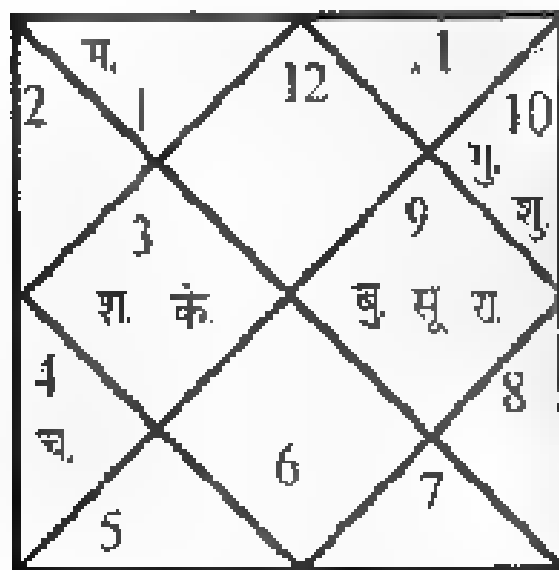
मीनलग्न और अश्लेषा नक्षत्र में जन्मे ऋतिक रोशन का जन्म नाम 'ड' से शुरू होता है, परन्तु भाग्य का सितारा चमकाने के लिए इनके माता-पिता के इनका नाम तुला राशि के शुक्र प्रधान सितारे पर रखा। लग्नेश गुरु लाभ स्थान में है, नीच राशि मे है परन्तु शुक्र के साथ है, जो इन्हें सफल अभिनेता घोषित करता है। केन्द्र में बुधादित्य योग उन्हें सफलता की ओर बढ़ा रहा है। मंगल स्वगृही है। चद्रमा पचम भाव में स्वगृही है। चद्रमा नवमांश में वर्गोत्तमी है। फलत: ऋतिक को धन की कमी उनके काम में बाधक नहीं रहेगी।

ऋतिक ने अपने पारिश्रमिक में 60 प्रतिशत की कमी कर दी है और आज वे निर्माताओं को काफी कम कीमत पर उपलब्ध है। इनकी कुण्डली मे धनेश मंगल स्वगृही है अत: पैसे की तकलीफ का उन्हें कभी सामना नहीं करना पड़ेगा।

वर्तमान मे ऋतिक को गुरु की दशा लग चुकी है। गुरु जो कि लग्नेश और राज्येश है तथा लाभ स्थान में बैठा हुआ है। पराक्रम भाव जमा पूंजी के स्थान पंचम भाव और गुप्त समझौते के स्थान, सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है। फलत: 29 अक्टूबर 2002 से कुछ ऐसी दशा लगी है, जो 29 जून 2005 तक लगातार उन्हें सफलता की ओर अग्रसर करती रहेगी। इस समय विशेष मे ऋतिक रोशन की फिल्में सफल होंगी।

रुपया और शोहरत दोनों उनके इर्द गिर्द बरसते रहेगे। जो भी उनके साथ जुड़ेगा, मालामाल होता रहेगा। इनका सप्तमेश बुध दशम भाव में सूर्य व राहु से युत है। फलत: ससुराल से इन्हें लाभ प्राप्ति के आसार हैं। मुख्य प्रतिद्वन्द्वी विवेक ओबेराय

को भी उनके सामने खड़े रहने से काफी तकलीफों का सामना करना पड़ेगा। ऋतिक रोशन की कुण्डली में मंगल स्वगृही है, अतः क्रोध अधिक आएगा।

संगीतकार रविशंकर
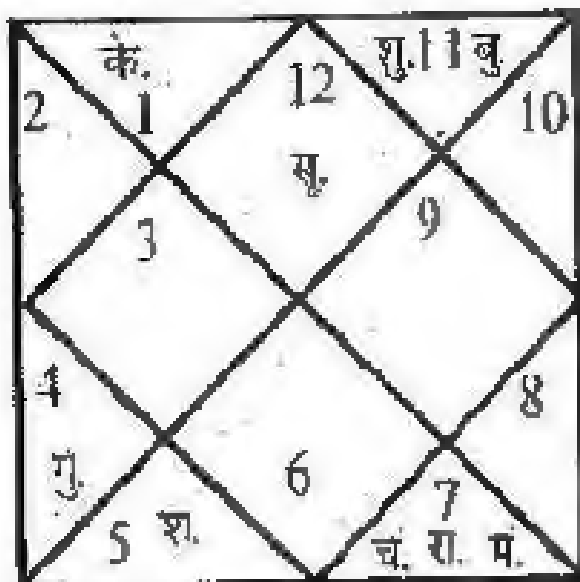
जन्म तिथि-4.4.1920, जन्म समय-6.00 बजे सायं:, जन्म स्थान-वाराणसी। पंचम भाव में उच्च का गुरु पूर्व जन्म में अर्जित पुण्यफल के रूप में आध्यात्मिक विद्या देता है। द्वादशस्थ शुक्र एवं षष्टस्थ शनि दोनों ही 'विपरीतराज योग' की सृष्टि कर रहे हैं। जिनके कारण इन्हें उच्च राजकीय (राष्ट्रीय) सम्मान मिला।

शाबाना आजमी
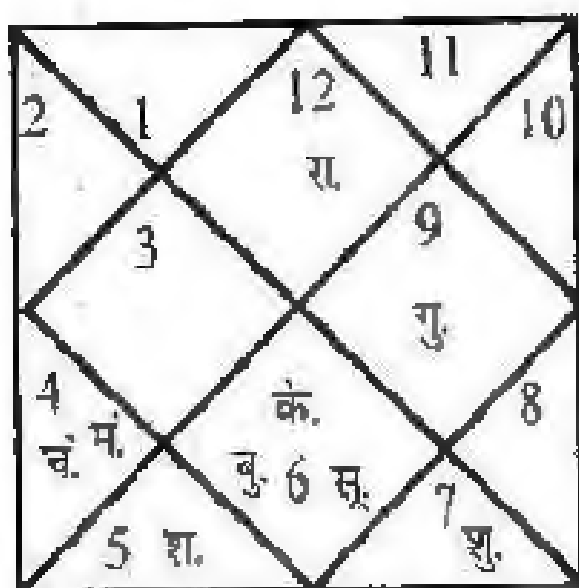
पंचमभाव में चंद्र+मंगल युति से 'नीचभंग राजयोग', सप्तम में बुध से 'भद्रयोग' के कारण शाबाना आजमी को राज्यसभा सदस्य जैसा महत्त्वपूर्ण पद मिला। अष्टमस्थान में अष्टमेश स्वगृही होने से सरलनामक 'विपरीतराज योग' ने इन्हें सफल अभिनेत्री बनाया।

डिम्पल कपाड़िया

जन्म तिथि-8.6.1957, जन्म समय-2.48 बजे प्रातः, जन्म स्थान-मुम्बई। शुक्र केन्द्र में, सप्तम में चंद्रेश होने से डिम्पल कपाड़िया स्वयं खूबसूरत है तथा जीवन
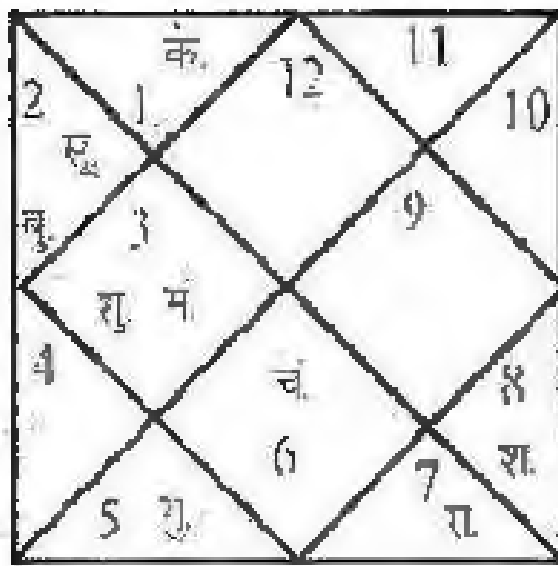
साथी भी खूबसूरत है। धनेश, भाग्येश केन्द्र में होने से वे जन्म से ही भाग्यशालर एवं धनी महिला है। बुधादित्य योग से इनको अभिनय क्षेत्र में सफलता मिली।

राहुल द्रविड़
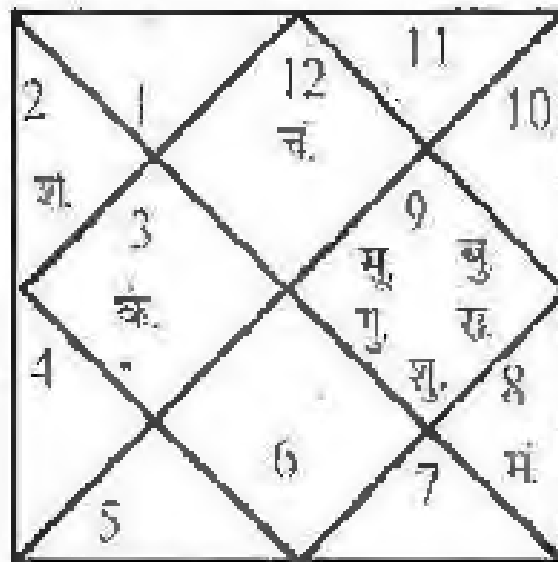
जन्म तिथि-21.1.1973। अपनी प्रतिभा के कारण क्रिकेट जगत पर छा जाने वाले राहुल द्रविड़ की सफलता का कारण दशम भाव में स्थित पंचग्रह युति, 'बुधादित्य योग', 'हस योग' तथा चतुर्थेश बुध व दशमेश गुरु की युति केन्द्रगत होने से बना 'काहल योग' है। इन योगों में जन्मा व्यक्ति झुझारू व्यक्तित्व का धनी, प्रतिभाशाली एवं साहसी एवं मान-सम्मान पाने वाला होता है।

श्री बी.एस. नागर, (डी.आई.जी)
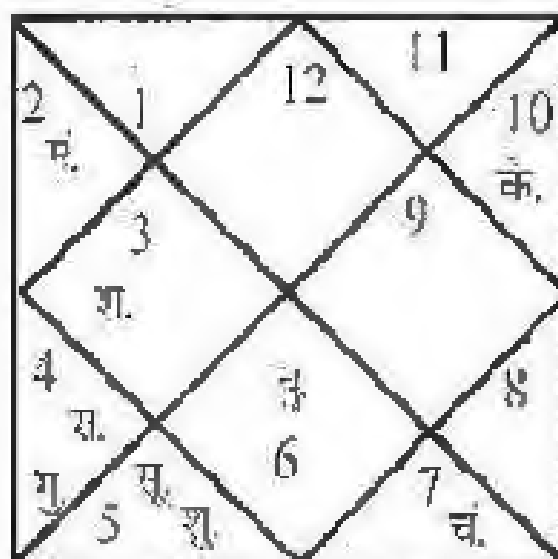
जन्म तिथि-4.9.1943, जन्म समय-20.31, जन्म स्थान-दिल्ली। प्रधानमंत्री स्पेशल सुरक्षाबल के डी.आई.जी. श्री बी. एस. नागर की कुण्डली में स्थित 'हंस योग' ने इस उच्च व प्रतिष्ठित पद पर पहुंचाया। पंचमस्थ उच्च के गुरु ने इन्हें पांच तेजस्वी पुत्र देने थे परन्तु दो पुत्र राहु ने नष्ट कर दिए। उनके तीन तेजस्वी पुत्र हैं। परन्तु पंचमेश खड्डे में होने के कारण अपने विवाह को लेकर वे परेशान हैं। पचंमस्थ गुरु के कारण वे स्वयं आध्यात्मक विद्या के ज्ञाता, एवं बड़े तांत्रिक हैं।

पं. भगदत्त शास्त्री
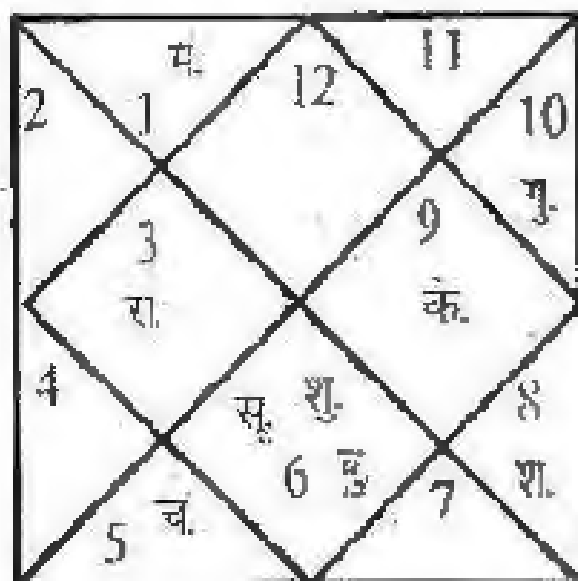
जन्म तिथि-3.10.1926, जन्म समय-17.50 बजे, जन्म स्थान-जोधपुर। इस कुण्डली में केवल सप्तम भाव 'नीचभंग राजयोग' बुधादित्य योग के कारण शक्तिशाली है। जातक पत्नी पक्ष से सौभाग्यशाली रहा। विवाह के बाद जातक का भाग्योदय हुआ। परन्तु गुरु में राहु की दशा में पत्नी का स्वर्गवास हो गया। पंचम भाव पर गुरु की दृष्टि से पांच पुत्र होते हैं। वर्तमान में जातक के चार पुत्र दो कन्या है। पंचम भाव पर गुरु की दृष्टि से जातक को संस्कृत व ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् बनाया।

पं. बाबूलाल दवे
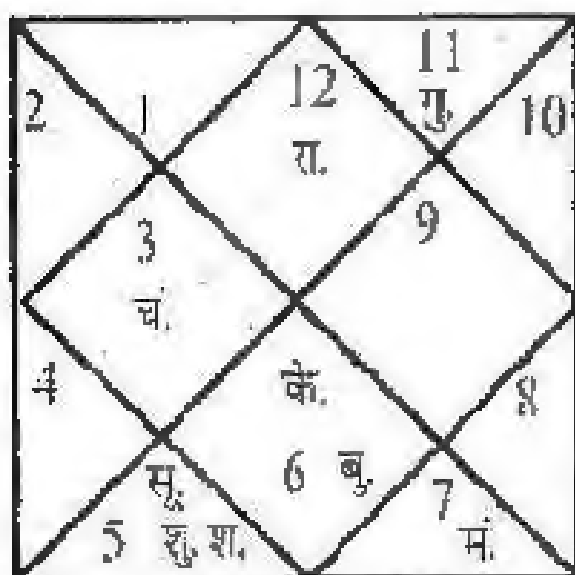
जन्म तिथि-7.9.1950, जन्म समय-20.00 बजे रात्रि, जन्म स्थान-बालोतरा। इस कुण्डली में केवल सप्तम भाव 'भद्रयोग' के कारण शक्तिशाली है। जातक ने विवाह के बाद उन्नति की एवं धनी ससुराल के कारण अपने परिवार में धनी व्यक्ति कहलाया। सूर्य स्वगृही होकर छठे साथ में होने से 'हर्षनामक' 'विपरीतराज योग' ने जातक को उच्च श्रेणी की सरकारी नौकरी दी। अष्टमेश छठे सरल नामक 'विपरीतराज योग' द्वादशेष छठे विमल नामक 'विपरीतराज योग' बना रहा है।

❑❑❑